वैदिक कोष :

Kathmandu

कोड्डा: १४१

कोश: ९४१

❀ ओ३म् ❀

वैदिककोषः

प्रथमो भागः

महर्षेर्दयानन्दस्य वेदभाष्ये ग्रन्थान्तरेषु चोपलभ्यमानवैदिकपदार्थानां
सङ्ग्रहरूपः । तत्र तत्र च व्याकरणनिरुक्तब्राह्मणोपनिषदां
प्रकृतिप्रत्ययविभागेनार्थोद्धृतिभिश्च संवलितया

विमर्शटीकया सहितः

सङ्ग्रहीता सम्पादकश्च :
राजवीरः शास्त्री

प्रकाशकः
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

प्रकाशक
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
२ एफ, कमलानगर, दिल्ली-७
दूरभाष : २२६५४७

❀

दयानन्दाब्द : १५१
विक्रमाब्द : २०३२
सृष्टि-संवत् : १,९६,०८,५३,०७५

❀

विक्रय केन्द्र
हरकरनदास दीपचन्द
४५५, खारी बावली, दिल्ली-६
दूरभाष : २६८३६०

❀

मूल्य १००.०० रुपये
© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

❀

प्रथम संस्करण, दिसम्बर १९७५
(शताब्दी संस्करण)

९२३७४
…मीकि विद्यापीठ-पुस्तकालय

❀

मुद्रक
आर० के० प्रिण्टर्स
८० डी, कमलानगर, दिल्ली-७

प्रकाशकीय

वेद ईश्वरीय ज्ञान व स्वतः प्रमाण है और सब सत्य विद्याओं का मूल है। अतः वेदों का बड़ा भारी महत्त्व है। वेदमन्त्रों के अर्थों को बिना जाने केवल पाठ मात्र से विशेष लाभ नहीं। सत्य वेदार्थ का जानना अत्यावश्यक है। प्राचीन समय में केवल वेदों का पठन-पाठन एवं उनके सत्य अर्थों का ही प्रचार था। महाभारत के काल के पश्चात् शनैः शनैः वेदों का प्रचार ह्रास को प्राप्त हुआ। स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने से निषेध किया जाने लगा। इस प्रकार मानव जाति का बड़ा भाग विद्याहीन हो गया। पुनः माता के अशिक्षित होने से सब ही अशिक्षित हो गये। ब्राह्मणों तक ने वेद का पठन-पाठन बन्द कर दिया। वर्ण-व्यवस्था जो गुण, कर्म, स्वभावानुसार थी जन्म पर आधारित हो गई। वाममार्ग आदि घृणित मत भी प्रचलित हुए। सायण, महीधर आदि अक्षरी-अक्षरी लोग वेद-भाष्यकार बन गये और वेदों के मिथ्या घृणित अर्थ कर डाले जिससे वेदों का अत्यन्त अपमान हुआ। महाभारत के लगभग पांच सहस्र वर्षों के पश्चात् वेद के सूर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती का आविर्भाव हुआ। जिन्होंने लुप्त हुए सत्य वेदार्थ विज्ञान को परमेश्वर के अनुग्रह, गुरु विरजानन्द की शिक्षा, अनुपम तपोबल और विद्याबल से समझ कर अन्यों को समझाया। वेद पर लगे लाञ्छनों को सत्यवेदार्थ करके दूर किया। देखिये महर्षि अपने वेदभाष्य के विषय में क्या लिखते हैं :

"परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देखने को मिला कि वेदभाष्य पूर्ण हो जाये तो निस्संदेह आर्यावर्त्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जायेगा कि जिसके मेटने और झंपने को किसी का सामर्थ्य न होगा क्यों कि सत्य का मूल ऐसा नहीं जिसको कोई सुगमता से उखाड़ सके और कभी भानु के समान ग्रहण में भी आ जावे तो थोड़े ही काल में फिर उग्रह अर्थात् निर्मल हो जायेगा।"

—भ्रान्तिनिवारण

मैंने महर्षि के अतिरिक्त अन्यों के मन्त्रार्थों को भी देखा बहुत स्थानों पर महर्षि के अर्थों से उनको मिलाया जिससे अनार्ष अर्थों पर अश्रद्धा उत्पन्न हो गई। उन अनार्ष अर्थों में बहुत दोष दृष्टि पड़े और अनार्ष अर्थों को पूर्णतः पढ़ना ही छोड़ दिया। क्योंकि जब तक आर्ष अर्थों से मिलाया नहीं जाये उन अर्थों में संदेह बना रहता है। महर्षि के ग्रन्थों के स्वाध्याय से इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि वेदों का अर्थ करने वाले विद्वानों की योग्यता का मापदण्ड आवश्यक है। महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के पठन-पाठन विषय में सीधा वेदार्थ जानने के लिए जितनी योग्यता का होना आवश्यक बताया है। वर्तमान समय में उसके अनुसार वेदार्थ करने वाले विद्वानों की भी योग्यता नहीं है। अतः ऋषि के आदेशानुसार उनको भी उतनी योग्यता वालों से किये भाष्य को पढ़ना चाहिये। इस समय मन्त्र का क्रमशः भाष्य केवल महर्षि दयानन्द का ही ऐसा मिलता है। महर्षि दयानन्द तथा अन्य ऋषियों द्वारा निर्धारित योग्यता का मापदण्ड मिथ्या नहीं हो सकता। इस समय तो योग्यता का मापदण्ड कुछ भी नहीं रहा है। बहुत ही साधारण संस्कृत मात्र जानने वाला व्यक्ति चाहे जिस मन्त्र की व्याख्या अपनी इच्छानुसार करता हुआ दृष्टिगोचर हो रहा है। महर्षि ने बरेली के लिखित शास्त्रार्थ में कहा था—"वेदों में पाप का क्षमा होना नहीं लिखा। आश्चर्य यह है कि अंग्रेजी जानने वाले भी वेदार्थ का निर्णय करें।"

आज कल आर्यों और अनार्यों के किये कपोल-कल्पित वेदों के व्याख्यानों का बहुत प्राबल्य है। प्रत्येक अपने विचारों को वेद मन्त्रों से सिद्ध करने का प्रयत्न कर रहा है। वास्तविकता यह है कि जब तक प्रामाणिक वेदार्थ सामने न हो तब तक वैदिक सिद्धान्तों का निर्णय नहीं हो सकता। यदि सिद्धान्त को पहले निर्धारित कर लिया और फिर तदनुसार वेदार्थ किया तो उस वेदार्थ की आवश्यकता ही क्या है ? तथ्य तो यह है कि प्रामाणिक वेदार्थ से सिद्धान्त का निर्णय किया जाता है। जब शास्त्रार्थ में वेदभाष्य की प्रामाणिकता का प्रश्न आता है। तब अनार्ष वेदभाष्य मैदान छोड़कर भाग जाते हैं। केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत वेदभाष्य ही मैदान में डटा रहता है।

जिन लोगों का ऐसा विचार है कि महर्षि ने तो वेदभाष्य पद्धति को एक उदार एवं विस्तृत शैली प्रदान की है उनकी सेवा में निवेदन है कि यदि महर्षि का उद्देश्य केवल शैली बतलाना ही था तो सब वेदों का भाष्य करने के लिए कमर कसने की क्या आवश्यकता थी ? एक विशाल ग्रन्थ के रूप में चारों वेदों की भूमिका (ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका) लिखने की भी कोई आवश्यकता नहीं थी। शैली तो दो-चार मन्त्रों के उदाहरण से भी बतलाई जा सकती है। आर्य विद्वानों की इन मिथ्या कल्पनाओं ने महर्षि के सत्य वेदार्थ के प्रति घोर अनर्थ किया है। महर्षि ने कहीं भी नहीं लिखा कि मैं एक उदार वेदार्थ शैली समझाने के लिए यह वेद-भाष्य प्रस्तुत कर रहा हूँ।

देखिये महर्षि क्या लिखते हैं—

"मेरा भाष्य उन ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थों के प्रमाणों से युक्त होगा जिनमें ऋषि, मुनि, महर्षि, महामुनि आर्यों ने वेद का सत्यार्थ परमात्मा की कृपा से लिखा है, क्यों कि विना सत्यार्थप्रकाश के देखे मनुष्यों की भ्रम निवृत्ति कभीं नहीं हो सकती"। (ऋग्वेदादि० प्रतिज्ञा०)

महर्षि के इस लेख के प्रकाश में कौन कह सकता है कि उन्होंने एक शैली मात्र दर्शाने के लिए वेदभाष्य किया है। वास्तविकता तो यह है कि प्राचीन ऋषि-मुनियों ने वेद का जो सत्यार्थ परमात्मा की कृपा से प्राप्त किया था महर्षि दयानन्द उसी सत्य वेदामृत का सबको पान कराना चाहते हैं। आज कल के विद्वान् तो अपने कपोल-कल्पित नये अर्थ करने को एक महत्त्व समझते हैं।

ऋषि कृत वेदार्थ ही प्रामाणिक होता है। अनार्ष वेदार्थ तो संदेह युक्त ही होते हैं। इस आर्ष कोष में वेदों के अधिकतर पद आ गये हैं, यह कोष सत्यवेदार्थ जानने में पूरा सहायक होगा। अनुसन्धान कर्त्ताओं के लिए अमूल्य निधि सिद्ध होगा। यह कोष अन्य वेदों में आये पदार्थों को समझने में भी सहायक है। देखिये महर्षि क्या लिखते हैं—

"(प्र०) वेदों के चार विभाग क्यों किये हैं ? (उ०)······(द्रुत, मध्यम, विलम्बित एवं तीनों का मिलना) इस (गान विद्या के) लिये वेदों के चार विभाग हुए हैं तथा कहीं-कहीं एक मन्त्र का चार वेदों में पाठ करने का यही प्रयोजन है कि वह पूर्वोक्त चारों प्रकार की गान विद्या में गाया जाये तथा प्रकरण भेद से कुछ-कुछ अर्थ भेद भी होता है इसलिये कितने ही मन्त्रों का पाठ चार वेदों में किया जाता है।" ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका प्रश्नोत्तर विषय

ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य एवं उनके समस्त ग्रन्थों में वेदों के जिन पदों का अर्थ मिला वह इस कोष में दिया गया है। इसके अतिरिक्त चारों वेदों के जिन पदों का अर्थ इस कोष में नहीं आया है। उन पदों का अर्थ द्वितीय भाग में प्रकाशित किया जायेगा। अर्थ वेदाङ्गों एवं ब्राह्मण ग्रन्थों आदि से दिये जायेंगे।

आर्ष अर्थों से युक्त वेदों का कोई भी कोष इस समय उपलब्ध नहीं था। अतः योग्य विद्वानों से सम्पादन कराके इस भारी कमी को दूर किया गया है। यह कोष आर्यसमाज स्थापना शताब्दी उत्सव पर उपहार रूप में भेंट करने की बहुत वर्षों से प्रबल इच्छा थी। समय पर तैयार कराने के लिए बहुत पुरुषार्थ करना पड़ा है, तब ठीक समय पर यह कोष भेंट किया जा रहा है।

इस कोष का सम्पादन पं० राजवीर जी शास्त्री ने श्री वेदपाल शास्त्री के सहयोग से किया है। श्री पं० राजवीर जी शास्त्री की व्याकरण शास्त्र में विशेष रूप से बहुत बड़ी योग्यता है। दोनों विद्वानों ने इस कार्य को बड़ी योग्यता और पुरुषार्थ से किया है। मैं उक्त दोनों विद्वानों का एवं इस कोष के प्रकाशन में सब सहयोगियों का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

२ एफ, कमला नगर,
दिल्ली-७

ऋषि-चरणों का अनुचर
दीपचन्द आर्य
प्रधान, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

वेदों का महत्त्व

विश्व धरातल पर सृष्टि के प्रारम्भ में ही परमपिता परमात्मा ने अग्नि ऋषि को ऋग्वेद, वायु ऋषि को यजुर्वेद, आदित्य ऋषि को सामवेद तथा अङ्गिरा ऋषि को अथर्ववेद का ज्ञान दिया। अथर्ववेद में लिखा है—

यस्माद् ऋचो अपातक्षन् यजुर्यस्मादपाकषन् ।
सामानि यस्य लोमान्यथर्वाङ्गिरसो मुखम् ।
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः । अथर्व० १०.२३.४.२०.

अर्थात् सब जगत् के कर्त्ता धर्त्ता परमेश्वर से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद उत्पन्न हुए।

(प्रश्न) वेद ईश्वर कृत हैं मनुष्य कृत नहीं, इसमें अवैदिक मतावलम्बी मनुष्यों के लिये क्या प्रमाण है? (उत्तर)—प्रथम तो यह सभी विद्वान् स्वीकार करते हैं कि मनुष्य बिना सिखाये कुछ भी नहीं सीख सकता। अतः परमेश्वर ही आदि गुरु है जिसकी अपार अनुकम्पा से मानव को ज्ञान मिला। और वह ज्ञान वेद ही है। मानव का स्वाभाविक ज्ञान वेद और विद्वानों की शिक्षा के ग्रहण में साधन मात्र ही है। वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष विद्या का साधन स्वतंत्रता से कभी नहीं कर सकता। ज्ञान दो प्रकार का होता है—एक स्वाभाविक और दूसरा नैमित्तिक। विद्या का बोध स्वाभाविक ज्ञान से कदापि सम्भव नहीं है। वेद-विद्या का बोध निमित्त से होता है। वेद में सब विद्याओं का मूल रूप में प्रकाश है। आज भी मनुष्य छोटी से छोटी विद्याओं को दूसरों से सीखता है। अतः स्पष्ट है कि वेद ज्ञान ईश्वर प्रदत्त ही है। महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास ने वेदान्तदर्शन में स्पष्ट लिखा है—'शास्त्रयोनित्वात्।' (वेदान्त० १.१.३.) अर्थात् वह परब्रह्म ही ऋग्वेदादि चारों वेदों का बनाने वाला है। महर्षि पतञ्जलि लिखते हैं—'स एष पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।' (योग० १.२६.) अर्थात् वह परमेश्वर सृष्टि के आदि में उत्पन्न हुए अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरादि का भी गुरु है। महर्षि कणाद लिखते हैं—'बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे।' (वै० ६.१.१.) अर्थात् वेद में सब रचना बुद्धि पूर्वक है और 'तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम्।' (वै० १.१.३.) वेदों को इसलिए प्रामाणिक मानता हूँ कि उनमें सब सत्य विद्या और पक्षपात रहित धर्म का ही प्रतिपादन है।

अतः चारों वेद ईश्वरोक्त होने से स्वतः प्रमाण हैं। महर्षि दयानन्द लिखते हैं—'वेद ईश्वर के रचे हुए हैं और ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वविद्यायुक्त तथा सर्वशक्ति वाला है। इस कारण से उसका कथन भी निर्भ्रम और स्वतः प्रमाण के योग्य है।' (ऋ० भू० ग्रन्थप्रामाण्य०) 'किञ्च—परमेश्वर के बनाये वेदों के पढने, विचारने और उसी के अनुग्रह से मनुष्यों को यथाशक्ति विद्या का बोध होता है, अन्यथा नहीं।' (ऋ० भू० वेद नित्य०)

वेद ईश्वरीय ज्ञान है इसमें इतिहास भी साक्षी है क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आज तक इसे ईश्वर का ज्ञान ही माना गया है। और वेद की पुस्तकों पर आज तक किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं मिलता। इसका कारण भी ईश्वरीय ज्ञान ही है। इसका नाम श्रुति भी इसलिए पड़ा है कि यह ज्ञान सुनते-सुनते ही प्राप्त किया जाता रहा। परन्तु कुरान बाइबिलादि के विषय में ऐसा कोई इतिहास नहीं है। जब सृष्टि को बने दो अर्ब के लगभग समय बीत गया

है तो क्या परमपिता परमात्मा अपने पुत्रों को अपने ज्ञान से वञ्चित रख सकता है ? क्योंकि कुरान बाइबिलादि ग्रन्थों का निर्माण दो हजार वर्ष पूर्व ही माना गया है।

'जैसे सूर्य और दीपक अपने ही प्रकाश से प्रकाशमान होके सब क्रिया वाले द्रव्यों को प्रकाशित कर देते हैं वैसे ही वेद भी अपने प्रकाश से प्रकाशित हो के अन्य ग्रन्थों का भी प्रकाश करते हैं। इससे यह सिद्ध हुआ कि जो-जो ग्रन्थ वेद से विरुद्ध हैं वे कभी प्रमाण स्वीकार करने के योग्य नहीं होते।' (ऋ० भू० ग्रन्थप्रामाण्य०)

जैसे माता-पिता अपने सन्तानों पर कृपादृष्टि कर उन्नति चाहते हैं, वैसे ही परमात्मा ने सब मनुष्यों पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया है। जिससे मनुष्य अविद्यान्धकार, भ्रमजाल से छूटकर विद्याविज्ञान रूप सूर्य को प्राप्त होकर अत्यानन्द में रहें और विद्या तथा सुखों की वृद्धि करते जायें। (सत्यार्थ० सप्तम समु०)

ऐसे परम पवित्र स्वतः प्रमाण वेदों के आगे ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त सभी ऋषि-मुनि नतमस्तक रहे हैं। भगवान् मनु ने वेद का स्वाध्याय न करने वाले की घोर निन्दा करते हुए लिखा है—

'योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः॥ (मनु० २.१६८.)

अर्थात् जो द्विज वेद को न पढ़ कर अन्य वेदविरुद्ध अनार्ष ग्रन्थों में पुरुषार्थ करता है वह इसी जीवन में शूद्रभाव को प्राप्त होता है। दूसरे स्थान पर तो मनु ने 'नास्तिको वेदनिन्दकः' वेद के निन्दक को नास्तिक कहकर घोर निन्दा की है। महर्षि पतञ्जलि ने तो महाभाष्य में लिखा है—

ब्राह्मणस्य निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च। (महाभा० पस्पशाह्निक)

विद्वान् ब्राह्मण (ब्रह्म के ज्ञाता) का यह परम धर्म है कि वह लौकिक प्रयोजनों से पराङ्मुख होकर अंगों सहित वेदों को पढ़े और उनको जाने।

वेदों के विषय में कुछ ऐसी भ्रान्त धारणाएं भी फैली हुई हैं जिनका निवारण करना अत्यावश्यक है। उनमें से एक यह है—वेदों में जो मन्त्रों के साथ ऋषियों के नाम लिखे हुए हैं, वे ही उन-उन मन्त्रों के कर्त्ता हैं। परन्तु यह ठीक नहीं। जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन जिस-जिस ऋषि को हुआ, जिससे पहले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, उस-उस का नाम उसी-उसी मन्त्र के साथ स्मरणार्थ लिखा गया है। क्योंकि ऋषि शब्द का अर्थ महर्षि यास्क ने 'ऋषिर्दर्शनात्' कहकर मन्त्रार्थ के द्रष्टा को ऋषि कहा है। अतः जो कोई ऋषियों को मन्त्रकर्त्ता बतलाता है वह मिथ्यावादी ही है। इसी प्रकार 'मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्' इत्यादि वचनों को कहकर ब्राह्मणों को वेद कहने लगे, किन्तु यह कथन स्वयं ब्राह्मण ग्रन्थों के भी विरुद्ध होने से मान्य नहीं है। ब्राह्मण ग्रन्थों के बनाने वाले भिन्न-भिन्न ऋषियों के नाम ब्राह्मण ग्रन्थों पर अंकित हैं और ब्राह्मण ग्रन्थों में याज्ञवल्क्य, मैत्रेयी, गार्गी और जनकादि लौकिक, ऐतिहासिक पुरुषों का उल्लेख है। परन्तु वेदों में न तो लौकिक इतिहास है और न किसी व्यक्ति विशेष का नाम ही अंकित है। ब्राह्मण शब्द से भी स्पष्ट होता है कि इन पुस्तकों का नाम ब्राह्मण इसलिए रक्खा गया है कि ब्रह्म अर्थात् वेद का व्याख्यान होने के कारण ब्राह्मण नाम प्रसिद्ध हुआ। महर्षि पाणिनि ने 'छन्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि' सूत्र में ब्राह्मण का छन्द से पृथक् निर्देश करके मन्त्र और ब्राह्मण को पृथक् माना है। महर्षि पतञ्जलि ने महाभाष्य के प्रारम्भ में वैदिक शब्दों के उदाहरणों में चारों वेदों के ही मन्त्र दिये हैं। ब्राह्मणों का नाम यदि वेद होता तो वैदिक शब्दों में कोई उदाहरण ब्राह्मणों का अवश्य देते। निरुक्तकार भी 'इत्यपि निगमो भवति। इति ब्राह्मणम्, लिखकर मन्त्रों को निगम और ब्राह्मण-वाक्यों को ब्राह्मण शब्द से ही लिखते हैं। अन्यथा कहीं तो ऐसा मिलता कि ब्राह्मण वाक्यों को नैगम कह देते और नैगम उद्धरणों को ब्राह्मण कहते। परन्तु ऐसा कहीं भी विपर्यय देखने में नहीं आता। अतः स्पष्ट है कि मन्त्र भाग का ही नाम वेद है, ब्राह्मणों का नहीं। महर्षि दयानन्द लिखते हैं—

'ब्राह्मण पुस्तकों में बहुत से ऋषि, महर्षि और राजादि के इतिहास लिखे हैं और इतिहास जिसका हो उसके जन्म के पश्चात् लिखा जाता है। वह ग्रन्थ भी उसके जन्मे पश्चात् होता है। वेदों में किसी का इतिहास नहीं किन्तु विशेष जिस-जिस शब्द से विद्या का बोध होवे, उस-उस शब्द का प्रयोग किया है। किसी मनुष्य की संज्ञा वा विशेष कथा का प्रसंग वेदों में नहीं है।'

(सत्यार्थ० सप्तम समु०)

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अतः वेद भाष्यकार सायण तथा उनके अनुयायी पाश्चात्त्य विद्वान् एवं कतिपय भारतीय विद्वानों की यह धारणा बिलकुल मिथ्या तथा परस्पर विरोधी है कि ब्राह्मणों का नाम भी वेद है।

इसी प्रकार वेदों की एक हजार एक सौ सत्ताइस (११२७) शाखाएं हैं। वेदों का व्याख्यान होने से ही उन ग्रन्थों का नाम शाखा पड़ा। जो विद्वान् मानते हैं कि वेदों के अवयवभूत विभाग होने से शाखा नाम प्रसिद्ध हुआ, वह ठीक नहीं। क्योंकि जितनी भी आश्वलायनादि शाखाएं उपलब्ध होती हैं, वे उन उनके बनाने वाले महर्षियों के नाम से प्रसिद्ध हैं और सब शाखाओं में मन्त्रों के प्रतीक धरके ही व्याख्या की गई है। अतः ईश्वरोक्त चारों वेद ही मूलवृक्ष और आश्वलायनादि शाखाएं ऋषि मुनि कृत हैं। अतः इस कोष में चार वेदों के पदों का ही अर्थ दिया गया है। यही इसकी विशेषता है, क्योंकि इन्हीं चार वेदों को ऋषियों ने स्वतः प्रमाण माना है एवं समस्त आप्तों ने इनका प्रमाण स्वीकार किया है। जैसा कि न्यायदर्शन में महर्षि गौतम ने लिखा है—

"मन्त्रायुर्वेदप्रामाण्यवच्च तत्प्रामाण्यमाप्तप्रामाण्यात्।" न्याय० २.१.६.

अर्थ—सृष्टि के आरम्भ से लेकर आजपर्यन्त ब्रह्मादि जितने आप्त पुरुष होते आये हैं वे सब वेदों को प्रामाणिक मानते आये हैं। वे आप्त प्रामाणिक हैं, क्योंकि आप्त लोग वे होते हैं जो धर्मात्मा, छल-कपट, आदि दोषों से रहित, सब विद्याओं से युक्त, महायोगी और सब मनुष्यों के लिए सत्य का उपदेश करने वाले हैं। जिनमें लेश मात्र भी पक्षपात वा मिथ्याचार नहीं होता, उन्होंने वेदों का यथावत् प्रमाण किया है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका वेदनित्यत्व विचार) उक्त लेखानुसार वेदों का बड़ा भारी महत्त्व है।

महर्षि दयानन्द के भाष्य की विशेषताएँ

महाभारत-महायुद्ध के पश्चात् वेद-ज्योति मिथ्या मतों की घनघोर घटाओं से आच्छन्न होने के कारण लुप्तप्राय हो गई थी। वेदों के सत्यार्थ न जानने के कारण पाश्चात्त्य विद्वान् वेदों को गडरियों के गीत कहने लगे थे। वेदों का पठन-पाठन न होने से वेदों के नाम से मिथ्यावादी, प्रपञ्ची, छली, कपटी लोगों ने अपने मायाजाल में लोगों को फंसाने के लिए नये नये मन्त्र घढ़ रक्खे थे। ऐसे घोर-अन्धेरे में मतान्ध दैत्यों से पीडित भ्रान्त, पथ-भ्रष्ट लोगों को पांच हजार वर्षों के बाद महर्षि दयानन्द का इस पावन ऋषियों की भूमि पर आविर्भाव हुआ। जिन्होंने घोर-तपस्या, ब्रह्मचर्य तथा परमेश्वर की अनवरत आराधना से और वेदों के प्रति प्रबल आस्था तथा ऋषि-मुनियों के बनाये ग्रन्थों पर अनन्य श्रद्धालु गुरु विरजानन्द दण्डी की शिक्षाओं से वेदों के सत्यार्थ को जाना और एक कुशल चिकित्सक बनकर रोगाक्रान्त भारतीय जनता तथा उनके यमराज सदृश मायावी वैद्यों को पहचाना। उन्होंने वेद-ज्योति की प्रबल मशाल हाथ में लेकर मिथ्याडम्बरों की पोल खोली और अपने अमित प्रभाव से जनता का मनोबल उन्नत किया। और लुप्त वेद-ज्योति को पुनर्जीवित किया। महर्षि दयानन्द ने प्राचीन महर्षियों के किये समस्त वेदव्याख्यानों का बड़ा ही सम्मान किया है और उन्हीं के अनुकूल वेद-भाष्य की रचना की। उन्होंने अपने वेद-भाष्य सम्बन्धी विचारों को इस प्रकार स्पष्ट किया है—'(प्रश्न) क्यों जी तुम यह वेदों का भाष्य बनाते हो वह पूर्वाचार्यों के भाष्य के समान बनाते हो वा नवीन? यदि पूर्वरचित भाष्यों के समान है तब तो व्यर्थ हैं क्योंकि वे तो पहले ही से बने बनाये हैं और जो नया बनाते हो तो उसको कोई भी न मानेगा, क्यों कि जो बिना प्रमाण के केवल अपनी ही कल्पना से बनाना है, यह बात कब ठीक हो सकती है?

(उत्तर) यह भाष्य प्राचीन आचार्यों के भाष्य के अनुकूल बनाया जाता है, परन्तु जो रावण, उवट, सायण और महीधरादि के भाष्य बनाए हैं वे सब मूलमन्त्र और ऋषिकृत व्याख्यानों से विरुद्ध हैं। मैं वैसा भाष्य नहीं बनाता क्योंकि उन्होंने वेदों की सत्यार्थता और अपूर्वता कुछ भी नहीं जानी। और जो यह मेरा भाष्य बनता है वह वेदाङ्ग, ऐतरेय, शतपथब्राह्मणादि ग्रन्थों के अनुसार है, क्योंकि जो जो वेदों के सनातन व्याख्यान हैं उनके प्रमाणों से युक्त बनाया जाता है। यही इसमें अपूर्वता है।········· और दूसरा इसके अपूर्व होने का कारण यह भी है कि इसमें कोई बात अप्रमाण वा अपनी रीति से नहीं लिखी जाती। और जो जो भाष्य उवट, सायण, महीधरादि के बनाए हैं वे सब

मूलार्थ और सनातन वेद-व्याख्यानों से विरुद्ध हैं तथा जो-जो इन नवीन भाष्यों के अनुसार अंग्रेजी, जर्मनी, दक्षिणी और बंगाली आदि भाषाओं में वेद-व्याख्यान बने हैं वे भी अशुद्ध हैं।" (ऋ० भू० भाष्यकरण शंका०)

'मेरा भाष्य उन ऐतरेयादि ब्राह्मणग्रन्थों के प्रमाणों से युक्त होगा, जिनमें ऋषि, मुनि, महर्षि, महामुनि आर्यों ने वेद का सत्यार्थ परमात्मा की कृपा से लिखा है क्योंकि विना सत्यार्थ प्रकाश के देखे मनुष्यों की भ्रम-निवृत्ति कभी नहीं हो सकती।' (ऋ० भू० प्रतिज्ञा०)

महर्षि दयानन्द ने अपने वेद-भाष्य के स्वरूप को जनाने के लिए अपनी 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' नामक पुस्तक के अन्त में एक पद्य लिखा है जिससे उनके भाष्य की विशेषताओं पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। पद्य का अर्थ इस प्रकार है—

"इस मन्त्र-भाष्य में इस प्रकार का क्रम रहेगा कि प्रथम तो मन्त्र में परमेश्वर ने जिस बात का प्रकाश किया है, फिर मूलमन्त्र, उसका पदच्छेद, क्रम से प्रमाण सहित मन्त्र के पदों का अर्थ, अन्वय अर्थात् पदों की सम्बन्ध पूर्वक योजना और छठा भावार्थ अर्थात् मन्त्र का जो मुख्य प्रयोजन है। इस क्रम से मन्त्र-भाष्य बनाया जाता है।" (ऋ० भू०)

महर्षि ने सर्वप्रथम अपनी दिव्य-दृष्टि से सर्वत्र मन्त्रों के ऊपर मन्त्रों के प्रतिपाद्य विषय का उल्लेख किया है। जिसको महर्षि ने मन्त्रार्थ-भूमिका नाम दिया है। इससे वेद के अध्येता को सरलता से प्रथम ही बोध हो जाता है कि मन्त्र का प्रतिपाद्य विषय क्या है। विषय का प्रथम ज्ञान होने पर मन्त्रार्थ के समझने में बड़ी सहायता मिलती है।

महर्षि का वेद-भाष्य मन्त्र के देवता के अनुरूप है। मन्त्र में विद्यमान विशेषणों के आधार पर मन्त्र के देवतार्थ को बड़ा ही स्पष्ट किया है। महर्षि ने मन्त्र के प्रतिपाद्य देवता का कहीं भी (मन्त्रार्थभूमिका, पदार्थ, अन्वय तथा भावार्थादि में) परित्याग नहीं किया है।

महर्षि ने वेदों के सत्यार्थ को प्रकाशित करने के लिए स्थान-स्थान पर सायणादि भाष्यकारों की व्याकरण, छन्द तथा प्रकरणादि से विरुद्ध त्रुटियों का भी दिग्दर्शन कराया है। जिससे पाठक सत्यासत्य का निर्णय करने में स्वयं ऊहा कर सकता है, क्योंकि सत्य कभी दो नहीं होते।

महर्षि ने अपने भाष्य में व्याकरण, निरुक्त तथा ब्राह्मणादि के अनुसार मन्त्रार्थ किया है। निरुक्तकार ने स्पष्ट लिखा है कि वैदिक पद आख्यातज हैं, रूढ नहीं। इस नियम का पालन सायणादि भाष्यकार नहीं कर सके। यदि वे इस नियम का पालन करते तो वेदों में प्रकरण-विरुद्ध, ऐतिहासिक कल्पित अर्थ नहीं कर सकते थे। महर्षि ने पद-पद पर इस वात का विशेष ध्यान रक्खा है कि मन्त्र का पदार्थ प्रकरणानुकूल हो।

महर्षि ने भाष्य में लौकिक कोषों का आश्रय न लेकर वैदिककोष निघण्टु के आश्रय से अर्थ किये हैं। लौकिक तथा वैदिककोषों में वड़ा अन्तर है। जैसे वैदिककोष में विष्णु का अर्थ सूर्य तथा समुद्र का अर्थ अन्तरिक्ष है। सूर्य अन्तरिक्ष में विचरता है किन्तु सायणादि भाष्यकारों ने लौकिक अर्थों के आश्रय से पौराणिक अर्थों की कल्पना कर ली कि विष्णु समुद्र में शयन करता है। इसी प्रकार वेद में शत, सहस्र शब्द बहुत्ववाची नामों में पढ़े हैं, परन्तु लोक में सौ तथा हजार के वाचक हैं। इस रहस्य को न समझ कर पुरुष-सूक्त के सहस्राक्षादि शब्दों के अनर्थ किये गए हैं। इसी प्रकार देवराज इन्द्र और अहल्या की कथा वना रखी है कि देवलोक में इन्द्र ने गोतम ऋषि की स्त्री अहल्या के साथ जारकर्म किया। यह भी निरुक्तादि के न समझने के कारण कल्पना की गई, क्यों कि निरुक्त में इन्द्र का अर्थ सूर्य है और गोतम चन्द्र का नाम है और अहल्या रात्रि का नाम है। रात्रि और चन्द्र का स्त्री पुरुष के समान रूपकालङ्कार है। चन्द्रमा अपनी स्त्री रात्रि से सव प्राणियों को आनन्द कराता है और उस रात्रि का जार आदित्य है अर्थात् सूर्य के उदय होने से रात्रि का अन्तर्धान हो जाता है। ऐसे सत्य-शास्त्रों को न जानकर स्वकल्पित अर्थ कर दिये गये। इसी प्रकार ब्राह्मण ग्रन्थों की उपेक्षा करके अनेक कथाएं कल्पित की गईं। जैसे गया में श्राद्ध करने से पितरों की मुक्ति हो जाती है। परन्तु 'प्राणा वै गया:' (श० १४.८.१.६.) के अनुसार प्राणों का नाम गया है। प्राणादि में श्रद्धा से परमेश्वर की उपासना करने से जीव की मुक्ति हो जाती है। इस प्रकार महर्षि का भाष्य वैदिककोष निरुक्त

तथा ब्राह्मणग्रन्थों के अनुसार किया गया है। परन्तु सायणादि भाष्यकारों ने इसके विरुद्ध स्वकल्पित अर्थ करके वेदों को ऐतिहासिक ग्रन्थ ही बना दिया, जो कि स्वयं उनकी प्रतिज्ञा के भी विरुद्ध था।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द का वेदभाष्य सर्वांगपूर्ण, ऋषि-महर्षियों की शैली के अनुकूल, व्याकरण-निरुक्त ब्राह्मणग्रन्थों से सम्मत तथा परस्पर सुसंगत होने से आज तक कोई विद्वान् उनके भाष्य को त्रुटिपूर्ण सिद्ध नहीं कर सका है। और इस प्राचीन-पद्धति का आश्रय करके कोई भी वेदभाष्यकार वेदों में इतिहास सिद्ध नहीं कर सकता, अपने कल्पित अर्थों के लोकों में नहीं घूम सकता, और नहीं मूर्त्ति-पूजा, मृतकश्राद्ध, अवतारवादादि अवैदिक मन्तव्यों को सिद्ध कर सकता है।

महर्षि दयानन्द ने सर्व प्रथम ऋग्वेद के प्रथम सूक्त का भाष्य नमूने के रूप में बनाया था। जिसका पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न आदि ने खण्डन किया। जिसका महर्षि ने 'भ्रान्तिनिवारण' पुस्तक में उत्तर दिया और उनके सब खण्डन भ्रम ही सिद्ध किये। इसके पश्चात् वेदभाष्य के प्रकार को ऋषि ने बदल दिया जिसकी सूचना ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की समाप्ति पर दी, क्योंकि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्राक्कथन में वेदभाष्य के नमूने अनुसार लिखा गया था। पं० महेशचन्द्र न्यायरत्न का लेख उक्त प्राक्कथन के पश्चात् लिखा गया था। वर्तमान वेदभाष्य का रूप ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अन्त में लिखे गये श्लोकानुसार है। जिसके अनुसार महर्षि ने पदार्थ को मन्त्रपद के क्रम से किया और पश्चात् अन्वय पृथक् लिखा एवं भावार्थ अलग से पृथक् लिखा। पदार्थ सप्रमाण ब्राह्मण ग्रन्थ और वेदाङ्गादि के अनुकूल किया है एवं अन्वय में वाक्य के मध्य कहीं भी कोई काल्पनिक शब्दार्थ नहीं बढ़ाया है। किन्तु सायणाचार्य आदिकों ने अपने काल्पनिक विचारों को वेद में घुसेड़ने के लिए बहुत स्थानों पर काल्पनिक शब्दार्थों को बढ़ाया है, एवं उन्हें अशुद्ध काल्पनिक अर्थों का प्रकाश करना पड़ा है। ऋषि दयानन्द प्राचीन ऋषियों के भाष्यों के तुल्य अर्थ करते हुए मूल में अप्राप्त शब्दों की कल्पना नहीं करते। मूल में प्राप्त पदों की ही व्याख्या करके समझाने का पूरा प्रयास करते हैं। जिस प्रकार कि प्राचीन ऋषियों का योगदर्शन पर व्यासभाष्य एवं न्याय दर्शन पर वात्स्यायन भाष्य मिलता है। उनमें भी मूल से प्राप्त पदों को खोलकर समझाया गया है। नये पदों की कल्पना करके काल्पनिक अर्थ नहीं किया गया। इस प्रकार ऋषि दयानन्द का वेदभाष्य बहुत महत्त्वपूर्ण है।

ऋषि दयानन्द को भी ईश्वर साक्षात्कार था उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के प्रारम्भ में लिखा है—

"त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वादिष्यामि।"

अर्थ—आप ही अन्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष ब्रह्म हो मैं आप ही को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा क्योंकि आप सब जगह में व्याप्त होके सब को नित्य ही प्राप्त हैं। एवं सत्यार्थप्रकाश के अन्त में लिखा है।

"त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्मावादिषम्।"

अर्थ—आप ही अन्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष ब्रह्म हो मैंने आपको प्रत्यक्ष ब्रह्म कहा है। इस प्रकार परमात्मा के सत्यस्वरूप का पूरे ग्रन्थ में प्रतिपादन किया और जहां तहां अन्य पुस्तकों में ईश्वर के मिथ्या स्वरूप का कथन था उनकी सत्यार्थप्रकाश में समालोचना की। ऋषि दयानन्द को ईश्वर का साक्षात्कार था अतः वह वेदार्थ ज्ञान के अधिकारी थे। परमात्मा से अनभिज्ञ लोग सत्यवेदार्थ कभी नहीं कर सकते, क्योंकि वेदों का मुख्य तात्पर्य भी ईश्वर में है।

स्वयं महर्षि दयानन्द की भी यह जीवन घटना प्रसिद्ध है कि जब महाराज जी पण्डितों से वेदभाष्य लिखवाया करते थे उस समय जब कभी किसी मन्त्र का उन्हें अर्थ स्पष्ट नहीं होता था तब महर्षि एकान्त में जा, समाधिस्थ होकर अभीष्ट मन्त्र का अर्थ अपने आचार्य परमात्मा से समझ आते थे और पण्डितों को लिखवाया करते थे। महर्षि दयानन्द को परमात्मा का साक्षात्कार था। यह बात उनके जीवन तथा उनके अद्भुत लेखों से सिद्ध है। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के आरम्भ और समाप्ति पर ब्रह्म का प्रत्यक्ष स्वयं स्वीकार किया है। महर्षि वेद-विद्या में पारङ्गत, परम तपस्वी, धार्मिक योगी विद्वान् थे। परमात्मा के साक्षात्कार से युक्त ऋषि थे। महर्षि के अपने जीवन तथा उनके सत्यार्थप्रकाश के उक्त लेख से यह तथ्य सर्वथा स्पष्ट हो जाता है कि वेदों का भाष्य तथा वेदमन्त्रों का व्याख्यान करने

का अधिकार उन्हीं को है जिन्हें परमात्मा का साक्षात्कार हो एवं जो धार्मिक योगी विद्वान् हों। जो समाधि में स्थित होकर परमात्मा से वेदों के अर्थों को जान सकें।

अब प्रश्न उपस्थित होता है कि जिन्हें परमात्मा का साक्षात्कार नहीं अर्थात् जो योगी नहीं ऐसे विद्वान् क्या करें ? उत्तर—अत्यन्त स्पष्ट है ऐसे विद्वान् प्राचीन तथा अर्वाचीन ऋषियों के किये वेदभाष्यों का स्वाध्याय करें तथा उन्हीं के किये अर्थों का प्रचार एवं प्रसार करें।

वेदार्थ ज्ञान के १६ ग्रन्थ—परमात्मा के साक्षात्कार की बात तो बहुत दूर की है। आधुनिक वेद-व्याख्याता विद्वान् तो विद्या-अध्ययन की दृष्टि से भी अधूरे हैं। देखिये महर्षि दयानन्द वेदार्थ ज्ञान के लिए ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका (पठन-पाठन विषय) में कितने ग्रन्थों के अध्ययन का निर्देश करते हैं—"मनुष्य लोग वेदार्थ जानने के लिये अर्थयोजना सहित व्याकरण—अष्टाध्यायी, धातुपाठ, उणादिगण, गणपाठ और महाभाष्य, शिक्षा, कल्प, निघण्टु-निरुक्त, छन्द और ज्योतिष ये छः वेदों के अङ्ग, मीमांसा, वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त ये छः शास्त्र जो वेदों के उपाङ्ग अर्थात् जिनसे वेदार्थ ठीक-ठीक जाना जाता है; तथा ऐतरेय, शतपथ, साम और गोपथ ये चार ब्राह्मण; इन सब ग्रन्थों को क्रम से पढ़के अथवा जिन्होंने इन सम्पूर्ण ग्रन्थों को पढ़ के जो सत्य-सत्य वेद-व्याख्यान किये हों उनको देख के वेद का अर्थ यथावत् जान लेवें।" **(ऋग्वेदादि० पठनपाठन०)**

यहाँ महर्षि दयानन्द ने वेदार्थ ज्ञान के लिए ६ वेदांग, ६ उपांग और ४ ब्राह्मण अर्थात् १६ ग्रन्थों का उल्लेख किया है। जबकि आधुनिक वेद का व्याख्यान करने वाले विद्वान् एक विषय का भी पूर्ण ज्ञान नहीं रखते। साधारण व्याकरण के धातु-प्रत्यय विषयक ज्ञान के बल पर वेदार्थ में प्रवृत्त हो रहे हैं। इससे वेदार्थ का बड़ा अनर्थ दृष्टिगोचर हो रहा है। अतः सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे वेदार्थ के लिए महर्षि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित पथ पर चल कर वेदार्थ के गौरव को बढ़ावें। अपना मनोवाञ्छित वेदार्थ तुरन्त बन्द कर प्राचीन महर्षियों द्वारा तथा महर्षि दयानन्द द्वारा किये वेदार्थ का ही सर्वत्र उपयोग करें। उसी का प्रचार एवं प्रसार करें। स्वयं वेदार्थ करने के लिए ईश्वर का साक्षात्कार एवं उक्त १६ ग्रन्थों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करें।

महर्षि ने 'वेदविरुद्धमतखण्डन' ग्रन्थ में मनुस्मृति के 'अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते' श्लोक का प्रमाण देते हुए लिखा है—"सत्योपदेष्टा गुरु तुम में इससे नहीं हो सकते कि आप लोगों में वेदोक्त और ब्रह्मज्ञानी जन नहीं हैं। यदि कहो हैं तो तुम्हारा कहना असङ्गत है क्योंकि तुम लोगों की प्रीति विषयों की सेवा में प्रसिद्ध दीखती है। धर्मशास्त्रों में कहा है कि अर्थ और काम में जो आसक्त नहीं उनके लिए ही धर्म-ज्ञान का विधान है।" इस उल्लिखित ऋषियों के वचन से यह स्पष्ट है कि अर्थ और काम में न फंसा हुआ विद्वान् ही वेदवेत्ता हो सकता है। साक्षात्कृतधर्मा विद्वान् ही वेदार्थ को यथार्थ रूप में समझकर अन्यों को समझा सकता है।

आजकल पाश्चात्त्य सभ्यता से प्रभावित विद्वान् भाषा-विज्ञान को भी वेदार्थ में सहायक मानने लगे हैं। वर्तमान में जो भाषा-विज्ञान हमारे सामने उपस्थित है, इसका आविर्भाव बहुत प्राचीन नहीं है। यदि भाषा-विज्ञान वेदार्थ में सहायक है, तो भाषा-विज्ञान के प्रसार से पूर्व जिन भारतीय विद्वानों ने वेद भाष्य किये हैं, क्या वे सब अधूरे ही कहलायेंगे ? और हमारे प्राचीन शास्त्रकारों ने कहीं भी वेदार्थ करने के लिए भाषा-विज्ञान को सहायक नहीं माना है। भाषा-विज्ञान का यदि यह अभिप्राय है कि विभिन्न भाषाओं के शब्दों के जानने से वेदार्थ होता है तो यह कदापि ठीक नहीं है। महर्षि दयानन्द ने और प्राचीन ऋषि मुनियों ने ऐसा कभी भी स्वीकार नहीं किया। और यह एक अद्भुत तथा असंगत बात ही है कि अन्य भाषा के शब्दों से अन्य भाषा का बोध होना। कुछ ऐसे आर्य विद्वान् भी वेदार्थ में भाषा-विज्ञान को सहायक मानने लगे हैं। इनके विचार में भाषागत शब्दों की दूसरी भाषा के शब्दों से समता होने से अर्थबोध होता है किन्तु यह बिल्कुल असम्भव तथा मिथ्या धारणा है। जैसे ईसा शब्द की समता लेकर 'ईशावास्यमिदं सर्वम्०' मन्त्र का कैसे अर्थ होगा ? क्या कभी सकल-शकल शशः-षषः को जो एक ही भाषा के शब्द हैं, समानार्थक माना जा सकता है। अतः भाषा-विज्ञान के सिद्धान्त अभी परिपक्व नहीं हैं। कालान्तर में इसकी परीक्षा अच्छी प्रकार हो जायेगी। ऐसे ही कुछ भाषा-विज्ञान के विद्वान् यह भी कहते हैं कि ऋग्वेद का दशम मण्डल प्राचीन नहीं है। यह

बाद में बनाकर मिलाया गया है। उनसे कोई पूछे कि इसमें कोई प्रमाण भी है तो निरुत्तर ही रह जाते हैं। इस भाषा-विज्ञान की कपोल-कल्पनाओं से हमारा सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय मिथ्या नहीं हो सकता। हमारे सभी शास्त्रकारों का एक ही मत है कि वेदार्थ में सहायक वेदाङ्ग और ब्राह्मण ग्रन्थ हैं और चारों वेद सृष्टि के प्रारम्भ में परमेश्वर से अग्न्यादि ऋषियों को प्राप्त हुए।

एक मिथ्या धारणा वेदार्थ करने के लिए यह भी सुनने में तथा पढ़ने में आती है कि मन्त्रों के ऊपर जो ऋषियों के नाम लिखे हुए हैं, वे मन्त्रार्थ में सहायक होते हैं। परन्तु उनकी इस मान्यता में कोई प्रमाण नहीं है। ऋषि का अर्थ करते हुए निरुक्त में एक ही अर्थ बताया है कि—'ऋषिर्दर्शनात्' अर्थात् जिसने मन्त्रार्थ का साक्षात्कार किया है वह ऋषि होता है। जिन ऋषियों ने सर्वप्रथम मन्त्रार्थ को जाना, उन उन ऋषियों के नाम मन्त्रों के प्रारम्भ में लिखे हुए हैं। ऐसा ही महर्षि दयानन्द का मन्तव्य है। महर्षि लिखते हैं—

"जिस-जिस मन्त्र का अर्थ जिस-जिस ऋषि ने प्रकाशित किया उस उस का नाम उसी उसी मन्त्र के साथ स्मरण के लिए लिखा गया है।" (ऋ० भा० भू० प्रश्नोत्तर०)

इससे स्पष्ट है कि मन्त्रों के प्रारम्भ में लिखे ऋषि ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। इनका मन्त्रार्थ जानने में कोई सहयोग नहीं प्राप्त हो सकता। महर्षि दयानन्द ने अपने पूरे भाष्य में वेदार्थ में मन्त्रों के ऊपर लिखे ऋषि शब्दों से कोई सहायता नहीं ली है। और न ही कोई प्राचीन प्रमाण है जिससे स्पष्ट हो सके कि ये ऋषि मन्त्रार्थ में सहायक होते हैं। यह वास्तव में एक काल्पनिक धारणा ही है।

दयानन्द-वैदिककोष की विशेषताएँ

(१) महर्षि दयानन्द के वेद-भाष्य की उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखकर चिरकाल से एक इच्छा बनी हुई थी कि महर्षिकृत अर्थों से युक्त वैदिक पदों का अकारादि क्रम से एक ऐसे कोष का निर्माण होना चाहिये, जिससे वेद के अध्येता तथा अनुसन्धान कर्त्ताओं को पदार्थ देखने में सरलता तथा सुगमता हो सके। प्रकरण-भेद से मन्त्रों में पठित पदों के विभिन्न अर्थों का एक सन्दर्भ में पूर्ण चित्र उपस्थित करने में यह कोष पाठकों को विशेष सहायक सिद्ध होगा। महर्षि के वेद-भाष्य तथा उनके अन्य ग्रन्थों में जहाँ कहीं भी वैदिक पदों के अर्थ उपलब्ध होते हैं, उन सबका संग्रह इसमें किया गया है। वेद भाष्य का हिन्दी भाषार्थ महर्षि का नहीं है, पण्डितों का किया हुआ है। अतः हमने वेदभाष्य में से संस्कृत से ही पदार्थ छाँटा है। कुछ विद्वान् वेदभाष्य के भाषार्थ को भी महर्षि का मानते हैं, परन्तु यह उनकी मिथ्या धारणा है। इसमें प्रथम कारण यह है कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अन्त में महर्षि ने वेदार्थ करने का एक क्रम पदच्छेदादि का लिखा है उसमें भाषार्थ का कोई नाम नहीं है। और उस श्लोक में छः नाम गिनाए हैं उनमें भाषार्थ के बिना उनकी पूर्त्ति हो जाती है। दूसरा कारण यह है कि महर्षि के पत्र-व्यवहार से भी स्पष्ट पता लगता है कि महर्षि ने भाषार्थ करने के लिए पं० भीमसेनादि को लगाया था और उनकी अशुद्धियाँ बताकर उन्हें यदा कदा धमकाया भी है। तीसरा कारण यह है कि ऋषि निर्वाण के पश्चात् परोपकारिणी-सभा में यह रिपोर्ट पेश की गई थी कि महर्षि के भाष्य का भाषार्थ कराने के लिए पं० भीमसेन और ज्वालादत्त को ही तीस रुपया मासिक पारिश्रमिक देकर भाषार्थ के लिए नियुक्त किया था। कारण यह भी है कि महर्षि का भाषार्थ करने का ढंग भिन्न है। वे केवल अनुवाद मात्र ही नहीं करते अपितु कहीं उनका अर्थ विस्तृत होता है और कहीं संक्षिप्त। जैसा कि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में किया है। परन्तु वेद-भाष्य में भाषार्थ अनुवाद मात्र किया गया है। जिससे स्पष्ट हो जाता है कि यह महर्षि का भाषार्थ नहीं है। यदि कोई महर्षि का भाषार्थ देखना चाहे तो महर्षि का सर्वप्रथम 'वेदभाष्य के नमूने का अंक' को पढ़कर विचार करे कि महर्षि के भाषार्थ की शैली क्या है? अतः आज कल के विद्वानों की यह धारणा बिलकुल मिथ्या तथा स्वकल्पित ही है कि वेदभाष्य का भाषार्थ महर्षि का है। और आजकल उसी भाषार्थ को महर्षि के नाम से छापकर लोगों को धोखे में रक्खा जा रहा है। इस विषय में 'यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर' की भूमिका में पर्याप्त लिखा गया है, जिसका आजतक विद्वानों का कोई उत्तर नहीं प्राप्त हुआ है और न उनके पास कोई समाधान है। अतः हमने भाषार्थ के पदार्थ को अपने कोष में कोई स्थान नहीं दिया है।

(२) यद्यपि गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य श्री पं० चमूपति जी की देख-रेख में 'वेदार्ष कोष' तीन भागों में

पहले भी प्रकाशित हुआ था। उनका प्रथम प्रयास अत्यन्त उपयोगी तथा श्लाघनीय था। और हमारे कोष के कार्य में वह मार्ग-प्रदर्शक भी बना। एतदर्थ हम उनका हृदय से आभार मानते हैं। परन्तु वह कोष आजकल किसी कीमत पर उपलब्ध न होने के कारण विद्वानों को इसका अभाव खटक रहा था। और उस कोष में कई न्यूनताएँ रह गई थीं, उन सबका निराकरण करके बहुत ही परिश्रम से इस कोष का निर्माण किया गया है। मिलान करने से यह भी पता लगा कि वेदार्ष कोष में बहुत अधिक पद और अर्थ छूटे हुए हैं।

(३) 'वेदार्ष कोष' में जिन पदों का अर्थ था, उनका वाच्यार्थ अथवा विशेषण-विशेष्य भाव का पता न होने से पाठक संशय-ग्रस्त ही रह जाता था। वाच्यार्थ दिखाने के लिए हमारे सामने एक बड़ी कठिनाई आई कि महर्षि-भाष्य में पदार्थ में अन्वय नहीं है और अन्वय में पदार्थ नहीं है। अतः वाच्यार्थ का पता लगाना सुगम नहीं था। अतः हमारे सहपाठी श्री पण्डित सुदर्शनदेव जी के परामर्श एवं देख-रेख में श्री पण्डित वेदपाल जी शास्त्री ने महर्षि के समस्त वेदभाष्य का सपदार्थान्वय तैयार किया, तभी हम कोष में वाच्यार्थ दिखा पाये हैं। वाच्यार्थ के बिना पदों के विभिन्नार्थों का स्पष्ट करना बहुत कठिन था। महर्षि के पदार्थ में बहुत कम वाच्यार्थ का पता लगता है। वेदार्ष कोष ने वाच्यार्थ की बिल्कुल उपेक्षा की और इससे विद्वानों में एक बडी भ्रांति उत्पन्न हो गई कि महर्षि के पदार्थ में त्रिविध प्रक्रिया है। जो कि बहुत बडी भ्रान्ति का कारण बनी। इस विषय में 'यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर' की भूमिका में पर्याप्त विचार किया है, जिसका भी विद्वान् अभी तक कोई उत्तर नहीं दे सके हैं। महर्षि ने प्रकरणानुसार मन्त्र में आए पद का क्या अर्थ है, यह अन्वय में स्पष्ट किया है।

अतः समस्त महर्षि वेद-भाष्य की सपदार्थान्वय से वाच्यार्थ सहित चिटें बनवाई और फिर अकारादिक्रम से वर्गीकरण करके कोष का निर्माण किया गया है। जिससे पदार्थ को पाठक सुगमता से हृदयंगम कर सकें।

महान् आश्चर्य तो यह है कि आजकल महर्षि के अनुयायी विद्वान् भी मन्त्रों की त्रिविध-प्रक्रिया मानने लगे हैं और वेद के मर्मज्ञ बनने का दम्भ भी करते हैं। उनसे विनम्र निवेदन है कि वे वेदार्थ की कुञ्जी निरुक्त को उठाकर देखें—

'तास्त्रिविधा ऋचः परोक्षकृताः प्रत्यक्षकृता आध्यात्मिक्यश्च।' (नि० दैवत० १.१.)

'परोक्षकृताः प्रत्यक्षकृताश्च मन्त्रा भूयिष्ठाः, अल्पश आध्यात्मिकाः।' (नि० दैवत० १.३.)

यहाँ वेदमन्त्रों के तीन विभाग किये हैं और उनकी पहचान भी बताई गई है। यदि सभी मन्त्रों के त्रिविध प्रकार से अर्थ सम्भव होते तो महर्षि यास्क का लक्षण—परोक्षकृत ऋचाओं में प्रथमपुरुष का प्रयोग, प्रत्यक्षकृत ऋचाओं में मध्यमपुरुष का प्रयोग तथा आध्यात्मिकी ऋचाओं में उत्तमपुरुष का प्रयोग इत्यादि कैसे संगत हो सकता है। और आध्यात्मिक कम मन्त्र हैं, परोक्षकृत तथा प्रत्यक्षकृत मन्त्र अधिक हैं यह कथन निरर्थक ही हो जायेगा। और कोई भी विद्वान् मन्त्रों के त्रिविध अर्थ आज तक नहीं कर सका है। हो भी कैसे सकते हैं? प्रत्येक पदार्थ के दर्शनों के अनुसार कुछ सामान्य गुण होते हैं कुछ विशेष। सामान्य गुणों को तो दिखाया जा सकता है किन्तु विशेष गुण त्रिविध प्रक्रिया में कैसे संगत होंगे? वही प्रकृति में भी घट जाये, वही जीव और परमात्मा में भी घट जाए? कैसी विचित्र कल्पना है? कोई भी विद्वान् जो त्रिविध प्रक्रिया का दम्भ भरता हो वह—'स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणम्०' इस मन्त्र के त्रिविध अर्थ करके तो दिखाए? इस प्रकार के अनेक मन्त्र उपस्थित किये जा सकते हैं। महर्षि की मान्यता कितनी स्पष्ट तथा सुन्दर है—

'जहाँ-जहाँ सर्वज्ञादि विशेषण हों वहाँ-वहां परमात्मा और जहां-जहाँ इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और अल्पज्ञादि विशेषण हों, वहाँ-वहां जीव का ग्रहण होता है।' (स० प्र० प्र० समु०)

इससे विपरीत कोई कैसे कर सकता है कि सर्वज्ञादि विशेषण होने पर भी जीव-परक अथवा प्रकृति-परक अर्थ कर सके। अतः त्रिविध प्रक्रिया की मान्यता निरर्थक तथा मिथ्या ही है। आज तक त्रिविध प्रक्रिया मानने वाले प्रक्रिया की संख्या भी निश्चित नहीं कर सके हैं। कोई त्रिविध मन्त्रार्थ मानता है तो कोई आधियाज्ञिक और जोड़ कर चार संख्या करता है और न इनकी परिभाषा ही बताते हैं।

इस अनर्थ मूलिका त्रिविधप्रक्रिया को देखकर कोष के लिए अधिक प्रेरणा मिली। यास्क तथा महर्षि दयानन्द

दोनों इस बात से सहमत हैं कि प्रकरणानुसार मन्त्रों के अर्थ होने चाहिएँ, तब धातु के विभिन्न अर्थ होते हुए भी प्रकरण के अनुकूल ही अर्थ लगाया जा सकता है, भिन्न नहीं। अतः वाच्यार्थ-सहित चिटें बनाकर वेदार्ष कोष से मिलान किया। जो पद उसमें छूट गए थे अथवा हमारी चिटों से रह गये थे, उन सब त्रुटियों का बहुत ध्यान करके निराकरण किया है और कोष को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने का पूरा प्रयास किया गया है।

(४) महर्षि दयानन्द ने वेदभाष्य में जो पदार्थ किया है उसको प्रमाणित करने के लिए महर्षि ने पदार्थ के आगे कहीं-कहीं प्रमाण-भाग भी दिए हैं उन प्रमाणों को इस कोष में यथास्थान अक्षुण्ण ही रखा गया है।

(५) इस कोष में सर्वनाम-पदों को छोड़ दिया गया है, क्योंकि सर्वनामपद सब के वाचक होते हैं। अतः उनका सामान्यार्थ ही होता है विशेष नहीं।

(६) इस में यह भी ध्यान रक्खा गया है कि जिन पदों में संहिता (सन्धि) के कारण दीर्घत्व, षत्वादि कार्य हो जाते हैं, वे पद-पाठ में नहीं रहते। अतः पदों का मूलरूप ही रक्खा गया है।

(७) विभक्ति-भेद से आये विभिन्न सुबन्त पदों को एक ही सन्दर्भ में दिखाने का पूरा प्रयास किया गया है।

(८) सुबन्त-पदों की तरह ही तिङन्तरूपों में भी यह ध्यान रक्खा गया है कि जिस धातु के एक ही लकार में विभिन्न रूप आए हैं, अथवा अन्य लकारों में उसी क्रिया के रूप हैं, तो उन सबको एक ही सन्दर्भ में दिखाया गया है।

(९) पदार्थ लिखते समय यह भी ध्यान रक्खा गया है कि उपसर्ग को क्रिया के साथ ही रक्खा जाए। क्योंकि वेद-मन्त्रों में उपसर्ग क्रिया से अन्यत्र भी पढ़े होते हैं। 'उपसर्गाः क्रियायोगे' इस पाणिनीय सूत्र के अनुसार भी क्रिया के योग में ही उपसर्ग संज्ञा का विधान है। वेदार्ष-कोष में सोपसर्ग क्रिया के अर्थ पर ध्यान नहीं दिया गया था। उपसर्ग का अर्थ क्रिया के साथ ही संगत होता है।

(१०) इस कोष में सर्वाधिक परिश्रमसाध्य काम व्याकरण-प्रक्रिया का किया गया है। कुछ अनावश्यक दोषदर्शी महर्षि के वेद-भाष्य के विषय में अनेक बार यह कहते भी सुने गए कि महर्षि ने स्वेच्छा से मन्त्रों के अर्थ किए हैं। उन्होंने व्याकरणादि का कोई ध्यान नहीं रक्खा है। यह मिथ्या धारणा कण्टकवत् मर्मभेदी बनकर पीड़ा पहुँचा रही थी। अतः प्रत्येक पद का व्याकरणानुसार प्रकृति-प्रत्यय विभाग, निरुक्त के अनुसार निरुक्ति और ब्राह्मणग्रन्थों के पाठों से सुग्रथित करके कोष को तैयार किया गया है। इससे विद्वानों के लिए पदार्थ हृदयंगम करने में पर्याप्त सहायता और पण्डितमन्यों को स्वतः ही निरुत्तर होना पड़ेगा।

व्याकरण वेद का मुख्य अंग है, व्याकरण के बिना पदार्थ-ज्ञान हृदयंगम कदापि नहीं हो सकता। महर्षि यास्क का यह सिद्धान्त कि वेद के सभी पद आख्यातज हैं, तब तक अधूरा ही है जब तक व्याकरण का बोध न हो। महाभाष्य में महर्षि पतञ्जलि ने व्याकरणाध्ययन के प्रयोजनों में लिखा है—'वाङ् नो विवृणुयादात्मानमित्यध्येयं व्याकरणम्।' (महाभा० पस्पशा०) अर्थात् व्याकरण पढ़ने से वाणी के स्वरूप का अच्छी प्रकार बोध हो जाता है, अन्यथा नहीं। 'महता देवेन न साम्यं यथा स्यादित्यध्येयं व्याकरणम्।' (महा० पस्पशा०) अर्थात् महान् देव शब्द के साथ साम्य-भाव प्राप्त करने के लिए व्याकरण पढना चाहिये। इससे स्पष्ट है बिना व्याकरण के पदार्थ के अन्तर्निहित अर्थ को नहीं जान सकते। उदाहरण स्वरूप—मित्र के लिए 'सखा' तथा 'वयस्य' शब्द आते हैं। परन्तु दोनों में बडा अन्तर है। समान आयु वाला वयस्य होता है और समान विचारों वाला सखा होता है। इस रहस्य का बोध व्याकरणादि के द्वारा ही सम्भव है। केवल पर्यायवाची शब्द से शब्दार्थ के अन्तर्निहित अर्थ का बोध नहीं होता।

अतः प्रत्येक पद के साथ-साथ कोष्ठान्तर्गत उस पद का व्याकरण, निरुक्त, तथा ब्राह्मणग्रन्थों का अर्थ 'विमर्श-टीका' के नाम से मैंने दिया है।

(११) इस कोष में पदों के अर्थ महर्षि भाष्य से पदार्थ के अतिरिक्त अन्वय से भी छांटे गये हैं। अन्वय में अर्थ बहुत स्थानों पर हैं एवं भावार्थ से भी लिये हैं। वेदार्ष-कोष में केवल पदार्थ से लिये गये थे।

(१२) उपर्युक्त विशेषताओं के साथ-साथ यह कोष सुन्दर कागज, सुन्दर छपाई एवं नये टाइप भरवाकर छापा गया है।

(१३) आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी के पावन-अवसर पर वैदिक-विद्वानों के लिए यह अमूल्य उपहार है।

ग्रन्थ-संकेत सूची

अ०	अष्टाध्यायी	तै० आ०	तैत्तिरीयारण्यक
अथर्व०	अथर्ववेदः	तै० उ०	तैत्तिरीयोपनिषद्
आर्याभि०	आर्याभिविनयः	तै० सं०	तैतिरीयसंहिता
उ०	उणादिकोषः	दै०	दैवतब्राह्मणम्
ऋ० भू०	ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका	नि०	निरुक्तम्
ऐ०	ऐतरेयब्राह्मण	निघं०	निघण्टुः
ऐ० आ०	ऐतरेयारण्यक	पं० वि०	पंचमहायज्ञविधिः
क०	कपिष्ठलकठसंहिता	मं०	मन्त्रब्राह्मणम्
कौ०	कौषीतकिब्राह्मणम्	मै०	मैत्रायणी संहिता
गो० पू०	गोपथ ब्राह्मणम् (पूर्वभागः)	वे० भा०न०	वेदभाष्य के नमूने का अंक
गो० उ०	,, (उत्तरभागः)	श०	शतपथब्राह्मणम्
जै०	जैमिनीयब्राह्मण	ष०	षड्विंशब्राह्मणम्
जै० उ०	जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण	सं० वि०	संस्कारविधिः
तां०	ताण्ड्यमहाब्राह्मणम्	स० प्र०	सत्यार्थप्रकाशः
तै०	तैत्तिरीयब्राह्मणम्	सा०	सामविधानब्राह्मणम्

विशेषः—(क) जहाँ पदों के आगे तीन अङ्कों से निर्देश किया है, वहाँ ऋग्वेद की क्रमशः मण्डल, सूक्त तथा मन्त्र की संख्याएँ जाननी चाहियें। और जहाँ दो अङ्कों से निर्देश किया गया है वहाँ यजुर्वेद की अध्याय तथा मन्त्र की संख्याएँ जाननी चाहिये।

(ख) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि और सत्यार्थप्रकाश की जो पृष्ठों की संख्याएँ दी गई हैं, वे आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द के जीवनकाल में छपे प्रामाणिक संस्करणों की पृष्ठ संख्याएँ हैं।

(ग) इस कोष में पदार्थ के पश्चात् [ ] कोष्ठान्तर्गतव्याकरण निरुक्त तथा ब्राह्मण ग्रन्थों के उद्धरण 'विमर्श-टीका' नाम से जानना चाहिए।

(घ) ( ) इस चिह्न से अङ्कित कोष्ठक के अन्तर्गत पदों का विशेष्य दिया गया है और यदि अग्नि इन्द्रादि पद विशेष्य में ऐसे हैं जो अनेकार्थक हैं तो उनके उस उस मन्त्र में उस उस पद का क्या अर्थ महर्षि ने किया है यह भी = लगाकर समझाया गया है।

इस कोष में सत्यार्थप्रकाश व संस्कारविधि के द्वितीय (प्रामाणिक) संस्करण तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के प्रथम संस्करण का उपयोग किया है। अतः जिन सज्जनों के पास ये संस्करण नहीं हैं उनकी सुविधार्थ इन पुस्तकों के समुल्लास वा प्रकरण पृष्ठांकों सहित दिये जाते हैं—

सत्यार्थप्रकाश

निवेदन व भूभिका १-८
प्रथम समुल्लास ९-२७
द्वितीय ,, २८-३६
तृतीय ,, ३७-७७
चतुर्थ ,, ७८-१२३
पंचम ,, १२४-१३७
षष्ठ ,, १३८-१७७
सप्तम ,, १७८-२०६
अष्टम ,, २०७-२३१
नवम ,, २३२-२५५
दशम ,, २५६-२७०
एकादश ,, २७१-३९४
द्वादश ,, ३९५-४६१
त्रयोदश ,, ४६२-५१८
चतुर्दश ,, ५१९-५९२

संस्कारविधि

सामान्य प्रकरण १३-२६
गर्भाधान संस्कार २७-३८
पुंसवन ,, ३९-४१
सीमन्तोन्नयन ,, ४२-४५
जातकर्म ,, ४६-५१
नामकरण ,, ५२-५४
निष्क्रमण ,, ५५-५७
अन्नप्राशन ,, ५८-५९
चूड़ाकर्म ,, ६०-६३
कर्णवेध ,, ६४-६४
उपनयन ,, ६५-७१
वेदारम्भ ,, ७२-९१
समावर्तन ,, ९२-९७
विवाह ,, ९८-१३६
गृहाश्रम ,, १३७-१८७
वानप्रस्थाश्रम ,, १८८-१९३
संन्यासाश्रम ,, १९४-२१७
अन्त्येष्टि ,, २१८-२२६

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका विषय

ईश्वर प्रार्थना १-९
वेदोत्पत्ति ९-२६
वेदानां नित्यत्वविचार २७-४१
वेदविषयविचार ४१-८०
वेदसंज्ञाविचार ८१-८८
ब्रह्मविद्या ८८-९२
वेदोक्तधर्म ९२-११५
सृष्टिविद्या ११५-१३६
पृथिव्यादिलोकभ्रमण १३६-१३९
धारणाकर्षण १३९-१४२
प्रकाश्यप्रकाशक १४३-१४४
गणितविद्या १४५-१४८
प्रार्थनायाचनासमर्पण १४८-१५५
उपासना विधान १५५-१८१
मुक्ति विषय १८१-१८८
नौविमानादिविद्या १८९-१९८
तारविद्या १९९-२००
वैद्यकशास्त्रमूल २००-२०१
पुनर्जन्म २०१-२०७
विवाह २०८-२१०
नियोग २१०-२१४
राजप्रजाधर्म २१५-२३२
वर्णाश्रम २३३-२४५
ब्रह्मचर्य्याश्रम २३८-२३८
गृहाश्रम २३९-२४०
वानप्रस्थाश्रम २४१-२४२
संन्यासाश्रम २४३-२४५
पंचमहायज्ञ २४५-२७२
ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्य २७२-३०८
अधिकारानधिकार ३०९-३१२
पठन-पाठन ३१३-३१९
भाष्यकरण शंकासमाधान ३२०-३३९
प्रतिज्ञा ३३९-३४१
प्रश्नोत्तर ३४२-३५१
वैदिकप्रयोगनियम ३५२-३५२
स्वरव्यवस्था ३५३-३५४
व्याकरण नियम ३५५-३६९
अलङ्कारभेद ३७०-३७२
ग्रन्थसंकेत ३७३-३७६

आभार-प्रदर्शन

ऐसे विशालकाय और परिश्रम साध्य कोषों के प्रकाशन करने के कार्य में बहुत साधन तथा विद्वानों की अपेक्षा होती है पुनरपि इस कोष कार्य को मैंने श्री वेदपाल शास्त्री के सहयोग से पूर्ण किया है। सर्वप्रथम मैं 'आर्ष-साहित्य-प्रचार ट्रस्ट' के अधिकारियों को हृदय से धन्यवाद अवश्य करूँगा। जिनके सत्प्रयास तथा प्रेरणाओं से इस शुभ कार्य का प्रारम्भ किया गया। और इस कोष के सम्पूर्ण-व्यय को वहन किया। हमें एक अप्राप्य ग्रन्थ को विद्वत्समाज के कर-कमलों में समर्पण करते हुए बड़ी प्रसन्नता है। इस कोष की प्रेस कापी तैयार करने में तथा वाच्यार्थ लिखने में श्री पं० वेदपाल शास्त्री जी ने जिस तन्मयता एवं परिश्रम से कार्य किया है, एतदर्थ वे बहुत ही श्लाघनीय हैं। अकारादि क्रम से चिटों के लगाने में और विशेष रूप से प्रूफ-रीडिंग करने में, जो कि सबसे अधिक कठिन कार्य था, श्री पं० विश्वदेव जी शास्त्री, श्री कर्मवीर जी शर्मा और अपने प्रिय शिष्य श्री धर्मपाल जी का मैं अत्यन्त ही कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने इस कार्य में अपना पूरा समय देकर रात-दिन एक करके इस कार्य को सफल बनाया है। इसके साथ-साथ ही मैं श्री पं० रामहौसला मिश्र आदि प्रेस कर्मचारियों का भी धन्यवाद किये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने पूरे पुरुषार्थ से हमें इस शुभ कार्य में पूर्ण सहयोग दिया है।

उपसंहार

आज हम उस महर्षि के लगाये आर्यसमाज रूपी पवित्र पौधे की शताब्दी मना रहे हैं। हम सब महर्षि के भक्त तथा उनके बताये मार्ग के अनुयायी हैं। हम सब हृदय से चाहते भी हैं कि यह महर्षि का पौधा उत्तरोत्तर फले फूले और चहुँमुखी उन्नति करे। परन्तु एक बार हमें इस पवित्रावसर पर आत्मनिरीक्षण भी करना होगा, अपने अतीत का सिंहावलोकन भी करना होगा कि हमारे कार्यों में क्या-क्या त्रुटियाँ रह गई हैं? उनको दूर करके हम फिर नवीन उमंग तथा उत्साह के साथ आगे बढ़ सकें। धर्म-प्रेमी आर्यो! महर्षि के पास एक ही सर्वोपरि बल था वह शारीरिक नहीं, और न धन तथा पद का था। वह था सत्य-ज्ञान का स्रोत वेद की ज्योति। जिससे वे न कभी घबराये और नहीं हतोत्साह हुए। अपने वैदिक मतावलम्बी आर्यों को अमर सन्देश दे गये कि—

वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।

महर्षि के हृदय से निकले इन उद्गारों में ही हमारा कल्याण सुनिहित है। इनका पालन करने से ही हम आर्य कहला सकेंगे। और अपने जीवन मार्ग को प्रशस्त कर के विश्वजनीन वैदिक धर्म को जन-मानस तक पहुँचा सकेंगे। अतः हम आज एक सद्व्रत का संकल्प लें कि हम महर्षि के वेदभाष्य की विशेषताओं को ध्यान में रखकर अवैदिक विचारधाराओं को दूर करने में भगीरथ श्रम करेंगे।

इस 'दयानन्द-वैदिक-कोष' में महर्षि के वेद-भाष्य से पदार्थ-रूपी मोतियों की माला सुग्रथित की गई है। यह निःसन्देह महर्षि से छूटे हुए वेद-भाग के भाष्य करने में भी अत्यन्त उपयोगी एवं सहायक होगी। ऐसी उदात्त भावनाओं को लेकर ही यह प्रयास किया गया है। पुनरपि विद्वद्गण से यही प्रार्थना है—

गच्छतः स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः। हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः॥

इस कोष के सम्पादन में मैं अपने को अयोग्य ही समझता हूँ। पुनरपि अपनी अल्पमति के अनुसार निर्दोष बनने का प्रयास किया है। इसमें जो भी अच्छाई दिखाई देती है वह परब्रह्म की अनुकम्पा, महर्षि की दया और गुरुजनों की कृपा का फल है और जहाँ जितने भी दोष रह गये हैं, वे सब मेरी अल्पज्ञता के परिणाम हैं। आशा है गुण गृह्य विद्वद्गण दोषों के लिए क्षमा करेंगे।

विदुषां वशंवदः—
राजवीर शास्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द-बलिदानदिवसः
पौष-कृष्णा पञ्चमी सं० २०३२ वि०
दिनांक: २३-१२-७५ मंगलवारः
स्थानम् नरेला
(दिल्ली-४०)

कोश १४१

ओ३म्

अथ दयानन्दवैदिककोषः

अकनिष्ठासः कनिष्ठभावमप्राप्ताः (भ्रातरः=बन्धवः) ५.६०.५. अविद्यमाना कनिष्ठा येषान्ते (मर्याः=मनुष्याः) ५.५९.६. [नञ्+युवन्+इष्ठन्, 'आज्जसेरसुग्' इत्यसुगागमः] ।

अकरम् कुर्य्याम् । अन्वये—निष्पादयेयम् । १६.८ करोमि १.११४.९. **अकर्त्त**=कुर्यात् कुरुत ४.३५.५कुर्वन्ति। प्र०—अत्र लुडर्थे लुङ् 'मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुक् । वचनव्यत्ययेन झस्य स्थाने तः, छन्दस्युभयथा०, इत्यार्धधातुकं मत्त्वा गुणादेशश्च १.२०.६. **अकर्म्म** कुर्य्याम् । ४.१६.२०. अकार्ष्म, कुर्य्याम । प्रमाणम्—अत्र डुकृञ् धातोर्लुङि 'मन्त्रे घस०' अ० २.४.८० इत्यादिना च्लेर्लुक् ८.१८ [अकरम्=डुकृञ् करणे धातोर्लुङ् 'कृमृदृरुहिभ्यः०' अ० ३.१.५९ सूत्रेण च्लेः स्थाने अङ् प्रत्ययः । अकर्त्त अकर्म्म इत्यनयोर् डुकृञ् धातोर्लुङ् च्लेर्लुक् च]

अकल्पयत् रचितवान् पञ्चमहा० बनाता था, अब बनाए हैं और आगे भी वैसे ही बनायेगा स० प्र० २९९. रचे थे, रचे हैं, बनाए गए हैं स० प्र० २३१ । १.१९०.३. **अकल्पयन्**=कथयन्ति ३१.१३ [कृपू सामर्थ्ये (भ्वादिः) धातोर्णिजन्तात् लङ् सामान्यकाले 'छन्दसि लुङ्लङ्लिट्ः' इति सूत्रेण]

अकल्पः कल्पैरन्यैः समर्थैरसदृशोऽन्येभ्योऽधिक इति (इन्द्रः=सेनापतिः) १.१०२.६. [कृपू सामर्थ्ये भ्वादि० अच् प्रत्ययः) कल्पते अर्चति कर्मा निघं० ३.१४]

अकवाभिः प्रशंसिताभिः (ऊती=रक्षाभिः) १.१५८.१. अनिन्दितृभिः (ऊती=रक्षाभिः) ६.३३.४ [अकवाः=अशब्दायमानाः (वायवः) ५.५८.५. अकवेभिः=असंख्यैः राधोभिः=धनैः) ६.६०.३. अकवैः=अकुत्सितैः कर्मभिः । ३.५४.१६. (नञ्+कुशब्दे अदादि० 'ऋदोरबित्यप्' प्रत्ययः) कवते गतिकर्मा निघं० २.१४]

अकवऽअरिम् न विद्यन्ते कवा शब्दायमाना अरयो यस्य तम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.१९.११. अविद्यमानशत्रुम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.४७.५. [कौति धर्ममुपदिशतीति कवो, न कवो ऽकवोऽधर्मात्मा, तस्यारिः शत्रुस्तम् (इन्द्रम्=राजानम्) ७.३६. कु शब्दे धातोः अच् प्रत्यये कवः, कवार्योः समासे नञ्समासः]

अकविषु अक्रान्तप्रज्ञेषु (अविद्वत्सु) ७.४.४. [नञ्+कु शब्दे 'अच इः' उणादि ४.१३९. सूत्रेण 'इ' प्रत्ययः । कविः=मेधाविनाम निघं० ३.१५]

अकः कुरु ८.२३. करोति १.१२३.७. कुर्य्यात् १७.६३. कुर्य्याः ५.८३.१०. [कृतवान् प्र० अत्र मन्त्रे घसह्वरणश० इति च्लेर्लुक्) १.२४.८. (कृधातोः छन्दसि लुङ्लङ्लिटः' इति सामान्ये लुङ्)]

अकानिषम् प्रदीपयेयम्, अन्वये—कामयेयम् ४.२४.९. [कनी दीप्तिकान्तिगतिषु भ्वादि०, कानिषत्=कान्तिकर्मा निघं० २.६. ततः सामान्ये लङ्]

अकामऽकर्शनः योऽकामानलसान् कृशति तनूकरोति सः (इनः=राजा) १.५३.२. [अकामः=नञ्+कमु कान्तौ घञ् (बहुब्रीहिसमासः) कर्शनः=कृश् तनूकरणे, मण्डनार्थत्वात् कर्त्तरि युच् प्रत्ययः]

अकायम् स्थूल-सूक्ष्म-कारणशरीरत्रयसम्बन्धरहितम् (ब्रह्म) ऋ० भू० ३६ । (जो कभी शरीर-धारण वा जन्म नहीं लेता वह (ब्रह्म=ईश्वर) स० प्र० २४४ । यो न कदाचिज्जन्मना शरीरधारणेन सावयवो भवति (ब्रह्म=ईश्वरः) पं० वि० । जो कभी शरीर-धारण=अवतार नहीं करता क्योंकि जो अखण्ड, अनन्त और निर्विकार है, इससे देह-धारण कभी नहीं करता; जिससे अधिक कोई पदार्थ नहीं है इसी से जिसका शरीर-धारण करना कभी नहीं बन

सकता वह (ब्रह्म=ईश्वर) आर्याभि० २.२. [नञ्+चिञ्+घञ्, 'निवासचितिशरीरो०' अ० ३.३.४१ सूत्रेण शरीरार्थे घञ् प्रत्ययः। आदेश्च ककारादेशः। वियोगार्थे नञ्समासः]

अकारि क्रियते प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् १.१०४.१. अकारिषम्=कुर्य्याम् ४.२६.६. किये गये ४.१६.२१ **अकारीत्**=करोति ४.३६.३. [डुकृञ् करणे धातोः कर्मणि लुङ् अकारीत्=डकृञ्+लुङ् कर्त्तरि]

अकितवम् अद्यूतकारिणम् (जनम्) ३०.८. [कितवः=किं तवास्तीति शब्दानुकृतिः निरु० ५.२२.]

अकिरत् किरति विक्षिपति १.३२.१३. [कॄ विक्षेपे तुदादि० लेटि प्रयोगः]

अकुत्र अविषये १.१२०.८. [नञ्+किम्+त्रल्, 'कुतिहोरि' ति किमः कुरादेशः]

अकुमारः पञ्चविंशतिवर्षातीतः (युवा) १.१५५.६. [कुमार क्रीडायां चुरादि० कर्त्तरि अच् प्रत्ययः, तत्प्रतिषेधः]

अकूपारस्य अकुत्सित पारो यस्य तस्य (धर्मविद्याप्रकाशस्य) ५.३६.२. समुद्रस्य २४.३५. प्र०-अकूपारस्य··· अकुपरणस्य नि० ४.१८.१. आदित्योऽप्यकूपार उच्यतेऽकूपारो भवति दूरपारः, समुद्रोऽपि अकूपार उच्यतेऽकूपारो भवति महापारः, कच्छपोऽप्यकूपार उच्यतेऽकूपारो न कूपमृच्छति निरु० ४.१८.२. [नञ्+कु+पॄ पूरणे (चुरादि०) धातोर्घञ् 'अन्येषामपि दृश्यते' अ० ६.३.१३७. सूत्रेण दीर्घादेशः कूपोपपदाद्वा ऋच्छतेर्धातोरण् प्रत्ययः]

अकृणुत कुरुत १.११०.३. **अकृणुतम्**=कुरुतम् १.११६.१०. कुर्यातम् ६.६६.५. **अकृणुध्वम्**=कुरुत ४.३५.६. **अकृणोत्**=करोति। प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.१६४.२८. कुर्यात् ५.४२.१३. **अकृणोत**=कुरुत ४.३५.३. **अकृणोतन** कुरुत १.११०.८. **अकृणोः**=कुर्याः ४.२८.४. कुरु १७.२४. करोति २.१३.३. **अकृण्वत**=कुर्वन्तु ३.११.४. **कृण्वन्ति**= कुर्वन्ति। अत्र लडर्थे लङ्, व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च १.३६.५. **अकृण्वन्**=कुर्युः २.४०.१. कुर्वन्ति ४.१.१० [डुकृञ् करणे धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

अकृत करोति ५.३४.८. कुर्यात् ३.२६.८. [डुकृञ् करणे धातोरात्मनेपदे लुङ् 'ह्रस्वादङ्गात्' इति सूत्रेण सिचो लोपः]

अकृता अकृतानि (कर्त्वानि=कर्त्तव्यानि) ४.१८.२. **अकृते**=अनिष्पादिते (योनौ=निमित्ते) १.१०.७. **अकृतम्**=अक्रियमाणं कर्म ६.१८.१५. **अकृतः**=कृन्तसि १.६३.४. **अकृथाः**=कुर्याः ५.३०.८. [नञ्+डुकृञ् करणे ततः क्तः, कृती छेदने धातोर्वा]

अकृप्रन् कल्पन्ते ४.२.१८. [कृपू सामर्थ्ये सामान्ये लङ्) 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.८ सूत्रेण रुडागमः]

अकृष्टपच्याः या अकृष्टेषु जङ्गलादिषु पच्यन्ते ताः (ओषधयः=अन्नादयः) १८.४४ [कृष्टपच्याः=कृष्टे पच्यन्ते कृष्टपच्याः। 'राजसूयसूर्य०' अ० ३.१४४. सूत्रेण क्यप् प्रत्ययान्तो कर्मकर्त्तरि निपात्यते]

अकृष्णः अविद्याऽन्धकाररहितः (ब्रह्मा=चतुर्वेदविद्विद्वान्) २३.१३. [कृष विलेखने विलेखनमाकर्षणम्, तस्मादुणादिर्नक् प्रत्ययः, तत्प्रतिषेधः]

अकेतवे अविद्यमानप्रज्ञाय (जनाय) २६.३७. अज्ञानान्धकारविनाशाय १.६.३. अज्ञाननाशाय ऋ० भू० ३०८ [चायृ पूजानिशामनयोः+उणादिस्तुः प्रत्ययः, की आदेशश्च तत्प्रतिषेधस्तस्मै। केतुः=प्रज्ञानाम निघं० ३.६]

अक्तम् सम्बन्धम् (कलशं=कुम्भम्) ४.२७.५. युक्तम् (बर्हिः=उदकम्) २.३.४. प्रकटं व्यक्तं वस्तु सुखं वा २.१६. प्रसिद्धम् (स्योनं=सुखकारकं स्थानम्) २०.३६. **अक्तः** रात्रिः ६.५.६. प्रसिद्धः (सूर्यः) ६.४.६. [शुभगुणैर्युक्तः (अग्निः=विद्युदिव राजा) ४.३.१०. **अक्तौ**=घृतेनासक्तचित्तौ यज्ञकर्त्ता यज्ञकारयिता च] ६.११. **अक्ता**=अनक्त्यञ्जनवत् पदार्थानाच्छादयति सा रात्रिः १.६२.८. [अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु धातोः क्तः प्रत्ययः]

अक्तुः व्यक्तीकर्त्तुः (सूर्यस्य) २.३०.१. रात्रिः १.१४३.३. **अक्तुना**=रात्र्या २.१०.३. **अक्तुभिः**=प्रसिद्धैः कर्मभिर्मार्गैः प्रसिद्धाभी रात्रिभिर्वा १.६४.५. अञ्जन्ति मृत्युं नयन्ति यैस्तैः शस्त्रैः, प्र०—अत्र अञ्जुधातोर्बाहुलकादौणादिकस्तुः प्रत्ययः १.३६.१६. **अक्तून्**=व्यक्तान् प्राप्तव्यान् पदार्थान् १.६८.१. प्रसिद्धान् (लोकान्) ५.५४.५. **अक्तोः**=रात्रेर्मध्ये ४.१०.५. अक्तौ=रात्रौ ६.४६.१०. [अक्तून्=अन्धकारान् ११.४३. (अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु धातोस्तुः प्रत्ययः) अक्तोः=रात्र्याः निरु० ५.२८.१. अक्तुभी रात्रिभिः निरु० १२. २३.]

अक्रः दुष्टान् क्राम्यति १.१८६.७. अन्यैरक्रान्तः (विद्वज्जनः) प्र०—अत्र पृषोदरादिनेष्टसिद्धिः १.१४३.७. केनाऽपि प्रकारेण क्रमितुमयोग्यः (राजपुरुषः) ३.१.१२. अक्रमिता (सूर्यः) ४.६.३. [अक्रः=पदनाम निघं० ४.३. अक्र अक्रमणात् निरु० ६.१७.५। क्रमुपादविक्षेपे धातोः सामान्ये लुङ्]

अक्रत कुर्वते ५.२१.३. कुर्वन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् 'मन्त्रे घस० इति च्लेर्लुक् १.२०.४ कुरुत ३५.१८. कारयन्ति प्र०—अत्र णिलोपः १.९२.१. **अक्रन्**=कुर्युः १.६१.१६. कुर्वन्तु १२.४५. कुर्युः कुर्वन्ति वा २.३९.८. अक्रान्= कुर्वन्ति २.११.८. [अक्रत=अकृषत निरु० ४.९. अक्रान् अत्यक्रमीत् निरु० १४.२९. अत्र 'मन्त्रे घसह्वर०' इति च्लेर्लुक्]

अक्रतून् निर्बुद्धीन् (अविदुषो जनान्) ७.६.३. [क्रतुः=प्रज्ञानाम निघं० ३.९]

अक्रन्दत् प्राप्नोति १२.६. गमयति १२.२१. विजानाति १२.३३. **अक्रन्दयः**=आह्वयः १.५४.१. **अक्रन्दः** शब्दायसे १.१६३.१. [क्रदि आह्वाने रोदने च भ्वादि०, ततः सामान्ये लङ्]

अक्रपिष्ट कल्पते ७.२०.९. [क्रप कृपायां गतौ भ्वादि० ततो लुङ् सामान्यकाले]

अक्रमीत् क्राम्यति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ३.६. क्रामति ६.५९.६. क्रमते ३३.९३. उत्तमतया क्रमणं कुर्यात् ११.२२. **अक्रमुः**=क्राम्यन्ति १२.८४. **अक्रंस्त**= क्रमते २.२५. गच्छति २.२५. **अक्रामत**=व्याप्नोति ३१.४. [क्रमु पादविक्षेपे ततो लुङ्]

अक्रविहस्ता अहिंसाहस्तौ दानशीलहस्तौ वा (राजानो=राजाऽमात्यौ) ५.६२.६.

अक्रौ=अकर्त्तरि (मर्त्ते=मनुष्ये), प्र०—अत्र नञ्युपपदात्कृधातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' इति बहुलवचनात् कर्त्तरीक् १.१२०.२.

अक्षम् धूः १.३०.१४. अश्यन्ते व्याप्यन्ते प्रशस्ता व्यवहारा येन तम् (वेदज्ञानम्), १.३०.१५. व्याप्तम् (तत्त्वम्) ७.३३.४ **अक्षः**=व्याप्तविद्यः (आचार्यः) ३.५३.१९. पुरो भागः १.१६४.१३. इन्द्रियछिद्रम् ३.५३.१७. रथ्यो भागः १.१६६.९. 'धुरी' इति भाषायाम्, ६.२४.३. [अशूङ् व्याप्तौ संघाते च, ततः 'अशेर्देवने' उणादिसूत्रेण स प्रत्ययः। अक्षा अश्नुवत एतानिति वाभ्यश्नुवत एभिरिति वा निरु० ९.७.२. अक्षाः अश्नोरित्येवमेके क्षियतिनिगमः ··· क्षरति निगमः ··· इत्येके निरु० ५.३.१.

अक्षण्वान् विज्ञानी (सज्जनः) १.१६४.१६. [अक्षि+मतुप्, छन्दस्यपि दृश्यते अ० ७.१.७६ सूत्रेणानङ् आदेशः, 'अनो नुट्' अ० ८.२.१६ सूत्रेण नुडागमे सति अक्षण्वान् रूपम्) अक्षण्वन्तः अक्षिमन्तः निरु० १.९.१]

अक्षतः क्षतवर्जितः (कुमारः) ५.७८.९. [क्षणु हिंसायां तनादि० ततः क्तः, तत्प्रतिषेधः]

अक्षन् शुभगुणान् प्राप्नुवन्तु १.८२.२. भुञ्जीरन् २१.६०. अदन्तु, प्र०—योऽद् धातोः स्थाने घस्लृ-आदेशस्तस्य लुङि रूपम् १९.३६. अदन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् 'मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुक् 'गमहन०,' इत्युपधालोपः 'शासिवसिघसीनां च,' इति षत्वं 'खरि च' इति चर्त्वम् ३.५१. भोजनाच्छादनादिकं कुर्वीरन् ऋ० भू० २६६ [अद्भक्षणे धातोः लुङ्। अद्धातोः स्थाने घस्लादेशः। अक्षू व्याप्तौ (भ्वादि०) धातोर्वा लङ् सामान्ये। आडभावश्च]

अक्षभिः चक्षुभिः २५.२१. इन्द्रियैः १.१३९.२. प्राणैः १.३९.२. बाह्यान्तरैर्नेत्रैः, प्र०—अत्र 'छन्दस्यपि दृश्यते' अ० ७.१.७६ इत्यनेन सूत्रेणाऽक्षिशब्दस्य भिस्यनङ्ङादेशः १.८९.८. आंखों से, आर्याभि ० २.२७. [अक्षि+भिस्। अक्षि चष्टेः, अनक्तेरित्याग्रायणः तस्मादेते व्यक्ततरे इव भवत इति विज्ञायते निरु० १.९.]

अक्षरत् क्षरति १.११२.११. **अक्षरन्**=प्राप्नुवन्ति १.१८८.५. क्षरन्ति १.११२.११. सञ्चलन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.३३.११. चालयन्ति १.८४.४. [क्षर सञ्चलने भ्वादि० तस्य लङि रूपम्]

अक्षरपङ्क्तिः असौ लोकः १५.४. [असौ वै लोकोऽक्षरपङ्क्तिश्छन्दः श० ८.५.२.४. एष वै यज्ञोऽक्षरपङ्क्तिः ऐ० २.२४]

अक्षरम् अक्षयस्वभावम् (उपदेशम्) १.१६४.४२. महतत्त्वाख्यम् ३.५५.१. **अक्षरा**=अक्षराण्यकारादीनि ७.१५.९. उदकानि, प्र०—अत्राऽऽकारादेशः 'अक्षरम् इत्युदकनामसु पठितम् (निघं० १.१२) ७.१.१४. अविनाशिनी सकलविद्याव्यापिनी (वाक्) ७.३६.७. **अक्षराणाम्**= वर्णानाम् ३.३१.६. **अक्षराणि**=भा०—जलादीनि वस्तूनि व्यवहारसाधकानि २३.५८. **अक्षरे**=अविनाशिनि स्वरूपे कारणे जीवे वा ६.१६.३५. विनाशरहिते ब्रह्मणि ऋ० भू० ३१६। नाशरहित परमात्मा में स० प्र० २१५. [अशूङ् व्याप्तौ धातोः 'अशेः सरन्' इत्युणादिना सरन् प्रत्ययः। अक्षरं वाङ् नाम निघं० १.११. उदकनाम निघं० १.१२. निरु० ११.४१. अक्षरं न क्षरति, न क्षीयते वाऽक्षरं भवति, वाचोऽक्ष इति वा निरु० १३.१२. तद् यदक्षरत्तस्मादक्षरम् श० ६.१.३.६. यदक्षरदेव तस्मादक्षरम् जै० उ० १.२४.१. यद्वेवाक्षरं नाक्षीयत तस्माक्षयम्। अक्षयं ह वै नामैतत्। तदक्षरमिति परोक्षमाचक्षते जै० उ० १.१४.२. कतमत् तदक्षरमिति

यत्क्षरन्नाक्षीयतेति । इन्द्र इति जै० उ० १.४३.४. विराजो वा एतद्रूपं यदक्षरम् ता० ८.६.१४. अक्षरेणैव यज्ञस्य छिद्रमपिदधाति ता० ८.६.१३.]

अक्षराजाय येऽक्षैः क्रीडन्ति तेषां राजा तस्मै ३०.१८. [अक्षो व्याख्यातः । अक्षराजन्‌शब्दयोस्तत्पुरुषसमासे 'राजाहस्सखि०' अ० ५.४.९१ सूत्रेण समासान्तष्टच् प्रत्ययः]

अक्षाणि इन्द्रियाणि ७.५५.६. [अक्षो व्याख्यातः]

अक्षिणाः क्षयन्ति हन्ति ४.१८.१२. [क्षिणु हिंसायाम्, विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने उः न । लडर्थे लङि रूपम्]

अक्षितम् यन्न कदाचित् क्षीयते सदैव वर्त्तमानं तत् (श्रवः=सुवर्णादिधनम्) १.९.७. क्षयरहितम् (बीजम्) ५.५३.१३. **अक्षिता**=क्षयरहितानि (द्युम्नानि=यशांसि जलान्यन्नानि धनानि वा) ३.४०.७. **अक्षिते**=नाश से रहित (लोके=द्रष्टव्य अपने स्वरूप में) सं० वि० १९६. [क्षिणु हिंसायां, ततः क्तोऽनुनासिकलोपः । नञ्‌समासः । अक्षिताम् अनुपक्षीणाम् । निरु० ११.११.]

अक्षितोतिः क्षयरहिता ऊतिर्ज्ञानं यस्य सः (इन्द्रः=परमेश्वरः) १.५.९. नित्यरक्षः (राजा) ६.२४.१. अक्षीणा ऊती रक्षा यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ४.१७.१६. [अक्षितं व्याख्यातम्, ऊतिः=अवधातोः 'ऊतिजूति०' सूत्रेण क्तिनि रूपसिद्धिः]

अक्षितिः अविद्यमाना क्षितिः क्षयो यस्य तत् १.४०.४. **अक्षित्यै**=परिपूर्ण होने के लिए ६.२८. [क्षि क्षये, ततः क्तिन्, तत्प्रतिषेधः । श्रद्धैव सकृद् इष्टस्याक्षितिः स यः श्रद्दधानो यजते तस्येष्टं न क्षीयते । कौ० ७.४. पुरुषो वाऽक्षितिः शत० १४.४.७. आपोऽक्षितिर्या इमा एषु लोकेषु याश्चेमा अध्यात्मन् कौ० ७.४. क्षिप प्रेरणे लडर्थे लङि रूपम्]

अक्षिपत् क्षिपति ६.१६.१८.

अक्षिभुवः यदक्षिणि भवति प्रत्यक्षं तस्य (प्रत्यक्षस्य द्रव्यस्य), भा०—प्रत्यक्षादिप्रमाणस्य २३.२९. [अक्षि+भू+क्विप्]

अक्षियन्तम् न निवसन्तम् (शत्रुम्) ४.१७.१३. [क्षि निवासगत्योस् ततः शतृ । क्षियन्तम्=निवसन्तम् नि० १०.१२]

अक्षी अश्नुवते व्याप्नुवन्ति याभ्यां वाह्याभ्यन्तरविद्यायुक्ताभ्यान्ते (नेत्रे) १.७२.१०. रूपप्रकाशके नेत्रे इव (अश्विनौ=अध्यापकोपदेष्टारौ) १.१२०.६. चक्षुषी १.११६.१६. अक्षिणी २.३९.५. [अक्षभिः [पदे व्याख्यातम् ।' 'ई च द्विवचने' 'अ० ७.१.७७. सूत्रेण ईकारादेशः । स एष एवेन्द्रः । योऽयं दक्षिणेऽक्षन्पुरुषोऽथेयमिन्द्राणी श० १०.५.२.९.]

अक्षीयमाणम् विद्याविज्ञानाऽगाधमक्षीणविद्यम् (विपश्चितं=विद्वांसम्) ३.२६.९. क्षयरहितम् (पदम्) १.१५४.४. क्षेतुमनर्हम् (सत्यकलत्रम्) १७.३. **अक्षीयमाणा**=क्षयरहितानि (वस्तूनि) १.१५४.४. **अक्षीयमाणाः**=क्षेतुमनर्हाः (धेनवः) १७.३. [क्षि क्षये ततः कर्मणि शानच्, तत्प्रतिषेधः]

अक्षुत् क्षुधो राहित्यम् १८.१०. [क्षुध् बुभुक्षायां दिवादि० ततः क्विप्, तत्प्रतिषेधः]

अक्षुः व्याप्तुं शीलः (जूर्णः=रोगी जनः) १.१८०.५. [अक्षू व्याप्तौ भ्वादि०]

अक्षेत्रवित् यः क्षेत्रं रेखागणितं न वेत्ति सः (मुग्धः=अविद्वान्) ५.४०.५. [क्षेत्र+विद् ज्ञाने+क्विप्, तत्प्रतिषेधः]

अक्षोदयत् सञ्चूर्णयति ४.१९.४. [क्षुदिर् संपेषणे, स्वार्थे णिच्, ततो लङ्]

अक्ष्णयाऽध्रुक् कुटिलया रीत्या द्रुह्यति सः (दुर्जनः) १.१२२.९. [अक्ष्णया+द्रुह जिघांसायाम्+क्विप्, समासे विभक्तेरलुक् च]

अक्ष्णः दर्शनसाधकस्य ४.३२. अक्ष्योः=अक्ष्णोः २१.४८. [अक्षिशब्दात् षष्ठी । उपधालोपश्च]

अखनन् खनन्ति १२.९८. [खनु अवदारणे भ्वादि०, ततो लडर्थे लङ्]

अखर्वम् अनल्पं पूर्णम् (मन्त्रं=गूढं विचारम्) ७.३२.१३. [खर्व गतौ भ्वादि०, ततोऽच्]

अखिद्रयामभिः अछिन्नानि निरन्तराणि निगमनानि येषान्तैः (मेधाविजनैः) प्र० 'स्फायितञ्चि' उ०—२.१३. इति रक् सर्वधातुभ्यो मनिन्, इति करणे मनिश्च १.३८.११. [खिद् दैन्ये+रक् तत्करोतीति णिच्, ततो मनिन्, तत्प्रतिषेधः]

अख्यत प्रख्यापयत १.१६१.१३. **अख्यत्**=प्रकटयति ५.३०.९. प्रकाशते ४.१४.१. प्रख्यापयेत् ४.२४.८. धर्म्यानुपदेशान् प्रकथयेः १२.३३. ख्याति १२.२१. प्रख्यातो भवति ११.१७. प्रसिद्धतया प्रकाशेत १.४६.१०. **अख्यन्**=ख्याता भवन्ति १.३५.५. उपदिशन्तु ४.१.१८. **अख्यम्**=अन्यान् प्रति कथयेयम् १.१०९.१. कथनीयम् (अनीकं=सैन्यम्) ५.४८.४. **अख्ये**=प्रकथयामि, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मने-

पदं लडर्थे लुङ्च ४.२३. **अख्यः**=प्रकाशयति ७.१३.३. [ख्याप्रकथने धातोर्लुङ्, 'अस्यतिवक्ति०' अ० ३.१.५२. सूत्रेण च्लेः स्थानेऽङ्, चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि धातोर्वा ख्याञ् आदेशः]

अगच्छत=आगच्छत १.११०.२. प्राप्नुत १.१६१.६. **अगच्छत्**=प्राप्नुयात् ३.३१.७. गच्छति प्राप्नोति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लङ् १.३२.१४. **अगच्छतम्**=प्राप्नुताम् १.११६.८. आगच्छतम् (आग्नो) १.११७.१६. गच्छतम् ५.७८.४. **अगच्छन्त**=प्राप्नुवन्ति १७.३०. [गम्लृ गतौ ततो लङ्]

अगथाः गच्छसि प्राप्नोषि वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः, वर्त्तमाने लुङ्, 'मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुक् ३.१६. **अगन्**=समन्तात्प्राप्ताः १.१६४.३७. प्राप्नुवन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ३.३७.१०. गच्छन्तु प्राप्नुवन्तु, प्र०—अत्र गम् धातोर्लोडर्थे लुङ् 'मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुगनुनासिकलोपश्च ८.५६. गच्छति, प्र०—अत्र लङि प्रथमैकवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् संयोगत्वेन तलोपे 'मो नो धातोः' इति मस्य नकारादेशः १.१२३.२. आगच्छतु ४.५३.७. प्राप्नोतु ७.२०.६. प्राप्नोति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् 'मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुक् 'मो नो धातोः' इति मकारस्य नकारः ४.१५. आगच्छति १.१७६.४. **अगन्म**=गच्छामः १.११३.१६. गच्छेम १२.७३. प्राप्त हों आर्याभि० २.१३. विजानीयाम ३५.१४. प्राप्त हुए ४.५.१२. प्राप्नुयाम, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् 'मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुक् 'म्वोश्च' ८.२.६५. इति मकारस्य नकारः ३.३१.१४. **अगन्महि**=गच्छेम ६.५१.१६. प्राप्नुमः प्र०—अत्र गम्धातोर्लुङि उत्तमबहुवचने 'मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुक् 'म्वोश्च' इत्यनेन मकारस्य नकारदेशः, लडर्थे लुङ् २.२४. प्राप्नुयाम, प्र०—अत्र गम्लृधातोर्लिङर्थे लुङ् ८.१४. अगन् गतिकर्मसु निघं० २.१४ अगमन्=प्राप्नुवन्तु २५.२०. **अगमम्**=प्राप्नुयाम् १.१६१.२. [अत्र गम्लृ धातोः सामान्ये लुङ्]

अगदम्=रोगरहितम्, भा०—अरोगम् (देहम्) १२.७६.

अगनीगन् प्राप्नुवन्ति २३.७. [गम्लृ धातोर्लङि व्यत्ययेन श्लुः, अभ्यासस्य चुत्वाऽभावो नीक् चागमो 'दाधर्ति······आगनीगन्तीति च' अ० ७.४.६५. सूत्रेण निपात्यते]

अगव्यूति=क्रोशद्वयपरिमाणरहितम् (क्षेत्रं=देशम्) ६.४७.२०. [गोशब्दस्य यूतौ परतो वान्तादेशो 'अध्वपरिमाणे च' वा० सूत्रेण भवति, तत्प्रतिषेधः]

अगस्त्यः ये धर्मादन्यत्र न गच्छन्ति तेऽगस्तयस्तेषु साधुः (सत्पुरुषः) १.१७६.६. अस्तदोषः (सज्जनः) ७ ३३.१०. अगस्तौ विज्ञाने साधुः (विद्वज्जनः) १.१७०.३. अगमपराधमस्यन्ति प्रक्षिपन्ति तेषु साधुः (विद्वज्जनः) १ १८०.८. अगस्तिषु ज्ञातव्येषु व्यवहारेषु साधूनि कर्माणि यस्य, प्र०—अत्र अगधातोरौणादिकस्तिः प्रत्ययोऽसुडागमश्च १.११७.११. अपराधरहितो मार्गः १.१८४.५. [अगस् प्राति० 'तत्र साधुः' इति यत् प्रत्ययः। अगधातोर्वा तिर् असुगागमश्च]

अगस्महि सङ्गच्छामहे, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् 'मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुक्, वर्णव्यत्ययेन मकारस्थाने सकारादेशश्च १.२३.२३. [गम्लृ गतौ धातोर्लुङ् सामान्यकाले]

अगात् प्राप्नुयात् ३.३०.१३. एति प्राप्नोति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् 'इणो गा लुङि अ० २.४.४५.' इति गाऽऽदेशः १.३५.८. प्राप्तमस्ति १.११५.१. व्याप्नोति १.५०.१३. व्याप्तोऽस्ति ४०.८. गच्छति १.११३.१६. गच्छन्ति १.१६३.१३. गच्छतु प्राप्नोतु १.६२.७. गच्छेत् १.१२६.३. आगच्छति २.३८.४. आगच्छेत् ३.८.४. उदितोऽस्ति १३.४६. **अगाम्**=प्राप्नुयाम् १७.६७. **अगाः**=गच्छेः ३.२१.४. गच्छ ५.३६. **अगाम**=जानीयाम प्राप्नुयाम वा, प्र०—अत्रेण् धातोर्लिङर्थे लुङ् १.३१.६. **अगामि**=गम्यते ६.१६.१६. **अगुः**=प्राप्तवन्तः १.८८.४. प्राप्नुवन्तु ३.४२.३. व्याप्नुवन्तु १.१८१.६. आगच्छन्ति ३.५६.२. अगमन् ६.७. [अत्र इण् गतौ धातोर्लुङ्, इणो गा लुङि, इति सूत्रेण गादेशः 'गातिस्था०, इति सूत्रेण सिचो लुक्]

अगिरौकसः (अगिराऽओकसः) अविद्यमानया गिरा सहौको गृहं येषान्ते, प्र०—अत्र तृतीयाया अलुक् १.१३५.६.

अगूहत् संवृणोति २.२४.३. [गुहू संवरणे, ततो लङ्। 'ऊदुपधाया गोहः' इति सूत्रेण ऊकारादेशः]

अगृभीतशोचिषम् न गृहीतं शोचिर्यस्मिंस्तम् (नाकम्=अविद्यमानदुःखम्) ५.५४.१२. **अगृभीतशोचिषः** न गृहीतं शोचिस्तेजो यैस्ते (मेघगतयः) ५.५४.५. [ग्रह उपादाने धातोः क्तः, हकारस्य भकारः इटो दीर्घश्च। शुच् दीप्तौ तत औणादिक इसिः प्रत्ययः तयोः समासे नञ्समासः]

अगृभीषत गृह्णन्तु २१.६०. **अगृभ्णत्**=गृह्णन्ति

६.८.४. **अगृभ्णत**=गृह्णन्तु ३.६.६. **अगृभ्णन्**=गृह्णीत १०.१. गृह्णीयुः २२.२. **अगृभ्णात्**=गृह्णीयात् १.१६३.२. **अगृभ्णाः**=गृहाण ५.३१.७. **अगृभन्**=गृह्णन्ति ५.२.४. [ग्रह उपादाने क्रयादि०, ततः सामान्ये लुङ् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' वा० सूत्रेण हकारस्य भकारादेशः। 'अगृभ्णात=अगृह्णत' इति नि० ७.२६]

अगोतायै इन्द्रियविकलतायै ३.१६.५. [इन्द्रियार्थकगोशब्दात् भावे तल् प्रत्यये गोता, ततो नञ्समासः]

अगोपाः अविद्यमानो गोपो यासां ताः (गावः=धेनवः) ७.१८.१०. पालकरहितः (पशुः) २.४.७. [गो+पा+कः, तत्प्रतिषेधः]

अगोह्य अरक्ष्य (दुर्जन) १.१६१.१३. **अगोह्यम्**=गोप्तुमनर्हम् (अमृतत्वं=मोक्षभावम्) १.११०.३. गोहितुं रक्षितुमनर्हं (परपदार्थम्) १.१६१.११. **अगोह्यस्य**=असंवृतस्य (प्रकाशितविद्यस्य जनस्य) ४.३३.७. [गुहू संवरणं, तत 'ऋहलोर्ण्यत्' सूत्रेण ण्यत् तत्प्रतिषेधः । 'अगोह्य आदित्योऽगूहनीयः' नि० ११.१६]

अग्नयः श्वैत्येन युक्ताः पावकाः १४.२७. आहवनीयादयः पावकाः १८.६७. सूर्यविद्युत्प्रसिद्धास्त्रयः ८.४०. पावका इव वर्त्तमाना (जनाः) ३.२२.४. विद्युदादयः ३३.१. पावक इव कालविदो विद्वांसः १३.२५. प्रज्वलिता वह्नयः १.५०.३. नेतारो नयन्ति श्रेष्ठान् पदार्थान् (विद्वज्जनाः) ५.३४. सभाध्यक्षादयः ५.३४. बहिःस्थाः (पावकाः) १४.१६. शरीरस्थाः (पावकाः) १४.१६. आहवनीयाद्यग्न्याधानकरणम् 'ऋ० भू० २०३. वह्नय इव वर्त्तमाना विद्वांसः १२.५०. सूर्यादय इव ज्ञानप्रकाशकाः (विद्वज्जनाः) १.५९.१. विद्युत इव १.१२७.५.

अग्नये अग्निविद्यासम्पादनाय, भा०—सकलविद्यासिद्धये १.१०. अङ्गति सर्वान् पदार्थान् दग्ध्वा देशान्तरे प्रापयति तस्मै (भौतिकाय) २.२९. परमेश्वराय भौतिकाय वा २.२०. रूपदाहप्रकाशच्छेदनादिगुणस्वभावाय ३.२. विज्ञानस्वरूपायाऽन्तर्यामिणे जगदीश्वराय ३.११. विज्ञानमयाय न्यायव्यवहाराय ८.३८. अग्नि में 'स० प्र०' ३९५. पावकाय १.१४०.१. विदुषे सभाध्यक्षाय १.७८.५. अग्निवत्प्रकाशमानाय जनाय, भा०—विद्याशिक्षायुक्ताय जनाय २०.७८. अग्निरिव विद्यादिशुभगुणैः प्रकाशमानाय (यतये=संन्यासिने) ७.१३.१. अग्निसम्बन्धे स्थापनाय ११.५९. पावक इव वर्त्तमानाय सेनापतये २४.१६. विज्ञानस्वरूपाय (वैश्वानराय=जगदीश्वराय) ११.६६. अग्निवद्वर्त्तमानाय (विदुषे) ३.१३.१. विज्ञानादिगुणप्रकाशाय (सेनापतये) २९.५९. विद्युद्रूपाय २९.६०. हवनार्थाय २.१. विज्ञापकाय (विदुषे) १.७७.१. अग्निवद्वर्त्तमानाय (वेधसे=मेधाविजनाय) प्रमा०—अत्र तादर्थ्ये चतुर्थी ६.१६.२२. राज्ञे ५.२५.७. पावकवर्द्धनाय (जनाय) ५.१. अग्निवत्तीव्रबुद्धये (विद्यार्थिने) १.१४३.१. विज्ञानाय १४.७. सुशिक्षाप्रकाशाय १४.७. शास्त्रविज्ञानाय १४.७. पूर्णाय विज्ञानाय ।। १४.७. अग्निरिव वर्त्तमानाय (गृहपतये=गृहपालकाय जनाय) २४.२४. जाठराग्नये २२.२७. विद्युत इव प्रकाशमानाय (उपदेशकाय) १.२७.१०. विद्युदादिविद्यायै ५.५.११. अग्निप्रदीपनाय ४.७. विद्युद्विद्याग्रहणाय ४.७. जाठराग्निशोधनाय ४.७. कारणरूपाय ४.७. अग्निविद्याप्राप्तये ४.८.५. विद्युदाद्याय ५.१६.१. विज्ञानवते (विदुषे) १.७९.१०. धर्मविज्ञानाऽऽढ्याय (गृहपतये=गृहाश्रमस्वामिने) १०.२३. पावके होमाय ७.४.१. पावकवत् पवित्राय (यतिरूपायाऽतिथये) ७.१५.४. अग्निरिव वर्त्तमानाय सुपात्राय ६.३.२. विद्यया प्रकाशमानाय विदुषे २३.१३. अग्नय इव वर्त्तमानाय (सभाध्यक्षाय) १.१२७.४. वह्निवद्वर्त्तमानाय विदुषे राज्ञे ४.५.१. अग्ना=अग्नौ । प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति डादेशः १२.२७. विद्युदिव वर्त्तमाने (पदार्थे) १.५९.३. अग्नौ विद्युति ४.८.६. **अग्निभ्यः**=पावकपरमाणुभ्यः ७.१.४. **अग्निम्**=परमेश्वरं भौतिकं वा १.१.१.

प्र०—'इन्द्रं मित्रं वरुणमग्नि०' ऋ० १.१६४.४६ अनेनैकस्य सतः परब्रह्मणः इन्द्रादीनि बहुधा नामानि सन्तीति वेदितव्यम् । 'तदेवाग्निस्तदादित्य०' यजु० ३२.१. यत्सच्चिदानन्दादिलक्षणं ब्रह्म, तदेवात्राऽग्न्यादिनामवाच्यमिति बोध्यम् 'ब्रह्म ह्यग्निः' शत० १.४.२.११. 'आत्मा वा अग्निः' श० १.२.३.२. अत्राऽग्निर्ब्रह्मात्मनोर्वाचकोऽस्ति । 'अयं वा अग्निः प्रजाश्च प्रजापतिश्च, श० ९.१.२.४२. अत्र प्रजाशब्देन भौतिकः प्रजापतिशब्देनेश्वरश्चाग्निर्ग्राह्यः । "अग्निर्वै देवानां व्रतपतिः, एतद्ध वै देवा व्रतं चरन्ति यत्सत्यम्" श० १.१.१.२.५. सत्याचारनियमपालनं व्रतं तत्पतिरीश्वरः । 'त्रिभिः पवित्रैरपुपो०' ऋ० ३.२६.८ अत्राग्निशब्दस्यानुवृत्तेः प्रजानन्निति ज्ञानवत्त्वात् पर्य्यपश्यदिति सर्वज्ञत्वादीश्वरो ग्राह्यः । यास्कमुनिरत्रोभयार्थकरणायाग्निशब्दपुरःसरमेतन्मन्त्रमेवं व्याचष्टे—"अग्निः कस्मात् ? अग्रणीर्भवत्यग्रं यज्ञेषु०······तस्यैषा भवतीति अग्निमीलेऽग्निं याच मीलिरध्येषणा कर्मा पूजाकर्मावा······ धनानां दातृतमम्" निरु० ७.१४-१५. अग्रणीः सर्वोत्तमः

सर्वेषु यज्ञेषु पूर्वमीश्वरस्यैव प्रतिपादनात्तस्याऽत्र ग्रहणम् । दग्धादिति विशेषणाद्भौतिकस्यापि च । 'प्रशासितारं सर्वेषाम्०,'........'एतमेके वदन्त्यग्निं०, मनु० अ० १२. १२२-१२३ अत्राप्यग्न्यादीनि परमेश्वरस्य नामानि सन्तीति । 'ईळे अग्निं विपश्चितं०, ऋ० ३.२७.२. विपश्चितमीळे इति विशेषणादग्निशब्देनात्रेश्वरो गृह्यते, अनन्तविद्यावत्त्वाच्चेतनस्वरूपत्वाच्च ।

अथ केवलं भौतिकार्थग्रहणाय प्रमाणानि—'यदश्वं तं पुरस्तादुदश्रयस्तस्याभये०' श० २.१.४.१६. 'वृषो अग्निः' 'अश्वो ह वा एष भूत्वा देवेभ्यो यज्ञं वहति' श० १.३.३. २९-३०. वृषवद्यानानां वोढृत्वाद् वृषोऽग्निः । तथाऽयमग्निराशुगमयितृत्वेनाऽश्वो भूत्वा कलायन्त्रैः प्रेरितः सन् देवेभ्यो विद्वद्भ्यः शिल्पविद्याविद्भ्यो मनुष्येभ्यो विमानादियानसाधनसङ्गतं यानं वहति प्रापयतीति । 'तूर्णिर्हव्यवाडिति, श० १.३.४.१२. अयमग्निर्हव्यानां यानानां प्रापकत्वेन शीघ्रतया गमकत्वाद्धव्यवाट् तूर्णिश्चेति । 'अग्निर्वै योनिर्यज्ञस्य' श० १.४.३.११. इत्याद्यनेकप्रमाणैरश्वनाम्ना भौतिकोऽग्निर्वाऽत्र गृह्यते, आशुगमनहेतुत्वादश्वोऽग्निर्विज्ञेयः । 'वृषो अग्निः समिध्यते०' ऋ० ३.२७.१४. यदा शिल्पिभिरयमग्निर्यन्त्रकलाभिर्यानेषु प्रदीप्यते तदा देववाहनो देवान् यानस्थान् विदुषः शीघ्रं देशान्तरेऽश्व इव वृष इव च प्रापयति, ते हविष्मन्तो मनुष्या वेगादिगुणवन्तमश्वमग्निमीडते, कार्य्याऽर्थमधीच्छन्तीति वेद्यम् १.१.१. तेजस्विनम् (होतारं जनम्) २८.४६. पावकमिव प्रकाशमानं (पुरोहितम्) ५.११.२. शुभगुणैः प्रकाशमानम् (भौतिकाग्निम्) ७.२४. पावकवच्छत्रुदाहकं योद्धारम् १९.३३. वन्द्य, ज्ञानस्वरूप ईश्वर को 'आर्या०' १.२. अन्तरिक्षे वाय्वादिस्थम्, भा०—अग्न्यादिपदार्थविद्याम् ११.१६. अग्निविद्याम् ११.१९. पावकमिव तेजस्विनं (सन्तानम्) ३.११.४. विद्युद्वद्वर्त्तमानं (सेनापतिम्) ११.७६. परमविद्वांसं भा०—पदार्थविद्यां, वहनकर्म, ब्रह्मोपासनं, ब्रह्मज्ञानम् १३.१. उपदेशकं विद्वांसम् १२.३०. योगाऽभ्यासजनितां विद्युतम् ११.६६. भौमं पावकम् ३.३१.१५. अग्निमिवाऽन्यान् परितापकं (न्यायाधीशम्) ३५.१९. सर्वपदार्थच्छेदकम् १.१२.१. अग्निहोत्र को सं० वि० १५२. पावकमिव वर्त्तमानं (विपश्चितं=पण्डितम्) ३.२७.२. पावकमाग्नेयाऽस्त्रं वा १.८४.१८. विद्युदादिरूपं वह्निम् ३.२६.२. पावक इव दुष्टानां दाहकम् (विद्वांसमुपदेशकम्) ३.१२.३. विद्युतं भा०—विद्युद्रूपेणाऽभिव्याप्तं व्याप्तं सूर्यादेः कारणम् १२.२. व्यापकं विद्युदाख्यम् ११.२२. प्रसिद्धं विद्युतं वा ११.१३. पवित्रं स्वप्रकाशं परमात्मानं पावकमग्निं वा । भा०—परमेश्वरोपासनमग्निहोत्रं वा ३४.३४. ज्ञातारं दाहकं वा । अन्व०—परमेश्वरं भौतिकं वा १.१२.७. सर्वसुखप्रापकमीश्वरं सुखहेतुं भौतिकं वा १.१२.९. भा०—अग्निविद्याम् १५.३२. अग्निमिव वर्त्तमानं वीर्यम् ११.५७. भा०—अग्न्यादिपदार्थविज्ञानम् ११.४६. सूर्यादिरूपं ज्ञानवन्तं वा १.१०६.१. भा०—विद्युदादिपदार्थम् १५.४९. **अग्निषु**=अग्न्यादिपदार्थेषु ५.६.६. कलायन्त्रेषु १.१०८.४. **अग्नौ**=इन्द्राग्नी वायुविद्युतौ ६.६०.१. **अग्निः**=भौतिकः । प्रमा०—'अग्निरिति पदनामसु पठितम् निघं० ५.४, अनेनाऽग्नेर्गत्यर्थत्वेन ज्ञानस्वरूपत्वादीश्वरः; प्राप्तिहेतुत्वाद् भौतिकोऽर्थो वा गृह्यते ३.९. सर्वविद्योपदेष्टा जगदीश्वरः ३.९. अग्निरिव विद्यासु प्रकाशमानः, भा०—ब्रह्मचर्येण पूर्णविद्यो (विद्वान्) १९.६५. सर्वस्वामिन्नीश्वरः प्रकाशादिगुणवान् भौतिको वा, भा०—विद्युज्जाठरादिरूपः ३.१२. विजयप्रदो भगवान् १.७४.३. सेनेशः १२.३४. अग्निरिव तेजस्वी (आप्तो जनः) ६.४९.१. सब जगत् का कारण एक परमेश्वर । प्रमा०—'ब्रह्म ह्यग्निः' शतपथे आर्याभि० २.४. चाक्षुषः (भौतिकोऽग्निः) १३.४५. अत्युष्णतायुक्त होने से अग्निसञ्ज्ञक (पतिः) स० प्र० १५३. प्रसिद्धो रूपवान् दहनशीलः पृथिवीस्थः सूर्यलोकस्थश्च १.१२.६. पावकवद् वर्त्तमानो (विद्वान्) । भा०—यथा सूर्यो दूरदेशात् स्वप्रकाशेन दूरस्थान् पदार्थान् प्रकाशयति तथा विद्वान् स्वसूपदेशेन दूरस्थान् जिज्ञासून् प्रकाशयति २६.८. विज्ञानानन्दस्वरूपः परमेश्वरः ऋ० भू० २०३. सूर्यरूपेण परिणतः ५.७६.१. सद्विद्याया वेत्ता विज्ञापयिता वा (विद्वज्जनः) १.१०५.१४. स्वयं प्रकाशमानोऽग्निरिव पापिनां दग्धा (ईश्वरः) ५.३७. भा०—अग्निवच्छत्रुदाहको (राजा) १८.३८. वह्निरिव (पुत्रः) ४.६.७. सब जगत् में प्रकाशित (ईश्वर) आर्या० १.५. सब मनुष्यों के स्तुति करने योग्य ईश्वर 'आर्याभि० १.४. भास्वरः ३.४.८. पावक इव गृहस्थो विद्वान् १८.६४. सूर्याख्यः ३३.९२. उत्कृष्टगुणविज्ञानः (सभाध्यक्षः) १.७७.४. भा०—सूर्यवद् गुणकर्मस्वभावो (राजा) १३.१४. स्वप्रकाशः परमात्मेव राजा ४.१.१०. विज्ञानस्वरूपो जगदीश्वरः १.९९.१. प्रसिद्धो भौतिको, न्यायमार्गं गमयिता विद्वान्वा १.१०७.३. पावक इव पवित्रः सभाध्यक्षः १.६९.३. अग्निरिव ज्ञानप्रकाशको (राजा) १.६९.२. सूर्य इव स्वप्रकाशः सर्वद्योतकः (परमात्मा) १.५९.७. सूर्यादिरूपेण पावकः ५.२.९. अरुणतरुणतापस्तीव्रप्रतापो

वा १.१२४.११. अग्निरिव सर्वासु विद्यासु देदीप्यमानो विद्वान् २०.१४. विद्युदादिकार्यकारणस्य स्वरूपः २.६.१. सुशील-अभिधायकः ४.११. वाचकः ४.११. सूर्य इव सुशीलप्रकाशितो (विद्वान्) १.१४१.१३. यथा सर्वसुखदात्री विद्युत् १.७०.३. ज्ञानादिगुणवान् (अर्यः) १.७०.१. यथा परमेश्वरस्तथा विद्वान् १.७६.१२. अविद्याऽन्धकारदाहको (गृहपतिः=गृहस्थो जनः) ८.१७. विद्युदिव (राजप्रजाजनः) १०.२६. पावक इव पवित्रोपचितो मुनिः ६.१४.५. महाबलिष्ठो वीरपुरुषः ६.१४.४ः पावक इव विद्यादिशुभगुणप्रकाशितो (विद्वज्जनः) ७.३६.७. पावक इव प्रकाशितयशा (दारः) ७.४०.७. नियन्त्री विद्युदिव १.५६.२. कारणाख्यः पावकः १२.१. जाठरस्थः २.११. प्रत्यक्षो भौतिकः २.३. ज्ञानस्वरूपत्वात् स्वप्रकाशत्वाच्चेश्वरः ३२.१. अग्निमय आर्त्तव और वीर्य सं० वि० १३८. अन्तस्थो विज्ञानस्वरूपो वा (विद्युदीश्वरो वा) ४.१५. युद्धजन्यक्रोधाग्निः ६.१८. भौतिको यज्ञसम्बन्धी शरीरस्थो वा १.२२. सर्वविद्या प्राप्तो विद्वान् ६.१६.

अग्निना विद्युता, भा०—आग्नेयाऽस्त्रादिना १७.६५. क्रोधरूपेण १.१६२.११. पावकेनेव ब्रह्मचर्येण ५.४३.७. महादाता ईश्वर की कृपा से 'आर्याभि० १.३. परमेश्वरेणाऽग्निहोत्रादियज्ञाऽनुष्ठानेन च 'ऋ० भू० २१६. अन्तःकरणरूपेण तेजसा २६.१०. अग्निभिः=अग्निवद्वर्त्तमानैर्वीरैः ६.११.६.

अग्ने हे विज्ञानस्वरूप ईश्वर ! 'आर्या० २.१५. अग्निरिव स्वच्छात्मन् (मातः, पितः आचार्य वा) १२.५२. देहान्तप्रापक जीव १२.३७. विज्ञानसुखद (विद्वज्जन) १. ७६.६. भा०—विद्वन्मातः, पितः १२.४०. सत्याऽसत्यविभाजक (सज्जन) १७.६. भा०—सर्वत्र मूर्त्तद्रव्येषु विद्युद्रूपो व्याप्तः सर्वप्रकाशोऽग्निः ३.२२. विज्ञातरीश्वर कार्यप्रापकोऽग्निर्वा ३.१८. परमेश्वर धनुर्वेदविद्वान्वा १.१७. विवेकप्राप्तोपकारक प्रकाशक (राजन्) १३.४६. विज्ञानस्वरूपेश्वर अग्नि वा प्र०—अत्र 'सर्वत्रार्थाद् विभक्तेर्विपरिणामः, इति परिभाषया साधुत्वं विज्ञेयम् १.१२.८. स्तोतुमर्हेश्वर भौतिकोऽग्निर्वा। अन्व०—वन्दनीयेश्वर १.१२.३. दृढविद्य (सभापते राजन्) २७.६. विनयप्रकाशित (राजन्) २७.४. सुपरीक्षक (शिल्पिजन) ३.२३.५. वह्निवद् दुष्टानां दाहक (राजन्) ३.२४.१. तीव्रबुद्धे (मनुष्य) ३.१.१७. ज्ञानप्रद (विद्वन्) १.७६.५. शान्तिप्रद (विद्वज्जन) १.७६.१. विश्वोपकारक (परमेश्वर विद्वन्वा) १.७६.२. हे स्वप्रकाशस्वरूप सब दुःखों के नाशक (देव=ईश्वर) सं० वि० २१४. विज्ञानस्वरूपेश्वरप्राप्तिहेतुर्भौतिकोऽग्निर्वा १.१४.२. अग्नौ प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१४.८. शुभगुणप्रदातः (परमेश्वर) ६.१५.१२. सर्वप्रजापीडानिवारक (परमेश्वर) ६.१५.१४. विद्युद्वद्वर्त्तमान जीव १.५८.४. कृपामय विद्वन् ३.१८.१. पावकद्वर्त्तमान वैद्यराज विद्वन् ३.१८.४. सुसङ्गृहीतराजनीते (राजन्) २७.७. वेदविदध्यापकोपदेशक (विद्वज्जन) २५.४७. प्रकाशमान (अर्य=वैश्य) १५.३०. वीरपुरुष ५.२३.१. प्रकाशात्मन् (राजन्) ५.५.३. धर्मिष्ठ राजन् ५.४.६. शूरवीर विद्वन् १.१२७.६. त्रिदोषदाहक (विद्वन्) ५.२.८. बहुश्रुत सज्जन १.४५.७. विद्याविज्ञापक सभासेनाशालाध्यक्ष १.६४.६. जीवनैश्वर्यप्रद परमेश्वर, रोगनिवारणायौषधप्रद वैद्यराज वा १.६४.१६. अत्यन्तविद्यायोगेनाऽनूचान (विद्वन्, १.७५.४. न्यायप्रकाशक (राजन्)। भा०—पक्षपातं विहाय न्यायाधीश २७.५. विशिष्टज्ञानयुक्त (विद्वन्) १.४४.७. नीतिज्ञ विद्वन् १.४४.६. राजविद्याविचक्षण (सज्जन) १.४४.२. कृतब्रह्मचर्यगृहाश्रमिन् (विद्वन्) ५.८.१. सूर्यवत् सुखप्रदातो (राजन्) २.१.७. शत्रुदाहक। अन्व०—सभेश १७.६६. पावक इव वर्त्तमान। अन्व०—पालक (मनुष्य) १७.८७. योगाभ्यासेन प्रकाशितात्मन् (योगिजन) १७.७३: पावक इव प्रकाशमय भा०—तप आदिसाधनैर्योगबलं प्राप्त योगिराज १७.७१. योगसंस्कारेण दुष्टकर्मदाहक। भा०—योगसंस्कारयुक्त (योगिन्) १७.७५ पूजनीयतम (जगदीश्वर) १.१४.११. अग्निः प्रत्यक्षोऽप्रत्यक्षः १.१४.१०. अग्नि में सं वि० १६४. अध्यापकाऽध्यापिके वा २६.२०. पालकवत् पवित्राचरण (राजन्) ४.१०.८. परमविद्वन् ४.११.६. विद्वन् पितः ! पितामह ! प्रपितामह १६.३८. पावकवत् पवित्रपुरुषार्थिन् (विद्वन्) ३.२७.३. विद्युदिव गुप्तप्रतापिन् (विद्वज्जन) ७.३.३. हे विज्ञानधनाढ्यविद्वन् (गृहपते) ८.१६. प्रदातः प्रदानहेतुर्वा (सभाध्यक्ष) १.७६.८. विद्यां जिघृक्षो (विद्यार्थिन्) ५.११.६. परमविद्वन्नुपदेशक २.२.१२. सूर्यवद् वर्त्तमान (महाविद्वन्) २.१.३. अग्निरिव दाहकृत् (राजन् ! शिष्य) २.१.६. विद्याप्रकाशितसभ्यजन ४.४.७. पावक इव तेजस्विन् (राजकर्मस्थजन) ४.४.५. विद्वन् विदुषि वा १५.५६. शिल्पविद्याविद्विद्वन् ६.१६.४३. न्यायाधीश ६.१६..३१. अग्निरिव विद्यया प्रकाशमान (धार्मिक जन) ६.१६.२७. पावकवद् वर्त्तमान (विद्यार्थिन्) ५.११.३ गृहस्थजन ५.८.२. दुष्टशासकविद्वन् १.१८६.७. सर्वाधारेश्वर १.५६.१. अध्यापकजन १.७३.७. पापिप्रतापक

(राजन्) ६.६०.३. सकलविद्याविद् (विद्वन्=राजन्) ९.३७. हे अनन्तविद्यातेजयुक्त (ईश्वर) आर्या० २.३३. पदार्थविद्यावेत्तर्विद्वन् १.२२.१०. अग्निवत्प्राप्तपुरुषार्थ (सज्जन) १२.१०९. प्राप्तशिल्पविद्य (विद्वन्) १.१४०.१२. हे सर्वशत्रुदाहक परमेश्वर 'आर्या० १.१२. जगदीश्वर अग्निर्वा ४.१६. विज्ञानस्वरूपेश्वरव्यवहारप्राप्तिहेतुर्भौतिको वा ३.१९. सर्वविद्यामयेश्वर विद्याहेतुर्भौतिको वा ३.१७. सर्वाभिरक्षकेश्वर रक्षाहेतुर्भौतिको वा ३.१७. कामानां प्रपूरकेश्वर कामपूर्त्तिहेतुर्भौतिको वा ३.१७. भा०—सत्यधर्मोपदेशकेश्वर १.५. अग्निर्भौतिको, भा०—यज्ञस्य मुख्यसाधनम् २.७. ज्ञानस्वरूपेश्वरस्य प्राप्तिहेतुं भौतिकमग्निं वा २.४. प्रकाशमय (सेनापते) १७.५०. विद्वन् पुरोहित १७.५२. विद्याविनयप्रकाशक (राजन्) २७.५. भा०—पावक इव मनुष्यजन्मप्राप्त (जन) १३.४७. स्वप्रकाशस्वरूप जगदीश्वर २०.२४. विज्ञापक (विद्वन्) १.७९.११. पदार्थविद्यावित् (अङ्गिरः=विद्यारसयुक्त विद्वन्) १२.८. हे सच्चिदानन्द स्वप्रकाशस्वरूपेश्वर आर्या० २.४७. वह्निरिव तेजस्विनि विदुषि (स्त्रि) १७.६. विज्ञानस्वरूपेश्वर विज्ञापको भौतिको वा ३.३८. सर्वगुणवर (विद्वन्) ६.२९. सकलविद्याविज्ञात (विद्वन्) १.१०५.१३. दुष्टप्रशासक सभाध्यक्ष १.७३.३. सर्वत्र व्याप्तेश्वर भौतिको वा । प्र०—अत्राऽन्त्यपक्षे व्यत्ययः १.१४.१. अग्निर्व्यावहारिकः १.१९.९. स्वयं प्रकाशेश्वर सर्वलोकप्रकाशकोऽग्निर्वा १.१९.३. अविद्याऽन्धकारविनाशक (परमेश्वर) ६.१५.११. पावकवद् विद्यया प्रकाशमान विद्वन् ३.११.९. अविद्यादोषप्रदाहक परात्मन् (जगदीश्वर) ३.१०.२. अग्प्रिवज्ज्ञानेन प्रकाशमय (विद्वन्) ३.६.९. पावक इव प्रकाशात्मन् विद्वन् ३.२०.२. विद्युदिव सकलविद्यासु व्यापिन् (महाविद्वन्) ३.१९.४. अग्निरिव प्रदीप्तविद्य (विद्वन्) ३.१८.३. विज्ञानस्वरूप परब्रह्मन् विद्युद्वा ५.६. अग्निरिव प्रतापवन् (पदार्थ विद्याविज्जन) ३.१४.४. सर्वनेतः परमात्मन् ५.३६. आप्ताऽनूचानाऽध्यापक १.९७.४. कृतविद्याभ्यास (राजन्) ५.३.१. दुष्टप्रदाहक (राजन्) ५.४.४. हे प्रकाशितप्रज्ञ (विद्वन्) २६.१३. अग्निरिव वर्त्तमाने ! अन्व०—विदुष्यध्यापिके स्त्रि १३.२२. परमेश्वर विद्वन् वा १८.४६. विद्यया सुप्रकाशिते स्त्रि पुरुष वा १५.५४. विद्युदिव राजविद्याव्याप्त (उत्तम-राजन्) ७.७.२. सन्मार्ग प्रकाशक (राजन्) ७.८.७. युद्धविद्यावित् सेनेश १८.७४. वह्निवत् सर्वदोषप्रणाशक (परमेश्वर) ७.५.६. विद्युदादे १.११५.१. हे तेजोमय (सभापते) ८.३८. प्रसिद्धाग्निवत्कार्यसाधक विद्वज्जन) ७.३.३. हे स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप सब जगत् के प्रकाश करने हारे परमात्मन् सं० वि० ७. विद्युद्वद् व्यतिरिक्त (अध्यापकोपदेशक) २.११५. विद्यादिगुणैर्विख्यात (विद्वन्) १.९४.१.

अग्ने=पृथिव्यादिस्थाया विद्युतः । भा०—प्रकाशमानस्य सूर्यादिः ११.१. आग्नेयाऽस्त्रादियोगात् १७.६६. सद्विदुषः ८.५०. विद्युदादिरूपात् २.३८.५. विद्युदाख्यात् १३.४५. अग्निवद् देदीप्यमानस्य (पत्युः) ११.४९. अग्नितुल्येन (भ्राजसा=तेजसा) १०.१७. उष्णत्वनिमित्तस्य १३.२५. आग्नेयाऽस्त्रादेः सिद्धिकरस्य पावकस्य ५.२. ऊष्मणः १४.१५. भौतिकस्य पाचकस्य २.११. विद्यादिगुणप्रकाशितस्य सभ्यजनस्य ६.२४.

[गत्यर्थक 'अगि' धातोः 'अङ्गेर्नलोपश्च' उणादि० ४.५० सूत्रेण निःप्रत्ययो नकारलोपश्च]

अग्निः कस्मादग्रणीर्भवति । अग्रं यज्ञेषु प्रणीयते । अङ्गं नयति सन्नममानः । अक्नोपनो भवतीति स्थौलाष्ठीविर्न क्नोपयति न स्नेहयति । त्रिभ्य आख्यातेभ्यो जायत इति शाकपूणिः । इतादक्ताद्दग्धाद्वानीतात् । स खल्वेतेरकारमादत्ते गकारमनक्तेर्वा दहतेर्वा नीः परः नि० ७.१४. विराडग्निः श० ६.२.२.३४. यो वै रुद्रः सोऽग्निः श० ५.२.४.१३. अग्निरेष यत्पशवः श० ६.३.२.६. अग्निर्हि देवानां पशुः ऐ० १.१५. अग्निर्वै देवानां वसिष्ठः ऐ० १.२८. शिर एवाग्निः श० १०.१.२.४. अग्निः सर्वा देवताः ऐ० २.३. अग्निर्वै सर्वेषां देवानामात्मा श० १४.३.२.५. आत्मैवाग्निः श० ६.७.१.२०. अग्निर्वै देवतानां मुखं प्रजनयिता स प्रजापतिः श० ३.९.१.६. अन्नादोऽग्निः श० २.१.४.२८. अग्निर्देवानां जठरम् तै० २.७.१२.३. अयं वै लोकोऽग्निः श० १४.९.१.१४. संवत्सर एषोऽग्निः श० ६.७.१.१८. वागेवाग्निः श० ३.२.२.१३. तेजो वाऽअग्निः श० २.५.४.८. अग्निर्वै रक्षसामपहन्ता कौ० ८.४.१०.३. तपो वाऽअग्निः श० ३.४.३.२. अग्निर्वै देवानां व्रतपतिः श० १.१.१.२. अग्निर्वै मृत्युः श० १४.६.२.१०. पुरुषोऽग्निः श० १०.४.१.६. मन एवाग्निः श० १०.१.२.३. प्राणो वा अग्निः श० ९.५.१.६८. वीर्यं वा अग्निः तै० १.७.२.२. गायत्री श० ३.४.१.९. अग्निरेव ब्रह्म अग्निर्वै श० १०.४.१.५. पर्जन्यो वा अग्निः श० १४.९.१.१३. आयुर्वाऽग्निः श० ६.७.३.७. अग्निमतिथिं जनानाम् तै० २.४.३.६. अमृतो ह्यग्निः श० १.९.२.२०. असौ वा आदित्य एषोऽग्निः श० ३.४.१.१. अग्निर्वैश्वानरः ता०

१३.११.२३. अनूचानमाहुरग्निकल्प इति मुखं ह्येतदग्नेर्यद् ब्रह्म श० ६.१.१.१० अग्निर्वै धर्मः श० ११.६.२.२. अग्निर्वै द्रष्टा गो० उ० २.१९. प्रजापतिरग्निः श० ६.२.१.२३. अग्निर्वै यमः श० ७.२.१.१०. अग्निर्वाव पुरोहितः ऐ० ८.२७. प्राणा अग्निः श० ६.३.१.२१. अग्निर्वै यज्ञः श० ३.४.३.१९. यजमानोऽग्निः श० ६.३.३.२१. अग्निर् ऋषिः मैं० १.६.१. अग्निः पशुरासीत् तमालभन्त तेनायजन्त इति च ब्राह्मणम् नि० १२.४१.]

अग्ना ३ इ सर्वसुखप्रापक (गृहपते=गृहस्वामिन्) ८.१०. [अग्निशब्दस्य सम्बोधने रूपम्। 'एचोऽप्रगृह्यस्य०' अ० ८.२.१०७. सूत्रेण एचः पूर्वस्यार्धस्य आकारादेशः स च प्लुतः। उत्तरस्येकारादेशः]

अग्नायी अग्नेः पावकवद्वर्त्तमानस्य पत्नी ५.४६.८.

अग्नायीम् यथाऽग्नेरियं ज्वालाऽस्ति तादृशीं (स्त्रियम्)। प्र०—वृषाकप्यग्नि० अ० ४.१.३७. अनेन ङीप् प्रत्यय ऐकारादेशश्च १.२२.१२. [अग्नायी अग्नेः पत्नी नि० ९.३३.]

अग्निजिह्वाः अग्निरिव सुप्रकाशिता जिह्वा वाणी येषान्ते (देवाः=विद्वांसः)। प्र०—जिह्वेति वाङ्नाम० (निघं० १.११) २५.२०. अग्निर्जिह्वावद् येषान्ते (विद्वांसः) ३३.५३. अग्निरिव तीव्रा प्रज्वलिता जिह्वा येषां ते (सत्यवादिनो विद्वांसः) ६.२१.११. अग्निवद् विद्याशब्द प्रकाशिका जिह्वा येषान्ते (मरुतः=विद्वांसः) १.४४.१४. अग्निर्जिह्वा हूयमानो येषान्ते (देवाः) १.८९.७. अग्निरिव प्रकाशमाना सत्योपदेशा जिह्वा येषान्ते (कवयः=मेधाविनो जनाः) ३.५४.१०. अग्निना सत्येन सुप्रकाशिता जिह्वा येषान्ते (देवाः=विद्वांसः) ६.५२.१३. अग्निरिव सत्यविद्यया सुप्रकाशिता जिह्वा येषान्ते ६.५०.२. अग्निर्जिह्वावद् येषान्ते (सज्जनाः) ३३.५३.

अग्नित् पावक प्रदीप्तकरः (अग्निविद्याविज्ञातृविद्वान्) २.१.२.

अग्निऽतपः येऽग्निना तापयन्ति ते (विद्वांसः) ५.६१.४ [अग्नि+तप्+णिच्+अच् 'पर्णशुषिवण्णिलुक् भविष्यति' (महा० ७.४.६५) यथा पर्णानि शोषयन्ति पर्णशुषो वाता इत्यादौ क्विपि 'बहुलमन्यत्रापि संज्ञाछन्दसो' रिति णिलुक् भवत्येवम् 'अग्निऽतप' इत्यादावपि]

अग्निनेत्राः अग्नौ विद्युदादौ नेत्रं नयनं विज्ञानं येषान्ते (विद्वांसः) ९.३६. **अग्निनेत्रेभ्यः**=अग्नेः प्रकाश इव नेत्रं नयनं येषान्तेभ्यः (सज्जनेभ्यः) ९.३५.

अग्निऽभ्राजसः अग्निरिव प्रकाशमानाः (वीरजनाः) ५.५४.११.

अग्निमग्निम् प्रत्यग्निम् ६.१५.६. [नित्यवीप्सयोः (अ० ८.१.४.) सूत्रेण वीप्सायां द्विर्वचनम्]

अग्निमिन्धः अग्निप्रदीपकः (होतृजनः) १.१६२.५. [भ्राष्ट्राग्न्योरिन्धेर्मुम् वक्तव्यः (अ० ६.३.७०.) वार्तिकेन पूर्वपदस्य, मुम् आगमः]

अग्निशालम् अग्निहोत्र के स्थान को सं० वि० १६६. [विभाषा सेनासुरा० (अ० २.४.२५.) सूत्रेण नपुंसकत्वे ह्रस्वः]

अग्निश्रियः अग्निना श्रीः=शोभा, धनं येषान्ते (मरुतः=वायवः) ३.२६.५. [अग्निश्रीशब्दयोः समासः]

अग्निष्वात्तान् सुष्ठु गृहीताऽग्निविद्यान्, भा०—पदार्थविद्याविदः (पितॄन्=विद्यावयोवृद्धान् पित्रादीन् १९.६१. **अग्निष्वात्तानाम्**=सुसंगृहीताग्निविद्यानाम् (शतरुद्रियाणां=विद्वदधिष्ठातृजनानाम्) २१.४४. अग्निना जाठराग्निना सुष्ठुगृहीताऽन्नानाम् (अवत्तानाम्=उदार—चेतोजनानाम्) २१.४५. गृहीताऽग्निविद्यानां (पितॄणां=जनकजननीनाम्) २४.१८. अग्निः सुष्ठ्वात्तो गृहीतो यैस्तेषां (जनानाम्) २१.४३. [अग्नि+सु+आ+दा+क्त। 'पूर्वपदात्' (अ० ८.३.१०६.) सूत्रेण मूर्धन्यादेशः]

अग्निष्वात्ताः अग्निविद्यायुक्ताः (पितरः) ऋ० भू० २६२. अग्निः परमेश्वरोऽभ्युदयाय सुष्ठुतयाऽऽत्तो गृहीतो यैस्ते (पितरः) ऋ० भू० २५४. सम्यग्गृहीताऽग्निविद्याः, भा०—येऽग्न्यादिपदार्थविद्यां विज्ञाय प्रवर्तयन्ति ते विद्वांसः १९.६०. अधीताऽग्निविद्याः (पितरः=पालका विद्वांस उपदेशकाः) १७.५९. [यदग्निष्वात्तान् (यजति) गृहमेधिनस्तत् मै० १.१०.१८. का० ३६.१३.]

अग्निहुतः अग्नौ हुतं=प्रक्षिप्तं येन सः (विद्वान्) ३८.२८. [अग्नि+हु दानादानयोः+क्तः]

अग्नीत् सम्प्रेषितः (योगी) ७.१५.

अग्नीन्द्राभ्याम् सकलराज्यकर्मविचारविचक्षणाभ्यामग्नीन्द्रगुणयुक्ताभ्यां (राजपण्डिताभ्याम्) ७.३२.

अग्नीपर्जन्यौ विद्युन्मेघौ ६.५२.१६. ['पर्जन्य' इति पदनाम निघं० ५.४. अग्निपर्जन्ययोः समासे पूर्वपदस्य दीर्घत्वम्]

अग्नीषोमयोः अग्निश्च सोमश्च तयोः प्रसिद्धाग्नि-

चन्द्रलोकयोः । प्र०—अत्र 'ईदग्नेः सोमवरुणयोः अ० ६.३.२७. अनेन देवताद्वन्द्वसमासेऽग्नेरीकारादेशः । भा०—अग्निजलयोः २.१५. शीतोष्णकारकयोर्जलाऽग्न्योः २५.५. **अग्नीषोमा**=अग्निषोमौ प्रसिद्धौ वाय्वग्नी । प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इतिं आकारादेशः १.१३.७. अध्यापकपरीक्षकौ १.६३.२. यज्ञफलसाधकौ (वाय्वग्नी) १.६३.१. **अग्नीषोमीयाः**=सोमाग्निदेवताकाः (वामना अनड्वाहः पशवः) २४.८. **अग्नीषोमौ**=विद्युत्पवनौ १.१३.१०. विद्यया सम्यक्=संयोजितौ (अग्निचन्द्रलोकौ) २.१५. तेजश्चन्द्राविव विज्ञानसोम्यगुणावध्यापकपरीक्षकौ १.६३.१. सर्वमूर्त्तद्रव्यसंयोगिनौ (अग्निवायू) १.६३.११. अग्निषोमाभ्याम्=तेजःशान्तिगुणाभ्याम् ६.६. [अग्नि-सोमशब्दयोः समासे 'ईदग्नेः०' अ० ६.३.२७. सूत्रेण ईकारादेशः । 'अग्नेः स्तुतस्तोमसोमाः' इति मूर्धन्यादेशः प्राणापानावग्निषोमौ । ऐ० १.८. अहोरात्रे वा अग्नीषोमौ कौ० १०.३. चक्षुषी अग्निषोमौ । ऐ० १.८. राजानौ वा एतौ देवतानां यदग्नीषोमौ तै सं० २.६.२.१-२. दार्शपौर्णमासिके वा एते देवते कौ० ५.२. यच्छुष्कं तदाग्नेयं यदार्द्रं तत्सौम्यम् श० १.६.३.२३. सूर्य एवाग्नेयः । चन्द्रमाः सौम्योऽहरेवाग्नेयं रात्रिः सोम्या य एवापूर्यतेऽर्धमासः स आग्नेयो, योऽपक्षीयते स सौम्यः श० १.६.३.२४. यच्छुक्लं तदाग्नेयं यत्कृष्णं तत्सौम्यं यदि वेतरथा यदेवकृष्णं तदाग्नेयं यच्छुक्लं तत्सौम्यं (रूपं) यदेव वीक्षते तदाग्नेयं रूपं शुष्केऽइव हि वीक्षमाणस्याक्षिणी भवतः श० १.६.३.४१.]

अग्न्येधम् अग्निश्चैधश्च तत् ३०.१२.

अग्मत गच्छत १.११९.३. प्राप्नुवन्ति, प्र०—अव लडर्थे लुङ् 'मन्त्रे घसहर०' इति च्लेर्लुक् 'गमहन०' इत्युपधालोपः 'समोगम्यृच्छिभ्याम्' अ० १.३.२९. इत्यात्मनेपदञ्च १.२०.५. **अग्मन्**=प्राप्नुत ४.२४.३. प्राप्नुवन्तु ४.४१.६. प्राप्नुवन्ति ६.६३.८. आगच्छन्ति ६.२८.१. गच्छन्ति ४.२.१७. गच्छेयुः १.१२७.३. [गम्लृधातोर्लङ् सामान्यकाले]

अग्रजिह्वम् जिह्वाया अग्रम् २५.१. '[राजदन्तादिषु परम्' अ० २.२.३१. सूत्रेण जिह्वायाः परनिपातः । जिह्वेति वाङ्नाम निघं० १.११]

अग्रणीतिम् अग्रा श्रेष्ठा चाऽसौ नीतिश्च ताम् २.११.१४. [अग्र+णीञ्+क्तिन् । अग्रनीतिपदयोः समासः]

अग्रतः सृष्टेः प्राक् ३१.६. [सार्वविभक्तिकस् तसिः प्रत्ययः]

अग्रभणे न विद्यते ग्रहणं यस्मिन् (समुद्रे=अन्तरिक्षे सागरे वा), प्र०—अत्र हस्य भः १.११६.५. हस्ताऽवलम्बनाऽविद्यमाने (समुद्रे) ऋ० भू० १६३. [ग्रह उपादाने धातोर्ल्युट्, तत्प्रतिषेधः, 'हृग्रहोर्भश्छन्दसी' ति हकारस्य भकारः]

अग्रभम् गृह्णीयाम् १.१६१.१३. **अग्रभीत्**=गृह्णाति १.१४५.२. ग्रहण करता हूं, ग्रहण कर चुका हूं सं० वि० १२१. [ग्रह उपादाने धातोर्लङ्, विकरणव्यत्ययेन शप्, हस्य च भकारः]

अग्रभीष्म गृह्णीयाम् ५.३०.१२. अतिगृह्णीयाम् ५.३०.१५. [ग्रह धातोर्लुङि उत्तमपुरुषबहुवचने रूपम् । हस्य च भकारः]

अग्रम् उपरिभावम् (यशः) ४.१३.१. मुख्यश्रियम्, भा०—अग्र्यां श्रियम् २३.२४. उत्तमविजयम् १.११२.१८. सर्वेषां मध्यं केन्द्रं स्थानमुपरिस्थम् ३.५५.७. उत्तमं (रसम्) ४.६१.१. उत्तमं सुखम् १३.५१. उपरिभागम् ३.५.५. पुरः ३३.५६. अग्रभागम् ३.३०.१७. प्रथमम् ४.२७.५. पूर्वम् ११.१७. **अग्रे**=आदौ २.१७.३. पुरतः ५.८०.२. विद्याराजलक्ष्म्याम् ३३.२५. प्रातः समये २९.२९. प्राक् ३१.१७. सन्मुखे १२.२२. सृष्टेः प्राक् १.१६४.८. पुरस्तात् पुरस्सरत्वे क्रियासम्बन्धे वा १.१२. पुरस्सरम् ७.४४.४. **अग्रमग्रम्**=पुरः पुरः १.१२३.४. **अग्रेण**=पुरस्सरेण २८.२०. पुरस्तात् ६.२. [अगि (गत्यर्थक) धातोः 'ऋजेन्द्राग्रवज्र०' उणादि० २.२८ सूत्रेण रन् प्रत्ययः । 'बाहु०' च नुमोऽभावः]

अग्रवः उत्तम स्त्री पुरुष सं० वि० १४०. अथर्व० १४.२.७२. [अग्रु+जस्]

अग्राऽअद्वाना येऽग्रदन्ति तद्विभाजकौ (इन्द्राविष्णू=वायुसूर्यौ) ६.६९.६.

अग्राः अग्रगण्याः (प्रजाः) ७.३३.७. पहिली (ज्योतियाँ) सं० वि० १३८.

अग्रिमा अतिश्रेष्ठः (विद्वानुपदेशकः) ५.४४.६. [अग्रप्राति० 'अग्रपश्चाड्डिमच्' वा० ४.३.२३. इति डिमच् प्रत्ययः]

अग्रियम् अग्रे भवम् (अग्निं=पावकम्) ६.६.४८. सुखम् । अन्व०—पुरुषार्थम् ४.३७.४. सर्वेषां वस्तूनां

साधनानां वाऽग्रे भवम् (त्वष्टारं=परमेश्वरं/भौतिकमग्निम्)। प्र०—अत्र 'घच्छौ च' अ० ४.४.११८. इति सूत्रेण अग्र-शब्दाद् भवार्थे घः प्रत्ययः १.१३.१०. **अग्रियः**=अग्रे भवोऽत्युत्तमः (स्तोमः=गुणप्रकाशसमूहक्रियः) १.१६.७. **अग्रियाः**=अग्रेभवाः [वाजाः=सत्कर्मसु वेगाः ४.३४.३. अग्रिया=अग्रगमनेनेति वा ऽग्रगरणेनेति वा ऽग्रसम्पादिन इति वा। अपि वा ऽग्रमित्येतदनर्थकमुपबन्धमाददीत निरु० ६.१५.१.]

अग्रुवः अग्रं गच्छन्त्यः सेनाः ७.२.५. अग्रसराः (प्रजाजनाः) ४.३०.१६. अग्रुगामिन्यो नद्यः। प्र०—अग्रुव इति नदीनाम० निघं० १.१३. या अग्रे गच्छन्ति ताः (स्वसारः=अङ्गुलयः) ३.२९.१३. अग्रगण्याः (स्त्रियः) १.१४०.८.

अग्रुः अग्रगन्ता (जनित्वान्=विद्वान्) ५.४४.७.

अग्रेगाः योऽग्रे गच्छति सः (विद्वान्) २७.३१. [अग्रे उपपदे गम्लृ गतौ धातोः 'जनसन०' सूत्रेण विट् प्रत्ययोऽनुनासिकस्य चाकारादेशः]

अग्रेगुवः अग्रे समुद्रेऽन्तरिक्षे गच्छन्तीति ताः (आपः=जलानि) १.१२. [ताः (आपः) यत्समुद्रं गच्छन्ति तेनाग्रेगुवः. श० १.१.३.७]

अग्रेणीः यथाऽध्यापकः शिष्यान्, पिता स्वसन्तानान् वा पुरस्तादेव सुशिक्षया विद्यां प्रापयति तथा ६.२. [अग्रे+णीञ् प्रापणे+क्विप् प्रत्ययः]

अग्रेराभिः येऽग्रे पान्ति रक्षन्ति तैः (मरुद्भिः=मनुष्यैः) ४.३४.७. **अग्रेराः**=पुरस्ताद्रक्षकाः (ऋभवः=विपश्चितः) ४.३४.१०. [अग्रे+पा रक्षणे+कः प्रत्ययः, ततः स्त्रियां टाप् प्रत्ययः]

अग्रेपुवः प्रथमां पृथिवीस्थसोमौषधिं सेविकाः। भा०—या मेघस्थास्ता द्वितीयाः (आपः=जलानि) १.१२. [अग्रे+पूङ् पवने+क्विप्, ततः प्रथमाबहुवचने रूपम्। ताः (आपः) यत्प्रथमाः सोमस्य राज्ञो भक्षयन्ति तेनाग्रेपुवः २७.१.१.३.७.]

अग्रेबधाय योऽग्रे पुरः शत्रून् वध्नाति हन्ति वा तस्मै (जनाय) १६.४०. [अग्रे+बधसंयमने (चुरादि०)+अच् प्रत्ययः, तस्मै]

अग्र्याय अग्रे भवाय सत्कर्मसु पुरस्सराय (सज्जनाय) १६.३०. [अग्रप्राति० 'अग्राद् यत्' अ० ४.४.११६. सूत्रेण तत्र भवार्थे यत् प्रत्ययः]

अघम् किल्विषम् ५.३.७. रोगालस्यपापं, मनोवाक्छरीरजन्यं पापम् १.९७.१. दारिद्र्यम् १.९७.५. भा०—पापाऽऽचरणम् ३५.६. अपराधम् ६.६.२८. [पापम् २.४१.११. अघं हन्तेर्निर्ह्रसितोपसर्ग आहन्तीति नि० ६.११.]

अघशंसम् अघस्य शंसितारं स्तेनम् ६.८.५. **अघशंसः**=योऽघं पापं शंसति स दस्युः २.४२.३. योऽघं पापं कर्त्तुं शंसति स स्तेनः १३.११. योऽघानि पापानि कर्माणि शंसति सः (रिपुः=शत्रुः) ३.३२. पाप-प्रशंसी स्तेनः, भा०—दुष्टाचारी जनः २९.४७. अघस्य पापस्य स्तोता चोरः, भा०—पीडाप्रदो दुर्जनः ३३.६९. पापप्रशंसकस्तेनः ४.४.३. हिंस्रः पापकृत् (स्तेनः=चोरः) ६.२८.७. दुष्टः स्तेनः ३३.८४. [अघोपपदात् शंसु (स्तुतौ) धातोरच् प्रत्ययः। शंसतीत्यर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. अघशंसम्=अघस्य शंसितारम् निरु० ६.११.१. अघशंस इति स्तेन-नाम निघं० ३.२४.]

अघत्तम् भुञ्जीयाताम् २८.४६. [घस्लृ अदने धातोर्लुङ् व्यत्ययेन आत्मनेपदम्, 'स स्यार्धधातुके' इति तत्वे 'झलो झलि०' इति सिचोलोपः]

अघः अहन्तव्यः (राजा) ५.२९.८. अघं पापं विद्यते यस्मिन् सः (दुर्जनः) १.४२.२.

अघा अन्धकाररूपा (भा०—रात्रिः) २८.१५.

अघायतः आत्मनोऽघमिच्छतो दोषकारिणः पुंसः १.९१.८. आत्मनोऽघमिच्छतः सङ्गात् (दुर्जनसमागमात्) ७.१५.१५. आत्मनोऽघमाचरतो (मनुष्यान्) ५.२४.३. पापी और पाप के इच्छुक (प्राणी का) आ० वि० १.२०. यः परस्याऽघमिच्छत्यघायति ततः (दुर्जनात्), प्र०—आचार्यप्रवृत्तिर्ज्ञापयति भवत्यघशब्दात् 'छन्दसि' परेच्छायां क्यच्, इति यदयम् 'अश्वाघस्यात्, इति क्यचि प्रकृते ईत्वबाधनार्थमाकारं शास्ति अ० ३.१.८. सूत्रेऽस्मिन् भाष्यकारस्य व्याख्यानाशयेनेदं सिध्यति इति बोध्यम् ३.२६. [अघ+क्यच्+शतृ]

अघायति आत्मनोऽघमिच्छति १.१३१.७. [अघ+क्यच्+लट्]

अघायते आत्मनोऽघमिच्छते (दुर्जनाय) ६.५१.६. [अघ+आत्मनेच्छायां क्यच्+शतृ। ततश्चतुर्थी]

अघायवः आत्मनोऽघेन पापेनाऽऽयुरिच्छवः (भा०—पापाचाराः पुरुषाः) ११.७९. [आत्मनोऽघं—पापमिच्छवः] (पापिनो मनुष्याः) ४.३४. **अघायुः**=आत्मनोऽघमिच्छुः (दुर्जनः) १.१४७.४. **अघायोः**=आत्मनोऽन्यायाचरणेनाऽघमिच्छतः (वृकात्=स्तेनात्) १.१२०.७. पापिनो

(जनस्य) ४.२.१०. आत्मनोऽघमिच्छोर्दुष्टाचारिणो (जनस्य) १६.५०. [अघ सुबन्ताद् इच्छायामर्थे क्यच्। 'क्याच्छन्दसी' ति क्यजन्ताद् उः प्रत्ययः]

अघाश्वाय हन्तुमयोग्याय शीघ्रं गमयित्रे (वैश्याय) १.११६.६. शीघ्रगमनाय ऋ० भू० १९३.

अघाः हन्याः ६.४८.१६. हिंस्याः ६.५९.८. [हन हिंसागत्योर् धातो रूपम्]

अघुक्षत् अपशब्दयेत् ५.४०.८. ['घुषिरविशब्दने' धातुं शब्दार्थे मन्यन्ते चन्द्रादयः। तस्य लुङि रूपम्]

अघोरऽचक्षुः प्रियदृष्टिः (ईश्वरः) सं० वि० ११४.

अघोरा अविद्यमानो घोर उपद्रवो यया सा (तनूः= विस्तृतोपदेशनीतिः) १६.२. [घुर भीमार्थशब्दयोः, ततः पचाद्यचि कृते घोरः, तत्प्रतिषेधोऽघोरः स्त्रियामघोरा]

अघ्नता अहिंसकेन (विदुषा) ५.५१.१५. **अघ्नतः**= अहिंसकस्य (राज्ञः) ७.२०.८. [हन्+शतृ प्रत्ययः नञ्समासश्च]

अघ्नत नित्यं घ्नन्ति अथर्व० ११.५.१९. [हन् हिंसागत्योर्धातोर्लङि झोऽदादेशश्छान्दसः]

अघ्न्यम् हन्तुमयोग्यमघ्न्याभ्यो गोभ्यो हितं वा 'अघ्न्यादयश्च उ० ४.११२. अनेनाऽयं सिद्धः 'अघ्न्या इति गोनामसु पठितम्' निघं० २.११.१.३७.५. **अघ्न्यस्य**=हन्तुं विनाशयितुमनर्हस्य यानस्य १.३.१९. **अघ्न्या**=हन्तुमयोग्या (गौः) १.१६४.२७. हनन न करने योग्य गाय सं० वि० १४१. **अघ्न्याः**=हन्तुमयोग्याः (गावः) ६.२२. वर्धयितुमर्हा हन्तुमनर्हा गाव 'इन्द्रियाणि' पृथिव्यादयः पशवश्च, प्र०—'अघ्न्या इति गोनाम निघं० २.११. अघ्न्या अहन्तव्या भवति अघघ्नीति वा निरु० ११.४३.३. **अघ्न्यायाः**=हन्तुमयोग्यायाः (धेनोः=वाण्या गोर्वा) ४.१.६. **अघ्न्ये**=गौरिव वर्त्तमाने (विदुषि स्त्रि) १.१६४.४०. हे हन्तुं तिरस्कर्त्तुमयोग्ये (पत्नि) ८.४३. **अघ्न्यौ**=हन्तुमनर्हे सत्यौ (स्त्रीपुरुषौ) ३.३३.१३. नञ्युपपदे [हन्+यक् प्रत्यये धातोरुपधालोपो हस्य घत्वं च उणादि ४.११२. सूत्रेण निपातनाद् अघ्न्या सिद्धयति। अथवा अघ्न्याप्राति० हितार्थे यत् प्रत्ययः]

अङ्कसम् लक्षणान्वितं मार्गम् ९.१५. लक्षणम् ४.४०.३.

अङ्कांसि लक्षणानि ९.१४. चिह्नानि ४.४०.४.

अङ्काः लक्षणानि १.१६२.३. प्र० [अञ्चु गति पूजनयोः' धातोः 'अञ्च्यञ्जियुजि०' उणादि० ४.११६. सूत्रेण असुन् प्रत्ययः कुत्वञ्च। अङ्कति गच्छति येन तद् अङ्कः अङ्कांसि कुटिलानि, अङ्कोऽञ्जतेः नि० २.२८.]

अङ्काऽङ्कम् गणितविद्या १५.५. प्र०—आपो वा अङ्काऽङ्कं छन्दः शत० ८.५.२.६.

अङ्कीव यथाऽङ्कुशी तथा ३.४५.४. [अङ्कोऽस्यास्तीति विग्रहः मत्वर्थे तनिः प्रत्ययः]

अङ्कुपम् अङ्कूनि कुटिलानि गमनानि पाति रक्षति तज्जलम् १५.४. (अङ्कु+पा+कः प्रत्ययः। आपो वाऽअङ्कुपं छन्दः॥ श० ८.५.२.६.)

अङ्कूयन्तम् यस्मिन्नङ्कूनि प्रसिद्धानि चिह्नानि प्राप्नुवन्ति तम् (अग्निं=विद्युतम्) प्र०—अत्र 'संहितायाम्' इति दीर्घः ६.१५.१७. [अंङ्कु+या+शतृ। पूर्वपदस्य दीर्घत्वम्]

अङ्क्ताम् संयोजयतु प्रकटं संयोजयतीति वा २.२२. [अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु धातोर्लोटिरूपम्। व्यत्येनात्मनेपदम्]

अङ्क्ते प्रसिद्धो भवति ५.१.३. प्रकाशयति १.१२४.८. [व्यक्ति म्रक्षणाद्यर्थकाञ्जूधातो रूपम्, व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अङ्ग योऽङ्गति जानाति तत्सम्बुद्धौ (राजन्) १०.३२. क्षिप्रकारिन् सर्वसुहृद् (इन्द्र=सभाद्यध्यक्ष) १.८४.९. मित्र (मनुष्य) १.८४.७. सखे (परीक्षक मनुष्य) ६.५२.३. सुहृत् (जिज्ञासो जन) ७.५६.२. सम्बोधने (इन्द्र=सभापते) ६.३७. शीघ्रकारिन् (इन्द्र= सभाद्यध्यक्ष) १.८४.८. अङ्गवद् वर्त्तमान (इन्द्र= पूर्णविद्य राजन्) ६.४४.१०. सर्वमित्र (परमेश्वर) १.१.६. मित्र जीव ऋ० भू० ११७. प्रिय (ईश्वर) १.१६४.७. **अङ्गेन**=कमनीयेन (अणुना) २३.५०. अङ्गेभिः=विविधाङ्गैः ३.७.४. अङ्गैः ११४१.१८. शिर आदिभिर्ब्रह्मचर्यादिभिर्वा ६.८९.८.

अङ्गमङ्गम् प्रत्यवयवम् १२.८६. [वीप्सायामर्थे द्वित्वम्। अङ्गेति क्षिप्रनाम, अङ्क्तिमेवाञ्चितं भवति निरु० ५.१७. अङ्गम्=अङ्गनादञ्चनाद्वा निरु० ४.३.२. अङ्गनि होत्रकाः ऐ० ६.८. अङ्गानि वाव होत्राः गो० ३.६.६. अङ्गानि वै होत्रा शङ्गिनः कौ० १७.७.२९.८. अंगानि वै विश्वानि धामानि श० ३.३.४.१४. वैश्वदैव्यानि ह्यङ्गानि ऐ० ३.२.]

अङ्गदङ्गात् प्रत्यङ्गात् २२.४३. अङ्ग अङ्ग से उत्पन्न हुए वीर्य से स० प्र० १२.

अङ्गानि अङ्क्तिानि व्यञ्जकानि वा। प्र०— अङ्गाङ्गेति क्षिप्रनामाङ्क्तिमेवाङ्क्तिं भवति निरु०

५ १७. श्रोत्रादीनि १२.४. अवयवाः २०.८. शिर आदीनि २०.६. योगाङ्गानि १६.६३. सेनाऽवयवान् १७.४४. **अङ्गेषु** राज्याऽवयवेषु २०.१०.

अङ्गे अङ्गे=प्रत्यङ्गम् ॥६.२०.

अङ्गिरः प्राणप्रियः (जगदीश्वरः) २.२३.१८. अङ्गानां मध्ये रसरूपः (विद्वन्) ६.२.१०. अङ्गेषु रममाणः (विद्वान्) ५.८.४. अङ्गति प्रापयति यः सः (भौतिको ऽग्निः) ३.३. प्र०—अङ्गाराऽअङ्कनाप्र० अञ्चनाः निरु० ३.१७. अङ्गारस्थः (प्रसिद्धोऽग्निः) ५.६. अञ्चिता (अग्नेसूर्यरूपः) ५.६. अङ्गानां रसः (भौतिकोऽग्निः) ५.६ **अङ्गिरे** प्राणवत्प्रिये पत्यौ ४.५१.४. [गत्यर्थक 'अगि' धातोर्बाहुलकात् किरच् प्रत्ययः]

अङ्गिरस्तम अङ्गति गच्छति जानाति सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ (विद्वन्) १.७५.२. अतिशयेन सारग्राहिन् (अग्ने=राजन्) १२.११६.

अङ्गिरस्तमः अतिशयेन प्राणवद् वर्त्तमानः (इन्द्रः=परमेश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.१००.४. अतिप्रशस्तः (इन्द्रः=ईश्वरः) १.१३०.३. अतिशयेनाङ्गिरा अङ्गिरास्तमः जीवात्प्राणादन्य मनुष्यादत्यन्तोत्कृष्टः (ईश्वरः) १.३१.२ [अङ्गिरस् प्राति० आतिशयिकस् तमप् प्रत्ययः]

अङ्गिरस्वत् योऽङ्गानां रसः प्राणस्तद्वत् १.४५.३. अङ्गिरसा प्राणेन तुल्यस्य (अग्नेः=विद्युदादेः) ११.११. अङ्गिरसा सूर्येण तुल्यम् (अग्नि=भूमिस्थं विद्युतं वा) ११.१६. अङ्गिरोभिरङ्गारैस्तुल्यम् (विद्वांसम्) ११.६. अङ्गिरोभिः प्राणैस्तुल्यम् (अग्निं=विद्युदादिस्वरूपम्) ११.६. अङ्गैस्तुल्यम् (अग्निं=विद्युदादिस्वरूपम्) ११.६. प्राणानां बलमिव १.६२.१. प्रशस्तप्राणवत् (विद्वांसम्) १.७८.३. अङ्गिरसा प्राणेन तुल्यं (स्वरूपम्) २.१७.१. अग्निवत् ११.६१. प्राणवत् ११.६१. आदित्यवत् ११.६१. आकाशवत् १४.१६. सूत्रात्मवायुवत् १४.१२. अङ्गिरसो विद्वांसो विद्यन्ते यस्त तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ३.३१.१६ प्रशस्ता अङ्गिरसो वायवस्तद्वत् (मरुतः=जगद्धितैषिणो जनाः) ६.४६.११. अग्निवत् ११.६५ समस्तौषधिरसवत् ११.६५. सूर्यवत् ११.६५. अङ्गानां रसः कारणं तद्वत् १४.६. कारणवत् १३.१६. विद्युद्वत् ११.६१. ब्रह्माण्डस्थ-शुद्धवायुवत् ११.६०. विज्ञानवत् ११.६०. ओषधिरसवत् ११.६१. आकाशवत् ११.५८. सूत्रात्मप्राणवत् (विद्वान् जिज्ञासुर्वा) २७.४५. हिरण्यगर्भवत् १२.५३. [अङ्गिरस्वत्……अग्निवत् श० ६.३.३.३. अङ्गिरस् प्राति० 'तेन तुल्यं क्रिया चेद् वतिः' अ० ५.१.११५ सूत्रेण तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः। 'नभोऽङ्गिरोमनुषां वत्युपसंख्यानम्' वा० १.४.१८ वार्तिकेन भसंज्ञकत्वेन पदसंज्ञायां बाधितायां रुत्वं न भवति। प्राणो वै यमोऽङ्गिरस्वान् पितृमान् तै० आ० ५.७.११.]

अङ्गिरस्वान् अङ्गिरसो वायोः सम्बन्धो विद्यते यस्य स (इन्द्रः=विद्युत्) २.११.२०. बहुविधाः प्राणा विद्यन्ते यस्मिन् सः (विद्वान्) ६.१७.६. **अङ्गिरस्वते**=विद्युदादिविद्या यस्मिन् विद्यते तस्मै प्राणवते (यमाय=न्यायाधीशाय) [अङ्गिरस् प्राति० मतुप्, 'तसौ मत्वर्थे' सूत्रेण भत्वाद् रुत्वं न भवति]

अङ्गिराः पृथिव्यादीनां ब्रह्माण्डस्याङ्गानां प्राणरूपेण शरीरावयवानां चाऽन्तर्यामिरूपेण रसरूपोऽङ्गिरास्तत्सम्बुद्धौ ! (अग्ने=परमेश्वर) प्र०—'प्राणो वा अङ्गिराः शत० ६.३.७.३. "देहेऽङ्गारेष्वङ्गिरा अङ्गारा अङ्कना अञ्चना निरु० ३.१७ अत्राप्युत्तमानामङ्गानां मध्येऽन्तर्यामी प्राणाख्योऽथो गृह्यते १.१.६. प्राणप्रिय (ईश्वर) १.६. अङ्गति प्रापयति यः सोऽङ्गिरः (अग्निः=अङ्गिराः) "अङ्गारा अङ्कना अञ्चनाः" निरु० ३.१७.३.३. प्राणानां रसभूत परमेश्वर १.१.६. विद्यारसयुक्त (अग्ने=विद्वन्) १२.८. अङ्गानां रसरूप (विद्वन् पुत्र) १.७५.५. प्राण इव प्रिय (सन्तान) ११.४५. प्राण इव वर्त्तमान (अग्ने=विद्वन्राजन्) ४.३.१५. अङ्गेषु रममाणो (विद्वान्) ५.८.४. अङ्गति जानाति यो विद्वांस्तत्सम्बुद्धौ १.११२.१८. [भृगूणामङ्गिरसां तपसा तप्यध्वम् तै० सं० १.१.७.२. वीरा वैतदजायन्त यदङ्गिरस. जै० ३.२६४. तान् हादित्यानङ्गिरसो याजयाञ्चक्रुः गो० २.६.१४. अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः तै० सं० २.६.१२.६. अङ्गारेष्वङ्गिराः (सम्बभूव) नि० ३.१७.१. ये अङ्गारा आसंस्तेऽङ्गिरसो ऽभवन् ऐ० ३.३४. अङ्गारेभ्यों ऽङ्गिरसः (समभवन्) श० ४.५.१.८. ये अङ्गिरसः स रसः गो० पू० १.६. अङ्गिरा उ ह्यग्निः श० १.४.१.२५. अङ्गिरा वा ऽअग्निः श० ६.४.४.४. प्राणो वा अङ्गिराः श० ६.१.२.२८. आदित्याश्चैवाङ्गिरसश्च श० ३.५.१.१३. ते हादित्याः पूर्वे स्वर्गं लोकं जग्मुः पाश्यचेवांगिरसः षष्टयां वा वर्षेषु ऐ० ४.२७. अङ्गिरसः स्वर्गं लोकं यतो रक्षांस्यन्वसचन्त ता० ८.६.५. अङ्गिरसां वा एकोऽग्निः ऐ० ६.३४. तं हाङ्गिरा उद्गीथमुपासांचक्रिरे। अङ्गिरसं मन्यन्ते अङ्गानानां यद्रसः छा० १.२.१०.

अङ्गिरसः येऽङ्गेषु रसभूतस्य प्राणाख्यस्य परमेश्वरस्य

ज्ञातारः (पितरः) ऋ० भू० २५८. वायव इव ६.६५.५. प्रकाशिकाः किरणाः ऋ० भू० ५. प्राणा इव विद्यासु व्याप्ता जनाः (योगिनः) ५.११.६. वायवः १.७१.२. सर्वविद्यासिद्धान्तविदः (पितरः=पालकाः पित्रादयः) १९.५०. प्राणा इव बलिष्ठाः (वीराः=व्याप्तयुद्धविद्याजनाः) ३.५३.७. सर्वस्याः सृष्टेर्विद्याङ्गविदः (पितरः=पालका ज्ञानिनः) ३४.१७. प्राणा इव सद्विद्यासु व्याप्ताः (विद्वांसः) ७.४२.१. प्राणा इव (जनाः) ७.५२.३. **अङ्गिरसाम्**=प्राणानामङ्गाराणां वा। प्र०—'प्राणो वै अङ्गिराः' शत० ६.५.२.३; 'अङ्गारेश्वङ्गिरा अङ्गारा अङ्कना अञ्चनाः, निरु० ३.१७.१.१८. विद्याधर्मराज्यप्राप्तिमतां विदुषाम् प्र०—अङ्गिरस इति पदनामसुपठितम् निघं० ५.५. १.६२.३. प्राणविद्याविदाम् (विदुषाम्) १.१०७.२. प्राणिनाम् १.१२७.२. प्राप्तविद्यासिद्धान्तरसानां (विद्वज्जनानाम्) १.१२१.१. अङ्गानां रसप्राणवत्प्रियाणां (विशां=प्रजानाम्) १.१२१.३.

अङ्गिराः पृथिव्यादीनां ब्रह्माण्डस्य शिव आदीनां शरीरस्य रसोऽन्तर्यामिरूपेणाऽवस्थितः (पुरुषः=ईश्वर) ३१.१. अङ्गानां रसरूपः प्राण इव ५.४५.७. अङ्गेषु रसवद्वर्त्तमानः (अतिमेधाविजनः) ३.३१.७. प्राण इव प्रियो वत्सः १.८३.४. अङ्गानां रस इव वर्त्तमानो यद्वाऽङ्गिभ्यो जीवात्मभ्यो सुखं राति ददाति सः (परमेश्वरो विद्वान्वा) ३४.१२. प्राणविद्यावित् (कण्वः=मेधाविजनः) १.१३९.९. **अङ्गिरोभिः**=प्राणैर्बलैः १.६२.५. वायुभिः ६.१८.५. अङ्गेषु रसभूतैः प्राणैः सह १.१००.४. अङ्गैः सदृशैः किरणैः २.१५.८. **अङ्गिरोभ्यः**=प्राणेभ्य इव विद्वद्भ्यः १.१३२.४. प्राणविद्याविद्भ्यो (देवेभ्यो=विद्वद्भ्यः) १.१३९.७. प्राणरूपेभ्यो वायुभ्यः, प्र०—'प्राणो वा अङ्गिराः, शत० ६.१.२.२८.१.१५१.३. [गत्यर्थक 'अगि' धातोः 'अङ्गेरसि' उणा० ४.२३६. सूत्रेणासि प्रत्ययः, इरुडागमश्च]

अङ्गुलयः अङ्गन्ति प्राप्नुवन्ति याभिस्ताः १८.२२. **अङ्गुलीः**=करचरणाऽवयवाः २०.६. [गत्यर्थक 'अगि' धातोर् औणादिक उलिः प्रत्ययः। अङ्गुलयः कस्माद्=अग्रगामिन्यो भवन्तीति वाग्रगालिन्यो भवन्तीति वाग्रकारिण्यो भवन्तीति वाग्रसारिण्यो भवन्तीति वाङ्कना भवन्तीति वाञ्चना भवन्तीति वापि वाभ्यञ्चनादेव स्युः ॥ नि० ३.८. नानावीर्या अङ्गुलयः ॥ तैसं० ६.१.९.५]

अङ्गेन कमनीयेन (अणुना) २३.५०. **अङ्गेभिः**=विविधाऽङ्गैः ३.७.४. **अङ्गेषु**=राज्याऽवयवेषु २०.१०.

अङ्गैः=शिर आदिभिर्ब्रह्मचर्यादिभिर्वा १.८९.८. श्रोत्रादि इन्द्रियों, अङ्गयों तथा सेनादि उपाङ्गों से आर्या० २.२७. योगाङ्गैः १९.९३. अवयवैः ३.१.५. अञ्जू [व्यक्ति-म्रक्षणकान्तिगतिषु) धातोर्भावे घञ्प्रत्यये रूपम्]

अङ्ग्घि शोधय १३.४१. [गत्यर्थक 'अगि' धातोर्लोट्, बहुलं छन्दसीति शपो लुक्]

अङ्ग्याः अङ्गेषु भवाः (सूचीकाः=वृश्चिकादयः) १.१९१.७. [अङ्गप्राति० 'भवे छन्दसि' (अ० ४.४.११०) सूत्रेण यत् प्रत्ययः]

अङ्घारिः अङ्घस्य कुटिलगामिनो जीवास्याऽरिः शत्रुः (भगवान्) ५.३२. स्वभक्तों का जो अघ पाप उसके अरि शत्रु होकर उस समस्त पाप के नाशक (ईश्वर) आ० वि० २.१७. **अङ्घारे**=अङ्घस्य छलस्याऽरिस्तत्सम्बुद्धौ (सज्जन) ४.२७. [अघि गत्याक्षेपे भ्वादिः, ततः पचाद्यच् प्रत्ययेऽङ्घः, तस्यारिः। अङ्घारिरसि बम्भारिः. मै० १.२.१२.]

अङ्घ्रिणा गमनसाधनेनाऽग्निना २.८. [अघि गत्याक्षेपे (भ्वादि०) धातोः औणादिकः क्रिन् प्रत्ययः]

अच ऊर्ध्वं गच्छति ५.८३.८. **अचथः**=गच्छथः ५.७८.६. [अञ्चु गतौ याचने च। अचु इत्येके धातोर्लोट् लडर्थे]

अचक्रत् करोति ४.१८.१२.

अचक्रया अविद्यमानचक्राकारया (गत्या) ४.२६.४. **अचक्रे**=अप्रतिहते १.१२१.४. **अचक्रेभिः**=अविद्यमानचक्रैः (दण्डसाधनैः) ५.४२.१०. [चक तृप्तौ प्रतिघाते च, डुकृञ् करणे धातोर्वा कः प्रत्य०। 'कृञादीनां के द्वे भवतः' (अ० ६.१.१२) वार्ति० द्वित्वे चक्रम् (चक्रं चकतेर्वा निरु० ४.२७]

अचक्षयत् दर्शयति २.२४.३. **अचचक्षम्**=कथयेयम् ५.३०.२. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अददि०) तस्य णिचि रूपम्]

अचरत् चरति ४.३.१०. आचरेत् ३.४८.३. **अचारिषम्**=चरितवान् २.२८. अनुतिष्ठामि, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् १.२३.२३. चरेयम् २०.२२. [चर गतो भक्षणे च (भ्वादि०)]

अचरन् स्थिरः (ईश्वरः) ३.५६.२. [चर गतौ धातोः शतृ प्रत्ययः, तत्प्रतिषेधः]

अचरती इतस्ततः स्वकक्षां विहाय गतिरहिते (द्यावापृथिवी) १.१८५.२. [चर गतौ, ततः शतृ+ङीप्, छान्दसत्वान् नुमोऽभावः]

अचरमाः नाऽन्याऽवयवाः (वायवः) ५.५८.५. [न चरमा अचरमा इति नञ्समासः]

अचष्ट उपदिशति, प्रकाशितवान्, प्रख्यापयेत् ४.१८.३. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, दर्शनेऽपि (अदादि०) धातोः सामान्ये लुङ्]

अचिकित्वान् अविद्वान् (जनः) १.१६४.६. [कित निवासे रोगापनयने च, ततो लिटः स्थाने क्वसुः चिकित्वांश्चेतनवान् निरु० ३.११.]

अचिक्रदत् शब्दं कुर्वन् (विद्युद्रूपोऽग्निः) ३८.२२. भृशमाक्रन्दति ४.२४.८. विकलयति १.५८.२. आह्वयेत् ७.२०.९. आह्वयति ७.३६.३. [क्रदि आह्वाने रोदने च। क्रद इत्यपरे तस्य णिचि लुङि रूपम्]

अचित्तम् चेतनरहितं (छर्दिः=गृहम्) ६.४६.१२. चेतनतारहितम् (वस्तु) ४.२.११. **अचित्तात्**=अविद्यमानं चित्तं यत्र तस्मात् (तनयित्नोः=विद्युतः) ४.३.१. **अचित्तान्**=प्राप्तदारिद्र्याऽवस्थान् (जनान्) ३.१८.२. [चिती संज्ञाने (भ्वादि०) ततः क्तः प्रत्ययः. चित्तमिति प्रज्ञा नाम निघं० ३.९. चित्तं चेततेः निरु० १.६]

अचित्तिम् अकृतचयनां (क्रियाम्) ४.२.११. अज्ञानम् २७.६. **अचित्तिभिः**=अचेतनाभिः (अज्ञानादिभिः) ४.१२.४. **अचित्ती**=अचित्त्या अविद्यया ४.५४.३. [चिती संज्ञाने ततः क्तिन्। चित्तिभिः=कर्मभिः. निरु० २.९.]

अचित्रम् अनद्भुतं (सत्कर्म) ६.४९.११. **अचित्रे**= अनाऽश्चर्ये (विमध्ये=विशेषाऽन्धकारे) ४.५१.३. [चिञ् चयने धातोः 'अभिचिमि०' उणा० ४.१६४ सूत्रेण क्तः प्रत्ययः। चित्रम्=चायनीयम् (धनम्). निरु० ४.४]

अचिध्वम्=प्राप्नुत गच्छथ ५.५५.७. सञ्चिनुत १.८६.२. [अञ्चु गतौ याचने च, अचु इत्येके, अथवा चिञ् चयने धातोर्लुङि रूपम्]

अचिष्टुः=गमनकर्त्ता (त्वष्टा=विद्युत्) २०.४४. [गत्यर्थक 'अचु' धातोः ताच्छील्ये तृन् प्रत्ययः षुगागमश्च]

अचुक्रुधत् भृशं क्रोधयति ५.३४.७. [क्रुध कोपे, ततो णिजन्ताल् लुङ्]

अचुच्यवीतन प्रेरयन्ति प्राप्नुवन्ति वा, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् 'बहुलं छन्दसीति शपः श्लुः 'बहुलं छन्दसीतीडागमः' 'तपतनप्०' इति तनबादेशः, पुरुषव्यत्ययः, सायणाचार्येणेदं भ्रान्त्या लुङन्तं व्याख्याय 'बहुलं छन्दसि' इति शपः शलुरिति सूत्रं योजितं, तत्र च्लेरपवादत्वाच्छबेव नाऽस्ति, कुतः श्लुः कस्य लुक् ? तस्मादशुद्धमेव १.३७.१२. **अचुच्यवुः** च्यावयन्ति नाशयन्ति १२.८४. प्राप्नुवन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.१६८.४. च्यावयेयुः ५.५३.६. च्यवन्तां प्राप्नुवन्तु १.४५.८. [च्युङ् गतौ ततो णिजन्ताल् लुङ्)

अचेत् चेतयति ४.२४.८. **अचेतयत्**=चेतयेत् सञ्ज्ञापयेत् ३.३४.५. **अचेति**=सञ्ज्ञाप्यते। प्र०—अत्र 'चिती सञ्ज्ञाने' इत्यस्माल्लुङि कर्मणि चिण् १.८८.५. सम्यग् विज्ञायताम् १.११३.४. चेतयति ६.२७.४. सञ्ज्ञायते १.३९.४. **अचैत्**=चिनुयात् ६.४४.७.

अचेतसम् अज्ञानिनम् (दुर्जनम्) ७.६०.६. जडबुद्धिम् (जनम्) ७.६०.७. **अचेतसः**=निर्बुद्धयः (भाग्यहीना जनाः) ७.१८.८. **अचेतानस्य**=चेतनता रहितस्य मूर्खस्य ७.४.७. **अचेताः**=ज्ञानरहिताः (जनाः) १.१२०.२. ['चेतः' इति प्रज्ञानाम निघं० ३.९. अचेतानस्य=अचेतयमानस्य तत्प्रमत्तस्य भवति निरु० ३.२.१.]

अचोदते अप्रेरकाय (हिंसकाय जनाय) ५.४४.२. [प्रेरणार्थक चुद् धातोः शतृ]

अचोदयः धर्मे प्रेरयेः, प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् १.४२.५. **अचोदयत्**=प्रेरयति ५.३१.३. [प्रेरणार्थकचुद् (चुरादि०) धातो रूपाणि]

अच्छ=श्रेष्ठाऽर्थे ३.२५. सम्यग्रीत्या ४.२०. सुष्ठु १.१०४.५. श्रैष्ठ्ये ३.५७.३. यथाक्रमम् २.१९.३. उत्तमरीत्या १.१२३.४. निश्शेषार्थे १.१३०.१. शोभनतया १.१२९.५. उत्तमेन प्रकारेण १.४४.४. सुष्ठुरीत्या २०.४९. शोभने ३३.५५. सम्यक् ३.१.१. अन्व०—प्रशस्तम् १.६.६. साक्षात् १.२.२.. [अच्छाभेराप्तमिति शाकपूणिः निरु० ५.२८.२.]

अच्छान् यच्छन्तु प्रददतु। प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति यलोपः ६.२८.५. [यमु उपरमे धातोः सामान्ये लङ्। यच्छादेशः]

अच्छान्तः विद्ययाऽऽच्छादयन्तः (विद्वांसः) १.१६५.१२. [छद अपवारणे धातोर्णिजन्तान् छतृ प्रत्ययः। छन्दसो दकारलोपश्च]

अच्छिद्यमानया छेत्तुमनर्हया (सूच्या=सीवनसाधनया) २.३२.४. [छिदिर् द्वैधीकरणे कर्मणि शानच्]

अच्छिद्रम् छिद्रवर्जितम् (शर्म=गृहम्) ५.६२.९. छेदरहितं (सङ्गम्) ६.४९.७. **अच्छिद्रस्य**=अखण्डितस्य (दृते=मेघस्य) ६.४८.१८. **अच्छिद्रा**=अच्छिन्नानि (शर्म=गृहाणि) ३.१५.५. छिद्ररहितानि. भा०—रोगरहितानि (गात्रा=गात्राणि) २५.४७. द्विधाभावरहितानि (गात्रा=अङ्गानि) १.१६२.१८. अच्छिद्राणि

(शर्माणि) १.५८.८. अच्छिन्ना: (पदार्था:) १३.१५.५. **अच्छिद्रा:**=छिद्ररहिता: (पदार्था:) १.१५२.१. **अच्छिद्रेण**=न विद्यते छिद्रं छेदनं यस्मिँस्तेन (यज्ञेन) १.३१. छिद्ररहितेन एकरसेन (पाणिना=किरणसमूहेन व्यवहारेण) १.१६. छिद्ररहितै: (रश्मिभि:=किरणै:) १.१२. निरन्तरेण व्यापनेन प्रकाशेन वा (पाणिना=स्तुतिसमूहेन) १.२०. निरन्तरेण (यज्ञेन) १.३१ अविनाशिना विज्ञानेन ४.४. अविच्छिन्नेन निरन्तरेण (पवित्रेण=व्यवहारेण) १०.६. **अच्छिद्रे**=अदोषे (विद्युदन्तरिक्षे) ११.३० [छिदिर द्वैधीकरणे तत:, स्फायितञ्चि० इत्युणादिना रक् तत्प्रतिषेध:]

अच्छिद्रोति: अच्छिद्राऽप्रच्छिन्ना द्वैधीभूता ऊतीरक्षणादिक्रिया यस्मात् स: (शिशु:) १.१४५.३. [अच्छिद्रा+रक्षणाद्यर्थक-अवधातो: क्तिनि 'ऊतियूति०' निपातनात्साधु:]

अच्छिन्नपत्रा: अविच्छिन्नानि पत्राणि कर्मसाधनानि यासां ता: (देवी:=विदुषां स्त्रिय:) १.२२.११. अच्छिन्नानि पत्राणि यासां ता: (प्रजा:) १३.३०. अखण्डितानि पत्राणि वस्त्राणि यानानि वा यासां ता: (देवी:=दिव्यगुणप्रदा: स्त्रिय:) ११.६१. **अच्छिन्नम्** छेदभेदरहितम् [अच्छिन्नम्=नञ्+छिद्+क्त: । पत्रम्=पंत्लृगतौ धातो: 'दाम्नीशस्०' (अ० ३.२.१८२) सूत्रेण करणे ष्ट्रन् प्रत्यय:] (इन्द्रं=विद्युतम्) २०.४३. **अच्छिन्नस्य**=अखण्डितस्य (द्रव्यस्य) ७.१४. [नञ्+छिद्+क्त:]

अच्छेत: अच्छं निर्मलं स्वरूपमित: प्राप्त: (विश्वकर्मा=सभापति:) ८.५४. [अच्छ+इण् गतौ+क्त:]

अच्छेदि छिद्येत् १.११६.१५. [छिदिर् द्वैधीकरणे धातो: कर्मणि लुङ्]

अच्छोक्तिभि: अच्छ श्रेष्ठा उक्तयो वचनानि यासु स्तुतिषु ताभि: १.६१.३. शोभनैर्वचोभि: १.१८४.२. **अच्छोक्तौ**=सत्योक्तौ सम्यग्वचने वा ५.४१.१६. [अच्छ+वच्+क्तिन् । वकारस्योकार: संप्रसारणेन]

अच्यत सम्यक् प्राप्नुत ५.५४.१२. [अचु गतौ धातो रूपम्]

अच्यवयत् निपातयति २.४४.२. [च्युङ् गतौ, ततो णिजन्ताल् लङ्]

अच्युतच्युत् योऽच्युतेषु च्यवते ताँश्च्यावयति (इन्द्र:=परमेश्वरो विद्युद्वा) २.१२.९. योऽच्युतमचलन्तं च्यावयति (सूर्य:) ६.१८.५. [अत्र पर्णांशुषिवण् णिलुक् । अच्युत=च्युङ् गतौ+क्त:, तत्प्रतिषेध: । च्युत्=च्युङ् णिच्+क्विप् । एनयो: समास:]

अच्युतम् कारणरूपेण प्रवाहरूपेण वाऽविनाशि (रज:= पृथिव्यादिलोकम्) १.५६.५. नाशरहितम् (विद्युज्ज्योति:) ६.१५.१. अविनाशिनम् २.३.३. **अच्युत:**=अक्षय: (इन्द्र:) १.५२.२. नाशरहित: (गन्ध:) २०.२७. **अच्युता**=नाशरहितानि (शम्बराणि=अभ्राणि) २.२४.२ अविनाशिना (प्रेम्णा) ६.२२.६. क्षेतुमशक्येन (ओजसा) १.८५.४. क्षयरहितानि (जन्तुविशेषाणि) ६.३१.२.

अच्युतानाम् कारणजीवानाम् ७.२५. **अच्युतानि**=अक्षीणानि शत्रुसैन्यानि ३.३०.४. [अग्निरच्युत: श० १.६.१.६]

अच्युतक्षित् योऽच्युतान् नाशरहितान् पदार्थान् क्षियति निवासयति स: (ईश्वर:) ५.१३.

अच्युतक्षित्तम: योऽच्युतं क्षियति निवासयति सोऽतिशयित: (ईश्वर:) ७.२५. [अच्युतोपपदात् 'क्षि निवासगत्यो:' धातो: क्विप् । अच्युतक्षिदसि दिवं दृंह (अन्तरिक्षं स्कभान) तै सं० १.२.१२.३]

अज जानीहि १.१७४.३ अजति प्रकाशं प्रक्षिप्य द्योतयति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२३.१३. प्रक्षिप १.४२.३. समन्ताद् दूरे प्रक्षिप ६.४७.३१. विज्ञापय ६.५५.६. [अजगतिक्षेपणयोर् धातोर्लोट्]

अजकावम् योऽजान् जीवान् कावयति पीडयति तम् (रोगं पापाचरणं वा) ७.५०.१. [कुशब्दे धातोर्णिजन्तात् 'कर्मण्यण्' (अ० ३.२.१.) सूत्रेणाण् प्रत्यय: । अनेकार्थत्वाद् धातूनामत्र पीडनार्थे कु धातु:]

अजगन् गच्छेत् । प्र०—अत्र लङि तिपि 'बहुलं छन्दसि' इति शप: श्लु: 'मो नो धातो:' इति मस्य न: १.१३०.९. गच्छन्ति १.१८७.७. गमयेयु: ५.३१.१०. पुन: पुन: प्राप्नोति १.१६१.४. प्राप्नुया: ३.९.२. गच्छन्तु ७.१८.७. [अजगन्=गतिकर्मा निघं० २.१४]

अजगर: महान् सर्प: २४.३८.

अजतम् प्रापयत: २.३९.७. **अजति**=गच्छति ५.३७.४. प्राप्नोति ५.३४.७. जानाति प्रक्षिपति वा १.१६१.१०. प्रक्षिपति ६.६६.७. प्राप्य रक्षति १.३३.३. **अजतु**=ददातु प्राप्नोतु वा ६.५४.१०. **अजते**=क्षिपति; प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् । १.९५.७. **अजथ**=गच्छथ ५.५४.४. **अजध्वम्**=प्राप्नुत ६.४८.११. [अज गतिक्षेपणयोर् धातो रूपाणि]

तत

अजनत् जनयन्ति ४.५.५. **अजनन्**= जनयन्ति

२.१३.५. **अजनयत्**=जनयति १२.१. **अजनयतु**=प्रसिद्ध करे सं० वि० १३४. **अजनयन्**=जनयन्ति १.६६.२. उत्पादयन्तु २०.३०. **अजनयन्त**=जनयन्ति ४.१.१२. उत्पादयन्ति १.१६८.९. प्रकटयन्ति १.५९.२. **अजनयः**=जनयसि, प्र०—अत्र लडर्थेलङ् १.९१.२२. जनयेः ३४.२२. **अजनि**=जनयेत् २.३४.२. जनयति १.७४.३. जायेत १.१४४.४. जायते २.५.४. **अजनः**=जनयति २.१३.७. **अजनिष्ट**=जायते १.१२३.९. जनितवान् १७.३२. जनयति ५.३२.३. जातः १५.२७. जनयेत् २.५.१. जायते १.१३३.१. जनयति ५.३२.३. [जनी प्रादुर्भावे धातो रूपाणि । पर्णंछुषिवण्णोर्लुक् । छान्दसत्वात् शपः श्यन् न भवति]

अजयत् बढ़ाते हो ९.३२. जयति २३.१७. जयेत् ४.७.११. जयेदुत्कर्षेत् ९.३१. **अजयः**=जय १९.७१. जयति १.३२.१२. **अजयताम्**=उत्तम करो ९.३१. [जि जये धातो रूपाणि]

अजनयन् अप्रकटयन् (जनः) २.१०.३. [जनी प्रादुर्भावे+णिच्+शतृ । नञ्समासः]

अजनयः अजायमानाः (मरुतः=वायवः) १.१३४.४. [नञ्+जनी प्रादुर्भावे+इण् (उणादिः) प्रत्ययः]

अजपालम् अजानां रक्षकम् (जनम्) ३०.११. [अज+पा रक्षणे धातोर् णिजन्तात्+अण् प्रत्ययः]

अजभर्त्तन धारण करो सं० वि० १९८. [डुभृञ् धारणपोपणयोर् धातो रूपम्]

अजरन्तीम्=वयोहानिरहिताम् (महीं=भूमिम्) २१.५. [जरन्तीम्=जॄष् वयोहानौ धातोः शतृ+ङीप् । नञ्समासः]

अजर! जरादोपरहित (अग्ने=विद्वज्जन) १.१२७.९. योऽजे जन्मरहित ईश्वरे रमते तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यविहितो डः १.१२७.९. स्वयं जरादोपरहित (अग्ने=ईश्वर) १.५८.४. जरारोगरहित (ब्रह्म) ६.२.९. **अजरम्**=जरारहितम् (अग्निम्=ईश्वरम्) ५.६.४. जरादिरोगरहितम् (चक्रम्) १.१६४.२. वयो नाशहीनम् (श्रवः=यशः) १.१२६.२. जरारहितं शरीरम् ६.२१.१. हानिरहितम् (इन्द्रं=विद्युतम्) ६.३८.३. जराव्याधिरहितम् (रुद्रं=परमात्मानम्) ६.४९.१०. सनातनं नाशरहितं (राष्ट्रम्) ऋ० भू० २२३. जरादोपरहितं (चक्रम्) १.१६४.१४. अक्षयं (ब्रह्म=महद्धनम्) ३.८.२. नाशरहितं (क्षत्रं=राज्यं धनं वा) ७.१८.२५. **अजरः**=जरारोगरहितः (सूर्यो जीवात्मा परमात्मा वा) ६.६८.९. ना[illegible] स्वस्वरूपेण जीर्णाऽवस्थारहितः (ईश्वरः) १.५८.२. जरारहितः (राजा) ६.४८.३. वृद्धावस्थारहितः (राजा) ५.४४.३. नाशरहितः (पावकः) ५.७.४. अवृद्धः (राजा) ५.४.२. हानिरहितः (सूर्यः) १.१४५.२. नित्यः (अग्निः=पावकः) ३.२३.१. जरादोषरहितः (परमेश्वरः) ६.४.३. **अजरा** वयोहानिरहिता (उषाः) १.११३.१३. जरारहिता (रात्रिः) ५.३४.१. **अजरासः**=वयोहानिरहिताः (अग्न्यादयः पदार्थाः) ३३.१. जरारोगरहिताः (मनुष्याः) ७.५४.२. **अजराः**=जन्मजरामृत्युधर्मादिरहितत्वात् कारणरूपेण नित्याः (रुद्राः) १.६४.३. वयोहानिरहिताः (प्रजाजनाः) १.१२७.५. जरारोगरहिताः (सज्जनाः) ३.१८.२. व्ययरहिताः (अग्नयः) ७.३.३. हानिरहिताः (त्वेषाः=विद्यासुशीलप्रकाशाः) १.१४३.३. **अजरे**=अजीर्णे (द्यावापृथिवी=भूमिसूर्यौ) ६.७०.१. जीर्णाऽवस्थारहिते अहोरात्रे ३.६.४. स्वस्वरूपेण जरानाशरहिते (द्यावापृथिवी =सूर्यभूमी) ३४.४५. **अजरेभिः**=जराऽऽदिरोगरहितैः (ज्ञानैः) ६.६.२. अजरैर्हानिरहितैः (प्रबन्धैः) १.१६०.४. जरारहितैः (अश्विना=सभासेनाध्यक्षौ) १.११२.९. अविनाशिनौ (पक्षौ=परिग्रहौ कार्यकारणरूपौ) १८.५२. [जॄष् वयोहानौ धातोः पचाद्यच् प्रत्यये जरः, न जरोऽजरः । अजरम्=अजरणधर्माणम् निरु० ४.२७.]

अजरयू जरादिदोषरहितौ (सूर्याचन्द्रमसौ) १.११६.२०. ['अजर' सुबन्तादाचारेऽर्थे क्यच् । 'क्याच्छन्दसि' (अ० ३.२.१७०.) सूत्रेण उ प्रत्ययः । 'न छन्दस्यपुत्रस्य' इति प्रतिषेधान्न दीर्घो न चेकारादेशः]

अजलः पक्षिविशेषः २४.३४.

अजवसः वेगरहितः (इन्द्रः=सूर्यः) २.१५.६. जु वेगितायां गतौ, ['जुरिति सौत्रो धातुः' जवति गतिकर्मा निघं० २.१४. 'ऋदोरबि'त्यप् प्रत्ययः । "जवसवौ छन्दसि०" वा० ३.३.५६. इति वा अच् प्रत्ययः । तत्प्रतिषेधः]

अजस्य अनुत्पन्नस्याऽनादेर्जीवस्याऽव्यक्तस्य वा १७.३०. प्रकृतेर्जीवस्य वा १.१६४.६. [जनी प्रादुर्भावे, ततो नञ्पूर्वात् डः प्रत्ययः । ब्रह्म वाऽअजः श० ६.४.४.१५. आजा ह वै नामैषा यदजैतया ह्येनं (सोमं) अन्तत आजति तामेतत् परोऽक्षमजेत्याचक्षते श० ३.३.३.९. प्रजापतेर्वै शोकादजा समभवन् श० ६.५.४.१६. यज्ञस्य शीर्षछिन्नस्य शुगुदक्रामत्ततोऽजा समभवत् श० १४.१.२.२३. तपसो ह वा एषा प्रजापतेः सम्भूता यदजा तस्मादाह तपसस्तनूरसीति श० ३.३.३.८. आग्नेयी वा एषा यदजा तै० ३.७.३.१. अजा ह सर्वा ओषधीरत्ति श० ६.५.४.१६. सा (अजा) यत् त्रिः संवत्सरस्य

विजायते तेन परमः पशुः श० ३.३.३.८. सा (अजा) यत् त्रिः संवत्सरस्य विजायते ते प्रजापतेर्वर्णाः श० ३.३.३.८. वाचोऽजम् श० ७.५.२.६.

अजस्रम् सततम् १.१००.१४. निरन्तरव्यापक (ज्योतिः=तेजः) सं० वि० १९६. निरन्तरम् २६.६. भा०— नित्यम् १२.१८. **अजस्रया**=निरन्तरया क्रियया ७.१.३. अनुपक्षीणया (सूर्म्या=ऐश्वर्येण) १७.७६. **अजस्रः**=अजस्रं गमनं विद्यते यस्य सः (घर्मः=यज्ञः) प्र०—अत्र 'अर्शआदिभ्योऽच्' इत्यच् १८.६६. बहुरजस्रं प्रकाशो निरन्तरं विद्यते यस्मिन् सः (भानुः=सूर्यः) ११.५४. निरन्तरः (जीवः) ३.१.२१. निरन्तरं गन्ता (घर्मः=सूर्यः) ३.२६.७. **अजस्राः**=अहिंसकाः (आप्ता विद्वांसः) ४.५५.२. (जसु मोक्षणे) दिवादि०, जसु हिंसायामिति चुरादि०, जसु ताडने चुरादि०, ततो नञ्पूर्वात् । 'नमिकम्पिस्म्यजस०' अ० ३.२.१६७. इति सूत्रेण रः प्रत्ययः । स्वभावादयं क्रियासातत्ये । 'अग्निरजस्रः' श० ६.७.४.३.)

अजहात् जह्यात् १९.७२. जहाति त्यजति ४.२६.७. [ओहाक् त्यागे सामान्ये लङ्]

अजुह्वत स्पर्द्धन्ते १.५१.५. **अजुह्वत**=स्पर्द्धन्ते १.५१.५. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च, विकरणव्यत्ययेन श्लुः, लङि रूपम्]

अजः न जायते यः सः (विद्वज्जनः) १.१६२.२. प्राप्तव्यश्छागः १.१६२.४. जन्मरहितः (अर्वा=अग्न्यश्वः) १.१६३.१२. यः कदाचिन्न जायते स ईश्वरः ६.५०.१४. न जायते कदाचित् सः (अहिः=मेघः) २.३१.६. जिसका जन्म कभी न हो वह (ईश्वर) आर्याभि० २.१८. छागजातिविशेषः २४.३२. क्षेपणशीलः (अर्वा=गन्ताऽश्वः) २९.२३. जन्म-मरण से रहित (परमेश्वर) स० प्र० ४२८. अजर-अमर आत्मा सं० वि० १८९. पशुविशेषः २५.२७. जन्मादिरहितः (जीवः) २५.२५. प्राप्तव्यो मेषः २१.२९. प्रेरकः (इन्द्रः=सूर्यः) ३.४५.२. [नञ्+जनी+डः प्रत्ययः]

अजा जन्मरहिता प्रकृतिः २३.५६. पशुविशेषः (छागः) ६.४९.१२. **अजा इव**=यथाऽजौ २.३९.२. [गतिक्षेपणार्थकाद् अजधातो पचाद्यच् स्त्रियाम् अजादिपाठाट्टाप्]

अजातशत्रुम् न जाताः शत्रवो यस्य तम् (सत्पुरुषम्) ५.३४.१. [जातशत्रुपदयोर्बहुव्रीहौ 'निष्ठा' अ० २.२.३६. सूत्रेण जातशब्दस्य पूर्वनिपातः]

अजातान् अप्रकटान्, भा०—अप्रसिद्धान् (अन्व०—शत्रून्) १५.१. युद्धेऽप्रकटान् शत्रुसेविनोऽमित्रान् (राजद्रोहिजनान्) १५.२. [जनी प्रादुर्भावे ततः क्तः प्रत्ययः आकारश्चान्तादेशः, तत्प्रतिषेधः]

अजाति समन्ताज्जातिर्जननं यस्मिन् कुले तत् ५.२.५. प्राप्नुयात् ५.२.१२. [जनी प्रादुर्भावे ततः स्त्रियां क्तिन् प्रत्ययः]

अजानन् जानन्ति १.७२.८. **जानीयुः** १.७२.१०. [ज्ञा अवबोधने, सामान्ये लङ् जादेशश्च]

अजानाम् जानीयाम् १.१६३.६. **जानामि** २९.१७. **अजानि**=जानीयाम् २३.१९. दूर फैकूं आर्याभि० २.४६. । ['अजगतिक्षेपणयोः' धातोर्लङ्]

अजामयः सपत्न्य इव शत्रवः ६.२५.३. **अजामिम्**=भोजन-रहितं स्थानम् । प्र०—अत्र जमुधातोर्वपादिभ्य इतीञ् १३.१३. अभार्याम् १.१२४.६. अप्रसिद्धं वैरिणम् । १.१११.३. अन्यामसम्बन्धाम् (प्रजाम्) ६.४४.१७. अभोगम् ४.४.५. **अजामिभिः**=अबन्धुवर्गैः शत्रुभिः १.१००.११. **अजामीन्**=असम्बन्धिनो दुष्टान् ६.१९.८ [जमु अदने धातोर् इञ् प्रत्ययः । याधातोर्वा बाहुलकान् मिः प्रत्ययः आदेश्च जकारादेशः । जमतेर्गतिकर्मणः नि० ३.६. जाम्यतिरेकनाम, बालिशस्य वा निरु० ४.२० तत्प्रतिषेधः]

अजामि प्राप्नोमि ५.१९.४. **अजाव**=प्राप्नुयाव १.१७९.३. अज [गतिक्षेपणयोः धातोर्लेटि लोटि च रूपाणि]

अजायत जातः ३१.१२. **जायते** ३१.५. उत्पन्नोऽस्ति १.११.४. **जायेत** १.१२८.४. **अजायथाः**=एतद्विद्याप्राप्त्या प्रकटो भव, अन्व०—प्रसिद्धो भव प्र०—अत्र लोडर्थे लङ् १.६.३. प्रादुर्भूतो भव १.५.६. जायेथाः १.१४१.९. **अजायन्त**=उत्पन्नाः ३१.८. जायन्ते प्र०—अत्र लडर्थे लङ् ३४.१२. प्रादुर्भवन्ति १.३७.२.

अजायमानः स्वस्वरूपेणाऽनुत्पन्नः सन्, भा०—स्वयमनुत्पन्नः (ईश्वरः) ३१.१९. अनुत्पन्नोऽजः ऋ० भू० १३२. [जनी प्रादुर्भावे कर्मणि शानच्, तत्प्रतिषेधः]

अजावयः अजाश्चावयश्च ते ३१.८. बकरी, भेड़ आदि दूध देने वाले पशु सं० वि० १४७. बकरी, भेड़ तथा उपलक्षण से अन्य सुखदायक पशु आर्याभि० २.४९. [अजावि आलभते भूम्ने तै० सं० ५.१.६.२. तस्मादेताः (अजावयः) त्रिः संवत्सरस्य विजायमाना द्वौ त्रीनिति जनयन्ति श० ४.५.५.६.

अजाऽइव ! अजोऽनुत्पन्नो विद्युदश्वो यस्य तत्सम्बुद्धौ

(विद्वज्जन) ६.५५.३. अजा अश्वाश्च विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वन्) १.१३८.४. **अजाऽश्वम्**=अजाऽश्वाश्वाश्वाऽस्मिँस्तम् (आदित्यम्) ६.५५.४. **अजाश्वः**=अजा अश्वाश्च यस्य सः (देवः=विद्वान्) ६.५८.२. [अजाश्वेतिपूषणमाह । अजाश्व अजा अजनाः निरु० ४.२५]

अजासः पुष्टिकर्त्तुरश्वाः ६.५५.६. शस्त्राऽस्त्रप्रक्षेपकाः (राजादयो जनाः) ७.१८.१६. [अज गतिक्षेपणयोः पचाद्यच्, प्रथमाबहुवचने जसि असुग् आगमः]

अजासि प्राप्नुयाः २३.१६. [अज गतिक्षेपणयोर्धातोः सामान्ये लट्]

अजाः नित्याः (वह्नयः=वोढारः) ६.५७.३. [न जायन्त इत्यजाः, नञ्युपपदे जनेर्डः]

अजिगात् प्राप्नोति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् 'जिगातीति गतिकर्मसु पठितम् निघं० २.१४.१.३३.१३

अजिघांसत् हन्तुमिच्छति ४.१८.१२. [हन् हिंसागत्योर्धातोरिच्छायां सन्, ततो लङि रूपम्]

अजिनसन्धम् जेतुमयोग्यान् यः सन्दधाति तम् (नरम्)। प्र०—अत्र जिधातोः कर्मणि नक् उणा० ३.२,३०.१५. [नञ्+'जि जये' धातोः 'इण्सिञ्०' उणादि० ३.२. सूत्रेण नक् प्र०—सन्धः=सम्युपपदे डुधाञ् धातोः 'आतश्चोपसर्गे' सूत्रेण कर्तरि कः प्रत्ययः। तयोः समासः]

अजिन्वतम् प्रीणितम् १.११२.६. **अजिन्वत्**=जिन्वेत् १.१५६.५. [जिवि प्रीणनार्थे भ्वादि०, ततो लङ्। जिन्वति गतिकर्मा निघं० २.१४. पदनाम निघं० ४.३.]

अजिरम् विषयादिषु प्रक्षेपकं जराद्यवस्थारहितं वा (मनः) ३४.२. गन्तारं प्रक्षेप्तारम् (विद्युदाख्यं वह्निम्) ३.६.८. ज्ञानवन्तम् (विद्वांसम्) १.१३८.२. प्राप्तव्यं प्रक्षेपकं वा (शस्त्राऽस्त्रम्), ४.४३.६. गतिमान् (मनः=मन को) सं० प्र० २४७. **अजिरः**=यः शीघ्रं न गच्छति सः (शूरः) ६.६४.३. **अजिरा**=गन्तारौ ५.५६.६. यानानां प्रक्षेप्तारौ (हरी=अश्वौ) ३.३५.२. **अजिराः**=अजिराणि क्षेप्तुं गमयितुमनर्हाणि (वस्तूनि) १.१३४.३. **अजिराय**=अश्ववारं प्रक्षेप्त्रे (अश्वाय) १६.३१. **अजिरासः**=प्राप्तशीलाः (कृषीवलाः) १.१४०.४. वेगवन्तः (परमाणवः) ५.४७.२. [अज गतिक्षेपणयोर्धातोः 'अजिरशिशिर' उणादि० १.५३. सूत्रेण किरच् । निपातनात् 'वी'रादेशो न भवति । अजिरमिति क्षिप्रनाम । निघं० २.१५. अजिराः इति नदीनाम । निघं० १.१३. एष वै मृत्युर्यद्वायुरजिर एव नाम । जै० १.२६.]

अजिहीत प्राप्नोति २.२३.१८. [ओहाङ् गतौ जुहोत्यादि० ततो लङ्]

अजीगः भृशं प्राप्नुयात् १.१६३.७. भृशं गिरति ५.१.३. जागरयति ६.६५.१. प्राप्नोति ३.५८.१. स्वव्याप्त्या निगलतीव १.११३.४. प्रसन्नान् करोषि १.११३.६. गच्छति प्राप्नोति ६.४७.३. जागारयति ७.१०.१. अन्धकारं निगलति। प्र०—गॄ निगरणे इत्यस्माद् 'बहुलं छन्दसि' इति शपः स्थाने श्लुः 'तुजादीनाम्०, इति दीर्घश्च १.६२.६. [गॄ निगरणे धातोर्णिजन्ताद्वा लुङ् 'अजीगः' इति पदनाम निघं० ४.३.]

अजीगमम् सम्यक् प्राप्नुयाम् ८.२६. [गम्लृ गतौ धातोः 'बहुलं छन्दसि' इति शपः स्थाने श्लुः]

अजीजनत् जनयन्ति ३.२३.३. जनयति ४.५३.२. **अजीजनन्**=जनयन्ति ३.२६.१३. **अजीजनः**=जनयति २२.१८. जनय ५.८३.१०. [जनी प्रादुर्भावे ततो णिजन्तात् सामान्ये लुङ् । अजीजनन्=अजनयन् । निरु० ७.२८]

अजीजपत जापयत ९.१२. उत्कर्षयत ९.१२. सम्यक् प्रापयत ९.१२. [जि जये धातोर्णिजन्तात् लुङ् 'क्रीङ्जीनां णौ' अ० ६.१.४८. सूत्रेणाकारादेशे । पुगागमे च रूपम्]

अजुर्यम् यदजूर्षु हानिरहितेषु साधु तत् (पदम्) १.१४६.४. जीर्णाऽवस्थारहितम् (त्वाष्ट्रं=सूर्यस्येदं तेजः) ३.७.४. अजीर्णम् (इन्द्रं=शत्रुविदारकं राजानम्) ६.१७.१३. युद्धविद्यासङ्गतम् (व्यवहारम्) १.६७.१. हानिरहितम् (श्रवः=श्रवणम्) ३.५३.१५. **अजुर्यः**=अजीर्णो युवा (इन्द्रः=राजा) ६.३०.१. अजीर्णेषु भवः (विद्वान् श्रीमज्जनः) २.८.२. **अजुर्या**=अजीर्णौ (जलाग्नी) २.३९.५. **अजुर्याः**=शरीरात्मजीर्णाऽवस्थारहिताः (देवाः=विद्वांसः) ३.७.७. अजीर्णाः (उषसः=प्रातर्वेलाः) ४.५१.६. ज्वररहितेषु साध्वीः (पतिव्रताः स्त्रियः) २.३.५. **अजुर्य**=अजीर्ण (जन) ६.२२.९. [नञ् उपपदे 'जॄ वयोहानौ' धातोः क्विपि अजुर्, 'बहुलं छन्दसीति उकारादेशः' 'तत्र साधुरिति' यत्]

अजुर्यमुश्च प्रक्षिपेयुर्नियच्छेयुश्च ५.६.१०. [अजुः०=अजगतिक्षेपणयोः धातो रूपम् । यमुः=यमु उपरमे धातो रूपम्]

अजुषन्त जुषन्ते ४.३३.९. प्रीतवन्तः सेवितवन्तः (जनाः) ४.१. **अजुष्टम्**=सेवेध्वम् ५.७७.२. **अजुषन्**=

सेवन्ते, प्र० अत्र 'बहुलं छन्दसीति रुडागमः १.७१.१. अजुषत=प्रसन्न रहो २.३७.४. [जुष प्रीतिसेवनयोर्धातो रूपाणि । जुषते कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

अजुष्टा असेवितौ (चन्द्रौषधिगणौ) २.४०.२. **अजुष्टात्**=धर्ममसेवमानात् (दुर्जनात्) ७.१.१३. [नञ्+ जुष प्रीतिसेवनयोर्धातोः क्तः प्रत्ययः]

अजुष्टिः असेवनम् ६.३.२. अजुष्टौ=अप्रतीतावसेवने १.६३.५. [नञ् + जुष प्रीतिसेवनयोर्धातोर्भावे क्तिन्]

अजूर्य्यतः अप्राप्तजीर्णाऽवस्थस्य (राज्ञः) ५.४२.६. अजीर्णस्य (राज्ञः) ३.४६.१. **अजूर्यन्**=वृद्धा जायन्ते १.१५२.२. [जॄष् वयोहानौ धातोः जूरी हिंसावयोहान्योः (दिवादि०) धातोर्वा रूपम्]

अजेत प्रक्षिपेत् । प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.१२६.६. [अज गतिक्षेपणयोर्धातोर्लिङि रूपम्]

अजेव यथाऽजौ २.३९.२. [अजा+इवेति विग्रहः अजा पशुविशेषः]

अजोषाः जुषसे । प्र०—अत्र 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकसञ्ज्ञाश्रयणाल्लघूपधगुणः 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति थासस्थकारस्य लोपेनेदं सिध्यति १.९.४

अजोष्यः असेवनीयः (पदार्थः) १.३८.५. [जुष् प्रीतिसेवनयोर्धातोर्ण्यत् प्रत्ययः]

अजोहवीत् पुनः पुनः स्पर्द्धेत् १.११७.१५. भृशमाह्वयेत् १.११७.१६. भृशं गृह्णीयात् १.११६.१३. भृशमाह्वयति ५.७८.४. [ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च, धातोर्णिजन्ताल् लुङ्, आदानार्थकजुहोतेर्वा]

अज्ञातकेताः अज्ञातः केतः प्रज्ञा यैस्ते मूढाः (चोराः) ५.३.११. ['केतः' इति प्रज्ञानाम । निघं० ३.९.]

अज्ञाताः न ज्ञाताः (शत्रुसेनाः) ४.२३.७. [नञ्+ ज्ञा अवबोधने+क्तः प्रत्ययः]

अज्ञायि ज्ञायते ६.६५.१. [ज्ञा अवबोधने तस्य कर्मणि लुङि रूपम्]

अज्म अजन्ति प्रक्षिपन्ति शत्रून् येन यस्मिन् वा । प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेर्लुक् 'अज्मेति सङ्ग्रामनाम०, निघं० २.१७,१७.३८. विजयं प्राप्नुमः ऋ० भू० २२४. प्राप्तव्यम् (अन्नम्=अत्तव्यं द्रव्यम्) ६.४.४. बलम् १.१५८.३. **अज्मन्**=अजन्ति प्रक्षिपन्ति शत्रून् यस्मिंस्तत्र (सङ्ग्रामे) १.११२.१७. मार्गे ६.३१.२. **अज्मनि**=पथि १.१६६.५. **अज्मम्**=अजन्ति गच्छन्ति यस्मिन् मार्गे तत् (मार्गम्) ३.२.१२. गमनाऽधिकरणं मार्गम् १.१६३.१०. अजन्ति गच्छन्ति यस्मिँस्तं मार्गम् २९.२१. **अज्मस्य**=अन्तरिक्षे प्रक्षिप्तस्य (भुवनस्य) ४.५३.४. **अज्मेषु**=सङ्ग्रामेषु । १.८७.३. अजन्ति गच्छन्ति येषु सङ्ग्रामेषु ५.८७.७. प्रापकक्षेपकादिगुणेषु सत्सु १.३७.८. [अज गतिक्षेपणयोर्धातोर् औणादिको 'मः' प्रत्ययः, बाहुलकात् 'वी' भावो न भवति । 'अज्म' इति गृहनाम निघं० ३.४. अज्मम् अजिनमाजिम् । निरु० ४.१३.]

अज्यताम् संयुज्यताम् १२.७०.

अज्यते प्रक्षिप्यते ३.१७.१. व्यज्यते १.१८८.२. प्राप्यते, भा०—गृह्यते ३३.८२. [गतिक्षेपणार्थकाद् अजधातोः कर्मणि रूपाणि]

अज्यमानः चाल्यमानः (अश्वः) ५.३०.१४. [अज गतिक्षेपणयोर्धातोः कर्मणि शानच्]

अज्यसे गम्यसे ६.२.८. प्राप्यसे ३.४०.६. [अज धातोः कर्मणि लट्]

अज्येष्ठासः ज्येष्ठभावरहिताः (भ्रातरः=बन्धवः) ५.६०.५. **अज्येष्ठाः**=अविद्यमानो ज्येष्ठो येषान्ते (मर्याः=मनुष्याः) ५.५९.६. [ज्येष्ठः=वृद्धशब्दाद् आतिशयिक इष्ठन्, ज्यादेशश्च, तत्प्रतिषेधः]

अज्राणाम् प्राप्तव्यानाम् (पदार्थानाम्) २१.४३. कमनीयानाम् (जनानाम्) २१.४४. **अज्रान्**=येऽजन्ति नित्यं गच्छन्ति तान् (राजसेवकान्) ४.१९.७. जगति प्रक्षिप्तान् (व्याप्तान् पदार्थान्) ४.१.१७. सततगामिनः (लोकान्) ५.५४.४. **अज्राः**=प्रक्षेप्तारः (गिरयः=मेघाः) ६.२४.८. सततगामिनः ५.५४.४. [गतिक्षेपणार्थकाद् अज धातोर्बाहुलकाद् उणादि 'रक्' प्रत्ययः । 'अज्राः' इति क्षिप्रनाम । निघं० २.१५.]

अञ्ज प्राप्नुहि २७.४५. [अञ्चु गतियाचनयोः, तस्य लोटि रूपम्]

अञ्जते प्रापयन्ति १.९२.१. कामयन्ते १.१५१.८. गच्छन्ति व्यक्तिं कुर्वन्ति ७.५७.३. गच्छन्ति ७.२.५. अञ्जन्ति गच्छन्ति १.९२.५. प्रकटीकुर्वन् (विद्वज्जनः) २.३.२. प्रकटीकुर्युः ३.३८.३. **अञ्जन्ति**=कामयन्ते प्रकटयन्ति वा ५.४३.७. कामयन्ते ३.८.१. सुप्रकटयन्ति ६.११.४. व्यक्तीकुर्वन्ति ५.३.२. प्रकटयन्ति ३.१४.३. **अञ्जन्तु**=प्रकटीकुर्वन्तु ६.६९.३. कामयन्ताम् २३.८. **अञ्जतः**=कामयेथाम् २.३.७. **अञ्जाते**=प्रसिध्यतः

२.६१. प्रकाशयतः २१.३५. **अञ्जाथे**=प्रकट करो ३३.३३. **अञ्जे**=कामये, प्र०—अत्र विकरणलुक् व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च १.६१.५. स्वेच्छया गृह्णामि १.६४.१. [अञ्जू व्यक्तिक्षणकान्तिगतिषु, ततो व्यत्ययेनात्मनेपदं शप् च]

अञ्जन् व्यक्तो भवन् (अग्निः) २९.१. [अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु, धातोः शतृ प्रत्ययः]

अञ्जयः प्रसिद्ध-प्रशंसाः (जनाः) १.१६६.१०. [अञ्जू धातोर् औणादिक इन्प्रत्ययः]

अञ्जसा शीघ्रम् १.१३९.४.

अञ्जसा व्यक्तेन शत्रूणां म्लेच्छनेन कान्त्या ज्ञापनेन वा ५.५. साक्षात् ६.५४.१. स्वच्छन्देन वेगवत्त्वेन ६.१६.३. **अञ्जसि**=प्रकटे १.१३२.२. कामयमाने (सेनापतौ) १.१३२.२. **अञ्जसी**=प्रसिद्धा (वीरपत्नी) १.१०४.४. **अञ्जः**=सर्वैः कमनीयः (विद्वज्जनः) १.१९०.२. व्यक्तागमनशीलः, प्र०—'अञ्जू व्यक्तिकरण' इत्यस्य प्रयोगः १.३२.२.

अञ्जानः प्रसिद्धो, दिव्यान् गुणान् प्रकटीकुर्वन् (अग्निः=पावकः) ३.१०.४. **अञ्जानाः**=ज्ञापयन्तः (कन्याः=कुमार्य्यः) १७.९७. प्रकटयन्त्यः (कन्याः=कुमार्य्यः) ४.५८.९.

अञ्जि व्यक्तं रूपम् १.१२४.८. कमनीयं रूपम् १७.९७. व्यक्तं सुलक्षणम् ४.५८.९. गमनम् ७.५७.३. **अञ्जिभिः**=प्रकटैः (प्रकाशादिभिः) २.३४.१३. व्यक्तै रक्षणविज्ञानादिभिः १.८७.१. व्यक्तीकरणादिधर्मैः १.६४.४. व्यक्तैर्विज्ञानादिगुणनिमित्तैः १.८५.३. प्रकटीकरणैर्गुणैः १.११३.१४. विद्याशुभगुणप्रकटकारकैः (सूरिभिः=विद्वद्भिः) ५.५२.१५. साधनानि प्रकटयद्भिः (सज्जनैः), प्र०—सर्वधातुभ्य इन् उ० ४.१२३ इति कर्त्तरीन् प्रत्ययः १.३६.१३. **अञ्जिम्**=प्रसिद्धन्यायम्, भा०—तीव्रदण्डम् २३.२१. **अञ्जिषु**=प्रकटेषु व्यवहारेषु ५.५३.४. कामयमानेषु (जनेषु) २.३६. [रश्मयो वाऽएतस्य (आदित्यस्य) अञ्जयो वाघतः शत० ६.४.३.१०. छन्दांसि वा अञ्जयो वाघतः० ऐ० २.२. समञ्जते भानुना० निरु० १२.७.]

अञ्जिमन्तः प्रकृष्टा अञ्जयः कामना विद्यन्ते येषान्ते (विद्वज्जनाः) ५.५७.५. [अत्र अञ्जिप्रातिपदिकात् प्रशंसार्थे मतुप्]

अञ्जिसक्थः अञ्जीनि प्रसिद्धानि सक्थीनि यस्य सः (पशुः पक्षी वा) २४.४. [अञ्जिसक्थिपदयोर्बहुव्रीहिसमासे 'बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो० अ० ५.४.१३३. इति सूत्रेण समासान्तषच् प्रत्यये टिलोपे च रूपम्]

अणवः सूक्ष्मतण्डुलाः १८.१२. [अत्र अण्-शब्दार्थे (भ्वादि०) ततो 'धान्ये नित्' उणादि १.९. सूत्रेण उः प्रत्ययः [अणुरनु स्थवीयांसमुपसर्गो लुप्तनामकरणो यथा सम्प्रति निरु० ६.२२. 'प्रियङ्गवश्च मेऽणवश्च' मे तै० सं० ४.७.४.३.]

अणीयः सूक्ष्मम् (द्रव्यम्) ऋ० भू० ११९. [अत्र 'अणु-प्रातिपदिकात् आतिशयिक ईयसुन्]

अण्वीभिः कारणैः, प्रकाशाऽवयवैः, किरणैरङ्गुलिभिर्वा, सूर्यपक्षे—किरणकारणाऽवयवैः, प्र०—अत्र 'वोतो गुणवचनात्, अ० ४.१.४४. अनेन ङीषि प्राप्ते व्यत्ययेन ङीन् १.३.४. अङ्गुलिभिः २०.८७. ['अण्व्यः' इत्यङ्गुलिनामसु पठितम् निघं० २.५.]

अतक्षत् तनूंकरोति १.६२.१३. **अतक्षत**=अवस्तृणीत १.१६१.७. अतिसूक्ष्मां धियं कुर्वन्ति १.८६.३. **अतक्षन्**=तनूकुर्वन्ति २.३१.७. कुर्वन्ति ७.७.६. **अतक्षम्**=तनूकुर्याम् १.१०९.१. निर्ममे ५.२.११. प्राप्नुयाम् ५.२९.१५. **अतक्षिषुः**=सूक्ष्मधियं सम्पादयन्तु १.१३०.६. संवृणुयुः, प्र०—तक्ष त्वचने, त्वचनं संवरणमिति १.१३०.६. [तक्षू तनूकरणे, तक्ष त्वचने च भ्वादी]

अतथाः इव प्रतिकूल इव, प्र०—अत्राऽऽचारे क्विप् तदन्ताच्च प्रत्ययः १.८२.१. [नञ्युपपदे तथा शब्दात् आचारेऽर्थे 'सर्वप्रातिपदिकेभ्य इत्येके' वा० ३.१.११. वार्तिकेन क्विप् प्रत्ययः]

अतन् व्याप्नुवन् (सूर्यः) ६.६१.९. [अत्र 'अत सातत्यगमने' धातोः शतृप्रत्ययः। अतति गतिकर्मा निघं० ३.१४]

अतन्द्रः अनलसः (विद्वज्जनः) १.७२.७. [नञ्तन्द्रा-शब्दयोर्बहुव्रीहिः]

अतन्द्रासः नियतरूपत्वादनालस्यादियुक्ताः (युवतयः) १.९.५२. अनलसाः (राजभृत्याः) ४.४.१२.

अतन्वत विस्तृतं कृतवन्तः, कुर्वन्ति करिष्यन्ति च ऋ० भू० १२७. तन्वते, विस्तृणन्ति, भा०—विस्तारयेयुः ३१.१४. विस्तृतं कुरुत १९.१२. **अतनोत्**=विस्तृणाति २.१७.४. [अत्र 'तनु विस्तारे' धातोर्लङ् सामान्यकाले]

अतपत् तपति ३.३१.१०. [तप् संतापे धातोर्लङ्]

अतप्ततनूः ब्रह्मचर्य, सत्यभाषण, शम दम, योगाऽभ्यास, जितेन्द्रियता, सत्सङ्ग आदि तपश्चर्या से रहित अपरिपक्व आत्माऽन्तःकरणयुक्त (मनुष्य) स० प्र० ४२३.

अतप्यमाने सन्तापरहिते (द्यावापृथिवी) १.१३५.४. [नञ्+तप सन्तापे धातोः कर्मणि शानच्]

अतमानम् अततं सततं प्राप्तम् (दिनम्) प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् २.३८.३. **अतमानाः**=अतन्तः (वीरजनाः) प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् ६.६.२. [अत सातत्यगमने भ्वादि० । व्यत्ययेनात्मनेपदत्वेन शानच्]

अतमेरुः न ताम्यति येन यज्ञेन सः (यज्ञसम्पादकः सुसन्तानः) प्र०—तमुधातोर्बाहुलकादेरुः प्रत्ययः १.२३. न ताम्यति यः स यज्ञकर्त्ता मनुष्यः १.२३. [तमु कांक्षायाम् दिवादिः । बाहु० कर्त्तरि एरुः प्रत्ययः । नञ्समासः]

अतरत् तरेत् ४.२७.२. तरति ७.१८.६. **अतरन्**=तरन्ति ४.४५.११. प्लावयन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.३६.८. **अतरः**=तरति १.३२.१४. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वादि०) धातोर्लङ्]

अतर्पयः तर्पय ४.१६.५. [तृप तृप्तौ (चुरादि०) धातोर्लङ्]

अतव्यान् यतमानः ५.३३.२. [अतव्यान्=(अमहान्) तवस इति महतो नामधेयम्]

अतष्ट तनूकुरुत १.५४.१२. निष्पादयत ४.३५.५. तक्षेरन् १.१६३.२. तक्ष्णोति तनूकरोति २६.१३. [तक्षू तनूकरणे भ्वादि०, ततो लुङ् सामान्ये]

अतसम् काष्ठम् १३.१२. कूपम् ४.४.४. **अतसस्य**=व्याप्तस्य (मेघस्य) ३.७.३. **अतसानि**=नैरन्तर्येण गन्त्रीणि त्रसरेण्वादीनि २.४.७. **अतसेषु**=विस्तृतेष्वाकाशपवनादिषु पदार्थेषु १.५८.२. वृक्षादिषु ४.७.१०. व्याप्तव्येषु तृणकाष्ठ-भूमिजलादिषु १.५८.४. **अतसे**=निरन्तर आकाशे १.१६६.३. [अत सातत्यगमने धातोर् औणादिकोऽसच् प्रत्ययः । अतसा अतसानि नि० ५.१२.]

अतसि=निरन्तरं गच्छति, प्रापयति, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.३०.५. [अत सातत्यगमने ततो लट्]

अतसाय्यः परोपकारे निरन्तरं वर्त्तमानः (इन्द्रः=दातृ-सज्जनः) २.१६.४. **अतसाय्या**=अतन्ति निरन्तरं सुखानि गच्छन्ति यया सा (ऊतिः=रक्षणक्रिया । प्र० अत्र 'अतधातोर्बाहुलकादौणादिक' आय्य प्रत्ययोऽसुगागमश्च । [सायणाचार्येणेदं पदमतधातोराय्यप्रत्ययं वर्जयित्वा साय्यप्रत्ययान्तरं कल्पित्वाऽडागमेन व्याख्यातं तदशुद्धम् १.६३.६.]

अतंसयत् तंसयत्यलङ्करोति, भा०—भूषयति २३.२४. [तसि अलङ्कारे (चुरादि०) धातोर्लङ् ।]

अतः हेत्वर्थे १.२३.१२. अस्मात् (शिक्षणात्) १.२६. बन्धनात् १.२५. बन्धनादुपदेशाद्वा १.२६. कारणात् १.१०१.८. स्थानात् ४.२६.५. अन्व०—अधर्मात् १२.४५. अन्व०—पृथिवीस्थानात् १.६.६. [इदमः सर्वनाम्नः पञ्चम्यन्तात् तसिल्तद्धितप्रत्ययः]

अतान् अतेयुः प्रकाशयेयुः ६.६७.६. [अत सातत्यगमने भ्वादि० । अतति गतिकर्मा निघं० २.१४]

अतारिषुः तरन्तु ३.३३.१२. **अतारिष्म**=तरेम १.१८३.६. सन्तरेम प्लवेमहि वा १.६२.६. **अतारीत्**=तारयति ७.४.५. तरत्युल्लङ्घयति वा, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लुङ् १.३२.६. [तॄ प्लवनसन्तरणयोर् धातोर्लुङ् ।]

अति अन्तिके २.२७.१६. अतिक्रमणे २७.६. अतिशये २७.६. अत्यन्ते ५.४२. पृथक् करके आर्याभि० १.३३. उल्लङ्घने १.६७.७. व्याप्तिम् ६.४.५. [अति इत्यभिपूजितार्थे निरु० १.३]

अतिकुल्वम् लोमरहितम् (पदार्थम्) ३०.२२.

अतिकृशम् बहुत पतली (वस्तु) ३०.२२.

अतिकृष्णम् बहुत काली (वस्तु) ३०.२२.

अतिक्रमिष्टम् अतिक्रमणम् १.८२.३. **अतिक्रमे**=अतिक्रमितुमुल्लङ्घितुम् १.१०५.१६. **अतिक्रामेम**=उल्लङ्घयेम १.१०५.६. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वादि०) धातो रूपाणि]

अतिक्रुष्टाय अत्यन्तं निन्दकाय (दुर्जनाय) ३०.५. [अति+क्रुश आह्वाने रोदने च, ततो वर्त्तमाने क्तः प्रत्ययः]

अतिक्षरति अतिवर्षन्ति ५.६६.५. [क्षर संचलने भ्वादि०]

अतिख्यः उपदेशोल्लङ्घनं कुर्याः १.४.३. [ख्या प्रकथने (अदादि०) अतिशब्दोऽतिक्रमणेऽर्थे]

अतिगाहेमहि उल्लङ्घ्य मित्रभावं प्राप्नुयाम २.७.३. [अतिशब्दोऽतिक्रमणे, गाहू विलोडने धातुः । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अतिचितयेम चितिं सञ्ज्ञानमाचक्ष्महि ४.३६.८. [अति+चित सञ्चेत्तने चुरादिः; ततो विधिलिङ्]

अतिच्छन्दसम् अतिजगत्यादिप्रतिपादितम् २८.३४.

अतिछन्दसा=अतिजगत्यादिना २८.४५. **अति-छन्दसे**=अतिजगत्यादिछन्दोऽर्थाय २४.१३. [एषा वै सर्वाणि छन्दांसि यदतिच्छन्दाः श० ३.३.२.११.]

अतिजुगुर्यात् अत्युद्यच्छेत् १.१७३.२. (अति+गुरी उद्यमने तुदादिः, ततो लिङ्, व्यत्ययेन शप्रत्ययस्य स्थाने श्लुः]

अतितरेम उल्लङ्घ्य पारं गच्छेम ३.२७.३. [अति+तॄ+विधिलिङ्]

अतितस्थौ अतिशयेन तिष्ठति १.६४.१३. [अति+स्था गतिनिवृत्तौ+यङ् लुङन्ताल् लिट्]

अतितुतुर्याम अतिविनाशयेम ५.४५.११. [अति+तूरी गतित्वरणहिंसनयोर् धातोर्लिङ्। व्यत्ययेन श्लुः]

अतितृण्णम् अतिहिंसितं व्याकुलत्वम् ३६.२. मन्दत्वादिविकार आर्याभि० २.३९. [उतृदिर् हिंसाऽनादरयो रुधादिः, ततो निष्ठा (क्तः)]

अतितृषाम अतितृष्णायुक्तान् कुर्याम ४.३४.११. [ञितृष् पिपासायाम्, व्यत्ययेन शप्]

अतित्विषन्त अतिप्रदीपयत, अतिप्रकाशिता भवत ५.५४.१२. [अति+त्विष् दीप्तौ भ्वादि०]

अतिथयः अतिथिरूप (सज्जन लोग) सं० वि० २०९. [अत सातत्यगमने धातोर् औणादिक इथिन् प्रत्ययः]

अतिथिग्वम् योऽतिथीन् गच्छति तम् (राजादिजनम्) ६.१८.१३. अतिथीन् प्राप्नुवन्तम् (सेनापतिम्) १.११२.१४. योऽतिथीन् गच्छति गमयति वा तम् (विद्वज्जनम्) ४.२६.३. **अतिथिग्वस्य**=अतिथीन् गच्छतः (प्रजाजनस्य) २.१४.७. योऽतिथीनागच्छति तस्य (प्रजाजनस्य) ६.४७.२२. अतिथीन् गच्छति गमयति येन वा तस्य १.५३.८. **अतिथिग्वाय**=अतिथीन् गच्छते (विद्वज्जनाय) १.१३०.७. अतिथीनां गमनाय॥ प्र०—अत्राऽतिथ्युपपदाद् गम्धातोर्बाहुलकादौणादिको ड्वः प्रत्ययः १.५१.६. अतिथीन् गच्छते १.१३०.७. योऽतिथीन् गच्छति तस्मै ६.२६.३. [अतिथि+गम्लृ गतौ+ड्वः प्रत्ययः) **अतिथिपतिः**=अतिथियों का पालन करने वाला (गृहस्थजन) सं० वि० २०९. [अतिथि+पा रक्षणे+डतिः प्रत्ययः]

अतिथिम् अविद्यमाना तिथिर्यस्य तम्, भा० उत्तमगुणम् (सज्जनम्) ३.१. न विद्यते नियता तिथिर्यस्य तम् (सत्पुरुषम्) १.५८.६. नित्यं भ्रमणशीलं सेवितुमर्हम् (अग्निवद् विद्याप्रकाशप्रदं जनम्) १.४४.४. सत्योपदेशकम् (सत्पुरुषम्) ४.२.७. अतिथिमिव पूजनीयम् (पतिं=स्वर्गमनम्) १.१२७.८. सर्वदोपदेशाय भ्रमन्तम् ५.८.२. अविद्यमाना तिथिर्गमनाऽऽगमनयोर्यस्य तम् (सज्जनम्) ७.८.४. पूजनीयमनित्यस्थितिं विद्वांसम् (जनम्) ३.२६.२. अतिथिमिव वर्त्तमानम् (विद्वांसं जनम्) ६.१५.१. पूजनीयम् (राजानम्) ६.७.१. अतिथिवद् वर्त्तमानम् (अग्निं=विद्याप्रकाशितं विद्वांसम्) १.८६.३. अनियततिथिमुपदेशकम् १२.३०. अतिथिवत् सत्कर्त्तव्यम् (चेतनं=परमात्मानम्) ३.३.८. [अत सातत्यगमने धातोर् औणा० इथिन् प्रत्ययः। अथवा नञ्तिथ्योर्बहुव्रीहिः]

अतिथिः जिसकी कोई नियत तिथि नहीं वह (संन्यासी जन) सं० वि० २०९. जो विद्वान्, धार्मिक, निष्कपटी, सबकी उन्नति चाहने वाला, जगत् में भ्रमण करता हुआ सत्य उपदेश से सब को सुखी करता है वह चौथा (संन्यासी जन) स० प्र०—४३९. अनियततिथिः (जीवात्मा) ४.४०.५. अविद्यमान नियततिथिः (सत्पुरुषः) ५.१.८. महाविद्वान् भ्रमणशील उपदेष्टा परोपकारी मनुष्यः १.७३.१. सततं गन्ता (अग्निः) ३.२.२. पूजनीयः, भा०—मान्यः (राजा) ३३.१६. सर्वत्र भ्रमणकर्त्ता ५.१.९. अभ्यागत इव वर्त्तमानः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.१.२०. अकस्मादागतः (विद्वज्जनः) ५.४.५. पूजनीय आप्तो विद्वान् (जनः) ५.१८.१. नित्यं भ्रमणकर्त्ता विद्वान् (जनः) १२.३४. अविद्यमाना तिथिर्यस्य तद्वन्मान्यः (परमेश्वरः) १०.२४. आप्तो विद्वानिव (सत्पुरुषः) ७.९.३. सत्योपदेशकः (विद्वान् जनः) ७.४२.४. महाविद्वान् भ्रमणशील उपदेष्टा परोपकारी मनुष्यः १.७३.१. अविद्यमाना तिथिर्यस्य स राज्यरक्षणाय यथासमयं भ्रमणकर्त्ता (महाविद्वान्) १२.१४. पूजनीयः (राजा) ५.३.५. पूजनीयोऽविद्यमानतिथिः (राजा, विद्वान् जनो वा) २.२.८. **अतिथीन्**=अतिथियों के प्रति सं० वि० २०९. अनियततिथीन् (विदुषः) ५.५०.३. **अतिथीनाम्**=अतिथि अर्थात् उत्तम संन्यासियों का सं० वि० २१०. **अतिथेः**=संन्यासी से सं० वि० २१०. अविद्यमानतिथेर्विदुषः ५.१. [अत सातत्यगमने धातोर् इथिन् प्रत्ययः। अतिथिरभ्यतितो गृहान् भवति। अभ्येति तिथिषु परकुलानीति वा, गृहाणीति वा नि० ४.५. अतति गतिकर्मा निघं० २.१४. पूर्वं हि अतिथिमाशयन्ति काठकसं० १२. ब्राह्मणायातिथये सर्पिष्वन्तं पचति काठ० १९.१२. यो वै भवति यः श्रेष्ठतामश्नुते स वा अतिथिर्भवति ऐ० आ० १.१.१. अतिथिर्दुर्भणसत् काठ ३४.१४. अतिथय आगताय सर्पिष्वदातिथ्यं क्रियते तै सं० ५.२.२.४.

अतिदीर्घम् अतिशयेन दीर्घम्, भा०—महत्पदार्थम् ३०.२२. [दीर्घं द्राघतेः निरु० २.१६]

अतिद्रुतः अत्यन्तं शीघ्रकारी (सोमः=निष्पादितौषधिरसः), योऽतिद्रवति सः (सोमः=सोमलताद्योषधिगणः) १९.३. [अति+द्रु गतौ भ्वादि०+क्तः प्रत्ययः]

अतिधक् अतिदहति २.११.२१. अतिदहेत् २.१९.९. अतिदह्यात् २.१५.१०. अतिदहेः २.१६.९. **अतिधक्तम्**=अतिदहतम् १.१८३.४. [अति+दह भस्मीकरणे भ्वादि० धातोर् लङ् प्रत्ययः। हकारस्य घकारः, भष्भावेन दकारस्य धकारः, अवसाने च चर्भावेन ककारः। अतिधक्=अतिहाय दाः नि० १.७]

अतिधन्वेव महेष्वासा इव (वीरजन इव) २०.५३. [अति+धनधान्ये+वन् प्रत्ययः]

अतिनिष्टतन्युः अतिविस्तृणीयुः १.१४१.१३. [अति निस्+तनु विस्तारे धातोर्लिटि रूपम्]

अतिनेनीयमानः भृशं न्यायव्यवस्थां प्रापयन् (इन्द्रः=राजा) ६.४७.१६. [अति+णीञ् प्रापणे+यङ्, ततः कर्मणि शानच्]

अतिनेषि अतिनयसि। प्र०—अत्र विकरणाभावः ३१५.३. [अति+णीञ् प्रापणे+लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

अतिपर्षत् उल्लङ्घ्य पारं प्रापयतु ३.२०.४. अतिपारयेत् ५.२५.९. **अतिपर्षथः**=अतिसिञ्चथः ५.७३.८. **अतिपर्षन्**=उल्लङ्घयेयुः ७.४०.४. **अतिपर्षि**=अतिपारयसि ५.४.९. अत्यन्तं पालयसि ५.३.११. अतिपूरयसि ७.२३.२. [अति+पृषु सेचने (भ्वादि०) पॄ पूरणे (चुरादि०) धातोर्वा लेटि रूपम्]

अतिपारय उल्लङ्घ्य पारं प्रापय १.९७.७. [अतिरतिक्रमणे+पार कर्मसमाप्तौ (चुरादि०) धातोर्लोट्]

अतिपारयः योऽत्यन्तं पारयति सः (इन्द्रः=राजा) ६.४७.७. [अति+पार कर्मसमाप्तौ धातोः कर्त्तरि 'अनुपसर्गाल् लिम्पविन्दधारिपारि' अ० ३.१.१३८ सूत्रेण शः प्रत्ययः]

अतिप्रसस्रे अतिप्राप्नोति ६.१८.७. [अति+प्र+सृ गतौ (भ्वादि०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अतिबद्बधे अतिशयेन बीभत्सते १.८१.५. [अति+बध बन्धने (भ्वादि०) बध संयमने धातोर्वा लिटि रूपम् बद्बधानान्=बाबध्यमानान् निरु० १०.९.]

अतिमतिम् अतिशयिता चाऽसौ मतिश्च ताम् (प्रशस्तबुद्धिम्) १.१२९.५. [अति+मनु अवबोधने (दिवादि०)+क्तिन् स्त्रियाम्]

अतिमन्ये अतिमानं कुर्याम् १.१३८.४. [अति+मन ज्ञाने (दिवादि० धातोर्लट्]

अतिमृत्युम् मृत्युमतिक्रान्तं मृत्योः पृथग्भूतं मोक्षाख्यमानन्दम् ऋ० भू० १३१. [अति+मृङ् प्राणत्यागे धातोर् औणादिकः त्युक् प्रत्ययः]

अतियाजस्य योऽतिशयेन यष्टुं योग्यस्य यज्ञस्य ६.५२.१. [अति+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु धातोः क्रियायां क्रियार्थायामुपपदे घञ् प्रत्ययः]

अतियाथः अत्यन्तं गच्छतः ५.७७.३. [अति या प्रापणे (अदादि०) धातोर्लट्]

अतिरत् सन्तरति प्लावयति, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेनः श० १.३३.१३. सन्तारयति २.१७.२. उल्लङ्घयतु ३.३४.१ सन्तरेत् ३.३४.५. तरति ६.९.१. **अतिरतम्**=तमो हिंस्तः, प्र०—अवतिरतिरिति वधकर्मा निघं० २.१९/१.९३.४. तरेतम् १.११६.१०. उल्लङ्घयतम् १.१५२.१. **अतिरन्त**=तरन्ति ७.७.६. **अतिरम्**=सन्तरेयमुल्लङ्घेयम् ११.८२. **अतिरः**=शत्रुबलं प्लावयति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ्, विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने शश्च १.११.७. हन्याः ४.३०.३. हंसि ४.३०.७. [तॄप्लवनसन्तरणयोर् धातो रूपाणि। विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने शः, तस्य च ङित्वात् गुणाऽभावे 'ऋत इद्धातोः' इतीत्वे च रपरत्वे च रूपाणि। निघण्टौ च वधार्थे पाठाद् हिंसार्थेऽपि]

अतिरुग्भ्याम् अतिरुचीच्छाभ्याम् २५.३. [अति+रुच् दीप्तावभिप्रीतौ च+क्विप्]

अतिरोहति अतिरिक्त है स० प्र० २८२. व्यतिरिक्तः सन् जन्मादिरहितोऽस्ति ऋ० भू० १२०. अत्यन्तं वर्धते ३१.२. [अति रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च धातोर्लट्]

अतिलोमशम् अतिशयेन लोमयुक्तम् (पदार्थम्) ३०.२२. [अति+लोमप्राति० 'लोमादिपामादि०' सूत्रेण मत्वर्थे शः प्रत्ययः]

अतिवक्षत् अतिवहेत् प्रापयेत् ६.२२.७. [अति+वह प्रापणे धातोर्लेटि रूपम्। 'सिब्बहुलं लेटी' ति सिप् प्रत्ययः]

अतिविधे अतिवेद्धुं योग्यौ (मित्रावरुणौ=राजाऽमात्यौ) ५.६२.९. [अति+विध विधाने (तुदादि०) ततः 'इगुपधज्ञा०' अ० ३.१.१३५ सूत्रेण कः प्रत्ययः]

अतिविध्यति अतिशयेन ताडयति ४.८.८. [अति व्यध ताडने दिवादिः, ततो लट्]

अतिवेति अतिप्राप्नोति ५.४४.७. [अति+वी गतिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु अदादिः, ततो लट्]

अतिव्याधी अतिशयेन व्यद्धुं शत्रूंस्ताडयितुं शीलं यस्य सः (राजन्यः=राजपुत्रः) २२.२२. [अति+व्यध् ताडने धातोस्ताच्छील्ये णिनिः प्रत्ययः]

अतिव्रजद्भिः अतिशयेन गमयितृभिर्द्रव्यैः (रथैः) १.११६.४. अत्यन्तं वेगवद्भिः (रथैः) ऋ० भू० १९०. [अति+व्रज गतौ भ्वादिः, ततश्शतृप्रत्ययः]

अतिशुक्लम् अतिश्वेतं (वस्तु) ३०.२२.

अतिष्कद्वरीम् अतिशयेन या स्कन्दति जानाति ताम् (स्त्रीम्) ३०.१५. [अति+स्कन्दिर् गतिशोषणयोर्भ्वादिः, ततः क्वरप् प्रत्ययः]

अत्यतिष्ठत् उल्लङ्घ्य तिष्ठति, भा०—यत्र जगन्नास्ति तत्रापि पूर्णोऽस्ति ३१.१. [अति+स्था गतिनिवृत्तौ धातोर्लङ्]

अतिष्ठत् उत्तिष्ठति ४.१८.८. तिष्ठतु १.११६.१७. तिष्ठेत् १.१६३.२. तिष्ठति १.१६४.९. महातप को करता हुआ सं० वि० ९३. **अतिष्ठन्**=तिष्ठन्ति प्र०—अत्र वर्त्तमाने लङ् १.३२.११. **अतिष्ठन्त**=स्थिरा भवेयुः, प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् १.११.६. १.३२.१० **अध्यतिष्ठत**=अधिष्ठातृत्वेन वर्त्तते १७.२०. उपरि तिष्ठति २९.१३. [स्था गतिनिवृत्तौ धातो रूपाणि]

अतिष्ठन्तीनाम् चलन्तीनाम् (नदीनाम्) १.३२.१०. [अति+स्था गतिनिवृत्तौ+शतृ प्रत्यये स्त्रियां रूपम्। अतिष्ठन्तीनाम्=अस्थावराणाम् नि० २.१६]

अतिस्थिपः संस्थापयेः १.५६.५. [अति+स्थाधातोर्णिजन्तस्य रूपम्]

अतिस्थूलम् बहुत मोटी (वस्तु) ३०.२२.

अतिसर्पति अतिशयेन गच्छति ११.७४. [अति+सृप्लृ गतौ भ्वादिः, ततो लट्। सर्पति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अतिसश्चतः समवेताः (प्रजाः) ३.९.४. [सश्चति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अतिसूदयन्तु अतिक्षरयन्तु दूरीकुर्वन्तु ४.३९.१. [अति+पूद् क्षरणे चुरादिः, ततो लोट्]

अतिसस्रेम अतिगच्छेम ६.११.६. [अति+सृ गतौ जुहोत्यादिः, ततो लिङ्]

अतिस्रिधः उल्लङ्घनत्वेन विद्यादिसद्व्यवहारविरोधिनः (अविद्यादिकुसंस्कारान्) ३.१०.७. अतिसहनशीलाः (प्रजाः) ३.९.४.

अतिस्रुतः अत्यन्तज्ञानवान् (राजप्रजाजनः) १०.३१. [अति+स्रु गतौ+वर्त्तमाने क्तः प्रत्ययः]

अतिहाय अतिशयेन त्यक्त्वा १.१६२.२०. अत्यन्तं त्यक्त्वा २५.४३. [अति+ओहाक् त्यागे+क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

अतिह्रस्वम् अतिशयेन ह्रस्वम् (भा०—सूक्ष्मपदार्थम्) ३०.२२.

अतीत्वरीम् अतिगमनशीलां (स्त्रीम्) ३०.१५. [अति+इण् गतौ (अदादि०) धातोस्ताच्छील्ये 'इण्नश०' अ० ३.२.१६३. सूत्रेण क्वरप्, ङीप्]

अतीतृपन्त अतिशयेन तर्पयत १९.३६. **अतीतृपाम**=तर्पयाम ७.२९. [अति+तृप प्रीणने (दिवादि०) धातोश्शतृप्रत्ययोऽन्यत्र च लोट् संहितायामति शब्दस्य दीर्घः]

अतीतृषाम अतितृष्णायुक्तान् कुर्याम ४.३४.११. [अति+ञितृषा पिपासायाम् (दिवादि०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन च श्यन् न भवति]

अतीयाम उल्लङ्घेम त्यजेम ५.५३.१४. [अति+इण् गतौ (अदादि०) धातोर्लिङ्]

अतीरज्यसि अतिशयतया ऐश्वर्यं प्राप्नोषि १.५५.३. [अति+रञ्ज रागे (दिवादि०) धातोर्लट्। 'अनिदितामि' ति न लोपः]

अतीहि अतिगच्छ ३.४५.१. सर्वतः प्राप्नुहि, प्र०—अभिपूजितार्थे निरु० १.३. अतिक्रम्योल्लङ्घ्य, अन्व०—तस्मात्पारं गमय ३.६१. [अति+इण् गतौ (अदादिः) धातोर्लोट्]

अतुष्टवम् प्रशंसेयम् ३.५३.१२. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदादि०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

अतूतुजिम् भृशमहिंस्रम् (वीरपुरुषम्) ७.२८.३. [नञ्+तुज हिंसायाम् (भ्वादि०) धातोर्यङ्, तत औणादिक इक् प्रत्ययः। 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासस्य दीर्घश्च]

अतूर्त्तपन्थाः अतूर्त्तोऽहिंसितः पन्था यस्य सः (मेघः) ५.४२.१. [अतूर्त्तपन्थाः=अत्वरमाणपन्थाः नि० ११.२०.]

अतूर्त्तम् अहिंसितम् (पुत्रम्) ५.२५.५. **अतूर्त्तः**=अहिंसितः (राजा) १.१२६.१. (अतूर्त्तः=अतूर्णं इति वाऽत्वरमाण इति वा नि० ९.१०. अतूर्त्तो होतेत्याह न ह्येतं

(अग्निम्) कश्चन तरति तै० सं० २.५.६.२३. अयं वा अग्निरतूर्त्तो होतेमं ह न कश्चन तिर्यञ्चं तरति ऐ० २.३४. न ह्येतं रक्षांसि तरन्ति तस्मादाहातूर्त्तो होतेति श० १.४.२.१२.)

अतृणत् हिनस्ति ४.१.१६. सन्तारयति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन श्ना २.१५.३. [तृणेलिह वधकर्मा निघं० २.१६. उतृदिर् हिंसानादरयोः (रुधादि०) धातोर्लङ्]

अतृन्दन् हिंस्युः ३.३१.५. [उतृदिर् हिंसानादरयोः (रुधादि०) धातोर्लङ्]

अतृपासः अतृप्ताः सन्तः (श्रोतृजनाः) ४.५.१४. [नञ्+तृप प्रीणने धातोः 'इगुपधज्ञा०' सूत्रेण कः प्रत्ययः]

अतृष्णुवन्तम् भोगेष्वतृप्तम् (अधार्मिकं जनम्) ४.१६.३ [नञ्+तृप् प्रीणने धातोर् औणा० नु प्रत्ययः, ततो मतुप्]

अतृष्यन्तीः तृष्णादिदोषरहिताः (कुमार्यः) १.७१.३. [नञ्+ञितृषा पिपासायाम् धातोः शतृप्रत्ययः। स्त्रियां रूपम्]

अत्कम् अतति व्याप्नोति तं वायुम् ४.१६.१३. व्याप्तम् (वव्रि=रूपम्) ५.७४.५. व्याप्तिशीलं वस्त्रम् ६.२९.३. निरन्तरम् १.६५.७. कूपमिव १.१२२.२. कूपम् ४.१८.५. **अत्कान्**=व्यक्तान् (अश्वान्=अग्न्यादीन्) ५.५५.६. **अत्कैः**=अत्तुमर्हैः (गुणकर्मस्वभावैः) २.३५.१४. अश्वैः ६.३३.३. [अत सातत्यगमने धातोः 'इण्भी०' उणादि० ३.४३. सूत्रेण कन् प्रत्ययः। अतति गतिकर्मा निघं० २.१४. अत्कः वज्रनाम निघं० २.२०. अश्वनाम निघं० १.१४.]

अत्त भक्षयत २३.८. **अत्ति**=भक्षयति १.६५.४. भुङ्क्ते २.३५.७. **अत्तु**=भुङ्क्ताम्, प्राप्नोतु १९.५१. [अद् भक्षणे (अदादि०) धातोर्लोट्]

अत्तवे आनन्दभोगाय ऋ० भू० २६५. अत्तुं भोक्तुम् १९.७०. [अद् भक्षणे धातोः 'तुमर्थे सेसेन०' अ० ३.४.९. सूत्रेण तवेन्प्रत्ययः]

अत्ता हवींषि प्रयत्नयुक्तानि कर्माणि देययोग्यानि उत्तमानि अन्नानि वा ऋ० भू० २६२.

अत्नत प्रयतध्वम् १.८०.१६. निरन्तरं गच्छत ५.४८.२. तन्वते, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणाऽभावः 'तनिपत्योश्छन्दसि' अ० ६.४.९९. अनेनोपधालोपः १.३७.१०.[तनु विस्तारे धातोर्लङ्। बहुलं छन्दसीति विकरणलुक्। अत्नत=अतनिषत निरु० १२.३४.]

अत्यक्रमुः उल्लङ्घ्य क्राम्यन्ति, भा०=उल्लङ्घ्य पलायन्ते १२.८४. [अति+क्रमुपादविक्षेपे धातोर्लुङ्]

अत्यनयन् प्राप्नुवन्ति १०.१. [अति+णीञ् प्रापणे धातोर्लङ्]

अत्यम् व्याप्तिशीलम् (अश्वम्) १.१२९.२. अतन्तमश्वम् १.१३५.५. अतति व्याप्नोत्यध्वानमश्वम् ५.२५.६. वेगवन्तं वाजिनम् ७.३.५. अतितुं व्याप्तुं योग्यम् (अश्वम्) १२.४७. व्यापकं शीघ्रगामिनं वायुम् ३.२२.१. अतति व्याप्नोति तत्रभवम् (हविः=होतव्यं द्रव्यम्) ५ ४४.३. व्याप्तिशीलम् (वाजिनम्=विज्ञानवन्तं जनम्) १.१२९.२. **अत्यमिव**=यथाऽश्वम् १.१३०.६. **अत्यस्य**=अश्वस्य १.१८०.२. **अत्यः**=अतति व्याप्नोतीति (पदार्थविद्याविद्विद्वान्) १.१४९.३. साधुरश्वः १.६५.३. सततं गन्ता (वाजी=सुशिक्षितस्तुरङ्गः) ३.३८.१ अश्वः १.५८.२. व्याप्तिशीलोऽश्वः (अग्निः=पावकः) ३.२.७. योऽतति व्याप्नोत्यध्वानं सोऽश्वः, भा०—यानादीनां सद्यो गमयिता (अग्निः) ३३.७५. योऽतति सततं गच्छति सः (भौ० अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१९. अतति व्याप्नोति मार्गं सः (अश्वः) ५.३०.१४. **अत्या**=यावततोऽध्वानं व्याप्नुतस्तौ (वाय्वग्नी) ४.२.३. **अत्या इव**=अश्ववत् ५.५९.३. **अत्यान्**=येऽतन्ति मार्गान् व्याप्नुवन्ति तान् (अश्वान्) १.१२६.४. सुशिक्षयाऽश्वान् ३.३४.९. **अत्यानिव**=यथाऽश्वाः सततं सद्यो गच्छन्ति तथा २.३४.३. **अत्याय**=सर्वविद्याव्यापनशीलाय विद्वज्जनाय) ३.७.८. **अत्यासः**=येऽतन्ति अध्वानं व्याप्नुवन्ति ते (मर्याः=मनुष्याः) ७.५६.१६. **अत्याः**=अतन्ति सर्वत्र व्याप्नुवन्ति त आकाशादयः ३.५६.२. सततं गामिनोऽश्वाः ५.३१.९. सकलशुभगुणकर्मव्यापिनः (राज्यकर्माऽधिकारिजनाः) ६.४४.१९. सततगमनाः (विद्युदादयः) १.१८१.२. अतितुं शीलाः (अश्वाः=अग्न्यादयः) १.१६३.१०. नितरां गमनशीला अश्वाः १.१७७.२. **अत्येन**=अश्वेनेव वेगेन २.३४.१३. **अत्यैः**=अश्वैरिव वेगवद्भिः (यानैः) ६.३२.५. (अत्यः अश्वनाम निघं० १.१४. अत्याः अतनाः निघं० ४.१३. (हे ऽश्व त्वम्) अत्योऽसि ता० १.७.१. तस्मादश्वः पशूनत्येति तस्मादश्वः पशूनां श्रैष्ठ्यं गच्छति श० १३.१.६.१. अत्योऽसीत्याह तस्मादश्वः सर्वान् पशूनत्येति तस्मादश्वः सर्वेषां पशूनां श्रैष्ठ्यं गच्छति तै० ३.८.९.१.]

अत्यंहाः अतिक्रान्तमंहो दुष्कृतं येन सः (अन्वः=ईश्वरः) १७.८०. [अति+हन् धातोरसुन् प्रत्ययः, हन्तेश्च

स्थानेंऽह आदेशः । अंहश्चांहुश्च हन्तेर्निरूढोपधाद् विपरीतात् निरु० ४.२५]

अत्यरिच्यत अतिरिक्तो भवति, भा०—तस्माद् (जगतः) पृथग्भूतस्तत्कलनषाऽलिप्तो व्याप्तोऽपीश्वरो भवति ३१.५. परमेश्वरः सर्वेभ्यो भूतेभ्योऽतिरिक्तो पृथग्भूतोऽस्ति ऋ० भू० १२२ (अति+रिचिर् विरेचने (रुधादि०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्यन्]

अत्यायातम् देशानति क्रम्याऽऽगच्छतम् ५.७५.२. **अत्यायाहि**=अतिवेगेनागच्छोल्लङ्घ्य वा ३.३५.५.[अति+आ+या प्रापणे (अदादिः) धातोर्लोट्]

अत्यावृणीत अत्यावृणुयात् ७.३३.२. [अति+आ+वृञ् वरणे (स्वादि०) धातोर्लिङ्]

अत्येतवै एतुं प्राप्तुम् ५.८३.१०. [अति+इण् गतौ धातोः 'तुमर्थे सेसेन०' सूत्रेण तवै प्रत्ययः]

अत्येति व्याप्तिं गच्छति ६.४.५. उल्लङ्घ्य गच्छति, भा०—पृथग् भवितुं शक्नोति ३१.१८. उल्लङ्घन कर सकता है आर्याभि० २.८. [अति+इण् गतौ धातोर्लट्)

अत्र अस्माकं सत्कारसंयुक्ते व्यवहारे स्थाने वा २.३१. अस्यां प्रजायाम् ४.४१.६ अस्मिन् समये १२.४५. अस्मिन् ब्रह्मणि विज्ञानव्यवहारे वा ३.५५.२. अस्मिन् राजव्यवहारे ३.३८.६ अस्मिन् संसारे समये वा ३५.१०. अस्मिन् जगति व्यवहारे वा ४.१.१३. इस गृहस्थाश्रम में सं० वि० १०५. अस्यामप्सु भूमौ वा १.३३.१५. विद्वत्प्रचारिते रक्षिते व्यवहारे १.४१.४. अस्यां विद्यायाम् १.४८.४. अस्मिन् १.६७.२. अस्मिन् गृहाश्रमे १.१२३.३. अस्मिन् विद्यायोगाभ्यासव्यवहारे १.१६३.७. अस्मिन् जन्मनि १.१६४.३३. आसु १.१७३.१२. राज्यप्रबन्धे २.१५.९. अस्मिन् राज्ये ४.२२.७. अस्मिञ्छिल्पविद्याकर्मणि ५.३१.१०. येषु ६.३. अस्मिन् सैन्ये २९.१६. अस्मिन् राज्यपालनव्यवहारे ३३.६४. [इदम् सर्वनाम्नः सप्तम्यन्तात् त्रल् तद्धितप्रत्ययः । 'तद्धितश्चासर्वविभक्तिरि' त्यव्ययसंज्ञा]

अत्रम् योऽतति सर्वत्र व्याप्नोति तम् (मेघम्) ५.३२.८. **अत्रैः**=अतन्तीत्याततायिनस्तान् गच्छन्तीत्यत्राः शत्रवस्तैः १.१२९.८. [अत्र 'अत सातत्यगमने' धातोरौणादिको रक् प्रत्ययः कर्त्तरि]

अत्रयः अविद्यमानास्त्रिविधगुणानां दोषा येषु ते (गिरः=वाण्यः) ५.३९.५. अविद्यमानत्रिविधदुःखाः (गिरः=वाण्यः) ५.३९.५. त्रिभिः कामक्रोधलोभदोषै रहिताः (उपदेशकाः) ५.२२.४. विद्याविशालाः (विद्वज्जनाः) ५.४०.९. **अत्रये**=अविद्यमानत्रिविधदुःखाय (कण्वाय=मेधाविने जनाय) १.११८.७. अविद्यमानान्याध्यात्मिकादीनि त्रीणि दुःखानि यस्मिँस्तस्मै सुखाय १.११९.६. अविद्यमानानि त्रीण्याध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैविकानि दुःखानि यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.११२.७. न सन्ति त्रीणि भूतभविष्यद्वर्त्तमानकालजानि दुःखानि यस्य तस्मै सर्वदा सुखसम्पन्नाय (विदुषे जनाय) १.१८०.४. अविद्यमाना आत्मिक-वाचिक-शारीरिक दोषा यस्मिँस्तस्मै (मनवे=राज्ञे) १.११२.१६. अविद्यमानानि त्रीणि दुःखान्याध्यात्मिकाधिभौतिकाधिदैवकानि यस्मिन् तस्मिन् सुखे १.५१.३. अविद्यमानानि त्रीणि दुःखानि यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.११२.७. **अत्रिभ्यः**=व्याप्तविद्येभ्यः (विद्वज्जनेभ्यः) ५.६७.५. **अत्रिम्**=अत्तारम् (सर्वगणं=लोकम्), प्र०—'अदेस्त्रिनिश्च, उ० ४.६९. अत्र चकारात् त्रिबनुवर्त्तते, तेनाऽद्धातोस्त्रिप् १.११६.८. अविद्यमानान्यात्म-मन-शरीरदुःखानि येन तम् (ऋषिं=वेदपारगमध्यापकम्) १.११७.३. **अत्रिः**=सुखानामत्ता भोक्ता (कण्वः=मेधावी जनः), प्र०—अत्राऽद्धातोरौणादिकस्त्रिप् प्रत्ययः १.३९.९. सततं पुरुषार्थी (राजा) ५.७.१०. अविद्यमानत्रिविधदुःखम् (यज्ञं=अध्ययनाऽध्यापनम्) ५.७३.६. आप्तविद्यः (विद्वज्जनः) ५.७४.१. सकलविद्याव्यापकः (विद्वज्जनः) ५.४०.८. अविद्यमानत्रिविधदुःखः (विद्वज्जनः) ५.७८.४. सततं गामी (गोतमः=नौकादियानयायी जनः) १.१८३.५. अत्रिवारम् (व्यवहारम्) ५.७३.७. **अत्रेः**=अविद्यमानत्रिविधदुःखस्य (विद्वज्जनस्य) ५.२.६. **अत्रे**=अविद्यमानत्रिविधदुःख (राजन्) ५.४०.७. ['अद् भक्षणे' धातोः 'अदेस्त्रिनिश्च' उ० ४.६८. सूत्रेण चकारात् त्रिप् प्रत्ययः । 'अत सातत्यगमने' धातोर्वा । अत्रैव तृतीयमृच्छतेत्यूचुस्तस्मादत्रिर्नत्रय इति निरु० ३.१७. अत्रिम् अग्निरन्तरौषधिवनस्पतिष्वप्सु तम् निरु० ६.३६. वागेवात्रिवाचा ह्यन्नमद्यतेऽत्तिर्ह वै नामैतद् यदत्रिरिति शत० १४.५.२.६. तद्धैतद्देवाः । रेतः (वाचः सकाशात् पतितं गर्भम्) चर्मन्वा यस्मिन्वा बभ्रुस्तद्ध स्म पृच्छन्त्यत्रैव त्या३दिति ततोऽत्रिः सम्बभूव शत० १.४.५.१३.]

अत्रिणम्=परस्वाऽपहारकम् (दुर्जनम्) ६.५१.१४. अत्तुं भोक्तुं योग्यम् भा०— शुष्कमशुष्कं तृणादिकंम् १७.१६. परसुखमत्तारम् (शत्रुम्) प्र०—अदेस्त्रिनिश्च उ० ४.६९. अनेन सूत्रेणाऽद्धातोस्त्रिनिः प्रत्यय १.८६.१०. शत्रुम् ६.१६.२८. काम, क्रोध आदि शत्रु को आर्याभि०

१.१६. अत्ति भक्षयत्यन्यायेन यः स शत्रुस्तम् १.३६.१४. परपदार्थाऽपहर्त्तारं शत्रुम्. १.३६.२०. **अत्रिणः**=शत्रवः १.२१.५. ['अद भक्षणे' धातोः 'अदेस्त्रिनिश्च' सूत्रेण त्रिनिः प्रत्ययः। 'रक्षांसि वै पाप्मात्रिणः' ऐ० २.२. अत्रिणो वै रक्षांसि, ष० ३.१. 'पाप्मानोऽत्रिणः' ष० ३.१.]

अत्रिवत् न विद्यन्ते त्रय आध्यात्मिकाऽऽधिभौतिकाऽऽधिदैविकास्तापा यस्य तद्वत् (मुक्ताऽऽत्मवत्) १.४५.३. अविद्यमान त्रिविधदुःखेन तुल्यम् (मित्रवत्) ५.७२.१. व्यापकविद्यवत् (विद्वज्जनवत्) ५.२२.१. सततं गन्तारो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=राजन्) ५.४.९. व्यापकवत् विद्युदग्निः ५.५१.८. [अत्रि प्राति० तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः]

अथ अनन्तराऽर्थे १.९२.१५. इसके बाद सं० वि० १३८. आनन्तर्ये १.४७.३. पुनः २.३.९. पश्चात् १२.१२. अनन्तरम् १२.५२.

अथो अनन्तरम् १६.८. आनन्तर्ये ११.८२. इसके अनन्तर सं० वि० १६६. और आर्याभि० २.४९. तथा मं० प्र० ३१६.

अथर्य! संशय-रहित, थर्वति संशेते यः स थर्यो, न थर्योऽथर्यस्तत्सम्बुद्धौ (परमेश्वर !), प्र०—थर्वतिश्चरतिकर्मा निरु० ११.१८. अत्र वर्णव्यत्ययेन वकारस्थाने यकारः ३.३७. हे व्यापक ईश्वर ! आर्या भि० २.३७. हे अहिंसक दयालो स्वामिन् सं० वि० १४६. **अथर्यः**=अहिंसिताः स्त्रियः ४.६.८. [अथर्यः इत्यङ्गुलिनाम निघं० २.५. निरुक्ते थर्वतिश्चरत्यर्थे, चर धातुश्च संशये चुरा०]

अथर्युम् अहिंसां कामयमानम् (गृहपतिं=गृहस्वामिनम्) ७.१.१. [अथर्युम्=अतनवन्तम् निरु० ५.९. मतुबर्थे युप्रत्ययश्छान्दसः अथर्यति गतिकर्मा निघं० २.१४]

अथर्ववत् यथाऽथर्ववेदे मन्थनं विहितम् ६.१५.१७. [अथर्वन् प्राति० वतिः प्रत्ययस्तुल्यार्थे]

अथर्वणः अहिंसकस्य विदुषः ११.३३. अथर्वाणोऽथर्ववन्तः। थर्वतिश्चरतिकर्मा तत्प्रतिषेधः॥ निरु० ११.१९. अथर्वा, अथर्वाणः पदनामानौ निघं० ५.६, ५.५.]

अथर्वभ्यः अहिंसकेभ्यः (जनेभ्यः) ३०.१५. **अथर्वाणः**=अथर्ववेदविदो धनुर्वेदविदश्च ऋ० २.५.८. अहिंसकाः (जनाः) १९.५०. **अथर्वा**=अहिंसकः (वाघतः=मेधावि विद्वान्) १५.२२. अहिंसनीयः (इन्द्रः=विद्युत्) ८.५६. अथर्ववेदः स० प्र० २७३. हिंसादिदोषरहितः (अध्यापकः) १.८०.१६. [अथर्वाणोऽथर्वणवन्तः थर्वतिश्चरतिकर्मा, तत्प्रतिषेधः नि० ११.२७. प्राणो वा ऽअथर्वा श० ६.४.२.१. प्राणोऽथर्वा श० ६.४.२.२. अथर्वा वै प्रजापतिः गो० पू० १.४. येऽथर्वाणस्तदभेषजम् गो० १.३.४. अथर्वाणो वै ब्रह्मणः समानः काठ सं० ४. तद्‌यदब्रवीदथर्वाङ्गेनमेतास्वेवाप्स्वन्विच्छेति तदथर्वाऽभवत् तदथर्वणोऽथर्वत्वम् गो० १.१.४.]

अथर्व्यम् अहिंसनीयां स्वसेनाम् १.११२.१०.

आथर्वणः अथर्वणोऽहिंसकस्याऽपत्यम् (विद्वज्जनः) १.११६.१२. [अथर्वन् प्राति० अपत्यार्थे अण् प्रत्ययः]

अथर्वाऽङ्गिरसः अथर्ववेदः, ऋग्वेदा० भा० भू०,अथर्व० १०.७.२०. [अथर्वणामेकं पर्व व्याचक्षाण इवानुद्रवेत् श० १३.४.३.७. अङ्गिरसामेकं पर्व व्याचक्षाण इवानुद्रवेत् श० १३.४.३.८. मेद आहुतयो ह वाऽएता देवानाम्। यदथर्वाङ्गिरसः श० ११.५.६.७.]

अथो अनन्तरे १.२८.६. आनन्तर्ये ३.४३. [इदानीम् नि० ११.४०]

अदते बिना दांतों वाले दुष्ट के लिए १.१८९.५. [न विद्यन्ते दन्ता यस्येति बहुव्रीहौ 'छन्दसि च' अ० ५.४.१४२. सूत्रेण दन्तस्य दतृ० आदेशः]

अदत्त ददाति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लङ् १.३२.३. गृह्णीयात् १.१४५.३. आदद्यात् २०.७१. **अदत्तन**=दद्यात् १.१३९.७. **अदत्तम्**=दद्यातम् १.११७.७. **अददन्त**=दद्युः ७.३३.११. **अददात्**=ददाति ५.३०.११. **अददाम्**=ददामि ४.२६.२. **अददाः**=देहि १.५१.१३. **अददुः**=ददतु ६.५८.४. [डुदाञ् दाने (जुहो०) धातो रूपाणि। अददन्त=अधारयन्त नि० ५.१४]

अदत्रया अत्तुं योग्यान्यन्नादीनि ५.४९.३.

अदद्दहन्त वर्धेरन्, प्र०—अत्र दृंह धातोर्लेटि झादेशे कृते शपः श्लुस्ततो द्वित्वम् १७.२५. [दृह दृहि वृद्धौ (भ्वादि०) धातो रूपम्]

अदधात् दधाति प्र०—अत्र लडर्थे लङ् ६.४४.२३. धारण करता है सं० वि० १८७. धत्तवान्, दधाति वा ४.३१. विधत्ते, विहितवान् ऋ० भू० ३२०. सिद्ध करे सं० वि० १४८. अथर्व० १४.१.५३. **अदधात**=धर्त ७.३३.४. **अदधाः**=धेहि १.८३.३. दध्याः ३.३०.७. **अदधुः**=दधतु ६.३९.३. दधीरन् ३.२९.७. धरन्ति २.४.२. स्थापन करते हैं ३.२.९. दध्युः ३.४७.३. दधतु ६.३९.३. दधति ६.६७.५. अनेकविधं तस्य परमात्मपुरुषस्य व्याख्यानं

कृतवन्त:, कुर्वन्ति, करिष्यन्ति च ऋ० भू० १२५/३१.१०. [डुधाञ् धारणपोषणयो: (जुहो०) धातोर्लङ्]

अदन्ति भुञ्जते १.६४.३. विच्छिद्य भक्षयन्ति १.१०५.८. **अदन्तु**=भुञ्जताम् २६.११. [अद भक्षणे (अदादि०) धातोर्लट्]

अदब्धधीतीन्=अहिंसिताऽध्ययनान् (सज्जनान्) ६.५१.३. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१६. तत: क्त:=दब्ध:, तत्प्रतिषेध: । धीतिम्=कर्माणि ।। नि० १३.१४]

अदब्धम् अहिंसितम् (यानम्) ६.५१.१. **अदब्ध:**=अहिंसित: (ईश्वर:) १.८६.५. अहिंसक: (अग्नि:=विद्वान् राजा) ४.४.३. निरालस । (ईश्वर) आर्याभि० १.१०. अस्माभिरहिंसितोऽतिरस्कृत: (परमेश्वरो विद्वान् वा) १.७६.२. हिंसारहित (परमेश्वर) आर्या भि० २.५०. अहिंसनीय: (धर्म:) ५.१६.४. हिंसितुमनर्ह: (अग्नि:=अन्तस्थो विज्ञानस्वरूपो वा) ४.१५. अनलस: सन् पालनकर्त्ता (परमेश्वर:) ऋ० भू० ८८. दम्भादिदोषरहित: (सत्पुरुष:) ऋ० भू० २१३. **अदब्धा:**=अहिंसितौ (सभासेनेशौ) ३.५४.१६. **अदब्धान्**=अहिंसितानहिंसकान् (राज्ञ:=नृपान्) ६.५१.४. **अदब्धानि**=अहिंसनीयानि १.२४.१०. **अदब्धास:**=दम्भाऽहङ्काररहिता अनुपहिंसिता: (जना:), प्र०—अत्र 'आज्जसेरसुक्' इत्यसुगागम: 'हिनस्ति दभ्नोतीति वधकर्मसु पठितम् निघं० २.१६. ३.१८. अहिंसनीया: (देवा:) १.८६.१. अहिंसिता: (क्रतव:=यज्ञा: प्रज्ञा वा) २५.१४. अहिंसिता अहिंसका वा (देवास:=आप्ता विद्वांस:) ६.६७.५. **अदब्धा:**=अहिंसनीया: (कवय:=विपश्चित:) ४.२.१२. अहिंसनीया: सत्कर्त्तव्या: (युवतय:=प्राप्तयौवना: स्त्रिय:) ३.१.६. हिंसितुमयोग्या: (धेनव:=गाव:) १.१७३.१. अहिंसका: (अदिते: पुत्रा:) ७.६०.५. **अदब्धे**=अहिंसिते (अहनी=रात्रिदिने) ४.५५.३. **अदब्धेन**=सुखयुक्तेन (चक्षुषा=विज्ञानेन प्रत्यक्षप्रमाणेन) नेत्रेण १.३०. **अदब्धेभि:**=केनाऽपि हिंसितुमशक्यै: (पायुभि:=रक्षणै:) १.६५.६. अहिंसनीयै: (पायुभि:=रक्षणोपायै:) ३३.८४. अहिंसकै: (विद्वद्भि:) १.१४३.८. अहिंसितै: (पायुभि:=रक्षणै:) ३३.६६. **अदब्धै:**=अहिंसनै: (शुभगुणै:) ६.४८.१०. **अदभा**=अहिंसकौ (इन्द्राग्नी=नरेशसेनापती) ५.८६.५. (दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१६, तत: क्तप्रत्यये दब्धम्, तत्प्रतिषेध: । दम्भुदम्भने (स्वादि०) धातोर्वा क्त: प्रत्यय:]

अदब्धव्रतप्रमति: अदब्धेन अहिंसितेन व्रतेन शीलेन प्रमति: प्रज्ञानं यस्य स: (अग्नि:=विद्युदादिकार्यकारणस्य स्वरूप:) २.६.१. अदब्धैरहिंसनीयैर्व्रतैर्धर्माचरणै: प्रकृष्टा मतिर्मेधा यस्य स: (सत्पुरुष:) ११.३६. [नञ्+दभ्नोति वधकर्मा+क्त=अदब्ध: । व्रतम्=शीलम् । प्र+मनु अवबोधने धातो: क्तिन्=प्रमति: । एतेषां समास:]

अदब्धायो ! अदब्धमहिंसितमायुर्यस्मात् तत्सम्बुद्धौ, अदब्धायुर्वा (अग्ने=जगदीश्वर भौतिकोऽग्निर्वा) २.२०. [नञ्+दभ् (वधकर्मा)+क्त=अदब्ध: । आयु:=इण् गतौ धातो: 'छन्दसीण:' उणादि १.२. सूत्रेण उण् प्रत्यय: । एनयो: समासे सम्बुद्धौ रूपम्]

अदमय: दमय ६.१८.३. [दमु उपशमने दिवादि:, ततो णिचि लङि रूपम्]

अदम्भ: दम्भादिदोषरहित: परमेश्वर: ऋ० भू० २०३. [दम्भु दम्भने (स्वादि०) ततोऽच् कर्त्तरि, तत्प्रतिषेध:]

अदय: अविद्यमाना दया करुणा यस्य स:, भा०—दुष्टेषु निर्दय: (इन्द्र:=सेनापति:) १७.३६. [दय दानगतिरक्षणहिंसादनेषु भ्वादि:, 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्' इत्यङ् प्रत्यये स्त्रियां दया रूपम् । ततो नञ्बहुव्रीहि:]

अदर्द: विदृणाति ५.३२.१. पुन: पुनर्भृशं विदारयति २.२४.२. **अदर्दृतम्**=भृशं विदारयतम् ४.२८.५. **अदर्ध:**=भृशं, विदारयति, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन दस्य स्थाने ध: २.३८.४. **अद:**=विदृणीहि, प्र०—अत्र विकरणस्याऽलुक् लङ्प्रयोग: १.१२१.१०. [दृ विदारणे क्र्यादि:, तत: क्रियासमभिहारे यङन्ताल् लङ् । अदर्द: अदृणा: निरु० १०.६]

अदर्शि दृश्यते ५.१.२. दृश्यताम् १.४६.११ [दृशिर् प्रेक्षणे भ्वादि:, तत: कर्मणि लुङ्]

अदहत् दहति भस्मीकरोति ४.२८.३. **अदह:**=दह १.३३.७. दहति ७.१.७. [दह भस्मीकरणे (भ्वादि०) धातोर्लङ्]

अदात् दद्यात् ६.४७.२४. दिया है सं० वि० १२१. अथर्व० १४.१.५२. दत्तवान्, ददाति दास्यति वा प्र०—अत्र 'छन्दसि लुङ्लङ्लिट:, इति सामान्यकाले लुङ् १.३०.१६. दूरीकुर्यात् ६.२७.७. **अदा:**=प्रदेहि १६.६६. [डुदाञ् दाने (जुहो०) धातो: सामान्ये लुङ् । दाति दानकर्मा निघं० ३.२०. दैप् शोधने धातोर्वा रूपम्]

अदानम् दानस्याऽकर्त्तारम् (राजपुत्रम्) ४.१६.६. [डुदाञ् धातो: 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट् । तत्प्रतिषेध:]

अदाभ्य: अहिंसनीय (राजन्) ७.१५.१५. दभितुं

हिंसितुं योग्यानि दाभ्यानि तान्यविद्यमानानि यस्य तत्सम्बुद्धौ, (अग्ने=सभाध्यक्ष) प्र०—अत्र 'दभेश्चेति वक्तव्यम् अ० ३.१. **अदाभ्यम्**=अहिंसनीयं सत्कर्त्तव्यम् १.२४ इत्यनेन वार्तिकेन दभ इति सौत्राद्धातोर्ण्यत् १.३१.१०. (बृहस्पतिं=राजानम्) ३.६२.६. **अदाभ्यः**=निष्कपटः (मेधाविजनः) ५.५.२. अविनाशित्वान्नैव केनापि हिंसितुं शक्यः (विष्णुः=विश्वान्तर्यामीश्वरः) १.२२.१८. हिंसितुमनर्हः (विद्वान्) ३.११.५. उपक्षयरहितः (अधिपतिः=अधिष्ठातृजनः) १८.१९. अहिंसकत्वाद् दयालुः (ईश्वरः) ३४.४३. अहिंसनीयः (देवः=परमेश्वरः) ४.५३.४. उपक्षयरहितः (परमेश्वरः) १८.१९. **अदाभ्या**=हिंसितुमयोग्यौ (अध्यापकोपदेशकौ १.१५५.१. अहिंसनीयौ (स्त्रीपुरुषौ) ५.७५.७. **अदाभ्याः**=अहिंसनीयाः २.३४.१०. हिंसितुमनर्हाः ३.२६.४. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१९, ततः कर्मणि ण्यत्, 'कृत्यल्युटो बहुलमिति' वा कर्त्तरि ण्यत् प्रत्ययः । तत्प्रतिषेधः । ते (देवाः) होचुः । अदभाम वाऽएनान् (असुरान्) इति तस्माददाभ्यो न वै (असुराः) नोऽदभन्निति तस्माददाभ्यो वाग्वाऽअदाभ्यः श० ११.५.९.४. वागेवादाभ्यः श० ११.५.९.१.]

अदामानः निर्बन्धनाः (प्रजाः) ६.२४.४. अदातारः (प्रजाजनाः) ६.४४.१२. [डुदाञ् दाने धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' अ० ३.२.७५. सूत्रेणानुपपदेऽपि मनिन् प्रत्ययः, तत्प्रतिषेधः]

अदाशत् ददाति ४.४२.९. **अदाशन्**=ददति ७.१९.९. [दाशति दानकर्मा निघं० ३.२०. दाशृ दाने भ्वादि०, ततो लङ्]

अदाशुषः अदातुः (प्रजाजनस्य) ७.१९.१. **अदाशुषाम्**=अदातॄणाम् (दुर्जनानाम्) १.८१.९. [दाशृदाने (भ्वादि०) धातो क्वसुः प्रत्ययः । तत्प्रतिषेधः । दाशुषे=दत्तवते नि० ११.११.]

अदाशून्=अदातॄन् (शत्रून्) १.१७४.६. [दाशृ दाने धातोः कर्त्तरि औणादि० उण् प्रत्ययो बाहुलकात्]

अदिक्षि आदिशामि ५.४३.९. [दिश अतिसर्जने (तुदादि०) धातोर्लुङ् । 'शल इगुपधात्०' इति च्लेः स्थाने क्सादेशः]

अदितयः अखण्डिताः (मनुष्याः) १.५२.१. **अदितये**=मात्राद्याय ५.८२.६. पृथिवी में स० प्र० ३३०/१.२४.२. अविनाशिने (आत्मने) २९.२९. अविनष्टायाऽन्तरिक्षाय ४.३.८. इस संसार में स० प्र० ३३०.१.२४.१. पृथिवीराज्याय प्र०—अदितिरिति पृथिवीनाम निघं० १.१.१२.१२. कारणरूपेण नाशरहितायां पृथिव्याम्, प्र०—अत्र सप्तम्यर्थे चतुर्थी १.२४.१. अखण्डितसुखाय १.२४.१५. **अदितिम्**=कारणरूपेण नित्याम् (महीं=महतीं भूमिम्) १८.३०. अखण्डितां नीतिम् ६.५१.४. अमातरम् (देवीं=विदुषीम्) ६.५०.१. अखिण्डतां विद्यां प्रकृतिं वा ६.५१.३. दिवम् १.१३६.३. अखण्डिताम् (महीं=भूमिम्) २१.५. पृथिवीम् ४.५५.३. अविनाशिकां विद्याम् १.१५२.६. मातरं पितरं पुत्रं, जातं सकलं जगत्, तत्कारणं जनित्वं वा १.१०६.१. आकाशं भूमिं वा ५.४२.१. अविनाशिकां प्रज्ञाम् २५.२. अन्तरिक्षम् ३३.४९. अखिण्डतप्रज्ञम् (अश्विना=अध्यापकमुपदेशकं च) २५.१६. सर्वविद्याप्रकाशवन्तम् (विद्वज्जनम्) १.८९.३. अविनाशिकारणम् ५.६२.८. अविनाशिनं पदार्थम् १०.१६. जनित्वं कामम् (स्त्र्यासक्तिम्) ७.१८.८. अखण्डितां कालविद्याम् ७.१०.४. अखिण्डनीयां गाम्, अन्व०—धेनुम् ३३.४९. अखण्डितबोधाम् (विदुषीं स्त्रीम्) ५.६९.३. अखण्डितां विद्यां पृथिवीं वा ६.५१.३. नाशरहितां क्रियाम् ४.२.११. कारणरूपेण नित्याम् (प्रकृतिम्) १८.३०. **अदितिः**=स्वस्वरूपेणाऽखण्डिता (देवी=विदुषी स्त्री) ७.४०.२. पृथिवी ३४.३०. अविनाशि (अन्तरिक्षम्) २५.२३. अध्यापिका ११.६१. कारणरूपेण नाशरहिताः (देवाः=पृथिव्यादयः) २५.२३. विनाशरहिता (माता=प्रकृतिः) २५.२३. अखण्डिता (द्यौः=कारणरूपेण प्रकाशः) २५.२३. अखण्डिता (विद्या) ५.५१.११. उत्पत्ति-नाशरहिता (कारणरूपा प्रकृतिः) विदुषी माता, भा०—सती विदुषी माता १०.९. चेतन ब्रह्म, ईश्वर के रचे लोक और नाम भी अविनाशी आर्याभि० १.१७. अविनाशिनी (प्रकृतिः) ४.१९. कारणरूपेणाविनाशिनी भूमिः २५.४५. स्वात्मरूपेण नित्यम्, भा०—स्वरूपेण नित्यम् (पञ्चजनाः=मनुष्याः प्राणा वा) २५.२३. कारणरूपेण नित्यम्, भा०—अदृष्टकारणम् २५.२३. द्यौरिव विद्यागुणप्रकाशकः (अग्निः=अध्यापकः) २.१.११. मातेव (विद्वान्) ३.५४.१८ माता २८.२५. जननी ११.५७. माता पिता वा ४.३९.३. अखण्डितैश्वर्यमन्तरिक्षमिवाक्षुब्धा (राजमहिषी) १३.१८. मातेव पालिका भूमिः १४.२९. अन्तरिक्षम् ३३.४२. अखिण्डतबुद्धिः, भा०—गम्भीरबुद्धिः (राजा) ३३.१६. अविनश्वरविनाशरहित (ब्रह्म) आ० वि० १.१७. अविकृत विकार को न प्राप्त

ईश्वर आर्याभि० १.१७. माता राजसभा च १.४३.२. उत्पन्नं वस्तुमात्रं जनित्वं कारणं वा १.६४.१६. प्रकाशमयी विद्या १.१०६.७. विद्वत्पिता सूर्यदीप्तिर्वा १.१०७.२. अखण्डसुखप्रदा (माता) ५.४२.२. अखण्डितमन्तरिक्षम् ४.१.२०. अखण्डिता सभासदलङ्कृता सभा १७.४८. अखिण्डता (धेनुः=गौः) १.१५३.३. नाशरहितो जगदीश्वरः, प्र०—अदितिरिति पदनामसु पठितम् निघं० ५.५. अनेन ज्ञानस्वरूपोऽर्थो गृह्यतेऽन्तरिक्षं वा १.१४. यज्ञस्याऽनुष्ठाता यजमानः, अन्व०—नाशरहितः, प्र०—पदनामसु पठितत्वादत्र यज्ञस्य ज्ञाता पालकोऽर्थो गृह्यते १.१६. अखण्डितज्ञाना (देवी=विदुषी माता) ४.५५.७. प्रकाशवन्नित्या (द्यौः), प्र०—अत्र 'अदितिर्द्यौरिति, प्रकाशकारकोऽर्थो गृह्यते ४.२१. पुत्रः पुत्री वा, अन्व०—विद्या ११.५६. अखण्डितः (अग्निः=परमेश्वरः) १.१६२.२२. अदीना देवमाता निरु० ४.२२/१.१६.६. अविद्यमानखण्डनः (विद्वज्जनः) ५.४६.६. अखण्डिता नीति ७.५१.२. नाशरहिता (विद्युत्) २६.४. माता, प्र०—अत्रादितिर्द्यौरित्यादिना माता गृह्यते १.४३.२. पितेव वर्त्तमानः ७.६.३. नाशरहितो जगदीश्वरः १.१४. अविद्यमाना क्षितिर्नाशो यस्याः सा राजपत्नी ६.३४. अध्यापिका ११.६१. **अदिते !**=अखण्डितविद्य (विद्वज्जन) ५.५१.१५. अखण्डितानन्ददे (स्त्रि) भा०—ब्रह्मचर्य ३८.२. अखण्डितज्ञानैश्वर्ये (मातः) ६.५१.५. अखण्डिताऽऽनन्दे (सती स्त्रि) ११.५६. अविनाशिन् जगदीश्वर ४.५५.१. भा०—सर्वसुखप्रापिके नाशरहिते राजनीति, प्र०—अदितिरिति पदनामसु पठितम् निघं० ४.१. अनेनाऽत्र प्राप्त्यर्थो गृह्यते ३.२७. अखण्डितस्वरूपविज्ञाने विदुषि स्त्रि) २.२७.१४ विनाशरहित (जगदीश्वर विद्वन्वा) १.६४.१५. विदुषि मातः २.२६.३. आत्मस्वरूपेणाऽविनाशिनि (पत्नि) ८.४३. **अदिते**=हे आत्मस्वरूपेणाऽविनाशिनि (पत्नि) ८.४३. विदुषी मातः २.२६.३. विनाशरहित (जगदीश्वर) १.६४.१५. अखण्डितस्वरूपविज्ञाने (विदुषि स्त्रि) २.७.१४. अखण्डितविद्य (विद्वन्) ५.५१.१४. अखण्डितज्ञानैश्वर्ये (विदुषि स्त्रि) ६.५१.५. नाशरहिता राजनीतिः, प्र०—अदितिरिति पदनामसु पठितम् निघं० ४.१. अनेनाऽत्र प्राप्यत्यर्थो गृह्यते ३.२७. अखण्डितानन्दे (विदुषि स्त्रि) ११.५६. अखण्डितानन्ददे (विदुषि स्त्रि) ३८.२. **अदितेः**=जातस्याऽपत्यस्य, प्र०—अदितिर्जातमिति मन्त्रप्रमाणात् १.१३६ १६. अखण्डितायाः कारणशक्तेः ३.३३. अन्तरिक्ष के सं० वि० १५६/७.४१.२. अखण्डितस्य विज्ञानस्य २.२८.३. पृथिव्याः सूर्यस्य वा १.१८५.३. अखण्डितस्याऽन्तरिक्षस्य ४.४२.४. अविनाशिनः कारणस्येव मातुः ३४.३५. पृथिव्याः ४.१२.४. अन्तरिक्षस्थाया भूमेः प्रकाशस्य वा ७.४१.२. **अदित्याः**=विज्ञानदीप्तेर्वेदवाचः सकाशादन्तरिक्षे मेघमण्डलस्य मध्ये, भा०—पृथिव्याः, अन्व०—अन्तरिक्षस्य, प्र०—अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमिति मन्त्रप्रामाण्यात् 'अदितिरिति वाङ्नामसु पठितम् निघं० १.११, पदनामसु च निघं० ४.१.१.११. पृथिव्याः, भा०—शुद्धायाः सर्वतोऽवकाशयुक्तायाः पृथिव्याः, प्र०—अदितिरिति पृथिवीनामसु पठितम् निघं० १.१. पृथिव्यादेः ४.३०. प्रकाशस्य भा०—सूर्यप्रकाशस्य, अन्व०—अन्तरिक्षस्य पृथिव्याश्च १.१६. **अदित्यै**=पृथिव्यै, प्र०—अदितिरिति पृथिवीना० निघं० १.१.२२.२०. पृथिव्या अन्तरिक्षस्य वा, प्र०—अत्र षष्ठ्यर्थे चतुर्थी, अदितिरिति पृथिवीनामसु पठितम् निघं० १.१. पदनामसु च निघं० ४.१. अनेन गमनाऽऽगमनव्यवहारप्राप्तिहेतुरवकाशोऽन्तरिक्षं गृह्यते १.३०. नाशरहितायै (मह्यै=वाचे) २२.२०. पृथिव्याः, प्र०—अत्र 'चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि अ० २.३.६२ इति षष्ठ्यर्थे चतुर्थी २.२. नित्यविज्ञानम् प्र०—अत्र कर्मणि चतुर्थी ३८.३. नाशरहितायै नीत्यै ३८.१. अन्तरिक्षस्य २५.४. दिवे प्रकाशाय, प्र०—अदितिर्द्यौविति प्रमाणात् २५.८. पृथिव्यादिसृष्टये ४.३०.

अखण्डितायाः अन्तरिक्षरूपायै (विष्णुपत्न्यै) २६.६०. जनन्यै २२.२०. दिवे विद्याप्रकाशाय ११.५६. अखण्डितायै जनित्वक्रियायै, प्र०—अदितिर्जनित्वमिति मन्त्रप्रामाण्यादत्रादितिशब्देन गृह्यते, भा०—प्रजननाय २४.६. प्रकाशस्य १४.२५. पृथिव्यादिसृष्टये ४.३०. नाशरहितायै जनन्यै २२.२०. [अदितिः शब्दो निघण्टौ पृथिवी, वाक् गो, पद, द्यावापृथिवीनामसु पठितः। दो अवखण्डने धातोः क्तिन्। 'द्यतिस्यति०' अ० ७.४.४०. सूत्रेण इकारादेशः। तत्प्रतिषेधः। दातुं=छेत्तुम् अयोग्या अदितिः। अदीना देवमाता नि० ४.२२. अग्निरप्यदितिरुच्यते नि० ११.२१. इयं (पृथिवी) वाऽअदितिर्मही श० ६.५.१.१०. इयं (पृथिवी) वै देव्यदितिर्विश्वरूपी तै० १.७.६.७. अदित्यै पुनर्वसू तै० १.५.१.१. एका न देव्यदितिरनर्वा विश्वस्य भर्त्री जगतः प्रतिष्ठा। पुनर्वसू हविषा वर्धयन्ती। प्रियं देवानामप्येतु पाथः तै० ३.१.१.४. अदितिर्वै प्रजाकामौदनमपचत्तत उच्छिष्टमश्नात् सा गर्भमधत्त तत आदित्या अजायन्त गो० पू० २.१५.

सर्वं वा ऽअत्तीति तददितेरदितित्वम् श० १०.६.५.५. इयं (पृथिवी) वाऽदितिरियं हीदं सर्वं ददते श० ७.४.२.७. इयं (पृथिवी) वा अदितिः कौ० ७.६. इयं वै पृथिव्यदितिः श० १.१.४.५. इयं वै पृथिव्यदितिः सेयं देवानां पत्नी श० ५.३.१.४. अदितिर्हि गौः श० २.३.४.३४. मा गामनागामदितिं वधिष्ट मं० २.८.१५. वाग्वाऽदितिः श० ६.५.२.२०. आदित्या (अदितेरुत्पन्नाः) वा इमाः प्रजाः ता० १३.९.५. अथ यत् प्रायणीयेन यजन्ते ‘अदितिमेव देवतां यजन्ते श० १२.१.३.२. सा (अदितिः) ऊर्ध्वां दिशं प्राजानात् कौ० ७.६. अदितिरच्छिन्नपत्रा काठ० १.११., क० १.११. अदितिः सोमस्य योनिः मै० ३.७.८.६.१. प्रतिष्ठा वा अदितिः प्रतिष्ठा पूषा० तै० ५.३.४.४. यत् तदादत्त तद् अदितिः काठ० ८.२.]

अदितित्वे अखण्डितत्वे (कार्ये) ७.५१.१. [अदिति प्राति० भावे त्वः प्रत्ययः]

अदित्यवाहः दितौ खण्डने भवा दित्या, न दित्या अदित्यास्तान् ये वहन्ति प्रापयन्ति ते अदित्यवाहः (पशुपालकाः) २४.१२. [अदित्योपपदात् वह प्रापणे धातोः ‘वहश्च’ सूत्रेण ण्विः प्रत्यये अदित्यवाट्, तस्य बहुवचने रूपम्]

अदित्सन्तम् राजकरं दातुमनिच्छन्तम् (पुरुषम्) ९.२४. दातुमनिच्छन्तम् (अदातृजनम्) ६.५३.३. [डुदाञ् दाने धातोरिच्छायामर्थे सन् । ‘सनि घुमा०’ इति सूत्रेणाचः स्थाने ‘इस्’ आदेशोऽभ्यासलोपश्च । दित्स धातोः शतृप्रत्ययस्ततो नञ्समासः]

अदिद्युतत् प्रकाशितवान् प्रकाशयति वा ४.२५. द्योतते ६.११.४. [द्युत् दीप्तौ (भ्वादि०) ततो णिचि लुङि ‘णिश्रि०’ अ० ३.१.४८. सूत्रेण च्लेः स्थाने चङ् । ‘द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्’ अ० ७.४.६७. सूत्रेणाभ्यासस्य सम्प्रसारणम्]

अदिष्ट दिशेत् ५.३६.६. [दिश अतिसर्जने धातोर्लुङ् । छान्दसत्वात् च्लेः स्थाने क्सादेशो न भवति]

अदीदेत् प्रदीप्येत्, प्र०—दीदयतीति ज्वलतिकर्मसु पठितम् निघं० १.१६, अत्र दीदिधातोर्लेङि प्रथमैकवचने शपो लुक् १.११२.१७. **अदीदेः**=प्रकाशयेः ७.५.३. [ज्वलनार्थकदीदधातोर्लिङ्]

अदीधयुः दृश्यन्ते, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ५.४०.५. दीपयेयुः ७.३३.५. [दीधीङ दीप्तिदेवनयोः (अदादि०) धातोः सामान्ये लुङ् । अदीधेत्:=अन्वध्यायत् निरु० २:१२.]

अदीनाः दीनतारहिताः, भा०—अपराधीनाः, आत्मवशाः (सज्जनाः) ३६.२४. स्वतन्त्राः (जनाः) पं० वि० कभी पराधीन नहीं आर्याभि० २.३७.३६.२४. [दीङ् क्षये दिवादिः, ततः ‘इणसिञ्’ उणादि० ३.२. सूत्रेण नक् प्रत्ययः । ततो नञ्समासः]

अदीमहि क्षाययेम, नाशयेम, प्र०—अत्र दीङ् क्षय इत्यस्माल्लिङर्थे लङ् ‘बहुलं छन्दसि’ इति श्यनो लुक् ३.५८. **अदीयम्**=निःसरेयम् ४.२७.१. [अदीयम्—दीयति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अदुग्धा इव दुग्धरहिता इवं (धेनवः=गाव इव) ७.३२.२२. अविद्यमानपयस इव (धेनवः=गाव इव प्रजाः) २७.३५. [दुह प्रपूरणे अदादिः, ततः क्तः प्रत्ययः । ततो नञ्समासः]

अदुद्रोत् द्रवयति २.३०.३. [द्रु गतौ भ्वादिः, ततो णिजन्तात् सामान्ये लुङ्]

अदुवः अपरिचारकाः (कृतघ्ना जनाः) ७.४.६. [दुवस्यति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. ततो क्विप् कर्त्तरि, ततो नञ्समासः]

अदुष्कृतौ अदुंष्टाचारिणौ (स्त्रीपुरुषौ) ३.३३.१३. [नञ्+दुस्+कृ+क्विप् । दुष्कृतः=पापकृतः नि० १०.१२.]

अदुहत् परिपूरयति, भा०=एधते १७.७४. [दुह प्रपूरणे अदादिः, ततो लङ्]

अदुः ददति २१.६१. देवें सं० वि० १३४, १०.८५.४३. देते हैं सं० वि० १२१, १०.८५.३६. [डुदाञ् दाने (जुहो०) धातोः सामान्ये लुङ्]

अदृक्षत दृश्यन्ते १.४८.१३. [दृशिर् प्रेक्षणे धातोर्लुङ् कर्मणि]

अदृपिताय अमोहिताय (देवाय=नृपाय) ४.३.३. **अदृपितेभिः**=मोहादिदोषरहितैः (विद्वज्जनैः) १.१४३.८.

अदृप्तः मोहरहितः (सज्जनः) १.६९.२.

अदृप्यता हर्षमोहरहितेन (सज्जनेन) १.१५१.८. [दृप हर्षणमोहनयोः (दिवादि०) धातोः क्तः । ततो नञ्समासः । ‘रधादिभ्यश्चे’ तीड्विकल्पः]

अदृप्तक्रतुम् अमोहितप्रज्ञम् (राजानमधिकारिणं वा) ६.४९.२. [‘अदृप्तम्’ अमोहितम् । क्रतुशब्दः प्रज्ञानाम

निघं० ३.६. कर्मनाम निघं० २.१. तयोः समासः]

अदृश्रन् पश्यन्ति ५.३.११. दृश्यन्ते १.१९१.५. समीक्षेरन्, पश्येयुः १६.७. **अदृश्रम्**=प्रेक्षेयम् १.५०.३. पश्येयम्, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ्, उत्तमैकवचनप्रयोगो 'बहुलं छन्दसि' इति रुडागमः 'ऋदृशोऽङि गुणः' इति प्राप्तौ गुणाऽभावश्च ८.४०. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वादि०) धातोर्लुङ् । 'इरितो वेति' अङ्प्रत्ययः]

अदृष्टहा योऽदृष्टमन्धकारं हन्ति सः (सूर्यः) १.१९१.८. यो गुप्तान् विषान् हन्ति सः (वैद्यः) १.१९१.९. [नञ्+दृष्ट+हन्+डः प्रत्ययः 'अन्येष्वपि दृश्यते' अ० ३.२.१०१. सूत्रेण]

अदृष्टाः ये न दृश्यन्ते ते (सर्पादयः) १.१९१.५. ये न दृश्यन्ते ते विषधारिणो जीवाः १.१९१.१. दृष्टिपथमनागता विषधरा विषा वा (सर्पादयः) १.१९१.४. अदृश्यमानाः (विषधराः प्राणिनः) १.१९१.७. **अदृष्टान्**=दृष्टिपथमनागतान् (रोगान्) १.१९१.२. [दृशिर् प्रेक्षणे धातोः क्तः प्रत्यये नञ्समासः]

अदृंहत् धरति २.१२.२. **अदृंहीत्**=धरेत् २८.२०. **अदृंहीः**=प्राप्य वर्द्धस्व ६.२. [दृहि वृद्धौ (भ्वादि०) धातोर्लङ् । अदृंहीत्=दृहिधातोर् लुङ्]

अदेदिष्ट भृशमुपदिशत ३.३१.२१. [दिश अतिसर्जने (तुदादि०) धातोर् यङ्लुक्, ततो लुङ्]

अदेवत्रात् देवान् त्रायते यस्मात्तद्विरुद्धात् (अराधसः=अधनात्) ५.६१.६. [नञ्+देव+त्रैङ् पालने धातोः कः प्रत्ययः]

अदेवम् अविद्यमानो देवः प्रकाशो यस्मिँस्तम् (सर्वसामर्थ्यम्) प्र०—अत्राऽन्येषामपि दृश्यते, २.२२.४. इत्यकारस्य दीर्घत्वम् प्रकाशरहितमविद्वांसं दुष्टं वा ३.३२.६. **अदेवयोः**=न देवौ अदेवौ तयोरदेवयोः (अविदुषोरध्यापकोपदेशकयोः) १.१५०.२. **अदेवस्य**=असुरस्य शत्रुगणस्य १.१७४.८. **अदेवः**=अविद्वान् (जनः) ६.१८.११. प्रकाशरहितः (विद्याहीनो जनः) ६.१७.८. **अदेवान्**=अविदुषः (जनान्) ३.१.१६. **अदेवानि**=अशुद्धानि (हेळांसि=अनादराणि) ६.४८.१०. **अदेवेन**=अशुद्धेन (मनसा) २.२३.१२. [दिवु क्रीडा विजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (दिवादि०) धातोः पचादिषु देवडिति पाठाद् इगुपधलक्षणं कं बाधित्वा अच् प्रत्ययः । 'देवाः' इति पदनाम निघं० ५.६. देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा द्युस्थानो भवतीति वा नि० ७.१५.]

अदेवीः असुरस्य दुष्टस्य नगरीः १.१७४.८. विद्यारहिताः (विशः=प्रजाः) ६.४९.१५. अशुद्धाः (प्रज्ञाः) ५.२.९. अप्रमदाः क्रियाः ५.२.१०. अदिव्याः (मिथतीः=हिंसतीः शत्रुसेनाः) ६.२५.९. अविदुषीः स्त्रियः ३.३१.१९. अदिव्या अशुद्धाः (मायाः=कपटछलयुक्ताः प्रज्ञाः) ७.१.१०. समन्ताद् देदीप्यमाना विदुषीः ६.४९.१५. [दिवु+अच्=देवः, स्त्रियां देवी, ततो नञ्समासः]

अदेवयन्तम् आत्मानमदेवमिच्छन्तम् (विद्वज्जनम्) २.२६.१. [देवाद् आत्मन इच्छायां क्यच्, 'न छन्दस्यपुत्रस्ये' ति ईत्वप्रतिषेधः, ततो नञ्समासः । देवयन्तः=देवान् कामयमानाः नि० ८.१८.]

अदेवृघ्नि ! हे देवरसेविके (पत्नि) ऋ० भू० २१४. हे देवर को दुःख न देने वाली स्त्रि सं० प्र० १५३, अथर्व० १४.२.१८. [नञ्+देवृ+हन् हिंसागत्योः+टक्प्रत्ययश्छान्दसः, स्त्रियां ङीप्, तत्सम्बुद्धौ रूपम्]

अद्धा साक्षात् ३.५४.५. प्रसिद्धम् ३३.३९. [अद्धा इति सत्यनाम निघं० ३.१०.)

अद्धि भुङ्क्ष्व १२.६५. अशान १.१६४.४०. भक्ष ३.५२.७. [अद भक्षणे (अदादि०) धातोर्लोट्]

अद्भिः प्राणैः १.९५.८. जलादिभिः ६.४९.१४. जलैः १.१२२.६. संसाधितैर्जलैः १८.३५. **अद्भ्यः**=जलाशयेभ्यः १७.१. जलेभ्यः ३१.१७. सुसंस्कृतेभ्यो जलेभ्यः १९.७४. जलेभ्यः प्रजाभ्यो वा १.८०.२. अप्सु गमनाय ३९.२. जलेभ्यः प्राणेभ्यो वा ७.२१. [अप्+भिसः 'अपो भिः' इति तकारादेशः]

अद्भुतः ! आश्चर्योत्तमगुणकर्मस्वभाव (अध्यापकोपदेशक) ५.१०.२. आश्चर्यकर्मन्, भा०—आश्चर्यगुण (वायो=विद्वज्जन) २७.३४. महाशय (विद्वज्जन), प्र०—अद्भुतमिति महन्नाम निघं० ३.३. **अद्भुतम्**=आश्चर्यगुणकर्मस्वभावम्, भा०—सर्वशक्तिमन्तं परमात्मानम् ३२.१३. आश्चर्यगुणकर्मस्वभावस्वरूपम् (परमेश्वरम्), प्र०—'अदि भुवो डुतच्' उ० ५.१. अनेन भू धातोरद्युपपदे डुतच् प्रत्ययः १.१८.६. अद्भुत, आश्चर्य, शक्तिमय ईश्वर को आर्याभि० २.५२,३२.१३. आश्चर्यभूतमिव वर्त्तमानम् (परमेश्वरम्) १.१७०.१. आश्चर्यस्वरूपम् (धनम्) १.१४२.१०. आश्चर्यभूतं रायस्पोषम् २७.२०. **अद्भुतस्य**=आश्चर्यगुणयुक्तस्य (विज्ञानस्य) १.१२०.४. आश्चर्यगुणकर्मयुक्तस्य सैन्यस्य १.७७.३. **अद्भुतः**=आश्चर्ययुक्तः (हेळः=अनादरः) १.९४.१२. आश्चर्यगुणकर्मस्वभावकः (ईश्वरः

सभाध्यक्षो वा) १.६४.१३. आश्चर्यगुणकर्मस्वभावः (राजा) ५.२३.२. अत्यन्त आश्चर्यरूप ईश्वर आर्याभि० १.४८. भा०—पवित्रस्वभावः (पतिः) ११.७०. आश्चर्यस्वरूपः (सवितादिलोकः) ऋ० भू० १४१. आश्चर्ययुक्तः (हेळः=अनादरः) १.६४.१२. **अद्भुता**=आश्चर्यरूपाणि (काव्या=कवीनां कर्माणि) प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि०' इति लोपः ५.६६.४, १.२५.११. **अद्भुतान्**=आश्चर्यगुणकर्मस्वभावान् (कवीन्=अध्यापकोपदेशकान्) ४.२.१२. ['अदि 'उपपदे भूधातोर्डुतच् प्रत्यय औणादिकः । (अद्भुतम् इति महन्नाम निघं० ३.३. अद्भुतम्=अभूतम् नि० १.६. महत्सम्भृतम् नि० ६.२१.]

अद्भुतक्रतू अद्भुता क्रतुः प्रज्ञा कर्म्म वा ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.७०.४. [अद्भुतम्=अभूतम्, क्रतुशब्दो निघण्टौ प्रज्ञावाची कर्मवाची च । तयोः समासः]

अद्भुतैनसाम् अद्भुतानि महान्त्येनांसि पापानि येषान्तेषाम् (दुष्टानां जनानाम्) ५.८७.७. [अद्भुतो व्याख्यातः । एनस्=इण् गतौ धातोः 'इण आगसि नुट् च' उणादि० ४.१९८. सूत्रेण असुन्प्रत्ययान्तः]

अद्मम अत्तुमर्हं कर्मफलम् १.५८.२. (अद भक्षणे धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' अ० ३.२.७५. सूत्रेण मनिन् । अद्म=अन्नं भवति नि० ४.१६.]

अद्मसत् योऽद्मानि सादयति परिपचति सः (अग्निः) १.१२४.४. [अत्र पर्णाशुषिवण् णिलुक् । अद्मोपपदात् षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु धातोः क्विप् । अद्मसादिनीति वान्नासनिनीति वा नि० ४.१६.)

अद्मसदः येऽद्मसु अत्तव्येषु सीदन्ति ते (पर्वताः=मेघाः) ६.३०.३. **अद्मसद्वा**=योऽद्मसु भोक्तव्येषु सीदति (अग्निः) पावकः ६.४.४. [अद्म+षद्लृ+क्विप्]

अद्य अस्मिन्नहनि ८.४५. इदानीम् ५.५८.३. इसी वर्त्तमान समय में स० प्र० २४६,३२.१४. अस्मिन् दिने, प्र०—अत्र 'सद्यः परुत्परार्यैषम० ५.३.२२, अनेनाऽयं निपातितः १.२३.२३. अस्मिन् वर्त्तमाने समये १५.४४. भा०—सदैव ३३.५१. अस्मिन् वर्त्तमाने दिने १.४७.३. अधुना ६.३७.१. अस्मिन् दिवसे ३३.१७. इसी समय में आर्याभि० २५३,३२.१४. [अस्मिन्नहनि अद्य । इदमोऽश्भावो द्यश्च प्रत्ययोऽहनि । अद्य=अस्मिन् द्यवि नि० १.६.]

अद्यत् अत्ति २८.२३. [अद् भक्षणे धातो रूपम्]

अद्यः अत्तुं योग्यः (पदार्थः) २.१३.६. **अद्याय**=अत्तुमर्हाय (इष्टभोगाय) ७.११.५. [अद भक्षणे धातोः क्यप् प्रत्ययश्छान्दसः]

अद्युतः अप्रकाशकान् भूम्यादीन् ६.३९.३. **अद्युम्**=प्रकाशरहितं व्यवहारम् ७.३४.१२. [द्युत् दीप्तौ धातोः क्विप् । ततो नञ्समासः । द्युरित्यह्नो नामधेयं द्योतत इति सतः नि० १.६]

अद्यूत्ये द्यूते भवो व्यवहारो द्यूत्यश्छलादिदूषितस्तद्भिन्ने (सद्व्यवहारे) १.११२.२४. अविद्यमानानि द्यूतानि यस्मिँस्तस्मिन् भवे (अवसे=रक्षणाय) ३४.२६. [द्यूत प्राति० भवार्थे यत् प्रत्ययः, ततो नञ् समासः]

अद्यौत् द्योतयति १.१२३.७. प्रकाशयति १.१२२.१५. प्रकाशते ४.५.१५. विद्योतयति प्रकाशते १.११३.१४. द्योतते ३.५.९. [द्युत् दीप्तौ धातो रूपम्]

अद्रयः मेघाः ४.१९.५. मेघाः पर्वता वा ३.३२.१६. **अद्रिणा**=मेघेन सह १.१६८.६. **अद्रिभिः**=शिलाखण्डादिभिः १.१३०.२. शैलाऽवयवैरुलूखलादिभिः १.१३५.५. प्रस्तरैर्मेघैर्वा १.१३७.३. मेघैः, प्र०—अद्रिरिति मेघना० १.१०,२०.३१. मेघैः शैलैर्वा १.१२१.८. **अद्रिम्**=मेघम्, प्र०—अद्रिरिति मेघना० १.१०, १.७.३. मेघमिव ४.२१.६. पर्वताकारम् (मेघम्) १.६१.७. मेघमिव शत्रुम् ४.२.१५. पर्वतमिव १.८८.३. **अद्रिः**=मेघः, प्र०—अद्रिरिति मेघनामसु पठितम् निघं० १.१०, १.१४. **अद्री**=मेघविद्युतौ ७.४२.१. आनन्दितौ पत्नीयजमानौ ७.३९.१. यौ न द्रवतो विनश्यतः कदाचित्तौ (इन्द्राग्नी=विद्युद्भौतिकाग्नी) १.१०९.३. **अद्रेः**=मेघात् १.९३.६. **अद्रेः**=शैलस्य १.११७.१६. मेघस्य ३.३१.६. **अद्रौ**=शैलादौ घने पदार्थे १.७०.२. मेघे ५.८५.२. मेघे शैले वा ४.३१. [अद भक्षणे (अदादि०) धातोः 'अदिशदि०' उणादि० ३.६५ सूत्रेण क्रिन् प्रत्ययः । अद्रि मेघनाम निघं० १.१०. अद्रिरादृणात्येतेन अपि वाऽत्तेः स्यात् नि० ४.४. अद्रयः आदरणीयाः नि० ९.८. गिरिर्वाऽद्रिः : श० ७.५.२.१८. ग्रावाणो वा अद्रयः तै० सं० ६.१.११.४. अद्रिरसि श्लोककृत् काठ० १.५.]

अद्रिजाः यो मेघपर्वत वृक्षादीन् जनयति सः (परमेश्वरः) १०.२४. योऽद्रीन् मेघान् जनयति (ब्रह्म जीवश्च) १२.१४. योऽद्रेर्मेघाज्जातः (जीवात्मा) ४.४०.५. [अद्रि+जनी प्रादुर्भावे (दिवादि०) धातोः 'जनसनखन०' अ० ३.२.६७ सूत्रेण विट् प्रत्ययः । 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्, अ० ६.४.४१ सूत्रेणाकारादेशः । अथवा अद्रि-

उपपदे जनी धातोः । 'अन्येष्वपि दृश्यते' सूत्रेण डः प्रत्ययः । एष (सूर्यः) वा अद्रिजाः ऐ० ४.२]

अद्रिजूतः योऽद्रौ मेघे जवति सद्यो गच्छति (रथः) ३.५८.८. [अद्रि+जू वेगितायां गतौ (सौत्रो धातुः) धातोः क्तः]

अद्रिदुग्धाः मेघेन पूर्णाः (अवताः=कूपाः) ४.५०.३. अद्रेर्मेघात् पर्वतेभ्यो वा प्रपूरिताः (चमूषदः) १.५४.९. [अद्रि+दुह प्रपूरणे (अदादि०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

अद्रिबुध्नम् मेघाऽऽकाशम्, भा०—मेघम् १३.४२. [बुध्नम्=अन्तरिक्षम्, बद्धा अस्मिन् धृता आप इति वा नि० ४.४४.]

अद्रिभित् मेघच्छेत्ता (बृहस्पतिः=सूर्य इव राजा) ६.७३.१. [अद्रि+भिदिर् विदारणे धातोः क्विप् प्रत्ययः]

अद्रिरसः प्राणादिविद्याविदः (सत्पुरुषाः) १ ६२.२. [अद्रय आदरणीया इति निरुक्तकृतो निर्वचनेन प्राणादिविद्या अद्रयः । रस आस्वादनस्नेहनयोः (चुरादि०) धातोः क्विप् । अद्रीन्=प्राणादिविद्याः रसयन्ति आस्वादयन्ति ते अद्रिरसः]

अद्रिवः अद्रिर्मेघः प्रशंसाधनं भूयान् वा विद्यते यस्मिन् तत्सम्बुद्धावीश्वर मेघवान् सूर्यो वा, प्र०–अद्रिरिति मेघनामसु पठितम् निघं० १.१०, अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् १.१०.७. वहवोऽद्रयो मेघा विद्यन्ते यस्मिन् तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=मेघवन् सूर्य), प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् 'छन्दसीरः' इति मतुपो मकारस्य वत्त्वम् 'मतुवसो रुः सम्बुद्धौ छन्दसि' ८.३.१. इति नकारस्थाने रुरादेशश्च १.११.५. प्रशस्तमेघयुक्त सूर्यवद्वर्त्तमान (इन्द्र=धार्मिक जन), प्रशस्ता अद्रिवः शैला विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभेश) १.१३३.६. अद्रिवन्मेघ इव वर्त्तमान (शूर=सभेश) १.१३३.२. मेघवत् सूर्य इव (राजन्) ५.३६.३. मेघयुक्त सूर्यवद् राजमान (इन्द्र=सेनेश) ५.३५.५. वहुशैलराज्ययुक्त (राजन्), अद्रयो वहवो मेघा विद्यन्ते यस्मिन् सूर्ये तदिव तेजस्विन् (राजन्) १.१२९.१०. अद्रयो मेघा विद्यन्ते सम्बन्धे यस्य सूर्यस्य तद्वद्वर्त्तमान (राजन्) ४.३२.५. प्रशस्ताऽश्ममयवस्तुयुक्त (इन्द्र=शत्रुविनाशक विद्वन् सेनेश), भा०—मेघसम्बन्धि सूर्य २७.३८. सूर्य इव विद्याप्रकाशक (राजन्) ५.३९.१. सुशोभितशैलयुक्त (विद्वन्राजन्) ५.३९.३. वहुमेघयुक्तसूर्यवत् सेनायुक्त (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्ष) १.८०.१४. अद्रयो मेघा विद्यन्ते यस्य सूर्यस्य तद्वद्वर्त्तमान (राजन्) ७.२०.८. अद्रयो मेघा इव शैला वर्त्तन्ते यस्य राज्ये तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ५.३८.३. प्रशस्ता अद्रयो विद्यन्ते यस्य राज्ये तत्सम्बुद्धौ (सभाध्यक्ष) १.१२१.१० मेघवत् पर्वतयुक्त राज्यालङ्कृत (सभाध्यक्ष) १.८०.७. मेघवान् सूर्य इव वर्त्तमान (इन्द्र=विद्वन्) ३.४१.१. सुशोभितशैलयुक्त (विद्वन्) ५.३९.३. मेघकर सूर्यवद्वर्त्तमान (उत्तमराजन्) ६.४५.९. [अद्रि+मतुप् । मकारस्य वकारः, नकारस्य च रुत्वम् । अद्रिवः=अद्रिवन् नि० ४.४.]

अद्रिसानो अद्रौ मेघे सानूनि यस्यास्तत्सम्बुद्धौ (उषः=वरे स्त्रि) ६.६५.५. [अद्रिः=मेघः । सानु=षण संभक्तौ धातो 'दृसनिजनि०' उणादि० १.३. सूत्रेण ञुट् प्रत्ययः । सनति सम्भजति सनोति ददाति वा स सानुः । एनयोः समासः]

अद्रिसुतासः अद्रिणा मेघेन सुता उत्पन्नाः (उद्भिदः=ओषधयः) १.१३९.६. [अद्रि+षुञ् अभिषवे (स्वादि०) षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वादि०) धातोर्वा क्तः प्रत्ययः]

अद्रुहम् द्रोहरहितम् (विप्रम्) ६.१५.७. **अद्रुहः**=द्रोहरहिताः, भा०—द्रोहादिदोषरहिताः (**अग्नयः**=विद्वज्जनाः) १२.५०. द्वेषरहिताः (सत्पुरुषाः) ३.२२.४. द्रोहरहितस्य (जनस्य) १.१५९.२. **अद्रुहा**=द्रोहादिदोषरहिताः (विद्वज्जनाः), प्र०—अत्र 'सुपाम्०' इत्याकारादेशः २.४१.२१. द्रोहरहितावध्यापकोपदेशकौ ३.५६.१. अद्रोग्धव्ये (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.२. [नञ् उपपदे द्रुह जिघांसायाम् (दिवादि०) धातोर् इगुपधलक्षणः कः]

अद्रुहाणा द्रोहरहितौ (रुद्रा=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७०.२. [नञ् उपपदे द्रुह जिघांसायाम् धातोः 'ताच्छील्यवयोवचन०' अ० ३.२.१२९ सूत्रेण ताच्छील्ये चानश्, विकरणलुक् च छान्दसः]

अद्रोघ द्रोहरहित (इन्द्र=जगदीश्वर) ३.३२.९. **अद्रोघम्**=द्रोहरहितम् (श्रवः+श्रवणम्) ५.५२.१. **अद्रोघः**=द्रोहरहितः (सज्जनो राजा) ६.१२.३. **अद्रोघेण**=अद्रोहेण निर्वैरेण (वचसा=वचनेन) प्र० अत्र वर्णव्यत्ययेन हस्य घः ३.१४.६. [नञ्युपपदे द्रुह जिघांसायां धातोरच् प्रत्ययः । हकारस्य च घकारः]

अद्रोघवाचम् अद्रोघा द्रोहरहिता वाग् यस्य तम् (विद्वज्जनम्) ६.५.१. द्रोहरहिता वाग्यस्य तम् (परमात्मानम्) ६.२२.२. [नञ्द्रोघपदयोः समासे ततो वाचा सह समासः]

अद्वयन्तम् अद्वयमिवाचरन्तम् (अग्नि=पावकम्) ३.२९.५. [द्वाववयवावस्येति द्वयम्, द्विप्राति० अवयवे तयप्, तस्यायजादेशः । ततो नञ्समासे अद्वयम्, तत

आचारे क्विप्, ततः शतृ प्रत्ययः]

अद्वयाविनम् यो द्वयोर्न विद्यते तं सरलगामिनम् (वह्निम्) २.२.१५. अद्वन्द्वभावरहितम् (विद्यार्थिनम्) ५.७५.५. **अद्वयाविनः**=न विद्यते द्वितीयो यस्मिँस्तस्य (पुत्रस्य) १.१५९.३. **अद्वयावी**=छलकपटादिरहितः (राजादिजनः) ७.५६.१८. [द्वयप्राति० मत्वर्थे 'छन्दसि विनिप्रकरणेऽष्ट्रामेखलाद्वयोभय०' अ० ५.२.१२२. वा० सूत्रेण विनिः प्रत्ययो दीर्घत्वम् च नञ्समासे रूपम्]

अद्वयाः अविद्यमानं द्वयं यस्मिन् सः (ईश्वरः) १.१८७.३. [नञ्+द्वि+तयप् । तयप्स्थाने अयजादेशः]

अद्विषेण्यः अद्वेष्टा (ईश्वरः) १.१८७.३. [द्विष अप्रीतौ (अदादि०) धातोः छान्दसत्वात् कर्त्तरि केन्यः प्रत्ययः । नञ्समासश्च]

अद्वेषः अविद्यमानो द्वेषो यस्मिन् सः (ईश्वरः) १.२४.४. द्वेषभावरहिताः (विद्वज्जनाः) १.१८६.१०. द्वेषरहितान् (मनुष्यान्) ५.८७.८. **अद्वेषे**=द्वेष्टुमनर्हे प्रीतिविषये १२.२९. [द्विष अप्रीतौ धातोर्भावे घञ्]

अध अनन्तरे प्र०—अत्र पृषोदरादित्वात् थस्य धः ८.५. अथ, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन थस्य धः १९.६९. अथ, प्र०—अत्रापि वर्णव्यत्ययेन धकारः १.१०१.९. अनन्तरम्, प्र०—अथेत्यस्यार्थे शब्दारम्भेऽधेत्यव्ययम् १.७२.१०. आनन्तर्ये ४.२.१६. निश्चयार्थे १.१५.१०. मङ्गले, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन थस्य धः १५.४५. [अधा=अथ इति नि० ३.२.]

अधत्त दधाति २.२२.२. धरति ६.८.३. **अधत्तम्**=दध्यातम् १.१८०.३. पोषयेतम् १.११६.८. धत्तः, धारयतः १.९३.५. भरतम् १.११६.१५. पुष्येतम् १.११६.१६. **अधत्थाः**=दध्याः ५.३२.२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः सामान्ये लङ्]

अधमम् निकृष्टम् (पाशं=बन्धनम्) १२.१२. नीचं तमोऽन्धकारम् ६.१६. **अधमान्**=पापाचारान् (नीचजनान्) ४.२८.४. **अधमानि**=निकृष्टानि (बन्धनानि) १.२५.२१.]

अधमत् धमति निराकरोति ४.५०.४. धमति ३३.९५. **अधमः**=धम कम्पय १.५१.५. शब्दैः शिक्षय १.३३.५. शिक्षय, अग्निना संयोजयति वा, प्र०—अत्र लोडर्थे लडर्थे वा लुट् १.३३.९. [ध्मा शब्दअग्निसंयोगयोः (भ्वा०) धातोर्लङ् सामान्ये । 'पाघ्रा०' इत्यादिना सूत्रेण धमादेशः । धमतिर्गतिकर्मा नि० ६.२]

अधयत् पिबति ५.१.३. धयति पिबति ३.१.१०. [धेट् पाने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अधरकण्ठेन अधरस्थेन कण्ठेन २५.२.

अधरम् अधोगतिम् (तमः=अन्धकारं कारागृहम्) १८.७०. निम्नम् (देशम्) २.१२.४. **अधरः**=नीचः (दुष्टकर्मैव द्वेष्यो जनः) ३.५३.२१. **अधरा**=नीचानि (पापफलानि) १.३३.१५. **अधरान्**=अधःपतितान् (दुर्जनान् शत्रून्) १७.६३. नीचान् (जनान्) १.१०१.५. **अधरात्**=नीचे से ६.१९.९. **अधरः**=अधस्थः (मेघः) १.३२.९. नीचः (दुर्जनः) ३.५३.२१. **अधरेण**=मुखादधस्थेन (ओष्ठेन) २५.५. [अधरः=अधोरः नि० ३.११]

अधराक् दक्षिणस्याः (दिशः) ६.३६. अधस्तात् १०.१९. [अधराची+अस्तातिः प्रत्ययः । 'अञ्चेर्लुक्' अ० ५.३.३० सूत्रेणास्तातेर्लुक् 'लुक्तद्धितलुकि' सूत्रेण स्त्रीप्रत्ययस्यापि लुक्]

अधराचीनम् योऽधोऽञ्चति तम् (मेघम्) २.१७.५. **अधराचीः**=या अधरान् नीचानञ्चन्ति ताः (ओषधयः (स्त्रियो वा) १६.५. [अधराच् प्राति० 'विभाषाञ्चेरदिक् स्त्रियामि' ति सूत्रेण ख-प्रत्ययः स्वार्थे]

अधर्म्माय=धर्माचरणरहिताय (दुर्जनाय) ३०.१०. [धृञ् धारणे धातोः 'अर्त्तिस्तु०' उणादि० १.१४०. सूत्रेण मन् प्रत्ययः । ततो नञ्समासः]

अधवन्त धुन्वन्ति ७.१८.१५. [धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातो लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्ना न भवति]

अधस्तात् अधो निपात्य ३.३०.१६. [अधर प्राति० अस्तातिः प्रत्ययः । 'अस्ताति च' अ० ५.३.४०. सूत्रेण अधरस्थाने अध् आदेशः]

अधस्पदम् नीचाऽधिकारम् (पृतन्युम्—शत्रुम्) १५.५१. [अधस्+पदम् 'अधःशिरसी पदे' अ० ८.३.४७. सूत्रेण सकारादेशः]

अधः अनन्तरम् १.१८०.७. अधोगामिनः (जनाः) १६.५७. अर्वाक् ३३.७४. हीनताम् ७.३८.६. [अधः=न धावतीत्यूर्ध्वंगतिः प्रतिषिद्धा नि० ३.११]

अधाक् दहति २.१५.४. [दह भस्मीकरणे (अदा०) धातोर्लुङ् । 'मन्त्रे घसह्वर०' अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक्]

अधात् दधाति ४.३४.१. दध्यात् ५.४०.८. समादधाति १९.९३. **अधातम्**=धारण करो २०.६६. **अधाताम्**=दध्याताम् २०.५७. डुधाञ् धारणपोषणयोः धातोर्लुङ् । 'गातिस्थाघु०' इति सूत्रेण सिचो लुक्]

अधायि ध्रियते १.१६२.७. धृता १.११९.२. धीय-

ताम् १.१०४.७. धीयते १.६०.४. ध्रियेत ७.३४.१४. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि लुङ्। अधायि=अध्यायि नि० ६.२२]

अधारयत् धारयेत्, धारयतु १३.२४. धारयति २.१७.५. **अधारयतम्**=धारयतम् ५.६२.३. **अधारयन्**=धारयन्तु ३.२.७. धारयन्ति ३३.७५. **अधारयन्त**=धारयन्ति प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.२०.८. धृतवन्तः १.१०३.१. **अधारयः**=धारय १.५२.८. धरति २.१३.७. धारयसि ६.१७.७. धरितवानसि ऋ० भू० १४४, ८.१२.३०. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्]

अधारयः अधारयन् सन् (सूर्यः) प्र०—अत्र नञुपपदात् 'धारिपारीति' शः प्रत्ययः १.५१.४. [नञ्+धारि+शः। 'अनुसर्गाल् लिम्पविन्दधारि०' अ० ३.१.१३८ सूत्रेण कर्त्तरि शः प्रत्ययः]

अधि उपरिभावे, अधिष्ठातृभावे ३१.५. उपरिभावे १६.५४. उपरान्तसमये १.४८.७. उपरि विराजमाने १७.१४. उपरिभागे १.१६.६. अधिकार्थे १.६.१०. अधीत्युपरिभावमैश्वर्यं वा प्राह निरु० १.३, १.२२. अधिष्ठातृत्वेन सर्वोपरि विराजमाने १७.३०. उपरि ४.१८.१२. उपरितः १.६.६. अध्यक्षतया १.८४.१७. आधेयत्वे १.८८.३. आधाराऽर्थे १.१२६.१. अनन्तराऽर्थे २.३०.३. उत्कृष्टे ३.१६.५. मध्ये ४.३०.१२. अधिकार-योगे सं० वि० १६५ १०.८५.४६. [अधीत्युपरिभावम् ऐश्वर्यं वा नि० १.३]

अधिकल्पिनम् अधिगतसामर्थ्ययुक्तम् (जनम्) ३०.१८. [अधि+कृपू सामर्थ्ये धातोर्भावे घञ्, ततो मत्वर्थे इनिः]

अधिकिरते विकिरति ४.३८.७. [कॄ विक्षेपे (तुदादि०) धातोर्लट्]

अधिकृण्वन्ते आधेयत्वं कुर्वन्ति तदाचरणायाधिकारं ददति, प्र०—व्यत्ययेनाऽत्रात्मनेपदम् १.८८.३. [अधि+डुकृञ्करणे धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययश्च। कृण्वन्ति=कुर्वन्ति नि० ६.३२]

अधिक्षियन्ति निवसन्ति ५.२०. आधाररूपेण निवसन्ति १.१५४.२. [अधि क्षि निवासगत्योः धातोर्लट्]

अधिगमेम उपरिभावेन गच्छेम, भा०—आप्नुयाम, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि, इति शपो लुक् १८.५१. [अधि+गम्लृ गतौ धातो लिङ्। शपो लुक् च।]

अधिगर्त्यस्य अधिकसुन्दरे गर्त्ते गृहे भवस्य (मध्वः=मधुरादिपदार्थस्य) ५.६२.७. [अधि+गर्त्त प्राति० भवार्थे यत् प्रत्ययः]

अधिचक्रिरे=उपरि कुर्वन्ति १.८५.२. [अधि+कृञ्+लिट्]

अधिजिगाति अधिगच्छति ५.८७.४. [अधि+जिगाति। जिगाति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अधिजज्ञिरे अधिजायन्ते भा०—जाताः ३२.२. अधिजज्ञे+प्रादुर्भवति १३.३४. [अधि+जनी प्रादुर्भावे धातोर्लिट्]

अधिजातः उपरिजातः (विद्वान्) ३५.२२. [अधि+जनीप्रादुर्भावे धातोः क्तः। नकारस्याकारादेशः]

अधिजायसे उत्पन्न होता है स० प्र० १५६. [अधि+जनी प्रादुर्भावे धातोर्लट्। जनेर्जादेशः]

अधित दधाति १.१४४.५. दध्यात् २१.४६. [डुधाञ् धारणपोषणयोर्धातोर्लुङ्। 'स्थाघ्वोरिच्च' सूत्रेणेकारादेशः कित्त्वञ्च]

अधितस्थुः तिष्ठन्ति १.१६४.२. [अधि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातोर्लिट्। अधितस्थुः+अभिसन्तिष्ठन्ते नि० ४.२७.]

अधितिष्ठति उपरि तिष्ठतु १.८२.४. ईश्वरत्वेनोपरिभावत्वेन प्रवर्त्तते १.५१.११. **अधितिष्ठन्**=उपरि स्थितः सन् (इन्द्रः+शिल्पविद्यैश्वर्ययुक्तो जनः) ३.३५.४ **अधितिष्ठसि**=उपरि तिष्ठसि १८.५५. [अधि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातोर्लट्]

अधिथाः धारयेथाः ४.१७.६. दध्याः ६.३१.१. [अधि+डुधाञ् धारणपोषणयोः धातोर्लुङ्। 'स्थाघ्वोरिच्च' सूत्रेणेकारादेशः कित्त्वञ्च]

अधिधत्त अधिधरत १७.१. [अधि+डुधाञ्+लोट्]

अधिधायि उपरि ध्रियते ४.२८.२. **अधिधाः**=उपरि धेहि १.५४.११. **अधिधेहि**=उत्कृष्टतया स्थापय ३.१६.५.

अधिनिदधुः अधिकतया नितरां धरन्ति १.७२.१०. उपरि नितरां धरन्तु १.७३.४. [अधि+नि+डुधाञ्+लिट्]

अधिनिषेद उपरि निषीदन्ति, प्र०—अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम् ४.३५.८. **अधिनिषेदुः**=स्थित हैं स० प्र०

२३६, १.१६४.३९. स्थित हुए और होते हैं सं० वि० २१५, १.१६४.३९. अधिनिषीदन्ति १.१६४.३९ [अधि+नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु धातोर्लिट्]

अधिपतयः अधिष्ठातारः (वसवः+अग्न्याद्याः) १५.१०. स्वामिनः १५.१२. अधिष्ठातारः पालकाः (संन्यासिनो ब्रह्मचारिणः) १६.५९. उपरिष्टात्पालकाः (रुद्राः=बलवन्ता वायवः) १५.११. **अधिपतये**=सर्वाधिष्ठात्रे, भा०+प्रजाधिपतये (राज्ञे) २२.३२. सर्वाधिष्ठातृणामुपरिवर्त्तमानाय (विद्वज्जनाय) ९.२०. पतीनां पालकानामधिष्ठात्रे, (राजपुरुषाय) १८.२८. सर्वस्वामिने राज्ञे २२.३०. **अधिपतिना**=अधिष्ठात्रा, भा०—अध्यक्षेण १५.९. **अधिपतिः**=उपरिष्टात् पालकः (पतिः) १५.१०. स्वामी (पतिः) १३.२४. अधिष्ठाता (सोमः=ओषधिराजः) १४.३१. द्योतकानामधिष्ठाता (सूर्यः) १५.११. अन्व०=सर्वस्य स्वामीश्वरः, पत्युः पतिः (ईश्वरः) १४.२८. [अधि + पति + जस् । प्रजापतिर्वाऽअधिपतिः श० ८ २.३.१२.]

अधिपत्नीम् अधिष्ठातृत्वेन पालयिकाम्, अन्व०—सूर्य्याम् (स्त्रीम्) १४.५. **अधिपत्नी**=अधिष्ठात्र्यौ (अहोरात्रे) १४.३०. अधिपतिना सहिता (अदितिः=भूमिः) १४.२९. सर्वासां दिशामुपरि वर्त्तमाना (दिक्) १५.१४. गृहेऽधिकृता स्त्री १४.१३. [अधि+पति प्राति० 'पत्युर्नो यज्ञसंयोगे' सूत्रेण ङीप् नकारादेशश्च]

अधिपतात् उपरि गच्छेत् १.१६.३. (अधि+पत्लृ गतौ धातोर्लेट् । 'लेटोऽडाटौ' सूत्रेणाडागम·]

अधिपाः अधिकः पालकः [अग्निः=उपदेशक आचार्यः) १२.५८. (अधि+पा रक्षणे धातोर् अच् प्रत्ययः]

अधिपिपिशे उपरिभावेनाऽऽश्रीयते ५.५७.६. [अधि+पिश अवयवे (तुदा०) धातोर्लिट्]

अधिपूरुषः अधि उपरि, पश्चाद् ब्रह्माण्डतत्त्वावयवैः पुरुषः सर्वप्राणिनां जीवाऽधिकरणो देहः ऋ० भू० १२२. [अधि+पुरुषः । 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घत्वम्]

अधिप्रभरे स्वीयचित्ते धरे १.१२६.१ [अधि+प्र+भृञ् भरणे (भ्वादि०) धातोर्लट्]

अधिप्रवोचत् प्रधिप्रवदेत् १.१६४.१८. [अधि+प्र+वच परिभाषणे (अदादि०) धातोर्लुङ् सामान्ये। 'बहुलं छन्द०' इत्यड् अभावः । 'अस्यति०' इत्यङ् 'वच उम' इति उम्]

अधिबुध्यमानौ सन्तानोत्पत्ति आदि की क्रिया को अच्छी प्रकार से जानने हारे (स्त्री पुरुष) सं० वि० १४०, १४.२.४३. [अधि+बुध अवगमने धातोः कर्मणि शानच्]

अधिब्रवत् अध्यक्षतया ब्रूयात् १.८४.१७. **अधिब्रवीतु**=उपरिभावेनोपदिशतु ६.७५.१२. **अधिब्रुवन्**=अधिकं ब्रुवन्तु, भा०—सत्यमुपदिशेयुः १७.५२. **अधिब्रुवन्तु**=अधिकं ब्रुवन्तु १९.५७. अधिष्ठातृभावेनोपदिशन्त्वध्यापयन्तु वा १९.५८. **अधिब्रूहि**=अधिकतयाऽऽज्ञापय १.११४.१० अधिकमुपदिश १५.१. उपरिभावेनोपदिश ३४.२७. विजयविधिमुपदिश १५.२. [अधि+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदादि०) धातोर् लेट्]

अधि भव उपरि भव ४४.५. अधिकारयुक्त हो अर्थात् सब से अविरोधपूर्वक प्रीति से वर्त्ता कर सं० वि० १३५, १०.८५.४६. [अधि भू सत्तायाम् (भ्वादि०) धातोर्लोट्]

अधिभोजना अधिकानि भोजनानि ६.४७.२३. [अधि+भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधादि०) धातोः 'ल्युट् च' अ० ३.३.११५. सूत्रेण ल्युट् । योर् अनादेशः]

अधिभ्रशत् अधिकं नष्टं स्यात् १२.११. [अधि+भृशु अधःपतने (दिवादि०) धातोर् लेट्]

अधिमन्थनम् उपरिस्थं मन्थनम् ३.२९.१. [अधि+ मन्थ विलोडने (भ्वादि०) धातोर्ल्युट् भावे]

अधियेतिरे उपरि प्रयतन्ते १.६४.४. (अधि+यती प्रयत्ने (भ्वादि०) धातोर्लिट् । 'अत एकहल्मध्ये०' इति सूत्रेणेत्वाभ्यासलोपौ]

अधिराजम् सर्वेषामुपरि राजमानम् ३४.४६. **अधिराजः** सर्वोपरिविराजमान (सभापति राजा) सं० वि० १८३. राजाऽधिराजः ऋ० भू० १४५ ('राजनि अधि' इति विभक्त्यर्थेऽव्ययीभावसमासे 'अनश्च' अ० ५.४.१०८. सूत्रेण टच् समासान्तः प्रत्ययः]

अधिरोचने उपरि प्रकाशे १.१५५.३. [अधि+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वादि०) धातोर्भावे ल्युट्]

अधिरोहय सन्तानों से अधिकाधिक बढ़ा सं० वि० १३९. अथर्व० १४.२.३७. **अधिरोह**=उपरिभावेन रोह १.५६.२. [अधि+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट्]

अधिवक्ता अधिकं वदतीति सः (इन्द्रः=विद्वान्) १.१००.१६. सर्वेषामुपर्य्यधिष्ठातृत्वेन वर्त्तमानः सन् वैद्यकशास्त्रस्याऽध्यापकः, भा०—सर्वेषामधिष्ठाता (भिषग्=वैद्यः) १६.५. यथावदनुशासिता १.१०२.११. **अधिवक्तारम्**=सर्वेषामुपरि उपदेशकम् २.३८.८. [अधि+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि धातोस्तृच् कर्त्तरि। 'ब्रुवो वचि' इति वचिरादेशः]

अधिवपते उपरि स्थापयति १.६२.४. [अधि+डुवप् बीजसन्ताने छेदने च (भ्वा०) धातोर्लट्। 'अनेकार्था अपि धातवो भवन्ति' इति महाभाष्यवचनात् स्थापनार्थेऽपि]

अधिवर्धत् उपरिभावेन वर्धयेत् ५.६२.५. **अधिवर्धताम्**=उपरिभावं वर्धताम् २७.४. [अधि+वृधुवृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अधिवासम् उपरि स्थापनीयम् (वस्त्रम्) २५.३६. [अधि+वस आच्छादने (अदादि०) धातोर्घञ् प्रत्ययः]

अधिविक्षरन्ति अक्षराण्यधिवर्षन्ति १.१६४.४२. [अधि+वि+क्षर सञ्चलने (भ्वा०) धातोर्लट्]

अधिविरप्शते उपरि विशेषेण राजते ४.४५.१. विरप्शी महन्नाम निघं० ३.३.]

अधिविराजतः अधिकं देदीप्येते १.१८८.६. [अधि+वि+राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

अधिवोच उपरिभावेनोपदिश १.१३२.१. **अधिवोचत**=प्रवदत २.२७.६. **अधिवोचः**=अधिकतया उच्याः। प्र०—अत्र लिडर्थे लुङ्। 'छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' अ० ६.४.७५. इत्यडभावः ६.३३. [अधि+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि धातोर्लुङ् सामान्ये। 'ब्रुवो वचि' रिति वचिः। 'अस्यतिवक्ति०' इत्यङ् 'वच उम्' इत्युमागमः। अडभावश्च]

अधिश्रितम् उपरि स्थितम् (भुवनं=जगत्) ४.५८.११. अधिश्रितः=प्रकाशित होता है स० प्र० ३१४. आश्रितः सन् प्रकाशितः (चन्द्रः) ऋ० भू० १४३. [अधि+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः]

अधिश्रियः अधिका लक्ष्म्यः १.१३६.३. [अधि+श्री]

अधिषन्ति उपरि सन्ति १८.६७. [अधि+अस भुवि अदादि०) धातोर्लट्। 'उपसर्गप्रादुर्भ्याम्०' अ० ८.३.८७. सूत्रेण मूर्धन्यादेशः]

अधिषवणे सोमलताद्योषधिसाधके (मुशलोलूखले) १८.११. [अधि+षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः करणे ल्युट्। जिह्वाधिषवणम् मै० ३.८.८, ४.५.६. त्वगधिषवणं चर्म काठ० २५.६.]

अधिषवण्ये अधिगतं सुवन्ति याभ्यान्तेऽधिषवणी तयोर्भवे (भक्ष्यपदार्थे), प्र०—अत्र 'भवेच्छन्दसि' इति यत् १.२८.२.

अधिष्ठः उपरिस्थः (सभाध्यक्षः) १.४७.७. [अधि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'सुपि स्थः' अ० ३.२.४. सूत्रेण कः]

अधिष्ठानम् अधितिष्ठन्ति यस्मिँस्तत् १७.१८. इस संसार की रचना करनें वाला (ब्रह्म) आर्याभि० २.३२. आधार इव (ब्रह्म) ७.१८ [अधि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातोरधिकरणे ल्युट्]

अधिष्ठाम अधितिष्ठेम १.१३६.४. [अधि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातोर्लट्। छान्दसत्वात् तिष्ठादेशो न भवति]

अधिसन्दधुः अधिसन्दध्युः ३.३.३. [अधि+सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट्]

अधिसमोताः अधिकता से निवास और मित्रता करने वाले (सब दिव्य गुण और विद्वान्) सं० वि० ८०. अथर्व० ११.५.२४.

अधिसादयामि उपरि स्थापयामि १३.१३. [अधि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

अधिसीदत उपर्युपस्थिता भवत १५.५४. उपरिभावेन सीदत १७.७३. उपरिभावेन तिष्ठत १८.६१. **अधिसीदन्**=उपरि गच्छन् (शिल्पविद्यावित्) १.८५.७. [अधि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट्। पाघ्रा०' इत्यादिसूत्रेण सीदादेशः शिति]

अधीतम् पठन-पाठन आर्याभि० २.१. [अधि+इङ् अध्ययने (अदादि०) 'नपुंसके भावे क्तः' इति सूत्रेण क्तः प्रत्ययः]

अधीतौ अध्ययने २.४.८. [अधि+इङ् अध्ययने+क्तिन् स्त्रियाम्]

अधीत्य स्वर और पाठ मात्र को पढ़कर स० प्र० ६६. [अधि+इङ् अध्ययने+क्त्वा। क्त्वास्थाने ल्यप् च]

अधीथ स्मरण करो ७.५६.१५. [अधि+इक् स्मरणे (अदादि०) धातोर्लट्]

अधीमसि सर्वोपरि विराजमानं प्राप्नुमः १.८०.१५. **अधीमहि**=प्राप्नुयाम ४.३२.१६. **अधीयन्त**=

अधीयताम् १४.२८. [अधि+इण् गतौ (अदादि०) धातोर्लट् । 'इदन्तो मसि:' अ० ७.१.४६. सूत्रेण 'मसि' इकारान्तो भवति]

अधीरा धैर्यरहिता (स्त्री) १.१७९.४. [धीर:= धीमान् नि० ३.१२. धीरा: प्रज्ञानवन्तो ध्यानवन्त: नि० ४.९.]

अधीवासम् अधीवासमिव घासादिकम् १.१४०.९. अधि उपरि वास आच्छादनं यस्य तम् (विद्युदग्निम्) १.१६२.१६. उपरि स्थापनीयम् २५.३९. [अधि+वस आच्छादने (अदादि०) धातोर्घञ् । पूर्वपदस्य च दीर्घत्वम्]

अधीहि उपरि स्मर १.७१.१०. [अधि+इक् स्मरणे (अदादि०) धातोर्लोट्]

अधुक्षन् प्रपूरयन्तु २.३६.१. **अधुक्षत** प्रपिपूर्द्धि, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् १.३. [दुह प्रपूरणे (अदादि०) धातो: सामान्ये लुङ् । 'शल इगुपधात्०' इति च्ले: क्सादेश: । 'हो ढ:' 'षढो: क: सि' इति ढत्वकत्वे]

अधुक्ष: दोग्धुमिच्छसि, भा०—प्रपूरयसि वा प्रपूरयितुमिच्छसि १.३. प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् [दुहप्रपूरणे (अदादि०) धातो: सामान्ये लुङ्]

अधु: दध्यासु: २.६४. आच्छादयन्ति ४.१३.४. [डुधाञ् धारणपोषणयो: (जु०) धातोर्लुङ् । 'गातिस्थाघु०' सूत्रेण सिचो लुक्]

अधूनुतम् कम्पाती हैं ३.१२.६. **अधूनोत्** कम्पयति १.५९.६. [धूञ् कम्पने (क्रयादि०) धातो: सामान्ये लङ्]

अधूर्षत् हिंसन्तु ५.१२.५. [धूरी हिंसायाम् (दिवादि:) धातोर्लुङ्]

अधूषत दुष्टान् दोषांश्च कम्पयन्ति, अन्व०—धुन्वन्ति प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ३.५१. दूरीकुरुत १.८२.२. [धू विधूनने (तुदादि०) धातोर्लुङ्]

अधृष्टम् अधर्षितम् (छर्दि:=गृहम्) ६.६७.२. **अधृष्टा:** [**अधृष्टास:**] अधर्षणीया: (गिर:=सुशिक्षिता वाच:) ७.३.८. धृष्टतारहिता अप्रगल्भा: (वसव:= जिज्ञासवो विद्यार्थिन:) ६.५०.१५ अप्रगल्भा: (वसव:= विद्वांस:) ६.५०.४. शत्रुभिरधर्षणीया: (मरुत:=शूरवीरा जना:) ६.६६.१०. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातो: क्त:]

अधेनुम् अदोहयित्रीम् (गां=पृथिवीम्) १.११७.२०. [धेनुर्धयतेर्वा धिनोतेर्वा नि० ११.४२. तत्प्रतिषेध:]

अधेन्वा अविद्वान् ऋ० भू० ३१७. सुशिक्षा शब्द, अर्थ और सम्बन्ध के बोध से रहित वाणी प० वि० ॥ [अधेन्वा=नास्मै कामान् दुग्धे नि० १.२०. धेनुरिति वाङ्नाम निघं० १.११. धेना वाङ्नाम १.११.]

अधोअक्षा: अधोऽर्वाचीना अक्षा इन्द्रियाणि येषान्ते (विद्वज्जना:), प्र०—अक्षा इति पदनाम० निघं० ५.३, ३.३३.९.

अधोक् प्रायात् ४.१९.७.

अधोराम: अध:क्रीडी (पक्षी) २९.५८. **अधोरामौ** अधोभागे श्वेतवर्णौ (पशू) २९.५९. अधोरमणं ययोस्तौ (अश्विनौ=पशू) २४.१. [अधोराम: सावित्र इति पशु समाम्नाये विज्ञायते, कस्मात् सामान्याद् इत्यधस्तात् तद्वेलायां तमो भवति, एतस्मात् सामान्याद् अधस्ताद् राम:=अधस्तात् कृष्ण: । नि० १२.१४.]

अध्यक्ष: स्वामी (परमात्मा) स० प्र० २८१, १०.१२९.७. **अध्यक्षाय** अधिरुपरिभावेऽन्वेषणेऽक्षाण्यक्षिणी वा यस्य यस्माद्वा तस्मै (सभाध्यक्षाय) ४.१९. [अधि अक्षिपदयोर्बहुव्रीहिसमासे 'बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो:०' अ० ५.४.११३ सूत्रेण समासान्त: षच्]

अध्यजायत अधिजायते १३.४५. उत्पन्नम् पं० वि० ॥ [अधि+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लङ् । 'ज्ञाजनोर्जा' इति जादेश:]

अध्यतिष्ठत् अधिष्ठातृभावेन वर्त्तते १७.२०. अधिष्ठाता भवति १.१६३.९. सब के ऊपर विराजमान हो रहा है आर्याभि० २.३६. १७.२०. उपरि तिष्ठेत् २९.२०. [अधि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातो: सामान्ये लङ्]

अध्यधत्तम् उपरि धरतम् १.११७.८. [अधि+डुधाञ् धारणपोषणयोर्धातो: सामान्ये लङ्]

अध्यधारय: उपरि धरति २.१३.७. [अधि+धृञ् धारणे धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

अध्यवधी: अधिहन्या: ४.३०.१५. [अधि+हन हिंसागत्यो: (अदादि०) धातो: सामान्ये लुङ् । 'लुङि च' इति सूत्रेण वधादेश:]

अध्यवोचत् उपदिशेत् १६.५. [अधि+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि धातो: सामान्ये लुङ् । 'ब्रुवो वचि' रिति वचिरादेश: । अङ् उमागमश्च]

अध्यस्थात् अधितिष्ठेत् १७.५४. अधितिष्ठति ५.३१.१. [अधि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ+लुङ् । 'गातिस्था०' सूत्रेण सिचो लुक्]

अध्यस्थाः अध्युपरि तिष्ठन्तीत्यध्यस्थाः (प्राणिनः) १.४९.२.

अध्यागहि उपरितो गमयत्यागमयति वा, प्र०—अत्र लडर्थे लोट्, पुरुषव्यत्ययेन गमेर्मध्यमपुरुषैकवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक्, हेर्ङित्वादनुनासिकलोपश्च १.६.९. [अधि+आ+गम्लृ गतौ+लोट् । शपो लुक् । अनुनासिकलोपश्च]

अध्याभरत् स्वात्मनि परमात्मानं धारितवान् ऋ० भू० १५६. [अधि+आ+भृञ् भरणे धातोर्लङ्]

अध्यारुहाम उपर्य्युत्कृष्टतया समन्तात् प्रादुर्भवेम, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययः ८.५२. [अधि+आ+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने शः]

अध्यालोहकर्णः अधिगतं च तल्लोहं च सुवर्णं तद्वद्वर्णो यस्य सः (पशुः पक्षी वा), प्र०—लोहमिति हिरण्यनाम निघं० १.२, २४.४.

अध्यावक्षत् अध्यावहेत् ३.५.९. [अधि+आ+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लेट् । 'सिब्बहुलं लेटि' सूत्रेण सिप्, हस्य ढत्वकत्वे]

अध्याशत उपरि व्याप्नुवन्ति १.८५.२. [अधि+आ+अशू व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोर्लङ् । बहुलं छन्दसी' ति विकरणलुक्]

अध्यासते उपरिभागे सन्ति १.१९.६. [अधि=आस् उपवेशने (अदादि०) धातोर्लट्]

अध्युत्तरस्मिन् परलोके द्वितीये जन्मनि च ऋ० भू० ३०५. [अधिउत्तरपदयोः समासे सप्तमी विभक्तिः]

अध्युदितः उपर्युदयं प्राप्तः (सूरः=सूर्यः) ३२.७. [अधि+उत्+इण् गतौ (अदादि०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

अध्येति स्मरण करता है सं० वि० १४६, ३.४२. स्मरति ४.१७.१२. **अध्येमि**=सर्वतः स्मरामि ३.४९.९. [अधि+इक् स्मरणे धातोर्लट्]

अध्येधे प्रकाशयति ७.३६.१. [अधि=एध वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

अध्यैरयन्त स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं सं० वि० ७, ३२.१०. सर्वत्र स्वेच्छया विचरन्ति ३२.१०. स्वच्छन्द स्वेच्छा से वर्त्तते हैं आर्याभि० २.६. [अधि=ईर गतौ कम्पने च धातोर्णिजन्ताल् लङ् सामान्ये]

अध्रजन् धावन्ति १.१६६.४. [ध्रज गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । ध्रजत गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अध्रिगवे शत्रुभिरध्रयोऽसहमाना वीरास्तान् गच्छति प्राप्नोति तस्मै (इन्द्राय=) १.६१.१. **अध्रिगुम्**=इन्द्रं परमैश्वर्यवन्तम्, प्र०—इन्द्रोऽप्यध्रिगुरुच्यते निरु० ५.११, १.११२.२०. **अध्रिगुः**=सत्यगतिः (राजा) ६.४५.२०. **अध्रिगू**=अधिकगन्तारौ (वायुविद्युतौ) ५.७३.२. **अध्रिगो**=योऽधृन् धारकान् गच्छन्ति तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) ५.१०.१. योऽधृन् मन्त्रान् गच्छति जानाति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=सत्पुरुष) ३.२१.४. [धृङ् अनवस्थाने (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिकक्रिन्प्रत्यये ध्रिः । न ध्रिः=अध्रिः । गाङ् गतौ (भ्वा०) धातोर् औणादिके कु प्रत्यये गुः । तयोः समासः । अधिगुर्मन्त्रो भवति गव्यधिकृतत्वात् । अपि वा प्रशासनमेवाभिप्रेतं स्यात् तच्छब्दवत्त्वात् । अग्निरप्यध्रिगुरुच्यते अधृतगमनकर्मवन् । इन्द्रोऽप्यध्रिगुरुच्यते निघं० ५.११. शमीध्वं सुशमि शमीध्वं शमीध्वमध्रिगविति । अध्रिगुर्वै देवानां शमिता ऐत० ब्रा० २.१.७. अध्रिगुश्चापापश्च । उभौ देवानां शमितारौ तै० ३.६.६.४.]

अध्रिगावः अधृता गावो रश्मयो यैस्ते (रुद्राः=वायवः) १.६४.३. [अध्रिगोशब्दयोः समासः]

अध्रिजः अध्रिषु धारकेषु जातः (राजा) ५.७.१०. [अध्रि+जनी प्रादुर्भावे धातोर्डः प्रत्ययः]

अध्रुक् यो न द्रुह्यति (महाविद्वान्) ६.५.१. द्रोहरहितः (भ्राता=बन्धुः) ६.५१.५. यः कदाचिन्न द्रोग्धि (अग्निः=परोपकारी विद्वज्जनः) ६.११.२. [द्रुह अभिकांक्षायाम् धातोः कर्त्तरि क्विप् । नञ्समासः]

अध्वन् अध्वनि ६.५१.१५. **अध्वनः**=सन्मार्गान् १.१०४.२. शत्रोर्मार्गान् ९.१३. मार्गात् १.७१.९. मार्गान् १.७२.७. अन्व०—व्यवहारपरमार्थसिद्धिकरस्य मार्गस्य मध्ये ४.१९. मार्गस्य १.१४६.३. **अध्वनाम्**=विद्याधर्मशिल्पमार्गाणाम् ५.३३. परमार्थ और व्यवहार मार्गों के आर्याभि० २.१८, ५.३३. **अध्वनि**=मार्गे ६.४६.१३. **अध्वभिः**=मार्गैः १.२३.१६. **अध्वसु**=मार्गेषु ३.३२. **अध्वा**=मार्गः १.११३.३. सन्मार्गरूपः १.१७३.११. **अध्वानम्**=धर्म-मार्गम् १.३१.१६. [अद भक्षणे (अदादि०) धातोः 'अदेर्ध च' उणा० ४.११६. सूत्रेण क्वनिप्-धकारादेशश्च अध्वन् अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. योजनशो हि मिमाना अध्वानं धावन्ति श० ५.१.५.१७.]

अध्वपते धर्मव्यवहार-मार्गपालयितः (विद्वज्जन)

५.३३. [अध्वा=मार्गस्तस्य पतिस्तत्सम्बुद्धौ]

अध्वनयत् धुनयति ६.१८.१०. [ध्वन शब्दे (चुरा०) धातोर्लङ्]

अध्वरकृतम् अध्वरं करोति येन सामग्रीसमूहेन तम्, प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति वार्त्तिकेन करणे क्विप् 'अध्वरो वै यज्ञो यज्ञकृतम्' शत० १.२.४.५ ,१.२४. [अध्वरोपपदे डुकृञ् करणे धातोः क्विप्]

अध्वरम् हिंसाऽधर्मादिदोषरहितम् (यज्ञं=प्रथम-मन्त्रोक्तं महिमानं कर्म वा), प्र०—'ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधो निपातः, निरु० १.८, १.१४. क्रियाजन्यं जगत् १.१८.८. अहिंसनीयं सुखरूपं यज्ञम् १.२३.१७. अग्निहोत्रादिकमिव विद्याविज्ञानवर्द्धकं यज्ञम् १.७४.४. अहिंसादिलक्षणं धर्मम्, यज्ञम् १.१३५.७. राज्यपालनाख्यं यज्ञम् १.१३५.३. न्यायव्यवहारम् ४.९.७. पालनाख्यं व्यवहारम् ५.४.८. अध्ययनाऽध्यापनाख्यमहिंसनीयं यज्ञम् १.१०१.८. अहिंसनीयं यज्ञम् १.४४.१३. अहिंसादिव्यवहारयुक्तं यज्ञम् ३.२४.२. अहिंसादिलक्षणं धर्म्यं व्यवहारम् ३.२८.५. अहिंसनीयराज्यव्यवहारम्, भा०—यथार्थं न्यायम् ३३.१५. अहिंसनीयं शिल्पसाध्यं व्यवहारम् २.२.५. अहिंसनीयं (यज्ञं=सङ्गमनीयं व्यवहारम्) भा०—अहिंसाऽऽख्यं धर्मम् २९.२६. अहिंसनीयं न्यायव्यवहारम् ६.५२.१२. पालकं व्यवहारम् ३.५४.१२. अहिंसनीयं सुखहेतुम् १.१४.११. अहिंसामयं यज्ञम्, भा०—विद्या-धर्मदानम् ३७.१९. क्रियामयं यज्ञम्, भा०—यज्ञाऽनुष्ठानम् ३.११. अहिंसाधर्मयुक्तं व्यवहारम् १.१५१.३. अहिंसादि-गुणयुक्तं व्यवहारम् ३.१७.५. सत्कर्त्तव्यं व्यवहारम् ४.१५.२. व्यवहारयज्ञम् १.९३.१२. अहिंसकं (विचारम्) १.७४.१. उपदेशाख्यं यज्ञम् ७.४२.५. अहिंसनीयं सुखहेतुम् १.१४.११. क्रियाजन्यं जगत् १.१८.८. त्रिविधं यज्ञम् १.२६.१. अहिंसनीयं गृहाश्रमादिव्यवहारम् ७.२.७. गृहाश्रमक्रियासिद्धिकरं यज्ञम् ६.२४. अविनश्वरं यज्ञम् ६.२५. निष्कौटिल्यम् ६.३०. **अध्वरस्य**=अहिंसनीयस्य धर्म्यस्य व्यवहारस्य ४.६.१. अहिंसनीयस्य वर्धितुं योग्यस्य यज्ञस्य १२.११०. अहिंसामयस्य शिल्पव्यवहारस्य ३.२३.१. अहिंसामयस्य न्यायव्यवहारस्य ७.७.१. अहिंसनीयस्य (शिल्पिनो जनस्य) ४.७.८. अहिंसनीयस्य राज्यस्य ४.३.१. हिंसितुमनर्हस्य (यज्ञस्य) १.१२८.४. अहिंसनीयस्य धर्मस्य व्यवहारस्य ४.६.१. अहिंसामयस्य यज्ञस्य ५.४९.४. सर्वव्यवहारस्य ७.११.१. यज्ञस्य मध्ये ७.१४.२. **अध्वरः**=अहिंसनीयो व्यवहारः १५.३८. यज्ञः २.८. **अध्वरा**=अहिंसनीयान् यज्ञान् २१.४७. **अध्वराणाम्**=अग्निहोत्राद्यश्वमेधान्तानां शिल्पविद्यासाध्यानां वा सर्वथा रक्ष्याणां यज्ञानाम् ३.२३. यज्ञों और युद्धों के मध्य में आर्याभि० १.२६. यज्ञानाम् १.४४.९. अहिंसनीयानां यज्ञानाम् १.४४.२. अहिंसनीय-व्यवहाराख्यकर्मणाम् १.४५.४. अग्निष्टोमादियज्ञानां तत्कर्तॄणां धर्मात्मनां मानवानाञ्च ऋ० भा० नमू० ८. पूर्वोक्तानां यज्ञानां धार्मिकाणां मनुष्याणां वा १.१.८. राज्यपालनाग्निहोत्रादि-शिल्पान्तानां यज्ञानाम् १.२७.१. **अध्वरान्**=अहिंसनीयान् गृहाश्रमव्यवहारान् १.४८.११. अहिंसकान् (जनान्) १.१३५.५. **अध्वराय**=हिंसारहिताय धर्म्याय व्यवहाराय ७.४१.६. अहिंसाख्याय शिल्पमयाय यज्ञाय ३३.७५. अहिंसारूपयज्ञाय ३.२.७. अहिंसनीयाय व्यवहाराय ४.७.७. **अध्वरे**=अहिंसनीये (दमे=दान्ते गृहे) ४.९.४. अहिंसनीये धर्म्ये व्यवहारे ३.१०.१. अविद्यमानो ध्वरो हिंसनं यस्मिन् रक्षणे १.१२१.७. अहिंसनीये प्रजापालनाख्ये व्यवहारे १.१२१.१. अहिंसनीये शिल्पव्यवहारे ७.३.१. अहिंसादिलक्षणे धर्माचरणे ७.१६.५. सङ्गते संसारे ३.२७.१२. सत्ये व्यवहारे ४.५५.१. अहिंसनीयेऽध्ययनाऽध्यापनीये व्यवहारे ३.५३.१०. अनुष्ठातव्ये क्रियासाध्ये यज्ञे १.१५.७. उपासनीये कर्त्तव्ये वा यज्ञे १.१२.७. उपासनाक्रियासाध्ये यज्ञे १.१६.३. अध्ययनाऽध्यापनराज्य-पालनादिव्यवहारे ३.८.१. ज्ञानादियज्ञ में आर्याभि० १.४८. शिल्पादिव्यवहारे ५.५८.६. अहिंसायुक्ते व्यवहारे ५.४४.५. अहिंसनीयेऽहातव्य उपासनाख्ये कर्त्तव्ये सङ्ग्रामे वा १.९४.१३. अहिंसायज्ञे ५.२६.३. सङ्गते शिल्प-क्रियासिद्धे याने १.४७.२. सर्वथाऽनुष्ठातव्ये धर्म्ये व्यवहारे ६.१६.२. मित्रभावेऽहिंसनीये यज्ञे वा २.४. अहिंसनीये विद्याप्राप्तिव्यवहारे ६.५०.९. व्यवहारे ४.१५.१. अहिंसादि-लक्षणे योगे ६.१६.४६. अहिंसनीये कर्त्तव्ये वा यज्ञे १.१२.७. अहिंसनीये धर्म्ये यज्ञे १.५७.३. दयामये व्यवहारे ३.२८.३. सङ्गतव्ये व्यवहारे ३.५७.४. सत्ये व्यवहारे ४.५५.१. **अध्वरेषु**=अहिंसनीयेषु विद्याप्राप्तिकर्मसु ३.६२.५. मित्रत्वादिगुणयुक्तव्यवहारेषु विधियज्ञेषु वा ३.२७.८. अग्निहोत्रादिक्रियामयव्यवहारेषु ७.१०.५. अहिंसनीयेषु यज्ञेषु २५.४०. राज्यपालनादिषु व्यवहारेषु ५.२८.४. उपासनाऽग्निहोत्राद्यश्वमेधान्तेषु शिल्पविद्याऽन्तर्गतेषु वा यज्ञेषु ३.१५. अनुष्ठातव्येषु क्रियामयेषु यज्ञेषु १.५८.७. सङ्गतिमयेषु व्यवहारेषु ३.२९.७. गृहाश्रम-

व्यवहारानुष्ठानेषु ४.५१.२. अहिंसनीयेषु प्रजापालनन्यायव्यवहारेषु ५.४.१. अहिंसनीयेषु धर्म्येषु व्यवहारेषु ५.१४.२. अहिंसायुक्तेषु सङ्ग्रामादिव्यवहारेषु ७.१.१६. [ध्वरति वधकर्मा नि० २.१९. अध्वर इति यज्ञनाम ३.१७. अध्वरमितिअन्तरिक्षनाम निघं० १.३. अध्वरे यज्ञे नि० ६.१३. अध्वरेषु यज्ञेषु नि० १०.१९. अध्वर इति यज्ञनाम, ध्वरति हिंसाकर्मा, तत्प्रतिषेधः नि० १.७. अध्वरम् यज्ञम् नि० ८.६. अध्वरो वै यज्ञः श० १. २. ४. ५; ४. १. ३८. ३९; ५. ३. ४. १०; ३. ५. ३. १७; ६. २. ११. यज्ञो वा अध्वरः काठ० ३१.११. प्राणोऽध्वरः श० ७.३.१.५. रसोऽध्वरः श० ७.३.१.६. ते ऽसुरा अपक्रामन्तोऽब्रुवन्न वा इमे ध्वर्तवा अभवन्निति । तदध्वस्याध्वरत्वम् क० ३६.४. देवान्ह वै यज्ञेन यजमानान्त्सपत्ना असुरा दुधूर्षाञ्चक्रुः । ते दुधूर्षन्त एव न शेकुर्धूर्वितुं ते पराबभूवुस्तस्माद् यज्ञोऽध्वरो नाम श० १.४.१.४०.]

अध्वरश्रियः या अध्वरस्याऽहिंसनीयस्य चक्रवर्त्तिराज्यस्य लक्ष्मीस्ताः १.४७.८. **अध्वरश्रियम्**=याऽध्वराणामहिंसनीयानां यज्ञानां श्री शोभा ताम् १.४४.३.

अध्वरस्येव अहिंसामयस्य यज्ञस्येव ६.६६.१०. [अत्र 'इवेन सह समासो विभक्त्यलोपा०' अ० २.२.१८. वार्त्तिकेन समासो विभक्तेरलोपश्च]

अध्वराऽइव अहिंसनीयौ यज्ञाविव ३.६.१०. [ध्वरति हिंसाकर्मा, तत्प्रतिषेधोऽध्वर नि० १.७.]

अध्वरीयताम् आत्मनोऽध्वरमिच्छतामस्माकम् (जनानाम्) प्र०—अत्र 'न छन्दस्यपुत्रस्य, अ० ७.४.३५ इत्यस्य 'अपुत्रादीनामिति वक्तव्यम्, इति वचनादीकारनिषेधो न भवति 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति नियमात् 'कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः' अ० ७.४.३९. इत्यकारलोपोऽपि न भवति १.२३.१६. य आत्मनोऽध्वरमहिंसायज्ञं कर्त्तुमिच्छन्ति तेषां (जनानां=मनुष्याणाम्) ४.९.५. आत्मनोऽध्वरमिच्छताम् (विशां=प्रजानाम्) ६.२.१०. [अध्वर सुवन्ताद् आत्मनेच्छायां क्यच् । 'क्यचि चे' तीत्वम् क्यजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

अध्वर्यन्तः आत्मनोऽध्वरमिच्छन्तः (देवाः=विद्वज्जनाः) १७.५६. **अध्वर्यन्ता**=आत्मनो ऽध्वरमिच्छन्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८१.१. [अध्वर+क्यच् आत्मनेच्छायाम् । ततः शतृ प्रत्ययः । 'न छन्दस्य०' इति सूत्रेणेत्वं न भवति]

अध्वर्यवम् य आत्मनोऽध्वरमिच्छति तम् (पुरुषम्) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यस्याऽपि गुणावादेशौ, (पुरुषम्) २८.१९. **अध्वर्यवः**=आत्मनोऽध्वरमहिंसां कामयमानाः (विद्वज्जनाः) ३.४६.५. युद्धयज्ञसिद्धिकराः (सज्जनाः) २.१४.६. सर्वस्य प्रियाचरणाः (विद्वांसः) २.१४.४. राजसम्बन्धिनः (विद्वज्जनाः) २.१४.११. महौषधिनिष्पादकाः (महावैद्या जनाः) २.१४.१०. पुरुषार्थिनः (जनाः) २.१४.९. यज्ञसम्पादकाः (सज्जनाः) २.१४.३. आत्मनोऽध्वरं कामयमानाः (सज्जनाः) २.१४.१. आत्मनोऽहिंसाख्ययज्ञमिच्छन्तः, (भा०—अध्यापकोपदेशकाऽतिथयः) २३.४२. अध्वरमहिंसाधर्मकाममिच्छवः (विद्वांसः) १.१५३.१. विद्यायज्ञसम्पादकाः (विद्वांसः) ५.३१.१२. सर्वस्य प्रियाचरणाः (सत्पुरुषाः) २.१४.४. **अध्वर्युभिः**=आत्मनो हिंसामनिच्छुभिः (जनैः) २.३७.२. अध्वरं यज्ञमिच्छद्भिः (सत्पुरुषैः) १.१३५.६. हिंसाऽन्यायवर्जितैः सह (प्रजाजनैः सह) ३३.७०. य आत्मानमध्वरमिच्छन्ति तैः (प्रजाजनैः) १.१३५.३. अध्वरं निष्पादकैः (होत्रध्वर्यूद्गातृब्रह्मसभ्यैर्ऋत्विग्भिः) ३.७.७. **अध्वर्युः**=आत्मनोऽध्वरमहिंसाव्यवहारं कामयमानः (सज्जनः) ६.४१.२. अध्वरं शिल्पविद्यां कामयमानः (विद्वान् शिल्पी) ५.३७.२. अहिंसायज्ञमिच्छुः (विद्वान्) २५.२८. अध्वरस्य योजको नेता कामयिता वा (परमेश्वरः) प्र०—अत्राऽध्वरशब्दोपपदाद् युज्धातोर्बाहुलकात् क्युः प्रत्ययः टिलोपश्च 'अध्वर्युरध्वरयु=अध्वरं युनक्ति० नि० १.८, १.९४.६. आत्मनोऽध्वरमहिंसाधर्ममिच्छुः (मित्रः=सुहृज्जनः) ३.५.४. य आत्मनोऽध्वरमहिंसनीयं व्यवहारं कर्त्तुमिच्छुः (अग्निः=सूर्यः) ४.६.४. यज्ञकर्त्ता (सज्जनः) २.५.६. आत्मनोऽध्वरमहिंसनमिच्छुः (सत्पुरुषः) १.१६२.५. **अध्वर्यू**=आत्मनोऽध्वरमहिंसामिच्छन्तौ (विद्वज्जनौ) ३३.७३. आत्मनोऽध्वरमहिंसनीयं गृहाश्रमादिकं यज्ञमिच्छू (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) १४.७. **अध्वर्यो** !=योऽध्वरमिवाचरति तत्सम्बुद्धौ (राजन्) २३.२३. अहिंसक (राजप्रजाजन) ३.५३.३. योऽध्वरं यज्ञं युनक्ति तत्सम्बुद्धौ (वैद्यराज) २०.३१. [अध्वर्युः=अध्वरयुः । अध्वरं युनक्ति अध्वरस्य नेता अध्वरं कामयते वा । अपि वाऽधीयाने युरुपबन्धः नि० १.७. पूर्वार्धो वै यज्ञस्याध्वर्युर्जघनार्धः पत्नी श० १.९.२.३. प्रतिष्ठा वा एषा यज्ञस्य यदध्वर्युः तै० ३.३.८.१०. वायुर्वा अध्वर्युर् अधिदैवं प्राणोऽध्यात्मम् गो० १.४.५. वह्निरध्वर्युः तै० १.१.६.१०. राज्यं वा अध्वर्युः तै० ३.८.५.१. मनो-

ऽध्वर्युः श० १.५.१.२१. प्राणो यज्ञस्याध्वर्युः जै० १.८५. प्राणापानावेवाध्वर्यू गो० १.२.१० श० ५.५.१.११. द्यौरध्वर्युः मै० १.९.१. चक्षुरध्वर्युः कौ० १७.७. आश्विनौ वाऽध्वर्यू काठ० २८.५. आदित्यो मे ऽध्वर्युः ष० २.५. अपानो मेऽध्वर्युः ष० २.७. अश्विनौ हि देवानामध्वर्युः तै० ३.२.२.१ अध्वर्युरेव महः गो० पू० ५.१५. तमेतमग्निरित्यध्वर्यव उपासते श० १०.५.२.२०. प्रतीच्यध्वर्योः श० १३.५.४.२४. पर्णमयेनाध्वर्युरभिषिञ्चति तै० १.७.८.७.]

अध्वरीयसि आत्मनोऽध्वरमहिंसामिच्छसि २.१.२. [अध्वरसुबन्ताद् आत्मनेच्छायां क्यच् । 'क्यचि चे' तीत्वम् । 'वा छन्दसि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते' इति वचनाद् 'न छन्दस्य०' इतीत्वप्रतिषेधो न भवति क्यजन्ताद्धातोर्लेट्]

अध्वस्मभिः अपतनशीलैर्गुणकर्मस्वभावैः २.३५.१४. अध्वस्तैः (पथिभिः=मार्गैः) २.३४.५. **अध्वस्मानः**= ये नाऽधःपतन्ति ते (जनाः), प्र०—'ध्वसु अधःपतने, १.१३९.४. [नञ्+ध्वंसु अवस्रंसने (भ्वा०) धातोर्मनिन् प्रत्ययः । छान्दसो नकारलोपः]

अध्वानयत् धुनयति ६.१८.१०. [ध्वन शब्दे धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

अनक्ति कामयते ४.६.३. **अनक्तु**=संयुनक्तु ३७.११. कामयताम् ७.४३.३. प्रकट करे २.३.२. सिञ्चतु ६.२. [अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधादि०) धातोर्लेट्]

अनग्नाः सर्वतो वस्त्रभूषणादिभिराच्छादिताः (युवतयः=प्राप्तयौवनाः स्त्रियः ३.१.६. [नञ्+नग्न-पदयोः समासः]

अनक् प्रकटीकरोति २.१५.७. **अनक्ति**=कामयते १.१५३.२. **अनक्तु**=कामयताम् ७.४३.३. प्रकट करे २.३.२. सिञ्चतु ६.२. संयुनक्तु ३७.११. [अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोर्लङि लोटि लटि च रूपाणि]

अनग्नित्राः अविद्यमानज्वरेण रक्षकाः (रोगाः) १.१८९.३. [नञ्+अग्नि+त्रैङ् पालने धातोः कः प्रत्ययः]

अनग्निष्वात्ताः अविद्यमानाऽग्निविद्याग्रहणा ज्ञाननिष्ठाः पितरः १९.६०. वायुजलभूगर्भादिविद्यानिष्ठाः (पितरः) ऋ० भू० २६२, १९.६०. [नञ्+अग्निष्वात्ताः । अग्निष्वात्ता=अग्नि+सु+आ+दाञ् दाने (जु०) धातोः क्तः]

अनज उच्चरतोपदिशत, प्र०—अत्र व्यत्ययेनैकवचनम् ५.५४.१. **अनजन्**=कामयेरन् ३.१९.५.

अनकुत्सु गवादिषु ३.५३.१८. **अनड्वान्**= वृषभः (पशुः) २९.५९. हलशकटादिवहनसमर्थः (वृषभः) १८.२७. **अनड्वाहः**=शकटवहनसमर्थाः (पशवः= (वृषभाः २४.१३. **अनड्वाहम्**=योऽनांसि शकटानि वहति तद्वद्वर्त्तमानम् (वह्निं कृषीवलं वा) ३५.१३. शकटवाहकम् (गाम्=वृषभम्) २८.३०. [अनडुह् प्रातिपदिकस्य रूपाणि । सप्तम्यां 'वसुस्रंसु०' अ० ८.२.७२. सूत्रेण दकारादेशः । प्रथमायां चामागमे नुमि संयोगान्तलोपे च रूपम् । अग्निरेष यदनड्वान् श० ७.३.२.१. आग्नेयो वा ऽनड्वान् । श० ७.३.२.१६, १३.८.४.६. वह्निर्वा अनड्वान् तै० १.१.६.१०, १.८.२.५. वोढा ऽनड्वान् तै० सं० ७.५.१८.१. अनड्वान् वै सर्वाणि वयांसि पशूनाम् मै० ३.७.४. अनड्वान् वयः पङ्क्तिश्छन्दः तै० सं० ४.३.५.१.]

अनत् प्राणत् १.१६४.३०. [अन प्राणने धातोर्लेट् । अनिति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अनदतीः अविद्यमाना अतीव सूक्ष्मा दन्ता यासान्ताः (युवतयः=प्राप्तयौवनाः स्त्रियः) ३.१.६. [नञ्+दन्तपदयोर्बहुव्रीहौ 'छन्दसि चे' ति सूत्रेण दतृ-आदेशे ङीपि च रूपम् । अनजादावपि छान्दसत्वान्नुट्]

अननुदः योऽनुगतं न ददाति तस्य १.५३.८. अप्रेरितः (इन्द्रः=विद्वान्) २.२१.४. येऽनुददति तेऽनुदा, न विद्यन्तेऽनुदा यस्य सः (विद्वज्जनः) २.२३.११. [अनु+दा+कः, ततो नञ्समासः । अथवा णुदप्रेरणे धातोर् इगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः, ततो नञ्समासः]

अननुभूतीः अनुभवरहितान् (जनान्) ६.४७.१७. [अनु+भू सत्तायाम्+क्तिन् भावे स्त्रियाम् । ततो नञ् बहुव्रीहिः]

अनन्तम् देशकालवस्तुपरिच्छेदशून्यम् (ब्रह्म) १.११५.५. अविद्यमानोऽन्तो यस्य तत् (भा०—ब्रह्म) ३३.३८. **अनन्तः**=अविद्यमानाऽन्त आकाशः १.११३.३. निःसीमः (त्वेषः=प्रकाशः) ६.६१.८. **अनन्ते**= देशकालवस्त्वपरिच्छिन्ने (अश्मनि=मेघे) १.१३०.३. परमात्मन्याकाशे वा ४.१.७. **अनन्तैः**=अविद्यमानसीमभिः (वधैः) १.१२१.९. [अनन्तमिति बहुव्रीहिसमासः अनन्ते द्यावापृथिव्योः कौ० नि० ६०.]

अनन्तासः अविद्यमानोऽन्तो येषान्ते (परमाणवः)

५.४७.२. (नञ्+अन्तयोर्वहुव्रीहिः]

अनन्तशुष्माः अनन्तं शुष्मं बलं येषान्ते (नरः) १.६४.१०. [शुष्मम् बलनाम निघं० २.९. अनन्तशुष्मयोर्बहुव्रीहिः]

अनपच्युतम् ह्रासरहितम् (सहा=बलम्) ५.४४.६. अपचयरहितम् (पुरुषम्) ४.१७.४. **अनपच्युतः**= अपचयरहितः (रथः=) विमानादियानविशेषः) ४.३१.१४. [अप+च्युङ् गतौ (भ्वा०) क्तः । नञ्समासः]

अनपत्यानि अविद्यमानान्यपत्यानि येषु तानि (अधर्म्यकर्माणि) ३.५४.१८. [अपत्यं कस्मात् । अपततं भवति । नानेन पततीति वा नि० ३.२. ततो नञ्बहुव्रीहिः]

अनपवृज्यान् अपवर्जितुमनर्हान् (मार्गान्) १.१४६.३. [अप+वृजी वर्जने (अदा०) धातोर् ण्यत् प्रत्ययः । नञ्समासः]

अनपवृत् यो नाऽपवृणोति ६.३२.५. [अप+वृञ्वरणे (स्वा०) धातोः क्विप् । नञ्समासः]

अनपव्ययन्तः अपव्ययमप्राप्नुवन्तः (अश्वाः= तुरङ्गा वह्न्यादयो वा) ६.७५.७. अपव्ययमाप्रापयन्तः (योद्धृजनाः) २९.४४. [अप+व्यय गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः नञ्समासश्च]

अनपस्फुरन्तीम् दृढां निश्चलां प्रज्ञां सम्पादयन्तीम् (धेनुं=वाचम्) ४.४२.१०. विज्ञापयित्रीमिव योगविद्याजन्यां वाचम् ७.१०. [अप+स्फुर संचलने (तुदा०) धातोः शतृङीप्प्रत्ययौ । नञ्समासश्च]

अनपस्फुराम् निश्चलां दृढाम् (धेनुं=वाचम्) ६.४८.११. [अप+स्फुर संचलने (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः । नञ्समासश्च]

अनपावृत् यो नाऽपवृणोति (इन्द्रः=राजा) ६.३२.५. [अप+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः क्विप् । तुगागमः । 'नहिवृति०' अ० ६.३.११६. सूत्रेणोत्तरपदे दीर्घः । नञ्समासश्च]

अनपिनद्धम् अनाच्छादितम् (जलप्रवाहम्) ६.७२.४. [अपि+णह बन्धने (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । 'नहो धः' इति हकारस्य धकारः । नञ्समासश्च]

अनपेताः नाऽपेताः पृथग्भूताः (धाराः=प्रवाहाः) १८.६५. [अप+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । नञ्समासश्च]

अनप्नसः अविद्यमानमप्नः कर्म यासान्ताः क्रियाः २.२३.९. [निघण्टौ अप्नः कर्मनामसु, अपत्यनामसु, रूपनामसु, पदनामसु च पठितः तेन नञ्बहुव्रीहिः । अनप्नस अप्न इति रूप नाम आप्नोतीति सतः नि० ३.११.]

अनभिद्रुहा द्रोहकर्मरहितौ (मित्रावरुणा=राजप्रधानपुरुषौ) २.४१.५. [अभि+द्रुह जिघांसायाम् धातोः कर्त्तरि इगुपधलक्षणः कः । नञ्समासः]

अनभिम्लातवर्णः न विद्यतेऽभितो म्लातो हर्षक्षीणो वर्णो यस्य सः) (नपात्=अपत्यम्) २.३५.१३. [अभि+म्लै हर्षक्षये (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । नञ्बहुव्रीहिश्च समासः]

अनभिशस्ति यन्नाभिशस्यतेऽभिहिंस्यते तत् (सत्यं= यथार्थम्) ५.५. [अनभिशस्तिः प्रशस्यनाम निघं० ३.८. [अभि+शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोस्स्त्रियां क्तिन् । नञ्समासश्च]

अनभिशस्तेन्यम् यदनभिशस्तेऽविद्यमानहिंसने नयति तत् (सत्यं=यथार्थम्) ५.५.

अनभीशुः अविद्यमानावभीशू बलयुक्तौ बाहू यस्य सः (वीरजनः), प्र०—अभीशू इति बाहुनाम निघं० २.४, ६.६६.७. नियामकरश्मिरहितः (सूर्यः) १.१५२.५. अप्रतिग्रहः (रथः=यानविशेषः) ४.३६.१. [अभि+अशूङ् व्याप्तौ+उः प्रत्ययः, बाहु० अकारस्येकारः । अभीशवोऽभ्यश्नुवते कर्माणि नि० ३.९. ततो नञ्बहुव्रीहिः]

अनमत् नमति ६.१७.९. नमतु २.२४.२. **अनमम्**= नमामि १.१६५.६. **अनमन्त**=नमन्ते, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ८.४६. नमन्तु १७.२४. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लङ् । अनमन्त प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अनमयत् दुष्टान्नम्रान् कारयेत् ७.६.५. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

अनमस्यन् प्रह्वीभूता भवन्ति ६.९.७. [नमस्करोतीति विग्रहे नमस् शब्दात् 'नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्' अ० ३.१.१९. सूत्रेण क्यच् । ततः शतृ । नञ्समासः]

अनमित्रम् अविद्यमानशत्रुः १८.६. [डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) अनेकार्थत्वादत्र मानार्थे, धातोः 'अमिचिमि०' उणा० ४.१६४. सूत्रेण क्त्रः । नञ्बहुव्रीहिः]

अनमीवस्य रोगरहितस्य सुखकरस्य, भा०— आरोग्यकारकस्य (अन्नस्य) ११.८३. **अनमीवः**=अरोगः (जनः) ३३.८६. अविद्यमानरोगः (जनः) ७.४६.२. **अनमीवाः**=अमीवो व्याधिर्न विद्यते यासु ताः (अघ्न्याः=गावः) (१.१. अविद्यमानोऽमीवा ज्वरादिरोग-

समूहो याभ्यस्ताः, भा०—रोगविच्छेदकाः (आपः=जलानि) ४.१२. नीरोगाः (इषः=अन्नादीनोषधिगणान्) ३.६२.१४. प्र०—अमरोगे, इत्यस्माद्बाहुलकादौणादिक ईवन् प्रत्ययः [अमीवा पदनाम निघं० ४.३. (अमीवा=अभ्यमनेन व्याख्यातः नि० ६.१२. नञ्समासः) अनमीवस्य शुष्मिण इत्याहायक्ष्मस्येति वावैतदाह तै० सं० ५.२.२]

अनमीवासः शरीरात्मरोगरहिताः (ब्रह्मचारिणो जनाः) ३.५९.३. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

अनम्नत नम्रता को धारण करे १.१३१.१.

अनयत् नयति ६.५७.४. प्राप्त करावे ६.४५.१.. **अनयन्**=नयन्ति ६.१५.१७. प्राप्नुवन्ति १०.१. **अनयन्त**=नयन्ति ४.३३.७. प्राप्नुयुः. ३.७.६. **अनयम्**=प्रापयेयम् ४.२६.२. **अनयः**=उन्नेयः २.१३.१२. नयसि ६.१.७. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अनर्वन् अनर्वणेऽविद्यमानज्ञानाय (अविदुषे), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्ति-लुक् १.११६.१६. **अनर्वम्**=प्राकृताऽश्वयोजनरहितम् (चक्रम्) १.१६४.२. अविद्यमानाऽश्वम् (दात्रं=दानम्) १.१८५.३. **अनर्वा**=अश्वहीनः (विद्वज्जनः) ६.१२. अविद्यमाना अश्वा यस्या सा (अदितिः=माता) २.४०.६. अविद्यमानाऽश्वगमनेव (मैत्री) ७.४०.४. अविद्यमानाऽश्वो रथ इव (अग्निः+विद्वान्) १.९४.२. **अनर्वाणम्**=अविद्यमानाऽश्वं पदातिम् (अतिथिम्) १.१९०.१. अग्न्याद्यश्वसहितं पश्वाद्यश्वरहितम् (रथम्) १.५१.१२. द्वेषादिदोषरहितम् (मर्त्तं=मनुष्यम्) १.१३६.५. अविद्यमानोऽर्वाणोऽश्वा यस्मिँस्तम् ( ) प्र०—अर्वेत्यश्वनामसु पठितम् निघं० १.१४, १.३७. **अनर्वाणः**=अविद्यमानाऽर्वधर्मादन्यत्र गमनं येषान्ते (विद्वज्जनाः) १.१९०.६. अनर्वणः=अनश्वस्य (रथस्य) [अर्व हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः बाहुलकात् कनिन्। अथवा ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' अ० ३.२.७५. सूत्रेण वनिप् प्रत्ययः। अर्वा हिंसको ज्ञानी वा। नञ्समासेऽनर्वा अनर्वा पदनाम निघं० ४.३. अनर्वम्=अप्रत्यृतमन्यस्मिन् नि० ६.२३. अनर्वम्=अप्रत्यृतमन्यस्मिन् नि० ४.२७. अनर्वा प्रेहीति। असपत्नेन प्रेहीत्येवैतदाह॥ श० ३.८.२.३.]

अनर्विशे अनस्सु शकटेषु विट् प्रवेशस्तस्मै (पश्विषे=पशूनामिषे वृद्धीच्छायै) प्र०—अत्र 'वाछन्दसि, इति षत्वाऽभावः १.१२१.७. [अनः शकटवाची निरुक्ते, विश प्रवेशे धातोः क्विपि विश्। एनयोः समासः]

अनवद्य प्रशंसित (विद्वज्जन), प्रशंसितगुणयुक्त (विद्वन्) १.१२९.१. न विद्यतेऽवद्यं निन्द्यं कर्म यस्मिँस्तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन), प्र०--'अवद्यपर्ण्यवर्या०, अ० ३.१.१०१. अनेन गर्ह्येऽवद्यशब्दो निपातितः १.३१.९. **अनवद्यम्**=अनिन्दितम् (युवानम्) १.७१.८. सर्वदोषरहितम् (रेतः) ३३.११. **अनवद्या**=विद्यासौन्दर्यादिशुभगुणयुक्ता (नारी) १.७३.३. अत्यन्तउत्तमगुणयुक्त (नारी) आर्याभि० १.४६. **अनवद्याभिः**=प्रशंसनीयाभिः (ऊतिभिः=रक्षादिभिः) ४.३२.५. **अनवद्याः**=अनिन्द्याः (गिरः=विविधविद्यायुक्ता वाण्यः) ३.३१.१३. अनिन्दिताः (जनाः) १.१२३.८. प्रशंसनीयाः (आप्ताः पुरुषाः) ६.१९.४. **अनवद्यैः**=निर्दोषैः (गणैः=किरणैर्मरुद्भिर्वा) १.६.८. [नञ्+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर् 'अवद्यपण्य०' अ० ३.१.१०१. सूत्रेण गर्ह्यार्थे निपातनात् साधु। तद्विपरीतमनवद्यम् अनवद्यः=प्रशस्यनाम निघं० ३.८.]

अनवद्यासः अनिन्द्या धर्माचाराः (मरुतः=मनुष्याः) ७.५७.५. [इष्ट० अनवद्य]

अनवन्त स्तुवन्तु ५.३०.१०. [णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्लङ्। बहुलं छन्दसीति शपो लुक् न। व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

अनवपृग्णा सम्पर्करहितानि (तेजांसि) १.१५२.४. [अव+पृची सम्पर्चने (अदादि०) धातोः क्तः। नञ्समासश्च]

अनवभ्रराधसः न विद्यतेऽवभ्रो धननाशो येषान्ते (विद्वज्जनाः) ५.५७.५. अनवभ्रमविनाशि राधो येषान्ते (गन्तारः=वायवः) ३.२६.६. अनवभ्रोऽपतितं राधो येषान्ते (प्राज्ञा राजजनाः) २.३४.४. अविनष्टधनाः १.१६६.७. [वभ्र गत्यर्थे (भ्वा०) धातोरच्। न वभ्रोऽवभ्रः। राधो धननामसु निघं० २.१०. ततो नञ्बहुव्रीहिः]

अनवसः अविद्यमानमवोऽन्नं यस्य सः (वीरजनः), प्र०—अव इत्यन्ननाम निघं० २.७.

अनवस्यन्तः अपरिचरन्तः कुर्वन्तः (जनाः) ४.१३.३.

अनवह्वरम् सरलं (मार्गम्) २.४१.६. अव+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः ['ऋदोरप्' सूत्रेणाप् प्रत्ययः। तद्विपरीतम्]

अनवः मनुष्याः, प्र०—अनव इति मनुष्यनाम निघं० २.३,७.१८.१४.

अनशनम् अविद्यमानमशनं भोजनं यस्मिँस्तत् पृथिव्यादिकं च यज्जडं जीवसम्बन्धरहितं जगत् ऋ० भू० १२२. [अश भोजने (क्रया०) धातोर्ल्युट् भावे। नञ्बहुव्रीहिश्च।

तपो नाऽनशनात् परम् तै० आ० १०.६२]

अनश्नन् उक्तभोगमकुर्वन् (परमेश्वरः) १.१६४.२०. कर्मों के फलों को न भोगता हुआ (परमात्मा) स० प्र० २८३, १.१६४.२०. [नञ्+अश भोजने+शतृप्रत्ययः]

अनश्रू अव्यापिनौ (धूर्षाहौ=सूर्यविद्वांसौ) ४.३३. [अशू व्याप्तौ (स्वा०) धातोर् डुन्प्रत्ययो रुडागमो नञ्समासश्च]

अनश्वदाम् अविद्यमाना अश्वा यस्यां तां गतिम् ५.५४.५. [अश्व+दा+कः । स्त्रियां टाप् । नञ्बहुव्रीहिः]

अनश्वम् अविद्यमाना अश्वास्तुरङ्गादयो यस्मिन् तं (रथम्) १.११२.१२. **अनश्वः**=अविद्यमानतुरङ्गः (सूर्यः) १.१५२.५. अविद्यमाना अश्वा यस्मिन् सः (रथः=यानविशेषः) ४.३६.१. अविद्यमाना अश्वा यस्य सः (जनः) ६.६६.७. [अशू व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अशूप्रुषि०' इत्युणादिना क्वन् प्रत्ययः । नञ्बहुव्रीहिः]

अनश्वासः अविद्यमाना अश्वा येषु ते (पवयः=चक्राणि) ५.३१.५. [नञ् अश्वपदयोर्बहुव्रीहिः]

अनष्टवेदसम् अनष्टविज्ञानधनम् (परीक्षकं जनम्) ६.५४.८. [वेदः धननामसु निघं० २.१०. नष्टवेदस्पदयोर्नञ्वहुव्रीहिः]

अनष्टाम् प्रसिद्धाम् (वीर-भुजाम्) ७.४५.२. [णश अदर्शने (दिवा०) धातोः क्तः । नञ्तत्पुरुषः]

अनसः शकटस्य ४.३०.१०. **अनसा**=शकटेन ३.३३.९. [अन प्राणने धातो ऽसुन् प्रत्ययो बाहुलकात् । अनो वा वायुरनितेः, अपि वोपमार्थे स्याद्, अनस इव शकटादिव, अनः शकटम् आनद्धमस्मिँश्चीवरम्, अनितेर्वा स्याज्जीवनकर्मण उपजीवन्त्येनन मेघोऽप्यन एतस्मादेव नि० ११.४७. भूमा वा अनः श० १.१.२.६. यज्ञो वा अनः श० १.१.२.७. ३.९.३.३ अन्तरिक्षरूपमिव वा एतद् यदनः श० ४.३.४.१. यज्ञो वाऽअनः श० १.१.२.७.]

अनस्था अस्थिरहितः (देही) १.१६४.४ [नञ्युपपदे अस्थिप्राति० सु प्रत्ययः । 'सुपां सुलुगि०' ति सुस्थाने डादेशे टिलोपे रूपम्]

अनस्वन्तः वहून्यनांसि शकटानि विद्यन्ते येषान्ते (वणिग्जनाः) १.१२६.५. **अनस्वन्ता**=उत्तमशकटादियुक्तः (विद्वान्) ५.२७.१. [अनः शकटम् नि० ११.४७. अनस् प्राति० अतिशायने मतुप् । 'मादुपधायाश्च०' अ० ८.२.९० सूत्रेण मकारस्य वकारादेशः]

अनः शकटम् २.१५.६. शकटमिव ४.३०.११.

अना प्राणाऽऽत्मकानि (अह्रा=दिनानि) ४.३०.३. [अन प्राणने (अदा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति वार्ति० भावे कः]

अनाकृतः न आकृतो न निवारितः (विद्वान्) १.१४१.७. [नञ्+आ+कृ+क्तः । धातूनामनेकार्थत्वान् निवारणेऽपि कृ धातुः]

अनागसम् अविद्यमानाऽपराधाम् (नावम्) २१.५. निर्माणदोषरहिताम्, भा०—सुपरीक्षिताम् (सुनावम्) २१.७. अनपराधम् (मनुष्यम्) ४.३९.३. **अनागसः**=न विद्यतेऽगः पापं दोषो यासु ता निर्दोषाः, भा०—सुपरीक्षिताः शोधिताः संस्कृताः (आपः=प्राणाः जलानि वा) ४.१२. अनपराधिनः (जनान्) १.१२३.३. **अनागाः**=न विद्यते आगोऽपराधो यस्मिन् सः (राजपुरुषः) ५.८३.२. अनपराधिनः (जनाः), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति जसः स्थाने सुः ३३.१७. अधर्माचरणरहितः (सविता=राजा) ३३.२०. अनपराधः (सूर्यः=जगदीश्वरः) ७.६०.१. [इण् गतौ (अदादि०) धातोः 'इण आगोऽपराधे च' उणादि ४.२१२. सूत्रेण असुन् प्रत्ययो धातोः स्थाने चागादेशः । नञ्समासः । अनागाः अनपराधः नि० १०.११]

अनागान् अनपराधिनः (प्रजाजनान्) ३.५४.१९. अनपराधान् (प्रजाजनान्) ४.१२.४. [आगः पूर्वपदे व्याख्यातम् । सकारलोपश्छान्दसः । नञ्समासः]

अनागास्त्वम् अनपराधत्वम् २५.४५. निष्पापस्य भावम् १.१६२.२२. निष्पापत्वम्, प्र०—इण आग अपराधे च उ० ४.२१९ अत्र नञ्पूर्वादागः शब्दात्त्वे प्रत्यये 'अन्येषामपि दृश्यते' इत्युपधाया दीर्घत्वम् १.९४.१५. **अनागास्त्वे**=निष्पापभावे प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेनाऽकारस्य स्थाने आकारः १.१०४.६. अनपराधित्वे ६.५०.२. [आगः पापम्, तस्माद्भावे त्वप्रत्ययः । नञ्समासः । अनागास्त्वनमपराधत्वम् नि० ११.२१]

अनाततताय अविद्यमान आततो विस्तारो यस्य तस्मै (सभेशाय) १६.१४. [नञ्+आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्तः । अनुनासिकलोपश्च]

अनातुरम् दुःखवर्जितम् (विश्वं=सम्पूर्णं जीवादिकम्) १.११४.१. रोगेणाऽऽतुरतारहितम्, भा०—रोगकष्टमप्राप्तम् (सर्वप्राणिसमूहम्) १२.९५. अदुःखितम्, भा०—रोगरहितम् (जगत्) १६.४८. [अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् उरच् । धातोरादौ दीर्घः । नञ्समासश्च]

अनाधृष्टम् यन्न धृष्यते तेजस्तत् ५.५. प्रौढम् (तेजः) ५.९. यन्न समन्ताद् धृष्यत इत्यनाधृष्टम् (ब्रह्मयज्ञो वा) १.३१. धार्ष्ट्यम् (छन्दः=बलम्) १४.९. यत्समन्तान्न धृष्यते तत्तेजः, प्रगल्भगुणसहितं (भौतिकाग्निम्) ५.९. **अनाधृष्टः** = केनाऽप्याधर्षितुमयोग्यः (पतिः = राजा) ७.१५.१४. **अनाधृष्टा**=परैर्धर्षणरहिता (स्त्री) ३७.१२. अधर्षणीया निर्भया (प्रजा) ७.१७. समन्ताद् धर्षितुमनर्हा (योगिनो वीरता) ७.१२. **अनाधृष्टाभिः**=शत्रुभिर्धर्षितुमयोग्याभिः (ऊतिभिः=रक्षादिभिः) ४.३२.५. **अनाधृष्टाः**=धर्षितुं निवारयितुमनर्हाः (वायवः) १.१९.४. शत्रुभिरधर्षिताः (मधुमतीः=ओषध्यः) १०.४. [आङ्युपपदे ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः क्तः। 'धृषिशसी वैयात्ये' अ० ७.२.१९. सूत्रेणेण्निषेधः। नञ्समासः। अयं वा अग्निरनाधृष्टः कौ० २७.५. विराड् वा ऽअनाधृष्टं छन्दः श० ८.२.४.४.]

अनाधृष्यम् प्रगल्भम् (वृषभम्) ४.१८.१०. न केनाऽपि धर्षितुं योग्यम् ५.५. **अनाधृष्यः**=अन्यैर्धर्षितुमयोग्यः, भा०—न्यायप्रियः (अग्निः=राजा) २७.७. **अनाधृष्याय**=भयधर्षणराहित्याय (वाताय=औषधिस्थवायुविज्ञानाय ३७.७. **अनाधृष्या**=शत्रुमिर्धर्षितुमयोग्याः (नरः+ नायकाः सेनास्था जनाः) १७.४६. [आङ्युपपदे ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'ऋदुपधाच्च०' अ० ३.१.११०. सूत्रेण क्यप् प्रत्ययः। नञ्समासश्च। अनाधृष्या तदग्निः ऐ० ५.२५. असावादित्योऽनाधृष्यः। कौ० २७.५.]

अनानत ! नम्रतारहित (शत्रूणां समीपे प्रजास्वामिन् राजन्) ६.४५.९. अनानतम्=नम्रीभूतम् (राजानम्) ७.६.४. **अनानताः**=शत्रूणामभिमुखे खल्वनम्राः (नृतमासः=नायका जनाः) १.८७.१. [नञ्युपपदे णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोः क्तः।]

अनानुदः अप्रेरितः (इन्द्रः=विद्याप्रकाशको जनः) २.२१.४. येऽनुददति तेऽनुदा, न विद्यन्तेऽनुदा यस्य सः (विद्वान्राजा) २.२३.११. [आङ्+णुद प्रेरणे (तुदादि०) धातोर् इगुपधलक्षणः कः। नञ्समासश्च]

अनानुभूतीः अनुभवरहितान् (अनभिज्ञान् सखीन्), प्र०—अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः ६.४७.१७. [अनु+भू+क्तिन् भावे। नञ्बहुव्रीहिः]

अनाप्तः मूर्खैः शत्रुभिरप्राप्तः (परमेश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.१००.२. [नञ्+आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः क्तः। अनाप्ता तत्पृथिवी। ऐ० ५.२५.]

अनाभुवः ये समन्ताद्धर्माचरणे भवन्ति त आभुवः, नाऽऽभुवोऽनाभुवस्तान् (पापिजनान्) १.५१.९. [नञ्+आङ्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् प्रत्ययः]

अनामयत् रोगादिरहितम् (आयुः) १८.६. [आङ्+अम रोगे (चुरा०) धातोर्बाहुलकात् कयन् प्रत्ययः। नञ्समासः। नपुंसकेऽदडादेशश्छान्दसः]

अनामि नम्येत ६.८.६. नम्यते ३.६२.५. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ् सामान्ये]

अनामृणः अविद्यमाना समन्तान्मृणा हिंसका यस्य सः (परमेश्वरः) १.३३.१. [आङ्+मृण हिंसायाम् (तुदा०) धातोर् इगुपधलक्षणः कः। नञ् बहुव्रीहिः]

अनायतः इतस्ततोऽगच्छन्त्सन्निहितः (सूर्यः) ४.१३.५. अदूरभवः (जीवात्मा) ४.१४.५. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ। नञ्समासश्च]

अनायुधासः अविद्यमानाऽऽयुधाः (योद्धृजनाः) ४.५.१४. (आङ्+युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर् इगुपधलक्षणः कः। नञ्बहुव्रीहिः। जसोऽसुगागमः]

अनारम्भणे आलम्बनरहिते (समुद्रे) ऋ० भू० १९३. अविद्यमानमारम्भणं यस्य तस्मिन् (तमसि=अन्धकारे) १.१८२.६. अविद्यमानमारम्भणं यस्मिँस्तस्मिन् (अन्तरिक्षे सागरे वा) १.११६.५. [आङ्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्भावे ल्युट्। 'रभेरशब्लिटोरि' ति नुमि परसवर्णे च रूपम्]

अनाविद्धया अप्राप्तक्षतया (तन्वा=शरीरेण) २९.३८. शस्त्राऽस्त्ररहितया (तन्वा=शरीरेण) ६.७५.१. [आङ्+व्यध ताडने (दिवा०) धातोः क्तः। सम्प्रसारणे पररूपे स्त्रियां टाप्। नञ्समासश्च]

अनाशवाः अव्याप्ताः (वीरजनाः) १.१३५.९. [अशू व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'कृवापाजिमि०' उणा० १.१. सूत्रेण उण् प्रत्ययः। नञ्समासः]

अनाशस्ता इव अप्रशस्तगुणसामर्थ्या इव (मनुष्याः) १.२९.१. [शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः। 'धृषिशसी वैयात्ये' इतीड्निषेधः। न शस्तोऽशस्तः=प्रशस्तः। नञ्समासः]

अनाशुना अनश्वेनाऽचिरेण गन्त्रा (अर्वता=अश्वेन) ६.४५.२. [अशू व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'कृवापाजि०' इत्युणादिना उण् प्रत्ययः। न आशुना=अनाशुना]

अनासः अविद्यमानाऽऽस्यान् (दस्यून्) ५.२९.१. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः 'अकर्त्तरि च कारके०' सूत्रेण करणे घञ । नञ्बहुव्रीहिः]

अनास्थाने अविद्यमानं स्थित्यधिकरणं यस्मिन् [समुद्रे=अन्तरिक्षे सागरे वा) १.११६.५. स्थातुमशक्ये (समुद्रे) ऋ० भू० १९३, १.११६.५. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातोर्ल्युट् अधिकरणे । नञ्बहुव्रीहिः]

अनिःशस्ताः निर्गतं शस्तं प्रशंसनं येभ्यस्तद्विरुद्धाः (ऋभवः=मेधाविनः) ४.३४.११. [निर्+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः क्तः । 'यस्य विभाषा' सूत्रेणेण् निषेधः । नञ्समासः]

अनितभा अप्राप्तदीप्तिः (रसा=पृथिवी) ५.५३.९. [अनित=नञ्+इण् गतौ धातोः क्तः । भा दीप्तौ (अदा०) धातोः घञर्थे कः प्रत्ययः, स्त्रियां टाप् । ततः समासः]

अनिध्मः अदीप्यमानः (विद्वज्जनः) २.३५.४. बाहर अप्रकाशमान और भीतर सुप्रकाशित रहता हुआ स्त्री-पुरुष के हृदय में प्रेम सं० वि० १०४, २.३५.४. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः 'इषियुधीन्धि०' उणा० १.१४५. सूत्रेण मक् प्रत्ययः । नञ्समासः]

अनिनस्य यत् प्रशस्तं प्राणनिमित्तं तस्य (धनिनो जनस्य) १.१५०.२. [अन प्राणने धातोर्भावे 'घञर्थे कविधानमि' ति कः प्रत्ययः) तत मत्वर्थे इनच् प्रत्ययः]

अनिन्दिषुः निन्देयुः १.१६१.५. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोः सामान्ये लुङ्]

अनिन्द्या निन्दितुमनर्हौ (अश्विनौ=स्त्रीपुरुषौ) १.१८०.७. [नञ्+णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोर्ण्यत् प्रत्ययः]

अनिन्द्रम् अनैश्वर्यम् ७.१८.१६. **अनिन्द्राम्**= अनीश्वरीं गतिम् ४.२३.७. **अनिन्द्राः**=अविद्यमाना इन्द्रा राजानो यासु ताः (महीः=पृथिवीः) १.१३३.१. अनैश्वर्याः (दरिद्रा जनाः) ५.२.३. [इदि परमैश्वर्ये (भ्वा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्रवज्र०' उणा० २.२८. सूत्रेण 'इन्द्र' शब्दो रन् प्रत्ययान्तो निपातितः । नञ्समासः । य इन्द्रं न विविदुः, इन्द्रो ह्यहमस्मि, अनिन्द्रा इतर इति वा । नि० ३.१०.]

अनिपद्यमानम् यो मन आदीनीन्द्रियाणि न निपद्यते प्राप्नोति तम् (परमेश्वरम्) १.१६४.३. अपदनशीलमचलम् (गोपाम्=परमेश्वरम् ३७.१७. [नि+पद गतौ (दिवा०) धातोः शानच् । नञ्समासश्च]

अनिबद्धः न कस्याऽप्याकर्षेण निबद्धः (सूर्यः) ४.१३.५ परवदेकत्र न स्थितः (जीवात्मा) ४.१४.५. [नि+बन्ध बन्धने (क्रया०) धातोः क्तः । नञ्समासः]

अनिबाधे निर्विघ्ने सति (कार्ये) ५.४२.१७. व्यवहारे ५.४३.१६. बाधारहिते (उरौ=बाहौ) ३.१.११. [नि+बाधृ लोडने (भ्वा०) धातोर्भावे घञ् प्रत्ययः । तत्प्रतिषेधः]

अनिभृष्टम् नित्यं भृष्टं पतिरहितमाचरितवान् (तत्प्रतिषेधः) (सभेशो राजा) १०.६. [नि+भ्रस्ज पाके (तुदा०) धातोः क्तः । तत्प्रतिषेधः]

अनिभृष्टतविषिः न निभृष्टा प्रदग्धा तविषी सेना यस्य सः (मेधावी राजा) ५.७.७. न नितरां भृष्टा तविषी सेना यस्य सः (ब्रह्मणस्पतिः=अन्नस्य पालको राजा) २.२५.४. [नञ्+नि+भ्रस्ज पाके+क्त=अनिभृष्ट । [तव इति सौत्रो धातुस्ततः 'तवेर्णिद्वा' उणा० १.४८. सूत्रेण टिषच् प्रत्यये तविषी । तविषी बलनाम निघं० ३.३. एनयोः समासः]

अनिमानः अपरिमाणः (इन्द्रः=परमैश्वर्यवान् जगदीश्वरः) ६.२२.७. अविद्यमानं निमानं परिमाणं यस्य सः (भौतिकाग्निः) १.२७.११. [नि+माङ् माने (दिवा०) धातोर्ल्युट् । नञ्बहुव्रीहिः]

अनिमिषम् अहर्निशम् ५.१९.२. निरन्तरम् १.२४.६. **अनिमिषः**=अहर्निशं प्रयतमानः (इन्द्रः=सेनेशः) १७.३३. **अनिमिषा**=अहर्निशजन्यया क्रियया ३.५९.१. नैरन्तर्येण ७.६०.७. **अनिमिषाः**=निमेषालस्यवर्जिताः (जगत्कल्याणकरा जनाः) २.२७.९. [अनिमिषा अनिमिषन् नि० ३.२२.]

अनिमिषद्भिः नैरन्तर्येणालस्यरहितैः (सज्जनैः) १.१४३.८. [नञ्+नि+मिष स्पर्द्धायाम्+शतृ]

अनिमिष्येण निरन्तरं प्रयतमानेन (इन्द्रेण=सेनापतिना) १७.३४. [निमिष प्राति० भवार्थे यत् । तत्प्रतिषेधः]

अनिमेषम् निरन्तरम् ३४.१३. प्रतिक्षणम् १.३१.१२. [अनिमेषम्=अनिमिषन्तः नि० ३.१२. नञ्+नि+मिष स्पर्द्धायाम्+घञ्]

अनिराम् अविद्यमाना इराऽन्नभुक्तिर्यस्यां ताम् (अमीवाम्=पीडाम्) १२.१०५ **अनिराः**=नितरां दातुमयोग्याः (अमीवाः=रोगपीडाः) ११.४७. [इरा अन्ननाम निघं० २.७. ततो नञ्बहुव्रीहिः । अथवा नि+रा दाने (अदा०) भावे घञ् । तत्प्रतिषेध.]

अनिरेण रमणीयेन (वचसा=वचनेन) ४.५.१४.

अनिलम् कारणरूपं वायुम् ४०.१५. [अन प्राणने धातोः 'सलिकल्यनि०' उणा० १.५४. सूत्रेण इलच्]

अनिविशमानाः याः कुत्रचिन्न निविशन्ते ताः (आपः=जलानि) ७.४९.१. [नञ्+नि+विश प्रवेशे (तुदा०) धातोः शानच् । 'नेर्विशः' इत्यात्मनेपदम्]

अनिवृतः निरन्तरः (अग्निः) ३.२९.६. [नि+वृञ् वरणे (स्वा०)+क्तः । तत्प्रतिषेधः]

अनिवेशनानाम् अविद्यमानं निवेशनमेकत्र स्थानं यासां तासाम् (काष्ठानां=जलानाम्) १.३२.१०. [नि+विश प्रवेशे (तुदा०) धातोरधिकरणे ल्युट् । नञ्बहुव्रीहिः । अनिवेशनानाम्=अनिविशमानानाम् नि० २.२६.]

अनिशितम् अतीक्ष्णम् (योनिः=कारणं वह्निम्) २.३८.८. **अनिशितः**=न विद्यते नितरां शिता तीव्रा क्रिया यस्मिन् स सङ्ग्रामो यज्ञपात्रं वा १.२९. **अनिशिता**=अतिविस्तीर्णा सेना कार्या वेदिर्वा १.२९. [नि+शिञ् निशाने (स्वा०) धातोः क्तः । तत्प्रतिषेधः]

अनिषङ्गाय अविद्यमानो नितरां सङ्गः पक्षपातो यस्य तस्मै (यज्यवे=शिल्पविद्याविदे) १.३१.१३. [नि+षञ्ज सङ्गे (भ्वा०) धातोर्घञ् । घित्वात् कुत्वम् । तत्प्रतिषेधः]

अनिष्टृतः दुःखात्पृथग्भूतः (अग्निः=राजा) २७.७. अनुपहिंसितः, भा०—विघ्नविरहः (अग्निः=विनयप्रकाशितो राजा) २७.४.

अनिःशस्ताः निर्गतं शस्तं प्रशंसनं येभ्यस्तद्विरुद्धाः (ऋभवः=मेधाविनो जनाः) ४.३४.११. [निर्+शंसु स्तुतौ+क्तः तत्प्रतिषेधः]

अनीकम् बलं सैन्यम् ५.२.१. सैन्यम् २९.५४. सर्वदुःखनाशार्थं कामक्रोधादिशत्रुविनाशार्थं बलम् (ब्रह्म) पं० वि० ॥ सैन्यमिव ४.५.९. सैन्यमिव ज्वालासमूहम् ८.२४. सैन्यमिव कार्यसिद्धिप्रापकं (यानम्) ६.५१.१. सैन्यमिव समूहम् १.१२४.११. सेनेव किरणसमूहम् १३.४६. सैन्यमिव तेजः २.३५.११. चक्षुरादीन्द्रियैरप्राप्तम् (चक्षुः=बलम्) १.११५.१. सैन्यवद्रक्षयित्री (स्त्री) १.११३.१९. विजयमानं सैन्यम् ४.१२.२. बलवत्तरं सैन्यमिव प्रसिद्धम् अनिति जीवयति सर्वान् प्राणिनः सः (सूर्यः=परमेश्वरः), प्र०—अनिहृषिभ्यां किच्च उ० ४.१६. अनेन सूत्रेण ईकन् प्रत्ययः ७.४२. **अनीका**=शत्रुभिः प्राप्तुमनर्हाणि सैन्यानि ४.२३.७. **अनीके**=सैन्ये ४.५८.११. **अनीकेन**=सेनासमूहेन सह २.९.६. सैन्येन ५.३४. **अनीकैः**=शत्रुभिर्दुष्टैर्दस्युभिर्नेतुमशक्यैः सैन्यैः ४.१०.३. भा०—सुशिक्षितैर्बलाढ्यैः सैन्यैरिव १५.४६. [अन प्राणने धातोः 'अनिहृषिभ्यां किच्च' उणा० ४.१७. सूत्रेण ईकन् प्रत्ययः । सेनाया वै सेनानीरनीकम् श० ५.३.१.१. णीञ् प्रापणे धातोः 'अजियुधुनीभ्यो दीर्घश्च' उ० ३.४७. सूत्रेण कन् प्रत्यये नीकः । तत्प्रतिषेधः]

अनीकवते प्रशस्तसेनायुक्ताय (अग्नये=सेनापतये) २९.५९. प्रशंसितसेनाय (अग्नये=सेनापतये) २४.१६. [अनीक प्राति० मतुप् प्रशंसार्थे]

अनीताम् प्रापयेताम् १.१२१.५. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः सामान्ये लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

अनु पश्चाद् भावे ५.२९. सद्यः ३.५५.४. पश्चादर्थे १.६.५. आनुकूल्ये १.५२.११. क्रियाऽर्थे १.१०.१२. वीप्सायाम् १.६.४. अनुगमाऽर्थे १.२५.१६. अर्वागर्थे १.८२.३. अनुक्रमे १.३७.९. आनुपूर्व्ये १.५२.४. अनुयोगे १.५२.१४. अनुलक्ष्ये १.१९१.१५. [अन्विति सादृश्यापरभावम् नि० १.३.]

अनुकामम् कामं काममनु १.१७.३. इच्छा के अनुकूल स्वतन्त्र सं० वि० १९७, ९.११३.९. **अनुकामः**=धर्माऽनुकूला कामना १८.८. [कमु कान्तौ धातोर्घञ् । ततोऽनुना सहाव्ययीभावः]

अनुक्थाः अविद्वांसः (जनाः) ५.२.३. (वच परिभाषणे (अदा०) धातोः । 'पातृतुदिवचि०' उ० २.७. सूत्रेण थक्प्रत्यये सम्प्रसारणे चोक्थरूपम् । तत्प्रतिषेधः]

अनुक्रामाम अनुक्रमेण गच्छेम ३८.१९. **अनुक्रामेम**=उल्लङ्घेम ५.५३.११. [अनु+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'क्रमः परस्मैपदेषु' अ० ७.३.७६. सूत्रेण दीर्घत्वम्]

अनुक्रोशन्ति रुदन्ति ४.३८.५. [अनु+क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्लट्]

अनुक्षत्तारम् सारथ्यनुकूलम् ३०.११. धर्मात्मा के अनुकूलवर्त्ती (जन) को ३०.१३. [क्षद संवृताविति सौत्रो धातुः, ततः 'तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः०' उ.० २.९४ सूत्रेण तृचि क्षत्ता । ततोऽनुना समासः]

अनुगमन्तु अनुगच्छन्तु ४.३५.१. **अनुगमानि**=अनुगच्छेयम् ४.१८.३. [अनु गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसीति शपो लुक् ।]

अनुगानि अनुगच्छेयम् ४.१८.३. [अनु+गम्लृ गतौ

धातोर्लोट्। छान्दसो वर्णलोप इति मकारलोपः [बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

अनुगुः पश्चाद् गच्छन्ति १.६५.२. अनुगच्छेयुः ३.७.७. [अनु+गम्लृ गतौ धातोर्लिङ्। छान्दसत्वाद् रूपसिद्धिः]

अनुग्मन् अनुगच्छन्ति ६.१.२. पश्चात्प्राप्नुवन्ति १.६५.१. [अनु+गम्लृ गतौ धातोर् लङ्, शपो लुक् उपधालोपः, अड्अभावश्च छान्दसः]

अनुग्मन् अनुकूलं गच्छन् (इन्द्रः=विद्युत्) ३.३९.५. [अनु+गम्लृ गतौ+शतृ। शपो लुग् उपधालोपश्च छान्दसः]

अनुगृणाति पश्चात् स्तौति १.१४७.२. पश्चात् स्तुयात् १२.४२. [अनु+गृ शब्दे (क्र्या०) धातोर्लट्]

अनुगृभाय अनुगृह्णीयाः २.२८.६. [अनु+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर् लोट्। 'छन्दसि शायजपि' अ० ३.१.८५. सूत्रेण श्नः शायजादेशः]

अनुग्रः अतेजस्वी (जनः) ७.३८.६. [न उग्र इति नञ्समासः। उग्रशब्दः 'ऋज्रेन्द्र०' उणादिसूत्रे निपातितः]

अनुघुष्य आनुकूल्येन घोषयित्वा २५.४१. आनुकूल्येन शब्दयित्वा १.१६२.१८. [अनु+घुषिर् विशब्दने (चुरा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

अनुचरेम अनुगच्छेम ५.५१.१५. [अनु+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

अनुचरम् सेवक को ३०.१३. [अनु+चर गतौ+अच् कर्त्तरि]

अनुचस्कन्द प्राप्नोति १३.५. [अनु+स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोर्लिट् सामान्ये]

अनुचेतथः ज्ञापयथः ४.४५.६. [अनु+चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लट्]

अनुचेति विज्ञायते ४.३७.४. [अनु+चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लट। छान्दसस्तकारलोपः शप्लुक् च]

अनुजिहाताम् प्राप्नुतः ७.३४.२४. [अनु+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लोट्]

अनुजुहोमि अनुगृह्णामि १३.५. [अनु+हुदानादानयोः (जु०) धातोर्लट्]

अनुतस्थुः आनुपूर्व्येण वर्त्तन्ते १.५२.४.
अनुतिष्ठाति=अनुतिष्ठेत् ४.२०.२. [अनु+ष्ठा गतिनिवृत्तौ+लिट्। अपरत्र च लेट्]

अनुतृन्धि हिन्धि ५.१२.२. [अनु+उतृदिर् हिंसानादरयोः (रुधा०) धातोर्लोट्]

अनुत्तम् अप्रेरितम् (वस्तु) १.१६५.९. अप्रेरितं स्वाभाविकं (वीर्यम्) १.८०.७. अप्रेरितम् (स्वरूपम्), प्र०—'नसत्तनिषत्तानुत्त०' अ० ८.२.६१. इति निपातनम् ३३.७९. अनुकूलं शत्रुभिरबाधितम् (क्षत्रं=धनं राज्यं वा) ७.३४.११. **अनुत्ताः**=आनुकूल्येन धृताः (गिरः=विविधविद्यायुक्ता वाण्यः) ३.३१.१३. [नञ्+णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोः क्तः। अथवा अनु+दा+क्तः। 'अच उपसर्गात्तः' इति दकारस्य तकारः]

अनुत्तमन्युम् न नुत्तः प्रेरितो मन्युः क्रोधो यस्य तम् जितेन्द्रियं राजानम्) ७.३१.१२. [अनुत्तः=नञ्+णुद् प्रेरणे+क्तः। [मन्युः=मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'यजिमनि०' उ० ३.२०. सूत्रेण युच् प्रत्ययः। एनयोः समासः]

अनुदकाः जलरहिताः (नद्यः) ७.५०.४. [नञ्उदकपदयोर्बहुव्रीहिः]

अनुदक्षि अनुदहसि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि, इति शपो लुक् २.१.१०. [अनु+दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लट् शप्लुक् च]

अनुददन्ते भा०—अनुमोदन्ते २७.१६. [अनु+दद दाने (भ्वा०) धातोर्लट्]

अनुददाति अनुकूलता से देता है २.१२.१० [अनु+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लट्]

अनुदधिरे अनुकूलतया धरन्ति १.८५.३. [अनु+दध धारणे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

अनुदायि अनुदीयते ६.२५.८. अनुदीयते २.२०.८. [अनु+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्मणि लुङ्। अडभावश्च छान्दसः]

अनुदिताम् ईश्वरोक्ताम् (वेदवाणीम्) ऋ.० भू० २०३. अथर्व० ५.१.१.२. [णुद प्रेरणे धातोः क्तः। छान्दस इडागमः। नञ्समासे टापि च रूपम्। अप्रेरितामित्यर्थः, सा च वेदवाणी]

अनुदिशामि उपदिशामि १३.४८. [अनु+दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोर्लट्]

अनुदिश्य प्राप्तुं शोधयितुमनुलक्ष्य १.२८. [अनु+दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

अनुदुदुह्रे पश्चात् प्रपूरयन्ति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिट् 'इरयो रे' अ० ६.४.७६. अनेनेरेजित्यस्य स्थाने रे

आदेशः ३.१६. [अनु+दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लिट्। इरेच् स्थाने रे आदेशः]

अनुदुः अनुदद्युः, प्र०—अत्र लुङ्यडभावः १.१२७.४. [अनु+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः 'गातिस्था०' सूत्रेण सिचो लुक्]

अनुदृश्य आनुकूल्येन दृष्ट्वा ३४.४९. [अनु+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

अनुदेथाम् प्रेरयेथाम् १.११६.९. [णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लङ्]

अनुदेयम् अनुदातुं योग्यं (नववास्त्वं=नवीनं निवासम्) ६.२०.११. [अनु+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'अचो यत्' सूत्रेण यत्। 'ईद्यती' ति ईकारादेशः]

अनुद्यून् दिनान्यनु ५.८९.५. दिवसान् १.१२१.७. वीप्सया दिवसान् १.७१.६. प्रतिदिनम् २.१४.१२. अनुकूलान् दिवसान् ३.२३.२. [द्युरित्यहर्नाम निघं० १.९. द्युरित्यह्नो नामधेयं द्योतत इति सतः। नि० १.६. तस्यानुना अव्ययीभावसमासः]

अनुद्यावापृथिवी सूर्यपृथिव्योर्मध्ये ऋ० भू० १३८. [पृथिव्यामुत्तरपदे दिवः स्थाने 'दिवसश्च पृथिव्याम्' अ० ६.३.३०. सूत्रेण द्यावादेशः। ततो अनुना समासः]

अनुधूपितासः अनुकूलैः सुगन्धैः संस्कृताः (पदार्थाः) २.३०.१०.

अनुनेषथ अनुनयथ ५.५४.६. **अनुनेषि**=प्रापयसि, प्र०—अत्र नी धातोर्लेटि 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक्, अत्रान्तर्गतो ण्यर्थः १.९१.१. [अनु+णीञ् प्रापणे (भ्वा०)धातोर्लेट्। 'सिब् बहुलं लेटीति' सिप्। अपरत्र शपो लुक्]

अनुपक्षितम् यद् व्ययेनाऽपि नोपक्षीयते तत् (वसु=विद्यासुवर्णादिधनम्) ३.१३.७. [उप+क्षि क्षये (भ्वा०) धातोः क्तः नञ्समासश्च]

अनुपत् अनु पश्चात् प्राप्यते या सा (शोभा) १५.८. [अनु+पद गतौ (दिवा०) धातोः स्त्रियां 'संपदादिभ्यः क्विप्' इति क्विप्]

अनुपथाः अनुकूलः पन्था येषान्ते (मनुष्याः) ५.५२.१० ['अनु+पथिन्' पदयोः समासे 'ऋक्पूरब्धूः पथाम्०' सूत्रेणाकारप्रत्यये टिलोपे च रूपम्]

अनुपदे पश्चात् प्राप्तव्याय (शोभायै) १५.८. [अनु+पद गतौ (दिवा०) धातोः क्विप्]

अनुपश्यतः अनुकूलेन योगाऽभ्यासेन साक्षाद् द्रष्टुः (संन्यासिनः), अनुकूल देखने वाले संन्यासी को सं० वि० २१५, ४०.७. [अनु+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः शतृ। शिति पश्यादेशश्च]

अनुपश्यति विद्याधर्मयोगाऽभ्यासाऽनन्तरं समीक्षते, अनुकूलता से देखता है सं० वि० २१४, ४०.६.

अनुपश्यसि=पश्चात् सम्प्रेक्षसे १.५०.६. [अनु+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लट्। शिति धातोः पश्यादेशः]

अनुपूर्वम् अनुकूलाः पूर्वे वेदोक्ता आप्तसिद्धान्ता यस्य तम् (ऋषिं=वेदपारगाऽध्यापकम्) १.११७.३. आनुकूल्यमनतिक्रम्य २३.३८. क्रमशः १०.३२. अनुकूलं प्रथमम् १९.६.

अनुप्रथन्ताम् अनुप्रख्यान्तु ८.३०. [अनु+प्रथ प्रख्याने (भ्वा० उ०) धातोर्लोट्]

अनुप्रमुचः अनुप्रमोचय ४.२२.७. [अनु+प्र+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट्। छान्दसो नुमो नकारलोपः]

अनुप्रयन्ति प्राप्नुवन्ति ५.५३.१०. [अनु+प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्। 'इणो यण्' इति यणादेशः]

अनुप्राणन्तु आयुर्भुञ्जताम् ४.२५. **अनुप्राणिहि**=जीवितोऽनुजीवनं धर धरति वा ४.२५. [अनु+प्र+अन प्राणने (अदा०) धातोर्लोट्]

अनुप्रेत आनुकूल्येन प्राप्नुत १८.५८. **अनुप्रेहि**=प्राप्नुहि १७.६६. [अनु+प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

अनुब्रुवाणः पठित्वाऽनूपदिशन् (विद्वज्जनः) ५.४४.१३. [अनु+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः शानच्]

अनुभक्षयामि पश्चात् पालयामि ८.३७. [अनु+भक्ष अदने (चुरा०) धातोर्लट्। धातूनामनेकार्थत्वात् पालनेऽपि]

अनुभरामि पश्चाद् धारयामि, प्र०—अन्विति सादृश्यापरभावं प्राह निरु० १.३, २.१७. [अनु+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

अनुभर्त्री अनुगतसुखधारणस्वभावा (वाणी) १.८८.६. [अनु+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। स्त्रियां ङीप्]

अनुभासि आनुकूल्येन प्रकाशयसि ३.६.७. [अनु+भा दीप्तौ (अदा०) धातोर्लट्]

अनुभुवन् अनुभवन्ति ७.३१.९. [अनु+भू+शतृ प्रत्ययः। विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने शे उवङ्ङादेशे च रूपम्]

अनुभ्राजन्तः पश्चात् प्रकाशमानाः (रश्मयः) १.५०.३. [अनु+भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अनुमता अनुज्ञापिता (सीता=काष्ठपट्टिका) १२.७०.[अनु+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः क्तः । अनुनासिकलोपश्च]

अनुमतिः अनुकूलं विज्ञानम् ३४.९. **अनुमते**=हे अनुमन्तः परमेश्वर ! ऋ० भू० २०२, १०.५९.६. अनुकूला मतिर्यस्य तत्सम्बुद्धौ (अन्व०—सभापते विद्वन्वा) ३४.८. **अनुमत्यै**=याऽनुमन्यते तस्यै (विष्णुपत्न्यै=अन्तरिक्षरूपायै) २९.६०. अनुमति के लिए २४.३२. [अनु+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'मन्त्रे वृषेषपचमन०' अ० ३.३.९६. सूत्रेण भावे स्त्रियां क्तिन् उदात्तश्च अनुमती राकेति देवपत्न्याविति नैरुक्ताः, पौर्णमास्याविति याज्ञिका, या पूर्वा पौर्णमासी साऽनुमतिर्योत्तरा सा राकेति विज्ञायते । अनुमतिरनुमननात् नि० ११.३०]

अनुमदन्ति आनुकूल्येनाऽऽनन्दयन्ति ३.४७.४. आनुकूल्येन हृष्यन्ति ३३.८०. अनुकूलं हर्षन्ति १.८४.१०. **अनुमदन्तु**=पश्चादानन्दन्तु २७.८. अनुहर्षन्तु ६.२०. उत्साहयन्तु, भा०— प्रोत्साहयन्तु, अनुमोदयन्तु च १७.४९. **अनुमदाम**=अनुहृष्येम, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप् १.१०२.३. **अनुमदेम**=आनन्दिता भवेम, प्र०—अत्रापि विकरणव्यत्ययेन श्यनः स्थाने शप् १.९१.२१. [अनु+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने श्यन् न भवति]

अनुमन्यत अनुमन्यसे ४.१७.१. **अनुमन्यताम्**=पश्चाद् विज्ञापयतु स्वीकुरुतां वा ४.२०. पश्चात् स्वीकरोतु स्वीकारयति वा ५.६. **अनुमन्यासै**=अनुमन्यस्व ३४.८. [अनु+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः सामान्ये लङ् । अड् अभावश्च अन्यत्र लोट्]

अनुममिरे निर्मिमते १.१६३.८. [अनु+मा माने (अदा०) धातोर्लिट्]

अनुमम्नाते अन्वभ्यासाते ७.३१.७. [अनु+म्ना अभ्यासे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

अनुमंसते अनुमन्यताम् ५.४६.४. [अनु+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लेट् । 'सिब्बहुलं लेटी' ति सिप्]

अनुमाद्यस्य अनुहर्षितुं योग्यस्य (पुंसः=पुरुषस्य) ७.६.१. **अनुमाद्यः**=अनुहर्षितुं योग्यः (इन्द्रः=परमैश्वर्यदाता राजा) ६.३४.२. **अनुमाद्यासः**=अनुमोदकारकगुणेन प्रशंसनीयाः (विद्वज्जनाः) १.११५.३. [अनु+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्ण्यत्]

अनुमार्ष्टु पुनः पुनः शुन्धतु, भा०—सम्पूरयन्तु ८.१४. [अनु+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लोट् 'मृजेर्वृद्धिरिति वृद्धिः]

अनुमृक्षीष्ट अनुशोधयतु १.१४७.४. [अनु+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लिङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अनुम्लोचन्ती अनुम्लोचयन्ती दीप्तिः १५.१७. [अनु म्लुचु गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः शतृ, स्त्रियां ङीप् च]

अनुयच्छतु अनुगृह्णातु ४.५७.७. **अनुयच्छन्ति**=निगृह्णन्तु ६.७५.६. [अनु+यम उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'इषुगमियमाम्' सूत्रेण छकारादेशः शिति]

अनुयच्छमाना अनुकूलतया प्राप्ता (पत्नी) १.१२३.१३. **अनुयच्छमानाः**=आनुकूल्येन नियन्तारः (मनुष्याः) प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.१०९.३. [अनु+यम उपरमे (भ्वा०) धातोः शानच्+टाप् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अनुयतम् आनुकूल्येन यतन्तम् (मर्त्तं=मनुष्यम्) ५.४१.१३. [अनु+यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः क्विप्]

अनुया याऽनुयाति तया (रात्र्या=रात्रिविद्यया) १.५.६ [अनु+या प्रापणे (अदा०) धातोरच् स्त्रियां टाप्]

अनुयाजान् अनुकूलान् यज्ञपदार्थान् १९.१९. [अनु+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः । 'प्रयाजानुयाजौ यज्ञाङ्गे' अ० ७.३.६२. सूत्रेण निपातनात् कुत्वं न भवति । अपाना अनुयाजा काठ० १२.२. श० ११.२.७.२७. कौ० ७.१.१०.३. अशनिरेव प्रथमोऽनुयाजः श० ११.२.७.२१. एकादश अनुयाजाः । मै० १.१०.८. छन्दांसि वाऽनुयाजाः श० १.८.२.८. तद्यत्तासु सर्वाष्वष्टासु (देवतासु) अथैतत् पश्चेवानुयजति तस्मादनुयाजा नाम श० १.८.२.७. त्रयोऽनुयाजाः । इमा ऽएवास्य ते ऽवाञ्चस्त्रयः प्राणाः श० ११.२. ६.९. प्रजाऽनुयाजाः तै० स० २.६.१.६. रेतोधेयम् अनुयाजा श० ३.८.४.८. आत्मा वै प्राणानामेकादशः······अथ यदेकादशानुयाजाः, प्राणानस्मिन् दधाति । मै० ३.९.८. पशवो वा ऽनुयाजाः । श० ३.८.४.८. अथ किन्देवताः प्रयाजानुयाजाः ? आग्नेया इत्येके । छन्दोदेवता इत्यपरम् । ऋतदेवता इत्यपरम् । पशुदेवता इत्यपरम् । प्राणदेवता इत्यपरम् । आत्मदेवता इत्यपरम् । आग्नेया इति स्थितिः । भक्तिमात्रमितरत् नि० ८.२१.]

अनुयाति अनुगच्छति ६.६.२. **अनुयासि**=प्राप्नोषि ३.१.१७. [अनु+या प्रापणे (प्रापणमिह गतिः) अदा० धातोर्लट्]

अनुयेमाते नियमेन गच्छतः ४.४८.३. **अनुयेमुः**=नियच्छन्ति ६.२१.६. [अनु+यम उपरमे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

अनुयोज अर्वाग् योजय १.८२.३. पश्चाद् योजय युङ्क्ते वा ३.५२. [अनु+युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शपः श्नम् न भवति]

अनुरुत् योऽनुरौति उपदिशति (परमात्मा) ३.५५.५. [अनु+रु शब्दे (अदा०) धातोः क्विप्]

अनुरुधम् योऽनुरुणद्धि तम् ३०.९. [अनु+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोः क्विप्]

अनुरूपः अनुकूलः (यज्ञः) १९.२४. [रूपम् रोचतेः नि० ३.१३. स योऽयं (पुरुषः) चक्षुष्येषो ऽनुरूपो नाम। अन्वङ् ह्येष सर्वाणि रूपाणि। जै० उ० १.२७.४. पूर्वमु चैव तद्रूपमपरेण रूपेणानुवदति यत्पूर्वं रूपमपरेण रूपेणापनुवदति तदनुरूपस्यानुरूपत्वमनुरूप एनं पुत्रो जायते य एवं वेद। तां० १२.१.५, १२.७.७, १३.१.९, १३.७.७. प्रजा अनुरूपः। गो० उ० ३.२१. प्रजा वा अनुरूपः। ऐ० ३.२४. अग्निरनुरूप. जै० उ० ३.४.२.]

अनुरोहते अनुवर्द्धते २.५.४. [अनु+रुह वीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्रात्मनेपदम्]

अनुवक्षः प्राप्नुहि ५.३३.२. **अनुववक्ष**=अनुवहति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिटि 'वाच्छन्दसि' इति सुडागमः ३.७.६. [अनु+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट्। सुडागमः पूर्वत्र द्विर्वचनप्रकरणे छन्दसि वेति वक्तव्यम्' (अ० ६.१.८.) वा० सूत्रेण द्वित्वं न भवति]

अनुवनथः पश्चात् सम्भजेथाम् १.४६.१४. [अनु+वन संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

अनुवर्त्मानः अनुकूलाऽऽचरणाः, अनुकूलो वर्त्मा मार्गो येषान्ते (विशः, मरुतः=प्रजाः, ऋत्विजो विद्वांसः) १७.८६.

अनुवर्द्धसे शमादिषु स्वात्मानमुन्नयसि ७.१२. **अनुवावृधे**=अनुवर्द्धयन्ति २.८.५. [अनु+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लट् लिट् च। तुजादीनामित्यभ्यासदीर्घः]

अनुववने पश्चाद् याचते १.६१.१५. [अनु+वनु याचने (तना०) धातोर्लिट्। अकारलोपश्छान्दसः। 'न शसददवादिगुणानामि' ति एत्वाभ्यासलोपौ न भवतः]

अनुवष्टि प्रकाशते १५.४७. कामयेत १.१२७.१. [अनु+वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लट्। वष्टि वश्मिकान्तिकर्मा निघं० २.६.]

अनुवस्ताम् अनुच्छादयतु ६.७५.१८. पश्चादाच्छादयताम् १७.४९. [अनु+वस आच्छादने (अदा०) धातोर्लोट्]

अनुवाति अनुगच्छति ४.४०.३. पीछे चलता है ४.७.१०. [अनु+वा गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

अनुवावृतुः अनुवर्त्तेरन्, प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदैर्घ्यम् ४.३०.२. [अनु+वृत्तु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लिट्। अभ्यासस्य दीर्घत्वं तुजादित्वात्]

अनुविक्रमते अनुकूलता से क्रिया करता है सं० वि० २१०. अथर्व० ९.६.२.२. **अनुविक्रमस्व**=अनुव्यवहर, प्रयतस्व १२.५. [अनु+वि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लट् 'वेः पादविहरणे' अ० १.३.४१. सूत्रेणात्मनेपदम्]

अनुवित्तः अनुलब्धः (पन्थाः=मार्गः) ४.१८.१. [अनु+विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्तः। 'वित्तो भोगप्रत्यययोः' इति सूत्रेण निष्ठानत्वनिषेधः]

अनुविदधौ अनुकूलं विदधाति १.९५.३. [अनु+वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट्]

अनुविदे अनुवेद्मि, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् **अनुविदेत्**=अनुकूलं प्राप्नुयात् ५.९. **अनुवेद**=विद्यापठनाऽनन्तरं जानाति १६४.१८. [अनु+विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अन्यत्र 'विदो लटो वे' ति तिपो णलादेशः]

अनुविध्य ताडय १३.९. [अनु+व्यध ताडने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अनुविराजति प्रकाशते १२.३. [अनु+वि+राजृ दीप्तौ (भ्वा० उ०) धातोर्लट्]

अनुवीक्षस्व आनुकूल्येन विशेषतः सम्प्रेक्षस्व १३.३०. [अनु+वि+ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अनुवीरयध्वम् पश्चाद् विक्रमयध्वम् १७.३८. [अनु+वीर विक्रान्तौ (चुरा०) धातोर्लोट्]

अनुवोचत् पुनरुपदिशेत् २.५.३. [अनु+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लुङ्। अडभावः। 'अस्यतिवक्ति०' सूत्रेणाङ्। 'वच उम' इत्युम्]

अनुव्यचः अनुयोगेन व्याप्तेः १.५२.१४. [अनु+व्यच व्याजीकरणे (तुदा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शप्। हेरभावश्छान्दसः]

अनुव्यस्थिरन् आनुकूल्येन विशेषेण तिष्ठन्ति १.८०.८.

[अनु+वि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातोश्छान्दसं रूपम् । 'समवप्रविभ्य: स्थ:' इत्यात्मनेपदम्]

अनुव्यायन् अनुकूलतयोत्पादिता: १४.३० [अनु+वि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्]

अनुव्रत: अनुकूल आचरणयुक्त (पुत्र) सं० वि० १४१. अथ० ३.३०.२. **अनुव्रताय**=अनुगतानि धर्म्याणि व्रतानि यस्य तस्मै (सज्जनाय) १.५१.६. [व्रतमिति कर्म नाम वृणोतीति सत: । इदमपीतरद् व्रतमेतस्मादेव निवृत्तिकर्म वारयतीति सत: । अन्नमपि व्रतमुच्यते यदावृणोति शरीरम् । नि० २.१३. व्रतस्यानुना समास:]

अनुशसे अनुशासनाय ५.५०.२. [अनु+शासु अनुशिष्टौ भावे क्विप् । आकारलोपश्च छान्दस:]

अनुशासता अनुशासितारौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१३६.४. [अनु+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातो रूपम्]

अनुशासति अनुशासनं करोति, प्र०–अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुङ् न ६.५४.१. [अनु+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्लट् शपो लुङ् न]

अनुशिश्रथ: अनुश्रथ्नाति, भा०—आलस्यं करोति ४.३२.२२.

अनुशिष्ट: प्राप्तशिक्ष: (जन:) ५.२.२८. [अनु+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातो: क्त: । 'शास इदङ्हलोरिति' इत्वम् । 'शासिवसि०' इति षत्वञ्च]

अनुषत्यम् सत्यस्याऽनुकूलम् ३.२६.१. [सत्यं कस्मात् ? सत्सु तायते सत्प्रभव भवतीति वा । नि० ३.१३. सत्यस्यानुना सह समास:]

अनुषु प्राणप्रदेषु (पूरुषु=मनुष्येषु) १.१०८.८ [अन प्राणने (अदा०) धातोर्बाहुलकाद् उ: प्रत्यय:]

अनुष्टवे अनुस्तौमि ५.७३.४. [अनु+ष्टु स्तुतौ (अदा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अनुष्टु अनुतिष्ठन्ति यस्मिँस्तत् १.९५.३.

अनुष्टुप् ययानुष्टोभते सा (छन्दोऽर्थविज्ञानम्) २३.३३. यया पठित्वा पुन: सर्वा विद्या अन्येभ्य: स्तुवन्ति सा (छन्द:) १०.१३. अनुष्टोभते स्तभ्नात्यज्ञानं य: (अध्यापक:) ८.४७. सुखानामनुष्टम्भनम् १४.१८. अनुस्तौति यया सा (छन्द:=सुखसाधकम्) १४.१०. श्रुत्वा पश्चात् स्तुभ्नाति जानाति शास्त्राणि यया मननक्रियया सा १५.५. अनुस्तौति यया सा (छन्द:) १४.१० अनुष्टुप् छन्द: २१.१४. **अनुष्टुभम्**=अनुस्तुम्भकम् छन्द:=(स्वातन्त्र्यम्) २८.२६. **अनुष्टुभा**=भा०—प्रीत्या, व्यवस्थया, धर्मव्यवस्थया २८.३७. अनुष्टुप् मन्त्र द्वारा सिद्ध हुई विद्या से १३.३४. **अनुष्टुभे**=अनुस्तम्भाय २४.१२. **अनुष्टुभेन**=अनुष्टुब्विहितार्थयुक्तेन (छन्दसा) ११.११. [अनुष्टुप् वाङ्नाम निघं० १.११. अनुष्टुबनुष्टोभनात् नि० ७.१२. अन्वस्तौदिति हि ब्राह्मणम् दे० ३.८. अनुष्टुबनुष्टोभनात् दे० ३.७. यस्याष्टौ ता अनुष्टुभम् कौ० ९.२. गायत्री वै सा यानुष्टुप् कौ० १०.५. वागेवासौ प्रथमानुष्टुप् कौ० १५.३. अनुष्टुप् सोमस्य छन्द: कौ० १५.२. आपो वा अनुष्टुप् कौ० २४.४. आनुष्टभं वै चतुर्थमह: कौ० २२.७. द्वात्रिंदशक्षरानुष्टुप् कौ० २६.१. तै० १.७.५५. ता० १०.३.१३. वागनुष्टुप् सर्वाणि छन्दांसि तै० १.७.५.५. आनुष्टुभ: प्रजापति: तै० ३.३.२.१. आनुष्टुभो राजन्य: तै० १.८.८. ता० १८.८.१४. वागनुष्टुप् ता० ५.७.१. श० १०.३.१.१. ज्यैष्ठ्यं वा अनुष्टुप् ता० ८.१०.१०. आनुष्टुब्भि छन्दसां योनि: ता० ११.५.१७. अन्तो वा अनुष्टुप् छन्दसाम् ता० १९.१२.८. इयं (पृथिवी) वा ऽनुष्टुप् तां० ८.७.२. श० १.३.२.१६. प्रजापतिर्वा अनुष्टुप् ता० ४.८.९. आनुष्टुभो वै प्रजापति: तां० ४.५.७. आनुष्टभी वै वृष्टि: तां० १२.८.८. पादावनुष्टुप् ष० २.३. अनुष्टुबेव सर्वम् गो पू० ५१.५. अनुष्टुब् वै परमा परावत ऐ० ३.१५. या कुहू: साऽनुष्टुप्) ऐ० ३.४७. यस्य ते (प्रजापते:) ऽहं (अनुष्टुप्) स्वं छन्दोऽस्मि ऐ० ३.१३. वाग्वा अनुष्टुप् ऐ० १.२८. वास्त्वनुष्टुप् श० १.७.३.१८. सक्थ्यावनुष्टुभ: श० ८.६.२.९. आनुष्टुभैषा (उत्तरा) दिक् श० १३.२.२.१९. अनुष्टुबुदीची (दिक्) श० ८.३.१.१२. आनुष्टुभो वाऽश्व: श० १३.२.२.१९. परमं वा ऽएतच्छन्दो यदनुष्टुप् १३.३.३.१. एषा वै प्रत्यक्षमनुष्टुब् यद् यज्ञायज्ञीयम् (साम) तां० १५.९.१५. सत्यानृते वा अनुष्टुप् तै० १.७.१०.४. वृषा वै त्रिष्टुब् योषानुष्टुप् ऐ० आ० १.३.५. विश्वेदेवा अनुष्टुभं समभरन् जै उ० १.४.४.७.]

अनुष्ठा: या अनुतिष्ठन्ति (नद्य:) १.५४.१०. [अनु+ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातो: क: प्रत्यय: । स्त्रियां टाप्]

अनुष्ठु अनुतिष्ठन्ति यस्मिँस्तत् (अहोरात्र:) .६१५.३.

अनुष्ठया आनुकूल्येन ४.४.१४.

अनुष्यदे आनुकूल्येन किञ्चित् प्रस्रवणाय २.१३.२. [अनु+स्यन्दू प्रस्रवणे धातो: क्विप्]

अनुष्याम अनुभवेम १.१८५.४. (अनु+अस भुवि (अदा०) धातोर्लिङ्]

अनुष्वधम् अनुकूलं स्वधा अन्नं विद्यते यस्मिँस्तम् (सोमं=महौषधिरसम्) ३.४७.१. स्वधाऽन्नस्याऽनुकूलम् (अग्निम्) १७.८८. अन्वन्नम् ३.६.६. स्वधाऽनुगतं द्रव्यम् २.३.११. स्वधामन्नमनुकूलम् १.८१.४. स्वधामन्नमनुवर्त्तमानम् (श्रवः=श्रवणम्) ५.५२.१. सर्वेषु पक्वाऽन्नेष्वनुकूलम्, प्र०—अत्र विभक्त्यर्थेऽव्ययीभावः समासः ७.३८. अनुकूलं स्वधाऽन्नं विद्यते यस्मिँस्तम् (सोमम्) ३.४७.१. [अनुष्वधम् अन्वन्नम् नि० ४.८. स्वधा अन्ननाम निघं० २.७.]

अनुसस्रुः प्राप्नुवन्ति ५.५३.२. [अनु+सृ गतौ धातोर्लिट्]

अनुसंरभध्वम् युद्धाऽऽरम्भं कुरुत ऋ० भू० २२४. आनुकूल्येन सम्यग् युद्धारम्भं कुरुत १७.३८. [अनु+सम्+रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अनुसृष्टान् अनुषङ्गिणः (पशून्) २४.१६. [अनु+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

अनुसेषिधत् पुनः पुनरनुकूलान् प्रापयेत्, अन्व—पुनः पुनरनुगतं प्रापयेत्, प्र०—अत्र यङ्लुगन्ताल्लेट् 'सेधते गतौ, अ० ८.३.११३. इत्यभ्यासस्य षत्वप्रतिषेधः 'उपसर्गादिति वक्तव्यं, किं प्रयोजनम् ? उपसर्गाद् या प्राप्तिस्तस्याः प्रतिषेधो यथा स्याद्, अनभ्यासाद् या प्राप्तिस्तस्याः प्रतिषेधो मा भूदिति 'स्तम्भुसिवु०' अ० ८.३.११६. इत्यत्र महाभाष्यकारेणोक्तम् । सायणाऽऽचार्येणेदमज्ञानान्न बुद्धमिति १.२३.१५. [अनु+षिधू गत्याम् (भ्वा०) धातोर्यङ्लुक् । ततो लेटि रूपम्]

अनुस्तवन्त अनुस्तुवन्ति ४.२२.७. प्रशंसन्ति ३३.९७. [अनु+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः शतृ प्रत्ययः]

अनुस्थाति अनुतिष्ठति २.३१.३. [अनु+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

अनुस्पृश अनुगतो भव १३.१०. [अनु+स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोर्लोट्]

अनुस्रयाम्णे योऽनुस्रं शीतं देशं याति तस्मै (जनाय) ४.३२.२४. [अनुस्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्मनिन् प्रत्ययः]

अनुहर्षध्वम् अनुमोदध्वम् ऋ० भू० २२४. [अनु+हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोर्लोट् व्यत्ययेन शप् आत्मनेपदं च]

अनुहृषितम् जातहर्षं (सेनाऽध्यक्षम् १.१०३.७. [अनु+हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोः क्तः]

अनुह्वय निमन्त्रय ५.५३.१६. [अनु+ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अनूकाशेन अनुप्रकाशेन (अङ्गेन) २५.२. [अनु+काशृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्भावे घञ् । 'इकः काशे' अ० ६.३.१२३. सूत्रेण पूर्वपदस्य दीर्घत्वम्]

अनूक्यम् अनुकूलता से कहने के योग्य (वचन) सं० वि० २०८. अथर्व० ९.६.१. [अनु+वच् परिभाषणे (अदा०) धातोः 'अघ्न्यादयश्च' उ० ४.११२ सूत्रेण यक् । किति सम्प्रसारणे पूर्वरूपे च 'न्यङ्क्वादीनां चे' ति कुत्वम्]

अनूचः कपटेनाऽनुकूलान् (शत्रून्) ३.३०.६. [अनु+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण क्विन् 'अनिदिताम्' इति नलोपे शसि भसंज्ञायाम् 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति दीर्घत्वे रूपम्]

अनूची अन्योऽन्यवर्त्तमाने (रात्र्युषसौ) १.११३.२. [अनूच्वत् सिद्धिः द्विवचने 'नपुंसकाच्च' अ० ७.१.१९ सूत्रेण शीभावे रूपम् अनूची अनूच्यौ इतरेतरमभिप्रेत्य नि० २.२०.]

अनूचीना यान्यनुचरन्ति तानि (जीविता=जीवनानि) ४.५४.२. यैरन्वञ्चन्ति जानन्ति तानि (जीविता=कर्माणि) ३३.५४. [अनूच् प्राति० 'विभाषाञ्चेर्०' अ० ५.४.८ सूत्रेण स्वार्थे खः । खस्येनादेशः]

अनूज्जेषम् पश्चादुत्कृष्टतया जयं कुर्याम्, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङडभावो वृद्ध्यभावश्च, अनुगतमुत्कर्षं प्राप्नुयाम् २.१५. [अनु+उत्+जि जये (भ्वा०) धातोर्लुङ् अड्वृद्ध्यभावौ छान्दसौ]

अनूती अरक्षया ६.२९.६. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातो; 'ऊतियूति०' अ० ३.३.९७. सूत्रेण स्त्रियां क्तिन् 'ज्वरत्वर०' सूत्रेण ऊठ् वकारस्योपधायाश्च स्थाने नञ्समासः ऊतिः पदनाम निघं० ४.२.]

अनूनम् हीनतारहितम् (अग्निं=विद्वांसम्) १.१४६.१. पुष्कलम् (सुश्चन्द्रं=ब्रह्मचर्यम्) ४.२.१९. ऊनतारहितम् (सज्जनम्) ६.१७.४. **अनूना**=पूर्णा (दक्षिणा) ७.२७.४. **अनूनाः**=न विद्यते ऊनमूनता यासु ताः (श्रियः=शोभा धनानि वा) ३.१.५. **अनूनेन**=न्यूनतारहितेन रोषेण ४.५.१. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'इण्सिञ्जि०' उ० ३.२. सूत्रेण नक् प्रत्ययः । 'ज्वरत्वर०'

सूत्रेण वकारस्योपधायाश्च स्थाने ऊठ् । नञ्समासश्च]

अनूनवर्चाः न विद्यते ऊनं न्यूनं वर्चो यस्य सः (पुत्रः) १२.१०७. [ऊन-वर्चस् पदयोर्नञ्बहुव्रीहिः]

अनूनोत् प्रेरयेत् ५.४५.७. [णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्णिचि लुङि रूपम् । च्लेर्लुक् च छान्दसः]

अनूरुत् योऽनुरौत्युपदिशति (ईश्वरः) ३.५५.५. [अनु+रुशब्दे (अदा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि । पूर्वपदस्य च दीर्घत्वम्]

अनूर्ध्वभासः न ऊर्ध्वा भासो दीप्तिर्यस्य (शिल्पिनो जनस्य) ५.७७.४.

अनूषत यथावत् स्तुवन्तु, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् 'सञ्ज्ञापूर्वको विधिरनित्यः, इति गुणाऽऽदेशाऽभावः १.७.१. स्तुवत १.५१.६. स्तुवन्तु प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् ४.३२.९. प्रशस्तां कुर्वन्ति, अन्व०—प्रशस्ते कुर्वन्ति, प्र०—अत्र 'णू स्तवने' इत्यस्य लुङ् प्रयोगः 'सञ्ज्ञापूर्वको विधिरनित्यः' इति गुणाऽभावः, लडर्थे लुङ् च १.६.६. स्तुवन्ति, प्र०—अत्र 'अन्येषाम्०,' इति दैर्घ्यं व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदञ्च १.१४४.२. प्रशंसन्ति ६.६०.७. प्रशंसेयुः ३.५१.१. प्रशंसत २०.६९. प्रशंसा कीजिए ५.५.४. **अनूषि**=स्तौमि ६.३८.३. [णू स्तवने (तुदा०) धातोर्लुङ् । गुणाऽभावो व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च । अनूषत=अस्तोषत निघं० ४.१९.]

अनूहिरे अनुप्रापयन्ति ऋ० भू० २६०, १९.५१. अनुवहन्ति पुनः पुनः प्राप्नुवन्ति च १९.५१. [अनु+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट् 'असंयोगाल्लिट् कित्' इति कित्त्वे यजादित्वात्सम्प्रसारणम्]

अनृक्षरः निष्कण्टकः (पन्थाः=वेदोक्तो मार्गः) २.२७.६. कण्टक-गर्तादिदोषरहितः, सेतुमार्जनादिभिः सहः वर्त्तमानः सरलः, चोरदस्युकुशिक्षाऽविद्याऽधर्माचरणरहितः (पन्थाः) १.४१.४. **अनृक्षरा**=अविद्यमाना ऋक्षरा दुःखप्रदाः कण्टकादयो यस्यां सा (पृथिवि=भूमिः) १.२२.१५. कण्टकगर्त्तादिरहिता (पृथिवी=भूमिः) ३६.१३. निष्कण्टका, भा०—क्रूरतादिदोषरहिता (भूमिर्गृहिणी वा) ३५.२१. [न ऋक्षरः इति नञ्समासः अनृक्षरा ऋक्षरः कण्टक ऋच्छतेः । निघं० ९.३०. [ऋच्छ गतीन्द्रियप्रलयमूर्तिभावेषु (तुदा०) धातोः 'ऋच्छेररः' उ० ३.१३१. सूत्रेण अरः प्रत्ययः । छकारस्य क्षकारश्छान्दसः]

अनृजोः कुटिलस्य (दुर्जनस्य) ४.३.१३. [अर्ज प्रतियत्ने (चु०) धातोः 'अर्जिदृशि०' उ० १.२७ सूत्रेण उः प्रत्ययः, 'ऋजि' आदेशश्च नञ्समासः अथवा ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु (भ्वा०) धातोर्बाहुः उप्रत्यये नञ्समासः]

अनृणः अविद्यमानमृणं यस्य सः, भा०—ऋणान्मुक्तः (जनः) १९.११. (ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः क्तः । 'ऋणमाधमर्ण्ये' अ० ८.२.६० सूत्रेण तकारस्य नकारो निपात्यते । ततो नञ्बहुव्रीहिः]

अनृतम् मिथ्याभाषणम् ७.२८.४. मिथ्याव्यवहारम् १.१३९.२. मिथ्याभाषणादिकं कर्म १.१५२.३. असत्यमाचरणम् १.२३.२२. असत्यं कार्यम् १.१०५.५. असत्यम् ६.१७. **अनृतस्य**=मिथ्यावस्तुनः ७.६०.५ असत्यव्यवहारस्य ५.१२.४. **अनृता**=अधर्म्यव्यवहारान् २.२४.७. मिथ्याभाषणादिकर्माणि २.२४.६. **अनृतात्**=न विद्यते ऋतं यथार्थमाचरणं यस्मिँस्तस्मान्मिथ्याभाषणान्मिथ्याकरणान्मिथ्यामानात् (पृथग्भूत्वा) १.५. अनित्य देहादि पदार्थों से पृथक् होकर आर्याभि० २४७.१.५. असत्याचरणाद् अधर्मात् ऋ०भू० ९९. **अनृतानि**=मिथ्याकर्माणि २.३५.६. मिथ्याभाषणादीनि कर्माणि १.१५२.१. मिथ्याभाषणादि दुष्ट दुर्व्यसनों को सं० वि० १०४, २.३५.६. **अनृताः**=असत्यवादिनः (पापिनो जनाः) ४.५.५.. **अनृते**=असत्येऽधर्मेऽन्याये ऋ० भू० ९७. अविद्यमानमृतं यस्मिँस्तस्मिन्न धर्मे १९.७७. मिथ्याभाषणादि अधर्म में सं० वि० १८७,१९.७७. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः क्तः । ऋतमित्युदकनाम प्रत्यृतं भवति । नि० ७.२५. ऋतस्य यज्ञस्य नि० ६.२२. ऋतमिति धननामसु, सत्यनामसु, उदकनामसु च निघण्टौ पठितम् तत्प्रतिषेधः अमेध्यो वै पुरुषः यदनृतं वदति तेन पूतिरन्तरतः श० १.१.१.१. सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्याः श० १.१.१.४. एतद् वाचश्छिद्रं यदनृतम् ता० ८.६.१३. अनृतं (वा एतत्) यदातपति वर्षति तै० १.७.५.३. अनृतं स्त्री शूद्रः श्वाकृष्णः शकुनिस्तानि न प्रेक्षेत श० १४.१.१.३१. अनृतादात्मानं जुगुप्सेत् तै० अ० १०.९.१. ओ३मिति सत्यं, नेत्यनृतम् ऐ आ० २.३.६. ते देवाः सत्यमभवन् अनृतमसुराः मै० १.९.३. भ्रातृव्यायानृतं वदेत् काठ० २७.८. शमलं वा एतद् वाचो यदनृतम् काठ० संक० १२. सुवति ह वा अनृतं वदतो यज्ञोऽथो ह पूयति जै० १.२५६. आमन्त्रणे नानृतं वदेत् काठ० ८.७. अश्रद्धामनृतेऽधाच्छ्रद्धां सत्ये प्रजापतिः मै० ३.११.६. अनृतेनैव भ्रातृव्यानभिभूय वाचः सत्यमवरुन्धे तै० १.८.३.४.]

अनृतुपाः य ऋतून् पाति स ऋतुपा, न ऋतुपा अनृतुपाः (तत्त्वस्वरूपविद् विद्वान्) ३.५३.८. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेश्च तुः' ३०.१.७२. सूत्रेण उः प्रत्ययः किच्च ऋतूपपदे+पा रक्षणे धातोरच् नञ्समासश्च]

अनेजत् न एजते कम्पते तदचलत् स्वाऽवस्थायाश्च्युतिः कम्पनं तद्रहितम् (ब्रह्म=परमेश्वरः) ४०.४. [एजृ कम्पने (भ्वा०) धातोर्लेट्। तत्प्रतिषेधः। एजति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अनेद्यः अनिन्दनीयः (मनुष्याणां गणः) ५.६१.१३. प्रशस्यं (श्रवः=शास्त्रम्, प्र०—अनेद्य इति प्रशस्यनाम निघं ३.८, १.१६५.१२. प्रशस्यः (सेनापतिः) १.८७.४. **अनेद्याः**= अनिन्दनीयाः (आप्ताः पुरुषाः) ६.१९.४. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोर्ण्यत् छान्दसो नकारलोपः नञ्समासश्च अनेद्यः प्रशस्यनाम निघं० ३.८.]

अनेनः अविद्यमानमेनः पापं यस्मिँस्तत् (कर्म) ६.६६.७. **अनेनाः**=अविद्यमानमेनः पापं यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१२९.५. निष्पापः (इन्द्रः=सज्जनः) ७.२८.४. [इण् गतौ (अदा०) धातोः 'इण आगसि' उ० ४.१९८. सूत्रेण असुन् नुडागमश्च नञ्बहुव्रीहिः एन एतेः नि० ११.२४.]

अनेशन् नश्ययेयुः, प्र०—अत्र 'णश' अदर्शने इत्यस्य धातोर्लुङि रूपं 'नशिमन्योरलिट्येत्वं वक्तव्यम्, अनेन वार्त्तिकेनाऽत्रैत्वम् १६.१०. [णश् अदर्शने (दिवा०) धातोर्लुङ् पुषादित्वाद् अङ्। 'नशिमन्योरलिट्येत्वं वक्तव्यम्' (वा० ६.४.१२०.) वा० सूत्रेणैकारादेशश्छन्दसि]

अनेषत् स्वीकार करो ३५.१८. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोरात्मनेपदे लेट्]

अनेहसम् अविद्यमानानि एहांसि हननानि यस्मिँस्तं (पन्थां=मार्गम्) ४.२९. अहन्तव्याम् (नावम्), प्र०—अत्र 'नञि हन एह च, उ० ४.२२४. इति नञ्पूर्वस्य हन्धातोः प्रयोगः २१.६. अहन्तव्यम् (पन्थां=मार्गम्) ६.५१.१६. निष्पाप निरुपद्रव स्थिर दृढ़ सुख रूप भद्र को आर्याभि० १.२९. अहन्तारम् (देवं=विद्वांसमुपदेशकम्) ३.९.१. अहिंसनीयं सर्वदा रक्षणीयं निर्दोषम् (मन्त्रम्=श्रुतिसमूहम्) १.४०.६. **अनेहसः**=अहिंसका सन्तः (मनुष्याः) ५.६५.५. अहन्तव्यस्य (वसोः=धनस्य) ३.५१.३. **अनेहसा**=अहिंसामयेन धर्मेण १.१२९.९. अहिंसके (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ६.७५.१०. अविनाशिनौ (द्यावापृथिवी=प्रकाशभूमी) २९.४७. **अनेहः**=अहन्तव्यं (दात्रं=दानम्) १.१८५.३. अहन्तव्यं सततं रक्षणीयं व्यवहारम् ६.५०.३. [नञ्युपपदे हन् हिंसागत्यो. (अदा०) धातोः 'नञि हन एह च' उ० ४.२२४ सूत्रेण असुन् प्रत्ययः धातोश्च स्थाने एहादेशः]

अनोनवुः स्तुवत १.८०.९. [णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुक् ततः सामान्ये लङ्]

अन्तकम् दुःखनाशकर्त्तारम् (भुज्युं=पालकं जनम्) १.११२.६. **अन्तकाय**=योऽन्तं करोति तस्मै (मृगयवे=व्याधाय) ३०.७. नाशाय ३०.१८. नाशकाय कालाय ३९.१३. [एष (संवत्सरः) हि मर्त्यानामहोरात्राभ्यामायुषोऽन्तं गच्छत्यथ म्रियन्ते तस्मादेष एवान्तकः श० १०.४.३.२.]

अन्तम् सीमानम् १.१००.१५. अवसानस्थम् (उत्तमौषधिरसम्) ६.४३.२. व्याप्ति का परिच्छेद, इयत्ता, परिमाण आदि अन्त को आर्याभि० १.१५. प्रान्तम् १.३७.६. नाशम् ७.२१.६. [अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'हसिमृगि०' उ० ३.८६. सूत्रेण तन् प्रत्ययः अन्तो वै क्षयः ऐ० आ० १.५.३.]

अन्तमस्य समीपस्थस्य (योद्धृजनस्य) ३.५५.८. सर्वेषां दुःखानामन्तं मिमीते येन युद्धेन तस्य १.२७.५. **अन्तम्**=समीपस्थः (पावकः=विद्वज्जनः) ३.१०.८. निकटस्थः (स्तोमः=प्रशंसामयो व्यवहारः) ६.४५.३०. अतिशयेनाऽन्तिकः (विद्वज्जनः), प्र०—अन्तमानामित्यन्तिक नाम० निघं० २.१६, १५.४८. य आत्माऽन्तस्थाऽनिति जीवयति सोऽतिशयितः (अग्निः=सर्वाऽभिरक्षकेश्वरः)प्र०—स उ प्राणस्य प्राणः केनोप० खं० १. मं० २ अनेनाऽऽत्माऽन्तस्थोऽन्तर्यामी गृह्यते ३.२५. **अन्तमा**=समीपस्थानि (दुर्वांसि=परिचरणानि) ७.२२.४. **अन्तमानाम्**=अन्तः सामीप्यमेषामस्ति तेऽन्तिकाः, अतिशयेनाऽन्तिका अन्तमास्तेषां समागमेन, अन्व०—अर्थात् त्वां ज्ञात्वा त्वन्निकटे त्वदाज्ञायां च स्थितानाम् (सुमतीनाम्=आप्तविद्वज्जनानाम्), प्र०—अत्रान्तिकशब्दात्तमपि कृते पृषोदरादित्वात्तकार लोपः १.४.३. **अन्तमाः**=समीपस्थाः (मनुष्याः) ६.५२.१४. **अन्तमेभि**=समीपस्थैः (विद्वज्जनैः) १.१६५.५. [अन्त-प्राति० अतिशयिकस् तमप्। पृषोदरादित्वात् तकार-अकारयोर्लोपः अन्तमानाम् अन्तिकनाम निघं० २.१६.]

अन्तरम् यदन्ते समीपे रमते तत् (ब्रह्म=परमेश्वरम्) ६.७५.१९. [अन्तोपपदे रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्ड; प्रत्ययः]

अन्तरम् अन्तःशोधनमाभ्यन्तरं वा, अन्व०—शुद्धमन्तःकरणम् (स्तोमं=स्तुतिसमूहम्) १.१०.९. मध्यस्थम् (पेशसादिकम्) १९.८२. मध्ये स्थितमपि दूरस्थमिव (ब्रह्म) १७.३१. मध्यस्थमाभ्यन्तरम् २५.२. जीव ब्रह्म के भेद को आर्याभि० २.४४, १७.३१. **अन्तरः**=भिन्नः (जनः) ६.५.४. मध्यस्थः (मर्त्यः=मनुष्यः) २०.८२. योऽनिति प्राणिति सः (भिषक्=वैद्यः) १९.१६. **अन्तरा**=मध्ये १४.१६. द्वयोर्मध्ये १७.५९ व्यवधाने ३.४०.९. आभ्यन्तरे १४.२७. सबसे भिन्न १९.४१. भिन्न-भिन्न सं० वि० २०३, अथर्व० ९.३.१५. अन्तरौ २९.६. **अन्तरान्**=भिन्नान् (अमित्रान्=शत्रून्) ३.१८.२. **अन्तराम्**=मध्ये पृथग्वा १.१०४.६. [अन्तरम्=सर्वनाम अन्तरा इति स्वरादिगणे पाठादव्ययम्]

अन्तरिक्ष अन्तरिक्षस्थो यज्ञः ४.७. **अन्तरिक्षम्**=द्वयोर्लोकयोर्मध्यमाकाशम् प० वि०, १०.१९०.३. अनेकेषां लोकानां मध्येऽवकाशरूपं वर्त्तमानमाकाशम् १.५२.१३. पुष्कल अवकाश को सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१५. अन्तरक्षयं कारणाख्यम् ६.४७.४. अक्षयमाकाशकम् (आकाशम्) १८.१८. मध्यवर्त्त्याकाशम्३ १.१३. मध्यस्थ लोक और उसमें स्थित वायु आदि पदार्थ को आर्याभि० २.२५, ३२.१७. सब के अधिष्ठाता (ईश्वर) को आर्याभि० १.१७, ऋ० १.६.१६.१०. अवकाशम् २८.२०. आकाशं तत्रस्थप्राणिवर्गं च, अत्र तात्स्थ्योपाधिना प्राणिनामपि ग्रहणम् ५.२७. भूमिसूर्ययोर्मध्यस्थमाकाशम् ६.६९.५. उदकम्, प्र०—अन्तरिक्षमित्युदकनाम निघं० १.१२, ३.३४.१०. अवकाशं सुखेन निवासार्थम् १.११. सुखसाधनार्थमवकाशम् १.७. आकाशस्थान् पदार्थान्, अन्तरात्मस्थमक्षयं ज्ञानं वा भा०—वेदविद्याम्, प्र०—अन्तरिक्षं कस्मादन्तरा क्षान्तं भवत्यन्तरेमे इति वा शरीरेष्वन्तरक्षयमिति वा निरु० २.१०, १.१८. उभयोर्लोकयोर्मध्यस्थमाकाशम् ३६.१७. जलम् १४.१२. प्रशस्तं शोधितमुदकम्, मधुरादिगुणयुक्तं रोगनाशकमुदकम् १४.१२. अक्षयप्रेमयुक्ता (स्त्री) ११.५८. जलमाकाशं वा ३४.२२. अन्तरक्षयमाकाशम् ४.५३.५. अन्तरं क्षयमन्तःकरणे क्षयरहितं विज्ञानम् ८.९. मेघमण्डलम् ८.६० आकाश इवाऽक्षयोऽक्षोभः ११.२०. अन्तरालमवकाशम् ७.५. आकाशमिवाऽक्षोभता ३.५४.१९. आकाशस्थं पदार्थसमूहम् ५.१३. धर्मप्रचारस्याऽवकाशम् ६.२. सर्वनिर्गतमनन्तमाकाशम् ७.४२. क्षयरहितमन्तर्यामिस्वाभाविकं ब्रह्मविज्ञानम् ७.५. **अन्तरिक्षस्य**=अन्तरक्षयविज्ञानस्य १४.५. आकाशस्य १४.१२. जलस्य १४.१४. **अन्तरिक्षा**=अन्तरिक्षेण सहचराणि (वस्तूनि) ६.२२.८. **अन्तरिक्षाणि**=अन्तरिक्षस्थानि सर्वाणि भुवनानि १.३५.७. **अन्तरिक्षात्**=उपरिष्टात् १.४८.१२. सूक्ष्मादाकाशात् १.६१.९. सूर्यपृथिव्योर्मध्ये वर्त्तमानादाकाशात् ४.६. मध्यस्थादवकाशात् ३.३०.११. **अन्तरिक्षाय**=आकाशे गमनाय ५.२६. आकाशाय २२.२९. **अन्तरिक्षे**=अवकाशे २.२५. मध्यवर्त्तिन्याकाशे ३२.६. अन्तरिक्षय आकाशे १६.५५. आकाशे १५.११ सूर्यपृथिव्योर्मध्ये १८.३७. आकाश में सं० वि० ६, ३२.६. स्वव्याप्तिरूपे ब्रह्माण्डे १.३५.११. अन्तराल आकाशे ६.३३. [अन्तरिक्षं अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. अन्तरिक्षं कस्मात् ? अन्तरा क्षान्तं भवति, अन्तरा इमे इति वा, शरीरेष्वन्तः अक्षयमिति वा नि० २.१०. अन्तरिक्षं वै नभांसि तस्य रुद्रा अधिपतयः तै० ३.८.१८.१. अन्तरिक्षं वै मध्यमा चितिः श० ८.७.२.१८. अन्तरिक्षं वै मातरिश्वनो घर्मः मै० ४.१.३. तै० ३.२.३.२. अन्तरिक्षं वै माध्यन्दिनं सवनम् श० १२.८.२.९. अन्तरिक्षं वै यजुषामायतनम् गो० १.२.२४. अन्तरिक्षं वै यज्ञः (पशवः) मै० ३.६.८. अन्तरिक्षं वै सर्वेषां देवानामायतनम् श० १४.३.२.६. अन्तरिक्षं समित् मै० ४.९.२३. अन्तरिक्षं सावित्री गो० १.१.३३. अन्तरिक्ष एव महः गो० १.५.१५. अन्तरिक्षं गौः (गार्हपत्यः) काठ० ८.६. अन्तरिक्षं त्रिष्टुप् मै० ३.१.२. काठ० १९.१. तद्यदस्मिन्निदं सर्वमन्तस्तस्मादन्तर्यक्षम् अन्तर्यक्षं ह वै नामैतत् तदन्तरिक्षमिति । परोक्षमाचक्षते जै० उ० १.२०.४. अन्तरेव वा इदमिति तदन्तरिक्षस्यान्तरिक्षत्वम् तां० २०.१४.२. अन्तरिक्षायतना हि प्रजा तां० ४.८.१३. छिद्रमिवेदमन्तरिक्षम् तां० ३.१०.२. अन्तरिक्षेणेदं सर्वं पूर्णम् तां० १५.१२.५. अयं मध्यमो लोकः अन्तरिक्षम् तां० ७.३.९. अन्तरिक्षम् वै वामदेव्यं (साम) तां० १५.१२.५. सह हैवेमावग्रे लोकावासतुर्तयोर्वियतोर्योऽन्तरेणाकाश आसीत्तदन्तरिक्षमभवद ईक्षं हैतन्नाम ततः पुरान्तरा वा इदमीक्षमभूदिति तस्मादन्तरिक्षम् श० ७.१.२.२३. मध्यं वा ऽन्तरिक्षम् श० ७.५.१.२६. अन्तरिक्षं वा ऽअवरं सधस्थम् श० ९.२.३.३९. अन्तरिक्षं वा ऽअपां सधस्थम् श० ७.५.२.५७. यान्येव बभ्रूणीव हरीणि (लोमानि) तान्यन्तरिक्षस्य रूपम् श० ३.२.१.३. अथ यत् कपालमासीत्तदन्तरिक्षमभवत् श० ६.१.२.२. घृतमन्तरिक्षस्य (रूपम्) श० ७.५.१.३. अन्तरिक्षलोको वै प्रमा अन्तरिक्षलोको ह्यस्माल्लोकात्प्रमित इव श० ८.३.३.५. अन्तरिक्षमेव विश्वं वायुर्नरः: श० ९.३.१.३. अन्तरिक्षं नाराशंसः श०

१.८.२.१२. अन्तरिक्षं वा आग्नीध्रम् श० ९.२.३.१५. अन्तरिक्षं वा ऽउलूखलम् श० ७.५.१.२६. अन्तरिक्षं ह्येष उद्धि श० ६.५.२.४. अथ यया विद्धः शयित्वा जीवति वा म्रियते वा सा द्वितीया (इषुः) तदिदमन्तरिक्षꣳ सैषा रुजा नाम (इषुः) श० ५.३.५.२९. अन्तरिक्षमेवोपाꣳशुसवनः श० ४.१.२.२७. अयमन्तरिक्ष लोको निरुक्तः सन्ननिरुक्तः श० ४.६.७.१७. मनोऽन्तरिक्षलोकः श० १४.४.३.११. अन्तरिक्षं वै वरिवश्छन्दः श० ८.५.२.३. अन्तरिक्षं वै विवधश्छन्दः श० ८.५.२.५. अन्तरिक्षलोक महः श० १२.३.४.७. अन्तरिक्षं महाव्रतम् श० १०.१.२.२. अन्तरिक्षं वै तृतीया चितिः श० ८.४.१.१. ये वधकास्तेऽन्तरिक्षस्य रूपम् श० ५.४.५.१४. अन्तरिक्षमु वै त्रिष्टप् श० १.८.२.१२. भुव इत्यन्तरिक्षलोकः श० ८.७.४.५. अन्तरिक्षलोको वै मारुतो मरुतां गणः श० ९.४.२.६. अन्तरिक्षदेवत्याः खलु वै पशवः तै० ३.२.१.३. अवरिष्ट इव वा अयम् मध्यमो लोकः तां० ७.३.१८. तस्मादेषां लोकानामन्तरिक्षलोकस्तनिष्ठः श० ७.१.२.२०. महद् हीदमन्तरिक्षम् कौ० २६.११. रजता (पुरी) अन्तरिक्षम् गो० उ० २.७. अन्तरिक्षं पृथिव्याम् ऐ० ३.६. गो० उ० ३.२. अन्तरिक्षमस्यग्नौ श्रितम् वायोः प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.८. य एवायम्पवते (वायुः) एतदेवान्तरिक्षम् जै० उ० १.२०.२. तद् (ब्रह्म) इदमन्तरिक्षम् जै० उ० २.९.६. अन्तरिक्षं वै प्र, अन्तरिक्षं हीमानि सर्वाणि भूतान्यनुपयन्ति तै० २.४१. इयं (पृथिवी) अन्तरिक्षम् ऐ० ३.३१. अन्तरिक्षं विश्वव्यचाः तै० ३.२.३.७. अन्तरिक्षं सावित्री गो० पू० १.३३. अन्तरिक्षं पुरोधाता ऐ० ८.२७. अन्तरिक्षमाग्नीध्रम् तै० २.१.५.१. अन्तरिक्षमुपभृत तै० ३.३.१.२. ३.३.६.११. वागित्यन्तरिक्षम् जै० उ० ४.२२.११. महद्वा अन्तरिक्षम् ऐ० ५.१८.१९. अन्तरिक्षलोको माध्यन्दिनं सवनम् गो० उ० ४.४. अन्तरिक्षम्प्रगाथः जै० उ० ३.४.२. अन्तरिक्षदेवत्यो हि सोमः गो० उ० २.४. वसुरन्तरिक्षसत् श० ५.४.३.२२. अन्तरिक्षलोको यजुर्वेदः ष० १.५. अन्तरिक्षं वै यजुषामायतनम् गो० पू० २.२४. अन्तरिक्षं त्रिष्टुप् जै० उ० १.५५.३. त्रैष्टुभन्तरिक्षम् श० ८.३.४.११. त्रैष्टुभोऽन्तरिक्षलोकः कौ० ८.९. (प्रजापतिः) भुवः इत्येव यजुर्वेदस्य रसमादत्त तदिदमन्तरिक्षमभवत् तस्य यो रस प्राणेदत् स वायुरभवद्रसस्य रसः जै० उ० १.१.४. भुवरिति यजुर्भ्यो ऽक्षरत् । सो ऽन्तरिक्षलोकोऽभवत् ष० १.५. स भुव इति व्याहरत् सो ऽन्तरिक्षमसृजत । चातुर्मास्यानि सामानि तै० २.२.४.२. अन्तरिक्षं दक्षिणाग्निः का० ७.९. अन्तरिक्षं मरीचयः श० १०.१.२.२. अन्तरेव वा इदमिति तदन्तरिक्षस्यान्तरिक्षत्वम् तां० २०.१४.२. अयं वाव समुद्रो ऽनारम्भणो यदिदमन्तरिक्षम् जै० १.१६५. आत्माऽन्तरिक्षम् काठ० १६.२. इन्द्रोऽन्तरिक्षम् काठ० २९.७. ऊधर्वा अन्तरिक्षम् तां० २४.१.६. सन्धिरित्यन्तरिक्षम् तै स० ५.३.६.१.]

अन्तरिक्षप्राम् स्वतेजसाऽन्तरिक्षं प्राप्य प्राति पिपर्त्ति तम् (इन्द्रम्=सेनापतिम्) १.५१.२. **अन्तरिक्षप्राः**=योऽन्तरिक्षं प्राति व्याप्नोति सः (सूर्यः) ७.४५.१.[अन्तरिक्षोपपदात् प्रा पूरणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः स्त्रियां टाप्]

अन्तरिक्षप्रुद्भिः अवकाशे गच्छन्तीभिः (नौभिः) १.११६.३. अन्तरिक्षं प्रति गन्तृभिर्विमानाख्ययानैः ऋ० भू० १९०, १.११६.३. [अन्तरिक्षोपपदात् प्रुङ् गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । तुगागमः]

अन्तरिक्षसत् योऽन्तरिक्ष आकाशे वा सीदति (जीवात्मा) ४.४०.५. यो धर्माऽवकाशे सीदति (ब्रह्म जीवो वा) १२.१४. योऽन्तरिक्षेऽवकाशे सीदति (परमेश्वरः) १०.२४. **अन्तरिक्षसदम्**=अवकाशे गमकम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ९.२. [अन्तरिक्षोपपदात् सद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुहदुह' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्]

अन्तरिक्ष्याः अन्तरिक्षे भवाः (पर्वताः=मेघाः) ५.५४.९. [अन्तरिक्षप्राति० 'भवे छन्दसि' अ० ४.४.११०. सूत्रेण यत् प्रत्ययः]

अन्तरेति अन्तर्गच्छति ३४.१. [अन्तर् उपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः लट्]

अन्तर्यामः योऽन्तर्मध्ये याति स वायुः १८.१९. अन्तर्मध्ये यामाः प्रहरा यस्मिन् समये सः १३.५५. **अन्तर्यामे**=यमनामयं यामः, अन्तश्चाऽसौ यामश्च तस्मिन् ७.५. [अन्तरोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः 'अर्त्तिस्तुसु०' उ० १.१४०. सूत्रेण मन् प्रत्ययः]

अन्तर्वती: अन्तर्मध्ये कारणं विद्यते यासु ताः (प्रजाः) ३.५५.५. [अन्तर् प्राति० मतुप् अन्तर् शब्दोऽधिकरणप्रधानः प्रथमासमर्थता न सम्भवति अतः 'अन्तर्वत्पतिवतोर्नुक्' अ० ४.१.३२. सूत्रेण निपातनात् मतुप् ङीप् च 'वा छन्दसि तु नुग्विधिः' इति नुङ् न भवति]

अन्तर्वावत् योऽन्तर्भृशं वाति गच्छति (वैश्वानरः=सूर्यः) ६.८.३. [अन्तरोपपदे वा गतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् क्विप्]

अन्तर्विद्वान् योऽन्तर्वेत्ति सः (परमेश्वरः) १.७२.७. [अन्तरोपपदे विद् ज्ञाने (अदा०) धातो. शतृ 'विदेः शतुः वसु' रिति वसुः 'वसोः सम्प्रसारणम्' इति सम्प्रसारणे नुमि दीर्घे च रूपम्]

अन्तस्पथा अन्तराभ्यन्तरे पन्था येषान्ते (विद्याधर्ममार्गाः) ५.५२.१०. [अन्तर्पथिन्शब्दयोर्बहुव्रीहौ समासे 'ऋक्पूरब्धूःपथाम्०' अ० ५.४.७४. सूत्रेण समासान्तोऽकारः । टिलोपे च रूपम्]

अन्तः पारम् १.५४.१. हृदि ३१.१९. मध्ये ५.६२.५. आभ्यन्तरे १.१६३.४. समीपे १०.७. शरीराऽभ्यन्तरे ७.५. आकाशाऽभ्यन्तर इव ७.५. आभ्यन्तरस्थान् प्राणादीन् ७.४. भीतर आर्याभि० २.१२, ४०.५. सर्वस्य मध्ये १.९६.५. बीच में सं० वि० १६८, अथर्व० ९.२.३.२२. अन्तःकरणम् ८.२५. शरीराऽन्तर्व्यवस्थितेन, भा०—शरीरस्थेन (मनसा) १७.९४. सीमा ६.२९.५. ब्रह्माण्डशरीरयोर्मध्ये ३.७. सभामध्ये १२.११. अभ्यन्तराकाशः ७.५. [अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अमेस्तुट् च' उ० ५.६० सूत्रेण अरन् प्रत्ययस्तुडागमश्च स्वरादित्वाद् अव्ययम् अन्तर्=अभ्यन्तरम् नि० १०.१९.]

अन्तःपर्शव्येन अन्तःपार्श्वाऽवयवभावेन ३९.८. [अन्तर् उपपदे पर्शुप्राति० अवयवार्थे यत् प्रत्ययः पर्शुः=स्पृश धातोः 'स्पृशेः श्वण्शुनौ पृ च' उ०५.२७. सूत्रेण शुन् प्रत्ययः धातोश्च पृ आदेशः]

अन्तःपार्श्व्यम् अन्तःपार्श्वे भवम् (शरीराङ्गविशेषम्) ३९.९. [अन्तरोपपदे पार्श्वं प्राति० भवार्थे 'शरीरावयवाच्च' अ: ४.३.५५. सूत्रेण यत् प्रत्ययः]

अन्तःश्लेषः मध्यस्पर्शः १४.१६. मध्ये स्पर्शो यस्य (श्रावणो भाद्रपदो वा मासः) १४.१५. मध्य आलिङ्गनम् १४.६. मध्यप्रवेशः (ईश्वरः) १५.५७. आभ्यन्तरे सम्बन्धः १३.२५. [श्लिष आलिङ्गने धातोर्घञ्प्रत्यये श्लेषः ततोऽन्तर् शब्देन बहुव्रीहिः]

अन्तःहृदा अन्तःस्थितेनाऽऽत्मना ४.५८.६. [अन्तः स्थितेन हृदयेनेति विग्रहे शाकपार्थिवत्वादुत्तरपदलोपे शस्प्रभृतिषु परतः 'पद्दन्नोमास्०' अ० ६.१.६३. सूत्रेण हृदयस्य स्थाने हृदादेशः]

अन्ता अन्ते समीपे ४.१.११. **अन्तात्**=समीपात् ३.६१.४. **अन्तान्**=समीपस्थान् (पदार्थान्) १.९२.११. समीपान् (भूगोलान्) ४.५०.१. **अन्ताय**=समीपाय ससीमाय वा (जनाय) ३०.१९. **अन्ताः**=अन्ताऽवयवाः १७.२५. **अन्ते**=समीपे ४.१६.२. **अन्तेभ्यः**=समीपेभ्योऽहोरात्रेभ्यः १.४९.३.

अन्ति अन्तिके, प्र० अत्र परस्य लोपः २.२७.३. समीपे, प्र० अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति ङिविभक्तेर्लुक् 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति कलोपश्च १.७९.११. निकटे १३.११. अन्तिके १.९४.९. अनन्ति जीवन्ति विद्यादिसुखसाधनैर्येतेऽन्त्यः प्र० अत्रान धातोरौणादिकस्तिन् प्रत्ययः सुपां सुलुगिति जसो लुक् च १.८९.९. **अन्तौ**=समीपे ५.४७.३. बन्धने १७.६०.

अन्तिके अत्यन्त निकट आर्याभि० २.२२, ४०५. [अन्तिकं कस्मात् ? आनीतं भवति निघं० ३.९.]

अन्तितः समीपात् ३.५९.२. समीपतः २.२७.१३. [अन प्राणने (अदा०) धातोरौणादिकस्तिन् प्रत्ययः ततः सार्वविभक्तिकस्तसिः प्रत्ययः]

अन्तिदेवम् अन्तिषु विद्वत्सु विद्वांसम् १.१८०.७. [अन प्राणने (अदाः) धातो रौणादिके तिन् प्रत्यये अन्ति अनन्ति जीवन्ति विद्यादिसुखसाधनैर्ये तेऽन्त्यो देवाः=विद्वांसः तेषु देवम्]

अन्तिमित्रः अन्तौ समीपे मित्राः सहायकारिणो यस्य सः, भा०—मित्रसेवी (गणः=गणनीयो विद्वज्जनः) १७.८३.

अन्त्याय अन्तेभवाय (जीवाय) ९.२०. [अन्तप्राति० भवार्थे 'दिगादिभ्यो यत्' (अ० ४.३.५४.) सूत्रेण यत्]

अन्त्यूतिम् अन्ति निकट ऊती रक्षणाद्या क्रिया यस्य तम् (विद्वज्जनम्) १.१३८.१. [अन्ति ऊति व्याख्यातौ, तयोर्बहुव्रीहिः]

अन्धसः अन्नस्य रसान् ५.५१.५. अन्नानि पृथिव्यादीनि, अन्व०—अन्नानां पृथिव्यादीनां प्रकाशेन, प्र०—अन्ध इत्यन्ननामसु पठितम् निघं० २.७, १.९.१. अन्नादेर्मध्ये २६.२४. शुद्धाऽन्नस्येच्छाहेतुम् ऋ० भू० ३०६ अन्नस्य १.८०.६. अन्नानि १.८५.६. अन्नादेः सकाशात् ३६.५. द्रवीभूतस्याऽन्नादेः १.१५५.१. संस्कृतस्याऽन्नादेः १९.७९. अन्नादियोगात् १९.७३. सुसंस्कृतस्याऽन्नस्य १९.७४. अन्नात् २७.४०. अन्नादेः ३३.२३. **अन्धसा**=अन्नाद्येन

४.२०.४. अन्नादिनोदकादिना वा १.५२.५. **अन्धः**=अन्नम् २.१४.१. अन्नम् भा०—वीर्यवान् वृक्षौषध्यादिः पदार्थः, प्र०—अन्ध इत्यन्ननामसु पठितम् निघं० २.७. 'अदेर्नुम् धौ च' उ० ४.२०६. अनेनाऽदेरसुन्प्रत्ययो नुमागमो धकाराऽऽदेशश्च 'वा शर्प्रकरणे खर्परे लोपो वक्तव्यः इति' विसर्जनीयलोपः ३.२०. प्राप्तुं योग्यो रस, भा०—वीर्यकरमन्नम्, प्र०—अन्ध इति पदनामसु पठितम् निघं० ४.२. अनेन प्राप्तव्यो रसो गृह्यते ३.२०. अद्यते यत्तदन्धोऽन्नम् प्र०—अदेर्नुम् धौ च उ० ४.२०६. अनेनाद्धातोरसुनि नुम् धश्च 'अन्ध' इत्यन्ननाम निघं० २.७. उपलक्षणेन चाऽन्येषां पदार्थानाम् ८.५४. सुसंस्कृतमन्नम् ३.३५.१. अन्नादिकम् ५.४५.९. रसम् ६.६३.२. **अन्धांसि**=अन्नपानादीनि ७.५९.५. **अन्धांसीव**=यथाऽन्नादीनि ५.५१.३. [अद भक्षणे (अदा०) धातोः 'अदेर्नुम् धौ च' उणादि० ४.२०६. सूत्रेण असुन् प्रत्ययो नुमागमो धकारादेशश्च अन्धः अन्ननाम निघं० २.७. अन्धांसि अन्नानि नि० ९.३४. अन्धसोऽन्नस्य नि० ११.९. अन्धसः=मन्त्रपूतस्य वाचा स्तुतस्य नि० १३.६. अन्धस्पत इति सोमस्य पते इत्येतत् श० ९.१.१.२४. अहर्वा अन्धः तां० १२.३.३. अन्धो रात्रिः तां० ९.१.७. अन्नं वा अन्धः जै० १.३.३.]

अन्धा अन्धकाररूपाणि (तमांसि=रात्रीः) ४.१६.४. **अन्धे**=अन्धकारके (तमसि) १.१००.८. **अन्धेन**=आवरकेण (तमसा=रात्र्यन्धकारेण) १७.४४. **अन्धाय**=दृष्टिनिरुद्धायेवाऽज्ञानिने (जनाय) १.११७.१७. चक्षुर्हीनाय (पुरुषाय) १.११७.१८. **अन्धाः**=ज्ञानदृष्टिहीनाः (दुर्जनाः) १.१४३.५. **अन्धः**=ज्ञानशून्यः (जीवात्मा) १.१६४.१६. नेत्रहीनः (जनः) १.९४.७. अन्धकारकृत् (सूर्यः) ४.१९.९. **अन्धम्**=अविद्यान्धकारयुक्तम् (पुरुषम्) १.११२.८. अविद्यायुक्तम् (अपत्यम्) १.१४७.३. चक्षुर्विहीनम् (जनम्) १.११६.१६. चक्षुर्विज्ञानविकलम् (जनम्) ४.३०.१९. आवरकम् (अविद्यान्धकारम्) ४०.१९. दृष्ट्यावरकम् (अन्धकारम्) ४०.१२. नेत्ररहितमिव (जनमिव) ४.४.१३. **अन्धस्य**=अन्धकाररूपस्याऽन्यायस्य १९.७५. अधर्माचरणस्य, आवरणस्य १९.७६. [अन्धः पदनाम निघं० ४.२. तमोऽप्यन्ध उच्यते, नास्मिन् ध्यानं भवति, न दर्शनम्, अयमपीतरोऽन्ध एतस्मादेव निघं० ५.२.]

अन्धाऽहीन् अन्धान् सर्पान् २५.७.

अन्नपते अन्नानां पालक अन्व०—यजमान पुरोहित वा सज्जन) ११.८३. [वरुणोऽन्नपतिः श० १२.७.२.२०.]

अन्नभागः खान-पान सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.६.

अन्नम् उत्तम चावलादि अन्न उसका उत्तम संस्कार सं० वि० १४५ अथर्व० १२.५.१०. अन्नादि उत्तम पदार्थ को सं० वि० १०४, २.३५.५. अत्तुं योग्यमत्तुमर्हं वा (वस्तु) २.३५.७. भोज्यम् (वस्तु) १९.५. सुशोधितं भोक्तुमर्हम् (वस्तु) २.३५.११. अत्तव्यम् (वस्तु) ४.११.१. अत्तुं योग्यम् (वस्तु) ३.४८.३. तण्डुलादिकमत्तव्यमिव १६.६६. **अन्नस्य**=अत्तुमर्हस्योदनादेः ३९.४. प्राणधारणस्य निरन्तरसुखस्य च हेतोः (पदार्थस्य) प्र०—'कृवृ०' उ० ३.१० इत्यनधातोर्नः प्रत्ययः 'धापृवस्यज्य०' उ० ३.६. इत्यतधातोर्नः प्रत्ययः ३.४३. अन्नादि पदार्थों के सं० वि० १४७, ३.४३. सर्वरोगनाशक ओषधि के आर्याभि० २.४९, ३.४३. **अन्ना**=अत्तुमर्हाण्यन्नानि १.१२७.४. सुसंस्कृतान्यन्नानि १.१२२.१३. अन्नानि १.६१.७. अत्तव्यानि (अन्नानि) ४.७.१०. अन्नादीनि ४.७.११. **अन्नात्**=यवाऽऽदेः १९.७५. अत्तुं योग्यात् २.२५. **अन्नानाम्**=गोधूमादीनाम् १६.१८. **अन्नेन**=पृथिव्यादिना जगता सह ऋ० भू० १२०. पृथिव्यादि जड़ से स० प्र० २८२, ३१.२. पृथिव्यादिना ३१.२. **अन्नेषु**=अत्तव्येषु पदार्थेषु १६.६२ **अन्नैः**=सुसंस्कृतैरन्नादिभिः २.३५.१२. पृथिव्यादिभिः २.१०.४. यवादिभिः ११.२३. [अन प्राणने (अदा०) धातोः 'कृवृ०' उ० ३.१० सूत्रेण नः प्रत्ययः। अद भक्षणे धातोर्वा क्तः 'अन्नाण्णः' इति निपातनात् संज्ञायां न जग्ध्यादेशः। अन्नम् उदकनाम निघं० १.१२. अन्नं कस्मात् ? आनतम्भूतेभ्यः, अत्तेर्वा नि० ३.९. अर्को वै देवानामन्नम् श० १२.८.१.२. तै० १.१.८.५. अन्नं वै देवा अर्क इति वदन्ति तां० १५.३.२३. अन्नं वा अर्कः तां० ५.१.९, १४.११.९, १५.३.३४. गो० उ० ४.२. अन्नमर्कः श० ९.१.१.४. अन्नं वै वाजः तां० १३.९, १३.२१. १५.११.१२.१८.६.८. त्रेधा विहितꣳ ह्यन्नम् श० ८.५.३.३. त्रिवृद्ध्यन्नम् श० ३.२.१.१२, ३.७.१.२०. त्रिवृद्धाऽअन्नं कृषिर्वृष्टिर्बीजम् श० ८.६.२.२. विरूपं (नानारूपम्) अन्नम् तां० १४.९.८. पाङ्क्तं ह्यन्नम्। तां० ५.२.७. सप्त वा अन्नानि तै० १.३.८.१. सर्वं वैतदन्नं यदधिमधुघृतम् श० ९.२.१.११. एतदुपरममन्नं यद्दधिमधुघृतम् श० ९.२.१.१२. शान्तिर्वा अन्नम् ऐ० ५.२७.७.३. अन्नं वै सर्वेषां भूतानामात्मा गो० उ० १.३. वैश्वदेवं वा अन्नम् तै० १.६.१.१०. अन्नं वा आयतनम् श० ६.२.१.१४. अन्नजीवनꣳ हीदꣳ सर्वम् श० ७.५.१.२०. अन्नं प्राणमन्नमपानमाहुः अन्नं मृत्युं तमु जीवातुमाहुः अन्नं ब्राह्मणो जरसं वदन्ति अन्नमाहुः

प्रजननं प्रजानाम् तै० २.८.८.३ अन्नमेव ग्रहः। अन्नेन हीदꣳ सर्वं गृहीतम् श० ४.६.५.४. तस्मात्प्राणोऽन्नेन गृहीतो यो ह्येवान्नमत्ति स प्राणिति श० ७.५.१.१६. तस्मात् प्राणेनान्नं गृहीतं यो ह्येव प्राणिति सोऽन्नमत्ति श० ७.५.१.१७. अन्नं प्राणः तै० ३.२.३.४. अन्नꣳ हि प्राणः श० ३.८.४.८, ४.३.४.२५. ता० (प्रजाः) अन्नादेव सम्भवन्ति तस्मादन्नमेव प्रजाः श० २.५.१.६. अन्नं पशवः ऐ० ५.१९. रेतो वा अन्नम् गो० पू० ३.२३. अन्नमु श्रीः श० ८.६.२.१. अन्नं वै ब्रह्मणः पुरोधाः तां० १२.८.६, १३.९.२७, १४.९.३८. अन्नमशीतयः श० ९.१.१.२१. अन्नमशीतिः श० ८.५.२.१७. अन्नं वै चन्द्रमाः तै० ३.२.३.४. अन्नं वा अपां पाथः श० ७.५.२.६० अन्नं वै प्रजापतिः श० ५.१.३.७. अन्नं वाऽअयं प्रजापतिः श० ७.१.२.४. यत्तदन्नमेष स विष्णुर्देवता श० ७.५.१.२१. अन्नं वै व्यन्ने हीमानि सर्वाणि भूतानि विष्टानि श० १४.८.१३.३. अन्नं वै पूषा कौ० १२.८. तै० १.७.३.६, ३.८.३३.२. अन्नं वाजः श० ५.१.१.१६, ८.१.१.९. अन्नं वै वाजः तै० १.३.६.२.६,१.३.८.५. श० ५.१.४.३, ६.३.२.४. अन्नं वै वाजाः श० १.४.१.९. अन्नं वै वाजपेयः तै० १.३.२.४. अन्नं नमः श० ६.३.१.१७. अन्नꣳ हि स्वाहाकारः श० ६.६.३.१७. अन्नं वै स्वाहाकारः श० ९.१.१.१३. अन्नꣳ श्रुष्टिः श० ७.२.२.५. अन्नꣳ रश्मिः श० ८.५.३.३. अन्नं वै नृम्णम् कौ० २७.४. भर्गो देवस्य कवयोऽन्नमाहुः गो० पू० १.३२. अन्नं वै भद्रम् तै० १.३.३.६. (मेधः) मेधाय इत्यन्नाये येतत् श० ७.५.२.३२. अन्नं प्रेतिः श० ८.५.३.३. अन्नं वै पितुः श० १.९.२.२०, ७.२.१.१५. अथर्वपितुं मे गोपायेत्याह अन्नमेवैतेन स्पृणोति तै० १.१.१०.४. अन्नं वै पितुः ऐ० १.१३. अन्नं वै देवाः पृश्नीति वदन्ति तां० १२.१०.२४. न अन्नं वै पृश्निः तै० २.२.६.१. श० ८.७.३.२१. अन्नं वै रूपम् श० ९.२.१.१२. अन्नं वै सुरूपम् कौ० १६.३. अथ यत् कृष्णं तदपां रूपमन्नस्य मनसो यजुषः जै० उ० १.२५.९. अन्नं वै वयश्छन्दः श० ८.५.२.६. अन्नं वै गिरश्छन्दः श० ८.५.२.५. अन्नं प्रच्छच्छन्दः श० ८.५.२.४. अन्नं केतः श० ६.३.१.१९. अन्नं पुरीषम् श० ८.१.४.५, ८.७.३.२. अन्नं वै पुरीषम् श० ८.५.४.४, ८.६.१.२१, १४.३.१.२३. अन्नं वै कम् ऐ० ६.२१. गो० उ० ६.३. तदन्नं वै विश्वम्प्राणो मित्रम् जै० उ० ३.३.६. अन्नं व्रतम् तां० २३.२७.२. अन्नꣳ हि व्रतम् श० ६.६.४.५. अन्नं वै व्रतम् तां० २२.४.५. श० ७.५.१.२५. अन्नं भुजिष्याः श० ७.५.१.२१. अन्नं हि गौः श० ४.३.४.२५ जै०. उ० ३.३.१३. अन्नं वै गौः तै० ३.९.८.३. अन्नं पशवः श० ६.२.१.१५, ७.५.२.४२. आपो वै सूदोऽन्नं दोहः श० ८.७.३.२१. अन्नं सोमः कौ० ९.६. तां० ६.६.१. अन्नꣳ सोमः श० ३.३.४.३८. अन्नं वै सोमः श० ३.९.१.८, ७.२.२.११. एष वै सोमो राजा देवानामन्नं यच्चन्द्रमाः श० १.६.४.५ २.४.२.७, ११.१.४.४. अन्नꣳ सुरा तै० १.३.३.५. अन्नं विशः श० २.१.३.८. अन्नं वै विशः श० ४.३.३.१२, ५.१.३.३, ६.७.३.७. अन्नं वै श्रीर्विराट् गो० पू० ५.४. गो० उ० १.१९. अन्नं विराट् कौ० ९.६.१२.३. तै० १.६.३.४, १.८.२.२. तां० ४.८.४. अन्नं विराट् तस्माद् यस्यैवेह भूयिष्ठमन्नं भवति स एव भूयिष्ठं लोके विराजति तद्विराजो विराट्त्वम् ऐ० १.५. अन्नं वै विराट् ऐ० १.५, ४.११, ५.१९, ६.२०. श० ७.५.२.१९. अन्नं वै पङ्क्तिः गो० उ० ६.२. पङ्क्तिर्वा अन्नम् ऐ० ६.२०. पाङ्क्तमन्नम् तां० १२.१.९. पाङ्क्तꣳ (पञ्चविधम्) ह्यन्नम् (अश्यं खाद्यं चोष्यं लेह्यं पेयमिति सायणः) तां० ५.२.७. अन्नं वा इडा ऐ० ८.२६. कौ० ३.७ अन्नं वा आपः श० २.१.१.३, ७.४.२.३७, ८.२.३.६. तै० ३.८.२.१, ३.८.१७.५. अन्नं वृष्टिः गो० पू० ४.४.५. सप्तदशꣳ ह्यन्नम् श० ८.४.४.७. अन्नं वै सप्तदश तां० २.७.७, १७.९.२, १९.११.४, २०.१०.१, २५.६.३. अन्नं सावित्री गो० पू० १.३३. अन्नं वै० स्वयमातृण्णा (इष्टका) श० ७.४.२.१. अन्नꣳ समिष्टयजुः श० ११.२.७.३०. अन्नं वै यजुष्मत्य इष्टकाः श० ८.७.२.८. अन्नमेव यजुः श० १०.३.५.६. अन्नं याज्या कौ० १५.३.१६.४. गो० उ० ३.२१. अन्नं वै याज्या गो० उ० ३.२२.६.८. अथो अन्नं निविद इत्याहुः कौ० १५.३.४. अन्नमुक्थानि कौ० ११.८,१७.७. अन्नं वा उक्थ्यम् गो० पू० ४.२०. अन्नं वा ऽउक्थ्यः श० १२.२.२.७. अन्नं वै स्तोमाः श० ९.३.३.६. अन्नं पृष्ठानि तां० १९.९.४. अन्नं न्यूङ्खः कौ० २२.६.८, २५.१३, ३०.५. अन्नं वै न्यूङ्खः ऐ० ५.३, ६.२९, ३०.३६. गो० उ० ६.८.१२. तस्मादाहुः सामैवान्नमिति सा० सा० १.१.३. साम देवानामन्नम् तां० ६.४.१३. एतद्वै साक्षादन्नं यद्राजनं (साम) पञ्चविधं भवति पाङ्क्तं ह्यन्नम् तां० ५.२.७. अन्नं वै रथन्तरम् ऐ० ८.१. अन्नं वै मरुतः तै० १.७.३.५, १.७.५.२, १.७.७.३. अन्नं वै गार्हपत्यः श० ८.६.३.५. एते हि साक्षादन्नं यद्रूषाः तै०

१.३.७.६. अन्नं वा ऊर्गुदुम्बरः । श० ३.२.१.३३, ३.३.४.२७. अन्नꣳ सम्मार्जनानि तै० ३.३.१.५. वरुणोऽन्नपतिः । श० १२.७.२.२०. अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात् तै० आ० ६.२. तै० उ० ३.२. अन्नं वै पूषा तै० सं० २.१.६.१. श० ८.५.४.४. अन्नं वै पावकम् तै० सं० ५.४.४.४. अन्नं वा आदित्याः तै० सं० ५.३.४.३. अन्नं वा आपः श० ६.२.१.१४.

अन्नादम् योऽन्नं यवादिकं सर्वमत्ति तम् (अग्निं=भौतिकम् ३.५. [अन्नोपपदं अद भक्षणे (अदा०) धातोर् अण् प्रत्ययः। अन्नादो अग्निः श० २.१.४.२८. प्रजापतिर्वै देवानामन्नादो वीर्यवान् तै० ३.८.७.१. स यो हैवमेतं वृत्रमन्नादं वेदान्नादो हैव भवति श० १.६ ३.१७. ऋग्भिरन्नादः (इन्द्रः) ज्योतिश्च वायुश्चान्नादमेताभ्यां हीदं सर्वमन्नमत्ति ऐ० आ० २.३.१.]

अन्नाद्यम् खाने के योग्य पदार्थ सं० वि० १४५, अथर्व० १२.५.१०. **अन्नाद्याय**=अत्तुं योग्यमाद्यं, अन्नञ्च तदाद्यञ्च तस्मै यद्वाऽन्नमोदनादिकं भोज्यं यस्मिँस्तस्मै (सुप्रजास्त्वाय) ३.६३. अत्तुं योग्यायाऽन्नाद्याय २०.३. अत्तुं योग्यमद्यं, अन्नञ्च तदद्यञ्चाऽन्नाद्यं तस्मै (अन्नाय) ३.५. **अन्नाद्येन**=अन्नादिराज्यैश्वर्येण ऋ० भू० १६१, अथर्व० १३.४.५६. [अन्नोपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोर्ण्यत् प्रत्ययः। एतद्वै परममन्नाद्यं यत्सोमः। कौ० १३.७. यश उ वै सोमो राजान्नाद्यम् कौ० ९.६. श्रीर्विराडन्नाद्यम् कौ० १.१.२.३. श्रीर्वै विराड् यशोऽन्नाद्यम् गो० पू० ५.२०. गो उ० ६.१५. विराडन्नाद्यम् ऐ० ४.१६.८.४. एतद्वै कृत्स्नमन्नाद्यं यद्विराट् कौ० १४.२. सो-(प्रजापतिः) ऽब्रवीदेकं वावेदमन्नाद्यमसृक्षि सामैव जै० उ० ३.१.११. अन्नाद्यं वा अमृतम् काठ० संक० ४९.६.५०.१. आफो वा अन्नाद्यम् काठ० संक० ४९.७. ऊर्ग्वा अन्नाद्यमुदुम्बरः ऐ० ५.२४.८.८. एतद्धि देवानां प्रत्यक्षमन्नाद्यं यच्चन्द्रमाः जै० १.२४६. वाग्वा अन्नाद्यम् ऐ० ४.१६.८.४. हिङ्कारेण ह्येव देवेभ्योऽन्ततोऽन्नाद्यं प्रदीयते जै० १.२४६.]

अन्नियते अदतां नियते निश्चिते समये ४.२.७.

अन्यकृतम् अन्येन कृतम् (एनः=अपराधम्) ६.५१.७. **अन्यकृतेभ्यः**=यथाऽन्यैर्यानि क्रियन्ते तेभ्यः (पापिभ्यो जनेभ्यः) ४.३५. [अन्योपपदे डुकृञ् करणे धातोः क्तः]

अन्यःजातम् अन्येनाऽन्यस्माद्वा समुत्पन्नम् (रेक्णः=धनम्) ७.४.७. अन्यस्मादुत्पन्नम् (एनः=पापम्) ७.५२.२. [अन्योपपदे जनी प्रादुर्भावे धातोः क्तः नकारस्याकारादेशः]

अन्यत् द्वितीयं भिन्नम् १.५२.१४. द्वितीयम् १.३०.१९. भिन्नम् १.११५.५. अन्यः ५.३१.२. अपने से भिन्न आर्याभि० १.१५. कार्यकारणजीवेभ्यो भिन्नं ब्रह्म १७.३१. अस्मद्भिन्नम् (ब्रह्म) ३३.३८. वेद और युक्ति से कभी सिद्ध न हो सकने वाली ब्रह्म से एकता आर्याभि० २.४४, १७.३१. **अन्यदन्यत्**=पृथक्-पृथक् ३.३८.७. [अन्यो नानेयः नि० १. ६. अन्ये सपत्नाः नि० १०.२६.]

अन्यतः भिन्नात् (देशात्) १.४.५. [अन्यप्राति० सार्वविभक्तिकस्तसिः]

अन्यतः एन्यः या अन्यतो यन्ति प्राप्नुवन्ति ताः (मैत्र्यः=पशवो गावः) २४.८. [अन्यतस् उपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः केन्यः कृत् प्रत्ययः। स च कृत्यार्थेऽपि सन् कर्त्तरि छान्दसत्वाद् भवति]

अन्यतः शितिबाहुः अन्यतः शितयो बाह्वोर्यस्य सः (पशुः) २४.२. [अन्यतस् उपपदे शिति-बाह्वोः बहुव्रीहिः। शितिः कृष्णः शुक्लवर्णो वा]

अन्यतःशितिरन्ध्रः अन्यतोऽन्यस्मिन् रन्ध्राणीव शितयो यस्य सः (पशुः), समन्ततो रन्ध्राणीव शितयः श्वेतचिह्नानि यस्य सः (पशुः) २४.२. [अन्यतस् उपपदे शिति-रन्ध्रयोः समासः। रन्ध्रशब्दस्य परनिपातः]

अन्यतोऽरण्याय अन्यतोऽरण्यानि यस्मिन् देशे तद्विनाशाय ३०.१९. [अन्यतस् व्याख्यातः, अरण्यम्=ऋ गतौ धातोः 'अर्त्तेर्निच्च' उ० ३.१०२. सूत्रेण अन्यः प्रत्ययः। तयोर्बहुव्रीहिः]

अन्यत्र अन्य स्थान में ७.५९.५. [अन्यप्राति० 'सप्तम्यास्त्रल्' अ० ५.३.१०. सूत्रेण त्रल्। 'तद्धितश्चासर्व०' इत्यव्ययत्वम्]

अन्यथा उल्टा पापरूप सं० वि० १४५, ४.२. [अन्यप्राति० 'प्रकारवचने थाल्' इति थाल् प्रत्ययः। तद्धितश्चासर्व०' इत्यव्ययसंज्ञा]

अन्यवापः कोकिलाख्यः पक्षिविशेषः २४.३७. [अन्यैः काकादिभिर् उप्यन्ते सन्तानानि क्रियन्ते यस्येति बहुव्रीहिः]

अन्यव्रतस्य धर्मविरुद्धाऽऽचरणस्य ५.२०.२. अन्येषां पालने व्रतं शीलं यस्य तस्य (विद्वज्जनस्येश्वरस्य वा) ३८.२०. ईश्वर और उसकी आज्ञा से भिन्न को लेशमात्र भी ईश्वर न मानने रूप व्रत का आर्याभि० २.४१, ३८.२०.

[अन्यत् व्रतं कर्म यस्य, अन्येषां पालने व्रतं यस्येति वा बहुव्रीहिः । व्रतमिति कर्मनाम । नि० २.१३.]

अन्यान् शत्रून् ३.४६.२.

अन्याऽन्या भिन्ना भिन्ना पृथक्-पृथक् संयुक्ते च (अहोरात्रे) प्र०—अत्र वीप्सायां द्विर्वचनम् १.६२.८. भिन्ना भिन्ना एकैका कालभेदेन ३३.५. परस्परं वर्त्तमाना (अहोरात्रे) १.९५.१.

अन्यादृङ् अन्येन समानः (पुरुषः) १७.८१. [अन्योपपदे दृशिर् प्रेक्षणे धातोः 'समानान्ययोश्चेति वक्तव्यम्' (अ० ३.२.६०) वार्त्तिकेन क्विन् । 'क्विन्प्रत्ययस्य कु' रिति कुत्वम् । 'आ सर्वनाम्नः' इत्याकारादेशः]

अन्योदर्य्यः अन्योदराज्जातः (अन्यगोत्रजोऽनौरसो वा पुत्रः) ७.४.८. [उदरप्राति० जातार्थे यत् प्रत्ययश्छान्दसः । ततोऽन्येन सह समासः]

अन्योऽन्यम् एक दूसरे से सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.१. ['कर्मव्यतिहारे सर्वनाम्नो द्वे भवतः, समासवच्च बहुलम्' अ० ८.१.१२. वा० द्वित्वम् । बहुलवचनात् समासवन्न । उत्तरपदस्य चाम्]

अन्वचष्ट अनुख्यापयेत् ४.१८.३. [अनु+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः सामान्ये लङ् । 'स्कोः संयोगाद्यो' रिति सकारलोपः]

अन्वचारिषम् धरेयम् २०.२२. पश्चादनुतिष्ठामि, अन्व०—कर्माऽनुचरामि, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् १.२३.२३. [अनु+चर गतौ (भ्वा०) धातोः सामान्ये लुङ्]

अन्वजायथाः अनुजायेथाः १.१४१.९. [अनु+जनी प्रादुर्भावे धातोः सामान्ये लङ् । 'ज्ञाजनोर्जा' इति धातोर्जादेशः]

अन्वतक्षत् पश्चादतिसूक्ष्मां धियं कुर्वन्ति १.८६.३. [अनु+तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोः सामान्ये लङ् । 'तनूकरणे तक्षः' इति विकल्पेन श्नुविधानात् पक्षे शप्]

अन्वददुः अनुददति ५.२९.५. [अनु+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः सामान्ये लङ् । 'आतः' इति नित्यं झेर्जुस्]

अन्वनयन्त प्राप्नुयुः ३.७.६. [अनु+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लङ् सामान्ये]

अन्वनोनवुः अनुकूलतया स्तुवत १.८०.९. [अनु+णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् लङ्]

अन्वपश्यत् अनुपश्यति १.१६४.९. [अनु+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लट् । शिति पश्यादेशः]

अन्वमदन् अनुमदन्ति अनुहर्षन्ति ७.१८.१२. आनुकूल्येन हर्षन्ति १.५२.९. अनुहर्षयन्ति १.१०३.७. अनुहृष्येयुरनुहर्षयेयुर्वा १.१०२.१. आनुकूल्येनाऽऽनन्देयुः भा०—सत्यानुकूलाः सन्तः स्वयमानन्दिता भूत्वाऽन्यानानन्दयन्ति ३३.२९. [अनु+मदी हर्षे (दिवा०) धातोः सामान्ये लङ् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

अन्वमन्यन्त पश्चाद् मन्यन्ताम् १.११६.१७. (अनु+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः सामान्ये लङ्]

अन्वमंसाताम् अनुकूलं मन्येताम् ३८.१३.

अन्वमंस्त=पश्चात् मन्यते ५.४०. [अनु+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः सामान्ये लुङ्]

अन्वरुहत् अनुवर्धयति १.१४१.५. [अनु+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

अन्वर्चन् आनुकूल्येन सत्कुर्वन् (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.८०.४. पश्चात् पूजयन् (सभापतिः) १.८०.१. [अनु+अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अन्वविन्दत् अनुलभते २.१२.११. **अन्वविन्दन्**=अनुलभेरन् ५.४०.९. अनुलभन्ते १७.९२. प्राप्नुयुः, भा०—सेवन्ताम् १५.२८. [अनु+विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लङ् । 'शे मुचादीनामि' ति नुमागमः]

अन्वविष्टन् व्याप्नुत ७.१८.२५. [अनु+विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातो रूपम् । 'बहुलं छन्दसी' ति श्लुर्न । छान्दसत्वात्साधु]

अन्ववृत्सत अनुवर्त्तन्ते ५.५५.१. [अनु+वृत्तु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर् लुङ् । छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पेन इड् न भवति]

अन्ववेदम् पश्चाद्विजानामि ४.२७.१. [अनु+विद ज्ञाने (अदा०) धातोः सामान्ये लङ्]

अन्वश्नोति पश्चाद् व्याप्नोति २.१६.३. [अनु+अशू व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अन्वसत् अनुयोगेन भवेत् १.५७.२. [अनु+अस भुवि (अदा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न । आडभावश्च]

अन्वागन्ता धर्ममन्वागच्छति यः सः (विद्वज्जनः) १८.५९. [अनु+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

अन्वागात् अन्वागच्छेत् १.१२६.३. [अनु+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् सामान्ये । 'इणो गा लुङी' ति गादेशः । 'गातिस्था०' इति सिचो लुक् च]

अन्वाततान आच्छाद्य विस्तारयति ८.६२. [अनु+आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिट् सामान्ये]

अन्वातांसीत् पश्चात् समन्तात्तनुताम्, प्र०—अत्र वचनव्यत्ययेन द्विर्वचनस्थाने एकवचनम् १५.५३. [अनु+तनु विस्तारे (तना०) धातोः सामान्ये लुङ् । छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पेन इडागमो न भवति । हलन्तलक्षणा वृद्धिः]

अन्वानशे आनुकूल्येन व्याप्नोति १.८४.६. [अनु+अशू व्याप्तौ (स्वा०) धातोः सामान्ये लिट् । 'अत आदे'-रित्यभ्यासस्य दीर्घत्वे 'अश्नोतेश्चे' ति नुडागमः]

अन्वापनीफणत् पश्चादत्यन्तं गच्छति ४.४०.४. [अनु+आङ्+फण+गतौ (भ्वा०) धातोर्णिचि लुङि च रूपम् । छान्दसोऽभ्यासस्य नीगागमः]

अन्वापनीफणत् पश्चादतिशयेन गच्छन् (दधिक्राः=अश्वः) ६.१४. [अनु+आङ्+फण गतौ (भ्वा०) धातोः यङन्तात् शतृ । नीगभ्यासस्य]

अन्वाभज अनुकूलं समन्तात् स्थापय ४.२८. [अनु+आङ्+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः लोट्]

अन्वायन् प्राप्नुवन्ति ४.२६.२. **अन्वायम्**=प्राप्नुयाम् ५.३०.२. **अन्वायातु**=आनुकूल्येन प्राप्नोतु २०.४९. [अनु+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङि लोटि च रूपाणि]

अन्वारभामहे हम आरम्भ करें, भा०—वर्द्धयामहे ९.२६. यानानि रचयित्वा तत्र स्थापयेम ३५.१३. [अनु+आङ्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्लट् । धातूनामनेकार्थत्वादत्र वर्धनेऽपि]

अन्वालेभिरे अनुलभन्ते ३४.४९. [अनु+आङ्+डुलभस् प्राप्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट् 'अत एकहल्मध्ये०' इत्येत्वाभ्यासलोपौ]

अन्वावर्त्ते अनुगतेन समन्ताद्वर्त्तमानो भवेयम् २.२७. पश्चादाभिमुख्येन वर्त्तमानो भवेयम् २.२६. [अनु+आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लिङर्थे लट्]

अन्वित्या अन्वेषणेन १५.६. [अनु+इण् गतौ (अदा०) धातोर्भावे स्त्रियां क्तिन् । धातूनामनेकार्थत्वादत्रान्वेषणार्थेऽपि । अन्नमन्वितिः श० ८.५.३.३.]

अन्वियाय अनुप्राप्नोतु ४.४.११. [अनु+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिट् । 'अभ्यासस्यासवर्णे' इत्यभ्यासस्य इयङ्]

अन्विहि अनुगच्छ १२.६२. [अनु+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

अन्वीयतुः अनुगच्छतः ३३.६७. **अन्वीयुः**=प्राप्नुयुः १.१६३.८. [अनु+इण् गतौ)अदा०) धातोर्लिटि द्विवचनबहुवचनयो रूपाणि]

अन्वूह्याते देशान्तरं गम्येते १.१२०.११. [अनु+ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट् । छान्दसत्वाद् 'आतो ङित' इत्येत्वं न]

अन्वेति आनुकूल्येन प्राप्नोति १.११३.१०. पुनः प्राप्नोति १.११३.८. **अन्वेमि**=अनुगच्छामि ७.२. [अनु+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

अन्वेतवे अन्वेतुं विज्ञातुं प्राप्तुं गन्तुं वा ७.३३.८. [अनु+इण् गतौ (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवेन् प्रत्ययः]

अन्वेतवै अनुक्रमेण गन्तुम् ८.२३. अन्वेतुमनुगन्तुम् ७.४४.५. [अनु+इण् गतौ (अदा०) धातोस्तुमर्थे 'तुमर्थे सेसेनसेअसेन्०' अ० ३.४.९. सूत्रेण तवै प्रत्ययः]

अप क्रियायोगे १.११.५. धात्वर्थे १.१०.७. दूरीकरणे ३४.२५. निवारणे ६.३.१३६. दूरीकरणे वर्जने निषेधाऽर्थे वा २.१५. दूरार्थे ३.२१. पृथग्भावे १.५०.२. विरुद्धाऽर्थे १.८५.३. अपराधे १.४८.८. [समित्येकीभावम् अपेत्येतस्य प्रातिलोम्यम् (पृथग्भावम्) नि० १.३.]

अपकामम् अपगतश्चाऽसौ कामश्च तम् (शत्रुम्=अरिम्) २९.३९. काममविनाशनम् ६.७५.२. [अप+कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोर्घञ्]

अपगमत दूरं गच्छति ६.४५.२४. [अप+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'पुषादिद्युताद्य्लृदितः०' इति च्लेः स्थाने अङ् प्रत्ययः । मध्यमबहुवचने]

अपगल्भम् प्रगल्भतारहितम् (जनम्) ३०.१७. अपगतं दूरीकृतं गल्भं धाष्टर्चं येन तस्मै (पुरुषाय) १६.३२. [अप+गल्भ धाष्टर्चे (भ्वा०) धातोर्भावे घञ्]

अपगात् दूरं गच्छन्तु, भा०—दूरे भवत, प्र०—अत्र लोडर्थे लङ्, पुरुषव्यत्ययश्च ३.२१. [अप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङी' ति गादेशः । 'गातिस्था०' इति सिचो लुक्]

अपगूहळम् गुप्तम् (पदं=पादचिह्नम्) ४.५.३. [अप+गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । छान्दसं रूपम्]

अपगूढम् अपगतश्चाऽसौ गूढश्च तम् (राजानं=प्राणं जीवं वा) १.२३.१४. अपगतं संवरणमाच्छादनं यस्मात्तत् (कर्म) १.११६.११. **अपगूढा**=आच्छादितानि (द्रव्याणि) १.१२३.६. **अपगोहम्**=आच्छादकम् (अन्धकारम्) २.१५.७. [अप+गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोर्भूते क्तः ।

'हो ढः' इति ढत्वे धत्वे ष्टुत्वे च 'ढो ढे लोपः' इति पूर्वढकारलोपे 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घः०' इति उकारस्य दीर्घत्वम्]

अपगूर्यम् उद्यम्य ५.३२.६. [अप+गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

अपचत पचति ५.२९.७. **अपचन्त**=पचन्ति १.१६४.४३. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः सामान्ये लङ् । पच धातुरुभयपदी]

अपचितिम् सत्कृतिम् २१.५८. सत्कारम् ४.२८.४. **अपचितिः**=प्रजाजनकम् (भसत्=भगेन्द्रियम्) २०.८. [चायृ पूजानिशामनयोः (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । 'क्तिनि नित्यमिति वक्तव्यम्' (वा० ७.२.३०) अनेन धातोरनिट्त्वं चिभावश्च निपात्यते । अपपूर्वाद्वा चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्तिन्]

अपचेतयातै दूरं चेतयेत्, प्र०—'चिती सञ्ज्ञाने' इति ण्यन्तस्य लेटः प्रथमपुरुषस्यैकवचने प्रयोगोऽयम् २.१७. [अप+चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर् णिजन्ताल्लेट् । 'लेटोऽडाटौ' इत्याट् 'एत ऐ' इत्यैकारादेशश्च]

अपच्यवम् त्यागम् १.२८.३. [अप+च्युङ् (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप् प्रत्ययः]

अपजर्गुराणः आच्छादनात् पृथक् कुर्वन् (राजा) ५.२९.४. [अप+गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् शानच्]

अपजहि दूरं नाशय, अ०—दूरीकुरु १२.४७. हिंसय १.१७. [अप+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लोट् । 'हन्तेर्जः' इति जादेशः]

अपतिघ्नि ! विवाहितपतिसेविके (स्त्रि) ऋ० भू० २१४. **अपतिघ्नी**=पति को दुःख न देने वाली (स्त्री) स० प्र० १५२, अथर्व० १४.२.१८. [पत्युपपदे हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोः । 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति बहुलवचनाट् टक् प्रत्ययः । स्त्रियां 'टिड्ढाण्०' इति ङीप् । नञ् समासश्च]

अपत्यम् सन्तानम् १.१७४.६. **अपत्याय**=सन्तानाय १३.३५. **अपत्ये**=सन्ताने=१.६८.४. [अपत्यं कस्मात् ? अपततं भवति नानेन पततीति वा नि० ३.१. अपत्यम्=अपत्यनाम निघं० २.२.]

अपत्यसाचम् यदपत्ये सचति व्याप्नोति तत् (शरीरात्मबलम्) ६.७२.५. पुत्रपौत्रादिसमेतम् (पुरुषम्) १.११७.२३. उत्तमाऽपत्यसंयुक्तम् (रयिं=धनम्) २.३०.११. [अपत्योपपदे षच समवाये (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

अपदी अविद्यमानपादे (द्यावापृथिवी) १.१८५.२. [नञ्-पादपदयोर्बहुव्रीहौ 'कुम्भपदीषु च' सूत्रेण समासान्तलोपः । 'पादोऽन्यतरस्याम्' इति ङीप् । 'पाद पत्' इति पदादेशः]

अपदे न विद्यन्ते पदानि चिह्नानि यस्मिँस्तस्मिन्नन्तरिक्षे १.२४.८. चौरादिनिष्पादितेऽप्रसिद्धे व्यवहारे ८.२३. [पद गतौ (दिवा०) धातोरधिकरणे घ प्रत्ययः । ततो नञ्बहुव्रीहिः]

अपद्महि प्राप्नुयाम् ४.२९. **अपद्यन्त**=प्राप्त होते हैं सं० वि० १७०, १४.२.३२. [पद गतौ (दिवा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति श्यनो लुक् । द्वितीयप्रयोगे लुक् न.]

अपद्रन् अपद्रवन्ति ६.२०.४. [अप+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । छान्दसो वकारलोपः]

अपद्वेषः दूरीकर्त्तुं द्विषन्ति ये शत्रवस्ते १.४८.८. द्वेषरहित (ईश्वरः) आर्याभि० २.४१, ३८.२०. [अप+द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि भावेऽपि विहितो घञ् बहुलवचनात् कर्त्तरि]

अपधमन्तः दूरीकुर्वन्तः (मरुतः=विद्वज्जनाः) २.३४.१. [अप+धम+शतृप्रत्ययः । धमतिर्गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अपधा योऽपदधाति सः (इन्द्रः=सूर्यलोकः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेर्डादेशः २.१२.३. [अप+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.१.१३६. सूत्रेण कः प्रत्ययः । विभक्तेश्च स्थाने डादेशः]

अपनुदताम् दूरं प्रेरयतः, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् न प्रेरयतः प्र०—अत्रापि लडर्थे लोट् २.१५. **अपनुदन्ताम्**=अपप्रेरयन्तु २८.१३. **अपनुदस्व**=दूरीकुरु ६.२१.७. [अप+णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लोट्]

अपन्नगृहस्य अप्राप्तगृहस्य कुमारब्रह्मचारिणः ६.२४. [पदगतौ धातोः क्तप्रत्यये पन्नः । न पन्नोऽपन्नः=अप्राप्तः । ग्रह उपादाने धातोः 'गेहे कः' इति कप्रत्यये गृहम् । ततस्तयोः समासः]

अपपादि अपपाद्येत ६.२०.५. [अप+पद गतौ (दिवा०) धातोः कर्मणि लुङ् । अडभावश्च]

अपपित्वम् अपचयम् ३.५३.२४. [अपोपपदे पि गतौ (तुदा०) धातोः कृत्यार्थे त्वन् प्रत्ययः । अथवा अप+पद गतौ धातोर्बाहु० इत्वन् प्रत्ययो डिच्च]

अपप्तत् उदय होता है १.१९१.३. **अपप्तन्**=उड्डी-

यन्ते ६.६४.६. पतन्ति गच्छन्ति ६.६४.२. पतन्ति ७.५९.७. गच्छन्ति ६.६४.२. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'पुषादिद्युताद्यलृदितः परस्मैपदेषु' इति च्लेर् अङ्। 'पतः पुम्' इत्यङि पुमागमः]

अपप्रोथ जेतुं पर्याप्तो भव, शत्रूनसमर्थान् कुरु ६.४७.३०. [अप+प्रोथृ पर्याप्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अपबाधताम् निवारयतु ७.५०.२. **अपबाधते**=दूरीकरोति ३४.२५. **अपबाधन्ते**=विरुद्धतया बाधन्ते १.८५.३. [अप+बाधृ लोडने (भ्वा०) धातोर्लोट् लट् च]

अपबाधमान अपबाधते सः (बृहस्पतिः=सेनापतिः) १७.३६. **अपबाधमाना**=निवारयन्ती (उषाः) ५.८०.५. **अपबाधमानाः**=निवर्त्तयन्तः (विद्वज्जनाः) १९.८४. [अप+बाधृ लोडने (प्रतिघाते) (भ्वा०) धातोः शानच्]

अपभर्त्ता अपबिभर्त्ति दूरीकरोतीति (भेषजः=भिषग्जनः) २.३३.७. [अप+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

अपभवन्तु दूरीभवन्तु ३४.४६. **अपभूत**=अपमानयुक्ता भवत ४.३५.१. **अपभूतु**=अपभवतु १.१३१.७. [अप+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'अपभूत' 'अपभूतु' इत्येनयोः 'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। 'भूसुवोस्तिङी' ति गुणप्रतिषेधः]

अपभूतन विरुद्धा भवत ७.५९.१०. [अप+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। शपो लुक्। 'तप्तनप्तनथनाश्च' इति तस्य तनादेशः]

अपमृष्टः अपमृज्यते दूरीक्रियतेऽविद्यादिक्लेशैः यः सः शुद्धः (योगिजनः) ७.१२. दूरीकृतः (मर्कः=अनीतिः) ७.१७. [अप+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोः क्तः। 'क्क्ङिति चे' ति मृजेर्वृद्धिर्न भवति]

अपयन्ति पृथक्त्वेन यन्ति १.५०.२. **अपयन्तु**=दूरं गच्छन्तु ३५.१. [अप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् लोट् च]

अपयुयोति निवारयितुं मिश्रयति १.९२.११. [अप+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्यङ्लुक्। ततो लट्। गुणाऽभावश्च छान्दसः]

अपरजाय अपरे जाताय ज्येष्ठाऽनुजायाऽन्त्यजाय वा १६.३२. [अपरोपपदे जनी प्रादुर्भावे धातोर्डः प्रत्ययः]

अपरम् भविष्यति काले ३३.९४. अन्यम् (भयम्) १.१८९.४. पश्चात् १.१८४.१. पश्चिमम् (दुष्टजनम्) ६.४७.१५. द्वितीयम् २.२८.८. श्वो दिनं प्रति १.३६.६.

अपरः=अन्यो (देशो) अन्यः (शिल्पी वा) १.७४.८. अन्यः ३५.१५. अपरा=अपरौ १.१८५.१. अन्य कोई पीछे उत्पन्न हुई (छोटी बहिन) १.१२४.९. अपराः=या जनिष्यन्ते (प्रजाः) ३.५५.५. अन्याः (अपः=जलानि) ५.४८.२.

अपरासः पश्चाद् भूताः (विद्वज्जनाः) ५.४२.६.

अपराजितम् यो न केनाऽपि पराजेतुं शक्यते तम् (इन्द्रम्=ईश्वरं सभाऽध्यक्षं वा) १.११.२. अन्यैः पराजेतुमशक्यम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यकारकं राजानम्) २८.२. **अपराजिता**=शत्रुभिः पराजेतुमशक्यौ (इन्द्राग्नी=सभासेनेशौ) ३.१२.४. [परा+जि जये (भ्वा०) धातोः क्तः। नञ्समासः]

अपरितासः अन्यैरव्याप्ताः (क्रतवः=यज्ञाः प्रज्ञा वा) २५.१४.

अपरिविष्टम् परिवेषरहितम् (कर्म्म) २.१३.८. [परि+विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः क्तः। नञ्समासः]

अपरिह्वृतः परितः सर्वतोऽनावृतः (अग्निः=विद्युत्) २.१०.३. [परि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः क्तः। नञ्समासः]

अपरिह्वृताः सर्वतोऽकुटिला ऋजवो भूत्वा (मनुष्याः) प्र०—अत्र 'अपरिहवृताश्च' अ० ७.२.२३. इत्यनेन निपातनाच्छन्दसि प्राप्तो ह्वुभावो निषिध्यते १.१००.१९. अपरिवर्जिताः (मनुष्याः) १.१०२.११. [परि+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। 'अपरिह्वृताश्च' (अ० ७.२.३२.) सूत्रेण 'हरु' आदेशाभावो निपात्यते। नञ्समासः]

अपरीतः अवर्जितः (राजा) ५.२९.४. **अपरीताः**=अवर्जिताः (पन्थासः) १.१००.३. [परि+इण् गतौ धातोः क्तः। नञ्समासः।]

अपरीतासः अवर्जनीयाः (देवाः) १.८९.१. अन्यैरव्याप्ताः (क्रतवः=यज्ञाः प्रज्ञा वा) २५.१४. [नञ्+परि+इण् गतौ (अदा०)+क्तः]

अपरीभ्यः अपूर्णाभ्यः सेनाक्रियाभ्यः, प्र०—अत्र पृधातोः 'अच इः' उ० ४.१४४. अनेन सूत्रेण इः प्रत्ययः 'कृदिकारादक्तिनः' अ० ४.१.४५. इत्यनेन वार्तिकेन ङीष् प्रत्ययः १.३२.१३. **अपरीषु**=आगामिनीषूषस्सु १.११३.११ (पॄ पालनपूरणयोः) (जु०) धातोः 'अच इः' उ० ४.१४४. सूत्रेण इः प्रत्ययः। स्त्रियां ङीष् नञ्समासः]

अपर्वन् अपर्वणि पर्वरहिते समये ४.१९.३.

[पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'स्नामदि०' उ० ४.११३. सूत्रेण वनिप् । नञ्समासः । 'सुपां सुलुक्' इति ङेर्लुक्]

अपवक्ता मिथ्यावादी (प्रजापुरुषः) ८.२३. [अप+वच परिभाषणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

अपवध्यासम् हन्याम् १.२६. [अप+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिङ् 'हनो वध लिङि' (अ० २.४.४२.) सूत्रेण वधादेशः]

अपवर्त्तय दूरीकुरु २.२३.७. [अप+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

अपववर्थ अपवर्त्तते ३.४३.७. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लिट् । 'बभूथाततन्थजगृम्भववर्थेति निगमे' इतीडभावो निपात्यते]

अपवः अपवृणुयात् १.१२१.४. अपवृणोति २.१४.३. [अप+वृञ् वरणे (स्वा०) वृङ् धातोर्वा लुङ् । 'मन्त्रे घसह्वरणशवृदह०' इति सूत्रेण लेर्लुक् । अडभावश्च]

अपव्रन् अपवृण्वन्ति ५.२९.१२. अपवृणोति ४.५.८. अपवृणुयुः ४.२.१६. दूरीकुर्वन्तु १९.६९. अपवृण्वन्ति ४.५५.६. [अप+वृञ् वरणे धातोर्लुङ् प्रथमा बहुवचने 'मन्त्रे घसह्वरणश०' सूत्रेण लेर्लुक् अडभावश्च]

अपवर्त्ता अपवारयिता (इन्द्रः=राजा), प्र०—अत्र **तृन्** प्रत्ययः ४.२०.८. [अप+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्णिजन्तात् तृन् तच्छीलादिषु । णेर्लुक् च]

अपवाति अपगतं वाति गच्छति १.१६२.१०. अपगच्छति २५.३३. [अप+वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोर्लट्]

अपवृधि अपवृणु, अपवृणोति वा, प्र०—अत्र पक्षान्तरे सूर्यस्य प्रत्यक्षत्वात् प्रथमाऽर्थे मध्यमः 'श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि' अ० ६.४.१०२. अनेन सूत्रेण हेर्धिः १.१०.७. दूरीकुरु ७.२७.२. [अप+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लोट् । 'श्रुशृणु०' इत्यादिना छन्दसि हेर्धिरादेशः]

अपवेत्ति नश्यति ५.६१.८. [अप+विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्लट् । धातूनामनेकार्थत्वादत्र विनाशे]

अपव्रतान ब्रह्मचर्यसत्यभाषणादिव्रताऽऽचरणरहितान् (अविद्वज्जनान्) ५.४२.९. अपगतानि दुष्टानि मिथ्याभाषणादीनि व्रतान् कर्माणि येषां तान् दस्यून् १.५१.९. **अपव्रतेन**=अन्यथा वर्त्तमानेन (ब्रह्मणा=धनेन) ५.४०.६. अनियमेन परुषकर्मणा १७.४७. [अप-व्रतयोर्बहुव्रीहिः । व्रतमिति कर्मनाम निघं० २.१.]

अपशोशुचत् दूरीकुर्यात् १.९७.१. दूरीकर्त्तुं शोशुच्यात् १.९७.५. भृशं शोषयतु, भा०—पृथक् कारयति ३५.६. सब नष्ट हो जाये आर्याभि० १.३९, ऋ० १.७.५.६. [अप+शुच शोके (भ्वा०) ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोर्वा यङ्लुकि रूपम् । शोचतिर्ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६.]

अपश्चाद्दध्वने उत्तमेषु व्यवहारेष्वग्रगामिने (विदुषे=आप्ताय विपश्चिते) ६.४२.१. [दघ पालने (स्वा०) धातोर्बाहुलकात् वनिप् । दघ्नोति गतिकर्मा नि० २.१४. 'पश्चात्' अ० ५.३.३२. सूत्रेणापरस्य पश्च भावो निपात्यते । पश्चात्=अपरम् । तद्विपरीतोऽग्रगामी]

अपश्यत् पश्यति ३२.१२. पश्येत् ३.२६.८. **अपश्यताम्**=पश्यतः ७.३३.१०. **अपश्यन्**=पश्येयुः १.११३.११. **अपश्यन्त**=पश्यन्ति १.१४६.४. **अपश्यम्**=पश्यामि प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.१८.९. पश्येयम् ३७.१७. **अपश्याम**=सम्प्रेक्षेमहि १.१३९.२. (दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लङि रूपाणि शिति पश्यादेशः । 'अपश्यन्त' प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अपश्याः ये न पश्यन्ति ते (अन्धा जनाः) १.१४८.५. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'पाघ्राध्माधेट्दृशः शः' अ० ३.१.१३७. सूत्रेण कर्तरि शः प्रत्ययः । शिति पश्यादेशः । तत्प्रतिषेधः]

अपश्रितम् आसेवितम् (शिरः=उत्तमाऽङ्गम्) १.८४.१४. **अपश्रितः**=योऽपश्रयति सः (सूर्यः) ५.६१.१९. [अप···श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः । 'आदिकर्मणि क्तः कर्त्तरि चे' ति कर्त्तर्यपि क्तः]

अपस्सम् कर्म, प्र०—अप इति कर्मनामसु पठितम् निघं० २.१. 'व्यत्ययो बहुलम्', इति लिङ्गव्यत्ययः, इदमपि सायणाचार्येण न बुद्धम् १.२.९. **अपसः**=कर्माणि, भा०—अनेकविधानि कर्माणि ३३.७५. अपः कर्म तद्वन्तः सदा कर्मनिष्ठाः (धीरा जनाः) ३४.२. उत्तमानि कर्माणि १.९२.३. सुकर्म्माणः (वरा जनाः) ५.४२.१२. कर्म करने वाले लोग स० प्र० २४६,३४.२. कर्मवन्तः, भा०—कर्मसाधनानि (त्रिधातवः=जीवाः), अत्र विन् प्रत्ययलुक् २१.३७. कर्मठाः (त्रयः=अध्यापकोपदेशकवैद्याः) २८.८. **अपसा**=कर्मणा ४.२.१४. **अपसाम्**=जलानाम् १.९५.४. कर्म्मणाम् १.१६४.४. कर्मकर्तॄणाम् (सज्जनानाम्) ६.६१.१३. **अपसि**=कर्म्मणि ३.१.३. **अपः**=अन्तरिक्षं प्रति ३.३२.५. कर्माणि कर्त्तुम् १.१०.८. जलानीव व्याप्तविद्याः (विद्वज्जनाः) ३.३१.१६. व्याप्तान् प्रकाशान्

२३.१७. सुकर्म ७.४०.४. जलानि प्राणान्वा १०.१. कर्म १.११०.१. प्राणान् कर्म्माणि वा १.६४.१. प्राणान् जलान्यन्तरिक्षाऽवयवान् १.६४.६. बलानि जलानि वा १.९१.२२. कर्माणि जलानि वा १.१०३.५. जलानि प्राणवती प्रजा वा १.१०५.१. प्राणान् वायून्वा ४.२६.२. विमानादिनिर्माणसाधकं कर्म्म ४.३३.९. जलान्यन्तरिक्षं वा ४.४२.४. कर्म्माणि ४.१६.६. अन्तरिक्षलोक और जल आर्याभि० १.१३, ऋ० १.४.१४.१२. सुसंस्कृतानि जलानि अन्व०—प्राणान् ४.१३. या आप्नुवन्ति सर्वान् पदार्थान् ताः (जलानि) १.२३.१८. जलानि वायून्वा १२.१०२. जलानीव कर्माणि ५.३१.८. जलानीव शत्रुप्राणान् ५.३१.६. प्राणा इव वर्त्तमानाः (प्रजाः) १.१३१.४. अन्तरिक्षम् ५.१४.४. अपांसि कर्माणि ५.४१.१४. प्राणान् १४.८. जलानि १.५६.६. उदकानि ६.६०.२. **अप इव**=जलानीव प्राणान् १.५१.१. [अप इत्युदकनाम निघं० १.१२. कर्मनाम निघं० २.१. अपो यत्कर्म नि० ७.२७. अपः प्रजननकर्म नि० ११.३१. आप्यते सुखे येन तद् अपः=अपत्यं सुकर्म वा (उ० द० भा०) आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा' उ० ४.२०८. सूत्रेण असुन् प्रत्ययः]

अपसश्चिम दूरे प्राप्नुयाम गमयेम वा ३८.२०. [अप+सश्चति गतिकर्मा निघं० २.१४. धातोर्लोट् लिङर्थे]

अपसुव दूरं प्रापय, दूरीकर्त्तुं प्रेरय ३३.११. [अप+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्लोट् विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

अपसेध अपनय ६.४७.२९. [अप+षिधु गत्याम् (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अपसेधन् दूरीकुर्वन्, भा०—तिरस्कुर्वन् (देवः=सूर्यः) ३४.२६. निवारयन् (सभापतिः) १.३५.१०. [अप+षिधु गत्याम् (भ्वा०) धातोः शतृ]

अपस्तमः अतिशयेन क्रियावान् (ईश्वरः) १.१६०.४. **अपस्तमा**=अतिशयेन कर्मकर्त्री (सरस्वती=वाक्) ६.६१.१३. [अपस् इति कर्मनाम निघं० २.१. तत आतिशयिकस्तमप् प्रत्ययः। स्त्रियां टाप्]

अपस्पृधेथाम् स्पर्द्धेथाम् ६.६९.९. [स्पर्द्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोर् लङि आथामि द्विवचनं रेफस्य सम्प्रसारणमकारलोपश्च 'अपस्पृधेथामानृचुः०' अ० ६.१.३६. सूत्रेण निपात्यते। अथवा—अप+स्पर्धेर्लङि आथामि सम्प्रसारणमकारलोपश्च निपात्यते छन्दसि]

अपस्फरीः अवृद्धं मा कुर्याः ६.६१.१४.

अपस्यया आत्मनः कर्मेच्छया ५.४४.८. **अपस्यः**=अपस्सु कर्मसु साध्व्यः (विदुष्यः स्त्रियः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति शसः स्थाने सुः १०.७. **अपस्याम्**=आत्मनः कर्मेच्छाम् ७.४५.२. [कर्मवाचिनोऽपस्सुबन्तादात्मन इच्छायामर्थे क्यच्। 'अ प्रत्ययादि' ति क्यजन्तात् स्त्रियाम् 'अ' प्रत्ययः। ततष्टाप्]

अपस्यात् आत्मनोऽपांसि कर्माणीच्छेत् १.१२१.७. [अपस्+क्यच्। 'सनाद्यन्ता धातवः' इति धातुसंज्ञायां लिङ्]

अपस्युवः आत्मनोऽपांसि कर्माणीच्छन्तः (कन्याः) १.७९.१. [अपस्+क्यच् आत्मन इच्छायाम्। 'क्याच्छन्दसि' (अ० ३.२.१७०.) सूत्रेण तच्छीलादिष्वर्थेषु 'उः' प्रत्ययः। ततः प्रथमाबहुवचने रूपम्]

अपहतम् नाशयतम् १.१३२.६. [अप+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लोट्]

अपहतम् विनाशितम् (रक्षः=दुर्गन्धादिदुःखजातम्) १.९. अपहन्यते यत्तत् (रक्षः=दस्युस्वभावः) १.१६. **अपहताः**=अपहिंसिताः (असुराः=दुष्टस्वभावाः प्राणिनः) २.२९. [अप+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

अपहंसि दूरे प्रक्षिपसि १८.५२. [अप+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लट्। अत्र गत्यर्थे प्रयोगः]

अपह्नुवे आच्छादयेयम् १.१३८.४. [अप+ह्नुङ् अपनयने (अदा०) धातोर्लटि रूपम्]

अपह्वरः चलन कम्पन रहित हो आर्याभि० २.४१. ३८.२०. [अप+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोर्लङि मध्यमैकवचने रूपम्। अडभावश्छान्दसः]

अपाक् पश्चिमतः ३.५३.११. पश्चिमायाः ६.३६. [अपाची+अस्ताति। 'अञ्चेर्लुक्' इति अस्तातेर्लुक्। 'लुक्तद्धितलुकी' ति स्त्रीप्रत्ययस्यापि लुक्]

अपाकषन् प्रादुर्भूतोऽस्ति ऋ० भू० ९. प्रकाशित हुए हैं स० प्र० २७३, अथर्व० १०.२३.४.२०. [अप+कष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्लङ्। धातूनामनेकार्थत्वादत्र प्रादुर्भावेऽपि]

अपाकः अपरिपक्वः (जनः) ६.११.४. अप्रशस्यः (त्वष्टा=विद्युत्) प्र०—पाक इति प्रशस्यनाम निघं० ३.८, २०.४४. **अपाकाः**=अपगतमविद्याजन्यं दुःखं यस्य

तम् (विद्वज्जनम्) १.१२९.१. **अपाकाः**=वर्जितपाकयज्ञा यतयः १.११०.२. **अपाके**=अपरिपक्वे (राजनि) ६.१२.२. [पाकः प्रशस्यनाम निघं० ३.८. पाकः पक्तव्यो भवति 'विपक्व प्राज्ञ आदित्य' इत्युपनिषद्वर्णो भवतीत्यधिदैवतम्। पाकः पक्तव्यो भवति विपक्वप्रज्ञ आत्मेत्यात्मगतिमाचष्टे नि० ३.१२.]

अपाका अपगतमविद्याजन्यं दुखं यस्य तम् १.१२९.१. [अप+अकयोर्बहुव्रीहिः। कम् इति सुखनाम निघं० ३.६. तत्प्रतिषेधम् अकम्=दुःखम्]

अपाऽघुक्षत् अपशब्दयेत् ५.४०.८. [अप+घुषिर् अविशब्दने (भ्वा०) धातोर्लुङ् अनित्यमागमशासनमितीटोऽभावे 'शल इगुपधात्०' इति क्सादेशे रूपम्]

अपाङ् अपाऽञ्चतीति (जीवः) १.१६४.३८. [अपोपपदे 'अञ्चु' धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण क्विन्। 'अनिदिताम्०' इत्यादिना नलोपे नुमागमे हल्ङ्यादिसंयोगान्तलोपयोः' 'क्विन् प्रत्ययस्य कुः' इति कुत्वे ङकारे रूपम्]

अपाचीने योऽधोऽञ्चति तस्मिन् (तमसि=अन्धकारे) ७.६.४. [अपाच्प्राति० 'विभाषाञ्चेर्०' अ० ५.४.८. सूत्रेण खः प्रत्ययः खस्येनादेशः]

अपाचीः या अधोऽञ्चन्ति (अपः) ५.४८.२. [अप+अञ्चु गतिपूजनयोः धातोः क्विन् 'अञ्चतेश्चो'-पसंख्यानम्' इति ङीप्। अनिदितामिति नकारलोपे भसंज्ञायाम् 'अच' इत्यकारलोपे 'चौ' इति पूर्वपदस्य दीर्घत्वे रूपम्]

अपात् पिबेत् २.३७.४. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्लुङ् 'गातिस्थाघुपा०' इति सिचो लुक्]

अपात् अविद्यमानाः पादा यस्याः सा विद्या १.१५२.३. पादरहिता (विद्युत्) ६.५९.६. अविद्यमानौ पादौ यस्याः सा, भा०—वेगवती, पादशिर आद्यवयवरहिता (उषाः) ३३.९३. अविद्यमानौ पादौ यस्य सः (वृत्रः=मेघः) १.३२.७. पादरहितः (अग्निः=परमात्मा) ४.१.११. **अपादम्**=अविद्यमानपादम् (मेघम्) ५.३२.८. पादेन्द्रियरहितम् (वृत्रं=मेघम्) १८.६९. पादरहितम् (वृत्रं=मेघम्) ३.३०.८. (नञ्-पादयोर्बहुव्रीहौ छान्दसत्वात् समासान्तलोपे रूपम्]

अपातक्षन् उत्पन्नोऽस्ति ऋ० भू० ९. प्रकाशित हुए हैं स० प्र० २७३, अथर्व० २३.४.२०. [अप+आङ्+तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अपाताम् रक्षेतम् ३८.१३. [पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लङि प्रथमद्विवचने रूपम्]

अपादयत् विनाशयेत् २.११.१० [पद गतौ (दिवा०) धातोर्णिचि लङि रूपम्। धातूनामनेकार्थत्वादत्र विनाशार्थे पदधातुः]

अपाधमत् दूरं धमति ३३.९५. **अपाधमः**=दूरं धम कम्पय १.५१.५. [अप+ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'पाघ्रा०' इत्यादिना धमादेशः शिति। धमतिर्गतिकर्मा। निघं० २.१४.]

अपानती अपानमधोगमनशीलं वायुं निष्पादयन्ती विद्युत् ३.७. [अप+अन प्राणने (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः स्त्रियां ङीप्]

अपानदाः या अपानं दुःखदूरीकरणसाधनं प्रयच्छन्ति ताः (हेतयः=शस्त्राऽस्त्रोन्नतयः) १७.१५. [अपानोपपदे डुदाञ् दाने धातोः कः प्रत्ययः]

अपानपाः योऽपानं पाति (विद्वज्जनः) २०.३४. [अपानोपपदे पा रक्षणे (अदा०) कः प्रत्ययः वचनव्यत्ययेन बहुवचनम्]

अपानम् यो नाभेरर्वाग्गच्छति तम् (प्राणवायुम्) १४.८. **अपानश्च**=सब दुःख दूर करने का उपाय और उसकी सामग्री सं० वि० १४५, अथर्व० १२.५.९. **अपानः**=नाभेरधोगामी वातः १८.२. अपानयति दुःखं येन सः (वायुः) २२.३३. बाह्याद् देशाच्छरीरं प्रविशति स वायुरपानः ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.९. **अपानाय**=अपानिति दुःखं येन तस्मै (दुःखनिवृत्तिहेतवे) १३.२४. दुःखनिवारणाय १३.१९. यो बहिर्देशादाभ्यन्तरं गच्छति तस्मै (वायवे) २२.२३. दुःखनिवृत्तये १५.६४. [अप+अन प्राणने (अदा०) धातोः 'हलश्चे' ति करणे घञ्। भुव इत्यपानः तै० अ० ७.५.३. तै उ० १.५.३. अपानो वा एतवान् श० १.४.३.३. अपानाः अनुयाजाः श० ११.२.७.२७. अन्तर्ह्यपानः। ता० ७.६.१४. अन्तर्यामौ अपान एव कौ० १२.४. अग्निरपानः जै० ३.४.२२.९. अपानो वरुणः श० ८.४.२.६. वरुणस्य सायं (कालः) आसवोऽपानः तै० १.५.३.१. अपानः प्रस्तोता कौ० १७.७. गो० उ० ५.४. अपानस्त्रिष्टुप् ता० ७.३.८. अपानो रथन्तरम् तां० ७.६.१४. अपानो याज्या श० १४.६.१.१२. अपानो वै यन्ताऽपानेन ह्ययं यतः प्राणो न पराङ् भवति ऐ० २.४०. अर्वाङपानः तै० सं० ६.३. १.५. अहरेव प्राणो रात्रिरपानः ऐ० आ० २.१.१५. उपरिष्टाद् अपानः तै० स० ३.४.१.४. एत्यपानस्तदसौ लोकः जे० उ० २.३.३.९.

ऐन्द्रोऽपानः तै० सं० ६.३.११.२. घोषीव ह्ययमपानः ष० २.२. नाभ्या अपानः, अपानान्मृत्युः ऐ० आ० २.४.१. ऐ० उ० १.१.४. मनसा ह्यपानो धृतः काठ० २७.२.]

अपापकाशिनी अपापान् सत्यधर्मान् काशितुं शीलमस्याः सा (तनूः=विस्तृतोपदेशनीतिः) १६.२. [अपापोपपदे काशृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः स्त्रियां ङीप्

अपादधीत् अपहन्ति ५.८. [अपपूर्वाद् हन्तेर्लुङ्। 'लुङि च' इति वधादेशः]

अपापविद्धम् यत् पापयुक्तं पापकारि पापप्रियं कदाचिन्न भवति तद् (ब्रह्म) ४०.८. नैव तद् ब्रह्म पापयुक्त पापकारि च कदाचिद् भवति ऋ० भू० ३६, ४०.८. जिसमें पापाचरण का अभाव होने से क्लेश, दुःख, अज्ञान कभी नहीं होता वह (ब्रह्म=परमेश्वर) स० प्र० २४४, ४०.८. परमात्मा कभी अन्याय नहीं करता क्योंकि वह न्यायकारी ही है आर्याभि० २.२, ४०.८. [अपाप+व्यध ताडने (दिवा०) धातोः क्तः। किति 'ग्रहिज्या०' इत्यादिना सम्प्रसारणम्]

अपापोहति दूरीकर्त्तुं वितर्कयति ५.३४.३. [अप+ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लट् 'उपसर्गादस्यत्यूहोर्वा वचनम्' इति वा परस्मैपदम्। अप शब्दस्य द्वित्वम्]

अपाऽभरत् अपभरति १.१६१.१०. [अप+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अपाऽभिचुच्यवत् अपाभिच्यावयति २.४१.१०. (अप+अभि+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्णिचि लुङि रूपम्। अडभावश्च]

अपाऽभूत तिरस्कृता भवत ४.३४.११. [अप+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङि मध्यमबहुवचने रूपम् 'गातिस्थाघुपाभूभ्यः०' इति सिचो लुक्]

अपाम आप्नुयाम १०.२१. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्लुङि रूपम् 'गातिस्था०' इति सिचो लुक्। अनेकार्थत्वाद् धातूनामत्राप्नोत्यर्थे]

अपाम् प्राणिनां जलानामिव ५.४१.१०. प्राणानां जलानां वा १.६७.५. व्यापकानां प्राणानां जलानां वा १३.२. प्राप्तानां मित्रशत्रूदासीनानां पुरुषाणाम् १.१००.११. प्राणानां जलानां वा प्र०—आप इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.३. अनेन चेष्टादिव्यवहारप्रापकाः प्राणा गृह्यन्ते 'आप इत्युदकनामसु पठितम् निघं० १.२, ३.१२. ये व्याप्नुवन्ति सर्वान् पदार्थानन्तरिक्षादयस्तेषाम् १.२२.१६. अन्तरिक्षस्य जलस्य प्राणानां वा २.४.२. आप्नुवन्ति याभिस्तासामुदकानाम् ८.२४. अन्तरिक्षस्य, प्र०—आप इत्यन्तरिक्षनाम निघं० १.३, १.१६४.५२. विद्याविज्ञानयोगव्यापिनाम् (संन्यासिनाम्) १.१५८.६. व्याप्नुवतां विद्युदादीनाम् १३.५३. प्राप्तव्यानां पदार्थानाम् १३.५३. उदकानाम् १.८५.९. जलानाम् ७.१६. [आपः=अन्तरिक्षनाम. नि० १.३. उदकनाम निघं० १.१२. पदनाम. निघं० ५.३. आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'आप्नोतेर्ह्रस्वश्च' उ० २.५८ सूत्रेण रूपसिद्धिः] तद्या एताश्चान्द्रमस्य आगामिन्य आपो भवन्ति रश्मयस्ताः नि० ५.४२. आपः आयनाः (आयनानि वा) नि० १२.३५. आप तद्यदब्रवीत् (ब्रह्म) आभिर्वा अहमिदं सर्वमप्स्यामि यदिदं किं चेति तस्मादापोऽभवंप्तदपामप्त्वमाप्नोति वै स सर्वान् कामान् यान् कामयते गो० पू० १.२. सेदं सर्वमाप्नोद् यदिदं किं च यदाप्नोत्तस्मादापः श० ६.१.१.९. अद्भिर्वा इदं सर्वमाप्तम्. श० १.१.१.१४. आपो ह वा इदमग्रे सलिलमेवास ता अकामयन्त कथं नु प्रजायेमहीति श० ११.१.६.१. प्राणा वा ऽआपः तै० ३.२.५.२. तां० ९.९.४. आपो वै प्राणाः श० ३.८.२.४. प्राणो ह्यापः जै० उ० ३.१०.९. अमृतं वा आपः श० १.९.३.७, ४.४.३.१५. अमृतत्वं वा आपः कौ० १२.१. शान्तिरापः श० १.२.२.११. शान्तिर्वा आपः ऐ० ७.५. आपो हि शान्तिः तां० ८.७.८. शान्तिर्वै भेषजमापः कौ० ३.६.७.८.९. गो० उ० १.२५. आपो ह वा ऽओषधीनां रसः श० ३.६.१.७. रसो वाऽआपः श० ३.३.३.१८, ३.९.४.७. आपो वै सर्वस्य शान्तिः प्रतिष्ठा ष० ३.१. आपो वाऽअस्य सर्वस्य प्रतिष्ठा श० ४.५.२.१४. आपः सत्ये (प्रतिष्ठिताः) ऐ० ३.६. गो० उ० ३.२. श्रद्धा वा आपः तै० ३.२.४.१. मेध्या वा आपः श० १.१.१.१, ३.१.२.१०. आपो वै क्षीररसा आसन् तां० १३.४.८. ऊर्ग्वा आपो रसः कौ० १२.१. अन्नं वा ऽआपः श० २.१.१.३, ७.४.२.३७. अन्नमापः कौ० १२.३.८. आपोऽन्नम् ऐ० ६.३०. आपो वै रक्षोघ्नीः तै० ३.२.३.१२. वज्रो वाऽआपः श० १.१.१.१७. वीर्यं वाऽआपः श० ५.३.४.१. आपो वा ऽअर्कः श० १०.६.५ २. आपो वा ऽअवकाः श० ७.५.१.११. देव्यो ह्यापः श० १.१.३.७. यज्ञो वा आपः कौ० १२.१. श० १.१.१.१२. आपो वै यज्ञः ऐ० २.२०. आपो रेतः श० ३.८.४.११. पशवो वा एते यदापः ऐ० १.८. आपो वै सर्वा देवताः ऐ० २.१६. आपो वै सर्वे कामाः श० १०.५.४.१५. आपो वै सर्वे देवाः श०१०.५.४.१४. आपो वै देवानां प्रियं धाम तै० ३.२.४.२. सौम्या ह्यापः ऐ० १.७. आपो वरुणस्य पत्न्य आसन् तै० १.१.३.८. अग्निना वाऽआपः सुपत्न्यः श० ६.८.२.३.

अस्ति वै चतुर्थो देवलोक आपः कौ० १८.२. अप्सु पृथिवी (प्रतिष्ठिता) जै० उ० १.१०.२. आपः स्थ समुद्रे श्रिताः। पृथिव्याः प्रतिष्ठाः तै० ३.११.१.५. प्रातः सवनरूपा ह्यापः कौ० १२.३. अथ यद्यपः शूद्राणां स भक्षः ऐ० ७.२९. योषा वा ऽआपो वृषाग्निः श० १.१.१.१८, २.१.१.४. आपो वै सरिरम् श० ७.५.२.१८. आपो वा इदमग्रे सलिलमासीत् तै० १.१.३.५. आपो वा इदमग्रे महत्सलिलमासीत् जै० उ० १.५६.१. आपः एष वै रयिर्वैश्वानरः श० १०.६.१.५. आपो व्यानः जै० उ० ४.२२.९. शुक्रा ह्यापः तै० १.७.६.३. चन्द्रा ह्यापः तै० १.७.६.३. आपस्सावित्री जै० उ० ४.२७.३. आपो वै पुष्करम् श० ६.४.२.२, ७.४.१.८. आपो वै पुष्करपर्णम् श० ७.३.१.९. आपो वै प्रजापतिः परमेष्ठी यजु० १४.९. आपो हि पयः कौ० ५.४. गो० उ० १.२२. अपामेष ओषधीनां रसो यत्पयः श० १२.८.२.१३. आपो ह्येतस्य (सोमस्य) लोकः श० ४.४.५.२१. आपो हि रेतः तां० ८.७.९. आपो रेतः प्रजननम् तै० ३.३.१०.३. घर्मे ह्यापः श० ११.१.६.२४. आपः प्रोक्षण्यः ऐ० ५.२८. आपो वै सूदोऽन्नं दोहः श० ८.७.३१. आपः स्वरसमानः कौ ० २४.४. रेवत्यः आपः श० १.२.२.२. आपो वै रेवतीः तै० ३.२.८.२. वज्रो वाऽआपः श० १.७.१.२०. आप इति तत् प्रथमं वज्ररूपम् कौ० १२.२. आप वै विधाः श० ८.२.२.८. आपो वै द्यौः श० ६.४.१.९. आपो दिव ऊधः श० ६.७.४.५. आपो वै दिव्यं नभः श० ३.८.५.३. आपो वै वरेण्यम् जै० उ० ४.२८. आपो वै सवः श० ६.१.३.११. आप एव सर्वम् गो० पू० ५.१५. आपो वै मरुतः ऐ० ६.३०. कौ० १२.८. अन्नं वाऽअपां पाथः श० ७.५.२.६०. आपो वै सहस्त्रियो वाजः श० ७.१.१.२२. गिरिबुध्ना उ वा आपः श० ७.५.२.१८. वै राजीर्वा आपः कौ० १२.३.]

अपामतिम् अज्ञानम् १७.५४. [अप+आङ्+मन ज्ञाने (अदा०) धातोः स्त्रियां भावे क्तिन् 'मन्त्रे वृषेष०' अ० ३.३.९६. सूत्रेण निपात्यते]

अपामार्ग रोगनिवारकोऽपामार्ग औषधिरिव पापदूरीकर्त्तः (सत्पुरुष !) ३५.११. [अप+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोः 'हलश्चे' ति संज्ञायां घञ् 'उपसर्गस्य घञ्यमनुष्ये०' इत्युपसर्गस्य दीर्घत्वम्। प्रतीचीनफलो वा अपामार्गः श० ५.२.४.२०]

अपायि पाति ६.४४.८. पिबति ६.४४.१६. पान किया २.१९.१. [पा पाने (भ्वा०) पा रक्षणे वा (अदा०) धातोः कर्मणि लुङि चिणि रूपम्]

अपारम् अपारविद्यम्, गम्भीराऽऽशयम् (इन्द्रं=राजानम्) ४.१७.८. **अपारः**=पाररहितः (महिमा) ५.८७.६. **अपाराम्**=पाररहिताम् (भूमिम) ३.३०.९. **अपारे**=पाररहितेऽपरिमिते (रजसी=द्यावापृथिव्यौ) ४.४२.६. अगाधे द्यावापृथिव्यौ, प्र०—अपारे इति द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०, ३.१.१४. अविद्यमानाऽवधी (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ३.३०.५. [अपारे द्यावापृथिवी नाम निघं० ३.३०. दूरपारे नि० ६.१.]

अपारयत् दुःखात् पारयेत् ४.३०.१७. [पारकर्मसमाप्तौ (चु०) धातोर्लङ्]

अपाऽवधीत् अपहन्ति, प्र०—अत्र क्रियापदे लडर्थे लुङ् 'व्यपेत्येतस्य प्रातिलोम्यं प्राह नि० १.३, ५.८. पृथक्करणतया हन्ति ५.८. [अप+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लुङ् 'लुङि चे' ति हन्तेर्वधादेशः]

अपावपत् अधो वपति २.१४.६. **अपाऽवपः**=दूरे प्रक्षिप १.१३३.४. [अप+टुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अपाऽऽवः आवृणोति ३.५.१. दूरीकरोत्युद्घाटयति, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः लडर्थे लुङ् 'बहुलं छन्दसि' इत्याडभावश्च १.११.५. निवारयति १.११३.१४. **अपावृणोत्**=दूरीकरोति ३.४४.५. अपवृणोति १.१३०.३. आच्छादयति ४.२८.१. **अपावृणोः**=दूरीकर्त्तुं वृणु १.५१.३ अपवृणुयाः १.१३२.४. दूरं वृणुयाः १.५१.४. **अपावृत**=दूरीकुर्वन्ति ५.४५.१. [अप+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः सामान्ये लुङ्। 'मन्त्रे घसह्वरणशवृ०' सूत्रेण लेर्लुक् छान्दस आडागमः अपावृणोत्=अप+वृञ् वरणे+लङ् अपावृत अप+वृञ् वरणे+लुङ्]

अपावृतम् दानाय भोगाय वा प्रसिद्धम् (राधः=धनम्) १.५७.१. [अप+आङ्+वृञ् वरणे धातोः क्तः प्रत्ययः]

अपाऽसेधत् अपसेधते ६.४७.२१. **अपाऽसेधः**=निवारयतु ५.३१.७. [अप+षिधु गत्याम् (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अपाऽस्य दूरीकुरु ३.२४.१. [अप+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लोटि मध्यमैकवचने रूपम्]

अपांसि न्याय्यानि कर्माणि १.६८.३. [अपस् इति कर्मनाम, तस्य प्रथमाद्वितीययोर्बहुवचने रूपम्]

अपाः पिब ३.५३.६. **अपिबत्**=पिबति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.३२.३. पिबेत् ३.४८.४. गृह्णीयात् १९.७५. **अपिबः**=पिबेः ५.२९.११. पिब ४.३५.७. पिबसि ३.३२.१०. पिबति ३.३२.९. पी चुके हो ७.३५.

अपुः=पिबन्ति १.१६४.७. पिबन्तु २१.६०. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्लुङ्। सिचो लुक् 'गातिस्थाघु०' इत्यादिसूत्रेण। 'अपिबत्, अपिबः' इत्येनयोर्लङ्]

अपाः पाहि ६.६६.१. [पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लुङ् छान्दसत्वात् सिचो लुक्]

अपि निश्चयाऽर्थे १.१४०.७. पदार्थसम्भावनायाम् ७.३८.३. निश्चय करके सं० वि० ११०, १.१७६.१. भी सं० वि० १६८, १४.२.२६, १.१२१.१३. कुछ भी पं० वि० [अपीति संसर्गम् नि० १.३]

अपिकक्षे पार्श्वे ४.४०.४. निश्चितपार्श्वाऽवयवे ६.१४. [अपि+कष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः 'वृतॄ-कषिभ्यः' उ० ३.६२. सूत्रेण स प्रत्यये रूपम्। कक्षो गाहतेः क्स इति नामकरणः। ख्यातेर्वाऽनर्थकोऽभ्यासः। किमस्मिन् ख्यानमिति वा। कषतेर्वा तत्सामान्यान्मनुष्य कक्षो बाहुमूलसामान्यादश्वस्य नि० २.२.]

अपिकक्ष्यम् कक्षासु विद्याप्रदेशेषु भवा बोधाः कक्ष्यास्तान् प्रति वर्त्तते तत् (त्वाष्ट्रम्=विज्ञानम्) १.११७.२२. [कक्ष्या रज्जुरश्वस्य नि० २.२. कक्ष्याः प्रकाशयन्ति कर्माणि नि० ३.६. अपि+कक्षाप्राति० भवार्थे यत्]

अपिकर्णे आच्छादितश्रोत्रे ६.४८.१६. [अपिहितौ कर्णौ यस्येति बहुव्रीहौ 'प्रादिभ्यो धातुजस्य०' अ० २.२.२४. वार्त्तिकेनोत्तरपदलोपः]

अपिजाय निश्चयेन जायमानाय (विजयाय) ६.२०. स्वीकाराय १८.२८. उत्पन्नाय (गृहाय) २२.३२ [अपि+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः प्रत्ययः]

अपिजुवा प्रेरके (उषासानक्ता=अहोरात्रे) २.३१.५. [अपि+जु गतौ (सौत्रो धातुः) धातोः 'क्विप् वचिप्रच्छिश्रि०' उ० २.५७. सूत्रेण क्विप्]

अपिदधामि प्रक्षिपामि ११.७७. [अपि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लट्]

अपिधानवन्तम् आच्छादनयुक्तम् (विद्यैश्वर्यवन्तं विद्वज्जनम्) ५.२६.१२. [अपि+डुधाञ् धारणपोषणयोर्धातोर्ल्युट्। ततो मतुप्]

अपिधाना अपिधानानि मुखाच्छादनानि १.१६२.१३. आवरणानि १.५१.४. आच्छादनानि (पात्राणि) २५.३६. [अपि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः करणे ल्युट्]

अपिधीन् सद्गुणधारकान् दुःखाऽऽच्छादकान् (विद्वज्जनान्) १.१२७.७. [अपि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'उपसर्गे घोः किरि' ति किः प्रत्यये आल्लोपे रूपम्]

अपिन्वत् सेवते १.६२.६. सेवेत सिञ्चेत वा ४.१६.७. **अपिन्वतम्** जलादिभिः सिञ्चतम् १.११७.२०. सेवन करो १.११८.८. **अपिन्वम्** सेवे ४.४२.४. **अपिन्वः** पिन्व २.११.२. [पिवि सेवने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अपिन्वत् सिञ्चति सेवते वा ३.५५.१३. विद्या और उपदेश से संयुक्त किया करो सं० वि० १६८, १०.७२.७. [पिवि सेवने (भ्वा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अपिप्रत पूरयेत् ५.३४.२. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्णिचि लुङि रूपम्]

अपिप्राणी निश्चितप्राणबलप्रदा (वेदविद्या) १.१८६.११. [अपि+प्र+अन प्राणने (अदा०) धातोः 'हलश्च' इति करणे घञ् ततो मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपावि' ति ईकारप्रत्ययः]

अपिप्रियम् प्रीणामि प्र०—ण्यन्ताल्लुङ् प्रयोगोऽयम् २६.७. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ (क्र्या०) धातोर्णिचि लुङि च्लेश्चङि रूपम्]

अपिमृष्ठाः अपिसहेः, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् ३.३३.८. [अपि+मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लङ् विकरणव्यत्ययेन श्यनो लुक् अडभावश्च]

अपियन्तम् म्रियमाणम् (विद्वज्जनम्) १.१६२.२०. योऽप्येतितम् (आत्मानम्=स्वस्वरूपम्) २५.४३. [पि गतौ (तुदा०) धातोः शतृ तत्प्रतिषेधेऽगतिशीलम् अथवा अपि+इण् गतौ धातोः शतृ]

अपियन्ति प्राप्नुवन्ति ३४.११. [अपि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लटि प्रथमबहुवचने रूपम्]

अपिरिप्ताय सकलविद्योपचयनाय (कण्वाय=मेधाविने), प्र०—अत्र लिपधातोर्निष्ठा, कपिलकादित्वाल्लत्वविकल्पः १.११८.७. [अपि+लिप उपदेहे (तुदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः लकारस्य रेफः]

अपिवातयन्तः शीघ्रं गमयन्तः (विद्वज्जनाः) १.१६५.१३. [अपि+वातं करोतीति विग्रहे 'तत्करोति०' वार्त्तिकेन णिच् ततश्शतृप्रत्ययः]

अपिवृतम् सुखबलैर्युक्तम् (अनीकं=सैन्यम्) १.१२१.४. आच्छादितम् २.११.५. [अपि+वृञ् आवरणे (चु०) धातोः क्तः णेर्लुक् च]

अपिशर्वरे निश्चिते रात्रावन्धकारे ३.६.७. [अपि+शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'कॄगॄशॄवृञ्०' उ० २.१२१.

सूत्रेण ष्वरच् प्रत्ययः शृणाति हिनस्ति प्रकाशमिति विग्रहः द्वादशस्तोत्राण्यपि शर्वराणि ऐ० ४.६. अपि शर्वराणि खलु वा एतानि छन्दांसि ऐ० ४.५. तद्यदपि शर्वर्या अपि स्मसीत्यब्रुवंस्तदपि शर्वराणामपि शर्वरत्वम् गो० २.५.१. शर्वरी वै नाम रात्रिः जै० १.२०९.]

अपिस्थितम् स्थिर हुए (विद्वान्) को १.१४५.४. [अपि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः 'द्यतिस्यति०' इतीकारादेशः]

अपिहितम् आच्छादितम् (बिलं=गर्त्तम्) १.३२.११. **अपिहितानि**=आच्छादितानि (अश्वा=भोक्तव्यानि वस्तूनि) ४.२८.५. **अपिहितेव**=आच्छादितानीव (खानि=इन्द्रियाणीव) ४.२८.१. [अपि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः 'दधातेर्हिरि' ति धातोर्हिरादेशः]

अपिꣳशत् अवयवयति २९.३४. **अपिंशत**=अवयवीकुरुत १.११०.८. विभक्तान् कुरुत १.१६१.९. अवयवयन्ति, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शब्विकरणोऽपि ३.६०.२. **अपिंशन्**=साऽवयवान् कुर्वन्ति ४.३३.४. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोर्लङ् मुचादित्वान् नुमागमः अपिंशत् अकरोत् नि० ८.१४.]

अपीच्यम् येऽप्यश्वन्ति प्राप्नुवन्ति तेषु साधुम् (प्रकाशरूपं व्यवहारम्) १.८४.१५. स्वगुणैर्निश्रितम् (नाम=आख्या), प्र०—अपीच्यमिति निर्णयाऽन्तर्हितनाम निघं० ३.२५, २.३५.११. **अपीच्येन**=येनाऽयमश्वति तत्र भवेन (सहसा=बलेन) ७.६०.१०. [अपीच्यमिति निर्णीतान्तर्हितनाम निघं० ३.२५. अपीच्यमपचितं, अपगतम्, अपहितम् अन्तर्हितं वा नि० ४.२४]

अपीजुवा प्रेरके (उषासानक्ता=प्रत्यूषरात्र्यौ) २.३१.५. [अपि+जु गतो (सौत्रो धातुः) धातोः क्विप् दीर्घश्च 'क्विप् वचिप्रच्छ्या०' वार्त्तिकेन]

अपीतम् अपि संयोगे इतं प्राप्तम् (पाथः=अन्नम्), प्र०—अपीति संसर्गं प्राह निरु० १.३, २.१७. [अपि+इण् गतौ+क्तः]

अपीतेः विनाशनात् १.१२१.१०. [अपि+इण् गतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

अपीत्य निश्चयेन प्राप्य २.४३.२. निश्चय से प्राप्त होके आर्याभि० १.५२. [अपि+इण् गतौ धातोः क्त्वा। क्त्वो ल्यप् समासे]

अपीपयन्त प्याययन्ति ७.३६.३. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्यङ् 'लिड्यङोश्च' अ० ६.१.२९. सूत्रेण पी आदेशे लङि रूपम्]

अपीव समुच्चिता इव ३.३८.८. अतीव ७.१८.६. [अपि+इव]

अपीवृतम् आच्छादितम् (अहिं=मेघम्) २.११.५. [अपि+वृञ् आवरणे (चु०) धातोः क्विप् 'नहिवृतिवृषि०' अ० ६.३.११६. सूत्रेण दीर्घः]

अपीवृताः ये निश्चयेन वर्त्तन्ते (विद्वज्जनाः) १.१९०.६ [अपि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः 'अन्येषामपि दृश्यते' इति पूर्वपदस्य दीर्घः]

अपीहि निश्चयेन प्राप्नुहि जानीहि वा ८.५०. [अपि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट् 'सेर्ह्यपिच्चे' ति हिरादेशः]

अपुपोत् पवित्रं कुर्यात् ३.२६.८. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोर्यङ्लुकि, अभ्यासस्यागुणत्वे रूपम्]

अपुनन् पवित्र करती हैं ३२.९. [पूञ् पवने (स्वा०) धातोर्लङ् 'प्वादीनां ह्रस्व' इति ह्रस्वः]

अपुरुषघ्नः यः पुरुषान् न हन्ति सः (शूरो जनः) १.१३३.६. [पुरुष+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति बहुलवचनाट् टक् नञ्समासः]

अपुष्पाम् कर्मोपासनाऽनुष्ठानाऽऽचार-विद्यारहिताम् (वाचम्) ऋ० भू० ३१७, १०.७१.५. साधनरूप पुष्पों से रहित (वाणी) पं० वि०। **अपुष्पा**=पुष्परहिताः (ओषधयः) १२.८९. [अपुष्पाम्=अपुष्पा वाग् भवतीति वा, किञ्चित् पुष्पफलेति वा अर्थं वाचः पुष्पफलमाह याज्ञदैवते पुष्पफले देवताध्यात्मे वा नि० १.२०]

अपूपम् पुआ ३.५२.७. [नञ्उपपदे पूञ् पवने (क्र्या०) धातोर्बाहुलकात् पः प्रत्ययः इन्द्रियमपूपः ऐ० २.२४]

अपूपवन्तम् प्रशस्ता अपूपा विद्यन्ते यस्य तम् (आप्तं विद्वांसम्) ३.५२.१. सुष्ठु सम्पादिताऽपूपसहितम् (अन्नरसादिकम्) २०.२९. [अपूपप्राति० प्रशंसार्थे मतुप्]

अपूर्वम् अनुत्तमगुणकर्मस्वभावम् (मनः) ३४.२. अपूर्वसामर्थ्ययुक्त (मन) स० प्र० २४६, ३४.२.

अपूर्व्यम् अपूर्वेषु दिव्येषु गुणेषु कुशलम् (राजानम्) ३.१३.५. अपूर्वे भवम् (उदकम्) ५.५६.५. **अपूर्व्यः**=पूर्वैः कृतः पूर्व्यो न पूर्व्योऽपूर्व्यः (सभेशः) १.१३४.६. **अपूर्व्या**=न पूर्वैः कृता (उषाः), प्र०—अत्र 'पूर्वैः कृतमिनियौ च, अ० ४.४.१३४ अनेनाऽयं सिद्धः १.४६.१. न विद्यते पूर्वो यस्मात् सोऽपूर्वस्तत्र भवानि (वचांसि=वचनानि) ६.३२.१. [पूर्व-

प्राति० कृतार्थे 'पूर्वैः कृतमिनियौ च' अ० ४.४.१३४ सूत्रेण यः प्रत्ययः नञ्समासः]

अपृच्छत पृच्छन्तु १.१६१.४. **अपृच्छम्**=पृच्छेयम् ५.३०.२. [प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोर्लङ्]

अपृच्यन्त पृच्यन्ति १.११०.४. पृची सम्पर्चने (अदा०) धातोर्लङ्, विकरणव्यत्ययेन श्यन्]

अपृणक् तर्पयेत् ४.१६.७. **अपृणत्**=तर्पयति २.२२.२. पृणाति व्याप्नोति ३३.७५. पूरयति ३.२.७. प्रपूरयेत् ३.३४.१. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लङ् धातूनामनेकार्थत्वात् तर्पणपूरणयोरपि]

अपृणः पुष्णीयाः ३.३.१०. **अपृणाः**=पिपर्त्ति ३.६.२. पूरय ७.१३.२. **अपृणात्**=पृणाति पालयति ४.१८.५. [पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोर्लङ् 'प्वादीनां ह्रस्व' इति ह्रस्वः]

अपृणतः अपालयतः (दुष्टान् जनान्) ५.७.१०. दुःखदातुर्दुर्जनात् ६.४४.११. [नञ्युपपदे पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोः शतरि द्वितीयाबहुवचने]

अपृणन्तम् धर्मेणाऽपुष्यन्तमन्यानपोषयन्तम् (जनम्) १.१२५.७. **अपृणन्तः**=अपूर्णा अपालयन्तो वा (अविद्वज्जनाः) ५.४२.६. [नञ्युपपदे पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अपृतन्यत् आत्मनः पृतनां युद्धमिच्छतीति (मेघः), प्र०—अत्र 'कव्यध्वरपृतनस्य०' अ० ७.४.३९. इत्याकारलोपः १.३२.७. [पृतनाः मनुष्यनाम निघं० २.३. संग्रामनामनिघं० २.१७. तत आत्मन इच्छायां क्यच् । 'कव्यध्वर पृतनस्य०' अ० ७.४.३९ सूत्रेणाकारलोपः ततो लङ्]

अपेक्षन्ते समालोकन्ते १७.६८. [अप+ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्लट्]

अपेजते कम्पते ५.४८.२. [अप+एजृ कम्पने (भ्वा०) धातोर्लट् एजति गतिकर्मा निघं० २.१४]

अपेत त्यजत १२.४५. [अप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोटि मध्यमबहुवचने]

अपेशसे अविद्यमानं पेशः सुवर्णं यस्य तस्मै नराय २९.३७. दारिद्र्यविनाशाय ऋ० भू० ३०८. निर्धनतादारिद्र्यादिदोषविनाशाय १.६.३. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोरसुन् प्रत्ययः । पेशः हिरण्यनाम निघं० १.२. पेशः रूपनाम निघं० ३.७. पेश इति रूपनाम, पिशतेर्विपिशितं भवति निघं० ८.११. ततो नञ्बहुव्रीहिः]

अपैति दूरं गच्छति १.१२४.८. प्राप्नोति १.१२३.७. [अप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

अपो दूरीकरणे ३५.११.

अपोच्छत् अपराद्धं विवासयति १.४८.८. [अप+उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोर्लेट्]

अपोदकाभिः अपगत उदकप्रवेशो यासु ताभिः (नौभिः) १.११६.३. अपगतं दूरीकृतं जललेपो यासां ताभिः सचिक्कणाभिः (नौभिः) ऋ० भू० १९०. [अप-उदकपदयोर्बहुव्रीहिः 'प्रादिभ्यो धातुजस्य०' वार्त्तिकेनोत्तरपदलोपश्च]

अपोर्णु दूरमाच्छादय १९.५३. **अपोतेर्णु**=दूरीकर्त्तुमाच्छादयति १.९२.४. उद्घाटयति, प्रकाशयति, आच्छादकमन्धकारं निवारयति १.१५६.४. आच्छादयति २.३४.१२. [अप+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोर्लोटि लटि च रूपाणि हेर्लोपश्छान्दसः]

अपोर्णुवन्तः निवारयन्तः (सूर्यकिरणाः) ४.४५.२. अविद्यादिदोषैरनावरन्तः (विद्वज्जनाः) १.१९०.६. [अप+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अपोवसानाः जलपात्राच्छादिताः (हरयः=अग्न्यादयोऽश्वाः) ऋ० भू० १९८. [अपः जलनाम निघं० १.१२. वस आच्छादने (अदा०) धातोः शानचि वसानः ततः समासः]

अपोसुव दूरं प्रेरय ३५.११. [अपो=दूरीकरणे षुप्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्लोट् व्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

अपोहते अपसा सुवर्णेन प्राप्ते, भा०—सुवर्णादियुक्ते गृहे, प्र०—आप इति हिरण्यनाम निघं० १.२, २६.२६. [आपः=हिरण्यम् हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्गत्यर्थात् क्त-प्रत्यये हतम् ततः समासः]

अपोहामि दूरं विविधतर्केण क्षिपामि २.१५. वर्जनतया विविधां शिक्षां करोमि २.१५. [अप+ऊह वितर्के धातोर्लट् 'उपसर्गादस्यत्यूह्योर्वा वचनम्' इति वा परस्मैपदम्]

अप्तुरम् योऽपः प्राणान् जलानि वा तोरयति प्रेरयति तम् (अग्नि=विद्वज्जनम्) ३.२७.११. प्राणप्रेरकम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.५१.२. **अप्तुरः**=मनुष्याणामपः प्राणान् तुतुरति विद्यादिबलानि प्राप्नुवन्ति प्रापयन्ति च ते (विश्वेदेवाः=समस्ता विद्वज्जनाः), प्र०—अयं शीघ्रार्थस्य तुरेः क्विबन्तः प्रयोगः १.३.८. अप्स्वन्तरिक्षे त्वरन्ति ते (आशवः=अश्वाः) १.११८.४. प्राप्नुवन्तः (मनीषिणोजनाः) २.२१.१५. [अप इति निघण्टौ कर्मनाम, उदकनाम च, तस्मिन्नुपपदे तुर त्वरणे (जु०) धातोर्णिजन्तात् क्विप् णेर्लोपः पर्णशुषिवत्]

अप्तुः व्यापकः (मनुष्यः) ५.३५. [आप्नोति व्याप्नोति

सर्वान् पदार्थान् इति विग्रहे आप्लृ व्याप्तौ धातोः 'आप्नोतेर्ह्रस्वश्च' उ० १.७५ सूत्रेण तुः प्रत्ययो धातोर् ह्रस्वश्च प्रजा वा अप्तुरित्याहुः गो० उ० ५.६]

अप्तूर्यम् कर्माऽनुष्ठानाय त्वरितव्यम् (अविरोधनम्) ३.१२.८. [अप इति कर्मनाम । निघं० २.१. तुर त्वरणे (जु०) धातोर् ण्यत् 'हलि चे' ति दीर्घः]

अप्तूर्ये अपोभिः कर्मभिः प्रेरयितव्ये (व्यवहारे) ३.५१.६. ['अप्तूर्यम्' पदवत्]

अप्त्यस्य अप्तौ विस्तीर्णे संसारे भवस्य (किरणसमूहस्य) १.१२४.५. [आप्लृ व्याप्तौ धातोः 'आप्नोतेर्ह्रस्वश्च' उ० १.७५. सूत्रेण तु प्रत्ययो ह्रस्वश्च । ततो भवार्थे यत् उकारलोपश्छान्दसः]

अप्नवानः येऽप्नान् विद्यासन्तानान् कुर्वन्ति ते (अन्व०—विद्वांसः) प्र०—अत्र अप्न इत्यस्मात् 'तत्करोति तदाचष्टे' अ० ३.१.२६. इत्यनेन वार्तिकेन करोत्यर्थे णिच्, ततो 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते, इति वनिप् 'अप्न' इति अपत्यनामसु पठितम् निघं० २.२, ३.१५. रूपवन्तः (विद्वज्जनाः), प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपः' इति मतोस्तलोपः 'अप्न इति रूपनाम' निघं० ३.५, १५.२६. पुत्रपौत्रादियुक्ताः (भृगवः=मनुष्याः) ४.७.१. सुसन्तानयुक्ताः सुशिष्याः ३३.६. [आप्लृ-व्याप्तौ धातोः 'आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा' उ० ४.२०८ सूत्रेणासुन् प्रत्यये 'अप्नः' रूपम् आप्यते सुखं येनेति विग्रहः। अप्नः कर्मनाम निघं० २.१. अपत्यनाम निघं० २.२. रूप नाम निघ० ३.७. अप्नः प्राति० 'तत्करोति' वार्तिकेन णिच् ततो वनिप् प्रत्यये प्रथमाबहुवचने रूपम् अथवा अप्नप्राति० मतुप् तकारलोपश्च अप्नवाना बाहुनाम निघं० २.४.]

अप्नःस्थः अपत्यस्थः (विद्याशिक्षासुबोधः) ६.६७.३. [अप्न इत्यपत्यनाम निघं० २.२. तस्मिन्नुपपदे 'सुपि स्थः' इति कः प्रत्ययः]

अप्नस्वतिषु प्रशस्तमप्नोऽपत्यं विद्यते यासां तासु (वाणीसु) १.१२७.६. **अप्नस्वतीम्**=प्रशस्ताऽपत्ययुक्ताम् (वाचम्=वाणीम्) १.११२.२४. प्रशस्तान्यपांसि कर्माणि विद्यन्ते यस्यास्ताम् (वाणीं प्रज्ञां वा) ३४.२६. [अपत्यार्थक-अप्नस् प्राति० मतुप् 'मादुपधायाश्च०' अ० ८.२.९ सूत्रेण मकारस्य वकारः 'तसौ मत्वर्थे' इति भसंज्ञायां पदसंज्ञावाचनाद् रुत्वं न स्त्रियां ङीप् ह्रस्वश्च]

अप्नः अपत्यम् १.११३.२०. [अप्नः पदनाम निघं० ४.३. अप्न इति रूपनाम आप्नोतीति सतः निघं० ३.११. अपत्यनाम निघं० २.२.]

अप्यम् अप्सु प्राणेषु भवाम् [भागम्=अंशम्) २.३८.७.

अप्यः अप्सु सत्कर्मसु भवः (सत्पुत्रः) ६.६७.९. योऽपोऽर्हति (विद्यार्थी) १.१४५.५. **अप्यानि**=अप्सु भवानि (पुरीषाणि=उदकानि) ६.४९.६. **अप्याः**=अप्सु भवा नौयायिनो मुक्ताद्याः पदार्था वा ७.३५.११. अप्सु अन्तरिक्षे भवाः (दिवः=ज्योतींषि) ३.५६.५. अप्सु भवाः (पदार्थाः) ६.५०.११. **अप्येभिः**=अप्सु भवैः (मेघजलैः) ४.५५.६. [आप्लृ व्याप्तौ धातोः 'आपः कर्मा०' उ० ४.२०८. सूत्रेणासुनि 'अपः' । ततो भवार्थे यत् प्रत्ययः । अप्सु शृतम् अद्भिः संस्कृतमिति वा नि० ११.३९. अप्या उदकानि निघं० ११.३६]

अप्येतु निश्चयेनैतु ८.६१. [अपि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

अप्रकेतम् रात्रिरूप में जानने के अयोग्य (जगत्) स० प्र० २०७, १०.१२९.३. [प्र+कि ज्ञाने धातोर्बाहुलकात् तन् । केत इति प्रज्ञानाम निघं० ३.९. नञ्समासः]

अप्रक्षितम् यन्न प्रक्षीयते तत् (वसु=धर्मः) १.५५.८. [प्र+क्षि क्षये (भ्वा०) धातोः क्तः नञ् समासः]

अप्रचेताः विद्याविज्ञानरहितः (शत्रुजनः) १.१२०.१. [चेत इति प्रज्ञानाम निघं० ३.९. चिती संज्ञाने धातोरसुन् तत्प्रतिषेधः]

अप्रच्युतानि अविनश्वराणि (व्रतानि=सत्यभाषणादीनि) २.२८.८ [प्र+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः नञ्समासः]

अप्रजाः अविद्यमानाः प्रजा येषान्ते (अत्रिणः=शत्रवः] १.२१.५. [प्रोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'उपसर्गे च संज्ञायाम्' अ० ३.२.९९. सूत्रेण डः प्रत्ययः नञ्बहुव्रीहिः]

अप्रति अप्रतीतानि यथा स्यात्तथा १.५३.६. अप्रत्यक्षेऽपि ७.२३.३. **अप्रतीनि**=अप्रतीतानि (वृत्रा=मेघावयवान्) ४.१७.१९. अप्रतीतान्यपि (पुराणि=दुर्गुणानि) ६.३१.४. अविद्यमाना प्रतीतिः परिमाणं येषान्तानि (धनानि) २.१९.४.]

अप्रतिधृष्टशवसम् न प्रतिधृष्यते शवो बलं यस्य तम् (इन्द्रं=प्रजासेनापतिम्) १.८४.२. धृष्टं प्रगल्भं शवो बलं येन तम्प्रतीति (इन्द्रं=सेनारक्षकम्) ८.३५. [प्रतिधृष्ट=प्रति+ञिधृषा प्रागल्भ्ये धातोः क्तः शव इति बल-

नाम निघं० २.९. ततो नञ्बहुव्रीहिः]

अप्रतिधृष्याय अधर्षितुं योग्यान् प्रति वर्त्तमानाय (वाताय=वायुवेगगतिविज्ञानाय) ३८.७. [प्रति+ञिधृषा प्रागल्भ्ये धातोः 'ऋदुपधाच्चा०' अ० ३.१.११०. सूत्रेण क्यप् नञ्समासः]

अप्रतिपदम् अनिश्चितबुद्धिम् (दुष्टजनम्) ३०.८. [पदं पदं प्रतीति वीप्सायामव्ययीभावः। ततो नञ्समासः]

अप्रतिष्कुतम् इतस्ततो लोकान्तरस्याऽभितो भ्रमणरहितम् (अग्निं=वह्निम्) ३.२.१४. **अप्रतिष्कुतः**=सत्य-भाव-निश्चयाभ्यां याचितोऽनुगृहीतां स्वकक्षां विहायेतस्ततो ह्यचलितो वा (इन्द्रः=ईश्वरः सूर्यो वा) १.७.८. असश्चलितोऽविस्मृतो वा (इन्द्रः=परमेश्वरः सूर्यो वा) प्र०—यास्काऽऽचार्योऽस्यार्थमेवमाह—अप्रतिष्कुतो अप्रतिकृतोऽप्रतिस्खलितो वेति, निरु० ६.१६, १.७.६. अकम्पितो दृढः (मनुष्यगणाः) ५.६.१३. इतस्ततः कम्परहितः (राजा) ७.३२.६. असश्चलितः (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्षः) १.८४.७. [नञ्+प्रति+कृञ् हिंसायां (स्वा०) धातोः क्तः सुडागमश्च स्खल सञ्चलने (भ्वा०) धातोर्वा क्त प्रत्यये धातोः 'स्कुः' आदेशः अप्रतिष्कुतो ऽप्रतिष्कृतो ऽप्रतिस्खलितो वा। नि० ६.१६]

अप्रतिः अविद्यमाना प्रतिः प्रतीतिर्यस्य सः (विद्वज्जनः) ५.३२.३. [नञ्+प्रति+इण् गतौ+क्तिन्। पृषोदरादित्वात् तिलोपः]

अप्रती अप्रतीतानि (वपींसि=सुन्दराणि रूपाणि) ६.४४.१४. [नञ्+प्रति+इण् गतौ+क्तिन्। पृषोदरादित्वात् 'ति' शब्दस्य लोपः]

अप्रतीत ! यो न प्रतीयते तत्सम्बुद्धौ (शूर जन) १.१३३.६. **अप्रतीतम्**=अदृश्यम् (अश्वं=विद्युदग्निम्) १.११७.९. अप्रज्ञातम् (सहः=बलम्) ४.४२.६. यश्चक्षुरादीन्द्रियैर्न प्रतीयते तमगोचरम् १.३३.२. अधर्मिभिरप्राप्तम् (बलम्) ५.३३.७. **अप्रतीतस्य**=प्रतीत्यविषयस्य (राज्ञः) ५.४२.६. **अप्रतीतः**=यः शत्रुभिरप्रतीयमानः (महान् राजा) ६.७३.३. अप्रत्यक्षः (विद्युदग्निः) ५.३२.८. शत्रुभिरपराजितः (राजा=नृपतिः) ४.५०.९. शत्रुभिरज्ञातः (इन्द्रः=राजा) ६.२०.९. प्रसिद्धिमप्राप्तः (इन्द्रः=विद्युद्रूपोऽग्निः) ३.४६.३. **अप्रतीता**=अप्रतीतगुणौ (होतृयजमानौ) ८.५९. [नञ्+प्रति+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः]

अप्रथतम् प्रख्यापयतम् ६.६९.५. प्रथेयाथाम् ६.७२.२. **अप्रथन्त**=प्रथयन्ति ७.३३.६. **अप्रथयः**=प्रथय १.६२.५. **अप्रथिष्ट**=प्रथताम् २.११.७.= **अप्रथेताम्**=प्रख्याते भवेताम् १७.२५. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अप्रदुग्धाः न केनाऽपि प्रकर्षतया दुग्धाः (धेनवः=वाचः) ३.५५.१६. जो किसी ने दुही न हों वे (धेनवः=गौवें) स० प्र० ११०, ३.५५.१६. [नञ्+प्र+दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः क्तः]

अप्रदृपितः न प्रमोहितः (विद्वज्जनः) १.१४५.२. [नञ्+प्र+दृप हर्षणमोहनयोः (दिवा०) धातोः क्तः]

अप्रमादम् प्रमादरहितम् ३४.५५. [नञ्+प्र+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्भावे घञ् 'प्रमदसम्मदौ हर्षे' निपातनाद् हर्षादन्यत्र घञ्। अप्रमादम्=अप्रमाद्यन्तः नि० १२.३७]

अप्रमूराः मूढत्वरहिता धार्मिकाः (सज्जनाः), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन ढस्य स्थाने रेफादेशः १.९०.२. [नञ्+प्र+मुह वैचित्ये, वैचित्यमविवेकः ततः क्तः हस्य ढत्वे धत्वे ष्टुत्वे ढलोपे पूर्वस्य दीर्घे रूपम्]

अप्रमृष्यम् अविचारणीयम् (अर्थं=द्रव्यम्) ६.३२.५. सोढुमनर्हम् (शत्रुम्) २:३५.६. अप्रसह्यम् (दात्रं=दानम्) ६.२०.७. शत्रुओं को सहने के अयोग्य (ब्रह्मचर्य से प्राप्त हुए शरीरात्मबलयुक्त देह को) सं० वि० १०४, २.३५.६. **अप्रमृष्यः**=परैर्न प्रमर्षणीयः (अग्निः=विद्वान्) ४.२.५. [नञ्+प्र+मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोः 'ऋदुपधाच्चा०' सूत्रेण क्यप्]

अप्रयावम् प्रयुवन्त्यन्यायं यस्मिन् स प्रयावो, न विद्यते प्रयावो यस्मिन् गृहाश्रमे तम् ११.७५. [प्र+यु मिश्रणे (अदा०) धातोरधिकरणे 'हलश्चे' ति घञ्। नञ्समासः]

अप्रयुच्छद्भिः प्रमादरहितैर्विद्वद्भिः (जनैः) १.१४३.८.

अप्रयुच्छन्=प्रमादमकुर्वन् (सज्जनः) ५.८२.८. अप्रमाद्यम्, अन्व०—प्रमादं विहाय (अग्निः=पावक इव सेनापतिः) १५.५२. अप्रविवासयन् (अग्निः=विद्वज्जनः) ५.४. प्रमादमकुर्वन् अप्रमाद्यन् वा (अग्निः=पावकः) ४.१४. [प्र+युच्छ प्रमादे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अप्रयुत्वभिः अविभक्तैः (शुभगुणैः) ६.४८.१०. [प्र+युतृ भासने (भ्वा०) धातोः क्वनिप्। नञ्समासः धातूनामनेकार्थत्वादत्र विभागेऽपि]

अप्रवीता अगच्छन्ती (स्त्री) ४.७.९. **अप्रवीताः**=अव्याप्ताः परिच्छिन्नाः (प्रजाः) ३.५५.५. [प्र+वी गतिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोः क्तः। नञ्समासः]

अप्रशस्ता इव यथा न प्रशस्ता अप्रशस्तास्तथा वर्त्तमाना वयम् (ब्रह्मचारिण्यः कुमार्यः) २.४१.१६. **अप्रशस्ताः**=प्रशस्तसुखरहिताः (विशः=प्रजा) ४.२८.४. **अप्रशस्तान्**=निन्द्यकर्माऽऽचारिणः (दुर्जनान्) १.१६७.८. [प्र+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः क्तः। नञ् समासः। शंसति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४]

अप्रहणम् योऽन्यायेन कश्चिन्न प्रहन्ति (इन्द्रं=दुष्टाचारि-शत्रुविनाशकं नृपम्) ६.४४.४. [प्र+हनहिंसागत्योः (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् नञ्समासः। 'हन्तेरत्पूर्वस्य' अ० ८.४.२२. सूत्रेण णत्वम्]

अप्रायि पूर्यन्ते ३४.३२. [प्रा पूरणे (अदा०) धातोः कर्मणि लुङ् अप्रायि आपूपुरः नि० ६.२७.]

अप्रायु यन्न प्रैति नश्यति तत् (रयिं=धनम्) ५.८०.३ **अप्रायुवः**=न विद्यते प्रगत प्रणष्ट आयुर्बोधो येषान्ते (देवाः=विद्वज्जनाः) प्र०—'जसादिषु छन्दसि वा वचनम्' इति गुणविकल्पात् 'यङादिप्रकरणे तन्वादीनां छन्दसि वहुलमुपसङ्ख्यानम्' इति वार्त्तिकेनोवङादेशः १.८९.१. अनष्टाऽऽयुषः (देवाः=विद्वज्जनाः) २५.१४. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः 'छन्दसीणः' उ० १.२. सूत्रेण उण् प्रत्ययः नञ्समासः। अप्रायुवो ऽप्रमाद्यन्तः नि० ४.१९.]

अप्रायुषे यः प्रैति स प्रायुट् न प्रायुड् अप्रायुट् तस्मै (प्रजाजनाय) १.१२७.५. [प्रोपपदे इण् गतौ धातोः 'एतेर्णिच्च' ० २.११८. सूत्रेण 'उसिः' प्रत्ययः नञ्समासः]

अप्राः प्रपूर्द्धि १.५२.१३. व्याप्नोति १२.१३. पूरितवान् १.११५.१. प्राति व्याप्नोति ४.५२.५. पिपृहि ६.२. प्राति पिपर्त्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ७.४२. [प्रा पूरणे (अदा०) धातोर्लुङ् 'मन्त्रे घसह्वरणश०' अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक्]

अप्रियायत प्रिय इवाऽऽचरति ३.५३.९. ['प्रिय' इति सुवन्तात् 'कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च' अ० ३.१.११. सूत्रेण क्यङ् आचारेऽर्थे]

अप्वे याऽपवाति शत्रुप्राणान् हिनस्ति तत्सम्बुद्धौ (अन्व०—शूरवीरे राजस्त्रि क्षत्रिये !), प्र०—अत्र अपपूर्वाद्वातेः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' इति क्विप्, अकारलोपश्छान्दसः १७.४४. [अप+वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोः क्विप् अपोऽकारलोपश्च छान्दसः अप्वे अप्वा यदेनया विद्धोऽपवीयते व्याधिर्वा भयं वा नि० ६.१२.]

अप्सन्त प्राप्नुवन्तु, प्र०—अत्र प्साधातोर्लङि 'छन्दस्युभयथा, इत्यार्धधातुकत्वाद् 'आतोलोप इटि च' इत्याकारलोपश्च 'प्सातीति गतिकर्मा' निघं० २.१४, १.१००.८. [प्सा भक्षणे (अदा०) धातोर् लङ् व्यत्ययेनात्मनेपदम् धातूनामनेकार्थत्वादत्र गत्यर्थे आकारलोपश्चार्धधातुकत्वाद्]

अप्सरसः या अन्तरिक्षे जलादौ च सरन्ति गच्छन्ति ताः, भा०—चेष्टानां जनकाः (आपः=प्राणरूपाः) १८.४१. गन्धर्वाणां स्त्रियः ऋ० भू० १३६. या अप्सु व्याप्येषु प्राणादिपदार्थेषु सरन्ति गच्छन्ति ताः (क्रियाः) १८.४३. या अप्सु प्राणेषु सरन्ति प्राप्नुवन्ति ताः (दक्षिणाः) १८.४२. या अप्स्वन्तरिक्षे सरन्ति गच्छन्ति ताः (मरीचयः=किरणाः) १८.३९. या अप्सु सरन्ति ताः (ओषधयः) १८.३८. आकाशगताः किरणाः १८.४०. अन्तरिक्षचराद्वायोः ७.३३.१२. **अप्सरसाम्**=किरणादीनाम् २४.३७. **अप्सरसौ**=येऽप्सु प्राणेषु सरन्त्यौ गच्छन्त्यौ ते (प्रधान दिशोपदिशे) १५.१५. [अप+सृ गतौ धातोः 'सर्त्तेरप्पूर्वादसिः' उ० ४.२३७ सूत्रेण असिः प्रत्ययः। उपसर्गान्त्यलोपश्छान्दसः अथवा 'अपस्' इति जलनाम, तेषु सरन्तीति विग्रहे=अप+सृ+असिः अपोऽकारलोपः अथवा न प्सान्ति भक्षयन्ति रक्षां कुर्वन्तीति विग्रहे=नञ्+प्सा भक्षणे (अदा०) धातोर् असिः प्रत्ययः प्रत्ययस्य रुडागमश्च, स्त्रीलिङ्गश्च अप्सरा अप्सारिणी, अपि वाऽप्स इति रूपनामाप्सातेरप्सानीयं भवत्यादर्शनीयं व्यापनीयं वा स्पष्टं दर्शनायेति शाकपूणिः 'यदप्सः' इत्यभक्षस्य 'अप्सो नाम' इति व्यापिनः तद्रा भवति रूपवती, तदनयात्तम् इति वा तदस्यै दत्तमिति वा नि० ५.१३. गन्ध इत्यप्सरसः (उपासते) श० १०.५.२.२०. तस्य (वातस्य) आपोऽप्सरसः श० ९.४.१.१०. तस्य (यज्ञस्य) दक्षिणा अप्सरसः श० ९.४.१.११. तस्य (चन्द्रमसः) नक्षत्राण्यप्सरसः श० ९.४.१.९. तस्य (सूर्यस्य) मरीचयोऽप्सरसः श० ९.४.१.८. तस्य (मनसः) ऋक्सामान्यप्सरसः श० ९.४.१.१२. तस्य (अग्नेः) ओषधयोऽप्सरसः श० ९.४.१.७. गन्धेन च वै रूपेण च गन्धर्वाप्सरसश्चरन्ति श० ९.४.१.४. किं नु तेऽस्मासु (अप्सरस्सु) इति जै० उ० ३.२५.८. सोमो वैष्णवो राजेत्याह तस्याप्सरसो विशस्ता इमा आसत इति युवतयः शोभना उपसमेता भवन्ति श० १३.४.३.८.]

अप्सवः कुरूपा (कृतघ्नाः पुरुषाः) ७.४.६. [अप्स इति रूपनाम निघं० ३.७. ततो मत्वर्थे निन्दायां 'व प्रकरणेऽन्येभ्योऽपि दृश्यते' अ० ५.२.१९. वार्तिकेन वः प्रत्ययः]

अप्सः रूपम्; प्र०—'अप्स इति रूपनाम' निघं०

३.७, १.१२४.७. सुरूपम् ५.८०.७. न विद्यते परपदार्थस्याऽप्सो भक्षणं यस्य सः (सज्जनः) १५.३. [अप्सः रूपनाम निघं० ३.७. अप्सः रूपाणि नि० ३.५. अप्स इति रूप नामाप्सातेरप्सानीयं भवत्यादर्शनीयं, व्यापनीयं वा, स्पष्टं दर्शनायेति शाकपूणिः 'यदप्सः' इत्यभक्षस्य 'अप्सो नाम' इति व्यापिनः नि० ५.१३.]

अप्साम् योऽपो जलानि सनुते तम् (सेनाद्यध्यक्षम्) १.९१.२१. योऽपो जलानि प्राणान् सनोति ददाति तंम् (राजानं सेनापतिं वा) ३४.२०. सत्कर्मणां विभक्तारम् (वीरं=शूरपुरुषम्) ६.१४.४. [अप् उपपदे षण् सम्भक्तौ धातोः 'जनसनखन०' अ० ३.२.६७. सूत्रेण विट् 'विड्वनोरनुनासिक०' अ० ६.४.४१. सूत्रेणाकारादेशः]

अप्सु विद्याव्यापकेषु वेदादिषु १.११७.४. [आप्लृव्याप्तौ धातोर् 'अप्' इति तस्या सप्तमीबहुवचने]

अप्सुक्षितः येऽप्सु क्षियन्ति निवसन्ति ते (एकादशः= दशेन्द्रियाणि मनश्च) १.१३९.११. प्राणेषु क्षियन्ति निवसन्ति ते (एकादशः=दशप्राणादयो जीवश्च) ७.१९. [अबिति सप्तम्युपपदे क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः क्विपि तुकि प्रथमबहुवचने रूपम् 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्' इति सप्तम्या अलुक् च]

अप्सुजाः प्राणेषु जायमानः (ब्रह्मा=महान् योगी विद्वज्जनः) २३.१४. ['अप्सु' उपपदे जनी प्रादुर्भावे धातोः 'जनसन०' इति विट् । 'विड्वनोः' इत्याकारादेशः । सप्तम्याश्चालुक्]

अप्सुसदम् योऽप्सु प्राणेषु जलेषु वा सीदति तम् ३.३.५. जलेषु गच्छन्तम् (चक्रवर्त्तिनं राजानम्) ९.२. **अप्सुसदे**=यो जलेषु नौकादिषु सीदति तस्मै (नौयायिने विद्वज्जनाय) १७.१२. ['अप्सु' उपपदे 'सदॢ विशरणगत्यवसादनेषु' धातोः क्विपि द्वितीयैकवचने रूपम् सप्तम्याश्चाऽलुक्]

अफलाम् धर्म्येश्वरविज्ञानाऽऽचारविरहाम् (वाचम्) ऋ० भू० ३१७, १०.७१.५. अर्थ, काम और मोक्ष फलों से रहित (वाणी) पं० त्रि०। **अफलाः**=अविद्यमानफलाः (ओषधयः) १२.८९. [फलतीति फलमिति विग्रहे 'फल निष्पत्तौ' (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः । नञ्बहुव्रीहिः अफलाम् अफलाऽस्मै वाग्भवतीति नि० १.१०८.]

अबधीत् हन्ति १.१८. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लुङ् । 'लुङि चे' ति हनो वधादेशः]

अबध्नन्ती अत्यन्तं दुःखयन्ती (ओषधी) १.१९१.२. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः शतृप्रत्ययः । स्त्रिया ङीप्]

अबध्नन् बध्नन्ति ३१.१५. ध्यानेन बध्नन्ति ऋ० भू० १२८. बध्नीयुः ३४.५२. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्लङ् 'अनिदितामि' ति नकारलोपः]

अबन्धनः यो बध्नाति तद्भिन्नः (वरुणः=परमात्मा) ३.५५.६. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्बहुलवचनात् कर्त्तर्यपि ल्युट् । नञ्समासः नन्द्यादित्वाद्वा ल्युः]

अबन्धुना अविद्यमाना बन्धवो मित्रा यस्य तेनाऽर्थेन सह १.५३.९. [नञ्-बन्धुपदयोर्बहुव्रीहिः]

अबलाः अविद्यमानं बलं यासान्ताः (सेनाः) ५.३०.९. [नञ्-बलपदयोर्बहुव्रीहिः]

अबाधेथाम् बाधेथाम् ४.२८.४. [बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अबिभ्यत् बिभेति ६.२३.२. [ञिभी भये (जु०) धातोर्लङि रूपम्]

अबिभ्युषः बिभेति यस्मात् स बिभीवान्, न बिभीवान् अबिभीवान् तस्य (बलस्य=मेघस्य) १.११.५. भयरहितस्य १.११.५. **अबिभ्युषा**=भयनिवारणहेतुना किरणसमूहेन वायुगणेन सह वा (इन्द्रेण=परमेश्वरेण सूर्येण) वा १.६.७. [ञिभी भये (जु०) धातोः 'क्वसुश्च' अ० ३.२.१०७ सूत्रेण छन्दसि क्वसुः । 'एरनेकाच०' इति यण् इति 'वसोः सम्प्रसारणम्' इति सम्प्रसारणम् 'शासिवसि०' इति षत्वम् नञ्समासः]

अबीभयन्त भीषयन्ते, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् १.३९.६. [ञिभी भये (जु०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् 'णिश्रीद्रु०' इति च्लेश्चङि द्वित्वे रूपम्]

अबुध्ने अन्तरिक्षसादृश्ये स्थूलपदार्थे, प्र०—बुध्नमन्तरिक्षं बद्धा अस्मिन् धृता आप इति निरु० १०.४२, १.२४.७. [बन्ध बन्धने धातोः 'बन्धेर्ब्रधिबुधी च' उ० ३.५. सूत्रेण नक् धातोर्बुधादेशश्च]

अबुध्यम् बुद्धिरहितम् (अधार्मिकं जनम्) ४.१९.३. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणे क-प्रत्यये बुधः= विद्वान् ततो भवार्थे यत् । नञ्समासः]

अबुध्यमानम् उपदेशेनाऽपि अजानन्तम् (अधार्मिकञ्जनम्) ४.१९.३. **अबुध्यमानाः**=बोधरहिताः (स्त्रियः) ४.५१.३. **अबुध्यमाने**=बोधनिवारके शरीरमनसी आलस्ये कर्मणि ये १.२९.३. [बुध अवगमने धातोः कर्मणि शानच् नञ्समासः]

अबुभोजीः आकर्षणेन न्यायेन वा पालयसि पालयति

वा प्र०—अत्र 'भुज पालनाऽभ्यवहारयोः, इत्यस्मात् लङि सिपि 'बहुलं छन्दसि' इति शपः स्थाने आदिष्टस्य श्नमः स्थाने श्लुः 'श्लौ' इत्यद्वित्वं 'बहुलं छन्दसि' इतीडागमश्च १.३३.९.]

अबूबुधत् बोधयेत् १.१६१.१३. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्णिचि लुङि च रूपम् 'दीर्घो लघो' रिति दीर्घत्वम् अभ्यासस्य]

अबोधयः बोधयसि १.१०३.७. बोधय ५.७९.१. **अबोधि**=बोधयति १.९२.११. बुध्यते विज्ञायते १.१५७.१. प्रबुध्यते १५.२४. बुध्यताम् ३.५६.४. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

अब्जाम् अप्सु जातम् (अहिं=मेघम्) ७.३४.१६. **अब्जाः**=योऽपः प्राणान् जनयति (ब्रह्म जीवो वा) १२.१४. योऽपो जनयति (ईश्वरः) १०.२४. योऽद्भ्यो जातः (जीवात्मा) ४.४०.५. [अप् उपपदे 'जनी प्रादुर्भावे' धातोर्विट् । नकारस्याकारश्च । अब्जाम् अप्सुजाम् नि० १०.४२. एषः (सूर्यः) वा अब्जा अद्भ्यो वा एष प्रातरुदेत्यपः सायं प्रविशति । ऐ० ४.२०.]

अब्जिते योऽप्सु जयति तस्मै (इन्द्राय=विद्वत्सभासेनेशाय) २.२१.१. [अपः कर्मनाम (निघं० २.१) तदुपपदे जि जये धातोः क्विप् तुगागमश्च]

अब्दया येऽपो जलानि ददति ते (मरुतः=मानवाः) ५.५४.३. [अप उदक नाम (निघं० १.१२.) तदुपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः प्रत्ययः । 'सुपां सुलुगि' ति जसः स्थाने यादेशः]

अब्दः संवत्सरः १२.७४. [अप् उपपदे दा धातोः कः]

अब्दिमान् जलदवान् (मेघः) ५.४२.१४. [अब्दप्राति० मतुप् अब्दशब्दस्य अब्दिभावः]

अब्रवम् उक्तवानस्मि १.१०८.६. ब्रूयाम् ६.५५.५. **अब्रवीत्**=ज्ञापयति, प्र०—अत्र लडर्थे लङन्तर्गतो ण्यर्थः, प्रसिद्धीकरणं धात्वर्थश्च १.२३.२०. ब्रूयादुपदिशेत् १.१६१.१२. ब्रूते १.१९१.१६. **अब्रवीत**=उपदिशत ४.३५.३. **अब्रवन्**=ब्रूयुरुपदिशेयुः १.१६१.२. ब्रुवन्तु उपदिशन्तु ऋ० भू० १३४, ३१.२१. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा० उभ०) धातोर्लङ् 'ब्रुव ईट्' इति हलादौ पितीडागमः]

अब्रवीतन उपदिशेत १.१६१.१२. ब्रूयुः १.१६१.८. ब्रूयात् १.१६१.३. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लङि मध्यमबहुवचने तस्य स्थाने 'तप्तनप्तनथनाश्चे' ति तनप् । हलादौ पितीडागमः]

अब्रह्मता अधनता ५.३३.३. वेदेश्वरनिष्ठारहितता १०.२२. [ब्रह्म धननाम । निघं० २.१०. ततो भावे तल् प्रत्ययः नञ्समासः ब्रह्म च बृहि वृद्धौ धातोः 'बृंहेर्नोऽच्च' उ० ४.१४६ सूत्रेण मनिन् नकारस्याकारः यणादेशश्च]

अब्रह्मा अवेदवित् (दस्युः=दुष्टस्वभावो जनः) ४.१६.९. **अब्रह्माणः**=अचतुर्वेदविदः (जनाः) ७.२६.१. [सिद्धिः पूर्वपदे द्रष्टव्या तस्य पुंसि 'ब्रह्मा' रूपम् नञ्समासः]

अब्राह्मणाः न ब्राह्मणाः, अब्राह्मणाः, (प्राजापत्याजनाः), अविद्यमानो ब्राह्मणो येषां ते (प्राजापत्याजनाः) ३०.२२. [ब्रह्मन्प्राति० 'तदधीते तद्वेद' इत्यण् । ब्रह्म वेदस्तधीते वेद वेति ब्राह्मणः ब्रह्मणोऽपत्यमिति विग्रहे ब्रह्मन् अण् 'अन' प्रकृतिभावाट्टिलोपो न भवति । नञ्समासश्च समानार्थौ ब्रह्मन्शब्दो ब्राह्मणश्च महाभा० ५.१.१.]

अभक्तम् असेवितम् (आयुः=जीवनम्) १.१२७.५. विभागरहितम् (धनादिकम्) ३.३०.७. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः । नञ्समासः]

अभक्त भजेत ३.३०.१२. **अभक्षि**=सेवे ४.३१.५. **अभजत्**=सेवते २.३८.१. सेवेत १.१४६.५. भजेत् २.२४.१४. **अभजन्त**=भजन्ति १.९१.१. भजन्तु १९.५२. नित्यमानन्दं सेवन्ते, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.२०.८. **अभजः**=सेवेथाः ३.३५.९. सेवस्व ३.४७.३. [भज सेवायाम् (भ्वा० उभ०) धातोर्लुङ् 'झलो झली' ति सिचो लोपः 'अभजत्.' 'अभजः' इत्येतयोः परस्मैपदे, 'अभजन्त' प्रयोगे आत्मनेपदे च लङ्]

अभयन्त डरते हैं ५.३०.५. [ञिभी भये (जु०) धातोर् लङ् 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुर्न भवति]

अभयम् भयरहितम् (धार्मिकं जनसमूहम्) ४.२९.३. भयराहित्यम् १८.६. निर्भयम् (प्राणिसमूहम्) ३६.२२. अविद्यमानं भयं यस्य यस्माद्वा (सज्जनम्) ६.२८.४. भयवर्जितम् (ज्योतिः=प्रकाशम्) २.२७.११. **अभयानि**=अविद्यमानं भयं येषु तानि (राज्यप्राणिनः) ११.१५. **अभये**=भयरहिते व्यवहारे ३.३०.५. [ञिभी भये (जु०) धातोः 'एरच्' भावे इत्यच् प्रत्ययः नञ्समासः । 'अज्विधौ भयादीनामुपसंख्यानम्' इत्यपुसंख्यानात् नपुंसकेऽप्यच् भवति स्वर्गो वै लोकोऽभयम् श० १२.८.१.२२]

अभयसनि अभयं सनति सम्भजति येन (अपत्यम्)

१६.४८. [अभयोपपदे षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहुलकात् करणे 'इ' प्रत्ययः]

अभरत् धारयति ऋ० भू० २३८, ११.५.१६. धरेत् ४.२६.७. भरति १.१६१.१०. बिभर्ति २०.५६. **अभरन्**=धरन्ति पुष्णन्ति वा ४.३३.४. **अभरिष्यत्**=भरति २.३०.२. [भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लङि लृङि च रूपाणि । अभरत् अहरत् निघं० ७.२६.]

अभवत् भवेत् १.११२.४. भवति, भा०—उत्पादयति ३१.४. होवे सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१.६. **अभवत**=भवन्ति ४.३५.८. **अभवतम्**=भवेतम् १.११७.१४. **अभवन्**=भवन्तु ४.१७.६. भवेयुः ३.३५.६. **अभवम्**=अस्मि ४.२६.१. **अभवः**=भूयाः भवति वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः, लिङ्लटोरर्थे लङ् च १.४.८. भवति १.७२.७. भव ३.१.१७. भवसि १.६१.२. प्रसिद्धो भवसि २.१३.१०. भवेः ४.१७.६. भवति प्र०—अत्र वर्त्तमाने लङ्—व्यत्ययः १.३२.१२. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः सामान्ये लङ्]

अभासि समन्तात् प्रकाशयति १.४६.४. [भा दीप्तौ (अदा०) धातोः सामान्ये लङ् 'इतश्चे' ति लोपो न भवति छान्दसत्वात्]

अभाः पुष्णाति धरति वा, भा०—पालयति, रक्षति १२.६१. [डुभृञ् धारणपोषणयोः । (जु०) धातोलङि मध्यमैकवचने रूपम् । सिचो लुक् छान्दसः]

अभार्ष्टाम् दहताम् २८.१७. [भ्रस्ज पाके (तुदा०) धातोर्लुङि प्रथमद्विवचने रूपम्]

अभि अभितः ३.४०. आभिमुख्यार्थे १.११.२. सर्वतो भावे प्र०—अभीत्याभिमुख्यं प्राह निरु० १.३, १.११.८. सर्वतः ३३.६. अभिलक्ष्य १.१६२.११. [अभीत्याभिमुख्यम् निघं० १.३.]

अभिऽआयंसेन्या आभिमुख्यतया समन्तात् यम्येते गृह्येते यौ तौ (अश्विना=शिल्पिनौ) प्र०—अत्र सुपां सुलुगित्याकारादेशः अभ्याङ् पूर्वाद् यमधातोर्बाहुलकादौणादिकः सेन्यः प्रत्ययः १.३४.१. [अभि+आङ्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोरौणादिकः सेन्यः 'सुपां सुलुग्' इति डादेशः]

अभिऽआवर्ती यो विजेतुमभ्यावर्त्तते सः (अग्निः=राजा) ६.२७.८. **अभिऽआवर्तिने**=अभ्यावर्तितुं शीलं यस्य तस्मै (उपदेशकाय) ६.२७.५. [अभि+आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः प्रत्ययः]

अभीतिम् अभयम् ७.२१.६. [ञिभी भये (जु०) धातोः क्तिन् । नञ्समासः]

अभिऽइतीः अभितः सर्वत इत्या प्राप्त्या २.३३.३. [अभि+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तिन्]

अभिऽइत्य अभितः प्राप्य ४.३२.१०. [अभि+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्त्वा । क्त्वो ल्यप्]

अभिऽइद्धः सर्वतः प्रदीप्तः (घर्मः) १.१६४.२६. [अभि+ञिइन्धी दीप्तौ धातोः क्तः]

अभिऽउदेत्य प्राप्य अथर्व० १५.११.२. [अभि+उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्त्वा क्त्वो ल्यप्]

अभिऽउप्य अभितो वपनं कृत्वा २.१५.६. [अभि+टुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोः क्त्वा । क्त्वो ल्यप् यजादित्वात् सम्प्रसारणम्]

अभिऽऊर्ण्वाना आभिमुख्येनार्थानाच्छादयन्ती (उर्वशी=बुद्धिः) ५.४१.१६. [अभि+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः शानच् । स्त्रियां टाप्]

अभिकल्पमानाः आभिमुख्येन समर्थयन्तः (देवाः=दिव्यगुणाः) १४.२७. सम्पादयन्तः (अग्नयः=पावकाः) १५.५७. अभितः सुखाय समर्थयन्तः (देवाः) १४.१५. [अभि+कृपु सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोः शानच्]

अभिक्रतूनाम् आभिमुख्येन क्रतुः=कर्म येषान्तेषां बलीयसां शत्रूणाम् ३.३४.१०. [अभि+क्रतुपदयोर्बहुव्रीहिः क्रतुः कर्म नाम । निघं० २.१. प्रज्ञानाम । निघं० ३.६.]

अभिक्रन् पूर्णं कुर्वन् (वैश्वानरः=परमेश्वरः), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति विकरणाऽभावः ७.५.७. [अभि+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः शतृ । छन्दसि विकरणाऽभावे यणादेशे रूपम्]

अभिक्रन्द आभिमुख्येन क्रन्दति, प्र०—अत्र व्यत्ययः ५.८३.७. [अभि+क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्लोट् । अथवा क्रन्दसातत्ये (चुरा०) धातो रूपम्]

अभिक्रमाम अभिमुखमनुक्रमेण प्राप्नुयाम ६.४६.१५. [अभि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लट् 'क्रमः परस्मैपदेषु' इति दीर्घत्वं न, छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पनात्]

अभिक्रम्य सर्वत उल्लङ्घ्य १.८०.५. [अभि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोः क्त्वा । क्त्वो ल्यप् समासे]

अभिक्रोशकम् योऽभितः क्रोशति आह्वयति तम् (जनम्) ३०.२०. [अभि+क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि ण्वुल् वोः स्थानेऽकादेशः]

अभिक्षत्तारः आभिमुख्येन योगस्य कर्त्तारः (देवाः=विद्वज्जनाः) २.२६.२. **अभिक्षत्तुः**=अभितः क्षयकर्त्तु-

हिंस्रकस्य (दुर्जनस्य) ७.२१.८. [अभि+क्षद धातोः 'तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्य०:' उणा० २.९४. सूत्रेण तृच् अथवा 'क्षदेश्च नियुक्ते' अ० ३.२.१३५. वार्त्तिकेन तृन प्रत्ययः]

अभिक्षदाम् ये भिक्षां न ददति तेषाम् (जनानाम्) ६.५०.१. [भिक्षोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः कर्त्तरि ह्रस्वश्च पूर्वपदस्य । नञ्समासः]

अभिक्षमेत अभिसहेत २.३३.१. [अभि+क्षमूष् सहने (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

अभिक्षिपन् आभिमुख्येन प्रेरयन् (पर्जन्यः=मेघः) ५.८३.३. [अभि+क्षिप् प्रेरणे (तुदा०) धातोः शतृ]

अभिख्यः प्रकथयसि ६.४९.१९. [अभि+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोर्लङ् सामान्ये अडभावश्च]

अभिख्या येऽभितः ख्यान्ति ते (अन्धा जनाः) १.१४८.५. [अभि+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोः कः अभिख्या प्रज्ञा नाम निघं० ३.९.]

अभिख्याता आभिमुख्येनाऽन्तर्यामितयोपदेष्टा (इन्द्रः=ईश्वरः) ४.१७.१७. [अभि+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोस्तृच् कर्त्तरि चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्वा तृच् । चक्षिङ् ख्याञादेशश्च]

अभिख्याय अभितः प्रख्यातुम् १.१५५.५. अभितः सर्वतः संख्याय २.३०.९. [अभि+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोः क्त्वा समासे क्त्वो ल्यप्]

अभिगरः अभिगतस्तवः (विश्वकर्मा=अध्यापकः) ८.४७. [अभि+गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोः 'ॠदोरबि' ति 'अप्' प्रत्ययो भावे]

अभिगूर्त्तम् अभित उद्यमिनम् (अग्निम्) १.१६२.१५. अभितः कृतोद्यमम् (अश्वम्) २५.३७. [अभि+गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोः क्तः ईदित्त्वादनिट्त्वम् 'नसत्त-निषत्त.........गूर्त्तानि०' अ० ८.२.६१. सूत्रेण निपातनान्नत्वं न भवति]

अभिगूर्त्तिः अभितः सर्वतो गूर्त्तिरुद्यमो यस्य सः (मनुष्यः) १.१६२.६. अभिगत उद्यमः १.१६२.१२. अभ्युद्यमः २५.२९. [अभि+गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् 'तितुत्रे०' तीण्निषेधः]

अभिगूर्य अभित उद्यमं कृत्वा २.३७.३. [अभि+गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

अभिगृणन्तः अभिमुखं स्तुवन्तः उपदिशन्तो वा (विद्वज्जनाः) प्र०—'अभीत्याभिमुख्यं प्राह, निरु० १.३, २.१८. [अभि+गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोः शतृ प्रथमा-बहुवचने रूपम्]

अभिगृणन्ति अभिमुखं वदन्ति १.१००.१७. **अभिगृणन्तु**=अभिमुखं अर्चन्तु सत्कुर्वन्तु, प्र०—गृणातीत्यर्चतिकर्मा निघं० ३.१४ १४.४. प्रशंसन्तु १५.३. **अभिगृणाति**=अभिगतान्युपदिशति १.५४.७. **अभिगृणीत**=आभिमुख्येन प्रशंसत १९.६२. **अभिगृणीतम्**=प्रशंसेताम् २७.१८. **अभिगृणीहि**=आभिमुख्येन गृणाति स्तुतिहेतुर्भवति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.१५.३. अभ्युपदिश १.१०.४. आभिमुख्यतया स्तुहि १.४८.१४. सर्वतः प्रशंस २.९.४. [अभि+गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्लटि लोटि च रूपाणि । गृणाति अर्चतिकर्मा । निघं० ३.१४]

अभिघ्नते य आभिमुख्येन हन्ति तस्मै (वीरपुरुषाय) १६.४६. [अभि+हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोः शतृ प्रत्ययः]

अभिचक्षसे उपदिशेः ५.३.९. आभिमुख्यतया सत्यमुपदिशन्ति १.१९०.६. [अभि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसीति' शपो लुङ् न भवति]

अभिचक्षे आभिमुख्येन दर्शनाय १.१०२.२. अभितः ख्यातुम् ५.३१.१२. [अभि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) 'तुमर्थे सेसेन०' इति तुमर्थे 'से' प्रत्ययः]

अभिचक्षे अभिपश्यति ३३.३८. [अभि+चक्षिङ व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट् मध्यमैकवचने रूपम्]

अभिचक्षाणः अभिव्यक्तवाग्विषयः (विद्वज्जनः) २.४०.५. [अभि+चक्षिङ्+शानच्]

अभिचक्ष्य अभितः सर्वतः प्रकाश्य १.९२.९. [अभि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि दर्शनेऽपि च (अदा०) धातोः क्त्वो ल्यप्]

अभिचष्टे अभितः प्रकाशयति १.१६४.४४. अभिपश्यति, प्र०—चष्ट इति पश्यतिकर्म निघं० ३.११, १७.५९. अभितो दर्शयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.१०८.१. अभिजानाति ७.६१.१. अभितः ख्याति ३.५९.१. [अभि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि दर्शनेऽपि (अदा०) धातोर्लट् अभिचष्टे=अभिविपश्यति नि० १०.२०]

अभिचाकशीति अभिपश्यति १.१६४.२०. सर्वत्र प्रकाशमान हो रहा है स० प्र० २८३, १.१६४.२०. **अभिचाकशीमि**=पुनः पुनः प्राप्नोमि १७.९७. सर्वतोऽनुशास्मि १७.९३. सर्वतः प्रकाशयामि ४.५८.५.

आभिमुख्यतया भृशं प्राप्नोमि १३.३८. **अभिचाकशीहि**= सर्वतो भृशं कश्व पुनः पुनः शाधि, प्र०—अयं कशधातोर्यङ्लुगन्तः प्रयोगः 'वाच्छन्दसि' इति पित्त्वादीट् १६.२.]

अभिजम्भय सर्वतो विनाशय २.२३.६.[अभि+जभि नाशने (चुरा०) धातोर्लोट्]

अभिजायन्ते प्रकट करते हैं १.१६८.२. [अभि+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लट्]

अभिजिता आभिमुख्यगतान् शत्रून् जयति येन तेन (तेजसा=निशातेन तीव्रेण कर्मणा) १५.७. [अभि+जि जये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । अभिजित् (नक्षत्रम्) देवासुराः संयता आसन् । ते देवास्तस्मिन्नक्षत्रेऽभ्यजयन् । यदभ्यजयन् तदभिजितोऽभिजित्त्वम् तै० १.५.२.३-४. यस्मिन् ब्रह्माभ्यजयत् सर्वमेतत् अमुञ्च लोकमिदं च सर्वम् तन्नो नक्षत्रमभिजिद् विजित्य श्रियं दधात्वहृणीयमानम् तै० ३.१.२.५. अभिजिन्नाम नक्षत्रमुपरिष्टादषाढानामवस्ताच्छ्रोणायै तै० १.५.२.३. अभिजित् (यज्ञः) अभिजिता वै देवा अभ्यजयन्निमांस्त्रींल्लोकान् कौ० २४.१. अभिजिता वै देवा इमान् लोकानभ्यजयन् तां० २२.८.४. अभिजिता वै देवा असुरानिमान् लोकानभ्यजयन् तां० २०.८.१. सो (इन्द्रः) ऽकामयत यन्मे ऽनभिजितं तदभिजयेयमिति स एतमभिजितमपश्यत्तेनानभिजितमभ्यजयत् तां० १६.४.६. यदभिजिद् भवत्यनभिजितस्याभिजित्यै तां० १६.४.७. अग्निरेवाभिजिदग्निर्हीदं सर्वमभ्यजयत् कौ० २४.१. अथ यदभिजितमुपयन्ति अग्निमेव देवतां यजन्ते श० १२.१.३.१२. स वा अभिजिदभयसामा सर्वस्तोमो भवति कौ० २४.१. एकाहो वा अभिजित् कौ० २४.२.]

अभिजुजोषत् अभितः सेवते ४.२३.४. [अभि+जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) यङ्लुकि शतृ]

अभिज्ञु अभिगते जानुनी यासां ताः (वाश्राः=गावः) प्र०—अत्र 'अव्ययं विभक्ति०' अ० २.१.६. इति यौगपद्यार्थे समासः 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति समासान्तो ज्ञुरादेशश्च १.३७.१०. अभितो जानुनी यस्य तम् (नमस्यम्) १.७२.५. आभिमुख्ये जानुनी यस्य सः (सखा) ३.३९.५. अभिमुखे जानुनी यैस्ते (छात्राः) ७.२.४. विदुषां सन्निधौकृतेऽभिमुखे जानुनी यैस्ते (विद्यार्थिजनाः) ७.२.४. (अभि+जानुपदयोर्बहुव्रीहौ समासान्तो 'ज्ञुरादेशः']

अभितत्नाम आभिमुख्यतया विस्तारयेम १.१६०.५. [अभि+तनु विस्तारे (तना०) धातो रूपम्]

अभितस्थौ अभितिष्ठति ४.५०.७. [अभि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

अभितः सर्वतः १.५३.३. सर्वतोऽभिमुखाः ४.१.१५. चारों ओर से सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.६. [अभि शब्दात् 'पर्यभिभ्यां च' अ० ५.३.९. सूत्रेण तसिल् 'तद्धितश्चासर्वविभक्तिरि' ति सूत्रेणाव्ययसंज्ञा]

अभिताप्सीत् अभितपेत् १३.३०. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर् लुङ्]

अभितितृत्सान् अभिमुख्येन तर्दितुं हिंसितुमिच्छेयुः, प्र०—अत्र लेट्-प्रयोगः ३३.२८. [अभि+तर्द हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन् ततो लेट्]

अभितिष्ठामि सम्मुखे तिष्ठामि, अन्व०—तिरस्करणाय तत्सम्मुखमुपविशामि ६.१६. **अभितिष्ठाः**= अभिमुखं तिष्ठेः ३.१४.४. [अभि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभित्यै भयराहित्याय ११.६४. [ञिभी भये (जु०) धातोर्भावे स्त्रियां क्तिन् धातोश्च ह्रस्वश्छान्दसः नञ् समासश्च]

अभिऽइत्वरीः आभिमुख्येन राजविरोधं कुर्वतीः (भा० विरोधिन्यः सेनाः) ११.७७. [अभि+इण् गतौ (अदा०) धातोः 'इण्णश०' सूत्रेण क्वरप् प्रत्ययः । स्त्रियां ङीप् सेना वा अभीत्वरी कौ० २८.५]

अभिदक्षत् अभितो दहति २.४.७. [अभि+दह भस्मीकरणे (अदा०) धातोर्लेटि सिबविकरणे च रूपम्]

अभिदधे उपरि दधामि २.८.५. [अभि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लट्]

अभिदासत् अभिक्षियति ६.५.४. **अभिदासति**= सर्वत्र उपक्षयति, प्र०—अत्र 'दसु उपक्षये' इत्यस्य वर्णव्यत्ययेनाऽकारस्य स्थाने आकारः ८.४४. अभिमुखेनोपक्षयति १८.७०. [अभि+दसु उपक्षये (दिवा०) धातोर्लट् अकारस्याकारो व्यत्ययेन]

अभिदासति अभीष्टं ददाति १.७९.११. [अभि+दासृ दाने (भ्वा०) धातोर्लट् । दासति दानकर्मा निघं० ३.२०.]

अभिदिप्सवः अभितो दिप्सवो दम्भितुमिच्छवो यासु ताः (मृधः=सङ्ग्रामान्) २.२३.१३. [अभिदिप्सुपदे सिद्धिः]

अभिदिप्सुः अभितो दम्भमिच्छुः (दुशंसः=चोरः) २.२३.१०. [अभि+दम्भु दम्भने (स्वा०)+सन् । 'दम्भ इच्च' इत्यकारस्येकारादेशः 'हलन्ताच्चे' ति कित्त्वादनुनासिकलोपः 'सनांशभिक्ष उ' रिति 'उः' प्रत्ययः]

अभिदीधय अभिमुखं प्रकाशय ३.३८.१. [अभि+दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्लोट् 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न भवति]

अभिदुक्षन् अभितोऽधुक्षन् दुहन्तु प्रपिरतु १.१२१.८. [अभि+दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लुङ्]

अभिद्यवः अभितः सर्वतो द्यवो दीप्ता विद्या 'विद्युदादयः पदार्थाः साधिता यैस्ते (कण्वासः=मेधाविजनाः) प्र०—अत्र द्युतधातोर्बाहुलकादौणादिको डुप्रत्ययः १.४७.४. आभ्यन्तरे कामयमानाः प्रकाशवन्तः (विद्वज्जनाः) ६.५१.१५ अभितो द्यवो विद्याप्रकाशा येषान्ते (विद्वज्जनाः) १.१३४.२. अभितो द्यवः सूर्यकिरणा इव देदीप्यमानाः (मनुष्याः) १.१३४.२. अभितः प्रकाशमानाः (वाजाः=विज्ञानादयः) पदार्थाः) ३.२७.१. अभिगता द्यवो दीप्तयो येषान्ते (विद्वज्जनाः) १.१२७.७. **अभिद्युभिः**=अभितो दिवो विद्याव्यवहारप्रकाशा येषु तैः (जनैः) १.५३.५. अभितः प्रकाशमानैः (गणैः=किरणैर्मरुद्भिर्वा) १.६.८. **अभिद्युम्**=अभितो दिवो विद्युद्योगप्रकाशा यस्मिंस्तम् (विद्युद्यानम्) १.११६.१०. प्राप्तविद्युत्प्रकाशम् (तारम्) ऋ० भू० १६६. [अभि+द्युत् दीप्तौ (भ्वा०) वाहुलकाड् डुः प्रत्ययः। अर्द्धमासा वा अभिद्यवः श० १.४.१.६. मासा देवा अभिद्यवः गो० पू० ५.२३]

अभिद्यून् अभितो वर्त्तमानान् दिवसान् १.१६०.४. [द्युरित्यह्नो नामधेयं द्योतत इति सतः। नि० १.६. तस्य अभिना सह समासः]

अभिद्रुहन् अभिद्रुहन्त्वभिजिघांसन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययेन शो लोडर्थे लुङ् च १.५.१०. [अभि+द्रुह अभिजिघांसायां धातोर्लुङ् विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

अभिद्रुहे योऽभिद्रुह्यति तस्मै (रिपवे=शत्रवे) २.२७.१६. [अभि+द्रुह अभिजिघांसायां (दिवा०) धातोर्लट् व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अभिदुद्रोह आभिमुख्येन द्रोहं कृतवान् १.२३.२२. यथाऽभिद्रुह्यति तथा ६.१७. [अभि+द्रुह अभिजिघांसायां धातोर्लिट्]

अभिधमन्ता अग्निं संयुज्यमानौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.११७.२१. [अभि+ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः (भ्वा०) धातोः शतृ। शिति धमादेशश्च]

अभिधातम् अभिमुखं धरतम् १.१२०.८. [अभि+डुधाञ् (जु०) धातोर्लुङ्]

अभिधाः योऽभिदधाति सः (विद्वज्जनः) २२.३. [अभि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरच् प्रत्ययः]

अभिधीतः निश्चितः (अन्धः=अन्नम्) ८.५४. [अभि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः। 'घुमास्था०' इतीकारान्तादेशः]

अभिध्रुक् अभितो द्रोहं कुर्वन् (जनः) १.१२२.६. [अभि+द्रुह अभिजिघांसायाम् (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

अभिनक्षति सर्वतो व्याप्नोति, अभिगच्छति वा १.६५.१०. **अभिननक्षु**=सर्वतः प्राप्नुवन्ति प्र०—अत्र 'नक्षतिर्गतिकर्मा निघं० २.१४, ५.१५.२. [अभि+णक्ष गतौ (भ्वा०) धातोर्लट् लिट् च। नक्षति गतिकर्मा—निघं० २.१४. व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८.]

अभिनक्षन्तः अभितो जानन्तः (विद्वज्जनाः) २.२४.६. [अभि+णक्ष गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अभिनत् विदारयति, प्र०—अत्र लडर्थे लङन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.३२.१. भिनत्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.३३.१२. विदारयसि १.५३.८. भिन्द्यात् १२.२३. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लुङ् 'इरितो वे' ति च्लेः स्थाने ऽङ् प्रत्ययः]

अभिनिवर्त्तस्व नितरां वर्त्तस्व १२.७. [अभि+नि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अभिनिशिशाः अभितो नितरां शिक्षय ६.१८.१३. [अभि+नि+शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

अभिनेता आभिमुख्यं प्रापयिता (इन्द्रः=राजा) प्र०—अत्र तृन् प्रत्ययः ४.२०.८. [अभि+णीञ् प्रापणे धातोस्तृन् प्रत्ययः]

अभिनोनुमः भृशं नताः स्मः ४.३२.४. भृशं नमामः ७.३२.२२. भृशं सत्कुर्याम प्रशंसेम २७.३५. [अभि+णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुकि रूपम्। नौति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

अभिन्ने एकीभूते व्यवहारे ६.२८.२. [नञ्+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

अभिपनयन्त अभितः स्तुवन्ति व्यवहरन्ति वा ७.१.१०. [अभि+पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभावश्च पनायते, अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

अभिपरेहि अभिमुखं सर्वतो जानीहि, अन्व०—सर्वतो धनवृद्धिमिच्छ ७.१८. [अभि+परा+इण् गतौ

(अदा०) धातोर्लोट्]

अभिपवन्ते अभितः शोधयन्ति ४.५८.९. सर्वतः पवित्रीभवन्ति १७.९७. [अभि+पूङ् पवने (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभिपासि सर्वतो रक्षसि ३.९.६. आभिमुख्यतया रक्षतु १३.१९. [अभि+पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लट्]

अभिपित्वम् प्राप्तम् (सुदक्षं=सुष्ठु बलम्) ४.१६.१. पदार्थों की प्राप्ति स० प्र० १५१, १०.४०.२. प्राप्यम् (वस्तु) ७.१८.९. **अभिपित्वे**=सर्वतः प्राप्तौ १.१२६.३. अभीष्टप्राप्तौ ४.३५.६. आभिमुख्यगमने ३३.३४. अभितः प्राप्तव्ये (सद्व्यवहारे) १.१८६.६. **अभिपित्वेषु**=अभितः सर्वतः प्राप्तव्येषु व्यवहारेषु, प्र०—अत्र पदधातोर्बाहुलकादौणादिक इत्वन् प्रत्ययो डिच्च १.८३.६. [अभि+पद गतौ (दिवा०) धातोर्बाहुलकाद् इत्वन् प्रत्ययः, डिच्च । अथवा=अभि+पि गतौ (तुदा०) धातोः कृत्यार्थे त्वन् अभिपित्वम्=अभिप्राप्तिम् नि० ३.१४.]

अभिपित्वा अभितः प्राप्ते (व्यवहारे) १.१८९.७. [अभि० पदगतौ धातोर्बाहु० इत्वन् प्रत्ययो डिच्च]

अभिप्रगायत आभिमुख्येन प्रकृष्टतया विद्यासिद्ध्यर्थं तद्गुणानुपदिशत शृणुत च १.५.१. [अभि+प्र+गै शब्दे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अभिप्रघ्नन्ति आभिमुख्ये प्रकर्षेण घ्नन्ति ६.४६.१०. [अभि+प्र+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लट्]

अभिप्रचक्षे अभिगतप्रसिद्धाय वागादिव्यवहाराय १.११३.६. [अभि+प्र+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, दर्शनेऽपि (अदा०) धातोः तुमर्थे से प्रत्ययः]

अभिप्रच्यस्व अभितः प्रकृष्टतया गच्छ ४.३४. [अभि+प्र+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् धातोर्गुणेऽवादेशे च वकारलोपः]

अभिप्रजिन्वतु आभिमुख्येन प्रापयतु ६.४९.१४. [अभि+प्र+जिन्वति गतिकर्मा निघं० २.१४. धातोर्लोट्]

अभिप्रणोनुमः सर्वतः प्रकृष्टतया प्रशंसामः १.७८.२. अभिमुखं प्रकर्षेण भृशं स्तुमः १.७८.४. सर्वतः प्रकृष्टतयाऽतिशयेन स्तुमः १.७८.१. भृशं नमस्कुर्मः १.७८.५. [अभि+प्र+णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुकि रूपम्]

अभिप्रमन्दसे सर्वत्राऽऽनन्दयति ३६.७. **अभिप्रमन्दुः**=प्रकृष्टमानन्दमाप्नुवन्ति ७.३३.१. **अभिप्रमन्दे**=आनन्दयेयमानन्दयामि वा ५.४.१. [अभि+प्र+मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभिप्रमर्षिष्ठाः अभितः प्रकृष्टतया विनाशयेः १.७१.१०. [अभि+प्र+मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्च]

अभिप्रवन्त अभिगच्छन्तु ४.५८.८. अभिगच्छन्ति, प्र०—अत्र लङ्यडभावः १७.९६. [अभि+प्रुङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावश्च । अभिप्रवन्त=अभिनमन्त नि० ७.१७.]

अभिप्रश्निनम् अभितो बहवः प्रश्ना विद्यन्ते यस्य तम् (परीक्षकं जनम्) ३०.१०. (अभि+प्रश्न+मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

अभिप्रसाक्षि अभितः प्रकृष्टतया सम्बध्नासि ५.३३.२. [अभि+प्र+षच समवाये (भ्वा०) धातोर्लुङ अडभावश्च]

अभिप्रसेदुः आभिमुख्येन प्रसीदन्ति ४.१.१३. [अभि+प्र+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट् 'अतएकहल्मध्ये०' इति सूत्रेणैत्वाभ्यासलोपश्च]

अभिप्रियम् सर्वतः कमनीयम् (पुरोडाशम्) २५.२६. [अभि+प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' अ० ३.१.१३५ सूत्रेण कः]

अभिप्रेहि अभिप्रायं दर्शय १७.४४. [अभि+प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

अभिभङ्गाय दुष्टानामभितो मर्दकाय (इन्द्रस्य=सभासेनेशाय) २.२१.२. [अभि+भञ्जो आमर्दने (रुधा०) धातोर्घञ् । 'चजोः कुघिण्ण्यतो' रिति कुत्वम्]

अभिभञ्जतीनाम् शत्रुसेनामभितो मर्दनमाचरन्तीनाम् (देवसेनानाम्) १७.४०. (अभि+भञ्जो आमर्द्दने (रुधा०) धातोः शतृ, ततः स्त्रियां ङीप्]

अभिभराति अभिमुखं धरति ५.३.७. [अभि+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लेट् आडागमः]

अभिभा अभितः कान्ति २.४२.१. [अभि+भा दीप्तौ धातोर्भावे घञ् । अभिभा अभिभूतिः नि० ९.३.]

अभिभाः अभितः प्रकाशयति ७.८.४. [अभि+भा दीप्तौ+लुङ्]

अभिभाषथाः अभिमुखं वदेः २३.२३. [अभि+भाष व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लङ् अडभावश्च]

अभिभिनत् आभिमुख्यतया भिनत्ति १.५२.५. [अभि+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लङ् अडभावश्च]

अभिभुवे अभिमुखं भावुकाय (अग्नये) २२.३०.

शत्रूणां तिरस्कर्त्रे (इन्द्राय) २.२१.२. **अभिभूः**=दुष्टानां तिरस्कर्त्ता (ब्रह्मा=लब्धात्मविद्यो राजा) १०.२८. [अभि+भूसत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्]

अभिभूति शत्रूणां तिरस्कारनिमित्तम् ४.२१.१. **अभिभूतिम्**=पराजयम् ४.३८.१. [अभि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्तिन् भावे स्त्रियाम्]

अभिभूतिः शत्रूणामभिभवकर्तृ (क्षत्रं=राज्यम्) २०.४७. **अभिभूते**=शत्रूणामभिभवनं पराजयो यस्मात्तत्सम्बुद्धौ १.५३.३. [अभि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायामिति क्तिच्' छन्दाꣳसि वा अभिभूतयः तां० ६.४.७.]

अभिभूत्योजाः अभिभूतिपराजयकरमोजो बलं यस्य सः (राजा) ३.३४.६. **अभभूत्योजसम्**=अभिगतानि तप ऐश्वर्याण्योजः पराक्रमश्च यस्मात् तम् (वज्रम्=शस्त्रम्) १.५२.७. [अभिभूति-ओजस्पदयोः समासः]

अभिभूम अभिमुखं भवेम ६.२०.१. [अभि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङ् अडभावश्च]

अभिभूय तिरस्कृत्य ३.४८.४. [अभि+भू+क्त्वा समासे क्त्वो ल्यप्]

अभिभूः दुष्टानां तिरस्कर्त्ता (सेनापतिः) १.१००.१०. [अभि+भू सत्तायाम् धातोः क्विप्]

अभिमदत आभिमुख्यतया हर्षत १.५१.१. **अभिमदेम**=आनन्देम ४.१६.१६. [अभि+मदी स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्लोट् लिङ् च व्यत्ययेन परस्मैपदम्। मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्वा व्यत्ययेन शप्]

अभिमन्त्रये धर्ममाज्ञापयामि ऋ० भू० ६४ [अभि+मत्रि गुप्तभाषणे (चुरा०) धातोर्लट् मन्त्रयते अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

अभिमन्यमानः आभिमुख्येन जानन् (इन्द्रः=राजा) ४.२०.५. [अभि+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः कर्मणि शानच्]

अभिमंस्थाः अभिमन्येथाः १३.४१. [अभि+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लुङ् अडभावश्छान्दसः]

अभिमाति अभिमन्यते येन (सहः=बलम्) ५.२३.४. **अभिमातयः**=अभिमानिनः (मनुष्याः) प्र०—अत्र 'माङ् माने' इत्यस्य रूपम् १.२५.१४. **अभिमातीः**=अभिमानहर्षयुक्ताः (पृतनाः=वीरजनसेनाः) ६.३७. अभिमानयुक्तान् दुष्टान् विघ्नकारिणः (दुर्जनान्) ३.२४.१. शत्रूनिव रोगान् ३.६२.१५. **अभिमातिषु**=अभिमानयुक्तेषु योद्धृषु ३.३७.७. [अभि+माङ् माने (दिवा०) धातोः क्तिच् घुमास्था०' इतीत्वं छान्दसत्वान्न भवति। सपत्नो वा ऽअभिमातिः श० ३.६.४.६. अभिमातिर्वै पाप्मा भ्रातृव्यः मै० २.५.८.६. पाप्मा वा अभिमातिः तै० स० २.१.३.५. काठ० १३.३.]

अभिमातिघ्ने येनाऽभिमानयुक्ताः शत्रवो हन्यन्ते तस्मै, (इन्द्राय=सभापतये) ६.३२. योऽभिमातीन् शत्रून् हन्ति तस्मै, भा०—विघ्ननाशकाय (इन्द्राय=पुरुषाय) ३८.८. [अभिमाति+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति टक्]

अभिमातिजित् अभिमानजित् (अग्निः=विद्वज्जनः) २७.३. (अभिमाति+जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्]

अभिमातिनम् शत्रुगणम् १.८५.३. [अभिमाति प्राति० मत्वर्थे पामादित्वान्नः]

अभिमातिसहः येऽभिमात्याभिमानेन युक्तान् शत्रून् सहन्ते ते (वीरासः=शूराः जनाः) ६.७.३. येऽभिमातीन् शत्रून् सहन्ते ते (आप्ता विद्वांसः) २.४.६. [अभिमाति+षहमर्षणे (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः]

अभिमातिसह्ये अभिमातयोऽभिमानयुक्ताः शत्रवः सह्या यस्मिन् सङ्ग्रामे तस्मिन् ३.३७.३. [अभिमाति+षहमर्षणे (भ्वा०) धातोः 'शकिसहोश्च' अ० ३.१.९९. सूत्रेण यत् स च 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति बहुलवचनात् कर्त्तरि]

अभिमातिषाहः येऽभिमातीनभिमानयुक्ताञ्छत्रून् सहन्ते निवारयन्ति (वाजाः=धनुर्वेदबोधजा वेगाः) १२.११३. येऽभिमानयुक्तान् शत्रून् सोढुं शक्नुवन्ति (वीरजनाः) ६.६९.४. [अभिमाति+षह मर्षणे (दिवा०) धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण ण्विः प्रत्ययः। संवृष्णान्यभिमातिषाह इति सꣳरेताꣳसि पाप्मसह इत्येतत् श० ७.३.१.४६.]

अभिमातिहनम् योऽभिमानयुक्तं शत्रुं हन्ति तम् (राजानम्) ६.५१.३. [अभिमाति+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्]

अभिमातिहा येऽभिमिमत इत्यभिमातयस्तान् हन्ति सः (विद्वान्मनुष्यः) प्र०—अत्र औणादिक क्तिच् प्रत्ययः ५.२४. [अभिमाति+हन हिंसागत्योर्धातोः क्विप् 'सौ चे' ति दीर्घः]

अभिमृशे आभिमुख्येन मृषन्ति सहन्ते येन तस्मै (विद्युदग्नये) ११.२४. [अभि+मृष तितिक्षायां धातोः क्विप्]

अभिमृशे अभिमृशे=अभिसहे २.१०.५. [अभि+मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लट् व्यत्ययेन शप्। षकारस्य शकारश्छान्दसः]

अभिमित्रम् अभिमुखं सखायमिव ७.१८.१०. [अभि-मित्रयोः समासः]

अभियन्तु प्राप्नुवन्तु १२.६९. [अभि+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्]

अभियासिषत् सम्मुखं यातुमिच्छतु १.१७४.५. [अभि+या प्रापणे (अदा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्। ततो द्वित्वाऽभावो लेट् च]

अभियुग्वना योऽभियुज्यते वन्यते विभज्यते तेन (रथेन) ६.४५.१५. [अभि+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति क्वनिप्]

अभियुग्वा योऽभियुङ्क्ते सः, भा०—संयुक्तः (मरणं प्राप्तो जीवः) ३९.७. [अभि+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्वनिप्]

अभियुजः या आभिमुख्येन युज्यन्ते ताः प्रजाः ३.११.६ योऽभियुङ्क्ते तस्य (तन्यतोः=विद्युतः) ४.३८.८. या आभिमुख्येन युञ्जते ताः शत्रुसेनाः ५.४.५. या अभियुञ्जते ताः (विशः=प्रजाः) ६.२५.२. [अभि+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'सत्सूद्विष०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्]

अभियुध्य अभिमुखं युध्यस्व, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.९१.२३. आभिमुख्येन योधय गमय, प्र०—अत्र अन्तर्भाविण्यर्थः युध्यतिर्गतिकर्मा निघं० २.१४, ३४.२३. [अभि+युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्लोट् व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अभियोधिष्टम् अभिमुखं युध्येयाताम् ६.६०.२. [अभि+युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्लुङ् अडभावश्च]

अभिरक्षति सब ओर से रक्षा करता है ३३.३०.
अभिरक्षन्ति=सर्वतः पालयन्ति १.१६३.५. [अभि+रक्ष पालने (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभिरुरुहुः अभिवर्धन्ते ५.७.५. [अभि+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च धातोर्लिट्]

अभिवक्षसि आभिमुख्येन वदसि ३.१५.५. [अभि+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लेट् 'सिब्बहुलं लेटि' इति सिप्]

अभिवक्षि प्रापय ६.२१.१२. [अभि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लुङि उत्तमैकवचने रूपम् अडभावो पुरुषव्यत्ययश्च]

अभिवदति दूसरे के साथ संवाद या दूसरे को अभिवादन करता है सं० वि० २०९. अथ० ९.६.१.४. [अभि+-वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लट्। वदति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अभिवर्षतु अभिमुखं वर्षतु ३६.१०. सब ओर से बरसे आर्याभि० २.२२, ३६.१०. [अभि+वृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभिववक्षे अभिसंहन्ति, प्र०—अयं 'वक्ष सङ्घाते' इत्यस्य प्रयोगः १.१४६.२. [अभि+वक्ष रोषे सङ्घात इत्येके (भ्वा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अभिवव्रे अभिमुखं वृणोति ४.१.१३. [अभि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लिट्]

अभिवष्टि अभितः कामयते ४.१.८. [अभि+वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लट्। वष्टि कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

अभिवहन्ति प्रापयन्ति १.११८.४. [अभि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभिवावशाना अभिमुखं भृशं कामयमाना (गौः=पृथिवी) १.१६४.२८. [अभि+वश कान्तौ (अदा०) धातोः 'लिटः कानज्वा' अ० ३.२.१०६ सूत्रेण कानच् वावशानः पदनाम निघं० ४.२.]

अभिवावशे अभिमुखं भृशं कामयते २.१४.९. [अभि+वश कान्तौ (अदा०) धातोर्यङ्लुक् व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अभिवाहि आभिमुख्येन प्राप्नुहि १८.४५. [अभि+वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोर्लोट्]

अभिविक्त सर्वतो विजानीत २५.३७. सर्वतो विञ्ज्यात् पृथक् कुर्यात् १.१६२.१५. [अभि+विजिर् पृथक् भावे (रुधा०) धातोर्लुङ् अडभावश्च]

अभिविख्येषम् अभितः सर्वतो विविधं पश्येयम्, प्र०—अत्राऽभिव्योरुपपदे चक्षिङ् इत्यस्याऽऽशीर्लिङ्यार्धधातुकसंज्ञामाश्रित्य ख्याञ्-आदेशः, 'लिङ्याशिष्यङ्' इत्यङ्, सार्वधातुकसंज्ञामाश्रित्य च या इत्यस्य इय्-आदेशः, सकारलोपाऽभाव इति १.११.]

अभिविद्यौत् अभिविद्योतयेत् ४.४.६. [अभि+वि+द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावः। 'द्युद्भ्यो लुङी'ति परस्मैपदम्। च्लेर्लुक् च]

अभिविनश्यति सर्वतोऽदृष्टं भवति १.१७०.१. [अभि+वि+णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्लट्]

अभिविपश्य अभिसमीक्षस्व ३.२३.२. [अभि+वि+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। शिति पश्यादेशः]

अभिवियन्ति अभिमुखं प्राप्नुवन्ति ६.९.५. [अभि+वि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् 'इणो यण्' इति यणादेशः]

अभिवीता अभितः सर्वतो व्याप्ता अभयाख्या (दक्षिणा) ७.२७.४. [अभि+वी गतिप्रजनादिषु (अदा०) धातोः क्तः। स्त्रियां टाप्]

अभिवीरः अभीष्टा वीरा यस्य सः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. [अभि+वीरपदयोर्बहुव्रीहिः। 'प्रादिभ्यो धातुजस्ये०' ति वार्त्तिकेनोत्तरपदलोपश्च]

अभिव्यक्रामत् सर्वतो व्याप्तवान् ऋ० भू० १२२. [अभि+वि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'क्रमः परस्मैपदेषु' सूत्रेण शिति दीर्घः]

अभिव्ययस्व सर्वतो व्ययं कुरु ३.५३.१९. [अभि+व्यय गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अभिव्रजद्भिः सर्वतो गच्छद्भिः (विद्वज्जनैः) १.१४४.५. **अभिव्रजन्**=अभितः सर्वतो गच्छन् (आत्मा) १.५८.५. [अभि+व्रज गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अभिव्लग्य अभितः सर्वतः प्राप्य १.१३३.२. अभितः सर्वतो लगित्वा प्र०—अत्र पृषोदरादिना वुगागमः १.१३३.१. [अभि+लगे सङ्गे (भ्वा०) धातोः क्त्वा, क्त्वो ल्यप्। वुगागमश्च]

अभिव्लङ्गैः अभितो गमनाऽऽगमनैः १.१३३.४. [अभि+लगि गतौ (भ्वा०) धातोः 'हलश्चे' ति घञ् अधिकरणे]

अभिशस्तये अभितो हिंसनाय ५.३.१२. [अभि+शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः स्त्रियां भावे क्तिन्]

अभिशस्तिचातनः योऽभिशस्ति हिंसां चातयति सः (अग्निः=पावकः) ३.३.६. (अभिशस्ति+चते याचने (भ्वा०) धातोर् णिचि ल्युः प्रत्ययः]

अभिशस्तिपाम् अभिमुखप्रशंसारक्षितारम् (परीक्षकं जनम्) ६.५२.३. **अभिशस्तिपाः**=योऽभिशंस्तेः हिंसनात् पाति रक्षति (ईश्वरो विद्युद्वा) ५.५. [अभिशास्ति+पा रक्षणे (भ्वा०) धातोर् 'आतो मनिन्०' अ० ३.२.७४ सूत्रेण विच् प्रत्ययः]

अभिशस्तिपावा प्रशंसितानां पालकः पवित्रकरः (अग्निः=विद्वज्जनः) ७.११.३. योऽभिशस्तेराभिमुख्याद्धिसमानात्पाति रक्षति (अग्निः=विद्वन्मनुष्यः) ५.४. योऽभिशस्तेर्हिंसायाः पावा रक्षकः सः (सभाध्यक्षः) १.७३.६. [अभिशस्ति+पा रक्षणे (भ्वा०) धातोः 'आतो मनिन्०' अ० ३.२.७४. सूत्रेण वनिप् प्रत्ययः]

अभिशस्तिम् अभितो हिंसाम् ३.३०.१. दुर्वचनवादम् ३४.१८. **अभिशस्तेः**=आभिमुख्येन स्वप्रशंसां कुर्वतो दम्भिनः (जनस्य) ७.१३.२. अभितः प्रशंसितस्य (शर्धतः=बलस्य) ६.४२.४. हिंसायाः १.७१.१० सर्वतोऽपराधात् २७.९. अभितो हिसकात् (अग्नेः) १.९३.५. सुखहिंसकात् (कार्यात्) १.९१.१५. **अभिशस्त्यै**=आभिमुख्यायै स्तुतये, प्र०—अत्र 'शंसु स्तुतौ' इत्यस्य क्तिन् प्रत्ययान्तः प्रयोगः २.५. [अभि+शसु हिंसायां, शंसु स्तुतौ वा धातोः क्तिन्]

अभिशस्तीः अभितो हिंसीः ३३.९५. [अभि+शसु हिंसायाम्+क्तिन्]

अभिशासति आभिमुख्ये शासनं करोति ६.५४.२. [अभि+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्लट्]

अभिशुम्भमाना अभितः प्रकाशयन्ती (उषाः) १.९२.१०. [अभि+शुम्भ भाषणे (भासने चापि) (भ्वा०) धातोः शानच् व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अभिशूशुचन् भृशं शोकं कुर्य्युः ३५.८. [अभि+शुच् शोके (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ् अडभावश्च]

अभिशोचीः अभितः शोकयुक्तां कुर्याः १२.१५. [अभि+शुच शोके (भ्वा०) धातोर्लुङ् अडभावश्च]

अभिश्रावाय य अभितः शृणोति श्रावयति वा तस्मै (पुरुषाय) १.१८५.१०. [अभि+श्रुश्रवणे (भ्वा०) कर्त्तरि छान्दसत्वात् अण्]

अभिश्रियम् अभितः शोभकम् (सभापतिम्) ३३.२१. **अभिश्रिया**=अभितः शोभायुक्ते (द्यावापृथिव्यौ) १.१४४.६. अभितः सर्वतः श्रीः शोभा लक्ष्मीर्याभ्यान्ते (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ३४.४५. आभिमुख्या श्रीर्याभ्यान्ते (द्यावापृथिवी=भूमिसूर्यौ) ६.७०.१. **अभिश्रीः**=अभितः सर्वतः श्रियो यस्य सः (राजा) २६.७. सर्वथा सब का निधि (शोभाकारक ईश्वर) आर्याभि० १.३१, ऋ० १.७.६.१. अभितः श्रियो यस्य यस्माद्वा (ईश्वरोऽग्निर्वा) १.९८.१. अभितः शोभा यस्य सः (श्वेतः=वायुः) २७.२३. [अभिश्रीपदयोः समासः। 'श्री' शब्दे श्रिञ्सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'क्विप् वचिप्रच्छ्यचा०' वार्तिकेन क्विप् दीर्घश्च। अभिश्रीः अभिश्रयणीयः नि० ७.२१]

अभिश्रोषन्तु अभिमुखं शृण्वन्तु, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन लेटि सिप् १.८६.५. [अभि+श्रु श्रवणे (भ्वा०)

धातोर्लेटि सिपि च रूपम्]

अभिश्वसन्=सर्वतः श्वसन् प्राणं धरन् (मुमुक्षुर्जनः) १.१४०.५. [अभि+श्वस प्राणने (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अभिषाचम् आभिमुख्येन सचन्तम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.५१.२. **अभिषाचः**=ये आभिमुख्येन सचन्ति ते (सहाय्या जनाः) ६.६३.९. य आभ्यन्तर आत्मनि सचन्ते सम्बध्नन्ति ते (योगिनो जनाः) ७.३५.११. [अभि+षच समवाये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अण् प्रत्ययश्छान्दसः]

अभिषाताः अभितो विभक्ताः (गिरः=वाचः) ५.४१.१४. [अभि+षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । 'जनसनखनाम्०' इत्यात्वे रूपम्]

अभिषिञ्चामि सर्वथा स्वीकरोमि २०.३. सुगन्धजलैर्मूर्धनि मार्जयामि ऋ० भू० २१८. राजधर्मपालनार्थं सर्वतः स्थापयामि ऋ० भू० २१८. सर्वतो मार्जनेन स्वीकरोमि, भा०—राज्यपालनार्थमधिकरोमि २०.३. [अभि+षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोर्लट् । 'शे मुचादीनाम्' इति नुमि परसवर्णे रूपम्]

अभिषेक्तारम् अभिषेककर्त्तारम् (पुरुषम्) ३०.१२. [अभि+षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोस्तृच् कर्त्तरि]

अभिषेणान् अभिमुख्या सेना येषान्तान् (शत्रून् जनान्) ६.४४.१७. [अभिसेनापदयोः समासः । 'सुषामादिषु चे'ति मूर्धन्यादेशः]

अभिष्टने अभितः शब्दयुक्ते व्यवहारे १.८०.१४. [अभि+ष्टन शब्दे धातोरच् प्रत्ययः]

अभिष्टयः अभीप्सिताः (ऊतीः=रक्षणाद्याः) १.११९.८. इष्टेच्छाः १.५२.४. इष्टय इच्छाः ४.३१.१०. **अभिष्टये**=इष्टसिद्धये ५.३८.३. इष्टप्राप्तये १.१२९.१. अभीष्टसिद्धये, प्र०—अत्र 'एमन्नादिषु छन्दसि पररूपं वाच्यम्' अ० ६.१.९४. अनेन वार्त्तिकेन पररूपादस्य सिद्धिः ४.११. इष्टसुखाय, भा०—सर्वाभीष्टसंसाधनाय ३३.९१. अभीष्टसुखप्राप्तये ३३.८७. इष्टसुखसिद्धये ३६.१२. अभीष्टसुखाय २.३४.१४. **अभिष्टिभिः**=अभितः सर्वतो यजन्ति संगच्छन्ति याभिस्ताभिः (क्रियाभिः) १.२९.९. इष्टेच्छाभिः ५.३८.५. या आभिमुख्येनेष्यन्ते ताभिरभीष्टाभिरिच्छाभिः १.४७.५. अभीष्टाभिः क्रियाभिः १.१२९.९. **अभिष्टिः**=अभितः सर्वतो ज्ञाता ज्ञापयिता मूर्त्तद्रव्यप्रकाशको वा, प्र० अत्राऽभिपूर्वाद् इष गतौ, इत्यस्माद्धातोः 'मन्त्रे वृषेष०' अ० ३.३.९६. अनेन क्तिन् । 'एमन्नादिषु छन्दसि पररूपं वाच्यम्' 'एङि पररूपम्' इत्यस्योपरिस्थवार्त्तिकेनाऽभेरिकारस्य पररूपेणेदं सिध्यति (इन्द्रः=ईश्वरः सूर्यो वा) १.९.१. अभियष्टव्यः सर्वतः पूज्यः (विद्वज्जनः), प्र०—अत्र पृषोदरादित्वादिष्टसिद्धिः ३३.२५. अभिमुखा इष्टिः सङ्गतिर्यस्य सः (इन्द्रः=तेजस्विराजः) ३.३४.४. अभितः सर्वत इष्टयो यज्ञा यस्य सः (विद्वज्जनः), प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इतीकारलोपः २०.३८. **अभिष्टौ**=आभिमुख्येन यजनक्रियायाम् ६.६७.११. अभितः सङ्गते कर्मणि ४.१६.४. अभिप्रियायां सङ्गतौ ७.१९.८. [अभि+इष गतौ धातोः 'मन्त्रे वृषेष०' सूत्रेण क्तिन् । 'एमन्नादिषु छन्दसि पररूपं वाच्यम्' इतीकारस्य पररूपम्]

अभिष्टिकृत् योऽभिष्टिं करोति सः (विद्युदादिस्वरूपोऽग्निः) ४.११.४. योऽभिष्टिं सर्वत इष्टं सुखं करोति सः (इन्द्रः=राजा) २०.४८. अभीष्टसुखकारी (इन्द्रः=राजा) ४.२०.१. [अभिष्टि+डुकृञ् करणे (तना०) धातो. क्विप् प्रत्ययः । तुगागमश्च]

अभिष्टिद्युम्नाः प्रशंसितयशोधनाः (ब्रह्मचारिण्यः) ४.५१.७. [अभिष्टिर् व्याख्यातः । द्युम्नमिति धननाम निघं० २.१०. एनयो समासः]

अभिष्टिपाः योऽभिष्टिं पाति सः, (इन्द्रः=विद्वज्जनः) प्र०—अत्राऽऽकारादेशः २.२०.२. [अभिष्टि+पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि कः प्रत्ययः]

अभिष्टिमत् अभीष्टानि प्रशस्तानि सुखानि विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (कर्म) १.११६.११. [अभिष्टिप्राति० प्रशंसायां मतुप्]

अभिष्टिशवसे अभीष्टबलाय ३.५९.८. [अभिष्टिर्व्याख्यातः । शवस् इति बलनाम निघं० २.९. एनयोः समासः]

अभिष्टुते अभितः प्रशंसनीये (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ७.३९.७. [अभि+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

अभिष्ठितः अभितः स्थितो जाज्वल्यमानः (नमः पाशः=वज्रं बन्धनम्) ८.२३. [अभि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः । 'द्यतिस्यतिमास्था०' इतीकारादेशः]

अभिष्णक् उपसेवयाम्, प्र०—'भिष्णज् उपसेवायाम्' इति कण्ड्वादिधातोर्लङि विकरणव्यत्ययेन यको लुक्, अन्यत्कार्यं स्पष्टम् १०.३४. उपसेवेत २०.७७. [अभि+भिष्णज् उपसेवायाम् (कण्ड्वादि०) धातोर्लङ् यको लुक्]

अभिष्याम् आभिमुख्येन भवेयम् ७.१.१३. [अभि+अस भुवि (अदा०) धातोर्विधिलिङ्]

अभिसङ्क्लपेथाम् सर्वतः समानाभिप्राये समर्थयताम् १२.५७. [अभि+सम्+कृपु सामर्थ्ये धातोर्लङ् अडभावश्च]

अभिसचन्ताम् अभिमुखं संयुञ्जन्तु, अन्व०—अभिसंयुक्ता भवन्तु १.२२.११. **अभिसचन्ते**=अभिमुखं सम्बध्नन्ति ४.४४.२. अभितः समवयन्ति १.७१.७. [अभि+षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्लोट् लट् च । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । सचन्तां=संसेव्यन्ताम् नि० ६.३३.]

अभिसञ्चरन्ति आभिमुख्येन सम्यगाचरन्ति । [अभि+सम्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभिसञ्चरन्ती अभितः सम्यक् गच्छन्ती (द्यावापृथिव्यौ) [अभि+सम्+चर गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ ततो ङीप्]

अभिसञ्चरेण्यम् अभितः सम्यक् चरितुं ज्ञातुं योग्यम् (चित्तम्) १.१७०.१. [अभि+सम्+चर गतौ भक्षणे च (भ्वा०) धातोः 'कृत्यार्थे तवैकेनकेन्यत्वनः' सूत्रेण केन्यः प्रत्ययः । अभि सञ्चरेण्यम्=अभिसञ्चारि नि० १.६.]

अभिसत्वा अभितः सर्वतः सत्वानो युद्धविद्वांसो रक्षका भृत्या वा यस्य सः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७]

अभिसन्दधुः अभिमुखं सन्दधति १.१०१.६. [अभि+सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट् सामान्ये]

अभिसर्त्तारम् अभिमुखं गन्तारम् (पुरुषम्) ३०.१४. [अभि+सृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

अभिसन्नवन्ते अभिमुखं गच्छन्ति, प्र०—नवत इति गतिकर्मा निघं० २.१४, १.१६४.३. [अभि+सम्+नवत इति गतिकर्मा निघण्टौ, ततो लट्]

अभिसम्बभूव सर्वथा ऐसे निश्चय युक्त हो स० प्र० १५२, १०.१८.८. [अभि+सम्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

अभिसश्चत सर्वतः प्राप्नुत ३.१६.२. [अभि+सश्चति गतिकर्मा निघं० २.१४. धातोर्लोट्]

अभिसंयन्ति सम्मुख जाकर वड़ा मान्य करते हैं सं० वि० ८०, अथ० ११.५.३. सम्मुखे प्रसन्नतया मान्यं कुर्वन्ति ऋ० भू० २३५, अथर्व० ११.५.३. [अभि+सम्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

अभिसंरभन्ते अभिमुखं सम्यक् प्रवर्त्तयन्ति ३.२९.१३. [अभि+सम्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभिसंविवेश आभिमुख्येन सम्यक् प्रविशति ३२.११. अभिमुखं सम्यक् प्राप्य स एव मोक्षाख्यं सुखमनुभवति ऋ० भू० ८९. समाधियोग से सर्वथा प्रवेश किया करे सं० वि० २१५, ३२.११. परमानन्द में सर्वथा रहता है आर्याभि० २.१०. **अभिसंविशन्तु**=अभितः सम्यक् प्रविशन्तु १४.६. भा०—आभिमुख्येन विजानन्तु १५.५७. [अभि+सम्+विश प्रवेशे (तुदा०) धातोर्लिट् लोट् च]

अभिसिञ्चामि आभिमुख्येन सुगन्धेन रसेन मार्ज्मि ९.३०. अभिमुखमधिकरोमि १०.१७. [अभि+षिच क्षरणे (तुदा०) धातोर्लट्]

अभिसृजामि आभिमुख्येन रचयामि १.१९.९. [अभि+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लट्]

अभिसृष्टः अभिमुखं प्रेरितः (अन्धः=सुसंस्कृतमन्नम्) ३.३५.१. [अभि+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तः]

अभिस्तुते आभिमुख्येनाध्यापयन्त्यावुपदेशयन्त्यावध्यापकोपदेशिके ७.४०.७. [अभि+ष्टुञ् स्टुतौ (अदा०) धातोः क्तः]

अभिस्तुहि आभिमुख्यतया प्रशंस १.५४.२. [अभि+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

अभिस्याम् अभिमुखं भवेम १.१०५.१७. [अभि+अस भुवि (अदा०) धातोर्लिङ्]

अभिस्रवन्तु अभितः सर्वतः वृष्टिं करोतु प० वि० । सर्वतो वर्षन्तु ३६.१२. [अभि+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

अभिस्वर आभिमुख्येन जानीहि प्राप्नुहि, प्र०—स्वरतीति गतिकर्मसु, पठितम् निघं० २.१४, १.१०.४. **अभिस्वरन्ति**=आभिमुख्येनोच्चरन्ति १.१६४.२१. [अभि+स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोर्लोट् । अत्र गत्यर्थे अभिस्वरन्ति अभिप्रयन्ति नि० ३.१२.]

अभिस्वरा अभितः सर्वतः स्वरा वाणी तया, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति डादेशः 'स्वर' इति वाङ्नाम निघं० १.११, २.२१.५. **अभिस्वरे**=योऽभितः स्वरति शब्दयति तस्मिन् (अश्वे) ३.४५.२. [अभि+स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः 'स्वर' इति वाङ्नाम निघण्टौ]

अभिहर्यत सर्वथा प्रेमपूर्वक कामना से वर्त्ता करो सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.१. [अभि+हर्यति कान्तिकर्मा, निघं० २.६. ततो लोट् । हर्यति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

अभिहितः कथितो धृतो वा (वह्निः=अग्निः) ५.५०.४. [अभि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः । 'दधातेर्हिरि' ति धातोर्हिरादेशः]

अभिह्रुताम् सर्वतः कुटिलाचरणानाम् (दुर्जनानाम्)

१.८९.६. [अभि+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः क्तः । ह्रु ह्वरेश्छन्दसि' अ० ७.२.३१. सूत्रेण ह्रुरादेशः]

अभिह्रुते अभितः कुटिलात् १.१६६.७. [अभि+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः क्तिन् 'ह्रु ह्वरेश्छन्दसी' ति ह्रुरादेशः]

अभिह्रुतः आभिमुख्यं प्राप्तात् कुटिलात्, अभितः सर्वतो वक्रात् (अघात्=पापात्) १.१२८.५. [अभि+ह्वृ कौटिल्ये धातोः क्तः धातोश्च स्थाने ह्रुरादेशः]

अभीके सङ्ग्रामे, प्र०—अभीक इति सङ्ग्राम नाम निघं० २.१७, १.११८.५. कामिते व्यवहारे १.११६.१४. समीपे ४.१२.५. कमिते (सत्याचरणे) १.१८५.१०. कमितरि (जगदीश्वरे) ३.५६.४. [अभीके संग्रामनाम निघं० २.१७. अभीके प्रपित्वे निघं० ३.२९. अभीके प्राप्तस्य कौ० नि० ११७. अभीके इत्यासन्नस्य, अभीकेऽभ्यक्ते नि० ३.२०. अभीके उत्तराणि पदानि निघं० ३.२९.]

अभीतिः अभितः सर्वत इत्या प्राप्त्या २.३३.३. [अभि+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तिन्]

अभीत्य अभितः प्राप्य ४.३२.१०. [अभि+इण् गतौ धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

अभीद्धात् अभित सर्वतः इद्धात् दीप्तात् ज्ञानमयात् (तपसः) पं० वि०, १०.१९०.१. [अभि+ञिइन्धी दीप्तौ धातोः क्तः]

अभीन्धताम् आभिमुख्येन प्रदीपयन्तु ११.६१. [अभि+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) लोटि प्रथमबहुवचने रूपम्]

अभीपतः अभित उभयत आपो यस्मिँस्तस्मात् (मेघात्) १.१६४.५२. [अभि+अप् पदयोः समासे 'ऋक्पूरब्' अ० ५.४.७४. सूत्रेण समासान्तोऽकारः । 'द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत्' अ० ६.३.९७. सूत्रेणेकारादेशः । ततस्तसिः प्रत्ययः]

अभीयक्षते अभितो यष्टुं सत्कर्त्तुमिच्छते (इन्दवे=विद्यार्थिने) पु०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपः' इत्यभ्यासयकारलोपः ३३.६२. [अभि+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सनि द्वित्वेऽभ्यासयकारलोपे शतरि रूपम्]

अभीरवः भयरहिताः (सज्जनाः) १.८७.६. **अभीरुः**=भयरहितः (राजा) ४.२९.२. [ञिभी भये (जु०) धातोः 'भियः क्रुक्लुकनौ' अ० ३.२.१७४. सूत्रेण क्रुः प्रत्ययः । नञ्समासः]

अभीरुणम् निर्भयं, अन्व०—निरपराधिनम् (पुरुषम्) ६.१७. [नञ्+ञिभी भये (जु०) धातोः क्रुः प्रत्ययः । ततो मत्वर्थे नः प्रत्ययः]

अभीवर्त्तः य आभिमुख्येन वर्त्तते सः (व्यवहारः) १४.२३. [अभि+वृतुवर्त्तने धातोरच् प्रत्ययः । पूर्वपदस्य दीर्घः वृषा वा एष रेतोधा यदभीवर्त्तः तां० ४.३.८. अभीवर्त्तो ब्रह्मसाम भवत्येकाक्षराणि धनः प्रतिष्ठायै तां० १५.१०.११. संवत्सरो वाऽऽभीवर्त्तः सविꣳशस्तस्य द्वादशमासाः सप्तर्त्तवः संवत्सर एवाभीवर्त्तः श० ८.४.१.१५. अभीवर्त्तेन वै देवाः स्वर्गं लोकमभ्यवर्त्तन्त ता० ४.३.२.]

अभीवृतम् अभितो वृतं युक्तम् (वज्रं=किरणसमूहम्) ३.४४.५. **अभीवृता**=सर्वतो वायुनाऽऽवृता (गौः=भूमिः) १.१६४.२९. **अभीवृता**=येऽभितो वर्त्तेते (द्यावापृथिवी=विद्युदन्तरिक्षे) ६.७०.४. **अभीवृतम्**=अभितः सर्वतः साधनैः पूर्णो वर्त्तते सोऽभिवृतम् प्र० 'नहिवृति०' अ० ६.३.११६. इति पूर्वस्य दीर्घत्वम् १.३५.४. [अभि+वृञ् आवरणे धातोः क्तः । अभीवृता अभिप्रवृत्ता नि० २.९.]

अभीशवः अङ्गुलय इव (विद्वांसः), प्र०—अभीशव इत्यङ्गुलिनाम निघं० २.५, ५.६१.२. अभितोऽश्नुवते व्याप्नुवन्ति मार्गान् यैस्ते रश्मयो हया वा, प्र०—अत्राभिपूर्वाद् 'अशूङ् व्याप्तौ' इत्यस्माद्धातोः 'कृवापा०' उ० १.१. इत्युण् वर्णव्यत्ययेनाकारस्थाने ईकारश्च १.३८.१२. **अभीशुभिः**=रश्मिभिः, प्र०—अभीशव इति रश्मिनाम निघं० १.५, ५.४४.१४. रस्सियों से स० प्र० २४७, ३४.६. भा०—प्रग्रहैः ३४.६. **अभीशूनाम्**=बाहूनाम् ६.७५.६. अभितः सद्यो गन्तॄणाम् (अश्वानाम्) २९.४३. **अभीशूनिव**=रश्मीनिव ३.५७.६. [अभि+अशूङ् व्याप्तौ धातोर्बाहुलकाद् उः प्रत्ययः । अकारस्येकारः अभीशू बाहु नाम निघं० २.४. अभीशव रश्मिनाम निघं० १.५. अंगुलिनाम निघं० २.५. अभीशवः रश्मिनामसाधारणमश्व· रश्मिभिः नि० २.१५. अभीशवोऽभ्यश्नुवते कर्माणि नि० ३.९. अभीशवो वै रश्मयः श० ५.४.३.१४.]

अभीषाट् योऽभिसहेत सः (औरसः स्वगोत्रजो वा पुत्रः) ७.४.८. [अभि+षह मर्षणे धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण ण्विः 'सहेः साडः सः' अ० ८.३.५६. सूत्रेण मूर्धन्यः 'अन्येषामपि दृश्यते' इति पूर्वपदस्य दीर्घत्वम् अभिषाट् अभिषहमाणः सपत्नान् नि० ३.३.]

अभीष्टये इष्टाऽऽनन्दप्राप्तये ऋ० भू० ३०८. [अभि+इष गतौ धातोः 'मन्त्रे वृषेष०' सूत्रेण क्तिन्]

अभीहि आभिमुख्येन जानीहि १.८०.३. [अभि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट् मध्यमैकवचनम्]

अभुञ्जतः स्वयमपि भोगमकुर्वतः (अदातुर्जनस्य) १.१२०.१२. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोः शतृ-प्रत्ययः नञ्समासः]

अभुत्स्महि विजानीयाम ४.५२.४. [बुध अवगमने (दिवा०) धातोर्लुङि उत्तमबहुवचनम्]

अभूत् भवतु ६.१२. भवति, प्र०—अत्र 'वर्त्तमाने लट्' पूर्वाऽपरभावतः ८.६. होता है सं० वि० २१५, ४०.७. भवेत् १३.३६. भवति, प्र०—लडर्थे लुङ् १.४६.१०. भवन्ति, प्र—अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम् ४०.७. **अभूत**=भवत ४.३४.३. **अभूताम्**=भवेताम् २५.४४. भवतः १.१६२.२१. **अभूम**=भवेम १८.२८. **अभूवन्**=भवन्ति ५.३.११. प्रसिद्धा भवन्ति ६.३७.२. [भू सत्तायाम् धातोः सामान्ये लुङ् 'गातिस्थाघु०' इति सिचो लुक्। अभूत अभवत नि० ६.१६.]

अभूतन भवन्ति १.१६१.५. **अभूः**=भवेः १२.११. [भू सत्तायाम् धातोर्लुङ् मध्यमबहुवचने तकारस्य स्थाने 'तप्तनप्तनथनाश्चे' ति सूत्रेण तनप्]

अभूत्यै अनैश्वर्याय ३०.१७. [भू सत्तायाम् धातोः क्तिन् नञ्समासः भू प्राप्तौ (चु०) धातोर्वा क्तिन्]

अभूषन् अलङ्कुर्य्युः ३.५१.८. भूषयेयुः ३३.२२. [भूष अलङ्कारे (भ्वा० चुरा०) धातोर्लङ्]

अभूषन् अलङ्कुर्वन् (विद्वान्) ३.३८.४. [नञ्+भूष अलङ्कारे धातोः शतृ]

अभेत् भिनत्ति १.३३.१३. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लुङ्। च्लेर्लुक् च छान्दसः]

अभोग्घनः ये भोज्यन्ते ते भोजो, हन्यन्ते ते हनः, भोजश्च ते हनवो भोग्घनः, न भोग्घनोऽभोग्घनस्ते (रुद्राः=वायवः) १.६४.३. [भोजः=भुज पालनाभ्यवहारयोर् धातोर्घञ्। हनः=हन हिंसागत्योर् धातोः घः प्रत्ययः। समासेऽकारलोपो भोजस्य]

अभ्यक्षरन् अभिमुखं चालयन्ति १.८४.४. [अभि+क्षर संचलने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अभ्यक्षि गच्छति ६.११.५.

अभ्यख्यत् प्रख्यापयेत् ४.२४.८. [अभि+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोर्लुङ्। 'अस्यतिवक्ति०' इत्यङ्]

अभ्यचष्ट प्रकाशितवान् ३.५४.६. [अभि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि दर्शनेऽपि (अदा०) धातोर्लङ्]

अभ्यचुच्यवुः अभितः च्यवन्तां प्राप्नुवन्तु १.४५.८. [अभि+च्युङ् गतौ धातोर्णिचि लुङि रूपम्]

अभ्यजाव प्राप्नुयाव १.१७८.३. (अभि+अज गति-क्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लोटि उत्तमद्विवचनम्]

अभ्यञ्जानः सर्वतः प्रकटीकुर्वन् (अग्निः) २.८.४. अभि+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोः शानच्]

अभ्यनूषत् सर्वतः स्तुवन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् १.११.८. अभिमुखं प्रशंसेयुः ३.५१.१. सर्वतः प्रशंसत भा०—प्रशंसां प्राप्नुत २०.६६. प्रशंसन्तु ३३.८१. [अभि+णू स्तवने (तुदा०) धातोर्लुङ् व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अभ्यपारयत् अभिपारयति २.१५.५. [अभि+पार-कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोर्लङ्]

अभ्यमदन् आभिमुख्येनाऽऽनन्दन्ति ३.३१.१०. [अभि+मदी हर्षग्लेपनयोः (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अभ्यमन्त अभितो रुजन्ति १.१८९.३. [अभि०+अम रोगे (चु०) धातोर्लङ्। णिलुक् च]

अभ्यमीति प्राप्नोति २२.५. [अभि+अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लट्। 'तुरुस्तुशम्यमः०' अ० ७.३.९५. सूत्रेण 'ईट्' आगमः]

अभ्यमुञ्चत् आभिमुख्येन मुञ्चति १.६१.१०.[अभि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लङ्। 'शे मुचादीनामि' ति नुम्]

अभ्ययष्ट अभिसङ्गच्छेत ६.४७.२५. [अभि+यजदेवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अभ्ययुक्त आभिमुख्यतया युङ्क्ते १.४८.७. [अभि+युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लुङ्]

अभ्यर्च सर्वतः सत्कुरु ६.५०.६. **अभ्यर्चत**=सर्वतः सत्कुरुत १.५१.१. **अभ्यर्चति**=सर्वतः सत्करोति १.१०१.७ **अभ्यर्चन्ति**=अभिमुखं सत्कुर्वन्ति ६.५०.१५. **अभ्यर्चामि**=आभिमुख्येन पूजयामि ४.२५. **अभ्यर्चे**=आभिमुख्येन सत्करोमि ५.४१.८. [अभि+अर्च पूजायाम् (भ्वा० उभय०) धातोर्लोटि लटि च रूपाणि]

अभ्यर्धयज्वा आभिमुख्यस्यार्धे सङ्गन्ता (पूषा=मेघः) ६.५०.५. [अभि+अर्धोपपदे यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'सुयजोर्ङ्वनिप् अ० ३.२.१०३. सूत्रेण ङ्वनिप्। अभ्यर्द्धयज्वा=अभ्यर्धयन्यजति नि० ६.६.]

अभ्यर्षत सर्वतः प्राप्नुत १७.९८. [अभि+ऋषी

गतौ (तु०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन शप्]

अभ्यवतु सर्वतो रक्षतु १७.३९. [अभि+अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अभ्यवधावति अभिमुखं गच्छति २५.३४. [अभि+अव+सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लट् । शिति 'पाघ्राध्मा०' सूत्रेण धावादेशः]

अभ्यवन्वन् आभिमुख्येनाऽवन्ति रक्षणादिकं कुर्वन्ति १.५१.२. [अभि+अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

अभ्यवर्त्तन्त अभिवर्त्तन्ते ५.३१.५. [अभि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभ्यवहन् आभिमुख्येन प्राप्नुयुः १.५१.१०. [अभि+अव+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ् । अडभावश्च]

अभ्यवह्रियमाणः भुज्यमानः (सलिलः) ८.५९. [अभि+अव+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

अभ्यवासयत् आभिमुख्यतयाऽऽच्छादयति १.१६०.२. [अभि+वस आच्छादने (अदा०) धातोर्णिचि लङि च रूपम्]

अभ्यवृधत् अभिवर्धते ४.२३.१. [अभि+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'द्युद्भ्यो लुङी' ति परस्मैपदम् । 'पुषादिद्युतादि०' सूत्रेण च्लेरङ्]

अभ्यश्नवाम अभितः प्राप्नुयाम ६.४९.१५. **अभ्यश्नाव**=आभिमुख्यतया व्याप्नुयाव जेतुं समर्थौ स्याव १.१७९.३. **अभ्यश्नोति**=अभिमुखं प्राप्नोति ३.११.७. **अभ्यश्याम्**=सर्वतः प्राप्नुयाम् १.१५४.५. **अभ्यश्याम**=अभिमुखं प्राप्नुयाम १८.७४. [अभि+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लोट् । 'अभ्यश्याम्' इत्यादौ विधिलिङ् 'बहुलं छन्दसी' ति श्नुविकरणस्य लुक् । अश्नुते व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८]

अभ्यसचन्त आभिमुख्येन समवयन्ति ३.३१.४. [अभि+षच् समवाये (भ्वा०)+लङ् व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अभ्यसत् अभ्यासं कुर्यात् १.१५६.२. [भ्यस भये (भ्वा०)+लङ् । धातूनामनेकार्थत्वादत्राभ्यासेऽपि]

अभ्यसि अभिमुखं भवसि ४.६.१. **अभ्यस्तु**=अभिमुखमस्तु १.९४.८. [अभि+अस भुवि (अदा०) धातोर्लट् लोट् च]

अभ्यसिञ्चन् अभिसिञ्चन्ति १०.१. [अभि+षिच क्षरणे (तुदा०) धातोर्लङ् । 'शे मुचादीनामि' ति नुम्]

अभ्यसृक्षत अभिमुखं सृजेयुः १.१३५.६. [अभि+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लुङ् । च्लेः क्सादेशे रूपम् । छान्दसत्वाद् 'सृजिदृशोर्झल्यम्०' इत्यमागमो न । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अभ्यसेताम् प्रक्षिप्ते भवतः २.१२.१. [अभि+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन शप् आत्मनेपदञ्च । भ्यस भये (भ्वा०) धातोर्वा लङ् । अभ्यसेताम् भ्यसते रेजते इति भयवेपनयोः नि० ३.२१. अबिभीताम् नि० १०.१०.]

अभ्यस्थात् अभितिष्ठति १.१४९.४. [अभि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'गातिस्था०' इति सिज्लुक्]

अभ्यहिन्वन् अभिवर्धयन्ति ३.३१.५. [अभि+हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्लङ्]

अभ्यागन्म अभिमुखं समन्तात् प्राप्नुयाम, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् 'मन्त्रे घसह्वर०' इति च्लेर्लुक् 'म्वोश्च' अ० ८.२.६५. इति मकारस्य नकारः ३.३८. [अभि+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०)+लुङ् । लेर्लुक् । 'म्वोश्चे' ति मकारस्य नकारः]

अभ्यागात् अभ्यागच्छति १.१६४.२७. **अभ्यागाम्**=अभिमुखं समन्तादगाम् ७.४५. [अभि+आङ्+इण् गतौ (अदा०)+लुङ् । 'इणो गा लुङि' इति गादेशः । 'गातिस्था०' इति सिचो लुक्]

अभ्यातर अभ्याप्लव ११.७१. [अभि+आङ्+तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) +लोट्]

अभ्यादधामि होम करता हूं स० प्र० १६४, २०.२४. सर्वथा सब ओर से धारण करता हूं सं० वि० १८९, २०.२४. [अभि+आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०)+लट्]

अभ्यानट् अभितो व्याप्नोति ३४.४२. [अभि+आङ्+नक्षति व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८. ततो लङ्]

अभ्यानशुः अभिमुखमश्नुवन्ति प्राप्नुवन्ति २.२४.६. [अभि+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०)+लिट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अभ्यायच्छस्व अभिमुखं समन्ताद्विस्तारय विस्तारयति वा, प्र०—अत्र पक्षे लडर्थे लोट् 'आङो यमहनः अ० १.३.२८. अनेनाऽऽत्मनेपदम् 'आङ्पूर्वको यमधातुर्विस्तारार्थे ३.३८. अभिमुखं समन्ताद् देहि आयच्छति विस्तारयति वा' प्र०=अत्र पक्षे व्यत्ययः सिद्धिश्च पूर्ववत् ३.३९. अभिमुखं समन्ताद् विस्तारय ३.४०. [अभि+आङ्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'आङो यमहनः' इत्यात्मनेपदम् । 'इषुगमियमां छः' इति मकारस्य छकारे तुगागमे च रूपम्]

अभ्यायत समन्ताद् हन्ति १.८०.१२. [अभि+अय गतौ (भ्वा०)+लङ्]

अभ्यायातम् आगच्छतम् १.१०८.६. [अभि+आङ्+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्]

अभ्यारुः प्राप्नुवन्तु ३.१.४. [अभि+ऋ गति-प्रापणयोः (भ्वा०)+लोटि प्रथमबहुवचनम्]

अभ्यावर्त् अभ्यावर्त्तते ७.५९.४. [अभि+आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०)+लङ्। 'बहुलं छन्दसीति' शपो लुक्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अभ्यावर्त्तस्व आभिमुख्येनाऽऽवर्त्तते १२.१०३. [अभि+आङ्+वृत्तु वर्त्तने (भ्वा०)+लोट्]

अभ्यावर्त्तिन् आभिमुख्येन वर्त्तितुं शीलमस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=पुरुषार्थिन् विद्वज्जन) १२.७. **अभ्यावर्त्तिने**= अभ्यावर्त्तितुं शीलं यस्य तस्मै (सज्जनाय) ६.२७.५. **अभ्यावर्त्ती**=यो विजेतुमभ्यावर्त्तते सः (अग्निः=राजा) ६.२७.८. [अभि+आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

अभ्याववृत्रन् अभिमुखं समन्तादावृण्वन्ति ३.३२.१५. [अभि+आङ्+वृतु वरणे (दिवा०) धातोर्णिचि लुङि छान्दसं रूपम्]

अभ्याववृत्स्व अभ्यावर्त्तय ४.१.३. वर्त्तिता भवतु, अन्व०—अभ्यावर्त्यताम् १२.७०. अभ्यावर्त्तस्व ६.१९.३. [अभि+आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

अभ्यावृत्तः आभिमुख्येनाऽङ्गीकृतः (वातः=बाह्यो वायुः) ८.५८. [अभि+आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः क्तः]

अभ्युत्तरेम उल्लङ्घयेम ३५.१०. [अभि+उत्+तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

अभ्युदेति अभित उदयं करोति ७.६०.२. [अभि+उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

अभ्युपप्रभरामहे आभिमुख्येन समीपं धरामहे ४.५६.५. [अभि+उप+प्र+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभ्युपयन्ति अभिमुखं प्राप्नुवन्ति ६.२८.४. [अभि+उप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

अभ्युपावहरामि अभितः सामीप्येनाऽर्वाक् स्थापयामि १०.२५. [अभि+उप+अव+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

अभ्युप्य अभितो वपनं कृत्वा २.१५.९. [अभि+डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोः क्त्वा। क्त्वो ल्यप् समासे]

अभ्यूर्ण्वाना आभिमुख्येनाऽर्थानाच्छादयन्ती (उर्वशी=प्रज्ञा) ५.४१.१९. [अभि+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः शानच्। स्त्रियां टाप्]

अभ्यृणोति सर्वतो गच्छति प्राप्नोति, प्र०—ऋणोतीति गतिकर्मा निघं० २.१४, ३४.२५. [अभि+ऋणोति गतिकर्मा निघं० २.१७. ततो लट्]

अभ्येति प्राप्नुयात् १.१२४.९. पश्चाद् गच्छति १.११५.२. [अभि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

अभ्यैति आभिमुख्येन सर्वतः प्राप्नोति १७.४७. [अभि+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

अभ्यैक्षेताम् अभिमुखमीक्षतां पश्यतः ३२.७. [अभि+ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अभ्यौहिष्ट अभिमुखं वितर्कयति, भा०—कुतर्कयति ६.१७.८. [अभि+उ वितर्के (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अभ्रा अभ्राणि (मेघाः) ५.६३.६. **अभ्रेण**= घनेन ५.६३.४. मेघेन, प्र०—अभ्र इति मेघनाम निघं० १.१०, ५.८५.४. **अभ्राणीव**=वायुदलानीव ६.४४.१२. **अभ्रे**=घने ५.४८.१. अभ्रस्य=घनस्य ५.८४.३. [अभ्रम् मेघनाम। निघं० १.१०. अभ्रमेव सविता गो० पू० १.३३. अथ यदभ्रं स्यादेतद्वा अस्य तद्रूपं येन प्रजा बिभर्त्ति कौ० १८.४. अग्नेर्वै धूमो जायते, धूमादभ्रम् अभ्राद् वृष्टिः श० ५.३.५.१७. अभ्रं वा अपां भस्म श० ७.५.२.४८. [वसोर्धारायै) अभ्रमूधः श० ९.३.३.१५.]

अभ्राजि प्रकाश्यते ५.५४.६. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

अभ्राट् न केनाऽपि प्रकाशितो भवति स्वप्रकाशत्वात् (अग्निः) १.६६.३. [नञ्युपपदे भ्राजृ दीप्तौ धातोः क्विप्]

अभ्राट् भ्राजते ४.६.५. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। बहुलं छन्दसीति शपो लुक्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अभ्रातरः अबन्धुरिव वर्त्तमानाः (पापिनो जनाः) ४.५.५. [अभ्रातरः=अभ्रातृकाः नि० ३.४.]

अभ्रातेव यथाऽबन्धुस्तथा १.१२४.७.]

अभ्राय मेघनिमित्ताय २२.२६. [अभ्र इति मेघनाम निघ० १.१०.]

अभ्रिम् खननसाधकं शस्त्रम् ११.११. **अभ्रिः**= अयोमयं खननसाधनम् ११.१०. [वज्रो वा अभ्रिः श० ६.३.१.३९. वाग्वा अभ्रिः श० ६.४.१.५.]

अभ्रियाः अभ्राणि २.३४.२. [अभ्रप्राति० भवार्थे 'समुद्राभ्राद् घः' इति घः प्रत्ययः। घस्येयादेशः]

अभ्रियेव यथाऽभ्रेषु भवान्युदकानि १.११६.१. [अभ्रप्राति० तत्र भवार्थे घः]

अभ्रियाम् अभ्रेषु भवां गर्जनाम् १.१६८.८. [अभ्रप्राति० तत्र भवार्थे घः]

अभ्वम् महत् (विश्वं=जगत्) २.३३.१०. अभवन्तम् (वर्पः=शरीरम्) १.१४०.५. महान्तं महिमानम् ६.४.३. महत्तरम् (कृष्णम्=अन्धकारम्) १.९२.५. महान्तं न्यायम् ६.७१.५. उदकमिव २.४.५. सत्तानिषेधम्, प्र०—अत्र भूधातोः क्विप् ततः 'छन्दस्युभयथा' अ० ६.४.८६. इत्यमि परे यणादेशः १.२४.६. अविद्यमानम् (वस्तु) १.१६८.९. अचाक्षुषत्वेनाऽप्रसिद्धं वा कारणम् १.१६९.३. **अभ्वात्**=असत्याचरणजन्याद् दुःखात् १.१८५.२. [भू सत्तायां धातोर्नञ्युपपदे क्विप्। छन्दस्युभयथा' अ० ६.४.८६. सूत्रेण यणादेशः। अभ्वः महन्नाम निघं० ३.३. अभ्वम् उदकनाम निघं० १.१२.]

अभ्वपिहितम् आच्छादित था स० प्र० २८२. [अभि+अपि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः। 'दधातेर्हि' रिति धातोर्हिरादेशः। वर्णव्यत्ययेन यकारस्य वकारः]

अमतये विरुद्धप्रज्ञायै ३.१६.५. मूढत्वाय ७.१.१९. **अमतिम्**=सुरूपां लक्ष्मीम् ३.३८.८. सुरूपां श्रियम् ७.३८.१. सुखरूपाम् (पृथिवीं=भूमिम्) ७.३८.२. विरुद्धामधर्मयुक्तां प्रज्ञाम् ३.८.२. नष्टा मतिरमतिस्ताम् १९.८४. अविद्यमाना मतिर्विज्ञानं सुखं वा यस्यामविद्यायां दरिद्रायां वा तां सुरूपं वा १.५३.४. सुन्दरं रूपम्। प्र०—अमतिरिति रूपनाम निघं० ३.७, ७.४५.३. अज्ञानम् १७.५४. **अमतिः**=रूपम् ४.२५. सुन्दरस्वरूपः (विद्वान्) १.७३.२. **अमतेः**=निबुद्धेः (प्रजाजनस्य) [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'मन्त्रे वृषेषपचमन०' सूत्रेण क्तिन्। तत्प्रतिषेधः अमतिः रूपनाम निघं० ३.७. अमतिः=अमामयी मतिरात्ममयी नि० ६.१२. अशनाया वै पाप्माऽमतिः ऐ० २.२. अशनाया वाऽअमतिः श० ९.२.३.८.]

अमत्त हृष्यतु २.३७.४. **अमत्सुः**=हर्षयेयुः १.८४.५. **अमदत्**=हर्षयेत् १.८०.२. **अमदन्**=हृष्यन्तु १.५३.६. मदन्ति हर्षन्ति ७.१८.१२. हृष्येयुर्हर्षयेयुर्वा १.१०२.१. हर्षयन्ति १.१०३.७. आनन्देयुः ३३.२९. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लुङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। 'अमदत्' इत्यादिषु व्यत्ययेन शप्]

अमन्दत् आनन्दयतु १.१६५.११. **अमन्दत**=आनन्देत् ५.३४.२. **अमन्दन्**=आनन्देयुः ३.३६.४. आनन्दयेयुः ३.५१.९. आनन्दन्ति ५.३०.१०. **अमन्दिषुः**=हर्षयन्तु १.८२.६. **अममदुः**=हर्षन्ति ७.१८.२१. **अममन्दुः**=आनन्दयेयुः ५.३०.१३. [मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्लङ्। अन्यत्र लुङ्]

अमत्रम् सुपात्रम् ४.२३.६. **अमत्रः**=ज्ञानवान् (पुरुषोत्तमः) ३.३६.४. ज्ञानवान् ज्ञानहेतुर्वा (इन्द्रः) १.६१.९. **अमत्रेभिः**=पात्रैः २.१४.१. उत्तमैः पात्रैः ६.४२.२. [अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अमिनक्षि०' उ० ३.१०५. सूत्रेणात्रन् प्रत्ययः। अमत्रम्=पात्रम् अमा अस्मिन्नदन्ति। अमा पुनरनिर्मितं भवति नि० ५.१. अमत्रः अमात्रो महान् भवति, अभ्यमितो वा नि० ६.२३. अमत्रः पदनाम निघं० ४.३.]

अमत्रिन् बहुबलयुक्त (राजन्) ६.२४.८. [अमत्रं व्याख्यातम्। अमत्रप्राति० मत्वर्थे इनिः। ततः सम्बुद्धौ रूपम्]

अमथ्नात् मथ्नाति १.९३.६. [मन्थ विलोडने (क्र्या०) धातोर्लङ्। 'अनिदिताम्' इत्युपधाया नकारस्य लोपः]

अमदः आनन्दः १.८२.६. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'मदोऽनुपसर्गे' इति सूत्रेणाप् प्रत्ययः। नञ् समासः]

अमध्यमासः अविद्यमानो मध्यमो येषान्ते (मर्याः=मनुष्याः) ५.५९.६. [नञ्-मध्यमपदयोर्बहुव्रीहिः]

अमनुत विजानीत ४.५.१०. [मनु अवबोधे (तना०) धातोर्ङि मध्यमबहुवचने रूपम्]

अमन्त रुजन्ति १.१८९.३. [अम रोगे (चुरा०) धातोर्लङ्। आडभावश्च। व्यत्ययेनात्मनेपदं णिलुक् च]

अमन्ति प्रापयन्ति रोगान् ७.२५.२. (अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लट्]

अमन्थत् मन्थन करता है ११.३२. **अमन्थत**=मन्थन्ति ३.१६.१३. मन्थित्वा गृह्णीयात् १५.२२. **अमन्थिष्ठाम्**=मथ्नीताम् ३.२३.२. [मथि हिंसासंक्लेशनयोः (भ्वा०) धातोर्लङ्। इदित्त्वान्नुम्। व्यत्ययेनात्मनेपदम् अन्यत्र]

अमन्दान् मन्दभावरहितान् तीव्रान् (स्तोमान्=विद्याविशेषान्) १.१२६.१. [अमन्दान्=अबालिशान् अनल्पान् वा नि० ९.९.]

अमन्महि विजानीयाम, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्यनोर्लुक् १.३०.२१. विजानीमहि, प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणलुक् ७.२९. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लङ्युत्तमबहुवचने रूपम् । 'बहुलं छन्दसी'ति श्यनो लुक्]

अमन्यत मन्यते ६.७२.३. **अमन्यन्त**=मन्यन्ताम् १.११६.१७. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लङ्]

अमन्यमानान् अज्ञानहठाग्रहयुक्तान् सूर्यप्रकाशनिरोधकान् मेघाऽवयवान्वा १.३३.९. अज्ञानिनः शठान् पापिष्ठान् २.१२.१०. [नञ्युपपदे मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः शानच्]

अमन्वत मन्यन्ते १.८४.१५. [मनु अवबोधने (तना०) धातोर्लङ् । अमन्वत सममंसत नि० ४.२४.]

अमम् अपरिपक्वविज्ञानम् (जनम्) १.६६.४. **अमः**=गृहम् ५.५६.३. यो गच्छति (वाक्प्रकाशः) ६.६१.८. ज्ञानस्वरूपम् (ब्रह्म) ऋ० भू० १६२, अथ० १३.४.५०. न्यायेन प्राप्तो गृहादिपदार्थः १८.४. गृहम्, प्र०—अमेति गृहनाम निघं० ३.४, ६.५१.१५. **अमा**=गृहाणि ६.६४.६. गृहेषु ३.३२. समीपस्थगृहाय १.१२४.१२. गृहे ६.२४.१०. गृहम् ६.५१.१५. [अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्भावे घञ् । 'नोदात्तोपदेश०' सूत्रेण वृद्धिप्रतिषेधः । अमम्=भयं बलं वा । नि० १०.२१. अमागृहनाम निघं० ३.४. अमा गृहे नि० ११.४२.]

अमर्त्तः आत्मत्वेन मरणधर्मरहितः (मनुष्यः) ५.३३.६. [मृङ् प्राणत्यागे धातोः 'हसिमृग्रिण्वामि०' उ० ३.८६. सूत्रेण तन् प्रत्ययः मर्त्त मनुष्य नाम निघं० २.३. तत्प्रतिषेधः]

अमर्त्य ! कीर्त्या मरणधर्मरहित (राजन्) १.१२९.१०. आत्मस्वरूपेण नित्य (मनुष्य) ५.१८.२. स्वस्वरूपेण मरणधर्मरहित साधारणमनुष्यस्वभावविलक्षण (अग्ने) १.४४.१. मर्त्यधर्मरहितः (अग्निः=राजा सेनेशो वा) ७.१५.१०. **अमर्त्यम्**=नाशरहितम् (अग्निं=विद्युदग्निम्) ४.८.१. कारणरूपेण मरणधर्मरहितम् (अग्निं=पावकम्) २२.१५. साधारणैर्मनुष्यैरसदृशम् (इन्द्रं=राजराजपुरुषम्) २८.३. मृत्युधर्मरहितम्, भा०—उत्पत्तिनाशरहितम् (ईश्वरम्) ३३.६०. दिव्यम् (मदम्) १.८४.४. स्वरूपतो नित्यम् (परमात्मानम्) ५.१४.२. मरणधर्मरहितम् (राजानम्) ५.४.१०. नाशरहितं (यशः) १.१३९.८. मर्त्यस्य स्वभावराहित्येन देवस्वभावम् (आप्तविद्वज्जनम्) ३.१०.६. साधारणमनुष्यस्वभावरहितं स्वरूपेण नित्यम् नित्यम् (दूतम्) १.४४.११. आत्मना मरणधर्मरहितम् (दासं=सेवकम्) २.११.२. कारणरूपेण मरणधर्मरहितम् (अग्निम्) २२.१५. मृत्युधर्मरहितम् (इन्द्रं=स्वकीयं जीवस्वरूपम्) २८.२७. **अमर्त्यः**=मर्त्यस्वभावरहितः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.९.२. मरणधर्मरहितो जीवः १.१६४.३८. मरणधर्मरहितः (अध्यापकः) ३.२७.७. स्वस्वरूपेण मृत्युरहितः (गौः=विद्वज्जनः) २१.१४. स्वरूपेण नित्यः (अग्निः=वह्निः) ३ २७.५. आत्मत्वेन मरणधर्मरहितः (अग्निः=विद्वान्) ३.२४.२. अनादित्वान्मृत्युधर्मरहितः (जीवः) १.१६४.३०. नाश-प्रकृतमनुष्यस्वभावरहित (अग्ने=पुरुषार्थिजन !) १२.१०९. साधारणमनुष्यस्वभावविरुद्धः (विद्वज्जनः) ६.१६.६. अविद्यमाना मर्त्या यस्मिन् सः (रथः=यानम्) ५.७५.९. मनुष्यस्वभावाद्विलक्षणः (मदः=ओषधिसारः) १.१७५.२. स्वभावेन मरणधर्मरहितः (अतिथिः) ५.१८.१. मृत्युधर्मरहितः (धर्त्ता=ईश्वरः) ३७.१६. अविद्यमाना आकर्षका मनुष्यादयः प्राणिनो यस्मिन् सः (रथः) १.३०.१८. नाशरहितः (देवः=जीवात्मा) १.५८.३. **अमर्त्याः**=तत्त्वस्वरूपेण नित्याः (देवाः=पृथिव्यादयः) २१.१७. साधारणमनुष्यस्वभावाद्विलक्षणाः (देवाः=विद्वज्जनाः) ६.१८.१५. **अमर्त्ये**=मरणधर्मरहिते वह्नौ परमात्मनि वा ७.१.२३. **अमर्त्येन**=मरणधर्मरहितेन कारणेन ६.१८.७. **अमर्त्येषु**=मरणधर्मरहितेषु पदार्थेषु १.११०.५. [मर्त्तो व्याख्यातः ततः स्वार्थे 'पादार्घाभ्यां च' अ० ५.४.२५. सूत्रे चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वात् यत् । नञ्समासः । अमर्त्य आदित्यो मर्त्येन मनसा सह…… अमर्त्य आत्मा मर्त्येन मनसा सह । नि० १३.३७. मर्त्याः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

अमर्धन्ता सर्वान् शोषयन्तौ (इन्द्रो=विद्युदग्निः, वायुश्च) ३.२५.४. [नञ्युपपदे मृधु उन्दने (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अमर्धन्तीः अहिंसन्त्यः (धेनवः=वाचः) ५.४३.१. [नञ्युपपदे मृधु उन्दने (भ्वा०) धातोः शतृ । ततो ङीप् । अत्र हिंसनार्थेऽपि]

अमर्मणः अविद्यमानं मर्म यस्मिँस्तस्य (वृत्रस्य=शत्रोः) ३.३२.४. अविद्यमानानि मर्माणि यस्य तस्य (शत्रोः) ५.३२.५. [नञ्-मर्मणोर्बहुव्रीहिः]

अमवत् अमः प्रशस्तो बोधः सम्भागो यस्मिँस्त

(स्वः=सुखम्) १.५२.६. गृहेण तुल्यम् (क्षत्रं=धनं राज्यं वा) ५.३४.६. प्रशस्तरूपयुक्तम् (वरूथं=गृहम्) ४.५५.४. **अमवत्सु**=अमाः प्रशस्तानि गृहाणि विद्यन्ते येषु (स्थानेषु) ६.६६.६. **अमवती**=ज्ञानयुक्ता १.१६८.७. **अमवान्**=बलवान् (वज्रः) १.५२.१०. गृहवान् (एवयामरुत्=विज्ञानवान् मनुष्यः) ५.८७.५. वहवो सचिवा विद्यन्ते यस्य तद्वत् (राजेव) १३.६. **अमवन्तः**=अमानां रोगाणां गमनाऽऽगमनबलानां वा सम्बन्धो विद्यते येषान्ते प्र०—अत्र सम्बन्धार्थे मतुप् अम रोगे अम गत्यादिषु च इत्यस्माद् 'हलश्च' इति करणाधिकरणयोर्घञ्, अमन्ति रोगं प्राप्नुवन्ति यद्वाऽमन्ति गच्छन्ति आगच्छन्ति बलयन्ति यैस्तेऽमाः (रुद्रियासः=वायवः) १.३८.७. निन्दितरोगकारकाः (पुरुषाः) १.३६.२०. [अम गत्यादिषु अम रोगे वा धातोः 'हलश्चे' त्यधिकरणे घञ्। 'नोदात्तोपदेश०' इति वृद्धिप्रतिषेधः। ततो मतुप् प्रत्ययः। अथवा=अमप्राति० तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः। अमा गृहनाम निघं० ३.४. अमागृहे। नि० ११.४२. अम पदनाम निघं० ४.३.]

अमहीयमानाम् असत्कृताम् (जायां=स्त्रियम्) ४.१८.१३. [महीङ् पूजायाम् (कण्ड्वादि०) धातोः शानच्। नञ्समासः]

अमंस्त मन्यते ५.४०. **अमंसाताम्** मन्येताम् ३८.१३. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लुङ्]

अमाजूरिव योऽमा गृहे जूर्यति तद्वत् २.१७.७. [अमा इति गृहनाम निघं० ३.४. अमोपपदे जॄ वयोहानौ (दिवा०) धातोः क्विप्। 'बहुलं छन्दसी' ति (अ० ७.१.१०३) सूत्रेणोकारादेशः]

अमात्यम् अमात्येषु साधुम् (वेदः=धनम्) ७.१५.३. **अमात्यः**=मेधावी खानकः प्रधानभृत्यः ५.२३. (अमेति सहार्थेऽव्ययम्। ततः 'अव्ययात् त्यप्' अ० ४.२.१०४. सूत्रेण शैषिकः त्यप्]

अमात्रम् अपरिमितम् (धिषणां=बुद्धिम्) १.१०२.७. [नञ्युपपदे माङ् माने शब्दे च (जुहो०) धातोः 'हुयामा०' उ० ४.१६८ सूत्रेण त्रन्प्रत्ययः। नञ्समासः]

अमानुषम् मनुष्यसम्बन्धरहितम् (पदार्थम्) २.११.१०. [मनुप्राति० 'मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च'.अ० ४.१.१६१. सूत्रेणाञ् षुगागमश्च। नञ्समासः]

अमितक्रतुः अमिताः क्रतवः प्रज्ञा यस्य सः (सेनापतिः) १.१०२.६. [अमित=नञ्+माङ् माने+क्तः। क्रतुः प्रज्ञानाम निघं० ३.६. एनयोः समासः]

अमितम् अपरिमितम् (महिमानम्) ४.१६.५. **अमिता**=अतुलशुभगुणा (स्त्री) ५.३४.१. अमितानि अपरिमितानि (वरांसि=वरणीयानि वस्तूनि) ६.६२.२. **अमिताः**=अतुलशुभगुणाः (सत्पुरुषाः) ५.५२.२. **अमितैः**=असंख्यैः (कर्मभिः पुरुषैर्वा) ७.३.७. [नञ्+माङ् माने+क्तः। 'द्यतिस्यतिमा०' सूत्रेणेत्त्वम्]

अमिताः अप्रक्षिप्ताः (वीरयोद्धारः) १.११६.३. [नञ्+डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोः क्तः]

अमितौजाः अमितं परिमाणरहितम् बलमुदकं वा यस्य यस्माद्वा सः (इन्द्रः=सेनापतिः सूर्यो वा १.११.४. [अमितं व्याख्यातम्। उब्ज आर्जवे (तु) धातोः 'उब्जेर्बले बलोपश्च' उ० ४.१९२. सूत्रेणासुन् प्रत्यये—ओजः। एनयोः समासः]

अमित्रदम्भनम् शत्रुहिंसनम् २.२३.३. **अमित्रदम्भनः**=शत्रूणां हिंसकः (राजभृत्यः) ४.१५.४. [अमित्रः=शत्रुः। दम्भनम्=दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोर्भावेल्युट् अथवा कर्त्तरि ल्युः प्रत्ययः]

अमित्रयन्तम् शत्रूयन्तम् (मर्त्यम्) १.१३१.७. शत्रुवदाचरन्तम् (मर्त्यम्) ५.३५.५. ['अमित्रसुबन्ताद्' आचारेऽर्थे 'उपमानादाचारे' अ० ३.१.१०. सूत्रेण क्यच्। ततः शतृप्रत्ययः। 'न छन्दस्य०' अ० ७.४.३५. सूत्रेणेत्त्वनिषेधः]

अमित्रहन् अरिहन् (राजन्) ६.४५.१४. **अमित्रहा**=यो येन वाऽमित्रान् शत्रून् हन्ति सः (सूर्यो विद्वान्वा) ५.२४. [अमित्रोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्। 'सौ च' इति सूत्रेण सुप्रत्यये दीर्घत्वम्]

अमित्रः शत्रुः (जनः) ६.२८.३. **अमित्रान्**=शत्रून् (दुर्जनान्) ४.४.४. मित्रतारहितान्(दुष्टाञ्जनान्)७ १८.६. दुष्टान् सर्वपीडकान् (जनान्) ६.३३.३. मित्रभावरहितान् (दुष्पुरुषान्) २६.४१. सर्वैः सह द्रोहयुक्तान् (दुर्जनान्) ७.५२.२. धर्मद्वेष्टॄन् शत्रून् १३.१२. सब शत्रुओं को आर्याभि० १.२४, ऋ० ४.३.२१.२५. न विद्यन्ते मित्राणि येषां तान् (जनान्) १७.३६. धर्मविरोधिनो मनुष्यान् १.६३.५. धर्मद्वेषिणः शत्रून् (जनान्) ४.१२.२. वैरं कुर्वतः (जनान्) ६.७५.७. विरोधिन उदासीनान् (जनान्) ७.७३.२. **अमित्राः**=मित्रभाववर्जिताः (शत्रवो जनाः) १.१३३.१. [डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) अत्र मानार्थे, ततः 'अमिचिमिशसिभ्यः०' उ० ४.१६४ सूत्रेण क्त्रः प्रत्ययः। ततो नञ्समासः, नञ्बहुव्रीहिर्वा। अम गत्यादिषु धातोर्वा 'अमेर्द्वि-

षति चित्' उ० ४.१७४ सूत्रेण इत्रः प्रत्ययः । स च चिद्भवति]

अमित्रायुधः अमित्रेषु शत्रुषु प्रक्षिप्तान्यायुधानि यैस्ते (जनाः) ३.२९.१५. [अमित्रं व्याख्यातम् । आयुधम्=आङ्+युध सम्प्रहारे धातोर् इगुपधलक्षणः कः करणे । एनयोः समासः]

अमित्रिणे अविद्यमानानि मित्राणि सखायो यस्य तस्मै जनाय १.१२०.८. [अमित्रप्राति० मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

अमित्रिया अमित्राणि ६.१७.१. [अमित्रप्राति० जसः स्थाने 'इयाडियाजीकाराणाम्०' इति वार्त्तिकेन इयादेशः]

अमिनती अहिंसन्ती (उषाः) १.१२४.२. [नञ्+मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः शतृ, ङीप्, ह्रस्वश्च धातोः]

अमिनती अहिंसके (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.२. [नञ् मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः शतृ । धातोश्च ह्रस्वः]

अमिनते अहिंसकाय (विद्यार्थिने) ४.५.६. [मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातो; शतृ धातोश्च ह्रस्वत्वम् । 'मीनातेर्निगमे' सूत्रेण नञ्समासः]

अमिनन्त प्रक्षिपन्ति १.७९.२. [डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्ना]

अमिनः अहिंसकः (इन्द्रः=सूर्यः) ६.१९.१. अनुपमोऽतुलपराक्रमः (इन्द्रः=जगदीश्वरः) प्र०—अमिनोऽमितमात्रो महान् भवत्यमितो वा निरु० ६.१६, ७.३९. [मीञ् हिंसायां धातोर्नञ्युपपदे बाहुलकान् नः प्रत्ययो ह्रस्वश्च । अमिनः अमितमात्रो महान् भवति अभ्यमितो वा नि० ६.१६.]

अमिनात् हिंस्यात् ३.४९.२. हिंसेत् ३.३४.३. [मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्लङ् । 'मीनातेर्निगमे' अ० ७.३.८१. सूत्रेण शिति ह्रस्वः । अमिनात् प्रामापयद् निरु० ५.६.]

अमिनाः निवारयेद्वा प्र०—'मीनातेर्निगमे' अ० ७.३.८१. इति ह्रस्वादेशश्च १.३२.४. (मीञ् हिंसायां (क्र्या०) धातोर्लङि मध्यमैकवचनम् । धातोश्च ह्रस्वादेशः]

अमिमीत निर्मिमीते, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् ४.३०. निर्मितवान् निर्मिमीते वा ४.२५. निर्मीयते ३.२९.११. निमिमीते १.१२६.१. मिमीते २९.३६. **अमिमीयाः**= निर्माणं कुर्याः ५.३१.७. [माङ् माने शब्दे च (जुहो०) धातोर्लङ् । अमिमीत=निरमिमीत । नि० ६.१९.]

अमीतवर्णाः अहिंसितवर्णाः (स्त्रियः) ४.५१.९. [नञ्युपपदे मीञ् हिंसायां धातोः क्तप्रत्यये=अमीतम् । तस्य वर्णेन सह समासः]

अमीति प्राप्नोति २२.५. [अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लटि 'तुरुस्तुशम्यमः०' अ० ७.३.९५. सूत्रेण ईडागमः]

अमीमदन्त अतिशयेन हर्षयत १९.३६. आनन्दन्तु १.८२.२. आनन्दयन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ३.५१. आनन्दयताऽस्मान् मोदयत विद्यां ज्ञापयत वा, अन्व०—हर्षयत २.३१. (मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्]

अमीमेत् प्रक्षिपति १.१६४.९. (डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोः छान्दसं रूपम् । अमीमेत् अन्वमीमेत् नि० ११.४२.]

अमीमेत् भिनाति १.१६४.२८. [मीञ् हिंसायां (क्र्या०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

अमीवचातनम् अमीवानज्ञानादीन् ज्वरादींश्च रोगान् चातयति हिनस्ति तम् (अग्नि=परमेश्वरं भौतिकं वा) १.१२.७. रोगनाशनम् ७.८.६. **अमीवचातनः**=योऽमीवान् रोगान् शातयति सः (भिषक्=वैद्यः) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन शस्य चः १२.८०. [अमीवः=अमंरोगे (चुरा०) धातोर्बाहुलकाद् ईवः प्रत्ययः । चातनम्=चते याचने (भ्वा०) अत्र हिंसार्थे धातोर्णिचि ल्युः प्रत्ययः । अथवा शद्लृ शातने धातोर्ल्युट् । वर्णव्यत्ययेन शकारस्य चकारः]

अमीवहा योऽमीवान् अविद्यादिरोगान् हन्ति सः (परमात्मा) ३.२९. शरीर-इन्द्रियजन्य और मानस रोगों का हनन विनाश करने वाला (परमेश्वरः) आर्याभि० १.३८. अमीवानामविद्यादीनां ज्वरादीनां वा हन्ता (ईश्वरो विद्वान्वा) १.९१.१२. योऽमीवान् रोगान् हन्ति (वास्तोष्पतिः=गृहस्वामी) ७.५५.१. अविद्यादिरोगाणां हन्ता (ब्रह्मणस्पतिः=जगदीश्वरः) १.१८.२. [अमीवोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप् । अमीवहा=अभ्यमनहा नि० १०.१७.]

अमीवा रोगः ६.७४.२. **अमीवाम्**=रोगम् ७.१.७. रोगोत्पन्नां पीडाम् १२.१०५. व्याधिरूपमन्धकारम् ३४.२५. **अमीवाः**=रोगाः १.१८९.३. रोग इवान्यान् पीडयन्तः रक्षसः=दोषान्) ३.१५.१. रोगपीडाः, भा०—आत्मनोऽविद्यादयः ११.४७. रोग इव प्राणिनां पीडकाः (द्विषः=व्यभिचारिणीर्वृषलीः ११.४९. रोगान् २.३३.२. भा० शरीरात्मरोगान् २१.१०. ये रोगवद् वर्त्तमानाः शत्रवस्तान्

९.१६. [अम रोगे (चु०) धातोर्बाहुलकाद् ईवः प्रत्ययः। अमीवा=अभ्यमनेन व्याख्यातः। नि० ६.१३. अमीवाः देवाश्वा इति वा नि० १२.४३.]

अमुग्ध्वम् मुञ्चत ५.५५.६. [मुच्लृ मोक्षणे (तुदा०) धातोर्लुङि रूपम्। च्लेर्लुक् आत्मनेपदञ्च व्यत्ययेन]

अमुच्यत मुच्येत १२.९८. **अमुञ्चतम्**=मुञ्चेताम् १.११८.८ मोचयतम् १.११७.१६. मुञ्चतम् प्र०—अत्र-लोडर्थे लङ् १.११२.८ मुञ्चतो मोचयतो वा १.९३.५. **अमुञ्चत**=त्यजत ४.१२.६. **अमुञ्चत्**=मुञ्चति १.६१.१०. मुच्यात् ३.३१.८. **अमुञ्चः**=मुच्याः ५.२.७. मोचय ७.१३.२. **अमुच्ये**=छोड़ देता हूं सं० वि० १४९ वे० को०, अथ० १४.१.५७. [मुच्लृ मोक्षणे (तुदा०) धातोः कर्मणि लङ्। कर्त्तरि चापि लङि रूपाणि। अमुञ्चतम् प्रमुमुचतुः नि० ५.२१.]

अमुतः मोक्षाख्यात् परलोकात्, परजन्मसुखफलाद् धर्माद्वा, अन्व०—मोक्षसुखात सत्यसुखफलाद् धर्मात् ३.६०. [अदस् सर्वनाम्नः 'पञ्चम्यास्तसिल्' अ० ५.३.७. सूत्रेण तसिल्। 'तद्धितश्चा०' इत्यव्ययसंज्ञा]

अमुत्र परस्मिन् जन्मनि १७.२. [अदस् सर्वनाम्नः 'सप्तम्यास्त्रल्' अ० ५.३.१०. सूत्रेण त्रल्। अव्ययसंज्ञा]

अमुत्र भूयात् परजन्मनि भाविनः (अभिशस्तेः=सर्वतोऽपराधात्) प्र०—अत्राऽमुत्रोपपदाद् भूधातोः क्यप् २७.९. [अमुत्रोपपदे भू सत्तायां धातोः क्यप् प्रत्ययः। 'कृत्यल्युटो बहुलमि'ति कर्त्तर्यपि क्यप्]

अमुमुक्तम् मोचयतम् १.११६.१४. मोचयेतम् ६.५०.१०. [मुच्लृ मोक्षणे (तुदा०) धातोर्णिचि लुङि रूपम्। चङोऽकारस्य लोपः]

अमुष्णात् मुष्णाति चोरयति ६.४४.२२. **अमुष्णाः**=मुष्णीयाः १.१३१.४. **अमुष्णीतम्**=चोरवद्धरतम् १.९३.४. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोर्लङ्]

अमुष्यपुत्रम् प्रतिष्ठितस्य धार्मिकस्य विदुषः सन्तानम् ९.४०. [अमुष्य=अदस्सर्वनाम्नः षष्ठी। पुत्रः=पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः 'पुवो ह्रस्वश्च' उ० ४.१६५. सूत्रेण क्त्रः प्रत्ययो ह्रस्वश्च। तयोः समासे षष्ठयाः अलुक्]

अमूर मूढतादिदोषरहित (अग्ने=राजन्) ४.४.१२. **अमूरम्**=मूढतादिदोषरहितं विद्वांसम् ४.११.५. मूढतादिदोषरहितम् (अग्निं=मेधाविजनम्) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन ढस्य रः ३.१९.१. **अमूरः**=अमूढो विद्वान् सन् (राजा) ४.६.२. मूढत्वादिदोषरहितः (विद्वज्जनः) ३.२५.३. मोहरहितः (सेनेशः) ४.२६.७. गन्ता (विद्वान्) १.१४१.१२. **अमूराः**=मूढत्वादिगुणरहिता ज्ञानवन्तः (सज्जनाः) १.६८.४. मूढभावरहिता (जीवा) १.७२.२. अमूढा विद्वांसः ७.४४.५. [नञ्+मुह वैचित्ये=अविवेके (दिवा०) धातो क्तः। वर्णव्यत्ययेन ढस्य रेफः। अमूरः=अमूढः नि० ६.८.]

अमृक्तम् अकोमलम् (प्रयः=अन्नादिकम्) २.३७.४. अशुद्धं जनम् ६.५०.७. शुद्धिरहितम् (श्रवः=पृथिव्यन्नादिकम्) ६.१.४. **अमृक्तः**=अन्यैरहिंस्यः (महाविद्वज्जनः) ३.११.६. अहिंसितः (रथः=रमणीयं यानम्) ७.३७.१. **अमृक्ताः**=अशोधिताः (आपः=प्राणाः) ४.३.१२. **अमृक्ते**=विकाराऽवस्थयाऽशुद्धे (अहोरात्रे) ३.६.४. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०), मृजू शौचालङ्करणयोः (चुरा०) धातोः क्तः। जकारस्य षत्वं न छान्दसत्वात्]

अमृक्षन्तः मृष्णन्ति सहन्ते १.१२६.४. [मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लुङ्]

अमृणः हिंस्याः ५.२९.१०. [मृण हिंसायाम् (तुदा०) धातोर्लङ्]

अमृणतम् सुखयतम् ४.२८.४. [मृड सुखने (तु०) धातोर्लङ्। वर्णव्यत्ययेन डस्य णकारः। अथवा=मृण हिंसायां धातोर्लोट्। नञ्समासः धातूनामनेकार्थत्वादत्र सुखार्थे]

अमृतत्वम् उदकस्य भावम् ५.६३.२. मोक्षस्य भावम् १.१६४.२३. मोक्षसुखम् ४.३६.४. प्राप्तमोक्षाणां भावम् १.९६.६. मोक्षभावमुत्तमाऽऽनन्दं वा ४.३३.४. अमृतस्य भावम् १७.८९. अमृतस्य मोक्षस्य वा भावम् १.११०.३. क्रियासिद्धं नित्यं विज्ञानम् ७.४७. **अमृतत्वेन**=सर्वरोगनिवारकत्वेन सह, भा०—रोगराहित्येन ९.१९. **अमृतत्वस्य**=अविनाशिनो मोक्षसुखस्य कारणस्य वा ३१.२. मोक्षभावस्य ऋ० भू० १२०. नाशरहित कारण प्रकृति और जीव का स० प्र० २८२, ३१.२. **अमृतत्वाय**=मोक्षादिसुखानां भावाय १.७२.९. अमृतस्य मोक्षस्य भावाय ३.३१.९. **अमृतत्वे**=अमृतानां नाशरहितानां पदार्थानां भावे वर्त्तमाने ५.५५.४. [मृङ् प्राणत्यागे धातोः क्तः। ततो भावे त्वः प्रत्ययः। नञ्समासः। अथवा 'मतिबुद्धि०' सूत्रेण चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वात् वर्त्तमाने क्तः]

अमृत स्वात्मस्वरूपेण नाशरहित (अग्ने=परमविद्वज्जन) ४.११.५. मरणधर्मरहित (अतिथे) ५.१८.५.

अविनाशिन् (परमेश्वर) १.४४.५. आत्मस्वरूपेण मरणधर्मरहित (विद्वज्जन) ५.३१.१३. नाऽस्ति मृतं मरणदुःखं येन तत्सम्बुद्धौ (विद्वन्, वैद्यराजोपदेशक वा) १.११४.६. नाशरहितम् (नाम) ५.५७.५. **अमृतम्**=अधर्मजन्मदुःखरहितं मोक्षसुखम् १.८३.५. कारणरूपेण नाशरहितं जलम् ३.१.१४. धर्मार्थकाममोक्षाख्यममृतसुखम् १.७२.६. सर्वं सुखप्रापकत्वेन दुःखविनाशकम् (ब्रह्म) १.७१.९. मोक्षसुखम् ऋ० भू० १२९. सत्यविज्ञानं किरणसमूहं वा ऋ० भू० १४२. मोक्षम्, ओषध्यात्मकं वृष्ट्यादिकं रसं वा ऋ० भू० । जन्म-मृत्यु के दुःख से रहित मोक्ष प्राप्ति को सं० वि० १९७, ९.११३.११. अमृतात्मकव्यवहारपरमार्थसुखसाधकम् (धर्मम्) ४.१८. कारणरूपेणाऽविनाशिस्वरूपम् (भौतिकमग्निम्) १५.३३. उदकेऽपि व्यापकं कारणम् (अग्निम्), प्र०—अमृतमित्युदकनाम निघं० १.१२, १५.३३. सर्वरोगहरं सुरसं मिष्टादिकम् २.३४. मोक्षम् १.१२५.६. अमृतात्मकम् (चक्षुः=नेत्रम्) १९.८९. अमृतात्मकमुदकम् १९.९१. रोगनाशकम् (अगदम्) १९.७३. एतत्स्वरूपमानन्दम्, भा०—मोक्षसुखम् १९.७२. अमृतात्मकं ब्रह्म ओषवेः सारं वा १९.७२. मृत्युरोगात्पृथक्करम् (इन्द्रियं=विज्ञानसाधकम्) १९.७७. अमृतमिव सुखप्रदं (रसम्) १९.७५. मृत्युनिमित्तरोगनिवारकम् (इन्द्रियं=ईश्वरेण सृष्टं धनम्) १९.७९. मृत्युधर्मरहितं विज्ञानम् १९.७८. अमृतात्मकं मोक्षसुखं प्रकाशनं वा १.३१. व्यावहारिक वा पारमार्थिक सुख को सं० वि० १४३, अथ० ३.३०.७. प्रकाशयुक्त और नाशरहित (मनः=मन को) स० प्र० २४७, ३४.३. मृत्युरोगनिवारकं रसम् १.२३.१९. स्वस्वरूपं मुक्तिसुखं यज्ञशिष्टमन्नं वा १८.६. मरणजन्मदुःखादिरहितम् (मोक्षम्) १.६८.२. नाशरहितं सदामुक्तम् (ईश्वरम्) १.४४.५. मोक्षाख्यं सुखं ब्रह्म वेदश्च ऋ० भू० २१८. स्वस्वरूपेण नाशरहितम् (आप्तं विद्वांसम्) २२.१. मोक्षसाधकम् (इन्द्रियम्=मनः) ऋ० भू० ३०६. मृत्युरहितं सुखम् ५.३.४. मरणादि दोषरहित ईश्वर को आर्याभि० २.२४, ३२.९. मरणादि दुःखरहित मोक्षपद में सब दुखों से छूट के सर्वव्यापी पूर्णानन्दस्वरूप परमात्मा को आर्याभि० २.६, ३२.१०. अल्पमृत्यु-रोगनिवारकम् (रेतः=वीर्यम्) १९.८४. उदकममरणधर्मकमाकाशादिकं वा, भा०—अमृतात्मकमुदकम् ३३.४३. मरणधर्मरहितं चेतनं ब्रह्म २०.५. मरणधर्मरहितं कारणमल्पमृत्युनिवारकं वा (भेषजम्=औषधम्) ९.६. अमृतात्मकं भोज्यं वस्तु (हविः=होतव्यं द्रव्यम्) १८.६६. अमृतात्मकं रसम् ३.२६.७. मोक्षसुखदायक ईश्वर को सं० वि० ५, २५.१३. औषध्यादिरसम्, सत्योपदेशरूपम् पं० वि० । **अमृतस्य**=नाशरहितस्य कारणस्य ५.५८.१. अविनाशिनः (सूरेः=विदुषः) १.१२२.११. मोक्षस्वरूपस्य नित्यस्य परमेश्वरस्य ऋ० भू० १५७. नाशरहितस्य मोक्षस्य ४.३५.३. उदकसमूहस्य, प्र०—अमृतमित्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२, १.१३.५. मोक्षस्य १७.८९. अविनाशिनो जीवस्य १.१७०.४. अविनाशिनो जगदीश्वरस्य ११.५. नाशरहितस्य परमेश्वरस्य नित्यस्य वेदस्य वा ३३.७७. कारणस्योदकस्य मध्ये वा ५.२८. नाशरहितस्य विज्ञानस्य ६.५२.९. परमात्मानम्, प्र०—अत्र 'अधीगर्थदयेशां कर्मणि' इति कर्मणि षष्ठी अ० २.३.५२, ७.४.६. नित्यस्य पदार्थस्य ६.९.३. अतिस्वादिष्ठस्य (सोमस्य=सारस्य) ६.३४. **अमृतः**=मृत्युरहितः (जीवः) १.७७.१. आत्मरूपेण मृत्युधर्मरहितः (विद्वज्जनः) ३.१.१८. अविनाशी (अग्निः=कारणाख्य ईश्वरः) १२.२४. अनुत्पन्नत्वान्नाशरहितः (जगदीश्वरो जीवो वा) १.७०.२. स्वस्वरूपेण नाशरहितः (महाविद्वान्) ७.४.४. शत्रुभिरप्रतिहतः (सभाध्यक्षः) १.३८.४. **अमृतात्**=मोक्षप्राप्तेः ७.५९.१२. **अमृतान्**=प्राप्तमोक्षान् सदेहान् विदेहान्वा विदुषो मुक्त्यानन्दानुत्तमान् भोगान्वा ४.२८. **अमृता**=विनाशविरहा (उषाः) १.११३.१३. मृत्युधर्मरहिताः, भा०— नाशोत्पत्तिरहिताः (देवाः=जीवाः) ३३.६०. स्वादून्युदकानि ५.७६.५. उदकानि, सुखकराणि (सौभगानि=शोभनैश्वर्याणि) ५.७७.५. नाशधर्मरहिते (प्रिये=कमनीये परमात्मस्वरूपे) २८.२७. नाशरहितानि (सौभगानि) ५.४३.१७. आपकी प्राप्ति रूप को आर्याभि० २.१३, १७.२९. **अमृताय**=मोक्षाय १.९१.१८. मोक्षस्याऽविनाशिसुखप्राप्तये ३.२५.२. जलवच्छान्तस्वरूपाय (राज्ञे) ४.३.३. **अमृतानि**=नाशरहितानि वस्तूनि, प्र०—अत्र सप्तम्यर्थे प्रथमा ३३.२२. मोक्षपर्यन्तार्थप्रापकानि (काव्यानि) १.७२.१. **अमृताम्**=अमृतात्मिकाम् (ओषधीम्) १९.१. **अमृते**=प्रवाहरूपेण नाशरहिते (उषाः, रात्रिश्च) १.११३.२. **अमृतेव**=जलादिना ६.७५.१८. परमात्मना सह युक्तेन ३४.४. सर्वरोगनिवारकेणामृतात्मकेनोषधेन १७.४९. सर्वरोगप्रहारकेण गुणेन १९.१. परमेश्वरमोक्षबोधेन परमानन्देन ऋ० भू० २४९, वे० को०, अथ० ११.५.५. **अमृतेषु**=हिरण्यादिषु धनेषु, प्र०—अमृत इति हिरण्यनाम निघं० १.२, ३.६३.३. **अमृताः**=प्राप्तमोक्षाः (देवाः=विद्वांसः) ७.२.११. स्वस्वरूपेण नित्याः (देवाः=दिव्याः पदार्थाः) २१.२८. प्राप्तजीवनमुक्ति-

सुखाः (देवाः=विद्वज्जनाः) ५.६६.४. नाशरहिता अमृतरसाः (आपः=प्राणा जलादयो वा) ४.१२. प्राप्तात्मविज्ञानाः (विद्वज्जनाः) ५.२.१२. अमृतात्मैकरसाः (मधुश्चुतः=खाद्यपदार्थाः) २१.४२. कारणरूपेण नाशरहिताः (आपः=प्राणाः) ४.३.१२. प्राप्तमोक्षसुखाः (देवाः=विद्वज्जनाः) ६.२१. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोः क्तः । अथवा 'मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च' सूत्रेण चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वाद् वर्त्तमाने क्तः । नञ्समासः । अमृतम् हिरण्यनाम निघं० १.२. उदकनाम निघं० १.१२. अमृते अमरणधर्माणौ नि० २.२०. अमृतस्य उदकस्य नि० १२.८. अमृतेषु देवेषु नि० ८.१६. प्रजापतिर्वाऽमृतः श० ६.३.१.१७. अमृता देवाः श० २.१.३.४. अमृतं वा ऽआपः श० १.६.३.७, ४.४.३.१५. तद्यत्तदमृतꣳ सोमः सः श० ६.५.१.८. अमृतं वै हिरण्यम् श० ६.४.४.५. तै० १.३.७.७. अमृतंꣳ हिरण्यम् श० १०.४.१.६. तां० ६.६.४. प्राणोऽमृतम् श० १०.२.६.१८. अमृतमु वै प्राणाः श० ६.१.२.३२. सदमृतम् श० १४.४.१.३१. अथ यद् ब्रह्म तदमृतम् जै० उ० १.२५.१०. अमृतं वा ऋक् कौ० ७.१०. अमृतं वै रुक् श० ७.४.२.२१. अमृतत्वं वै रुक् श० ६.४.२.१४. अमृतमेव सप्तमी चितिः श० ८.७.४.१८. अमृतमिव हि स्वर्गो लोकः तै० १.३.७.५. किं नु तेऽस्मासु (देवेषु) इति अमृतमिति जै० उ० ३.२६.८. अमृतान्मृत्युः (निवर्त्तते) श० १०.२.६.१६. एतद्वै मनुष्यस्यामृतत्वं यत्सर्वमायुरेति श० ६.५.१.१०. एतद्वाव मनुष्यस्यामृतत्वं यत्सर्वमायुरेति तां० २२.१२.२, २३.१२.३. य एव शतं वर्षाणि यो वा भूयाꣳसि जीवति स हैवैतदमृतमाप्नोति श० १०.२.६.८. अमृतमु वै प्राणाः श० ६.३.३.१३. अमृतं वै प्राणाः गो० उ० १.१३. अमृतं वै प्राणाः कौ० ११.४, १४.२. अमृतꣳ हि प्राणः श० १०.१.४.२. प्राणो वाऽमृतम् श० १४.४.४.३. अमृतमापः गो० उ० १.३. अमृतत्वं वा आपः कौ० १२.१. अमृता ह्यापः तै० १.७.६.३. यद्भेषजं तदमृतं यदमृतं तद्ब्रह्म गो० पू० ३.४. अमृतꣳ ह्येतदमृतेन क्रीणाति यत्सोमꣳ हिरण्येन श० ३.३.३.६. अमृतꣳ हिरण्यम् तै० १.७.६.३. १.७.८.१. अमृतꣳ हिरण्यममृतमेष (आदित्यः) श० ६.७.१.२. आदित्योऽमृतम् श० १०.२.६.१६. अग्निरमृतम् श० १०.२.६.१७. अमृतमेभ्यः (विश्वसृड्भ्यः) उदगायत् । सहस्रं परिवत्सरान् तै० ३.१२.६.३.]

अमृतासः प्राप्तमोक्षसुखाः (देवासः=विद्वांसः) ४.३५.८. मरणधर्मरहिताः (देवासः=दिव्यगुणाः) १.१२३.१. मृत्युरहिताः (विद्वांसः) १.१२७.८. स्वरूपेणाऽविनाशिनः (देवाः=विद्वज्जनाः) ५.४२.५. [अमृतप्राति० जसि असुगागमः]

अमृत्यवः मृत्युभयरहिताः (विद्युद्भौमसूर्यरूपेण ज्योतींषि) ३.२.६. [मृङ् प्राणत्यागे (तु०) धातोः भुजिमृङ्भ्यां युक्त्युकौ' (उणा०) सूत्रेण त्युक् । नञ्समासः]

अमृत्युः अविद्यमानं मृत्युभयं यस्मिन् (श्रवः=श्रवणम् ६.४८.१२. [पूर्वपदे द्र०]

अमृध्रम् न मर्धते नोनत्तितम् (मेघम्) अत्र नञ्पूर्वस्माद् मृधातोर्बाहुलकादौणादिको रक् प्रत्ययः १.३७.११. [नञ्+मृधु उन्दने (भ्वा०)+रक्]

अमृध्रः अहिंसकः (वैद्यः) ५.४३.१३. अहिंस्रः (मदः=अतिहर्षः) ६.१६.७. **अमृध्राः**=अहिंसकाः (राजपुरुषाः) ६.७५.६. अध्यापकोपदेशकाः ३.३८. (नञ्=मृधु उन्दने (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् रक्]

अमृध्राम् अहिंसिकाम् (सेनाम्) ६.२२.१०. **अमृध्राः**=अहिंसिकाः (उषसः=प्रातर्वेलाः) ५.३७.१. अकोमलाङ्गा दृढाङ्गाः २६.४६. **अमृध्रे**=अहिंसिते (द्यावापृथिवी) ५.४३.२. [नञ्+मृधु उन्दने (भ्वा०) धातोर्बाहु० रक् । स्त्रियां टाप्]

अमेनान् अविद्यमाना मेना प्रक्षेपकर्त्र्यः स्त्रियो येषान्तान् (ब्रह्मचारिणः) ५.३१.२. [मेना वाङ्नाम निघं० १.११. मेना उत्तराणि पदानि निघं० ३.२६. ततो नञ् बहुव्रीहिः । डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्बाहुलकाद् नः प्रत्ययः]

अमेनि अहिंसकः सन् (पुरुषः स्त्री वा) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति सुलोपः ३८.१४. निर्वैर आर्याभि० २.३१, ३८.१४. निर्वैरः (परमेश्वरः) ऋ० भू० १५२. [नञ्+मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्बाहुलकाद् निः प्रत्ययः मेनि; वज्रनाम निघं० २.२०. अमेन्यस्मेनृम्णानि धारयेत्यक्रुध्यन्नो धनानि धारयेत्येवैतदाह श० १४.२.२.३०.]

अमेष्टम् अमायां गृहे इष्टम् (प्रजापतिः=ईश्वरः) १०.२०. [अमा गृहनाम, निघं० ३.४. तदुपपदे इष गतौ धातोः क्तः]

अमोचि मुच्यते ५.१.२. मुच्लृ मोक्षणे (तुदा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

अम्ब अमति प्रेमभावेन प्राप्नोति (मातः !) प्र०—अत्रोणादिर्वन् प्रत्ययः ६.३६. मातरध्यापिके २.४१.१६. [अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् वन् प्रत्ययः वकारस्य बकारः]

अम्बयः रक्षणहेतवः आपः १.२३.१६. [अबि शब्दे (भ्वा०) धातोः 'इः' प्रत्यये बहुवचने रूपम्। आपो वा अम्बयः कौ० १२.२.]

अम्बरीषः शब्दविद्यावित् (इन्द्रः=विद्वज्जनः) प्र०—अत्र शब्दार्थादबिधातोरौणादिक ईषन् प्रत्ययो रुगागमश्च १.१००.१७. [अबि शब्दे (भ्वा०) धातोर्बाहु० ईषन् प्रत्ययो रुगागमश्च 'अम्बरीष' उ० ४.२६ सूत्रेण]

अम्बालिके प्रपितामहि २३.१८.

अम्बिकया अम्बते शब्दयति यया तया (स्वस्रा=वेदादिशब्दविद्यया) ३.५७. **अम्बिके**=पितामहि २३.१८. [अबि शब्दे (भ्वा०) धातोः कर्तरि ण्वुल्। स्त्रियां टाप् इत्वञ्च। अम्बिका शरद्वा अस्य (रुद्रस्य) अम्बिका स्वसा तै० १.६. अम्बिका=अम्बिकाः ह वै नामास्य (रुद्रस्य) स्वसा श० २.६.२.६.]

अम्बितमे याऽम्बतेऽध्यापयति साऽतिशयिता तत्सम्बुद्धौ (सरस्वति=बहुविज्ञानवति विदुषि स्त्रि) २.४१.१६. [अम्बिप्राति० आतिशयिकस्तमप् प्रत्ययः]

अम्बे ! मातः २३.१८. [अम्बिप्राति० सम्बुद्धौ रूपम्]

अम्भः उदकम्, प्र०—अम्भ इत्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२, १८.४. [आप्लृ व्याप्तौ धातोः 'उदके नुम्भौ च' उ० ४.२१० सूत्रेणासिः प्रत्ययो नुमागमो भकारान्तादेशश्च। अम्भ उदकनाम। नि० १.१२. अयं वै (भूः) लोकोऽम्भांसि तै० ३.८.१८.१.]

अम्भः व्यापकं, शान्तस्वभावं, जलवत् प्राणस्याऽपि प्राणम् (ईश्वरम्) प्र०—आप्लृधातोरसुन् प्रत्ययान्तस्याऽयं प्रयोगः ऋ० भू० १६२. [पूर्वपदे द्र०। अदोऽम्भः परेण दिवं, द्यौः प्रतिष्ठा। ऐ० आ० २.४.१. अयं वै (भूः) लोकोऽम्भसाꣳसि। तस्य वसवोऽधिपतयः तै० ३.८.१८.१.]

अम्भृणम् शत्रुभ्यो भयङ्करम् (रक्षः=दुष्टं जनम्) १.१३३.५. **अम्भृणौ**=अपो बिभर्त्ति याभ्यां तौ (पात्रे) १६.२७. [अप् उपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहुलकाद् 'नः' प्रत्ययः। अम्भृण महन्नाम निघं० ३.३. अम्भृण (पात्रविशेष) वैश्वदेवौ वाऽअम्भृणावतो हि देवेभ्य उन्नयन्त्यतो मनुष्येभ्योऽतः पितृभ्यः श० ४.५.६.३.]

अम्यक् अमिं सरलां गतिमञ्चति गच्छति १.१६६.३. [अम्युपपदे अञ्चु गतौ (भ्वा०) धातोः क्विन्। अम्यक्=अमाक्तेति वाऽभ्यक्तेति वा नि० ६.१५.]

अम्यक्षि गच्छति ६.११.५.

अय प्राप्नुहि ४.१८.२. **अयत्**=गच्छति ५.३७.२. प्राप्नोति ७.२०.७. प्राप्नुयात् २.३०.७. **अयते**=प्राप्नोति १.१२७.३. **अयन्**=प्राप्नुवन्ति ४.२.१६. **अयन्त**=प्राप्नुवन्ति ६.२६.१. **अयन्ते**=गच्छन्ते १.१६.२. [अय गतौ (भ्वा०) धातोर्लोटि लटि लङि च रूपाणि। व्यत्ययेन परस्मैपदेऽपि]

अयक्ष्मम् यक्ष्मादिरोगरहितं शरीरादिकम् १६.४. **अयक्ष्मया**=पराजयादिपीडानिवारिकया (सेनया) १६.११. **अयक्ष्माय**=आरोग्याय, भा०—शरीरात्मनोरारोग्याय ११.५३. यक्ष्मादिरोगनिवारणाय ११.३८. **अयक्ष्माः**=न विद्यते यक्ष्मा रोगराजो यासु ताः (अघ्न्याः=गावः) प्र०—अत्र यक्ष इत्यस्माद् 'अर्तिस्तु०' उ० १.१३८ अनेन मन्प्रत्ययः १.१. अविद्यमानो यक्ष्मा क्षयरोगो याभ्यस्ताः (आपः) ४.१२. [यक्ष पूजायाम् (चुरा०) धातोः 'अर्त्तिस्तु०' उणा० १.१४० सूत्रेण मन् प्रत्ययः। नञ्समासः]

अयच्छत् दद्यात् ११.५६. प्रयच्छति ददाति ७.१८.१७. [दाण् दाने (भ्वा०) धातोर्लङ्। शिति 'पाघ्रा०' सूत्रेण यच्छादेशः]

अयच्छथाः प्रदान कीजिए १.५२.८. [दाण् दाने (भ्वा०) धातोर्लङ्। शिति यच्छादेशः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अयजन्त सङ्गच्छेरन् ५.३.८. सङ्गमयन्ति १२.२३. यजन्ते १७.५५. यजन्तु १७.५५. पूजयन्ति ३१.६. समपूजयन्त पूजयन्ति पूजयिष्यन्ति च ऋ० भू० १४८. यजन्ति संगच्छन्ते १.१६४.५०. संगच्छेरन् ४.३.८. अपूजयन्त ऋ० भू० १२५, वे० को०, ३१.६. **अयजः**=यजेः ३.१७.२. संगमयसि १.३१.३. प्राप्त होता है १.७६.५. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अयजमानम् अदातारम्, भा०—स्तेनम् (पुरुषम्) १२.६२. [यज देवपूजा...दानेषु (भ्वा०) धातोः 'पूङ्यजोः शानन्' अ० ३.२.१२८ सूत्रेण शानन्। नञ्समासः]

अयज्ञसाचः ये यज्ञेन न सचन्ति सम्बध्नन्ति ते (मर्त्ताः=असत्पुरुषाः) ६.६७.६. [यज्ञोपपदे षच समवाये (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः। नञ्समासः]

अयज्ञान् संगाद्याऽग्निहोत्राद्यनुष्ठानरहितान् (अविदुषो जनान्) ७.६.३. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'यजयाच०' अ० ३.३.६० सूत्रेण नङ् प्रत्ययः। नञ्बहुव्रीहिः]

अयज्युम् अयजमानम् (मर्त्यम्) १.१३१.४. **अयज्यून्**=असंगतिकर्त्तॄन् (नॄन्) १.१२१.१३. विद्वत्सत्कार-

विरोधिनः (असज्जनान्) ७.६.३. अयज्योः=असङ्गन्तुः (शत्रोः) २.२६.१. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'यजिमनि०' उ० ३.२० सूत्रेण युच् । बहुलवचनाद् अनादेशो न । नञ्समासः]

अयज्वनः=यज्ञविरोधिनः (जनस्य) १.१०३.६. अयाक्षुस्ते यज्वानो, न यज्वानोऽयज्वानस्तान् (जनान्) १.३३.४. **अयज्वानः**=यज्ञानुष्ठानं व्यक्तवन्तः (जनाः) १.३३.५. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'सुयजोर्ङ्वनिप्' सूत्रेण ङ्वनिप् । नञ्समासः]

अयतन्ता प्रयत्नरहितौ (अध्यापकाऽध्येतारौ) २.२४.५. (यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः शतृ । नञ्समासः]

अयनम् भूमिस्थानम् ३.३३.७. **अयनाय**=व्यावहारिक-पारमार्थिकसुखाय ऋ० भू० १३२. अभीष्टस्थानाय मोक्षाय ३१.१८. **अयने**=भूमौ १३.५३. [अय गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट् । इयं (पृथिवी) वाऽपामयनमस्याꣳ ह्यापो यन्ति श० ७.५.२.५०.]

अयमानम् प्राप्नुवन्तम् (राजपुरुषम्) ४.३८.५. [अय गतौ (भ्वा०) धातोः शानच्]

अयवानाम् अमिश्रितानाम् (पदार्थानाम्) १४.२६. **अयवाः**=अमिश्रिताः, अन्व०—प्रकृत्यवयवाः सत्त्वरजस्तमांसि गुणाः, परमाण्वादयश्च १४.३१. **अयवोभिः**=मिश्रिताऽमिश्रितैरन्नैः क्षणादिभिः कालावयवैः १२.७४. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप् प्रत्ययः । नञ्समासः । अयवाः (अपरपक्षा हीदꣳ सर्वम्) अयुवते श० ८.४.२.११. अपरपक्षाः अयवाः श० ८.४.२.११. योऽसुराणाम् (अर्धमासः कृष्णपक्षः) सोऽयवा न हि तेनाऽसुरा अयुवत । श० १.७.२.२५. अथो इतरथाहुः य एव देवानाम् (अर्धमासः=शुक्लपक्षः) आसीत्सोऽयवा न हि तमसुरा अयुवत श० १.७.२.२६]

अयष्ट अभिसङ्गच्छेत् ६.४७.२५. [यजदेवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लुङि रूपम्]

अयसः हिरण्यस्य, प्र०—अय इति हिरण्यनाम निघं० १.२, ६.४७.१०. **अयसे**=गमनाय ४.२१.७. विज्ञानाय १.५७.३. **अयः**=लोहयुक्तम् (मुखम्) ६.७५.१५. सुवर्णम् २६.२०. योऽयते गच्छति सः (विद्वज्जनः) ५.६२.७. प्राप्तिसाधका धातवः १.१६३.६. लोहा १८.१३. [अय गतौ-(भ्वा०) धातोरसुन् । अथवा=इण् गतौ (अदा०) धातोरसुन् प्रत्ययः । अयस् हिरण्यनाम । निघं० १.२. अयः (प्रजापतिः) अश्मनोऽयः (असृजत) श० ६.१.३.५. दिशो वा अयस्मय्यः (सूच्यः) तै० ३.९.६.५. अस्य वै (भूः) लोकस्य रूपमयस्मय्यः (सूच्यः) तै० ३.९.६.५. (असुराः) अयस्मयीमेव (पुरीं) अस्मिंल्लोके (चक्रिरे) श० ३.४.४.३. अयः (प्रजापतिः) अयसो हिरण्यं (असृजत) तस्मादयो बहुध्मातꣳ हिरण्यसंकाशमिवैव भवति श० ६.१.३ ५. अयः विश एतद् रूपं यदयः श० १३.२.२.१९.]

अयस्तापम् लोहसुवर्णतापकम्, भा०—तप्तं लोहमिव ३०.१४. [अयस् हिरण्यनाम निघं० १.२. तदुपपदे तप सन्तापे धातोरण् प्रत्ययः]

अयस्मयम् सुवर्णादिप्रकृतम् (नमः=अन्नम्) प्र०—अय इति हिरण्यनाम निघं० १.२, १२.६३. **अयस्मयः**=हिरण्यमिव तेजोमयः (घर्मः=प्रतापः) ५.३०.१५. [अयो हिरण्यम् । ततः 'तत्प्रकृतवचने मयट्' अ० ५.४.२१. सूत्रेण मयट् । 'अयस्मयादीनि च्छन्दसि' अ० १.४.२०. सूत्रेण निपातनात् साधु । अयस्मयेन (पात्रेण) असुरा अदुहुर्यवान् । काठसंक० १४०.१०.]

अयंसत गृह्णीयुः १.१३५.६. यच्छेयुः १.१३५.६. उपयच्छेयुः १.१३५.३. **अयंस्त**=यच्छति ६.७१.१. उद्यच्छति १.५६.१. उपयच्छति १.१३६.२. यच्छतः १.१४४.३. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अयःशया योऽयस्सु सुवर्णादिषु शेते सा (तनूः=शरीरम्) हिरण्यनाम निघं० १.२, ५.८. [अयस् हिरण्यनाम निघं० १.२. तदुपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः 'अधिकरणे शेतेः' अ० ३.२.१५. सूत्रेणाच् प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्]

अयःशिप्राः अय इव शिप्रे हनूनासिके येषामश्वानां तद्वन्तः (राजपुरुषाः) ४.३७.४. [अयस् हिरण्यनाम, शिप्रे=हनूनासिके । तयोः समासः । ततो मत्वर्थेऽकारः प्रत्ययः]

अयःस्थूणम् सुवर्णस्तम्भमिव (उषसो हिरण्यरूपम्) ५.६२.८. [अयस् हिरण्यम्, तस्य स्थूणम् । तिष्ठति छादनादिकमनया सा स्थूणा=गृहस्तम्भः, 'रास्नासास्नास्थूणावीणा' उ० ३.१५. सूत्रेण निपातनात् साधु]

अया एति जानाति सर्वा विद्या यया प्रज्ञया तया, प्र०—अत्र 'सुपां०' इत्याकारादेशः १.८७.४. [इण् गतौ (अदा०) धातोः 'एरच्' इत्यच् प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्]

अया अनया १.१२८.२. अनया नीत्या ६.१७.१५. [इदम् सर्वनाम्नस्तृतीयकवचने रूपम् । पृषोदरादिना नकारस्य लोपः । अया=इत्युपदेशस्य नि० ३.२१.]

अयाट् यजेत्, भा०—प्राप्नुयात् २१.४७. सङ्गच्छेत्,

भा०—सङ्गृह्णीयात् ३०.१०. अयाक्षीत् ७.१५. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लुङ् । लेः सिचो लुक् विश्वान् देवानयाडिहेति सर्वान् देवानयाक्षीदिहेत्येवैतदाह श० १४.२.२.१६.]

अयातन प्राप्नुत ५.५४. [या प्रापणे धातोर्लङ् । 'त' प्रत्ययस्य स्थाने 'तप्तनप्तनथनाश्च' सूत्रेण तनप् आदेशः]

अयातम् प्राप्नुतम् १.११६.१८. प्राप्नुयातम् १.११६.२०. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लङ्]

अयातम् अप्राप्तम् (धनम्) ५.३१.८. [या प्रापणे (अदा०) धातोः क्तः । नञ्समासः]

अयातयतम् सुशिक्षया प्रयत्नवतीं संस्कुर्वन्तु १.३३.६. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्णिचि लङि मध्यमद्विवचने रूपम्]

अयातुः यो न याति तस्मात् (स्थिरादविदुषः) ७.३४.८. [या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । नञ्समासः]

अयान् यच्छतु ४.५३.१. प्रकाशित करते हैं १७.५८. इयात् ६.७१.५. [या प्रापणे धातोर्लङ्]

अयान् प्राप्तान् (पृथिवीदेशान्) २.३८.३. [इण् गतौ धातोः 'एरज्' इत्यच् । द्वितीयाबहुवचने रूपम्]

अयाम गमयेम ५.४५.५. प्राप्नुयाम, प्र०—अत्र अयं लोडुत्तमबहुवचने प्रयोगः १.३३.१. [अय गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । या प्रापणे धातोर्वा लङ्]

अयामन् अगन्तव्ये मार्गे १.१८१.७. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्मनिन् । नञ्समासः । बहुवचनाद् अधिकरणे मनिन्]

अयामि एमि प्राप्नोमि १.१५३.२. प्राप्नोमि ३३.८५. [अय गतौ (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । या प्रापणे धातोर्वा लङ् । छान्दसत्वान् नेकारलोपः]

अयावि पृथक्कुरुतः, भा०—निवर्त्तयति २८.१५. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

अयासम् अयासिषं प्राप्नुयाम्, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इतीडभावः ३.३३.३. **अयासिषम्**=प्राप्नुयाम् १.१८.६. करोमि, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ३.४८. मैं याचता हूँ आर्याभि० २.५२, ३२.१३. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लुङ्]

अयासिषम् प्राप्तवती (स्त्री) ८.२७. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लुङ्]

अयासिष्ट यातु ५.५८.६. **अयासिष्टाम्**=प्राप्नुतः २८.१४. **अयासुः**=प्राप्नुयुः ७ ५७.१. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लुङ्]

अयासः गच्छन्तः (स्तेनाः=चौराः) ६.६६.५. प्राप्तविज्ञानासः (श्येनासः=अश्वाः) ४.६.१०. विज्ञानवन्तः (सज्जनाः) ३.१८.२. प्राप्ताः (गावः=किरणाः) १.१५४.६. प्राप्तविद्याः (विद्वज्जनाः) ३.५४.१३. प्राप्तिशीलाः (मरुतः=वाताः) १.६४.११. ज्ञातारो गन्तारो वा (भयङ्करा जनाः) ७.५८.२. अयन्त इत्ययासः (गावः), समीक्षा—महीधरेणात्रायगतावित्यस्य यदयन्तीति परस्मैपदमुक्तम् तदसदात्मनेपदोपयोग्यत्वात् ६.३. [अय गतौ (भ्वा०) धातोरच् । ततः प्रथमाबहुवचनेऽसुगागमे रूपम् । अयासः अयनाः नि० २.७.]

अयास्यः प्रयत्नाऽसाध्यः स्वाभाविकः (सभाध्यक्षः) १.६२.७. [यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोर्ण्यत् । नञ्समासः अयास्यः ते (असुरा) ऽब्रुवन्नयं वा आस्य इति । यदब्रुवन्नयं वाऽ आस्य इति तस्मादयमास्यः । अयमास्यो ह वै नामैषः । तमयास्य इति परोक्षमाचक्षते जै० उ० २.८.७. स एवाऽयास्यः (अन्नाद्यम्) आस्ये धीयते तस्मादयास्यः यद्देवा (ऽयम्) आस्ये रमते तस्माद्देवाऽयास्यः जै० उ० २.११.८. क्व नु सोऽभूद् यो न इत्थमसक्तेत्ययमास्येऽन्तरिति सोऽयास्यः श० १४.४.१.६. स प्राणो वा अयास्यः जै० उ० २.८.८. अयास्य उद्गाता मै० १.६.१. काठ० ६.६. अयास्यो ब्रह्मा जै० ३.११८]

अयांसम् अयौ प्राप्तवन्तौ दोर्दण्डौ येन तम् (सज्जनम्) २.३५.१५. [अयः=इण् गतौ (अदा०) धातोरच् । अंसः=अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अमेः सन्' उ० ५.२१. सूत्रेण सन् तयोर्बहुव्रीहिः]

अयाः प्राप्नुवन्तः (स्तेनाः=चौराः) ६.६६.५. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लङि मध्यमैकवचने रूपम्]

अयाः यजेः सङ्गच्छस्व, प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् ८.२०. यजेः, प्र०—अत्र लङ् मध्यमैकवचने शपो लुक्, श्वेतवाहादित्वात् पदान्ते डस् ३.२६.१६. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर् लङ् । शपो लुक् 'बहुलं छन्दसीति' सूत्रेण । पदान्ते श्वेतवाहादित्वाड् डसि टिलोपे रूपम्]

अयुक्त युनक्ति ५.४५.१०. युङ्क्ते ६.६३.४. युञ्जते ७.६०.३. योजयति १.५०.६. समाहितो भवति ३३.३७. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लुङ्]

अयुक्तासः योगरहिताः (व्यवहाराः) ५.३३.३. अधर्मकारिणः (राजप्रजाजनाः) १०.२२. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्तप्रत्यये युक्तः। प्रथमाबहुवचनेऽसुगागमे रूपम्। नञ्समासः]

अयुक्थाः योजयसि १.९४.१०. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लुङि मध्यमैकवचने रूपम्]

अयुक्षत युञ्जते १.९२.२. संयुङ्ग्ध्वम् ३.२६.४. **अयुक्षाताम्**=अयोजयताम् युङ्क्थः १.१५७.१. **अयुग्ध्वम्** योजयत ५.५७.३. **संप्रयुग्ध्वम्**=१.८५.५. संयोजयत ५.५५.६. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लुङि प्रथमाबहुवचने, द्विवचने, मध्यमबहुवचने रूपाणि]

अयुञ्जन् युञ्जन्ति ९.७. **अयुज्महि**=प्रयुञ्ज्महि ६.५३.१. **अयुञ्जत**=युञ्जते १.१३०.५. **अयुञ्जन्**= युञ्जन्ति ३.४१.२. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लङि रूपाणि। अयुज्महि प्रयोगे श्नमो लुक्। अयुञ्जन् प्रयोगे 'बहुलं छन्दसी' ति रुट् श्नमो लुक् च]

अयुजि असंयुक्तायाम् (धुरि=मार्गे) ५.४६.१. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्नञ्युपपदे क्विप्। सप्तम्येकवचने रूपम्]

अयुतम् अपरिमितसङ्ख्याकम् (पदार्थसमूहम्) ४.२६.७. दश सहस्राणि (धेनवः=गावः) १७.२. [अयुतं दक्षिणा इति वा नि० १०.१२. अयुतं नियुतं प्रयुतं तत्तदभ्यस्तम् नि० ३.१०.]

अयुध्यः योद्धुमनर्हः (इन्द्रः=राजा) ४.३०.५. शत्रुभिर्योद्धुमयोग्यः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३९. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोः क्यप् प्रत्ययः छान्दसः। नञ्समासः]

अयुनक् युनक्ति ६.४४.२४. नियुञ्जति १.१६३.२. (युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लङ्]

अयुयुत्सन् युद्धेच्छां कुर्युः, प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च १.३३.६. [युध संप्रहारे (दिवा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्। ततो लङ्। 'पूर्ववत्सनः' इत्यात्मनेपदे प्राप्ते व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अयेभ्यः य अय्यन्ते प्राप्यन्ते पदार्थास्तेभ्यः ३०.८. [अयः=इण् गतौ (अदा०) धातोः 'एरच्' सूत्रेणाच्]

अयोगूढम् अयसा शस्त्रविशेषेण सह गन्तारम् [अयस् उपपदे गम्लृ गतौ धातोः क्विप्। 'ऊङ् च गमादीनाम्' अ० ६.४.४० वार्त्तिकेन ऊङ्]

अयोजि युज्यते १.१२३.१. योज्यते ५.७५.९. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः कर्मणि लुङ्। योज्यते=युजिर्+णिच्+लुङ्]

अयोदंष्ट्रान् अयोदंष्ट्रायोदंसनानि येषु तान् (रथान्) १.८८.५. [अयस् हिरण्यनाम निघं० १.२. दंश दशने धातोः 'दाम्नीशस०' अ० ३.२.१८२ सूत्रेण करणे ष्ट्रन्, प्रत्यये दंष्ट्रा=दशनम्। एनयोः समासः]

अयोधयः सम्यग् योधय, प्र०—अत्र लोडर्थे लङ् १.३३.७. **अयोधीत**=योधयति ४.३८.८. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ् लुङ् वा]

अयोद्धेव न योद्धा अयोद्धा तद्वत् १.३२. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोस्तृचि योद्धा। नञ्समासः। तद्वत्]

अयोयवीत् पुनः पुनर्मिश्रयत्यमिश्रयति वा १.५२.१०. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्यङ्लुकि लङि रूपम्]

अयोहनुः अयो लोहमिव दृढा हनुर्यस्य सः (सविता= विद्वान् राजा) ६.७१.४.

अयोः अनयोः १.१८५.१. [अयोरिति सर्वनाम। अयोः=अनयोः नि० ३.२२.]

अयोः वियोजय संयोजय वा ६.२५.६. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लङ्। 'उतोवृद्धिः०' इति वृद्धिर्न छान्दसत्वात्]

अरक्षत् रक्षति १.७४.१. **अरक्षन्**=रक्षेयुः १.१४८.५. रक्षन्ति ४.२७.१. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अरक्षसः अकुटिलस्योत्तमस्य (सत्यवाचो जनस्य) १.१९०.३. **अरक्षसा**=अविद्यमानानि दुष्टानि रक्षांसि यस्मिँस्तेन (पथा) १.१२९.६. अदुष्टभावेन (मनसा= विज्ञानेन) २.१०.५. रक्षोवद् दुष्टतारहितेन (सज्जनेन) ११.२४. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोरसुन् प्रत्ययः। रक्षन्तियस्मादिति रक्षः। नञ्समासः]

अरक्षः अरक्षणीयम् (दुष्कर्म) ५.८७.९. [रक्ष पालने धातोरसुन्। नञ्समासः]

अरङ्कृतः सर्वान् पदार्थानलङ्कर्त्तुं शीलं येषान्ते (वृक्तबर्हिषः ऋत्विजः), प्र०—अत्र 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' अ० ३.२.१७८. अनेन ताच्छील्यार्थे क्विप् १.१४.५. (अलमुपपदे डुकृञ् करणे धातोस्ताच्छील्यार्थे क्विप्। कपिलकादित्वाल्लत्वविकल्पः]

अरङ्कृताः अलङ्कृता भूषिताः (सोमाः=पदार्थाः) प्र०—'संज्ञाछन्दसोर्वा कपिलकादीनामिति वक्तव्यम्' अ०

८.२.१८. इति लत्वविकल्पः १.२.१. अलङ्कृत अर्थात् उत्तम रीति से बनाए गए (सोमाः) आर्याभि० १.७. [अलम्+डुकृञ् करणे धातोः क्तः प्रत्ययः । कपिलकादित्वाल् लत्वविकल्पः। अरङ्कृता अलङ्कृताः नि० १०.१.]

अरङ्कृतिः अलङ्कारः ७.२९.३. [अलम् उपपदे डुकृञ् करणे धातोः क्तिन् प्रत्ययः. कपिलकादित्वाल् लत्वविकल्पः ।]

अरङ्कृते पूर्णपुरुषार्थिने (राज्ञे) २.१.७. [अलमुपपदे डुकृञ् करणे धातोस्ताच्छील्ये क्विप् । कपिलकादित्वाल्लत्वविकल्पः]

अरङ्गमाय यो विद्याया अरं पारं गच्छति तस्मै (विदुषे=आप्ताय विपश्चिते) ६.४२.१. [अलमुपपदे गम्लृ धातोः 'गमश्चे' ति अ० ३.२.४७. सूत्रेण खच् प्रत्ययः]

अरज्जौ असृष्टौ २.१३.९. [सृज विसर्गे (दिवा०) धातोः 'सृजेरसुम् च' उ० १.१५. सूत्रेण उः प्रत्ययोऽसुमागमः, आदिसकारलोपश्च । नञ्समासः]

अरणम् उदकम् ५.८५.७. प्रेरितम् (अश्वं=तुरङ्गम्) ३.५३.२४. **अरणस्य**=अविद्यमानो रणः सङ्ग्रामो यस्मिँस्तस्य (रायः=धनस्य) ७.४.७. **अरणः**=सङ्ग्रामरहितो, यथावत् सङ्ग्रामं न करोति यः (कुराजभृत्यः) ६.७५.१९. विज्ञाता (ब्रह्मणस्पतिः=महाविद्वान्) २.२४.७. सङ्गन्ता (पुत्रः) ५.२.५. अरममाणः (अन्यगोत्रजोऽनौरसो वा पुत्रः) ७.४.८. **अरणानि**=अरमणीयानि (क्षेत्राणि) ६.६१.१४. **अरणाय**=सल्लक्षणाय प्राप्तायान्त्यजाय २६.२. अतिशूद्रादि के लिए स० प्र० ९७. [अरणमम्बु नि० ३.१०. अरणोऽपार्णो भवति नि० ३.२. अर्ण इत्युदकनाम निघं० १.१२. अपरत्र=नञ्-रणयोः समासः । रणाय=रमणीयाय संग्रामाय नि० ४.८. रणः संग्रामनाम निघं० २.१७. अन्यत्र=ऋ गतौ धातोर्ल्युट् प्रत्ययः]

अरणी काष्ठविशेषाविव (विद्वांसौ) ५.९.३. **अरणीभिः**=अरणियों से १.१२७.४. सुखप्रापिकाभिः (ऊतिभिः=रक्षाभिः) १.१२९.५. **अरण्योः**=उपर्य्यधस्थयोः साधनयोः ३.२९.२. [ऋ गतौ धातोः 'अतिसृधृ०' उ० २.१०२. सूत्रेणानिः प्रत्ययः । 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष् । अरणी=प्रत्यृत एने । अग्निः समरणाज्जायत इति वा नि० ५.१०. देवरथो वा अरणी कौ० २.६. अरो वै विष्णुस्तस्य वा एषा पत्नी यदरणी काठसंक० २१.२.३.]

अरण्यम् वनम् २५.३. **अरण्यानाम्**=वनानाम् १६.२०. **अरण्ये**=वानप्रस्थाऽऽश्रमे ऋ० भू० २३८. जङ्गले २०.१७. वानप्रस्थैः सेविते एकान्तदेशे वने ३.४५. **अरण्येषु**=वनेषु १.१६३.११. जङ्गलेषु २९.२२. [ऋ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेर्निच्च' उ० ३.१०२. सूत्रेणान्यः प्रत्ययः । अरण्यमपार्णं ग्रामादरमणं भवतीति वा नि० ९.२९. अरण्यानी अरण्यस्य पत्नी नि० ९.२९. वाग्वाऽ अरण्येऽनूच्यः (पुरोडाशः) श० ६.३.२.४.]

अरतये प्राप्ताय व्याप्ताय (अग्नये=परमात्मने) ७.५.१. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'वहिवस्यर्त्तिभ्यश्चित्' उ० ४.६०. सूत्रेणातिः प्रत्ययः ।]

अरताम् प्राप्नुताम् ३.३३.१३. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः । षष्ठीबहुवचने रूपम्]

अरतिम् नाऽस्ति रतिश्चैतन्यमस्मिँस्तम् (अग्निं=विद्युतम्) १५.३२. दुःखम् ४.३८.४. विषयेष्वरममाणम् (राजानमधिकारिणं वा) ६.४९.१२. प्राप्तम् (पावकम्) ३३.८. प्राप्तिम् ६.७.१. प्रापकम् (अग्निम्) १.५८.७. प्रापणीयम् (अग्निं=विद्वज्जनम्) ४.१.१. सुखप्रापकम् (अग्निं=सत्योपदेशकम्) सर्वत्र प्राप्तम् (द्रविणं=धनं यशो वा) ७.१०.३. प्राप्तविद्यम् (विद्वज्जनम्) १.१२८.८. **अरतिः**=प्रापकः (अग्निः=विद्वान्) २.२.२. सर्वत्र प्राप्तः (अग्निः=आप्तो जनः) ४.२.१. सत्योपदेशं प्राप्तः सन् (सज्जनः) ६.६७.८. स्वव्याप्त्या धर्त्ता (ईश्वरः) १.५९.२. समर्थः (अग्निः=वह्निः) २.४.२. ज्ञाता (अग्निः=कारणाख्यो जगदीश्वरः) १२.२४. अरमणः (अग्निः) ६.३.७. प्राप्तिः ६.१२.३. **अरतौ**=अरमणवेलायाम् ५.२.१. ऋच्छति प्राप्नोति तम् (अग्निं=भौतिकम्) ७.२४. (रमु क्रीडायाम् धातोर्भावे स्त्रियां क्तिन् । नञ्समासः । अन्यत्र ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽतिः प्रत्ययः । अयं वै (पृथिवी) लोकोऽरतिः पृथिव्याः जै० २.३९०.]

अरत्नी प्रजाया व्यापारे गणितविद्यायां च निपुणीकरणम् ऋ० भू० २१९. भुजमध्यप्रदेशौ २०.८. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) 'ऋतनि०' उ० ४.२. सूत्रेण कत्निच् । बाहुर्वा ऽअरत्निः श० ६.३.१.१३.]

अरथाः अविद्यमाना रथा येषान्ते (पदातयः) ५.३१.५. **अरथेभ्यः**=अविद्यमाना रथा येषान्तेभ्यः पदातिभ्यः १६.२६. [नञ्रथयोः समासः]

अरथीः अविद्यमानरथः (वीरजनः) ६.६६.७. [नञ्-

पूर्वकरथप्राति० 'छन्दसीवनिपौ' अ० ५.२.१०६. वार्त्तिकेन मत्वर्थे ईः प्रत्ययः]

अरदत् विलिखति ७.४७.४. विलिखेत् ३.३३.६. **अरदतम्**=सन्मार्गादिकं विज्ञापयतम् १.११६.७. **अरदः**=विलिखति आकर्षति ६.३०.३. [रद विलेखने (भ्वा०) विलेखनं भेदनम् । ततो लङ् । विज्ञापनेऽपि धातुरयं धातूनामनेकार्थत्वात्]

अरध्रम् असमृद्धव्यवहारम् ६.६२.३. **अरध्रस्य**= अहिंसकस्य (राज्ञः) ६.१८.४. [नञ्युपपदे रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्घञ् । अन्यत्र कर्त्तरि अच् । रेफागमश्छान्दसः]

अरन् आचरन्तु १.१२५.७. समन्तात्प्राप्नुयुः ५.३१.१३. [ऋगतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्लङ् । आडभावश्च]

अरन्त रमन्ताम् ५.३१.८. रमते ४.१६.६. (रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

अरन्धनायः अरमलं धनं यस्य स इवाऽऽचरसीत्यरन्धनायः प्र०—अत्र लडर्थे लिङ् १.५३.१०. [अलं धनयोः समासे तत आचारेऽर्थे 'कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च' सूत्रेण क्यङ् । ततो लिङ् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अरन्धयत् हिंस्यात् ७.१८.६. **अरन्धयः**=हिंस २.११.१६. हिंसय ६.२३.२. हिन्धि १.५१.६. हिंसयेः ७.१६.२. (रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्णिचि लङ् । 'रधिजभोरचि' अ० ७.१.६१. सूत्रेण नुमागमः]

अरपत् रपति गुञ्जति १.११६.६. व्यक्तमुपदिशति ५.६१.६. [रप व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अरपः निष्पापः (पुत्रः) ८.५. अविद्यमानं पापं यस्मिन् तत् सत्याचरणम्, प्र०—रपो रिप्रमिति पापनामनी भवतः निरु० ४.२१, १६.५५. निष्पापताम् ऋ० भू० २७६. वे० को० [रप व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोरसुन् प्रत्ययः । ततः समासः । रप इति पाप नाम नि० ४.२१.]

अरपाः अविद्यमानं रपः पापं यस्य सः (वैद्यः) २.३३.६. [रपस् पापनाम नि० ४.२१. नञ्रपसोर्बहुव्रीहिः]

अरम् पर्याप्तम् १.१०८.२. अलम् प्र०—अत्र कपिलकादित्वाल्लत्वम् ११५२., अरमत्र वर्णव्यत्ययेन लस्य स्थाने रः ६.४१.५. पर्याप्तं वा १.६३.३. [अलमित्यव्ययम् भूषणपर्याप्तिवारणेषु]

अरमणसम् यस्मिन्न रमन्ते शत्रवस्तम् (वज्रं=शस्त्रविशेषम्) ६.१७.१०. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट् । नञ्समासः । असुगागमः]

अरमतिम् विषयेष्वरममाणाम् (महीं=वाचम्) ५.४३.६. अरमणाम् ५.५४.६. न रमती रमणं विद्यते यस्य सः (सविता=सूर्यलोकः) २.३८.४. न विद्यते पूर्वा रमती रमणे गृहस्थक्रिया यस्याः सा (भार्या) ७.१.६. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् अतिः प्रत्ययः । नञ्समासः]

अरमतिम् अलं प्रज्ञाम् ७.३६.८. पूर्णां प्रज्ञाम् ७.४२.३. **अरमतिः**=अरम्=अलं मतिः=प्रज्ञा यस्य सः (राजा) ७.३४.२१. [अरम्=अलम् । कपिलकादित्वाल् लत्वविकल्पः । मतिः=मन ज्ञाने धातोः क्तिन् प्रत्ययः । एनयोः समासः]

अरमन्त रमन्ते ३.५६.४. **अरमयः**=रमय ५.३१.८. रमयसि २.१३.१२. रमते ४.१६.६. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ् । अन्तर्भावितण्यर्थः]

अरम्णात् वधति, प्र०—रम्णातीति वधकर्मा निघं० २.१६, २.१२.२. हन्ति २.१५.५. [रम्णाति वधकर्मा निघं० २.१६. ततो लङ् । अरम्णात् अरमयत् नि० १०.३२.]

अरम्णाः रमय ५.३२.१. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन श्नाः । अरम्णाः रम्णाति संयमनकर्मा विसर्जनकर्मा वा नि० १०.६.]

अररिन्दानि उदकानि, प्र०—अररिन्दानि इत्युदकनाम निघं० १.१२, १.१३६.१०. [अररिन्दानि उदकनाम निघं० १.१२.]

अररिवान् प्राप्नुवन् (दुष्टजनः) १.१४०.४. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः क्वसुः]

अररुम् प्रापकम् (मर्त्यम्) १.१२६.३. असुर—राक्षसस्वभाव शत्रुम्, भा०—विघ्नकारिणं दुष्टप्राणिनम् प्र०—अर्त्तेररुः उ० ४.७६. अनेन ऋ धातोररुः प्रत्ययः १.२६. ऋगतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेररुः' उ० ४.७६. सूत्रेण अरुः प्रत्ययः । अररुर्हं वै नामासुररक्षसामास तं देवा अस्याः (पृथिव्याः) अपाघ्नत श० १.२.४.१७. भ्रातृव्यो वा अररुः तै० ३.२.६.४.]

अररुषः भृशं हिंसकात् (दुर्जनात्) ७.१.१३. अहिंसकस्य (धार्मिकस्याऽऽप्तजनस्य) ३.१८.२. [अलमुपपदे रुषहिंसार्थे (भ्वा०) धातोः क्विप् । लस्य रेफः । मकारलोपश्च छान्दसः]

अररुषः अदातुः (मर्त्यस्य=मनुष्यस्य) प्र—अत्र 'रा दाने' इत्यस्मात् क्वसुस्ततः षष्ठ्येकवचनम् १.१८.३.

राति ददाति स ररिवान्, न ररिवान् अररिवान् तस्य, अन्व०—परस्वादायिनः (मर्त्यस्य=दुष्टस्य मनुष्यस्य) ३.३०. [रा दाने (अदा०) धातोः क्वसुः । नञ्समासः]

अररुषे अलं रोषकाय (दुष्टजनाय) ७.५६.१९. [अलम्+रुष हिंसार्थे+क्विप्]

अररो दुष्टमनुष्य ! १.२६. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेररुः' ३.४.७९ सूत्रेण अरुः प्रत्ययः सम्बुद्धौ रूपम्]

अरसम् अविद्यमानरसम् (विषम्) १.१९१.१६. [नञ्रसपदयोः समासः]

अरंस्त रमताम् २.११.७. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातो लुंङ्]

अरंहः गमयति ५.३२.२. [रंहति गतिकर्मा निघं० २.१४. ततोलङ्]

अरंहितः अत्यन्तहितकारी पं० वि० । [अलम्+डुधाञ्+वर्त्तमाने क्तः 'दधातेर्हि' रिति हिरादेशः]

अरातयः परसुखाऽसोढारः (दुर्जनाः) १.२९. कपटेन विद्यादानग्रहणरहिताः (अयोग्या जनाः) १.७. अदानस्वभावाः कृपणाः (जनाः) १.१९. अदातारः (पुरुषाः) ६.४८.१६. अदानरीतयः (पुरुषाः स्त्रियश्च) २.२३.९. अविद्यमाना रातिर्दानं येषु ते शत्रवः १.७. दानशीलतारहिताः शत्रवः १.१४. परपदार्थग्रहीतारः शत्रवः १.१६. विद्याविघ्नकारिणः (दुर्जनाः) १.२९. अन्येभ्यो दुःखप्रदाः (कुपुरुषाः) १.२९. सत्यविरोधिनोऽरयः १.२९. अन्यायेनाऽऽदातारः शत्रवः ५.२.६. शत्रु लोग सं० वि० १०४, २.३५.६. **अरातये**=रातिर्दानं न विद्यते यस्मिँस्तस्मै शत्रवे बहुदानकरणार्थं दारिद्र्यविनाशाय वा अन्व०—अदानाय १.११. **अरातिम्**=अदानम् २७.६. शत्रुम् ४.४.४. **अरातिः**=शत्रुः २.७.२. **अरातीः**=न विद्यते रातिर्दानं येषु तान् कृपणान् विरोधिनः (दुर्जनान्) ६.१६.२७. अदान-क्रियाः ६.४४.९. शत्रून् ५.२६. सुखदानरहिताः शत्रुसेनाः १.१६६.२१. अदानशीलान् शत्रून् ९ ३७. **अरात्याः**=शत्रुभूताया वाण्याः तादृशस्य कर्मणो वा ऋ० भू० १६०, अथर्व० १३.४.४७. [रा दाने (अदा०) धातोः क्तिन् । नञ्बहुव्रीहिः । अरातयः अदानकर्मणः वा अदानप्रज्ञा वा नि० ३.११. अमित्रान् अदानान् इति वा नि० ११.२.]

अरातीयतः विद्यादिदानं कर्त्तुमनिच्छतः (अविद्वज्जनस्य) १२.५. शत्रोरिवाचरणशीलस्य (मनुष्यस्य) १.९९.१. दुष्ट शत्रु जो हम धर्मात्माओं का विरोधी, उसके आर्याभि० १.३३, ऋ० १.७.७.१. [अरातिपूर्वपदे द्र० । तत इच्छायामर्थे क्यच् ततः शतृ]

अरातीयात् शत्रुत्वमाचरेत् ११.८०. [अराति+क्यच्+लिङ्]

अरातीवा योऽरातीन् शत्रून् वनति सम्भजति (मर्त्तः=मनुष्यः) २.२३.७. योऽरातिरिवाचरति (दुर्जन) १.१४०.४. [अराति+वन संभक्तौ (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति वनिप् । 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इति नकारस्याकारः । पूर्वपदस्य च दीर्घत्वम्]

अराधसम् धनरहितम् (मर्त्तम्=मनुष्यम्) १.८४.८. **अराधसः**=अधनात् (जनात्) ५.६१.६. [राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोरसुन् । राधः धननाम निघं० २.१०. नञ्समासः अराधसम् अनाराधयन्तम् नि० ५.१७.]

अराधि संसाध्यते १.७०.४. संसाधितम् २.२८. (राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

अराध्यै अविद्यमानसंसिद्धये ३०.९. (नञ्+राध संसिद्धौ (स्वा०)+क्तिन्]

अराध्वम् स्मर्धयन्ति ७.५९.४. दत्त १.११६.१२. [रा दाने (अदा०) धातोर्लुङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अरान् चक्रस्याऽवयवान् १.१४.१.९. **अराः**=रथचक्राऽवयवाः ऋ० भू० ६, ३४.५. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः]

अराम अलग करें ७.५६.२१. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट् । छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पाद् ऋच्छादेशो न । अत्र प्रापणार्थे प्रयोगः]

अरावा अदाता अवचनो वा (लोभिनो जनस्य) ७.५६.१५. [नञ्+रा दाने+वनिप् । अथवा नञ्+रु शब्दे+घञ् । अरावाणो वा एते येऽमृतमभिशंसन्ति ता० ६.१०.१७.]

अराव्णः कृपण मनुष्य से आर्याभि० १.१२, ऋ० १.२.१०.१५. **अराव्णे**=अदात्रे (दुष्टमनुष्याय) ७.३१.५. [रा दाने (अदा०) धातोर्वनिप् । नञ्समासः]

अरासत दद्युः ५.७९.६. रासन्ते १.१६६.३. रासन्ताम् ३.५३.१३. [रासति दानकर्मा निघं० ३.२०. ततो लङ्]

अरिगूर्त्तः अरिषु शत्रुषु गूर्त्तं उद्यमी (विद्वज्जनः) १.१८६.३. [अरि+गुरी उद्यमने (तु०) धातोः क्तः]

अरिच्यत रिच्यतेऽतिरिक्तोऽस्ति २.२२.२. पृथग्भूतोऽस्ति ऋ० भू० १२३, वे० को०, ३१.५. [रिचिर् विरेचने

(रुधा०) धातोः कर्मणि लङ्]

अरिणक् विरिणक्ति २.१३.५. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लङ्]

अरिणन् प्राप्नुवन्तु प्र०—रिणातीति गतिकर्मसु पठितम् निघं० २.१४, ६.१८ **अरिणात्**=रिणाति प्राप्नोति २.१५.६. प्राप्नुयात् ३.३.११. गमयति २.१२.३. प्रेरयति ४.२८.१. प्राप्नोति २.१५.६. **अरिणाः**=प्राप्नुयाः ४.४२.७. प्राप्नोषि १.५६.६. प्रदद्याः ४.३०.६. हिनस्ति ४.१९.५. **अरिणीत**=प्राप्नुत ४.३६.४. प्राप्नुवन्ति ३.६०.२. **आरिणीतम्**=गच्छतम् १.११७.११. [रिणातीति गतिकर्मा निघं० २.१४. ततो लङ्]

अरिणिभिः सुखप्रापिकाभिः (ऊतिभिः=रक्षणादिभिः १.१२९.५. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तिसृ०' इत्युणादिसूत्रेण अनिः प्रत्ययः इकारागमश्छान्दसः]

अरितेव यथाऽरितानि (अरित्राणि) २.४२.१. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोस्तृच् । अरितेव=ईरयितेव नि० ९.३.]

अरित्रम् यानस्तम्भनार्थं जलगाधग्रहणार्थं वा लोहमयं साधनम् १.४६.८. **अरित्रः**=स्तम्भनार्थसाधनयुक्तः ऋ० भू० १९६. [ऋ गतौ धातोः 'अर्त्तिलूधूसू०' अ० ३.२.१८४. सूत्रेण इत्रः प्रत्ययः]

अरित्राः येऽरिभ्यस्त्रायन्ते ते (अग्न्यादयः पदार्थाः) ३३.१. [अरि उपपदे त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः]

अरिधायसः अरीन् शत्रून् दधति यैस्तान् (वीरजनान्) १.१२९.५. [अरि उपपदे+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'श्याद्व्यध०' अ० ३.१.१४१. सूत्रेण णः प्रत्ययः । जसि असुगागमः]

अरिप्रम् निष्पापं निर्दोषम् (आहारम्) ७.४७.१. [रीङ् श्रवणे (दिवा०) धातो 'लीरीङोर्ह्रस्वः०' उ० ५.५५ सूत्रेण रः प्रत्ययः पुगागमो ह्रस्वश्च । नञ्समासः]

अरिरेचीत् रिक्तङ्कुर्यात् ४.३४.९. रिणक्ति ६.२०.४. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्णिचि लुङ्]

अरिषण्यन् द्रविणमिच्छुः (द्रविणोदाः=विद्वज्जनः) २.३७.३. आत्मनो रिषं हिंसनमिच्छन् (इन्द्रः) प्र०—अत्र 'दुरस्युर्द्रविणस्यु०' अ० ७.४.३६. अनेनेत्वनिषेधः १.६३.५. अहिंसयन् (राजा) ६.२४.९. अहिंसन् (सेनेशः) ६.२५.२. **अरिषण्या**=अहिंसकौ (वायुविद्युतौ) २.३९.४. [रिष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये रिष्टः । तत इच्छायामर्थे क्यच्, ततः शतृ । नञ्समासः । 'दुरस्युर्द्रविणस्यु०' अ० ७.४.३६. सूत्रेण रिष्टस्य रिषण्भावो निपात्यते । अरिषण्यन्=अरिष्यन् नि० ८.३]

अरिष्टगातुः अरिष्टा अहिंसिता गातुर्वाग्यस्य सः (राजा) ५.४४.३. [रिष हिंसार्थे धातोः क्तप्रत्यये नञ्समासे चारिष्टः । गातुः पदनाम निघं० ४.१. गाति गतिकर्मा निघं० २.१४ धातोः 'कमिमनि०' उ० १.७३ सूत्रेण तुः प्रत्ययः । तयोः समासः]

अरिष्टग्रामाः अहिंसका ग्रामा येभ्यस्ते (मरुतः=विद्वज्जनाः) १.१६६.६. [अरिष्टो व्याख्यातः । ग्रामशब्दः समूहार्थे—ग्रस धातोः 'ग्रसेरा च' उ० १.१४३ सूत्रेण मन् प्रत्ययः । ततः समासः]

अरिष्टतातये रिष्टानां हिंसकानां रोगाणामभावाय १२.८१. [रिष्टः=रिष हिंसार्थे धातोः क्तः । नञ्समासे ऽरिष्टः । ततः करोत्यर्थे भावे च 'शिवशमरिष्टस्य करे' 'भावे च' सूत्राभ्यां तातिल् प्रत्ययः]

अरिष्टनेमिम् दुःखनिवारकम् (रथम्) १.१८०.१०. **अरिष्टनेमिः**=अरिष्टानां दुःखानां नेमिः वज्रच्छेत्ता (परमेश्वरः), प्र०—नेमिरिति वज्रनाम निघं० २.२०, १.८९.६. योऽरिष्टानि सुखानि प्रापयति सः (इन्द्रः=ईश्वरः), प्र०—अत्राऽरिष्टोपपदाण्णीञ् प्रापणे धातोरौणादिको मिः प्रत्ययः २५.१९. अरिष्टानि दुःखानि दूरे नयति स कार्त्तिकः १५.१८. **अरिष्टनेमे**=योऽरिष्टानि अहिंसितानि कर्माणि नयति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=ऐश्वर्यववज्राजन्) ३.५३.१७. [अरिष्टः=नञ्+रिष हिंसार्थे+क्तः । नेमिः=णीञ् प्रापणे धातोरौणादिको मिः प्रत्ययः 'नियो मिः' उ० ४.४३ सूत्रेण । तस्य (यज्ञस्य) तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानीग्रामण्याविति शारदौ तावृतू श० ८.६.१.१९. एष (तार्क्ष्यः=वायुः) अरिष्टनेमिः पृतनाजिदाशुः ४.२०]

अरिष्टम् रिष्यते हिंस्यते यः स रिष्टो न रिष्टोऽरिष्टस्तम् (यज्ञम्=अनुष्ठातुमर्हम्) २.१३. **अरिष्टः**=अहिंसनीयः (रथः) ५.१८.३. अहिंसितः (राजा) १०.२१. सर्वविघ्नरहितः (धार्मिकजनः) १.४१.२. **अरिष्टैः**=अहिंसितैर्हिंसकरहितैः (पथिभिः=मार्गैः) ६.६९.१. [नञ्+रिष हिंसार्थे+क्तः । अरिष्टं (साम) अनेन (अरिष्टेन साम्ना) नारिषामेति तदरिष्टस्यारिष्टत्वम् । तां० २२.५.२३. देवाश्च असुराश्चास्पर्धन्त यं देवानामघ्नन्न स समभवद् यमसुराणाꣳ स ꣳ सोऽभवत्तं देवास्तपो

ऽतप्यन्त एतदरिष्टमपश्यꣳस्ततोऽयं देवानामघ्नत् (अघ्नन्) सꣳ सोऽभवद्यमसुराणान्नं स समभवत् तां० १२.५.२३]

अरिष्टवीराः अरिष्टा अहिंसिता वीरा यासु ताः (विशः=प्रजाः) १.११४.३. [अरिष्टो व्या०। वीर विक्रान्तौ (चु०) धातोरच्। वीरो वीरयत्यमित्रान् वेतेर्वा स्याद् गतिकर्मणो वीरयतेर्वा। नि० १.७. ततस्तयो० समासः]

अरिष्टा अहिंसिता, भा०—अवैरबुद्धिः (देवी=विद्यायुक्ता पत्नीः) ११.६६. **अरिष्टाः**=अहिंसिताः (प्रजाजनाः) ७.४३.५. अहिंसनीयाः (मायाः=प्रज्ञाः) २.२७.१६. अहिंसनीया न किञ्चिद्धिंसितवन्तः (पूर्णविद्या अध्यापकाः) २.२७.२. न केनापि हिंसितुं योग्याः (प्रजाजनाः) २.२७.७. **अरिष्टेभिः**=हिंसितुमनर्हैः (ऐश्वर्यैः) १.११२.२५. अहिंसितैः (सौभगेभिः=श्रेष्ठानां धनानां भावैः) ३४.३० [पूर्वं व्याख्यातः]

अरिष्टान् अहिंसितान् (प्रजाजनान्) ७.४०.४. [पूर्वं व्याख्यातः]

अरिष्टासू बल प्राण का नाश न करने वाले (अपत्य) सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७२. [अरिष्टो व्या०। असु प्रज्ञा नाम निघं० ३.९. अपि वासुरिति प्राण नामास्तः शरीरे भवति नि० ३.८. तयोः समासः]

अरिष्टिम् अहिंसाम् २.२१.६. **अरिष्ट्यै**=सुखहेतवे, दुःखनिवारणेन सुखाय, सुखाय वा २.३. कुशलप्राप्तये ३०.१३. [रिष हिंसार्थे धातोः क्तिन्। नञ्समासः]

अरिष्यतः अन्यैरहिंसिष्यन्तः (सर्वसज्जनाः) ४.५७.३. अहिंस्यमानाः (विद्वज्जनाः) २.८.६. [नञ्+रिष हिंसार्थे धातोः कर्मणि शतृ। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अरिः ऋच्छति गृह्णात्यन्यायेन सुखानि च यः (दुर्जनः) प्र०—'अच इ' उ० ४.१३९ इत्यनेन ऋधातोरौणादिकः इः प्रत्ययः १.९.१०. प्रापकः (विद्वज्जनः) १.१५०.१. शत्रुः ३३.८२. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिक इः प्रत्ययः। अरिः=अमित्र ऋच्छतेः। ईश्वरोऽप्यरिरेतस्मादेव नि० ५.७.]

अरीहणम् शत्रूणां हन्तारम् (राजानम्) ४.१८.१०. [अरि उपपदे हनहिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्। पूर्वस्य दीर्घः]

अरीरमत् रमयति २.३८.३. रमयेत् ६.७१.५. [रमु क्रीडायाम् धातोर्णिचि लुङ्]

अरीः सुखप्रापिकाः प्रजाः, भा०—स्वाऽपत्यानि ६.३६. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः इः प्रत्यये ङीषि च रूपम्। प्रजा वा अरीः श० ३.९.४.२१.]

अरुग्णम् रोगरहितम् (उत्तमजनम्) ६.३९.२. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोः क्तः। 'ओदितश्चे' ति नत्वम्। नञ्समासः]

अरुचः प्रकाशरहिताँश्चन्द्रादीन् ६.३९.४. [रुच दीप्तौ अभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः कः प्रत्यये नञ्समासः]

अरुजत् भनक्ति ६.६१.२. **अरुजः**=रुज ६.३०.५. रुजति ३.३२.१६. आमर्दय १.५६.६. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लङ्]

अरुजः रोगयुक्ताः (पुरः=नगरीः) ४.३२.१०.

अरुणप्सवः अरुणा रक्तगुणविशिष्टाश्च प्सवो भक्षणानि येषान्ते वृद्धा जनाः १.४९.१. [प्सुः=प्सा भक्षणे धातोर् बहुलवचनादुप्रत्ययः। अरुणप्सुपदयोः समासः]

अरुणप्सुम् अरुणरूपाम् (उषसं=प्रातर्वेलाम्), प्र०—प्सु इति रूपनाम निघ० ३.७, ५.८०.१. [अरुण प्सु पदयोः समासः। प्सुः रूपनाम निघं० ३.७]

अरुणबभ्रुः अरुणेन युक्तो बभ्रुर्वर्णो यस्य सः (पशुविशेषः) २४.२. [अरुणबभ्रुपदयोः समासः। बभ्रुः=डुभृञ्धातोः 'कुर्भ्रश्च' उ० १.२२. सूत्रेण कुः प्रत्ययो द्वित्वं च]

अरुणम् प्रकाशस्वरूपम् (परमेश्वरम्) ऋ. भू. १६२. रक्तम् (वस्तुमात्रम्) १.७३.७. **अरुणः**=आरक्तः (पृश्निः=सूर्यः) १७.६०. रक्तवर्णः (पशुः) २४.३. अग्निरिव तीव्रतेजाः, (भा०—अग्निवद् दुष्टदाहकः (राजा) १६.६. य ऋच्छति सर्वा विद्या स आलोचको वा (विद्वज्जनः) प्र०—अत्र ऋधातोरौणादिक उनच् प्रत्ययः १.१०५.१८. **अरुणा**=पदार्थप्रापणसमर्थानि (पवनानि) १.१३४.३. **अरुणान्**=आरक्तान् (पदार्थान्) २४.११. **अरुणाम्**=रक्तानां (गवां=किरणानाम्) १.१२४.११. **अरुणाम्**=प्राप्तव्याम् (द्यां=कामनां) ५.६३.६. **अरुणाय**=प्रापकाय (जनाय) १६.३९. **अरुणैः**=अग्न्यादिभिः २.१.६. **अरुणेभिः**=आरक्तवर्णैरग्निप्रयोगजैः (अश्वैः) १.८८.२. ईषद्रक्तैः (अश्वैः=किरणैः) १.११३.१४. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिक उनच् प्रत्ययः। अरुणः आरोचनः। नि० ५.२०]

अरुणयुग्भिः येऽरुणान् किरणान् योजयन्ति तैः

(अश्वैः=किरणैः) ६.६५.२. अरुणोपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'सत्सूद्विष०' सूत्रेण क्विप्]

अरुणाऽश्वाः रक्तवर्णा अश्वाः ५.५७.४. [अरुणो व्याख्यातः। अश्वः=अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अशूप्रुषिलटि०' उ० १.१५१ सूत्रेण क्वन्। ततः समासः]

अरुणासः रक्ताऽरुणादिगुणविशिष्टाः (गावः=किरणाः) ६.६४.३. [ऋगतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिक उनच्। प्रथमबहुवचनम्]

अरुणीनाम् अरुणवर्णानां स्त्रीणाम्, भा०—स्वपत्नीनाम् १९.६३. **अरुणीभिः**=रक्तप्रभाभिः १२.७४. **अरुणीः**=ब्रह्मचारिणीः (कुमार्य्यः) १.११२.१९. रक्तगुणविशिष्टाः (व्राः=वाण्यः) ४.१.१६. किञ्चिदारक्ताऽऽभाः (उषसः=प्रातर्वेलाः) ४.१४.३. प्राप्ताः प्रजाः ४.२.१६. सुशीलतया प्रकाशमयाः स्त्रियः १९.६९. उषसोऽरुण्यो दीप्तय इव राजनीतीः १.१२१.३. **अरुण्यः**=उषःकालाः १.१४०.१३. [अरुणः=ऋ गतिप्रापणयोर्धातोर् उनच्। 'अन्यतो ङीष्' इति वर्णवाचिनोऽरुणात् स्त्रियां ङीष्। अरुण्यो गाव उषसाम् इति आदिष्टोपयोजनम् निघं० १.१५]

अरुषम् अश्वम्, प्र०—अरुष इति अश्वनाम निघं० १.१४, ३.१.४. अश्वादिकम् १.११४.५. अहिंसकं करुणामयम् (ईश्वरम्) ऋ० भू० १६३. मर्मविद्यायां सीदन्तम् (विद्वांसम्) ५.४३.१२. अरुःषु मर्मसु सीदन्तम् (ब्रध्नं=परमात्मानम्) २३.५. सर्वेषु मर्मसु सीन्दन्तमहिंसकं परमेश्वरं प्राणवायुं तथा बाह्ये देशे रूपप्रकाशकं रक्तगुणविशिष्टमादित्यं वा प्र०—अरुषमिति रूपनामसु पठितम् ३.७, १.६.१. आरक्तरूपविशिष्टम् (धूमम्) ३८.१७. आरक्तगुणम् (राजानम्) ६.४९.२. सुन्दररूपयुक्तम् १.३६.९. **अरुषस्य**=आरक्तगुणस्याऽग्नेः ६.४९.३. अहिंसकस्य (सज्जनस्य) ३.३१.३. **अरुषः**=अहिंसकः सन् (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.१५.३. य ऋच्छत्यध्वानं सः (वाजी=वेगवानश्वः) १७.९५. अरुणरूपः (वाजी=अश्वः) ४.५८.७. गर्भस्थः (विद्युत्) ७.३.३. मर्मणः ५.५६.७. निर्मर्मव्यापी (अग्निः=अग्निरिव यजमानः) ५.१.५. मर्मसु स्थितः (अग्निः) ३.२९.६. योऽरुष्षु मर्मसु सीदति सः (विद्वज्जनः) ६.३.६. सुखप्रापकः (समुद्रः=सागरः) ५.४७.३. आरक्तगुणः (विद्युदग्निः) ६.४८.६. **अरुषा**=आरक्ते (सेवाराजनीती) ६.२७.७. अहिंसकावश्वौ, प्र०—अत्र द्विवचनस्य आकारादेशः १.९४.१०. मर्मसु व्यापकौ (अश्विनौ) २.१०.२. अश्वाविव जलाग्नी ७.१६.२. रूपवता पदार्थसमूहेन १५.३३. **अरुषेण**=सुरूपेण (भानुना=प्रकाशेन) २.२.८. **अरुषेभिः**=रक्तैर्गुणैः १.१४१.८. **अरुषैः**=रक्तगुणविशिष्टैरश्वैः ३.३१.२१. [अरुषः अश्वनाम निघं० १.१४. अरुषम्=रूपनाम निघं० ३.७. रुष हिंसार्थे धातोः कर्त्तरि कः। नञ्समासः। ऋ गतिप्रापणयोर्धातोर्वा औणादिक उसिः। अग्निर्वा अरुषः तै० ३.९.४.१]

अरुषाम् यो बहून् सनति विभजति ताम् (महीं=वाचम्) ५.४४.६. [अरु उपपदे षण संभक्तौ धातोर्वनिप्। 'विड्वनोरनुना०' अ० ६.४.४१ सूत्रेणाकारः। 'सनोतेरनः' इति षत्वम्]

अरुषासः सुशिक्षितास्तुरङ्गाः ४.६.९. अहिंसमानाः किरणाः १.१४६.२. ज्वालाः ७.१६.३. रक्तगुणविशिष्टाः पदार्थाः ४.४३.६. [अरुषः=नञ्+रुष हिंसार्थे+कः अरुषः अश्वनाम निघं० १.१४. प्रथमाबहुवचनम्]

अरुषाः रक्तभास्वरगुणाः ५.७३.५. रक्तादिगुणविशिष्टाः (देवाः) ७.४२.२. रक्तादिगुणविशिष्टा अग्न्यादयः १.११८.५. [अरुषम् इति रूपनाम निघं० ३.७.]

अरुषस्तूपः योऽरुषानहिंसकान् उच्छ्राययति सः (विद्वज्जनः) ३४.१४. योऽरुष्षु मर्मसु सीदन्ति तेषु प्रशंसितः (पाजः=बलम्) ३.२९.३. [अरुष् उपपदे सद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु धातोः क्विप्। ततः ष्टुञ् स्तुतौ धातोः 'स्तुवो दीर्घश्च' उ० ३.२५ सूत्रेण पः प्रत्ययो दीर्घश्च]

अरुषी आरक्ता (उषाः) ४.५२.२. प्रकाशरूपोषाः ३.५५.११. **अरुषीं**=आरक्तवर्णाम् (उषसम्) १.७१.१. **अरुषीः**=रक्तगुणविशिष्टा वडवा इव ज्वाला ५.५६.६. अरुष्य आरक्तगुणाः (सूर्यकिरणाः) १.९२.२. अरुष्यो रक्तगुणविशिष्टाः (किरणाः) १.९२.१. रक्तगुणा अरुष्यो गमनहेतवः (अग्नयः), प्र०—अत्र बाहुलकादूषन् प्रत्ययः 'अन्यतो ङीष् अ० ४.१.४० अनेन ङीष् प्रत्ययः 'वाच्छन्दसि' अ० ६.१.१०६ अनेन जसः पूर्वसवर्णम् १.१४.१२. उषस इव सर्वसुखप्रापिका विद्याः क्रिया वा १.७२.१० [ऋगतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिक उषन् प्रत्ययः। 'अन्यतो ङीष्' इति स्त्रियां ङीष्। अरुषी उषो नाम निघं० १.८. अरुषीः आरोचनात् नि० १२.७.]

अरुहत् रोहति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ्, विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने शः १.१०.२. वर्धयति १.१४१.५. रोहेत् १.५१.२. **अरुहन्**=रोहन्ति १.११०.६. **अरुहम्**=

आरूढोऽस्मि ९.१०. रोहेयम् १७.६७. **अरुहाम**=प्रादुर्भवेम, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययः ८.५२. [रुहबीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने शः]

अरूक्षितम् रूक्षता-रहितम् (अन्नम्) ४.११.१. [रूक्ष पारुष्ये (चु०) धातोः क्तः। नञ्समासः]

अरूरुचत सम्यक् प्रकाशते ३७.१५. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च धातोर्णिचि लुङ्]

अरे नीचसम्बोधने २३.५५. सम्बोधने २३.५६. ['अरे' इति निपातश्चादिगणे पठितः]

अरेजन्त कम्पते, प्र०—रेजृ कम्पने अस्माद् धातोर्लडर्थे लङ् १.३८.१०. **अरेजेताम्**=चलतः प्र०—भ्यसते रेजत् इति भयवेपनयोः नि० ३.२१, १.३१.३. कम्पेताम् १.१५१.१. कम्पेते २.११.९. [रेजति गतिकर्मा निघं० २.१४. रेजते उत्तराणि पदानि० निघं० ३.२९. भ्यसते रेजते इति भयवेपनयोः नि० ३.२१.]

अरेणवः दुष्टानप्राप्ताः (धेनवः=किरणाः) १.१५१.५. रेणुरहिताः (मरुतः=वायवः) ६.६२.२. अविद्यमाना रेणवो येषु ते, भा०—निर्मलाः (पन्थाः=मार्गाः) ३४.२७. अविद्यमाना रेणवो धूल्यंशा इव विघ्ना येषु ते (पन्थाः) प्र०—'अजिवृरी०' उ० ३.३७ इति रीधातोर्णुः प्रत्ययः १.३५.११. [री गतिरेषणयोः (क्र्या०) धातोर्णुः प्रत्ययः। नञ्समासः]

अरेणु अहिंसनीयम् (कर्म) १.५६.३. [पूर्वपदे द्र०]
अरेणुभिः अविद्यमाना रेणवो वालुका येषु तैः (रजोभिः=ऐश्वर्यप्रदैर्मार्गैः) ६.६२.६. अविद्यमानरजःस्पर्शैः (पथिभिः) १.१६३.६. [अरेणवो द्र०]

अरेपसम् अनपराधिनीम् (द्याम्=कामनाम्) ५.६३.६. **अरेपसः**=अनपराधिनः (परमेश्वरभक्ताः) ५.६१.१४. अव्यक्तशब्दा निष्पापाः (सत्वानः) १.६४.२. दोषलेपरहिताः (नरः) ५.५३.३. **अरेपसा**=अनपराधिनौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.७३.४. न विद्यते रेपः पापं ययोस्तौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८१ ४. अकम्पितेन (तन्वा=शरीरेण) १.१२४.६. **अरेपसौ**=अविद्यमानं रेपो व्यक्तं प्राकृतं वचनं ययोरध्येत्रध्यापकयोस्तौ ५.३. अनपराधिनौ (विवाहितौ स्त्रीपुरुषौ) १२.६०. दयालू (राजामात्यौ) ५.५१.६. **अरेपाः**=निष्पापः (सूरः=सूर्यः) ६.३.३. पापाचरणरहिताः (प्रजाजनाः) ४.१०.६. [अरेपसा=पापेन नि० १२.३].

अरैक् अतिरिणक्ति १.१२४.८. न्यतिरिणक्ति १.११३.१६. [रिचिर् विरेचने) (रुधा०) धातोर्लुङ् सिचो लुक्]

अरोचत प्रकाशते ५.१४.४. रोचते प्रकाशते ३३.९२. **अरोचथाः**=रोचस्व ३.२९.१०. प्रदीप्येथाः, भा०—कृतकृत्यो भव १५.५६. दीपयति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लुङ् ३.१४. **अरोचयः**=रोचय ३.४४.२. **अरोचयत्**=प्रकाशयेत् १.१४३.२. रोचयेत् ३.३४.४. **अरोचि**=प्रकाशते ७.१०.२. **अरोचिष्ट**=प्रकाशते ३७.१५. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लङ् लुङ् च। रोचते ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६.]

अरोरवीत् भृशं शब्दायते ५.३०.११. भृशं शब्दायति २.११.१०. [रु शब्दे (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लङ्]

अरोहत् रोहति ३.७.३. **अरोहयः**=रोहयसि १.५१.४. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अर्कम् ऋग्वेदम् १.१६४.२४. सूर्यादिलोकम् १.१९.४. अर्च्यते येन तम् (वीरम्) १.६१.५. दिव्यगुणसम्पन्नमर्चनीयं वीरम् १.६१.८. सत्कर्त्तव्यं क्रियामयं व्यवहारम् ६.४९.८. पूजनीयं (राजानम्) ५.३१.५. सत्करणीयम् (सूर्यम्) ५.३०.६. अर्च्यते पूज्यते सर्वैर्जनैस्तम् (जगत्स्रष्टारमीश्वरम्) १.१०.१. सत्कर्त्तव्यमन्नम् १.१८६.४. सुसंस्कृतमन्नम् प्र०—अर्क इत्यन्ननाम निघं० २.७, ३.२६.८. सत्कर्त्तव्यमन्नं विचारं वा ७.३९.७. अन्नं सत्कर्त्तव्यं जनं वा ७.९.२. सत्कर्त्तव्यं धनधान्यम् ७.४०.७. अन्नं वज्रं वा, प्र०—अर्क इति वज्रनाम च निघं० २.२०, ६.६६.९. **अर्कस्य**=सूर्यस्य १.१३१.६. **अर्कः**=अर्चनीयः (होता=दाता जनः) ६.२१.४. अग्निः १८.५०. पूजनीयसामग्रीविशेषः १८.२२. सर्वान् प्राणिनोऽर्चन्ति येन सः (घर्मः=यज्ञः) २९.३९. वज्रो विद्युद्वा, प्र०—अर्क इति वज्रनाम निघं० २.२०, ३.२६.७. सत्कर्त्तव्यः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) ७.२४.५. विद्यमानः सूर्यः १.८३.६. **अर्काः**=मन्त्राऽर्थविदः (राजपुरुषाः) ५.५.४. **अर्केण**=ऋचां समूहेन १.१६४.२४. **अर्कैभिः**=अर्चनसाधकैः सत्यभाषणादिभिः, शिल्पविद्यासाधकैः कर्मभिर्मन्त्रैश्च प्र०—अर्क इति पदनामसु पठितम् निघं० ४.२. अनेन प्राप्तिसाधनानि गृह्यन्ते 'अर्को मन्त्रो भवति यदनेनाऽर्चन्ति निरु० ५.४. अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति भिस ऐसादेशाभावः १.७.१. **अर्केषु**=सुसंस्कृतेष्वन्नेषु १.१७६.५. **अर्कैः**=सत्करणैः ६.२१.१०. अर्चनीयैः (गुणैः) ४.५६.१. मन्त्रैर्विचारैर्वा १.४७.१०.

सत्कर्त्तव्यैः (प्रजाबलसाधुभिः) ४.१०.३. सुविचारैः ७.२३.६. सत्कार-साधनैः ६.४९.१४. मन्त्रैः ४.५५.३. किरणैः २.११.१५. सत्कार के योग्य (ब्रह्मचारियों) से सं० वि० १०५, ५.४१.७. सत्कारसाधकतमैर्विचारैर्वचनैः कर्मभिर्वा ५.३१.४. मन्त्रैः सत्कारैर्वा ६.६९.२. अर्चनीयैर्विद्वद्भिस्सह ३.३१.९. पूजितैः कर्मभिः २०.५४. वज्रवच्छेदकैः (किरणैः) ६.४.६. अन्नादिभिः प्र०—अत्र बहुवचनं सूपाद्युपलक्षणार्थम् १.१९०.१. वज्रादिभिः ६.७३.३. स्तोत्रैः १.६२.७. अर्चनीयैः पदार्थैः ५.४१.६. [अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोः 'कृदाधारार्चिकलिभ्यः कः' उणा० ३.४०. सूत्रेण कः। अर्कः अन्ननाम निघं० २.७. वज्रनाम निघं० २.२०. पदनाम निघं० ४.२. अर्को देवो भवति यदेनमर्चति। अर्को मन्त्रो भवति, यदनेनार्चन्ति। अर्कमन्नं भवति, अर्चति भूतानि। अर्को वृक्षो भवति, संवृत्तः कटुकिम्ना नि० ५.५. अर्कैरर्चनीयैः स्तोमैः नि० ६.२३. अन्नं वै देवा अर्क इति वदन्ति ता० १५.३.२३. अर्को वै देवानामन्नम् श० १२.८.१.२. तै० १.१.८.५. अन्नं वा अर्कः तां० ५.१.९. गो० उ० ४.२. अन्नमर्कः श० ९.१.१.४. आदित्यो वा ऽअर्कः श० १०.६.२.६. अर्कश्चक्षुस्तदसौ सूर्यः तै० १.१.७.२. स एष एवार्को य एष (सूर्यः) तपति श० १०.४.१.२२. अयं वाऽअग्निरर्कः श० ८.६.२.१९. अग्निर्वाऽअर्कः श० २.५.१.४. स एषोऽअग्निरर्को यत्पुरुषः श० १०.३.४.५. आपो वा अर्कः श० १०.६.५.२. प्राणो वा ऽअर्कः श० १०.४.१.२३. प्राणापानौ वा एतौ देवानाम् यदर्काश्वमेधौ तै० ३.९.२१.८. ओजो बलं वा एतौ देवानाम्। यदर्काश्वमेधौ तै० ३.९.२१.३. वेत्थार्कमिति पुरुषꣳ हैव तदुवाच। वेत्थार्क पर्णोऽइति कर्णौ हैव तदुवाच वेत्थार्क पुरुषेऽइत्यक्षिणी हैव तदुवाच० श० १०.३.४.५. अस्य (अग्ने) एवैतानि (घर्मः, अर्क, शुक्रः, ज्योतिः, सूर्यः), नामानि श० ९.४.२.२५. एतस्य वै देवस्य (रुद्रस्य) आशयदर्कः समभवत्स्वेनैवैनम् (रुद्रम्) एतद् भागेन स्वेन रसेन प्रीणाति (यजमानः) श० ९.१.१.९. अर्कः (सामविशेषः) दीर्घतमसो ऽर्को भवति ता० १५.३.३४.]

अर्कशोकैः अन्नादीनां शोधनैः ६.४.७. अर्कः सूर्य इव शोकाः प्रकाशाः येषान्तैः (पुरुषोत्तमैः) ३३.१३. [अर्को व्याख्यातः) शोकः=ईशुचिर् पूतिभावे (दिवा०) धातोर्घञ्, शोचतिः ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. धातोर्वा घञ्। ततः समासः]

अर्कसातौ अन्नानां संविभागे १.१७४.७. अन्नादिविभागे प्र०—अर्क इत्यन्ननाम निघं० २.७, ६.२०.४. [अर्कः अन्ननाम निघं० २.६. सातिः=षण संभक्तौ धातोः स्त्रियां भावे क्तिन्। 'जनसनखनाम्०' अ० ६.४.४२ सूत्रेणात्वम्]

अर्किणः अर्का मन्त्रा ज्ञानसाधना येषान्ते (ईश्वरोपासका जनाः) १.१०.१. विद्वांसः १.७.१. [अर्को व्याख्यातः। ततो मत्वर्थे इनिः]

अर्च पूजय १.५४.३. सत्कुरु १.५४.२. **अर्चत्**=अर्चेत् १.१७३.२. सत्कुर्यात् १.१६५.१४. **अर्चत**=सत्कुरुत १.७४.५. **अचर्चति**=सर्वान् पदार्थान् सत्करोति १.६.८. **अर्चथ**=सत्कुरुथः १.१५१.६. [अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। लङि आडभावश्च। अर्चति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

अर्चतः सत्क्रियां कुर्वतः (विप्रस्य=मेधाविजनस्य) ७.२२.४. **अर्चते**=सत्कर्त्रे सभाद्यध्यक्षप्रियाय १.८७.२. **अर्चन्तः**=सत्कुर्वन्तः (जनाः) १.६२.२. **अर्चन्**=सत्कुर्वन् (मर्यः=मनुष्यः) ३.३१.७. [अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोः शतृ प्रत्ययः]

अर्चन् प्राप्नुवन्तु ३.१४.४. सत्कुर्वन्ति ४.१.१४. **अर्चन्ति**=सत्कुर्वन्ति १.९२.३. सत्कुर्वन्ति १.१६५.१. नित्यं पूजयन्ति १.१०.१. **अर्चयः**=३.४४.२. **अर्चा**=सत्कुरुत, प्र०—अत्र वचनव्यत्ययो 'द्व्यचोऽतस्तिङः' इति दीर्घश्च ३३.२३. **अर्चात्**=सत्कुर्यात् ४.१६.३. **अर्चान**=पूजयन्तु ५.३१.५. सत्कुर्युः ४.५५.२ **अर्चाम**=पूजयेम १.६२.१. सत्कुर्याम ३४.१६. **अर्चामि**=सत्करोमि ४.४.८. **अर्चामसि**=अर्चामः सत्कुर्मः ६.२१.७. **अर्चे**=सत्करोमि ५.४१.८.

अर्चत्रयः अर्चकाः (मरुतः=सज्जनाः) ६.६६.१०. [अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोर् अत्रिन् प्रत्ययो बाहुलकाद्]

अर्चत्र्यः सत्कारं कुर्वत्यः प्रजाः ६.२४.१. [अर्चत्रिर्व्याख्यातः। ततः 'कृदिकारादक्तिनः' इति वार्तिकेन ङीष्]

अर्चद्धूमासः अर्चन्तः सुगन्धियुक्ता धूमा येषान्ते (अग्न्यादयः पदार्थाः) [अर्चद्धूमपदयोः समासः]

अर्चनानसम् अर्चिता श्रेष्ठा नासिका यस्य तम् (सोमम्) ५.६४.७. [अर्चना=नासिकापदयोः समासः। 'अञ्नासिकायाः संज्ञायां नसं०' अ० ५.४.११८. सूत्रेण नसादेशोऽच् प्रत्ययश्च]

अर्चयः किरणाः ५.२५.८. सत्कृतयः ५.१७.३. विद्याविनयप्रकाशिता (विद्वज्जनाः) ५.१०.५. दीप्तयः,

भा०—सत्कीर्त्तयः १२.१०६. प्रकाशाः १.४८.१३. सत्क्रियाः ४.६.१०. दीप्तिरूपा ज्वाला न्यायप्रकाशका नीतयो वा १.३६.३. **अर्चिभिः**=पूजितैः (भानुभिः=विद्याप्रकाशकैर्गुणैः) १२.३२. पूजितैर्गुणकर्मस्वभावैः ५.७९.८. तेजोभिः ६.४८.७. [अर्च्च पूजायाम् धातोरौणादिक इः प्रत्ययः। अर्चिरिति ज्वलतो नामधेयम् निघं० १.१७.]

अर्चिषा विद्याप्रकाशेन ५.१७.३. पूजनीयेन (भानुना=प्रकाशेन) २.८.४. सत्कारेण ६.६०.१०. तेजसा ५.७९.९. सत्कारेण दीप्त्या वा ६.४८.३. **अर्चिषि**=अर्चितुं योग्ये शुद्धे तेजसि १९.४१. **अर्चिषे**=स्तुतिविषयाय (ईश्वराय) ३६.२०. पूज्याय (सभापतये) १७.११. **अर्चिः**=दीप्तिः १.९२.५. प्रदीप्तिः ३७.११. विद्याप्रकाशम् ३.६.३. तेजः, भा०—विद्युत्तेजः ४.७.९. [अर्च्च पूजायाम् (भ्वा०) 'अर्चिशुचिहु०' उ० २.१०८. सूत्रेण इसिः प्रत्ययः]

अर्चिनः सत्कर्त्तारः (मरुतः=विद्वज्जनाः) २.३४.१.

अर्चेव सत्क्रियेव ६.३४.४.

अर्जुन सुस्वरूप (गृहस्थजन) ७.५५.२. **अर्जुनम्**=ऋजुगत्यादिगुणम् (दिनम्) ६.९.१. रूपम्, प्र०—अर्जुन इति रूपनाम निघं० ३.७.३.४४.५. **अर्जुनस्य**=रूपस्य १.१२२.५. **अर्जुनः**=प्रशस्तं रूपं विद्यते यस्य सः (राजा) प्र०—अर्श आदित्वादच् १०.२१. **अर्जुना**=सुरूपाणि (वस्त्राणि) ३.३९.२. [अर्ज प्रतियत्ने (चुरा०) धातोः अर्जेर्णिलुक् च' उ० ३.५८ सूत्रेण उनन् प्रत्ययो णिलुक् च। अर्जुनप्राति० अर्शआदित्वादच् मत्वर्थे। अर्जुनमिति रूपनाम निघं० ३.७. अर्जुनं शुक्लम् नि० २.२१. अर्जुनो ह वै नामेन्द्रो यदस्य गुह्यं नाम श० ५ ४.३.७. (सोमस्य ह्रियमाणस्य) यानि पुष्पाण्यावाशीर्यन्त तान्यर्जुनानि तां० ८.४.१. इन्द्रो वृत्रमहं तस्य यो नस्तः सोमः समधावत्तानि वभ्रूतूलान्यर्जुनानि तां० ९.५.७. यदि सोमं न विन्देयुः पूतीकानभिपुणुयुर्यदि न पूतीकानर्जुनानि तां० ९.५.३.]

अर्जुनि उषर्वद् वर्त्तमाने (विदुषि स्त्रि) ५.८४.२. अर्जयन्ति प्रतियतन्ते ययोपसा। प्र०—अत्र अर्ज प्रतियत्ने धातोर् उनन् प्रत्ययो णिलुक् च, उ० ३.५७. अनेनायं सिद्धः १.४९.३. (अर्जुनो व्याख्यातः। स्त्रियां ङीष्, 'अन्यतो ङीष्' सूत्रेण) ततः सम्बुद्धौ रूपम्। अर्जुनी इत्युषर्नाम निघं० १.८. अर्जुन्यो वै नामैतास्ता एतत् परोक्षमाचक्षते फल्गुन्य इति श० ६.२.१.३२.]

अर्णम् विज्ञानम्, भा०—बोधम् १२.४९. उदकम् ३.३२.११. जलम् ५.३२.८. **अर्णः**=जलाऽर्णवमिव शब्दसमुद्रम् प्र०—'उदके नुट् च' उ० ४.१९६. अनेन सूत्रेणाऽर्त्तेरसुन् प्रत्ययः 'अर्ण इत्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२, १.३.१२. उदकम् १.१९७.९. **अर्णाः**=प्रापिकाः (धीः) ५.५०.४. नदीसम्बन्धिनीः (अपः=जलानि) १.१७४.२. **अर्णा**=अर्णांसि जलानि, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्० इति विभक्तेराकारादेशः 'छान्दसो वर्णलोप०' इति सलोपः ३.३२.५. प्रापिका (धीः) ५.५०.४. **अर्णांसि**=उदकानि ६.७२.३. **अर्णोभिः**=जलैः ४.३.१२. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'उदके नुट् च' उ० ४.१९६. सूत्रेणासुन् प्रत्ययो नुडागमश्च अर्णमिति सकारलोपः। अर्णा उदक नाम निघं० १.१२. अर्णा नदीनाम निघं० १.१३.]

अर्णवम् समुद्रम् १.८५.९. समुद्रवद्वर्त्तमानम् (इन्द्रम्) १.५१.१. पृथिवीस्थं सागरं १.१९.७. **अर्णवः**=अर्णांसि बहून्युदकानि विद्यन्ते यस्मिन् सः (समुद्रः), प्र०—अत्र 'अर्णसो लोपश्च' अ० ५.२.१०९ इति मत्वर्थे वः सलोपश्च १२.४८. समुद्र इवाऽऽकाशः ६.६१.८ **अर्णवान्**=नदीः समुद्रान्वा ५.३२.१. **अर्णवाय**=बहून्यर्णांसि विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मै (समुद्राय) २२.२५. **अर्णवे**=प्राणे १३.५३. यत्राऽर्णांस्युदकानि सम्बद्धानि सन्ति तस्मिन् संसारे २६.६३. बहून्यर्णांसि जलानि विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मिन्निव (सागर इव) १६.५५. **अर्णवैः**=समुद्रैर्नदीभिर्वा ५.५९.१. [अर्णस् व्याख्यातः। ततो मत्वर्थे 'अर्णसो लोपश्च' अ० ५.२.१०९ वार्त्तिकेन वः प्रत्ययो सकारलोपश्च। अर्णवान् अर्णस्वतः नि० १०.९. प्राणो वा अर्णवः श० ७.५.२.५१.]

अर्णवः प्रकृष्टतया ऋणुहि १.४८.१५. [ऋणु गतौ (तना०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

अर्णसम् जलम् ५.५४.६. **अर्णसः**=प्रचुरजलात् १.११७.१४. उदकस्य १.१५८.३. [अर्णस् व्याख्यातः। तस्य रूपाणि]

अर्णसातौ अर्णानां विजयप्रापकाणां योद्धॄणां सातिर्यस्मिँस्तस्मिन् (आजौ) १.६३.६. उदकस्य प्राप्तौ २.२०.८. प्राप्तविभागे ४.२४.४. [अर्णः=ऋणु गतौ (तना०) धातोः कर्त्तर्यच्। सातिः=षण् संभक्तौ धातोः क्तिन्। 'जनसनखनाम्०' इत्याकारादेशः। तयोः समासः]

अर्णाचित्ररथा अर्णौ प्रापकौ च तौ चित्ररथा आश्चर्यरथौ च तौ ४.३०.१८. [ऋणु गतौ (तना०) धातोरचि कर्त्तरि=अर्णः। अर्ण-चित्ररथपदयोः समासः]

अर्णोवृतम् अर्णांसि वर्त्तन्ते यस्मिँस्तम् (अहिं=मेघम्) २.१९.२. [अर्णस् उदकनाम निघं० १.१२. तदुपपदे वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्०' वार्त्तिकेन कः प्रत्ययः]

अर्त्त प्राप्नुत ५.२५.८. नश्यतु ४.१६.६. प्रापय ४.१.१७. [ऋ गतौ (क्र्या०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणलुक्]

अर्त्तनम् प्रापकम् (जनम्) ३०.१९.

अर्थज्ञः जो वेदों को पढ़ता और उनका यथावत् अर्थ जानता है (विद्वान् पुरुषः) स० प्र० ३ समु०, निरु० १.१८. [अर्थोपपदे ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः कः प्रत्ययः]

अर्थम् द्रव्यम् ४.१३.३. प्रयोजनम् ३.११.३. अर्त्तुं ज्ञातुं प्राप्तुं गुणं द्रव्यं वा, प्र०—'उषिकुषिगार्त्तिभ्यः स्थन्' उ० २.४ अनेनाऽर्त्तेः स्थन् प्रत्ययः १.१०.२. वस्तु ३.६१.३. य ऋच्छति प्राप्नोति तम् (अभीष्टं पदार्थम्) १.१०५.२. द्रव्यम् १.३८.२. धनादिपदार्थम् १.१४४.३. **अर्थान्**=सत्य विद्या जो चार वेद हैं उनका आर्याभि० २.२, ४०.८. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिकः स्थन् प्रत्ययः। अर्थः अर्त्तेः अरणस्थो वा नि० १.१८.]

अर्थमिव द्रव्यवत् १.११३.६.

अर्थयन्ति अर्थं कुर्वन्ति ५.४४.११. **अर्थयस्व**=अर्थं कुरु २.१३.१३. **अर्थयासे**=याचस्व १.८२.१. [अर्थ उपयाञ्चायाम् (चुरा०) धातोर्लेट्]

अर्थः सकलपदार्थसञ्चयः १८.१५.

अर्थिनः प्रशस्तोऽर्थो प्रयोजनं येषान्ते (सज्जनाः) १.१०५.२. **अर्थी**=प्रशस्तोऽर्थोऽस्याऽस्तीति (अग्निः=विद्वज्जनः) ७.१.२३. [अर्थप्राति० मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

अर्थेतः येऽर्थं यन्ति (राष्ट्रदाः=सभासदो मनुष्याः) १०.३. [अर्थोपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः क्विप्। तुगागमे प्रथमाबहुवचनम्]

अर्दय नाशय २.२३.१४.

अर्दयत् अर्दयेत् प्रापयेत् १.१८७.१. **अर्दयति**=नाशयति ३४.७. [अर्द हिंसायाम् (चुरा०) धातोर्लोटि लटि लङि च रूपाणि। अर्द गतौ याचने च (भ्वा०) धातोर्वा णिचि लोट्। अर्दयति वधकर्मा निघं० २.१९. अर्दति गतिकर्मा वधकर्मा च निघण्टौ]

अर्द्धऽऋचैः ऋचामर्द्धान्यर्द्धर्चास्तैर्मन्त्रभागैः १९.२५. 'प्रतिष्ठा वै अर्द्धर्चः, गो० उ० ५.१०. ['अर्धर्चाः पुंसि च' अ० २.४.३१. सूत्रेण पुंसि नपुंसके च भाष्यन्ते]

अर्द्धगर्भाः अपूर्णगर्भा महत्तत्त्वाऽहङ्कारपञ्चभूतसूक्ष्माऽवयवाः १.१६४.३६. [अर्द्धगर्भयोः समासः। गर्भः=गॄ निगरणे धातोः 'अर्त्तिगॄभ्यां भन्' उ० ३.१५२. सूत्रेण भन् प्रत्ययः]

अर्द्धदेवम् देवस्याऽर्धमर्धस्य जगतो देवं वा (इन्द्रं=सूर्यम्) ४.४२.८. अर्द्धजगत्प्रकाशकं सूर्यम् ४.४२.९. (अर्द्धं देवस्येति विग्रहे 'अर्द्धं नपुंसकम्' अ० २.२.२. सूत्रेणैकदेशिसमासः]

अर्द्धम् वर्द्धकम् (मेघम्) ६.४७.२१. वर्द्धनम् ४.३२.१. अर्धं भागम् १.१६४.१७. ऋद्धिम् २.३०.५. भूगोलार्थम् ६.३०.१. **अर्द्धौ**=वर्द्धकौ (विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ) २.२७.१५. [ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोरच् प्रत्ययः। अर्धम्=हरतेर्विपरीतात्, धारयतेर्वा स्याद् उद्धृतं भवति, ऋध्नोतेर्वा स्यात् ऋद्धतमो विभागः नि० ३.२०.]

अर्द्धमासाः कृष्णशुक्लपक्षाः २३.४१. सिताऽसिताः पक्षाः २७.४५.

अर्द्धय वर्धय ११.८. [ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन शप्]

अर्ध्यम् अर्धे भवम् (वाजं=विज्ञानवन्तम्) ५.४४.१०. **अर्ध्यः**=वर्द्धितुं योग्यः (यज्ञः=ब्रह्मचर्याख्यः) १.१५६.१. [अर्धप्राति० भवार्थे 'अर्धाद्यत्' अ० ४.३.४. सूत्रेण यत् ऋधु वृद्धौ धातोर्वा ण्यत् प्रत्ययः]

अर्पय समर्पय २.३३.४. **अर्पयतु**=संयोजयतु १.१. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्णिचि लोट्। 'अर्त्तिह्री०' इति सूत्रेण पुगागमः]

अर्पितम् प्रापितं स्थितम् (ब्रह्म) १७.३०. स्थापितम् (संवत्सरम्) १.१६४.१२. **अर्पितः**=स्थापितः (पूषा=पोषको विद्वान्) ६.५८.२. **अर्पिता**=स्थापितानि (भुवनानि) १.१६४.१४. समर्पिता (विद्यावाणी) १.१४२.८. **अर्पितानि**=स्थापितानि (भूतानि तन्मात्राणि वा) २३.५२. **अर्पिताः**=स्थापनीयाः (कलाः) ऋ० भू० १९८. समर्पिताः (होत्राः=क्रियाः) १.१४२.९. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् क्तः]

अर्बुदम् दश कोटयः (धेनवः=दुग्धदात्र्यो गावः) १७.२. एतत्सङ्ख्याकम् (दुर्जनसमूहम्) २.१४.४. असङ्ख्यातगुणविशिष्टम् (सैन्यम्) २.११.२०. (शम्बरं=बलम्) १.५१.६. [अम्बुदो मेघो भवति···स (मेघः) यथा महान् बहुर्भवति वर्षंस्तदिवार्बुदम् नि० ३.१०. अर्बुदः

क्राद्रवेयो राजेत्याह तस्य सर्पाविश···सर्वविद्या वेदः···सर्पविद्याया एकं पर्व व्याचक्षाण इवानुद्रवेत् श० १३.४.३.९. वाग्वा अर्बुदम् तै० ३.८.१६.३.]

अर्भकम् बाल्याऽवस्थापन्नम् १.११४.७. क्षुद्रं जनम् पं० वि० । छोटे जन को स० २४८, १६.१५. अल्पं क्षुद्रम्, (भा०—बालकम्) **अर्भकासः**=अल्पवयसो बालका इव क्षुद्राशयाः (अध्येतारः) ७.३३.६. **अर्भके**=अल्पे (विज्ञानकर्मणी) ४.३२.२३. **अर्भकेभ्यः**=अल्पगुणेभ्यो विद्यार्थिभ्यः १.२७.१३. कनिष्ठेभ्यः क्षुद्राशयेभ्यः शिक्षणीयेभ्यो विद्यार्थिभ्यः १६.२६. [ऋधु वृद्धौ धातोः 'अर्भकपृथुकपाका वयसि' उ० ५.५३ सूत्रेण वुन् प्रत्ययः, धस्य भश्च । अर्भको ह्रस्व नाम निघं० ३.२. द्विश उत्तरनाम निघं० ३.२९. अर्भके अवृद्धे नि० ४.१५. अर्भकमित्यल्पस्य । अर्भकमवहृतं भवति नि० ३.२०.]

अर्भगाय ह्रस्वाय बालकाय, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन कस्य गः १.११६.१. ['अर्भकम्' पदे द्र० । कस्य गकारः]

अर्भस्य अल्पस्य (वसुनः=धनस्य) ७.३७.३. **अर्भात्**=अल्पात् (पदार्थात्) १.१२४.६. **अर्भाम्**=अल्पामपि शिल्पक्रियां वाचं वा १.५१.१३. **अर्भाय**=अल्पाय (जीवसे) १.१४६.५. **अर्भे**=अल्पे सङ्ग्रामे १.८१.१. अल्पवयसि जने ६.५०.४. **अर्भेषु**=अल्पेषु १.१०२.१०. [ऋ गतौ धातोः 'अर्त्तिगृभ्यां भन्' उ० ३.१५२ सूत्रेण भन्]

अर्मके दुःखप्रापके (महागर्त्ते) १.१३३.३. [ऋगतिप्रापणयोर्धातोः 'अर्त्तिस्तुसु०' उ० १.१४० सूत्रेण मन् प्रत्यये अर्मः । अर्म एव अर्मक इति स्वार्थे कन्]

अर्मेभ्यः प्रापकेभ्यः (पुरुषेभ्यः) ३०.११. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिको मन्प्रत्ययः]

अर्य ! प्रशंसित (शूरवीर जन) ४.१६.१७. **अर्यः**=ईश्वरः, प्र०—अर्य इतीश्वरनाम निघं० २.२२, २.१२.४. स्वामी ५.२.१२. सर्वस्य स्वामीश्वरः १.८१.६. स्वामीश्वरो राजा ४.२४.८. ईश्वरो वा स्वामी ६.२५.७. स्वामीश्वरो जीवो वा १.७०.१. वैश्यो वणिग्जनः ऋ० भू० १९४. स्वामी वणिग् जनो वा १.७३.५. वैश्यः, प्र०—अर्यः स्वामीवैश्ययोः, अ० ३.१.३ इत्यनेन वैश्यार्थे निपातितः १५.३०. सर्वस्वामी सर्वसभाध्यक्षो राजा १.११८.९. अरयश्शत्रवः ७.३४.१८. यथावज्ज्ञातारः (मघवानः=परमधनयुक्ता जनाः) ७.६०.११. **अर्याय**=वैश्याय, प्र०—अर्यः स्वामिवैश्ययोः, इति पाणिनिसूत्रम् २६.२. वैश्य के लिए स० प्र० ९७, २६.२. **अर्ये**=स्वामिनि वैश्ये वा २०.१७. धनस्वामिनि वैश्यादौ ३३.८२. [ऋ गतौ धातोः 'अर्यः स्वामिवैश्ययोः' अ० ३.१.१०३ सूत्रेण यत् प्रत्ययो निपात्यते । अर्य इति ईश्वर नाम निघं० २.२२. अर्यः=ईश्वरः नि० १३.४.]

अर्यया अर्यस्य वैश्यस्य स्त्रिया ५.७५.७. **अर्या**=वैश्यकन्या १.१२३.१ **अर्य्यायै**=अर्य्यस्य स्वामिनो वैश्यस्य वा स्त्रियै २३.३१. [अर्यः पूर्वपदे द्र० । ततः स्त्रियां टापि रूपम्]

अर्यजारा अर्यौ स्वामिवैश्यौ जारयति वयसा हन्ति सा (शूद्रा=शूद्रस्य स्त्री), भा०—धनाढ्या शूद्रा जारा दासी २३.३०. [अर्योपपदे जॄ वयोहानौ (चुरा०) धातोरण् प्रत्ययः । स्त्रियां टाप् प्रत्ययः]

अर्यपत्नीः स्वामिनां भार्याः ७.६.५. [अर्यो व्याख्यातः । पत्नी=पतिप्राति० स्त्रियां 'पत्युर्नो यज्ञसंयोगे' सूत्रेण ङीप् नकारादेशश्च]

अर्य्यमणम् न्यायाधीशम् (मित्रं=सखायम्) ४.२.४. पक्षपातराहित्येन न्यायकर्त्तारम् (राजपुरुषम्) ९.२७. प्रजायाः पालकम् (अध्यापकमुपदेशकं वा) २५.१६. न्यायेशं (इन्द्रं=सभेशम्) १.१७४.६. न्यायकारिणम् (पुरुषम्) ६.५०.१. **अर्यमणः**=न्यायेशाः (नरः=नायका जनाः) ५.५४.८. **अर्यम्णः**=य ऋच्छति नियच्छत्याकर्षणेन पृथिव्यादीन् स सूर्यलोकस्तस्य, प्र०—'स्वन्नुक्षन्पूषन्०' उ० १.१५९. अनेनाऽयं निपातितः ३.३१. **अर्यमन्**=योऽर्यान् श्रेष्ठान् मनुष्यान् मिमीते मन्यते तत्सम्बुद्धौ (विद्याप्रकाशक विद्वन्) २.२७.५. श्रेष्ठसत्कृत् (सज्जन) २.२७.६. न्यायकारिन् (राजन्) ५.६७.१. **अर्यमा**=योऽर्यान् मन्यते स न्यायाधीशः ३६.९. न्यायाधीश इव नियन्ता (इन्द्रः=राजा) २५.२४. न्यायवस्थापकः (राजा) ५.२९.१. नियन्ता वायुर्न्यायकर्त्ता वा १.१०७.३. योऽर्यान् स्वामिनो न्यायाधीशान् मिमीते मान्यान् करोति सोऽर्यमा (परमात्मा) जो सत्य, न्याय के करने वाले मनुष्यों का मान्य और पाप तथा पुण्य करने वालों को पाप-पुण्य के फलों का यथावत् सत्य सत्य नियमनकर्त्ता है इसी से उस परमेश्वर का नाम अर्यमा है, प्र०—ऋ गतिप्रापणयोः इस धातु से यत् प्रत्यय करने से अर्य्य शब्द सिद्ध होता है और अर्य पूर्वक 'माङ् माने' इस धातु से कनिन् प्रत्यय होने से अर्यमा शब्द सिद्ध होता है स० प्र० २०, ३६.९. यमराज, प्रियाप्रिय को छोड़ कर

न्याय में वर्त्तमान (ईश्वर) आर्याभि० १.१८, ऋ०१.६.१७.१. न्यायकारी दयालु (ईश्वर) सं० वि० १३४, १०.८५.४३. न्यायकर्त्ता (विद्वान्) ४.५५.४. सूत्रात्मा, भा०—जीवः ३४.५७. योऽर्यान् वैश्यान् स्वामिनोऽवमन्यते सः (राजा) ३३.१५. विद्युत् ७.६०.४. नियन्ता सूर्यः १.७९.३. न्यायव्यवस्थाकारी (ईश्वरो विद्वज्जनो वा) १.९०.९. विद्वत्प्रियः (न्यायाधीशः) २.२७.७. नियन्ता धारको वायुः २.३८.९. [अर्यो व्याख्यातः। अर्योपपदे माङ् माने धातोः 'श्वनुक्षन्पूषन्०' उणा० १.१५९. सूत्रेण कनिन् प्रत्ययः। अर्यमन्नादित्यो ऽरीन् नियच्छति नि० ११.२३. यज्ञो वा अर्यमा तै० २.३.५.४. अर्यमेति तमाहुर्यो ददाति तै० १.१.२.४. अर्यमा सप्तहोतॄणाꣳ होता तै० २.३.५.६. अर्यम्णो वा एतन्नक्षत्रं यत्पूर्वे फल्गुनी तै० १.१.२.४.]

अर्यमेव यथार्थन्यायकारीव (परमेश्वरो विद्वान् वेव) १.९१.३.

अर्यमो न्यायकारी (राजा) प्र०—अत्राऽर्योपपदान्मनधातोरौणादिको बाहुलकादो प्रत्ययः १.१६७.८.

अर्य्यम्यम् अर्य्यमसु न्यायाधीशेषु भवम् (प्रमादम्) ५.८५.७. [अर्यमन् पूर्वं व्याख्यातः। ततो भवार्थे यत् प्रत्ययः]

अर्वतः अश्वान् १.९३.१२. प्राप्तराज्यान् जनानश्वान्वा १.११८.२. शीघ्रं स्थानान्तरं प्राप्नुतः (अश्वस्य) १.१६२.८. अश्वानिवाऽग्न्यादीन् ६.५४.५. अश्वादीन् ६.४६.१३. बलिष्ठस्याऽश्वस्य २५.३१. आशुगामिनोऽश्वस्येव २७.३७. प्राप्तस्य (मांसस्य) १.१६२.१२. **अर्वता**=अश्वादिना ४.३७.६. अश्वादिभिः सेनाङ्गैः, प्र०—अर्वेत्यश्वनामसु पठितम् निघं० १.१४, १.८.२. अश्वादियुक्तेन सैन्येन २.२.१०. अश्वेन १.११६.१७. य ऋच्छति तेनाश्वेन १.१५५.१. गन्त्रा (अश्वेन) २५.२६. विज्ञानेन सह १.१६२.३. **अर्वति**=उत्तमेऽश्वे स्थित्वा २.३३.१. **अर्वते**=अश्वाय १.१११.३. अश्वादियुक्ताय सैन्याय १.६३.५. अश्वजातये १.४३.६. प्राप्ताय (दुर्जनाय) ६.३६.२. विज्ञानाय ५.८६.५. प्रशस्तविज्ञानवते (विदुषे) १.१५१.३. **अर्वत्सु**=अश्वेषु ५.८५.२. अश्वेषु प्राप्तवेगगुणेषु विद्यादिषु वा ४.३१. **अर्वद्भिः**=प्रशस्तैरश्वैः १.७३.९. वेगादिगुणैरश्वैः १.१६४.१३. **अर्वन्**=अश्व इव वर्त्तयन् (मनुष्य) १७.८७. अश्व इव वर्त्तमान (वीरजन) २९.२२. अश्वेव शीघ्रं गमयन् (अग्ने!=प्रतापिन् जन) ६.१२.६. गन्त्रश्ववद्वर्त्तमान (शिल्पिन्) १.१६३.११. अश्वेव वेगवद्विद्वन् २९.१२. विज्ञानयुक्त (अन्व०—पुत्र, भा०—सुसन्तान) ११.४४. वेगवान् वह्निरिव वर्त्तमान जन २९.१४. **अर्वन्तम्**=शीघ्रगामिनमश्वम् २२.५. वाजिनम् १.११२.२१. वेगेन गच्छन्तमश्वम् ३४.२१. प्राप्नुवन्तम् (वाजम्=वेगान्नविज्ञानादिकम्) ५.५४.१४. वेगवन्तमश्वमग्निम् १.११३.९. अश्ववत्प्राप्नुवन्तं वह्निम् २९.२०. गमयन्तं (विद्युदग्निम्) १.१६२.१६. गच्छन्तम् (अश्वम्) **अर्वन्तः**=अश्वाः १५.४१. वेगवन्तः (पदार्थाः) ७.४०.६. गच्छन्तः (आशवः=पदार्थाः) ५.६.१. प्राप्नुवन्तः (आप्ताः जनाः) ७.४०.६. जानन्तः (राजजनाः) ९.१७. प्रशस्तविज्ञानवन्तः (सूरयः=विद्वांसः) १५.४२. **अर्वा**=अश्वः १.१०४.१. वाजीव (अग्निः=विद्युत्) ४.७.११. गन्ताऽश्वः २९.२३. अश्वेव शुभगुणग्रहणे वेगवान् (धार्मिको विद्वान्) ६.३३.२. अश्व इव बुद्धिहीनो विषयासक्तः (दुर्जनः) ६.२८.४. यः सद्यो मार्गान् गच्छति (अश्वः) ४.३८.१०. शीघ्रं गन्ता (अश्वः) २९.९. प्रापकः (सूर्यः) १.१५२.५. प्राप्तप्रेरणः (अग्निः) ७.४४.४. शुभगुणप्रापकः (मनुष्यः) ४.३६.६. यः सद्यः ऋच्छति गच्छति सः (विद्युदादिस्वरूपोऽग्निः) ४.११.४. यः सर्वानृच्छति सः (अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१९. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्वनिप् प्रत्ययः। 'अर्वणस्त्रसावनञः' सूत्रेण तृ-आदेशः। 'अवद्यावमाधमार्वरेफाः कुत्सिते' उ० ५.५४. सूत्रेण वा वन् प्रत्ययो निपात्यते। अर्वान्=ईरणवान् नि० १०.३१. अश्वनाम निघं० १.१४. अर्वा यच्छवयदरुरासीत्। तस्मादर्वा नाम तै० ३.९.२१.३. (हे अश्व त्वं) अर्वासि तां० १.७.१. अग्निर्वा अर्वा तै० १.३.६.४. पुमाꣳसोऽर्वन्तः श० ३.३.४.७.]

अर्वतीः प्रशस्तबुद्धिमत्यः (कन्याः) १.१४५.३. [अर्वन् पूर्वं व्याख्यातः। ततः स्त्रियां ङीपि 'अर्वणस्त्रसावनञः' सूत्रेण तृ-आदेशः]

अर्वाक् प्राप्त्यनन्तरमाभिमुख्येनानन्दकारकम् (राधः=धनम्) १.९.५. योऽधोऽश्चति (दूतः=समाचारप्रापको जनः) ६.६३.१. सत्यधर्ममनु ५.४३.८. यौ अर्वागधोऽश्चतः (अश्वौ) ५.४३.५. भूमेरधोभागम् १.११८.२. अवरः ५.४२. पुनः ५.३२.१५. पश्चात् १.४७.१०. अधः १.९२.१६. अधस्तात् ३.४.८. (अर्व=अनन्तरार्थे। तदुपपदे अचु गतौ याचने। च धातोः क्विप् प्रत्ययः अर्वाके अन्तिकनामसु पठितम् निंघं० २.१६.]

अर्वाग्वसुः अर्वाग् वृष्टेः पश्चाद्वसु धनं यस्मात् स हेमन्तर्त्तुः १५.१९. [अर्वाग् व्याख्यातः। वसु=वस निवासे

धातोरौणादिकः उः प्रत्ययः । वसु धननाम निघं० २.१०. तयोः समासः अथ यदर्वाग्वसुरित्याहातो (पर्जन्यात्) ह्यर्वाग्वसु वृष्टिरन्नं प्रजाभ्यः प्रदीयते श० ८.६.१.२०. अर्वाग्वसुर्ह वै देवानां ब्रह्मा पराग्वसुरसुराणाम् गो० उ० १.१.]

अर्वाङ् इतस्मिन् व्यवहारे वर्त्तमानः (अग्निः=पावकवद्राजा) ४.१०.३. योऽर्वागञ्चति (द्युम्नं=यशो धनं वा) ६.१९.९. योऽर्वाग् गच्छति सः (सोमः=रसः) ६.४१.५. योऽर्वाचीनानञ्चति प्राप्नोति सः (देवः=सूर्यः) ३४.२६. योऽधोदेशमञ्चति (रथः) १.१५७.३. योऽर्वाचीनाननुत्कृष्टानुत्कृष्टान् कर्त्तुमञ्चति जानाति सः (विद्वान्) १५.४६. योऽधस्तादञ्चति अधो गच्छति सः (सूर्यः) ३.६.९. आभिमुख्यं प्राप्तः (विद्वान्) २६.२३. अभिमुखम् १.१७७.२. पश्चात् ५.४०.४. अधो वर्त्तमानः (असुरः=मेघः) ५.८३.६. अर्वाचीनमञ्चन् (इन्द्रः=सभेशः) १.१७७.५. अर्वाचीने व्यवहारे १.१०४.९. अर्वाचीनं देशम् ३.४१.८. अर्वंत स्वकीयानध ऊर्ध्वंतिर्यग्गमनाख्यवेगानञ्चति प्राप्नोतीति, प्र०—अत्र 'ऋत्विग्दधृक्०' अ० ३.२.२९. इति क्विन्, 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इति कवर्गादेशः १.३५.१०. अर्वाचीनः (विद्वान्) ३.४३.१. अर्वाचः=येऽर्वाग्गच्छन्ति ते (नरः=नायका जनाः) ७.४८.१. अपरत्वेन व्यपदिष्टान् (पदार्थान्) १.१६४.१९. **अर्वाञ्चम्**=योऽर्वंतो वेगादिगुणानश्वानञ्चति प्राप्नोति तम् १.४५.१०. योऽर्वागधोऽञ्चति गच्छति (इन्द्रं=ऐश्वर्ययुक्तं जनम्) ३.४१.९. अर्वाग्गामिनम् (रथम्) २.३७.५. अर्वागुपरिष्टादधस्थं स्थानमभीष्टं वाञ्चति येन तम् ३.४१.९. **अर्वाञ्चः**=अर्वागधोऽञ्चन्ति ये (पदार्थाः) १.१६४.१९. अस्मदभिमुखाः, भा०—अस्मदविरोधिनः (यजत्राः=देवाः) ३३.५१. येऽर्वागञ्चन्ति विद्यां प्राप्नुवन्ति ते (देवाः=विद्वांसः) २.२९.६. **अर्वाञ्चा**=यावर्वागञ्चतो गच्छतस्तौ (अश्विना=स्त्रीपुरुषौ) ५.७६.१. अर्वंतो वेगवानञ्चतः प्राप्नुतस्तौ (नरौ) १.४७.८. [अर्वं उपपदे अञ्चु गतिपूजनयोर्धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' इत्यादिसूत्रेण क्विन्प्रत्ययः । अर्वाक्पथः अर्वाच एनान् पथः नि० १२.४३.]

अर्वाची याऽर्वणोऽश्वानञ्चति सा (क्रिया) २.३५.१५. सुशिक्षाविद्याभ्यासात्पश्चाद् विज्ञानमञ्चति प्राप्नोत्यनया सा (सुमतिः) ८.४. याऽर्वागधोऽञ्चति ४.५७.६. नवीना (पथ्या=नीतिः) ७.१८.३. अस्मदभिमुखी (सुमतिः=प्रज्ञा) ३३.६८. इदानीन्तनी (सुमतिः १.१०७.१. **अर्वाच्यै**=निम्नायै (दिशे) २२.२७. याऽवविरुद्धमञ्चति तस्यै उपदिशे २२.२४. अधस्ताद्वर्त्तमानायै (दिशे) २२.२४. याऽर्वागधोऽञ्चति तस्यै (दिशे) २२.२४. [अर्वं+अञ्चु गतौ+क्विप् । स्त्रियाम् 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' वा० ४.१.६. सूत्रेण ङीप्]

अर्वाचीनम् इदानीन्तनं नूतनम् (ऐश्वर्ययुक्तं जनम्) ७.४१.६. इदानीन्तनं युवावस्थास्थम् (सूनुम्=अपत्यम्) ४.२४.१. इदानीं सुशिक्षितम् (मनः=अन्तःकरणम्) ३.३७.२. अधोगामिनम्, भा०— अनुत्कृष्टगति (मनः=अन्तःकरणम्) ८.३३. अधस्ताद् भूमिजलयोरुपगन्तारम् (रथम्) १.८४.३. **अर्वाचीनः**=इदानीन्तनः (इन्द्रः=राजा) ४.३२.१४. विद्यादिबलेनाऽभिगन्ता (इन्द्रः=सेनाधीशः) २०.४९. **अर्वाचीना**=यावर्वागञ्चतस्तौ (विद्वज्जनौ) ५.७४.९. [अर्वाच्प्राति० 'विभाषाञ्चेरदिक्स्त्रियाम्' अ० ५.४.८. सूत्रेण स्वार्थे खः प्रत्ययः]

अर्वाचीनासः इदानीन्तनाः (जामयः=पतिव्रता भार्याः) ६.२५.३. [अर्वाच्+खः स्वार्थे । तस्य प्रथमाबहुवचनम्]

अर्वाणम् गच्छन्तमश्वम् २८.१३. [ऋ गतिप्रापणयोर्धातोर्वनिप् । छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पात् 'अर्वणस्त्रसावनञः' इति तृ-आदेशो न भवति]

अर्वान् ज्ञानीजनः, प्र०—अत्र नलोपाऽभावश्छान्दसः २९.२४. [ऋ गतौ धातोर्वनिप् । 'न लोपः प्राति०' इति न लोपो न भवति छान्दसत्वात्]

अर्वावतम् प्राप्तसामीप्यम् (राजानम्) ३.४०.९.]

अर्वावतः प्रशस्ता अश्वा विद्यन्ते येषान्तान् (सेनाङ्गयुक्तान् वीरान्) ३.४०.८. अर्वाचीनात् (स्वदेशात्) ३.३७.११. [अर्वा=अश्वः, ततो मत्वर्थे मतुप्]

अर्वावति निकटदेशे ५.७३.१. [ऋ गतौ धातोरौणादिको वन् प्रत्ययः । ततो मतुपि सप्तम्येकवचनम्]

अर्शसः मूलेन्द्रिय-व्याधेः १२.९७. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'व्याधौ शुट् च' उ० ४.१९६. सूत्रेणासुन् शुडागमश्च]

अर्शसानम् प्राप्तं सत् (दस्युम्) १.१३०.८. अर्शसानस्य प्राप्नुवतः (दासस्य=सेवकस्य) २.२०.६. (ऋ गतौ धातोः 'अर्तेर्गुणः शुट् च' उ० २.८८. सूत्रेण असानच् प्रत्ययः शुडागमश्च]

अर्षत् गच्छत् (ब्रह्म) ४०.४. [ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन शप् । ऋ गतौ धातोर्वा लेटि रूपम् । सिप् विकरणश्च]

अर्षत प्राप्नुत ४.५८.१०. **अर्षति**=गच्छति

१.१३५.२. प्राप्नुयात् प्र०—ऋधातोर्लेट् प्रयोगोऽयम् १.१३५.२. प्राप्नोति, भा०—धावति २३.५५. **अर्षन्ति**=वर्षन्ति १.१२५.५. गच्छन्ति ४.५८.६. प्राप्नुवन्ति, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप् २.२५.४. प्रापयन्तु, प्र०—लेट्-प्रयोगोऽयम् १.१०५.१२. गच्छन्ति निस्सरन्ति १७.९३. गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति, भा०—धावन्ति १७.९४. **अर्षन्तु**=प्राप्नुवन्तु ३.३०.९. **अर्षात्**=प्राप्नुयात् ३.३३.११. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्लेट्। ऋषी गतौ (तु०) धातोर्वा लटि लोटि रूपाणि। विकरणव्यत्ययेन शप्]

अर्हणा सत्कृतानि (हव्यानि) १.१२७.६. [अर्ह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्णिचि 'ण्यासश्रन्थो युच्' इति युच् प्रत्ययः]

अर्हति योग्यो भवति २.१४.२. **अर्हथः**=(तुम) योग्य हो ४.४७.२. **अर्हसि**=कर्तुं योग्योऽसि १.१३४.६. [अर्ह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्]

अर्हते योग्याय (जातवेदसे=विदुषे जनाय) १.९४.१. **अर्हन्**=योग्यो भवन् (राजपुरुषः) २.३३.१०. सत्कुर्वन् (सज्जनः) ७.१८.२२. **अर्हन्तः**=सत्कुर्वन्तः (जनाः) ५.७.२. योग्यतां प्राप्नुवन्तः (नरः=नायका जनाः) ५.५२.५. **अर्हन्ता**=पूज्यौ (इन्द्राग्नी=नरेशसेनापती) ५.८६.५. [अर्ह पूजायाम् (भ्वा०) धातोः 'अर्हः प्रशंसायाम्' अ० ३.२.१३३. सूत्रेण पूजायां शतृप्रत्ययः]

अर्हरिष्वनिः योऽर्हान् हिंसकांश्च सम्भजति सः (सूर्यः) १.५६.४.

अर्हात् योग्यात् (विदुषो जनात्) २.२३.१५. [अर्ह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः]

अर्हामसि योग्या भवामः ४.५५.७. [अर्ह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्। 'इदन्तो मसिः' अ० ७.१.४६. सूत्रेण मस इकारान्तत्वम्]

अलकम् अर्थप्रयोजनरहितम् पं० वि०। [अल भूषणपर्याप्तवारणेषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् क्वुन् प्रत्ययः]

अलजः पक्षिविशेषः २४.३४.

अललाभवन्तीः अलला अलला इव शब्दयन्तीः (नदीः) ४.१८.६.

अलातृणः योऽलं तृणाति सः (इन्द्रः=परमैश्वर्यप्रापको राजा) ३.३०.१०. [अलम् उपपदे आङ्पूर्वकात् तृदिर् हिंसायाम् (रुधा०) धातोर्युच्। दकारस्य लोपो गुणाभावश्च। 'अलम्' शब्दस्य मलोपः। पृषोदरादित्वाद् रूपसिद्धिः। अलातृणो ऽलमातर्दनो मेघः नि० ६.२. अलातृणः पदनाम निघं० ४.३.]

अलिनासः अलिनाः=सुभूषिता नासिका येषान्ते (आर्या राजजनाः) ७.१८.७. [अल भूषणपर्याप्तिवारणेषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् इः प्रत्ययः। तस्य नासिकापदेन बहुव्रीहौ समासे नसादेशः समासान्तः]

अलिप्सत लिम्पन्ति १.१९१.१. [लिप उपदेहे (तुदा०) धातोर्लुङ्। मध्यमबहुवचनम्]

अल्गाभ्याम् अलं गन्तृभ्याम् (प्राणिभ्याम्), प्र०—अत्र छान्दसो वर्णलोप इति टिलोपः २५.६. [अलम् उपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः तृच् प्रत्ययः। द्वयोरपि पदयोः टिलोपश्छान्दसः]

अल्पाञ्जिः अल्पगतिः (पशुः पक्षी वा) २४.४. [अल्पोपपदे अञ्जू गतौ (रुधा०) धातोरौणादिक इः प्रत्ययः]

अव विनिग्रहार्थे, प्र०—अवेति विनिग्रहार्थीयः निरु० १.३, १.११.७. अर्वागर्थे १.३३.७. क्रियार्थे १.२४.१४. निरोधे १.५४.४. निवारणे ४.१.४. निषेधे ५.२.६. नीचाऽर्थे १.३२.२. पृथक्करणे १.२४.१३. [अवेति विनिग्रहार्थीयः नि० १.३.]

अव रक्ष वर्धय वा ७.४१.३. रक्षणादिकं कुर्याः १.१०२.४. रक्ष रक्षति वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः २.९. प्रवेशय ३.५३.३. पाहि ५.३५.८. जानीहि १.२८.३. प्राप्नुहि १.२८.२. प्रापय १.१०२.३. [अव रक्षणगतिकान्तिप्रीत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अवऋत्यै विरुद्धप्राप्तये (वधाय=हननाय) ३०.१२. [अवेति विनिग्रहार्थीयः नि० १.३. ऋतिः=ऋ गतौ धातोः क्तिन्]

अवकया यया अवन्ति रक्षन्ति तया क्रियया १७.४. अवकाम्=रक्षिकाम् (मृदम्=मृत्तिकाम्) २५.१. [अव रक्षणगताद्यर्थेषु (भ्वा०) धातोर्धात्वर्थनिर्देशे ण्वुल्। स्त्रियां टापि इत्वाभावश्च। आपो वा अवकाः श० ७.५.१.११. अथ (आपः) यदब्रूवन्नवाङ् नः कमगादिति ता अवाक्का अभवन्नवाक्का ह वै ता अवका इत्याचक्षते परोक्षम् श० ९.१.२.२२. तस्मादवका अपामनुजीवनीयतमा यातयाम्न्यो हि ताः श० ९.१.२.२४.]

अवकर्शयन्ति कृशं कर्त्तुं शक्नुवन्ति ६.२४.७. [अव +कृश तनूकरणे (दिवा०) धातोर्णिचि लटि रूपम्]

अवकोपयः निरोद्धुं कोपयसि १.५४.४. [अव

विनिग्रहार्थे, कुप क्रोधे (दिवा०) धातोर्णिचि लङ् । अडभावश्च]

अवक्रन्द शब्दं कुरु २.४२.३. **अवक्रन्दतु**=आह्वयतु ५.५८.६. [अव+क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्लोट्]

अवक्रन्दाय नीचैः कृताह्वानाय (जनाय) २२.७. **अवक्रन्देन**=विकलतारहितेन (व्यवहारेण) २५.१. [अव+क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्घञ् । क्रदि वैक्लव्ये धातोर्वा घञ्]

अवक्रमिषम् उल्लङ्घयेयम्, भा०—आज्ञामुल्लङ्घ्य वर्त्तिषीय प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् २. [अव+क्रमु पादविक्षेपे धातोर्लुङ्, अडभावश्च]

अवक्रमुः अवक्राम्यन्तु ७.३२.२७. [अव+क्रमु पादविक्षेपे धातोर्लिङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

अवक्रामन् देशदेशान्तरानुल्लङ्घयन् (राजा) ११.१५ **अवक्रामन्तः**=इतस्ततो गच्छन्तः (अश्वाः=तुरङ्गा वह्न्यादयो वा ६.६५.७. धर्षयन्तः (अश्वाः) २९.४४. [अव+क्रमु पादविक्षेपे धातोः शतृ]

अवक्षिप दूरे गमय २.३०.५. **अवक्षिपत्**=प्रेरयेत् ४.२७.३. [अव+क्षिप प्रेरणे (दिवा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

अवखादः विखादो भयम् १.४१.४. [अव+खद स्थैर्ये हिंसायां च (भ्वा०) धातोर्घञ्]

अवगत्य प्राप्य ६.७५.५. [अव+गम्लृ गतौ+क्त्वा । क्त्वो ल्यप् समासे]

अवघ्नती अत्यन्तं दुःखयन्ती १.१९१.२. [अव+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः शतृ, ततः स्त्रियां ङीप्]

अवचक्षे प्रख्यातुम् ४.५८.५. अवख्यातव्याः १७.९३. [अव+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः कृत्यार्थे 'अवचक्षे च' अ० ३.४.१५. सूत्रेण एश् प्रत्ययो निपात्यते]

अवचचक्षम् कथयेयम् ५.३०.२. [अव+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि धातो रूपम्]

अवजघन्थ अवहंसि ६.३१.४. विरोधेन हंसि ७.१८.२०. [अव+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिट्]

अवजिघ्रत सुगन्धान् बोधान् वाऽधो गृह्णीत ९.९. [अव+घ्रा गन्धोपादाने (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'पाघ्रा०' सूत्रेण शिति जिघ्रादेशः]

अवजीहिपः अवत्याजयेः ३.५३.१९. [अव+ओहाक् त्यागे (जु०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

अवट अपरिभाषिताऽपरिनिन्दित (अन्व०—शिशो!) ११.६१. **अवटेषु**=अपरिभाषितेषु मार्गेषु १३.७. [नञ्+वट परिभाषणे (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि । ततः सम्बुद्धौ रूपम्]

अवट्याय अवटेषु गर्त्तेषु भवाय (भृत्याय) १६.३८. [अवटः कूपनाम निघं० ३.२३. ततो भवार्थे यत्]

अवत पालयत ९.१८. रक्षत २१.११. कामयध्वम् २.३१.२. **अवतम्**=रक्षतम् १.११६.९. रक्षणादिकं कुरुतम् १.१०९.७. प्राप्नुतम् १.१८१.७. गच्छतम् २.३१.१. प्रविशतम् १.३४.५. प्रवेशयतम् १.११७.२३. **अवतः**=रक्षतः २१.५२. **अवतात्**=रक्षति, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् ५.९. **अवताम्**=रक्षतः २.१६. रक्षेताम् २७.१७. **अवति**=रक्षति २.१२.१४. **अवतु**=प्राप्नोतु १०.१०. प्रवेशयतु २३.१३. रक्षतु प्राप्नोतु वा १८.३२. **अवथ**=रक्षथ ४.३६.५. **अवथः**=रक्षथः १.११२.१७. वर्धयेतम् १.११२.२२. **अवतु**=रक्षक हो आर्याभि० २.१. **अवन्ति**=रक्षन्ति १.१७९.३. रक्षन्त्युपदिशन्ति ३४.५८. **अवन्तु**=रक्षणादिभिः पालयन्तु १.१०६.३. रक्षन्तु ५.४६.७. एतद्विद्यामवगमयन्तु प्रापयन्ति वा, प्र०—अत्र पक्षे लडर्थे लोट् १.२२.१६. प्रापयन्ति, प्र०—अत्र अवधातोर्गत्यर्थात् प्राप्त्यर्थो गृह्यते, लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२३.१२. अन्व०—उन्नतं सम्पादयन्तु २०.११. प्रवेशयन्तु ४.११. रक्षा करें आर्याभि० १.११. कामयन्ताम् १७.५४. वर्धयन्तु ७.३६.७. [अव रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्ति-अवगम-प्रवेशादिष्वर्थेषु (भ्वा०) धातोर्लेटि लोटि च रूपाणि । अवति गतिकर्मा निघं० २.१४. अवन्तु आगच्छन्तु नि० ११.१६.]

अवततधन्वा अवेति निगृहीतं ततं विस्तृतं धनुर्येन सः (रुद्रः=शूरवीरः सेनाध्यक्षः) ३.६१. [अवतत=अव+तनु विस्तारे धातोः क्तः । अवततधनुषोः समासः]

अवतत्य विस्तार्य १६.१३. [अव+तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्त्वा । क्त्वो ल्यप् समासे]

अवतनुहि अवविस्तृणु १५.४०. विस्तृणुहि, अ०—विनाशय १३.१३. [अव+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लोट्]

अवतन्मसि विरुद्धतया विस्तारयेम १६.६३. अर्वागधो विस्तारयेम १६.५४. [अव+तनु विस्तारे धातोर्लेट्, उत्तमबहुवचनम्, 'इदन्तो मसि' रिति मस इकारान्तत्वम्]

अवतम् रक्षणादियुक्तम् (पर्वतं=मेघम्) १.८५.१०. रक्षकम् (इन्द्रं=विद्युतम्) ३.४६.४. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् अतच्]

अवतम् निम्नदेशस्थम् (उत्सं=कूपम्) १.८५.११. अधोगामिनम् (मेघस्य मुख्यभागम्) २.२४.४. रक्षणीयं वेद्यादिगर्त्तम् ३३.१९. वृद्धम् (सोमम्) १.१३०.२. [अवतः कूपनाम निघं० ३.२३. [अवतः=अवातितो महान् भवति नि० ५.२६.]

अवतरम् अवाङ्मुखं क्षुद्रमिव (दुर्जनम्) १.१२९.६. [अव+तॄ प्लवनसंतरणयोर् धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप् प्रत्ययः]

अवतात् हिंसकाद्रक्षकाद्वा (जनात्) १.११६.२२. [अव रक्षणादिषु धातोर्बाहुलकाद् अतच् । ततः पञ्चमी]

अवताः कूपाः ४.५०.३. **अवते**=कूपे, प्र०—अवत इति कूपनाम, निघं० ३.२३, ४.१७.१६. [अव रक्षणादिषु धातोरतच् । अवत इति कूप नाम निघं० ३.२३.]

अवतस्थे अवतिष्ठते ५.४४.९. प्राप्त होता हूं स० प्र० २३८, १०.४८.५. [अव+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । 'समवप्रविभ्यः स्थः' इत्यात्मनेपदम्]

अवतारीः दुःखात्तारय ६.२५.२. [अव+तॄ प्लवनसंतरणयोर्धातोर्लुङि मध्यमैकवचनम् । अडभावश्च]

अवतासः सर्वतो रक्षिताः (मनुष्याः) १.५५.८. [अव रक्षणादिषु धातोर्बाहुलकाद् अतच् प्रत्ययः । प्रथमाबहुवचनम्]

अवतोकाम् निरपत्याम् (स्त्रियम्) ३०.१५. [अव पृथक्करणे । तोकमित्यपत्यनाम निघं० २.२. तयोः समासः]

अवत्तानाम् गृहीतानाम् (जनानाम्) २१.४४. नम्रीभूतानामुत्कृष्टानामङ्गानाम् २१.४३. उदारचेतसाम् (सज्जनानाम्) २१.४५. [अव+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्तः । 'अच उपसर्गात्तः' इति तकारादेशे 'खरि च' इति चर्त्वे षष्ठीवहुवचने रूपम्]

अवत्सारस्य योऽवतो रक्षकान् सरति प्राप्नोति तस्य (क्षत्रस्य=राष्ट्रस्य) ५.४४.१०. [अव रक्षणादिषु धातोर्बाहुलकादतच् प्रत्ययेऽवत । तदुपपदे सृ गतौ धातोरण् । अवतस्याकारलोपश्च]

अवदन् उपदिशन्तु १२.९१. **अवदन्त**=परस्परं संवादं कुर्युः १२.९६. **अवदः**=वदेः ३.३०.५. [वद व्यक्तायां वाचि धातोर्लङ् । 'अवदन्त' प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अवदन् कहते हुए (विद्वज्जनाः) १.१७९.२. [वद व्यक्तायां वाचि धातोः शतृ । नञ्समासः]

अवद्यगोहना अवद्यानि गर्ह्याणि निन्दितानि दुःखानि गूहत आच्छादयतो दूरीकुरुतस्तौ, (अश्विना=विद्वज्जनौ) प्र०—अवद्यपण्य० अ० ३.१.१०१. इत्ययं निन्द्यार्थे निपातितः, ण्यन्ताद् गूहू संवरणे इत्यस्माद्धातोः 'ण्यासश्रन्थो युच्, अ० ३.३१.७. इति युच् 'ऊदुपधाया गोहः' अ० ६.४.८८. इत्यूदादेशे प्राप्ते 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इत्यस्य निषेधः 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशश्च १.३४.३. [अवद्यम्=नञ्युपपदे वद व्यक्तायां वाचि धातोः 'अवद्यपण्य०' सूत्रेण यत् प्रत्ययान्तो निपात्यते गर्ह्येऽर्थे । गूह संवरणे धातोर्णिचि 'ण्यासश्रन्थो युजि' ति युच् । तयोः समासः]

अवद्यम् निन्दितं कर्म ५.५३.१४. गर्ह्यम् (शब्दम्) ४.१८.७. **अवद्यात्**=अधर्माचरणान्निन्द्यात् ७.४.९. निन्दितात् (अभिशस्तेः=हिंसकात्) १.९३.५. पापाचरणात् ४.१५. निन्दनीयात् (दुरितात्=दुष्टाचारात्) ७.१२.२. निन्द्यादधर्म्यादाचरणात् ३.३१.८. निन्द्याद् दुःखात् ३३.४२. **अवद्यानि**=निन्द्यानि कर्माणि ६.६६.४. [नञ्युपपदे वद व्यक्तायां वाचि धातोर्गर्ह्यार्थे 'अवद्यपण्य०' सूत्रेण यत्]

अवद्यमिव निन्दनीयमिव (स्वाऽपत्यम्) ४.१८.५.

अवधम् अमरणम् १.१८५.३. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनश्च वधः' अ० ३.३.७६. सूत्रेणाप् प्रत्ययो भावे, वधादेशश्च । नञ्समासः]

अवधवन्ते चालयन्ति ६.४७.१४. [अव+धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन शप्]

अवधावति निपतति १.१६२.११. गच्छति २५.३४. [अव+धावु गतिशुद्ध्योः (भ्वा०) धातोर्लट्]

अवधिष्म हन्याम ९.१८. ताडयेम ९.३८. **अवधीत्**=हन्ति १.५२.२. नाश करे ५.३४.४. **अवधीः**=हंसि १.८०.७. हन्यात् ६.२७.४. हन्याः ४.३०.१५. हिन्धि, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् १.३३.१२. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लुङ् । 'लुङि च' इति सूत्रेण वधादेशः]

अवधुक्षत अलङ्कुरुते ६.४८.१३. [अव+धुक्ष सन्दीपनक्लेशनजीवनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट् । अत्रालंकरणेऽर्थे]

अवधूतम् विनाशितम् (रक्षः=दुःखं, निवारणीयम्) १.१९. दूरीकृतं विचालितम् (रक्षः=दुष्टस्वभावो जन्तुः) १.१४. **अवधूताः**=दूरीभूताः, निवारिताः (अरातयः=शत्रवः) १.१५. निवारणीयाः, विचालिताः हताः

(अरातयः=कृपणाः) १.१६. [अव +धूञ् कम्पने धातोः क्तः । 'यस्य विभाषेति सूत्रेणानिट्त्वम्]

अवधूनुषे अतिकम्पयसि १.७८.४. [अव धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

अवधून्वानः अर्वाक् कम्पयन् (इन्द्रः=राजा) ६.४७.१७. [अव+धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोः शानच् । व्यत्ययेन श्नुः]

अवध्यम् हन्तुमयोग्यम् (इन्द्रं=मन्त्रिणम्) १७.२४. हन्तुमनर्हम् (ईश्वरं सभाध्यक्षं च) ८.४६. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर् ण्यत् । 'बहुलं संज्ञाछन्दसोरि' ति धातोर्वधादेशः । नञ्समासः]

अवन् रंक्षन् (विद्वान् राजा) ७.४६.२. [अव रक्षणादिषु धातोः शतृ]

अवनद्धम् अधोबद्धम् (नौकादिकम्) १.११६.२४. [अव+णह बन्धने+क्तः । 'नहो धः' इति धकारादेशः]

अवनक्षथः प्राप्नुथः १.१८०.२. [अव+नक्षति व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८. गतिकर्मा निघं० २.१४. धातोर्लट्]

अवनयः भूमयः १.८६.८. अवन्ति यास्ता नद्यः, प्र०—अवनय इति नदीनाम निघं० १.३, ५.८५.६. तटस्था भूमयः १.१६०.७. **अवनिम्**=पृथिवीम् १.१४०.५. रक्षिकाम् (महीं=पृथिवीम्) ४.१९.६. **अवनिः**=पृथिवी १.८१.३. रक्षकः प्रापको दाता, अन्व०—करुणामयः (इन्द्रः=परमेश्वरः) १.४.१०. **अवनीः**=रक्षिका भूमीः ६.६१.३. पृथिवीं प्रति १.६१.१०. रक्षिकाः (गिरः) ५.११.५. [अव रक्षणादिषु धातोः 'अर्त्तिसृधृ०' उ० २.१०२. सूत्रेणानिः प्रत्ययः । अवनिः पृथिवीनाम निघं० १.१. अवनयः अंगुलिनाम निघं० २.५. अवनयो नदीनाम निघं० १.१३. अवनयोऽङ्गुलयो भवन्ति अवन्ति कर्माणि नि० ३.८.]

अवनयामि विनिग्रहेण प्राप्नोमि प्रापयामि वा ५.२५. स्वीकरोमि ७.२५. [अव+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

अवना अवनादीनि रक्षणादीनि ५.५४.२. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'ण्यासश्रन्थो युच्' इति युच् प्रत्ययः]

अवनीतम् अर्वाक् प्रापितम् (सर्वगणं=लोकम्) १.११६.८. **अवनीताय**=अविद्यमानामपगमनाय १.११८.७. [अव+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

अवनोः रक्ष ५.२९.९. सम्भज ६.१८.३. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन उः]

अवन्ती रक्षित्र्यौ (द्यावापृथिवी) १.१८५.४. **अवन्तीः**=रक्षन्त्यः (स्त्रियः) १.१५२.६. रक्षन्तीः सेनाः प्रजा वा ७.४६.२. [अव रक्षणादिषु धातोः शतृ, ततः स्त्रियां ङीप्]

अवन्वन् अवन्ति रक्षणादिकं कुर्वन्ति, प्र०—अत्र अवधातोर्विकरणव्यत्ययेन श्नुः १.५१.२. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

अवपत् वपति २.१४.७. [डुवप बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अवपतन्ती अधः आगच्छन्ती (ओषधयः=सोमादयः) १२.९१. [अव+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ, ततः स्त्रियां ङीप्]

अवपदः आपत्कालात् २.२९.६. यत्राऽवपद्यन्ते पतन्ति ततः (कर्त्तात्=कूपात्) ३३.५१. [अव+पद गतौ (दिवा०) धातोः क्विप्]

अवपद्यते अवगच्छति ४.१३.५. [अव+पद गतौ (दिवा०) धातोर्लट्]

अवपश्यन् यथार्थं विजानन् (वरुणः=ईश्वरः) ७.४९.३. [अव+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः शतृ । शिति 'पाघ्रा०' इति पश्यादेशः]

अवपश्यामि सम्प्रेक्षे १.३०. [अव+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लट् । शिति पश्यादेशः]

अवपादि विरुद्धं प्रतिपद्यतां प्राप्यताम् १.१०५.३. [अव+पद गतौ (दिवा०) धातोः कर्मणि लुङ्, अडभावश्च]

अवपानेषु अत्यन्तेषु रक्षणेषु १.१३६.४. [अव+पा रक्षणे (अदा०) धातोर्ल्युट्]

अवप्रियाः विरुद्धतया प्रसन्नताकारकाः (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.५१. [अव+प्रीञ् तर्पणे (क्र्या०) धातोः 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' अ० ३.१.१३५. सूत्रेण कः प्रत्ययः]

अवबबाधे अवबाधते २.१४.४. अर्वाक् नाशयामि, अन्व०—अर्वाचीनो यथा स्यात्तथा हन्मि यतो न पुनः सम्मुखो भूयादिति भावः ६.१६. [अव+बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

अवभर अर्वाचीनतया भर ३४.१४. **अवभरते**=विरुद्धं धरति १.१०४.३. अन्यायेन स्वीकरोति १.१०४.३. [अव+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लोट् लट् च]

अवभाति प्रकाशते १.१५४.६. [अव+भा दीप्तौ (अदा०) धातोर्लट्]

अवभारि अवभ्रियते, प्र०--अत्र लडर्थे लुङ्, भृञ् धातोश्चिणि परेऽडभावः 'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि अ० ६.४.७५. इति सूत्रेण ६.३. [अव+भृञ् भरणे धातोर्लुङ् कर्मणि । अडभावश्च]

अवभृथ विद्याधर्मानुष्ठानेन शुद्ध (निचुम्पुण=धैर्येण शब्दविद्याध्यापक) प्र०—अत्र 'अवे भृञः' उ० २.३. इति क्थन् प्रत्ययः ३.४८. विद्याव्रतस्नातक (वरुण=वरप्रापक विद्वन्) २०.१८. यो निषेकेण गर्भं बिभर्त्ति तत्सम्बुद्धौ (हे पते) ८.२७. **अवभृथः**=शोधनम् १९.२८. यज्ञान्तस्नानादिकम् १८.२१. **अवभृथाय**=पवित्रीकरणाय यज्ञान्तस्नानाय वा ८.५९. [अव+भृञ् भरणे धातोः 'अवे भृञः' उ० २.१. सूत्रेण उः प्रत्ययः । अवभृथो ऽपि निचुम्पुण उच्यते नि० ५.१८. अवभृथः तद् यदपोऽभ्यवहरन्ति तस्मादवभृथः श० ४.४.५.१. यो ह वायमपामावर्त्तः स हावभृथः सहैष वरुणस्य पुत्रो वा भ्राता वा श० १२.९.२.४. वरुण्यो वा अवभृथः श० ४.४.५.१०. समुद्रोऽवभृथः तै० २.१.५.२.]

अवभेत् विनिग्रहेण भिन्द्यात् १.५९.६. [अव+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लङ् । विकरणलुक् च]

अवभेदिने शत्रूनवभेत्तुं विदारयितुं शीलाय, (आ०—दूताय) १६.३४. [अव+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

अवमम् निकृष्टम् तृणमृत्तिकाक्षुद्रकृमिकीटादिकं जगत् ऋ० भू० १३५. अथ० १०.७८. रक्षादिसाधकमुत्तममर्वाचीनं वा (ऋतम्=सत्यमुदकं वा) १.१०५.४. निकृष्टं रक्षकं वा (वसु=द्रव्यम्) ७.३२.१६. **अवमस्य**=अर्वाचीनस्य (सम्बन्धिजनस्य) ६.२१.५. **अवमः**=रक्षकः (अग्निः=अध्यापको राजा वा) ४.१.५. **अवमा**=कनिष्ठानि, भा०—निकृष्टानि (धामानि=जन्मस्थाननामानि) १७.२१. अर्वाचीनानि (सदांसि=वस्तूनि) ३.५४.५. निकृष्टा (ऊतिः=रक्षा) ६.२५.१. **अवमाय**=अवराय रक्षकाय वा (जनाय) २.३५.१२. **अवमे**=निकृष्टे (वृजने=व्यवहारे) १.१०१.८. रक्षितव्ये व्यवहारे १.१८५.११. **अवमैः**=अधमैः (अमित्रैः=शत्रुभिः) ३.३०.१६. **अवमस्याम्**=अनुत्कृष्टगुणायाम् (पृथिव्याम्) १.१०८.९. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'अवद्यावमाधमार्वरेफाः कुत्सिते' उ० ५.५४. सूत्रेण अमः प्रत्ययः । अवम इति अन्तिकनामसु पठितम् निघं० २.१६.]

अवमार्जनानि शोधनानि १.१६३.५. शुद्धिकरणानि २९.१६. [अव + मृजू शौचालङ्करणयोः (चु०) धातोर्ल्युट]

अवमीत् उपदिशेत् १७.९. [टुवम उद्गिरणे (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अवमृड आनन्दय १६.५०. [अव+मृड सुखने (तुदा०) धातोर्लोट्]

अवयक्ष्व सङ्गच्छस्व ४.१.५. सङ्गमय, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणाऽभावः २१.४. [अव+यज-देव पूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपो लुक्]

अवयजनम् दूरीकरणम्, पृथक्करणम्, परिहरणम् वा ८.१३. दूरीकरणसाधनम् २०.१७. छुड़ाने वाला (ब्रह्म) आर्याभि० २.१९, ८.१३. दूर करने वाला (ब्रह्म) आर्याभि० २.१९. नाशक (ब्रह्म) आर्याभि० २.१९. [अव+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

अवयजामहे नाशयामः ऋ० भू० २३९. दूरं सङ्गच्छामहे, अन्व०—दूरीकुर्म्मः ३.४५. [अव+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लट्]

अवयत् वेति प्राप्नोति २१.४४. व्याप्नुयात् २१.४५. [वय गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अवयताम् धर्मविरोधिनाम् (मरुतां=मनुष्याणाम्) १.९४.१२. [वय गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ । नञ्समासः]

अवयाः योऽवयजति विरुद्धं कर्म न सङ्गच्छते सः (परमेश्वरः) १.१७३.१२. योऽवयजते विनिगृह्णाति सः (अ०—यजमानः) ३.४६. [अव+यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'अवे यजः' अ० ३.२.७२. सूत्रेण ण्विन् प्रत्ययः]

अवयातहेलाः अवयातं दूरीभूतं हेळो यस्मात् सः (सभेशः) १.१७१.६. [अवयातम्=अव+या प्रापणे (अदा०) धातोः क्तः । हेडृ अनादरे धातोर्घञ् प्रत्यये हेडः । तयोः समासः]

अवयाता विरुद्धं गन्ता (इन्द्रः=सभेशः) १.१२९.११. [अव+या प्रापणे (अदा०) धातोस्तृच्]

अवयानम् अपगमनं निरसनम् १.१८५.३. [अव+या प्रापणे+ल्युट्]

अवयासि अवयाति, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ४.१३.४. [अव+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लट्]

अवयासिसीष्ठाः मा कुर्याः सनिषेधं यायाः प्राप्नुयाः २१.३. निवारयितुं प्रेरयेथाः, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति मूर्धन्यादेशाऽभावः ४.१.४.

अवयुनम् अज्ञानाऽन्धकाररूपम् ६.२१.३. [अज गतिक्षेपणयोर्धातोः 'अजियमिशीङ्भ्यश्च' उ० ३.६१. सूत्रेण उनन्। अजेर्वी आदेशः। नञ्समासः। वयुनम् प्रशस्यनाम निघं० ३.८. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. पदनाम निघं० ४.२. वयुनं वेतेः, कान्तिर्वा प्रज्ञा वा नि० ५.१५. वयुनवत्=प्रज्ञानवत् नि० ५.१५. वयुनानि प्रज्ञानानि नि० ८.२०.]

अवर्यै धर्म से विपरीत चलने वाले (दुर्जन) को आर्याभि० १.२९, ८.४७.१५.

अवरम् अर्वाचीनम् (नाम=आख्याम्) १.१५५.३. कार्यम् १.१६८.६. **अवरान्**= अर्वाचीनानाकाशादीन् १७.१७. नीचाननुत्कृष्टगुणस्वभावान् (मनुष्यान्) ११.७१. **अवरासु**=अर्वाचीनासु (ओषधीषु) १.१४१.५. अवरे= अर्वाचीने (जन्मन्=जन्मनि) २.९.३. अर्वाचीनाः, भा०—निकृष्टाः (पितरः) १९.४९. **अवरेण**=अर्वाचीनेन (पदा=पदेन) १.१६४.१७. **अवरेभ्यः**=मध्यस्थेभ्यो निकृष्टेभ्यो वा (गात्रेभ्यः) २३.४४. अनुत्कृष्टेभ्यः (जनेभ्यः) ५.४२. [अवरे परे नि० ११.१६. अवरेभ्योऽसाक्षात्कृतधर्मभ्यः नि० १.२०.]

अवरस्पराय योऽवरेषां परस्तस्मै (शत्रवे) ३०.१९.

अवरासः अर्वाचीना जिज्ञासवः ६.२१.६. [अवरप्राति० प्रथमाबहुवचनम्]

अवरोकिणः अवरोधकाः (पशवः पक्षिणो वा) २४.६. [अव+रुधिर् आवरणे धातोर्णिनिः।· धकारस्य ककारो व्यत्ययेन]

अवरोधनम् रुकावट सं० वि० १९६, ९.११३.८. [अव+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोर्ल्युट्]

अवरोहन् अवरोहं कुर्वन् (विद्वज्जनः) ५.७८.४. [अव+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः शतृ]

अवर्त्त् आवर्त्तते ७.५९.४. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसीति' शपो लुक्]

अवर्त्तत वर्त्तमान आसीत् २५.१०. वर्त्तये २७.२५. वर्त्तते ३१.१७. **अवर्त्तन्त**=वर्त्तन्ते ५.३१.५. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अवर्त्तयत् वर्त्तयति २.११.२०. वर्त्तमानं कारयति ऋ० भू० १४४. वे० को०, ६.८.३. **अवर्त्तयः**=प्रवर्त्तय १.१२१.१३. [वृत्तु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिचि लङ्]

अवर्त्तिम् अवर्त्तमानाम् (ऐश्वर्यसम्पत्तिम्) ३.५८.३. अवाच्यम् १.११८.३. अमार्गम् ५.७६.२. [वृतु वर्तने (भ्वा०) धातोः 'इञ् अजादिभ्यः' वार्त्तिकेन इञ्। बाहुलकाद्वा इः प्रत्ययः। नञ्समासः]

अवर्त्या अवर्त्तनीयानि (आन्त्राणि=उदरस्थाः स्थूला नाडीः) ४.१८.१३. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्ण्यत्। नञ्समासः]

अवर्त्रः अनिवारणीयः (अग्निः=राजा) ६.१२.३.

अवर्द्धताम् वर्धयतः २८.१५. वर्धयताम् २८.१७. वर्धेत २८.६. **अवर्धन्**=वर्धयेयुः ३.३५.९. वर्धेरन् १२.२०. अ०—अवर्धयन् ३३.६४. वर्धन्ताम् ५.२९.११. वर्धयन्ति ५.३१.१०. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। अवर्धन् प्रयोगे व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अवर्धत वर्धते १.३३.११. **अवर्धन्त**=वर्धन्ते १.७५.७. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अवर्धन् वर्धन्तम् (सखायम्) ५.२९.११.

अवर्धयत् वर्धयेत् २८.२२. वर्धयेत २८.१९. वर्धयति २८.२१. वर्धयन्ति २८.३६. **अवर्धयन्**=वर्धयन्ति २१.५१. वर्धयन्तु २०.६८. समुन्नयेयुः २०.७३. वर्धयेयुः २८.४१. **अवर्धयन्**=वर्धयन्तु ३.१.४. **अवर्धयः**= वर्धयति २.११.१५. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिचि लङ्]

अवर्षीः वर्षयति ५.८३.१०. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अवर्ष्याय अविद्यमानासु वर्षासु भवाय (पुरुषाय) १६.३८. [वर्षाप्राति० भवार्थे यत्। नञ्समासः]

अवलिप्ताः अवलिप्तान्युपचितान्यङ्गानि येषान्ते (पशवः) २४.३. [अव+लिप उपदेहे (तुदा०) धातोः क्तः]

अववाति विनिग्रहेण गच्छति १.५८.५. [अव+वा गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

अवविद्धम् अताडितम् (तौग्र्यम्) १.१८२.६. [अव+व्यध ताडने (दिवा०) धातोः क्तः]

अववृत्रन् वर्त्तन्ते, प्र०—अत्र 'वृतु वर्त्तने' इत्यस्माद्वर्त्तमाने लङ्, व्यत्ययेन परस्मैपदं प्रथमस्य बहुवचने 'बहुलं छन्दसि' इति रुडागमश्च १.१६४.४७. आवृण्वन्ति ३.३२.१५.

अववृत्रन् अर्वाचीनो वृत्र इवाचरन् (राजशिल्पी) प्र०—अत्राचारे सुबन्तात् क्विप् १०.१९. [अव+वृत्र प्राति० आचारेऽर्थे क्विप्। ततः शतृ]

अववृत्रन्त विरोधेन धनं प्राप्नुवन्तु ४.२४.४. (अव+वृत्रप्राति० आचारेऽर्थे क्विप् । ततः लङ्, अड-भावश्च]

अवव्ययन् दूरीकुर्वन् (सविता=सूर्यः) ४.१३.४. [अव+व्यय गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ]

अवशत् कामयते २.२२.१. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लङ् । वहुलं छन्दसीति शपो लुङ् न । वष्टि कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

अवसम् रक्षणादिकम् १.९३.४. रक्षणं स्वाम्यर्थं वा ३.६१. **अवसः**=रक्षादेः ५.५७.७. कमनीयस्य (विदुषः जनस्य) ५.२२.३. रक्षणादेः ३.५१.६. रक्षणस्य ४.२१.१०. **अवसा**=रक्षणाद्येन १.१२४.१३. रक्षणादिना १.१०७.३. पालनादिना १८.३१. रक्षाविद्याप्रवेशादिकर्मणा सह १.२२.११. विज्ञानेन तदुपकारकरणेन वा १.१७.६. अन्नादिना प्र०—अव इत्यन्ननाम निघं० २.७, ५.७६.५. **अवसाम्**=रक्षणादीनाम् ४.२३.३. **अवसि**=रक्षणादौ कर्मणि ५.६५.५. **अवसे**=अन्नाद्याय ४.२०.२. रक्षणादिने २.२९.१. रक्षणाय बह्वन्नाय वा ७.१.२. कामनायै २.३४.१४. सम्यक् रक्षा के लिए १.१३. ज्ञानाद्याय ६.२१.९. रक्षकाय (सभाध्यक्षाय) १.१२७.४. प्रवेशाय १.२२.१०. रक्षणादये १.२२.६. रक्षणाय ३४.२९. विद्यादिसद्गुणप्रवेशाय ५.१७.१. रक्षणादिप्रयोजनाय १.४८.१४. क्रियासिद्ध्येषणायै १.१७.२. विजयाऽऽगमाय १.३५.४. धर्मात्मनां रक्षणाय दुष्टानां च हिंसनाय ४.३.१. [अव रक्षणगतिकान्तिप्रीत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अत्यविचमि०' उ० ३.११७. सूत्रेणासच् । अवसाय—पथ्यदनम्, अवतेर्गत्यर्थस्यासो नामकरणः नि० १.१७. स्यतिरुपसृष्टो विमोचने नि० १.१७. अवसे अवनाय नि० २.२४.]

अवसत् वसेत् १.१४४.२. [वस निवासे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अवसर्ज्जनाय त्यागाय १२.६४. [अव+सृज विसर्गे (द्वि०) धातोर्ल्युट्]

अवसर्प्पति दुष्टेभ्यो विरुद्धं गच्छति १६.७. [अव+सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

अवसानम् अवकाशम्, भा०—यथायोग्यमवकाशम् ३५.१. अवकाशमधिकारं वा १२.४५. **अवसानाः**=अन्ते समीपे स्थिताः (युवतयः=प्राप्तयौवनाः स्त्रियः) ३.१.६. [अव+षोऽन्तःकर्मणि धातोर्ल्युट् । प्रतिष्ठा वा अवसानम् कौ० ११.५.]

अवसान्याय अवसानव्यवहारे साधवे (पुरुषाय) १६.३३. [अवसानप्राति० 'तत्र साधु' इत्यर्थे यत्]

अवसाय रक्षणाद्याय १.१०४.१. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसच्, तस्मै]

अवसितासः कृतनिश्चयाः (विद्वांसोऽविद्वांसो जनाः) ४.२५.८. [अव+षोऽन्तःकर्मणि धातोः क्तः । 'द्यतिस्यति०' सूत्रेणेत्वम्]

अवसृज दूरीकुरु ३.४.१०. **अवसृजत्**=विनिग्रहेण सृजति १.५५.६. अवसृजेत् १.१७४.४. **अवसृजतम्**=निष्पादयतम् १.१५१.६. **अवसृजन्तु**=सनिषेधं निःसारयन्तु ५.२.६. **अवसृजः**=संयोजयेः १.८९.५. **अवसृज**=विनिग्रहेण सृजति १.१३.११. [अव+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लोट्]

अवसृजन् अवसर्गं कुर्वन् (वनस्पतिः=वटादिः) २.३.१०. विविधया विद्ययाऽलङ्कुर्वन् (विद्वज्जनः) १.१४२.११. [अव+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः शतृ]

अवसृष्टः आज्ञप्तः पुरुषः २०.४५. **अवसृष्टा**=शत्रूणामुपरि निपतिता (सेना) ६.७५.१६. प्रेरिता (सेनानी पत्नी) १७.४५. [अव+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तः]

अवसृष्टासः सुशिक्षिताः (अश्वासः=अश्वाः) २०.७८. [अव+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तः । प्रथमाबहुवचनम्]

अवसै निश्चयाय, प्र०—अत्र षोधातोः क्विप् 'वाच्छन्दसि' इत्याकारलोपाऽभावः ३.५३.२०. [अव+षोऽन्तःकर्मणि धातोः क्विप्]

अवस्तात् अधस्तात् ३.२२.३. पीछे के समय में ८.९. अधस्थाः (आपः=जलानि) १२.४९. अर्वाचीनात् समयात् ८.९. [अवर प्राति० अस्तातिः प्रत्ययो दिग्देशकालेषु । 'विभाषाऽवरस्य' सूत्रेण अव् आदेशः]

अवस्तृणामि विनिग्रहेणाऽऽच्छादयामि ५.२५. [अव+स्तृञ् आच्छादने (स्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन श्ना]

अवस्थात अवतिष्ठत ५.५३.८. **अवस्थाम्**=अवतिष्ठेयम् २.२७.१७. अवतिष्ठस्व २.२८.११. **अवस्थाः**=अवतिष्ठन्ति ५.१९.१. [अव+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अवस्थाः वस्ते ३.३२.११. [वस आच्छादने धातोर्लङ्]

अवस्थाः अवतिष्ठन्ति विरुद्धं प्राप्नुवन्ति यासु ता वर्त्तमाना दशाः ५.१६.१. [अव+ष्ठा गतिनिवृत्तौ 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.३.१०६ सूत्रेण अङ् स्त्रियाम् । ततः टाप्]

अवस्परत् पालयति ६.४२.४. [अवस् उपपदे पॄ पालनपूरणयोः (चु०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

अवस्पर्त्तः अवसा रक्षणेन दुःखात्पारकर्त्तः (बृहस्पते=परमेश्वर सभेश वा) २.२३.८. [अवस् उपपदे पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोस्तृचि सम्बुद्धिः]

अवस्पृधि अभिकाङ्क्ष ५.३.६. [अव+स्पृ प्रीतिपालनयोः (स्वा०) धातोर्लोट् 'बहुलं छन्दसीति' विकरणस्य लुक्]

अवस्फूर्जते अधो वज्रवद् घातं कुर्वते (विद्युते) २२.२६. [अव+टुओस्फूर्जा वज्रनिर्घोषे (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अवस्फूर्जन् अर्वाचीनं घोषं कुर्वन् (प्राणी) १५.१६. [अव+टुओस्फुर्जा वज्रनिर्घोषे (भ्वा०) धातोः शतृ]

अवस्य विरोधेनाऽन्तं प्रापय ४.१६.२. निश्चिनुहि ६.४०.१. [अव+षोऽन्तकर्मणि (दिवा०) धातोर्लोट्]

अवस्यते आत्मनोऽवो रक्षणादिकमिच्छते १.११६.२३. [अव रक्षणादिषु धातोर् असुन् । तत आत्मन इच्छायां क्यच् ततः शतृ]

अवस्यवः आत्मनोऽवमिच्छवः (जनाः) १.१३१.३. आत्मनोऽवो रक्षणादिकमिच्छवः (मनुष्याः) १.१०१.१. आत्मनोऽवो रक्षणादिकमिच्छन्तस्तच्छीलाः (ऋत्विजः), प्र०—अत्र अवधातोः 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' उ० ४.१९६ इति भावेऽसुन् ततः 'सुप आत्मनः क्यच्' इति क्यच् प्रत्ययः, ततः 'क्याच्छन्दसि' अ० ३.२.१७० अनेन ताच्छील्य उः प्रत्ययः १.१४.५. **अवस्यवे**=रक्षामिच्छवे (ब्रह्मणे=परमात्मने) अवस्युम्=आत्मनोऽवं रक्षणमिच्छुं कामयमानं वा (जनम्) ५.७५.८. **अवस्युः**=आत्मनोऽवो रक्षणमिच्छुः (कविः=मेधाविजनः) ५.३१.१०. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरसुन् । अवस्पदात् 'सुप आत्मनः क्यच्' इति क्यच् । 'क्याच्छन्दसी' ति उः प्रत्ययः । अयं वाऽवस्युरशिमिदो योऽयं (वातः) पवते श० १४.२.२.५.]

अवस्यूः आत्मनोऽव इच्छुः, भा०—स्वात्मवत्सर्वेषां रक्षकः (विद्वज्जनः) १८.४५. योऽवसीव्यति तारादितन्तून् सन्तानयति वा सः (भगवान्) ५.३२. अपने भक्तों धर्मात्माओं को अन्नादि पदार्थ देने की सदा इच्छा करने वाला (भगवान्) आर्याभि० २.१७, ५.३२. [अवस्युव्याख्यातो रक्षणार्थे । अन्यत्र—अव+सिवु तन्तुसन्ताने (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । वकारस्य ऊठ्]

अवस्युवम् आत्मनोऽवमिच्छन्तीम् (विदुषीम्) ५.४६.१. [अवस्युपदे द्रष्टव्यः । अम् प्रत्यये 'तन्वादीनां छन्दसि बहुलम्' अ० ६.४.७७. वार्त्तिकेन उवङ्]

अवस्रन् वसन्ति ४.२.१९. [वस निवासे (भ्वा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.८. सूत्रेण रुडागमः]

अवस्रजेत् वैपरीत्येन गमयेत् १.१२९.६. [अव+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लिङ् । रेफादेशश्छान्दसः]

अवस्रवेत् समन्ताद् दण्डयेत् १.१२९.६. [अव+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

अवस्रसः अवसारयति २.१७.५. [अवपूर्वकसृ गतौ धातोश्छान्दसं रूपम्]

अवस्वन्याय अर्वाचीनेषु स्वनेषु भवाय (मनुष्याय) १६.३१. [अव+स्वन अवतंसने, शब्दे च (भ्वा०) धातोरच् । ततो भवार्थे यत्]

अवहत् प्राप्नोति ३.५३.६. **अवहन्**=प्राप्नुवन्ति ४.३३.२. प्राप्नुयुः १.५१.१०. **अवहः**=प्राप्नुहि ५.३१.८. वहति प्राप्नोति २.१३.८. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अवहन् अवहन्ति ५.३२.१. अवहन्यात् ५.२९.४. [अव+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ् । अडभावश्च]

अवहन्ता विरुद्धस्य हननकर्त्ता (इन्द्रः=राजपुरुषः) ४.२५.६. [अव+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोस्तृच्]

अवहितः अवस्थितः (विद्वान्) १.१०५.१७. [अव+डुधाञ् धारणपोषणयोर् धातोः क्तः । 'दधातेर्हि' रिति हिरादेशः]

अवंशात् असन्तानात् ७.५८.१. **अवंशे**=अविद्यमाने वंश इव वर्त्तमानेऽन्तरिक्षे २.१५.२. अविद्यमानो वंशो ययोस्तेऽन्तरिक्षस्थे (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ४.५६.३. [नञ्-वंशयोः समासः । वंशः=टुवम उद्गिरणे (भ्वा०) धातोः शः प्रत्ययः । स च द्विविधः=जन्मना विद्यया च]

अवः रक्षेः १.१२१.१२. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लङ् । आडभावश्च]

अवः रक्षणम् ४.१.२०. अवनम् रक्षणम्, प्र०—अत्र भावेऽसुन् १.१७.१. रक्षणादिकम् ३३.१७. रक्षकम् (मैन्यम्) १.११९.४. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरसुन् प्रत्ययः]

अवः अधस्तात् १.१६४.१७. अधोमुखम् १.१३३.६.

अवस्तात् १.१६४.१८. [अवरप्राति० दिग्देशकालेष्वर्थेषु 'पूर्वाधरावराणामसि पुरधवश्चैषाम्' अ० ५.३.३९. सूत्रेण असिः प्रत्ययः । अव् आदेशश्च]

अवाऽख्यत् प्रख्यापयेत् १.१६१.४. [अव+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोर्लुङ् । 'अस्यतिवक्ति०' सूत्रेण अङ् प्रत्ययः]

अवाचः दुष्टवचनस्य ४.२५.६. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोः 'क्विप् वचिपृच्छ्या०' अ० ३.२.१७८. वार्त्तिकेन क्विप् दीर्घश्च]

अवाचि उच्यते ६.३४.५. [वच परिभाषणे धातोः कर्मणि लुङ्]

अवाजति अवजानाति प्रक्षिपति वा १.१६१.१०. [अव+अज गतिक्षेपणयोर्धातोर्लट्]

अवाजिनम् अविद्यमाना वाजिनो यत्र सङ्ग्रामे तम् ३.५३.२३. [नञ् वाजिन् पदयोः समासः । वाजिन्= अश्वनाम निघं० १.१४.]

अवाट् वहसि १९.६६. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । सिचो लुक् छान्दसः]

अवातः अविद्यमानो वातो हिंसनं यस्य (विदुषः सन्तानः) १९.५३. वायुर्वर्जितः (अग्निः) ६.१६.२०. अहिंसितः (इन्द्रः=दुःखविदारको जनः) ६.१८.१. **अवाता**=वायुविरहा (स्थिरा स्त्री) ६.६४.५. **अवाताः**= अविद्यमानो वातो वायुः कम्पनं यासां ताः (नद्यः) १.५२.४. पतीनप्राप्ता (युवतयः=स्त्रियः) ६.६७.७. वायुकम्पादि-रहिताः (पृथिवीः) १.६२.१०. **अवाते**=निर्वाते (समये) ६.६४.४. [वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातो क्तः । 'निर्वाणोऽवाते' सूत्रेण वातार्थे नत्वं न भवति । नञ्समासः । वातः पदनाम निघं० ५.४.]

अवातिरत् अधः प्रापयति १.१०१.५. नीचे गिराता है तथा उन डाकुओं को मार ही डालता है आर्याभि० १.४४., ऋ० १.७.१२.५. **अवातिरतम्**=उल्लङ्घयतम् १.१५२.१. तमो हिंस्तः, प्र०—अवतिरतिरिति वधकर्मा निघं० २.१९, १.९३.४. **अवाऽतिरः**=विनिग्रहेण शत्रुबलं प्लावयति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने शश्च १.११.७. अवतरेत् १.१३१.४. [अव+तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन श प्रत्यय इत्वे च रूपम् । अवतिरतिः वधकर्मा निघं० २.१९. अवातिरत्=अवाहन् नि० २.२१.]

अवात्सीः निवासं कृतवान् ऋ० भू० २८९ वे० को०, अथर्व० १५.११.२. [वस निवासे+लुङ्]

अवाथ रक्षेत ७.४०.३. अवाथः=रक्षेताम् ७.६१.२. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लेटि आटि च रूपम्]

अवादीमहि सर्वाणि दुःखानि क्षाययेम नाशयेम, प्र०—अत्र दीङ्क्षये इत्यस्माल्लिङर्थे लङ् 'बहुलं छन्दसि' इति श्यनो लुक् ३.५८. [अव+दीङ् क्षये (दिवा०) धातोर्लङ् । श्यनो लुक् च]

अवाऽधुः अधो धरन्तु १.१५८.५. [अव+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ्, सिचो लुक्]

अवाधूषत शत्रून् दुःखानि वा दूरीकुरुत १.८२.२. [अव+धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

अवान्तरदिशाभ्यः=उपदिशाभ्यः २४.२६. [सर्वत इव हीमा अवान्तरदिशः श० २.६.१.११.]

अवाभरत् अवबिभर्त्ति १.१३०.७. [अव+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अवाभिनत् अवभिनत्ति ४.१९.४. विद्दृणाति २.११.१८. [अव+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लङ्]

अवाऽयक्षि नाशयसि २०.१८. [अव+यज देवपूजा-संगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः सामान्ये लुङ्]

अवाऽयासिषम् विनिग्रहं करोमि, अ०—दूरतस्त्यजामि, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ३.४८. [अव+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लडर्थे लुङ् । 'यमरमनमातां सक् च' सूत्रेण सगिटौ]

अवारतः निरन्तरम् ऋ० भू० १३८. [अव+आङ्+रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः । पूर्वपदस्य च दीर्घः]

अवारयेथाम् निवारयेतम् १.११६.८. [वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोर्लङ्]

अवाराय अर्वाचीनमागमनाय ३०.१६. [अव+ऋ गतौ धातोर्घञ् प्रत्ययो भावे । अवार अवरम् नि० २.२३.]

अवारि व्रियेत ४.६.७. [वृञ् वरणे धातोः कर्मणि लुङ्]

अवार्य्याः अवारे भवाः (इक्षवः=इक्षुदण्डाः) २५.१. **अवार्याणि**=अवारेषु भवानि (पक्ष्माणि=परिग्रहाणि लोमानि वा) २५.१. **अवार्याय**=अवारे अर्वाचीने भागे भवाय (पुरुषाय) १६.४२. [अवारो व्याख्यातः । ततो भवार्थे यत्]

अवावशीताम् भृशं कामयेथाम्, प्र०—अत्र 'वश-कान्तौ' इत्यस्य यङ्लुगन्तः लङि रूपम् १.१८१.४. [वश

कान्तौ (अदा०) धातोः यङ्लुकि लुङि रूपम् । 'ग्रहिज्यादि०' सूत्रे श्तिपा निर्देशेन संप्रसारणं न भवति]

अवाशयः प्रकाशितवान् १.३१.४. [वाशृ शब्दे (दिवा०) धातोर्णिचि लङि रूपम् । अत्र प्रकाशने धातुर्धातूनामनेकार्थत्वात्]

अवाऽश्वैत् वर्द्धते १.२४.११. [टुओश्वि गतिवृद्ध्योः (भ्वा०) धातोर्लुङ् । छान्दसत्वात् 'ह्म्यन्तक्षण०' सूत्रेण वृद्धिप्रतिषेधो न । सिचश्च लुक्]

अवासयत् वासयति ६.३२.२. वासयेत् ३.७.३. आच्छादयति १.१६०.२. **अवासयः**=वासय ३.१.१७. वासयेः ६.१७.५. [वस निवासे (भ्वा०), वस आच्छादने (अदा०) द्वाभ्यामपि णिजन्ताल् लङ्]

अवाऽसृजत् अवसृजति २.१२.१२. **अवाऽसृजन्त**=अवसृजन्ते ४.१९.२. **अवाऽसृजः**=अवसृजति ६.४३.३. विनिग्रहेण सृज १.५७.६. [अव+सृज विसर्गे (तुदा०). धातोर्लङ्]

अवाऽस्य विरुद्धतया प्रक्षिप्य १.१४०.१०. [अव+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लोट्]

अवाऽस्वनीत् शब्दयेदुपदिशेत् ४.२७.३. [अव+स्वन शब्दे (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अवाहन् वहन्ति ५.४०.६. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लङ् । छान्दसं दीर्घत्वम्]

अवाऽहन् अवहन्ति ४.३०.१४. [अव+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ्]

अवाहाः त्यजति, प्र०—अत्र 'ओहाक् त्यागे' इत्यस्माल्लुङि प्रथमैकवचने आगमाऽनुशासनस्याऽनित्यत्वात् सगिटौ न भवतः १.११६.३. [अव+ओहाक् त्यागे (जु०) धातोर्लुङ्]

अवांसि रक्षणादीनि २७.३४. बहुविधानि रक्षणानि ४.५५.५. [अव रक्षणगतिकान्त्यादिषु (भ्वा०) धातोरसुन्]

अवाः रक्षेः, प्र०—अयं लेट्-प्रयोगः १२.७.७. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लेट्]

अविका रक्षिका (राज्ञी) १.१२६.७. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर् इन् प्रत्यये ऽविः । ततः 'अवेः कः' इति स्वार्थे कः । स्त्रियां टाप्]

अविक्रीतः न विक्रीतः ४.२४.९. [वि+डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये (क्र्या०) धातोः क्तः । नञ्समासः]

अविक्षत प्रविशन्ति १.१९१.४. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लुङ् । 'शल इगुपधात्०' सूत्रेण च्लेः क्सः]

अविक्षितासः अविक्षीणाः क्षयरहिताः (जनाः) ७.१.२४. [वि+क्षि क्षये धातो क्तः । नञ्समासः]

अविचाचलिः सर्वथा निश्चलः, भा०—जितेन्द्रियः (राजा) १२.११. [वि+चल कम्पने (भ्वा०) धातोर्यङ् । ततः 'सहिवहिचलिपतिभ्यो यङन्तेभ्यः किकिनौ वक्तव्यौ' अ० ३.२.१७१. वार्तिकेन किः प्रत्ययः । 'दीर्घोऽकितः' इत्यभ्यासस्य दीर्घः । नञ्समासः]

अविचृत्यम् अमोचनीयम् (पाशं=धर्म्यं बन्धनम्) १२.६५. [वि+चृती हिंसाग्रन्थनयोः (तुदा०) धातोः क्यप् । नञ्समासः । 'ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः' अ० ३.१.११०. सूत्रेण छान्दसत्वात् प्रतिषेधो न भवति]

अविजाताम् अप्रसूतां ब्रह्मचारिणीं (कुमारीम्) ३०.१५. [वि+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः, नञ्समासः, स्त्रियां टाप्]

अविजानन् न विजानन् (प्राज्ञः) १.१६४.५. [वि+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः शतृ । नञ्समासः]

अविज्ञाताः विशेषेणाऽज्ञाताः (त्र्यवयः=तीन प्रकार की भेड़ें) २४.५. न विशेषेण ज्ञाता विदिताः (पशवः) २४.९. [वि+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः क्तः । नञ्समासः]

अविड्ढि रक्ष, प्र०—अत्राऽवधातोः 'वाच्छन्दसि' इति लोट् सिपि अशादेशः २.१७.८. व्याप्नुहि प्र०—अत्र विष्लृधातोः शपो लुकि लोटि मध्यमैकवचने हेर्धि ष्टुत्वं जश्त्वं च 'छन्दस्यपि दृश्यते' इत्यडागमः १.११०.९. प्राप्नुहि २.२४.१. प्रविश २.३०.८. प्रवेशय ६.४४.९. [अव रक्षणकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशादिषु (भ्वा०) धातोर्लोट् । विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्वा लोट्]

अवित प्रविशत रक्षत ७.५९.६. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लोट् । इकारादेशश्छान्दसः]

अवितवे अवितुम् ७.३३.१. [अव रक्षणादिषु धातोस्तुमर्थे तवेन् प्रत्ययः]

अवितः रक्षक (राजन्) १.१२९.१०. **अविता**=रक्षकः (इन्द्रः=राजा) ६.४५.५. रक्षिता (विद्यार्थी) २७.४४. रक्षणादिकर्त्ता (विद्वान् ओषधिसमूहो वा) १.९१.९. रक्षको ज्ञापकः सर्वासु विद्यासु प्रवेशकः (परमेश्वरः) १.३६.२. **अवितारम्**=वर्धयितारम् (विद्वांसमुपदेशकमध्यापकं वा) ७.३६.८. प्रीणयितारम् (इन्द्रम्=परमैश्वर्यप्रदं राजानम्) २०.५०. ज्ञानादिप्रदम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.४७.११. **अवितारा**=रक्षितारौ

(अध्यापकोपदेशकौ) १.१८१.१. **अवितुः**=रक्षकस्य (सेनेशस्य) ७.२५.४. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोस्तृच् प्रत्ययः]

अवित्री रक्षिका (देवी=विदुषी माता) ६.६१.४. रक्षादिनिमित्ते द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी २.३२.१. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०)धातोस्तृच् । 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इति ङीप्]

अवित्सि वेद्मि १९.५६. जानीयाम् १२.८१. [विद ज्ञाने (अदा०) धातो रूपम्]

अविथुराः कम्पभयरहिताः (नायका जनाः) प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिकः कुरच् प्रत्ययः १.८७.१. [विथृ याचने (भ्वा०) धातोर्बाहुलकात् कुरच् । नञ्समासः । धातूनामनेकार्थत्वादत्र कम्पने]

अविदत् विन्दति प्राप्नोति १.५३.१. प्राप्नुयात् ३.५७.१. **अविदन्**=विजानन्ति, भा०—उपासन्ते ३३.६०. लभन्ते १.७२.६. **अविदम्**=लभेय ५.४२. अविदः=वेत्सि ५.८३.१०. **अविदाम**=विन्देमहि ८.५२. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लुङ् । लृदित्वादङ् । अविदाम विजानीमः नि० ६.२८]

अविदस्यम् अक्षीणम् (रयिं=धनम्) ७.३९.६. [वि+दसु उपक्षये (दिवा०) धातोर्ण्यत् । 'संज्ञापूर्वको विधिरनित्यः' वृद्ध्यभावः । नञ्समासः]

अविदीधयुम् द्यूतादिदुष्टकर्मरहितम् (राजानम्) ४.३१.७. [वि+दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोरौणादिक उः प्रत्यये नञ्समासः]

अविद्यया शरीरादिजडेन पदार्थसमूहेन कृतेन पुरुषार्थेन ४०.१४. अविद्या अर्थात् कर्मोपासना से स० प्र० ३१८, ४०.१४. **अविद्याम्**=अविद्या के स्वरूप को स० प्र० ३१८, ४०.१४. 'अनित्याऽशुचिदुःखाऽनात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या, इति ज्ञानादिगुणरहितं वस्तु कार्यकारणात्मकं जडं परमेश्वराद्भिन्नम् ४०.१२. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः 'संज्ञायां समजनिषदनिपत०' सूत्रेण क्यप् । नञ्समासः]

अविद्रियाभिः अच्छिद्राभिः (ऊतिभिः=रक्षणादिभिः) ३४.२८. या विदीर्यन्ते ता विद्रास्ता अर्हन्ति ता विद्रियाः, अविद्यमाना विद्रिया यासु क्रियासु ताभिः, प्र०—अत्र घञर्थे कविधानम् ततो घस्ताद्धितः १.४६.१५. [वि+दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः । ततोऽर्हत्यर्थे घः । नञ्समासः]

अविद्वान् विद्याहीनो भृत्योऽन्यो वा १.१२०.२. अजानन् सन् (सर्वोपकारी सखा गृहपतिः) ८.१३. [विद् ज्ञाने (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'विदेः शतुर्वसुरि' ति वसुः । नञ्समासः]

अविद्वेषम् वैरविरोध आदि रहित व्यवहार को सं० वि० १४१, अथ २.३०.१. [वि+द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोः 'हलश्चे' ति घञ् । नञ्समासः]

अविधत् परिचरेत् १.१३६.५. विधत्ते २.१.९. विदधाति ६.५४.४. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ् । धातोश्च ह्रस्वादेशः]

अविध्यत् विध्यति ५.४०.९. मुक्तो भवति ५.४०.५. [व्यध ताडने (दिवा०) धातोर्लङ् । धातोः सम्प्रसारणम्]

अविन्दत् प्राप्नोति १.१३०.३. जानाति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.२३.१४. लभते १.१०३.५. विन्देत् प्राप्नुयात् ३.३४.४. **अविन्दतम्**=लम्भयतम् १.९३.४. **अविन्दन्**=लभन्ते ३.१.३. लम्भयेरन् ३४.१७. प्राप्नुयुः १.६२.२. लभेरन् ५.४०.९. **अविन्दः**=लभते, अ०—विन्दते, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः, लडर्थे लोट् च १.६.५. विन्दसि प्राप्नोषि ६.७.५. प्राप्नुहि ६.६१.३. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लङ् । 'शे मुचादीनाम्' इति नुमागमः]

अविपालम् अवीनां रक्षकम् (जनम्) ३०.११. [अव्युपपदे पाल रक्षणे (चुरा०) धातोरण् प्रत्ययः]

अविप्रे अमेधाविनि (अज्ञे बालके) ६.४५.२. [वि+प्रा पूरणे (अदा०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.१.१३६. सूत्रेण कः नञ्समासः]

अविम् रक्षणादिनिमित्ताम् (महीं=महतीं भूमिम्) १३.४४. रक्षणादिहेतुम्, भा०—अन्नाद्युत्पादनेन रक्षिकाम् (गां=पृथिवीम्) १२.१७. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर् बाहुलकाद् इः प्रत्ययः ।

अविमान् बह्वयोऽवयो विद्यन्ते यस्मिन् सः (अग्निः=विद्वज्जनः ४.२.५. [अविर्द्रष्टव्यः पूर्वपदे। ततो मतुप् प्रत्ययः

अविरणाय युद्धनिवृत्तये १.१७४.८. [वि+रमु क्रीडायाम् (भ्वा०] धातोर्बाहुलकाद् नक् प्रत्ययो मकारलोपश्च । नञ्समासः । रणाय=रमणीयाय संग्रामाय नि० ४.८.]

अविवेनन् विगतकामः (राजा) ४.२४.६. [वेनति कान्तिकर्मा निघं० २.६, ततः शतृ । नञ्समासः]

अविवेनम् दुष्टकामनारहितम् (कर्म्म) ४.२५.३.[वि+वेनति कान्तिकर्मा निघं० २.६. धातोर्भावे घञ् । नञ्समासः]

अविवेषीः विशेषेण प्राप्नुयाः ४.१६.१०. व्याप्नुयाः ४.२२.५. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्लङ् । छान्दसं रूपम्]

अविवेः व्याप्नुहि ६.३१.३. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्लङ् । छान्दसं रूपम्]

अविव्यक् व्याजीकरोति ७.१८.८. [व्यच् व्याजीकरणे (तुदा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति श्लुः]

अविशस्ता अविहिंसितानि (गात्राणि=अङ्गानि) १.१६२.२०. अविच्छेदकः (गृध्नुः=अभिकाङ्क्षको जनः) २५.४३. [वि+शसु हिंसायां (भ्वा०) धातोः क्तः । नञ्समासः]

अविष्यन् रक्षणादिकं कुर्वन् (राजन्) १५.६२. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लृटः स्थाने शतृ]

अविश्वमिन्वन् अविद्यमानानि विश्वानि मिन्वन्ति येन तम् (रथं=रमणीयं यानम्) २.४०.३. **अविश्वमिन्वाम्**=असर्वसेविताम् (वाचं=वाणीम्) [विश्वोपपदे मिवि सेवने (भ्वा०) धातोः शतृ । नञ्बहुव्रीहिः]

अविषम् विषादिदोषरहितम् (पितुं=अन्नम्) २.२०. [विष विप्रयोगे (क्र्या०) धातोर् घञर्थे कः । नञ्बहुव्रीहिः। विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्वा कः प्रत्ययः । विषमिति उदकनाम निघं० १.१२.]

अविषः व्यापयेत् ३.१३.६. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्लुङ्, लृदित्वाद् अङ्, मध्यमैकवचनम्]

अविषा अविद्यमानं विषं येषु तानि (वनानि=जङ्गलानि) ६.३९.५. [नञ् विषपदयोर्बहुव्रीहिः]

अविष्टम् व्याप्नुतम् २.३०.६. प्राप्नुयातम् ४.५०.११. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लुङ् । आडभावश्च]

अविष्टाम् रक्षतम् १.१८५.९. प्राप्नुयाताम् ५.४३.२. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लुङ् आडभावश्च]

अविष्टु रक्षणादिकं करोतु, प्र०—अत्र अवधातोर्लोटि सिबुत्सर्ग इति सिब्विकरणः १.१११.५. [अव रक्षणादिषु धातोर्लोट् । सिब्विकरणः]

अविष्टो दोषेष्वप्रविष्टाः सन्तो रक्षतः (प्रजानुकूलान् राज्याधिकारिणः) ७.३४.१२. [विश प्रवेशे (तुदा०) धातोः क्तः नञ्समासः]

अविष्ठः अतिशयेन अविता (विद्वज्जनः) ७.२८.५. अतिशयेन रक्षकः (सर्वरक्षकोऽध्यापकः) ७.२९.५. [अव रक्षणादिषु धातोः कर्त्तरि तृच् । तृजन्तात् 'तुश्छन्दसि' अ० ५.३.५९. सूत्रेण इष्ठन् 'तुरिष्ठेमेयस्सु' अ० ६.४.१५४. सूत्रेण तृ-शब्दस्य लोपः]

अविष्यन् रक्षणं करिष्यन् (अश्वः=तुरङ्गः) ७.३.२. रक्षणादिकं करिष्यन् (परमेश्वरः) १.५८.२. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'लृटः सद्वा' सूत्रेण लृटः स्थाने शतृ]

अविष्यवे धर्ममव्याप्नुवते (रिपवे=शत्रवे) १.१८९.५. [विष्लृ व्याप्तौ धातोर्बाहुलकाद् युक् प्रत्ययः]

अविष्याम् रक्षाम्, प्र०—अत्र अवधातोरौणादिकः स्यः प्रत्ययः २.२८.३. [अव रक्षणादिषु धातोः स्यः प्रत्यय औणादिकः]

अविहर्यक्रतो ! न विद्यन्ते विरुद्धा हर्यताः प्रज्ञाः कर्माणि यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाध्यक्ष) १.६३.२.

अविह्रुतम् अकुटिलम् (क्षत्रं=राज्यं धनं वा) अखण्डितम् ३३.३०. [वि+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । 'ह्रु ह्वरेश्छन्दसि' अ० ७.२.३१. सूत्रेण धातोर्ह्रुः' आदेशः । नञ्समासः]

अविह्वरन्तम् अकुटिलगतिम् ४.३६.२. [वि+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः । नञ्समासः]

अविः रक्षणादिकर्त्री पृथिवी, सर्वरत्नाढ्या भूः २३.१२. योऽवति रक्षति सः (पशुविशेषः) १९.९०. रक्षिका प्रकृतिः २३.५४. भेड़ २१.३०. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वा० सूत्रेण इक् । इयं (पृथिवी) वा ऽअविरियं हीमाः सर्वाः प्रजाः अवति श० ६.१.२.३३. नासिकाभ्यामेवास्य वीर्यमस्रवत् । सोऽविपशुरभवन्मेषः श० ११.७.१.३.]

अव्युष्टाः अविषु रक्षणादिषूष्टाः कारितनिवासाः २.२८.९. [अविः=अव रक्षणादिषु धातोर् इक् प्रत्ययः । उष्टाः=वस निवासे धातोः क्तः प्रत्ययः । तयोः समासः]

अवीत् रक्षेत् ७:३४.१४ **अवीः**=रक्षेः ६.२५.१. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लुङ्, आडभावश्च]

अवीताः नाशरहिताः (क्रियाः) ४.४८.१. [वीताः=वि+इण् गतौ धातोः क्त प्रत्यये रूपम् । विशेषेणेता गता वीताः, ततो नञ्समासः]

अवीरता वीरभावरहितता ७.१.११. **अवीरतायै**=कातरतायै ३.१६.५. [वीरप्राति० भावे कर्मणि च तल्, स्त्रियां टाप् । ततो नञ्समासः]

अवीरते न विद्यन्ते वीरा यस्मिन् सैन्ये तस्मिन् ७.१.१९. [नञ्-वीरतापदयोः समासः]

अवीरयेथाम् विक्रमेथाम् १.११६.५. [वीरविक्रान्तौ (चुरा०) धातोर्लङि मध्यमद्विवचनम्]

अवीरहा विद्यासुशिक्षाभ्यां रहितान् कातरान् प्राप्नोति सः (विद्वान्) १.९१.१९. अवीरान् कातरान् मनुष्यान् हन्ति येन सः । प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति करणे क्विप् ४.३७. **अवीरहणौ**=वीरहननरहितौ (धूर्षाहौ=सूर्यविद्वांसौ) ४.३३. [वीरोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप् नञ्समासः]

अवीराः वीरतारहिताः (कृतघ्ना जनाः) ७.४.६. [नञ् वीरपदयोः समासः]

अवीविपत् अतिशयेन भ्रामयति १.१५५.६. [टुवेपृ कम्पने (भ्वा०) धातोर्णिचि लुङि च रूपम्]

अवीवृधध्वम् अवर्द्धयत १.१२४.१३. **अवीवृधन्**= अत्यन्तं वर्धयन्तु, अन्व०—नित्यं वर्द्धयन्ति, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् १.११.१. अत्यन्तं वर्धयन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् १.५.८. अत्यन्तं वर्धेयुः १५.५६. **अवीवृधन्त**= वर्द्धन्ताम् २१.६०. वर्धयन्तु ४.३२.१२. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिचि लुङि च रूपम्]

अवृकतमः न सन्ति वृकाश्चौरा यस्य सम्बन्धे सोऽतिशयितः (राजा) १.१७४.१०. [वृकः=वृक आदाने (भ्वा०) धातोः कः । ततोऽतिशये तमप् । नञ्समासः]

अवृकम् हिंसकप्राणिरहितम् (गृहम्) १.४८.१५. अचौर्य्यम् (सख्यं=मित्रत्वम्) ६.४८.१८. **अवृकस्य**= चौर्यादिदोषरहितस्य (मीदुषः=वीर्यसेचनसमर्थस्य यूनः) १.१५५.४. **अवृकः**=चोरादिसङ्गरहितः (सज्जनः) ६.२.२. अस्तेनः (जनः) ४.१६.१८. अस्त्येनः (श्रीमज्जनः) ६.१५.३. **अवृकाणि**=अविद्यमानचोराणि (सदनानि) १.५५.६. **अवृकाभिः**=अविद्यमानस्तेनादिभिः ३.३१.३. **अवृकाः**=अस्तेनाः (राजभृत्याः) ४.४.१२. अविद्यमाना वृकाश्चौरा येषु ते, भा०—स्तेयादिदोषरहिताः (पितरः= पालकाः पित्रादयः) १९.४९. अजातशत्रवः (पितरः) ऋ० भू० २५८. **अवृके**=अचोरे (जने) ६.४.४. **अवृकेभिः**= अचोरैः (विद्वज्जनैः) ७.१९.७. [वृक आदाने (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः । वृञ् वरणे धातोर्वा 'सृवृभूशुषि०' उ० ३.४१. सूत्रेण कक् प्रत्ययः। नञ्समासः। वृकश्चन्द्रमा भवति, विवृतज्योतिष्को वा विकृतज्योतिष्को वा विक्रान्तज्योतिष्को वा। आदित्योऽपि वृक उच्यते,··· श्वापि वृक उच्यते विकर्त्तनात्···वृद्धवाशिन्यपि वृक्युच्यते नि० ५.२०. वृको लाङ्गलं भवति, विकर्त्तनात् नि० ६.२६.]

अवृजिनाः अविद्यमानं वृजिनं वर्जनीयं पापं येषान्ते (पूर्णविद्या अध्यापकाः) २.२७.२. [वृजी वर्जने (रुधा०) धातोः 'वृजेः किच्च' उ० २.४७. सूत्रेण इनच् प्रत्ययः । नञ्बहुव्रीहिः]

अवृणक् वर्जयेत्, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.१०१.२. छिनत्ति २.१७.६. [वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लङ्]

अवृणीत वृणोतु २१.६१. वृणुयात् २८.२३. वृणोति २१.५९. स्वीकरोति ३.३६.८. वृणीते, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.१३. स्वीकुरुते ४.४३.२. **अवृणीतम्**= वृणीयाताम् १.१८०.४. **अवृणीध्वम्**=वृणते स्वीकुरुध्वम्, प्र०—अत्र प्रथमपक्षे लडर्थे लङ् १.१३. **अवृणीमहि**=वृणुयाम ३.२९.१६. स्वीकुर्वीमहि प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् ८.२०. **अवृणोत**=युद्धाय वृणुयात् ३३.२६. **अवृण्वत**=स्वीकुर्वन्तु २.३४.१. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातो रूपाणि]

अवृतः अस्वीकृतः (अग्निः=मुनिः) ६.१४.५. अनावृतः (जनः) १.१३३.७. अनाच्छादितः (रयिः=धनम्) ६.१४.५. [वृञ् वरणे (स्वा०) वृञ् आवरणे (चु०) धातोर्वा क्तः प्रत्ययः । नञ्समासः]

अवृत्सत वर्त्तन्ते ५.५५.३. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लुङ् । छान्दसं रूपम्]

अवृधन् वर्द्धयन्ति ३३.६०. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शः परस्मैपदञ्च]

अवृधान् अवर्धकान् हानिकरान् (अविदुषो जनान्) ७.६.३. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः । नञ्समासः]

अवृश्चत् वृश्चति छिनत्ति ७.१८.१७. [ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोर्लङ् । ग्रहिज्यादिसूत्रेण सम्प्रसारणम्]

अवृहः वर्धयेः ५.२९.१०. [वृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

अवेत् रक्षेत् ६.४७.१५. **अवेताम्**=रक्षेताम् १.७६.२. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

अवेदि विद्यते ७.८.२. [विद सत्तायाम् (दिवा०) धातोः कर्मणि लुङ् । विद ज्ञाने धातोर्वा रूपम्]

अवेनत् कामयते ४.३३.६. याचते ४.१८.११.

[वेनति कान्तिकर्मा नि० २.६. गतिकर्मा निघं० २.१४. अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

अवेपयः वेपय, प्र०—अत्र लोडर्थे लङ् ८.३६. [टुवेपृ कम्पने धातोर्णिचि लङ्]

अवेभिः न्यायपुरस्सरैः रक्षणादिभिः २०.५१. [अव रक्षणादिषु धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः]

अवेमहे दूरीकुर्महे ७.५८.५. सनिषेधं याचामहे, भा०—तिरस्कारं कारयामः १६.६. [अव+ई गतौ (अदा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। ई धातुश्च वी धातौ प्रश्लेषाद्]

अवेषन् व्याप्नुवन्ति १.१७८.२. [विष्लृ व्याप्तौ(जु०) धातोर्लङ्। बहुलं छन्दसीति शपः श्लुर्न भवति]

अवेष्टाः विरुद्धस्य गन्तारः (शत्रवः) १०.१०. [अव+इष् गतौ (दिवा०) धातोस्तृच्]

अवेहि आगच्छ ५.७८.८.

अवैतु प्राप्नोतु ५.४६.५.

अवोचन् वदन्तु १.११७.२५. वदेयुः १.१२२.१२. कथयेयुः १.१८२.८. **अवोचम्**=वदेयम् १.११६.२५. उपदिशेयं वदेयं च १.१८५.१०. **अवोचाम**=उपदिशेम १.१८९.८. उच्याम १५.२५. वदेम १.११४.११. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लुङ्। 'अस्यतिवक्ति०' सूत्रेणाङि 'वच उम्' इत्युमागमः]

अवोभिः रक्षणादिभिः ४.४१.२. नानाविध रक्षाओं से आर्याभि० २.२२, ३६.११. पालनैः १.१८५.११. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरसुन् प्रत्ययः]

अवोः रक्षकयोः 'अध्यापकोपदेशकयोः' प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति सलोपः ६.६७.११. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरसुन् प्रत्ययः। वर्णव्यत्ययेन सकारलोपः]

अव्यथमाना अभीताऽचलिता सती (स्त्री) ११.६३. पीडामप्राप्ता, भा०—व्यभिचारकामव्यथारहिता (राजपत्नी) १३.१६. **अव्यथमानाम्**=अपीडितामचलिताम् (प्रज्ञाम्) १४.११. [व्यथ भय सञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोः शानचि स्त्रियां टापि नञ्समासे च रूपम्]

अव्यथायै अविद्यमानशरीरपीडायै १५.१०. अविद्यमानसभयायै (स्त्रियै) १५.११. अविद्यमानपीडायै क्रियायै १०.२१. अविद्यमानेन्द्रियभयायै (स्त्रियै) १५.१३. अविद्यमानाऽऽत्मसञ्चलनायै (स्त्रि यै) १५.१२. अविद्यमानसार्वजनिकपीडायै १५.१४. [व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोः स्त्रियाम् अङ्, टाप् च। नञ्समासः]

अव्यथिभिः व्यथारहिताभिः (ऊतिभिः=रक्षाभिः) १.११२.६. **अव्यथिः**=अविद्यमाना व्यथिर्व्यथायस्य सः (कृतब्रह्मचर्यः पुरुषः) १.११७.१५. [व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् इः प्रत्ययः। नञ्समासः]

अव्यथ्याय व्यथितुमनर्हाय (देवाय=कामाय विदुषे) २.३५.५. पीड़ा से रहित (देवाय=काम के लिए) सं० वि० १०४, २.३५.५. [नञ्पूर्वात् व्यथभयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोः 'राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्य०' इत्यादिना क्यप् प्रत्ययान्तो निपातितः]

अव्ययम् नाशरहितम् (सुखम्) ७.३३.४. **अव्यया**=व्ययरहितानि नाशरहितानि (सुखानि) १.१३५.६. (व्यय-गतौ (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः नञ्समासः]

अव्याः रक्षेत् २.३८.१०. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

अव्युष्टाः अविषु रक्षणादिषूष्टा कारितनिवासाः (उषासः=दिनानि) २.२८.९. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर् इ प्रत्यये अविः। वस निवासे (भ्वा०) धातोः क्त-प्रत्यये=उष्टः। ततः समासः]

अव्रणम् अच्छिद्रमच्छेद्यम् (ब्रह्म) ४०.८. नैवैतस्मिँश्छिद्रं कर्त्तुं परमाणुरपि शक्नोति, अत एव छेदरहितत्वादक्षतम् (ब्रह्म) ऋ० भू० ३६, ४०.८. न यस्य कर्हिचिच्छेदो भवति तद् (ब्रह्म) प० वि०। जो अखण्डैकरस, अच्छेद्य, अभेद्य, निष्कम्प और अचल है इससे अंशांऽशिभाव भी जिसमें नहीं है क्योंकि जिसमें छिद्र किसी प्रकार से भी नहीं हो सकता वह (ब्रह्म) आर्याभि० २.२. [व्रण गात्रविचूर्णने (चु०) धातोः 'घञर्थे क विधानम्' इति भावे कः। नञ्समासः]

अव्रतम् सत्यभाषणादिव्यवहाररहितम् (दुर्जनम्) १.१३२.४ मिथ्याचारयुक्तम् (दुर्जनम्) १.१३२.४. ब्रह्मचर्यरीत्याऽऽचरणादिपालनरहितम् (मनुष्यम्) १.१०१.२ दुःशीलम् (दस्युम्) १.१७५.३. धर्म्यकर्मरहितम् (दुर्जनम्) ६.१४.३. **अव्रतान्**=सत्यभाषणादिरहितान् (असज्जनान्) १.५१.८. दुष्टाचारान् दस्यून् १.१३०.८. सत्याऽनुष्ठानाद् विरुद्धाचरणान् (दस्यून्) प० वि०। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास आदि धर्माऽनुष्ठान व्रतरहित, वेदमार्गोच्छेदक अनाचारी (जनों को) आर्याभि० १.१४. [व्रतम्=कर्मनाम निघ० २.१. आर्याभि० व्रतमिति कर्मनाम

वृणोतीति सतः । नि० २.१३. नञ्व्रतयोः समासः]

अव्रदन्त मृदूनि भवन्ति २.२४.३.

अशकम् शक्तवान् २.२८. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्लुङ् । लृदित्वादङ्]

अशक्नुवन् शक्नुयुः ५.४०.६. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर् लङि प्रथमबहुवचने रूपम्]

अशत प्राप्नुत १.८७.५. [अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

अशत्रुम् अविद्यमानाः शत्रवो यस्य तम् (विद्वज्जनम्) ५.२.१२. **अशत्रुः**=न सन्ति शत्रवो यस्य सः (नृपतिः) १.१०२.८. (नञ्शत्रुपदयोर्बहुव्रीहिः]

अशनिम् विद्युतम् ३९.८. वज्रम् ३.३०.१६. छेदनभेदनेन वज्रस्वरूपाम् (गभस्तिम्=किरणान्) १.५४.४. व्यापिकां घोषयुक्ताम् (विद्युतम्) २५.२. **अशनिः**= विद्युत् १.१४३.५. [अश भोजने (क्र्या०) अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्वा 'अर्त्तिसृधम्यश्यवितृभ्योऽनिः' उ० २.१०२ सूत्रेणानिः प्रत्ययः]

अशनिमानिव यथा बहुशस्त्राऽस्त्रः (इन्द्रः=राजा) ४.१७.१३. [अशनिर्व्याख्यातः । ततो मतुप्]

अशन्येव विद्युतेव २.१४.२.

अशपत सत्यपराधे आक्रुश्यत १.१६१.१२. [शप आक्रोशे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अशमिष्ट शाम्यति ५.२.७. **अशमिष्ठाः**=शमादिगुणान् गृहाण ८.२०. शमयेः ३.२९.१६. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोर्लुङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अशयत् शेते ३.१.११. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन परस्मैपदं शप् च]

अशसः अस्तवकान् (रक्षसः=दुष्टाचारान्) ४.४.१५. अहिंसकस्य (प्रजाजनस्य) २.३४.९. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे क विधानम्' इति कः प्रत्ययो भावे नञ्समासः । अन्यत्र शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः कः]

अशस्तिहा अप्रशस्तानां दुष्टानां हन्ता (राजा) ३३.९५. [शस्ति=शंसु स्तुतौ धातोः क्तिन् । ततो नञ्समासः, तदुपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप् ।]

अशस्तीः अप्रशंसिता निरुदकाः [सुपारा=मार्गान्) ७.१८.५. अप्रशंसनीयाः शत्रुक्रियाः १.१००.१०. अप्रशस्ताः शत्रुसेनाः ११.१५. अप्रशंसिताः (वनस्पतयः=वटादिवृक्षाः) ६.४८.१७. अहिंसाः ४.४८.२. अप्रशंसाः (शत्रुसेनाः) ६.६८.६. (शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः क्तिन्]

अशंसन् स्तुवन्ति १.६७.२. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अशंसिषम् प्रशंसेयम् ४.३.१६. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अशाम्यन् शाम्यन्ति १४.३१. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोर्लङ् । 'शमामष्टानाम्०' इति दीर्घः]

अशिक्षतम् पाठयतम् १.११२.१९. **अशिक्षः**= शिक्षय ६.३१.४. [शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अशिपदाः भोजनादिव्यवहाराय प्राप्ताः (नद्यः) ७.५०.४. [अश भोजने (क्र्या०) धातोरि प्रत्ययेऽशिः । पद गतौ धातोर्घञर्थे कप्रत्यये पदः । तयोः समासः]

अशिमिदाय यदस्यते भुज्यते तदन्नं तन्मेदते यस्मिँस्तस्मै रसाय ३८.७. [अशि=अश भोजने (क्र्या०) धातोरिः प्रत्ययः । तदुपपदे ञिमिदा स्नेहने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः प्रत्ययः]

अशिवस्य सर्वस्मै दुःखप्रदस्य (दस्योः) १.११७.३. अमङ्गलस्य (दुर्जनस्य) ६.४४.२२. **अशिवाः**=अमङ्गलाचरणाः (सखायः) ५.१२.५. अकल्याणकराः (भा०—अशुभाचरणानि दुष्टाश्च ३५.१०. **अशिवेन**=अमङ्गलकारिणा न्यायाधीशेन १.११७.१७. असुखेन १.११६.२४. [नञ्शिवयोर्बहुव्रीहिः । शिवं सुखनाम निघं० ३.६.]

अशिवासः असुखप्रदाः (नावः) ७.३२.२७. [नञ्शिवयोबर्हुव्रीहिः]

अशिशात् छेदयेत् ७.१८.२४.

अशिश्नत् हिनस्ति ७.२८.३.

अशिश्रयुः श्रयन्ति सेवन्ते, प्र०—अत्र लङि प्रथमस्य बहुवचने विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने श्लुः 'सिजभ्यस्त०' इति झेर्जुस् 'जुसि च, इति गुणः १.६२.२. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्लुः]

अशिश्रेत् आश्रयेत् ७.३८.१. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लिङ् । शपः श्लुश्च व्यत्ययेन]

अशिश्वीः वत्सरहिताः (धेनवः=गावः) १.१२०.८. अबालाः (युवतयः=ब्रह्मचारिण्यः) ३.५५.१६. बाल्याऽवस्था से रहित (युवतियां) स० प्र० ८५. [नञ् शिश्वोः समासः । शिशुः शो तनूकरणे धातोः 'शः कित् सन्वच्च' उ० १.२० सूत्रेण उप्रत्ययान्तः । समासे च 'सख्यशिश्वीति भाषायाम्' अ० ४.१.६२. सूत्रेण ङीष्]

अशीतम अश्नुते व्याप्नोति चराचरं यज्ञं सोऽतिशयित-

स्तत्सम्बुद्धौ स वा (भा०—अग्ने=जगदीश्वर, सूर्यविद्युत्प्रत्यक्षोऽग्निर्वा), प्र०—'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः २.२०. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर् इ प्रत्ययः, ततोऽतिशायने तमप्, पूर्वस्य च दीर्घः]

अशीतिः उपलक्षणमेतदसङ्ख्यस्य, भा०=बहवः (होमाः=देयानि आदेयानि वस्तूनि) २३.५८. [अष्टानां दशताम् अशीभावः, तिः प्रत्ययश्च निपात्यते 'पङ्क्तिविंशति०' अ० ५.१.५९. सूत्रेण अन्नमशीतिः । श० ८.५.२.१७. अन्नमशीतयः श० ९.१.१.२१.

अशीमहि प्राप्नुयाम ७.३२.२६. **अशीय**=व्याप्नुयाम्, प्राप्नुयाम् ५.७. प्राप्नुयाम् २.३३.६. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिङ्]

आशीर्दा आशीरिच्छां ददाति सः (पुत्रः) ८.५. [आङ्+शासु इच्छायाम्+क्विप् प्रत्यये आशीः तदुपपदे डुदाञ् दाने धातोः कः प्रत्ययः ।

अशीर्षा शिर आद्यवयवरहितः (अग्निः=परमात्मा) ४.१.११. [नञ्-शिरसोर्बहुव्रीहिः । 'शीर्षंश्छन्दसि' अ० ६.१.६० सूत्रेण शीर्षन् शिरसः समानार्थो निपात्यते]

अशुचत् शोधयति ७.९.४. [शुच शोके (भ्वा०) धातोर्लङ् । धातूनामनेकार्थत्वादत्र शोधनेऽपि]

अशुद्धाः न शुद्धा, अशुद्धा गुणाः, अ०—दोषाः, भा०—सर्वदोषाः १.१३. [शुध शौचे (दिवा०) धातोः क्त प्रत्यये शुद्धः । तस्य नञा समासः]

अशुषम् शोकरहितं हर्षितम् (इन्द्रं=सभासेनाध्यक्षम् १.१०१.२. अशुष्कम् (अधर्मिणं शत्रुम्) ६.३१.३. अशुष्कम् आर्द्रम् (शुष्णं=बलम्) २.१९.६. असुरं, दुःखम् ४.१६.१२. शोषरहितम् (अग्निम्) १.१७४.३. आर्द्रम् (पदार्थम्) २.१४.५. **अशुषस्य**=शोषणरहितस्य (जनस्य) ६.२०.४. [शुष शोषणे (दिवा०) धातो 'घंञर्थे कविधानम्' इति भावे कः । ततो नञ्समासः]

अशूद्राः अविद्यमानः शूद्रो येषान्ते (जनाः), न शूद्रा अशूद्राः (विद्वज्जनाः) ३०.२२.

अश्रृणवम् श्रृणोमि १९.४७. **अश्रृणोः**=श्रृणुयाः ७.२९.४. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लङ् । 'श्रुवः श्रृ चे' ति श्नुः प्रत्ययः, शृ आदेशश्च]

अशेम प्राप्नुयाम, प्र०—अत्र अशूङ् धातोः 'लिङ्याशिष्यङ्' इत्यङ्, सार्वधातुकसंज्ञया 'लिङः सलोपो०' इति सकारलोपः, आर्धधातुकसंज्ञया शपोऽभावः १.८९.८. व्याप्नुयाम, प्र०—'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति नियमाच्छपः स्थाने श्नुर्न १.२४.५. **अशेमहि**=प्राप्नुयाम २५.२१. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिङ् । व्यत्ययेन शप्]

अशेरन् शयीरन् १.१३३.१. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्लिङर्थे लङ्]

अशेवा असुखानि ७.३४.१३. [नञ्-शेवयोः समासः । शेवम्=सुखनामसु पठितम् निघं० ३.६. शेव इति सुखनाम शिष्यतेर्वकारो नामकरणः नि० १०.१७.]

अशेषसः निःशेषाः (क्षत्रियकुलोद्भवा राजपुरुषाः) ७.१.११. [शिष असर्वोपयोगे धातोरसुन् । ततो नञा समासः]

अशोचत दीप्यते ३.२९.१४. [शोचति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१७. ततो लङ्]

अशोचि प्रकाश्यते ७.८.१. [शोचति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१७. ततः कर्मणि लुङ्]

अश्नवत् प्राप्त होता है आर्याभि० १.३., ऋ० १.१.१.३. अश्नुते १.११३.१८. प्राप्नुयात् प्राप्नोति वा १.१.३. व्याप्नुयात्, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं शप् च १.९३.३. प्राप्नोति, प्र०—अत्र लेट् प्रयोगः, व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च १.१.३. **अश्नवन्त**=अश्नुवते ७.३०.४. **अश्नवाम**=प्राप्नुयाम ६.४९.१५. **अश्नवामहै**=प्राप्नुयाम १२.९१. **अश्नवै**=प्राप्नुयाम प्र०—लोट्प्रयोगोऽयम् २०.२३. [अशूङ् व्याप्तौ (भ्वा०) धातोर्लेट्]

अश्नम् मेघम् २.१४. **अश्नस्य**=मेघस्य, प्र०—अश्न इति मेघनाम निघं० १.१०., २.२०.५. व्यापकस्य (परमेश्वरस्य) ६.४.३. **अश्नः**=भोक्ता (विद्वान् शिल्पी) १.१६४.१. व्यापकः (यजत्रः=विद्वज्जनः) १.१७३.२. **अश्ना**=भोक्तव्यानि (वस्तूनि) ४.२८.५. [अशूङ् व्याप्तौ (क्र्या०) अश भोजने (स्वा०) धातोर्वा बाहुलकाद् नक् प्रत्ययः । अश्न इति मेघनाम निघं० १.१०. अश्ना=अशनवता मेघेन नि० १०.१२.]

अश्नाति भक्षण अर्थात् नाश करता है सं० वि० २१०, अथर्व० ९.६.३.१. भोजन करता है सं० वि० २१०. **अश्नामि** भुञ्जे २.११. [अश भोजने (क्र्या०) धातोर्लट्]

अश्नुतः व्याप्नुतः ८.५. **अश्नुताम्**=प्राप्नुताम् ३२.१६. **अश्नुते**=प्राप्नोति ६.२८.४. प्राप्त होता है स० प्र० ४२३, ९.८३.१. **अश्नुथ**=प्राप्नुथ ५.५४.१०. **अश्नुवन्ति**=प्राप्नुवन्ति ७.२२.८. **अश्नुवन्तु**=प्राप्नुवन्तु ६.२३.८. **अश्नुवे**=प्राप्नोमि १.१६४.३७.

अश्नुहि=व्याप्नुहि, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.५४.६. **अश्नोति**=व्याप्नोति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.६४.२. प्राप्नोति २.२४.८. **अश्नोतु**=व्याप्नोतु १.१७.६. प्राप्नोतु, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.५१.१२. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लेटि लोटि च रूपाणि । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । अश्नुते व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८.]

अश्नुवन् विद्यासुखेन व्याप्नुवन् (विद्वज्जनः) १.११६. २५. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अश्नेव योऽश्नाति भुङ्क्ते तद्वत् (राजपुरुषः) २.३०.४ [अश भोजने (क्र्या०) धातोर्बाहुलकाद् नक्, तद्वत्]

अश्मदिद्यवः मेघविद्याप्रकाशकाः (मरुतः=मनुष्याः) ५.५४.३. [अश्मा मेघनाम निघं० १.१०. द्युत् दीप्तौ धातोश्छान्दसं दिद्युरूपम् । तयोः समासः]

अश्मन् अश्मनि १७.१. मेघे, भा०—मेघमण्डले, प्र०—अश्मेति मेघनाम निघं० १.१०., १७.१. **अश्मनः**=पाषाणात् २.१.१. मेघस्य ६.४३.३. पाषाणस्य मेघस्य वा ३.२९.६. **अश्मना**=विषहरेण पाषाणेन १.१९१.५. **अश्मनि**=मेघमण्डले १.१३०.३. **अश्मनोः**=पाषाणयोर्मेघयोर्वा २.१२.३. **अश्मा**=अश्नुते व्याप्नोति स मेघः १७.६०. पाषाणवद् दृढम् (तनूः=शरीरम्) ६.७५.१२. पाषाणः २९.४९. **अश्मानम्**=मेघम् ४.१६.६. व्यापनशीलं मेघम् १.१२१.८. मेघमिव राजानम् ४.२२.१. अश्नुवन्तं मेघम् ५.३०.८. योऽश्नुते संहन्ति तं मेघम् २.३०.५. [अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोर्बाहुलकान् मन् प्रत्ययः । अश्मा मेघनाम निघं० १.१०. स्थिरो वो ऽअश्मा श० ९.१.२.५. शर्कराया अश्मानम् असृजत तस्माच्छर्कराश्मैवान्ततो भवति श० ६.१.३.५.]

अश्मनेव यथाऽश्मना तथा २.१४.६. [अश्मा मेघनाम निघं० १.१०. तद्वत्]

अश्मन्मयीम् मेघप्रचुराणामिव पाषाणनिर्मितानाम् (पुरां=शत्रुनगरीणाम्) ४.३०.२०. [अश्मन् प्राति० 'तत्प्रकृतवचने मयट्' अ० ५.४.२१. सूत्रेण प्राचुर्ये मयट् । टित्वान् ङीप् । अश्मन्मयीभिः=अश्ममयीभिः नि० ४.१९.]

अश्मन्वती वहवोऽश्मानो मेघाः पाषाणो वा विद्यन्ते यस्यां सृष्टौ नद्यां वा सा ३५.१०. [अश्मा मेघनाम निघं० १.१०. ततो मयट् । 'मादुपधायाश्चे०' ति मस्य वकारः]

अश्मव्रजाः येऽश्मसु मेघेषु व्रजन्ति (उस्राः=किरणाः) ४.१.१३. [अश्मन् उपपदे व्रज गतौ (भ्वा०) धातोर् मूलविभुजादित्वात् कर्त्तरि कः प्रत्ययः]

अश्मास्यम् अश्मनो मेघस्य मुख्यभागम् २.२४.४. [अश्मा मेघनाम निघं० १.१०. आस्यप्राति० भवार्थे 'शरीरावयवाच्च' इति यत्]

अश्याम् प्राप्नुयाम्, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणस्य लुक् १.९२.८. **अश्याम**=प्राप्नुयाम, प्र०—अत्र व्यत्ययेन श्यन् परस्मैपदं च १.११४.२. भुञ्जीमहि १.१३६.७. प्राप्त हों आर्याभि० १.४५, ऋ० १.८.५.२. भुञ्ज्महि ५.४१.१८. **अश्याः**=प्राप्नुयाः ४.५.७. भोगं कुर्याः १.६०.३. व्याप्नुयाः, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.६९.३. व्याप्नुहि १.७०.३. **अश्युः**=भुञ्जते १.७३.५. प्राप्नुयुः २.१९.८. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिङ् । व्यत्ययेन श्यन् परस्मैपदञ्च]

अश्रथ्नन् विमुक्तानि भवन्ति २.२४.३. [श्रन्थ विमोचने (क्र्या०) धातोः शतृ । नञ्समासः]

अश्रद्धान् श्रद्धारहितान् (अविदुषो जनान्) ७.६.३. [नञ्-श्रद्धयोः समासः । 'श्रदन्तरोरुपसर्गवत् वृत्तिः' अ० ३.३.१०६. वार्तिकेनोपसर्गवत् श्रद् उपपदे 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३ ३.१०६. सूत्रेण दधातेरङ् प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्]

अश्रद्धाम् अप्रीतिम् १९.७७. अप्रीति को सं० वि० १८७. [श्रद्धापूर्वपदे व्याख्यातम् । तस्य नञा समासः]

अश्रमासः श्रमरहिताः (जनाः) ६.२१.१२. [नञ्-श्रमयोर्बहुव्रीहिः । श्रमु तपसि खेदे च (दिवा०) धातोर्घञ्]

अश्रमिष्ठाः अतिशयेनाऽश्रान्ताः श्रमरहिताः (राजभृत्याः) ४.४.१२. [नञ्-श्रमयोर्बहुव्रीहिः । ततोऽतिशायने इष्ठन् प्रत्ययः]

अश्रवम् शृणोमि १.१०९.२. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शप् । अश्रवम्=अश्रौषम् नि० ६.६. अशृणवम् नि० ११.३९.]

अश्रायि श्रियेत सेव्येत १.५१.१४. आश्रयति ६.११.५. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

अश्रितम् असेवितम् (अग्निं=विद्युदाख्यम्) ४.७.६. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः । नञ्समासः]

अश्रीणीत श्रीणाति पचति ७.१७. [श्रीञ् पाके (क्र्या०) धातोर्लङ्]

अश्रीरम् अश्लीलममङ्गलमधर्माचरणम् ६.२८.६. [अश्लीलम्=पापकम् नि० ६.२३. रलयोरभेदः]

अश्रुभिः रोदनैः २५.९. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०)

धातोः 'अश्व्रादयश्च' उ० ५.२९. सूत्रेण डुन् प्रत्ययो रुडागमश्च]

अश्रेत् श्रयति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् च १.९२.५. श्रयेत्, प्र०—अत्र विकरणस्य लुक् लङ्प्रयोगश्च १५.२५. आश्रयति ४.१३.२. आश्रयेत् ४.६.२. **अश्रेः**=आश्रय ३.५४.११. सेवयेः ५.३३.२. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ् । शपो लुक्]

अश्रोत् शृणोति १.३९.६. शृणुयात् ७.३३.५. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसि' ति शपो लुक्]

अश्वकः अश्व इव गन्ता जनः, भा०—-पुरुषार्थी २३.१८. [अश्व प्राति० इवार्थे कन् प्रत्ययः]

अश्वजिते योऽश्वैर्जयति तस्मै (इन्द्राय=विद्वत्सभासेनेशाय) २.२१.१. [अश्वोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्]

अश्वत्थम् पिप्पलमिव १.१३५.८. **अश्वत्थे**=श्वः स्थाता न स्थाता वा वर्त्तते तादृशे देहे १२.७९. श्वः स्थास्यति न स्थास्यति वा तस्मिन्ननित्ये संसारे ३५.४. **अश्वत्थः**=योऽश्नुते सः (मेधावी जनः) ६.४७.२४. [प्रजापतिर्देवेभ्योऽनिलायत । अश्वो रूपं कृत्वा । सोऽश्वत्थे संवत्सरमतिष्ठत् । तदश्वत्थस्याश्वत्थत्वम् तै० ३.८.१२.२. अग्निर्देवेभ्यो निलायत । अश्वो रूपं कृत्वा । सोऽश्वत्थे संवत्सरमतिष्ठत् । तदश्वत्थस्याश्वत्थत्वम् तै० १.१.३.९. अश्वत्थो वनस्पतिरभवत् श० १२.७.१.९. तेजसो य एष वनस्पतिरजायत यदश्वत्थः ऐ० ७.३२. साम्राज्यं वा एतद् वनस्पतीनाम् (यदश्वत्थः) ऐ० ७.३२.८.१६. अश्वत्थं (पात्रं) भवति । तेन वैश्योऽभिषिञ्चति श० ५.३.५.१४. आश्वत्थेन (पात्रेण) वैश्योऽभिषिञ्चति तै० १.७.८.७]

अश्वदावन् योऽश्वान् व्याप्तिकरान् विज्ञानादिगुणान् ददाति तत्सम्बुद्धौ (गृहस्थ जन) ५.१८.३. [अश्वः=अशूङ् व्याप्तौ धातोरौणादिकः क्वन् । तदुपपदे ददातेर्धातोर्वनिप् प्रत्ययः]

अश्वदाः या अश्वादीन् पशून् प्रददति ताः (विदुष्यः स्त्रियः) १.११३.१८. अश्वानग्न्यादींस्तुरङ्गान् वा ददति (धनाढ्या जनाः) ५.४२.८. [अश्वोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः । स्त्रियां टाप्]

अश्वपतिभ्यः अश्वानां पालकेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२४. [अश्वो व्याख्यातः । पतिः=पा रक्षणे (अदा०) धातोरौणादिको डतिः । तयोः समासः]

अश्वपम् अश्वानां रक्षकं शिक्षकम् (सज्जनम्) ३०.११. [अश्वोपपदे पा रक्षणे धातोः कः प्रत्ययः]

अश्वपर्णाः अश्वानां पर्णानि पालनानि यासु सेनासु ताः (सेनाः) २९.५७. महान्तः पर्णाः पक्षा येषान्ते (वीरजनाः) ६.४७.२१. **अश्वपर्णैः**=अग्न्यादीनामश्वानां पतनैः सह वर्त्तमानैः (रथेभिः) १.८८.१. [अश्वपर्णयोर्बहुव्रीहिः । अश्वो व्याख्यातः । पर्णः=पॄ पालनपूरणयोर्धातोः 'धापॄवस्यज्यतिभ्यो नः' उ० ३.६. सूत्रेण नः प्रत्ययः अश्वपर्णैः= अश्वपतनैः नि० ११.१४.]

अश्वपेशसम् अश्वादीनां पेशो रूपं यस्यास्ताम् (रातिं=दानम्) २.२.१३. शीघ्रगन्तृ पेशोरूपमिव रूपं यस्यां ताम् (रातिं=विद्यादिदानक्रियाम्) २.१.१६. [अश्वपेशसोः समासः । पेशस् रूपनाम निघं० ३.७.]

अश्वबुध्यम् अश्वा बुध्यन्ते सुशिक्षन्ते येन तम् (रयिं=विद्याराज्यश्रियम्) १.९२.८. **अश्वबुध्यान्**= अश्वान् वेगवतस्तुरङ्गान् वा बोधयन्त्यवगमयन्त्येषु तान् (सङ्ग्रामान्) प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थो बाहुलकादौणादिकोऽधिकरणे ल्यप् च १.९२.७. अश्वानन्तरिक्षे भवानग्न्यादीन् चालयितुं वर्द्धितुं बुध्यन्ते तान् (वाजान्=विज्ञानवेगयुक्तान् सम्बन्धिनः) १.१२१.१४. [अश्वोपपदे बुध अवगमने धातोरधिकरणे बाहुलकाल् ल्यप्]

अश्वम् तुरङ्गम् ६.४६.२. विद्युदाख्यमग्निम् १.११७ ९. विद्युतम् १.११७.४. व्याप्तुं शीलं (मेघम्) १३.४२. शुक्लवर्णं वाष्पाख्यम् ऋ० भू० १९३. तुरङ्गादिकम् १२.७८. व्यापनशीलं विद्युतम् १.११८.९. व्यापकत्ववेगादिगुणसमूहम् ९.७. अध्वव्यापिनमग्निम् १.११६.६. तुरङ्गमिवाशुगामिनीम् (विद्युतम्) ३.५३.११. अश्ववत् शीघ्रं गमयितारम् (अग्निम्) १.१६२.१५. आशु सुखकरं बोधम् ४.३९.५. आशुगामिनम् (वायुम्) २९.१३. वेगवन्तम् (अश्वम्) २५.३७. वेगवन्तम् (पदार्थम्) १.१६१.७. महान्तम् (भा०—शरीरात्मनोर्महद् बलम्) २२.४. **अश्वस्य**=आशुगमकस्य द्रव्यस्य १.११६.१२. महान् गृहस्थाश्रम के सं० वि० १०५, २.३५.६. व्याप्तिकारकाऽग्न्यादेस्तुरङ्गस्य वा १.५३.२. महतो व्याप्तिविद्यस्य (उषसः=प्रभातस्य) ४.३९.३. महतः (मेघस्य) प्र० — अश्व इति महन्नाम निघं० ३.३, ५.८३.६. सकलशुभगुणव्याप्तस्य (राज्ञः) ४.३९.६. वह्न्यादेः ३७.९. तुरङ्गस्य २५.४२. बलेन युक्तस्य जनस्य २३.६२. बलवतः, भा०— बलिनो जनस्य २३.६१. वीर्यप्रदातुर्महतः (विद्वज्जनस्य) २,३५.६. तुरङ्गस्येवाग्निगृहस्य १.११६.७. व्याप्तुमर्हस्य

राज्यस्य १.१२१.१२. सूर्यस्याऽग्नेर्वायोर्वा ऋ० भू० १४७. अश्ववद्वीर्यवतः (जनस्य) १.१६४.३४. शीघ्रगामी सूर्य के १.१६४.३५. **अश्वः**=आशुगन्ता तुरङ्गः ६.३.४. महत्तत्त्वम्, भा०—महदाख्यं द्वितीया परिणतिः २३.५४. योऽश्नुते व्याप्नोति मार्गान् सः (अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१९. व्याप्तिशीलः (प्राणी) २५.४५. उत्तमस्तुरङ्गः ३.२९.६. आशुगामी (विद्युदादिः) १.१६१.३. वाजी १५.६२. आशुगामी वायुरग्निर्वा १.१६४.२. व्याप्तिशीलोऽग्निः १.१६२.२२. **अश्वयोः**=क्षिप्रं गमयित्रोः ६.४७.९. **अश्वा**=व्याप्तौ (इन्द्राग्नी=वायुविद्युतौ) ६.५९.३. आशुगामिनौ (हरी=अग्निजले) ४.३३.१०. तुरङ्गौ महान्तौ जनौ वा ६.६७.४. वेगेनाऽध्वनि व्याप्तिशीलौ युग्मौ पदार्थौ ४.३४.९. अश्वौ १.१७४.५. **अश्वान्**=वेगवतः किरणान् १.९२.१५. शीघ्रगामितुरङ्गान् ७.३४.४. वेगवतस्तुरङ्गान् १.१०४.१. तुरङ्गादीन् ६.४७.२३. आशुगामिनोऽग्न्यादीन् तुरङ्गान्वा ३३.४. सद्योगामिनोऽग्न्यादीन् ४.४३.६. महतः पदार्थान् १.१०३.५. महतो बलिष्ठान् (शूरान् जनान्) ६.७५.१३. अत्युत्कृष्टवेगवतः (विद्वज्जनान्) १.१७१.१. घोड़ों को स० प्र० २४७, ३४.६. अश्वादीनि सेनाऽङ्गानि १३.७०. **अश्वानाम्**=वेगवतामग्न्यादिपदार्थानाम् ५.१८.५. **अश्वाय**=सद्यो गमनाय ५.३१.५. तुरङ्गाद्याय ३.५९. अग्नये (विद्युते) १.१६२.१६. **अश्वाः**=आशुगामिनस्तुरङ्गाः ३.७.२. व्याप्तिशीलाः किरणाः, प्र०—अश्व इति किरणनाम, निघं० १.५, ३.६.८. वेगवन्तः (देवाः=विद्वांसः) ९.६. महान्तो विद्वांसः, प्र०—अश्व इति महन्नाम निघं० १.१४, ६.२४.६. विद्याव्याप्तिशीलाः (विद्वज्जनाः) ३.१.४. आशुगामिनोऽग्न्यादयः १.१६४.३. **अश्वेभिः**=सुशिक्षितैस्तुरङ्गादिभिः २०.७३. **अश्वेभ्यः**=हयेभ्यः १६.२४. **अश्वेषु**=वाजिषु १.११४.८. अग्न्यादिवेगवत्पदार्थेषु प० वि०। वह्नितुरङ्गादिषु १८.४७. तुरङ्गहस्त्युष्ट्रादिषु, भा०—अश्वादिषु १६.१६. गवादिषु १३.२३. **अश्वैः**=आशुकारिभिः (जनैः) ५.५५.१. आशुगमनहेतुभिरग्निजलकलागृहरूपैरश्वैः १.८८.२. वेगादिभिर्गुणैः १.१७५.४. सर्वोत्तम घोड़ों सहित आर्याभि० २.११, ३४.३६. सर्वोत्तम अश्व विद्या विज्ञानादियुक्त घोड़े आदि पशुओं से आर्याभि० १.३५, ऋ० १.१.३१.९. आशुगमनहेतुभिरग्न्यादिभिस्तुरङ्गहस्त्यादिभिर्वा १.१६.९. आशुगामिभिर्विद्युदादिना निर्मितैर्विमानादियानैः १.११७.१४. महाबलिष्ठैः पुरुषार्थयुक्तैः (पतिभिः) ४.५१.५. महद्भिः किरणैः ६.६५.२. महद्भिर्वेगादिगुणैः ६.६२.३. तुरङ्गैरग्न्यादिभिर्वा ५.२९.९. व्यापनशीलैः किरणैः १.११३.१४. आशुकारिभिः (जनैः) ५.५५.१. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अशूप्रुषि०' उ० १.१५१. सूत्रेण क्वन्। यः कश्चाध्वानमश्नुवीताश्वः स वचनीयः नि० १.१३. अश्नुतेऽध्वानम्, महाशनो भवतीति वा नि० २.२७. प्रजापतेरक्ष्यश्वयत्। तत् परापतत्ततोऽश्वः समभवद्यदश्वयत्तदश्वस्याश्वत्वम् श० १३.३.१.१. तै० १.१.५.४. तां० २१.४.२. (प्रजापतिः) चक्षुषाऽश्वम् (निरमिमीत) श० ७.५.२.६. तान् (असुरान्) अश्वा भूत्वा (देवाः) पद्भिरपाघ्नत यदश्वा भूत्वा पद्भिरपाघ्नत तदश्वानामश्वत्वमश्नुते यद्यत्कामयते य एवं वेद ऐ० ५.१. अथ यदश्रुसंक्षरितमासीत् सो ऽश्रुरभवदश्रुर्हं वै तमश्व इत्याचक्षते परोऽक्षम् श० ६.१.१.११. यद्वै तदश्रुसंक्षरितमासीदेष सोऽश्वः श० ६.३.१.२८. अप्सुजा उ वा ऽअश्वः श० ७.५.२.१८. अप्सुयोनिर्वा ऽअश्वः तै० ३.८.४.३. अद्भ्यो ह वा ऽअग्रेऽश्वः सम्बभूव सोऽद्भ्यः सम्भवन्नसर्वः समभवद्० श० ५.१.४.५. अश्वो ऽस्यत्योसि मयोऽसि हयोऽसि वाज्यसि सप्तिरस्यर्वासि वृषासि तां० १.७.१. अत्योऽसीत्याह। तस्मादश्वः सर्वान् पशूनत्येति तै० ३.८.९.१. तस्मादश्वः सर्वेषां पशूनां श्रैष्ठ्यं गच्छति तै० ३.८.९.१. तस्मादश्वः पशूनां जविष्ठः। ऐ० ५.१. आशुः सप्तिरित्याह। अश्व एव जवं दधाति। तस्मात् पुराशुरश्वोऽजायत तै० ३.८.१३.२. अश्वः पशूनां त्विषिमान् हरस्वितमः तै० ३.८.७.३. अश्वः पशूनामाशुः सारसारितमः तै० ३.८.७.२. तस्मादश्वः पशूनामाशिष्ठः श० १३.१.२.७. अश्वः पशूनां यशस्वितमः श० १३.१.२.८. तस्मादु हैतदश्वः पशूनां भगितमः श० ६.३.३.१३. परमोऽश्वः पशूनाम् श० १३.३.३.१. अन्तो वा अश्वः पशूनाम् तां० २१.४.६. अश्वः पशूनामपचिततमः तै० ३.८.७.२. तस्मादश्वः पशूनामोजस्वितमः श० १३.१.२.६. अश्वः पशूनामोजिष्ठो बलिष्ठः तै० ३.८.७.१. तस्मादश्वः पशूनां वीर्यवत्तमः श० १३.१.२.५. अश्वः पशूनामन्नादो वीर्यवत्तमः तै० ३.८.७.१. वीर्यं वा अश्वः श० २.१.४.२४. क्षत्रं वाऽअन्वश्वः श० ६.४.४.१२. क्षत्रं वा ऽअश्वो विडितरे पशवः श० १३.२.२.१५. यजमानो वा अश्वः तै० ३.९.१७.५. वज्रो वा ऽअश्वः श० ४.३.४.२७, १३.१.२.९. वज्रो वा एषः यदश्वः तै० १.१.५.५. वज्री वा अश्वः प्राजापत्यः तै० ३.८.४.२. इन्द्रो वा अश्वः कौ० १५.४. असौ वा आदित्योऽश्वः तै० ३.९.२३.२. असौ वा ऽआदित्य एषोऽश्वः

श० ७.३.२.१०. तस्मा (आयास्यायोद्गात्रे) अमुमादित्यमश्वं श्वेतं कृत्वा (आदित्याः) दक्षिणामानयन् तां० १६.१२.४. तेऽङ्गिरस आदित्येभ्य अमुमादित्यमश्वं श्वेतं भूतं दक्षिणामानयन् तै० ३.९.२१.१. ते (आदित्याः) अश्वं श्वेतं दक्षिणां निन्युरेतमेव य एष (सूर्यः) तपति कौ० ३०.६. अग्निर्वा अश्वः श्वेतः श० ३.६.२.५. अग्निरेष यदश्वः श० ६.३.३.२२. सोऽग्निरश्वो भूत्वा प्रथमः प्रजिगाय गो० उ० ४.११. अश्वो न देववाहन इति अश्वो ह वा एष (अग्निः) भूत्वा देवेभ्यो यज्ञं वहति श० १.४.१.३०. यस्मात्प्रजापतिरालब्धोऽश्वोऽभवत् तस्मादश्वो नाम तै० ३.९.२१.४. प्राजापत्योऽश्वः श० ६.५.३.९. सौर्यो वा अश्वः गो० उ० ३.१९. वारुणो हि देवतयाऽश्वः तै० १.७.२.६. वारुणो वा ऽअश्वः तै० २.२.५.३. वारुणो ह्यश्वः श० ७.५.२.१८. वैश्वदेवो वा अश्वः श० १३.२.५.४. अश्वे वै सर्वा दैवता अन्वायत्ताः तै० ३.८.७.३. अश्वश्चतुस्त्रिंशः तै० २.७.१.३. अश्वश्चतुस्त्रिंशो दक्षिणानाम् तां० १७.११.३. अपूतो वाऽएषोऽमेध्यो यदश्वः श० १३.१.१.१. तस्मादश्वस्त्रिभिः (पद्भिः) तिष्ठंस्तिष्ठति श० १३.२.७.६. ईश्वरो वा अश्वः प्रयुक्तः परां परावत्तं गन्तोः तै० ३.८.९.३. अश्वो वै बृहद्वयः तै० ३.९.५.३. (हे ऽश्व त्वं) हयोऽसि तां० १.७.१. (हे ऽश्व त्वं) सप्तिरसि तां० १.७.१. (हे ऽश्व त्वं) वृषासि .तां० १.७.१. वाजिनो ह्यश्वाः श० ५.१.४.१५. (हे ऽश्व त्वं) वाज्यसि तां० १.७.१. समुद्र एवास्य (अश्वस्य मेध्यस्य) वन्धुः समुद्रो योनिः श० १०.६.४.१. जागतो ऽश्वः प्राजापत्यः तै० ३.८.८.४. स हि वारुणो यदश्वः श० ५.३.१.५. सोमो वै वृष्णो अश्वस्य रेतः तै० ३.९.५.५. अश्वस्य वा आलब्धस्य रेत उदक्रामत्। तत्सुवर्णꣳ हिरण्यमभवत् तै० ३.८.२.४. अश्वमालभते…श्रीर्वा एकशफम्। श्रियमेवावरुन्धते तै० ३.९.९.२. अश्वं चार्विं चोत्तरतः, एतस्यां तद्दिश्येतौ पशू दधाति तस्मादेतस्यां दिश्येतौ पशू भूयिष्ठौ श० ७.५.२.१५.]

अश्वमिष्टे योऽश्वमिच्छति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन), प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति मुमागमः २.६.२.

अश्वमेधस्य चक्रवर्त्तिराज्यपालनस्य विद्यायाः ५.२७.५. **अश्वमेधः**=राष्ट्रम् १८.२२. **अश्वमेधाय**=आशुपवित्राय (विद्वज्जनाय) ५.२७.४. **अश्वमेधे**=राज्यपालनाख्ये व्यवहारे ५.२७.६. [प्रजापतिरश्वमेधः श० १३.२.२.१३. अग्निर्वा अश्वमेधस्य योनिरायतनम् तै० ३.९.२१.३. सोऽश्वमेधेनेष्ट्वा स्वराडिति नामाधत्त गो० पू० ५.८. सर्वस्यैष न वेद यो ब्राह्मणः सन्नश्वमेधस्य न वेद, सोऽब्राह्मणः श० १३.४.२.१७. असावादित्योऽश्वमेधः श० ९.४.२.१८. असौ वाऽ आदित्य एकविंशः सोऽश्वमेधः श० १३.५.१.५. एष वाऽश्वमेधो य एष (सूर्यः) तपति श० १०.६.५.८. एष वाऽश्वमेधो यच्चन्द्रमाः श० ११.२.५.१. राष्ट्रमश्वमेधः श० १३.२.२.१६. राष्ट्रं वा अश्वमेधः श० १३.१.६.३. श्रीर्वैराष्ट्रमश्वमेधः श० १३.२.९.२. यजमानो वाऽश्वमेधः श० १३.२.२.१. राजा वा एष यज्ञानां यदश्वमेधः श० १३.२.२.१. वृषभ एष यज्ञानां यदश्वमेधः श० १३.१.२.२. ऋषभ एष यज्ञानां यदश्वमेधः तै० ३.८.३.३. अश्वमेधे सर्वा देवता अन्वायत्ताः श० १३.१.२.९. प्राणापानौ वा एतौ देवानाम्। यदार्काश्वमेधौ तै० ३.९.२१.३. ओजो बलं वा एतौ देवानाम्। यदर्काश्वमेधौ तै० ३.९.२१.३. एष (अश्वमेधः) वै ब्रह्मवर्चसी नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.३. एष (अश्वमेधः) वै तेजस्वी नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.३. एष (अश्वमेधः) वा अतिव्याधी नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.३. एष (अश्वमेधः) वा ऊर्जस्वान्नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.१. एष (अश्वमेधः) वै प्रतिष्ठितो नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.२. एष (अश्वमेधः) वै क्लृप्तो नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.३. एष (अश्वमेधः) वै दीर्घो नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.३. एष (अश्वमेधः) वै विधृतो नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.२. एष (अश्वमेधः) वै व्यापृतो नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.२. एष (अश्वमेधः) वै पयस्वान्नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.१. एष (अश्वमेधः) वै० विभूर्नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.१. एष (अश्वमेधः) वै प्रभूर्नाम यज्ञः तै० ३.९.१९.१ प्रजापतिꣳ सर्वङ्करोति योऽश्वमेधेन यजते तां० २१.४.२. तरति सर्वं पाप्मानं तरति ब्रह्महत्यां योऽश्वमेधेन यजते श० १३.३.१.१. यो ऽश्वमेधेन यजते। देवानामेवायनेनैति तै० ३.९.२२.३. तेजसा वा एष ब्रह्मवर्चसेन व्यृध्यते योऽश्वमेधेन यजते दै० ३.९.५.१. स यो हैवं विद्वानग्निहोत्रं च जुहोति दर्शपूर्णमासाभ्यां च यजते मासि मासि हैवास्याश्वमेधेनेष्टं भवति श० ११.२.५.५.]

अश्वयते अश्वमिवाचरते '६.४५.२६. [अश्वपदादाचारेऽर्थे क्यङ्। छान्दसत्वाद् दीर्घाऽभावः]

अश्वायन्तः आत्मनोऽश्वानिच्छन्तः (विप्राः=प्राज्ञा जनाः) ४.१७.१६. महतो विदुषः कामयमानाः (जनाः) ७.३२.२३. [अश्वपदाद् आत्मन इच्छायां क्यच्। ततः शतृ प्रत्ययः]

अश्वयुजः येऽश्वान् सद्योगामिनः पदार्थान् योजयन्ति (विद्वज्जनाः) ५.५४.२. [अश्वोपपदे युजिर् योगे धातोः क्विप् प्रत्ययः । अश्विनोरश्वयुजौ (नक्षत्रौ) तै० १.५.१.५]

अश्वयुः आत्मनोऽश्वानिच्छुः (इन्द्रः) १.५१.१४. बह्वश्वबलयुक्तः (रथः=विमानादियानविशेषः) ४.३१.१४. [अश्वपदाद् आत्मन इच्छायां क्यच् । 'क्याच्छन्दसी' ति उः प्रत्ययः]

अश्वयूपाय अश्वानां बन्धनाय १.१६२.६. अश्वस्य बन्धनार्थाय स्तम्भाय २५.२९. [अश्वयूपयोः समासः । यूपः=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च धातोः 'कुयुभ्यां च' उ० ३.२७ सूत्रेण पः प्रत्ययः कित् दीर्घश्च]

अश्वयोगाः येऽश्वान् योजयन्ति ते (मतयः=मनुष्याः) १.१८६.७. [अश्वोपपदे युज संयमने (चुरा०) धातोरण् प्रत्ययः]

अश्वराधसः विद्युदादिपदार्थसंसाधिकाः (गिरः=वाचः) ५.१०.४. [अश्वोपपदे राधसंसिद्धौ धातोरसुन् प्रत्ययः]

अश्वश्चन्द्राः अश्वाश्चन्द्राणि सुवर्णानि येषान्ते (प्रजाजनाः) ६.३५.४. [अश्वो व्याख्यातः । चन्द्रम्=हिरण्यनाम निघं० १.२.]

अश्वसनिः अश्वानामग्न्यादिपदार्थानां वा सनिर्दाता (गृहपतिः) ८.१२. [अश्वोपपदे षण् संभक्तौ धातोः 'खनिकष्यजि०' उ० ४.१४०. सूत्रेण इ प्रत्ययः]

अश्वसातमः योऽश्वान् सनति सम्भजति सोऽतिशयितः (सभेशः) १.१७५.५. [अश्वोपपदे षण् संभक्तौ धातोः क्विप् । ततोऽतिशायने तमप् । धातोर्नकारस्याऽऽकारादेशः]

अश्वसादम् योऽश्वान् सादयति तम् [(पुरुषम्) ३०.१३. [अश्वोपपदे षद्लृ विशरणगत्यादिषु धातोर्णिचि अण्]

अश्वसाम् अश्वानां संविभाजिकाम् (धियं=प्रज्ञाम्) ६.५३.१०. [अश्वोपपदे षण् संभक्तौ धातोः क्विप् । स्त्रियां टाप्]

अश्वसूनृते अश्वा महती सूनृता प्रिया वाग्यस्यास्तत्सम्बुद्धौ (विदुषि स्त्रि), प्र०--अश्व इति महन्नाम निघं० ३.६, ५.७९.१. महाज्ञानयुक्ते (विदुषि रित्र) ५.७९.३. महदन्नयुक्ते (साध्वि स्त्रि) ५.७९.२. [अश्वसूनृतापदयोः समासः]

अश्वा आशुगमनशीला वडवा २१.३३. व्यापिका (पत्नी) ३७.१२. [अश्व+टाप्]

अश्वाजनि याऽश्वान् जनयति सुशिक्षितान् करोति तत्सम्बुद्धौ (अ०—विदुषि राज्ञि) २९.५०. अश्वानां प्रक्षेप्त्रि ! (राज्ञि!) ६.७५.१३. [अश्व+जनी प्रादुर्भावे धातोर्बाहुलकाद् इः प्रत्ययः, स्त्रियां ङीष् । अथवा अश्व+अज गतिक्षेपणयोर्धातोर्ल्युट् स्त्रियां ङीप् । अश्वाजनीं कशेत्याहुः नि० ९.१८]

अश्वाजनीव विद्युदिव (स्थूणा=दृढा नीतिः) ५.६२.७.]

अश्वापयः शापयः ७.१९.४.

अश्वायते अश्वमिवाचरते (सज्जनाय) ६.४५.२६. [अश्वपदात् क्यङ् आचारेऽर्थे, ततः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अश्वायन्तः आत्मनोऽश्वमिच्छन्तः (सज्जनाः) २७.३६. आत्मनोऽश्वानिच्छन्तः (विप्राः=मेधाविनो जनाः) ४.१७.१६. महतो विदुषः कामयमानाः (सत्पुरुषाः) ७.३२.२३. [अश्वपदादिच्छायामर्थे क्यच् । ततः शतृ]

अश्वायेव यथाऽश्वाय ११.

अश्वावत् बह्वश्वयुक्तम् (राधः=धनम्) ५.५७.७. बहवः प्रशस्ता वेगप्रदा अश्वा अग्न्यादय सन्ति यस्मिँस्तत् (वाजम्) १.४८.१२. प्रशस्ततुरङ्गयुक्तम् (नृपाय्यम्=नृणां पाय्यं मानम्), प्र०—अत्र सोमाऽश्वेन्द्रिय०, इति दीर्घः २०.८१. **अश्वावतः**=बह्वश्वयुक्तस्य (जनस्य) प्र०—'मन्त्रे सोमाऽश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ' इति अश्वशब्दस्य मतौ दीर्घः १.१२२.८. [अश्वप्राति० मतुप् । 'मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रिय०' सूत्रेण मतौ परतः पूर्वस्य दीर्घादेशः]

अश्वावत् अश्वेन तुल्यौ (वाय्वग्नी) २.४१.७. अश्वादिभिः समानम् (यज्ञम्) ८.६३. [अश्वप्राति० तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः । पूर्वस्य च दीर्घत्वम्]

अश्वावति अश्वा अस्याः सम्बन्धे सन्ति तत्सम्बुद्धौ (उषः) प्र०—अत्र 'मन्त्रे सोमाऽश्वेन्द्रिय०' अ० ६.३.१३१. इत्यश्वशब्दस्य दीर्घः, सम्बन्धाऽर्थे मतुप् १.९२.१४. सम्बद्धा अश्वा यस्मिँस्तस्मिन् रथे १.८३.१. **अश्वावतीम्**=प्रशस्तशुभगुणयुक्ताम् (महौषधीम्) प्र०—अत्र मतौ दीर्घः १२.८१. **अश्वावतीः**=प्रशस्ता अश्वा विद्यन्ते यासान्ताः (सूनृताः=वाचः) १.४८.२. प्रशस्तान्यश्वानि व्याप्तिशीलान्युदकानि विद्यन्ते यासु ताः (उषासः=प्रभाताः) ३४.४०. प्रशस्ता अश्वा व्याप्तयो विद्यन्ते यासान्ताः (उषसः=

प्रभाताः) प्र०—अत्र मतौ पूर्वपदस्य दीर्घः १.१२३.१२. अश्वा महान्तः पदार्था विद्यन्ते यासु ताः (विदुष्यः स्त्रियः) ७.४१.७. **अश्वावत्या**=प्रशस्ता वेगबलयुक्ता अश्वा विद्यन्ते यस्यां तया (सेनया) १.५३.५. [अश्वप्राति० मतुप् । पूर्वपदस्य मतौ दीर्घः । स्त्रियां ङीप् प्रत्ययः]

अश्वावन्तम् प्रशस्ताऽश्वादिसहितम् (रयिं=धनम्) ४.४९.४. प्रशस्ता अश्वा विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (राज्यम्) १.८३.४. [अश्वप्राति० मतुप् । द्वितीयैकवचनम्]

अश्वासः वाजिनः २०.७८. सुशिक्षितास्तुरङ्गाः १३.३६. आशुगामिनोऽग्न्यादयः ६.६३.७. सद्यो गामिनः (रथाः=यानानि) ४.१४.४. अश्वा इव महान्तो विद्युदादयः पदार्थाः ६.२९.२. तुरङ्गाः ४.४५.२. वेगादयो गुणाः ५.७५.६. व्याप्तिशीला वेगादयो गुणाः २.१२.७. महान्तः (वीरजनाः) ६.६९.४. अग्न्याद्यास्तुरङ्गा वा ५.६३.४. शीघ्रगामिनः (अत्याः=विद्युदादयः पदार्थाः) १.१८१.२. [अश्वो व्याख्यातः । तस्य प्रथमाबहुवचनम्]

अश्विनकृतस्य यौ सद्गुणमश्नुवाते तावश्विनौ तावेवाश्विनौ ताभ्यां कृतस्य, भा०—विद्वदैश्वर्ययुवतैर्जनैरनुष्ठितस्य (कार्यस्य) २०.३५. [अत्राश्विन्शब्दात् स्वार्थेऽण्, वृद्ध्यभावस्त्वार्षः । 'अश्विनपदस्य' कृतपदेन सह समासः]

अश्विनम् बहूत्तमाऽश्वादियुक्तम् (रयिं=धनम्) ४.३७.५. [अश्वप्राति० मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

अश्विना अश्विनौ जलाग्नी, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः "या सुरथा रथीतमोभा देवा०"। "नहि वामस्ति दूरके०" ऋ० १.२२.२, ४. वयं यौ सुरथौ शोभना रथा याभ्यां तौ, रथीतमा भूयांसो रथा विद्यन्ते ययोस्तौ रथी अतिशयेन रथी रथीतमौ, देवौ=शिल्पविद्यायां दिव्यगुणप्रकाशकौ, दिविस्पृशा विमानादियानैः सूर्य्यप्रकाशयुक्तेऽन्तरिक्षे मनुष्यादीन् स्पर्शयन्तौ, उभा=उभौ, ता=तौ, हवामहे=गृह्णीमः ॥१॥ यत्र मनुष्या वां तयोरश्विनोः साधिपित्वाचलितयोः सम्बन्धयुक्तेन हि यतो गच्छन्ति तत्र गृहं विद्याधिकरणं दूरं नैव भवतीति यावत् ॥२॥ "अथातो द्युस्थाना देवतास्तासामश्विनौ प्रथमागामिनौ............भाग अदित्यः" निरु० १२.१. "तथा अश्विनौ चापि भर्त्तारौ......भागो०" निरु० १२.१. (अथातो०) अत्र द्युस्थानोक्तत्वात्प्रकाशस्थाः प्रकाशयुक्ताः सूर्य्याग्निविद्युदादयो गृह्यन्ते, तत्र यावश्विनौ द्वौ द्वौ संप्रयुज्येते यौ च, सर्वेषां पदार्थानां मध्ये गमनशीलौ भवतः । तयोर्मध्यादस्मिन्मन्त्रे ऽश्विशब्देनाऽग्निजले गृह्येते । कुतः ? यद्यस्माज्जलमश्वैः स्वकीयवेगादिगुणैः रसेन सर्वं जगद् व्यश्नुते=व्याप्तवदस्ति । तथाऽन्योऽग्निः स्वकीयैः प्रकाशवेगादिभिरश्वैः सर्वं जगद्व्यश्नुते, तस्मादग्निजलयोरश्विसंज्ञा जायते । तथैव स्वकीयस्वकीयगुणैर्द्यावापृथिव्यादीनां द्वन्द्वानामप्यश्विसंज्ञा भवतीति विज्ञेयम् । शिल्पविद्याव्यवहारे यानादिषु युक्त्या योजितौ सर्वकलायन्त्रयानधारकौ यन्त्रकलाभिस्ताडितौ चेत्तदाहननेन गमयितारौ च तुर्फरीशब्देन यानेषु शीघ्रं वेगादिगुणप्रापयितारौ भवतः । "अश्विनाविति पदनामसु पठितम्" निघं० ५.६. अनेनापि गमनप्राप्तिनिमित्ते अश्विनौ गृह्येते १.३.१. प्रकाशितगुणयोरध्वर्योः, अ०—अश्विनोः, प्र०—-अत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः १.२२.३. यजमानर्त्विजौ ५.७८.२. प्राणाऽपानौ २१.६०. व्यापिनौ (मित्रावरुणौ=प्राणोदानौ) ७.३५.४. अश्विभ्यां युक्तेन (रथेन=विमानादियानेन) १.२२.४. व्यवहारव्यापिनौ (शिल्पिजनौ) १.४६.७. सत्योपदेशकरक्षयितारौ (प्रशस्तदानशीलौ पुरुषौ) १.१८१.९. शरीराऽऽत्मबलयुतौ (कुमारौ) १.११७.१३. राजाऽमात्यौ ४.४५.५. व्यापनशीले द्यावान्तरिक्षे ६.६२.१. व्याप्तिगुणशीलौ (अग्निजले) १.२२.२. राजप्रजाजनौ ५.४९.१. विद्यादिशुभगुणव्यापिनौ राजप्रजाजनौ ३३.८८. व्याप्तिमन्तौ सूर्याचन्द्रमसौ, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति आकारादेशः १.१५.११. अग्निजलाभ्याम् ऋ० भू० १९३. वायुविद्युतौ ३.५८.४. व्याप्तिशीलौ (इन्द्राग्नी=विद्युद्भौतिकाग्नी) १.१०९.४. अग्निवायू २१.३६. वायूसूर्यौ २१.४९. अग्निजलसूर्यचन्द्रादिभिः १.५३.४. जलाग्नी इव निर्मातृवोढारौ (शिल्पिचालकौ) १.१८२.७. शिल्पविद्याविदावध्यापकोपदेशकौ ३.५८.५. सकलविद्याव्याप्तौ (शिल्पिनौ) ३.५८.८. शिल्पविद्याऽध्येत्रध्यापकौ (गुरुशिष्यौ) १.८९.४. आप्तावध्यापकोपदेशकौ १.११२.२४. शिल्पविद्याऽध्यापकाऽध्ययन-क्रियायुक्तावग्निजलादिद्वन्द्वं वा १.८९.३. विद्याव्यापनशीलौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.११२.१. सर्वशुभगुणव्यापनशीलौ (अध्यापकाऽध्येतारौ) १.१११.४. विद्याप्रापकाऽध्यापकोपदेष्टारौ १.१२०.६. विद्याशिक्षकौ २०.६४. रक्षादिकर्मव्यापिनौ (अध्यापकोपदेशकौ) २०.७६. विद्याबलव्यापिनौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.४. व्याप्तविद्यौ (देवौ=विद्वांसौ) ५.७४.१. वैद्यकविद्यानिपुणावध्यापकोपदेशकौ २०.६९. विद्वांसौ राजप्रजाजनौ, भा०—जगद्धितैषिणौ ३४.४७. व्याप्तसकलविद्यावध्यापकोपदेशकौ, भा०—अध्यापिकोपदेशिके विदुष्यौ १४.१. द्यावापृथिव्याविवाऽध्यापकोपदेशकौ ५.७३.९ शिल्पिनौ १.११७.९. कृषिकर्मविद्याव्यापिनौ (सभासेना-

धीशौ) १.११७.५. सूर्याचन्द्रमसौ वैद्यावध्यापकौ वां ७.४१.१. सत्योपदेशव्यापिनौ अध्यापकोपदेशकौ १.१८१.७. शिल्पविद्याक्रियाशिक्षकौ (विद्वज्जनौ) १.१६१.६. सद्गुणकर्मस्वभावव्यापिनौ, भा०—पठितसाङ्गोपाङ्गवेदौ (सरस्वती=प्रशंसिता गृहिणी तथा पुरुषः) २०.५६. शुभगुणव्यापिनौ (विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ) ४.१५.१०. विद्यान्यायप्रकाशकौ (विद्वज्जनौ) १.१३६ ३. सिद्धसाधकौ (अ०—विद्वांसौ) १६.६३. आयुर्वेदाङ्गव्यापिनौ (विद्वज्जनौ) १६.१२ सद्वैद्यौ २१.४३. वैद्यकविद्याव्यापिनौ (भिषजा=वैद्यौ) २१.३३. सर्वाधीश-सेनाधीशौ ३.५८.६. अग्निजले इव वर्त्तमानौ सभासेनेशौ १.४७.२. सेनेशयोद्धारौ ४.४५.३. शत्रुसेनाव्यापिनौ (सभासेनाधीशौ) १.११६.१८. यज्ञानुष्ठानशीलौ (सभासेनेशौ) १.११६.८. जलपृथिव्याविवाशुसुखदातारौ (सभासेनाध्यक्षौ) १.११६.६. सर्वविद्याव्याप्तिमन्तौ सभासेनेशौ १.११६.१०. सूर्यवायुसदृक्कर्मकारिणौ सभासेनेशौ १.४७.३. सकलविद्यासुखव्यापिनौ (सभासेनेशौ) १.४६.१५. गृहाश्रमधर्मव्यापिनौ स्त्रीपुरुषौ १.१२०.१. शिल्पविदौ दम्पती १.११८.१. पतिपत्नी सर्वलोकाऽधिपती १.११८.६. भूगर्भविद्याविदौ स्त्रीपुरुषौ १.११७.२०. विद्यासुशिक्षितौ स्त्रीपुरुषौ, व्याप्तशुभगुणकर्मस्वभावौ २०.५६. स्त्रीपुरुषौ १६.१८. ब्रह्मचर्येण प्राप्तविद्यौ स्त्रीपुरुषौ ५.७५.८. व्याप्तसुखौ (स्त्रीपुरुषौ) ५.७६.३. गृहाश्रमव्यवहारव्यापिनौ (स्त्रीपुरुषौ) १६.८८. सूर्योषसौ ५.७७.२. शिल्पविद्याऽध्यापकाऽध्येतारौ स्वामिसेवकौ वा ३.५८.७. सुसत्कृतौ पुरुषौ २१.४२. विद्याज्योतिर्विस्तारमयौ १.३४.६. क्षत्रधर्मव्यापिनौ (सभासेनेशौ) १.४७.४. वह्निजलवद्यानसिद्धिं सम्पाद्य प्रेरकचालकावध्वर्यू, प्र०—'अश्विनावध्वर्यू' १.३४.३. विद्यादाताग्रहीतारावध्वर्यू १.३४.४. वायुसूर्याविव वर्त्तमानौ धर्मन्यायप्रकाशकौ (उपदेशकसेनेशौ) १.४१.१०. पशुपालकृषीवलौ २१.४१. सूर्य और चन्द्र को सं० वि० १५५, ७.१४.१. हे सूर्यचन्द्रवत्प्रकाशमानौ (अ०—योगाऽध्येत्रध्यापकौ ७.११. **अश्विनोः**=सभासेनेशयोः १.१२०.१०. सूर्याचन्द्रमसोः ३८.१. सूर्याचन्द्रमसोरध्वर्य्वोर्वा, प्र०—सूर्याचन्द्रमसावित्येके, निरु० १२.१, १.१०. विद्वत्क्रियाकुशलयोः (सज्जनयोः) १.१५७.३. प्राणोदानयोः ११.६. प्राणापानयोरध्वर्य्वोर्वा ५.२२. वैद्यकविद्यां प्राप्तयोरध्यापनौषधिकारिणोः (अध्यापकवैद्ययोः) २०.३. सकलविद्याव्याप्तयोरध्यापकोपदेशकयोः २०.३. प्रकाशभूम्योः प्र०—द्यावापृथिव्यावित्येके, निरु० १२.१, १.२१. द्यावापृथिव्योराकर्षणधारणाभ्यामिव ११.२८. **अश्विनौ**=अश्विदेवताकौ (पशू) २४.१. सूर्याचन्द्रमसाविवाध्यापिकोपदेशिके १.४६.१. सूर्याचन्द्रमसाविव राजराजपुरुषौ ६.३१. सर्वपदार्थगुणव्यापिनौ स्त्रीपुरुषौ १.१८०.७. सूर्याचन्द्रमसाविव वैद्यकविद्याकार्ये प्रकाशमानौ (वैद्यजनौ) २०.५८. वायुजले १.४४.८. प्रजाराजानौ २५.३. अध्वर्यू प० वि० । वायूदके इवोपदेष्ट्रुपदेश्यौ ५.७८.१. विद्याप्रीतिशीलौ (सभासेनेशौ) १.११६.५. यौ व्युपदेशकौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८४.६ अध्यापकपरीक्षकौ ५.७५.१. शिल्पविद्याव्यापिनौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१६३.६. सुशिक्षितौ स्त्रीपुरुषौ ३८.१२. **अश्विभिः**=सूर्याचन्द्रमस् ? आदिभिः ६.४५.२१. **अश्विभ्याम्**=राज्यस्वामिपशुपालाभ्याम् २१.४०. बहुभोजिभ्यां स्त्रीपुरुषाभ्याम् १६.८६. इन्द्राग्निभ्याम् २१.३४. अग्निवायुभ्याम् २१.५५. सूर्याचन्द्रमोभ्याम् २०.६०. विद्याव्यापिभ्याम् (योगिभ्याम्) १६.६५. पूर्णविद्याऽध्यापकोपदेशकाभ्याम् २०.३३. व्याप्तविद्याभ्याम् (स्त्रीपुरुषाभ्याम्) १६.१. [अश्वशब्दात् मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः । अश्विनौ (द्यावापृथिव्यौ) यद् व्यश्नुवाते सर्वं रसेनान्यो ज्योतिषान्यः नि० १२.१. अथवा अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्बाहुलकाद् विनिः । अश्विन् द्विवचने=अश्विनौ । इमे ह वै द्यावापृथिवी प्रत्यक्षमश्विनाविमे हीदꣳ सर्वमश्नुवातां पुष्करस्रजावित्यग्निरेवास्यै (पृथिव्यै) पुष्करमादित्योऽमुष्यै (दिवे) श० ४.१.५.१६. श्रोत्रे अश्विनौ श० १२.६.१.१३. नासिके अश्विनौ श० १२.६.१.१४. तद् यौ ह वा ऽइमौ पुरुषाविवाक्ष्योः । एतावेवाश्विनौ श० १२.६.१.१२. अश्विनावध्वर्यू ऐ० १.१८. अश्विनौ वै देवानां भिषजौ ऐ० १.१८. मुख्यौ वा ऽश्विनौ (यज्ञस्य) श० ४.१.५.१६. श्वेताविव ह्यश्विनौ श० ५.५.४.१. सयोनी वा ऽअश्विनौ श० ५.३.१.८ अश्विनाविव रूपेण (भूयासम्) मं० २.४.१४. आश्विनं द्विकपालं पुरोडाशं निर्वपति श० ५.३.१.८. आश्विनो द्विकपालः (पुरोडाशः) तां० २१.१०.२३. वसन्तग्रीष्मावेवाश्विनाभ्याम् (अवरुन्धे) श० १२.८.२.३४. अश्विभ्याऽन्धानाः तै० १.५.११.३. अथ यदेनं (अग्निम्) द्वाभ्यां बाहुभ्यां, द्वाभ्यामरणीभ्यां मन्थन्ति द्वौ वा अश्विनौ तदस्याश्विनं रूपम् ऐ० ३.४. देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे । अश्विनोर्बाहुभ्याम् तै० २.६.५.२. गर्दभरथेनाश्विना उदजयताम् ऐ० ४.६. तदश्विना उदजयतां रासभेन कौ० १८.१. इममेव लोकमाश्विनेन (अवरुन्धे) श० १२.८.२.३२. अश्विनमन्वाह तदमुं लोकं (दिवं) आप्नोति कौ० ११.२.१८.२.]

अश्विनी आशुगामिनः स्त्री ५.४६.८. [अश्विन्+ङीप् । अश्विनी=अश्विनोः पत्नी नि० १२.४६.]

अश्विया अश्वादियुक्तानि (हिरण्या=धनानि) ४.१७.११.

अश्वी बह्वश्वः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.२.५. बहवो महान्तोऽश्वा वेगादयो गुणा विद्यन्ते यस्मिन् सोऽग्निः (विद्वज्जनः) ७.१.१२. [अश्वप्राति० मत्वर्थे इनिः]

अश्वीव यथा वडवा २.२७.१६. [अश्वस्य स्त्री अश्वी । अश्व+ङीष्]

अश्वेव अश्वावद्वर्त्तमाना (उषाः) ४.५२.२. [अश्वशब्दात् स्त्रियां टाप्, तदिव]

अश्वे इव अश्ववडवाविव ३.३३.१. [अश्व+टाप् । अश्वा शब्दस्य द्विवचनम्]

अश्वैत् व्याप्नोति १.९२.१२. वर्धते १.१२४.११. [टुओश्वि गतिवृद्ध्योः (भ्वा०) धातोर्लुङ् । सिचो लुक्]

अश्व्यम् अश्वेषु भवम् (शिरः) १.११७.२२. तुरङ्गेषु वेगादिषु वा साधुम् (वीरजनम्) १.११२.१०. अश्वेषु व्याप्तविद्येषु साधुम् (मनः=विज्ञानम्) १.११९.९. अश्वेभ्यो हितम् (राधः=धनम्) २७.२७. **अश्व्यस्य**=अश्वेष्वाशुगामिषु भवस्य (पुष्टेः) ४.४१.१०. **अश्व्यः**=अश्वेषु आशु गच्छत्सु साधुरत्यन्तवेगकारी (विद्वज्जनः) १.७४.७. योऽश्वेषु वेगादिगुणेषु साधुः (वीरजनो मेघो वा) १.३२.१२. **अश्व्या**=महत्सु भवानि (राधांसि=धनानि) ७.१६.१०. अश्वेभ्यो हितानि (राधांसि=धनानि) ५.७९.७. अश्वेषु हितानि (राधांसि=धनानि) ६.४४.१२. **अश्व्यानि**=अश्वानां महतामिमानि (शीर्षाणि=शिरांसि) ७.१८.१९. **अश्व्यैः**=अश्वेषु भवैर्गुणैः ६.६०.१४. [अश्वशब्दात् साध्वर्थे भवार्थे वा यत् प्रत्ययः]

अषतरा प्राप्ततराणि (च्यौत्नानि=स्तोत्राणि), प्र०—अत्र ऋषधातो रेफस्य लोपः १.१७३.४. [ऋषी गतौ (तुदा०) धातोर्भावे घञ् प्रत्ययः । रेफस्य लोपश्छान्दसः ततोऽतिशायने तरप्]

अषाळ्हम् सोढुमनर्हम् (राजानं सेनापतिं वा) ३४.२०. पापिभिः सोढुमशक्यम् (सहः=बलम्) १.५५.८. शत्रुभिरसह्यमतिरस्करणीयम् (सोमं=सेनाऽध्यक्षम्) १.९१.२१. असोढव्यम् (राजपुरुषम्) ६.१८.१. **अषाळ्हः**=यः शत्रुभिः सोढुमशक्यः (इन्द्रः=राजा) ७.२०.३. **असहमानः** (अग्निः=विद्वान् राजपुरुषः) ३.१५.४. **अषाळ्हाय** शत्रुभिरसहमानाय (रुद्राय=शूरवीराय) ७.४६.१. **अषाळ्हाः**=असोढव्याः शत्रुसेनाः ७.२८.२. **अषाळ्हेन** शत्रुभिरसोढव्येन (शवसा=बलेन) ६.१९.२. [षह मर्षणे धातोस्तृचि 'साढ्यैसाढ्वासाढेति निगमे' अ० ६.३.११३. सूत्रेण निपात्यते । ततो नञ्समासः]

अषाढा शत्रुभिरसह्यमाना (पत्नी) १३.२६. [षह मर्षणे धातोः क्तः, स्त्रियां टाप् । नञ्समासः । अषाढा (इष्टका) (देवाः) ताम् (इष्टकां) उपधायासुरान्त्सपत्नान् भ्रातृव्यानस्मादसहन्त यदसहन्त तस्मादषाढाः श० ७.४.२.३३. त एते सर्वे प्राणा यदषाढाः श० ७.४.२.३६. ग्रीवा अषाढाः श० ७.५.१.३५. इयं पृथिवी वाऽअषाढा श० ६.५.३.१. वागषाढा श० ६.५.३.४. वाग्वाऽअषाढा श० ७.४.२.३४. (नक्षत्रं) यन्नासहन्त तदषाढाः तै० १.५.२.८. अपां पूर्वाषाढाः तै० १.५.२.८. अपां पूर्वाषाढाः तै० १.५.१.४. विश्वेषां देवानामुत्तराः (अषाढाः) तै० १.५.१.४]

अष्टधा दिग्भिरष्टप्रकारः (दोहः=सामग्रीसमूहः) ८.६२. [अष्टन् प्राति० 'संख्याया विधार्थे धा' अ० ५.३.४२. सूत्रेण धा प्रत्ययः]

अष्टमम् अष्टसङ्ख्यापूरकम् (चेतनं ब्रह्म) २.५.२. [अष्टन् संख्यावाचिनः पूरणार्थे 'नान्तादसंख्यादेर्मट्' अ० ५.२.४९. सूत्रेण डट् मडागमश्च]

अष्टमी अष्टानां पूरणा (क्रिया) २५.४. [अष्टम शब्दात् ङीप् प्रत्ययः]

अष्टवे व्याप्तुम् ४.३०.१९. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः कृत्यार्थे तवेन् प्रत्ययः]

अष्टा व्यापकः (सूर्यलोकः) १.१२१.८. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोस्तृच्]

अष्टाकपालः अष्टसु कपालेषु संस्कृतः (चरुः=पाकः), अष्टसु कपालेषु संसाधितः (चरुः=पाकः) २९.६० [अष्टन् कपालयोः संस्कृतार्थे तद्धितार्थे द्विगुः समासः । 'संस्कृतं भक्षाः' अ० ४.२.१६. सूत्रेण प्राप्तस्याण् प्रत्ययस्य 'द्विगोर्लुगनपत्ये' अ० ४.१.८८. सूत्रेण लुक् । 'छन्दसि च' इति पूर्वपदस्य दीर्घः]

अष्टाक्षरेण याजुष्याऽनुष्टुभा (छन्दसा) ९.३२.

अष्टाचत्वारिंशत् अष्टाधिकाचत्वारिंशत् (संख्या) १८.२५. [अष्टन् चत्वारिंशत् पदयोर्बहुव्रीहौ समासे 'द्व्यष्टनः संख्यायाम्०' इति पूर्वपदस्याकारादेशः]

अष्टाचत्वारिंशः अष्टाचत्वारिंशद्धा (धर्त्रम्=धारणम्) १४.२३.

अष्टादशः अष्टादशधा (तपः=संन्तापो गुणः)

अष्टापक्षाम् चारों ओर दो दो शाला और उनकी चारों दिशाओं में दो दो शाला सं० वि० १६८, अथर्व० ९.३.२१. [अष्टन्-पक्षयोः समासः]

अष्टापदी वेदोपवेदविद्यायुक्ता (विदुषी स्त्री) १.१६४.४१. **अष्टापदीभिः**=अष्टौ पादौ यासां ताभिर्वाग्भिः २.७.५. **अष्टापदीम्**=अष्टौ ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्राश्चत्वारो वर्णा, ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-वानप्रस्थ-संन्यासाश्चत्वार आश्रमाः पदानि प्राप्तव्यानि यस्यास्ताम् (स्वाहा=वाचम्) ८.३०. [अष्टन्-पादशब्दयोर्बहुव्रीहौ 'संख्यासुपूर्वस्य' अ० ५.४.१४० सूत्रेण पादशब्दान्तस्य लोपः। 'पादः पत्' इति पदादेशे 'पादोऽन्यतरस्याम्' इति ङीप्। 'छन्दसि चे' ति पूर्वपदस्य दीर्घादेशः]

अष्टाविंशतिः अष्टाधिका विंशतिः (सङ्ख्या) १८.२५. [अष्टन्-विंशत्योः समासः। 'द्व्यष्टनः संख्या-याम्०' इत्याकारादेशः]

अष्टाविंशानि दशेन्द्रियाणि, दश प्राणा, मनोबुद्धि-चित्ताऽहङ्कारविद्यास्वभावशरीरबलञ्च ऋ० भू० १६०. [अष्टन्-विंशत्योः समासः। ततः पूरणार्थे डट्। 'ति विंशते-र्डिति' अ० ६.४.१४२. सूत्रेण तेर्लोपः]

अष्टु प्राप्नोतु ८.६०. व्याप्नोतु ७.३. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

अष्टौ अष्टत्वविशिष्टा सङ्ख्या १८.२५. चतस्रो दिश उपदिशश्च १.३५.८. [अष्टन्प्राति० परयोः जश्शसोः स्थाने 'अष्टाभ्य औश्' इत्यौशादेशः]

अष्ट्रा व्यापिका (पशुवर्धनक्रिया) ६.५३.९. **अष्ट्राम्**=व्याप्ताम् (पदार्थविद्याम्) ६.५८.२. कृषि-साधनाऽवयवम् ४.५७.४. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' उ० ४.१५९. सूत्रेण ष्ट्रन् प्रत्ययः स्त्रियां टाप्]

अष्ठीवन्तौ ष्ठीवनं कफादिकमत्यजन्तौ (कुल्फौ=गुल्फौ) ७.५०.२. [ष्ठिवु निरसने (भ्वा०) धातोः शतृ। नञ्समासः]

असक्त सज्ज, प्र०—अत्र सज्जधातोः 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक्, लोडर्थे लङ्, व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदञ्च १.३३.३. [षञ्ज सङ्गे (भ्वा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेनात्मने-पदम्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

असक्राम् या सहनं क्रामति ताम् (इषम्=अन्नं विज्ञानं च) ६.६३.८. [असक्राम्=असंक्रमणीत् नि० ६.२९.]

असघ्नोः हिंस्याः १.३१.३. [षघ हिंसायाम् (स्वा०) धातोर्लङ्]

असङ्ख्याता सङ्ख्यारहितानि (धन्वानि=धनूंषि) १६.५४. [सम्+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोः क्तः। नञ्-समासः]

असचन्त समवयन्ति ३.३१.४. [षच समवाये (भ्वा०) धातोर्लङ् व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

असजातः यथा यः सह न जातः (व्यक्तिः) ५.२३. [सह+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः। सह स्थाने सादेशः। नञ्समासः]

असत् भवेत्, प्र०—अत्र 'अस' धातोर्लेट्-प्रयोगः १.९.५. स्यात् ३३.६८. अस्तु १२.६८. है आर्याभि० २.५०, २५.१८. **असति**=स्यात् १.१२४.११. भवेत् ६.२३.९. भवति ५.५३.१५. भवानि ५.५३.१५. **असथ**=भवत १७.४६. भवथ ३५.४. **असथः**=भवथः ६.६३.१. **असन्**=सन्तु, प्र०—अत्र लेट्-प्रयोगः १.८९.१. सन्ति ३५.१०. भवन्ति ७.८.५. भवन्तु २५.१४. स्युः ३१.२१. भवेयुः, प्र०—अत्र लेट्-प्रयोगः १.३८.१५. **असम्** भवेयम् ३४.५२. **अससि**=असि प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुगभावः ४.५७.६. स्याः २.२६.२. **असः**=भवेत् ६.३६.५. भवेः ७.२४.१. **असाम**=भवेम १.५३.११. **असि**=भवेत् प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययो लिङर्थे लट् च १.२८. भवति, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः १.२९. भवति वा, प्र०—अत्र पक्षे पुरुषव्यत्ययः २.२१. अस्ति वा, प्र०—अत्र भौतिकपक्षे व्यत्ययेन प्रथमपुरुषो गृह्यते १.८. उत्पादको वर्त्तसे, प्रकाशको वर्त्तते वा १.८. भव, प्र०—अत्र लोडर्थे लट् ३.४८. अस्तु ७.१७. भवसि ४.३२.२. वर्त्तते ५.१. वर्त्तसे ५.२६. सुखदायक होती है सं० वि० १६६, अथर्व० ९.२.३.७. हो आर्याभि० १.३९. **अस्ति**=विद्यते १.१७०.१. **अस्तु**=भवेत्, प्र०—अत्र लिङर्थे लोट् १.१६.७. भवति, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.१३.११. भवतु, भवति वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः १.१३.१०. होवे स० प्र० १८४, १.३९.२. हो, हो सकता है आर्याभि० २.४३, ३४.१. **अस्मि**=भवामि, वर्त्ते २.२८. [अस भुवि (अदा०) धातो रूपाणि]

असत् शून्यमाकाशम् ऋ० भू० ११६. अनित्यम् ऋ० भू० ३२८. अथ० १०.७.१०. **असतः**=अविद्यमानस्या-ऽदृश्यस्याऽव्यक्तस्य कारणस्य १३.३. अविद्या, चक्षुरादि इन्द्रियों से अगोचर इस विविध जगत् की आर्याभि०

२.२८. १३.३. निन्द्यात् (वचंसः) ५.१२.४. **असता**= अवर्त्तमानेन (बलादिना) ४.५.१४. [अस भुवि (अदा०) धातोः शतृ । नञ्समासः । मृत्युर्वाऽअसत् श० १४.४.१.३१. तदाहुः किं तदसदासीदित्यृषयो वाव तदग्रेऽसदासीत् श० ६.१.१.१. अस्य यदसत् सर्कं सा वाक् सोऽपानः जै० उ० १.५३.२.]

असत्याः असत्याऽऽचरणाः (पापिजनाः) ४.५.५. [नञ्-सत्यपदयोर्बहुव्रीहिः । सत्यं कस्मात् ? सत्सु तायते, सत्प्रभव भवतीति वा नि० ३.१३.]

असदत् तिष्ठेत् २६.२६. स्वकक्ष्यायां भ्रमति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ३.६. प्राप्नुयात् ११.४८. आसीदतु ३.६२.१५. उपसीदति ६.५७.२. सीदति २.९.१. आसीदति २८.४. सीदेत् ११.३७. सीद ११.४०. **असदन्**= सीदन्ति १.१९१.४. भवेयुः प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति सीदादेशो न २.६. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लङ् । छान्दसत्वात् सीदादेशो न भवति]

असदः जानीहि जानीया वा ५.२१.४. आस्स्व १२.१७. प्राप्नोषि १२.३८. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लङ् । छान्दसत्वात् सीदादेशो न भवति]

असन् प्रक्षिपन्ति ४.३.११. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लङ् । विकरणलुक् आडभावश्च छान्दसः]

असनत् विभजति ५.३०.१४. **असनम्**=सम्भजेयम् १.१२०.१० [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

असनाम् प्रक्षेपणां क्रियाम् १.१४८.४. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्युच् प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्]

असनाय प्रक्षेपणाय १.१३०.४. **असने**=क्षेपणे १.११२.२१. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्ल्युट्]

असनोत् सुनुयात् ३.३४.१०. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्लङ् । वर्णव्यत्ययेनोकारलोपश्च]

असन्दितः अखण्डितः (अग्निः=सेनापतिः) १३.१०. [सम्+दो अवखण्डने+क्तः 'द्यतिस्यति०' इत्यादि-सूत्रेणेत्वम् । नञ्समासः]

असन्वन् याचन्ते ७.१८.१.

असपत्नम् अजातशत्रुम् (राजानम्) ९.४०. शत्रूपद्रवरहितं निष्कण्टकमुत्तमराजधर्मम् ऋ० भू० २२२. सर्वत्र पक्षपातरहित पूर्णविद्या-विनययुक्त सब के मित्र सभापति राजा को स० प्र० १८३, ९.४०. **असपत्नाः**=अजातशत्रवः (राजानः) ७.२५. [नञ्-सपत्नपदयोर्बहुव्रीहिः]

असपर्यन् सेवन्ते ३.९.९. सेवेरन् ३३.७. [सपर्यति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. ततो लङ्]

असबन्धुः यथाऽसमाना बन्धवो यस्य सः (जनः) ५.२३. [समानबन्धुपदयोर्बहुव्रीहिः । समानस्य सादेशः 'ज्योतिर्जनपद०' अ० ६.३.८५. सूत्रेण । नञ्समासः]

असमनाः असमानमनस्काः (कृषीवलाः) १.१४०.४. पृथक् पृथग् वर्त्तमानाः (असिक्नीः=रात्रीः) ७.५.३. [समान-मनसोर्बहुव्रीहिः । समानस्य सादेशः । नञ्समासः]

असमने अविद्यमानं समनं सङ्ग्रामो यस्मिँस्तस्मिन् (पथि) ६.४६.१३. [नञ्-समनपदयोर्बहुव्रीहिः । समनम्=संग्रामनाम निघं० २.१७.]

असमरथः अविद्यमानः समो रथो यस्य सः (ग्रामणीः) १५.१७. [नञ्समरथपदयोर्बहुव्रीहिः । असमरथः तस्य (आदित्यस्य) रथश्रोतश्चासरथश्च सेनानी ग्रामण्याविति कर्षिकौ तावृतू श० ८.६.१.१८.]

असमष्टकाव्यः असमष्टं न सम्यग् व्याप्तं काव्यं कवेः कर्म यस्य सः (इन्द्रः=विद्याप्रकाशको जनः) २.२१.४. [असमष्टम्=नञ्+सम्+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) +क्तः काव्यम्=कविप्राति० भावे कर्मणि वा ष्यञ् तयोर्बहुव्रीहिः]

असमः नाऽन्यः समः सदृशो यस्य (ईश्वरः) ६.३६.४. **असमा**=अतुल्यौ सर्वेभ्योऽधिकौ (अध्यापकोपदेशकौ) ६.६७.१. अविद्यमाना समा यस्यां साऽनुपमा (मनीषा) १.५४.८. [नञ्-समपदयोर्बहुव्रीहिः]

असमात्योजः असमाति अतुल्यमोजो यस्य सः (इन्द्रः=ईश्वरोपासको राजा) ६.२९.६. [असमाति-ओजस् पदयोः समासः समातिश्च समानार्थे]

असमानः असदृशः (व्यक्तिः) ५.२३. (नञ्-समानयोः समासः]

असमानि अन्येषां धनैरतुल्यान्यधिकानि यावत् ७.४३.१. [नञ्समपदयोः समासः]

असमाः असदृशीः (दिद्युतः=तडितः) २.१३.७. [नञ्-समपदयोः समासः । स्त्रियां टाप्]

असम्भवात् अनुत्पन्नात् कारणात् ४०.१०. [सम्भवः=सम्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इति कर्त्तृभिन्ने कारकेऽप् । नञ्समासः]

असम्भूतिम् अनाद्यनुत्पन्नं प्रकृत्याख्यं सत्त्वरजस्तमोगुणमयं जडं वस्तु ४०.९. अनुत्पन्न अनादि प्रकृति कारण को स० प्र० ४३२, ४०.९. [सम्भूतिः=सम्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्तिन् । नञ्समासः]

असम्मृष्टः सम्यगशुद्धः (विद्यार्थी जनः) ५.११.३. [सम्मृष्टः=सम्+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोः क्तः। नञ्समासः]

असंयतः अजितेन्द्रियः (जनः) १.८३.३. [संयतः=सम्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः। नञ्समासः]

असरत् सरति गच्छति ४.३८.९. सरेत् प्राप्नुयात् ४.२४ १४. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

असर्जि सृज्यते, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् १.३८.८. सृजति ४.२६.५. सृज्येत ६.६३.७. रची गई १.१८१.७. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लुङ् कर्मणि]

असवे प्राणाय, भा०—प्राणादिशुद्धये २२.३०. [असुरिति प्राणनाम, अस्तः शरीरे भवति नि० ३.८.]

असश्चतम् जानीतम्, प्र०—अत्र लोडर्थे लङ्, सश्चतीति गतिकर्मा निघं० २.१४, १.११२.९. अप्राप्तम् (धेनुं=गामिव वाणीम्) २.३२.३. [सश्चतीति गतिकर्मा निघं० २.१४. ततो लङ्]

असश्चतः असज्यमानाः (भद्रा वीराः) २.२५.४. असमवेता (जनाः) १.११२.२. विभागं प्राप्ताः (द्वारः=द्वाराणि), प्र०—अत्र 'सस्ज गतौ' इत्यस्य व्यत्ययेन जकारस्य चकारः १.१३.६. परस्परं विलक्षणाः (वाचः) १.१४२.६. **असश्चता**=विलक्षणस्वरूपे (भूमिसूर्यौ) १.१६०.२. [षस्ज गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। नञ्समासः। वर्णव्यत्ययेन जकारस्य चकारः]

असश्चन्ती असमवयन्ती (धारा=प्रवाहवद्वाणी) ३.५७.६. पृथक् पृथग् वर्त्तमाने (रोदसी=सूर्यभूमी) ६.७०.२. [षच समवाये (भ्वा०) धातोः शत्रन्ताद् ङीप्। नञ्समासः। असश्चन्ती असज्यमाने इति वा। अव्युदस्यन्त्याविति वा नि० ५.२.]

अससन्तः जागृताः (सिन्धवः) १.१४३.३. [षस स्वप्ने (अदा०) धातोः शतृ प्रत्ययः। नञ्समासः। सस्तिस्वपितिकर्मा। निघं० ३.२२.]

असस्तन हिंसत १.१६१.११. [असस्तन अस्वपथ नि० ११.१६.]

असहन्त सहन्ते ३.२९.९. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अंसयोः भुजदण्डमूलयोः ५.५७.६. [अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अमेः सन्' उ० ५.२१. सूत्रेण सन् प्रत्ययः। ततः षष्ठी सप्तमी वा]

असादि आसद्यते ७.७.५. साद्यते १.६०.२. सीदेत् ५.४६.७. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर् कर्मणि लुङ्]

असानिषम् सम्भज्य प्राप्नुयाम् ६.४७.२३. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

असामि अतुलम् (महाविद्वज्जनम्) ६.३८.५. अनल्पम् (अतुलां वृद्धिम्) ६.१९.२. सम्पूर्णम् (सुखम्) प्र०—सामीति खण्डवाची न सामि असामि १.३९.९. **असामिभिः**=क्षयरहिताभिः ऊतिभिः, प्र०—अत्र षैं क्षये इत्यस्माद् बाहुलकादौणादिको मिः प्रत्ययः १.३९.९. [सामि खण्डवाची, स्वरादिषु पाठादव्ययम्। नञ्समासः। असामि=सामिप्रतिषिद्धम्। सामि स्यतेः। असुसमाप्तम् नि० ६.२३. षो अन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्बाहुलकान् मिः प्रत्यये सामि]

असामिशवसः अखण्डितबलाः (नरः=नायका जनाः) ५.५२.५. [असामि व्याख्यातम्। शवस् बलनाम निघं० २.९. तयोर्बहुव्रीहिः]

असावि उत्पाद्यते १.८४.१. सूयते ७.२१.१. **असावीत्** सुनोति १.१२४.१. प्रसुवति १.१५७.१. [षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

असिक्नीः रात्रीः, प्र०—असिक्नीति रात्रिनाम निघं० १.७, ७.५.३. **असिक्न्याम्**=रात्रौ ४.१७.१५. [असिक्नी रात्रिनाम निघं० १.७. असिक्न्यशुक्लाऽसिता नि० ९.२४. 'सितम्' शुक्लवर्णनाम, तत्प्रतिषेधोऽसितम्। क्तार्थे 'छन्दसि क्नमित्येके' अ० ४.१.३९. वार्ति० क्नम् ङीप् च]

असिञ्चत् सिञ्चति ३.४८.२. **असिञ्चतम्**=सिञ्चतम् १.११६.७. **असिञ्चन्**=सिञ्चन्ति १.८५.११. [षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोर्लङ्। 'शे मुचादीनाम्' इति नुमागमः]

असितग्रीवः असिता कृष्णा ग्रीवा शिखा यस्य सः (भा०—अग्निः) २३.१३. [असितो व्याख्यातः। ग्रीवा=निगलति यया सा शरीरावयवः, 'शेवायह्वजिह्वाग्रीवा०' उ० १.१५४. सूत्रेण निपातनात् साधु। तयोर्बहुव्रीहिः। अग्निर्वाऽअसितग्रीवः श० १३.२.७.२.]

असितम् निकृष्टवर्णं तमः ४.५१.९. कृष्णं तमः ४.१३.४. कृष्णं (रूपम्) १९.८९. **असितः**=कृष्णगुणः पशुविशेषः २४.३७. बन्धनरहितः (पशुः) प० वि०। अबद्धः (सूर्यः) १.४६.१०. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः क्तप्रत्यये सितः। तत्प्रतिषेधोऽसितः। असितो धान्वो राजेत्याह

तस्यासुरा विशः श० १३.४.३.१. सितमिति वर्ण नाम, तत्प्रतिषेधोऽसितम् नि० ६.२५.]

असिना खड्गेन २५.४३. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः 'खनिकष्यज्य०' उ० ४.१४० सूत्रेण इः प्रत्ययः। वज्रो वा असिः श० ३.८.२.१२. असिं वै शास इत्याचक्षते श० ३.८.१.४]

असिन्वन् बध्नन्ति ७.३९.६. **असिन्वम्**=अबद्धम् (मेघम्) ५.३२.८. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोर्लङ्]

असिमद्भ्यः प्रशस्ता असयः खड्गानि विद्यन्ते येषान्तेभ्यः (प्रजापुरुषेभ्यः) १६.२१. [असिप्राति० प्रशंसार्थे मतुप्]

असिषासन् विभक्तुमिच्छन्तु ३.३१.६. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सनि लङ्]

असिष्यन् बन्धनमप्राप्नुवन् (अग्निः) ६.३.५. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोर्लृटः शतृप्रत्ययः। नञ्समासः]

असीदत् निषीदेत् ५.१.६. सीदति १७.१७. सादयसि सादयत्यवस्थापयति वा ४.३०. अवस्थित है, आर्याभि० **असीदः** तिष्ठेः ६.१.२. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लङ्। ['पाघ्रा०' इत्यादिना शिति सीदादेशः]

असीषदन् प्रापयन्तु १२.५४. सादयन्तु १५.५६. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिचि लुङि रूपम्]

असुतः अनुत्पन्नः (सोमः=महौषधिरसः) ७.२६.१. **असुतात्** अनुत्पादितात् (महैश्वर्ययोगात्) ६.४१.४. [षु प्रसवैश्वर्ययो· (भ्वा०) धातोः क्तः। तत्प्रतिषेधोऽसुतः]

असुतृपः येऽसुषु प्राणेषु तृप्यन्ति ते (अब्रह्मविदो जनाः) १७.३१. केवल स्वार्थसाधक, प्राणपोषण में ही तत्पर (आत्महन्ता लोग) आर्याभि० २.४४. [असुरिति प्राणनाम, अस्तः शरीरे भवति नि० ३.८. तदुपपदे तृप प्रीणने (दिवा०) धातोर् इगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः]

असुनीतिम् याऽसून् प्राणान् नयति प्राप्नोति ताम् (तन्वम्=शरीर दीर्घायुः) १९.६०. सत्यन्याययुक्तां प्राणनीतिम् ऋ० भू० २६२. **असुनीते**=असवः प्राणा नीयन्ते येन सोऽसुनीतिस्तत्सम्बुद्धौ (ईश्वरः) ऋ० भू० २०१, १०.५९.६. [असु प्राणार्थे व्याख्यातः। नीतिः णीञ् प्रापणे (भ्वा०)धातोः क्तिन्। तयोः समासः। असुनीतिः (मध्यमस्थानीयो देवता) असून्नयति नि० १०.३९.]

असुनोत् सुनोति १९.३४. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्लङ्]

असुन्वन्तम् अभिषवादिनिष्पादनपुरुषार्थरहितम् (जनम्) १.१७६.४. **असुन्वतः**=यज्ञकर्तृविरोधिनः (दुर्जनाः) १.१०१.४. अयजमानस्य (जनस्य) ५.३४.५. **असुन्वता**=अपुरुषार्थिना (दरिद्रेण जनेन) ४.२५.७. **असुन्वताम्**=स्वैश्वर्यविरोधिनां शत्रूणाम् १.११०.७. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। ततो नञ्समासः]

असुम् प्रज्ञाम्, अस्यति दोषाननेन सोऽसुः प्रज्ञाः ताम्, प्र०—असुरिति प्रज्ञानामसु पठितम् निघं० ३.९, ८.१९. जीवनम् ऋ० भू० २०२. प्राणम् १९.४९. प्राणमन्नमयं बलं च ऋ० भू० २०२, १०.५९.७. **असुः**=नागादिमरुत् १८.२. प्राणः १.१६४.४. [असुरिति प्रज्ञानाम, अस्यत्यर्थान्, अस्ताश्चास्यामर्थाः नि० १०.३४. असुरिति प्राणनामास्तः शरीरे भवति नि० ३.८. प्राणम् नि० ११.१८. प्राणो वाऽसुः श० ६.६.२.६. तस्या एतस्यै वाचः प्राणा एवासवः। एषु हीदं सर्वमसूतेति जै० उ० १.४०.७.]

असुम्ना असुखानि दुःखानि प्र०—सुम्नमिति सुखनाम, निघं० ३.६, ३५.१.]

असुर ! मेघ इव वर्त्तमान (राजन्) १.१७४.१. दुष्टानां प्रक्षेप्तः (अग्ने=विद्वज्जन) ४.२.५. अविद्यमाना सुरा मद्यपानं यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) २.२७.१०. **असुरम्**=मेघमिव वर्त्तमानम् (सुदक्षं=सुष्ठुबलचातुर्य्यम्) ७.२.३. **असुरस्य**=अविदुषः (जनस्य) १.१२२.१. असुषु प्राणेषु रतस्य (जनस्य), प्र०—असुरताः, निरु० ३.७. १.११०.३. शत्रूणां प्रक्षेपकस्य (वीरजनस्य) ३.५३.७. विदुषः शत्रोः (जनस्य) २.३०.४. रूपरहितस्य वायोः ३.२९.१४. योऽस्यति दोषान् प्राणेषु रममाणो वा तस्य (वायोः) ३.३८.४. हिंसकस्य विद्युदाख्यस्याऽग्नेः ३३.२२. मेघस्य ५.४९.१. दुष्टान् दोषान् प्रक्षेप्तुः (राज्ञः) ३.५६.८. **असुरः**=प्रकाशाऽऽवरको मेघः ५.४२.१. मेघो वा यः प्रज्ञां राति ददाति सः १.५४.३. प्रक्षेप्ता (देवः=सूर्यः) ३४.२६. असुषु प्राणेषु रममाणो विद्युदग्निरिव (वीरः=रक्षको मनुष्यः) ७.५६.२४. प्राणेषु सुखदाता (अग्निः) ५.१५.१. योऽसुषु रमते सः (होता=हवनकर्त्ता जनः) ७.३०.३. सर्वेषां भूगोलादिपदार्थानां यथाक्रमं प्रक्षेपकः (अग्निः=ईश्वरः) ३.३.४. प्रकाशरहितो वायुः २७.१२. सर्वेभ्यः प्राणप्रदः (सूर्यः), सूर्योदये मृता इवोत्तिष्ठन्तीत्यतः, असुषु प्राणेषु रमते वा (सुपर्णः=सूर्यः) १.३५.७. असून् प्राणान् राति ददाति, अविद्यमानरूपगुणो वा सोऽसुरो वायुः, प्र०—अत्र 'आतोऽनुपसर्गे कः'

अ० ३.२.३. इत्यसूपपदाद् रा धातोः कः १.३५.१०. **असुरा**=प्राणवद् बलिष्ठौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५१.४. यावसुषु रमेते तौ (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ७.३६.२. प्र०—अत्राऽऽकारादेशो 'बहुलं छन्दसि' इति ७.३६.२. **असुरान्**=दुष्टकर्मकारिणो मूर्खान् पाखण्डिनो जनान्, दैत्यरक्षःस्वभावान् (दुर्जनान्) ऋ० भू० २३७. **असुराय**=मेघाय ५.४१.३. **असुराः**=प्रकाशरहिताः (सत्वनः) १.६४.२. अविद्वांसो दुष्टस्वभावाः (जनाः) २.२९. धर्माऽऽच्छादकाः (भा०—दुष्टा मनुष्याः) २.३०. **असुरैः**=अविद्वद्भिः, अन्तकरूपाभिः प्रजाभिर्वा १७.२९. विद्याहीनैर्मनुष्यैः १.१०८.६. [असुरः=मेघनाम निघं० १.१० असुरा=असुरताः स्थानेष्वस्ता स्थानेभ्य इति वा। अपि वा ऽसुरिति प्राणनामास्तः शरीरे भवति, तेन तद्वन्तः नि० ३.८. देवाश्च वा असुराश्च प्रजापतेर्द्वयाः पुत्रा आसन् तां० १८.१.२. असुरः, तेऽसुरा भूयांसो बलीयाꣳस (प्रजापतेः पुत्राः) आसन् तां० १८.१.२. कनीयस्विन इव वै तर्हि (युद्धसमये) देवा आसन् भूयस्विनोऽसुराः तां० १२.१३.३१. कनीयसा एव देवा ज्यायसा असुराः श० १४.४.१. (असुराः) स्वेष्वेवास्येषु जुह्वतश्चेरुः श० ११.१.८.१. मायेत्यसुराः (उपासते) श० १०.५.२.२०. असुरः, असुरमायया कौ० २३.४. असुरः, आसुरी माया स्वधया कृतासीति प्राणो वा ऽसुस्तस्यैषा माया स्वधया कृता श० ६.६.२.६. असुरः, (प्रजापतिः) तेभ्यः (असुरेभ्यः) तमश्च मायां च प्रददौ श० २.४.२.५. अहर्वै देवा अश्रयन्त रात्रिमसुराः ऐ० ४.५. अहर्वै देवा अश्रयन्त रात्रिमसुराः गो० उ० ५.१. (असुराः प्रजापतिमब्रुवन्) दयध्वमिति न आत्थेति श० १४.८.२.४. योऽपक्षीयते तम् (अर्धमासम्) असुराः उपायन् श० १.७.२.२२. असुरा वा एषु लोकेष्वासꣳस्तान् देवा ऊर्द्धसद्मनेन (साम्ना) एभ्यो लोकेभ्यः प्राणुदन्त तां० ९.२.११. ततोऽसुरा एषु लोकेषु पुरश्चक्रिरे ऽयस्मयीमेवास्मिंल्लोके रजतामन्तरिक्षे हरिणीं (सुवर्णमयीम्) दिवि श० ३.४.४.३. अर्वा (भूत्वा) असुरान् (अवहत्) श० १०.६.४.१. मनो वा असुरम्। तद्ध्यसुषु रमते जै० उ० ३.३५.३.]

असुरघ्नः दुष्टकर्मकारिणां हन्ता (विद्वज्जनः) ६.२२.४. **असुरघ्ने**=योऽसुरान् दुष्टकर्मकारिणो हन्ति तिरस्करोति तस्मै (यतये=संन्यासिने) ७.१३.१. [असुरो व्याख्यातः। तदुपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति वार्त्तिकेन बहुलग्रहणाट् टक् प्रत्ययः]

असुरत्वम् अस्यति प्रक्षिपति दूरीकरोति सर्वाणि दुःखानि तस्य भावम् (अद्वितीयं ब्रह्म) ३.५५.४. प्रज्ञा, शास्त्रशिक्षायुक्तप्रज्ञा में रमण के भावार्थ को स० प्र० ११०, ३.५५.१६. प्राणेषु क्रीडमानम् (सर्वान्तर्यामि ब्रह्म) ३.५५.२. यदसुषु प्राणेषु रमते तत् (अद्वितीयं ब्रह्म) ३.५५.१. प्राणाधारम् (ऋतं=सत्यम्) ३.५५.३. प्रक्षेप्तृत्वम् (असहायं ब्रह्मतेजः) ३.५५.६. सर्वेषां प्रक्षेप्तारम् (चेतनमात्रस्वरूपं ब्रह्म) ३.५५.५. [असुरप्राति० भावे कर्मणि वा त्वः प्रत्ययः। असुरत्वमेकं प्रज्ञावत्त्वं वा अनवत्त्वं वा। असुरिति प्रज्ञानाम, अस्यत्यर्थान् अस्ताश्चास्यामर्थाः। अपि वा असुरत्वमादिलुप्तम् नि० १०.३४.]

असुर्य ! असुरेषु प्रवासरहितेषु साधो (बृहस्पते=परमेश्वर) २.२३.२. **असुर्यम्**=असुरस्य मेघस्य भवम् (मेघाज्जलमिव बहुविधमैश्वर्यम्) ३.३८.७. असुरेषु अविद्वत्सु भवम् (सङ्गम्) ६.३६.१. असुरेषु मेघेषु प्राणक्रीडासाधनेषु भवं द्रव्यम् ८.२४. असुरस्य मेघस्येदं स्वकीयं स्वरूपम् ७.५.६. असुराणामविदुषां स्वं धनम् २.२७.४. असुरसम्बन्धिनम् (विद्योपदेशम्) ५.१०.२. असुरस्य स्वम् (असुरभावम्) २.३३.९. असुरेभ्यो विद्वद्भ्यो हितं (क्षत्रं—धनं राज्यं वा) ५.६६.२. असुराणां मूढाणां पापिनामिदमैश्वर्यम् ६.२०.२. **असुर्यस्य**=असुरेषु मूर्खेषु भवस्य (अज्ञानस्य) ७.२२.५. मेघे भवस्य (जलस्य) २.३५.२. **असुर्यः**=असुभ्यः प्राणेभ्यो हितः (परमेश्वरः) ३३.४०. **असुर्याणि**=असुराणां मेघानामिमानि चिह्नानि ४.४२.२. **असुर्यात्**=असुराणां दुष्टानां निजव्यवहारात् १.१३४.५. **असुर्याय**=असुरेषु अविद्वत्सु भवायाऽविदुषे (जनाय) ४.१६.३. **असुर्याः**=असुराणां प्राणपोषणतत्पराणामविद्यादियुक्तानामिमे सम्बन्धिनस्तत्सदृशाः पापकर्माणः (दुर्जनाः) ४०.३. [असुरप्राति० साध्वर्थे भवार्थे वा यत् प्रत्ययः]

असुवत् ऐश्वर्ययोगं कुर्यात् १.११०.३. [षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

असुष्वीन् अभिषवस्याऽकर्त्तॄन् (दुर्जनान्) ६.४४.११. येऽसूनभिषुन्वन्ति तान् (आप्तान् जनान्) ४.२४.५. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्विः प्रत्ययः षुगागमश्च बाहुलकाद्। ततो नञ्समासः]

असुष्वेः अलसस्याऽनिष्पादकस्य ४.२५.६. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

असूत सूते जनयति ३.३९.३. [षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोर्लङ्]

असूदयत् सूदयत् क्षरयेत् ३.३१.७. **असूदयतम्**=सञ्चालयेयुः १.७२.३. [षूद क्षरणे (चुरा०) धातोर्लङ्]

असूम् याऽस्यति प्रक्षिपति ताम् (स्त्रियम्) ३०.१४. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्बाहुलकादुः प्रत्ययः। स्त्रियाम् ऊङ्]

असूर्त्ते अप्राप्ते परोक्षे (रजसि=लोके), प्र०—अत्र सृधातोः क्तान्तं निपातनम् 'नसत्तनिषत्त०' इत्यनेन निपात्यते १७.२८. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये 'नसत्तनिषत्त०' अ० ८.२.६१. सूत्रेणोत्त्वं निपात्यते। नञ्समासः। असूर्त्ते असुसमीरिता वातसमीरिता माध्यमिका देवगणाः नि० ६.१५]

असूर्ये अविद्यमानः सूर्यो यस्मिँस्तस्मिन् (तमसि=रात्रौ) ५.३२.६. [नञ्सूर्यपदयोः समासः। सूर्यः—षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) सृ गतौ धातोर्वा 'राजसूयसूर्य०' अ० ३.१.११४ सूत्रेण क्यप् प्रत्ययः, सुवते रुडागमः, सर्त्तेरुत्वं वा निपात्यते]

असृक् रुधिरम् १.१६४.४.

असृक्षत सृजेयुः १.१३५.६. सृजन्तु ५.५२.६. **असृक्षि**=सृजति २.३५.१. **असृक्ष्महि**=संसृजेम, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् २०.२२. **असृग्रम्**=सृजामि विविधतया वर्णयामि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.८. अनेन सृजधातोरुडागमः वर्णव्यत्ययेन जकारस्थाने मकारः, लडर्थे लङ् च १.६.४. **असृजत्**=सृजति ४.१८.७. सृजते ३.१.६. **असृजत**=युक्त करो १.११०.८. **असृजन्त**=सृजन्ते ४.१६.२. **असृजः**=सृजेः १.१३०.५. सृजति ५.३२.१. सृजेत् ६.१७.६. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लुङ्। छान्दसत्वात् क्सः प्रत्ययः]

असृज्यत सृष्टम् १४.२६. सृष्टः १४.२८. **असृज्यन्त**=निर्मिताः (वनस्पतयः) १४.३१. उत्पादिताः १४.२६. सृज्यन्ते १४.२८. संसृष्टानि कुर्वन्ति १४.२८. सृष्टाः (सिंहादयः पशवः) १४.३०. **असृज्येताम्**=रचे हैं १४.३०. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः कर्मणि लङ्]

असृपत् सर्पति १३.३१. [सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

असेधः निवारयतु ५.३१.७. **असेधत्**=सेधते ६.४७.२१. [षिधु गत्याम् (भ्वा०) धातोर्लङ्। सेधति गतिकर्मा। निघं० २.१२४. अत्र निवारणार्थेऽपि]

अस्कन्नम् अविक्षुब्धम् (आज्यं=घृतादिकम्) २.८. [स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोः क्तः। नञ्समासः]

अस्कभायत् प्रतिबध्नाति ५.१८. स्तभ्नाति १.१५४.१. [स्कभि प्रतिबन्धे (भ्वा०) धातोर्णिचि लङ्। छान्दसत्वान् नुमभावः]

अस्कभ्नाः प्रतिबध्नासि प्रतिबध्नाति वा। ५.१६. [स्कम्भुरिति सौत्रो धातुः। ततो लङि 'स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भु०' अ० ३.१.८२ सूत्रेण श्नाप्रत्ययः]

अस्कृधोयु य आत्मनः कृधु ह्रस्वत्वं नेच्छति, (विद्यार्थिजनः), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति सुलोपः ६.६७.११. अस्थूलम् ७.५३.३. **अस्कृधोयुः**=अपरिच्छिन्नः (परमात्मा) ६.२२.३. [अस्कृधोयु अकृध्वायुः। कृध्विति ह्रस्वनाम निकृत्तं भवति नि० ६.३. कृधु ह्रस्वनाम निघं० ३.२]

अस्तभायत् स्तभ्नाति स्थिरी करोति ६.४४.२२. **अस्तभायः**=स्तभान १.६२.५. **अस्तभ्नात्**=स्तभ्नाति धरति २.१२.२. स्तभ्नासि स्तभ्नाति धरति वा प्र०—अत्र लडर्थे लङ् ४.३०. स्तम्भितवानस्ति ऋ० भू० १४४ वे० को०, ६.४७.५. **अस्तभ्नाः**=स्तभ्नाति २.१३.१०. [स्तम्भुरिति सौत्रो धातुः। ततो णिचि लङि रूपम्। मकारलोपश् छान्दसः। अन्यत्र—'स्तम्भुस्तुम्भु०' अ० ३.१.८२ सूत्रेण श्नाप्रत्ययः]

अस्तम् सुखमयं गृहम्, भा०—दिव्यसुखयुक्तं मोक्षाख्यं व्यावहारिकं चाऽऽनन्दम्, प्र०—अस्तमिति गृहनामसु पठितम् निघं० ३.४, ३.४७. अस्यन्ति दूरीकुर्वन्ति दुःखानि यस्मिँस्तद् गृहम् १.११६.५. घर को सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२६. [अस्तं गृहनाम निघं० ३.४. गृहा वा अस्तम् श० २.५.२.२६.]

अस्तम् प्रक्षिप्ताम् (स्त्रियम्) ४.१६.१०. प्रक्षिप्त प्रेरितम् (विद्युदग्निम्) ५.६.१. क्षिप्तं चालितं यानम् ऋ० भू० १६३. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्बाहुलकात् तः प्रत्ययः]

अस्तमिव गृहं प्राप्येव १.११६.२५. [अस्तं गृहनाम निघं० ३.४.]

अस्तमीके समीपे १.१२६.६. [अस्तमीके अन्तिकनाम निघं० २.१६.]

अस्तम्भीत् उत्तभ्नाति ३.५.१०. [स्तम्भुरिति सौत्रो धातुः, ततो लुङि रूपम्। 'जृस्तम्भु०' अ० ३.१.५८. सूत्रेणाङभावे सिच्]

अस्तवे असितुं प्रक्षेप्तुम्, प्र०—अत्र असधातोस्तुमर्थे तवेन् प्रत्ययः १६.३.

अस्तः प्रक्षिप्तः (राजजनः) २.११.२०. योऽस्यति सः (राजा) ७.१८.११. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्बाहुलकात् तः प्रत्ययः]

अस्ता शस्त्राऽस्त्राणां प्रक्षेप्ता (इन्द्रः=सर्वसेनाधिपतिः) १७.३५. **अस्तारः**=प्रक्षेप्तारः (नरः=नायका जनाः) १.६४.१०. **अस्तुः**=शत्रूणां विजेतुः प्रक्षेप्तुः (वीरजनस्य) १.६६.४. प्रक्षेप्तुः (शिल्पिनो विदुषः) १.१४८.४. **अस्तृभिः**=सर्वशस्त्राऽस्त्रप्रक्षेपणदक्षैः (शूरेभिः=योद्धृभिः शूरवीरैः) १.८.४. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः कर्तरि तृच् प्रत्ययः]

अस्ता इव यथा शस्त्राणां प्रक्षेप्ता (शूरवीरो जनः) १.७०.६. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोस्तृच्]

अस्तातिम् गृहस्थम् ५.७.६. [अस्तं गृहनाम निघं० ३.४. आतिः=अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोः 'अज्यतिभ्यां च' उ० ४.१३१ सूत्रेण इण् । तयोः समासः]

अस्तारि तीर्यते ६.६३.३. [स्तृञ् आच्छादने (स्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

अस्तावि स्तूयते ६.२३.१०. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

अस्तुतः अप्रशंसितः (सखा) ५.६७.५. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः]

अस्तुवत प्रशंसत १४.३१. प्रशंसन्तु १४.२६. स्तुवन्तु १४.२८. स्तुवन्तु सङ्ख्यायन्तु १४.२९. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लङ्]

अस्तृणन् विस्तारयन्ति ३.९.९. आच्छादयन्तु ३३.७. आच्छादयन्ति १.१८८.४. [स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्लङ्]

अस्तृतः अहिंसितस्सन् (मनुष्यः) १.४१.६. **अस्तृतम्**=हिंसारहितम् (सख्यम्) १.१५.५. [स्तृणाति वधकर्मा निघं० २.१९. ततः क्तः । नञ्समासः]

अस्ते गृहे वा प्रक्षेपणे ७.१.२. [अस्तं गृहनाम निघं० ३.४.]

अस्तेव गृहाणीव ४.३१.३. [अस्तं गृहनाम, तदिव]

अस्तेव प्रेरकः सारथिरिव ६.२०.९. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोस्तृच्]

अस्तोढ्वम् स्तुवत १.१२४.१३. **अस्तोषत**=स्तुवन्ति प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ३.५१. स्तुत १.८२.२. **अस्तोषि**=प्रशंससि ५.४१.१०. स्तौमि १.१२२.१. **अस्तौष्ट**=स्तौति १.७७.५. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लुङ्]

अस्तोभयत् बन्धयति १.८८.६. [ष्टुभु स्तम्भे (भ्वा०) धातोर्णिचि लङि रूपम्]

अस्त्रिधम् अहिंसनीयम् (अश्विना=अध्यापकमुपदेशकं च) २५.१६. [नञ्पूर्वात् स्रिधक्षये धातोर्घञर्थे कः प्रत्ययः]

अस्थभिः अस्थिरैश्चञ्चलैः किरणचलनैः १.८४.१३. **अस्थभ्यः**=शरीरस्थकठिनाऽवयवेभ्यः, सूक्ष्माऽवयवाऽस्थिरूपेभ्यः ३९.१०. अस्थिभ्यः, प्र०—छन्दस्यपि दृश्यते, इत्यनेन हलादावप्यनङ् २३.४४. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः 'असिसञ्जिभ्यां क्थिन्' उ० ३.१५४. सूत्रेण क्थिन् प्रत्ययः । अस्यति प्रक्षिपति येन तदस्थि । 'छन्दस्यपि दृश्यते' अ० ७.१.७६. सूत्रेणानङ् । षष्टिश्च ह वै त्रीणि च शतानि पुरुषस्यास्थीनि श० १०.५.४.१२. अस्थि वा एतत् यत्समिधः तै० १.१.९.४. अस्थीनि वै समिधः श० ९.२.३.४६. अस्थीष्टकाः श० ८.१.४.५, ८.७.४.१९. अस्थि प्रतिहारः जै० उ० १.३६.६. सप्त च ह वै शतानि विंशतिश्च संवत्सरस्याहानि च रात्रस्याहानि च रात्रयश्चेत्येतावन्त एव पुरुषस्यास्थीनि च यज्जानश्चेत्यत्र तत्सयम् गो पू० ५.५]

अस्थन्वन्तम् अस्थियुक्तं देहम् १.१६४.४. [अस्थि-प्राति० मतुप् प्रत्ययः । 'छन्दस्यपि दृश्यते' अ० ७.१.७६. सूत्रेणानङ्]

अस्थात् तिष्ठेत् १.१६२.२१. तिष्ठति ३.६१.६. उत्तिष्ठति उदेति ३४.२६. वर्त्तते ४.५१.१. स्थितवानस्ति १.३५.१०. तिष्ठते २.४.७. **अस्थाम्**=तिष्ठेयम् ४.२८. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'गातिस्थाघु०' सूत्रेण सिचो लुक्]

अस्थित तिष्ठते १.४०.७. **अस्थिरन्**=स्थिरा इवाचरेयुः १.१३५.१. स्थिराः स्युः १.१३५.१. तिष्ठेरन्, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् 'वाच्छन्दसि' इति झस्य रनादेशः 'छान्दसो वर्णलोपः' इति सिचः सलोपः १.९४.११. तिष्ठन्ति १.८०.७. **अस्थुः**=आतिष्ठन्ति ६.४४.२०. तिष्ठन्ति ७.४३.२. तिष्ठेयुः १७.५६. सन्ति ५.७६.१. तिष्ठन्तु १.१२३.६. उत्तिष्ठन्तु ७.६०.४. प्राप्नुवन्तु ४.४१.८. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर् लुङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् 'स्थाघ्वोरिच्चे' ति कित्त्वमित्त्वं च]

अस्थूरि अस्थिरं यानम् ६.१५.१९. तिष्ठन्ति यस्मिन्नालस्ये तत्स्थूरं, तन्निन्दितं विद्यते यस्मिन् तत् स्थूरि, न स्थूरि यथा स्यात्तथा (गार्हपत्यानि कर्माणि), प्र०—अत्र

निन्दार्थे इनिः प्रत्ययः २.२७. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'स्थः किच्च' उ० ५.४ सूत्रेण ऊरन् प्रत्ययः। ततो निन्दार्थे इनिः प्रत्ययः। नञ्समासश्च]

अस्ना रुधिराणि, २५.९. [असृज् रुधिरम्। तस्य स्थाने टा प्रत्यये 'पद्दन्नोमास्हृन्निशसन्०' अ० ६.१.६३. सूत्रेण 'असन्' आदेशः]

अस्नातारा स्नानादिकर्मरहितौ (मनुष्यौ) ४.३०.१७. **अस्नातॄन्**=अस्नातकान् (अयज्ञस्नानकर्त्तृकान् जनान्) २.१५.५. [ष्णा शौचे (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। नञ्समासश्च]

अस्नाविरम् नाड्यादिसम्बन्धरहितम् (ब्रह्म=ईश्वरः) ४०.८. नाड्यादिसम्बन्धरहितत्वाद् बन्धनावरणविमुक्तम् (ब्रह्म) ऋ० भू० ३६, ४०.८. जो नाड़ी आदि के बन्धन में नहीं आता (ब्रह्म परमेश्वर) स० प्र० २४४, ४०.८. नाड़ी आदि का प्रतिबन्ध (निरोध) जिसका नहीं हो सकता और अतिसूक्ष्म होने से जिसको कोई आवरण भी नहीं हो सकता वह (ब्रह्म=ईश्वर) आर्याभि० २.२, ४०.८.

अस्पन्दमानः किञ्चिच्चलितः सन् (अग्निः=विद्युदिव राजा) ४.३.१० [स्पदि किञ्चिच्चलने (भ्वा०) धातोः शानच्। नञ्समासश्च]

अस्पष्ट स्पशते, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१०.२. [स्पश बाधनस्पर्शनयोः (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

अस्पः प्रीणय ५.१५.५. [स्पृ प्रीतिपालनयोः (स्वा०) धातोर्लङ् 'बहुलं छन्दसीति' शपो लुक्, ततश्च श्नुरपि न भवति]

अस्पृक्षत् स्पृहेत् २८.१८. **अस्पृक्षः**=स्पृश, प्र०—अत्र लोडर्थे लङ् ६.२. [स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोर्लुङ् 'स्पृशमृश०' अ० ३.१.४४ वार्त्तिकेन वा क्सः प्रत्ययः]

अस्पृध्रन् स्पर्द्धन्ताम् ६.६६.११. स्पर्द्धन्ते ७.५६.३. [स्पर्द्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोर्लङ् छान्दसं रूपम्]

अस्पृशत् स्पृशति ६.८.२. **अस्पृशन्त**—स्पर्श करते हैं सं० वि० १७० वे० को०, अथ० १४.२.३२. [स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोर्लङ्]

अस्फुरत् स्फुरति सञ्चालयति २.१२.१२. वर्धयति २.११.९. [स्फुर सञ्चलने (तुदा०) धातोर्लङ्]

अस्मत्रा अस्मासु १.१३२.२. अस्मासु मध्ये १.१३७.१. [अस्मद् सर्वनाम्नः 'देये त्रा च' अ० ५.४.५५. सूत्रेण तदधीनवचने त्रा प्रत्ययः]

अस्मत्राञ्चः ये शत्रुभ्योऽस्माँस्त्रायन्ते तानञ्चन्ति प्राप्नुवन्ति ते (राज्यकर्माधिकारिणो जनाः) ६.४४.१९. [अस्मत्रोपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' अ० ३.२.५९ सूत्रेण क्विन् प्रत्ययः]

अस्मत्सखा अस्माकं मित्रम् (राजा) ६.४७.२६. वयं सखायो यस्य सः (राजा) ८.५०. [अस्मद्-सखिशब्दयोः समासः]

अस्मद्र्यक् योऽस्मानञ्चति सर्वज्ञतया जानाति (इन्द्रः=भगवान्) ७.३९. अस्माकं सम्मुखीभूतः (इन्द्रः=सूर्यः) ६.१९.१. योऽस्मानञ्चति सः (इन्द्रः=परमैश्वर्यप्रदो न्यायेशः) ६.१९.३. योऽस्मानञ्चति जानाति ज्ञापयति वा (राजा) ५.४.२. योऽस्मानञ्चति प्राप्नोति (शक्तिः=सामर्थ्यम्) ४.२२.८. **अस्मद्र्यञ्चः**=येऽस्मानञ्चन्ति प्राप्नुवन्ति ते (विद्वांसोऽध्येतारश्च) ७.१९.१०. [अस्मद्युपपदे अञ्चु गतिपूजनयोर्धातोः क्विन्। 'विष्वग्देवयोश्च टेरद्रि०' अ० ६.३.९२. सूत्रेण सर्वनाम्नः टेरद्रिरादेशः]

अस्मद्राता येऽस्मभ्यं रान्ति शुभान् गुणान् ददति ते (राजसभासेनाजनाः) ७.४६. [अस्मद्+रा दाने (अदा०) धातोस्तृच् प्रत्ययः। व्यत्ययेनैकवचनम्]

अस्मध्रुक् योऽस्मान् द्रोग्धि (दुर्जनः) १.१७६.३. अस्मान् द्रुह्यति यः सः (मर्त्यः) १.३६.१६. [अस्मद्+द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोः क्विप्। छान्दसो दकारलोपश्च]

अस्मयुम् अस्मान् पाययितारम् (अग्निं=प्रसिद्धं विद्युतं वा) प्र०—अत्राऽस्मदुपपदात् पाधातोरौणादिकः कुः 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति दलोपः ११.१३. **अस्मयुः**=योऽस्मान् याति सः (शिल्पी जनः) ५.७४.८. अस्मान् कामयमानः (राजा) ६.४८.२. अस्मास्वात्मानमिच्छुः (विद्वज्जनः) १.१३१.७. अहमिवाऽऽचरन् (विद्वज्जनः) १.१३५.२. योऽस्मान् कामयते (विद्यार्थी जनः) २७.४४. आत्मनोऽस्मानिच्छुरिव (इन्द्रः=विद्वज्जनः) ३.४२.१. **अस्मयू**=आवामिवाचरन्तौ (इन्द्रवायू=सर्पपवनाविवाऽध्यापकोपदेशकौ १.१३५.५. अस्मानिच्छन्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५१.७. [अस्मद् सर्वनाम्नः 'उपमानादाचारे' अ० ३.१.१० सूत्रेण क्यच् प्रत्ययः। 'क्याच्छन्दसि' अ० ३.२.१७० सूत्रेण उः प्रत्ययः। छान्दसो दकारलोपश्च। अग्निं भरन्तमस्मयुमित्यग्निं भरन्तमस्मत्प्रेषितमित्येतत् श० ६.३.२.३.]

अस्माकासः येऽस्माकं मध्ये वर्त्तमानाः (वीरजनाः), प्र०—अत्राऽणि 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति वृद्ध्यभावः १.६७.३. अस्माकमिमे (सूरयः=पण्डिता जनाः) ५.१०.६. **अस्माकेभिः**=अस्मदीयैः (सत्वभिः= शूरवीरजनैः) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यणि वृद्ध्यभावः २.३०.१०. [अस्मत्प्राति० 'युष्मदस्मदोर०' अ० ४.३.१. सूत्रेण शैषिकोऽण् 'तस्मिन्नणि च०' अ० ४.३.२. सूत्रेणास्माकादेशः । छान्दसत्वाद् वृद्धेरभावः]

अस्मेराः या अस्मानीरयन्ति ताः (युवतयः=स्त्रियः), प्र०—अत्र पृषोदरादिना तलोपः २.३५.४. हम को प्राप्त होने वाली (युवतयः=कन्या लोग) सं० वि० १०४, २.३५.४. [अस्मद्युपपदे ईर गतौ (भ्वा०) ईर क्षेपे (चुरा०) धातोरच् प्रत्ययः पृषोदरादिना दकारलोपः]

अस्य दूरीकुरु ३.२४.१. प्रक्षिप ६.३७. **अस्यताम्**= पटकें १७.६४. **अस्यति**=प्रक्षिपति ३.५३.२२. **अस्यतु**= शत्रून् प्रक्षिपतु २.२४.८. **अस्यथ**=प्रक्षिपत १.१७२.२. प्रचालयत ५.५५.६. **अस्यसि**=प्रक्षिपसि ५.८४.२. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लटि रूपम्]

अस्यद्भ्यः प्रक्षिपद्भ्यस्त्यजद्भ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२२. **अस्यन्**=प्रक्षिपन् (राजा) ४.२२.२. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

अस्रत् संस्रतोऽधः स्रवतु, प्र०—लोडर्थे लङ् ८.२८. [स्रंसु अवस्रंसने (भ्वा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् । 'वसुस्रंसुध्वंसु०' सूत्रेण पदान्तसकारस्य दकारः । नकारलोपश्छान्दसः]

अस्रवन्तीम् अच्छिद्राम् (नावम्) २१.५. छिद्रादिदोषरहिताम् (सुनावम्) २१.७. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । ततो नञ्समासः]

अस्रवः स्रावय ६.६१.३. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लङि मध्यमैकवचनम्]

अस्राक् यः सृजति (सविता=जगदीश्वरः) ४.५३.३. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लुङ् । सिचो लुक् । अमागमश्च]

अस्रक् सृजति ४.५३.४. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लुङ् । सिचो लुक् । अमागमश्च]

अस्रिधम् अहिंसकम् (विद्वज्जनम्) १.८६.३. **अस्रिधः**=अहिंसकः (सोमः=विद्वज्जनः) ५.४६.४. अक्षयविज्ञानवन्तः (विश्वेदेवासः=समस्ता वेदपारगा विद्वज्जनाः), प्र०—अत्र क्षयाऽर्थस्य नञ्पूर्वकस्य स्रिधेः क्विबन्तस्य रूपम् १.३.६. अहिंसिताः (हंसासः=अश्वाः) ४.४५.४. अहिंसनीयाः (इडा-सरस्वती-मही नीतयः) १.१३.६. अहिंस्राः (तिस्रो देवीः) ५.५.८. **अस्रिधा**= अहिंसकौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.३२.२४. [क्षयार्थे वर्तमानस्य स्रिध धातोः क्विप् । नञ्समासश्च]

अस्रीवयः यदस्यति कामयते च तदस्रीवयोऽन्नादिकम् १४.१८.

अस्रेधता अक्षीणेन (मनसा=चित्तेन) ३.१४.५. इतस्ततो गमनरहितेन स्थिरेण (मनसा=विज्ञानेन) १८.७५. **अस्रेधन्तः**=अहिंसन्तः (मरुतः=मनुष्याः) ७.५६.६. अक्षीणोत्साहाः (देवासः=विद्वांसः शूराः) ३.२६.६. [नञ्पूर्वात् स्रिध क्षयार्थात् धातोः शतृप्रत्ययः]

अस्रेधन्ती साधयन्ती (उषाः) ५.८०.३. [क्षयार्थकस्रिध धातोः शत्रन्तान् ङीप् । नञ्समासश्च]

अस्रेमाणम् अक्षयम् (अग्निम्) ३.२९.१३. [स्रिध क्षये धातोः शानच् । नञ्समासः । वर्णव्यत्ययेन धकारलोपः । अस्रेमा=प्रशस्यनाम निघं० ३.८.]

अस्वदयत् स्वादयति २.४.७. [स्वद आस्वादने (चुरा०) धातोर्लङ्]

अस्वनीत् शब्दयेदुपदिशेत् ४.२७.३. [स्वनशब्दे (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अस्वप्नजः जागरूकाः (राजभृत्याः) ४.४.१२. विद्याव्यवहारे जागृता अविद्यानिद्रारहिताः (जगत्कल्याणकरा जनाः) २.२७.६. **अस्वप्नजौ**=स्वप्नो न जायते ययोस्तौ, भा०—तमोगुणानभिभूतौ प्राणापानौ ३४.५५. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्भावे नन् प्रत्यये स्वप्नः । स्वप्नोपपदे जनीप्रादुर्भावे धातोर्डप्रत्यये स्वप्नजः । ततो नञ्समासः । जागृतो अस्वप्नजौ (देवौ वाय्वादिस्थौ) नि० १२.३७.]

अस्वम् या दुष्कर्म न सूते नोत्पादयति ताम् [धेनुं= वाचम्) १.११२.३. [षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः क्विप् प्रत्यये सूः । नञ्समासे ऽसूः । 'वा छन्दसि' अ० ६.१.१०७. वार्तिकेन पूर्वरूपाऽभावे यणादेशे च रूपम्]

अस्वरन् स्वरन्ति शब्दयन्ति ५.५४.८. [स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोर्लङ्]

अस्ववेशम् न स्वकीयो वेशो यस्य तम् (सत्पुरुषम्) ७.३७.७. [वेशः=विश प्रवेशे (तुदा०) धातोः 'पदरुजविशस्पृशो घञ्' अ० ३.३.१६. सूत्रेण घञ् । नञ्-स्ववेशानां बहुव्रीहिः]

अस्वापयत् स्वापयेत् ४.३०.२१. **अस्वापयः**=हत्वा

शापय ७.१९.४. [जिष्वप् शये (अदा०) धातोर्णिचि लङ्]

अस्वार्ष्टाम् शब्दयतः २.११.७. [स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'सनीवन्तर्द्धभ्रस्जदम्भु०' अ० ७.२.४९. सूत्रेणेड्विकल्पः]

अह दुःखविनिग्रहे १.९२.३. शत्रुविनिग्रहे १.११९.३. विशेषणग्रहणे ५.३४.३. विनिग्रहार्थे, प्र०—अह इति विनिग्रहार्थीयः निरु० १.५., १.६.४. निरोधे १.१४०.९. निश्चये ६.३. इसके अनन्तर ६.३८.४. [अह इति च ह इति च विनिग्रहार्थीयौ नि० १.१५.]

अह इव अहानीव ७.३४.५. [अहः=दिनम्, उपाहरन्त्यस्मिन् कर्माणि नि० २.२१.]

अहतम् हन्यातम् ६.७२.१. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ्]

अहतौ न हतौ हिंसितौ (पितरौ=माता पिता च द्वौ) १९.११. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्तप्रत्यये नञ्समासे च रूपम्]

अहन् शत्रून् हंसि १.६३.३. हन्ति १.५६.५. हन्याः ४.३०.५. हन्यात् ३३.२६. दूरीकुर्याः ६.२६.३. हतवान् हन्ति हनिष्यति वा १.३२.२. जहि १.३२.४. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ्]

अहन् अहनि दिवसे ४.१२.१. **अहना**=दिवसेन व्याप्त्या वा प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यल्लोपो न १.१२३.४. **अहनि**=दिने १.११०.७. **अहनी**=रात्रिदिने १.१२३.७. अहर्निशम् १.१८५.१. **अहभिः**=दिवसैस्सह ७.२८.४. दिनैः, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति रलोपः १.१६४.५१. प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति रुत्वाऽभावो नलोपश्च ४.४५.६. **अहसु**=दिनेषु, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति रोरभावे नलोपः १.१२४.८. **अहः**=व्याप्तिशीलं दिनम् १.७१.२. प्रतिदिनम् ३८.११. दिने ३.४८.२. **अहा**=दिनानि ४.३०.३. अहानि दिनानि १.५०.७. **अहानि**=दिनानि ३६.११. सब दिवस आर्याभि० २.२३, ३६.११. **अहोभिः**=दिनैः ३५.१. **अह्नः**=दिवसस्य ४.१०.५. **अह्ना**=अहर्विद्यया १५.६. दिवसेन ४.१६.३. **अह्नाम्**=दिनानाम् १.१८५.४. **अह्ने**=दिनाय ९.२०. [अहः=दिनम्, उपाहरन्त्यस्मिन् कर्माणि नि० २.२१. अहनी अहोरात्रे नि० ३.२२. अहना उषो नाम निघं० १.८. अहर्मित्रः तां० २५.१०.१०. अहर्वै मित्रः ऐ० ४.१०. अहरेव सविता गो० पू० १.३३. अहः यज्ञो वै स्वः यजु० १.२१. अहर्देवाः सूर्यः श० १.१.२.२. अहः स्वर्गः श० १३.२.१.६. अहर्वै स्वर्गो लोकः ऐ० ५.२४. अग्निर्वाऽहः, सोमो रात्रिः श० ३.४.४.१५. अहः यजुष्मत्यः (इष्टकाः) ज्योतिस्ताद्धचह्नां रूपम् श० १०.२.६.१७. अहर्वै पान्तम् तां० ९.१.७. अहर्वै शबलो रात्रिः श्यामः कौ० २.९. अहर्व्युष्टिः तै० ३.८.१६.४. अहर्वै वियच्छन्दः श० ८.५.२.५. अहः सब्दामहः (सब्दः=ऋतुविशेषः) तै० ४.४.७.२. श० १.७.२.२६. अहः (पूर्वपक्षापरपक्षयोः) यान्यहानि ते मधुवृषाः तै० ३.१०.१०.१. अहर्वै विष्णुक्रमाः श० ६.७.४.१२. अहः ब्राह्मणो वाऽएतद्रूपं यदहः श० १३.१.५.४. अहः ब्रह्मणो वै रूपमहः क्षत्रस्य रात्रिः तै० ३.९.१४.३. अहः अहर्बार्हतम् ऐ० ५.३०.]

अहन्त्यै या कश्चिन्न हन्ति तस्यै (राजपत्न्यै) १६.१८. [नञ्पूर्वस्य हन्तेः शत्रन्तान् ङीप्]

अहन्यः अहनि भवः (मृगः=सिंहः) १.१९०.३. **अहन्येभिः**=दिनैः ५.४८.३. [अहन्प्राति० भवार्थे यत् प्रत्ययः]

अहये मेघाय ५.३१.४. [अहि मेघनाम निघं० १.१०.]

अहरहः प्रतिदिनम्, भा०—नित्यम् ११.७५. [अहः=दिनम्, तस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

अहर्पतये पुरुषार्थेन गणितविद्यया दिवस्पालकाय (वागिन्द्रियाय) ९.२०. अह्नां पालकाय (राज्ञे) १८.२८. [अहन्-पत्योः समासः । 'अहरादीनां पत्यादिषूपसंख्यानम्' अ० ८.२.७०. वार्तिकेन रेफस्य रेफादेशो विसर्जनीयबाधनाय]

अहर्विदम् योऽहनि विन्दति तम् (व्रजं=देशम्) १.१५६.४. **अहर्विदः**=य अहर्विज्ञानप्रकाशं विन्दन्ति प्राप्नुवन्ति ते (विद्वज्जनाः) १.२.२. [अहन्युपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप् प्रत्ययः]

अहविः अविद्यमानं हविरादानमदनं वा यस्य सः (जनः=आप्तो मनुष्यः) १.१८२.३. [नञ्-हविपदयोर्बहुव्रीहिः । हविः=हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'अर्त्तिशुचि०' उ० २.१०८. सूत्रेण इसिः प्रत्ययः]

अहस्तम् अविद्यमानहस्तम् (व्रजं=मेघम्) ३.३०.८. अविद्यमानौ हस्तौ यस्य तम् (वृत्रं=मेघमिव) १८.६९. **अहस्तः**=अविद्यमानौ हस्तौ यस्य सः (मेघः) १.३२.७. [नञ्-हस्तपदयोर्बहुव्रीहिः । हस्तो हन्तेः प्राशुर्हनने नि० १.७.]

अहंपूर्वः अयमहमित्यात्मज्ञानेन पूर्णः (रथः) १.१८१.३. [अहमित्यात्मार्थे सर्वनाम । पूर्वः=पॄ पालनपूरणयोर्धातो रूपम् । तयोः समासः]

अहंयुः अहं विद्यते यस्मिन् सः (जनः) १.१६७.७. [अहम् शब्दात् 'अहंशुभमोर्युस्' अ० ५.२.१४०. सूत्रेण मत्वर्थे युस् । अहमिति शब्दान्तरमहंकारे]

अहः व्याप्तिशीलम् (अर्जुनम्=ऋजुगत्यादिगुणम्) ६.९.१. [अह व्याप्तौ (स्वा०) धातोरसुन् प्रत्ययः]

अहार्षम् हरेयम् १२.११. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

अहावि हूयते २०.७९. [हु दानादानयोः (जु०) धातोः कर्मणि लुङ्]

अहासत ज्ञापयन्ति, प्र०—अत्र 'ओहाङ् गतौ' इत्यस्माल्लडर्थे लुङ् १.९.४. [ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लुङ्]

अहाः त्यजति, प्र०—अत्र 'ओहाक् त्यागे' इत्यस्माल्लुङि प्रथमैकवचने आगमानुशासनस्याऽनित्यत्वात् सगिटौ न भवतः १.११६.३. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोर्लुङ्]

अहिगोपा अहिना मेघेन गोपा गुप्ता आच्छादिताः (आपः=जलानि) १.३२.११. [अहि मेघनाम निघं० १.१०. गोपः=गुपू रक्षणे (भ्वा०) धातोर्घञ् । तयोः समासः । अहिगोपाः=अहिना गुप्ताः नि० २.१७.]

अहिघ्ने योऽहिं मेघं हन्ति तस्मै (सवित्रे=सूर्याय) २.३०.१. [अहिः=मेघः, तदुपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति टक् प्रत्ययः]

अहिन्वन् वर्धयन्ति ३.३१.५. [हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्लङ्]

अहिभानवः अहेर्मेघस्य प्रकाशकाः (वायवः) १.१७२.१. [अहिर्मेघवाची । भानुः=भा दीप्तौ (अदा०) धातोः 'दाभाभ्यां नुः' उ० ३.३२. सूत्रेण नुः प्रत्ययः]

अहिना मेघेन ४.५५.६. मेघेनेव धनेन ४.१७.१. **अहिम्**=सर्पं शत्रुं वा १.१०३.७. सर्पमिव वर्त्तमानं (वृकं=स्तेनम्) ७.३२.७. सर्वत्र व्याप्तुमर्हं मेघम् १.५१.४. व्याप्नुवन्तं मेघम् ६.३०.४. मेघमिव चेष्टमानमुन्नतम् (वृकं=चोरम्) ९.१६. **अहिः**=व्यापनशीलो मेघः २.३१.६. सर्पवत् क्रुद्धो विषधरः ८.२३. समस्तविद्यासु व्यापनशीलः (ईश्वरः) ५.२३. सर्पवत् (विद्वज्जनः) ६.१२. **अहेः**=मेघस्य १.५२.१०. [अह व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्बाहुलकाद् इः प्रत्ययः । अथवा 'आङि श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्च' उ० ४.१३८ सूत्रेण आङ्पूर्वस्य हन्तेरिण् प्रत्ययः । अहिः=मेघनाम । निघं० १.१०. उदकनाम निघं० १.१२. अहिः=अयनात्, एति अन्तरिक्षे अयमपीतरोऽहिरेतस्मादेव, निर्ह्रसित उपसर्ग आहन्तीति नि० २.१७. अही गोनाम नि० २.११. द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०. अथ (वृत्रः) यदपात्समभवत्तस्मादहिः शं० १.६.३.९.]

अहिमन्यवः येऽहिं मेघं मानयन्ति ज्ञापयन्ति ते (वायवः) १.६४.८. येऽहिं व्याप्तिं मानयन्ति ज्ञापयन्ति ते (मरुतः) १.६४.९. [अहिर्व्याख्यातः । मन्युः=मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'यजिमनि०' उ० ३.२० सूत्रेण युच् । तयोः समासः]

अहिमायस्य अहेर्मेघस्य मायाऽऽच्छादनमिव कापट्यं यस्य तस्य (शत्रोः) ६.२०.७. **अहिमायान्**=अहेर्मेघस्य माया इव माया प्रज्ञा येषां तान् (विदुषो जनान्) १.१९०.४. [अहिर्मेघवाची । माया प्रज्ञानाम निघं० ३.९. मात्यन्तर्भवतीति विग्रहे मा माने (अदा०) धातोः 'माछाशसिभ्यो यः' उ० ४.१०९. सूत्रेण यप्रत्यये टापि च माया रूपम्]

अहिमायाः मेघस्य मायाः कुटिलगतयः ६.५२.१५. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

अहिरिव मेघ इव गर्जन्, भा—मेघवद् गर्जन् (पुमान्=पुरुषार्थिसेनापतिः) प्र०—अहिरिति मेघनाम निघं० १.१०, २९.५१.

अहिशुष्म योऽहिं मेघं शोषयति स सूर्यस्तद्वद्वर्त्तमान (इन्द्र=राजन्) ५.३३.५. [अहिर्मेघवाची । शुष्मम्=बलनाम निघं० २.९. शुष्यति निस्सारं करोतीति विग्रहे शुष शोषणे (दिवा०) धातोः 'अविसिविसिशुषिभ्य कित्' उ० १.१४४ सूत्रेण मन् प्रत्ययः]

अहिंसतीम् हिंसादिदोषरहित (शाला) को सं० वि० २०५, वे० को०, अथर्व० वे० को० ९.३.२२. [नञ्पूर्वात् हिसि हिंसायाम् (रुधा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

अहिंसन् अनाशयन् रक्षन्त्सन् (रुद्रः=सेनाध्यक्षः) ३.६१. [नञ्पूर्वात् हिसि हिंसायाम् (रुधा०) धातोः शतृ]

अहिंसानस्य हिंसारहितस्य (मित्रस्य) ५.६४.३. [नञ् पूर्वाद् हिसि हिंसायाम् (रुधा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अहिंस्यमानः अहिंसितः सन् (वैद्यः) १.१४१.५. [नञ्पूर्वाद् हिसि हिंसायाम् (रुधा०) धातोर्लृटः स्थाने शानच्]

अहिहत्याय मेघहननाय १.१३०.४. **अहिहत्ये**=

मेघहनने १.१६५.६. अहीनां मेघानां हत्या यस्मिँस्तस्मिन् (सूर्ये) १.६१.८. अहेर्मेघस्य हत्या हननं पतनं येन तस्मिन्, प्र०—निमित्तार्थेऽत्र सप्तमी ३.३२.१२. [अहिहत्या-पदयोः समासः। अहिर्व्याख्यातः। हत्या=हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनस्त च' अ० ३.१.१०८. सूत्रेण भावे क्यप्]

अहिहन् अहेर्मेघस्य हन्तेव शत्रुहन् (विद्वज्जन) २.१३.५. [अहि उपपदे हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्]

अहिहनम् मेघस्य हन्तारम् (अश्वं=विद्युदग्निम्) १.११७.६. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

अहिहा मेघस्य हन्ता (इन्द्रः=विद्युत्) २.१६.३. [अह्युपपदे हन्तेः क्विप्। 'सौ चे' ति सूत्रेण दीर्घः]

अहीन् सर्पवत् प्राणान्तकान् रोगान्, भा०—बलसुख-नाशकान् रोगान् १६.५. [अहिर्मेघवाची, तस्य द्वितीयाबहुवचनम्]

अहुतादः येऽहुतमदन्ति ते, भा०—होममकुर्वन्तो भुञ्जानः (देवाः=विद्वांसः संन्यासिनः) १७.१३. [नञ्-पूर्वाद् हु दानादानयोः (जु०) धातोः क्तप्रत्ययेऽहुतः। तदुपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। अहुतादो हि प्राणः श० ६.२.१.१४. अथैता (प्रजाः) अहुतादो यद्राजन्यो वैश्यः शूद्रः ऐ० ७.१६.]

अहुवे जुहोमि, प्र०—अत्र 'वहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि, इत्यडागमः २.३७.२. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लट्। 'वहुलं छन्दसीति' शपो लुक्। अडागमश्छान्दसः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

अहूमहि प्रशंसेम ६.४५.१०. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लङ्। 'वहुलं छन्दसि' इति शपो लुक्]

अहूयते दीयते ५.६.५. [हु दानाऽदानयोः (जु०) धातोः कर्मणि लट्। अडागमश्छान्दसः]

अहूषत स्पर्धध्वम् १.१४.३. स्पर्द्धयन्ताम् १.४६.४. उपदिशत १.४५.४. आह्वयन्ति शिल्पार्थं स्पर्धयन्ति वा, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् 'वहुलं छन्दसि' इति सम्प्रसारणं च १.१४.२. [ह्वेञ् स्पर्धायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङ्। धातोः सम्प्रसारणं छान्दसम्]

अहृणीयमाना क्रोधरहिताचरणौ सन्तौ (राजाऽमात्यौ) ५.६२.६. [हृणीङ् रोषणे लज्जायां च (कण्ड्वादि०) धातोर्नञ्पूर्वात् शानच्]

अहृषत हरत ३५.१८. [हृञ् हरणे धातोर्लुङ्]

अहेडता अनादृतेन (मनसा=विज्ञानेन) २.३२.३. **अहेडन्**=अनादरमकुर्वन् (अग्ने=राजन् वा सेनापते) १५.१. [हेडृ अनादरे (भ्वा०) धातोर्नञ्पूर्वात् शतृ। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

अहेडमानः सत्क्रियमाणः (वरुणः=विद्वज्जनः) २१.२. अनादृतः (विद्वान्) १.१३८.३. सत्कृतः (इन्द्रः=राजा) ६.४१.१. [नञ्पूर्वाद् हेडृ अनादरे (भ्वा०) धातोः शानच्। अहेडमानः=अक्रुध्यन् नि० ४.२५. अहेडमानो वरुणेह वोधीत्यक्रुध्यन्तो वरुणेह बोधीत्येतत् श० ६.४.२.१७.]

अहेम व्याप्नुयाम २.१६.७. [अह व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिङ्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

अहेव दिनानीव ६.६१.६. [अहन् पदे द्रष्टव्यम्]

अहोरात्राः रात्रिदिनानि २७.४५. **अहोरात्रे**= अहश्च रात्रिश्चाऽहोरात्रे, प्र०—'हेमन्तशिशिरावहोरात्रे च छन्दसि' अ० २.४.२८. इत्यनेन नपुंसकत्वम् ६.२१. **अहोरात्रेभ्यः**=अहर्निशेभ्यः २२.२८. [अहश्च रात्रिश्चेति विग्रहः। 'अहस्सर्वैकदेश०' अ० ५.४.८७. सूत्रेण समासान्तोऽच् प्रत्ययः। नपुंसकत्वञ्च छान्दसम्। अहोरात्रे वा अश्वस्य मेध्यस्य लोमनी तै० ३.६.२३.१. एते ह वै संवत्सरस्य चक्रे यदहोरात्रे ऐ० ५.३०. अहोरात्रे परिवेष्ट्री श० ११.२.७.५. तमस्मा अक्षितिमहोरात्रे पुनर्दत्तः जै० उ० ३.२२.८. मृत्योर्ह वा एतौ व्राजबाहू यदहोरात्रे कौ० २.६. अहोरात्राणीष्टकाः (संवत्सरस्य) तै० ३.११.१०.४. अहोरात्रे वा उषासानक्ता ऐ० २.४. अहोरात्रे नक्तोषासा श० ६.७.२.३. अहोरात्रे वै गो आयुषी कौ० २६.२. अहोरात्रे वै नृवाहसा तै० ३.६.४.३. अहोरात्रे तद्वाऽअहोरात्रेऽएव विष्णुक्रमा भवन्ति श० ६.७.४.१०. अहोरात्रे वात्सप्रम् (सूक्तम्) श० ६.७.४.१०. यौ द्वौ स्तोभावहोरात्रे एव ते जै० उ० १.२१.५. अहोरात्रे वै रौहिणौ (पुरोडाशौ) श० १.४.२.२. अहोरात्रौ वै मित्रावरुणौ तां० २५.१०.१०. अहोरात्रे वै पिशंगिले श० १३.२.६.१७. अहोरात्राणि वाऽउपसदः श० १०.२.५.४. अहोरात्राणि हिङ्कारः ष० ३.१. अहोरात्राणि वै वरुत्रयो ऽहोरात्रैर्हीदꣳ सर्वं वृतम् श० ६.५.४.६. अहोरात्राणां वा ऽएतद्रूपं यद्धानाः श० १३.२.१.४. अहोरात्रे स (प्रजापतिः) एतमतिरात्रमपश्यत्तमहरत्तेनाहोरात्रे प्राजनयत् तां० ४.१.१४.]

अह्यन् व्याप्नुवन् (इन्द्रः=राजा) ६.४०.२. [अह व्याप्तौ (स्वा०) धातोः कर्मणि शतृ। छान्दसत्वात्कर्मण्यात्मनेपदं न भवति]

अह्यर्षूणाम् येऽहिं मेघं प्राप्नुवन्ति तेषाम् (रक्षाणाम्) २.३८.३. [अहिः=मेघः, तदुपपदे ऋषी गतौ धातोर्बाहुलकात् सिद्धिः]

अह्रयम् लज्जादिदोषरहितम् (राधः=धनम्) ५.७९.५. लज्जारहितम् (अग्निम्) ३.२.४. **अह्रयः**= ये सद्योऽन्हुवन्ति व्याप्नुवन्ति यानानि मार्गांस्ते (अग्न्यादयः) १.७४.८. अह्रुवन्ति व्याप्नुवन्ति सर्वा विद्या ये ते विद्वांसः, प्र० अत्र 'अह व्याप्तौ' इत्यस्माद् बाहुलकेनौणादिकः क्रिः प्रत्ययः, महीधरेणायं 'ह्री लज्जायाम्, इत्यस्य प्रयोगोऽशुद्ध एव व्याख्यात इति ३.१६. **अह्रया**=अलज्जया प्रतिपादितानि (राधांसि=धनानि) ५.७९.६. [अह व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्बाहुलकात् क्रिन् प्रत्ययः। छान्दसत्वाद् गुणः]

अह्रयाण लज्जारहित (राजन्) ४.४.१४. **अह्रयाणम्**=विगतलज्जं प्रकाशितम् (बन्धुम्), प्र०–अत्र नञ्पूर्वाद् ह्री धातोर्बाहुलकादौणादिक आनच् प्रत्ययः १.६२.१०. [नञ्पूर्वाद् ह्री लज्जायाम् (जु०) धातोर्बाहुलकाद् आनच् प्रत्यये रूपम्। अह्रयाणोऽह्रीतयानः नि० ५.१५. ह्रीतशब्दस्य ह्रभावश्छान्दसः]

अह्रुतप्सवः अह्रुतमकुटिलं सूर्यरूपं यासान्ताः (ऊतयः=सुरक्षिताः प्रजाः) प्र०—अत्र 'ह्रु ह्वरेश्छन्दसि' अ० ७.२.३६. इत्यनेन ह्रुरादेशः 'प्स्विति रूपनाम निघं० ३.७, १.५२.४. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोर्नञ् पूर्वात् धातोर्ह्रुरादेशः। प्सुः रूपनाम निघं० ३.७. तयोः समासः]

अह्रुतम् कुटिलतारहितम् (हविर्धानं=हविषां धानं स्थित्यधिकरणम् १.९. **अह्रुतः**=अकुटिलः सरलः (त्वेषः=प्रकाशः) ६.६१.८. **अह्रुता**=अकुटिलानि सरलानि शोभनानि (अङ्गानि) प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि बहुलम्' अ० ६.१.७० इति लुक् ८.२९. [नञ्पूर्वाद् ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। पूर्वपदवत् ह्रुरादेशश्च]

अह्वत आह्वयेत् १.१०६.६. आह्वयति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.२४.१२. **अह्वन्त**=आह्वयन्ति ५.२९.८. आह्वयन्ते ४.६.९. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'लिपिसिचिह्वश्चे' ति च्लेरङ्]

अह्वयत् उपदिशेत् १.११७.१८. आह्वयेत् १.११७.१९. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोलङ्]

अह्वाम इच्छेम ६.५०.४. **अह्वे**=आह्वयामि २.३२.८. प्रशंसामि ३.३३.५. आह्वयेयम् ३.५६.४. **अह्वेताम्** आह्वयतः २८.१४. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लुङ्। च्लेरङ्। ह्वयति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४]

अह्वे अह्रुवन्ति व्याप्नुवन्ति यस्मिन् व्यवहारे तस्मिन् १.६९.३. [अह व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्बाहुलकात् क्वन् प्रत्ययः]

अंशम् सेवाविभागं, भोजनाच्छादन-धन-यान-शस्त्र-कोशविभागं वा १.१०२.४. प्राप्तम् (ऐश्वर्यम्) २.१९.५. भागम् ३.४५.४. बल सेना को आर्याभि० १.४३, ऋ० १.७.१४.४. **अंशः**=विभागः ५.४२.५. प्रेरकः (राजा शिष्यो वा) २.१.४. दुष्टानां सम्यग् घातकः (द्विव ज्जनः) २.२७.१. विभाजकः (आप्तो जनः) ३४.५४. [भागः ७.३२.१२. **अंशाय**=परमाण्ववगमाय १०.५. भागाय १.११२.१. [अंशः=अंशुना व्याख्यातः नि० १२.३६.]

अंशवे पदार्थानां किरणानां वेगाय १.४६.१०. **अंशुना**=भागेन २०.२७. किरणसमूहेन १७.८९. सूर्येण ४.५८.१. **अंशुभिः**=सृष्टितत्त्वाऽवयवैः १.९१.१७. किरणैः १२.११४. **अंशुभ्याम्**=बाहुभ्यामिव, अन्व०—बाह्याऽभ्यन्तरव्यवहाराभ्याम् ७.१. **अंशुम्**=विभक्तम् (वीरपुरुषम्) ६.१७.११. विभक्तां सोमवल्लीम् १.१३७.३. विज्ञानादिकं पदार्थम् ४.२६.६. प्राणप्रदम् (दुग्धम्) ५.३६.१. वैद्यकविद्यारीत्या विभक्तम् (मदिरं=मादकं द्रव्यम्) ६.२०.६. सारम् ३.३६.७. **अंशुषु**= विभक्तेषु सांसारिकेषु पदार्थेषु ८.५७. **अंशुः**=व्याप्तिमान् सूर्यः, प्र०—अत्र 'अशूङ् व्याप्तौ' इत्यस्माद्धातोर्बाहुलकेनौणादिक उः प्रत्ययो नुगागमश्च १८.१९. प्रापकः (स्वराजपीडको जनः) ४.२२.८. किरणः ५.४३.४. ओषधिसारः ३.३६.६. संविभागः, प्र०—अत्र 'अमधातोरुः प्रत्ययः शकारागमश्च ७.२६. **अंशुरंशुः**=अवयवोऽवयवः, अन्व०—अङ्गमङ्गम्, प्र०—अत्र 'अशूङ् व्याप्तौ संघाते च' इत्यस्माद् बाहुलकादौणादिक उः प्रत्ययो नुमागमश्च ५.७.

अंशो=सूर्यवत्प्रकाशमान (देव=दिव्याऽऽत्मन् जन) ७.३. **अंशोः**=स्त्रीशरीरस्य भागात् १.१२५.३. अंशात् २.१३.१. सूर्यस्य प्राप्तस्य ४.१.१९. प्राप्तव्यस्य महौषधिरसस्य ४.२५.३. प्राप्तस्य (सन्तानस्य) ३.४८.२. [अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोर्बाहुलकादुः प्रत्ययो नुमागमश्च। अंशुः शमष्टमात्रो भवति। अननाय शं भवतीति वा नि० २.५. प्राण एवांशुः चक्षुरेवांशुः श० ११.५.९.२. मनो ह वांशुः श० ११.५.९.२. प्रजापतिर्वा एष यदंशुः

श० ४.६.१.१. अंशुर्वै ग्रहः प्रजापतिः श० ४.१.१.२. प्रजापतिर्वा एष यदंशुः सो अस्य (यजमानस्य) एष आत्मैव श० ४.६.१.१. श० ११.५.६.१]

अंशेव भागमिव ५.८६.५. [अंशो व्याख्यातः पूर्वपदे]

अंसत्रा अंसान् गत्यादीन् रक्षतस्तौ (अश्विना=विद्वज्जनौ) ४.३४.६. [अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अमेः सन्' उ० ५.२१ सूत्रेण सन्। अंसोपपदे त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः। अंसत्रम् अंहसस्त्राणं धनुर्वा कवचं वा नि० ५.२६.]

अंसाभ्याम् भुजमूलाभ्याम् २५.३. **अंसेषु**=बलपराक्रमाऽधिकरणेषु भुजमूलेषु १.६४.४. स्कन्धेषु ५.५४.११. **अंसौ**=बाहुमूले २०.८. [अंसः पूर्वपदे व्याख्यातः]

अंस्याः अंसेषु स्कन्धेषु भवाः (सूचिकाः=वृश्चिकादयः) १.१९१.७. [अंसो व्याख्यातः, ततो भवार्थे यत्]

अंहतिः दारिद्र्यम् १.९४.२. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हन्तेरंह च' उ० ४.६२ सूत्रेणातिः=प्रत्ययः। धातोश्चांहादेशः। अंहतिश्चांहश्चांहुश्च हन्तेर्निरूढोपधाद् विपरीतात् नि० ४.२४]

अंहसः अधर्माचरणान् ६.१६.३०. अपराधात् ५.५१.१३. अविद्याज्वरादिरोगात् १.९१.१५. विद्याध्ययननिरोधकाद्विघ्नाख्यात् पापात् १.११७.३. पापात्, प्र०—अत्र 'अमरोगे' इत्यस्माद् 'अमेर्हुक् च' उ० ४.२१३. अनेनाऽसुन् प्रत्ययो हुगागमश्च १.१८.५. अधर्मानुष्ठानात् १.११८.८. दुष्टाचारात् १.१८०.५. पापाचरणात् तत्फलाद् दुःखाद्वा १.१०६.१. रोगजन्यदुःखात् १२.८९. दुष्टाद् व्यसनात् २०.१४. मिथ्याचारात् १९.१०. दुष्टाचरणादपराधाद्वा ७.१५.३. दुःखदारिद्र्याख्यात् पापात् ७.१.१५. कुपथ्यजन्यादपराधात् २.३३.३. अविद्या आदि महापाप से आर्याभि० १.१३., ऋ० १.३.१०.१४. क्षुज्ज्वरादिरोगात् १.९३.८. **अंहसि**=पापे १.५४.१. **अंहः**=अनिष्टाचरणम् ३.१५.३. पापं पापजन्यं दुःखं वा ५.५४.११. पापमपराधभूतम् ६.३.१. पापात्मकं कर्म कुपथ्यादिकं वा २.३३.२. दुःखदातारम् (जनम्) ४.२.९. दुःखरोगवेगम्, प्र०—अत्र 'अमेर्हुक् च, उ० ४.२१३. चादसुन्, अनेन वेगो गृह्यते १.४२.१. [अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अमेर्हुक् च' उ० ४.२१३ सूत्रेणासुन प्रत्ययः। हुगागमश्च। अंहश्च हन्तेर्निरूढोपधाद् विपरीतात् नि० ४.२४]

अंहसस्पतये सर्वेषां वेगस्य पालकाय (चैत्रादिमासाय) ७.३०. श्लिष्टस्य पालकाय (फाल्गुनमासाय) २२.३१. [अंहस्-पतिपदयोः समासः। विभक्तेरलुक् च]

अंहांसि अधर्मयुक्तानि कर्माणि ७.२३.२. [अंहस् व्याख्यातः। तस्य प्रथमाबहुवचने रूपम्]

अंहुभेद्याः अंहुमपराधं या भिनत्ति तस्याः (प्रजायाः), भा०—दुःखविच्छेदिकायाः प्रजायाः २३.२८. [अहि गतौ (भ्वा०) धातोर् औणादिक उः प्रत्ययः। अंहु-उपपदे भिदिर विदारणे (रुधा०) धातोर्ण्यत्। 'कृत्यल्युटो बहुलमि'-ति कर्त्तरि ण्यत्]

अंहूरणा येंऽहयन्ति तेंऽहवो गन्तारस्तेषां रणः सङ्ग्रामो यस्यां सा (भूमिः=पृथिवी) ६.४७.२०. **अंहूरणात्**=अंहूरं पापं विद्यतेऽस्मिन् व्यवहारे ततः १.१०५.१७. [अहि गतौ (भ्वा०) धातोरौणादिक उ-प्रत्यये अंहुः। अंहु-रणपदयोः समासः। पूर्वपदस्य च दीर्घः। अंहूरप्राति० मत्वर्थे नः प्रत्ययः। अंहुरः=अंहस्वान् भवति नि० ६.२७. अंहूरणमप्यस्य भवति नि० ६.२७.]

अंहोमुचः दुःखमोचयित्र्यः (अपः=जलानि) ४.१३. [अंहुर्व्याख्यातः। तदुपपदे मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोः क्विप्]

अंहोयुवः येंऽहोऽपराधं युवन्ति पृथक्कुर्वन्ति ते (मनुष्याः) ५.१५.३. [अंहुर्व्याख्यातः। तदुपपदे यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्विप्]

अंहोः पापमाचरितुः (दुर्जनस्य) २.२६.४. सुखप्रापकस्य गृहाश्रमस्याऽनुष्ठानस्य ८.४. प्राप्तस्य प्राप्तव्यस्य वा राज्यस्य १.६३.७. अपराधात् ५ ६७.४. दुष्टाचारात् ५.६५.४. विज्ञानवत् (सुमतिः), प्र०—अत्राऽहि धातोरौणादिक उः प्रत्ययः १.१०७.१. अपराधिनः (मर्त्यस्य) ३३.६८. [अहि गतौ (भ्वा०) धातोरौणादिक उः प्रत्ययः]

आ अनुगतार्थे क्रियायोगे १.१९.८. यथावत् आर्याभि० १.३७., ऋ० १.६.२१.१३. मर्यादायाम् ७.५९.१२. अभितः ५.१९. समन्तात् १.७.२. धात्वर्थे १.१०.२. क्रियाऽर्थे १.७.३. आधाराऽर्थे १.२९.२. आभिमुख्ये १.४२.५. अनन्तरे १.६७.४. सर्वतः १.८६.५. [अर्वागर्थे नि० १.३. एतस्मिन्नेवार्थे (समुच्चयार्थे) देवेभ्यश्च पितृभ्य एत्याकारः नि० १.४. उपमार्थे दृश्यते नि० ३.१६. अध्यर्थे दृश्यते नि० ५.५.]

आऽकरम् समन्तात्कुर्याम् १२.५८. **आकरः**=समन्तात्करोति ६.२२.१०. [आङ्+डुकृञ् करणे धातो-

लुंङ् । 'कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि' अ० ३.१.५९. सूत्रेण च्लेः स्थाने अङ्]

आकरः समूहः ५.३४.४. **आकरे**=समूहे ३.५१.३. [एत्य तस्मिन् कुर्वन्तीति विग्रहे आङ्पूर्वात् करोतेः 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' अ० ३.३.११८. सूत्रेण घः प्रत्ययः]

आकर्त्त समन्तात् कुरुत ६.५१.१५. [आङ् डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुंङ् । च्लेरङ् च]

आकाय्यस्य समन्तात्काये भवस्य (राज्ञः) ४.२९.५. [आङ् पूर्वात् कायप्राति० भवार्थे यत्]

आकीम् समन्तात् १.१४.९. [आकीम् सर्वपदसमाम्नायः निघं० ३.१२.]

आकीरिणः समन्ताद् विक्षेपकाः (तायवः=स्तेनाः) ५.५२.१२. [आङ्+कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोर्बाहुलकाद् इनच् । स च कित्]

आकूतात् उत्साहात् १८.५८. **आकूतिम्**=उत्साहकारिकां क्रियाम् ११.६६. उत्साहम् ३९.४ **आकूतिः**=अध्यवसाय उत्साह आप्तरीतिर्वा ऋ० भू० ९५, ऋ० १०.१९१.४. **आकूत्यै**=उत्साहाय ४.१७.

आकृणुते सब प्रकार से उत्पन्न करती है स० प्र० १५१, १०.४०.२. **आकृणुध्वम्**=समन्तात् कुरुध्वम् १.७७.२. **आकृणोति**=समन्तात्करोति १.१७३.११. **आकृधि**=समन्तात् कुरु १.५५.७. समन्तात्कुर्याः ३.१६.५. [आङ्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

आकृष्णेन समन्तात्कर्षितेन (रजसा=लोकसमूहेन) ३४.३१. आकर्षणात्मना (रथेन), परमाणूनां धारणेन वा प० वि० । आकर्षणगुणेन सह ऋ० भू० १४१. [आङ्+कृष विलेखने (भ्वा०) धातोर्नक् प्रत्ययः । कृष्यतेर्निकृष्टो वर्णः नि० २.२०.]

आके समीपे २.१.१०. [आकेः=अन्तिकनाम निघं० २.१६. दूरनाम निघं० ३.२६.]

आकेनिपासः य आके समीपे नितरां पान्ति ते किरणाः ४.४५.६. [आके अन्तिकनाम निघं० २.१६. निपासः=नि+पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः । आकेनिपः=मेधाविनाम निघं० ३.१५.]

आक्रन्दय समन्ताद्रोदयाऽऽह्वय वा ६.४७.३०. [आङ् पूर्वात् क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आक्रन्दयते यो दुष्टानामाक्रन्दयते रोदयति तस्मै न्यायाधीशाय १६.१९. [आङ् पूर्वात् क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्णिचि लटि च रूपम्]

आक्रमताम् आक्रमण अर्थात् रीतिपूर्वक आरूढ़ हों सं० वि० १८९. अथर्व० ९.५.१. [आङ् पूर्वात् क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'आङ उद्गमने अ० १.३.४०. इत्यात्मनेपदम्, व्यत्ययेन वा]

आक्रमः समन्तात्क्रमन्ते पदार्था यस्मिन्नन्तरिक्षे तस्य विज्ञापकः (विद्वज्जनः) १५.९. [आङ्+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोः 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' इति घः प्रत्ययः]

आक्रमीत् अभितः क्राम्यति, अन्व०—आक्राम्यति, प्र०—लडर्थे लुङ् ३.६. चारों ओर घूमता जाता है स० प्र० ३१३, ३.६. आक्रमणं कुर्वन् सन् गच्छति ऋ० भू० १३६. [आङ्+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

आक्रयायै आक्रमन्ति प्राणिनो यस्यां तस्यै हिंसायै ३०.५. [आङ्+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोरधिकरणे 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' अ० ३.३.११८. सूत्रेण घः । वर्णव्यत्ययेन मकारस्य यकारः]

आक्रंसते समन्तात्क्रमेत् १.१२१.१. [आङ्+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लेट् । 'सिब्बहुलं लेटि' इति सिब्विकरणः । व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

आक्षित् यः समन्तात् क्षियति सर्वत्र वसति सः (परमात्मा) ३.५५.५. [आङ्+क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः क्विप् । तुगागमः]

आऽक्षितम् समन्तादनष्टमिव ५.७.७. [आङ्+नञ्+क्षि क्षये (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

आक्षिषुः व्याप्नुवन्ति १.१६३.१०. प्राप्नुयुः २९.२१. [अक्षू व्याप्तौ (भ्वा०) धातोर्लुंङ्]

आक्षेति समन्तात् क्षियति निवासयति १.६४.१३. [आङ्+क्षि निवासगत्योः (तु०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी'-ति विकरणलुक् । अन्तर्भावितण्यर्थश्चायं धातुः]

आखरेष्ठः समन्तात् खनति यं तस्मिन् तिष्ठतीति सः (यज्ञः) प्र०—'खनो डडरेकेकवकाः' अ० ३.३.१२५. अनेन वार्त्तिकेनाऽऽखरः सिध्यति २.१. [आङ्+खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोर्डरः प्रत्ययः । तदुपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः]

आखिदति दैन्यं प्राप्नोति ४.२५.७. [खिद दैन्ये (दिवा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

आखिदते आ समन्ताद् दीनायैश्वर्योपक्षीणाय (पुरुषाय) १६.४६. [आङ्+खिद दैन्ये (दिवा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

आखुः समन्तात् खनति अवदृणाति ये भोजनसाधनेन सः (पदार्थः), प्र०—अत्र 'आङ्परयोः खनिशृभ्यां डिच्च' उ० १.३३. इति कु प्रत्ययो डित्संज्ञा च ३.५७. मूषकः २४.३८. **आखून्**=मूषकान् २४.२६. [आङ्+खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोरौणादिकः कुः प्रत्ययः, स च डिच्च]

आऽख्यत् समन्तात्प्रख्याति ४.२.१८. [आङ्+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोर्लुङ्। 'अस्यतिवक्ति०' इति सूत्रेण च्लेरङ्]

आऽगच्छतम् आगच्छतम् ५.७८.४. **आगच्छताम्**=समन्तात् प्राप्नुतः, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.२२.१. **आगच्छन्ति**=समन्ताद् यान्ति १.८५.११. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आगच्छात् समन्तात् प्राप्नुयात् १८.६०. **आगच्छाति**=आगच्छेत् प्राप्नुयात् ७.३३.१४. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लेट्। आडागमः]

आगत समन्ताद् गमयत्, अ० —समन्तादागच्छत, प्र०—अत्र गमधातोर्ज्ञानार्थः प्रयोगः १.३.७. **आगतम्**=समन्तात् प्राप्नुतम् १.४६.१३. समन्ताद् गच्छतम् १.४७.६. अभितो गच्छतम् १.४७.७. आगच्छतम्, प्र०—अत्र गम्लृ गतौ इत्यस्माद् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुकि सति शित्वाऽभावाच्छस्याऽभावो 'अनुदात्तोपदेश' इत्यादिना मलोपश्च ७.८. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। शपो लुक् मकारलोपश्च छान्दसत्वात्]

आगतः समन्तात् प्राप्तः सहायकारी पुरुष इव (सोमः=ऐश्वर्यसमूहः) ८.५६. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

आगतिः आगमतम् २०.१३. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तिन् प्रत्ययः]

आगतेन सब प्रकार से प्राप्त होने वाले (मित्र) के द्वारा प० वि०। [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

आगतौ समन्तात् प्राप्तौ (ऋत्विगध्वर्यू) २.५.६. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तिन्]

आगाद् समन्तात् गच्छति १.११३.१६ [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ्। 'इणो गा लुङि' इति गादेश सिचो लुक् च]

आगधिता समन्ताद् गृहीता (नीतिः) प्र०—गध्यं गृह्णातेः नि० ५.५, १.१२६.६. [आङ्+गध्यं गृह्णातेः नि० ५.५. इति प्रमाणात् गध धातोः क्तः। स्त्रियां टाप्। आगधिता गध्यतिर्मिश्रीभावकर्मा नि० ५.१५]

आऽगन् आगच्छति, प्र०—अत्र गम्लृधातोः लङि प्रथमैकवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक्, संयोगत्वेन तलोपे 'मो नो धातोः' इति मस्य नकारादेशः १.१२३.२. आगच्छति प्राप्नोति १.१७६.४. समन्तात्प्राप्नोति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ्, 'मन्त्रे घस०', इति च्लेर्लुक् 'मो नो धातोः' इति मकारस्य नकारः ४.१५. समन्तादागच्छन्तु ४.५३.७. आभिमुख्येन प्राप्नोति ४.१५. अभितः प्राप्नोति ४.१५. समन्तात्प्राप्नोतु ७.२०.६. समन्तात्प्राप्ताः (महत्तत्त्वादयः) १.१६४.३७. आगच्छेत् प्राप्नुयात् ७.५०.१. **आगन्त**=नित्यमागच्छत, समन्तात्प्राप्नुत, प्र०—अयं गमेर्लोटो-मध्यमबहुवचने प्रयोगः 'बहुलं छन्दसि' अष्टा० २.४.७३. इत्यनेन शपो लुकि कृते 'तप्तनप्तनथनाश्च' अ० ७.१.४५. इति तनादेशे पित्वादनुनासिकलोपाऽभावः १.३.८. आगच्छन्तु प्राप्नुवन्तु ५.४३.१०. **आगन्तन**=आगच्छथ ५.५७.१. प्राप्नुत ७.४३.४. **आगन्तम्** आगच्छतम्, प्र०—अत्र गमधातोरडभावो 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१३५.५. **आगन्तु**=आगच्छन्तु १.१८६.६. **आगन्म**=समन्तात्प्राप्नुयाम प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् ४.१. [स्पष्टम्]

आगनीगन्ती भृशं बोधं प्रापयन्ती (ज्या=प्रत्यञ्चा) २६.४०. [आङ्+गम्लृ गतौ धातोर्यङ्लुकि शत्रन्तान् ङीप्]

आगमत् सर्वत आज्ञाप्यात् गमयति वा, प्र०—अत्र पक्षे वर्त्तमानेऽर्थे लिङर्थे च लुङ् 'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' अ० ६.४.७५. इत्यडभावः १.५.३. आगच्छेत् प्राप्नुयात् ३.१३.१. समन्ताद् गच्छेत् ५.३६.१. समन्ताद् गच्छतु, प्राप्तो भवतु वा, प्र०—अत्र लुङ्प्रयोगोऽडभावश्च १.१.५. समन्ताद् गच्छति ४.५५.१०. आगच्छेत् ३.१०.४. हमारे हृदय में प्रकट हो आर्याभि० १.५, ऋ० १.१.१.५. **आगमथः**=प्राप्नुथः ४.४३.४. **आगमन्**=आगच्छन्ति १७.७८. आगच्छन्तु प्राप्नुवन्तु, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ्-प्रयोगः १.८६.७. **आगमन्तु**=समन्ताद् गच्छन्तु, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १८.३१. समन्तात् प्राप्नुवन्तु १.१८६.२. **आगमम्**=प्राप्नुयाम् २०.२२. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातो रूपाणि]

आगमिष्ठः अतिशयेनाऽऽगन्ता (विद्वज्जनः) ६.५२.५. **आगमिष्ठा**=समन्तादतिशयेन गन्तारौ (अश्विना=स्त्री-पुरुषौ) ५.७६.२. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोस्तृच् कर्त्तरि। ततोऽतिशायनेऽर्थे इष्ठन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' अ० ६.४.१५४. सूत्रेण तृ-शब्दस्य लोपः]

आग्मिष्ठाः आगच्छन्तु, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ्, पुरुषवचनव्यत्ययः १९.५६. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

आग्मेः समन्ताद् गच्छ, भा०—आप्नुहि, प्र०—वा छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति इति छत्वाऽभावः। [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्। छान्दसत्वाच्छत्वाऽभावः]

आगम्याः आगच्छेः १.१८६.६. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातो रूपम्]

आगम्याः समन्ताद् गमयितुं योग्याः (अश्वाः) १.१८१.३. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिचि 'पोरदुपधात्' इति यत्]

आगहि समन्तात्प्राप्नुहि प्रापयति वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् 'वाच्छन्दसि' अ० ३.४.८८. इति हेरपित्वात् 'अनुदात्तोपदेश०' अ० ६.४.३७ अनेनाऽनुनासिकलोपश्च १.१४.२. आभिमुख्येन कार्याणि प्रापयति १.१९.५. समन्ताद् गच्छ गच्छति वा १.१९.२. आगच्छ प्राप्नुहि ३.३१.१८. समन्तात् प्राप्नोति १.१९.४. आगच्छ, अ०—अस्मदात्मनि प्रकाशितो भव १.४.३. सर्वतः प्राप्नोति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् च १.२३.१. समन्तात् सुखानि गमयति १.१९.६. अभितः साधको भवति १.१९.९. प्राप्नुयाः ४.३२.५. समन्ताद् गच्छ गच्छति वा, अ०—समन्ताद् विदितो भवसि १.१९.३. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। छान्दसत्वाच्छपो लुक्। सिपो हिरादेशः। मकारलोपश्च हेरपित्त्वात्]

आगः अपराधम् ७.५७.४. [आग आङ् पूर्वाद् गमेः नि० ११.२४. तद्यास्तिस्र आगा इम एव ते लोकाः जै० उ० १.२०.७.]

आऽगात् आगच्छति ४.१.७. प्राप्नोति १.१२३.४. समन्तात् प्राप्नुयात् ३.३०.१३. समन्तादागच्छेत् ३.८४. आता है स० प्र० १०९, ३:८.४. आऽगाम=प्राप्नुयाम ५.२.८. **आऽगाः**=आगच्छेः ३.२१.४. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ्। इणो गादेशः सिचो लुक् च]

आऽगामि समन्ताद् गम्यते ६.१६.१९. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) कर्मणि लुङ्]

आगुरस्व सततमुद्यमं कुरुष्व, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् ३.५२.१. उद्यमस्व २१.६१. [आङ्+गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

आऽगुः समन्तात् प्राप्नुवन्ति ३.८.९. समन्ताद् व्याप्नुवन्तु १.१८१.६. आगच्छेयुः १:१७४.८. आगच्छन्ति ३.५६.२. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ्। इणो गादेशः, सिचो लुक् च]

आग्नावैष्णवाः अग्निवायुदेवताकाः (पशवः) २४.८. [अग्नि-विष्णुपदयोर्द्वन्द्वसमासे 'सास्य देवता' अ० ४.२.२४. सूत्रेण अण्। 'देवताद्वन्द्वे च' अ० ७.३.२१. सूत्रेणोभयपदवृद्धिः। 'देवताद्वन्द्वे च' अ० ६.३.२६. सूत्रेण पूर्वपदस्यानङ्]

आग्निमारुताः अग्निवायुदेवताकाः (शुकरूपा वाजिनाः कल्माषाः पशवः) २४.७. [अग्नि-मरुत्पदयोर्द्वन्द्वसमासे 'सास्य देवता' अ० ४.२.२४. सूत्रेणाणि 'देवताद्वन्द्वे च' सूत्रेणोभयपदवृद्धौ च रूपम्]

आग्निवेशिम् योऽग्निं प्रवेशयति तम् (केतुं=प्रज्ञाम्) ५.३४.९. [अग्न्युपपदे विश प्रवेशे (तुदा०) धातोर् बाहुलकाद् इञ् प्रत्ययः]

आग्नीध्रम् अग्नीध्र ऋत्विजः शरणम् १९.१८. आग्नीध्रात्=अग्निरिध्यते प्रदीप्यते यस्मिन् तस्येदं शरणमाश्रयणं तस्मात् (ईश्वरात्), प्र०—'अग्नीधः शरणे रञ् भं च' अ० ४.३.१२०. अनेन वार्त्तिकेनाऽधिकरणवाचिनः क्विबन्ताद् अग्नीध्र-प्रातिपदिकादञ् प्रत्ययः २.१०. अन्नाऽऽशयात् २.११. अग्निं धरति यस्मात् तस्मात् (सत्यकामतः) २.३६.४. **आग्नीध्रे**=प्रदीपन साधनइन्धनादौ ८.५६. अग्नीध्रः शरणे ३८.१८. [अग्नि-उपपदे ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोरधिकरणे क्विप्-प्रत्यये=अग्नीधः। तत इदमर्थे 'अग्नीधः शरणे रञ् भं च' अ० ४.३.१२०. वार्तिकेन रञ् प्रत्ययः। भसंज्ञकत्वाच्च जश् न। द्यावापृथिव्यौ वा ऽ एष यदाग्नीध्रः श० १.८.१.४१. वसन्त आग्नीध्रस्तस्माद् वसन्ते दावाश्चरन्ति तद् ह्यग्निरूपम् श० ११.२.७.३२. अन्तरिक्षमाग्नीध्रम् तै० २.१.५.१. अन्तरिक्षं वा ऽआग्नीध्रम् श० ९.२.३.१५.]

आग्नेयः अग्निदैवत्यः (कृष्णोऽजः पशुः) २९.५९. अग्निदेवताकः (कृष्णग्रीवः पशुः) २९.५८. **आग्नेयाः**= अग्निदेवताकाः (कृष्णग्रीवाः पशवः) २४.१४. [अग्नि-प्राति० 'साऽस्य देवता' अर्थ में 'अग्नेर्ढक्' अ० ४.२.३३. सूत्रेण ढक् प्रत्ययः। ढस्येयादेशः। सा या मन्द्रा साऽऽग्नेयी (आगा) जै० ३०.१.३७.२. त्रिणिधनमाग्नेयं भवति प्रतिष्ठायै तां० १३.३.२१.]

आग्मन् समन्तात् प्राप्नुवन्तु ४.३४.५. आगच्छन्ति ६.२८.१. [आङ्पूर्वाद् गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्।

'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

आग्रयणः मार्गशीर्षादिमासनिष्पन्नो यज्ञविशेषः, भा०—सामयिकी क्रिया १८.२०. अङ्गति प्राप्नोति येन तस्यायम् (विज्ञानम्) १३.५८. समन्तादग्राणि विज्ञानयुक्तानि प्रशस्तानि कर्माण्ययते सः (सभापतिः, राजा उपदेशको वा), प्र०—'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यम्' इति पररूपम् ७.२०. [आङ्+अग्रोपपदाद् अय गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि युच् बाहुलकात् । 'शकन्ध्वादिषु पररूपं वाच्यमि' ति पररूपम् । आत्मा वा आग्रयणः श० ४.२.२.५, श० ४.५.४.६. संवत्सराद्वा एतदधिप्रजायते यदाग्रयणम् गो० उ० १.१७. यां वा ऽअमूं ग्रावाणमाददानो वाचं यच्छत्यत्र वै साग्रे ऽवदत्तद्यत्सात्राग्रे ऽवदत्तस्मादाग्रयणो नाम श० ४.२.२.६.]

आघृणिः समन्ताद् घृणयो दीप्तयो यस्य सः (पूषाः=सर्वपदार्थपोषक ईश्वरः) १.२३.१४. समन्ताद् घृणयः किरणा दीप्तयो यस्य सः (पूषाः=सूर्यलोकः) १.२३.१३. **आघृणे**=समन्तात् प्रकाशित (देव=विद्वन् राजन् वा) ३.६२.७. सर्वतो दीप्तिमन् (सज्जन) ६.४८.१६. समन्ताद् देदीप्यमान (विद्वज्जन) १.१३८.४. सर्वतो न्यायकारिन् (पूषन्=विद्वन् राजन्) ६.५३.८. समन्तात् पशुविद्या प्रकाशक (विद्वज्जन) ६.५३.९. सर्वतो दीप्त (विद्वज्जन) ७.४८.६. समन्तात्प्रकाशात्मन् (पूषन्=पुष्टिकरविद्वज्जन) ६.५३.३. [आङ्+घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोर् 'घृणिपृश्नि०' उ० ४.५२. सूत्रेण निः प्रत्ययो निच्च । घृणु दीप्तौ (तना०) धातोर्वा 'इगुपधात् कित्' उ० ४.१२०. सूत्रेण इन् प्रत्ययः । घृणिः=ज्वलतो नाम निघं० १.१७. क्रोधनाम निघं० २.१३. आघृणिः=आगतहृणिः नि० ५.९]

आघोषतम् समन्ताद् घोषं कुर्वन्तौ स्तः, अ०—व्यक्तं शब्दं कुरुतः ५.१७. **आघोषते**=विद्याप्राप्तये उच्चरति १.८३.६. **अघोषथः**=विशेषेण शब्दयथः १.१५१.४. **आघोषात्**=परस्पर आप प्रिय वचन बोलें सं० वि० १०५, ५.३७.३. [आङ्+घुषिरविशब्दने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आङ्गिरसस्य अङ्गिरसस्सु प्राणेषु भवस्य (राज्ञः) ४.४०.१. **आङ्गिरसः**=योऽङ्गिरसां वायुविद्युतामयमुत्पन्नः (सूर्य इव राजा) ६.७३.१. अङ्गिरसा=विदुषा कृतो विद्वान् १९.७३. **आङ्गिरसान्**=अङ्गिरासु प्राणेषु साधून् (विद्वज्जनान्) ६.३५.५. [अङ्गिरसः पदनाम निघं० ५.५. अगि गतौ (भ्वा०) धातोः 'अङ्गतेरसिरिरुडागमश्च' उ० ४.२३६. सूत्रेणासिः, इरुडागमश्च । तस्यापत्यमाङ्गिरसः । अथवा अङ्गिरस्प्राति० भवार्थेऽण्प्रत्ययः । सोऽयास्य आङ्गिरसः । अङ्गानां हि रसः प्राणो वा ऽअङ्गानां रसः श० १४.४.१.२१. आङ्गिरसोऽङ्गानाꣳ हि रसः श० १४.४.१.९. स एष एवा ऽऽङ्गिरसः (अन्नाद्यम्) अतो हीमान्यङ्गानि रसं लभन्ते । तस्मादाङ्गिरसः । यद्वेवैषामङ्गानां रसस्तस्माद्वेवा ऽऽङ्गिरसः जै० उ० २.११.९. चतुर्णिधनमाङ्गिरसं भवति चतूरात्रस्य धृत्यै तां० १२.९.१८. यान् मन्त्रानपश्यत्स आङ्गिरसो वेदोऽभवत् गो० पू० १.८]

आङ्गिरसि ! याऽङ्गिरोभिरग्न्यादिभिर्निवृत्ता सिद्धा सा तत्सम्बुद्धौ (ऊर्क्=शिल्पविद्यं), प्र०—उवटमहीधराभ्यामिदं निघातत्वात् सम्बोधनान्तं पदमबुद्ध्वा व्याख्यातमतः एतयोः स्वरज्ञानमपि नास्त्यर्थज्ञानस्य तु का कथा ? ४.१०. [अङ्गिरस्प्राति० 'तेन निर्वृत्तम्' अ० ४.२.६८. सूत्रेण निर्वृत्तार्थेऽण् प्रत्यये स्त्रियां ङीपि सम्बोधने 'अम्बार्थनद्योर्ह्रस्व' इति ह्रस्वः]

आङ्गूषम् विज्ञानं स्तुतिसमूहं वा, अङ्गूषाणां विदुषामिदं विज्ञानमयं स्तुति समूहो वा, प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिक ऊषन् प्रत्ययः, तस्येदम्, इत्यण् 'अङ्गूष इति पदनाम निघं० ४.२, १.६२.१. अङ्गूषाणां विद्यानां विज्ञापकमिदम् (ब्रह्म=परमेश्वरः) प्र०—अत्राऽगिधातोरूषन् ततस्तस्येदमित्यण् १.११७.१०. विद्याशास्त्रबोधम् ३४.१६. प्राप्तव्यम् (स्तोत्रम्) ६.३४.५. प्राप्नुवन्तम् तुवसं=बलम् ७.२४.३. स्तुतिप्राप्तम् (सूरिम्) १.६१.३. युद्धं प्राप्तं शत्रुम् १.६१.२. **आङ्गूषः**=विद्वज्जनः ३.५८.५. अङ्गेषु भवा प्रशंसा ५.७४.८. **आङ्गूषान्**=प्राप्तविद्यान् (वीरजनान्) १.१३८.२. **आङ्गूषेण**=परमविदुषा १.१०५.१९. **आङ्गूषेभिः**=स्तावकैः (प्रजाजनैः) ४.२९.१. **आङ्गूषैः**=समन्ताद् घोषैः, भा०—सूपदेशैः ३३.७६. [अगि गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक ऊषन् प्रत्ययः, ततः 'तस्येदमि' त्यण् प्रत्ययः । अथवा=आङ्पूर्वाद् घुष शब्दे धातोर्घञ् । घोषस्य स्थाने गूषादेशः । 'आङोऽनुनासिकश्छन्दसि' अ० ६.१.१२६. सूत्रेणाकारोऽनुनासिकः । आङ्गूषः स्तोम आघोषः नि० ५.११.]

आङ्गूष्यम् अङ्गूषाणां विज्ञानानां भावस्तम् (नमः=अन्नम्) १.६२.२. अङ्गूषाय सत्काराय बलाय वा हितम् (साम=सामवेदम्) ३४.१७. [अङ्गूषाणां विदुषा-

मिदमिति विग्रहे अङ्गूषप्राति० इदमर्थेऽण्। ततो भावे ष्यञ् प्रत्ययः। अथवा आङ्गूषप्राति० हितार्थे यत्]

आचकृषे समन्तात् कृतवानसि १.५२.१२. [आङ्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिट्]

आचके समन्तात् कामितवान् कामयतां वा, प्र०—अत्र पक्षे लोडर्थे लिट् 'आचके' इति कान्तिकर्मसु पठितम् निघं० २.६, ४.२१. समन्तात् कामयेत ३.३.१०. समन्तात् कामयते, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति यलोपः ३.३.३. समन्तात् कामये २१.१. सर्वतः सुखैस्तर्पयेत् १.४०.२. [आचके कान्तिकर्मा निघं० २.६. आङ् पूर्वाद्वा चक तृप्तौ प्रतिघाते च (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'अत एक हल्मध्ये०' इति एत्वमपि छान्दसत्वान्न भवति]

आचक्रथुः समन्तात् कुरुतः १.९२.१७. सर्वतः कुर्यातम् १.११६.२२. **आचक्रे**=सेवते, प्र०—अत्र 'गन्धनावक्षेपण०' अ० १.३.३२. इति करोतेः सेवनात् आत्मनेपदम् ३३.८७. समन्तात् करोति ३.३२.१३. [आङ्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिट् सामान्ये]

आचक्रिः समन्तात् कर्त्ता (इन्द्रः=राजा) ६.२४.५. [आङ्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गऽश्छन्दसि' अ० ३.२.१७१. वार्त्तिकेन कर्त्तरि किः प्रत्ययो लिड्वच्च]

आचक्रे शृणुयाम्, प्र०—अत्र कै शब्दे, अस्माल्लिट्, व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.११७.२३.

आचक्रे अप्रतिहते (द्यावाक्षामा), प्र०—चक्रं चकतेर्वा नि० ४.२७, १.१२१.११. [आङ्+चक तृप्तौ प्रतिघाते च (भ्वा०) धातो रूपम्]

आचखाद स्थिरीकरोति ६.६१.१. [खद स्थैर्ये हिंसायां च (भ्वा०) धातोर् आङ् पूर्वाल् लिट्]

आचरणेषु समन्ताच्चरन्ति जानन्ति व्यवहरन्ति येषु तेषु (व्यवहारेषु) १.४८.३. [आङ्+चर गतौ (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

आचरतः समन्ताद् गच्छत आगच्छतश्च १.६२.८ः [आङ्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

आचरन्ती समन्तात्प्राप्नुवत्यौ (धनुर्ज्ये) २९.४१. सत्याचरणं कुर्वती (विदुषी स्त्री) १.१६४.४०. समन्तात् प्रियाचरणं कुर्वत्यौ (योषा=पत्न्यौ) ६.७५.४. [आङ्+चर गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् प्रत्ययः]

आचरिक्रत् धर्मोपदेशमेव करोति ऋ० भू० २३७, अथर्व० ११.५.६. [आङ्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्यङ्लुकि शतृ प्रत्यये रूपम्]

आऽचर्थः सत्कुरुथः १.१५१.६. [आङ्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर् लट्। 'वहुल छन्दसी' ति शपो लुक्]

आचष्टे समन्तात्कथयति ७.३४.१०. [आङ्+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट्]

आचाकन्तु सर्वतः कामयन्तु १.१२२.१४. [चाकनत् कान्तिकर्मा निघं० २.६. तत आङ् पूर्वाल्लोट्]

आचार्यः विद्याऽध्यापकः ऋ० भू० २३५. तीसरा जो विद्या का देने वाला (गुरुः) स० प्र० ४३९, अथर्व० ११.५.३. विद्वान् (जन) सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.१७. [आङ्+चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो वहुलमि' ति कर्त्तरि ण्यत् प्रत्ययः। आचार्यः कस्मात् ? आचार्य आचारं ग्राहयत्याचिनोत्यर्थान् आचिनोति बुद्धिं वा नि० १.४. संस्थानाध्यायिन आचार्याः पूर्वे बभूवुः श्रवणादेव प्रतिपद्यन्ते न कारणं पृच्छन्ति गं० पू० १.२७.]

आचिकेत् सर्वतो जानीयात् १.१५२.३. समन्ताद्विजानीयात् ७.६१.१. विजानीत १.१६४.१६. समन्ताद् वेत्ति ऋ० भू० २०३. [आङ्+कि ज्ञाने (जु०) धातोर्लङ्]

आचिकेत् समन्ताद् विजानाति ७.४२.४. [आङ्+कि ज्ञाने (जु०) धातोर्लङ्]

आचितम् सहितम् १.१८२.२. [आङ्+चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्तः]

आचित्तम् चेतनतारहितम् (ब्रह्म=अन्नम्) १.१५२.५. [नञ्-चित्तपदयोः। समासः]

आऽचुच्यवुः आगच्छन्तु ५.५९.८. समन्तात् च्यावयेयुः ५.५३.६. [आङ्+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

आच्छत् समन्तात् पापनिवारकं कर्म १५.५. दोषाऽपवारणम् १५.४. [आङ्+छद अपवारणे (चुरा०) धातोः क्विप्]

आच्य अधो निपात्य १९.६२.

आच्यावयामसि प्रापयामः ४.३२.१८. [आङ्+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्णिचि लटि रूपम्। 'इदन्तो मसि' अ० ७.१.४६. सूत्रेण मस इकारान्तत्वम्]

आच्यावयामः प्रापयामः ४.१७.१६. [आङ्+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्णिचि लटि रूपम्]

आछ्यति समन्ताच्छिनत्ति २३.३९. [आङ्+छो छेदने (दिवा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन शप्]

आछृन्दन्तु समन्तात्प्रदीप्यन्ताम् ११.६५. [आङ्+

उच्छृदिर् दीप्तिदेवनयोः (रुधा०) धातोर्लोट्]

आछ्यन्तु समन्ताच्छिन्दन्तु, भा०—निवर्त्तयेुः २३.४१. भा०— दुर्गुणान् विनाश्य विद्यां प्रापयेयुः २३.४२ [आङ्+छो छेदने (दिवा०) धातोर्लोट्]

आऽज समन्तादजति प्रकाशयति, प्रकाशं प्रक्षिप्य द्योतयति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२३.१३. समन्ताद् दूरे प्रक्षिप ६.४७.३१. [आङ्+अजगतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आऽजगन् पुनः पुनः प्राप्नोति, प्र०—अत्र यङि, लङि 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१९१.१. **आजगन्थ**=आगच्छेः १२.१९. समन्ताद् गच्छ, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः १८.७१. [आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि लङि शपो लुकि च रूपम्]

आजगन्वान् समन्ताद् गन्ता (अग्निः=पावकः) ७.७.५. [आङ्+गम्लृ गतौ धातोर्लिटः क्वसुः। 'विभाषा गमहनविद०' अ० ७.२.६८. सूत्रेणेटो विकल्पः]

आजग्म प्राप्नुवन्तु ८.१८.

आजत् समन्तादजत्याकर्षणेन प्रक्षिपति वा १.८३.५. सर्वतः प्राप्नोति ४.५०.५. **आजत**=विजानीत १.१६१.६. प्रक्षिपति ३.४४.५. **आजतम्**=जानीतम् १.११२.१६. **आऽजति**=समन्ताद् गच्छति ५.३७.४. **आऽजन्**=प्राप्नुवन्ति ४.१.१३. **आऽजः**=प्रापयसि ७.५.६. [आङ्+अजगतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लङ् लेट् वा]

आजङ्घन्ति समन्ताद् भृशं घ्नन्ति ६.७५.१३. [आङ्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्यङ्लुकि लटि रूपम्]

आजनत समन्तात् प्रसिद्धया प्रकाशयत ४.१.१. समन्तादुत्पादयत ४.१.१. **आजनथः**=सर्वतो जनयतम्, प्र०—शप आर्धधातुकत्वाण्णिलुक् १.११६.८. **आजनयत्**=समन्ताद् जनयत् १.७१.७. **आऽजनि**=अभितो जायते १.८३.५. **आजनिषीष्ट**=आजायेत ४.१८.१. **आजनिष्ठाः**=समन्ताज्जायसे ५.३०.५. [आङ्+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन शप्। अपरत्र लुङ् लिङ् च]

आजनयन्त समन्तात्प्रादुर्भावयेयुः ३३.८. समन्तादुत्पादयन्तु, प्र०—अत्र लोडर्थे लङडभावश्च ७.२४. [आङ्+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिचि लङि रूपम्]

आजभार सर्वतो हरति ४.१८.१३. समन्ताद् बिभर्त्ति ७.३३.१०. **आजभर्थ** आहरसि ४.१९.९. [आङ्+हृञ् हरणे धातोर्लिट्। 'हृग्रहोर्भश्छन्दसी' ति वार्त्तिकेन हकारस्य भकारः। अथवा भृञ् धारणपोषणयोः [जु०) धातोर्लिट्]

आजभर्त्तन चारों ओर से अपने आत्माओं में धारण करो और आनन्दित होओ सं० वि० १९८, १०.७२.७. [आङ्+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

आजभ्रिरे अभितो भरन्ति पुष्णन्ति १.७२.४. समन्ताद्धरेयुः २०.६७. [आङ्+भृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः, आङ्+हृञ् हरणे धातोर्वा लिट्]

आजभ्रुः आधरन्ति ४.७.४. [आङ्+भृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्हरतेर्वा लिट्]

आजमीलहासः येऽजान् विद्यया सिञ्चन्ति तदपत्यानि (नरः=नायका जनाः) ४.४४.६. [अजः=नञ्+जनी+डः। अजोपपदे मिह सेचने (भ्वा०) धातोः क्विप्। ततोऽपत्यार्थेऽण्। जसेरसुक्]

आजयन् समन्ताद्विजयमानः (विद्वज्जनः) २.२७.१५. [आङ्+जि जये (भ्वा०) धातोः शतृ]

आजयः सङ्ग्रामाः ७.२३.१७. [आजिः संग्रामनाम निघं० २.१७. तस्य प्रथमाबहुवचने रूपम्]

आजरसाय जराऽवस्थापर्यन्त जीने के लिए सं० वि० १३४, १०.८५.४३. [जरापदस्याङा सहाव्ययीभावः। जराया जरसादेशः]

आजहुः समन्तात् त्यजन्ति २.२४.७. [आङ्+ओहाक् त्यागे (जु०) धातोर्लिट्]

आजा अजन्ति सङ्गच्छन्ते वीराः शत्रुभिर्यस्मिन् (सङ्गमे=सङ्ग्रामे) १.१०२.३. आजिषु सङ्ग्रामेषु १.१०२.१०. [अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोः 'अज्यतिभ्यां च' उ० ४.१३१ सूत्रेणेण् प्रत्ययः। आजिः संग्रामनाम। निघं० २.१७. 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण डादेशः]

आजातम् समन्तात्प्रादुर्भूतम् (अग्निं=विद्युतम्) ३३.८. **आजातः**=सर्वतः प्रसिद्धः (कामः) १.१७९.४. **आजाता**=समन्ताज्जातौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.४३.३. [आङ्+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः]

आजाति समन्ताज्जातिर्जननं यस्मिन् कुले तत् ५.२.५. [जातिः=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तिन्। आङ्-जात्योर्बहुव्रीहिः]

आजानम् समन्ताज्जनानां मनुष्याणामिदं कर्त्तव्यं

कर्म ३१.१७. [आङ्-जनपदयोः समासे 'तस्येदमि' ति सूत्रेणाण्]

आजानीः समन्तात्प्रसिद्धाः [उषसः=प्रकाशकर्त्र्योवेलाः) ३.१७.३. [आङ्-जनयोः समासे 'तस्येदमि' त्यणि स्त्रियां 'टिड्ढाण्०' इति ङीप् प्रत्ययः]

आजानेषु समन्ताज्जायन्ते विद्वांसो यैस्तेषु पठनपाठनादिव्यवहारेषु ३३.७२. [आङ्-जनयोः समासे 'तस्येदमि' त्यण् प्रत्ययः]

आजायत उत्पन्न कर दिया स० प्र० २८२. **आजायताम्**=समन्तादुत्पद्यताम् २२.२२. [आङ्+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लङ् लोट् वा]

आजिगातन प्रशंसन्ति ५.५९.६. [आङ्+गा स्तुतौ (जु०)+लडर्थे लोट्। जिगाति गतिकर्मा निघं० २.१४]

आजिगाति समन्तात् प्रशंसयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.११७.३. [आङ्+गा स्तुतौ (जु०) धातोर्लट्]

आजिघर्मि समन्तात् प्रदीप्ये सञ्चालयामि वा ४.२२. [आङ्+घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोर्लट्]

आजिम् अजन्ति प्रक्षिपन्ति शस्त्राण्यस्मिँस्तम् (सङ्ग्रामम्) ४.२४.८. सङ्ग्रामम्, प्र०—आजिरिति सङ्ग्रामनाम निघं० २.१७, ४.२०.३. अजन्ति जानन्ति सुकर्माणि येन तं सङ्ग्रामम्, प्र०—इणजादिभ्यः, इतीण् प्रत्ययः १७.९८. प्रसिद्धम् (व्यवहारम्) ४.५८.१०. **आजिषु**=प्राप्तेषु (सङ्ग्रामेषु) १.१३०.८. **आजौ**=युद्धे ३.३२.६. [अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर् औणादिक इण् प्रत्ययः। आजिरिति संग्रामनाम निघं० २.१७]

आजीरदानुम् समन्ताज्जीवयतीति आजीरदानुस्तम् ३४.४८. [आङ्+जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोर् 'महाभाष्यकार' सम्मत्या रदानुक्प्रत्यये 'लोपो व्योर्वलि' इति वकारलोपे रूपम्। ऊठ्निषेधश्च बाहुलकादेव। जीवति प्राणान् धारयतीति विग्रहः]

आजुहवाम आदद्याम १.११०.६. **आजुहुयाम**=समन्ताद् दद्याम ७.१.१७. **आजुहोत** आदत्त ५.२८.६. आदद्युः ३.५९.५. समन्ताद् गृह्णीत ३.९.८. **आजुहोति**=समन्तात्प्रक्षिपति स्थिरीकरोति ७.१.२३. [हुदानाऽऽदानयोः (जु०) धातोर्लोट्]

आजुहूर्थाः प्रदद्याः ७.१.१९. [आङ्+हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लङ्। अडभावश्च छान्दसः]

आजुहोतन समन्तात् प्रक्षिपत, प्र०—अत्र हुधातोर्लोटि मध्यमबहुवचने 'तप्तनप्०' इति तनपादेशः ३.१. [आङ्+हुदानादानयोः (जु०) धातोर्लोट्। मध्यमबहुवचनस्य तस्य तनपादेशः]

आजुह्वानम् स्पर्द्धमानम् (इन्द्रं=राजपुरुषम्) २८.३. **आजुह्वानस्य** समन्तात्प्राप्तद्रव्यस्य ७.१६.३. समन्ताद्धूयमानस्य (सर्पिषः+घृतस्य) १.१२७.१. **आजुह्वानः**=समन्तात् स्पर्द्धमानः (अग्निः=पावकवत्पवित्र विद्वज्जनः) २९.२८. सत्कारेणाऽऽहूतः (अग्निः=योगाभ्यासेन प्रकाशितात्मा) १७.७३. कृताऽऽह्वानः (शिल्पीजनः) ५.३७.१. कृतहोमः कृताऽऽमन्त्रणो वा (अग्निः=आप्तो विद्वज्जनो वा) १.१८८.३. सत्कारेणाऽऽहूतः (होता=जनः) २१.३२. **आजुह्वानाः**=समन्ताद्धोमस्य कर्त्तारः (सज्जनाः) ७.२.४. [आङ्+हुदानादानयोः (जु०) धातोः शानच्। अथवा ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्।

आजुह्वाना समन्तात् शब्दायमाना (सरस्वती=प्रशस्तज्ञानवती स्त्री) [आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लिटः कानचि स्त्रियां टापि च रूपम्। आजुह्वान=आहूयमानः नि० ८.८.]

आजेष्म आजयेम, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् अड्, वृद्ध्यभावश्च १.१६. [आङ्+जि जये (भ्वा०) धातोर्लुङ्। वृद्ध्यभावश्छान्दसः]

आज्यपानाम् गत्या पालकानाम् (देवानां=पृथिव्यादीनाम्) २१.४६. ज्ञातव्यरक्षकाणां रसानां वा (देवानां=विद्वज्जनानाम्) २१.४७. **आज्यपाः**=य आज्यं पिबन्ति वाऽऽज्येन रक्षन्ति ते (देवाः=विद्वज्जनाः) २८.११. य आज्यं पातुमर्हं रसं पिबन्ति ते (देवाः=विद्वज्जनाः) २१.५८. य आज्यं विज्ञानं पान्ति रक्षन्ति ते (देवाः=विद्वज्जनाः) २१.४०. [आज्यम्=अञ्जु व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोः क्यप् 'आङ् पूर्वादञ्जेः सञ्जायामुपसंख्यानम्' अ० ३.२.१०९. वार्त्तिकेन। तदुपपदे पा रक्षणे (अदा०) पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा कः प्रत्ययः। प्रयाजाऽनुयाजा वै देवा आज्यपाः श० १.५.३.२३.

आज्यम् व्यञ्जनोपलक्षणम् ऋ० भू० १२३. ज्ञातव्यं घृतवत्सारभूतम् सर्वदुःखनिवारकमानन्देन स्निग्धं सारभूतञ्च ऋ० भू० १४७. घृतादिकम् २.८. ज्ञातव्यं घृतवत्सारभूतम् ऋ० भू० १५२, १०.१०३.३. **आज्यस्य**=यज्ञसामग्रीम्, प्र०—'सुपां सुलुग्०' इति द्वितीया स्थाने षष्ठी २.१३. प्राप्तुमर्हस्य (पदार्थस्य) २१.४०. घृतम्, प्र०—अत्र कर्मणि षष्ठी २१.२९. घृतादेर्हविषः १०.२९. प्राप्तव्यस्य घृतादिसम्बन्धिपदार्थस्य २८.२८. विज्ञातुमर्हस्य

भा०—विज्ञेयस्य (जगतः) २८.२६. विज्ञानस्य ५.३५. प्राप्तुं योग्यस्याऽध्यापनव्यवहारस्य २८.८. निदानाऽऽदेः २८.७. प्रक्षेप्तुं योग्यस्य (पदार्थस्य) कर्त्तव्यस्य न्यायस्य २८.४. विज्ञेयस्य राज्यविषयस्य २८.५. विज्ञानेन रक्षितुं योग्यस्य राज्यस्य २८.३. ज्ञातुं योग्यस्य (वचसः) २८.६. स्नेहद्रव्यस्य ६.१६. **आज्येन** यज्ञेऽग्नौ च प्रक्षेपितुं योग्येन हविषा संस्कृतेन होतव्येन पदार्थेन २.६. [आज्यम् पूर्वपदे साधितम् । आज्यं महिष्यभ्यनक्ति । तेजो वा आज्यम् । तै० ३.६.४.६. तेजो वा आज्यम् ता० १२.१०.१८. तेज आज्यम् तै० १.६.३.४. अग्नेर्वा एतद्रूपम् । यदाज्यम् तै० ३.८.१४.२. देवलोको वा आज्यम् कौ० १६.५. एतद्वै देवानां प्रियतमं धाम यदाज्यम् श० १.३.२.१७, १३.३.६.२. आज्यम् (=विलीनं सर्पिः) वै देवानां सुरभिः ऐ० १.३. एषा हि विश्वेषां देवानां तनूः यदाज्यम् तै० ३.३.४.६. एतद्वै जुष्टं देवानां यदाज्यम् श० १.७.२.१०. एतद्वै संवत्सरस्य स्वं पयः यदाज्यम् श० १.५.३.५. रस आज्यम् श० ३.७.१.१३. आज्यꣳ ह वाऽअनयोर्द्यावापृथिव्योः प्रत्यक्षं रसः श० २.४.३.१०. पशव आज्यम् तै० १.६.३.४. यज्ञो वा आज्यम् तै० ३.३.४.१. यजमानो वा आज्यम् तै० ३.३.४.४. वज्रो ह्याज्यम् श० १.३.२.१७. वज्रो वाऽआज्यं वज्रेणैवैतद्रक्षाꣳसि नाष्ट्रा अपहन्ति श० ७.४.१.३४. वज्रो वाऽआज्यं तद्वज्रेणैवैतन्नाष्ट्रा रक्षाꣳस्यवबाधते श० ३.६.४.१५. वज्रो वा ऽआज्यम् कौ० १३.७. श० १.५.३.४. तै० ३.८.१५.१. काम आज्यम् तै० ३.१.४.१५. सत्यमाज्यम् श० ११.३.१.१. प्राणो वाऽऽज्यम् तै० ३.८.१५.२३. रेतो वाऽआज्यम् श० १.६.२.७. छन्दाꣳसि वा आज्यम् तै० ३.१.५.३. अयातयाम ह्याज्यम् श० १.५.३.२५. ईश्वरो वा एषोऽन्धो भवितोः यच्चक्षुषाज्यमवेक्षते । निमील्यावेक्षेत तै० ३.३.५.२. आज्यानि (शास्त्राणि, स्तोत्राणि) आज्येन वै देवाः सर्वान् कामान् जयन्त्सर्वममृतत्वम् कौ० १४.१. ते वै प्रातराज्यैरेवाजयन्त आयन् यदाज्यैरेवाजयन्त आयंस्तदाज्यानामाज्यत्वम् ऐ० २.३६. ते (देवाः) आजिमायन्यदाजिमायꣳस्तदाज्यानामाज्यत्वम् तां० ७.२.१. तद्वा इदं षड्विधमाज्यं तूष्णीं जपस्तूष्णीं शंसः पुरोरुक्सूक्तमुक्थवीर्यं याज्येति । कौ० १४.१. आत्मा वै यजमानस्याज्यम् कौ० १४.४. वागेवाज्यम् कौ० २.६. सर्वाणि स्वराण्याज्यानि (स्तोत्राणि) तां० ७.२.५. आज्यं तेज आज्यम् तै० ३.३.४.३. तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि (आज्य !) श० १.३.१.२८. एतद्रेतः । यदाज्यम् तै० १.१.६.४. मेधो वा आज्यम् तै० ३.६.१२.१. एतद् वै मधुदैव्यं यदाज्यम् ऐ० २.२. (=विलीनं सर्पिः) तदाहुः । किन्देवत्यान्याज्यानीति प्राजापत्यानीति ह ब्रूयादनिरुक्तो वै प्रजापतिरनिरुक्तान्याज्यानि श० १.६.१.२०. आज्यम् अथैषाज्याहुतिर्यद्धविर्यज्ञो यत्पशुः (=पशुयज्ञः) श० १.७.२.१०.]

आञ्जन् कामयन्ते ६.६३.३. [अञ्जु व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शप्]

आञ्जनीकारीम् आञ्जनीः प्रसिद्धाः क्रियाः कर्त्तुं शीलं यस्यास्ताम् (स्त्रियम्) ३०.१४. (आङ्+अञ्जु-व्यक्तिम्रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्ल्युटि ङीपि चाञ्जनी । तदुपपदे करोतेर्धातोस्ताच्छील्ये णिनिः प्रत्यय]

आडम्बराघातम् आडम्बरस्याऽऽघातकं कोलाहलकर्त्तारम् (जनम्) ३०.१६. [आडम्बरोऽर प्रत्ययान्त औणादिकः । तदुपपदे आङ् पूर्वाद् हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्णमुल् प्रत्ययः]

आणिम् सङ्ग्रामम्, प्र०—आणाविति सङ्ग्रामनामसु पठितम् निघं० २.१७, १.३५.६. **आणिः**=कीलकम् ५.४३.८. **आणौ**=सङ्ग्रामे १.६३.३. [अण शब्दार्थे (भ्वा०) धातोः बाहुलकाद् इण् प्रत्ययः । आणौ संग्रामनाम निघं० २.१७. आणिररणात् नि० ६.३२]

आण्डा गर्भान् पं० वि०। गर्भों को, आर्याभि० १.४६. ऋ० १.७.१६.८. अण्डवत् गर्भे स्थितान्, आर्याभि० १४८, १.१०४.८ **आण्डाभ्याम्**=वीर्याऽऽधाराभ्याम् २५.१. अण्डाऽऽकाराभ्यां वृषणाऽवयवाभ्याम् २५.७. **आण्डौ**= अण्डाकारौ वृषणौ २०.६. [आण्डौ आणी इव व्रीडयति तस्तम्भे नि० ६.३२. आण्डौ वै रेतः सिचौ, यस्य ह्याण्डौ भवतः स एव रेतः सिञ्चति श० ७.४.२.२४]

आत् नैरन्तर्ये २.२४.६. अभितः ३३.७. समन्तात् १.१८.८. आनन्तर्यार्थे १.६.४. अद्भुते १.३२.४. (आत् अथ नि० ४.११]

आतक्षत् समन्तात् तनूकरोति १.५१.१०. **आतक्षत**=अभितो निष्पादयत १.१११.३. समन्तात् साध्नुत ४.३५.६. विस्तृणुत ४.३६.८. **आतक्षन्तु**=अभितो रचयन्तु ४.३३.८. [आङ्+तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लङि लेटि वा रूपम्]

आततने विस्तृणीयाम् ७.२६.३. **आततन्थ**=सर्वतस्तनोषि ७.५.४. भ्रमन् सन्नागच्छति ऋ० भू० १३८. विस्तारयति ३.६.५. विस्तृणोषि, प्र०—अत्र 'बभूथाततन्थ०, अ० ७.२.६४. अनेन सूत्रेण निपात्यते १.१६१.२२.

समन्तात्तनु १२.४०. समन्तात्तनोषि ३४.२२. विस्तृणीहि १९.५४. समन्तात्तनोति ३.२२.२. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिट्। 'छन्दसि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते' इत्येत्वाभ्यासलोपौ न भवतः]

आततन्वान् समन्ताद्विस्तारितवान् ३.१.५. (तनु विस्तारे (तना०) धातोराङ्पूर्वाल् लिटः स्थाने क्वसुः]

आततम् समन्तात्ततं विस्तृतम् (चक्षुः=नेत्रम्) १.२२.२०. व्याप्तम् ऋ० भू० ४४. सब ओर से व्याप्त होने से सब जगह में परिपूर्ण एक रस भर रहे (ब्रह्म) को आर्याभि० १.२१. **आततः**=व्याप्तः (सूरः=सूर्यः) ६.२.६. [आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

आतता समन्ताद्विस्तृता (नाभिः) १.१०५.९. **आतताः** समन्ताद्विस्तृताः (रश्मयः=किरणाः) २.५.२. [आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्तप्रत्यये स्त्रियां टाप्]

आततान सर्वतो विस्तृणाति १.१२६.२. समन्तात्तनोति ७.२३.१. आतनोति विस्तृणाति ७.४७.४. सर्वतो विस्तृणोति ५.१.७. [आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लडर्थे लिट्। आततान आतनोति नि० १०.३१]

आततायिने समन्तात्ततं विस्तृतं शत्रुदलमेतुं शीलमस्य तस्मै (शूर-जनाय) १६.१८. [आततम्=आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्तः। तदुपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः प्रत्ययः]

आतनच्मि समन्तात्सङ्कोचयामि दृढीकरोमि १.४. [तञ्चू संकोचने (रुधा०) धातोराङ् पूर्वाल् लट्]

आतनन् विस्तारयेत् १.९१.२३. सर्वतः सङ्कुचेत्, प्र०—अत्र 'उपसर्गाच्चाऽदैर्घ्ये' इत्याद्यृषीयपाठात् तनुधातोः स्वगणे लेट्-प्रयोगः समर्थो भवति ३४.२३. [आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

आतनिः विस्तारकः (अग्निः=राजा) २.१.१०. [आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः कर्त्तरि बाहुलकाद् इः प्रत्ययः]

आतनुष्व विस्तृणीहि ४.४.४. **आतनोषि**=विस्तृणासि ४.५२.७. **आतन्वन्ति**=सर्वतो विस्तृणन्ति १८.४६. अनुगम्य विस्तारयन्ति १.१९.८. समन्ताद्विस्तृण्वन्ति १३.२२. [आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लोट्]

आतन्वन्तः विस्तारयन्तः (आकेपिनासः=किरणाः) ४.४५.६. [आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः शतृ प्रत्ययः]

आतन्वानेभ्यः समन्तात् सुखविस्तारकेभ्यः (सत्पुरुषेभ्यः) १६.२२. [आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः शानच् प्रत्ययः]

आतपति समन्तात्तपति ३१.२०. समन्तादन्तःकरणे प्रकाशयति ऋ० भू० १३३. [आङ्+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लट्]

आतपः समन्तात् प्रतापयुक्तः १.५५.१. समन्तात् प्रतापकः (घर्मः) ५.७३.५. [आङ्+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः]

आतप्याय आतपेषु भवाय (सत्पुरुषाय) १६.३८. [आतपप्राति० भवार्थे यत् प्रत्ययः]

आतरन्ति प्राप्नुवन्ति ७.३२.१३. [आङ्+तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोर्लट्]

आतस्थिवांसम् आस्थितम् (भुज्युं=भोगसमूहम्) १.११६.५. **आतस्थिवांसः**=समन्तात् स्थिताः (द्यावापृथिवी) ५.४७.२. **आतस्थिवांसा**=समन्तात्तिष्ठन्तौ (द्यावापृथिव्यौ) २.१२.८. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः। 'वस्वेकाचाद्घसाम्' अ० ७.२.६७. सूत्रेणेडागमः]

आतस्थुः समन्तात् स्थिरा भवन्ति ऋ० भू० १५७. समन्तात् तिष्ठन्ति १.७२.९. आस्थितवन्तः ११.५. **आतस्थौ**=समन्तात् तिष्ठति ३.७.२. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

आतान समन्तात् सुखं तनितः (विद्वज्जन) ६.१२. [आङ्+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिट्। वर्णव्यत्ययेन तकारलोपश्च। अथवा—आङ्+तनु धातोः 'तनोतेर्ण उपसंख्यानम्' इति णः प्रत्ययः]

आतासु व्याप्तासु दिक्षु प्र०—आता इति दिङ्नामसु पठितम् निघं० १.६, १.११३.१४. **आताः**=व्याप्ता दिशः ३.४३.६.

आतिथ्यम् अतिथिसत्कारम् ५.२८.२. अतिथेः कर्म १.७६.३. यदतिथेर्भावः सत्काराख्यं कर्म वा ५.१. अतिथिवत् सत्कारम् ४.४.१०. **आतिथ्ये**=अतिथीनां सत्कारे ४.३३.७. [अतिथिः अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोः 'ऋतन्यञ्जि' उ० ४.२ सूत्रेण इथिन्। नञ्तिथिपदयोर्वा बहुव्रीहिः। ततो भावे ष्यञ्]

आतिथ्यरूपम् अतिथीनां भावः कर्म वाऽऽतिथ्यं

तद्रूपं च तत् १९.१४. [आतिथ्यं व्याख्यातम्। आतिथ्यरूपपदयोः समासः]

आतितिक्षन्ते समन्तात् सहन्ते ३४.१८. [आङ्+तिज निशाने (भ्वा०) धातोः 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्' अ० ३.१.५. सूत्रेण स्वार्थे सन्। ततो लट्। 'निन्दाक्षमाव्याधिप्रतिकारेषु सन्निष्यते' इति क्षमार्थे सन्]

आऽतिरत् सन्तारयति २.१७.२ **आऽतिरन्त**=समन्तात्तरन्ति ७.७.६. आऽतिरः=सर्वतो हन्याः ४.३०.३. सर्वतो हंसि ४.३०.७. [आङ्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लेट्। इकारादेशश्छान्दसः। अन्यत्र आतिरत् वधकर्मा निघं० २.१९.]

आऽतिष्ठः अभितस्तिष्ठ १.८४.३. **आऽतिष्ठत**=सर्वतस्तिष्ठत ८.१९. **आतिष्ठति**=समन्ताद्वर्त्तते १.५८.२. **आऽतिष्ठन्**=सर्वतस्तिष्ठन्ति ४.३३.७. **आतिष्ठसि**=अभितस्तिष्ठसि १.५१.१२. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

आतिष्ठन्तम् समन्तात् स्थितम् (सूर्यादिलोकम्) ३.३८.४. समन्तात् स्थिरम् (अग्निं=विद्युतम्) ३३.२२. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लटः शतृ प्रत्ययः]

आतिष्ठिपत् समन्तात् स्थापयेत् २५.४३. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्णिचि लुङि रूपम्। 'तिष्ठतेरित्' अ० ७.४.५. सूत्रेणेकारादेशः]

आतिः पक्षिविशेष २४.३४. [अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोः 'अज्यतिभ्यां च' उ० ४.१३१. सूत्रेण इण् प्रत्ययः]

आतुजे बलकारकाय (राये=धनाय) ७.३२.९. [आङ्+तुज हिंसायाम् (भ्वा०) [धातोः कर्तरि क्विप्। तुजः=वज्रनाम निघं० २.२०]

आतैः सततं गमकैः (पक्षोभिः=पक्षैः) २९.५. [अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि णः प्रत्ययः]

आत्मकृतस्य स्वयमाचरितस्य (एनसः=पापस्य) ८.१३. [आत्मन्-कृतपदयोः समासः]

आत्मदाः आत्म-ज्ञान का दाता (ईश्वरः) सं० वि० ५, २५.१३. विद्याविज्ञानप्रदः (ईश्वरः) ऋ० भू० ६. य आत्मानं ददाति सः (जगदीश्वरः) २५.१३. आत्मज्ञानादि का दाता (ईश्वर) आर्याभि० २.४८. [आत्मन्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः प्रत्ययः। आकारस्य छान्दसत्वान्नलोपः]

आत्मन् आत्मनि २०.१०. वेदिस्थ अग्नि में होम करने के समान आत्मा में सं० वि० २०९. **आत्मना**=स्वस्वरूपेणाऽन्तःकरणेन च ३२.११. स्वसामर्थ्येन ऋ० भू० ८९. अपने आत्मा, अनन्त सत्याचरण, विद्या और श्रद्धा भक्ति से आर्याभि० २.१०, ३२.११. **आत्मने**=इच्छादिगुणसमवेताय स्वस्वरूपाय ७.२८. **आत्मा**=अतति सर्वत्र व्याप्नोतीति सर्वाऽन्तर्यामी परमात्मा स्वस्वभावो वा ४.१५. अतति नैरन्तर्येण सर्वत्र व्याप्नोतीत्यात्मा (परमेश्वरः सूर्यो वा) पं० वि०। योऽतति शरीरमिन्द्रियाणि प्राणांश्च व्याप्नोति सः १८.२९. स्वस्वरूपम् १२.४. जीवः २२.३३. तत्त्वमूलम् १२.८५· स्वयम्भूर्जीवः २०.७. आत्मवत् ४०.७. आत्मानम्=चेतनम् (तत्त्वम्) १४.१७. सर्वाधिष्ठातारम् (परमात्मानम्) १.१६३.६. स्वस्वरूपमधिष्ठानं वा, भा०—सर्वत्राऽभिव्याप्तं परमात्मानम् ३२.११. परमानन्द स्वरूप परमात्मा को आर्याभि० २.१०, ३२.११. [अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोः 'सातिभ्यां मनिन्मनिणौ' उ० ४.१५३. सूत्रेण मनिण् प्रत्ययः। आत्माऽततेर्वा, आप्तेर्वा, अपि वा आप्त इव स्याद् व्याप्तीभूत इति नि० ३.१५. आत्मा हृदये (श्रितः) तै० ३.१०.८.९. आत्मा वै तनूः श० ६.७.२.६. मध्यतो ह्ययमात्मा श० ६.२.२.१३, ८.१.४.३. आत्मनो ह्येवाध्यङ्गानि प्ररोहन्ति श० ८.७.२.१५. आत्मनो वाऽइमानि सर्वाण्यङ्गानि प्रभवन्ति ४.२.२.५. सप्तपुरुषो ह्ययं पुरुषो यच्चत्वार आत्मा त्रयः पक्षपुच्छानि श० ६.१.१.६. चतुर्विधो ह्ययमात्मा श० ७.१.१.१४. (शरीरम्) पाङ्क्त इतर आत्मा लोमत्वङ्मांसमस्थि मज्जा तां० ५.१.४. षडङ्गोऽयमात्मा षड्विधः कौ० २०.३. स पञ्चविंश आत्मा श० १०.१.२.४. तस्मादितर आत्मा मेद्यति च कृश्यति च तां० ५.१.७. आत्मा हि प्रथमः सम्भवतः सम्भवति श० १०.१.२.४. भूमोऽएषोऽङ्गानां यदात्मा श० ६.६.१.१०. सर्वं ह्ययमात्मा श० ४.२.२.१. (शरीरम्) तस्मादयं सर्व एवात्मोष्णस्तद्धैतदेव जीविष्यतश्च मरिष्यतश्चविज्ञानमुष्ण एव जीविष्यञ्छीतो मरिष्यन् श० ८.७.२.११. (शरीरम्) तत्सर्वं आत्मा वाचमप्येति वाङ्मयो भवति कौ० २.७. एतन्मयो वा ऽअयमात्मा वाङ्मयो मनोमयः प्राणमयः श० १४.४.३.१०. बाह्यो ह्यात्मा श० ६.६.२.१६. आत्मा यजमानः कौ० १७.७. गो० उ० ५.४. आत्मैवोखा श० ६.५.३.४, ६६.२.१५. अविनाशी वा ऽअरेऽयमात्मानुच्छित्तिधर्मा श० १४.७.३.१५. यथा व्रीहिर्वा यवो वा श्यामाको वा श्यामाकतण्डुलो वैवमयमन्तरात्मन्पुरुषो हिरण्मयो यथा ज्योतिरधूममेवं ज्यायान् दिवो

ज्यायानाकाशाज् ज्यायानस्यै पृथिव्यै ज्यायान्त्सर्वेभ्यो भूतेभ्य स प्राणस्यात्मैष म ऽआत्मैतमित आत्मानं प्रेत्याभि सम्भविष्यामीति यस्य स्यादद्धा न विचिकित्सास्तीति श० १०.६.३.२. अथ यो हैवैतमग्निं सावित्रं वेद । स एवास्माल् लोकात्प्रेत्य । आत्मानं वेद । अयमहमस्मीति तै० ३.१०.११.१. आत्मनो वा ऽअरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम् श० १४.५.४.५. यश्चायमध्यात्मꣳ शारीरस्तेजोमयोऽमृतमया पुरुषोऽयमेव स योऽयमात्मेदममृतमिदं ब्रह्मेदꣳ सर्वम् श० १४.५.५.१. आत्मा ह्ययं प्रजापतिः श० ४.६.१.१, ११.५.९.१. आत्मा बै तनूः श० ७.३.१.२३, ७.५.२.३२. आत्मा (शरीरम्) वै पूः श० ७.५.१.२१. अन्तरिक्षं यच्छान्तरिक्षं दृꣳहान्तरिक्षं मा हिꣳसीः (यजु० १४.१२.) इत्यात्मानं यच्छात्मानं दृꣳहात्मानं मा हिंसीत्येतत् (अन्तरिक्षम् आत्मा) श० ८.३.१.९. आत्मा वै वृषाकपिः ऐ० ६.२९. गो० उ० ६.८. (होता) यदि वृषाकपिम् (ऋ० १०.८६.१.२३) आत्मानम् अस्य अन्तरियात् ऐ० ५.१५. आत्मा वै वेनः (ऋ० १०.१२३.१) कौ० ८.५. आत्मा वै समस्तः सहस्रवांस्तोकवान् पुष्टिमान् ऐ० २.४०. आत्मा सूक्तम् कौ० १४.४, १५.३, १६.४, २३.८. आत्मा वै स्तोत्रम् श० ५.२.२.२०. आत्मैव स्तोत्रियः जै० उ० ३.४.३. आत्मा वै स्तोत्रियः कौ० १५.४.२२.८. ऐ० ३.२३.२४, ६.२६. गो० उ० ३.२२. आत्मा वै स्तोत्रियानुरूपौ कौ० ३०.८. आत्मा महदुक्थम् श० १०.१.२.५. आत्मा उपांसुसवनः ऐ० २.२१. आत्मा लोकम्पृणा (इष्टका) श० ८.७.२.८. आत्मा वै बृहती ऐ० ६.२८. गो० उ० ६.८. आत्मा त्रिष्टुप् श० ६.२.१.२४, ६.६.२.७. आत्मा वै होता कौ० २९.८ ऐ० ६.८. गो० उ० ५.१४. आत्मा वै यज्ञस्य होता कौ० ९.६. आत्मा होतृचमसः ऐ० २.३०. आत्मा वै ब्राह्मणाच्छंसी कौ० २८.९.]

आत्मन्नेव आत्मा अर्थात् परमेश्वर ही में तथा अपने आत्मा के तुल्य सं० वि० २१४, ४०.६. [आत्मन्-एव पदद्वयम्]

आत्मन्वतीभिः प्रशस्ता आत्मन्वन्तो विद्यावन्तः क्रियाकुशलाः पुरुषाः विद्यन्ते यासु ताभिः (नौभिः) १.११६.३. स्वयं स्थिताभिः स्वात्मीयस्थिताभिर्वा (नौभिः) ऋ० भू० १९०. [आत्मन्प्राति० अतिशायनेऽर्थे मतुप् । ततो ङीप् । 'अयस्मयादीनि च्छन्दसि' सूत्रेण भत्वान्नकारलोपो न भवति]

आत्मन्वन्तम् स्वकीयजनयुक्तम् (प्लवं=नौकादिकम्) १.१८२.५. [आत्मन्+मतुप्]

आत्मसनि आत्मानं सनति सम्भजति येन तत् (अपत्यम्) १९.४८. [आत्मन्युपपदे षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोः 'खनिकषि०' उ० ४.१४०. सूत्रेण इः प्रत्ययः]

आत्महनः य आत्मानं घ्नन्ति तद्विरुद्धमाचरन्ति ते (जनाः) ४०.३. [आत्मन्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्]

आत्मेव यथाऽऽत्मा मनश्च शीघ्रं गच्छति ऋ० भू० १९६. आत्मनः शीघ्रं गमनवत् १.३४.७. आत्मा इव १.७३.२. [आत्मन् इव पदयोः समासः]

आथर्वणः अथर्वणोऽहिंसकस्याऽपत्यम् १.११६.१२. **आथर्वणाय**=छिन्नसंशयस्य पुत्राय १.११७.२२. [अथर्वन् प्राति० अपत्यार्थेऽण्प्रत्ययः । अथर्वाणोऽथर्ववन्तः । थर्वतिश्चरतिकर्मा तत्प्रतिषेधः नि० ११.१९. चरतिश्च चर संशये (चुरा०) भेषजं वा आथर्वणानीति तां० १२.९.१०. भेषजं वै देवानामाथर्वणो (अथर्वणा ऋषिणा........ मन्त्राः) भैषज्यायै वारिष्ट्यै तां० ६.१०.१०.]

आदत् आदद्यात् ५.३२.८. आद्यात् १.१२७.६. आदत्ते १.१२.४. **आदत्त**=आददाति ५.२९.२. समन्ताद् गृह्णीयात् १.१४५.३. [आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङ् । आकारस्य च ह्रस्वश्छान्दसः]

आदर्दर्षि समन्ताद् भृशं विदृणासि २.१२.१५. [आङ्+दृ हिंसायाम् (स्वा०) धातोर्यङ्लुकि लटि रूपम्]

आददानः समन्ताद् गृह्णन् ४.१९.९. [आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः शानच्]

आददिः आदाता (ब्रह्मणस्पतिः=राज्यधनस्य पालको राजपुरुषः) २.२४.१३. [आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किः प्रत्ययो लिट्वच्च]

आददीमहि समन्ताद् गृह्णीमः, प्र०—अत्र लडर्थे लिङ् १.८.३. **आददे**=सर्वतो गृह्णाति, प्र०—अत्रा ऽऽत्मनेपदे तलोपः १.१६१.१२. समन्ताद् गृह्णामि ६.३०. समन्तात् स्वीकरोमि १.२४. आगृह्णीयात् ४.१५.८. सर्वतो गृह्णीयाम् ३८.१. आदद्याम् ४.३४.४. आददामि ५.७.१०. [आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लिङ्]

आददृशे समन्ताद् दृश्यते ६.४८.६. [आङ्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि लिट्]

आदधते समन्ताद् धरन्ति ६.४८.१७. **आदधिरे**=समन्ताद् धरन्ति १.५९.३. समन्ताद् दधति १.८३.४.

आदधिष्व=समन्ताद् धेहि ३.३५.६. **आदधीत**=समन्ताद् दधेत ५.६६.१. **आदधुः**=समन्ताद् धरन्ति ७.३२.२. समन्ताद् धरन्तु १.५८.६. **आदधे**=समन्तात् स्थापयामि, भा०—प्रयत्नेनोपनियोजयामि ३.५. समन्ताद् दधेत ३.२७.९. अभितो धरामि ५.९. समन्ताद् दधाति ३.२३.१. आदधीय १.१३९.१. अभितः स्वीकरोमि ५.९. [आङ्+दध धारणे (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनैकवचनम् । अन्यत्र लिटि लुङि लोटि च रूपाणि]

आदधर्ष तिरस्कुर्यात् ६.७.५. आधृष्णोति ५.८५.६. आदधर्षत्=प्रगल्भो भवेत् २.४१.८. आदधर्षीत् समन्ताद् धृष्णुयात् २०.८२. **आदधर्षति**=समन्ताद् धर्षितुमिच्छति १.१५५.५. तिरस्करोति ६.२८.३. धर्षयितुं शक्नोति, प्र०—अत्र लेटि व्यत्ययेन श्लुः ३५.१८. [आङ्+ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोर्लेट् । व्यत्ययेन श्लुः]

आदधर्षीत् समन्ताद् धर्षेत्, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति द्विर्वचनम् १३.११. आधृष्णुयात् ४.४.३. [आङ्+ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोर्लुङ् । छान्दसत्वाद् द्विर्वचनम्]

आदधानाः समन्ताद् धरन्तः (विद्वज्जनाः) १.१६५.१२. [आङ्+दध धारणे (भ्वा०) धातोः शानच्]

आदध्मसि समन्ताद् धरामः ११.७३. [आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लटि उत्तमबहुवचने मस इदन्तत्वं छन्दसि]

आदने अत्तव्ये घासे ६.५९.३. [अद भक्षणे (अदा०) धातोर्णिजन्ताल् ल्युट्]

आदभत् सर्वतो हिंस्यात् ७.५६.१५. **आदभुः**=समन्ताद् हिंसन्ति ६.४६.१०. समन्ताद्धिंसन्तु ३.१६.२. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१९. ततो लङ् । व्यत्ययेन शप्]

आदम् आददामि १.१२६.२. [आङ्पूर्वाद् डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङ् । सिचो लुक्, आकारस्य च ह्रस्वश्छान्दसम्]

आदम् अत्तुं योग्यम् (इषम्=अन्नम्) १२.१०५. [अद भक्षणे (अदा०) धातोर्घञ्]

आदर्त्ता समन्तात् शत्रूणां विदारकः (इन्द्रः=राजा) ४.२०.६. [आङ्+दॄ विदारणे (क्र्या०) धातोस्तृच् कर्त्तरि]

आदर्दृतम् समन्ताद् भृशं विदारयतम् ४.२८.५. [आङ्+दॄ विदारणे (क्र्या०) धातोर्यङ्लुकि लोट्]

आदर्षि सर्वतो द्रियस्वाऽऽदरं कुरु, प्र०—अत्र 'दृङ आदरे' इत्यस्माल्लोटि मध्यमैकवचने 'वाच्छन्दसि' इति सिपः पित्वाद् गुणः १.११०.९. विदीर्णं करोषि ४.१६.८. समन्ताद् विदृणासि ५.३९.३. [आङ्+दृङ् आदरे (तुदा०) धातोर्लोट् । अथवा दॄ विदारणे (क्र्या०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक्]

आदशस्ये आदद्याः ७.३७.५. [आङ्+दाशति दानकर्मा (निघं० ३.२०.) धातोर्लृटि रूपम् । धातोश्च ह्रस्वश्छान्दसः]

आऽदः विदृणीहि, प्र०—अत्र विकरणस्याऽलुक् लङ् प्रयोगः १.१२१.१०. [आङ्+दॄ विदारणे (क्र्या०) धातोर्लङ्]

आदः अत्ता प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इति कर्त्तरि घञ् 'बहुलं छन्दसि' इति घस्लादेशो न १.१२१.९. [अद भक्षणे (अदा०) धातोर्घञ्]

आदात् समन्ताद् ददाति ४.१६. **आदाति**=समन्ताद् ददाति ७.४२.४. **आदाम**=समन्ताद् दद्याम ५.३०.१५. [आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लङ् । 'गातिस्थाघु०' इति सिचो लुक्]

आदाय गृहीत्वा ४.२६.७. [आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्त्वा । समासे ल्यप्]

आदारः समन्ताच्छत्रूणां दारणकर्त्ता गुणः १.१६.५. [आङ्+दॄ विदारणे (क्र्या०) धातोर्घञ् भावे]

आदित् तदनन्तरम् ऋ० भू० १३९. [गायत्रीयꣳ सोममाहरत् तस्य योंऽशुः परापतत् त आदारा अभवन् तै० १.४.७.५-६. यत्र वै यज्ञस्य शिरोऽच्छिद्यत तस्य यो रसो व्यप्रुष्यत्तत आदाराः समभवन् श० ४.५.१०.४. आदाराः यत्र वाऽएनं (विष्णुं=यज्ञम्) इन्द्र ओजसा पर्यगृह्णात्तदस्य परिगृहीतस्य रसो व्यक्षरत्स पूयन्निवाशेत सोऽब्रवीदादीर्येव बत मऽएष रसोऽस्तोषीदिति तस्मादादारा श० १४.१.२.१२]

आदित्य! अविनाशिस्वरूप विद्वन् (गृहपते) ८.५. विद्यया सूर्य इव प्रकाशमान (गृहपते) ८.३. अविनाशिस्वरूप सूर्य इव सत्यन्यायप्रकाशक, भा०—सत्याचरणे वर्त्तमान (वरुण=शत्रूणां बन्धक राजन्) १२.१२. **आदित्यम्**=सूर्यम् १३.४१. सूर्यमिव वर्त्तमानम् (राजानं=नरेशम्) ४.१.२. **आदित्यः**=सूर्यवद्विद्यया प्रकाशितः (अर्वा=वह्निरिव वर्त्तमानो जनः) २९.१४. प्रलये सर्वस्याऽऽदातृत्वात् (ईश्वरः) ३२.१. विनाशरहितः सूर्यवत्प्रकाशकः (पन्थाः=मार्गः) १.१०५.१६. अदित्यावन्तरिक्षे भवः (विद्युदग्निः) १.१६३.३. जिसका कभी

नाश न हो और स्वप्रकाशस्वरूप हो वह (ईश्वर)
आर्याभि० २.४.३२.१. विनाशरहितो परमेश्वरो, जीवः,
कारणरूपेण प्राणो वा १.२५.१२. **आदित्या**=सूर्य-
प्राणौ १.१३६.३. अविनाशिनौ (सुहृदौ) ५.६७.१.
अखण्डितौ (सूर्याचन्द्रमसौ) २.४१.६. **आदित्यान्**=
मासानिव वर्त्तमानान् पूर्णविद्यान् (आप्तान् जनान्)
४.२५.३. सर्वान् मासान् ७.४४.१. द्वादशमासान् १.१४.३.
कृताष्टचत्वारिंशद्ब्रह्मचर्येण पूर्णविदुषः (राज्ञः=नृपान्)
६.५१.४. मुख्यान् विदुषः २५.१. समाचरिताष्टचत्वा-
रिंशत्संवत्सरब्रह्मचर्याऽखण्डितव्रतान् महाविदुषः (जनान्)
१.४५.१. **आदित्यानाम्**=अखण्डितन्यायाधीशानाम्
२५.६. पूर्णब्रह्मचर्यविद्यावताम् सज्जनानाम् २.२७.१३.
सूर्यादीनां मासानां वा ३.५६.४. कालाऽवयवानाम् २४.३९.
मासानामुत्तमानां विदुषां वा १४.२५. सूर्यसम्बन्धिनां
मासानाम् २४.६. पूर्णविद्यानां विदुषाम् (जनानाम्)
७.५१.१. **आदित्याः**=द्वादशा मासाः, प्र०—कतम
आदित्या इति ? द्वादशा मासाः संवत्सरस्य एत आदित्याः,
एते हीदं सर्वमाददाना यन्ति तस्मादादित्या इति, शत०
१४.६.७.६, २.५. समाचरितेनाऽष्टचत्वारिंशद्वर्षपरिमित-
ब्रह्मचर्येण गृहीतसमस्तविद्याः, अन्व०—पूर्णविद्यया शरी-
रात्माखिलबला विद्वांसः (राजादयः) ९.३४. चैत्रादयो
द्वादशा मासाः, प्रथम-मध्यमोत्तमविद्वांसो वा १४.३०.
द्वादशमासा वसुरुद्रादिसञ्ज्ञका विद्वांसश्च १४.२०.
कालाऽवयवाः ६.६२.८. विद्यायुक्ताः प्राणाऽत्रयवाः १५.१२.
पूर्णकृतब्रह्मचर्यविद्याः (महाविद्वांसो जनाः) ६.५१.५.
अन्तरिक्षस्य, प्र०—अदितिरित्यन्तरिक्षमित्यस्मादयमर्थो
गृह्यते ४.२२. सूर्याः २.२७.८. सूर्यवद्विद्याप्रकाशाः
२.२७.१६. उत्तमा विद्वांसोऽध्यापकाः ११.६०. उत्तमा
विपश्चितः ११.६५. पूर्णविद्याबलप्राप्त्या विपश्चितः
११.५८. कारणरूपेण नित्याः सूर्यादयः पदार्थाः
१.१०६.२. द्वादशमासाः, किरणास्त्रसरेणवो वा ऋ०
भू० १४३. किरणाः ऋ० भू० १४७, अथर्व० १४.१.२.
वरुणादयो विद्वांसः (सज्जनाः) १.४१.५. **आदित्येभ्यः**=
तेजस्विभ्यः (भा०—आचार्येभ्यः) ३४.५४. संवत्सरेभ्यः
८.३. **आदित्यैः**=उत्तमकल्पैश्च विद्वद्भिः, भा०—काला-
ऽवयवमासैः २८.४. पूर्णविद्यावद्भिः (सज्जनैः) २९.८.
पूर्णविद्यैर्मनुष्यैर्द्वादशभिर्मासैर्वा १.१०७.२. संवत्सरस्य
मासैः कृताऽष्टचत्वारिंशद्वर्षब्रह्मचर्यैः सह वा ५.११. [दो
अवखण्डने (दिवा०) धातोर्नञ्पूर्वात् क्तिन् प्रत्ययेऽदितिः ।
'द्यतिस्यति०' इति सूत्रेणेत्वम् । ततः 'दित्यदित्यादित्य०'
अ० ४.१.८५. सूत्रेण ण्यः प्रत्ययः । आदित्यः=आदत्ते
रसानादत्ते, भासं ज्योतिषामादीप्तो भासेति वादितेः पुत्र इति
वा नि० २.१३. यदस्य दिवि तृतीयं तदसावादित्य इति हि
ब्राह्मणम् नि० ७.२८. आदित्यः यदसुराणां लोकानादत्त ।
तस्मादादित्यो नाम तै० ३.९.२१.२. तेषां (नक्षत्राणां)
एष (आदित्यः) उद्यन्नेव वीर्यं क्षत्रमादत्ते तस्मादादित्यो
नाम श० २.१.२.१८. तस्य यद् (प्रजापतेः) रेतसः प्रथम-
मुददीप्यत तदसावादित्योऽभवत् ऐ० ३.३४. तस्य
(प्रजापतेः) शोचत आदित्यो मूर्धनोऽसृज्यत तां० ६.५.१.
तत् (छिन्नं विष्णोश्शिरः) पतित्वासावादित्योऽभवत् श०
१४.१.१.१०. आदित्यो वा अर्क. श० १०.६.२.६. पर्जन्य
आदित्यः गो० पू० ४.३. ज्योतिः शुक्रमसौ (आदित्यः)
ऐ० ७.१२. (हे आदित्य त्वं) व्युषि सविता भवस्युदेष्यन्
विष्णुरुद्यन्पुरुष उदितो बृहस्पतिरभिप्रयन्मघवेन्द्रो वैकुण्ठो
माध्यन्दिने भगोऽपराह्ण उग्रो देवो लोहितायन्नस्तमिते यमो
भवसि । अश्नसु सोमो राजा निशायाम् पितृराजस्स्वप्ने
मनुष्यान् प्रविशसि पयसा पशून् । विरात्रे भवो भवस्य-
परात्रे ऽङ्गिरा अग्निहोत्रवेलायाम्भृगुः जै० उ० ४.५.१-३.
असौ वाऽ आदित्योऽश्मा पृश्निः श० ९.२.३.१४. अप्रति-
घृष्या (प्रजापतेस्तनूविशेषः) तदादित्यः ऐ० ५.२५. एष
(आदित्यः) वा अब्जा अद्भ्यो वा एष प्रातरुदेत्यपः सायं
प्रविशति ऐ० ४.२०. असौ वा आदित्य एषोऽ अश्वः श०
६.३.१.२९. आदित्यस्त्रिपात् तस्येमे लोकाः पादाः गो०
पू० २.२.८. (९) अथ यत्तच्चक्षुरासीत् स आदित्योऽभवत्
जै० उ० २.२.३. चक्षुरादित्यः श० ३.२.२.१३. आदित्यो
वा उद्गाताऽधिदेवं चक्षुरध्यात्मम् गो० पू० ४.३. किं
नु ते मयि (आदित्य) इति । ओजो मे बलम्मे चक्षुर्मे
जै० उ० ३.२७.८. प्राण आदित्यः तां० १६.१३.२.
अथैष ह्राव यशः य एष (आदित्यः) तपति श० १४.१.१.
३२. एष (आदित्यः) वै यशः श० ६.१.२.३. आदित्योऽसि
दिवि श्रितः । चन्द्रमसः प्रतिष्ठा तै० ३.१३.१.११. एष
(आदित्यः) स्वर्गो लोकः तै० ३.८.१०.३. (आदित्यलोकं
प्रशंसति) तद्दैव्यं क्षत्रम् । सा श्रीः । तद् ब्रघ्नस्य विष्टपम् ।
तत्स्वाराज्यमुच्यते तै० ३.८.१०.३. देवलोको वा आदित्यः
कौ० ५.७. गो० उ० १.२५. आदित्य एषां भूतानामधिपतिः
ऐ० ७.२०. असावादित्यः शिरः प्रजानाम् तै० १.२.३.३.
सर्वतोमुखो वा ऽअसावादित्य एष वाऽ इदꣳ सर्वं निर्द्धयति
यदिदं किञ्च पुष्यति तेनैष सर्वतो मुखस्तेनान्नादः श०
२.६.३.१४. आदित्यो वा उद्गाता गो० पू० २.२४.
आदित्य उद्गीथः जै० उ० १.३३.५. आदित्य उदयनीयः

श० ३.२.३.६. असौ वा आदित्य एकाकी चरति तै० ३.९.५.४. आदित्यस्त्वेव सर्वऽऋतवः । यदैवोदेत्यथ वसन्तो- यदा संगवोऽथ ग्रीष्मो यदा मध्यन्दिनोऽथ वर्षा यदा- पराह्णोऽथ शरद् यदैवास्तमेत्यथ हेमन्तः श० २.२.३.९. आदित्यः त्रिर्ह वा एष (मघवा=इन्द्रः=आदित्यः) एतस्या मुहूर्त्तस्येमाम्पृथिवीं समन्तः पर्य्येति जै० उ० १.४४.९. एष ह वा अह्नां विचेता योऽसौ (सूर्यः) तपति गो० उ० ६.१४. एष (आदित्यः) ह वा अह्नां विचेतयिता ऐ० ६.३५. असौ वाऽ आदित्यः पाप्मनोऽपहन्ता श० १३.८.१.११. स वा एष (आदित्यः) न कदाचनास्तमेति नोदेति । तद् यदेनं पश्चादस्तमयतीति मन्यन्ते अह्न एव तदन्तं गत्वाथात्मानं विपर्य्यस्यतेऽहरेवाधस्तात् कृणुते रात्रीं परस्तात् गो० उ० ४.१०. ऐ० ३.४४. तस्य (अर्कस्य=आदित्यस्य) एतदन्नं तदर्क्यमेष चन्द्रमास्तदर्क्यं यजुष्टः श० १०.४.१.२२. प्राङ् चार्वाङ् चादित्यस्तपति तां० १२.१०.६. यस्माद् गायत्रोत्तमस्तृतीयः (त्रिरात्रः) तस्मादर्वाङ् आदित्यस्तपति तां० १०.५.२. सहस्रं हैत आदित्यस्य रश्मयः जै० उ० १.४४.५. स एष (आदित्यः) एकशतविधस्तस्य रश्मयः शतं विधा एष एवैकशततमो य एष तपति श० १०.२.४.३. षष्टिश्च ह वै त्रीणि च शतान्यादित्यस्य रश्मयः श० १०.५.४.४. षष्टिश्च ह वै त्रीणि च शतान्यादित्यं नाव्याः समन्तं परियन्ति श० १०.५.४.१४. शतयोजने ह वा एष (आदित्यः) इतस्तपति कौ० ८.३. तं (सावित्रमग्निं) स (भारद्वाजः) विदित्वा । अमृतो भूत्वा । स्वर्गं लोकमियाय । आदित्यस्य सायुज्यम् तै० ३.१०.११.५. असौ वा ऽआदित्यो विवस्वानेष ह्यहोरात्रे विवस्ते तमेष (मृत्युः) वस्ते सर्वतो ह्येनेन परिवृतः श० १०.५.२.४. विवस्वान् आदित्यैष ते सोमपीथः श० ४.३.५.१८. यं (मार्तण्डं) उ ह तद् विचक्रुः (देवा आदित्याः) स विवस्वानादित्यस्तस्येमाः प्रजाः श० ३.१.३.४. असौ वाऽ आदित्यः सूर्यः श० ९.४.२.२३. असावादित्यो देवः सविता श० ६.३.१.१८. आदित्य एष सविता गो० पू० १.३३. जै० उ० ४.२७.११. धातासौ स आदित्यः श०.९.५.१.३७. स एष (आदित्यः) सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मान् जै० उ० १.२८.२. सप्त ह्येत आदित्यस्य रश्मयः जै० उ० १.२९.८. 'युक्ता ह्यस्य (इन्द्रस्य) हरयश्शता दश' (ऋ० ६.४७.१८.) इति सहस्रं हैत आदित्यस्य रश्मयः । तेऽस्य युक्तास्तैरिदं सर्वं हरति । तद्यदेतैरिदं सर्वं हरति । तस्माद्धरयः (रश्मयः) जै० उ० १.४४.५. स यः स विष्णुर्यज्ञः सः । स यः स यज्ञोऽसौ स आदित्यः (विष्णुः=आदित्यः) श० १४.१.१.६. एष वै वृषा हरिः (यजु० ३८.२२) य एष (आदित्यः) तपति श० १४.३.१.२६. असौ वै वैश्वानरो योऽसौ (आदित्यः) तपति कौ० ४.३.१९.२. स यः स वैश्वानरः । असौ स आदित्यः श० ९.३.१.२५. चक्षुस्त्वा ऽएतद् वैश्वानरस्य (यदादित्यः) श० १०.६.१.८. एष वै सुततेजा वैश्वानरः (यदादित्यः) श० १०.६.१.८. एष (आदित्यः) ह्येवाऽऽसाम् प्रजानामृषभः जै० उ० १.२९.८. आदित्यो वाजी तै० १.३.६.४. असौ वाऽआदित्यो ब्रध्नोऽरुषः श० १३.२.६.१. असौ वा आदित्यो ब्रध्नः तै० ३.९.४.१. आदित्यो वै वृषाकपिः गो० उ० ६.१२. असावादित्यो वेनः श० ७.४.१.१४. स यः स कूर्मोऽसौ स आदित्यः अ० ७.५.१.६. असौ वै षोडशी योऽसौ (आदित्यः) तपति कौ० १७.१. एष (आदित्यः) दीक्षितः गो० पू० २.१. असौ वाऽ आदित्यो दिव्यꣳ रोचनम् श० ६.२.१.२६. असौ वाऽ आदित्यो दिव्यो गन्धर्वः श० ६.३.१.१९. असौ वाऽ आदित्यो विश्वव्यचाः (यजु० १३.५६.) यदा ह्येवैष उदेत्यथेदꣳ सर्वं व्यचो भवति श० ८.१.२.१. असौ वाऽ आदित्यो व्यचच्छन्दः श० ८.५.२.३. असौ वा आदित्यो भा इति जै० उ० १.४.१. असौ वा आदित्यो हꣳसः शुचिषत् श० ६.७.३.११. एष (आदित्यः) वै हंसः शुचिषद् ऐ० ४.२०. असौ वाऽ आदित्यस्तपः श० ८.७.१.५. (आदित्यस्थः) पुरुषो यजूꣳषि श० १०.५.१.५. अथ य एष एतस्मिन् (आदित्य०) मण्डले पुरुषः सोऽग्निस्तानि यजूꣳषि स यजुषां लोकः श० १०.५.२.१. असौ वाऽ आदित्य एषो ऽग्निः श० ६.४.१.१. आदित्यो वाऽ अस्य (अग्नेः) दिवि वर्चः श० ७.१.१.२३. अयं वाऽ अग्निर्ऋतमसावादित्यः सत्यं यदि वासावृतमयꣳ (अग्निः) सत्यमुभयम्वेतदयमग्निः श० ६.४.४.१०. एष (आदित्यः) वै सत्यम् ऐ० ४.२०. सत्यमेष य एष (आदित्यः) तपति श० १४.१.२.२२. असावादित्यः सत्यम् तै० २.१.११.१. तद् यत्तत्सत्यम् । असौ स आदित्यो य एष एतस्मिन्मण्डले पुरुषः श० १४.८.६.२३. सत्यं हैतद् यद्रुक्मः ।······तद् यत्तत्सत्यम् । असौ स आदित्यः श० ६.७.१.१-२ तस्य (अश्वस्य श्वेतस्य) रुक्मः पुरस्ताद् भवति । तदेतस्य रूपं क्रियते य एष (आदित्यः) तपति श० ३.५.१.२०. असौ वाऽ आदित्य एष रुक्म एष हीमाः सर्वाः प्रजा अतिरोचते श० ७.४.१.१०. आदित्यो वै भर्गः जै० उ० ४.२८.२. आदित्य एव चरणं यदा ह्येवैष उदेत्ययेदꣳ सर्वं चरति श० १०.३.५.३. आदित्यः असौ वाऽ आदित्यो हृदयम् श० ९.१.२.४०. असौ वाऽ आदित्यो द्रप्सः श० ७,४.१.१०. असौ वाऽ

आदित्यः संहितः (यजु० १८.३९) एष अहोरात्रे संदधाति श० ९.४.१.८. असौ वाऽ आदित्य एष रथः श० ९.४.१.१५. तस्य (आदित्यस्य) रथप्रोतश्चासमरथश्च (यजु० १५.१७) सेनानीग्रामण्याविति वार्षिकौ तावृतू श० ८.६.१.१८. तद्यदेष (आदित्यः) सर्वैर्लोकैस्समस्तस्मादेष (आदित्यः) एव साम जै० उ० १.१२.५. (प्रजापतिः) स्वरित्येव सामवेदस्य रसमादत्त । सोऽसौ द्यौरभवत् । तस्य यो रसः प्राणेदत् स आदित्योऽभवद् रसस्य रसः जै० उ० १.१.५. साम्नामादित्यो दैवतं तदेव ज्योतिर्जागतच्छन्दो द्यौः स्थानम् गो० पू० १.२९. यदनूदितः (आदित्यः) स हिङ्कारः जै० उ० १.१२.४. असावादित्यस्तोमभागाः श० ८.५.४.२. स यः स यज्ञो ऽसौ स आदित्यः श० १४.१.१.६. एष वै संवत्सरो य एष (आदित्यः) तपति श० १४.१.१.२७. स यः स संवत्सरोऽसौ स आदित्यः श० १०.२.४.३. आदित्य एव प्रायणीयो भवति श० ३.२.३.६. तदसौ वा आदित्यः प्राणः जै० उ० ४.२२.९. आदित्यो वै प्राणः जै० उ० ४.२२.११. उद्यन्नु खलु वा आदित्यः सर्वाणि भूतानि प्रणयति तस्मादेनं प्राण इत्याचक्षते ऐ० ५.३१. असौ वाऽ आदित्यः कविः श० ६.७.२.४. आदित्यो वै घर्मः श० ११.६.२.२. असौ वै घर्मो योऽसौ (आदित्यः) तपति कौ० २.१. आदित्यो निवित् जै० उ० ३.४.२. यन्महान्देव आदित्यस्तेन कौ० ६.६. असौ वाऽ आदित्यः शुक्रः (यजु० १८.५०) श० ९.४.२.१. एष वै शुक्रो य एष (आदित्यः) तपति श० ४.३.१.२६. यद्वा ऽएष एव शुक्रो य एष (आदित्यः) तपति तद्यदेष तपति तेनैष शुक्रः श० ४.२.१.१. तत्र ह्यादित्यः शुक्रश्चरति गो० पू० २.९. असौ वा आदित्यः शुक्रः तां० १५.५.९. आदित्यो वाव पुरोहितः ऐ० ८.२७. आदित्यो वै देवसंस्फानः गो० उ० ४.९. असौ वा आदित्यो लोकम्पृणा (इष्टका) श० ८.५.४.८. असौ वाऽ आदित्यो लोकम्पृणैष हीमांल्लोकान्पूरयति श० ८.७.२.१. वायुर्वा एतं (आदित्यं) देवतानामानशे तां० ४.६.७. तदसावादित्य इमांल्लोकान्त्सूत्रे समावयते तद्यत्तत्सूत्रं वायुः सः श० ८.७.३.१०. सा या सा वागसौ स आदित्यः श० १०.५.१.४. आदित्य एव यशः गो० पू० ५.१५. आदित्यो यशः श० १२.३.४.८. आदित्यो यूपः तै० २.१.५.२. असौ वा अस्य (अग्निहोत्रस्य कर्त्तुः) आदित्यो यूपः ऐ० ५.२८. अथ यद्विषुवन्तमुपयन्ति । आदित्यमेव देवतां यजन्ते श० १२.१.३.१४. आदित्यो बृहत् ऐ० ५.३० असौ वाऽ आदित्यो ब्रह्म श० ७.४.१.१४. आदित्यो वै ब्रह्म जै० उ० ३.४.९. असावादित्यः सुब्रह्म ष० १.१. आदित्यः हन्तेति चन्द्रमा ओमित्यादित्यः जै० उ० ३.६.२. ओमित्यादित्यः जै० उ० ३.३.१२. ओमित्यसौ यो ऽसौ (आदित्यः) तपति ऐ० ५.३२. यदेतत् (आदित्य) मण्डलं तपति । तन्महदुक्थं ता ऋचः स ऋचां लोकः श० १०.५.२.१. (आदित्यस्य) मण्डलमेवाऽर्चः श० १०.५.१.५. अग्निश्च ह वा आदित्यश्च रोहिणावेताभ्याꣳ हि देवताभ्यां यजमानाः स्वर्गं लोकꣳ रोहन्ति श० १४.२.१.२. छन्दोभिर्वै देवा आदित्यꣳ स्वर्गं लोकमहरन् ता० १२.१०.१०.६. त्रैष्टुभो वा एष य एष (आदित्यः) तपति कौ० २५.४. त्रैष्टुब्जागतो वा आदित्यः तां० ४.६.२३. जगती छन्द आदित्यो देवता श्रोणी श० १०.३.२.६. स (आदित्यः) उद्यन्नेवामूम् (दिवम्) अधिद्रवत्यस्तं यन्निमाम् (पृथिवीम्) अधिद्रवति श० १.७.२.११.]

आदित्यवते पूर्णविद्यायुक्तपाण्डित्यवते (इन्द्राय=सन्तानाय) ३८.८. [आदित्यः पूर्वपदे द्रष्टव्यः । ततोऽतिशायनेऽर्थे मतुप्]

आदित्यवनिः या आदित्यान् मासान् वनति सम्भजति सा (स्वाहा=ज्योतिःशास्त्रसंस्कारयुक्ता वाक्) ५.१२. [आदित्योपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर् इः प्रत्ययः]

आदित्यवर्णम् आदित्यस्य वर्णः स्वरूपमिव स्वरूपं यस्य तं स्वप्रकाशम्, भा०—स्वप्रकाशानन्दस्वरूपम् (पुरुषम्=ईश्वरम्) ३१.१८. स्वप्रकाशविज्ञानस्वरूपम् (पुरुषं=परमेश्वरम्) ऋ० भू० १३१, ३१.१८. आदित्यादि का रचक और प्रकाशक परमात्मा, आर्याभि० २.८, ३१.१८. [आदित्यवर्णपदयोर्बहुव्रीहिः । उत्तरपदलोपश्च]

आदित्या याऽऽदित्यवदर्थविद्याप्रकाशिकाऽष्टचत्वारिंशत्संवत्सरपर्यन्ताऽनुष्ठितब्रह्मचर्यैः स्वीकृता सा (वाग् विद्युद्वा) ४.२१. [आदित्यो व्याख्यातः, ततस्स्त्रियां टाप्]

आदित्यासः अष्टचत्वारिंशद्वर्षपरिमितेन ब्रह्मचर्येण कृतविद्या मासा इव व्याप्ताऽखिलविद्या वा (विद्वज्जनाः) ५.५१.१२. सूर्यवत्तेजस्विनः, भा०—पूर्णविद्या राजकर्मकराः (जनाः) ३३.६६. आदित्यवद्विद्यादिशुभगुणैः प्रकाशमानाः (गृहपतयः) ८.४. सूर्य इव पूर्णविद्या प्रकाशाः (कवयः=मेधाविजनाः) ३.५४.१०. द्वादशमासा इव विद्यार्थिनः (जनाः) २.१.१३. पूर्णा विद्वांसः संवत्सरस्य मासा वा ७.५१.२. [आदित्यो व्याख्यातः । तस्य प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमे च रूपम् । आदित्याः=अष्टौ ह वै पुत्राः अदितेः । यांस्त्वेतद्देवा आदित्या इत्याचक्षते सप्त ह वै तेऽविकृतꣳ हाष्टमं जनयाञ्चकार मार्तण्डम् श०

३.१.३.३. तदभ्यनूक्ता अष्टौ पुत्रासो अदितेर्ये जातास्तन्वं परिदेवान् उपप्रैतु सप्तभिः परा मार्तण्डमास्यदिति तां० २४.१२.५-६. एताभिर्वा आदित्या द्वन्द्वमार्ध्नुवन् मित्रश्च वरुणश्च धाता चार्यमा चाꣳशश्च भगश्चेन्द्रश्च विवस्वांश्च तां० २४.१२.४. कतमऽआदित्या इति ? द्वादशमासाः संवत्सरस्यैतऽआदित्याः, एते हीदꣳ सर्वमाददाना यन्ति ते यदिदꣳ सर्वमाददाना यन्ति तस्मादादित्या इति श० ११.६.३.८. सप्तादित्याः तां० .२३.१५.३. भूमोऽएष देवानां यदादित्याः श० ६.६.१.८. प्राणा वा आदित्याः । प्राणा हीदं सर्वमाददते जै० उ० ४.२.९. घृतभाजना ह्यादित्याः श० ६.६.१.११. आदित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा संमृजन्तु तां० १.२.७. वर्षाभिर्ऋतुनादित्याः स्तोमे सप्तदशे स्तुतं वैरूपेण विशौजसा तै० २.६.१९.१-२. सर्वं वा ऽआदित्याः श० ५.५.२.१०. आदित्या वै प्रजाः तै० १.८.८.१. एते खलु वादित्या यद् ब्राह्मणाः तै० १.१.९.८. पशव आदित्याः तां० २३.१५.४. सर्प्या वा आदित्याः तां० २५.१५.४. आदित्याः अदितिः पुत्रकामा साध्येभ्यो देवेभ्यो ब्रह्मोदनमपचत् तस्या उच्छेषणमददुः । तत्प्राश्नात् सा रेतोऽधत्त । तस्यै धाता चार्यमा चाजायेताम् । ···मित्रश्च वरुणश्चाजायेताम् । ···अंशश्च भगश्चाजायेताम् ।··· इन्द्रश्च विवस्वांश्चाजायेताम् तै० १.१.९.१-३. अदितिर्वै प्रजाकामौदनमपचत्तत उच्छिष्टमश्नात् सा गर्भमधत्त तत आदित्या अजायन्त । गो० पू० २.१५. (प्रजापते) रेतस उत्पन्नं) यत्तृतीयमदीदेदिव त आदित्या अभवन् ऐ० ३.३४. द्वयो ह वा इदमग्रे प्रजा आसुः । आदित्याश्चैवाङ्गिरसश्च श० ३.५.१.१३. विश्वकर्मा त्वादित्यैरुत्तरतः पातु श० ३.५.२.७. वरुण आदित्यैः (उदक्रामत्) ऐ० १.२४. वरुण आदित्यैः (व्यद्रवत्) श० .३.४.२.१. आदित्यास्त्वा पश्चादभिषिञ्चन्तु जागतेन छन्दसा तै० २.८७.१५.५. अथैनं (इन्द्रं) प्रतीच्यां दिश्यादित्या देवाः···अभ्यषिञ्चन्··· स्वाराज्याय ऐ० ८.१४. गावो वा आदित्याः ऐ० ४.१७. आदित्याः एव यशः गो० पू० ५.१५. आदित्यानीमानि यजूꣳषीत्याहुः श० ४.४.५.१९. आदित्यानीमानि शुक्लानि यजूꣳषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते श० १४.९.४.३३. आदित्यानां तृतीयं सवनम् कौ० १६.१. ३०.१. श० ४.३.५.१. आदित्यं हि तृतीयसवनम् तां० ९.७.७. अथेमं विष्णुं यज्ञं त्रेधा व्यभजन्ते । वसवः प्रातःसवनꣳ रुद्रा माध्यन्दिनं सवनमादित्यास्तृतीयसवनम् श० १४.१.१.१५. जगत्यादित्यानां पत्नी गो० उ० २.९. आदित्यानां वा एतद्रूपं यल्लाजाः तै० ३.८.१४.४. वसवो वै रुद्रा आदित्याः सꣳस्रवभागाः तै० ३.३.९.७. तान् हादित्यानङ्गिरसो याजयाञ्चक्रुः गो० उ० ६.१४. त एतेन सद्यः क्रियाङ्गिरस आदित्यानयाजयन् श० ३.५.१.१७. आदित्याश्चाङ्गिरसश्चैतत् सत्रꣳ समदधतादित्यानामेकविंशतिरङ्गिरसां द्वादशाहः तां० २४.२.२. आदित्या ह इत उत्तमां सुवर्गं लोकमायन् ते वा इतो यन्तं प्रतिनुदन्ते तै० १.१.९.८. । (आदित्याः) स्वर्गं लोकमायन्नहीयन्ताङ्गिरसः तां० १६.१२.१. ते हादित्याः पूर्वे स्वर्गं लोकं जग्मुः पश्चेवाङ्गिरसः षष्ठ्यां वा वर्षेषु ऐ० ४.१७. तत उ हादित्याः स्वरीयुः कौ० ३०.६. तऽआदित्याः । चतुर्भिः स्तोमैश्चतुर्भिः पृष्ठैर्लघुतिः सामभिः स्वर्गं लोकमभ्यप्लवन्त श० १२.२.२.१०. तस्य (स्वर्गस्य लोकस्य) आदित्या अधिपतयः तै० ३.८.१८.२]

आदित्येभिः संवत्सरस्य मासैः ७.४४.४. [आदित्यो व्याख्यातः । तस्य भिसि रूपम् 'वहुलं छन्दसि' अ० ७.१.१० सूत्रे बहुलवचनाद् ऐसादेशो न भवति]

आदिदीहि समन्तात् प्रकाशय ३.५३.४. [दीदयति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. तत आङ् पूर्वाल्लोट्]

आदिदेशति समन्तात् सम्यगुपदिशति ६.५६.१. सर्वतोऽतिसृजेदस्मान् समन्तादतिदेश्य पीडयेत् १.४२.२. [आङ्+दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातो रूपम्]

आदिनवदर्शम् य आदौ नवान् पश्यति तम्, भा०— ज्योतिर्विदम् (महाविद्वज्जनम्) ३०.१८. [आदि-नवोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्णमुल्]

आदिवम् द्योतनात्मक सूर्य लोक को। आर्याभि० १.१३, ऋ० १.४.१४.१२]

आदिशम् दिशमभिव्याप्यैव ७.१७. **आदिशः**= आभिमुख्या दिशः ६.१९. **आदिशाम्**=समन्ताद् दीयमानानाम् (जनानाम्) ६.४.५. **आदिशे**=आज्ञापालनाय ६.४८.१४. [आङ्-दिशोः समासः दिक्=दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः क्विप्]

आदिशे अभिप्रशंसे ६.५६.१.

आदीदिहि समन्तात् प्रकाशय ५.२३.४. [आङ्+ दीदयति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६ धातोर्लोट्]

आदीधयन् प्रदीपयन्ति ७.७.६. [आङ्+दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् न । व्यत्ययेन च परस्मैपदम्]

आदुरे शत्रूणां विदारक (राजन्) ४.३०.२४. [आङ्+दृ विदारणे (क्र्या०) 'आदृगमहनजनः०' अ०

३.२.१७१. सूत्रेण किः द्वित्वाऽभावश्च छान्दसः। अथवा—आङ् पूर्वात् दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः 'अच इः' उ० ४.१३९. सूत्रेण इः प्रत्यये रूपम्। मध्यस्थाकारस्योकारश्छान्दसः। आदुरि=आदरणात् नि० ६.३१]

आदृत्य आदरं कृत्वा १.१०३.६. [आङ्+दृङ् आदरे (तुदा०) धातोः क्त्वा समासे क्त्वो ल्यप्।

आदेदिशानान् भृशमाज्ञाकर्त्तॄन् (शत्रून् जनान्) ६.४४.१७. [आङ्+दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोर्यङ्न्ताच्छानच्]

आदेवम् समन्ताद् विद्याप्रकाशयुक्तम् (विद्वज्जनम्) ४.१.१. (आङ्+दिवु द्युत्यादिषु (दिवा०) धातोः पचाद्यच्]

आदेवीः समन्ताद् देदीप्यमाना विदुषीः (विशः=प्रजाः) ६.४९.१५. [आङ्+दिवु द्युत्यादिषु (दिवा०) धातोः पचाद्यच्-पचादिगणे टित् पाठान् ङीप्]

आदेवे सर्वतो विद्याप्रकाशयुक्ते (जने=विदुषि पुंसि) २.४.१. [आङ्+दिवु द्युत्यादिषु (दिवा०) धातोः पचाद्यच्]

आद्विहाया सर्वव्यापक और आकाशवद् निर्विकार अक्षोभ्य सर्वाधिकरण (ईश्वर) आर्याभि० २.४०, १७.२६. अनन्तरं विविधेषु पदार्थेषु व्याप्तः (परमेश्वरः) प्र०—अत्रोहाङ् गतावित्यस्माद् असुन् णित् कार्यश्च १४.२६. [आत्+वि+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोरसुन्। णित्वत्त्वाद् युगागमश्च]

आद्व्यानम् सम्पूर्ण विद्याओं में व्यापकता सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.२४]

आधक् समन्ताद् दहेः ७.१.२१. [आङ्+दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'मन्त्रे घसह्वरणशवृद०' अ० २.४.८० सूत्रेण लेर्लुक्]

आधत्त समन्ताद् धारयत २.३३. **आधत्तम्**=सर्वतो दध्यातम् १.११७.१७. समन्तात्पोषयतम् १.११६.१६. [आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोटि मध्यमबहुवचनम्)

आधत्तन समन्ताद् दधतु, प्र०—अत्र व्यत्ययः. 'तप्तनप्०' इति तनबादेशश्च १.२०.७. [आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोट्। तप्रत्ययस्य स्थाने तनबादेशश्च]

आधवनीयः आधवनसाधनपात्रविशेषः १८.२१. [आङ्+धुञ् (स्वा०) धातोरनीयर् प्रत्ययः]

आधवे समन्तात्प्रक्षेपणे १.१४१.३. [आङ्+धुञ् कम्पने (स्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' त्यप् प्रत्ययो भावे। आधवः=आधवनात् नि० ६.२९]

आधात् आदध्यात् ५.४०.८. अभिमुखं दधाति १.६३.२. समन्ताद् दधाति १.१६४.३३. **आधारयः**=समन्ताद् धारय १.५२.८. **आऽधाः**=सर्वतो दधाति ५.७.९. समन्ताद्धर १.६१.१६. समन्ताद्धेहि ३.५६.६. आधेहि ६.४७.९. **आऽधिथाः**=आदध्याः ६.३१.१. [आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ्। 'गातिस्थाघु०' सूत्रेण सिचो लुक्। आधिथाः=आङ्+डुधाञ्+लुङि मध्यमैकवचनम्। 'स्थाघ्वोरिच्च' सूत्रेणेत्वं कित्वञ्च]

आधावतम् समन्ताद् धावयतः १.१०९.४. **आधावते**=सद्यो गच्छति, भा०—सद्यो गच्छत्यागच्छति, धावति ३३.९०. **आधावन्तु**=समन्तात् प्राप्नुवन्तु ६.३६. [आङ्+धावु गतिशुद्ध्योः (भ्वा०) धातोर्लङ्। उभयपदी चायं धातुः]

आधिपत्यम् अधिपतेर्भावम् (क्षत्रं=राजन्यकुलम्) १४.२४. **आधिपत्याय**=अधिष्ठातृत्वाय १८.२८. **आधिपत्ये**=अधिष्ठातृत्वे ३७.१२. अधिपतेर्भावे ३७.१२. (अधिपतिप्राति० भावे 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' अ० ५.१.१२८. सूत्रेण यक्]

आधिम् यः समन्ताद् दधाति तम् (भौतिकमग्निम्) २२.२० [आङ् डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'उपसर्गे घोः किः' अ० ३.२.९२ सूत्रेण किः। छान्दसत्वात् कर्त्तरि]

अधिवक्ता यथावदनुशासिता (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.१०२.११. [अधि+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोस्तृच् 'ब्रुवो वचि' रिति वच्यादेशः]

आधीतम् सर्वतो धारितम् (अध्ययनम्) १५.७. समन्ताद् धृतिर्निश्चयवृत्तिः १८.२. समन्ताद्धृतम् १.१७०.१. आधीताय=समन्ताद्विद्यावृद्धये २२.२०. **आधीतेन**=समन्ताद्धारितेन (अध्ययनेन) १५.७ (आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः। 'घुमास्था०' अ० ६.४.६६ सूत्रेणेकारादेशः। छान्दसत्वाद् दधातेर्हिर्भावो न भवति। आधीतम्=आध्यातम् आध्यातमभिप्रेतम् नि० १.६]

आधुनयन्ताम् गर्भ धारण करें स० प्र० ११०, ३.५५.१६. [आङ्+धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोर्णिच्। 'धूञ्प्रीञोर्नुग्' इति नुक् छान्दसं च ह्रस्वत्वम्]

आधुः समन्ताद् दध्युः, प्र०—अत्राऽडभावः २.४.३.

[आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०)+लुङ् । प्रथमाबहुवचनम्]

आधूनोमि समन्तात् [कम्पयामि, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो णिच् ८.४८. [आङ्+धुञ् कम्पने (स्वा०) धातोर्लट् छान्दसत्वादुकारस्य दीर्घः]

आधृषः समन्ताद् धर्षणं कुर्वतः (आतॄन् मित्राणि पितॄंश्च) २.१.९. **आधृषे**=समन्ताद् धृष्णुवन्ति यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.३९.४. [आङ्+ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः क्विप्]

आधृषे आधर्षितुम् ५.८७.२. आधृषाय ५.८.५. [आङ्+ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोस्तुमर्थे क्से प्रत्ययः]

आधेहि समन्ताद् दधाति ४.१०. सर्वथा उत्पन्न कर सं० प्र० १४८, १०.८५.५. [आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोटि मध्यमैकवचनम् । 'घ्वसोरेद्धाव०' इत्येत्वमभ्यासलोपश्च]

आध्यक्ष्याय अध्यक्षाणां भावाय ३०.११. [अध्यक्ष प्राति० भावे ष्यञ्]

आध्याः समन्ताद् ध्यायन्ति चिन्तयन्ति ये ते (सज्जनाः) १.१०५.७. परस्य मनसि शोकादिजनकाः (जनाः) १.१०५.८. आधिं यः समन्ताद् दधाति तम् । २२.२०. [आङ्+ध्यै चिन्तायाम् (भ्वा०) बाहुलकात् कर्त्तरि क्यप् । आध्यः=कामाः नि० ४.६.]

आध्रः यः सर्वैस्समन्ताद् ध्रियते (परमात्मा) ७.४१.२. अपुत्रस्य पुत्रः ३४.३५. सब ओर से धारणकर्त्ता (परमात्मा) सं० वि० १५६, ७.४१.२. समन्ताद् धृतेन (बलेन) ७.१८.१७. [आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहुलकाद् रक् प्रत्ययः । आध्रः=आढ्यालुः नि० १२.१४.]

आध्वम् उपविशत, भा०—पुनः पुनः प्रयतध्वम् १७.६५. [आस उपवेशने (अदा०) धातोर्लोट्]

आध्वर्यवम् य आत्मनोऽध्वरमिच्छति तम् (शिल्पिजनम्) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यम्यपि गुणावादेशौ २८.१९. [अध्वरः=अध्वर इति यज्ञनाम । ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः नि० १.८. अध्वर्युः=अध्वरं युनक्ति, अध्वरस्य नेताध्वरं कामयते इति वापि वाधीयाने युरुपबन्धः नि० १.८. अध्वरपदाद् इच्छायामर्थे क्यच् । 'क्याच्छन्दसि' इत्युः प्रत्ययः]

आनक्तु कामयताम् ७.४३.३. [अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (क्र्या०) धातोराङ्पूर्वाल् लोट्]

आनजाना प्रसिद्धौ, प्रसिद्धिकारकौ (इन्द्राग्नी=वायुविद्युतौ) प्र०—अत्र अञ्जू धातोर्लिटः स्थाने कानच् १.१०८.४.

आनजे व्यनक्ति ३३.२९. सर्वैः काम्यते प्रकटयते विज्ञायते, प्र०—अत्राऽञ्जूधातोः कर्मणि लिट् १.१०२.१. अस्येच्चालयेत् १.१६१.४. **आनञ्ज**=अञ्जयेत्, कामयेत् प्र०—अत्र लिडर्थे लिट् ८.३०. [अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (क्र्या०) धातोर्लिट् कर्मणि । कर्त्तरि व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

आनज्रे अजन्तु शत्रून् क्षिपन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.८७.१. [अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लिट् । रुडागमश्छान्दसः]

आनट् समन्ताद् व्याप्नोति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं श्नञ्च १.७१.८. आनडिति व्याप्तिकर्मा, निघं० २.१४, ३३.११. प्राप्नोति, प्र०—अत्र नक्षतेर्गतिकर्मणो लङि 'छन्दस्यपि दृश्यते' इत्याडागमः १.१६३.७. अश्नुवीत १.१२१.१. [अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा० आत्म०) धातोराङ् पूर्वात् लङ् । नक्षति गतिकर्मा निघं० २.१४. व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८. धातोर्वा लङ्]

आनतिः आनमन्ति यया सा (आगतिः=आगमनम्) २०.१३. समन्तान्नमनम् २०.१३. [आङ्+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोः क्तिन्]

आनन्दनन्दौ आनन्देन सम्भोगजनितसुखेन नन्दतस्तौ (आण्डौ=अण्डाकारौ वृषणौ) २०.९. [आङ्+टुनदि समृद्धौ (भ्वा०) धातोर्घञ्प्रत्यये=आनन्दः । तदुपपदे नदि धातोरेव कर्त्तरि—अच्]

आनन्दम् आनन्द को सं० वि० १९६; ऋ० ९.११. ३.६. **आनन्दाय**=परमसुखाय १९.८. **आनन्दाः**=सम्पूर्णं समृद्धियां सं० वि० १९७, ९.११३.११. [आङ्+टुनदि समृद्धौ (भ्वा०)+घञ्]

आनम् अनन्ति येन तज्जीवनम् १.५२.१५. [अन प्राणने (अदा०) धातोर्घञ्]

आनमम् समन्तात् सत्कृतिं कर्त्तुम् ४.८.३. [आङ्+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे णमुल्]

आनमे समन्तान्नमामि ६.५१.८. [आङ्+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

आनय अपने मन को गृहाश्रम से इधर की ओर ला सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. [आङ्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आनवस्य समन्तान्नवीनस्य (राज्ञः) ७.१८.१३. **आनवाय**=समन्तान्नवीनाय (वचसे=वचनाय) ६.६२.६. [आङ्-नवपदयोः समास; । नवम्=नवनाम निघं० ३.१८.]

आनश आनशिरे व्याप्नुवन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं पुरुषव्यत्ययश्च ३.६०.१. प्राप्नुयुः ४.३६.४. सम्यग् व्याप्नुत ३.६०.२. **आनशते**=व्याप्नोति प्र०—नशदिति व्याप्तिकर्मा निघं० २.१६, ३३.७६. **आनशुः**=व्याप्नुवन्ति प्राप्नुवन्ति १.५२.१४. अश्नुवते १.१६४.२३. व्याप्नुवन्ति १.१५१.६. अश्नुवन्ति १.११०.४. पा सकते आर्याभि० १.१५. अश्नवन्ति ६.२२.४. सम्यक् प्राप्नुयुः, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.६०.३. **आनशे**=प्राप्नोति ५.७.८. व्याप्नोति ५.८१.५. **आनश्याम्**=प्राप्नुयाम् ६.२६.७. **आनाश**=व्याप्नुयात् ६.१६.२६. [आनशे व्याप्तिकर्मा निघं० ११.१८.]

आनशानाः प्राप्नुवन्तः (देवाः=विद्वज्जनाः) ३२.१०. प्राप्त होते हुए (देवा=विद्वान् जन) सं० वि० ७, ३२.१०. [आङ्+नशत् व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८. धातोः शानच् । अशूङ् व्याप्तौ धातोर्वा शानच् । नुडागमश्छान्दसः]

आनिर्हतेभ्यः ये समन्तान्निर्हतास्तेभ्यः (भा०—अनाथमनुष्यादिप्राणिभ्यः) १६.४६. (आङ्+निर्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्तः]

आनिशितम् सर्वतो नितरां तीक्ष्णम् (शस्त्रम्) ४.२४.८. [आङ्-निशितपदयोः समासः । निशितम्=नि+शो तनूकरणे+क्तः । 'शाच्छोरन्यतरस्याम्' इति वेत्त्वम्]

आनिषत्तः समन्तान्निषण्णः (अग्निः=सूर्यलोकः) ३.६.४. समन्तान्नितरां स्थितः (विद्वान् सभेशः) १८.५३. **आनिषत्ताः**=कृतनिवासाः (पितरः) १६.६८. समन्तान्निषण्णाः (पितरः) ऋ० भू० २६४. [आङ्+नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्तः । 'नसत्तनिषत्तानुत्त०' अ० ८.२.६१. सूत्रेण छन्दसि नत्वाऽभावः]

आनिषत्सि समन्तान्निश्चिततया निषीदसि ३.१४.२. **आनिषसाद**=समन्तान्नित्यं सीदतु १०.२७. समन्तान्नित्यं सीद २०.२. **आनिषीद**=आस्स्व १.१०४.१. **आनिषीदत**=समन्तान्नितरामाध्वम् ७.३४. अभितो निश्चयेन वर्त्तध्वम् १.२२.८. आभिमुख्येन नितरां तिष्ठत १.५१. **आनिषेदुः**=निषीदेयुः ४.५०.३. [आङ्+नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि सीदादेशो न भवति]

आनीयमाने समन्तात्प्राप्ते (पयसि=उदके) ३६.५. [आङ् + णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

आऽनुग्मन् समन्तादनुकूलं गच्छन् (सखा) ३.३६.५. [अनु+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ । 'बहुलं छन्दसी 'ति शपो लुक्]

आनुषक् अनुकूलतया १.५८.३. आनुकूल्ये ६.४८.४. [आनुषक्=नामानुपूर्व्यस्यानुषक्तं भवति नि० ६.१४. पदनामसु निघं० ४.३]

आनुषक् अनुकूलम् (सज्जनम्) २.६.८. योऽनुसजति (राजा) ६.५.३. व्याप्त्यानुषक्तमुत्कृष्टगुणैरनुरक्तमाकर्षणेनाऽनुयुक्तं वा (विश्वम्=जगत्) १.५२.१४. अभितो योऽनुषङ्गि तत् (बर्हिः=अन्तरिक्षम्) १.१३.५. आनुषक्त अर्थात् व्याप्त (बर्हिः=अन्तरिक्षम्) आर्याभि० १.१५. य आनुकूल्येन सचति समवैति सः (क्रियाविज्जनः) ३.४१.२. आनुकूल्येन वर्त्तमानः (विद्वज्जनः) ३.११.१. अनुकूलः (अग्निः=राजा) ४.१२.३. [अनु+षञ्ज सङ्गे (भ्वा०) धातोः क्विप् । 'अनिदिताम्०' अ० ६.४.२४. सूत्रेण नकारलोपेऽनोऽकारस्य दीर्घश्छान्दसः । आनुषगिति नामानुपूर्व्यस्यानुषक्तं भवति नि० ६.१४.]

आनुष्टुभम् अभितोऽनुकूलतया स्तोभते सुखं बध्नाति येन तत् (छन्दः) १२.५. **आनुष्टुभेन**=अनुष्टुप्कथितेन (छन्दसा=स्वच्छेनाऽर्थेन) १३.५३. विद्यां गृहीत्वा पश्चाद् दुःखं विस्तभ्नुवन्ति येन तेन (छन्दसा) १५.६५. अनुष्टुब्विहितार्थयुक्तेन (छन्दसा) ११.११. [अनु+स्तोभति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१. धातोः क्विप् । अनुष्टुबनुष्टोभनात् नि० ७.१२]

आनूकम् आनुकूल्यम् ५.३३.६.

आनृचुः स्तावयन्ति तद्गुणान् प्रकाशयन्ति, प्र०—अत्र 'अपस्पृधेथामानृचु०' अ० ६.१.३६. अनेनाऽर्चधातोर्लिट्युसि सम्प्रसारणमकारलोपश्च निपातितः १.१६.४. अर्चामः ५.६.८. **आनृचे**=स्तौमि १.१६०.४. [अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट् । 'अपस्पृधेथामि' ति सूत्रे निपातनाद् रूपसिद्धिः]

आन्तरिक्षः अन्तरिक्षदेवताकः (अजलः=पक्षिविशेषः)

२४.३४. **आन्तरिक्षाः**=अन्तरिक्षदेवताकाः (धूम्राः=पश्वादयः) २४.१०. [अन्तरिक्षप्राति० 'सास्य देवता' इत्यण् प्रत्ययः । अन्तरिक्षं कस्मादन्तरा क्षान्तं भवत्यन्तरेमे इति वा शरीरेष्वन्तरक्षयमिति वा नि० २.१०]

आन्त्याय अन्ते भवाय (जनाय) १८.२८. [अन्तप्राति० भवार्थे यत् । आद्यक्षरस्य दीर्घत्वं छान्दसम्]

आन्त्यायनाय अन्ते भवनमयनं यस्य स अन्त्यायनः, स एव तस्मै (पुरुषाय) १८.२८. अन्त्यं नीचमयनं प्रापणं यस्य तस्मै (विनंशिने=विनष्टुं शीलाय जनाय) ९.२०. [आन्त्य-अयनपदयोः समासः आन्त्यः=अन्त+यत् । अयनम्=अय गतौ+ल्युट्]

आन्त्राणि उदरस्थ-अन्नपाकाऽऽधारा नाडीः १९.८६. उदरस्थाः स्थूला नाडीः ४.१८.१३. **आन्त्रैः**=उदरस्थैर्नाडीविशेषैः २५.७]

आन्दस् वन्धितारम् (जनम्) ३०.१६. [अदि वन्धने (भ्वा०) धातोराङ्पूर्वादच् कर्त्तरि]

आऽन्वसृक्षत समन्तादनुसृजन्तु ५.५२.६. (आङ्+अनु+सृज् विसर्गे (तुदा०) धातोर्लुङ् । च्लेः क्सादेशः]

आप आप्नोति ५.४५.६. प्राप्नुयात् ४.४१.१. व्याप्नोति ५.४२.६. प्राप्नोति ४.५१.७. आप्नुयात् ४.२३.२. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिट् सामान्ये]

आपत समन्तात् पतति गच्छति, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् । अन्व०—आपतति समन्तात् पृथिवीं शोभनं जलरसं गमयति ३.४९. **आपतन्ति**+अभित उपरिष्टादधः पतन्ति १.७९.२. [आङ्+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आपतये समन्तात् पतिः पालको यस्मिँस्तस्मै (प्रयोजनाय) ५.५. [आङ्-पतिपदयोः समासः । 'पतिः समास एव' इति समासे पतिशब्दस्य घिसंज्ञकत्वाद् 'घेर्ङिति' इति गुणे ज्यादेशे च रूपम्]

आपत्यते समन्तात् प्राप्यते १.८४.९. [आङ्+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

आपथयः समन्तादभिमुखः पन्था येषान्ते (विद्वज्जनाः) ५.५२.१०. [आङ्-पथिन् पदयोर्वहुव्रीहिः । 'ऋक्पूरब्धूः०' अ० ५.४.७४. इति प्राप्तः समासान्तोऽपि न छान्दसत्वात्]

आपथ्यः पथि भवः पथ्यः, सर्वतः पथ्य आपथ्यः १.६४.११. [पथिन्प्राति० भवार्थे यत् । आङ्-पथ्यपदयोः समासः]

आपन् आप्नुवन्ति ६.१.४. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

आपनीफनत् सर्वतोऽत्यन्तं गच्छति ४.४०.४. [आङ्+फण गतौ (भ्वा०) फणति गतिकर्मा निघं० २.१४. धातोर्वा यङ्लुकि शतृप्रत्यये रूपम् । 'दाधर्त्ति⋯आपनीफणत्' अ० ७.४.६४. इत्यभ्यासस्य नीगागमो निपात्यते]

आपप्रथे समन्तात्प्रख्यापयति ५.८७.७. **आपप्राथ**=समन्तात्प्रति व्याप्नोति ७.२०.४. [आङ्+प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

आपप्रिवान् सर्वतः स्वतेजसा व्याप्तवान्, भा०—स्वप्रकाशेन सर्वमभिव्याप्तवान् (सूर्यः) १७.५९. सर्वतो व्याप्तान् १.७३.८. **आपप्रिवांसम्** समन्तात् पूर्णम् (विद्वज्जनम्) १.१४६.१. [आङ्+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लिटः क्वसुः]

आपप्रुषी समन्ताद् व्याप्ता (सरस्वती=विद्यासुशिक्षिता वाक्) ६.६१.११. समन्तात् सर्वा विद्या व्याप्नुवती (स्त्री) ४.५२.६. [आङ्+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लिटः क्वसुः । स्त्रियां ङीपि 'वसोः सम्प्रसारणम्' इति संप्रसारणे षत्वे च रूपम्]

आपप्रौ आ=समन्तात् प्राति० ३.३०.११. समन्तात् प्रपूर्त्ति १.८१.५. समन्ताद् व्याप्नोति ६.१०.४. [आङ्+प्रा पूरणे (अदा०) धातोर्लिट् । 'आत औ णलः' इत्यौत्वम्]

आपयः मित्रतां व्याप्ताः (मरुतः=विद्वज्जनाः) २.३४.१०. विद्याव्याप्तुकामाः (मनुष्याः) १.११०.२. सकलशुभगुणव्यापिनः (देवाः=विद्वज्जनाः) २.२९.४. य आप्नुवन्ति ते (शिल्पविद्याऽर्थिनो जनाः) ५.५३.२. **आपये**=सकलविद्याव्याप्तये ९.२०. विद्याव्यापकाय (विद्वज्जनाय) २.३८.११. प्रापकायाऽऽप्ताय (सत्पुरुषाय) ७.८.६. **आपिषु**=विद्यादिगुणैर्व्याप्तेषु (विद्वज्जनेषु) २.२९.४. **आपिः**=सुखप्रापकः (विद्वज्जनः) प्र०—अत्र आप्लृ व्याप्तौ इत्यस्माद् 'इणजादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. इतीण् प्रत्ययः १.२६.३. यः प्रीत्या प्राप्नोति सः (विद्वज्जनः) १.३१.१६. यः समन्तात्पिबति शुभगुणव्याप्तो वा (राजा) ३.५१.९. यः सर्वानाप्नोति (इन्द्रः=राजपुरुषः) ४.२५.६. आपी=सकलविद्यां प्राप्तौ (इन्द्रावरुणा=राजाऽमात्यौ) ४.४१.२. **आपीन्**=य आप्नुवन्ति तान् (प्रजाजनान् राजपुरुषान्वा) ७.३१.१२. **आपः**=प्राप्तधनात् २.२८.११. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'इणजादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वार्त्तिकेन इञ् प्रत्ययः]

आपयायाम् प्राणव्यापिकायाम् (सरस्वत्यां=वाचि) ३.२३.४. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्बहुलकाद् इञ्

प्रत्ययः । 'कृदिकारादक्तिनः' इति वार्त्तिकेन ङीष् । ततः सप्तमी । यकारागमश्छान्दसः]

आपरीवृतम् सर्वत आवृतम् (रजः=लोकलोकान्तरम्) ४.४५.२. [आङ्+परि+वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तः । पूर्वपदस्य दीर्घत्वम्]

आपर्याश्याम् समन्तात् सर्वतः प्राप्नुयाम् [आङ्+परि+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिङ् । व्यत्ययेन परस्मैपदं विकरणलुक् च छान्दसम्]

आपवस्व समन्तात् पवित्रीकुरु ८.६३. सर्वथा पवित्र कर सं० वि० १९५, ९.११३.२. [आङ् पूञ् पवने (क्र्या०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

आपः जलानि, वाऽऽप्नुवन्ति शब्दोच्चारणादिव्यवहारान् याभिस्ता आपः प्राणाः, प्र०—आप इत्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२ 'आप इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.३. आभ्यां प्रमाणाभ्यामप्-शब्देनाऽत्रोदकानि, सर्वचेष्टाप्राप्तिनिमित्तत्वात् प्राणाश्च गृह्यन्ते १.८.७. व्याप्तिशीलानि जलानि १.८३.२. अन्तरिक्षे व्याप्तिशीलाः (देवीः=स्त्रियः) ९.६. जलवद्वर्त्तमाना मातरः ४.१८.८. प्राणा जलानीव विद्वांसः २०.२०. जलानीव शान्ताः (स्त्रियो विदुष्यः) १०.७. आप्नुवन्तीत्यापः (अन्व०—सर्वविद्याव्यापिनो विपश्चितः) ६.१७. सकलविद्याधर्मव्यापिनः (राजपुरुषाः) १०.४. व्यापिकास्तन्मात्राः २७.२५. ब्रह्मणो नाम ऋ० भू० ३०८. सर्वव्यापक ईश्वरः पं० वि० २१२. पवित्रजलानीव सकलशुभगुणव्यापिकाः कन्याः १२.३५. व्याप्तिशीलाः सूक्ष्मास्तन्मात्रा २७.२६. जलानीव प्रजाः ५.३४.९. आप्नुवन्ति व्याप्नुवन्ति शरीरमित्यापः (इन्द्रियाणि मनो बुद्धिश्च ३४.५५. प्राणान्, प्र०—अत्र शसो जस् २.२४.१२. वाष्परूपाणि जलानि १.११६.९. अन्तरिक्षं प्राणा वा १.१००.१५. सर्वाः शुभगुणकर्मविद्याव्यापिन्यः (देवीः=विदुष्यो देव्यः) ८.२६. सर्वव्यापकत्वादीश्वरः ३२.१. कारणाख्याः प्राणा जीवा वा १७.३०. जलानीव शान्तिशीला विदुष्यः सत्स्त्रियः प्र०—आप्लृ व्याप्तौ अस्माद्धातोरप्शब्दः सिध्यति, स नियतस्त्रीलिङ्गो बहुवचनान्तश्च ३६.१४. आकाशः ३२.७. आप्ताः प्रजाः ६.२७. आप्नुवन्ति सद्गुणान् यास्ताः (देवीः=विदुष्यः सत्स्त्रियः) ६.१३. प्राणा जलादयो वा ४.१२. आप्नुवन्ति व्याप्नुवन्ति सर्वान् पदार्थांस्ते प्राणाः १.२३.२१. प्राणबलानि १.१७८.१. जलों को सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.१.५. जल और जलस्थ पदार्थ आर्याभि० २.२५, ३६.१७. प्राणप्रद वायु सं० वि० १९६, ९.११३.८. प्राण, वायु, समुद्र इत्यादि आर्याभि० १.३२, ऋ० १.७.१०.१५. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'आप्नोतेर्ह्रस्वश्च' उ० २.५८ सूत्रेण क्विप् प्रत्यये ह्रस्वत्वे चाप् शब्दः सिध्यति । अथवा 'आपः कर्माख्यायां ह्रस्वो नुट् च वा' उ० ४.२०८. सूत्रेणासुन् प्रत्ययो ह्रस्वश्च । आप आप्नोतेः नि० ९.२६ आपः=आपना आपनानि वा नि० १२.३८. आपः अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. आपः=उदकनाम निघं० १.१२. तद्या एताश्चान्द्रमस्य आगामिन्य आपो भवन्ति रश्मयस्ताः नि० ५.४२. आपः तद् यदब्रवीत् (ब्रह्म) आभिर्वा अहमिदं सर्वमाप्स्यामि यदिदं किं चेति तस्मादापोऽभवंस्तदपामप्त्वमाप्नोति वै स सर्वान् कामान् यान् कामयते गो० पू० १.२. सेदꣳ सर्वमाप्नोद् यदिदं किं च यदाप्नोत्तस्मादापः श० ६.१.१.९. अद्भिर्वाऽइदं सर्वमाप्तम् श० १.१.१.१४. आपो ह वा ऽइदमग्रे सलिलमेवास । ता अकामयन्त कथं नु प्रजायेमहीति श० ११.१.६.१. अश्मनो ह्यापः प्रभवन्ति श० ९.१.१.४. तस्मात्पुरुषात्तप्तादापो जायन्ते श० ६.१.३.१.ता वा ऽ एताः सप्तदशापः सम्भरति श० ५.३.४.२२. प्राणा वा आपः तै० ३.२.५.२. ता० ९.९.४. आपो वै प्राणाः श० ३.८.२.४. प्राणो ह्यापः जै० उ० ३.१०.९. अमृतं वा ऽ आपः श० १.९.३.७. अमृतत्वं वाऽआपः कौ० १२.१. अमृता ह्यापः श० ३.९.४.१६. अमृतं वा एतदस्मिन् लोके यदापः ऐ० ८.२०. आपो वा ऽ उत्सः श० ६.७.४.४. आपोऽक्षितिर्या इमा एषु लोकेषु यश्चेमा अध्यात्मन् कौ० ७.४. शान्तिरापः श० १.२.२.११. शान्तिर्वा आपः ऐ० ७.५. आपो हि शान्तिः तां० ८.७.८. शान्तिर्वै भेषजमापः कौ० ३.६, ७, ८, ९. गो० उ० १.२५. आपो ह वा ऽओषधीनां रसः श० ३.६.१.७. रसो वा ऽ आपः श० ३.३.३.१८. आपो वै सर्वस्य शान्तिः प्रतिष्ठा ष० ३.१. आपो वा ऽअस्य सर्वस्य प्रतिष्ठा श० ४.५.२.१४. आपः सत्ये (प्रतिष्ठिताः) ऐ० ३.६. गो० उ० ३.२. श्रद्धा वा आपः तै० ३.२.४.१. मेध्या वा आपः श० १.१.१.१. मेध्या वा एता आपो भवन्ति या आतपति वर्षन्ति श० ५.३.४.१३. पवित्रं वा ऽआपः श० १.१.१.१. आपो वै क्षीररसा आसन् तां० १३.४.८. ऊर्ग्वा आपो रसः कौ० १२.१. अन्नं वा ऽआपः श० २.१.१.३. अन्नमापः कौ० १२.३.८. आपोऽन्नम् ऐ० ६.३०. तद्यास्ता आपोऽन्नं तत् जै० उ० १.२५. आपो वै रक्षोघ्नीः तै० ३.२.३.१२. (इन्द्रः) एताभिः (अद्भिः) ह्येनं (वृत्रम्) अहन् श० १.१.३.८. वज्रो वा ऽआपः श० १.१.१.१७. वीर्यं वा ऽ आपः श० ५.३.४.१. आपो वा ऽअर्कः श० १०.६.५.२. अप्सु

योनिर्वाऽअश्वः तै० ३.८.४.३. आपो वा ऽअवकाः श० ७.५.१.११. यदापोऽसौ (द्यौः) तत् श० १४.१.२.६. देव्यो ह्यापः श० १.१.३.७. यज्ञ वा ऽआपः कौ० १२.१. श० १.१.१.१२. तै० ३.२.४.१. आपो वै यज्ञः ऐ० २.२०. आपो हि यज्ञः श० ३.१.४.१५. आपो रेतः श० ३.८.४.११. रेतो वा आपः ऐ० १.३. पशवो वा एते यदापः ऐ० १.८. तेजश्च ह वै ब्रह्मवर्चसं चातपवर्ष्या आपः ऐ० ८.८. आपो वै सर्वा देवताः ऐ० २.१६. कौ० ११.४. तै० ३.२.४.३. आपो वै सर्वे कामाः श० १०.५.४.१५. आपो वै सर्वे देवाः श० १०.५.४.१४. आपो वै देवानां प्रियं धाम तै० ३.२.४.२. सौम्या ह्यापः ऐ० १.७. तस्मात्प्रतीच्यो ऽप्यापो बह्व्यः स्यन्दन्ते, सौम्या ह्यापः ऐ० १.७.१२. आपो वरुणस्य पत्न्य आसन् तै० १.१.३.८. अग्निना वा ऽआपः सुपत्न्यः श० ६.८.२.३. अस्ति वै चतुर्थो देवलोक आपः कौ० १८.२. अप्सु पृथिवी (प्रतिष्ठिता) जै० उ० १.१०.२. आपः स्थ समुद्रे श्रिताः। पृथिव्याः प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.५. प्रातःसवनरूपा न्वापः कौ० १२.३. अथ यद्यपः शूद्राणां स भक्षः ऐ० ७.२९. योषा वा ऽआपो वृषाग्निः श० १.१.१.१८. आपो वै सरिरम् श० ७.५.२.१८. आपो वा ऽइदमग्रे सलिलमासीत् तै० १.१.३.५. आपः एष वै रयिर्वैश्वानरः श० १०.६.१.५. आपो व्यानः जै० उ० ४.२२.९. शुक्रा ह्यापः तै० १.७.६.३. चन्द्रा ह्यापः तै० १.७.६.३. आपो वै जनयः श० ६.८.२.३. आपस्सावित्री जै० उ० ४.२७.३. आपो वै पुष्करम् श० ६.४.२.२. आपो वै पुष्करपर्णम् श० ७.३.१.९. आपो वै प्रजापतिः परमेष्ठी। ता हि परमे स्थाने तिष्ठन्ति श० ८.२.३.१३. आपः स (परमेष्ठी प्राजापत्यः) आपो ऽभवत् श० ११.१.६.१६. आपो हि पयः कौ० ५.४. गो० उ० १.२२. अपामेष ओषधीनां रसो यत्पयः श० १२.८.२.१३. ओषधयो व ऽअपामोद्म श० ७.५.२.४७. आपो ह्येतस्य (सोमस्य) लोकः श० ४.४.५.२१. आपो हि रेतः तां० ८.७.९. आपो रेतः प्रजननम् तै० ३.३.१०.३. आपो मे रेतसि श्रितः तै० ३.१०.८.६. धर्मो ह्यापः श० ११.१.६.२४. आपः प्रोक्षण्यः ऐ० ५.२८. दिव्या आपः प्रोक्षण्यः तै० २.१.५.१. आपो वै सूदोऽन्नं दोहः श० ८.७.३.२१. आपः स्वरसामानः कौ० २४.४. अथ यत् स्वरसाम्न उपयन्ति। अप एव देवतां यजन्ते श० १२.१.३.१३. रेवत्यः आपः श० १.२.२.२. आपो वै रेवत्यः तां० ७.९.२०. आपो वै रैवतीः तै० ३.२.८.२. वज्रो वा ऽआपः श० १.७.१.२०. वृत्रꣳ ह्येताः (आपः) अघ्नन् श० ६.९.४.१६. आपो वै विधाः श० ८.२.२.८. आपो वै द्यौः श० ६.४.१.९. द्यौर्वाऽअपाꣳ सदनम् श० ७.५.२.५६. आपो दिव ऊधः श० ६.७.४.५. आपो वै दिव्यं नभः श० ३.८.५.३. आपो वै वरेण्यम् जै० उ० ४.२८.१. वायुरापश्चन्द्रमा इत्येते भृगवः गो० पू० २.८. आपो वै सवः (शर्वः=रुद्रः) अद्भ्यो हीदं सव जायते श० ६.१.३.११. आप एव सर्वम् गो० पू० ५.१५. एष वा ऽअपाꣳ रसो यो ऽयं (वायुः) पवते श० ५.१.२.७. अपः श्लाघा (गच्छति) गो० पू० २.२. स वा एषो (सूर्यः) ऽपः प्रविश्य वरुणो भवति कौ० १८.९. अप्सु वै वरुणः तै० १.६.५.६. यो ह वा ऽअयमपामावर्त्तः स हावभृथः स हैष वरुणस्य पुत्रो वा भ्राता वा श० १२.९.२.४. अद्भ्यो वा एष (अग्निः) प्रथममाजगाम श० ६.७.४.४. आपो वा ऽस्य (अग्नेः दिवोऽर्णः श० ७.१.१.२४. अन्तरिक्षं वा ऽअपाꣳ सधस्थम् श० ७.५.२.५७. आपो वै मरुतः ऐ० ६.३०. कौ० १२.८. अप्सु वै मरुतः श्रिताः गो० उ० १.२२. कौ० ५.४. अथ यत्कृष्णं तदपां रूपम् जै० उ० १.२५.९. अन्नं वा ऽअपां पाथः श० ७.५.२.६०. आपो वै सह स्त्रियो वाजः श० ७.१.१.२२. गिरिबुध्ना उ वा आपः श० ७.५.२.१८. वैराजीर्वा आपः कौ० १२.३. अद्भिर्यज्ञः प्रणीयमानः प्राङ् तायते। तस्मादाचमनीयं पूर्वमाहारयति गो० पू० १.३९. अप्सुयोनिर्वै वेतसः श० १२.८.३.१५. अप्सुजा वेतसः श० १३.२.२.१९. तै० ३.८.४.३. तद्यत्तत्सत्यम्। आपो एव तदापो हि वै सत्यम् श० ७.४.१.६. तदेतत्सत्यमक्षरं यदोमिति। तस्मिन्नापः प्रतिष्ठिताः जै० उ० १.१०.२. इयं (पृथिवी) वा ऽअपामयनम्। अस्याꣳ ह्यापो यन्ति श० ७.५.२.५०. समुद्रो वा ऽपां योनिः श० ७.५.२.५८. समुद्रोऽसि तेजसि श्रितः। अपां प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.४. विद्युद्वाऽअपां ज्योतिः श० ७.५.२.४९. अभ्रं वाऽअपां भस्म श० ७.५.२.४८. सिकता वा अपां पुरीषम् श० ७.५.२.५९. चक्षुर्वाऽअपां क्षयः। तत्र हि सर्वदैवापः क्षियन्ति श० ७.५.२.५४. श्रोत्रं वा ऽअपाꣳ सन्धिः (यजु० १३.५३.) श० ७.५.२.२५.]

आपानम् व्यापकम् (ब्रह्म=धनमन्नं वा) प्र०—आपानमिति व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८, २.३४.७. [आपानम्=व्याप्तिकर्म निघं० २.१८. आप्नुवानः नि० ३.११.]

आपाम् व्याप्नुयाम् १२.७३. **आपाम्**=आप्नुयाम १०.२१. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लङ्]

आपिपेश समन्तात् पिनष्टि १९.११. [आङ्=पिष्लृ संचूर्णने (रुधा०) धातोर्लिट्। पकारस्य शकारश्छान्दसः]

आपिप्यानम् सर्वतो वर्धमानम् (कलशं=कुम्भम्) ४.२७.५. [आङ्+ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्यङन्ताच्छानच्। 'लिङ्यङोश्च' अ० ६.१.२९. सूत्रेण पीभावः]

आपिप्रिये समन्तात्प्रीणाति ३.५१.३. [आङ्+प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोर्लिट्]

आपिब समन्तात् श्रवणशक्त्या गृहाण १.१०.११. [आङ्+पा पाने (भ्वा०) धातोर्लोट्। शिति पिबादेशः]

आपीपयन् आवर्द्धयेयुः १.१५२.६. [आङ्+ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

आपीपाय आवर्द्धस्व ४.३.६. (आङ्+ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'लिड्यङोश्चे' ति पीभावः]

आपुनन्ति समन्तात् पवित्रीकुर्वन्ति ३.८.५. [आङ्+पूञ् पवने (क्र्या०) धातोर्लट्। 'प्वादीनां ह्रस्व' इति शिति ह्रस्वः]

आपुः प्राप्नुवन्ति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लडर्थे लिट् १.२४.६. पा सकते हैं आर्याभि० १.३२. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिट् लडर्थे]

आपूर्णः समन्तात् पूरितः (कलशः=कुम्भः) ३.३२.१५. [आङ्+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'धापॄवस्य०' उ० ३.६. सूत्रेण नः प्रत्ययः। वाहुलकाद् गुणाऽभावः]

आपूर्यमाणम् समन्तात् न्यूनतारहितम् (श्रवः=अन्नम्) १.५१.१०. [आङ्+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः कर्मणि शानच्]

आपृचे समन्तात् सम्पर्काय ५.५०.२. [पृची सम्पर्चने (अदा०) पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्वा 'घञर्थे क विधानम्' इति कः प्रत्ययः]

आपृचीमहि समन्तात् सम्बन्धनीयाम १.१२६.७. [आङ्+पृची सम्पर्चने (अदा०) धातोर्लिङ्]

आपृच्छ्यम् समन्तात् प्रष्टव्यम् १.६४.१३. [आङ्+प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोर्क्यप् प्रत्ययः। किति सम्प्रसारणम्]

आपृच्छ्यः समन्तान्निश्चयार्थं प्रष्टुं योग्यः (विद्वज्जनः) १.६०.२. [आङ्+प्रच्छ ज्ञीप्सायां (तुदा०) धातोः क्यप्। किति 'ग्रहिज्या०' सूत्रेण सम्प्रसारणम्]

आपृण समन्ताद् योजय ६.२१. अभितः पूरय १.१६.६. समन्तात् पूरयति वा ३.१७. समन्तात् सुखय १७.७२. आपूर्णं कुरु ३.३०.१९. सब प्रकार से पूर्ण करो आर्याभि० २.३३, ३.१७. परिपूर्ण करो आर्याभि० १.३५. अभितः पिपूर्द्धि ११.६३. **आऽपृणत्**=समन्तात्पूरयति ३.२.७. अभितः प्रपूरयेत् ३.३४.१. आपृणाति व्याप्नोति २.१५.२. **आपृणध्वम्**=समन्तात् सुखयत २५.२८. अभितः पूरयध्वम् १.१६२.५. **आऽपृणन्ति**=समन्तात् सुखयेयुः १.५२.४. अभितः पालयन्ति विद्याः पूरयन्ति वा ५.११.५. **आपृणस्व** सुखी भव १७.७९. समन्तात् सुखय ६.४१.४. **आऽपृणात्**=अभितः प्रपूर्यात् १२.२३. **आपृणैथे**=समन्तात् पूरयतम् ७.६१.२. [आङ्+पृण प्रीणने (तुदा०) [धातोर्लोट्। पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोराङ्पूर्वाल्लोटि लङि वा रूपाणि]

आपृणक्तु समन्तात् सम्पर्कं करोतु १.८४.१. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोराङ् पूर्वाल्लोट्। (आपृणस्व) आपृणस्वेत्याप्रजायस्वेत्येतत् श० ६.२.३.४४.]

आपृणन् समन्तात् पूरयन् (परमेश्वरः) ४.५३.२. [आङ्+पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोः शतृप्रत्ययः]

आपृणन्ती अभितः सुखयन्ती (उषाः) १.१२४.५. [आङ्+पृण प्रीणने (तु०) धातो शतरि स्त्रियां ङीपि च रूपम्]

आपेः य आप्नोति तस्य (सर्वव्यापकस्येश्वरस्य) २.२७.१७. प्राप्तस्य (अनृजोः=कुटिलस्य जनस्य) ४.३.१३ प्राप्तधनात् २.२८.११. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर् इः प्रत्यय औणादिकः]

आप्तम् व्याप्तं प्राप्तम् (होमादिकम्) १९.२६. **आप्तः**=सर्वविद्यादिसद्गुणव्याप्तः सत्योपदेष्टा (राजा, विद्वज्जनो वा) १.३०.१४. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

आप्ताः प्राप्त होती हैं सं० वि० १९७, ९.११३.११. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः क्तप्रत्यये स्त्रियां टापि च रूपम्]

आप्त्यः य आप्तेषु भवः सः (विद्वज्जनः) १.१०५.९. [आप्लृ व्याप्तौ+क्तप्रत्यये=आप्तः। ततो भवार्थे यत्। आप्त्या आप्नोतेः नि० ११.२०. आप्त्यम्=आप्तव्यम् नि० ११.२१. आप्त्याः (देवाः) साध्याश्च त्वाऽऽप्त्याश्च देवाः पाङ्क्तेन च्छन्दसा त्रिणवेन स्तोमेन शाक्वरेण साम्नाऽऽरोहन्तु तानन्वारोहामि राज्याय ऐ० ८.१२. अथैन (इन्द्रं) अस्यां ध्रुवायां मध्यमायां प्रतिष्ठायां दिशि साध्याश्चाऽऽप्त्याश्च देवाः········अभ्यषिञ्चन्········ राज्याय ऐ० ८.१४.]

आप्नोति प्राप्नोति १९.१९. प्राप्त होता है सं० वि०

१८८, १९.३०. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लट्]

आप्यते प्राप्यते १९.२५. प्राप्ति की गई है सं० वि० १८८, १९.३०. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

आप्यम् आप्तुं प्राप्तुं योग्यं सखित्वम्, प्र०=अत्र 'आप्लृ व्याप्तौ' इत्यस्मादौणादिको यत्, अत्र सायणाचार्येण प्रमादादटुपधत्वाऽभावेऽपि 'पोरदुपधात्' इति कर्मणि यत्, 'यतोऽनावः' इत्याद्युदात्तत्वं, यच्च छान्दसमाद्युदात्तत्वमित्यशुद्धमुक्तम्, औणादिकस्य यत्प्रत्ययस्य विद्यमानत्वात् १.३६.१२. आप्तुं योग्यम् (उक्थ्यं=विद्यावचः) प्र०—अत्राऽऽप्लृ-धातोर्वाहुलकादौणादिको यत् प्रत्ययः १.१०५.१३. **आप्येन**=व्याप्येन वस्तुना २.२९.३. [आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्वाहुलकादौणादिको यत् प्रत्ययः। आप्यः=आप्यमाप्नोतेः निघं० ६.१४.]

आप्यायताम् समन्ताद् वर्धयताम्, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः ५.७. सत्कर्माऽनुष्ठानेन वर्द्धताम् ६.१५. सर्वतो वर्द्धताम् ३८.१८. अभितो वर्धयताम् ५.७. **आप्यायध्वम्**=आप्यायामहे वा प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः १.१. **आप्यायन्ताम्**=पुष्टा भवन्तु १.९३.१२. **आप्यायय**=अभितो वर्धय वर्धयति वा ५.७. **आप्यायस्व**=सर्वतो वर्धस्व वर्द्धयेद्वा ५.७. अभितो वर्धस्व १.९१.१६. समन्तात्पुषाण ३८.२१. अ०—नित्यं व्यापय २.१४. **आप्यासिषीमहि**=समन्ताद्वर्धेम, प्र०—अत्र प्यैङ् धातोः 'सिबुत्सर्गश्छन्दसि' अ० ३.१.३४. अनेन वार्त्तिकेन सिप् प्रत्ययः २.१४. सर्वतो वर्द्धेम ३८.२१. [आङ्+ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लिङ्ङपि]

आप्यायमानः समन्ताद्वर्धमानः (मनुष्यः) १२.११३. पुष्टः पुष्टिकारकः (विद्वज्जनः) १.९१.१८. वृद्ध इव (यमः=सूर्यः) ८.५७. [आङ्+ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शानच्]

आप्रणेषि समन्तात्प्रकर्षेण नयसि २.१.१६. [आङ्+प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

आप्रथस्व अभितः प्रख्यातो भव १३.२. [आङ्+प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आप्रयच्छ समन्तात् प्रकर्षेण देहि ५.१९. [आङ्+प्र+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'इषुगमियमां छ' इति छकारादेशः]

आप्रयातु अभितः प्रकृष्टं प्राप्नोतु १८.७२. **आप्रयाहि**=समन्तात्प्रकर्षेण गच्छ ३४.१९. [आङ्+प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्]

आप्ररिक्थाः समन्तादतिरिणक्षि, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति विकरणाऽभावः ३.६.२. [आङ्+प्र+रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। अथवा 'वाच्छन्दसि' वार्तिकेन विकरणाऽभावः]

आप्रशस्यते अभितः प्रशस्तो जायते २.८.३. [आङ्+प्र+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

आप्रस्य पूर्णबलस्य (सेनापतेः) १.१३२.२. [आङ् पूर्वात् प्रा पूरणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः]

आप्राः समन्ताद् व्याप्नोति १३.४६. समन्तात्प्रातिपिपर्त्ति प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् ७.४२. अभितः प्रातिव्याप्नोति ४.५२.५. समन्ताद् व्याप्नुयोः ६.४६.५. समन्तात्पूरितवान् १.११५.१. समन्तात् पिपृहि ६.२. [आङ्=पृ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लुङ्। 'मन्त्रे घसह्वरणशवृदहात्०' अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक्। आङ्पूर्वात् प्रा पूरणे (अदा०) धातोर्वा लुङ्]

आप्राः समन्ताद्धारयन् (परमेश्वरः) पं० वि०। [आङ्+प्रा पूरणे (अदा०) धातोरच् प्रत्ययः]

आप्रायि समन्तात् पूर्यन्ते ३४.३२. [आङ्+प्रा पूरणे (अदा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

आप्रीणीते अभितः कामयते ७.७.३. [आङ्+प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोर्लट्]

आप्रीतपाः समन्तात् प्रीतान् कमनीयान् पदार्थान् पाति रक्षति (विष्णुः=विद्युत्) ८.५७. [आङ्-प्रीतोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः। आकारस्य न लोपश्छान्दसत्वात्]

आप्रीभिः याः समन्तात् प्रीणन्ति ताभिः (क्रियाभिः) १९.१९. **आप्रीः**=सर्वथा प्रीत्युत्पादिका परिचारिका, (भा०—सुशिक्षितसेविका) १९.१९. [आङ्+प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः क्विप्। आप्रियः (ऋचः) तद्यद् आप्रीणाति तस्मादाप्रियो नाम कौ० १०.३. आप्रीभिराप्नुवन् तदाप्रीणामाप्रीत्वम् तै० २.२.८.६. तद्यदेनं (पशुम्) एताभिराप्रीभिराप्रीणात् तस्मादाप्रियो नाम श० १०.८.३.५. यदेतान्याप्रिय आज्यानि भवन्ति, आत्मानमेवैतेराप्रीणाति तां० १५.८.२. प्राणा वा आप्रियः कौ० १८.१२. तेजो वै ब्रह्मवर्चसामाप्रियः ऐ० २.४.]

आबध्नन् समन्ताद् बध्नीयुः ३४.५२. **आबबन्ध**=अभितो बध्नामि १२.६५. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोराङ्पूर्वात् शतृप्रत्ययः। अन्यत्र—आङ्+बन्ध+लिट्]

आबभाज समन्तात् सर्वं सेवन्ते १.१६४.८. (आङ्+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

आबभूव समन्ताद् भवति ३२.५. समन्ताद् भवेत् ६.२५. प्रकाशित हुई स० प्र० २८१, १०.११६.७. [आङ्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

आबिभ्रति समन्ताद् भरन्ति ६.१६.४०. [आङ्+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लटि प्रथमबहुवचने रूपम्]

आभगः समस्तसौभाग्यः (आप्तपुरुषः) १.१३६.४. [आङ्-भगपदयोः समासः]

आभज समन्तात् सेवस्व ३.४७.३. अभिलष १.१२१.१५. **आऽभजत्**=समन्तात् सेवेत १.१५६.५. समन्तात् सेवते ४.३०.१६. **आभजन्त**=अभितो भजन्ते सेवन्ते १६.५६. **आभजस्व**=आसेवस्व ४.३२.२१. **आभजेमहि**=समन्तात् सेवेमहि ७.३२.७. [आङ्+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लिङ्]

आभजन्तीः समन्तात् सेवमानाः (देवीः=दिव्याः स्त्रियः) १७.५४. [आङ्+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः शतरि स्त्रियां ङीपि च रूपम्]

आभनन्त समन्ताद् भनन्तु उपदिशन्तु ७.१८.७. [आङ्+भण शब्दार्थे (भ्वा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

आभयते समन्ताद् भयं जनयति १.५८.५. [भयं करोतीति विग्रहें 'तत्करोति तदाचष्टे' वार्त्तिकेन णिच्। 'सनाद्यन्ता धातव' इति धातुसंज्ञायाम् आङ्पूर्वाल्लट्। णिलोपश्छान्दसः। 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकसंज्ञायां वा णेर्लोपः]

आभर समन्ताद् भर १.७६.८. आभिमुख्येन धर १.५३.३. अभितो भरति वा ४.१६. अभितः सम्यग् धारय प्रदेहि १.४.७. समन्ताद्धारय १.८.१. समन्तात्पुष्णीहि ५.१६.५. अभितः पोषय ३४.३३. सर्वतः पालयसि ३६.७. अभितः सुखैर्भरति पुष्णातीति ४.१६. समन्ताद् धेहि १.८१.७. समन्तात् प्रापय १.८१.६. समन्ताद्धर पुष्णीहि वा ५.३५.२. **आभरत्**=समन्ताद् भरतः, अभितो बिभ्रतः २०.५६. **आभरतम्**=अभितो धारयतम् १.१०६.७. **आभरति**=समन्ताद्धरति ४.२२.४. अभितः सम्यग् धारय प्रदेहि १.४.७. [आङ्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आभरति समन्ताद् हरति ४.२२.४ [आङ्+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लट्। 'हृग्रहोर्भश्छन्दसी' ति [इकारस्य भकारः]

आभरद्वसुः या समन्ताद्वसूनि बिभर्त्ति सा (विदुषी स्त्री) ५.७६.३. [आभरत्+वसुपदयोर्बहुव्रीहिः; 'वोतो-गुणवचनात्' इति विकल्पाद् ङीष् न]

आभरन्तः समन्ताद् धरन्तः (ऋषयः) १५.४६. [आङ्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

आभरत् समन्ताद्धरेत् ४.२.७. [आङ्+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लेट्]

आभाति समन्तात् प्रकाशयति ३.२५.३. अभितो राजति १२.२१. समन्तात्प्रकाशते १२.६. **आभासि**=समन्तात् प्रकाशयसि १.५०.४. अभितो दीपयसि १५.६३. **आभाहि**=समन्ताद् भाहि १.४८.६. समन्तात् प्रकाशय २७.१. [आङ्+भा दीप्तौ (अदा०) धातोर्लट्। आभाहि पदे लोट् च]

आभार्ष्टाम् समन्ताद् दहताम् २८.१७. [आङ्+भ्रस्ज पाके (तुदा०) धातोर्लुङि प्रथमद्विवचने रूपम्। 'वदव्रज०' इति वृद्धिः 'भ्रस्जोरोपधयोरमन्यतरस्याम्' इति रेफोपधयोर्निवृत्तिः रमागमश्च]

आभुवत् समन्ताद् भूयात्, अ० भवति वा, प्र०—भूधातोराशिषि लिङि प्रथमैकवचने 'लिङ्याशिष्यङ्' अ० ३.१.८६ इत्यङि सति 'किदाशिषि' इत्यागमाऽनित्यत्वे प्रयोगः १.५.३. समन्ताद् भवेत् ३६.४. अभितो भवेः ४.३१.१ [आङ्+भू सत्तायाम्+आशिषि लिङ्। आगमशासनस्यानित्यत्वाद् यासुट् न भवति]

आभुवम् यत्र समन्ताद्भवति सुखं तम् (रयिं=द्रव्यम्) प्र०—अत्र 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः १.१३३.७. समन्ताद् भवनशीलम् (गां=बलीवर्दम्) १.१५१.४. **आभुवः**=समन्ताद् भवन्ति ये या वा तान् ता वा (अपः) १.६४.१. समन्ताद् भवन्ति ये ते (वायवः) १.६४.६. [आङ्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे क-विधानमि' ति कः प्रत्ययः]

आभुः रिक्तः खड्गादिरहितः सेनापतिः १६.१०. [आङ्+भू सत्तायाम् धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ३.३.१८०. इति डुः प्रत्ययः]

आभूभिः समन्ताद् भवन्ति वीरा यासु प्रशासन-

क्रियासु ताभिः सह १.५१.६. ये विद्याविनये समन्ताद् भवन्ति तैः सह (मन्त्रिभिः सह) ५.३५.३. [आङ्+भूमिपदयोः समासः । भूमिः=भू सत्तायां धातोः 'भुवः कित्' उ० ४.४५ सूत्रेण मिः प्रत्ययो किच्चाधिकरणे । भवन्ति पदार्था यस्यां सा भूमिः]

आभूष समन्तादलङ्कुरु ७.७. **आभूषति**=समन्तादाप्नोति १.१३६.५. [आङ्+भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आभूषति समन्तादाप्नोति १.१३६.५. [आङ्+ भू प्राप्तौ धातोर् लेट् 'सिब्बहुलं लेटी' ति सिप् विकरणो, णिचोऽभावश्च]

आभूषन्तीः समन्ताद् भूषणयुक्ताः (स्त्रियः) १.४३.६. [आङ्+ भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोः शतरि स्त्रियां ङीपि च रूपम्]

आभूषु समन्ताद् भूषिता जना येन तत् (सुकर्म) १.५६.३. [आङ्+भूप अलंकारे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् उः प्रत्ययः]

आभूषेण्यम् अलङ्कर्त्तव्यम् (महित्वनं=महिमानम्) ५.५५.४. [आङ्+भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोः 'कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः' अ० ३.४.१४. इति केन्यः प्रत्ययः]

आभृतम् समन्ताद् धृतम् (मांसम्) १.१६१.१०. समन्तात् पुष्टं धृतं वा (रेतः=वीर्यम्) ३८.२८. समन्तात् पोपितम् (सहः=बलम्) २६.५३. आभिमुख्येन धृतम् (वज्रं बलं वा) ६.४७.२७. **आभृतः**=समन्तात् पोषितः (सुतः=पुत्रः) २.३६.५. समन्ताद्धृतः (आनन्दः) ५.५८.११. **आभृता**=समन्ताद् धृतानि (वसूनि=धनानि) ६.१६.४८. [आङ्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

आभोगयम् समन्ताद् भोगेषु साधुं व्यवहारम्, प्र०—अत्रोभयसंज्ञान्यपि छन्दांसि दृश्यन्ते, इति भसंज्ञानिषेधादल्लोपाऽभावः १.११०.२. [भोगप्राति० भवार्थे यत् । छन्दसि भसंज्ञाया अभावाद् 'यस्येति चे' त्यल्लोपो न भवति । आङ्भोगयोः समासः । भोगः=भुजपालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोर्घञ्]

आभोगये समन्ताद् भुञ्जन्ते सुखानि यस्यां तस्यै पुरुषार्थयुक्तायै (राये=राज्यश्रियै) प्र०—अत्र बहुलवचनादौणादिको यिः प्रत्ययः १.११३.५. [आङ्+भुजपालनाव्यवहारयोः (रुधा०) धातोर्यिप्रत्यये छान्दसं रूपम्]

आम्रियन्ते समन्ताद् ध्रियन्ते ७.२१.२. [आङ्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

आमत्स्व अस्माभिः स्तुतः सन् सदा समन्ताद्धर्षय, प्र०—'बहुलं छन्दसि' इति श्यनो लुक् १.९.३. [आङ्+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि तत्स्थाने भाविनः श्यनोऽपि लुक्]

आमन्येथाम् समन्ताद् विजानीतम् ३.५८.४. [आङ्+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लङ्]

आमयत् रुग्णं कुर्यात्, प्र०—अम रोगे, अमागमः लङि रूपम् १६.४७. [अम रोगे (चुरा०) धातोर्लङ्, अमागमश्छान्दसः]

आमस्य अपरिपक्वस्य (क्रविषः=भक्षितस्य पदार्थस्य) २५.३३. **आमः**=अपरिपक्व आत्मा अन्तःकरणयुक्त (मनुष्य) स० प्र० ४२३, ९.८३.१. [अम रोगे (चुरा०) धातोर् घञ्]

आममिरे समन्तात् सृजन्ति ३.३८.७. [आङ्+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लिट् सामान्ये]

आमयति रोगयति, भा०—रोगाऽऽविष्कारं भवति १२.८३. [अम रोगे (चुरा०) धातोर्लट्]

आमरीता समन्ताद् विनाशकः (शत्रुः) ४.२०.७. [आङ्+मृ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोस्तृच् । 'वृतो वा' अ० ७.२.३८. इतीटो दीर्घः]

आमा आमानि (वस्तूनि) ३.३०.१४. अपरिपक्वम् (आहारम्) प्र०—अत्र विभक्तेराकारादेशः ४.३.९. [अम रोगे (चुरा०) धातोर्घञ्]

आमादम् आमानपरिपक्वानत्ति तम्, भा०—दाहकस्वभावं येनामान् पदार्थान् पक्त्वाऽदन्ति तम् (अग्निं=विद्युदाख्यम्) १.१७. [आमोपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोरण्प्रत्ययः । अयम् (अग्निः) वा ऽआमाद्येनेदं मनुष्याः पक्त्वाऽश्नन्ति श० १.२.१.४]

आमायाम् अप्रौढायाम् (उस्रियायां)=गवि) १.१८०.३. **आमासु**=अपक्वास्वोषधीषु १.६२.९. [आमम्=अपरिपक्वम् ततष्टापि रूपम्]

आमायाम् गृहे भवासु (पूर्षु=पुरीषु) २.३५.६. अपने घरों में उत्पन्न हुए (पुत्र और कन्या रूप प्रजाओं में) सं० वि० १०४, २.३५.६. [अमा गृहनाम निघं० ३.४. अमः पदनाम निघं० ४.३. अम प्राति० भवार्थे इण् प्रत्यये स्त्रियां टापि च रूपम्]

आमिक्षा दधिदुग्धमिष्टैर्निर्मिता (हविः=पदार्थाः)

१९.२१. मधुराऽम्लादिसंयोगयुक्ता (हविः=वस्तु) १९.२३. [समन्तान्मेषति हिनस्तीत्यामिक्षा=क्षीरविकार इति विग्रहे, (आङ्पूर्वाद् मिश रोषकृते (भ्वा०) धातोर्बाहुलकात् सः प्रत्ययः किच्च । आण्डस्य वा ऽएतद्रूपं यदामिक्षा तै० १.६.२.४]

आऽमित्रः समन्तादशत्रुः (जनः) ६.२८.३. [आङ्-अमित्रपदयोः समासः । मित्रम्=मिनोति मान्यं करोतीति विग्रहे, डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोः 'अमिचिशसिभ्यः क्त्रः' उ० ४.१६४ सूत्रेण क्त्रः प्रत्ययः]

आमिनत् आहिंस्यात् ४.३०.२३. **आमिनन्ति**=समन्ताद्धिंसन्ति ५.६४.४. [आङ्+मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्लेटि रूपम् । ह्रस्वत्वं छान्दसम्]

आमिनन्त समन्तात् प्रक्षिपन्ति १.७९.२. [आङ्+डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्ना]

आमिनाना समन्ताद् हिंसन्ती (उषाः), प्र०—मीञ् हिंसायाम्, इत्यस्य रूपम् १.९२.१०. [आङ्+मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः शानचि स्त्रियां टापि च रूपम् । ह्रस्वत्वं छान्दसम्]

आमिनाने परस्परं प्रक्षिपन्तौ पदार्थाविव (रात्र्युषसौ) प्र०—आमिनाने आमिन्वाने अन्योऽन्यस्याऽध्यात्मं कुर्वाणे इति नि० २.२०, १.११३.२. [आङ्+डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोः शानचि स्त्रियां टापि रूपम् । विकरणव्यत्ययेन च श्ना]

आमिमिक्षुः समन्तात् सिञ्चन्ति सम्बध्नन्ति ६.२९.२. अभितः सिञ्चतः ६.२९.३. [आङ्+मिह सेचने (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'शल इगुपधात्०' इति च्लेः क्सः । छान्दसं द्वित्वम् । 'सिजभ्यस्तविदिभ्यश्चे' ति झेर्जुस्]

आमिश्लतमः समन्तादतिशयेन मिश्रितः (सोमः=ऐश्वर्ययोग ओषधिरसो) वा ६.२९.४. [आङ्+मिश्रपदयोः समासेऽतिशायने तमप् प्रत्ययः । कपिलादित्वाद् रेफस्य लकारः । मिश्रः=मेशति शब्दयतीति विग्रहे, मिश शब्दे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् रक् प्रत्ययः]

आमिषि मांसे ६.४६.१४. [अमन्ति=रोगिणो भवन्ति येनेति विग्रहे, अम रोगे (चुरा०) धातोः 'अमेर्दीर्घश्च' उ० १.४६. सूत्रेण टिषच् प्रत्ययो धातोरकारस्य च दीर्घः]

आमुरः समन्ताद् रोगकारिणः (जनाः) ४.३१.९. [आङ्+अम रोगे (चुरा०) धातोर्बाहुलकाद् उरच् प्रत्ययः]

आमुष्य चोरयित्वा ३.४८.४. [आङ्+मुष स्तेये (क्र्या०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

आमेन्यस्य समन्तान्मेयस्य (रजसः=लोकस्य) ५.४८.१. [आङ्+मा माने (अदा०) धातोः कृत्यार्थे केन्यः प्रत्ययः]

आमेम्याने पुनः पुनर्हिंसन्त्यौ (द्यावाक्षामा=प्रकाशभूमी) १.९६.५. [आङ्+मीञ् हिंसायां (क्र्या०) धातोर्यङि शानचि टापि च रूपम्]

आयच्छ अभितो ददाति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च ४.९. **आयच्छत**=समन्ताद् गृह्णीत ४.५१.१०. **आयच्छतम्** समन्ताद् विस्तारयतः, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.१७.८. **आयच्छतु**=निगृह्णातु ४.३२.१५. **आयच्छन्तु** अभितो निगृह्णन्तु १.१३०.२. [आङ्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'इषुगमियमां छः' इति छकारादेशः]

आयच्छद्भ्यः समन्ताद् निगृहीतृभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२२. [आङ्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः शतृ । 'इषुगमियमां छ' इति छकारादेशः]

आयक्षत् समन्तात् सङ्गच्छेत्पूजयेद्वा ५.१३.३. **आयक्षि**=अभितः सङ्गमयेत् १.१०५.१३. **आयज**=समन्ताद् गमय १.१८८.९. **आयजताम्**=समन्ताद् गृह्णातु २१.४७. **आऽयजन्त**=समन्तात् सङ्गच्छन्ते ४.४२.८. आभिमुख्येन ददतु १.१२१.५. **आयजन्ते**=समन्तात् सङ्गच्छन्ते ३.४.२. **आयजसे**=समन्तात् सुखं ददते १.९४.२. **आयजस्व**=समन्ताद् यजस्व ७.४. अभितो देहि ३.१.१२. [आङ्+यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लेट् । सिब्बहुलं लेटि' इति सिब्विकरणः । अन्यत्र लोटि लटि च रूपाणि]

आयजाते समन्ताद् यजेत सङ्गच्छेत ६.७०.११. आयजेत ३.५३.११. [आङ्+यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लेट् आडागमः]

आयजिष्ठः समन्तादतिशयितो यष्टा (गोपाः=गवां पाता जनः) २.९.६. [आङ्+यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोस्तृच् कर्त्तरि । ततोऽतिशायन इष्ठन्प्रत्यये 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

आयजी समन्ताद् यज्यन्ते सङ्गम्यन्ते पदार्था याभ्यां तौ स्त्रीपुरुषौ, प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिकः करणकारके इः प्रत्ययः १.२८.७. [आङ् पूर्वाद् यजदेवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् इः प्रत्ययः]

आयत् प्राप्नुवत् (विश्वं=सर्वं जगत्) ३.५५.८.

आयताम्=आगच्छताम्, आगच्छन्तीनां वा (मरुताम्=जनानाम्) १.१६६.७. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

आयत् समन्तात् प्राप्नुयात् २.३०.७. **आयथुः**=सर्वं राज्यं रक्षेथाम् १०.३४. **आयन्**=प्राप्नुवन्ति ६.७.४. मर्यादायामायान्तु ७.५.३. आगच्छन्ति प्राप्नुवन्ति ७.५६.१२. आप्नुवन्ति १.१६३.९. प्राप्नुयुः ३.३३.७. प्राप्नुवन्तु १७.५६. आगच्छन्ति २७.२५. **आयन्ति**=समन्तात्प्राप्नुवन्ति ३.३१.१४. **आयन्तु**=समन्तात्प्राप्नुवन्तु १.८९.१. आगच्छन्तु १९.५८. **आयम्**=आगच्छेयं प्राप्नुयाम् १.१२५.३. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङि लटि लोटि च रूपाणि]

आयय आयाय ५.६१.१. आगच्छत १.१६८.६. **आययुः**=समन्ताज्जानीयुः प्राप्नुयुर्वा ५.५३.३. समन्तात् प्राप्नुयुः २.५.५. **आयात**=अभितो गच्छत १.८८.१. समन्तात्प्राप्नुत १.१७१.२. **आयातम्**=समन्तात्प्राप्नुतम् ३४.४७. अभितः प्राप्नुतम् ३३.८८. समन्ताद् गच्छतो गमयतो वा प्र०—अत्र व्यत्ययः, अन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.३.३. समन्तात्प्राप्नुतम् ३३.५८. समन्तात्प्राप्नुतः २.३९.५. अभितो गच्छतम् १.४७.२. आगच्छतम् १.१८४.६. **आयाताम्**=आगच्छताम् ७.४८.१. **आयाति**=समन्तात् प्राप्नोति ३४.३१. समन्ताद् गच्छति ३३.४३. **आयातु**=आगच्छतु २०.४७. समन्ताद् गच्छतु ५.४५.९. समन्तात् प्राप्नोतु ४.४८.५. **आयासत्**=समन्ताद् यायात् २०.४८. समन्तात्प्राप्नुयात् ४.२०.१. **आयासि**=समन्ताद् याति, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः १.१२.४. **आयासिष्टम्**=आयातम् १.११९.४. **आयासीष्ट**=समन्तात् प्राप्नुयात्, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.१६५.१५. **आयाहि**=समन्तात्प्राप्नुयाः १.१०१.८. समन्तात्प्राप्तो भव भवति वा, अ०—कृपया प्राप्नुहि प्राप्नोति वा १.३.४. तू प्राप्त हो आर्याभि० १.७. आगच्छ ५.४०.१. समन्तात्प्राप्नुहि ४.१६.१०. आभिमुख्यतयाऽऽगच्छ १.१७७.२. समन्ताद् गच्छ १.१३४.१. समन्ताद् याति समन्तात्प्रापयति, अ०—समन्तात्प्राप्नोति १.३.६. आगच्छ आगच्छति वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः १.२.१. समन्ताद् यजामि सङ्गमयामि वा, प्र०—अत्र लडर्थे लुङडभावश्च १.१४.१. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लङि लटि लेटि लुङि च रूपाणि]

आयत समन्ताद्धन्ति, प्र०—अत्र 'यमो गन्धने' अ० १.२.१५. इत्यनेन सिचः कित्वम् १.८०.१२. [आङ्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'आङो यमहनः' अ० १.३. इत्यात्मनेपदम् । 'यमो गन्धने' इति सिचः कित्वादनुनासिकलोपः]

आयतने आयन्ति आगच्छन्ति प्राणिनो यस्मिँस्तज्जगत्तस्मिन् जगति स्थाने यज्ञे वा ५.२८. [मनो वाऽआयतनम् श० १४.९.२.५]

आयता विस्तृतानि (धनानि) ५.४४.९. [आङ्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

आयतिः समन्ताद् विस्तृतिः १.१३९.९. [आङ्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तिन् । प्राणो वा आयतिः गो० उ० २.३]

आयती समन्तात् प्राप्यमाणा (औषधी) १.१९१.२. **आयतीनाम्**=आगामिनीनामुषसाम् १.११३.८. आगच्छन्तीनाम् (उषसाम्) १.१२४.२. **आयतीम्**=प्राप्नुवतीम् (उषासं=प्रभातम्) १५.२४. आगच्छन्तीम् (उषसं=प्रातर्वेलाम्) ३.६१.६. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः शत्रन्तात् स्त्रियां ङीपि रूपम् । (आयती) वाहुनाम निघं० २.४]

आयते समीपं प्राप्नुवते (जिज्ञासवे जनाय) २.१३.४. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ प्रत्ययः]

आयत्याः पश्चाद्भवाः (उषसः=प्रभाताः) ५.४५.१. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतरि ङीपि रूपम्]

आयनाय समन्ताद् विज्ञानाय २२.७. [आङ्+अय गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

आयन्तम् प्राप्नुवन्तम् (अग्निं=विद्युतम्) ११.४७. आगच्छन्तम् (शिष्यम्) १.१२५.२. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'इणो यण्' इति यणादेशः]

आयमत् समन्तादुपरमेत १२.११५. **आयमति**=अभितो यच्छेत्, प्र०—अत्र लेटि 'बहुलं छन्दसि' इति शबभावः १.१४१.११. [आङ् +यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लङ् लट् च]

आयवः ये स्वकर्मफलानि यान्ति ते मनुष्याः, प्र०—आयव इति मनुष्यनाम निघं० २.३, ३३.९७. विद्वांसः १.१३०.६. प्राप्नुवन्तः (जनाः) १.१३९.३. ये सूर्यमभितो यन्ति ते लोकाः १.१३१.२. ये पुरुषार्थं यन्ति ते मनुष्याः १.१३१.२. विद्वज्जनाः १.१३०.६. ज्ञानवन्तो मनुष्याः ४.७.४. ये सत्यं यन्ति ते मनुष्याः प्रजाः ३३.२८. प्राप्तसत्यासत्यविवेचनाः (मानुषासः=मनुष्याः) १.६०.३.

[आङ्+या प्रापणे (अदा०) धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' इति डुः प्रत्ययः]

आयवसस्य पूर्णसामग्रीकस्य (राज्ञः) १.१२२.१५. [आङ्-यवस-पदयोर्बहुव्रीहिः]

आयवे गमनाय २.२.८. प्रायणाय १.१४०.८. विज्ञानाय १.३१.११. [इण् गतौ (अदा०) धातोः 'छन्दसीणः' उ० १.२. सूत्रेण उः प्रत्ययः]

आयसम् अयोनिर्मितम् (वज्रम्) १.५२.८. अयोमयम् (वज्रम्) १.८१.४. अयोनिर्मितं शस्त्राऽस्त्रादिकम् १.१२१.९. **आयसः**=विज्ञानात् १.५६.३. अयसा निष्पन्नस्तेजोमयो वा (वज्रः) १.८०.१२. [अयः=हिरण्यनाम निघं० १.२. अयस्प्राति० विकारार्थेऽण् प्रत्ययः]

आयसी अयोमयी दृढा (पूः=नगरी) ७.१५.१४. **आयसीभिः**=अयसः सुवर्णनिर्मितान्याभूषणानीवेश्वरेण रचिताभिः (पूर्भिः=अन्नादिक्रियाभिः) १.५८.८. अयसा निर्मिताभिः (पूर्भिः=नगरीभिः) ७.३.७. **आयसीम्**=अयोविकाराम् (शस्त्राऽस्त्ररूपाम्) १.११६.१५. **आयसीः**=सुवर्णमयीर्लोहमयीर्वा (पुरः=नगर्य्यः) ४.२७.१. सुवर्णलोहनिर्मिताः (पुरः=नगर्य्यः) २.२०.८. [अयः+हिरण्यनाम निघं० १.२. ततोऽवयवविकारयोऽर्थयोरण् प्रत्ययः। स्त्रियां 'टिड्ढाण्०' इति ङीप्]

आयामयन्ति समन्तात् नियमयन्ति २५.३९. [आङ्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्णिचि लटि च रूपम्]

आयासाय समन्तात् प्रापणाय, भा०—पुरुषार्थसिद्धये ३९.११. [आङ्+यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः]

आयुक्त समन्ताद् युक्तो भवति ५.१७.३. [आङ्+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

आयुञ्जाथाम् समन्ताद् युज्येते ऋ० भू० १९७. [आङ्+युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लङि मध्यमद्विवचनम्]

आयुधम् समन्ताद् युध्यन्ति येन तत् (शस्त्रम्) ३.४४.४. असिभुशुण्डीशतघ्न्यादिकम् १६.५१. भुशुण्डिशतघ्न्यसिधनुर्बाणशक्तिपट्टपाशादि २९.४५. आयुध्यन्ति येन तत् (किरणवत्तीव्रस्वभावं शस्त्रम्) ५.६३.४. **आयुधा**=आयुधानि ५.२.३. शस्त्राऽस्त्राणि ५.५७.८. आग्नेयाऽस्त्रादीनि ऋ० भू० १५१. आग्नेयादि अस्त्र और शतघ्नी (तोप), भुशुण्डी (बन्दूक), बाण, करवाल (तलवार) आदि शस्त्र स० प्र० १८४, १.३९.२. **आयुधानि**=समन्ताद्युध्यन्ते यैस्तानि १७.४२. शतघ्नीभुशुण्ड्यादीनि शस्त्राणि आग्नेयादीन्यस्त्राणि वा १.६१.१३. **आयुधेभिः**=युद्धसाधनैः (शस्त्राऽस्त्रैः) ७.२१.४. [आङ्+युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोः 'घञर्थे कविधानं स्थास्नापाव्याधिहनियुध्यर्थम्' अ० ३.३.५८. वार्त्तिकेन कः। आयुधमायोधनात् नि० १०.६. आयुधा=आयुधानि नि० १०.३०.]

आयुधानीव यथा वीरैर्युद्धविद्यया प्रक्षिप्तानि शस्त्राणि गच्छन्त्यागच्छन्ति तथा १.९२.१. [व्युत्पत्तिः पूर्वपदे द्रष्टव्या। आयुधानि=उदकनाम निघं० १.१२.]

आयुधाय यः समन्ताद् युध्यते तस्मै (सभेशाय), प्र०—अत्र 'इगुपध०' इति कः प्रत्ययः १६.१४. [युध संप्रहारे (दिवा०)+कः। आङ्-युधपदयोः समासः]

आयुधिने ये शतघ्न्यादिभिः समन्ताद् युध्यन्ते ते प्रशस्ता विद्यन्ते यस्य तस्मै (राजपुरुषाय) १६.३६. [आयुधो व्याख्यातः। ततो मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

आयुनक् शिल्पकार्ये नियुञ्जीत १.१६३.२. [आङ्+युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लङ्]

आयुना जीवनेन प्रापकत्वेन वा ५.९. **आयुभिः**=जीवनैः ५.६०.८. **आयुम्**=यन्तं गच्छन्तं (सभेशम्) १.३१.११. य एति प्राप्नोति तम् (जीवनम्) १.५३.१०. **आयुषः**=जीवनस्य १२.६५. नियतवर्षाज्जीवनात् ११.४६. **आयुषा**=चिरञ्जीवनेन १२.७. अन्नेन १२.९. जीवनेन ७.१.२४. **आयुषि**=प्राणधारणे २२.२. वयसि १६.१६. जीवनहेतौ भा०—युक्ताहारविहारेण शरीरारोग्यसन्ताने १७.९९. जीवननिमित्ते प्राणे ४.५८.११. **आयुषु**=बाल्याद्यवस्थासु १.५८.३. **आयुषे**=पूर्णायुवर्धनेन सुखभोगाय १.२०. आयुर्भोगाय ३.६३. जीवनाय १४.२१. वृद्धये, उन्नत्यै ७.२३. वर्द्धनाय ७.२२. जीवन के लिए सं० वि० १९०, अथर्व० १९.४०.३. **आयुः**=जीवनं ज्ञानं वा १.९४.१६. विद्याधर्मोपयोजकं जीवनम् १.९६.८. चिरञ्जीवनम् १.११६.१९. जीवनहेत्वन्नम् प्र०—आयुरित्यन्ननामसु पठितम् निघं० २.७, १.११३.१७. जीवनप्रदमन्नम् ३७.१२. जीवनं तन्निमित्तं वा ५.१७. एति जीवनं येन तत् ५.२. उमर आर्याभि० २.१३, १८.२९. ज्ञाता (इन्द्रः=मेधावी जनः) १.१६२.१. आयु को सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.६४. प्राणधारणम् १.१२५.६. जीवनं प्राप्तव्यं वस्तु वा १.७३.५. जीवनं विज्ञानं वा २१.२. वयः १.२४.११. **आयूंषि**=अन्नादीनि जीवनानि वा ३५.१६. **आयोः**=न्यायाऽनुगामिनो दीर्घजीवितस्य

१५.६३. विदुषः १.१४७.१. प्रापकस्य (सज्जनस्य) १.१७४.६. जीवनस्य ५.४६.१. सनातनात् कारणात् १.६६.२. प्राप्तव्यस्य (वस्वः=धनस्य) २.२०.४. प्राप्तुं योग्यस्य (मेवस्य) प्र०—'छन्दसीणः' उ० १.२, १.१०४.४. प्राप्तस्य (अग्नेः) २.४.२. आयुषः ४.३८.४. **आयौ**= जीवनविषये १.११४.८. [इण् गतौ (अदा०) धातोः 'छन्दसीणः' उ० १.२. सूत्रेण उण् प्रत्ययः। एति प्राप्नोति सर्वानित्यायुर्जीवनकालः। अथवा इण् धातोः 'एतेर्णिच्च' उ० २.११८. सूत्रेण उसिः प्रत्ययः। णिद्वद्भावाद् वृद्धिश्च। आयुस् अन्ननाम निघं० २.७. आयुश्च वायुरयनः नि० ९.३. आयोरयनस्य मनुष्यस्य ज्योतिषो वोदकस्य वा नि० १०.४०., ११.४९. आयुः (एकाहः)—आयुषा वै देवा असुरानायुवतायुते भ्रातृव्यं य एवं वेद तां० १६.३.२. आयुः उर्वशी वा ऽप्सराः पुरूरवापतिरथ यत्तस्मान्मिथुनादजायत तदायुः श० ३.४.१.२२. वरुण एवायुः श० ४.१.४.१०. अग्निर्वा ऽआयुः श० ६.७.३.७. अग्निर्वा ऽआयुष्मानायुष ईष्टे श० १३.८.४.८. संवत्सरः आयुः श० ४.१.४.१०. यज्ञो वा आयुः तां० ६.४.४. असौ लोकः (द्युलोकः) आयुः ऐ० ४.१५. असावुत्तमः (लोकः=स्वर्लोकः) आयुः (स्तोमः) तां० ४.१.७. अन्नमु वा ऽआयुः श० ९.२.३.१६. आयुर्वा उद्गाता। आयुः क्षतसंग्रहीतारः तै० ३.८.५.४. प्राणो वा आयुः ऐ० २.३८. यो वै प्राणः स आयुः श० ५.२.४.१०. आयुर्वा उष्णिक् ऐ० १.५. स यो हैवं विद्वान्त्सायम्प्रातराशी भवति सर्वꣳ हैवायुरेति श० २.४.२.६. य एवं विद्वान्त्स्यान्न मृण्मये भुञ्जीत। तथा हास्यायुर्न रिष्येत तेजश्च आ० १.१. आयुर्वै विकर्णी (इष्टका) श० ८.७.३.११. आयुर्वै सहस्रम् तै० ३.८.१५.३. विदेदग्निर्नभो नामाग्ने ऽअङ्गिर आयुना नाम्नेत्याह (यजु० ५.९.) श० ३.५.१.३२. अमृतमायुर्हिरण्यम् श० ३.८.२.२७. आयुर्हि हिरण्यम् श० ४.३.४.२४. आयुर्वै हिरण्यम् तै० १.८.९.१. यद्धिरण्यं ददाति आयुस्तेन वर्षीयः कुरुते गो० उ० ३.१९.]

आयुनि प्राप्ते (स्वापत्ये=स्वकीये सन्ताने) ३.३.७. [आयु-व्याख्यातम्। तस्य सप्तम्येकवचने रूपम्]

आयुयुञ्जे समन्ताद् युञ्जते ५.५८.७. [आङ्+युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लिट्]

आयुयुवे समन्ताद् बध्नाति १.१३८.१. **आयुवते**= समन्तायुवते बध्नाति प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शः १.१०५.२. [आङ्+युञ् बन्धने (क्र्या०) धातोर्लिट्। अपरत्र-लट्। विकरणव्यत्ययेन शः]

आयुर्दाः आयुःप्रदः (परमेश्वरः), अन्व०—आयुर्निमित्तम् ३.१७. आयु उमर बढ़ाने वाले (परमेश्वर) आर्याभि० २.३३. [आयुष्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः प्रत्ययः]

आयुर्युधः ये आयुषा सह युध्यन्ते (अ०—भृत्याः, भा०—जीवनादिरक्षका वायवः) १६.६०. [आयुष्युपपदे युध सम्प्रहारे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः]

आयुवः प्राप्ताः (धेनवः=गावः) २.५.५. समन्तात् संयोजका वियोजकाश्च (मरीचयः=किरणाः) १८.३९. [आङ्+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोरच् प्रत्ययः। 'तन्वादीनां छन्दसि बहुलम्' अ० ६.४.७७. वार्त्तिकेन उवङ्]

आयुष्पाः य आयुः पाति सः (आप्तो विद्वज्जनः) २२.१. [आयुषि-उपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः। छान्दसत्वादाकारलोपो न भवति]

आयुष्मान् बह्वायुर्विद्यते यस्य सः (राजा) ३५.१७. [आयुष्प्राति० मतुप् प्रत्ययो भूम्नि। 'तसौ मत्वर्थे' अ० १.४.१९. सूत्रेण भत्वात् पदकार्यं न भवति]

आयुष्यम् आयुषे जीवनाय हितम् (हिरण्यं=तेजो सुवर्णादिकम्) ३४.५०. [आयुर्व्याख्यातम्। ततो हितार्थे यत्]

आयूय सम्मेल्य २.३७.३. [आङ्+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

आये यत्समन्तादाप्यते तस्मिन् (सङ्गथे=सङ्ग्रामे) २.३८.१०. [आङ्पूर्वाद् इण् गतौ (अदा०) धातोः 'एरच्' इत्यच् प्रत्ययः]

आयेजे समन्ताद् याजयति १.११४.२. स्वप्रजा को सङ्गत और अनेक विध ताड़न करता है आर्याभि० १.४५. [आङ्=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्]

आयेमिरे समन्ताद् विस्तृणन्ति ३.६.८. [आङ्+यम उपरमे (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'आङो यमहनः' इत्यात्मनेपदम्]

आयेषम् समन्तात् प्रयतेयम् २.२७.१६.

आयै एतुं गन्तुम् २.१८.३. [आङ्+या प्रापणे (भ्वा०) धातोश्छन्दसि कैः प्रत्ययस्तुमर्थे]

आयोत्सि अभिमुखं युध्यसे, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्यनभावः १.१३२.४. [आङ्+युध सम्प्र-

हारे (दिवा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसि' इति श्यनो लुक् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

आयोयुवानः समन्ताद् भृशं मिश्रयिता विभाजको वा (अग्निः=परमात्मा) ४.१.११. [आङ्+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्यङि शानचि च रूपम्]

आर अभितो गच्छति ३.३०.१०. **आरत्**=समन्तात् प्राप्नोति १७.८९. **आरत**=समन्ताद् गच्छन्तु १.४.५. प्राप्नुत, प्र०—अत्र लोडर्थे लङ् १.३९.५. **आरन्**=समन्तात्प्राप्नुयुः ५.३१.१३. आचरन्तु १.१२५.७. प्रापयति १.४९.३. **आरुः**=समन्ताद् गच्छेयुः ३.७.१. सर्वतः प्राप्नुवन्तु ३.१.४. [आङ्+ऋ गतौ (जु०) धातोर्लिटि, लुङि च रूपाणि । लुङि 'सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्चे' त्यङ् । 'ऋदृशोऽङि' इति गुणः]

आरजः लोक-लोकाऽन्तरम् ४.४५.२. [रजसी द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०. रञ्ज रागे (भ्वा०) धातोः 'भूरञ्जिभ्यां कित्' उ० ४.२१७. सूत्रेण असुन् प्रत्ययः]

आर्जीकात् सरलता से सं० वि० १९५, ९.११३.२. [ऋजीकं सरलम्, ततः प्रभवत्यर्थेऽण् प्रत्ययः]

आरणे सर्वतो युद्धभावे १.११२.६. [आङ्-रण-पदयोः समासः । रणः संग्रामनाम निघं० २.१७]

आरण्यम् जङ्गलोत्पन्नम् (शरभं=शल्यकम्) १३.५१. **आरण्यः**=अरण्ये भवः (पशुः=सिंहादिः) ६.६. **आरण्यानाम्**=वनानाम् १६.२०. **आरण्याः**=अरण्ये भवाः, भा०—वनस्थाः (सिंहादयः पशवः) ३१.६. [अरण्यप्राति० भवार्थेऽण् प्रत्ययः । ऋच्छन्ति गृहाद् गच्छन्ति यत्रेति विग्रहे 'ऋ गतिप्रापणयोः' (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेर्निच्च' उ० ३.१०२. सूत्रेणान्यः प्रत्ययः]

आरपन्ती व्यक्तशब्दं वदन्ती (सा=बुद्धिः) २२.२. [आङ्+रप व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

आरभम् आरब्धुम् ५.३४.५. [आङ्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्णमुल् । 'रभेशब्लिटोः' अ० ७.१.६३ सूत्रेण प्राप्तो नुमपि न भवति, आगमशासनस्यानित्यत्वात्]

आरभस्व आरम्भ कर सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. **आरभे**=समन्तात् कुर्वे, अ०—नित्यं कुर्वे ४.६. समन्तादारम्भं कुर्वे ४.९. [आङ्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आरभे आरब्धुम् १.१८२.७. आरब्धव्ये व्यवहारे प्र०—अत्र 'कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः' अ० ३.४.१४. अनेन रभधातो केन्प्रत्ययः १.२४.५. आरब्धव्ये गमनागमने १.४.२. [आङ्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोः कृत्यार्थे केन् प्रत्ययः]

आरभ्य त्वत्सामर्थ्यमाश्रित्य १.५७.४. [आङ्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोः क्त्वा । क्त्वो ल्यप् समासे]

आरम्भणम् आरभते यस्मात्तत् १७.१८. [आङ्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर् अपादाने ल्युट् । 'रभेरशब्लिटोः' अ० ७.१.६३. सूत्रेण नुम्]

आरया प्रतोदेन ६.५३.५. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः आरा शस्त्रिकायामिति भिदादिपाठाद् अङ् वृद्धिश्च]

आरात् निकटात् १९.८४. दूरात् समीपाद्वा १.१६३.६. निकटे २९.१७. [आरादिति दूरसमीपयोरिति कोशः]

आरात्तात् दूरे ७.३२.१. दूरात् १.१६७.९.]

आराम् काष्ठविभाजिकाम् (राजनीतिम्) ६.५३.८. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'आरा शस्त्रिकायामि' ति भिदादिपाठात् स्त्रियाम् अङ्वृद्धिश्च]

आरारन्धि समन्ताद्रमस्व रमते वा, प्र०—अत्र रमधातोर्लोटि मध्यमैकवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपः स्थाने श्लुः, व्यत्ययेन परस्मैपदम् 'वाच्छन्दसि' इति हेः पित्वाद् 'अङितश्च' इति धिः १.९१.१३. यथावत् रमण करो आर्याभि० १.३७. [आङ्+रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आरास्व अभितो देहि ददाति वा ४.१६. [आङ्+रा दाने (अदा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

आरितः सभया विज्ञापितः (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्षः) १.१०१.४. समन्तात्प्राप्तः (शमादिगुणकर्मयुक्तो जनः) २.२१.३. [आङ्+ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् क्तः । 'सूचिसूत्रि' अ० ३.१.२२. वा० इति यङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति यङो लुक् । इडागमश्छान्दसः । प्रत्ययलक्षणेन द्वित्वे, अभ्यासस्य 'उरत्' इत्यत्वे रपरत्वे च, 'रुग्रिकौ च लुकि' इति रुगागमे' 'रो रि' इति पूर्वरेफस्य लोपे 'ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' अ० ६.३.१०९ इति दीर्घे रूपम् । आरितः प्रत्यृतः नि० ५.१६.]

आरिशामहे समन्तात् प्राप्नुयाम, प्र०—अत्र 'लिश गतौ' इत्यस्य वर्णव्यत्ययेन लस्य स्थाने रेफादेशः १.१८७.८. [आङ्+लिश गतौ (तुदा०)धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । वर्णव्यत्ययेन लस्य रेफादेशः]

आरीरिषः समन्ताद् हिंस्याः १.१०४.६. [आङ्+रिष

हिंसार्थे (भ्वा०)धातोर्यङ्लुगन्ताल् लोटि छान्दसं रूपम्]

आरीः ज्ञानवत्यः (प्रजाः), प्र०—अत्र ऋधातोः 'सर्वधातुभ्य इन्' इतीन् प्रत्ययः 'कृदिकारादक्तिनः इति ङीष्, पूर्वसवर्णादेशश्च १.७७.३. समन्तादाप्तुं योग्याः (विशः=प्रजाः) १.९६.३.]

आरीः प्राप्त होवो आर्याभि० १.४०, ऋ १.७.३.३. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

आरुचयन्त रुचिमाचक्षते ३.६.७. [आङ्-रुचिपदयोः समासे 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिजन्ताल् लङ्, शतरि वा रूपम्]

आरुजत्नुभिः समन्ताद् भञ्जद्भिः (वह्निभिः=मरुद्भिः) प्र०—अत्राऽऽङ्पूर्वाद् 'रुजो भङ्गे' इत्यस्माद्धातोरौणादिकः क्त्नुः प्रत्ययः १.६.५.

आरुजः यः समन्ताद् रुजति भनक्ति (इन्द्रः=सूर्यः) ३.४५.२. समन्ताद् रोगयुक्ताः (पुरः=नगरीः) ४.३२.१०. **आरुजे**=समन्ताद् रोगाय ४.३१.२. दुःखभञ्जकाय जीवाय ३६.५. [आङ्+रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

आरुणीषु गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति सुखानि यैस्तान्यरुणानि यानानि तेषामिमाः क्रियास्तासु १.६४.७. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेश्च' उ० ३.६०. सूत्रेण उनन् प्रत्ययेऽरुणः। ततः 'तस्येदमि' त्यण्प्रत्यये स्त्रियां ङीपि च रूपम्]

आरुन्धानः समन्ताच्छत्रून् निरुन्धानः (राज्याधिकारी जनः) ४.३८.४. [आङ्+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोः शानच्]

आरुपितम् आरूढम् (नक्षत्रम्) ४.५.७. [आङ्+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०)धातोर्णिजन्तात् क्तः। 'रुहः पोऽन्यतरस्याम् इति हकारस्य पकारः]

आरुरुचे समन्ताद्रोचते १७.१०. **आरुरोच**=समन्ताद् रोचते ४.५.१५. [आङ्+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लिट्। अन्यत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

आरुव समन्तात् शब्दविद्यां प्रकाशय १.१०.४. [आङ्+रु शब्दे (अदा०)धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शः]

आऽरुहत् आरोहति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ्, विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने शः १.१०.२. समन्ताद्रोहेत् १.५१.२. **आरुहन्ति**=समन्ताद् रुहन्ति १७.६८. **आऽरुहम्**=समन्ताद् रोहेयम् १७.६७. **आरुहेम**=अधितिष्ठेम २१.६. [आङ्+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन शः]

आरे समीपे दूरे वा ७.३२.१. दूरे समीपे च १.११४.१०. दूरे ७.५६.१७. [आरे दूरनाम निघं० ३.२६.]

आरे अघाम् आरे दूरेऽघं पापं यस्याम् (स्वस्ति=सुखं) ६.५६.६. **आरे अघाः**=आरे दूरेऽघानि पापानि यासान्ताः (इषः=अन्नादिसामग्रीः) ६.१.१२. [आरे-अघपदयोः समासः। आरे=दूर नाम निघं० ३.२६. अघम्=आङ्+हन हिंसागत्योः धातोर्डः प्रत्ययः। अघं हन्तेर्निर्ह्रसितोपसर्ग आहन्तीति नि० ६.११]

आरैक् समन्ताद् व्यतिरिणक्ति १.११३.१. अभिमुखमृणक्ति ३.३१.२. [आङ्+रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लुङ्। छान्दसत्वाल्लेर्लुक्। आरैक् अरिचत् नि० २.१९. आरैक्=प्रारिचत् नि० ३.६.]

आरोचते समन्तात् प्रकाशते ४.११.१. **आरोचथाः**=समन्तात् प्रदीपयति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लङ् ३.१४. [आङ्+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लङ् रोचते ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६]

आरोधनम् सर्वतो निरोधनम् ४.८.२. समन्तान्निरोधकम् (अग्निं=विद्युदग्निम्) ४.८.४. **आरोधनानि**=समन्तान्निग्रहणानि ४.७.८. [आङ्+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोर्ल्युट्]

आरोह सर्वतः प्रसिद्धो भव १०.१०. अ०—शत्रून् विजयस्व १०.११. समन्तादुन्नतिं गमय गमयति वा, अ०—समन्ताद् रोहति ३.१४. समन्ताद् दर्शयसि दर्शयति वा ४.३२. सब ओर से तू चढ़ सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.३१. **आरोहसे**=समन्ताद् रोहसे १.५१.१२. [आङ्+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्]

आरोहणम् आरोहन्ति येन तत् १.५२.६. [आङ्+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः करणे ल्युट्]

आरोहन् समारूढः सन् जगत्यारोहणं कुर्वन् वा १.५०.११. **आरोहन्तम्**=आरोहणं कुर्वन्तम् (मेघम्) २.१२.१२. [आङ्+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

आऽरोहयत् उपरि स्थापितवान् १.७.३. **आरोहयः**=समन्ताद्रोहयसि १.५१.४. [आङ्+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

आऽर्चत् समन्तात् सत्कुर्यात् ५.३३.६. आऽर्चत=समन्तात् सत्कुरुत ५.५४.१. **आऽर्चति**=समन्तात्

समर्पयति १.६.१०. **आऽर्चन्**=सर्वतः सत्कुर्य्युः ५.२९.२. अभितोऽर्चन्तु १.५२.१५. [आङ्+अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ् । अन्यत्र लडपि]

आर्चत्कस्य समन्तादर्चतः सत्कुर्वतः शिष्टस्याऽनुकम्पकस्य (शत्रुनाशकस्य जनस्य) प्र०—अत्राऽर्चधातोर्बाहुलकादौणादिकोऽतिः प्रत्ययस्ततोऽनुकम्पायां कः प्रत्ययः १.११६.२२. [आङ्+अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽतिः प्रत्ययः । ततोऽनुकम्पायां कः प्रत्ययः]

आऽर्चन् समन्तात् सत्कुर्वन् (विद्वज्जनः) ५.४५.७. [आङ्+अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

आर्जुनेयम् अर्जुनेन रूपेण निर्वृत्तम् (कुत्सं=वज्रम्) प्र०—अत्र चातुरर्थको ढक् १.११२.२३. अर्जुनेन ऋजुना विदुषा निष्पादितमिव (कुत्सं=वज्रम्) ४.२६.१. **आर्जुनेयाय**=अर्जुन्याः सुरूपवत्या विदुष्यः पुत्राय ७.१९.२. [अर्जुनः=अर्जने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् 'अर्जेर्णिलुक् च' उ० ३.५८. सूत्रेण उनन् णेर्लुक् च । ततो निर्वृत्तार्थे ढक्, ढस्यैयादेशश्च । अन्यत्र अर्जुनीप्राति० अपत्यार्थे ढक्]

आर्त्त समन्तात् प्राप्नोति ७.३४.७. समन्तात्प्रापय ४.१.१७. अभिमुखं प्राप्नुत ५.५२ ६. सर्वतः प्राप्नुयाः ४.१.१२. [आङ्+ऋत गतौ सौत्रो धातुः, ततो लङ् । छान्दसत्वादीयङ् प्रत्ययो न]

आर्त्तनासु या आर्त्तयन्ति सत्ययन्ति तासु (वाणीषु) १.१२०.६. [ऋतुप्राति० 'तत्करोति०' इति णिचि 'ण्यासश्रन्थो युच्' इति युचि रूपम्]

आर्त्तवाः ऋतुषु भवा गुणाः १४.२९. **आर्त्तवेभ्यः**=ऋतुजातेभ्यः (पदार्थेभ्यः) २२.२८. [ऋतुप्राति० भवार्थे जातार्थे वा अण्प्रत्ययः । अथवा तदस्य प्राप्तमित्यस्मिन्नर्थे ऋतुप्राति० 'ऋतोरण्' अ० ५.१.१०५. सूत्रेणाण्]

आर्त्नी प्राप्यमाणे (धनुर्ज्ये) २९.४१. गच्छन्त्यौ (योषा=पत्न्यौ) ६.७५.४१. आर्त्न्योः=पूर्वाऽपरयोः (कोटचोः) १६.९. ['आर्त्नी' इति देवतापदं सांग्रामिकोपकरणरूपं द्विवचनम् । आर्त्नी अर्त्तन्यौ वारण्यौ वारिषण्यौ वा नि० ९.३९. 'ऋत' गतौ सौत्रो धातुः, 'ऋतेरीयङ्' इति, ततो ल्युट् कर्त्तरि अर्त्तनम् । स्त्रियां ङीपि अर्त्तनी । अर्त्तनी शब्दस्येव द्विवचने 'आर्त्नी' ति छान्दसं रूपम्]

आर्त्यै कामपीडायै ३०.९. पीडानिर्वृत्तये ३०.१७. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः क्तिन् प्रत्ययः स्त्रियाम् । वृद्धिश्च भिदादिगणे पाठाद् भवति । अनार्त्यै त्वेत्येवैतदाह यदाह व्यथायै त्वेति (व्यथा आर्तिः) श० ५.४.३.७.]

आर्त्विज्या ऋत्विजां गुणप्रकाशकानि कर्माणि १.९४.६. [ऋत्विज्प्राति० भावकर्मणोः ष्यञ् प्रत्ययः । ऋत्विज्=ऋतूपपदे यजतेः क्विन्]

आऽर्दन् समन्ताद् हिंसन्ति ४.१७.२. [आङ्+अर्द हिंसायाम् (चुरा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शप् । अर्दतिवधकर्मा निघं० २.१९.]

आऽर्दयः आर्दयति नयति ६.१७.१२. [अर्द गतौ (भ्वा०) धातोर् णिजन्ताल् लुङ्]

आर्द्रदानुः य आर्द्राणां गुणानां दानुर्दाता सः (समुद्रः) १८.४५. [आर्द्रः=अर्द गतौ याचने च (भ्वा०) धातोः 'अर्देर्दीर्घश्च' उ० २.१८. सूत्रेण रक्, दानुः=डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'दाभाभ्यां नुः' उ० ३.२२. सूत्रेण नुः । तयोः समासः । आर्द्रदानुः एष (वायुः) ह्यार्द्रं ददाति श० ९.९.१.२९.]

आर्द्रस्य सपङ्कस्य सागरस्य १.११६.४. जलेन पूर्णस्य समुद्रस्य ऋ० भू० १९०. [अर्दति गच्छति याचते वा तद् आर्द्रमिति विग्रहे 'अर्द गतौ' धातोरौणादिको रक् प्रत्ययः]

आऽर्पिता स्थापितानि (भुवनानि) १.१६४.१४. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् क्तः । 'अर्तिह्री०' इति पुक् 'पुगन्तलघूपधस्ये' ति च गुणः]

आर्य्यम् आर्याणामर्याणां वा इदम् (सहः=बलम्) १.१०३.३. सकलशुभगुणकर्मस्वभावेषु वर्त्तमानम् (विद्यादातारं जनम्) १.१५६.५. उत्तमगुणकर्मस्वभावं धार्मिकं (सज्जनम्) ३.३४.९. **आर्य्यस्य**=उत्तमजनस्य ७.१८.७. **आर्य्यः**=धर्म्यगुणकर्मस्वभावः (दासः=सेवकः) ३३.८२. ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यवर्णः (राजा) ५.३४.६. **आर्य्या**=धर्मिष्ठानुत्तमान् जनान् ६.३३.३. **आर्यान्**=धार्मिकानाप्तान् विदुषः सर्वोपकारकान् मनुष्यान् १.५१.८. धार्मिक विद्वान् आप्त पुरुषों को स० प्र० ३०७, १.५१.८. विद्या, धर्मादि उत्कृष्टस्वभावाऽऽचरणयुक्त जनों को आर्याभि० १.१४. **आर्य्याय**=अर्य्यस्येश्वरस्य पुत्रवद्वर्त्तमानाय (सज्जनाय) १.११७.२१. सज्जनाय मनुष्याय ७.५.६. उत्तमगुणकर्मस्वभावाय (जनाय) १.५९.२. **आर्ये**=ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, द्विज में स० प्र० ३०८. **आर्य्येण**=उत्तमविद्या-धर्मसामर्थ्येन २.११.१९. **आर्य्याणि**=द्विजकुलानि ६.२२.१०. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्ण्यत् प्रत्ययः । अर्य-आर्यप्रातिपदिकयोर्वा 'तस्येदम्' इत्यण् । ऋ गतौ

धातोः 'अर्यः स्वामीवैश्ययोः' अ० ३.१.१०३. सूत्रेण यत्। अर्यः=ईश्वरनाम निघं० २.२२. आर्यः=ईश्वरपुत्रः नि० ६.२६]

आर्षेय ऋषिषु साधुस्तत्सम्बुद्धौ (पुरुष) प्र०—अत्र छान्दसो ढक् २१.६१. [ऋषिप्राति० 'तत्र साधुः' अर्थे छान्दसो ढक्। ढस्यैयादेशः]

आलाऽक्ता आलेन विषेण दिग्धा युक्ता (शूरवीरा राज्ञी) ६.७५.१५.

आव सर्वतो रक्ष २.११.११. **आवत्**=समन्ताद्रक्षेत् ३.३२.२. रक्षणादिकं कुर्यात् १.८५.७. समन्ताद्रक्षति प्रीणाति १.३६.१७. **आवत**=समन्तात्पालयत २०.७६. विजानीत १.६४.१३. **आवतम्**=अभिमुखं पालयतम् १.११२.२१. समन्तात्कामयतम् १.११२.१५. सर्वतो रक्षतम् १०.३३. रक्षणीयवेद्यादिगत्तं कुरुतम् ३३.१९. समन्ताद्विजानीतम् १.११२.१३. **आवतुः**=कामयेताम् १.१६१.१०. **आवथुः**=समन्ताद्रक्षताम्, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः २०.७७. सर्वतो रक्षेथाम् १०.३४. **आवन्**=प्रकर्षेण रक्षन्ति ३.३.१०. प्राप्नुयामः ४.४४.६. **आवम्**=रक्षयेयम् ४.२६.३. **आवः**=समन्तादवति अवेत् १३.३. समन्ताद्रक्षेः ७.१९.२. सर्वतो रक्ष ६.२६.४. समन्तात्प्रापय १.३३.१५. समन्ताद्रक्षति ५.७७.२. अभिमुखं रक्षेत्, प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् १.३३.१४. समन्ताद्रक्ष प्राप्नुहि वा १.३३.७. प्राणिनः सुखेन प्रवेशयेत् १.३३.१४. समन्तात् कामयस्व ७.१९.३. **आविथ**=समन्तादवति २.१३.९. सर्वतो रक्षसि १.५३.१०. अभिमुखं रक्ष १.५१.६. समन्ताद्रक्षेः १.१३१.५. अभितः पालय १.१३१.५. रक्षणादिकं करोषि १.५४.६. [आङ्+अव रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादानभागवृद्धिषु (भ्वा०) धातो लोटि लङि लिटि च रूपाणि]

आवक्षत् समन्ताद् वहेत् १.१५७.३. सर्वतः प्रापयेत् १७.६२. **आवक्षति**=समन्ताद् वहतु प्रापयतु वे० भा० न० १.१.२. कृपा से प्राप्त करो आर्याभि० १.४. **आवक्षन्**=समन्ताद् वहन्तु प्रापयन्तु १.१०४.२. **आवक्षि**=समन्तादावह ५.४३.१०. समन्तात्प्राप्नोषि प्रापयसि वा ५.२६.१. आवह ६.४७.९. समन्तात् प्रापय ३.७.९. समन्तादुपदिशसि १७.८. समन्ताद् वदसि ३.१४.२. सर्वथा उपदेश करो आर्याभि० १.५२. [आङ्+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लेट्। 'सिब् बहुलं लेटि' ति सिप्। आवक्षत्=आवहति नि० ९.४२.]

आवदत समन्तादुपदिशत १.६४.९. **आवदतः**=समन्तादुपदिशतः ५.१७. **आवदानि**=समन्तादुपदिशेयम् २६.२. मैं उपदेश करता हूँ स० प्र० ९७, २६.२. **आवदेम**=समन्तादुपदिशेम १.११७.२. [आङ्+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर् लोटि लटि लिङि च रूपाणि]

आवदन् समन्तादुपदिशन् (उपदेशको जनः) २.४३.३. समन्ताद् ब्रुवन् सन् (मनुष्यः) १.११.६. निरन्तर उपदेश करता हुआ (परमेश्वर) आर्याभि० १.५३. [आङ्+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

आवनसे सर्वतः सम्भजसि १.१४०.११. **आवनिषीष्ट**=समन्ताद् याचेत् १.१२७.७. **आवनेम**=आभिमुख्यतया संविभागेनातिष्ठेम १.७०.१. [आङ्+वन संभक्ता (भ्वा०) धातोर्लेटि लिङि च रूपाणि। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अथवा वनु याचने (तना०) धातो रूपाणि लटि व्यत्ययेन शप्]

आवनुथः समन्तात् कामयेथे, प्र०—वनोतीति कान्तिकर्मसु पठितम् निघं० २.६, ७.१७. [आङ् पूर्वात् वनोति कान्तिकर्मा (निघं० २.६.) धातोर्लेट्]

आवपतु समन्तात् स्थापयतु ३५.५. [आङ्+टुवप बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

आवपनम् समन्ताद् वपति यस्मिँस्तत् (क्षेत्रम्) २३.९. समन्ताद्वपन्ति यस्मिँस्तत् (भा०—सर्वबीजवपनार्थं क्षेत्रम्) २३.४६. समन्तात् सर्वाऽऽधारम् (उत्पत्तिस्थानम्) २३.४५. बीजारोपणादेरधिकरणम् क्षेत्रम् ऋ० भू० १४४. [आङ्+टुवप बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोः 'करणाधिकरणयोश्च' अ० ३.३.११७. सूत्रेणाधिकरणे ल्युट्। अयं वै (भू) लोक आवपनं महत् तै० ३.९.५.५.]

आवयत् समन्ताद् व्यापनुयात् २१.४५. [आङ्+वय गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङर्थे लेट्]

आऽवयन्ति समन्तादवगच्छन्ति ५.४१.१३. [आङ्+अव+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्। 'इणो यण्' इति यणादेशः]

आवयः अभितो विद्याः कामयमानाः (विद्वज्जनाः) १.१२७.८. समन्तात्प्राप्तविद्याः (विद्वज्जनाः) २५.२८. [आङ्पूर्वाद् वय गतौ (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः]

आवयाः येनाऽवयजन्ति सः (अध्वर्युः=अहिंसायज्ञ-

मिच्छुर्जनः) २५.२८. यः समन्ताद्यजति सङ्गच्छते सः (होतृजन) १.१६२.५. [आङ्+अव+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'अवे यजः' अ० ३.२.७२. सूत्रेण मन्त्रे ण्विन् प्रत्ययः। 'श्वेतवाहादीनां डस् पदस्य' अ० ३.२.७१. वा० सूत्रेण पदान्ते डसादेशे 'अत्वसन्तस्य चाधातोः' अ० ६.४.१४. सूत्रेण उपधाया दीर्घादेशे सस्य रुत्वे विसर्गादेशे च रूपम्। आवयाः=उदकनाम निघं० १.१२.]

आवरत् आवृणुयात् १.१४३.६. आवृणोति ३.५.१. निवारयति १.११३.१४. विवृणोतीव १.११३.४. **आवरते**=समन्तात् स्वीकरोति ६.२२.११. **आऽवः**=समन्ताद् वृणोति १.९२.४. [आङ्+वृञ् वरणे (स्वा०) वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोर्वा लङ्। विकरणव्यत्ययेन शप्। 'आवः' प्रयोगे लु्। 'मन्त्रे घसह्वर०' सूत्रेण लेर्लुक्]

आवरीवर्त्ति समन्ताद् भृशमावर्त्तते १.१६४.३१. समन्ताद् भृशमावृणोति समन्ताद्वर्त्तते वा ३७.१७. [आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्वा यङ्लुगन्ताल् लट्। अभ्यासस्य रीगागमः]

आवर्त्तयतु समन्तात् प्रवृत्तं कारयतु ४.२०. [आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट्]

आवर्जते समन्ताद् वर्जयति त्याजयति, प्र०—अत्राऽऽङ्पूर्वाद् वृजीधातोर्लट् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुङ् न, अन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.३३.१. [आङ्+वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेणादादित्वेऽपि शपो लुक् न भवति]

आवर्त्तयामसि समन्तात् प्रवर्त्तयामः १८.६८. आवर्त्तयामः ३.३७.१. [आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्। 'इदन्तो मसि' रिति मस इकारान्तत्वम्]

आवर्त्तयासि आवर्त्तयेः २३.७. [आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

आवर्द्धयन् समन्ताद्वर्द्धयन्ति २८.१३. **आऽवर्द्धयः**=आ=समन्ताद्वर्धयति २.११.१५. [आङ्+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

आववक्षे आभिमुख्येन वक्षति रोषं सङ्घातं करोति १.६१.९. [आङ्पूर्वाद् वक्ष रोषे (भ्वा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

आववर्त समन्ताद् वर्त्तते, प्र०—अत्र शपः स्थाने श्लुस्तस्य स्थाने तप् च १.१६५.२. **आववर्त्तत्**=समन्ताद्वर्त्तते ६.६.६८.१. **आववर्त्तति**=भृशं वर्त्तते ५.७३.७. [आङ्पूर्वाद् वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातो रूपाणि। 'बहुलं छन्दसी' ति साभ्यासत्वम्]

आऽववर्त्तत् आवर्त्तयेत् ४.२४.१. समन्ताद्वर्त्तयते २.३४.१४. **आववृतीय**=समन्ताद्वर्त्तयामि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति साऽभ्यासत्वम् १.१८०.५. [आङ्पूर्वाद् वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति साभ्यासत्वम्]

आववृतन् आवर्त्तन्ते ५.६१.१६. **आववृत्यात्**=आवर्त्तताम् प्र०—अत्र वृतु धातोर्लिङि विकरणात्मनेपदं व्यत्ययेन श्लुर्द्वित्वं च ३३.६८. **आववृत्याम्**=आवर्त्तयेयम् प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं, 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः ३.३२.१३. **आववृत्याम**=आवर्त्तयेम ७.२७.५. आववृत्याः=समन्ताद्वर्त्तेथाः १.१७३.१३. समन्तात् प्रवर्त्तयेः ६.५०.९. आभिमुख्येन प्रवर्त्तय ७.४२.३. **आववृत्स्व**=समन्ताद्वर्त्तस्व ४.१.२. [आङ्पूर्वाद् वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातो रूपाणि। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

आवव्ने सर्वतः सम्भजति ५.७४.७. [आङ्पूर्वाद् वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट्। अकारलोपश्छान्दसः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

आवश्मि समन्तात् कामये ३.५१.१४. **आवष्टि**=आभिमुख्येन कामयते ४.२२.१. [आङ्+वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लट्। 'वश्मि', 'वष्टि' क्रान्तिकर्मा निघं० २.६]

आऽवसत् समन्ताद् वसेत् १.१४४.२. [आङ्+वस निवासे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

आवसथान् निवासस्थानों को सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.७. [आङ्पूर्वाद् वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'उपसर्गे वसेः' उ० ३.११६. सूत्रेण अथ प्रत्ययः। समन्ताद् वसति यत्रेति विग्रहः]

आवह समन्ताद् वहति प्रापयति, अ०—समन्ताद् देशान्तरं प्रापयति, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१३.४. समन्ताद् वहसि प्रापयसि, वहति प्रापयति वा, प्र०—अत्र पक्षान्तरे पुरुषव्यत्ययः १.१३.१. अभितो वह वहति वा, अ०—समन्तात् प्रापय प्रापयति वा १.१२.३. समन्तात् प्राप्नुहि, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२२.१०. आभिमुख्येन प्राप्नुहि प्रापय वा ७.१६.४. **आवहतम्**=सर्वतः प्रापयतम् १.९२.१७. अभिमुखं प्रापयेतम् ५.४३.१७. **आवहतः**=समन्ताद् धरतः ५.४१.७. सब ओर से प्राप्त होते हैं सं०

वि० १०५, ५.४१.७. **आवहन्ति**=समन्तात् प्रापयन्ति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.१४.६. **आवहन्तु**=समन्तात् प्रापयन्तु १.१६.१. समन्तात् प्राप्नुवन्तु १.१३४.१. समन्ताद् गमयन्तु ३४.३६. **आऽवहः**=समन्तात् प्राप्नुयाः ८.१९. [आङ्पूर्वाद् वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोटि लटि लङि च रूपाणि]

आवहतम् प्रापयन्तम् (रयिं=धनम्) ५.७६.५. आङ्+वह प्रापणे (भ्वा०) [धातोः शतृ। आगमशासनस्यानित्यत्वान् नुमागमो न भवति]

आवहात् समन्तात् प्राप्नुयात् १८.५९. **आवहातः**=अभितः प्राप्नुतः ३.४३.४. आवहेताम् ३.३५.२. **आवहान्**=समन्तात् प्राप्नुयुः १.८४.१८. [आङ्पूर्वाद् वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लेटि रूपम्। 'लेटोऽडाटौ' इत्याडागमः]

आवहन्ती सर्वतः सुखं प्रापयन्ती (उषाः=कन्या) १.४८.६. **आवहन्तीम्**=प्रापयन्तीम् (उषसं=प्रातर्वेलाम्) ५.८०.१. [आङ्पूर्वाद् वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

आवः आवृण्वन्ति स्वव्याप्त्याऽऽच्छादयन्ति ताः (बुध्न्याः=सूर्यादयो लोकाः) १३.३. [आङ्पूर्वाद् वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोर्लुङ्। 'मन्त्रे घसह्वर०' इत्यादिना लेर्लुक्]

आवावृधुः समन्ताद् वर्धयन्तु ५.५५.३. [आङ्+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिट्। परस्मैपदमभ्यासस्य च दीर्घत्वं छान्दसत्वात्]

आवास्यम् समन्तादाच्छादयितुं योग्यं, सर्वतोऽभिव्याप्यम् (जगत्=प्रकृत्यादिपृथिव्यन्तं जगत्), भा०—सर्वतो व्याप्तम् (जगत्) ४०.१. सब ओर से व्याप्त (जगत्) को स० प्र० २३८, ४०.१. [आङ्पूर्वाद् वस आच्छादने (अदा०) धातोर्ण्यत्]

आवित्तः प्राप्तपूर्णभोगो लब्धप्रतीतो वा (अग्निः=पावक इव विद्वज्जनः) प्र०—'वित्तो भोगप्रत्यययोः' अ० ८.२.५८. अनेनाऽयं निपातितः १०.९. [आङ्+विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्तः 'वित्तो भोगप्रत्यययो' रिति निपातनान् नकारादेशो न भवति]

आऽवित्सि समन्ताद् जानीयाम् १२.८१. [आङ्+विद् ज्ञाने (अदा०) धातोर्लट्। गुणाऽभावश्छान्दसः]

आविदम् समन्तात् प्राप्नुयाम् २.२८.११. [आङ्पूर्वाद् विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लुङ्। लृदित्त्वादङ्]

आविद्वान् यः समन्तात् सर्वं वेत्ति (आप्तो विद्वज्जनः) ४.१९.१०. [आङ्+विद ज्ञाने (अदा०) धातोः शतृ। 'विदेः शतुर्वसुः' इति शतुर्वसुरादेशः। सर्वनामस्थाने नुमि हल्ङ्यादिलोपे दीर्घे च रूपम्]

आविभाति अभितः प्रकाशते १.७१.६. समन्तात् प्रकाशते २.८.४. [आङ्+विपूर्वाद् भा दीप्तौ (अदा०) धातोर्लट्]

आविमोचनात् विमोचनमारभ्य ३.५३.२०. [आङ्-विमोचनपदयोः समासः। विमोचनम्=वि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्ल्युट्]

आविरकृणोत् प्रादुर्भूतं कुर्यात्, भा०—आविष्करोति ३३.२६. [आविः=प्रकटीभावे, तदुपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

आविरकृत प्रकटं करोति १.१२४.४. [आविरुपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ्]

आविरभवत् प्रकटं भवति ४.३.११. **आविर्भुवत्**=प्रकटं भवेत् ४.१.१६. [आविरुपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ्। अन्यत्र व्यत्ययेन शः]

आविराविवासे प्रकटं समन्ताद्वासयामि ७.५८.५. [आविरुपपदे आङ्+वस आच्छादने (अदा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

आविर्ऋजीकः प्रसिद्धः सरलस्वभावः (राज्याधिकारिजनः) ४.३८.४. [आविरुपपदे ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु (भ्वा०) धातो 'ऋजेश्च' उ० ४.२२. सूत्रेण ईकन् प्रत्ययः किच्च]

आविर्बभूव प्रकटं भवति ५.१.९. [आविरुपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

आविर्भवन् प्रकृष्टतया भवन् (इन्द्रः=सूर्यः) २.१५.७. [आविरुपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

आविवाय समन्तात् संवृणोति १.७१.४. आभिमुख्येन गच्छेत् १.१५६.५. [आङ्+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लिटि 'अजेर्व्यघञपोः' अ० २.४.५६. सूत्रेण 'वीरादेशः'। वी गतिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोर्वा लिटि रूपम्]

आविवास आविवसति ५.८३.१. **आविवासतः**=समन्तात् परिचरतः ३३.७६. **आविवासति**=समन्तात् सेवते, प्र०—आविवासतीति परिचरणकर्मसु पठितम् निघं० ३.५, १.१२.९. समन्तात् परिचरति सेवते २.२६.३.

आविवासते=समन्तात् परिचरति १.११७.१. **आविवासथः**=समन्तात् सेवेथाम् १.११६.६. **आविवासन्ति**=समन्तातपरिचरन्ति ४.११.५. [आविवासतीति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. तस्य रूपाणि]

आविवासन् समन्तात् परिचरन् (विद्वज्जनः) १.१५२.६. **आविवासन्तः**=सर्वतः परिचरन्तः (विद्यार्थिजनाः) ५.४५.३. [विवासतिः परिचरणकर्मा (निघं० ३.५) धातोराङ्पूर्वात् शतृप्रत्ययः]

आविवसन्ती समन्तात् सेवमाना (माता) ५.४७.१. [परिचरणार्थकाद् आविवासतेर्धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

आविवासयन्तः सत्यं समन्तात् सेवमानाः (कवयः=विद्वज्जनाः) ५.४५.४. [आविवाशतेः परिचरणार्थकाद् धातोर्णिजन्तात् शतृप्रत्ययः]

आविवासात् समन्तात् सेवते ७.२०.६. **आविवासान्**=समन्तात् सेवन्ते २.११.१६. [आविवासतेर्लेट्। 'लेटोऽडाटौ' सूत्रेणाट्]

आविवासे समन्तात् सेवेय ६.५२.१७. समन्तात् सेवे ६.५१.८. **आविवासेत्**=समन्तात् सेवेत् ६.१६.४६. [विवासति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) धातो रूपाणि। आविवासेम परिचरेम नि० २.२४.]

आविविद्रे समन्ताल्लभन्ते ३.५४.४. [आङ्+विद्लृ लाभे (तु०) धातोर्लिट्। 'इरयो रे' अ० ६.४.७६. सूत्रेण 'रे' आदेशः]

आविविशुः समन्तात् प्रविशेयुः ३.७.१. आविशन्ति ५.१८.२. **आविवेश**=समन्ताद् विष्टोऽस्ति १७.१७. समन्ताद् विष्टमस्ति २३.५०. समन्तात्प्रविष्टोऽस्ति २३.५१. समन्तात् प्रविष्टवान् ३.३.४. व्याप्तवानस्ति ऋ० भू० ४४. आविश ३.३१.५. सर्वतः प्रविशति १७.६०. समन्ताद् व्याप्नोति ४.५८.३. समन्तादाविष्टो व्याप्तोऽस्ति २३.४९. स्वव्याप्त्याऽऽविष्टोऽस्ति २३.५२. सर्वतः प्रविशति ५.४७.३. आविशति १.१६४.३२. प्रविष्ट होके पूर्ण हो रहा है आर्याभि० २.१४. **आविवेशीः**=समन्तात् पुनः पुनराविश ३.३२.१०. **आविवेशुः**=आविशन्ति ४.२३.९. [आङ्पूर्वाद् विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लिट्]

आविश समन्तात्प्राप्नुहि १.१७६.१. समन्ताद्विश ४.२७. सब ओर से प्रविष्ट वा प्राप्त हो सं० वि० १३४, १०.८५.४३. **आविशत्**=समन्ताद्विशति २.१३.१. **आविशत**=अ०—विज्ञानेन समन्तात् प्रवेशं कुरुत ४.१३. समन्ताद्विशत ७.४६. **आविशतु**=समन्तात्प्रविशतु १२.१०५. **आविशन्**=आविशन्ति ७.५५.१. **आविशन्ति**=समन्तात् प्राप्नुवन्ति ६.३६.३. **आविशन्तु**=समन्तादाविष्टा भवन्तु १.५.७. समन्ताद्विशन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.१५.१. **आविशस्व**=समन्तात्प्रविश, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १७.८७. [आङ्पूर्वाद् विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लोट्, लङ् च। अन्यत्र लोटि व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

आविशतात् समन्ताद् विशतु ३४.५०. [आङ्+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लोट्। 'तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्यामि' ति हेः स्थाने तातङ्]

आविशन् आविष्टः सन् (अग्निः) ५.२५.४. [आङ्+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

आविशन्ती समन्तात् प्रविशन्ती (सुरा=सोमवल्ल्यादिलता) १९.७. [आङ्+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

आविशम् आविशन्ति यस्मिँस्तम् ४.२४.६. [आङ्+विश प्रवेशने (तु०) धातोरधिकरणे 'घञर्थे क विधानम्' इति कः प्रत्ययः]

आविषुः अभितः स्वस्वकक्षां व्याप्नुवन्ति. प्र०--अत्र लडर्थे लुङ्, अयं व्याप्त्यर्थस्याऽवधातोः प्रयोगः १.११.५. प्राप्तविद्यं कुर्वन्तु ४.३६.६. सर्वतो व्याप्नुयुः २३.२९. [आङ्पूर्वाद् अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

आविष्करिक्रत् प्रकृष्टतया भृशं कुर्वन् (इन्द्रः=ईश्वरः) १.१३१.३. [आविरुपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्यङ्लुगन्तस्य शतरि 'दाधर्त्तिदर्द्धर्त्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेणाभ्यासस्य चुत्वाऽभावोऽभ्यासककारस्य च रिगागमो निपात्यते]

आविष्कर्त्त प्रकटं कुरुत, प्र०—विकरणस्यात्र लुक् १.८६.९. [आविरुपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट्। विकरणस्य च लुक्]

आविष्कृणवाथ प्रकटं कुरुथ १८.६०. [आविरुपपदे करोतेर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन श्नुः। आविरकृत=आविष्कुरुत नि० ४.१६.]

आविष्कृणुषे आविष्करोषि १.१२३.११. **आविष्कृणुष्व**=प्रकटं कुणुष्व १३.१३. प्रकटं कुरु ४.४.५. **आविष्कृणोति**=प्रकटं करोति ५.८३.३. **आविष्कृणोमि**=प्रादुर्भावं करोमि १.११६.१२. **आविष्कृण्वन्ति**=प्रकटं कुर्वन्ति १.१२३.६. [आविष्+कृ+लट् विकरणव्यत्ययेन श्नुः। आविः कृणुते=आविष्कुरुते

नि० ५.१९.]

आविष्कृष्व: प्रकटं कुरुष्व २.२३.१४. [आविरुपपदे करोतेर्लोट् । विकरणस्य च लुक्]

आविष्कृण्वान प्राकट्यं कुर्वन् (इन्द्रः=राजा) ४.१७.३. [आविष्+कृ+शानच् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

आविष्कृण्वाना सर्वेषां मूर्त्तिमतां द्रव्याणां प्राकट्यं सम्पादयन्ती (उषाः=प्रातर्वेला) ५.८०.४. [आविष्+कृ+शानच्+टाप् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

आविष्ट्यः आविर्भूतेषु व्यवहारेषु प्रसिद्धः (अग्निः=सूर्यः) १.९५.५. [आविष् अव्ययात् 'आविसश्छन्दसि' अ० ४.२.१०४ वा० सूत्रेण शैषिकस्त्यप् प्रत्ययः आविरावेदनात् तत्त्यः नि० ८.१५.]

आविः प्राकट्ये १३.१३. प्रसिद्धौ १.१२३.१०. प्रसिद्धार्थे १.३१.३. प्रकटीभावे १.८६.९. [आविस् आविष्कुरुते नि० ५.१९. आवेदनात् नि० ८.१५.]

आविः रक्षकम् (सर्वाऽन्तर्यामि ब्रह्म) ३.५५.१५. [आङ्+अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर् औणादिक इः प्रत्ययः]

आवीत् समन्ताद् रक्षेत् ७.२०.२. प्राप्नुयात् २९.८. [अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोराङ् पूर्वाल् लुङ्]

आवीतये समन्तात् प्राप्तये ५.२६.२. [आङ्+वी गतिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोः क्तिन् स्त्रियाम्]

आवृणक् आवृणोति, प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इति दीर्घः ५.३२.८. [आङ्+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लङ् । अत्र वृणोत्यर्थे]

आवृणानः समन्तात् स्वीकुर्वन् (अग्निः=विद्वन्) ४.१.२०. [आङ्+वृञ् वरणे (क्र्या०) धातोः शानच् । प्वादित्वाद् ह्रस्वः]

आवृणाना सर्वतः स्वीकुर्वाणा (विदुषी स्त्री) ५.४८.१. [आङ्+वृञ् वरणे (क्र्या०)+शानच्+टाप् स्त्रियाम् । प्वादित्वाद् ह्रस्वः]

आऽवृणीत समन्तात् स्वीकुर्य्यात् १.११९.५. **आवृणीमहे**=सर्वतः स्वीकुर्महे ६.१५.९. **आवृणे**=समन्तात् स्वीकरोमि ७.५९.११. समन्तात् स्वीकुर्वे १.१७.१. समन्तात् प्राप्नुयाम् ३.१२.५. शुभगुणैराच्छादयामि ३.३७.९. [आङ्+वृञ् वरणे (क्र्या०) धातोर्लङ् । अन्यत्र लट् । वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोर्वा रूपम्]

आवृतम् समन्ताद् वर्त्तन्ते यस्मिन् तमीश्वराज्ञापालनमुपदेशः प्रकाशनं वा २.२६. समन्ताद्वर्त्तन्तेऽहोरात्राणि यस्मिँस्तं समयम् २.२७. संयुक्तम् [इन्द्रम्=सेनेशम्) १.५१.२. समन्तादाच्छादितम् (नमः=अन्नम्) ३.३६.६. घेरे हुए (शत्रु) को आर्याभि० १.४३. **आवृतः**=निवृत्याऽऽगतः (ब्रह्मचारी जनः) ३४.४९. युक्तः (सेनापतिः) १.८७.४. **आवृताः**=चारों ओर से युक्त (गृहस्थ मनुष्य लोग) सं० वि० १४३, अथ० १२.५.२. **आवृते**=सर्वत आच्छादिते स्थानविशेषे ३.४२.३. [आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कविधानम् । इति कः प्रत्ययः कर्त्तरि भिन्नेषु कारकेषु । अन्यत्र आङ्+वृञ् आच्छादने (चु०) +क्तः]

आवृतः आवृतिरूपाः क्रियाः १२.८. [आङ्+वृञ् वरणे धातोः क्तः प्रत्ययः]

आवृतासः समन्तात् सुखैराच्छादिताः (जनाः) १.५५.८. [आङ्+वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तः । बहुवचने जसोऽसुगागमः]

आवृत्य सामग्र्याऽऽच्छाद्य १.५६.१. [आङ्+वृञ् आच्छादने (चु०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

आवृषस्व समन्ताद् वृष इव बलिष्ठो भव, ३.३२.२. सर्वतः सिञ्चस्व १.१०४.९. **आवृषेथाम्**=सर्वतो वर्षतः प्र०—अत्र व्यत्ययेन शः प्रत्यय आत्मनेपदञ्च २.३१. [आङ्+वृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन श आत्मनेपदञ्च]

आवृषायिषत आभिमुख्येन विद्याधर्मशिक्षया हर्षकारका भवत, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् २.३१. **आवृषायध्वम्**=समन्तादानन्दसेक्तारो वृषा इवाऽऽचरत, प्र०—अत्र 'कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च' अ० ३.१.११. अनेन क्यङ् प्रत्ययः २.३१. [वृष इवाचरतीति विग्रहे वृषपदादाचारार्थे क्यङ् । 'सनाद्यन्ता धातव' इति धातुसंज्ञायाम् आङ् पूर्वाल् लुङ्]

आवृषाः जलसेचनयुक्ताः (यानानि) ऋ० भू० १९६. [आङ्-वृषपदयोः समासः । वृषः=वृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

आवेदयामसि समन्ताद्वेदयामः प्रज्ञापयामः ४.३६.२. [आवेदनं करोतीति विग्रहे 'तत्करोति तदाचष्टे' इति वार्तिकेन णिच् । 'णाविष्ठवत् प्रातिपदिकस्य' इति टिलोपे 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तत्वे रूपम्]

आवेशय समन्तात् प्रापय १.१७६.२. [आङ्+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

आवेः समन्ताद् विद्धि १.६३.२. [आङ्+अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

आवोढम् आवहतः २.४१.९. समन्ताद्वहतम् २०.८३. [आङ्+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लुङि मध्यमबहुवचनम्]

आऽव्य सर्वतो रक्षित्वा १.१६६.१३. [आङ्+अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

आऽव्यन् समन्तात् कामयन्ताम् ३.४९.१. [आङ्+अवरक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः कर्मणि शतृव्यत्ययेन]

आऽव्ययेयम् समन्तात् प्राप्नुयाम् ३३.५१. [आङ्+व्यय गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

आव्याधिनीनाम् समन्तात् शत्रुसेना व्यद्धुं शीलं यासां तासां स्वसेनानाम् १६.२०. **आव्याधिनीभ्यः**=शत्रुसेनाताडनशीलाभ्यः स्वसेनाभ्यः १६.२४. **आव्याधिनीः**=समन्ताद् बहुरोगयुक्तास्ताडितुं शीला वा (सेनाः) ११.७७. [आङ्पूर्वाद् व्यध ताडने (दिवा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः प्रत्ययः । स्त्रियां ङीप् 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' अ० ४.१.५. सूत्रेण]

आऽवृ आवृणोमि ४.५५.५. [आङ्+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणलुक्]

आश अश्नाति, भा०—रुधिरादिकं पिबति २५.३२. [अश भोजने (क्र्या०) धातोर्लिट्]

आशकः समन्ताच्छक्नुहि ७.२०.९. [आङ्+शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन शप्]

आशत सर्वतो व्याप्तवन्तो भवेयुः, प्र०—अत्र 'अशूङ् व्याप्तौ' इत्यस्माल्लिङर्थे लुङ्प्रयोगः 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति च्लेरभावः १.८.६. अभिमुखं प्राप्नुवन्ति २.२१.५. सर्वतो व्याप्नुत २०.७२. समन्ताद् व्याप्नुवन्ति, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्नो लुक् १.८५.२. समन्तात्प्राप्नुवन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लङ् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुकि श्नोऽभावश्च १.२०.२. [आङ्+अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोर्लुङ् लङ् च । लुङि च्लेः, लङि श्नोश्चाभावश्छान्दसः]

आशयत् समन्ताच्छेते १.५२.६. [आङ्+शीङ् शये (अदा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लङ् न भवति । आशयदाशेतेः नि० २.१६.]

आशयानम् आस्थितम् (वृत्रं=मेघम्) २.११.९. यः समन्ताच्छेते तम् (मेघम्) ५.३०.६. समन्तात्प्राप्तनिद्रमिव (शत्रुम्) १.१२१.११. समन्ताच्छयानमिव वर्त्तमानम् (अहिं=मेघम्) ४.१७,७, [आङ्+शीङ् शये (अदा०) धातोः शानच्]

आशये गर्भाशय में सर्वथा ठहरता है सं० वि० १६८, अथ० २.३.२१. [आङ् पूर्वात् 'शीङ् शये' (अदा०) धातोरधिकरणे घः प्रत्ययः]

आशाते समन्तात् प्राप्नुतः १.१३६.३. **आशाथे**=सर्वतो व्याप्नुत, प्र०—'छन्दसि लुङ्लङ्लिटः' अ० ३.४.६. इति वर्त्तमाने लिट् 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति नुडभावः १.२.८. समन्तात्प्राप्नुथः १.१५१.८. सर्वतोव्याप्तवन्तौ स्तः १.१५.६. [आङ्+अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोर्लिट् । 'अश्नोतेश्च' अ० ७.४.७२. सूत्रेण प्राप्तोऽपि नुडागमो न छान्दसत्वात्]

आशवः वेगादिगुणसहिताः सर्वक्रियाव्याप्ताः (सोमासः=सर्वपदार्थाः) १.५.७. शीघ्रगामिनोऽश्वा इवाऽग्न्यादयः, प्र०—आशुरित्यश्वनाम निघं० १.१४, १.११८.४. शीघ्रगामिनोऽश्वाः २.३१.२. शुभगुणव्यापिनः (कृषीवलाः) १.१४०.४. येऽश्नुवन्ति ते (सोमाः) १.१३५.६. आशुगामिनः पदार्थाः ५.६.१. **आशवे**=वायुरिवाऽध्वानं व्याप्तायाऽश्वाय १६.३१. यानेषु सर्वानन्दस्य वेगादिगुणानाञ्च व्याप्तये १.४.७. [अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोः 'कृवापाजि०' उ० १.१. सूत्रेण उण्प्रत्यये आशुः । अश्नुते व्याप्नोति तदाशु शीघ्रम् । अश्नुते सद्योऽध्वानमित्याशुरश्वः । आशुः क्षिप्रनाम, निघं० २.१५. अश्वनाम निघं० १.१४. आशु इति शु इति च क्षिप्रनामनी भवतः । नि० ६.१. आशु भार्गवं भवति तां० १४.९.९. अहर्वा एतदव्लीयत तद्देवा आशुनाभ्यधिन्वꣳस्तदाशोराशुत्वम् तां० १४.९.१०. आशवः क्षिप्रकारिणः नि० ६.५.]

आशसः आशंसन्ति ते (सज्जनाः) ५.५६.२. काममिच्छन्तः (ब्रह्मचारिणो जनाः) ५.३२.११. **आशसा**=समन्तात् प्रशंसितेन (नमसा=सत्कारेण) ४.५.११. [आङ् पूर्वात् 'शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । शंसनत् कान्तिकर्मा (निघं० २.६) धातोर्वा क्विप्]

आशापालाः य आशा दिशः पालयन्ति (देवाः=विद्वज्जनाः) २२.१९. (आशा दिङ् नाम । निघं० १.६. तदुपपदे पालयतेर्धातोरण् प्रत्ययः । शतं वै तल्प्या राजपुत्रा आशापालाः श० १३.१.६.२. अथैते देवा (आशापालाः) आप्याः साध्या अन्वाध्या मरुतः श० १३.४.२.२६.]

आशाभ्यः दिग्भ्यः, प्र०—आशा इति दिङ्नाम, निघं० १.६, २.४१.१२. व्यापिकाभ्यः (दिग्भ्यः) २२.२७.

आशाः=दिशः १७.६६. प्राप्तीच्छाः १.१६२.७. [आशा दिङ्नाम निघं० १.६. आशा दिशो भवन्त्यासदनात् । आशा उपदिशो भवन्त्यभ्यशनात् नि० ६.१. 'आङः शासु इच्छायाम्' (अदा०) धातोर्वा साधनीयम्]

आशासते आशां कुर्वन्ति, भा०—समन्तात्कामयन्ते ३३.७८. समन्तादिच्छन्ति १.१६५.४. **आशास्ते**=समन्तादिच्छति १.१६३.१३. **आशास्स्व**=आभिमुख्येन शिक्ष २१.६१. [आङः शासु इच्छायाम् (अदा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट्]

आशिक्षायै समन्ताद्विद्योपादानाय, भा०—सर्वतो विद्याग्रहणायाऽध्यापनाय च ३०.१०. [आङ्-शिक्षापदयोः समासः । शिक्षा=शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोः 'गुरोश्च हलः' अ० ३.३.१०३. इत्यङ् । शिक्षति दानकर्मा निघं० ३.२०. शिक्षा=देहि नि० १.७.]

आशिनेभ्यः सकलविद्याव्यापकेभ्योऽध्यापकेभ्यः १.२७.१३. [आङ्+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्बाहुलकाद् इनच् प्रत्ययः]

आशिरम् यदश्यते तत् क्षीरादिकम्, ३.५३.१४. समन्ताद् भोग्यम् (घृतम्) १.१३४.६. समन्ताद् भोगम् १.१३४.६. [आङ्+'अश भोजने' (क्र्या०) धातोः 'श्रा पाके' धातोर्वा क्विप् । धातोश्च शीर्भावश्छान्दसः । आशीर्=आश्रयणाद्वा ऽऽश्रपणाद्वा नि० ६.८.]

आशिशीत समन्तात्तीक्ष्णीकुरुत ६.१६.१२. [आङ्+शिञ् निशाने (तीक्ष्णीकरणे) धातोर्लिङ् । 'वहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

आशिश्रेत् समन्तादाश्रयेत् ३.३८.८. [आङ्+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लिङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

अशिश्वीः वाल्याऽवस्था से रहित (युवतयः=पूर्णयुवाऽवस्थास्थ स्त्रियाँ) स० प्र० ११०, ३.५५.१६. [नञ्-शिश्वीपदयोः समासः । अशिश्वी=शिशुप्राति० नञ्पूर्वात् 'सख्यशिश्वीति भाषायाम्' अ० ४.१.६२. सूत्रेण ङीप्]

आशिषः न्यायेच्छाविशिष्टाः क्रियाः, प्र०—शास इत्त्वे आशासः क्वावुपसङ्ख्यानम्, अ० ६.४.३४. अनेन वार्त्तिकेनाऽऽशीरिति सिद्धः २.१०. चक्रवर्त्तिराज्याऽनुशासनादय इच्छाः ऋ० भू० १४९. सिद्धा इच्छाः १.१७९.६. आशीर्वादान् ३.४३.२. आशाएं आर्याभि० २.५१, २.१०. इच्छासिद्धयः (इष्टसाधिकाः सिद्धयः) १७.५७. कामनाः २.१०. **आशिषा**=आशीर्वदिन १७.५७. उस सामर्थ्य, सहजस्वभाव से आर्याभि० २.३०, १७.१७. [आङः शासु इच्छायाम् (अदा०) धातोः क्विप् । धातोरुपधाया इकारादेशः । 'शासिवसिघसीनामुपसंख्यानम्' इति शकारस्य षकारः । आशिषः=अध्येषणाकर्म निघं० ३.२. आशीराशास्तेः नि० ६.८.]

आशिष्ठाः अतिशयेनाऽऽशुगामिनः (वह्नयः=अश्वाः) २.२४.१३. [आङ्पूर्वाद् 'अशूङ् व्याप्तौ' धातोस्तृजन्ताद् अतिशायने इष्ठन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण तृचो लोपः]

आशीर्दाः य इच्छासिद्धिं ददाति सः (यज्ञः) १८.५६. [आशिष्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः प्रत्ययः]

आशीर्वन्तः आशिषः प्रशस्ताः कामना भवन्ति येषान्ते (सोमासः=उत्पन्नाः पदार्थाः), प्र०—अत्र 'शास इत्त्वे 'आशासः क्वावुपसङ्ख्यानम्' अ० ६.४.३४. अनेन वार्त्तिकेनाशीरिति सिद्धम्, ततः प्रशंसार्थे मतुप् 'छन्दसीरः' इति वत्वं च । सायणाचार्येण 'श्रीञ् पाके' इत्यस्मादिदं पदं साधितम्, तदिदं भाष्यविरोधादशुद्धमस्तीति बोध्यम् १.२३.१. [आशिष्प्राति० प्रशंसार्थे मतुप् । 'छन्दसीरः' इति मतुपो मकारस्य वकारः]

आशु सद्यः १.८४.१८. शीघ्रम् १७.३३. शीघ्रकारिणम् (सङ्ग्रामम्) ५.४४.१. **आशुभिः**=अश्वैरिव क्षिप्रकारिभिः (किरणैः) २.३८.३. शीघ्रगन्तृभिरश्वैः २.३४.३. शीघ्रगमयित्रीभिर्विद्युदादिपदार्थैः २.१६.३. आशुकारिभिर्गुणैः ५.६१.११. सद्योऽभिगामिभिः (जनैः) ५.५५.१. शीघ्रं गमनागमनकारकैर्विमानादियानैः १.३७.१४. **आशुम्**=वेगादिगुणवन्तमग्निवाय्वादिपदार्थसमूहम् । प्र०—आश्वित्यश्वनामसु पठितम्, निघं० १.१४. 'कृवापा०' उ० १.१. अनेनाऽशूङ् धातोरुण् प्रत्ययः १.४.७. पूर्णमध्वानं प्राप्नुवन्तम् (राजजनम्) ४.३८.२. मार्गान् सद्योऽश्नुवन्तम् (अर्वन्तम्=अश्वम्) ३४.२१. शीघ्रं सिद्धिप्रदम् (वृजनं=योगबलम्) ७.१२. शीघ्रगमकम् (अश्वं=विद्युदग्निम्) १.११७.९. शीघ्रकारिणं (अश्वम्) १.१३५.५. शीघ्रगमनहेतुम् (अश्वम्) १.६०.५. **आशुः**=शीघ्रं गन्ता (विद्युदादिस्वरूपोऽग्निः) ४.११.४. सद्यः ७.१८.९. तीव्रवेगः (अश्वः=तुरङ्गः) २९.९. शीघ्रगाम्यश्वः ४.२२.८. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'कृवापा०' उ० १.१. सूत्रेण उण् प्रत्ययः । आशु क्षिप्रनाम निघं० २.१५. आशु इति शु इति च क्षिप्रनामनी भवतः निघं० ६.१. आशवः क्षिप्रकारिणः नि० ९.६. आशुः=अश्वनाम निघं० १.१४.]

आशुः प्राप्नुवन्ति ४.३३.४. समन्तादश्नीयुः १९.६१.

[अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) अश भोजने (क्र्या०) धातोर्वार्लिट् । आगमशासनस्यानित्यत्वान् नुडागमो न भवति]

आशुपत्वा सद्यः पतित्वा ४.२६.४. [आशूपपदे पत्लृ-गतौ (भ्वा०) धातोः क्त्वा । पृषोदरादित्वाद्रूपसिद्धिः]

आशुया शीघ्रगमनाः (उल्काः विद्युत्पाताः) प्र०—अत्र जसः स्थाने याऽऽदेशः १३.१०. क्षिप्राणि (भ्रमासः=भ्रमणानि) ४.४.२. आशुगैरश्वैः ६.४६.१४. [आशु व्याख्यातम् । तस्य प्रथमा बहुवचने जसो यादेशः । 'आशु' इति क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

आशुरथाय आशु शीघ्रगामिनो रथा यानानि यस्य तस्मै, (भा०—तूर्णगामियानस्थवीराय) १६.३४. [आशु-रथपदयोर्बहुव्रीहिः]

आशुशुक्षणिः शीघ्रकारी (अग्निः=राजमानो विद्वान् राजा वा) २.१.१. शीघ्रं शीघ्रं दुष्टान् क्षिणोति हिनस्ति यः (अग्निः=न्यायाधीशो राजा) ११.२७. [आशुशुक्षणिः=आशु इति च शु इति च क्षिप्रनामनी भवतः, क्षणिरुत्तरः क्षणोतेः । आशु शुचा क्षणोतीति वा सनोतीति वा । आ इत्याकार उपसर्गः पुरस्ताच्चिकीर्षित ज उत्तरः, आशुशोचयिषुरिति नि० ६.१. आशु शुचा क्षणिता सनिता वार्थः]

आशुशुग्धि समन्तात् शोधय, प्रकाशय, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन श्लुः १.९७.१. [आङ्+ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन शपः श्लुः]

आशुश्राव समन्ताच्छ्रावयति ५.५३.२. [आङ् पूर्वात् श्रुश्रवणे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

आशुषाणः सर्वतो व्याप्नुवन् सन् (विद्वज्जनः) ५.३६.४. आशुषाणाः समन्ताद् विभजन्तः (पितरः=जनकाः) ४.२.१६. सद्यो विभाजकाः (प्रजाजनाः) ४.२.१४. समन्तात् प्राप्नुवन्तो ब्रह्मचर्येण शुष्कशरीरा वा (आप्ता जनाः) ४.१.१३. सद्यः कुर्वाणाः (आप्ता जनाः) २.१९.७. [आशूपपदे षण् सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अण् । अथवा आङ्पूर्वाद् अशूङ् व्याप्तौ (भ्वा०) धातोर्वा छान्दसं रूपम्]

आशुषाणासः शीघ्रकारिणः (क्षितयः=मनुष्याः) ४.२४.४. [आशु=क्षिप्र नाम । तदुपपदे षणसंभक्तौ (भ्वा०) धातोरण् । जसोऽसुगागमः]

आशुषेणाय आशु शीघ्रगामिनी सेना यस्य तस्मै, भा०—बलिष्ठसेनाय (सेनापतये) १६.३४. [आशु-सेना-पदयोर्बहुव्रीहिः । 'एति संज्ञायामगात्' अ० ८.३.९९. सूत्रेण षकारादेशः]

आशुहेमभिः शीघ्रं गमयद्भिः (जूतिभिः=युद्ध-क्रियाभिः) १.११६.२. [आशूपपदे हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्मनिन् प्रत्ययः]

आशुहेमा आशून् शीघ्रकारिणो जनान् हिनोति वर्धयति सः (राजा) २.१.५. शीघ्रं वर्द्धको गन्ता वा (इन्द्रः=विद्युदिव राजा) ७.४७.२. शीघ्रं वर्द्धमानः (अहिः=मेघः) २.३१.६. [आशूपपदे हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्मनिन्]

आशू शीघ्रं गमयितारौ (हरीं=जलाऽग्नी) ३.३५.४. **आशून्**=आशुगामिनः (अर्वतः=अश्वान्) ६.६०.१२. [आशुरित्यश्वनाम निघं० १.१४. तस्य द्विवचने रूपम्]

आशृण्वतीः याः समन्ताच्छ्रूयन्ते ताः (आपः=प्राणाः) ५.४५.१०. [आङ्+'श्रु श्रवणे' (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

आशृण्वते समन्ताच्छ्रवणं कुर्वते (देवाय=नृपाय) ४.३.३. [आङ्+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्यये रूपम्]

आशृण्वन्ति समन्तात् प्रशंसां कुर्वन्ति १.१९०.१. [आङ्+श्रुश्रवणे (भ्वा०) धातोर्लट् । 'श्रुवः शृ च' इति श्नुः शृ आदेशश्च]

आशोः सकलविद्याव्यापकस्य (राज्ञः) ४.३.९. [आशुर्व्याख्यातम् । तस्य षष्ठ्यां रूपम्]

आश्याः समन्ताद् भोगं कुर्याः १.६०.३. समन्ताद् व्याप्नुहि १.७०.१. [आङ्+अश भोजने (क्र्या०) अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक्]

आश्रावयन्त इव समन्तात् श्रवणं कारयन्त इव (जनाः) १.१३९.३. [आङ्पूर्वात् श्रवणप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिचि 'णाविष्ठवत्प्रातिपदिकस्ये' ति टेर्लोपे शतरि रूपम्]

आश्रवस्यात् अत्यन्त विद्या, धन-धान्य युक्त सब ओर से होवे सं० वि० १०५, य आत्मनः श्रव इच्छति तस्मात् (जनात्) ५.३७.३. [आङ्+श्रवस् पदादिच्छा-यामर्थे क्यच् । ततो लिङ्]

आश्रावय समन्ताद् विद्यापदेशान् कुरु १९.२४. **आश्रवयेतम्**=समन्ताच्छ्रावयताम्, प्र०—वृद्ध्यभावश्छान्दसः २१.९. [आङ्पूर्वात् 'श्रु श्रवणे' (भ्वा०) धातोर्णिचि लोटि च रूपम्]

आश्रीणन्ति समन्तात् पचन्ति १५.६०. [आङ्+श्रीञ् पाके (क्र्या०) धातोर्लट्। इकारस्य च ह्रस्वश्छान्दसः]

आश्रिषत् समन्तादाश्रयति २५.३४. [आङ्+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ्। सिबुत्सर्गश्छन्दसि' अ० ३.१.३४. वा० इति सिप्]

आश्रिषत् आभिमुख्येन श्लिष्येत् १.१६२.११. अत्राडभावो वर्णव्यत्ययेन लस्य स्थाने रेफादेशश्च [आङ्+श्लिष आलिङ्गने (दिवा०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन शः]

आश्रुतिः समन्ताच्छ्रवणं यस्या सा (पत्नी) ३७.१२. [आङ्+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

आश्रुत्कर्ण समन्ताच्छ्रुतौ विज्ञानमयौ श्रवणहेतू कर्णौ यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=जगदीश्वर) प्र०—अत्र सम्पदादित्वात् करणे क्विप् १.१०.९. [आश्रुत्-कर्ण-पदयोर्बहुव्रीहिः। आश्रुत्=आङ्+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः+सम्पदादित्वात् क्विप् करणे]

आश्वश्वतमाः आशवः सद्योगामिनोऽश्वा विद्यन्ते येषान्ते (योद्धारो जनाः) ५.४१.४. [आशु-अश्वपदयोर्बहुव्रीहौ, अतिशायने तमप्]

आश्वश्वाः आशुगामिनोऽग्न्यादयो अश्वा येषान्ते (वीरजनाः) ५.५८.१. [आशु-अश्वपदयोर्बहुव्रीहिः]

आश्वश्व्यम् आशवो वेगादयो गुणा अश्वा इव यस्मिँस्तम् (सुवीर्यं=सुष्ठु पराक्रमम्) ५.६.१० (अश्वप्राति० 'भवे छन्दसि' अ० ४.४.११०. सूत्रेण यत्। आशु-अश्व्य-पदयोः समासः]

आश्विनम् प्रशस्ताऽश्वादियुक्तम् (रयिं=धनम्) ५.४.११. **अश्विनोः**=सूर्याचन्द्रमसोरिदम् (तेजः=प्रकाशः) १९.८. **आश्विनः**=अश्विनोः सूर्याचन्द्रमसोरयं मध्यवर्त्ती (प्रकाशः) १८.१९. अश्विनोः प्राणाऽपानगत्योरयं सम्बन्धी (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. अश्विदेवताकः (लोपाशः=वनचरपशुविशेषोऽश्विगुणः) २४.३६. **आश्विनाः**=सूर्यचन्द्रदेवताकाः (पशवः) २४.३. [अश्व-प्राति० प्रशंसार्थे मत्वर्थे इनिः। ततस्तस्येदमिति अण्-प्रत्यये प्रकृतिभावे च रूपम्। अश्वा=अश्वसदृशाः शक्तयः पशुरूपा अश्वा वा सन्त्यनयोस्तस्मादश्विनौ। अश्विनौ यद् व्यश्नुवाते सर्वं रसेनान्यो ज्योतिषान्यः। अश्वैरश्विनावित्यौर्णवाभः। तत्कावश्विनौ? द्यावापृथिव्यावित्येके। अहोरात्रावित्येके। सूर्याचन्द्रमसावित्येके। राजानौ पुण्यकृतावित्यैतिहासिकाः नि० १२.१. अश्विनौ देवते एपामिति विग्रहे वा 'सास्य देवता' सूत्रेणाण्। आश्विनः (ग्रहः) श्रौत्रमाश्विनः कौ० १३.५. श्रौत्रं चात्मा चाश्विनः ऐ० २.२६. (शस्त्रम्) यदश्विना उदजयतामश्विनावाश्नुवातां तस्मादेतदाश्विनमित्याचक्षते। ऐ० ४.८. तेषां (देवानां) अश्विनौ प्रथमावधातान्तावन्ववदन् सह नोऽस्त्वति तावब्रूताङ् किन्नो ततः स्यादिति यत्कामयेथे इत्यब्रुवꣳस्तावब्रूतामस्मद्देवत्यमिदमुक्थमुच्याता इति तस्मादाश्विनमुच्यते तां० ९.१.३६. द्वाभ्यां ह्याश्विनमित्याख्यायते कौ० १८.५]

आष्ट समन्तादश्नुवीत, प्र०—अत्र लिङि लुङ् विकरणस्य लुक् १.१२१.६. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लुङ्। विकरणस्य लुक् छान्दसत्वात् आष्ट। व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८]

आस अस्ति, प्र०—अत्र 'छन्दस्युभयथा' इति लिट् आर्द्धधातुकसंज्ञाऽभावः ३३.८०. भवेयम् ४.२७.२. भवति ५.२.५. वर्त्तते ५.४४.२. **आसते**=सन्ति १.१९.६. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लिट्। 'छन्दस्युभयथा' इति लिट आर्द्धधातुक संज्ञाऽभावेऽस्तेर्भूर्भावो न भवति]

आस आस्ते ५.५६.३. **आसते**=उपविशन्ति २३.१६. स्थित हैं सं० वि० १९७, ९.११३.११. उपविष्टाः सन्ति २.१३.४. आस्ते, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इत्येकवचनस्य बहुवचनम् ६.४७.१९. [आस उपवेशने (अदा०) धातोर्लिट् 'दयायासश्चे' ति आम् न भवति छान्दसत्वात्।]

आसङ्कारिषत् समन्तात् सम्यक् कुर्यात् ६.४८.१५. [आङ्+सम्पूर्वात् करोतेर्लेट्। 'सिब्बहुलं णिद्वक्तव्य' इति णित्वे वृद्धिः]

आसचन्त समन्तात् सेवन्ताम् १.७३.४. **आसचसे**=सर्वतः सम्बध्नासि ४.११.६. **आसचस्व**=समन्तात् समवेहि १.१२९.९. **आसचेते**=समन्तात् समवेतः १.१३६.३. [आङ्+षच समवाये (भ्वा०) षच सेचने (भ्वा०) (अयं सेवनार्थेऽपि) धातोर्वा लङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

आसजामि समन्तात् संयुनज्मि १.१९१.१० [आङ्+षञ्ज सङ्गे (भ्वा०) धातोर्लट्। 'दंससञ्जस्वञ्जाम्०' इति शपि अनुनासिकलोपः]

आऽसत् समन्ताद् भवतु १.१०७.१. [आङ्+अस भुवि (अदा०) धातोर्लेटि रूपम्]

आसतः निन्द्यात् (वचसः) ५.१२.४. (नञ्-सत्

पदयोः समासः । 'अन्येषामपि दृश्यते' इति पूर्वपदस्य दीर्घः]

आऽसता समन्ताद् वर्त्तमानेन (कालेन), प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इत्याद्यचो दीर्घः ४.५.१४. [अस भुवि (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः । पूर्वस्याचो दीर्घत्वम्]

आसत्सि आसन्नोऽसि २.६.८. समन्ताद् दोषान् हिनस्ति प्र०—अयं विशरणार्थस्य षद्लृधातोः प्रयोगः पुरुषव्यत्ययश्च १.१२.४. समन्तात् सीदसि, प्र०—अत्र 'वहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् ३.३०.१८. [आङ् पूर्वात् षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लट् । 'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि सीदादेशो न भवति]

आसदत् स्वकक्षायां भ्रमति, भा०—समन्तात्प्रतिक्षणं भ्रमति प्र० अत्र लडर्थे लुङ् ३.६. समन्तात् प्राप्नुयात् ३.१३.१. आसीदतु ३.६२.१५. आसीदति २८.४. **आसदताम्**=आसीदेत् ७.४२.५. **आसदन्तु**=समन्तादवस्थापयन्ति, अ०—प्रापयन्ति । प्र०—अत्र षद्लृ-इत्यस्य स्थाने 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति सीदादेशाऽभावो लडर्थे लोट् च २.५. समन्तात्तिष्ठन्तु ३.४.८. समन्तात् प्राप्नुवन्तु २७.१९. आसीदन्तु ७.४३.३. **आसदः**=आसस्व १२.५९. सर्वतः प्राप्नोषि १२.३८. समन्ताद् जानीयाः ५.२१.४. समन्ताज्जानीहि २.२१.४. [आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लुङ् । लृदित्वादङ् लोटि तु छान्दसत्वात् सीदादेशो न भवति]

आसदम् आसीदन्ति सर्वे यस्मिँस्तम् (योनिं=कारणमव्यक्तम्) ३.६२.१३. य आसीदति तम् (जनं=प्रसिद्धं विद्वज्जनम्) ४.९.१. [आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे घः प्रत्ययः]

आसदे समन्तात् स्थित्यर्थं गमनार्थं वा ५.२६.८. समन्तात् सीदन्ति प्राप्नुवन्ति सुखानि यस्यां साऽऽसत्तस्यै १.१३.७. आसादनीयाय (बर्हिः=अन्तरिक्षे) ३.४१.९. (आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् भावे क्विप् । आसदे=आसीदतु नि० ७.२०.]

आसदे आसत्तुमुपवेष्टुम् ५.४६.५. [आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे से प्रत्ययः]

आसद्य समन्ताद्विज्ञाय स्थित्वा वा २.१८. उपविश्य ६.६८.११. आगत्य १२.३९. प्राप्य १.१०९.५. [आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

आसन् सन्तु ३३.७४. सन्ति १.१६४.४३. भवन्ति १.१०९.७. भवेयुः ५.५२.१२. स्युः ३३.७४. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लङ्]

आसन् मुखे, प्र०—अत्राऽऽस्यशब्दस्य 'पद्दन्नोमास०' अ० ६.१.६३. अनेनाऽऽसन्नादेशः 'सुपां सुलुग्०' इति सप्तम्येकवचनस्य लुक् ७.२४. आसन आस्ये वा ५.१८.४. आस्ये मुखे १२.६४. **आसनि**=आस्ये ५.६.९. व्याप्त्याख्ये मुखे १.७५.१. [आस्यप्राति० सप्तमीविभक्तिः 'पद्दन्नोमास०' अ० ६.१.६३. सूत्रेणासन्नादेशः । विभक्तेश्च लुक् छान्दसत्वात्]

आसन्दी समन्ताद्रसप्रापिका (नाभिः) १९.८६. समन्तात् सन्यते सेव्यते या सा (सुक्रिया) प्र०—अत्र 'सन्' धातोरौणादिको दप्रत्ययस्ततो ङीष् १९.१६. **आसन्द्याम्**=यानाऽऽसनविशेषे ८.५६. [आङ्+षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिको दप्रत्यये ङीषि च रूपम् । अथवा आङ्पूर्वात् षदलृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्वा साधनीयम् । सैषा (आसन्दी) खादिरी वितृणा भवति श० ५.४.४.१. इयं (पृथिवी) वा वाऽआसन्द्यस्याᳬ हीदं सर्वमासन्नम् श० ६.७.१.१२.]

आसन्नम् समीपस्थम्, भा०—सर्वेषां समीपम्, ईश्वरस्य समीपवर्त्तिनं जीवम् (बर्हिः=अन्तरिक्षम्) २८.२१. **आसन्नः**=सर्वेषां निकटः (विष्णुः=हिरण्यगर्भ ईश्वरः) ८.५५. **आसन्नानाम्**=समीप बैठने हारों (संन्यासियों) के सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.४. [आङ्पूर्वात् षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । 'रदाभ्याम्०' इति दकारतकारयोर्नकारौ]

आसन्निषून् आसने प्राप्ता बाणा यैस्तान् (मयोभून्=सुवीरान्) १.८४.१६. [आसन-इषुपदयोः समासः । आसनस्य स्थाने 'पदन्नोमास०' अ० ६.१.६३ सूत्रेण आसन्-आदेशः आसन्निषून्=असून्यसुवन्ति, इषून् इषुणवन्ति नि० १३.२५.]

आसपर्यन् समन्तात् सेवमानः (बलाध्यक्षो न्यायाधीशः) ४.१२.२. [आङ्पूर्वात् 'सपर्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) धातोः शतृ]

आसपेम सपर्थैर्नियमयेम ५.४३.१२. [सपति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. धातोराङ्पूर्वाल्लिङ्]

आसभिः आस्यैः मुखैः ४.४५.३. [आस्यप्राति० भिस् । 'पदन्नोमास;०' सूत्रेण 'आसन्' आदेशः]

आसमाविष्करत् समन्तात् सम्यक् प्रकटं कुर्यात् ६.४८.१५. [आङ्+सम्+आविष्पूर्वात् करोतेर्लेट्। व्यत्ययेन शप्]

आसया मुखेन, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इत्यास्यशब्दस्य यलोपः 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेर्याजादेशश्च १.२०.१.

आसया उपवेशनेन १.१२७.८. [आस उपवेशने (अदा०) धातोः 'ण्यासश्रन्थो युच्' इति युचि टापि आसनारूपम्। तस्य तृतीयैकवचने पृषोदरादित्वान्नकारलोपः]

आसवम् समन्तादैश्वर्ययुक्तम् (सवितारम्=ईश्वरम्) २२.१३. सकलैश्वर्यहेतुम् (भगम्) २२.१४. [आङ्+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप्। ततो मत्वर्थेऽकारः]

आससाद समन्तादवसादयति १.६७.४. समन्तात् कृतवान् ऋ० भू० २०३. समन्तान्निवसेत् ७.४.५. [आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्]

आससार समन्ताद् गच्छति ४.३०.११. [आङ्+सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

आसस्राणासः समन्ताद् गतिमन्तः (अश्वाः+तुरङ्गाः) ६.३७.३. [आङ्+सस्रति गतिकर्मा, निघं० २.१४. धातोः शानचि प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः। आङ्+सृ गतौ धातोर्वा कानच्। आसस्राणासः=आससृवांसः नि० १०.२.]

आसः होवे सं० वि० १४२, अथ० १४.२.७५. प्राप्नुयाः ऋ० भू० २०८. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन शपः]

आसा अस्यन्ते वर्णा येन तेन मुखेन १.७६.४. मुखेनाऽऽसनेन वा ५.१७.२. आस्येन, प्र०—अत्र छान्दसो वर्णलोप इति यलोपः २.१.१४. [आस्यप्राति० तृतीयैकवचनम्। छान्दसत्वाद् यकारलोपः]

आसा उपवेशनेन ५.१७.५. [आस उपवेशने+युच्+टाप्। टा प्रत्यये नकारलोपश्छान्दसः]

आसा अन्तिके १.१२९.५. [आसा=समीपात् निघं० २.१६.]

आसाच्यम् समन्तात् साचितुं समवेतुं योग्यम् (शिशुम्) १.१४०.३. [आङ्+षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् ण्यत्]

आसात् समीपात् (देशात्) २०.४८. [आसात्=समीपात् निघं० २.१६.]

आसाते उपविशतः २.४१.५. **आसाथे**=उपविशथः १.१८२.३. [आस उपवेशने (अदा०) धातोर्लट्],

आसादय समन्तात् स्थापय १.२८. समन्तादासय १.४५.६. **आसादयतम्**=समन्तादवस्थापयतम् १४.४. **आसादयध्वम्**=समन्तात् स्थापयत ५.४३.१२. **आसादयात्**=समन्तात् सादयेत् प्रापयेत् २२.१७. समन्तात् प्रापयतु ऋ० भू० २४६. [आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट्]

आऽसादि समन्तात् सीदेत् ५.४३.७. [आङ्पूर्वात् षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

आसाधन् समन्तात् संसाध्नुवन् (मनुष्यः) प्र०—अत्र व्यत्ययेन शप् ३.१.१७. [आङ्पूर्वात् साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन शप्]

आसानः आसीनः (अग्निः=पुरुषार्थी विद्वज्जनः) ६.१०.६. [आस उपवेशने (अदा०) धातोः शानच्। 'ईदासः' इतीकारादेशो न छान्दसत्वात्]

आसानेभिः आसीनैर्ऋत्विग्भिः सह ६.५१.१२. [आस उपवेशने (अदा०) धातोः शानच्। ईकारादेशश्छान्दसत्वान्न भवति]

आसाविषत् समन्तात् सुवेत् ७.४५.३. [आङ् पूर्वात् षुप्रसवैश्वर्ययोः। (भ्वा०) धातोर्लेट्। सिपो णित्वाद् वृद्धिः]

आसिचम् समन्तात् सिक्ताम् (पूर्णां कामनाम्) ७.१६.११. समन्तात् सेचकम् २.३७.१. [आङ्+षिच क्षरणे (तुदा०) धातोर् इगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः। घञर्थे वा कः]

आसिञ्चन्तीः समन्तात् सिञ्चन्त्यः (अवनयः+नद्यः) ५.८५.६. [आङ्+षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्। 'शे मुचादीनाम्' इति नुमागमः]

आसिथ भवसि ६.४५.१७. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचनम्]

आसिषासति समन्ताद्विभक्तुमिच्छति ७.३२.१४. [आङ्पूर्वात् षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्। 'सनीवन्तर्द्धभ्रस्ज०' इटो विकल्पे 'जनसनखनां सञ्झलोः' इत्यात्वे रूपम्]

आसिसक्तु समन्तात् सुखैः संयोजयतु ७.३७.८.

आसीत् अस्ति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लङ् १.३२.११. भा०—सर्वप्रकाशोऽवर्त्तत २५.१०. बभूव निरु० १०.२३, १३.४. है आर्याभि० २.३२, १७.१८. था स० प्र० २८२. हुआ है और होगा स० प्र० २८२, १०.१२१.१. भवति

१४.२८. [अस् भुवि (अदा०) धातोर्लङ् । 'अस्तिसिचोऽपृक्ते' इतीडागमः । आसीत्=बभूव नि० १०.२३.]

आसीद समन्तात् स्थिरो भव १७.७३. समन्तात् सादयति प्र०—अत्र लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थो व्यत्ययश्च, अभितः सीदति गमयति, सर्वतः सीदति प्राप्नोति, समन्तात्प्रापयति २.६. समन्तात्प्रापयसि प्रापयति वा ४.३६. **आऽसीदत्**=सर्वतः सादयसि सादयत्यवस्थापयति वा ४.३०. **आसीदत**=सर्वतो देशान्तरं गच्छत १.८५.६. **आसीदताम्**=समन्तात् प्राप्नुतः १.१४२.७. **आसीदन्तु**=समन्तादास्ताम् ५.२६.६. आभिमुख्यतया सीदन्तु १.४४.१३. [आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट् लङ् च । शिति सीदादेशः]

आसीनः उपविष्टः सन् (उपदेशको जनः) २.४३.३. हमारे हृदय में सदा स्थिर (परमात्मा) आर्याभि० १.५३. **आसीनाः**=स्थिराः (कृतकृत्या विद्वज्जनाः) ३.३१.१२. **आसीनाय**=स्थिताय (जनाय) २२.७. **आसीनेभ्यः**=आसनोपरिस्थितेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२३. [आस उपवेशने (अदा०) धातोः शानच् । 'ईदासः' इतीकारादेशः]

आसीनासः उपस्थिताः सन्तः (पितरः=वृद्धा जनाः) १९.६३. [आसीनो व्याख्यातः । तस्य प्रथमाबहुवचने रूपम्]

आसुतः समन्ताद्रोगनिवारणे सेवितः (सोमः=महौषधिरसः) १९.५. [आङ्+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

आसुता समन्तान्निष्पादिता (क्रिया) १९.१४. [आङ्+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये स्त्रियां टापि रूपम्]

आसुतिम्=समन्ताद् जन्मभावम् २.१.१४. प्रजाम् १.१०४.७. [आङ्+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

आसुरस्य=मेघभवस्य (महीम्=वाणीम्) ५.८५.५. **आसुरः**=असुरो मेघ इव ५.४०.६. अनुद्भूतरूपः (सूर्यः) ५.४०.५. असुरे प्रकाशरूपरहिते वायौ भवः (अग्निः) ३.२९.११. **आसुरात्**=असुरस्य मेघस्याऽयं तस्मात् १९.३४. मेघात् २०.६७. **आसुरे**=असुरस्य मेघस्याऽयं व्यवहारस्तस्मिन्, प्र०—असुर इति मेघनाम निघं० १.१०, १०.३२. [असुरः=असु क्षेपणे (अदा०) धातोः 'असेरुरन्' उ० १.४२. सूत्रेण उरन् । अस्यति प्रक्षिपति धर्मं शुभगुणांश्च सोऽसुरः । असुरप्राति० भवार्थे, इदमर्थे वाण् प्रत्ययः । असुर इति मेघनाम निघं० १.१०.]

आसुरी येऽसुषु प्राणेषु रमन्ते तेषां स्वा (माया=प्रज्ञा) ११.६९. [असुरप्राति० तस्येदमर्थेऽण्प्रत्यये स्त्रियां ङीप् । असुरा=असुरताः स्थानेष्वस्ता स्थानेभ्य इति वा । अपि वासुरिति प्राणनामास्तः शरीरे भवति तेन तद्वन्तः नि० ३.८.]

आसुव समन्तात् प्रेर्ष्व १९.३८. समन्तादुत्पादय कृपया प्रापय ऋ० भू० ३. समन्ताज्जनय ३.५४.११. प्राप्त कीजिए सं० वि० ४, ३०.३. **आऽसुवत्**=सर्वत ऐश्वर्ययोगं कुर्यात् १.११०.३. **आसुवन्ति**=समन्तादुत्पादयन्ति ४.५४.६. **आसुषाव**=समन्तान्निष्पादयेत्, भा०—आसवं निस्सारयेत् १९.२. [आङ्+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लङ् लट् लिट् च । विकरणव्यत्ययेन शः]

आसुषूदति समन्ताद् ददाति १.१०५.१४. [आङ्+षूद क्षरणे (भ्वा०) षूद क्षरणे (चु०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् । च्लेश्चङ् । इकारलोपो न छान्दसत्वात्]

आसुः भवन्ति ६.१९.४. आसन् ४.५१.७. सन्ति ६.२१.५. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लिट् । अस्तेर्भूभावोऽपि न, 'छन्दस्युभयथेति' लिट आर्धधातुकसंज्ञाया अभावात्]

आसुः दोषान् प्रक्षिपेयुः १.१७९.२. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लिट्]

आसूर्य्यम् स्वयं प्रकाशस्वरूप सूर्यादि का प्रकाशक परमात्मा है उसको सं० वि० १९८, १०.७२.७. [आङ् पूर्वात् सूसर्तिभ्यां क्यप्, सर्तेरुत्वं सुवतेश्च रुडागमः 'राजसूयसूर्य०' अ० ३.१.११४. सूत्रेण निपातनात्साधु । सरते सुवति वा सूर्यः]

आसृजत समन्ताद्विविधतया प्रकाशयत सम्पादयत वा १.९.२. [आङ्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लोट्]

आसे मुखे ७.२०.३. [आस्यप्राति० सप्तम्येकवचने रूपम् । आस्यस्य स्थाने 'पद्दनोमास०' सूत्रेणासन् आदेशः । 'अयस्मयादीनि च्छन्दसी' ति अजादावपि पदत्वान्नकारलोपः]

आसेचनानि समन्तात् सेचनाधिकरणानि (पात्राणि) १.१६२.१३. समन्तात् सिञ्चन्ति यैस्तानि (पात्राणि) २५.३६. [आङ्+षिच् क्षरणे (तु०) धातोः 'करणाधिकरणयोश्च' इति ल्युट्]

आसोषवीति अभिविधं भृशं सुवति ३.५६.७. [आङ्+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि लटि रूपम्]

आस्कन्दम् समन्तादुत्प्लुत्य गमनम् २३.५६. **आस्कन्दाय**=समन्ताच्छोषणाय ३०.१८. [आङ्+स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोर्भावे घञ्]

आस्क्राः समन्तादाहूताः (प्रजाजनाः) ७.४३.५. शत्रुवलस्य क्रमितारः (विश्वेदेवाः=विद्वज्जनाः) १.१८६.२. **आस्क्रे**=आक्रमणस्वभावे (अहोरात्रे) ३.६.४]

आस्तम् आसाथाम्, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.१२०.७. **आस्ताम्**=समन्तादुपविशतु ३ ४.११. **आस्ते**=उपविशति ७.५५.६. तिष्ठति १७.५९. [आस उपवेशने (अदा०) धातोर्लङि मध्यमद्विवचने रूपम्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

आस्ताम् भवतः १४.३०. **आऽस्तु**=समन्ताद् भवतु १.५५.७. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लङि प्रथमद्विवचनम् [अन्यत्र आङ्पूर्वाद् अस्तेर्लोट्]

आस्तृणन्ति समन्ताद् यन्त्रैश्छादयन्ति ७.३२. आस्तृणामि समन्तात् सामग्र्याऽऽच्छादयामि २.५. [आङ्+स्तृञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्लट्। 'प्वादीनां ह्रस्वः' इति शिति परे ह्रस्वः]

आस्तृता वस्त्राऽलङ्कारशुभगुणैः सम्यगाच्छादिता दिता [राजपत्नी) १३.१६. [आङ्+स्तृञ् आच्छादने (स्वा०) धातोः क्तप्रत्यये स्त्रियां टाप्]

आस्थ समन्ताद् भवत ७.४३.४. [आङ्पूर्वाद् 'अस भुवि' (अदा०) धातोर्लटि मध्यमबहुवचनम्]

आस्थन समन्तात् सन्ति, प्र०—अत्र 'तप्तनप्तनथनाश्च' इति थनाऽऽदेशः १.१०५.५. [आङ्+अस भुवि (अदा०) धातोर्लटि मध्यमबहुवचने थस्य स्थाने थनादेशे रूपम्]

आस्थात् समन्तादातिष्ठेत् ३.५.७. समन्तात् तिष्ठति प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् २.८. समन्तात्तिष्ठेत् ३.१४.१. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङि 'गातिस्थाघु०' इति सिचो लुकि रूपम्]

आस्थाता समन्तात् स्थिरः सेनापतिः २९.५२. आस्थायुक्तः (राजा) ६.४७.२६. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोस्तृच् कर्त्तरि]

आस्थाथः समन्ताद् भवथः ४.४६.४. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लटि मध्यमद्विवचनम्। छान्दसत्वात् तिष्ठादेशो न भवति]

आस्थानात् आस्थायाः ११.३८. निवासस्थानस्य सकाशात् ११.२१. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

आस्थितम् निश्चितम् (जीवनलक्ष्यम्) ६.१५. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः। 'द्यतिस्यति० इतीत्वम्]

आस्थिवांसः समन्तात् स्थिताः (परमाणवः) ५.४७.२. [आङ्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातोर्लिट् क्वसुः। छान्दसत्वाद् द्वित्वं न]

आस्थुः समन्तात् तिष्ठन्ति १.११५.३. सर्वतस्तिष्ठन्तु १.१२३.१. [आङ् पूर्वात्तिष्ठतेर्लुङ्। 'गातिस्था०' इति सिचो लुक्]

आस्नः आस्यान्मुखात् १.११६.१४. **आस्ना**=आस्येन ५.७३.६. **आस्ने**=आस्याय मुखाय २.३९.६. [आस्यप्राति० पञ्चमी-तृतीया-सप्तमीषु रूपाणि। 'पद्दन्नोमास०' इति सूत्रेण 'आसन्' आदेशः। 'अल्लोपोऽन' इत्यलोपः]

आस्मयेते समन्तादीषद्धसतः ३.४.६. [आङ्+ष्मिङ् ईषद्धसने (भ्वा०) धातोर्लट्]

आस्महे कुर्महे ऋ० भू० १६६, अथर्व० १३.४.४७. [आस उपवेशने (अदा०) धातोर्लटि उत्तमबहुवचनम्]

आस्माकः योऽस्माकमुपदेष्टाऽधिपतिः सः (उपदेष्टा) ४.२४. [अस्मद् सर्वनाम्नः शैषिकोऽण्। 'तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ' अ० ४.३.२. सूत्रेणास्माकादेशः]

आस्यत् व्यसेत् छिन्द्यात् ४.३०.२०. [असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लङ्]

आस्यम् मुखम् २.१३.८. मुखमिव प्रमुखम् (आप्तमध्यापकम्) २.१.१३. **आस्ये**=मुखे २१.५०. प्रज्वलिते ज्वालासमूहेऽग्नौ ११.७७. **आस्येन**=आस्यदन्ति क्लेदी भवन्ति यस्मिँस्तेन (मुखेन) २५.१. अस्यन्ति प्रक्षिपन्ति उदरेऽन्नादिकं येन तदास्यं तेन मुखेन, प्र०—ओष्ठात् प्रभृति प्राक्काकलादास्यम्, अ० १.१.९. इति महाभाष्ये २.११. [आस्यमस्यतेः, आस्यन्दत एतदन्नमिति वा नि० १.९.]

आह वदति ४.३३.५. ब्रूयात् ७.१८.४. प्रतिवदेत् २.२८.१०. उपदिशति ५.३७.१. उपदेश करता है सं० वि० १५६, ७.४१.२. ब्रूते ४.१९.१०. (ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट्। 'ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः' इति सूत्रेग लटः परस्मैपदानामादितः पञ्च णलादयो धातोश्चाहादेशः]

आहनन्याय वीररसाय वादित्रवादनेषु साधवे, भा०—अत्युत्तमानि वादित्राणि यस्य तस्मै (पुरुषाय) १६.३५. [आहनने साधुरिति विग्रहे आहननप्राति० साध्वर्थे यत्। आङ्पूर्वाद् हन् धातोर्ल्युटि=आहननम्। आङ्पूर्वस्य हन्तेरुच्चारणार्थे प्रयोगः। यथा आहत्य तृचो

यच्छास्त्रम् (अ० ७.१.९५. सूत्रे महाभाष्ये) ब्राह्मण इदमाहतमित्यन्यत्र प्रयोगः]

आहनाः या आहन्यन्ते ताः (वाचः) ५.४२.१३. व्याप्ताः (अपः=जलानि) २.१३.१. [आङ्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर् (सर्वधातुभ्योऽसुन्' उ० ४.१८९ सूत्रेणासुन् । आहनः=आहंसीव नि० ५.२. आहनसः=आहननवन्तः नि० ४.१५]

आहलक् समन्ताद्धलं विलेखनमञ्चति सः (राजा) २३.२२. समन्ताद्विलिखितं यथा स्यात्तथा २३.२३. [आङ् पूर्वाद् 'हल विलेखने' (भ्वा०) धातोरचि=आहलः । तदुपपदे 'अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विप्]

आहवनानि समन्ताद् दानानि ७.१.१७. सत्कारपूर्वकनिमन्त्रणानि ७.८.५. [आङ्+हु दानाऽऽदानयोः (जु०) धातोर्भावे ल्युट्]

आहवनीयः आहवनीय अग्नि अर्थात् जिसमें ब्रह्मचर्याश्रम में ब्रह्मचारी होम करता है सं० वि० २.१०, अथर्व०, ९.६.१३. [आङ्+हु दानाऽऽदानयोः (जु०) धातोरनीयर् प्रत्ययः । आहवनीयः (अग्निः) द्यौराहवनीयः श० ८.६.३.१४. यद्वाऽऽआहवनीयमुपतिष्ठते । दिवं तदुपतिष्ठते श० २.३.४.३६. एंष वै स यज्ञः येन तद्देवा दिवमुपोदक्रामन्नेष आहवनीयोऽथ य इहाहीयत स गार्हपत्यस्तस्मादेतं (आहवनीयं) गार्हपत्यात् प्राञ्चमुद्धरन्ति श० १.७.३.२२. यज्ञो वा आहवनीयः स्वर्गो लोकः ऐ० ५.२४, २६. स्वर्गो वै लोक आहवनीयः ष० १.५. तै० १.६.३.६. देवयोनिर्वाऽ एष यदाहवनीयः श० १२.९.३.१०. इन्द्रो ह्याहवनीयः श० २.६.१.३८. तस्य (राज्ञः) पुरोहित एवाहवनीयो भवति ऐ० ८.२४. शम इत्याहवनीयः जै० उ० ४.२६.१५. प्राणोदानावेवाहवनीयश्च गार्हपत्यश्च श० २.२.२.१८. यज्ञ आहवनीयः श० १.७.३.२६. यजमान आहवनीयः तै० ३.३.७.२. एतदायतनो यजमानो यदाहवनीयः तां० १२.१०.१६. यजमानदेवत्यो वा आहवनीयः तै० १.६.५.३. यद्वा आहवनीयमुपतिष्ठते । पशूंस्तद्याचते श० २.३.४.३२. योनिर्वै पशूनामाहवनीयः कौ० १८.६. गो० उ० ४.६. आहवनीयो वा आहुतीनां प्रतिष्ठा श० २.४.३.१०. सामवेदादाहवनीयः (अजायत) ष० ४.१. शिरो वै यज्ञस्याहवनीयः पूर्वोऽर्धो वै शिरः पूर्वार्धमेवैतद् यज्ञस्य कल्पयात श० १.३.३.१२. आहवनीयो वै यज्ञस्य शिरः श० ६.५.२.१. (पुरुषस्य) मुखमेवाहवनीयः कौ० १७.७. मुखमेवास्य (यज्ञस्य) आहवनीयः श० ३.५.३.३.]

आहवन्ते अभितः स्पर्धन्ते प्रेप्सन्ते १.६३.६. समन्तादाददति ३.४३.२. [आङ्+हु दानाऽऽदानयोः (जु०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुर्न भवति बहुलवचनात्]

आहवम् प्रतिष्ठाह्वानम् १.१५५.६. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः 'भावेऽनुपसर्गस्य' अ० ३.३.७५. सूत्रेणाप संप्रसारणञ्च भावे । ततः=आङ्-हवपदयोः समासः]

आहवामहे अभितः स्वीकुर्वीमहि, प्र०—लेट्—प्रयोगोऽयम् ४.५. [आङ्+हु दानाऽऽदानयोः (जु०) धातोर्लेट्]

आहवेषु सङ्ग्रामेषु ६.४७.१. [आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः 'आङि युद्धे' अ० ३.३.७३. सूत्रेणाप्प्रत्ययः सम्प्रसारणञ्च]

आऽहार्षम् समन्ताद् हरेयम् १२.११. [आङ्+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लुङि उत्तमैकवचनम्]

आहावम् समन्तात् स्पर्धनीयम् (अग्निम्) ६.७.२. [आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातो रूपम् । आहाव आह्वानाद् नि० ५.२६.]

आहावाः निपानसदृशा मार्गा जलाधारा वा, प्र०—निपानमाहावः, अ० ३.३.७४. इति निपातनम् १.३४.८. [आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः 'निपानमाहावः' अ० ३.३.७४. सूत्रेण सम्प्रसारणमप्प्रत्ययो वृद्धिश्च निपात्यते । वागाहावः ऐ० ४.२१. ब्रह्म वा आहावः ऐ० २.३३]

आहितम् स्थितम् (ज्योतिः+प्रकाशकं ब्रह्म) ६.९.६. **आहितः**=समन्ताद् धृतः २८.११. स्थापितः सन् (चन्द्रमाः) ऋ० भू० १४४. [आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः । दधातेर्हि' रिति धातोर्हिरादेशः]

आहिता सर्वतः स्थापिता (वाणीची=वाक्) ५.७५.४. (आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः । 'दधातेर्हिरि' ति धातोः स्थाने हिरादेशः]

आहिनुहि समन्ताज्जानीहि १.१४३.४. (आङ्+हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्लोट्]

आहुत बहुभिः सत्कृत (अग्ने=विद्वन्राजन्) ७.१५.७. तृप्ति प्राप्त (अग्ने=प्रकाशमय सेनापते) १७.५०. समन्तात् कृताऽऽह्वान (अग्ने=प्रकाशयुक्त राजन्) ३.२४.३. सत्कारेण निमन्त्रित (विद्यार्थिजन) ५.११.३. **आहुतम्**=

समन्तात् स्पर्द्धितं शब्दितं (अग्निम्) वा ५.८.६ समन्ताद्वरदीक्षादिकर्मभिः स्वीकृतम्, भा०—सुपरीक्षितं वर्त्तुमर्हम् (पतिम्) ३४.१०. समन्तात् स्वीकृतम् (हविः=अन्नम्) १.६४.३. समन्ताद् गृहीतम् (हविः=उत्तममन्नम्) २.१.१३. समन्तात् प्रदत्तम् (पुरोडाशं=अन्नविशेषम्) ३.२८.३. समन्तात् कृताऽऽह्वानम् (विद्वांसमध्यापकम्) ३.५२.६. समन्तात् प्रक्षिप्तम् (हव्यं=द्रव्यम्) २.३२.६. विद्वद्भिः समन्तात् सत्कृतम् (अग्नि=परमेश्वरम्) १.६६.३. जिसको हम दीनता से कहते हैं उस (ईश्वर) को अपना सर्वथा पुकारते हैं आर्याभि० १.४०. **आहुतस्य**=सर्वतः कृतप्रियस्य (अग्नेः) ७.३.५. **आहुतः**=समन्तात् सङ्गृहीतो धर्म इव (अग्निः=पावकः) १५.३८. सम्यक् स्वीकृतः (अग्निः=विद्युत्) ७.१.१६. समन्तात्तर्पितो हुतो वा (अग्निः=सभाद्यध्यक्षो विद्वान् पावको वा १८.५७. सर्वतः कृताऽऽह्वानः (अग्निः=सूर्यः) ३३.६. समन्तात् कृतसत्कारः (उद्यमी विद्वज्जनः) ६.१६.३४. [आङ्+हु-दानाऽऽदानयोः (जु०) धातोर्निष्ठासंज्ञकः क्तः। अथवा आङ्-पूर्वाद् ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तः। 'वचिस्वपियजादीनां किती' ति संप्रसारणम् आहुतम् अभिहुतम् नि० ७.२५.]

आहुतिम् या समन्ताद्धूयते ताम् (सामग्रीम्) ६.१.६. समन्ताद् ग्रहणम् १.१३५.८. समन्ताद् वेद्यां प्रक्षिप्ताम् (सामग्रीम्) २.३७.६. समन्ताद्धूयन्ते गृह्यन्ते शुभानि यया ताम् (क्रियाम्) १.३१.५. समन्ताद् घृतादिसुसंस्कृताम् (क्रियाम्) १.६३.३. **आहुतिः**=होमः, प्रलयः १.१०५.५. **आहुती**=आदातव्ये (क्रिये) २१.५२. **आहुतीः**=या आहूयन्ते प्रदीयन्ते ताः १६.१६. [आङ्+हु दानादानयोः (जु०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। आहुतिर्हि यज्ञः श० ३.१.४.१. द्वे वा आहुती सोमाहुतिरेवान्याज्याहुतिरन्या श० १.७.२.१०. तद् यदाहूयति तस्मादाहुतिर्नाम श० ११.२.२.६. आहुतयो वै नामैता यदाहुतय एताभिर्वै देवान् यजमानो ह्वयनि तदाहुतीनामाहुतित्वम् ऐ० १.२. तस्मिन्नग्नौ यत् किञ्चाभ्यादधात्याहितय एवास्य ता आहितयो ह वै ता आहुतय इत्याचक्षते परोक्षम् श० १०.६.२.२.

आहुवध्यै आह्वयितुम् ६.६०.१३. समन्ताच्छब्दयितुमुपदेष्टुं श्रोतुं वा, प्र०—अत्र 'ह्वेञ्' इत्यस्मात् 'तुमर्थे सेसेन०' इति कध्यै प्रत्ययः ३.१३. [आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः 'तुमर्थे सेसेन०' इति सूत्रेण तुमर्थे कध्यै प्रत्ययः। 'वचिस्वपियजादीनां किती' ति सम्प्रसारणम्]

आहुवामहे समन्तात् स्पर्द्धामहे ५.५६.८. (आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च धातोर्लट। 'बहुलं छन्दसि' अ० ६.१.३४. सूत्रेण संप्रसारणम् 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। उवङ्ङादेशश्च। आहुवामहे=आह्वयामहे नि० ११.५०]

आहुवे समन्तादाददामि गृह्णामि वा १.१११.४. आदद्मि ७.१६.१. आह्वये, भा०—प्रकटये १५.३२. [आङ्+हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। अथवा=आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) लट्। 'बहुलं छन्दसि' अ० ६.१.३४. सूत्रेण सम्प्रसारणम्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि, उवङादेशे च रूपम्]

आहुः कथयन्ति १.१६४.१६. कथयन्तु ५.३०.२. कथयेयुः ५.५३.३. उपदिशन्ति ३.७.८. वदन्ति १५.४६. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट्। 'ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः' अ० ३.४.८४. सूत्रेण प्रथमबहुवचन उस्, आहादेशश्च धातोः]

आहूर्यः आह्वातव्यः, प्र०—अत्र ह्वेञ् धातोर्बाहुलकाद्यक् रुडागमश्च १.६६.२. [आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् यकि रुडागमे कृते, कित्वाद् यजादित्वात् संप्रसारणे च रूपम्]

आऽहूषत आभिमुख्येनाऽऽह्वयन्ति शिल्पाऽर्थं स्पर्धयन्ति वा, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् 'बहुलं छन्दसि' इति संप्रसारणं च १.१४.२. (आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'बहुलं छन्दसि' अ० ६.१.३४. सूत्रेण सम्प्रसारणम्]

आह्लादुनीवृतः ये ह्लादुन्या शब्दकर्त्र्या विद्युता युक्ताः (मरुतः=मानवाः) ५.५४.३. [आह्लादुनी=आङ्+ह्लाद अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् उनन् प्रत्यये स्त्रियां ङीप्। वृतः=वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः क्तः। तयोः समासः]

आऽह्वयन्त आह्वयन्ते ४.६.६. **आह्वये**=समन्तात् शब्दयेयम् ५.५६.१. आह्वामहे समन्तात् स्पर्धामहे ३.५३. [आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'आह्वामहे' प्रयोगे 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपो लुकि 'आदेच उपदेशेऽशिती' त्यात्वे रूपम्]

इक्षवः इक्षुदण्डाः, गुडादिनिमित्ताः (इक्षुदण्डाः) २५.१. [इष इच्छायाम् (तुदा०) धातोः 'इषेः क्सुः' उ० ३.१५७. सूत्रेण क्सुः। इष्यते इति इक्षुः]

इङ्गय गमय ४.५७.४. **इङ्गयन्ति**=चेष्टन्ते १.१६४.४५. [इगि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट् लट् च]

इच्छ भा०—गृहाण १२.६२. **इच्छति**=काङ्क्षति १.८०.६. [इष इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्लोट् । 'इषुगमियमां छः' इति शिति छकारादेशः]

इच्छत इच्छते ऋ० भू० २५१, अथर्व० ११.५.१७. **इच्छते**=इच्छा करता है सं० वि० १८०, अथर्व० ११.५.१७. स्वीकुर्यात् ऋ० भू० २३७. **इच्छस्व**=तू इच्छा कर स० प्र० १५४, ऋ० १०.१०. **इच्छन्त**=इच्छन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.६८.४. [इष इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्लोट् षकारस्य छकारादेशश्शिति]

इच्छन्तः श्रद्धालवो भूत्वा (जनाः) १.७२.२. इच्छा करते हुए (ऋषयः=वेदविद्जनाः) सं० वि० १९८, अथर्व० १९.४१.१. [इष इच्छायाम् (तुदा०) धातोः शतृप्रत्यये 'इषुगमियमां छः' इति शिति छत्वे च रूपम्]

इच्छन्ती इच्छा करती हुई (वधूः) सं० वि० १०५, ५.३७.३. **इच्छन्तीः**=इच्छन्त्यः (गाव इव धीतयः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति पूर्वसवर्णः १.२५.१६. [इष इच्छायाम् (तुदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

इच्छमानः उत्पन्न करना चाहता हुआ (परमेश्वर) आर्याभि० २.३०, १७.१७. अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १७.१७. **इच्छमानाः**=इच्छन्तः (मेधाविनो जनाः) प्र०—व्यत्ययेनाऽत्राऽऽत्मनेपदम् १.११०.५. अभिलषन्तः (परिषदः=सभाः) ३.३३.७. [इष इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्लटः स्थाने शानच् । शिति षकारस्य छत्वे 'आने मुग्' इति मुकि रूपम्]

इच्छमानासः भा०—सेवमानाः (ऋत्विजो नरः=नेतारो जनाः) ३.२.६. [इच्छमानो व्याख्यातः । तस्य प्रथमा बहुवचने जसोऽसुगागमः]

ईट्टे स्तौति १.१३४.५. [ईड स्तुतौ' (अदा०) धातोर्लट्]

इडया अन्नादिनिमित्तरूपया पृथिव्या १२.७४. प्रशंसितया वाचा ५.४.४. **इडः** प्रशंसनीयस्य (अधिकारस्य) प्र०—इड इति पदनाम निघं० ५.२. अत्रेडधातोर्बाहुलकादौणादिकः क्विप्, आदेर्ह्रस्वश्च १५.३०. वाण्याः प्र०—अत्र 'जसादिषु छन्दसि वावचनम्' इति याडभावः २८.१. विद्याप्राप्तये स्तोतुमर्हः (अग्निः=प्रत्यक्षो भौतिकः), दाहप्रकाशादिगुणाधिक्येन स्तोतुमर्हः (अग्निः=विद्युत्) २.३. अन्नम् ११.२९. **इडा**=ईड्यते स्तूयतेऽनया सा वाणी, प्र०—इडेति वाङ्नामसु पठितम् निघं० १.११, अत्र 'ईड' धातोः कर्मणि वाहुलकादौणादिकोऽन् प्रत्ययो ह्रस्वत्वं च 'वा छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति गुणादेशाऽभावश्च । अत्र सायणाचार्येण 'टापं चैव हलन्तानाम्' इत्यशास्त्रीयवचनस्वीकारादशुद्धमेवोक्तम् १.१३.९. प्रशंसितुमर्हा, भा०—स्तुतियुक्ता (वाणी) २८.८. स्ताविका (सरस्वती=विदुषी स्त्री) २१.५४. स्तोतुं योग्योपदेशिका (स्त्री) २०.६३. भूमिः २१.१९. भा०—सर्वदोषगुणविज्ञापिका वाक् २८.१८. सुशिक्षिता मधुरा वाक् २९.३३. प्रशंसितया वाचा २१.३२. **इडाभिः**=प्रशंसिताभिर्वाग्भिः ३३.३४. भूमिवाणीनीतिभिः प्र०—इडेति पदनाम निघं० ५.५. अनेन प्राप्तुं योग्या नीतिर्गृह्यते १.४८.१६. अन्नादिभिः ५.५३.२. पृथिवीभिः प्र०—इडेति पृथिवीनाम निघं० १.१. **इडाम्**=स्तोतुमर्हां वाचम् १२.५१. **इडायाः**=स्तोतुमन्वेष्टुमर्हाया वेदवाण्याः, प्र०—इडेति वाङ्नामसु पठितम् निघं० १.११, ४.२२. **इडेः**=सुशिक्षिता वागिव स्त्रि ३८.२. इडा पृथिवी ३.२७. प्रशस्ते ! (विदुषि कन्ये) १.१८८.८. हे स्तोतुमर्हे (पत्नि) ८.४३. [ईड स्तुतौ (अदा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिकोऽन् प्रत्ययः । धातोश्च ह्रस्वत्वम् । स्त्रियां टापि इडा रूपम् । इडः=ईड स्तुतौ धातोर्बाहुलकात् क्विप्, धातोश्च ह्रस्वत्वम् इळः पदनाम निघं० ५.२. इळा पृथिवीनाम निघं० १.१. वाङ्नाम निघं० १.११. अन्ननाम निघं० २.७. गोनाम निघं० २.११. पदनाम निघं० ५.५. इळः (बहु० व०) अन्नं वा इडः ऐ० २.४.६.१५. प्रजा वाऽइळः श० १.५.४.३. वर्षा वाऽइड इति हि वर्षा इडा यदिदं क्षुद्रꣳ सरीसृपं ग्रीष्महेमन्ताभ्यान्नित्यक्तं भवति तद्वर्षा ईडितमिवान्नमिच्छमानं चरति तस्माद् वर्षा इडः श० १.५.३.११. इळो यजति वर्षा एव वर्षाभिर् ईडितमन्नाद्यमुत्तिष्ठति कौ० ३.४. इडा इयं (पृथिवी) वा इडा कौ० ९.२. गौर्वाऽइडा श० ३.३.१.४. या वा सा (इडा) सीद्गौर्वै सासीत् श० १.८.१.२४. इडाहि गौः श० २.३.४.३४. पशवो वा इडा कौ० ३.७, ५.७, २९.३. श० १.८.१.२२, ७.१.१.२७. ष० २.२. तां० ७.३.१५, १४.५.३१. गो० उ० १.२५. तै० १.६.६.६. ऐ० २.९, १०, ३०. (पशवः) अथेडां पशून्त्समवद्यति श० १.७.४.९. अन्नं पशव इडा कौ० १३.६. अन्नं वा इळा ऐ० ८.२६. कौ० ३.७. श्रद्धेडा श० ११.२.७.२०. उत मैत्रावरुणी (इडा) इति । यदेव (इडा मित्रावरुणाभ्याꣳ समगच्छत श० १.८.१.२७. यदेवास्यै (इडायै) घृतं पदे समतिष्ठत तस्मादाह घृतपदी (इडा) इति श० १.८.१.२६. इडा वै मानवी यज्ञानूकाशिन्यासीत् तै० १.१.४.४. सा (मनुर्दुहिता) एषा निदानेन

यदिडा श० १.८.१.११. एतद्ध वै मनुर्बिभयांचकार इदं वै मे तनिष्ठं यज्ञस्य यदियमिडा पाकयज्ञिया श० १.८.१.१६. मनुर्ह्येतामग्रेऽजनयत तस्मादाह मानवी (इडा) इति श० १.८.१.२६. सा (इडा) वै पश्चावत्ता भवति श० १.८.१.१२.]

इडस्पदे पृथिव्यन्नस्थाने, भा०—संसारस्य मध्ये २१.२९. [इड्-पदयोः समासः । षष्ठ्या अलुक्]

इडावान् बह्वन्नयुक्तः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.२.५. [इडा शब्दादातिशायने मतुप् । इडेति पृथिवीनाम निघं० १.१. अन्ननाम निघं० २.७.]

इडेन्यः प्रशंसनीयधर्म्यकर्मा (अतिथिः) ५.१.९. [ईळ स्तुतौ (अदा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिक एण्य प्रत्ययः । केन्यः प्रत्ययो वा कर्त्तरि छान्दसत्वात्]

इत् एति जानात्यनेन तदिज्ज्ञानम् ३.३४. ईयते प्राप्यते सोऽयमित् तस्माद् देशात् प्र०—अत्र कर्मणि क्विप्, ततः 'सुपां सुलुग्०' इति ङसेर्लुक् १.४.५. [इण् गतौ (अदा०) धातोः कर्मणि क्विप्]

इत् निश्चये १.१०४.५. ही आर्याभि० २०.४५, ३४.३८. अपि २०.५४. इव १.७१.३. चाऽर्थे १.२१.१. किन्तु स० प्र० ९१, १.१६४.३९. पादपूरणाऽर्थे १.६१.१४. एव ६.६१.८. [इत् पदपूरणः नि० १.९. महान् नि० ६.१.]

इत प्राप्नुत ३३.४७. प्राप्नुवन्ति ३.४७. यन्तु प्राप्नुवन्तु ३.२७. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

इत ऊतिः इतः ऊतिः रक्षा यस्मात्तत् (ऐश्वर्यम्) १.१५१.९. **इत ऊतिः**=इतः ऊती रक्षणाद्या क्रिया यस्मात् सः (सूर्यः) १.१४६.२. [इतः-ऊतिपदयोः समासः । इतः=इदम् सर्वनाम्नस्तसिल् । ऊतिः=अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'ऊतियूति०' अ० ३.३.९७. सूत्रेण क्तिन् प्रत्ययान्तो निपात्यते]

इतन प्राप्नुत ३.२९.९. प्र०—अत्र 'इण गतौ' इत्यस्माल्लोटि युष्मद् बहुवचने 'तप्तनप्तनथनाश्च' अ० ७.१.४५. इति तनबादेशः ५.८७.८. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोटि मध्यमबहुवचने त प्रत्ययस्य स्थाने तनबादेशः]

इतरजनानाम् इतरे च ते जना इतरजनास्तेषाम् २८.३६. [इतर-जनपदयोः कर्मधारयः]

इतः अस्मात् (स्थानात्) २.८. अस्माच्छरीरान्मर्त्यलोकाद्वा ३.६०. अस्मात्कारणात् १.९८.१. अस्माद्वर्त्तमानाद्यतः १.११९.८. इस हेतु से सं० वि० १४५, ४.२. [इदम् सर्वनाम्नः 'पञ्चम्यास्तसिल्' इति तसिल् । 'इदम इश्' इति इशादेशः । 'तद्धितश्चासर्वविभक्ति' रित्यव्ययसंज्ञा]

इतः प्राप्तः (प्रेरको विद्वान्) १९.२. प्राप्ताः (रक्षादिक्रियाः) १.१३०.५. [इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः]

इति प्रकाराऽन्तरे ६.२२. अनेन प्रकारेण ४.३३.५. इव १२.६४.

इत्था अस्माद्धेतोः ३३.२७. अनेन प्रकारेणाऽस्माद्धेतोर्वा ६.४७.२०. एवं प्रकारेण ४.४१.३. अनेन हेतुना ३.९.५. धारणपालनवृद्धिक्षयहेतुना, प्र०—अत्र 'था हेतौ च छन्दसि' अ० ५.३.२६. इति था प्रत्ययः १.२.६. अस्मादिव ६.१८.५. इत्थमस्मै हेतवे १.९२.१७. [इदम् सर्वनाम्नः प्रकारवचने 'था हेतौ च च्छन्दसि' अ० ५.३.२६. सूत्रेण था-प्रत्ययः 'एतेतौ च रथोः' इति थकारादौ प्रत्यये परत इदम 'इत्' आदेशः । इत्था सत्यनाम, निघं० ३.१०. पदनाम निघं० ४.२. इत्था=अमुत्र नि० ४.२५]

इत्थाधिये अनेन प्रकारेण धीर्यस्य तस्मै (मर्त्याय=मनुष्याय) ४.११.३. **इत्थाधीः**=अनेन हेतुना धीर्धारणावती बुद्धिर्यस्य सः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) २.२०.२. [इत्था-धीपदयोः समासः । इत्था व्याख्यातम् । धीः=ध्यै चिन्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'ध्यायतेः सम्प्रसारणम् अ० ३.२.१७८ वा० इति क्विप् सम्प्रसारणञ्च]

इत्य आगत्य ऋ० भू० २८९, अथर्व० १५.११.२. [इण् गतौ (अदा०) धातोः क्त्वा । क्त्वो ल्यप् छान्दसत्वात् । 'क्त्वाऽपि छन्दसि' अ० ७.१.३८. सूत्रेऽपि पदेन सर्वोपाधिव्यभिचारादसमासेऽपि ल्यप्]

इत्या एमि जानामि यया रीत्या सा १८.१५. एतुमर्हा क्रिया १२.६२. प्राप्तुं योग्या (स्त्री) १.१६७.५. **इत्याम्**=एतुमर्हां क्रियाम् १२.६२. **इत्याः**=एतुं प्राप्तुं योग्याः (धेनवः=गावः) ७.३६.३. **इत्यै**=सङ्गत्यै प्राप्तये वा १.११३.६. [इण् गतौ (अदा०) धातोः 'संज्ञायां समजनिषद०' अ० ३.३.९९. इति सूत्रेण स्त्रियां क्यप् । ततष्टाप् । 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुग्' इति तुगागमः]

इत्यै प्रापयितुम् १.१२४.१. [इण् गतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां भावे क्यप् प्रत्यये टापि चतुर्थ्यां रूपम् । 'तुमर्थाच्च भाववचनात्' अ० २.३.१५. सूत्रेण चतुर्थी]

इत्वा प्राप्य ३२.१२. [इण् गतौ (अदा०) धातोः क्त्वा]

इथः प्राप्नुथः १०.१६. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लटि

मध्यमद्विवचनम्]

इदम् अन्तरिक्षस्थमुदकम्, प्र०—इदमित्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२, ५.११. जलम् १९.७२. जलादि १९.७८. [इदम् उदकनाम निघं० १.१२.]

इदा एव ४.१०.५. इदानीम् ४.३३.११. [इदा नवनाम निघं० ३.२८. इदमः सर्वनाम्नो दा प्रत्ययः]

इदानीम् वर्त्तमानसमये ३४.३७. इसी समय में सं० वि० १५६, ७.४१.४. [इदम्सर्वनाम्नः 'दानीं च' अ० ५.३.१८. सूत्रेण दानीम् प्रत्ययः। इदानीम्=नवनाम निघं० ३.२८.]

इदावत्सरः निश्चयेन समन्ताद्वर्त्तमानः संवत्सर इव (विद्वान् जिज्ञासुर्वा) २७.४५. **इदावत्सराय**=इदावत्सरस्तृतीयस्तत्र कार्यसम्पादनाय, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययः ३०.१५.

इदु पादपूरणे १.६१.८.

इद्धम् दीप्तम् (सूर्यम्) १.६६.५. प्रदीप्तम् (विद्वज्जनम्) १.७३.४. **इद्धः**=शुभलक्षणैः प्रकाशितः (अग्निः=विद्वान्-राजा) १२.३३. प्रदीप्यमानः (द्यौः=सूर्यः) १२.२१. प्रदीप्तः (सविता) १२.६. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः क्तः। 'अनिदिताम्०' इति नकारलोपः]

इद्धाऽग्नयः इद्धाः प्रदीप्ता मानस-बाह्याग्नयो यैस्ते (नरः) १.८३.४. [इद्ध-अग्निपदयोर्बहुव्रीहिः]

इद्वत्सरः निश्चितसंवत्सर इव (विद्वान् जिज्ञासुर्वा) २७.४५. **इद्वत्सराय**=पञ्चमाय वर्षाय ३०.१५.

इधते प्रदीपयति ७.१.८. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन शः]

इधानः प्रदीप्तः (अग्निः=पावकः) १५.३६. इन्धनैः पावकवद् विद्यया प्रदीप्तः (विद्वज्जनः) १.७९.५. प्रदीप्यमानः (सूर्यः) १२.२२. प्रकाशमानः (बलाध्यक्षो न्यायाधीशः) ४.१२.२. दीपयन् (अग्निः=विद्वान्) ६.१०.२. **इधानाः**=देदीप्यमानाः (अग्नयः) ७.३.३. प्रकाशमानाः (अग्नयः=पावकाः) ६.६६.२. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः शानच्]

इधीमहि प्रदीपयेम ५.६.४. प्रकाशयेम ३.२७.१५. जीवेम ३.१८. प्रकाशयेमहि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्नमो लुक् २.४. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्लिङ्। 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुकि तत्स्थानभाविनः श्नमोऽपि लुक्]

इध्मभृतिः इध्मानां धारकः (पक्थी=पाचकः) ६.२०.१३. [इध्मभृतिपदयोः समासः। इध्मः=ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः 'इषियुधीन्धि०' उ० १.१४५. सूत्रेण मक्प्रत्ययः। भृतिः=डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तिच्प्रत्ययः। क्तिन् वा कर्त्तरि छान्दसत्वात्]

इध्मम् इन्धनम् १.९४.४. प्रदीप्तम् (मूर्धानम्) ४.२.६. देदीप्यमानम् (अनीकं=विजयमानं सैन्यम्) ४.१२.२. **इध्मः**=प्रदीप्तः (सूर्यः) ३३.२४. प्रदीपकः (वसन्तः=पूर्वाह्णकालः) ३१.१४. इन्धनानि, अग्निर्वा ऋ० भू० १२७. **इध्मेन**=समिधेन (घृतेन=आज्येन) ३.१८.३. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः 'इषियुधीन्धि०' उ० १.१४५. सूत्रेण मक्प्रत्ययः। इध्मः समिन्धनात् नि० ८.४. यज्ञेध्म इति कात्थक्यः। अग्निरिति शाकपूणिः ८.५. आत्मा वा इध्मः तै० ३.२.१०.३. वनस्पतय इध्माः तै० २.१.५.२. वनस्पतय इध्माः ऐ० ५.२८. इध्मः तासाम् (आप्रीदेवतानाम्) इध्मः प्रथमागामी भवति नि० ८.५. इन्धे ह वा एतदध्वर्युः। इध्मेनाग्निं तस्मादिध्मो नाम श० १.३.५.१ इध्मः पदनाम निघं० ५.२.]

इध्यते प्रदीप्यते २८.१. प्रज्ञाप्यते प्रदीप्यते वा ३.१.२१. **इध्यसे**=प्रदीप्यसे ५.२१.२. **इध्यस्व**=प्रदीप्तो भव २७.२. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः कर्मणि लट्। अन्यत्र लोडपि]

इध्यमानः देदीप्यमानः (राजा) ५.३.८. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः कर्मणि शानच्]

इनक्षत् व्याप्नुयात्, प्र०—इनक्षदिति व्याप्तिकर्मसु पठितम् निघं० २.१८, ८.५३. [इनक्षति व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८. ततो लेटि रूपम्]

इनक्षतः व्याप्नुवतः १.५१.९ **इनक्षन्**=व्याप्नुवन् (अग्निः=कारणाख्य ईश्वरः) प्र०—इनक्षतीति व्याप्तिकर्म० निघं० २.१८, १२.२४. [व्याप्त्यर्थकाद् इनक्षतेः शतृ]

इनतमः अतिशयेनेश्वरः समर्थः (राजा) ३.४९.२. [इनतमः=ईश्वरतमः नि० ११.२१. इनः=इण् गतौ (अदा०) धातोः 'इषसिञ्जि०' उ० ३.३. सूत्रेण नक् प्रत्ययः। इनप्राति० अतिशायने तमप्। इनः=ईश्वरनाम निघं० २.२२. इनः=समित ऐश्वर्येणेति वा समितमनेनैश्वर्यमिति वा नि० ३.१२.]

इनधते ईश्वरेण सङ्गमयेत् ४.१२.१ [इन ईश्वरनाम निघं० (२.२२) तदुपपदे दधातेर्लट्]

इनधते इनमीश्वरं दधाति यस्मिँस्तस्मिन् (दुरोणे=

गृहे) ४.२.७. [इनो व्याख्यातम्, तदुपपदे दधातेर् बाहु० औणा० कितच्]

इनस्य महदैश्वर्यस्य स्वामिनः १.१४६.१. समर्थस्येश्वरस्य १.१५५.४. **इनः**=स्वामी सूर्यः १.१६४.२१. समर्थः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) २.२०.२. ईश्वरः ७.३६.२. **इना**= इनान् प्रभून् समर्थान् ३.२८.२. [इनः=इनतमे पदे पदे द्रष्टव्यः]

इनासः ईश्वराः समर्थाः (नरः) ५.५४.८. [इन प्राति० प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमे रूपम्]

इनुहि व्याप्नुहि ६.१०.७. **इनोति**=प्राप्नोति ६.४.३. **इनोषि**=व्याप्नोषि ४.१०.७. प्रेरयसि ६ ५.३. [इन्वति व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८. इन्वति गतिकर्मा निघं० २.१४. ततो लोट्, लट् च]

इन्दवः उन्दन्ति स्नेहयन्ति सर्वान् पदार्थान् ये ते रसाः, प्र०—अत्र 'उन्देरिच्चादेः' उ० १.१२. इत्युः प्रत्ययः, आदेरिकारादेशश्च १.१६.६. जलानि, अन्व०—उन्दन्ति आर्द्रीकुर्वन्ति पदार्थांस्ते जलरसाः, प्र०—इन्दव इत्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२, १.१५.१. सोमाः १.८४.५. जलानि, क्रियामया यज्ञाः, प्राप्तव्या भोगाश्च, प्र०—इन्दुरिति यज्ञनामसु पठितम् निघं० ३.१७, पदनामसु च निघं० ५.४, १.२.४. सोमलताद्युदकादीनि ६.४१.२. रसवन्तः सोमाद्यौषधिगणाः १.१४.४. सङ्गन्तारः पूजनीयाः (यज्ञाः) ४.४७.२. आर्द्रीभूताः (मनुष्याः) १.१३४.२. सस्नेहाः (भोक्तव्याः पेयाश्च पदार्थाः) ३.४०.५. सार्द्राः (सोमाः= ओषध्यादयः पदार्थाः) ३.४०.४. ऐश्वर्ययुक्ता आनन्दिताः (भद्रा धार्मिका जनाः) ७.३१.६. सुखकारका जलादिपदार्थाः ऐश्वर्याणि ४.५०.१०. उन्दन्ति स्नेहयन्ति सर्वान् पदार्थांस्ते रसाः १.१.६. **इन्दवे**=ऋजवे विद्यार्थिने (जिज्ञासवे छात्राय) ३३.६२. **इन्दुभिः**=आह्लादकारिभिर्गुणैः पदार्थैर्वा १.५३.४. स्निग्धैः पदार्थैः सह १.२३.१५. सोमलतादिभिश्चन्द्रकिरणैर्वा ६.१६.१६. आनन्दकरैरुदकैः ६.४२.२. **इन्दुम्**=रोगहरौषधिरसम् २६.२३. परमैश्वर्यम् २०.५७. सूर्यम् २१.५८. आर्द्रस्वभाविनं जनम् २०.४६. जलम् १३.४३. ऐश्वर्यम् ५.१८.२. परमैश्वर्यकारकम् (सोमम्=ओषधिम्) १९.३४. **इन्दुः**=जलवदार्द्रस्वभावः (देवः=परमेश्वरः) २.२२.२. परमैश्वर्ययुक्तः (देवः=जीवः) २.२२.३. सुस्नेहयुक्तः (पदार्थः) १९.९५. आनन्दकरः (शिल्पिजनः) ६.४४.२२. ऐश्वर्यकरः (वाजी= अश्वः) १.१७५.१. चन्द्रः २.२२.१. सोमः ६.४४.२१. आर्द्रीकरः (सूर्यः) ६.३९.३. **इन्दून्**=आह्लादान् ६.४७.१४. **इन्दो**=शमादिगुणयुक्तसंन्यासिन् सं० वि० १०५, ९.११३.२. सुप्रजासु चन्द्रवद्वर्त्तमानः (सेनेशः) १.१७६.५. आर्द्रीकारकसभाध्यक्ष १.४३.८. सोम्यगुणसम्पन्न (ईश्वरो विद्वान्वा) १.९१.१. हे सर्वानन्दयुक्त जगदीश्वर सं० वि० १९७, ९.११३.११. ऐश्वर्यवन् (विद्वन्राजन्) ४.२८.२. **इन्दोः**=सोमगुणसम्पन्नस्य (गृहपत्युः पुत्रस्य) ८.९. [उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोः 'उन्देरिच्चादेः' उ० १.१२. सूत्रेण उः प्रत्यय आदेश्चेकारादेशः। उन्नत्त्यार्द्रीकरोति पदार्थानिति विग्रहः। इन्दुः=उदक नाम निघं० १.१२. यज्ञनाम निघं० ३.१७. पदनाम निघं० ५.४. इन्दुरिन्धेरुनत्तेर्वा नि० १०.४१. सोमो वाऽइन्दुः श० २.२.३.२३. सोमो वै राजेन्दुः ऐ० १.२९]

इन्द्र परमेश्वर सूर्य्यो वा अंत्राऽऽह यास्काचार्य्य 'इन्द्र इरां दृणातीति वेरां ददातीति यज्वनाम्' नि० १०.८. 'इन्द्राय साम गायत० नि० ७.२. इराशब्देनाऽन्नं पृथिव्यादिकमुच्यते। तद्दारणात्तददानात्तद्धारणात् चन्द्रलोकस्य प्रकाशाय द्रवणात्तत्र रमणादित्यर्थेनेन्द्रशब्दात् सूर्य्यलोको गृह्यते। तथा सर्वेषां भूतानां प्रकाशनात्प्राणैर्जीवस्योपकरणादस्य सर्वस्य जगत उत्पादनाद् दर्शनहेतोश्च सर्वैश्वर्य्ययोगाद् दुष्टानां शत्रूणां विनाशकाद् दूरे गमकत्वाद्यज्वनां रक्षकत्वाच्चेत्यर्थादिन्द्रशब्देनेश्वरस्य ग्रहणम्। एवं परमेश्वराद्विना किञ्चिदपि वस्तु न पवते। तथा सूर्य्याकर्षणेन विना कश्चिदपि लोको नैव चलति तिष्ठति वा। "प्रतुविद्युम्नस्य स्थविरस्य घृष्वे" ऋ० ६.१८.१२. यस्याऽयं महाप्रकाशस्य वृद्धस्य सर्वपदार्थानां जगदुत्पत्तौ संघर्षकर्त्तुः सहनशीलस्य बहुपदार्थनिर्मातुरिन्द्रस्य परमैश्वर्य्यवतः परमेश्वरस्य सूर्य्यलोकस्य सृष्टेर्मध्ये महिमा प्रकाशते तस्याऽस्य न कश्चिच्छत्रुः, न किञ्चित्परिमाणसाधनसमर्थादुपमानम्, नैकत्राधिकरणं चाऽस्ति, इत्यनेनोभावर्थौ गृह्येते १.३.४. जगदीश्वर सुवीर वा अ०—शूरवीरेश्वर वा ३.४६. मृदूग्रस्वभाव (मनुष्य) ३.५३.५. न्यायप्रापक (राजन्) ६.४७.८. सर्वाऽर्थस्य सुखस्य धर्त्तः (राजन्) ६.४७.१०. हे महाराजाऽधिराज (ईश्वर) आर्याभि० १.२८, ऋ० ५.८.१७.४१. विद्वन्मनुष्य २६.४. मेघाऽवयवानां छेदकवच्छत्रुछेदक (सभेश) १.५२.८. इन्द्रियाऽधिष्ठातर्जीव ३.३२.१०. सर्वसेनास्वामिन् (सेनापते) ७.२३.५. न्यायेश विद्वन् (जन) ६.२१.८. दातः (प्रजाजन) ४.३२.२०. सत्यैश्वर्यप्रद (सज्जन) ४.३२.११. अनन्तबलेश्वर १.८.३. यज्ञैश्वर्ययुक्त (विद्वज्जन) ४.२२.११. दारिद्र्यविदारक (शिल्पिजन) ३.३५.७. शिल्पविद्यैश्वर्ययुक्त (शिल्पिजन) ३.३५.४. सभाद्यध्यक्ष १.५५.७. दुःखविदारक

विद्वन् (राजन्) ८.३९. विजयप्रद सभाद्यध्यक्ष १.६३.७. शत्रुविनाशक (सभापते) १.१०४.८. शत्रूणां विदारयितः (सेनापते) १.८४.४. शत्रुजित् (सेनापते) ७.३८. सुखैश्वर्यप्रापक (विद्वज्जन) ६.२१.१२. सुखानां धारक (सेनापते) १७.५१. सुखेच्छो विद्यैश्वर्ययुक्त जन २०.२९. सूर्यवन्न्यायप्रकाशितराजन् ५.३५.१. ऐश्वर्यकारक (सज्जन) ३.४१.१. ऐश्वर्यवर्द्धक (राजन्) ६.४६.११. ऐश्वर्ययुक्त पुरुष स० प्र० १४८, १०.८५.४५. ऐश्वर्याय द्रवन्, ऐश्वर्ये रममाण वा (सभापते) प्र०—इन्दवे द्रवतीति वेन्दौ रमत इति वा, निरु० १०.८, ८.३९. ऐश्वर्यमिच्छुक (राजन्) ५.४०.१. ऐश्वर्ययुक्त स्वामिन् (राजन्) ३.५३.६. परमैश्वर्यप्रापक, शत्रुनिवारक, सभासेनयोः परमाऽध्यक्ष (महाराज) १.११.७. परमैश्वर्यप्रयोजक (राजन्) ४.२२.५. हे सर्वविघ्नविदारक सकलैश्वर्ययुक्त सम्राट् ३.३५. सर्वतो रचयितरीश्वर १.८.९. सकलैश्वर्यसम्पन्न (राजन्) ३.५१.८. महायशः सर्वविभागकारकेश्वर, सर्वविभक्तरूपदर्शक सूर्यलोक वा १.१०.७. सर्वज्ञेश्वर १.१०.२. सर्वश्रोतौ व्यापिन्नीश्वर प्रकाशमान सूर्यलोक वा १.१०.३. सर्वथा स्तोतव्य परमेश्वर १.९.४. सर्वस्वामिन्नीश्वर सभाध्यक्ष राजन्वा १.११.२. हे यज्ञपते (विद्वज्जन) ३.३६.१. पुष्कलैश्वर्यकारक (राजन्) ४.३०.२२. विद्युदग्निरिव वर्त्तमान (राजन्) १.१७४.२. विद्यैश्वर्यवर्द्धक (राजन्) ६.१७.१४. विद्यादिपरमैश्वर्ययुक्त विद्वन् (जन) प्र०—इन्द्र इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.४. अनेन गन्ता प्रापको विद्वान् जीवो गृह्यते १.५.६. वायुः १.१८.५. अविद्याविच्छेदक (विद्वज्जन) २.११.१६. आयुर्वेदविद्यायुक्त (वैद्य) २.११.११. विद्योपदेशकर्त्तः (विद्वज्जन) ६.२२.४. पूर्णायुः कामुक (राजादिमनुष्य) ३.४०.५. इन्द्रियस्वामिन् जीव २१ ५७. प्रशंसनीयकर्मन् (राजन्) ४.१९.११. योगैश्वर्यजिज्ञासो (जन) १.१७६.६. कालविभागकर्त्तः सूर्यलोक १.१५.१. युद्धस्य परमसामग्रीसहित (सेनापते) १७.३७. विद्याक्रियाकुशल (तेजस्विन् जन) ६.२३.८. धनोन्नतये प्रेरक (राजन्) ७.२७.५. सुखप्रद सुखहेतो वा (सभाध्यक्ष विद्युद्वा) १.६३.८. इन्द्रियाद्यैश्वर्ययुक्त भोजक (जीव) २.२२.४. सर्वेश्वर इव वर्त्तमान (विद्वज्जन) २.२१.६. सर्वाभिरक्षक (आप्तपुरुष) १.१३१.४. परमैश्वर्यप्रद जगदीश्वर सेनाध्यक्षो वा १.८१.९. दुष्टदलहर (राजन्) ५.३१.५ पालयितः (सेनापते) १.८१.३. सर्वैश्वर्यप्राप्तिहेतो (सभाद्यध्यक्ष) १.८४.१. योगैश्वर्यमिच्छुक (राजन्) ५.३०.४. प्रकृष्टपदार्थप्रद (सेनाद्यध्यक्ष) १.१०३.३. परमविद्यैश्वर्ययुक्त (विद्वन् जन) १.१००.१७. अधर्मविदारक (सभाध्यक्ष) १.१२१.१४. परमधनवन् परमधनहेतुर्वा (सभाध्यक्ष विद्युद्वा) १.६२.१२. विद्युदिव सभेश १.१७७.२. बह्वैश्वर्ययुक्त (सर्वसुहृद् विद्वज्जन) ३.४२.१. हे परमात्मा आर्याभि० १.४१, ऋ० १.७.९.७. हे परमैश्वर्ययुक्तेश्वर आर्याभि० १.४९. परमैश्वर्ययुक्त इस वधू के स्वामिन् (पते) सं० वि० १३४. दुःखविदारकाऽतिविद्याबलसम्पन्न (विद्वज्जन) १.१६९.१. ऐश्वर्यवन् (विद्वज्जन) २०.७४. सुखेच्छा-विद्यैश्वर्ययुक्तजन २०.२९. प्रजापालन तत्पर (राजन्) ६.४५.२५. परमैश्वर्ययुक्त गृहपते ८.१५. अन्नदातः (राजन्) ६.२०.४. विवाहितपते ऋ० भू० २२४, १०.८५.४५. ऐश्वर्यप्राप्तये तत्कर्माऽनुष्ठातर्मनुष्य १.२८.१. अन्तःकरणबहिष्करणशरीरादिसाधनैरैश्वर्यवन् मनुष्य १.२८.२. अविद्यानिद्रादोषविदारक विद्वन् (जन) १.२९.३. वीराणां रक्षक (सेनापते) १.१०२.५. **इन्द्रम्**=परमेश्वरं परमैश्वर्यदातारमीश्वरं, परमैश्वर्यसाधकं विद्युदाख्यं भौतिकमग्निं, बाह्याऽभ्यन्तरस्थं वायुम् १.१६.३. परमेश्वरं विद्युदादियुक्तं वायुं वा, प्र०—इन्द्र इति पदनामसु पठितम निघं० ५.४. विद्याजीवनप्रापकत्वादिन्द्रशब्देनाऽत्र परमात्मा वायुश्च गृह्येते 'विश्वेभिः सोम्यं मध्वग्न इन्द्रेण वायुना' ऋ० १.१४.१०. इन्द्रेण वायुनेति वायोरिन्द्रसंज्ञा १.५.१. सूर्यम् ३३.१३. स्वकीयं जीवस्वरूपम् २८.२७. सुखानां बिभर्त्तारं सेनेशम् १.५१.२. परमैश्वर्यवन्तं, सूर्यमिव शत्रूणां विदारयितारम् (राजानम्) १.५१.१. नीत्या सुशोभमानम् (राजानम्) २८.४. विरोधविदारकम् (शुनं=परपरमेलजन्यं सुखम् ३.५०.५. अविद्या-दुष्टजनविनाशकम् (राजानम्) ६.४७.११. ऐश्वर्यप्रदं सोमरसम्, भा०—रोगनिवारकमौषधम् २०.६२. परमैश्वर्ययुक्तमुत्तमश्रीप्रापकमुद्योगम् ९.१२. विजयप्रदमीश्वरं, शत्रूणां विजेतारं शूरं वा १.१२.१. पृथिव्यां राज्यप्रदम् (अ०—सर्वगुणैरुत्कृष्टं परमेश्वरम्) १.७.१०. महाबलवन्तं वायुम् १.७.१. विद्युद्वत्तीव्रबुद्धिम् (सज्जनम्) ६.४८.१४. शरीरात्मराजश्रिया सुशुम्भमानम् (राजानम्) ६.१९.११. परमैश्वर्यवन्तं धनिकम् (जनम्) १०.३३. अविद्याविदारकमाप्तं विद्वांसम् (राजानम) ७.३१.१२. विद्युदिव दुष्टदोषप्रणाशकम् (विद्वांसमध्यापकम्) ३.१२.३. विद्युतं परमैश्वर्यवन्तं सभाध्यक्षं वा १.१०६.१. अविद्यादिक्लेशविदर्त्तारम् (विद्वांसं जनम्) ३.४३.८. न्यायेन राज्यपालकं (राजानम्) ऋ० भू० २२०. मेघानां धारकम् (वातं=वायुम्) २.१४.३. प्रशंसितगुणधरम् (राजानम्) ४.२०.५. सकलैश्वर्यप्रदं परमेश्वरमात्मनः सर्वभोगहेतुं वायुं वा। विद्युदाख्यमग्निम् १.८७.५. परमैश्वर्यवन्तं शालाध्यक्षम्

१.१०६.६. अनन्तपराक्रमं जगदीश्वरं पूर्णं वीर्यं विद्वांसं वा १.८०.१५. परमैश्वर्य के दाता और परमैश्वर्ययुक्त (ईश्वर) को सं० वि० १५५, ७ १४.१. सत्यं धर्मं न्यायं यो दधाति तम् (राजानम्) ६.३६.३. परमैश्वर्यवन्तं यजमानम् २८.१४. सूर्यमिव जीवम् २८.१८. ऐश्वर्यं जीवं वा २१. दुःखविच्छेत्तारम् (परमेश्वरं विद्वांसं वा) २.२०.४. अविद्या.ऽन्धकारविदारकमध्यापकम् ७.२९.५. परमैश्वर्ययुक्तं जनम् १९.३२. सर्वज्ञं सर्वशक्तिमन्तमीश्वरम् १.७.५. बलादिधारकं सोमम् २०.६९. राज्यधारकं (राजानम्) २०.५०. इन्द्रियस्वामिनं जीवम् ७.२६.१. परमैश्वर्यवन्तं शालाध्यक्षम् १.१०६.६. **इन्द्रस्य**=योगजन्यस्य परमैश्वर्यस्य १९.७४. परमैश्वर्यवतो धर्मस्य १९.७७. परमेश्वरस्य यज्ञस्य वा १.४. विद्युत इव १०.१७. अ०—सूर्यलोकस्य मेघस्य वा १.२४. सूर्यादि राज्यस्य वा ५.३०. इन्द्रियस्वामिनो जीवस्य १९.३. परमैश्वर्येण युक्तस्य योजकस्य वा (मनुष्यस्य) ४.१०. इन्द्रियों के साथ वर्त्तमान कर्मों के कर्त्ता भोक्ता जीव का आर्याभि० १.२३. परमैश्वर्ययुक्त राज्य और धन के स० प्र० १८३, ९.४०. परमैश्वर्ययुक्तस्य धार्मिकस्य विदुषः (जनस्य) १.१६७.१०. **इन्द्रः**=य इन्दति परमैश्वर्यवान् भवति स इन्द्रः परमेश्वरः, जो अखिल ऐश्वर्ययुक्त है वह परमेश्वर प्र०—इदि परमैश्वर्ये इस धातु से रन् प्रत्यय करने से इन्द्र शब्द सिद्ध होता है स० प्र० २०, ३६.९. वायुः, प्र०—विश्वेभिः सोम्यं ऋ० १.१५.१०. अनेन प्रमाणेनेन्द्रशब्देन वायुर्गृह्यते १.३.६. अन्तरिक्षः सूर्यप्रकाशः, प्र०—'इन्द्रियमिन्द्रलिङ्ग०' अ० ५.२.९३. इति सूत्राशयादिन्द्रशब्देन जीवस्यापि ग्रहणम् १.२.६. विद्युदिव पराक्रमी सभाध्यक्षः १.८०.१०. सूर्यलोकः १.१००.१. राजमानः (राजा) ५.२९.३. इन्द्रियवान् जीवः १.१०१.५. अन्यायविदारकः सभेशः १८.१६. सकलपदार्थविच्छेत्ता (सूर्यादिः) १८.१८. सर्वाऽभिव्यापिका तडित्, विद्युत्क्रिया १८.१८. विद्यार्थिनो जाड्यविच्छेदक उपदेशकः १८.१६. यः पुष्टिकरणविद्यायां रमते (सज्जनः) १८.१६. जलानां धर्त्ता (सूर्यः) २०.३९. दिग्ज्ञापकः (सूर्यः) १८.१८. अखिलैश्वर्यः (ईश्वरः) ७.४०. विद्युत्सूर्यो वा ३४.५७. सकलाऽविद्याछेदकोऽध्यापकः १८.१६. ईश्वरोपासको राजा ६.२९.६. परमात्मा विद्युद्वा ५.७. ऐश्वर्यकारी सभेशः २५.४६. चन्द्र इव आर्द्रस्वभावः (विद्वान् सभेशः) १८.५३. पराक्रमवान् सूर्य इव तेजस्वी विद्युद्रूपोऽग्निः)३.४६.३. कालज्ञाननिमित्तः (सूर्यः) १८.१८. लोकलोकान्तरस्था विद्युत् १८.१८. विद्याप्रदः (राजा) ६.४७.१३. भूमेर्दारयिता (कृषीवलः) ४.५७.७. परमैश्वर्यकारको विद्युदग्निः ३.२५.४. विद्युदिव सुखप्रदो दुःखविदारकः (विद्वज्जनः) ३.३१.१५. सूर्य इव प्रतापी सभेशः ३३.२६. अग्निर्विद्युत् सूर्यो वा १.१७.५. सर्वजगत्स्रष्टेश्वरः १.७.३. भौतिकः सूर्यो वायुर्वा २.९. अ०—विद्वान् सेनापतिः सूर्यलोको वा १.११.४. दारयिता सूर्यलोकः २.१२.१. आश्चर्य गुणकर्मस्वभावः परमेश्वरः २.१२.५. परमैश्वर्यवान् सभाशालासेनान्यायाधीशः १.५१.९. प्रजारक्षकः (राजा) ४.२१.१. परमसुखप्रदो राजा ४.२२.१. विद्युद् धनाध्यक्षो वा १.१०७.३. सर्वत्राऽभिव्याप्ता विद्युत् २०.२६. परमैश्वर्ययुक्तो मित्रः १.१७३.९. वीरपुरुषराजा ७.२०.४. सूर्य इव योद्धा (सभेशः) २.२०.७. अनेकैश्वर्यः (सेनापतिः) १.१०२.६. सत्यन्यायधर्त्ता (राजा) ४.२९.३. समर्थो राजा ७.३२.१२. परमैश्वर्यवान् सूर्य इव पिता ४.१८.११. सूर्य के सदृश सब जगत् का प्रकाशक (परमेश्वर) स० प्र० २३८, १०.४८.५. परम ऐश्वर्य का कर्त्ता (सभापति राजा) स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. परमैश्वर्ययुक्त, रक्षक, सर्वनियन्ता, क्षणादिकालपति, सर्वस्वामी, प्राणाधार, प्राणपति, महाराज (परमेश्वर) आर्याभि० २.२१, ३६.८. पूर्णविद्यो वैद्यः ६.२७.२. रूपविच्छेदकः (अग्निः) १९.८५. प्रशस्तविद्यैश्वर्यो विद्वान् (जनः) १.१००.१९. सर्वदुःखविदारकः (परमेश्वरः) ७.२५. सकलैश्वर्यवान्, प्रत्येकाऽङ्गपुष्टः सभापतिः ७.३२. विद्युदादिरूपो वह्निः ३.४.६. सर्वैश्वर्याऽऽधारः (पुरुषार्थः) १८.१८. शत्रूणां विदारयिता सेनेशः १७.३३. सूर्य इव महाप्रकाशः (प्रसन्नात्मा जनः) ३.३६.८. परमैश्वर्यहेतुः (वृत्रहा=सूर्यः) ३.३१.११. प्रशस्तसेनाधारकः (सेनापतिः) २०.५०. विद्युत् परमैश्वर्यं वा १४.२०. परमैश्वर्यहेतुमान् हेतुर्वा (सूर्यः सभाध्यक्षो वा) १.६१.९. परमैश्वर्ययोगारूढो वृद्धः (योगिजनः) ९.३९. शत्रुविदारकः सेनाधीशः १०.९. पूर्णविद्यो वैद्यः ६.२७.२. सेनाऽधिपतिः स्तनयित्नुर्वा १.६१.१०. सर्वपदार्थविच्छेत्ता (जगदीश्वरः) २.१५.४. परमैश्वर्यः सभाध्यक्षः १.१०२.११. शत्रूणां दारयिता सेनापतिः १७.४६. रोगविच्छेदकः (सद्वैद्यः) १९.८५. विद्युदिव व्याप्तविद्यः (राजा) ७.२७.४. अग्निविद्युत्सूर्यो वा १.१७.५. **इन्द्रात्**=विद्युतः ५.३०.५. **इन्द्राय**=परमैश्वर्यवन्तम् (परमेश्वरम्) प्र०—अत्रोभयत्र 'सुपां सुलुग्० इति द्वितीयैकवचनस्थाने चतुर्थ्येकवचनम् १.४.१०. परमेश्वरं सूर्यं वा, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' अनेनाऽमः स्थाने ङे १.५.४, परमैश्वर्यवते परमेश्वराय स्वामिने व्यवहाराय

वा ४.१६. परमोत्तमव्यवहाराय २०.३३. परमैश्वर्यप्रदाय राज्याय ८.३६. परमविद्याप्रकाशेनाऽविद्याविदारकाय (सभापतये) ६.३२. परमैश्वर्ययोगाय, अ०—परमैश्वर्यप्राप्ताय १.१. ऐश्वर्यप्रदाय गृहाय ८.३३. पुरुषार्थे द्रवणाय ६.४. विद्यावृष्टिकारकाय (आप्ताय जनाय) १.६१.४. सुखप्रदात्रे द्रव्यैश्वर्याय ४.२४.७. इन्द्रियाऽधिष्ठातुर्जीवस्य बोधाय १०.५. दुष्टशत्रुविदारणाय, विद्यायोगमोक्षैश्वर्याय ६.२. जीवाय विद्युते परमैश्वर्याय वा २२.२७. अत्यन्तोत्कृष्टाय (शूरवीराय जनाय) १.८४.५. सर्वमित्रायैश्वर्यमिच्छुकाय जीवाय १.१०.५. परमैश्वर्य प्राप्ति के लिए सं० वि० १६६, ६.११३.७. परमैश्वर्य युक्त मोक्ष का आनन्द देने के लिए सं० वि० १६६, ६.११३.६. सब दुःख विदारण के लिए सं० वि १६७, ६.११३.१०. सर्वशुभलक्षणाऽन्विताय (सत्पुरुषाय) २.२१.२. परमैश्वर्यवते परमात्मने १.८.१०. परमैश्वर्यप्रापकाय रणाय ७.३८. ऐश्वर्यसुखप्रदाय पत्ये १६.१८. परमानन्दप्राप्तये ८.४४. परमैश्वर्यकारणाय १.१३.१२. परमैश्वर्ययुक्ताय जगदीश्वराय ६.२. **इन्द्रे**=परमैश्वर्यवति प्राणिनि २१.३५. विद्याविनयाऽन्विते (राजनि) २८.४५. स्वाऽऽत्मनि २८.४०. परमैश्वर्ये २०.६६. विद्युति २१.३७. सूर्यप्रकाशे २१.२३. **इन्द्रेण**=परमेश्वरेणाऽऽप्तेन विदुषा वा २.१८.८. विद्युदाद्यस्त्रेण ७.४८.२. विद्युता तद्रचितेन विदारकेण शस्त्रेण वा १.५३.४. वायुना विद्युता वा ३.४.११. परमेश्वरेण सूर्येण सह वा १.६.७. **इन्द्रौ**=परमैश्वर्यकारकौ (मित्रावरुणौ=उपदेशक-सेनापती) १०.१६. [इदि परमैश्वर्ये (भ्वा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्रवज्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रन् प्रत्ययः। इन्दति परमैश्वर्यवान् भवतीति विग्रहः। इन्द्रः पदनाम निघं० ५.४. इन्द्रः=इरां दृणातीति वा इरां ददातीति वा, इरां दधातीति वा। इरां दारयत इति वा। इरां धारयत इति वा। इन्दवे द्रवतीति वा। इन्दौ रमत इति वा। इन्धे भूतानीति वा। 'तद्यदेनं प्राणैः समैन्धंस्तदिन्द्रस्येन्द्रत्वमिति विज्ञायते।' इदं करणादित्याग्रायणः। इदं दर्शनादित्यौपमन्यवः। इन्दतेर्वैश्वर्यकर्मणः। इन्दञ्छत्रूणां दारयिता वा द्रावयिता वा। आदरयिता च यज्वनाम् नि० १०.८. इन्द्रः=इन्धो वै नामैष योऽयं दक्षिणेऽक्षन्पुरुषस्तं वाऽएतमिन्धं सन्तमिन्द्र इत्याचक्षते परोऽक्षेणेव श० १४.६.११.२. अस्मिन्वा इदमिन्द्रियं प्रत्यस्थादिति। तदिन्द्रस्येन्द्रत्वम् तै० २.२.१०.४. तस्य (क्षत्रियस्य) हृदीक्षमाणस्येन्द्र एवेन्द्रियमादत्ते ऐ० ७.२३. इन्द्रस्येन्द्रियेणाभिषिञ्चामि ऐ० ८.७. इन्द्रस्येन्द्रियेण (त्वाभिषिञ्चामि) श० ५.४.२.२. (देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे) इन्द्रस्येन्द्रियेण तां० १.३.५. इन्द्रियम् (आत्मन् धत्ते) ऐन्द्रेण (पशुना) तै० १.३.४.३. इन्द्रमच्छसुता इत इतीन्द्रियस्य वीर्यस्यावरुध्यै तां० ११.१०.४. (यजु० ३८.१६) मधुहुतमिन्द्रतमेऽअग्नाविति मधु हुतमिन्द्रियतमेऽग्नावित्येवैतदाह श० १४.२.२.४२. (इन्द्रियवान्) सखाय इन्द्रमूतयऽइतीन्द्रियवन्तमूतयऽइत्येतत् श० ६.३.२.४. इन्द्रः (एवैनम्) इन्द्रियेण (अवति) तै० १.७.६.६. इन्द्रस्य त्वेन्द्रियेण व्रतपते व्रतमादधामि तै० १.१.४.८. दधात्विन्द्र इन्द्रियम् तां० १.३.५. मयीदमिन्द्र इन्द्रियं दधातु श० १.८.१.४२. 'इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा' अ० ५.२.६३. इति सूत्रे इन्द्रः=आत्मा। युक्ता ह्यस्य (इन्द्रस्य) हरयः शता दशेति। सहस्रं हैत आदित्यस्य रश्मयः (इन्द्रः=आदित्यः) जै० उ० १.४४.५. इन्द्र इति ह्येतमाचक्षते य एष (सूर्यः) तपति श० ४.६.७.११. एष वै शुक्रो य एष (सूर्यः) तपत्येष (सूर्यः) उ एवेन्द्रः श० ४.५.५.७, ४.५.६.४. स यस्स इन्द्र एष एव स य एष (सूर्यः) एव तपति जै० उ० १.२८.२. १.३२.५. अथ यः स इन्द्रोऽसौ स आदित्यः श० ८.५.३.२. एष वाऽइन्द्रो य एष (सूर्यः) तपति श० २.३.४.१२. ३.४.२.१५. स यस्स आकाश इन्द्र एव सः। जै० उ० १.२८.२. अथ यत्रैतत् प्रदीप्तो भवति। उच्चैर्धूमः परमया जूत्या बल्बलीति तर्हि हैष (अग्निः) भवतीन्द्रः श० २.३.२.११. इन्द्रो वागित्यु वाऽआहुः श० १.४.५.४. तस्मादाहुरिन्द्रो वागिति श० ११.१.६.१८. अथ य इन्द्रस्सा वाक् जै० उ० १.३३.२. वाग्वा इन्द्रः कौ० २.७. १३.५. वागिन्द्रः श० ८.७.२.६. अयं वाऽइन्द्रो योऽयं (वातः) पवते श० १४.२.२.६. यो वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः श० ४.१.३.१६. सर्वं वा ऽइदमिन्द्राय तत्स्थानमास यदिदं किं चापि योऽयं (वायुः) पवते श० ३.६.४.१४. योऽयं चक्षुषि पुरुष एष इन्द्रः जै० उ० १.४३.१०. ततः प्राणोऽजायत स (प्राणः) इन्द्रः श० १४.४.३.१६. प्राण एवेन्द्रः श० १२.६.१.१४. स योऽयं मध्ये प्राणः। एष एवेन्द्रस्तानेष प्राणान्मध्यत इन्द्रियैणैन्द्ध यदैन्द्ध तस्मादिन्ध इन्धो ह वै तमिन्द्र इत्याचक्षते परोऽक्षम् श० ६.१.१.२. हृदयमेवेन्द्रः श० १२.६.१.१५. यन्मनः स इन्द्रः गो० उ० ४.११. मन एवेन्द्रः श० १२.६.१.१३. रुक्म एवेन्द्रः श० १०.४.१.६. एष वा एतर्हीन्द्रो यो यजते तै० १.३.६.३. इन्द्रो वै यजमानः श० २.१.२.११ एष वा ऽत्रेन्द्रो भवति यद् यजमानः श० ३.३.३.१०. यजमानो वै स्वे यज्ञ ऽइन्द्रः श० ८.५.३.८. द्वयेन वाऽएष इन्द्रो भवति यच्च

क्षत्रियो यदु च यजमानः श० ५.३.५.२७. ऐन्द्रो वै राजन्यः तै० ३.८.२३.२. इन्द्रः क्षत्रम् श० १०.४.१.५. क्षत्रं वा इन्द्रः कौ० १२.८. तै० ३.९.१६.३. श० २.५.२.२७. यदशनिरिन्द्रस्तेन कौ० ६.९. स्तनयित्नुरेवेन्द्रः श० ११.६.३.९. तस्मादाहेन्द्रो ब्रह्मेति कौ० ६.१४. यत्परं भाः प्रजापतिर्वा स इन्द्रो वा श० २.३.१.७. देवलोको वा इन्द्रः कौ० १६.८. इन्द्रो बलं बलपतिः श० ११.४.३.१२. तै० २.५.७.४. इन्द्रो मे वले श्रितः तै० ३.१०.८.८. वीर्यं वा इन्द्रः तां० ९.७.५,८. गौ० उ० ६.७. वीर्यमिन्द्रः तै० १.७.२.२. इन्द्रियं वीर्यमिन्द्रः श० २.५.४, ८. इन्द्रियं वै वीर्यमिन्द्रः श० ३.९.१.१५. शिश्नमिन्द्रः श० १२.९.१.१६. रेत इन्द्रः श० १२.९.१.१७. वृषा वा इन्द्रः कौ० २०.३. अर्जुनो ह वै नामेन्द्रः श० २.१.२.११. अर्जुनो ह वै नामेन्द्रो यदस्य गुह्यं नाम श० ५.४.३.७. एष एवेन्द्रो यदाहवनीयः श० २.३.२.२. इन्द्रो ह्याहवनीयः श० २.६.१.३८. स यस्स इन्द्रस्सामैव तत् जै० उ० १.३१.१. ऋचश्च सामानि चेन्द्रः श० ४.६.७.३. इन्द्र एष यदुद्गाता जै० उ० १.२२.२. स यः स इन्द्रः। एष सोऽप्रतिरथः श० ९.२.३.५. इन्द्र आसीत् सीरपतिः शतक्रतुः तै० २.४.८.७. स प्रजापतिरिन्द्रं ज्येष्ठं पुत्रमपन्यधत्त नेदेनमसुरा वलीयाꣳसोऽहनन्निति तै० १.५.९.१. ते (देवाः) होचुः इन्द्रो वै नो वीर्यवत्तमः श० ४.६.६.३. स (इन्द्रः) एतमिन्द्राय ज्येष्ठायै (ज्येष्ठानक्षत्राय) पुरोडाशमेकादशकपालं निरवपन् महाव्रीहीणाम्। ततो वै स ज्यैष्ठ्यं देवानामभ्यजयत् तै० ३.१.५.२. इन्द्रः (एवैनं) ज्येष्ठानां (सुवते) तै० १.७.४.१. सो (प्रजापतिः) ऽकामयतेन्द्रो मे प्रजायाꣳ ह्येकः स्यादिति तामस्मै स्रजं प्रत्यमुञ्चत्ततो वा इन्द्राय प्रत्ययः श्रैष्ठ्यायातिष्ठन्त तच्छिल्पं पश्यन्त्यः ता० १६.४.३. इन्द्रः खलु वै श्रेष्ठो देवतानामुपदेशनात् तै० २.३.१.३. इन्द्रः सर्वा देवता इन्द्रश्रेष्ठा देवाः श० ३.४.२.२. अथ यदिन्द्रे सर्वे देवास्तत्स्थानाः। तस्मादाहुरिन्द्रः सर्वा देवता इन्द्रश्रेष्ठा देवा इति श० १.६.३.२२. ततो वा इन्द्रो देवानामधिपतिरभवत् तै० २.२.१०.३. सो (इन्द्रः) ऽग्रं देवतानां पर्यैत् अगच्छत् स्वाराज्यम् तै० १.३.२.२. स (इन्द्रः) वै देवानां वसुर्वीरो ह्येषाम् श० १.६.४.२. इन्द्रो वै देवानामोजिष्ठो वलिष्ठः सहिष्ठः सत्तमः पारयिष्णुतमः ऐ० ७.१६, ८.१२. इन्द्रो वै देवानामोजिष्ठो वलिष्ठः कौ० ६.१४. गो० उ० १.३. इन्द्रौजसां पते तै० ३.११.४.२. इन्द्रो मृधां विहन्ता कौ० ४.१. इन्द्रायाꣳहोमुचे तै० १.७.३.७. इन्द्राय सुत्राम्णे तै० १.७.३.७. वृद्धानामिन्द्रः प्रदापयिता तै० १.७.२.३. ओकः सारी हैवैषामिन्द्रो भवति यथा गौः प्रज्ञातं गोष्ठम् गौ० उ० ६.४. ओकः सारी वा इन्द्रः ऐ० ६.१७,२२. गो० उ० ५.१५. इन्द्रो वै त्रिशिरसं त्वाष्ट्रमहन् तां० १७.५.१. इन्द्रो वृत्रꣳ हत्वा देवताभिश्चेन्द्रियेण च व्यार्धत् तै० १.६.१.७. इन्द्रो मरुद्भिः (व्यद्रवत्) श० ३.४.२.१. इन्द्रो रुद्रैः (उदक्रामत्) ऐ० १.२४. इन्द्रस्य पुरोडाशः श० ४.२.५.२२. यदिन्द्रो ऽपिबच्छचीभिः तै० १.४.२.३. इन्द्रो यज्ञस्य नेता श० ४.१.२.१५. तदाहुः किन्देवत्यो यज्ञ इति ऐन्द्र इति ब्रूयात् गो० उ० ३.२३. इन्द्रो यज्ञस्यात्मेन्द्रो देवता श० ९.५.१.३३. ऐन्द्रो वै यज्ञः ऐ० ६.११. ऐन्द्रो हि यज्ञक्रतु कौ० ५.५, २८.२, ३. इन्द्रो यज्ञस्य देवता ऐ० ५.३४. ६.९. श० २.१.२.११. इन्द्रो वै यज्ञस्य देवता श० १.४.१.३३. न ह वा इन्द्रः कश्चन भ्रातृव्यम्पश्यते जै० उ० १.४५.६. ऋक् सामे वा इन्द्रस्य हरी ऐ० २.२४. तै० १.६.३.९. इन्द्रस्य वै हरी बृहद्रथन्तरे तां० ९.४.८. सेनेन्द्रस्य पत्नी गो० उ० २.९. यत्साकमेधैर्यजतऽइन्द्र एव तर्हि भवतीन्द्रस्यैव सायुज्यꣳ सलोकतां जयति श० २.६.४.८. ऐन्द्रा वै पशवः ऐ० ६.२५. एतद्वा इन्द्रस्य रूपं यदृषभः श० २.५.३.१८. (प्रजापतिः) ऐन्द्रमृषभं (आलिप्सत) श० ६.२.१.५. ऐन्द्रमृषभꣳ सेन्द्रत्वाय (आलभते) तै० १.८.५.६. स ह्यैन्द्रो यदृषभः श० ५.३.१.३. इन्द्रो वा अश्वः कौ० १५.४. ऐन्द्रं माध्यन्दिनम् गो० उ० १.२३. ऐन्द्रो माध्यन्दिनः कौ० ५.५.२२.७. ऐन्द्रो वै माध्यन्दिनः ऐ० ६.३०. ऐन्द्रो वै माध्यन्दिनः गो० उ० ६.९. मध्यस्थो वा इन्द्रः कौ० ५.४. (अन्तरिक्षस्थानः) इन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्र इति तदन्तरिक्षलोकं लोकानाप्नोति माध्यन्दिनं सवनं यज्ञस्य कौ० १४.१. स (इन्द्रः) एतं माहेन्द्रं ग्रहमब्रूत माध्यन्दिनं सवनानां निष्केवल्यमुक्थानां त्रैष्टुभं छन्दसां पृष्ठं साम्नाम् ऐ० ३.२१. ऋभवो वा इन्द्रस्य प्रियं धाम तां० १४.२.५. ऐन्द्रं वै सुत्यमहः कौ० ४.४. (प्रजापतिः) अग्निहोत्रेण दर्शपूर्णमासाभ्यामिन्द्रमसृजत कौ० ६.१५. ऐन्द्र एकादशकपालः (पुरोडाशः) तां० २१.१०. ऐन्द्रमेकादशकपालं पुरोडाशं निर्वपति श० ५.३.१.३. हेमन्तशिशिरावैन्द्राभ्याम् (अवरुन्धे) श० १२.८.२.३४. दिवमिन्द्रेण अवरुन्धे श० १२.८.२.३२. अथेन्द्राय ज्येष्ठाय। हायनानां चरुं निर्वपति श० ५.३.३.६. यद्वै किञ्चन पीतवत्पदं तदैन्द्रं रूपम् ऐ० ६.१०. यत् (अक्ष्योः) शुक्लं तदैन्द्रम् श० १२.९.१.१२. इन्द्रघोषस्त्वा वसुभिः पुरस्तात्पातु श० ३.५.२.४. स वा एष (आदित्यः) इन्द्रो वै मृध उद्यन्

भवति……इन्द्रो वैकुण्ठो मध्यन्दिने जै० उ० ४.१०.१०. इन्द्रो वै मघवान् श० ४.१.२.१५. स उ एव मखः स विष्णुः । तत इन्द्रो मखवानभवन्मखवान्ह वै तं मघवानमित्याचक्षते परोऽक्षम् श० १४.१.१.१३. इन्द्रो वसुधेयः श० १.८.२.१६. इन्द्र उ वै वेनः कौ० ८.५. इन्द्रो वै वेधाः ऐ० ६.१०. गो० उ० २.२० इन्द्रो हि षोडशी श० ४.२.५.१४. इन्द्रो ह वै षोडशी श० ४.५.३.१. कौ० १७.१.४. एतद्ध वा इन्द्राग्न्योः प्रियं धाम यद् वागिति ऐ० ६.७. गो० उ० ६.१३. वाग् वै ऐन्द्री ऐ० २.२६. वाक् च प्राणश्चैन्द्रवायवः ऐ० २.१६. अथैतद्वामेऽक्षिणि पुरुषरूपम् । एषास्य (दक्षिणेऽक्षणि वर्त्तमानस्य पुरुषस्येन्द्राख्यस्य) पत्नी विराट् श० १४.६.११.३. इन्द्रो वृषा श० १.४.१.३३. इन्द्रो वै वृषा तां० ९.४.३. इन्द्रो वै वाजी ऐ० ३.१८. इन्द्रो वै गोपाः ऐ० ६.१०. गो० उ० २.२०. इन्द्रो उ वै परुच्छेपः कौ० २३.४. एतेन (पारुच्छेपेन रोहिताख्येन छन्दसा) वा इन्द्रः सप्त स्वर्गाल्लोकानारोहत् ऐ० ५.१०. इन्द्रो वै चतुर्होता तै० २.३.१.३. इन्द्रः सप्तहोता तै० २.३.१.१. २.२.८.५. यन्मनः स इन्द्रः गो० उ० ४.११. इन्द्रो वै प्रदाता स एवास्मै यज्ञं प्रयच्छति कौ० ४.२. यो ह खलु वाव प्रजापतिः स उ वावेन्द्रः तै० १.२.२.५. इन्द्रो वै त्वष्टा ऐ० ६.१०. इन्द्र उ वै वातापिः स हि वातमाप्त्वा शरीराण्यर्हन् प्रतिप्रैति कौ० २७.४. कतमत्तदक्षरमिति। यत्क्षरन्नाऽक्षीयतेति इन्द्र इति जै० उ० १.४३. इन्द्र उ वै वरुणः स उ वै पयोभाजनः कौ० ५.४. गो० उ० १.२२. इन्द्रस्य शतभिषक् (नक्षत्रम्) तै० १.५.१.५. इन्द्रो लोकम्पृणा श० ८.७.२.६. यत् पुरस्ताद् वासीन्द्रो राजा भूतो वासि जै० उ० ३.२१.२. दक्षिणा दिक् । इन्द्रो देवता तै० ३.११.५.१. अथ यद् विश्वजितमुपयन्ति । इन्द्रमेव देवतां यजन्ते श० १२.१.३.१५. इन्द्रो विश्वजिद् इन्द्रो हीदं सर्वं विश्वमजयत् कौ० २४.१. ततो वा इदमिन्द्रो विश्वमजयद् यद् विश्वमजयत्तस्माद् विश्वजित् ता० १६.४.५. इन्द्रो वै युधाजित् ता० ७.५.१४. इन्द्रो वै प्रासहस्पतिस्तुविष्मान् ऐ० ३.२२. सेना वा इन्द्रस्य प्रिया जाया वावाता प्रासहा नाम ऐ० ३.२२. सेना ह नाम पृथिवी धनञ्जया विश्वव्यचा अदितिः । सूर्यत्वक् । इन्द्राणी देवी प्रासहा ददाना तै० २.४.२.७. वैखानसा वा ऋषय इन्द्रस्य प्रिया आसन् तां० १४.४.७. यत्रेन्द्रं देवताः (यज्ञेषु) पर्यवृञ्जन् (यतः स इन्द्रः) विश्वरूपं त्वाष्ट्रमभ्यमंस्त वृत्रमस्तृत यतीन्त्सालावृकेभ्यः प्रादादरुर्मघानवधीद् बृहस्पतेः प्रत्यवधीदिति तत्रेन्द्रः सोमपीथेन व्यार्द्धत ऐ० ७.२८. कालकञ्जा वै नामासुरा आसन् । ते सुवर्गाय लोकायाग्निमचिन्वत पुरुष इष्टकामुपादधत् पुरुष इष्टकाम् । स इन्द्रो ब्राह्मणो ब्रुवाण इष्टकामुपाधत्त । एषा मे चित्रा नामेति । ते सुवर्गलोकमाप्रारोहन् । स इन्द्र इष्टकामवृहत् । तेऽवाकीर्यन्त येऽवाकीर्यन्त त ऊर्णनाभयोऽभवन् । द्वावुदपतताम् । तौ दिव्यौ श्वानावभवताम् तै० १.१.२.४-६. इन्द्रो यतीन् सालावृके येभ्यः प्रायच्छत्तमश्लीला वागभ्यवदत् स प्रजापतिमुपाधावत् तस्मा एतमुपहव्यं प्रायच्छत् ता० १८.१.९. नमुचिर्ह वै नामासुर आस तमिन्द्रो निविव्याध तस्य पदा शिरोऽभितष्टौ स यदभिष्ठित उदबाधत स उच्छ्वङ्कस्तस्य पदा शिरः प्रचिच्छेद ततो रक्षः समभवत् श० ५.४.१.९. तं (त्रिशीर्षाणं त्वाष्ट्रं विश्वरूपं) इन्द्रो दिद्वेषतस्य तानि शीर्षाणि प्रचिच्छेद श० १.६.३.२. स (इन्द्रः) यत्र त्रिशीर्षाणं त्वाष्ट्रं विश्वरूपं जघान श० १.२.३.२. इन्द्रो वै वृत्रहा कौ० ४.३. महानाम्नीभिर्वा इन्द्रो वृत्रमहन् कौ० २३.२. इन्द्रो वा एष पुरा वृत्रस्य वधादथ वृत्रꣳ हत्वा यथा महाराजो विजिग्यान एवं महेन्द्रोऽभवत् श० १.६.४.२१, ४.३.६.१७. इन्द्रो वै वृत्रं हत्वा विश्वकर्माऽभवत् ऐ० ४.२२. तस्य (इन्द्रस्य) असौ (द्यु०) लोकोनाभिजित आसीत्तम् (इन्द्रः) विश्वकर्मा भूत्वाभ्यजयत् तै० १.२.३.३. मरुतो ह वै क्रीडिनो वृत्रꣳ हनिष्यन्तमिन्द्रमागतं तमभितः परिचिक्रीडुर्महयन्तः श० २.५.३.२०. ते (मरुतः) एनम् (इन्द्रम्) अध्यक्रीडन् तै० १.६.७.५. इन्द्रो वै मरुतः क्रीडिनः गो० उ० १.२३. इन्द्रो वै मरुतसान्तपनः गो० उ० १.२३. इन्द्रस्य वै मरुतः को० ५.४, ५. धर्म इन्द्रो राजेत्याह तस्य देवा विशः श० १३.४.३.१४. एतद्वाऽइन्द्रस्य निष्केवल्यꣳ सवनं यन्माध्यन्दिनꣳ सवनं तेन वृत्रमजिघांसत्तेन व्यजिगीषत श० ४.३.३.६. ऐन्द्रं वै माध्यन्दिनं सवनम् । जै० उ० १.३७.३. इन्द्रस्य माध्यन्दिनं सवनम् कौ० १४.५. ऐन्द्रं हि त्रैष्टुभं माध्यन्दिनं सवनम् कौ० २९.२. गो० उ० ४.४ त्रैष्टुभ इन्द्रः कौ० ३.२.२२.७. इन्द्रः (श्रियः) बलम् (आदत्त) श० ११.४.३.३. तान् (पशून्) इन्द्रः पञ्चदशेन स्तोमेन नाप्नोत् तै० २.७.१४.२. ऐन्द्रो राजन्यः तां० १५.४.८. (राजन्यस्य) इन्द्रो देवता तां० ६.१.८. हरिव आगच्छेति पूर्वपक्षापरपक्षौ वा इन्द्रस्य हरी ताभ्याꣲ हीदꣳ सर्वं हरति ष० १.१. ऐन्द्री द्यौः तां० १५.४.८. द्यौरिन्द्रेण गर्भिणी श० १४.९.४.२१. ऐन्द्रं हि पुरीषम् श० ८.७.३.७. अथ यत्पुरीषꣳ स इन्द्रः श० १०.४.१.७. ऐन्द्र्चो बालखिल्याः (ऋचः) ऐ० ६.२६. ऐन्द्रो वा एष यज्ञक्रतुर्यत्साकमेधाः कौ० ५.५. गो० उ०

१.२३. इन्द्रो ज्येष्ठामनुनक्षत्रमेति तै० ३.१.२.१. इन्द्रस्य रोहिणी तै० १.५.१.४. एता वा ऽ इन्द्रनक्षत्रं यत्फल्गुन्यः श० २.१.२.११. ऐन्द्रꣳ सान्नाय्यम् (हविः) श० २.४.४.१२. ऐन्द्रं वै दधि श० ७.४.१.४२. ऐन्द्रो ब्राह्मणाच्छंशी श० ६.४.३.७. तै० १.७.६.१. ऐन्द्राबार्हस्पत्यं ब्राह्मणाच्छंसिन उक्थं भवति गो० उ० ४.१४, १६. ऐन्द्रो वाऽएष यज्ञो यत्सौत्रामणी श० १२.८.२.२४. ऐन्द्रो वा एष यज्ञक्रतुर्यत् सौत्रामणी कौ० १६.१०. गो० उ० ५.७. ऋषभमिन्द्राय सुत्रामणऽआलभते श० ५.५.४.१. तस्मात्सदस्यृक्सामाभ्यां कुर्वन्त्यैन्द्रꣳ हि सदः श० ४.६.७.३. ऐन्द्रं हि सदः श० ३.६.१.२२.]

इन्द्रघोषः इन्द्रस्य परमेश्वरस्य वेदाख्याया विद्युतो वा घोषो विविधशब्दार्थसम्बन्धो यस्य यस्या वा स सा वा वाक् (विश्वकर्मा विद्वान् वाग्वा) प्र०—घोष इति वाङ्नामसु पठितम् निघं० १.११, ५.११. [इन्द्रो व्याख्यातम् घोष इति वाङ्नाम निघं० १.११. तयोः समासः]

इन्द्रजूतम् सभाध्यक्षेण प्रेरितम् (शिल्पिनम्) १.११८.६. **इन्द्रजूतः**=इन्द्रो विद्युदिव प्रतापयुक्तः (सज्जनः) ३.३३.११. [इन्द्र-जूतपदयोः समासः। जूतः= 'जू' इति सौत्रो धातुर् वेगितायां गतावर्थे, ततः क्तः प्रत्ययः]

इन्द्रज्येष्ठाः इन्द्रः सभापतिर्ज्येष्ठो येषु ते (देवाः= विद्वज्जनाः) ३३.५०. **इन्द्रज्येष्ठान्**=इन्द्रो विद्युत् सूर्यो वा ज्येष्ठो येषान्तान् (क्षयान्=निवासान्) ४.५४.५. **इन्द्रज्येष्ठाः**=इन्द्रः=सूर्यो ज्येष्ठः प्रशस्यो येषान्ते (मरुद्गणाः=मरुतां समूहाः) १.१३.८. सूर्यो ज्येष्ठो महान् येषां लोकानां तद्वद्वर्त्तमानाः (विद्वज्जनाः) ६.५१.१५. इन्द्रः परमविद्यैश्वर्यं प्रधानं येषान्ते (सर्वविद्वांसः) २.४१.१५. इन्द्रः सभापतिर्ज्येष्ठो येषु ते (भा०-राजजनाः) ३३.५०. [इन्द्रज्येष्ठपदयोः समासः। ज्येष्ठः= प्रशस्यप्राति० अतिशायन इष्ठन् 'ज्य चे' ति सूत्रेण ज्यादेशः]

इन्द्रज्येष्ठासः इन्द्रो राजा ज्येष्ठो येषान्ते (राजप्रजाजनाः) ७.११.५. [इन्द्रज्येष्ठस्य जस्य सुगागमे रूपम्]

इन्द्रतमा अतिशयेनैश्वर्ययुक्तौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.२. **इन्द्रतमे**=अतिशयेनैश्वर्यकारके विद्युद्रूपे (अग्नौ=पावके) ३८.१६. [इन्द्रप्राति० अतिशायने तमप्। 'सुपां सुलुगि' त्याकारादेशः]

इन्द्रत्वोताः इन्द्रेण त्वया पालिताः (प्रजाः) १.१३२.१.

इन्द्रपत्नीः इन्द्रस्य जीवस्य पत्नी स्त्रीवद्वर्त्तमानाः इडा-सरस्वती-भारतीवाण्यः २८.८. [इन्द्र-पत्नीपदयोः समासः। पत्नी=पति प्राति० स्त्रियां 'पत्युर्नो यज्ञसंयोगे' अ० ४.१.३३. सूत्रेण नकारादेशो ङीप् च]

इन्द्रपानम् इन्द्रस्य जीवस्य पातुमर्हम् (मधुमन्तम्= बहुमधुरादिगुणयुक्तं वस्तु) ७.४७.१. इन्द्रस्यौषधिरसस्यैश्वर्यस्य वा पानं रक्षणं वा ६.४४.१६. **इन्द्रपानाः**=य इन्द्रं परमैश्वर्यहेतुं सवितारं पान्ति ते (चमूषदः), प्र०—अत्र नन्द्यादित्वात् ल्युः प्रत्ययः १.५४.६. [इन्द्रोपपदे 'पा पाने' 'पा रक्षणे' वा (अदा०) धातोर्भावे ल्युट्। अन्यत्र नन्द्यादित्वात्कर्त्तरि ल्युः]

इन्द्रपीतस्य सूर्येण जीवेन वा पीतस्य (पयसः= उदकस्य दुग्धस्य वा) ३८.२८. [इन्द्र-पीतपदयोः समासः। पीतम्=पा पाने (भ्वा०) धातोः क्तः। 'घुमास्थागापा०' अ० ६.४.६६. सूत्रेणेकारादेशः]

इन्द्रमिव ऐश्वर्यमिव ११.५७. यथाविद्युतम् १४.१५. सूर्यप्रकाशमिव सद्यो गन्तारम् (विद्युद्यानम्) १.११६.१०. सूर्यवत् दूरस्थमपि व्यवहारप्रकाशनसमर्थम् (तारम्) ऋ० भू० २००. [इन्द्र-इवपदयोः समासः। 'इवेन सह समासो विभक्त्यलोपः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वं च वक्तव्यम्' अ० २.२.१८. वा० इति समासे विभक्तेर्न लोपः]

इन्द्रयन्ते इन्द्रं स्वामिनं कुवते ४.२४.४. [इन्द्रप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' वार्तिकसूत्रेण णिजन्ताल् लट्]

इन्द्रवत् विद्युद्वत् (ऐश्वर्यम्) ३८.४. [इन्द्रप्राति० 'तत्र तस्येव' अ० ५.१.११६. सूत्रेण वतिः। स्वरादिपाठाद् वतेरव्ययत्वम्]

इन्द्रवत् इन्द्रं परमैश्वर्यं विद्यते यस्मिँस्तत् (वस्तु) ३८.४. चेतनाऽऽत्मसंयुक्तं शरीरम् ३८.४. [इन्द्रप्राति० संसर्गेऽर्थे मतुप्। 'मादुपधायाश्च०' इति मतोर्मकारस्य वकारः]

इन्द्रवत्या इन्द्रो बह्वी विद्युद् विद्यते यस्यां तया (रात्र्या=तमोरूपया) प्र०—अत्र भूमन्यर्थे मतुप् 'स्तनयित्नुरेवेन्द्रः, शत० १४.५.७.७, ३.१०. सूर्यप्रकाशसहितया (उषसा) ३.१०. सूर्यप्रकाशवत्योषसाऽथवा जीववत्या मानसवृत्या, वायुचन्द्रवत्या रात्र्या सह ऋ० भू० २४६. [इन्द्रप्राति० भूम्नि मतुप्। 'उगितश्चे' ति स्त्रियां ङीप्]

इन्द्रवन्तः परमैश्वर्ययुक्त इन्द्रस्तद्वन्तः (सर्ववीराः) १.१०५.१६. बह्विन्द्र ऐश्वर्यं विद्यते येषान्ते (रुद्रासः=

विद्वज्जनाः) ५.५७.१. परमैश्वर्ययुक्ताः (पितरः) ४.३३.३. **इन्द्रवन्ता**=बह्वैश्वर्ययुक्तौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.११६.२१. [इन्द्र+मतुप् । मकारस्य वकारः । प्रथमा-बहुवचनम्]

इन्द्रवायुभ्याम् विद्युत्प्राणाभ्यामिव योगाकर्षण-निष्कर्षणाभ्याम् ७.८. **इन्द्रवायू**=प्राणसूर्यसदृशौ योगस्योपदेष्ट्रभ्यासिनौ (योगिसिद्धजनौ) ७.८. सूर्यवायू इवाऽध्यापकोपदेशकौ ४.४६.६. इमौ प्रत्यक्षौ सूर्य्यपवनौ। 'इन्द्रेण सेचना दिवो दृळ्हानि दृंहितानि च। स्थिराणि न पराणुदे, ऋ० ८.१४.९. यथेन्द्रेण=सूर्य्यलोकेन प्रकाशमानाः किरणा धृताः, एवं च स्वाऽऽकर्षणशक्त्या पृथिव्यादीनि भूतानि दृढानि पुष्टानि स्थिराणि कृत्वा दृंहितानि धारितानि सन्ति, न पराणुदे=अतो नैव स्वस्वकक्षां विहायेतस्ततो भ्रमणाय समर्थानि भवन्ति। 'इमे चिदिन्द्र रोधसी अपारे ······परिक्वणनं मेघम् निरु० ६.१. यतोऽयं सूर्य्यलोको भूमिप्रकाशौ धारितवानस्ति, अत एव पृथिव्यादीनां निरोधं कुर्वन् पृथिव्यां मेघस्य च कूलं स्रोतश्चाकर्षणेन निरुणद्धि। यथा बाहुवेगेनाकाशे प्रतिक्षिप्तो लोष्ठो मृत्तिकाखण्डः पुनर्विपर्य्ययेणाकर्षणाद् भूमिमेवागच्छति, एवं दूरे स्थितानपि पृथिव्यादिलोकान् सूर्य्य एव धारयति। सोऽयं सूर्य्यस्य महानाकर्षः प्रकाशश्चाऽस्ति। तथा वृष्टिनिमित्तोऽप्ययमेवाऽस्ति। "इन्द्रो वै त्वष्टा" ऐ० ब्रा० ६.१०. सूर्य्यो भूम्यादिस्थस्य रसस्य मेघस्य च छेत्ताऽस्ति। एतानि भौतिकवायुविषयाणि 'वायवा याहि०' इति मन्त्रप्रोक्तानि प्रमाणान्यत्रापि ग्राह्याणि १.२.४. धनिविद्वांसौ राजाऽमात्यौ ४.४७.४. विद्युत्प्राणौ १.१३९.१. इन्द्रश्च वायुश्च तौ विद्युत्पवनौ १.१४.३. विद्युत्पवनविद्याविदौ (विद्वज्जनौ) ३३.५६. सूर्यपवनाविव (अध्यापकोपदेशकौ) १.१३५.५. राजप्रजाजनौ ३३.८६. वायुविद्युद्वच्छीघ्रकारिणौ शिल्पविद्याऽध्यापकोपदेशकौ ४.४६.४. वायुऽविद्युदग्नी इव प्रतापिनौ राजसेनेशौ ४.४६.५. अग्निपवनौ १.२३.२. [इन्द्र-वायुपदयोः समासः । इन्द्रो व्याख्यातः । वायुः=अजगतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिको युच् । 'वा यौ' अ० २.४.५७. सूत्रेण धातोर्वादिशः । 'वा गतौ' (अदा०) धातोर्वौणादिक उण्]

इन्द्रवाहा याविन्द्रं विद्युतं परमैश्वर्यं वहतस्तौ (हरी=जलाग्न्याख्यौ), प्र०—अत्राऽऽकारादेशः १.१११.१. **इन्द्रवाहौ**=ऐश्वर्यप्रापकौ (हरी=वायुविद्युतौ) ४.३५.५. [इन्द्रोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' अ० ३.२.६४. सूत्रेण ण्विः प्रत्ययः । अथवा—'कर्मण्यण्' इत्यण् प्रत्ययः]

इन्द्रशत्रुः इन्द्रः शत्रुर्यस्य वृत्रस्य सः (मेघः) १.३२.६. इन्द्रः शत्रुर्यस्य स मेघः १.३२.१०. [इन्द्र-शत्रुपदयोः समासः । इन्द्रशत्रुः=इन्द्रोऽस्य शमयिता वा शातयिता वा नि० २.१६.]

इन्द्रसखा इन्द्रः परमैश्वर्यो राजा सखा यस्य सः (विद्वज्जनः) ७.३४.२४. [इन्द्र-सखिपदयोः समासः । 'राजाहस्सखिभ्यष्टच्' अ० ५.४.९१. सूत्रेण तत्पुरुषे विहितष्टच् समासान्तो बहुव्रीहावपि भवति छान्दसत्वात्]

इन्द्रसारथिः इन्द्रो विद्युत् सारथिर्यस्य सः (वायुः) ४.४६.२. इन्द्रस्य विद्युतः सूर्यस्याऽग्नेर्वा नियमेन गमयिता (नियुत्वान्=नियतगतिर्वायुः) ४.४८.२. [इन्द्र-सारथिपदयोः समासः । सारथिः=सारयति नियमेन चालयतीति विग्रहे 'सृ' गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् 'सर्त्तेर्णिच्च' उ० ४.८९. सूत्रेण घथिन् प्रत्ययः । णेर्लोपो णित्वाच्च वृद्धिः]

इन्द्रस्येव यथा परमैश्वर्ययुक्तस्य राज्ञः ९.८. सूर्यस्येव ७.६.१. [इन्द्र-इवपदयोः 'इवेन सह समासो विभक्त्यलोपः०' अ० २.२.१८. वा० इति समासो विभक्तेश्च न लोपः]

इन्द्रस्वन्तम् परमैश्वर्ययुक्तस्वामिसहितम् (रयिं=धनम्) ४.३७.५. [इन्द्रस्वप्राति० मतुप्]

इन्द्रहूतिम् परमैश्वर्यप्रकाशिकाम् (धीतिं=धियम्) ६.३८.१. [इन्द्रोपपदे ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तिन् बाहुलकात् यजादित्वात् किति संप्रसारणम्]

इन्द्रा परमैश्वर्ययुक्तम् (सज्जनम्) ६.५७.१.

इन्द्राकुत्सा इन्द्रश्च कुत्सश्चेन्द्राकुत्सौ विद्युदाघातौ ५.३१.९. [इन्द्र-कुत्सयोः समासे 'देवताद्वन्द्वे च' अ० ६.३.२६. सूत्रेण पूर्वपदस्यानङ् । कुत्स इत्येतत् कृन्ततेर्ऋषिः कुत्सो भवति । कर्त्तास्तोमानाम् इत्यौपमन्यवोऽत्राप्यस्य वधकर्मैव भवति । 'तत्सख इन्द्रः शुष्णं जघान' इति नि० ३.११. कुत्सः=वज्रनाम निघं० २.२०.]

इन्द्राऽग्नी इन्द्रो वायुर्विद्युदादिरूपोऽग्निश्च तौ ३.१३. वायुवह्नी प्र०—"या वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः" शत० ४.१.३.१९, १.२१.१. प्राणविद्युताविव (आप्ताध्यापकोपदेशकौ) १.१३९.९. वायुसवितारौ १.१०८.२. वायुपावकौ १.१०८.१. सूर्यविद्युतौ ५.४६.३. सूर्याऽग्नी इव प्रकाशमानौ सभापतिसभासदौ ७.३१. मातापितरौ १२.५४. इन्द्रः परमैश्वर्यश्चाऽग्निर्विज्ञाता च तौ १५.५९.

संयुक्तौ वायुविद्युदग्नी ३३.४६. सभासेनाधीशौ ३३.६१. अध्यापकोपदेशकौ ३३.६३. अध्येत्रध्यापकौ १.१०६.७. उपदेश्योपदेष्टारौ १.१०६.८. न्यायसेनाध्यक्षौ वायुविद्युतौ वा १.१०८.६. परमधनाढ्यो युद्धविद्याप्रवीणश्च १.१०८.१३. स्वामिभृत्यौ १.१०८.५. ऐश्वर्यविद्यायुक्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ३.१२.२. विद्युद्भौतिकावग्नी १.१०६.१. इन्द्रः प्रसिद्धो विद्युदग्निः पावकश्च १८.४७. इन्द्रो विद्युच्चाग्निः सूर्यश्च १४.११. सूर्य तथा अग्नि आर्याभि० २.२३, ३६.११. बिजली और प्रसिद्ध अग्नि सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५४. वायुवह्नी इव वर्त्तमानौ राजप्रजाजनौ ६.५६.२. **इन्द्राऽग्निभ्याम्**=जीवाऽग्निभ्याम् २२.५. वायुविद्युदस्त्राभ्याम् ३४.४६. सूर्याग्निभ्याम् ५.८६.६. विद्युत्प्रसिद्धाभ्यां वह्निभ्याम् ७.२३. **इन्द्राग्न्योः**=वायुपावकयोः २५.५. इन्द्रो वायुरग्निविद्युत्तयोः २.१५. सूर्यविद्युतोः ६.२४. [इन्द्र-अग्निपदयोर्द्वन्द्वे 'देवताद्वन्द्वे च' अ० ६.३.२६. सूत्रेण पूर्वस्याऽऽनङ् । इन्द्राग्नी प्राणोदानौ वा ऽ इन्द्राग्नी श० २.५.२.८. इन्द्राग्नी हि प्राणोदानौ श० ४.३.१.२२. प्राणापानौ वा इन्द्राग्नी गो० २.१. प्राणापानौ वा एतौ देवानां यदिन्द्राग्नी तै० १.६.४.३. वलं वै तेज इन्द्राग्नी गो० उ० १.२२. ब्रह्मक्षत्रे वा इन्द्राग्नी कौ० १२.८. अमृतꣳ इन्द्राग्नी श० १०.४.१.६. इन्द्राग्नी वै देवानामयातयामानौ तै० १.१.६.५, १.२.५.१. इन्द्राग्नी वै देवानां मुखम् कौ० ४.१४. तस्मादाहुरिन्द्राग्नी ऽ एव देवानाꣳ श्रेष्ठाविति श० ८.३.१.३. इन्द्राग्नी वै देवानामोजस्वितमौ श० १३.१.२.६. इन्द्राग्नी वै देवानामोजिष्ठौ तां० २४.१७.३. ष० ३.७. इन्द्राग्नी इव वलेन (भूयास) मं० २.४.१४. ओजो वलं वा एतौ देवानां यदिन्द्राग्नी तै० १.६.४.४. इन्द्राग्नी वै देवानामोजिष्ठौ वलिष्ठौ सहिष्ठौ सत्तमौ पारयिष्णुतमौ ऐ० २.३६. इन्द्राग्नी वै देवानामोजिष्ठौ वलिष्ठौ तै० ३.८.७.१. एताभिर्वा इन्द्राग्नी अत्यन्या देवता अभवताम् तां० २४.१७.२. इन्द्राग्नी वै विश्वेदेवाः श० १०.४.१.६. इन्द्राग्नी वै सर्वे देवाः कौ० १२.६. श० ६.१.२.२८. इन्द्राग्नी वा इदं सर्वम् श० ४.२.२.१४. अस्ति वै छन्दसां देवतेन्द्राग्नी श० १.८.२.१६. प्रतिष्ठे वा इन्द्राग्नी कौ० ३.६, ५.४. क्षत्रं वा इन्द्राग्नी श० २.४.२.६. ज्योतिरिन्द्राग्नी श० १०.४.१.६. ऐन्द्राग्नं वै सामतस्तृतीयं सवनम् कौ० ४.४. तस्मादैन्द्राग्नौ द्वादशकपालः पुरोडाशो भवति श० १.६.४.३. ऐन्द्राग्नो द्वादशकपालः पुरोडाशो भवति श० २.५.२.८. ऐन्द्राग्नानि ह्युक्थानि श० ४.२.५.१४. दर्शपूर्णमासयोर्वै देवते स्त इन्द्राग्नी ऽ एव श० २.४.४.१७. इन्द्राग्नी वै विश्वेदेवाः श० २.४.४.१३. इन्द्राग्नी हि विश्वेदेवाः श० २.६.२.१४. नक्षत्राणामधिपत्नी विशाखे । श्रेष्ठाविन्द्राग्नी भुवनस्य गोपौ तै० ३.१.१.११. इन्द्राग्न्योर्विशाखे (नक्षत्रविशेषः) तै० १.५.१.३. एतद्ध वा इन्द्राग्न्योः प्रियं धाम यद् वागिति ऐ० ६.७. गो० उ० ५.१३.]

इन्द्राणी इन्द्रस्य परमैश्वर्ययुक्तस्य स्त्री ५.४६.८. सूर्य की कान्ति सं० वि० १३८. **इन्द्राणीम्**=परमैश्वर्ययुक्ताम् (विदुषीं स्त्रीम्) २.३२.८. इन्द्रस्य सूर्यस्य वायोर्वा शक्ति सामर्थ्यमिव वर्त्तमानाम् (स्त्रियम्) १.२२.१२. **इन्द्राण्यै**=इन्द्रस्य विद्युद्रूपस्य स्त्रीव वर्त्तमानायै दीप्त्यै २५.४. परमैश्वर्यकारिण्यै राजनीत्यै ३८.३. [इन्द्रप्राति० स्त्रियाम् 'इन्द्रवरुण०' अ० ४.१.४६. सूत्रेण ङीष् आनुक् च । इन्द्राणी इन्द्रस्य पत्नी नि० ११.३७. इन्द्राणी ह वाऽइन्द्रस्य प्रिया पत्नी, तस्या उष्णीषो विश्वरूपतमः श० १४.२.१.८. स एष एवेन्द्रः योऽयं दक्षिणेऽक्षन्पुरुषोऽथेयमिन्द्राणी श० १०.५.२.६.]

इन्द्रापर्वता सूर्यमेघाविव वर्त्तमानौ सभासेनेशौ १.१३२.६. सूर्यमेघसदृशौ सेनापतिसेनाजनौ, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' अ० ७.१.३६. इत्याकारादेशः ८.५३. विद्युन्मेघाविव राज्यसेनाधीशौ ३.५३.१. [इन्द्र-पर्वतपदयोर्द्वन्द्वः । 'देवताद्वन्द्वे च' अ० ६.३.२६. सूत्रेण पूर्वपदस्यानङ् । इन्द्रो व्याख्यातः । पर्वतः=मेघनाम निघं० १.१०.]

इन्द्रापूषणा विद्युत्पृथिव्यौ ३६.११. विद्युद्वायू ७.३५.१. **इन्द्रापूष्णोः**=ऐश्वर्यवत्पुष्टिमतोः (विद्युत्सूर्ययोः) १.१६२.२. विद्युद्वाय्वोः २५.२५. [इन्द्र-पूषन् पदयोर्द्वन्द्वे पूर्वपदस्यानङ् । पूषन्=पृथिवीनाम निघं० १.१. पदनाम निघं० ५.६. पूषेत्यपरं सोऽदन्तकः । 'अदन्तकः पूषा' (श० १.७.४.७. गो० उ० १.२.) इति च ब्राह्मणम् नि० ६.३१.]

इन्द्राबृहस्पती वायुसूर्यौ २५.६. अध्यापकोपदेशकौ ४.४६.५. राजोपदेशकविद्वांसौ ४.४६.२. विद्युत्सूर्याविव प्रधानराजानौ ४.४६.१. राजाऽमात्यौ ४.४६.६. **इन्द्राबृहस्पतिभ्याम्**=राजाऽनूचानाभ्यां विद्वद्भ्याम् ७.२३. [इन्द्र-बृहस्पतिपदयोर्द्वन्द्वे पूर्वपदस्य आनङ्ङादेशः । बृहस्पतिः पदनाम निघं० ५.४. 'तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च' अ० ६.१.१५७. इति सुट् तलोपौ । बृहतः पाता वा पालयिता वा नि० १०.११.]

इन्द्राब्रह्मणस्पती राजधनपालकौ (प्रजा-राजपुरुषौ)

२.२४.१२. [इन्द्र-ब्रह्मणस्पतिपदयोर्द्वन्द्वे पूर्वपदस्यानङ् । ब्रह्मणस्पतिः=ब्रह्मणः पाता वा पालयिता वा नि० १०.१२. ब्रह्मणस्पतिः=पदनाम निघं० ५.४.]

इन्द्रामरुतः इन्द्रश्च विद्युन्मरुतश्च वायवस्तान् २.२९.३. [इन्द्र-मरुत्पदयोर्द्वन्द्वे पूर्वपदस्यानङ् । मरुतः=ऋत्विङ्नाम निघं० ३.१८. पदनाम निघं० ५.५. मरुत्=हिरण्यनाम निघं० १.२. रूपनाम निघं० ३.७.]

इन्द्रावतः ऐश्वर्ययुक्तान् (पुरुषार्थिनो जनान्) ४.२७.४. [इन्द्रप्राति० भूम्नि मतुप् । 'अन्येषामपि दृश्यते' अ० ६.३.१३७. सूत्रेण दीर्घः]

इन्द्रावरुणयोः इन्द्रश्च वरुणश्च तयोः सूर्याचन्द्रमसोः, प्र०—इन्द्र इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.४. 'वरुण इति च निघं० ५.४. अनेन व्यवहारप्रापकौ गृह्यते १.१७.१. **इन्द्रावरुणा**=अग्निजले, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्० इत्याकारादेशो वर्णव्यत्ययेन ह्रस्वत्वञ्च १.१७.३. विद्युज्जले ७.३५.१. वायुजले सम्यक् प्रत्युक्ते १.१७.८. वायुविद्युताविव (अध्यापकोपदेशकौ) ४.४२.९. शुभगुणयुक्तप्रधानौ (राजाऽमात्यौ) ४.४१.३. परमैश्वर्य-श्रेष्ठाचारयुक्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.४१.१. विद्यैश्वर्यप्रशंसितगुणयुक्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.४१.५. प्राणोदानवत् प्रियबलिनौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.४१.१. शत्रुविदारकश्रेष्ठौ (राजाऽमात्यौ) ४.४१.४. वायु और चन्द्र आर्याभि० २.२३, ३६.११. सूर्यचन्द्रवद्वर्त्तमानौ राजप्रजाजनौ ६.६८.८. **इन्द्रावरुणाभ्याम्**=विद्युज्जलाभ्याम् ७.२३. [इन्द्र-वरुणपदयोर्द्वन्द्वे पूर्वपदस्यानङ् । इन्द्र इति पदनाम निघं० ५.४. वरुण इति पदनाम निघं० ५.४.]

इन्द्राविष्णू सूर्यविद्युतौ ६.६९.१. विद्युत्सूर्याविव (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५५.२. विद्युद्वायू ४.५५.४. विद्युत्सूत्रात्मानौ ४.२.४. वायुसूर्यौ ६.६९.४. वायुविद्युताविव सभासेनेशौ ६.६९.३. **इन्द्राविष्णुभ्याम्**=ईश्वरवेदज्ञानाभ्याम् ७.२३. [इन्द्र-विष्णुपदयोर्द्वन्द्वे 'देवताद्वन्द्वे च' इति पूर्वपदस्यानङ् । विष्णुः=यज्ञनाम निघं० ३.१७. पदनाम निघं० ५.६. विष्णुः=अथ यद् विषितो भवति तद् विष्णुर्भवति । विष्णुर्विशतेर्वा व्यश्नोतेर्वा नि० १२.१८. विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः 'विषेः किच्च' उ० ३.३९. सूत्रेण णुः प्रत्ययः किच्च]

इन्द्रासोमा विद्युदोषधिगणौ ३६.११. सेनापत्यैश्वर्यवन्तौ २.३०.६. विद्युच्चन्द्रमसौ ६.७२.१. वायुविद्युतौ ६.७२.४. राजा और प्रजा आर्याभि० २.२३, ३६.११. वायुविद्युद्वद् वर्तमानौ (अध्यापकोपदेशकौ) ६.७२.५. [इन्द्र-सोमपदयोर्द्वन्द्वे पूर्वपदस्यानङ् । 'सुपां सुलुगि०' त्याकारादेशः]

इन्द्रियम् इन्द्रस्यैश्वर्यप्राप्तेर्लिङ्गं चिह्नमिन्द्रेण परमेश्वरेण दृष्टमिन्द्रेण सृष्टं प्रकाशितमिन्द्रेण विद्यावता जीवेन जुष्टं संप्रीत्या सेवितमिन्द्रेण परमेश्वरेण यद्दत्तं सर्वसुखज्ञानसाधकम् प्र०—'इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा' अ० ५.२.९३. अनेनोक्तेष्वर्थेषु इन्द्रियशब्दो निपातितः २.१०. सुशिक्षितं मनः २०.७१. प्रशस्तं बुद्ध्यादिकं चक्षुरादिकं वा १.५७.३. विज्ञानयुक्तं मनः १.५५.४. मन आदीनि वाग्भिन्नानि षड् ज्ञानेन्द्रियाणि कर्मेन्द्रियाणि च ऋ० भू० १०२. दिव्यां वाचम् १९.७३. दिव्यं श्रोत्रम् १९.७३. चित्तम् १९.७७. जिह्वादिकम् १९.७६. मन आदिकम् १९.५. अन्तःकरणम् २१.५४. श्रोत्रादिकम् २१.२०. मनःप्रभृतीन्द्रियमात्रम् २१.४०. मन-आदिकार्यसाधकम् ८.३. धनम् २०.५५. इन्द्रै राजभिर्जुष्टं न्यायाचरणम् १९.७५. इन्द्रेण जीवेन जुष्टम् (भा०—आरोग्यम्) २८.३६. इन्द्रैर्जीवैर्जुष्टं सुखम् २८.३१. विज्ञानसाधकं (मनः) १९.७७. उपस्थः पुरुषलिङ्गम् १९.७६. ऐश्वर्यम् २१.२२. विज्ञानं धनं वा १.१११.२. इन्द्रस्य परमैश्वर्यवतस्तव ईश्वरस्य जीवस्य च लिङ्गम् (प्रत्यक्षाऽप्रत्यक्षसामर्थ्यम्) १.१०३.१. प्रज्ञानम् १९.७४. ज्ञानादिव्यवहारसाधकम् (मनः) २१.१४. शान्त धर्मयुक्त अन्तःकरण सं० वि० १४४, अथर्व० १२.५.७. **इन्द्रियाणि**=चक्षुरादीनि धनानि वा १९.१२. ऐश्वर्यजनकानि सुवर्णादीनि २०.५८. **इन्द्रियाय**=धनायेन्द्रियबलाय वा १९.३४. धनाय, प्र०—इन्द्रियमिति धननामसु पठितम् निघं० २.१०, १.१०४.६. धनवर्धनाय १०.१८. नेत्राद्यायाऽन्तःकरणाय वा १०.२३. न्यायव्यवहारप्रकाशनायाऽन्यायाऽन्धकारनाशाय ऋ० भू० २२२. **इन्द्रिये**=मनसि श्रोत्रादौ वा ३.४५. **इन्द्रियेण**=परमैश्वर्येण विज्ञानेन वा ऋ० भू० २१८. इन्द्रेण जीवेन जुष्टेन प्रीतेन वा १०.२१. मनसा धनेन वा ७.२०. **इन्द्रियेभ्यः**=कार्यसाधकतमेभ्यः (श्रोत्रादिभ्यः) ७.६. **इन्द्रियैः**=इन्द्रस्य जीवस्य लिङ्गैः २०.६१. [इन्द्रियमिति धन नाम निघं० २.१०. इन्द्रप्राति० षष्ठीसमर्थात् 'इन्द्रियमिन्द्रलिङ्गमिन्द्रदृष्टमिन्द्रसृष्टमिन्द्रजुष्टमिन्द्रदत्तमिति वा' अ. ५.२.८३. सूत्रेण लिङ्गादिष्वर्थेषु घच् प्रत्ययान्तो निपात्यते । प्राणा इन्द्रियाणि । तां० २.१४.२. जायमानो ह वै ब्राह्मणः सप्तेन्द्रियाण्यभिजायते ब्रह्मवर्चसञ्च यशश्च स्वप्नं

च क्रोधं च श्लाघां च रूपं च पुण्यमेव गन्धं सप्तमम् गो० पू० २.२.]

इन्द्रियावत् प्रशस्तानि इन्द्रियाणि भवन्ति यस्मिन् तत् (दुग्धम्) १९.९५. **इन्द्रियावतः**=बहुधनयुक्तस्य (बृहस्पतिसुतस्य) ८.९. **इन्द्रियावान्**=प्रशस्तानीन्द्रियाणि यस्मिन् सः (भागः=करः) ६.२७. [इन्द्रियमिति धननाम निघं० २.१०. ततो भूम्नि प्रशंसार्थे वा मतुप्। 'मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ' अ० ६.३.१३१. सूत्रेण मतौ परतो दीर्घत्वम्]

इन्द्रेषिताम् इन्द्रेण परमेश्वरेण प्रेषिताम् (धमनिं=वेदवाणीम्) २.११.८. **इन्द्रेषिताः**=इन्द्रेण स्वामिना प्रेरिताः (पवयः=चक्राणि) ५.३१.५. **इन्द्रेषिते**=इन्द्रेण सूर्येण वर्षाद्वारा प्रेरिते (अध्यापिकोपदेशिके) ३.३३.२. [इन्द्र-इषितपदयोः समासः। इषितः=इषु गतौ (दिवा०) धातोः क्तः]

इन्धताम् दीप्यन्तु १.१७०.४. प्रदीपयन्तु ११.६१. प्रकाशयन्तु १२.४४. **इन्धते**=प्रदीपयन्ति ७.३२. प्रकाशयन्ति ३४.४४. प्रदीप्यन्ते १.४४.७. **इन्धे**=प्रकाशयामि २०.२४. प्रकाशयते ७.१.१६. प्रदीपयामि ७.८.१. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्लोटि लटि च रूपाणि]

इन्धन्वभिः प्रदीपिकाभिः (धेनुभिः=वाग्भिः) प्र०—अत्र वनिपि 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इत्यलोपः २.३४.५. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्वनिप्]

इन्धानः प्रदीपयन्, अ०—विद्वान् (सभेशो राजा) १२.१८. प्रदीप्तः सन् (विद्वज्जनः) १.१४३.७. **इन्धानाः**=प्रकाशमानाः (ऋषयः=वेदार्थवेत्तारो जनाः) १५.५९. प्रकाशयन्तः, अ०—प्रदीपयन्तः (जनाः) ३.१८. प्रकाशयितारः पं० वि०, अथर्व० १९.५.३. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः शानच्। ताच्छील्ये चानश् वा कर्त्तरि]

इन्व व्याप्नुहि ५.४.७. **इन्वतम्**=वर्धयतम् १.१६०.५. **इन्वतः**=व्याप्नुतः, प्र०—इन्वतीति व्याप्तिकर्मसु पठितम् निघं० २.१८, १.१०.८. **इन्वताम्**=व्याप्नुताम् ६.७०.६. **इन्वति**=व्याप्नोति जानाति वा, प्र०—इन्वतीति गतिकर्मसु पठितम् २.१४, १.१८.७. प्राप्नोति १.१२८.५. **इन्वतु**=व्याप्नोतु प्राप्नोतु १.१६२.१२. ददातु ४.५३.७. **इन्वथः**=प्राप्नुतम् १.११९.७. **इन्वसि**=व्याप्नोति, प्र०—अत्र 'व्यत्ययो बहुलम्' इति लकारः व्यत्ययः ५.२८.२. व्याप्नोषि १.१७६.१. व्याप्नोषि व्याप्नोति वा १.९४.१०. **इन्विरे**=व्याप्नुवन्ति ५.६.६. [इवि व्याप्तौ (भ्वा०) धातोर्लोटि लटि लिटि च रूपाणि। लोटि व्यत्ययेनात्मनेपदम्। इन्वति गतिकर्मा निघं० २.१४. व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८.]

इन्वतः प्रियस्य (यजमानस्य) १.१४१.४. [इवि गतौ (भ्वा०) धातोः शतरि रूपम्]

इन्वन् प्राप्नुवन् (राजा) ५.३० ७. **इन्वन्तः**=व्याप्नुवन्तः (मनुष्याः) ३.४.५. [इवि गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ०। इन्वतीति व्याप्तिकर्मणो वा (निघं० २.१८) शतृ]

इभम् हस्तिनमिव ६.२०.८. **इभाय**=हस्तिने १.८४.१७. **इभेन**=हस्तिना ४.४.१. [इण् गतौ (अदा०) धातोः 'इणः कित्' उ० ३.१५३. सूत्रेण भन् प्रत्ययः किच्च। इभाय=महते नि० १३.३९. इभेन=इराभृतागणेन गतभयेन हस्तिना वा नि० ६.१२.]

इभ्यान् य इभान् हस्तिनो नियन्तुमर्हन्ति तान् (हस्तिचालकान्) १.६५.४. [इभप्रातिपदिकादर्हत्यर्थे यत्। इभश्च व्याख्यातम्]

इमथा इदानीन्तनानामिव (योगिनाम्) ७.१२. इममिव ५.४४.१. [इमप्राति० 'प्रत्नपूर्वविश्वेमात्थाल् छन्दसि' अ० ५.३.१११. सूत्रेणेवार्थे थाल् प्रत्ययः। इमथा=अमुथा नि० ३.१६.]

इमसि प्राप्नुमः १.१.७. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लटि, उत्तमबहुवचने मसि 'इदन्तो मसि' रिति मस इदन्तत्वम्]

इमः प्राप्नुमः ११.१६. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

इयक्षते यष्टुं सत्कर्त्तुमिच्छते (इन्दवे=विद्यार्थिने) प्र०—अत्र छान्दसो वर्णलोप इत्यभ्यास-यकारलोपः ३३.६२. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सनि शतरि रूपम्। अभ्यासयकारस्य च 'छान्दसो वर्णलोप' इति लोपः]

इयक्षन् प्राप्तुमिच्छन् (सूरिः=विद्वान्) १.१५३.२. **इयक्षन्तः**=सत्कुर्वन्तः (सत्पुरुषाः) २.२०.१. यष्टुं सङ्गमयितुमिच्छन्तः (अहिंसका जनाः) ६.२१.३. [इयक्षति गतिकर्म, निघं० २.१४, ततः शतृ। अथवा=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः सन्नन्ताच्छतृ। अभ्यासयकारस्य लोपश्छान्दसः]

इयक्षमाणाः यज्ञं चिकीर्षमाणा (यजमानाः)

१७.६९. **इयक्षमाणम्**=अतिशयेन सङ्गच्छमानम् (पतिम्) १.१२३.१०. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः सन्नन्ताच्छानच् । अभ्यासयकारस्य च लोपश्छान्दसः]

इयक्षसि यष्टुं सङ्गन्तुमिच्छसि ३३.५५. संगच्छसे प्राप्नोषि वा ६.४९.४. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः सन्नन्ताल् लट् । अभ्यासयकारस्य लोपश्छान्दसः]

इयत् प्राप्नुवन् (अग्ने=ई०, अग्निर्वा) ४.१६. एतावत् परिमाणम् (आयुः) १०.२५. [इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'इणो यण्' इति यणादेशो न भवति छान्दसत्वात् । यणभाव इयङ्]

इयत् एतावत् परिमाणम् (आयुः) १०.२५. **इयति**=एतावति (देवयजने=विदुषां पूजने) ३७.५. [इदम् सर्वनाम्नो वतुप् । 'किमिदंभ्यां वो घः' अ० ५.२.४०. सूत्रेण घादेशे घस्येयादेशे 'इदंकिमोरीश्की' इतीशादेशे 'यस्येति चे' ति लोपः]

इयत्तिकः कुत्सितः (कुषुम्भकः=नकुलः) प्र०—अत्र कन् प्रत्ययः १.१९१.१५. [इयदिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीपि कुत्सितार्थे कन् । 'केऽणः' इति ह्रस्वः]

इयत्तिका इयति प्रदेशे भवा बाला (शकुन्तिका=कपिञ्जली) १.१९१.११. [इयदिति व्याख्यातम्, ततः स्त्रियां ङीपि भवार्थे कन् । 'केऽण' इति ह्रस्वत्वम्]

इयत्यै सुखप्राप्तीच्छायै (विशे=प्रजायै) ७.४२.४. [इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ+ङीप्]

इयध्यै एतुं प्राप्तुम् ६.२०.८. [इण् गतौ (अदा०) धातोस्तुमर्थे कध्यै प्रत्ययः । छान्दसत्वादियङ्]

इयन्ति एतावन्ति (सवना=कर्माणि) ६.२३.४. [इयद् व्याख्यातम् । ततो नपुंसके प्रथमाबहुवचने रूपम्]

इयर्त्ति प्राप्नोति ४.२१.५. गच्छति ४.१७.१२. अर्पयति प्र०—अत्राऽन्तर्गतो णिच् ३३.७८. उन्नयति ६.४७.३. जानाति १.११३.१७. **इयर्मि**=गच्छामि १.११६.१. प्राप्नोमि ४.४२.५. **इयर्षि**=प्राप्नोषि १२.१०७. [इयर्त्ति गतिकर्म निघं० २.१४. ऋ गतौ (जु०) धातोर्लट् । 'अर्त्तिपिपर्त्योश्च' इति श्लावभ्यासस्येत्वे 'अभ्यासस्यासवर्णे' इतीयङि पिति गुणे च रूपम् । इयर्त्ति=इरयति नि० ९.३.]

इयात् प्राप्नुयात् १२.६८. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिङ्]

इयाते गच्छतः ३३.४४. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । इङ् गतौ (दिवा०) धातोर्वा-लट्]

इयानः प्राप्नुवन् (कर्मोपासनाज्ञानविज्जनः) २.३४.१४. सर्वाऽभीष्टाऽभिज्ञाता (राजा) प्र०—अत्रेङ् गतौ, इत्यस्माच्छन्दसि लिट् अ० ३.२.१०५. इति लिट् 'लिटः कानज्वा' अ० ३.२.१०६. इति कानच्, १.३०.१४. **इयानाः**=प्राप्नुवन्तः (विद्वज्जनाः) ७.२५.५. गन्त्र्यः (नावः) १०.१९. अधीयमानाः (जनाः) ७.५२.३. **इयानम्**=गच्छन्तम् (रथम्) १.१८०.१०. [इङ् गतौ (दिवा०) धातोश्छन्दसि लिटः कानच् । इङ् गतौ (दिवा०) धातोश्शानच् वा]

इयाम उल्लङ्घयेम त्यजेम ५.५३.१४. **इयाय**=प्राप्नोतु ४.४.११. एति ७.३३.१३.

इयानासः प्राप्नुवन्तः (मर्त्तासः=मनुष्याः) ५.२२.३. [इङ् गतौ (दिवा०) धातोः शानचि प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः]

इये प्राप्नुयाम्, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदं, लडर्थे लिट् च २.१७.७. **इयेथ**=एषि ४.९.१. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

इरज्यति ऐश्वर्यं दातुं सेवितुं च योग्योऽस्ति, प्र०—इरज्यतीत्यैश्वर्यकर्मसु पठितम् निघं० २.२१, परिचरणकर्मसु च, निघं० ३.५, १.७.९. **इरज्यथः**=ऐश्वर्ययुक्तां कुरुथः १.१५१.६. [इरज्यति ऐश्वर्यकर्म निघं० २.२१. परिचरणकर्म निघं० ३.५.]

इरज्यन् ऐश्वर्यं कुर्वन् (अग्निः=अग्निवत्प्राप्तपुरुषार्थ जनः) १२.१०९. [इरज्यति ऐश्वर्यकर्म (निघं० २.२१) धातोः शतृ । इरज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिरिति । मनुष्या वै जन्तवो दीप्यमानो अग्ने प्रथयस्व मनुष्यैरित्येतत् श० ७.३.१.३२.]

इरज्यन्त प्राप्नुवन्तु ७.२३.२. **इरज्यसि**=ऐश्वर्यं प्राप्नोषि १.५५.३. [इरज्यति ऐश्वर्यकर्म (निघं० २.२१.) धातोर्लङ् आडभावश्च । अन्यत्र लट्]

इरज्यन्ता ऐश्वर्यं सम्पादयन्तौ (इन्द्राग्नी=वायुविद्युतौ) ६.६०.१. [इरज्यति ऐश्वर्यकर्म (निघं० २.२१.) धातोः शतृ]

इरधन्त य इरान् इलान् प्रेरकान् दधति त इरधास्त इवाऽऽचरन्तु १.१२९.२. [इल प्रेरणे (चुरा०) धातोरिगुपधलक्षणे कप्रत्यये=इलः । तदुपपदे दधातेः कः प्रत्ययः । इरधप्राति० आचारे क्विपि धातोर्लङ्]

इरध्यै ईरितुं प्राप्तुम्, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन

ईकारस्थाने इः १.१३४.२. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोस्तुमर्थे कध्यै प्रत्ययः। धातोरीकारस्य ह्रस्वश्छान्दसः]

इरम्मदम् य इरयाऽन्नेन माद्यति हृष्यति तम् (सेनापतिम्) प्र०—'उग्रंपश्येरम्मदपाणिन्धमाश्च' अ० ३.२.३७. इति खश्प्रत्ययान्तो निपातितः। [इरा अन्ननाम निघं० २.७. तदुपपदे 'मदी हर्षे' (दिवा०) धातोः 'उग्रं पश्येरम्मद०' अ० ३.२.३७. सूत्रेण खश्प्रत्ययान्तो निपात्यते]

इरस्यः प्राप्तुं योग्यः (विद्वज्जनः) ७.४०.६.

इरस्या अन्नेच्छया ५.४०.७. ['इरा' अन्ननाम निघं० २.७. तत आत्मन इच्छायां क्यचि 'सर्वप्रातिपदिकेभ्यो लालसायामसुक्०' अ० ७.१.५१. वा० सूत्रेणासुक्। 'अ प्रत्ययाद्' इत्यकारे प्रत्यये स्त्रियां टाप्]

इरा अन्नादिकम्, प्र०—इरेत्यन्ननामसु पठितम् निघं० २.७, ५.८३.४. **इरायै**=अन्नादिवृद्धये ३०.११. [इण् गतौ (अदा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्रवज्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रन् प्रत्ययान्तो निपात्येत। एति गच्छति ययेति विग्रहः। 'इरा' इत्यन्ननाम निघं० २.७.]

इरावत् अन्नाद्यैश्वर्ययुक्तम् (वर्त्तिः=मार्गम्) ७.४०.५. ['इरा' इत्यन्ननाम (निघं० २.७.), ततो भूम्नि मतुप्]

इरावती इराः प्रशस्तान्यन्नानि विद्यन्ते यस्यां सा (पृथिवी=भूमिरन्तरिक्षं वा), प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् 'इरेत्यन्ननामसु पठितम् निघं० २.७, ५.१६. **इरावतीम्**= इरा जलानि विद्यन्ते यस्यास्ताम् (वाचम्) ५.६३.६. **इरावतीः**=बह्वन्नादिसामग्रीस्ताः (धेनवः=वाण्यः) ५.६९.२. [इरावती नदीनाम निघं० १.१३. इरावतीं परुष्णीत्याहुः नि० ९.२५. 'इरा' इत्यन्ननाम निघं० २.७, ततो भूम्नि मतुप्। स्त्रियां ङीप्]

इरिणम् कम्पितं जगत् १.१८६.९. [इरितं निर्ऋणम्। ऋणातेरपार्णं भवति, अपरता अस्मादोषधय इति वा नि० ९.६. ऋ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेः किदिच्च' उ० २.५१. सूत्रेण 'इनन्' प्रत्ययः किच्च। धातोश्चेकारादेशः। ऋच्छन्ति गच्छन्ति यत्र यस्माद्वेति विग्रहः]

इरिण्याय इरिणे ऊषरभूमौ साधवे (पुरुषाय) १६.४३. [इरिणं व्याख्यातम्। तत्र साध्वर्थे यत् प्रत्ययः]

इरी प्रेरकः (एवयामरुत्=विज्ञानवान् मनुष्यः) ५.८७.३.

ईर्यम् प्रेरकम् (राजानम्), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन दीर्घेकारस्य ह्रस्वः ५.४८.४. प्रेरणीयम् (परीक्षकं जनम्) ६.५४.८. **इर्यः**=सन्मार्गे प्रेरकः (अग्निः=यतमानो संन्यासी) ७.१३.३. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोः कर्त्तरि बाहुलकादौणादिको यक्। धातोश्च छान्दसं ह्रस्वत्वम्। इल प्रेरणे (चु०) धातोर्वा साधनीयम्। अन्यत्र कर्मणि ण्यत्]

इलयत गच्छत १.१९१.६. [इल प्रेरणे (चुरा०) धातोर्लोट्। गुणाऽभावश्छान्दसः]

इलीविशस्य इलायाः पृथिव्या बिले गर्त्ते शेते तस्य वृकस्य प्र०—इलेति पृथिवीनामसु पठितम् निघं० १.१, इदमभीष्टं पदं पृषोदरादिना सिध्यति 'इलीविशस्य इलाबिलशयस्य निरु० ६.१९, १.३३.१२. [इला अन्ननाम (निघं० २.७), तस्य बिलमुदकम्। उदकेऽन्नं गुप्तं विद्यते। तस्योदकस्य शयः=शयनस्थानं मेघः अथवा—इला पृथिवीनाम (निघं० १.१) तस्या बिलानि गुहास्थानानि, तेषु यः शेते स इलाबिलशयो दस्युः। पृषोदरादित्वाद्रूपसिद्धिः। इलीविशः=इलाबिलशयस्य नि० ६.१९. इलीविशः पदनाम निघं० ४.३.]

इलावान् बह्वन्नयुक्तः (सभाध्यक्षः) ४.२.५. [इला अन्ननाम निघं० २.७. ततो भूम्नि मतुप्]

इव यथा १२.६. तद्वत् ७.४०. जैसे स० प्र० १५१, १०.४०.२. समान स० प्र० २४७, ३४.६. [इवेत्युपमार्थे नि० १.४. इव इति पदपूरणः नि० १.१०. इवः परिभयार्थे वा नि० ९.२८.]

इषणत् इष्णाति प्राप्नोति ४.१७.१४. **इषणन्त**= इच्छन्तु १.१३४.५. प्राप्नुवन्ति ४.२३.९. **इषणः**=प्रेरय ४.२२.१०. प्रेरयेः ४.१६.९. [इष आभीक्ष्ण्ये (क्र्या०) इष गतौ (दिवा०) धातोर्वा लेटि रूपम्। व्यत्ययेन शप् श्ना च]

इषणि एषणायाम् २.२.९. [इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिकः क्युन्। अल्लोपश्छान्दसः]

इषण्य प्रेरय ३.५०.३. **इषण्यत**=प्राप्नुवन्ति ५.५२.१४. **इषण्यन्ति**=अन्नादिकमिच्छन्ति ५.६.६. [इषणप्राति० इच्छायामर्थे क्यच्। छान्दसत्वादल्लोपः]

इषण्यन् आत्मन इषणं प्रेरणमिच्छन्निव (विद्युद्रूपोऽग्निः) ३.६१.७. [इषणप्राति० आत्मन इच्छायामर्थे क्यच्। ततः शतृ। अल्लोपश्छान्दसः]

इषध्यै एष्टुं ज्ञातुम् ७.४३.१. [इष गतौ (दिवा०) धातोस्तुमर्थे कध्यै प्रत्ययः]

इषन्त प्राप्नुवन्तु १.१३४.५. [इष गतौ (दिवा०)

धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श आत्मनेपदञ्च । आड-भावोऽपि छान्दसः]

इषम् इष्यते या सत्क्रिया ताम्, प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति कर्मणि क्विप् १.१२.११. अन्नं विज्ञानं वा ७.४८.४. अन्नाद्यैश्वर्यम् ४.१६.२१. अन्नादिपदार्थसमूहम्, प्र०—इषमित्यन्ननामसु पठितम् निघं० १.७, १.१६. अभीष्टमन्नम् ३.४९. इच्छामन्नं वा ७.३६.२. उत्तमगुण-सम्पादकमन्नाद्यौषधसमूहम् १.४६.६. विज्ञानम् ३५.१६. विज्ञानं धनं वा ७.८.७. इष्टामिच्छां वा २.३४.८. विद्या-योगजं बोधम् १.१७१.६. प्राप्तिम् १.१७७.५. इच्छासिद्धिम् १९.३८. इष्टं सुखम् १.१८४.६. प्राप्तव्यं सुखं १.१८०.१०. प्रेरणम् १.१७८.५. शास्त्रविज्ञानम् १.१७४.१०. **इषः**= इष्यन्ते यास्ताः सेनाः, प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति वार्त्तिकेन कर्मणि क्विप् १.९.८. विद्यासिद्धयो या इष्यन्ते ताः क्रियाः १.३ १. अन्नादीनीच्छा वा ६.६९.१. विज्ञानानि ३.५४.२२. अन्नादिसामग्रीः ६.१.१२. इच्छाः ३.३०.११. अन्नाद्यान्योषधिगणान् ३.६२.१४. ज्ञातव्याः प्रजाः १.१८१.६. एष्टव्या रथ्याः १.१३०.३. प्राप्तव्यान् रसान् ६.३५.४. इष्टसाधकाः किरणाः १.८६.५ इष्यतेऽसावा-श्विनो मासः १४.१६. **इषा**=इष्यते ज्ञायते येन तदिट् ज्ञानं तेन, प्र०—'इष गतौ' इत्यस्य क्विबन्तस्य रूपम् 'कृतो बहुलम्' इति करणे क्विप् २.१८. इष्टविद्यया-ऽन्नादिना वा ४.१ इच्छयाऽन्नेन वा निमित्तेन ३४.४८. स्वेच्छया १.११७.१. उत्तमाऽन्नादिसमूहेन १.८८.१. **इषाम्**=सर्वैर्जनैर्यानीष्यन्ते तेषाम् (रयीणाम्) ३.१३. **इषे**=अन्नविज्ञानयोः प्राप्तये, प्र०—इषतीति गतिकर्मसु पठितम्, निघं० २.१४. अस्माद्धातोः क्विपि कृते पदमिदं सिध्यति, अन्व०—अन्नायोत्तमेच्छायै १.१. वृष्ट्यै ३३.११. इच्छापूर्त्तये १.७१.८. अन्नरूपायै राज्यलक्ष्म्यै १.५०.११. आश्विनाय ७.३०. इच्छासिद्धयेऽन्नप्राप्तये वा ७.२१.१०. उत्तम अन्न के लिए आर्याभि० २.३१, ३८.१४. [इषु इच्छायाम् (तुदा०) इष गतौ (दिवा०) धातोर्वा कर्मणि 'कृतो बहुलमि' ति क्विप् । इषम् अन्ननाम निघं० २.७. इषा अद्भिः सह नि० १०.२६. प्रजा वाऽ इषः । श० १.७.३.१४. अन्नं वाऽ इषम् कौ० २८.५. अयं वै लोक इषमिति । ऐ० ६.७.]

इषयते इषमन्नं विज्ञानं वा कामयमानाय (मर्त्याय= मनुष्याय) ६.१६.२५. [इषमित्यन्ननाम (निघं० २.७.), ततः 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिजन्ताच्छतृ]

इषयध्यै इषयितुं गमयितुम् १.१८३.३. गन्तुम् ६.६४.४. [इष गतौ (दिवा०) धातोर्णिजन्तात् तुमर्थे कध्यैः प्रत्ययः । गुणाभावश्छादसः]

इषयन् प्रापयन् (विद्वज्जनः) ६.१.२. **इषयन्तम्**= प्राप्नुवन्तं गच्छन्तं वा (सज्जनम्) ६.१८.५. प्रापयन्तम् (पावकमग्निम्) ६.१.८. **इषयन्तः**=प्राप्नुवन्तो प्रापयन्तो वा (सिन्धवः=नद्यः) ४.४९.४. इषमन्नं कामयमानाः (सज्जनाः) ६.१६.२७. [इष गतौ (दिवा०) धातोर्णि-जन्ताच्छतृ । गुणभावश्छान्दसः । अन्यत्र—इषमित्यन्ननाम, ततो 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिचि शतरि च रूपम्]

इषयन्त प्राप्नुयुः २.२.११. एषयन्ति प्राप्नुवन्ति, प्र०—अत्र लङि 'वा छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति गुणाऽभावोऽडभावश्च १.७७.४. [इष गतौ (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ् । गुणाभाव आडभावश्च छान्दसौ]

इषयन्ती सुखं प्रापयन्त्यौ (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.४. **इषयन्तीः**=इषमन्नं कुर्वन्त्यः (विदुष्यः) ३.३३.१२. [इषमित्यन्ननाम (निघं० २.७.) ततः 'तत्करोति-तदाचष्टे' इति णिचि शतरि स्त्रियां ङीपि च रूपम्]

इषयुः इष्यते सर्वैर्जनैर्विज्ञायते यत्तद्याति प्राप्नोतीति (विद्वज्जनः) प्र०—अत्र इषधातोः 'घञर्थे कविधानमि'ति कः तस्मिन्नुपपदे या धातोरौणादिकः कुः १.१२०.५. [इष गतौ (दिवा०) धातोर् 'घञर्थे क विधानमि' ति कः । इषोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर् औणादिकः कुप्रत्ययः]

इषये विज्ञानायाऽन्नाय वा ६.५२.१५. [इष गतौ (दिवा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वा सूत्रेण इक् प्रत्ययः]

इषयेम प्राप्नुयाम १.१८५.९. [इष गतौ (दिवा०) धातोर्णिचि लिङि च रूपम् । गुणाऽभावश्छान्दसः]

इषवः बाणाः १६.६४. बाणाद्याः शस्त्रविशेषाः २९.४८. शस्त्राऽस्त्राणि १६.६६. प्राप्ताः सेनाः १७.४३. गतयः १३.७. **इषवे**=इष्णात्यभीक्ष्णं हिनस्ति शत्रून् येन तस्मै (भा०—शस्त्राऽस्त्राय) १६.१. **इषुम्**=प्राप्ति-साधनमिच्छाविशेषं वा १.६४.१० [ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोः 'ईषेः किच्च' उ० १.१३. सूत्रेण उः प्रत्ययः । स च कित्, धातोरिकारादेशश्च । ईषति गच्छति हिनस्ति वा शत्रूनिति विग्रहः । इषु इच्छायाम् (तुदा०) इष गतौ (दिवा०) इष आभीक्ष्ण्ये (क्र्या०) धातुभ्यो वा साधनीयम् । इषुः=ईषतेर्गतिकर्मणो वधकर्मणो वा निरु० ९.१८. वीर्यं वा ऽइषुः श० ६.५.२.१० चतुःसन्धिर्हीपुरनीकं

शल्यस्तेजनं पर्णानि ऐ० १.२५. इषवो वै दिद्यवः श० ५.४.२.२. इषुः=पदनाम निघं० ५.३.]

इषवान् ज्ञानवान् (विद्वज्जनः) १.१२६.६. [इषति गतिकर्मा निघं० २.१४., ततो 'घञर्थे कविधानमि' ति कप्रत्ययः। इष्यते यत् तद् इषं ज्ञानम्। ततो मतुप्। इषवान्=अन्नवान् कामवान् वा नि० १०.४२.]

इषव्यः इषुषु साधुः (राजन्यः=राजपुत्रः) २२.२२. [इषुप्राति० 'तत्र साधुरि' त्यर्थे यत्प्रत्ययः]

इषः इच्छ ३.३.७. [इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्लोट्। 'इषुगमियमां छ' इति छत्वं न भवति छान्दसत्वात्]

इषःस्तुतः अन्नादेः स्तावकः (रथस्पतिः=शिल्पी जनः) ५.५०.५. [इष-स्तुतपदयोः समासे विभक्तेरलुक्। इष् इत्यन्ननाम। स्तुतः ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि बाहुलकाद् औणादिकः क्तः]

इषाण प्रापय कामय वा ३१.२२. स्वेच्छया निष्पादय तथा सर्वलोकं, सर्वलोकसुखं सर्वलोकराज्यं वा मदर्थं कृपया सिद्धं कुरु ऋ० भू० १३४. [इष आभीक्ष्ण्ये (क्र्या०) धार्तोलोटि मध्यमैकवचने 'हलः श्नः शानज्झौ' अ० ३.१.८३. सूत्रेण हौ परतः शानच्]

इषाय अन्नोत्पादकायाऽश्विनाय २२.३१. [इषमित्यन्ननाम निघं० २.७. इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कर्मणि कः]

इषितम् इष्टम् (केतं=विज्ञानम्) २.३८.५. **इषितः**=प्रेरितः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) २०.८८. अन्वेषितः (अग्निः=पावकः) ३.३.२. इच्छाप्रयुक्तः (यजमानः) ३.४.३. प्रापयितव्यः (इन्द्रः=परमेश्वरः) १.३.५. इष्टः (होता=दातृजनः) ७.३९.१. **इषिता**=इषितावध्यापकोपदेशकौ ७.३३.१३. प्रज्ञापकौ सन्तौ (इन्द्राग्नी=अध्यापकोपदेशकौ) ३.१२.१. प्रेषितौ प्रार्थितौ (इन्द्राग्नी=राजप्रजाजनौ) ७.३१. **इषिताः** प्रेरिताः (नावः) १.१८२.६. [इष गतौ (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्वा क्तः। इडागमश्छान्दसः। उभयत्र गुणाभावोऽपि छान्दसम्। इषितः प्रेषित इति वा अधीष्ट इति वा नि० ८.८.]

इषितासः प्रेरिताः सन्तः (जनाः) ६.४९.१०. [इषितशब्दस्य प्र० बहुवचने जसोऽसुकि रूपम्]

इषिधः इच्छाप्रकाशिकाः (इषः=अन्नाद्याः) ६.६३.७. [इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' इति इक्। 'इषि' उपपदे दधातेः क्विप्]

इषिर ! इच्छो (इन्द्र=सभेश) १.१२९.१. **इषिरम्**=एष्टव्यम् (अग्निं=वह्निम्) ३.२.१४. गमनम् ५.३७.२. प्राप्तव्यम् (दक्षं=बलम्) ५.६८.४. **इषिरः**=येनेच्छन्ति सः (वातः=वायुः) १८.४१. ज्ञानवान् (राजा) ६.२९.३. सद्यो गन्ता (वातः=वायुः) ७.३५.४. गन्तव्यः (विद्वान्) ५.४१.१२. इच्छुः (मित्रः=सुहृज्जनः) ३.५.४. **इषिरा**=गन्तारौ (अश्विना=विद्याध्यापकोपदेशकौ) ५.७५.५. **इषिराम्**=बहुपदार्थप्रापिकाम् (भूमिम्) ३.३०.९. प्राप्नुवन्तीम् (पत्नीम्) ५.३७.३. वर की इच्छा करने वाली हृदय को प्रिय स्त्री को सं० वि० १०५, ५.३७.३. प्राप्तव्याम् (स्वधाम्=अन्नम्) १.१६८.९. **इषिराः**=ज्ञानवन्तः (देवाः=विद्वांसः) २.२९.१. गन्तारः (देवाः=विद्वांसः सैनिकाः) ३.५६.८. **इषिरैः**=प्राप्तैः (वेगादिगुणैः) ६.६२.३. [इषिरः, इषिरेणेत्येतौ पदनाम्नी, निघं० ४.१. इषु इच्छायाम् (तुदा०) 'इषिमदिमुदि०' उ० १.५१. सूत्रेण किरच् प्रत्ययः। इषिरेण=ईषणेन वैषणेन कर्षणेन वा नि० ४.७. इषिर इति क्षिप्र इत्येतत् श० ९.४.१.१०.]

इषिरेभिः इष्टैः (केतेभिः=प्रज्ञाभिः) ३.६०.७. [इषिर इति व्याख्यातम्। ततो भिस्। 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

इषुकारम् य इषून् बाणान् करोति तम् (शिल्पिजनम्) ३०.७. [इषूपपदे डुकृञ्करणे धातोरण् प्रत्ययः]

इषुकृतेव बाणीकृताविव (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८४.३.]

इषुकृद्भ्यः बाणनिर्मापकेभ्यः (जनेभ्यः) १६.४६. [इषूपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप् कर्त्तरि]

इषुधिमते प्रशस्तेषुधिधर्त्रे (राजजनाय) १६.२१. प्रशस्तशस्त्राऽस्त्रकोशाय १६.३६. [इषूपपदे दधातेः 'कर्मण्यधिकरणे च' अ० ३.३.९३. सूत्रेण किः। ततो मतुप् प्रत्ययः]

इषुधिः इषवो धीयन्ते यस्मिन् सः (तूणीरः) १६.१२. [इषूपपदे दधातेः 'कर्मण्यधिकरणे च' इति किरधिकरणे। इषुधिः=इषूणां निधानम् नि० ९.१३. इषुधिः=पदनाम निघं० ५.३.]

इषुध्यति इषून् धरति ५.५०.१. याचते शरान् धरति वा २२.२१. शरादीनि शस्त्राणि धरेत्, प्र०—लेट् प्रयोगोऽयम् ११.६७. शरान् धारयेत् ४.८. [इषुध

शरधारणे (कण्ड्वादि०) धातोर्लट् । इषुध्यति=याच्ञाकर्मा नि० ३.१९. इषुधिप्राति० 'सर्वप्रातिपदिकेभ्यः इत्येके' इति क्विपि लटि रूपम्]

इषुध्यते इषुध इवाऽऽचरति तस्मै (जनसमूहाय) १.१२८.६. [इषूपपदे दधातेः कप्रत्यये=इषुधः । तदिवाचरतीति क्यङ् आचारेऽर्थे]

इषुध्यवः य इषुभिर्युध्यन्ते (शिल्पिनो विद्वज्जनाः) ५.४१.६. [इषूपपदे युध संप्रहारे (दिवा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको युक् प्रत्ययः । पृषोदरादिना रूपसिद्धिः]

इषुध्येव इषवो धीयन्ते यस्यां तयेव १.१२२.१. [इषुधिपदं व्याख्यातम्]

इषुबलाः इषुभिः शस्त्राऽस्त्रैः बलं सैन्यं वा येषान्ते (राजजनाः) ६.७५.९. [इषु-बलपदयोः समासः]

इषुम् बाणम्, प्राप्तिसाधनम्, इच्छाविशेषं वा १.६४.१०. बाणाऽऽवलिम्, भा०—शस्त्रम् १६.३. [इषुरीषतेर्गतिकर्मणो वधकर्मणो वा नि० ९.१८. इष गतौ (दिवा०) धातोः 'इषेः किच्च उः' उ० १.१३. सूत्रेण उः प्रत्ययः किच्च । इष्यति गच्छति संग्रामे शत्रुं प्रतीति विग्रहः]

इषुमते प्रशस्ता इषवो बाणा विद्यन्ते यस्य तस्मै वीराय (जनाय) १६.२९. **इषुमन्तः**=बाणवन्तः (शिल्पिनो वीरजना वा) ५.५७.२. **इषुमद्भ्यः**=बहवः इषवो विद्यन्ते येषान्तेभ्यः (सैनिकेभ्यः) १६.२२. **इषुमान्**=बाणवान् (वीरः=शुभगुणेषु व्यापनशीलो जनः) २.४२.२. [इषु व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने भूम्नि वा मतुप्]

इषुयते इषुरिवाऽऽचरति १.१२८.४. [इषु व्याख्यातम् । तदिवाचरतीत्याचारे क्यङ्]

इषुहस्तेन इषवः शस्त्राणि हस्तयोर्यस्य तेन (इन्द्रेण=पराक्रमाऽऽढ्येन सेनापतिना) १७.३४. **इषुहस्तैः**=शस्त्रपाणिभिः सुशिक्षितैर्बलिष्ठैर्भृत्यैः १७.३५. [इषु-हस्तपदयोः समासः]

इषे इच्छापूर्त्तये १.७१.८. अन्नाय १.१८०.२. [इष् इत्यन्ननाम । इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः क्विष् सम्पदादित्वाद् भावे]

इषे प्राप्तुम् ६.१३.२. [इष गतौ (दिवा०) धातोस्तुमर्थे के प्रत्ययः]

इष्कर्त्तारम् निष्कर्त्तारं संसाधकम् (प्रचेतसं=प्रकृष्टप्रज्ञं पुरुषम्) प्र०—अत्र छान्दसो वर्णलोप इति नलोपः १२.११०. [निस् उपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोस्तृच् कर्त्तरि । 'छान्दसो वर्णलोप' इति नकारलोपः । इष्कर्त्तारमध्वरस्य प्रचेतसमिति । अध्वरो वै यज्ञः । प्रकल्पयितारं यज्ञस्य प्रचेतसमित्येतत् । श० ७.३.१.३३]

इष्कृतिः निष्कर्त्री (ओषधिः) १२.८३. [निसुपपदे करोतेर्धातोः स्त्रियां क्तिन् । 'छान्दसो वर्णलोप' इति नलोपः]

इष्टकानाम् इज्यन्ते संगम्यन्ते कामा यैः पदार्थैस्तेषाम् १३.३१. **इष्टकाम्**=इष्टं कर्म यस्यास्ताम् १४.११. **इष्टकाः**=इष्टसुखं साधिकाः (धेनवः) १७.२. वेद्यां चिताः ३५.८. **इष्टके**=इष्टकेव शुभैर्गुणैः सुशोभिते, अ०—इष्टकावद् दृढांगे (देवि=देदीप्यमाने स्त्रि) १३.२१. [यज देवपूजादिषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्तः । ततः 'संज्ञायां कन्' अ० ५.३.८७. इति सूत्रेण कन् । इषु इच्छायां धातोर्वा क्तप्रत्यये कन् । तद् यदिष्टात्समभवंस्तस्मादिष्टकाः श० ६.१.२.२२. तद् यदस्माऽइष्टे कमभवत्तस्माद्वेवेष्टकाः श० ६.१.२.२३. अस्थीनि वा ऽ इष्टकाः श० ८.७.२.१०. अहोरात्राणि वा ऽ इष्टकाः श० ६.१.२.१८.]

इष्टनिः इच्छाविशिष्टः (विद्वज्जनः) प्र०—अत्रेषधातोर्बाहुलकादौणादिकोऽनिः प्रत्ययस्तुगागमश्च १.१२७.६. यष्टुं योग्यः (विद्वज्जनः) १.१२७.६. [इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्बाहु० औणा० अनिः प्रत्ययस्तुगागमश्च]

इष्टम् येन इज्यते तम् (अग्निम्) १.१६२.१५. ब्रह्मोपासनं सर्वोपकारकं यज्ञाऽनुष्ठानं च ऋ० भू० १०५, अथर्व० १२.५.१०. सुखं तत्साधनं वा १८.५७. अभीप्सितम् (अश्वम्) २५.३७. **इष्टः**=सत्कृत आहुतिभिर्वर्धितो वा (अग्निः=सभाध्यक्षो विद्वान् पावको वा) १८.५७. कृतः (यज्ञः) १८ ५६. सङ्गन्तुमर्हः (वनस्पतिः=पिप्पलादिः) २१.५८. **इष्टानि**=सुखसाधनानि कर्माणि १७.२६. सङ्गतानि (तत्त्वानि) १.१६४.१५. **इष्टे**=सङ्गन्तव्ये (व्यवहारे) ६.८.७. **इष्टौ**=पूजनीयौ (मातापितरा=जनकजनन्यौ) ४.६.७. इष्टम्=यज्ञ करना और कराना । सं० वि० १४५, अथर्व० १२.५.१०. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः क्तः । इषु इच्छायां (तुदा०) धातोर्वा 'मतिबुद्धिपूजार्थेभ्यश्च' अ० ३.२.१८८. सूत्रे चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वाद् वर्तमानेऽपि क्तः । इष्टानि कान्तानि वा, क्रान्तानि वा, गतानि वा, मतानि वा, नतानि वा नि० १०.२६.]

इष्टयजुषः इष्टानि यजूंषि यस्य तस्य (वीरगृहपते) ८.१२. [इष्ट-यजुष्पदयोर्बहुव्रीहिः । विभक्तिव्यत्ययश्च]

इष्टयः इष्टप्राप्तयः ६.७४.१. सत्सङ्गतयः १.१४५.१. **इष्टये**=विद्यासङ्गतये २७.३३. अभीष्टसिद्धये १.५७.२. यजन्ति सङ्गच्छन्ते यस्मिन् यज्ञे तस्मै, प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिकस्तिः प्रत्ययः किच्च १.११३.५. इष्टरूपायै (महीयै=नीतये) १.११३.६. इष्टसुखप्राप्तये ५.७८.३. इष्टसुखाय १.११२.१. अभीष्टसुखाय २७.२७. **इष्टिभिः**=होमैरिव सत्कारैः २.१.६. **इष्टिः**=यजनक्रिया ४.४.७. **इष्टे !**=पूजितुं योग्य (विद्वज्जन), प्र०—अत्र संज्ञायां क्तिच् १.१४३.८. **इष्टेः**=इष्टस्य गृहाश्रमस्य स्थानात् १.१२५.३. **इष्टैः**=संगन्तुं प्राप्तुमर्हैः (मेघजलैः) ४.५५.६. **इष्टौ**=यजने सङ्गतिकरणे २.२८.७. विज्ञानवर्द्धके यज्ञे ६.११.३. इष्टसाधिकायां नीतौ १.६२.३. गन्तव्यायाम् (सदने=आकाशे) १.१४८.३. [इष्टिः=यज्ञनाम, निघं० ३.१७. यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः क्तिन् स्त्रियां, संज्ञायां क्तिच् वा । इषु इच्छायां वा धातोः 'मन्त्रेवृषेष०' अ० ३.३.९६. सूत्रेण क्तिन्]

इष्टरश्मिः इष्टा संयोजिता रश्मयो येन (प्राप्तविज्ञानो जनः) १.१२२.१३. [इष्ट-रश्मिपदयोर्बहुव्रीहिः । इष्टः=यज संगतिकरणे (भ्वा०)+क्तः । रश्मिः=अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अश्नोते रश्च उ० ४.४६. सूत्रेण मिः, धातोश्च रशादेशः]

इष्टव्रताः इष्टकर्माणः (विद्वज्जनाः) ३.५९.९ [इष्टव्रतपदयोः समासः । इष्टं व्याख्यातम् । व्रतमिति कर्मनाम निघं० २.१.]

इष्टापूर्त्ते इष्टं च पूर्त्तं च ते १८.६१. इष्टं श्रौतं कर्म च पूर्त्तं स्मार्त्तं कर्म च ते १८.६०. इष्टं सुखं विद्वत्सत्करणमीश्वराराधनं सत्सङ्गतिकरणं सद्विद्यादिदानञ्च, पूर्त्तं पूर्णं बलं ब्रह्मचर्यं विद्याऽलङ्करणं पूर्णं यौवनं पूर्णं साधनोपसाधनञ्च ते १५.५४. [इष्ट-पूर्त्तपदयोर्द्वन्द्वसमासे पूर्वपदस्य दीर्घः । इष्टम्=यजदेवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः क्तः । पूर्त्तम्=पॄ पालनपूरणयोः (जु०)+धातोः क्तः]

इष्टाऽश्वः इष्टाः सङ्गता अश्वा यस्य सः (प्राप्तविद्यो जनः) १.१२२.१३. [इष्ट-अश्वपदयोर्बहुव्रीहिः । इष्टाश्वपदे व्याख्याते]

इष्णन् अभीक्ष्णमिच्छन् (इन्द्रः=पुरुषार्थी सभेशः) २.२०.५. प्राप्नुवन् (इन्द्रः=राजा) ४.१७.३. [इष आभीक्ष्ण्ये (क्र्या०) धातोः शतृ]

इष्णानः अभीक्ष्णं निष्पादयन् शोधयन् (सभाध्यक्षः) १.६१.१३. [इष आभीक्ष्ण्ये (क्र्या०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

इष्णासि अभीक्ष्णं प्राप्नोषि गच्छसि वा १.६३.२. [इष आभीक्ष्ण्ये (क्र्या०) धातोर्लट्]

इष्मिणम् इष्मो बहुविधो विद्यते यस्य तम् (पितरं=जनकम्) ५.५२.६. **इष्मिणः**=प्रशस्तविज्ञानगतिमन्तः (मनुष्याः) १.८७.६. बहुविधमिष्म इच्छा येषान्ते (विद्वद्राजजनाः) ५.८७.५. इच्छाऽन्नादियुक्ताः (युद्धविद्याकुशला जनाः) ७.५६.११. [इषु इच्छायाम् (तु०) धातोः 'इषि युधीन्धि०' उ० १.१४५. सूत्रेण मक् प्रत्यये–'इष्मः' । ततो मत्वर्थे इनिः । इष्मिणः=ईषणिन इति वा, एषणिन इति वा, अर्षणिन इति वा नि० ४.१६. इष्मिणः पदनाम निघं० ४.१.]

इष्यत प्राप्नुत २६.२२. विजानीत १.१५.९. **इष्यति**=गच्छति १.३४.१०. **इष्ये**=प्राप्नोमि ४.३३.१. [इष गतौ (दिवा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् । 'इष्ये' प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

इष्यन् जानन् (सभाध्यक्ष) १.६१.१२. [इष गतौ (दिवा०) धातोः शतृ]

इष्वै गन्त्र्यै (शूरवीरायै राज्यै) ६.७५.१५. [इष गतौ (दिवा०) धातोः 'इषेः किच्च उः' उ० १.१३. सूत्रेण उः । स्त्रियां चतुर्थ्या एकवचने रूपम् । 'ङिति ह्रस्वश्च' अ० १.४.६. सूत्रेण पक्षे नदीसंज्ञकत्वेन न गुणः]

इह अस्मिन् वर्त्तमाने काले १९.५९. अस्मिन् संसारेऽस्मत्कुले वा २.३३. अस्मिन् संसारे वर्त्तमानसमये वा २५.२०. अस्मिन् स्थाने १.१२.३. अस्यां प्रजायाम् ७.३६. अस्मिन् राज्यकर्मणि १७.६६. एतेषु (जनेषु) ३.२१. अस्यां शिल्पविद्यायामस्मिन् गृहे वा १.१३.१०. एतस्मिन् व्यवहारे १.२२.१२. इस स्थान में सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२९. इसी जन्म में आर्याभि० २.४५, ३४.३८. [इदम्सर्वनाम्नः सप्तम्यन्ताद् 'इदमो हः' अ० ५.३.११. सूत्रेण हः प्रत्ययः । 'इदम इश्' अ० ५.३.३. सूत्रेण इदम इशादेशः । 'तद्धितश्चासर्वविभक्तिरि' त्यव्ययसंज्ञा]

इहि एति २२.१९. प्राप्नुहि ६.५४.६. जानीहि प्राप्नुहि वा ४.२०. गच्छ १.१०.४. गच्छति, प्र०—अत्र व्यत्ययः ५.८३.६. प्राप्नुहि प्रापयति वा १.९.अ. प्राप्नुयात्

३.५७. प्राप्नोति १.१५. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोटि मध्यमैकवचने रूपम्]

इहेव यथाऽस्मिन् स्थाने तथा १.३७.३. [इह-इव-पदयोः समासः। इह पदं व्याख्यातम्]

इहेह अस्मिन् जगति, प्र० अत्र वीप्सायां द्वित्वम्, प्रकर्षद्योतनार्थम् १.१८१.४. अस्मिन्नस्मिन् व्यवहारे २३.३८. अस्मिन् संसारे व्यवहारे च १९.६. ['इह' पदं व्याख्यातम्। तस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

इहेहमातरा इहेह माता जननी ययोस्तौ (भ्रातरा=बन्धू) ६.५९.२. [इहेह-मातृपदयोः समासः]

ई उदकम्, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति मलोपः १.१०३.१. ईम् उदकनाम निघं० १.१२. पदनाम निघं० ४.२.]

ईक्षते देखता है सं० वि० २५४, अथर्व० ९.६.३. **ईक्षध्वम्**=सम्प्रेक्षध्वम् ५.३४. **ईक्षन्ताम्**=प्रेक्षन्ताम् ३६.१८. **ईक्षन्ते**=आलोकन्ते १७.६८. **ईक्षामहे**=पश्येम ३६.१८. **ईक्षे**=पश्यामि ४.२०.८. [ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्लटि लोटि च रूपाणि। ईक्षे पदनाम निघं० ४.३. ईक्षे ईशिषे नि० ६.६.]

ईक्षमाणाय दर्शकाय (मनुष्याय) २२.८. [ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोः शानच्]

ईक्षयत् दर्शयेत् १.१३२.५. ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् 'लिङर्थे लेट्' इति लेट्]

ईक्षिताय अन्येन दृष्टाय (जीवाय) २२.८. [ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये चतुर्थ्येकवचनम्]

ईङ्खयन्ति खेदयन्ति निपातयन्ति १.१९.६. [ईखि गतौ धातोर्णिचि लटि च रूपम्। ईङ्खते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

ईजते दूरीकरोति ६.६४.३. कम्पते ५.४८.२. [ईज गतिकुत्सनयोः (भ्वा०) धातोर्लट्]

ईजे सङ्गच्छते ६.३.२. यजामि ६.१६.४. सङ्गच्छे ६.१.९. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः सामान्ये लिट्। 'असंयोगाल् लिट् कित्' इति कित्वे यजादित्वात् सम्प्रसारणम्]

ईजानम् यज्ञं कुर्वन्तम् (पुत्रम्) १.१२५.४. **ईजानस्य**=यज्ञकर्त्तुः (मर्त्यस्य=साधारणमनुष्यस्य) ६.४८.२०. **ईजानः**=यजमानः (सत्पुरुषः) ७.५९.२. **ईजानाय**=सङ्गन्तुं शीलाय (पुरुषाय) १.११३.२०. [यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि लिट्' अ० ३.२.१०५. सूत्रेण लिटि 'लिटः कानज्वा' अ० ३.२.१०६. सूत्रेण कानचि सम्प्रसारणे द्वित्वे च रूपम्]

ईट्टे ऐश्वर्यं प्रयच्छति ७.२४.५. ऐश्वर्यं लभते ४.२५.१. अधीच्छति ४.२५.३. स्तौति १.१८०.२. ऐश्वर्यवान् भवेत् ३.५२.५. ऐश्वर्ययुक्तं करोति ५.१२.६. ऐश्वर्यहेतुं विदधाति १.८५.१८. [ईड स्तुतौ (अदा०) धातोर्लट्। ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोर्वा साधनीयम्]

ईडत स्तुत १.९६.३. स्तुति करो आर्याभि० १.४०, ऋ० १.७.३.३. **ईडते**=स्तुवन्ति गुणैः प्रकाशितं कुर्वन्ति ५.८.३. स्तुवन्ति अध्येषन्ति वा १.१५.७. प्रशंसन्ति ७.४४.४. स्तुवन्त्यन्विच्छन्ति वा ७.१०.५. **ईडिष्व**=प्रशंसाऽध्यन्विच्छ वा ६.६०.१० **ईडीत**=प्रशंस्येत् ५.२१.४. प्रशंसत ६.१६.४६. **ईडे**=स्तौमि प्राप्नोमि ४.३३.१. स्तुवे, याचेऽधीच्छामि प्रेरयामि वा १.१.१. अध्येषयामि स्तौमि वा ३.१.१५. अध्यन्विच्छामि १३.४३. गुणैः प्रशंसामि ७.५३.१. अधीच्छामि ५.६०.१. सत्कुर्याम् १.४४.४. मैं स्तुति करता हूँ आर्याभि० १.२, ऋ० १.१.१.१. [ईड स्तुतौ (अदा०) धातोर्लोट् लट् वा। ईळते याचन्ति स्तुवन्ति वर्धयन्ति पूजयन्तीति वा नि० ८.१.ईळे=याचामि। ईळिरध्येषणाकर्मा पूजाकर्मा वा नि० ७.१५.]

ईडानः स्तुवन् (वह्निः=विद्वज्जनः) २७.१४. **ईडानाय**=स्तुवते (सज्जनाय) २.६.६. [ईड स्तुतौ (अदा०) धातोः शानच्]

ईडाना प्रशंसन्ती (घृताची=रात्रिः) ५.२८.१. [ईड स्तुतौ (अदा०) धातोः शानच् प्रत्यये स्त्रियां टापि च रूपम्]

ईडितम् प्रशस्तम् (इन्द्रं=राज-राजपुरुषम्) २८.३. **ईडितः**=प्रशंसितगुणः (सज्जनः) ७.७.३. मनुष्यैरध्येषितोऽधिष्ठितः (अग्निः=भौतिकः) १.१३.४. विद्यामभीप्सुभिः सम्यगध्येषितव्यः (अग्निः=प्रत्यक्षोऽग्निः) २.३. [ईड स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः]

ईडिता प्रशंसितौ (होतारौ=स्त्रीपुरुषौ) ५.५.७. [ईड स्तुतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

ईडेन्यम् प्रशंसनीयम् (विद्वज्जनम्) ७.२.३. स्तोतुमर्हम् (बलम्) २८.२६. **ईडेन्यः**=अन्वेषणीयः (अग्निः=पावकः) १५.३६. ईडितुं प्रशंसितुमर्हः (अग्निः=महाविद्वान्) ३.२७.१३. स्तोतुं योग्यः (विद्वान्) १.७९.५. [ईड स्तुतौ (अदा०) धातोः 'कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः' अ० ३.४.१४. सूत्रेण केन्यः प्रत्ययः। वाग्वाऽ ईडेन्या श०

१.४.३.५. मनुष्यो वा ऽईडेन्या श० १.५.२.३. ईडेन्यो ह्येषः श० १.४.१.२९.]

ईड्यम् उत्तमैर्गुणैः प्रशंसनीयम् (अग्निम्) ६.१५.२. अध्यन्वेषणीयम् (विद्युदाख्यं वह्निम्) ३.९.८. प्रशंसितुमर्हम् (सोमं=सोमाद्योषधिगणम्) २८.२६. **ईड्यः**=अध्येष्टव्यः (अग्निः=ईश्वरो भौतिकोऽग्निर्वा) १.१२.३. नित्यं स्तोतव्योऽन्वेष्टव्यश्च (अग्निः=परमेश्वरो भौतिको वा) १.१.२. उपासितुमध्येषितुं वाऽर्हः (अग्निः) ३.१५. स्तोतुमन्वेष्टुं वा योग्यः (अग्निः=राजा सेनेशो वा) ७.१५.१०. भा०—पूजाऽर्हः (अग्निः=ईश्वरो भौतिको वा) ४.१६. स्तोतव्य उपास्यः (ईश्वरः) ऋ० भू० ७८. स्तुति के योग्य (ईश्वर) आर्याभि० १.४. प्रशंसनीय गुण-कर्म-स्वभावयुक्त (सभापति राजा) स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.८९.१. प्रशंसनीयः (विद्वान्) ५.२२.१. ईडितुं स्तोतुमध्येषितुं योग्यः (घर्मः=अग्निहोत्रादिको यज्ञः) १७.५५. **ईड्याः**=अध्येषितुं योग्याः (विद्युदादयः) १.१४.८. [ईड स्तुतौ (अदा०) धातोर्ण्यत् । ईड्यः=ईडितव्यः नि० ८.८. वन्दितव्यः नि० ७.१६. ईड्य इति यज्ञिय इत्येतत् श० ९.२.३.९.]

ईदृक्षासः एतल्लक्षणसहिताः (मनुष्याः) १७.८४. [इदमुपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'दृशेः क्सश्च वक्तव्यः' अ० ३.२.६०. वा० क्सः प्रत्ययः । 'दृक्षे चेति वक्तव्यम्' अ० ६.३.९०. वा० सूत्रेणेदम ईशादेशः]

ईदृङ् अन्येन तुल्यः (अ०—पुरुषः) १७.८१. [इदमुपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'त्यदादिषु०' इति क्विन् । 'इदंकिमोरीश्की' अ० ६.३.९०. सूत्रेण इदम ईशादेशः । 'क्विन् प्रत्ययस्य कुः' इति कुत्वम्]

ईदृशे ईदृग्लक्षणे (सङ्ग्रामादिव्यवहारे) ३३.६१. ईदृग्व्यवहारे ६.४५.५. [इदमुपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः त्यदादिषु दृशो०' अ० ३.२.६०. इति कञ् । 'इदंकिमोरीश्की' अ० ६.३.९०. सूत्रेण ईशादेशः]

ईधिरे प्रदीपयन्ति ५.२५.२. प्रदीपयेयुः ३.२९.१५. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः सामान्ये लिट् । 'इन्धिभवतीभ्याञ्च' अ० १.२.६. सूत्रेण कित्वे 'अनिदिताम्' नलोपो गुणाऽभावश्च । 'लिटस्तझयोरेश्इरेच्' इति झस्येरेच्]

ईधे प्रदीपये १२.२०. प्रदीपयति ६.१६.१४. प्रापयति ६.१६.१५. प्रदीप्यताम् ११.३४. प्रदीपयेत्, प्र०—अत्र 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' इति तकारलोपः ११.३३. दीपयति प्र०—अत्र लडर्थे लिड् 'इजादेश्च गुरुमतो०' अ० ३.१.३६. इति प्रतिषेधादाङ्निषेधः 'इन्धिभवतीभ्याञ्च, अ० १.२.६. इति लिटः कित्वाद् 'अनिदिताम्०' इति नलोपो गुणाऽभावश्च १.३६.११. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः सामान्ये लिट्]

ईन्धे प्रकाशित करता हूँ सं० वि० १८९, २०.२४. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्लट् । छान्दसं धातोर्दीर्घत्वम्]

ईम् जलम् ५.५४.४. जलमग्निं वा, प्र०—ईमित्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२, पदनामसु च निघं० ४.२. अनेन शिल्पविद्यासाधकतमावेतौ गृह्येते १.९.२. जलं पृथिवीं च १.४.७. ज्ञातव्यं प्राप्तव्यं परमेश्वरं विद्युद्रूपमग्निं वा १.६५.३. विज्ञानमुदकं वा १.६७.४. एव १.३८.११. जलमन्नं पृथिवीं वा १.५१.२. दुग्धम् २.३५.१३. प्रदातारम् (अग्निम्=सभाध्यक्षम्) १.३६.७. प्राप्तम् (पेयपदार्थम्) ५.१.३. प्राप्तव्यम् (इन्द्रं=अग्निम्) १.८७.५. प्राप्तव्यया (इषा=इच्छया) १.१२९.७. प्रत्यक्षं, सर्वतः १.१६७.८. शास्त्रबोधम् १.११६.१२. महान्तम् (पुरुषम्) ४.१७.४. विद्याम् ५.२.५. प्राप्तं वस्तु ६.१७.२. प्राप्तव्यो विजयः १.८१.१. समुच्चये २३.५५. जलेन २.२२.१. उदकं सर्वान् पदार्थान्वा ५.३७.३. सर्वां क्रियाम् १.१६४.३२. विजयप्रापिका सेवा १.७१.४. प्राप्तव्यान् बोधान् १.६७.२. सततम् ३.३०.१६. अभिगताम् (विद्याम्) १.१२७.७. सर्वम् ४.१७.१७. शब्द को पं० वि०, सब प्रकार की सं० वि० १०५, ५.३७.३. सर्वतः ६.३.६. [ईम् उदकनाम निघं० १.१२. पदपूरणः नि० १.९. ईम् पदनाम निघं० ४.२.]

ईमहे याचामहे, प्र०—इमह इति याच्ञाकर्मसु पठितम् निघं० ३.१९, १.१०.६. व्याप्नुयाम् ६.१.७. प्राप्नुयाम ७.५४.१. विजानीमः, प्र०—अत्र 'ईङ् गतौ' इत्यस्मात् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुकि श्यनभावः १.६.१०. प्राप्नुयाम जानीम वा ५.८२.३. प्राप्नुमः १.१७.३. जानीमः १.४०.१. दूरीकुर्महे ७.५८.५. [ईमहे याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९. ईङ् गतौ (दिवा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि श्यन् न भवति]

ईयचक्षसा ईयं प्राप्तव्यं ज्ञातव्यं वा चक्षोर्दर्शनं कथनं च ययोस्तौ (मित्रा=सखायौ) ५.६६.६. [ईङ् गतौ (दिवा०) धातोर् वाहुलकादौणादिको यक् प्रत्यये ईयम् । चक्षस्-चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, दर्शनेऽपि (अदा०) धातोर-

सुन् प्रत्ययः । तयोः समासः]

ईयतुः प्राप्नुतः ३.२.९. गच्छतः ३३.६७. **ईयते**=गमयति १.३०.१९. गच्छति १.१४१.८. गम्यते २१.५५. प्राप्नोति १.४८.५. **ईयथुः**=प्राप्नुयातम्, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ५.७३.४. **ईयन्ते**=प्राप्यन्ते ५.५५.१. **ईयसे**=प्राप्नोषि गच्छसि वा ५.३.८. विज्ञायसे विज्ञायते वा ४.३२. व्याप्नोषि ६.१५.९. **ईयुः**=प्राप्नुयुर्गच्छेयुर्वा ७.१८.१०. यन्ति ३४.४५. प्राप्नुवन्ति १.१६४.८. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिटि प्रथमद्विवचनम् ईयसे, ईयते=ईङ् गतौ (दिवा०) धातोर्लट्]

ईयमानम् गच्छन्तम् (रथम्) ५.३०.१. **ईयमानाः**=प्राप्नुवन्तः (परमाणवः) ५.४७.२. [ईङ् गतौ (दिवा०) धातोः शानच्]

ईयिवांसम् प्राप्नुवन्तम् (सिंहं=व्याघ्रम्) ३.९.४. [इण् गतौ (अदा०) धातोः क्वसुः प्रत्ययः । 'उपेयिवाननाश्वाननूचानश्च' अ० ३.२.१०९. सूत्रेण द्वित्वेऽभ्यासदीर्घत्वम् इडागमश्च निपात्यते । 'इणो यण्' इति यणादेशः]

ईयुषीणाम् अतीतानाम् (उषसाम्) १.१२४.२. गच्छन्तीनाम् (सूर्यकान्तीनाम्) १.११३.१५. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिटः क्वसुः । 'उपेयिवान्०' इति निपातनाद् अभ्यासदीर्घत्वम् इडागमश्च । 'वसोः सम्प्रसारणम्' इति सम्प्रसारणम्]

ईरताम् प्राप्नुवन्तु ४.८.७. प्राप्नुवन्ति २६.१२. उत्कृष्टतया जायन्ते ५.२५.७. गच्छन्ति कम्पन्ते वा ५.६३.४. प्रेरयन्तु १.१२३.६. **ईरते**=प्राप्नुयुः १.१८७.५. प्राप्नुवन्ति ७.५६.१४. गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति १.५२.१. कम्पयन्ति गच्छन्ति वा ५.८३.३. **ईरय**=गमय १.४८.२. प्रेरयत ५.४२.३. नियोजय ८.१९. प्रेरय १४.८. **ईरयथ**=प्रेरयथ ५.५५.५. **ईरयध्वम्**=प्रापयत ४.३४.२. **ईरयन्ति**=प्रेरणा करते हैं ५.२०.२. **ईरयस्व**=प्रापय ७.५.८. प्रेरणा कर सं० वि० १७०, अथर्व० १४.२.२८. **ईरयामि**=प्रेरयामि २.३३.८. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लोट् लट् च । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न । अन्यत्र ईर क्षेपे (चुरा० पर०) धातो रूपाणि]

ईरयध्यै प्रेरितुम् ४.२.१. [ईर क्षेपे (चुरा०) धातोस्तुमर्थे अध्यै प्रत्ययः]

ईरयन्ती सद्यः प्रेरयन्ती (उषाः) १.११३.१२. [ईर क्षेपे (चुरा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

ईरिरे प्रेरयन्ति ३.११.९. प्राप्नुवन्ति ३.२९.१५. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लिट् । झस्येरेच्]

ईर्ध्वम् कम्पध्वम् १.११३.१६. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लोट्]

ईर्मा प्राप्तव्यं ज्ञातव्यं वा (वपुः=सुरूपम्) ५.७३.३. प्रेरकः (सज्जनः) ४.२७.२. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको मक् । ईर्म इह, ऋणे, अस्मिन् लोक इति वा । ईर्म इति बाहुनाम समीरिततरो भवति नि० ५.२५.]

ईर्माऽन्तासः कम्पनान्ताः (अश्वाः=अग्न्यादयः) १.१६३.१०. ईर्मः प्रेरितः स्थितिर्येषान्ते, भा०—प्रेरणामनुगन्तारः (अश्वाः) २९.२१. [ईर क्षेपे (चुरा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको मन् प्रत्ययः । ईर्मः=क्षेपोऽन्तो येषामिति समासः । ईर्मान्तासः=समीरितान्ताः नि० ४.१३. ईर्मान्तासः पदनाम निघं० ४.१.]

ईर्यतायै कम्पनाय ३०.८. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको यक् । ईर्य शब्दात् भावे तल्, ततष्टापि चतुर्थ्यां रूपम्]

ईवत् गतिरक्षणवत् (नमः=अन्नम्) ५.४९.५.

ईवतः गच्छतः (उद्यमिनो जनस्य) ७.५६.१८. बहुगतिमतः (द्यून्=प्रकाशान्) ४.४३.३. प्रशस्तगमनकर्त्तुः (सेनापतेः) ४.१५.५. सामीप्ये गच्छतः (राजपुरुषस्य) ७.२३.१. **ईवते**=उपगताय (जनाय) ६.७३.२. विद्याव्याप्ताय (ब्रह्मणे=वेदविज्जनाय) ४.४.६. [ई गतिप्रजनादिषु (अदा०) धातोः शतरि छान्दसं रूपम्]

ईशत ईष्टां समर्थो भवतु, अ०—उत्पद्यताम्, भा०—प्रबलो भवेत्, प्र०—अत्र लोडर्थे लङ् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुगभावः १.१. समर्थयत, प्र०—अत्र लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२३.९. विघ्नानामीश्वरो भवेत् ६.७१.३. अ०—हन्तुं समर्थो भवेत् १.१. समर्थो भवतु १.३६.१६. समर्थो भवेत्, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शः २.४२.३. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न]

ईशः करुणामय (ईश्वर) आर्याभि० १.४१, १.७.९.७. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः]

ईशा ईश्वरेण सकलैश्वर्यसम्पन्नेन सर्वशक्तिमता परमात्मना ४०.१. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

ईशानम् ईष्टे कारणात् सकलस्य जगतस्तम्

(इन्द्रम्=ईश्वरम्) १.११.८. रचने समर्थं परमेश्वरं तन्मध्यस्थविद्यासाधकं वायुं वा १.५.२. निर्मातारम् (इन्द्रं=परमात्मानम्) ७.३२.२२. सर्वस्य जगतः स्वामिनम् (ईश्वरम्) ३६.८. ऐश्वर्ययुक्तम् (कपर्दिनम्=ब्रह्मचारिणं विद्वज्जनम्) ६.५५.२. ईशनशीलम् (परीक्षकं जनम्) ६.५४.८. ईषणशीलम् (सूनुं=सत्पुत्रम्) ७.७.७. ईष्टेऽसावीशानः सर्वजगत्कर्त्ता तम् (जगदीश्वरम्) ऋ० भू० ८८. सर्वस्याः सृष्टेर्विधातारम् (परमात्मानम्) १.८८.५. ईशन उत्पादन करने की इच्छा करने वाले सब जगत् के स्वामी (ईश्वर) को आर्याभि० २.५०, २५.१८. **ईशानः**=ऐश्वर्यवान्, ऐश्वर्यहेतुः, सृष्टेः कर्त्ता प्रकाशको वा (इन्द्रः=ईश्वरः सूर्यो वा) १.७.८. अधिष्ठाता (पुरुषः=ईश्वरः) ३१.२. पूर्णसामर्थ्यः (सेनापतिः) १.८७.४. समर्थः (सज्जनः) २.२४.१५. साधकः समर्थः (अग्निः=विद्वज्जनः) १५.३५. शक्तिमान् (विद्वान्) १.१३०.६. अधिपतिः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६१.१५. ईषणशीलः सर्वस्येश्वरः (परमेश्वरः) ऋ० भू० १२०. ईशनकर्त्ता अर्थात् ईश्वरता करने वाला, सब से बड़ा और प्रलयोत्तरकाल में रहने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.२८, ५.८.१७.४१. **ईशानाय**=समर्थाय जनाय २४.२८. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोस्ताच्छीलिकश्चानश् । आदित्यो वा ऽ ईशान आदित्यो ह्यस्य सर्वस्येष्टे श० ६.१.३.१७. एतान्यष्टौ (रुद्रः, सर्वशर्वः, पशुपतिः उग्रः, अशनिः, भवः, महान्देवः, ईशानः) अग्निरूपाणि । कुमारो नवमः श० ६.१.३.१८. स ह स (असुः) ईशानो नाम । स दशधा भवति । स एष एतस्य (आदित्यस्य) रश्मिरसुर्भूत्वा सर्वास्वासु प्रजासु प्रत्यवस्थितः जै० उ० १.२९.३. यदीशानोऽन्नं तेन कौ० ६.८.]

ईशानकृत् य ईशानानीशच्छीलान् पुरुषार्थिनः करोति (जगदीश्वरः) २.१७.४. ईशानानैश्वर्यवतः करोतीति (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६१.११. **ईशानकृतः**=य ईशानान् ऐश्वर्ययुक्तान् कुर्वन्ति ते (वायवः) १.६४.५. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोस् ताच्छीलिकश्चानश् । ईशानोपपदे डुकृञ् करणे धातोः क्विप्]

ईशाना प्रभवित्री (उषाः) १.११३.७. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोर्लटः । शानचि स्त्रियां टापि रूपम्]

ईशाना समर्थौ (मित्रावरुणौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७१.२. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोः शानच् । 'सुपां सुलुग्' इत्याकारः]

ईशानासः ऐश्वर्ययुक्ताः (विद्वज्जनाः) १.१४१.३. समर्थाः स्वामिनः १.७३.९. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोस्ताच्छीलिकश् चानश् । ततो जसोऽसुगागमः]

ईशायै यथैश्वर्यं प्राप्नोति तस्यै (क्रियायै) २१.५७. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोर् औणादिकोऽन् प्रत्ययः, ततष्टाप्]

ईशिरे ऐश्वर्यं प्राप्नुवन्ति ५.५८.१. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचनम्]

ईशिषे इच्छसि ४.५२.३. ईश्वरो भवसि ६.४१.३. ऐश्वर्यवान् भवेः २.३६.१. ऐश्वर्यं करोषि १.७०.५. ऐश्वर्यं विदधासि ५.८१.५. ईशनं करोषि २.२४.१. ईशोऽसि, भा०—स्वामी भवसि १७.७१. समर्थोऽसि २.१६.६. **ईशीत**=समर्थो भवेत् ४.१५.५. **ईशीय**=ईश्वरः समथ भवेयम् ७.३२.१८. **ईशे**=ईष्टे, प्र०—अत्र सर्वत्रैकपक्षे 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' इति तलोपोऽन्यत्रोत्तमपुरुषस्यैकवचनम् ३.१६.१. ईष्टे ऐश्वर्यं करोति ४.१२.३. ईश्वरो भवति ४.२१.४. इच्छामि ६.५१.८. ईष्टे ज्ञातुमिच्छति ७.४.६. रचना करता है सं० वि० ५, २३.४३. ऐश्वर्ययुक्तो भवति १.७१.९. समर्थो भवामि ३.३२. ईष्टे, प्र०—अत्र 'लोपस्त आत्मने०' इति तलोपः २०.३२. [ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोर्लट् । 'ईशः से' अ० ७.२.७७. सूत्रेणेडागमः । 'ईशीय' प्रयोगे लिङ् । 'ईशे' इत्यत्र 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' सूत्रेण तलोपः]

ईषते गच्छति १.१२४.६. प्राप्नोति प्र०—ईषतीति गतिकर्मा निघं० २.१४, ६.४२.३. हिनस्ति ५.८३.२. युद्धमिच्छेत् १.८४.१७. अभिगच्छति ५.६७.५. पश्यन्ति १.१४१.८. ईषथुः=प्रापयितुमिच्छतम् १.११२.१६. **ईषन्ते**=हिंसन्ति ६.६६.४. [ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोर्लट् । ईषते भीतः पलायते नि० १०.११. ईषति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

ईषमाणः ऐश्वर्यं कुर्वन् (प्रजाजनः) प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१७१.४. **ईषमाणाः**=गच्छन्तः (ऊर्मयः=उदकतरङ्गाः) ४.५८.६. भयात् पलायमानाः (मृगाः) १७.९४. [ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोः शानच्]

ईषा हिंसकः (इन्द्रः=ऐश्वर्यवान्राजा) ३.५३.१७. [ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः । 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः]

ईषुः इच्छन्तु ३.१.२. **ईषे**=इच्छामि ५.४९.१. **ईष्टे**=ईषणं करोति ५.८७.३. [ईष गतिहिंसादर्शनेषु

(भ्वा०) धातोर्लिट् सामान्ये। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। धातूनामनेकार्थत्वाद् इच्छार्थेऽपि। 'ईष्टे' प्रयोगः ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोरपि सिध्यति]

ईहे ऐश्वर्ययुक्तं करोति ५.१२.६. स्तौति १.१८०.२. ऐश्वर्यहेतुं विदधाति १.८४.१८. [ईह चेष्टायाम् (भ्वा०) धातोर्लेटि रूपम्]

उ वितर्के १७.९७. समुच्चये १२.५८. उत्तमे २१.५. निश्चयार्थे ३३.८१. पादपूरणार्थे १.६१.१४. प्रसिद्धार्थे १७.२०. आकाङ्क्षायाम् १.६१.१३. अद्भुते ७.२०.२. आश्चर्ये ३.५७.४. अच्छे प्रकार स० प्र० ११०, १.१७९.१. निश्चय ही आर्याभि० २.४३., ३४.१. एव ३२.४. [उ विनिग्रहार्थे, पदपूरणः नि० १.५.]

उक्तः कथितः (होता=होतृजनः) ४.४१.१. **उक्ताः**=निरूपिताः (भा० —पश्वादिपालनमार्गाः) २४.१७. कथिताः (संचराः=पशवः) २४.१५. ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः क्तः। 'ब्रुवो वचिरि' ति वच्यादेशे 'वचिस्वपि०' इति सम्प्रसारणम् वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्वा क्तः]

उक्तिम् स्तुति को स० प्र० २४८, ४०.१६. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः क्तिन् स्त्रियाम्। धातोश्च वच्यादेशः]

उक्थपत्रः उक्थानि वक्तुं योग्यानि वेदस्तोत्राणि पत्राणि विद्यागमकानि यस्य सः (घर्मः=यज्ञः) १७.५५. [उक्थ-पत्रपदयोः समासः। उक्थम्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोः 'पातृतुदिवचि०' उ० २.७. सूत्रेण थक्। पत्रम्=पत्लृ गतौ+ष्ट्रन् करणे]

उक्थभृतम् य ऋग्वेदं विभर्त्ति (आप्तं विद्वांसम्) ७.३३.१४. [उक्थं व्याख्यातम्। तदुपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप्। तुगागमः]

उक्थम् शास्त्रप्रवचनम् १.८६.४. वक्तुं योग्यं स्तोत्रम् प्र०—अत्र 'पातृतुदि०' उ० २.७. अनेन वचधातोस्थक् प्रत्ययः १.१०.५. वक्तुं योग्यं शास्त्रम् ४.१६.२. वक्तुमर्हम् (आज्यं=घृतम्) १५.१०. प्रशंसनीयं वचनं कर्म वा १.१००.१७. वाच्यम् (विदवचनम्) १५.१२. उच्यन्त ईश्वरगुणा येन ताद्दक्समूहम् १.८.१०. वेदविद्याः १.१०९.१४. उपदेष्टुं योग्यम् (कर्म वचनं वा) १५.११. प्रशंसितम् (वचः) ५.३९.५. **उक्थस्य**=प्रशंसितस्य कर्नणः ६.४४.६. **उक्थानाम्**=स्तोत्र-विशेषाणाम् १९.२५. **उक्थानि**=वक्तुं योग्यानि वचनानि २.८.५. प्रशंसनीयानि कर्माणि ७.५६.२३. उक्थाय=प्रशंसिताय (जनुषे=जन्मने) ५.४५.३. **उक्थे**=श्रोतुं वक्तुमर्हे वा (वचने) ६.२३.१. वक्तव्ये ४.२०.१०. **उक्थेन**=प्रशंसनीयेन (वाहसा=प्रापणेन) २६.८. **उक्थेभ्यः**=प्रशंसनीयेभ्यो वेदोक्तेभ्यः कर्मभ्यः ७.२२. **उक्थेषु**=प्रशंसितेषु धर्म्येषु कर्मसु ५.६.९. वक्तुं श्रोतुमर्हेषु वेदविभागेषु १५.४३. प्रशंसनीयेषु व्यवहारेषु ३.३३.८. **उक्थैः**=वेदविद्याजन्यैरुपदेशैः ५.४५.१. तद्गुणप्रशंसकैर्वचोभिः ७.३४.१६. परिभाषितोपदेशैः १.७१.२. वक्तुमर्हैर्वेदितव्यैर्वेदवचनैः ६.१३.४. कीर्त्तनीयैर्वचनैः ६.१.१०. वेदस्थैः स्तोत्रैः ६.६९.३. प्रशंसितैर्गुणैः ६.१६.१५. **उक्था**=उक्थानि परिभाषितुमर्हाणि वेदस्थानि सर्वाणि स्तोत्राणि अ०—स्तुतिसाधकानि, प्र०—'पातृतुदिवचि०' उ० २.७. अनेन वचधातोः स्थक् प्रत्ययस्तेनोक्थस्य सिद्धिः 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति शेर्लुक् १.५.८. प्रशस्तानि विज्ञानानि १.१७३.९. प्रशंसनीयानि वस्तूनि ४.२२.१. प्रशंसनीये (रजसी=द्यावापृथिव्यौ) ४.४२.६. वक्तुं योग्यानि वेदस्तोत्राणि वचनानि वा १.५४.७. वक्तुं श्रोतुमर्हाणि (प्रवचनानि) ६.६७.१०. प्रशंसनैः ४.३३.१०. प्रशंसनीयानि वचनानि ७.१९.९. उचितानि (सख्या=कर्माणि भावा वा) ४.३.४. उक्तानि वक्तव्यानि ६.२९.४. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोः 'पातृतुदिवचि०' उ० २.७. सूत्रेण थक् प्रत्ययः। उक्थम् प्राण उ ऽएवोक्तस्यान्नमेव थं तदुक्थम् श० १०.४.१.२३. एष (अग्निः) उ ऽएवोक्तस्यैतदन्नं थं तदुक्थम् श० १०.४.१.४. अग्निर्वा ऽउक्तस्याहुतय एव थम् श० १०.६.२.८. आदित्यो वा उक्। तस्य चन्द्रमा एव थम् श० १०.६.२.९. प्राणो वा ऽउक्तस्यान्नमेव थम् श० १०.६.२.१०. (देवाः सोमं) उक्थैरुदस्थापयन्। तदुक्थानाम् उक्थत्वम् तै० २.२.८.७. (वागिति) एतदेषां (नाम्नां) उक्थमतो हि सर्वाणि नामान्युत्तिष्ठन्ति श० १४.४.४.१. वागुक्थम् ष० १.५. अन्नमुक्थानि कौ० ११.८, १७.७. प्रजा वा उक्थानि तै० १.८.७.२. पशव उक्थानि ऐ० ४.१, १२ गो० उ० ६.७. तै० १.८.७.२. पशवो वा उक्थानि कौ० २८.१०, २९.८. ष० ३.११. तै० १.२.२.२. तां० ४.५.१८. विड्उक्थानि तां० १८.८.६. ऐन्द्राग्नानि ह्युक्थानि श० ४.२.५.१४. (देवाः) अन्तरिक्षमुक्थेन (अभ्यजयन्) तां० ९.२.९. अपच्छिदिव वा एतद् यज्ञकाण्डं यदुक्थानि तां० ११.११.२. यदुक्थानि भवन्त्यनुसन्तत्या एव तां० १८.८.६. (तमेतम् पुरुषम्) उक्थमिति बह्वृचाः (उपासते) एष हीदꣳ सर्वमुत्थापयति श० १०.५.२.२०.]

उक्थवाहसा प्रशंसितविद्याप्रापकौ (इन्द्राग्नी=विद्युद्विद्याविद्विद्वांसौ) ६.५९.१०. [उक्थोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् असुन् । उक्थं व्याख्यातम्]

उक्थशंसिनः वेदप्रकाशकरणशीलान् (सज्जनान्) ६.४५.६. [उक्थोपपदे शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

उक्थशासः य उक्थानां प्रशंसनीयानां मन्त्राणामर्थाञ्छासन्ति ते (नरः=विद्वांसोऽध्यापकाः) ७.१९.६. ये योगाऽभ्यासं विहाय उक्थानि वचनानि शंसन्ति तेऽर्थात् शब्दार्थयोः खण्डने रताः (अब्रह्मविदो जनाः) १७.३१. य उक्थानि वक्तुं योग्यानि वचनानि शंसन्ति (पितरः=जनकादयः) १९.६९. प्रशंसितशासनाः (पितरः=जनकाः) ४.२.१६. केवल विषय भोगों के लिए ही अवैदिक कर्म करने में लगे हुए (मनुष्य लोग) आर्याभि० २४४, १७.३१. **उक्थशासा**=उक्था उक्ता शासा शासनानि ययोस्तौ (वाय्वग्नी) २.३९.१. [उक्थोपपदे शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोरण् प्रत्ययः । उक्थ-शासपदयोः समासो वा (शासु धातोर्घञ्) अथवा उक्थोपपदे शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः साधनीयम्]

उक्थशुष्माः उक्थानि उक्तानि शुष्माणि बलानि याभिस्ताः (गिरः=वाचः) ६.३६.३. [उक्थ-शुष्मपदयोः समासः । शुष्मम्=बलनाम निघं० २.९.]

उक्थाऽर्का उक्थानि प्रशंसितानि वचनान्यर्काणि पूजनीयानि च ६.३४.१. (उक्थ-अर्कपदयोः समासः । अर्कः पदनाम निघं० ४.२. अर्चपूजायाम् (चु०) धातोः क औणादिकः]

उक्थाव्यम् प्रशंसाऽर्हाणि स्तोत्राणि शस्त्रविशेषाणि वा तस्य तमिव सेनापतिम्, भा०—सुशिक्षितं शस्त्राऽस्त्रपरमप्रवीणम् ७.२२.

उक्थाशस्त्राणि उक्थानि च तानि शस्त्राणि च, प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति पूर्वपदस्य दीर्घः १९.२८. [उक्था-शस्त्रपदयोः समासः]

उक्थिनम् प्रशस्तोक्थवाक्यजन्यबोधनिष्पादितम्, भा०—विद्यासुशिक्षायुक्तां वाचम् (भक्ष्याद्यन्वितं भोज्यमन्नरसादिकम्) २०.२९. उक्थानि वक्तुं योग्यानि प्रशस्तानि वचनानि यस्य तम्, भा०—धर्मसुशिक्षाप्रकाशकम् (इन्द्रं—जीवम्) २८.३३. बहून्युक्थानि वक्तुं योग्यानि वेदस्तोत्राणि विद्यन्ते यस्य तम् (आप्तं विद्वांसम्) ३.५२.१. **उक्थिनः**=गुणप्रशंसकाः (राजप्रजासज्जनाः) ३.१२.५. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोस्थक् प्रत्ययः । ततो मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

उक्थेऽउक्थे वक्तुं योग्ये योग्ये व्यवहारे १२.२७. धर्म्ये उपदेष्टव्ये व्यवहारे व्यवहारे ७.२६.२. [उक्थशब्दस्य वीप्सायां द्विर्वचनम्]

उक्थेभिः स्तोत्रैः, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति भिस स्थान ऐसभावः १.२.२. प्रशंसकैः (वचनैः) ५.४५.४. सुष्ठूपदेशैः २.११.१६. वेदस्तोत्रैरधीतवेदाप्तोपदिष्टवचनैव १.४७.१०. प्रशंसनीयैः स्तुतिसाधकैर्वेदविभागैर्मन्त्रैः ३३.७६ [उक्थम्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोस्थक् प्रत्ययः]

उक्थ्यम् उक्थेषु प्रशंसनीयेषु भवम् (सुप्रवाचनं=अध्यापनमुपदेशनम्) १.१०५.१२. उक्थेषु वक्तुं योग्येषु भवम् (अंशम्) २.१३.१. उच्यते प्रशस्यते यत्तस्मै हितम् (वाजम्) १.४८.१२. प्रकृष्टं विद्यावचः १.१०५.१३. उक्थेषु प्रशंसनीयेषु साधुम् (मन्त्रम्) ३४.५७. प्रशंसितम् (वचः) ५.३८.२. प्रशंसितुं योग्यम् (अग्निं=विद्युदादिरूपं वह्निम्) ३.२६.२. प्रशंसनीयं कर्म ४.३६.४. वक्तुं श्रोतुं योग्यम् (तोकम्) १.६४.१४. वक्तुं श्रोतुं योग्येषु ऋग्वेदादिषु भवम् (मन्त्रम्) १.४०.५. **उक्थ्यः**=प्रशंसितो योग्यो विद्वान् ३.१०.६. यानि विद्यासिद्ध्यर्थं वक्तुं वाचयितुं वाऽर्हाणि तत्र साधुः (इन्द्रः=अग्निर्विद्युत्सूर्यो वा, वरुणः=जलं वायुश्चन्द्रो वा) १.१७.५. **उक्थ्यैः**=उचन्ति सर्वा विद्या येषु तैः (व्यवहारैः) ३.५.२. [उक्थम्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोरौणादिकस्थक् । ततः 'तत्र साधुः' 'तत्र भवे' वार्थे यत् । उक्थ्यम् प्रशस्यनाम निघं० ३.८. वक्तव्यप्रशंसनम् नि० ११.३१. अन्नं वा उक्थ्यम् गो० पू० ४.२०. पशव उक्थ्यानि कौ० २१.५. यज्ञियं वै कर्मोक्थ्यं वचः ऐ० १.२९. उक्थ्या वाजिनः गो० उ० १.२२.]

उक्षणः बलप्रदान् (वीरान्) १.१३५.९. सेचकान् (विदुषो जनान्) ५.५२.३. **उक्षणः**=सेचकाः (सज्जनाः) ६.१६.४७. सुखसेचकाः (देवाः=विद्वज्जनाः) ३.७.७. सेचनकर्त्तारः (सत्वानः=प्राणिनः) १.६४.२. सेचनसमर्थान् (वीरजनान्) १.१३५.९. मधुरैरुपदेशैः सेचमानाः (वाचः) ५.२७.५. जलस्य सुखस्य वा सेक्तारो महान्तः (अग्निपवनमेघादयः) प्र०—उक्षा इति महन्नाम निघं० ३.३., १.१०५.१०. सेक्तारः (वृषभाः) २०.७८. वृषभान् १.१६८.२. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोः 'श्वन्नुक्षन्पूषन्०' उ० १.१५९. सूत्रेण कनिन् प्रत्ययः । उक्षणः=उक्षतेर्वृद्धिकर्मणः, उक्षन्त्युदकेनेति वा । उक्षण एतान् माध्य-

मिकान् संस्त्यायान् नि० १२.६. उक्षन् महन्नाम निघं० ३.३.]

उक्षत सिञ्चत १.८७.२. **उक्षतम्**=सिञ्चतम् २१.८. सिञ्चेताम् २१.९. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उक्षन् सेवन्ते ४.१.१०. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लेट्। अत्र सेवनार्थे धातूनामनेकार्थत्वात्]

उक्षन्ति सिञ्चन्ति १.१६६.३. **उक्षन्ते**=सेवन्ते ५.५९.१. सिञ्चन्ति २.३४.३. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लट्]

उक्षन्तम् वीर्यसेचनसमर्थ (जवान) को आर्याभि० १.५०, १.११४.७. वीर्यसेक्तारम् (युवानम्) १६.१५. विद्यावीर्यसेचनसमर्थम् (जनम्) पं० वि०। [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लटः शतृप्रत्ययः]

उक्षभिः महद्भिः (जनैः) १.१३९.१०. [उक्षन् व्याख्यातम्। तस्य तृतीयाबहुवचने रूपम्। उक्षन् महन्नाम निघं० ३.३.]

उक्षमाणः सिञ्चमानः (मेघः) ५.४२.१४. **उक्षमाणाः**=सेवमानाः (नरः) ५.५८.८. **उक्षमाणे**=सुखैः सिञ्चमाने (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.२. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लटः शानच्। अथवा ताच्छील्ये चानश्। व्यत्ययेन आत्मनेपदम्]

उक्षयन्त सिञ्चन्ति ६.१७.४. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोः स्वार्थे णिजन्ताल् लङ्। आडभावश्छान्दसः]

उक्षा वीर्यसेचकः (वृषभः) १८.२७. सूर्यः ४.५६.१. वृष्ट्या सेचकः (समुद्रः) १७.६०. सेचनसमर्थः (गौः=जनो वृषभो वा) २१.२०. वर्षा के द्वारा भूगोल का सेचन और आकर्षण करने वाला (सूर्य) स० प्र० ३११. **उक्षाणम्**=वीर्यसेचनसमर्थम् (गां==युवाऽवस्थं वृषभम्) २८.३२. **उक्षाणः**=वीर्यसेचनसमर्थाः (पशवः) २४.२३. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोः 'श्वन्नुक्षन्०' उ० १.१५९. सूत्रेण कनिन्। उक्षतेर्वृद्धिकर्मणः, उक्षन्त्युदकेनेति वा नि० १२.९.]

उक्षामि शोधयामि, आर्द्रीकरोमि, सिञ्चामि वा २.१. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लट्]

उक्षितम् सिक्तम् (भा०—गर्भम्) १६.१५. वीर्यसेचनस्थितं गर्भम् १.११४.७. विद्यावीर्यसिक्तं जनम् प० वि०। सेवकम् (इन्द्रं=विद्युतम्) २.१६.१. गर्भ में वीर्य के सेचन को, आर्याभि० १.५०, ऋ० १.८.६.७. **उक्षितः**=संसिक्तः (अग्निः) ५.८.७. सेवितः (शमादिशुभकर्माऽऽचारिजनः) २.२१.३. सिक्तः (विद्वज्जनः) १.३६.१९. **उक्षिते**=सिञ्चिते (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २.३.६. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। उक्षितः=महन्नाम निघं० ३.३.]

उक्षितासः वृष्टिद्वारा सेक्तारः (रुद्रासः=वायवः) १.८५.२. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोः क्तः। तस्य प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमे रूपम्]

उखच्छित् य उखं गमनं छिनत्ति सः (राजपुरुषः) ४.१९.९. (उखम्=उख गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः। तदुपपदे छिदिर् द्वैधीकरणे (रुधा०) धातोः क्विप्]

उखा पाकस्थाली ३.५३.२२. ज्ञातुमर्हा (पृथिवी=स्त्री) १२.६१. उखाम्=सूपादिसाधनीं स्थालीम् ११.५६. प्राप्तव्यां कन्याम् ११.६४. **उखायाः**=पाकसाधिकायाः (स्थाल्याः) १.१६२.१३. प्राप्तायाः प्रजायाः १२.१६. **उखे !**=अन्नाऽऽधारा! स्थालीव विद्याऽऽधारे, ज्ञानयुक्ते, विज्ञानमिच्छुके, जिज्ञासो वा (कन्ये) ११.६१. [उख गत्यर्थे (भ्वा०) धातोरौणादिको ऽन् प्रत्ययः। ततः स्त्रियां टाप्। उखा एतद्वै देवा एतेन कर्मणैतयावृतमेमांल्लोकानुदखनन् यदुदखनंस्तस्मादुत्खोत्खा ह वै तामुखेत्याचक्षते परोक्षम् श० ६.७.१.२३. आत्मैवोखा श० ६.५.३.४, ६.६.२.१५. शिर एतद् यज्ञस्य यदुखा श० ६.५.३.८. उदरमुखा श० ७.५.१.३८. योनिर्वाऽउखा श० ७.५.२.२. इमे वै लोका उखा श० ६.५.२.१७, ६.७.१.२२., ७.५.१.२७. प्राजापत्यमेतत् कर्म यदुखा श० ६.२.२.२३. पर्वैतदग्नेर्यदुखा श० ६.२.२.२४.]

उख्यम् उखायां संस्कृतं भक्ष्यमोदनादिकम्, प्र०—अत्र 'शूलोखाद्यत्' अ० ४.२.१६. अनेन 'संस्कृतं भक्षाः' इत्यर्थे यत् १७.६५. **उख्यस्य**=उखायां स्थाल्यां भवस्य पाकसमूहस्य १४.१. [उखाप्राति० 'शूलोखाद् यत्' अ० ४.२.१६. सूत्रेण 'संस्कृतं भक्षाः' अर्थे यत्। अथवा उखा प्राति० भवार्थे यत्। अयं वाऽग्निरुख्यः श० ८.२.१.४.]

उगणाभ्यः विविधतर्कयुक्ता गणा यासु ताभ्यः (स्त्रीभ्यः) १६.२४. [उ-गणपदयोर्बहुव्रीहिः। उ=वितर्के इति व्याख्यातम्]

उगणाः उद्यताऽऽयुधसमूहाः (सेनाः), प्र०—पृषोदरादित्वादभीष्टसिद्धिः ११.७७.

उग्र! तेजस्विन् (राजन्) ४.२.१८. प्रतापिन् (इन्द्र=राजन्) ४.२०.७. तीक्ष्णस्वभाव (राजन्) ४.२४.४.

शत्रूणां हनने कठिनस्वभाव (इन्द्र=सेनापते) ७.२५.१. बाणादियुक्त (सैनिक) ३.४६.२. **उग्रम्**=उत्कृष्टम् (शर्म=गृहम्) २६.१६. उत्कृष्टस्वभावम् (इन्द्रं=विद्वांसम्) ३.४३.८. अत्युत्कृष्टम् (गाम्) ३४.३५. उग्रगुणकर्मस्वभावम् (पदं=विज्ञानम्) ५.३०.२. क्रूरं भयङ्करम् (वचः=वचनम्) ५.८. शत्रुभिः सोढुमशक्यम् (शर्द्धः=बलं सैन्यम्) १७.४१. तीक्ष्णस्वभावम् (महादेवं=परमात्मानम्) ३९.८. तीव्रं गुणम् ३९.९. कठिनं दृढम् (शवः=बलम्) ३.३६.४. सर्वैः सह समवेतम् (इन्द्रं=विद्युतम्) ३.४६.४. दुष्टेषु कठिनस्वभावं श्रेष्ठेषु सरलम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.४८.५. दुष्टैः शत्रुभिरसहम् (अश्वं=विद्युतम्) १.११८.९. दुष्टानां दुःखप्रदम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.४९.५. दुष्टानां दमयितारम् (राजानम्) ३.४७.५. द्वेषविनाशकम् (शुनं=परस्परमेलजन्यं सुखम्) ३.५०.५. शत्रुबलविदारणक्षमम् (सेनापतिम्) १.१०२.१०. दुःसहम् (वचः=परिभाषणम्) ५.८. दुर्जयम् (धनम्) ५.३१.८. प्रचण्डपराक्रमम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ७.३६. तेजोमयम् (भगं=ऐश्वर्यम्) ७.४१.२. तेजस्वभावम् (इन्द्रं=राजाद्यध्यक्षम्) ३.३२.१७. तेजस्वी (ईश्वर) को सं० वि० १५६, ७.४१.२. **उग्रस्य**=उत्कृष्टस्य (बलस्य) ५.२०.२. **उग्रः**=सर्वोत्कृष्टः (इन्द्रः=परमैश्वर्यप्रद ईश्वरः), 'ऋजेन्द्राग्र०' उ० २.२९. इति निपातनम् १.७.४. तीक्ष्णस्वभावः (भा०—शूरः (जनः) ३३.८०. तीव्रः प्रभावः ४.२३.७. तीव्रकारी (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.५५.३. तीव्रभाग्योदयः (इन्द्रः=ऐश्वर्यवान् विद्वान्) ३.३६.५. अतिकठिनदण्डप्रदः (इन्द्रः=सेनाद्यधिपतिः) १.१००.१२. क्रूरस्वभावः (राजपुरुषः) २.३३.९. दुष्टानां वधे तीव्रतेजाः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. दुष्टानां हन्ता (सभाध्यक्षः) १.५१.११. दुष्टानामुपरि क्रोधकृत् (इन्द्रः=राजा)२०.४८. दुष्टदलने तेजस्वी (राजा) ८.४६. हिंसने तीव्रः (इन्द्रः=मन्त्री) १७.२४. भयङ्कर (ईश्वर) आर्याभि० १.३४. [उच्यति समवैतीति विग्रहे उच समवाये (दिवा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्रवज्र०' इत्यादिना रन् प्रत्ययान्तो निपातितः । वायुर्वाऽउग्रः श० ६.१.३.१३. एतान्यष्टौ (रुद्रः, शर्वः, पशुपतिः, उग्रः, अशनिः, भवः, महादेवः, ईशानः) अग्निरूपाणि । कुमारो नवमः श० ६.१.३.१८.]

उग्र इव तेजस्वीव (राजादिजन इव) ६.१६.३९. [उग्र-इवपदयोः समासः]

उग्रधन्वा उग्रं धनुर्यस्य (इन्द्रः=सर्वसेनाधिपतिः) १७.३५. [उग्र-धन्वन्पदयोर्बहुव्रीहिः । उग्रं व्याख्यातम् । धन्वन्—धवि गतौ (भ्वा०) धातोः 'कनिन् युवृषितक्षि०' उ० १.१५६. सूत्रेण कनिन्]

उग्रमुग्रम् तेजस्विनं तेजस्विनम् (दुर्जनं दुर्जनम्) ६.४७.१६. [उग्रं व्याख्यातम् । तस्य वीप्सायां द्विर्वचनम्]

उग्रा तीव्रतेजस्का (द्यौः) ३२.६. **उग्राभिः**=अत्यन्तोत्कृष्टाभिः [ऊतिभिः=रक्षाप्राप्तिविज्ञानसुखप्रवेशनैः) १.७.४. **उग्राः**=कठिनगुणकर्मस्वभावाः (पतिव्रताः स्त्रियः) ७.५६.६. (उग्रं व्याख्यातम् । तस्य स्त्रियां टापि रूपम्]

उग्रा उग्रबलौ तेजस्विस्वभावौ (सभासेनाधीशौ) प्र०—अत्र विभक्तेर्लुक्, संहितायामिति दीर्घः ३३.६१. तीक्ष्णस्वभाव वाले (सूर्यादि और पृथिवी) सं० वि० ६, ३२.६. तीव्रौ (वाय्वग्नी) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः १.२१.४. (उग्रं व्याख्यातम्]

उग्राः दृढाः, भा०—बलिष्ठाः (बाहवः=भुजाः) १७.४६. तीव्रसंवेगादिगुणसहिताः (मरुतः=वायवः) १.२३.१०. [उग्रं व्याख्यातम् । ततः प्रथमाबहुवचनम्]

उग्रादेवम् उग्रान् तीव्रस्वभावान्, विजिगीषुम् (सभाध्यक्षम्) प्र०—अन्येषामपि०, इति पूर्वपदस्य दीर्घः १.३६.१८. [उग्र-देवपदयोः समासः । देवः=दिवु क्रीडाविजिगीषादिषु (दिवा०) धातोः पचाद्यच् प्रत्ययः]

उग्रेभिः तेजस्विभिः (विद्वज्जनैः) १.१७१.५. तीक्ष्णस्वभावैः (शूरवीरैः) १.१३३.६. [उग्रं व्याख्यातम् । 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

उचथम् वक्तव्यम् (वचनम्) २.१९.७. वक्तुं योग्यम् (वचनम्) १.१८२.८. **उचथस्य**=वक्तुं योग्यस्य (दुर्जनस्य) ७.१८.५. उचितस्य (जनस्य) ७.१८.५. **उचथानि**=रुचिकराणि (सुखानि) ४.२४.७. वेदवचनानि १.७३.१०. उचितानि वचनानि ४.२.२०. **उचथाय**=प्रवचनायाऽध्यापनाय १.११०.१. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽथः प्रत्ययः । स च कित् । कित्वासंप्रसारणम्]

उचथा वक्तुमर्हाणि (ब्रह्मा=धनानि) २.२०.५. [उचथं व्याख्यातम् । 'शेश्छन्दसि बहुलमिति' शेर्लुक्]

उच्चरण्यत् चरणमिवाऽऽचरेत्, प्र०—'वाच्छन्दसि' अ० १.४.९. इत्यत्राऽल्लोप ईत्त्वाऽभावश्च ८.२४. [उत्+चरणप्राति० आचारेऽर्थे क्यच् । छान्दसत्वादल्लोपः]

उच्चरत् उत्कृष्टतया चरति सर्वं जानाति ३६.२४. उत्कृष्टतया सर्वत्र व्याप्तमस्ति प० वि० । प्रलय के ऊर्ध्वं

रहता है आर्याभि० २.३७, ३६.२४. [उत्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लेट्]

उच्चरन्तम् ऊर्ध्वं प्राप्नुवन्तम् (सूर्यम्) ६.५२.५. ऊर्ध्वं विहरन्तम् (सूर्यमण्डलम्) ४.२५.४. [उत्+चर गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ]

उच्चा ऊर्ध्वं स्थितानि (घनानि) २.३०.५. उच्चानि उत्कृष्टानि (ब्रह्मचर्य-विद्या-बल-शील-पुरुषार्थाः) २.२.१०. उच्चादुत्कृष्टकर्मसेवमानात्, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति पञ्चम्येकवचनस्याकारादेशः १.११६.२२. उच्चे ऊर्ध्वस्थिते (दिवि=आकाशे) २.४०.४. उच्चम् (शर्म=गृहम्) २६.१६. उच्चानि वस्तूनि १.१२३.२. उच्चानि सुखानि कर्माणि वा १.३३.७. [उच्चा=उच्चैः नि० ६.३६. उच्चैः=उच्चितं भवति नि० ४.२४.]

उच्चाबुध्नम् उच्चा ऊर्ध्वं बुध्नमन्तरिक्षं यस्मिँस्तत् (विमानादियानस्थमुदकाधारं कुण्डम्) १.११६.९. [उच्च-बुध्नपदयोर्बहुव्रीहिः । बुध्नम्=अन्तरिक्षं बद्धा अस्मिन् धृता आप इति वा । इदमपीतरद् (हृदयम्) बुध्नमेतस्मादेव बद्धा अस्मिन् धृता प्राणा इति नि० १०.४४.]

उच्चैर्घोषाय उच्चैर्घोषो यस्य तस्मै (न्यायाधीशाय) १६.१९. [उच्चैस्-घोषपदयोः समासः । उच्चैः=उच्चितं भवति नि० ४.२४.]

उच्छ विशिष्टतया वासय १.११३.१७. विवासय ६.६५.६. विवस १.४८.१. उच्छति विवासयति १.९२.१४. [उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उच्छत् विवासयति १.४८.८. [उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोर्लेट्]

उच्छति विवसति १.४६.१. **उच्छन्तु**=सेवन्ताम् ७.४१.७. तमो विवासयन्तु १.१२४.९. विवसन्तु ३४.४०. **उच्छात्**=विवसेत् १.११३.१३. प्राप्नुयात् १.१२४.११. **उच्छान्**=विवासयेयुः ४.५५.२. विवासयेत् ५.३७.१. [उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोर्लेट्, लोट्, लेट् च]

उच्छन्ती विवासयन्ती दूरीकुर्वन्ती (उषाः) १.९२.६. निवसन्ती (उषाः=स्त्री) ५.७९.१०. अन्धकारं निस्सारयन्ती (उषाः=प्रातर्वेला) १.१२४.१. **उच्छन्तीम्**=निवासयन्तीम् (उषसम्) १.७१.१. **उच्छन्तीः**=सेवयन्तीः (उषसः=प्रातर्वेलाः) ४.३९.१. सुवासयन्त्यः (स्त्रियः) ४.५१.३. **उच्छन्त्याम्**=विविधवासदात्र्याम् (उषसि=प्रभातवेलायाम्) १.१८४.१. [उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

उच्छशाधि उत्कृष्टतया शिक्षय ७.१.२५. [उत्+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

उच्छंस उत्कृष्टतया स्तुहि ५.५२.८. [उत्+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उच्छात् विवसनात् १.४८.३. [उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोर्भावे घञ् । ततः पञ्चमी]

उच्छिषः उच्छिष्टं त्यज ६.७५.१६. ऊर्ध्वं शिष्टं त्यजेत् १७.४५.

उच्छिष्टात् उत् सर्वस्मादूर्ध्वं शिष्टात् परमेश्वरात् तत्सामर्थ्यात् च ऋ० भू० १३६. [उत्+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोः क्तः । 'शास इदङ्हलोरि' तीत्युपधाया इत्वम् । 'शासि वसिघसीनां चे' ति षत्वम्]

उच्छोचस्व उत्कृष्टतया विचारय ४.२.२०. [उत्+शुच शोके (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

उच्छ्रयतात् उच्छ्रितं कुर्यात्, भा०—प्रजाराजपुरुषानुन्नयेत् २३.२७. [उत्+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् । मध्यमपुरुषैकवचने 'तुह्योस्तातङ्०' इति हेः स्थाने तातङ्]

उच्छ्रयस्व उत्कृष्टतया सेवस्व ३.८.२. उत्कृष्टं सेवस्व सेवते वा ४.१०. [उत्+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उच्यते उपदिश्यते १.११४.६. उपदिश्येत, अ०—उच्येत, तद्गुणान् प्रकाशयेत्, प्र०—लेट्-प्रयोगोऽयम् १२.८०. कथ्यते १.७७.१. कहा जाता है सं० वि० २०८, अथर्व० ९.६.१.२. **उच्यसे**=परिभाष्यसे १.३१.१४. **उच्येते**=कथ्येते ३१.१०. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोः कर्मणि लट्]

उच्यसि वदसि ५.८१.४. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन यक्]

उज्जजान उत्कृष्टतया जायते ३.१.१२. [उत्+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लिट्]

उज्जिघ्नते उत्कृष्टतया हिंसन्ति १.६४.११. [उत्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसीति' शपः श्लुः । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

उज्जितम् जयत्यनया सा जितिरुत्कृष्टा चाऽसौ जितिश्च तामुत्कृष्टं विजयम्, विद्यया सम्यगुत्कर्षम् २.१५. [उत्+जि जये (भ्वा०) धातोः क्तः]

उज्जिहानाः सम्यक् त्यजन्तः (मानवाः) ५.१.१.

उत्कृष्टतया प्राप्नुवन्तः, भा०—उन्नयन्तः (भानवः=किरणाः) १५.२४. [उत्+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोः शानच् । धातूनामनेकार्थकत्वात् त्यागेऽपि । अथवा ओहाक् त्यागे (जु०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

उज्जिहीते उत्कृष्टतया विज्ञापयति १.१०५.१८. [उत्+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लट् । भृञादित्वादभ्यासस्येत्वं श्लौ । हलादौ क्ङिति 'ई हल्यघोः' अ० ६.४.११३. इतीत्वम्]

उज्जेषम् उत्कृष्टया नीत्या जयेयमुत्कर्षेयम् ९.३१. [उत्+जि जये (भ्वा०) धातोर्लिङर्थे लेट् । 'सिब्बहुलं लेटी' ति सिप्]

उज्जेषी उत्कृष्टतया जेतुं शीलः (भा०—गृहस्थः) १७.८५. [उत्+जि जये (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः । 'सिबुत्सर्गश्छन्दसि' अ० ३.१.३४. वा सूत्रेण सिप्]

उत् उत्कृष्टार्थे प्र०—उदित्येतयोः प्रातिलोम्यं प्राह निरु० १.३, १.१०.१. ऊर्ध्वे १.५०.१. आश्चर्ये ३०.३१. उत्कृष्टतया ९.३१. उत्कृष्टरीत्या १५.५४. अधिकार्थे ७.३२.१२. उत्कर्षे १७.१०. उद्गमने ७.४२. अपि ४.२८. अत्यन्तार्थे ४.४५.१. ऊर्ध्वे उत्कृष्टवोवे व्यवहारे च अथर्व० ११.५.५, ऋ० भू० २४९. एवार्थे ७.१६.११. क्रियायोगे ७.४१. चाऽर्थे ६.७२.२. धात्वर्थे १.१२. [उत् (न्यवेति विनिग्रहार्थीयौ) इत्येतयोः प्रातिलोम्यम् नि० १.३. उदिति सोऽसावादित्यः जै० उ० २.९.८.]

उत अप्यर्थे १.२३.१९. यदि १६.१०. उत्प्रेक्षायाम् १.१७.६. चाऽर्थे ५.१९. तथा आर्याभि० १.५०. विकल्पे, अव्ययार्थे । और आर्याभि० १.१५. [उत अपि नि० १.६. च नि० १०.२७.]

उतानि संततानि वस्त्राणि १९.८९. [वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोः क्तः । यजादित्वात् किति सम्प्रसारणम्]

उतो अपि २५.२९. पक्षान्तरे १.२३.१५.

उत्किरामि उत्कृष्टतया विक्षिपामि ५.२३. उत्कृष्टतया प्रक्षिपामि ५.२३. [उत्+कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोर्लट् । 'ॠत इद्धातोरि' तीत्वे रपरत्वे च रूपम्]

उत्कूलनिकूलेभ्यः ऊर्ध्वंनीचतटेभ्यः ३०.१४.

उत्क्रमणम् ऊर्ध्वं क्रमणं तेज इव ७.२६. [उत्क्रमणपदयोः समासः । क्रमणम्=क्रमुपादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

उत्क्रमः उदूर्ध्वं क्रमः क्रमणं यस्मात्तस्य (विद्वज्जनः) १५.९. [उत्+क्रमपदयोः समासः । क्रमः=क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्घञ् । 'नोदातोपदेशस्य०' अ० ७.३.३४. इति वृद्धिर्न भवति]

उत्क्रान्तिः उत्क्राम्यन्त्युल्लङ्घयन्ति समान् विषमान् देशान् यया गत्या तद्विद्याज्ञात्री (विदुषी स्त्री) १५.१. [उत्+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोः क्तिन् । 'अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति' अ० ६.४.१५. सूत्रेण उपधाया दीर्घः]

उत्तभान ऊर्ध्वं स्तभान १७.७२. [उत्+स्तम्भु (सौत्रो धातुः) धातोर्लोट् । 'स्तम्भुस्तुम्भु०' अ० ३.१.८२. इति श्ना । 'हलः श्नः शानज्झौ' इति श्नः शानजादेशः । 'उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य' इति पूर्वसवर्णः]

उत्तभिता धारिताऽस्ति ऋ० भू० १४३. धारण किया है स० प्र० ३११. [उत्+स्तम्भु स्तम्भार्थे सौत्रो धातुः । ततस्तृच् कर्त्तरि । पूर्वसवर्णादेशश्च]

उत्तमम् सर्वोत्कृष्टम् (सूर्यम्=ईश्वरम्) ३५.१४. श्रेयांसम् (रसः=वीर्यं) ९.३. प्रशस्तम् (दक्षं=बलम्) १.१५६.४. अतिशयेन श्रेष्ठम् (पुत्रम्) ५.२५.५. उत्कृष्टगुणकर्मस्वभावम् (सूर्यम्) १.५०.१०. विजयाऽऽख्यम् (नाकं=सर्वसुखप्रदं विजयम्), सर्वथोत्कृष्टम् (मोक्षपदम्), प्रशस्तम् (अविद्यमानदुखं भोगम्), सर्वश्रेष्ठम् (सर्वदुःखप्रणाशकमानन्दम्) ९.१०. सर्वोत्कृष्टम् (ईश्वरम्) २०.२१. अतिश्रेष्ठम् (श्रवः=अन्नादिकं श्रवणं वा) ४.३१.१५. भा०—अत्युत्तमम् (नाकम्=सुखम्) १८.५१. **उत्तमः**=श्रेष्ठः (भौतिकाग्निः) ३.५.१०. **उत्तमानि**=श्रेष्ठानि (द्युम्नानि=धनानि यशांसि वा) ३३.१२. श्रेष्ठतमानि (श्रवांसि=श्रवणान्यन्नानि वा) १.९१.१८. **उत्तमाम्**=अतिश्रेष्ठाम् (श्रियम्=शोभां लक्ष्मीं च) ३२.१६. **उत्तमेन**=प्रशस्तेन (पविना=वाचा) ६.३०. [उत् शब्दाद् अतिशायने तमप्]

उत्तमेभिः श्रेष्ठैः (कर्मभिः) ६.६०.३. [उत्तमं व्याख्यातम् । ततो भिस् । 'बहुलं छन्दसीति' ऐसादेशो न भवति]

उत्तम्भनम् उत्कृष्टं प्रतिबन्धनम् प्र०—अत्र 'उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य' अ० ८.४.६१. अनेन सस्य पूर्वसवर्णादेशः ४.३६. [उत्+स्तम्भु स्तम्भार्थे सौत्रो धातुः । ततो ल्युट् । 'उदः स्थास्तम्भोः०' इति पूर्वसवर्णादेशः]

उत्तरणाय अर्वाचीनतटात्परतटं प्राप्नुवते प्रापयते वा (जनाय) १६.४२. [उत्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०)

धातोर्ल्युडन्ताच्चतुर्थी]

उत्तरतः उत्तरस्माद् देशात् ५.११. उत्तरकाले २.३. [उत्तरप्राति० पञ्चम्यन्तात् तसिल्]

उत्तरम् प्रलयाऽनन्तरं कारणाऽऽख्यम् १.१५४.१. सर्वेभ्यः सूक्ष्मत्वादुत्तरम् (ईश्वरम्) २०.२१. सर्वेभ्यः पदार्थेभ्य उत्तरस्मिन् वर्त्तमानम् (सूर्यम्=ईश्वरम्) ३८.२४. उत्पद्यमानम् (रूपम्) १.९५.८. अन्ताऽवयवम् (सधस्थं=कारणरूपम्) ५.१८. सर्वेषां लोकानामुत्तारकम् (सूर्यं=जगदीश्वरम्) २७.१०. सर्वोत्कृष्टं प्रलयादूर्ध्वं वर्त्तमानं संप्लवकर्त्तारम् (ईश्वरम्) १.५०.१०. उत्तरन्ति येन तत् (दक्षं=बलम्) ६.१६.१७. दुःखेभ्य उत्तारकं परत्र वर्त्तमानम्, जन्ममृत्युक्लेशादिभ्यः पृथग्वर्त्तमानम् (सूर्यम्=ईश्वरम्) ३५.१४. अर्वाक्कालीनम् (सुम्नं=सुखम्) २.२३.८. उत्तर समुद्र अर्थात् गृहाश्रम को सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.६. उत्तरां दिशाम् २५.५. **उत्तरः**=उत्तरकालीनः (राजविरोधिजनः) ४.१८.९. पश्चात् (पुरुषः) ४.३०.१. उत्कृष्टं तारयति समादधाति सः (परमेश्वरः) २३.५२. **उत्तरात्**=सर्वेभ्य उत्तरम् (स्वः=सुखसम्पादकदिग्रूपम्) १३.५७. पश्चात् ५.६०.७. **उत्तरान्**=आगामिनः (उषसः) १.११३.१३. **उत्तरे**=विजयाऽनन्तरसमये कुशला विद्यमानजीवनाः (वीरजनाः) १७.४३. सिद्धान्तसिद्धाः (स्तोमाः=स्तुतिसमूहाः) १.७.७. **उत्तरेण**=उपरिस्थेन (प्रकाशेन) २५.२. [उत् शब्दादतिशायने तरप्। उत्तरः=उद्धततरो भवति नि० २.११. उत्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'ॠदोरबि' त्यप्। अयं वै (भू) लोकोऽद्भ्य उत्तरः श० १४.३.१.२८. तेषु ह वा एष एतदध्याहितस्तपति स वा एष (सूर्यः) उत्तरोऽस्मात्सर्वस्माद् भूताद् भविष्यतः सर्वमेवेदमतिरोचते यदिदं किं च ऐ० ४.१८.]

उत्तरवेद्याः उत्तरा चाऽसौ वेदी च तस्याः १९.१६. [उत्तरावेदीपदयोः समासः। उत्तरं व्याख्यातम्। वेदी=विद सत्तायां (अदा०) धातोः 'हृपिषिरुहिवृतिविदि०' उ० ४.११९. सूत्रेण इन्। 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष् स्त्रियाम्। नासिका ह वा ऽएषा यज्ञस्य यदुत्तरवेदिः। अथ यदेनामुत्तरं वेदेरुपकिरति तस्मादुत्तरवेदिर्नाम श० ३.५.१.२. द्यौरुत्तरवेदिः श० ७.३.१.२७. योनिर्वा ऽउत्तरवेदिः श० ७.३.१.२८. योषा वा ऽउत्तरवेदिः श० ३.५.१.३३. पशवो वा ऽउत्तरवेदिः तै० १.६.४.३. खल उत्तरवेदिः ता० १६.१३.७.]

उत्तरस्मिन् उत्तमाऽऽसने १८.६१. [उत्तरसर्वनाम्नः सप्तमी। 'पूर्वादिभ्यो नवभ्यो वा' इति स्मिन्नादेशः]

उत्तराम् उत्कृष्टतया तरन्ति यया सेनया तां प्राप्तविजयाम् (सेनाम्) १७.५०. कारणरूपाम् (दिवम्) १.५०.११. [उत्+तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोः 'ॠदोरबि' त्यप्। ततः स्त्रियां टाप्]

उत्तरामुत्तराम् आगामिनीमागामिनीम् (समां=वेलाम्) ३८.२८. पुनः पुनर्निर्मिताम् (सीतां=भूमिकर्षिकाम्) ४.५७.७. [उत्तराम् पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

उत्तरासदः ये प्रश्नोत्तराणि समादधाना उत्तरस्यां दिशि सीदन्ति (देवाः=विद्वज्जनाः) ९.३६. **उत्तरासद्भ्यः**=य उत्तरस्यां दिशि सीदन्ति तेभ्यः (देवेभ्यः=विद्वज्जनेभ्यः) ९.३५. [उत्तरोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि। संहितायां पूर्वपदस्य दीर्घः]

उत्तानयोः उपरिस्थयोः ऊर्ध्वं स्थापितयोः पृथिवीसूर्ययोः १.१६४.३३. **उत्तानः**=ऊर्ध्वं स्थितः (सूर्यः) ४.१३.५. ऊर्ध्वं तनित इव स्थितः (जीवात्मा) ४.१४.५. [उत्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'तनोतेर्णं उपसंख्यानम्' अ० ३.१.१४०. वा इति णः प्रत्ययः। उत्तानः उत्ततान ऊर्द्धतानो वा नि० ४.२१.]

उत्तानहस्तः ऊर्ध्वबाहुः (विद्वज्जनः) ६.६३.३. उत्तानौ उपरिस्थौ हस्तौ यस्य सः (मर्त्तः=मनुष्यः) ६.१६.४६. **उत्तानहस्ताः**=उत्तानावूर्ध्वंगतावभयदातारौ हस्तौ येषान्ते (जनाः) १८.७५. उत्थापितकराः (शिष्याः) ३.१४.५. [उत्तान-हस्तपदयोः समासः। उत्तानं व्याख्यातम्। हस्तः=हसधातोः 'हसिमृ०' उ० ३.८६. सूत्रेण तन्प्रत्ययः। हस्तो हन्तेः प्राशुर्हनने नि० १.७.]

उत्तानाम् ऊर्ध्वंगामिनीम् (रशनां=रज्जुम्) ५.१.३. **उत्तानायाम्**=उत्कृष्टतया विस्तृतायां जगत्याम् १.१६४.१४. उत्कृष्टतया विस्तीर्णायां भूमावन्तरिक्षे वा ३४.१४. उत्तान इव शयानायां पृथिव्याम् २.१०.३. सरलतया शयानो मनुष्य इव वर्त्तमानायां भूमौ ३.२९.३. **उत्तानायाः**=उत्कृष्टस्तानः शुभलक्षणविस्तारो यया राज्यास्तस्याः ११.३९. [उत्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'तनोतेर्ण उपसंख्यानम्' इति वा० सूत्रेण णः। स्त्रियां टाप्]

उत्तिर उत्कृष्टतया विस्तारय, अ०—उत्कृष्टतया निवारय १.११.७. [उत्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट। व्यत्ययेन शः। तिरते प्रवर्धयते (नि० ११.६.)

धातोर्वा रूपम्]

उत्तिरामसि उत्कृष्टतया तराम ३.३७.१०. [उत्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन शप्रत्यये रूपम्। 'इदन्तो मसि' रितीदन्तता मसः]

उत्तिष्ठ ऊर्ध्वं गच्छ ५.५६.५. उद्युक्तो भव ४.४.४. उत्तिष्ठतु उद्युक्तो भवतु ३४.५६. प्रकाशितो भव ७.३८.२. **उत्तिष्ठत**=उद्यता भवत, भा०—प्रयत्नेनोद्यमिनो भवत ३५.१०. [उत्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। शिति 'पाघ्राध्मास्था०' इत्यादिना तिष्ठादेशः। 'उदः स्थास्तम्भोः०' इति पूर्वसवर्णादेशः]

उत्तिष्ठन् उद्यमाय प्रवर्त्तमानः (सत्पुरुषः) ७.३३.१. सद्गुणकर्मस्वभावेषूर्ध्वं तिष्ठन् (इन्द्रः=सभापती राजा) ८.३९. [उत्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ। शिति तिष्ठादेशः पूर्वसवर्णादेशश्च पूर्वपदवत्]

उत्थाय आलस्यं विहाय ११.६४. [उत्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्। पूर्वसवर्णादेशश्च पूर्वपदवत्]

उत्थिताय कृतोत्थानाय (जीवाय) २२.८. [उत्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ धातोः क्तः। 'द्यतिस्यतिमास्थाम्०' इति धातोरिकारादेशः। पूर्वसवर्णादेशश्च]

उत्पतन् ऊर्ध्वमुड्डीयमान इव (पक्षी) २.४३.३. उत्तम व्यवहार में पहुँचाता हुआ (परमेश्वर) आर्याभि० १.५३. [उत्+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ]

उत्पतन्ति ऊर्ध्वं गमयन्ति ऋ० भू० १९८. प्राप्नुवन्ति १.१६४.४७. [उत्+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्। अन्तर्भावितण्यर्थश्च]

उत्पातयति ऊर्ध्वं जागरयति १.४८.५. [उत्+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

उत्पारयन्ति उत्कृष्टतया पारं गमयन्ति १.१८२.६. [उत्+पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोर्लट्]

उत्पुनामि उत्कृष्टतया पवित्रीकरोमि, प्र०—उदित्येतयोः प्रातिलोम्यं प्राह, निरु० १.३, १.३१. [उत्+पूञ् पवने (क्र्या०) धातोर्लट्। 'प्वादीनां ह्रस्व' इति धातोर्ह्रस्वत्वम्]

उत्प्रपूर्याः पूर्णं कुर्य्याः १५.४३. [उत्+प्र+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लिङ्। 'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

उत्सक्थ्याः ऊर्ध्वं सक्थिनी यस्यास्तस्याः प्रजायाः २३.२१. [उत्+सक्थिपदयोः समासः। सक्थि—षञ्ज सङ्गे (भ्वा०) धातोः 'असिसञ्जिभ्यां क्थिन्' उ० ३.१५४. सूत्रेण क्थिन् प्रत्ययः। सक्थि-सचतेरासक्तोऽस्मिन् कायः नि० ९.१८.]

उत्सधिम् उत्साः कूपा धीयन्ते यस्मिन् भूमिभागे तम् १.८८.४. [उत्सोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरधिकरणे कारके 'कर्मण्यधिकरणे च' इति किः प्रत्ययः। उत्सः कूपनाम निघं० ३.२३.]

उत्सम् उन्दन्ति येन तं कूपम्, प्र०—उत्समिति कूपनाम, निघं० ३.२३, १७.८७. कूपमिव जलेन क्लिन्नम् (दशयन्त्रम्=जगत्) ६.४४.२४. कूप इवाऽऽर्द्रीकरम् (अग्नि=विद्वद्राजानम्) १२.१९. कूपमिव पालकं गवादिकम्, अ०—वीर्यसेचकं वृषभम् १३.४९. **उत्सः**=उन्दन्ति यस्मात् स कूप इव (पुरुषः) १९.८७. कूप इव तृप्तिकरः (ईश्वरः) १.१५४.५. **उत्सौ**=कूपोदकमिवाऽऽर्द्रीभूतौ (स्त्रीपुरुषौ) १३.३५. [उनत्ति क्लिद्यतीत्युत्सः। उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोः 'उन्दिगुधिकुषिभ्यश्च' उ० ३.६८. सूत्रेण सः प्रत्ययः किच्च। उत्सः कूपनाम नि० ३.२३. उत्सरणाद्वोत्सदनाद्वोत्स्यन्दनाद्वोनत्तेर्वा नि० १०.९. आपो वा ऽउत्सः श० ६.७.४.४.]

उत्सवे हर्षनिमित्ते व्यवहारे १.१०२.१. कर्त्तव्याऽऽनन्दसमये ३३.२९. **उत्सवेषु**=आनन्दयुक्तेषु कर्मसु १.१००.८. [उत्+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरबि' त्यप् प्रत्ययः]

उत्सादतः त्यागमात्रात् २१.४५. उत्सादनं कुर्वतः (प्रत्यङ्गात्) २१.४३. गात्रोत्सादनात् २१.४४. [उत्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ। अथवा=उत्सादप्राति० सार्वविभक्तिकस्तसिः प्रत्ययः]

उत्सादम् ऊर्ध्वं सीदन्ति यस्मिँस्तम् (तालु=आस्याऽवयवम्) २५.१. **उत्सादेभ्यः**=नाशेभ्यः प्रवृत्तम् ३०.१०. [उत्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्घञ् 'हलश्च' सूत्रेण]

उत्सिनाति उत्कृष्टतया बध्नाति १.१२५.२. [उत्+षिञ् बन्धने (क्र्या०) धातोर्लट्]

उत्स्नाय स्नानं कृत्वा २.१५.५. [उत्+ष्णा शौचे (अदा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

उदक् उत्तरतः ३.५३.११. उत्तरस्याः (दिशः) ६.३६. [दिशावाचिन उदक् शब्दादुत्तरस्यास्ताति प्रत्ययस्य 'अञ्चेर्लुक्' अ० ५.३.३०. सूत्रेण लुक्]

उदकम् (जलम्) १.१६४.७. जल को सं० वि०

२०९, अथर्व० ९.६.४. **उदकाय**=आर्द्रीकारकाय(जलाय) २२.२५. [उदकम् उदकनाम निघं० १.१२. उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोः 'उदकञ्च' उ० २.३९. सूत्रेण निपातनात् क्वुन् प्रत्ययः। उदकं कस्मादुनत्तीति सतः नि० २.२४.]

उदक्ताः पुनरूर्ध्वं गच्छन्त्यः (नावः=विमानानि) १०.१९. [उत्+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्तः]

उदगन्म प्राप्नुयाम प० वि०, २०.२१. **उदगात्**= उत्कृष्टतया प्राप्तोऽस्ति प० वि०, १.११५.१. उद्गमनतया प्राप्नोति ७.४३. उदितोऽस्ति १३.४६. [उत्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं' छन्दसीति शपो लुक्। 'म्वोश्च' अ० ८.२.६५ सूत्रेण नकारादेशः। उदगात्-प्रयोगे-उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ्। 'इणो गा लुङि' इति गादेशः। सिचो लुक् च]

उदच ऊर्ध्वं गच्छति, प्र०—अत्र व्यत्ययः ५.८३.८. [उत्+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्। विकरण-व्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

उदजते ऊर्ध्वं क्षिपति, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मने-पदम् १.९५.७. [उत्+अजगतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातो-र्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

उदजनि उत्कृष्टतया जनयति १.७४.३. [उत्+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लुङ्। 'दीपजन०' इत्यादिना विकल्पेन चिण्]

उदजयत् उत्कृष्टरीत्योत्कर्षेत् ९.३४. उत्कृष्टतया नीत्या जयेदुत्कर्षेत् ९.३१. [उत्+जि जये (भ्वा०) धातोर्लङ्]

उदजायन्त उत्कृष्टा भवन्ति ४.१८.१. [उत्+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लङ्। 'ज्ञाजनोर्जा' इति जादेशः]

उदञ्चनः उत्कृष्टतां प्रापकः (विद्वज्जनः) ५.४४.३. [उत्+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि युच् बाहुलकादौणादिकः]

उदञ्चम् ऊर्ध्वं प्राप्नुवन्तम् (सिन्धुं=समुद्रम्) २.१५.६. (उत्+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोर्बाहुल-कादन् प्रत्यय औणादिकः कर्त्तरि]

उदतिरम् उत्कृष्टतया सन्तरेयमुल्लङ्घेयम् ११.८२. [उत्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः सामान्ये लङ्। विकरणव्यत्ययेन शप्रत्यये ऋत इत्वे रपरत्वे च रूपम्]

उदतिष्ठत् उत्तिष्ठति ४.१८.८. ऊर्ध्वे उत्कृष्टबोधे व्यवहारे च तिष्ठति ऋ० भू० २३५. उत्कृष्टतया तिष्ठति २.१५.७. **उदतिष्ठः**=उत्तिष्ठते ५.११.३. [उत्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। शिति प्रत्यये तिष्ठादेशः]

उदद्यौत् उत्कृष्टतया द्योतते ३.५.९. [उत्+द्यु अभिगमने (अदा०) धातोर्लङ्। 'उतो वृद्धिर्लुकि हलि' सूत्रेण वृद्धिः। धातूनामनेकार्थकत्वादत्र द्यु द्योतने]

उदधिम् उदकधारकं सागरम् १८.५५. **उदधिः**= उदकानि धीयन्ते यस्मिँस्तत् समुद्रोऽन्तरिक्षं वा ३८.२२. [उदकोपपदे दधातेः 'कर्मण्यधिकरणे च' इत्यधिकरणे किः। उदकस्य 'पेषंवासवाहनधि च' अ० ६.३.५८. सूत्रेण उदादेशः]

उदधीनिव उदकानि धीयन्ते येषु तानिव (सागरा-निव) ३.४५.३. [उदकोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरधिकरणे किः प्रत्ययः। उदकस्य उदादेशः]

उदन् उदकमये जलाशये, प्र०—अत्र 'पद्दन्नोमास०' इत्युदकस्योदन्नादेशः १.१०४.३. [उदकशब्दात् सप्तमी। 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्या लुक्। 'पद्दन्नोमास०' अ० ६.१.६३. सूत्रेणोदकस्य 'उदन्' इत्यादेशशः। उदन् उदके नि० १०.१२.]

उदनयः उन्नेयः (शिल्पविद्याविज्जनः) २.१३.१२.

उदनष्टाम् उत्कृष्टतया प्रसिद्धाम् (प्रशंसाम्) ७.४५.२.

उदनि उदके, प्र०—अत्र 'पद्दन्नोमास०' इत्युद-कस्योदन्नादेशः १.११६.२४. [उदकप्राति० सप्तमी। उदकस्य 'उदन्' आदेशः]

उदनिमान् बहूदकः (मेघः) ५.४२.१४. [उदक प्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्। उदकस्योदनिभावश्छान्दसः]

उदनेव जलानीव ४.२०.६. [उदक-इव पदयोः समासः। उदकस्य 'उदन्' आदेशः]

उदन्यवः आत्मन उदकमिच्छवः (विद्वज्जनाः) ५.५४.२. **उदन्यवे** आत्मन उदकानीच्छवे (जिज्ञासवे) ५.५७.१. [उदकपदात् 'सुप आत्मनः क्यच्' सूत्रेणात्मन इच्छायां क्यच्। 'क्याच्छन्दसी' ति उः प्रत्ययः। 'पद्दन्नो-मास्०' सूत्रे शस्प्रभृतिष्विति प्रकारे प्रभृतिशब्दः। तेन क्यच्यपि उदकस्य उदन्नादेशः। उदन्युरुदन्यतेः नि० ११.१५.]

उदन्या इव उदकसम्बन्धिन्य इव (धारा इव) २.७.३. [उदकशब्दाद् भवार्थे यत्। उदकस्य उदन्नादेशश्च]

उदन्वता बहूदकसहितेन (रथेन=मेघरूपेण) ५.८३.७. [उदकप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्। 'उदन्वानुदधौ च'

अ० ८.२.१३. सूत्रेण उदधावर्थे संज्ञायां विषये मतावुदकस्योदन्भावो निपात्यते]

उदन्वतीः उदकयुक्ताः (नद्यः) ७.५०.४. [उदकप्राति० मतुप् भूम्न्यर्थे। मतुबन्तान् ङीप् । पूर्वपदवत् उदन्भावश्च]

उदपप्तन् ऊर्ध्वं पतन्ति १.९२.२. [उत्+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । लृदित्त्वादङ् । 'पतः पुम्' इत्यङि पुमागमः]

उदप्रुतम् उदकयुक्तम् (पौरं=मनुष्यम्) ५.७४.४. **उदप्रुतः**=उदकस्य गमयितारः ४.४५.४. उदकं प्राप्ता नद्य इव (धेनवः=वाचः) ७.४२.१. [उदक-प्रुत्पदयोः समासः । उदकस्य उदादेशश्छान्दसः । प्रुत्=प्रुङ् गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुग्' इति तुगागमः]

उदभिः उदकैः २.१३.५. [उदकप्राति० भिस् । उदकस्योदादेशः । 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

उदमन्दिषुः उत्कृष्टतया हर्षयन्तु १.८२.६. [उत्+मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्लुङ् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

उदमुच्ये छोड़ देता हूँ सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५७. [उत्+मुच्लृ मोक्षणे (तुदा०) धातोः कर्मणि लङ्]

उदमृक्षन्त उत्कृष्टतया मृषन्ति सहन्ते १.१२६.४. [उत्+मृक्ष संघाते (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । धातूनामनेकार्थकत्वादत्र सहनेऽपि]

उदमेघे यस्योदकैर्मिह्यते सिच्यते जगत् तस्मिन् समुद्रे १.११६.३. [उदक-मेघपदयोः समासः । उदकस्योदादेशश्छान्दसः । मेघः=मिह सेचने (भ्वा०) धातोः पचाद्यच् । न्यङ्क्वादिषु पाठात् कुत्वम्]

उदयनात् उदयात् १.४८.७. [उत्+अय गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट् । ततः पञ्चमी]

उदयँस्त उद्यच्छति १.५६.१. [उत्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे' अ० १.३.७५. सूत्रेणात्मनेपदम्]

उदरम् घर के भीतर का प्रसार विस्तार सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.१५. **उदरस्य**=उदरस्य सकाशात् २५.३३. **उदरे**=शरीराऽभ्यन्तरे ४.१२. **उदरेषु**=अन्तर्देशेषु १.२५.१५. [उत्+दॄ विदारणे (क्र्या०) धातोः 'उदि दृणातेरलचौ पूर्वपदान्त्यलोपश्च' उ० ५.१९. सूत्रेणाल् अच् वा प्रत्ययः । उद्दृणाति येनान्नमिति विग्रहः । प्रजापतेर्वा एतदुदरं यत्सदः । तां० ६.४.११. उदरं वै सदः कौ० ११.८. उदरमेवास्य (यज्ञस्य) सदः श० ३.५.३.५. उदरं मध्यमा चितिः श० ८.७.२.१८. उदरम् उखा श० ७.५.१.१८.]

उदर्के उत्कृष्टतयाऽऽप्तौ १.११३.१८. [उत्+अर्च-पूजायाम् (भ्वा०) 'कृदाधारार्चिकलिभ्यः कः' उ० ३.४०. सूत्रेण कः प्रत्ययः । रसो वा उदर्कः कौ० ११.५.]

उदर्येण उदरे भवेन (व्यवहारेण) २५.८. [उदरं व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत्]

उदव उत्तम रीति से कृपा करके रक्षण करो, आर्याभि० १.४३. उत्कृष्टतया रक्ष ५.५.९. सर्वथा रक्षा कीजिए सं० वि० १५६, ७.४१.३. उद्गमय प्रापय, प्राप्त करा आर्याभि० २.११.३४.३६. **उदवत**=कामयध्वम् २.३१.२. **उदवन्तु**=उत्कर्षेण रक्षन्तु, भा०—पालयन्तु १९.४९. [उत्+अव रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणादिषु (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उदवता ऊर्ध्वंगमनेन ६.१८.९. [उत्+अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

उदवर्त्तय ऊर्ध्वं वर्त्तय १९.७१. [उत्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिचि लोट्]

उदवविश्रथाय उत्कृष्टतया विमोचय १२.१२. [उत्+अव+वि+श्रन्थ विमोचनप्रतिहर्षयोः (क्र्या०) धातोर्घञ् । 'अवोदैधोद्मप्रश्रथ०' अ० ६.४.२९. इति निपातनात् नलोपो वृद्ध्यभावश्च]

उदवाहासः य उदकं वहन्ति तानिव (मरुतः=वायव इव) ५.८३.३. [उदकोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः । प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः]

उदव्रजे उदकानि व्रजन्ति यस्मिँस्तस्मिन् (आकाशे) ६.४७.२१. [उदक-व्रजपदयोः समासः । व्रजः=व्रज गतौ (भ्वा०) धातोरधिकरणे 'गोचरसंचरवहव्रज०' अ० ३.३.११९. सूत्रेण घप्रत्ययान्तो निपात्यते]

उदसृजत् अपिसृजति ६.३२.२. **उदसृजः**=उत्सृजति त्यजति २.१३.१८. [उत्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लङ्]

उदस्तभ्नात् उत्कृष्टतया स्तभ्नाति ६.४७.५. [उत्+स्तम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोर्लङ् । 'स्तम्भुस्तुम्भुस्कम्भु०' अ० ३.१.८२. सूत्रेण श्नाविकरणः]

उदस्तम्भीत् उत्तभ्नाति ३.५.१०. [उत्+स्तम्भु

स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोर्लुङ् । 'जॄस्तम्भुम्रुचु०' अ० ३.१.५८. सूत्रेण च्लेर्वाऽङादेशे पक्षे सिच्]

उदस्थात् उत्तिष्ठते ७.१६.३. उत्तिष्ठति १.१६४.१७. उत्तिष्ठतु १७.४१. ऊर्ध्वमुदेति १.१२३.१. **उदस्थाम्**= उत्कृष्टतया तिष्ठेयम् ४.२८. उत्कृष्टतया प्राप्नुयाम् ४.२८. **उदस्थुः**=उत्तिष्ठन्तु ७.६०.४. [उत्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'गातिस्थाघुपाभूभ्यः' इति सिचो लुक्]

उदहार्य्यः या उदकं हरन्ति ताः (स्त्रियः) १६.७. [उदकोपपदे हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोरण्प्रत्यये स्त्रियां ङीप् । उदकस्योदादेशश्छान्दसः]

उदा उदकेन ५.४१.१४. [उदकप्राति० तृतीयैकवचनम् । 'पद्दन्नोमास्' सूत्रेणोदन्नादेशः । 'अयस्मयादीनि छन्दसि' इत्यजादावपि पदसंज्ञायां नकारालोपो, न त्वल्लोपः । इनादेशोऽपि न छान्दसत्वाद्]

उदाचरत् ऊर्ध्वं गच्छति ७.५५.७. [उत्+आङ्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

उदाजत् ऊर्ध्वं क्षिपति २.१२.३. ऊर्ध्वमधो गमयति २.२४.१४. विक्षिपेत् हन्यात् २.१४.३. प्रक्षिपति ३.४४.५. ऊर्ध्वं समन्तात् क्षिपतु, प्र०—अत्र लोडर्थे लङ् १.११२.१२. **उदाजन्**=प्राप्नुवन्ति ४.१.१३. [उत्+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लङ्]

उदादाय ऊर्ध्वं समन्ताद् गृहीत्वा १.२८. [उत्+आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

उदानः य ऊर्ध्वमनिति (वायुविशेषः) ६.२०. उदानिति बलयति येन सः (वायुः) २२.२३. **उदानाय**= उत्कृष्टाय बलाय १३.१९. उत्कृष्टाय जीवनबलसाधनाय (वायवे) ७.६. स्फूर्त्तिहेतव ऊर्ध्वमन्यते चेष्ट्यते येन तस्मै उत्क्रमणपराक्रमहेतवे (वायवे) १.२०. [उत्+अन प्राणने (अदा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः । तद् यदस्यैषो (उदानः) ऽन्तरात्मन्यतो यद्वैनेनेमाः प्रजा यतास्तस्मादन्तर्यामो नाम श० ४.१.२.२. उदान उदयनीयः ऐ० १.७. उदस्त इव ह्ययमुदानः ष० २.२. चन्द्रमा उदानः जे० ३०.४. २२.९. उदानो वै त्रिककुप् छन्दः श० ८.५.२.४. उदानो वै नियुतः श० ६.२.२.६. एति ('आ' इति) उदानः श० १.४.१.५. उदानो वै बृहच्छोचाः श० १.४.३.३. उदाना मासाः तां ५.१०.३.]

उदारत् उदूर्ध्वं प्राप्नोति १७.८९. उत्कृष्टतया प्राप्नोति ४.५८.१. **उदारताम्**=प्राप्नुताम् ३.३३.१३. [उत्+ऋ गतौ (जु०) धातोर्लुङि 'सर्त्तिशास्त्यर्तिभ्यश्चे' त्यङ् । ऋदृशोऽङि' सूत्रेण गुणः]

उदारिथ उत्कृष्टतया प्राप्नोषि २.९.३. उत्कृष्टैः साधनैः प्राप्नुहि १७.७५. [उत्+आङ्+ऋ गतौ (जु०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचनम्]

उदारथिः उद्दीपकः (ईश्वरः) १.१८७.१०. [उत्+आङ्+ऋ गतौ (भ्वा०) धातोः 'उद्यर्त्तेश्चित्' उ० ४.८८. सूत्रेण घथिन् प्रत्ययः]

उदारः य उत्कृष्टं परीक्ष्य ऋच्छति ददाति, भा०—सुपात्रेभ्यो दाता (राजा=प्रकाशमानो जनः) १२.२२. [उत्+ऋ गतौ (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

उदारुहम् उत्कृष्टतया रोहेयम् १७.६७. [उत्+आङ्+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन शः]

उदाहसत् उत्कृष्टतया ज्ञापयन्ति, प्र०—अत्र 'ओहाङ् गतौ' इत्यस्माल्लडर्थे लुङ् १.९.४. [उत्+आङ्+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लुङ् । छान्दसं रूपम्]

उदिङ्गय उत्कृष्टतया गमय ४.५७.४. [उत्+इगि गतौ (भ्वा०) धातोर्णिचि लोट्]

उदितः उदयं प्राप्तः (सूरः=सूर्यः) ३२.७. [उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः]

उदिता उदिते (काले), प्र०—अत्राऽऽकारादेशः ३३.४२. उदये ७.४१.४. उत्कृष्टप्राप्तौ १.११५.६. उदितावुदये ७.६.७. सूर्योदये ६.५१.१. उदितौ प्राप्तोदयौ (इन्द्राग्नी=पवनविद्युतौ) १.१०८.१२. उदयसमये ३४.३७. [उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः । उदितस्य रूपाणि]

उदितिम् उदयम् ६.१५.११. [उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तिन् स्त्रियाम्]

उदिते उदयं प्राप्ते (सूर्ये) ५.५४.१०. ['उदित' इति व्याख्यातम्]

उदिथः प्राप्नुथः १०.१६. [उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लटि मध्यमद्विवचने रूपम्]

उदियर्त्ति ऊर्ध्वं प्राप्नोति ४.४५.१. उत्कृष्टतया जानाति १.११३.१७. उन्नयति ६.४७.३. **उदियर्षि**= उत्कृष्टतया प्राप्नोषि १२.१०७. [उत्+ऋ गतौ (जु०) धातोर्लट् । 'अर्तिपिपर्त्योश्च' इत्यभ्यासस्येत्त्वम् । 'अभ्यासस्यासवर्णे' इत्यभ्यासस्येयङ्]

उदियाय उदेति ७.३३.१३. [उत्+इण् गतौ

(अदा०) धातोर्लिट्]

उदीची या उदङ्ङुत्तरं देशमञ्चति सा (दिक्) १५.१३. उत्तरा (दिक्) १४.१३. बाईं ओर (दिशा) पं० वि०, अथर्व० ३.२७.४. **उदीचीम्**=उत्तराम् (दिशम्) १०.१३. **उदीचीः**=उत्तराः (दिशः) १६.६४. **उदीच्यै**=योदक् पूर्वाऽभिमुखस्य जनस्य वामभागमञ्चति तस्यै (दिशे) २२.२४. [उत्+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण क्विन्। 'अनिदिताम्०' इति नलोपे 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' अ० ४.१.६. वा० इति स्त्रियां ङीपि भसंज्ञायाम् 'अचः' सूत्रेणाल्लोपे प्राप्ते 'उद ईत्' अ० ६.४.१३९. इतीकारादेशः। उदीची हि मनुष्याणां दिक् श० १.७.१.१२. एषा (उदीची) वै देवमनुष्याणां शान्ता दिक् तै० २.१.३.५. एषा (उदीची) वै रुद्रस्य दिक् तै० १.७.८.६. एषा वै वरुणस्य दिक् तै० ३.८.२०.४. नक्षत्राणां वा एषा दिग्यदुदीची ष० ३.१. साम्नामुदीची महती दिगुच्यते तै० ३.१२.९.१. उदीच्येव यशः गो० पू० ५.१५.]

उदीयुः उत्कृष्टतया प्राप्नुयुः १९.४९. [उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचनम्]

उदीरत् सन्नुदन् ४.२.७. **उदीरताम्**=उत्कृष्टतया प्रेरताम् १९.४९. **उदीरते**=कम्पयन्ति गच्छन्ति वा ५.८३.३. उत्कृष्टतया कम्पयन्ति २.१७.१. प्राप्नुवन्ति १२.८२. उत्कृष्टा जायन्ते १.८१.३. उत्कृष्टं कम्पन्ते गच्छन्ति ४.४५.२. [उत्+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। अन्यत्र लोट् लट् च। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न भवति]

उदीरय उत्कृष्टतया गमय १.४८.२. प्रेरयत ५.४२.३. **उदीरयताम्**=उत्कृष्टतया प्रेरयन्तु १.१२३.६. **उदीरयन्ति**=उत्कृष्टतया प्रेरते १.१६८.८. [उद्+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्णिचि लोट्, लटौ। ईर क्षेपे (चुरा०) धातोर्वा रूपाणि]

उदीरयन्ती कर्मसु प्रवर्त्तयन्ती (उषाः) १.११३.८. [ईर क्षेपे प्रेरणे (चुरा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

उदीराणाः उत्कृष्टतां प्राप्ताः (राजप्रजाजनाः) ४.३९.५. उत्कृष्टं ज्ञानं प्राप्ताः (मनुष्याः) ७.४४.२. [उत्+ईर गतौ (अदा०) धातोः शानच्। ताच्छील्ये चानश् वा]

उदीर्ध्वम् ऊर्ध्वं कम्पध्वम् १.११३.१६. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर् उत्पूर्वाल् लोट्]

उदीर्ष्व उत्कृष्टमिच्छ ऋ० भू० २११. विचार और निश्चय रख स० प्र० १५२, १०.१८.८. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर् उत्पूर्वाल्लोट्]

उदुद्धर्षसे उत्कृष्टतयाऽऽनन्दसि ४.२१.९. [उत्+हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन शप् आत्मनेपदं च]

उदूपथुः उत्कृष्टतया वपतः १.११७.१२. ऊर्ध्वं वपेथाम् १.११६.११. ऊर्ध्वं वपेतम् १.११७.५. [उत्+डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लिटि मध्यमद्विवचनम्। 'असंयोगात्०' इति लिटः कित्वे यजादित्वात् सम्प्रसारणम्]

उदूहथुः ऊर्ध्वं वहतः १.१८२.७. [उत्+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर् लिटि मध्यमद्विवचनम्। यजादित्वात् किति सम्प्रसारणम्]

उदृचः उत्कृष्टा अधीता प्रत्यक्षीकृता ऋचो यस्मिँस्तस्य (यज्ञस्य=शिल्पविद्यासिद्धस्य) ४.६. **उदृचि**=उत्कृष्टा ऋचो यस्मिन्नध्ययने तस्मिन् १.५३.११. [उत्-ऋच्पदयोर्बहुव्रीहिः। 'विभाषा समासान्तो भवति' इति परिभाषाश्रयेण 'ऋक्पूरब्धूःपथाम्०' इति समासान्तो न भवति]

उदेति उदयं प्राप्नोति। १.१५७.१. सब जगत् में उदित प्रकाशमान हो रहे हो आर्याभि० १.४७. **उदेषि**=उत्कृष्टतया प्राप्तोऽसि १.५०.५. [उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

उदैत् उदेति ३१.४. उदितः प्रकाशितोऽस्ति ऋ० भू० १२१. **उदैति**=अधिष्ठातृत्वेन व्याप्नोति ऋ० भू० १५२. जाता है स० प्र० २४६, ३४.१. जाता आता है आर्याभि० २.४३, ३४.१. उद्गच्छति ३४.१. [उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्। 'आटश्चे' ति वृद्धिः]

उदैरत् प्रेरयति ७.२३.१. **उदैरतम्**=उत्कृष्टतया गच्छतम् १.११८.६. [उत्+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो न लुक्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

उदैरयतम् प्रेरयतम् १.११७.२४. उत्कृष्टतया गमयतम् १.११२.५. [उत्+ईर क्षेपे=प्रेरणे (चुरा०) धातोर्लङ्]

उदोजसम् उत्कृष्टं पराक्रमम् १२.८१. [उत्+ओजस्पदयोः समासः। ओजः=उब्ज आर्जवे (तुदा०) धातोः 'उब्जेर्बले बलोपश्च' उ० ४.१९२. इति बलोपो गुणोऽसुन् च प्रत्ययः]

उदोजसः उत्कृष्टमोजो पराक्रमो येषान्ते (मरुतः=मानवाः) ५.५४.३. [उत्+ओजस्-पदयोर्बहुव्रीहिः]

उद्गः जलस्य १.११२.१२.

उदगात् ऊर्ध्वं व्याप्नोति १.५०.१३.

उद्गाता यज्ञ में सामगान करने वाला महापण्डित आर्याभि० १.५२. [उत्+गा स्तुतौ (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच्। सूर्य उद्गाता गो० पू० १.१३. आदित्यो वा उद्गाताऽधिदैवं चक्षुरध्यात्मम् गो० पू० ४.३. पर्जन्यो वाऽउद्गाता श० १२.१.१.३. वर्षा उद्गाता तस्माद्यदा बलवद्वर्षति साम्न इवोपब्दिः क्रियते श० १२.२.७.३२. प्रजापतिर्वाऽउद्गाता श० ४.३.२.३. उद्गातैव यशः गो० पू० ५.१५. प्राण उद्गाता कौ० १७.७. गो० उ० ५.४. ते य एवेमे मुख्याः प्राणा एत एवोद्गातारश्चोपगातारश्च जै० उ० १.२२.५. देवानां वै षड् उद्गातार आसन् वाक् च मनश्च चक्षुश्च श्रोत्रं चाऽपानश्च प्राणश्च जै० उ० २.१.१.]

उद्गातेव यथोद्गाता तथा (वेदविज्जनः) २.४३.२. [उद्गातेति व्याख्यातम्]

उद्गुरमाणाय य उत्कृष्टतया गुरत उद्यच्छत्युद्यमं करोति तस्मै (पुरुषाय) १६.४६. [उत्+गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोः शानच्]

उद्गृहीताय ऊर्ध्वं गृहीतं जलं येन तस्मै (मेघाय) २२.२६. [उत्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्तः। 'ग्रहोऽलिटि दीर्घं' इतीटो दीर्घः]

उद्गृह्णते य ऊर्ध्वं गृह्णाति तस्मै (मेघाय) २२.२६. [उत्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः शतृ। धातोः सम्प्रसारणं किति]

उद्ग्राभम् उत्कृष्टतया ग्रहणम् १७.६४. **उद्ग्राभेण**=उत्कृष्टतया गृह्णाति येन तेन (साधनेन) १७.६३. [उत्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्घञ्। 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि हस्येति वक्तव्यम्' अ० ८.२.३५. वा० सूत्रेण हकारस्य भकारः]

उद्दिशः या उद्दिश्यन्ते ताः (शत्रुलक्षिताः दिशः) ६.१९. [उत्+दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इति सूत्रेण क्विन्। 'कृतो बहुलम्' अ० ३.३.११३. वा० सूत्रेण कर्मणि क्विन्]

उद्दृंह उद्वर्धय १७.७२. [उत्+दृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उद्द्रावाय ऊर्ध्वं गताय द्रवीभूताय (वाष्पाय) २२.८. [उत्+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्घञ् 'उदि श्रयतियौतिपूद्रुवः' अ० ३.३.४९. सूत्रेण]

उद्द्रुताय उत्कर्षं गताय (धूम्राय) २२.८. [उत्+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

उद्धर्षय उत्कर्षय, भा०—नित्यं हर्षय, उन्नय १७.४२. **उद्धर्षयन्ति**=उत्साहयन्ति ५.२७.५. [उत्+हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

उद्ना उदकेन ५.८५.६. [उदक+टा। 'पद्दन्नोमास्०' इति उदन्नादेशे 'अल्लोपोऽन' इत्यल्लोपः]

उद्बाधस्व पृथक् कुरु ४.२८. [उत्+बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उद्बुध्यस्व प्रकाशितो भव ऋ० भू० ३०५. ऊर्ध्वत्वेन जानीहि १८.६१. उत्कृष्टरीत्या जानीहि १५.५४. [उत्+बुध अवगमने (दिवा०) धातोर्लोट्]

उद्बोधत् उद्बोधय ४.१५.७. [उत्+बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्लेट्]

उद्भरन्तु उत्कृष्टतया धरन्तु १७.५३. [उत्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उद्भिदम् पृथिवीं भित्त्वा जातेन काष्ठेन निर्मितम् (रथम्) १.१०२.९. उद्भिद्य जायते तम् (भा०—जातं बलम्) २८.२५. **उद्भिदः**=ये पृथिवीं भित्त्वा प्ररोहन्ति (वृक्षादिवत् परोपकारिणो जनाः) ५.५९.६. य उद्भिन्दन्ति (क्रतवः=यज्ञाः प्रज्ञाः वा) २५.१४. उत्कृष्टतया दुःखविदारकाः (देवाः) १.८९.१. उद्भेदं विदारणं प्राप्ताः (ओषधिरसाः) १.१३९.६. ये पृथिवीमुद्भिद्य जायन्ते (ओषध्यादयः) १.१३९.६. [उत्+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः क्विप्]

उद्भिनदत् उद्भिन्द्यात् १२.२७. [उत्+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लेट्]

उद्भिः उदकैः १.८५.५.

उद्भृतम् उत्कृष्टरीत्या धृतम् (ओजः=बलम्) ६.४७.२७. उद्धृतम् (मेदः=स्निग्धं वस्तु) २१.४४. उत्कृष्टतया पोषितम् (मेदः=स्निग्धं वस्तु) २१.४५. [उत्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

उद्भौ उदुत्कृष्टानि वस्तूनि भवन्ति यस्मिँस्तस्मिन् (शर्मन्=गृहे) १५.१. [उत्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ३.२.१८०. वा० सूत्रेण डुः]

उद्मेघे समुद्रे ऋ० भू० १८९.

उद्यतम् उद्वृतम् (ब्रह्म) १.८०.६. **उद्यतः**= प्रयत्नेन प्रेरितः (असुः=प्राणः) ८.५८. उत्कृष्टतया यतः (सिन्धुः=नदी) ८.५९. ऊर्ध्वं गच्छन् (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. उद्योगी (यज्ञः=शिष्यः) ६.६८.१. [उत्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः]

उद्यतस्रुचे उद्यता उत्कृष्टतया गृहीता स्रुग् येन तस्मै यज्ञानुष्ठात्रे १.३१.५. [उद्यत-स्रुच्पदयोः समासः। यतस्रुचः=ऋत्विङ्नाम। निघं० ३.१८.]

उद्यता उत्कृष्टतया यतानि गृहीतानि (वस्तूनि) २.३१.७. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये=यत इति रूपम्। उत्-यतपदयोः समासः]

उद्यतिम् उद्यमम् १.१९०.३. [उत्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तिन्]

उद्यते कथ्यते ५.५५.८. क्लिद्यते १.१६४.४७. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्। यजादित्वात् किति सम्प्रसारणम्। अन्यत्र उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोः कर्मणि लट्]

उद्यन् उदयन् (सूर्यः) ७.६०.१. उदयं प्राप्नुवन् (सूर्यः) १.१२४.१. [उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ। 'इणो यण्' अ० ६.४.८१. सूत्रेण यणादेशः]

उद्यन्ता उत्कृष्टतया नियन्ता (इन्द्रः=सेनेशः) १.१७८.३. [उत्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

उद्यन्तु उद्गच्छन्तु १७.४२. [उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्। 'इणो यण्' सूत्रेण यणादेशः]

उद्यमिष्ट उत्कृष्टतया नियच्छेत् ५.३२.७. [उत्+यमु उपरमे धातोर्लुङ्। 'समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे' अ० १.३.७५. सूत्रेणात्मनेपदम्। इडागमश्छान्दसः]

उद्यंयमीति उत्कृष्टतया पुनः पुनरतिशयेन नियमं करोति १.९५.७. [उत्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि रूपम्]

उद्यंसते उत्कृष्टतया रक्षति १.१४३.७.

उद्यासाय ऊर्ध्वं गमनाय ३९.११. [उत्+यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोर्भावे घञ्]

उद्युवामहे उत्कृष्टतया विभजामहे ६.५७.६. [उद्+यु मिश्रणे अमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदं शप्रत्ययश्च]

उद्येमिरे उत्कृष्टतया युञ्जन्ति १.१०.१. [उत्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे' इत्यात्मनेपदम्]

उद्रः जलचरः कर्कटाऽऽख्यः २४.३७. [उनत्ति क्लिद्यतीति विग्रहे उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक् प्रत्ययः]

उद्रिच्यते अधिको भवति ७.३२.१२. [उत्+रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोः कर्मणि लट्]

उद्रिणम् उदकवन्तम् (उत्सं=कूपम्) २.२४.४. [उद्र इति व्याख्यातम्। ततो मत्वर्थ इनिः]

उद्रिरिचे उत्कृष्टतयाऽतिरिच्यते १.१०२.७. [उत्+रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लिट्]

उद्वत्सु ऊर्ध्वेषूत्कृष्टेषु प्रदेशेषु १.१६१.११. [उत्-शब्दाद् मतुप्। 'झयः' अ० ७.२.१०. सूत्रेण मतुपो मस्य वादेशः]

उद्वतः उपस्थितान मार्गान् ३.२.१०. ऊर्ध्वान् प्रदेशान् ७.५०.४. ऊर्ध्वदेशस्थाः (समाः=वृष्टिजलानि) ५.८३.७.

उद्वधीत् उत्कृष्टतया हन्यात् १३.१६. [उत्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लुङ्। 'लुङि चे' ति हनो वधादेशः। अडभावश्छान्दसः]

उद्वपतु उत्कृष्टतया बीजवत् सन्तनोतु ११.६३. [उत्+डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उद्वयसम् उत्कृष्टं वयो जीवनं यस्मात्तम् (रसं=सारम्) ९.३. [उत्+वयस् पदयोर्बहुव्रीहिः। वयः=अन्ननाम निघं० २.७. वेति गच्छतीति विग्रहे वी गत्यादिषु (अदा०) धातोरसुन् प्रत्ययः]

उद्वरीवृजत् उत्कृष्टतया भृशं वर्जयति ६.५८.२. [उत्+वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ]

उद्वहन्ति उत्कृष्टतया प्रापयन्ति ज्ञापयन्ति प्रकाशयन्ति पं० वि०। ऊर्ध्वं प्राप्नुवन्ति १.५०.१. [उत्+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

उद्वावृषाणः उत्कृष्टतया बलिष्ठः सन् (राजा) ४.२९.३. उत्कृष्टतया भृशं बलकरस्य (मघस्य=धनस्य) ४.२०.७. [उत्+वृष शक्तिबन्धने (चुरा०) धातोर्यङन्ताच्छानच्]

उद्वृह उत्कृष्टतया वर्धस्व ३.३०.१७. **उद्वृहः**= उच्छेदयेः ६.४८.१७. [उत्=वृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन शः प्रत्ययः। वृहू उद्यमने (तुदा०) धातोर्वा लोट्]

उनत्त विद्यासुशिक्षाभ्यां सिञ्चत ५.४२.३. [उन्दी क्लेदने (रुधा०)। धातोर्लोट् 'श्नसोरल्लोपो' ऽपि न, छान्दसत्वात्]

उनत्तः उच्छ्रित (पशुः) २४.७. [उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोः क्तः]

उनत्ति आर्द्रीकरोति ५.८५.४. [उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोर्लट्]

उनप् उम्भति पूरयति २.१३.९. [उभ पूरणे (तुदा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्नम् । आडभावश्छान्दसः]

उनोति प्रेरयति ५.३१.१.

उन्दन् आर्द्रीकुर्वन् (अग्निः=विद्युत्) २.३.२. [उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोः शतृ]

उन्दन्ति क्लेदन्ति १.८५.५. [उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोर्लट्]

उन्धि उन्दयति क्लेदयति ५.८३.८. [उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोर्लोट्]

उन्नयध्वम् उत्कर्षत २.१४.९. **उन्नयन्ति**=उन्नतिशील करके प्रतिष्ठित करते हैं स० प्र० १०६, ३.८.४. ऊर्ध्वत्वेनोत्तमं सम्पादयन्ति ३.८.४. **उन्नयामि**=ऊर्ध्वं बध्नामि भा०—प्रापयामि ११.८२. [उत्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

उन्नशत् उत्कर्षेण नश्यति १.१६४.२२. **उन्नशन्**=नाशयेयुः २.२३.८. [उत्+णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्लुङ् । पुषादित्वादङ् । अडभावश्छान्दसः]

उन्निनीथः उत्कर्षं प्राप्नुथः १.१८१.१. **उन्निनेथ**=उन्नय ६.१८.१३. **उन्निन्यथुः**=ऊर्ध्वं नयतम् १.११६.८. [उत्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

उन्नीतः ऊर्ध्वं नीतः सुगन्धादिपदार्थः ८.५८. [उत्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

उन्नीयमानाः उत्कृष्टान् गुणान् प्रापयन्तः (देवाः=विपश्चितः) ३.८.९. [उत्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

उन्नेतॄणाम् उत्कर्षं प्रापयितॄणाम् (पुरुषाणाम्) ६.२. [उत्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

उन्मत्तम् उन्मादरोगिणम् (जनम्) ३०.८. [उत्+मदी हर्षे (दिवा०) धातोः क्तः । ईदित्त्वादनिट्त्वम्]

उन्ममन्द उन्मन्दते कामयते २.३३.६. [उत्+मदि स्तुतिमोदमस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

उन्मा ऊर्ध्वं मिनोति यया तुलया तद्वत्, भा०—तुलादिकम् १५.६५. [उत्+मा माने (अदा०) धातोर्घञ्]

उप सामीप्ये १.८२.१. सामीप्ये क्रियायोगे, प्र०—उपेत्युपजनं प्राह नि० १.३, २.१९. उपगमाऽर्थे १.२१.४. क्रियाऽर्थे १.५. गताऽर्थे २.१०. उपयोगाऽर्थे १.२२.१६. [उप इत्युपजनम् नि० १.३. इयं (पृथिवी) वाऽउप श० २.३.४.९. उप वै रथन्तरम् तां० १६.५.१४.]

उप समीपस्थः सन् (पुत्रः) १२.७८.

उपक्रणवन्त उपकुर्वन्ति ७.३७.७. [उप+डुकृञ् करणे (तना०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

उपक्षरन्ति समीपतया वर्षन्ति १.१२५.४. उपवर्षन्ति ५.६२.४. [उप+क्षर संचलने (भ्वा०) धातोर्लट्]

उपक्षियन्तः उपनिवसन्तः (सज्जनाः) ३.५९.३. [उप+क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

उपक्षेतारः उपगतान् द्वैधीकुर्वाणाः (मनुष्याः) ३.१.१६. [उप+क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

उपक्षेति उपनिवसति २.२७.१३. विजानाति निवासयति वा १.७३.३. निवासित और धारण करता है आर्याभि० १.४६. [उप+क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि शप्रत्ययस्यापि लुक्]

उपगतम् समीपमागच्छतम् ५.७१.३. [उप+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

उपगन्तम् सामीप्येन गमयतम् १.१३७.३. [उप+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । बहुलं छन्दसीति' शपो लुकि छकारादेशो न भवति]

उपगमेयम् समीपतया प्राप्नुयाम् १.१५८.३. [उप+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ् । 'लिङ्याशिष्यङ्' अ० ३.१.८६. सूत्रेणाङ्]

उपगात् उपगच्छेत्, प्र०—अत्राऽडभावः १.१६४.४. [उप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङि' सूत्रेण गादेशः । अडभावश्च]

उपगायत सामीप्येन शास्त्राणि पाठयत ३३.८२. [उप+गै शब्दे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपगृणन्ति उपगन्तुं स्तुवन्ति १.४८.११. [उप+गृ शब्दे (क्र्या०) धातोर्लट्]

उपगेषम् समीपं प्राप्नुयाम्, अ०—विजानीयाम् ५.५. [उप+गेषृ अन्विच्छायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावश्च । धातोश्च गतिरर्थो धातूनामनेकार्थत्वात्]

उपचिताम् अन्येषां वर्धमानानां रोगाणाम् १२.९७. [उप+चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्विप्]

उपच्यवम् प्रापणम्, प्र०—अत्र 'च्युङ् गतौ' इत्यस्य

प्रयोगः' १.२८.३. [उप+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप् । च्यवते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

उपजग्मुषः य उप=सामीप्यं गतवन्तस्तान् (मनुष्यादीन्) १.५३.६. [उप+गम्लृ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

उपजायते यत्किञ्चिदुत्पद्यते तत्सर्वं त्रयोदशो मासो वा १.२५.८. [उप+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लट्]

उपजिह्विका उपगताऽनुकूला जिह्वा यस्याः पत्न्याः सा ११.७४. [उप+जिह्विकापदयोः समासः । जिह्वा=वाङ्नाम निघं० १.११. उपजिह्विका वम्रीभिरुपजिह्विका इति सीमिकानाम् । उपजिह्विका उपजिघ्रयः नि० ३.२.]

उपतस्थुः समीपं तिष्ठन्ते १.९५.६. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

उपतिष्ठथः समीपस्थौ भवतः ५.६३.३. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

उपतिष्ठन्त उपतिष्ठन्तु १.१३५.८. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावः । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

उपतिष्ठाते समीपं तिष्ठेत १.१२४.११. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

उपदद्यमाने उपादीयमाने (शर्मन्=गृहे) ६.४९.१३. [उप+दद दाने (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

उपदधामि समीपं धरामि ५.२५. समीपं धारयामि, तेन पुष्णामि उपदधाति वा १.१८. सामीप्येन धारयामि १.१८. [उप+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लट्]

उपदसत् समीपं नश्येत् १.१३९.५. **उपदस्यन्ति**=समीपतया क्षयन्ति ५.५५.५. समीपं नश्यन्ति १.६२.१२. [उप+दसु उपक्षये (दिवा०) धातोर्लेट् लट् च]

उपदाम् उप समीपे दीयते ताम् (उत्कोचम्) ३०.९. [उप+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.३.१०६. सूत्रेणाङ् स्त्रियाम्]

उपद्यवि समीपस्थे प्रकाशितेऽप्रकाशिते वा (धार्मिकेऽधार्मिके जने) ७.३१.९. [उप+द्युपदयोः समासः]

उपद्रव समीपमागच्छ ६.४८.१६. [उप+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपधापयेते सामीप्येन पाययतः, भा० —समीपं पालयेताम् ३३.५. समीपं पाययेते १.९५.१. [उप+धेट् पाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट् । आत्वे पुगागमः । 'धेट उपसंख्यानम्' अ० १.३.८९. वा० सूत्रेण परस्मैपदप्रतिषेधादात्मनेपदम्]

उपधीव यथोपधिर्मध्यस्थस्य रथाऽवयवस्य धारिका २.३९.४. [उपधि-इवपदयोः समासः । उपधिः==उप+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः किः प्रत्ययः]

उपध्वस्ताः उपाऽधः पतिताः (पशवः) २४.१४. [उप+ध्वंसु अवस्रंसने (भ्वा०) धातोः क्तः]

उपनतिः उपनमन्ति यया सा (अस्थि) २०.१३. [उप+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

उपनयमानः विद्यापठनार्थमुपवीतं दृढव्रतमुपदिशन् (आचार्य्यः) ऋ० भू० २३५, अथर्व० ११.५.३. प्रतिज्ञापूर्वक समीप रख के (आचार्य) सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.३. [उप+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः शानच् । 'सम्माननोत्सञ्जनाचार्यकरण०' अ० १.३.३६. सूत्रेणात्मनेपदमाचार्यकरणे]

उपनिपद्यते समीपतया प्राप्नोति ऋ० भू० २२१ अथर्व० १८.३.११. [उप+नि+पद गतौ (दिवा०) धातोर्लट्]

उपनिपद्यमानम् समीपे प्राप्नुवन्तम् (सूर्यम्) १.१५२.४. [उप+नि+पद गतौ (दिवा०) धातोः शानच्]

उपनिषेदुः ब्रह्मचर्य ही से समीप प्राप्त होवें सं० वि० १९८, १९.४१.१. समीपता से प्राप्त होकर अनुष्ठान करते हैं सं० वि० १८९, अथर्व० १९.४१.१. [उप+नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्]

उपनीतम् प्राप्तसमीपम् (अश्मानं=मेघम्) १.१२१.९. [उप+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

उपन्यसादि अ०—समीपं निषाद्येत ४.६.२. [उप+नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

उपपतिम् यः पत्युः समीपे वर्त्तते तम् (अन्यपतिम्) ३०.९. [उप-पतिपदयोः समासः]

उपपर्चनम् उपसम्बन्धः ६.२८.८. [उप+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्भावे ल्युट्]

उपपृक् उप सामीप्यं पृङ्क्ते स्पृशति यः सः (अहिः=मेघः) १.३२.५. [उप+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः क्विप् । उपपृक् उपपर्चनः नि० ६.१८.]

उपपृङ्ग्धि सम्बधान २.२४.१५. [उप+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लोट्]

उपपृच्यताम् उपसम्बध्यताम् ६.२८.८. [उप+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः कर्मणि लोट्]

उपप्रक्षे समीपतया सम्पर्के ५.४७.९. [उप+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

उपप्रयन् सामीप्यङ्गच्छन् (सेनापतिः) १.१०३.४. **उपप्रयन्तः**=उत्कृष्टं निष्पादयन्तो जानन्तः (जनाः) ३.११. समीपतया प्राप्नुवन्तः (राजप्रजाजनाः) ४.३९.५. प्रयत्नेनोपायं कुर्वन्तः (मनुष्याः) ७.४४.२. समीपं प्राप्तवन्तः (मनुष्याः) १.७४.१. [उप+प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ]

उपप्रयन्ति समीपं गच्छन्ति ३.१२.७. **उपप्रयन्तु**= प्राप्नुवन्तु, भा०—उपतिष्ठेयुः ३४.५६. [उप+प्र+इण् (अदा०) धातोर्लट्]

उपप्रयाहि समीपतया गच्छाऽऽगच्छ १.८२.६. समीपं प्राप्नुहि १५.५२. [उप+प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्]

उपप्रवहतः अच्छे प्रकार से प्राप्त हो सकते हैं सं० वि० १०५, ५.४१.७. [उप+प्र+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

उपप्रसस्त्रे सम्बन्ध को समीपता से प्राप्त होती है सं० वि० १०४, २.३५.५. [उप+प्र+सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

उपप्राऽगात् समीपतया गच्छतु प्राप्नोतु १.१६२.७. समीपं गच्छति १.१६३.१२. समीपतया प्राप्नुयात् २५.३०. [उप+प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङी' ति गादेशः । 'गातिस्थाघु०' इति सिचो लुक्]

उपप्रेत समीपतया प्राप्नुत ३.५३.११. [उप+प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

उपप्रैत् समीपं प्राप्नोति ५.३०.९. [उप+प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्]

उपबर्बृहत् सामीप्येन भृशमुपबर्हयति ५.६१.५. [उप+बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लङ् । अड-भावश्च]

उपबर्हणीम् सुवर्द्धिकाम् (क्षां=भूमिम्) १.१७४.७. [उप+बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्ल्युडन्तान् ङीप् स्त्रियाम्]

उपब्दिः महाशब्दकर्त्ता (विद्वज्जनः) १.७४.७. वाक् प्र०—उपब्दिरिति वाङ्नाम, निघं० १.११, १.१६९.७.

उपब्रवामहै समीपतयोपदिशेम ५.५१.१२. [उप+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो न लुक्]

उपब्रुवते समीपमुपदिशन्ति १.१३४.२. **उपब्रुवे**= समीप्येनोपदिशामि १.१७९.५. समीपमुपदिशेयम् १.१८५.७. उपयोगि वच उपदिशेयम् १.१८८.८. समीपतया कथयामि . ३.३७.५. **उपब्रूते**=समीपमुपदिशेत् १.४०.२. [उप+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट्]

उपभरन्ती उपधरन्ती (स्वसा=भगिनी) २.५.६. [उप+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

उपभूषतम् सामीप्येनाऽलङ्कुरुतम् ३३.८८. [उप+भूष अलङ्कारे (भ्वा) धातोर्लोट्]

उपभृत् योपगतं बिभर्त्यनया हस्तक्रियया सा घृताची=होमक्रिया) २.६. [उप+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः स्त्रियां सम्पदादित्वात् क्विप् । ह्रस्वस्य तुगागमः । अथेदमन्तरिक्षमुपभृत् श० १.३.२.४. अन्तरिक्षमुपभृत् तै० ३.३.१.२. सावित्र्युपभृत् तै० ३.३.७.६. उपभृत् सव्यः (हस्तः) तै० ३.३.१.५. अत्तैव जुहूराद्य उपभृत् श० १.३.१.११.]

उपभ्राजन्ते समीपं प्रकाशन्ते ७.५५.२. [उप+भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

उपमदन्ति समीपतया कामयन्ते, भा०—सिद्धकामा भवन्ति २५.३०. [उप+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन शप्]

उपमन्थितारम् समीपे विलोडितारम् (दुर्जनम्) ३०.१२. [उप-मन्थ विलोडने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

उपमन्युम् उप समीपे मन्तुं योग्यम् (कारुं=शिल्पकार्यकर्त्तृजनम्) १.१०२.९. [उप-मन्युपदयोः समासः । मन्युः=मन ज्ञाने (दिवा०) धातोरौणादिको युच् । मन्युरिति क्रोधनाम निघं० २.१३. पदनाम निघं० ५.४.]

उपमम् उपमाम् ५.६४.४. उपमानम् १.११०.५. दृष्टान्तस्वरूपम् १.६१.३. उपमेयसाधकतमम् (अर्कं=धनधान्यम्) ७.४०.७. येनोपमीयते तम् (अर्कं=सत्कर्त्तव्यमन्नं विचारं वा) ७.३९.७. उपमायुक्तम् (नाम) ५.३.३. येनोपमिमीते तम् (केतुं=प्रज्ञाम्) ७.३०.३. [वस्तुतः उपगतेन स्तुतम् १.११०.५. उपमे अन्तिकनाम निघं० २.१६. उप+मा माने (अदा०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' सूत्रेण कः]

उपमर्मृजन्त अत्यन्तं मार्जयन्तु शोधयन्तु १.१३५.५. [उप+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छान्दसं रूपम्]

उपमश्रवस्तमम् उपमीयते येन तच्छ्रवस्तदतिशयितम्

(परमेश्वरम्) २.२३.१. [उपम-श्रवस्पदयोः समासः। ततोऽतिशायने तमप्]

उपमस्य उपमा विद्यते यस्य तस्य (राज्ञः) ४.४२.१. उपमायुक्तस्य (कृष्टेः=मनुष्यस्य) ४.४२.२ [उपमप्राति॰ मत्वर्थीयप्रत्ययस्य लुक्]

उपमस्याम् उपमायाम्, प्र॰—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति स्याडागमः १.१४५.५. [उपमप्राति॰ सप्तमी। उपमम् इति व्याख्यातम्]

उपमा उपमीयतेऽनयेति दृष्टान्तः १.३१.१५. दृष्टान्तः १.१२४.२. सब व्यवहारों में उपयुक्त अन्तरिक्षादि आर्याभि॰ २.२८, १३.३. **उपमाः**=उपमिमते याभिस्ताः (भा॰—दृष्टान्ताः) १३.३. [उप+मा माने (अदा॰) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' अ॰ ३.३.१०६. सूत्रेण स्त्रियाम् अङ्]

उपमातयः उपमाः ४.२३.३. **उपमातिः**=उपमानम् ४.४३.४. [उप+मा माने (अदा॰) धातोर्बाहुलकादौणादिकस् तिः प्रत्ययः]

उपमातिवनिः उपमातेर्विभाजकः (अहिः=मेघः) ५.४१.१६. [उपमाति-वनिपदयोः समासः। उपमातिः= उप+मा माने+तिः। वनिः=वन सम्भक्तौ (भ्वा॰) धातोर्बाहुलकादौणादिकः 'इः' प्रत्ययः]

उपमादम् य उपमां ददाति तम् (अग्नि=पावकम्) ३.५.५. [उपमोपपदे डुदाञ् दाने (जु॰) धातोः कः प्रत्ययः]

उपमासि प्रापयसि १.६२.७. परिमिमीषे १.१४२.२. **उपमाहि**=उपमन्यस्व ४.२२.१०. [उप+मा माने (अदा॰) धातोर्लट् लोट् च]

उपमित् य उपमिनोति सः (रोधः=रोधनम्) ४.५.१. य उप=समीपे मिनोति प्रक्षिपति सः १.५६.१. [उप+डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा॰) धातोः क्विप्। ह्रस्वस्य तुगागमः]

उपमिताम् सब प्रकार की उत्तम उपमायुक्त (शाला) को सं॰ वि॰ १६६, अथर्व॰ ९.३.१. [उप+मा माने (अदा॰) धातोः क्तः। 'द्यतिस्यतिमा॰' इतीकारादेशः]

उपमिमीहि उत्कृष्टतया मान्यं कुरु ७.१९.११. उपमितान् कुरु १.८४.२०. [उप+माङ् माने शब्दे च (जु॰) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

उपयच्छामि उत्कर्षेण गृह्णामि ३८.६. [उप+यमु उपरमे (भ्वा॰) धातोर्लट्। 'इषुगमियमां छ' इति छकारादेशः]

उपयन्तम् समीपं प्राप्नुवन्तम् (अध्यापकम्) २.३३.१२. [उप+इण् गतौ (अदा॰) धातोः शतृ]

उपयन्ति समीपतया प्राप्नुवन्ति १.८३.२. **उपयन्तु**= समीपं प्राप्नुवन्तु ३.४. समीपं गमयन्तु ५.६२.४. [उप+ इण् गतौ (अदा॰) धातोर्लट्]

उपया अधर्मी के समीप रहने वाले उसके सहायक को, आर्याभि॰ १.२९.

उपयात समीपतया प्राप्नुत ४.३५.१. **उपयातम्**= समीपं प्राप्नुतम् ३.२५.४. उपाऽऽप्नुतः २.३९.८. **उपयाति**=समीपं गच्छति ७.१.१२. **उपयाथः**=समीपं प्राप्नुतः १.१८३.१. समीपतया प्राप्नुथः १.१८२.२ [उप+या प्रापणे (अदा॰) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्]

उपयामगृहीतः अध्यापननियमैः स्वीकृतः (सुताऽध्येता) ७.३३. सुनियमैर्गृहीताऽन्तःकरणः (विद्वज्जनः) २६.६. सुनियमैर्निगृहीताऽऽत्मा २६.५. सुनियमैरधीतविद्य भा॰—सुशिक्षितः (इन्द्रः=सेनापतिः) ७.२२. सर्वनियमोपनियमसामग्रीसहितः (मुख्यसभासद्) ७.३६. यमानां समूहो यामम्, उपगतं च तद् यामं चोपयामम्, उपयामेन गृहीत उपयामगृहीतः परमेश्वरः ७.२५. सेनासु नियमस्वीकृतः (इन्द्रः=सेनापतिः) ७.३७. यमनियमादिभिर्योगाङ्गैः साक्षात् स्वीकृतः (इन्द्रः=ईश्वरः) ७.४०. सेनादिसामग्रीसंगृहीतः (इन्द्रः=सेनापतिः) ८.४४. भा॰—यमादिसाधनाऽन्वितः (योगजिज्ञासुर्जनः) ७.८. योगाऽभ्यासेन स्वीकर्त्तुं योग्यः (इन्द्रः=भगवान्) ७.३९. राज्याङ्गैर्युक्तः (शिल्पविधिविज्जनः) ७.१६. राज्यगृहाश्रमसामग्रीसहितः (विद्वान् राजा वा) ९.४. राज्यव्यवहाराय स्वीकृतः (अग्निः=सभापती राजा) ८.३८. राजनियमैः स्वीकृतः (इन्द्रः=सभासेनापतिः) ७.३८. उपगतैर्यामैर्यमैः स्वीकृतः (जगदीश्वरः) ८.४१. उपगतयमैर्विदितः (ईश्वरः) २६.३. उपयामैर्गृहीतानि जितानि इन्द्रियाणि येन सः (इन्द्रः= विद्वज्जनः) २६.४. उपयामाः सामग्रीगृहीता येन सः (गृहस्थो जनः) ८.३३. उपयामेन सत्कर्मणा योगाभ्यासेन गृहीतः स्वीकृतः (जगदीश्वरः) २३.४. यो यामैर्यमसम्बन्धिभिः कर्मभिरुप समीपे गृहीतः साक्षात्कृतः (भगवान्) २३.२. कर्षकादिभिः स्वीकृतः (राजपुरुषः) १९.६. उपयामैरुत्तमनियमैः सङ्गृहीतः, भा॰—शिक्षितः (विद्वान्) २०.३३. उपगतैर्धर्म्यैर्यामैर्यमसम्बन्धिभिर्नियमैर्गृहीतः संयुतः (राजप्रजाजनः) १९.८. उपयामैः प्रजाराजजनैः स्वीकृतः (इन्द्र =सम्राट्) ९.२. उपगतैर्यामानामिमैः सेवकैः पुरुषैः स्वीकृतः (इन्द्रः=सम्राट्) ९.२.

साङ्गोपाङ्गसाधनैः (स्वीकृतः) (अध्यापकः) ८.४७. शास्त्रनियमोपनियमा गृहीता येन सः (कुमारब्रह्मचारी) ८.१. उपयामेन विवाहनियमेन गृहीतः (गृहपतिः) ८.७. उपयामाय गृहाश्रमाय गृहीतः (गृहपतिः) ८.११. साधनोपसाधनैः स्वीकृतः (इन्द्रः=राजा) ६.३. ब्रह्मचर्यनियमैः स्वीकृतः (अङ्गः=राजा) १०.३२. उपनियमैः स्वीकृतः (योगमभीप्सुः) ७.११. उपात्तैर्गृहीतः, भा०—यमादिभिर्योगाङ्गैर्निरुद्धचित्तः (योगजिज्ञासुः) ७.४. उपयामाः शौचादयो नियमा गृहीता येन सः (योगी) ८.१२. विनयादिराजगुणैर्युक्तः (सभापती राजा उपदेशको वा) ७.२०. विद्याविचारसंयुक्तः (विद्वज्जनः) २६.८. [यामः=यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर् अच् । ततः समूहार्थेऽण्, तस्येदमर्थेऽण् वा । उप-यामपदयोः समासे ततः उपयामगृहीतपदयोः समासः । गृहीतः=ग्रहउपादाने (क्र्या०)+क्तः]

उपयामम् उपगतं नियमम् २५.२. [उप-यामपदयोः समासः । यामः=यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्घञ् 'यमः समुपनिविषु च' इति सूत्रेण । इयं (पृथिवी) वाऽउपयाम इयं वा इदमन्नाद्यमुपयच्छति पशुभ्यो मनुष्येभ्यो वनस्पतिभ्यः श० ४.१.२.८.]

उपयासत् उपागच्छेत् ५.४०.४. [उप+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लेट् सिब्विकरणः]

उपयाहि उपगतं प्राप्नुहि ८.२०. उपाऽऽगच्छ ३.६०.७ समीपं प्राप्नुहि १.१३५.१. समीपं गच्छ प्राप्नुहि वा १.८२.५. [उप+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्]

उपयुज्महे समादधीमहि, प्र०—अत्र बहुलं छन्दसि इति श्यनो लुक् १.१६५.५. [उप+युज समाधौ (दिवा०) धातोर्लट् । श्यनो लुक्]

उपयुञ्जाथे नियुक्तौ भवतः १.१५१.४. [उप+युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लट्]

उपरताति उपरतातौ पलैः मेघाऽस्त्रादिभिः योद्धव्ये सङ्ग्रामे ७.४८.३. उपराणां मेघानामवकाशवत्यन्तरिक्षे १.१५१.५. [उपर इति मेघनाम निघं० १.१०. उपरो मेघो भवति । उपरमन्तेऽस्मिन्नभ्राणि । उपरता आप इति वा नि० २.२१.]

उपरम् मेघम् १.६२.५. मेघमिव प्र०—उपरमिति मेघनाम निघं० १.१०, ५.३१.११. **उपराः**=समीपे रममाणाः (किरणाः) ५.२६.५. **उपरेण**=उत्कृष्टनियमेन ६.२. [उपर इति मेघनाम निघं० १.१०. आ उपर उपल इत्येताभ्यां साधारणानि पर्वतनामभिः (उपर शब्दो मेघपर्वतयोर्वाचक इत्यर्थः) उपर उपलो मेघो भवति, उपरमन्तेऽस्मिन्नभ्राणि, उपरता आप इति वा नि० २.२२.]

उपरा मेघ इव १.५४.७. समीपस्था दिक् १.१६७.३. **उपरासु**=श्रेष्ठासु (मनुष्यादिप्रजासु) ४.३७.३. दिक्षु, प्र०—उपरा इति दिङ्नाम निघं० १.६, १.१२७.५. [उपरा इति दिङ्नाम निघं० १.६.]

उपरासत् उपदद्यात् ६.५०.६. [उप+रासति दानकर्मा (निघं० ३.२०.) धातोर्लेट्]

उपरासः वानप्रस्थ संन्यास । श्रममाप्ता गृहाश्रमभोगेभ्य उपरताः (पितरः=प्रजाशोधका वृद्धा जनाः) १६.६८. [उप+रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' अ० ३.२.१०१. सूत्रेण डः प्रत्ययः । प्रथमाबहुवचने च जस्यसुगागमे रूपम्]

उपरि ऊर्ध्वं वर्त्तमानम् (द्यां=प्रकाशम्) ४.३१.१५. ऊर्ध्वमुत्कृष्टे व्यवहारे १८.४४. उत्कर्षे ३३.८५. सर्वोपरि विराजमाना (मतिः=प्रज्ञा) १३.५८. ['उपर्युपरिष्टात्' अ० ५.३.३१. सूत्रेण ऊर्ध्वस्योपभावो रिल् च प्रत्ययो निपात्यते । दिग्देशकालेषु]

उपरिप्रुता उपरि प्रवते यस्तेन (भङ्गेन=मर्दनेन) ७.३. [उपर्युपपदे प्रुङ् गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । ह्रस्वस्य तुगागमे तृतीयायां रूपम्]

उपरिष्टात् ऊर्ध्वात् ३७.१२. ['उपर्युपरिष्टात्' अ० ५.३.३१. सूत्रेण दिग्देशकालेषु वर्त्तमानस्योर्ध्वस्योपभावो रिष्टातिल् च निपात्यते]

उपरिसदः ये उपरि उत्कृष्ट आसने व्यवहारे वा सीदन्ति ते (देवाः=आयुर्वेदविदो विद्वांसः) ६.३६. **उपरिसद्भ्यः**=सर्वोपरि विराजमानेभ्यः (देवेभ्यः=विद्वद्वरेभ्यः) ६.३५. [उपर्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः]

उपरिस्पृशम् य उपरि स्पृशति तम् (अधिराजानं=राजानम्) ३४.४६. [उपर्युपपदे स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः क्विप्]

उपरेण उत्कृष्टनियमेन ६.२.

उपलान् मेघान्, प्र०—उपल इति मेघनाम, निघं० १.१०, २५.८. [उपल इति (मेघपर्वतयोर्नामि) । आ उपर उपल इत्येताभ्यां साधारणानि पर्वतनामभिः नि २.२२.]

उपवक्ता उपदेशकानामुपदेशकः (विद्वज्जनः) ४.६.५. [उप+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोस्तृच् । 'ब्रुवो

वचि' रिति वचिरादेशः]

उपवक्तेव यथोपवक्ता तथा (सविता=सूर्य इव राजा) ६.७१.५. [उपवक्तृ-इवपदयोः समासः]

उपवक्षतः समीपं वहतः, अ०—उपगतं वहतः प्रापयतः, प्र०—अत्र लडर्थे लेट् १.१६.२. [उप+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लेट्। 'सिब् बहुलं लेटी' ति सिप्]

उपवसुम् उप समीपे वसूनि यस्यां ताम् (स्वस्तिं=सुखम्) ६.५६.६. [उप-वसुपदयोः समासः। वसुरिति धननाम निघं० २.१०.]

उपवहतः समीपतया प्राप्नुतः १.८४.२. **उपवहन्तु**=समीपं प्राप्नुवन्तु १.४६.१. [उप+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट् लोट् च]

उपवाकम् उपगता वाग् यस्मिँस्तम् (सूर्यम्) १.१६४.८. **उपवाकाः**=उपगताः प्राप्ता यवाः १९.२२. **उपवाकैः**=उपनयन्ति यैस्तैः (कर्मभिः) १९.९०.

उपवाकाभिः उपदेशक्रियाभिः २१.३०. उपगताभिर्वाग्भिः २१.३१. [यच्छ्लेष्माणस्ता उपवाका (अभवन्) श० १२.७.१.३.]

उपवाच्यः उपवक्तुं योग्यः (इन्द्रः=सूर्यः) १.१३२.२. उपदेशनीयः (सविता=सर्वैश्वर्यप्रद ईश्वरः) ४.५४.१. [उप+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्ण्यत् प्रत्ययः]

उपविष्टाय य उपविशति तस्मै (जनाय) २२.७. [उप+विश प्रवेशे (तुदा०) धातोः क्तो बाहुलकादौणादिकः]

उपवीतिने प्रशस्तमुपवीतं यज्ञोपवीतं विद्यते यस्य तस्मै, भा०—यज्ञोपवीतधारकाय (सेनाधीशाय) १६.१७. [उपवीतप्राति० मत्वर्थे इनिः। उपवीतम्=उप+वी गतिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोः क्तः संज्ञायां 'क्तिच् क्तौ च संज्ञायाम्' अ० ३.३.१७४. सूत्रेण]

उपवेतु उत्कृष्टतया व्याप्नोतु ५.११.४ [उप+वी गतिप्रजनकान्त्यसनखादेनपु (अदा०) धातोर्लोट्]

उपवोचन्त उपगतमुपदिशन्तु १.१२७.७. **उपवोचे**=समीपमुपदिशेयम् ४.४९.४. [उप+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लुङ्। अडभावो व्यत्ययेनात्मनेपदश्च]

उपशाकेभिः उपशक्यन्तै यैः कर्मभिस्तैः प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति भिस ऐस् न १.३३.४. [उप+शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्घञ्]

उपशिक्षति उत्कृष्टतया विद्यां ददाति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ६.२८.२. **उपशिक्षन्ति**=समीपतया शिक्षां प्रददति १.१७३.१०. [उप+शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन परस्मैपदश्च]

उपशिक्षन् उपगतां विद्यां ग्राहयन् (ब्रह्मा=चतुर्वेदविज्जनः) ५.४०.८. [उप+शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

उपशिक्षायै उपवेदादिविद्योपादानाय, भा०—परीक्षादानाय ३०.१०. [उप+शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोः 'गुरोश्च हल' इति स्त्रियाम् अङ्]

उपशिश्रियाणाः ये उपश्रयन्ति ते (मरुतः=बलिष्ठा योद्धृजनाः) ७.५६.१३. [उप+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोश्छन्दसि लिट्। 'लिटः कानज्वा' इति कानच्]

उपशृणवत् समीपतया शृणुयात् १७.९०. [उप+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः शतृ। 'श्रुवः शृ चे' ति श्नुः शृ आदेशश्च]

उपशृण्वन्ति सामीप्येन शृण्वन्ति १२.९४. [उप+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लट्। 'श्रुवः शृ चे' ति श्नु, शृ आदेशश्च]

उपशेषे सन्तानोत्पादनाय ऋ० भू० २११. [शेष इत्यपत्यनाम निघं० २.२.]

उपश्रवत् समीपं शृणुयात् ६.५०.६. [उप+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लेट्। छान्दसत्वात् 'श्रुवः शृ च' इति श्नुर्न भवति]

उपश्रिताः उपश्लेषतया श्रिताः कण्ठा येषान्ते (रुद्राः=जीवा वायवो वा) १६.५६. [उप्+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः]

उपश्रुतिम् उपगतां श्रूयमाणाम् (गिरां=वाचम्) ८.३४. उपयुक्तां श्रुतिं श्रवणम् १.१०.३. [उप+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः क्तिन्]

उपश्रोता य उपद्रष्टा सञ्छृणोति (उपदेशको जनः) ७.२३.१. [उप+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोस्तृच्। वायुर्वा उपश्रोता गो० उ० ४.९. वायुरुपश्रोता तै० ३.७.५.४.]

उपश्वासय उपप्राणय ६.४७.२९. [उप+श्वस प्राणने (अदा०) धातोर्णिचि लोटि च रूपम्]

उपसचन्ते समीपं समवयन्ति १.१९०.२. [उप+षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

उपसत्ता उपसीदन् (अग्निः=विनयप्रकाशितो राजा) २७.४. य उपसीदति सः (अग्निः=विद्वज्जनः) २७.२. [उप+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

उपसदम् यः समीपे सीदति तम् (पुरुषम्) ३०.९.

उपसीदन्ति यस्यां तां वेदीम् २.६.१. **उपसदाम्**=य उपसीदन्ति तेषामतिथीनाम् १६.१४. [उप+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। ते (देवाः) एताभिरुपसद्भिरुपासीदंस्तद् यदुपासीदंस्तस्मादुपसदो नाम श० ३.४.४.४. ऋतव उपसदः श० १०.२.५.७. मासा उपसदः १०.२.५.६. अर्धमासा उपसदः श० १०.२.५.५. अहोरात्राणि वा ऽउपसदः श० १०.२.५.४. इमे लोका उपसदः श० १०.२.५.८. एतदु यज्ञे तपः। यदुपसदः, तपो वा ऽउपसदः श० १०.२.५.३. तपो ह्युपसदः श० ३.६.२.११. ग्रीवा वै यज्ञस्योपसदः श० ३.४.४.१. वज्रा वा ऽउपसदः श० १०.२.५.२. जितयो वै नामैता यदुपसदः ऐ० १.२४. ता (उपसदः) वा ऽज्यहविषो भवन्ति श० ३.४.४.६. इषुं वा एतां देवाः समस्कुर्वत यदुपसदस्तस्याग्निरनीकमासीत्, सोमः शल्यो विष्णुस्तेजनं वरुणः पर्णानि ऐ० १.२५.]

उपसदेम समीपं प्राप्नुयाम ६.७५.८. [उप+षद्लृविशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिङ्। छान्दसत्वात् सीदादेशो न भवति]

उपसद्य सामीप्यं प्राप्य १८.७५. [उप+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

उपसद्यः समाश्रयितुं योग्यः (परमेश्वरः) ऋ० भू० २२२. प्राप्तुं योग्यः (न्यायाधीशो राजा) २.२३.१३. समीप जाने और शरण लेने योग्य (सभापति राजा) स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. **उपसद्याय**=समीपे स्थापयितुं योग्याय (यतिरूपायाऽतिथये) ७.१५.१. [उप+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर् ण्यत्। छान्दसत्वाद् वृद्धिर्न भवति]

उपसन्नमन्तु समीप प्राप्त होकर नम्र होवें सं० वि० १९०, अथर्व० १६.४१.१. यथावत् सत्कार किया करें सं० वि० १९८, अथर्व० १६.४१.१. [उप+सम्+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपसंप्रयात समीपं सम्यक् प्राप्नुत १५.५३. [उप+ सम्+प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्]

उपसि समीपे ५.४३.७. [उपसि उपस्थे नि० ६.६.]

उपसीदन् समीपतया तिष्ठन्ति १.७२.५. समीपतयाऽवतिष्ठन्ते १.६५.१. [उप+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः। शिति सीदादेशः]

उपसृज उत्कृष्टतयोत्पादय ३.४.१०. उत्कर्षेण निर्मिमीहि ६.३६.४. **उपसृजन्ति**=समीपतया ददते २.१.१६. समीपं प्रयच्छन्ति २.२.१३. [उप+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लोट्]

उपसृजन् समीपं प्रापयन्निव (गृहस्थो जन इव) ८.५१. [उप+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः शतृ]

उपसेक्तारम् उपसेचनकर्त्तारम् (पुरुषम्) ३०.१२. [उप+षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

उपसेदिम समीपतया प्राप्नुयाम १.८९.२. उपतिष्ठेम ५.८.४. **उपसेदुः**=उपसीदन्ति ७.३३.६. [उप+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्। उपसेदिम= उपसीदेम नि० १२.३६.]

उपस्तभायत् उपस्तभ्नीयात् ४.५.१. [उप+स्तम्भु स्तम्भनार्थे सौत्रो धातुः, तस्य णिचि लेटि च रूपम्। मकारलोपश्छान्दसः]

उपस्तयः ये उप समीपे स्त्यायन्ति संघ्नन्ति ते (वैद्याः) प्र०—अत्रोपपूर्वात् 'स्त्यै संघाते' इत्यस्मादौणादिकः क्विप् सम्प्रसारणं च १२.१०१. **उपस्तिः**=संहतिः (मित्रजनः) १२.१०१. [उप+ष्ट्यै शब्दसंघातयोः (भ्वा०) धातोरौणादिकः क्विप्, सम्प्रसारणं पूर्वरूपे च रूपम्]

उपस्तिरे उपस्तृणामि, प्र०=अत्र 'वाच्छन्दसि' इति रेफादेशः २.३१.५. [उप+स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

उपस्तिरे आस्तरणे ५.८५.१. संस्तराय ४.३३.१.

उपस्तुतम् उपगतैर्गुणैः प्रशंसितम् (सद्वैद्यम्) १.११२.१५. य उपगतैर्गुणैः स्तूयते तम् (सुवीर्यं=सुबलम्) १.३६.१७. **उपस्तुतः**=समीपे प्रशंसितः (इन्द्रः=राजा) ७.२७.३. उपगतः स्तौति स उपस्तुतो विद्वान् प्र०—अत्र स्तुधातोर्बाहुलकादौणादिकः क्तः प्रत्ययः १.३६.१०. **उपस्तुताः**=उपगतेन स्तुताः (ऋभवः=मेधाविनो जनाः) १.११०.५. [उप+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः]

उपस्तुता उपगतप्रशंसया कीर्त्तितौ (अश्विना=स्त्रीपुरुषौ) ५.७६.२. उपगतैर्गुणैः प्रशंसितौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१३६.१. [उप+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः। 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारः]

उपस्तुतिम् उपगतां प्रशंसाम् १.१४८.२. उपमितां प्रशंसाम् ४.५६.५. **उपस्तुतिः**=उपगता चाऽसौ स्तुतिः १.१५८.४. **उपस्तुत्या**=ययोपस्तौति तया (वाचा) ६.६१.१३. समीपेन स्तुत्या २१.४६. [उप+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

उपस्तुते उप समीपे प्रशंसिते (द्यावापृथिवी=सूर्य-

भूमी) २.३२.१. [उप+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः]

उपस्तुतौ निकटे प्रशंसितौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.८१.७. [उप+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः]

उपस्तुत्यम् उपस्तोतुमर्हम्(कर्माङ्गमग्निम्)१.१६३.१. उपगतस्तुतिविषयम्, भा० सर्वं प्रशंसितम् (कर्म) २६.१२. समीपे प्रशंसनीयम् (उक्थ्यं कर्म) १.१३६.२. [उप+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः 'एतिस्तुशास्वृदृजुषः क्यप्' अ० ३.१.१०६. सूत्रेण क्यप्]

उपस्तुहि सामीप्येन प्रकाशय १.१२.७. समीपतया प्रशंस २.८.१. समीपतया प्रशंसय १.२२.६. [उप+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

उपस्तृणन्ति आच्छादयन्ति २५.३६. बिछौने आदि करते हैं सं० वि० २०६, अथर्व० ९.६.८. [उप+स्तृञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्लट्]

उपस्तृणीषणि उपाऽऽच्छादनीयम् (ऐश्वर्यम्) ६.४४.६.]

उपस्तोषाम समीपतया प्रशंसेम ६.५५.४. [उप+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लोट् । उपस्तोषाम उपस्तुमः नि० ८.७.]

उपस्थम् समीपस्थम् (वायुम्) २.३५.६. उपतिष्ठन्ति यस्मिँस्तम् (सज्जनम्) २.४१.२१. **उपस्थे**=कर्त्तृणां समीपस्थे देशे १.९५.५. उत्सर्गे १.११७.५. स्वाङ्के ११.५७. समीपे स्थातव्ये व्यवहारे १.१०६.३. अङ्के १.१८५.५. उत्सङ्गे १२.३९. गोद में आर्याभि० १.२७, ऋ० ५.३.२७.२५. उपतिष्ठन्ति यस्मिँस्तस्मिन् प्र०—अत्र 'घञर्थे कविधानम् स्था०' अ० ३.३.५८. इति वार्त्तिकेनाऽधिकरणकारके कः प्रत्ययः १.३१.६. समीपे स्थापयितव्ये व्यवहारे १.१०६.३. सामीप्ये ११.२१. **उपस्थात्**=यः समीपे तिष्ठति तस्मात् (यानात्) ६.६२.६. समीपात् ३.३३.१. समीपस्थव्यवहारात् १.९५.४. **उपस्था**=उपतिष्ठन्ति यस्मिँस्तत्र १.३५.६. क्रोडे तिष्ठति सा (उषा) १.१२४.५. [उपस्थे उपस्थाने नि० ७.२६. उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम् । स्थास्नापाव्यधिहनियुध्यर्थम्' अ० ३.३.५८. वा० सूत्रेणाधिकरणे कः प्रत्ययः]

उपस्थात् उपतिष्ठते २.३.१०. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

उपस्थाय सामीप्यं प्राप्य ३.४८.३. यथावत् जान कर उपस्थित निकट प्राप्त होकर आर्याभि० २.१०, ३२.११. पठित्वा संसेव्य वा, भा०—सम्पाद्य लब्ध्वा ३२.११. उपगतो भूत्वा विदित्वा च ऋ० भू० ८९. समीप स्थित होकर सं० वि० २१५, ३२.११. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

उपस्थायम् अभिक्षणमुपस्थातुम् १.१४५.४. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'आभीक्ष्ण्ये णमुल् च' अ० ३.४.२२. इति णमुल्]

उपस्थावराभ्यः उपस्थिताभ्योऽवराभ्यो निकृष्टक्रियाभ्यः ३०.१६. [उपस्था-अवरापदयोः समासः । उपस्थ इति व्याख्यातम्]

उपस्थिताय प्राप्तसमीपत्वाय (पदार्थाय) २२.७. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः । 'द्यतिस्यतिमा०' इतीकारादेशः]

उपस्थुः उपतिष्ठन्तु ७.१८.३. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

उपस्थेयाम उपतिष्ठेम ६.४७.८. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोराशिषि लिङि 'लिङ्याशिष्यङ्' अ० ३.१.८६. सूत्रेणाङिकृते 'छन्दस्युभयथा' अ० ३.४.११७. सूत्रेण सार्वधातुकत्वादियादेशः]

उपस्थेषम् उपपत्सीय, प्र०—अत्र 'लिङ्याशिष्यङ्' इत्यङि कृते 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकत्वादियादेश आर्धधातुकत्वात् सकारलोपो न भवति २.८.

उपस्रवन्तु प्राप्नुवन्तु ३५.२०. [उप+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपहत्नुम् य उपहन्ति तम् (वीरपुरुषम्) २.३३.११. [उप+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृहनिभ्यां क्त्नुः' उ० ३.३०. इति क्त्नुः प्रत्ययः]

उपहरति स्वीकार करता है सं० वि० २१०, अथर्व० ९.६.१२. [उप+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपहिन्वन्तु सामीप्येन प्रीणयन्ति सेधयन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२३.१७. [उप+हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्लोट् । हिनोत इति पदनाम निघं० ४.३.]

उपहूतस्य समीपमाहूतस्य (पयसः=उदकस्य दुग्धस्य वा) ३८.२८. सत्कारेणाऽऽहूतोपस्थितस्य (वीरगृहपतेः) ८.१२. **उपहूतः**=सम्मानित उपस्थितः (वीरगृहपतिः) ८.१२. सत्कृत्याऽऽहूतः (जनः) २०.३५. उप समीपे कृताऽऽह्वानः (विद्वज्जनः) ३८.२८. समीपं सम्यक्

प्रापितः (कीलालः=उत्तमान्नादिपदार्थसमूहः) ३.४३. कृतोपह्वानः, अ०—स्पर्द्धितः सन् (पिता=पालनहेतुः सूर्यलोकः) २.११. [उप+ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तः। यजादित्वात् किति सम्प्रसारणे पूर्वरूपे 'हलः' इति दीर्घः]

उपहूता यथावत् स्पर्द्धिता (भारती=वाणी) २९.८. उपहूयते जनै राज्यसुखार्थं या (माता, पृथिवी=विद्या) २.१०. [उपहूत इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

उपहूताः सामीप्यं प्रापिताः (अजाऽवयः) ३.४३. सम्यक् प्राप्ताः (गावः) ऋ० भू० २४०. नियन्त्रिताः (पितरः) ऋ० भू० २६२. सामिप्यमाहूताः (पत्नीः=विदुष्यः स्त्रियः) ६.३४. समीपस्थाः (अजाऽवयः) सं० वि० १४७, ३.४३. [उपहूत इति व्याख्यातम्। तस्य प्रथमाबहुवचने रूपम्]

उपह्वयताम् उपह्वयति, अ०—स्वीकरोतु, प्र०—अत्र व्यत्ययेन लडर्थे लोट् २.११. उपगतं स्पर्धतामुपदिशताम् २.१०. **उपह्वयामहे**=समीपं शब्दयामहे ३.४२. हम प्रशंसा करते और प्रीति से समीपस्थ बुलाते हैं सं० वि० १४६, ३.४२. **उपह्वये**=सामीप्येन स्वीकुर्वे १.२१.१. समीपं गन्तुं स्पर्द्धे १.१३.८. सामीप्येन सम्यक् स्पर्द्धे १.१३.१०. उपगम्य स्वीकुर्वे १.२३.१८. निकटमाह्वये १.१३.१२. उपगतभोगद्योतनाय उपतापये, अ०—उपगम्योपतापये १.१३.३. उपयोक्तुं स्वीकुर्वे १.२२.१२. उपस्तुयाम् २२.१३. सामीप्येन स्वीकरोमि १.१६४.२६. समीपतया स्पर्द्धे १.१३.७. [उप+ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपह्वरे उपह्वरन्ति कुटिलयन्ति येन तस्मिन् व्यवहारे, प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इति करणे अच् १.६२.६. निकट २६.१५. **उपह्वरेषु**=उपस्थितेषु कुटिलेषु मार्गेषु १.८७.२. [उप+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः 'कृतो बहुलम्' अ० ३.३.११३. वा० सूत्रेण करणेऽच्]

उपाकयोः समीपस्थयोः सेनयोः १.८१.४. **उपाके**=समीपे ७.४२.३. समीपं वर्त्तमाने (उषसौ=रात्र्यहनी) प्र०—उपाके इति अन्तिकनाम, निघं० २.१६, ३.४.६. परस्परमसन्निहितवर्त्तमाने (रात्रिदिने) १.१४२.७. सन्निहिते, भा०—परस्परेण कालेन सह वर्त्तमाने सम्बद्धे (उषासानक्ता=रात्रिदिने २९.३१. [उपाके उपक्रान्ते नि० ८.११. अन्तिकनाम निघं० २.१६.]

उपाकरम् उपाकरोमि १.११४.९. [उप+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ्। 'कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि' अ० ३.१.५९. सूत्रेण च्लेरङ्]

उपाकृधि उपाकुरु १७.६. [उप+आङ्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट्। 'श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि' अ० ६.४.१०२. सूत्रेण हेर्धिरादेशः। विकरणव्यत्ययेन शप्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

उपागच्छतम् समीपं प्राप्नुतम् १.४७.३. [उप+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपाऽऽगच्छतम् उपगतं समन्ताद् गमयतः, प्र०—अत्र लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२१.४. [उप+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपागतम् समीपतयाऽऽगच्छतम्, प्र०—अत्र 'गम्लृ गतौ' इत्यस्माद् 'बहुलं छन्दसि' अ० २.४.७३. इति शपो लुकि सति शित्वाऽभावाच्छस्याऽभावः 'अनुदात्तोपदेश०' अ० ६.४.३७. इत्यादिना मलोपश्च ७.८. समीपमागच्छतः, प्र०—अत्र लोट्-मध्यम-द्विवचनम् १.२.४. समीपं समन्तात् प्राप्नुतम् ३३.५६. [उप+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। छान्दसत्वाच्छपो लुकि छकारादेशो न भवति। मकारलोपश्च]

उपागन्तम् समीपतया सम्यक् प्राप्नुतम् १.१३७.१. [उप+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। शपो लुकि छत्वमपि न]

उपागन्म प्राप्नुयाम ६.१६.३८. [उप+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। शपो लुकि छत्वाऽभावे 'म्वोश्चे' ति नकारादेशः]

उपागमन्तु समीपं सर्वतो गच्छन्तु १.१०७.२. [उप+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि छत्वमपि न भवति]

उपागहि समीपतयाऽऽगच्छति, अ०—उपागच्छति, प्र०—अत्र शपो लुकि सति 'वाच्छन्दसि' इति हेरपित्वाद् 'अनुदात्तोपदेश०' अ० ६.४.३७. इत्यनुनासिकलोपो लडर्थे लोट् च १.४.२. समीपमागच्छ १७.६. समीपं समन्ताद् गच्छति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् च १.१६.५. उपागच्छ उपागच्छति वा १.९१.१०.[उप+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि छत्वं न भवति। हेरपित्वात् कित्वादनुनासिकलोपः]

उपाऽगाम् समीपं प्राप्नुयाम् ५.४२. **उपाऽगाः**=

सामीप्येन गच्छ ५.३९. [उप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङि' सूत्रेण गादेशे 'गातिस्था०' इति सिचो लुक्]

उपाघ्नत नित्यं घ्नन्ति ऋ० भू० २३८. [उप+आङ्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ् । 'आङो यमहन' इत्यात्मनेपदम्]

उपाचर समीपं समन्तात् प्राप्नुहि १.१८७.३. [उप+आङ्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपाचरत् उपचारिणीव वर्त्तते १.४६.१४. [उप+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

उपाजत समीपतया विजानीत १.१६१.६. [उप+आङ्+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपातंसत् उपभूषयेत्, भा०—प्रशंसयेत् २३.२८. [उप+तसि अलंकारे (चुरा०) धातोर्लङ् । नुमागम आगमशासनस्यानित्यत्वात्]

उपातिष्ठन्त समीपं स्थिरा भवेयुः, प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् १.११.६. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

उपानट् समीपतया समन्ताद् व्याप्नोति १७.८९. [उप+आङ्+नशत् व्याप्तिकर्मा (निघं० २.१८.) धातोर्लङ्]

उपाऽऽयन् उपायन्ति, प्राप्नुवन्ति १३.५१. [उप+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्]

उपायने समीपे प्राप्ते (काले) २.२८.२. [उप+अय गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

उपाऽऽयात उत्कर्षेण समन्तात् प्राप्नुत ४.३४.५. [उप+आङ्+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्]

उपाऽऽयातन समीपं समन्तात्प्राप्नुत ४.३४.६. [उप+आङ्+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट् । तस्य तनपादेशश्छान्दसः]

उपायातम् समीपतया सम्यक् प्राप्नुतम् १.११६.१९. समीपमागच्छतः, उपागच्छतः, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.२.५. उपायातः समीपं समन्तात् प्राप्नुतः, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.२.६. **उपायातु**=समीपमागच्छतु ४.२१.१. **उपायाहि**=समीपं समन्तात्प्राप्नुहि १.१३०.१. समीपतया प्राप्तो भव १.३.५. [उप+आङ्+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट् लङ् वा]

उपावत समीपतया रक्षत ३३.१९. [उप+अव रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपावतुः समीप कामयेताम् १.१६१.१०.

उपावरोह उपवर्त्तस्व ६.२६. **उपावरोहन्तु**=समुपाश्रयन्तु ६.२६. [उप+अव+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपावसि उत्कृष्टतया रक्षसि १२.१०७. [उप+अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्लट्]

उपावसुम् उप समीपे वसूनि यस्यां ताम् (स्वस्ति=सुखम्) ६.५६.६. [उप-वसुपदयोः समासः । संहिताय पूर्वपदस्य दीर्घः]

उपावसृज उत्कर्षेण यथावद् देहि २९.३५. [उप+अव+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लोट्]

उपावसृजन् समीपतया विविधया विद्ययाऽलङ्कुर्वन् (विद्वज्जनः) १.१४२.११. [उप+अव+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

उपावस्रक्षत् उपावसृजेत् २१.४६. [उप+अव+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लुङ् । च्लेः क्सादेशश्छान्दसः । 'सृजिदृशोर्झल्यमकिति' अ० ६.१.५८. सूत्रेणामागमः]

उपावह समीपं समन्ताद् वहति प्रापयति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२२.९. **उपावहन्तु**=सामीप्येनाऽभितः प्राप्नुवन्तु १.४७.८. [उप+आङ्+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपावह्रियमाणः क्रियाकौशलेनोपयोज्यमानः (इन्द्रः=विद्युत्) ८.५६. [उप+अव+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

उपाविधन् समीपं समन्ताद् विदधतु १.१४९.१. [उप+आङ्+वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लङ् । शपो लुक्]

उपावीः उपागत पालक इव, शरणागतस्य रक्षकः (त्वष्टा=सर्वदुःखच्छित् सभापतिः) ६.७. [उप+अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिक ईः प्रत्ययः]

उपावृतः ये भोगा उपावर्त्तन्ते (सुखोपभोगाः) १२.८. [उप+आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः क्विप्]

उपश्रिताः उपश्लेषतया श्रिताः कण्ठा येषान्ते (रुद्राः=जीवा वायवो वा) १६.५६. [उप-श्रितपदयोः समासः । संहितायां पूर्वपदस्य दीर्घः]

उपासते प्राप्य सेवन्ते ३२.१४. अनुशासनं मन्यन्ते ऋ० भू० १०६, स्वीकुर्वन्ति पं० वि० । उपासना करते हैं सं० वि० १८६, १०.१९१.२. यथावत् मानते हैं आर्याभि० २.४८, २५.१३. उपाश्रित होते हैं आर्याभि० २.५३,

३२.१४. उपास्यतया जानन्ति ४०.९. **उपास्महे**=उपासनं कुर्महे ऋ० भू० १६६, अथर्व० १३.४.४७. [उप+आस उपवेशने (अदा०) धातोर्लट्]

उपासदत् उपसीदति ६.५७.२. [उप+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लुङ्। लृदित्त्वाद् अङ्]

उपासीदतम् सामीप्येनाऽभितो गच्छतम् १.४७.८. [उप+आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट्। शिति सीदादेशः]

उपासृजध्वम् उत्कृष्टतया विविधविद्यायुक्तं कुरुत ६.४८.११. [उप+आङ्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

उपासेदिम समीपं समन्तात्प्राप्नुयाम २५.१५. [उप+आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्]

उपास्थात् उपतिष्ठेत् २५.४४. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'गातिस्थाघुपाभूभ्यः०' इति सिचो लुक्]

उपास्थित उपतिष्ठति २.५.६. **उपाऽस्थुः**=उपतिष्ठन्ति ४.४१.९. समीपं प्राप्नुवन्तु ४.४१.८. [उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'अकर्मकाच्चे' त्यात्मनेपदे 'स्थाघ्वोरिच्च' अ० १.२.१७. सूत्रेणेकारान्तादेशः किच्च]

उपांशुः उपगता अंशवो यत्र स उपांशुर्जपः १८.१९. उपगृहीता (जपरूपः) १३.५४. **उपांशोः**=उप सामीप्येऽनिति तस्य (सेनेशस्य) प्र०—अत्राऽनधातोरुः शुगागमश्च ९.३८. [उप-अंशुपदयोः समासः। अंशुः=शमष्टमात्रो भवति। अननाय शम्भवतीति वा नि० २.५. अनिरुक्तं वा ऽउपांशुः श० १.३.५.१०. प्रमाणो वा ऽअस्य (यज्ञस्य) उपांशुः श० ४.१.१.१. अथवा उपांशु प्राण एव कौ० १२.४ यज्ञमुखं वा ऽउपांशु श० ५.२.४.१७. इयं (पृथिवी) ह वा ऽउपांशुः श० ४.१.२.२७.]

उपेतिः उपेयते सुखानि यया सा (नीतिः) १.७६.१. [उप+इण् गतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

उपेतौ प्राप्तौ (पितरा=जनकौ) ३.१८.१. [उप+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः]

उपेमसि समीपं समन्ताद् प्राप्नुमः १.१.७. [उप+इण गतौ (अदा०) धातोर्लट्। 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तत्वम्]

उपेयतुः समीपं प्राप्नुतः ३.२.९.

उपैति समीपतया प्राप्नोति ७.१.६. समीपता से प्राप्त होता है सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.४. [उप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

उपैमसि सामीप्यं सर्वतः प्राप्नुमः वे० भा० नि० उपगम्य समन्तात् प्राप्नुमः, प्र०—अत्र 'इदन्तो मसि' इतीकारादेशः ३.२२. अ०—नित्यमुपाप्नुमः ३.२३. [उप+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्। मस इदन्तता]

उपैमि समीपतया ज्ञातुं प्राप्तुमनुष्ठातुं प्राप्नोमि १.५. समीप प्राप्त होऊं स० प्र० १६४, २०.२४. समीप प्राप्त होता हूँ सं० वि० १८९, २०.२४. **उपैषि**=समीपतया प्राप्नोषि १.५३.७. **उपैहि**=समीप प्राप्त हो स० प्र० १५२, १०.१८.८. [उप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् लोट् च। 'एत्येधत्यूठ्सु' अ० ६.१.८९. सूत्रेण वृद्धिरेकादेशः]

उपो समीपे १.६१.१४. सामीप्ये १.१२४.४.

उपोक्षत (उप+आ+उक्षत) समीपं समन्तात् सिञ्चत १.८७.२. [उप+आङ्+उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

उपोत्थितः समीपे प्रकाशितः (विष्णुः=हिरण्यगर्भः परमेश्वरः) ८.५५. [उप+उत्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः। 'द्यतिस्यतिमास्थाम्०' अ० ७.४.४०. सूत्रेणेकारादेशः। 'उदः स्थास्तम्भोः०' इति पूर्वसवर्णादेशः]

उपोदके उपगतान्युदकानि यस्मिँस्तस्मिन् (लोके) ३५.६. [उप+उदकपदयोः समासः]

उपोप अति सामीप्ये १.१२३.७. सामीप्ये, प्र०—अत्र 'उपर्यध्यधसः सामीप्ये' अ० ८.१.७. इति द्वित्वम् ८.२.

उपोपपृच्यते सामीप्येन सम्बध्यते ३.३४. [उप+पृची सम्पर्के (रुधा०) कर्मणि लट्। उपशब्दस्य द्वित्वं सामीप्ये]

उपोपसश्चसि सामीप्येन प्राप्नोषि, प्र०—सश्चतीति गतिकर्मसु पठितम् निघं० २.१४, ८.२. [उप+सश्चति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्लट्। सामीप्ये उपशब्दस्य द्वित्वम्]

उब्जतम् कुटिलमपहतः, कुटिलं दूरीकुरुतः, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२१.५. **उब्जन्तु**=कुटिलं कुर्वन्तु ६.५२.१. **उब्जः**=हन्याः ४.१९.५. [उब्ज आर्जवे (तुदा०) धातोर्लोट्]

उब्जन् आर्जवं कुर्वन् (इन्द्रः=सूर्यः) १.५२.२. [उब्ज आर्जवे (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

उब्धम् उन्दकम् (दृढज्ञानम्) ४.१.१५.

उभयतः शीर्ष्णी उभयतः शिरोवदुत्तमा गुणा यस्यां सा, भा०—बाह्याभ्यन्तररक्षणाभ्यां सर्वोत्तमा (वाग् विद्युच्च) प्र०—अत्र पञ्चम्या अलुक् ४.१६. [उभयतस्-शिरस्पदयोः समासः । 'शीर्षंश्छन्दसि' अ० ६.१.६०. सूत्रेण शिरसः स्थाने 'शीर्षन्' आदेशः । स्त्रियां ङीप्]

उभयत्र गमनाऽऽगमनयोः ३.५३.५. [उभयसर्वनाम्नः सप्तम्यन्तात् त्रल्]

उभयस्य द्विविधस्य (जगतः स्थातुश्च) ४.५३.६. [उभप्राति० 'उभादुदात्तो नित्यम्' अ० ५.२.४४. सूत्रेणावयवे विहितस्य तयपोऽयजादेशः]

उभया वर्त्तमानेन सह पूर्वाऽपराणि (जन्मकृत्यानि) २.६.७. [उभयप्राति० परस्य जसः स्थाने भूतस्य शेर्लुक् 'शेश्छन्दसि बहुलम्' अ० ६.१.७०. सूत्रेण]

उभयादतः उभयोरध ऊर्ध्वभागयोर्दन्ता येषान्ते (पशवः) ३१.८. उभयतो दन्ता येषान्ते उष्ट्रगर्दभादयः ऋ० भू० १२४. [उभय-दन्तपदयोर्बहुव्रीहौ 'छन्दसि च' अ० ५.४.१४२ सूत्रेण दन्तस्य दतृ-आदेशः । संहितायां पूर्वपदस्य दीर्घः]

उभयासः उभयत्र वर्त्तमानाः (सेनाजनाः) ४.२४.३. [उभयप्राति० प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः]

उभयाहस्ति उभये हस्ताः प्रवर्त्तन्ते यस्मिँस्तत् (राधः=द्रव्यम्) ५.३९.१. [उभय-हस्तपदयोर्बहुव्रीहौ 'द्विदण्ड्यादिभ्यश्च' अ० ५.४.१२८. सूत्रेण समासान्त इच् प्रत्ययः । संहितायां पूर्वस्य दीर्घः । उभयाहस्ति उभाभ्यां हस्ताभ्याम् नि० ४.५.]

उभयाहस्त्या समन्तादुभयत्र हस्तो येषु कर्मसु तानि तेषु साधूनि (वसु=वासस्थानानि) १.८१.७. [उभय-हस्तपदयोर्बहुव्रीहौ समासान्त इच्प्रत्यये कृते 'तत्र साधुर्' इत्यर्थे यत्प्रत्यये जसः स्थानेभूतस्य शेर्लुक्]

उभ्नाः प्रपूर्द्धि, प्र०—अत्र व्यत्ययेन श्ना १.६३.४. [उभ पूरणे (तुदा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन श्नाप्रत्ययः]

उमेभिः रक्षणादिकर्त्तृभिस्सह (देवेभिः=विद्वज्जनैः) ५.५१.१.

उरणम् आच्छादकम् (दुर्जनम्) २.१४.४. [ऋ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेः क्युरुच्च' उ० ५.१७. सूत्रेण क्युः प्रत्ययो धातोरुकारादेशश्च । उरणः=ऊर्णावान् भवति, ऊर्णा पुनर्वृणोतेरूर्णोतेर्वा नि० ५.२१.]

उरवः विशालजघनोरस्काः (पितरः=पालनक्षमा राजपुरुषाः) १९.४६. बहवः (परमाणवः) ५.४७.२. बहुप्रज्ञाः (पूर्णविद्याः परीक्षका जनाः) २.२७.३. बहवः (मरुतः=मनुष्याः) ५.५७.४. **उरवे**=विस्तृताय (मार्गाय) १.१३६.२. [ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः 'महति ह्रस्वश्च' उ० १.३१. सूत्रेण कुः प्रत्ययो नुलोपो ह्रस्वश्च ऊर्णोत्याच्छादयत्यल्पानिति विग्रहः । उरुबहुनाम निघं० ३.१.]

उरः हृदयम्, भा०—अन्तःकरणम् २०.७. वक्षःस्थलम् १.१५८.५. **उरसा**=अन्तःकरणेन ११.३१. [ऋ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेरुच्च' उ० ४.१९५. सूत्रेणासुन् प्रत्ययो धातोरुकारादेशश्च । उरुस्त्रिष्टुप् ष० २.३. उरस्त्रिष्टुभः श० ८.६.२.७.]

उराणम् बहुबलं कुर्वन्तम् (इन्द्रं=सेनेशम्) १.१७३.७. **उराणः**=य उरून् बहूननिति प्राणयति सः (सूर्यः) ४.६.३. य उरुर्बह्वनिति सः (जनः), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेनोकारस्य स्थानेऽकारः ३.१९.२. बहुकुर्वाणः (अग्निः=विद्युत्) ४.७.८. बहुकुर्वन् (अग्निः=सूर्यः) ४.६.४. [उराणः=उरु कुर्वाणः नि० ६.१७. 'उरु' इत्युपपदे अन प्राणने (अदा०) धातोरण् । वर्णव्यत्ययेनोकारस्याकारः । उरूपपदाद्वा णीञ् धातोर्डः प्रत्ययः । उराणः पदनाम निघं० ४.३.]

उरु व्यापकम् (अन्तरिक्षम्=आकाशम्) ३.५४.१९. विस्तीर्णम् (सुखम्) ५.४१. बहुविधम् (सुखम्), प्र०—उर्विति बहुनामसु पठितम् निघं० ३.१, १.७. बहु (अन्तरिक्षम्) ७.५. **उरुः**=बहुशक्तिः (जगदीश्वरः) २.१३.७. सर्वशक्तिमान् (ईश्वरः) ऋ० भू० १६२. **उरुणा**=बहुना (पथा=मार्गेण) ४.२६.५. **उरुम्**=बहुगुणाऽन्वितं न्यायम् ८.२३. बहुबलादिगुणविशिष्टम् (वीरसेनाम्) १.५७.६. बहुविधम् (लोकं=भुवनसमूहम्) १.९३.६. बह्वाच्छादनं स्वीकरणं वा ४.२७. बह्वैश्वर्यम् (इन्द्रं=राजाद्यध्यक्षम्) ३.४१.५. बहुसुखकरं विस्तीर्णम् (लोकम्) ७.६०.९. **उरुषु**=विस्तीर्णेषु (विक्रमणेषु=सृष्टिक्रमेषु) १.१५४.२. **उरो !**=बहुसुखप्रतिपादकः (अन्तरिक्षः=यज्ञः) ४.७. **उरोः**=बहुनः (मनसः=विज्ञानात्) प्र०—अत्र लिङ्गव्यत्ययेन पुंस्त्वम् ४.६. बहुगुणैश्वर्यात् १७.४९. बहुविधगुणयुक्तात् (अन्तरिक्षात्=आकाशात्) ३.४६.३. वहोरनन्तात् (अन्तरिक्षात्) ५.१९. **उरौ**=बहुसुखकरे (कार्ये) ५.४२.१७. पुष्कले (अन्तरिक्षे=आकाशे) ३.६.८. बहुरूपे (अन्तरिक्षे=आकाशे) ५.५२.७. विस्तृते (अन्तरिक्षे=अन्तराल आकाशे) ६.३३. बाहौ ३.१.११. ['उरु'

इति 'उरव' पदे व्याख्यातम् । उरु बहुनाम निघं० ३.१.]

उरुक्रमस्य बहुपराक्रमस्य (विष्णोः=परमेश्वरस्य) १.१५४.५. **उरुक्रमः**=बहवः क्रमाः पराक्रमा यस्य सः (ईश्वरो विद्वज्जनो वा) १.९०.९. अनन्त पराक्रम (ईश्वर) आर्याभि० १.१, ऋ० १.६.१८.९. बहुपुरुषार्थः (विद्वज्जनः) ३.५४.१४. उरुर्महान् क्रमः पराक्रमो यस्य सः, अनन्त, महापराक्रमयुक्त परमात्मा स० प्र० २१, ३६.९. उरुर्बहुः क्रमः संसाररचने यस्य सः (विष्णुः=ईश्वरः) ३६.९. उरवो बहवो क्रमा यस्य (एवयामरुत्=विज्ञानवान् मनुष्यः) ५.८७.४. [उरु-क्रमपदयोः समासः । उरुपदम् 'उरवः' इत्यत्र व्याख्यातम् । उरु बहुनाम निघं० ३.१. क्रमः=क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्घञ् । 'नोदात्तोपदेश०' इति सूत्रेण वृद्धिप्रतिषेधः]

उरुक्षया उरुक्षयौ बहुषु जगत्पदार्थेषु क्षयो निवासो ययोस्तौ (मित्रावरुणौ=सूर्यवायू) अत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः 'उर्विति बहुनामसु' पठितम् निघं० ३.१ 'क्षि निवासगत्योः' अस्य धातोरधिकरणाऽर्थः क्षयशब्दः १.२.९. [उरु-क्षयपदयोः समासः । उरु बहुनाम निघं० ३.१. क्षयः=क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेणे' त्यधिकरणे घः]

उरुगायः ! उरूणि बहूनि शास्त्राणि गायति पठति, तत्सम्बुद्धौ (कुमार ब्रह्मचारिन्) ८.१. **उरुगायम्**=उरूणि गया अपत्यानि धनानि गृहाणि वा यस्मात्तम् (श्रवः=अन्नं श्रवणं वा) ६.६५.६. बहुभिर्गीयमानं विद्याबोधम् ७.३५.१५. बहुभिः प्रशंसनीयम् (विद्यार्थिजनम्) ६.२८.४. **उरुगायस्य**=बहुर्गायः स्तुतिर्यस्य तस्य (विष्णोः=व्यापकस्येश्वरस्य) प्र०—अत्र 'गै शब्दे' इत्यस्माद् 'घञर्थे कविधानम्' इति कर्मणि कः ६.३. बहुभिः स्तुतस्य (सज्जनस्य) ३.६.४. बहुधा प्रशंसितस्य (परमेश्वरस्य) १.१५४.६. **उरुगायः**=यो बहूनर्थान् वेदद्वारा गायत्युपदिशति सः (विष्णुः=परमेश्वरः) ५.१८. य उरुभिर्बहुभिर्मन्त्रैर्गीयते स्तूयते वा सः (परमेश्वरः) १.१५४.१. बहुभिः स्तुतः (अलविद्यो जनः) २.१.३. **उरुगायाय**=बहुप्रशंसिताय (जीवनाय) १.१५५.४. बहुप्रशंसाय (विष्णवे=परमेश्वराय) ४.३.७. [उरूपपदे गै शब्दे (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः । 'आतो युक् चिण्कृतो' रिति युगागमः । अथवा=उरु-गयपदयोः समासः । गयः=अपत्यनाम निघं० २.२. धननाम निघं० २.१०. गृहनाम निघं० ३.४. अथवा=उरूपपदे गायतेः 'घञर्थे कविधानमि' ति कर्मणि कः । उरुगायस्य विष्णोर्महागतेः नि० २.८.]

उरुगाया बहुप्रशंसौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.१४.१. [उरूपपदे गै शब्दे (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानमि' ति कर्मणि कः]

उरुचक्रयः बहुकर्त्तारो महापुरुषार्थिनः (विद्वज्जनाः) ५.६७.४. **उरुचक्रिः**=बहुकर्त्ता (विद्वज्जनः) २.२६.४. [उरु-चक्रिपदयोः समासः । उरु बहुनाम निघं० ३.१. चक्रिः=डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि सदादिभ्यो दर्शनात्' अ० ३.२.१७१. वा० सूत्रेण किः प्रत्ययो लिट्वच्च कार्यम्]

उरुचक्षसम् उरु बहुविधं वेदद्वारा चक्ष आख्यानं यस्य तम् (परमेश्वरम्) १.२५.५. उरुषु बहुषु चक्षो विज्ञानं प्रकाशनं वा यस्य तं कर्मकर्त्तारं जीवम् १.२५.१६. **उरुचक्षसः**=बहुदर्शनान् (नॄन्=उत्तमविदुषः) ६.५१.९. **उरुचक्षसा**=उरु बहु चक्षो व्यक्तं वचनं दर्शनं वा यस्यास्तया (वाचा विद्युता वा) ४.२३. [उरु-चक्षस्पदयोः समासः । उरु बहुनाम निघं० ३.१. चक्षस्=चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि दर्शनेऽपि (अदा०) धातोः असुन् प्रत्ययः । 'चक्षिङः ख्याञ्' इति ख्याञादेशे प्राप्ते 'असनयोश्च प्रतिषेधो वक्तव्यः' अ० २.४.५४. वा० सूत्रेण प्रतिषेधः]

उरुचक्षाः उरूणि बहूनि चक्षांसि दर्शनानि यस्मात् सः (सूर्यः=सविता) ७.३५.८. [उरु-चक्षस्पदयोः समासः; । चक्षस्पूर्वपदे व्याख्यातम्]

उरुज्रयसम् बहुवेगवन्तम् (अग्निम्) ५.८.६.

उरुज्रयः बहुगन्तारः (देवाः=विद्वज्जनाः) ७.३९.३. [उरुज्रयः बहुजवाः नि० १२.४३. उरूपपदे जवतिगतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्बाहुलकाद् ड्रिः प्रत्ययः]

उरुधारा उर्वी धारा विद्यासुशिक्षाधारणा यस्याः सा (पत्नी) ८.४२. [उर्वी-धारापदयोः समासः । पूर्वपदस्य पुंवद्भावः । धारा वाङ्नाम निघं० १.११.]

उरुप्रथाः बहुः प्रथः सुखस्य विस्तारो यस्मात् सः, (घर्मः=यज्ञः), प्र०—उर्विति बहुनामसु पठितम् निघं० ३.१, १.२२. बहुविस्तारः (इन्द्रः=सूर्यः) २०.३९. [उरु-प्रथपदयोः समासः । उरु बहुनाम निघं० ३.१. प्रथः=प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानमि' ति कः]

उरुव्यचसम् बहुषु सद्गुणेषु व्यापकम् (इन्द्रं=धार्मिकं राजानम्) ६.३६.३. उरुव्यचसः=बहुव्यापकस्य (अग्नेः=पावकस्य) २७.१६. **उरुव्यचसे**=बहुषु विद्यासु

व्यापकाय (राज्ञे) ७.३१.११. [उरु-व्यचस्पदयोः समासः। व्यचस्=वि+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोरसुन् प्रत्ययः। बाहुलकादनुनासिकलोपः। अथवा व्यच व्याजीकरणे (तुदा०) धातोरसुन्। धातूनामनेकार्थत्वाद् व्याप्त्यर्थे]

उरुव्यचसा बहुव्यापिनौ (रोदसी=द्यावापृथिवी) १.१६०.२. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

उरुव्यचा बहुव्याप्त्या १.१०८.२. [उरूपपदे विपूर्वादञ्चतेः क्विप्]

उरुव्यचाः बहुषु व्याप्तः (विद्वज्जनः) ५.४६.६. उरु बहुविधं व्यचो विज्ञानं पूजनं सत्करणं वा यस्य सः (सभाध्यक्षः) १.१०४.९. बहुशुभगुणव्याप्तः (समृद्धो राजा) ३.५०.१. ['उरुव्यचसम्' पदे व्याख्यातम्]

उरुव्यञ्चम् उरुषु बहुषु विशेषेणाऽञ्चति तम् (रुक्मम्=आदित्यम्) १५.२५. बहुव्याप्तिमन्तम् (स्तोमम्) ५.१.१२. [उरूपपदे विपूर्वात् अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

उरुशर्म्मा उरूणि बहूनि सुखानि यस्याः सा (अदितिः=विदुषी माता) १०.१९. [उरु-शर्मन्पदयोः समासः। 'उरु' व्याख्यातम्। शर्मन्=सुखनाम निघं० ३.६. गृहनाम निघं० ३.४.]

उरुशंस बहुभिः प्रशंसित (वरुण=विद्वज्जन) २१.२. य उरून् बहून् शंसति तत्सम्बुद्धौ (आप्त विद्वन्) १८.४९. उरु बहुशंसः प्रशंसा यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.१३८.३. बहुभिः शस्यते यत्तत्सम्बुद्धौ पक्षे सूर्यो वा (वरुण=जगदीश्वर) १.२४.११. **उरुशंसस्य**=बहुप्रशंसितस्य (विद्वत्पितुः) २.२८.३. **उरुशंसः**=बहुप्रशंसः (राजा) ४.१६.१८. [उरु+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

उरुशंसा बहुस्तुती (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ३.६२.१७. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

उरुशंसाः बहुप्रशंसाः (जगत्कल्याणकरा जनाः) २.२७.९. [उरूपपदे शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोरण्। 'कृतो बहुलमि' ति वा कर्मण्यण्]

उरुष्य पाहि १.५८.९. रक्ष, प्र०—अत्र कण्ड्वाद्याकृतिगणत्वादुरुषशब्दाद् यक्, अ०—सततं पृथग् रक्ष ३.२६. बहुना योगाऽभ्यासेनाऽविद्यादिक्लेशानन्तं नय, प्र०—अत्रोरूपपदात् 'षोऽन्तः कर्मणि' इत्यस्मात् क्विप्, ततो नामधातुत्वात् क्विप्, ततो मध्यमैकवचनप्रयोगः ७.४. रक्ष, प्र०—उरुष्यतीति रक्षति कर्मा नि० ५.२३, १.९१.१५. सेवस्व ४.२.११. **उरुष्यत**=सेवध्वम् ५.८७.६. **उरुष्यतम्**=प्रेरयेतम् ५.६५.६. सेवेतम् ४.४३.४. सेवेथाम् ४.४३.७. **उरुष्यति**=रक्षति २.२६.४. वर्धयति १.१५५.२. सेवते ६.१४.५. **उरुष्यथः**=रक्षथः १.११९.६. सेवेथाम् १.१५५.२. **उरुष्या**=सेवेत, रक्षेत् ६.४५ **उरुष्यात्**=रक्षेत् ७.१.१५. **उरुष्याः**=रक्षेः ७.३.८. **उरुष्येत्**=सेवेत ४.५५.५. **उरुष्व**=सेवस्व ४.२.११. [उरुष्-शब्दात् कण्ड्वाद्याकृतिगणत्वाद् यक्। ततो लोट्। अथवा उरूपपदे षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोः क्विपि ततो नामधातोर्लोट्। अथवा उरुष्यती रक्षतिकर्मा नि० ५.२३.]

उरुष्यत् आत्मन उरुर्बहुरिवाचरति ३.५.८. [उरु बहुनाम (निघं० ३.१.) तत आचारे क्यचि लेट्। 'सुग् वक्तव्यः' अ० ७.१.५१. वा० सूत्रेण क्यचि सुगागमः]

उरूची या उर्वीर्बह्वीर्विद्या अञ्चति प्राप्नोति सा (जिह्वा=वाणी) ३.५७.५. या बहूनञ्चति प्राप्नोति सा पृथिवी ७.३५.३. बह्वीनां पदार्थविद्यानां ज्ञापिका बह्वर्थज्ञापिका वा (धेना=वेदचतुष्टयी वाक् वाणी वा) प्र०—उर्विति बहुनामसु पठितम् निघं० ३.१, १.२.३. योरूणि बहून्यञ्चति सा (गौः=पृथिवी) ३.३१.११. **उरूचीम्**=या उरूणि बहून्यञ्चति प्राप्नोति ताम् (महीं=भूमिम्) २१.५. उरूणि बहूनि वस्तून्यञ्चन्तीम् (अमतिं=सुन्दरं रूपम्) ७.४५.३. [उरूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण क्विन्। 'अच' इत्यकारलोपो ङीपि। 'चौ' इति पूर्वस्य दीर्घ]

उरूची य उरून् बहूनञ्चतस्ते (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.४. ये बहूनञ्चतस्ते (रोदसी=भूमिप्रकाशौ) ६.११.४. [पूर्वपदे व्याख्यातम्। 'वा छन्दसि' अ० ६.१.१०६. सूत्रेण पूर्वसवर्णदीर्घः]

उर्वराजिते य उर्वरां सर्वफलपुष्पशस्यादिप्रापिकां जयति तस्मै (इन्द्राय=विद्वत्सभासेनेशाय) २.२१.१. [उर्वरा उपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्। ह्रस्वस्य तुक्]

उर्वी बहुविस्तीर्णे (द्यावापृथिवी) १.१८५.६. हिंसके (अपारे=द्यावापृथिव्यौ) ३.१.१४. [उर्वी=द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०. ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः 'महति ह्रस्वश्च' उ० १.३१. सूत्रेण कुः। स्त्रियां ङीष्]

उर्वी बहुफलाद्युपेता (भूमिः=पृथिवी) ६.४७.२०. [उर्वी पृथिवी नाम निघं० १.१. उर्वीः=ऊर्णोतिर्वृणोतेरित्यौर्णवाभः नि० २.२७.]

उर्वरासाम् बहुश्रेष्ठानां भूमीनाम् ६.२०.१. बहुश्रेष्ठाः पदार्थाः सन्ति यस्यां तां भूमिं सनति तम् (प्रजाजनम्) ४.३८.१. **उर्वरासु**=सुन्दरवर्णयुक्तासु (वाणीषु) १.१२७.६. पृथिव्यादिनिमित्तेषु ६.२५.४. भूमिषु ४.४१.६.

उर्वर्याय उरूणां महतामर्य्याय स्वामिने (पुरुषाय) १६.३३. [उरु-अर्यपदयोः समासः। उरु बहुनाम निघं० ३.१. ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः 'महति ह्रस्वश्च' उ० १.३१. सूत्रेण कुः प्रत्ययः। अर्यः='अर्यः स्वामी वैश्ययोः' सूत्रेण स्वामिन्यभिधेये ऋ गतौ (भ्वा०) धातोर्यत् प्रत्ययो निपात्यते]

उर्वशी ययोरूणि बहूनि सुखान्यश्नुवते सा यज्ञक्रिया, प्र०—उर्वशीति पदनामसु पठितम् निघं० ५.५, उर्विति बहुनामसु पठितम् निघं० ३.१. तस्मिन्नुपपदे अशूङ् धातोः 'संपदादिभ्यः क्विप्' ततः शार्ङ्गरवाद्यन्तर्गतत्वात् ङीन् ५.२. उरु बहु अश्नाति यया सा दीप्तिः १५.१९. उरवो बहवो वशे भवन्ति यया सा वाणी प्र०—उर्वशीति पदनामसु पठितम् निघं० ४.२, ५.४१.१९. बहुवशकर्त्री प्रज्ञा ५.४१.१९. **उर्वशीः**=बहु व्यापिकाः (क्रियाः) ४.२.१८. **उर्वश्याः**=विशेषविद्यायाः ७.३३.११. [उर्वशी पदनाम निघं० ५.५. उरूपपदे अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) अश भोजने (क्र्या०) धातोर्वा 'संपदादिभ्यः क्विप्' इति स्त्रियां क्विप्। ततः स्त्रियां ङीन्। अथवा उरूपपदे अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्य इन्' उ० ४.११८. सूत्रेण इन्। ततः स्त्रियां 'कृदिकारादक्तिनः' अ० ४.१.४५. वा० सूत्रेण ङीष्। उर्वशी अप्सरा। उर्वभ्यश्नुते, उरुभ्यामश्नुते, उरुर्वा वशोऽस्याः नि० ५.१३.]

उर्वारुकमिव यथोर्वारुकफलम् पक्वं भूत्वामृतात्मकं भवति तथा ३.६०. यथोर्वारुकफलम् ७.५९.१२.

उर्विया पृथिव्याम् ३.१.१८. पृथिव्या, प्र०—उर्वीति पृथिवीनाम निघं० १.१, १.१२४.१. उर्व्या पृथिव्या सह, प्र०—अत्रोर्वीशब्दात् टास्थाने डियाजादेशः १.९२.९. बहुरूपया दीप्त्या ६.६.४. बहुरूपः (विद्वज्जनः) २.३५.८. बहुपुरुषार्थयुक्ता (स्त्री) ६.६४.३. बहुत्वेन २९.३०. [उर्वी पृथिवी नाम निघं० १.१. ततः 'टास्थाने डियाजादेशः 'इयाडियाजीकाराणामुपसंख्यानम्' अ० ७.१.३९. वा सूत्रेण। उर्विया उरुत्वेन नि० ८.१०.]

उर्वी बहुकलादियुक्ते (रोदसी=द्यावापृथिवी) ७.१८.२४. बहुरूपे द्यावापृथिव्यौ १.६१.८. बहुपदार्थधरे (रोदसी=सूर्यभूलोकौ) ४.४२.३. बहुले (रोदसी= प्रकाशाऽप्रकाशे जगती) ३.५६.७. महती (मही=पृथिवी) ३.३८.३. विस्तीर्णा (पृथ्वी) १.१८९.२. बहुत्वे (पृथिवी द्यौश्च) ६.६८.४. बहुफलाद्युपेता (भूमिः) ६.४७.२०. **उर्वीम्**=विस्तृताम् (क्षां=भूमिम्) ६.१७.७. बहुपदार्थयुक्ताम् (पृथिवीं=भूमिम्) ७.३८.२. महतीम् (अध्यापिकोपदेशिकाम्) ३.३३.३. उर्वीः=बहुस्वरूपे (सूर्यभूमी) ३.६.१०. षड्विधा भूमीः ६.४७.३. बहुसुखप्रदाः प्रजाः ३.३३.६. बह्वीः पृथिवीः १.८.७. **उर्व्या**=महत्या पृथिव्या सह १२.१. बहुरूपयोत्तमफलप्रदया पृथिव्या सह १४.८. **उर्व्याः**=पृथिव्याः १.१४६.२. **उर्व्यै**=बहुरूपायै (दिशे) २२.२७. [ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः 'महति ह्रस्वश्च' उ० १.३१. सूत्रेण कुप्रत्यये=उरुः। ततो ङीषि उर्वी। उर्वी नदीनाम निघं० १.१३. उर्व्यं ऊर्णोतेः, वृणोतेरित्यौर्णवाभः नि० २.२६. पृथिवीनाम निघं० १.१. द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०. यथेयं पृथिव्युर्वी एवम् उरुर्भूयासम् श० २.१.४.२८.]

उलप्याय उलपे उत्क्षेपणे साधवे (जनाय), प्र०—अत्रोलश्चौरादिकाद्धातोरौणादिकोऽपन् प्रत्ययः १६.४५. [उलपप्राति० 'तत्र साधु' रित्यर्थे यत्। उलपः=वल संवरणे (भ्वा०) 'विटपविष्टपविशिपोलपाः' उ० ३.१४५. सूत्रेण कपन् प्रत्ययान्तो निपात्यते। धातोरादेश्च सम्प्रसारणम्]

उलः क्षुद्रक्रमिः २४.३१.

उलूकः उलूकः २४.३८. [वल संवरणे (भ्वा०) धातोः 'उलूकादयश्च' उ० ४.४१. सूत्रेण ऊकप्रत्ययान्तो निपात्यते]

उलूखलः बहुकार्यकरेण साधनेन, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयैकवचनस्य लुक् १.२८.६. [उरूपपदे डुकृञ्करणे (तना०) धातोः 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु' अ० ३.२.२०. सूत्रेण टप्रत्यये, उकारस्य दीर्घे, रेफयोर्लत्वे ककारस्य खकारश्च वर्णव्यत्ययेन। लत्वम्, ककारस्य खकारश्च वर्णव्यत्ययेन। उलूखलम् उरुकरं वोक्करं वोर्ध्वखं वोरु मे कुर्वित्यब्रवीत्तदुलूखलमभवत्। उरुकरं चैतत्तदुलूखलमित्याचक्षते परोक्षेणेति च ब्राह्मणम् नि० ९.२०. (प्रजापतिरब्रवीत्) उरु मे करदिति तस्माद् उरुकरमुरुकरं ह वै तदुलूखलमित्याचक्षते परोऽक्षम् श० ७.५.१.२२. अन्तरिक्षं वोलूखलम् श० ७.५.१.२६. योनिरुलूखलम् श० ७.५.१.३८.]

उलूखलक उलूखलं कायति शब्दयति यस्तत्सम्बुद्धौ विद्वन् (जन) १.२८.५. [उलूखलोपपदे कै शब्दे (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः। उलूखलं पूर्वपदे व्याख्यातम्। उलूखलं पदनाम निघं० ५.३.]

उलूखल सुतानाम् उलूखलेन सम्पादितानाम् (पदार्थानाम्) प्र०—उलूखलशब्दार्थं यास्कमुनिरेवं समाचष्टे—उलूखलमुरुकरं वोर्क्करं वोर्ध्वखं वोरु मे कुर्वित्यब्रवीत् तदुलूखलमभवत्, उरुकरं चैतदुलूखलमित्याचक्षते, नि० ९.२०, १.२८.४. [उलूखल-सुतपदयोः समासः। उलूखलं व्याख्यातम्। सुतः=षु प्रसवैश्वर्ययः (अदा०) धातोः क्तः]

उल्काः विद्युतः ४.४.२. विद्युत्पाताः १३.१०. [उष दाहे (भ्वा०) धातोः 'शुकवल्कोल्काः' उ० ३.४२. सूत्रेण कक् प्रत्ययान्तो निपात्यते। षकारस्य लत्वम्। ओषति दहतीति विग्रहः]

उल्वम् बलम् १०.८. आवरणम् १९.७६. [उल्वं पदनाम। निघं० ४.३. उच समवाये (दिवा०) धातोः 'उल्वादयश्च' उ० ४.९५. सूत्रेण वन् प्रत्ययः। निपातनाच्चकारस्य लत्वं गुणाभावश्च। उल्व ऊर्णोतेर्वृणोतेर्वा नि० ६.२५. उल्वं घृतं श० ६.६.२.१५. उल्वं वाऽऊषाः ७.३.१.११.]

उवाच उच्यात् ५.२.८. वक्ति २.३०.२. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लिट्]

उवास वसति १.४८.३. वस १.११३.१३. [वस निवासे (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'लिट्यभ्यासस्य०' इति सम्प्रसारणम्]

उवाह वहति १.११६.१८. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट। लिटि अभ्यासस्य सम्प्रसारणम्]

उवोच वदति ७.४.३. उच्यात् ७.२१.१. **उवोचिथ**=उपदिश ७.३८.३. [उच समवाये (दिवा०) धातोर्लिट्। अत्र व्यक्तायां वाचि धातूनामनेकार्थत्वात्। अथवा वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लिट्। धातोरकारस्यौकारश्छान्दसः]

उशतः कामितान् (दिव्यान् गुणान्) प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इति कर्मणि लटः स्थाने शतृ-प्रत्ययः १.१२.४. कामयमानान् (पितृन्=जनकादीन्) १९.७०. विद्यादिसद्गुणान् कामयमानान् (देवान्=विदुषो गृहस्थान्) ८.१९. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लटः स्थाने शतृप्रत्ययः) 'कृतो बहुलमि' ति कर्मणि शतृ। धातोर्ग्रह्यादिसूत्रेण संप्रसारणम्]

उशती कामयमाना (जाया=हृद्या स्त्री) ४.३.२. कामयमाने (अध्यापिकोपदेशिके) ३.३३.१. कामना करती हुई (जाया=स्त्री) स० प्र० ९०.१०.७१.४. **उशतीम्**=कामयमानाम् (मनीषां=प्रज्ञाम्) ६.४७.३. **उशतीः**=कामयमानाः (मातरः) ३६.१५. स्वस्वधारणगुणं प्रकाशयन्तीः (पत्नी=पृथिव्यादिद्रव्यस्थशक्तय इव) १.२२.९. कमनीयाः (ऊर्म्याः=रात्रीः) २.४.३. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्। उशती उशत्यौ कामयमाने नि० ९.३९. कामयमाना नि० १.१९.]

उशतीव कामयमाना स्त्रीव १.३२.१०. [उशती-इवपदयोः समासः]

उशते कामयमानाय (ईश्वराय) ४.१७.१७. उशद्भिः=कामयमानैः (ज्ञानिभिर्जनकैः) १९.५१. **उशद्भ्यः**=त्वत्पदार्थान् कामयमानेभ्यः (देवेभ्यः=शत्रुभ्यः) १.१६२.११. सत्पुरुषेभ्यः २५.३४. **उशन्**=कामयमान (इन्द्र=राजन्) ४.२०.४. कामयन् (मित्र) ४.२७. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लटः शतृ। उशतः कामयमानान् नि० ६.१३. उशन्नुशन्तमिति प्रियः प्रियमित्येवैतदाह श० ३.३.३.१०. वायुर्वा उशन् तां० ७.५.१९.]

उशधक् य उशान् युद्धं कामयमानान् दहति सः (इन्द्रः=राजा) ३.३४.३. उशः कमनीयान् दहति येन सः (अग्निः) ३.६.७. कामयमानः (अग्निः=उत्तमो राजा) ७.७.२. य उशन्ति परस्वं कामयन्ति तान् दहति सः (सभेशः) ३३.२६. [उशोपपदे दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोः क्विप्। उशः=वश कान्तौ (अदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः। धातोः संप्रसारणम्]

उशना सर्वहितङ्कामयमानः (परमेश्वरः) ४.२६.१. कान्तियुक्तः (विद्वान्) १.१३०.९. कामयिता (विद्वज्जनः) १.८३.५. धर्मकामुकः (प्रजापालको राजा), प्र०—अत्र डादेशः १.१२१.१२. **उशनाः**=कामयमानाः (विद्वज्जनाः) ५.३१.८. **उशने**=कामयमाने (काव्ये) १.५१.११. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः 'वशेः कनसिः' उ० ४.२३९. सूत्रेण कनसिः। वष्टि कामयते स इति विग्रहः। 'ऋदुशनस्०' अ० ७.१.९४. सूत्रेणानङ् आदेशः सौ]

उशनेव यथाकामः (उपदेशको जनः) ४.१६.२. [उशना-इवपदयोः समासः]

उशन्तम् कामयन्तम् (स्योनम्=सुखम्) ४.२७. कामयमानं (पतिं) १.७१.१. **उशन्तः**=शृण्वन्तः श्रावयन्तः (जनाः) ऋ० भू० २६५. सन्तानों की कामना करते हुए

(स्त्रीपुरुष) सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३८. कामयमानाः (जनकादयः) १९.७०. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लटः शतृप्रत्ययः]

उशन्ता कामयमानौ (स्त्रीपुरुषौ) ७.४२.५. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

उशन्ति प्रकाशन्ते, कामयन्ते १.२.४. भा०—साक्षात्कर्त्तुं प्रयतन्ते ७.८. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लट् । ग्रह्यादिसूत्रेण संप्रसारणम्]

उशमानः कामयमानः (इन्द्रः=राजा) ४.१९.४. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदं शप्रत्ययश्च]

उशानः कामयमानः (विद्यार्थिजनः) ४.२३.१. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

उशिक् कामयमानः (राजा) ८.५०. सत्यङ्कामयमानः (अग्निः=भौतिकोऽग्निरिव राजा) १.६०.४. कमिता (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.३.७. कान्तिमान् (भगवान्) ५.३२. सर्वप्रिय, कमनीयस्वरूप अर्थात् सब लोगों का चाहने योग्य (ईश्वर) आर्याभि० २.१७, ५.३२. **उशिग्भिः**=कामयमानैर्वीरैः (राजपुरुषैः) ३.३४.४. **उशिजम्**=सद्गुणप्रचारं कामयमानम् (अध्यापकम्) ३.२७.१०. **उशिजः**=मेधाविनः (यजमानाः=सङ्गन्तारो जनाः) प्र०—उशिगिति मेधाविनाम निघं० ३.१५, १२.२८. कामयमानान् (प्रजाजनान्) ३.१५.३. कामयमानाः (गोपालका जनाः) ४.१६.६. कामयितारः (राजाप्रजाजनाः) १.६०.२. कमनीयान् (देवान्=विदुषो जनान्) ६.७. कमनीयाः (विद्युद्भौमसूर्यरूपेण ज्योतींषि) ३.२.९. कमितारः (मनीषिणो जनाः) २.२१.५. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः 'वशः कित्' उ० २.७१. सूत्रेण 'इजिः' प्रत्ययः किच्च । उशिक् कान्तिकर्मा निघं० २.६. उशिजः=मेधाविनाम निघं० ३.१५. उशिग्वष्टेः कान्तिकर्मणः नि० ६.१०.]

उशेन्यः कमनीयः (राजा) ७.३.६. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः कृत्यार्थे केन्यः प्रत्ययः । धातोः सम्प्रसारणम्]

उश्मसि कामयेमहि १.९४.३. कामयामहे, प्र०—अत्र 'इदन्तो मसि' इति मसेरिदन्ताऽऽदेशः १.२१.१ प्रकाशयितुं प्राप्तुं वा कामयामहे १.२२.६. उश्मः कामयामहे ६.३. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लट् । 'इदन्तो मसि' रिति मस इदन्तत्वम् । कामयामहे नि० २.७. उश्मसि कान्तिकर्मणः निघं० २.६.]

उषद्भिः य उषन्ति हविर्दहन्ति तैर्यजमानैः २९.३७. ईश्वरादिपदार्थविद्याः कामयमानैर्विद्वद्भिः सह १.६.३. [उष दाहे (भ्वा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन शः]

उषमाणः दहन् (राजा) ४.२२.२. [उष दाहे (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदं शप्रत्ययश्च]

उषर्बुधम् य उषसि बोधयति तम् (अग्निं=वह्निम्) ३.२.१४. य उषसि बुध्यते तम् (द्विजम्) ४.६.८. **उषर्बुधः**=उषसि बोधयुक्ताः (हंसासः=अश्वाः) ४.४५.४. रात्रिचतुर्थप्रहरे जागृताः (सज्जनाः) १.१३२.२. य उषसि स्वयं बुध्यन्ते, सुतान् बोधयन्ति तान् (देवान्=विदुषो जनान्) १.४४.१. य उषःकालं बोधयन्ति तान् किरणान् १.९२.१८. उषः सम्प्राप्य बोधयन्ति तान् (देवान्=दिव्यान् भोगान्) १.१४.९. उषसि बोधयुक्ताः (हंसासः=अश्वाः) ४.४५.४. **उषर्बुधे**=प्रत्युषः काले जागरूकाय (अग्नये=विद्युते) १.१२७.१०. [उषस्-उपपदे बुध अवगमने (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः । अन्तर्भावितण्यर्थः]

उषर्भुत् य उषसि बुध्यते (अतिथिर्जनः) ६.४.२. य उषसि सर्वान् बोधयति सः (अग्निः=विद्युदाद्यग्निः) प्र०—अत्रोषरुपपदाद् बुधधातोः क्विप् 'बशो भष०' इति भत्वञ्च १.६५.५. [उषस् उपपदे बुध अवगमने (भ्वा०) धातोः क्विप् । 'कृतो बहुलमि' ति कर्त्तृभिन्नेष्वपि कारकेषु क्विप्]

उषसम् प्रातःकालम् १.४४.८. दिनम् ३.३२.८. प्रभातकालम् ३.२०.१. सन्धिवेलाम् १.११५.२. रात्र्यन्तसमयम् १.७१.१. प्रत्युषःकालम् १.५६.४. प्रत्यूषःकालम् २.१२.७. प्रभातसमयम् १.११३.११. **उषसः**=दिवसानि १.६०.७. दिवसस्य ७.३९.२. दिवसमुखस्य ४.१४.१. प्रभातवेला इव स्त्रियः १.११३.२०. प्रभातवेलाया दिनमिव ४.२.१५. प्रभाता इव १.७९.१. प्रातःकालीनाः सूर्यस्य रश्मयः १.९२.२. प्रातःकालस्थाः प्रकाशाः १.९२.१. प्रातर्वेला इव ४.५१.३. प्रातःकालस्य मध्ये १.१३१.६. प्रातःसायं समयान्, भा०—प्रभातस्य १५.३७. प्रातःकालात् १.४४.१. प्रातर्मुखानि दिनानि १३.२८. प्रत्यूषःकालमिव सत्पुरुषान् ३.४४.२. प्रकाशकर्त्र्यो वेलाः ३.१७.३. उषःकाल से सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.३१. प्रातःकाल की वेलाओं को स० प्र० ११०, ऋ० १.१७९.१. **उषसा**=रात्र्यवसानोत्पन्नया दिवसहेतुना ३.१०. दिनप्रमुखेन १.६२.५. दिनेन सह १.७३.७. प्रातःकालेन युक्तया क्रियया १.४४.२. प्रकाशेन १.४४.१४.

उषसाम्=प्रत्यूषःकालानाम् २.२८.२. प्रभातवेलानाम् ६.४७.५. **उषसि**=दिने ४.२.८. **उषसे**=प्रातःकालाय १.११३.१. **उषः**=उषर्वद् वर्त्तमाने विदुषि (स्त्रि) १.११३.१२. उषर्वत् सर्वरूपप्रकाशिके विदुषि स्त्रि १.४८.१६. उषा इव कमनीये स्त्रि १.४८.९. हे दाहगुणयुक्तोषर्वत् स्त्रि १.४८.२. उषसः १.४८.४. उषाः, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेर्लुक् १.५७.३. उषर्वद्विद्याप्रकाशयुक्ते स्त्रि १.१२४.२. उषा इव शुम्भमाने (स्त्रि) ४.५२.३. **उषाः**=सुप्रभातः १.११३.४. दिननिमित्तः प्रकाशः १.११३.८. प्रातर्वेलेव ४.३०.१०. प्रबोधदात्री १.४८.५. सुशोभा कान्तिः १.४८.७. दाहनिमित्तशीला १.४६.१. दाहाऽऽरम्भनिमित्ता १.११३.५. सूर्याचन्द्रमसोः प्रातःप्रकाशः १.४६.१४. प्रभावती १.४८.३. उषर्वत् प्रकाशिका (स्त्री) १.४८.१५. [उष दाहे (भ्वा०) धातोः 'उषः किच्च' उ० ४.२३४. सूत्रेणासिः प्रत्ययः किच्च। ओषति दहतीति विग्रहः। स्त्रियाम् उषा। तत्र इगुपधलक्षणे क-प्रत्यये स्त्रियां टाप्। उषाः पदनाम निघं० ५.५. निघं० ५.६. उषस् उच्छतीति सत्या रात्रेः परः कालः नि० २.१८. उषा वष्टेः कान्तिकर्मणः, उच्छतेरितरा माध्यमिका नि० १२.५. रात्रिर्वा उषाः तै० ३.८.१६.४. योषाः सा एका ऐ० ३.४८. भूतानां पतिर्गृहपतिरासीदुषा पत्नी श० ६.१.३.७.]

उषसः दाहाऽऽदिकर्त्तॄन् पदार्थान् १.१३४.३. [उषसं व्याख्यातम्]

उषसा रात्रिदिने ५.१.४. प्रातःसायं सन्धिवेले ३.१४.३. [व्याख्यातम् उषसम्। 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

उषसौ रात्र्यहनी, अ०—स्त्रीपुरुषौ ३.४.६. [उषसं व्याख्यातम्]

उषस्याः उषोदेवताकाः, भा०—उषोगुणाः पशवः पक्षिणश्च २४.४. [उषसं व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत् प्रत्ययः]

उषः सुखे निवासिनि विदुषि (स्त्रि), प्र०—अत्र 'वस निवासे' इत्यस्माद्धातोरौणादिकोऽसुन् स च बाहुलकात् कित् १.११३.७.

उषाणः दहन् (सैन्यपुरुषः) ४.१६.१४. [उष दाहे (भ्वा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

उषाभ्याम् उभयवेलाभ्याम्, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति सलोपः २१. ५०. [उषसिति व्याख्यातम्]

उषाम् उषसं प्रभातवेलाम् १.१८१.९. [उष दाहे (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। स्त्रियां टाप्]

उषासम् उषसं प्रभातसमयम्, प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १५.२४. दिनमुखं प्रभातम् ६.३०.५. **उषासः**=प्रभातवेला इव शोभमानाः (विदुष्यः स्त्रियः) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्युपधादीर्घः ७.४१.७. प्रभातवाताः १.१३४.४. प्रत्यूषसमयाः १.१२३.२. [उषसमिति व्याख्यातम्। उपधादीर्घश्छान्दसः]

उषासा प्रातःसायंवेले २९.६. प्रभाते २० ६१. [उषसमिति व्याख्यातम्। 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

उषासौ रात्रिदिने इव (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८८.५. प्रातःसायंवेले, प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इत्युपधादीर्घः २१.५०. [उषसमिति व्याख्यातम्]

उषासानक्ता उषाश्च नक्तश्च ते २०.४४. प्रत्यूषरात्र्यौ २.३१.५. रात्रिदिने ५.४१.७. भा० अहोरात्रौ २८.३७.

उषे दहनकर्त्र्याविव स्त्रियौ २१.१७. कामं दहन्त्यौ (सुपेशसा=सुखरूपे स्त्रियौ) २१.३५. प्रतापयुक्ते (प्रातः सायंवेले) २८.६. [उष दाहे (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। स्त्रियां टापि सम्बुद्धौ रूपम्]

उष्णन् दहन् (अग्निः=वह्निः) २.४.७. [उष दाहे (भ्वा०) धातोः शतृ। विकरणव्यत्ययेन श्ना]

उष्णिक् यद् दुःखानि दहति तम् (वयः=पराक्रमम्) १४.१०. स्नेहनम् १४.१८. **उष्णिहम्**=उष्णिहा प्रतिपादितम् (इन्द्रियं=जीवस्य लिङ्गम्) २८.२५. **उष्णिहा** यया उषः स्निह्यति तया (क्रियया) २३.३३. **उष्णिहे**= उत्कृष्टतया स्निह्यति यया तस्यै क्रियायै २४.१२. **उष्णिहा**=छन्दोविशेषः २१.१३. [उत्पूर्वात् ष्णिह प्रीतौ कान्तौ (दिवा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण क्विन्। निपातनाद् उपसर्गान्तलोपः षत्वं च। उष्णिक् उष्णिगुत्स्नाता भवति। स्निह्यतेर्वा स्यात्कान्तिकर्मणः। नि० ७.१२. उष्णिगुत्स्नातात् स्निह्यतेर्वा कान्तिकर्मणोऽपि वोष्णीषिणो वेत्यौपमिकम्। दे० ३.४. यस्य सप्त ता उष्णिहम् कौ० ९.२. अष्टाविंशत्यक्षरोष्णिक् कौ० २६.१. आयुर्वा उष्णिक् ऐ० १.५. ग्रीवा उष्णिह श० ८.६.२.११. चक्षुरुष्णिक् श० १०.३.१.१. पशवो वा उष्णिक् तां० ८.१०.४. अजाविकमेवोष्णिक् कौ० ११.२. औष्णिहो वै पुरुषः ऐ० ४.३.]

उष्णीषः शिरोवेष्टनमिव ३८.३. [उत् पूर्वात् ष्णौ वेष्टने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् बाहुलकाद् ईषन् प्रत्ययः। उपसर्गन्तिलोपश्च । उष्णीषं स्नायतेः नि० ७.१२.]

उष्णीषिणे प्रशस्तमुष्णीषं शिरोवेष्टनं विद्यते यस्य तस्मै ग्रामण्यै भा०—प्रधानपुरुषाय १६.२२. [उष्णीष प्राति० अतिशायने इनिः। उष्णीषं पूर्वपदे व्याख्यातम्]

उस्रयाम्णे उस्रैः किरणैरिव यानेन याति तस्मै (जनाय) ४.३२.२४. [उस्रोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्मनिन् प्रत्ययः। 'उस्रः' अग्रिमपदे द्रष्टव्यम्]

उस्रः रश्मिरिव (विद्वज्जनः) १.६९.५. किरणान्, प्र०—उस्रा इति रश्मिनाम निघं० २.१५, ५.४९.३. किरणयुक्तानि दिनानि ७.१५.१८. गाः प्र०—उस्रेति गोनाम निघं० २.११, ३.५८.४. **उस्राः**=सूर्यकिरणाः, १.३८. रश्मीन् ४.४५.५. किरणाः ४.१.१३. किरणान् ६.३.६. दिनानि ६.५२.१५. गावः १.१२२.१४. रश्मयः ४.२५.२. मूलराज्ये परम्परया निवसन्तः (विद्वांसः) १.१७१.५. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक्। कित्वात् सम्प्रसारणम्। उस्रा रश्मिनाम निघं० १.५. गोनाम निघं० २.११.]

उस्रा रश्मयो विद्यन्ते ययोस्तौ (अश्विना=अन्तरिक्षविद्युतौ) ६.६२.१. किरणवद्वर्त्तमानौ (अग्निवायू) २.३९.३. [उस्र इति व्याख्यातम्। ततो मत्वर्थे 'लुगकारेकाराश्च वक्तव्याः' अ० ४.४.१२८ वा० सूत्रेण अकारप्रत्ययः]

उस्रा इव यथा किरणास्तथा १.८७.१. [उस्रा व्याख्यातम्। उस्रा-इवपदयोः समासः]

उस्रि गवादियुक्तम् (भेषजम्=औषधम्) ५.५३.१४. [उस्रेति गोनाम निघं० २.११. ततो मत्वर्थ इकारप्रत्ययः]

उस्रिकम् य उस्राभिर्गोभिश्चरति तम् (विद्वज्जनम्) १.१९०.५. [उस्रेति गोनाम निघं० २.११. चरत्यर्थे ततष् ठन्प्रत्ययः]

उस्रियः उस्रासु किरणेषु भवः (वृषभः=मेघः) ५.५८.६. [उस्रेति रश्मिनाम निघं० १.५. ततो भवार्थे घः प्रत्ययः]

उस्रिया क्षीरादिप्रदा (गौः) ४.५.९. **उस्रियाणाम्**=गवाम् ४.५.८. रश्मीनाम् ५.३०.४. किरणानाम् ५.३०.११. **उस्रियाभिः** किरणैः १.६२.३. **उस्रियायाम्**=पृथिव्याम् ३.३०.१४. गवि १.१८०.३. भूमौ ३.३९.६. **उस्रियायाः**=दुग्धदात्र्या धेनोः, प्र०—उस्रियेति गोनाम निघं० २.११, १.१५३.४. धेनोर्गोः १.१२१.५. **उस्रियासु**=पृथिवीषु ५.८५.२. गोषु ४.३१. भूमिषु २.४०.२. **उस्रियाः**=किरणाः, प्र०—अत्र इयाडियाजीकाराणामुपसङ्ख्यानाम्, इत्यनेन शसः स्थाने डियाजादेशः, उस्रेति रश्मिनामसु पठितम् निघं० १.५, १.६.५. उस्रासु रश्मीषु भवा विद्युतः १.११२.१२. पृथिव्यां वर्त्तमानाः (प्रजाः) ४.५०.५. किरणैस्संयुक्तः (सूर्यः) ३.१.१३. गावः किरणाः ३.३१.११. ['उस्रिया' इति गोनाम निघं० २.११. उस्रेति रश्मिनाम (निघं० १.५.) ततो भवार्थे यः प्रत्ययः। उस्राविणोऽस्यां भोगाः नि० ४.१९.]

उस्रेव यथा गौस्तथा १.९२.४. [उस्रा इव पदयोः समासः]

उस्रौ रश्मिमन्तौ निवासहेतू सूर्य्यवायू, प्र०—उस्रेति रश्मिनामसु पठितम् निघं० १.५. गोनामसु च निघं० २.११, ४.३३. [उस्रा रश्मिनाम गोनाम च। ततो मत्वर्थे 'लुगकारेकाराश्च वक्तव्याः' अ० ४.४.१२८. वा० सूत्रेण अकारः]

उहीत वहेत् ७.३७.६. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिङ्। छान्दसं रूपम्]

उहुवः भाराणां वोढारः (हंसासः=अश्वाः) ४.४५.४. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

उह्यमानः गम्यमानः (इन्द्रः=राजपुरुषः) २.१८.६. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

ऊचिम उच्याय १.१६१.१. **ऊचिषे**=वक्ति १२.४९. उच्याः ३.२२.३. **ऊचुः**=वदन्ति ६.४५.८. वदन्तु ४.३३.६. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लिट्]

ऊचुषे वक्तुमर्हाय (श्रवसे=धनाय) १.१०३.४. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

ऊतयः रक्षाः ४.३१.१०. रक्षका गुणाः ३.१३.२. रक्षादिक्रियावन्तः (जनाः) १.१३४.२. रक्षणादिकाः क्रियाः १.९१.९. रक्षादयः १.५१.२. रक्षणादीनि कर्माणि १.८४.२०. रक्षणाद्याः ५.५४.७. रक्षणानि १.११.३. रक्षा-विज्ञान-सुखप्राप्त्यादयः १.८.९. अनन्तरक्षण तथा बलादि गुण आर्याभि० १.४१, ऋ० १.७.९.७. कमनीया रक्षादयः पं० वि०। रक्षा करने हारे (उपाय) आर्याभि० १.२९. रक्षादिक्रियावन्तः (क्राणाः=सज्जनाः) १.१३४.२. **ऊतये**=व्यवहार-सिद्धि-प्रवेशाय ३.३९.९. विद्याप्राप्ताय प्र०—अत्राऽवधातोः प्रयोगः 'ऊतियूति०' अ० ३.३.९७. अस्मिन् सूत्रे निपातितः १.४.१. विद्यादिशुभगुणप्रवेशाय

३.४३.८. अतिशयेन गुणप्राप्तये १.४८.१४. ऐक्यभावप्रवेशाय. ३५०.५. रक्षणाद्यर्थाय १.१०६.१. रक्षादिव्यवहारसिद्धये ५.४६.३. रक्षाऽर्थम् १.१०४.२. रक्षणाद्याय पुष्टये १.८.१. रक्षणाय, स्वामित्वप्राप्येत क्रियोपयोगाय वा १.९.९. क्रियासिद्धीच्छायै १.२३.३. प्रीतये १.२२.५. धनाढ्याय ७.४४.१. प्रीत्याद्याय २७.४१. **ऊतिभिः**=रक्षा-प्राप्ति-विज्ञान-सुख-प्रवेशनैः १.७.४. अन्वेषणादिरक्षादिभिः ५.३३.७. रक्षाप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशयुक्ताभिः (क्रियाभिः) १.३२.८. रक्षणादिकर्त्तृभिः सेनाभिः २.११.१९. **ऊतिम्**=रक्षां, प्रीतिमवगमं च १.१०.१०. **ऊतिः**=रक्षणादियुक्ता नीतिः १.११७.१९. रक्षणादिका (क्रिया) १.६३.६. [अव रक्षणगतिकान्तिप्रीतितृप्त्यवगमप्रवेशश्रवणस्वाम्यर्थयाचनक्रियेच्छादीप्त्यवाप्त्यालिङ्गनहिंसादानभागवृद्धिषु (भ्वा०) धातोः 'ऊतियूति०' अ० ३.३.९७. सूत्रेण क्तिन् निपात्यते। 'ज्वरत्वर०' अ० ६.४.२०. सूत्रेण ऊठ्। ऊतिरवनात् निघं० ५.३. ऊती ऊत्या च पथा (च) नि० १२.२१. ऊतयः खलु वै ता नाम याभिर्देवा यजमानस्य हवमायन्ति। ये वै पन्थानो या सुतयस्ता वा ऊतयस्त उ एवैतत् स्वर्गयाणा यजमानस्य भवन्ति। ऐ० १.२.]

ऊती ऊत्या रक्षणाद्यया क्रियया ४.१.५. ऊतये रक्षणाद्याय, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति चतुर्थ्या एकवचनस्य पूर्वसवर्णादेशः १.१००.१. ऊत्यै रक्षणाद्याय ४.२९.१. रक्षणादिव्यवहारसिद्धये १.१००.२. ऊत्या रक्षणाद्येन ४.२३.२. रक्षकः (परमेश्वरः) ऋ० भू० ३०८. ऊत्या रक्षणादिक्रियया ४.३१.१. रक्षाद्यया क्रियया, प्र०—'सुपां सुलुग्०' इति पूर्वसवर्णः १८.७४. रक्षाभिः, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति भिसो लुक् ४.४१.११. रक्षा के लिए आर्याभि० १.३२, ऋ० १.७.१०.१५. सम्यग्रक्षया ७.१९.११. ऊत्या रक्षणादिकर्मयुक्तया(क्रियया) १.१७८.१. व्यवहारविद्यारक्षे १.१८५.९. ['ऊतयः' पदे व्याख्यातम्]

ऊतीः रक्षाद्याः क्रियाः १.१३०.५. रक्षणाद्याः १.११९.८. ['ऊतयः' पदे व्याख्यातम्]

ऊत्या रक्षणादिसत्क्रियया १.१३५.५. रक्षणेन ऋ० भू० २६०. रक्षया ६.४८.९. ['ऊतयः' पदे व्याख्यातम्]

ऊदिम वदेम १.१६१.१. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्यजादित्वात् किति सम्प्रसारणम्]

ऊधन् ऊधनि उषसि, प्र०—ऊध इत्युषसो नामसु पठितम् निघं० १.८, १२.२०. ऊधनि अवयवे ४.७.७. ऊधनि दुग्धाऽऽधारे १.१५२.६. आढ्ये धनाढ्ये (सदने=राज्ये) ४.१०.८. **ऊधनि**=रात्रौ, प्र०—ऊध इति रात्रिनाम निघं० १.७, २.३४.२. उषःसमये ५.३४.३. अत्र वर्णव्यत्ययेन सस्य नः ३.२९.१४. उषसि १.५२.३. **ऊध्नः**=विस्तीर्णबलान् (पुरुषान्) ४.२२.६. **ऊधः**=पयोधिकरणम् २.३४.१०. दुग्धाऽधिकरणम् १.६९.२. दुग्धाऽऽधारम् ७.५६.४. स्तनाऽऽधारः २.१४.१०. जलाऽऽधारं धनसमूहम् ५.३२.२. जलस्थानम् १.१४६.२. रात्री ३.१.९. उषाः ३.५५.१३. उषसम् १.६४.५. उत्कृष्टम् (सोमं=दुग्धादिरसम्) ४.२३.१. ऊर्ध्वं गमयिता (विद्वज्जनः) ५.४४.१३. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिकोऽसुन्। धातोः सम्प्रसारणे कृते दीर्घत्वं धकारश्चान्तादेशः वर्णव्यत्ययेन सस्य नकारः। ऊधस् रात्रिनाम निघं० १.७. गोरूध उद्धततरं भवति उपोनद्धमिति वा। स्नेहानुप्रदानसामान्याद्रात्रिरप्यूध उच्यते नि० ६.१९. ऊधा रात्रिनाम निघं० १.७.]

ऊनम् अ०—बुद्धिबलशौर्यादिकमपर्याप्तम् ३.१७. न्यून (बलादि) आर्याभि० २.३३, ३.१७. [अवति रक्षादिकं करोतीति विग्रहे अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'इण सिञ्जि०' उ० ३.२ सूत्रेण नक् प्रत्ययः]

ऊनयीः परिहीणं क्षीणं न्यूनं सम्पादयेः, ऊनयेः प्र०—लुङ्प्रयोगोऽयम् १.५३.३. [ऊन परिहाणे (चुरा०) धातोर्लुङ्। 'नोनयतिध्वनयति०' अ० ३.१.५१. सूत्रेण णिजन्ताद् धातोश्च्लेश्चङः प्रतिषेधे सिच्। आडभावश्च]

ऊपथुः वपेथाम् १.११६.११. वपेतम् १.११७.५. वपतः १.११७.१२. **ऊपिषे**=वपसि, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् १.३१.९. [डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लिट्। यजादित्वात् किति सम्प्रसारणम्]

ऊम् अप्यर्थे १.३२.१५. अद्भुते १.११३.२. आश्चर्ये ३.५७.४. चाऽर्थे १.३६.१३. निश्चयाऽर्थे १.३४.११. वितर्के १.२६.५. जिज्ञासने १.२८.३.]

ऊमाः कमनीयाः (अश्वाः=किरणाः) ३.६.८. सर्वस्य रक्षणादिकर्त्तारः (आप्ताः पुरुषाः) ५.५२.१२. रक्षादिकर्मकर्त्तारः (विद्वज्जनाः) ३३.८०. **ऊमैः**=रक्षणादिभिः १.१६९.७. **ऊमासः**=रक्षणादिकर्त्तारः (विद्वज्जनाः) १.१६६.३. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'अविसिवि०' उ० १.१४४. सूत्रेण मन् प्रत्ययः किच्च। 'ज्वरत्वर०' सूत्रेण ऊठ्। ऊमा वै पितरः प्रातःसवने, ऊर्वा माध्यन्दिने, काव्यास्तृतीयसवने (ऊमाः=ऋतुविशेषः)

नैत्तरीय ४.४.७.२.) ऐ० ७.३४.]

उरः वक्षस्थलम् १.१५८.५.

ऊरुभ्याम् जानुन ऊर्ध्वाभ्यां पादाऽवयवाभ्याम् २५.६. [ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः 'ऊर्णोतेर्नुलोपश्च' उ० १.३० सूत्रेण कुः]

ऊरू सक्थिनी २०.८. ऊरू इव वेगादिकर्मकर्त्तृणी (शरीराङ्गे) ३१.११. कटि के अधस्थ और जानु के उपरिस्थ भाग स० प्र० ११४, ३१.११. व्यापारादिमध्यमैर्गुणैरुत्पन्ने (शरीराऽवयवे) ऋ० भू० १२५. **ऊरुम्**=बह्वाच्छादनं स्वीकरणं वा ४.२७. **उरुभ्याम्**=जानुन ऊर्ध्वाभ्यां पादाऽवयवाभ्याम् २५.६. **ऊरौ**=आच्छादने ८.५५. [पूर्वपदे व्याख्यातम् । अनुष्टुप् छन्दो विश्वेदेवा देवतोरू श० १०.३.२.६.]

ऊर्क् सुसंस्कृतमन्नम् १८.६. पराक्रमाऽन्नादिप्रदा शिल्पविद्या ४.१०. पराक्रमोऽन्नं वा १७.१. बलवान् (ब्रह्म) १०.२५. रसः १८.५४. **ऊर्ज्जम्**=पराक्रमाख्यां नीतिम् १.११६.८. पराक्रमम् १.११८.७. पराक्रममन्नादिकं वा ४.१०. विद्यादिपराक्रममनुत्तमं रसं वा १.१६. प्राणनम् २८.१६. बलम् १५.६. शरीराऽऽत्मबलम् १२.५८. अनेकविधं बलम् ३.४१. इष्टं विविधं रसम्, प्र०—ऊर्ग्रसः, श० १.५.४.२, २.३४. पराक्रम तथा अन्नादि ऐश्वर्य को सं० वि० १४६, ३.४१. अन्नं पराक्रमं वा, प्र०—ऊर्गिति अन्ननाम, निघं० २.७, ६.७०.६. **ऊर्जः**=पराक्रमस्य ६.४८.२. पराक्रमान् ५.१७.५. पराक्रमात् १.५८.८. पराक्रमयुक्तस्य (मनुष्यस्य) ५.७.१. पराक्रमयुक्ताः (विद्यार्थिनो जनाः) ७.१७.६. पराक्रमा अन्नादयो वा २.११.१. बलपराक्रमप्रदाः, भा०—बलपराक्रमयोर्जनकाः (आपः=प्राणरूपाः) १८.४१. बलादियुक्तस्य (विद्वज्जनस्य) ६.१६.२५. पृथिवी आदि जगत् रूप अन्न का, आर्याभि० १.४०, ऋ० १.७.३.३. वायुरूपात् कारणात् १.६६.३. **ऊर्जाम्**=बलयुक्तानां सेनानामन्नादीनां वा ५.४१.१२. **ऊर्जे**=वेदविद्याविज्ञानग्रहणाय ऋ० भू० १५२. पराक्रमप्राप्तये १४.२२. पराक्रमोत्तमरसलाभाय, प्र०—श० ५.१.२.८, १.१. कार्त्तिकाय ७.३०. अत्यन्त पराक्रम के लिए आर्याभि० २.३१, ३८.१४. [ऊर्जे अन्नाय नि० ६.२६. ऊर्ग् इत्यन्ननामोर्जयतीति सतः । पक्वं सुप्रवृक्णमिति वा नि० ३.८. ऊर्क्=अन्ननाम निघं० २.७. ऊर्ज बलप्राणनयोः (चुरा०) धातोः क्विप् । ऊर्क् अन्नं च रसं च नि० ६.४१. ऊर्जं दधाथामिति रसं दधाथामित्येवैतदाह श० ३.६.४.१८. ऊर्ग् वा आपो रसः कौ० १२.१. आपो वा ऽऊर्जोऽद्भ्यो ह्यूर्ग् जायते श० ६.४.१.१०. ऊर्ग् वा उदुम्बरः तै० १.१.३.१०. अन्नं वा ऽ ऊर्गुदुम्बरः श० ३.२.१.३३. ऊर्ग् वा अन्नमुदुम्बरः तै० १.२.६.५. ऊर्ग् वा अन्नाद्यमुदुम्बरः ऐ० ५.२४. कौ० २५.१५. ऊर्ग् वै मुञ्जाः तै० ३.८.१.१. ऊर्ग् विराट् तै० १.२.२.२. अन्नमूर्जम् कौ० २८.५.]

ऊर्जम् पराक्रमम् ११.८३. **ऊर्जे**=बलयुक्ताय पराक्रमाय) ११.५०. [ऊर्ज बलप्राणनयोः (चुरा०) धातोः क्विप्]

ऊर्जयन् बलं प्राप्नुवन् (विद्वज्जनः) २.३५.७. [ऊर्ज बलप्राणनयोः (चुरा०) धातोः शतृ]

ऊर्जयन्तीम् पराक्रमादिदानेनोन्नयन्तीम् (सुमतिं=श्रेष्ठां प्रज्ञाम्) ५.४१.१८. बलं प्रापयन्तीम् (महौषधीम्) १२.८१. **ऊर्जयन्तीः**=बलयन्त्यः (शक्तयः) ३.७.४. **ऊर्जयन्त्यः**=ऊर्जवतीषु बलयन्तीषु साध्व्यः (आपः) २.१३.८. [ऊर्ज बलप्राणनयोः (चुरा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

ऊर्जयमाने बलं कुर्वाणे (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २८.१६. [ऊर्ज बलप्राणनयोः (चुरा०) धातोः शानच्]

ऊर्जव्यस्य बहुबलप्राप्तस्य (भा०—सर्वविद्यासम्बन्धस्य) ५.४१.२०.

ऊर्जसने पराक्रमस्य प्रक्षेपणे ६.४.४. [ऊर्ज्-असनपदयोऽसमासः । ऊर्ज् व्याख्यातम् । असनम्=असुक्षेपणे (दिवा०)+ल्युट्]

ऊर्जस्वती अन्नवती, ऊर्ग् बहुविधमन्नं यस्यां सा (पृथिवी) प्र०—अत्र 'तदस्यास्त्य०' इति भूम्नि मतुप् 'ऊर्गिति अन्ननाम' निघं० २.७. 'ज्योत्स्नातमिस्रा०' अ० ५.२.११४ इति निपातितः १.२७. ऊर्जः पराक्रमसम्बन्धो विद्यते यस्याः सा (सीता=काष्ठपट्टिका) १२.७०. बहुत बल, आरोग्य, पराक्रम को बढ़ाने वाली, धन-धान्य से पूरित सम्बन्ध वाली (शाला) सं० वि० १६७, अथर्व० ६.२.३.१६. **ऊर्जस्वतीः**=बलपराक्रमप्रदाः (अपः=जलानि प्राणान्वा) १०.१. [ऊर्जस्प्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप् । ऊर्जस्=ऊर्जबलप्राणनयोः (चुरा०) धातोरसुन् । ऊर्जस्वती नदीनाम निघं० १.१३.]

ऊर्जस्वन्तम् प्रशस्तबलकारकम् (अ०—रसम्) १७.८७. उत्तमपराक्रमसम्बन्धिनम् (करदायं प्रजापुरुषम्) ६.३०. [ऊर्ज बलप्राणनयोः (चुरा०) धातोरसुन् प्रत्ययान्तान् भूम्न्यर्थे मतुप्]

ऊर्जः ऊर्जयन्ति सर्वे पदार्था यस्मिन् स कार्त्तिकः १४.१६. **ऊर्जाय**=बलाऽन्नोत्पादकाय कार्त्तिकाय २२.३१. [ऊर्ज बलप्राणनयोः (चुरा०) धातोः क्विप्। ततो मत्वर्थे 'लुगकारेकाराश्च वक्तव्याः' अ० ४.४.१२८. वा० सूत्रेण अकारः]

ऊर्जा वेगपराक्रमादिगुणयुक्ता (संहिता=विद्युत्) ३.२२. [ऊर्ज बलप्राणनयोः (चुरा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिकेऽन् प्रत्यये स्त्रियां टापि रूपम्]

ऊर्जा पराक्रमयुक्तानि कर्माणि, भा०—शरीरात्मबलानि १२.६. [ऊर्ज बलप्राणनयोः (चुरा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽन्। 'शेश्छन्दसि बहुलम्' अ० ६.१.७०. सूत्रेण शेर्लोपः]

ऊर्जानी पराक्रमयुक्ता नीतिः १.११६.२.

ऊर्जाहुतयः ऊर्जा बल-प्राणनकारिका आहुतयो ग्रहणानि दानानि वा येषान्ते (ग्रहाः=गृहाश्रमिणो जनाः) ६.४. [ऊर्ज्-आहुतिपदयोः समासः। ऊर्ज् इति व्याख्यातम् आहुतिः=आङ्+हुदानादानयोः (जु०) धातोः क्तिन्]

ऊर्जाहुती सुसंस्कृताऽन्नाऽऽहुती २८.३६. अन्नस्याऽऽहुती २१.५२. बलप्राणधारिके (उषासानक्ता=रात्रिदिने), बलस्याऽऽदात्र्यौ (रात्रिदिने) २८.१६. [ऊर्जाहुती ऊर्जाह्वान्यौ। द्यावापृथिव्याविति वाहोरात्रे इति वा शस्यं च समा चेति कात्थक्यः नि० ६.४१. सिद्धिः पूर्वपदे द्रष्टव्या]

ऊर्णम्रदाः य ऊर्णैराच्छादकैर्मृदन्ते ते (जनाः) २१.५७. [ऊर्णोपपदे म्रद मर्दने (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः]

ऊर्णम्रदसम् ऊर्णानि धान्याच्छादनानि तुषाणि म्रदयन्ति येन तं पाषाणमयम्, भा०—प्रस्तर उलूखलाख्यः साधकोऽस्याऽस्ति तस्मात्तम् २.२. ऊर्णानि सुखाऽऽच्छादनानि म्रदयति येन तं यज्ञम् २.५. **ऊर्णम्रदाः**=य ऊर्णानाच्छादकानि मृद्नन्ति ते (मनुष्याः) २१.३३. य ऊर्णैं रक्षकैर्मृदनन्ति (अर्काः=मन्त्रार्थविदो जनाः) ५.५.४. ऊर्णमाच्छादनं मृद्नन्ति सन्त्वेषन्ति यया सा (ऊर्क्=शिल्पविद्या) ४.१०. [ऊर्णोपपदे म्रद मर्दने (भ्वा०) धातोरसुन् प्रत्ययः]

ऊर्णाम् आच्छादिकाम् (शत्रुसेनाम्) ४.२२.२. **ऊर्णाः**=रक्षिताः (विदुषां सङ्गाः) ५.५२.६. [ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः 'ऊर्णोतेर्डः' उ० ५.४७. सूत्रेण डः प्रत्ययः। स्त्रियां टाप्। ऊर्णा पुनर्वृणोतेरूर्णोतेर्वा नि० ५.२१]

ऊर्णायुम् अविम् १३.५०. [ऊर्णाप्राति० 'ऊर्णाया युस्' अ० ५.२.१२३. सूत्रेण मत्वर्थे युस्। 'सिति च' इति पदत्वाद् भत्वाऽभावात् 'यस्येति चे' ति लोपो न। ऊर्णां याति प्राप्नोतीत्यूर्णायुरिति विग्रहे ऊर्णोपपदे या प्रापणे धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ३.२.१८०. वा० सूत्रेण डुः प्रत्ययः। इममूर्णायुमित्युर्णावलमित्येतत् श० ७.५.२:३५.]

ऊर्णावन्तम् बहूर्णादिवस्त्रयुक्तम् (योनिं=गृहम्) ६.१५.१६. [ऊर्णा प्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

ऊर्णासूत्रेण ऊर्णाकिम्बलेनेव (भा०—साधनविशेषेण) १६.८०. [ऊर्णा-सूत्रपदयोः समासः। ऊर्णा व्याख्यातम्]

ऊर्णु आच्छादय १६.५३. **ऊर्णुत**=आच्छादयत २.१४.३. **ऊर्णुते**=आच्छादयति १.६२.४. **ऊर्णुवाथाम्**=आच्छादयताम् २.१६. प्राप्नुयाथाम् २३.२०. **ऊर्णुषे**=स्वव्याप्त्याऽऽच्छादयसि ४.५४.२. विस्तारयसि ३३.५४. **ऊर्णोत्**=आच्छादयति स्वीकरोति वा १.६८.१. **ऊर्णोति**=निष्पादयति १.१०५.१५. [ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोर्लोट् लट् लेट् च]

ऊर्दरम् कुसूलम् २.१४.११. [ऊर्क् पराक्रमं रसं वा दृणातीति विग्रहे 'ऊर्जि दृणातेरलचौ' उ० ५.४०. सूत्रेण दृ विदारणे (क्र्या०) धातोरलचौ प्रत्ययौ। ऊर्दरं कुदरमित्यावपनस्य, ऊर्दरमुदीर्णं भवति ऊर्ज दीर्णं वा नि० ३.२०.]

ऊर्ध्वग्रावाणः मेघाः ३.५४.१२. [ऊर्ध्वः=उच्छ्रितो भवति। ग्रावः मेघनाम निघं० १.१०. तयोः समासः]

ऊर्ध्वचितः ऊर्ध्वं संचिन्वन्तः (विद्वज्जनाः) १२.४६. ऊर्ध्वानुत्कृष्टगुणान् चेतयन्ति ते मनुष्याश्चितानि कपालानि वा १.१८. [ऊर्ध्वोपपदे चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्विप्]

ऊर्ध्वनभसम् ऊद्र्ध्वं नभो जलं यस्मात्तम्, भा०—त्वद्यज्ञशोधित जलमूर्ध्वप्रापकम् (मारुतम्) ६.१६. [ऊर्ध्वनभस्पदयोः समासः। ऊर्ध्वः=उच्छ्रितो भवति नि० ८.१५. नभः=उदक नाम निघं० १.१२.]

ऊर्ध्वपृश्निः ऊर्ध्वं उत्कृष्टः पृश्निः स्पर्शो यस्य सः (पशुः पक्षी वा) २४.४. [ऊर्ध्व-पृश्निपदयोः समासः। ऊर्ध्वं व्याख्यातम्। पृश्निः=साधारणनाम निघं० १.४. स्पृशति संयुक्तो भवतीति विग्रहे 'घृणिपृश्नि०' उ० ४.५२. सूत्रेण स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोर्निः प्रत्ययो निपात्यते। धातोः सकारलोपः]

ऊर्ध्वबर्हिभ्यः ऊद्र्ध्वमुत्कृष्टं बर्हिर्वर्द्धनं येभ्यस्तेभ्यः (पितृभ्यः=पालकेभ्यो जनेभ्यः) ३८.१५. [ऊर्ध्व-बर्हि-

पदयोः समासः । र्बाहः=बृह बृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक इः प्रत्ययः]

ऊध्वम् उपरिस्थम् (भानुं=किरणम्) ४.६.२. उत्कृष्टं भागम् १.८८.४. उत्कृष्टगुणम् (यज्ञम्) ५.१७. उच्छ्रितम् उत्कृष्टम् (केतुं=प्रज्ञाम्) ३.८.८.उत्कृष्टमार्गम् प्रति १.८५.१०. प्राप्तोन्नतिम् (अध्वरम्=अहिंसनीयं व्यवहारम्) २७.१८. अग्रगामिनम् (राजानम्) २३.२७. **ऊर्ध्वः**=उन्नतः (अग्निः=राजकर्मचारिजनः) ४.४.५. उपर्य्याकाशस्थः (अग्निः=राजा) १२.१३. ऊर्ध्वगामी (पावक) ५.१.२. उपर्य्यधिष्ठाता (अग्निः=विद्वान्) ४.६.१. ऊर्ध्वं स्थित उत्कृष्टः (इन्द्रः=पुरुषार्थी सभेशः) २.२०.६. ऊर्ध्वं स्थित ऊर्ध्वं स्थापितो वा (जनः) ४.१०. सब से उत्कृष्ट गुण वाला (परब्रह्म) आर्याभि० १.१६. उपरिगामी (गातुः=स्तावको जनः) ३.४.४. ऊर्ध्वगामी (अग्निः=पावकः) ७.३९.१. [ऊर्ध्वः=उच्छ्रितो भवति नि० ८.१५. उत्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्वन् प्रत्ययः । बाहुलकाद् 'उत्' इत्यस्य 'ऊर्' इत्यादेशः]

ऊर्ध्वया उपरि गत्या १५.४७.

ऊर्ध्वया उत्कृष्टया (विद्यया) १.१२७.१. **ऊर्ध्वा**=उत्कृष्टा (उषाः) ३.५५.१४. ऊर्ध्वं स्थिता (उषः=उषाः) ३.६१.३. उत्कृष्टसुखप्रापिका (वाशीः=वाणी) १.८८.३. **ऊर्ध्वाम्**=उत्कृष्टाम् (धियम्) १.१४४.१. **ऊर्ध्वाः**=ऊर्ध्वगमयित्र्यः (मेधाः=प्रज्ञाः) ३.५८.२. उत्तमाः (समिधः) २७.११. उपरिस्थाः (दिशः) १६.६४. ऊर्ध्वं गामिन्यो ज्वालाः १.१८१.६. उच्चपदव्यः (स्त्रियः) १.१४०.८. **ऊर्ध्वायै**=ऊर्ध्ववर्त्तमानायै (दिशे) २२.२४. **ऊर्ध्वा**=ऊर्ध्वानि (तेजांसि) २७.११. ऊर्ध्वं गन्तॄणि (तेजांसि) ७.४३.२. **ऊर्ध्वासः**=उत्कृष्टाः (जनाः) ७.३१.९. ['ऊर्ध्वम्' इति व्याख्यातम् । अथैतदन्तरिक्षम् (ऊर्ध्वा दिक्) एषा हि दिग्बृहस्पतेः श० २.३.४.३६. पंक्तिः (छन्दः) ऊर्ध्वा दिक् श० ८.३.१.१२. एषा वा ऊर्ध्वा बृहस्पतेर्दिक्वदेष उपरिष्टादर्यम्णः पन्थाः श० ५.५.१.१२. स्वर्ग्यैव ऊर्ध्वा दिक् ऐ० १.१८.]

ऊर्ध्वशोचिषम् ऊर्ध्वज्वालम् (अग्निम्) ६.१५.२. [ऊर्ध्व-शोचिष्पदयोः समासः । शोचिस्=शोचति ज्वलतिकर्मा (निघं० १.१६.) धातोः 'अर्चिशुचिहुसृपि०' उ० २.१०८. सूत्रेण इसिः प्रत्ययः]

ऊर्ध्वसानुः ऊर्ध्वं सानवः शिखरा यस्य सः (अर्वा=सूर्यः) १.१५२.५. [ऊर्ध्व-सानुपदयोः समासः । सानुः=षण् सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'दृसनिजनिचरि०' उ० १.३. सूत्रेण ञुण्प्रत्ययः । षणु दाने (तना०) धातोर्वा ञुण्]

ऊर्मयः तरङ्गादयः १.५२.७. वीचयः १.४४.१२. समुद्रादिजलतरङ्गाः ६.४४. २०. **ऊर्मिभिः**=शत्रुभेदनोत्थश्रमस्वेदोदकैः १७.९५. प्रापकैः प्रकारैस्तरङ्गैर्वा, प्र०—अत्र 'अर्त्तेरुच्च' उ० ४.४. इति ऋधातोर्मिः प्रत्यय ऊकारादेशश्च १.९५.१०. **ऊर्मिम्**=उषसं जलवीचिं वा १.९५.१०. रक्षणादिकम्, अ०—आनन्दम् ४.५८.११. तरङ्गमिवोच्छ्रितम् (आहारम्) ७.४७.१. बोधम् १७.९९. जलधाराम् ४.५७.२. लहरीम् ७.३८. **ऊर्मिः**=ज्ञाता (राजा), प्रापकः (राजा) १०.२. आच्छादकस्तरङ्गः ९.६. जलसमूहः ४.५८.१. **ऊर्म्मीन्**=सतरङ्गान् (सिन्धून्=नदीः) ४.१९.५. [ऊर्मिः ऊर्णोतेः नि० ५.२४. ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः 'अर्त्तेरुच्च' उ० ४.४४. सूत्रेण बाहुलकान् मिः । ऋ गतौ (भ्वा०) धातोर्वा मिः प्रत्ययः]

ऊर्म्या रात्र्या सह, प्र०—ऊर्म्येति रात्रिनाम, निघं० १.७, १.१८४.२. **ऊर्म्यायाः**=रात्रेः ६.६५.२. रात्र्याः ६.१०.४. **ऊर्म्ये**=रात्रीव वर्त्तमाने (देवि=विदुषि स्त्रि) ५.६१.१७. [ऊर्म्या रात्रि नाम निघं० १.७.]

ऊर्म्याय ऊर्मिषु जलतरङ्गेषु भवाय वायुरिव वर्त्तमानाय (मनुष्याय) १६.३१. [ऊर्मिः पदं व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत्]

ऊर्व इव प्राप्तेन्धनोऽग्निरिव ३.३०.१९.

ऊर्वम् आच्छादकम् (सत्यम्) ४.२८.५. दुःखानां हिंसकम् (अग्निम्) २.३५.३. हिंस्यम् (दुष्टजनम्) ६.१७.१. दोषहिंसनम् १.७२.८. निरोधस्थानम् ३.३२.१६. **ऊर्वात्**=बहुरूपात् ५.४५.२. हिंसनात् ६.१७.६. विस्तीर्णात् (परिश्रमात्) ४.१२.५. **ऊर्वान्**=आच्छादकान् पावकान् ७.१६.७. विनश्वरान् पदार्थान् २.१३.७. [उर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्वन् प्रत्ययः । 'राल्लोपः' इति वलोपे 'र्वोरुपधायाः०' इति दीर्घः । ऊमा वै पितरः प्रातःसवने, ऊर्वा माध्यन्दिने, काव्यास्तृतीयसवने ऐ० ७.३४.]

ऊर्वष्ठीवे ऊरू चाऽष्ठीवन्तौ च ते, प्र०—अत्र 'अचतुरवि०' अ० ५.४.७७. इति निपातितः १८.२३. [ऊरु=ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः 'ऊर्णोतेर्नुलोपश्च' उ० १.३०. सूत्रेण कुः प्रत्ययः । अष्ठीवत्=अस्थिप्राति० मतुपि 'आसन्दीवदष्ठीवत्० अ० ८.२.१२. सूत्रेणाष्ठीभावः । तयोः समासे 'अचतुरविचतुर०' अ० ५.४.७७. सूत्रेण समासान्तेऽच्प्रत्यये टिलोपो निपात्यते]

ऊर्व्याय ऊर्वौं हिंसायां साधवे (पुरुषाय) १६.४५. [उर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः कुः प्रत्ययः। स्त्रियां ङीष्। ततः 'तत्र साधु' रित्यर्थे यत्]

ऊर्व्यूतिः ऊर्व्याः पृथिव्या ऊती रक्षा येन सः (राजा) ६.२४.२. [ऊर्वी-ऊतिपदयोः समासः। ऊर्वी=ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०)+कुः। स्त्रियां ङीष्। ऊतिः=अवरक्षणादिषु (भ्वा०+क्तिन्)]

ऊवध्यम् वधितुं ताडितुमर्हम् (उदरस्थमपक्वमन्नम्) १.१६२.१०. ऊरू वध्ये येन तत् (रेतः=वीर्यम्) प्र०—अत्र छान्दसो वर्णलोपो वा, इति रुलोपः १९.८४. मलीनम् (भा०—दुर्गन्धयुक्तं द्रव्यम्) २५.३३. [ऊरु-वध्यपदयोः समासः। पूर्वपदस्थस्य रोर्लोपः। वध्यम् वधप्राति० 'दण्डादिभ्यो यः' अ० ५.१.६६. सूत्रेणार्हत्यर्थे यः प्रत्ययः]

ऊवुः तन्तुवद् विस्तारयेयुः १.६१.८. [वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'वश्चास्यान्यतरस्यां किति' इति सूत्रेण यकारस्य वकारः]

ऊष निवासयन्ति ४.५१.४. **ऊषतुः**=वास करते थे स० प्र० १२०, १०.४०.२. **ऊषुः**=वसेयुः ३.७.१०. [वस निवासे (भ्वा०) धातोर्लिट्। यजादित्वात् सम्प्रसारणम्। 'शासिवसिघसीनाञ्चे' ति षत्वम्। पुरुषव्यत्ययः]

ऊष्मणः आतपान् ६.१८. **ऊष्मणा**=ऊष्णतया २५.९. [उष दाहे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको मनिन् प्रत्ययः। अन्येषामपीति दीर्घः]

ऊष्मण्या ऊष्मसु साधूनि (पात्राणि) २५.३६. [ऊष्मन्प्राति० 'तत्र साधु' रित्यर्थे यत्। ऊष्मन् इति व्याख्यातम्]

ऊहति वितर्कयति ५.३४.३. **ऊहथुः**=प्राप्नुतम् १.११६.४. प्रापयतम् १.४७.९. प्रापयथः ६.६३.६. वहतम् १.११६.२०. वहेतम् १.११६.३. वहथः, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ६.६२.३. देशान्तरमगतं सम्यक् सुखेन प्रापयतः ऋ० भू० १९०, सद्यो गमयेतम् १.११६.५. **ऊहामि**=तर्कयामि ६.३. तर्केण निश्चयामि ५.२५. योजयामि, तर्केण क्षिपामि, तर्कैः प्राप्नोमि करोमि वा २.१५. [ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। ऊहथुः=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट्। यजादित्वात् किति सम्प्रसारणम्]

ऊहिरे प्राप्नुवन्ति २.३४.१२. **ऊहिषे**=वितर्कयसि १.१२८.६. **ऊहुः**=वहन्ति ४.२७.३. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट्। सम्प्रसारणं किति। ऊहिषे=ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लिट्। छान्दसत्वाद् आमोऽभावः]

ऊहे वितर्कयामि ५.३.९. [ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लट्]

ऊह्याते देशान्तरं गम्येते १.१२०.११. **ऊह्याथे**=वितर्कयथः ४.५६.६. [वह प्रापणे (भ्वा०) ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

ऊह्ळाः प्राप्ताः (दिशः) ६.६०.२.

ऋक् ऋग्वेदः १८.२९. ऋग्वेदाऽध्ययनम् ऋ० भू० १५४, **ऋग्भिः**=मन्त्रैः २.३५.१२. **ऋचम्**=प्रशंसनीयमृग्वेदम् ३६.१. **ऋचः**=ऋग्वेदश्रुतयः १८.६७. ऋग्वेदाऽऽदेः १.१६४.३९. चत्वारो वेदाः ऋ० भू० ३१६, ऋच्छ्रुतयः ५.४४.१४. प्रशंसितबुद्धयो विद्यार्थिनः ५.४४.१५. सब वेदों का स० प्र० ९१, १.१६४.३९. ऋग्वेदः ३४.५. **ऋचा**=वेदचतुष्टयेन १.१६४.३९. प्रशंसया, ऋग्वेदादिना ६.१६.४७. स्तुत्या ५.६४.१. ऋग्वेदेन ११.८. प्रशंसया ५.६.५. स्तुत्या ऋग्वेदादिना वा, भा०—वेदरीत्या १८.६३. वेदादि शास्त्र पढ़ने से, सं० वि० २१५, १.१६४.३९. ऋग्वेदादि से स० प्र० ९१, १.१६४.३९. प्रशंसितौ (स्त्रीपुरुषौ) २.३.७. **ऋचे**=स्तुतये १३.३९. [ऋच् स्तुतौ (तुदा०) धातोः क्विप् 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' सूत्रेण। ऋक् वाङ्नाम निघं० १.११. ऋक् अर्चनी नि० १.८. अथेमानि प्रजापतिर् ऋक्पदानि शरीराणि सञ्चित्याऽभ्यर्चत्। यदभ्यर्चत्ता एवर्चोऽभवन् जै० उ० १.१५.६. प्राणो वा ऋक् प्राणेन ह्यर्चति श० ७.५.२.१२. ब्रह्म वा ऋक् कौ० ७.१०. वागृक् जै० उ० ४.२३.४. वागेवऽर्चश्च सामानि च। मन एव यजूंषि श० ४.६.७.५. ऋग् रथन्तरम् तां० ७.६.१७. अमृतं वा ऋक् कौ० ७.१०. अस्थि वा ऋक् श० ७.५.२.२५. ऋक् शतपदी ष० १.४. तस्य (दक्षिणनेत्रस्य) यच्छुक्लं तदृचां रूपम् जै० उ० ४.२४.१२. ऋक्सामयोर्हैते (शुक्लकृष्णे) रूपे श० ६.७.१.७. उक्थमिति बह्वृचः (उपासते) श० १०.५.२.२०. यदेतन्मण्डलं (आदित्यः) तपति। तन्महदुक्थं ता ऋचः स ऋचां लोकः श० १०.५.२.१. वीर्यं वै देवतऽर्च्चः श० १.७.२.२०.]

ऋक्वता बहुप्रशंसायुक्तेन (गणेन=उपदेश्यविद्यार्थिसमुदायेन) ४.५०.५. [ऋच्प्राति० प्रशंसायां मतुप्। 'अयस्मयादीनि च्छन्दसि' अ० १.४.२०. सूत्रेण पदत्वात् कुत्वं भत्वाज्जश्त्वं च न भवति]

ऋक्वभिः प्रशस्ता ऋचः स्तुतयो विद्यन्ते येषु कर्मसु तैः १.८७.६. प्रशंसनीयैः (विनयादिगुणैः) ६.३२.२. प्रशंसितैः (कविभिः=विपश्चितैः ६.३२.३. प्रशंसितैर्गुणकर्म-

स्वभावैः १.१५५.६. सत्कर्तृभिः (मरुद्भिः=मनुष्यैः) ५.५२.१. सत्कर्त्तव्यैः (मरुद्भिः=मनुष्यैः) ५.६०.८. ऋग्वेदादिभिः ७.१०.४. **ऋक्वा**=सत्कर्त्ता (सत्पुरुषः) ७.३७.४. **ऋक्वाणः**=प्रशस्ता ऋचः स्तुतयो विद्यन्ते येषान्ते (विद्वांसः) १.८७.५. स्तुत्यानां गुणानां स्तावकाः (सज्जनाः) ३.१३.५. [ऋच्प्राति० मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' अ० ५.२.१०९. वा० सूत्रेण वनिप्। अयस्मयादित्वात् पदत्वात् कुत्वं भत्वाच्च जश्त्वं न भवति।]

ऋक्षलाभिः गत्यादानैः २५.३. [ऋक्षोपपदे ला आदाने (अदा०) धातोर् 'घञर्थे क विधानमि' ति कः प्रत्ययो भावे स्त्रियां टाप्। ऋक्षः=ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः सः प्रत्ययः]

ऋक्षः पशुविशेषः ५.४६.३. भल्लूकः २४.३६. **ऋक्षाः**=सूर्यचन्द्रनक्षत्रादिलोकाः १.२४.१०. [ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः 'ऋषेर्जातौ' उ० ३.६७. सूत्रेण सः प्रत्ययः। ऋक्षाः स्तृभिरिति नक्षत्राणाम्। उदीर्णानीव ख्यायन्ते निघं० ३.२०. सप्तर्षीन् उ ह स्म वै पुरऽक्षा इत्याचक्षते श० २.१.२.४.]

ऋक्षीकाभ्यः या ऋक्षा गतीः कुर्वन्ति ताभ्यः (स्त्रीभ्यः) ३०.८.

ऋक्समम् ऋचः सनन्ति सम्भजन्ति येन तत् साम १३.५६.

ऋक्सामयोः ऋक् च साम च तयोर्वेदयोः ४.९. **ऋक्सामानि**=ऋक् च सामानि च तानि १८.४३. **ऋक्सामाभ्याम्**=ऋचन्ति स्तुवन्ति पदार्थान् येन स ऋग्वेदः, सामयन्ति सान्त्वयन्ति कर्माऽन्तं फलं प्राप्नुवन्ति येन स सामवेदः, ऋक् च साम च ताभ्याम्, प्र०—अत्र 'अचतुर-विचतुर-सुचतुर-स्त्री-पुंस-धेन्वनडुहर्क्साम०' अ० ५.४.७७. इति सूत्रेणाऽयं समासान्ताऽच्प्रत्ययेन निपातितः ४.१. [ऋक्-सामन्पदयोः समासः। 'अचतुरविचतुर०' अ० ५.४.७७. सूत्रेण द्वन्द्वसमासे समासान्तेऽच् प्रत्यये 'नस्तद्धिते' अ० ६.४.१४४. सूत्रेण टिलोपः। ऋक्सामे वा इन्द्रस्य हरी ऐ० २.२४. तै० १.६.३.९. ऋक्सामे वै हरी श० ४.४.३.६. ऋक्सामे वै सारस्वतावुत्सौ तै० १.४.४.९. ऋक्सामानि वा एष्टयः ऋक्सामैर्ह्याशासत ऽइति नोऽस्त्वित्थं नोऽस्त्विति श० ९.४.१.१२.]

ऋग्मियम् य ऋग्भिर्मीयते तम् (राजानमिव सूर्यम्) ६.८.४. य ऋग्भिर्मीयते प्रमीयते तम् (अग्निम्) ३.२.४. ऋचां वेदमन्त्राणां निर्मातारम् (इन्द्रं=धारकमीश्वरम्) प्र०—ऋगुपधात् मीञ् धातोः क्विप्, अमीयङादेशश्चेति १.९.९. स्तुतिभिः स्तवनीयम् (आप्तं विद्वज्जनम्) ६.४५.७. **ऋग्मियाय**=ऋग्भिर्यो मीयते स्तूयते तस्मै (सभाद्यध्यक्षाय, प्र०—अत्र ऋगुपपदान्माधातोर्बाहुलकादौणादिको डियच्-प्रत्ययः १.६२.१. य ऋचो मिनोत्यधीते तस्मै (नरे=नायकाय जनाय) ३४.१६. [ऋच्शब्दान् मत्वर्थीयः 'बहुलं छन्दसि' अ० ५.२.१२२. सूत्रेण ग्मिनिः। अमीयङादेशः, छन्दसि सर्वनामस्थानेऽपि पदत्वान्नलोपः। ऋगुपपदाद्वा मा माने (अदा०) धातोः डियच् प्रत्ययः। ऋग्मियम् ऋग्मन्तमिति वा, अर्चनीयमिति वा, पूजनीयमिति वा नि० ७.२६.]

ऋग्मी ऋग्वेदी (इन्द्रः=सभाध्यक्षो वा), **ऋग्मिभिः**=ऋचः ऋग्वेदमन्त्राः सन्ति येषान्ते ऋग्मयस्तैः (विद्वज्जनैः) प्र०—अत्र मत्वर्थीयो बाहुलकाद् ग्मिनिः प्रत्ययः १.१००.४. [ऋच्प्राति० मत्वर्थे 'बहुलं छन्दसि' अ० ५.२.१२२. सूत्रेण ग्मिनिः]

ऋघायतः ऋतं सत्यं हिंसतः (दुर्जनस्य), प्र०—अत्र हनधातोः 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति तलोपो बाहुलकादौणादिको डण्) प्रत्ययः २.२५.३. बाधमानान् (वनून्=अधर्मसेविनो जनान्) ४.३०.५. [ऋतोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको डण्। पूर्वपदस्य तकारलोपः। ऋघायप्राति० क्विपि नामधातुसंज्ञायां लट्]

ऋघायन्त बाध्यन्ते ४.१७.२. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोऽन् संप्रसारणं च। तत आचारे क्यङ्]

ऋघायमाणम् परिचरितुमर्हम् (इन्द्रं=जगदीश्वरम्) प्र०—ऋध्यते पूज्यते इति ऋघः, अत्र बाहुलकात् कः, तत आचारे क्यङ् 'ऋघ्नोतीति परिचरणकर्मसु पठितम् निघं० ३.५., १.१०.८. **ऋघायमाणः**=वर्द्धमानः (सभेशः) प्र०—अत्र ऋधु धातोः कः प्रत्ययो वर्णव्यत्ययेन घः, तत 'उपमानादाचारे' इति क्यङ् १.१७६.१. ऋघो हिंसितुम् इवाऽऽचरति (सभापतिः), प्र०—अत्र रधधातोर्बाहुलकादौणादिकोऽन् प्रत्ययः सम्प्रसारणञ्च तत आचारे क्य १.६१.१३. [ऋधु वृद्धौ (स्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। तत आचारे क्यङन्तात् शानच्। धस्य घो वर्णव्यत्ययेन। रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोऽन्। ततः क्यङ् आचारे। रेफस्य संप्रसारणम्, धस्य घकारश्छान्दसः। ऋघ्नोतीति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५) धातोः कः। ततः क्यङ् आचारे। ततः शानच्]

ऋघावा शत्रूणां हन्ता (अर्यः=स्वामीश्वरो राजा

वा) ४.२४.८. ['ऋ' उपपदे हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्वनिप् प्रत्ययः । हस्य घकारः नकारस्याकारश्छान्दसः]

ऋघावान् ऋघा वह्वचः स्तुतयः सत्याऽसत्यविवेचिका मतयो विद्यन्ते यस्मिन् सः (मन्त्रः=विचारः) १.१५२.५. य ऋन् शत्रून् घ्नन्ति ते वा बहवः शूरा विद्यन्ते यस्य सः (इन्द्रः=परमैश्वर्ययुक्तो जनः), प्र०—अत्र हनधातोर्वर्ण-व्यत्ययेन हस्य घो नलोपश्च ३.३०.३.

ऋचसे प्रशंसिताय कर्मणे ६.३९.५. [ऋच् स्तुतौ (तुदा०) धातोरसुन् प्रत्ययः]

ऋचीषम ऋचा तुल्यप्रशंसनीय (इन्द्र=राजन् ६.४६.४. **ऋचीषमाय**=ऋच्यन्ते स्तूयन्ते त ऋचीषास्ता-नतिमान्यान् करोति तस्मै (इन्द्राय=सभाद्यध्यक्षाय), प्र०—अत्र ऋचधातोर्बाहुलकादौणादिकः कर्मणीषन् प्रत्ययः १.६१.१. [ऋच् स्तुतौ (तुदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः कर्मणीषन् प्रत्ययः । ऋचीषोपपदे मा माने (अदा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' अ० ३.२.१०१. वा० सूत्रेण डः प्रत्ययः । ऋचीषमः=ऋचासमः नि० ६.२३.]

ऋच्छतु प्राप्नोतु १३.४७. [ऋच्छ गत्यादिषु (तुदा०) धातोर्लोट् । ऋच्छति गतिकर्मा निघं० २.२४. परिचरण-कर्मा निघं० ३.५.]

ऋचयमाना स्तूयमाना (वाक्) ६.३८.२. **ऋचय-माने**=स्तूयमाने (अहोरात्रे) ६.४९.३. [ऋच् स्तुतौ (तुदा०) धातोः कर्मणि शानच् । स्त्रियां टाप्]

ऋजवे सरलाय, भा०—विनयेन युक्ताय (विदुषे) ३७.१०. **ऋजुः**=सरलः (विद्वज्जनः) २.२६.१. [अर्ज अर्जने (भ्वा०) अर्ज प्रतियत्ने (चुरा०) धातोर्वा 'अर्जिदृशि०' उ० १.२७. सूत्रेण कुः प्रत्ययः । धातोश्च 'ऋजि' आदेशः । ऋजुः=ऋजुरित्यप्यस्य (ऋञ्जतेः) भवति नि० ६.२१. असौ वा लोकः ऋजुः सत्यं ह्यृजुः सत्यमेव य एषः (सूर्यः) तपति श० १४.१.२.२२.]

ऋजिप्यम् ऋजूनां पालके भवम् (वृषणं=राज-पुरुषम्) ६.६७.११. ऋजिपेषु सरलानां पालकेषु साधुम् (राजजनम्) ४.३८.२. **ऋजिप्यः**=सरलगामिषु साधुः (राजा) ४.३८.७. य ऋजुगामिषु साधुः (सज्जनः) ४.२७.४. **ऋजिप्याः**=ऋजीन् सरलान् व्यवहारान् प्यायन्ते वर्द्धयन्ति ते (सखायः=सुहृदो जनाः) ३.३१.१७. ['ऋजि' उपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः । ततः 'तत्र साधु' इत्यर्थे यत् । अथवा= 'ऋजि' उपपदे ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः]

ऋजिप्यासः ये ऋजिं कोमलत्वं वर्द्धयन्ति ते (प्राज्ञा राजजनाः) २.३४.४. ['ऋजि' उपपदे ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क । ततः प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः । ऋजिः=ऋज गतिस्थानादिषु (भ्वा०) धातोरिक् प्रत्ययः]

ऋजिश्वना ऋजय ऋजुगुणयुक्ताः सुशिक्षिताः श्वानो येन तेन सह (व्यवहारेण) १.५३.८. ऋजवः सरलाः श्वानो वृद्धयो यस्मिन्नध्ययने तेन, प्र०—अत्र श्वन्शब्दः श्विधातोः कनिन्प्रत्ययान्तो निपातित उणादौ १.१०१.१. **ऋजिश्वने**=ऋजुगुणैर्वृद्धाय (अपत्याय) ४.१६.१३. ऋज्वादिगुणवर्धकाय (सुपात्राय) ६.२०.७. **ऋजिश्वा**= ऋजिः सरलश्चाऽसौ श्वा च ५.२९.११. **ऋजिश्वानम्**= य ऋजीन् ज्ञानादि-सरलान् गुणान् अश्नुते तं धार्मिकं मनुष्यम्, प्र०—अत्र 'इक् कृषादिभ्यः' इत्यृजधातोरिक् 'अशूङ्धातोर्ङ्वनिप् अकारलोपश्च १.५१.५. [ऋजिश्वन् पदयोः समासः । श्वन्=टुओश्वि गतिवृद्धयोः (भ्वा०) धातोरौणादिकः कनिन्]

ऋजीते सरले व्यवहारे २९.४९. ['ऋजि' उपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः]

ऋजीते ऋजु गच्छति ६.७५.१२. ['ऋजि' उपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

ऋजीपी सरलगामी (शकुनः=पक्षी) ४.२६.६.

ऋजीषम् उपार्जकम् (इन्द्रं=सूर्यलोकम्) प्र०—अत्र 'अर्जेऋर्ज् च' उ० ४.२. इत्यर्जधातोरीषन् प्रत्यय ऋजा-देशश्च १.३२.६. [अर्ज अर्जने (भ्वा०) धातोः 'अर्जेऋर्ज च' उ० ४.२८. सूत्रेणेषन् प्रत्ययः । ऋजादेशश्च]

ऋजीषिणम् ऋजूनां सरलानां धार्मिकाणां जना-नामीषितुं शीलम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.४२.२. प्रशस्त-मुपार्जनं विद्यते यस्मिँस्तम् (मरुतां गणम्) १.६४.१२. **ऋजीषिणः**=कोमलस्वभावाः (मरुतः=विद्वज्जनाः) २.३४.१. सर्वविद्यायुक्ता उत्कृष्टसेनाङ्गोपार्जकाः (नृतमासः= नायका जनाः) १.८७.१. **ऋजीषिन्**=सरलस्वभाव (सज्जन) ७.४२.३. ऋजुभावमिच्छन् (विद्वज्जन) ३.४३.५. ऋजीषि सरलत्वं यस्याऽस्ति तत्सम्बुद्धौ (तेजस्विन् राजपुरुष) ६.१७.१०. ऋजुधर्मयुक्त (इन्द्र=राजन्) ६.२०.२. शोधक (सज्जन गृहस्थिन्) ३.३२.१. **ऋजीषी**=ऋजुः (इन्द्रः= जगदीश्वरः) ४.१६.४. सरलगुणकर्मस्वभावः (राजा) ६.२४.१. सरलादियुक्तः (राजा) ५.४०.४. ऋजुनीतिः (इन्द्रः=राजा) ४.१६.१. ऋजुगामी (राजकर्मचारी) ६.१८.२. ['ऋजि' उपपदे ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०)

धातोस्ताच्छील्ये णिनिः। ऋजीषी सोमः। यत् सोमस्य पूयमानस्यातिरिच्यते तदृजीषम्, अपार्जितं भवति। तेनर्जीषी सोमः। अथाप्यैन्द्रो निगमो भवति 'ऋजीषी वज्री' इति नि० ५.१२.]

ऋजीषेण सरलभावेन १९.७२. [ऋजीषमिति व्याख्यातम्]

ऋजु सरलं यथास्यात्तथा २.३.७. **ऋजुना**=सरलेन शुद्धेन वा (पथा=न्यायमार्गेण) १.४१.५. ['ऋजवे' पदे व्याख्यातम्]

ऋजुक्रतुः ऋजवः क्रतवः प्रज्ञाः कर्माणि वा यस्य सः (विद्वज्जनः) १.८१.७. [ऋजु-क्रतुपदयोः समासः। ऋजुरिति व्याख्यातम् ।क्रतुः=कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

ऋजुगाथ य ऋजुं सरलं व्यवहारं गाति स्तौति तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) ५.४४.५. [ऋजूपपदे गै शब्दे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकस्थन् प्रत्ययः]

ऋजुनीती ऋजु सरला शुद्धा चाऽसौ नीतिश्च तया, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति तृतीयायाः पूर्वसवर्णादेशः १.९०.१. सरल शुद्ध कोमलत्वादि गुणविशिष्ट चक्रवर्ती राजाओं की नीति को। आर्याभि० १.१८, ऋ० १.६.१७.१. [ऋजु-नीतिपदयोः समासः। नीतिः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्तिन् प्रत्ययः। ततष्टास्थाने पूर्वसवर्णादेशः]

ऋजुमुष्कान् य ऋजुना मुष्णन्ति तान् (वृषणः=बलिष्ठान् सन्तानान्) ४.२.२. **ऋजुमुष्काः**=य ऋजुमार्गं मुष्णन्ति ते (अरुषासः=तुरङ्गाः) ४.६.९. [ऋजूपपदे मुष स्तेये (क्र्या०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः कक्। प्रत्ययः]

ऋजुयवः कर्मभिरात्मन ऋजुत्वमिच्छन्तस्तच्छीलाः प्र०—अत्र 'क्याच्छन्दसि'.इत्युः प्रत्ययः १.२४.४. [ऋजुपदाद् आत्मन इच्छायां क्यच्। ततस्ताच्छील्ये उः]

ऋजुवनिः ऋजूनामकुटिलानां पदार्थानां संविभाजिका (मातेव विदुषी स्त्री) ५.४१.१५. [ऋजूपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक इः प्रत्ययः]

ऋजुहस्ता ऋजू सरलौ हस्तौ यस्या यस्यां वा सा (मातेव विदुषी स्त्री) ५.४१.१५. [ऋजु-हस्तपदयोः समासः]

ऋजूयताम् सरलीकुर्वताम् (देवानां=विदुषां जनानाम्) २५.१५. आत्मन ऋजुत्वमिच्छताम् देवानां=विद्वज्जनानाम्) १.८९.२. [ऋजुपदाद् आत्मन इच्छायां क्यचि शतरि च रूपम्। 'अकृत्सार्वधातुकयो' रिति दीर्घः। ऋजूयताम् ऋजुगामिनाम् ऋतुगामिनां वा नि० १२.३९.]

ऋजूयते ऋजूयन्ते ५.१२.५. [ऋजुपदादाचारे क्यङ्]

ऋजूयते ऋजुरिवाऽऽचरतीति तस्मै (विदुषे जनाय) १.११६.२३. [ऋजुपदादाचारे क्यच्। ततः शतृप्रत्ययः]

ऋजूयन्तम् आत्मन ऋजुभावमिच्छन्तम् (सज्जनम्) १.१३६.५. [ऋजुपदाद् इच्छायां क्यचि शतरि च रूपम्]

ऋजूयेव ऋजुना मार्गेणेव, प्र०—अत्र टा-स्थाने याऽऽदेशः, 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १.१८३.५. [ऋजु-इव पदयोः समासः]

ऋज्यते उपार्ज्यते १.१४०.२. [ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु (भ्वा०) कर्मणि लट्]

ऋज्यन्तः ऋजुरिवाऽऽचरन्तः (हरयः=मनुष्याः) ६.३७.२. [ऋजु पदादाचारे क्यच्। उकारलोपश्छान्दसः। ऋज्यन्तः ऋजुगामिनः नि० १०.३. ऋज गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ऋज्रा ऋज्राणि (प्रशस्त-कर्माणि) ४.१६.११. ऋजुगामिनौ (अश्वौ) १.१७४.५. [अर्ज अर्जने (भ्वा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रन् प्रत्ययान्तो निपात्यते]

ऋज्राऽश्वम् सरलतुरङ्गम् (स्तेनम्) १.११६.१६. **ऋज्राऽश्वस्य**=ऋज्रा ऋजुगामिनोऽश्वा वेगवन्तो यस्य तस्य (सभाद्यध्यक्षस्य) १.१००.१६. **ऋज्राऽश्वः**=ऋज्रा ऋजवोऽश्वा महत्यो नीतयो यस्य सः (विद्वज्जनः) प्र०—अश्व इति महन्नाम, निघं० ३.३, १.१००.१७. ऋजुगतिमदश्वः पुरुषः १.११७.१८. **ऋज्राऽश्वे**=सुशिक्षिततुरङ्गादियुक्ते सैन्ये १.११७.१७. [ऋज्र-अश्वपदयोः समासः। 'ऋज्र' इति व्याख्यातम्। अश्वाः=अश्वनाम निघं० १.१४. महन्नाम निघं० ३.३. अश्वः=अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अशूप्रुषि०' उ० १.१५१. सूत्रेण क्वन्]

ऋज्रासः सरलस्वभावाः (विद्वांसो जनाः)७.१८.२३. ['ऋज्रा' इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

ऋज्रे ऋजुप्रिये (कर्मणि) ६.६३.९. ['ऋज्रा' इति व्याख्यातम्]

ऋज्रेभिः ऋजुगमकैः (अश्वैः=यानैः) १.११७.१४. ['ऋज्रा' इति व्याख्यातम्। भिस ऐसादेशो न भवति छन्दसि]

ऋज्वञ्चः याभिर्ऋजुमञ्चन्ति (हरितः=अङ्गुलयः)

४.६.९. [ऋजूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विन् प्रत्ययः]

ऋञ्जत प्रसाध्नुत ५.८७.५. **ऋञ्जते**=प्रसाध्नोति १.१४३.७. प्रसाधयन्ति २.२.५. भृज्जन्ति १.१४१.६. [ऋजि भर्जने (भ्वा०) धातोर्लोट् लट् च' लोटि व्यत्ययेन परस्मैपदम्। ऋञ्जतिः पदनाम निघं० ४.३. ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्मा नि० ६.२१.]

ऋञ्जती ऋञ्जमाना पाचयित्री (शरुः=दुष्टानां हिंसिका ऋष्टिः) १.१७२.२. [ऋजि भर्जने (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ऋञ्जन् संसाध्नुवन् (विद्वज्जनः) ३.३१.१. प्रसाध्नुवन् (राजा) ४.३८.७. प्राप्नुवन् (कालः) १.९५.७. [ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्मा (नि० ६.२१) धातोः शतृप्रत्ययः]

ऋञ्जन्ति साध्नुवन्ति ३.४३.६. **ऋञ्जसे**=प्रसाध्नोषि ४.८.१. [ऋञ्जन्तिः प्रसाधनकर्मा (नि० ६.२१) धातोर्लेट्]

ऋञ्जसानम् विवेकादिसाधनैः प्रसाध्यमानम् (अग्निं=परमेश्वरम्) १.९६.३. जिसको विवेक विज्ञानादि से सिद्ध करते और जानते हैं उस (परमेश्वर) को आर्याभि० १.४०, ऋ० १.७.३.३. **ऋञ्जसानः**=प्रसाध्नुवन् (इन्द्रः=राजा) ४.२१.५. य ऋञ्जति प्रसाध्नोति सः (देवः=जीवात्मा) प्र०—अत्र 'ऋञ्जिवृधिमहि०' उ० २.८७. अनेन सानच् प्रत्ययः १.५८.३. [ऋञ्जतिः=प्रसाधनकर्मा (निघं० ६.२१.) धातोः 'ऋञ्जिवृधि०' उ० २.८७. सूत्रेण सानच् किच्च]

ऋञ्जे भर्जयामि ३.४.७. साध्नोमि ४.२६.१. [ऋजि भर्जने (भ्वा०) धातोर्लेट्। ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्मा नि० ६.२१.]

ऋणचित् य ऋणं चिनोति सः (विद्वज्जनः) २.२३.१७. [ऋणोपपदे चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्विप् ह्रस्वस्य तुक्]

ऋणच्युतम् ऋणादयुक्तम् (दिवोदासं=विद्वांसम्) ६.६१.१. [च्युङ् गतौ (भ्वा) धातोः क्तः। ऋण-च्युतयोः समासः]

ऋणञ्चयस्य ऋणं चिनोति येन तस्य (राज्ञः) ५.३०.१२. **ऋणञ्चये**=ऋणं चिनोति यस्मात्तस्मिन् (राजनि) ५.३०.१४. [ऋण-चयपदयोः समासः। विभक्तेर्लुक्। चयः=चिञ् चयने (स्वा०) धातोः 'एरच्' इत्यच्]

ऋणधत् समृध्नुयात् १.८४.१६. [ऋधु वृद्धौ (स्वा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन श्नम्]

ऋणया प्राप्तया सेनया ४.२३.७. [ऋ गतिप्रापणयो (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये टापि च रूपम्]

ऋणयावा य ऋणं याति प्राप्नोति सः (सेनापतिः) १.८७.४. [ऋणोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्वनिप्]

ऋणयाः य ऋणं याति प्राप्नोति सः (विद्वान्राजा) २.३३.११. [ऋणोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोरण् प्रत्ययः]

ऋणवः प्राप्नुयाः १.१३८.२. प्रसाध्नुयाः ७.८.३. ऋणुहि १.४८.१५. [ऋणु गतौ (तना०) धातोर्लोट्]

ऋणः प्रापकः (तायुः=स्तेनः) ६.१२.५. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्तः]

ऋणा ऋणानि २.२८.९. प्राप्तानि (अनीका=सैन्यानि) ४.२३.७. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः क्तः। 'ऋणमाधमर्ण्ये' इति निष्ठानत्वं निपात्यते। ऋणं ह वै जायते योऽस्ति। स जायमान एव देवेभ्य ऋषिभ्यः पितृभ्यो मनुष्येभ्यः श० १.९.२.१.]

ऋणानि अन्येभ्यो देयानि विज्ञानानि २.२७.४. ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्तः].

ऋणावानम् ऋणयुक्तम् (मर्त्यं=मनुष्यम्) १.१६९.७. [ऋणप्राति० मत्वर्थे वनिप्। पूर्वस्य दीर्घत्वम्]

ऋणुत साध्नुत ५.४५.६. **ऋणोः**=प्राप्नुयाः १.१७४.२. प्रसाध्नुयाः ६.१८.५. प्राप्नोषि, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् 'बहुलं छन्दसि' इत्यडभावश्च १.३०.१४. प्रापयसि १.३०.१५. **ऋणोति**=प्रापयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.३५.९. [ऋणु गतौ (तना०) धातोर्लङ्। आडभावश्च। अन्यत्र लट्। ऋणोति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

ऋण्वति गच्छति, प्र०—ऋण्वतीति गतिकर्मा, निघं० २.४, ६.२.६. साध्नोति ५.१६.२. प्राप्नोति १.१२८.६. गच्छति जानाति वा ३.११.२. **ऋण्वथः**=प्राप्नुथः १.१५१.५. **ऋण्वन्**=प्रसाध्नुवन्ति ७.५.६. हिंसन्ति १.६९.५. [ऋण्वति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्लेट्। अन्यत्र लङ्]

ऋण्वन् प्रसाध्नुवन् (अग्निः=विद्वज्जनः) ७.२.१. [ऋण्वति गतिकर्मा (निघं० २.१४) धातोः शतृप्रत्ययः]

ऋण्वे प्रसाध्नोमि ५.७४.५. [ऋणु गतौ (तना०) धातोर्लेट्]

ऋतचित् य ऋतं सत्यं चिनोति सः (अग्निः=राजा) ४.३.४. या ऋतं सत्यं चिनोति सा (नारी) ४.१६.१०. [ऋतोपपदे चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्विप्। ह्रस्वस्य तुक्। ऋतं सत्यनाम निघं० ३.१०.]

ऋतजात य ऋते सत्ये जायते तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वन् जन) ६.१३.३. सत्याचारे प्राप्तप्रसिद्धे (अग्ने=विद्वन्) १.१८९.६. ऋतात् सत्यात् प्रादुर्भूत (विद्वन् जन) १.१४४.७. सत्याचरणे प्रसिद्ध (अग्ने=विद्वन् जन) ३.२०.२. **ऋतजातस्य**=ऋतात् सत्यात् कारणाज्जातस्य जगतो मध्ये ३.६.१०. **ऋतजातः**=ऋतेन सत्याचरणेन जातः प्रसिद्धः (राजपुरुषः) १.३६.१९. **ऋतजाताः**=ऋतेन सत्येन प्रसिद्धाः (विद्वांसः) ३.५४.१३. य ऋते जायन्ते ते (परमेश्वरभक्ताः) ५.६१.१४. [ऋतोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः। 'ज्ञाजनोर्जा' इति जादेशः। ऋतं सत्यनाम निघं० ३.१०.]

ऋतजातसत्याः ऋताज्जातेषु व्यवहारेषु सत्सु साध्व्यः (ब्रह्मचारिण्यः कन्याः) ४.५१.७. ऋत-जातपदयोः समासे कृते सत्यपदेन सह समासः]

ऋतजाः य ऋतं सत्यं ज्ञानं जनयति सः (ब्रह्मजीवश्च) १२.१४. यः सत्यविद्यामयं वेदं जनयति सः (परमेश्वरः) १०.२४. यः सत्याज्जातः (जीवात्मा) ४.४०.५. ये ऋतं सत्यं जानन्ति ते (ब्रह्मविदो जनाः) ७.३५.१५. [ऋतोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः प्रत्ययः। अथवा ऋतोपपदे ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्कः प्रत्ययः। छान्दसो जादेशोऽशित्यपि। ऋतजा इत्येष (सूर्यः) वै सत्यजाः। ऐ० ४.२०.]

ऋतजित् य ऋतं विज्ञानमुत्कर्षति सः, भा०—यो विद्याकर्मोन्नयति सः (गणः=गणनीयो विद्वज्जनः) १७.८३. [ऋतोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्। ह्रस्वस्य तुक्]

ऋतज्ञाम् ऋतं सत्यं जानन्ति यया ताम् (महीं=वाचम्) ५.४३.६. **ऋतज्ञाः**=य ऋतं सत्यं जानन्ति ते (विप्राः=विद्वांसः) २१.११. ये ऋतं यथार्थं जानन्ति ते (कवयः=विद्वांसः) ५.५७.८. य ऋतं सत्यं व्यवहारं ब्रह्म वा जानन्ति ते (विप्राः=मेधाविनो जनाः) ७.३८.८. ये 'ऋतं सत्यं जानन्ति' भा०—विदितवेदितव्या अधिगतयाथातथ्याः (पितरः=पालका जनाः) १९.४९. य ऋतं परमात्मानं प्रकृतिं वा जानन्ति (नरः=नायका जनाः) ५.५८.८. ब्रह्मविदो वेदविदश्च (पितरः) ऋ० भू० २५८. या ऋतञ्जानन्ति ताः (युवतीः=स्त्रियः) ४.१९.७. सत्यविदः (विद्वज्जनाः) १.७२.८. [ऋतोपपदे ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः कः प्रत्ययः। स्त्रियां टाप्। अन्यत्र प्रथमाबहुवचनम्। ऋतज्ञाः सत्यज्ञा वा यज्ञज्ञा वा नि० ११.१८.]

ऋतज्येन ऋता सत्या ज्या यस्मिँस्तेन (धन्वना=धनुषा) २.२४.८. [ऋत-ज्या पदयोः समासः। ऋतं सत्यनाम निघं० ३.१०. ज्या वयोहानौ (क्र्या०) धातोः स्त्रियामङि टापि च ज्यारूपम्]

ऋतद्युम्न ! हे सत्यधन और सत्य-कीर्त्ति वाले यतिवर सं० वि० १९५, ९.११३.४. [ऋत-द्युम्नपदयोः समासः। ऋतं सत्यनाम निघं० ३.१०. द्युम्नं धननाम निघं० २.१०.]

ऋतधाम सर्वगत सत्य और यथार्थस्वरूप वाला धाम स्थान आर्याभि० २.१७, ५.३२. ऋतं यथार्थं धाम स्थित्यर्थं स्थानं यस्य सः (राजा) १८.३८. यथा सत्यं जलं वा दधाति तथा (भगवान् विद्वान्वा) ५.३२. [ऋत-धामन्पदयोः समासः। धामन्=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहुलकादौणादिको मनिन् प्रत्ययः। दधाति यत्रेति विग्रहः]

ऋतधीतयः सत्यधारकाः (महाविद्वांसः) ६.५१.१०. ऋतस्य सत्यस्य धीतिर्धारणं येषान्ते (विद्वज्जनाः) ५.५१.२. **ऋतधीतिभिः**=जलधारकैर्गुणैः ६.३९.२. [ऋत-धीतिपदयोः समासः। धीतिः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातो स्त्रियां क्तिन्]

ऋतनिभ्यः सत्यन्यायकर्त्रीभ्यो राज्ञीभ्यः २.२७.१२. [ऋत-तनिपदयोः समासः। तकारलोपः पूर्वपदस्य छान्दसः। तनिः=तनु विस्तारे (तना०) धातोर्बाहुलकाद् इः प्रत्ययः]

ऋतपाः य ऋतं सत्यं पाति (सूर्यः) ६.३.१. सत्यपालिका (उषाः) १.११३.१२. [ऋतोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोरण् प्रत्ययः]

ऋतपेशसे सत्यस्वरूपाय (वरुणाय=उत्तमव्यवहाराय) ५.६६.१. [ऋत-पेशस्पदयोः समासः। पेशस् इति रूपनाम निघं० ३.७. हिरण्यनाम निघं० १.२.]

ऋतप्रजात ऋतं सत्यं प्रजातं यस्मात्तत्सम्बुद्धौ (अर्य=स्वामीश्वर) २६.३. ऋते सत्याचरणे प्रकट (बृहस्पते=विद्वज्जन) २.२३.१५. **ऋतप्रजातः**=कारणादुत्पद्य ऋते वायावुदके प्रसिद्धः (अग्निः) १.६५.५. [ऋत-प्रजातपदयोः समासः। प्रजातः=प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः]

ऋतप्रवीतम् ऋतात् सत्यात् कारणात् प्रकृष्टतया

जनितमुदकेन चालितं वा (रथम्) १.७०.४. [ऋत-प्रवीत-पदयोः समासः। प्रवीतम्=प्र+वी गतिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोः क्तः]

ऋतप्सू ऋतं जलं प्सातो भक्षयतस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) प्र०—ऋतमित्युदकनाम, निघं० १.१२, १.१८०.३. [ऋतोपपदे प्सा भक्षणे (अदा०) धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' इति डुः प्रत्ययः]

ऋतम् यथार्थं सर्वविद्याऽधिकरणं वेदशास्त्रम् पं० वि०। अव्यभिचारि (सत्यम्=अव्यक्तं जीवाख्यं, सत्यभाषणादिकम्) ११.४७. प्राप्तुं योग्यं कारणम् (रत्नम्=सुवर्णहीरकादिकम्) ३.५४.३. ब्रह्म, सत्यं, यज्ञं वा १.४१.४. सत्यं विज्ञानं १.७१.३. सत्यं कारणम् १.१०५.५. वेद- सृष्टिक्रम--प्रत्यक्षादिप्रमाणविद्वदाचरणाऽनुभव- स्वात्मपवित्रतानामनुकूलम् (सुप्रवाचनम्=अध्यापनमुपदेशनम्) १.१०५.१२. यज्ञं, सत्यव्यवहारं जलादि च १.१८८.२. सत्याऽऽढ्यम् ५.६८.१. सत्यं धर्म्मम् ७.२१.५. सत्यरूपम् १.१०५.१५. सत्यं न्याय्यम् ४.२.१६. उदकम् २.२८.४.

ऋतस्य=प्राप्तसत्यस्य (पत्युः) २१.५. सत्याचारस्य ३.६२.१८. सत्यन्यायाख्ययज्ञस्य ६.८. कारणस्य १.१०५.६. सत्यस्य ५.१२.२. सत्यस्य विज्ञानस्य ७.७.६. सत्यविद्यामयस्य वेदचतुष्टयस्य जलस्य वा १.६७.४. सत्यस्य वस्तुनो व्यवहारस्य वा ७.६०.५. सत्यव्यवहारयुक्तजनस्य १.१२३.९. सत्यस्य प्रकृत्याख्यस्य ४.४२.४. सत्यस्यं सर्वविद्यायुक्तस्य वेदचतुष्टयस्य, सनातनस्य जगत्कारणस्य वा, प्र०—ऋतमिति सत्यनामसु पठितम्, निघं० ३.१०. 'पदनामसु च' निघं० ५.४, १.१.८. सत्यविद्यामयस्य वेदचतुष्टयस्य मोक्षस्य च वे० भा० न० सत्यस्वरूपस्य सत्यप्रियस्य वा (ईश्वरस्य) १.४३.९. सत्यस्य परमाण्वादेः ५.२१.४. अनादिस्वरूपस्य सस्यस्य कारणस्य जलस्य वा, प्र०—ऋतमित्युदकनाम, निघं० १.१२, ३.२३. यथार्थम्, प्र०—अत्र कर्मणि षष्ठी २९.१६. शुद्धस्य सत्यस्य २.६. यथार्थस्वरूपस्य (ज्योतिषः=प्रकाशस्य) १.२३.५. यथार्थस्य धर्म्यस्य व्यवहारस्य ६.५१.८. स्वरूपप्रवाहेण सत्यस्य १.६८.३. स्वसामर्थ्यस्य ऋ० भू० ८९. मेघोत्पन्नजलस्येव सत्यस्य १.७३.६. यथार्थ सत्यस्वरूप परमात्मा का आर्याभि० २.१०, ३२.११. सत्यस्योदकस्य वा ७.५३.२.

ऋते=ब्रह्मणि पुरुषार्थे च ऋ० भू० १०१, १२.५.१. सत्ये धर्मे ६.६७.८. सत्यभाषणादिरूपे सङ्गन्तव्ये व्यवहारे ७.१६.६. उदकमये समुद्रादौ २.२९.४. यज्ञनिमित्तम् (अग्निम्) ३३.८. यथार्थं पक्षपातरहित न्याय रूप धर्म में सं० वि० १४३, अथर्व० १२.५.१. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्तः। ऋतम् उदकनाम निघं० १.१२. प्रत्यृतं भवति नि० २.२५. सत्यनाम निघं० ३.१०. यज्ञस्य नि० ६.२२. सत्यं वा ऽऋतम् श० ७.३.१.२३. तै० ३.८.३.४. ऋतमिति सत्यमित्येतत् ६.७.३.११. ऋतमित्येष (सूर्यः) वै सत्यम् ऐ० ४.२०. अग्निर्वा ऋतम् तै० २.१.११.१.. ऋतमेव परमेष्ठी तै० १.५.५.१. चक्षुर्वा ऋतं तस्माद्यतरो विवदमानयोराहाहमनुष्ठ्या चक्षुषादर्शमिति तस्य श्रद्दधति ऐ० २.४०. मनो वा ऋतम् जै० उ० ३.३६.५. ब्रह्म वा ऽऋतम् श० ४.१.४.१० ओमित्येतदेवाक्षरमृतम् जै० उ० ३.३६.५. अयं वा ऽअग्निर्ऋतमसावादित्यः सत्यं यदि वासावृतमयं (अग्निः) सत्यमुभयम्वेतदयमग्निः श० ६.४.४.१०. ऋतनेवैनं स्वर्गं गमयन्ति तां० १८.२.९.]

ऋतयन् सत्यमिवाऽऽचरन् (विद्यार्थिजनः) ५.४३.७. सत्यमाचरन् (विद्वज्जनः) ५.१२.३. ऋतं सत्यमात्मन इच्छन् (पुत्रः) १.११७.२२. [ऋतपदाद् आत्मन इच्छायाम् आचारे वा क्यजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

ऋतया सत्यविज्ञानयुक्तया (क्रियया) २.११.१२. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः क्तः। ततः स्त्रियां टाप्]

ऋतयुक् य ऋतेन सत्येन युनक्ति (विद्वज्जनः) ६.३९.२. **ऋतयुग्भिः**=जलस्य योजकैः (अश्वैः=किरणैः) ६.३९.४. य ऋतेन सत्येन युञ्जते तैः (अश्वैः=पुरुषार्थिपतिभिः) ४.५१.५. [ऋतोपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुह०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्]

ऋतये हिंसायै ३०.१३. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः क्तिन् स्त्रियाम्। धातूनामनेकार्थकत्वाद् हिंसायामर्थे]

ऋतवः वसन्ताद्यः २३.४०. शरदादयः २७.१. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेश्च तुः' उ० १.७२. सूत्रेण तुः प्रत्ययः। 'ऋतुना' पदे द्रष्टव्यः]

ऋतवाकेन यथार्थ बोलने से सं० वि० १९५, ९.११३.२. [ऋत-वाकपदयोः समासः। वाकः वच् परिभाषणे (अदा०) धातोर्घञि 'चजोः कु घिण्यतोः' अ० ७.३.५२. सूत्रेण कुत्वम्]

ऋतवादिभ्यः ऋतं वदितुं शीलं येषां तेभ्यः सत्यवादिभ्यो विद्वद्भ्यः ५.७. [ऋतोपपदे वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

ऋतसत् यः सत्ये सीदति (जीवात्मा) ४.४०.५. य ऋते सत्ये संस्थितः (ब्रह्म जीवश्च) १२.१४. य ऋतेषु

सत्येषु प्रकृत्यादिषु सीदति सः (परमेश्वरः) १०.२४. [ऋतोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुह०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्। ऋतसदित्येष (सूर्यः) वै सत्यसत् ऐ० ४.२०.]

ऋतसदनम् यदृतानां सत्यानां बोधानां स्थानं तत् ४.३६. ऋतानां यथार्थानां पदार्थानां सादनं स्थानम् ४.२६. [ऋत-सदनपदयोः समासः। सदनम्=षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। सदनम्=उदकनाम निघं० १.१२]

ऋतसदनी या क्रिया ऋतानां जलानां सदनी गमनागमनकारिणी ४.३६. [ऋत-सदनीपदयोः समासः। सदनी=षद्लृ विशणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। ततः स्त्रियां ङीप्]

ऋतसापः य ऋतेन सत्येन सपन्ति सम्बध्नन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ६.५०.२. ये ऋतेन सपन्ति प्रतिज्ञां कुर्वन्ति ते (मरुतः=सत्पुरुषाः) ७.५६.१२. सत्यसम्बन्धाः (विद्वज्जनाः) ५.४१.६. य आप्नुवते त आपः, समानाश्च ते इति सापः, ऋतस्य सत्यस्य मध्ये व्यापका व्यापयितारो वा विद्वांसः १.१७९.२. [ऋतोपपदे षप समवाये (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यण्। समवायः=सम्बन्धः सम्यगवबोधो वा। अन्यत्र=ऋत-सापपदयोः समासः। सापः=आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः क्विप् प्रत्यये=आप्। ततः समानेन सह समासः। समानस्य सादेशः]

ऋतस्तुभम् यया ऋतं स्तोभते स्तभ्नाति धरति ताम् (नीतिम्) १.११२.१०. [ऋतोपपदे स्तम्भु (सौत्रो धातुः) धातोः क्विप्]

ऋतस्पते ! हे सत्यपालक ! भा०—सत्यसेवक (वायो=विद्वज्जन) २७.३४. [ऋत-पतिपदयोः समासः। पारस्करप्रभृतीनामाकृतिगणत्वात् सुडागमः]

ऋतस्पृशः य ऋतं सत्यं यथार्थं स्पृशन्ति स्वीकुर्वन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ५.६७.४. सत्यस्पर्शस्य (राज्ञः) ४.५०.३. [ऋतोपपदे स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः क्विप्]

ऋतस्पृशा ऋतस्य ब्रह्मणो वेदस्य स्पर्शयितारौ प्रापकौ जलस्य च (मित्रावरुणौ=सूर्यवायू) १.२.८. [ऋतोपपदे स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः क्विप्। 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

ऋतः सत्यज्ञानः, भा०—विधानधर्त्ता (अ०—परमात्मा) १७.८२. [ऋतं सत्यनाम निघं० ३.१०. ततो मत्वर्थे 'लुगकारेकाराश्च वक्तव्याः' अ० ४.४.१२८. वा० सूत्रेण लुक्]

ऋता सत्याऽऽचारौ (अध्यापकोपदेशकौ) ६.६७.४. ऋतौ यथार्थसुगुणस्वरूपौ, (सभासेनाऽधिपती) १.४६.१४. [ऋतप्रानि० 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेणौकारस्याकारः]

ऋता ऋतानि सत्यानि (विज्ञानानि) १.१६१.६. ऋतं सत्यनाम निघं० ३.१०. ततः शेर्लोपः 'शेश्छन्दसि बहुलम्' अ० ६.१.७०. सूत्रेण]

ऋता ऋते सत्यसुखप्रापके यज्ञे ६.१५.१४. ['ऋता' इति व्याख्यातम्]

ऋतात् सत्याद् धर्म्याद् व्यवहारात् १.१३९.२. **ऋतानाम्**=सत्यानाम् (व्यवहाराणाम्) ४.२३.४. **ऋतानि**=सत्यानि (वचनानि) १.१७९.२. **ऋताय**=सत्यं प्राप्ताय (विदुषे जनाय) १.१५३.३. सत्याचाराय १.१३७.२. धर्म्यव्यवहारेण प्राप्ताय (धनाय) ५.२०.४ सत्याय जलाय वा ४.२३.१०. सत्यलक्षणाऽन्वितायोदकाय वा १.१२१.४. सत्यविद्याय (सज्जनाय) १.१५१.३. [ऋतमिति पदे व्याख्यातम्]

ऋतायतः उदकमिवाऽऽचरतः (सज्जनस्य) २.३२.१. आत्मन ऋतं सत्यमिच्छतः (महाविदुषः) २.१.२. **ऋतायते**=ऋतं कामयमानाय (विद्यार्थिने जनाय) ५.२७.४. ऋतमात्मन इच्छवे (विदुषे जनाय), प्र०—'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति क्यच उत्वं न १.९०.६. आत्मन ऋतं विज्ञानमिच्छते (मनुष्याय) १.९१.७. [ऋतपदाद् आत्मन् इच्छायामाचारे वा क्यच्। ततः शतृ]

ऋतायते ऋतमिव करोति ४.८.३. ऋतमुदकमिवाऽऽचरन्ति, प्र० अत्र वचनव्यत्ययेन बहुवचनस्थान एकवचनम् 'ऋतमित्युदकनामसु पठितम्' निघं० १.१२. 'न छन्दस्यपुत्रस्य' इतीत्वाऽभावः 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १३.२७. [ऋतपदादाचारे क्यङ्]

ऋतायन् ऋतं सत्यमात्मन इच्छन् (विद्वज्जनः) १.११७.२२. ऋतमाचरन् (सज्जनः) ५.४०.१. (ऋतपदाद् आत्मन इच्छायां क्यच्, आचारे वा उपमानाद्। 'नच्छन्दस्यपुत्रस्य' इतीत्त्वाऽभावः। ततः शतृ]

ऋतायवः ऋतं सत्यमिच्छवः (विद्वज्जनाः) ५.८.१. आत्मन ऋतमिच्छवः (नरः=नायका जनाः) ५.५४.१२. **ऋतायुभ्याम्**=आत्मन ऋतमिच्छद्भ्यामिव (अध्यापकशिष्याभ्याम्) ७.१०. **ऋतायोः**=ऋतं सत्यं न्यायधर्मं

कामयमानस्य (राज्ञः) ७.३४.१७. [ऋतपदाद् आत्मन इच्छायां क्यचि 'क्याच्छन्दसी' ति उः प्रत्ययः। ऋतायुः यज्ञकामः नि० १०.४५.]

ऋतायोः आत्मन ऋतं सत्यमिच्छुः (विद्वज्जनः) १.१६९.५. [ऋतपदाद् आत्मन इच्छायां क्यचि ताच्छील्ये उः प्रत्ययः]

ऋतावरि ! सत्याचरणयुक्ते (विदुषि स्त्रि !) २.१.१८. **ऋतावरी**=उषाः ६.६१.९. बहुसत्यप्रकाशिका (उषाः) ४.५२.२. सत्यप्रकाशिकोषाः ३.५४.४. ऋतं सत्यं विद्यते यस्यां सा (उषाः=प्रातर्वेला) ३.६१.६. **ऋतावरीम्**=बहुसत्याचरणयुक्ताम् (उषसं=प्रातर्वेलाम्) ५.८०.१. **ऋतावरीः**=ऋतं पुष्कलमुदकं विद्यते यासु ताः (नद्यः) ३.३३.५. ऋतं सत्यं विद्यते यासु ताः (दिवः=ज्योतींषि ३.५६.५. उषसः ४.१८.६. [ऋतमुदकनाम निघं० १.१२. सत्यनाम निघं० ३.१०. ततः 'छन्दसीवनिपौ' अ० ५.२.१०९. वा० सूत्रेण वनिप्। 'वनो र च' अ० ४.१.७. सूत्रेण रेफङीषौ। 'अन्येषामपि०' सूत्रेण पूर्वस्य दीर्घः]

ऋतावरी सत्यकारणयुक्ते (विद्युदन्तरिक्षे) १.१६०.१ बहूनृतादीन्युदकानि विद्यन्ते ययोस्ते (सूर्यभूमी) ३.६.१०. बह्वृतं सत्यं विद्यते ययोस्ते (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.२. [ऋतावर्यः=नदीनाम निघं० १.१३. ऋतावरीर्ऋतवत्यः। ऋतमित्युदक नाम प्रत्यृतं भवति। नि० २.२५. सिद्धिः पूर्वपदे द्रष्टव्या]

ऋतावः ऋतं सत्यं विद्यते यस्मिँस्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=राजन्) ४.१०.७. ऋतं सत्यं बहुविधं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (वरुण=अध्यापकोपदेशक वा) २.२८.६. सत्यप्रकाशक (विद्वन्नध्यापक) ३.१४.२. **ऋतावा**=ऋतं सत्यं विद्यते यस्मिन् सः (पुत्रः=तनयः) ४.४२.४. सत्यगुणकर्मस्वभाववान् (विद्वान्) १.७७.२. ऋताः प्रशस्ताः सत्यगुणा विद्यन्ते यस्मिन् सः (विद्वज्जनः) १.७७.१. सत्यस्वरूपः (अग्निः=आप्तो जनः) ४.२.१. सत्यप्रकाशकः (देवः=विद्वान्) ३.५४.१२. सत्यसेवी (विप्रः=मेधाविजनः) ७.६१.२. सत्यवान् (तत्त्ववेत्ता विद्वान्) ३.५३.८. ऋतस्य सत्यस्य सम्बन्धो विद्यते यस्य सः (विद्वान् सभेशः) प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः 'सुपां सुलुग्०' इति डादेशः १८.५३. सत्याचरणः (राजा) ४.३८.७. ऋतानि सत्यानि कर्माणि गुणाः स्वभावो वा यस्य सः (सभाध्यक्षः) १.७७.५. **ऋतावानम्**=ऋतं बहु सत्यं विद्यते यस्मिँस्तम् (अग्निं=विद्वज्जनम्) प्र०—अत्र 'छन्दसीवनिपौ' इति वार्त्तिकेन वनिप् १२.१११. सत्यकारणमयम् (अग्निं=पावकम्)३.२.१३. ऋतं सत्यं विद्यते यस्मिँस्तम् (अग्निं=परमेश्वरम्) ४.७.३ **ऋतावानः**=प्रशंसितमृतं सत्यं विद्यते येषु ते (देवाः=विद्वत्सैनिकाः) ३.५६.८. सत्यस्य प्रकाशिकाः (कन्याः) ७.४०.७. [ऋतं सत्यनाम निघं० ३.१०. ततो मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' अ० ५.२.१०९. वा सूत्रेण वनिप्। 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः]

ऋतावा=य ऋतं जलं संवनति भजति सः (सूर्य इव राजा) ६.७३.१. सत्यस्य विभाजकः (अग्निः=परमात्मा) ४.६.५. य ऋतं वनति संभजति सः (विद्वज्जनः) २.३५.८. सत्यस्य जलस्य वा विभाजकः (अग्निः=विद्युत्) ७.३.१. सत्याऽसत्योर्विभाजकः (अग्निः=सर्वप्रकाशको जगदीश्वरः) ६.१५.१३. य ऋतेन सत्येन वनति सम्भजति सः (धार्मिको जनः) १.१२२.९. **ऋतावानम्**=य ऋतं जलं वनति सम्भजति तम् (वैश्वानरं=अग्निम्), भा०—योऽग्निर्जलादीनि मूर्त्तानि द्रव्याणि स्वतेजसा भिनत्ति, निरन्तरं जलमाकर्षति च तम् २६.६. सत्यस्य सम्भक्तारम् (राजानम्) ४.१.२. **ऋतावानः**=य ऋतानि सत्याचरणानि वनन्ति संभजन्ति ते (कवयः=प्राज्ञा विद्वांसः) २.२४.७. [ऋतोपपदे वन संभक्तौ (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति विच्। 'विड्वनोर्०' इत्याकारादेशः]

ऋतावा य ऋतं सत्यं वनुते याचते सः (विद्वज्जनः) ३.१३.२. **ऋतावानः**=सत्यं याचमानाः (विद्वज्जनाः) ७.३९.७. [ऋतोपपदे वनु याचने (तना०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति विच्। 'विड्वनोर्०' इत्याकारादेशः]

ऋतावाना ऋतं सत्यं विद्यते ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.६५.२. ऋतस्य सत्यस्य सम्बन्धिनौ (सभासेनेशौ), प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १.१३६.४. सत्याचारसम्बन्धिनौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५.८. [ऋतप्राति० मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' अ० ५.२.१०९. वा० सूत्रेण वनिप्। संहितायां पूर्वस्य दीर्घः]

ऋतावानाः ऋतं सत्यं मतं कर्म वा विद्यते येषु ते (विद्वज्जनाः) ५.६७.४. **ऋतावानौ**=सत्याऽऽचारिणौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५१.४. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

ऋतावृधः य ऋतेन वेदविज्ञानेन वर्द्धन्ते तान् (पितॄन्=जनकादीन्) १९.६५. सत्यविद्यावर्द्धकाः (विश्वेदेवाः=सर्वविद्वांसः) ६.५२.१०. या ऋतेन जलेन नद्य इव सत्येन वर्द्धन्ते ताः (सत्यस्त्रियः) प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०'

इति दीर्घः १७.३. ये ऋतेन सत्येन वर्द्धन्ते (भा०—ईश्वरोपासका विद्वांसः) १७.७८. या ऋतं सत्यं वर्द्धयन्ति ताः (प्रजाः) ५.४४.४. ऋतेन सत्येनाऽऽचरणेन विज्ञानेन च वृद्धाः (वाचः) १.१४२.६. सत्यस्य वर्द्धकाः (देवाः=विद्वज्जनाः) ३४.५३. या ऋतं यथायोग्यं सत्यं वर्द्धयन्ति ताः (द्वारः=द्वाराणि) २८.२८. सत्यव्यवहारवर्द्धकान् (देवान्=दिव्यान् गुणान् भोगान्वा) ६.१५.१८. ऋतमुदकं सत्यं यज्ञं च वर्धयन्ति तान् (देवान्=विद्वज्जनान्) १.१४.७. या ऋतं सत्यं सुखं जलं वा वर्धयन्ति ताः (द्वारः=द्वाराणि) १.१३.६. ऋतेन सत्येन वर्धन्ते ते (विद्वांसः) १.४४.१४. [ऋतोपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । 'अन्येषामपि दृश्यते' अ० ६.३.१३७ सूत्रेण संहितायां दीर्घः । ऋतावृध्=सत्यवृधो वा यज्ञवृधो वा नि० १२.३३.]

ऋतावृधा यावृतेन सत्याऽनुष्ठानेन वर्धेते तौ (अश्विनौ=सूर्यपवनौ) १.४७.१. यावृतेन यथार्थगुणेन प्राप्तिसाधकेन वर्धयेते तौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.४७.३. यावृतेन जलेन यथार्थतया शिल्पक्रियया वा वर्धेते तौ (अश्विनौ=सूर्यपवनौ) १.४७.१. कारणेन वर्द्धिते (द्यावापृथिवी=क्षितिसूर्यौ) १.१५९.१. यावृतं सत्यं वर्धयतस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.६५.२. सत्येन वृद्धौ (अध्यापकाऽध्येतारौ) २.४१.४. ये ऋतेन कारणेन वर्धेतां ते (देवी=द्यावापृथिव्यौ भूमिसूर्यप्रकाशौ) १.१०६.३. सत्यवर्द्धकौ (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ३.६२.१८. यावृतं विज्ञानं वर्द्धयतस्तौ, (अ०—अध्यापकाऽध्येतारौ) ७.९. [पूर्वपदे सिद्धिः द्रष्टव्या]

ऋतावृधे सत्यस्य वर्द्धकाय (अग्नये=पावकाय) ३.२.१. **ऋतावृधौ**=ऋतं सत्यं कारणं जलं वा वर्द्धयतस्तौ (मित्रावरुणा=सूर्यवायू) प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घश्च १.२३.५. ऋतं ब्रह्म तेन वर्धयितारौ ज्ञापकौ जलाकर्षणवृष्टिनिमित्ते वा (मित्रावरुणौ=सूर्यवायू) १.२.८. ['ऋतावृधः' इति पदे व्याख्यातम्]

ऋताषाट् य ऋतं व्यवहारं सहते सः (राजा) १८.३८. [ऋतोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण ण्विः । 'सहे साडः सः' अ० ८.३.५६. सूत्रेण षत्वम् । 'अन्येषामपि दृश्यते' अ० ६.३.१३७. सूत्रेण दीर्घत्वम्]

ऋतीषाहम् य ऋतीन् परपदार्थप्रापकाञ्छत्रून् सहते तम् (वीरं=शूरपुरुषम्) ६.१४.४. गतिसहम् (इन्द्रं=राजानम्) प्र०—अत्र 'संहितायाम्' इति दीर्घः २६.११. [ऋत्युपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः क्विप् प्रत्ययः । पूर्वपदस्य दीर्घः संहितायाम्]

ऋतीषाहम् य ऋतिं सत्यं सहते तम् (रयिम्), प्र०–अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १.६४.१५. [ऋत्युपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण ण्विः । पूर्वपदस्य दीर्घत्वम्]

ऋतुथा ऋतुभ्यः २३.४०. ऋत्वनुकूलानि (अन्नानि) १.१७०.५. ऋतौ ऋतौ, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति थाल् १.१६२.१९. ऋतुप्रकारेण १.१६४.४४. ऋतुरिव ६.१८.३. ऋतुभिः २६.१९. ऋतुप्रकारैः २०.६५. ऋतोः २५.४२. ऋतुष्विव ६.९.३. [ऋतुप्राति० प्रकारवचने 'वा छन्दसि' इति थाल् प्रत्ययोऽसर्वनाम्न अपि । अथवा इवार्थे थाल् प्रत्ययः । ऋतुथा=ऋतावृतौ नि० ८.१६. ऋतुथा=काले काले नि० १२.२७.]

ऋतुना औष्ण्यं प्रापकेन २१.२४. प्राप्तव्येन (वसन्तेन) २१.२३. वसन्ताद्येन २.३७.६. वसन्तादिभिः सह, प्र०—अत्र 'जात्याख्यायामेकस्मिन् बहुवचनमन्यतरस्याम्' अ० १.२.५८. अनेन जात्यभिप्रायेणैकवचनम् १.१५.१. **ऋतुभिः**=वसन्ताद्यैः १२.६१. ऋच्छन्ति प्राप्नुवन्ति यैस्तैः (वसन्तादिभिः) प्र०—अत्र 'अर्त्तेश्च तुः' उ० १.७३. इति ऋ-धातोस्तुः प्रत्ययः किच्च १.१५.१०. मेधाविभिः सह ४.३४.२. सहचरितैः सुखैः, सर्वैः कालाऽवयवैः १४.७. **ऋतुः**=वसन्तादिः २५.४२. **ऋतू**=यावृच्छतस्तौ (ज्येष्ठाऽऽषाढौ) १४.६. वृष्टिप्रापकौ (श्रावणभाद्रपदौ), वर्षर्त्तुसम्बन्धिनौ (श्रावणभाद्रपदौ) १४.१५. बलप्रदौ (आश्विनकार्त्तिकौ) १४.१६. स्वलिङ्गप्रापकौ (मार्गशीर्षः पौषश्च मासौ) १४.२७. **ऋतून्**=रसाऽऽहरणसाधकान् (वसन्तादीन्) १.१५.५. [ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः अर्त्तेश्चतुः' उ० १.७३. सूत्रेण तुः प्रत्ययः किच्च । ऋतुः अर्त्तेर्गतिकर्मणः नि० २.२५. ऋतुभिः कालैः नि० ८.३. द्वौ द्वौ हि मासावृतुः तां० १०.१२.८. द्वौ हि मासावृतुः श० ७.४.२.२९. त्रयो वा ऋतवः संवत्सरस्य श० ३.४.४.१७. पञ्च वाऽ ऋतवः श० २.२.३.१४. पञ्चर्तवो हेमन्तशिशिरयोः समासेन ऐ० १.१. षड् वा ऋतवः संवत्सरस्य श० १.२.५.१२. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः, ते देवा ऋतवः । शरद् हेमन्तशिशिरस्ते पितरः (ऋतवः) श० २.१.३.१. याः षड् विभूतय ऋतवस्ते जै० उ० १.२१.१. तद् यानि तानि भूतानि ऋतवस्ते श० ६.१.३.८. सप्त ह्यृतवः श० ९.३.१.१९. अग्नयो वाऽ ऋतवः श० ६.२.१.३६. ऋतवो हैते यदेताश्चितयः श० ६.२.१.३६. ऋतव उपसदः श० १०.२.५.७. ऋतव उद्गीथः ष० ३.१. ऋतवो वा उदु ब्रह्मी-

यम् (सूक्तम्) कौ० २९.६. ऋतवो वै देवा: श० ७.२.४.२६. ऋतवो ह वै प्रयाजा: । तस्मान्पञ्च भवन्ति पञ्च ऋतव: श० १.५.३.१. ऋतवो वै प्रयाजा ऽनुयाजा: कौ० १.४. ऋतवो वै पृष्ठानि तै० ३.९.९.१. श० १३.३.२.१. ऋतव: पितर: कौ० ५.७. श० २.४.२.२४. गो० उ० १.२४. ऋतव एव प्रवोवाज: गो० पू० ५.१२. ऋतवो वाव होत्रा: गो० उ० ६.६. ऋतवो होत्राशंसिन: कौ० २९.८. सदस्या ऋतवोऽभवन् तै० ३.११.९.४. ऋतवो वै विश्वेदेवा: श० ७.१.१.४३. ऋतवो वै वाजिन: कौ० ५.२. श० २.४.४.२२. गो० उ० १.२०. ऋतव: शिक्यमृतुभिर्हि संवत्सर: शक्नोति स्थातुं यच्छक्नोति तस्माच्छिक्यम् श० ६.७.१.१८. ऋषभो वा एष ऋतूनां यत्संवत्सर: । तस्य त्रयोदशो मासो विष्टपम् तै० ३.८.३.३. अग्निष्टोम उक्थ्योऽग्निर् ऋतु: प्रजापति: संवत्सर इति । एते ऽनुवाका यज्ञक्रतूनाञ्चर्त्तूनाञ्च संवत्सरस्य च नामधेयानि तै० ३.१०.१०.४. मुखं वा एतद् ऋतूनां यद्वसन्त: तै० १.१.२.६. अन्त ऋतूनां हेमन्त: श० १.५.३.१३.]

ऋतुपा: य ऋतून् पाति रक्षति स सूर्य: ३.४७.३. **ऋतुपाभि:**=ये ऋतुषु पान्ति तै: (मरुद्भि:=मनुष्यै:) ४.३४.७. [ऋतूपपदे पा रक्षणे धातोरच्प्रत्यय:]

ऋतुमत: प्रशस्ता वसन्तादय ऋतवो विद्यन्ते येषां तान्, भा०—देशकालज्ञान् (पितॄन्=विद्यावयोवृद्धान् पित्रादीन्) १९.६१. ऋतुविद्यावतोऽर्थात् यथासमयमुद्योगकारिण: (पितॄन्) ऋ० भू० २६३. [ऋतुप्राति० मतुप्]

ऋतुश: ऋतुमृतुं प्रति २३.५७. बहुषु ऋतुषु १.१६२.४. वहूनृतून् १३.४३. ऋत्वर्हम्, भा०—प्रत्यृतु २५.२७. ऋतावृतौ २९.१०. [ऋतुप्राति० 'संख्यैकवचनाच्च वीप्सायाम्' अ० ५.४.४३. सूत्रेण वीप्सायां शस्]

ऋतुष्ठा: या ऋतुषु वसन्तादिषु तिष्ठन्ति ता: (सत्यस्त्रिय:) १७.३. [ऋतूपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातो: क: प्रत्यय: । स्त्रियां टाप्]

ऋते विना २.१२.९. भिन्न ७.११.१. ['ऋते' इत्यव्ययम्]

ऋतेजा: यो ऋते सत्ये जायते (सूर्य:) ६.३.१. सत्ये प्रादुर्भूता (उषा:) १.११३.१२. [ऋतोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्ड: प्रत्यय: । सप्तम्या: समासेऽलुक्]

ऋतेन सत्यस्वरूपेण ब्रह्मणा २.२७.८. सत्येन परमात्मना वा ५.१५.२. सत्येन वेदविज्ञानेन, विद्याविनययुक्तेन न्यायेन १९.७५. सत्येन व्यवहारेण ७.३४.८. जलेनेव सत्येन ५.८०.१. बहिस्थेन वायुना सह १९.७६. कालेन सूर्येण वायुना वा ऋ० भू० १४३. यथार्थेन योगाभ्यासेन, भा०—सत्याचरणेन १९.७३. सत्यविज्ञानयुक्तेन (वेदेन) १९.७८. [ऋतमिति व्याख्यातम् । ऋतम् उदकनाम निघं० १.१२. धननाम निघं० २.१०. सत्यनाम निघं० ३.१०.]

ऋतेश्रिता: ऋते ब्रह्मणि पुरुषार्थे चाऽऽश्रिता:, ऋतं सेवमानाश्च (ज्ञानिनो जना:) ऋ० भू० १०१. [ऋतश्रितपदयो: समास: । सप्तम्या अलुक् । श्रित:=श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातो: क्त:]

ऋतो: ऋतुसमयात् २.२८.५. ['ऋतुना' पदे द्रष्टव्य:]

ऋत्विक् ऋत्वनुकूलं सङ्गच्छन् (विद्वज्जन:) २.५.७. **ऋत्विजम्**=य ऋतौ ऋतौ प्रत्युत्पत्तिकालं संसारं सङ्गतं यजति करोति तथा च शिल्पसाधनानि सङ्गमयति, सर्वेषु ऋतुषु यजनीयस्तम् (अग्निम्=परमेश्वरं भौतिकमग्निं वा) प्र०—'ऋत्विग्दधृग्०' अ० ३.२.५९. अनेन कर्त्तरि निपातनं तथा 'कृतो बहुलम्०' इति कर्मणि वा १.१.१. सर्वेषु ऋतुषु यजनीयं, पूजाऽर्हं, यथाकालं जगद्रचकं ज्ञानादियज्ञसाधकम् (ईश्वरम्) वे० भा० न० य ऋतूनर्हति तम् (सज्जनम्) ७.१६.६. ऋतून् यजति सङ्गच्छते यस्तम् (वहुश्रुतं सज्जनम्) १.४५.७. यज्ञसम्पादकम् (विद्वज्जनम्) १.४४.११. यज्ञसाधकम् (विद्वांसम्) ५.२६.७. य ऋतुषु यजति तद्वद्वर्त्तमानम् (अग्निं=पावकम्) ५.२२.२. ऋत्विग्वत् सुखसाधकम् (अग्निं=परमेश्वरम्) ३.१०.२. सब ऋतु वसन्त आदि के रचक अर्थात् जिस समय जैसा सुख चाहिये, उस समय वैसे सुख के सम्पादक (ईश्वर) को आर्याभि० १.२, १.१.१. **ऋत्विज:**=य ऋतुषु यजन्ते ते विद्वांस: १.६०.३. समय-समय में प्राप्त होने वाले (संन्यासि जन) सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.६. ऋतूपपदे यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातो: कर्त्तरि क्विन् । 'ऋत्विग्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण निपात्यते । ऋत्विक् ईरण:, ऋग्यष्टा भवतीति शाकपूणि: । ऋतुयाजी भवतीति वा नि० ३.१९. ऋतव: ऋत्विज: श० ११.२.७.२. ऋत्विजो हैव देवयजनम् श० ३.१.१.५. एते एव सरघो मधुकृतो यद् ऋत्विज: श० ३.४.३.१४. आत्मा वै यज्ञस्य यजमानोऽङ्गान्यृत्विज: श० ९.५.२.१६.]

ऋत्वियम् ऋत्विगर्हम् (सत्कर्म) २.१.२. ऋतु: सम्प्राप्तोऽस्य तम् (गर्भम्=बीजम्) २३.६३. **ऋत्विय:**=

ऋतुयाजकः (विद्वज्जनः) ५.७५.६. य ऋतुमर्हति सः (क्रियाविज्जनः) ३.४१.२. ऋतुः प्राप्तोऽस्य सः (अग्ने=विद्युदग्निः) प्र०—अत्र 'छन्दसि घस्' अ० ५.१.१०६. अनेन ऋतुशब्दाद् घस् प्रत्ययः ३.१४. **ऋत्विये**=ऋतु समय में सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३७. [ऋतु-प्राति० तदस्य प्राप्तमित्यस्मिन् विषये 'छन्दसि घस्' अ० ५.१.१०६. सूत्रेण घस्। 'सिति चे' पदसंज्ञायाम् 'ओर्गुण' इति न भवति। छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पाद् अर्हत्यर्थेऽपि घस्। ऋतवः ऋत्विजः श० ११.२.७.२. इति ऋत्विगर्थे ऋतुः]

ऋत्वियाः या ऋतुमर्हन्ति ताः (वाचः) १.१९०.२. [पूर्वपदे व्याख्यातम्। स्त्रियां टाप्]

ऋदूदरः मृदूदरः (वैद्यः) प्र०—ऋदूदरः सोमो मृदूदरो मृदुरुदरेष्विति वा०, नि० ६.४, २.३३.५. **ऋदूदराः**=ऋत् सत्यमुदरे येषान्ते (कवयः=मेधाविजनाः) ३.५४.१०. [मृदु-उदरपदयोः समासे मकारलोपश्छान्दसः। अन्यत्र ऋत्-उदरपदयोः समासः। ऋदूदरः सोमो मृदूदरो मृदुरुदरेष्व् इति वा नि० ६.४.]

ऋद्धम् समृद्धम् (प्राप्तपदार्थम्) १८.११. [ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोः क्तः]

ऋद्धिः सम्यग् वृद्धिः ८.५२. योगेन प्राप्ता समृद्धिः १८.११. [ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोः क्तिन्। अग्निमुखा ह्यृद्धिः श० ३.३.८.९.]

ऋधक् यः समृध्नोति सः (मर्त्यः=मनुष्यः) ३३.८७. समृद्धिवर्द्धके (भा०—कर्मणि), समृद्धिर्यथा स्यात्तथा ८.२०. स्वीकारे ३.२५.१. सत्ये ७.५७.४. सत्यम् (रुद्रं=परमात्मानम्) ६.४९.१०. यथार्थम् ६.४०.५. [ऋधक् पदनाम निघं० ४.१. ऋधक् पृथगर्थेऽव्ययम्। ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽजिः प्रत्ययः। ऋध्यति वर्धयतीति विग्रहः। ऋधक् पृथग्भावस्य प्रवचनं भवति। अथाप्यृध्नोत्यर्थे दृश्यते। ऋध्नुवन् नि० ४.२५.]

ऋधत् ऋध्नुयात् समर्द्धयेत् ६.२.४. ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोर्लेट्। व्यत्ययेन शः]

ऋधद्वाराय ऋधत् संवर्द्धकः सत्यो वारः स्वीकरणीयो व्यवहारो यस्य तस्मै (अग्नये=सुपात्राय जनाय) ६.३.२. [ऋधत्-वारपदयोः समासः। ऋधत्=ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोर्बाहु० अतिः प्रत्ययः। वारः=वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्घञ्]

ऋधाथे वर्धयतः, प्र०—अत्र व्यत्ययो 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणाभावश्च १.१७.९. **ऋधीमहि**=समृद्धा भवेम ६.३७.१. **ऋधेम**=वर्द्धेमहि ऋ० भू० २४७, अथर्व० १९.५५.४. [ऋधु वृद्धौ (दिवा०, स्वा०) धातोर्लेट्।' बहुलं छन्दसी' ति विकरणलुक्। अन्यत्र लिङ्व्यत्ययेन शप् च]

ऋधावा शत्रूणां हन्ता (अर्यः=राजा) ४.२४.८.

ऋध्नोति वर्धयति १.१८.८. [ऋधु वृद्धौ (स्वा०) धातोर्लट्। ऋध्नोति परिचरणकर्मा निघं० ३.५.]

ऋध्यताम् वर्धताम् २६.२. **ऋध्याम्**=वर्धयेयम् ५.६०.१. **ऋध्याम**=वर्धेम १७.७७. समृध्याम ४.१०.१. वर्द्धेमहि १५.४४. **ऋध्यासम्**=वर्द्धिषीय ८.९. [ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अन्यत्र लिङ्। ऋणद्धिपरिचरणकर्मा निघं० ३.५.]

ऋन्धन् संसाधयन् (तनूनपात्=धार्मिको मनुष्यः) २९.२६. वर्द्धमानः सन् (यज्ञः=राजधर्मः) १.१७३.११. साध्नुवन् (पुत्रः) ३.३१.२. [ऋन्धन् अर्द्धयित्वा नि० ३.७. समर्द्धय नि० ८.६. ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन श्नम्]

ऋबीसम् सरलम् (भावम्) ५.७८.४. **ऋबीसात्**=नष्ट विद्याप्रकाशादविद्यारूपात्, प्र०—ऋबीसमपगतभासमपहृतभासमन्तर्हितभासं गतभासं वा नि० ६.३६, १.११७.३. **ऋबीसे**=दुर्गतभासे व्यवहारे १.११६.८. [ऋबीसम्=अपगतभासम्, अपहृतभासम्, अन्तर्हितभासम्, गतभासं वा नि० ६.३६.]

ऋभवः मेधाविनः (विद्वज्जनाः) प्र०—ऋभुरिति मेधाविनाम, निघं० ३.१५, अत्राऽऽह निरुक्तकारः—ऋभव उरु भान्तीति वा, ऋतेन भान्तीति वा, ऋतेन भवन्तीति वा, नि० ११.१५, १.११०.१. प्राज्ञाः (विद्वांसो मेधाविजनाः) ४.३३.२. विपश्चितः (विद्वज्जनाः) ४.३४.१०. धीमन्तः (विद्वांसः) ४.३५.५. सूरयः (विद्वज्जनाः) ४.३६.७. किरणाः १.११०.६. क्रियाकुशला मेधाविनः (जनाः) १.१११.१. **ऋभुः**=प्रशस्तो विद्वान् १.१११.५. बहुविद्याप्रकाशको विद्वान्, मेधाव्यायुः सभ्यताप्रकाशकः (विद्वज्जनः) १.११०.७. सकलविद्याजातप्रज्ञो मेधावी (जनः) १.१२१.२. धनञ्जयः सूत्रात्मा वायुरिव मेधावी १.१६१.६. महान् (विद्वान् जनः) ३.५.६. [ऋभुरिति मेधाविनाम निघं० ३.१५. ऋभव उरु भान्तीति वा, ऋतेन भान्तीति वा, ऋतेन भवन्तीति वा, आदित्यरश्मयोऽप्यृभव उच्यन्ते नि० ११.१६. प्रजापतिर्वै पिता ऋभून् मर्त्यान् सतो मर्त्यान् कृत्वा तृतीयसवन आभजत् ऐ० ६.१२. ऋभवा वा इन्द्रस्य

प्रियं धाम तां० १४.२.५.]

ऋभुक्षणम् ये ऋभून् मेधाविनः क्षाययति निवासयति ज्ञापयति वा तम् (इन्द्रं=क्रियाकुशलं विद्वांसं सेनापतिं वा) १.१११.४. **ऋभुक्षणः**=महान्तः (नरः=नायका जनाः), प्र०— ऋभुक्षा इति महन्नाम, निघं० ३.३, ७.४८.१. मेधाविनो विद्वांसः (जनाः) ७.३७.१. **ऋभुक्षाः**=मेधावी (जनः) ६.५०.१२. महान् (मेधाविजनः) ४.३३.६. सद्गुणैर्महान्तः (आप्ता विद्वांसः) ४.३४.५. य ऋभून् मेधाविनः क्षियति निवासयति स महान् (इन्द्रः=राजा) ७.४८.३. [ऋभुक्षाः महन्नाम निघं० ३.३. उरुक्षयणः ऋभूणां राजेति वा नि० ६.३. ऋभुः मेधाविनाम (निघं० ३.१५), तदुपपदे क्षि निवासे (तुदा०) धातोर्डिनिः प्रत्ययः । 'पथिमथ्यृभुक्षामात्०' इत्याकारादेशः]

ऋभुतः ऋभूणां सकाशात् ४.३६.५. [ऋभुः मेधाविनाम, निघं० ३.१५. ततः सार्वविभक्तिकस्तसिः]

ऋभुमत् प्रशस्ता ऋभवो मेधाविनो विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (वयः=आयुः) १.१११.२. **ऋभुमन्तम्**=प्रशस्ता ऋभवो मेधाविनो विद्यन्ते यस्य तम् (विद्वांसमध्यापकम्) ३.५२.६. **ऋभुमान्**=प्रशस्ता ऋभवो मेधाविनो विद्यन्ते यस्य सः (सेनाऽध्यक्षः) १.११०.६. [ऋभुप्राति० मतुप् अतिशायनेऽर्थे । ऋभुरिति मेधाविनाम निघं० ३.१५.]

ऋभ्वसम् ऋभुं मेधाविनमसते गृह्णाति तम् (विद्वज्जनम्) प्र०—ऋभुरिति मेधाविनाम, निघं० ३.५, अस गत्यादिः ५.५२.८. ऋभून् मनुष्यादीन् पदार्थान्वाऽस्यन्ति येन तम् (रथम्) १.५६.१. [ऋभूपपदे अस गतिदीप्त्यादानेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि मूलविभुजादित्वात् कः । अन्यत्र ऋभूपपदे असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः करणे 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' अ० ३.३.११८ सूत्रेण घः]

ऋभ्वा महता मेधाविना मन्त्रिणा, प्र०—अत्र सुपां सुलुग्०, इत्याकारादेशः १.१००.५. अत्यन्त विज्ञानादि प्रकाश वाला, सवका प्रकाशक, महान्, महावल वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.३४. [ऋभुरिति मेधाविनाम निघं० ३.१५. ततस्तृतीयायाः स्थान आकारः]

ऋश्यः मृगविशेषः २४.३७. **ऋश्यान्**=मृगजातिविशेषान् पशून् २४.२७. [ऋषति गच्छतीति विग्रहे ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः 'अघ्न्यादयश्च' उ० ४.११२. सूत्रेण यक्]

ऋषभम् वृपभम् २१.५६. श्रेष्ठं पुरुपार्थम् २१.४०. बलीवर्दम् २१.३८. अतिश्रेष्ठम् (गाम्) २८.३४. **ऋषभस्य**=उत्कृष्टगुणकर्मस्वभावस्य राज्ञः २१.४७. प्राप्तुं योग्यस्य (हविषः=वस्तुनः) २१.४६. उत्तमस्य (हविषः=वस्तुनः) २१.४५. श्रेष्ठस्य (विदुषो राज्ञः) ६.२८.८. **ऋषभः**=बलिष्ठः (वृषभः) १८.२७. विज्ञानवान् (परमयोगी) १६.६१. गतिमान् पशुः १४.६. श्रेष्ठः (गौः=वृषभः) २१.२२. **ऋषभाय**=श्रेष्ठाय सभ्याय (जनाय) २४.३०. **ऋषभाः**=बलिष्ठाः (पशवः) २४.१३. **ऋषभेण**=गन्तुं योग्येन, भा०—पुरुषार्थेन (गवा) २१.३२. [ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः 'ऋषिवृषिभ्यां कित्' उ० ३.१२३. सूत्रेण अभच् किच्च । ऋषभो वै पशूनामधिपतिः तां० १६.१२.३. ऋषभो वै पशूनां प्रजापतिः श० ५.२.५.१७. वृषा वा वृषभो योषा ब्रह्मण्या ऐ० ६.३. वीर्यं वा ऋषभः तां० १८.६.१४.]

ऋषभासः वृषभाः २०.७८. उत्तमाः (अस्मत्सम्बन्धिजनाः) ६.१६.४७. [पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततः प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः]

ऋषयः वेदविद्यापुरस्सराः परमयोगिनः १८.५८. वेदादिशास्त्रार्थविदः (महाविद्वांसः) ३४.४६. वेदार्थवेत्तारः, भा०—वेदपारगाः (सज्जनाः) १५.४६. मन्त्रद्रष्टारः (योगिजनाः) ऋ० भू० १२५. मन्त्रार्थविदः (विप्राः=मेधाविपुरुषाः) २५.३०. वेदार्थविद्या को प्राप्त (संन्यासि जन) सं० वि० १६८, अथर्व० १६.४१.१. प्राणादयः पञ्च देवदत्तधनञ्जयौ च १७.७६. विद्वान् लोग सं० वि० १८६, अथर्व० १६.४१.१. विषयप्रापकाः (पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि) ३४.५५. गन्तारः (ऋतवः) १.१६४.१५. ज्ञापकाः प्राणाः १५.११. प्रापकाः (वायवः) १५.१०. प्राप्ताः (पितरः=पालकाः जनाः) ४.४२.८. बलवन्तः प्राणाः १५.१३. गतिमन्तः (प्रथमजाः=वायवः) १५.१२. धनञ्जयादयः सूक्ष्मस्थूला वायवः प्राणाः १५.१४. **ऋषिभिः**=मन्त्रार्थद्रष्टृभिरध्यापकैस्तर्कैः कारणस्थैः प्राणैर्वा, प्र०–'ऋषिप्रशंसा चैवमुच्चावचैरभिप्रायैर्ऋषीणां मन्त्रदृष्टयो भवन्ति' निरु० ७.३. इयमेव ऋषीणां प्रशंसा यतस्त एवमुच्चावचैर्महदल्पाभिप्रायैर्मन्त्रार्थैर्विदितैः प्रशंसनीया भवन्ति, तेषाम् ऋषीणां मन्त्रेषु दृष्टयोऽर्थादत्यन्तपुरुषार्थेन मन्त्रार्थानां यथावद् दर्शनानि ज्ञानानि भवन्ति, तस्मात्ते पूज्याः सत्कर्त्तव्या आसन्निति । 'साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुस्ते० निरु० १.२०. कीदृशा ऋषयो भवन्तीत्यत्र प्राह—यतः साक्षात्कृतधर्माणो धार्मिका आप्ता यैः सर्वा विद्या यथावद्विदिता येऽवरेभ्यो ह्यसाक्षात्कृतवेदेभ्यो मनुष्येभ्य उपदेशेन वेदमन्त्रान् मन्त्राऽर्थांश्च संप्रादुः प्रकाशितवन्तस्तस्मात्ते ऋषयो जाताः । तैः कस्मै प्रयोजनाय मन्त्राध्यापनं तदर्थ-

प्रकाशश्च कृत इत्यत्रोच्यते—उत्तरोत्तरं वेदार्थप्रचाराय। येऽवरेऽल्पबुद्धयो मनुष्या अध्ययनायोपदेशाय च ग्लायन्ते तेषां वेदार्थविज्ञानायेमं नैघण्टुकं निरुक्ताख्यं च ग्रन्थं समाम्नासिषुः सम्यगभ्यासार्थं रचितवन्तः। येन सर्वे मनुष्याः वेदं वेदाङ्गानि च यथार्थतया विजानीयुरेवं कृपालव ऋषयो गण्यन्त इति। 'पुरस्तान्मनुष्या वा ऋषिषूत्क्रामत्सु०' निरु० १३.१२. अत्र तर्क एव ऋषिरुक्तः। 'अविज्ञाततत्त्वेऽर्थे०' न्याय० १.१.४० या तत्त्वज्ञानार्थोहा सैव तर्कशब्देन गृह्यते। 'प्राणा ऋषयः' शत० ७.२.१.५. अत्रर्षिशब्देन प्राणा गृह्यन्ते १.१.२. विचारशीलैर्मन्त्रार्थद्रष्टृभिः (परमयोगिजनैः) १.२३.२४. वेदविद्भिर्विद्वद्भिः, भा०—सच्चिदानन्दस्वरूपेश्वरसेवकैर्धार्मिकैर्विद्वद्भिः परोपकारकत्वादाप्तैः १२.२६. **ऋषिम्**=कार्यसिद्धिप्राप्तिहेतुम् (द्युतं=कारणस्थां दीप्तिम्) प्र०—अत्र 'इगुपधात् कित्' उ० ४.१२०. अनेन 'ऋषी गतौ' इत्यस्माद्धातोरिन् प्रत्ययः ३.१६. वेदमन्त्रार्थद्रष्टारं, जितेन्द्रियतया शुभगुणानां सदैवोपदेष्टारं, सकलविद्याप्रत्यक्षकारिणम् (परमविद्वज्जनम्) १.१०.११. सकलवेदमन्त्रार्थवेत्तारम् (महाविद्वांसम्) ३.४३.५. वेदपारगाऽध्यापकम् १.११७.३. **ऋषिः**=मन्त्राऽर्थवेत्तेव (ईश्वरः) ४.२६.१. सर्वज्ञ (ईश्वरः) आर्याभि० २.३०, १७.१७. ज्ञाता (परमेश्वरः) १७.१७. प्रापको विद्वान् १३.५४. रूपप्रापकः (जमदग्निः=प्रज्वलिताऽग्निर्नयनम्) १३.५६. शब्दप्रापकः (श्रोत्रम्) १३.५७. विज्ञापकः पतिः १४.५. अध्यापकोऽध्येता वा १.१०६.६. सर्वविद्याविद् वेदोपदेष्टा (महाविद्वान्) १.३१.१. मन्त्रार्थद्रष्टा विद्वान् विद्याप्रकाशकः (सज्जनः) १.६६.२. **ऋषीणाम्**=वेदार्थशब्दसम्बन्धविदाम् (महाविदुषाम्) ७.२६.४. **ऋषे**!=हे विद्याप्रद (परमविद्वज्जन) ५.५६.८. **ऋषेः**=मन्त्रार्थविदः (परमविदुषः) ५.३३.१०. [ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः 'इगुपधात् कित्' उ० ४.१२०. सूत्रेण इन् प्रत्ययः किच्च। ऋषयः पदनाम निघं० ५.६. ऋषीन्=सप्त ऋषीणानि ज्योतींषि नि० ३.२६. ऋषिः दर्शनात् स्तोमान्ददर्शेत्यौपमन्यवः। तद् 'यदेनांस्तपस्यमानान् ब्रह्म स्वयम्भ्वभ्यानर्षत्त ऋषयोऽभवंस्तदृषीणामृषित्वम् इति विज्ञायते नि० २.११. ऋषयः=आदित्यरश्मयः। इन्द्रियाणि नि० १२.३६. प्राणा वा ऋषयः ऐ० २.२७. प्राणा ऋषयः श० ७.२.३.५. एते वै विप्रा यदृषयः श० १.४.२.७. अथ यदेवानुब्रवीत। तेनर्षिभ्य ऋणं जायते यद्ध्येभ्य एतत्करोत्यृषीणां निधिगोप इति ह्यनूचानमाहुः। श० १.७.२.३. यो वै ज्ञातोऽनूचानः स ऋषिरार्षेयः श० ४.३.४.१६. ये यत्पुरास्मात् सर्वस्मादिदम् इच्छन्तः श्रमेण तपसारिषंस्तस्माद् ऋषयः श० ६.१.१.१.]

ऋषिकृत् ऋषीन् ज्ञानवतो मन्त्रार्थद्रष्टॄन् कृपया ध्यानोपदेशाभ्यां करोति (अग्निः=सर्वोत्तमो विद्वान्) प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति करणे क्विप् १.३१.१६. [ऋष्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप्। ह्रस्वस्य तुगागमः। ऋषिरिति व्याख्यातम्]

ऋषिद्विषे वेदविदीश्वरविरोधिने दुष्टाय मनुष्याय १.३६.१०. [ऋष्युपपदे द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। ऋषिरिति व्याख्यातम्]

ऋषिस्वरम् ऋषीणामुपदेशम् ५.४४.८. [ऋषिस्वरपदयोः समासः]

ऋषूणाम् मन्त्रार्थविदाम् (विद्वज्जनानाम्) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन इकारस्य स्थाने उत्वम् ५.२५.१. प्राप्तविद्यानां जिज्ञासूनां वा (अध्यापकानामध्येतॄणां वा) प्राप्तवैद्यकविद्यानाम् (परमवैद्यानाम्) १.१२७.१०. [ऋषिरिति व्याख्यातम्। ततः षष्ठी। वर्णव्यत्येनेकारस्योकारः]

ऋष्टयः ज्ञानवन्तः (मरुतः=मनुष्याः) ५.५७.६. गमनाऽऽगमनशीलाः (वायवः) १.६४.४. शस्त्राऽस्त्राणि ५.५४.११. प्रापकाः (दन्ताद्यवयवाः)७.५५.२. **ऋष्टिभिः**=प्रापिकाभिः (पृषतीभिः=मरुद्गतिभिः) २.३६.२. यन्त्रचालनार्थैर्गमनाऽऽगमननिमित्तैर्दण्डैः १.८५.४. व्यवहारप्रापकैः (पृषतीभिः=वेगादिगुणैः) १.६४.८. याभिः कलायन्त्रयष्टिभिर्ऋषन्ति जानन्ति प्राप्नुवन्ति व्यवहारांस्ताभिः (वाशीभिः=वाणीभिः) १.३७.२. **ऋष्टिषु**=प्राप्तिषु १.१६६.४. **ऋष्टिः**=प्रापिका (वाक्=वाणी) १.१६७.३. प्राप्तिः १.१६६.३. **ऋष्टीः**=प्राप्ताः सेनाजनाः ५.५२.६. [ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

ऋष्टिमद्भिः कलाभ्रामणार्थयष्टिशस्त्राऽस्त्रादियुक्तैः (रथेभिः=विमानादियानैः) १.८८.१. **ऋष्टिमन्तः**=बह्वय ऋष्टयो गतयो येषां ते (मर्याः=मनुष्याः) ३.५४.१३. प्रशस्तविज्ञानवन्तः (मरुतः=मनुष्याः) ५.६०.३. [ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः क्तिन् प्रत्यये—ऋष्टिः। ततो भूम्नि मतुप्]

ऋष्टिविद्युतः विद्युति ऋष्टिर्विज्ञानं येषां ते (वेधसः=मेधाविनो जनाः) ५.५२.१३. ऋष्टिर्विद्युदिव येषान्ते (मरुतः=विद्वांसो जनाः) १.१६८.५. [ऋष्टिविद्युत्पदयोः समासः। 'सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहाविति' पूर्वनिपाते प्राप्ते सप्तम्यन्तस्य परनिपातः गड्वादिभ्यः सप्त-

म्यन्तं परम्' अ० २.२.३५. वा० सूत्रेण]

ऋष्वः ! महापुरुष (राजन्) ५.३३.३. प्राप्तविद्य (इन्द्र=शिल्पिजन) ३.३५.८. प्राप्तविज्ञान (अग्ने=विद्वत्पुत्र) ४.२.२. **ऋष्वम्**=महान्तम् (इन्द्रं=विद्युतमिव राजानम्) ६.२०.६. गन्तारम् (युवानम्) ६.१६.२. श्रेष्ठम् (राजानम्) ४.१६.१. **ऋष्वः**=प्रापकः (विद्वज्जनः) ३.५.५. प्राप्तुं योग्यः (विद्वान्) ३.५.७. ज्ञाता (इन्द्रः=विद्याप्रकाशको जनः) २.२१.४. गतिमान् (सूर्यः) १.१४६.२. प्राप्तविद्यः (सेनापतिः) १.८१.४. महान् (अग्निः) ३.५.१०. **ऋष्वात्**=महतः कारणात् ४.२२.४. **ऋष्वान्**=महतः (अश्वान् रथादीन्वा) प्र०—ऋष्व इति महन्नाम निघं० ३.३., ६.६३.६. **ऋष्वाः**=महान्तो महाशयाः (वेधसः=मेधाविजनाः) ५.५२.१३. [ऋष्व इति महन्नाम निघं० ३.३. ऋषी गतौ (तुदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको वन् प्रत्ययः किच्च]

ऋष्वया महत्या (सेनया) ६.१८.१०. **ऋष्वाः**=महत्यः (द्वारः=गृहद्वाराणि) २६.५. [ऋष्व इति महन्नाम निघं० ३.३.]

ऋष्ववीरस्य ऋष्वा महान्तो गुणा वीरा वा यस्य तस्य (जगतो महावीरस्य मनुष्यस्य वा) १.५२.१३. [ऋष्व-वीरपदयोः समासः । ऋष्व इति महन्नाम निघं० ३.३. वीरः=वीरो वीरयत्यमित्रान् वेतेर्वा स्याद् गतिकर्मणो वीरयतेर्वा नि० १.७.]

ऋष्वा ऋष्वौ महान्तौ (बाहू=भुजौ) ६.४७.८. [ऋष्व इति महन्नाम निघं० ३.३. 'सुपां सुलुगि' त्याकारः]

ऋष्वासः ज्ञानहेतवः (सत्वानः=बलपराक्रमप्राणिभूतगणाः) १.६४.२. [ऋषी गतौ (तुदा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिको वन् प्रत्ययः किच्च । जसोऽसुगागमः]

ऋष्वे ! महागुणयुक्त (विद्वन् पते) ६.६४.४. [ऋष्व इति महन्नाम निघं० ३.३.]

एकचक्रम् एकं सर्वकलाभ्रमणार्थं चक्रं यस्मिँस्तम् (रथम्=विमानादियानम्) १.१६४.२. [एक-चक्र-पदयोः समासः । एकम्=इण् गतौ (अदा०) धातोः 'इण्भीकापा०' उ० ३.४३ सूत्रेण कन् । चक्रम्=डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कप्रत्यये 'कृञादीनां के द्वे भवत इति वक्तव्यम्' अ० ६.१.१२. वा० सूत्रेण द्वित्वम् । एकचक्रम् एकचारिणम् नि० ४.२७.]

एकजम् एकस्मात् कारणाज्जातम् (महत्तत्त्वम्) १.१६४.१५. [एकोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' अ० ३.२.१०१ सूत्रेण डः प्रत्ययः]

एकताय एकस्य सुखस्य भावाय १.२३. [एकप्राति० भावे तल् । तलन्तस्य लिङ्गव्यत्ययेन पुंस्त्वम्]

एकत्रिंशत् एकाऽधिका त्रिंशत् (सङ्ख्या) १८.२४. [एक-त्रिंशत्पदयोः समासः । त्रिंशत्='पंक्तिविंशतित्रिंशत्०' अ० ५.१.५६. सूत्रेण निपात्यते तदस्य परिमाणमिति विषये]

एकत्वम् परमात्मनोऽद्वितीयत्वम् ४०.७. आत्मा के एक भाव को सं० वि० २१५, ४०.७. [एकप्राति० भावे त्वः प्रत्ययः]

एकधनविदे य एकेन धर्मेण विज्ञानेन वा धनं विन्दति तस्मै (इन्द्राय=परमैश्वर्ययुक्ताय (पुरुषाय) ५.७. [एक-धनोपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप्]

एकधेनुभिः एकैव धेनुर्वाक् सहायभूता येषां तैः सह (विद्वज्जनैः) ७.३८.५. [एक-धेनुपदयोः समासः । धेनुरिति वाङ्नाम निघं० १.११. धेनुः=धेट् पाने (भ्वा०) धातो 'धेट इच्च' उ० ३.३४ सूत्रेण नुः प्रत्ययः । धेनुर्धयतेर्वाधिनोतेर्वा नि० ११.४२.]

एकनीडम् एकस्थानम् भा०—एकाधिकरणम् (जगत्) ३२.८. [एक-नीडपदयोः समासः । नीडम्=नितरां मिलन्ति यत्रेति विग्रहे पृषोदरादित्वात्साधु]

एकपदी एकवेदाऽभ्यासिनी (विदुषी स्त्री) १.१६४.४१. **एकपदीम्**=एकमोमिति पदं प्राप्तव्यं यस्यां ताम् (स्वाहा=वाचम्) ८.३०. [एक-पादपदयोः समासे 'संख्यासुपूर्वस्य' अ० ५.४.१४० सूत्रेण समासान्तलोपे 'पादोऽन्यतरस्याम्' अ० ४.१.८. सूत्रेण ङीपि 'पादः पत्' अ० ६.४.१३०. सूत्रेण पदादेशः]

एकपात् एकः पादो गमनं प्रापणं यस्य सः (अहिः=मेघः) २.३१.६. एकः पादो बोधो यस्य सः (अजः=ईश्वरः) ३४.५३. एकः पादो जगति यस्य सः (अजः=परमात्मा) ६.५०.१४. एकस्मिन् पादे विश्वं यस्याऽस्ति सः (ईश्वरः) ५.३३. सर्वं जगदेकस्मिन् पादे यस्य सः (अजः=परमेश्वरः) ७.३५.१३. सब जगत् जिसके किञ्चिन्मात्र एक देश में है वह (अनन्त ईश्वर) आर्याभि० २.१८, ५.३३. [एक-पादपदयोर्बहुव्रीहौ समासे 'संख्यासुपूर्वस्य' अ० ५.४.१४० सूत्रेण समासान्तलोपः । वायुरेकपात्तस्याकाशं पादः । गो० पू० २.८. एकपात्=एकेन पादेन पातीति वा, एकेन पादेन पिबतीति वा, एकोऽस्य पाद इति वा नि० १२.३०.]

एक एकः प्रत्येकः (जनः) ३.२९.१५. [एकपदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

एकम् स्वयं सिद्धम् (परमात्मानम्) १७.३०. अद्वितीयं ब्रह्म ४०.४. **एकः**=अद्वैतः (परमात्मा) १.१५४.४. अद्वितीयः (परमेश्वरः) १.७.९. अनुत्तमोऽसहायः [प्रजापतिर्वा एकः तै० ३.८.१६.१. एकम्=इण् गतौ (अदा०) धातोः 'इण्भीकापा०' उ० ३.४३. सूत्रेण कन्। एका इता संख्या नि० ३.१०.]

एकविꣳशतिः एकाऽधिका विंशतिः (सङ्ख्या) १८.२४. [एक-विंशतिपदयोः समासः]

एकविꣳशः एकविंशतिधा (प्रतूर्त्तिः=शीघ्रगतिः) १४.२३. एकविंशतेर्विद्यानां पूरकः (सिद्धान्तः) १३.५७. षोडश कलाश्चत्वारः पुरुषार्थाऽवयवाः कर्त्ता चेति तेषामेकविंशतेः पूरणः (स्तोमः=स्तुतिविषयः) १०.१३. एतत्सङ्ख्यापूरकः (सोमः=चन्द्रः) १५.१३. **एकविंशाभ्याम्**=एतत्सङ्ख्यायुक्ताभ्याम् (मित्रावरुणाभ्यां=प्राणोदानाभ्याम्) २९.६०. **एकविंशे**=एतत्सङ्ख्याके (स्तोमे=स्तुतिव्यवहारे) २१.२६. [एक-विंशतिप्राति० पूरणार्थे डट्। 'तिविंशतेर्डिति' अ० ६.४.१४२ सूत्रेण तेर्लोपः। प्रतिष्ठा वा एकविंशः स्तोमानाम् तां० ३.७.२. एकविंश एव (स्तोमः) सर्वम् गो० पू० ५.१५. एकविंशो वै स्वर्गो लोकः श० १०.५.४.६. एष एवैकविंशो य एष (सूर्यः) तपति श० ५.५.३.४. एकविंशो वा अस्य भुवनस्यादित्यः तां० ४.६.३. असौ वा आदित्य एकविंशः तै० १.५.१०.६. एकविंशो वा एष य एष (आदित्यः) तपति कौ० २५.१. द्वादश वै मासाः संवत्सरस्य पञ्चर्तवस्त्रयो लोकास्तद्विंशतिरेषऽएवैकविंशो य एष (सूर्यः) तपति। सैषा गतिरेषा प्रतिष्ठा श० १.३.५.११. आदित्य एवैकविंशस्यायतनं द्वादशमासाः पञ्चर्त्तवस्त्रय इमे लोका असावादित्य एकविंशः तां० १०.१.१०. एकविंशो वै प्रजापतिर्द्वादशमासाः पञ्चर्त्तवस्त्रय इमे लोका असावादित्य एकविंशः ऐ० १.३०. एकविंशो वै पुरुषः तै० ३.३.७.१. एकविंशोऽयं पुरुषो दशहस्त्या अंगुलयो दशपाद्या आत्मैकविंशः ऐ० १.१९. क्षत्रं वा एकविंशः तां० १८.१०.९. विड् वा एकविंशः तै० १.८.८.५. शौद्रो वर्ण एकविंशः ऐ० ८.४. एकविंशोऽग्निष्टोमः तां० १६.१३.४. तम् (एकविंशस्तोमं) उ देवतल्प इत्याहुः तां० १०.१.१८.]

एकवीरः एकश्चाऽसौ वीरश्च (इन्द्रः=सेनेशः) १७.३३. [एक-वीरपदयोः समासः। एको ह तु सन्वीरो वीर्यवान् भवति। जै० ३.२.९.९. एको ह्येवैष वीरो यत्प्राणः जै० ३.२.५.१.]

एकशताय एकाऽधिकाय शताय (व्यवहाराय पदार्थाय वा) २२.३४. [एक-शतपदयोः समासः]

एकशफम् एकखुरमश्वादिकम् १३.४८. **एकशफाः**=अश्वादयः १४.३०. [एक-शफपदयोः समासः। पशवो वा एकशफम् तै० ३.९.११.४. श्रीर्वा एकशफम् तै० ३.९.८.२.]

एकशितिपात् एकः शितिः पादोऽस्य (कृष्णः पशुः) २९.५८. [एक-शिति-पादपदानां समासः। 'संख्यासुपूर्वस्य' अ० ५.४.१४० सूत्रेण समासान्तलोपः। शितिः=कृष्णः शुक्लो वा। शतिः सौत्रो धातुः। ततः 'क्रमितिमिशति०) उ० ४.१२२ सूत्रेण इन् प्रत्यय किच्च धातोर् अकारस्येकारादेशश्च]

एकश्रुष्टीन् एक ही धर्मकृत्य में शीघ्र प्रवृत्त होने वाले (गृहस्थादि मनुष्यों) को सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.७. [एक-श्रुष्टीपदयोः समासः। श्रुष्टी पदनाम निघं० ४.३. श्रुष्टीति क्षिप्रनाम। आशु अष्टीति नि० ६.१३.]

एकाकी असहायोऽद्वितीयः (सूर्यः=सूर्यलोकः) २३.४५. [एकप्राति० 'एकादाकिनिच्चासहाये' अ० ५.३.५२ सूत्रेण आकिनिच् प्रत्ययः]

एकाऽक्षरेण ओमित्यनेन विज्ञापकेन दैव्या गायत्र्या छन्दसा ९.३१. [एक-अक्षरपदयोः समासः। अक्षरं वाङ् नाम निघं० १.११.]

एकादश प्राणाऽपानोदानसमान-नाग-कूर्म-कृकल-देवदत्त-धनञ्जयजीवाः (देवासः=देवाः) पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशाऽऽदित्य-चन्द्र - नक्षत्राऽहङ्कार-महत्तत्त्व-प्रकृतयः, श्रोत्र-त्वक् चक्षू रसना-घ्राण-वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थ-मनांसि ७.१९. एकाधिका दश (संख्या) १८.२४. एतत्सङ्ख्याताः (देवाः=दिव्यगुणाः प्राणादयः) २०.११. दशेन्द्रियाणि मनश्च १.१३९.११. **एकादशभिः**=दश प्राणा एकादश आत्मा तै० १४.२९. **एकादशम्**=ग्यारहवें (पति) को सं० वि० १३४, १०.८५.४५. [एकः दशत् पदयोः समासः]

एकादशकपालः एकादशसु कपालेषु संस्कृतः पाकः ९.३३. [एकादश-कपालपदयोस्तद्धितार्थे समासः। संस्कृतार्थे विहितस्य अण् प्रत्ययस्य 'द्विगोर्लुगनपत्ये' इति लुक्]

एकादशाऽक्षरेण आसुर्य्या पङ्क्त्या (छन्दसा)

९.३३. [एकादश-अक्षरपदयोः समासः]

एकादशी एकादशानां पूरणा (क्रिया) २५.४. [एकादशप्राति० पूरणप्रत्ययान्तात् (टिड्ढाण्०) इति स्त्रियां ङीप्]

एकायुः एकं सत्यगुणस्वभावमायुर्यस्य सः (अग्निः=प्रज्ञेश्वरः) १.३१.५. [एक-आयुपदयोः समासः]

एजत् चलत्सत् (विश्वं=सर्वं जगत्) १९.४७. कम्पयन् (ब्रह्म) १.१६४.३०. कम्पमानम् (जगत्) ऋ० भू० २०५. [एजतिः गतिकर्मा निघं० २.१४. एजृ कम्पने (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

एजत् कम्पते ४.१७.१०. कम्पयत् १.१६४.३०. **एजतः**=कम्पयतः २३.२८. **एजति**=कम्पते वर्द्धते च ८.२८. कम्पते चलति वा ५.७८.८. चाल पर चला रहा है आर्याभि० २.१२, ४०.५. कम्पते कम्प्यते वा ४०.५. चलित हो के उत्पन्न होता है आर्याभि० १.४७, ऋ० ७.८. १२.२. चलता है आर्याभि० २.१२, ४०.५. **एजतु**=सत्कर्मसु चेष्टताम्, भा०—अधर्माचरणाद् बिभीयात् २३.२७. कम्पताम् ५.७८.७. चलतु ८.२८. [एजृ कम्पने (भ्वा०) धातोर्लेट् लट् लोट् च]

एजान् भीरून् कम्पकान् (जनान्) ६.२५.७. [एजृ कम्पने (भ्वा०) धातोः पचाद्यच् कर्त्तरि]

एज्याः समन्ताद् यष्टुं सङ्गन्तुं योग्याः क्रियाः २१.४७ [आङ्+यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर् वाहुलकादौणादिकः यक् । किति सम्प्रसारणम्]

एणी मृगी २४.३६. [एणस्य स्त्री एणी । एणप्राति० स्त्रियां ङीष्]

एत समन्तात् प्राप्नुत ५.४५.६. समन्ताद् यन्तु प्राप्नुवन्तु ३.२७. प्राप्त होवो सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.५. **एतम्**=समन्तात्प्राप्नुतम् ४.३३. **एति**=प्राप्नोति ५.५६.३. गच्छति ६.४७.१७. गच्छति प्राप्नोति वा ५.४७.१. जाता आता है आर्याभि० २.४३, ३४.१. प्राप्त होता है स० प्र० १८४, ३४.१. विजानाति प्राप्नोति वा ५.४४.१२. प्रापयति ८.४. प्राप्नुयात् १.१२४.९. **एतु**=गच्छतु १७.४०. गच्छतु ७.४४. [इण् गतौ (अदा०) धातोराङ्पूर्वाद् लोट् । अन्यत्र लटि लोटि च रूपाणि । एतिः गतिकर्मा निघं० २.१४.]

एतग्वाः एतान् प्रत्यक्षान् पदार्थान् गच्छन्तीति (अश्वाः=किरणाः) १.११५.३. [एतग्वाः अश्वनाम निघं० १.१४.]

एतन प्राप्नुत ५.८७.८. [आङ्पूर्वाद् इण् गतौ (अदा०) धातोर् लोट् । तस्य तनबादेशः]

एतरी प्राप्नुवन्ती (अग्निज्वाला) ५.४१.१०. प्राप्तव्ये (दमे=गृहे) ६.१२.४.

एतवे एतुं गन्तुम् १.११२.८. प्राप्तुम् ५.४४.११. एतुम्, प्र०—अत्र 'तुमर्थे से०' इति तवे-प्रत्ययः १.४६.११. [इण् गतौ (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवेन् प्रत्ययः]

एतवै प्राप्तुम् ४.५८.९. गन्तुम् ८.१३. [इण् गतौ (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवैप्रत्ययः]

एतशम् वेगादि गुणयुक्ताऽश्ववन्तम् (रथम्) १.५४.६. प्राप्तविद्यमश्ववद् बलिष्ठम् (सज्जनम्) ४.३०.६. अश्वम् ४.१७.१४. **एतशस्य**=अश्वस्य सम्बन्धीनि बलानि, प्र०—एतश इत्यश्वनाम, निघं० १.१४, १७.१०. **एतशः**=प्राप्नुवन् (उपकारि जनः) २.१९.५. सर्वत्र प्राप्तः (सविता=ईश्वरः) ५.८१.३. अश्वोऽश्विकमिव ५.३१.११. साधुरश्वः १.१२१.१३. सर्वं जगदितः स्वव्याप्त्या प्राप्तः (सविता=ईश्वरः), प्र०—इणस्तशन्तसुनौ, उ० ३.१४७, ११.६. **एतशे**=अश्वेऽश्विक इव ५.२९.५. **एतशेन**=अश्वेनेव व्याप्तिशीलेन वेगवता किरणनिमित्तेन वायुना १२.७४. [एतशः=अश्वनाम निघं० १.१४. इण् गतौ (अदा०) धातोः 'इणस्तशन्तशसुनौ' उ० ३.१४९. सूत्रेण तशन् प्रत्ययः]

एतशेभिः विज्ञान-वेदादिभिरागमकैर्गुणैरश्वैः ४.३२. [पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततो भिस ऐसादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

एता प्राप्तौ (हरी=हरणशीलावश्वौ) ३.४३.४. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः । 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारः]

एतादृक्षासः एतैः पूर्वोक्तैः सदृशाः (मनुष्याः) १७.८४. [एतदोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'दृशेः क्सश्च वक्तव्यः' अ० ३.२.६०. वा० सूत्रेण क्सः प्रत्ययः । 'दृक्षे चेति वक्तव्यम्' अ० ६.३.९१. वा० सूत्रेण सर्वनाम्न एतद आकारादेशः । जसोऽसुक् च]

एतावत् एतत्परिमाणमस्य तत् (रूपं=स्वरूपम्) १९.३१. **एतावन्तः**=यावन्तो व्याख्याताः (रुद्राः=प्राणजीवाः) १६.६३. **एतावान्**=एतत् परिमाणं दृश्याऽदृश्यं ब्रह्माण्डरूपम्, भा०—इदं सर्वं सूर्यचन्द्रादिलोकलोकान्तर चराचरं यावज्जगदस्ति तत् (महिमा=माहात्म्यम्) ३१.३. [एतत् सर्वनाम्नः 'यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्' अ० ५.२.३९.

सूत्रेण वतुप् । 'आ सर्वनाम्नः' अ० ६.३.९१. सूत्रेणाकारादेशः सर्वनाम्नः]

एतासः समन्तात् प्राप्ताः (वायव इव विद्वांसः) १.१६५.१. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः । जसोऽसुक् च]

एतो एते (जनाः) ५.४५.५.

एतोः अयनम् २.१५.५. एताम् (अविष्यां=रक्षाम्) २.३८.३.

एत्य सेवां कृत्वा ऋ० भू० २८६, अथर्व० १५.११.२. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

एत्यै समन्ताद् गत्यै २७.४५. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

एदिधिषुः पतिम् अकृतविवाहायां ज्येष्ठायां पुत्र्यामूढा कनिष्ठा तस्याः पतिम् ३०.९.

एधताम् वर्द्धताम् २३.२६. **एधते**=वर्द्धते ८.५. [एध वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट् लट् च]

एधते समन्तात् प्रदीपयति ७.१.८. [आङ्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्लट् । नकारलोपश्छान्दसः]

एधमानद्विट् यो वर्धमानान् द्वेष्टि सः (राजप्रजाजनः) ६.४७.१६. [एधमानोपपदे द्विष् अप्रीतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । एधमानः=एध वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शानच् । एधमानद्विट्=एधमानान् द्वेष्टि नि० ६.२२.]

एधः इन्धते प्रदीपयन्ति येन तद्वत्, भा०—इन्धनं, घृतम् ३८.२५. वर्द्धकः (जगदीश्वरः) २०.२३. इन्धनम् १.१५८.४. [ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्घञ् प्रत्यये 'अवोदैध०' अ० ६.४.२९. सूत्रेण नलोपो गुणश्च निपात्यते। वर्धकार्थे तु एध वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच्]

एधि प्राप्तो भव ४.१.५. भवसि १.९१.१५. भवतु ४.१९. वर्धय, वर्धयिता भव ७.४७. प्राप्त हो स० प्र० १५२, अथर्व० १४.२.१८. [अस् भुवि (अदा०) धातोर्लोट् । 'घ्वसोरेद्हौ०' इति सकारस्यैत्वे हावल्लोपे च, एत्वस्यासिद्धत्वाद् 'हुझल्भ्यो हेर्धिः' इति धिभावः । एधि=भव नि० १०.१७.]

एधिषीमहि सर्वतो वर्द्धयेम ३८.२५. वर्द्धिषीमहि २०.२३. [एध वृद्धौ (भ्वा०) धातोराशिषि लिङि, उत्तमपुरुषबहुवचनम्]

एन एति पुरुषार्थेन सुखानि यस्तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.१७३.९. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको नः प्रत्ययः]

एनस एनसः अधर्मस्याऽधर्मस्य ८.१३. [एनसः पदस्य वीप्सायां द्विर्वचनम्]

एनसः अपराधात् २०.१४. अपराधस्य ४.१२.५. विरोधाऽऽचरणस्य ८.१३. दुष्टाचारात् २०.२०. पाप से आर्याभि० २.१९, ८.१३. पापों को आर्याभि० २.१९, ८.१३. धर्मविरुद्धाचरणात् भा०—दुष्टाचारात् ६.१७. दुःख के आर्याभि० २.१९, ८.१३. **एनः**=अधर्माचरणम् ८.१३. अपराधम् ६.५१.७. कुपथ्यादिकमपराधं वा ६.७४.३. पापाचरणम् १.१२५.७. प्रापकः (दुर्जनः) ७.१८.१८. दुःखफलं पापम् ५.३६. पापरूप कर्म को सं० वि० ७, ४०.१६. [ईयते प्राप्यते दुःखमनेनेति विग्रहे इण् गतौ (अदा०) धातोः 'इणः आगसि' उ० ४.१९८. सूत्रेणासुन् प्रत्ययः । एनस्=एनः एतेः नि० ११.२१.]

एना एनेन पूर्वोक्तेन (नमसा=अन्नेन) प्र०—अत्राऽऽकारादेशः १५.३२. [इदमः सर्वनाम्नः । 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' अ० २.४.३४. सूत्रेणान्वादेश एनादेशः । 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः । एनम् एनाम्=अस्यास्या इत्येतेन व्याख्यातम् नि० ५.२८.]

एनांसि भा०—दुश्चेष्टाः २०.१६. अपराधान् २०.१५. ['एनसः' पदे द्रष्टव्यम्]

एनी ये इतस्ते (द्यावापृथिव्यौ) १.१४४.६. [एतदः सर्वनाम्नोऽन्वादेशे 'वा छन्दसि०' इत्येनाद्रेश औ प्रत्ययेऽपि]

एनीम् प्राप्तुं योग्याम् (श्रियम्) ५.३३.६. **एनीः**=एन्यो मृगस्त्रिय इव (अवनयः=नद्यः) ५.८५.६. [एनी नदीनाम निघं० १.१३.]

एनोः एनयोः (अध्यापकोपदेशकयोः) प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोप०' इत्यकारलोपः १.१३६.१. अनयोर्मध्ये ६.६९.८. [इदमः सर्वनाम्न ओसि 'द्वितीयाटौस्स्वेनः' अ० २.४.३४. सूत्रेणान्वादेश एनादेशः । 'छान्दसो वर्णलोप' इति वा० सूत्रेणाकारलोपः]

एन्यः या यन्ति ता नद्यः, प्र०—एन्य इति नदीनाम निघं० १.१३, ५.५३.७. [एनी+जस् । एनी नदीनाम निघं० १.१३.]

एम प्राप्नुयाम ४.७.९. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिङि उत्तमपुरुषबहुवचनम्]

एमन् प्राप्तव्ये स्थाने, प्र०—अत्र सप्तम्या लुक् 'एमन्नादिषु छन्दसि पररूपम्' इति वार्त्तिकेन पररूपं च १३.१७. एति गच्छति तस्मिन् वायौ, प्र०—अत्र सप्तमी

लुक् १३.५३. [इण् गतौ (अदा०) धातोरधिकरणे बाहुलकादौणादिको मनिन् । आङ्+एमन् इति स्थिते 'एमन्नादिषु छन्दसि पररूपम्' अ० ६.१.९४. वा० सूत्रेण पररूपम्]

एमभिः प्रापकैर्गुणैः ५.५६.२. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्मनिन् प्रत्ययः]

एमसि समन्तात् प्राप्नुमः, प्र०—अत्र 'इदन्तो मसि' इतीदादेशः ३.४१. प्राप्त होते हैं सं० वि० १४६, ३.४१. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् । 'इदन्तो मसी' ति मस इदन्तता]

एमहे समन्ताद् याचामहे, प्र०—ईमहे इति याच्ञाकर्मसु पठितम्, निघं० ३.१९, ४.५. समन्तात्प्राप्नुमः, प्र०—अत्र 'ईङ गतौ' इत्यस्मात् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुकि श्यनभावः १.१७.३.

एमः एति येन स प्रयत्नः १८.१५. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको मन् प्रत्ययः]

एमि प्राप्नोमि १.१७१.१. प्राप्नुयाम्, प्र०—अत्र लिङर्थे लट् ३.४१. प्राप्तोऽस्मि २३.५०. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

एयसे (आ+ईयसे) समन्ताद् गच्छसि ४.२.३. **एयात्**=समन्तात्प्राप्नुयात् १२.६८. [आङ्+ईङ् गतौ (दिवा०) धातोर्लेटि मध्यमैकवचनम् । अन्यत्र आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिङ् । एयात्=आगच्छतु नि० ५.२८.]

एयुषीणाम् समन्तादतीतानामुषसाम् १.१२४.४. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिटः क्वसुः । स्त्रियां ङीपि 'वसोः सम्प्रसारणम्' इति सम्प्रसारणम्]

एयेथ (आ+इयेथ) अभित एषि ४.९.१. [आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचनम् । आङ्+च (अदा०) धातोर्वा णिचि लोटि रूपम्]

एरयस्व समन्तात् प्रापय ७.५.८. प्रेम से प्रेरणा कर सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३८. [आङ् पूर्वाद् ईर क्षेपे (चुरा०) धातोर्लोट् । आङ्+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्वा णिचि लोट्]

एरिरे (आ+ईरिरे) समन्तात् प्राप्नुवन्ति ३.२९.१५. सर्वतः प्रेरयन्ति ६.५.२. समन्ताज्जानीयुः १.१४३.४. प्रेरयन्ति प्राप्नुवन्ति वा १.१२८.८. कम्पयन्ति गमयन्ति वा २.२.३. [एरिरे इतीर्त्तिरुपसृष्टोऽभ्यस्तः नि० ४.२३. आङ्+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लिट् । छान्दसत्वाद् आम् न]

एव अवधारणार्थे १.८.८. निश्चयाऽर्थे २.२८. [एव एवम् नि० २.१९.]

एवम् अमुना प्रकारेण २१.४४. इसी प्रकार सं० वि० १४५, ४.२.

एवया गमनक्रियया ५.४१.१६. [इण् गतौ (अदा०) धातोर् वन्प्रत्यये स्त्रियां टापि तृतीयैकवचनम्]

एवयामरुत् य एवान् प्रापकान् यान्ति तेषां यो मरुत् मनुष्यः (धीमान् जनः) ५.८७.१. विज्ञानवान् मनुष्यः ५.८७.२. [एवया-मरुत्पदयोः समासः । एवया=इण् गतौ (अदा०) बाहु० औणादिको वन्, तत एवोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोरण् प्रत्ययः । प्रतिष्ठा वा एवयामरुत् ऐ० ६.३०, गो० पू० ६.८.]

एवयावरी दुःखनिवारिका (अध्यापिकोपदेशिका वा) ६.४८.१२. [एवोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्वनिप् प्रत्ययः । ततः स्त्रियां 'वनो र च' सूत्रेण ङीप् रेफादेशश्च]

एवयावः एति जानाति सर्वव्यवहारं येन स एवो बोधस्तं याति प्राप्नोति प्रापयति वा तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन), प्र०—'मतुवसोरादेशे वन उपसङ्ख्यानम्, अ० ८.३.१. अनेन वार्त्तिकेनाऽत्र सम्बोधने रुः १.९०.५. [एवः=इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिको वन् । एवोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्वनिप् । ततः सम्बुद्धौ 'मतुवसोरादेशे वन उपसंख्यानमि' इति वार्त्तिकेन रुः]

एवयाव्नः य एवं विज्ञानं यान्ति तान् (यतस्रुचः=ऋत्विजः) २.३४.११. [एवेति व्याख्यातम् । तदुपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्वनिप् । 'अल्लोपोऽन' इत्यल्लोपः]

एवयाः एवान् रक्षकान् याति (विद्वज्जनः) १.१५६.१. [एवोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोरण् प्रत्ययः छान्दसः एवः=अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि]

एवः प्रापणम् १५.५. ज्ञानम् १५.४. **एवान्**=प्राप्तव्यान् (पदार्थान्) ६.५१.२. **एवाः**=कामयमानाः (मरुतः=मनुष्याः) ५.४१.५. **एवेन**=गमनेन १.१२८.३. **एवैः**=विज्ञानादिप्राप्तैः सद्गुणैः सह ७.६.६. ज्ञापकैः प्रापकैर्गुणैः १.६८.२. प्रशस्तैर्ज्ञानैः कर्मभिर्वा १.१००.१८. प्राप्तैः प्रशस्तज्ञानैः १.१००.२. प्रापणैः ५.४१.५. सुखप्रापकैः (गुणैः) ४.५६.१. [एवैः कामैरयनैरवनैर्वा नि० १२.२१. एवः=इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिको वन्]

एवासः गमनशीलाः (रथाः) १.१६६.४. ['एव' इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

एवावदस्य एवान् प्राप्तान् गुणान् वदन्ति येन तस्य (क्षत्रस्य=राष्ट्रस्य) ५.४४.१०. ['एव' इति व्याख्यातम्। तदुपपदे वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' अ० ३.३.११८. सूत्रेण करणे घः प्रत्ययः]

एवो एव ४.१२.६.

एषते (आ+ईषते) अभिगच्छति ५.६७.५. प्राप्नोति १.१४६.१. हिनस्ति ५.८६.३. [आङ् पूर्वाद् ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोर्लट्]

एषस्य सर्वत्र प्राप्तव्यस्य (विष्णोः=परमेश्वरस्य) ७.४०.५. ऐश्वर्यवतः (विष्णोः=ईश्वरस्य) २.३४.११. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिक सः प्रत्ययः]

एषः कार्यकारणसङ्गत्या यदनुमीयते (योनिः=असमं प्रमाणम्) ८.४१. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः सः प्रत्ययः]

एषि प्राप्नोषि १.१२३.१०. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्। मध्यमैकवचनम्]

एषे एतुं प्राप्तुम् ५.४१.५. गन्तुम् ५.६६.३. [इण् गतौ (अदा०) धातोस्तुमर्थे 'तुमर्थे सेसेन०' इति सेन् प्रत्ययः]

एषे (आ-इषे) समन्तादिच्छामि ५.४६.१. सब सुख प्राप्त कराने को समर्थ होवे सं० वि० १०५, ५.४१.७. [आङ्+ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोर्लट्]

एषे समन्तादिच्छवे (अत्रये=विदुषे जनाय) १.१८०.४. [आङ्पूर्वाद् इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। ततश्चतुर्थ्या एकवचनम्]

एषो इयम् (उषाः=प्रातर्वेला) १.४६.१.

एष्टयः समन्तादिष्टयो विद्वत्पूजा सत्सङ्गो विद्यादानञ्च याभ्यस्ताः (क्रियाः) १८.४३. **एष्टः**=भा०—समन्तात् पूजितुं योग्यः (विष्णुः=परमेश्वरः) २३.४९. [आङ्+यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। किति सम्प्रसारणम्। ऋक्सामानि वाऽएष्टय ऋक्सामैर्ह्याशासनऽइति नोऽस्त्वित्थं नोऽस्त्वति श० ९.४.१.१२.]

एष्टा पर्यालोचकः (विद्वज्जनः) १.१८४.२. **एष्टाः**=सर्वत इष्टकारिणः (रायः=धनसमूहान्) ५.७. [इष गतौ (दिवा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। अन्यत्र आङ्पूर्वाद् इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः क्तः]

एष्टौ समन्ताद् यज्ञ+क्रियायाम् ६.२१.८. [आङ् यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। सप्तम्या एकवचनम्]

एहि (आ-इहि) आगच्छ ६.१६.१६. आगच्छन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययः ५.८३.६. प्राप्नुहि प्रापयति वा, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.९.१. समन्तात् प्राप्नुहि प्राप्नोतु वा ४.२०. समन्तात् प्राप्नुयात्, प्र०—अत्र व्यत्ययः ३.२७. अध्ययनेनैवैति प्राप्नोति १.१५. अभितः प्राप्नुहि, समन्तादेति, अ०—सञ्जानीहि ५.९. [आङ् पूर्वाद्इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

एहिमायासः आ ममन्ताच्चेष्टायां प्रज्ञा येषान्ते (विश्वेदेवासः=समस्तवेदपारगा विद्वांसः) प्र०—चेष्टार्थस्याऽऽङ्पूर्वस्य ईहधातोः 'सर्वधातुभ्य इन्' उ० ४.११९. इतीन्प्रत्ययान्तं रूपम् 'मायेति प्रज्ञानामसु पठितम्' निघं० ३.९, १.३.९. [एहि-मायापदयोः समासः। एहि=आङ्+ईह चेष्टायाम् (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्यः इन्' उ० ४.११९. सूत्रेण इन्। माया प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

ऐक्षेताम् पश्यतः ३२.७. [ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्लङि प्रथमपुरुषद्विवचनम्]

ऐजन् एजन्ति १.६३.१. [एजृ कम्पने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

ऐट्ट प्रशंसेत ३.४८.३. [ईड स्तुतौ (अदा०)धातोर्लङ्]

ऐडम् इडाया वाचो व्याख्यात्री साम १३.५७. **ऐडेन**=इडाया अन्नस्येदं संस्करणं तेन १५.७. [इळा वाङ् नाम निघं० १.११. अन्ननाम निघं० २.७. इळाप्राति० व्याख्यानार्थे तस्येदमर्थे वाऽण् प्रत्ययः]

ऐत् प्राप्नोति ५.३०.९. **ऐत**=प्राप्नुत ४.३५.३. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्]

ऐतन विज्ञापयत १.११०.३. विजानीत १.१६१.६. प्राप्नुत १.११०.२. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङि मध्यमबहुवचनम् तस्य तनबादेशश्छान्दसः]

ऐताम् प्राप्नुतः १४.३०. **ऐतु**=समन्तात्प्राप्नोतु ३३.३४. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङि प्रथमद्विवचनम्। ऐतु=आङ्+इण् गतौ+लोट्]

ऐधेव एधैः काष्ठैरिव १.१६६.१. [ऐध-इव पदयोः समासः। एधः=ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्घञि 'अवोदैध०' इति नलोपः। एधप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण्, स्वार्थे वाऽणि 'ऐध' इति रूपम्]

ऐनोः प्रेरयेः ४.१६.७. **ऐनोत्**=प्राप्नोति, प्र०—अत्रेणधातोर्व्यत्ययेन श्नुः १.६६.५. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन शपः श्नुः]

ऐन्द्रम् परमैश्वर्यस्वरूप, सब विद्वानों में अत्यन्त शोभायमान (ईश्वर) को आर्याभि० २.१८. इन्द्रस्यैश्वर्यस्येदम् (सदः=सभाम्) १९.१८. इन्द्रस्य परमैश्वर्यस्येदधिकरणम् (ईश्वरः सभाध्यक्षो वा) ५.३०. इन्द्रो विद्युद्देवता यस्य तद् विज्ञानम् १९.१५. ऐश्वर्यकारकम् (सवनम्=आरोग्यकरं होमादिकम्) १९.२६. इन्द्रस्य विद्युत इदम् (वलम्) १९.८. **ऐन्द्रः**=विद्युद्देवताकः (उदानः=य ऊर्ध्वमनिति) ६.२०. इन्द्रदेवताकः (अरुणः पशुः) २९.५८. इन्द्रो जीवो देवताऽस्य स ऐन्द्रः (प्राणः=शरीरस्थो वायुविशेषः) ६.२०. [इन्द्रप्राति० 'सास्य देवता' (अ० ४.२.२४.) अर्थे 'तस्येदम्' अ० (अ० ४.३.१२०.) अर्थे वाऽण् प्रत्ययः]

ऐन्द्रवायवः इन्द्रो विद्युद्वायुश्च तयोरयं सम्बन्धी (कर्त्तव्यः) १८.१९. [इन्द्र-वायुपदयोः समासे 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् प्रत्ययः। वाक् प्राणश्चैन्द्रवायवः ऐ० २.२६.]

ऐन्द्राग्नः इन्द्राग्निदैवत्यः (संहितः=दृढाङ्गः पशुः) २९.२८. इन्द्रो वायुरग्निर्विद्युच्च ताभ्यां निर्वृत्तः (व्यवहारः) १८.२०. **ऐन्द्राग्नाः**=इन्द्राग्निदेवताकाः (सञ्चराः प्राणिनः) २४.१५. वायुविद्युत्सञ्ज्ञिनः भा०—वाय्वग्न्यादिगुणाः पशवः २४.८. वायुविद्युद्देवताकाः (सञ्चराः=मार्गाः) २४.१७. [इन्द्र-अग्निपदयोः समासे 'सास्य देवता' इत्यर्थे तेन निर्वृत्तमित्यर्थे वाऽण् प्रत्ययः]

ऐन्द्राबार्हस्पत्याः वायुसूर्यदेवताकाः (पशवः) २४.७. [इन्द्र-बृहस्पतिपदयोः समासे 'सास्य देवता' इत्यर्थे 'दित्यदित्या०' इति ण्यः प्रत्ययः। 'देवताद्वन्द्वे च' अ० ६.३.२६. सूत्रेण पूर्वपदस्यानङ्। 'देवताद्वन्द्वे च' अ० ७.३.२१. सूत्रेणोभयपदवृद्धिः]

ऐन्द्रावैष्णवाः विद्युद्वायुदेवताकाः (पशवः) २४.७. [इन्द्र-विष्णुपदयोः समासे 'सास्य देवता' इत्यर्थेऽण्। पूर्वपदवदानङ् उभयपदवृद्धिश्च]

ऐमि समन्तात्प्राप्नोमि ४.२. समन्तात् प्राप्नुयाम् प्र०—अत्र लिङर्थे लट् ३.४१. सब प्रकार से प्राप्त होता हूँ सं० वि० १४६, ३.४१. [आङ्पूर्वाद् इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

ऐयेः गच्छेः ५.२.८. [ईङ् गतौ (दिवा०) धातोर्लिङ्। आडागमश्छान्दसः]

ऐरत् प्राप्नोति २.१५.८. प्रापयेत् ४.४.६. ऐरयति २.१९.६. कम्पयति यथाक्रमं चालयति ४.५६.३. प्रेरयेत् ३.३१.१५. प्रेरयति ३.५५.२०. **ऐरत**=प्रेरयन्ति ७.२३.१. **ऐरतम्**=गच्छतम् १.११८.६. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् न। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ऐरम् प्रेरयेयम् ४.२६.३. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। छान्दसत्वाच् छपो लुङ् न]

ऐरयत् कम्पयति २.१७.१ गमयति १.५१.११ प्रेरयति २.२०.७. प्रेरयेत् ६.५६.३. वीरयत् वीरयत्यूर्ध्वमधो गमयति, प्र०—अत्र लङर्थे लुङ् १.७.३. **ऐरयतम्**=प्रापयतम् ६.७२.३. गमयतम् १.११२.५. प्रेरयतम् १.११७.२४. **ऐरयन्**=प्राप्नुवन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.२८. **ऐरयम्**=प्रेरयेयम् ४.४२.३. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्णिचि लङ्]

ऐरयः ईर्ष्व २.१७.३. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्णिचि लङि मध्यमैकवचनम्]

ऐरयेथाम् प्रेरयेतम् ६.६९.८. चालयेथाम् १.१५७.५. [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्णिचि लङि च रूपम्]

ऐरिरे समन्तात् प्राप्नुवन्तः, प्र०+ईर गतौ कम्पने च, इत्यस्याऽमन्त्र इति प्रतिषेधादामोऽभावे प्रयोगः १.६.४, [ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोराङ् पूर्वाल् लिट्। आमोऽभावश्च छान्दसः]

ऐलवृदाः इलायाः पृथिव्या इमानि वस्तुजातानि ऐलानि, तानि ये वर्धयन्ति ते, भा०—पृथिवीरक्षका वायवः, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन धस्य दः, इगुपधलक्षणः कश्च १६.६०. [इला पृथिवीनाम निघं० १.१. ततः 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् प्रत्ययः। ऐलोपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। अन्तर्भावितण्यर्थः। वर्णव्यत्ययेन धकारस्य दकारः]

ऐषन्त इच्छेयुः १.१२६.५. [ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोर्लङ्। धातूनामनेकार्थत्वाद् इच्छार्थेऽपि]

ओ सम्बोधने १.१७७.५. आभिमुख्ये १.१६५.१४. अवधारणे १.११३.११. प्रेरणेषु २.३४.१५.]

ओकसः सर्वनिवासाऽर्थस्याऽऽकाशस्य १.३०.९. **ओकः**=गृहम् ४.१६.१५. स्थानम् २.१९.१. निवासस्थानम् ६.४१.१. **ओकसि**=गृहे ५.३३.४. **ओकांसि**=निवासान् ३४.५७. समवेतानि गृहाणि २.३८.५. [अवतिरक्षणहेतुर्भवतीति विग्रहे अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकात् कक् प्रत्ययः। उच्यते यत्रेति विग्रहे उच समवाये (दिवा०) धातोर्वा बाहुलकाद् औणादिकोऽसुन्

प्रत्ययः (उणा० ४.२१६)। कुत्वन्तु न्यङ्क्वादित्वात्। ओक इति निवासनामोच्यते नि० ३.३. गृहा वा ओकाः निरु० ८.२६.]

ओकिवांसा सङ्गतौ सम्बद्धौ (इन्द्राग्नी=वायु-विद्युतौ) ६.५९.३. [आङ्पूर्वाद् उच समवाये (दिवा०) धातोर्लिटः क्वसुः। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः। छान्दसं रूपम्]

ओक्ता समन्तादुक्तानि प्रशंसितानि (अन्नानि धनानि वा) १.६३.९. [आङ्पूर्वाद् वच परिभाषणे (अदा०) धातोः क्तः। 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति शेर्लोपः]

ओक्यम् ओकेषु गृहेषु साधु (विद्योपदेशम्) १.१३३.५. ['ओक' इति व्याख्यातम्। ततः 'तत्र साधु' इत्यर्थे यत्]

ओक्ये गृहे ३.४२.८. घर में, आर्याभि० १.३७, ऋ० १.६.२१.१३. ['ओक' इति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत्]

ओक्षतम् समन्तात् सिञ्चेताम् २१.९. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लङि मध्यमद्विवचनम्]

ओजसः पराक्रमस्य १.५२.१२. बलस्य ५.३२.९. अपने सामर्थ्य से, आर्याभि० १.१३, ऋ० १.५२.१२. **ओजसा**=जलेन, प्र०—ओज इत्युदकनाम, निघं० १.१२, २.२२.३. उदकेन सह ३४.७. स्वबलेन १.१३०.९. प्रशस्त शरीरात्मसभा-सेनाबलेन ८.३९. बलेन वेगेन वा १.१९.८. स्वस्य शरीरबुद्धिबलेन सैन्येन वा १७.३८. अनन्तबलेन, प्र०—ओज इति बलनामसु पठितम्, निघं० २.९, १.११.८. पराक्रमेण, कोमलेन कर्मणा वा १.१२७.४. विद्याबलेन १.५५.६. सामर्थ्येन ३०.४१. बलादिगुणसमूहेन १.१९.४. **ओजसे**=बलयुक्ताय (सभाध्यक्षाय) १.५७.५. पराक्रमाय ८.३९. आत्मबलाय ७.२८. **ओजः**=वेगवद् बलम् ४.७.१०. जलवेगः, प्र०—ओज इत्युदकनाम, निघं० १.१२, २८.५. पराक्रमकारि (अ०—वैद्युतं तेजः ५.५. पराक्रमस्वरूप (ईश्वर), आर्याभि० २.९, १९.९. पराक्रम को आर्याभि० २.९, १९.९. महाप्राणवत्त्वम् १९.९. पराक्रमयुक्तः (अ०—परमाप्तः परमात्मा) १०.१५. जलमिव बलम् ५.३१.७. न्यायपालनाऽन्वितः पराक्रमः, ऋ० भू० १०२. सत्यं विद्याबलम्, ऋ० भू० १४९. बलकरमन्नादिकम् ६.४६.७. बलपराक्रमः ३४.५१. मानसं बलम् ३६.१. शरीरस्थं तेजः १८.३. अनन्त सामर्थ्य-युक्त (ईश्वर) स० प्र० २४६, १९.९. प्राणधारणम् ६.१९.६. वीर्य्यम् ५.३२.१०. बलकरमन्त्रादिकम् ६.४६.७.

ओजांसि=शरीरात्मनः पराक्रमान् १.८०.१५. [उब्जति कोमलो भवतीति विग्रहे उब्ज आर्जवे (तुदा०) धातोः 'उब्जेर्बले बलोपश्च' उ० ४.१९२. सूत्रेणासुन् प्रत्ययः। ओजो बलम्। नि० ६.२३. ओजः=उदकनाम निघं० १.१२. बलनाम निघं० २.९. ओजसा बलेन। ओज ओजतेर्वा उब्जतेर्वा नि० ६.८. ओजः सहः सह ओजः कौ० ३.५. वज्रो वा ऽओजः श० ८.४.१.२०.]

ओजस्वतीः विद्याबलपराक्रमयुक्ता राजस्त्रियः, जितेन्द्रियाः (राजस्त्रियः) १०.३. ['ओज' इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने मतुपि स्त्रियां ङीप्]

ओजायमानम् ओजः पराक्रममिवाऽऽचरन्तम् (अहिं=मेघम्) २.१२.११. बलयन्तम् (अहिं=मेघम्) ३.३२.११. **ओजायमानः**=ओज इवाऽऽचरन् (जनः) १.१४०.६. [ओजस्पदादाचारेऽर्थे 'कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च' अ० ३.१.११. सूत्रेण क्यङ् सलोपश्च। ततः शानच्]

ओजिष्ठ ! अतिशयेनौजस्विन् (राजन्) १.१२९.१०. **ओजिष्ठम्**=अतिशयेन बलप्रदम् (श्रवः=अन्नं श्रवणं वा) ६.४६.५. अतिशयेन बलिष्ठम् (मेदः=स्नेहः) ३.२१.५. अतिशयेन पराक्रमयुक्तम् (द्युम्नं=यशोधनं वा) ५.१०.१. **ओजिष्ठः**=अतिपराक्रमी (इन्द्रः=विद्वान् राजा) ८.३९. अतिशयेनौजस्वी, भा०—ब्रह्मचर्येण शरीरात्मबलयुक्तो विद्वान् (राजा) ३३.६४. **ओजिष्ठाय**=अतिशयेनौजो विद्यते यस्मिन् विद्या-व्यवहारे तस्मै ५.५. ['ओजस्' इति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायन इष्ठन्। 'टेः' अ० ६.४.१५५. सूत्रेणेष्ठनि परे टेर्लोपः]

ओजिष्ठया अतिशयेन पराक्रमयुक्तया (दक्षिणया) १.१६९.४. [ओजस्प्राति० अतिशायन इष्ठन्। ततः स्त्रियां टाप्]

ओजिष्ठेभिः अतिशयेन बलादिगुणयुक्तैर्नरोत्तम-सैन्यैः ४.२०.१. बलिष्ठैर्योद्धृभिः २०.४८. ['ओजिष्ठ' इति व्याख्यातम्। ततो भिस ऐसादेशो न]

ओजीयः बलिष्ठम् (विश्वं=जगत्) २.३३.१०. [ओजस्प्राति० अतिशायन ईयसुन्। टेर्लोपः]

ओजीयान् अतिशयेन पराक्रमी (राजा) ६.२०.३. [ओजस्प्राति० अतिशायन ईयसुन्। टेर्लोपः]

ओजोभिः पराक्रमादिभिः ७.५६.६. [ओजस्प्राति० तृतीयाबहुवचनम्। 'ओजस्' इति व्याख्यातम्]

ओज्मानम् पराक्रमयुक्तं रसम् २९.५३. बलकारिणम् (मेघमिव सुखम्) ६.४७.२७.

ओणिम् दुःखाऽन्धकारस्याऽपनयनम् १.६१.१४.

ओण्योः=द्यावापृथिव्योः, प्र०—ओण्योरिति द्यावापृथिवीनामसु पठितम्, निघं० ३.३०, ४.२५. [ओणृ अपनयने (भ्वा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वा० सूत्रेण इक् प्रत्ययः। ओण्यौ द्यावापृथिव्योर्नाम। निघं० ३.३०.]

ओतम् सूत्रे मणिगणा इव प्रोतम्, भा०—सञ्चितम् (ज्ञानम्) ३४.५. सर्वव्यापक (चित्तं=चित्त को) स० प्र० २४७, ३४.४. **ओतः**=ऊर्ध्वतन्तुः पट इव ३२.८. [आङ्+वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोः क्तः। 'ग्रहिज्या०' इति सूत्रेण किति सम्प्रसारणम्]

ओतवै विस्ताराय १.१६४.५. [आङ्+वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवै प्रत्ययः। 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकत्वे सार्वधातुकमपिदिति कित्वे च ग्रह्यादिसूत्रेण सम्प्रसारणम्]

ओतुम् रचयितुम् ६.९.२. [आङ्+वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोस्तुमुन्। 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकत्वे कित्वे सम्प्रसारणम्]

ओतुम् रक्षकम् (तन्तुं=जगत्कारणम्) ६.९.३. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'सितनिगमिमसि०' उ० १.६९. सूत्रेण तुन्। 'ज्वरत्वर०' इति सूत्रेणोपधावकारयोरूठ्। ततो गुणे रूपम्]

ओदती उन्दनं कुर्वन्ती (उषाः) १.४८.६. [उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोराङ्पूर्वाच्छत्रन्तान् ङीप्। छान्दसत्वात् श्नमोऽभावः। ओदती उषो नाम। निघं० १.८.]

ओद्मन् ओषधीषु, प्र०—अत्र सप्तमी-लुक् १३.५३. [उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोर्मनिन्नौणादिकः। 'अवोदैधौद्म०' इति न लोपो गुणश्च निपात्यते]

ओपमिमीहि अभितः श्रेष्ठैरुपमितान् कुरु १.८४.२०. [आङ्+उप+माङ् माने (जुहो०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ओपशमिव अत्यन्तं सम्बद्धम् (द्यां=प्रकाशम्) १.१७३.६. ['ओ' इत्यवधारणे, तदुपपदे पश बन्धने (चुरा०) धातोर्घञर्थे कः। ततः=ओपशम्-इव-पदयोः समासः]

ओ३म् योऽवति सकलं जगत्तदाख्या ४०.१७. एतन्नामवाच्यमीश्वरम् ४०.१५. अवतीत्योम्, रक्षा करने से यह ईश्वर का नाम है, स० प्र० १४, ४०.१७. ईश्वर-वाचको यज्ञो वेदविद्या वा, प्र०—ओ३म् खं ब्रह्म, अत्र 'अवतेष्टिलोपश्च' उ० १.१४२. अनेनाऽवधातोर्मन् प्रत्ययोऽस्य टिलोपश्च, अ०—हे ओङ्कारवाच्यबृहस्पते, भा०—एतत्परमेश्वरस्यैव नाम २.१३. ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है, इसमें अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर 'ओ३म्' समुदाय हुआ, इस एक नाम से परमात्मा के बहुत नाम आते हैं, जैसे—अकार से विराट्, अग्नि और विश्वादि; उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तैजसादि; मकार से ईश्वर, आदित्य और प्राज्ञादि स० प्र० ११. रक्षा करने वाला (ईश्वर), सं० वि० ११४, १०.८५.४४. यह मुख्य परमेश्वर का नाम है जिस के साथ अन्य सब नाम लग जाते हैं सं० वि० ७५, ३६.३. [अव रक्षणगतिकान्तिप्रीत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अवतेष्टिलोपश्च' उ० १.१४२. सूत्रेण मन्प्रत्ययो टिलोपश्च प्रत्ययस्यैव। धातोरुपधावकारयोरूठ् च चादिषु पाठादव्ययम्। तदेतदक्षरं (ओङ्कारं) ब्राह्मणो यं काममिच्छेत् त्रिरात्रोपोषितः प्राङ्मुखो वाग्यतो बर्हिष्युपविश्य सहस्रकृत्व आवर्त्तयेत् सिद्ध्यन्त्यस्यार्थाः सर्वकर्माणि च गो० पू० १.२२. (ओङ्कारस्य) को धातुरित्याप्लृधातुरवतिमप्येके रूपसामान्यादर्थसामान्यान्नेदीयः, तस्मादापेरोङ्कारः सर्वमाप्नोतीत्यर्थः गो० पू० १.२६. को विकारो च्यवते। प्रसारणमाप्नोतेराकारपकारौ विकार्यादित ओङ्कारो विक्रियते। द्वितीयो मकार एवं द्विवर्ण एकाक्षर ओमित्योङ्कारो निर्वृत्तः गो० पू० १.२६. ते (देवाः) ओङ्कारं ब्रह्मणः पुत्रं ज्येष्ठं ददृशुः गो० पू० १.२३. लातव्यो गोत्रो, ब्रह्मणः पुत्रो, गायत्रं छन्दः, शुक्लो वर्णः, पुंसो वत्सो रुद्रो देवता ओङ्कारो वेदानाम् गो० पू० १.२५. तासामभिपीडितानां (व्याहृतीनां) रसः प्राणेदत्। तदेतदक्षरमभवदोमिति यदेतत् जै० उ० १.२३.७. तानि (भूर्भुवःस्वः) शुक्राण्यभ्यतपत्तेभ्योऽभितप्तेभ्यस्त्रयो वर्णा अजायन्त अकार उकारो मकार इति। तानेकधा समभरत्तदेतद् ओ३मिति ऐ० ५.३२, ओमिति वै साम जै० उ० १.९.२. ओमिति मनः जै० उ० १.९.२. ओमित्यथर्वणां शुक्रम् गो० पू० २.२४. ओमितीन्द्रः जै० उ० १.९.२. ओमित्यसौ योऽसौ (सूर्यः) तपति ऐ० ५.३२. हन्तेति चन्द्रमा ओमित्यादित्यः जै० उ० ३.६.२. ओमिति वै स्वर्गो लोकः ऐ० ५.३२. ओमित्येतदेवाक्षरमृतम् जै० उ० ३.३६.५. तदेतत् सत्यमक्षरं यदोमिति। तस्मिन्नापः प्रतिष्ठिताः जै० उ० १.१०.२. तस्मादोमित्येव प्रतिगृह्णीयात् तद्धि सत्यं तद्देवा विदुः श० ४.३.२.१३. ओमित्यृचः प्रतिगर एवं तथेति गाथाया ओमिति वै दैवं तथेति मानुषम् ऐ० ७.१८. यद्वै नेत्यृच्योमिति तत् श० १.४.१.३०. एतद्ध वा (ओमिति) अक्षरं

वेदानां त्रिविष्टपम् जै० उ० ३.१९.७. एतद् (ओमिति) एवाक्षरं त्रयी विद्या जै० उ० १.१८.१०. स (ब्रह्मा) ओमित्येतदक्षरमपश्यद् द्विवर्णञ्चतुर्मात्रं सर्वव्यापि सर्वविभ्वयातयाम ब्रह्म गो० पू० १.१६. एष (ओमित्यक्षरम्) उ ह वाव सरसः जै० उ० १.८.५. यथा सूच्या पलशानि सन्तृण्णानि स्युरेवमेतेना (ओमिति) अक्षरेणेमे लोकाः सन्तृण्णाः जै० उ० १.१०.३. एवमेवैवं विद्वान् ओमित्येतदेवाक्षरं समारुह्य यददोऽमृतं तपति तत्प्रपद्य ततो मृत्युना पाप्मना व्यावर्त्तते जै० उ० १.१८.११.]

ओमभिः रक्षणादिकारकैः (ओषधैः) ५.४३.१३. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्मनिन् । उपधावकारयोरूठ् धातोः]

ओमानम् रक्षादिकर्त्तारम् (जनम्) ६.५०.७. रक्षणादिसत्कर्मपालकम् (ऊर्जं=पराक्रमम्) १.११८.७. ['ओमन्' इति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततो द्वितीयैकवचनम्]

ओमासः अवन्ति सद्गुणै रक्षन्ति ते (देवासः=विद्वज्जनाः) ७.३३. रक्षका, ज्ञानिनो विद्याकामा उपदेशप्रीतयो, विज्ञानतृप्तयो याथातथ्यावगमाः, शुभगुणप्रवेशाः, सर्वविद्याश्राविणः, परमेश्वरप्राप्तौ व्यवहारे च पुरुषार्थिनः, शुभविद्यागुणयाचिनः, क्रियावन्तः, सर्वोपकारमिच्छुका, विज्ञाने प्रशस्ता आप्ताः सर्वशुभगुणलिङ्गिनो दुष्टहिंसकाः शुभगुणदातारः सौभाग्यवन्तो ज्ञानवृद्धाः, (विश्वेदेवासः=सर्वे विद्वांसः), प्र०—अव रक्षण-गति-कान्ति-प्रीति-तृप्त्यवगम-प्रवेश-श्रवण-स्वाम्यर्थयाचन-क्रियेच्छा-दीप्त्यवाप्त्यालिङ्गन-हिंसा-दान-भाग-वृद्धिषु, इत्यस्माद् 'अविसिविसिशुषिभ्यः कित्, इत्यनेनौणादिकेन सूत्रेणाऽवधातोरोमशब्दः सिध्यति । ओमास इति पदनामसु पठितम्, निघं० ४.३, १.३.७. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरौणादिको मन् प्रत्ययः । ततो जसोऽसुगागमः । ओमासः पदनाम निघं० ४.३. ओमासः अवितारो वा ऽवनीया वा नि० १२.४०.]

ओम्यावतीम् अवन्ति त ओमास्तेषु भवा प्रशस्ता विद्या तद्वतीम् (नीतिम्) १.११२.२०. ['ओम' इति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत् प्रत्यये मतुपि च स्त्रियां ङीप्]

ओम्यावन्तम् ये अवन्ति ते ओमानस्तान् ये यान्ति प्राप्नुवन्ति त ओम्याः, एते प्रशस्ता विद्यन्ते यस्य तम् (विद्वज्जनम्) १.११२.७. [अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्मनिन् प्रत्यय ओमन् । तदुपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोरण् प्रत्ययः । ततोऽतिशायने मतुप्]

ओर्णुत आच्छादयत २.१४.३. आङ्+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोर्लोट्]

ओषतात् दह १३.१२. **ओषति**=दहेत् १.१३०.८. **ओषः**=दहसि १.१७५.३. [उष दाहे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'तुह्योस्तातङ्' इति तातङादेशः । अन्यत्र लट्]

ओषधयः यवादयः, प्र०—फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः, मनु० १.४६, १.२१. सोमाद्याः ३६.१७. सोमयवाद्याः २०.१९. **ओषधीनाम्**=सोमाद्योषधीनाम् १.१२७.८. **ओषधीभिः**=यवादिभिः, प्र०—ओषधय ओषद् धयन्तीति वा दोषं धयन्तीति वा, नि० ९.२७, १.२१. यवसोमलतादिभिः १५.७. **ओषधीभ्यः**=प्रसिद्धाभ्यः (वनस्पतिभ्यः) ६.२. रोगनिवारिकाभ्यः (सोमलतादिभ्यः) ६.९. **ओषधीषु**=सोमलतादिषु १९.३३. **ओषधीः**=गोधूमाद्याः (अन्नानि) १.१०३.५. वृक्षादि वनस्थ सब पदार्थ, आर्याभि० १.२७, ऋ० ७.३४.२५. सर्वरोगनाशिकाः (सोमाद्याः) १.९१.२२. ओषधयः १३.२७. यवादीन् १.१६३.७. सोमलतादय ओषध्यः, प्र०—'अत्र वाच्छन्दसि' इति पूर्वसवर्णदीर्घः १.९०.६. **ओषधे**=ओषधिवद्वर्त्तमाने (स्त्रि) १२.९९. ओषधिनद्वर्त्तमान विद्वन् (जन) १२.१००. ओषो विज्ञानं धीयते यस्मिँस्तत्सम्बुद्धौ (अ० विज्ञानवराऽध्यापक, प्र०—अत्र 'ओष गतौ' इत्यस्माद् गतिरत्र विज्ञानं गृह्यते ६.१५. ओषधिव्यापिन् (ईश्वर) १.१८७.१०. ओषधिः १२.१०१. ओषधिम् १२.९८. सोमलताद्योषधिगणः ४.१. सर्वरोगनिवारक (विद्वज्जन) ५.४२. **ओषध्याः**=यवादेः १.२५. [ओषद् उपपदे धेट् पाने (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यधिकरणे च' अ० ३.३.९३. इति विहितः किः प्रत्ययोऽत्र 'कृतो बहुलम्' इति कर्तर्यपि, तलोपश्च, स्त्रियां ङीष् । ओषद्=उष दाहे (भ्वा०) धातोः शतृ । ओषधय ओषद्धयन्तीति वा, ओषत्येना धयन्तीति वा, दोषं धयन्तीति वा नि० ९.२७. ओषधयः पदनाम निघं० ५.३. (प्रजापतिः) तां (आहुतिं) व्यौक्षत् ओषं धयेति, तत ओषधयः समभवँस्तस्मादोषधयो नाम श० २.२.४.५. द्वय्यो वा ओषधयः पुष्पेभ्योऽन्याः फलं गृह्णन्ति । मूलेभ्यो अन्याः तै० ३.८.१७.४. उभय्यो (ओषधयः) ऽस्मै स्वदिताः पच्यन्तेऽकृष्टपच्याश्च कृष्टपच्याश्च तां० ६.९.९. वाग्दैवत्यं साम, वाचो मनो देवता, मनसः पशवः, पशूनामोषधयः, ओषधीनामापः । तदेतदद्भ्यो जातं सामाप्सु प्रतिष्ठितमिति जै० उ० १.५९.१४. आपो ह वाऽओषधीनां रसः श० ३.६.१.७. अपामोषधयः (रसः) ओषधीनां पुष्पाणि (रसः) पुष्पाणां फलानि (रसः) । श० १४.९.४.१. एष ह वै

सर्वासामोषधीनां रसो यत्पयः को० २.१. अग्नेर्वा एषा तनूः यदोषधयः तै० ३.२.५.७. यदुग्रो देवा ओषधयो वनस्पतयस्तेन कौ० ६.५. ओषधयो वै पशुपतिस्तस्माद् यदा पशव ओषधीर्लभन्तेऽथ पतीयन्ति श० ६.१.३.१२. ओषधयो वै मुदः, ओषधिभिर्हीदं सर्वं मोदते श० ९.४.१.७. ओषधयो बर्हिः ऐ० ५.२८. श० १.३.३.९. तै० २.१.५.१. ओषधयः खलु वै वाजः तै० १.३.७.१. ओषधयो मधुमतीः तै० ३.२.८.२. रसो वा एव ओषधिवनस्पतिषु यन्मधुः ऐ० ८.२०. सौम्या ओषधयः श० १२.१.१.२. सोम ओषधीनामधिराजः गो० उ० १.१७. सोमो वै राजा ओषधीनाम् कौ० ४.१२. सोमो वा ओषधीनां राजा तै० ३.९.१७.१. औषधो वै सोमो राजा ऐ० ३.४०. ओषधिलोको वै पितरः श० १३.८.१.२०. जगत्य ओषधयः श० १.२.२.२. ओषधयो वै देवानां पत्न्यः श० ६.५.४.४. सैनान्यं वा एतदोषधीनां यद्यवाः ऐ० ८.१६. साम्राज्यं वा एतदोषधीनां यन्महाव्रीहयः ऐ० ८.१६. (प्रजापतिः) विष्णोरध्योषधीरसृजत तै० २.३.२.४.]

ओषधिः सोमादिः १.१६६.५. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

ओहते प्राप्नोति ५.५२.१०. व्यवहारान् वहति, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति सम्प्रसारणं लघूपधगुणः १.१७६.४. वहति प्रापयति ५.४२.१०. वितर्कयति ७.१६.११. प्राप्नोति प्रापयति वा ५.५२.११. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्। छान्दसत्वात् सम्प्रसारणं लघूपधगुणः। ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्वा छान्दसं रूपम्]

ओहते वितर्कयुक्ताय (जनाय) २.२३.१६. [ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोः शत्रन्ताच्चतुर्थी। अलघूपधत्वेऽपि छान्दसत्वाद् गुणः]

ओहम् ओहति प्राप्नोति येन तम् (स्तोमं=स्तुतिम्) १.६१.१. **ओहेन**=बीजादिस्थापनेन १.१८०.५. **ओहैः**=अर्दकैः कर्म्मभिः ४.१०.१. विद्यासुखप्रापकैः (स्तोमैः=वेदभागैः) १५.४४. रक्षणादिभिः १७.७७. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः प्रत्ययः। छान्दसत्वात्सम्प्रसारणे कृते गुणः]

ओहसा प्राप्तेन बलेन वेगेन वा ६.६७.९. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोरसुन्। छान्दसत्वात् सम्प्रसारणे कृते गुणः]

ओहसानम् तर्कगम्यम् (अहिं=मेघम्) ६.१७.९. [ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः। छान्दसत्वाद् गुणः। ओहोपपदे षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

ओहानम् त्यजन्तम् (मेघम्) ५.३०.६. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति कर्त्तरि ल्युट्। छान्दसत्वादौकारानुबन्धस्य लोपो न]

ओहानः रक्षकः (विद्वज्जनः) ६.५२.५. [ओहाङ् गतौ (जु०) धातोः पूर्वपदवल्ल्युट् कर्त्तरि]

ओषधीः ओषध्यः २०.१९. [ओषधिप्राति० 'कृदिकारादक्तिनः' इति वार्तिकसूत्रेण ङीष्]

औक्षन् सिञ्चन्ति ३.९.९. सिञ्चेरन् ३३.७. [उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

औचथ्यम् उचितेषूचितेषु कर्मसु साधुम् (विद्वज्जनम्) १.१५८.४. **औचथ्यः**=प्रशंसितेषु भवः (रेक्णः=धनम्) १.१५८.१. [उच समवाये (दिवा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽथः प्रत्ययः, स च णित्। औचथप्राति० साध्वर्थे भवार्थे वा यत्]

औच्छत् निवासयति ५.३०.१४. **औच्छः**=विवासयति ५.७९.२. निवासवती वर्त्तते ५.७९.३. [उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

औद्भिदम् उद्भिनत्ति दुःखानि येन तदेव, भा०—विद्वद्भिः सह परामृश्य सत्यासत्यनिर्णयः (हिरण्यं=तेजो सुवर्णादिकम्) ३४.५०. [उत्+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः। ततः स्वार्थे प्रज्ञादित्वादण्]

औद्भिद्यम् उद्भिदां पृथिवीं भित्त्वा जातानां भावम् (वृक्षादि) १८.९. [उद्भिदप्राति० भावे ष्यञ्]

औपद्रष्ट्र्याय उपद्रष्ट्रत्वाय ३०.१३. [उपद्रष्ट्रप्राति० भावे कर्मणि वा ष्यञ्]

औब्जः य उब्जत्यार्जवी करोति तेन निर्वृत्तः सः (सूर्यलोकः) १.५६.५. [उब्ज आर्जवे (तुदा०) धातोरच् कर्त्तरि। ततो निर्वृत्तार्थेऽण् प्रत्ययः]

औब्जः आर्जवे भव २.२३.१८. [उब्ज आर्जवे (तुदा०) धातोर्घञर्थे कः। ततो भवार्थेऽण्]

औब्जत् उब्जति सरली करोति १.८५.९. [उब्ज आर्जवे (तुदा०) धातोर्लङ्]

औभ्नात् मृद्नाति ४.१९.४. [उभ उम्भ पूरणे (तुदा०) धातोर्लङ् विकरणव्यत्ययेन शपः श्ना। मृद्नात्यर्थे धातूनामनेकार्थकत्वात्]

और्णनाभम् ऊर्णा नाभ्यां यस्य तदपत्यमिव (वृत्रं=मेघम्) २.११.१८. [ऊर्णा-नाभिपदयोः समासः। समासान्तोऽच् प्रत्ययः। ततोऽपत्यार्थेऽण्]

और्णोत् ऊर्णुत आच्छादयति १७.१८. स्वीकरोति

१.६८.५. आच्छादित कर रखा है, आर्याभि० २.३२, १७.१८. **और्णोः**=आच्छादयतु ६.१७.६. [ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोर्लङ्]

औशिजस्य कामयमानेषु कुशलस्य (राजभृत्यस्य) ४.२१.७. कामयमानाऽपत्यस्य ४.२१.६. य उशजि प्रकाशे जातः स उशिक्, तस्य विद्यावतः पुत्र इव (यजमानः) १.१८.१. यः सर्वा विद्या वष्टि स उशिक्, तस्य विद्यापुत्र इव, भा०—विद्याजः पुत्रः ३.२८. विद्याकामस्य पुत्रः १.१२२.५. कमनीयस्य पुत्रः (परिव्राट्=संन्यासी) १.११९.९. कामयमानस्य पुत्रः ६.४.६. **औशिजाय**= मेधाविपुत्राय, प्र०—उशिज इति मेधाविनाम, निघं० ३.५, १.११२.११. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः 'वशः कित्' उ० २.१७. सूत्रेण इजिः प्रत्ययः किच्च । ग्रह्यादिसूत्रेण सम्प्रसारणम् । वष्टि यं कामयते यत्काम्यते वा स उशिक् । उशिज्प्राति० 'कृतलब्धक्रीतकुशलाः' अ० ४.३.३८. सूत्रेण कुशलार्थे वा 'तस्यापत्यम्' अ० ४.१.९२. सूत्रेणापत्यार्थे वा 'तत्र जातः' अ० ४.३.२५. सूत्रेण जातार्थे वा अण् प्रत्ययः । आदिवृद्धिः । उशिज इति मेधाविनाम निघं० ३.१५. 'उशिक् इति कान्तिकर्मा निघं० २.६. औशिजः= उशिजः पुत्रः । उशिग् वष्टेः कान्तिकर्मणः नि० ६.१०.]

औष्णिहाय उष्णिग्बोधिताय (सवित्रे=ऐश्वर्योत्पादकाय पुरुषाय) २९.६०. [उत्+ष्णिह प्रीतौ (दिवा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण क्विन् प्रत्ययः । निपातनादुपसर्गान्तिलोपः षत्वं च उष्णिगुत्स्नाता भवति, स्निह्यतेर्वा स्यात् कान्तिकर्मणः नि० ७.१२. उष्णिह्प्राति० 'प्रज्ञादिभ्यश्च' अ० ५.४.३८. सूत्रेणाण् ।]

औहत ऊहते १.१६४.२९. [ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लङ्]

औहिष्ट वितर्कयति ६.१७.८. [ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

ककरान् पक्षिविशेषान् २४.२०. [कक लौल्ये (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽरन् प्रत्ययः]

ककुत् महान् (अग्निः=सर्वस्वामीश्वरः, प्रकाशादिगुणवान् भौतिको वा) ककुह इति महन्नामसु पठितम् निघं० ३.३, ककुह-शब्दस्य स्थाने ककुत्, पृषोदराद्याकृतिगणान्तर्गतत्वात् सिद्धः ३.१२. प्र०—ककुहशब्दस्यान्त्यलोपो वर्णव्यत्यययेन हस्य दः १३.१४. [ककुहः=महन्नाम निघं० ३.३. पृषोदरादित्वादन्त्यलोपो हस्य च दः । अथवा= कस्य देहस्य सुखस्य वा कुं भूमिं ददातीति विग्रहे कम्+कु+दा+कः प्रत्ययः । कक लौल्ये (भ्वा०) धातोरौणा० उतिः प्रत्ययः]

ककुत्पतिः दिशां पालकः (अग्निः=प्रसिद्धः पावकः) १५.२०. [ककुभः=दिङ्नाम निघं० १.६. ककुभ्-पतिपदयोः समासः । भस्य दकारो वर्णव्यत्ययेन]

ककुन्मान् प्रशस्ताः ककुतो लौल्या गुणा विद्यन्ते यस्मिन् (पराक्रमः), प्र०—अत्र ककधातोरौणादिक उतिः उ० १.९४, ९.६. [कक लौल्ये (भ्वा०) धातोर्वाहुलकादौणादिकः (१.९४) उतिः प्रत्ययः । ततोऽतिशायने मतुप्]

ककुप् दिशः १४.९. लालित्ययुक्ता (छन्दोऽर्थविज्ञापनम्) २३.३३. दिगिव यशः १५.४. भा०—उत्तमानि वस्त्राणि २१.२१. **ककुभम्**=दिग्वच्छुद्धम (रूपम्) ८.४९. स्तम्भकम् (इन्द्रियं=धनम्) २८.३३. **ककुभः**=दिशः ४.१९.४. सर्वा दिशः, प्र०—ककुभ इति दिङ्नाम, निघं० १.६, ३४.२४. **ककुभा**=ककुप्छन्दसा २८.४४. **ककुभाम्**=दिशाम् ५.४४.२. **ककुभे**=ककुबुष्णिक्-छन्दोऽर्थाय २४.१३. ['ककुभ' इति दिङ्नाम निघं० १.६. ककुप् ककुभिनी भवति । ककुप् च कुब्जश्च कुजतेर्वोब्जतेर्वा नि० ७.१२. प्राणौ वै ककुप् छन्दः श० ८.५.२.४. कीकसाः ककुभः श० ८.६.२.१० पुरुषो वै ककुप् । तां० ८.१०.६.]

ककुभाय प्रसन्नमूर्त्तये (पुरुषाय) १६.२०.]

ककुहः महतीः (जनित्रीः+मातृः), प्र०—ककुह इति महन्नाम, निघं० ३.३, ३.५४.१४. सर्वा दिशः १.१८१.५. **ककुहाः**=दिशः १.१८४.३. ['ककुह' इति महन्नाम निघं० ३.३.]

ककुहः महान् (जनः) ५.७३.७. **ककुहान्**=महतः (यतस्रुचः=ऋत्विजः), प्र०—ककुह इति महन्नाम निघं० ३.३, २.३४.११. ['ककुह' इति महन्नाम निघं० ३.३.]

ककुहासः महान्तो विद्वांसः (जनाः) १.१६.३. सर्वा दिशः ४.४४.२. ['ककुह' इति महन्नाम निघं० ३.३. ततो जसोऽसुगागमः]

कक्कटः मृगविशेषः २४.३२. [कखति हसतीति विग्रहे कखे हसने (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः (उ० ४.८१) अटन् प्रत्ययः । कुगागमे चर्त्वे च रूपम्]

कक्षः क्रान्तस्तटादिः ६.४५.३१. **कक्षाणाम्**=गृहप्रान्तावयवेषु स्थितानाम् (जनानाम्) १६.१९. **कक्षेषु**= सामन्तेषु ११.७९. [कषति हिनस्तीति विग्रहे कष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः 'वृतृवदिवचि०' उ० ३.६२. सूत्रेण सः

प्रत्ययः । कक्षः=कक्षो गाहतेः क्स इति नामकरणः ख्यातेर्वाऽनर्थकोऽभ्यासः । किमस्मिन् ख्यानमिति । तत्सामान्याद् मनुष्यकक्षो बाहुमूलसामान्यादश्वस्य नि० २.२.]

कक्षीवता शिक्षकेन विदुषा १.११७.६. **कक्षीवते**=कक्षाः प्रशस्ताऽङ्गुलय इव विद्याप्रान्ता विद्यन्ते यस्य तस्मै (जनाय) १.५१.१३. प्रशस्तशासनयुक्ताय (विद्यार्थिने जनाय) १.११६.७. **कक्षीवन्तम्**=कक्षेषु विद्याऽध्ययनकर्मसु साध्वी नीतिः कक्षा, सा बह्वी विद्यते यस्य विद्यां जिघृक्षोस्तम् (विद्वज्जनम्), प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् 'कक्ष्यायाः संज्ञायां मतौ सम्प्रसारणं कर्त्तव्यम्' अ० ६.१.३७. इति वार्त्तिकेन सम्प्रसारणादेशः 'आसन्दीवदष्ठीवच्च०' अ० ८.२.१२. इति निपातनात् मकारस्थाने वकारादेशश्च ३.२८. या कक्षासु कराऽङ्गुलिक्रियासु भवाः शिल्पविद्यास्ताः प्रशस्ता विद्यन्ते यस्य तम् (यजमानम्), प्र०—कक्षा इति अङ्गुलिनामसु पठितम्, निघं० २.५, अत्र कक्षाशब्दात् 'भवेच्छन्दसि' इति यत्, ततः प्रशंसायां मतुप् १.१८.१. प्रशस्ताः कक्षा सहाया विद्यन्ते यस्य तम् (स्तोतारं जनम्) १.११२.११. **कक्षीवन्तः**=प्रशस्ताः कक्षयो विद्यन्ते येषान्ते (भृत्या जनाः) १.१२६.४. **कक्षीवान्**=सर्वसृष्टिकक्षा विद्यन्ते यस्मिन् सः (ईश्वरः) ४.२६.१. युद्धे प्रशस्तकक्षः (वीरयोद्धा) १.१२६.३. बह्वचः कक्षयो विद्याप्रदेशा विदिताः सन्ति यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१२६.२. ['कक्ष्या' इत्यङ्गुलीनाम निघं० २.५. ततो भवार्थे यत् । ततो प्रंशायां मतुपि 'कक्ष्यायाः संज्ञायां मतौ सम्प्रसारणम्' अ० ६.१.३७. वा सूत्रेण संप्रसारणे 'आसन्दीवदष्ठीवत्०' अ० ८.२.१२. सूत्रेण मकारस्य वकारः । कक्षीवत् कक्ष्यावान् नि० ६.१०.]

कक्ष्यप्रा कक्ष्यं प्रातः पिपूर्त्तः (हरी=अश्वौ) ८.३४. कक्षासु भवाः कक्ष्याः सर्वपदार्थाऽवयवास्तां प्रातः प्रपूरयतस्तौ (हरी=अश्वौ) १.१०.३. [कक्ष्योपपदे प्रा पूरणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः । 'सुपां सुलुगि' ति सूत्रेणाकारादेशः । कक्ष्या अङ्गुलिनाम निघं० २.५. प्रकाशयन्ति कर्माणि नि० ३.९. रज्जुरश्वस्य कक्षं सेवते निरु० २.२.]

कक्ष्यः कक्षासु भवः (मदः=आनन्दः) ५.४४.११. **कक्ष्याय**=कक्षासु भवाय, भा०—कक्षास्थाय (जनाय) १६.३४. **कक्ष्ये**=कक्षासु भवे (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) १.१७३.६. [कक्षाप्राति० भवार्थे यत्]

कङ्कः लोहपृष्ठः २४.३१. [ककि गतौ (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः]

कङ्कतः चञ्चलः (मनुष्यः) १.१९१.१ विषवान् इव (प्राणी इव) १.१९१.१. [ककि गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽतच् प्रत्ययः]

कच्च कदा च ३३.३५.

कच्चित् किञ्चित् (आगः=अपराधम्) २.२७.१४.

कञ्चन कञ्चिदपि (शत्रुम्) १७.४५.

कण्टकीकारीम् या कण्टकीं करोति ताम् (दुष्टां स्त्रियम्) ३०.८. ['कण्टकी' इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण् प्रत्ययः । स्त्रियां ङीप्]

कण्ठ्यम् कण्ठे भवं स्वरम् ३९.९. [कण्ठप्राति० भवार्थे 'शरीरावयवाच्च' अ० ४.३.५५. सूत्रेण यत् । कण्ठः=कणति येन शब्दं करोतीति विग्रहे कण शब्दार्थे (भ्वा०) धातोः 'कणेष्ठः' उ० १.१०३. सूत्रेण ठ०:]

कण्वतमः अतिशयेन मेधावी (जनः) १.४८.४. [कण्वप्राति० अतिशायने तमप् । 'कण्व' इति मेधाविनाम निघं० ३.१५.]

कण्वम् मेधाविनम् (जनम्) १.११२.५. **कण्वाः**=मेधाविनो विद्वांसः, प्र०—कण्व इति मेधाविनाम, निघं० ३.१५, १.१४.२. [कण्व इति मेधाविनाम । निघं० ३.१५. कणति निमीलति चेष्टते य इति विग्रहे कण निमीलने (चुरा०) धातोः 'अशूप्रुषिलटिकणि०' उ० १.१५१ सूत्रेण क्वन् प्रत्ययः]

कण्वहोता कण्वो मेधावी चाऽसौ होता दाता च (विद्वान्) ५.४१.४. [कण्व-होतृपदयोः समासः । कण्व इति व्याख्यातम् । होता=हु दानादानयोः (जु०) धातोस्तृच्]

कण्वासः शिल्पविद्याविदो मेधाविनः (जनाः) १.४६.९. [कण्व इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुगागमः]

कत् कदा, प्र०—छान्दसो वर्णलोपो वा, इत्याकारलोपः १.१२१.१. कुत्र, प्र०—पृषोदरादित्वात् 'क्व', इत्यस्य स्थाने कत् १.१०५.५. केन (पथा=मार्गेण) १.१०५.६. [किमः सर्वनाम्नः सप्तम्यन्तात् 'सर्वैकान्य०' अ० ५.३.१५. सूत्रेण दा प्रत्ययः । छान्दसत्वादाकारलोपः]

कतमत् बहुनामुपादानानां मध्ये किमिति प्रश्ने (आरम्भणम्) १७.१८. **कतमस्य**=किस (देवस्य=सदा मुक्त परमात्मा) का स० प्र० ३३०, १.२४.१. **कतमः**=कौन सा (देवः=परमात्मा) स० प्र० २७३, अथर्व० १०.२३.४.२०. बहूनां मध्ये कः (सभापती राजा) ७.२९. [किम् सर्वनाम्नो 'वा बहूनां जातिपरिप्रश्ने डतमच्' अ० ५.३.९३. सूत्रेण डतमच् । ततो नपुंसके 'अद्ड्डतरादिभ्यः०'

अ० ७.१.२५. सूत्रेण स्वमोः स्थानेऽद्‌ड्]

कतमः अत्यन्ताऽऽनन्दयुक्तः (परमात्मा) ऋ० भू० २१८. अतिशयेन सुखकारी (सत्यराजा=सत्यन्याय-प्रकाशकः सभेशः) २०.४. [कं० सुखनाम (निघ० ३.६) ततोऽतिशायने वा तमप्]

कतमाम् बहूनां मध्ये काम् (द्यां=प्रकाशम्) १.३५.७. ['कतम इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

कतरा द्वयोर्द्वयोर्मध्ये कतरौ (द्यावापृथिव्यौ कार्य-कारणे वा) १.१८५.१. अनयोर्मध्ये एकः (सभेशः सेनेशो वा) ६.६९.८. [किमः सर्वनाम्नः 'किंयत्तदोर्निर्द्धारणे द्वयो-रेकस्य डतरच्' अ० ५.३.९२. सूत्रेण निर्धारणे डतरच्]

कतिधा कतिप्रकारैः ३१.१०. [कतिप्राति० प्रकारेऽर्थे 'संख्याया विधार्थे धा' अ० ५.३.४२. सूत्रेण धा । संख्या-संज्ञा तु 'बहुगुणवतु डति संख्या' अ० १.१.२२. सूत्रेण । कति=किमः सर्वनाम्नः 'किमः संख्यापरिमाणे डति च' अ० ५.२.४१ सूत्रेण डतिः प्रत्ययः]

कत्पयम् कतिपयम् (मेघम्) प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इती लोपः ५.३२.६. [कत्पयम्=सुखपयसम् । सुखमस्यं पयः नि० ६.३.]

कथा कथम् १.५४.१. केन प्रकारेण ४.३.५. किस प्रकार से, आर्याभि० २.३२, १७.१८. केन हेतुना १.४१.९. [किमः सर्वनाम्नः 'था हेतौ च च्छन्दसि' अ० ५.३.२६ सूत्रेण हेतौ प्रकारवचने च था प्रत्ययः । तस्य विभक्ति-संज्ञकत्वात् 'किमः कः' अ० ७.२.१०३. सूत्रेण किमः कादेशः । कथा कथम् नि० ९.३०.]

कथो कथम् ५.२९.१३.

कदा कस्मिन् काले ३.३४. [किमः सर्वनाम्नः सप्त-म्यन्तात् काले वाच्ये 'सर्वैकान्य०' अ० ५.३.१५. सूत्रेण दा प्रत्ययः]

कदाचन कदाचिदपि ३४.४१. कभी भी स० प्र० २३८, १०.४८.५. ['कदा' इति व्याख्यातम् । कदा-चन-पदयोः समासः]

कद्रीची अचाक्षुष्यगमना (पृथिवी) १.१६४.१७. [किम्शब्दोपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्०' इत्यादिना क्विन् । 'विष्वग्देवयोश्च०' अ० ६.३.९२ सूत्रेण पूर्वपदस्य टेरद्रिरादेशः स्त्रियां ङीप् । 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ०' अ० ६.३.१३८ सूत्रेण दीर्घः]

कधप्रियाः ये कधाभिः कथाभिः प्रीणयन्ति ते (विद्वज्जनाः) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन थकारस्य धकारः 'ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम्' अ० ६.३.६३. अनेन ह्रस्वः १.३८.१. **कधप्रिये**=कथनं कथा प्रिया यस्यां सा (उषः) १.३०.२०. [कथोपपदे प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः । इयङ् आदेशः पूर्वपदस्य ह्रस्वत्वं थकारस्य च धकारः ।]

कनिक्रदत् भृशं शब्दयन्, भा०—उच्चैः शब्दयन् (हरिः=अश्वः) ३३.९०. भृशं शब्दायमानः (उपदेशकः) २.४२.१. भृशं गच्छन् (अग्निः=विद्वत्सन्तानः) ११.४६. [क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोः 'दाधर्तिदर्धर्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेण लुङि च्लेरङादेशो द्विर्वचनमभ्यासस्य चुत्वाभावो निगागमश्च निपात्यते । कनिक्रदत्=न्यक्रन्दीत् नि० ९.३.]

कनिक्रदम् भृशं विकलं प्राप्तव्यथम् (पशुम्) १३.४८. [क्रदि वैक्लव्ये (भ्वा०) धातोर्यङ्लुङन्तादच्]

कनिष्ठाय अतिशयेन बालकाय १६.३२. [अल्पप्राति० अतिशायन इष्ठन् । 'युवाल्पयोः कन्०' अ० ५.३.६४. सूत्रेण वा कन्नादेशः]

कनीन इव यथा प्रकाशमानो जनः १.१७७.१८. [कनीन-इवपदयोः समासः । कनीनः=कनी दीप्तिकान्ति गतिषु (भ्वा०) धातोर्बाहु० ईनप्रत्ययः]

कनीनकम् कनति प्रकाशते येन तत् (चक्षुः=दर्शकम्) प्र०—अत्र कनीधातोर्बाहुलकादौणादिक ईनक-प्रत्ययः ४.३२. [कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक ईनकः प्रत्ययः]

कनीनकः य कनति दीपयति स एव कनीनकः, भा०—वृष्ट्युत्पादकः (सूर्यः), प्र०—अत्र कनीधातोर्बाहुलकादौ-णादिक ईनप्रत्ययस्ततः स्वार्थे कन् ४.३ **कनीनकाभ्याम्**=प्रदीप्ताभ्यां कमनीयाभ्याम् (कर्णाभ्यां=श्रवणसाधका-भ्याम्) २५.२. तेजोमयाभ्यां कृष्णगोलकतारकाभ्याम् २५.१. [कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक ईनः प्रत्ययः । ततः स्वार्थे कन् । कनीनकः कन्यके नि० ४.१५. शुष्णो दानवः प्रत्यङ् पतित्वा मनुष्या-णामक्षीणि प्रविवेश स एष कनीनकः कुमारक इव परि-भासते श० ३.१.३.११.]

कनीनकेव कमनीयेव (विज्ञानकर्मणी) ४.३२.२३. [कनीनक इति व्याख्यातम् । तस्य इवपदेन सह समासः]

कनीनः दीप्तिमान् (सूर्यः) ३.४८.१. **कनीनाम्**=कान्तीनाम् २.१५.७. कन्येव वर्त्तमानानां रात्रीणां सूर्यादीनां वा १.६६.४. यौवनत्वेन दीप्तिमतां ब्रह्मचारिणां कन्यानाम्

१.११६.१०. कामयमानानाम् (जनानाम्) १.१६३.८. कमनीयानाम् (जनानाम्) २६.१६. [कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिक ईनः प्रत्ययः। 'कनीनाम्' प्रयोगे नुटोऽभाव आगमशासनस्यानित्यत्वात्]

कनीयसः अतिशयेन कनिष्ठात् (विद्यार्थिनः) ७.२०.७. [युवन्प्राति० अल्पाद्वातिशायने ईयसुन्। 'युवाल्पयोः कन्०' इति कन्नादेशः]

कनीयः अतिशयेन कनिष्ठम् ['कनीयस' इति पदे ४.२४.६. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

कनीयान् अतिशयेन कनिष्ठः (बन्धुर्विद्वान्) ४.३३.५. व्याख्यातम्]

कन्या कुमारिका (शिष्या) १.१६१.५. कमनीया (विदुषी कन्या) ६.४६.७. [कन्यते दीप्यते काम्यते गच्छति वेति विग्रहे कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोः 'अघ्न्यादयश्च' उ० ४.११२. सूत्रेण यक्। स्त्रियां टाप्। कन्या कमनीया भवति, क्वेयं नेतव्येति वा, कमनेनानीयत इति वा, कनतेर्वा स्यात्कान्तिकर्मणः नि० ४.१५.]

कन्या इव यथा कुमार्य्यः ४.५८.६. कुमार्य्य इव १७.६७. [कन्या-इव पदयोः समासः। कन्येति व्याख्यातम्]

कपनेव वायुगतय इव ५.५४.६. [कपना-इव-पदयोः समासः। कपनाः कम्पनाः क्रिमयो भवन्ति नि० ६.४.]

कपर्दिनम् कृतब्रह्मचर्य्यं जटिलं विद्वांसम् (वैद्यम्) १.११४.५. जटाजूटं ब्रह्मचारिणम् (विद्वांसम्) ६.५५.२. **कपर्दिनः**=प्रशंसितो जटाजूटो विद्यते यस्य तस्य (अ०—सेनापतेः) १६ १०. **कपर्दिने**=जटिलाय ब्रह्मचारिणे १६.२६. कृतब्रह्मचर्याय (सेनापतये) १६.४८. जटायुक्ताय जनाय १६.४३. [कपर्दप्राति० प्रशंसायां मत्वर्थीय इनिः]

कपिञ्जलः पक्षिविशेषः २४.३८. [कपिशब्दोपपदे जॄ वयोहानौ (क्र्या०) धातोः खच्प्रत्ययो बाहुलकाद् रेफस्य लत्वं च। कपिञ्जलः कपिरिव जीर्णः, कपिरिव जवत ईषत् पिङ्गलो वा, गमनीयं शब्दं पिञ्जयतीति वा नि० ३.१८.]

कबन्धिनः बहूदकाः (मरुतः=मनुष्याः) ५.५४.८. [कबन्धमित्युदकनाम निघं० १.१२. ततो भूम्नि इनिः। कबन्धं मेघम्। कवनमुदकं भवति तदस्मिन् धीयते। उदकमपि कबन्धमुच्यते बन्धिरनिभृतत्वे कमनिभृतं च नि० १०.४.]

कम् सुखम्, प्र०—कमिति वारिमूर्द्धसुखेषु १.२८.८. सुखस्वरूपम् (देवम्=ईश्वरम्) ५.१८. सुखकारकम् (वपुः=शरीरम्) १.१०२.२. सुखकरं सुन्दरम् (अत्कं=वस्त्रम्) ६.२६.३. सुखसम्पादकम् (सोमवल्ल्यादिरसम्) १.४७.१०. कल्याणम् १.८८.३. सब के सुख दाता (ईश्वर) को आर्याभि० १.३१, ऋ० १.७.६.१. सुखकारिणम् प्लवं=नौकादिकम्) १.१८२.५. सुखप्रदम् (देशम्) १.३६.१ [कम् उदकनाम निघं० १.१२. सुखनाम निघं० ३.६. पदपूरणः नि० १.१६. उदकम् निघं० ४.१७. अन्नम् नि० ६.३५.]

कमयाध्वे कामयध्वम् २.१४.८. [कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोः 'कमेर्णिङ्' इति स्वार्थे णिङि लट्। वृद्ध्यभावश्छान्दसः]

कयस्य विज्ञातुः (विदुषो जनस्य) १.१२६.५.

कर कुर्याः ४.३३.५. कुरु १.८२.१. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर् लोट्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

करञ्जम् यः किरति विक्षिपति धार्मिकांस्तम् (पर्णयम्=दस्युम्) प्र०—अत्र 'कॄ विक्षेपे' इत्यस्माद्धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽञन्-प्रत्ययः १.५३.८. [कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽञन्प्रत्ययः]

करणम् साधनम् ६.१८.१३. करोति येन तत् ५.३१.७. **करणानि**=साधनानि कर्माणि वा २.१५.१. क्रियन्ते यैस्तानि (अपांसि=कर्माणि) ४.१६.१०. कुर्वन्ति यैस्तानि साधनानि ५.३१.६. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः करणे ल्युट्। करणं कर्मनाम निघं० २.१.]

करणा कुर्वन्तौ (अश्विना=स्त्रीपुरुषौ) १.११६.७. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति कर्त्तरि ल्युट्। 'सुपां सुलुग्' इत्याकारः]

करत् कुर्य्यात् ४.३६.६. करोतु, प्र०—लेट्-प्रयोगोऽयम् ७.२५. कुर्य्युः, प्र०—लेट्-प्रयोगोऽयं 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणाभावः १.८६.३. **करतः**=कुर्याताम् २१.४३. **करताम्**=कुरुतः, प्र०—अत्राऽपि लडर्थे लोट्, विकरणव्यत्ययश्च १.२३.६. कुर्याताम् ३३.४६. करति=कुर्य्यात् ४.२२.१. **करते**=करोति ४.४४.३. कुर्य्यात् ४.१६.१. **करथः**=कुर्याताम् ६.५०.३. **करन्**=कुर्य्यात् ५.३०.६. कुर्वन्तु १.१८६.२. कुर्य्युः, प्र०—लेट्प्रयोगोऽयम् 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणाऽभावः १.८६.३. **करसि**=कुर्याः ६.३५.१. **करसे**=कुर्य्याः ३.४३.५. **करः**=कुर्य्यात् ३.४१.६. कुर्य्याः ६.४५.२७. करोति ६.२२.१०. कुरु १.८२.१. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन शप्। करतः कुरुथः नि० ३.१५.]

करम्भम् भोगं कर्त्तुं योग्यम् (पदार्थम्) ६.५७.२.

दध्यादियुक्तं भक्ष्यविशेषम् ३.५२.७. **करम्भस्य**=दधिसंसृष्टस्य सक्तुनः १९.२२. **करम्भः**=कर्त्ता (ईश्वरः) १.१८७.१०. करोति मथनं येन सः १९.२१. **करम्भात्**=यः करम्भमन्नविशेषमत्ति सः (देवः=विद्वज्जनः) ६.५६.१. **करम्भेण**=अविद्याहिंसनेन, प्र०—अत्र 'कृ हिंसायाम्' इत्यस्माद्धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽम्भच्-प्रत्ययः ३.४४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः, अथवा कृ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽम्भच् प्रत्ययः]

करम्भिणम् बहवः करम्भाः पुरुषार्थेन संशोधिता दध्यादयः पदार्था विद्यन्ते यस्य तम् (आप्तं विद्वांसम्) ३.५२.१. सुष्ठुक्रियया निष्पन्नम् (भोज्यमन्नरसादिकम्) २०.२९. [करम्भप्राति० भूम्नि इन् प्रत्ययः। 'करम्भम्' इति व्याख्यातम्]

करस्नम् बाहुम्, प्र०—करस्नाविति बाहुनाम, निघं० २.४, १.१६१.१२. **करस्ना**=बाहू, प्र०—करस्नौ बाहू कर्मणां प्रस्नातारौ, नि० ६.१४, ३.१८.५. यौ करान् कर्त्तॄन् स्नापयतः शोधयतस्तौ (गभस्ती=हस्तौ) ६.१९.३. [करस्नौ बाहुनाम निघं० २.४. करस्नौ बाहु कर्मणां प्रस्नातारौ नि० ६.१७. करोपपदे ष्णा शौचे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः। 'सुपां सुलुगि' त्याकारः]

करः यः करोति सः (विद्वज्जनः) ६.१८.१४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोरच् प्रत्ययः]

करा कुर्वाणौ (अध्यापकौ) १.११६.१३.

कराम कुर्य्याम, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप् १९.६२. **करामहे**=कुर्याम, प्र०—अत्र लेटि व्यत्ययेन शप्, अथवा भ्वादिर्मन्तव्यः ९.५. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

करांसि करणीयानि कर्म्माणि ४.१९.१०. [करस् कर्मनाम निघं० २.१. डुकृञ् करणे (तना०) धातोरसुन् प्रत्ययः]

करिक्रत् भृशं करोति ३.५८.९. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्यङ्लुगन्तस्य शतरि 'दाधर्त्तिदर्द्धति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेण निपातनादभ्यासककारस्य चुत्वाऽभावो रिगागमश्च निपात्यते]

करिक्रत् भृशं कुर्वन् (इन्द्रः=जगदीश्वरः) १.१३१.३. **करिक्रतः**=येऽतिशयेन कुर्वन्ति (जनाः) १.१४०.५. [पूर्वपदे व्याख्यातम्। करिक्रत् कर्मनाम निघं० २.१.]

करिष्यतः ये करिष्यन्ति तान् (देवान्=दिव्यान् गुणान्) ११.३. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लृटः स्थाने 'लृटः सद्वा' इति सूत्रेण शतरि रूपम्]

करिष्यथः करिष्यमाणं साधयिष्यथः ११.६८. **करिष्यसि**=करोषि, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति लडर्थे लृट् १.१.६. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लृट्]

करिष्यन् करूँगा ऐसी इच्छा करता हुआ (संन्यासीजन) सं० वि० १९५, ९.११३.१. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लृटः स्थाने शतृ]

करिष्या कर्त्तुं योग्यानि (कार्याणि), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति डादेशः १.१६५.९.

करिष्या करिष्यसि, प्र०—सिज्लोपो दीर्घश्चाऽत्र छान्दसः ३३.७९.

करुणस्य कृपामस्य कर्मणः १.१००.७. करुणा करने वाले (ईश्वर) का, आर्याभि०, अथर्व० १२.३.४७.. [कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोः 'कॄवृदारिभ्य उनन्' उणा० ३.५३. सूत्रेण उनन् प्रत्ययः। करुणम् कर्मनाम निघं० २.१.]

करूळती यः करूनूढा कामयते स करूळतः सोऽस्याऽस्तीति (विद्वज्जनः) ४.३०.२४.

कर्कन्धु येन कर्म दधाति (मधु=विज्ञानम्) १९.९१. **कर्कन्धुभिः**=ये कर्कं बदरीक्रियां दधति तैः (यवादिभिरन्नैः) २१.३२. **कर्कन्धुम्**=यः कर्कान् कारुकानन्तति व्यवहारे बध्नाति तम् (वय्यम्=ज्ञातारं विद्वांसम्) १.११२.६. **कर्कन्धूनि**=कर्कन्धुफलानि स्थूलानि पक्वानि बदरीफलानीव १९.२३. [कर्कं कण्टकं दधातीति विग्रहे कर्कोपपदाद् डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर् 'अन्दूदृम्फू०' उ० १.९३. सूत्रेण कूः प्रत्ययः। छान्दसं ह्रस्वत्वम्। यत्स्नेहस्तत् कर्कन्धु श० १२.७.१.४.]

कर्कन्धुरोहितः कर्कन्धुर्बदरीफलमिव रोहितः (पशुः) २४.२. [कर्कन्धुरोहितपदयोः समासः। कर्कन्धु पूर्वपदे व्याख्यातम्। रोहितः=रोहति प्रादुर्भवतीति विग्रहे रुह प्रादुर्भावे (भ्वा०) धातोः 'रुहेरश्चलो वा' उ० ३.९४. सूत्रेण क्तः प्रत्ययः]

कर्करिः भृशं कुर्वन् (उपदेशको जनः) २.४३.३. कर्त्तव्य कर्म, धर्म को ही पुरुषार्थ से करता हुआ (ईश्वर) आर्याभि० १.५३. ऋ० २.८.१२.३. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्यङ्लुगन्ताद् बाहुलकाद् औणा० इः प्रत्ययः]

कर्णम् श्रुतस्तुतिम् (सखायम्=सुहृद्वद्वर्त्तमानं पतिम्) २९.४०. **कर्णयोः**=श्रोत्रयोः २१.५०. **कर्णः**=दीर्घकर्णः (गर्दभः=पशुविशेषः) २४.४०. **कर्णाभ्याम्**=

श्रवणसाधकाभ्याम् २५.२. कुर्वन्ति श्रवणं याभ्याम् १६.६१. **कर्णाः**=यैः कार्याणि कुर्वन्ति ते (पशवः) २४.३. **कर्णे**=कुर्वन्ति येन तस्मिन् ५.३१.६. **कर्णेभिः**=श्रोत्रैः, प्र०—अत्र ऐसभावः १.८६.८. कानों से आर्याभि० २.२७, २५.२१. **कर्णैः**=नौचालकैः (कैवर्तैः) २.३४.३. **कर्णौ**=करोति श्रवणं याभ्यान्तौ २५.२. कर्ण्यौ (पृथिवीसूर्य्यौ) ३३.७१. **कर्णा**=श्रोत्रौ ४.२६.३. कर्णौ श्रोत्रे ३३.१६. कर्णानि ४.२३.८. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः, कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोर्वा 'कृवृजॄसि०' उ० ३.१०. सूत्रेण नक् प्रत्ययः। कर्णः कृन्ततेर्निकृत्तद्वारो भवति। ऋच्छतेरित्याग्रायणः। ऋच्छन्तीव खे उदगन्तमिति ह विज्ञायते नि० १.६.]

कर्णयोनयः कर्णं श्रोत्रं योनिर्येषान्ते (धार्मिका वीराः) २.२४.८. [कर्ण-योनिपदयोः समासः]

कर्त्त कुरुत, अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणस्य लुक्, लोडादेशस्य तस्य स्थाने तबादेशः १.६०.५. **कर्त्तन**=कुर्यात् ७.४८.४. कुरुत २.१४.६. कुर्वन्तु १२.६६. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसीति' विकरणस्य लुक्]

कर्त्तम् कूपम्, प्र०—कर्त्तमिति कूपनाम, निघं० २.२३, १.१२१.१३.

कर्त्तरि कारके (कर्म सम्पादके जने) १.१३६.७. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोस्तृच्प्रत्यये सप्तम्येकवचनम्]

कर्त्तवै कर्त्तुम् २.२२.१. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोस् तुमर्थे तवै प्रत्ययः]

कर्त्ता निष्पादकः (इन्द्रः=सेनापतिः) १.१००.६. **कर्त्तारम्**=भा०—स्रष्टारम् (ईश्वरम्) २६.६. **कर्त्तृभिः**=सुकर्मकारिभिर्जीवैः सह ७.३६. पुरुषार्थिभिः (जनैः) १.५५.८. कर्मकारकैः (सज्जनैः) ६.१६.१. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि तृच्। ताच्छील्ये तृन् वा]

कर्त्तोः कर्त्तुं समर्थस्य (परमेश्वरस्य) ३३.३७. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोस्तुमर्थे तोमुन् प्रत्ययः। 'क्त्वातोसुन्०' इत्यव्ययसंज्ञा]

कर्त्तोः कर्त्तव्यं गमनाद्यगन्तव्यं कर्म्म २.३८.४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोस् तोसुन् प्रत्ययः]

कर्त्तात् छेदकात् (अवपदः=आपत्कालात्) २.१६.६.

कर्त्त्वम् कर्त्तुं योग्यं कार्य्यम्, प्र०—अत्र करोतेस्त्वन् प्रत्ययः १.१०.२. **कर्त्त्वः**=कर्त्तुं योग्यः (विद्युदादिः) प्र०—अत्र कृत्यार्थे त्वन् प्रत्ययः १.१६१.३. **कर्त्वानि**=कर्त्तुं योग्यानि (धनानि) २.३०.१०. [कर्त्वं कर्मनाम निघं० २.१. डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृत्यार्थे तवैकेन्०' अ० ३.४.१४. सूत्रेण त्वन् प्रत्ययः]

कर्म धर्म्यं कृत्यम् १.१७३.६. कर्त्तुर्यदीप्सितमभीष्टं योग्यं चेष्टामयमुत्क्षेपणादिकमस्ति तत्, भा०—पुरुषार्थम्, प्र०—कर्त्तुरीप्सिततमं कर्म, अ० १.४.४६. क्रियमाणम् १.६२.६. अभीप्सिततमा क्रिया १६.१५. **कर्मणः**=चेष्टितस्य (कार्यस्य) १.११.४. **कर्मणा**=ईप्सिततमेन व्यापारेण ६.६६.१. सत्क्रियया ७.३३.१३. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' 'उ० ४.१४५. सूत्रेण मनिन् प्रत्ययः। क्रियते तत् कर्म क्रिया वा। अर्धर्चादित्वादुभयलिङ्गः। कर्मन् कर्मनाम निघं० २.१. कर्म कस्मात्, क्रियत इति सतः नि० ३.१. यज्ञो वै कर्म श० १.१.२.१. पुण्यो वै पुण्येन कर्मणा पापः पापेनेति श० १४.६.२.१४. वीर्यं वै कर्म श० ११.५.४.५. कर्माणि धियः गो० पू० १.३२.]

कर्म कुर्म्म, प्र०—अत्र लुङि च्लेर्लुक् 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकत्वेन ङित्वाभावाद् गुणः १.१७३.४. कुर्य्याम ६.५१.७. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ्। छान्दसत्वाच्च्लेर्लुक्, अडभावो गुणश्च]

कर्मकृतः ये कर्माणि कुर्वन्ति ते, भा०—पुरुषार्थिनः (जनाः) ३.४७. [कर्मोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप्। ह्रस्वस्य तुक्]

कर्मणि कर्मणि क्रियायां क्रियायाम् १.१०१.४. [कर्मणि पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

कर्मणे कर्त्तव्याय १.५५.३. क्रियासिद्धये ३०.७. कर्त्तुं योग्यत्वेन सर्वोपकारार्थाय, भा०—क्रियायै १.१. पञ्चविधलक्षणचेष्टामात्राय, प्र०—उत्क्षेपणमवक्षेपणमाकुञ्चनं प्रसारणं गमनमिति कर्माणि, वैशे० १.७. इत्यत्र पञ्चविधं कर्म गृह्यते १.१३. ['कर्म' इति पदे व्याख्यातम्]

कर्मण्यम् कर्मणा सम्पन्नम् (वीरम्), प्र०—अत्र 'कर्मवेषाद्यत्' अ० ५.१.१००. इति कर्मशब्दाद् यत् 'ये चाभावकर्मणोः' इति प्रकृतिभावश्च १.६१.२०. **कर्मण्यः**=यः कर्मणा संपद्यते सः (वीरः=सन्तानः) ३.४.७. कर्मसु कुशलः (वीरजनः) ७.२.६. ['कर्म' इति व्याख्यातम्। ततः सम्पादिन्यभिधेये 'कर्मवेषाद्यत्' अ० ५.१.१००. सूत्रेण यत्। 'ये चाभावकर्मणोः' अ० ६.४.१६८. सूत्रेण प्रकृतिभावाट्टेर्लोपो न भवति]

कर्मण्याम् यः कर्मभिः सम्पद्यते ताम् (मृदं=मृति-

काम्), प्र०—अत्र 'कर्मवेषाद्यत्' अ० ५.१.१००. इति कर्मशब्दात् सम्पादिन्यर्थे यत् ११.५५. [कर्मण्यमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

कर्मन् राज्यकर्मणि १.१२१.११. ['कर्म' इति व्याख्यातम्]

कर्मन्कर्मन् कर्मणि कर्मणि १.१०२.६. [कर्मन् पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

कर्मभिः धर्म्याभिः क्रियाभिः २३.३७. **कर्मसु**=कृष्यादिक्रियासु १०.३३. **कर्माणि**=जगत्सृष्टि-पालन-प्रलयकरणन्यायादीनि १३.३३. सत्कर्मों को सं० वि० १४५, ४.२. कर्त्तुरीप्सिततमानि क्रियमाणानि ३४.२. कर्त्तुं योग्यानि, कर्त्तुरीप्सिततमानि १.६१.१३. जगत् की उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय आदि कर्मों को, आर्याभि० १.२३, ऋ० १.२.७.१९. ['कर्म' इति पदं व्याख्यातम्]

कर्मारम् यः कर्माण्यलङ्करोति' तम् (सज्जनम्) ३०.७. **कर्मारेभ्यः**=असि-भुशुण्डी-शतघ्न्यादिनिर्मातृभ्यः (शिल्पिभ्यः) १६.२७. [कर्मोपपदे ऋ गतौ (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

कर्वरम् कर्त्तव्यं कर्म ६.२४.५. [कर्वरं कर्मनाम निघं० २.१. किरति विक्षिपतीति विग्रहे कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोः 'कॄगॄशॄ०' उ० २.१२१. सूत्रेण ष्वरच्प्रत्ययः]

कर्ष विलिखति ५.८३.७. [कृष विलेखने (भ्वा०) धातोर्लडर्थे लोट्]

कर्हि कस्मिन् समये ६.३५.२. कदा ५.७४.१०. [किमः सर्वनाम्नः सप्तम्यन्ताद् 'अनद्यतने र्हिलन्यतरस्याम्' अ० ५.३.२१. सूत्रेण र्हिल् । किमः कादेशः]

कलविङ्कः चटकः २४.३१. **कलविङ्कान्**=चटकान् २४.२०.

कलशम् घटम् १.११७.१२. **कलशः**=कुम्भः ३.३२.१५. **कलशे**=पात्रे ६.४७.६. [कलाशब्दोपपदात् शीङ् शये (अदा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' अ० ३.२.१०१. सूत्रेणाधिकरणे डः प्रत्ययः । पूर्वपदस्य ह्रस्वत्वम् । कलशः कस्मात् ? कला, अस्मिञ्छेरते मात्राः । कलिश्च कलाश्च किरतेर्विकीर्णमात्राः नि० ११.१२.]

कलशा कुम्भाविव ६.६८.२. [पूर्वपदे व्याख्यातम् । 'सुपां 'सुलुगि'त्याकारः]

कलिम् यः किरति विक्षिपति, दुःखानि दूरी करोति तं (सद्वैद्यम्), गणकं वा १.११२.१५. [कलिश्च कलाश्च किरतेर्विकीर्णमात्राः नि० ११.१२. कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोः 'सर्वधातुभ्य इन्' उ० ४.११८ सूत्रेण इन् । अथ ये पञ्च (स्तोमाः) कलिः सः तै० १.५.११.१. रेफस्य लत्वम्]

कल्पताम् समर्थितोऽस्तु १९.४५. समर्थो भवतु १८.२९. समर्प्पयतु २२.३३. समर्थो भवतु २२.२२. समर्थताम् ९.२१. स्थिरा भवतु ऋ० भू० २७५. समर्पितं भवतु ऋ० भू० १५४. प्रसिद्धो भवतु ऋ० भू० २७४. **कल्पन्ताम्**=समर्था भवन्तु ३५.९. समर्थयन्ताम् १४.६. समर्थयन्तु १३.२५. सुखयुक्ता भवन्तु १०.२८. भा०—स्वाभीष्टानि साधयन्तु १८.७. **कल्पेताम्**=समर्थयतः १४.१५. समर्थयेताम् १४.६. भा०—स्वस्वनियमेन समर्थो भवेताम् १५.५७. **कल्पस्व**=अध्यापनोपदेशाभ्यां समर्थय ५.१०. समर्थो भव १.१७०.२. **कल्पत्**= निवास करे सं० वि० ९३, अथर्व० ११.५.२६. **कल्पयन्ति**=कल्पना करते हैं सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.७. समर्थित करते हैं, सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.७. **कल्पयाति**=कल्पयेत् समर्थं कुर्यात्, भा०—सम्पादयेत् १९.६०. समर्थयेत् १८.३३. निष्पादयतु ऋ० भू० २६२. **कल्पयस्व**=समर्थयस्व २३.१५. [कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोर्लोट् । कल्पते अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

कल्पमानः समर्थः सन् (ईश्वरः) १३.४३. [कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोः शानच्]

कल्पयन्ती समर्थयन्त्यौ (प्राची=रोदसी) ५.१७. [कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छत्रन्तान् ङीप्]

कल्पिनम् कल्पः प्रशस्तं सामर्थ्यं विद्यते यस्य तम् (जनम्) ३०.१८. [कल्पप्राति० प्रशंसायाम् इन्प्रत्ययः । कल्पः=कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः]

कल्मलीकिनम् देदीप्यमानम् (नाम) प्र०—कल्मलीकिनमिति ज्वलतो नाम, निघं० १.१७, २.३३.८.

कल्माषग्रीवः जिसके हरित रंग वाले वृक्ष आदि ग्रीवा के समान हैं, वह (विष्णुः=परमेश्वर), पं० वि०, अथर्व० ३.२७.५. [कल्माष-ग्रीवापदयोः समासः । कल्माषः=कलयति, कल्+क्विप् । तं माषयति अभिभवतीति विग्रहे माष्+णिच्+अच् । कल्-माषपदयोः समासः । ग्रीवा गिरतेर्वा गृणातेर्वा गृह्णातेर्वा नि० २.२८.]

कल्माषः श्वेतकृष्णवर्णः (पशुः) २९.५८. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

कल्याण कल्याणकारक (सभास्वामिन्) १.३१.९. [कल्याणं कमनीयं भवति नि० २.३.]

कल्याणीम् कल्याणनिमित्ताम् (वाचम्=वेदचतुष्टयीं

वाणीम्) २६.२. कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी (वाचं=ऋगादि चारों वेदों की वाणी को), स० प्र० ६७, २६.२. **कल्याण्यः**=कल्याणकारिण्यः (योषाः=स्त्रियः) ४.५८.८. कल्याणाचरणशीलाः, भा०—सौभाग्यवत्यः (योषाः=स्त्रियः) १७.९६. [कल्याणपदं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप् । कल्याणी तत्पशवः । ऐ० ५.२५. कौ० २७.५.]

कवचिने सम्बद्धं कवचं शरीररक्षासाधनं विद्यते यस्य तस्मै (पुरुषाय) १६.३५. [कवचप्राति० संसर्गे इन् प्रत्ययः । कवचम्=कु अञ्चितं भवति, काञ्चितं भवति, कायेऽञ्चितं भवतीति वा नि० ५.२६.]

कवत्नवे कुत्सितकर्मव्यापनाय ७.३२.९. [कु शब्दे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० क्त्नुः प्रत्ययः । बहुलवचनाद् गुणः]

कवन्धम् मेघम् ५.८५.३. [कबन्धम् उदकनाम निघं० १.१२. ततो मत्वर्थीयप्रत्ययस्य लुक् । कबन्धं मेघम्, कवनमुदकं भवति तदस्मिन् धीयते उदकमपि कवन्धमुच्यते नि० १०.४.]

कवयः सर्वशास्त्रविदः (मरुतः=जगद्धितैषिणो जनाः) ६.४९.११. सकलशास्त्रेषु निपुणाः (विद्वांसः) ५.५२.१३. विक्रान्तप्रज्ञामेधाविनः (जनाः) ३.५४.१०. विद्वांसः क्रान्तदर्शनाः क्रान्तप्रज्ञा वा ऋ० भू० १५८. बहुदर्शिन उपदेशकाः ४.३६.७. मेधाविनः (विद्वांसः), प्र०—कविरिति मेधाविनाम, निघं० ३.१५. १२.६७. पूर्णविद्याः (नरः=नायका जनाः) ५.५८.८. अनूचाना विद्वांसः ३.८.४. **कवये**=विपश्चिते (विदुषे) ५.१५.१. सर्वविद्यायुक्ताय (धार्मिकाय राज्ञे) ४.२.२०. **कविम्**=सर्वज्ञम् (परमेश्वरम्) २.२३.१. सर्वेषां बुद्धीनां सर्वज्ञतया क्रमितारमीश्वरं, सर्वेषां दृश्यानां दर्शयितारं भौतिकं वा (अग्निम्=ईश्वरं भौतिकं वा) १.१२.७. वेदविद्याया उपदेष्टारं निमित्तं वा (ईश्वरम्) ४.२५. विद्वांसमिव क्रान्तप्रज्ञम् (वायुं=पवनम्) ६.४९.४. विद्यापारदर्शिनम् (मेधाविनम्) १.११६.१४. क्रान्तदर्शनम् (अग्निम्) ७.२४. **कविः**=विक्रान्तदर्शनः (अग्निः=पावक इवेश्वरः) ३.३.४. क्रान्तदर्शनः क्रान्तप्रज्ञः सर्वज्ञो वा (सविता=ईश्वरः सूर्यो वा) १२.३. क्रान्तप्रज्ञादर्शनः (मर्त्यः=मनुष्यः) १.९१.१४. सर्वेषां क्रान्तप्रज्ञः सर्वज्ञः (सविता=ईश्वरः) ५.८१.२. सर्वविद्यावित् (विद्वज्जनः) १.७९.५. समर्थः (अग्निः=पावकः) १५.३६. शब्दहेतुः (अग्निः) ३३.७५. काव्यादिनिर्माणे चतुरः (मघवा=राजा) ७.१८.२. जातप्रज्ञः (यतिरूपोऽतिथिः) ७.१५.२. न्यायविद्याया दर्शनविषयस्य वा क्रमकः (इन्द्रः=विद्वान् सेनापतिः सूर्यो वा १.११.४. पूर्णविद्वान् (परमेश्वर), आर्याभि० २.१७, ५.३२. सर्वशास्त्रवित् (अध्यापकः) २३.३९. **कवी**=क्रान्तदर्शनौ सर्वव्यवहारदर्शनहेतू (मित्रावरुणौ=सूर्यवायू), प्र०—कविः क्रान्तदर्शनो भवति कवतेर्वा, नि० १२.१३. एतन्निरुक्ताभिप्रायेण कविशब्देन सुखसाधकौ मित्रावरुणौ गृह्येते १.२.९. सकलविद्यावेत्तारावध्यापकोपदेशकौ १.१८८.७. प्राज्ञौ (भिषजा=चिकित्सकौ २८.७. **कवीन्**=धार्मिकान् विदुषः (जनान्) ३.३८.१. **कवे !**=वक्तः (राजन् विद्वन्वा) ७.१६.३०. सकलसाङ्गोपाङ्गवेदवित् (आप्ताऽध्यापक) २.१.१३. [कुशब्दे (अदा०) धातोः 'अच इः' उ० ४.१३९. सूत्रेण इः प्रत्ययः । कविः=मेधाविनाम निघं० ३.१५. कविः क्रान्तदर्शनो भवति, कवतेर्वा नि० १२.१३. असौ वाऽदित्यः कविः श० ६.७.२.४. ये वा अनूचानस्ते कवयः ऐ० २.२. एते वै कवयो यदृषयः श० १.४.२.८. ये वै तेन ऋषयः पूर्वे प्रेतास्ते वै कवयः ऐ० ६.२०. शुश्रुवांसो वै कवयः तै० ३.२.२.३. ये विद्वांसस्ते कवयः श० ७.२.२.४.]

कवषम् उपदेशकम् (राजाऽमात्यम्) ७.१८.१२. **कवषः**=शब्दं कुर्वन् (द्वाः=गृहद्वारम्) २९.५. **कवषाः**=शब्दं कुर्वाणाः (द्वारः=गृहद्वाराणि) -२९.५. [कुशब्दे (अदा०) धातोः 'ऋतन्यञ्जि०' उ० ४.२. सूत्रेण असप्रत्ययः । सस्य षकारश्छान्दसः । बाहुलकाद् औणादिकोऽषट्प्रत्ययः]

कवष्यः शब्दे साधवः (वीरजनाः) २०.४०. प्रशस्ताः (दिशः), प्र०—अत्र 'कुशब्दे' धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽषट्प्रत्ययः २०.६०. सच्छिद्राः (दुरः=द्वाराणि) २१.३४. ['कवषम्' इति व्याख्यातम् । ततः 'तत्र साधु' इत्यर्थे यत्]

कवासखः कविः सखा यस्य (मघवा=धनवान् मनुष्यः) ५.३४.३. [कवि-सखिपदयोः समासः । पूर्वपदस्येकारस्याकारश्छान्दसः कवासखो यस्य कपूयाः सखायः नि० ६.१९.]

कविक्रतुम् कविः सर्वज्ञा सकलविद्यायुक्ता क्रतुः प्रज्ञा कर्म क्रमदर्शनं वा यस्य तम् (देवं=परमात्मानं सभाध्यक्षं प्रजापुरुषं वा) ४.२५. कवीनां क्रतुः यज्ञ इव प्रज्ञा यस्य तम् (अग्नि=भौतिकम्) ३.२.४. कवीनां विदुषां क्रतुः प्रज्ञा कर्म वा क्रतुवत्, यस्य स तम् (विद्वज्जनम्) ३.२७.१२. प्रज्ञप्रज्ञाम् ५.११.४. **कविक्रतुः**=कविः सर्वज्ञः क्रान्तदर्शनो

वा, करोति यो येन वा स क्रतुः, कविश्चासौ क्रतुश्च सः (अग्निः=परमेश्वरो भौतिको वा), प्र०—कविः क्रान्तदर्शनो भवति कवतेर्वा, नि० १२.१३. यः सर्वविद्यायुक्तं वेदशास्त्रं कवते उपदिशति स कविरीश्वरः, क्रान्तं दर्शनं यस्मात् स सर्वज्ञो भौतिको वा क्रान्तदर्शनः 'कृञः कतुः' उ० १.७६. अनेन कृञो हेतुकर्त्तरि कर्त्तरि वा कतुः प्रत्ययः १.१.५. कवि (सर्वदृक्) सबको देखने वाला, क्रतुः सब जगत् का जनक (ईश्वर) आर्याभि० १.५, ऋ० १.१.१.५. कविः सर्वज्ञः क्रान्तप्रज्ञः सर्वेषां जीवानां बुद्धेः क्रमिता तदग्रे न कस्यापि बुद्धिः क्रमते सर्वेषां बुद्धेः प्रभुत्वात्, क्रतुः सर्वजगत्कर्त्ता (ईश्वरः) वे० भा० न० महान् विद्वान् ६.१६.२३. **कविक्रतो !**=कवीनां क्रतुरिव क्रतुः प्रज्ञा यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) ३.१४.७. [कविक्रतुपदयोः समासः । कविरिति व्याख्यातम् । क्रतुः=कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

कविच्छदा यौ कवीन् विदुषश्छदयत ऊर्जयतस्तौ (इन्द्राग्नी=अध्यापकोपदेशकौ) ३.१२.३. [कव्युपपदे छद अपवारणे (चु०) धातोः छदिरूर्जने (भ्वा०) धातोर्वा मूलविभुजादित्वात् कः प्रत्ययः]

कवितमम् अतिशयेन मेधाविनम् (विद्वज्जनम्) ५.४२.३. **कदितमस्य**=अतिशयेन कवेः (देवस्य=महाविदुषः) ५.८५.६. **कवितमः**=विद्वत्तमः (मेधाविजनः) ७.९.१. [कविरिति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

कविप्रशस्तः कविभिः प्रशंसनीय कविभिः प्रशस्तो वा (अतिथिर्जनः) ५.१.८. [कवि-प्रशस्तपदयोः समासः]

कविशस्तः कविभिः विद्वद्भिः प्रशंसितः (अग्निः=सत्पुरुषः) ३.२१.४. **कविशस्ताः**=कविभिः मेधाविभिः शस्ताः प्रशंसिता अध्यापिता वा (मन्त्राः=वेदस्य श्रुतयो विचारा वा) ६.५०.१४. [कवि-शस्तपदयोः समासः । शस्तः=शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । कविशस्ताः मेधाविशस्ताः नि० १२.३३.]

कवीयमानः अतीव विद्वान् (मनुष्यः) १.१६४.१८. [कविपदाद् आचारेऽर्थे क्यङि शानच्]

कव्यता कव्यं कवित्वं तन्यते यया तया (निविदा=वेदवाचा) १.९६.२. [कविप्राति० 'तत्र साधु' रित्यर्थे यत् प्रत्यये कव्यम् । तदुपपदे तनु विस्तारे (तना०) धातोर् 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति डः प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्]

कव्यवाहन ! यः कविषु साधूनि वस्तूनि वहति प्रापयति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=अग्निरिव) प्रकाशमान विद्वज्जन) १९.६४. कवीनां प्रागल्भ्यानि कर्माणि प्राप्त (अग्ने=विद्वन् पुत्रः) १९.६६. **कव्यवाहनः**=यः कव्यानि कवीनां प्रशस्तानि कर्माणि प्रापयति सः (अग्निः=विद्वज्जनः) १९.६५. **कव्यवाहनाय**=कुवन्ति शब्दयन्ति सर्वा विद्या ये ते कवयः क्रान्तदर्शनाः क्रान्तप्रज्ञाश्च तेभ्यो हितानि कर्माणि कव्यानि तानि यो वहति प्रापयति तस्मै, भा०—शिल्पिनां कार्यवाहनाय (अग्नये=भौतिकाय) २.२९. [कविप्राति० साध्वर्थे हितार्थे वा यत् प्रत्यये कव्यम् । तदुपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' अ० ३.३.१३० सूत्रेण युच् प्रत्ययः]

कव्या कवयः, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेर्ड्यादेशः २२.२.

कशया ताडनसाधनेन २५.४०. गत्या शिक्षया वा १.१५७.४. ताडनार्थरज्ज्वा ५.८३.३. प्रेरकया (वेत्रेण) १.१६२.१७. शासनेन गत्या वा १.१६८.४. **कशा**=वाणी, प्र०—कशेति वाङ्नामसु पठितम्, निघं० १.११, ७.११. **कशाः**=चेष्टासाधनरज्जुवन्नियमप्रापिकाः क्रियाः १.३७.३. वाक् १.२२.३. [अश्वाजनीं कशेत्याहुः । कशा प्रकाशयति भयमश्वाय । कृष्यतेर्वाणूभावात् । वाक् (कशा) पुनः प्रकाशयत्यर्थान् । खशया, क्रोशतेर्वा नि० ९.१९. वाङ्नाम निघं० १.११.]

कशः शासनीयः (जन्तुविशेषः) २४.३८. **कशान्**=पक्षिविशेषान् २४.२६. [कशः जलम् निघं० १.१२.]

कशीकेव यथा ताडनार्था कशीका १.१२६.६.

कशोजुवम् कशांस्युदकानि जवयति गमयति तम् (सेनापतिम्) प्र०—कश इत्युदकनाम, निघं० १.१२, १.११२.१४. [कश इत्युदकनाम (निघं० १.१२.), तदुपपदे जु गतौ (सौत्रो धातुः) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' अ० ३.२.१७८ सूत्रेण क्विप्]

कश्चन कश्चिदपि ६.४७.१.

कश्यपस्य आदित्यस्येश्वरस्य, प्र०—प्रजापतिः प्रजा असृजत यदसृजताकरोत् तद्यदकरोत् तस्मात् कूर्मः, कश्यपो वै कूर्मस्तस्मादाहुः, सर्वाः प्रजा काश्यप्य इति, श० ७.४.१.५. अनेन प्रमाणेनेश्वरस्य कश्यपसंज्ञा, एतन्निर्मितं त्रिगुणमायुर्लभेमहीत्यभिप्रायः ३.६२. प्राणस्य ऋ० भू० ८१. **कश्यपः**=कच्छपः २४.३७. जीव सं० वि० २७.

कस्मै सुखकारकाय (देवाय=परमेश्वराय) २५.१०. सुखरूपाय (देवाय=कमनीयाय सवितृलोकाय) २५.१२. सुखस्वरूपाय सुखकारकाय (देवाय=ईश्वराय) प्र०—क इति

पदनाम, निघं० ५.४. 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति सर्वनाम-कार्यम् १२.१०२. आनन्दरूपाय (देवाय=परमात्मने) २३.३. सुखदायक (देवाय=परमेश्वर) के लिए सं० वि० ६, ३२.६. **कः**=सुखस्वरूपो देवः १.२४.१. प्रश्नार्थे ७.२९. कश्चिदेव १.५४.५. [कः पदनाम निघं० ५.४. छान्दसत्वात् सर्वनामकार्यम् । कः कमनो वा, क्रमणो वा, सुखो वा, नि० १०.२२. प्राणो वाव कः जै० उ० ४.२३.४. प्रजापतिरब्रवीदथ कोऽहमिति यदेवैतदवोच इत्यब्रवीत् ततो वै को नाम प्रजापतिरभवत् को वै प्रजापतिः ऐ० ३.२१. कः=आदित्यः नि० १३.२५. किमः सर्वनाम्नो वा चतुर्थ्या एकवचनम्]

कः करोति ५.२९.४. कुर्य्यात्, प्र०—अत्राऽडभावो 'मन्त्रे घस०' इत्यादिना च्लेर्लुक् १.१६२.२०. कुर्य्याः ७.४३.३. कुरु १.१६४.४९. करोषि ७.२१.३. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ् । मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुक्, अटोऽभावश्च]

काकंबीरम् काकानां गोपकम् (वनस्पतिः=वटादिकम्) ६.४८.१७.

काकुत् सुशिक्षिता वाक्, प्र०—काकुदिति वाङ्नाम, निघं० १.११, ६.४१.२. **काकुदः**=वाचः शब्दसमूहः, प्र०—काकुदिति वाङ्नामसु पठितम्, निघं० १.११, १.८.७. [काकुद् वाङ्नाम निघं० १.११. काकुदं तालु । काकुर्जिह्वा साऽस्मिन्नुद्यते । महाभाष्ये १.१.१.]

काटे कटन्ति वर्षन्ति सकला विद्या यस्मिन्नध्यापने व्यवहारे तस्मिन् १.१०६.६. [कटे वर्षावरणयोः (भ्वा०) धातोरधिकरणे 'हलश्च' अ० ३.३.१२१. सूत्रेण घञ्]

काट्याय काटेषु कूपेषु भवाय (भा०—कूपानां जलाय) प्र०—काट इति कूपनाम, निघं० ३.२३, १६.३७. कटेष्वावरणेषु भवाय (जनाय) १६.४४. [काट इति कूपनाम (निघं० ३.२३) ततो भवार्थे यत् । अथवा कटे वर्षावरणयोः (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । ततो भवार्थेऽण् तद्धितः]

काण्डात्काण्डात् ग्रन्थेर्ग्रन्थेः १३.२०. [काम्यते जनैरिति विग्रहे कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोः 'क्वादिभ्यः कित्' उ० १.११५. सूत्रेण डः]

कानिषः कमनीयस्य (सहसः=बलवतो जनस्य) ३.२८.५. [कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इसिन् प्रत्ययः । बहुलवचनाद् वृद्धिः]

कामदुघाः या कामान् दुहन्ति प्रपिपुरति ताः (सत्यस्त्रियः) १७.३. **कामदुघे !**=इच्छापूरिके (अ०—पाचिके स्त्रि) १२.७२. [कामोपपदे दुहप्रपूरणे (अदा०) धातोः 'दुहः कब् घश्च' अ० ३.२.७०. सूत्रेण कप् प्रत्ययो घकारश्चान्तादेशः । स्त्रियां टाप्]

कामधरणम् कामानां धरणं स्थानम् ३.२७. सङ्कल्पानामाधरणं स्थानम् १२.४६. [काम-धरणपदयोः समासः । पशवः कामधरणम् श० ७.१.१.८.]

कामप्रेणेव यत्कामं प्राति पिपर्त्ति तेनेव (मनसा=अन्तःकरणेन) १.१५८.२. [कामोपपदे प्रा पूरणे (अदा०) धातोः कः । ततस्तृतीयैकवनम् । कामप्रेण-इवपदयोः समासः । अमृतं वै कामप्रम् श० १०.२.६.४.]

कामम् अभिलाषम् ३.३०.२०. इच्छासिद्धिम् १.८५.११. यः काम्यते तम् (अभिलाषम्) १.५४.९. इच्छापूर्त्तिम् ३९.४. काम्यत इष्यते सर्वैर्जनैस्तम् (पदार्थाऽभिलाषम्) १.१६.९. इच्छाम् १२.७२. **कामस्य**=अभिलाषी पुरुष की सं० वि० १९७, ९.११३.११. **कामः**=कमिता (विद्वज्जनः) २.३८.६. कामनामभिलाषां कुर्वाणः (प्रजाजनः) ७.२०.९. काम्यते येन यस्मिन् वा (पदार्थाभिलाषः) १८.८. यः काम्यते सः (अग्निः=सभेशो जनः) १२.११७. कामना २६.२. कामयते यः परमेश्वरः, यः काम्यते सर्वैर्योगिभिः स परमेश्वरो जीवो वा ७.४८. **कामान्**=सङ्कल्पितान् (आकाश-काल-दिशः) २०.२३. भा०—इच्छाः २०.६०. **कामाय**=कामयमानाय जीवाय ७.४८. विषयसेवनाय ३०.५ इच्छासिद्धये १२.११६. **कामाः**=सब कामनाएं सं० वि० १९७, ९.११३.११. ये कामयन्ते (सेनाऽमात्यादिजनाः) ४.१६.१५. अभिलाषाः १२.४४. **कामेन**=इच्छया ७.१६.१०. [कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोर्घञ् । कामो हि दाता कामः प्रतिग्रहीता तै० २.२.५.६. समुद्र इव हि कामः । नैव कामस्यान्तोऽस्ति न समुद्रस्य तै० २.२.५.६. श्रद्धां कामस्य मातरं हविषा वर्धयामसि तै० २.८.८.८.]

कामयाध्वे कामयध्वम् २.१४.८. [कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोः 'कमेर्णिङ्' अ० ३.१. सूत्रेण स्वार्थे णिङन्ताल् लट् लोडर्थे]

कामिनम् कामाऽऽतुरम् (पतिम्) ५.६१.७. **कामिनः**=प्रशस्तः कामो येषामस्ति तान् (जनान्) ५.५३.१६. कामयितारः (मरुतः=मनुष्याः) ७.५९.३. **कामी**=कामयितुं शीलः (वीरपुरुषः) ३.१४.१. [कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः । अथवा कामप्राति० प्रशंसायाम् इन्]

काम्पीलवासिनीम् कं सुखं पीलति बध्नाति गृह्णातीति

कम्पीलः, स्वार्थेऽण्प्रत्यये काम्पीलः, तं वासयितुं शीलमस्यास्तां लक्ष्मीम् २३.१८. [काम्पीलोपपदे वस निवासे (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिन्यन्तान् ङीप् । काम्पीलः=कम्=सुखम्, तदुपपदे पील प्रतिष्टम्भे (भ्वा०) धातोरण् । कम्पीलप्राति० प्रज्ञादित्वात्स्वार्थेऽण् प्रत्ययः]

काम्यम् कमनीयम् (परमेश्वरम्) ३२.१३. प्रियम् (राधः=धनम्) २.२२.३. कामना के योग्य ईश्वर को, आर्याभि० २.५२, ३२.१३. **काम्याः**=काम्यन्ते इष्यन्ते ये पदार्थास्ते ३.२७. कमनीयाः (सखायः=सुहृदः) ३.३१.१७. [कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोर्ण्यत् काम्यानि उदकानि नि० ११.३३.]

काम्या कमनीयौ (हरी=हयौ) २३.६. कमनीयानि (वसूनि=धनानि) ५.६१.१६. कामयितव्यौ (रथे=याने) १.६.२. कमनीये (कर्मणी), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्' इति द्विवचनस्याऽऽकारादेशः १.८.१०. [कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोर्ण्यत् । ततः प्रथमा द्विवचनस्याकारादेशः । बहुवचने तु 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति शेर्लोपः]

काम्ये ! हे कमनीये (पत्नि) ८.४३. [कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोर्ण्यत् । स्त्रियां टाप् । सम्बुद्धौ रूपम्]

काम्यैः कामयितव्यैरुत्तमैः (गणैः=किरणैर्मरुद्भिर्वा) १.६.८. [कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोर्ण्यत्]

काय सुखसाधकाय विदुषे (सज्जनाय) २२.२०. को ब्रह्म देवता यस्य वेदमन्त्रस्य तस्मै २०.४. सुखरूपराज्यप्रदाय (ईश्वराय) ऋ० २१८. [कः कमनो वा क्रमणो वा सुखो वा नि० १०.२२. ततश्चतुर्थी । 'सास्य देवता' 'कस्येत्' इति प्राप्तोऽण् न भवति छान्दसत्वात्]

कायमानः अध्यापयन्नुपदिशन् वा (अग्निः=आप्ताऽध्यापक उपदेशको वा) ३.९.२. [कायमानः चायमानः, कामयमान इति वा नि० ४.१४.]

कायाः प्रजापतिदेवताकाः (पश्वादिप्राणिनः) २४.१५. [को वै प्रजापतिः ऐ० ३.२१. ततः 'सास्य देवतेत्यर्थे' 'कस्येत्' अ० ४.२.१५. सूत्रेणाण् प्रत्ययः । इकारश्चान्तादेशः]

कारम् कुर्वन्ति यस्मिँस्तम् (विद्युदग्निम्) १.११२.१. क्रियते यस्तम् (नद्यं=नदीम्) १.१३१.५. कर्त्तारम् (राजानम्) ५.२९.८. शिल्पकृत्यम् ४.१.१४. **कारे**=कर्त्तव्य-व्यवहारे १.१४१.१०. [डुकृञ् करणे तना० धातोर्घञ् प्रत्ययः । कर्त्तरि तु छान्दसत्वादण् निरुपपदेऽपि]

कारवः कारुकाः शिल्पिनः ३.६.१. ये कार्याणि कुर्वन्ति ते (शिल्पिनो जनाः) १.११.६. कारकराः (नरः=नायका जनाः) ६.४६.१. कर्त्तारः (शिल्पिनः) २७.३७. **कारुम्**=शिल्पकार्यकर्त्तारम् (जनम्) १.१०२.९. यः उत्साहेनोत्तमानि कर्माणि करोति तम् (शिल्पिनं जनम्) १.३१.८. **कारुः**=शिल्पकार्यसाधिका (मेधा=प्रज्ञा) १.१६५.१४. स्तुत्यानां शिल्पकर्मणां कर्त्ता (इन्द्रः=विद्वज्जनः), प्र०—कारुरहमस्मि स्तोमानां कर्त्ता, नि० ६.६, १.८३.६. **कारू**=शिल्पिनौ, प्र० भा०—कारु-शब्दे द्विवचनमध्यापकहस्तक्रिया-शिक्षकाऽभिप्रायम् २९.३२. शिल्पविद्याकुशलौ पुरुषार्थिनौ (स्त्रीपुरुषौ) ७.२.७. **कारो** !=यः करोति तत्सम्बुद्धौ (सज्जन) ३.३३.८. **कारोः**=कर्त्तुं शीलस्य (शिल्पजनस्य) १.१७८.३. पुरुषार्थिनः (शिल्पिनः) १.१६५.१५. शिल्पविद्याविदः (जनस्य) ३४.४८. शिल्पविद्यासाध्यकर्त्तुः (विदुषो जनस्य) १.१४८.२. कारकरस्य शिल्पिनः (जनस्य) ३.३९.७. क्रियाकुशलस्य (जनस्य) १.१६८.१०. सर्वस्य सुखकर्त्तुः (शिल्पिजनस्य) १.१६७.११. कारकस्य (शिल्पिनः) १.१७७.५. [कारुः=स्तोतृनाम निघं० ३.१६. कारुकर्त्तारौ नि० ८.१२. कारुरहमस्मि कर्त्ता स्तोमानाम् नि० ६.५. डुकृञ् करणे (भ्वा०) धातोः 'कृवापाजि०' उ० १.१. सूत्रेण उण् प्रत्ययः]

काराधुनीव कारान् शब्दान् धूनयतीव (वात इव) १.१८०.८. [कारोपपदे धूञ् कम्पने (स्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको निः प्रत्ययः । धुनि=धुनोतेः नि० ५.१२. काराधुनि-इवपदयोः समासः]

कारिणः कर्त्तुं शीलाः (विद्वांसो जनाः) ३.५४.१४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिश्छान्दसत्वान् निरुपपदादपि]

कारिम् उपहासकर्त्तारम् (दुर्जनम्) ३०.६. विक्षेपकम् (जनम्) ३०.२०. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः, कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोर्वा 'इञ् कृष्यादिभ्यः' इति वार्त्तिकेन इञ्]

कारिषत् कुर्य्यात् ६.४८.१५. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लेट् । 'सिब् बहुलं लेटी' ति सिपि, तस्य णित्त्वाद् वृद्धिः]

कारुधायः कारूणां विदुषां धर्त्तः (इन्द्र=न्यायेश विद्वन्) ६.२१.८. **कारुधायाः**=यः कारून् शिल्पिनो दधाति सः (इन्द्रः=अधिष्ठाता जीवः) ३.३२.१०. कारूणां शिल्पिनां धारकः (इन्द्रः=राजा) ६.४४.१५. विदुषां शिल्पिनां धारयिता (इन्द्रः=विद्युत्) ६.४४.१२. कारवो ध्रियन्ते येन सः (राजा) ६.२४.२. [कारूपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरण् प्रत्ययः]

कारोतरः कर्मकारी (भिषक्=वैद्यः) १९.१६.

कारोतरेण=कूपेनेव प्र०—कारोतर इति कूपनाम, निघं० ३.२३, १९.८२. **कारोतरात्**=कारान् व्यवहारान् कुर्वतः शिल्पिन 'उ इति वितर्के' तरति येन तस्मात् (शफात्=खुरादिव जलसेकस्थानात्) १.११६.७. [कार+उ+तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोरप् प्रत्ययः। कारोतरः कूपनाम निघं० ३.२३. कारोतरात् इति कूपनाम निघं० ३.२३.]

कार्षिः कर्षति हलेन भूमिमिति (वैश्यो जनः), प्र०—अत्र 'इञ् कृष्यादिभ्यः' अ०—३.३.१०८. इतीञ् प्रत्ययः ६.२८. [कृष विलेखने (भ्वा०) धातोरिञ्प्रत्ययः। 'कृषेर्वृद्धिश्छान्दसः' उ० ४.१२७. सूत्रेण वा इञ्प्रत्ययः]

कार्ष्णम् मृगचर्मादिकम् ऋ० भू० २३७. मृग-चर्मादि सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.६. [कृष्णप्राति० अवयवे विकारे चार्थेऽण् प्रत्ययः। कृष्णः=कृष विलेखने (तुदा०) धातोः 'कृषेर्वर्णे' उ० ३.४. सूत्रेण नक्। कृष्णं कृष्यतेर्निकृष्टो वर्णः नि० २.२१.]

कार्ष्मेव यथा काष्ठादिकं द्रव्यम् १.११६.१७. [कार्ष्म-इवपदयोः समासः]

कालका पक्षिविशेषः २४.३५.

काव्यम् कविभिर्निर्मितम् १५.४. कविभिः कमनीयम् (वचः) ५.३९.५. **काव्ययोः**=कविभिर्विद्वद्भिर्निर्मितयोर्व्यवहार-परमार्थप्रतिपादकयोर्ग्रन्थयोः ३३.७२. **काव्यस्य**=कवेः कर्मणः १.११७.१२. **काव्यः**=कवेर्मेधाविनः पुत्रः १.१२१.१२. यथा कवेः पुत्रः शिष्यो वा १.८३.५. **काव्या**=कविभिर्विद्वद्भिर्निर्मितानि (काव्यानि) ४.११.३. कवीनां मेधाविनां कर्म्माणि ५.५९.४. कवेः=क्रान्तप्रज्ञस्य कर्माणि २.५.३. वेदस्तोत्राणि १.७२.१. **काव्यानि**=कविभिः क्रान्तप्रज्ञैर्विद्वद्भिर्निर्मितानि (सर्वशास्त्राणि) ३.१.१८. **काव्याय**=कविभिः सुशिक्षिताय (स्नातकाय) ६.२०.११. **काव्येन**=कविना मेधाविना निर्मितेन शास्त्रेण ३.३६.५. **काव्यैः**=कविभिः परमविद्वद्भिर्धार्मिकैर्निर्मितैः (दंसनाभिः=कर्मभिः) १०.३४. [कविप्राति० भावे कर्मणि च ष्यञ् ब्राह्मणादित्वात्। त्रयी वै विद्या काव्यं छन्दः श० ८.५.२.४. ऊमा वै पितरः प्रातःसवने ऊर्वा माध्यन्दिने, काव्यास्तृतीयसवने ऐ० ७.३४.]

काशिः न्यायविनयादिशुभगुणप्रदीप्तिः ३.३०.५. [काशृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'इञ् कृष्यादिभ्यः' इति वार्तिकेन इञ्। काशिर्मुष्टिः प्रकाशनात् नि० ६.१. काशृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्यः इन्' उ० ४.११८. सूत्रेण इन् प्रत्ययः]

काष्ठाम् दिशम् ९.१३. **काष्ठासु**=दिक्षु २७.३७. **काष्ठाः**=दिशः प्रति १.६३.५. सङ्ग्रामप्रदेशान्, प्र०—काष्ठा इति सङ्ग्रामनाम. निघं० २.१७, १७.९५. दिश इव तटीः ४.५८.७. दिशस्तत्रस्थाः प्रजाः १.५९.६. [काशृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'हनिकुषिनी०' उ० २.२. सूत्रेण क्थन् प्रत्ययः स्त्रियां टाप्। काष्ठा दिङ्नाम निघं १.६. तत्र काष्ठा इत्येतदनेक यापि सत्वस्य नाम भवति। काष्ठा दिशो भवन्ति क्रान्त्वा स्थिता भवन्ति, काष्ठा उपदिशो भवन्तीतरेतरं क्रान्त्वा स्थिता भवन्ति, आदित्योऽपि काष्ठोच्यते क्रान्त्वा स्थितो भवति, आज्यन्तोऽपि काष्ठोच्यते क्रान्त्वा स्थिता भवन्तीति स्थावरणाम् नि० २.१५. सुवर्गो वै लोकः काष्ठा तै० १.३.६.५.]

किकिदीविना किं किं ज्ञानं दीव्यति ददाति यस्तेन (चाषेण=भक्षणेन), प्र०—कि ज्ञाने, इत्यस्मादौणादिके सन्वति डौ कृते किकिस्तदुपपदाद् दिवु धातोरौणादिकः किर्बाहुलकाद् दीर्घश्च १२.८७. [किकिना शब्देन दीव्यतीति विग्रहे 'किकि' इत्युपपदे दिवु क्रीडादिषु (दिवा०) धातोः 'कृविघृष्विछवि०' उ० ४.५६. सूत्रेण क्विन् प्रत्ययान्तो निपात्यते]

किकिरा विकीर्णानि (हृदयानि) ६.५३.८. व्यवस्थापत्राणि ६.५३.७.

किञ्च किञ्चिदपि (पापं पुण्यं वा) १.२३.२२.

किञ्चन किञ्चिदपि (कर्म्म) ३४.३. कुछ भी (कर्म) स० प्र० २४७, ३४.३.

कितवम् द्यूतकारिणम् (पापि-जनम्) २.२९.५. **कितवः**=द्यूतशीलः (दुर्जनः) ३०.२२. [कितवः किं तवास्तीति शब्दानुकृतिः, कृतवान् वाशीर्नामकः नि० ५.२२.]

कितवासः द्यूतकाराः (छलिनो जनाः) ५.८५.८. [कितव इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

किन्त्वः किमसौ किमन्यो वा २०.२८.

किम् प्रश्ने १७.१८. कुछ (जगत्), स० प्र० २३८ ४०.१.

किम्पूरुषम् जाङ्गलं कुत्सितं मनुष्यम् ३०.१६. [किम्पुरुषपदयोः समासः। संहितायां दीर्घः। अथैनमुत्क्रान्तमेधं (पुरुषं देवाः) अत्यार्जन्त स किम्पुरुषोऽभवत् ऐ० २.८. किम्पुरुषो वै मयुः श० ७.५.२.३२.]

किम्मयः यः किं मिनोति सः (चमसः=यज्ञपात्रम्)

४.३५.४. [किमुपपदे मिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोरच् प्रत्ययः। आत्वाऽभावश्च छान्दसः]

कियते अल्पसामर्थ्याय (विद्यार्थिजनाय) ४.५.६. [किम् प्राति० परिमाणे 'किमिदंभ्यां वो घः' अ० ५.२.४०. सूत्रेण वतुप् वस्य घादेशश्च । घस्येयादेशः]

कियेधाः यः कियतो धरति सः प्र०—अत्र पृषोदरा० इति तस्थाने इकारः (सूर्यः) १.६१.६. कियतो गुणान् धरतीति (सभाद्यध्यक्ष.) १.६१.१२. [कियेधाः कियद्धा इति वा क्रममाणधा इति वा नि० ६.२०.। कियदुपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरच् प्रत्ययः। पृषोदरादित्वात् तस्य स्थाने इकारः]

किर विक्षिप ६.४६.२. प्रापय २७.३८. **किरते**=विकिरति ५.३८.७. **किरामि**=विक्षिपामि ५.२३. प्रक्षिपामि ५.२३. [कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

किरणम् ज्योतिः ४.३८.६. दीप्तिम् ५.५९.४. **किरणाः**=कान्तयः १.६३.१. [किरति विक्षिपत्यन्धकारमिति विग्रहे कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोः 'कॄपॄवृजि०' उ० २.८१. सूत्रेण क्युः प्रत्ययः। किरणाः रश्मिनाम निघं० १.५. अश्वरश्मिः तेषां (रश्मिवाचिशब्दानाम्) आदितः साधारणानि पञ्च (खेदयः, किरणाः, गावः, रश्मयः, अभिशवः) अश्वरश्मिभिः नि० २.१५.]

किरातम् जनविशेषम् ३०.१६. [किरं पर्यन्तभूमिम् अतति गच्छतीति विग्रहे किरोपपदात् अतं सातत्यगमने (भ्वा०) धातोरच्]

किरिकेभ्यः विक्षेपकेभ्यः (जनेभ्यः) १६.४६. [कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोः 'कॄगॄशॄ०' उ० ४.१४३ सूत्रेण इः प्रत्ययः, ततः स्वार्थे कः। एते (किरिकाः) हीदं सर्वं कुर्वन्ति श० ९.१.१.२३.]

किर्मिरम् कर्बुरवर्णम् (पुरुषम्) ३०.२१.

किल निश्चयाऽर्थे ६.४७.१. खलु १२.७९. [किल विद्याप्रकर्षे नि० १.५.]

किलासम् ईषच्छ्वेतवर्णम् (पुरुषम्) ३०.२१.

किलास्यः निश्चितमास्यं यस्य सः (विद्वज्जनः) ५.५३.१. [किल-आस्यपदयोः समासः]

किल्विषम् स्वाऽन्तःस्थं मलम् ३५.११. किल्विषात्=पापात् ५.३४.४. [किलति क्रीडति विचारशून्यतया कार्येषु प्रवर्त्तते येनेति विग्रहे किल श्वैत्ये (श्वैत्यक्रीडनयोरिति मैत्रेयः) (तुदा०) धातोः 'किलेर्बुक् च' उ० १.५० सूत्रेण टिषच् प्रत्ययः। किल्विषं किलमिदं सुकृतकर्मणो भयं कीर्त्तिमस्य भिनत्तीति वा नि० ११.२४.]

कियुः आत्मनः किमिच्छुः (विप्रः=मेधाविजनः), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति क्यच्-प्रतिषेधो न ३.३३.४. [किम्-सर्वनाम्न इच्छायां क्यचि 'क्याच्छन्दसी' त्युप्रत्ययः]

किंशिलाय किं कुत्सितः शिलो वृत्तिर्यस्य तस्मै (जनाय) १६.४३. [किम्-शिलपदयोः समासः]

किंस्वित् क्या? आर्याभि० २.३२, १७.१८.

कीकटेषु अनार्यदेशनिवासिषु म्लेच्छेषु ३.५३.१४. कीकटा नाम देशोऽनार्यनिवासः। कीकटाः किंकृताः, किं क्रियाभिरिति प्रेप्सा वा नि० ६.३२.]

कीकसा भृशं शासनानि २५.६. [कङ्कते चञ्चलं भवतीति विग्रहे ककि गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् (उ० ३.११७.) असच् प्रत्ययः। धातोश्च कीकादेशः]

कीनाशम् कृषीवलम् ३०.११. **कीनाशाः**=ये श्रमेण क्लिश्यन्ति ते कृषीवलाः, भा०—चतुराः कृषिकाराः (जनाः), प्र०—अत्र 'क्लिशेरीच्चोपधायाः कन्-लोपश्च लो नाम् च' उ० ५.५६. क्लिशधातोः कनि प्रत्यये ललोप उपधाया ईत्वं धातोर्नामागमश्च १२.६९. [क्लिशू विबाधने (क्र्या०) धातोः 'क्लिशेरीच्चोपधाया०' उ० ५.५६ सूत्रेण कन् प्रत्ययादिकार्याणि]

कीरये स्तावकाय (जनाय) ६.२३.३. [कीरिः स्तोतृनाम निघं० ३.१६. कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोः 'कॄशॄपॄकुटि०' उ० ४.१४३ सूत्रेण इः प्रत्ययो बाहुलकाद् धातोर्दीर्घश्च]

कीरिचोदनम् कीरीणां विद्यार्थिनां प्रेरकम् (विद्वत्तमं जनम्) ६.४५.१९. [कीरिः स्तोतृनाम निघं० ३.१६. चोदनम्=चुद सञ्चोदने (प्रेरणे) (चुरा०) धातोर्बाहुलकाद् औणा० क्युन् । ततस्तयोः समासः]

कीरिणः विक्षेपकाः (तायवः=स्तेनाः) ५.५२.१२. [कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोर्बाहुलकाद् इनिः प्रत्ययः]

कीरिणा सकलविद्यास्तावकेन (जनेन), प्र०—कीरिरिति स्तोतृनाम, निघं० ३.१६, ५.४०.८. शत्रूणां विक्षेपकेन प्रबन्धेन १.१००.९. **कीरिः**=स्तोता विद्वान् (जनः) ६.३७.१. सद्यः स्तोता (सज्जनः) ७.२१.८. **कीरेः**=सकलविद्यास्तोतुः (विद्वज्जनस्य) २.१२.६. किरति विविधतया वाचा प्रेरयतीति कीरिः स्तोता तस्मात् (सज्जनात्), प्र०—अत्र 'कॄ विक्षेपे' इत्यस्मात् 'कॄशॄपॄकुटि०' उ ४.१४३. अनेन इ-प्रत्ययः, स च कित्पूर्वस्य च

दीर्घो बाहुलकात् १.३१.१३. [कीरिरिति व्याख्यातम् । स्तोतृनाम निघं० ३.१६.]

कीर्त्तिः सद्गुणग्रहणार्थमीश्वरगुणानामुपदेशार्थं कीर्त्तनं स्वसत्कीर्त्तिमत्त्वं च, ऋ० भू० १०३, अथर्व० १२.५.६. सत्याचरण से प्रशंसा, सं० वि० १०५, अथर्व० १२.५.६. [कॄत संशब्दने (चुरा०) धातोः 'हृपिशिरुहि०' उ० ४.११६. सूत्रेण इन्-प्रत्ययः]

कीर्त्तेन्यम् कीर्त्तितुम् १.११६.६. कीर्त्तनीयम् (नाम=प्रसिद्धं कर्म) १.१०३.४. कीर्त्तनीयमत्यन्तप्रशंसनीयम् (सामर्थ्यम्) ऋ० भू० १९३. [कॄत संशब्दने (चुरा०) धातोः 'कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः' उ० ३.४.१४ सूत्रेण केन्यः]

कीलालपे यः कीलालमन्नरसं पिबति तस्मै (अग्नये=जनाय) २०.७८. [कीलालमित्यन्ननाम निघं० २.७. तदुपपदे पा पाने (अदा०) धातोः 'गापोष्टक्' अ० ३.२.८. इति टक्]

कीलालम् सुसंस्कृतमन्नम्, प्र०—कीलालमित्यन्ननामसु पठितम्, निघं० २.७, २.३४. **कीलालः**=विशेषेणोत्तमरसः, ऋ० भू० २४०. उत्तमाऽन्नादिपदार्थसमूहः, भा०—भक्ष्य-भोज्य-लेह्य-चूष्यः पदार्थः ३.४३. उत्कृष्ट रस आर्याभि० २.४९, ३.४३.]

कीवतः कियतः (दुर्जनान्), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन यस्य स्थाने वः ३.३०.१७. [किम्सर्वनाम्नः परिमाणे वतुप् प्रत्यये 'किमिदंभ्यां वो घ' इति वकारस्य घकारः । 'इदंकिमोरीश्की' इति की-आदेशे 'यस्येति च' लोपे, वर्णव्यत्ययेन यस्य वकारे इकारस्य च छान्दसदीर्घत्वे रूपम्]

कीस्तासः मेधाविनः (विद्वज्जनाः), प्र०=कीस्तास इति मेधाविनाम, निघं० ३.१५, ६.६७.१०.

कुकूननानाम् भृशं शब्दविद्यया नम्राणाम् (पत्नीनाम्), प्र०—अत्र 'कुङ् शब्दे' इत्यस्माद् यङि गुणाऽभावेऽभ्यस्ततः कुकूयपदान्नम्धातोरौणादिको नक्प्रत्ययश्च, ततः षष्ठीबहुवचनम् ८.४८.]

कुक्कुटः कुकं परद्रव्याऽऽदातारं चोरं शत्रुं वा कुटति येन स यज्ञः १.१६. [कुक आदाने (भ्वा०) धातोः क्विप् प्रत्यये कुक् । कुक् इत्युपपदे कुट कौटिल्ये (तुदा०) धातोर्बाहुलकात् औणा० क्विप्]

कुक्षयः उभयत उदराऽवयवाः ३.३६.८. **कुक्षिः**=कुष्णाति निष्कर्षति सर्वपदार्थेभ्यो रसं यः (इन्द्रः=सूर्यलोकः), प्र०—अत्र 'प्लुषिकुषिशुषिभ्यः क्सिः' उ० ३.१५३. अनेन कुषधातोः क्सिः प्रत्ययः १.८.७. **कुक्षी**=उदरपार्श्वौ २.११.११. [कुष निष्कर्षे (क्र्या०) धातोः 'प्लुषिकुषिशुषिभ्यः क्सिः' उ० ३.१५५ सूत्रेण क्सिः]

कुचरः यः कुत्सितं चरति सः (मृगः=सिंहः) १.१५४.२. यः कुत्सितां गतिं चरति सः (मृगः=मृगेन्द्रः सिंहः) १८.७१. यः कुत्सितं प्राणिवधं चरति (मृगः=सिंहः) ५.२०. [कूपपदे चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'चरेष्टः' अ० ३.२.१६. सूत्रेण टः प्रत्ययः । कुचरः चरति कर्म कुत्सितम् । अथ चेद्देवताभिधानं क्वायं न चरतीति नि० १.२०.]

कुटरुः कुक्कुटः २४.३९. **कुटरून्** कुक्कुटान् २४.१३. [कुट कौटिल्ये (तुदा०) धातोः 'कुटः किच्च' उ० ४.८० सूत्रेणारुः]

कुटस्य कुटिलस्य मार्गस्य सकाशात् १.१६.४. [कुट कौटिल्ये (तुदा०) धातोर्घञर्थे कः । कुटस्य कृतस्य कर्मणः नि० ५.२४.]

कुणारुम् शब्दयन्तम् (वृत्रं=मेघम्), प्र०—अत्र 'क्वणशब्दे' इत्यस्माद्धातोरौणादिक आरुः प्रत्ययः १८.६९. शब्दायमानम् (वृत्रं=मेघम्) ३.३०.८. [कुणारुः परिक्वणनं मेघम् नि० ६.१.]

कुण्डृणाची वनचरी (पशु जातिः) २४.३७. **कुण्डृणाच्या**=यया कुटिलां गतिमञ्चति प्राप्नोति तया (गत्या) १.२९.६.]

कुतः कस्माद् १.१३६.१. [किमः सर्वनाम्नः पञ्चम्यन्तात् तसिल्]

कुत्र कस्मिन् ५.७.२. [किमः सर्वनाम्नः सप्तम्यन्तात् त्रल् । 'कुः तिहो' रिति किमः कुरादेशः]

कुत्सम् वज्रायुधयुक्तम् (नर्यं=नृषु साधुं जनम्), १.११२.९. वज्रम् ४ २६.१. वज्रमिव दृढम् ६.१८.१३. विद्युतमिव वज्रम् ७.१९.२. वज्रादिशस्त्रसमूहम् १.५१.६. कुत्सितम् ५.३१.८. सायणाचार्येणाऽत्र भ्रान्त्या कुत्सगोत्रोत्पन्न ऋषिर्गृहीतोऽसम्भवादिदं व्याख्यानमशुद्धम् १.३३.१४. **कुत्सस्य**=अवक्षेप्तुः (प्रजापतेः) २.१४.७. **कुत्सः**=विद्यावज्रयुक्तश्छेत्ता पदार्थानां भेत्ता वा (ऋषिः=अध्यापकोऽध्येता वा), प्र०—कुत्स एतत्कृन्ततेर्ऋषिः कुत्सो भवति, कर्त्ता स्तोमानामित्यौपमन्यवोऽत्राप्यस्य वधकर्मैव भवति, निरु० ३.११, १.१०६.६. निन्दितः (स्त्रिजनः) ४.१६.१०. **कुत्साय**=शस्त्राऽस्त्रयुक्ताय (जनाय) ४.३०.४. कुत्सः प्रशस्तो वज्रः शस्त्र-

समूहो वा यस्य तस्मै धृतव्रताय (यूने=युवावस्थाय जनाय) १.६३.३. वज्रप्रहाराय ६.२०.५. **कुत्साः**=वज्राऽस्त्राद्या शस्त्राऽस्त्रसमूहाः ७.२५.५. **कुत्सेन**=वज्रेणेव दृढेन कर्मणा ५.२९.९. कुत्सितकर्मणा ४.१६.११. [कुत्सः वज्रनाम निघं० २.२०. कुत्स एतत् कृन्ततेर्ऋषिः कुत्सो भवति, कर्त्ता स्तोमानामित्यौपमन्यवोऽत्राप्यस्य वधकर्मैव भवति नि० ३.११.]

कुत्स्येन कुत्से वज्रे भवेन वेगेन ४.१६.१२. [कुत्सः वज्रनाम निघं० २.२०. ततो भवार्थे यत्]

कुपयम् गोपनीयम् (शिशुम्) १.१४०.३.

कुब्जम् वक्राङ्गम् (जनम्) ३०.१०. [कुब्जश्च कुजतेर्वोब्जतेर्वा नि० ७.१२.]

कुभन्यवः आत्मनः कुभनमुन्दनमिच्छवः (आप्ताः पुरुषाः) ५.५२.१२. [कुभनपदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यच्। 'क्याच्छन्दसी' ति उः प्रत्ययः]

कुभा कुत्सितप्रकाशा (रसा=पृथिवी) ५.५३.९. [कु+भा दीप्तौ (अदा०) धातोः कः। स्त्रियां टाप्]

कुमारम् ब्रह्मचारिणम्, अ०— विद्यार्थिनम् (जनम्) २.३३. वालकम् ५.२.२. **कुमाराः**=अतिचपला वेगवन्तो वालकाः १७.४८. कृतचूडाकर्माणः (वालकाः) ६.७५.१७. **कुमारेण**=अकृतविवाहेन (जनेन) २८.१३. [कामयते भोगान् इति विग्रहे कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोः 'कमेः किदुच्चोपधायाः' उ० ३.१३८ सूत्रेणारन् प्रत्ययः। कुमार क्रीडायाम् (चुरा०) धातोर्वा अच्-प्रत्ययः]

कुमारीपुत्रम् विवाहात् पूर्वं व्यभिचारेणोत्पन्नम् (अपत्यम्) ३०.६. [कुमारम् इति व्याख्यातम्। ततो 'वयसि प्रथमे' इति स्त्रियां ङीप्प्रत्यये कुमारी। कुमारीपुत्रपदयोः समासः]

कुम्भः कलश इव वीर्यादिधातुभिः पूर्णः (भा०—वीर्यवान् पुरुषः) १९.८७. **कुम्भान्**=कलशान् १.११७.६. [कुं=भूमिं कुत्सितं वा उम्भति पूरयतीति विग्रहे कूपपदे उम्भपूरणे (भ्वा०) धातोरच्। शकन्धुन्यायेन पररूपम्]

कुम्भिनीरिव यथा जलाऽधिकारिण्यः (नद्यः) १.१९१.१४. [कुम्भप्राति० मत्वर्थे इनिः। कुम्भिनी-इव-पदयोः समासः]

कुम्भी धान्यादिपदार्थाऽऽधारा १९.१६. धान्याऽऽधारा (अ०—स्त्री) १९.८७. **कुम्भीभ्याम्**=धान्यजलाऽऽधाराभ्याम् (पात्रीभ्याम्) १९.२७. [कुम्भप्राति० स्त्रियां ङीप्]

कुयवम् कुत्सितसङ्गमम् २.१९.६. कुत्सिता यवा अन्नादि यस्य तम् (दुर्जनम्) ७.१९.२. कौ पृथिव्यां यवा यस्मात् तम् (वृत्रं=मेघं शत्रुं वा) १.१०३.८. कुत्सिता यवा यस्मिँस्तत् (शत्रुस्थानम्) ६.३१.३. कुत्सितैर्यवैर्वियुक्तम् (अन्नम्) १८.२०. **कुयवस्य**=कुत्सिता धर्माऽधर्ममिश्रिता व्यवहारा यस्य तस्य (राजपुरुषस्य) १.१०४.३. [कु-यवपदयोः समासः। यवः=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप्]

कुयवाचम् यः कुयवान् वक्ति प्रशंसति तम् (सामान्यं जनम्) १.१७४.७. [कुयवोपपदे वच परिभाषणे (अदा०) धातोः क्विप्। पूर्वपदस्थवकाराकारयोर्लोपः]

कुरु सम्पादय ११.८०. कीजिए स० प्र० २४६, ३२.१४. तू कर, आर्याभि० २.५३, ३२.१४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट्]

कुरुपिशङ्गिला कुरोः कृतस्य कृष्यादेः पिशान्यङ्गानि गिलति सा, भा०—या सेधा कृष्यादिकंविनाशयति, (अजा=प्रकृतिः) २३.५६. भा०—कृष्यादि विनाशिनी (श्वावित्=पशुविशेष इव सेधा) २३.५५. [कुरु-पिशङ्गिलापदयोः समासः। कुरुः=डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृग्रोरुच्च' उ० १.२४. सूत्रेण कुः प्रत्यय उकारश्चान्तादेशः]

कुर्मः सम्पादयामः १७.५२. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लट्]

कुर्वन् सम्पादयन् (अग्निः=पावकः) २८.२२. करता हुआ (मनुष्य) स० प्र० २४९, ४०.२. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः शतृप्रत्ययः]

कुलायम् कुल की वृद्धि को सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५७. कुल-अयपदयोः समासः। अयः=इण् गतौ (अदा०) धातोः 'एरच्' सूत्रेणाच्प्रत्ययः]

कुलाययत् कुलायं कुलोन्नतिं कामयमानः (मनुष्यः) ७.५०.१. [कुलायप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिचि शतृप्रत्ययः]

कुलायिनम् गृहादिसामग्रीयुक्तम् (यज्ञं=सङ्गतिमयं व्यवहारम्) ६.१५.१६. [कुलायप्राति० संसर्गे मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

कुलायिनी कुलं यदेति तत्कुलायं, तत्प्रशस्तं विद्यते यस्याः सा (स्त्री) १४.२. [कुलायप्राति० प्रशंसायाम् इनिः। तदन्तात् स्त्रियां ङीप्]

कुलालेभ्यः मृत्स्ना पात्रादिरचकेभ्यः (जनेभ्यः)

१६.२७. [कोलति सङ्घातयतीति विग्रहे कुल संस्त्याने (संघाते) बन्धुषु च (भ्वा०) धातोः 'तमिविशि०' उ० १.११८. सूत्रेण कालन् प्रत्ययः]

कुलिशः वज्रम्, प्र०—कुलिश इति वज्रनाम, निघं० २.२०, ३.२.१. [कुलिशः=कूलशातनो भवति नि० ६.१७.]

कुलिशी कुलिशेन वज्रेणाऽभिरक्ष्या (वीरपत्नी) १.१०४.४. [कुलिश इति वज्रनाम निघं० २.२०. ततो मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

कुलीकाः पक्षिणीविशेषाः २४.२४.

कुलीपयः जलजन्तुविशेषः २४.३५.

कुलुङ्गः पशुविशेषः २४.३२.

कुलुञ्चानाम् ये कुशीलेन लुञ्चन्ति अपनयन्ति परपदार्थांस्तेषाम् (दुर्जनानाम्) १६.२२. [कूपपदे लुञ्च अपनयने (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

कुल्फौ गुल्फौ ७.५०.२.

कुल्याः वाटिकादिषु जलचालनमार्गाः ३.४५.३. निर्मिता जलगमनमार्गाः ५.८३.८. जलप्रवाहधाराः ३५.२०. घृतधाराः ६.१२. [कुल्याः नदीनाम निघं० १.१३.]

कुल्याय कुल्यासु नदीषु भवाय (जलप्रायदेशाय) प्र०-कुल्या इति नदीनाम, निघं० १.१३, १६.३७. [कुल्याप्राति० भवार्थे यत्]

कुवलम् कोमलं बदरीफलमिव १९.२२. **कुवलैः**=कुत्सितं बलं यैस्तैर्बदरैः, प्र०—अत्र 'कु शब्दे' इत्यस्माद्धातोरौणादिकः कलन् प्रत्ययः २१.२९. सुशब्दैः १९.८९. कु शब्दे (अदा०) धातोरौणादिकः कलन् प्रत्ययः। यदश्रुभ्यः (तेजो ऽस्रवत्) तत्कुवलमभवत् श० १२.७.१.२.]

कुवित् महान् (अग्निः=विद्वज्जनः) १.१४३.६. महान्तम् (राजानम्) ३.४३.५. बह्वैश्वर्य्यः (अङ्गः=राजा) प्र०—कुविदिति बहुनाम, निघं० ३.१, १०.३२. बहुविज्ञानयुक्तः (अङ्गः=मित्रः) २३.३८. बहुवारम् ३.४२.४. बहुविधानि (रायः=धनानि) १.३३.१. बलम्, प्र०—कुविदिति बहुनाम, निघं० ३.१; १९.६. [कुवित् बहुनाम निघं० ३.१.]

कुवित्सस्य यः कुवित् महत् सनति विभजति तस्य (सत्यासत्यविवेचकस्य राज्ञः) ६.४५.२४. [कुवित् बहुनाम (निघं० ३.१.) तदुपपदे षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति डः प्रत्ययः]

कुशरासः कुत्सिताश्च ते शराः १.१९१.३. [कु-शरपदयोः समासः]

कुशिकस्य विद्यानिष्कर्षप्रापकस्य (विद्वज्जनस्य) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन मूर्द्धन्यस्य तालव्यः ३.३३.५. **कुशिकाः**=ये कुर्वन्त्यपदिशन्ति ते कुशाः, प्रशस्ताः कुशा विद्यन्ते येषु ते कुशिकाः (विद्वज्जनाः) ३.५३.११. विद्यासिद्धान्तनिष्कर्षकाः (विप्राः) ३.५३.१०. [कुष निष्कर्षे (क्र्या०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः किकन् प्रत्ययः। वर्णव्यत्ययेन मूर्धन्यस्य षस्य शकारः। अथवा कुशप्राति० प्रशंसायामर्थे मत्वर्थे ठन्। कुशिको राजा बभूव। क्रोशतेः शब्दकर्मणः क्रंशतेर्वा स्यात् प्रकाशयतिकर्मणः साधु विक्रोशयितार्थानामिति वा नि० २.२५.]—

कुशिकेभिः कार्यसिद्धान्तविद्वद्भिः (जनैः) ३.५३.८. शब्दायमानैः (सज्जनैः) ३.२६.३. [कुशिक इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततो भिस ऐसादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

कुशिकासः विद्याविनयादिभिराप्ता निष्पन्नाः (नूतना विद्वांसः) ३.४२.९. उपदेशकाः (विद्वज्जनाः) ३.२६.१. उत्कर्षं प्राप्ताः (जनाः) ३.२९.१५. सर्वशास्त्रसिद्धान्तवेत्तारः (विप्राः=पूर्णविद्या मेधाविजनाः) ३.५०.४. शब्दायमानाः (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.३०.२०. [कुशिकप्राति० जसोऽसुगागमः। कुशिक इति व्याख्यातम्]

कुषवा कुत्सितः सवः प्रेरणा यस्याः सा (युवतिः) ४.१८.८. [कु-सवपदयोः समासः। स्त्रियां टाप्। सवः=षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप् प्रत्ययः]

कुषुम्भकः अल्पः कुषुम्भो नकुलः, प्र०—अत्र कन् प्रत्ययः १.१९१.१५.[कुषुम्भप्राति० 'अल्पे' अ० ५.३.८५. सूत्रेण कन् प्रत्ययः। कुषुम्भः=कुस श्लेषणे (दिवा०) धातोः 'कुसेरुम्भोमेदेनाः' उ० ४.१०६. सूत्रेण उम्भः प्रत्ययः। बहुलवचनाद् गुणाऽभावः]

कुष्ठाभ्याम् निष्कर्षाभ्याम् २५.६. [कुष निष्कर्षे (क्र्या०) धातोः 'हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन्' उ० २.२. सूत्रेण क्थन्प्रत्ययः]

कुह कहाँ स० प्र० १५१, १०.४०.२. कस्मिन् (काले) १.१८.४. कुत्र १.११७.१२. क्व प्र०—अत्र 'वा ह च छन्दसि' अ० ५.३.१३. अनेन किमो हः प्रत्ययः 'कुतिहोः' अ० ७.२.१०४. इति कुरादेशश्च १.२४.१०. [कुह क्व नि० ३.१५.]

कुहचिद्विदे यः कुह क्वचिदपि विन्दति तस्मै (राये=धनाय) ७.३२.१९. [कुहचिदुपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः]

कुहस्वित् कहां स० प्र० १५१, १०.४०.२.

कूचिदर्थिनम् क्वचिद् बह्वोऽर्था विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (अग्नि) ४.७.६. ['कूचित्-अर्थिन् पदयोः समासः। कूचित्= क्वचित्, छान्दसत्वात् 'कु' इत्यादेशो दीर्घश्च। अर्थिन्= अर्थप्राति० मत्वर्थ इनिः प्रत्ययः]

कूजते अप्रकटशब्दोच्चारकाय (जनाय) २२.७. [कूज अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोश्शत्रन्ताच्चतुर्थी]

कूपे कूपाकारे हृदये १.१०५.१७. [कौति शब्दयतीति विग्रहे कु शब्दे (अदा०) धातोः 'कुयुभ्यां च' उ० ३.२७. सूत्रेण पः प्रत्ययः कित् दीर्घश्च। कूपः कूपनाम निघं० ३.१९. कुपानं भवति कुप्यतेर्वा नि० ३.१६.]

कूप्याभ्यः कूपेषु भवाभ्यः (अद्भ्यः=जलेभ्यः) २२.२५. **कूप्याय**=कूपे भवाय (भृत्याय) १६.३८. [कूप-प्राति० भवार्थे यत् प्रत्यये स्त्रियां टाप्]

कूर्मः कच्छपः २४.३४. **कूर्मान्**=कच्छपान् २५.३. [स यः कूर्मो नाम। एतद्वै रूपं कृत्वा प्रजापतिः प्रजा असृजत, यदसृजताकरोत्तद्यकरोत्तस्मात्कूर्मः, कश्यपो वै कूर्मस्तस्मादाहुः सर्वाः प्रजाः काश्यप्य इति श० ७.५.१.५. तां (पृथिवीं) सं क्लिश्याप्सु प्राविध्यत्तस्मै यः पराङ्रसो ऽक्षरत् स कूर्मोऽभवत् श० ६.१.१.१२. यो वै स एषां लोकानामप्सु प्रविद्धानां पराङ्रसो ऽत्यक्षरत् स एषः कूर्मः श० ७.५.१.१. स यः स कूर्मोऽसौ स आदित्यः श० ६.५.१.६. प्राणो वै कूर्मः प्राणो हीमाः सर्वाः प्रजाः करोति श० ७.५.१.७. द्यावापृथिव्यौ हि कूर्मः श० ७.५.१.१०. शिरः कूर्मः श० ७.५.१.३५.]

कूल्याय कूलेषु समुद्रनद्यादितटेषु साधवे (पुरुषाय) १६.४२. [कूलप्राति० 'तत्र साधु' इत्यर्थे यत्]

कूश्मान् शासनानि प्र०—अत्र कशधातोर्मक्प्रत्ययोऽन्येषामपि० इति दीर्घश्च २५.७. [कसि गतिशासनयोः (अदा०) धातोर्बाहुकादौणादिको मक् प्रत्ययः। अकारस्योकारादेशो बाहुलकात्]

कूष्ठः यः कौ पृथिव्यां तिष्ठति (विद्वज्जनः) ५.७४.१. [कूपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः]

कृकदाश्वम् कृकं हिंसनं दाशति तं शत्रुम्, प्र०—अत्र दाशृधातोर्बाहुलकादौणादिक उण्-प्रत्ययस्ततोऽमिपूर्व इत्यत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यनुवृत्तौ पूर्वसवर्णविकल्पेन यणादेशः १.२९.७. [कृक-दाशुपदयोः समासः। दाशु=दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्ब्राहु० औणा० उण् प्रत्ययः]

कृकलासः सरटः २४.४०.

कृकवाकुः कुक्कुटः २४.३५. [कृके कण्ठेन वक्तीति विग्रहे कृकोपपदात् वच् परिभाषणे (अदा०) धातोः 'कृके वचः कश्च' उ० १.६. सूत्रेण ञुण् प्रत्ययः। कृकवाकुः= कृकवाकोः पूर्वं शब्दानुकरणम् नि० १२.१३.]

कृच्छ्रेश्रितः ये कृच्छ्रे दुःखेऽपि धर्मं श्रियन्ति सेवन्ते (राजपुरुषाः) ६.७५.९. ये कृच्छ्रे कष्टे श्रिताः कष्टं सेवमानाः (पितरः=पालनक्षमा राजपुरुषाः) २९.४६. [कृच्छ्र-श्रितपदयोः समासे सप्तम्या अलुक्। श्रितः=श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः]

कृणवत् कुर्यात् १२.२६. **कृणवते**=कुर्वते ४.२.९. **कृणवन्**=कुर्वन्ति ७.४८.३. कुर्य्युः ५.२.३. **कृणवन्त**= कुरुत १.१७८.२. कुर्वन्ति ७.३७.७. **कृणवन्ते**=कुर्वन्ति प्र०—व्यत्ययेनाऽत्राऽऽत्मनेपदम् १.८८.३. **कृणवम्**= प्रकाश करने हारा हूँ, स० प्र० २३८, १०.४९.१. **कृणवसे**=करोषि ६.१६.१७. **कृणवः**=करोषि ५.४.११. कुर्याः ६.३५.३. हिंसितुं शक्नोति १.५४.५. **कृणवाथ**= कुरुथ १८.६०. **कृणवाम**=कुर्याम २.२९.३. **कृणवे**= करता हूँ सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१५. **कृणवै**= कर्त्तुं शक्नुयाम् १.१६५.१०. **कृणु**=कुरु करोति वा, प्र०—अत्र पक्षे लडर्थे लोट् २.२०. कर सं० वि० १३४, १०.८५.५५. **कृणुत**=स्वीकुरुत ४.११. कुरुत ५.४९.५. **कृणुतम्**=कुरुतम् १.९३.१२. **कृणुतात्**=कुरु २.३०.५ **कृणुताम्**=करोतु १५.५१. कुरुताम् २.५.७. **कृणुते**= करोति ४.७.११. कर सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.३. करोति निर्मिमीते ३३.३८. **कृणुथ**=कुरुथ ६.२८.६. **कृणुध्वम्**=कुरुत १५.५३. कुरुध्वम् १.७७.२. **कृणुषे**= धारयति ५.१.२. ऋ० भू० २०३. करोति १.१२३.१०. करोषि १.१२३.११. **कृणुष्व**=करोति कुर्याद् वा प्र०— अत्र लडर्थे लोट्, व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदं च १.१०.७. कुरु १५.३९. कुरुष्व १३.९. **कृणुहि**=सम्पादय, प्र०— 'उतश्च प्रत्ययाच्छन्दो वा वचनम्' अ० ६.४.१०६. अनेन वार्त्तिकेन विकल्पाद्धेर्लोपो न भवति १.१८.१. करोति, प्र०—अत्र व्यत्ययः 'कृवि हिंसाकरणयोश्च' इत्यस्माल्लडर्थे लोट् १.१३.२. करोषि ३३.७९. कुरु १.१६५.९. **कृणोत**= कुरुत ३.२९.९. **कृणोतन**=कुर्य्यात् १.१६१.२. कुर्यातम् ४.१५.१०. कुरुत, प्र०—अत्र तकारस्थाने तनबादेशः १.१३.१२. **कृणोति**=करोति १.१०५.१५. कारयति १.९२.६. **कृणोतु**=करोतु १.८४.३. सदा सिद्ध करें सं० वि० १४१, अथर्व० १४.२.७५. **कृणोमि**=करोमि ४.४२.५. स्थिर करता हूँ सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.१ **कृणोषि**=करोषि १.७४.४. **कृण्महे**=कुर्मः ७.१६.४.

कृण्मः=निश्चित करता हूँ सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.४. **कृण्वत**=कुर्वन्ति १.७२.५. कुर्वन्तु, प्र०—अत्र लङ्यडभावः १.१००.७. कुरुत ४.२४.३. करो, आर्याभि० १.४१, ऋ० १.७.६.७. [डुकृञ् करणे (तना०) धातो रूपाणि। विकरणव्यत्ययेन श्नुः। कृवि हिंसाकरणयोश्च (भ्वा०) धातोर्वा रूपाणि]

कृणुहि अनुतिष्ठ ४.२.२०. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

कृण्वती प्रकाशं कुर्वती (उषाः) ५.८०.२. **कृण्वते**=कुर्वन्ति ६.७५.७. कुर्वते (सवित्रे=सूर्याय) २.३०.४. **कृण्वन्**=सम्पादयन् (राजा) ११.१५. वि०—कुर्वन् (विद्वज्जनः) २६.३७. **कृण्वन्तम्**=कुर्वन्तम् (नरम्) २.२८.७. **कृण्वन्तः**=कुर्वन्तः (वसिष्ठाः=सन्मार्गस्था जनाः) ७.३७.४. प्र०—इदं 'कृवि हिंसाकरणयोश्च' इत्यस्य रूपम् १.६.३. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्। विकरणव्यत्ययेन श्नुः। कृवि हिंसाकरणयोश्च (भ्वा०) धातोर्वा रूपम्]

कृण्वन्ति कुर्वन्ति ३४.२. **कृण्वन्तु**=कुर्वन्तु १.१७०.४. भा०—आचरेयुः २३.४२. हिंसन्तु १.१६१.१०. निष्पादयन्तु १.१७०.४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः, कृवि हिंसाकरणयोश्च (भ्वा०) धातोर्वा लट्। कृण्वन्ति कुर्वन्ति नि० ६.३२. कृण्वति वधकर्मा निघं० २.१६.]

कृण्वानः कुर्वन् (महाराजः) ३.५३.८. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः शतृ। विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

कृण्वाना कुर्वती (अदितिः=विद्युत्) २६.४. कुर्वन्तौ (मातापितरौ) १५.५३. [पूर्वपदे व्याख्यातम्। स्त्रियां टाप्। अथवा 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः]

कृण्वानासः कुर्वन्तः (मुमुक्षुजनाः) १.७२.६. (कृण्वान इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगादेशः]

कृण्वाथाम् उत्पन्न करो सं० वि० १३६, अथर्व० १४.२.३७. **कृण्वीत**=कुर्यात् ४.२१.५. **कृण्वे**=करोमि ७.३६.२. **कृण्वैते**=कुर्याताम् ६.२५.४. **कृत**=कुरुत, प्र०—अत्र विकरणलुक् १२.७६. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

कृत यो विद्वान् कृतस्तत्सम्बद्धौ (विद्वज्जन) ६.५८.३. **कृतम्**=कर्त्तव्यं कर्म १.११७.८. निष्पन्नम् (व्यवहारम्) १.१३२.१. निष्पादितम् (सुखम्) ४.१०.७. निष्पादितं प्रकाशितं वा (रूपं=स्वरूपम्) १६.३१. आचरितम् (एनः=पापम्) १.२४.६. शोधितम् (हविः=द्रव्यम्) १.३४.८. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्तः। ये वै चत्वारः स्तोमाः कृतं तत् तै० १.५.११.१.]

कृतब्रह्मा कृतं ब्रह्म धनमन्नं वा येन सः (राजा) ६.२०.३. कृतानि ब्रह्माणि धनानि येन सः (ब्रह्मणस्पतिः)' २.२५.१. [कृत-ब्रह्मन् पदयोः समासः। ब्रह्म=धननाम निघं० २.१०. अन्ननाम निघं० २.७. उदकनाम निघं० १.१२.]

कृतम् कुरुतम्, प्र०—अत्र विकरणस्य लुक् १.११२.२४. कुरुतः, प्र०—अत्र लडर्थे लोट्, मध्यमस्य द्विवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् च १.१७.७. कुर्यातम् ६.५६.८. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट्। 'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि तत्स्थाने भाविनो विकरणस्यापि लुक्]

कृतस्य शुद्धस्य (व्यवहारस्य) ७.११.४. **कृतः**=सम्पादितः (रथः) १.१४१.८. नितरां स्थापितः (वेदप्रतिपादितो मार्गः) १.१०५.१६. निष्पन्नः (राजन्यः=राजपुत्रः) ३१.११. आज्ञप्तः (आप्तः पुरुषः) ३४.४२. **कृता**=निर्मिता निष्पादिता (सरस्वती=वाक्) ६.६१.१३. कृतानि (कर्माणि) ३४.१६. **कृतानि**=कार्याणि विद्याप्रचाररूपाणि १.११७.४. कर्माणि १.१००.६. उत्पादितानि (भुवनानि) २.१२.४. अनुष्ठितानि (कर्माणि) २.११.६. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्तान्तात् षष्ठी]

कृतिः क्रिया १.१६८.३. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

कृत्तिम् मृगचर्मादिमयीम् (अङ्गरक्षणीम्) १६.५१. [कृत्तिः=गृहनाम निघं० ३.४. कृती छेदने (रुधा०) धातोः क्तिन्। 'कृतो बहुलं वा' इति वार्त्तिकबलेन कर्त्तर्यपि क्तिन्। कृत्तिः कृन्ततेर्यशो वा अन्नं वा। इयमपीतरा कृतिरेतस्मादेव सूत्रमयी। उपमार्थे वा नि० ५.२२.]

कृत्तिवासः कृत्तिश्चर्म तद्वद् दृढानि वासांसि धृतानि येन सः (रुद्रः=शूरवीरः सेनाध्यक्षः) ३.६१. [कृत्ति-वासस्-पदयोः समासः। कृत्तिरिति व्याख्यातम्। वासस्=वस्त्र आच्छादयतीति विग्रहे वस आच्छादने (अदा०) धातोः 'वसेर्णित्' उ० ४.२१८. सूत्रेणासुन्]

कृते हलादिभिः कर्षिते, योगाङ्गैर्निष्पादिते (योनौ=क्षेत्रेऽन्तःकरणे वा) १२.६८. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्तः]

कृत्नवे कर्त्तुम् २.१३.१०. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृहनिभ्यां क्त्नुः' उ० ३.३०. सूत्रेण क्त्नुः]

कृत्नुः छेदिका श्येनी इव (उषाः) १.९२.१०. [कृती छेदने (रुधा०) धातोः 'कृहनिभ्यां क्त्नुः' उ० ३.३०. सूत्रेण क्त्नुः]

कृत्नो कर्त्तः (इन्द्र=राजन्) ६.१८.१५. [कृत्नुरिति व्याख्यातम् । ततः सम्बुद्धिः]

कृत्याम् करोति यया ताम् (क्रियाम्) ५.२३. दुष्क्रियाम् ३५.११. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः स्त्रियां 'कृञः श च' अ० ३.३.१००. सूत्रेण क्यप्]

कृत्रिमा कृत्रिमाणि (सदनानि=स्थानानि) १.५५.६. **कृत्रिमाणि**=क्रियमाणानि (रोधांसि=आवरणानि) २.१५.८. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'ड्वितः क्त्रिः' अ० ३.३.८८. सूत्रेण क्त्रिः प्रत्ययः । 'क्त्रेर्मम् नित्यम्' अ० ४.४.२०. सूत्रेण मप् प्रत्ययः । ततश् शेर्लोपः]

कृत्वः बहवः कर्त्तारो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=वैद्यराज विद्वन्) ३.१८.४.]

कृत्वा अनुष्ठाय ३.४७. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्त्वा]

कृत्वाय कृत्वा ११.५९. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्त्वा । 'क्त्वो यक्' अ० ७.१.४७. सूत्रेण यगागमः]

कृत्वी कृत्वा, प्र०—अत्र 'स्नात्व्यादयश्च' इति निपातितम् १.१६१.३. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्त्वा । 'स्नात्व्यादयश्च' अ० ७.१.४९. सूत्रेण निपातनाद् रूपसिद्धिः]

कृत्वे प्रज्ञायै न्यायकर्मणे वा १.१११.२. [क्रतुरिति कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. गुणाऽभावश्छान्दसः]

कृत्व्यः करणीयं कर्म, प्र०—कृत्वीति कर्मनाम, निघं० २.१, ६.२.८. **कृत्व्यान्**=कर्मसु साधून् (द्यून्=दिवसान्) १.१२१.७. **कृत्व्ये**=कर्त्तव्ये (कार्य्ये) १.५४.६. [कृत्वीति कर्म नाम निघं० २.१. ततः साध्वर्थे भवार्थे वा यत्]

कृत्स्नहृदयेन सम्पूर्णहृदयाऽवयवेन ३९.८. [कृत्स्नहृदयपदयोः समासः । कृत्स्नम्=कृती छेदने (रुधा०) धातोः 'कृत्यशूभ्यां क्स्नः' उ० ३.१७. सूत्रेण क्स्नः । कृन्तति स्वल्पमिति विग्रहः । हृदयम्=हरति विषयानिति विग्रहे हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः 'वृह्लोः षुग्दुकौ च' अ० ४.१००. सूत्रेण कयन् प्रत्ययो दुगागमश्च]

कृत्स्नायतया आयस्य लाभस्य भाव आयता, कृत्स्ना चाऽसावायता कृत्स्नायता, तया सम्पूर्णलाभतया १६.२०. [कृत्स्न-आयतापदयोः समासः । कृत्स्नं व्याख्यातम्]

कृथ कुरुत, प्र०—अत्र विकरणस्य लुक् १२.८३. **कृथः**=कुरुथः ५.७४.५. कुरुतम्, प्र०—अत्र लोडर्थे लट् विकरणस्य लुक् च १.११२.८. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोडर्थे लट्, विकरणस्य लुक् च]

कृदरम् उदरम् २९.१. [कृत्स्नं दृणातीति विग्रहे 'कृदरादयश्च' उ० ५.४१. सूत्रेण निपात्यते । कृदरं गृहनाम निघं० ३.४. ऊर्दरं कृदरमित्यावपनस्य । कृतदरं भवति नि० ३.२०.]

कृधि करोषि करोति वा, प्र०—अत्र लडर्थे लोट्, पक्षे व्यत्ययः, विकरणाऽभावः 'श्रुशृणुपॄकृ०' अ० ६.४.१०२. अनेन हेर्ध्यादिशश्च १.१४.७. कुरु, प्र०—अत्र विकरणलुक् १३.२२. कुरु निष्पादय १.१०६.५. कुर्याः ५.४१. कुरु कारय वा ४.१०. कीजिए सं० वि० १९७, ९.११३.१०. [डुकृञ् करणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक् । 'श्रुशृणु०' इत्यादिना हेर्धिरादेशः]

कृधु ह्रस्वम्, भा०—स्वल्पम् (कर्म), प्र०—कृध्विति ह्रस्वनाम, निघं० ३.२, २३.२८. **कृधुना**=ह्रस्वेनाऽल्पेन (वचसा=ज्ञानेन) ४.५.१४. [कृधु ह्रस्वनाम निघं० ३.२. निकृत्तं भवति नि० ६.३.]

कृध्वम् कुरुध्वम् ७.३४.१५. [डुकृञ् करणे धातोर्लोट् । विकरणस्य लुक्]

कृन्तामि छिनद्मि ६.१. कृती छेदने (रुधा०) धातोर्लट् ।

कृपते समर्थयतु, प्र०—व्यत्ययेनाऽत्र शः १.११३.१०. [कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन शपः स्थाने शः]

कृपमाणम् कृपां कर्त्तुं शीलम् (परिव्राजं=संन्यासिनम्) १.११९.८. कृपां कर्त्तारम् (कविं=मेधाविजनम्) प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शः १.११६.१४. [कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेन शः । ताच्छील्ये चानश् वा]

कृपा कल्पते समर्थयति यया तया (विद्यया) १.१२७.१. कृपया ६.२.६. करुणा ४.२५. सामर्थ्येन १७.१०. समर्थया क्रियया १५.४७. कल्पनया १.१२८.२. [क्रप कृपायां गतौ (भ्वा०) धातोः 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्' अ० ३.३.१०४. सूत्रेण स्त्रियामङ् । भिदादिगणे (क्रपेः सम्प्रसारणं च' इति वार्तिकेनाङि सम्प्रसारणम् । कृपा=कृप् कृपतेर्वा कल्पतेर्वा नि० ६.८. कल्पते अर्चतिकर्मा निघं०

२.१४. धातोर्वा क्विप्प्रत्यये तृतीया]

कृमिः क्षुद्रजन्तुविशेषः २४.३०. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोः 'क्रमितिमि०' उ० ४.१२२. सूत्रेण इन् प्रत्ययः सम्प्रसारणं च क्रमिः क्रव्ये मेद्यति, क्रमतेर्वा स्यात् सरणकर्मणः क्रामतेर्वा नि० ६.१२.]

कृशनावतः कृशनं बहुसुवर्णादिर्भूषणं विद्यते येषान्ते (भृत्याः) १.१२६.४. [कृशनं हिरण्यनाम निघं० १.२. रूपनाम निघं० ३.७. ततो भूम्नि मतुपि पूर्वस्य दीर्घः]

कृशनिनः कृशनं बहु हिरण्यं विद्यते येषान्ते (विद्वज्जनाः) प्र०—कृशनमिति हिरण्यनाम, निघं० १.२, ७.१८.२३. [कृशनप्राति० भूम्नि मत्वर्थे इनिः]

कृशनैः तनूकरणैः सूक्ष्मत्वनिष्पादकैः किरणैर्विविधै रूपैर्वा १.३५.४. [कृशनं रूपनाम निघं० ३.७. हिरण्यनाम निघं० १.१२.]

कृशम् क्षीणम् (अश्रीरम्=अधर्माचरणम्) ६.२८.६. **कृशस्य**=दुर्बलस्य (जनस्य) २.१२.६. [कृश तनूकरणे (दिवा०) धातोः क्तप्रत्यये 'अनुपसर्गात् फुल्लक्षीबकृशोल्लाघाः' इति सूत्रेण निपात्यते]

कृशानुम् कृशम् (प्राणिनम्) १.११२.२१. **कृशानुः**=तनूकर्त्ता (भगवान्) ५.३२. शत्रूणां कर्षकः (राजा) ४.२७.३. दीनों के प्राणों के सुखदाता (ईश्वर), आर्याभि० २.१७, ५.३२. **कृशानो!**=दुष्टान् कृशति यस्तत्सम्बुद्धौ (मित्र=विद्वन् सभाध्यक्ष) ४.२७. **कृशानोः**=विद्युतः १.१५५.२. [कृश तनूकरणे (दिवा०) धातोः 'ऋतन्यञ्जि०' उ० ४.२. सूत्रेण आनुक् प्रत्ययः]

कृषिः भूमिविलेखनम् १४.१९. भूमिकर्षणम् १८.९. **कृषीः**=कर्षन्ति विलिखन्ति याभिस्ताः (कृषि-क्रियाः) ४.१०. **कृष्यै**=कृषिकर्मणे १४.२१. कृषन्ति विलिखन्ति भूमिं यया तस्यै ९.२२. [कृष विलेखने (भ्वा०) धातोः 'इगुपधात् कित्' उ० ४.१२०. सूत्रेण इन् प्रत्ययः]

कृष्टपच्याः याः कृष्टेषु क्षेत्रेषु पच्यन्ते ताः (अन्नादयः) १८.१४. [कृष्टोपपदात् डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः 'राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्यकुप्यकृष्टपच्याव्यथ्याः' अ० ३.१.१४४. सूत्रेण क्यप्]

कृष्टयः कृषन्ति विलिखन्ति स्वानि कर्माणि ये ते मनुष्याः १.५२.११. प्र०—कृष्टय इति मनुष्यनामसु पठितम्, निघं० २.३, १.४.६. **कृष्टिभिः**=विलेखनक्रियाभिः १.१००.१०. **कृष्टिषु**=मनुष्यादिप्रजासु ३.५३.१६. मनुष्येषु ६.४६.७. **कृष्टीनाम्**=मनुष्यादिप्रजानां मध्ये ७.२६.५. कृषीवलादिप्रजास्थमनुष्याणाम् ४.१७.५. **कृष्टीः**=कर्षका मनुष्यप्रजाः ३.५९.१. मनुष्याद्याः प्रजाः ४.१७.७. मनुष्याः ७.१९.१. मनुष्यानाकर्षणादिव्यवहारान्वा १.७.८. **कृष्टेः**=कृष्टस्य (राज्ञः) ४.४२.१. मनुष्यस्य ४.४२.२. [कृष विलेखने (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। कृष्टयः=मनुष्यनाम निघं० २.३. कृष्टीः मनुष्यजातानि नि० १०.२९, १०.३१. कृष्टय इति मनुष्यनाम कर्मवन्तो भवन्ति विकृष्टदेहा वा नि० १०.२२.]

कृष्टिप्रः यः कृष्टीन् मनुष्यान् दूतचारैः प्राति तस्य (राज्ञः) ४.३८.९. [कृष्ट्युपपदे प्रा पूरणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः। कृष्टयः=मनुष्यनाम निघं० २.३.]

कृष्णगर्भाः कृष्णा विलिखिता रेखाविद्यादयो गर्भा यैस्ते (मनुष्याः) १.१०१.१. [कृष्ण-गर्भपदयोः समासः। कृष्णः=कृष् विलेखने (भ्वा०) धातोरौणादिको नक् प्रत्ययः। गर्भः=गॄ निगरणे (तुदा०) धातोः 'अर्त्तिगॄभ्यां भन्' उ० ३.१५२ सूत्रेण भन् प्रत्ययः]

कृष्णग्रीवः कृष्णा ग्रीवा यस्य सः (पशुः पक्षी वा) २४.४. **कृष्णग्रीवाः**=कृष्णा कर्षका ग्रीवा निगरणं येषान्ते, भा०—अग्नेराकर्षणक्रियाः (पशवः पक्षिणो वा) २४.६. कृष्णकण्ठाः, भा०—कर्षका निगलकाः पशवः २४.९. [कृष्ण-ग्रीवापदयोः समासः। कृष्णग्रीवापदे व्याख्याते]

कृष्णजंहसः कृष्णानि जंहांसि हननानि यस्मिँस्तस्य (अग्नेः) १.१४१.७. [कृष्ण-जंहस्पदयोः समासः]

कृष्णपविः कृष्णो विलेखः पविः शस्त्राऽस्त्रसमूहो यस्य (पूज्यो राजा) ७.८.२. [कृष्ण-पविपदयोः समासः। पविः=पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः 'अच इः' उ० ४.१३९ सूत्रेण इः प्रत्ययः। पविः=वज्रनाम निघं० २.२०. वाङ्नाम निघं० १.११.]

कृष्णप्रुतौ विद्वदुपदेशेन चित्ताऽऽकर्षणवृत्तिं प्राप्नुवत्यौ (मातरा=धात्रीजनन्यौ) १.१४०.३. [कृष्ण-प्रुतपदयोः समासः। प्रुतः=प्रुङ् प्लुङ्गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

कृष्णम् अन्धकारम्, प्र०—कृष्णं कृष्यतेर्निकृष्टो वर्णः, नि० २.२०, १.९२.५. कर्षणीयम् (व्रजनं=गमनम्) ७.३.२. कर्षितुं योग्यम् (विमानं=भूगोलं विमानादिकं वा) १.१६४.४७. तिमिराख्यम् (अन्धकारम्) १.११५.८-कर्षकम् (शोचिः=प्रकाशः) १५.६२. निकृष्टवर्णं तमः ३.५५.११. रात्रिः ६.९.१. कर्षति विलिखति येन ज्योतिः

समूहेन तम् १.५८.४. पृथिवीविकारमयम् ऋ० भू० १९८. **कृष्णः**=अग्निना छिन्नो वायुना कर्षितो यज्ञः २.१. कृष्णगुणविशिष्टः (प्राणी) २४.३०. आकर्षणकर्त्ता (सूर्यः) १.७९.२. कर्षकः (जुहुराणः=कुटिलगतिर्जनः) ४.१७.१३. **कृष्णा**=कर्षणानि ६.६०.१०. कृष्णान्याकर्षण-कृष्णवर्णयुक्तानि पृथिव्यादीनि १.३५.४. कृष्णानि सैन्यानि ४.१६.१३. श्यामा (विदुषी स्त्री) ४.३.९. **कृष्णात्**=अन्धकारात् १.१२३.१. **कृष्णान्**=कृष्णवर्णान् कृषिसाधकान् वा (पदार्थान्) २४.११. **कृष्णाय**=विद्याकर्षणाय, भा०—विद्याप्राप्तये २५.१. **कृष्णाः**=निकृष्टवर्णाः कर्षिता वा (रात्रीः) ६.४७.२१. कृष्णवर्णा विलेखननिमित्ता वा, भा०—कर्षणादिकार्यसाधकाः पश्वादिपदार्थाः २४.१०. **कृष्णासु**=परिपक्वासु विलिखितासु (ओषधीषु) १.६२.९. **कृष्णेभिः**=परस्पराकर्षणैर्विलेखनैः १.६२.८. **कृष्णे**=कर्षिते (द्यावाभूमी) ४.४८.३. **कृष्णेन**=आकर्षण गुण से स० प्र० ३१३, ३३.४३. कर्षति येन स कृष्णःतेन, यद्वा कृष्णवर्णेन लोकेन, प्र०—कृष्णं कृष्यतेर्निकृष्टो वर्णः, नि० २.२०. 'यत् कृष्णं तदन्नस्य, छा० उ० ६.५. एताभ्यां प्रमाणाभ्यां पृथिवीलोका अत्र गृह्यन्ते 'कृषेर्वर्णे' उ० ३.४. इति नक् प्रत्ययः, अत्राऽऽङ्पूर्वकत्वादाकर्षणार्थो गृह्यते १.३५.२. पृथिव्यादिना १.३५.९. कृष्णवर्णेन (रजसा=लोकेन) ३४.२५. [कृष विलेखने (भ्वा०) धातोः 'कृषेर्वर्णे' उ० ३.४. सूत्रेण नक् प्रत्ययः । कृष्णम्=कृष्यतेर्निकृष्टो वर्णः नि० २.२०. कृष्णा=कृष्णवर्णा रात्रिः नि० २.२०.]

कृष्णयामम् कृष्णा कर्षिता यामा येन तम् (सूनुम्=अपत्यम्) ६.६.१. [कृष्ण-यामपदयोः समासः । यामः=या प्रापणे (अदा०) धातोः 'अर्त्तिस्तुसुहु०' उ० १.१४०. सूत्रेण मन् प्रत्ययः]

कृष्णयोनीः कृष्णा कर्षिका योनिर्यासां ताः (सेनाः) २.२०.७. [कृष्णा-योनिपदयोः समासः । योनिः=यौति संयोजयति पृथक् करोति वेति विग्रहे यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'वहिश्रिश्रुयुद्रुग्ला०' उ० ४.५१. सूत्रेण निः प्रत्ययः । योनिः=उदकनाम निघं० १.१२. गृहनाम निघं० ३.४.]

कृष्णव्यथिः यः कर्षकश्चाऽसौ व्यथयिता च (अग्निः=वह्निः) २.४.७. [कृष्ण-व्यथिपदयोः समासः । व्यथिः=क्रोधनाम निघं० २.१३. व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोरौणा० इन्]

कृष्णसीतासः कृष्णा कृषिसाधनी सीता येषां ते (कृषीवलाः) १.१४०.४. [कृष्णा-सीतापदयोः समासः । सीता=स्यति कर्मसमाप्ति करोतीति विग्रहे षोऽन्तः कर्मणि (दिवा०) धातोरौणादिको बाहुलकात् क्तः । आकारस्येकारादेशः]

कृष्णाञ्जिः कृष्णा विलिखिता अञ्जिर्गतिर्यस्य सः (पशुः पक्षी वा) २४.४. [कृष्णा-अञ्जिपदयोः समासः । अञ्जिः=अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोरौणादिक इन् प्रत्ययः]

कृष्णाध्वा कृष्णोऽध्वा मार्गो यस्य (अग्निः) २.४.६. कृष्णः कर्षितोऽध्वा मार्गो येन (विद्युत्प्रकाशः) ६.१०.४. [कृष्ण-अध्वन् पदयोःसमासः । अध्वन्=अद भक्षणे (अदा०) धातोः 'अदेर्ध च' उ० ४.११६. सूत्रेण क्वनिप् धान्तादेशश्च अध्वा=अन्तरिक्षनाम निघं० १.३.]

कृष्णासः ये कर्षन्ति ते (सूरयः=विद्वांसः) १.१४१.८. [कृष्णप्राति० जसोऽसुगागमः । कृष्णः=कृष विलेखने+नक्]

कृष्णियाय कृष्णमाकर्षणमर्हाय (विद्वज्जनाय), प्र०—'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति घः १.१६.२३. कृष्णं विलेखनं कृषिकर्माऽर्हति यस्तस्मै (कृषीवलाय) १.११७.७. [कृष्ण इति व्याख्यातम् । तत अर्हत्यर्थे घः प्रत्ययः । ततश्चतुर्थी]

कृष्व कुरु, प्र०—अत्र 'कृञ्' इत्यस्माद्धातोर्लोटि विकरणाऽभावः १.१०.९. कुरुष्व ७.२२.४. विलिख १.५४.९. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट् । कृष विलेखने (भ्वा०) धातोर्वा]

केतपूः यः केतेन विज्ञानेन पुनाति (ईश्वरः) ११.७. यः केतं प्रज्ञां पुनाति पवित्रीकरोति सः (वाचस्पतिः=वाण्याः पालकः प्रजाराजजनः) ९.१. यः केतं विज्ञानं पुनाति सः (सविता=सर्वजगदुत्पादको जगदीश्वरः) ३०.१. [केतोपपदे पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्विप् प्रत्ययः । केतः प्रज्ञानाम निघं० ३.९. अन्नं केतः, श० ६.३.१.१९.]

केतम् प्रज्ञां प्रज्ञापनं वा ४.२६.२. प्रज्ञानम्, प्र०—केत इति प्रज्ञानाम, निघं० ३.९, ३०.१. विज्ञानम् ११.७. **केतः**=प्रज्ञाविशेषो बोधः १.२४.१२. [केतमिति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

केतवः ज्ञापकाः (अग्नयः=सूर्यविद्युत्प्रसिद्धास्त्रयः) ८.४०. किरणाः ३०.३१. किरणा इव प्रकाशमाना विद्वांसः ८.४१. ज्ञानानि १.१९१.४. प्रज्ञानानि ७.४१. किरणाः, विविधजगतः पृथक् पृथग् रचनादिनियामका ज्ञापकाः

प्रकाशकाश्चेश्वरस्य गुणाः पं० वि० । **केतवे**=विज्ञानस्वरूपाय ज्ञापकाय वा (सूर्याय=परमेश्वराय सूर्यलोकाय वा) ४.३५. विज्ञानाय १.१६६.१. **केतुना**=सङ्केतरूपचिह्नेन ३८.१६. जागरूकेण ज्ञानेन जागृताऽवस्थया ३७.२१. प्रज्ञया सुकर्मणा वा ३७.२१. विज्ञान अर्थात् विद्यादान से, आर्याभि० १.१६, ऋ० १.३.१०.१४. शोभनकर्मणा प्रज्ञया वा, प्र०—केतुरिति प्रज्ञानामसु पठितम्, निघं० ३.९, १.३.१२. **केतुम्**=ध्वजवद् वर्त्तमानम् (वह्निम्) १.६०.१. महाप्राज्ञम् (राजानम्) ७.६.२. प्रज्ञापकम् (अग्निम्) ६.७.२. सूर्यमिव ७.५.५. प्रज्ञानम् १.६.३. प्रज्ञाम् २९.३७. किरणम् १.१२४.५. रूपादिप्रापकम् (अग्नि=वह्निम्) ३.२.१४. ध्वजवद्विज्ञापकम् (अग्नि=पावकम्) ३.२९.५. **केतुः**=प्रज्ञापिका (उषः=उषाः) ३.६१.३. प्रज्ञापक इव प्रज्ञा ५.११.३. ज्ञानस्वरूपम् (ब्रह्म) ३.५५.२. उद्गतशिखा प्रज्ञावतौ वा (उषाः) १.१२४.११. ज्ञापयित्री पताकेव प्रसिद्धा (स्त्री) १.११३.१९. ज्ञानवान् (मनुष्यः) ३.१.१७. विज्ञापकः (ईश्वर आप्तो वा) १.१३.१. [चायते पूजयतीति विग्रहे चायृ पूजानिशामनयोः (भ्वा०) धातोः 'चायः की' उ० १.७४. सूत्रेण तुः प्रत्ययः । धातोश्च 'की' इत्यादेशः । केतुः प्रज्ञानाम निघं० ३.९. केतुना कर्मणा प्रज्ञया वा नि० ११.२७. केतवः रश्मयः नि० १२.१५. केतुं प्रज्ञानम् नि० १२.७. कित निवासे रोगापनयने च (भ्वा०) धातोर्वा वाहुलकादौणादिक उः प्रत्ययः]

केतवेदाः केतः प्रज्ञातं वेदो धनं येन सः (राजपुरुषः) प्र०—केत इति प्रज्ञानाम, निघं० ३.९, १.१०४.३. [केतवेदस्पदयोः समासः ।' केतः प्रज्ञानाम निघं० ३.९. वेदस् धननाम निघं० २.१०.]

केतसापः ये केतेन प्रज्ञया सपन्ति ते (विद्वज्जनाः) ५.३८.३. [केतोपपदे पप् समवाये (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः । केतः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

केताः प्रज्ञाः प्रज्ञापनव्यवहारान् १.५५.७. [केतः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

केतान् वोधान् १.१४६.३. [केतः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

केतुमत् प्रशस्तप्रज्ञायुक्तम् (वचः) ६.४७.३१. केतुः प्रशस्ता ध्वजा यासु ताः (स्वसेनाः) प्र०—अत्र स्त्रीप्रत्ययस्य लुक् २९.५७. [केतुप्राति० प्रशंसार्थे मतुप् । केतुरिति व्याख्यातम्]

केतू किरणौ २.११.६. [केतुरिति व्याख्यातम् । तस्य द्विवचनम् ।]

केतेभिः प्रज्ञाभिः ३.६०.७. [केत इति व्याख्यातम् । ततश्छन्दसि भिस ऐसादेशो न भवति]

केवटे कूपे, प्र०—केवट इति कूपनाम, निघं० ३.२३, ६.५४.७.

केवर्त्तम् जले नौकायाः पारावारयोर्गमकम् (नाविकजनम्) ३०.१६. [के जले वर्तत इति विग्रहे कोपपदाद् वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोरण् । समासे सप्तम्या लुङ् न]

केवलम् असहायम् (सहः=वलम्) १.५७.६. **केवलः**=एक एवेष्टोऽसाधारणसाधनो वा (त्वष्टा=परमेश्वरो भौतिकोऽग्निर्वा) १.१३.१०. असहायः (इन्द्रः=राजा) ४.२५.७. एकश्चेतनमात्रस्वरूप एवेष्टदेवः (इन्द्रः=राज्यप्रदेश्वरः) १.७.१०.

केवला केवलाम् (पक्तिम्=पाकम्) ४.२५.६. [केवलप्राति० स्त्रियां टाप्]

केशिनः प्रकाशवन्तो ज्ञापकाः (वायुविद्युत्सूर्याः) १.१६४.४४. [केशप्राति० भूम्नि इनिः प्रत्ययः । केशः=क्लिश उपतापे (दिवा०) धातोः 'क्लिशेरन् लो लोपश्च' उ० ५.३३. सूत्रेणान्प्रत्ययः, लकारस्य च लोपः । केशी केशा रश्मयस्तैस्तद्वान् भवति, काशनाद्वा प्रकाशनाद्वा केशीदं ज्योतिरुच्यत इत्यादित्यमाह नि० १२.२६. अथाप्येते इतरे ज्योतिषी केशिनी उच्येते । धूमेनाग्नी रजसा च मध्यमः नि० १२.२६.]

केशिना प्रशस्ताः केशा विद्यन्ते ययोस्तौ (हरी=अश्वौ) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' अ० ७.१.३९. इति विभक्तेराकाराः ८.३४. सूर्यरश्मिवत्प्रशस्तकेशयुक्तौ (हरी=अश्वौ) १.८२.६. वहवः केशाः किरणा विद्यन्ते ययोस्तौ (सूर्यविद्युतौ) ३.६.६. प्रकाशयुक्ते आकर्षणवले (हरी=अश्वौ), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति द्विवचनस्याकारादेशः १.१०.३. [केशिन् इति व्याख्यातम् । तस्य द्विवचने प्रयोगः]

केशिनीः रश्मिवतीः (सुन्दरस्त्रियः) १.१५१.६. प्रशंसनीयकेशाः (स्त्रियः) १.१४०.८. [केशप्राति० मत्वर्थे इनिः । ततः स्त्रियां ङीप्]

केशिभिः केशा वहवो रश्मयो विद्यन्ते येषामग्निविद्युत्सूर्याणां तैः सह, प्र०—'क्लिशेरन् लो लोपश्च' उ० ५.३३. अनेन क्लिशधातोरन् लकारलोपश्च, ततो भूम्न्यर्थे इनिः, "केशी केशा रश्मयस्तैस्तद्वान् भवति, काशनाद् वा, प्रकाश-

नाद् वा, केशीदं ज्योतिरुच्यते, नि० १२.२५-२६, १.१६.४. ['केशिन्' इति व्याख्यातम्]

केशैः शिरस्थैर्बालैः २५.३. [केशिनः पदे व्याख्यातम्]

केसराणि विज्ञानानि १९.९१.

कोपयथ धूनय ५.५७.३. **कोपयः**=कोपयसि १.५४.४. [कुप क्रोधे (दिवा०) धातोर्णिचि लोडर्थे लट्]

कोम्या प्रशंसनीयानि (दिनानि) १.१७१.३.

कोशकारीम् या कोशं करोति ताम् (स्त्रियम्) ३०.१४. [कोशोपपदे डुकृञ् करणें (तना०) धातोरणि स्त्रियां ङीप्। कोशः कुष निष्कर्षे (क्रचा०) धातोरच् प्रत्ययः। षकारस्य शकारश्छान्दसः। कोशः कुष्णातेर्विकुषितो भवति। अयमपीतरः कोश एतस्मादेव संचय आचितमात्रो महान् भवति नि० ५.२६. कोशः मेघनाम निघं० १.१०.]

कोशम् धनाऽऽलयम् ५.५९.८. मेघम्, प्र०—कोश इति मेघनाम, निघं० १.१०, ५.५३.६. धनादीनां 'कोश इव जलेन पूर्णं मेघम् ५.८३.८. **कोशः**=धनसमुदायः ६.५४.३. मेघः १.११२.११. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

कोशयीः याः कोशान् यान्ति ता भूमीः ६.४७.२२. [कोशोपपदे या प्रापणे धातोरणि स्त्रियां ङीप्। कोश इति व्याख्यातम्]

कोशान् दशगुणधनपूर्णान् ६.४७.२३. **कोशाः**= यथा मेघाः १.८७.२. **कोशेन**=मेघेन १.१३०.२. [कोशकारीम् पदे द्रष्टव्यम्]

कोश्याभ्याम् कोश उदरे भवाभ्यां मांसपिण्डाभ्याम् ३९.८. [कोश इति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत्]

कौलालम् कुलाल-पुत्रम् ३०.७. [कुलालप्राति० अपत्यार्थेऽण्। कुलाल=कोलति संघातयतीति विग्रहे कुल संस्त्याने वन्धुषु च (भ्वा०) धातोः 'तमिविशिविडि०' उ० १.११८. सूत्रेण कालन् प्रत्ययः]

कौलितरम् अतिशयेन कुलीनम् (दासं=सेवकं जनम्) ४.३०.१४.

कौलीकान् पक्षिविशेषान् २४.२४.

कौशिकः! सर्वासां विद्यानामुपदेशे प्रकाशे च भवस्तत्सम्बुद्धौ! अर्थानां साधूपदेष्टर्वा (इन्द्र=सर्वानन्दस्वरूपेश्वर) प्र०—क्रोशतेः शब्दकर्मणः क्रंशतेर्वा स्यात्, प्रकाशयति कर्मणः, साधु विक्रोशयिताऽर्थानामिति वा नद्यः प्रत्यूचुः निरु० २.२५. अनेन कौशिकशब्दः उक्तार्थो गृह्यते १.१०.११. [कुशिकप्राति० भवार्थेऽण्। अथ यत्सुवर्णरजताभ्यां कुशीभ्यां परिगृहीत आसीत्। सास्य (आदित्यस्य चात्वालस्य) कौशिकता तै० १.५.१०.२.]

क्रतवः प्रजाः ७.४८.१. प्रज्ञाः १.५५.८. यज्ञाः प्रज्ञा वा, प्रशस्तक्रियावन्तः शिल्पयज्ञधियो वा (देवाः=विद्वांसः) १.८९.१. **क्रतवे**=प्रज्ञायै कर्मणे वा २२.३२. विज्ञानाय १८.२८. **क्रतुभिः**=प्रज्ञाकर्मभिः ६.७.४. श्रेष्ठैः कर्मभिः १.१००.१४. **क्रतुना**=प्रकाशकर्मणा २.१२.१. **क्रतुम्**= प्रज्ञां कर्माणि वा ५.३१.११. जीवस्य प्रज्ञानम् ६.९.५. धर्म्यां प्रज्ञाम् ७.३२.२६. क्रियाम् ७.५.६. सर्वं सङ्गतं संसाराख्यं यज्ञम् १.२.८. प्रज्ञातम् (सुशिक्षिताश्वम्) १५.४४. प्रज्ञां पुरुषार्थं वा १.८०.१५. प्रज्ञापनं कर्म वा १.६८.२. **क्रतुः**=करोति कार्याणि येन सः (इन्द्रः= अग्निर्विद्युत्सूर्यो वा, वरुणः=जलं वायुश्चन्द्रो वा); प्र०— कृञः कतुः, उ० १.७७. अनेन कृञ्धातोः कतु-प्रत्ययः १.१७.५. प्रज्ञा राज्यपालनाख्यो यज्ञो वा ४.२१.२. प्रज्ञाकर्मयुक्तः प्रज्ञाकर्मज्ञापको वा (सभाध्यक्षः) १.७७.३. प्राज्ञः (महाविद्वान्) ३.११.६. सब संसार का कर्त्ता (ईश्वर) आर्याभि० १.१९, ऋ० १.६.१९.५. कर्मपराक्रमः १.१७५.५. प्रशस्तकर्मप्रज्ञः (विद्वान्) १.६७.१. प्रज्ञामयः प्रज्ञाप्रदः प्रज्ञाहेतोर्वा (परमेश्वर ओषधिराजो वा) १.९१.५. **क्रतो!**=यः करोति जीवस्तत्सम्बुद्धौ ४०.१५. **क्रतोः**= प्रज्ञायाः, भा०—शास्त्रयोगजाया धियः १२.४५. [क्रतुं कर्म वा प्रज्ञां वा नि० २.२८. यः क्रियते यया करोति वेति विग्रहे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृञः कतुः' उ० १.७६. सूत्रेण कतुः प्रत्ययः। क्रतुः=कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. क्रतुना कर्मणा नि० १०.१०. क्रत्वे अपत्याय नि० ११.२७. स यदेव मनसाऽकामयतऽइदं मे स्यादिदं कुर्वीयेति स एव क्रतुः श० ४.१.४.१. क्रतुर्मनोजवः श० ३.३.४.७. हृत्सु ह्ययं क्रतुर्मनोजवः प्रविष्टः श० ३.३.४.७. क्रतुं दक्षं वरुण सं शिशाधि (ऋ० ८.४२.३) इति वीर्यं प्रज्ञानं वरुण सं शिशाधीति ऐ० १.१३. मित्र एव क्रतुः श० ४.१.४.१]

क्रतुप्राः ये प्रज्ञां पूरयन्ति ते (मेधाविजनाः) ४.३९.२. [क्रतूपपदे प्रा पूरणे (अदा०) धातोः कः। क्रतुपदं व्याख्यातम्]

क्रतुमत् भूयांसः क्रतवो भवन्ति यस्मिँस्तत् (ब्रह्म) ऋ० भू० ३०६. प्रशस्तप्रज्ञाकर्मयुक्तम् (मनः) २६.३. प्रशंसितप्रज्ञायुक्तम् (विद्वांसम्) २.२३.१५. [क्रतुपदं व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां मतुप्]

क्रतुमन्ता बहुप्रज्ञायुक्तौ (यानसाधकचालकौ) १.१८३.२. [क्रतु+मतुप् । 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः । क्रतुपदं व्याख्यातम्]

क्रतुमान् बहुशुभप्रज्ञः (होता=होतृजनः) ४.४१.१. प्रज्ञावान् (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६२.१२. [क्रतुपदं व्याख्यातम् । ततो भूम्नि प्रशंसायां वा मतुप्]

क्रतुविदम् क्रतुः प्रज्ञा तां विन्दति येन तम् (सोमम्=ओषधिगणम्) ३.४०.२. [क्रतूपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप् । क्रतुपदं व्याख्यातम्]

क्रतुविदा क्रतु प्रज्ञां विन्दति याभ्यां तौ (अध्यापकोपदेशकौ) २.३९.२. [क्रतूपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप् । 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः]

क्रतुस्थला प्रज्ञाकर्मज्ञापनोपदिक् १५.१५. [(अग्नेः) पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला चाप्सरसाविति दिक् चोपदिशा चेति स्माह माहित्थिः, सेना च तु ते समितिश्च श० ८.६.१.१६.]

क्रतूदक्षाभ्याम् प्रज्ञाबलाभ्याम् ७.२७. [क्रतुः प्रज्ञानाम निघं० ३.९. दक्षः बलनाम निघं० २.९. तयोः समासः]

क्रतूयन्ति प्रज्ञां कर्माणि चेच्छन्ति ४.२४.४. [क्रतुपदाद् आत्मन इच्छायां क्यच् । ततो लट्]

क्रत्वा श्रेष्ठया प्रज्ञयोत्तमेन कर्मणा वा ४.२१.१०. क्रतुना प्रज्ञया वा ३.२.३. **क्रत्वे**=प्रज्ञायै ३४.८. प्रज्ञानाय ६.४०.२. सद्विद्या-शुभकर्माऽनुभूतसंस्कारस्मृतये, प्र०—क्रतुरिति कर्मनामसु पठितम्, निघं० २.१, ३.५४. [क्रतुरिति प्रज्ञानाम निघं० ३.९. कर्मनाम निघं० २.१.]

क्रत्वामघासः क्रतुः प्रज्ञा कर्मैव मघं धनं येषान्ते (स्वामिनो जनाः) ५.३३.९. [क्रतु-मघपदयोः समासः । क्रतुरिति व्याख्यातम् । मघम्=धननाम निघं० २.१०.]

क्रन् कुर्य्युः २७.४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ् । अडभावो विकरणलुक् च छान्दसत्वात्]

क्रन् कुर्वन् (जातवेदाः=ईश्वरः) ७.५.७. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः शतृ । विकरणलुक्]

क्रन्त क्रमन्तु १.१४१.३. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावो विकरणलुक् च]

क्रन्तः क्रमकः (अग्निः=राजा) ४.२.१४. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्तः]

क्रन्द शब्दं कुरु २.४२.३. क्रन्दति, प्र०—अत्र व्यत्ययः ५.८३.७. **क्रन्दत्**=ह्वयति १.१७३.३. [क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्लोट् । विकरणस्य लुक्]

क्रन्दत् शब्दं कुर्वन् (अश्वः) १.३६.८. [क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

क्रन्दति श्रेष्ठानाह्वयति दुष्टान् रोदयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.१००.१३. **क्रन्दतु**=आह्वयतु ५.५८.३. **क्रन्दते**=आह्वानं रोदनं वा कुर्वते २२.७. [क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्लट्]

क्रन्दते आह्वानं रोदनं वा कुर्वते (जनाय) २२.७. [क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोश् शत्रन्ताच्चतुर्थी]

क्रन्दन् शब्दायमानः (अश्वः=तुरङ्गः) ३.२६.३. [क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

क्रन्दनुः आह्वाता (विद्वज्जनः) ७.४२.१. [क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽनुः प्रत्ययः]

क्रन्दय रोदयाऽऽह्वय वा २९.५६. [क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्लोट्]

क्रन्दसी क्रन्दमानौ विक्रोशन्तौ (राजाऽमात्यौ) ६.२५.४. गुणैः प्रशंसनीये (द्यावापृथिव्यौ) ३२.७. रोदनशब्दनिमित्ते (द्यावापृथिव्यौ) २.१२.८. [क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन् प्रत्ययः]

क्रपाय व्यवहारसिद्धये ८.५५.

क्रमणाय गमनाऽऽगमनाय ६.७०.३. **क्रमणे**=अनुक्रमेण गमने (शरीरात्मबले) १.१५५.५. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

क्रमताम् चालयति, अ०—क्रमयति, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.९. आक्रमण अर्थात् रीतिपूर्वक आरूढ हो सं० वि० २३०, ९.५.१. **क्रमते**=प्राप्नोति १.१४४.१. **क्रमध्वम्**=पराक्रमं कुरुत, भा०—पराक्रमध्वम् १७.६५. **क्रमस्व**=पुरुषार्थी भव ४.१८.११. गच्छ ५.३८. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'अनुपसर्गाद्वा' इत्यात्मनेपदम्]

क्रमः अवस्थाऽन्तरम् १२.५. व्यवहारः १२.५. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्भावे घञ् । 'नोदात्तोपदेश०' इति वृद्धिर्न भवति]

क्रमाम अनुक्रमेण प्राप्नुयाम ६.४९.१५. **क्रमिषम्**=उल्लङ्घेयम्, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् २.८. **क्रमिष्ट**=क्रमते १.१५५.४. **क्रमिष्टम्**=अतिक्रमणं कुरुतम् १.१८२.३. **क्रमीः**=क्रमस्व १.५१.६. **क्रमुः**=अवक्राम्यन्तु ७.३२.२७. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावश्च । अन्यत्र लुङ्]

क्रमुः क्रमिता (रसा=पृथिवी) ५.५३.९. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक उः प्रत्ययः]

क्रयस्य द्रव्यविक्रयस्य १९.१३. [डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये (क्र्या०) धातोः 'एरच्' इत्यच् भावे]

क्रवणस्य शब्दकर्त्तुः (विद्वज्जनस्य) ५.४४.९.

क्रविषः भक्षितस्य (पदार्थस्य) २५.३३. गन्तुः (अश्वस्य) २५.३२. क्रमितुं योग्यस्याऽन्नस्य १.१६२.१०. क्रमणशीलस्य (अश्वस्य), प्र०—अत्र क्रमधातोरौणादिक इसिः प्रत्ययो वर्णव्यत्ययेन मस्य वः १.१६२.९. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोरौणादिक इसिः प्रत्ययः । मस्य वकारादेशो वर्णव्यत्ययेन]

क्रव्यादम् यः क्रव्यं मांसमत्ति तम् (भा०—दुष्टाचारिणं जनम्) ३५.१९. क्रव्यं पक्वं मांसमत्ति स तम् (विद्युदाख्यमग्निम्) १.१७. [क्रव्योपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोः 'क्रव्ये च' अ० ३.२.६९. सूत्रेण विट् । क्रव्यादे क्रव्यमदते । क्रव्यं विकृताज्जायत इति नैरुक्ताः नि० ६.११. अथ येन (अग्निना) पुरुषं दहन्ति स क्रव्याद् श० १.२.१.४.]

क्राणस्य कुर्वाणस्य (सेनापतेः) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति शपो लुक् १.१३२.२.

क्राणा कुर्वन् (मित्रः=उत्तमविद्वान्) ५.१०.२. कुर्वाणौ (इन्द्रवायू=विद्युत्प्राणौ) १.१३९.१. कुर्वती (माता) ५.७.८. कर्त्ता (देवः=जीवात्मा) प्र०—अत्र कृञ्धातोर्बाहुलकादौणादिक आनच्प्रत्ययः 'सुपां सुलुग्०' इति आकारादेशश्च १.५८.३. **क्राणाः**=कर्त्तुं शीलाः (जनाः) १.१३४.२. पुरुषार्थं कुर्वाणाः (मनुष्याः) १.१३४.२. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्बाहु० औणा० आनच् । क्राणाः कुर्वाणाः नि० ४.१९.]

क्राणासः उत्तमानि कर्माणि कुर्वन्तः (सज्जनाः) १.१३४.२. [क्राणप्राति० जसोऽसुगागमः । क्राणेति पूर्वपदे द्रष्टव्यम्]

क्रान्तम् वृद्धम् (महद्यक्षं=ब्रह्म) ऋ० भू० ९०, १०.७.३८. क्रमाऽधिकरणम् (राजशिल्पिनम्) १०.१९. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोः क्तः । 'अनुनासिकस्य०' अ० ६.४.१५. सूत्रेणोपधाया दीर्घः । 'यस्य विभाषे' तीण्निषेधः]

क्रामाम अनुक्रमेण गच्छेम ३८.१९. **क्रामेम**=लङ्घयेम १.१२५.६. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'क्रमः परस्मैपदेषु' इति दीर्घः शिति परतः]

क्रियमाणम् वर्त्तमाने सम्पाद्यमानम् (ब्रह्म=बृहदन्नं धनं वा) ७.३५.१४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्मणि शानच्]

क्रियमाणा वर्त्तमानेन पुरुषार्थेन सिद्धानि (अन्नानि धनानि वा) ५.२९.१५. [डुकृञ् धातोः कर्मणि शानचि द्विवचनस्य 'सुपां सुलुगि' त्याकारः]

क्रियास्म कुर्याम ६.२३.६. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोराशिषि लिङ्]

क्रिवि कृणोति हिनस्ति येन तत् (नाम) प्र०—अत्र नकारस्थाने वर्णव्यत्ययेनेकारः १०.२०. **क्रिविम्**=कूपम्, प्र०—क्रिविरिति कूपनाम, निघं० ३.२३, २.१७.६. **क्रिविः**=प्रजापालनकर्त्ता (सूर्यवद् राजा) १.४४.४. [कृवि हिंसाकरणयोश्च (भ्वा०) धातोरौणादिक इः प्रत्ययः । इदितत्वान्नुमो नकारस्येकारे यणादेशे च रूपम् । क्रिविः कूपनाम निघं० ३.२३.]

क्रिविर्दती क्रिविर्हिंसनमेव दन्ता यस्याः सा (विद्युत्) १.१६६.६. [क्रिवि-दन्तपदयोः समासः । क्रिवि-व्याख्यातम् । क्रिविर्दती विकर्त्तनदन्ती नि० ६.३०.]

क्रीडन्तः धनुर्वेदविद्याशिक्षणाय युद्धाय शस्त्राऽभ्यासं कुर्वन्तः (जनाः) ४.४.९. **क्रीडन्तौ**=सद्धर्मक्रियां कुर्वन्तौ (स्त्रीपुरुषौ) ऋ० भू० २०९. क्रीड़ा करते हुए (स्त्रीपुरुषौ) सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१.२२. [क्रीडृ विहारे (भ्वा०) धातोः शत्रन्ताज्जस्]

क्रीडम् क्रीडन्ति यस्मिँस्तत् (मारुतं=मरुतां समूहः) प्र०—अत्र 'क्रीडृ विहारे, इत्यस्मात् 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः १.३७.१. क्रीडन्ति येन तत् (मारुतं=मरुतां समूहः) १.३७.५. [क्रीडृ विहारे (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानमि' ति कः]

क्रीडयः क्रीडन्तः (धूतयः=वीरजनाः) १.८७.३. [क्रीडृ विहारे (भ्वा०) धातोरौणादिक इः प्रत्ययः । ततो जस्]

क्रीडा विहारः १८.५. [क्रीडृ विहारे (भ्वा०) धातोः स्त्रियाम् 'गुरोश्च हलः' इत्यकारः प्रत्ययः]

क्रीडाः क्रीडकाः (विद्वांसो जनाः) १.१६६.२. [क्रीडृ विहारे (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि]

क्रीडिभ्यः प्रशंसितक्रीडेभ्यः (मरुद्भ्यः=मनुष्येभ्यः) २४.१६. **क्रीडी**=अवश्यं क्रीडितुं शीलः (भा०—गृहस्थो जनः) १७.८५. [क्रीडृ विहारे (भ्वा०) धातोस् ताच्छील्ये णिनिः । औणादिको वा इः प्रत्ययः कर्त्तरि]

क्रीणामि गृह्णामि ४.२६. **क्रीणावहै**=व्यवहारयोग्यानि वस्तूनि दद्याव गृह्णीयाव वा ३.४९. [डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये (क्र्या०) धातोर्लट्]

क्रीतस्य गृहीतस्य (सोमस्य=सोमलताद्योषधिसमूहस्य) १९.१५. **क्रीतः**=व्यवहृतः (विष्णुः=व्याप्तो धनञ्जयः) ८.५५. [डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये (क्र्या०) धातोः क्तः]

क्रीयसे क्रीयते ४.२६. [डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये (क्र्या०) धातोः कर्मणि लट्]

क्रुङ् यथा पक्षी अल्पमल्पं पिबति तथा १९.७३. [क्रुञ्च कौटिल्याल्पीभावयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण क्विन्]

क्रुञ्चान् सारसान् २४.२२. **क्रुञ्चौ**=पक्षिविशेषौ २५.६. [क्रुञ्च कौटिल्याल्पीभावयोः (भ्वा०) धातोरच्]

क्रुद्धम् क्रोधयुक्तम् (जनम्) ४.१५.३. [क्रुध कोपे (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

क्रुध्मी क्रोधशीलानि (मनांसि=अन्तःकरणानि) ७.५६.८.

क्रुमुः क्रमिता (रसा=पृथिवी) ५.५३.९. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोरौणादिक उः प्रत्ययः। उपधाया उकारादेशो वर्णव्यत्ययेन]

क्रूरम् दुश्चरित्रम् (जनम्) ६.१५. **क्रूरस्य**=कृन्तन्त्यङ्गानि यस्मिन् तस्य युद्धस्य, 'प्र०—कृतेश्छः क्रू च' उ० २.२१. अनेन कृन्ततेरक् प्रत्ययः क्रू इत्यादेशश्च १.२८. [कृती छेदने (रुधा०) धातोः 'कृतेश्छः क्रू च' उ० २.२१. सूत्रेण रक् प्रत्ययो धातोश्च क्रूरादेशश्च। संग्रामो वै क्रूरम् श० १.२.५.१९. क्रूरमित्यप्यस्य (कृन्ततेः) भवति नि० ६.२२.]

क्रोडः निमज्जनम् २५.८.

क्रोधाय वाह्यकोपाय ३०.१४. [क्रुध कोपे (दिवा०) धातोर्भावे घञ्]

क्रोशन्ति रुदन्ति ४.३८.५. [क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्लट्]

क्रोशाय रोदनाय ३०.१९. [क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्घञ्]

क्रोष्टा शृगालः २४.३२. [क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोः 'सितनिगमि०' उ० १.६९. सूत्रेण तुन् प्रत्ययः। 'तृज्वत् क्रोष्टुः' अ० ७.१.९५. सूत्रेण तृज्वद्भावः]

क्लथन् हिंसां कुर्वन् (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. [क्लथ हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

क्लीबम् नपुंसकम् (जनम्) ३०.५. **क्लीबे**=स्वसामर्थ्याय ४०.१५. [क्लीबृ अधाष्टर्चे (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। अन्यत्र क्विप्]

क्लृप्तम् समर्थितम् (कर्म) १८.११. [कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोः क्तः। 'कृपो रोलः' इति रेफभागस्य लकारः]

क्लृप्तिः समर्थोहा १८.११. [कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। रेफभागस्य लकारः]

क्लोमभिः क्लेदनैः २५.८. **क्लोमानम्**=कण्ठनाडिकाम् १९.८५.

क्लोशम् क्रोशम् ६.४६.१४. [क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्घञ्। रेफस्य लकारः]

क्व कस्मिन् कुत्र वा १.३४.९. [किमः सर्वनाम्नः सप्तम्यन्तात् 'किमोऽत्' अ० ५.१.१२. सूत्रेणात्प्रत्ययः। 'क्वाती' ति 'कु' इत्यादेशः]

क्वयिः पक्षिविशेषः २४.३९.

क्वो कुत्र, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेनाऽकारस्थान ओकारः १.३८.३.

क्षत्ता छेदकः (अग्निः=विद्वान्) ६.१३.२. क्षत्तारम्=क्षतात्तारकं धर्मात्मानम् (जनम्) ३०.१३. [क्षद संवृताविति सौत्रो धातुः, ततः 'तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः०' उ० २.९४. सूत्रेण तृच्]

क्षत्तृभ्यः शूद्रात् क्षत्रियायां जातेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२६. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

क्षत्रपतिः राज्यस्य पालकः (राजा) १०.१७. [क्षत्र-पति-पदयोः समासः। क्षत्रपदं द्रष्टव्यं 'क्षत्रम् इति पदे]

क्षत्रभृत् यः क्षत्रं राज्यं बिभर्त्ति सः, (भा०—प्रजा पालको राजा) २७.७. [क्षत्रोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (भ्वा०) धातोः क्विप्। क्षत्रपदं द्रष्टव्यं 'क्षत्रमि' ति पदे]

क्षत्रम् राज्यं, क्षण्यते हिंस्यते नश्यते पदार्थो येन स क्षतो घातादिस्ततस्त्रायते रक्षतीति क्षत्रः क्षत्रियादिवीरस्तम् ५.२७. धनम् ५.६४.६. दुष्टनाशकं कुलम् १८.४०. विद्यावर्द्धकं राजकुलम् १८.४१. चक्रवर्त्तिनं राजानम् १८.४२. धनुर्वेदम् १८.४३. राज्यं, धनुर्वेदविद्या, क्षत्रियकुलम् ३२.१६. राजन्यकुलम्, भा०—सर्वं राज्यम् १८.३८. शूरवीरकुलम्, भा०—शौर्य्यम् १८.३९. क्षत्रियाणां राज्यम् १०.४. क्षात्रधर्मप्राप्तं राजन्यकुलम् १४.२४. क्षत्रियकुलमर्था-

द्विद्याशौर्यादिगुणोपेतम् २०.२५. क्षताद्रक्षकम् (उरः= हृदयम्) २०.७. क्षत्रियकुलं राष्ट्रं वा ५.२७.६. क्षत्रियोपलक्षणं, विद्याचातुर्यशौर्यधैर्यवीर-पुरुषाऽन्वितम् (राष्ट्रं = राज्यम्) ऋ० भू० १०४. राज्यं क्षत्रियवर्णञ्च ऋ० भू० १५२. राज्यं धनुर्वेदविदं क्षत्रियं वा ६.३. धनं राज्यं वा २१.२८. **क्षत्रस्य**=राजन्यस्य १०.२६. राजव्यवहारस्य ऋ० भू० २१६. राजकुलस्य २०.१. क्षत्रियस्य १०.८. **क्षत्राणाम्**=क्षत्रकुलोद्गतानाम् १०.१७. **क्षत्राणि**= राज्योद्भवानि धनानि, प्र०—क्षत्रमिति धननाम, निघं० २.१, ४.४.८. **क्षत्राय**=राजधर्मनिष्ठाय (भा०—राजकुलाय) १८.४४. राजधर्माय ऋ० भू० २२२. राज्याय पालनाय वा ३०.५. साम्राज्याय ऋ० भू० १५२. अखण्ड चक्रवर्त्ति राज्य के लिए, आर्याभि० २.३१, ३८.१४. **क्षत्रे**=क्षताद्रक्षके क्षत्रियकुले २०.१०. **क्षत्रेण**=राज्येन धनेन वा २७.५. [क्षतोपपदे त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' सूत्रेण उः प्रत्ययः। पूर्वपदान्त्याकारस्य च लोपः। क्षतः=क्षणु हिंसायाम् (तना०) धातोः क्तः प्रत्ययः। क्षत्रम् उदकनाम निघं० १.१२. धननाम निघं० २.१०. प्राणो हि वै क्षत्रं त्रायते हैनं प्राणः क्षणितोः प्रक्षत्रमात्रमाप्नोति क्षत्रस्य सायुज्यं सलोकतां जयति य एवं वेद श० १४.८.१४.४. क्षत्रं राजन्यः ऐ० ८.६. श० ५.१.५.३. १३.१.५.३. क्षत्रस्य वाऽएतद्रूपं यद्राजन्यः श० १३.१.५.३. ओजः क्षत्रं वीर्यं राजन्यः ऐ० ८.२, ३.४. क्षत्रं हि राष्ट्रम् ऐ० ७.२२. आदित्यो, वै दैवं क्षत्रमादित्य एषां भूतानामधिपतिः ऐ० ७.२०. क्षत्रं वा एतदारण्यकानां पशूनां यद्व्याघ्रः ऐ० ८.६. क्षत्रं वा एतद् वनस्पतीनां यन्न्यग्रोधः ऐ० ७.३१.८.१६. क्षत्रं वा एतदोषधीनां यद् व्रीहयः ऐ० ८.१६. क्षत्रं वा एतदोषधीनां यद्दूर्वा ऐ० ८.८. क्षत्रं वै पयः श० १२.७.३.८. क्षत्रस्यैतद्रूपं यद्धिरण्यम् श० १३.२.२.१७. ब्राह्मणो वै रूपमहः क्षत्रस्य रात्रिः तै० ३.९.१४.३. क्षत्रस्य वा ऽएतद्रूपं यद्रात्रिः श० १३.१.५.५. क्षत्रं पञ्चदशः (स्तोमः) ऐ० ८.४. क्षत्रं हि ग्रीष्मः श० २.१.३.५. अयं वा ऽअग्निर्ब्रह्म च क्षत्रं च श० ६.६.३.१५. ब्रह्म वा अग्निः क्षत्रं सोमः कौ० ९.५. क्षत्रं सोमः ऐ० २.३८. कौ० ७.१०. क्षत्रं वै सोमः श० ३.४.१.१०, ३.९.३.३७, ५.३.५.८. प्रजापतिर्वै क्षत्रम् श० ८.२.३.११. मित्रः क्षत्रं क्षत्रपतिः तै० २.५.७.४. श० ११.४.३.११. क्षत्रं वरुणः कौ० ७.१०, १२.८. श० ४.१.४.१. गो० उ० ६.७. क्षत्रं वै वरुणः श० २.५.२.६. क्षत्रं वाऽइन्द्रः कौ० १२.८. तै० ३.९.१६.३. श० २.५.२.२७, ३.९.१.१६, ४.३.३.६. क्षत्रमिन्द्रः श० २.५.४.८. क्षत्रमिन्द्रः क्षत्रियेषु ह पशवोऽभविष्यन् श० ४.४.१.१८. तस्मादु क्षत्रियो भूयिष्ठं हि पशूनामीशते गो० उ० ६.७. क्षत्रं वै वैश्वानरः श० ६.६.१.७, ९.३.१.१३. यान्येतानि देवत्रा क्षत्राणीन्द्रो वरुणः सोमो रुद्रः पर्जन्यो यमो मृत्युरीशान इति तस्मात् क्षत्रात् परं नास्ति तस्माद् ब्राह्मणः क्षत्रियमधस्तादुपास्ते राजसूये श० १४.४.२.२३. क्षत्रं वै स्विष्टकृत् श० १२.८.३.३९. क्षत्रं त्रिष्टुप् कौ० ३.५. श० ३.४.१.१०. ब्रह्म हि पूर्वं क्षत्रात् तां० ११.१.२. सैषा क्षत्रस्य योनिर्यद् ब्रह्म श० १४.४.२.२३. ब्रह्मणः क्षत्रं निर्मितम् तै० २.८.८.९. तद् यत्र ब्रह्मणः क्षत्रं वशमेति तद् राष्ट्रं समृद्धं तद्वीरवदाहास्मिन् वीरो जायते ऐ० ८.९. अभिगन्तैव ब्रह्म कर्त्ता क्षत्रियः श० ४.१.४.१. एतद्ध त्वेवानवक्लृप्तं यत्क्षत्रियोऽब्राह्मणो भवति तस्मादु क्षत्रियेण कर्म करिष्यमाणेनोपसर्त्तव्य एव ब्राह्मणः श० ४.१.४.६. क्षत्रं वै होता ऐ० ६.२१. गौ० उ० ६.३. क्षत्रं मध्यन्दिनं सवनम् कौ० १६.४. भुव इति (प्रजापतिः) क्षत्रम् (अजनयत) श० २.१.४.१२. यजुर्वेदं क्षत्रियस्याहुर्योनिम् तै० ३.१२.९.२. क्षत्रं वै साम श० १२.८.३.२३. गौ० उ० ५.७. क्षत्रं वै स्तोत्रम् ष० १.४. क्षत्रं वै लोकम्पृणा (इष्टका) विश इमा इतरा इष्टकाः श० ८.७.२.२. क्षत्रं वै लोकम्पृणा (इष्टका) श० ९.४.३.५. क्षत्रमुपांशुयाजः श० ११.२.७.१५. क्षत्रं वै प्रस्तरः श० १३.४.१०. यस्तान्तवं वस्ते क्षत्रं वर्द्धते न ब्रह्म गो० पू० २.४. ब्रह्म वै पौर्णमासी क्षत्रममावस्या कौ० ४.८. एतानि क्षत्रस्यायुधानि यदश्वरथः कवच इषुधन्व ऐ० ७.१९. अन्नं वै क्षत्रियस्य विट् श० ३.३.२.८. तस्मान्न कदाचन ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च वैश्यं च शूद्रं च पश्चादन्वितः श० ६.४.४.१३. तस्मात् क्षत्रियं प्रथमं यन्तमितरे त्रयो वर्णाः पश्चादनुयन्ति श० ६.४.४.१३. तस्मादु क्षत्रियमायन्तमिमाः प्रजा विशः प्रत्यवरोहन्ति तमधस्तादुपासते श० ३.९.३.७. क्षत्रियोऽजनि विश्वस्य भूतस्याधिपतिरजनि विशामत्ताऽजन्यमित्राणां हन्ताऽजनि ब्राह्मणानां गोप्ता ऽजनीति ऐ० ८.१७. एतद्वै परार्ध्यमन्नाद्यं यत् क्षत्रियः कौ० २५.१५. निरुक्तमिव हि क्षत्रम् श० ९.३.१.१५. अपरिमितो वै क्षत्रियः ऐ० ८.२०. क्षत्रं बृहत् (साम) ऐ० ८.१. यत्सुरा भवति क्षत्ररूपं तदपो अन्नस्य रसः ऐ० ८.८. अथास्य (क्षत्रियस्य) एष भक्षो न्यग्रोधस्यावरोधाश्च फलानि चौदुम्बराण्याश्वत्थानि प्लाक्षाण्यभिषुणुयात्तानि भक्षयेत्सोऽस्य स्वो भक्षः ऐ० ७.३०. स (क्षत्रियः) ह दीक्षमाण एव ब्राह्मणतामभ्युपैति ऐ० ७.२३.]

क्षत्रवनिः क्षत्रं सम्भाजिनं वनति तम्, भा० यः क्षत्रियैर्वन्यते संसेव्यते तम् (परमेश्वरम्), प्र०—अत्राऽमो लुक् १.१७. राज्यं वनयति तम्, भा०--राज्यवर्धनम् (ईश्वरं भौतिकमग्निं वा) १.१८. राजधर्मप्रकाशकस्य विभाजितारं, राजगुणानां दृष्टान्तेन प्रकाशयितारं वा (परमेश्वरं भौतिकमग्नि वा) १.१८. क्षत्रस्य राज्यस्य क्षत्रियाणां वा संविभाजकम् (सभाध्यक्षम्) ६.३. सर्वमनुष्यार्थं ब्रह्मणो वेदस्य विभाजितारं, ब्रह्माण्डस्य मूर्त्तद्रव्यस्य प्रकाशकं वा (परमेश्वरं भौतिकमग्नि वा) १.१८. वलविद्यासम्भाजितारम् (सभाध्यक्षम्) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेर्लुक् ५.२७. क्षत्रियाणां क्षत्रस्य राज्यस्य वा संविभाजकम् (सभाध्यक्षम्) ६.३. [क्षत्रोपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिक इन् प्रत्ययः]

क्षत्रवनिः यया क्षत्रं राज्यं धनुर्विद्यां शूरवीरान् पुरुषान्वा वनन्ति सम्भजन्ति सा (स्वाहा=वाक्) ५.१२. [क्षत्रोपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिक इन् प्रत्ययः]

क्षत्रश्रीः राज्यलक्ष्मीः ६.२६.८. [क्षत्र-श्रीपदयोः समासः। श्रीः=श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'क्विब्वचिप्रच्छि०' उ० २.५७. सूत्रेण क्विप् दीर्घश्च]

क्षत्रियस्य क्षत्राऽपत्यस्य राज्ञः ५.६९.१. क्षात्रधर्मयुक्तस्य (वाजस्य=वेगस्य विज्ञानस्य वा ४.१२.३. [क्षत्रं व्याख्यातम्। ततोऽपत्यार्थे 'क्षत्राद् घः' अ० ४.१.१३८. सूत्रेण घः प्रत्ययः]

क्षत्रिया या क्षत्रस्याऽपत्यवद्वर्त्तते (विद्याविद्युद्वा) ४.१९. [क्षत्रियप्राति० स्त्रियां टाप्। क्षत्रियपदं व्याख्यातम्]

क्षत्रियाय क्षत्रस्य पुत्राय १०.४. [व्याख्यातम्]

क्षद से अविद्या-रोगाऽन्धकारविनाशकाय बलाय १.२५.१७.

क्षद्मेव उदकमिव १.१३०.४. [क्षद्मेत्युदकनाम निघं० १.१२. अन्ननाम निघं० २.७.]

क्षपः रात्रीः ६.५२.१५. क्षान्ता रात्रीः १.७०.४. **क्षपाम्**=रात्रिम् ३.४९.४. [क्षपः उदकनाम निघं० १.१२. क्षपा रात्रिनाम निघं० १.७. रात्रयः क्षपाः ऐ० १.१३.]

क्षपावान् क्षपाः प्रशस्ता रात्रयो विद्यन्ते यस्मिन् यस्य वा सः (जगदीश्वरो जीवो वा) १.७०.३. बह्वयः क्षपा रात्रयो विद्यन्ते यस्मिन् सः (अग्निः=पावकः) ७.१०.५. क्षपा रात्रिः सम्बन्धिनी यस्य स चन्द्रः ३.५५.१७. [क्षपा प्राति० प्रशंसायां मतुप्। क्षपा रात्रिनाम निघं० १.७.]

क्षमा सर्वसहनयुक्ता पृथिवी १.१०३.१. [क्षमा पृथिवी नाम निघं० १.१. क्षमूष् सहने (भ्वा०) धातोः 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्' इत्यङ्]

क्षमाचराः ये क्षमायां पृथिव्यां चरन्ति, भा०—ये वायवो भूमेरन्तरिक्षमन्तरिक्षाद् भूमिं च गच्छन्त्यागच्छन्ति, तत्र ये तेजोभूम्यादितत्त्वानामवयवाश्चरन्ति ते १६.५७. [क्षमेति व्याख्यातम्। तदुपपदे चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'चरेष्टः' इति टः प्रत्ययः]

क्षमाय रक्षणाय ९.२२.

क्षमि क्षाम्यन्ति सहन्ते जना यस्मिन् व्यवहारे तस्मिन् स्थित्वा, प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इत्यधिकरणे क्विप् 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति 'अनुनासिकस्य क्विब्झलो०' इति दीर्घो न भवति १.२५.१८. पृथिव्याम् ३.८.७. [क्षमा पृथिवीनाम निघं० १.१. क्षमूष् सहने (भ्वा०) धातोरधिकरणे क्विप्]

क्षमेत सहेत २.३३.१. [क्षमूष् सहने (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

क्षम्यस्य क्षन्तुमर्हस्य (जन्मनः=प्रादुर्भावस्य) ७.४६.२. क्षमायां साधोः (राज्ञः) २.१४.११. [क्षमाप्राति० अर्हत्यर्थे तत्र साध्वर्थे वा यत् प्रत्ययः। क्षमां=क्षमूष् सहने (भ्वा०)+अङ्]

क्षयणाय निवासे वर्त्तमानाय (जनाय) १६.४३. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोर्ल्युट्]

क्षयत् निवसेत् ६.२३.१०. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोर्लिङर्थे लेट्]

क्षयतः निवसतः (राज्ञः=नृपान्) ६.५१.४. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन शप्]

क्षयति निवसति निवासयति वा ५.४२.११. प्राप्नुयात् प्र०—लेट प्रयोगोऽयम् १.५१.१४. **क्षयथ**=निवसथ ६.५१.७. **क्षयथः**=निवसथः १.११२.३. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोर्लेट्। व्यत्ययेन शप्]

क्षयद्वीर ! शूरवीर-निवासक (रुद्र=न्यायाधीश) १.११४.१०. **क्षयद्वीरम्**=क्षयतां शत्रुहन्तॄणां मध्ये प्रशंसायुक्तम् (पुत्रम्) १.१२५.३. क्षयन्तः शत्रूणां नाशकर्त्तारो वीरा यस्य सेनाध्यक्षस्य तम् १.१०६.४. **क्षयद्वीरस्य**=क्षयन्तो निवासिता वीरा येन तस्य (रुद्रस्य=सभाध्यक्षस्य) १.११४.३. **क्षयद्वीराय**=क्षयन्तो विनाशिताः

शत्रुसेनारथा वीरा येन तस्मै (रुद्राय=सेनापतये) १.११४.२. क्षयन्तो दोषनाशका वीरा यस्य तस्मै (कपर्दिने=ब्रह्मचारिणे) १.११४.१. क्षयन्तो दुष्टनाशका वीरा यस्य तस्मै (सेनापतये) १६.४८. शत्रुओं के वीरों का क्षय करने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.४५. ऋ० १.८.५.२. [क्षयत्-वीरपदयोः समासः। क्षयत्=क्षि क्षये (भ्वा०) धातोः शतृ]

क्षयन् निवासयन् (अग्निः=सूर्यो विद्युद्वा) ३.२५.३. **क्षयन्तम्**=निवसन्तम् (प्रचेतसं=प्रकृतप्रज्ञं पुरुषम्) १२.११०. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन शप्]

क्षयम् निवासस्थानम् ३.३.२. निवासम् ३.११.७. निवासितारम् (अग्निं=पावकम्) ३.२.१३. निवासयितुम् (रयिं=श्रियम्) ६.४६.१५. निवासं प्राप्तव्यं वा १.१३२.३. गृहम् ६.२.५. **क्षयः**=निवासार्थः प्रासादः १.१४४.७. निवासहेतवः (कालविभागाः) २.२.२. **क्षयान्**=निवासान् ४.५४.५. **क्षयाय**=क्षत्रियाणां पालनाय ९.४०. विज्ञानोन्नतये ५.४१. निवासार्थाय गृहाय विज्ञानादिप्राप्तये वा ५.३८. **क्षये**=चक्षुषि १३.५३. निवसनीये गृहे ३.२१. **क्षयौ**=निवसन्तौ (स्त्रीपुरुषौ) २.२७.१५. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' ति घः प्रत्ययः। 'क्षयो निवासे' अ० ६.१.२०१. इत्याद्युदात्तत्वम्। भावे 'एरचि' इत्यच्। 'कृतो बहुलमि' ति कर्त्तर्यपि। अन्तो वै क्षयः कौ० ८.१. क्षयो वै देवाः गो० उ० २.१३.]

क्षयय क्षायय निवासय, पराजयं प्रापय वा ३.४६.२. [क्षि निवासगत्योः (तु०) धातोर्णिचि लोट्]

क्षयसि निवससि ४.५.११. निवससि निवासयसि वा ६.१३.२. **क्षयाम**=निवासं करवाम १.१११.२. [क्षि निवासगत्योः (तु०) धातोर्लेट्। क्षयति ऐश्वर्यकर्मा निघं० २.२१.]

क्षरति वर्षति ५.५६.२. [क्षर सञ्चलने (भ्वा०) धातोर्लट्]

क्षरध्यै क्षरितुं सञ्चलितुम् १.६३.८. [क्षर सञ्चलने (भ्वा०) धातोस्तुमर्थेऽध्यै प्रत्ययः]

क्षरन् क्षरन्ति १.११६.९. **क्षरन्तः**=कम्पन्तः २.११.१. **क्षरन्ति**=वर्षन्ति १३.२७. संवर्षन्ति १.७२.१०. वर्षन्तु १.१२५.४. [क्षरन् संचलने (भ्वा०) धातोर्लङ् अडभावः। शतृप्रत्ययान्तं वा रूपम्]

क्षरन्ती प्राप्नुवन्ती (गीः=वाणी) १.१८१.७. **क्षरन्तीम्**=प्रापयन्तीम् (महीं=पृथिवीम्) ४.१९.६. **क्षरन्तीः**=वर्षन्त्यः (आपः=जलानि) ७.३४.२. [क्षर सञ्चलने (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्। धातूनामनेकार्थकत्वात् प्रापणेऽर्थेऽपि]

क्षरसि वर्षसि १.२७.६. [क्षर सञ्चलने (भ्वा०) धातोर्लट्]

क्षातिः क्षयः ६.६.५.

क्षाम् व्यापकत्वान्निवासहेतुम् (अग्निं=परमेश्वरम्) १.९६.७. भूमिम्, प्र०—क्षेति भूमिनाम, निघं० १.१, ७.१८.६. भूमिं भूमिराज्यमात्रं वा १.१८९.३. [क्षाः पृथिवीनाम निघं० १.१. क्षा क्षियतेर्निवासकर्मणः नि० २.६.]

क्षाम पृथिवीम्, प्र०—क्षामेति पृथिवीनाम निघं० १.१, 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तिलोपः १२.२१. क्षान्तम् (बुध्नम्=अन्तरिक्षम्) ४.१९.४. **क्षामन्**=पृथिव्याम्, ६.१५.५. क्षामनि राज्यभूमौ १७.१०. **क्षामा**=पृथिवीम् प्र०—अत्राऽन्येषामपि०, इत्युपधादीर्घः 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तिलोपः १२.२१. निवासभूमिम्, प्र०—अत्र विभक्तेर्लुक् १९.६९. **क्षामेव**=निवासाऽधिकरणां पृथिवीम् २.३९.७. [क्षामः क्षामा पृथिव्या नाम्नी निघं० १.१.]

क्षासु भूमिषु, प्र०—क्षेति पृथिवीनाम निघं० १.१, १.१२७.१०. **क्षाः**=पृथिवी १.१३३.६. भूमयः ४.१७.१. [क्षाः पृथिवी नाम निघं० १.१.]

क्षिणन्ति हिंसन्ति ६.७५.७. **क्षिणोमि**=हिनस्मि ११.८२. [क्षिणु हिंसायाम् (तना०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन शप्]

क्षितयः मनुष्याः, प्र०—क्षितय इति मनुष्यनाम, निघं० २.३, १.१००.७. गृहस्था मनुष्याः ५.१.१०. निवासवन्तो मनुष्याः ६.१.५. हे शूरवीर मनुष्यो ! आर्याभि० १.४१, ऋ० १.७.९.७. क्षियं क्षयं प्राप्नुवन्ति निवसन्ति ये ते मनुष्याः, प्र०—'क्षि निवासगत्योः' इत्यर्थयोर्वर्त्तमानात् धातोः 'क्तिच्क्तौ च सञ्ज्ञायाम्' अ० ३.३.१७४. अनेन क्तिच् १.३६.३. **क्षितिभ्यः**=भूमिस्थदेशेभ्यः ३.१३.४. **क्षितिषु**=पृथिवीषु १.७३.४. **क्षितिः**=क्षियन्ति निवसन्ति, राज्यरत्नानि प्राप्नुवन्ति यस्यां सा (पृथिवी) १.६५.३. भूमिः १.१५१.४. **क्षितीनाम्**=पृथिवीलोकानां मध्ये, प्र०—क्षितिरिति पृथिवीनामसु पठितम्, निघं० १.१, १.७.९. राजसम्बन्धिनीनां भूमीनां मध्ये ६.४६.७. स्वराज्ये निवसन्तीनाम् (विशां=प्रजानाम्) ३.३४.२. **क्षितीः**=

मनुष्यान् ३.१४.४. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः संज्ञायाम् 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' इति क्तिच् । क्षितिः पृथिवीनाम निघं० १.१. क्षितयः=मनुष्यनाम निघं० २.३.]

क्षिप दूरे गमय २.३०.५. [क्षिप प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लोट्]

क्षिपणिम् दूरे क्षिपन्ति शत्रून् यया तां सेनाम् ९.१४. शीघ्रकारिणम् (अश्वारोहिजनम्) ४.४०.४. [क्षिप प्रेरणे (तुदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽनिः प्रत्ययः किच्च । क्षिपणिम् क्षेपणमनु नि० २.२८.]

क्षिपणोः हिंसकाद् भयात्, भा०—व्याधात् १७.९४. प्रेषकात् (व्याधमनुष्यात्) ४.५८.६. [क्षिप प्रेरणे (तुदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽनुः प्रत्ययः किच्च]

क्षिपत् प्रेरयति ४.२७.३. [क्षिप प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लेट्]

क्षिपः प्रक्षेपिका अङ्गुलयः ३.२३.३. क्षिपन्ति प्रेरयन्ति याभिस्ता अङ्गुलयः, प्र०—क्षिप इत्यङ्गुलिनाम निघं० २.५, ५.४३.४.

क्षिप्ता प्रेरिता (सेना) १.१२९.८. [क्षिप् प्रेरणे (तुदा०) धातोः क्तः]

क्षिप्रश्येनाय शीघ्रगामिने श्येनायेव वर्त्तमानाय (जनाय) २४.३०. [क्षिप्र-श्येनयोः समासः। क्षिप्रं क्षिप्रनाम निघं० २.१५. संक्षिप्तो विकर्षः नि० ३.९. यद्वै क्षिप्रं तत्तूर्तम् श० ६.३.२.२. श्येनः=श्यायते गच्छतीति विग्रहे श्यैङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'श्यास्त्याहृञविभ्य इनच्' उ० २.४६. सूत्रेण इनच्]

क्षिप्रेण क्षिप्रकारिणा (धन्वना=धनुषा) २.२४.८. [क्षिप्रं व्याख्यातम्]

क्षिप्रेव क्षिप्राणि प्रेरितानीव (दुःखानि) ४.८.८. [क्षिप्र प्रेरणे (तुदा०) धातोरौणादिको रक् प्रत्ययः । क्षिप्र-इवपदयोः समासः]

क्षिप्रेषवे क्षिप्राः शीघ्रगामिन इषवः शस्त्राऽस्त्राणि यस्य तस्मै (रुद्राय=शूरवीरजनाय) ७.४६.१. [क्षिप्र-इषुपदयोः समासः । इषुः=ईषति गच्छति हिनस्ति वा शत्रूनिति विग्रहे ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोः 'ईषेः किच्च' उ० १.१३. सूत्रेण उः प्रत्ययः । धातोरीकारस्येकारादेशः]

क्षियतः निवसतः (विद्वज्जनस्य) १.१२६.१ **क्षियन्तम्**=गच्छन्तम्(वृत्रं=मेघम्) १८.६९. **क्षियन्तः**=निवसन्तः (जनाः) ४.२५.८. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः शतृ । क्षियति गतिकर्मा निघं० २.१४. क्षियन्तं निवसन्तम् नि० १०.१२.]

क्षीयते नश्यति २.९.५. **क्षीयन्ते**=क्षीणानि भवन्ति १.६२.१२. [क्षि क्षये (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

क्षीरम् दुग्धम् १९.७३. **क्षीरेण**=जलेन, प्र०—क्षीरमित्युदकनाम, निघं० १.१२, १.१०४.३. [क्षीरमित्युदकनाम निघं० १.१२. क्षीरं क्षरतेः घसेर्वेरो नामकरणः निघं० २.५.]

क्षीरश्रीः यः क्षीरादीनि शृणाति, (पाचको जनः) ८.५७. [क्षीरोपपदे श्रा पाके (भ्वा०) शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्वा क्विपि बाहुलकाद्रूपसिद्धिः]

क्षुत् बुभुक्षा १७.१. [क्षुध बुभुक्षायाम् (दिवा०) धातोः सम्पदादित्वात् स्त्रियां क्विप्]

क्षुद्रपृषती क्षुद्राणि पृषन्ति यस्याः सा (पशुजातिः) २४.२. [क्षुद्र-पृषत्पदयोः समासः । क्षुद्रः=क्षुनत्ति संपिनष्टि यः स इति विग्रहे क्षुदिर् संपेषणे (रुधा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक् प्रत्ययः । पृषत्=पर्षति सिञ्चति हिनस्ति वेति विग्रहे पृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'वर्त्तमाने पृषद्बृहद्०' उ० २.८४. सूत्रेणातिः प्रत्ययः शतृवच्च]

क्षुद्रमिव यथा क्षुद्राऽऽशयम् (निन्दकं चौरम्) १.१२९.६. [क्षुद्र-इवपदयोः समासः । क्षुद्रपदं व्याख्यातम्]

क्षुद्राः नकुलपर्यन्ताः (जन्तवः) १४.३०. [क्षुद्रपदं व्याख्यातम् । क्षुद्रजन्तुरनस्थि स्यादथवा क्षुद्र एव यः । शतं वा प्रसृतौ येषां केचिदानकुलादपि । महाभाष्ये २.४.१.८]

क्षुधे बुभुक्षायै ७.१.१९. [क्षुध बुभुक्षायाम् (दिवा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

क्षुध्यद्भ्यः बुभुक्षितेभ्यः (प्रजाजनेभ्यः) १.१०४.७. [क्षुध बुभुक्षायाम् (दिवा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

क्षुभा सञ्चलनेन ५.४१.१३. [क्षुभ सञ्चलने (भ्वा०) धातोः स्त्रियां सम्पदादित्वात् क्विप्]

क्षुमतः बह्वन्नादि विद्यते यस्य तस्य (रायः=धनस्य) २.१.१०. **क्षुमति**=बहु क्ष्वन्नं विद्यते यस्मिँस्तस्मिन् (प्रजायाम्) ४.२.१८. **क्षुमन्तम्** प्रशस्ताऽन्नयुक्तम् (रयिं=धनम्) २.४.८. **क्षुमन्तः**=बहुविधं क्ष्वन्नं विद्यते येषां ते (प्रजाजनाः) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् 'क्षिवत्यन्ननामसु पठितम्, निघं० २.७, १.३०.१३. [क्षु अन्ननाम निघं० २.७. ततो भूम्नि मतुप्]

क्षुमा सत्योपदेशकः (राजा), प्र०—अत्रौणादिको

मनिन् किच्च १०.८. [क्षौति शब्दयतीति विग्रहे टुक्षु शब्दे अदा०) बाहुलकादौणादिको मक् प्रत्ययः। अथ ययापैव राध्नोति सा तृतीया सासौ द्यौः सैषा क्षुमा नाम श० ५.३.५.२६.]

क्षुम्पमिव यथा सर्पः फणम् १.८४.८. [क्षुम्प-इव-पदयोः समासः। क्षुम्पम्=क्षुभ सञ्चलने (दिवा०) धातोरौणादिकः पः प्रत्ययः। मकारस्य मकारश्छान्दसः। क्षुम्पम् अहिच्छत्रकं भवति यत् क्षुभ्यते नि० ५.१७. क्षुम्पति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्वाच्प्रत्ययः]

क्षुरः क्षुर इव छेदक आदित्यः १५.४. **क्षुराः**=घर्म्यशब्दाः १.१६६.१०. क्षुरति विलिखति येन वा छिनत्तीति विग्रहे—क्षुर विलेखने (तुदा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रन् प्रत्ययः]

क्षे भूमी राज्याय विद्यते यस्मिँस्तस्मिन् (सुकर्मणि) प्र०—'अर्शादिभ्योऽच्' ४.३.६. [क्षा पृथिवीनाम (निघं०) १.१. ततो मत्वर्थेऽर्शादित्वादच्]

क्षेति क्षयति निवसति, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणस्य लुक् १.६४.२. निवासयति ३.५५.४. निवासयत्यैश्वर्यं करोति वा ५.३७.४. निवसति निवासयति वा ३.५५.७. **क्षेषि**=निवससि ७.१८.२. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसीति' विकरणस्य लुक्]

क्षेत्रजेषे क्षेत्रमन्नादिसहितं भूमिराज्यं जेषते प्रापयति तस्मै (मेघाय) प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः, क्विबुपपदसमासश्च १.३३.१५. [क्षेत्रोपपदे जेषृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

क्षेत्रम् क्षियन्ति निवसन्ति पदार्था यस्मिँस्तत् ३.३१ १५. क्षियन्ति निवसन्ति तं देशम् ६.४७.२०. स्वनिवासस्थानम् १.१००.१८. **क्षेत्रस्य**=क्षयन्ति निवसन्ति यस्मिन् जगति तस्य ७.३५.१०. शस्यस्योत्पत्तेरधिकरणस्य ४.५७.१. **क्षेत्रात्**=गर्भाशयोदरान्निवासस्थानात् १.११६.७. संस्कृताया भार्यायाः ५.२.३. **क्षेत्राणाम्**=धान्योद्भवाऽधिकरणानाम् १६.१८. **क्षेत्राणि**=क्षियन्ति निवसन्ति येषु तानि (स्थानानि) ६.६१.१४. **क्षेत्रे**=क्षियन्ति निवसन्ति यस्मिन् पुण्ये कर्मणि तत्र ५.६२.७. [क्षयति नश्यति निवासहेतुर्भवतीति विग्रहे। क्षि निवासगत्योः (तुदा०) क्षि क्षये (भ्वा०) धातोर्वा 'दादिभ्यश्छन्दसि' उ० ४.१७०. सूत्रेण त्रन् प्रत्ययः। क्षेत्रम् क्षियतेर्निवासकर्मणः नि० १०.१४. इयं वै क्षेत्रं पृथिवी कौ० ३०.११. गो० उ० ५.१०.]

क्षेत्रमिव यथा क्षेत्रं तथा १.११०.५. [क्षेत्र-इव पदयोः समासः। क्षेत्रपदं व्याख्यातम्]

क्षेत्रसाता क्षेत्राणां विभागे ७.१६.३. [क्षेत्र-सात-पदयोः समासः। सातः=षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः। 'जनसनखनां सञ्झलोः' अ० ६.४.४२. सूत्रेणाकारादेशः]

क्षेत्रसाधसः ये क्षेत्राणि साध्नुवन्ति ते (ऋत्विजः) ३.८.७. [क्षेत्रोपपदे साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोरण्। ततो जसोऽसुक्]

क्षेत्रासाम् यः क्षेत्राणि सनति विभजति तम् (प्रजाजनम्) ४.३८.१. [क्षेत्रोपपदे षण् संभक्तौ (भ्वा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यत' इति डः प्रत्ययः। पूर्वपदस्य संहितायां दीर्घः। उत्तरपदस्याकारादेशश्छान्दसः]

क्षेपयत् प्रेरयेत् ५.६.७. [क्षिप प्रेरणे (तुदा०) धातोर्णिजन्ताल्लेट्]

क्षेमम् कल्याणकरं रक्षणम् १.६६.२. प्राप्य योगम् ऋ० भू० १६०. **क्षेमस्य**=कुशलता का, आर्याभि० १.४१, ऋ० १.७.६.७. रक्षणस्य १.१००.७. **क्षेमः**=कल्याणकारी (विद्वज्जनः) १.६७.१. रक्षणम् १८.७. **क्षेमाय**=रक्षणाय १४.२१. रक्षण के लिए सं० वि० १४७, ३.४३. **क्षेमे**=रक्षणे ५.३७.५. **क्षेमेण**=रक्षणेन १.५५.४. [क्षयत्यज्ञानं नाशयतीति विग्रहे क्षि क्षये (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तिस्तुसु०' उ० १.१४० सूत्रेण मन्प्रत्ययः]

क्षेमयन्तम् रक्षयन्तम् (विद्वांसं जनम्) ३.७.२. **क्षेमयन्तः**=रक्षयन्तः (त्रिधातवः=सत्त्वरजस्तमांसि) ५.४७.४. क्षेमं रक्षणं कुर्वन्तः (विद्वांसो जनाः) ४.३३.१०. [क्षेमं करोतीति विग्रहे 'तत्करोति तदाचष्टे' इति वार्त्तिकेन णिचि शतृप्रत्ययः। क्षेमं व्याख्यातम्]

क्षेम्याय क्षेमेषु रक्षकेषु साधुस्तस्मै (वीरपुरुषाय) १६.३३. [क्षेमं व्याख्यातम्। ततः तत्र साध्वर्थे यत्]

क्षेषत् निवसति ६.३.१. **क्षेषि**=निवसेः ६.४.४. निवससि ७.१८.२. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोर्लेट्। 'सिब् बहुलं लेटि' इति सिप्]

क्षेष्यन्तः निवसन्तः (देवासः=विद्वांसो जनाः) २.४.३. [क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः शतरि रूपम्। विकरणव्यत्ययेन स्यः प्रत्ययः]

क्षैतवत् क्षितौ भववत् (यशः=धनमन्नं कीर्त्ति वा ६.२.१. [क्षितिप्राति० भवार्थेऽण् प्रत्यये क्षैतम्। ततस्तुल्यार्थे वतिः]

क्षैत्रजित्याय यया क्रियया क्षेत्राणि जयन्ति तस्या भावाय ३३.६०. [क्षेत्रजित्प्राति० भावे कर्मणि वा ष्यञ् । क्षेत्रजित्=क्षेत्रोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्]

क्षैत्रपत्येषु क्षेत्राणां भूमण्डलानां पतयः पालकास्तेषां कर्मसु १.११२.१३. [क्षेत्र-पतिपदयोः समासे भावे कर्मणि च 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' अ० ५.१.१२८. सूत्रेण यक्]

क्षोणस्य अध्यापकस्य १.११७.८. [क्षोणस्य क्षयणस्य नि० ६.६.]

क्षोणी स्वपरभूमी, प्र०—क्षोणीति पृथिवीनाम, निघं० १.१, ३३.६७. **क्षोणीभिः**=पृथिवीभिः २.३४.१३. **क्षोणीभ्याम्**=द्यावापृथिवीभ्याम् २.१६.३ **क्षोणीः**=भूमीः १.१७३.७. बह्वीः पृथिवीः १.५४.१. [क्षौति शब्दयतीति विग्रहे टुक्षु शब्दे (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको निः प्रत्ययः । स्त्रियां 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष् । क्षोणी पृथिवी नाम निघं० १.१. क्षोणी द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०.]

क्षोदन्ति संपिशन्ति ७.५८.१. [क्षुदिर् संपेषणे (रुधा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

क्षोदन्ते क्षरन्ति वर्षन्ति ५.५८.६. [क्षोदति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) ततो लट्]

क्षोदसः जलस्य १.१८२.५. **क्षोदसा**=प्रवाहेण १.११२.१२. **क्षोदः**=अगाधजलम् १.९२.१२. उदकम्, प्र०—क्षोद इत्युदकनाम, निघं० १.१२, ६.१७.१२. जलं जलसमूहो वा १.६६.५. [क्षोदस् उदकनाम निघं० १.१२.]

क्षोभणः क्षोभकर्त्ता सञ्चालयिता (इन्द्रः=सेनेशः) १७.३३. [क्षुभ सञ्चलने (भ्वा०) धातोः 'चलनशब्दार्थादकर्मकाद् युच्' अ० ३.२.१४८. सूत्रेण तच्छीलादिषु कर्त्तरि युच्]

क्ष्णोत्रेणेव तेजस्विकारकेण साधनेनेव २.३९.७.

क्ष्मया भूम्या सह, प्र०—क्ष्मेति पृथिवीनाम, निघं० १.१, ७.४६.३. पृथिव्या ५.८४.३. **क्ष्मः**=पृथिवीः १.१००.१५. पृथिवी का, आर्याभि० १.३२, ऋ० १.७. १०.१५. [क्ष्मा पृथिवी नाम निघं० १.१. क्षमूष् सहने (भ्वा०) धातोः 'क्षमेरुपधालोपश्च' उ० ५.६५. सूत्रेणाच्प्रत्यय उपधालोपश्च]

खजकृत् यः खजं सङ्ग्रामं करोति सः (राजपुरुषः), प्र०—खज इति सङ्ग्रामनाम, निघं० २.१७, ६.१८.२. [खजोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप् । खजे संग्राम नाम निघं० २.१७.]

खजङ्करः यः सङ्ग्रामं करोति सः (सेनापतिः), प्र०—अत्र 'खज मन्थने' इति धातोः 'कर्मणि०' इत्यण् 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति वृद्ध्यभावः सुपो लुगभावश्च १.१०२.६.

खड्गः तुण्डशृङ्गः पशुविशेषः २४.४०. [खडति भिनत्तीति विग्रहे खड भेदने (चुरा०) धातोः 'छापूखडिभ्यः कित्' उ० १.१२४. सूत्रेण गन् प्रत्ययः]

खदिरस्य एतत्काष्ठस्य ३.५३.१९. [खदति हिनस्तीति विग्रहे खद स्थैर्ये हिंसायां च (भ्वा०) धातोः 'अजिरशिशिर०' उ० १.५३. सूत्रेण किरच्प्रत्ययान्तो निपात्यते । खदिरेण ह सोममाचखाद । तस्मात् खदिरो यदेनेनाखिदत् श० ३.६.२.१२. अस्थिभ्य एवास्य (प्रजापतेः) खदिरः समभवत् । तस्मात् स दारुणः बहुसारः श० १३.४.४.९.]

खनतु भूमिं खनित्वा कूपजलवद् विद्यायुक्तान्निष्पादयतु ११.६१. [खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

खनमानः भूमिमवदारयन् (कृषीवलः) १.१७९.६. [खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

खनामः विलिखामः ११.२८. **खनामि**=उत्पाटयामि १२.९५. निष्पादयामि ११.२८. [खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

खनिता उत्पाटिता (ओषधी) १२.९५. सेवकः १२.१००. [खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोस्तृच् कर्त्तरि]

खनित्रिमाः याः खनित्रेण सञ्जाताः (आपः=जलानि) ७.४९.२. [खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोः 'उषिखनिभ्यां कित्' उ० ४.१६२. सूत्रेण ष्ट्रन् । खनित्रप्राति० जातार्थे डिमच्प्रत्ययः]

खनित्रैः खननसाधनैः १.१७९.६. [खनु अवदारणे (भ्वा०)+ष्ट्रन्]

खम् आकाशम् ४.११.२. आकाशवद् व्यापकम् (ब्रह्म) ४०.१७. आकाशमिव व्यापकत्वात् खम् (ब्रह्म), आकाशवत् व्यापक होने से यह नाम ईश्वर का है, स० प्र० १४, ४०.१७. [खनु अवदारणे (भ्वा०) खर्ब गतौ (भ्वा०) धातोर्वा 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' अ० ३.२.१०१. सूत्रेण डः प्रत्ययः । खं पुनः खनतेः नि० ३.१३. छिद्रं खमित्युक्तम् गो० उ० २.५.]

खलितम् निर्बालशिरस्कम् (जनम्) ३०.२१. [स्खल

सञ्चलने (भ्वा०) धातोः 'खलतिः' उ० ३.११२. सूत्रेणातच्-प्रत्यये धातोः सलोपः प्रत्ययान्तस्येत्वञ्च निपात्यते]

खल्याय खले सञ्चयाधिकरणे साधवे (पुरुषाय) १६.३३. [खलप्राति० 'तत्र साधु' इत्यर्थे यत्]

खल्वाः चणकाः १८.१२.

खाताः खनिताः (अवताः=कूपाः) ४.५०.३. [खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोः क्तः। 'जनसनखनां सञ्झलोः' अ० ६.४.४२. इत्याकारादेशः। खातः कूपनाम निघं० ३.२३.]

खाद विनाशय, अ०—विनाशयेः ११.७८.

खादति खादेत् १.१५८.४. **खादथ**=खादन्ति १.६४.७. [खादृ भक्षणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

खादयः खाद्यानि भक्ष्यविशेषाणि (वस्तूनि) १.१६६.९ भोक्तारः (वीरजनाः) ५.५४.११. ये खादन्ति ते (मरुतः=बलिष्ठा योद्धृजनाः) ७.५६.१३. **खादिषु**=भक्षणादिषु ५.५३.४. **खादिः**=भोजनम् १.१६८.३. [खादृ भक्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक इञ्प्रत्ययः]

खादिनम् खादितुं भक्षयितुं शीलम् (शिशुं=बालम्) ६.१६.४०. **खादिनः**=भक्षकाः (मरुतः=विद्वज्जनाः) २.३४.२. [खादृ भक्षणे (भ्वा०) धातोर्णिनिस्ताच्छील्ये]

खादिहस्तम् खादिहस्तयोर्यस्य तम् (विद्वज्जनम्) ५.५८.२. [खादि-हस्तपदयोः समासः। खादिरिति व्याख्यातम्]

खादोअर्णाः खादो भक्षणीयान्यन्नानि वा यान्यर्णांसि यासु ताः (नद्यः) ५.४५.२. [खादो अर्णः नदीनाम निघं० १.१३.]

खानि इन्द्रियाणि ४.२८.१. खातानि (जलस्थानानि) २.१५.३. [खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति डः प्रत्ययः। खं पुनः खनतेः नि० ३.१३.]

खाम् नदीम्, प्र०—खा इति नदीनाम, निघं० १.१३, २.२८.५.

खार्यः एतत्परिमाणमितान्यन्नादीनि ४.३२.१७.

खिदत् दैन्यं प्राप्नोति ४.२८.२. **खिदति**=दैन्यं प्राप्नोति ४.२५.७. [खिद दैन्ये (दिवा०) धातोर्लेट् लट् च]

खिद्रम् दैन्यम् ५.८४.१. [खिद दैन्ये (दिवा०) धातोः 'स्फायितञ्चिवञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक्प्रत्ययः। खिद्रं खेदनं छेदनं भेदनम् नि० ११.३७.]

खिद्वः दीनः (जनः) ६.२२.४. [खिद दैन्ये (दिवा०) धातोर् बाहु० औणादिको वन्प्रत्ययः]

खिल्ये खण्डेषु भवे (व्यवहारे) ६.२८.२. [खिल-प्राति० भवार्थे यत् प्रत्ययः]

खृगलेव यौ खृ खननं गलयतस्तौ (वायुविद्युतौ) २.३९.४.

खेलस्य खण्डस्य १.११६.१५.

ख्यः प्रकथयसि ६.१५.१५. **ख्यत्**=वर्जयेत् ७.३६.७ **ख्यतम्**=निराकुरुतम् ५.६५.६. **ख्यन्**=प्रकाशयन्ति ३.३१.१२. ख्यापयेयुः १.१६२.१. [ख्या प्रकथने (अदा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः। 'अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्' इत्यङ्प्रत्ययः]

गच्छ प्राप्नुहि ६.२१. गच्छतु, प्र०—अत्र व्यत्ययः; १.२५. प्राप्नुहि प्रापय वा ४.२४. प्राप्नुहि गच्छतु वा १.२६. जानीहि ६.२१. गमनं कुरु ४.३४. गच्छतु गमय वा १.२६. गच्छति २.१६. कालविद्यया जानीहि याहि वा ६.२१. प्राणायामाऽभ्यासेन विद्धि ६.२१. पठन-पाठन-पुरस्सरेण श्रवणमनननिदिध्यासन-साक्षात्कारेण विजानीहि ६.२१. प्राप्त हो सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७५. निधेहि ६.२१. **गच्छत**=प्राप्नुत ७.४६. **गच्छतम्**=गमयतः ४.३३. प्राप्नुतम् ५.७५.३. **गच्छति**=चलति १.८३.१. प्राप्नोति १.१.४. **गच्छताम्**=गमयतः, प्र०—अत्र लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२१.४. प्राप्नुतः १.२२.१. **गच्छतु**=गच्छति २.२२. प्राप्त हो सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. **गच्छथ**=प्राप्नुथ ५.५५.७. **गच्छथः**=गमनं कुरुतम्, प्र०—लट्-प्रयोगोऽयम् १.२२.४. प्राप्नुथः १.११२.१८. **गच्छन्ति**=प्राप्नुवन्ति १.१४५.३. यान्ति १.८५.११. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लडपि]

गच्छ्याः प्राप्नुयाः ६.३५.३. **गच्छाति**=गच्छेत्, प्राप्नुयात् ७.३३.१४. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लेट्]

गणकम् गणितविदम् (विद्वांसम्) ३०.२०. [गण-संख्याने (चुरा०) धातोः कर्त्तरि ण्वुल्]

गणपतये समूहानां पालकाय वायवे २२.३०. **गणपतिभ्यः**=गणानां सेवकानां पालकेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२५. **गणपतिम्**=मुख्यानां स्वामिनम् (परमेश्वरम्) २.२३.१. समूहपालकम् (जगदीश्वरम्) २३.१९. [गण-पतिपदयोः समासः। गणो गणनाद् गुणश्च नि० ६.३६.]

गणम् समूहम् १.६४.१२. गणनीयम् (विद्वांसम्) ५.५८.२. मरुतां समूह इव १.८७.४. **गणान्**=परि-चारकादीन् ६.३१. **गणानाम्**=गणनीयानां मुख्यानाम्

(सज्जनानाम्) २.२३.१. सब समूहों के पति (परमेश्वर) आर्याभि० २.४६, २३.१६. **गणाय**=गणनीयाय (विद्वज्जनाय) ७.५८.१. **गणाः**=समूहाः ५.७६.५. राज्याधिकारिण ६.३१. **गणे**=गणनीये विद्वत्सङ्घे ६.४०.१. **गणेन**=अध्यापकविद्यार्थिसमूहेन १.११७.३. सुशिक्षितभृत्यसमूहेन सैन्येन वा १७.३५. गणनीयेन सङ्ख्यातेन समूहेन ३.३२.२. किरणसमूहेनोपदेश्यविद्यार्थिसमुदायेन ४.५०.५. **गणेभ्यः**=सेवकेभ्यः १६.२५. **गणैः**=किरणसमूहैर्मरुद्भिर्वा १.६.८. [गण संख्याने (चुरा०) धातोरच् । घञर्थे वा कः । गणः वाङ्नाम निघं० १.११. गणः गणनाद् गुणश्च नि० ६.३६.]

गणं गणम् समूहं समूहम् ३.२६.६. [गणपदस्य वीप्सायां द्विर्वचनम्]

गणश्रिभिः समुदाय-लक्ष्मीभिः ५.६०.८. **गणश्रियः**=गणानां समूहानां श्रियः शोभा येषु ते (मरुतः=विद्वज्जनाः) १.६४.६. **गणश्रिये**=या गणानां समूहानां श्रीः शोभा तस्यै विद्युते २२.३०. [गण-श्रीपदयोः समासः]

गण्या सङ्ख्यातुं योग्या (गीः=वाणी) ३.७.५. [गणप्राति० अर्हत्यर्थे यत्]

गत गच्छत १.१०६.२. प्राप्नुत, प्र०—अत्र लोटि शपो लुक् ३७.१४. **गतम्**=प्राप्नुतम् २.३७.५. गच्छतः प्राप्नुतं वा, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१३५.४. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

गतम् प्राप्तम् (ऋतम्=सत्यमुदकं वा) १.१०५.४. **गतः**=प्राप्तः (अध्वा=मार्गः) ७.५८.३. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

गतासुम् गतप्राणम्, मृतम् (जनम्) ऋ० भू० २११, १०.१८.८. मरे हुए (पति की आशा) को स० प्र० १५२, १०.१८.८. [गत-असुपदयोः समासः । अपि वासुरिति प्राणनामास्तः शरीरे भवति तेन तद्वन्तः नि० ३.८.]

गतिः गमनम् १८.१५. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्-प्रत्ययः]

गत्वा प्राप्य १७.६५. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्त्वा]

गत्वी गत्वा प्राप्य वा ४.४१.५. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'स्नात्व्यादयश्च' अ० ७.१.४६. सूत्रेण क्त्वा प्रत्ययान्तो निपात्यते]

गध्यम् ग्रहीतव्यम् (वाजं=वेगम्) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन रेफलोपो हस्य घः ४.१६.११. गृह्यम् (वाजम्=अन्नाद्यैश्वर्यम्) ४.१६.१६. **गध्यस्य**=अभिकाङ्क्षितुं योग्यस्य (राजस्य=विज्ञानादेः) ६.१०.६. सर्वैः प्राप्तुं योग्यस्य (वाजस्य=विज्ञानस्य) ६.२६.२. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) गृधु अभिकांक्षायाम् (दिवा०) धातोर्वा 'अघ्न्यादयश्च' उ० ४.११२. सूत्रेण यकि निपातनाद् रूपसिद्धिः । गध्यं गृह्णातेः नि० ५.१५.]

गध्या मिश्रीभूतान् (शत्रून्) ४.३८.४. [गध्यपदं व्याख्यातम् । गध्यं पदनाम निघं० ४.२.]

गन् गच्छति २७.३१. [गन्ति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

गनीगन्ति भृशं गच्छति ६.७५.३. भृशं बोधं प्रापयन्ति २६.४०. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

गन्त प्राप्नुत ५.८७.६. गच्छन्तु प्राप्नुवन्तु ५.४३.१०. गच्छत गच्छन्ति वा, प्र०—अत्र पक्षे लडर्थे लोट्, 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् 'तप्तनप्तन०' इति तनबादेशो ङित्वाऽभावादनुनासिक लोपाऽभावः १.३८.२. **गन्तन**=प्राप्नुत २.३४.५. गच्छत ७.५६.५. गच्छथ ५.५७.१. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । शपो लुक्]

गन्तम् गच्छतम्, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१३५.५. गच्छथ ५.५७.१. गमयतम् १.१३७.३. प्राप्नुतम् १.१३७.१. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । शपो लुक्]

गन्तम् गच्छन्तम् (निधिम्=ऐश्वर्यम्) ५.४३.८.

गन्तवे गन्तुम्, प्र०—अत्र 'गत्यर्थकर्मणि०' इति द्वितीयार्थे चतुर्थी १.४६.७. प्राप्तुम् १५.५५. जाने को सं० वि० २०८, अथर्व० ६.५.१७. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोतुस्मर्थे तवेन् प्रत्ययः]

गन्ता गमनशीलः (वायुः) २७.२६. **गन्तारम्**=ज्ञातारं सर्वत्र व्याप्त्या प्रापकम् (इन्द्रं=धारकमीश्वरम्) १.६.६. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये तृन् । कर्त्तरि तृज्वा]

गन्ताम् प्राप्नुतः, प्र०—अत्र विकरणलुक् ६.१६.

गन्तारा गच्छत इति गमनशीलौ (अ०—अग्निजले), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः १.१७.२.

गन्तु गच्छतु प्राप्नोतु ७.१८.४. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोटि विकरणलुक्]

गन्तोः गन्तुं प्राप्तुम् १.८६.६. गन्तव्यानि (अधर्म्यकर्माणि) ३.५४.१८. गमनम् २५.२२. [गम्लृ गतौ (भ्वा०)

धातोस्तुमर्थे तोसुन् प्रत्ययः]

गन्धर्वः गां पृथिवीं धरतीति (वाचस्पतिः=राजप्रजाजनः) प्र०—अत्र पृषोदरादिना गो-शब्दस्य गम्भावः ९.१. यो गां पृथिवीं धरति स वायुः १.१६३.२. यो गां=पृथिवीं वाणीं वा धरति धारयति वा स सूर्यलोकः २.३. गोः पृथिव्या धर्त्ता (यमः=नियन्ता वायुः) २९.१३. यो गां वेदवाचं धरति सः (विद्वान्=पण्डितो जनः) ३२.९. यो गाः सूर्यकिरणान् धरति सः (चन्द्रमाः) १८.४०. यो गां पृथिवीं धरति स सूर्यः सूत्रात्मा वायुर्वा, भा०—विद्युदग्निः १७.३२. येन वागादीन् धरति सः, भा०—वेदवित् पुरुषः १८.४३. द्वितीयो नियुक्तः पतिः ऋ० भू० २१४. एक स्त्री से सम्भोग करने से जो दूसरा नियोग से प्राप्त हो, वह (पतिः) स० प्र० १५३, १०.८५.४०. गच्छतीति गं ब्रह्म, तद्धरतीति स गन्धर्वः (विद्वान् जनः), सर्वगत ब्रह्म को जो धारण करने वाला है, उस (विद्वान् जन) का नाम गन्धर्व है, आर्याभि० २.२४, ३२.९. भोगाऽभिज्ञत्वात् गन्धर्व इति पतिसञ्ज्ञा ऋ० भू० २२४, १०.८५.४०. **गन्धर्वस्य**=यो गां पृथिवीं धरति स गन्धर्वो वायुस्तस्य, प्र०—वातो गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरसः, शत० ९.३.३.१०, १.२२.१४. **गन्धर्वान्**=पृथिवीराज्यपालनादिव्यवहारेषु कुशलान् (राजपुरुषान्) ऋ० भू० २१६. **गन्धर्वाणाम्**=गायकानाम् (जनानाम्) २४.३७. **गन्धर्वाः**=ये वायव इन्द्रियाणि च धरन्ति ते ९.७. गानविद्याविदः सूर्यादयो वा, ऋ० भू० १३६. गानविद्याकुशलाः (विद्वांसः=सत्यशास्त्रविदो जनाः) १२.९८. [वरुण आदित्यो राजेत्याह तस्य गन्धर्वा विशस्त इमेऽआसत ऽइति युवानः शोभना उपसमेता भवन्ति तानुपदिशत्यथर्वाणो वेदः सोऽयमिति श० १३.४.३.७. गन्धा मे मोदो मे प्रमोदो मे । तन्मे युष्मासु (गन्धर्वेषु) जै० उ० ३.२५.४. रूपमिति गन्धर्वाः (उपासते) श० १०.५.२.२०. योषित्कामा वै गन्धर्वाः श० ३.२.४.३. स्त्रीकामाः वै गन्धर्वाः ऐ० १.२७. त (गन्धर्वाः) उ ह स्त्री-स्त्रीकामाः कौ० १२.३. तस्य (पतञ्जलस्य काप्यस्य) आसीद् दुहिता गन्धर्वगृहीता श० १४.६.३.१. एतदेव कुमारी गन्धर्व-गन्धर्वगृहीतोवाच कौ० २.९. एतदु हैवोवाच कुमारी गन्धर्वगृहीता ऐ० ५.२९. तमेते गन्धर्वाः सोमरक्षा जुगुपुरिमे धिष्ण्या इमा होत्राः श० ३.६.२.९. वातो गन्धर्वः श० ९.४.१.१०. प्राणो वै गन्धर्वः जै० उ० ३.३६.३. मनो गन्धर्वः श० ९.४.१.१२. यज्ञो गन्धर्वः श० ९.४.१.११. अग्निर्गन्धर्वः श० ९.४.१.७. चन्द्रमा गन्धर्वः श० ९.४.१.९. सूर्यो गन्धर्वः श० ९.४.१.८. असौ वाऽदित्यो दिव्यो गन्धर्वः श० ६.३.१.१९. गन्धर्वाः सप्तविंशतिः श० ५ १.४.८. (अश्वो) वाजी (भूत्वा) गन्धर्वान् अवहत् श० १०.६.४.१.]

गन्धर्वाप्सरोभ्यः गन्धर्वाश्चाऽप्सरस ताभ्यः ३०.८. [गन्धर्व-अप्सरस् पदयोः समासः 'गो' इत्युपपदे धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्वन् औणादिकः । पृषोदरादित्वाद् गम्भावो गोपदस्य । अप्सरा अप्सारिण्यपि वाऽप्स इति रूपनाम नि० ५.१३.]

गन्धारीणामिव यथा पृथिवीराज्यधर्त्रीणां स्त्रीणाम् १.१२६.७. ['गो' इत्युपपदे धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोरण्प्रत्यये स्त्रियां ङीप् । तत इव पदेन सह समासः]

गन्म प्राप्नुयाम ६.६१.१४. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । विकरणलुक् । मकारस्य नकारो 'म्वोश्च' सूत्रेण । अडभावश्च]

गभस्तिपूतम् गभस्तिभिः किरणैर्वा बाहुभ्यां पवित्रीकृतम् (राज्यं धनं वा) २.१४.८. **गभस्तिपूतः**=गभस्तिभिः किरणैः पूत इव (देवः=विद्वान्), प्र०—गभस्तय इति रश्मिनामसु पठितम्, निघं० १.५, ७.१. [गभस्ति-पूतपदयोः समासः । गभमन्धकारमस्यतीति विग्रहे गभोपपदे असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः तिः प्रत्ययः । गभस्तयः रश्मिनाम निघं० १.५. अङ्गुलिनाम निघं० २.५. गभस्ती बाहुनाम निघं० २.४. पूतम्=पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्तः]

गभस्तिम् रश्मिम् १.५४.४. **गभस्ती**=हस्तौ, प्र०—गभस्तीति बाहुनाम, निघं० २.४, ६.१९.३. **गभस्तौ**=किरणे ६.२०.९. विज्ञानप्रकाशे २.१८.८. नीतिप्रकाशे १.६२.१२. अङ्गुल्या निर्देशे, प्र०—गभस्तय इति अङ्गुलिनामसु पठितम्, निघं० २.५, ७.१७. **गभस्त्योः**=रश्मियुक्तयोः सूर्यप्रसिद्धाग्न्योरिव भुजयोः १.६४.१०. बाह्वोः १.१३०.४. हस्तयोर्मध्ये ५.५४.११. [गभस्तिरिति व्याख्यातम् । गभस्तिः रश्मिनाम निघं० १.४. बाहुनाम निघं० २.४. पाणी वै गभस्ती श० ४.१.१.९.]

गभीरम् गूढाऽऽशयम् (इन्द्रं=विद्युतम्) ३.४६.४. अगाधम् (ब्रह्म=धनमन्नं वा) ५.८५.१. अगाधगुणम् (करदायं जनम्) ६.३०. गहनम् (पदं=दुःखम्) ४.५.५. महोत्तमगुणागाधम् (धाम) १.९३.३. **गभीरः**=गाम्भीर्यगुणोपेतः (सिन्धुः=समुद्रः) ३.३२.१६. **गभीराः**=गम्भीराशयाः (राजपुरुषाः) ६.७५.९. अगाधाशयाः (पितरः=पालनक्षमा राजपुरुषाः) २९.४६. शीलवन्तः

(पूर्णविद्याः परीक्षका जनाः) २.२७.३. **गभीरे**=विस्तीर्णे (रजसी=द्यावापृथिव्यौ) ४.४२.३. गम्भीराश्रये (पृथ्वी=भूम्यन्तरिक्षे) ४.२३.१०. गाम्भीर्यादिगुणसहिते (सूर्यभूमी) ४.५६.३. [गभीरः महन्नाम निघं० ३.३. गभीरमुदकनाम निघं० १.१२. गभीरा वाङ्नाम निघं० १.११. गभीरे द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०. गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'गभीरगम्भीरौ' उ० ४.३५. सूत्रेण ईरन् प्रत्यये मकारस्य भकारो निपात्यते । गभीरमिममध्वरं कृधीति । अध्वरो वै यज्ञो महान्तमिमं यज्ञं कृधीत्येवैतदाह श० ३.६.४.५.]

गभीरवेपाः गभीरोऽविद्वद्भिर्लक्षितुमशक्यो वेपः कम्पनं यस्य सः (रश्मिगणेन युक्तः सूर्यः) प्र०—टुवेपृ कम्पने इत्यस्मात् 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' इत्यसुन्प्रत्ययः १.३५.७. [गभीर-वेपस्पदयोः समासः । गभीरं व्याख्यातम् । वेपस्=टुवेपृ कम्पने (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' उ० ४.१८९ इत्यसुन् । गम्भीरवेपसः=गम्भीरकर्माणो वा गम्भीरप्रज्ञा वा नि० ११.१७.]

गभे प्रजायाम् २३.२२. [विड् वै गभः श० १३.२.९.६. तै० ३.९.७.३.]

गमत् गच्छति ७.३२.१०. आज्ञाप्यात् गमयति वा, प्र०—अत्र पक्षे वर्त्तमानाऽर्थे लिङर्थे च लुङ् 'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' अ० ६.४.७५. इत्यडभावः १.५.३. गच्छेत्, प्राप्नुयात् ३.१३.१. गच्छति ७.३२.१०. प्राप्नोति ७.३२.११. **गमथः**=प्राप्नुथाः ४.४३.४. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

गमध्यै गन्तुम् १.१५४.६. प्राप्तुम् ६.३. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थेऽध्यैन् प्रत्ययः]

गमन् गच्छन्तु प्राप्नुवन्तु, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ्प्रयोगः १.८९.७. **गमन्ति**=प्राप्नुवन्ति ७.३४.२०. **गमन्तु**=गच्छन्तु ४.३५.१. समन्तात् प्राप्नुवन्तु १.१८६.२. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् अडभावश्च । 'गमन्ति गमन्तु' प्रयोगयोस्तु लट्-लोटौ । विकरणस्य लुक्]

गमया प्राप्नुहि ८.४४. प्रापय, प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इति दीर्घः ५.५.१०. **गमयन्ति**=प्राप्त कराते हैं सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.६. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिचि लोट् । दीर्घान्तादेशश्छान्दसः]

गमानि गच्छेयम् ४.१८.२. **गमाम**=गच्छेम ११.५२. प्राप्नुयाम ३६.१६. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । विकरणस्य लुक्]

गमिष्ठा अतिशयेन गन्तारौ (अश्विना=स्त्रीपुरुषौ) ५.७६.२. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोस्तृच् । ततोऽतिशायन इष्ठन् प्रत्ययः । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' अ० ६.४.१५४. सूत्रेण तृचो लोपः]

गमेम प्राप्नुयाम ४.५.१३. गच्छेम, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १८.५१. **गमेमहि**=गच्छेम ६.४४.२. संगच्छेमहि ५.५१.१५. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ् । विकरणस्य लुक्]

गमेयम् प्राप्नुयाम् १.१५८.३.

गमेः गच्छ, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति छत्वाऽभावः १८.५६. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ् । छत्वाऽभावश्छान्दसः]

गम्भन् गम्भनि धारके मेघे, प्र०—अत्र गमधातोरौणादिको बाहुलकाद् भनिः प्रत्ययः सप्तम्या लुक् च १३.३०.]

गम्भीरया अगाधबलया (सेनया) ६.१८.१०. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोरीरन्प्रत्यये 'गभीरगम्भीरौ' उ० ४.३५. सूत्रेण मकारस्य भकारो मुमागमश्च । गम्भीरमुदकनाम निघं० १.१२. गम्भीरा वाङ्नाम निघं० १.११. गम्भीरे द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०.]

गम्यात् प्राप्नुयात् ९.१९. **गम्याः**=प्राप्नुहि २९.२४. गच्छेः १.१८१.५. प्रापयेः १.१८७.७. प्राप्नुयाः ५.४१.१८. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ् । विकरणस्य लुक्]

गम्याः गन्तुं योग्याः (सुखदातारो जनाः) १.१६३.१३. गमयितुं योग्याः (अग्न्यादिपदार्थाः) १.१८१.३. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'पोरदुपधात्' अ० ३,१.९८. सूत्रेण यत्प्रत्ययः]

गम्याः गच्छेः १.१८१.५. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ् । शपो लुक्]

गयम् प्रजाम् ७.३२.७. अपत्यं धनं गृहं वा, प्र०—गय इति अपत्यनाम, निघं० २.२; धननाम निघं० २.१०; गृहनाम निघं० ३.४, ६.७१.३. श्रेष्ठमपत्यं धनं वा ५.४४.७. भा०—अपत्य-धन-गृहादिकम् ३३.६९. [गयः अपत्यनाम निघं २.१. धननाम निघं २.१०. गृहनाम निघं० ३.४. स यदाह गयोऽसीति सोमं वैतदाहैषं ह वै चन्द्रमा भूत्वा सर्वांल्लोकान् गच्छति तद् यद्गच्छति तस्माद् गयस् तद्गयस्य गयत्वम् गो० पू० ५.१४. प्राणा वै गयाः श० १४.८.१५.७.]

गयस्फानः गयानामपत्य-धन-गृहाणां स्फानो वर्धयिता

(परमेश्वरः) प्र०—गय इत्यपत्यनामसु पठितम्, निघं० २.२; धननामसु च, निघं० ३.४, ४.३७. गयानां प्राणानां वर्धयिता (ईश्वरो विद्वज्जनो वा), प्र०—स्फायी वृद्धौ इत्यस्माद्धातोर्नन्द्यादेराकृतिगणत्वाल्ल्युः 'छान्दसो वर्णलोपः' इति यलोपः 'अत्र सायणाचार्येण स्फान इति कर्त्तरि ल्युडन्तं व्याख्यातं तदशुद्धम् १.६१.१२. धनवर्धकः (विद्वज्जनः) १.६१.१६. गृहस्य वर्धकः (गृहस्थो जनः) ७.५४.२. प्रजाधन जनपद और सुराज्य का बढ़ाने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.३८, ऋ० १.६.२१.१२. [गय इति व्याख्यातम् । स्फानः=स्फायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्नन्द्यादित्वाल्ल्युः । यकारलोपश्छान्दसः । गयस्फानः प्रतरणः सुवीरः (ऋ० १.६.१६.) इति गवां न स्फाययिता प्रतारयितैधीत्येव ऐ० १.१३.]

गरन् निगलेयुः १.१५८.५. [गॄ निगरणे (तुदा०) धातोर्लङ् । अडभावो व्यत्ययेन शप् च]

गरुत्मान् गरुतः शब्दा विद्यन्ते यस्य सः (सुपर्णः=पक्षी) १२.४. गुर्वात्मा (सुपर्णः=वृक्ष इवाध्येताऽध्यापकः पक्षी च) १२.४. यो गुर्वात्मा स गरुत्मान्, जिसका आत्मा अर्थात् स्वरूप महान् है, वह (ईश्वर), स० प्र० १५, १.१६४.४६. [गिरति निगलतीति विग्रहे गॄ निगरणे (तुदा०) धातोः 'मृग्रोरुतिः' उ० १.६४. सूत्रेण उतिः प्रत्ययः । गरुत्प्राति० मतुप् । गरुत्मत् गरणवान् गुर्वात्मा महात्मेति वा नि० ७.१८.]

गर्त्तम् गृहम् ५.६८.५. उपदेशक-गृहम्, प्र०—गर्त्त इति गृहनाम, निघं० ३.४, १०.१६. [गॄ निगरणे (तुदा०) धातोः 'हसिमृग्रिण्०' उ० ३.८६. सूत्रेण तन् प्रत्ययः । गिरति निगलतीति विग्रहः । गर्त्तः सभास्थाणुर् गृणातेः सत्यसंगरो भवति नि० ३.५. श्मशानसंचयोऽपि गर्त्त उच्यते गुरतेरपगूर्णो भवति नि० ३.५. गृहनाम निघं० ३.४. पितृदेवत्यो वै गर्त्तः श० ५.२.१.७. पुरुषो गर्त्तः श० ५.४.१.१५. रथोऽपि गर्त्त उच्यते गृणातेः स्तुतिकर्मणः नि० ३.५.]

गर्त्तसदम् यो गर्त्ते गृहे सीदति तम् (वीरपुरुषम्) २.३३.११. [गर्त्तमिति व्याख्यातम् । तदुपपदे सद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

गर्त्तारुगिव गर्त्ते आरुगारोहणं गर्त्तारुक् तद्वत् १.१२४.७. [गर्त्तारुगिव गर्त्तारोहिणीव नि० ३.५.]

गर्दभम् लम्बकर्णं खरम् ३.५३.२३. गर्दभस्य स्वभावयुक्तम् (शत्रुं जनम्) १.२६.५. **गर्दभः**=पशुविशेषः २४.४०. [गर्द शब्दे (भ्वा०) धातोः 'कॄशॄशलि०' उ० ३.१२२. सूत्रेणाभच् । गर्दयति शब्दं करोतीति विग्रहः । तस्मात्स (गर्दभः) द्विरेता वाजी । ऐ० ४.६. अथ यदासां पांसवः पर्यशिष्यन्त ततो गर्दभः समभवत्, तस्माद् यत्र पांसुलं भवति गर्दभस्थानमिव वतेत्याहुः श० ४.५.१.६.]

गर्भत्वम् गर्भस्याधिकरणा वाक् तस्या भावस्तत् १.६.४. [गर्भमिति पदं द्रष्टव्यम् । गर्भप्राति० भावे त्वः प्रत्ययः]

गर्भधम् यो गर्भं दधाति तम् (जगदीश्वरम्), भा०—प्रकृतेः पतिम्, सर्वेषां बीजानि विदधाति यस्तं जगदीश्वरम् २३.१६. प्रकृतिम् २३.१६. सब जगत् को जिस सामर्थ्य से उत्पन्न किया है, उस अपने सामर्थ्य का धारण करने वाला (जगदीश्वर), आर्याभि० २.४६. [गर्भमिति पदे गर्भव्याख्या । तदुपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कः प्रत्ययः]

गर्भम् बीजम्, भा०—सूर्यादीनां परं कारणं प्रकृतिं, तत्र बीजधारकं परमात्मानं च २३.६३. धारणम् १७.३२. सर्वजगदुत्पत्तिस्थानम् ५.४७.४. सर्वव्यवहारादिकारणम् (अहोरात्रम्) १.६५.२. सर्वलोकानामुत्पत्तिस्थानं प्रकृताख्यम् १७.३०. किरणाख्यं वीर्यम् १.१६४.३३. विद्याजं बोधम् १.१५६.३. स्तुतिविषयम् (आदित्यं=सूर्यम्) १३.४१. कार्याख्यम् (सूनुम्) १.१८५.२. अन्तःस्वरूपम् ४.७.६. ग्रहणम् २.१८.२. गर्भमिव वर्त्तमानं जल-समुदायम् ३.३१.७. ग्रहीतुं योग्यं वस्तु १७.२६. मध्यव्यापिनम् (विद्युद्रूपमग्निम्) ३.१.१३. मूलं प्रधानम् २७.२५. विद्यादिसद्गुणस्थापनाख्यम् ३.२७.६. गर्भ इव स्थितम् (इन्द्रं=सूर्यम्) २८.२५. **गर्भः**=यो गृह्यते सः (भा०=सन्तानः) १६.७६. यो गीर्यते स्वीक्रियते सः, [अ०—अर्कः, भा०—पुत्रः) ११.४३. योऽनर्थान् गिरति विनाशयति सः (अग्निः=अग्नितुल्यो जीवः); प्र०—गर्भो गृभेर्गृणात्यर्थे गिरत्यनर्थानिति, यदा हि स्त्रीगुणान् गृह्णाति, गुणाश्चास्या गृह्यन्तेऽथ गर्भो भवति, निघं १०.२३, १२.३७. गृह्यते सिच्यते वा स गर्भः (सन्तानः) ८.२८. गर्भ इवाऽऽवृतः (जगदीश्वरो जीवो वा) १.७०.२. स्तोतव्योऽन्तस्थो वा (परमात्मा जीवात्मा वा) १.७०.१. स्तोतुमर्हः (सूर्यः) ३.१.१२. अन्तस्थ आशयः २६.५४. यो गृह्णाति सः (जिज्ञासुर्जनः) १.१५२.३. ग्रहीतव्यः (पदार्थः) १.१६४.६. आवरकः (कविः=कालः) १.६५.४. कारणभूतः (विद्वज्जनः) ५.४५.३. अन्तर्हितः (अपां पतिः=राजा) १०.३. कुक्षिस्थः (पुत्रः) २.१.१४. **गर्भाः**=गर्भधारणशक्तयः

१४.२३. गर्भ इव विद्याशुभगुणैरावृताः (सज्जनाः) १४.२५. **गर्भे**=सर्वपदार्थाऽन्तःस्थाने १.६५.२. आभ्यन्तरे ६.१६.३५. मध्ये १४८.५. कुक्षौ ११.५७. अन्तःकरणे, भा०—सर्वप्राणिनां हृदये ३२.४. गर्भस्थे जीवात्मनि ३१.१९. **गर्भेभ्यः**=गत्तुं स्तोतुं योग्येभ्यः (विद्वद्भ्यः) १.१४६.५. [गिरति गृणातीति विग्रहे गॄ निगरणे (तुदा०) धातोः 'अर्त्तिगॄभ्यां भन्' उ० ३.१५२. सूत्रेण भन् प्रत्ययः। गर्भः गृभेर्गृणात्यर्थे गिरत्यनर्थानिति वा नि० १०.२३. एष वै गर्भो देवानां (यजुः ३७.१४.) य एष (सूर्यः) तपति, एष हीदं सर्वं गृह्णा येतेनेदं सर्वं गृभीतम् श० १४.१.४.२. प्रजा वै पशवो गर्भः श० १३.२.८.५. वायव्या गर्भाः तै० ३.९.१७.५. पुरुष उ गर्भः जै० उ० ३.३६.३. इन्द्रियं वै गर्भः तै० १.८.३.३. गर्भः समित् श० ६.६.२.१५. संवत्सरो वाव गर्भः पञ्चविंशः, तस्य चतुर्विंशत्यर्धमासाः संवत्सर एव गर्भाः पञ्चविंशस्तद्यत्तमाह गर्भ इति संवत्सरो ह त्रयोदशो मासो गर्भो भूत्वऽर्त्तून् प्रविशति श० ८.४.१.१९. विषुरूपा इव हि गर्भाः श० ४.५.२.१२. संवत्सरे वृद्धगर्भाः प्रजायन्ते मै० १.६.१२.]

गर्भरसा रसो गर्भे यस्याः सा (माता=पृथिवी) १.१६४.८. [गर्भ-रसपदयोः समासः। गर्भपदं व्याख्यातम्]

गर्भिणीषु गर्भा विद्यन्ते यासु तासु (स्त्रीषु) ३.२९.५. गर्भप्राति० मत्वर्थे इनि-प्रत्यये स्त्रियां ङीप्]

गर्हसे निन्दसि ४.३.५. [गर्ह कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्]

गल्गलीति भृशं निगलतीव वर्त्तते २२.२२. [गल अदने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्। छान्दसत्वादभ्यासस्य लोपो न]

गवयम् गोसदृशं (पशुविशेषम्), रोषं वा १३.४९. **गवयस्य**=गोसदृशस्य (पशोः) ४.२१.८. [गौरिवायो गमनं प्राप्तिर्वाऽस्येति गवयः। गो-अयपदयोः समासः]

गवयी गवयस्य स्त्री २४.३०. [गवयपदं व्याख्यातम् ततो गौरादित्वान् ङीष्]

गवा किरणेन ५.३०.७. **गवाम्**=स्वस्वविषय-प्रकाशकानां मन आदीन्द्रियाणां किरणानां पशूनां वा, प्र०—गौरिति पदनामसु पठितम्, निघं० ४.१. इत्यत्रेन्द्रियाणां पशूनां च ग्रहणम्। गाव इति रश्मिनामसु च पठितम् निघं० १.५, १.१०.७. वाणीनाम् १.१२२.७. गन्तॄणाम् (रश्मीनाम्) ५.३०.४. गवां पृथिव्यादीनां वा १.१०१.४. धेन्वादीनाम् ३४.१३. **गवि**=वाचि ४.५८.४. इन्द्रियाय पृथिव्यै वा १.४३.२. इन्द्रिय-धेनुसमूहाय ३.५९. गवादि-पशुहिताय ५.३३.४. गोजातये १.४३.६. स्तावकाय (सज्जनाय) ६.४५.२२. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'गमेर्डोः' उ० २.६७. सूत्रेण डोस्-प्रत्ययः। गौः पृथिवी-नाम निघं० १.१. गौः वाङ्नाम निघं० १.११. गौः स्तोतृ-नाम निघं० ३.१६. गौरिति पृथिव्या नामधेयम्। यद्दूरं गता भवति। यच्चास्यां भूतानि गच्छन्ति। गातेर्वौकारो नामकरणः। अथापि पशुनामेह भवत्येतस्मादेव नि० २.५.]

गवाशिरम् गावः किरणा इन्द्रियाणि वाऽश्नन्ति यस्मिँस्तम् (सोमम्=ऐश्वर्यकारकं पेयम्) ३.३२.२. गावोऽश्नन्ति तं यम् (सोमम्=ओषधिगणमिवैश्वर्यम्) ३.४२.१. **गवाशिरः**=ये गोभिरिन्द्रियैर्वाऽश्यन्ते ये गोभिः किरणैर्वाऽश्यन्ते (सोमाः=ऐश्वर्ययुक्ताः पदार्थाः) १.१३७.१. गोरससंस्कर्त्ता (जनः) १.१८७.९. गाः किरणानश्नुते तस्य (शुक्रस्य=उदकस्य) २.४१.३. [गो-आङ्-अशिरपदानां समासः। गौरिति व्याख्यातम्। अशिरम् अश भोजने (क्र्या०) धातोः 'अशेर्नित्' उ० १.५२. सूत्रेण किरच्प्रत्ययः]

गविषः गवामिच्छोः (राज्ञः) ४.४१.७. गा इच्छन् (राजा) गाः प्राप्तुमिच्छन् (सविता=सवितृलोकम्) ४.१३.२. ['गो' इत्युपपदे इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः क्विप्]

गविष्टिषु किरणानां सङ्गतिषु ५.६३.५. गवां किरणानामिष्टयः सङ्गतयो यासु क्रियासु तासु ६.५९.७. **गविष्टौ**=गवां किरणानां सङ्गमने ३.४७.४. किरण-समागमे ६.३१.३. गवां किरणानां सङ्गत्याम् ३३.६३. गोः स्वर्गस्य सुखविशेषस्येष्टाविच्छायां सत्याम् ३४.२३. गवामिन्द्रिय-पृथिवीराज्य-विद्याप्रकाशकानामिष्टयो यस्मिँ-स्तस्मिन् तम् (चक्रवर्त्तिराज्यैश्वर्ये) १.९१.२३. गोः सुशिक्षिताया वाचः सङ्गतौ ६.४७.२०. [गो-इष्टिपदयोः समासः। गौरिति व्याख्यातम्। इष्टिः=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां भावे क्तिन्]

गविष्ठिरः=यो गवि सुशिक्षितायां वाचि तिष्ठति (विद्वज्जनः) ५.१.१२. गोषु किरणेषु तिष्ठतीति (विद्युत्) १५.२५. [गो-स्थिरपदयोः समासः। गौरिति व्याख्यातम्। स्थिरम्=ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'अजिरशिशिर०' उ० १.५३. सूत्रेण किरच् निपात्यते। 'गवियुधिभ्यां स्थिरः' इति षत्वम्। 'हलदन्तात्सप्तम्याः०' इत्यलुक्]

गवेन्द्रियम् भा०—ऐश्वर्यम् २१.३२.

गवेषणम् गां भूमिं प्रापकम् (रथं=प्रशस्तं यानम्) ७.२३.३. गवां वाचादीनामीषणं येन तम् (विद्वद्गणम्) ६.५६.५. **गवेषणः**=उत्तमवाग्विद्याऽन्वेषी (न्यायकारी राजा) ७.२०.५. यो गां वाणीमिच्छति सः (विद्वज्जनः) गवां किरणानामिष्टः सूर्य इव (विद्वान्) १.१३२.३. ['गो' इत्युपपदे इषु गतौ (दिवा०) धातोर्नन्द्यादित्वाल्ल्युः प्रत्ययः। 'गो' इति व्याख्यातम्]

गव्यता गौरिवाऽऽचरन्तौ (जनौ) १.१३१.३. गवा वाचेवाऽऽचरता (मनसा) ६.४६.१०. आत्मनो गौरिवाचरता (मनसा=अन्तःकरणेन) ३.३१.९. गोः प्रचुरो गव्यं तदाचरतीव तेन (वचसा=वचनेन) ४.१.१५. **गव्यते**=गौरिवाचरते (सज्जनाय) ६.४५.२६. **गव्यन्**=गौरिवाऽऽचरन् (सज्जनः) ३.३३.११. **गव्यन्तः**=आत्मनो गा इच्छन्तः (विप्राः=मेधाविनो जनाः) ४.१७.१६. आत्मनो गां सुशिक्षितां वाचमुत्तमां भूमिं वेच्छन्तः (सत्पुरुषाः) ७.३२.२३. गां वाणीं चक्षाणाः (मनुष्याः) २७.३६. आत्मनो गा इन्द्रियाणीच्छन्तः (जनाः) प्र०—अत्र गोशब्दात् 'सुप आत्मनः क्यच्' अ० ३.१.८. इति क्यच्प्रत्ययः 'गौरिति पदनामसु पठितम्, निघं० ४.१, १.३३.१. [गौरिति व्याख्यातम्। गोपदाद् इच्छायामर्थे क्यचि शतृप्रत्ययः]

गव्यम् गवामिदम् (दुग्धादिकम्) ६.१७.१. गवां भावम् १.१२६.३. गोरिदम् (वस्तु) ५.२९.१२. गोमयं वाङ्मयम् ४.२.१७. गोषु साधुम् (पशुम्) ५.६१.५. गोभ्यो हितम् (राधः=धनम्) २७.२७. गोभ्यः पशुभ्य इन्द्रियेभ्यो वा हितम् १.७२.८. गोविकारं दुग्धादिकं सुवर्णादिकं वा १.१४०.१३. गवे वाचे हितं व्यवहारम् ४.५८.१०. गवि वाचि भवं बोधं, धेनौ भवं दुग्धादिकं वा १७.९८. **गव्यस्य**=गवां किरणानां विकारस्य ५.३०.१५. **गव्येभिः**=गोर्विकारैर्घृतादिभिः ६.६०.१४. [गोप्राति० अवयवविकारयोरर्थयोः 'गोपयसोर्यत्' इति यत्। अथवा हितार्थे साध्वर्थे भवार्थे वा यत्]

गव्या गोषु हितानि (राधांसि=धनानि) ६.४४.१२. गव्यानि सुवाचि भवानि (प्रवचनानि) ७.१८.७. [गोप्राति० हितार्थे भवार्थे वा यत्]

गव्युः गां पृथिवीराज्यमिच्छुः (इन्द्रः=राजा) ६.४१.२. आत्मनो गां वाणीमिच्छुः (पूर्णविद्यो जनः) ३.३१.८. य आत्मनो गां पृथिवीं वाचं वेच्छुः (धार्मिको जनः) ४.२३.१०. गां पृथिवीमुत्तमां वाचं, वा कामयमानः (धर्मात्माऽऽप्तो विद्वान्, राजाऽध्यापकः परीक्षको वा) ७.३१.३. आत्मनो गा धेनु-पृथिवीन्द्रियकिरणानिच्छुः (इन्द्रः=सर्वाधीशो जनः) १.५१.१४. बहवो गावो विद्यन्ते यस्मिन् सः (रथः=विमानादियानविशेषः) ४.३१.१४. [गोपदादिच्छायां क्यचि 'क्याच्छन्दसी' ति ताच्छील्ये उः प्रत्ययः]

गव्यूतिम् मार्गम् ५.६६.३. क्रोशद्वयम् ३.६२.१६. क्रोशयुग्मम् २१.९. [गो-यूतिपदयोः समासः। 'अध्वपरिमाणे च' अ० ६.१.७९ वा० सूत्रेण वान्तादेशः]

गव्यूती गवां यूतयः स्थानानि, प्र०—(वा०—गोर्यूतौ छन्दस्युपसङ्ख्यानम्, अ० ६.१.७९, १.२५.१६. [गो-यूतिपदयोः समासे 'गोर्यूतौ छन्दस्युपसंख्यानम्' अ० ६.१.७९. वा० सूत्रेण वान्तादेशः। यूतिः=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्तिन्प्रत्यये 'ऊतियूतिजूति०' अ० ३.३.९७. सूत्रेण दीर्घत्वं निपात्यते]

गहनम् कठिनं सैन्यम्, अ०—शत्रुदलम् ८.५३. [गहनम् उदकनाम निघं० १.१२.]

गहि सर्वतः प्राप्नुहि ३.४२.२. गच्छ गच्छति वा १.१९.३. प्राप्नुहि प्रापयति वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययो 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् 'वाच्छन्दसि' अ० ३.४.८७. इति हेरपित्वाद् 'अनुदात्तोपदेश०' अ० ६.४.३७. अनेनानुनासिकलोपश्च १.१४.२. आगच्छ प्राप्नुहि वा ७.३२.१. प्राप्नोति १.२३.१. प्राप्नुयाः ४.३२.५. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। विकरणस्य लुक्]

गह्वरेष्ठा गह्वरे गहने गभीर आभ्यन्तरे तिष्ठतीति (तनूः=व्याप्तं शरीरम्) ५.८. **गह्वरेष्ठाय**=गह्वरेषु गहनेषु तिष्ठति तत्र सुसाधवे (पुरुषाय) १६.४४. [गह्वरोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः। 'हलदन्तात्०' इति सप्तम्या अलुक्। सुषामादित्वात् मूर्धन्यादेशः। गह्वरः=गाहते विलोडयतीति विग्रहे गाहू विलोडने (भ्वा०) धातोः 'छित्वरछत्वरधीवर०' उ० ३.१. सूत्रेण ष्वरच् प्रत्यये ह्रस्वत्वं निपात्यते। गह्वरम् उदकनाम निघं० १.१२.]

गा इव पृथिव्या इव, ३.४५.३. [गौरिति पृथिवीनाम निघं० १.१.]

गाङ्ग्यः यो गां गच्छति तस्या अदूरभवः (कक्षः=क्रान्तस्तटादिः) ६.४५.३१. ['गो' इत्युपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति डः प्रत्ययः। द्वितीयाया अलुक्। गाङ्गप्राति० अदूरभवार्थे ण्यः। अथवा गङ्गाप्राति० अदूरभवार्थे ण्यः]

गाणपत्यम् गणानां सेनासमूहानां पतित्वम् ११.१५. [गणपतिप्राति० भावे कर्मणि वा 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' अ० ५.१.१२८. सूत्रेण यक्]

गात् प्राप्नोतु ३३.५६. प्राप्नोति ७.३.६. प्राप्नुयात् ३.३१.१. एति १.१०४.५. गच्छेत्, प्र०—अत्र लडर्थे लुङडभावश्च १.३८.५. गच्छति १.१६७.५. **गात**=गच्छन्तु प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् पुरुषव्यत्ययश्च ३.२१. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ्। 'इणो गा लुङी' ति गादेशः। अड-भावश्च]

गातन प्रशंसत ५.५५.६. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ्। इणो गादेशः तस्य तनबादेशश्च। गा स्तुतौ (जुहो०) धातोर्लोड् वा। व्यत्ययेन शपो लुक्]

गातवे स्तावकाय (वैश्वानराय=विद्वज्जनाय) ३.३.१. **गातुभिः**=विद्यासुशिक्षिताभिर्वाणीभिः १.१००.४. **गातुम्**=पृथिवीम्, प्र०—गातुरिति पृथिवीनाम, निघं० १.१. 'गातुमिति वाङ्नाम' निघं० १.११, १.११२.१६. पृथिवीराज्यादिनिष्पन्नमुपकारम्, भूगर्भविद्यान्वितं भूगोलम् ८.२१. गीयते ज्ञायते येन स गातुवेदस्तम्, प्र०—गातुरिति पदनामसु पठितम्, निघं ४.१. अनेन ज्ञानार्थो गृह्यते, गीयते शब्द्यते यस्तं यज्ञम् २.२१. बोधसमूहम् १.७२.६. वाणीम् ४.१८.१०. स्तुतिम् १.१५१.२. प्राप्तव्यम् (ऊर्मिम्=उषसम्) १.६५.१०. **गातुः**=स्तावकः (जनः) ३.४.४. [गायति षड्जादिस्वरान् आलापयतीति विग्रहे गा स्तुतौ (जुहो०) धातोः 'कमिमनिजनि०' उ० १.७३. सूत्रेण तुः प्रत्ययः। गातुः पृथिवीनाम निघं० १.१. पदनाम निघं० ४.१. गातुम् गमनम् नि० ४.२१. गातुं वित्त्वेति यज्ञं वित्त्वेत्येवैतदाह श० १.६.२.२८. गातुं गमनम् नि० ४.२२.]

गातुमत्या प्रशस्तवाग्भूमियुक्तया (संसदा=सभया) ७.५४.३. [गातुपदं व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां मतुपि स्त्रियां ङीप्]

गातुयन् यो गातुं पृथिवीमेति सः (सविता=सूर्यः) १.५२.८. [गातूपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः। गातुपदं व्याख्यातम्]

गातुयन्तीव आत्मनो गातुं पृथिवीमिच्छन्तीव १.१६९.५. [गातुरिति व्याख्यातम्। तत इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छत्रन्तान् ङीप्। तत इवपदेन समासः]

गातुवित् प्रशंसावित् (सोमः=विद्वान्) ३.६२.१३. यो भूगर्भविद्यया गातुं पृथिवीं वेत्ति सः (राजा) १.५१.३. **गातुविदम्**=वेदवाग्वेत्तारम् (शुभगुणकर्मस्वभावयुक्तं जनम्) १.१०५.१५. **गातुविदः**=गीयते स्तूयतेऽनया सा गातुः स्तुतिस्तस्या विदो वक्तारः (देवाः=विद्वज्जनाः) प्र०—'कमिमनिजनि०' उ० १.७३. अनेन 'गा स्तुतौ' इत्यस्मात् तुः प्रत्ययः २.२१. स्वगुणकर्मस्वभावेन गातुं पृथ्वीं विदन्तः (देवाः=गृहपतयो जनाः), प्र०—गातुरिति पृथ्वीनामसु पठितम्, निघं० १.१, ८.२१. [गातूपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः क्विप्। गातुरिति व्याख्यातम्। गातुविदो हि देवाः श० ४.४.४.१३.]

गात्रा गात्राण्यङ्गानि १.१६२.१८. [गच्छति चेष्टतेऽनेनेति गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'गमेरा च' उ० ४.१६६. सूत्रेण त्रन्-प्रत्यय आकारादेशश्च। 'शेश्छन्दसि बहुलमि' ति शेर्लोपः]

गात्रात् हस्तात् १.१६२.११. **गात्राणाम्**=अङ्गानाम् २५.४२. **गात्राणि**=अङ्गानि २३.३६. [गात्रं व्याख्यातम्]

गाथपतिम् यो गाथानां स्तावकानां विदुषां पतिः पालकस्तम् (रुद्रम्=परमेश्वरम्) १.४३.४. [गाथ-पति-पदयोः समासः। गाथः=गा स्तुतौ (जु०) धातोः 'उषिकुषि०' उ० २.४. सूत्रेण थन्]

गाथम् प्रशंसनीयमुपदेशम् १.१६७.६. **गाथानाम्**=परस्परं प्रश्नोत्तरकथनयुक्ता गाथास्तासाम्, ऋ० भू० ८३. [गा स्तुतौ (जु०) धातोः 'उषिकुषिगार्त्तिभ्यस्थन्' उ० २.४. सूत्रेण थन्प्रत्ययः]

गाथान्यः यो गाथां नयति तस्य (सज्जनस्य) १.१९०.१. [गाथोपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

गाथिनः गानकर्त्तारः (अर्किणः=विद्वांसो जनाः) १.७.१. [गाथाप्राति० मत्वर्थ इनिः प्रत्ययः। गाथा वाङ्नाम निघं० १.११.]

गाधम् अपरिमितमुदकम् ७.६०.७. विलोडनम् १.६१.११. प्रज्ञाविलोडनम् ६.४८.६. गभीरम् ५.४७.७. गृहीतपरिमाणम् (गुणसमूहम्) ६.२४.८. **गाधानि**=परिमितानि (अर्णांसि=उदकानि) ७.१८.५. [गाहू विलोडने (भ्वा०) धातोर्घञ् भावे। हकारस्य धकारश्छान्दसः। अथाप्यन्तव्यापत्तिर्भवति, ओघो मेघो नाधो गाधः नि० २.२.]

गानि गच्छेयम् ४.१८.३.

गाम् वाणीं पृथिवीं वा ३५.१८. युवावस्थास्थं वृषभम् २८.३२. वाचम् २८.२५. धेनुम् ६.४६.२. धेन्वादिकं पृथिव्यादिकं वा १२.७८. प्राप्तव्यं बोधम् २८.२७. बलीबर्दम् १.१५१.४. ['गवि' पदे द्रष्टव्यम्]

गामय प्रापय, प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इति दीर्घः ५.५.१०.

गाय पठ पाठय वा १.३८.१४. प्रशंस ६.१६.२२. स्तुहि ६.४०.१. [गै शब्दे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

गायत् स्तूयात्, प्र०—अत्राऽडभावः १.१६७.६. गायेत् १.१७३.१. [गै शब्दे (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावः]

गायत आलपत १.३७.४. नित्यमर्चत, प्र०—गायतीति अर्चति कर्मसु पठितम्, निघं० ३.१४, १.४.१०. गानं कुरुत १.२१.२. प्रशंसत ५.६८.१. गुणश्रवणास्तवनाभ्यां विजानीत १.५.४. शास्त्राणि पाठयत ३३.६२. **गायन्ति**=सामवेदादिगानेन प्रशंसन्ति १.१०.१. **गायसि**=तुम गाते ही हो, आर्याभि० १.५२, ऋ० १.८.६.८. [गै शब्दे (भ्वा०) धातोर्लोट् । गायतीति अर्चति कर्मसु पठितम् निघं० ३.१४.]

गायत्रम् गायत्र्या विहितं विज्ञानम् १२.४. गायतां रक्षकम् (परमेश्वरम्) १.१६४.२३. गायन्तं त्रातृविज्ञानम् १.१२०.६. गायत्रीम् २.४३.१. गायत्रीछन्दसा प्रकाशितम् (छन्दः) ३८.६. गायत्रीनिष्पन्नमर्थम् १२.५. गायत्र्येव छन्दः १३.५४. गायत्र्या विहितं विज्ञानम् १२.४. गायत्री प्रगाथा येषु चतुर्षु वेदेषु तं वेदचतुष्टयम् १.२७.४. **गायत्रस्य**=गायत्रीप्रगाथस्य छन्दस आनन्दकरस्य व्यवहारस्य वा १.७९.७. गायत्र्या संसाधितस्य (समिधः) १.१६४.२५. **गायत्रः**=गायत्रीप्रगाथोऽस्य सः (भागः) प्र०—'सोऽस्यादिरिति छन्दसः प्रगाथेषु अ० ४.२.५५. अनेन प्रगाथविषये प्रत्ययः ४.२४. **गायत्राय**=गायत्रादिछन्दो-विज्ञापिताय (अग्नये=पावकाय) २९.६०. **गायत्रे**=गायत्री-छन्दो-वाच्ये (मन्त्रे) १.१६४.२३. **गायत्रेण**=गायत्रीछन्दोऽभिहितेन बोधेन १.१८८.११. गायत्रीप्रगाथोऽस्य तेन (छन्दसा) ५.२. गायत्रीछन्द आदिर्यस्य प्रगाथस्य तेन, प्र०—सोऽस्यादितिरिति छन्दसः प्रगाथेषु, अ० ४.२.५५. इति गायत्री-शब्दादण् १.१२.११. गायत्र्येव गायत्रं तेन (छन्दसा), प्र०—छन्दसा प्रत्ययविधाने नपुंसकात् स्वार्थ उपसङ्ख्यानम्, अ० ४.२.५५. अनेन वार्त्तिकेन गायत्रशब्देऽण्, त्रैष्टुभादिषु अञ् च १.२७. गायत्रीनिर्मितेन (छन्दसा=स्वच्छन्देना ऽर्थेन) १३.५३. गायत्रीछन्दसा १.१६४.२४. गायत्रीछन्दोवाच्येन (अर्थेन) २३.८. गायन्ति सद्विद्या येन तेन वेदस्थविभक्तेन स्तोत्रेण ११.६५. वेदविहितेन (छन्दसा) ११.५८. वेदस्थेन (छन्दसा=सत्क्रियया) ११.६०. **गायत्रेषु**=यानि गायत्रीछन्दस्कानीमानि वेदोक्तानि स्तोत्राणि तेषु १.२१.२. [गायत्रं गायतेः स्तुतिकर्मणः नि० १.८. गायति अर्चति कर्मा (निघं० ३.१४.) धातोर्बाहुलकाद् औणादिको ऽत्रन् प्रत्ययः । अथवा गायत्रीप्राति० 'सोऽस्यादिरिति छन्दस प्रगाथेषु' अ० ४.२.५५. सूत्रेणाण् । अथवा गायत्रीप्राति० स्वार्थे 'छन्दसः प्रत्ययविधाने नपुंसकात् स्वार्थे उपसंख्यानम्' अ० ४.२.५५. वा० सूत्रेणाण् । गायत्रो मैत्रावरुणः तां० ५.१.१५. गायत्रः सप्तदशः स्तोमः तां० ५.१.१५. गायत्रं वै प्रातःसवनम् ऐ० ६.२. ष० १.४. गायत्राः पशवः तै० ३.२.१.१. गायत्रो वै पुरुषः ऐ० ४.३. गायत्रं प्रातःसवनम् जै० उ० ४.२.२. इमे वै लोका गायत्रं (साम) तां० ७.१.१. गायत्रो यज्ञः गो० पू० ४.२४. गायत्रं वै रथन्तरम् तां० ५.१.१५. गायत्रं हि शिरः श० ८.६.२.६. गायत्रच्छन्दा अग्निः तां० १६.५.१९. गायत्रं साम जै० उ० १.१.८. गायत्रोऽयं (भूलोकः) कौ० ८.९. गायत्रेऽस्मिँल्लोके गायत्रोऽयमग्निरध्यूढः कौ० १४.३. प्राणो गायत्रं (साम) तां० ७.१.९. तत्प्राणो वै गायत्रम् जै० उ० १.३७.७. गायत्र उ वै प्राणः तै० ३.३.५.३. कौ० ८.५. अग्निर्गायत्रः श० १६.१.१.१५. गायत्रमग्नेश्छन्दः कौ० १०.५. गायत्रो वै ब्राह्मणः ऐ० १.२८. गायत्रच्छन्दो वै ब्राह्मणः तै० १.१.९.६. गायत्रं वै व्रतस्य शिरः, तदधि ब्रह्म जै० २.४.१५. गायत्रं चक्षुः तै० ४.१.१०.५. गायत्रमेव हिंकारः जै० २.४३३. गायत्रो वै देवानां सविता मै० ४.७.१. गायत्रो वै बृहस्पतिः तां० ५.१.१५. गायत्रो हि यूपः मै० ३.९.३. मनो वै गायत्रम् जै० ३.३०५.]

गायत्रछन्दसम् गायत्रीछन्दोऽर्थविज्ञापकम् (विश्वकर्माणम्=अध्यापकम्) ८.४७. [ब्राह्मणो गायत्रीछन्दाः जै० १.६८. गायत्रछन्दा अग्निः तां० ७.८.४. गायत्रछन्दा वै ब्राह्मणः तै० १.१.९.६. श्येनोऽसि गायत्रछन्दाः तै० सं० ३.२.१.१. गायत्रं वै रथन्तरं गायत्रछन्दः तां० १५.१०.९.]

गायत्रवर्त्तनि गायत्रस्य वर्त्तनि मार्गो वर्त्तनं यस्मिँस्तत् (गानम्) ११.८.

गायत्रवेपसे गायत्रं गायन्तं त्रायमाणं वेपो रूपं यस्मात्तस्मै (इन्द्राय=धनाय) १.१४२.१२. [गायत्र-वेपस्-पदयोः समासः । गायत्रं व्याख्यातम् । वेपस् कर्मनाम निघं० २.१.]

गायत्रिणः गायत्राणि प्रशस्तानि छन्दांस्यधीतानि विद्यन्ते येषां ते धार्मिका ईश्वरोपासकाः (भा०—मनुष्याः) प्र०—अत्र प्रशंसायामिनिः १.१०.१. [गायत्रं व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थ इनिः]

गायत्री गायन्तं त्रायमाणा (ऋक्) २३.३३. पठितं

गायत्रीछन्दः १०.१०. या गायन्तं त्रायते सा (ईश्वर-प्रेरणा) १४.१८. **गायत्रीम्**=यया गायन्तं त्रायते तां नीतिम् ९.३२. सदर्थान् प्रकाशयन्तीम् (भा०—सद्विद्याम्) २८.२४. **गायत्र्या**=गायत्रीनिष्पादितया विद्यया १३.३४. भा०—वेदद्वारा २८.३५. **गायत्र्याम्**=गायतो रक्षिकायां विद्यायाम्, भा०—पवित्रविज्ञाने ३८.१८. **गायत्र्यै**=गायतो रक्षिकायै (ऋचे) २४.२२. गायत्र्याः प्र०—अत्र षष्ठ्यर्थे चतुर्थी १३.५४. (गायत्री गायतेः स्तुतिकर्मणः त्रिगमना वा विपरीता, गायतो मुखादुदपतदिति ब्राह्मणम् नि० ७.१२. अग्निर्हि गायत्री जै० ३.१८४.१९१. अथ यान्यष्टावहानि सा गायत्री जै० ३.९. अयं वै (पृथिवी) लोको गायत्री तृचाशीतिः ऐ० आ० १.४.३. अयमेव (भू)लोको गायत्री तां० ७.३.९. अष्टाक्षरा गायत्री ऐ० २.१७. कौ० ९.२. गो० १.४.२४. जै० १.११२. तां० ६.३.१३. तै० १.१.५.३. श० १.४.१.३३. जै उ० १.१.८. अष्टौ वसवोऽष्टाक्षरा गायत्री तै०सं० ३.४.९.६-७. इमे वै लोका गायत्री तां० १५.१०.९. इयं (पृथिवी) वै गायत्री मै० १.५.१०. एतद्धि (गायत्री) छन्द आशिष्टम् श० ८.२.३.९. एते वाव छन्दसां वीर्यवत्तमे यद्गायत्री च त्रिष्टुप् च तां० २०.१६.८. एते ह खलु वै छन्दसां वीर्यतमे यद् विराट् च गायत्री च। जै० २.३३५. एषा वै गायत्री ज्योतिष्पक्षा तयैव स्वर्गं लोकमेति काठ० २१.१०. गायत्री सर्वाणि छन्दांस्यपियन्ति जै० १.२९०. गायत्री छन्दसां (मुखम्) तां० ६.१.६. गायत्री छन्दोऽग्निर्देवताशिरः श० १०.३.२.१. गायत्रीं छन्दः (प्रजापतिः शीर्षत एव मुखतोऽसृजत) जै० १.६८. गायत्री देवेभ्योऽपक्रामत् तै० आ० ५.११.३. गायत्री पक्षिणी भूत्वा स्वर्गं लोकमपतत् काठ० २१.४. गायत्री ब्रह्मवर्चसम् मै० ४.३.१. तां० ५.१.९. तै० २.७.३.३. गायत्रीमेव प्रातःसवनं संपद्यते जै० २.१०१. गायत्री वसूनाम् (पत्नी) मै० १.९.२. काठ० ९.१०. गो० २.२.९. गायत्री वा वाऽग्निः श०. १.८.२.१३. गायत्री वै छन्दसामग्रं ज्यैष्ठ्यम् जै० २.२२७. गायत्री वै प्राची दिक् श० ८.३.१.१२. गायत्री वै प्राणः श० १.३.५.१५. गायत्री वै यज्ञस्य प्रमा काठ० ३२.४. गायत्री वै रथन्तरस्य योनिः तां० १५.१०.५. गायत्री वै रेवती तां० १६.५.१९. गायत्री वै श्येनः सोमभृत् मै० ३.७.९. गायत्री सुवर्गं लोकमञ्जसा वेद तै० सं० ५.२.३.४. काठ० २०.१. गायत्र्या वसवः (अन्वारभ्यन्त) काठ० ७.६. गायत्र्येव भर्गः गो० १.५.१५. ज्यैष्ठ्यं वै गायत्री जै० २.३४६. ज्योतिर्वै गायत्री तां० १३.७.२. तस्य (यज्ञस्य) गायत्र्येव प्रतिष्ठा जै० १.११९. तस्य (प्राणस्य) त्वग्गायत्री ऐ० आ० २.१.६. तेजो वै गायत्री तै० सं० ३.२.९.३. तां० १५.१०.७. पशवो गायत्री। जै० २.३११. पूर्वार्धो वै यज्ञ गायत्री श० ३.५.१.१०. मुखं गायत्री (छन्दसाम्) तां० ७.३.७. जै० २.१३. वाग् वै गायत्री मै० १.४.१३. काठ० २३.५. वीर्यं गायत्री श० १.३.५.४. संवत्सरो वै गायत्री तै० सं० २.४.३.२. मै० २.१.११.]

गायन्ति सामवेदादिगानेन प्रशंसन्ति १.१०.१. **गायसि**=गान करते हो, आर्याभि०, २.४३.२ [गायति अर्चकर्मा निघं० ३.१४. धातोर्लट्]

गारीत् निगलेत् ५.४०.७. [गॄ निगरणे (तुदा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

गार्हपत्यम् गृहस्थसम्बन्धी (अग्निम्=अग्निहोत्र) को सं० वि० १५२, अथर्व० १४.२.१८. **गार्हपत्यः**=गृहपतिना संयुक्तः (अग्निः=ईश्वरो भौतिको वा). प्र०—अत्र गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः' अ० ४.४.९०. अनेन ञ्यः प्रत्ययः। इदं पदं महीधरादिभिर्व्याकरणज्ञानविरहत्वात् गृहस्य पतिः पालक इत्यशुद्धं व्याख्यातम् ३.३९. **गार्हपत्यानि**=गृहपतिना संयुक्तानि कर्माणि २.२७. **गार्हपत्याय**=गृहकार्याय ऋ० भू० २०८. गृहाश्रम-कर्म के अनुष्ठान के लिए सं० वि० १२१, १०.८५.३६. **गार्हपत्येन**=गृहपतिना संयुक्तेन व्यवहारेण १.१५.१२. [गृहपतिप्राति० 'गृहपतिना संयुक्ते ञ्यः' अ० ४.४.९०. सूत्रेण संयुक्तार्थे ञ्यः। 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' अ० ५.१.१२८. सूत्रेण वा भावकर्मणोर्यक्। ऋग्वेदाद् गार्हपत्यः (अजायत) ष० ४.१. गृहा वै गार्हपत्यः श० १.१.१.१९. जाया गार्हपत्यः ऐ० ८.२४ प्रजापतिर्वै गार्हपत्यः कौ० २७.४. अथैष गार्हपत्यो यमो राजा श० २.३.२.२. अन्नं वै गार्हपत्यः श० ८.६.३.५. कर्मेति गार्हपत्यः जै० उ० ४.२६.५. अयं वै भूलोको गार्हपत्यः श० ७.१.१.६. ष० १.५. प्राणोदानावेवाहवनीयश्च गार्हपत्यश्च श० २.२.२.१८. अपणो वै गार्हपत्यः कौ० २.१. यजमानदेवत्यो वै गार्हपत्यः श० २.३.२.६. य इहाहीयत स गार्हपत्यः श० १.७.३.२२. गार्हपत्यो वा अग्नेर्योनिः तै० १.४.७.४. यद् गार्हपत्यं (उपतिष्ठते) पुरुषांस्तद्याचते श० २.३.४.३२. यद् गार्हपत्यम् (उपतिष्ठते) पृथिवीं तत् (उपतिष्ठते) श० २.३.४.३६. प्रतिष्ठा जाया गार्हपत्यः तै० सं० ५.२.३.६.]

गावः रश्मयः, प्र०—गाव इति रश्मिनामसु पठितम्, निघं० १.५, ६.३. धेनवः किरणा वा १२.८२. धेनवो वत्सस्थानानीव सुशिक्षिता वाचः ४.२३.९. पृथिव्यो धेनवो

वा ४.४१.८. गवादयः पशवः ७.१०. पशुपृथिवीन्द्रियविद्याप्रकाशाह्लादादयः ऋ० भू० २४०. गमनशीलाः (किरणाः) १.६२.१. किरणाः १.१५४.६. सूर्य की किरणे, विद्वानों का मन और गाय पशु, आर्याभि० १.३७, ऋ० १.६.२१.१३. धेनवः, प्र०—गाव इत्युपलक्षणमेकदताम् भा०—गवाश्वादयो ग्राम्याः सर्वे पशवः ३१.८. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'गमेर्डोः' उ० २.६७. सूत्रेण डोः प्रत्ययः तस्य प्रथमाबहुवचने रूपम् । गावः=रश्मिनाम निघं० १.५. गौ पृथिवीनाम निघं० १.१. वाङ्नाम निघं० १.११. स्तोतृनाम निघं० ३.१६. साधारणनाम निघं० १.४. यद्दूरं गता भवति, यच्चास्यां भूतानि गच्छन्ति, गातेर्वौकारो नामकरणः निघं० २.५. पयः नि० २.५. चर्म च श्लेष्मा च नि० २.५. ज्यापि गौरुच्यते नि० २.६. शेषं द्रष्टव्यं गौरिति पदे]

गावेव यथा धेनुवृषभौ ३.३३.१. [व्याख्यातं गाव इति पदे]

गावौ किरणाविव सेनाराजनीती ६.२७.७. [व्याख्यातं गाव इति पदे]

गासि प्रशंससि ५.२५.१. [गा स्तुतौ (जु०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

गाहते विलोडते १.१२७.४. [गाहू विलोडने (भ्वा०) धातोर्लट्]

गाहमानः विलोडनं कुर्वन् (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३९. [गांहू विलोडने (भ्वा०) धातोः शानच्]

गाः इन्द्रियाणि १.१०.८. किरणान् १.९१.२२. धेनूरिव ६.२७.८. भूमीर्वाचो वा ६.४७.१४. पृथिव्यादीन् ४.३२.२२. पृथिवीराज्यानि ४.१७.१०. पृथिवीन्द्रियाणि प्रकाशयुक्तान् लोकान् वा १.१०१.५. भूगोलस्थाभूमीः १.११८.२. या गच्छन्ति ताः (वाणीः=वाचः) ३.३०.१०. [व्याख्यातं गाव इति पदे]

गाः प्राप्नुयाः ४.३.१३. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङी' ति गादेशः । अडभावः सिचश्च 'गातिस्था०' इति लुक्]

गिरम् योगसंस्कारयुक्तां वाचम् ७.५.१. **गिरः**=गीर्यते निगल्यते यदेनं तत् १५.५. गृणन्ति ये ते गिरो विद्वांसः १.६.६. वाचः ५.११.५. सत्या वाचः, भा०—करुणामयानुपदेशान् १३.५२. वाणीः १.८४.८. स्तुतयः १.५३.१. उपदेशरूपा वाणीः १.१७६.२. स्तुतिवाचः ५.२९. सुवाचः ६.४७.१. वेदवाण्यः १.९.४. वेदवाणीः १.१४.१. वेदविद्यासंस्कृता वाचः भा०—साङ्गोपाङ्गान् वेदान् १२.५६. धर्म्या वाचः ५.१०.४. सर्वदेशभाषाः १.१२२.१४. विद्यासत्यभाषणादियुक्ता वाण्यः, प्र०—गीरिति वाङ्नामसु पठितम्, निघं० १.११, १.५.८. **गिरा**=वेदवाण्या विद्यया ऋ० भू० १५९. सुशिक्षितया सत्यया कोमलया वाचा ५.५२.१३. **गिराम्**=प्रवर्त्तमानां वाचाम् १.१०.३. न्यायविद्यायुक्तानां वाचाम् ६.२४.१. [गी वाङ् नाम निघं० १.११. गॄ निगरणे (तुदा०) गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्वा क्विप् । वाग्वै गीः श० ७.२.२.४. विशो गिरः श० ३.६.१.२४.]

गिरयः ये जलं गिलन्ति शब्दं वा गृणन्ति ते मेघाः १.६४.७. शैला मेघा वा १.६३.१. **गिरिम्**=यो गृणाति शब्दयति तम् (अश्मानं=मेघम्) ५.५६.४. गिरिवद्वर्त्तमानं मेघम् ४.१७.३. **गिरिः**=यो गिरति जलादिकं गृणाति महतः शब्दान्वा सः (मेघः) १.३७.७. [गॄ निगरणे (तुदा०) धातोः, गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्वा, 'कॄगॄशॄ०' उ० ४.१४३. सूत्रेण इः प्रत्ययः किच्च । गिरिः मेघनाम निघं० १.१०. गिरिः पर्वतः नि० १.२०. तस्य (वृत्रस्य) एतच्छरीरं यद् गिरयो यदश्मानः श० ३.४.३.१३. गिरिर्वै रुद्रस्य योनिः मै० १.१०.२०. शीर्षहार्यं गिरौ जीवनम् तै० सं० ६.१.९.४.]

गिरिक्षिते गिरयो मेघा शैला वा क्षितो व्युष्टा यस्मिँस्तस्मै (विष्णवे=ईश्वराय) १.१५४.३. [गिरिक्षितपदयोः समासः गिरिर्व्याख्यातम् क्षितः=क्षिनिवासगत्योः (तुदा०) धातोः क्तः]

गिरिचराय यो गिरिषु पर्वतेषु चरति तस्मै जाङ्गलाय (पुरुषाय) १६.२२. [गिर्युपपदे चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'चरेष्टः' अ० ३.२.१६. सूत्रेण टः प्रत्ययः]

गिरिजाः ये गिरौ मेघे जाताः (गर्जनादिप्रभावाः) ५.८७.१. [गिर्युपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः सप्तम्यां जनेर्डः' अ० ३.२.९७. सूत्रेण डः प्रत्ययः]

गिरित्र ! गिरीन् विद्योपदेशकान् मेघान् वा त्रायते रक्षति, तत्सम्बुद्धौ (सेनापते) १६.३. [गिर्युपपदे त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति डः प्रत्ययः]

गिरिश ! यो गिरिषु पर्वतेषु मेघेषु वा शेते तत्सम्बुद्धौ (वैद्यराज) १६.४. भा०—वैद्यकशास्त्रमधीत्य पर्वतादिषु स्थितानामोषधीनामपां वा सुपरीक्षक (विद्वद्वैद्यराज) १६.४. [गिरिति व्याख्यातम् । तदुपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः 'गिरौ डश्छन्दसि' अ० ३.२.१५. वा० सूत्रेण डः प्रत्ययः]

गिरिशन्त गिरिणा मेघेन वा शं तनोति, तत्सम्बुद्धौ (सेनापते) १६.३. यो गिरिणा मेघेन सत्योपदेशेन वा शं सुखं तनोति, तत्सम्बुद्धौ (शिक्षक जन), प्र०—गिरिरिति मेघनाम, निघं० १.१०, १६.२. [गिरि-शमुपपदे तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति डः प्रत्ययः]

गिरिशयाय यो गिरिषु पर्वतेषु श्रितः सन् शेते तस्मै वानप्रस्थाय (जनाय) १६.२९. [गिरिरिति व्याख्यातम्। तदुपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः 'अधिकरणे शेतेः' अ० ३.२.१५. सूत्रेणाच् प्रत्ययः]

गिरिष्ठाम् गिरौ मेघे स्थितम् (शुक्रम्=उदकम्) प्र०—गिरिरिति मेघनाम, निघं १.१०, ५.४३.४. **गिरिष्ठाः**=गिरौ तिष्ठतीति (मृगः=सिंहः), प्र०—क्विबन्तोऽयं प्रयोगः ५.२०. [गिरिति व्याख्यातम्, तदुपपदे ष्ठा गति निवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप् प्रत्ययः । गिरिष्ठा-गिरिस्थायी नि० १.२०.]

गिर्वणसम् गीर्भिः सेव्यमानम् (धनाढ्यजनम्) ६.५०.६. यो गीर्भिर्वनति सम्भजति, वनुते याचते वा तम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.३४.३. विद्यावाक्-सेवमानम् (श्रीमज्जनम्) २.६.३. **गिर्वणसे**=गिरः सुशिक्षिता वाचो वनन्ति सम्भजन्ति वा तस्मै (नरे=नायकाय जनाय) ३४.१६. गीर्भिः स्तोतुमर्हाय (सभाद्यध्यक्षाय) १.६२.१. **गिर्वणः**=गीर्भिः प्रशंसनीय (शुभाचरण जन) ६.४५.२८. य उत्तमाभिर्वाग्भिः सेव्यते तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ६.३२.४. यो गीर्यते याच्यते तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ३.५१.१०. वेदशिक्षाभ्यां संस्कृताभिर्वाग्भिर्वन्यते सम्यक् सेव्यते यस्तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सर्वरक्षकेश्वर) १.५.१०. गीर्भिर्वन्यते सम्भज्यते स गिर्वाणास्तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=विद्वज्जन) प्र०—गिर्वणा देवो भवति गीर्भिरेनं वनयन्ति, निरु० ६.१४. देवशब्देनाऽत्र प्रशस्तैर्गुणैः स्तोतुमर्हो विद्वान् गृह्यते 'गिर्वणस इति पदनामसु पठितम्' निघं० ४.३, १.५.७. गीर्भिर्वन्द्यते सेव्यते जनैस्तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाध्यक्ष) १.११.६. गीर्भिर्वेदानां विदुषां च वाणीभिर्वन्द्यते संसेव्यते यस्तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=भगवन्) १.१०.१२. सुशिक्षितवाचा स्तुत (इन्द्र=विद्वज्जन) ६.४०.५. गीर्भिः सत्कृत (इन्द्र=राजन्) ४.३२.८. यो गीर्भिर्वन्यते सम्भज्यते तत्सम्बुद्धौ (अग्ने!) १.४५.२. यो गीर्भिर्वन्यते याच्यते तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=धनाढ्य जन) ३.४१.४. सुशिक्षिताभिः सेवित (इन्द्र=राजन्) ६.४६.१०. यो गीर्भिर्वेदविद्या संस्कृताभिर्वाग्भिर्वन्यते सम्भज्यते, तत्सम्बुद्धौ(इन्द्र=राजन्) १.५७.४. [गीः वाङ्नाम निघं० १.११. तदुपपदे वनु याचने (तना०) धातोः, वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्वा औणादिकोऽसुन् प्रत्ययः । गिर्वणो देवो भवति, गीर्भिरेनं वनयन्ति नि० ६.१५.]

गिर्वणस्तमः अतिशयेन वाग्भिः प्रशंसनीयः (राजा) ६.४५.२०. [गिर्वणस् इति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

गिर्वणस्तमा: अतिशयेन सुशिक्षितां वाचं सेवमानौ (इन्द्राग्नी=नरेश-सेनापती) ५.८६.४. [व्याख्यातम् । सुपां सुलुगित्याकारः]

गिर्वाहसम् यो गिरा वहति प्राप्यते वा तम् (सज्जनम्) ४.४४.१. सुशिक्षित-वाक्प्रापकम् (विद्वज्जनम्) ६.२१.२. **गिर्वाहसे**=यो गिरो विद्यावाचो वहति तस्मै (इन्द्राय=विदुषे जनाय) १.६१.४. **गिर्वाहः**=ये गिरो वहन्ति प्रापयन्ति ते (विद्वांसः) ६.२४.६. गीर्भिर्वेदस्य वाग्भिरुह्यते प्राप्यते यस्तत्सम्बुद्धौ (सेनाध्यक्ष) प्र०—अत्र कारकोपपदाद् वह धातोः 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' उ० ४.१९६. अनेनाऽसुन्प्रत्ययः 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति पूर्वपदस्य दीर्घादेशो न १.३०.५. उपदेशगिरां प्रापक (विद्वज्जन) १.१३९.६. [गिरोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तादौणादिकोऽसुन्]

गीताय गानाय ३०.६. [गै शब्दे (भ्वा०) धातोरौणादिको बाहुलकात् क्तः । 'घुमास्था०' अ० ६.४.६६. सूत्रेणेकारादेशः]

गीयमानासः सुगीताः (गिरः=वाचः) ६.६९.२. [गै शब्दे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच् । 'घुमास्था०' सूत्रेणेकारादेशः]

गीः सत्यप्रिया वाक् १.१६८.१०. सुशिक्षिता वाक् १.१८३.२. वाणी, प्र०—गीरिति वाङ्नामसु पठितम्, निघं० १.११, ३.४६. वेदविद्याशिक्षायुक्ता वाणी १.१६७.११. सत्यगुणाढ्या वाणी १.१७३.१२. गायन्ति पदार्थान् यया सा (वाक्) ४.४३.८. आज्ञप्ता वाक् १.१८३.४. [गॄ निगरणे (तुदा०) गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्वा क्विप् । गीः वाङ्नाम निघं० १.११. गिरः स्तुतयो गृणातेः नि० १.१०. गिरा गीत्या स्तुत्या नि० ६.२४. वाग्वै गीः श० ७.२.२.५. विशो गिरः श० ३.६.१.२४.]

गुङ्गूः अव्यक्तोच्चारणा (विदुषी स्त्री) २.३२.८. [गुङ् अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप् ।

तदुपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः मितद्र्वादित्वाद् डुप्रत्यये स्त्रियामूङ्]

गुदम् क्रीडाम् २३.२१. [गुद क्रीडायामेव (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । प्राणो वै गुदः श० ३.८.४.३.]

गुदाः गुह्येन्द्रियाणि १९.८६. [गुद क्रीडायामेव (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः]

गुप्ता गुप्तानि रहस्यानि (सख्या=सख्युः कर्माणि) २.३२.२. अथर्व० [गुपू रक्षणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

गुप्ताः रक्षिताः (गृहस्थ मनुष्य लोग) सं० वि० १४३, अथर्व० १२.५.३. [गुपू रक्षणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

गुरस्व उद्यमं कुरुष्व, ३.५२.२. [गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोर्लोट्]

गुरु भारवत् (द्वेषः=अप्रीतिम्) ७.५६.१९. गुरुत्वयुक्तं न्यायाचरणं पृथिव्यादिकं द्रव्यं वा १.३९.३. [गॄ निगरणे (तुदा०) धातोः, गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्वा 'कृग्रोरुच्च' उ० १.२४. इत्युप्रत्ययो धातोश्चोकारादेशः]

गुरुम् महान्तम् (मन्म=विज्ञानम्) ४.५.६. **गुरुः**=उपदेष्टा (विद्वज्जनः) १.१४७.४. बड़ा (भार) सं० वि० १६९, अथर्व० ९.२.३.२४. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

गुल्मान् दक्षिणपार्श्वोदरस्थितान् (पदार्थान्) २५.८.

गुवः गच्छन्तीति गुवः (आपः=जलानि) १.१२.

गुहदवद्यम् आच्छादितनिन्द्यम् (रयिं=श्रियम्) २.१९.५. [गुहत्-अवद्ययोः समासः । गुहत्=गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोरतिः प्रत्ययः शतृवच्च बाहुलकादौणादिकम् । अवद्यम्=वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्नञ्पूर्वात् क्यप् प्रत्ययो गर्ह्येऽर्थे 'अवद्यपण्यवर्या०' ३.१.१०१. सूत्रेण निपात्यते]

गुहम् गूढं विज्ञानगम्यं कारणज्ञानम् १.६७.३. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः प्रत्ययः]

गुहमानः संवृतः सन् (अग्निः=परमात्मा) ४.१.११. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

गुहा गुहायामन्तरिक्षे, प्र०—'सुपां सुलुग्०' इति ङेर्लुक् 'गुहा गूहतेः' नि० १३.८, १.६.५. गुह्यन्ते संव्रियन्ते सकला विद्या यया बुद्ध्या तस्याम् ८.९. बुद्धौ १५.२८. बुद्धौ विज्ञाने १.६७.४. बुद्धेः ४.५.१२. गुहायां गर्भाशये ५.२.१. गुहायामन्तःकरणे ५.८.३. सर्वपदार्थानां मध्ये १.६५.११. सर्वविद्यासंयुक्तायां बुद्धौ १.६७.२. गुप्ते कारणे ३२.८. आच्छादिका (तमः=रात्री) १.१२३.७. कन्दरायाम् ३.१.९. महत्तत्त्वाख्यायां समष्टिबुद्धौ ३.५६.२. स्वहृदय में आर्याभि० २.२४, ३२.९. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्' सूत्रे 'गुहागिर्योषध्योरित्यङ् । गुहा गूहतेः नि० १३.९.]

गुहेव यथा गुहायां बुद्धौ स्थितं जीवम्, अ०—बुद्धिस्थमात्मानम् ३.१.१४. [गुहा-इवपदयोः समासः । गुहा व्याख्यातम्]

गुह्यम् गुप्तम् (स्वात्मवस्तु) ४.५.१०. गोप्तुं योग्यम् (मायिनं=मायाविनं शत्रुम्) २.११.५. रहस्यम् (नाम=संज्ञा) १७.८९. गोपनीयम् (व्यवहारम्) १.८६.१०. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः 'शंसिदुहिगुहिभ्यो वा०' अ० ३.१.१०९. वा० सूत्रेण । क्यप्]

गुह्यमानम् रहसि स्थितम् (घृतं=प्रदीप्तं विज्ञानम्) १७.९२. गोप्यमानम् (घृतमिव विज्ञानम्) ४.५८.४. **गुह्यमानः**=सम्यग् व्रियमाणः (अग्निः=ईश्वरो भौतिको वा) २.१७. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

गुह्या गूढानि विज्ञानानि ३.३८.३. [गुह्यं व्याख्यातम् । 'सुपां सुलुगि' त्याकारः]

गुह्यानि गुप्तानि सम्यक् स्वीकर्त्तव्यानि (सप्त पदानि) १.७२.६. **गुह्याः**=गुप्तानि रहस्यानि २.३२.२. **गुह्येन**=गोप्येन (व्रतेन=शीलेन) १.१६३.३. **गुह्येषु**=गुप्तेषु रक्षितव्येषु (व्रतेषु=सत्यभाषणादिनियमेषु) ३.५४.४. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः 'शंसिदुहिगुहिभ्यो वेति वक्तव्यम्' अ० ३.१.१०९. वा० सूत्रेण क्यप्]

गुः गच्छन्ति, प्र०—अत्राऽडभावो लडर्थे लुङ् च १.६५.२. प्राप्नुवन्ति १.१०४.२. प्राप्नुवन्तु ४.३७.२. प्राप्नुयुः ७.२१.५. गच्छेयुः ३.७.७. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङीति" गादेशः । 'गातिस्थाघु०' इति सिचो लुक् । अडभावश्छान्दसः]

गूळ्हम् गुप्तं विद्युदाख्यम् ५.४०.६. गूढाऽऽशयम् (ऋषिं=वेदपारगाऽध्यापकम्) १.११७.४. आवृत आच्छादित (यह सब जगत्) स० प्र० २८९. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः क्तः । हस्य ढत्वे, तस्य धत्वे, ष्टुत्वे, 'ढो ढे' लोपः ढलोपे, पूर्वस्य दीर्घत्वे रूपम्]

गूळ्हा गुप्तानि (वसु=धनानि) ६.४८.१५. [व्याख्यातम्]

गूर्त उद्यच्छत १.१७३.२. [गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोर्लोट् 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

गूर्ततमाः=अतिशयिता उद्यमाः १.१६७.१. [गूर्त-

प्राति० अतिशायने तमप् । गूर्तः=गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोः क्तः]

गूर्तमनाः गूर्तमुद्युक्तं मनो यस्य सः (राजव्यवहारस्थो जनः) ६.६३.४. [गूर्त-मनस्पदयोः समासः । गूर्तं व्याख्यातम्]

गूर्तयः उद्यमयुक्ताः कन्याः १.५६.२. [गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । 'हलि च' इत्युपधाया दीर्घत्वम्]

गूर्तश्रवसम् गूर्त्तं निगलितं श्रवः शास्त्रश्रवणं येन तम् (वीरजनम्) १.६१.५. **गूर्तश्रवाः**=गूर्त्तेनोद्यमेन श्रवः श्रवणमन्नं वा यस्य सः (शूरः=वीरपुरुषः) १.१२२.१०. [गूर्त्तश्रवस्पदयोः समासः । गूर्त्तं व्याख्यातम् । श्रवः=श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप् । श्रवः=अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०.]

गूर्ताः गच्छन्त्यो हिंसिकाः (उषसः=प्रभातवेलाः) ४.१९.८. [गुरी उद्यमने (तुदा०) धातोः क्तप्रत्यये स्त्रियां टाप्] .

गूहत संवृणुत १७.४७. आच्छादयत १.८६.१०. **गूहताम्**=समावृणुतः २.४०.२. **गूहथः**=संवृणुथः ५.६३.४. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'ऊदुपधाया गोहः' इत्यजादौ प्रत्यय ऊकारादेशः]

गूहन्तीः संवृण्वत्यः (स्त्रियः) ४.५१.९. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । 'ऊदुपधाया गोहः' इत्यूकारादेशः]

गृणतः स्तुतिं कुर्वतः (ईश्वरोपासकान् जनान्) ७.१२.२. सत्यप्रशंसकान् (सज्जनान्) ६.४९.११. सकलविद्याः स्तुवतः (सभ्यसत्पुरुषस्य) ४.१७.५. **गृणताम्**=प्रशंसकानाम् (प्रजाजनानाम्) ६.४५.१७. **गृणते**=प्रशंसते (पत्ये) १.११३.१७. विद्याप्रशंसां कुर्वते पुरुषाय १.९४.९. गुणान् कीर्त्तयते (जनाय) १.५८.९. प्रशंसितकर्मणे (सज्जनाय) ४.२४.१. सत्योपदेशकाय (विद्वज्जनाय) ६.६२.५. स्तावकाय (पत्ये) ६.४९.७. यजमानाय ७.४.१०. सत्यभाषण रूप स्तुति करने वाले (मनुष्य) के लिए, स० प्र० २३८, १०.४९.१. **गृणन्तम्**=स्तुवन्तम् (विप्रं=मेधाविनम्) ४.२९.४. **गृणन्तः**=स्तुवन्त उपदिशन्तः (विद्वज्जनाः) ४.१६.३. प्रशंसन्तः (युवानो जनाः) १.१५२.५. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोः शतरि रूपम् । 'प्वादीनां ह्रस्वः' इति शिति प्रत्यये ह्रस्वः]

गृणते स्तुतिं कुर्वते (सज्जनाय) ६.४.८. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोः शतृ]

गृणते स्तौति ६.६.७. **गृणन्ति**=अर्चन्ति शब्दयन्ति वा । अ०—स्पर्द्धन्ते, प्र०—गृणातीत्यर्चति कर्मसु पठितम् निघं० ३.१४. 'गॄ शब्दे' इति पक्षे शब्दार्थः १.१४.२. स्तुवन्ति १.४८.११. वदन्ति १.१००.१७. उपदिशन्ति २.४३.१. स्वीकुर्वन्ति ६.४५.३३. **गृणन्तु**=प्रशंसन्तु १४.२. अर्चन्तु सत्कुर्वन्तु १४.४. **गृणाति**=प्रशंसति १.४८.४. सत्यमुपदिशति ७.२६.५. **गृणातु**=स्तौतु ५.४१.१९. **गृणे**=स्तौमि ५.६.२. स्तुवे १५.४२. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । गृणात्यर्चतिकर्मसु पठितम् निघं० ३.१४. गृणातेः स्तुतिकर्मणः नि० ३.५.]

गृणानः स्तुवन् (इन्द्र=राजन्) ४.१७.१८. स्तूयमानः (सेनापतिः) ४.१६.८. शब्दं कुर्वाणः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६२.५. प्रशंसन् (मनुष्यः) ४.१६.२१. उच्चारयन् प्रकटयन् (सूर्यः) ३४.२६. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । गृणात्यर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

गृणाना स्तुवन्तौ (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ३.६२.१८.] उपदिशन्तौ (अश्विना=राजप्रजाजनौ) १.११७.११. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । 'सुपां सुलुगि' त्याकारः]

गृणाना स्तुवन्ती (देवी=कमनीया वाणी) २७.१९. स्ताविका (उर्वशी=प्रज्ञा) ५.४१.१९. **गृणाने**=स्तूयमाने (द्यावापृथिवी=भूमिसवितारौ), प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इति शानच् १.१६०.५. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोः शानच् । ततः स्त्रियां टाप् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । गृणात्यर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

गृणानाः स्तुवन्तः (मनुष्याः) ५.५९.८. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । गृणात्यर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

गृणीतः शब्दयतः ३.६.१०. **गृणीते**=उपदिशते १.७९.१२. स्तौति ५.४१.१०. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्लट् । प्रथम-द्विवचने रूपम्]

गृणीमसि स्तुवीमः १.६४.१२. अर्चामः स्तुम १.५३.२. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्लट् । 'इदन्तोमसि'-रिति मस इदन्तत्वम्]

गृणीषणि स्तोतव्ये व्यवहारे ६.१५.६.

गृणीषे स्तौषि २.२०.४. स्तौमि, प्र०—अत्र तिङ्व्यत्ययेनेट्स्थाने से ६.४४.४. **गृणीहि**=प्रशंस ६.६८.३.

[गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । अन्यत्र लोट् । गृणात्यर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

गृत्सपतिभ्यः मेधाविरक्षकेभ्यः (विद्वद्भ्यः) १६.२५. [गृत्स-पतिपदयोः समासः । गृत्स इति गृत्स-पदे द्रष्टव्यम्]

गृत्सम् यो गृणाति तं मेधाविनम् (जनम्) ३.१९.१. **गृत्सः**=यो गृणाति स मेधावी (वैश्वानरः=राजा) ४.५.२. **गृत्सेभ्यः**=ये गृणन्ति पदार्थगुणान् स्तुवन्ति तेभ्यो विद्वद्भ्यः १६.२५. [गृधु अभिकांक्षायाम् (दिवा०) धातोः 'गृधिपण्योर्दकौ च' उ० ३.६९. सूत्रेण सः प्रत्ययो-धकारस्य च भषभावनिवृत्त्यर्थो दकारः । गृत्सः मेधाविनाम निघं० ३.१५. गृत्स इति मेधावि नाम, गृणातेः स्तुतिकर्मणः निघं० ९.५.]

गृत्समदासः गृत्सानां मेधाविनां मद आनन्द इवानन्दो येषान्ते (आप्ता विद्वज्जनाः) २.४.९. गृत्सा अभिकाङ्क्षिता मदा हर्षा यैस्ते (विद्वांसो जनाः) २.३९.८. [गृत्सं व्याख्यातम् । गृत्स-मदपदयोः समासः । जसोऽसुगागमः । मदः=मदी हर्षे (दिवा०) धातोरप्]

गृत्समदाः गृत्सोऽभिकाङ्क्षितो मद आनन्दो येषान्ते (विद्वांसः) २.१९.८. गृहीताऽऽनन्दाः (विद्वांसो जनाः) २.४१.१८. [गृत्सं व्याख्यातम् । गृत्स-मदपदयोः समासः मदः=मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'मदोऽनुपसर्गे' अ० ३.३.६७. सूत्रेण अप् प्रत्ययः । गृत्समदः गृत्समदनः नि० ९.५. (ऋषिः) स यत्प्राणो गृत्सोऽपानो मदस्तस्माद् गृत्समद इत्याचक्षते ऐ० आ० २.२.१.]

गृधः अभिकाङ्क्षीः ४०.१. आकाङ्क्षा कर, स० प्र० २३८, ४०.१. [गृधु अभिकांक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन शः]

गृध्नुः परोत्कर्षाऽभिकाङ्क्षकः (सभाध्यक्षः) १.७०.६. अभिकाङ्क्षिता (लोभाकृष्टहिंसको जनः) १.१६२.१०. [गृधु अभिकांक्षायाम् (दिवा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको नुः प्रत्ययः किच्च]

गृध्यन्तम् अभिकाङ्क्षमाणम् (शत्रुम्) ४.३८.३. [गृधु अभिकांक्षायाम् (दिवा०) धातोः शतृ]

गृध्रः सर्वेषां सुखाऽभिकाङ्क्षकः (अध्यापको जनः) १.१९०.७. **गृध्रात्**=अभिकाङ्क्षायाः ५.७७.१. **गृध्राः**=अभिकाङ्क्षन्तः (गोतमासः=विद्वांसो जनाः) १.८८.४. पक्षिणः १.११८.४. [गृधु अभिकांक्षायाम् (दिवा०) धातोः 'सुसूधाञ्गृधिभ्यः क्रन्' उ० २.२४. सूत्रेण क्रन् प्रत्ययः । गृध्र आदित्यो भवति गृध्यतेः स्थानकर्मणः नि० १३.१३. श्येनो गृध्राणाम्……पवित्रमत्येति तै० सं० ३.४.११.१.]

गृभम् ग्रहीतुम् ७.४.३. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः सम्पदादित्वात् स्त्रियां क्विप् । 'कृतो बहुलमि' ति तुमर्थेऽपि]

गृभः ग्रहीतुं योग्यायाः (पौरुषेय्याः=पुरुषसम्बन्धि-विद्यायाः) २१.४३. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः स्त्रियां सम्पदादित्वात् क्विप् । संप्रसारणं हस्य च भकारः]

गृभयन्तः ग्रहीता इवाचरन्तः (शिल्पविद्याविदो जनाः) १.१४८.३.

गृभात् गृहात् ७.२१.२. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः 'गेहे कः' इति कः प्रत्ययः । संप्रसारणं ग्रहिज्यादि-सूत्रेण । हस्य च भकारः]

गृभाय गृहाण ५.८३.१०. गृह्णीयाः २.२८.६. गृहाण ग्राहय वा, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः, ग्रह धातोर्हस्य भत्वं श्नः स्थाने शायजादेशश्च १.९१.४. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लोटि श्नः स्थाने 'छन्दसि शायजपि' अ० ३.१.८४. सूत्रेण शायच्]

गृभायति गृह्णाति, प्र०—अत्र हस्य भः, श्नः शायच् १.१४०.७. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लट् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसी' ति हस्य भकारः । श्नः छान्दसः शायच्]

गृभीतम् गृहीतम् (मनः=अन्तःकरणम्) ७.२४.२. **गृभीतः**=गृहीतः (घर्मः=अग्निहोत्रादिको यज्ञः), प्र०—'हृग्रहोश्छन्दसि हस्य भत्वम्, अनेनाऽत्र हस्य भः १.२४.१२. स्वीकृतः शुनःशेपः=विद्वान्) १.२४.१३. **गृभीतान्**=गृहीतान् लोकान् १.९३.५. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातो क्तः । ग्रह्यादिसूत्रेण सम्प्रसारणे हस्य भकारे 'ग्रहोऽलिटि दीर्घे' इति दीर्घत्वम् । गृभीत इति धारित इत्येतत् श० ९.२.३.९.]

गृभीततातये गृहीता तातिः सत्कर्म विस्तृतिर्येन (एकपुरवासिजनाय) ५.७४.४. [गृहीत-तातिपदयोः समासः । गृभीतं व्याख्यातम् । तातिः=तनु विस्तारे (तना०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

गृभीताम् गृहीताम् (रातिं=दानम्) २५.२५. [गृभीतप्राति० स्त्रियां टाप् । गृभीतं व्याख्यातम्]

गृभ्णन्ति ग्राहयन्ति, प्र०—अत्र णिज्लोपः १.१६२.१५. गृह्णन्ति १.५५.२. **गृभ्णाति**=गृह्णाति १.५५.२. **गृभ्णातु**=गृह्णातु ११.५९. **गृभ्णामि**=गृह्णामि ऋ० भू० २०८. ग्रहण करता हूँ, सं० वि० १२१, १०.८५.३६. **गृभ्णीत**=गृह्णीत ऋ०·भू० १९६,

१०.६२.१. स्वीकुर्वीत १२.३५. **गृभ्णीष्व**=ग्राहय गृह्णाति वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि, इति हकारस्य भकारः १.१८. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लट्। ग्रह्यादिसूत्रेण सम्प्रसारणम्। हस्य च भकारश्छान्दसः]

गृभ्णानाः गृह्णन्तः (देवाः=विद्वांसो जनाः) १५.५०. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः शानच्। सम्प्रसारणं ग्रह्यादिसूत्रेण, हस्य च भकारः]

गृभ्य सङ्ग्रह करके, सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.६. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्त्वा। क्त्वो ल्यबादेशश्छान्दसः]

गृष्टिः सकृत्प्रसूता गौः ४.१८.१०.

गृहते गृह्णन्ति ५.३२.१२. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन शः]

गृहपतये गृहाश्रमस्वामिने १०.२३. गृहपालकाय (जनाय) २४.२४. **गृहपतिना**=सर्वस्वामिना गृहपालकेन वा (जगदीश्वरेण सुगृहस्थेन वा) २.२७. **गृहपतिम्**=गृहस्वामिनम् (अग्निं=परमविद्वज्जनम्) ४.११.५. गृहव्यवहारपालकम् (जनम्) ५.८.१. **गृहपतिः**=गृहाणां स्थानविशेषाणां पतिः पालनहेतुः (ईश्वरो भौतिकोऽग्निर्वा) ३.३९. गृहस्य स्थानस्य तत्स्थस्य वा पतिः पालनहेतुः (अग्निः=प्रसिद्धो रूपवान् दहनशीलः) १.१२.६. गृहस्य पालक इव ब्रह्माण्डस्य प्रबन्धकर्त्ता (परमेश्वरः) ६.१५.१३. गृहस्य पालयिता (अग्निः) १.६०.४. गृहकृत्यस्य पालकः (अग्निः=महाविद्वान् जनः) २.१.२. गृहाऽऽत्मपालको भौतिकः (पावकः) परमेश्वरो वा पं० वि०। अथर्व० १९.५५.३. **गृहपतीनाम्**=गृहाश्रमपालकानाम् (गृहस्थपुरुषाणाम्) ६.३९. **गृहपते**=गृहाभिरक्षकेश्वर, गृहाणां पालयिता (अग्निः) वा ३.३९. गृह्णन्ति स्थापयन्ति पदार्थान् यस्मिन् ब्रह्माण्डे, शरीरे, निवासार्थे वा गृहे तस्य यः पतिः पालयिता तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=जगदीश्वरो विद्वज्जनो वा) २.२७. [गृह-पतिपदयोः समासः। गृहम्=ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातो 'गेहे कः' इति सूत्रेण कः प्रत्ययः। सम्प्रसारणं ग्रह्यादिसूत्रेण। असावेव गृहपतिर्योऽसौ (सूर्यः) तपत्येष हि गृहाणां पतिस्तस्यर्तव एव गृहाः कौ० १७.५. असौ वै गृहपतिर्योऽसौ (सूर्यः) तपत्येष (सूर्यः) पतिः, ऋतवो गृहाः ऐ० ५.२५. अयं वै (पृथिवी०) लोको गृहपतिः श० १२.१.१.१. गो० पू० ४.१. अथ यदग्निं गृहपतिमन्ततो यजति कौ० ३.९. अग्निर्गृहपतिरिति हैक आहुः सोऽस्य लोकस्य (पृथिव्याः) गृहपतिः ऐ० ५.२५. तप आसीद् गृहपतिः तै० ३.१२ ९.३. वायुर्गृहपतिरिति हैक आहुः सोऽन्तरिक्षस्य लोकस्य गृहपतिः ऐ० ५.२५. प्रजापतिरेव गृहपतिरासीत् जै० ३.३७४.]

गृहपत्नी घर के स्वामी की स्त्री, सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७५. [गृहपतिप्राति० 'पत्युर्नो यज्ञसंयोगे' सूत्रेण ङीष् नकारान्तादेशश्च]

गृहपम् गृहाणां रक्षकम् (सज्जनः) ३०.११. [गृहोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः]

गृहं गृहम् निकेतनम् निकेतनम् १.१२३.४. [गृहं व्याख्यातम्। तस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

गृहम् गृह्णाति यस्मिँस्तत् (सदनम्) १.२२.४. निवासस्थानम् १.४९.१. **गृहान्**=गृहाणि ४.३३. गृहस्थान् (जनान्) ६.५४.२. गृहाश्रमस्थान् विदुषः (जनान्) ३.४१. गृह्णन्ति विद्यादिपदार्थान् येषु तान् (स्थानविशेषान्) २.३२. द्वीपखण्ड-देशान्तरस्थानानि ४.३४. **गृहाय**=निवासस्थानाय १.१४०.१२. **गृहाः**=ये गृह्णन्ति ते गृहस्थादयः १८.४४. गृह्णन्ति ब्रह्मचर्याश्रमानन्तरं गृहाश्रमं ये मनुष्यास्तत्सम्बुद्धौ ३.४१. हे गृहस्थ लोगो सं० वि० १४६, ३.४१. **गृहे**=निवासस्थाने, यज्ञशालायां, कलाकौशलसिद्धविमानादियानसमूहे वा १.१३.१२. घर में सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.४. **गृहेभ्यः**=प्रासादेभ्यः १.१२०.८. गृहस्थ-सम्बन्धियों के लिए, सं० वि० ३८, अथर्व० १४.२.२७. **गृहेषु**=निवसनीयेषु प्रासादेषु ३.४३. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः (गेहे कः) इति कः प्रत्ययः। अथवा घञर्थे कविधानमिति कः प्रत्ययः। गृहाः कस्माद् गृह्णन्तीति सताम् नि० ३.१३. ऋतवो (प्राणा) गृहाः ऐ० ५.२५. जै० २.३९. गृहा गार्हपत्यः (अग्निः) मै० १.५.१०. काठ० ८.७. गृहाणां ह पितर ईशते श० २.४.२.२४. गृहा वै दुर्याः ऐ० १.१३. श० १.१.२.२२. गृहा वै प्रतिष्ठा श० १.१.१.१९. गृहा वै सूक्तम् ऐ० ३.२३. प्रतीच्या दिशा गृह्णाः पशवो मार्जयन्ताम् तै० सं० १.६.५.२. काठ० ५.५.]

गृहमेधासः गृहे मेधा प्रज्ञा येषान्ते (मरुतः=उत्तमा जनाः) ७.५९.१०. [गृह-मेधापदयोः समासः। मेधा=धननाम निघं० २.१०]

गृहमेधिभ्यः गृहस्थेभ्यः (मरुद्भ्यः=मनुष्येभ्यः) २४.१६. **गृहमेधी**=प्रशस्तो गृहे मेधः सङ्गमोऽस्याऽस्तीति सः (भा०—गृहस्थो जनः) १७.८५. [गृह-मेधपदयोः समासे

मत्वर्थ इनिः। गृहं व्याख्यातम्। मेधः=मेधृ संगमे च (भ्वा०) धातोर्भावे घञ्। मेधः मेधाविनाम निघं० ३.१५. यज्ञनाम निघं० ३.१७.]

गृहमेधीयम् गृहमेधे गृहस्थशुद्धे व्यवहारे भवम् (प्रजाजनम्) ७.५६.१४. [गृहमेधप्राति० 'द्यावापृथिवी-शुनासीर०' अ० ४.२.३२. सूत्रेण सास्य देवता विषयेऽपि विहितश्छो भवार्थेऽपि छान्दसत्वात्। गृहमेधो वै पाकयज्ञः। काठसंक० १४०.१. पशवो वै गृहमेधाः काठ० ३६.९. यद्धानाः करम्भो भवति, तेन गृहमेधः जै० २.३८. गृहमेधीयः पुष्टिकर्म वै गृहमेधीयः गो० २.१.२३. गो० उ० १.२३. पुष्टि कर्म वा एतद् यद् गृहमेधीयः कौ० ५.५.]

गृहाण ग्रहणं कुरु १७.४४. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लोट्। 'हलः श्नः शानज्झौ' इति शानच्]

गृहे गृहे प्रतिगृहम् १.७१.४. [गृहे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

गृह्णामि वृणोमि, अङ्गीकरोमि ७.२३. भा०—स्वीकरोमि १३.१. सम्पादयामि, स्वीकरोमि १.२७. [ग्रह-उपादाने (क्र्या०) धातोर्लट्]

गेषम् प्राप्नुयाम् ५.५. [गेषृ अन्विच्छायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः]

गेहाय गृहपत्नीसङ्गमाय ३०.९.

गेह्यम् गृहेषु गृहेषु भवम् (धनादिकम्) ३ ३०. **गेह्याय**=गेहे नितरां भवाय (जनाय) १६.४४. [गेह-प्राति० भवार्थे यत्]

गैरिक्षितस्य गिरौ पर्वते क्षितं निवसनं यस्य तस्य (सूरेः मेधाविजनस्य) ५.३३.८. [गिरि-क्षितपदयोः समासे स्वार्थे प्रज्ञादित्वादण्। गिरि-क्षितपदे व्याख्याते]

गोऽअग्रया गाव इन्द्रियाणि धेनवः पृथिव्यो वाऽग्राः श्रेष्ठा यस्यां तया (सेनया) १.५३.५. **गोअग्रान्**=गौर्भूमिरग्रे प्राप्नुवन्ति यैस्तान् (सङ्ग्रामान्), प्र०—गौरित्युपलक्षणं तेन भूम्यादिसर्वपदार्थनिमित्तानि सम्पद्यन्ते १.९२.७. **गोअग्राम्**=गौः पृथिवी धेनुर्वाऽग्रा मुख्या यस्यास्ताम् (रातिं=दानम्) २.२.१३. गाव इन्द्रियाण्यग्रसराणि यस्यां ताम् (क्रियाम्) २.११.१६. **गोअग्राः**=गौर्वागग्रा उत्तमा यासु ताः (इषः=अन्नादीनीच्छा वा) ६.३९.१. गाव इन्द्रियाण्यग्रे यासां ताः (धियः) प्र०—अत्र 'सर्वत्र विभाषा गोः' अ० ६.१.१२२. अनेन सूत्रेणाऽत्र प्रकृतिभावः १.९०.५. गावः सूर्यकिरणा अग्रे यासां ताः (अपः) १.१६९.८. [गो-अग्रपदयोः समासः। 'सर्वत्र विभाषा गोः' अ० ६.१.१२२. सूत्रेण प्रकृतिभावः]

गोअजनासः गवि सुशिक्षितायां वाचि अप्रादुर्भूताः (अध्येतारः) ७.३३.६. [गो-अजनासपदयोः समासः। गौरिति व्याख्यास्यते। अजनासः=नञ्पूर्वाज् जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः पचाद्यच्। जसोऽसुगागमः। 'सर्वत्र विभाषा गो' रिति प्रकृतिभावः]

गोअर्णसः गोः पृथिव्या जलस्य च, प्र०—अत्र 'सर्वत्र विभाषा, गोः' इति प्रकृतिभावः १.११२.१८. **गोअर्णसा**=गावः किरणा अर्णो जलं चाऽस्मिँस्तेन (ज्योतिषा=प्रकाशेन) २.३४.१२. [गो-अर्णस्पदयोः समासः। पूर्ववत् प्रकृतिभावः। गोरिति व्याख्यास्यते। अर्णस्=उदकनाम निघं० १.१२.]

गो ऋजीकम् गोर्भूमेर्ऋजुत्वेन प्रापकम् (देवं=कृषकम्) ७.२१.१. गाव इन्द्रियाणि ऋजीकानि सरलानि येन तम् (सोमम्=महौषधिरसम्) ६.२३.७. [गो-ऋजीक-पदयोः समासः। गो-पदं व्याख्यातम्। ऋजीकम्=ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु (भ्वा०) धातोः 'ऋजेश्च' उ० ४.२२ सूत्रेण ईकन् प्रत्ययः]

गो ऋजीका गवां दुग्धादिना मिश्रितानि (मधूनि) ३.५८.४. [व्याख्यातम्]

गो ओपशा गाव आ उपशेरते यस्यां सा (पशुवर्धन-क्रिया) ६.५३.९. [गो-आङ्-उप इत्युपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति डः प्रत्ययः]

गोघातम् गवां घातकम्, भा०—गोघ्नम् (दुर्जनम्) ३०.१८. [गो-घातपदयोः समासः। घातः=हन हिंसा-गत्योः (अदा०) धातोः 'कृतो बहुलं वेति' वा० सूत्रेण कर्त्तरि घञ्]

गोघ्नम् गवां हन्तारं (दुर्जनम्) १.११४.१०. [गा हन्तीति विग्रहे 'गो' इत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः टक्प्रत्ययः 'कृतो बहुलमि' ति वार्त्तिकेन। मूल-विभुजादित्वात् को वा]

गोजाताः गवि अन्तरिक्षे प्रसिद्धाः (पदार्थाः) ६.५०.११. गवा सुशिक्षितया वाचा प्रादुर्भूताः (विद्वज्जनाः) ७.३५.१४. [गो-जातपदयोः समासः। जातः=जनी-प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः]

गोजाः यो गाः पृथिव्यादीन् जनयति (परमेश्वरः) १०.२४. यो गा इन्द्रियाणि पशून् वा जनयति (ब्रह्म जीवश्च) १२.१४. यो गोषु पृथिव्यादिषु जातः (जीवात्मा) ४.४०.५. ['गो' इति सप्तम्यन्त उपपदे जनी प्रादुर्भावे

(दिवा०) धातोः 'सप्तम्यां जनेर्डः' इति डः प्रत्ययः। 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति वा डः प्रत्ययः। एष (सूर्यः) वै गोजाः ऐ० ४.२०.]

गोजितम् येनेन्द्रियाणि पृथिव्यादिकं च जितं तम् (राजानम्) ऋ० भू० २२४. **गोजितः**=गौर्भूमिर्जिता यैस्तान् (प्रजासेनाऽध्यक्षान्) ३.३१.२०. **गोजिते**=यो गा जयति तस्मै (इन्द्राय=विद्वत्सभासेनेशाय) २.२१.१. ['गो' इत्युपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्। अथवा गो-जितपदयोः समासः]

गोजिता गाः पृथिवीर्जयति याभ्यां तौ (बाहू), प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इति करणे क्विप् 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेराकारादेशश्च १.१०२.६. ['गो'-इत्युपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः 'कृतो बहुलमि' ति करणे क्विप् प्रत्ययः]

गोजरीया गवां जीरया जीवनक्रियया, भा०—गवादिपशुजीवनेन २२.१८. [जीरा=जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको रक्। स्त्रियां टाप्। गो-जीरापदयोः समासः]

गोतम ! अतिशयेन स्तोतः (विद्वज्जन) १.७९.१०. **गोतमस्य**=अतिशयेन गौः स्तोता गोतमस्तस्य १.११६.९. **गोतमः**=गच्छतीति गौः स्तोता, सोऽतिशयितः सः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६२.१३. विद्यायुक्तो जनः १.७८.२. बहुधेनु-धनयुक्तः (विद्वान्) १.७९.४. मेधावी (नौकादियानयायी जनः) १.१८३.५. **गोतमात्**=अतिशयेन गौः सकलविद्यास्तोता तस्मात् (पितुः=जनकात्), गौरिति स्तोतृनाम, निघं० ३.१६, ४.४.११. **गोतमाय**=गच्छतीति गौः सोऽतिशयितो गोतमस्तस्मै भृशं मार्गं गन्त्रे जनाय १.८५.११. **गोतमाः**=अतिशयेन स्तोतारः (विद्वज्जनाः) १.७८.१. [गौरिति स्तोतृनाम निघं० ३.१६. ततोऽतिशायने तमप्]

गोतमेभिः सर्वविद्यास्तावकैर्विद्वद्भिः १.९२.७. ये गच्छन्ति जानन्ति प्राप्नुवन्ति विद्यादिशुभान् गुणांस्तैर्विद्वद्भिः किरणैर्वा प्र०—गौरिति पदनाम, निघं० ४.१, १.६३.९. अतिशयेन स्तावकैः (मेधाविजनैः) १.७७.५. [गोतम इति व्याख्यातम्। 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

गोतमासः येऽतिशयेन गावो वेदाद्यर्थानां स्तोतारस्ते (विद्वज्जनाः) १.६०.५. अतिशयेन ज्ञानवन्तः (विद्वज्जनाः) १.८८.४. गच्छन्ति स्तुवन्ति सर्वा विद्यास्तेऽतिशयिताः (संस्तोतारो जनाः) १.६१.१६. [गोतम इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

गोत्रभित् यो गोत्रं मेघं भिनत्ति सः (सूर्यः) २०.३०. **गोत्रभिदम्**=मेघस्य भेत्तारम् (सूर्यम्) २.२३.३. यः शत्रूणां गोत्राणि भिनत्ति तम् (इन्द्रं=सेनापतिम्) १७.३८. [गोत्रोपपदे भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः क्विप्। गोत्रः=मेघनाम निघं० १.१०.]

गोत्रम् कुलम् २.२३.१८. मेघम् १.५१.३. **गोत्रा**=गोत्राणि मेघस्याऽवयवान् ४.१६.८. शत्रुकुलानि १७.३९. वंशान् ३.३९.४. [गुङ् अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोः 'गुधृवीपचिवचि०' उ० ४.१६७. सूत्रेण स्त्रः प्रत्ययः। गवते शब्द्यत इति विग्रहः। गोत्रः=मेघनाम निघं० १.१०.]

गोत्रा भूमिः, प्र०—गोत्रेति पृथिवीनाम, निघं० १.१, ६.६५.५. [गोत्रं व्याख्यातम्। स्त्रियां टाप्]

गोदाः यो गां धेनुं ददाति सः (इन्द्रः=राजा) ४.२२.१०. यो गा वाण्यादीन् ददाति सः (सत्याचारः सुशीलो विद्वान्) ३ ३०.२१. चक्षुरिन्द्रियव्यवहारप्रदः (इन्द्रः=सूर्यः) प्र०—क्विप् च, इति क्विप्-प्रत्ययः 'गौरिति पदनामसु पठितम्' निघं० ५.५. जीवो येन रूपं जानाति तस्माच्चक्षुर्गौः १.४.२. ये गाः सुशिक्षिता वाचो धेनुं वा ददति (विद्वांसो जनाः) ५.४२.८. ['गो' इत्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। गौरिति व्याख्यास्यते]

गोदुहे गोर्दोग्ध्रे दुग्धादिकमिच्छवे मनुष्याय, प्र०—'सत्सूद्विष०' अ० ३.२.६१. इति सूत्रेण क्विप्-प्रत्ययः १.४.१. **गोधुक्**=यो गां दोग्धि (अध्यापको विद्वान् जनः) १.१६४.२६. ['गो' इत्युपपदे दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'सत्सूद्विष०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्]

गोनाम् धेनूनाम् १.६९.२. पृथिवीधेन्वादीनाम्, प्र०—अत्र 'गोः पादान्ते' अ० ७.१.५०. इति नुडागमः ३३.१४. गवादिपशूनाम् ७.१६.७. इन्द्रियाणां किरणानां ५.३.३. स्तोतॄणाम् (प्रजाजनानाम्) ४.२०.८. [गौरिति व्याख्यास्यते। तस्य षष्ठ्या बहुवचने रूपम्। 'गोः पादान्ते' अ० ७.१.५०. सूत्रेण नुडागमः]

गोपतिः गवां स्वेषामिन्द्रियाणां स्वामी (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्षः) १.१०१.४. गोः पृथिव्याः स्वामी (वीरः=राजा) ४.२४.१. गवां पालकः (गोपो जनः) ३.३१.२१. **गोपते**=भूपते (राजन्) ३.३०.२१. **गोपतौ**=यो गवां

पतिः स्वामी तस्मिन्, अ०—पृथिव्यादिरक्षणमिच्छुकस्य धार्मिकमनुष्यस्य समीपे १.१. [गो-पतिपदयोः समासः। गौरिति व्याख्यास्यते]

गोपाजिह्वस्य गोरक्षका जिह्वा यस्य तस्य (राजादिजनस्य) ३.३८.९. [गोपा-जिह्वापदयोः समासः। गोपा='गो' इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः। स्त्रियां टाप्। जिह्वा वाङ्नाम निघं० १.११.]

गोपा रक्षकौ (राजाऽमात्यौ) ५.६२.९. ['गो' इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः। 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः]

गोपान् पालकान् (विदुषो जनान्) ६.५१.३. [गोप इति व्याख्यातम्]

गोपाम् रक्षकम् (मनुष्यम्) ६.५२.३. इन्द्रियपश्वादीनां रक्षकम् (ईश्वरं भौतिकमग्निं वा) ३.२३. गाः पृथिव्यादीन् पाति रक्षति तम् (अग्नि=परमेश्वरम्) १.१.८. ['गो' इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क्विप् प्रत्ययः। गोपा गोपायिता आदित्यः निघं० ३.११. एष वै गोपा य एषः (सूर्यः) तपत्येष हीदं सर्वं गोपायति श० १४.१.४.९. प्राणो वै गोपाः। स हीदं सर्वमनिपद्यमानो गोपायति जै० उ० ३.३७.२. इन्द्रो वै गोपाः ऐ० ६.१०. गो० उ० २.२०. अग्निर्वै देवानां गोपा ऐ० १.२८.]

गोपायत पालयत ५.३४. [गुपू रक्षणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'गुपूधूपविच्छिपणिपनिभ्य आयः' अ० ३.१.२८. सूत्रेण आयः प्रत्ययः]

गोपालम् गवां पालकम् (जनम्) ३०.११. ['गो' इत्युपपदे पाल रक्षणे (चुरा०) धातोरण् प्रत्ययः]

गोपावत् पृथिवीपालवत् ७.६०.८. [गोपाप्राति० तुल्यार्थे वतिः। गोपाः='गो' इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क्विप्]

गोपाः रक्षकः (अग्निः=विद्युत्) १५.२७. रक्षका भृत्याः (जनाः) १६.७. पृथिव्यादयो जगद्रक्षकाः, भा०—सर्वलोकाभिरक्षकाः (पृथिव्यादिलोकाः) १७.५८. गवां पाता (जनः) २.९.६. गोपालाः पशुरक्षकाः (जनाः) ७.१३.३. पालिकाः (रशनाः=रज्जवः) २९.१६. [गोपेति व्याख्यातम्]

गोपीथाय पृथिवीन्द्रियादीनां रक्षणाय, प्र०—निशीथ-गोपीथाऽवगथाः, उ० २.९. अनेनाऽयं निपातितः १.१९.१. **गोपीथे**=गवां पेये दुग्धाऽऽदौ ५.६५.६. ['गो' इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः, पा पाने (अदा०) धातोर्वा 'निशीथ-गोपीथावगथः' उ० २.९. सूत्रेण थक् प्रत्ययः। गोपीथाय सोमपानाय नि० १०.३६.]

गोपौ रक्षकौ राजाऽमात्यौ ५.६३.१ [गोप इति व्याख्यातम्]

गोभाजः ये गां पृथिवीं भजन्ति ते (वैद्या जनाः) १२.७९. ये गाः पृथिवीं वाचमिन्द्रियाणि किरणान् वा भजन्ति ते (जीवाः) ३५.४. ['गो' इत्युपपदे भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'भजो ण्विः' अ० ३.२.६२. सूत्रेण ण्विः प्रत्ययः]

गोभिः सुशिक्षिताभिर्वाणीभिः पृथिवीधेनुभिर्वा २०.७३. गोहस्त्यश्वादिभिः सह १.२३.१५. इन्द्रिय-पृथिवी-विद्या-प्रकाश-पशुभिः १.१६.९. धेनु-वृषभैः २०.३७. धेनुभिः सुष्ठु व्यवहारयुक्तैर्वा ८.१५. रश्मिभिः, प्र०—गाव इति रश्मिनामसु पठितम्, निघं० १.५, १.७.३. [गौरिति पदे द्रष्टव्यम्]

गोमघा पृथिवीराज्येन सत्कृतानि धनानि ६.३५.३. **गोमघाः**=भूमिराज्यधना; (प्रजाजनाः) ६.३५.४. [गो-मघपदयोः समासः। मघम्=धननाम निघं० २.१०.]

गोमत् प्रशस्ता गाव इन्द्रियाणि किरणा पृथिव्यादयो वा विद्यन्ते यस्मिँस्तद् (वाजम्=विज्ञानमन्नं वा) १.४८.१२. प्रशस्ता गौर्वाग् विद्यते यस्मिँस्तत् (सैन्यम्) ७.२३.६. प्रशंसिता गावो गवादयः पशवो यस्मिन् (राज्यम्) २०.५४. बहुगवादियुक्तम् (परमैश्वर्यम्) ७.२७.५. बह्वचो गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तद् (वर्त्तिः=मार्गम्) २.४१.७. गौः प्रशस्ता वाक्, गावः स्तोतारश्च विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (श्रवः=विद्याः सुवर्णादि च धनम्) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.९.७. गावः सुखप्रापिका बह्वयो विद्यन्ते यस्मिँस्तत्, (यानम्) प्र०—गौरिति पदनामसु पठितम्, निघं० ५.५. अनेन प्राप्त्यर्थो गृह्यते, अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् १.३०.१७. **गोमतः**=प्रशस्तवाग्युक्तस्य (वाजस्य=विज्ञानस्य) ६.४५.२३. प्रशस्तधेनुपृथिवीयुक्तस्य (ऐश्वर्यस्य) १५.३५. शोभना वाक् पृथिव्यादयो वा विद्यन्ते यस्य तस्य (प्रजाजनस्य) ३.१६.१. प्रशस्ता पृथिवी, गावः पशवो वागादीनीन्द्रियाणि च विद्यन्ते यस्मिँस्तस्य (इन्द्रस्य=ईश्वरस्य सभासेनाध्यक्षस्य वा) १.११.३. गावः सम्बद्धा रश्मयो विद्यन्ते यस्य तस्य (बलस्य=मेघस्य), प्र०—अत्र सम्बन्धे मतुप् १.११.५. बहुकिरणयुक्तान् (वज्रान्=मेघान्) ६.७३.३. गावो विद्यन्ते येषां तान् (प्रजाजनान्) ४.३२.६. अतिशयितस्तोता विप्रः=मेधाविजनः) ६.१०.३.

गोमति=प्रशस्ता गाव इन्द्रियाणि विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मिन् (व्रजे) १.८६.३. गावो यस्याः सम्बन्धेन भवन्ति (उषः !) प्र०—अत्र सम्बन्धार्थे मतुप् १.९२.१४. **गोमती**=गावो भूयांसः स्तोतारो विद्यन्ते यस्यां सा (मही=वेदचतुष्टयी पृथिवी वा) प्र०—गौरिति स्तोतृनामसु पठितम्, निघं० ३.१६, १.८.८. **गोमतीनाम्**=प्रशस्तगोयुक्तानाम् (उषसां=प्रत्यूषकालानाम्) २.२८.२. **गोमतीषु**=प्रशंसिता गावो वाचो यासु सेनासु तासु ४.२१.४. **गोमतीः**=गावो विद्यन्ते यासु ताः (इषः=अन्नाद्याः) ५.७९.८. बह्वयो गावो विद्यन्ते यासां ताः (सूनृताः=वाचः) १.४८.२. बहवो गावः किरणा विद्यन्ते यासु ताः (उषासः=प्रभाताः) ३४.४०. बहुपृथिवीकिरणयुक्ताः (उषसः) १.१२३.१२. प्रशस्ताः स्वराज्ययुक्ता गावः किरणा विद्यन्ते यासु ताः (इषः=इच्छाः) १.४८.१५. गावो किरणा धेनवो विद्यन्ते यासु ताः (विदुष्यः स्त्रियः) ७.४१.७. गावः किरणा विद्यन्ते यासु गतिषु ताः ५.६१.१९. **गोमते**=प्रशस्तपृथिवीराज्ययुक्ताय (विदुषे राज्ञे) २६.४. प्रशस्तवाग्वते (इन्द्राय=विद्वज्जनाय) २६.४. **गोमद्भिः**=प्रशस्तभूमिधेनु-वाग्युक्तैः (अश्विभिः=सूर्यचन्द्रम आदिभिः) ६.४५.२१. बहवो गावः किरणा विद्यन्ते येषु तैः (पदार्थैः) २६.५. **गोमन् !**=प्रशस्ता गौर्वाणी विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=विद्वज्जन) २६.४. **गोमन्तम्**=प्रशस्तेन्द्रियादिसम्बन्धम् (यज्ञम्) ८.६३. दुष्टा गाव इन्द्रियाणि यस्य तम् (ऊर्वम्=हिंसकम्) ३३.२८. गावः किरणा विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (अद्रिं=मेघम्) ४.१.१५. बहुगवादिसहितम् (धनम्) ५.४.११. [गौरिति पदे गोपदं द्रष्टव्यम् । ततोऽतिशायने सम्बन्धे भूम्नि वा मतुप्प्रत्ययः । गोमान् गोभिः नि० ५.३. स्त्रीलिङ्गे मतुबन्तान् ङीप्]

गोमातरः गौः पृथिवीव माता मानप्रदा येषां वीराणां ते (शुभ्राः=वीरजनाः) १.८५.३. [गो-मातृपदयोः समासः]

गोमान् बह्वयो गावो विद्यन्ते यस्मिन् सः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.२.५. [गोप्राति०भूम्न्यर्थे मतुप् प्रत्ययः]

गोमृगः यो गां मार्ष्टि शुन्धति सः (पशुविशेषः) २४.३०. गौरिव वर्त्तमानो गवयः २४.१. [पशवो वै गोमृगः तै० ३.९.१.१३. नैष ग्राम्यः पशुर्नारण्यो यद् गोमृगः तै० सं० २.१.१०.२. प्रजापतये च वायवे च गोमृगः मै० ३.१४.११. वायव्यं गोमृगमालभेत तै० सं० २.१.१०.२.]

गोरभसम् गवां महत्त्वम्, प्र०—रभस इति महन्नाम, निघं० ३.३, १.१२१.८. [गो-रभसपदयोः समासः । रभस इति महन्नाम निघं० ३.३.]

गोलत्तिका वनचरविशेषा (पशुः) २४.३७.

गोवित् या गा वाचो धेनुः पृथिवी वा विन्दति सः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. **गोविदम्**=गां भूमिं विन्दति येन तम् (रथम्) १.८२.४. योऽरीणां गां भूमिं विन्दति तम् (इन्द्रं=सेनापतिम्) १७.३८. ['गो' इत्युपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप् । गौरिति व्याख्यास्यते]

गोव्यच्छम् गोषु विचेष्टितारम् (जनम्) ३०.१८.

गोशफे गोखुर-चिह्ने, भा०—अल्पे जलाशये, अल्पेऽपि करलाभे २३.२८. [गो-शफपदयोः समासः]

गोश्रीताः गाः किरणान् श्रीताः प्राप्ताः (सोमासः=सोमाद्योषधिसमूहाः) १.१३७.१. [गो-श्रीतपदयोः समासः । श्रीतः=श्रीञ् पाके (क्रया०) धातोः क्तः । धातूनामनेकार्थत्वादत्र गत्यर्थेऽपि]

गोषणः यो गाः सनुते याचते तत्सम्बुद्धौ (जिज्ञासो जन) ४.३२.२२. ['गो' इत्युपपदे षणु दाने (तना०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः प्रत्ययः]

गोषणिम् गवां विभाजिकाम् (धियं=प्रज्ञाम्) ६.५३.१०. ['गो' इत्युपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिक इन्प्रत्ययः]

गोषतमाः ये गा वाचः सनन्ति सेवन्ते ततोऽतिशयिताः (प्रेमास्पदबद्धाः प्रजाः) ६.३३.५. [गोषाप्राति० अतिशायने तमप् । गोषा='गो' इत्युपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'जनसनखनक्रमगमो विट्' अ० ३.२.६७. सूत्रेण विट् । 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इति अनुनासिकस्याकारः]

गोषु गोजाऽव्यादिषु, भा०—गवोदिषु १६.१६. पशुष्विन्द्रियेषु पं० वि० । किरणेष्विन्द्रियेषु दुग्धादिदात्रीषु वा १८.४७. पृथिवीषु धेनुषु वा ६.१९.१२. पृथिवीषु वाक्षु वा ६.२८.८. प्राप्तव्यासु भूमिषु ६.२६.२. पृथिवी-वाणी-धेनु-धर्म-प्रकाशेषु १.१२१.१५. [गोप्राति० सप्तम्या बहुवचने रूपम् । गौरिति पदे व्याख्यास्यते]

गोषादीः या गाः सादयन्ति हिंसयन्ति ताः पक्षिणीः २४.२४. ['गो' इत्युपपदे सद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्तादण् । स्त्रियां ङीप्]

गोषुयुधम् पृथिव्यादिषु योद्धारम् (शूरवीरम्) १.११२.२२. **गोषुयुधः**=ये गोषु युध्यन्ते तान् (वीरजनान्) ६.६.५. ['गो' इत्युपपदे युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः प्रत्ययः । समासे सप्तम्या अलुक्]

गोष्ठम् गवां स्थानम्, प्र०—अत्र 'घञर्थे क-विधानम्' इति कः ५.१७. **गोष्ठे**=गावः पशव इन्द्रियाणि यस्मिँस्तिष्ठन्ति तस्मिन् ३.२१. ['गो' इत्युपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे क-विधानम्' इति कः प्रत्ययः। 'अम्बाम्बगोभूमि०' अ० ८.३.९७. सूत्रेण मूर्धन्यादेशः। गोष्ठ एव पुरीषम् जै० ३.११४. सोऽब्रवीद् (प्रजापतिः) गोष्ठो वाव म इदं पशूनां सामाभूदिति। तदेव गोष्ठस्य गोष्ठत्वम् जै० ३.१५३.]

गोष्ठादिव यथा स्वस्थानात् तथा १२.८२. [गोष्ठात्-इवपदयोः समासः]

गोष्ठानम् गौर्वाणी तिष्ठति यस्मिन्नध्ययनाध्यापने तं व्यवहारम्, भा०—विद्यावृद्धिम्; प्र०—गौरिति वाङ्नामसु पठितम्, निघं० १.११, १.२६. गौः पृथिवी तिष्ठति यस्मिँस्तदन्तरिक्षम् १.२६. गवां सूर्यरश्मीनां पशूनां वा स्थानम्, प्र०—गाव इति रश्मिनामसु पठितम्, निघं० १.५, १२५. [गौरिति व्याख्यास्यते, तदुपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्प्रत्ययः। सुषामादित्वात् षत्वम्]

गोष्ठ्याय गोष्ठेषु गवां स्थानेषु साधवे (पुरुषाय) १६.४४. [गोष्ठं व्याख्यातम्। ततः साध्वर्थे यत् प्रत्ययः]

गोसखायम् गौर्भूगोलः सखा यस्य तम् (सोमं=जलम्) ५.३७.४. [गो-सखिपदयोः समासः]

गोसनाः यो गाः सनुते याचते तत्सम्बुद्धौ (जिज्ञासो जन !) ४.३२.२२. [गोषणपदे व्याख्यातम्]

गोसनिः गोः संस्कृतवाचो भूमेर्विद्याप्रकाशादेः सनिर्दाता (वीरो गृहपतिः) ८.१२. **गोसणिम्**=गवां विभाजिकां (प्रज्ञाम्) ६.५३.१०. [गोषणिम्पदे व्याख्यातम्]

गोसादीः या गाः सादयन्ति हिंसयन्ति ताः पक्षिणीः २४.२४. [गोषादी-पदे व्याख्यातम्]

गोहा यो गां हन्ति (दुर्जनः) ७.५६.१७. ['गो' इत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्। 'सौ चे' ति दीर्घः]

गोहे संवरणीये गृहे ४.२१.६. [गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः 'हलश्च' सूत्रेण घञ्प्रत्ययः]

गोः भूमेः १.१२१.२. पृथिव्यादेः ४.२३.६. वाचः २२.४८. धेनोः १.१२१.७. [गौरिति पदे द्रष्टव्यम्]

गौपत्यम् वाक्चातुर्य्यम्, अध्यापकत्वम्, सकलविद्याऽधिस्वामित्वम्, गोर्धेनोः पृथिव्या वाचो वा पतिस्तस्य भावम् ११.५८. **गौपत्येन**=गवामिन्द्रियाणां पशूनां वा पतिः पालकस्तस्य भावः कर्म वा तेन, भा०—चेष्टादिव्यवहारहेतुना, (जीवेन) प्र०—अत्र 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' अ० ५.१.१२८. इति यक् प्रत्ययः ३.२२. [गो-पति-पदयोः समासे भावकर्मणोरर्थयोः 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' अ० ५.१.१२८. सूत्रेण यक्]

गौरम् गौर-वर्णम् (पशुं=द्रष्टव्यमश्वादिकम्) १३.४८. **गौरः**=यो गवि सुशिक्षितायां वाचि रमते सः (ब्रह्मा=चतुर्वेदविज्जनः) ४.५८.२. यो वेदविद्यावाचि रमते स एव (ब्रह्मा=चतुर्वेदविज्जनः) १७.९०. गौरगुणविशिष्टो मृगः १.१६.५. [गायति शब्दं करोतीति विग्रहे गै शब्दे (भ्वा०) धातोः 'किशोरादयश्च' उ० १.६५. सूत्रेण ओरन्प्रत्यये धातोराकारादेशो निपात्यते। अरुणे श्वेते पीते निर्मले च वाच्यलिङ्गः। अथवा=गुङ् अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्र०' उ० २.२८. सूत्रेण निपातनात् साधु। अथवा='गो' इत्युपपदे रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' सूत्रेण डः प्रत्ययः। विभक्तेश्चालुक्]

गौरिव आदित्य इव ५.५६.३. [गो-इव पदयोः समासः]

गौरिवीतेः यो गौरिं वाचं व्येति सः (राजा), प्र०—गौरीति वाङ्नाम' निघं० १.११, ५.२९.११. [अतिरिक्तं गौरीवीतम् तां० १८.६.१९. तै० १.४.५.२. एतद्ध वा अद्यश्वं देवानां यद् गौरिवीतम् जै० ३.१७. एतद्वै यज्ञस्य श्वस्तनं यद् गौरीवितम् तां० ५.७५. गौरीवितिर् (ऋषिविशेषः) वा एतच्छाक्तयो ब्रह्मणोऽतिरिक्तमपश्यत्तद् गौरीवितमभवत् तां० ११.५.१४. तेजो वै ब्रह्मवर्चसं गौरिवीतम् ऐ० ४.२. देवा वै वाचं व्यभजन्त तस्याः यो रसोऽत्यरिच्यत तद्गौरी वितमभवत् तां० ५.७.१. प्रजा वै पशवो गौरिवीतम् जै० ३.२९१. प्र वा इन्द्राय मादनमिति गौरीवितम् तां० ९.२.२. ब्रह्म यद्देवा व्यकुर्वत ततो यदतिरिच्यत तद् गौरीवितमभवत् तां० ९.२.३. रसो वै गौरिवीतम् जै० ३.२९१. वाचो वै रसोऽत्यक्षरत् तद् गौरिवीतमभवत् जै० ३.१८.]

गौरीः गौरवर्णा (विदुषी स्त्री) १.१६४.४१. [गौरः पदं व्याख्यातम्। ततः 'षिद्गौरादिभ्यश्च' अ० ४.१.४१. सूत्रेण स्त्रियां ङीष् गौरी वाङ्नाम निघं० १.११. गौरी रोचतेर्ज्वलतिकर्मणः नि० ११.३९.]

गौर्यम् गौरीं वाचम्, प्र०—गौरीति वाङ्नाम, निघं० १.११, ४.१२.६. **गौर्यः**=शुभ्राः किरणा इव उद्यमयुक्ताः सेनाः १.८४.१०. [गौरी व्याख्यातम्।

'वा छन्दसि' इति पूर्वरूपैकादेशो न भवति]

गौः विद्यासुशिक्षिता वाणी १.१७३.८. पृथिवी धेनुर्वा १.१६४.२८. पशुः २१.१९. वृषभः २१.१७. या गच्छति सा (इन्द्रः=विद्युत्) ३.३०.१४. स्तोता (जनः) २१.१३. गच्छतीति गौः पृथिवी १.१६४.१७. गन्त्री (वाक्) ४.४१.५. यो गच्छति स भूगोलः, प्र०—गौरिति पृथिवीनामसु पठितम्, निघं० १.१. 'गौरिति पृथिव्या नामधेयम्' यद् दूरं गता भवति यच्चाऽस्यां भूतानि गच्छन्ति, नि० २.५, ३.६. विद्यया स्तोतव्यः (विद्वान् जनः) २१.१४. पृथिवीगोलः सूर्यश्चन्द्रोऽन्यो लोको वा, ऋ० भू० १३६. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'गमेर्डोः' उ० २.६८. सूत्रेण डोसि प्रत्यये गो रूपम् । सु प्रत्यये 'गोतो णित्' इति णित्वे वृद्धौ गौरूपम्। गौः पृथिवीनाम निघं० १.१. साधारणनाम निघं० १.४. वाङ्नाम निघं० १.११. स्तोतृनाम निघं० ३.१६. पदनाम निघं० ४.१ गावः रश्मिनाम निघं० १.५. गौरिति पृथिव्या नामधेयम्, यद्दूरं गता भवति, यच्चास्यां भूतानि गच्छन्ति, गातेर्वौकारो नामकरणः नि० २.५. पयः नि० २.५. चर्म च श्लेष्मा च नि० २.५. अधिषवणचर्म नि० २.५. स्नाव च श्लेष्मा च नि० २.५.ज्यापि गौरुच्यते, गमयतीषून् नि० २.६. सो (आदित्यरश्मिः) ऽपि गौरुच्यते नि० २.६. गौः आदित्यो भवति गमयति रसान्, गच्छत्यन्तरिक्षे । अथ द्यौः यत् पृथिव्या अधिदूरं गता भवति, यच्चास्यां ज्योतींषि गच्छन्ति नि० २.१४. वागेषा माध्यमिका, धर्मधुगिति याज्ञिकाः नि० ११.४२. गावो गमनात् नि० १२.७. इमे वै लोका गौर्यद्धि किं च गच्छतीमांस्तल्लोकान् गच्छति श० ६.१.२.३४. इमे लोका गौः श० ६.५.२.१७. अयम्मध्यमो (लोकः=अन्तरिक्षम्) गौः तां० ४.१.७. अन्तरिक्षं गौः ऐ० ४.१५. गावो वा आदित्याः ऐ० ४.१७. अन्नमु गौः श० ७.५.२.१९. अन्नं वै गौः तै० ३.९.८.३. अन्नं हि गौः श० ४.३.४.२५. जै० उ० ३.३.१३. यज्ञो ह्येवेयं (गौः) नो ह्यते गोर्यज्ञस्तायतेऽन्नं ह्येवेयं (गौः) यद्धि किं चान्नं गौरेव तदिति श० २.२.४.१३. यज्ञो वै गौः तै० ३.९.८.३. (प्रजापतिः) प्राणाद् गाम् (निरमिमीत) श० ७.५.२.६. प्राणो हि गौः श० ४.३.४.२५. इन्द्रियं वै वीर्यं गावः श० ४.५.३.१०. मुखादेवास्य बलमस्रवत् स गौ पशुरभवदृषभः श० १२.७.१.४. इडे रन्ते हव्ये काम्ये चन्द्रे ज्योतेऽदिति सरस्वति महि विश्रुति एता ते ऽअघ्न्ये (देवत्रा) नामानि श० ४.५.८.१०. इडा हि गौः श० २ ३.४.३४. सरस्वती हि गौः श० १४.२.१.७. मह्य इति ह वा ऽएतासामेकं नाम यद्गवाम् श० १.२.१.२२. या गौः सा सिनीवाली सा एव जगती ऐ० ३.४८. विराड् वै गौः श० ७.५.२.१९. गौः विराजो वा एतद्रूपं यद् गौः तां० ४.९.३. गौर्वै सार्पराज्ञी कौ० २७.४. साहस्रो वा एष शतधार उत्सो यद् गौः श० ७.५.२.३४. स हैष सोमोऽजस्रो यद् गौः श० ७.५.२.१९. गौर्वै स्रुचः तै० ३.३.५.४. गौर्वै देवानां मनोता कौ० १०.६. ऐ० २.१०. वैश्वदेवी वै गौः गो० उ० ३.१९. यद्गौस्तेन रौद्री श० ५.२.४.१३. रौद्री वै गोः तै० २.२.५.२. आग्नेयो वै गौः श० ७.५.२.१९. गौर्वा ऽइदं सर्वं बिभर्त्ति श० ३.१.२.१४. महांस्त्वेव गोर्महिमेत्यध्वर्युः (आह)। गौर्वै प्रतिधुक् श० ३.३.३.१. मनुष्याणां ह्येतासु (गोषु क्षीरदध्यादिविषयाः) कामाः प्रविष्टाः श० २.३.४.३४. सर्वस्य वै गावः प्रेमाणं सर्वस्य चारुतां गताः ऐ० ४.१७. अपशवो वा एते यदजावयश्चारण्याश्च एते वै सर्वे पशवः यद् गव्या इति तै० ३.९.९.२. नैते सर्वे पशवो यदजावयश्चारण्याश्चैते वै सर्वे पशवो यद्गव्या इति श० १३.३.२.३. तस्मादाहुर्गावः पुरुषस्य रूपमिति श० १२.९.१.४. षट्त्रिंशदवदाना गौः गो० पू० ३.१८. तस्माद् संवत्सर ऽएव स्त्री वा गौर्वा विडवा वा विजायते श० ११.१.१६.२. आग्रयणपात्रमुक्थ्यपात्रमादित्यपात्रमेतान्येवानु गावः प्रजायन्ते श० ४.५.५.८. गां चाजं च दक्षिणत एतस्यां तद्दिश्येतौ पशू दधाति तस्मादेतस्यां दिश्येतौ पशू भूयिष्ठौ श० ७.५.२.१६. आग्नेयो वै गौः श० ७.५.२.१९. इन्द्रियं वै वीर्यं गावः श० ५.४.३.१०. इयं (पृथिवी) वै गौः काठ० ३७.६. गां पशुम् जै० १.६९. गावो वै शक्वर्यः जै० ३.१०३. गोभिर्यज्ञं दाधार (इन्द्रः) तै० सं० ४.४.८.१. गौरेव रथन्तरम् जै० १.३३३. गौर्घृताची तै०सं० २.५.७.४. गौर्वावि सर्वस्य मित्रम् तै०सं० २.५.२.६. गौर्वै देवानां मनोता ऐ० २.१०. गौर्वै वाग्, गौर्विराड्, गौरिडा, गौः खल्वेव गौः, गौरिदं सर्वं मै० ४.२.३. गौर्हि यज्ञिया मेध्या मै० १.८.९. गौस्त्रिष्टुक् तै० सं० ७.५.१.५. गोस्सायं प्रातस्तनमाप्यायते काठ० २४.१०. जगती छन्दस्तद् गौः, प्रजापतिर्देवता मै० २.१३.१४. तस्मादाहुर्गावो लवणमिति जै० ३.२३६. तस्मादेषा (गौः) उपजीवनीया श० २.२.४.१२. तां (गाम्) रुद्राय होत्रे ऽददात् श० ४.३.४.२५. यज्ञो वै गौः तै० ३.९.८.३. श० ४.३.४.२५. माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानामृतस्य नाभिः प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गाम् अनागाम् अदितिं वधिष्ट मं० २.८.१५.]

गधः हन्तु, प्र०—हन्तेर्लुङि छान्दसमेतत् १.१५८.५.

ग्नापतिः-वाचः पतिः पालकः (परमेश्वरः) २.३८.१०. [ग्ना-पतिपदयोः समासः । ग्नाः वाङ्नाम नि० १.११.]

ग्नाभिः सुशिक्षिताभिर्वाग्भिः २.३१.४. **ग्नाम्**=

गच्छन्ति ज्ञानं यया ताम् (महीं=वाचम्) ५.४३.६. [ग्नाः वाङ्नाम निघं० १.११. गमनादयः नि० १०.४७. गच्छन्त्येनाः नि० ३.२१. छन्दांसि वै ग्नाश्छन्दोभिर्हि स्वर्गं लोकं गच्छन्ति श० ५.५.४.७.]

ग्नावः ग्ना प्रशंसिता वाणी विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन् शिष्य वा) २.१.५. सर्वपदार्थप्राप्तिर्यस्य व्यवहारे (ऋतुः) प्र०—ग्ना इति उत्तरपदनामसु पठितम्, निघं० ३.२६, १.१५.३. प्रशस्त-वाग्मिन् (विद्वज्जन), प्र०—ग्नेति वाङ्नाम, निघं० १.१, २६.२१. ['ग्नास् इति व्याख्यातम्। ग्नाप्राति० मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ च वक्तव्यौ' अ० ५.२.१०९. वा० सूत्रेण वनिप्। 'वन उपसंख्यानम्' अ० ८.३.१. वा सूत्रेण रुत्वम्]

ग्नासु गन्तुं योग्यासु भूमिषु १.१६१.४. **ग्नाः**=वेदवाचः प्र०—ग्ना इति वाङ्नामसु, निघं० १.११, ११.६१. पृथिव्याः, प्र०—ग्ना इत्युत्तरपदनामसु पठितम्, निघं० ३.२६, १.२२.१०. सुशिक्षिता वाचः ३३.४८. ['ग्नाः' इति व्याख्यातम्]

ग्नास्पत्नीभिः या ग्नाः पतीनां स्त्रियस्ताभिः (स्वपत्नीभिः) ४.३४.७. [ग्नाः-पतिपदयोः समासे स्त्रियां ङीप् नकारान्तादेशश्च। ग्ना इति व्याख्यातम्]

ग्मन् गच्छन्ति ५.३३.१०. प्राप्नुयुः ३.३८.२. प्राप्नुवन्ति प्र०—अत्र गमधातोर्लुङि 'मन्त्रे घस०' इति च्लेर्लुक्, 'गमहन०' इत्युपधालोपोऽडभावो लडर्थे लुङ् च १.६५.१. प्राप्नुवन्तु ४.३४.५. **ग्मन्त**=प्राप्नुत १.१२२.११.

ग्मः पृथिव्याः ५.३८.३. पृथिव्यादेः, प्र०—ग्मेति पृथिवीनामसु पठितम्, निघं० १.१, १.२५.२०. प्रकाशरहितपृथिव्यादिलोकान्। प्र०—अत्र गमधातोर्बाहुलकादौणादिक अ-प्रत्यय उपधालोपश्च १.३७.६.

ग्मिषीय प्राप्नुयाम्, प्र०—अत्राऽऽशिषि लिङि वा 'छन्दसि सर्वे विधयो वा भवन्ति' इति डागमः 'गमहनजन०' अ० ६.४.९८. इति उपधालोपश्च ३.१९. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोराशिषि लिङ्]

ग्रथिनः अज्ञानेन बद्धान् (अविदुषो जनान्) ७.६.३. [ग्रन्थ बन्धने (चुरा०) धातोर्णिनिः प्रत्ययः। नकारलोपश्छान्दसः]

ग्रभणवत् प्रशस्तं ग्रभणं ग्रहणं विद्यते यस्मिँस्तत् (आयुः=जीवनम्) १.१२७.५. [ग्रहणप्राति० मतुप्। हकारस्य भकारः 'हृग्रहोर्भश्छन्दसी' ति वार्त्तिकेन]

ग्रभाय ग्रहणाय ७.४.८.

ग्रभीष्ट गृह्णीयाः २.२९.५.

ग्रसिताम् निगलिताम् (वर्त्तिकामिव प्रजाम्) १.११२.८. [ग्रसु अदने (भ्वा०) धातोः क्तः]

ग्रसिष्ठः अतिशयेन ग्रसिता (मर्त्तः=मनुष्यः) २९.१८. [ग्रसु अदने (भ्वा०) धातोस्तृजन्तादतिशायने इष्ठन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण तृचो लोपः। ग्रसिष्ठ ग्रसितृतमः नि० ६.८.]

ग्रहम् गृह्णाति येन तम् (अक्षितं=अक्षयं सुखम्) ३८.२६. **ग्रहान्**=गृह्यन्ते स्वीक्रियन्ते विवाहकाले नियतशिक्षाविषया ये तान् ८.९. **ग्रहाभ्याम्**=यौ गृह्णीतस्ताभ्याम् (स्त्रीपुरुषाभ्याम्) १९.९०. याभ्यां गृह्णीतस्ताभ्याम् (व्यवहाराभ्याम्) १९.९१. **ग्रहाः**=ग्रहीतारो गृहाऽऽश्रमिणः भा०—राजप्रजाजना गृहस्थाः ६.४. यैः सर्वं क्रियाकाण्डं गृह्णन्ति ते व्यवहाराः १९.२८. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः। अन्नमेव ग्रहः। अन्नेन हीदं सर्वं गृहीतम् श० ४.६.५.४. नामैव ग्रहः। नाम्ना हीदं सर्वं गृहीतम् श० ४.६.५.३. वागेव ग्रहः। वाचा हीदं सर्वं गृहीतेम् श० ४.६.५.२. अङ्गानि वै ग्रहाः श० ४.५.९.११. यद् गृह्णाति तस्माद् ग्रहः श० १०.१.१.५. तं (सोमम्) अघ्नन्। तस्य यशो व्यगृह्णत। ते ग्रहा अभवन्। तद् ग्रहाणां ग्रहत्वम् तै० २.२.८.६. तद् यदेनं पात्रैर्व्यगृह्णतस्माद् ग्रहा नाम श० ४.१.३.५. (प्रजापतिः) तौ (दर्शपूर्णमासौ) ग्रहेणागृह्णात् तद् ग्रहस्य ग्रहत्वम् तै० २.२.२.१. यद् वित्तं (यज्ञं) ग्रहैर्व्यगृह्णत तद् ग्रहाणां ग्रहत्वम् ऐ० ३.९. तान् पुरस्तात् पवित्रस्य व्यगृह्णात् ते ग्रहा अभवन्। तद् ग्रहाणां ग्रहत्वम् तै० १.४.१.१. ते (देवाः) सोममन्वविन्दन्। तमघ्नन्। तस्य यथाभिज्ञायं तनूर्व्यगृह्णत। ते ग्रहा अभवन्। तद् ग्रहाणां ग्रहत्वम् तै० १.३.१.२. एष वै ग्रहः। य एष (सूर्यः) तपति, येनेमाः सर्वाः प्रजाः गृहीताः श० ४.६.५.१. अष्टौ ग्रहाः (प्राणः, जिह्वा, वाक्, चक्षुः, श्रोत्रं, मनः, हस्तौ, त्वक्) श० १४.६.२.१. प्राणा वै ग्रहाः श० ४.२.४.१३. साम ग्रहः श० ४.२.३.७. ग्रहान् वा अनु प्रजाः पशवः प्रजायन्ते तै० सं० ६.५.१०.१. ग्रहा ह वा ऋतस्य योनिः जै० १.१०४. प्राणा वा एत इतरे ग्रहाः मै० ४.६.६.]

ग्रह्यः ग्रहीतुं, योग्यः, भा०—परस्परमनुष्यग्राह्यानुग्राहकभावः ४.२४. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्यप्]

ग्रामजितम् येन पूर्वं शत्रूणां समूहा जितास्तम्

(राजानम्) ऋ० भू० २२४. **ग्रामजितः**=ये ग्रामं जयन्ति (नरः=नायका जनाः) ५.५४.८. [ग्रामोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप् । ग्रामपदं व्याख्यास्यते]

ग्रामण्यम् ग्रामस्य नायकम् (प्रधानपुरुषः) ३०.२०. [ग्रामोपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'सत्सूद्विष०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप् । वैश्यो वै ग्रामणीः श० ५.३.१.६. मारुतः सप्त कपालो वैश्यस्य ग्रामण्योः गृहे मै० २.६.५. ग्रामण्यो गृहान् परेत्य मारुतं सप्तकपालं पुरोडाशं निर्वपति । श० ५.३.१.६. एको बहूनां ग्रामणीः काठ० २७.१०.]

ग्रामः मनुष्यसमूह इव (सज्जनः) ३.३३.११. **ग्रामाः**=मनुष्यनिवासाः २.१२.७. **ग्रामे**=गृहाश्रमे ऋ० भू० २३९. शालासमुदाये नगरादौ १.११४.१. शालासमुदाये गृहस्थैः सेविते (नगरे), प्र०—ग्राम इत्युपलक्षणं नगरादीनाम् ३.४५. ब्रह्माण्डसमूहे १६.४८. **ग्रामेभिः**=ग्रामस्थैः प्रजापुरुषैः १.१००.१०. **ग्रामेषु**=मनुष्यादिनिवासेषु १.४४.१०. [ग्रसु अदने (भ्वा०) धातोः 'ग्रसेरा च' उ० १.१४३. सूत्रेण मन्प्रत्यय आकारान्तादेशश्च । छन्दांसीव खलु वै ग्रामः तै० सं० ३.४.९.२.]

ग्राम्यान् ग्रामे भवान् (पशून्=गवादीन्) ९.३२. **ग्राम्याः**=ग्रामे भवा गवादयः, भा०—गामस्थाः पशवः ३१.६. [ग्रामप्राति० भवार्थे यत् । ग्रामपदं व्याख्यातम्]

ग्रावग्राभः यो ग्राव्णः स्तावकान् गृह्णाति सः (विद्वज्जनः) १.१६२.५. यो ग्रावाणं मेघं गृह्णाति सः (अध्वर्युः=अहिंसायज्ञमिच्छुः) २५.२८. [ग्रावन् इत्युपपदे ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर् अण् हकारस्य भकारादेशः । ग्रावेति व्याख्यास्यते]

ग्रावच्युतः ग्राव्णो मेघाच्युतः (अंशुः=यज्ञपदार्थानां संविभागः) प्र०—ग्रावेति मेघनामसु पठितम्, निघं० १.१०, ७.२६. [ग्रावन्-च्युतपदयोः समासः । ग्रावा मेघनाम नि० १.१०. च्युतः=च्युङ् प्लुङ् गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

ग्रावणा मेघ से सं० वि० १९६, ९.११३.७. **ग्रावभिः**=मेघैः ३.४२.२. गर्जनायुक्तैर्मेघैः २६.५. **ग्रावभ्यः**=गर्जकेभ्यः मेघेभ्यः प्र०—ग्रावेति मेघनाम, निघं० १.१०, ३८.१५. **ग्रावा**=गर्जनायुक्तो मेघ इव (विद्वज्जनः) ५.३१.१२. जलगृहीतो मेघः १.१४. मेधावी (जनः) १.१३५.७. यो गृणाति स मेघ इव विद्वान् १.८४.३. पाषाणः १.२८.१. **ग्रावाणम्**=मेघमिव ७.३३.१४. **ग्रावाणः**=मेघादयः पदार्थाः १.८९.४. सदसद्विवेचकाः विद्वांसः अ०—स्तावका विद्वांसः सभासदः, प्र०—ग्रावाण इति पदनामसु पठितम्, निघं० ५.३, ६.२६. शिलाफलकादयः १८.२१. **ग्राव्णः**=मेघात् ३.५७.४. [गृणाति अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोः क्वनिप् प्रत्ययो धातोश्च ग्रादेशश्छान्दसः । अथवा=ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्वनिप् ग्रादेशश्च । ग्रावा मेघनाम निघं० १.१०. ग्रावाणो हन्तेर्वा गृणातेर्वा गृह्णातेर्वा नि० ९.८. आ उपर उपल इत्येताभ्यां (अद्रिः ग्रावा, गोत्रः, वलः, अश्नः, उपरः, उपल) साधारणानि पर्वतनामभिः नि० २.२१. प्राणा वै ग्रावाणः श० १४.२.२.३३. वज्रो वै ग्रावा श० ११.५.९.७. पशवो वै ग्रावाणः तां० ९.९.१४. विड् वै ग्रावाणः तां० ६.६.१. विशो ग्रावाणः श० ३ ९.३.३. जागता वै ग्रावाणः कौ० २९.१. बार्हता ग्रावाणः श० १२.८.२.१४. मारुता वै ग्रावाणः तां० ९.९.१४. विद्वांसो हि ग्रावाणः श० ३.९.३.१४. यदि ग्रावापि शीर्यते पशुभिर्यजमानो व्यृध्यते तां० ९.९.१३. ग्रावाणो दन्ताः तै० सं० ६.२.११.१४. मै० ३.८.८. ग्रावाणो वै सोमस्य राज्ञो मलिम्लुसेना तै० सं० ६.३.२.६. ग्रावा शेपः तै० सं० ७.५.२५.२. ग्राव्णाः पर्वताः काठ० ३५.१५. यज्ञमुखं ग्रावाणः सै० ४.५.२. राष्ट्रं वै द्रोणकलशो विशो ग्रावाणः जै० १.८०. वत्सा (पशवो हि) ग्रावाणः काठ० २५.९.]

ग्रावहस्तासः ग्रावा स्तुतिसमूहो ग्रहणं दानं वा ग्रावाणः पाषाणादयो यज्ञशिल्पविद्यासिद्धिहेतवो हस्तेषु येषां ते (द्रविणसः=ऋत्विजः) प्र०—'ग्रावाणो हन्तेर्वा गृणातेर्वा गृह्णातेर्वा' नि० ९.८, १.१५.७. [ग्रावा व्याख्यातम्। ग्रावान्हस्तपदयोः समासः । जसोऽसुगागमः]

ग्रावेव मेघ इव ४.३.३. [ग्रावा-इवपदयोः समासः । ग्रावापदं व्याख्यातम्]

ग्रीवा प्रजायाः सुखेन भूषितपुरुषार्थकरणम् ऋ०भू० २१९. **ग्रीवायाम्**=कण्ठे ४.४०.४. **ग्रीवासु**=कण्ठेषु १२.६५. **ग्रीवाः**=शिरांसि ५.२६. कण्ठप्रदेशाः २०.८. कण्ठान् ६.४८.१७. [निगलति यया सेति विग्रहे गॄ निगरणे (तुदा०) धातोः 'शेवायह्वाजिह्वाग्रीवा०' उ० १.१५४. सूत्रेण वन्प्रत्ययो ग्रीभावश्च निपात्यते । ग्रीवा गिरतेर्वा गृणातेर्वा गृह्णातेर्वा नि० २.२८. ग्रीवा उष्णिह श० ८.६.२.११. उष्णिक् छन्दः सविता देवता ग्रीवाः श० १०.३.२.२. ग्रीवा वै यज्ञस्योपसदः श० ३.४.४.१. ग्रीवा पञ्चदशः । चतुर्दश वा ऽ एतासां कारुकराणि, वीर्यं पञ्चदशम् । तस्मादेताभिरण्वीभिः सतीभिर्गुरुं भारं हरति श० १२.२.४.१०. गो० पू० ५.३. इमा एव ग्रीवाः पञ्चदशमहः

ओजो वै वीर्यं ग्रीवा ओजो वीर्यं पञ्चदशः, तस्मात् पशवो ग्रीवाभिर्भारं वहन्ति जै० २.५७. ग्रीवा अणिष्ठास्सतीवीर्यवत्तमाः काठ० २५.१. त्रीणि वा आसां ग्रीवाणां पर्वणि शां० आ० २.३.]

ग्रीष्मः यो रसान् ग्रसते सः (ऋतुः) १३.५५. मध्याह्नः ३१.१४. **ग्रीष्माय**=ग्रीष्मर्तौ सुखाय २४.११. **ग्रीष्मेण**=सर्वरसग्रहीत्रा (ऋतुना) २१.२४. [ग्रसु अदने (भ्वा०) धातोः 'घर्मग्रीष्मौ' उ० १.१४९. सूत्रेण मक् प्रत्यये धातोर्ग्रीभावः षुगागमश्च निपात्यते। ग्रीष्मः= स्यन्तेऽस्मिन् रसाः नि० ४.२७. अनिरुक्त ऋतूनां ग्रीष्मः जै० उ० १.१२.१.३. एतावेव (शुक्रश्च शुचिश्च) ग्रैष्मौ (मासौ)। स यदेतयोर्बलिष्ठं तपति ते नो हैतौ शुक्रश्च शुचिश्च श० ४.३.१.१५. ग्रीष्म उपर्युष्णोऽधश्शीतमधिगम्यते। तस्मादु ग्रीष्मे शीताः कूप्या अप उदाहरन्ति जै० १.१६७. ग्रीष्म ऋतुः (राजन्यस्य) तां० ६.१.८. ग्रीष्म एव महः गो० १.५.१५. ग्रीष्मः प्रस्तावः ष० ३.१. ग्रीष्मम्प्रस्तावं (प्रजापतिरकरोत्) जै० उ० १.३.२.७. ग्रीष्मेण दक्षिणं पक्षम् (अचिनुत) तै० सं० ५.६.१०.१. ग्रीष्मे वा इन्द्रो वृत्रमहन् मै० १.६.९. ग्रीष्मो दक्षिणः पक्षः तै० ३.११.१०. ग्रीष्मो दक्षिणं पक्षम्। वर्षा उत्तरम् मै० ४.९.१८. ग्रीष्मोऽध्वर्युस्तप्त इव वै ग्रीष्मस्तप्तमिवाध्वर्युर्निष्क्रामति श० ११.२.७.३२. ग्रीष्मो वै तनूनपाद् ग्रीष्मो ह्यासां प्रजानां तनूस्तपति श० १.५.३.१०. ग्रीष्मो वै राजन्यस्य ऋतुः काठ० ८.१. तै० १.१.२.७. ग्रीष्मो हि तन्वं तपति कौ० ३.४. तनूनपातं यजति ग्रीष्ममेव तै० सं० २.६.१.१. तस्मात् क्षत्रियो ग्रीष्मऽआदधीत क्षत्रं हि ग्रीष्मः श० २.१.३.५. यस् स्तनयति तद् ग्रीष्मस्य (रूपम्) श० २.२.३.८. वाग् ग्रीष्मः अग्निर्ग्रीष्मः जै० २.५०. श्वेता (पशवः) ग्रीष्माय मै० ३.१३.१९. षड्भिरिन्द्रैः (पशुभिः) ग्रीष्मे (यजते) श० १३.५.४.२८. स (प्रजापतिः) ग्रीष्माद् एव वसन्तं निरमिमीत जै० ३.१. तस्य (वायोः) रथस्वनश्च रथेचित्रश्च सेनानीग्रामण्याविति ग्रैष्मौ तावृतू श० ८.६.१.१७.]

ग्रैष्मी ग्रीष्मर्तु व्याख्यात्री ऋक् १३.५५. [ग्रीष्म इति व्याख्यातम् ततो व्याख्यानेऽर्थेऽण्प्रत्यये स्त्रियां ङीप्]

ग्रैष्मौ ग्रीष्मे भवौ (ज्येष्ठाऽऽषाढौ) १४.६. [ग्रीष्म इति व्याख्यातम्। ततो भवार्थेऽण्]

ग्लापयन्ति आलपन्ति १.१६४.१०. [ग्लै हर्षक्षये (भ्वा०) धातोर्णिचि लट्। धातूनामनेकार्थकत्वादत्रालापनेऽपि]

ग्लाविनम् अहर्षितारम् (जनम्) ३०.१७. [ग्लै हर्षक्षये (भ्वा०) धातोः 'ग्लानुदिभ्यां डौ' उ० २.६४. सूत्रेण डौः प्रत्ययः। ग्लौप्राति० मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

ग्लौभिः हर्षक्षयैः २५.८. [ग्लाविति व्याख्यातम्]

घ एवाऽर्थो निपातः १.५.३. अपि २.३४.१४.

घनम् घनीभूतम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.४९.१. हन्ति येन तम् ४.३८.१५. **घनः**=दृढः काठिन्येन मूर्त्ति प्रापितो वा, अ०—मूर्त्तिमानयं सूर्यलोकः, प्र० मूर्त्तौ घनः, अ० ३.३.७७. अनेनाऽयं निपातितः १.४.८. **घनाः**=शतघ्नी-भुशुण्ड्यसि-चाप-बाणादीनि दृढानि युद्धसाधनानि, प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति लुक् १.८.३. **घने**=हनने ६.२६.८. **घनेन**=वज्राख्येन शस्त्रेण, प्र०—मूर्त्तौ घनः, अ० ३.३.७७. इति घनशब्दो निपातितस्तेन काठिन्यादिगुणयुक्तो हि शस्त्रविशेषो गृह्यते, अत्र 'ईषा अक्षादिषु च छन्दसि प्रकृतिभावमात्रं द्रष्टव्यम्, अ० ६.१.१२७. इति वार्त्तिकेन प्रकृतिभावः, अत्र सायणाचार्येण द्रष्टव्यमिति भाष्यकार पाठमबुद्ध्वा वक्तव्यमित्यशुद्धः पाठो लिखितः, मूलवार्त्तिकस्याऽपि पाठो न बुद्धः १.३३.४. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'मूर्त्तौ घनः' अ० ३.३.७७. सूत्रेण अप्प्रत्ययो मूर्त्तौ (काठिन्ये) वाच्ये, घश्चादेशो निपात्यते]

घनाघनः अतिशयेन शत्रून् घातुकः (इन्द्रः=सेनेशः) प्र०—'हन्तेर्घत्वं च, इति वार्तिकेनाऽचि प्रत्यये घत्वमभ्यासस्यागागमश्च १७.३३. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोरच्प्रत्यये 'हन्तेर्घत्वं च' अ० ६.१.१२. वा० सूत्रेण द्वित्वमभ्यासहकारघत्वागागमश्च। परस्य हकारस्याभ्यासाच्चेति सूत्रेण कुत्वम्]

घनेव यथा घनेन तथा १.६३.५. [घन-इवपदयोः समासः। घन इति व्याख्यातम्]

घर्म! प्रदीपक (देव=जगदीश्वर!) ३७.१८. प्रकाशाऽऽत्मन्, दिनमिव विशालविद्य, विद्युतः प्रकाश इव वर्त्तमान (विद्वन् विदुषी वा) ३८.१८. प्रकाशमान (देव=विद्वज्जन) ३८.१६. **घर्मम्**=यज्ञम् ५.७३.६. अग्निहोत्रादिकं यज्ञम्, प्र०—घर्म इति यज्ञनामसु पठितम्, निघं० ३.१७, १७.५५. सुखवर्धकं यज्ञम् ३८.६. गृहाश्रमकृत्याख्यं यज्ञम् ५.७६.१. गृहाऽऽश्रम-व्यवहाराऽनुष्ठानम् ३८.१३. दिनम् प्र०—घर्म इत्यहर्नामसु पठितम्, निघं० १.९, ३.५३.१४. प्रतापम् २६.६. प्रतापस्वरूपम् (अग्निं=विद्युतम्) १.११२.१. सूर्यतापम् १.११९.६. प्रशस्ता घर्मा यज्ञा विद्यन्ते यस्य तम् (विद्वज्जनम्), प्र०—अत्र घर्मशब्दादर्श आदित्वादच् १.११२.७. प्रदीप्तं सुगन्धियुक्तं भोज्यं पदार्थम् १.११९.२.

अन्नं यज्ञं वा, प्र०—घर्म इत्यन्ननामसु पठितम्, निघं० १.६, यज्ञनामसु च, निघं० ३.१७, ८.१६. **घर्मः**=प्रदीप्तो दिवसकरः (सूर्यः) ३.२६.७. जिघ्रति येन सं प्रकाश इव यज्ञः १८.६६. यज्ञ इव संगतियुक्तः (अग्निः=पावकः) २०.५५. पूजनीयतम (अ०—सर्वतो प्रकाशमयजगदीश्वरो विद्वान्वा) ३८.२१. अग्नितापयुक्तः शोधकः (वसो=यज्ञः) १.२. दिनम्, प्र०—घर्मेति अहर्नाम, निघं० १.६, ३.५३.१४. आतपम् १.१६४.२८. **घर्माय**=प्रसिद्धाऽप्रसिद्ध-सुखप्रदाय यज्ञाय ३८.३. [घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोः 'घर्मग्रीष्मौ' उ० १.१४६. सूत्रेण मक्-प्रत्ययः। घर्मः अहर्नाम निघं० १.६. यज्ञनाम निघं० ३.१७. घर्मम्=हर्म्यम् नि० ६.३२. हरणम् नि० ११.४२. तद् यद् (छिन्नं विष्णोश्शिरः) घृङ्ङित्यपतत्तस्माद् घर्मः श० १४.१.१.१०. अस्यैव एतान्यग्नेः (घर्मः, अर्कः, शुक्रः, ज्योतिः, सूर्यः) नामानि श० ६.४.२.२५. अग्निर्वै घर्मः श० ११.६.२.२. तप्त इव वै घर्मः श० १४.३.१.३३. आदित्यो वै घर्मः श० ११.६.२.२. असौ वाऽआदित्यो घर्मः श० ६.४.२.१६. असौ वै घर्मो यो ऽसौ (सूर्यः) तपति कौ० २.१. एष वै घर्मो य एष (सूर्यः) तपति श० १४.१.३.१७. वेदमिथुनं वा एतद् यद् घर्मः गो० उ० २.६. तदेतद् देवमिथुनं यद् घर्मः स यो घर्मस्तच्छिश्नम् ऐ० १.२२. अग्निश्च मे घर्मश्च मे (यज्ञेन कल्पताम्) तै० सं० ४.७.६.१. घर्म इति दिवाऽऽचक्षीत। सम्राडिति नक्तम् तै० आ० ५.११.२. तेजो वै घर्मः मै० २.२.८. देवमिथुनं वा एतद् यद् घर्मः गो० २.२.६. ब्रह्मवर्चसं वै घर्मः तै० सं० २.२.७.२.]

घर्मपावभ्यः घर्मेण यज्ञेन पवित्रीकर्तृभ्यः (पितृभ्यः=पालकजनेभ्यः) ३८.१५. [घर्म-पावन्पदयोः समासः। घर्म इति व्याख्यातम्]

घर्मस्तुभे यो घर्मं यज्ञं स्तोभति स्तौति तस्मै (विदुषे जनाय) ५.५४.१. [घर्मः यज्ञनाम निघं० ३.१७. तदुपपदे स्तोभति अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोः क्विप्]

घर्मस्वरसः घर्मे यज्ञे स्वकीयो रसो यस्य सः (विद्वज्जनः) ४.५५.६. [घर्म-स्वरसपदयोः समासः। घर्मपदं व्याख्यातम्]

घर्मासः पापानि ७.३३.७. [घर्म इति व्याख्यातम्]

घसत् अद्यात् २१.४५. **घसः**=भक्षय ३.५२.३. **घस्ताम्**=भक्षयताम् २१.४३. [अद भक्षणे (अदा०) धातोर्लुङ्। 'लुङ्सनोर्घस्लृ' अ० २.४.३७. सूत्रेण घस्लादेशः। अडभावश्च]

घसः भोगः ४.३२.१६. [अद भक्षणे (अदा०) धातोः 'उपसर्गेऽदः' सूत्रेणानुपसर्गादपि छान्दसत्वादप् धातोर्घस्लृ-आदेशः]

घासम् भक्ष्यम्, (भा०—यवदुग्धादिकम्) ११.७५. **घासे**=भोजने २१.४३. [अद भक्षणे (अदा०) धातोर्घञ्। 'घञपोश्च' अ० २.४.३६. सूत्रेण घस्लृ-आदेशः]

घासिम् अदनम् २५.३८. [अद भक्षणे (अदा०) धातोः 'इञजादिभ्यः' इति इञ्प्रत्ययः। 'बहुलं छन्दसी' ति घस्लादेशः। अथवा घस्लृ अदने (भ्वा०) धातोः 'जनिघसिभ्यामिण्' उ० ४.१३०. सूत्रेण इण्प्रत्ययः]

घासेअज्राणाम् भोजनेऽग्रे प्राप्तव्यानाम् (अग्निष्वात्तानां=गृहीताग्निजनानाम्) २१.४३. भोजने कमनीयानाम् (शतरुद्रियाणाम्=विद्वदधिष्ठातृजनानाम्) २१.४४. [घास-अज्रपदयोः समासः। घास इति व्याख्यातम्। सप्तम्या अलुक्। घासपदं व्याख्यातम्। अज्रः=अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्बाहु०रक्]

घृणा दीप्तिः ६.३.७. दीप्तिः क्षरणं वा १.५२.६. [घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोर्बाहुलकादौणादिको नक्-प्रत्ययः। घृणः अहर्नाम निघं० १.६.]

घृणाः प्रदीप्ताः (पदार्थाः) ४.४३.६. [घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोः क्तः]

घृणिः रश्मिवान् सूर्यः ३.५.८. [घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोः 'घृणिपृश्नि०' उ० ४.५२. सूत्रेण निप्रत्ययान्तो निपात्यते। घृणिः अहर्नाम निघं० १.६. ज्वलतो नाम निघं० १.१७. क्रोधनाम निघं० २.१३.]

घृणीव प्रदीप्त सूर्य इव २.३३.६. [घृणिपदं व्याख्यातम्]

घृणीवान् तेजस्वी पशुविशेषः २४.३६. [घृणिरिति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने मतुप्। छान्दसं दीर्घत्वम्]

घृणे प्रदीप्ते (रणे=सङ्ग्रामे) ६.१५.५. [घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोः क्तः]

घृतच्युतम् उदकात् प्राप्तम् (स्वारम्=उपतापं शब्दं वा) २.११.७. [घृत-च्युतपदयोः समासः। घृतम्=घृ सेचने (भ्वा०) धातोः क्तः। घृतम् उदकनाम निघं० १.१२.]

घृतनिर्णिक् यो घृतमुदकं नितरां नेनेक्ति पुष्णाति सः, यद्वा घृतस्य सुस्वरूपम् (सूर्यः), प्र०—निर्णिक् इति रूपनाम निघं० ३.७, २.३५.४. यो घृतेन निर्णेक्ति सः (अग्निः=पावकः) ३.१७.१. आज्योदकयोः शोधकः (अग्निः=वह्निः) ३.२७.५. जल को शोधन करने हारा)

(अग्निः) सं० वि० १०४, २.३५.४. **घृतनिर्णिजः**=घृतेनाऽऽज्येनोदकेन शुद्धीकृताः (यज्ञाः=सत्या व्यवहाराः) ४.३७.२. [घृतं व्याख्यातम्। तदुपपदे णिजिर् शौचपोषणयोः (जु०) धातोर्निरुपसर्गात् क्विप्]

घृतपावानः उदकपा वीराः (जनाः) ६.१९. [घृतं व्याख्यातम्। तदुपपदे पा पाने (भ्वा०) धातोः 'आतो मनिन्क्वनिप्वनिपश्च' अ० ३.२.७४. सूत्रेण वनिप्]

घृतपृचा घृतेन प्रदीपनेनोदकेन वा सम्पृक्ते (द्यावापृथिवी=विद्युदन्तरिक्षे) ६.७०.४. [घृतं व्याख्यातम्। तदुपपदे पृची सम्पर्चने (अदा०) धातोः क्विप्]

घृतपृष्ठम् घृतं पृष्ठमिव यस्य तम् (अग्निम्) ७.२.४. घृतमुदकमाज्यं पृष्ठ आधारे यस्य तम् (अग्निम्) ५.४.३. घृतं दीपनमाज्यमुदकं वा पृष्ठे यस्य तम् (अग्निम्) ५.१४.५. घृतमुदकं पृष्ठे यस्मिँस्तत् (बर्हिः=अन्तरिक्षम्) १.१३.५. **घृतपृष्ठः**=घृतमुदकं पृष्ठे यस्य सः(शिल्पी जनः) ५.३७.१. घृतं जलं पृष्ठेऽस्य (सूर्यः) १.१६४.१. **घृतपृष्ठाः**=घृतमुदकं पृष्ठे आधारे येषां ते (वह्नयः=अग्नयः) १.१४.६. [घृत-पृष्ठपदयोः समासः। पृष्ठः=पृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः' उ० २.१२. सूत्रेण थक्-प्रत्ययः]

घृतप्रतीकम् ये घृतमाज्यं प्रत्येति तम् (अग्निं=विद्वज्जनम्) १.१४३.७. **घृतप्रतीकः**=प्रतीतिकरं जलमाज्यं वा यस्य सः (अग्निः=विद्युत्) १५.२७. घृतमाज्यं प्रतीकं प्रदीपकं यस्य सः (अग्निः=पावकः) ३.१.१८. यो घृतमुदकं प्रत्याययति सः (घृतयोनिः=अग्निः) ३५.१७. घृतमाज्यमुदकं वा प्रतीतिकरं यस्य सः (अग्निः) ५.११.१. [घृत-प्रतीकपदयोः समासः। घृतं व्याख्यातम्]

घृतप्रयाः यो घृतेन प्रीणाति सः (सज्जनः) ३.४३.३. [घृतोपपदे प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोरच्-प्रत्ययः]

घृतप्रसत्तः घृते प्रसत्तः (अग्निः) ५.१५.१. [घृत-प्रसत्तपदयोः समासः। प्रसत्तः=प्र+सद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्तः। नत्वाऽभावश्छान्दसः]

घृतप्रुषम् यो यज्ञसिद्धेन घृतेन प्रुष्णाति स्निह्यति तम् (जनम्) १.४५.१. घृतेनोदकेनाऽऽज्येन वा सिक्तम् (आहारम्) ७.४७.१. **घृतप्रुषः**=ये घृतमुदकं प्रोषयन्ति पूरयन्ति ते (ऊर्मयः=समुद्रादिजलतरङ्गाः) ६.४४.२०. **घृतप्रुषा**=घृतेन तेजसा प्रुट् पूर्णास्तेन (मनसा=विज्ञानेन) २.३.२. [घृतोपपदे प्रुष स्नेहन-सेचन-पूरणेषु (क्र्या०) धातोः क्विप्]

घृतप्वः घृतं पुनन्ति यास्ताः (आपः=जलानि) ४.२. [घृतोपपदे पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्विप्]

घृतम् उदकम्, प्र०—घृतमित्युदकनामसु पठितम्, निघं० १.१२, ६.१९. शुद्धं प्रदीप्तमुदकम् ३४.४०. घृतमिवाऽऽनन्दप्रदं विज्ञानम् ४.५८.४. सन्दीप्तं तेजः २.३.११. उदकमाज्यं वा १.११०.६. आज्यादिकम् ३.२. प्रदीप्तविज्ञानम् १.१३५.७. **घृतस्य**=शुद्धस्य ज्ञानस्य १७.९६. विज्ञानस्य १७.९५. प्रदीप्तस्य विज्ञानस्य १७.९८. प्रकाशस्य ४.५८.९. प्रकाशितस्य बोधस्य ४.५८.१०. **घृतेन**=प्रदीपकेनोदकेनाऽऽज्येन वा ७.८.१. उदकेनाऽन्नेन वा २९.२. विद्याप्रकाशेन ५.११.३. सुगन्ध्यादिगुणयुक्तेनाऽऽज्येन २.२२. **घृतेभिः**=आज्यादिभिः २.७.४. **घृतैः**=उदकादिभिः ३.६२.१६. शोधितैः सुगन्ध्यादियुक्तैर्घृतादिभिर्यानेषु जलवाष्पादिभिर्वा प्र०—अत्र बहुवचनमेकसाधनद्योतनार्थम् ३.१. आज्यादिभी रसैः १.१५३.१. प्रदीपकैः साधनैः ५.८.७. [घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोः 'अञ्जिघृसिभ्यः क्तः' उ० ३.८९. सूत्रेण क्तः प्रत्ययः। घृतम् उदकनाम निघं० १.१२. घृतमित्युदकनाम जिघर्त्तेः सिञ्चतिकर्मणः नि० ७.२४. एतद्वा अग्नेः प्रियं धाम यद् घृतम् तै० १.१.९.६. घृतं वै देवा वज्रं कृत्वा सोममघ्नन् गो० उ० २.४. देवव्रतं वै घृतम् तां० १८.२.६. बहुदेवत्यं वै घृतम् कौ० २०.४. सर्वदेवत्यं वै घृतम् कौ० २१.४. रेतो वै घृतम् श० ९.२.३.३४. रेतसिक्तिर्वै घृतम् कौ० १६.५ उल्वं घृतम् श० ६.६.२.१५. घृतमित्यन्तरिक्षस्य (रूपम्) श० ७.५.१.३. एतद्वै प्रत्यक्षाद् यज्ञरूपं यद् घृतम् श० १२.८. अन्तो वै पयसां घृतम् जै० १.२२४. अन्नस्य घृतमेव रसस्तेजः मं० २.६.१५. आयुर्दा देवजरसं वृणानो घृतं वसानो घृतपृष्ठो अग्ने काठ० ११.१३. एतद्रूपा वै पशवो यद् घृतम् काठ० ११.२. घृतं वै देवानां फाण्टं मनुष्याणाम् श० ३.१.३.८. घृतं वै देवानां मधु काठ० २६.३. घृतं च मे मधु च मे (यज्ञेन कल्पताम्) तै० सं० ४.७.४.१. घृतं दुहानादितिर्जनाय, सा मे धुक्ष्व सर्वान् भूतिकामान् काठ० ३१.१४. घृतं देवानामायुतं मनुष्याणाम् मै० ३.६.२. काठ० २३.१. घृतं मनुष्याणाम् (सुरभि) ऐ० १.३. घृतेन ते (अग्नेः) तन्वं वर्धयामि काठ० ३८.१२. तेजो वा एतत् पशूनां यद् घृतम् ऐ० ८.२०. तेजो वै घृतम् तै० सं० २.२ ९.६. मै० १.६.८. काठ० १०.१. पयो वै घृतम् मै० २.१.७. पशवो घृतम् मै० १.१०. काठ० २२.६. भूतिर्दध्ना घृतेन वर्धताम् तै० सं० ३.२.६.१. मै० ४.८.९. यदध्रियत तद् घृतम् तै० सं० २.३.१०.१. मै० २.३.४. वज्रो घृतम् काठ० २०.५. स घृङ्ङ्करोत् तद् घृतस्य घृतत्वम् काठ० २४.७. समिधाग्नि

दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् काठ० १६.१०.]

घृतयोनिम् घृतं दीपकं तत्त्वं योनिः कारणं यस्य तम् (यज्ञम्) ३.४.२. घृतमुदकं प्रदीप्तं कारणं वा योनिर्गृहं यस्य तम् (अग्निम्) ५.८.६. **घृतयोनिः**=घृतं प्रदीप्तं तेजो योनिः कारणं गृहं वा यस्य सः (अ० – अग्निः) ३५.१७. **घृतयोनी**=घृतमुदकं कारणं ययोस्तौ (विद्वांसौ जनौ) ५.६८.२. **घृतयोने**=यथा जलनिमित्ता विद्युद् वर्त्तते, तथा तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) ५.४१. यथा घृतयोनिरग्निस्तथा तत्सम्बुद्धौ (सुशिक्षितः शूरः जन !) ५.३८. [घृतयोनिपदयोः समासः। घृतं व्याख्यातम्। योनिः=यौति संयोजयति पृथक् करोति वेति विग्रहे यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'वहिश्रिश्रुयु०' उ० ४.५१. सूत्रेण निः प्रत्ययः योनिः उदकनाम निघं० १.१२. गृहनाम निघं० ३.४.]

घृतवत् घृतमाज्यमुदकं वा प्रशस्तं विद्यते यस्मिँस्तत् (मधु=रसम्) ३.३१.११. बहुघृतादियुक्तं हविः ३.५९.१. घृतं प्रशस्तं जलं विद्यते यस्मिँस्तत् (पयः=रसादिकम्) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.२२.१४. बहुघृतयुक्तम् (हव्यम्) ७.४७.३. [घृतं व्याख्यातम् । ततः प्रशंसार्थे मतुप्]

घृतवत् घृतेन तुल्यम् ३.५.६. घृतेन पुष्टिदीप्तिकारकेण तुल्या ४.२२. [घृतप्राति० तुल्यार्थे वतिः]

घृतवद्भिः बहुघृतादिपदार्थैः सह वर्त्तमानैः (द्रव्यैर्हुतैः) २.३६.४. घृतादियुक्तैः (इळाभिः=अन्नैः) ७.३.७. [घृतं व्याख्यातम् । ततः प्रशंसार्थे भूम्नि वा मतुप्]

घृतवती घृतं बहूदकमस्ति यस्याः सा (स्त्री) १४.२. प्रशस्तान्यांज्यादीनि विद्यन्ते यस्याः सा (स्त्री) १४.४. प्रशस्ताऽऽज्यादियुक्ता (स्त्री) १५.३. बहूदकयुक्ता नदी ६.११.५. [घृतप्राति० प्रशंसार्थे भूम्न्यर्थे वा मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप्]

घृतवती घृतमुदकं बहु विद्यते ययोस्ते (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ३४.४५. बहु घृतमुदकं दीप्तिर्वा विद्यते ययोस्ते (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी), प्र०—घृतमिति उदकनाम, निघं० १.१२, ६.७०.१. [घृतं व्याख्यातम्। ततो मतुबन्तान् ङीप् । घृतवती द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०.]

घृतवन्तम् बहुघृतादिवन्तम् (यज्ञं=सङ्गतिमयं व्यवहारम्) ६.१५.१६. बहुघृतमुदकं विद्यते यस्मिँस्तम् (योनिं=गृहम्) ३.५.७. बहुघृतयुक्तम् (यज्ञम्) १.१४२.२. **घृतवन्तः**=प्रशस्तं बहु वा घृतमाज्यमुदकं वा विद्यते येषान्ते (पदार्थाः) ३.२१.२. [घृतवदिति व्याख्यातम् । ततो द्वितीयैकवचनम्]

घृतवृधा घृतेन तेजसा वर्धेते (द्यावापृथिवी=विद्युदन्तरिक्षे) ६.७०.४. [घृतोपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । 'सुपां सुलुगि' त्याकारः]

घृतश्चुतम् उदकान् प्राप्तम् (स्वारम्=उपतापं शब्दं वा) २.११.७. **घृतश्चुतः**=घृतेन सिक्ताः (सज्जनाः) ३.२१.३. **घृतश्चुता**=घृतं श्चोतति तेन (स्रुचा=यज्ञसाधनेनेव योगाभ्यासेन) ५.१४.३. [घृत-श्चुतपदयोः समासः । श्चुतः=श्चुतिर् क्षरणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

घृतश्च्युतः घृतमाज्यं श्च्युतं निस्सृतं याभ्यस्ताः (सत्यस्त्रियः) १७.३. [व्याख्यातम् । अथवा घृतोपपदे श्च्युतिर् क्षरणे (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप् । पशवो वै घृतश्श्चुतः तां० ९.१.१७.]

घृतश्रियम् यो घृतं श्रयति, घृतेन शुम्भमानस्तम् (राजानम्) ५.८.३. घृतेनोदकेन शोभमानम् (भिषजम्=वैद्यम्) २८.९. **घृतश्रिया**=घृतं प्रदीपनमवकाशनञ्च श्रीर्ययोस्ते (द्यावापृथिवी=विद्युदन्तरिक्षे) ६.७०.४. **घृतश्रीः**=घृतमाज्यं सेवमानः (अतिथिर्विद्वज्जनः) १.१२८.४. [घृतोपपदे श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'क्विप् वचिपृच्छ्यायतस्तु०' वार्ति० सूत्रेण क्विप् दीर्घत्वं च]

घृतसदम् आज्यं प्राप्नुवन्तम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ९.२. [घृतोपपदे सद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्]

घृतस्नाः याभिर्घृतमाज्यमुदकं वा स्नान्ति ताः (हरितः=अङ्गुलयः) ४.६.९. [घृतोपपदे ष्णा शौचे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः]

घृतस्नुना घृतमिव शुद्धेन (हव्येन=अध्ययनेन श्रवणेन वा) ६.५२.८. **घृतस्नुः**=यो घृतमुदकं स्नाति (रथः=विमानादियानम्) ५.७७.३. [घृतं व्याख्यातम् । तदुपपदे ष्णा शौचे (अदा०) धातोः 'मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' इति डुः प्रत्ययः]

घृतस्नुवः घृतमुदकं स्नुवन्ति प्रस्रवन्ति यास्ताः (धानाः=दीप्तयः) १.१६.२. **घृतस्नुवा**=यौ घृतमुदकं स्नुतः=स्रावयतस्तौ (सूर्यविद्युतौ) ३.६.६. **घृतस्नू**=घृतस्य स्रावकौ (मित्रावरुणौ=सुहृद्वरौ) १.१५३.१. यौ घृतमुदकं स्नुतः प्रस्रावयतस्तौ (वाय्वग्नी) ४.२.३. यौ घृतमुदकं स्नातः शोधयतस्तौ (अग्नी) ३.४१.९. [घृतं व्याख्यातम् । तदुपपदे ष्णु प्रस्रवणे (अदा०) धातोः क्विप् । ततः प्रथमाद्विवचनम् घृतस्नूः=घृतप्रस्राविण्यः,

घृतसारिण्यः, घृतसानिन्य इति वा नि० १२.३६. अन्यत्र ष्णा शौचे (अदा०) धातोरौणा० उः प्रत्ययः]

घृतस्नूः या घृतमुदकं स्नान्ति शोधयन्ति ताः (गिरः=संस्कृता वाणीः) २.२७.१. घृतमुदकमिव प्रदीप्तं व्यवहारं स्नान्ति शोधयन्ति ताः (गिरः=वाचः) ३४.५४. [घृतस्नुरिति व्याख्यातम्]

घृतस्नो यो घृतं स्नाति शुन्धति तत्सम्बुद्धौ (विद्वन्) ५.२६.२. [घृतस्नुपदं व्याख्यातम्। ततः सम्बुद्धौ रूपम्]

घृतहस्ता घृतं हस्ते गृह्यते यया सा (इळा=प्रशंसनीया वाक्) ७.१६.८. [घृत-हस्तपदयोः समासः]

घृताची घृतमुदकमञ्चत इति घृताची अग्निवाय्वोर्धारणाकर्षणक्रिये, भा०—रसच्छेदकधारकौ (अग्निवायू) प्र०—अत्र पूर्वसवर्णादेशः 'घृतमित्युदकनाम' निघं० १.१२, २.१९.

घृताची सुखप्रदा रात्रीव ३.३०.७. घृतमाज्यमुदकं वाऽञ्चति प्राप्नोति सा दीप्तिः १५.१८. घृतमायुर्निमित्तमञ्चति प्राप्नोत्यनया सुनियमाचरणक्रियया सा २.६. या घृतमुदकमञ्चति प्राप्नोति सा (रात्रिः) घृतमाज्यमञ्चति प्राप्नोत्यनयाऽऽदानक्रियया सा २.६. या होमक्रिया घृतमुदकमञ्चति प्रापयति सा, प्र०—घृतमित्युदकनामसु पठितम्, निघं० १.१२, २.६. या घृतमुदकमञ्चति सा (देवी=विदुषी स्त्री) ५.४३.११. रात्रिः, प्र०—घृताचीति रात्रिनाम, निघं० १.७, ६.६३.४.

घृताचीम् या घृतमुदकमञ्चति प्राप्नोति तां रात्रीम्। ३.१९.२. घृतं जलमञ्चति प्रापयतीति तां क्रियाम्, प्र०—घृतमित्युदकनामसु पठितम्, निघं० १.१२, १.२.७. **घृताचीः**=या घृतमुदकमञ्चन्ति ताः (अ०—द्युतीः) १७.५९. या घृतमाज्यादिकं जलं वाऽञ्चन्ति प्रापयन्ति ताः (समिधः) ३.४. **घृताच्या**=या घृतमुदकमञ्चति प्राप्नोति तया रात्र्या ३.२७.१. [घृताची रात्रिनाम निघं० १.७. घृतमित्युदकनाम (निघं० १.१२.) तदुपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्०' इत्यादिना क्विन्। 'अनिदिताम०' इति नकारलोपे 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानमि' ति ङीप्। 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति दीर्घः। घृताच्यसि जुहूर्नाम्ना श० १.३.४.१४. घृताच्यसि ध्रुवा नाम्ना श० १.३.४.१४. घृताच्यस्युपभृन्नाम्ना श० १.३.४.१४. स्रुग् घृताची श० ८.६.१.१९. स विश्वाचीरभिचष्टे घृताचीरिति स्रुचश्चैतद् वेदीश्चाह घृताची—स्रुक् श० ९.२.३.१७. वाग्वै धीर्घृताची ऐ० आ० १.१.४.]

घृताऽन्नः घृतमाज्यं प्रदीपनमन्नमिव प्रदीपकं यस्य (अग्निः=विद्युत्) ७.३.१. [घृत-अन्नपदयोः समासः]

घृतावृधा घृतेन तेजसा वर्धेते (द्यावापृथिवी=विद्युद्-अन्तरिक्षे) ६.७०.४. [घृतोपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'सुपां सुलुगि' त्याकारः]

घृतासुतिः घृतमासूयते येन सः (विद्वज्जनः) १.१५६.१. **घृतासुती**=घृतेन समन्तात् सुतिः प्रेरणं ययोस्तौ (इन्द्राविष्णू=वायुसूर्यौ) ६.६९.६. घृतेनाऽऽसुतिः सवनं ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१३६.१. यौ घृतमुदकमासुतः (सूर्याचन्द्रमसौ) २.४१.६. [घृतं व्याख्यातम्। सुतिः=षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः क्तिन्। तयोः समासः]

घृताहवन घृतमाज्यादिकं जलं चाऽऽसमन्ताद् जुह्वति यस्मिन् सः (अग्ने=अग्निर्भौतिकः) १.१२.५. घृतग्राहिन् (विद्वज्जन) १.४५.५. [घृतोपपदे हु दानाऽदानयोः (जु०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

घृषुम् घर्षणशीलम् (मरुतां गणम्) १.६४.१२. **घृषौ**=दुष्टानां घर्षणे ६.४६.४. [घृसु संघर्षे (भ्वा०) धातोः 'मृगय्वादयश्च' उ० १.३७. सूत्रेण कुः प्रत्ययः]

घृष्वयः सम्यग् घर्षणशीलाः (वीरजनाः) १.८५.१. प्र०—'कृविघृष्वि०' उ० ४.५६. घृषु सङ्घर्षे इत्यस्माद् विन् प्रत्ययः १.८५.१. सोढारः (क्रीडाः=क्रीडका जनाः) १.१६६.२. **घृष्वये**=घर्षिताय शुद्धाय (प्रजाजनाय) ४.३२.९. घर्षणाय ४.३२.६. घर्षन्ति परस्परं सञ्चूर्णयन्ति येन तस्मै (प्रकाशमानाय यशसे) १.३७.४. **घृष्वे !**=पदार्थानां सङ्घर्षक ! (अग्ने=राजन्) ४.२.१३. **घृष्वेः**=दुष्टानां घर्षकस्य (वीरजनस्य) ६.१८.१२. [घृषु संघर्षे (भ्वा०) धातोः 'कृविघृष्विच्छवि०' उ० ४.५६. सूत्रेण विन् प्रत्ययान्तो निपात्यते]

घृष्विराधसः घृष्वीनि सम्बद्धानि राधांसि धनानि येषान्ते (मरुतः=धार्मिका विद्वांसो जनाः) ७.५९.५. [घृष्विरिति व्याख्यातम्। राधस् इति धननाम निघं० २.१०. तयोः समासः]

घोरम् हननम् २.१२.५. **घोरः**=यो हन्ति सः (इन्द्रः=राजा) ७.२८.२. **घोरस्य**=दुष्टस्य (जनस्य) ४.६.६. **घोराणाम्**=हन्त्रीणाम् (मरुतां=वायूनामिव) १.१६९.७. **घोराय**=हन्यन्ते सुखानि यस्मिन् तद् घोरं, तन्निवारणाय, प्र०—'हन्तेरच् घुर् च' उ० ५.६४. अनेन घोर इति सिद्धयति २.३२. आपत्काल-निवारणाय, ऋ०

भू० २५६. **घोरा**=भयङ्करौ (अश्वा=तुरङ्गौ, महान्तौ जनौ वा) ६.६७.४. भयङ्करा (समृतिः=युद्धम्) ४.१६.१७. दुष्टानां दुःखप्रदा (सरस्वती=विद्याविज्ञानयुक्ता वाणी) ६.६१.७. **घोराः**=विद्युद्योगेन भयङ्करा (मरुतः=वायवः) १.१६७.४. **घोरे !**=हे भयानके (अ०-पत्नि !) १२.६४. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हन्तेरच् घुर च' उ० ५.६४. सूत्रेणाच् प्रत्ययो धातोर्घुरादेशश्च]

घोरवर्पसः घोरं हननशीलं वर्पो रूपं स्वरूपं येषान्ते (मरुतः=वायवः), प्र०—वर्प इति रूपनामसु पठितम् निघं० ३.७, १.१९.५. [घोर-वर्पस्पदयोः समासः]

घोषतम् घोषं कुर्वन्तौ स्तः ५.१७. **घोषथः**=विशेषेण शब्दयथः १.१५१.४. [घुषिरविशब्दने (भ्वा०) धातोर्लोट् अन्यत्र लट्]

घोषम् विद्या सुशिक्षायुक्तां वाचम्, प्र०—घोष इति वाङ्नामसु पठितम्, निघं० १.११, ३.७.६. **घोषः**=सुवक्तृत्वयुक्ता वाक् ७.२३.२. शौर्योत्साहजनको विचित्र-वादित्र-स्वरालापशब्दः, भा०—मनोहरो निर्भयादिजनको वादित्रशब्दः १७.४१. वाणीः, प्र०--घोष इति वाङ्नाम, निघं० १.११, ३.३०.१६. **घोषात्**=सुशिक्षिताया वाचः ६.३८.२. शब्दद्वारया ५.३७.३. **घोषान्**=वाक्प्रयोगान् ३.३३.८. शब्दान् ६.७५.७. **घोषाय**=सत्प्रियभाषणादि-युक्तायै वाण्यै १०.५. **घोषाः**=शब्दाः १७.४२. **घोषे**=उत्तमायां वाचि १.१२०.५. [घुषिरविशब्दने (भ्वा०) धातोर्घञ् । घोषः=वाङ्नाम निघं० १.११. घोषो घुष्यतेः नि० ९.९.]

घोषायै घोषाः प्रशंसिता शब्दा, गवादिस्थित्यर्थाः स्थानविशेषा वा विद्यन्ते यस्यां तस्यै (कृषिभूम्यै) १.११७.७. [घोषप्राति० 'अर्श आदिभ्योऽच्' इत्यच् मत्वर्थे । ततः स्त्रियां टाप् । घोष इति व्याख्यातम्]

घोषि शब्दयुक्तं वचः ४.४.८. घोषो यस्मिन्नस्ति तत् (मन्म=विज्ञानम्) ६.५.६. [घोषप्राति० मत्वर्थ इनिः]

घोषेव आप्तानां वागिव १.१२२.५. [घोष-इवपदयोः समासः । घोषः=वाङ्नाम निघं० १.११.]

घ्नन् नाशयन् (सेनापतिः) ६.७३.२. विनाशयन् (बलाध्यक्षो न्यायाधीशः) ४.१२.२. **घ्नन्तम्**=विरोधं विनाशयन्तम् (इन्द्रं=विद्वज्जनम्) ३.४३.८. हन्तारम् (इन्द्रं=राजाद्यध्यक्षम्) ३.३२.१७. विद्यावन्तं शूरवीरमिव ३.३९.९. **घ्नन्तः**=शत्रु-हननं कुर्वन्तः (राजपुरुषाः) १.३६.८. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

घ्नन्ति नाशयन्ति १.४१.३. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः लटि प्रथमबहुवचनम्]

घ्रंसम् रात्र्या दिनम्, प्र०—घ्रंस इत्यहर्नाम, निघं० १.९, १.११६.८. दिनम् ५.४४.७. [घ्रंसः अहर्नाम निघं० १.९. घ्रंसम् अहः नि० ६.३६.]

घ्राताय योऽघ्रायि तस्मै (जनाय) २२.७. [घ्रा गन्धोपादाने (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । 'नुदविद०' निष्ठानत्वविकल्पः]

च अनुक्त-समुच्चयार्थे १.२.५. पुनरर्थे १.२६. आवृत्त्यर्थे १.७.४. अन्वाचये २.१४. पश्चादर्थे २.१९. पूर्वाऽर्थानुकर्षणे १.१४.१. और, सं०वि० १९७, ऋ० ९.११३.११. भी, आर्याभि० २.३७, ३६.२४. पक्षाऽन्तरे ६.२६. [च समुच्चयार्थे नि० १.४.]

चकनन्त कामयन्ते १.१६८.४. [कानिषत् कान्तिकर्मा निघं० २.६. कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

चकमानः कामयमानः (राजा) ५.३६.१. [चकमानः कान्तिकर्मा निघं० २.६. चक तृप्तौ प्रतिघाते च (भ्वा०) धातोः शानच्]

चकर करोमि १.१६५.८. **चकरम्** भृशं करोमि ४.४२.६. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः सामान्ये लिट् । अन्यत्र यङ्लुकि रूपम्]

चकर्तिथ कृन्तसि १.५७.६. **चकर्थ**=करोषि २.१३.११. करोति १.६९.४. कुरु १.१३१.५. कुर्य्याः ५.३३.४. [कृती छेदने (तुदा०) धातोः सामान्ये लिट् । अन्यत्र डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिट्]

चकर्थ कृन्त ३.३०.१७.

चकानः कामयमानः (इन्द्रः=विद्वान् राजा) ७.२७.१. **चकाना**=कामयमानौ (सभासेनेशौ) ६.६८.३. **चकानाः**=देदीप्यमानाः (सेनाऽमात्यादिजनाः) ४.१६.१५. [चक तृप्तौ प्रतिघाते च (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्, मुगभावश्च छान्दसः चकमानः कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

चकार कुर्य्याः, प्र०—अत्र लिङर्थे लिट् ८.२३. करोति ४.१६.४. कुर्यात् १२.६५. कृतवान्, करोमि करिष्यामि वा, प्र०—अत्र 'छन्दसि लुङ्लङ्लिटः' अ० ३.४.६. इति कालसामान्ये लिट् ८.१३. करोति करिष्यति वा, प्र०—अत्र सामान्यकाले लिट् १.३२.१. करोतु ७.२६.३. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः सामान्ये लिट्]

चकृपन्ते कृपालवो भवन्ति १.१७९.५.

चकृम कुर्याम २५.३०. विदध्याम १.१०१.९. कुर्मो वा करिष्यामः २०.१७. कुर्महे करिष्यामो वा, प्र०—अत्र लट्लृटोरर्थे लिट् ३.४५. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः सामान्ये लिट्]

चकृवान् कृतवान् (इन्द्रः=परमैश्वर्यवान्राजा) ५.२९.१४. **चकृवांसम्**=कुर्वन्तम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यवन्तं शत्रुविदारकं वा राजानम्) ६.१७.१३. **चकृवांसः**=कर्त्तारः (मेधाविनो जनाः) १.१६१.४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिटः क्वसुः]

चकृषन्त कृपालवो भवन्ति ४.१.१४.

चकृषे करोषि ४.३५.७. करोति १५.२३. कृतवानसि उत्पन्न किया है, आर्याभि० १.१५, १.५२.१४. कुर्याः १.११३.९. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचने रूपम्]

चके कामितवान् कामयतां वा, प्र०—अत्र पक्षे लोडर्थे लिट् 'आचके इति कान्तिकर्मसु पठितम् निघं० २.६, ४.२१. कामये २१.१. प्रशंसामि १.२५.१९. कामयते, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति यलोपः ३.३.३. कामयेत ३.३.१०. कृतवानस्ति ऋ० भू० ४३, १०.७.३२. [आचक इति कान्तिकर्मसु पठितम् निघं० २.६. चक तृप्तौ प्रतिघाते च (भ्वा०) धातोर्लिट्]

चक्र कुरुत, प्र०—अत्र लोडर्थे लिट् १.८९.९. कुर्वन्तु २५.२२. कुर्वन्ति ७.५६.२३. कुर्याम ४.३६.४. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिटि मध्यमबहुवचनम्]

चक्रतुः कुर्याताम्, प्र०—अत्र लिङर्थे लिट् ८.३७. कुरुतः १.१५९.२. **चक्रथुः**=कुर्यातम् १.१०८.५. कुरुतम् १.११७.१७. कुरुथः ६.५९.१. **चक्राते**=कुरुतः ३.५४.६. **चक्राथे**=कुरुतः १.१०८.३. **चक्रिरे**=कुर्वन्ति ७.६०.११. कृतवन्तः सन्ति १.४०.५. **चक्रुः**=कृतवन्तः १९.५३. कुर्वन्ति ४.१६.३. कुर्य्युः ४.३३.३. **चक्रे**=कुर्य्यात् ३.४८.३. कृतवान् २.४०.४. करोति, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् १.३३.१०. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोः सामान्ये लिट्]

चक्रम् भूगोलराज्यम् १.१७५.४. भूगोलसमूहम् २.११.२०. स्वराज्यम् १.१७४.५. कलाचालकम् ५.३१.११. क्रामति रथो येन तत् १.१२१.१३. कलायन्त्रादिकम् ६.५४.३. चक्रवद्वर्त्तमानं जगत् पृथिव्यादिकम् १.१३०.९. चक्रमिव वर्त्तमानं ब्रह्माण्डम् ४.१६.१२. चरति येन तत् ५.७३.३. यन्त्रकलासमूहम् १.३०.१९. **चक्राणि**=चक्रवद्वर्त्तमानानि कर्म्माणि ४ ३१.६. **चक्रेण**=शस्त्रसमूहेन चक्राऽङ्गयुक्तेन यानसमूहेन वा १.५३.९. **चक्रैः**=लोकभ्रमणाय परिध्याख्यैः ६.६२.१०. [चक्रम्=चकतेर्वा, चरतेर्वा, क्रामतेर्वा नि० ४.२६. डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः। 'कृञादीनां के द्वे भवत इति वक्तव्यम्' अ० ६.१.१२. वा० सूत्रे द्वित्वम्। वज्रो वै चक्रम् तै० १.४.४.१०. जै० १.५१.]

चक्रमन्त क्रमन्ते गच्छन्ति ४.४२.६. रमन्ते २.१९.६. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लिट्। छान्दसत्वाद् झस्य इरेच् न]

चक्रमे क्रमते ५.८७.४. यथायोग्यं प्रकृतिपरमाण्वादिपादानंशान् विक्षिप्य साऽवयवं कृतवान् १.२२.१७. क्रान्तवान्, निक्षिप्तवान्, क्राम्यति, क्रमिष्यति वा, प्र०—अत्र सामान्यार्थे लिट् २.१५. विहितवान् १.२२.१८. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'अनुपसर्गाद्वा' इत्यात्मनेपदम्]

चक्रमाणा क्रमयितारौ (वायुविद्युतौ) ६.६२.२. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'लिटः कानज्वा' इति कानच्। 'सुपां सुलुगि' त्याकारादेशः]

चक्रमाथे कामयथः ६.६९.५. [क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लिटि मध्यमद्विवचनम्। 'अनुपसर्गाद्वा' इत्यात्मनेपदम्]

चक्रमासजः यो चक्रस्य मासकालस्य मासास्तेभ्यो जाताः (आर्यः=राजा) ५.३४.६. [चक्रमासोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः प्रत्ययः]

चक्रमिव यथा चक्रं गच्छति तथा ३.६१.३ [चक्र-इवपदयोः समासः। चक्रपदं व्याख्यातम्]

चक्रये पुरुषार्थकरणशीलाय (इन्द्राय=ऐश्वर्यमिच्छवे जीवाय) १.९.२. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोस्तच्छीलादिष्वर्थेषु 'आदृगमहन्०' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किर्लिड्वच्च]

चक्रवाकः पक्षिविशेषः २४.३२. **चक्रवाकौ**=पक्षिविशेषाविव २५.८. चकवा चकवी के समान एक दूसरे से प्रेम बद्ध (स्त्रीपुरुष) सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.६४.

चक्राणासः भृशं युद्धं कुर्वाणाः (योद्धृजनाः) १.३३.८. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिटः कानच्। जसोऽसुगागमः]

चक्राणौ कुर्वन्तौ (राजप्रजाजनौ) ४.४१.१०. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिटः कानच्। लिट् च सामान्ये]

चक्रिम् शिल्पविद्याक्रियासाधनेषु यानानां शीघ्रचालनस्वभावम् (ईम्=जलमग्निं वा) १.६.२. **चक्रिः**=यः करोति सः, कर्त्तुं शीलः (परमात्मा) ३.१६.४. कर्त्ता (इन्द्रः=सूर्य इव राजा) ७.२०.१. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोस्तच्छीलादिष्वर्थेषु 'आदृगमहन०' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किर्लिड्वच्च]

चक्रिया चक्रेण २.३४.६. चक्राविव वर्त्तमानान् (वायून्) २.३४.१४. [चक्रिरिति व्याख्यातम्। ततस्तृतीयास्थाने 'सुपां सुलुग्०' सूत्रेण यादेशः]

चक्रियेव यथा चक्रे भवाः पदार्थाः १.१८५.१. यथा चक्राणि तथा ५.३०.८. [चक्रियेव=चक्रयुक्ते इव नि० ३.२२.]

चक्रयोः चक्रयोः ६.२४.३. रथाऽङ्गयोः, प्र०—अत्र कृञ् धातोः 'आदृगमहन०' अ० ३.२.१७१. इति कि-प्रत्ययः १.३०.१४. [चक्रिरिति व्याख्यातम्। ततः षष्ठयाः=सप्तम्या वा द्विवचनम्]

चक्रेव चक्राणीव ४.३०.२.

चक्षणम् प्रकाशनम् ५.५५.४. दर्शनम्, प्र०—चक्षिङ् दर्शने, इत्यस्माल्ल्युटि प्रत्यये परे 'असनयोश्च, अ० २.४.५४. इति वार्तिकेन ख्याञादेशाऽभावः १.१३.५. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोर्भावे ल्युट्। 'चक्षिङः ख्याञ्' इति ख्याञादेशे प्राप्ते 'असनयोश्चे' ति प्रतिषेधः]

चक्षणिः प्रकाशकः सूर्यः ६.४.२. [चक्षिङ् दर्शने (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽनिः प्रत्ययः]

चक्षत चक्षीत १.१२१.२. **चक्षते**=सत्यमुपदिशन्ति १.१६०.६. दर्शयन्ति १.१२१.२. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) अयं दर्शनेऽपि, धातोर्लङ्, अडभावश्छान्दसः। अन्यत्र लट्]

चक्षदानम् व्यक्तोपदेशकम् (लम्पटजनम्), प्र०—अत्र चक्षिङ्धातोरौणादिक आनक्प्रत्ययोऽदुगागमश्च बाहुलकात् १.११६.१६. **चक्षदानः**=चक्षो विद्यावचो दीयते येन सः (जारः=वृद्धो जनः) १.११७.१८.

चक्षमीथाः सहस्व २.३३.७. [क्षमूष् सहने (भ्वा०) धातोर्लिङ्। विकरणस्य लुक् द्वित्वञ्च छान्दसम्]

चक्षय प्रख्यापय १.१३४.३. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

चक्षसा प्रज्ञानेन ६.७.६. दर्शकेन (विवस्वता=सूर्येण) १.९६.२. दर्शनेन वा १.८७.५. प्रकाशेन १.५०.६. तन्निमित्तभूतेन दर्शनेन १.९२.११. व्यक्तेन दर्शनेनोपदेशेन वा ३३.३२. प्रज्ञानेन ६.७.६. **चक्षसे**=प्रसिद्धाय (ऊर्जे=बलाय) ३६.१४. सर्वद्रष्टुर्दर्शयितुर्वा (सूर्याय=परमेश्वराय सूर्यलोकाय वा), प्र०—अत्र षष्ठ्यर्थे चतुर्थी, इति वार्त्तिकेन चतुर्थी 'चष्ट इति पश्यतिकर्मसु पठितम्' निघं० ३.११, ४.३५. ख्यापयितुम् ५.१५.४. विद्यायुक्तवाण्या प्रकाशाय १.११२.८. ख्यातुं योग्याय (रणाय=सङ्ग्रामाय) ११.५०. द्रष्टुम् १.४८.८. दर्शनाय १.७.३. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः। चष्टे पश्यतिकर्मा निघं० ३.११. चक्षसे दर्शनाय नि० ६.२७.]

चक्षसे उपदिशेः ५.३.६. **चक्षाथाम्**=उपदिशेताम् १०.१६. **चक्षाथे**=उपदिशथः ५.६२.८. **चक्षि**=वदेयम् ७.३.६. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो न लुक्]

चक्षाणः उपदिशन् (विद्वज्जनः) १.१२८.३. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लटः शानच्]

चक्षुरिव यथा चक्षुः ५.५४.६.

चक्षुर्दाः चष्टेऽनेन तद्, ददातीति, भा०—चक्षु-व्यवहार-साधकः (सूर्यः) ४.३. [चक्षुस्-उपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्विप्। चक्षुरिति व्याख्यास्यते]

चक्षुषम् प्रत्यक्षम् १२.५.६. प्रकाशकम् (ब्रह्म) १८.६६. दर्शकं ब्रह्म १.११५.१. नेत्रवद् दर्शनहेतुः (ब्रह्म) १.९२.६.

चक्षुषः प्रत्यक्षादेरिन्द्रियोत्पन्नात्, भा०—प्रत्यक्षादिप्रमाणात् १८.५८. न्यायदर्शकस्य (उपदेशकस्य) १७.२५. नेत्र का, आर्याभि० २.३६, ३६.२. नेत्रस्य ३६.२. **चक्षुषा**=दृष्ट्या ५.३४. लोचनेन, भा०—विवेकेन ११.६०. स्वात्मवत् प्रेमबुद्ध्या, ऋ० भू० ६८, दृष्टि से सं० वि० २१४, ३६.१८. विज्ञानेन प्रत्यक्षप्रमाणेन नेत्रेण १.३०. दर्शनशक्तियुक्तौ (जलाऽग्नी) २.३९.५. **चक्षुषे**=चष्टे पश्यति येन तस्मै २२.२३. एकस्य चक्षुर्गोलकस्य दहनाय ३९.३. पदार्थानां दृष्ट्यै १.२०. **चक्षुः**=चष्टेऽनेन तन्नेत्रम् ६.१४. चष्टे नेनेक्ति नेत्रेन्द्रियम् ३.२६.७. चष्टे येन तन्नेत्रम् प्र०—'चक्षेः शिच्च' उ० २.११५. अनेन चक्षेरुसिः प्रत्ययः शिच्च १.२२.२०. चष्टे पश्यति येन तत्

३६.१. चष्टे येन तद्रूपग्राहकमिन्द्रियम् ४.१५. नेत्रव्यवहारम् ४.३. प्रकाशक: (विद्वज्जन:) ५.५९.३. व्यक्तिकारकम् (इन्द्रियम्) १.१६४.१४. बाह्यमाभ्यन्तरं विज्ञानं तत्साधनं वा (अग्ने=अग्निर्भौतिक:) २.१६. चक्षुरिव सर्वदर्शकम् (ब्रह्म=ईश्वर:) ३६.२४. नेत्रदृष्टि:, ऋ० भू० ४४. नेत्रवद् दर्शनहेतु: (उषा:) १.९२.९. दर्शकं प्रकाशकम् (घृतम्=आज्यम्) १८.६६. प्रकाशको विज्ञानमयो विज्ञापकश्च (ब्रह्म) पं० वि०। सर्वदृग् (ब्रह्म) पं० वि०। चाक्षुषं प्रत्यक्षम्, ऋ० भू० १०४. चक्षुरादीन्द्रियम् ३.३७.२. दर्शनम् १४.१७. नेत्रम् १९.८९. **चक्षो:**=ज्योति: स्वरूपात् (ब्रह्मण:) ३१.१२. ज्योतिर्मयात् (परमेश्वरात्) ऋ० भू० १२६. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातो: 'चक्षे: शिच्च' उ० २.११९. सूत्रेण उसि: प्रत्यय:, स च शित्। चक्षु: ख्यातेर्वा चष्टेर्वा नि० ४.३. चक्षु:=ख्यानम् नि० १२.१६. चक्षुर्वा ऋतम् ऐ० २.४०. सत्यं वै चक्षु: श० १.३.१.२७. एतद्ध वै मनुष्येषु सत्यं निहितं यच्चक्षु: ऐ० १.६. एतद्वै मनुष्येषु सत्यं यच्चक्षु: गो० उ० २.२३. सत्यं वै चक्षु: श० ४.२.१.२६. चक्षुर्वै सत्यम् तै० ३.३.५.२. चक्षुर्निवित् जै० उ० ३.४.३. तस्मादेकं सच्चक्षुर्द्वेधा ऐ० २.३२. त्रिवृद् वै चक्षु: शुक्लं कृष्णं लोहितमिति कौ० ३.५. तस्माद् विरूपं चक्षु: कृष्णमन्यच्छुक्लमन्यत् ष० २.२. चक्षुर्हृदये (श्रितम्) तै० ३.१०.८.५. शश्वद्ध वै रेतस: सिक्तस्य चक्षुषी ऽएव प्रथमे सम्भवत: श० ४.२.१.२८. चक्षु: पुरुषस्य प्रथमं सम्भवत: सम्भवति ऐ० ३.२. चक्षुर्वै रुक् श० ६.३.३.११. चक्षुर्वै विचक्षणं चक्षुषा हि विपश्यति कौ० ७.३. चक्षुर्वै विचक्षणं वि ह्येनेन पश्यतीति ऐ० १.६. यच्चक्षु: स बृहस्पति: गो० उ० ४.११. चक्षुर्वै जमदग्निर्ऋषि:, यदेनेन जगत् पश्यत्यथो मनुते तस्माच्चक्षुर्जमदग्निर्ऋषि: श० ८.१.२.३. चक्षुषी वै रोहिणौ (पुरोडाशौ) श० १४.२.१.५. चक्षुर्मैत्रावरुण: कौ० १३.५. चक्षुश्च मनश्च मैत्रावरुण: ऐ० २.२६. चक्षुरध्वर्यु: गो० उ० ५.४. चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्यु: श० १४.६.१.६. चक्षुरेवोद्गाता गो० पू० २.१०. चक्षुर्ब्रह्मा तै० २.१.५.९. चक्षुर्वै ब्रह्म श० १४.६.१०.८. चक्षुर्ब्रह्म गो० पू० २.१०. चक्षुर्देव: गो० पू० २.१०. यद्वै चक्षुस्तद् हिरण्यम् गो० पू० २.११. सूर्यो मे चक्षुषि श्रित: तै० ३.१०.८.५. चक्षुरादित्य: जै० उ० ३.२.७. तद् यच्चक्षुरादित्य: स: जै० उ० १.२८.७. यत्तच्चक्षुरसौ स आदित्य: श० १०.३.३.७. अर्कश्चक्षुस्तदसौ सूर्य: तै० १.१.७.२. चक्षुर्वा ऽअपां क्षयस्तत्र हि सर्वदैवाप: क्षियन्ति श० ७.५.२.५४. चक्षुरेव चरणं चक्षुषा ह्ययमात्मा चरति श० १०.३.५.७. चक्षुरुष्णिक् श० १०.३.१.१. त्रैष्टुभं चक्षु: तां० २०.१६.५. चक्षुर्वै प्रतिष्ठा श० १४.९.२.३. चक्षुर्वाव साम्नोऽपचिति: जै० उ० २.३९.५. चक्षुर्यश: श० १२.३.४.१०. चक्षुरेव यश: गो० पू० ५.१५. यच्चक्षु: स बृहस्पति: गो० २.४.११. प्रजापतेर्वा एते चक्षुषी यच् शुक्रामन्थिनौ मै० ४.६.३. चत्वारि चक्षुषो रूपाणि द्वे शुक्ले द्वे कृष्णे तै० सं० ५.३.१.४. चक्षुश्चतुर्होता मै० १.९.५. काठ० ९.१३. चक्षुर्वै शुक्र: मै० ४.१.१२.६. तै० ३.३.५.२.]

चक्षुष्पा: चक्षुर्दर्शनं रक्षतीति स:, भा०—दृष्टिव्यवहारस्य पालक: (अग्ने=अग्निर्भौतिक:) २.१६. यश्चक्षु: पाति (विद्वज्जन:) २०.३४. [चक्षुरिति व्याख्यातम्, तदुपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातो: क्विप् प्रत्यय:। विद्वद्वसुश्चक्षुष्पा: तै० सं० ३.२.१०.२.]

चक्षुष्मते प्रशस्तं चक्षुर्विद्यते यस्य तस्मै (जनाय) ३५.७. [चक्षुष्प्राति०, अतिशायने मतुप्। चक्षुरिति व्याख्यातम्]

चखवांसम् प्रतिघातम् (दुर्जनम्) २.१४.४.

चचक्ष कथयेत् ५.२.८. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

चतन्तम् गच्छन्तं व्याप्तम् (नम:=सत्कारमन्नं वा) प्र०—चततीति गतिकर्मसु पठितम्, निघं० २.१४, १.६५.१. [चतति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातो: शतृप्रत्यय:]

चतसृभि: धर्माऽर्थ-काम-मोक्षविज्ञापिकाभि: गीर्भि:=वाग्भि:) २७.४३. **चतस्र:**=चतु:सङ्ख्योपेता: (उपदिश:) १.१६४.४२. चतु:सङ्ख्याका: (उपरा:=दिशा:) १.६२.६. पूर्वाद्या दिश: १८.३२. चतुष्ट्वविशिष्टा सङ्ख्या अ०—चतु:सङ्ख्या १८.२५. एतत्सङ्ख्याप्रमिता: (प्रदिश:) २७.१. साम-दाम-दण्ड-भेदाऽऽख्या वृत्तय: ५.३२.२. [चतुर्प्राति० स्त्रियां तृतीयाबहुवचनम्। चतुरश्चतसृ आदेश:। चतुर्=चते-याचने (भ्वा०) धातो: 'चतेरुरन्' उ० ५.५८. सूत्रेण उरन्। चत्वारश्चलिततमा संख्या नि० ३.१०.]

चतिनम् आनन्दप्रदम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यप्रदमीश्वरम्) ६.१९.४.

चतुरक्षरेण दैव्या बृहत्या (छन्दसा) ९.३१. [चतुर्-अक्षरपदयो: समास:]

चतुरक्ष: य: खलु चतस्र: सेना अश्नुते व्याप्नोति स चतुरक्ष: (सभाध्यक्ष:) प्र०—अक्षा अश्नुवते इति वा

अभ्यश्नुत एभिरिति वा, नि० ९.७, १.३१.१३. [चतुर्-अक्षपदयोः समासः । अक्षः=अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अशेर्देवने सः' उ० ३.६५. सूत्रेण सः । अक्षा अश्नुवत एनानिति वाभ्यश्नुवते एभिरिति वा नि० ९.६.]

चतुरनीकः चतुर्विधान्यनीकानि यस्य सः (राजा) ५.४८.५. [चतुर्-अनीकपदयोः समासः]

चतुरश्रिम् चतुरङ्गिणीं सेनां प्राप्तम् (राजाख्यं वीरजनम्) ४.२२.२. **चतुरश्रिः**=चतुरो वेदानश्नुते सः (विद्वज्जनः) १.१५२.२. [चतुर्-अश्रिपदयोः समासः । अश्रिः=श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोराङ्पूर्वात् 'आङि 'श्रिहनिभ्यां ह्रस्वश्च' उ० ४.१३८. सूत्रेण इण्प्रत्यय उपसर्गस्य ह्रस्वश्च ।]

चतुरः एतत्सङ्ख्याकान् (भागान्) ४.३५.४. धर्माऽर्थकाम-मोक्षान् २३.२०. चतुर्विधानि भू–जलाऽग्नि-वायुभिः सिद्धानि शिल्पकर्माणि १.२०.६. वाय्वग्नि-जल-भूमीः १.१६१.२. धर्माऽर्थ-काम-मोक्षान् २३.२०. [चतुर्पदं व्याख्यातम्]

चतुर्थी चतुर्णां पूर्णा (क्रिया) २५.४.५. [चतुर्-प्राति० पूरणार्थे डट् । 'षट्कतिकतिपयचतुरां थुक्' अ० ५.२.५१. सूत्रेण थुगागमः । स्त्रियां ङीप् । यज्ञ एव चतुर्थी चितिः श० ८.७.४.१५. यदूर्ध्वं मध्यादर्वाचीनं ग्रीवाभ्यस्तच्चतुर्थी चितिः श० ८.७.४.२१.]

चतुर्दशम् दशेन्द्रिय-मनोबुद्धिचित्तानां सङ्ख्यापूरकमहङ्कारम् ९.३४. [चतुर्-दशन्पदयोः समासे पूरणार्थे डट्-प्रत्ययः]

चतुर्दशाक्षरेण साम्न्युष्णिहा (छन्दसा) ९.३४. [चतुर्दश-अक्षरपदयोः समासः]

चतुर्धा अध-ऊर्ध्व-तिर्यक्-समगतियुक्तम् (चमसं=रथम्) ४.३५.२. [चतुर्प्राति० 'संख्याया विधार्थे धा' अ० ५.३.४२. सूत्रेण धाप्रत्ययः]

चतुर्भिः चतुष्ट्वसङ्ख्याकैः (नामभिः) १.१५५.६. [चतुर् इति व्याख्यातम्]

चतुर्युगः यश्चतुर्षु युज्यते सः (रथः) २.१८.१. [चतुर्-युगपदयोः समासः । युगः=युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्घञ् उञ्छादिपाठादगुणत्वम्]

चतुर्वयम् चत्वारो वयम् (जनसमूहम्) ४.३६.४. चत्वारो धर्मार्थ-काम-मोक्षा वया व्याप्तव्या येन तम् (विद्वद्व्यवहारम्) १.११०.३.

चतुर्विंशतिः चतुरधिका विंशतिः (सङ्ख्या) १८.२५. [चतुर्-विंशतिपदयोः समासः]

चतुर्विंशः चतुर्विंशतिधा (स्तोमः) १४.२५. [चतुर्विंशः एव स्तोमो भवति तेजसे ब्रह्मवर्चसाय तां० १५.११.१६. तेजश्चतुर्विंशः स्तोमानाम् तां० १५.१०.६. चतुर्विंशो वै संवत्सरोऽन्नं पञ्चविंशम् तां० ४.१०.५.]

चतुश्चत्वारिंशत् चतुरधिका चत्वारिंशत् (सङ्ख्या) १८.२५. [चतुर्-चत्वारिंशत्पदयोः समासः]

चतुश्चत्वारिंशः एतत्सङ्ख्यायाः पूरकः (स्तोमः) १४.२६. [चतुश्चत्वारिंशत्प्राति० पूरणार्थे डट्प्रत्ययः]

चतुःशृङ्गः चत्वारो वेदाः शृङ्गाणीव यस्य (ब्रह्मा=चतुर्वेदविज्जनः) ४.५८.२. चत्वारो वेदाः शृङ्गवदुत्तमा यस्य सः (ब्रह्मा=चतुर्वेदविज्जनः) १७.९०. [चतुर्-शृङ्गपदयोः समासः । शृङ्गः=शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'शृणातेर्ह्रस्वश्च' उ० १.१२६. सूत्रेण गन्प्रत्ययः स किद् नुडागमश्च । शृङ्गं श्रयतेर्वा शृणातेर्वा शम्नातेर्वा शरणायोद्गतमिति वा शिरसो निर्गतमिति वा नि० २.८.]

चतुष्टोमः चत्वारः स्तोमाः स्तुतयो यस्मिन् संवत्सरे सः १४.२३. चतुर्भिर्वेदैः स्तूयते यः स्तोता (विद्वज्जनः) १४.२५. [चतुर्-स्तोमपदयोः समासः । 'स्तुतस्तोमयोश्छन्दसि' अ० ८.३.१०५ सूत्रेण छन्दसि मूर्धन्यः । स्तोमः=ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः 'अर्त्तिस्तुसुहु०' उ० १.१४०. सूत्रेण मन्प्रत्ययः । यच्चतुष्टया देवाश्चतुर्भिः स्तोमैरस्तुवंस्तस्माच्चतुः स्तोमः, तं चतुःस्तोमं सन्तं चतुष्टोममित्याचक्षते ऐ० ३.४३. प्रतिष्ठा वै चतुष्टोमः तां० ६.३.१६. प्रतिष्ठा चतुष्टोमः श० ८.२.४.२६. परमश्चतुष्टोमः मस्तोनाम् श० १३.३.३.१. अन्तश्चतुष्टोमः स्तोमानाम् तां० २१.४.६. सरघा वा अश्वस्य सक्थ्या बृहत् तद्देवाश्चतुष्टोमेन प्रत्यदधुर्यच्चतुष्टोमो भवत्यश्वस्य सर्वत्वाय तां० २१.४.४.]

चतुष्पक्षा जिसके पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर में एक एक शाला और इनके मध्य में पाँचवीं बड़ी शाला हो, सं० वि० १६८, अथर्व० ९.२.३.२१ [चतुर्-पक्षपदयोः समासः]

चतुष्पत् चत्वारः पादा यस्य पश्वादेः सः, अत्र 'वाच्छन्दसि' इति पदादेशः १.४९.३. **चतुष्पदः**=गवादेः २३.३. चत्वारः पादा यस्य गवादेस्तस्य २५.१७. गौ आदि प्राणि-समूह के, सं० वि० ५, २३.३. **चतुष्पदा**=गवादिना २६.१९. चत्वारः पादा यस्मिँस्तेन (वाकेन=यजुषा)

१.१६४.२४. **चतुष्पदे**=गवाद्याय १६.४८. गवादि पशु-वर्ग के लिए आर्याभि० २.२१, ३६.८. [चतुर्-पादपदयोः समासः। पादस्य पदादेशश्छान्दसः। समासान्तलोपे पदादेशश्छान्दसः]

चतुष्पदाः चत्वारि पदानि यासु ताः (प्रजाः) २३.३४. [चतुर्-पादशब्दयोः समासे समासान्तलोपे पदादेशे 'टाबृचि' अ० ४.१.९. सूत्रेण टाप्]

चतुष्पदी चतुर्वेदाऽध्यापिका (विदुषी स्त्री) १.१६४.४१. **चतुष्पदीम्**=चत्वारि धर्मार्थकाममोक्षाः पदानि यस्यास्ताम् (स्वाहा=वाचम्) ८.३०. [चतुर्-पादपदयोः समासे समासान्तलोपे पदादेशे स्त्रियां 'पादोऽन्यतरस्याम्' इति ङीप्]

चतुष्पदे चत्वारः पादा यस्य गवादेस्तस्मै ११.८३.

चतुष्पात् चत्वारः पादा यस्य सः गवादिः ४.५१.५. गवादिकम् १४.२५. गवादीन् १४.८. [चतुर्-पादयोः समासे समासान्तलोपे 'पादोऽन्यतरस्याम्' इति ङीपोऽभावे रूपम्। चतुष्पादः पशवः गो० उ० १.४. तै० २.१.३५. चतुष्पादाः पशवः तां० ३.८.३. चतुष्पादा वै पशवः ऐ० २.१८. चतुष्टया वै पशवोऽथो चतुष्पादाः कौ० १६.३.]

चतुस्त्रिꣳशत् एतत्सङ्ख्याकाः (वङ्क्रीः=कुटिला गतीः) १.१६२.१८. अष्टौ वसव एकादश रुद्रा, द्वादशाऽऽदित्या, इन्द्रः, प्रजापतिः प्रकृतिश्चेति (तन्तवः=वस्वादयः) ८.६१. शिक्षणानि २५.४१. [चतुर्-त्रिंशत्पदयोः समासः]

चतुस्त्रिंशः चतुस्त्रिंशद्विधः (नाकः=आनन्दः) १४.२३. [तस्य चतुस्त्रिंशोऽग्निष्टोमः प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशो देवतानाम् तां० १२.७.५. अश्वश्चतुस्त्रिंशो दक्षिणानां प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशो देवतानाम् तां० १७.११.३.]

चतुःसहस्रम् चत्वारि सहस्राणि सङ्ख्या यस्य तम् (घर्मं=प्रतापम्) ५.३०.१५.

चतुःस्रक्तिः चतुरस्रा, भा०—प्रासरसा (नाभिः) चार ३८.२० कोणे वाली (नाभि) आर्याभि० २.४१, ३८.२०. [एष वै चतुःस्रक्तिर्य एष (सूर्यः) तपति दिशो ह्येतस्य स्रक्तयः श० १४.३.१.१७.]

चत्ताय याचिताय (शत्रवे) १.१३२.६. आह्लादाय, अ०—आनन्दाय ८.५३. [चते याचने (भ्वा०) धातोः क्तः]

चत्वारः वर्णा आश्रमाश्च १.१२२.१५. ऋत्विजः ७.१८.२३. पृथिव्यादयः ५.४७.४. [चतुर् इति व्याख्यातम् ततः प्रथमाबहुवचनम्। 'चतुरनडुहोरामुदात्तः' इत्यामागमः। चत्वारश्चलिततमा संख्या नि० ३.१०.]

चत्वारि चत्वारो वेदाः ४.५८.३. नामाख्यातोपसर्गनिपाताः १.१६४.४५.

चत्वारिंशः एतत्सङ्ख्यापूरको ब्रह्मचर्यव्यवहारकरः (वर्चः=अध्ययनम्) १५.३. [चत्वारिंशत्प्राति० पूरणार्थे डट्]

चत्वारिंश्याम् चत्वारिंशतः पूर्णायाम् (शरदि=शरदृतौ) २.१२.११. [चत्वारिंशत्प्राति० पूरणार्थे डट्। ततः स्त्रियां ङीप्]

चन अपि ४.१८.८. कदाचित् १.१८.७. आकाङ्क्षायाम् ३.३४.

चनस्यतम् अन्नवदेतौ सेव्येताम्, प्र०—'चायतेरन्ने ह्रस्वश्च' उ० ४.२००. अनेनाऽसुन्प्रत्ययान्ताच्चनस्शब्दात् क्यच्प्रत्ययान्तो नामधातोर्लोटि मध्यमस्य द्विवचनेऽयं प्रयोगः १.३.१. [चनस्शब्दाद् 'उपमानादाचारे' अ० ३.१.१०. सूत्रेण क्यच्। ततो लोट्]

चनः अन्नादिकमैश्वर्य्यम् ७.३८.३. भोग्यमन्नम् २०.८९. अन्नभोजनादिव्यवहारम् १.३.६. भक्ष्य-भोज्य-लेह्यचूष्यामरयन्नम्, प्र०—अत्र 'चायतेरन्ने ह्रस्वश्च' उ० ४.२००. अनेनाऽसुन्प्रत्ययो नुडागमश्च १.२६.१०. [चायृ पूजानिशामनयोः (भ्वा०) धातोः 'चायतेरन्ने ह्रस्वश्च' उ० ४.२००. सूत्रेणासुन् प्रत्ययस्य नुडागमे सति यलोपो ह्रस्वश्च। चनः अन्ननाम नि० ६.१५.]

चनिश्चदत् आह्लादयति ५.४३.४.

चनिष्ठम् अतिशयेनाऽन्नम् ५.७७.४. [चनस्पदं व्याख्यातम्। ततोऽतिशायन इष्ठन् प्रत्यये टिलोपे रूपम्]

चनिष्ठा अतिशयेनाऽन्नाद्यैश्वर्ययुक्ता (सुमतिः=शोभना प्रज्ञा) ७.५७.४. [चनिष्ठं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

चनोधाः चनांस्यन्नानि दधातीति (गृहपतिर्जनः), प्र०—चन इत्यन्ननामसु पठितम्, निघं० ६.१५, ८.७. अभ्यासेनाऽधिकार्थो ग्राह्यः, सर्वेभ्योऽधिकाऽन्नवान् गम्यते (गृहपतिर्जनः) प्र०—अभ्यासे भूयांसमर्थं मन्यते, नि० १०.४२, ८.७. [चनस्पदं व्याख्यातम्। तदुपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप्। चन इत्यन्ननाम नि० ६.१५.]

चनोहितः यश्चनांस्यन्नानि हिनोति प्रापयति सः (अग्निः=पावकः) २२.१६. ओषधिपाकसामर्थ्येन अन्ना-

दीनां हितः (अग्निः=सूर्यः) ३३.९२. चनः स्वन्नादिषु हितो=हितकारी (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.११.२. अन्नाय हितकारी (अग्निः=पावकः) ३.२.७. चनसे अन्नाय हितः (अग्निः) ३.२.२. चनसे पृथिव्याद्यन्नाय हितकारी (अग्निः) प्र०—चन इत्यन्ननाम, नि० ६.१५, ३३.७५. [चनस्पदं व्याख्यातम्। तदुपपदे हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोरौणादिकः क्तः। अथवा=चनस्-हितपदयोः समासः]

चन्द्र आह्लादप्रद (विद्वज्जन) ५.१०.४. **चन्द्रम्**=आह्लादकारकम् (यन्त्रम्) ४.१८. सुवर्णम्, प्र०—चन्द्रमिति हिरण्यनामसु पठितम्, निघं० १.२, ४.२६. आनन्दकरं देदीप्यमानं सुवर्णमिव वर्त्तमानम् (अग्निं=वह्निम्) ३.३.५. आह्लादकरं सुवर्णम् ४.२.३१. हिरण्यवदानन्दप्रदम् (स्वरूपम्) १२.१०४. **चन्द्राणि**=काञ्चनादीन् धातून् ४.२६. **चन्द्राय**=चन्द्रलोकस्य प्राप्तये ३९.२. चन्द्रमण्डलाय २२.२९. चन्द्रलोकाय २२.२८. **चन्द्राः**=आह्लादकराः (विद्वज्जनाः) ७.३९.७. आनन्ददाः (विदुष्यः स्त्रियः) ७.४०.७. चन्द्रादिलोकान्, प्र०—अत्र शसः स्थाने जस् १२.१०२. **चन्द्रे**=हे आह्लादकारके (पत्नि!) ८.४३. **चन्द्रेण**=इन्दुना १.४८.९. आनन्देन १९.९३. रत्नजटितेन (रथेन=यानेन) ४.४८.३. आह्लादकेन सुवर्णादिजटितेन (रथेन=यानेन) ४.४८.२. सुवर्णमयेन (रथेन) ४.४८.१. [चदि आह्लादने दीप्तौ च (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चिवञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक्-प्रत्ययः चन्द्रम्=हिरण्यनाम निघं० १.२. चन्द्रमाश्चायन् द्रमति, चन्द्रो माता, चान्द्रं मानमस्येति वा। चन्द्रश्चन्दतेः कान्तिकर्मणः। चन्दनमित्यप्यस्य भवति। चारु द्रमति, चिरं द्रमति, चमेर्वा पूर्वम् नि० ११:५. असौ वै चन्द्रः प्रजापतिः श० ६.२.२.१६. चन्द्र एव सविता जै० उ० ४.२७.१३. चन्द्रं ह्येतच्चन्द्रेण क्रीणाति यत्सोमं हिरण्येन (चन्द्रः=सोमः, चन्द्रम्=हिरण्यम्) श० ३.३.३.६. चन्द्रं हिरण्यम् तै० १.७.६.३. चन्द्रा ह्यापः तै० १.७.६.३. असौ वै चन्द्रः पशुस्तं देवाः पौर्णमास्यामालभन्ते श० ६.२.२.१७.]

चन्द्रदक्षिणाः=चन्द्रं सुवर्णं दक्षिणा दानं येषान्ते (सेनाप्रजाजनाः) ७.४५. [चन्द्र-दक्षिणापदयोः समासः। चन्द्र इति पदं व्याख्यातम्। दक्षिणा=दक्षतेः समर्द्धयतिकर्मणो व्यृद्धं समर्द्धयतीति नि० १.७.]

चन्द्रबुध्नः चन्द्रं सुवर्णं चन्द्रमा वा बुध्नेऽन्तरिक्षे यस्य यस्माद्वा सः (मेघः), प्र०—चन्द्रमिति हिरण्यनाम, निघं० १.२, १.५२.३. [चन्द्र-बुध्नपदयोः समासः। चन्द्र इति व्याख्यातम्। बुध्नमन्तरिक्षं बद्धा अस्मिन् धृता आप इति वा इदमपीतरद् (शरीरस्य मूलं हृदयम्) बुध्नमेतस्मादेव बद्धा अस्मिन् धृताः प्राणा इति नि० १०.४४.]

चन्द्रमसम् चन्द्रलोकम् २३.५९. **चन्द्रमसः**=चन्द्रलोकाऽऽदेः १.८४.१५. चन्द्रस्य २४.३५. **चन्द्रमसि**=चन्द्रलोके २३.४. चन्द्रलोकसमीप आह्लादे वा १.२८. **चन्द्रमाः**=यस्सर्वान् चन्दत्याह्लादयति सः १८.४०. इन्दुः (देवता) १४.२०. आह्लादकारक इन्दुलोकः १.१०५.१. चन्द्रलोकः २३.४. आनन्दस्वरूपत्वादाह्लादकत्वाच्च (ईश्वरः) ३२.१. शैत्यकरः (चन्द्रलोकः) ३३.९०. आह्लादकरश्चन्द्रः २३.४६. आनन्दस्वरूप और स्व-सेवकों को आनन्द देने वाला (ईश्वर), आर्याभि० २.४, ३२.१. [चन्द्र इति व्याख्यातम्, तदुपपदे माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः 'चन्द्रे मो डित्' उ० ४.२२८. सूत्रेणासिः प्रत्ययः। चन्द्रमाः पदनाम निघं० ५.५. चन्द्रमाः=चायन् द्रमति, चन्द्रो माता, चान्द्रं मानमस्येति वा नि० ११.५. स (इन्द्रः) चन्द्रं म आहरेति प्रालपत्। तच्चन्द्रमसश्चन्द्रमसत्वम् तै० २.२.१०.३ चन्द्रमा वै मा मासः। तस्मान् मेत्याह। भा इति हैतत् परोक्षेणेव जै० उ० ३.१२.६. चन्द्रमा वै सोमः कौ० १६.५. तै० १.४.१०.७. श० १२.१.१.२. चन्द्रमा उ वै सोमः श० ६.५.१.१. सोमो राजा चन्द्रमाः श० १०.४.२.१. असौ वै सोमो राजा विचक्षणश्चन्द्रमाः कौ० ४.४.७.१०. एतद्वै देवसोमं यच्चन्द्रमाः ऐ० ७.११. चन्द्रमा वाऽस्य (सोमस्य) दिवि श्रव उत्तमम् श० ७.३.१.४६. यद्रुद्रश्चन्द्रमास्तेन कौ० ६.७. (प्रजापतिः) तं (रुद्रं) अब्रवीन्महान्देवोऽसीति। तद्यदस्य तन्नामाकरोच्चन्द्रमास्तद्रूपमभवत् प्रजापतिर्वै चन्द्रमाः प्रजापतिर्वै महान्देवः श० ६.१.३.१६. (इन्द्रः) तं (वृत्रं) द्वेधान्वभिनत्तस्य यत् सौम्यं न्यवतमास तं चन्द्रमसं चकाराथ यदस्यासुर्य्यमास तेनेमाः प्रजा उदरेणाविध्यत् श० १.६.३.१७. अथैष एव वृत्रो यच्चन्द्रमाः श० १.६.४.१३. चन्द्रमा एव मन्थी श० ४.२.१.१. चन्द्रमा वै वरेण्यम् जै० उ० ४.२८.१. चन्द्रमा द्विपात्तस्य पूर्वपक्षापरपक्षौ पादौ गो० पू० २.८. चन्द्रमा वै पञ्चदशः एष हि पञ्चदश्यामपक्षीयते पञ्चदश्यामापूर्य्यते तै० १.५.१०.५. अथो चन्द्रमा वै भान्तः पञ्चदशः स च पञ्चदशाहान्यापूर्यते पञ्चदशापक्षीयते तद् यत्तमाह भान्त इति भाति हि चन्द्रमाः श० ८.४.१.१०. षोडशकलो वै चन्द्रमाः ष० ४.६. एतद्वै देवसत्यं यच्चन्द्रमाः कौ० ३.१. चन्द्रमाः पुनरसुः तै० २.५.७.३. चन्द्रमा वै जायते पुनः तै० ३.९.५.४. मनो मे रेतो मे प्रजा मे पुनस् सम्भूतिर्मे तन्मे त्वयि (चन्द्रमसि) जै० उ० ३.२७.१४. नक्षत्राणि स्थ चन्द्रमसि श्रितानि। संवत्सरस्य प्रतिष्ठा

तै० ३.११.१.१३. चन्द्रमा अस्यादित्ये श्रितः। नक्षत्राणां प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.१२. (सूर्यरश्मिः=चन्द्रमाः) सूर्यस्येव हि चन्द्रमसो रश्मयः श० ९.४.१.९. चन्द्रमा एव सविता गो० पू० १.३३. चन्द्रमा मे मनसि श्रितः तै० ३.१०.८.५. तद् यत्तन् मनश्चन्द्रमास्सः जै० उ० १.२८.५. अथ यत्तन्मन आसीत् स चन्द्रमा अभवत् जै० उ० २.२.२. यत्तन्मन एष स चन्द्रमाः श० १०.३.३.७. मनश्चन्द्रमाः जै० उ० ३.२.६. एष वै (चन्द्रमाः) रेतः श० ६.१.२.४. स (चन्द्रमाः) वै देवानां वस्वन्नं ह्येषाम् श० १.६.४.५. अन्नमु चन्द्रमाः श० ८.३.३.११. अन्नमु वै चन्द्रमाः जै० उ० १.३.४. चन्द्रमा ह्येतस्यान्नं य एष (सूर्यः) तपति श० ४.६.७.१२. चन्द्रमा वै प्राणः जै० उ० ४.२२.११. असौ वै चन्द्रः प्रजापतिः श० ६.२.२.१६. प्रजापतिर्वै चन्द्रमाः श० ६.१.३.१६. चन्द्रमा वै धाता ष० ४.६. चन्द्रमा एव धाता विधाता च गो० उ० १.१०. चन्द्रमा वै ब्रह्म ऐ० २.४१. चन्द्रमा वै ब्रह्मा श० १२.१.१.२. गो० पू० २.२४. चन्द्रमा ब्रह्मा (आसीत्) गो० पू० १.१३. चन्द्रमा वै ब्रह्माऽधिदैवं मनोऽध्यात्मम् गो० पू० ४.२. चन्द्रमा वै ब्रह्म कृष्णः (यजु० २३.१३.) श० १३.२.७.७. यददश्चन्द्रमसि कृष्णं पृथिव्या हृदयं श्रितम् मं० १.५.१३. स यदस्यै पृथिव्याऽअनामृतं देवयजनमासीत्तच्चन्द्रमसि न्यदधत तदेतच्चन्द्रमसि कृष्णम् श० १.२.५.१८. यदस्याः (पृथिव्याः) यज्ञीयमासीत्तदमुष्यां (दिवि) अदधात्। तददश्चन्द्रमसि कृष्णम् तै० १.१.३.३. एतद्वा इयं (भूमिः) अमुष्यां (दिवि) देवयजनमदधाद् यदेतच्चन्द्रमसि कृष्णमिव ऐ० ४.२७. चन्द्रमा एव (संवत्सरस्य) द्वारपिधानः श० ११.१.१.१. रात्रिर्वै चन्द्रमाः श० १२.४.४.७. चन्द्रमा उदानः जै० उ० ४.२२.९. सः (चन्द्रमाः) अस्य (सूर्यस्य) व्यात्तम् आपद्यते। (सूर्यः) तं (चन्द्रमसं) ग्रसित्वोदेति। स (चन्द्रमाः) न पुरस्तान्न पश्चाद् ददृशे श० १.६.४.१८. चन्द्रमा वा अमावस्यायामादित्यमनुप्रविशति ऐ० ८.२८. अथैष चन्द्रमा दक्षिणेनैति ष० २.४. तस्मादिमौ सूर्याचन्द्रमसौ प्रत्यञ्चौ यन्तौ सर्व एव पश्यति श० ४.२.१.१८. चन्द्रमा मनुष्यलोकः जै० उ० ३.१३.१२. वाग्घ चन्द्रमा भूत्वोपरिष्टात् तस्थौ श० ८.१.२.७. वागिति चन्द्रमाः जै० उ० ३.१३.१२. हन्तेति चन्द्रमा ओमित्यादित्यः जै० उ० ३.६.२. चन्द्रमा वै हिङ्कारः जै० उ० १.३.४. चन्द्रमा एव हिङ्कारः जै० उ० १.३३.५. चन्द्रमाः प्रतिहारः जै० उ० १.३६.९. चन्द्रमा वै यज्ञायज्ञियं यो हि कश्च यज्ञं संतिष्ठते, एतमेव तस्याहुतीनां रसोऽप्येति तद्यदेतं यज्ञोऽप्येति तस्माच्चन्द्रमा यज्ञायज्ञियम् श० ९.१.२.३९. चन्द्रमा वै भर्गः जै० उ० ४.२८.२. वायुराप श्चन्द्रमा इत्येते भृगवः गो० उ० २.८. वृष्टिर्वै वृष्ट्वा चन्द्रमसमनुप्रविशति ऐ० ८.२८. चन्द्रमा एव सर्वम् गो० पू० ५.१५.]

चन्द्ररथम् चन्द्रमिव रथं यस्य तम् (अग्नि=वह्निम्) ३.३.५. **चन्द्ररथः**=चन्द्रं रजतं सुवर्णं वा रथे यस्य सः (होता=विद्यादातृजनः) १.१४१.१२. [चन्द्र-रथ पदयोः समासः। चन्द्रपदं व्याख्यातम्। रथः=रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः 'हनिकुषि०' उ० २.२. सूत्रेण क्थन्प्रत्ययः]

चन्द्ररथा चन्द्र इव रथो यस्याः सा (विदुषी स्त्री) ३.६१.२. **चन्द्ररथाः**=चन्द्रं सुवर्णमिव रथो रमणीयं स्वरूपं यासां ताः (उषसः=प्रभातवेलाः) ६.६५.२. [चन्द्र-रथयोः समासे स्त्रियां टाप्। चन्द्ररथौ व्याख्यातौ]

चन्द्रवत् सुवर्णादियुक्तमानन्दादिप्रदं वा (राधः=धनम्) ५.५७.७. **चन्द्रवता**=पुष्कलं चन्द्रं सुवर्णं विद्यते यस्मिँस्तेन (राधसा=धनेन), प्र०—चन्द्र इति हिरण्यनाम, निघं० १.२, ३.५०.४. बहूनि चन्द्राणि सुवर्णादीनि धनानि विद्यन्ते यस्मिँस्तेन (राधसा=धनेन) ३.३०.२०. [चन्द्र इति व्याख्यातम्। ततो मतुप्]

चन्द्रवर्णाः चन्द्रस्य वर्णं इव वर्णो येषान्ते (विद्वज्जनाः) १.१६५.१२. [चन्द्र-वर्णपदयोः समासः]

चन्द्रा आह्लादयित्री, भा०—बहुसुखकारिका (वाग्विद्युद् वा) ४.२१. आह्लादप्रदा (उषाः) १.१५७.१. आह्लादकानि सुवर्णादीनि ४.२३.९. **चन्द्राभिः**=आनन्द-धनकरीभिः (प्रजाभिः) ६.६.७. **चन्द्राणि**=आनन्दप्रदानि सुवर्णादीनि (वसूनि=द्रव्याणि) ५.४२.३. काञ्चनादीन् धातून् ४.२६. [चन्द्रपदं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्। चन्द्रा ह्यापः तै० १.७.६.३.]

चन्द्राग्राः चन्द्रं सुवर्णमानन्दो वाऽग्रे यासां ताः (गिरः=वाचः) ५.४१.१४. चन्द्रं सुवर्णमग्रमुत्तमं यासु ताः (वाचः) ६.४९.८. चन्द्रमाह्लादनमग्रं मुख्यं यासान्ताः (साधनानि) ३४.४२. [चन्द्राग्राः चायनीयाग्राणि धनानि नि० १२.१८.]

चन्द्रासः आह्लादकराः (सोमाः=ओषध्यादयः पदार्थाः) ३.४०.४. [चन्द्रप्राति० जसोऽसुगागमः]

चन्द्री चन्द्रं बहुसुवर्णं विद्यते यस्य सः, (भा०—न दरिद्रो विद्वान्) २०.३७. चन्द्रं बहुविधं सुवर्णं विद्यते यस्य सः (भिषक्=वैद्यः) ११.३१. [चन्द्रपदं व्याख्यातम्। ततो मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

चन्द्रेव सुवर्णानीव, प्र०—चन्द्रमिति सुवर्णनाम, निघं० १.१२, ३.६१.७. [चन्द्र-इवपदयोः समासः]

चमसम् यज्ञसाधनम् ४.३५.३ चमत्यस्मिन् मेघे १.११०.३. मेघम् १.१६१.१. मेघमिव गर्जनायुक्तं रथम् ४.३५.२. पेयसाधनम् ४.३५.५. मेघमिव विभक्तम् (उक्थ्यं=प्रशंसनीयं कर्म) ४.३६.४. **चमसः**=आचामति येन सः (यज्ञपात्रम्) ४.३५.४. **चमसा**=चमसौ ४.३३.५. **चमसान्**=मेघानिव (पदार्थान्) १.१६१.६. मेघान् प्र०—चमस इति मेघनाम, निघं० १.१०, ४.३३.६. **चमसाः**=ये चाम्यन्ति अदन्ति भोगान् येभ्यो मेघेभ्यस्ते (**इन्द्रयानाः**=मेघाः) १.५४.६. होम-भोजन-पात्राणि १८.२१. [चमु अदने (भ्वा०) धातोः 'अत्यविचमि०' उ० ३.११७. सूत्रेण असच्प्रत्ययः । चमसः=मेघनाम निघं० १.१०. चमसः कस्मात् ? चमन्त्यस्मिन्निति नि० १०.१२.]

चमू द्विविधे सेने ५.५१.४. सेनया, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयैकवचनस्य लुक् ८.३६. **चमूषु**= भक्षयित्रीषु सेनासु ३.४८.४. **चम्वा**=सेनयेव ३.५५.२०. **चम्वोः**=सेनयोर्मध्ये ४.१८.३. द्यावापृथिव्योर्मध्ये ६.५७.२. पदाति-हस्त्यश्वादिरूढयोः सेनयोरिव १.२८.६. [चमु अदने (भ्वा०) धातोः 'कृषिचमितनि०' उ० १.८०. सूत्रेण ऊः प्रत्ययः स्त्रियाम् । चम्वौ द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०.]

चमूषदः से चमूषु सेनासु सीदन्ति अवस्थिता भवन्ति ते वीराः १.५४.६. चमन्त्यदन्ति विनाशयन्ति शत्रुवलानि याभिस्ताश्चम्वः, ये चमूषु सेनासु सीदन्ति ते (इन्दवः=सोमाद्योषधिगणाः), प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति वार्त्तिकमाश्रित्य 'सत्सूद्विष०' अ० ३.२.६१. अनेन करणे क्विप् 'कृषि-चमितनि०' उ० १.८१. अनेन चमूशब्दश्च सिद्धः १.१४.४. [चमूपदं व्याख्यातम् । तदुपपदे षद्लृ विशरण-गत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः करणे क्विप्]

चम्रिषः चमन्त्यदन्ति भोगाँस्तान् (पूर्वीः=प्राचीनाः प्रजाः), प्र०—अत्र वाहुलकादौणादिक इसिः प्रत्ययो रुडागमश्च १.५६.१. [चमु अदने (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् इसिः प्रत्ययो रुट् च]

चम्रीषः ये चमूभिः शत्रुसेना ईषन्ते हिंसन्ति ते (वीरा योद्धृजनाः) १.१००.१२. चमू=सेना में वश को प्राप्त (परमात्मा) आर्याभि० १.३४, ऋ० १.७.१०.१२.

चम्वीव यथा चम्वौ यज्ञपात्रे २०.७६.

चयत् चिनोमि ५.६०.१ **चयते**=एकत्रं करोति १.१६७.८. **चयध्वे**=सञ्चिनुत ७.५२.२. सञ्चिनुथ ६.५१.७. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

चयमानाः वर्धमानाः (देवाः=पूर्णविद्या विद्वज्जनाः) २.२७.४. [चय गतौ (भ्वा०) धातोः शानच्]

चयसे प्राप्नोषि १.१६०.५. **चयिष्टम्**=चिनुतः ६.६७.८. **चयेम**=चिनुयाम १.१३२.१. [चय गतौ (भ्वा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लुङ् लिङ् च । चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्वा रूपाणि । विकरणव्यत्ययेन शप् । चयसे=चातयसि नि० ४.२५.]

चय्यम् चयेषु सान्त्वनेषु भवम् प्र०—'चय सान्त्वने' धातोरच् ततो यत् १६.८८. [चय गतौ (भ्वा०) धातोरच् । ततो भवार्थे यत् । धातूनामनेकार्थकत्वात् सान्त्वनेऽर्थेऽपि]

चर विजानीहि, प्र०—अत्र चर इत्यस्य गत्यर्थत्वात् प्राप्त्यर्थो गृह्यते ८.३४. प्राप्नुहि प्राप्नोति वा १.१०.३. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

चरकाचार्यम् चरकाणां भक्षकाणामाचार्य्यम् ३०.१८. [चरक-आचार्यपदयोः समासः । चरकः=चर भक्षणार्थेऽपि (भ्वा०) धातोरच् । ततः स्वार्थे कन् । अथवा चर धातोः 'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोः०' उ० २.३२. सूत्रेण क्वुन्]

चरणम् गमनम् ३.५.५. विहरना, सं० वि० १६७, ६.११३.६. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्भावे ल्युट् । चक्षुरेव-चरणं चक्षुषा ह्ययमात्मा चरति श० १०.३.५.७. आदित्य एव चरणं यदा ह्येवैष उदेत्यथेदं सर्वं चरति श० १०.३.५.३.]

चरणीयमाना प्राप्नुवती (उषः=उषाः) ३.६१.३.

चरण्यत् चरणमिवाऽऽचरेत्, प्र०—'वाच्छन्दसि' इत्यत्राल्लोप ईत्वाऽभावश्च ८.२४. [चरणपदात् 'उपमानादाचारे' इति क्यच् । ततो नामधातोर्लेट् । अल्लोप ईत्वाभावश्च छान्दसम्]

चरत् चरति ३३.६३. गच्छति ६.५६.६. प्राप्नोति १.१७३.३. सर्वं जानाति, पं० वि०, ३६.२४. **चरतः**=कुरुतः २.२४.५. वर्त्तेते २०.२५. चलतः ६.२७.७. आगच्छतः १.६२.८. प्राप्नुतः १.१०२.२. **चरति**=प्राप्तोऽस्ति ३.५५.६. विलसति ३.५८.१. स्वेनैव स्वं प्रकाशित. सन् भवति, ऋ० भू० १४४. भ्रमति २३.४६. सेवते १.५२.६. प्राप्नोति ५.४४.८. गच्छति ५.६३.४. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लट्]

चरतः स्वगत्या व्याप्तस्य (दिवः=सूर्यस्येव विदुषः) १.१४६.१. **चरता**=प्राप्तेन (वधेन) ३.३२.६. **चरताम्**=प्राणभृताम् २.३८.६. [चर गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

चरथम् चर्य्यते गम्यते भक्ष्यते यस्तम् (रजः=सकारणं लोकसमूहम्) १.५८.५. मनुष्यादिजङ्गमम् १.७२.६. जङ्गम-समूहम् १.६८.१. आगमनं विज्ञानं वा ३.३१.१५. **चरथाम्**=जङ्गमानाम् (प्राणिनाम्) १.७०.२. चरथाय=गमनाय विज्ञानाय भोजनाय वा ४.३६.३. सब से अधिक आनन्द भोग, सब देशों में अव्याहत गमन=इच्छाऽनुकूल आने जाने के लिए, आर्याभि० १.१६, ऋ० १.३.१०.१४. चरणाय १.३६.१४. भ्रमणाय ४.५१.५. [चरथाय=चरणाय नि० ४.१६. चर गतौ (भ्वा०) धातोरौणादिको बाहुलकाद् अथः प्रत्ययः]

चरद्रुचः अनर्थकारिभ्यः (प्रजापुरुषेभ्यः) १६.२१. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक अतिः प्रत्ययः]

चरध्यै चरितुं भक्षितुं गन्तुम् १.६१.१२. [चर गतौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे अध्यै प्रत्ययः। चरध्यै चरणाय नि० ६.२०.]

चरन् विचरन् (पुत्रः) १.१४४.४. जानन् प्राप्तः सन् (ईश्वरः सूर्यलोको वा) १.३३.४. **चरन्तम्**=प्राप्नुवन्तम् (आत्मानम्) ३.१.९. ज्ञातारं सर्वज्ञमीश्वरम्, ऋ० भू० १६३. विहरन्तम् (पुत्रम्) ४.१८.१२. व्यवहरन्तम् (कुमारम्) ५.२.४. सर्वं जगज्जानन्तं, सर्वत्र व्याप्नुवन्तम् (अ०—स्वात्मनि परमात्मानं, बाह्यदेशे सूर्यं वायुं वा) १.६.१. गच्छन्तम् (सूनुम्) १.१८५.२. **चरन्तः**=विचरते हुए (गृहस्थादि मनुष्य) सं० वि० १४२, अथर्व० ३.६.५. [चर गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। वायुर्वै चरन् तै० ३.९.४.१.]

चरन्त चरन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् ३.४.५. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभावो व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

चरन्ता प्राप्नुवन्तौ गच्छन्तौ वा (विद्याकामौ जनौ) १.१५८.२. [चर गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ। प्रथमाद्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

चरन्ति वर्त्तन्ते २.३०. प्रवर्त्तन्ते १.९४.५. प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा ४.६.१०. व्यवहरन्ति १७.३१. सञ्चरन्ति ५.९.२. विचरन्ति ६.४७.३१. आचरन्ति ७.३३.९. गच्छन्त्यागच्छन्ति १.३६.३. जानन्ति गच्छन्ति वा ७.१.१५. व्यवहरन्ति १७.३१. प्रवृत्त हो रहे हैं आर्याभि० २.४४, १७.३१. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

चरन्तीः प्राप्नुवन्त्यः (नद्यः=सरिताः) ३.३३.४. **चरन्ती**=प्राप्नुवन्ती (वाक्) ७.३६.७. प्राप्नुवत्यौ (उषासा=प्रातःसायं वेले) २९.६. गच्छन्ती (योषा=स्त्री) १.१६७.३. [चर गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

चरन्तु विलसन्तु ४.८.७. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

चरमम् अन्तिमम् (युक्ताहारविहारं ब्रह्मचर्य्यम्) ७.५९.३. [चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'चरेश्च' उ० ५.६९. सूत्रेण अमच्-प्रत्ययः]

चरसि गच्छसि प्राप्नोषि ११.३९. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

चरसे व्यवहर्त्तुं भोजयितुं वा १.९२.९. चरितं गन्तुम् ५.४७.४. [चर गतौ भक्षणे च (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे असेन् प्रत्ययः]

चराचरेभ्यः स्थावर-जङ्गमेभ्यः (जड-चेतनेभ्यः) २२.२९. [चर-अचरपदयोः समासः। चरः=चर गतौ (भ्वा०) धातोरच्]

चराणि गतिमन्ति प्राप्तव्यानि वा (वीर्ययुक्तानि सैन्यानि) ५.२९.१३. [चर गतौ (भ्वा०) धातोरच्। घञर्थे को वा]

चराथा चरथया (वसव्या), प्र०—अत्र चरधातोर्बाहुलकादौणादिकोऽथच् प्रत्ययः, प्रत्ययाऽऽदेर्दीर्घः 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशश्च १.६६.५. [चराथा=चरन्त्या नि० १०.२१.]

चरामसि विचरामः १.५७.४. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्। उत्तमबहुवचने 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

चरामि गच्छामि १.१६४.३७. प्राप्नोमि ३.५५.१४. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

चरितवे चरितुं व्यवहर्त्तुम्. १.११३.५. [चर गतौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेङ्प्रत्ययः]

चरितस्य अनुष्ठितस्य कर्मणः १.११०.२. [चर गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

चरित्रम् शत्रु-शीलम् १.११६.१५. **चरित्रान्**=व्यवहारान् ६.१४. **चरित्राय**=धर्म्माऽऽचरणाय १३.१९. शुभ-कर्माऽऽचाराय १४.१२. सत्कर्माऽनुष्ठानाय १५.६४.

[चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तिलूधू०' अ० ३.२.१८४. सूत्रेण करणे इत्रः प्रत्ययः]

चरिष्णु यच्चरति गच्छति (अर्चिः=विद्युत्तेजः) ४.७.९. **चरिष्णुः**=गन्ता (त्वेषः=प्रकाशः) ६.६१.८. [चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'अलंकृञ्निराकृञ्०' अ० ३.२.१३६. सूत्रेण तच्छीलादिष्वर्थेषु इष्णुच्प्रत्ययः]

चरिष्यामि अनुष्ठास्यामि १.५. आचरण करूंगा, आर्याभि० २.४७, १.५. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लृट्]

चरुम् ज्ञानलाभं मेघं वा १.७.६. **चरुः**=स्थालीपाकः, पाको वा २९.६०. [चर गतौ भक्षणे च (भ्वा०) धातोः 'भृमृशीङ्तृचरि०' उ० १.७. सूत्रेण उः प्रत्ययः । चरुः मेघनाम निघं० १.१०. चरुर्मृच्चयो भवति, चरतेर्वा समुच्चरन्त्यस्मादापः निघं० ६.११. ओदनो हि चरुः श० ४.४.२.१. इमे लोकाश्चरुः पंचबिलः मै० १.४.९. काठ० ३२.६.]

चरूणाम् पात्राणाम् २५.३६. अन्नादिपचनाऽऽधाराणाम् (पात्राणाम्) १.१६२.१३. [चरुपदं व्याख्यातम्]

चरेते सञ्चरन्ति १.१२३.७. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

चर्कर्मि भृशं करोमि ४.३९.२. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

चर्किरन् भृशं विक्षिपेयुः १.१३१.५. **चर्किराम**=भृशं विक्षिपेम ४.४०.१. भृशं विक्षेपयाम ४.३९.४१. [कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् सामान्ये लङ् । अडभावश्छान्दसः]

चर्कृतात् सततं कर्त्तुं योग्यात् कर्मणः १.१०४.५. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्यङ्लुगन्तात् क्तः]

चर्कृतिः अत्यन्तक्रिया ५.७४.९. भृशमुत्तमा क्रिया ६.४८.२१. [डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्यङ्लुगन्तात् स्त्रियां क्तिन्]

चर्कृत्यम् भृशं कर्त्तुं योग्यम् (राजपुरुषम्) ४.३८.२. पुनः पुनः कर्त्तव्येषु कार्येषु साधुम् (तोकम्=अपत्यम्), प्र०—अत्र यङ्लुगन्तात् करोतेः क्तस्ततः साध्वर्थे यत् १.६४.१४. सभापति होने को अत्यन्त योग्य (सभापति राजा) स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. वारं वारं सत्क्रियासु योजनीयम् (ताराऽऽख्यं यन्त्रम्) ऋ० भू० १९९. **चर्कृत्यः**=पुनः पुनरुपासनीयः (परमेश्वरः) ऋ० भू० २२२. [डुकृञ् करणे (तना० धातोर्यङ्लुगन्तात् क्तः । ततः 'तत्र साधुः' इति यत्]

चर्कृषत् भृशं कर्षन् भृशं भूमिं विलिखन् (वृषा=कृषकः) १.१७६.२. पुनः पुनर्भूमिं कर्षेत्, प्र०—अत्र यङ्लुगन्ताल्लेट् १.२३.१५. [कृष विलेखने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लेट्]

चर्मणः त्वचः ४.३६.४. चर्मप्राप्तेः ३.६०.२. त्वगुपरिभागस्य १.१६१.७. [चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' उ० ४.१४५. सूत्रेण मनिन् । चर्म चरतेर्वोच्चृतं भवतीति वा नि० २.५. जिह्वा चर्म । तै० सं० ६.२.११.४. चर्म वाऽएतत् कृष्णस्य (मृगस्य) तन्मानुषं, शर्म देवत्रा श० ३.२.१.८.]

चर्मन् चर्मणि ४.५.७. [व्याख्यातम् । सप्तम्या लुक्]

चर्मम्नम् यश्चर्म विज्ञानं म्नात्यभ्यस्यति तम् (जनम्) ३०.१५. [चर्मण्युपपदे म्ना अभ्यासे (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः]

चर्मणीव यथा चर्मणि लोमानि धृतानि ६.८.३. [चर्मन्-इवपदयोः समासः]

चर्मेव यथा चर्म देहमावृणोति तथा ४.१३.४. चर्मवत् काष्ठादिनावृत्य १.८५.५. [चर्मन्पदं व्याख्यातम् । चर्मन्-इवपदयोः समासः]

चर्षणयः विद्वांसः (मनुष्याः) ६.३३.२. मनुष्याः १.१८४.४. **चर्षणिभ्यः**=उत्तमेभ्यो मनुष्येभ्यः १.८४.२०. **चर्षणिः**=दर्शको मनुष्यः, प्र०—चर्षणिरिति पदनामसु पठितम्, निघं० ४.२, १.४६.४. **चर्षणीनाम्**=मनुष्याणाम्, प्र०—चर्षणय इति मनुष्यनामसु पठितम् निघं० २.३, १.७.९. मनुष्यादिप्राणीनाम्, प्र०—'कृषेरादेश्च चः' उ० २.१०० अनेन कृषधातोरनिः प्रत्यय आदेश्चकारादेशश्च १.१७.२. मनुष्याणां तत्सम्बन्धिसेनानां वा १७.३३. ऐश्वर्येण प्रकाशमानानाम् (मानुषाणां=मानवानां मध्ये) ४.८.८. मनुष्यादिप्रजानाम् ३.१०.१. विद्याप्रकाशवतां मनुष्याणाम् ३.६२.६. **चर्षणीभ्यः**=दुष्टेभ्यः श्रेष्ठेभ्यो वा मनुष्येभ्यः १.५५.१. चर्षणीः=प्राणान् मनुष्यान् वा ५.८६.२. प्रकाशान् ४.७.४. प्रकाशमाना मनुष्यसेनाः ५.२३.१. [चर्षणिः=चायिता आदित्यः नि० ५.२४. चर्षणीनाम् मनुष्याणाम् नि० १२.२१.कृष विलेखने (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोः अनिः प्रत्ययः । आदेश्च धातोश्चकारादेशः । चर्षणयः=मनुष्यनाम निघं० २.३. चर्षणिः पदनाम निघं० ४.२.]

चर्षणी प्रचर्षणी सम्यक् सुखप्रापकौ (इन्द्राग्नी=

विद्युत्प्रसिद्धाग्नी) १.१०९.५. [चर्षरिणरिति व्याख्यातम्। ततः प्रथमाद्विवचनम्]

चर्षरणीधृत् यो मनुष्यान् धरति (इन्द्रः=राजा) ४.१७.२०. **चर्षरणीधृतम्**=चर्षरणीनां सत्यासत्यविवेचकानां धर्त्तारम्(अध्याकमुपदेशकं वा) ४.१.२. विद्वद्भिर्धृतम् (अध्यापकमुपदेशकं वा) ४.१.२. **चर्षरणीधृतः**=सत्योपदेशेन मनुष्येभ्यः सुखस्य धर्त्तारः (सर्वविद्वज्जनाः), प्र०—चर्षरणय इति मनुष्यनामसु पठितम्, निघं० २.३, १.३.७ः सुशिक्षया मनुष्याणां धर्त्तुः (देवस्य) ११.६२. चर्षरणयो मनुष्यास्तान् धरन्ति पोषयन्ति ते (देवासः=विद्वांसः) ७.३३. [चर्षरिणरिति व्याख्यातम्। तदुपपदे धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः क्विप्। तुगागमः। चर्षरिणधृतः=मनुष्यधृतः नि० १२.४०.]

चर्षरणीप्राम् यश्चर्षरणीन् मनुष्यान् प्राति व्याप्नोति तम् (रयिं=धनम्) ६.४९.१५. **चर्षरणीप्राः**=यश्चर्षरणीन् मनुष्यान् प्राति व्याप्नोति सः (अग्निः=राजा) ४.२.१३. यश्चर्षरणीन् मनुष्यान् सुखैः पिपर्त्ति सः (इन्द्रः=सूर्यः) १.१८६.६. यश्चर्षरणीन् मनुष्यान् प्राति विद्यया पिपर्त्ति सः (राजा) १.१७७.१. यश्चर्षरणीन् मनुष्यान् सत्यविद्या-शिक्षा-शीलैः प्राति प्रपूर्त्ति सः (इन्द्रः=धार्मिको विद्वान्, राजा वा) ३.३४.७. यश्चर्षरिणषु मनुष्येषु विद्युद्रूपेण व्याप्नोति (अग्निः=सूर्यः) ६.१९.१. यो विद्यादिभिर्गुणैश्चर्षरणीन् मनुष्यान् प्राति व्याप्नोति (विद्वज्जनः) ६.३९.४. चर्षणीन् मनुष्यान् प्राति सुखैः प्रपूरयति सः (इन्द्रः=भगवान् जगदीश्वरः) ७.३९. [चर्षरिणरिति व्याख्यातम्। तदुपपदे प्रा पूरणे (अदा०) धातोः क्विप्]

चर्षरणीसहम् मनुष्याणां सोढारम् (क्रतुं=प्रज्ञाम्) ५.३५.१. शत्रुसेनायाः सोढारम् (राजानम्) ६.४६.६. चर्षरणयो मनुष्याः शत्रून् सहन्ते येन तम् (विद्युद्यानम्) १.११९.१०. मनुष्यसेनायाः कार्यसहनशीलम् (ताराख्यं यन्त्रम्) ऋ० भू० १९९. **चर्षरणीसहाम्**=ये चर्षरणीन् मनुष्यसमूहान् सहन्ते तेषाम् (योद्धृजनानाम्) २८.१. [चर्षरिणरिति व्याख्यातम्। तदुपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः क्विप् करणे 'कृतो बहुलं वे' ति वार्त्तिकेन। कर्त्तरि बा क्विप्]

चलाचलासः चलाश्चाऽचलाश्च ताः (शङ्कवः=कीलाः) १.१६४.४८. चलाः चालनाऽर्हा अचलाः स्थित्यर्हाः कलाः) ऋ० भू० २०७, १.१६४.४८. [चल-अचलपदयोः समासः]

चषालवन्तः वहवश्चषाला भोगा विद्यन्ते येषान्ते (बहुश्रुता विद्वांसः) ३.८.१०. [चषालप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्। चषालः=चष भक्षणे (भ्वा०) धातोः 'सानसिवर्णसि०' उ० ४.१०७. सूत्रेणालच् प्रत्ययान्तो निपात्यते]

चषालम् वृक्षविशेषम् १.१६२.६. यूपाऽवयवम्, भा०—अश्वबन्धनादिनिमित्ताय काष्ठविशेषजं वस्तु २५.२९. [व्याख्यातम्। चषालाद् वै देवतास्स्वर्गं लोकमायन् काठ० २६.४.]

चष्टे वदति ७.२८.४. उपदिशति १.१९०.७. प्रकाशयति ७.६०.३. कथयामि ६.२६.२. जानाति ७.६१.१. दर्शयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.१०८.१. कथयति ७.३४.१०. कथयामि ६.२६.२. अभितः ख्याति ३.५९.१. पश्यति १२.६६. विख्यायते ५.१९.१. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट्। अयं धातुर्दर्शनार्थेऽपि। चष्टे पश्यतिकर्मा निघं० ३.११.]

चस्कन्द प्राप्नोति १३.५. [स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोः सामान्ये लिट्]

चाकन् चङ्कन्यते काम्यते, प्र०—'कनी दीप्तिकान्तिगतिषु' इत्यस्य यङ्लुगन्तस्य क्विबन्तं रूपं 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति तुगभावः 'दीर्घोऽकितः' इत्यभ्यासस्य दीर्घत्वं च। सायणाचार्येणेदं भ्रमतो मित्संज्ञकस्य ण्यन्तस्य च कनीधातो रूपमशुद्धं व्याख्यातम् १.३३.१४. कामयते २.११.३. कामयसे प्र०—अत्र कनी दीप्तिकान्तिगतिषु इत्यस्माल्लङो मध्यमेकवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपः स्थाने श्लुः 'श्लौ' इति द्वित्वं 'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' इत्यडभावः, संयोगान्तसलोपश्च १.१७४.५. [कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्तंप्रयोगः। चाकन् चायन्निति वा कामयमान इति वा नि० ६.२८. चाकन् पदनाम निघं० ४.३. चाकनत् कान्तिकर्मा निघं० २.६. चाकनत् पश्यतिकर्मा निघं० ३.११.]

चाकन कामये, प्र०—प्रत्र कनधातोर्वर्तमाने लिट् 'तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य' इति अभ्यासदीर्घत्वञ्च १.५१.८. प्रकाशितो भवेयम्, प्र०—अत्र तुजादित्वादभ्यासदीर्घः १.१२०.१०. कामना करता हूँ, आर्याभि० १.१४. **चाकनन्त**=कामयन्ते ५.३१.१३. **चाकनः**=कामयसे १.५१.१२. **चाकनाम**=कामयेमहि २.११.१३. **चाकन्तु**=कामयन्तु १.१२२.१४. [कनी दीप्तिकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्लिट्। छान्दसं रूपम्]

चाकशीति अभिपश्यति १.१६४.२०. **चाकशीमि**=प्रकाशयामि ४.५८.५. भृशं प्राप्नोमि १३.३८. सर्वतोऽनु-

शास्मि १७.६३. **चाकशीहि**=भृशं चक्ष्व पुनः पुनश्शाधि, प्र०—अयं कशधातोर्यङ्लुगन्तस्य प्रयोगः 'वाच्छन्दसि' इति पित्वादीट् १६.२. [काशृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि लटि रूपम् । 'बहुलं छन्दसीति वक्तव्यम्' अ० ७.३.८७. वा० सूत्रेण ह्रस्वत्वम् । अन्यत्र लोट्]

चाक्षुष्यः चक्षुष इमा दर्शनीयाः (वर्षाः) १३.५६. [चक्षुष् प्राति० 'तत्र साधु' इति यत् । हितार्थे वा यत् । चक्षुष्यप्राति० स्वार्थेऽण्]

चाक्ष्मः व्यक्तवाक् (राजपुरुषः) २.२४.६. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको मक् । बाहुलकादेवोपधादीर्घश्च । चाक्ष्म पश्यतिकर्मा निघं० ३.११.]

चातयते विज्ञापयति, प्र०—चततीति गतिकर्मा, निघं० २.१४, ४.१७.६. [चतति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

चातयस्व याचयस्व २.३३.२. नाशं प्रापय ७.१.७. हिंसय हिन्धि वा ५.४.६. [चते याचने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट् । धातूनामनेकार्थकत्वाद् हिंसार्थेऽपि । चातयतिर्नाशने नि० ६.३०.]

चायमानः पूज्यमानः (अग्निः=राजा) ६.२७.८. वर्धमानः (पशुः=गवादिः) ७.१८.८. **चायमानाय**= सत्कर्त्रे (सज्जनाय) ६.२७.५. [चायृ पूजानिशामनयोः (भ्वा०) धातोः शानच्]

चायवः सत्कर्त्तारः (राजजनाः) ३.२४.४. [चायृ पूजानिशामनयोः (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक उः प्रत्ययः]

चारणाय अतिशूद्रायाऽन्त्यजाय, ऋ० भू० ३१०. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् ल्युट् । 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति कर्त्तरि ल्युट्]

चारय प्रापय २३.२१. [चर गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

चारवः सुन्दरस्वभावा गन्तारो वा (नरः=मनुष्याः) ५.५६.३. [चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'दृसनिजनिचरि०' उ० १.३. सूत्रेण ञुण् । चारुः चरतेः नि० ८.१५. रुचेर्विपरीतस्य नि० ११.५.]

चारु श्रेष्ठतरम् (मनः) १.१८७.६. सुन्दरं वस्त्रम् ५.४८.५. सुन्दरं भोक्तव्यम् (सवनं=भोजनम्) ३.३२.१. श्रैष्ठ्यं यथा स्यात्तथा १.७२.२. पवित्र (नाम) स० प्र० ३३०, १.२४.१. **चारुम्**=श्रेष्ठं व्यवहारम् १.७२.१०. श्रेष्ठाम् (मतिं=बुद्धिम्) २०.७८. भक्षणीयं सुन्दरम् (पुरोडाशं=सुसंस्कृताऽन्नविशेषम्) ३.५२.५. **चारुः**= अत्युत्तमः (सोमः=महौषधिरसः) ४.४६.२. श्रेष्ठः (ईश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.६४.१३. सुन्दरा (सोमलता) ६.८.१. अत्यन्तशोभायमान और शोभा का देने वाला (ईश्वर), आर्याभि० १.४८, ऋ० १.६.३२.१३. [चारुपदं व्याख्यातम्]

चारुतमम् अतीव सुन्दरम् (कर्म) १.६२.६. **चारुतमः**=अतिशयेन सुशीलः सुन्दरः (अतिथिः) ५.१.६. [चारुपदं व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

चारुप्रतीकः सुन्दर गुणकर्मस्वभावैः प्रतीतः (विद्वान् श्रीमज्जनः) २.८.२. [चारु-प्रतीकपदयोः समासः । चारु-व्याख्यातम् । प्रतीकः=प्रतिप्राति०क न्प्रत्ययः । निपातस्य दीर्घः]

चाषान् भक्षणानि २५.७. **चाषेण**=भक्षणेन, भा०—औषधसेवनेन १२.८७. [चष भक्षणे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

चिकितः जानासि, प्र०—मध्यमैकवचने लेट्प्रयोगः १.६१.१. [कि ज्ञाने (जु०) धातोर्लेट्]

चिकितान ! ज्ञानयुक्त (मर्त्त=मनुष्य) ५.६६.१. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच्]

चिकितानः ज्ञानवान् ज्ञापकः (महाबलिजनः) ३.१८.२. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच्]

चिकितुषः प्रशस्तविद्यस्य (विद्वज्जनस्य) १.७३.१. **चिकितुषा**=विज्ञापयित्र्या (वाचा) ६.६१.१३. **चिकितुषे**=चिकित्सितुं विचारयितुमिष्टाय (रणाय=सङ्ग्रामाय) ६.४१.४. ज्ञातव्याय (विद्यार्थिने जनाय) ५.४१.११. विज्ञापनाय ४.१६.२. विज्ञानवते (पत्ये) ६.६६.१. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः प्रत्ययः]

चिकितुः विज्ञातुः (सेनाऽध्यक्षस्य) ३.५३.२४. [कि ज्ञाने (जु०) धातोस्तृच्, गुणाऽभावो द्वित्वं च छान्दसम्]

चिकिते जानाति ७.२३.२. जानातु ३.५३.२३. विज्ञापयति २.४.५. चिकित्सति १.५१.७. ज्ञापयति १.७१.७. [कि ज्ञाने (जुहो०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

चिकित्रिरे जानीत १.१६६.१३. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लिटि झस्य इरेच् । रुडागमश्छान्दसः]

चिकित्रे विज्ञानवते (पूर्णविद्यायाध्यापकाय) १.१८६.६. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोस्तृच् । गुणाभावो द्वित्वं च छान्दसम्]

चिकित्वत् ज्ञापयन्तीम् (सत्यवाचम्) ४.५२.४. **चिकित्वः**=ज्ञानवन् (परमेश्वर जीव वा) १.७०.३. विज्ञानवन् (परमेश्वर) २.६.८. विज्ञातव्यम् (ऋतं=सत्यं कारणम्) ५.१२.२. बुद्धिमन् (विद्वज्जन) ५.२.७. शुद्धबहुप्रज्ञायुक्त (राजन्) ६.५.३. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोर्मतुप्। धातोर्द्वित्वं 'वा छान्दसि' इति वार्तिकेन]

चिकित्वान् ज्ञानवान् ज्ञानहेतुर्वा (देवः=सूर्योऽध्यापको वा) १.७१.५. विवेकी (विद्वज्जनः) ४.५.१२. ज्ञानवान् ज्ञापको वा (विद्वज्जनः) १.७१.७. विज्ञानवान् (विद्वान् जनः) ४.८.४. सत्यार्थविज्ञापकः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.१२.१. केतयति जानातीति (धार्मिकोऽखिलविद्यो न्यायकारी जनः) प्र०—अत्र 'कित् ज्ञाने' अस्माद् वेदोक्ताद्धातोः क्वसुः प्रत्ययः 'चिकित्वान् चेतनवान्' नि० २.११, १.२५.११. **चिकित्वांसम्**=विद्वांसम् (सज्जनम्) ४.७.५. **चिकित्वांसः**=विज्ञापयन्तः (विद्वज्जनाः) ७.६०.७. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः। चिकित्वान् चेतनवान् नि० ८.५. नि० २.११. चिकित्वानिति विद्वानित्येतत् श० ६.४.२.६.]

चिकित्विन्मनसम् चिकित्वितां विज्ञानवतां मन इव मनो यस्य तम् (देवं=विद्वांसं जनम्) ५.२२.३. [चिकित्वित्-मनस्पदयोः समासः]

चिकित्सत् चिकित्सते ४.१६.१०. **चिकित्सति**=संशयं प्राप्नोति ४०.६. [कित निवासे रोगापनयने च (भ्वा०) धातोः 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्' इति स्वार्थे सन्। ततः शतृ। अन्यत्र लट्]

चिकित्सन्ती चिकित्सां कुर्वती (अर्या=वैश्यकन्या) १.१२३.१. [कित निवासे रोगापनयने च (भ्वा०) धातोः स्वार्थे सन्। ततः शत्रन्तान् ङीप्]

चिकित्स यश्चिकित्सति रोगपरीक्षां करोति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=वैद्यराज) ६.४७.२०. [चिकित्स धातोरच्प्रत्ययः, ततः सम्बुद्धिः। चिकित्स=कित निवासे रोगापनयने च (भ्वा०) धातोः स्वार्थे सन्]

चिकित्स संशययुक्तो भव १.९१.२३. रोगनिवारणायेव विघ्ननिवारणोपायं कुरु ३४.२३. [कित निवासे रोगापनयने च (भ्वा०) धातोः स्वार्थे सन्। ततो लोटि मध्यमैकवचनम्]

चिकिद्धि ज्ञापय २.४३.३. विजानीहि ५.१.१०. परमविद्या प्राप्त कराओ आर्याभि० १.५३, ऋ० २.८.१२.३. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धात्तोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

चिकीषते वेत्तुमिच्छति ११.१८. [कि ज्ञाने (जु०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल् लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

चिकेत उद्बुध्येत २.४.६. विजानीयात् २.१४.१०. जानाति १.६७.४. केतति जानाति, प्र०=अत्र 'कित ज्ञाने' धातोर्लडर्थे लिट् १.३५.७. विजानीत १.१६४.१६. आचरति ऋ० भू० २१३, अथर्व० ५.१.२. **चिकेतत्**=जानाति ५.३६.१. चिकेतति विजानाति ६.६२.९. विजानीयात्, प्र०—अयं 'कित ज्ञाने' धातोर्लेट्, प्रथमैकवचनप्रयोगः 'बहुलं छन्दसि' इतिः शपः श्लुः १.३५.६. **चिकेतति**=ज्ञापयति १.४३.३. जानाति १.८२.४. **चिकेतसि**=जानीयाः १.१३१.६. **चिकेथे**=जानीथः ५.६६.४. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लिट् सामान्ये। अन्यत्र लेटि शपः श्लौ रूपम्]

चिक्युः चिनुयुः १.१६४.३८. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचनम्। 'विभाषा चेः' इत्यभ्यासात् परस्य वा कुत्वम्। चिक्यत् कान्तिकर्मा निघं० २.६. पश्यतिकर्मा निघं० ३.११.]

चिच्युषे च्यावयसि ४.३०.२२. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचनम्। अभ्यासोकारस्य इकारश्छान्दसः, इडभावश्च]

चित् अपि २०.५२. इव, प्र०—चिदित्युपमाऽर्थे, नि० १.१४, १.१०.९. अ०—यथा १.६.५. एवाऽर्थे, प्र०—चिदिदं पूजायाम्, नि० १.४, १.६.५. पूजाऽर्थे, प्र०—चिदिदं ब्रूयादिति पूजायाम्, नि० १.४, १.१०.९. अ०—अन्ये नास्तिकाः १.४.५. निश्चयार्थे ५.४१.१७. भी, सं० वि० १५६, ७.४१.२. खलु १.१६७.७. चाऽर्थे १.२८.६. पुनरर्थे १.३०.४. यदि १.१९.४. वितर्के १.२४.१०. किञ्चित् २.१७.१४. [चिदित्येषोऽनेककर्मा। आचार्यश्चिदिदं ब्रूयाद् इति पूजायाम्। दधिचिदित्युपमार्थे। कुल्माषांश्चिदाहरेत्यवकुत्सिते नि० १.४.]

चित् या विद्याव्यवहारस्य चेतयमाना वाग् विद्युद्वा ४.१९. संज्ञप्ता (कन्या) १२.५३. **चितः**=चेतयन्ति संजानन्ति ये ते चितः (मनुष्याः कपालानि वा) १.१८. संचिताः (विद्वज्जनाः) १२.४६. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः क्विप्। अथापि पशुनामेह भवत्युदात्तः। 'चिदसि मनासि धीरसि' चितास्त्वयि भोगाः, चेतयस इति वा नि० ५.५. चित् मर्मणि नि० ६.३३.]

चितन ज्ञापयत ४.३७.७.

चितन्त्या बुद्धिमत्या (मात्रा) १.१२९.७. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीपि तृतीयैकवचनम्]

चितयत् संज्ञापयेत् १.१८०.८. [चिति संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लेट् । गुणाऽभावश्छान्दसः]

चितयत् यच्चितं ज्ञातारं करोति तत् (ब्रह्म=धनमन्नं वा) २.३४.७.

चितयन् ज्ञापयन् (देवः=विद्वज्जनः) ५.१५.५. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

चितयन्त चितं कुर्वन्तु २.३४.२. विज्ञापयन्ति ४.५१.३. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ् । अडभावश्छान्दसः]

चितयद्भिः ज्ञापयद्भिः (अर्कैः=विद्वद्भिः) ५.४१.७. सब सत्य विद्याओं को जनाने-हारे (ब्रह्मचारियों) से, सं० वि० १०५, ५.४१.७. **चितयन्तम्**=ज्ञापयन्तम् (रूपम्) ६.६.७. **चितयन्तः**=सञ्चेतयन्तः (जनाः) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्युपधागुणो न १.१३१.२. ज्ञापयन्तः (नरः=नायका जनाः) ५.१९.२. गुणानां चितिं कुर्वन्तः (सभासेनाप्रजास्था जनाः) १.९४.४. सञ्जानन्तः (क्षितयः=मनुष्यः) १.३३.६. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः । गुणाऽभावश्छान्दसः]

चितयन्ति ज्ञापयन्ति ७.६०.६. **चितयन्ते**=प्रज्ञापयन्ति ५.५९.२. सञ्ज्ञापयन्ति १.१७१.५. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

चितयन्त्या चेतनतायाः कर्त्र्या (कृपा=सामर्थ्येन) १७.१०. ज्ञापयन्त्या (कृपा=कृपया) ६.१५.५. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

चितये चेतनाय (परमेश्वराय) २३.४९. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः क्तिच्प्रत्ययः । यच्चेतयमाना अपश्यंस्तस्माच्चितयः श० ६.२.३.९. पञ्च ह्येतेऽग्नयो यदेताश्चितयः श० ६.२.१.१६. पञ्च तन्वो व्यस्रंसन्त लोम त्वङ् मांसमस्थि मज्जा ता एवैता पञ्च चितयः श० ६.१.२.१७. ऋतवो ह्येते यदेताश्चितयः श० ६.२.१.३६. सप्त योनीरिति चितीरेतदाह श० ६.२.३.४४.]

चितयेम ज्ञापयेम २.२.१०. चितिं संज्ञानमाचक्ष्महि ४.३६.६. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लिङ्]

चितः इन्धनैः संयुक्तः (अग्निः) १.११२.१७. सञ्चितः (अग्निः) १.१५८.४. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

चितानाः संज्ञाकारिण्यः (अपः=जलानि प्राणान्वा), प्र०—अत्र विकरणलुग् व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदञ्च १०.१. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः शानच् । विकरणस्य लुक्, आत्मनेपदञ्च व्यत्ययेन]

चितासः सञ्चययुक्ताः (जीवाः) ७.१८.१०. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । जसोऽसुगागमश्च]

चित्तगर्भासु चित्तं चेतनत्वं गर्भो यासु तासु (प्रजासु) ५.४४.५. [चित्त-गर्भपदयोः समासः । चित्तं व्याख्यास्यते । गर्भः=गॄ निगरणे (तुदा०) गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्वा 'अर्त्तिगॄभ्यां भन्' उ० ३.१५२. सूत्रेण भन्प्रत्ययः]

चित्तम् चेतति येन तत् (योगाभ्यासजनितां विद्युतम्) ११.६६. अन्तःकरणम् १.१६३.११. अन्तःकरणस्य स्मरणात्मिकां वृत्तिम् १.१७०.१. सर्वज्ञ, सर्वव्यापक साक्षी (मन) स० प्र० २४७, ३४.५. स्मृतिः १८.२. स्वान्तम् १७.४४. सञ्ज्ञानम् ५.७.९. पूर्वपराऽनुभूतं स्मरणात्मकं धर्मेश्वरचिन्तनम्, ऋ० भू० ९४. स्मृतिसाधकम् (अन्तःकरणम्) २२.२०. विज्ञानसाधिकामन्तःकरणवृत्तिम् २५.२. सर्वपदार्थ-विषयिज्ञानम् ३४.५. **चित्तानि**=अन्तःकरणानि ७.५९.८. संज्ञप्तानि धर्म्याणि कर्म्माणि १२.५८. [चिती-संज्ञाने (भ्वा०) धातोः क्तः । चित्तं प्रज्ञानाम निघं० ३.९. चित्तं चेततेः नि० १.६. चित्तं विज्ञातम् तै० सं० ४.१.९.१. मैं० २.७.७. मनो वै चित्तम् मै० ४.२.६.]

चित्तिनः विद्वान् संज्ञान (गृहस्थादिमनुष्यगण), सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.५. [चित्तप्राति० मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः । वचनव्यत्ययः]

चित्तिभिः चयनक्रियाभिः ५.४४.१०. चयनैः १.१६४.२९. काष्ठादिचयनैः ३.३.३. संज्ञानैः १७.५३. सम्यग् विज्ञानैस्सह, भा०—विद्यासञ्चयैः १२.३१. **चित्तिम्**=चिन्वन्ति यया ताम् (क्रियाम्) १७.७८. चिन्वन्ति विद्यां यया ताम् (प्रकृतिम्) २.२१.६. कृतचयनां क्रियाम् ४.२.११. ज्ञानम् २७.६. **चित्तिः**=सम्यङ् ज्ञाता ज्ञापको वा (ईश्वरो विद्युद्वा) १.६७.५. [चित्तिभिः कर्मभिः नि० २.९. चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः क्तिन् स्त्रियाम् । चितिः स्रुक् मै० १.९.१. तै० आ० ३.१.१.]

चित्पतिः चेतयति येन विज्ञानेन तस्य पतिः पालयिताऽधिष्ठातेश्वरः ४.४. [चित्-पतिपदयोः समासः चित्=चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः 'कृतो बहुलं वा' इति करणे क्विप् प्रजापतिर्वै चित्पतिः ३.१.३.२२. मनो वै चित्पतिः तै० सं० ६.१.१.९. मै० ३.६.३.]

चित्र ! अद्भुतविद्य (इन्द्र=मनुष्य) ६.४६.२. अद्-

भुतगुणकर्मस्वभाव (इन्द्र=राजन्) ६.४६.५. आश्चर्यगुणकर्मस्वभाव (इन्द्र=राजन्) ४ ३२.२. आश्चर्यरूप (इन्द्र=शत्रुनाशक विद्वज्जन) २७.३८. अद्भुतकर्मकारिन् (इन्द्र=परमैश्वर्यप्रद राजन्) ७.२०.७. अद्भुत (विद्वन्) २७.३९. **चित्रम्**=नानाविधम् (इन्द्रम्=ऐश्वर्यम्) १.१४२.४. अद्भुतं विज्ञानम् ४.२३.२. अद्भुतस्वरूपम् ३४.३३. आश्चर्यगुणयुक्तम् (राधः=धनम्) १.११०.९. चक्रवर्त्तिराज्यश्रिया विद्यामणिसुवर्णहस्त्यश्वादियोगेनाऽद्भुतम् (राधः=धनम्) १.९.५. आश्चर्यभूतम् (रयिं=धनम्) ६.६.७. आश्चर्यवेगादियुक्तम् (रथं=रमणहेतुं यानम्) १.३४.१०. **चित्रस्य**=अदभुतस्य (राधसः=धनस्य) १.२२.७. **चित्रः**=नानावर्णोऽद्भुतः (सविता=सूर्यः) ६.४.६. अद्भुतगुणकर्मस्वभावपरमेश्वरः ३६.४. अद्भुतपुरुषार्थः (अग्निः=विद्वज्जनः) ६.४८.९. शौर्यादिगुणैरद्भुतः (विद्वान्=शिल्पी) १.८८.२. **चित्राः**=अद्भुता अनेकवर्णाः (किरणाः) १.११५.३. **चित्रेभिः**=अद्भुतैः (अभ्रैः=घनैः) ५.६३.३. **चित्रे**=आश्चर्य-व्यवहारे १.३०.२१. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोः 'अमिचिमिशसिभ्यः क्त्रः' उ० ४.१६४. सूत्रेण क्त्रः प्रत्ययः। चित्रं चायनीयं मंहनीयम् नि० २२.६. सर्वाणि हि चित्राण्यग्निः श० ७.४.१.२४. चित्ररूपा वै पशवः जै० ३.१०१. चित्राण्येव नक्षत्राणाम् (रूपम्) जै० २.४२९.

चित्रक्षत्र चित्रमद्भुतं क्षत्रं राज्यं धनं वा यस्य (राजन्) ६.६.७. [चित्र-क्षत्रपदयोः समासः। चित्रं व्याख्यातम्। क्षत्रमपि व्याख्यातम्]

चित्रज्योतिः चित्रमद्भुतं ज्योतिर्यस्य सः (भा०—सूर्यः) १७.८०. [चित्र-ज्योतिस्पदयोः समासः। चित्रं व्याख्यातम्]

चित्रतमम् अत्यन्ताऽऽश्चर्ययुक्तं रूपम् ६.६.७. अतिशयेनाऽऽश्चर्यरूपम् (स्वः=सुखम्) ४.२३.६. **चित्रतमः**=अतिशयेनाऽश्चर्यस्वरूपगुणक्रियायुक्तः (रथः) १.१०८.१. अतिशयेनाश्चर्यगुणकर्मस्वभावः (विद्वज्जनः) ६.३८.१. [चित्रं व्याख्यातम्। तोऽतिशायने तमप्]

चित्रतमा अतिशयाऽद्भुतगुणकर्मस्वभावोत्पादकानि (कर्माणि) ४.१.६. [चित्रं व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने तमप्। ततः 'सुपां सुलुगि' त्याकारः]

चित्रदृशीकम् आश्चर्य-दर्शनम् (अर्णः=जलम्) ६.४७.५. [चित्र-दृशीकपदयोः समासः। चित्रं व्याख्यातम्। दृशीकम्=दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक ईकन् प्रत्ययः]

चित्रध्रजतिः विचित्रगतिः (अग्निः) ६.३.५. [चित्र-ध्रजतिपदयोः समासः चित्रं व्याख्यातम्। ध्रजतिः=ध्रज गतौ (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽतिः प्रत्ययः]

चित्रबर्हिषम् चित्रमाश्चर्यं वर्हिरन्तरिक्षं भवति यस्मात्तद् (धरुणं=पृथिवीम्) १.२३.१३. चित्रमनेकविधं बर्हिरुत्तमं कर्म क्रियते येन तम् (राजानं=प्राणं जीवं वा) १.२३.१४. [चित्र-बर्हिष्पदयोः समासः। चित्रं व्याख्यातम् बर्हिः=अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. उदकनाम निघं० १.१२. पदनाम निघं० ५.२.]

चित्रभानवः आश्चर्यप्रकाशाः (मेधाविनो जनाः) १.८५.११. चित्रा अद्भुता भानवो दीप्तयो येभ्यस्ते (गिरयः) १.६४.७. **चित्रभानुम्** अद्भुतकिरणम् (अग्निं=विद्युतम्) ७.१२.१. **चित्रभानुः**=विचित्रदीप्तिः (अग्निः=पावकः) २.१०.२. अद्भुतप्रकाशः (विवस्वान्=सूर्यः) ७.९.३. चित्रा भानवो दीप्तयो यस्य यस्माद् वा (सविता=ऐश्वर्यवान्राजा सूर्यलोको वायुर्वा) १.३५.४. **चित्रभानो !**=चित्रा आश्चर्यभूता भानवो दीप्तयो यस्य सः (इन्द्र=परमेश्वर सूर्यो वा) १.३.४. चित्रा भानवो विद्याप्रकाशा यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभेश) २०.८७. [चित्र-भानुपदयोः समासः। चित्रं व्याख्यातम्। भानुः=अहर्नाम निघं० १.९. भानुः=भा दीप्तौ (अदा०) धातोः 'दाभाभ्यां नुः' उ० ३.३२. सूत्रेण नुः प्रत्ययः]

चित्रया अनेकविधया (ऊती=ऊत्या) २.१७.८. **चित्रा**=अद्भुतगुणकर्मस्वभावा (उषाः) ४.५२.२. अद्भुतस्वरूपा (उषाः=प्रभातवेला) ४.१४.३. विविधव्यवहारसिद्धिप्रदा (उषाः) १.११३.४. विचित्रस्वरूपोषाः, प्र०—चित्रेत्युषर्नाम, निघं० १.८, १.९२.१२. [चित्रप्राति० स्त्रियां टाप्]

चित्रा चित्राण्यद्भुतानि (सुखानि) १.१२५.६. [चित्रं व्याख्यातम्। ततः 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः]

चित्राभिः अद्भुताभिः (ऊतिभिः=रक्षादिभिः) ४.३२.५. **चित्राम्**=अद्भुतविषयाम् (सुमतिं=प्रज्ञाम्) १७.७४. अद्भुतसुखप्रकाशिकाम् (इषम्) १.६३.८. [चित्रपदं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्। ते ह देवाः समेत्योचुः। चित्रं वाऽअभूम यऽइयतः सपत्नानवधिष्मेति तद्वै चित्रायै चित्रात्वम्, चित्रं ह भवति हन्ति सपत्नान् हन्ति द्विषन्तं भ्रातृव्यं य एवं विद्वांश्चित्रायामाधत्ते श० २.१.२.१७. चित्रा शिरः (नक्षत्रियस्य प्रजापतेः तै०

१.५.२.२. त्वष्टा नक्षत्रमभ्येति चित्राम् तै० ३.१.१.६. चक्षुर्वा एतत् संवत्सरस्य यच्चित्रा पूर्णमासः तां० ५.६.११. इन्द्रस्य चित्रा तै० १.५.१.३. चित्रा नक्षत्रं त्वष्टा देवता मै० २.१३.२०. यः सपत्नवान् भ्रातृव्यवान् वा स्यात् स चित्रायामग्निमादधीत मै० १.६.६. यां तामिष्टकाम् (इन्द्रः) आवृहत् सा चित्राऽभवत् मै० १.६.६.]

चित्रयामम् चित्रा अद्भुता यामाः प्रहरा यस्माद् यद्वा चित्रं यामं प्रापणं यस्य तम् (अग्निं=पावकम्) ३.२.१३. [चित्र-यामपदयोः समासः । चित्रं व्याख्यातम् । यामः==या प्रापणे (अदा०) धातोरौणादिको मन् प्रत्ययः]

चित्रराती चित्राऽद्भुता रातिर्दानं याभ्यां तौ (वायु-विद्युतौ) ३.६२.५. चित्राऽद्भुता रातिर्दानं ययोस्तौ (सभा-सेनेशौ) ६.६२.११. [चित्रा-रातिपदयोः समासः । चित्रा व्याख्यातम् । रातिः=रा दाने (अदा०) धातोः क्तिन् । औकारे द्विवचने परे 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इति पूर्वसवर्णदीर्घः]

चित्रशोचिषम् अद्भुतप्रकाशम् (नाकं=सुखम्) ५.१७.२. [चित्र-शोचिष्पदयोः समासः । शोचिष्= शोचिः=ज्वलतो नाम निघं० १.१७.]

चित्रशोचिः चित्रं विविधं शोचिः प्रकाशो यस्य सः (विप्रः=मेधाविजनः) ६.१०.३. [चित्र-शोचिस्पदयोः समासः । शोचिस्=शोचति ज्वलतिकर्मा (निघं० १.१६) धातोरौणा० इसिः प्रत्ययः]

चित्रश्रवस्तम चित्राण्यद्भुतानि श्रवांस्यतिशयितान्यन्नानि वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) १५.३१. **चित्रश्रवस्तमम्**=चित्राण्याश्चर्यभूतानि श्रवांस्यन्नादीनि यस्मात् तम् (द्युम्नं=धनम्) ११.६२. चित्राण्यद्भुतानि श्रवांसि श्रवणान्यन्नानि वा येन तदतिशयितम् (द्युम्नं= यशस्करं धनं विज्ञानं) वा ३.५६.६. **चित्रश्रवस्तमः**= चित्रमद्भुतं श्रवः श्रवणं यस्य सोऽतिशयितः (अग्निः= परमेश्वरो भौतिको वा) १.१.५. चित्रमाश्चर्यं श्रवः श्रवणं यस्य स चित्रश्रवाः, अतिशयेन चित्रश्रवाः चित्रश्रवस्तमः (अग्निः=परमेश्वरः) वे० भा० न० १.१५. आश्चर्य-श्रवणादि, आश्चर्यगुण, आश्चर्यशक्ति, आश्चर्यरूपवान् और अत्यन्त उत्तम (ईश्वर), आर्याभि० १.५, ऋ० १.१.१.५. चित्राण्यद्भुतानि श्रवांस्यतिशयितान्यन्नादीनि यस्य (अग्निः=विद्युदिव विद्वज्जन) १.४५.६. [चित्र-श्रवस्-पदयोः समासे कृतेऽतिशायने तमप् । चित्रं व्याख्यातम् । श्रवस्=अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०.]

चित्रसेनाः चित्राऽद्भुता सेना येषान्ते (राजपुरुषाः) ६.७५.९. अद्भुतसैन्याः (पितरः=पालनक्षमा राजपुरुषाः) २६.४६. [चित्रा-सेनापदयोः समासः । चित्रा व्याख्यातम् । सेना=सिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः 'कृवृजॄसिद्रुप०' उ० ३.१०. सूत्रेण नः प्रत्ययः । इनेन सहेति वा]

चित्रा विविधाऽऽश्चर्यगुणः (शुचिः=पवित्रोऽग्निः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः १.६६.१. विचित्रस्वरूपोषाः १.९२.१२. विविधव्यवहारसिद्धिप्रदा (उषाः=सुप्रभातः) १.११३.४. **चित्राम्**=अद्भुतसुख-प्रकाशिकाम् (इषम्=इच्छामन्नादिप्राप्ति वा) १.६३.८. अद्भुतविषयाम् (सुमतिं=प्रज्ञाम्) १७.७४. [चित्रापदं व्याख्यातम्]

चित्रामघे ! चित्राण्यद्भुतानि मघानि धनानि यस्यास्तत्सम्बुद्धौ (उषः) प्र०—अत्र अन्येषामपि इति दीर्घः १.४८.१०. [चित्र-मघपदयोः समासः । पूर्वपदस्य दीर्घः । मघम्=धननाम निघं० २.१०.]

चित्रायुः चित्रमायुर्यस्याः सा (विदुषी कन्या) ६.४९.७. [चित्र-आयुपदयोः समासः । आयुः=इण् गतौ (अदा०) धातोः 'एतेर्णिच्च' उ० २.११८. सूत्रेण उसिः प्रत्ययः । आयुः=अन्ननाम निघं० २.७.]

चित्रावसो ! चित्रमद्भुतं वसु धनं विद्यते यस्मिँस्तत्सम्बुद्धावीश्वर ! चित्राणि वसूनि धनानि यस्माद् वा स भौतिकोऽग्निर्वा, प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः ३.१८. [चित्र-वसुपदयोः समासः । पूर्वपदस्य दीर्घः । वसु=वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'शॄस्वृ०' उ० १.१०. सूत्रेण उः प्रत्ययः । वसु=धननाम निघं० २.१०. रात्रिनाम निघं० १.७. रात्रिर्वै चित्रावसुः सा हीयं संगृह्येव चित्राणि वसति श० २.३.४.२२.]

चित्रिणीषु अद्भुतासु सेनासु ४.३२.२. [चित्रं व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थ इनिः । ततः स्त्रियां ङीप्]

चित्रोतयः चित्रा आश्चर्यवद्रक्षणाद्याः क्रिया यासु ताः मात्रादयोऽध्यापिकाः) १२.१०८. [चित्रा-ऊतिपदयोः समासः । ऊतिः=अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः 'ऊति-यूति०' अ० ३.३.९७. सूत्रेण क्तिन् प्रत्ययान्तो निपात्यते]

चित्र्यम् अद्भुते भवम् (रथं=यानम्) ५.६३.७. चित्रेषु अद्भुतेषु भवम् (रयिं=धनम्) ७.२०.७. [चित्रं व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत्]

चिनवत् चिनुयात् ४.२.११. **चिनुहि**=सञ्चयं कुरु

६.५३.४. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लोट्]

चिन्वती चयनं कुर्वती (उषाः=प्रभातवेला) ३.६१.४. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

चिन्वन्तु वर्धयन्तु, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः ४.२४. सञ्चितं कुर्वन्तु २३.३६. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्लोट्]

चिन्वानः वर्धमानः (मनुष्यजन्मप्राप्तो जनः) १३.४७. पुष्टः सन् (अग्निः=राजा) १३.४६. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोः शानच्]

चियन्तु चिन्वन्तु, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणलुगियङादेशश्च १.६०.४. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक्। इयङादेशश्च]

चिश्चा चिश्चेति शब्दानुकरणम् ६.७५.५. [चिश्चा शब्दानुकरणम् नि० ६.१४.]

चीयमानः वर्धमानः (अग्निः=पावक इव राजा) १३.४७. [चिञ् चयने (स्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

चुक्रुधाम कुपिता भवेम २.३३.४. [क्रुध कोपे (दिवा०) धातोर्लिटि उत्तम बहुवचने आडागमश्छान्दसः]

चुच्यवत् च्यावयति २.४१.१०. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि लेटि रूपम्]

चुमुरिम् अत्तारम् (शम्बरं=मेघम्) ६.१८.८. चोरम् ७.१६.४. वक्त्रसंयुक्तम् (दस्युं=बलात्कारिणं चोरम्) २.१५.६.

चुमुरिम् चोरम् ७.१६.४.

चृत नाशय, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.२५.२१. विमुञ्च १२.६३. **चृतन्ति**=ग्रथ्नन्ति १.६७.४. [चृती हिंसाग्रन्थनयोः (तुदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्]

चेकितानः प्रज्ञापकः (विप्रः=मेधाविजनः) ३.२६.७. प्रज्ञापयन् (सूर्यः) ४.१४.२. ज्ञानयुक्तः (विद्वान् राजा) १५.५१. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच्। चेकितानः सत्पतिश्चेकितान इत्ययमग्निः सतां पतिश्चेतयमान इत्येतत् श० ८.६.३.२०]

चेकिताना भृशं चेतयन्ती (उषाः=प्रभातवेला) १.११३.१५. प्राणिनः प्रज्ञापयन्ती (उषाः=प्रभातवेला) ४.१४.३. [कित ज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच्, ततो स्त्रियां टाप्]

चेकिते जानाति, प्र०—अत्र 'वा छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इत्यभ्यासस्य गुणः १.१५.३. विज्ञापयतु ७.६१.१३. [कि ज्ञाने (जु०) धातोर्लट्। छान्दसोऽभ्यासस्य गुणः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

चेतः चेतति स्मरति येन तत् (चित्तम्) ३४.३. **चेतसा**=चित्तेन ५.७३.६. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्। चेतः प्रज्ञानाम निघं० ३.६.]

चेतति संज्ञापयति प्रकाशयति वा, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.१०.२. संजानीते संज्ञापयति वा ३.११.३. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लट्। अन्तर्गतो ण्यर्थः]

चेततः चेतनस्वरूपस्य (सवितुः=जगदीश्वरस्य) २२.११. सञ्ज्ञापकस्य (राज्ञः) ४.५.४. **चेतते**=प्रज्ञापकाय (अध्यापकाय) ३.१४.२. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

चेतथ संजानीध्वं ज्ञापयत वा ५.५६.३. **चेतथः**=चेतयतः प्रकाशयित्वा धारयित्वा च संज्ञापयतः प्र०—अत्र व्यत्ययोऽन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२.५. ज्ञापयथः ४.४५.६. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लोडर्थे लट्]

चेतनम् चेतयति येन तत् (स्वरूपम्) १.१३.११. चेतति येन तम् (यज्ञम्) १.१७०.४. अनन्तविज्ञानादियुक्तम् (अग्निं=परमात्मानम्) ४.७.२. **चेतनः**=ज्ञानादिगुणयुक्तः (जीवात्मा) २.५.१. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः करणे ल्युट्। अन्यत्र 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

चेतन्ती सम्पादयन्ती सती (सरस्वती=वाक्) १.३.११. संज्ञापयन्ती (सरस्वती=विदुषी स्त्री) २०.८५. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

चेतयत् ज्ञापयत् ४.१.६. **चेतयति**=सम्यग् ज्ञापयति १.३.१२. **चेतयध्वम्**=ज्ञापयध्वम् ३.५३.११. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ् अडभावश्च। अन्यत्र लट्लोटौ]

चेतयन्ती प्रज्ञापयन्ती (क्रिया-प्रज्ञायुक्ता वाक्) २६.३३. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छत्रन्तान् ङीप्। चेतयन्ती चेतयमाना नि० ८.१४.]

चेतारः सम्यग् ज्ञानयुक्ता विज्ञापकाः (पूर्णविद्या जनाः) ७.६०.५. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोस्तृच् प्रत्ययः कर्त्तरि]

चेति जानाति, प्र०—अत्र विकरणस्य लुक् ४.४३.६. विज्ञायते ४.३७.४. संज्ञायते, प्र०—अत्र चितिधातोर्लुङ्यडभावश्चिण् च १.६२.१२. संज्ञापयति ३.१२.६. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः सामान्ये लुङ्। अडभावः, चिण् च। अथवा लटि विकरणस्य लुक्]

चेतिष्ठः अतिशयेन चेतयिता (सोमः=ओषधिसमूहः) १.६५.५. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोस्तृच्। ततोऽतिशायने इष्ठन्। ‘तुरिष्ठेमेयस्सु’ अ० ६.४.१५४. सूत्रेण तृ-शब्दस्य लोपः]

चेत्ता ज्ञानस्वरूपः (देवता=सवितेश्वरः) १.२२.५. सम्यग् ज्ञानस्वरूपत्वेन सत्याऽसत्यज्ञापकः (परमेश्वरः) २२.१०. [चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

चेत्यः चितिषु भवः (विद्युदग्निः) ६.१.५. [चिती-प्राति०भवार्थे यत्। चितिः=चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्तिन्]

चो च ५.२९.१३.

चोद प्रेरय १.४८.२. **चोदत्**=प्रेरयेत् ७.२७.३. **चोदत**=प्रेरयत १.१६८.४. [चुद सञ्चोदने (चुरा०) धातोर्लोट्। ‘अनित्यण्यन्ताश्चुरादयः’ इति णिचोऽभावः]

चोदना प्रेरणानि कर्माणि २९.७. [चुद संचोदने (चुरा०) धातोर्ल्युट्। ‘शेश्छन्दसि बहुलम्’ इति शेर्लोपः]

चोदप्रवृद्धः चोदनेन प्रेरणेन प्रवृद्धः (इन्द्रः=सूर्य इव सभेशः) १.१७४.६. [चोद-प्रवृद्धपदयोः समासः। चोदः=चुद संचूर्णने (चुरा०) धातोर्घञ्]

चोदम् प्रेरणाम् २.१३.९. **चोदः**=प्रेरकः (विद्वान् नरः) ५.६१.३. [चुद संचूर्णने (चुरा०) धातोर्भावे घञ्। अन्यत्र कर्त्तरि अच्]

चोदय प्रेरय प्रापय १.९.५. **चोदयः**=प्रेरय ६.२६.३. **चोदयत्**=प्रेरयति, प्र०—अत्र लडर्थे लङड-भावश्च ७.१६. **चोदयत**=प्रेरयत १.१८८.८. [चुद संचोदने (चुरा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लङ् अडभावश्च]

चोदयन् प्रेरयन् (सेनापतिः) १.८०.५. [चुद सञ्चूर्णने (चुरा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

चोदयन्मति प्रज्ञाप्रेरकम् (अग्नि=विद्वज्जनम्) ५.८.६.

चोदयसि प्रेरयसि १.९४.१५. **चोदयासे**=चोदय ६.४६.१३. [चुद सञ्चूर्णने (चुरा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लेट्]

चोदयित्री शुभगुणग्रहणप्रेरिका (सरस्वती=वाणी) १.३.११. प्रेरयित्री (विदुषी स्त्री) २०.८५. [चुद सञ्चूर्णने (चुरा०) धातोर्णिचि कर्त्तरि तृचि स्त्रियां ङीप्]

चोदस्व प्रेरयस्व १.१०४.७. **चोदः**=चुद्यात् प्रेरयेत् १.१४३.६. **चोदामि**=प्रेरयामि ३.४२.८. [चुद संचूर्णने (चुरा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लडपि। ‘अनित्यण्यन्ताश्चुरादयः’ इति णिचोऽभावः]

चोदिता प्रेरकः (परमेश्वरः) १.५१.८. उत्तम कामों में प्रेरणा करने वाला (ईश्वर), आर्याभि० १.१४. **चोदितारा**=प्रेरकौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.४३.९. [चुद संचूर्णने (चुरा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

चोदीः शुभे कर्मणि प्रेरयसि १.६३.४. [चुद संचूर्णने (चुरा०) धातोर्लुङि मध्यमैकवचनम्। अडभावश्छान्दसः। अनित्यण्यन्ताश्चुरादय इति णिचोऽभावश्च]

चोष्कूयते भृशमाह्वयति ६.४७.१६. **चोष्कूयसे**=सब धन के दाता हो, अपने सेवकों पर दया कर रहे हो, आर्याभि० १.२८, ऋ० ५.८.१७.४१. [चोष्कूयते पदनाम निघं० ४.३. कु शब्दे (तुदा०) धातोर्यङन्ताल् लट्। अभ्यासस्य षुगागमश्छान्दसः। चोष्कूयते व्युदस्यति नि० ६.२२.]

चोष्कूयमाणः सर्वानाप्रावयन् (इन्द्रः=राजा) प्र०–‘ष्कुञ् आप्रवणे’ इत्यस्य यङन्तं रूपम् १.३३.३. [चोष्कूयमाणः पदनाम निघं० ४.३. ष्कुञ् आप्रवणे (क्रया०) धातोर्यङन्ताच् शानच्। चोष्कूयमाणः ददत्। चोष्कूयतेश्चर्करीतवृत्तम् नि० ६.२२.]

च्यवतानः च्यावयन् सन् (अर्यः=स्वामी) ५.३३.९.

च्यवनः गन्ता (राजकर्मचारी) ६.१८.२. च्यावयिता (शमादि शुभकर्माचारी जनः) २.२१.३. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः ‘कृत्यल्युटो बहुलमि’ ति कर्त्तरि ल्युट्। औणादिको युच् वा। च्यवनः ऋषिर्भवति, च्यावयितां स्तोमानां च्यवानमित्यप्यस्य निगमो भवति नि० ४.१९. च्यवनो वै दाधीचोऽश्विनोः प्रिय आसीत् तां० १४.६.१०. सा (सुकन्या) होवाच (हे अश्विनौ) पतिं (च्यवनं) नु मे पुनर्युवाणं कुरुतम् श० ४.१.५.११.]

च्यवना प्राप्तानि (भुवनानि) २.१२.४. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युटि जसः स्थाने भूतस्य शेर्लोपः]

च्यवन्त च्यवन्ते १.४८.२. **च्यवन्ते**=प्राप्नुवन्ति १.१६७.८. **च्यवम्**=प्राप्नुयाम् १.१६५.१०. **च्यवस्व**=गच्छ ४.३४. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्, अडभावः। अन्यत्र लट् लोट् च। च्यवते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

च्यवानम् गच्छन्तम् (रथम्) १.११७.१३. पृच्छन्तम् (विद्यार्थिजनम्) ५.७५.५. गन्तारम् (युवानं जनम्) १.११८.६. **च्यवानात्**=गमनात् ५.७४.५. पलायमानात् (राजपुरुषात्) १.११६.१०. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः शानच्। आगम शासनस्यानित्यत्वान्मुकोऽभावः। अन्यत्र भावे ल्युटि दीर्घश्छान्दसः]

च्यवाना सद्यो गन्तारौ (अध्यापकोपदेशकौ) ६.६२.७. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति कर्त्तरि ल्युट् । दीर्घश्छान्दसः । 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः । च्यवाना बाहुनाम निघं० २.४. च्यवानमित्यपि (च्यावयिता स्तोमानाम) नि० ४.१९]

च्यावयति चालयति ७.१९.१. **च्यावयथ**=चालयथ १.१६८.६. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

च्यावयन् प्रचालयन् निपातयन् (राजा) ३.३०.४. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

च्यावयन्ति पातयन्ति १.३७.११. प्रचालयन्ति १.६४.३. **च्यावयन्ते**=गमयन्ति ६.३१.२. **च्यावयसि**= प्रापयसि ३.४३.७. **च्यावयामः**=प्रापयामः ४.१७.१६. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

च्यावयामसि प्रापयामः ४.३२.१८. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लटि उत्तमबहुवचनम् । 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

च्यौत्ना बलानि, प्र०—च्यौत्नमिति बलनाम, निघं० २.९, ६.४७.२. [च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'जनिदाच्यु०' उ० ४.१०४. सूत्रेण त्नण् प्रत्ययः]

च्यौत्नानि स्तोत्राणि १.१७३.४. च्यवयन्ति शत्रवो येभ्यस्तानि बलानि ७.१९.५. **च्यौत्नाय**=च्यवनाय गमनाय ६.१८.८. [च्यौत्नमिति बलनाम निघं० २.९.]

छदयत् बलयति ६.४९.५. सत्करोति, प्र०—छदयतीत्यर्चतिकर्मा, निघं० ३.१४, ३.९.७. **छदयन्ति**=ऊर्जयन्ति ५.७९.५. **छदयाथ**=अविद्यां दूरीकुरुत १.१६५.१२. [छदयति (ते) अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. छद अपवारणे (चुरा०), छद संवरणे (चुरा०), छदिर् अर्जने (भ्वा०) धातोर्वा णिचि धातोर्लेट् । अन्यत्र लट्]

छदिः विघ्नाऽपवरणम् १५.५. अपवारणम् १४.९. दुःखाऽपवारकत्वेन प्रापकः प्रापिका वा (यजमानः=यज्ञकर्त्ता पुरुषस्तत्पत्नी वा) ५.२८. [छद अपवारणे (चुरा०) धातोरौणादिक इसिः प्रत्ययः । छदिः=गृहनाम निघं० ३.४. अतिच्छन्दा वै छदिश्छन्दः सा हि सर्वाणि छन्दांसि छादयति श० ८.२.४.५. अन्तरिक्षं वै छदिश्छन्दः श० ८.५.२.६. सिंहो वयश्छदिश्छन्दः तै० सं० ४.३.५.२. मै० २.८.२.]

छन्त्सत् संवृणुयात् १.१३२.६. ऊर्जेत् ८.५३. **छन्त्सि**=ऊर्जयसि १.१६३.४. अर्चसि २९.१५. [छन्त्सत् कान्तिकर्मा निघं० २.६. छदिर् ऊर्जने (भ्वा०), छदयति अर्चतिकर्मा (नि० २.१४.) धातोर्वा लेटि रूपम्]

छन्दसा चन्दन्त्यानन्दन्ति येन तेन (कर्मणा) ५.२. स्वच्छन्देन ११.९. स्वच्छन्दताप्रदेन (यज्ञेन) २.२५. स्वातन्त्र्याऽऽनन्दप्रदेन (यज्ञेन) १.२७. स्वच्छन्दतया १९.७४. स्वच्छेनाऽर्थेन १३.५३. सुखकारकेण (यज्ञेन) सुखसम्पादकेन (यज्ञेन) ५.२. आह्लादकरेण (भा०—धर्मानुष्ठानेन) २८.४५. भा०—धर्मेण २८.४४. अत्यानन्दप्रकाशेन १.२७. आह्लादकारिणा (यज्ञेन) प्र०—'चन्देरादेश्च छः' उ० ४.२२६. अनेनाऽसुन् प्रत्ययः १.२७. भा०—सत्क्रियया ११.६०. **छन्दः**=स्वीकरणम् (रथन्तरं=यदस्मिँल्लोके तारकं वस्त्वस्ति तत्), प्रकाशनम् १५.५. प्रकाशकम् (काव्यम्), प्रकाशकरम् (मनः=संकल्पो विकल्पः) १५.४. स्वाधीनः (पुरुषः) १४.९. स्वाधीनम् (वयः= जीवनम्, स्वातन्त्र्यम्, प्रदीपनम् १५.५. बलम् १४.९. बलकारि (अन्नादिकम्) १४.१८. बलकरम् (इन्द्रियम्) २८.२५. आनन्दम् १४.९. आनन्दकरम् (त्रिककुप्) १५.४. उपदेशः, परिग्रहणम्, उत्साहः, उत्साहनम्, पराक्रमम्, स्वाच्छन्द्यम्, विद्याधर्मशमादिकर्म १४.९. स्वच्छन्दं स्वतन्त्रं वस्तु, ऋ० भू० १४७. सत्यप्रदीपकः (परिभूः=सर्वतः पुरुषार्थी) १५.४. आह्लादकारी व्यवहारः १५.४. सुखप्रदम् (वरिवः=सत्यसेवनम्) १५.४. विज्ञानम् १५.४. सुखसाधिका(सर्वा दिशः) १५.४. सुखसाधकः (लोकः)१५.४. सुखावहम् (विघ्नापवरणम्) १५.५. संस्थापनम् १५.५. तृप्तिकरं कर्म १५.४. प्रतिष्ठाप्रदम् (यशः) १५.४. जलमिव शान्तिः १५.४. अर्थकरम् (समुद्रः=सागर इव गाम्भीर्यम्) १५.४. ऊर्जनम् १५.४. आह्लादनम् १४.१०. प्रकाशः १४.१८. प्रयतनम् (एवः=प्रापणम्) १५.५. सृष्टिविद्याबलकारकम् (विज्ञानम्) १२.५. स्वाछन्द्य म् १४.९. प्रदीपनम् १४.९. **छन्दांसि**=ऋग्यजुःसामाऽथर्वाणश्चतुरो वेदान् ६.२१. उष्णिगादीनि १२.४. अथर्ववेदः ३१.७. **छन्दोभिः**=गायत्र्यादिभिर्विद्वद्भिः स्तोतृभिर्वा, प्र०—छन्द इति स्तोतृनाम, निघं० ३.१६, १९.२८. प्रज्ञापकैर्गायत्र्यादिभिः १९.२०. [चदि आह्लादने दीप्तौ च (भ्वा०) धातोः 'चन्देरादेश्च छः' उ० ४.२१९. सूत्रेण असुन्, धातोरादेश्च छकारादेशः । छन्दः स्तोतृनाम निघं० ३.१६. छन्दति अर्चतिकर्मा निघ० ३.१४. छन्दांसि च्छादनात् नि० ७.१२. छन्दांसि छन्दयन्तीति वा दे० ३.१९. तान्यस्मै (प्रजापतये) अच्छदयंस्तानि यदस्माऽअच्छदयंस्तस्माच्छन्दांसि श० ८.५.२.१. (देवाः) तं (सोमम्) छन्दोभिरसुवन्त तच्छन्दसां छन्दस्त्वम् तै० २.२.८.७. न वा एकेनाक्षरेण छन्दांसि वियन्ति न द्वाभ्याम् ऐ० १.६.२.३७. नाक्षराछन्दो

व्येत्येकस्मान्न द्वाभ्यां न स्तोत्रियया स्तोमः शा० १२.२.३.३. ह्येकेनाक्षरेण न्यच्छन्दो भवति न द्वाभ्याम् कौ० २७.१. छन्दांसि वाऽस्य सप्त धाम प्रियाणि (यजु० १७.७९.) श० ९.२.३.४४. सप्त वै छन्दांसि कौ० १४.५.१७.२. सप्त छन्दांसि श० ९.५.२.८. छन्दांसि वै हारियोजनः (ग्रहः) श० ४.४.३.२. छन्दांसि वै संवेशः उपवेश तै० १.४.६.४. छन्दांसि वै व्रजो गोस्थानः तै० ३.२.९.३. छन्दांसि वै वाजिनः गो० उ० १.२०. तै० १.६.३.९. पशवो वै छन्दांसि श० ७.५.२.४२, ८.३.१.१२. पशवश्छन्दांसि ऐ० ४.२१. कौ० ११.५. तां० १९.५.११. पशवा वै देवानां छन्दांसि श० ४.४.३.१. पशवो वै देवानां छन्दांसि तद् यथेदं पशवो युक्ता मनुष्येभ्यो वहन्त्येवं छन्दांसि युक्तानि देवेभ्यो यज्ञं वहन्ति श० १.८.२.८. छन्दांसि वै दिशः श० ८.३.१.१२, ९.५.१.३९. रसो वै छन्दांसि श० ७.३.१.३७. इन्द्रियं वीर्यं छन्दांसि तां० ६.९.२६. प्राणाः वै छन्दांसि कौ० ७.९.१७.२. प्राणाः छन्दांसि कौ०: ११.८. छन्दांसि वै देवानां पवित्राणि तां० ६.६.६. छन्दांसि देव्यः श० ९.५.१.३९. छन्दांसि वै देविकाः कौ० १९.७. छन्दांसि वै साध्या देवास्तेऽग्रेऽग्निनाग्निमयजन्त ते स्वर्गं लोकमायन् ऐ० १.१६. छन्दांसि वै देवाः प्रातर्यावाणः श० ३.९.३.८. छन्दांसि वै देवा वयोनाधाः (यजु० १४.७.) छन्दोभिर्हीदं सर्वं वयुनं नद्धम् श० ८.२.२.८. छन्दांसि वै ग्नाश्छन्दोभिर्हि स्वर्गं लोकं गच्छन्ति श० ६.५.४.७. देवा वै छन्दांस्यब्रुवन् युष्माभिः स्वर्गं लोकमयामेति तां० ७.४.२. सर्वैर्वै छन्दोभिरिष्ट्वा देवाः स्वर्गं लोकमजयन् ऐ० १.९. यातयामनि वै देवैश्छन्दांसि छन्दोभिर्हि देवाः स्वर्गं लोकं समाश्नुवत श० ३.९.३.१०. छन्दोभिर्वै देवा आदित्यं स्वर्गं लोकमहरन् तां० १२.१०.६. छन्दोभिर्हि स्वर्गं लोकं गच्छन्ति श० ६.५.४.७. प्रजापतेर्वा एतान्यंगानि यश्छन्दांसि ऐ० २.१८. यानि क्षुद्राणि छन्दांसि तानि मरुताम् तां० १७.१.३. एकाक्षरं वै देवानामवमं छन्द आसीत् सप्ताक्षरं परमन् नवाक्षरमसुराणामवमं छन्द आसीत् पञ्चदशाक्षरं परमम् तां० १२.१३.२७. छन्दांसि समिद्धानि देवेभ्यो यज्ञं वहन्ति श० १.३.४.६. हिरण्ययीमिति हिरण्मयी ह्येषा या छन्दोमयी श० ६.३.१.४१. हिरण्यममृतानि छन्दांसि श० ६.३.१.४२. छन्दांसि वै लोमानि श० ६.४.१.६, ६.७.१.६. बृहती वाव छन्दसां स्वराट् तां० १०.३.८. स्वाराज्यं छन्दसां बृहती तां० २४.६.३. श्रीर्वै यशश्छन्दसां बृहती ऐ० १.५. छन्दांसि सावित्री गो० पू० १.३३. जै० उ० ४.२७.७. पञ्च च्छन्दांसि रात्रौ शंसन्त्यनुष्टुभं गायत्रीमुष्णिहं त्रिष्टुभं जगतीमित्येतानि वै रात्रिच्छन्दांसि कौ० ३०.११. कतम एते देवा इति छन्दांसीति ब्रूयाद् तै० सं० २.६.९.३. छन्दप्रतिष्ठानो वै यज्ञः मै० ३.६.५. छन्दसां धेनवः (रूपम्) काठ० १२.४. छन्दांसि खलु वै सोमस्य राज्ञः साम्राज्यो लोकः तै० सं० ३.१.२.१. छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् (यज्ञात्) काठसंक० १००.१८. छन्दांसि देविकाः काठ० १२.८. मै० ४.३.५. कौ० १९.७. श० ९.५.१.३९. छन्दांसि वरुणपाशाः मै० २.३.३. काठ० १२.६. छन्दांसि वै धुरः मै० ३.८.४. जै० ३.२१०. छन्दांसि वै पञ्चजनाः मै० १.४.९. काठ० ३२.६. छन्दांसि वै व्रजो गोस्थानः मै० ४.१.१०. छन्दांसि वै सर्वा देवताः जै० १.३४२. छन्दोभिर्यज्ञस्तायते जै० २.४३१.]

छन्दस्याम् स्वतन्त्रतायुक्त वाणी को, सं० वि० १९६, ९.११३.६. [छन्दस् इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप्]

छन्दःस्तुभः यो छन्दोभिः स्तोभनं स्तवनं कुर्वन्ति (आप्ता जनाः) ५.५२.१२. [छन्दस् उपपदे स्तोभति अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोः क्विप् कर्त्तरि]

छन्दुः स्वच्छन्दः (अध्यापक उपदेशको वा) १.५५.४.

छन्दोनामानाम् यानि छन्दसामुष्णिगादीनां नामानि तेषाम् प्र०—अत्र 'अनसन्तान्नपुंसका०' अ० ५.४.१०३. इति सूत्रेण समासान्तष्टच् प्रत्ययः ४.२४. [छन्दस्-नामन्पदयोः समासः। समासान्तष्टच् प्रत्ययः]

छर्दिषा सत्यासत्यदीपकेन (स्वस्त्या=सत्क्रियया) १५.६४. प्रदीप्तेन (शन्तमेन=कर्मणा) १३.१९. प्रकाशेन १४.१२. **छर्दिः**=दीप्तियुक्तं शस्त्रास्त्रादिकम् १.११४.५. शुद्धाऽऽच्छादनादिना सन्दीप्यमानं गृहम् १.४८.१५. गृहम्, प्र०—छर्दिरिति गृहनाम, निघं० ३.४, ४.५३.१. [छर्दिः गृहनाम निघं० ३.४. छदी संदीपने (चुरा०) धातोः 'अर्चिशुचिहुसृपि०' उ० २.१०८. सूत्रेण इसिः प्रत्ययः]

छागम् छयति छिनत्ति रोगान् येन तम् २८.२३. छागदुग्धम् २१.५९. दुःखं छेत्तुमर्हम् (अजम्) २१.४०. छेदकम् अजादिपशुम्) २८.४६. **छागस्य**=अजादेः २१.४१ **छागः**=छेदकः २५.२६. **छागेन**=दुःखच्छेदकेन (भा०—छाग-दुग्धादिना) २१.६०. छेदनेन २८.२३. अजादिदुग्धेन १९.८९. **छागैः**=पशूनां पय आदिभिः २१.४२. [छो छेदने (दिवा०) धातोः 'छापूखडिभ्यः कित्' उ० १.१२४. सूत्रेण गन्प्रत्ययः। छागप्राति० अवयवे विकारे वार्थे 'प्राणिरजतादिभ्योऽञ्' अ० ४.३.१५४. सूत्रेणाञ्-

प्रत्ययः। बृहस्पतये छागमालभते काठ० १६.१३. यत्र बृहस्पतेश्छागस्य हविषः प्रिया धामानि काठ० १८.२१. लोहितग्रीवश्छागैः (त्वावतु) तै० सं० ७.४.१२.१. काठ० ४४.१.]

छादयामि अपवृणोमि १७.४६. [छद अपवारणे (चुरा०) धातोर्लट्]

छाया आश्रयः २५.१३. दुःखच्छेदकाश्रयो वा ५.२८. **छायाम्**=गृहम्, प्र०—छायेति गृहनाम, निघं० ३.४, २.३३.६. आश्रयम् २.८. **छायायाम्**=आश्रये १५.६३. [छो छेदने (दिवा०) धातोः 'माछाशसिभ्यो यः' उ० ४.१०६ सूत्रेण यः प्रत्ययः। छाया गृहनाम निघं० ३.४. मृत्युर्वै तमश्छाया ऐ० ७.२२. तद्वापि छायां पर्यवेक्षेतात्मनोऽप्रणाशाय जै० १.१६७. तस्मादु छायामभि च ष्ठीवेदभि च मेहेत जै० २.३७०.]

छायेव यथा शरीरैः सह छाया वर्त्तते तथा १.७३.८. [छाया इवपदयोः समासः]

छिद्रम् इन्द्रियम् २३.४३. छिनत्ति यत् तत् (भा०—दुर्व्यसनम्) १२.५४. निर्बलता, रोग, चाञ्चल्य को, आर्याभि० २.३६, ३६.२. न्यूनत्वम् ३६.२. [छिदिर् द्वैधीकरणे (रुधा०) धातोः 'स्फायितञ्जि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक् प्रत्ययः]

छिद्रा छिद्राणि (गात्राणि=अङ्गानि) २५.४३. [छिद्रं व्याख्यातम् ततः शेर्लोपः]

छिन्नम् द्वैधीकृतम् (यज्ञम्) ८.६१. [छिदिर् द्वैधीकरणे (रुधा०) धातोः क्तः। 'रदाभ्यां निष्ठा तः०' इति दकारतकारयोर्नकारः]

छृन्दन्तु प्रदीप्यन्ताम् ११.३५. [उच्छृदिर् दीप्तिदेवनयोः (रुधा०) धातोर्लोट्]

छेदि छिन्द्याः २.२८.५. **छेद्म**=छिन्द्याम् १.१०६.३. [छिदिर् द्वैधीकरणे (रुधा०) धातोः कर्मणि लुङ्। अडभावश्चिण् च। अन्यत्र छिदिर् धातोर्लिङि छान्दसं रूपम्]

छ्यन्तु छिन्दन्तु २३.४१. [छो छेदने (दिवा०) धातोर्लोट् 'ओतः श्यनि' सूत्रेणोकारस्य लोपः]

जक्षतः भक्षण-हसने कुर्वतः (स्वकीयभृत्यान्) १.३३.७. जक्ष भक्षहसनयोः (अदा०) धातोः शत्रन्ताद्द्वितीयाबहुवचनम्]

जक्षिवांसः अन्नं जग्धवन्तः (गृहस्था जनाः) ८.१६. [अद भक्षणे (अदा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः। 'लिटचन्यतरस्याम्' अ० २.४.४०. सूत्रेण घस्लृ आदेशः। 'वस्वेकाजाद्घसाम्' अ० ७.२.६७. सूत्रेण इडागमः। जक्षिवांसः खादितवन्तः नि० १२.४२.]

जगच्छन्दसम् जगच्छन्दोऽवगमकम् (अध्यापकम्) ८.४७.

जगत् संसारम् १६.३. यद् गच्छति तत् (चेतनं सन्तानादिगणम्) १८.५. मनुष्यादिकं जङ्गमं राज्यम् १६.४. जङ्गमं पुत्रगवादिकम् ३३.३४. सर्वं विश्वम् ४.५३.३. **जगतः**=गच्छतः (संसारस्य) १.१५६.३. चर जगत् का, आर्याभि० २.५०, २५.१८. स्थावर जड़ अप्राणि जगत् का, आर्याभि० १.४४, ऋ० १.७.१२.५. **जगताम्**=मनुष्यादिसंसारस्थानाम् २.३१.५. जङ्गमानां मनुष्यादीनाम् १३.१८. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च' अ० ३.२.१७८. वा० सूत्रेण क्विप् प्रत्यये धातोर्द्विवचनम्। जगतः मनुष्यनाम निघं० २.३. जगत् जङ्गमम् नि० ६.१३. सर्वं वा ऽ इदमात्मा जगत् श० ४.५.६.८. इयं (पृथिवी) वै जगती, अस्यां हीदं सर्वं जगत् श० ६.२.१.२६. यः पुरुषमात्रस्स जगच् चित् काठ० २१.४. जगत्=स्थावरं जङ्गमं च नि० ६.१२. नि० ५.३.]

जगती गच्छति सर्वं जगद् यस्यां सा (छन्दः=पराक्रमम्) १४.१८. एतच्छन्दोऽभिहितमर्थम् १०.१२. जगदुपकारकम् (छन्दः=आह्लादनम्) १४.१०. जगद्विस्तीर्णा (विज्ञानक्रिया) २३.३३. जगद्गता (जगती छन्दः) १३.५६. **जगतीभिः**=उत्तमाभिरोषधीभिः १.२१. **जगतीषु**=सृष्टिषु ६.७२.४. विविधासु पृथिव्यादिषु सृष्टिषु १.१५७.५. **जगतीम्**=एतच्छन्दोऽभिहितां नीतिम् ६.३३. **जगत्याम्**=जगदन्वितायां सृष्टौ ३८.१८. गम्यमानायां सृष्टौ ४०.१. संसार में, स० प्र० २३८, ४०.१. **जगत्यै**=जगद्रक्षणायै क्रियायै २४.१२. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'वर्त्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च' उ० २.८४. सूत्रेण अतिः प्रत्ययः शतृवच्च कार्यम्। धातोर्जगादेशः। शतृवद्भावान् ङीप्। जगती गो नाम। निघं० २.११. गततमं छन्दः जलचरगतिर्वा, जलगल्यमानोऽसृजदिति च ब्राह्मणम् नि० ७.१३. जगती गततमं छन्दो जज्जगतिर्भवति क्षिप्रगतिर्जज्मला कुर्वन्नसृजदेति हि ब्राह्मणम्। दे० ३.१७. तदिदं सर्वं जगदस्यां तेनेयं जगती श० १.८.२.११. इयं (पृथिवी) वै जगती, अस्यां हीदं सर्वं जगत् श० ६.२.१.२६, ६.२.२.३२. इयं (पृथिवी) वै जगती श० १२.८.२.२०. जगती हीयम् (पृथिवी) श० २.२.१.२०. या सिनीवाली सा जगती ऐ० ३.४७. या गौः सा सिनीवाली

सा एव जगती ऐ० ३.४८. ब्रह्म ह वै जगती गो० उ० ५.५. जगत्य ओषधय: श० १.२.२.२. पशवो वै जगती गो० उ० ५.५. ष० २.१. पशवो जगती कौ० १६.२. श० ३.४.१.१३. तै० ३.२.८.२. जागता वै पशव: ऐ० १.५, ३.१८, ४.३. जागता हि पशव: ऐ० ५.६. जागता: पशव: ऐ० १.२८. कौ० ३०.२. ष० ३.७. गो० उ० ४.४६. जगती वै छन्दसां परमं पोषं पुष्टा तां० २१.१०.९. जागतोऽश्व: प्राजापत्य: तै० ३.८.८.४. जागतो वै वैश्य: ऐ० १.२८. जगती छन्दो वै वैश्य: तै० १.१.९.७. ता वा एता जगत्यो यद् द्वादशाक्षराणि पदानि ता० १६.११.१०. यस्य द्वादश ता जगतीम् कौ० ९.२. द्वादशाक्षरपदा जगती ष० २.१. द्वादशाक्षरा जगती तां० ६.३.१३. द्वादशाक्षरा वै जगती ऐ० ३.१२. गो० उ० ३.१०. तै० ३.८.१२.२. श० ४.१.१.१२. अष्टाचत्वारिंशदक्षरा वै जगती श० ६.२.२.३३. अष्टाचत्वारिंशदक्षरा जगती तै० ३.८.८.४. जै० उ० ४.२.८. जगती सर्वाणि छन्दांसि श० ६.२.१.३०. जगती प्रतीची (दिक्) श० ८.३.१.१२. प्रतीचीमारोह । जगती त्वावतु वैरूपं साम सप्तदशस्तोमो वर्षा ऋतुर्विड् द्रविणम् श० ५.४.१.५. आदित्यास्त्वा पश्चादभिषिञ्चन्तु जागतेन छन्दसा तै० २.७.१५.५. आदित्या जगतीं समभरन् जै० उ० १.१८.६. जगत्यादित्यानां पत्नी गो० उ० २.९. जागतोऽसौ (द्यु) लोक: कौ० ८.९. साम्नामादित्यो देवतं तदेव ज्योतिर्जागतं छन्दो द्यौ: स्थानम् गो० पू० १.२९. जागतो वा एष य एष (सूर्य:) तपति कौ० २५.४. त्रैष्टुब्जागतो वा आदित्य: तां० ४.६.२३. जगती छन्द आदित्यो देवता श्रोणी श० १०.३.२.६. श्रोणी जगत्य: श० ८.६.२.८. अनूकं जगत्य: श० ८.६.२.३. योऽयमर्वाङ् प्राण एव जगती श० १०.३.१.१. गवाशीर्जगती तां० १२.१.२. मध्यं जगती ष० २.३. वलं वै वीर्यं जगती कौ० ११.२. वलं वीर्यमुपरिष्टाज्जगती कौ० ११.२. रैभ्या जगती (अपुनीत) जै० उ० १.५७.१. जागतं श्रोत्रम् तां० २०.१६.५. जागतमु वै तृतीयसवनम् । गो० उ० २.२२. ऐ० ६.२, १२. जागतं हि तृतीयसवनम् कौ० १६.१. ष० १.४. तां० ६.३.११. गो० उ० ४.१८. जागता वै ग्रावाण: कौ० २९.१. जगत्येव यश: गो० पू० ५.१५. पुंसो वा एतद् रूपं यद् वृहत् स्त्रियै जगती जै० ३.२६१. प्रजननं जगती जै० १.९३. ष० २.३.]

जगन्थ गच्छ, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्यय: १८.७१. अहन् १.५२.१५. भा०—उपदिश २३.४९. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचनम् । थलि भारद्वाजनियमाद् इड्विकल्प:]

जगन्वान् गन्ता (इन्द्र:=ईश्वर:) ३.३८.६. भृशं गन्ता (कृतब्रह्मचर्यो जन:) १.११७.१५. विज्ञातवान् ऋ० भू० २१६. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट: स्थाने क्वसु: । 'विभाषा गमहन्०' अ० ७.२.६८. सूत्रेणेड्विकल्प: । 'मो नो धातो' रिति नकार:]

जगन्वांसा गच्छन्तौ (विद्वज्जनौ) ५.६४.१. ['जगन्वान्' इति व्याख्यातम् । ततो प्रथमाद्विवचनम् । 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेश:]

जगम्यात् पुन: पुन: प्राप्नुयात् १.६२.१३. भृशं गच्छेत् १.१०४.२. यथावत् प्राप्नुयात् ५.३३.५. पुन: पुनर्भृशं ज्ञानानि गमयेत् १.६०.५. अ०—समन्तात्प्राप्नुयात् ९.१९. **जगम्याम्**=भृशं गच्छेयम् १.११६.२५. **जगम्यु:**=भृशं गच्छेयु: १.१७९.२. भृशं प्राप्नुयु:, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति नुगागमाऽभाव: १.१७९.१. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि लिङि रूपम् । 'वाछन्दसी' ति अभ्यासस्य नुगागमो न भवति]

जगाम गच्छेत् ५.३१.१२. गच्छति १.१४५.१. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातो: सामान्ये लिट्]

जगार निगिलति ४.१८.८. [गॄ निगरणे (तुदा०) धातोर्लिट्]

जगृधु: अभिकाङ्क्षेयु: २.२३.१६. [गृधु अभिकांक्षायाम् (दिवा०) धातो सामान्ये लिटि प्रथमबहुवचनम्]

जगृभथु: गृह्णीत:, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्यय: ६.७२.४. **जगृभु:**=गृह्णीयु: ५.२.५. **जगृभ्म**=गृह्णीयाम १.१३९.१०. **जगृभ्यात्**=भृशं गृह्णीयात् ५.४२.२. **जगृभ्रिरे**=गृह्णीयु: ४.७.२. **जगृभ्रे**=गृह्णीयु: १.१४८.३. गृह्णन्ति ७.४.३. गृह्णन्तु ५.३२.११. [ग्रह उपादाने (क्रया०) धातोर्लिट् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' इति हकारस्य भकार:]

जगृभ्वान् गृहीतवान् ४.२३.४. [ग्रह उपादाने (क्रया०) धातोर्लिट: स्थाने क्वसु: । हकारस्य भकारादेशश्छान्दस:]

जग्धम् भुक्तम् (अन्नम्) १.१४०.२. [अद भक्षणे (अदा०) धातो: क्त: प्रत्यय: । 'अदो जग्धिर्ल्यप्ति किति' इति जग्धिरादेश:]

जग्मय: गमनशीला: (देवा:=विद्वज्जना:) १.८९.७. शीघ्रगमनशीला: (वायव:) १.८५.८. सङ्गन्तार: (देवा:=विद्वांसो जना:) २५.२०. **जग्मये**=विज्ञानाऽधिक्याय

(विदुषे=आप्ताय विपश्चिते) ६.४२.१. **जग्मिः**=गन्ता (इन्द्रः=सूर्य इव राजा) ७.२०.१. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'आदृगमहनजनः०' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च कार्यम् । जग्मिः गन्ता नि० ५.१८.]

जग्मिरे संगच्छन्ते ६.१९.५. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जग्मुषः गन्तॄन्, प्राप्तान्, वेदितॄन् (सर्वमनुष्यान्) ७.३९.३. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः द्वि०-बहुवचनम्]

जग्मुषी गन्तुं शीला (योषा=युवतिः) १.११९.५. **जग्मुषीः**=प्राप्तुं योग्याः (गिरः=भाषाः) १.१२२.१४. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः । ततः स्त्रियां ङीप्]

जग्मुः जानीयुः प्राप्नुयुर्वा ३.१.१३. प्राप्नुवन्ति ५.५६.२. गताः १८.५८. गतवन्तः १८.५२. गच्छेयुः ६.२४.६. गच्छन्ति १.३२.२. प्राप्नुवन्ति ४.३३.६. प्राप्नुयुः ४.४१.८. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः सामान्ये लिटि प्रथमबहुवचने रूपम्]

जग्मे संगच्छते १.१६४.८. [गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जग्रभत् गृह्णाति ३२.२. [ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लेट् । हस्य भकारो द्विर्वचनञ्च छान्दसम् । विकरण-व्यत्ययश्च]

जग्रसानान् शत्रुसेना ग्रसमानान् (शूरवीरान्) ४.१७.१. [ग्रसु अदने (भ्वा०) धातोर्लिटः कानचि द्वितीया बहुवचनम्]

जग्रसीत् ग्रसते ५.४१.१७. [ग्रसु अदने (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अडभावो द्विर्वचनं च छान्दसम्]

जघना ऊरुणी, प्र०—जघनं जघन्यतेः, नि० ९.२०. अत्र 'हन्तेः शरीराऽवयवे द्वे च' उ० ५.३२. अनेनाऽच-प्रत्ययो द्वित्वं 'सुपां सुलुग्०' इति त्रिषु विभक्तेराकारादेशश्च १.२८.२. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हन्तेः शरीरा-वयवे द्वे च' उ० ५.३२. सूत्रेण अच्प्रत्ययः, धातोर्द्वित्वञ्च । स्त्रियां टाप् । जघनं जघन्यतेः नि० ९.२०.]

जघनान् नीचकर्मकारिणः (दुर्जनान्) ६.७५.१३. यूनः (दुर्जनान्) २९.५०. **जघने**=कट्यधोभागाऽवयवे ५.६१.३. [जघनं व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थीयप्रत्ययस्य 'गुणवचनेभ्यो मतुपो लुग्वक्तव्यः' अ० ५.२.९४. वा० सूत्रेण लुक्]

जघन्थ हन्यात् २.१५.९. हन्ति २.३०.४. जहि १८.६९. जह्याः ३.३०.८. हत १.५२.१५. हंसि ६.३१.४. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचने रूपम् । भारद्वाजनियमेन इटोऽभावः]

जघन्याय जघने नीचकर्मणि भवाय शूद्राय म्लेच्छाय वा १६.३२. [जघनं व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत् । इवार्थे शाखादित्वाद् यः प्रत्ययो वा]

जघन्वान् हतवान् १.१७४.६. हन्ति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिट् १.३२.११. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातो-र्लिटः स्थाने क्वसुः । 'विभाषा गमहन०' इति इटो विकल्पः । जघन्वान्=जघ्निवान् नि० २.१७. घ्नन् नि० ७.२३.]

जघन्वान् हननं कुर्वन् (सविता सूर्यः) १.५२.८. हन्ता (शूरवीरो जनः) ७.२३.३. [व्याख्यातम्]

जघान हन्यात् ७.२०.३. हन्ति २०.३६. हतवान् १.३२.७. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिट् । प्रथम-पुरुषैकवचनम्]

जघास अत्ति २५.३८. [अद भक्षणे (अदा०) धातो-र्लिट् । 'लिट्यन्यतरस्यामि' ति धातोर्घस्लृ आदेशः]

जघ्नुषः हन्तुः सकाशात् (योद्धृजनात्) १.३२.१४. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिटः क्वसुः । पञ्चम्या एकवचनम्]

जघ्रिः जिघ्रति यस्याः सा (उखा=स्थाली) २५.३७. जिघ्रन्ती (पाकस्थाली) १.१६२.१५. [घ्रा गन्धोपादाने (भ्वा०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि' इति कि-प्रत्ययो लिड्वच्च कार्यम्]

जङ्गहे अत्यन्तं ग्रहीतव्ये (व्यवहारे) १.१२६.६.

जङ्घनत् भृशं हन्ति प्राप्नोति ६.१६.३४. भृशं हन्यात् ३.५३.११. भृशं हन्ति ३३.९. **जङ्घनन्त**=अत्यन्तं घ्नन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुक-संज्ञयाऽकार-यकारयोर्लोपोऽडभावश्च १.८८.२. भृशं हत २.३१.२. **जङ्घन्ति**=भृशं घ्नन्ति ६.७५.१३. [हन हिंसा-गत्योः (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लङ् । अडभावश्छान्दसः]

जङ्घाम् हन्ति यया ताम् (आयसीम्=अयोविकारं शस्त्रास्त्रम्) १.११६.१५. सर्वसुखजनिकाम् (वर्त्तिकां=नीतिम्), प्र०—'अच् तस्य जङ्घ च, उ० ५.३१. इति जन-धातोरच्-प्रत्ययो जङ्घादेशश्च १.११८.८. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'अच् तस्य जङ्घ च' उ० ५.३१. इति बाहुलकाद् अच् जङ्घादेशश्च]

जजस्तम् योधयतम् ४.५०.११. [जज युद्धे (भ्वा०)

धातोर्लोट् । सुडागमश्छान्दसः]

जजान जनयति २.१२.३. जनयतु, प्र०—अत्र लोडर्थे लिट् १८.३३. जनयते, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो णिच्प्रत्ययः ३४.१४. उत्पादितवान् ४.५६.३. जनयेत् ७.२०.५. जायते ४.१७.१२. जज्ञे प्रादुर्भावयति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् २.४०.५. जनयन्ति १९.९०. **जज्ञतुः**=जनयतः २७.२४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लिटि प्रथमैकवचनम् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । जजान=जनयति नि० १०.३४.]

जज्ञानम् जनकम् (शिशुं=बालकम्) ३.१.४. सुखजनकम् (पाजः=बलम्) ६.२१.७. विद्याविनयेषु जायमानम् (महाविद्वांसम्) ६.३८.५. प्रादुर्भूतम् (अद्रिबुध्नं=मेघाऽऽकाशम्) १३.४२. सब जगत् में व्यापक (प्रादुर्भूत) ईश्वर को, आर्याभि० २.२८, १३.३. सर्वस्य जनकं विज्ञातृ (ब्रह्म) १३.३. **जज्ञानः**=प्रादुर्भावयिता (अग्निः=ईश्वरो भौतिको वा) १.१२.३. प्रादुर्भूतः सन् (सभेशः) १२.६. प्रसिद्धः (परमेश्वरः) १.६३.१. जायमानः (द्यौः=सूर्यः) १२.२१. **जज्ञाना**=अवबोधहेतू (प्राणोदानौ वायू) १.२३.४. **जज्ञानाम्**=प्रजाताम् (मायां=प्रज्ञापिकां विद्युतम्) १३.४४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच्]

जज्ञिरे प्रादुर्भवन्ति १.६४.२. जायन्ते जनयन्ति वा १.६४.४. उत्पन्नाः सन्ति ३१.८. प्रकाशिताः, अजायन्त ३१.७. **जज्ञिषे**=जायसे ५.३५.३. जातोऽसि, जातोऽस्ति वा १.५१.६. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचनम्]

जज्ञुः जायन्ते १.१५९.३. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचनम् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

जज्ञे जायते ३.३१.३. जातमस्ति ३.५५.१. जायताम् १.१२१.६. प्रादुर्भूतोऽस्ति ३३.८०. जायेत ७.२०.१. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लिटि प्रथमैकवचनम्]

जञ्झतीरिव शब्दकारिण्यः शीघ्रगतयो वा ता इव (वायव इव) ५.५२.६. [जञ्झतीरापो भवन्ति शब्दकारिण्यः नि० ६.१६.]

जञ्जती यथा युद्धे प्रवृत्ता सेना १.१६८.७. [जजि युद्धे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

जठरम् उदरमिव कोशम् २०.४५. उदरस्थमग्निम् ६.६७.७. उदराग्निम् ५.३४.२. उदरम् ६.६९.७. **जठरस्य**=उदरस्य, प्र०—जठरमुदरं भवति, जग्धमस्मिन् ध्रीयते, नि० ४.७, १.११२.१७. **जठरात्**=मध्यात् ३.२९.१४. **जठरे**=जायन्ते यस्मादुदराद् वा तस्मिन्, प्र०–'जनेररष्ठ च' उ० ५.३८. अत्र 'जनधातोररः प्रत्ययो नकारस्य' ठकारश्च १.१०४.९. आभ्यन्तरे २.२२.२. जातेऽस्मिन् जगति ३.४२.५. उदरे, प्र०—जठरमुदरं भवति, जग्धमस्मिन् ध्रियते धीयते वा, नि० ४.७, १२.४७. जायते सुखं यस्मात्तस्मिन्नुदरे ३.४०.५. **जठरेषु**=जायन्ते वृष्टयो येभ्यस्तेषु (मेघेषु) १.५४.१०. अन्तर्वर्त्तिष्वन्नादिपचनाऽधिकरणेषु वा १.९५.१०. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जनेररष्ठ च' उ० ५.३८. सूत्रेण अरः प्रत्ययः, नकारस्य ठकारादेशश्च जठरमुदरं भवति' जग्धमस्मिन् ध्रियते धीयते वा नि० ४.८. मध्यं वै जठरम् श० ७.१.१.२२.]

जठलस्य जठरस्योदरस्य मध्ये १.१८२.६. [जठरं व्याख्यातम् । रेफस्य लकारादेशः कपिलादित्वात्]

जतूः पक्षिविशेषान् २४.२५. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'फलिपाटिनमि०.' उ० १.१८. सूत्रेण उप्रत्यये तकारान्तादेशः]

जत्रवः सन्धयः २५.८. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जत्र्वादयश्च' उ० ४.१०२. सूत्रेण रु-प्रत्यये नस्य तकारादेशः]

जनञ्जनम् मनुष्यं मनुष्यम् ५.१५.४. [जनंपदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । जनपदं च व्याख्यास्यते]

जनत् जनयति, प्र०—अत्राऽडभावो विकरणात्मनेपदव्यत्ययश्च २.४०.२. जनयेत् ४.४०.२. जायेत २.२१.४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लङ् । अडभावो विकरणव्यत्ययेन शप्, परस्मैपदञ्च । जनदित्यङ्गिरसाम् (शुक्रम्) गो० पू० २.२४. तमाङ्गिरसं वेदमभ्यश्राम्यदभ्यतपत् समतपत् तस्माच्छ्रान्तात्तप्तात्सन्तप्ताज्जनदिति द्वेतमक्षरं व्यभवत् गो० पू० २.२४.]

जनत उत्पादयत, प्रसिद्ध्या, प्रकाशयत ४.१.१. **जनथः**=जनयतम्, प्र०—शप आर्धधातुकत्वाण्णिलुक् १.११३.७. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । 'छन्दस्युभयथा' इति छन्दसि शपोऽप्यार्धधातुकत्वान् णेर्लोपः]

जनना सुखजनकौ (प्राणाऽपानौ), उत्पादकौ (सोमापूषणा=प्राणापानौ) २.४०.१. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' अ० ३.२.१४९. सूत्रेण युच्प्रत्ययः कर्त्तरि]

जनन्त जनयन्ति ७.७.४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन शप् अडभावश्च]

जनन्ती (उषाः=प्रभातवेला) ३.६१.४. [जनी

प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच्छत्रन्तात् ङीप् । छन्दसि शप आर्धधातुकत्वात् णिलोपः]

जनभक्षः यो जनैर्भक्षः सेवनीयः (विद्वज्जनः) २.२१.३. [जन-भक्षपदयोः समास । भक्षः=भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० सः प्रत्ययः]

जनभृतः ये जनान् बिभ्रति ते (राजपुरुषाः) १०.४. [जनोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप् । तुगागमः]

जनम् मनुष्यम् १.४४.६. जिज्ञासुं मनुष्यम् २.२३.४. पुरुषार्थेषु प्रादुर्भूतम् (वीरपुरुषम्) १.४५.१०. पुरुषार्थयुक्तं धार्मिकं विपश्चितम् १.४५.६. प्रसिद्धं मनुष्यादिकं प्राणिमयम् ३.५३.१२. शुभाचरणैः प्रसिद्धम् (राजानम्) ६.५२.१०. **जनस्य**=श्रेष्ठस्य देवस्य मनुष्यस्य १.७०.१. जातस्य (संसारस्य) १५.२७. **जनः**=यशसा प्रादुर्भूतः (मनुष्यः) १.१३६.५. उत्तमगुणकर्मभिर्वर्त्तमानः (राजा) १.५४.७. यो विद्याधर्माभ्यां परोपकारान् जनयति प्रकटयति सः अ०—विद्वान्) ३.५५. उत्तमो विद्वान् ७.५५.५. प्रजासेनास्थो मनुष्यः १.४१.१. **जनान्**=मनुष्यादीन् १.६४.१३. धार्मिकान् मनुष्यान् १.१३२.५. मनुष्यादीन् प्राणिनः १.५०.३. प्रसिद्धान् वीरान् (मनुष्यान्) ३.४६.२. **जनानाम्**=शुभगुणेषु प्रादुर्भूतानाम् (मनुष्याणाम्) १.१७७.१. सज्जनानां मनुष्याणाम् १.८१.९. राजप्रजापुरुषाणाम् ४.४.६. **जनाय**=धर्म्ये प्रसिद्धाय (मनवे=मनुष्याय) १.१३०.५. राज्ञे ७.३४.६. शुभगुणविद्यासु प्रादुर्भूताय विदुषे १.११७.६. जनसमूहाय १.६२.१७. परोपकारे प्रसिद्धाय (अध्यापकाय) ७.१६.१२. सत्पुरुषाय २.३४.८. सेवकाय जीवाय १.१३.८. जीवस्य रक्षणाय १.३६.१६. **जनाः**=विद्याविज्ञानेन प्रादुर्भूता मनुष्याः १२.१११. मनुष्याः प्राणा वा २५.२३. जगत् के जीवनहेतु प्राणों, आर्याभि० १.१७, ऋ० १.६.१६.१०. शौर्यधनुर्वेदकुशला अतिरथा मनुष्याः १.१०२.५. प्राणा इव वर्त्तमानाः (मनुष्याः) ६.११.४. जीवाः १.८६.१०. **जने**=सम्बन्धिनि पुरुषे १.११३.१६. विद्याधर्मादिगुणैः प्रसिद्धे मनुष्ये १.४८.११. गुणैरुत्कृष्टे सेवनीये (पुरुषे) १.६९.२. जनेषु=सत्याचरणेषु मनुष्येषु ५.३१.१३. यज्ञकारकेषु विद्वत्सु, लोक-लोकान्तरेषु वा, ऋ० भू० ३०६. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः पचाद्यच्प्रत्ययः । अथवा घञ्-प्रत्ययः, 'जनिवध्योश्च' सूत्रे वृद्धि-प्रतिषेधः । अन्तो वा एषा ऋद्धीनां यज्जनः मै० २.२.९. इयं (पृथिवी) वाव जनो यो वा इमामेति न स पुनरागच्छति काठ० २५.७. एष ह वै प्रदूभ्यां पाप करोति यो जनमेति जै० २.१३५.]

जनमाने उत्पद्यमाने (जगति) प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययः ३३.४१. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः शानच् । विकरणव्यत्ययेन शप् जनमाने=जनिष्यमाणे नि० ६.८.]

जनय उत्पादय १.११३.१९. प्रकटय ३४.३६. उत्पन्न कर, सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.३१. **जनयत्**=जनयेत् १.७१.८. जनयति ३३.११. **जनयत**=जनयति, प्र०—अत्र लङ्यडभावो 'बुधयुध०' इति परस्मैपदे प्राप्ते व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.९५.४. **जनयतम्**=उत्पादयतम् १.१८५.३. **जनयथ**=उत्पादयत ११.५२. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट् । 'बुधयुधनशजन०' अ० १.३.८६. सूत्रेण परस्मैपदम् । अन्यत्र लङ् तत्राऽडभावश्छान्दसः]

जनयत्यै सर्वसुखोत्पादिकाय राज्यलक्ष्म्यै, भा०—पूर्णश्रियै १.२२. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच् शतृप्रत्ययान्तात् ङीप् । नुमोऽभावः]

जनयन् प्रकाशयन् (विद्वज्जनः) १.१४८.८. उत्पादयन् (विश्वकर्मा=परमेश्वरः) १७.१८. प्रकटयन् (अग्निः=परमेश्वरः) ७.५.६. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच् शतृप्रत्ययः]

जनयन् जनयति ३.२.१२. जगत् का कर्त्ता है, आर्याभि० २.३४, १७.१९. प्रकाश करता है, सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.२४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ् अटोऽभावश्च । अन्यत्र=जनी प्रादुर्भावे धातोर्णिजन्ताच्छतृ-प्रत्ययः]

जनयन्त जनयन्ति, प्र०—प्रत्राऽडभावः १.५२.२. प्रकटयन्ति १.१४१.२. उत्पादयन्त, प्र०—प्रत्र लोडर्थे लङ्ऽडभावश्च ७.२४. उत्पादयेयुः, प्र० अत्र लङ्यडभावः १९.८४. जनयेयुः ३.२.३. प्रादुर्भवेयुः ३३.८. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ् । अडभावश्च । 'बुधयुधनशजन०' इति परस्मैपदे प्राप्ते व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जनयन्तः निष्पादयन्तः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ३१.२१. प्रकटयन्तः (भा०—सभाध्यक्षादयो जनाः) १.८५.२. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच् छतृ-प्रत्ययः]

जनयन्ति पुत्रोत्पत्ति करते हैं, सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७२. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लट् । 'बुधयुध०' इति परस्मैपदम्]

जनयन्तीः प्रकटयन्त्यः (आपः=व्यापिकास्तन्मात्राः) २७.२५. उत्पादयन्त्यः (आपः=व्यापिकास्तन्मात्राः) २७.२६. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ-प्रत्ययान्तान् ङीप्]

जनयः ये जनयन्ति ते पतयः १.६२.१०. मातापितरः ५.६१.३. जनयितारः (स्त्रीव्रताः पतयः) १.१८६.७. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जनिघसिभ्यामिण्' उ० ४.१३० इति इण्]

जनयः जायाः ४.५.५. जनिकाः (सुपत्नीः=शोभनाः पत्नीः) २०.४०. जनित्र्यः, भा०—सर्वदा प्रसूताः (पत्नीः=स्त्रियः) २०.४३. या जनयन्ते ताः प्रजाः १.७१.१. शुभ-गुणैः प्रसिद्धाः (देवीः=दिव्यगुणप्रदाः स्त्रियः) ११.६१. जनित्र्यो भार्याः ४.१९.५. विद्या सुशिक्षया प्रादुर्भूताः (सुपत्नीः) १२.३५. [जनीनां जायानाम् नि० १२.४६. जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जनिघसिभ्यामिण्' उ० ४.१३०. सूत्रेण इण्प्रत्ययः। 'जनिवध्योश्च' इति वृद्धि-प्रतिषेधः। आपो वै जनयोऽद्भ्यो हीदं सर्वं जायते श० ६.८.२.३. नक्षत्राणि वै जनयो ये हि जनाः पुण्यकृतः स्वर्गं लोकं यन्ति तेषामेतानि ज्योतींषि श० ६.५.४.८.]

जनयामि प्रकटयामि १.१०९.२. **जनये**=उत्पादये ७.२६.१. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्। अन्यत्र-व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जनराज्ञः जना धार्मिका राजानो येषान्तान् (मनुष्यादि-कान्) १.५३.९. [जन-राजन्पदयोः समासः]

जनराट् यो जनेषु धार्मिकेषु विद्वत्सु राजते सः (सूर्यो विद्वान्वा) ५.२४. [जनोपपदे राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

जनवादिनम् प्रशस्ता जनवादा विद्यन्ते यस्य तम्, (उत्तमजनम्) ३०.१७. [जनवादप्राति० प्रशस्तार्थे मत्वर्थ इन् प्रत्ययः। जनवादः=जनवादपदयोः समासः। वादः=वदतेर्घञ्]

जनश्रियम् जनानां शोभा लक्ष्मीर्यस्य तम् (देवं=दिव्यगुणं विद्वांसम्) ६.५५.६. [जन-श्रीपदयोः समासः। जनश्रियं जातश्रियम् नि० ६.४.]

जनसी जनयित्र्यौ द्यावापृथिव्यौ २.२.४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोरसुन् प्रत्ययान्तात् प्रथमाद्विवचनम्]

जनंसहः यो जनान् सहते (शमादिशुभकर्माचारी जनः) २.२१.३. [जनोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः खच् प्रत्ययश्छान्दसः। पूर्वपदस्य मुमागमः]

जना जनौ १.१३१.३. [जनपदं व्याख्यातम्। 'सुपां सुलुग०' इति प्रथमा द्विवचनस्याकारादेशः]

जनामसि जनयेम, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.२.१. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लट्। विकरण-व्यत्ययेन शप्। मस इदन्तता च]

जनाषाट् यो जनान् सहते सः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः), प्र०—अत्र 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. इति सहधातोर्ण्वि-प्रत्ययः १.५४.११. [जनोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' इति ण्विः प्रत्ययः। 'सहेः साडः सः' इति षत्वम्। 'अन्येषामपि दृश्यते' अ० ६.३.१३७. सूत्रेण पूर्व-पदस्य दीर्घः]

जनासः योद्धारः (जनाः) २.१२.९. वीराः (सैनिका जनाः) ३.५३.२३. विद्यासु प्रादुर्भूताः(योगिजनाः) ३.५५.१८. विद्वत्प्रिया विद्वांसः २.१२.८. धीमन्तो जनाः २.१२.११. विद्वद्वरा जनाः २.१२.७. विद्वांसो वीराः ४.२४.१. उत्तमा धार्मिका विद्वांसः ७.६.६. जनाः प्रसिद्धाः (शूरा मनुष्याः) ७.५६.२२. प्रसिद्धाः पुण्यात्मानः (प्रजाजनाः) ५.३५.६. प्रसिद्धाः शुभाचरणाः (भृत्याः) ५.२३.३. [जनप्राति० प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः। जनपदं व्याख्यातम्]

जनि उत्पद्यते, प्र०—अत्राऽडभावः १.१४१.१. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लुङ्। अडभावः। 'दीप-जनबुध०' अ० ३.१.६१. सूत्रेण चिण्]

जनितः ! उत्पादक (परमेश्वर विद्वन्वा) १.७६.४. **जनिता**=उत्पादकः (वीर्यवान् पुरुषः) १९.८७. सुखानि प्रादुर्भावुकः, भा०—सुखानां जनकः (राजा) ३३.६६. पिता गुरुश्च १.१२९.११. जनयिता (परमेश्वरः) प्र०—अत्र 'जनिता मन्त्रे' अ० ६.४.५३. इति णिलोपः ३२.१०. प्रसिद्धकर्त्ताऽपां धर्त्ता पर्जन्यः १७.३२. सर्वेषां पदार्थानां प्रादुर्भावयिता (परमेश्वरः) १७.२७. सकल जगत् का उत्पादक (परमात्मा) सं० वि० ६, ३२.१० सर्वव्यव-हाराणामुत्पादकः (द्यौः) ऋ० भू० २७९. सब जगत् तथा हम लोगों का भी पालन करने वाला पिता (ईश्वर), आर्याभि० २.६, ३२.१०. **जनितुः**=जनकस्य (पितुः) ४.१७.१२. **जनितारा**=उत्पादकौ (राजशिल्पिनौ) ६.६९.२. [जनी प्रादुर्भावे धातोर्णिजन्तात् कर्त्तरि तृच्। 'जनिता मन्त्रे' ६.४.५३. सूत्रेण णेर्लोपः। जनिता=जनयिता नि० ४.२१.]

जनितोः जनकयोः ४.६.७.

जनित्रम् अपत्यजन्मनिमित्तम् (रेतः=वीर्यम्) १९.८४.

कारणं जनकं वा (वीर्यम्) २३.५९. जन्मसाधनं कर्म ७.४६.२. उत्पत्तिनिमित्तम् (ऊर्णायुम्=अविम्) १३.५०. जननम् १४.२४. जनकम् २१.५५. जनकं कारणम् ७.३४.२. जन्म १.१६३.४. भा०—द्वितीयं विद्याजन्म २९.१५. भा०—निमित्तकारणं (ब्रह्म) २३.६०. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'अशित्रादिभ्य इत्रोत्रौ' उ० ४.१७३. सूत्रेण इत्रः प्रत्ययः। विड् वै जनित्रम् श० ८.४.२.५. वसिष्ठो वा एते (जनित्रे) पुत्रहतः सामनी अपश्यत् स प्रजया पशुभिः प्राजायत तां० १९.३.८.]

जनित्री अनेककार्योत्पादिके (द्यावापृथिवी=विद्युद्-भूमी) २९.३४. मातृवत्सर्वेषां महत्तत्त्वादीनामुत्पादिका (प्रकृतिः) ३.३१.१२. उत्पादिका (उषाः) १.१२४.५. उत्पादयित्री (द्यावापृथिवी) १.१८५.६. माता २.३०.२. **जनित्रीः**=जनन्यः (मातरः) ६.५०.७. मातॄः ३.५४.१४. [जनित्रं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीप्। जनित्री जनयित्र्यौ नि० ८.१४.]

जनित्वम् जन्मादिकारणम् (सूर्यः) १.६६.४. जना हुआ बालक स० प्र० १५२, १०.१८.८. सन्तानम्, ऋ० भू० २११, उत्पत्स्यमानम्, भा०—यच्च जनिष्यते (कार्यरूपं जगत्) २५.२३. जन्म का हेतु (ईश्वर), आर्याभि० १.१७, ऋ० १.६.१६.१०. **जनित्वाः**=ये जनिष्यन्ते ते (पदार्थाः) ४.१८.४. **जनित्वैः**=जनिष्यमाणैः (जनैः) १२.२७.\ जनित्वम् जनिष्यमाणः नि० १०.२१. जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जनिदाच्युसृवृ०' उ० ४.१०४. सूत्रेण इत्वन्-प्रत्ययः]

जनिदाम् या जनिं जन्म ददाति (इन्दुं=राजानम्) ४.१७.१६. [जनिपदं व्याख्यातम्। तदुपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्विप्]

जनिभिः जन्मभिर्जनकैर्वा ६.५०.१३. भा०—यान्य-पत्यानि जनयेयुस्तैः (जन्मभिः) २६.२४. जनयित्रीभिर्वडवाभिः ३.२६.३. प्रादुर्भूताभिः प्रजाभिः ७.१८.२. [जनिपदं व्याख्यातम्। ततस्तृतीयाबहुवचनम्। देवानां वै पत्नीर्जनयः तै० सं० ५.१.७.२. काठ० १९.७. नक्षत्राणि वै जनयः मै० ३.१.८. श० ६.५.४.८.]

जनिम जन्म २.३५.६. जन्मानि ३.१.२०. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जनिमृङ्भ्यामिमनिन्' उ० ४.१४९. सूत्रेण इमनिन्-प्रत्ययः]

जनिमन् जन्मनि प्रादुर्भावे ४.२२.४. [जनिम-पदे व्याख्यातम्]

जनिमन् प्रशस्ता जनिर्जन्म विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) ३.१.४. जन्मवन् (राजन्) ४.१७.२. [जनि-पदं व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने मतुप्]

जनिमानि जन्मानि ३.४.१०. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जनिमृङ्भ्याम् इमनिन्' उ० ४.१४९. सूत्रेण इमनिन्-प्रत्ययः]

जनियन्तः जायामिच्छन्तः (विप्राः=मेधाविनो जनाः) ४.१७.१६. [जनिशब्दादिच्छायां क्यचि शतरि च रूपम्]

जनिवतः जन्मवतः (ब्रह्मचारिणो जनाः) ५.३१.२. **जनिवान्**=विद्यायां जन्मवान् (विद्वान् जनः) ५.१४.७. [जनिप्राति० प्रशंसायां मतुप्। 'छन्दसीरः' अ० ८.२.१४. सूत्रेण मतुपो मकारस्य वकारादेशः]

जनिषीष्ट जनयतु ७.८.६. जायेत ४.१८.१. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोराशिषि लिङ्]

जनिष्ट जायते ५.१.५. जनयतः ५.६.३. **जनिष्ठाः**= जनयेः, प्र०—अत्र लुङ्यडभावः ३३.६४. जनय ७.२८.२. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लुङ्, अडभावः। 'दीप-जनबुध०' इति चिणो विकल्पे पक्षे सिच्]

जनिष्ठाः अतिशयेन प्रकटाः (विद्वांसो जनाः) १.६८.२. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तादतिशायने इष्ठन्। 'तुंरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण तृचो लोपः]

जनिष्यते उत्पत्स्यते २७.३६. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः कर्मणि लृटि प्रथमैकवचनम्]

जनिष्यमाणम् उत्पत्स्यमानम् (पदार्थमात्रम्) १८.५. **जनिष्यमाणः**=प्रसिद्धिं प्राप्स्यमानः (देवः=ईश्वरः) ३२.४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः कर्मणि 'लृटः सद्वा' सूत्रेण सत्संज्ञकः शानच् प्रत्ययः]

जनिष्व जनय ६.१५.१८. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लोट्। 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकत्व इडागमः। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि श्यनोऽप्यभावः]

जनी जनयित्री (दुहिता=कन्या) ४.५२.१. **जनीनाम्**=जनानां प्रजानाम् १.६६.४. जनित्रीणां भार्य्याणाम् ५.४६.८. **जनीः**=अपत्यानि प्रादुर्भवित्रीः (स्त्रीः) १.१६७.७. [जनिपदं व्याख्यातम्। ततः 'कृदिकारा-दक्तिनः' इति स्त्रियां ङीष्। जनिः जाया नि० १२.४६. जनीनाम् जायानाम् नि० १२.४६.]

जनीरिव जायमानाः प्रजा इव ७.२६.३. [जनी व्याख्यातम्। जनी-इवपदयोः समासः]

जनुषम् जन्म १.१४१.४. विद्याजन्म १.१३९.९. प्रसिद्धाम् (वाचम्) २.४२.१. **जनुषः**=जनाः १.६१.१४. जन्मानि ६.६६.४. प्रसिद्धात् (वेदसः=धनाद्विज्ञानाद्वा) २.१७.६. **जनुषा**=जन्मना ७.२०.३. प्रादुर्भूतेन कर्मणा १.१०२.८. जातेन जगता सह १.९४.६. द्वितीयेन जन्मना ५.२९.१४. **जनुषाम्**=जन्मवताम् (मनुष्याणाम्) ४.१७.२०. जनानाम् १.१५१.१. **जनुषे**=जन्मने ५.४५.३. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जनेरुसिः' उ० २.११५. सूत्रेण उसिः प्रत्ययः। जनुषम् जन्म नि० ९.३.]

जनूंषि जन्मानि ७.४.१. [जनुष् इति व्याख्यातम्। ततो नपुंसकलिङ्गे प्रथमाबहुवचने रूपम्]

जनूः जनन्यः प्रकृतयः ७.५८.२. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक उः प्रत्ययः। ततः स्त्रियाम् ऊङ्प्रत्ययः]

जने जने मनुष्ये मनुष्ये ५.६७.४. [जनपदं व्याख्यातम्। ततो वीप्सायां द्विर्वचनम्]

जन्तवः जीवाः १.८१.९. मनुष्याः १.४५.६. जनाः १५.३१. सब जीव, सन्तानें, स० प्र० २३८, १०.४८.१. **जन्तवे**=प्राणिने ३.२.१२. **जन्तुभिः**=मनुष्यादिभिः १२.१०९. मनुष्यैः, प्र०—जन्तव इति मनुष्यनाम, निघं० २.३, ३.३.६. **जन्तुम्**=प्राणिनम् ७.५८.३. **जन्तोः**=जीवमात्रस्य ५.३२.७. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'कमिमनिजनि०' उ० १.७३. सूत्रेण तुः प्रत्ययः। जन्तवः मनुष्यनाम निघं० २.३. मनुष्या वै जन्तवः श० ७.३.१.३२.]

जन्म प्रादुर्भावम् १.७०.३. प्रादुर्भावः ११.१२. शरीरधारणेन प्रादुर्भावम् १.७०.१. विद्याजननम् १.७१.३. जन्मानि ५.४१.१४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' उ० ४.१४५. सूत्रेण मनिन्। अथवा बाहुलकाद् औणादिकः (उ० १.१४५.) मक्]

जन्मञ्जन्मन् जन्मनि जन्मनि ३.१.२०. [जन्मन्पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। जन्मन् व्याख्यातम्। ङेर्लुक्]

जन्मन् जन्मनि, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति ङेर्लुक् १७.७५. जन्मनि प्रादुर्भावे, अ०—द्वितीये विद्याजन्मनि १२.५५. **जन्मना**=शरीरेण, अ०—मनुष्यदेहधारणाख्येन १.८७.५. **जन्मने**=वर्त्तमानदेहोपयोगाय पुनः शरीरधारणेन प्रादुर्भावाय वा १.२०.१. जाताय (सञ्चितकर्मनिमित्ताय) १.१६६.१. **जन्मनि**=पूर्वाऽपरे (शरीरधारणाख्ये) १.१४१.११. वर्त्तमानं प्राप्स्यमानं च (शरीरधारणम्) ८.३. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' उ० ४.१४५. सूत्रेण मनिन्। जन्म उदकनाम निघं० १.१२. जन्म जन्मानि जातानि नि० १२.२३. जन्मसु=कर्मसूदयेषु नि० ११.२३.]

जन्मेव यथा प्रादुर्भावि कर्म प्रकटयति तथा ३.१५.२. [जन्म व्याख्यातम्। जन्मन्-इवपदयोः समासः]

जन्यम् जनितुं योग्यम् (सुष्टुतिं=प्रशंसाम्) २.३७.६. **जन्यः**=यो जायते (महाराजः) ४.३८.६. **जन्या**=जनितारौ (वाय्वग्नी) २.३९.१. **जन्यात्**=उत्पत्स्यमानात् (अहंसः=अपराधात्) ४.५५.५. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'तकिशसिचतियतिजनीनामुपसंख्यानम्' अ० ३.१.९७. वा०सूत्रेण यत्। 'भव्यगेयप्रवचनीय०' अ० ३.४.६८. सूत्रेण कर्त्तरि वा निपात्यते सपत्ना वै द्विषन्तो भ्रातृव्या जन्यानि ऐ० ८.२६.]

जन्येव जनेभ्यो हित इव (अग्निः=जगदीश्वरः) २.६.७. [जन्य-इवपदयोः समासः। जन्यः=जनप्राति० हितार्थे यत्]

जबारु जवमानमारूढम् (नक्षत्रम्) ४.५.७. [जबारु=जवमानरोहि जरमाणरोहि गरमाणरोहीति वा नि० ६.१७.]

जभरत् यथावद्धरेत्, पोषयेत्, पुष्येत् ४.१२.२. बिभर्त्ति ४.२.६. **जभर्थ**=हरसि ४.१९.९. **जभार**=धरति ३.४३.७. धरेत् ४.२७.२. बिभर्त्ति ७.५६.४. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लेट्। छान्दसं द्विर्वचनम्। अन्यत्र लिट्]

जभार हरति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिट् 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि वक्तव्यम्' इति भादेशः १.३२.९. जहार ३३.३७. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लिट्। हकारस्य भकारश्छान्दसः]

जभ्रिरे भरेयुः, प्र०—अत्राऽभ्यासस्य वर्णव्यत्ययेन बस्य जः ९.१७. भरन्ति पुष्णन्ति १.७२.४. हरन्तु १.१९१.१४. **जभ्रुः**=बिभ्रति ७.१८.१९. धरन्तु ३.५४.१. धरन्ति ४.७.४. **जभ्रे**=धरति १.६१.८. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचने झस्येरेच्। वर्णव्यत्ययेनाभ्यासस्थबकारस्य जकारः]

जमदग्निदत्ता चक्षुषा प्रत्यक्षेण दत्ता (वाक्), प्र०—चक्षुर्वै जमदग्निर्ऋषिः, शत० ८.१.२.३, ३.५३.१५. [जमदग्निदत्तापदयोः समासः। जमदग्निरग्रिमे पदे द्रष्टव्यः]

जमदग्निना चक्षुषा प्रत्यक्षेण ३.६२.१८.

जमदग्निः=प्रज्वलिताऽग्निर्नयनम् १३.५६. **जमदग्नेः**=चक्षुषः, प्र०—चक्षुर्वै जमदग्निर्ऋषिर्यदेनेन जगत् पश्यति, अथो मनुते, तस्माच्चक्षुर्जमदग्निर्ऋषिः, श० ८.१.२.३. अनेनाऽपि प्रमाणेन रूपगुणग्राहकं चक्षुर्गृह्यते ३.६२. चक्षुरित्युपलक्षणमिन्द्रियाणाम्, ऋ० भू० ८१. [जमत्=ज्वलतो नाम (निघं० १.१७.) जमत्-अग्निपदयोः समासः। जमदग्नयः=प्रजमिताग्नयो वा प्र०—ज्वलिताग्नयो वा नि० ७.२४. चक्षुर्वै जमदग्निर्ऋषिर्यदेनेन जगत् पश्यत्यथो मनुते तस्माच्चक्षुर्जमदग्निर्ऋषिः श० ८.१.२.३. प्रजापतिर्वै जमदग्निः श० १३.२.२.१४. जमदग्निर्ह वै माहेनानां पुरोहित आस जै० २.३१०. जमदग्नेः सप्ताहं विद्रथं चक्षूंषीति जै० २.१७०. सर्वरूपा वै जामदग्न्यः सर्वसमृद्धाः ऐ० २.२६.]

जम्भकम्=यो जम्भयति नाशयति तम् (जनम्) ३०.१६. [जभि नाशने (चुरा०) धातोर्ण्वुल् कर्त्तरि]

जम्भय विनाशय २.२३.६. **जम्भयतम्**=विनाशयतम् १.१८२.४. [जभि नाशने (चुरा०) धातोर्लोट्]

जम्भयन् साऽवयवान् दर्शयन् (सूर्यः) १.१६१.८. औषधैर्निवारयन् (भिषक्=वैद्यो जनः) १६.५. **जम्भयन्तः**=विनामयन्तः (अश्वा योद्धारो वा) ७.३८.७. गात्राणि विनमयन्तः (भा०—वीरा राजजनाः) ६.१६. विनाशयन्तः (विद्वांसो जनाः) २१.१०. [जभि नाशने (चुरा०) धातोः शतृप्रत्ययः। जभी गात्रविनामे (भ्वा०) धातोर्वा णिजन्ताच् छतृ। 'रधिजमोरचि' सूत्रेण नुम्]

जम्भयोः बन्धनयोर्मुखमध्ये ग्रासमिव ११.७९. **जम्भे**=जम्भन्ति गात्राणि विनामयन्ति येन मुखेन तस्मिन् १५.१५. बन्धने ११.७९. व्याघ्रस्य मुख इव कष्टे १५.१६. मार्जारमुखे मूषक इव पीडायाम् गुणरूपमुखे १५.१८. वशे, पं० वि०, अथर्व० ३.२७.१. **जम्भेभिः**=गात्रविनामैः ७.७.२. **जम्भैः**=गत्याक्षेपैः ४.७.१०. विस्फुरणैः १.१४३.५. चालनादिभिः स्वगुणैः १.१४८.४. गात्रविक्षेपैः ७.३४. [जभी गात्रविनामे (भ्वा०) धातोर्घञ्प्रत्ययः। 'रधिजभोरचि' सूत्रेण नुमागमः]

जम्भ्यैः जम्भेषु मुखेषु भवैर्जिह्वादिभिः ११.७८. [जम्भ इति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत्]

जय उत्कर्ष १०.२१. **जयत**=विजयध्वम् १७.४६. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लोट्]

जयताम् विजेतुं समर्थानाम् (देवानां=विद्वज्जनानाम्) १७.४१. [जि जये (भ्वा०) धातोः शत्रन्तात् षष्ठ्या बहुवचनम्]

जयतामिव विजयकारिणां योद्धॄणां शत्रूणामिव १.२३.११. [जयतामिति व्याख्यातम्। जयताम्-इवपदयोः समासः]

जयति उत्कर्षति १.३६.४. **जयतु**=विजयतु ५.३७. स्वोत्कर्षाय तिरस्करोतु, उत्कर्षतु ७.४४. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोट्]

जयन् उत्कर्षं प्राप्तुमिच्छन् (सेनापतिः) ६.७३.२. उत्कर्षं प्राप्नुवन् (बृहस्पतिः=सेनापतिः) १७.३६. शत्रून् पराजयन् (इन्द्रः=राजा) ४.१७.१०. विजयन् (विद्वान् राजा) ५.३१.६. **जयन्तम्**=शत्रून् विजयमानम् (योद्धृजनम्) ६.७५.१८. शत्रून् पराजयमानम् (इन्द्रं=सेनापतिम्) १७.३८. शत्रूणां विजेतारम् (राजानं सेनापतिं वा) ३४.२०. विजयहेतुम् (सेनाद्यध्यक्षम्) १.९१.२१. विजयमानम् (बलं=सेनाम्) ५.४४.१. दुष्टान् पराजयन्तम् (शूरवीरम्) १७.४९. [जि जये (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

जयन्ती उत्कर्षतां प्राप्नुवती सेना १.११६.१७. जयशीला (युवतिः स्त्रीः) १.१२३.२. **जयन्तीनाम्**=शत्रुविजयेनोत्कर्षन्तीनाम् (देवसेनानाम्) १७.४०. [जि जये (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

जयन्तु विजयिन्यो भवन्तु १७.४३. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लोट्]

जयाति जयेत् ५.३७.५. शत्रुओं को जीत सके, स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. **जयासि**=जय ६.३५.२. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लेट्। 'लेटोऽडाटौ' इत्याडागमः]

जयामसि जयामः ४.४७.१. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लट्। उत्तमबहुवचने 'इदन्तो मसि' रिति मस इदन्तता। जयामसि=जयामः नि० १०.१५.]

जयुषा जयशीलौ (अध्यापकोपदेशकौ) ६.६२.७. [जि जये (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक उसिः प्रत्ययः। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

जयुषा जयप्रदेन (रथेन) १.११७.१६. [जयुष् इति व्याख्यातम्। ततस्तृतीया]

जयेम उत्कर्षयेम २.४०.५. शत्रून् विजयेमहि १.१०२.४. दुष्ट जनों को जीतें, आर्याभि० १.४३, ऋ० १.७.१४.४. **जयेयम्**=उत्कर्षेयम् १८.३३. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लिङि उत्तमबहुवचनम्]

जरणा जरणानि स्तुत्यानि कर्माणि १.१२१.६.

जरां प्राप्तौ (पितरौ) ४.३३.३. **जरणाम्**=जराऽवस्थाम् ७.३०.४. **जरणाः**=स्तुतयः १.१४१.७. [जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० युच् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि । अन्यत्र स्त्रियां टाप् । जरति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

जरण्यया जरणान् विद्यावृद्धानर्हति यया विद्यया तया १.११९.७. [जरणपदं व्याख्यातम् । जरणप्राति० अर्हत्यर्थे यत् । ततष्टाप् स्त्रियाम् । तृतीयैकवचनम्]

जरताम् स्तुयात् ४.४.८. [जरते अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोर्लोट्]

जरतीः वृद्ध दुष्ट स्त्रियां, सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२९.

जरते स्तावकाय (विप्राय=मेधाविजनाय) ६.६५.४. [जरति अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.), ततः शत्रन्ताच् चतुर्थ्या एकवचनम्]

जरते स्तौति १.१२७.१०. सत्करोति १.५९.७. [जरते अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.), ततो लट् । जरते गृणाति नि० ४.२४. जरतेः स्तुतिकर्मणः नि० १०.८.]

जरदष्टिः जरं पूर्णमायुर्व्याप्तो यः सः (जनः) ३४.५२. जराऽवस्था को प्राप्त सुखपूर्वक (स्त्री) सं० वि० १२१. जराऽवस्था ऋ० भू० २०८. **जरदष्टिम्**=वृद्धाऽवस्थाम् ७.३७.७. [जरत्=जॄप् वयोहानौ (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० अतिः प्रत्ययः । अष्टिः=अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० तिः प्रत्ययः । तयोः समासः]

जरद्विषम् जरद् विनष्टं शत्रुरूपं विषं यस्य तम् (गृहपतिम्) ५.८.२. [जरद्-विषपदयोः समासः । जरदिति व्याख्यातम्]

जरन्तम् स्तवानम् (पतिम्) १.११७.१३. [जरति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. ततः शतृप्रत्ययः]

जरन्ता स्तुवन्तौ (शिल्पिजनौ) १.१६१.७. [जरति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. ततः शत्रन्तात् 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः]

जरन्ति जीर्णं कुर्वन्ति ६.२४.७. **जरन्ते**=स्तुवन्ति, प्र०—जरा स्तुतिर्जरतेः स्तुतिकर्मणः, नि० १०.८, १.२.२. [जॄप् वयोहानौ (दिवा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन शप् । अन्यत्र=जरते अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. जरतेः स्तुतिकर्मणः नि० १०.८.]

जरमाणम् स्तुवन्तम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.५१.१. **जरमाणः**=स्तुवन् (सज्जनः) ६.६२.१. **जरमाणाः**=स्तुवन्तः (विद्यार्थिजनाः) २.२८.२. [जरते अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोः शानच् । जरतेः स्तुतिकर्मणः नि० १०.८.]

जरयन् नाशयन् (विद्वान् श्रीमज्जनः) २.८.२. **जरयन्तम्**=अन्यान् जरां प्रापयन्तम् (इन्द्रं=विद्युतम्) २.१६.१. [जराप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति वा० सूत्रेण णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

जरयन्ती हीनं कुर्वती (उषाः) १.९२.१०. या जीर्णामिवस्थां भावयन्ती (उषाः) १.४८.५. वयो गमयन्ती (उषाः) १.१२४.१०. **जरयन्तीः**=जरां प्रापयन्तीः (उषसः=प्रभाताः) १.१७९.१. [जराप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति वा० सूत्रेण णिजन्ताच्छतरि स्त्रियां ङीप् प्रत्ययः । जरा=जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोः 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्' इत्यङ् प्रत्ययः]

जरसम् जरां वृद्धाऽवस्थाम्, प्र०—अत्र 'जराया जरसन्यतरस्याम्' अ० ७.२.१०१. अनेन जरा-शब्दस्य जरसादेशः १.८९.९. जरा, भा०—यदा शतवार्षिकमायुर्व्यतीयात् तदैव शरीराणां जराऽवस्था भवेत् २५.२२. [जराप्राति० द्वितीयैकवचने 'जराया जरसन्यतररस्याम्' अ० ७.२.१०१. सूत्रेण जरास्थाने जरसादेशः । जरा=जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोः 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्' इत्यङ् । ततः स्त्रियां टाप् । जरसा=जरया नि० ११.३८.]

जरसे अर्च्यसे पूज्यसे; प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन कर्मणि यकः स्थाने शप् । जरत इति अर्चतिकर्मसु पठितम् ३.१४, १.९४.१४. **जरस्व**=स्तुहि, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् । जरतीति स्तुतिकर्मा निघं० ३.१४, ३.३.७. प्रशंस ७.८.६. [जरते अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट् । प्रथमप्रयोगे कर्मणि प्रयोगः, व्यत्ययेन शप् आत्मनेपदञ्च]

जरा वृद्धाऽवस्था १८.३. **जरायै**=स्तुत्यै १.३८.१. [जरा व्याख्यातम् । जरा स्तुतिः नि० १०.८.]

जराते स्तौति ५.३७.२. **जरामहे**=स्तूमहे २.२३.६. प्रशंसेम ३.४१.७. [जरते अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४, ततो लेटि रूपम् । 'लेटोऽडाटौ' इत्याडागमः । व्यत्येनात्मनेपदम्]

जराबोध ! जरया गुणस्तुत्या बोधो यस्य सैन्यनायकस्य तत्सम्बुद्धौ (सेनाऽधिपते !) १.२७.१०. [जरा-बोधपदयोः समासः । जरा व्याख्यातम् । जराबोध=जरा-

स्तुतिर्जरतेः स्तुतिकर्मणः, तां बोधय, तया बोधयितरिति वा नि० १०.७.]

जराय हानये १.१६४.११. स्तावकाय २.३४.१०. [जॄष् वयोहानौ (दिवा०) जरति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४, धातोर्वा बाहु० औणा० अकारप्रत्ययः । ततश्चतुर्थी]

जरायु वृद्धाऽवस्थाप्रापकम् (सभेशं राजानम्) १०.८. [जरोपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः 'किंजरयोः श्रिणः' उ० १.४. सूत्रेण ञुण्]

जरायुणा देहाऽऽवरणेन ५.७८.८. बहिराच्छादनेन १९.७६. जरामेति येन जरायु तेन वस्त्रेणाऽग्निना वा १७.५. आवरणेन सह ८.२८. [जरायुपदं व्याख्यातम् । ततो नपुंसके तृतीयैकवचनम् । जरायुः=जरया गर्भस्य जरया यूयत इति वा नि० १०.३९. शणा जरायु श० ६.६.२.१५.]

जरितः ! प्रशंसक ! (सज्जन) ३.३३.८. सत्यगुणस्तावक (अग्ने=विद्वज्जन) ३.१५.५. **जरिता**=स्तावकः (प्रजाजन) ५.३६.३. स्तोता (इन्द्रः=सूर्यवद्राजा) ४.१७.१९. सकलविद्यास्तावकः (विप्रः=मेधाविजनः) ५.४३.१. सेवकः (राजपुरुषः) ३.५२.५. सकलविद्याप्रशंसकः (विद्वज्जनः) ५.३६.४. **जरितारम्**=विद्यागुणस्तावकं पितरम् ५.३.११. गुणानां प्रशंसकम् (सज्जनम्) ७.२०.२. **जरितारः**=सत्यस्तावकाः (धार्मिका विद्वांसः) ७.३२.२. विद्यालाभस्तोतारः (विद्वज्जनाः) ६.२१.१०. स्तोतारोऽर्थाद्वायुगुणस्तावका अर्चकाश्च (विद्वांसो जनाः) १.२.२. **जरितुः**=स्तोतुरध्यापकादुपदेशकात् १.१८२.४. **जरितृभ्यः**=सकलविद्यागुणस्तावकेभ्यः (विद्वद्भ्यः) १.१७५.६. योगगुणसिद्धीनां वेदितृभ्यः (योगिभ्य) १.१७६.६. **जरितॄणाम्**=सद्विद्याविदाम, (मनुष्याणाम्) ४.३१.३. **जरितॄन्**=सकलविद्यास्तावकान् (सूरीन्=विद्वज्जनान्) ७.३.८. **जरित्रे**=सकलविद्याऽध्यापकाय) ४.२१.११. विद्यागुणप्रकाशकाय (विद्वज्जनाय) याचमानायाऽयाचिताय वा (जनाय) ४.२४.११. स्तुतिकर्त्रे (सत्पात्राय जनाय) १.१८५.३. विद्यामिच्छुकाय (सज्जनाय) ४.२३.११. विदुषे (जनाय) ४.२२.११. स्तुत्याय (मनुष्याय) ४.१६.१८. अर्चिताय (विद्वज्जनाय) २.३८.११. [जरते अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोः कर्त्तरि तृच्प्रत्ययः । जरिता=गरिता नि० १७. जरिता=स्तोतृनाम निघं० ३.१६. यजमानो जरिता ऐ० ३.३८.]

जरिमा=अतिशयेन जरिता वयोहानिकर्त्ता (मनुष्यः) १.७९.१. अतिशयेन जरा (वृद्धाऽवस्था) ४.१६.१३. एतस्याः स्तुतेर्भावयुक्तः (सर्वविद्याभिव्याप्तो विद्वान्) १.७१.१०. स्ताविका (माता=जननी) ४.४१.१५. अतिशय वृद्धपन स० प्र० ११०, १.१७९.१. **जरिमाणम्**=प्राप्तजरसं देहम् १.११६.२५. [जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० इमनिच्प्रत्ययः । जराप्राति० वा, भावे कर्मणि वा इमनिच्प्रत्ययश्छान्दसः]

जरूथम् जराऽवस्थया युक्तम् (जीर्णं मेघम्) ७.९.६. जराऽवस्थां प्राप्तं जीर्णं काष्ठम् ७.१.७. [जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोः 'जॄवृञ्भ्यामूथन्' उ० २.६. सूत्रेण ऊथन् प्रत्ययः । जरूथं गरूथं गृणातेः नि० ६.१७.]

जरेत प्रशंसिता भवेत् ४.३.१५. **जरेथाम्**=स्तुयातम् ३.५८.२. **जरेथे**=जरयतः २.३९.१. [जरति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. ततो लिङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । जरेथे प्रयोगे लट्]

जर्भुरत् भृशं धरेत् २.२.५. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्यङ् लुगन्ताल् लेट् । विकरणव्यत्ययेन शः । शप्रत्ययस्य ङित्वाद् गुणाऽभावे 'उदोष्ठ्यपूर्वस्य' इत्युकारादेशो रपरत्वञ्च]

जर्भुराणः भृशं धरन् (वरुणः=वरो जीवः) २.३८.८. भृशं गात्राणि विनामयत् (वायुः) प्र०—अत्र जृभी धातोरौणादिक उरानन् प्रत्ययः ११.२४. **जर्भुराणा**=भृशं पोषकानि धारकाणि (शृङ्गाणि=सेनाङ्गानि) २९.२२. अत्यन्तं पुष्टानि (शृङ्गाणि=कर्माणि) १.१६३.११. भृशं धर्त्तारौ (अग्निवायू) २.३९.३. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । अन्यत्र=जृभि गात्रविनामे (भ्वा०) धातोरौणादिक उरानन् प्रत्ययः । नुमोऽभावश्छान्दसः । नाभिभृशे तन्वा जर्भुराण इति न ह्येषो (अग्निः) ऽभिमृशे तन्वा दीप्यमानो भवति श० ६.३.३.२०.]

जर्भुरीति भृशं धरति ५.८३.५. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

जर्हृषन्त भृशं हृष्यन्तु ६.१७.४. [हृष तुष्टौ (दिवा०), हृषु अलीके (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लङ् । अडभावः । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जर्हृषाणः भृशं हृषितः (इन्द्रः=विद्वान् सेनापतिः) ७.२१.४. पुनः पुनर्हर्षं प्रापयन् (राजप्रजाजनः) १.५२.२. अतिशयेन हृष्टः (अग्निः=शूरवीरः सेनापतिः) ५.३७. [हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच् छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जलाषभेषजम् जलाषाय सुखाय भेषजं यस्मात्तम् (रुद्रम्=परमेश्वरम्) १.४३.४. [जलाष-भेषजपदयोः समासः। जलाषम् उदकनाम निघं० १.१२. सुखनाम निघं० ३.६. भेषजम्=भिषज् चिकित्सायाम् (कण्ड्वा०) धातो रूपम्]

जलाषः सुखकर्त्ता (भेषजः=भिषग्जनः) २.३३.७. दुःखनिवारकः (रुद्रः=परमात्मा जीवो वा) ७.३५.६. [जलाषम् उदकनाम निघं० १.१२. सुखनाम निघं० ३.६. जल घातने (भ्वा०) जल अपवारणे (चुरा०) धातोर्वा बाहुलकादौणादिक आषच्प्रत्ययः]

जल्गुलः अतिशयेन गृणीहि, प्र०—अत्र 'गॄ शब्दे' इत्यस्माद् यङ्लुगन्ताल्लेट् 'बहुलं छन्दसि' इत्युपधाया उत्त्वञ्च १.२८.१. अतिशयेन शब्दय १.२८.२. शृणूपदिश च १.२८.३. [गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लेट्। धातोर् उपधाया उत्वं रपरत्वं छान्दसम्। कपिलकादित्वाल् लत्वम्]

जल्प्या जल्पेषु सत्याऽसत्यवादाऽनुवादेषु भवाः (अब्रह्मविदो जनाः), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेराकारादेशः १७.३१. [जल्पप्राति० भवार्थे यत्। जल्पः=जल्प व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्घञ्प्रत्ययः]

जवनी वेगशीला (सूनृता=अन्नादिसमूहकरी राजनीतिः) १.५१.२. **जवनीभिः**=वेगवतीक्रियाभिः २.१५.६. [जु वेगितायां गतौ सौत्रो धातुः। ततो ल्युडन्तान् ङीप्]

जवम् वेगम् २५.३. **जवाय**=वेगाय २२.८. [जवति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप्। 'जवसवौ छन्दसि वक्तव्यौ' अ० ३.३.५६. वा० सूत्रेण अच् प्रत्ययो वा। वीर्यं वै जवः श० १३.४.२.२.]

जवसा वेगेनेव १.११८.११. **जवसे**=वेगाय ३.५०.२. **जवांसि**=वेगा इव ४.११.८. [जु वेगितायां गतौ सौत्रो धातुः। जवति गतिकर्मा निघं० २.१४. धातोरौणादिको ऽसुन् प्रत्ययः]

जविष्ठम् वेगवत्तमम् (मनः=अन्तःकरणवृत्तिः) ६.९.५. अतिशयेन वेगवत्तरम् (मनः) ३४.६. अत्यन्त वेगवाला (मनः=मन) स० प्र० २४७, ३४.४. [जव प्राति० अतिशायन इष्ठन्। जवं व्याख्यातम्]

जविष्ठा अतिशयेन वेगवन्तौ (वाय्वग्नी) ४.२.३. [जवप्राति० अतिशायन इष्ठन्। 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः। जवं व्याख्यातम्]

जवीयः अतिशयेन वेगवत् (ब्रह्म=परमेश्वरः) ४०.४. [जवप्राति० अतिशायन ईयसुन् प्रत्ययः]

जवीयान् अतिशयेन वेगयुक्तः (रथः) १.११७.२. अतिशयेन वेगवान् (वायुयानाख्यो रथः) १.१८३.१. [जव प्राति० अतिशायन ईयसुन्]

जवेते गच्छतः ३.३३.१. [जयति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

जसमानम् शत्रून् हिंसन्तम् (भुज्युं=पालकं जनम्) १.११२.६. [जसु हिंसायाम् (चु०) धातो शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। जसति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

जसुरये हिंसकाय (अरये=शत्रवे) ६.१३.५. [जसु मोक्षणे (दिवा०) धातोः 'जसिसहोरुरिन्' उ० २.७३. सूत्रेण उरिन्प्रत्ययः। जसुरिः जस्तमिव नि० ४.२४.]

जसुरिम् प्रयतमानम् (पतिम्) ५.६१.७. [व्याख्यातम्]

जस्यत मुञ्चतु मोचयन्तु १.१९१.७. [जसु मोक्षणे (दिवा०) धातोर्लोट्]

जस्वने अन्यायेन परस्वप्रापकाय दुष्टाय राज्ञे, प्र०—जसतीति गतिकर्मा, निघं० २.१४, ६.४४.११ [जसति गतिकर्मा (निघं० २.१४) धातोर्वनिप्]

जहका गात्रसङ्कोचिनी (जोक इति भाषायाम्) २४.३६. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः 'जहातेर्द्वे च' उ० २.३४. सूत्रेण क्वुन् प्रत्ययो द्वित्वञ्च स्त्रियां टाप् ऋतूनां जहका काठ० ४७.८. जहका वैष्णवी मै० ३.१४.१७.]

जहतीः पूर्वामवस्थां त्यजन्तीः (विशः=प्रजाः) ७.५.३. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

जहाति त्यजति १.९५.७. **जहातु**=त्यजतु ३.५३.२१. **जहामि**=त्यजामि १२.१०५. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोर्लट्]

जहि दूरे प्रक्षिप ४.२२.९. हिन्धि गमय वा १.४२.२. त्यज ७.४८.८. मारय दण्डय वा १.१७६.४. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लोट् 'हन्तेर्जः' सूत्रेण धातोः स्थाने जादेशः]

जहितस्य हातुः (जनस्य) प्र०—अत्र हा धातोरौणादिक इतच्प्रत्ययो बाहुलकात् सन्वच्च १.११६.१०. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोरौणादिक इतच्। बाहुलकात् सन्वद्भावाद् द्वित्वम्]

जहिता जहितौ त्यक्तारौ (अन्धं=चक्षुर्विज्ञानविकलं,

श्रोणं=विकलं च जनम्) ४.३०.१९. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोरौणादिक इतच्प्रत्ययः। बाहुलकाच्च सन्वत्त्वे द्वित्वम्। 'सुपां सुलुग्' इत्याकारः]

जहीमः त्यजामः ३५.१०. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोर्लट्]

जहुः त्यजन्ति २.२४.७. जहति ७.१८.१५. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः सामान्ये लिट्]

जहृषाणः अतिशयेन हृष्टः (सेनापतिः) ५.३७. **जहृषाणेन**=सज्जनानां सन्तोषकेन (मन्युना=क्रोधेन) प्र०—अत्र हृष तुष्टौ इत्यस्माल्लिटः कानच्, तुजादित्वाद् दीर्घश्च १.१०१.२.]

जह्नावीम् जहत्यास्त्याज्यायाः शत्रुसेनाया इमां विरोधिनीं सेनाम्, प्र०—'जहातेर्द्वेऽन्त्यलोपश्च' उ० ३.३६. इति हा धातोर्नुस्ततः 'तस्येदम्' इत्यण्, पृषोदरादित्वाद् वर्णविपर्ययः १.११६.१९. **जह्नाव्याम्**=जह्नोस्त्यक्तुरियं नीतिस्तस्याम्, प्र०—अत्राऽऽकाराऽकारयोर्व्यत्ययः ३.५८.६. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः 'जहातेर्द्वेऽन्त्यलोपश्च' उ० ३.३६. सूत्रेण नु-प्रत्यये जह्नुः। ततः 'तस्येदम्' इत्यण् प्रत्ययान्तान् ङीर्। वर्णव्यत्ययेनाकारस्याकारः, अकारस्य चाकारादेशः]

जंहः सद्यो गता (यजत्रः=राजा) ६.१२.२.

जागतम् जगज्जानाति येन तत् (छन्दः=सृष्टि-विद्याबलकारकं वेदम्) १२.५. **जागतः**=जगतीप्रगाथोऽस्य सः (यज्ञः) ४.२४. **जागतेन**=जगत्या विहितेन साधनेन ११.१०. जगत्येव जागतं सर्वलोकसुखकारकं तेन (छन्दसा=आह्लादकारकेणाऽनुष्ठानेन) २.२५. जगतीप्रगाथोऽस्य तेन (छदसा) ५.२. जगतीछन्दः प्रकाशितेनाऽर्थेन २३.८. जगत्युक्तेन (छन्दसा) १३.५३. जगत्येव जागतं तेन (छन्दसा) १.२७. जगद्विद्याप्रकाशकेन (छन्दसा) ११.६५. **जागतेभ्यः**=जगतीबोधितेभ्यः (देवेभ्यः=दिव्यगुणेभ्यो जनेभ्यः) २९.६०. [जगतीप्राति० 'सोऽस्यादिरिति च्छन्दसः प्रगाथेषु' अ० ४.२.५५. सूत्रेणाण्प्रत्ययः। अथवा जगति प्राति० 'छन्दसः प्रत्ययविधाने नपुंसके स्वार्थ उपसंख्यानम्' वा० सूत्रेण स्वार्थेऽण् प्रत्ययः]

जागरणम् जागृतम् (प्रबोधम्) ३०.१७. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्ल्युट् भावे]

जागरासि जागती रहे, सं० वि० १६९, अथर्व० १४.२.२९. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लेट्। आडागमः]

जागार जागृतो भवति ५.४४.१५. **जागारः**=अविद्यानिद्राया उत्थाय जागर्ति ५.४४.१४. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लिट्। 'छन्दसि वेति वक्तव्यम्' अ० ६.१.८. वा० सूत्रेण वा द्वित्वम्]

जागरूके प्रसिद्धे (द्यावापृथिव्यौ) ३.५४.७. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोः 'जागुरूकः' अ० ३.२.१६५. सूत्रेण तच्छीलादिषु ऊकः प्रत्ययः]

जागृतम् प्रसिद्धगुणौ स्तः, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२१.६. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लोट्]

जागृधुः अभिकाङ्क्षेयुः २.१३.१६. [गृधु अभिकांक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचनम् तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

जागृयाम सचेतना अनलसाः सन्तो वर्त्तेमहि ९.२३. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लिङि उत्तमपुरुषे बहुवचनम्]

जागृवद्भिः अविद्यानिद्रात उत्थातृभिः (योगिभिर्जनैः) ७.५.१. अविद्याऽऽलस्य-निद्रा विहाय विद्यापुरुषार्थादिकं प्राप्तैः (मनुष्येभिः=मनुष्यैः) ३.२९.२. **जागृवांसः**=अविद्यानिद्रात उत्थाय जागरूकाः, भा०—पुरुषार्थिनः (विप्रासः=मेधाविजनाः) ३४.४४. अविद्यानिद्रात उत्थिता विद्यायां जागरूकाः (विप्राः=मेधाविनो जनाः) ३.१०.९. जागरूकाः (मेधाविजनाः), प्र०—अत्र जागर्तेर्लिटः स्थाने क्वसुः 'द्विर्वचनप्रकरणे छन्दसि वेति वक्तव्यम्' अ० ६.१.६. अनेन द्विर्वचनाऽभावश्च १.२२.२१. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः। 'छन्दसि वेति वक्तव्यम्' इति वा० सूत्रेण द्वित्वाऽभावश्च]

जागृवांसा जागृतौ (सभासेनेशौ) १.१३६.३. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लिटः क्वसुः। द्वित्वाऽभावश्च छान्दसः। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः]

जागृवि जागरूकम् (ज्योतिः=तेजः) २०.३० प्रसिद्धम् (नाम=संज्ञा) ७.२. जागरूका कार्यसाधनेऽप्रमत्ता (सरस्वती=सद्विद्या स्त्री) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सोर्लोपः २१.३६. **जागृविः**=सदा जाग्रदिव (वैश्वानरः=पावकः) ३.२.१२. जागरूकः (अग्निः=विद्युत्) १२.१०. यो नित्यं धर्म्ये पुरुषार्थे जागर्ति सः (अग्निः=सभास्वामी राजा) १.३१.९. **जागृवे !**=जागृत (अग्ने=विद्वज्जन) ३.३.७. जागरूक (अग्ने=प्रकाशयुक्त राजन्) ३.२४.३. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोः 'जॄशॄस्तॄजागृभ्यः क्विन्' उ० ४.५४. सूत्रेण क्विन्। 'जाग्रोऽविचिण्णल्ङित्सु' अ०

७.३.८५. सूत्रेण गुणप्रतिषेधः। जागृविः जागरणात्। नि० ९.८. यज्ञो वै जागृविः काठ० ३७.१०]

जागृहि विद्यामुन्नय २७.३ अ०—अस्माँश्च जागृतान् कुरु २७.३. अविद्याऽन्धकार-निद्रातः सर्वान् पृथक्कृत्य विद्याऽर्कप्रकाशे जागृतान् कुरु, अविद्यानिद्रां त्यक्त्वा विद्यया चेत १५.५४. जागर्ति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च ४.१४. निद्रादिकं गृहकार्ये परित्यज २७.३. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लोट्]

जाग्रतः भा० जागृताऽवस्थस्य (मम=जनस्य) ३४.१. जागते हुए (मे=मुझ जन) का, स० प्र० २४६, ३४.१. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

जाग्रत् जागरणे २०.१६. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोः शतृ। 'सुपां सुलुग्' इति ङेर्लुक्]

जाग्रद्भ्यः प्रबुद्धेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२३. [जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

जातम् प्रसिद्धम् (पृतिम्) ५.३२.११. उत्पन्नम् ३२.५. प्रकटम् (सोमम्=ऐश्वर्यम्) ३.५१.८. प्रसिद्धिं गतम् (अमृतं) २.८३.५. प्रादुर्भूतं जगत्कर्त्तारम् (भा०—सृष्टिकर्त्तारमीश्वरम्) ३१.९. प्रसिद्धमुत्पन्नं बलम् १.११७.१६. यत्किञ्चिदुत्पन्नं कार्यम् २५.२३. उत्पन्नं विज्ञानम् १.१५६.२. **जातस्य**=उत्पन्नस्य कार्यस्य १.९६.७ प्रसिद्धस्य जगतो मध्ये २.३३.३. **जातः**=प्रकटत्वं गतः (सेनेशः) १.६६.४. प्राकट्यं प्राप्तः, भा०—प्रकटीभूतः (देवः=ईश्वरः) ३२.४. विद्याजन्मनि प्रादुर्भूतः (अग्निः=विद्वान् पुत्रः) ४.२.२. प्रकटः सन् (सूरः=सूर्यः) १.१३०.९. प्रादुर्भूतस्य (संसारस्य), प्र०—अत्र षष्ठ्यर्थे प्रथमा २५.१०. निष्पन्नः, भा०—प्रसिद्धः (अग्निः=सूर्यवद् राजा) १२.१३. जनकः (प्रजापतिः) १३.४. **जातान्**=उत्पन्नान् प्रसिद्धान् (सपत्नान्=शत्रून्) १५.१. प्रादुर्भूतान् विरोधिनः (शत्रून्) १५.२. **जातानि**=प्रसिद्धानि (बलादीनि) ६.२५.५. उत्पन्न हुए (जड़ चेतनादिकों) को सं० वि० ६, १०.१२१.१०. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। 'जनसनखनां सञ्झलोः' अ० ६.४.४२. सूत्रेण आकारादेशः। जातः जायमानः नि० ८.२१.]

जातवेदसम् प्रसिद्धविद्यम् (पतिम्) १.१२७.१. जातेषु विद्यमानम् (पावकम्) ५.२६.७. जातेषु पदार्थेषु विद्यमानमिव व्याप्तविद्यम् (परमेश्वरम्) १.४४.४. जातविद्यम् (मित्रं=सखायम्) ६.४८.१. जातविज्ञानम् (मित्रं=सखायमीश्वरम्) २७.४२. उत्पन्नं वेदविज्ञानम् ११.५३. प्राप्तविद्यम् (सन्तानम्) ३.११.४. प्रसिद्ध-प्रज्ञम् (विप्रम्=आप्तं मेधाविजनम्) १५.४७. यो जातान् पदार्थान् विन्दति तम् (सूर्यम्) १.५०.१. यो जातान् वेत्ति, विन्दते, जाता वेदसो वेदाः पदार्था वा यस्मात्तम् (सूर्यम्=ईश्वरम्) ८.४१. यो जातेषु सर्वेषु स्वव्याप्त्या विद्यतेऽथवा जातान् सर्वान् पदार्थान् वेत्ति तम् (चेतनं=परमात्मानम्) ३.३.८. जातवित्तम् (अग्निं=विद्युदादिस्वरूपम्) २.२.१. जाता ऋग्वेदादयश्चत्वारो वेदाः सर्वज्ञानप्रदा यस्मात् तथा जातानि प्रकृत्यादीनि भूतान्यसङ्ख्यातानि विन्दति; यद्वा जातं सकलं जगद् वेत्ति जानाति स जातवेदास्तम् (ईश्वरम्) पं० वि०। **जातवेदसः**=जातविद्या विद्वांसः सन्तः (विप्रासः=मेधाविनो जनाः) ३.११.८. **जातवेदसा**=प्राप्तप्रकटविद्यौ (स्त्रीपुरुषौ) ७.२.७. **जातवेदसि**=जातविद्ये (सद्गृहस्थे) ६.१६.४२. **जातवेदसे**=यो जातं सर्वं वेत्ति, विन्दति, जातेषु विद्यमानोऽस्ति, तस्मै (जगदीश्वराय) १.९९.१. उत्पन्न मात्र सब जगत् को जानने वाले, सर्वत्र प्राप्त, विद्वानों से ज्ञात, सब में विद्यमान, जात अर्थात् प्रादुर्भूत, अनन्त धनवान् वा अनन्त ज्ञानवान् परब्रह्म के लिए, आर्याभि० १.३३, ऋ० १.७.७.१. जाते जाते उत्पन्ने पदार्थे विद्यमानस्तस्मिन्, अ०—जातवेदसि (अग्नये=रूपादिगुणस्वभावे), प्र०—जाते जाते विद्यते इति वा, जातवित्तो वा, जातधनो, जातविद्यो वा, जातप्रज्ञानो यत् तज्जातः पशूनविन्दतेति तज्जातवेदसो जातवेदस्त्वमिति, नि० ७.१९, ३.२. जातेषु पदार्थेषु विद्यमानाय जातप्रज्ञानाय वा (भौतिकाऽग्नये परमात्मने वा) ३.१०.३. यो विद्वान् जातं सर्वं वेत्ति, तस्मै, जातेषु कार्येषु विद्यमानाय वा (ईश्वराय) १.९४.१. **जातवेदसौ**=जातं वेदो विद्या ययोस्तौ (अ०—अध्येत्रध्यापकौ) ५.३. उत्पन्नाऽखिलविज्ञानौ (स्त्रीपुरुषौ) १२.६०. **जातवेदः!**=यो जातान् सर्वान् वेत्ति जातान् विन्दति वा तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=परमेश्वर!) १.४४.१. जातं विज्ञानं यस्य सः (अग्ने=विद्वज्जन) १५.३५. जातप्रज्ञानबले (तेजस्विन् राजन्) ६.१६.२९. प्रकटविद्य (अग्ने=विद्वज्जन) २७.२२. जाता वेदा प्रज्ञा यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वन्) १९.६७. जाता वेदा यस्माद्, जातान् वेदान् वेत्ति, जातान् सर्वान् पदार्थान् विन्दति, जातेषु पदार्थेषु विद्यते वा तत्सम्बुद्धौ (वैश्वानर=जगदीश्वर) १.५९.५. जातेषु जनेषु ज्ञानिन् विद्वन् (जन) १९.३९. जाता विदिता वेदा यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वन् राजन्) १२.१६. जातवित्तम् (अग्ने=अग्निम्) प्र०—अत्र विभक्तिव्यत्ययः ३.२९.४. **जातवेदाः**=जातं वेदो विज्ञानं यस्य

स: (विद्वज्जन:) १७.६६. जातप्रज्ञो वेदार्थवित् (मनुष्य:) १८.५६. जातानि वेद्वांसि धनानि यस्मात् स: (अग्नि:=पावक:) ३.२३.१. यो जातेषु सर्वेषु पदार्थेषु विद्यमानोऽग्नि: ३.२६.२. यो जातेषु पदार्थेष्वभिव्याप्य विद्यते स: (अग्नि:=पावक इवेश्वर:) ७.१२.२. यो जातान् विन्दति वेत्ति वा स: (सभाध्यक्ष:) १.७७.५. आविर्भूत विद्यायोगप्रज्ञ:, भा०—वेदादिशास्त्रवेत्ता (राजा) ३३.१६. जातानां सर्वेषां पदार्थानां वेत्ता जगदीश्वर: ३.५.४. यो जातेषु पदार्थेषु अजात: सन् विद्यते स: (जीव:) ३.१.२१. [जातशब्दोपपदाद् विद ज्ञाने (अदा०) विद सत्तायाम् (दिवा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) विद विचारणे (रुधा०) विद चेतनाख्याननिवासेषु (चुरा०) धातोर्वौणादिकोऽसुन्। जातवेदा: कस्मात्? जातानि वेद, जातानि वैनं विदु:, जाते जाते विद्यत इति वा, जातवित्तो वा जातधन:, जातविद्यो वा जातप्रज्ञान:। 'यत्तज् जात: पशूनविन्दतेति तज्जातवेदसो जातवेदस्त्वम्' इति ब्राह्मणम्। 'तस्मात् सर्वानृतून् पशवोऽग्निमभिसर्पन्ति' इति च। स न मन्येतायमेवाग्निरिति। अप्येते उत्तरे ज्योतिषी जातवेदसी उच्येते ततो नु मध्यम:। …अथासावादित्य:, ……अयमेवाग्निर्जातवेदा निपातमेवैते उत्तरे ज्योतिषी एतेन नामधेयेन भजेते नि० ७.१६.२०.

सोऽब्रवीज्जाता वै प्रजा अनेनाविदमिति, यदब्रवीज्जाता वै प्रजा अनेनाविदमिति तज्जातवेदस्यमभवत्तज्जातवेदसो जातवेदस्त्वम् ऐ० ३.३६. प्राणो वै जातवेदा: स हि जातानां वेद ऐ० २.३६. तद् यज्जातं जातं विन्दते तस्माज्जातवेदा: श० ६.५.१.६८. वायुर्वै जातवेदा वायुर्हीदं सर्वं करोति यदिदं किञ्च ऐ० २.३४. जातवेद: शिवो भव तै० सं० ४.१.६.४. यज्जात: पशूनविन्दत तज्जातवेदसो जातवेदस्त्वम् मै० १.८.२.]

जाता जातौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८१.४. [जातपदं व्याख्यातम्। 'सुपां सुलुगि०' त्याकारादेश:]

जाता प्रसिद्धा (वाक्) ६.६१.१२. **जातासु**=उत्पन्नासु प्रजासु ३.५५.५. **जातेभि:**=उत्पन्नै: (सृष्टिपदार्थै:) ३.३१.११. [जात इति व्याख्यातम्। तत: स्त्रियां टाप्। जातेभि:=भिस ऐसादेशो न भवति छन्दसत्वात्]

जातूभर्मा यो जातान् जन्तून् बिभर्त्ति स: (इन्द्र:=सेनाद्यध्यक्ष:) प्र०—अत्र जनिधातोस्तु: प्रत्ययो नकारस्याकारादेशोऽन्येषामपीति दीर्घ: १.१०३.३. [जातु:=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोरौणादिकस्तु: प्रत्ययो नकारस्य चाकारादेशो वाहुलकात्। तदुपपदे डुभृञ् धारणपोषणयो: (जु०) धातोर्मनिन्प्रत्यय:]

जातूष्ठिरस्य कदाचिल्लब्धस्थिते: (सेनेशस्य) २.१३.११. [जातु-स्थिरपदयो: समास:। संहितायां दीर्घ:]

जानत: धार्मिकान् विदुष: (जनान्) ३.४२. जानने वाले (विद्वानों) को, सं० वि० १४७, ३.४२. **जानता**=विदुषा (जनेन) ५.५१.१५. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातो: शतृप्रत्यय:। 'ज्ञाजनोर्जा' इति शित्प्रत्यये जादेश:]

जानताम् विज्ञानवन्तो भवत, ऋ० भू० ६२, १०.१९१.२. [ज्ञा+शतृ इति व्याख्यातम्। तत: षष्ठ्या बहुवचनम्]

जानती ज्ञापयन्ती (उषा:) १.१२३.६. या जानाति सा स्त्री १.१३४.१. विज्ञानवती (वैद्या स्त्री) ३३.५६. प्रबुध्यमाना (प्रज्ञा) १.१०४.५. **जानती:**=ज्ञानयुक्ता: (विदुषी स्त्री:) १.१४०.७. ज्ञानवत्य: (उषास:=प्रभातान्) ३.३१.४. विज्ञानवती: (व्रा:=वाण्य:) ४.१.१६. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातो: शत्रन्तान् ङीप्]

जानते जानन्ति ३.५७.३. जानते और जनाते हैं. पं० वि० [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जानत: धार्मिकान् विदुष: (जनान्) ३.४२. **जानन्**=जानन्ती च (पुरुष: स्त्री च) १५.५६. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातो: शतृ। शिति प्रत्यये धातोर्जादेश:]

जानन् जानीयु: १७.४७. **जानन्तु**=विदन्तु ३.४२. सुहृत् जानें सं० वि० १४७, ३.४२. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातो: सामान्ये लङ्। अडभावश्छान्दस:। अन्यत्र लोट्। शितिप्रत्यये जादेश:]

जानम् जायते यस्मात्तदाकाशम्, प्र०—अत्र जनधातो: घञ्, स्वर-व्यत्ययेनाऽऽद्युदात्तत्वम्। सायणाऽऽचार्येणेदं 'जनिवध्यो:' इत्यादीनामवोधादुपेक्षितम् १.३७.६. प्रादुर्भावम् ५.५३.१. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्घञ् प्रत्यय:]

जानराज्याय जनानां विदुषां मध्ये परमराज्यकरणाय, ऋ० भू० २२२, ६.४०. जनानां राज्ञां माण्डलिकानामुपरि प्रभवाय (महाराजाय) १०.१८. बड़े-बड़े विद्वानों से युक्त राज्य पालने के लिए, स० प्र० १८३, ६.४०. जनानां राजसु भवाय (इन्द्रियाये=धनाय) ६.४०. [जन-राज्यपदयो: समासे भवार्येऽण् प्रत्यय:]

जाना जनेषु भवानि (कर्माणि), प्र०—अत्रोत्सादे-

राक्तितिगणत्वाद् भवार्थेऽञ् 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति शेर्लोपः। अत्र सायणाऽऽचार्येण पृषोदराद्याकृतिगणत्वादाद्युदात्तत्वं प्रतिपादितं, तदशुद्धम्, अनुत्सर्गाऽपवादत्वात् १.९५.३. [जनप्राति॰ भवार्थे 'उत्सादिभ्योऽञ्' अ॰ ४.१.८६. सूत्रेणाञ्। उत्सादेराकृतिगणत्वात्]

जानाथ विजानीत, प्र॰—लेट्-प्रयोगोऽयम् १८.६०. **जानाथाम्**=जानीतः, प्रादुर्भूतविद्यासाधिके भवतः, प्र॰—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च २.१६. **जानीहि**=विद्धि १.५१.८. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या॰) धातोर्लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जानुना उरुजङ्घयोर्मध्यभागौ २०.८. [जानुप्राति॰ प्रथमाद्विवचनम्। जानु=जनी प्रादुर्भावे (दिवा॰) धातोः 'दृसनिजनि॰' उ॰ १.३. सूत्रेण ञुण्प्रत्ययः]

जापयत उत्कर्षेण बोधयत, उत्कृष्टतां प्रापयत ९.११. [जि जये (भ्वा॰) धातोर्णिजन्ताल्लोट्। 'क्रीङ्जीनां णौ' इत्येचः स्थाने आत्वे पुगागमः]

जामयः बन्धव इव १.२३.१६. प्राप्तचतुर्विंशतिवर्षा युवतयः ३.५७.३. पतिव्रता भार्या इव ६.२५.३. ज्ञानवन्त्यपत्यानि, प्र॰—जमतीति गतिकर्मसु पठितम्, निघं॰ २.१४. अत्र जमु धातोः 'इणजादिभ्यः' अ॰ ३.३.१०. अनेनेण्प्रत्ययः 'जमतेर्वा स्याद् गतिकर्मणः' नि॰ ३.६, १.३१.१०. **जामये**=जामात्रे ३.३१.२. जामिभिः=बन्धुवर्गैः १.१००.११. स्त्रीभिः १.७१.७. **जामिम्**=भोजनयुक्तम् (स्थानम्) १३.१३. जामात्रादिकम् ६.४४.१७. भोगम् ४.४.५. प्रसिद्धं (शत्रुम्) १.१११.३. भार्य्याम् १.१२४.६. जायमानम् (अग्नि=पावकम्) ३.२.९. **जामिः**=उदकमिव शान्तिप्रदः (विद्वान् जनः) १.७५.४. बन्धुः (इन्द्रः=राजपुरुषः) ४.२५.६. सुखप्रापको बन्धुः १.६५.४. कन्येव (उषाः) १.१२३.५. ज्ञाता (अग्निः=महाविद्वज्जनः) प्र॰—अत्र ज्ञा-धातोर्बाहुलकादौणादिको मिः प्रत्ययो जाऽऽदेशश्च १.७५.३. **जामि**=जातम् (सना=सनातनं ब्रह्म) ३.५४.९. **जाम्योः**=अत्तव्याऽन्नप्रदयोर्द्यावापृथिव्योः ५.१९.४. [या प्रापणे (अदा॰) धातोर्बाहुलकाद् (उ॰ ४.४३.) सूत्रेणौणादिको मिः प्रत्ययः। धातोरादेश्च जकारादेशः। जमतीति गतिकर्मसु पठितम्, (निघं॰ २.१४.), ततः 'इणजादिभ्यः। अ॰ ३.३.१०. वा॰ सूत्रेण इण्प्रत्ययः। जामये=भगिन्यै जामिरन्येऽस्यां जनयन्ति जामपत्यम्। जमतेर्वा स्याद्गतिकर्मणो निर्गमनप्राया भवति नि॰ ३.६. जामिः=अतिरेकनाम, बालिशस्य वा, असमानजातीयस्य वोपजनः नि॰ ४.२०. जामि उदकनाम निघं॰ १.१२. जामयः=अङ्गुलिनाम निघं॰ २.५.]

जामर्य्येण जामस्येदं जामं, तद्दच्छति येन तेन (पयसा=दुग्धेन, धासिना=अन्नेन) ४.३.९.

जामातः! कन्यापतिवद् वर्त्तमान! (वायो=विद्वज्जन) २७.३४. [जायां कन्यां माति मिनोति मिमीते मार्जयतिवेति विग्रहे जायोपपदे माङ् माने (जु॰) मा माने (अदा॰) धातोर्वा 'नप्तृनेष्टृत्वष्टृ॰' उ॰ २.९५. सूत्रेण तृच्। निपातनाद् या-लोपश्च]

जामि जातम् (सर्वं जगत्) ३.५४.९.

जामित्वम् सुख-दुःखभोगम् १.१६६.१३. **जामित्वाय**=कन्यावत् पालनाय प्रजाभावाय १.१०५.९. [जामिपदं व्याख्यातम्। ततो भावे कर्मणि वा त्वः प्रत्ययः]

जामी सुखभोक्तारौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५८.४. कन्ये इव १.१८५.५. **जामीन्**=सम्बन्धिनो बन्ध्वादीन् (मित्राणि) ६.१९.८. **जामीनाम्**=भोक्तॄणाम् (स्वसॄणां=भगिनीनाम्) ३.१.११. [जामिरिति व्याख्यातम्। (जमु अदने (भ्वा॰) धातोः 'इण् अजादिभ्यः' वार्त्तिकेन इण् प्रत्ययः। प्रथमाद्विवचने पूर्वसवर्णदीर्घः]

जाम्बिलेन फलविशेषेण २५.३.

जायत जायते, प्र॰—अत्राऽडभावः ४.१.११. **जायताम्**=उत्पद्यताम् ३५.२२. **जायते**=प्रसिद्धो भवति २.३.९. उत्पद्यते ५.१.४. प्रकाशितो भवति २३.४६. **जायन्ते**=उत्पद्यन्ते ३.३६.५. **जायसे**=उत्पद्यसे ५.११.३. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा॰) धातोर्लङ्, अडभावश्छान्दसः। 'ज्ञाजनोर्जा' इति शिति जादेशश्च। अन्यत्र लोट्लटौ]

जायमानम् उत्पद्यमानम् (भोगम्) १.६०.३. **जायमानस्य**=कल्पाऽन्ते पुनरुत्पद्यमानस्य कार्यस्य जगतः १.९६.७. **जायमानः**=उत्पद्यमानः (इन्द्रः=राजा) ४.१७.७. प्रसिद्धः (अग्निः=विद्वान् जनः) ३.६.५. प्रादुर्भवन् (मनुष्यः) १.९६.१. प्रकटः सन् (विद्युदग्निः) ६.१०.४. दूसरे विद्याजन्म में प्रसिद्ध (पुरुष), स॰ प्र॰ १०९, ३.८.४. विद्याया मातुरन्तः स्थित्वा निष्पन्नः (विद्यार्थिजनः) ३.८.४. **जायमानाः**=उत्पद्यमानाः (उषसः=प्रभातवेलाः) ६.५२.४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा॰) धातोः शानच्]

जायमाना उत्पद्यमानौ (पूजनीयौ अध्यापकोपदेशकौ) ६.६७.४. उत्पद्यामाना,(उषाः) १.९२.१०. **जायमानाम्**=

प्रसिद्धाम् (मेधाम्) ५.४२.१३. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः शानच् । ततः 'सुपां सुलुगि' त्याकारः । अन्यत्र स्त्रियां टाप्]

जायवः जयशीलाः (शूरा जनाः), जेतारः शूराः (जनाः) १.१३५.८. शत्रून् विजेतारः (वीरजनाः) १.११९.३. **जायुः**=प्रजेता (जनः) १.६७.१. [जयत्यभिभवति तिरस्करोति शत्रून् इति विग्रहे जि जये (भ्वा०) धातोः 'कृवापाजिमि०' उ० १.१. सूत्रेण उण्-प्रत्ययः]

जाया स्त्री, सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.२. पत्नी ३.५३.४. जायन्ते यस्या अपत्यानि सा (स्त्री) ३.५३.६. **जायाम्**=स्वस्त्रियम् १.८२.५. [या जायते यस्यां वा सेति विग्रहे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जनेर्यक्' उ० ४.१११. सूत्रेण यक्प्रत्ययः । 'ये विभाषा' इति सूत्रेण व्यवस्थितविभाषाविज्ञानात् पत्न्यां नित्यमात्वम् । स्त्रियां टाप्। पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वा स मातरं तस्यां पुनर्नवो भूत्वा दशमे मासि जायते तज्जाया जाया भवति यदस्यां जायते पुनः ऐ० ७.१३. तद् यदब्रवीद् (ब्रह्म) आभिर्वा अहमिदं सर्वं जनयिष्यामि यदिदं किञ्चेति तस्माज्जाया अभवंस्तज्जायानां जायात्वं यच्चासु पुरुषो जायते गो० पू० १.२. अर्धो ह वा एष आत्मनो यज्जाया तस्माद् यावज्जायां न विन्दते नैव तावत् प्रजायतेऽसर्वो हि तावद् भवति, अथ यदैव जायां विन्दतेऽथ प्रजायते, तर्हि हि सर्वो भवति श० ५.२.१.१० जाया गार्हपत्यः (अग्निः) ऐ० ८.२४.]

जायेव यथा भार्या तथा १.६६.३. हृद्या स्त्रीव ४.३.२. [जाया पदं व्याख्यातम् । जाया-इवपदयोः समासः]

जारम् व्यभिचारिणम् (दुर्जनम्) ३०.९. वयोहानिकारकम् (सूर्यम्) १.१५२.४. **जारस्य**=लम्पटस्य, रात्रेर्जरयितुः सूर्यस्य वा १.९२.११. **जारः**=वयोहन्ता सूर्यः १.६९.१. दुःखहन्ता सविता १.६९.५. विभागकर्त्ता आदित्यः १.१६.४. हन्ता सूर्यः १.६६.४. निवारयिता (सूर्यः) ६.५५.५. व्यभिचारी वृद्धो वा (जनः) १.११७.१८. व्यभिचारेण वयोहन्ता, अ०—यः सर्वतः क्षीणो जायते (दुर्जनः) २३.३१. जाल्म इव (पुरुष इव) १.१३४.३. [आदित्योऽत्र जार उच्यते रात्रेर्जरयिता, स एव भासाम् (नक्षत्राणां ज्योतिषां च) नि० ३.१६. जारः जरयिता नि० १०.२१.]

जारयन्ती वयो गमयन्ती (उषाः) १.१२४.१०. [जॄ वयोहानौ (चुरा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

जारयायि जारं जराऽवस्थां यातुं शीलं यस्य तच्छरीरम् ६.१२.४. [जारोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः प्रत्ययः । जारयायि=अजायि नि० ६.१५.]

जारिषुः जारकर्माणि कुर्वन्तु १.१२५.७. जीर्णानि भवन्तु १.१३७.८. जरन्तु, प्र०—अत्राऽडभावः १.१३९.८. [जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

जार्यम् जराऽवस्था जन्यम् (शेवं=सुखम्) ५.६४.२. [जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोः 'ऋहलोर्ण्यत्' इति ण्यत्]

जासु यासु, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन यस्य स्थाने जः ७.४६.२. [यद् सर्वनाम्नः स्त्रियां सप्तम्या बहुवचनम् । वर्णव्यत्ययेन यकारस्य जकारः]

जास्पतिम् जायायाः पतिम् १.१८५.८. **जास्पतिः**= प्रजायाः पालकः (राजा) ७.३८.६. [जाया-पतिपदयोः समासः । छान्दसो वर्णलोप इति या-लोपः सुडागमश्च]

जास्पत्यम् जायापतेर्भावम् जास्पत्यम्, प्र०—अत्र छान्दसो वर्णलोपो वा इति या-लोपः सुडागमश्च ३३.१२. जायायाः पतित्वम् ५.२८.३. [जाया-पतिपदयोः समासे भावे कर्मणि वा 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' इति यक्]

जाहुषम् जहुषां गन्तव्यानामिदं गमनम्, प्र०—अत्र 'ओहाङ् गतौ' इत्यस्माद् औणादिक उसिप्रत्ययः 'तस्येदम्' इत्यण्, १.११६.२०.]

जाहृषाणेन सज्जनानां सन्तोषकेन (मन्युना=क्रोधेन) प्र०—अत्र हृष तुष्टौ, इत्यस्माल्लिटः कानच्, तुजादित्वाद् दीर्घश्च १.१०१.२.)

जाः यो जनयति सुखानि सः (विद्वज्जनः) १.१४३.८. जायमानः सूर्यः ६.४७.२१. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति डः प्रत्ययः । जाः अपत्यनाम निघं० २.२. जा अपत्यम् नि० ६.९.]

जिगर्तिम् प्रशंसां निगलनं वा ५.२९.४. [गॄ निगरणे (तुदा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः । गृणाति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

जिगात स्तुत्यानि कर्माणि कुरुत १.८५.६. प्रशंसत ७.५७.७. **जिगातन**=प्रशंसन्ति ५.५९.६. **जिगातम्**= प्राप्नुतम्, प्र०—जिगातीति गतिकर्मा, निघं० २.१४, २.२४.१२. **जिगाति**=स्तौति ३.३९.१. प्राप्नोति, प्र०— जिगातीति गतिकर्मसु पठितम्, निघं० २.१४. तस्मात् प्राप्त्यर्थो गृह्यते १.२.३. प्रशंसति ७.४.१. गच्छति ५.८७.४. **जिगासि**=स्तौषि ३.२२.३. प्रशंससि ५.१५.४.

जिगातु=प्रशंसति २.३४.१५. [जिगाति गतिकर्मा निघं० २.१४. ततो लोट् । गा स्तुतौ (जु०) धातोर्वा लोट्]

जिगाय जयति ६.३२.३. जयेत् ३.३४.४. जयति, उत्कर्षतां प्रापयति, प्र०—अत्र लुडर्थे लिट् १.३०.१६. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लिट् । 'सन्लिटोर्जेः' अ० ७.३.५७. सूत्रेणाभ्यासादुत्तरस्य कवर्गादेशः]

जिगीवान् जयशीलः (अर्यः=ईश्वरः) २.१२.४. **जिगीवांसः**=शत्रुधनानि जेतुमिच्छन्तः (वीरजनाः) ५.६२.६. जेतुं शीलाः (प्रजाजनाः) ६.१६.७. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । 'सन्लिटोर्जेः' इत्यभ्यासादुत्तरस्य कुत्वम्]

जिगीषति शत्रून् जेतुमिच्छति, ऋ० भू० २३८, [जि जये (भ्वा०) धातोरिच्छायां सन् । ततो लट्]

जिगीषमाणम् जेतुमिच्छन्तम् (रूपम्) १.१६३.७. शत्रून् विजयमानम् (वीरस्योत्तमरूपम्) २९.१८. [जि जये (भ्वा०) धातोरिच्छायां सन्नन्ताच् छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जिगीषा जेतुमिच्छा १.१८६.४. जेतुमिष्टानि (अहानि=दिनानि) १.१७१.३. [जि जये (भ्वा०) धातोरिच्छायां सन् । ततः स्त्रियाम् 'अ प्रत्ययात्' इत्यकारप्रत्यये टाप्]

जिगीषुः जयशीलः (विद्वज्जनः) २.३८.६. [जि जये (भ्वा०) धातोरिच्छायां सन्नन्तात् ताच्छील्ये 'सनाशंसभिक्ष उः' अ० ३.२.१६८. इत्युकारप्रत्ययः]

जिगृत उद्गिरत ७.५७.६. **जिगृतम्**=जागृतौ भवतम् १.१५८.२. उपदेशयतम् ४.५०.११.

जिगेथ जितवानसि १.१०२.१०. **जिग्यथुः**=विजयेथे ६.६९.८. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचनम् । 'सन्लिटोर्जेः' इत्यभ्यासादुत्तरस्य कुत्वम्]

जिग्युभिः विजेतृभिः (शूरवीरैर्जनैः) १.१०१.६.

जिग्युषः विजययुक्तान् (धार्मिकाञ्जनान्) १.१७.७. जयशीलस्य (राज्ञः) ७.३२.१२. **जिग्युषे**=जयशीलाय (वीरपुरुषाय) २७.३८. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लिटः । क्वसुः । अभ्यासादुत्तरस्य पूर्ववत् कुत्वम्]

जिग्ये जयति, जितवान् भवति १.३२.१३. पराजितो भवति ६.६९.८. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जिघत्नुः हन्तुमिच्छुः (प्रजाहिंसको जनः) २.३०.९. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्बाहुलकाद् (उ० ३.३१.) औणा० क्त्नुः सन्वच्च कार्यम्]

जिघर्त्ति क्षरति ४.१७.१४. **जिघर्मि**=प्रदीप्ये सञ्चालयामि वा ४.२२. [घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.४.७८. सूत्रेणाभ्यासस्येत्वम् । जिघर्त्ति जिघर्त्तेः सिञ्चतिकर्मणः नि० ७.२४.]

जिघांसतः हन्तुमिच्छतः (मनुष्यात्) १.८०.१३. जो मारने की इच्छा करता है, उस मनुष्य से, आर्याभि० १.१२, १.३.१०.१५. **जिघांसद्भ्यः**=हन्तुमिच्छद्भ्यः (प्रजाजनेभ्यः) १६.२१. **जिघांसन्**=हन्तुमिच्छन् (इन्द्रः=राजा) ४.२३.७. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोरिच्छायां सन्नन्तात् शतृप्रत्ययः । 'अभ्यासाच्च' अ० ७.३.५५. सूत्रेणाभ्यासादुत्तरस्य कुत्वम्]

जिघांसति हन्तुमिच्छति, भा०—हिंसितुमिच्छति (मनुष्यः) २२.५. **जिघांससि**=हन्तुमिच्छसि १.१७०.२. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोरिच्छायां सन्नन्ताल्लट्]

जिघ्नते हन्त्रे (शत्रवे) १.८०.५. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः शतृ । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः स्थाने श्लुः]

जिघ्नते हन्ति ६.५६.२. प्राप्नोति ६.५७.३. गच्छन्ति, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुर्व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदं च १ ५४.१०. घ्नन्ति गमयन्ति २९.५०. **जिघ्नन्ते**=हिंसन्ति प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति अदादेशविकल्पः १.६४.११. **जिघ्नसे**=हन्याः प्र०—अत्र हनधातोर्लेटि शपः स्थाने श्लुर्व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदं च १.१०२.७. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लेट् । शपः स्थाने श्लुश्छान्दसः । व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

जिघ्नमानः घ्नन् सन् (राजा) ३.३०.४. [हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोः शानच् । 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेण शपः स्थाने श्लुः । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जिघ्रत सुगन्धान् बोधान् वा गृह्णीत ९.९. [घ्रा गन्धोपादाने (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'पाघ्रा०' इत्यादिना शिति जिघ्रादेशः]

जिजिन्वथुः प्रीणीयः, समीक्षा—अत्र सायणाचार्येण भ्रमाल्लिटि मध्यमपुरुषद्विवचनान्तप्रयोगे सिद्धेऽत्यन्तमशुद्धं प्रथमपुरुषबहुवचनान्तं साधितमिति वेद्यम् १.११२.६. [जिवि प्रीणनार्थे (भ्वा०) लिटि मध्यमपुरुषस्य द्विवचने रूपम्]

जिजीविषेत् जीवितुमिच्छेत् ४० २. जीने की इच्छा

कर, सं० वि० १४५, ४०.२. [जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन् । ततो लिङि रूपम्]

जितम् स्वपुरुषार्थेन लब्धम् (भगम्=ऐश्वर्यम्) ३४.३५. जयशील (ईश्वर) को, सं० वि० १५६, ७.४१.२. [जि जये (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । अन्यत्रौणादिको बाहुलकात् क्तः प्रत्ययः]

जिनन्ति जयन्ति, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययः ४.२५.५. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्ना]

जिनाति अभिभवति ५.३४.५. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लट् विकरणव्यत्ययेन श्ना]

जिन्व जानीहि १५.६. विजानीहि १५.६. प्रीणीहि १४.१७. प्राप्नुहि रक्ष वा १५.७. प्राप्नुहि जानीहि वा, प्र०—जिन्वतीति गतिकर्मसु पठितम्, निघं० २.१४, ८.७. सुखय २.२४.१६. प्रसादय ३.५३.२१. **जिन्वतम्**=प्रीणीतम् १.१५७.२. गमयतं प्राप्नुतं वा ६.४९.६. सुखयतम् १.११८.२. **जिन्वति**=प्रीणाति १५.२०. तर्पयति १३.१४. रचयितुं जानाति प्रापयति वा, अ०—स्रष्टुं जानाति, भा०—दधाति, जनयति ३.१२. प्राप्नोति १.१६२.३. पुष्णाति, ऋ० भू० ३०५, ३.१२. **जिन्वतु**=प्राप्नोतु सुखयतु वा २.४०.६. प्रीणात्वानन्दतु ४.५३.७. प्रापयतु ६.३९.१४. **जिन्वते**=पृणाति ३.२.११. **जिन्वथ**=प्रीणयथ ३६.१६. प्राप्नुवन्ति ६.४९.११. प्रीणयत ११.५२. **जिन्वथः**=गमयथः २.४०.३. प्राप्नुथः ५.७४.४. गच्छथः ४.४५.३. प्रीणीतः १.११२.२२. तर्पयथः १.११२.६. प्रीणीतम् १.११२.२२. **जिन्वन्ति**=प्रीणन्ति १.१६४.५. तर्पयन्ति १.१६४.५. **जिन्वतु**=प्राप्नोतु सुखयतु वा २.४०.६. प्रीणात्वानन्दतु ४.५३.७. **जिन्वते**=पृणाति ३.२.११. **जिन्वे**=तर्पयामि ४.२१.८. **जिन्वन्**=तर्पयन्तु १.७१.१. [जिवि प्रीणने (भ्वा०) धातोर्लोट् । लट् लङ् च । 'जिन्वते' 'जिन्वे' प्रयोगयोर्व्यत्ययेनात्मनेपदम् । जिन्वति गतिकर्मा निघं० २.१४. प्रीतिकर्मा नि० ६.२२. जिन्व यजमानं मदेनेति तेन प्रीणीहि श० १२.८.१.४.]

जिन्वन्तः तर्पयन्तः (वायवः) १.६४.८. [जिवि प्रीणने (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

जिन्वम् सर्वैः सुखैस्तर्पकम् (ईश्वरम्) १.८९.५. तृप्तिकारक (ईश्वर) को, आर्याभि० २.५०, २५.१८. प्रकाशित करने वाले, प्रीणनीय स्वरूप (ईश्वर) को, आर्याभि० १.१०, ऋ० १.६.१५.५. [जिवि प्रीणने (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिकोऽन्प्रत्ययः]

जिन्वासः प्राप्नुवन्तः (अध्यापकाऽध्येतारो जनाः) ७.३३.१. [जिन्वमिति व्याख्यातम् । ततः प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः]

जिव्रयः दृढजीवनाः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ४.१९.२. **जिव्रिः**=जीर्णो वृद्धः (विद्वज्जनः) १.१८०.५. **जिव्री**=सुजीवनयुक्तौ (पितरा=मातापितरौ) १.११०.८. जीवन्तौ (पितरा=पितरौ) ४.३६.३. **जिव्रेः**=जीर्णाद्, वृद्धाऽवस्थां प्राप्तात् जनकात् १.७०.५. [जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोः 'जीर्यतेः क्रिन् रश्च वः' उ० ५.४९. सूत्रेण क्रिन् प्रत्ययो रेफस्य च वकारादेशः । 'हलि चे' ति प्राप्तो दीर्घोऽपि बाहुलकान्न भवति । जिव्रयः जीर्णाः नि० ३.२१.]

जिषे शत्रून् जेतुम्, प्र०—अत्र 'तुमर्थे सेऽसेन०' इति क्से प्रत्ययः १.१११.४. [जि जये (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे क्से प्रत्ययः]

जिष्णु जयशीलम् (क्षत्रं=क्षत्रियकुलम्) ११.८१. **जिष्णुना**=जयशीलेन (इन्द्रेण=सेनापतिना) १७.३४. **जिष्णुः**=जयशीलः (युवा=प्राप्तयौवनो जनः) २२.२२. **जिष्णोः**=जयशीलस्य (अश्वस्य) २३.३२. [जि जये (भ्वा०) धातोस्तच्छीलादिष्वर्थेषु 'ग्लाजिस्थश्च क्स्नुः' अ० ३.२.१३९. सूत्रेण क्स्नुः प्रत्ययः]

जिहताम् प्राप्नुवन्तु ११.३८. **जिहते**=प्राप्नुवन्ति ५.८३.४. गच्छन्ति ५.८७.३. **जिहाताम्**=प्राप्नुतः ७.३४.२४. **जिहाते**=गच्छतः ५.३२.९. [ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् च]

जिहानः प्राप्नुवन् (विद्वज्जनः) ३.३८.१. [ओहाङ् गतौ (जु०) धातोः शानच्]

जिहीत स्वस्थानाच्चलति, प्र०—अत्र लडर्थे लिङ् १.३७.७. गच्छति ५.४५.३. **जिहीते**=प्राप्नोति ३.५१.४. गमयेते ५.३२.१०. विज्ञापयति १.१०५.१८. ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लिङ् । अन्यत्र लट्]

जिहीळानस्य अज्ञानादस्माकमनादरं कृतवतो जनस्य, प्र०—अत्र 'पृषोदरानि यथोपदिष्टम्, इत्येकारस्येकारः १.२५.२. [हेडृ अनादरे (भ्वा०) धातोः शानच् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

जिहीळिरे क्रोधयेयुः ७.५८.५. [हेळते क्रुध्यतिकर्मा निघं० २.१२. ततो लिटि प्रथमबहुवचनम् । एकारस्येकारश्छान्दसः]

जिहीष्व त्यज ५.७८.५. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । 'जहातेश्च' इतीत्वम् । अभ्यासस्येकारादेशश्छान्दसः]

जिह्मम् कुटिलम् (उत्सं=कूपम्) १.८५.११. **जिह्मानाम्**=कुटिलानाम् (दुर्जनानाम्) २.३५.६. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः 'जहातेः सन्वदाकारलोपश्च' उ० १.१४१. सूत्रेण मन्प्रत्ययः । जिह्मानां जिह्मं जिहीतेः नि० ८.१५.]

जिह्मवारम् जिह्मं कुटिलं वारो वरणं यस्य तम् (यानस्थमुदकाधारं कुण्डम्) १.११६.९. [जिह्म-वारपदयोः समासः]

जिह्मश्ये जिह्मः शेते स जिह्मशीस्तस्मै शयने वक्रत्वं प्राप्ताय जनाय, प्र०—'जहातेः सन्वदाकारलोपश्च' उ० १.१४०. अनेनाऽयं सिद्धः 'जिह्मं जिहीतेरूर्ध्वमुच्छ्रितो भवति, ८.१५, १.११३.५. [जिह्मं व्याख्यातम् । तदुपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः क्विप् । ततश्चतुर्थ्या एकवचनम्]

जिह्वरतम् कुटिलौ भवतम्, अ०—कुटिले भवेतां तथा कुरुतम् ५.१७. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'छन्दसि वा' इति द्विर्वचनम्]

जिह्वया वाण्या ५.४८.५. वाचा ३३.९३. रसनेन्द्रियेणेव किरणज्वालासमूहेन १.४६.१०. ज्वालाशक्त्या १.१४.८. सत्यप्रियया वाचा १७.८. ज्वालेव वर्त्तमानया (विशेषतया) ३.३५.९. **जिह्वा**=रसनेन्द्रियं वाग् वा १.८७.५. जुहोति शब्दमन्नं वा यया सा जिह्वा २०.६. जिहीते विजानाति रसमनया सा, प्र०—'शेवायह्वाजिह्वा०' उ० १.१५२. अनेनाऽयं निपातितः १.३०. जुहोति गृह्णाति यया सा (सरस्वती=वाणीव ज्ञानवती स्त्री) १९.८८. रसेन्द्रियम् ८.२४. **जिह्वाभिः**=विद्याविनययुक्ताभिर्वाग्भिः, प्र०–जिह्वेति वाङ्नाम, निघं० १.११, ६.१६.२. **जिह्वाम्**= ज्वालाम् २७.१८. जोहवीति यया तां वाचम् १३.१५. **जिह्वाः**=काल्यादयः सप्त सङ्ख्याका ज्वालाः १७.७९. [जयति यया सेति विग्रहे जि जये (भ्वा०) धातोः, 'शेवायह्वाजिह्वा०' उ० १.१५४. सूत्रेण वन्प्रत्ययान्तो निपात्यते । निपातनाद् धातोर्हुगागमः । जिह्वा वाङ्नाम निघं० १.११. जिह्वा जोहुवा नि० ५.२७. जिह्वा कोकुवा नि० ५.२६.]

जीजनत् जनयति ४.१६.३. जनयेत्, प्र०—अत्र लुङ्यडभावः १.१२९.११. **जीजनन्**=जनयेयुः, प्र०—अत्राऽडभावः १.१५१.१. जनयन्ति ४.६.८. **जीजनन्त**= जनयन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङडभावश्च १.६०.३. **जीजनम्**=जनयेयम् ७.१५.४. [जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

जीमूतस्येव यथा मेघस्य २९.३८. मेघस्येव ६.७५.१. [जीमूतस्य-इवपदयोः समासः । जीमूतपदमग्रिमे द्रष्टव्यम्]

जीमूतान् मेघान्, प्र०—अत्र 'जेर्मूट् चोदात्तः' इत्यनेनाऽयं सिद्धः २५.८. [जि जये (भ्वा०) धातोः 'जेर्मूट् चोदात्तः' उ० ३.९१. सूत्रेण क्तः प्रत्ययः । धातोर्दीर्घश्च]

जीयते जेतुं शक्यते ३.५९.२. जितो भवति ५.५४.७. [जि जये (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

जीरदानवः जीवन्ति ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५३.५. जीवनप्रदाः (पर्वताः=मेघाः) ५.५४.९. जीवाः (प्राज्ञाः सज्जनाः) २.३४.४. **जीरदानुम्**=जीवाऽऽत्मानम् १.१७१.६ जीवदयाम् १.१७६.६. दीर्घं जीवनम् १.१८१.९. जीवस्वरूपम् १.१७४.१०. जीवनम् १.१६५.१५. स्वात्मस्वरूपम् १.१७५.६. जीवननिमित्तम् (वृजनं=बलम्) १.१६७.११. जीवस्वभावम् १.१७८.५. जीवनोपायम् १.१८२.८. **जीरदानुः**=यो जीवयति (पर्जन्यः=मेघः) ५.८३.१. **जीरदानू**=यौ जीवनं दद्यातां तौ (मित्रराजाना=प्राणविद्युतौ) ५.६२.३. [जीवति प्राणान् धारयतीति विग्रहे जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोर् महाभाष्यकारसम्मत्या रदानुक् प्रत्ययः । धातोर्वलोपो वलि ऊड्निषेधश्च बाहुलकाद्]

जीरम् विद्यावन्तम् (विद्वज्जनम्), प्र०—अत्र 'जोरी च' उ० २.२३. इति दीर्घोऽनेन सूत्रेणाऽयं सिद्धः १.४४.११. वेगम् ५.३१.१२. **जीरः**=वेगवान् (अग्निः=पावकः) ३.३.६. [जीराः क्षिप्रनाम निघं० २.१५. जु वेगितायां गतौ सौत्रो धातुः, ततः 'जोरी च' उ० २.२३. सूत्रेण रक् प्रत्ययः, ईकारश्चान्तादेशः । महाभाष्यकारसंमत्या तु 'रकि ज्यः सम्प्रसारणम्' महाभाष्यम् १.१.४. वार्तिकेन ज्या वयोहानौ (क्र्या०) धातो रक्प्रत्यये सम्प्रसारणम् । जिनात्यवस्थां जहातीति जीरः

जीरयः वयोहन्तारः (शूरा जनाः) २.१७.३. ये जीर्यन्ते ते मनुष्याः ३.५१.५.]

जीरा वेगयुक्ता (देवी) १.४८.३. [जीरप्राति० स्त्रियां टाप् । जीरमिति व्याख्यातम्]

जीराश्वम् जीरान् जीवान् प्राणधारकानश्नुते येन तम् (रथं=यानम्) १.११९.१. **जीराश्वः**=जीरा वेगा अश्वा यस्मिन् (रथः) १.१५७.३. जीरा वेगवन्तो बहवोऽश्वा यस्य सः (होता=विद्यादातृजनः) १.१४१.१२. जीरा

वेगवन्तोऽश्वा आशुगामिनो गुणा यस्य सः (अग्निः=वह्निः) २.४.२. [जीर-अश्वपदयोः समासः। जीराश्वौ व्याख्यातौ]

जीव जीवन धारण कर, सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५२. जी, स० प्र० १५६, [जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

जीवगृभः यो जीवं गृह्णाति तस्य व्याघेः १२.८५. [जीवोपपदे ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्विप्। ह्रस्य भश्छान्दसः]

जीवदानुम् या जीवेभ्यो जीवनार्थं वस्तु ददाति ताम् (पृथिवीम्) १.२८. [जीवोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'दाभाभ्यां नुः' उ० सूत्रेण नुः प्रत्ययः]

जीवधन्याः या जीवेषु धन्या धनाय हिताः (अपः=जलानि) १.८०.४. [जीव-धन्यापदयोः समासः। धन्या=धनप्राति० हितार्थे यत्, ततः स्त्रियां टाप्]

जीवनम् जीविकाप्रापणम् १.४८.१०. [जीवप्राणधारणे (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

जीवन्तः प्राणान् धरन्तः (जनाः) १.१३६.६. [जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोः शतरि प्रथमा बहुवचनम्]

जीवपीतसर्गः जीवैः सह पीतः सर्गो येन सः (विद्वज्जनः) १.१४९.२. [जीव-पीत-सर्गपदानां समासः]

जीवभोजनः जीवा भोजनं भक्षणं यस्य सः, (अ०-व्यभिचारी जनः) भा०—विषयसेवायां क्रीडन् जनः, क्रीडन्ती स्त्री वा २३.२१. [जीव-भोजनपदयोः समासः]

जीवम् प्राणधारिणम् (आत्मानम्) ७.३९. ज्ञान--साधनयुक्तम् (भा०—मनुष्यजन्म, जीवनम्) ३.५५. जीव-समूहम् १.९२.९. प्राणधारकम् (जीवनम्) १२.९१. जीवात्मानम् १.१४०.८. **जीवः**=इच्छादिगुणविशिष्टः (आत्मा) १.११३.१६. यः प्राणान् धरति (कुमारः) ५.७८.९. **जीवाय**=जीवति प्राणं धारयति, प्राणधारणेन समर्थो भवति यस्मिन्नायुषि तस्मै २.३२. जीवनार्थं विद्या-जीविकाप्राप्तये, ऋ० भू० २५६, **जीवाः**=विद्यमानजीवनाः (आचार्यादयः) ऋ० भू० २५७, १९.४६. ये जीवन्ति ते (भा०—पितरः) १९.४६. **जीवेभ्यः**=प्राणधारकेभ्यः स्थावरशरीरेभ्यः ३५.१५. [जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोरच्प्रत्ययः]

जीवयाजम् जीवान् याजयति धर्मं च सङ्गमयति तम् (नरं=विनयाभियुक्तं मनुष्यम्) १.३१.१५. [जीवोपपदे यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्व०) धातोर्णिजन्ताद् अण्प्रत्ययः]

जीवलोकम् जीते हुए दूसरे पति को, स० प्र० १५२, १०.१८.८.

जीवशंसे जीवानां शंसा स्तुतिर्यस्मिँस्तस्मिन् व्यवहारे चोपमाम् १.१०४.६. जीवैः प्रशंसनीयैः (बर्हिषि=अन्तरिक्षे) ७.४६.४. [जीव-शंसापदयोः समासः। शंसा=शंसु स्तुतौ धातोर्घञ्। स्त्रियां टाप्। अथवा जीवोपपदे शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

जीवसे जीवनाय प्राणधारणाय १.१५५.४. जीवितुम् प्र०—अत्र 'तुमर्थे सेसे०' इत्यसे प्रत्ययः ३.५४. आरोग्य, देह, शुद्धमानस, बल और विज्ञान इत्यादि के लिए, आर्याभि० १.१६, ऋ० १.३.१०.१४. [जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोस्तुमर्थेऽसे प्रत्ययः। जीवसे चिरञ्जीवनाय नि० १२.३९.]

जीवात् चिरं जीवेत् १.८४.१६. [जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोर्लेट्। आडागमः]

जीवातवे जीवनाय १.९४.४. भा०—दीर्घाऽऽयुषे १८.६७. [जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोः। 'जीवेरातुः' उ० १.७८. सूत्रेण आतुः प्रत्ययः। चतुर्थ्या एकवचनम्। जीवातवे चिरजीवनाय नि० १०.३८.]

जीवातुम् जीवनम् ६.४७.१०. **जीवातुः**=येन जीवन्ति यज्जीवयति वा (जीवन-व्यवहारः) १८.६. [व्याख्यातं पूर्वपदे। जीवातुं जीविकाम् नि० ११.११.]

जीविता जीवनहेतूनि कर्माणि ३३.५४. जीवनानि १.११३.६. जीवितानि (जीवनानि) ४.५४.२. [जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्तः। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

जीवेम प्राणान् धारयेम ३६.२४. प्राणान् धारयेमहि प० वि०, ३६.२४. जीवें, आर्याभि० २.३७, ३६.२४. [जीव प्राणधारणे (भ्वा०) धातोर्लिङि उत्तम-बहुवचनम्]

जीहिपः त्याजयेः ३.५३.१९. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्। अडभावे छान्दसं रूपम्]

जुगुर्यात् उद्यच्छेत् १.१७३.२. **जुगुर्याः**=उद्यच्छेः, उद्यमिनः कुर्याः १.१४०.१३. [गुर्वी उद्यमने (भ्वा०) धातोर्लिङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

जुगुर्वणी अत्यन्तमुद्यमिनौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१४२.८. [गुर्वी उद्यमने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा०

अनिः प्रत्ययः । छान्दसं द्वित्वम्]

जुजुरुषः जीर्णाऽवस्थां प्राप्तः (गृहस्थि जनः) ५.७४.५. जीर्णाद् वृद्धात् (आप्तादध्यापकात्) १.११६.१०. [जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः प्रत्ययः । 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.१०३. सूत्रेणोकारादेशे रपरत्वे च रूपम्]

जुजुर्वान् रोगाऽऽपन्नः (मनुष्यः) १.१५८.६. जीर्णः (अग्निः) २.४.५. [जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोर्लिटः क्वसुः । 'बहुलं छन्दसी' त्युकारादेशः । 'हलि चे' ति दीर्घो न छान्दसत्वात्]

जुजुर्वां इव यथा वृद्धाऽवस्थां प्राप्तो मनुष्यः, प्र०—जॄष् वयोहानौ, इत्यस्मात् क्वसुः 'बहुलं छन्दसि' इत्युत्वम् 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति 'हलि च' इति दीर्घो न १.३७.८. [जुजुर्वान्-इवपदयोः समासः । जुजुर्वान् इति व्याख्यातम्]

जुजुषाणः सेवमानः (परमेश्वरो विद्वान् वा) १.९१.१०. भृशं सेवमानः (विद्वज्जनः) २.३६.३. प्रसन्नः सेवमानः (त्वष्टा=विद्वज्जनः) २६.२४. **जुजुषाणा**=सेवितौ प्रीतौ वा (अश्विनौ=दम्पती) १.११८.७. **जुजुषाणाय**=प्रीत्या सेवमानाय (क्रत्वे=प्रज्ञानाय जनाय) ५.४३.५. **जुजुषाणा**=सम्यक् सेवमाना (देवी=विदुषी स्त्री) ५.४३.११. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लिटः कानच् । अथवा शानच्प्रत्यये 'बहुलं-छन्दसी' ति शपः श्लुः]

जुजुषाणासः=भृशं सेवमानाः (धीमन्तो विद्यार्थिजनाः) ४.३४.३. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लिटः कानच् । जसोऽसुगागमः । जुजुषाणासः जोषयमाणासः नि० ६.१६.]

जुजुषुः सेवन्ते, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः १.१६५.२. सेवेरन् १.१५२.५. **जुजुषे**=सेवसे प्रीणासि वा ५.३९.४. सेवते ४.२२.१ [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लिट् सामान्ये]

जुजुष्टन सेवध्वम् ४.३६.७. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लोट् । छान्दसत्वात् शपः श्लुः । तस्य स्थाने तनबादेशश्छान्दसः]

जुजुष्वान् सेवितवान् (इन्द्रः=पुरुषार्थिजनः) २.२०.५. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

जुजोष सेवते ४.२३.५. जुषते ४.२४.५. **जुजोषत्**=जुषेत १.१७३.४. सेवते ७.२६.१. भृशं सेवते ३.४.६. भृशं सेवेत ४.४.१०. **जुजोषतम्**=अत्यन्तं सेवेते, प्र०—अत्र जुषी प्रीतिसेवनयोः, इति धातोः शब्विकरणस्य स्थाने श्लुः 'बहुलं छन्दसि' इति शप् च १.९३.११. **जुजोषन्**=सेवन्ते ७.५८.३. **जुजोषः**=जुषसे ५.३०.३. सेवस्व ४.९.६. भृशं सेवसे ४.२.१०. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लिट्]

जुनन्ति गच्छन्ति ७.२०.१०. प्राप्नुवन्ति १.१६९.३. प्रेरयन्ति ७.४०.३. **जुनाम**=बध्नीयाम १.१८६.५. **जुनाः**=प्रेरयेः, प्र०—अयं जुन गतौ इत्यस्य लेट्-प्रयोगः १.२७.७. गमयेः ६.२९. [जुन इत्येके (गतौ) (तुदा०) धातोर्लेट्]

जुम्बकाय अतिवेगवते २५.९. [वरुणो वै जुम्बकः श० १३.३.६.५. तै० ३.९.१५.३.]

जुरतम् रुजतं नाशयतम् १.१८२.३. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लोट् । वर्णविपर्ययेन रेफस्य जकारः, जकारस्य च रेफः]

जुरताम् जीर्णानाम् (जनानाम्) २.३४.१०. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययान्तात् षष्ठ्या बहुवचनम् वर्णयोर्रेफजकारयोराद्यन्तविपर्ययः]

जुवः जववन्तः (कृषीवलाः) १.१४०.४. वेगवन्तः (वायवः) १.१३४.१. [जूप्राति० प्रथमाबहुवचनम् । जूः=जु वेगितायां गताविति सौत्रो धातुः । ततः 'क्विब् वचिप्रच्छि०' अ० ३.२.१७८. वा०सूत्रेण क्विप्प्रत्ययो दीर्घश्च]

जुषत जुषते ५.१३.३. सेवध्वम् ७.१५.६. **जुषताम्**=प्रीत्या सेवताम्, भा०—सत्कर्मण्येव प्राप्नोतु २.१३. **जुषध्वम्**=सेवध्वम् ७.५६.१४. **जुषन्त**=सेवन्ताम् प्र०—अत्राऽडभावः ३३.४८. प्रीणन्ति सेवन्ते वा १.६८.२. **जुषन्ताम्**=प्रीत्या सेवन्ताम् ८.१७.५. **जुषस्व**=सेवस्व ७.५४.१. प्रीणीहि १३.४७. जुषते, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च, अ०—सेवते ३.४. सेवस्व सेवते वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययो लडर्थे लोट् च ३.५७. प्रीत्या सेवस्व जुषते वा १.१२.१२. भा०—सत्कुरु १९.६७. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । अन्यत्रात्मनेपदे एव । जुषते कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

जुषमाणः सेवमानः (विद्यार्थिजनः) ४.२३.१. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः शानच्]

जुषाणः यो जुषते सेवते सः (अग्निः=भौतिकः)

३.१०. सेवमानः (विद्वान् राजा) ६.४७.२८. प्रीतः (विद्वान् जनः) १.१३५.२. प्रीतः सेवमानो वा (इन्द्रः=सभापतिः) २.१४.६. **जुषाणाः**=प्रीताः (विद्वांसो जनाः) २८.११. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः शानच्। आगमशासनस्यानित्यत्वान् मुगागमो न। ब्रह्म वै जुषाणः कौ० ३.५.]

जुषाणा सेवमानौ (नरौ=स्त्रीपुरुषौ) १.११८.१०. [जुषाण इति व्याख्यातम्। ततः 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

जुषाणा सेवमाना (अदितिः=नाशरहिता विद्युत्) २६.४. प्रसन्ना सेवमाना सती (वाक्=वाणी) ८.३७. [जुषाण इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

जुषाते सेवते ४.४३.१. **जुषामहे**=प्रीणीयाम ५.४२ **जुषेत**=प्रीत्या सेवेत ७.३४.२१. **जुषेताम्**=सेवेताम् २१.४१. **जुषेथाम्**=सेवेथाम् ४.५७.५. जुषेते सेवेते १.६३.७. **जुषेरत**=सेवेरन् प्रीणन्तु वा, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति रुडागमः १.१३६.४. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लेटि लोटि लिङि च रूपाणि]

जुष्टतमम् धार्मिकैर्भक्तैर्जनैः शिल्पिभिश्च यो जुष्यते स जुष्टः, अतिशयेन जुष्टस्तम्, भा०—प्रीत्येष्टबुद्ध्या च सेवनीयम् (ईश्वरं भौतिकमग्निं वा) १.८. अतिशयेन प्रसन्नम् (विद्वांसं जनम्) ६.४. अतिशयेन जुषमाणम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ६.२. **जुष्टतमः**=अतिशयेन सेवितः (अर्वा=ज्ञानी जनः) २६.२४. अतिशयेन सेवमानः (सज्जनः) १.१६३.१३. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः क्तः। जुष्टप्राति० अतिशायने तमप् प्रत्ययः]

जुष्टतमासः राजधर्मिभिरतिशयेन सेविताः (नृतमासः=नायका जनाः) १.८७.१. [जुष्टतमं व्याख्यातम्। ततः प्रथमाबहु० जसोऽसुगागमः]

जुष्टम् सेवमानम् (विद्वांसं जनम्) ६.४. जुषमाणम् (इन्द्रं=सम्राजम्), प्रीतम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ६.२. सेवितम् (जगदीश्वरम्) २३.४. प्रीत्या संशोधितम् (हविः) २.१. प्रीत्या वर्त्तमानम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.३. प्रीतं, प्रीत्या सेवनीयम् १.१३. पुष्ट्यादिगुणयुक्तं प्रीतिकरं जलं पवनं वा २.१. विद्याप्रीतिक्रियाभिः सेवितम् (यज्ञम्) १.१३. प्रीत्या सम्पादितम् (हविः) २.१. प्रीतिकरम् (हव्यं=विज्ञानम्) ११.६६. अ०—प्रीतं चारु फलम् १.१०. **जुष्टः**=सेवितः प्रीतो वा (विद्वान् अतिथिः) ५.४.५. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। ईदित्त्वादनिट्त्वम्]

जुष्टयः जुष्यन्ते प्रीयन्ते यास्ताः (गिरः=स्तुतिवाचः) ५.२६. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

जुष्टा प्रीता सेविता वा ४.१७. **जुष्टाम्**=सद्भी राजभिः सेवितां नीतिम् ४.२६.३. प्रीत्या सम्पादिताम् (वेदिम्) २.१. पूर्वकालसेविताम् (वसतिं=निवासस्थानम्) १.३३.२. **जुष्टाः**=याः प्रीणन्ति सेवन्ते ताः (प्रशंसाः) १.१०.१२. प्रीताः सेविता वा (गिरः=स्तुतिवाचः) ५.२६. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः क्तप्रत्यये स्त्रियां टाप्]

जुष्टानि प्रीतानि सेवितानि (उचथानि=वेदवचनानि) १.७३.१०. [जुष्टं व्याख्यातम्। ततः प्रथमाबहुवचनम्]

जुष्टासः विद्वद्भिः सेविताः (यज्ञाः=सत्या व्यवहाराः) ४.३७.२. [जुष्टं व्याख्यातम्। ततः प्रथमाबहुवचने जसोऽसुक्]

जुष्टी जुष्ट्या प्रीत्या सेवया वा ७.३३.४. [जुष्टिर्व्याख्यातम्। ततस्तृतीयायाः पूर्वसवर्णः 'सुपां सुलुग्०' सूत्रेण]

जुष्ट्वी प्रीता सेवमाना वा (दुहिता) १.११८.५. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः क्त्वा। 'स्नात्व्यादयश्च' अ०—७.१.४६. सूत्रेणेदन्तत्वम्]

जुहवाम आदद्याम १.११०.६. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लोटि उत्तमबहुवचनम्]

जुहवाम दद्याम १.११४.३. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लोट्]

जुहाव आह्वयेत् ७.२१.८. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लिट्]

जुहुत दत्त ७.१५.१. **जुहुते**=जुहोति ६.१०.६. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लोटि मध्यमबहुवचनम्। अन्यत्र लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जुहुमः प्रशंसामः २३.६५. गृह्णीमः १०.२०. आश्रय लेवें, वाञ्छा करें, सं० वि० ६, १०.१२१.१०. **जुहुयाम**=दद्याम ७.१.१७. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लट्। अन्यत्र लिङ्]

जुहुरन्त प्रसह्यकारिणो भवन्तु, प्र०—अत्र 'हृ प्रसह्यकरणे, व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम्, लङ्यडभावो 'बहुलं छन्दसि' इत्युत्वम् 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति 'अदभ्यस्तात्'

इति प्राप्तेऽड्भावो न भवति १.४३.८. प्रसहन्ताम् ३.५५.२. [हृ प्रसह्यकरणे (जु०) धातोर्लङ्, अडभावो व्यत्ययेनात्मनेपदम्। 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.१०३. सूत्रेणोत्वम्। झस्य छान्दसत्वाद् अड्भावो न भवति।]

जुहुरः हिंस्यात् ७.४.४.

जुहुराणम् कुटिलगतिजन्यम् (एनः=पापम्) १.८९.१. कुटिलतायुक्त (कर्म), सं० वि० ७, ४०.१६. कुटिल पक्षपात सहित (एनः=पापकर्म) को, सं० वि० २१४, ४०.१६. कौटिल्यमन्तःकरणस्य ७.४३. **जुहुराणः**=कुटिलगतिः (दुर्जनः) ४.१७.१४. दुष्टेषु कुटिलः (जनः) १.७३.११. [हुर्छा कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः 'हुच्छेंः सनो लुक् छलोपश्च' उ० २.९१. सूत्रेण आनच्प्रत्ययः]

जुहुरे जुह्वति २.९.३. शब्दयन्ति १.४८.१४. कुटिलयन्ति ५.१९.२. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोर्लिटि रूपम्। 'बहुलं छन्दसी' त्युत्वम्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। हु दानादानयोः (जु०) धातोर्वा लिटि प्रथमबहुवचनम्। इरेच् स्थाने 'इरयो रे' अ० ६.४.७६. सूत्रेण रे आदेशः। जुहुरे जुह्विरे नि० ४.१९.]

जुहूभिः पान-साधनैः (पात्रैः) ५.१.३. जुह्वति याभिः क्रियाभिः १.५८.४. **जुहूः**=जुहोति ददाति हविरादत्ते सुखं चाऽनया सा (घृताची=आदानक्रियया) प्र०—हु दानाऽदानयोः, इत्यस्मात् 'हुवः श्लुवच्च' उ० २.५९. अनेन क्विप् प्रत्ययो दीर्घादेशश्च २.६. [असौ (द्यौः) वा जुहूः। तै० ३.३.१.१. तस्यासावेव द्यौर्जुहूः श० १.३.२.४. यजमानदेवत्या वै जुहूः तै० ३.३.५.४. अत्तैव जेहूराद्य उपभृत् श० १.३.२.११. क्षत्रं वै जुहूर्विश इतरः स्रुचः श० १.३.४.१५. जुहूर्दक्षिणो हस्तः तै० ३.३.१.५. आग्नेयी वै जुहूः तै० ३.३.७.६. जुहूर्वै यज्ञमुखम् मै० ३.१.१. जुह्वे हि घृताची द्यौर्जन्मना काठ० १.११. द्यौरसि जन्मना जुहूर्नाम मै० १.१.१२. पर्णमयी जुहूः तै० सं० ३.५.७.२. यजमानो वै जुहूः मै० १.४.१३. वाग् जुहूः तै० आ० २.१७.२. आश्रावयेति जुहूं तेन युनक्ति काठ० ३१.१३.]

जुहूमसि स्तुमः, प्र०—'बहुलं छन्दसि' अ० २.४.७६. अनेन शपः स्थाने श्लुः। 'अभ्यस्तस्य च' अ० ६.१.३३. अनेन सम्प्रसारणम्। 'सम्प्रसारणाच्च' अ० ६.१.१०८. अनेन पूर्वरूपम्। 'हलः' अ० ६.४.२. इति दीर्घः। 'इदन्तो मसि' अ० ७.१.४६. अनेन मसेरिकारागमः' १.४.१. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लट्। स्पष्टमन्यत्]

जुहूराणम् कुटिलम् (एनः=दुःखफलं पापम्) ५.३६. [जुहुराणमिति व्याख्यातम्। उकारस्य दीर्घश्छान्दसः]

जुहूरे शब्दयन्ति १.४८.१४. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लिटि छान्दसं रूपम्]

जुहूर्थाः प्रदद्याः ७.१.१९. [हु दानादानयोः (जु०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

जुहोत गृह्णीत २.१४.१. आदद्यात ७.४७.३. दत्त २.१४.५. दत्ताऽऽदत्त वा १.१५.९. दद्युः ३.५९.५. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसीति वक्तव्यम्' अ० ७.३.८७. वा० सूत्रेण गुणः]

जुहोतन प्रक्षिपत, प्र०—अत्र हुधातोर्लोटि मध्यमबहुवचने 'तप्तनप्त०' इति तनबादेशः ३.१. दत्त १२.३०. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लोट्। तस्य तनबादेशश्छान्दसः]

जुहोति आहुतियां देता है, सं० वि० २०९, अथर्व० ९.७.४. **जुहोमि**=ददामि १७.७८. आददामि ३४.५४. नियोजयामि ऋ० भू० ९४, ऋ० ८.८.४९.३. गृह्णामि १७.७८. क्षिपामि १.१६२.१९. निवेदयामि वा २.२७.१. व्याददामि ३४.५४. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लट्]

जुह्वत् आददत् (परमेश्वरः) १७.१७. होम=प्रलय करता हुआ (परमात्मा), आर्याभि० २.३०, १७.१७. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लङ्। अडभावः]

जुह्वति क्षरन्ति ५.७.५. स्थापयन्ति २.४१.१८. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लटि प्रथमबहुवचनम्]

जुह्वः विद्याविज्ञाने आददत्यः (कन्याः) १.१४५.३. जुहोति याभिस्ताः (यज्ञसाधनानि) ६.६६.१०. याभिर्जुह्वन्त्युपदिशन्ति परस्परं ताः (सुखसाधनानि) १.५८.७. **जुह्वा**=होमसाधनेन ७.३.४. जुहोति गृह्णाति ददाति वा यया (पावकया=पवित्रकारिकया ज्वालया) ६.११.२. ग्रहणसाधनेन ३४.५४. ग्रहणसाधनया क्रियया २.१०.६. दानाऽऽदानक्रियाकौशलया बुद्ध्या १.७३.५. आज्यहवनसाधनया १३.१०. जिह्वया साधनेन २.२७.१. साधनोपसाधनयुक्तया क्रियया ३.३१.३. जुह्वति याभिः क्रियाभिः १.५८.४. होमसाधनेन ४.४.२. [हु दानाऽऽदानयोः (जु०) धातोः 'हुव श्लुवच्च' उ० २.५९. सूत्रेण क्विप्प्रत्ययो दीर्घादेशश्च। श्लुवद्भावेन द्वित्वम्। 'जुहूभिः' पदेऽपि द्रष्टव्यम्]

जुह्वानः भुञ्जानः (विद्वज्जनः) १.७५.१. [हु दानादानयोः (जु०) धातोश्शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

जुह्वास्यः जुहोत्यस्यां सा जुहूर्ज्वाला, साऽऽस्यं मुखं यस्य सः (अग्निः=प्रसिद्धो रूपवान् दहनशीलः पावकः)

१.१२.६. [जुहू-आस्यपदयोः समासः । जुहूरिति व्याख्यातम्]

जुह्वे स्पर्द्धे ६.२.३. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लेटि उत्तमैकवचने रूपम्]

जूजुवत् गमयेत् २.३१.४. [जु वेगितायां गताविति सौत्रो धातुः । ततो णिजन्ताल् लुङ् । अडभावश्छान्दसः । जवति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

जूजुवान् भृशं गमयिता (विद्युदादिस्वरूपोऽग्निः) ४.११.४. **जूजुवांसम्**=अतिशयेन वेगवन्तम् (चक्रं=कलाचक्रम्) ५.३१.११. [जु वेगितायां गताविति सौत्रो धातुः, ततो लिटः स्थाने क्वसुः प्रत्ययः । तुजादीनामित्यभ्यासस्य दीर्घः]

जूजुवानेभिः वेगवद्भिः (अश्वैः) प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इति अभ्यासदैर्घ्यम् ५.२९.९. [जु इति सौत्रो धातुः । ततो लिटः स्थाने कानच् । 'तुजादीनामित्यभ्यासस्य दीर्घः । 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न]

जूजुवुः सद्यो गच्छन्ति ७.२१.५. [जु वेगितायां गताविति सौत्रो धातुः । ततो लिटि प्रथमबहुवचने रूपम्]

जूतः प्राप्तवेगः (वातः=वायुः) ४.१७.१२. [जवति गतिकर्मा (निघं० २.१४.), ततो भावे क्तः । 'जू' इति सौत्रो धातुः]

जूतये रक्षणाद्याय १.१२७.२. **जूतिभिः**=जूयते प्राप्यतेऽर्थो याभिस्ताभिर्युद्धक्रियाभिः १.११६.२. वेगादिभिर्गुणैः ३.३.८. **जूतिम्**=न्यायवेगम् ४.३८.९. **जूतिः**=वेगः २१.५६. वेगेन व्याप्तिकर्म (मनः=मननशीलं ज्ञानसाधनम्) प्र०—'ऊतियूतिजूति०' अ० ३.३.९७. अनेन निपातितः २.१३. **जूत्या**=वेगेन ३.१२.३. ['जू' इति सौत्रो धातुः, ततः स्त्रियां क्तिन् प्रत्यये 'ऊतियूतिजूति०' अ० ३.३.९७. सूत्रेण निपात्यते । जूतिः गतिः प्रीतिर्वा नि० १०.२८.]

जूर्णः रोगी (जनः) १.१८०.५. [जूरी हिंसावयोहान्योः (दिवा०) धातोः क्तः]

जूर्णायाम् गन्तुमशक्यायां वृद्धाऽवस्थायाम् १.४६.३. [जूर्ण इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

जूर्णिनी वेगवती (रातिः=दानम्) ६.६३.४. [जूर्णप्राति० मत्वर्थ इनिः । ततः स्त्रियां ङीप्]

जूर्णिः शीघ्रकारिणी (सेना) १.१२७.८. रोगवान् (होता=अत्ता जनः) १.१२७.१०. जीर्णा (विदुषी पत्नी) ७.३९.१. [जूर्णिर्जवतेर्वा द्रवतेर्वा दुनोतेर्वा नि० ६.४. जूर्णिः क्षिप्रनाम निघं० २.१५. क्रोधनाम निघं० २.१३. ज्वर रोगे (भ्वा०) धातोः 'वीज्याज्वरिभ्यो निः' उ० ४.४८. सूत्रेण निः प्रत्ययः 'ज्वरत्वर०' सूत्रेण ऊठ्]

जूर्णेव पुरातनानीव (वर्षाणीव) १.१८४.३. [जूर्ण-इव पदयोः समासः । जूर्ण इति व्याख्यातम्]

जूर्यति रुजति १.१२८.२. **जूर्यन्ति**=जीर्यन्ति जीर्णानि भवेयुः १.११७.४. [जूरी हिंसावयोहान्योः (दिवा०) धातोर्लेट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

जूर्यत्सु वेगवत्सु (वनेषु=रश्मिषु) ३.२३.१.

जूर्यन्त्यैः जीर्णाऽवस्थाप्राप्तिनिमित्तायै (घोषायै=वाण्यै कृष्यै वा) १.११७.७. [जूरी हिंसावयोहान्योः (दिवा०) धातोः शतृप्रत्ययान्तान् ङीप् । ततश्चतुर्थी]

जूर्य्यः जीर्णः (अतिथिः=विद्वज्जनः) ६.२.७. [जूरी हिंसावयोहान्योः (दिवा०) धातोर्ण्यत्]

जूर्व हिन्धि ६.६.६. [जूर्वति वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोर्लोट्]

जूर्वन् विनाशयन् (सूर्यः) १.१९१.९. [जूर्वति वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोः शतृप्रत्ययः]

जूः जीर्णाऽवस्थां प्राप्तः (जनः) २.१४.३. ज्ञानी वेगवान् वा (जनः) ४.१७. [जवति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः, जू इति सौत्रधातोर्वा 'क्विब् वचिपृच्छि०' उ० २.५७. सूत्रेण क्विप् दीर्घादेशश्च । जूरसीत्येतद्ध वा अस्या (वाचः) एकं नाम श० ३.२.४.११. ज्वर रोगे (भ्वा०) धातोर्वा क्विप्प्रत्यये 'ज्वरत्वर०' अ० ६.४.२०. सूत्रेण वकारस्योपधायाश्च स्थाने ऊठ्]

जेता जेतुं शीलः (इन्द्रः=सेनेशः) १.१७८.३. जयशीलः (इन्द्रः=शत्रुविदारको राजा) ६.४५.२. उत्कर्षत्वप्रापकः (वय. जीवनम्) १.६६.२. **जेतारम्**=शत्रून् जापयति जयति वा तम् (इन्द्रम्=ईश्वरं सभाध्यक्षं वा) १.११.२. जयशीलम्, भा०—विजेतारम् (इन्द्रं=राजानम्) २८.२. [जि जये (भ्वा०) धातोस्तच्छीलादिष्वर्थेषु तृन् । कर्त्तरि तृच्प्रत्ययो वा]

जेत्वानि जेतुं योग्यानि शत्रुसैन्यानि ६.४७.२६. [जि जये (भ्वा०) धातोः 'कृत्यार्थे तवैकेनकेन्यत्वनः' अ० ३.४.१४. सूत्रेण त्वन्प्रत्ययः । जेत्वानि जेतव्यानि नि० ६.१२.]

जेन्यम् जयति येन तम् (वाजिनम्=अश्वम्)

१.१३०.६. जेतुं योग्यम् (धनम्) २.५.१. **जेन्यस्य**=जेतुं योग्यस्य (शर्धतः=बलस्य) ६.४२.४. **जेन्यः**=जापयितुं शीलः (रथः) २.१८. जेतुं शीलः (यजमानः) ५.१.५. जेतुं योग्यः (वीरजनः) २.५.१. विजयहेतुः (मातरिश्वा=वायुः), प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिक एन्यप्रत्ययो डिच्च १.७१.४. [जि जये (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिक एन्यः प्रत्ययो डिच्च]

जेन्या जनेषु नयनकर्त्तृषु साधू (पत्नी=दम्पती) १.११६.५. [जनप्राति० 'तत्र साधुः' सूत्रेण यत्। अकारस्यैकारश्छान्दसः 'सुपां सुलुग्' इत्याकारः]

जेन्या जेतुं योग्या (गौः=पृथिवी) ३.३१.११. [जेन्यं व्याख्यातम्। जेन्यप्राति० स्त्रियां टाप्]

जेन्यावसू यौ जेन्यान् जयशीलान् वासयतो यद्वा ज्येन्यं जेतव्यं जितं वा वसु धनं याभ्यां तौ (राजप्रजाजनौ) ३३.८८. [जेन्य-वसुपदयोः समासः। जेन्यं व्याख्यातम्। पूर्वपदस्य संहितायां दीर्घः]

जेमा जेतुर्भावः १८.४. [जेतृप्राति० भावे इमनिच्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' अ० ६.४.१५४. सूत्रेण तृचो लोपः]

जेषम् जयेयम्, प्र०—लोडुत्तमैकवचने प्रयोगः ९.१३. उत्कर्षेयम् ९.३४. अनुगतमुत्कर्षं प्राप्नुयाम् २.१५. **जेषः**=विनयं प्राप्नोषि, प्र०—जि जये इत्यस्माल्लोटि मध्यमैकवचने प्रयोगः १.१०.८. **जेषि**=जयसि, प्र०—अत्र शपो लुक् ६.४५.१५. अत्र शबभावः २.३०.८. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्। 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपो लुक्। षुगागमश्छान्दसः। लुङि वा रूपम्। अड्-वृद्ध्योरभावश्छान्दसः]

जेषे उत्कष्टुं विजेतुम्, प्र०—अत्र जिधातोस्तुमर्थे से-प्रत्ययः। सायणाचार्येणेदमपि पदमशुद्धं व्याख्यातमर्थंगत्यासम्भवात् १.१००.११. जेतुम् ६.४४.१८. [जि जये (भ्वा०) धातोः 'तुमर्थे सेऽसेन्०' अ० ३.४.९. सूत्रेण से-प्रत्ययः]

जेष्म जयेम, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ्, अड्वृद्ध्यभावश्च १.१६. **जेष्यसि**=उत्कर्षयसि २३.१७. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अड्-वृद्ध्योरभावश्छान्दसः]

जेहमानम् प्रयतमानम् (अग्निम्=अश्वम्) १.१६३.६. प्रयत्नसाधकम् (पात्रं=ज्ञानसमूहम्) १.११०.५. प्रयत्नेन गच्छन्तम् (शिरः=विमानम्) २९.१७. [जेहते गतिकर्मा निघं० २.१४. ततः शानच्]

जेः जयेः ६.४.४. [जि जये (भ्वा०) धातोर्लोट् मध्यमैकवचनम्। शपो लुक्]

जैत्रम् जेतृभिः परिवृतं रथम् (यानम्) १७.३७. जयन्ति येन तम् (रथम्), प्र०—अत्र जिधातोः 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' इति ष्ट्रन्-प्रत्ययो बाहुलकाद् वृद्धिश्च १.१०२.३. दृढं वैयाघ्रं विजयनिमित्तम् (रथम्) १.१०२.५. जेतुं शीलम् (सुशिक्षितसेनादिजनम्) १८.९. **जैत्राय**=जयाय ३४.५०. [जि जये (भ्वा०) धातोरौणादिकः ष्ट्रन्प्रत्ययो वृद्धिश्च बाहुलकाद्]

जैत्रीम् जयशीलाम् (सातिं=सम्भक्तिम्) १.१११.३. **जैत्रीः**=जयशीलाः (सूर्यकिरणाः) ३.३१.४. [जि जये (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' इति ष्ट्रन् प्रत्ययो वृद्धिश्च बाहुलकात्। ततः स्त्रियां ङीष्]

जोगुवानः पुनः पुनरव्यक्तं शब्दं कुर्वन् (सभाध्यक्षः) १.६१.१४. [गुङ् अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोर्यङन्ताच्छानच्प्रत्ययः। यङो लुक्]

जोगुवे भृशमुपदेशकाय (विद्वज्जनाय) १.१२७.१०. [गुङ् अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोर्यङन्तात् क्विप्। ततश्चतुर्थी]

जोगुवे उपदिशामि ५.६४.२. [गुङ् अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः। अभ्यासस्य गुणश्छान्दसः। यङ्लुगन्ताद्वा लट्]

जोषत् जुषेत, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ८.४५. जुषताम्, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १७.२३. सेवेत १.१६७.५. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लेट्]

जोषम् प्रीतिं प्रसन्नताम् १.७७.५. विपरीतसेवनम् ४.२७.२. पूर्णम् (शपथम्) ७.४३.४. प्रीतिम् ६.२३.८. जुष्यते प्रीत्या सेव्यते तम् (परिधिम्) २.१७. **जोषे**=प्रीतिजनके व्यवहारे १.१२०.१. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्घञ्]

जोषयन्ते प्रीतयन्ति १.८३.२. **जोषयासे**=सेवयेः ५.३.१०. सेवय ४.३२.१६. सेवयस्व ३.५२.३. **जोषयेते**=सर्वान् सेवयतः १.९५.५. सेवेते, प्र०—अत्र स्वार्थे णिच् १.९५.६. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्। 'जोषयासे' प्रयोगे आडागमश्छान्दसः]

जोषवाकम् प्रीतिकरं वचनम् ६.५९.४. [जोषवाकपदयोः समासः। जोषं व्याख्यातम्। वाकः=वच् परिभाषणे (अदा) धातोर्घञ्। जोषवाकमित्यविज्ञातनामधेयं जोषयितव्यं भवति नि० ५.२२.]

जोषि जुषसे सेवसे, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शब्विकरणस्य लुक्, व्यत्ययेन परस्मैपदं च २.३७.६. सेवते २.३७.६. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

जोषिषत् जुषेत सेवेत, प्र० —अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् २.३५.१. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (भ्वा०) धातोर्लेट् । 'सिब्बहुलं लेटि' इति सिप्]

जोष्टार इव सेवमाना इव (प्रजाजना) इव ४.४१.६. [जोष्टार-इवपदयोः समासः । जोष्टारोऽग्रिमे पदे द्रष्टव्यम्]

जोष्टारम् प्रीतं सेवमानम् (शमितारं=यजमानम्) २८.१०. **जोष्ट्रे**=जुषमाणाय (अ०—होत्रे) १७.५६. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । इडभावश्छान्दसः]

जोष्ट्री सेवनीया (सरस्वती=स्त्री) २१.५१. सेवमाने (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २८.१५. प्रीतिमत्यौ (वसुधिती=विद्याधारिके स्त्रियौ) २८.३८. **जोष्ट्रीभ्याम्**= सेविकाभ्यां वेलाभ्याम् २१.५०. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' इत्युणादिसूत्रेण ष्ट्रन् प्रत्ययः । स्त्रियां ङीष्]

जोष्या सेवितुं योग्या (गौः=विद्यासुशिक्षिता वाणी) १.१७३.८. [जुषी प्रीतिसेवनयोः (भ्वा०) धातोर्ण्यदन्तात् स्त्रियां टाप्]

जोहवीति भृशमाह्वयति ३४.३८. भृशमाह्वयन्ति ७.५६.१८. भृशं ददाति ३.६२.२. भृशमाददाति ७.३८.६. भृशं शब्दयति ३.३३.४. भृशमुपदिशति ५.४३.१. भृशं प्रशंसति ७.४१.५. निश्चय कर के प्रशंसा करता है, सं० वि० १५६, ७.४१.५. ग्रहण करने को अत्यन्त इच्छा करता है, आर्याभि० २.४५, ३४.३८. **जोहवीमि**= भृशं स्पर्द्धे ५.४.१०. भृशं स्वीकरोमि २.१०.६. भृशं प्रशंसामि आह्वयामि वा ३.४३.३. भृशं स्तौमि १.१७५.६. भृशं ह्वयामि १.१७६.६. भृशं गृह्णामि ५.६६.३. पुनः पुनराददामि १.३४.१२. भृशमाददामि १.१६४.५२. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट् । ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्वा यङ्लुगन्ताल् लट् । धातोः सम्प्रसारणं 'अभ्यस्तस्य च' अ० ६.१.३३. सूत्रेण । जोहवीमि आह्वये नि० ११.३३.]

जोहुवती या भृशमाह्वयती (स्त्री) ७.२४.२. [ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच् छत्रन्तान् ङीप्]

जोहुवन्त भृशमाददति ७.२१.७. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदमडभावश्च]

जोहुवानम् आहूयमानमाह्वयितारं वा (जनम्) ५.४२.७. **जोहूवानान्**=भृशमाहूयमानान् (नॄन्=नायकान् राजपुरुषान्) ७.२८.३. [ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्यङन्ताच्छानच्]

जोहुवाना भृशं प्राप्तप्रशंसा (माता) ५.४७.१. [ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्यङन्ताच्छानच् । स्त्रियां टाप्]

जोहूत्रम् अतिशयेन स्पर्द्धितम् (अश्वं=विद्युतम्) १.११८.९. **जोहूत्रः**=भृशं दाता (इन्द्रः=परमेश्वर आप्तो जनो वा) २.२०.३. अतिशयेन सङ्गमनीयः (अग्निः) २.१०.१. [ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः, हु दानादानयोः (जु०) धातोर्वा छान्दसं रूपम्]

ज्ञातयः सम्बन्धिनः (जनाः) ७.५५.५. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । ज्ञातिः संज्ञानात् नि० ४.२१]

ज्ञात्रम् जानामि येन तत् (ज्ञानम्) १८.७. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' उ० ४.१५. सूत्रेण ष्ट्रन्]

ज्ञासः जानन्ति ये तान् विदुषः, सृष्टिस्थान् ज्ञातव्यान् पदार्थान् वा १.१०९.१. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' अ० ३.१.१३५. सूत्रेण कः प्रत्ययः । प्रथमाबहुवचने जसोऽसुक् । विभक्तिव्यत्ययः]

ज्ञुबाधः जानुनी बाधमानाः (जनाः) ६.१.६. [जानुशब्दोपपदे बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोः क्विप् । जानुस्थाने ज्ञुरादेशश्छान्दसः]

ज्ञेयाः ज्ञातुं योग्याः (विद्वांसो जनाः) २.१०.६. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः 'अचो यत्' सूत्रेण यत् । 'ईद् यति' अ० ६.४.६५. सूत्रेण ईकारान्तादेशः]

ज्ञेषम् जानीयाम् प्र०—जानातेर्लेटि सिपि रूपम् २०.२५. [ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्लेट्]

ज्मन् ज्मनि भूमौ, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्येकवचनस्य लुक् 'ज्मेति पृथिवीनाम' निघं० १.१, १७.६. पृथिव्याम् ७.२१.६. **ज्मयाः**=भूमेर्मध्ये ७.३९.३. **ज्मः**=पृथिव्याः ६.६२.१. [ज्मा पृथिवीनाम निघं० १.१. ज्मया=ज्मा पृथिवी तस्यां भवा नि० १२.४३. ज्मया= ज्माशब्दात् सप्तम्यां याच्प्रत्ययश्छान्दसः । भवार्थे वा याः प्रत्ययश्छान्दसः]

ज्या प्रत्यञ्चा २९.४०. **ज्याम्**=धनुषः प्रत्यञ्चाम् ४.२७.३. बाणसन्धानार्थम् १६.९. [जयति यया शत्रून् सा ज्येति विग्रहे जि जये (भ्वा०) धातोः 'अघ्न्यादयश्च' उ० ४.११२. सूत्रेण यक्प्रत्ययान्तं पदं निपातितम् । ज्या जयतेर्वा जिनातेर्वा, प्रजावयतीषूनीति वा नि० ९.१८.]

ज्याकारम् यो ज्यां प्रत्यञ्चां करोति तम् (शिल्पिजनम्) ३०.७. ['ज्या' व्याख्यातम् । ज्योपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण्प्रत्ययः]

ज्याज्मन् प्रत्यञ्चा २९.४०.

ज्यायस्यै ज्येष्ठायै (स्वस्रे) १.१२४.८. [वृद्धप्राति० अतिशायने ईयसुन् प्रत्यये 'वृद्धस्य च' अ० ५.३.६२. सूत्रेण ज्यादेशः । 'ज्यादादीयसः' अ० ६.४.१६०. सूत्रेण ईयस आकारादेशः]

ज्यायस्वन्तः उत्तम विद्यादिगुणयुक्त (विद्वान् लोग), सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.५. [प्रशस्यप्राति०' अतिशायने ईयसुन्प्रत्यये 'ज्य च' अ० ५.३.६१. सूत्रेण ज्यादेशः । ज्यायस्प्राति० मतुप्]

ज्यायः अतिशयेन ज्येष्ठम् (ब्रह्म) ७.३२.२४. प्रशस्यम् (सुखम्) ६.२६ ७.

ज्यायान् महिमाऽनन्तः (पुरुषः=परमेश्वरः), ऋ० भू० १२१, ३१.३. अतिशयेन ज्येष्ठः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) ७.२०.७. महान् वृद्धः (सूर्यः) ३.३८.५. महान् (इन्द्रः=सूर्य इव प्रकाशमानो जगदीश्वरः) ६.३०.४. अतिशयेन प्रशस्तो महान् (पूरुषः=परमेश्वरः) ३१.३. **ज्यायांसम्**=श्रेष्ठम् (ऋषिस्वरम्=ऋषीणामुपदेशम्) ५.४४.८. [वृद्धप्राति० प्रशस्यप्रातिपदिकाद्वातिशायने ईयसुन् । वृद्धप्रशस्ययोः स्थाने ज्यादेशः । ईयस आकारादेशश्च]

ज्यावाजम् ज्यायाः शब्दम् ३.५३.२४. [ज्या-वाजपदयोः समासः । ज्या व्याख्यातम् । वाजः=वज गतौ (भ्वा०) धातोर्घञ्]

ज्येष्ठतमा अतिशयेन ज्येष्ठौ (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ६.६७.१. **ज्येष्ठतमाय**=अतिशयेन वृद्धाय (अवसे=रक्षणाद्याय) २.१६.१. [वृद्धप्राति० अतिशायने इष्ठन्प्रत्यये 'वृद्धस्य च' अ० ५.३.६२. सूत्रेण ज्यादेशः । ततोऽतिशायने तमप् । प्रथमाद्विवचने 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः]

ज्येष्ठतातिम् प्रशस्तं ज्येष्ठम् (वृजनं=योगबलम्) ७.१२. ज्येष्ठमेव (राजानम्) ५.४४.१. [ज्येष्ठं व्याख्यातम् ज्येष्ठप्राति० भावे स्वार्थे वा छान्दसः तातिल्प्रत्ययः]

ज्येष्ठम् अतिशयेन प्रशस्यम् (रत्नं=धनम्) ५.४९.२. अतिशयेन प्रशस्तम् (विप्रं=विद्वांसम्) १.१२७.२. वृद्धं श्रेष्ठम्, भा०—सर्वोत्कृष्टं सर्वोपास्यं परमेश्वरम् (ब्रह्म) ३३.८०. विद्यावृद्धम् (अध्यापकम्) ४.१.२. प्रवृद्धम् (शवः=बलम्) ६.४८.२१. **ज्येष्ठः**=अतिशयेन प्रशंसनीयः (परमेश्वरः सभाध्यक्षो वा), प्र०—अत्र 'ज्य च' अ० ५.३.६१. इति सूत्रेण प्रशस्यस्य स्थाने ज्यादेशः १.१००.४. पूर्वजः (बन्धु विद्वान्) ४.३३.५. **ज्येष्ठाय**=सबसे बड़े होने के लिए, स० प्र० १८३, ९.४०. **ज्येष्ठे**=अतिशयेन प्रशस्ये (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ४.५६.१. [वृद्धात् प्रशस्याद्वातिशायने इष्ठन्प्रत्ययः । प्रातिपदिकस्येष्ठन्प्रत्यये ज्यादेशः । प्रजापतिर्वाव ज्येष्ठः तै० सं० ७.१.१.४. यद्वै ज्येष्ठं तन्महत् ऐ० आ० १.३.७.]

ज्येष्ठराज्यम् यो ज्येष्ठेषु राजते तम् (परमेश्वरम्) २.२३.१. [ज्येष्ठराजन्पदयोः समासे भवार्थे यत्]

ज्येष्ठा प्रशंस्यानि (नृम्णानि=धनानि) ४.२२.६. [प्रशस्यप्राति० अतिशायने इष्ठन् । ज्यादेशः । शेर्लोपश्छान्दसः]

ज्येष्ठासः विद्यावयोवृद्धाः प्रशस्तवाचः (विद्वज्जनाः) ५.८७.६. [ज्येष्ठं व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुगागमः]

ज्यैष्ठ्यम् प्रशस्यस्य भावः १८.४. **ज्यैष्ठ्याय**=अत्युत्तमकर्मणामनुष्ठानाय १.५.६.' प्रशस्त-सुख-भावाय १४.१६. प्रशस्यभावाय १४.१५. अतिशयेन प्रशस्यस्य भावाय १४.६. ज्येष्ठानां वृद्धानां भावाय १४.२७. ज्ञान-वृद्ध-व्यवहार-स्थापनाय ऋ० भू० २२२, ९.४०. वृद्धस्य भावाय ३.५०.३. विद्याधर्मवृद्धानां भावाय १०.१८. ज्येष्ठत्वाय ९.४०. ज्येष्ठे मासि भवाय व्यवहाराय, वृद्धत्वाय वा १३.२५. [ज्येष्ठं व्याख्यातम् । ततो भावे कर्मणि वा ष्यञ्प्रत्ययः । ज्यैष्ठ्यं वा अग्निष्टोमः जै० २.३७८.]

ज्योक् चिरार्थे १.२३.२१. निरन्तरम् १.१३६.६. [स्वरादिपाठादव्ययम्]

ज्योतिरग्राः ज्योतिर्विद्याप्रकाशादिकमग्रा अग्रगण्याः ७.३३.७. पहली ज्योति के तुल्य, सं० वि० १६९, अथर्व० १४.२.३१. [ज्योतिः-अग्रपदयोः समासः । ज्योतिः-पदं व्याख्यास्यते]

ज्योतिरनीकः ज्योतिरेवाऽनीकं सैन्यमिव यस्य सः (अग्निः) ७.३५.४. [ज्योतिः=अनीकपदयोः समासः । ज्योतिः पदं व्याख्यास्यते]

ज्योतिर्जरायुः ज्योतिषां जरायुरिवाऽऽच्छादकः (वेनः=कमनीयश्चन्द्रः) ७.१६. [ज्योतिः-जरायुपदयोः समासः । ज्योतिः पदं व्याख्यास्यते । जरायुः=जरोपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः 'किंजरयोः श्रिणः' उ० १.३. सूत्रेण ञुण्प्रत्ययः । ज्योतिर्जरायुः=ज्योतिरस्य जरायुस्थानीयं भवति नि० १०.३९.]

ज्योतिषस्पती प्रकाशस्य पालयितारौ (मित्रावरुणा=सूर्यवायू) प्र०—अत्र 'षष्ठ्याः पतिपुत्र०' अ० ८.३.५३. अनेन विसर्जनीयस्य सकारादेशः १.२३.५. [ज्योतिष्-पति-पदयोः समासः । षष्ठ्या अलुक्]

ज्योतिषः प्रकाशस्य २६.६. **ज्योतिषा**=प्रकाशेन, भा०—विज्ञानेन ३८.१६. स्वप्रकाशेन ३३.९२. विद्याप्रकाशेन ११.४०. विद्यासुशिक्षाप्रकाशेन शीतलेन तेजसा वा १.९१.२२. विद्यान्यायसुशिक्षाप्रकाशेन ११.५३. सत्यविद्योपदेशप्रकाशेन ३८.१६. सूर्यादिप्रकाशेन वा धर्मादिप्रकाशेन ३७.२१. मननादिरूपप्रकाशेन ३८.१६. तेजस्विना लोकसमूहेन सह २.९. विद्या-धर्म-प्रकाश-कारकेण (व्यवहारेण) २.२५. दीप्त्या १३.४०. द्योतमानेन (अग्निना) २६.२७. **ज्योतिषाम्**=इन्द्रियाणां सूर्यादीनां च, ऋ० भू० १५२, ३४.१. शब्दादिविषयप्रकाशकानामिन्द्रियाणाम्, भा०—ज्ञानस्य साधकत्वादिन्द्रियाणाम् ३४.१. अग्नि, सूर्यादि और श्रोत्रादि इन्द्रिय, इन ज्योतिः-प्रकाशकों का, आर्याभि० २.४३, ३४.१. **ज्योतिषि**=विद्युति १३.५३. **ज्योतिषे**=प्रदीपनाय २२.३०. न्याय-प्रकाशाय १३.३९. **ज्योतिः**=प्रकाशम् १५.५८. विज्ञानम् १४.१४. विद्याप्रकाशम् भा०—विद्युदादिपदार्थविद्याम् १३.२४. प्रकाशकः (अग्निः=पावकवद्राजा) ४.१०.३. द्योतमानम्, भा०—अन्तःकरणमनोऽहङ्कारवृत्तित्वाच्चतुर्विधमन्तःप्रकाशकम् (मनः) ३४.३. ज्ञानप्रकाशम् ६.४७.८. तेजः ३.३३. प्रकाशकम् (ईश्वरम्) ३३.४०. सूर्यादिप्रकाशः १.१००.८. प्रदीप्तिः २९.७. विद्युतो दीप्तिः १८.५०. विज्ञानविषयम्, विज्ञानप्रकाशम् ८.५२. स्वप्रकाशं सर्वप्रकाशकं वा (ब्रह्म), सूर्य इव स्वप्रकाशं चेतनं परमात्मानम् ६.९.५. प्रकाशस्वरूपम्, भा०—तेजस्वि (ब्रह्म=अनन्तमीश्वरम्) २३.४७. प्रकाशयुक्तं दिनम् २.२७.१४. शिल्पविद्याप्रकाशम् २९.३२. प्रकाशवान् (इन्द्रः=भौतिकः सूर्यो वायुर्वा), प्र०—'द्युते रिसन्नादेश्च जः' उ० २.१०५. इति द्युत-धातोरिसन्प्रत्यय आदेर्जकारादेश्च २.९. प्रकाशमयः, शिल्पविद्यासाधनप्रकाशकः (अग्निः=ईश्वरो भौतिको वा) ३.९. अ०—स्वाहुतं हविः ३.९. सर्वात्मप्रकाशको वेदद्वारा सकलविद्योपदेशकः, अ०—सर्वात्मसु ज्ञानम् (सूर्यः=चराचरात्मा जगदीश्वरः) ३.९. सर्वव्यवहारप्रकाशकः (अ०—सूर्यलोकः) ३.९. सर्वप्रकाशकः (अग्निः=जगदीश्वरः) ३.९. सकलपदार्थप्रकाशनम् अ०—सकलविद्याप्रकाशकं ज्ञानम् ३.९. सकलपदार्थप्रकाशनम्, अ०—मूर्त्तद्रव्यप्रकाशनम् ३.९. पृथिव्यादिमूर्त्तद्रव्यप्रकाशकः (सूर्यलोकः) ३.९. अ०—विद्युदाख्योऽयमग्निः शरीर-ब्रह्माण्डस्थः ३.९. सत्यप्रकाशकः (सूर्यः=जगदीश्वरः) ३.९. प्रकाशमिव विद्याम् ३.३९.७. सूर्यप्रकाश इव विज्ञानदीप्तिः ३.३९.८. प्रकाशस्वरूपं परमात्मानम् ७.३२.२६. प्रकाशकं, प्रवर्त्तकम् (मनः), प्र०—"आत्मा मनसा संयुज्यते, मन इन्द्रियेणेन्द्रियमर्थेन" इति महर्षिवात्स्यायनोक्तेः ३४.१. सर्वपदार्थप्रकाशकम् (मनः) ऋ० भू० १५२, ३४.१. ज्ञानप्रकाशः २२.३३. विद्युदादिप्रकाशम् १३.२४. प्रकाशमानम्, अ०—सवितृमण्डलम् २७.१०. प्रकाशस्वरूपं सूर्यलोकम् १.५०.१०. द्युतिम् १७.५८. दीप्तिम् १.९३.४. विद्याप्रकाशादिकम् ७.३३.७. विद्याविनयप्रकाशम् १.११७.२१. न्याय-विनय-प्रचारकम् (प्रशस्तं बुद्ध्यादिकम्) १.५७.३. प्रकाशमयम् (स्वः=सुखम्) ४.१६.४. प्रकाशयुक्त (मनः=मन), स० प्र० २४७, ३४.३. स्वप्रकाशस्वरूप और सुख के प्रकाशक (ईश्वर) को, आर्याभि० २.१७, ५.३२. सूर्यादि लोक, अग्न्यादिपदार्थ, आर्याभि० २.१३, १८.२९. स्वयं प्रकाशकत्वेन ज्ञानप्रकाशकम् (ब्रह्म) १.३६.१९. युद्धविद्याप्रकाशम् ३.३४.३. **ज्योतींषि**=विद्यातेजांसि ३.१०.५. विद्यादिसद्गुणप्रकाशकानि तेजांसि १.५५.६. अग्नि-सूर्य-विद्युदाख्यानि सर्वजगत्प्रकाशकानि, ऋ० भू० ४४, तेजोमयानि प्रकाशकानि (विद्युत्सूर्यचन्द्ररूपाणि) ३२.५. सूर्यविद्युदग्न्याख्यानि ८.३६. अग्नि, वायु और सूर्य इनको, आर्याभि० २.१४, १४.१४. [द्युत् दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'द्युतेरिसिन्नादेश्च जः' उ० २.११०. सूत्रेण इसिन्प्रत्ययः । आदेश्च जकारादेशः । अयमग्निर्ज्योतिः श० ९.४.२.२२. अयं वै (भू) लोको ज्योतिः काठ० ३३.३. ऐ० ४.१५. जै० २.३१७. असौ (सूर्यः) वाव ज्योतिस्तेन सूर्यं नातिशंसति ऐ० ४.१०. अहर्ज्योतिः श० १०.२.६.१६. इदमेवान्तरिक्षं ज्योतिः जै० २.१६६. इयं (पृथिवी) वाव ज्योतिः तै० सं० ७.२.४.२. तां० १६.१.७. एतद्ध ज्योतिरुत्तमं य एष (सूर्यः) तपति जै० २.६८. एतद्ध वाव सर्वेषु लोकेषु ज्योतिर्यद् हिरण्यम् जै० १.८०. एतद्वै प्रज्ञातं देवतीर्थं यज्ज्योतिरतिरात्रः जै० २.३०५. ज्योतिः प्रवर्ग्यः श० १४.४.१.३२. तै० आ० ५.१०.४. ज्योतिरिति नक्षत्रेषु तै०

आ० ६.१०.३. ज्योतिर्वामम् तै० सं० ५.५.३.४. ज्योतिर्वै यज्ञः काठ० ३१.११. ज्योतिर्वै हिरण्यम् तै० सं० ५.५.३.४. ऐ० ७.१२. गो० २.५.८. तां० ६.६.१० श० ६.७.१.२. ज्योतिर्हि स्वर्गो लोकः मै० १.४.७: ज्योतिश्च मे सुवश्च मे तै० सं० ४.७.१.१. ज्योतिषैव तमस् तरति मै० १.८.६. ज्योतिस्तद्यत् साम, ज्योतिस्तद्यद् देवता जै०१.७६. त्रीणि ज्योतींषि सचते स षोडशी । काठसंक० १०५.१६. दिवि ते बृहद्भा इत्याह सुवर्ग एवास्मै लोके ज्योतिर्दधाति तै० सं० ३.४.३.६. प्रजा ज्योतिः श० ८.३.२.१४. काठ० ३३.७. वाक् प्राणानां ज्योतिरुत्तमम् काठ० २०.११. विराजा ज्योतिषा सह (घर्मो विभाति) तै० आ० ४.२१.१. मै० ४.९.१३. सुवर्गो वै लोको ज्योतिः तै० १.२.२.२. सुववै पूर्वमहज्र्योतिरुत्तरम् जै० २.२३७. हिङ्कारेण वै ज्योतिषा देवास्त्रिवृते ब्रह्मवर्चसाय ज्योतिरदधुः जै० १.६६. हिरण्यं सम्प्रदायं षोडशिना स्तुवन्ति । षोडशिनमेव तज्ज्योतिष्मन्तं कुर्वन्ति जै० १.२०५. स त्वमग्ने दिव्येन ज्योतिषा भाहि समन्तरिक्षेण सं पार्थिवेन क० ६.३. सं ज्योतिषा भूमेति सं देवैरभूमेत्येवैतदाह श० १.९.३.१४. अस्य एवैतानि (घर्मः, अर्कः, शुक्रः, ज्योतिः, सूर्यः) अग्नेर्नामानि श० ९.४.२.२५. ज्योतिरमृतम् श० १४.४.१.३२. प्राणो वै ज्योतिः श० ८.३.२.१४. अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निरिन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्रस्सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिस्सूर्यः काठ० ४०.६. पञ्च ज्योतींषीद्वान्येषु लोकेषु दीप्यन्ते । अग्निः पृथिव्यां वायुरन्तरिक्ष आदित्यो दिवि चन्द्रमा नक्षत्रेषु विद्युदप्सु जै० १.२९२. २.४३३. यत्ते सोम दिवि ज्योतिर्यत् पृथिव्यां यदुरा अन्तरिक्षे तेनास्मै यज्ञपतय उरु राये कृधि मै० १.३.३ यथामूनि त्रीणि ज्योतींष्येवमिमानि पुरुषे त्रीणि ज्योतींषि यथासौ दिव्यादित्य एवमिदं शिरसि चक्षुर्यथाऽसावन्तरिक्षे विद्युदेवमिदमात्मनि हृदयं यथायमग्निः पृथिव्यामेवमिदमुपस्थे रेतः शां० आ० ७.४. यद् हिरण्यशल्कैः प्रोक्षति, ज्योषैवास्मै संवत्सरं विवासयति काठ० २१.६.]

ज्योतिष्कृत् यो ज्योतींषि करोति सः, अ०—सविता, भा०—विद्याप्रकाशको राजपुरुषः ३३.३६. यो ज्योतिः प्रकाशात्मकं सूर्यादिलोकं करोति सः (ईश्वरः) १.५०.४. [ज्योतिष्उपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप् । ज्योतिष्पदं व्याख्यातम्]

ज्योतिष्मत् बहुन्याययुक्तम् (क्षत्रं=राज्यम्) १.१३६.३. [ज्योतिष्पदं व्याख्यातम् । ततो मतुप्]

ज्योतिष्मती प्रशस्तानि ज्योतींषि विद्यन्ते यस्यां ताम् (तमः=रात्रिम्) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्यमो लुक् १.४६.६. ज्योतिष्मतीम्=बहु ज्योतिर्विद्यते यस्यास्ताम् (स्त्रियम्) १४.१४: प्रशस्तं ज्योतिर्विद्याविज्ञानं विद्यते यस्यास्ताम्, (अ०—विद्युतम्) १३.२४. बहुतेजोयुक्ताम् (अदितिं=दिवम्) १.१३६.३. प्रशस्तानि ज्योतींषि ज्ञानानि विद्यन्तेऽस्यां ताम् (स्त्रियम्) १५.५८. [ज्योतिष्प्राति० भूम्नि प्रशस्तार्थे वा मतुप्, ततः स्त्रियां ङीप् । ज्योतिष्पदं व्याख्यातम्]

ज्योतिष्मन्तम् बहुप्रकाशम् (विद्वज्जनम्) २.२३.३. बहूनि ज्योतींषि विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (अग्नि=विद्युतम्) ११.२८. प्रशस्त-ज्योतिर्युक्तम् (अग्नि=विद्युतम्) ११.३१. **ज्योतिष्मन्तः**=शुद्ध विज्ञानयुक्त मुक्ति को प्राप्त शुद्ध पुरुषगण सं० वि० १९७, ९.११३.९. **ज्योतिष्मान्**=प्रशस्तप्रकाशयुक्तः (अग्निः=जीवः) १२.३८. बहूनि ज्योतींषि प्रकाशा विद्यन्ते यस्य सः (अ०—ईश्वरः) १७.८०. बहूनि ज्योतींषि विज्ञानानि विद्यन्ते यस्य सः (विद्वान् जनः), अ०—सूर्यः १२.३२. [ज्योतिष्पदं व्याख्यातम् । ततो भूम्नि प्रशस्तार्थे वा मतुप् । देवयाना वै ज्योतिष्मन्तः पन्थानः ऐ० ३.३८. प्रजापतये त्वा ज्योतिष्मते ज्योतिष्मन्तं गृह्णामि मै० १.३.३५. विराजा ज्योतिष्मान् तै० सं० ४.४.८.१.]

ज्योतीरथम् प्रकाशयुक्तं रमणीयं यानम् १.१४०.१. [ज्योतिष्-रथपदयोः समासः]

ज्योते ! हे सुशीलेन द्योतमाने (पत्नि !) ८.४३.

ज्रयसः वेगवतः (यानस्य) ५.३२.९. [ज्रयति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

ज्रयसानौ गच्छन्तौ विजानन्तौ वा (मित्रावरुणौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.६६.५. [ज्रयनि गतिकर्मा निघं० २.१४. ततः शानच् । सुडागमश्छान्दसः । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

ज्रयः ज्रयन्त्यभिभवन्त्यायुर्येन तत् (कालः) १.९५.९. तेजः १.१०१.७. वेगयुक्तः (अग्निः) १.१४०.९. वेगवन्तः (आप्तपुरुषाः) ५.४४.६. अतितेजोमयाः(रश्मयः=किरणाः) ४.५२.५. **ज्रयांसि**=वेगयुक्तानि कर्माणि ५.८.७. ज्ञातव्यानि (कार्याणि) प्र०—ज्रयतीति गतिकर्मा, निघं० २.१४, ६.६.६. [ज्रयति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) । ज्रि अभिभवे (भ्वा०) धातोर्वा 'एरच्' अ० ३.३.५६. सूत्रेणाच्प्रत्ययः]

तकत् वह १.१३३.४. [तकति गतिकर्मा निघं० २.१४. तक हसने (भ्वा०) धातोर्वा लेट्]

तकम् तम्, प्र०—अत्राऽकच्प्रत्ययः १.१९१.१५. [तद्सर्वनाम्नो द्वितीयैकवचने 'तम्' इति रूपम्। ततः 'अव्ययसर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः' अ० ५.३.७१. सूत्रेणाकच्]

तकवानस्य प्राप्तविद्यस्य (विदुषो जनस्य), प्र०—गत्यर्थात् तकधातोरौणादिक उः, पश्चाद् भृगवाणवत् आचारे क्विपि, व्यत्ययेनात्मनेपदे शानचि 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकत्वाद् गुणः १.१२०.६.

तक्तः प्रसन्नः (इन्द्रः=परमैश्वर्यप्रदो राजा) ६.३२.५. [तक हसने (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

तक्ववीये तक्वनां स्तेनानामसम्बन्धे मार्गे १.१३४.५. [तक्वा स्तेननाम निघं० ३.२४.]

तक्ववीरिव यस्तकान् सेनाजनान् व्याप्नोति तद्वत् (अध्यापक-उपदेशक इव) १.१५१.५. [तक्ववीः-इव पदयोः समासः]

तक्वा स्तेनः १.६६.१. [तक्वा स्तेननाम निघं० ३.२४.]

तक्षत् तनूकरोति १.६१.६. तीक्ष्णीकृत्य शत्रून् हिंस्यात् १.१२१.३. **तक्षत**=निष्पादयत १.१११.२. सूक्ष्मान् कुरुत ३.३८.२. प्रापयत ४.१६.८. रक्षत ३.५४.१७. विस्तृणुत ४.३६.८. [तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लोट्। 'तनूकरणे तक्षः' अ० ३.१.७६. सूत्रेण विकल्पेन श्नुः पक्षे शप्। तक्षति करोति कर्मा नि० ४.१९.]

तक्षत् जलादीनि तनूकुर्वन् (सूर्य-मण्डलम्) १.१२७.४. [तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

तक्षति छिन्दन्ति, प्र०—अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम् १.१६२.६. तक्षन्ति तनूकुर्वन्ति, भा०—निर्मिमते प्र०—अत्राऽपि वचनव्यत्ययेनैकवचनम् २५.२९. **तक्षथ**=कुरुत ४.३६.३. **तक्षन्**=रचयन्तु ५.३१.४. सूक्ष्मीकुर्वन्तु १.१११.१ विस्तीर्णां कुर्वन्तु १.१११.१. सूक्ष्मरचनायुक्तं कुर्वन्तु १.१११.१. सूक्ष्मं कुर्वन्ति, छेदनादिना रचयन्ति वा, प्र०—अत्र लडर्थे लङडभावश्च १.२०.३. **तक्षन्तु**=रचयन्तु ४.३३.८. [तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लङ् लोट् च। लङ्यडभावश्छान्दसः]

तक्षभ्यः ये तक्ष्णुवन्ति तनूकुर्वन्ति तेभ्यः (शिल्पिभ्यः) १६.२७. [तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोः 'कनिन् युवृषितक्षि०' उ० १.१५६. सूत्रेण कनिन्प्रत्ययः]

तक्षम् उपदिशेयम् ६.३२.१ [तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोस्सामान्ये लङ्। उत्तमैकवचनम्। अडभावश्च]

तक्षाणम् तनूकर्त्तारम् (शिल्पिजनम्) ३०.६. [तक्षन् प्राति० द्वितीयैकवचनम्। तक्षन् इति व्याख्यातम्]

तक्षाम संवृणुयामाऽऽच्छादयाम, स्वीकुर्याम ५.७३.१०. **तक्षुः**=विस्तृणीयुः २.१९.८. [तक्ष त्वचने (संवरणे) (भ्वा०) धातोर्लोट्। उत्तमैकवचनम्। अन्यत्र तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लिट् सामान्ये। द्वित्वाभावश्च छान्दसः]

तकितः विद्युतः २.२३.९. [तड आघाते (चु०), धातोः 'तार्डेर्णिलुक् च' उ० १.९८. सूत्रेण इतिः प्रत्ययो णेश्च लुक्। तडिदित्यन्तिकवधयोः संसृष्टकर्म ताडयतीति सतः नि० ३.१०. विद्युत् तडिद् भवतीति शाकपूणिः। सा ह्यवताडयति दूराच्च दृश्यते। अपि त्विदमन्तिकनामैवाभिप्रेतं स्यात् नि० ३.११. तडित्=अन्तिकनाम निघं० २.१६. वधकर्मा निघं० २.१९.]

तळिदिव यथा विद्युत्तथा १.९४.७. [तडित्-इव-पदयोः समासः। तडिदिति व्याख्यातम्]

ततक्ष तक्षति १.५२.७. तीक्ष्णीकरोति ६.३.८. छिनत्ति १.३२.२. कणीकृत्य भूमौ पातयति १.३२.२. प्रक्षिपेत् १.१२१.१२. **ततक्षुः**=तनू कुर्वन्ति। प्र० अत्र लडर्थे लिट् १.२०.२. सूक्ष्मां विस्तृताञ्च कुर्वन्ति ४.३४.९. **ततक्षे**=तनूकरोषि ५.३३.४. [तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लिट्। तक्षति करोतिकर्मा नि० ४.१९. ततक्षुः=चक्रुः नि० ६.२७.]

ततनन् तनिष्यन्ति ४.५.१३. तन्वन्तु १.१६६.१४. **ततनन्त**=विस्तीर्णानि भवन्ति १.५२.११. **ततनः**=व्याप्नुहि ७.१.२. विस्तारय, प्र०—लेटि मध्यमैकवचने 'तनु विस्तारे' इत्यस्य रूपम्, विकरणव्यत्ययेन श्नोः श्लुः १.३८.१४. **ततनाम**=विस्तीर्णीयाम ५.५४.१५. विस्तारयेम १.१६०.५. **ततने**=विस्तृणीयाम् ७.२९.३. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन उ-प्रत्ययस्य स्थाने श्लुः]

ततनुष्टिम् विस्तारम् ५.३४.३. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः सन्नन्तात् क्तिच् कर्त्तरि। 'तितनिष्टिः' इत्यस्य स्थाने ततनुष्टिः। अभ्यासस्य इकाराभावः, सन्-प्रत्यये इटः स्थाने उट्आगमश्छान्दसः। ततनुंष्टि ततनिषुं धर्मसन्तानादनपेतमलङ्करिष्णुमयज्वानम् नि० ६.१९.]

ततन्थ तनोति ६.१६.२१. विस्तृणोति ६.१.११. तनोषि ६.४.६. विस्तारयति ३.६.५. विस्तृणोषि ६.६.६. विस्तृणुहि १९.५४. **ततन्युः**=विस्तृणीयुः १.१४१.१३. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचने छान्दसत्वाद् एत्वाभ्यासलोपौ इडागमश्च 'बभूथाततन्थजगृम्भ-

ववर्थेति निगमे' अ० ७.२.६४. सूत्रेण निपातनान् न]

ततन्वत् विस्तृणन् (जगदीश्वरः) प्र०—अत्र तनु धातोः शतृप्रत्यये 'बहुलं छन्दसि' अ० २.४.७६. अनेन बहुलं शपः श्लुः ६.२१.३. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः शतृप्रत्यये छान्दसः शपः श्लुः। व्यत्ययेन उकारप्रत्ययश्च]

ततन्वान् विस्तीर्णः (सूर्यः=सवितृमण्डलम् ७.६१.१. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिटः कानच्। 'छन्दस्युभयथे' ति लिटः सार्वधातुकत्वाद् शपः उकारप्रत्ययोऽपि भवति]

ततपते ! ततानां विस्तृतानां पालक (अग्ने=पावक राजन्) ४.२.६. [तत-पतिपदयोः समासः। ततः=तनु विस्तारे (तना०) धातो क्तः। 'यस्य विभाषा' इत्यनिट्त्वेऽनुनासिकलोपः]

ततम् व्याप्तम् (परिधिं=सर्वलोकाऽऽवरणम्) ७.३३.६. विस्तृतम् (अपः=कर्म १.११०.१. **ततः**= विस्तृतः (सूर्यः), प्र०—अत्र 'तनिमृङ्०' उ० ३.८६. अनेन तन्-प्रत्ययः किच्च १.८३.५. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्तः प्रत्ययः। अथवा तनु विस्तारे धातोः 'तनिमृङ्भ्यां किच्च' उ० ३.८८. सूत्रेण तन्प्रत्ययः किच्च]

ततरुषः तारकः (यजत्रः=राजा) ६.१२.२. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः। विभक्तिव्यत्ययश्च]

ततर्द हिनस्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् १.३२.१. विस्तारितवान्, ऋ० भू० २८३, १.३२.१. जलप्रवाहेण हिंसितवान्, ऋ० भू० २८३, १.३२.१. [तर्द हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

ततर्ह तिरस्करोति, सर्वान्निवारयति, ऋ० भू० २३७, अथर्व० ११.३.७. [तृहू हिंसार्थे (तुदा०) धातोर्लिट्]

ततस्रे तस्यन्ति दुःखान्युपक्षयन्ति १.१३१.३. तन्वन्ति ४.२३.५. उपक्षयन्ति ४.५०.२. [तसु उपक्षये (दिवा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। 'इरयो रे' अ० ६.४.७६. सूत्रेण 'रे' इत्यादेशः]

ततः तदनन्तरम् १०.१६. तस्मात् ८.६०. इस कारण से सं० वि० २१५, ४०.६. भा०—पश्चात् ३१.४. [तद्-सर्वनाम्नः 'पञ्चभ्यास्तसिल्' इति विभक्तिसंज्ञके तसिल्-प्रत्यये 'त्यदादीनामः' इत्याकारान्तादेशः]

ततान तनोति विस्तृणोति १.३५.७. तनयति ५.५४.५. विस्तारयति, प्र०—तुजादित्वाद् दीर्घः १.१०५.१२. तनुते विस्तृणाति ३.५३.१५. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिटि प्रथमैकवचनम्]

ततार तरेत् ७.३३.३. [तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोर्लिटि प्रथमैकवचनम्]

ततुरिम् त्वरमाणम् (अग्नि=पावकम्) ४.३९.२. दुःखात् तारयितारम् (परमात्मानम्) ६.२२.२. **ततुरिः**= शत्रूणां हिंसकः (राजा) ६.२४.२. तरिता (सेनेशः) ६.६८.७. दुःखात् सर्वान् सन्तारकः (परमात्मा) १.४५.३. [तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोः 'आदृगमहनजनः०' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण तच्छीलादिष्वर्थेषु किः प्रत्ययो लिट्वच्च कार्यम्। उपहूतेडा ततुरिरिति। तदेनां प्रत्यक्षमुपह्वयते ततुरिरिति सर्वं ह्येषा पाप्मानं तरति तस्मादाह ततुरिरिति श० १.८,१.२२.

ततृदाना दुःखस्य हिंसकौ (राजप्रजाजनौ) ४.२८.५. **ततृदानाः**=भूमिं हिंसन्तः (सिन्धवः=नद्यः) ५.५३.७. [उतृदिर् हिंसानादरयोः (रुधा०) धातोर्लिटः कानच्। सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः। अन्यत्र प्रथमाबहुवचनम्]

ततृपि अतिशयेन तृप्तिकारकम् (सोमम्=ओषधिगणम्) ३.४०.२. [तृप प्रीणने (दिवा०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि' अ० ३.२.१७१. वा० सूत्रेण किः]

ततृषाणम् प्राप्ततृषम् (प्राणिनम्) १.१३०.८. भृशं तृषितम् (ओकः=गृहम्) १.१७३.११. **ततृषाणः**= तृषातुरः [वीरपुरुषः) ६ १५.५. तातृषाणः भृशं तृड्युक्तः (वक्तृजनः). प्र०—अत्र तुजादित्वादभ्यासदीर्घः २.४.६. अतिशयेन पिपासितः (सेनापतिः) १.१३०.२. पुनः पुनर्जन्मनि तृष्यति (सूरिर्मेधाविजनः) प्र०—अत्र 'छन्दसि लिट्' इति लडर्थे लिट् 'लिटः कानज्वा' इति कानच्, वर्णव्यत्ययेन दीर्घत्वञ्च १.३१.७. [ञितृष पिपासायाम् (दिवा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच्]

तते तनुते, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणस्य लुक् १.८३.५.

तत्त्वाय ब्रह्मादितत्त्व-ज्ञानाय, ऋ० भू० १५६, ११.१. तेषां परमेश्वरादीनां पदार्थानां भावाय ११.१. [तद्-सर्वनाम्नो भावे त्वः प्रत्ययः। ततश्चतुर्थी]

तत्निरे विस्तृणन्ति १.१६४.५. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचने 'तनिपत्योश्छन्दसि' अ० ६.४.९९. सूत्रेण धातोरुपधाया लोपः]

तत्र तेषु कर्मसु १.१३.१२. उस संन्यास आश्रम में, सं० वि० २१५, ४०.७. तस्मिन् १.१०५.९. उसी अपने स्वरूप में, सं० वि० १९७, ९.११३.११. [तद्-सर्वनाम्नः 'सप्तम्यास्त्रल्' अ० ५.३.१०. सूत्रेण त्रल्]

तत्रो तेषु खलु १.३७.१४.

तत्सार तत्सरेत् १.१४५.४. [त्सर छद्मगतौ (भ्वा०) धातोर्लिटि प्रथमैकवचनम्]

तत्सिनाय तस्य यानसमूहस्य बन्धनाय १.६१.४. [तत्-सिनपदयोः समासः। सिनः=षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः क्तः। निष्ठातकारस्य नकारश्छान्दसः]

तथा तेन प्रकारेण ३१.१३. [तद्-सर्वनाम्नः 'प्रकारवचने थाल्' अ० ५.३.२३. सूत्रेण थाल्प्रत्ययः। तथा=उपमानाम निघं० ३.१३.]

तदपः तेषां प्राणान् ५.४७.२. **तदपाः**=तदपः कर्म यस्य सः (सविता=जगदीश्वरः) २.३८.१. [तद्-अपः-पदयोः समासः। अपः कर्मनाम निघं० २.१.]

तदोकसः तान्यन्तरिक्षवाय्वादीन्योकांसि येषां ते (इन्दवः=जलरसाः १.१५.१. **तदोकसा**=तदोकः स्थानं ययोस्तौ (इन्द्राबृहस्पती=राजामात्यौ) ४.४९.६. **तदोकसे**=तद्यानमोकः स्थानं यस्य तस्मै (शिल्पिजनाय) ३.३५.७. **तदोकाः**=तच्छ्रेष्ठमोको गृहं यस्य सः (वैद्यकशास्त्रविज्जनः) ७.२९.१. [तद्-ओकस्पदयोः समासः। तदिति सर्वनाम। ओकस्=अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर् बाहुलकादौणादिकः कक्प्रत्ययः]

तदोजाः तदेवौजः पराक्रमो यस्य सः (अतिथिर्जनः) ५.१.८. [तद्-ओजस्पदयोः समासः। ओजस्=उब्ज आर्ज्जवे (तुदा०) धातोः 'उब्जेर्बले बलोपश्च' अ० ४.१९२. सूत्रेण असुन् बलोपश्च]

तद्वशः तदिच्छः द्रविणोदाः=विद्वान्) २.३७.१. **तद्वशाय**=तत्तत्कामयमानाय (ऐश्वर्यवते जनाय) २.१४.२. [तद्-वशपदयोः समासः। वशः=वश कान्तौ (अदा०) धातोः 'वशिरण्योरुपसंख्यानम्' इति वार्त्तिकेन अप्प्रत्ययः]

तनच्मि सङ्कोचयामि, दृढीकरोमि १.४. [तञ्चू सङ्कोचने (रुधा०) धातोर्लटि उत्तमैकवचनम्]

तनत् विस्तारयेत् १.९१.२३. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लेटि रूपम्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

तनयम् सुखविस्तारकमपत्यम् ६.१३.६. विशालम् (तोकम्=अपत्यम्) ७.६०.८. विस्तीर्णशुभगुणकर्मस्वभावम् (तोकम्=अपत्यम्) ७.५६.२०. विद्यापुत्रम् (भा०—अपत्यम्) ३४.५८. विद्वांसं पौत्रम् १.६४.१४. औरसं विद्यार्थिनं वा २.२४.१६. पौत्रम् २.२५.२. प्राप्तकुमारावस्थम् (अपत्यम्) ३४.३३. सुकुमारम् ६.४८.१०. **तनयस्य**=अपत्यस्य १.१६६.८. पौत्रादेः १.१००.११. यूनः पुत्रस्य २.३०.५. कुमारावस्थां प्राप्तस्य (तोकस्य=अपत्यस्य) ४.२४.३. **तनयः**=सुखविस्तारकः (शिष्यः) ३.२३.५. विस्तीर्णबुद्धिः (सूनुः=पुत्रः) ३.१.२३. भा०—सुसन्तानः १२.५१. कामदः (सुसन्तानः) ३.५.११. धार्मिकः पुत्रः ३.१५.७. विद्याविस्तारकः (सूनुः=अपत्यम्) ३.२२.५. विद्यासुखप्रचारकः (सूनुः) ३.७.११. **तनयाय**=कुमाराय (पुत्राय) ५.६९.३. सन्तानाय ६.४९.५. यूने पुत्राय १.११४.६. सुकुमाराय सन्तानाय ६.५०.७. सुसन्तानाय १.१८४.५. प्राप्तकौमारयौवनाऽवस्थाय (विद्यार्थिजनाय) ३.५३.१८. प्राप्तकुमाराऽवस्थाय (तोकाय=सद्यो जातायाऽपत्याय) २.३३.१४. दशवार्षिकाय षोडशवार्षिकाय वा (अपत्याय) ४ १२.५. **तनये**=अतीतशैशवाऽवस्थे पुत्रे १.११४.८. पञ्चमाद्वर्षादूर्ध्वं वयः प्राप्ते, भा०—कुमारे १६.१६. ब्रह्मचारिणि कुमारे ६.३१.१. पौत्रस्य, प्र०—अत्र विभक्तिव्यत्ययः ३४.१३. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'वलिमलितनिभ्यः कयन्' उ० ४.९९. सूत्रेण कयन्प्रत्ययः। तनयः=अपत्यनाम निघं० २.२. तनयेषु=पौत्रेषु। तनयं तनोतेः नि० १०.७.]

तनयावहै विस्तृणावहै १.१७०.४. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्णिजन्ताल्लेटि रूपम्]

तनयित्नोः विद्युतः ४.३.१. [स्तनयित्नुशब्दात् षष्ठी। सकारलोपश्छान्दसः। स्तनयित्नुः=स्तनी देवशब्दे (चुरा०) धातोः 'स्तनिहृषि०' उ० ३.२९. सूत्रेण णिजन्ताद् इत्नुच् प्रत्ययः]

तनसा पौत्रादिसहिता (जनाः) ५.७०.४. [तनु विस्तारे (तना०) धातोरौणादिकोऽसुन् वचनव्यत्ययः तना धननाम निघं० २.१०.]

तना विस्तारकः (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.२५.१. विस्तृतधनप्रदाः (सुताः=मूर्त्तिमन्तः पदार्थाः) प्र०—तनेति धननामसु पठितम्, निघं० २.१०. अत्र 'सुपां सुलुक्' इत्यनेनाकारादेशः, अ०—विस्तृतप्राप्तिहेतवः सूर्यकिरणाः १.३.४. विस्तृतेन (राया=धनेन) ६.४९.१३. विस्तृतगुणेन २०.८७. [तना धननाम निघं० २.१०. तनु विस्तारे (तना०) धातोरन्प्रत्यय औणादिकः]

तना विस्तृतानि धनानि १.७७.४. [तना धननाम निघं० २.१०.]

तना विस्तृतया (वाण्या) २.२.१. विस्तृता (तविषी=सेना) १.३९.४. [तनु विस्तारे (तना०) धातोरौणादिको

ऽन्-प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्]

तनाय यः सर्वस्मै सद्विद्याधर्मोपदेशेन सुखानि तनोति तस्मै (कण्वाय=मेधाविजनाय) प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिकोऽन्प्रत्ययः। इदं सायणाचार्येण पचाद्यजित्यशुद्धं व्याख्यातम् । कुतोऽच्-स्वराऽभावेन 'ञ्नित्यादिर्नित्यम्' इत्याद्युदात्तस्याऽभिहितत्वात् १.३९.७. [तनु विस्तारे (तना०) धातोरौणादिकोऽन्-प्रत्ययः । ततश्चतुर्थी]

तनु विस्तृणुहि १.१२०.११. **तनुते**=विस्तृणोति ३३.३७. **तनुथाः**=विस्तारयेः ५.७९.९. **तनुध्वम्**=विस्तृणीत १२.६८. **तनुष्व**=विस्तृणीहि २.३३.१४. **तनुहि**=विस्तृणीहि ४.४.५. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लोटि रूपाणि । 'उतश्च प्रत्ययाच्छन्दो वा वचनम्' अ० ६.४.१०६. वा० सूत्रेण छन्दसि हेर्लोपे विकल्पः]

तनुकृद्भ्यः यथा विस्तारकारिभ्यस्तथा (पापिजनेभ्यः) ५.३५. **तनूकृत्**=यस्तनूषु पृथिव्यादिविस्तृतेषु लोकेषु विद्यां करोति सः (सर्वमङ्गलकारकः सभाध्यक्षः) १.३१.६. [तनूपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप्-प्रत्ययः । तनूः=तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'कृषिचमितनि०' उ० १.८०. सूत्रेण स्त्रियाम् ऊः प्रत्ययः]

तनूनपात् यस्तनूनि शरीराणि न पातयति सः (यज्ञः) १.१८८.२. शरीररक्षकः (विद्वज्जनः) ३.४.२. यस्तनूं न पातयति, भा०—न स्वशरीरनाशकः (विद्वज्जनः) २०.३७. यस्य तनूर्व्याप्तिर्न पतति (अग्निः) ३.२९.११. यस्तनूषु शरीरेषु न पतति सः (असुरः=वायुः) २७.१२. यस्तनूर्विस्तृतान् पदार्थान् न पातयति तत्सम्बुद्धौ (भा०—धार्मिकमनुष्य !) २९.२६. तनूनां शरीरौषध्यादीनामूनानि न्यूनान्युपाङ्गानि पाति रक्षति सः (अग्निः=भौतिकः), प्र०—इमं शब्दं यास्कमुनिरेवं समाचष्टे—तनूनपादाज्यं भवति०' नि० ८.५, १.१३.२. यस्तनूं शरीरं न पातयति तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन !) १.१४२.२. यस्तन्वा ऊनं पाति सः (होता=आदातृजनः) २१.३०. **तनूनपातम्**=शरीरादिरक्षकम् (गर्भम्) २८.२५. यः शरीराणि न पाति तम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यकारकं राजानम्) २८.२. [तनूनपाद् आज्यमिति कात्थक्यः । नपादित्यनन्तरायाः प्रजाया नामधेयं निर्णततमा भवति । गौरत्र तनूरुच्यते, तता अस्यां भोगाः, तस्याः पयो जायते, पयस आज्यं जायते । अग्निरिति शाकपूणिः । अग्निरत्र तन्व उच्यन्ते तता अन्तरिक्षे ताभ्य ओषधिवनस्पतयो जायन्ते । ओषधिवनस्पतयो जायन्ते । औषधिवनस्पतिभ्य एप जायते नि० ८.५. प्राणो वै तनूनपात् स हि तन्वः पाति ऐ० २.४. ग्रीष्मो वै तनूनपाद् ग्रीष्मो ह्यासां प्रजानां तनूस्तपति श० १.५.३.१०. तनूनपातं यजति ग्रीष्ममेव, ग्रीष्मो हि तन्वं तपति कौ० ३.४. रेतो वै तनूनपात् श० १.५.४.२. तनूनपाद् वै यज्ञः प्रसृतः काठ० ३६.३. तनूनपातं यजति, यज्ञमेवावरुन्धे तै० सं० २.६.१.१. यो वाऽअयं (वायुः) पवते एष तनूनपात् श० ३.४.२.५.]

तनूनप्त्रे तनूर्देहान् नयन्ति प्राप्नुवन्ति येन तस्मै ५.५. [तनूपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः तृचि रूपम्]

तनूनाम् शरीराणाम् २७.४४. विस्तृतसुखसाधकानां शरीरादीनां पदार्थानां वा २.२३.८. शरीराणां विस्तृतानां पदार्थानां वा १.५.१०. शरीरों की स० प्र० ११०, १.१७९.१. **तनूभिः**=विस्तृतशरीरैः ४.५१.९. बलविशिष्टशरीरैर्विद्वद्भिः ८.१६. विस्तृतबलैः शरीरैः १.८९.८. सुसंस्कृतैः शरीरैः १५.७. तन्वते सुखानि कर्माणि च यासु ताभिः २.२४. शरीरों से, सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३२. **तनूषु**=विस्तृतबलयुक्तेषु शरीरेषु १.८५.३. **तनूः**=व्याप्ति-निमित्तं शरीरम् ५.४०. शरीरं विस्तृता नीतिर्वा १६.४९. व्याप्तिः ५.८. शरीरवद्विस्तारकं वा (हविः) ५.१. विद्याविस्तृतिः ५.४०. व्याप्तं विस्तृतं शरीरम् ५.८. विस्तृता व्याप्तिः ५.६. शरीराणि १५.७. सुखविस्तारनिमित्तं शरीरम् ४.२. शरीरवत् तस्य संयोगेन विस्तृतो यज्ञः १.१५. विद्याविस्तृतिः ५.४०. **तन्वि**=शरीरे ६.४९.१२. **तन्वै**=शरीराय २३.४४. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'कृषिचमि०' उ० १.८०. सूत्रेण स्त्रियाम् ऊः प्रत्ययः । तनुः=तनु विस्तारे धातोः 'भृमृशीङ्०' उ० १.७. सूत्रेण उः प्रत्ययः । आत्मा वै तनुः श० ६.७.२.६. सा मे ते (सुपर्णस्य गरुत्मतः) तनूर्वामदेव्यम् मै० २.७.८.]

तनूपा यौ तनुं पातस्तौ (अश्विना=स्त्रीपुरुषौ) २०.५६. [तनू व्याख्यातम् । तदुपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः । 'सुपां सुलुग्' इत्याकारः]

तनूपाः यस्तनूः सर्वपदार्थदेहान् पाति रक्षति स जगदीश्वरः, पालनहेतुर्भौतिको वा (अग्निः) ३.१७. स्वस्याऽन्येषां च शरीराणां रक्षकः (इन्द्रः=राजा) ६.४६.१०. यः शरीरमात्मानं च रक्षति (अग्निः=अन्तस्थो विज्ञानस्वरूपो वा०) ४.१५. शरीरपालकः (राजा) ४.१६.२०. शरीर का रक्षक (ईश्वर) आर्याभि० २.३३, ३.१७. [तनू इति व्याख्यातम् । तदुपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क्विप्-प्रत्ययः । आत्मा वै तनूः श० ६.७.२.६.]

तनूरुचम् तन्वो रोचन्ते यस्मै तम् (राजानम्) २.१.६. **तनूरुचा**=या तनूषु रुक् प्रीतिस्तया ६.२५.४. [तनू व्याख्यातम् । तदुपपदे रुच दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'कृतो बहुलं वा' वार्त्तिकेन क्विप् । सम्पदादित्वादन्यत्र क्विप् स्त्रियाम्]

तनूशुभ्रम् शुभ्रा शुद्धा तनूर्यस्य तम् (विद्वज्जनम्) ५.३४.३. [तनू-शुभ्रपदयोः समासः । तनूशुभ्रम्=तनू शोभयितारम् नि० ६.१६.]

तने विस्तीर्णे (तुजे=दाने) ५.४१.६. विस्तारे २.६.२. विस्तृते (यशसि) ६.४६.१२. [तनु विस्तारे (तना०) धातोरौणादिकोऽन् प्रत्ययः]

तनोतु विस्तारयतु अ०—संदधातु २.१३. **तनोषि**=विस्तृणासि ४.५२.७. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लोट्]

तन्तम् शत्रुम् ८.५३.

तन्तयः विस्तीर्णाः (प्रजाः) ६.२४.४. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्तिच् । न क्तिचि दीर्घश्च' सूत्रेण दीर्घानुनासिकलोपयोर्निषेधः । 'तितुत्र०' अ० ७.२.६. सूत्रेण इण्-निषेधः]

तन्तवः सूत्रवत् समवेतुं शीलाः (वस्वादयः) ८.६१. **तन्तुना**=विस्तृतेन (पोषेण=पुष्ट्या) १५.७. **तन्तुम्**=विस्तारम् १.१४१.१. विस्तारकम् (शूरं पुरुषम्) २०.४१. विस्तीर्णम् (इन्द्रं=विद्युतम्) २०.४३. सन्तानम् १५.५३. विस्तृतं वस्तुविज्ञानं वा १.१५६.४. करणम् ४.१३.४. सूत्रम् २.३.६. **तन्तुः**=मूलम् २.२८.५. **तन्तून्**=विस्तृतान् धातून् १.१६४.५. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'सितनिगमि०' उ० १.६६. सूत्रेण तुन् प्रत्ययः । प्रजा वै तन्तुः ऐ० ३.११. तन्तुरिति प्रजाः (असृजत) तै० सं० ५.३.६.१.]

तन्त्रम् कुटुम्बधारणमिव तन्त्रकलानिर्माणम् १६.८०. [तत्रि कुटुम्बधारणे (चुरा०) धातोरौणादिकोऽन्प्रत्ययः । अच् वा प्रत्ययः]

तन्त्रायिणे तन्त्राणि कलाशास्त्राणि अयितुं ज्ञातुं प्राप्तुं वा शीलं यस्य तस्मै (विदुषे जनाय) ३८.१२. [तन्त्रोपपदे अय गतौ (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः प्रत्ययः । एष वै तन्त्रायी य एष (सूर्यः) तपत्येष हीमाँल्लोकांस्तन्त्रमिवानुसंचरति श० १४.२.२.२२.]

तन्दते हिनस्ति १.१३८.१.

तन्द्रत् मुह्येत् २.३०.७.

तन्द्रम् कुटुम्बधारणम्, प्र०—अत्र 'तत्रि कुटुम्बधारणे' इत्यस्मादच्, वर्णव्यत्ययेन तस्य दः १४.६. स्वतन्त्रताऽकरणम् १५.५. [पङ्क्तिर्वै तन्द्रं छन्दः श० ८.२. ४.३.]

तन्मसि विस्तारयेम १६.५४. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेण शपो लुकि उ प्रत्ययोऽपि न भवति । 'इदन्तो मसि' इतीदन्तता]

तन्यता तन्यतुना गर्जनेन शब्देन, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति डादेशः १.८०.१२. [स्तन देवशब्दे (चु०) धातोः शत्रन्तात् तृतीया । व्यत्ययेन शप् । सकारलोपश्छान्दसः]

तन्यति शब्दायते ६.३८.२. [स्तन देवशब्दे (चुरा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्यन् । सस्य च लोपश्छान्दसः]

तन्यतुम् विद्युतम् १.५२.६. **तन्यतुः**=विस्तृत-वेगस्वभावा विद्युत्, प्र०—अत्र 'ऋतन्यञ्जिवन्यञ्ज्यर्पि०' उ० ४.२. अनेन तन-धातोर्यतुच् प्रत्ययः १.२३.११. गर्जनसहित (विद्युत्) १.३२.१३. तन्यतोरिव=विद्युत इव ४.३८.८. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'ऋतन्यञ्जि०' उ० ४.२. सूत्रेण यतुच् प्रत्ययः । तन्यतुः तनित्री वाचोऽन्यस्याः नि० १२.३०.]

तन्यवः विद्युतः ५.६३.५.

तन्वते विस्तृणन्ति ६.५६.७. **तन्वन्ति**=विस्तारयन्ति १.१६.८. **तन्वन्तु**=विस्तृणन्तु २६.१४. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट्]

तन्वन्तः विस्तृणन्तः (सूर्यकिरणाः) ४.४५.२. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः शतृप्रत्ययः]

तन्वम् शरीरम्, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यत्र 'अमि पूर्वः' इत्यनुवर्त्तनात् पूर्वरूपादेशो न भवति ३.१७. स्वरूपम् ऋ० भू० ३१७, १०.७१.४. विस्तृतं शरीरम् २३.७. तेजस्वि-शरीरम् ४.१६.१४. शरीर को, आर्याभि० २.३३, ३.१७. **तन्वः**=शरीरस्य मध्ये २५.४३. शरीरस्य, प्र०—अत्र 'जसादिषु छन्दसि वा वचनम्' इति वार्त्तिकेनाऽऽङभावः ४.१८. तनूः शरीराणि १.१४०.६. विस्तृतविद्या (भा०—बालिकाः) १६.४४. विस्तीर्णाः (प्राणाः) ७.५६.७. बलारोग्ययुक्तास्ते (देहा) १.७२.५. **तन्वा**=विस्तृतया नीत्या [तनूरिति व्याख्यातम्]

तन्वानः विस्तृणानः (अग्निः=पावकः) ३.३.६. **तन्वानाः**=विस्तृणन्तः (उशिजः=ऋत्विजः) ७.१०.२. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः शानच्]

तन्वाः अन्तःकरणाऽऽख्यस्य बाह्यस्य शरीरस्य वा ३.१७. **तन्वे**=विस्ताराय १.१६५.१५. शरीरादिरक्ष-

णार्थम् ३४.४८. [तनूरिति पदं व्याख्यातम् । ततः षष्ठी चतुर्थी च]

तन्वि विस्तीर्णा नीतिः ४.६.६. [तनुप्राति० स्त्रियां ङीप्]

तन्वे विस्तृणुयाम् ४.१८.१०. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लटि उत्तमैकवचनम्]

तप तापय तपस्वी भव वा ६.५.४. सन्तापय २.२३.१४. **तपत्**=तपेत् २५.४३. **तपति**=विशेषेण सन्तापयति ३.५३.२. **तपतु**=तपे, आर्याभि० २.२२, ३६.१०. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लोट् लेट् लट् च क्रमशः]

तपनः तापकृत् (जगदीश्वरो विद्वज्जनो वा) २.२३.४. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्नन्द्यादित्वाल् ल्युः प्रत्ययः]

तपनी सन्तापिनी (शस्त्र्या) २.२३.१४. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्ल्युडन्तान् ङीप्]

तपन् शत्रून् सन्तापयन् (अग्निः=विद्वान्राजा) १२.१६. **तपन्तः**=सन्तापदुःखं सहमानाः (विप्राः=मेधाविनो जनाः) ५.४३.७. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

तपन्ति क्लेशयन्ति १.१०५.८. **तपन्तु**=दुःखयन्तु, भा०—ताडनं कुर्वन्तु १७.७. सन्तापयन्तु १७.११. पीडयन्ति ३६.२८. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लट् । तपन्ति पाचयन्ति नि० २.२२.]

तपसः धर्मानुष्ठानस्याऽग्नेस्तापसस्य वा ४.२६. प्रतापकस्य (दिवः=सूर्यादेः) ३७.१६. अनन्तसामर्थ्यात्, पं० वि०, **तपसा**=धर्मानुष्ठानेन १५.४६. धर्म-विद्याऽष्ठानेन तापेन तेजसा वा १.१८. प्रतापेन २९.११. ब्रह्मचर्य प्राणायामादिकर्मणा ६.५.४. सन्तापेन १२.१५. ब्रह्मचर्याऽनुष्ठान रूप तप से, सं० वि० ८०, अथर्वे० ११.५.४. तपश्चरण से सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.१७. **तपसि**=विज्ञाने, ऋ० भू० ९०, अथर्व० ११.५.१७. **तपसे**=माघाय ७.३०. तप उत्पादकाय माघाय २२.३१. सन्तापजन्याय सेवनाय ३०.५. तपनाय ३०.७. **तपः**=प्राणायामो धर्माऽनुष्ठानं वा १८.२३. जितेन्द्रियत्वादिपुरस्सरं धर्माऽनुष्ठानम् ५.६. प्राक्क्लेशमुत्तरानन्दं ब्रह्मचर्य्यम् ५.४०. यस्तापहेतुः स माघो मासः १५.५७. भा०—सततं धर्माचरणम् १८.२३. सन्तापो गुणः १४.२३. धर्मे श्रमकर्त्ता, भा०—दुष्टान् परिताप्य श्रेष्ठानां सुखयिता (विद्वान्) ३७.११. बड़े उत्तम व्रत ब्रह्मचर्य को, सं० वि० ९३, अथर्व० ११.५.२६. ब्रह्मचर्य रूप आश्रम को, सं० वि० १६८, अथर्व० १९.४१.१. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' उ० ४.१८९. सूत्रेणासुन् प्रत्ययः । तपति दुःखीभवति तप्यते समर्थो वा भवति येन तत् तपः । तप ऐश्वर्ये (दिवा०) धातोर्वाऽसुन् । तप दाहे (चुरा०) धातोर्वाऽसुन् । तपस्प्राति० 'मत्वर्थे मासतन्वोरि' ति सूत्रेण प्राप्तस्य यत्प्रत्ययस्य 'लुगकारेकाराश्च वक्तव्याः' अ० ४.४.१२८. वा० सूत्रेण लुक् । तपः ज्वलतो नामधेयम् निघं० १.१७. असौ वा ऽआदित्यस्तपः श० ८.७.१.५. तपः स्विष्टकृत् श० ११.२.७.१८. तपो वा अग्निः श० ३.४.३.२. तपोऽसि लोके श्रितम् । तेजसः प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.२. तप आसीद् गृहपतिः तै० ३.१२.९.३. एतद् वै तपो यो दीक्षित्वा पयोव्रतेऽसत् श० ९.५.१.८. तपो दीक्षा श० ३.४.३.२. तै० सं० ४.३.८.१. मै० २.८.४. अमांसाश्यनुब्रूते तपस्व्यनुब्रवाऽइति श० १४.१.१.२९. एतौ (तपश्च तपस्यश्च) एव शैशिरौ (मासौ) स यदेतयोर्वलिष्ठं श्यायति तेनो हैतौ तपश्च तपस्यश्च श० ४.३.१.१९. संवत्सरो वाव तपो नवदशस्तस्य द्वादशमासाः षड्तवः संवत्सरः एव तपो नवदशस्तद्यत्तमाह तप इति संवत्सरो हि सर्वाणि तपति श० ८.४.१.१४. अजा भवति, स तपसमेवैतत् (सोमम्) क्रीणाति श० ३.३.३.१८. ऋतेन तपः (अन्वाभवत्) काठ० ३५.१५. एतत् खलु वाव तप इत्याहुर्यः स्वं ददातीति तै० सं० ६.१.६.३. एतद् वाव तपो यत्स्वं ददाति क० ३७.१. एष ह त्वै जायते यस्तपसोऽधि जायते तै० सं० ७.२.१०.३. तद्धि जातं यत् तपसोऽधिजायते, न यत् स्त्रियाः काठ० ३४.१२. तपसा देवा देवतामग्रआयन् तपसर्षयः सुवरन्वविन्दन्, तपसा सपत्नान्प्रणुदामारातीस्तपसि सर्वं प्रतिष्ठितं तस्मात्तपः परमं वदन्ति तै० आ० १०.६३.१. तपसा ब्रह्मणा सह तस्य दोहमशीमहि मै० ४.९.१३. तपसा ब्रह्म विजिज्ञासस्व तै० आ० ९.२.१. तपसा वै प्रजापतिः प्रजा असृजत काठ० ६.७. तपसा वै लोकं जयन्ति श० ३.४.४.२७. तपो नवदशइत्युत्तरात्, तस्मात् सव्योः हस्तयोस्तपस्वितरः काठ० २०.१३. तपो वा एष उपैति यो वाचꣳ यच्छति मै० १.८.४. तपोऽवान्तरदीक्षायाम् (सोमः) काठ० ३४.१४. तपो वै पुष्करपर्णम् तै० आ० १.२५.१. तपो वै यज्ञस्य श्लेश्म काठ० ३४.९. तपो हि स्वाध्यायः तै० आ० २.१४.२. तस्मादु तमेव तपस्तप्यमानं मन्यन्ते यो ददत् जै० १.२८७. तेजोऽसि तपसि श्रितम् । समुद्रस्य प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.३. दीक्षा च मे तपश्च मे (यज्ञेन कल्पताम्) तै० सं० ४.७.९.१. दीक्षायै च त्वा (अग्ने) तपसश्च तेजसे जुहोमि तै० सं० ३.३.१.१. ब्रह्म तपसि (प्रतिष्ठितम्) ऐ०

३.६. गो० २.३.२. मनो वाव तपः जै० ३.३३४. सत्येन तपसा सह तस्य (घर्मस्य) दोहमशीमहि तै० आ० ४.२१.१. स्वाध्यायप्रवचने एवेति नाको मौद्गल्यः। तद्धि तपस्तद्धि तपः तै० आ० ७.६.१.]

तपस्पतिः यथा ब्रह्मचर्यादिपालकः (आचार्यः) ५.४०. तपसः पालयिता (अग्निः=ईश्वरोऽध्यापको वा) ५.६. [तपस्-पतिपदयोः समासः। तपस् इति व्याख्यातम्]

तपस्यः तपो धर्मो विद्यतेऽस्मिन् स फाल्गुनो मासः १५.५७. **तपस्याय**=फाल्गुनाय ७.३०. तपसि साधवे फाल्गुनाय २२.३१. [तपस् इति व्याख्यातम्। ततः 'तत्र साधुः' इत्यर्थे यत्। अथवा तपस्प्राति० मत्वर्थे 'मत्वर्थे-मासतन्वोः' अ० ४.४.१२८. सूत्रेण यत्प्रत्ययः]

तपस्वान् बहुतपोयुक्तः (विद्वज्जनः) ६.५.४. [तपस् व्याख्यातम्। ततो भूम्नि मतुप्]

तपाति तापयति ५.७६.६. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लेट्। आडागमः]

तपिष्ठः अतिशयेन तप्तः (विद्वज्जनः) ६.५.४. **तपिष्ठाम्**=अतिशयेन तप्ताम् (अशनिं=वज्रम्) ३.३०.१६. **तपिष्ठेन**=अतिशयेन तप्तेन (हन्मना=हननेन) ७.५६.८. अतिशयेन तापयुक्तेन (शोचिषा=तेजसा) ४.५.४. **तपिष्ठैः**=अतिशयेन प्रतापकैः (ज्योतिर्भिः किरणैर्वा) ७.१५.१३. अतिशयेन सन्तापकरैः शस्त्रैः १३.६. अतिशयेन सन्तापकैः शस्त्रादिभिः ४.४.१. [तपस्प्राति० अतिशायने इष्ठन्। टेर्लोपः। अथवा तपस्विन्प्राति० अतिशायने इष्ठन्प्रत्यये 'विन्मतोर्लुक्' अ० ५.३.६५. सूत्रेण विन्प्रत्ययस्य लुक्। तपिष्ठैः तप्ततमैस्तृप्ततमैः प्रपिष्टतमैरिति वा नि० ६.१२.]

तपुर्जम्भः तपूंषि तापा जम्भो वक्त्रमिव यस्य सः (अग्निः) १.५८.५. **तपुर्जम्भः**=तपूंषि एव जम्भानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (सेनापते) प्र०—'तप सन्तापे' इत्यस्मादौणादिक उसिन्प्रत्ययः, संताप्यन्ते शत्रवो यैस्तानि तपूंषि 'जभि नाशने' इत्यस्मात् करणे घञ्, जम्भ्यन्त एभिरिति जम्भनान्यायुधानि, तपूंषि एव जम्भानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (सेनापते) १.३६.१६. [तपुष्-जम्भपदयोः समासः। तपुष्=तप सन्तापे (भ्वा०) धातोरौणादिक उसिन्प्रत्ययः। जम्भः=जम्भनाशने (चुरा०) धातोः करणे घञ्प्रत्ययः]

तपुर्मुर्द्धा तपुस्तापो मूर्द्धेवोत्कृष्टो यस्य (अग्निः=विद्युत्) ७.३.१. [तपुस्-मूर्धन्पदयोः समासः। तपुस् पूर्वपदे व्याख्यातम्]

तपुषः तपत्यस्मिन् सूर्यस्तस्य दिनस्य मध्ये ३.३६.३. **तपुषा**=परितापेन क्रोधादिना २.३४.६. तापेन २.३०.४. **तपुः**=परितापकः (अग्निः) २.४.६. सन्तापम्, भा०—कठोरं दण्डम् ६.६२.८. **तपूंषि**=प्रतप्तानि (ब्रह्मास्त्रादीनि) ४.४.२. तेजोमयानि (वृजिनानि=बाधकानि बलानि) ६.५२.२. तापाः, भा०—अग्न्याद्यस्त्राणि शतघ्न्यादयः १३.१०. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तिपृवपियजितनिधनितपिभ्यो नित्' उ० २.११७. सूत्रेण उसिः प्रत्ययः। स च नित्। तपुः तपतेः नि० ६.११. तपुषी क्रोधनाम निघं० २.१३.]

तपुषिम् प्रतप्तम् (हेतिं=वज्रम्) ६.५२.३. [तपुष् इति व्याख्यातम् ततो मत्वर्थे 'लुगकारेकाराश्च वक्तव्याः' अ० ४.४.१२८. वा०सूत्रेण इकारः]

तपुष्पा यौ तपूंषि पातो रक्षतस्तौ (अश्वौ) ३.५३.३. [तपुस् इति व्याख्यातम्। तदुपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः]

तपो तपस्विन्, दुष्टानां पुरुषाणां दाहक (विद्वन् जन !) ३.१८.२. [तपस्प्राति० मत्वर्थीयप्रत्ययस्य 'लुगकारेकाराश्च वक्तव्या::' इति वार्तिकेन लुक्]

तपोजाः यस्तपसो जायते प्रकट्यते सः, भा०—तपसा विज्ञातव्यः (धर्त्ता=ईश्वरः) ३७.१६. ब्रह्मचर्यादितपसा जातः (सभेशो राजा) १०.६. [तपस् उपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' अ० ३.२.९८. सूत्रेण उः प्रत्ययः। वचनव्यत्ययः]

तपोभिः प्राप्तकरैरग्निगुणैः ७.१.७. [तपस्पदं व्याख्यातम्। ततस्तृतीयाबहुवचनम्]

तप्तम् ऐश्वर्ययुक्तम् (विद्वांसं जनम्), प्र०—ऐश्वर्याऽर्थात् तपधातोस्तः प्रत्ययः १.११२.७. तपोजनितम् (ऊर्जं=पराक्रमम्) १.११८.७. धर्मेणाऽध्ययनाऽध्यापनश्रमेण वा सन्तप्तम् (वाः=वाह्यमुष्कम्) ५.११. तापाऽन्वितम् (घर्मम्=अग्निहोत्रादिकं यज्ञम्) १७.५५. **तप्तः**=भा०—पुरुषार्थी (सज्जनः) २०.५५. [तप सन्तापे (भ्वा०), तप ऐश्वर्ये (दिवा०) धातोर्वा क्तः प्रत्ययः]

तप्तायनी तप्तानि स्थापनीयानि वस्तून्ययनं यस्या विद्युतः सा ५.६. [तप्त-अयनपदयोः समासः]

तप्यतुः दुष्टानां परितापकः (राजपुरुषः) २.२४.६. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर् औणादिको (४.२.) बाहु० यतुच् प्रत्ययः]

तप्यते यस्तापं प्राप्नोति तस्मै (जनाय) ३९.१२.

[तप सन्तापे (भ्वा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन श्यन्]

तप्यद्ध्वम् तपन्तु तापयत वा, अ०—यथा तपन्तु तथा तापयत १.१८. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन श्यन् आत्मनेपदञ्च]

तप्यमानः वेद-पठन, वीर्यनिग्रह, आचार्य के प्रियाचरणादि कर्मों को पूरा करता हुआ (ब्रह्मचारी जन), सं० वि० ९३, अथर्व० ११.५.२६. **तप्यमानाय**=प्राप्ततापाय (जनाय) ३९.१२. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

तमत् अभिकाङ्क्षेत २.३०.७. [तमु काङ्क्षयाम् (दिवा०) धातोर्लेट्]

तमसस्परि अन्धकारात् पृथग्वर्त्तमानम् (सूर्यं=जगदीश्वरम्) ३८.२४. (तमस् पदमग्रे व्याख्यास्यते । तमस्-परिपदयोः समासः । पञ्चम्या अलुक्]

तमसः अन्धकारस्य १.१७३.५. अन्धकारस्येव दुःखस्य १.९२.६. अन्धकारादविद्याया इव ३.३९.७. अज्ञानादन्धकाराद्वा भा०—अज्ञानलेशाद् ३१.१८. आवरकादज्ञानादन्धकारात् १.५०.१०. भा०—अविद्याऽन्धकारात् पृथग्भूतम् (सूर्यं=जगदीश्वरम्) २७.१०. रात्रेः प्रकाशरहितस्य समुद्रस्य वा १.१८३.६. अन्धकारवदविद्याछलाधर्मव्यवहारस्य १.३३.१०. **तमसा**=रात्र्यन्धकारेण १७.४४. अन्धकार से, स० प्र० २८२, अन्धकारेण शतघ्न्याद्युत्थधूमेन मेघपर्वताकारेणाऽस्त्रादिधूमेन वा, भा०—शस्त्रास्त्रप्रहारोत्थधूमधूल्यादिना १७.४७. **तमसि**=रात्रौ, प्र०—तम इति रात्रिनाम, निघं० १.७, १.११७.५. **तमसे**=अन्धकाराय ३०.५. **तमः**=तिमिरम् १.११३.१६. अन्धकारम् ४.१३.४. भा०—अधर्माऽविद्याऽन्धकारम् ३४.२२. रात्रिवदविद्याऽन्धकारम् १.८६.१०. अन्धकार अर्थात् महामूर्खत्व, चिरकाल घोर दुःख रूप नरक, स० प्र० ४३२, ४०.९. अविद्याकुत्सिताख्यं चक्षुदृष्ट्यावरकं वाऽन्धकारम् १.९१.२२. अन्धकारं कारागृहम् १८.७०. अन्धकाररूपं दुःखम् १.११७.१७. अन्धकाररूपां रात्रिम् ५.१४.४. रात्र्यन्धकारम् ३३.९२. **तमांसि**=रात्रीः ११.४३. रात्रिरिव वर्त्तमानान् दुष्टान् जनान् ७.५६.२०. रात्रिरिवाऽविद्यादीनि ६.७२.१. अज्ञान, दुःख आदि संसार के मोहों को, सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. [तमः रात्रिनाम निघं० १.७. तमः तनोतेः नि० २.१६. ताम्यति काङ्क्षति येनेति विग्रहे तमु काङ्क्षायाम् (दिवा०) धातोः 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' इत्यसुन् प्रत्ययः । कृष्णमिव हि तमः तां० ६.६.१०. कृष्णं वै तमः श० ५.३.२.२. मृत्युर्वै तमः श० १४.४.१.३२. गो० उ० ५.१. मृत्युर्वै तमश्छाया ऐ० ७.१२. पाप्मा वै तमः श० १२.९.२.८. तमो रजः नि० ९.२८. तमो मृत्युः काठ० १०.६. विसप्तरश्मिरधमत् तमांसि काठ० ११.१३.]

तमिस्राः रात्रयः २.२७.१४. [तमस्प्राति० मत्वर्थे 'ज्योस्नातमिस्राशृङ्गिण०' अ० ५.२.११४. सूत्रेण तमस उपधाया इकारो रश्च प्रत्ययो निपात्यते]

तमोगाम् प्राप्ताऽन्धकारम् (मेघम्) ५.३२.४. [तमस् उपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्डः प्रत्ययः]

तमोहनम् यस्तमो हन्ति तम् (ज्योतीरथं=प्रकाशयुक्तं रमणीयं यानम्) १.१४०.१ [तमसुपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः]

तमोहना यौ तमो हतस्तौ (सूर्यचन्द्रमसौ) ३.३९.३. [तमस्-उपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप् । 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः]

तम्पताम् सुखयतम् ३.१२.३.

तर उल्लङ्घस्व ११.७२. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्]

तरक्षुः व्याघ्रः २४.४०.

तरणयः तरुणाऽवस्थां प्राप्ताः (राजभृत्याः) ४.४.१२. **तरणिः**=सन्तारकः (अग्निरिव विद्वान्), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सुलुक् ३.११.३. **तरणिभिः**=सन्तरणैः ४.३३.१. **तरणिम्**=अध्वनां तारकम् (अग्निम्) ३.२९.१३. **तरणिः**=क्षिप्रतया संप्लविता (सर्वप्रकाशकः सर्वात्मेश्वरः) १.५०.४. प्लविताऽतिवेगवान् (परिज्मा=वायुः) १.११२.४. दुःखेभ्यस्तारकः (विचक्षणः=अतीव धीमान् जनः) ४.४५.५. पुरुषार्थी (सत्पुरुषः) ७.३२.९. सद्यो गन्ता (अर्वा=अश्वः) ३.४९.३. दुःखात् पारगः सुखविस्तारकः (अ०—सत्कर्मानुष्ठाता जनः) १.१२१.६. तारयिता (इन्द्रः=राजा) ७.२६.४. [तरणिः क्षिप्रनाम निघं० २.१५. तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तिसृधृ०' उ० २.१०२. सूत्रेण अनिः प्रत्ययः]

तरणित्वा शीघ्रत्वेन १.११०.६. [तरणिः क्षिप्रनाम निघं० २.१५. ततो भावे त्वः प्रत्ययः । 'सुपां सुलुग्०' इति तृतीयाया आकारः]

तरणित्वेन शीघ्रत्वेन १.११०.४. [तरणिप्राति० भावे त्वः प्रत्ययः । तरणित्वेन क्षिप्रत्वेन नि० ११.१६.]

तरणे दुःखादुद्धरणे ६.१.५. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्भावे ल्युट्]

तरत दुःखानि उल्लङ्घयत ३५.१०. तरति= उल्लङ्घयति ३.४९.२. उल्लङ्घते ७.५९.२. **तरन्ति**= उल्लङ्घन्ते ३४.५१. प्राप्नुवन्ति ७.३२.१३. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्]

तरद्द्वेषाः तरन्ति द्वेषान् येषु ते (पन्थानः=मार्गाः) १.१००.३. [तरत्-द्वेषपदयोः समासः]

तरन् उल्लङ्घयन् (अग्निः=राजा) ३.२४.१. शत्रुबलं संप्लवन् (अग्निः=विद्वान् राजा) ९.३७. **तरन्तम्**= संप्लावकम् (वृकं=विद्युतम्) १.१०५.११. **तरन्तः**= उल्लङ्घमानाः (राजद्रोहिणो जनाः) २.११.१६. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

तरन्ती दुःखं प्लावयन्त्यौ (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.७. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । विभक्तेः पूर्वसवर्णदीर्घः]

तरसा बलेन, प्र०—तर इति बलनाम, निघं० २.९, ५.५४.१५. **तरसे**=तारकाय (बलाय) ३.१८.३. **तरः**=तरति येन बलेन तत् १.३३.१२. **तरोभिः**= तरन्ति यैस्तानि तरांसि नौकादीनि तैः २.३९.३. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन् । तर इति बलनाम निघं० २.९. स्तोमो वै तरः तां० ११.४.५. स्तोमो वै देवेषु तरो नामासीत् तां० ८.३.३. तरो वै यज्ञः जै० १.१५३] .

तरस्वी प्रशस्तं तरो विद्यते यस्य सः (पुरुषः) १९.८८. [तरस्प्राति० मत्वर्थे 'अस्मायामेधास्रजो विनिः' अ० ५.२.१२१. सूत्रेण विनिः]

तरः यस्तरति सः (अध्यापको जनः) १.१९०.७. **तराय**=उल्लङ्घकाय (जनाय) २.१३.१२. [तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोः 'ॠदोरप्' इत्यप्प्रत्ययः]

तराथः गृहाश्रम के पार होवो, सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.४३. **तरामसि**=उल्लङ्घेमहि ७.३२.२७. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लेट् । आडागमः । अन्यत्र मस इदन्तता]

तरित्रतः अतिशयेन संप्लवतः (दधिक्राव्णः=अश्वस्य) ९.१५. अध्वनस्तरिता (वायुः) ४.४० ३. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः शतरि 'दाधर्त्तिदर्धर्त्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेण छन्दसि शपः श्लौ षष्ठ्येकवचनेऽभ्यासस्य रिगागमो निपात्यते]

तरीयान् तरणीयः (विद्वान् जनः) ५.४१.१२. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोस्तृचि अतिशायने 'तुश्छन्दसि' अ० ५.३.५९. सूत्रेण ईयसुन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' अ० ६.४.१५४. सूत्रेण तृचो लोपः]

तरीषणि तरणे ५.१०.६. दुःखं तरितुं सामर्थ्यम् ४.३७.१.

तरुणम् युवाऽवस्थास्थम् (शिशुः=वत्सम्) १.१८६.७. **तरुणः**=युवा (कुमारः) ७.४.२. **तरुणेन**=युवाऽवस्थेन (कुमारेण=अकृतविवाहजनेन) २८.१३. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'त्रो रश्च लो वा' उ० ३.५४. सूत्रेण उनन्प्रत्ययः]

तरुणीषु युवतय इव वर्त्तमानासु (प्रजासु) ३.५५.५. [तरुणप्राति० स्त्रियां 'वयस्यचरम इति वक्तव्यम्' अ० ४.१.२०. वा सूत्रेण ङीप्-प्रत्ययः । तरुणपदं व्याख्यातम्]

तरुता उल्लङ्घयिता (शत्रुः) ६.६६.८. प्लविता (विद्वान्) १.१२९.२. तर्त्ता, वरयिता, पारं गमयिता (सेनाऽध्यक्षो जनः) प्र०—'ग्रसित-स्कभित-स्तभितः', अ० ७.२.३४. अनेनाऽयं निपातितः १.२७.९. संप्लवनकर्त्ता (शत्रुर्जनः) १.४०.८. **तरुतारम्**=ताराख्यं यन्त्रम्, ऋ० भू० १९९, १.८.२१.१०. शब्दान् सन्तारकं प्लावकं वा ताराख्यं व्यवहारम् १.११९.१०. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोस्तृचि 'ग्रसितस्कभितस्तभित०' अ० ७.२.३४. सूत्रेण उट् आगमो निपात्यते । एष (तार्क्ष्यः=वायुः) वै सहावांस्तरुता, एष हीमाँल्लोकान् सद्यस्तरति ऐ० ४.२०. तरुतारम्=तारयितारम् नि० १०.२८.]

तरुत्र दुःखात्तारक (इन्द्र=विद्वज्जन) २.११.१६. अविद्यातारक (इन्द्र=बलप्रद विद्वज्जन) २.११.१५. **तरुत्रम्** = समुद्रादितारकम् (अश्वं = विद्युदग्निम्) १.११७.९. तारकम् (राजानम्) ६.२६.२. **तरुत्रः**= दुःखेभ्यस्तारकः (क्रतुः=राज्यपालनाख्यो यज्ञः) ४.२१.२. दुःखादुल्लङ्घयिता (राजा) १.१७४.१. सर्वदुःखादुत्तीर्णः (इन्द्रः=प्रजारक्षको जनः) ६.१७.२. **तरुत्राः**=दुःखात् सर्वेषां सन्तारकाः (विद्वज्जनाः) ७.२५.५. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिक उत्रः प्रत्ययो बाहुलकात्]

तरुभिः वृक्षैः ५.४४.५. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'भृमृशीङ्तृचरि०' उ० १.७. सूत्रेण उः प्रत्ययः]

तरुषन्त ये दुःखानि तरन्ति तद्वदाचरत १.१३२.५.

तरुषन्ते=सद्यः प्लवन्ते ५.५६.१. [तरुष्यतिप्येवङ्कर्मा (हन्तिकर्मा) नि० ५.२. तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन उः सिप् च। आत्मनेपदश्चापि व्यत्ययेनैव]

तरुषः तारकस्य (रायः=धनस्य) ६.१५.३. दुःखेभ्यः सन्तारकस्य (दक्षस्य=बलस्य) ३.२.३. अविद्यासंप्लवकान् (नॄन्=नायकान् जनान्) १.१२२.१३. **तरुषि**=दुःखात् तारके सङ्ग्रामे ६.२५.४. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिक उसिः प्रत्ययो बाहुलकाद्]

तरुषसा तरन्ति शत्रुबलानि येन तत्तरुषस्तेन (राया=परमलक्ष्म्या) १.१२९.१०.]

तरुषेम प्राप्नुयाम, प्र०—तरुष्यतीति पदनाम, निघं० ४.२, ७.४८.२. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लिङ्। विकरणव्यत्ययेन उः सिप् च]

तरुष्यतः हनिष्यतः शत्रून् ३३.६६. [तरुष्यतिप्येवङ्कर्मा (हन्तिकर्मा) निघं० ५.२. ततः शतृप्रत्ययः]

तरेम सर्वान् दोषांस्त्यजेम ६.१५.१८. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लिङि उत्तमबहुवचनम्]

तर्तरीति भृशं तरति ६.४७.१७. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

तर्पय प्रीणय १.५४.९. **तर्पयत**=प्रीणीत ६.३०. सुखयत, भा०—प्रीत्या नित्यं सेवध्वम् २.३४. **तर्पयन्त**=तर्प्पयन्ति १.८५.११. **तर्पयेथाम्**=तर्पयेते, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.१७.३. [तृप तृप्तौ (चुरा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लङ्। अडभावश्च]

तर्य्यः यस्तीर्यते, तरितुं योग्यः (जनः) ५.४४.१२. [तॄ प्लवन-सन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्ण्यत्]

तलवम् यो हस्तादितलानि वाति हिनस्ति तम् (पुरुषम्) ३०.२०. [तलोपपदे वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः]

तल्पम् पर्यङ्क पर, सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.३१. [तलयति प्रतिष्ठां करोतीति विग्रहे तलप्रतिष्ठायाम् (चुरा०) धातोः 'खष्पशिल्पशष्प०' उ० ३.२८. सूत्रेण प-प्रत्ययान्तो निपात्यते। मानवो वै तल्पः तै० २.२.५.३.]

तल्पशीवरीः यास्तल्पेषु शेरते ताः (नारीः=स्त्रियः) ७.५५.८. [तल्पोपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति वनिप्। 'वनो र च' सूत्रेण ङीप्, रेफश्चान्तादेशः]

तल्प्याय तल्पे शयने साधवे (शिल्पिजनाय) १६.४४. [तल्पं व्याख्यातम्। ततः 'तत्र साधु' रित्यर्थे यत्। ततश्चतुर्थी]

तवसम् महाबलयुक्तम् (मरुतां गणम्) १.६४.१२. बलवन्तम् (विद्वांसम्) ५.५८.२. बलिष्ठम् (सज्जनम्) ६.१७.४. बलादिवर्धकम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यप्रदमीश्वरम्) ६.१७.८. बलकारकम् (विद्युद्रूपमग्निम्) ३.१.१३. बलम् ७.२४.३. **तवसः**=बलिष्ठा गतिमन्तः (मनुष्याः) ५.६०.४. प्रवृद्धबलाः (वायव इव वर्त्तमाना जनाः) १.१६६.८. **तवसा**=बलेन, प्र०—तव इति बलनाम, निघं० २.९, १८.६९. **तवसे**=बलिने (इन्द्राय=विद्वज्जनाय) ५.३३.१. बलवते (इन्द्राय=सभाद्यध्यक्षाय) १.६१.१. विद्यावृद्धाय (गृत्साय=मेधाविने जनाय) ३.१.२. बलयुक्ताय (कपर्दिने=ब्रह्मचारिणे जनाय) १.११४.१. वर्धकाय (मनुष्याय) ६.४९.१२. [तवः बलनाम निघं० २.९. तवसः महन्नाम निघं० ३.३. तवस इति महतो नामधेयम् उदितो भवति नि० ५.९. तवतेर्वा वृद्धिकर्मणः नि० ९.२५. ततोऽसुन्प्रत्ययः। तव इति सौत्रो धातुः]

तवस्तमः अतिशयेन बली (सद्वैद्यः) २.३३.३. **तवस्तमा**=अतिशयेन बलयुक्तौ बलप्रदौ वा (इन्द्राग्नी=विद्युद्भौतिकाग्नी) १.१०९.५. [तवस् इति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने तमप्। अन्यत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः। तवस्-इति बलनाम निघं० २.९.]

तवस्तरम् अत्यन्तं बलयुक्तम्, भा०—बलिष्ठम् (इन्द्रं=राजानम्) प्र०—तव इति बलनाम, निघं० २.९. ततस्तरप् ११.१४. तूयते विज्ञायत इति तवाः, सोऽतिशयितस्तम् (इन्द्रं=परमात्मानं सभाध्यक्षं वा) समीक्षा सायणाचार्येणाऽत्र विन्-प्रत्ययस्य छान्दसो लोप इति यदुक्तं तदशुद्धं प्रमाणाऽभावात् १.३०.७. [तवस् इति बलनाम निघं० २.९. ततोऽतिशायने तरप्]

तवस्यम् तवसि बले भवम् (विजयम्) २.२०.८. [तवस् इति बलनाम निघं० २.९. ततो भवार्थे यत्प्रत्ययः]

तवागाम् प्राप्तबलम् (वृषभम्) ४.१८.१०.

तविषः बलवतः (वायोः) १.१६५.६. बलात् ५.८७.५. [तविषः महन्नाम निघं० ३.३.]

तविषात् बलिष्ठात् (सभासेनेशात्) १.१७१.४. **तविषाः**=बलवन्तः (विद्वांसो जनाः) ५.५४.२. [तविषः महन्नाम। निघं० ३.३. तविषेभिः=महद्भिः नि० २.२३. तव इति सौत्रो धातुः। ततः 'तवेर्णिद्वा' उ० १.४८. सूत्रेण टिषच्-प्रत्ययः]

तविषाणि बलानि ३.१२.८. [तविष इति व्याख्यातम् । ततः प्रथमाबहुवचनम्]

तविषी प्रशस्त-बलादि-युक्ता सेना, प्र०—'तवेर्णिद् वा' उ० १.४८. अनेन टिषच्-प्रत्ययो णिद् वा १.३६.२. बलादिगुणयुक्ता (देवी=दिव्यगुणैर्वर्त्तमाना स्त्री) १.५६.४. **तविषीभिः**=पूर्णबलयुक्ताभिः सेनाभिः १.८७.४. बलैः १.१६६.४. बलादिभिर्गुणैः ३.३.५. बलाऽऽकर्षणादिगुणाढ्याभिः सेनाभिः १.५१.२. सेनादिबलैः ५.३२.३. **तविषीम्**=बलम् ५.३४.७. बलयुक्तां सेनाम्, भा०—बलवतीं सेनाम्, प्र०—तविषीति बलनाम, निघं० २.६, ३४.७. **तविषीषु**=बलयुक्तेषु सैन्येषु १.५२.२. **तविषीः**=बलानि १.६४.७. बलयुक्ताः (गिरः=विविधविद्यायुक्ता वाण्यः) ३.३१.१३. भा०—हृष्टपुष्टसेनाः २०.४७. **तविष्याः**=बलयुक्तायाः सेनायाः ५.२६.१४. [तव इति सौत्रो धातुः, ततः 'तवेर्णिद्वा' उ० १.४८. सूत्रेण टिषच् प्रत्ययः। स्त्रियां टित्त्वान् ङीप्। तविषी बलनाम निघं० २.६. तवतेर्वा वृद्धिकर्मणः नि० ६.२५.]

तविषीमन्तम् प्रशस्ता तविषी सेना यस्य तम् (वीराणां गणम्) ५.५८.१. [तविषीपदं व्याख्यातम्, ततो मतुप् प्रशस्तार्थे]

तविषीयन्तः सेनां कामयमानाः (वीर-राजजनाः) ५.८५.४. [तविषी व्याख्यातम् । तत इच्छार्थे क्यजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

तविषीयमाणम् सेनयेवाऽऽचरन्तम् (शत्रुजनम्) २.३०.८. [तविषीपदं व्याख्यातम् । तत आचारे क्यङ् । ततः शानच्]

तविषीवः प्रशसिता तविषी सेना विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सेनेश) ७.२५.४. बलवत्-सेनावन् (इन्द्र=राजन्) ४.२०.७. [तविषीपदं व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' अ० ५.२.१०६. वा०सूत्रेण वनिप् । 'वन उपसंख्यानं कर्त्तव्यम्' अ० ८.३.१. वा०सूत्रेण सम्बुद्धौ रुत्वम्]

तवीयः अतिशयेन बलम् ६.१८.४. [तवः बलनाम निघं० २.६. ततोऽतिशायने ईयसुन् प्रत्ययः]

तवीयान् अतिशयेन प्रशंसितः (राजा) ६.२०.३. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

तव्यम् तवे बले भवम् (क्षत्रं=राज्यम्) १.५४.११. **तव्ये**=तवे बले हितम् (क्षत्रं=राज्यम्) १.५४.११. [तवः बलनाम निघं० २.६. ततो भवार्थे हितार्थे वा यत् प्रत्ययः]

तव्यसः बलस्य ५.४३.६. **तव्यसे**=अतिशयेन वृद्धाय (रुद्राय=परमेश्वराय जीवाय वा) १.४३.१. [तवः बलनाम निघं० २.६. ततोऽतिशायन ईयसुन् । ईकारलोपश्छान्दसः]

तव्यसीम् अतिशयेन बलवतीम् (मतिम्) १.१४३.१. [तव्यस् इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप्]

तव्यान् अतिशयेन बलवान् (राजपुरुषः), प्र०—अत्रेयसुन्, ईकारलोपः ३.३२.११. ये तविषि बले भवास्तान् (वीरजनान्), प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' सलोपः ५.३२.३. **तव्यांसम्**=अतिशयेन वृद्धम् (अग्निं=पावकम्) ५.१७.१. [तवः बलनाम निघं० २.६. ततोऽतिशायन ईयसुन् प्रत्ययः । ईकारलोपश्छान्दसः । अथवा तवस्बलवाचिनः प्राति० भवार्थे यत् । सकारलोपश्छान्दसः]

तष्टम् तीक्ष्णं शोधितम् (परमात्मस्वरूपम्) ६.१६.४७. **तष्टः**=विहितः (स्तोमः=स्तुतिविषयः) १.१७१.२. **तष्टान्**=तक्षन्ति तीक्ष्णीकुर्वन्ति यैर्विद्यास्तान् (मन्त्रान्) १.६७.२. [तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । तक्षति करोतिकर्मा नि० ४.१६. ततः क्तः प्रत्ययः]

तष्टेव तक्षेव ७.३२.२०. यथा तक्षकः शिल्पी शिल्पविद्याव्यवहारान् विज्ञापयति तथा १.१०५.१८. तथा तनूकर्त्ता शिल्पी १.६१.४. यथा छेत्ता (दुष्टदोषनिवारको जनः) १.१३०.४. यथा काष्ठानां सूक्ष्मत्वस्य कर्त्ता (विद्वज्जनः) ३.३८.१. [तष्टा-इवपदयोः समासः । तष्टा=तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोस्तृच् । तष्टा तक्ष्णुवन् नि० ५.२१.]

तसरम् तस्यत्युपक्षयति दुःखानि येन तम् (रसम्=आनन्दम्) १९.८३. [तसु उपक्षये (दिवा०) धातोरौणादिकः क्सरन् प्रत्ययो बाहुलकात् । तनु विस्तारे (तना०) धातोर्वा 'तन्यृषिभ्यां क्सरन्' उ० ३.७५. सूत्रेण क्सरन्]

तस्करम् दस्य्वादिकम् (दुर्जनम्) ७.५५.३. चोरम् ३०.५. **तस्करस्य**=प्रसिद्धचोरस्य, भा०—अपुरुषार्थिनः (दुर्जनस्य) १२.६२. **तस्करः**=चौरः ६.२८.३. **तस्करान्**=चोर इव वर्त्तमानान् (दुर्जनान्) ११.७८. **तस्कराणाम्**=स्तेयकर्मकर्त्तॄणाम् (प्रजाजनानाम्) १६.२१. **तस्कराः**=प्रसिद्धाः (चोरलुण्ठकादयो दुर्जनाः) ११.७९. **तस्करा इव**=यथा चोराः (तथा सर्पादयः) १.१९१.५. [तस्करः स्तेननाम निघं० ३.२४. तत्-करपदयोः समासे 'तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च' अ० ६.१.१५७. वा० सूत्रेण सुट् तलोपश्च । तस्करः=तत्करो भवति । करोति यत् पापकमिति नैरुक्ताः । तनोतेर्वा स्यात्

सन्ततकर्मा भवति । अहोरात्रकर्मा वा नि० ३.१४. ये जनेषु मलिम्लवः स्तेनासस्तस्करा वने । ये कक्षेष्वघायवस्ताँस्ते (अग्नेः) दधामि जम्भयोः तै० सं० ४.१.१०.२.]

तस्तभाने धारिके (क्रन्दसी=द्यावापृथिव्यौ) ३२.७. [स्तम्भुरिति सौत्रो धातुः । ततो लिटि कानच् । प्रथमद्विवचनम्]

तस्तभ्वांसम् स्तम्भिवन्तम् (अहिं=मेघम्) २.११.५. [स्तम्भुरिति सौत्रो धातुः । ततो लिटः क्वसुः]

तस्तम्भ स्तभ्नाति १.६७.३. **तस्तम्भत्**=स्तभ्नीयात् १.१२१.३. [स्तम्भुरिति सौत्रो धातुः । ततो लिट् । अन्यत्र लेट् । छान्दसं द्वित्वम्]

तस्थतुः तिष्ठतः ४.५६.२. तिष्ठेताम् ३.१४.३. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट्, प्रथमद्विवचनम्]

तस्थिवान् यस्तिष्ठति (वरुणः=परमेश्वरः) ५.८५.५. **तस्थिवांसम्**=प्रतिष्ठन्तम् (परमात्मानम्) ६.९.७. तिष्ठन्तम् (अ०—सूर्यमिव) १२.२०. स्थितम् (परमेश्वरम्) १.७२.४. स्थितिमन्तम् (भोगम्) ऋ० भू० १९३, १.११६.५. **तस्थिवांसः**=तिष्ठन्तः (पर्वताः=शैलाः) ३.५६.१. स्थिरप्रज्ञाः (देवासः=विद्वांसो जनाः) ३.८.६. स्थिरास्सन्तः (राजजनाः) ४.४.९. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

तस्थिवांसा स्थितिमन्तौ (इन्द्राग्नी=वायुपावकौ) १.१०८.१. [तस्थिवान् इति व्याख्यातम् । ततः प्रथमाद्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

तस्थुषः स्थावरान् काष्ठादि-पदार्थान् ५.५३.२. तिष्ठन्तीति तान् सर्वान् पदार्थान् मनुष्यान् वा, प्र०—तस्थुष इति मनुष्यनामसु पठितम्, निघं० २.३, १.६.१. स्थावरस्य (जगतः) २५.१८. स्थिरस्य (जगतः) ३.३८.९. अचर जगत् का, आर्याभि० २.५०, २५.१८. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुप्रत्ययान्ताद् द्वितीया बहुवचनम् । षष्ठ्या एकवचनं वा । तस्थुषः मनुष्यनाम निघं० २.३. स्थावरस्य च नि० १२.१६.]

तस्थुषीः स्थिराः (किरणाः) ५.६२.१. [तस्थुष इति=व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप्]

तस्थुः तिष्ठन्ति ३१.१९. स्थितिं चक्रिरे, ऋ० भू० १३२, ३१.१९. तिष्ठेयुः १.१६४.३. स्थिरा भवन्ति ११.५, ऋ० भू० १६२ तिष्ठन्तु ७.६.६. वर्त्तन्ते १.५२.४. **तस्थे**=तिष्ठते ५.४४.९. तिष्ठामि १.७२.९. **तस्थौ**=तिष्ठति ३३.२२. तिष्ठेत् १२.३४. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । 'तस्थे' प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम् । तस्थुः=सन्तिष्ठन्ते नि० ४.२७.]

ताढि आजहि १८.७१.

तात् तावन्ति (विज्ञानानि), प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति वलोपः 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति शेर्लोपः ६.२१.६. [तत्सर्वनाम्नः परिमाणे 'यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्' अ० ५.२.३९. सूत्रेण वतुप् । 'आ सर्वनाम्नः' अ० ६.३.९१. सूत्रेणाकारादेशः । तावत्प्राति० प्रथमाबहुवचने शेर्लोपः । वकारस्य लोपश्छान्दसः]

तातृपिम् अतिशयेन तृप्तिकरम् (सोमम्=ओषधिगणम्) ३.४०.२. [तृप प्रीणने (दिवा०) धातोर्यङ्लुगन्ताद् औणादिक इः प्रत्ययः]

तातृषाणः अतिशयेन पिपासितः (इन्द्रः=सभेशः) १.१३०.२. [ञितृष् पिपासायाम् (दिवा०) धातोर्यङ्लुगन्ताद् औणादिक आनच्-प्रत्ययः]

तात्या तस्मिन्नवसरे भवाः (पितरा=जननी जनकश्च) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति तदव्ययात्त्यप् १.१६१.१२.

तात्या या तते परमेश्वरे साध्वी तया (धिया=प्रज्ञया) ७.३७.६. ततः=तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्तः प्रत्ययः । ततप्राति० 'तत्र साधु' रित्यर्थेऽण्णन्तान् ङीपि तृतीयैकवचनम्]

तादीत्ना तदानीम्, प्र०—अत्र 'पृषोदरादीनि यथोपदिष्टम्' अ० ६.३.१०९. अनेन वर्णविपर्यासेनाकारस्थान ईकारः, ईकारस्थान आकारस्तुडागमः पूर्वस्य दीर्घश्च १.३२.४.]

तान्वः तन्वः, प्र०—अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते' इत्याद्यचो दीर्घः ३.३१.२. [तनूप्राति० प्रथमाबहुवचनम् । तनूरिति व्याख्यातम् । 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घादेशः । तान्वः आत्मजः पुत्रः नि० ३.६.]

ताप्तम् तपेः, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् ५.३३. **ताप्सीत्**=तपेत् १३.३०. [तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

ताम्रः ताम्रमिव कठिनाऽङ्गः (राजा), प्र०—अत्र 'अमितम्योर्दीर्घश्च' उ० २.१६. अनेनाऽयं सिद्धः १६.६. **ताम्राय**=यस्ताम्यति ग्लायति तस्मै (पुरुषाय) १६.३९. [तमु कांक्षायाम् (दिवा०) धातोः 'अमितम्योर्दीर्घश्च' उ० २.१६. सूत्रेण रक् प्रत्ययो धातोरकारस्य च दीर्घः । ताम्रम् रूपनाम निघं० ३.७.]

तायते पालयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.११०.१. तन्यते विस्तीर्यते ३४.४. बढ़ाया जाता है स० प्र० २४७, ३४.४. [तायृ सन्तानपालनयोः (भ्वा०) धातोर्लट्]

तायवः सूर्यपालका वायवः १.५०.२. स्तेनाः ५.५२.१२. **तायुम्**=तस्करम् ४.३८.५. **तायुः**=स्तेनः (जनः), प्र०—तायुरिति स्तेननामसु पठितम्, निघं० ३.२४, ६.१२.५. [तायृ सन्तानपालनयोः (भ्वा०) धातोरौणादिक उः प्रत्ययो बाहुलकात् । तायुः स्तेननाम निघं० ३.२४.]

तारकाः दुःखस्य पारे कारिणः (सिध्माः=मङ्गलकारिणः पश्वादयः) २४.१०. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि ण्वुल्प्रत्ययः । सिध्मास्तारकाः मै० ३.१३.११. सलिलं वा इदमन्त (अन्तरिक्षें) आसीत् । यदतरन् तत्तारकाणां तारकत्वम् तै० १.५.२.५.]

ताराय दुःखात् सन्तारकाय (सज्जनाय) १६.४०. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्णिजन्तादच्-प्रत्ययः कर्त्तरि]

तारि तीर्यन्ते १.११६.६. **तारिषत्**=सन्तार्येत्, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.२५.१२. वर्धयेत् ४.३९.६. **तारिषः**=सन्तर ११.८३. सन्तारयसि ३४.८. **तारिषीमहि**=तरेम, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् २.२३.१०. **तारिष्टम्**=अन्तरिक्षं प्लावयतम् १.३४.११. पारयतम् १.१५७.४. वर्धयतम् ३४.४७. **तारीत्**=तारयेः ६.४७.९. सन्तार्येत् १.६९.३. सुखानि ददाति १.७३.१. उल्लङ्घयेत् २.२०.८. उल्लङ्घते १.१५२.३. **तारीः**=दुःखात्तारय ६.२५.२. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ् । अडभावश्छान्दसः । अन्यत्र लेडपि]

तार्क्ष्यः तीक्ष्ण तेजः प्रापक आश्विनः १५.१८. तृक्षितुं वेदितुं योग्यस्तृक्ष्य, तृक्ष्य एव तार्क्ष्यः (ईश्वरः), प्र०—अत्र गत्यर्थात् तृक्षधातोर्ण्यत्, ततः स्वार्थेऽण् १.८९.६. अश्व इव (इन्द्रः=परमैश्वर्यवानीश्वरः) प्र०—तार्क्ष्य इत्यश्वनाम, निघं० १.१४, २५.१९. [तृक्ष गतौ (भ्वा०) धातोर्ण्यति तर्क्ष्यः । ततः प्रज्ञादित्वात् स्वार्थेऽण्प्रत्ययः । तार्क्ष्यः अश्वनाम निघं० १.१४. तार्क्ष्यः=त्वष्ट्रा व्याख्यातः । तीर्णेऽन्तरिक्षे क्षियति, तूर्णमर्थं रक्षति, अश्नोतेर्वा नि० १०.२७. वायुर्वै तार्क्ष्यः कौ० ३०.५. अयं वै तार्क्ष्यो योऽयं (वायुः) पवते, एष स्वर्गस्य लोकस्याभिवोळ्हा ऐ० ४.२० तस्य (यज्ञस्य) तार्क्ष्यश्चारिष्टनेमिश्च सेनानी ग्रामण्याविति शारदौ तावृतू श० ८.६.१.१६. तार्क्ष्यो वै पश्यतो राजेत्याह तस्य वयांसि विशः……पुराणं वेदः श० १४.३.३.१३. स्वस्त्ययनं वै तार्क्ष्यः (तार्क्ष्यदेवताकमन्त्रः) ऐ० ४.२९. भद्रस्तार्क्ष्यः सुप्रजास्त्वाय । काठसंक० ६०.५.]

तालु आस्याऽवयवम् २५.१. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'त्रो रश्च लः' उ० १.५. सूत्रेण ञुण् प्रत्ययो रेफस्य च लकारादेशः । तालु तरतेस्तीर्णतममङ्गं लततेर्वा स्याद् लम्बकर्मणो विपरीताद् यथा तलं लतेत्यविपर्ययः नि० ५.२७. अवक्रन्देन तालुम् तै० सं० ५.७.११.७. मै० ३.१५.१. का० ५३.१.]

तावकेभ्यः त्वदीयेभ्यस्तत्सिद्धेभ्यो वा १.९४.११. [युष्मत् प्रातिपदिकाच् छैषिकोऽण् । ततः 'तवकममकावेकवचने' अ० ४.३.३. सूत्रेण तवकादेशोऽणि]

तावान् तावत्परिमाणः (सोमः=उत्पन्नपदार्थसमूहः) १.१०८.२. [तत् सर्वनाम्नः परिमाणेऽभिधेये 'यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्' इति वतुप् 'आ सर्वनाम्नः' इत्याकारादेशः]

तिगितेन प्राप्तेन (शस्त्रेण) २.३०.९. **तिगितैः**=तीक्ष्णैः (जम्भैः=वक्त्रैः) १.४३.५. [तिग गतौ (स्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । तिज निशाने (भ्वा०) धातोर्वा रूपम्]

तिग्मजम्भ ! तिग्मं तीव्रं जम्भो गात्रविनामनं यस्मात् तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन !) १५.३७. तिग्मं तीव्रं जम्भं वक्त्रं यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.७९.६. **तिग्मजम्भस्य**=तिग्मं तीव्रं तेजस्वि जम्भो मुखं यस्य तस्य (सेनापतेः) ४.१५.५. **तिग्मजम्भः**=तिग्मानि गात्रविनमनानि यस्य सः (वैश्वानरः=राजा) ४.५.४. [तिग्म-जम्भपदयोः समासः । तिग्ममिति व्याख्यास्यते । जम्भः=जभी गात्रविनामे (भ्वा०) धातोर्घञ् । 'रधिजभोरचि' सूत्रेण नुम्]

तिग्मतेजः तीव्राणि तेजांसि यस्मात् तत् (नमः=अन्नादिकम्) १२.६३. **तिग्मतेजाः**=तिग्मानि तीक्ष्णानि तेजांसि भवन्ति यस्मात् सः (वायुः=गमनागमनशीलः पवनः), प्र०—'युजिरुजितिजां कुश्च' उ० १.१४५. अनेन 'तिज निशाने' इत्यस्मान्मक्-प्रत्ययः कुत्वादेशश्च, तथैव 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' उ० ४.१९६. अनेन तिज इत्यस्मादसुन् प्रत्ययः १.२४. [तिग्म-तेजस्पदयोः समासः । तिग्ममिति व्याख्यास्यते । तेजस्=तिज निशाने (भ्वा०) धातोरसुन्]

तिग्मभृष्टिः तिग्मा तीव्रा भृष्टिः परिपाको यस्य सः (विविद्वान्=श्रेष्ठो विद्वान् जनः) ४.५.३. [तिग्मा-भृष्टिपदयोः समासः । तिग्ममिति व्याख्यास्यते । भृष्टिः=भ्रस्ज

पाके (तुदा०) धातोः क्तिन्। 'ग्रहिज्या०' इति सूत्रेण सम्प्रसारणम्]

तिग्मम् वज्रवत् तीव्रम् (मनः=विज्ञानम्), प्र०—तिग्ममिति वज्रनामसु पठितम्, निघं० २.२०, ७.१७. तीव्रगुणकर्मस्वभावम् (वज्रं=शस्त्राऽस्त्रम्) ७.१८.१८. तीक्ष्णीकृतम् (सृकम्=वज्रतुल्यं शस्त्रम्) १८.७१. तीव्रम् (सोमम्=ऐश्वर्यम्) ३.४८.३. **तिग्मेन**=तीव्रेण (शोचिषा=प्रकाशेन) १७.१६ [तिज निशाने (भ्वा०) धातोः 'युजिरुचितिजां कुश्च' उ० १.१४६. सूत्रेण मक्-प्रत्ययः कुत्वञ्च। तिग्मम्=वज्रनाम निघं० २.२० तिग्मं तेजतेरुत्साहकर्मणः नि० १०.६.]

तिग्ममूर्द्धानः तिग्म उपरि वर्त्तमानाः (योद्धारो जनाः) ६.४६.११. [तिग्म-मूर्धन्पदयोः समासः। तिग्मं व्याख्यातम्]

तिग्मश्रृङ्गः तिग्मानि तीव्राणि श्रृङ्गाणीव किरणा यस्य सूर्यस्य सः ६.१६.३९. [तिग्म-श्रृङ्गपदयोः समासः। तिग्ममिति व्याख्यातम्। श्रृङ्गाणि ज्वलतो नाम निघं० १.१७.]

तिग्मशोचिषे तीव्रवुद्धिप्रकाशाय १.७९.१०. [तिग्म-शोचिष्पदयोः समासः। तिग्मं व्याख्यातम्। शोचिः=ज्वलतो नाम निघं० १.१७.]

तिग्महेती तिग्मस्तीव्रो हेतिर्वज्रो ययोस्तौ (वैद्य-राजानौ) ६.७४.४. [तिग्म-हेतिपदयोः समासः। तिग्ममिति व्याख्यातम्। हेतिः=वज्रनाम निघं० २.२०. तिग्मं व्याख्यातम्]

तिग्महेते तिग्मस्तीव्रो हेतिर्वज्रो दण्डो यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=सभाध्यक्ष राजन्), प्र०—हेतिरिति वज्रनाम, निघं० २.२०, १३.१२. तिग्मा तीव्रा हेतिर्वृद्धिर्यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=राजन्) ४.४.४. [तिग्म-हेतिपदयोः समासः। तिग्ममिति व्याख्यातम्। हेतिः वज्रनाम निघं० २.२०. हेतिः=हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोः क्तिन् प्रत्ययः]

तिग्मा तिग्मानि तीव्राणि (अनीका=सैन्यानि) ४.२३.७. [तिग्ममिति व्याख्यातम्। ततः प्रथमाबहुवचने शेर्लोपे रूपम्]

तिग्मा तीव्रा (अशनिः=विद्युत्) ४.१६.१७. **तिग्माम्**=तीव्रां गतिम् ४.७.१०. [तिग्ममिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

तिग्मानीकम् तिग्मानि निशितानि तीक्ष्णान्यनीकानि सैन्यानि यस्मिँस्तम् (सीम्=अहोरात्रव्यवहारम्) १.९५.२. [तिग्म-अनीकपदयोः समासः। तिग्ममिति व्याख्यातम्। अनीकम्=अन प्राणने (अदा०) धातोः 'अनिहृषिभ्यां किच्च' उ० ४.१७. सूत्रेण ईकन्-प्रत्ययः किच्च]

तिग्मायुधः तिग्मानि तीव्राण्यायुधानीव किरणा यस्य सः (इन्द्रः=सूर्यः) २.३०.३. **तिग्मायुधाय**=तिग्मानि तीव्राण्यायुधानि यस्य तस्मै (रुद्राय=शूरवीराय) ७.४६.१. **तिग्मायुधाः**=तीक्ष्णायुधाः (विद्वांसो जनाः) ५.२.१०. **तिग्मायुधौ**=तिग्मानि तेजस्विन्यायुधानि ययोस्तौ (वैद्यराजानौ) ६.७४.४. [तिग्म-आयुधपदयोः समासः। तिग्ममिति व्याख्यातम्। आयुधानि उदकनाम निघं० १.१२. आयुधमायोधनात् नि० १०.६. आङ्पूर्वाद् युध संप्रहारे (दिवा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः]

तितउना चालनी से, पं० वि०, [तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'तनोतेर्डउः सन्वच्च' उ० ५.५२. सूत्रेण डउः प्रत्ययः सन्वच्च कार्यम्। तितउ परिपवनं भवति, ततवद्वा तुन्नवद्वा तिलमात्रतुन्नं वा नि० ४.९.]

तितिक्षते सहते, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् २.१३.३. **तितिक्षन्ते**=सहन्ते ३.३०.१. तिज निशाने (भ्वा०) धातोः 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्' अ० ३.१.५. सूत्रेण स्वार्थे सन्नन्ताल् लट्। 'निन्दाक्षमाव्याधिप्रतीकारेषु सन्निष्यते' इतीष्ट्या क्षमायां सन्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

तितिरुः तरेयुः २.२३.५. प्लवन्तः उल्लङ्घयन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् १.३३.८. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'ऋच्छत्यृताम्' इति लिटि प्राप्तो गुणो न भवति छान्दसत्वात्। ततश्च 'ऋत इद्धातो' रितीत्वं रपरत्वं च]

तितिर्वः शत्रूणां बलं तरित उल्लङ्घयितः (इन्द्र=राजन्) ६.४१.४. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः क्वनिप् प्रत्ययः। छान्दसं द्विर्वचनम्]

तितिर्वांसः सम्यक् तरन्तः (मनुषः=मनुष्याः)प्र०—अत्र तॄ धातोर्लिटः स्थाने वर्त्तमाने क्वसुः १.३६.७. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः। प्रथमावहुवचने रूपम्]

तित्तिरिः तीतरी इति भाषायाम् २४.३६. **तित्तिरीन्**=भा०—वर्षासु प्रमुदितान् (पक्षिविशेषा) २४.२०न्.

[तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिको बाहुलकाद् इः प्रत्ययः। स च कित् सन्वत्कार्यमभ्यासस्य तुगागमः। तित्तिरिः तरणात्, तिलमात्रचित्र इति वा नि० ३.१८. अथ यदन्यस्माऽअशनाय (विश्वरूपस्य मुखम्) आस। ततस्तित्तिरिः समभवत् श० ५.५.४.६. येन (शिरसा विश्वरूपस्त्वाष्ट्रः) अन्नमावयत् स तित्तिरिः मै० २.४.१. रुद्राणां तित्तिरिः काठ० ४७.६. अथ यदन्नादनम् (त्रिशीर्ष्णो मुखम्) आसीत् स तित्तिरिरभवत् जै० २.१५४.]

तितृत्सान् तर्दितुं हिंसितुमिच्छेयुः ३३.२८. [उतृदिर् हिंसानादरयोः (रुधा०) धातोरिच्छायां सन्नन्ताल्लेट्। आडागमः]

तित्याज छोड़ देता है, पं० वि०, [त्यज हानौ (भ्वा०) धातोर्लिट्। अभ्यासस्येकारादेशश्छान्दसः]

तित्रतः तरन्तः (देवासः=विद्वांसो जनाः), प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शसोऽभ्यासस्येत्वञ्च २.३१.२.

तित्विषाणस्य अग्निज्वालयेव विद्यया प्रकाशमानस्य (राज्ञः) ५.८.५. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच्]

तित्विषे प्रकाशय १.५२.६. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट्।

तित्विषे त्वेषति प्रदीप्यते १.१०२.३. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लडर्थे लिट्।

तिर सन्तारय, प्र०—तरतेर्विकरणव्यत्ययेन शः 'ॠत इद्धातोः' इतीकारः १.१०.११. विस्तारय १.११.७. दुःखं प्लवस्व ५.४१. **तिरत**=निष्पादयत ७.५७.५. **तिरते**=प्राप्नोति ६.६८.७. प्लवते सन्तरति वा, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदं, विकरणव्यत्ययेन शश्च १.१०४.४. वर्धयति ७.५९.२. **तिरध्वम्**=शत्रुबलमुल्लङ्घध्वम् ७.५६.१४. **तिरन्त**=प्रतरन्ति ७.७.६. **तिरन्तु**=वर्धयन्तु १.८९.२. पूर्णं भोजयन्तु २५.१५. **तिरन्ते**=सन्तरन्ति १.१२५.६. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लड् अपि। व्यत्ययेन शपः स्थाने शः। आत्मनेपदमपि क्वचिद् व्यत्ययेन। 'ॠत इद्धातो' रितीत्वं रपरत्वञ्च। तिरते प्रवर्धयते नि० ११.६.]

तिरश्चता तिरश्चीनेन (त्वेन=केन जनेन सह) ४.१८.२.

तिरश्चा तिर्यग् गत्या १.९१.१५. तिरश्चीनेन (वयसा=जीवनेन) २.१०.४. येन तिरोऽश्चति तेन (वयसा=जीवनेन) ११.२३. [तिरस् इति व्याख्यास्यते। तदुपपदे अञ्चु गतौ (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इत्यादिना क्विन्। ततस्तृतीया]

तिरश्चीनपृश्निः तिरश्चीनः पृश्निः स्पर्शो यस्य सः (पशुः पक्षी वा) २४.४. [तिरश्चीन-पृश्निपदयोः समासः। तिरश्चीनपदं व्याख्यास्यते। पृश्निः=स्पृश संस्पर्शने (तु०) धातोः 'घृणिपृश्नि०' उ० ४.५२. सूत्रेण निः प्रत्ययः]

तिरश्चीनः तिर्यग्-गमनः (रश्मिः=किरणो दीप्तिः) ३३.७४. [तिरसुपपदे अञ्चु गतौ (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इति क्विन्। ततः 'विभाषाञ्चेरदिक्स्त्रियाम्' इति स्वार्थे खः प्रत्ययः। तिरस् इति व्याख्यास्यते]

तिरसि तरसि ४.६.१. **तिर**=प्लव, दुःखात् पारं गच्छ ३.४०.३. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोट्। विकरणव्यत्ययेन शः]

तिरः तिरस्करणे निवारणे ७.६०.६. तिर्यक् ४.२९.१. अन्तर्धाने १.४६.६. तिरोभावे ६.१०.४. अधोगमने १.६१.७. तिरश्चीनं कर्म ५.५३.१४. तिरश्चीने ६.६५.१. [तिरः सत इति प्राप्तस्य। तिरस्तीर्णं भवति। सतः संसृतं भवति नि० ३.२०.

तिराति विहन्ति ७.५८.३. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लेट्। आडागमः। व्यत्ययेन शः]

तिरामसि तराम ३.३७.१०. **तिरेत**=वर्धयेः ७.५८.३. [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन शः। मस इदन्तता छन्दसि। अन्यत्र लिङ्]

तिरोअह्न्यम् तिरश्च तदहश्च तिरोहस्तस्मिन् भवम् (रसम्) १.४७.१. चोरादीनां तिरस्कर्तृणि अहनि प्रसिद्धम् (जनं=पुरुषार्थेषु प्रादुर्भूतम्) १.४५.१०. तिरःस्वहस्सु साधुम् (पुरोडाशं=सुसंस्कृतमन्नादिकम्) ३.२८.६. तिरश्चीनेऽह्नि भवम् (पुरोडाशम्=अन्नविशेषम्) ३.२८.३. तिरश्चीनेष्वहस्सु साधुम् (पूर्णं ब्रह्मचर्यम्) ३.५८.७. अहनि भवमहन्यम्, तिरस्कृतमाच्छादितमहन्यं येन तम् (जनम्) प्र०—अत्र 'प्रकृत्यन्तःपादमव्यपरे' इति प्रकृतिभावः १.४५.१०. [तिरस्-अह्न्यपदयोः समासः। तिरस् इति व्याख्यातम्। अहन्यम्=अह्न्यप्राति० भवार्थे साध्वर्थे वा यत्]

तिरोदधे निवारयामि ७.५०.१. [तिरसुपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः साभान्ये लिट्। तिरोदधे=अन्तर्दधाति नि० १२.३२.]

तिरोहितम् परिच्छिन्नम् (अग्निं=पावकम्) ३.९.५. [तिरसुपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः

प्रत्ययः । 'दधातेर्हि' रिति धातोर्हिरादेशः]

तिर्यञ्चम् तिरश्चीनम् (पार्श्वस्थं वीरजनम्) १०.८. तिर्यक्स्थितमधस्थं वा (ईश्वरम्) ३२.२. [तिरसुपपदे अञ्चु गतौ (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इत्यादिना क्विन् । 'अनिदिताम्' इति नलोपे 'उगिदचाम्०' इति नुम् । तिरसस्तिर्यलोपे' अ० ६.३.९४. सूत्रेण तिरि इत्यादेशः]

तिल्विले स्नेह-स्थाने (क्षेत्रे=पुण्ये कर्मणि) ५.६२.७

तिष्ठ तिष्ठति, प्र०—अत्राऽन्त्यपक्षे व्यत्ययो लडर्थे लोट् च २.१३. प्रकाशितो भव ७.३८.२. स्थिरो भव १२.११. धर्मे वर्त्तस्व १.१२१.१२. उद्युक्तो भव ४.४.४. **तिष्ठत्**=अतितिष्ठति १.१७४.४. तिष्ठति ४.१.१७. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लेट् । शिति प्रत्यये तिष्ठादेशः]

तिष्ठत स्थिरा भवत १.१९१.६. प्रतिष्ठां लभध्वम्, भा०—प्रशंसां लभन्ते २६.२२. प्र०—अत्र 'बाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति नियमात् 'समबप्रविभ्यः स्थः' अ० १.३.२२. इत्यात्मनेपदं न भवति १.१५.९. **तिष्ठति**=प्रवर्त्तते १.५१.११. वर्त्तते १.५८.२. **तिष्ठेत्**=२०.४९. **तिष्ठते**=वर्त्तते १.५८.४. **तिष्ठसि**=तिष्ठति प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ३.६१.३. **तिष्ठस्व**=तिष्ठते, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् २.१९. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । शिति तिष्ठादेशः । अन्यत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

तिष्ठत् स्वस्वरूपेण स्थिरं सत् (ब्रह्म) ४०.४. **तिष्ठते**=वर्त्तमानाय (अश्वायेव=यथाऽश्वाय) ११.७५. **तिष्ठद्भ्यः**=स्थितेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२३. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः । शिति तिष्ठादेशः]

तिष्ठन्तीभ्यः स्थिराभ्यः (अद्भ्यः) २२.२५. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययान्तात् स्त्रियां ङीप्]

तिष्ठाति तिष्ठतु १.८२.४. तिष्ठेत् ४.२०.२. **तिष्ठाते**=तिष्ठेत १.१२४.११. **तिष्ठाः**=तिष्ठेः ३.८.१. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् । तिष्ठाः तिष्ठासति नि० ८.१८.]

तिष्ठिपत् समन्तात् प्रस्थापयेत् २५.४३. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् । अडभावश्छान्दसः । 'तिष्ठतेरित्' अ० ७.४.५. सूत्रेण णौ चङ्युपधाया इकारादेशः]

तिष्यः आदित्यः पुष्यनक्षत्रं वा ५.५४.१३. [तिष्यनक्षत्रवाचिनः प्राति० 'नक्षत्रेण युक्तः कालः' इति प्राप्तस्याणः 'लुबविशेषे' अ० ४.२.४. सूत्रेण लुप् । तिष्यो नक्षत्रं बृहस्पतिर्देवता तै०सं० ४.४.१०.१. मै० २.१३.२०. तिष्यो वै रुद्रः काठ० ११.५. बृहस्पतेस्तिष्यः तै० १.५.१.२, ३.१.१.५. रुद्रस् तिष्यः तै० सं० २.२.१०.१. मै० २.१.५.]

तिसृणाम् त्रिविधानाम् (धिषणानां=कर्मोपासना ज्ञानविदां बुद्धीनाम्) ५.६९.२. **तिसृभिः**=त्रिविधाभिः कर्मोपासना ज्ञान-ज्ञापिकाभिः (गीर्भिः=वाग्भिः) २७.४३. प्राणोदानव्यानगतिभिः १४.२८. **तिसृषु**=त्रिविधासु भूम्यादिषु ६.४७.४. **तिस्रः**=त्रिविधाः (दिवः=प्रकाशान्) ४.५३.५. स्थूलत्रसरेणुपरमाण्वाख्याः १.३४.८. ऊर्ध्वाधः समगतीः १.३४.७. स्थूला मध्या सूक्ष्मा च ३.५६.२. स्थूल-सूक्ष्म-कारणाख्याः ३.५६.५. सुशिक्षिता सभा सेना प्रजा ५.३५.२. विद्याराजधर्मसभास्थाः ७.३३.७. अध्यापकोपदेशकपरीक्षित्र्यः २८.४१. त्रित्वसङ्ख्याकाः (देवीः=देदीप्यमाना विदुष्यः) २८.४१. त्रित्वसङ्ख्याताः (जिह्वाः=विविधा वाणीः) ३.२०.२. त्रित्वसङ्ख्याः (भा०—कर्मोपासनाज्ञानविज्ञापिका वाणीः) २८.३१. त्रित्वविशिष्टा सङ्ख्याः १८.२४. त्रित्वसङ्ख्यावत्यः (इडा-सरस्वती-भारती) २१.१९. त्रित्वसङ्ख्याविशिष्टान् (शरदः) १.७२.३. त्रिप्रकारकाणि विद्युद्भौमसूर्यरूपेण स्थितानि ज्योतींषि ३.२.९. त्रिप्रकारकाः (इडा-सरस्वती-मही देव्यः) १.१३.९. उत्तम-मध्यम-निकृष्टरूपेण त्रिविधाः (दानुचित्राः क्रियाः) १.१७४.७. गार्हपत्या-हवनीय-दाक्षिणात्यरूपास्त्रिविधाः (दिवः=दीप्तीः) २.३.२. [त्रिप्राति०संख्यावाचिनः स्त्रियां रूपाणि । 'त्रिचतुरोः स्त्रियां तिसृचतसृ' अ० ७.२.९९. सूत्रे 'तिसृ' इत्यादेशो विभक्तौ परतः । अजादौ विभक्तौ तु 'अचि र ऋतः' इति रेफादेशः]

तिस्तिराणा यन्त्रकलाभिराच्छादितौ (इन्द्राग्नी=वायुविद्युतौ) १.१०८.४. [स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्लिटः स्थाने कानच् । 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

तिस्तिरे स्तृणाति आच्छादयति ३.४१.२. [स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्लिट्]

तिस्थिपत् स्थापयेत् १.१६२.२०. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् । अडभावः । 'तिष्ठतेरित्' इतीकारादेशः । षत्वाऽभावश्छान्दसः]

तीक्ष्णेषवे तीक्ष्णा तीव्रा इषवोऽस्त्रशस्त्राणि यस्य तस्मै (वीरपुरुषाय) १६.३६. [तीक्ष्ण-इषुपदयोः समासः]

तीर्त्वा उल्लङ्घ्य ४०.११. तर कर अर्थात् पृथक् होकर सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. [तॄ प्लवनसन्तर-

णयोः (भ्वा०) धातोः क्त्वा]

तीर्थानि यानि वेदाऽऽचार्य-सत्यभाषण-ब्रह्मचर्यादि-सुनियमादीन्यविद्यादुःखेभ्यस्तारयन्ति यद्वा यैः समुद्रादिभ्यस्तारयन्ति तानि १६.६१. **तीर्थे**=जलाशये १.१७३.११. तरन्ति येन तस्मिन्नर्थे (याने) १.४६.८. समुद्राणां तरणे कर्त्तव्ये, ऋ० भू० १६६, ऋ० १.३.३४.८. **तीर्थेभ्यः**=तरन्ति यैस्तीर्यन्ते वा येभ्यः (साधनैः साधनेभ्यो वा) ३०.१६ [तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'पातॄतुदिवचि०' उ० २.७. सूत्रेण थक्। तीर्थेन हि प्रतरन्ति तद्यथा समुद्रं तीर्थेन प्रतरेयुः गो० पू० ५.२. दक्षिणतस्तीर्थानां गाधम् काठ० २६.८. अप्सु स्नाति साक्षादेव दीक्षातपसी अवरुन्धे, तीर्थे स्नाति, तीर्थे हि (अङ्गिरसः) तां (दीक्षाम्) प्रावेशयन्, तीर्थे स्नाति तीर्थमेव समानानां भवति तै०सं० ६.१.१.२.]

तीर्थ्याय तीर्थेषु वेदविद्याऽध्यापकेषु सत्यभाषणादिषु च साधवे (सत्पुरुषाय) १६.४२. जो वेदादि शास्त्र और सत्यभाषणादि धर्मलक्षणों में साधु है, उस (सज्जन) को. स० प्र० ४५५, १६.४२. [तीर्थप्राति० 'तत्र साधु' रित्यर्थे यत्-प्रत्ययः]

तीव्रम् तीव्रगुणस्वभावम् (सोमं=ओषधिरसं प्रेरणाख्यं व्यवहारं वा) २०.६३. तेजोमयम् (सवनम्=ऐश्वर्यम्) ४.३५.६. सुशोधितम् (घृतम्) ५.५.१. सर्वदोषाणां निवारणे तीक्ष्णस्वभावम्, भा०—शीघ्रं दोषनिवारकम् (घृतम्=आज्यादिकम्) ३.२. **तीव्रः**=तीक्ष्णः (महाविद्वान्) २.४१.१४. तेजस्वी वेगवान् (ओषधिसारः) ६.४७.१. **तीव्रान्**=तीक्ष्णान् (घोषान्=शब्दान्) २६.४. **तीव्राः**=तीक्ष्णवेगाः (सोमासः=उत्पन्नपदार्थाः) १.२३.१. तीक्ष्णस्वभावाः (जनाः) ५.३०.१३. कठिनाः (समदः=संग्रामान्) ६.७५.२. तीव्रवेगवतीः शत्रूणां सेनाः २६.३६. **तीव्रेण**=आशुकारिगुणेन १६.१. **तीव्रैः**=तीक्ष्णवेगादिगुणैः (सोमैः=रसभूतैर्जलैः) १.१०८.४. [तिज निशाने (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् (२.२८) औणादिको रन् प्रत्ययो जस्य वो दीर्घत्वं च धातोर्बाहुलकादेव]

तीव्रसुतम् तीव्रैः तेजस्विभिः कर्मभिर्निष्पादितम् (उत्तमौषधिरसम्) ६.४३.२. [तीव्र-सुतपदयोः समासः। तीव्रं व्याख्यातम्। सुतम्=षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः क्तः]

तु पुनः, सं० वि० २१४, ४०.६. पश्चादर्थे १.६६.४. हेतौ ३४.१६. पुनरर्थे १.१०.११. क्षिप्रम् ३३.६५. चाऽर्थे ३३.६४. एव १.१६६.४. अवधारणे ३४.११.

तुग्रम् तेजस्विनम् (वीरपुरुषम्) ६.२६.४. आदातारम् (इभं=हस्तिनम्) ६.२०.८. **तुग्रस्य**=बलिष्ठस्य (जनस्य) ६.६२.६. **तुग्रः**=शत्रुहिंसकः सेनापतिः १.११६.३. यः कश्चिद्धनाऽभिलाषी भवेत् सः (जनः) प्र०—तुजि हिंसाबलादाननिकेतनेषु, अस्माद्धातोरौणादिके रक्प्रत्यये कृते तुग्र इति पदं जायते १.८.३, ऋ० भू० १६८. **तुग्राय**=बलाय १.११७.१४. [तुजि हिंसाबलादाननिकेतनेषु (चुरा०) धातोरौणादिको रक्-प्रत्ययः। 'इदितो नुम् धातोरि' ति नुम् न भवति, आगमशासनस्यानित्यत्वात्। तुज हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्वा रूपम्। अन्वेति तुग्रः (आदित्यः) तै० आ० १.१०.४.]

तुग्र्यासु अप्सु हिंसनक्रियासु १.३३.१५. [तुग्रं व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत् प्रत्यये स्त्रियां टाप्]

तुचे पुत्र-पौत्राद्यायाऽपत्याय, प्र०—तुगित्यपत्यनाम०, निघं० २.२, ३३.६४. [तुक् इत्यपत्यनाम निघं० २.२. ततश्चतुर्थी]

तुच्छ्यान् तुच्छेषु क्षुद्रेषु भवान् (कामान्) ५.४२.१०. **तुच्छ्येन**=तुच्छ अर्थात् अनन्त परमेश्वर के सन्मुख, स० प्र० २०७, [तुच्छप्राति० भवार्थे यत्]

तुज्यते हिंस्यते १.८४.१७. [तुज हिंसायाम् (भ्वा०) धातो। कर्मणि लट्]

तुज प्रेरय ५.१७.३. **तुजेते**=हिंस्तः १.६१.१४. [तुज हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

तुजतः बलवतः (मनुष्यस्य) ३.३६.८. **तुजता**=छेदकेन वज्रेण १.६१.६. **तुजन्**=हिंसन् (सूर्यः) १.६१.६. [तुज हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः शतरि षष्ठ्या एकवचनम्]

तुजम् आदातव्यम् (रयिं=धनम्) ३.४५.४. **तुजः**=शत्रुहिंसक-बलादियुक्ताः सेनाः ३.३४.५. आदत्ताः (धेनवः=(किरणाः) १.१५१.५. **तुजा**=तोजति हिनस्ति दुःखेन येन तेन १.५६.३. दुष्टानां हिंसकौ (सभासेनेशौ) ६.६८.२. **तुजे**=विद्याबलमिच्छुकाय (तोकाय=अपत्याय) ४.१.३. [तुजि हिंसाबालदाननिकेतनेषु (चुरा०) धातोर्घञर्थे कः। अथवा हिंसार्थकात् तुजधातोः क्विप्। 'कृतो बहुलम्' इति क्विप् कर्त्तृभिन्नकारकेषु भवति। तुजः वज्रनाम निघं० २.२०]

तुजये बलाय ५.४६.७. **तुजिम्**=बलिष्ठम् (वीरपुरुषम्) ६.२६.४. [तुजः वज्रनाम निघं० २.२०. ततो

मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपावि' तीकारप्रत्ययः । अथवा तुज हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिक इः तुजये अपत्यजननाय नि० १२.४५.]

तुजसे बलाय शत्रूणां हिंसनाय वा ४.२३.७. [तुजः वज्रनाम निघं० २.२०. तुज हिंसायाम् (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे कसेन्-प्रत्ययः]

तुजे दाने ५.४१.६.

तुज्यमानासः कम्पमानाः स्वां स्वां वसतिमाददानाः (देवाः=पृथिव्यादयः) १.११.५. [तुजि हिंसाबलादाननिकेतनेषु (चुरा०) धातोः कर्मणि शानच् । जसोऽसुगागमः । तुज्यमानासः क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

तुज्याः हिंसनीयाः (भृमयः=भ्रमणानि) ३.६२.१. [तुज हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिको यक् प्रत्ययो वाहुलकात्]

तुञ्जते तुञ्जन्ति पालयन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदमेकवचनञ्च १.१३१.२. (तुञ्जति दानकर्मा निघं० ३.२०. तुजि पालने (भ्वा०) धातोर्लट् आत्मनेपदं व्यत्ययेन]

तुञ्जमानाः बलायमानाः (मनुष्याः) ३.१.१६. [तुजि हिंसावलादाननिकेतनेषु (चुरा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

तुञ्जाते दुःखानि हिंस्तः, प्र०—व्यत्ययेनाऽत्राऽऽत्मनेपदम् १.१०५.६. [तुजि हिंसावलादाननिकेतनेषु (चुरा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । अनित्यण्यन्ताश्चुरादय इति णिच् न भवति]

तुञ्जे तुञ्जे दातव्ये दातव्ये (पदार्थे पदार्थे) १.७.७. [तुञ्जस्तुञ्जतेर्दानकर्मणः । तुञ्जे तुञ्जे दाने दाने नि० ६.१८.]

तुतुज्यात् वलयेत् १.१४३.६. [तुज हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लिङ् । 'वहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपः श्लुः]

तुतुर्यात् हिंस्यात् ६.६३.२. **तुतुर्याम**=विनाशयेम ५.४५.११. [तुर त्वरणे (जु०) धातोर्लिङि रूपम् । धातूनामनेकार्थकत्वाद् हिंसायामर्थेऽत्र]

तुतुर्वणिः शीघ्रगतिः १.१६८.१.

तुतोद तुद्यात् प्रेरयेत् २.१६२.१७. [तुद व्यथने (तुदा०) धातोर्लिट्]

तुथः ज्ञानवर्धकः (जगदीश्वरो विद्वज्जनो वा) ५.३१. ज्ञानवृद्धः (सभापतिः) प्र०—तु गतिवृद्धिहिंसासु इत्यस्मादौणादिकः थक्-प्रत्ययः ७.४५. सर्ववित् (ईश्वरः), प्र०—'तुथो वै ब्रह्म' यह शतपथ की श्रुति है, आर्याभि० २.१६, ५.३१. [ब्रह्म वै तुथः श० ४.३.४.१५. सत्यं वै तुथो विश्ववेदाः । काठ० २८.४. तुथो ह स्म वै विश्ववेदा देवानां दक्षिणा विभजति तै० सं० ६.६.१.२. तुथोऽसि विश्ववेदाः तै० सं० १.३.३.१. मै० १.२.१२. काठ० २.१३. तुथोऽसि जनधाया देवास्त्वा······प्रणयन्तु मै० १.३.१२.

तुद व्यथय ६.५३.६. **तुन्दते**=व्यथते, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति नुमागमः १.५८.१. [तुद व्यथने (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र नुमागमश्छान्दसः]

तुम्रम् ग्लातारम् (इन्द्रं=हृद्यं पतिम्) ६.२२.५. सत्कर्मसु प्रेरकम् (इन्द्रं=राजानम्) ४.१८.१०. **तुम्रः**=आहन्ता (इन्द्रः=समृद्धो राजा) ३.५०.१.

तुरगातु सद्यो गमनम् १.१६४.३०. [तुर-गातुपदयोः समासः]

तुरणे दुग्धादिपानार्थं त्वरमाणाय (सज्जनाय), प्र०—अत्र तुरणधातोः क्विप् १.१२१.५. [तुरण त्वरायाम् (कण्ड्वादि०) धातोः क्विप् । ततश्चतुर्थी]

तुरण्यतः सद्यो गच्छतः (श्येनस्य) ४.४०.३. शीघ्रं गच्छतः (वेः=पक्षिणः) ९.१५. **तुरण्यन्**=त्वरन् (गृहस्थो जनः) १.१२१.१. [तुरण त्वरायाम् (कण्ड्वादि०) धातोः शतृप्रत्ययः]

तुरण्यति त्वरयति ९.१४. सद्यो गमयति ४.४०.४. [तुरण त्वरायाम् (कण्ड्वादि०) धातोर्लट् । तुरण्यति तूर्णमश्नुतेऽध्वानम् नि० २.२८.]

तुरण्यवः क्षिप्रं कर्त्तारः (जनाः) ७.५२.३. पालकाः (जनाः) १.१३४.५. [तुरण त्वरायाम् (कण्ड्वा०) धातोरौणादिकः (३.२०.) युच् वाहुलकात्]

तुरण्यसत् आत्मनस्तुरणं त्वरणमिच्छन् (राजा) ४.४८.२. [तुरणपदाद् इच्छायामर्थे क्यच् । ततः शतृप्रत्ययः । व्यत्ययेन सिप्]

तुरतः सद्यः कर्त्तुः (राज्ञः) ६.१८.४. [तुर त्वरणे (जु०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

तुरम् शीघ्रम् ७.५६.१९. अविद्यादिदोषनाशकं सामर्थ्यम् ५.८२.१. शीघ्रकारिणम् (राजपुरुषम्) ४.३८.७. **तुरस्य**=क्षिप्रं कुर्वतः (गिरः=वाचः) ७.२२.५. शीघ्रकारिणः (तव्यसः=बलस्य) ५.४३.९. शीघ्रं सुखकरस्य (द्रविणसः=द्रव्यसमूहस्य) १.९६.८. त्वरमाणस्य सभा-

द्यध्यक्षस्य १.६१.१३. सद्योऽनुष्ठातुः (राज्ञः) ६.१८.४. दुःखहिंसकस्य (राधसः=धनस्य) ६.४४.५. **तुरः**=शीघ्रकारी (परमात्मा) ७.४१.२. त्वरितोऽनलसः सन् (विद्वान् मनुष्यः) १.१२१.३. त्वरमाणः (ईश्वरः) ३४.३५. तुरतीति (ब्रह्मणस्पतिः=जगदीश्वरः), प्र०—'तुर त्वरणे' इत्यस्मादिगुपधत्वात् कः १.१८.२. हिंसकः (इन्द्रः=राजा) ६.४४.३. **तुराणाम्**=सद्यःकारिणाम् (शूरवीराणाम्) ७.४०.१. शीघ्रकारिणाम् (विद्वज्जनानाम्) १.१७१.१. हिंसकानाम् (प्राणिनाम्) ५.४१.५. **तुराय**=दुःखहिंसकाय (मनुष्याय) ६.४९.१२. क्षिप्रं कारिणे (वीरपुरुषाय) ६.३२.१. शीघ्रत्वाय ३३.६४. क्षिप्रकारिणे (विदुषे जनाय) ६.६६.९. कार्यसिद्धये तूर्णं प्रवर्त्तमानाय, शत्रूणां हिंसकाय (इन्द्राय=सभाध्यक्षाय) १.६१.१. सद्योगमनाय १.१२१.७. त्वरमाणाय (अदितये=अन्तरिक्षाय) ४.३.८. दुःखहिंसकाय ६.४९.१२. [तुर त्वरणे (जु०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। तुर इति यमनाम तरतेर्वा त्वरतेर्वा, त्वरया तूर्णगतिर्यमः नि० १२.१४.]

तुरयन् सद्यो गमयन् (राजा) ४.३८.७. **तुरयन्तम्**=हिंसन्तम् (शुष्मम्=बलम्) ३३.६७. [तुर त्वरणे (जु०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

तुरयन्ते सद्यो गमयन्ति २.३४.३. [तुर त्वरणे (जु०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

तुरयाः शीघ्रतां प्राप्तम् (शुष्मः=बलम्) ४.२३.१०.

तुरश्चित् दुष्टों का भी (दण्डदाता ईश्वर), सं० वि० १५६, ७.४१.२.

तुराषाट् तुरान् त्वरितान् शत्रून् सहते (इन्द्रः=सभेशराजा) १०.२२. यस्तुरा त्वरितान् शीघ्रकारिणः सहते सः (इन्द्रः=राजा) ३.४८.४. यस्तुरान् हिंसकान् सहते (इन्द्रः=राजा) ६.३२.५. [तुरः=तुर त्वरणे (जु०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। तुरोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' सूत्रेण ण्विः। 'सहे साडः सः' इति षत्वम्। 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घत्वम्]

तुरासः त्वरिता आशुकारिणः (उत्तमविद्वज्जनाः) ७.६०.८. शीघ्रकारिणः (मनुष्याः) ७.५१.१. शीघ्रकारिणस्त्वरिताः (देवाः=विद्वज्जनाः) ५.४२.५. सद्यः कर्त्तारः (विद्वांसो जनाः) ३.५४.१३. [तुर त्वरणे (जु०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः]

तुरीपम् तूर्णं रक्षकम् (धनम्) १.१४२.१०. यस्तुरः सद्य आप्नोति तम् (रायस्पोषं=धनस्य पुष्टिम्) २७.२०. तारकं, शीघ्रकारी (विद्वदुपदेशम्), प्र०—अत्र तुर-धातोर्बाहुलकादौणादिक ईप् प्रत्ययः ३.४.९. क्षिप्रम् ७.२.९. **तुरीपाय**=नौकानां पालकाय (त्वष्ट्रे=विद्याप्रकाशकाय जनाय) २२.२०. [तूर्णोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः। तूर्णस्य तुर्भावश्छान्दसः। तुर त्वरणे (जु०) धातोर्वा बाहुलकादौणादिक ईप्-प्रत्ययः। अथवा तूर्णोपपदे आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः कन् ताच्छीलिकश्छान्दसः। तूर्णस्य तुर्भावो धातोराकारस्य ईकारादेशश्छान्दसः। तुरीपम् तूर्णापि नि० ६.२१.]

तुरीय ! चतुर्थवत् (गृहपते !), प्र०—अत्राऽर्शादित्वादच् ८.३. **तुरीयम्**=चतुर्थं निपातम् १.१६४.४५. चतुर्णां स्थूल-सूक्ष्म-कारण-परमकारणानां सङ्ख्यापूरकम् (द्रविणोदां=विद्यादेर्धनप्रदमीश्वरम्) प्र०—'चतुरश्छयतावाद्यक्षरलोश्च' अ० ५.२.५१. इति वार्त्तिकेनाऽस्य सिद्धिः १.१५.१०. **तुरीयः**=चतुर्थः (यज्ञ=सङ्गन्तव्यः सत्कार्यः) १७.५७. तूर्णमाप्नोति सः (त्वष्टा=विद्वान् जनः) २१.२०. चौथा (पति) स० प्र० १५३, १०.८५.४०. **तुरीयेण**=चतुर्थेन (ब्रह्मणा=धनेन) ५.४०.६. [चतुर् प्राति० पूरणार्थे 'चतुरश्छयतावाद्यक्षरलोपश्च' अ० ५.२.५१. वा०सूत्रेण छः प्रत्ययः, आद्यक्षरचकारस्य स्वरसहितस्य लोपः। यद्वै चतुर्थं तत्तुरीयम् श० ४.१.३.१४.]

तुरेभिः शीघ्रगामिभिरश्वैः ३.४.११. आशुकारिभिः (देवैः=विद्वद्भिर्दिव्यगुणैर्वा) ७.२.११. [तुर त्वरणे (जु०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। ततस्तृतीयाबहुवचने रूपम्। बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

तुर्यवाट् यस्तुर्यं चतुर्थं वर्षं वहति प्राप्नोति स वृषभादिः, यस्य त्रीणि वर्षाणि पूर्णानि जातानि चतुर्थं प्रविष्टः स इत्यर्थः १८ २६. तुर्यान् चतुरो वेदान् वहति येन सः (पुरुषः) १४.१०. **तुर्यवाहम्**=यस्तुर्यं चतुर्गुणं भारं वहति तम् (गाम्=वृषभम्) २८.२८. **तुर्यवाहः**=ये तुर्यं चतुर्थं वहन्ति ते (पशुपालका जनाः) २४.१२. [तुर्योपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' अ० ३.२.६४. सूत्रेण ण्विः प्रत्ययः। तुर्यः=चतुर्प्राति०पूरणार्थे 'चतुरश्छयतौ०' अ० ५.२.५१. वा० सूत्रेण यत्, आद्यक्षरलोपश्च]

तुर्यः हिन्धि ३३.६६. **तुर्याम**=हिंस्याम ५.९.६. हिंसेम ६.४.५. [तूरी गतित्वरणहिंसनयोः (दिवा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लिङ्। धातोरुपधाया ह्रस्वत्वं छान्दसम्]

तुर्यौहि पूर्वोक्तसदृशी गौः १८.२६.

तुर्वणिः यस्तुरः शीघ्रकारिणः शुभगुणानमात्यान्

याचते सः (इन्द्रः=राजा) ५.३५.३. हिंसकः हिंसन् वा० १.१३०.६. शीघ्राऽऽनन्ददाता (प्रशंसितप्रज्ञादियुक्तो जनः) १.५६.३. यस्तुरान् शीघ्रकरान् वनति सम्भजति सः (इन्द्रः=सेनाध्यक्षः) १.६१.११. शीघ्र-शत्रुहन्ता (इन्द्रः=राजा) २०.४८. सद्योगामी (विद्वज्जनः) १.१८६.३. शीघ्रकारी (इन्द्रः=राजा) ४.२०.१. तमःशीतं हिंसन् (अग्निः=विद्युत्सूर्यरूपः) १.१२८.३. [तुरोपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिक इन् प्रत्ययः। तुर इति व्याख्यातम्। तुर्वणिः तूर्णवनिः नि० ६.१४.]

तुर्वणे हिंसनाय ६.४६.८. [तुरोपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

तुर्वयाणम् तूर्वाः शत्रुबलहिंसकाः योद्धारो यानेषु यस्य तम् (कुत्सं=वज्रमिव वीरपुरुषम्) १.५३.१०. [तूर्व-यानपदयोः समासः। तुर्वः=तुर्वी हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरच्प्रत्ययः। यानम्=या प्रापणे (अदा०) धातोः करणे ल्युट्]

तुर्वशम् यस्तूर्णकारी वशंगतस्तं मनुष्यम् १.१७४.६. उत्तमं मनुष्यम् १.५४.६. हिंसकानां वशकरम् (आप्तं वीरजनम्) ६.४५.१. सद्यो वशगमनम् (यदुं=यत्नशीलं मनुष्यम्) ६.२०.१२. निकटस्थं जनम्, प्र०—तुर्वश इति अन्तिकनाम, निघं० २.१६, ७.१६.८. तुरा शीघ्रतया पर-पदार्थान् वष्टि काङ्क्षति तम् (यदुं=मनुष्यम्) १.३६.१८. **तुर्वशः**=सद्यो वशङ्करः (सज्जनः) ७.१८.६. **तुर्वशाय**=सद्यो वशकरणसमर्थाय (मनुष्याय) ५.३१.८. **तुर्वशे**=वेद-शिल्पादिविद्यावति मनुष्ये १.४७.७. **तुर्वशेषु**=तूर्वन्तीति तुरस्तेषां वशा वशङ्कर्त्तारो मनुष्यास्तेषु, प्र०—तुर्वश इति मनुष्यनाम, निघं० २.३, १.१०८.८. [तुर्वशाः मनुष्यनाम निघं० २.३. तुर्वशः अन्तिकनाम निघं० २.१६. तुरोपपदे वश कान्तौ (अदा०) धातोर्वा मूलविभुजादित्वात् कः प्रत्ययः]

तुर्वशायदू शीघ्रं वशंकरो यत्नवांश्च तौ मनुष्यौ, प्र०—तुर्वशा इति मनुष्यनाम, निघं० २.३. यदव इति च ४.३०.१७. [तुर्वशा-यदुपदयोः समासः। तुर्वशाः मनुष्यनाम निघं० २.३. यदवः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

तुर्वसि हिनस्ति ३३.६७. [तुर्वी हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लेट् पुरुषव्यत्ययः]

तुर्वीतये साधनैर्व्याप्ताय (जनाय) २.१३.१२. तुराणां शीघ्रकारिणां व्याप्तिरतस्यै (दाशुषे=दानकरण-शीलाय) १.६१.११. शत्रूणां हिंसकाय (राजजनाय) ४.१६.६. **तुर्वीतिम्**=हिंसकम् (पापिजनम्), प्र०—अत्र बाहुलकात् कीतिः प्रत्ययः १.११२.२३. तुर्वति हिनस्ति यस्तम् (दुष्टं जनम्) प्र०—अत्र हिंसाऽर्थात् तुर्वीधातोर्बाहुलकादौणादिकः कर्तृकारक ईति-प्रत्ययः १.३६.१८. दुष्टान् प्राणिनो दोषाँश्च हिंसन्तम् (वय्यं=ज्ञानवन्तं मनुष्यम्), प्र०—अत्र संज्ञायां क्तिन् 'बहुलं छन्दसि' इति ईडागमः १.५४.६. [तुर्वी हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक ईतिः प्रत्ययः। ततश्चतुर्थी। अथवा तुरोपपदे वी गति प्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोः क्तिन्]

तुलायै तोलनाय ३०.१७. [तुल उन्माने (चुरा०) धातोः 'तुल्यार्थैरतुलोपमाभ्याम्०' इति निपातनाद् अङ् णिलुक् च। ततश्चतुर्थी]

तुविकूर्मिः तुविर्बहुविधः कूर्मिः कर्मयोगो यस्य सः (इन्द्रः=परमैश्वर्ययुक्तो जनः) ३.३०.३. **तुविकूर्मिम्**=बहुकर्माणम् (इन्द्रं=हृद्यं पतिम्) ६.२२.५. [तुवि-कूर्मि-पदयोः समासः। तुवि बहुनाम निघं० ३.१. कूर्मिः=डुकृञ् करणे (तना०) धातोरौणादिको मिः। अकारस्योकारश्छान्दसः]

तुविकूर्मितमः अतिशयेन बहुकर्त्ता (इन्द्रः=राजा) ६.३७.४. [तुविकूर्मिप्राति० अतिशायने तमप्-प्रत्ययः]

तुविक्षत्राम् तुविर्बहु क्षत्रं धनं यस्यां ताम् (महीं=भूमिम्) २१.५. [तुवि-क्षत्रपदयोः समासः। तुवि बहुनाम निघं० ३.१. क्षत्रम्=धननाम निघं० २.१०.]

तुविग्रये वृद्धिनिमित्तोपदेशकाय (इन्द्राय=सभा-सेनेशाय) २.२१.२. [तुवि इत्युपपदे गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोरौणादिक इः प्रत्ययः। गुणाऽभावो बाहुलकात्। तुवि व्याख्यातम्]

तुविग्राभम् बहूनां ग्रहीतारम् (इन्द्रं=हृद्यं पतिम्) ६.२२.५. [तुवि इत्युपपदे ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोरण् कर्तरि। हस्य भश्छान्दसः]

तुविग्रीवः बहुबलयुक्ता सुन्दरी वा ग्रीवा यस्य सः (विद्वज्जनः) ५.२.१२. **तुविग्रीवाः**=तुविर्बलिष्ठा ग्रीवा येषान्ते (स्वादिष्ठाः पदार्थाः) १.१८७.५. [तुवि-ग्रीवा-पदयोः समासः। तुविग्रीवाशब्दौ व्याख्यातौ]

तुविग्रेभिः बहुशब्दवद्भिः (सत्वभिः=प्राणिभिः) १.१४०.६. ['तुवि' इत्युपपदे गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोरौणादिको ड्रट्-प्रत्ययो बाहुलकात्]

तुविजात! बहुषु विद्वत्सु प्रसिद्ध (विद्वन् जन) ५.२.१०. **तुविजातः**=बलादिगुणैः प्रसिद्धः (विद्वान्

राजजनः) २.२७.१. तुवेर्विद्यावृद्धात् प्रसिद्धविद्यः (अध्यापकः) १.१९०.८. **तुविजाताः**=तुविना बलेन सह प्रसिद्धाः (मरुतः=वायवः) १.१६८.४. **तुविजातौ**=बहुभ्यः कारणेभ्यो बहुषु वोत्पन्नौ प्रसिद्धौ (मित्रावरुणौ=सूर्यवायू), प्र०—तुवीति बहुनामसु पठितम्, निघं० ३.१, १.२.९. [तुवि-जातपदयोः समासः । तुविजातः बहुजातः नि० १२.३६.]

तुविद्युम्न बहुविधं द्युम्नं विद्याद्यनन्तं धनं यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=अन्तर्यामिन्नीश्वर), प्र०—द्युम्नमिति धननामसु पठितम्, निघं० २.१०. तुवीति बहुनामसु च, निघं० ३.१, १.९.६. तुविर्बहुविधं द्युम्नं धनं यशो वा यस्य (सज्जन) ३.१६.३. बहुप्रशंस (इन्द्र=राजन्) ६.१८.११. बहुधनकीर्त्तियुक्त (अग्ने=विद्वज्जन) ३.१६.६. **तुविद्युम्नस्य**=बहुयशसः (राज्ञः) ४.२१.२. बहुप्रशंसाधनस्य (सज्जनस्य) ६.१८.१२. **तुविद्युम्नाः**=बहुधनयशोऽन्विताः रुद्रासः=मध्यमा विद्वांसः) ५.८७.७. [तुवि-द्युम्नपदयोः समासः । तुवीति बहुनाम निघं० ३.१. द्युम्नम् धननाम निघं० २.१०.]

तुविद्युम्नासः तुवीनि बहूनि द्युम्नानि विद्याप्रकाशनानि येषान्ते (मरुतः=विद्वांसो जनाः) १.८८.३. [तुवि-द्युम्नपदयोः समासे जसोऽसुक्]

तुविनृम्ण बहुधनयुक्त (राजन्) ६.३१.५. बहुधन (इन्द्र=राजन्) ४.२२.६. **तुविनृम्णम्**=बहुविधं धनम् १.४३.७. **तुविनृम्णः**=तुवीनि बहूनि धनानि यस्य सः (प्रजापतिः=राजा) प्र०—तुवीति बहुनामसु पठितम्, निघं० ३.१, ७.१७. [तुवि-नृम्णपदयोः समासः । नृम्णम्=धननाम निघं० २.१०. बलनाम निघं० २.९.]

तुविप्रतिम् तुवीनां बहूनां पदार्थानां प्रतिमातरम् (नरं=परमेश्वरं सभासेनाध्यक्षं वा) प्र०—अत्रैकदेशेन प्रतिशब्देन प्रतिमातृशब्दार्थो गृह्यते १.३०.९. [तुवीति बहुनाम निघं० ३.१. तुवि-प्रतिपदयोः समासः]

तुविबाधम् यो बहून् शत्रून् बाधते तम् (इन्द्रं=सूर्यलोकम्) १.३२.६. [तुवीत्युपपदे बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोः क्विप्]

तुविब्रह्माणम् बहवो ब्रह्माणश्चतुर्वेदविदो विद्वांसो यस्य तम् (पुत्रं=सन्तानम्) ५.४५.५. [तुवि-ब्रह्मन्पदयोः समासः]

तुविमघस्य बहुधनस्य (जनस्य) ५.३३.६. **तुविमघा**=बहुविधं मघं पूज्यं विद्याधनं यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाध्यक्ष) प्र०—मघमिति धननामसु पठितम्, निघं० २.१०. 'मघमिति धननामधेयं मंहतेर्दानकर्मणः, नि० १.७. 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १.२९.२. **तुविमघासः**=बहुधनाः (नरः=नायका जनाः) ५.५८.८. बहुधनयुक्ताः (कवयः=विद्वांसो जनाः) ५.५७.८. [तुवि-मघपदयोः समासः । तुवीति बहुनाम निघं० ३.१. मघम् धननाम निघं० २.१०. 'तुविमघासः' प्रयोगे जसोऽसुक्]

तुविमन्यवः बहुक्रोधाः (भयङ्करा जनाः) ७.५८.२. [तुवि-मन्युपदयोः समासः । मन्युः क्रोधनाम निघं० २.१३.]

तुविम्रक्षः बहुस्नेहः (राजकर्मचारि जनः) ६.१८.२. [तुवि-मृक्षपदयोः समासः]

तुविम्रक्षासः बहुभिः सह सङ्गताः (नवग्वाः=नवीनगतयः) ६.६.३. [तुवि-म्रक्षपदयोः समासे जसोऽसुक्]

तुविराधसम् बहुधनधान्यम् (सर्वसेनाधिकारिपतिम्) ७.२३.५. **तुविराधसः**=बह्वैश्वर्यस्य (राज्ञः) ४.२१.२. बहुधनवतः (नॄन्) ५.५८.२. [तुवि-राधस्पदयोः समासः । तुवि बहुनाम निघं० ३.१. राधः धननाम निघं० २.१०.

तुविवाजः तुवि बहुविधो वाजो विद्या-बोधो यासां ताः (प्रजाः) १.३०.१३. **तुविवाजेभिः**=बहुवेगैर्बहुसङ्ग्रामैर्वा ६.१८.११. [तुवि-वाजपदयोः समासः । तुवीति बहुनाम निघं० ३.१. वाजः अन्ननाम निघं० २.७. बलनाम निघं० २.९. वाजे संग्रामनाम निघं० २.१७.]

तुविशग्म तुवि बहुविधानि शग्मानि सुखानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=महैश्वर्ययुक्त प्रजाजन) ६.४४.२. [तुवि-शग्मपदयोः समासः । तुवीति व्याख्यातम् । शग्मम् सुखनाम निघं० ३.६.]

तुविशुष्मः तुवि बहु शुष्मं बलं यस्य सः (सूर्यः) २.२२.१. [तुवि-शुष्मपदयोः समासः । शुष्मम् बलनाम निघं० २.९.]

तुविशुष्मा बहुबलसेनायुक्तौ (सभासेनेशौ) ६.६८.२. [तुविशुष्म इति व्याख्यातम् । ततः 'सुपां सुलुग०' त्याकारादेशः]

तुविश्रवस्तमम् अतिशयेन बह्वन्न-श्रवणयुक्तम् (पुत्रम्) ५.२५.५. **तुविश्रवस्तमः**=अतिशयेन बहुश्रुतः (महाविद्वान्) ३.११.६. [तुवि-श्रवस्पदयोः समासे अतिशायने तमप् । तुवीति व्याख्यातम् । श्रवस् अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०.]

तुविष्टमः अतिशयेन बली (इन्द्रः=सूर्यः) १.१८६.६. **तुविष्टमाय**=अतिशयेन तुविर्बहुस्तस्मै (इन्द्राय=

सभेशाय), प्र॰—तुविरिति बहुनाम, निघं॰ ३.१, १.१३०.२. [तुविर्बहुनाम, ततोऽतिशायने तमप्प्रत्ययः]

तुविष्टमा अतिशयेन बलिष्ठौ (अश्विनौ=वायु-विद्युतौ) ५.७३.२. [तुविरिति बहुनाम निघं॰ ३.१. ततोऽतिशायने तमप् । 'सुपां सुलुगिति' सूत्रेणाकारादेशः]

तुविष्मः बहुबलयुक्तः (इन्द्रः=सूर्यवद्राजा) ७.२०.४.

तुविष्मान् बहुबलाकर्षणयुक्तः (इन्द्रः=सूर्यलोकः) २.१२.१२. शरीरात्मबलयुक्तः (अध्यापको जनः) १.१९०.८. बलवान्, (विद्वज्जनः) प्र॰—तुविरिति बलनाम, निघं॰ ३.१, १.१६५.६. तुविषो बहवो बलवन्तो वीरा विद्यन्ते यस्य सः (सत्यवाग्जनः) १.१९०.३. प्रशंसित-बलः (राजा) ४.२९.३. वृद्धिमान् (सभाध्यक्षः) प्र॰—अत्र तुधातोर्बाहुलकादौणादिक इसि-प्रत्ययः स च कित् १.५५.१. बहुबलः (विविद्वान्=श्रेष्ठो विद्वान्) ४.५.३. [तुविष्प्राति॰ मतुप् । तुविष्=तु गतिवृद्धिहिंसासु (अदा॰) धातोरौणादिक इसिः प्रत्ययः]

तुविष्वणसम् बहूनां सेवकम् (राजानम्) ५.८.३. **तुविष्वणसः**=ये तुवींषि बलानि वन्वते याचन्ते ते (प्रजाजनाः) ४.६.१०. [तुविष्-वनस्पदयोः समासः । तुविष् इति पूर्वपदे व्याख्यातम् । वनस्=वन सम्भक्तौ (भ्वा॰)+असुन्]

तुविष्वणः तुविर्बहुविधः स्वनो येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः), प्र॰—अत्र व्यत्ययेनैकवचनम् १.१६६.१. [तुविष-स्वनपदयोः समासः । तुविष् व्याख्यातम् । स्वनः=स्वनशब्दे (भ्वा॰) धातोः 'स्वनहसोर्वा' इत्यप्प्रत्ययः]

तुविष्वणि बलसेवने ५.१६.३. बहुस्वनम् (शर्धः=बलम्) ६.४८.१५. [तुविष्-उपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा॰) धातोरौणादिक इन्]

तुविष्वणिः परमाणूनामेकीभूतानां विभक्ता सूर्यः २.१७.६. बलसेवी (अग्निः=पावकः) ५.५६.७. यस्तुविषो बहून् पदार्थान् वनति सम्भजति सः (जीवः) १.५८.४. [तुविष्-वनिपदयोः समासः । तुविरिति बहुनाम निघं॰ ३.१. वनिः=वन सम्भक्तौ (भ्वा॰) धातोरौणादिक इन्-प्रत्ययः]

तुविस्वनिः तुविर्वृद्धा स्वनिरुपदेशो यस्य सः विद्वान् १.१२७.६. [तुविस्-स्वनिपदयोः समासः । तुविस्=तु गतिवृद्धिहिंसासु (अदा॰) धातोरौणादिक इसिः स्वनिः=स्वनशब्दे (भ्वा॰) धातोरौणा॰ इन्प्रत्ययः]

तुव्योजसम् बहुबलपराक्रमम् ४.२२.८. [तुवि-ओजस्-पदयोः समासः । तुवीति व्याख्यातम् । ओजस् बलनाम निघं॰ २.९.]

तुष्टुवानाः प्रशंसन्तः (विद्वांसो जनाः) ७.५१.३. तुष्टुवांसः=पदार्थगुणान् स्तुवन्तः (मनुष्याः) १.८९.८. स्तुति और आज्ञा का अनुष्ठान सदा करते हुए (हम लोग), आर्याभि॰ २.२७, २५.२१. स्तोतारः (विद्यार्थिजनाः) २.२८.२. स्तुवन्तः (देवाः=विद्वांसो जनाः) २५.२१. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा॰) धातोर्लिटः स्थाने कानच्]

तूणवध्मम् यस्तूणवं धमति तम् (जनम्) ३०.१९.

तूताव वर्धयति, प्र॰—अत्रान्तर्गतो ण्यर्थः 'तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य' इति दीर्घः १.९४.२. [तु गतिवृद्धिहिंसासु (अदा॰) धातोः सामान्ये लिट् । 'तुजादीनामि' त्यभ्यासस्य दीर्घः । तूताव पदनाम निघं॰ ४.१.]

तूतुजानः क्षिप्रकारी (सूरिः=विद्वज्जनः) ६.२९.५. त्वरमाणः (इन्द्रः=वायुः), प्र॰—तूतुजान इति क्षिप्रनामसु पठितम्, निघं॰ २.१५, १.३.६. सद्यः कर्त्ता (सूरिः=विद्वान् जनः) ६.३७.५. [तूतुजानः क्षिप्रनाम निघं॰ २.१५. तुज हिंसायाम् (भ्वा॰) धातोर्लिटि कानचि 'तुजादीनाम्' इत्याभ्यासस्य दीर्घः । तूतुजानः त्वरमाणः नि॰ ६:२०.]

तूतुजिम् बलवन्तम् (इभं=हस्तिनम्) ६.२०.८. **तूतुजिः**=बलवान् (इन्द्रः=राजा) ७.२८.३. शीघ्रकारी (इन्द्रः=राजा) ४.३२.२. [तुज हिंसायाम् (भ्वा॰) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि॰' अ॰ ३.२.१७१. वा॰सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च । 'तुजादीनाम्॰' इत्यभ्यासस्य दीर्घः । तूतुजिः क्षिप्रनाम निघं॰ २.१५.]

तूतोत् वर्द्धयेत् २.२०.५. **तूतोः**=वर्धय ६.२६.४. [तु गतिवृद्धिहिंसासु (अदा॰) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः]

तूपरः हिंसकः (पशुः) २४.१. **तूपराः**=हिंसकाः (प्राणिनः) २४.१५. **तूपरौ**=अविद्यमानश्रृङ्गौ (पशू) २९.५९. [तूपरो भवति, प्राजापत्यो ह्येष देवतया तै॰ सं॰ २.१.६.५. यत्तूपरस्तदश्वानाम् (रूपम्) जै॰ २.३७१.]

तूयम् तूर्णम् प्र॰—तूयमिति क्षिप्रनाम, निघं॰ २.१५, ७.५९.४. क्षिप्रम् ६.५.६. शीघ्रम् ३.५३.१६. तूर्णं सुखकरम् (पुरोडाशम्) ३.५२.८. वर्द्धकम् (यज्ञं=शिल्प-विद्याप्रकाशमयम्) २९.३३. [तूयम् क्षिप्रनाम निघं॰ २.१५. उदकनाम निघं॰ १.१२.]

तूर्णयः सर्वत्र विद्यां प्रकाशयितुं त्वरमाणाः (विश्वेदेवाः=समस्ता विद्वांसो जनाः), प्र॰—'ञित्वरा सम्भ्रमे,

इत्यस्माद् 'वहिश्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्यो नित्' उ० ४.५३. अत्र नेरनुवर्त्तनात् तूर्णिरिति सिद्धम् १.३.८. **तूर्णम्**=सद्योगमकम् (अग्नि=वह्निम्) ३.३.५. शीघ्रकारिणम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.५१.२. **तूर्णः**=सद्योगामी (रथः=यानम्) ३.११.५. [ञित्वरा सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोः 'वहिश्रिश्रुयु०' उ० ४.५१. सूत्रेण निः प्रत्ययो निच्च। 'ज्वरत्वर०' अ० ६.४.२०. सूत्रेण वकारस्योपधायाश्च स्थाने ऊठ्। तूर्णिः क्षिप्रनाम निघं० २.१५. तूर्णिः कर्म नि० ७.२७. सर्वं ह्येष पाप्मानं तरति तस्मादाह तूर्णिर्हव्यवाडिति श० १.४.२.१२. वायुर्वै तूर्णिर्वायुर्हीदं सर्वं सद्यस्तरति यदिदं किञ्च ऐ० २.३४. तूर्णिर्हव्यवाडित्याह, सर्वं ह्येष (अग्निः) तरति तै० सं० २.५.९.३.]

तूर्णितमः अतिशयेन त्वरिता (अग्निः=सेनापति) १३.११. अतिशीघ्रकारी (अग्निः=विद्वान्राजा) ४.४.३. [तूर्णिरिति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने तमप्]

तूर्ण्यर्थः तूर्णिः सद्योऽर्थो यस्य सः (राजपुरुषः) ३.५२.५. **तूर्ण्यर्थाः**=तूर्णयः सद्यो गामिनोऽर्था यासु ताः (धेनवः=वाचः) ५.४३.१. [तूर्णि-अर्थपदयोः समासः। तूर्णिरिति व्याख्यातम्]

तूर्य्य हिन्धि ३३.६६. [तूरी गतित्वरणहिंसनयोः (दिवा०) धातोर्लोट्]

तूर्वतम् हिंस्यातम् ६.५०.१०. [तुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'उपधायाञ्च' इति दीर्घः]

तूर्वन् हिंसन् (जनः) ६.१५.५. **तूर्वन्तः**=हिंसन्तः (आयवः=मनुष्याः) ६.१४.३. [तुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। 'उपधायाञ्च' इति दीर्घः]

तूर्वयाणम् तूर्वं शीघ्रगामि यानं यस्यास्ताम् (क्षां=पृथिवीम्) ६.१८.१३. तूर्वाणि शीघ्रगमनानि यानानि यस्मात्तम् (अग्निम्) १.१७४.३. तूर्वाः शत्रुबलहिंसका योद्धारो यानेषु यस्य तम् (कुत्सं=वज्रमिव वीरपुरुषम्) १.५३.१०. [तूर्व-यानपदयोः समासः]

तूर्वसि हिनस्ति ३३.६७. [तुर्वी हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्। 'उपधायाञ्च' इति दीर्घः]

तूर्षु शीघ्रकारिषु १.११२.४. [ञित्वरा सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'ज्वरत्वर०' अ० ६.४.२०. सूत्रेण वकारस्योपधायाश्च ऊठ्]

तूष्णीम् मौनमालम्ब्य २.४३.३. मौन से ही, आर्याभि० १.५३, २.४३.३. [स्वरादिपाठाद् अव्ययत्वम्। यदा वै तूष्णीमास्ते प्राणमेव वागप्येति जै० २.५०.]

तृक्षौ विद्याशुभगुणप्राप्ते (जने=मनुष्ये) ६.४६.८. [तृक्ष गतौ (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽन्प्रत्ययः]

तृणम् घासविशेषम्, भा०—भक्ष्य, भोज्यं पेयं च श्रेष्ठमौषधम् २५.३१. हिंसितव्यं घासम् १.१६१.११. [तृह हिंसायाम् (रुधा०) धातोः 'तृहेः क्नो हलोपश्च' उ० ५.८. सूत्रेण क्न-प्रत्ययो हकारस्य च लोपः]

तृणस्कन्दस्य यस्तृणानि स्कन्दति गच्छति गमयति वा तस्य (राज्ञः) १.१७२.३. [तृणं व्याख्यातम्। तदुपपदे स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोरण्-प्रत्ययः]

तृणा तृणानि घासविशेषान् ३.२९.६. [तृणमिति व्याख्यातम्। तस्य द्वितीयाबहुवचने 'शेर्लोपश्छन्दसि' इति शेर्लोपः]

तृतीयम् त्रित्वसङ्ख्याकं विद्याजन्म १.१५५.५. त्रयाणां पूरकम् (सवनं=सुखैश्वर्यम्) ४.३४.४. अष्टाचत्वारिंशद्वर्षपरिमितसेवितं ब्रह्मचर्यम् ४.३५.९. तीसरे (नाकं=दुखरहित वानप्रस्थाश्रम को) सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. तीसरे (नियुक्त पति को) स० प्र० १५३, १०.८५.४०. **तृतीयः**=त्रयाणां सङ्ख्यापूरकः प्राणादिस्वरूपः (जनिता=पर्जन्यः) १७.३२. **तृतीये**=त्रयाणां पूरके (रजसि=लोके) १२.२०. जीवप्रकृतिभ्यां विलक्षणे, भा०—शुद्धस्वरूपे (धामन्=ईश्वरे) ३२.१०. सांसारिक सुख-दुःख से रहित नित्यानन्द-युक्त (धामन्=ईश्वर) में सं० वि० ७, ३२.१०. एक स्थूल जगत् पृथिव्यादि, दूसरे—सूक्ष्म आदिकारण प्रकृति से भिन्न तीसरे सर्वदोष रहित अनन्ताऽऽनन्दस्वरूप परब्रह्म धाम में आर्याभि० २.६, ३२.१०. **तृतीयैः**=वसुरुद्राभ्यां विलक्षणैर्द्वादशमासैः २०.१२. **तृतीयस्याम्**=तृतीयकक्षायां वर्त्तमानायाम् (पृथिव्याम्) ५.९. **तृतीया**=त्रयाणां पूरणा क्रिया २५.४. [त्रि-संख्यावाचिनः प्राति०पूरणार्थे 'त्रेः सम्प्रसारणञ्च' अ० ५.२.५५. सूत्रेण तीयः प्रत्ययः त्रेश्च सम्प्रसारणम्। तृतीयप्राति० सप्तम्यां 'विभाषा द्वितीयातृतीयाभ्याम्' अ० ७.३.११५. सूत्रेण स्याडागमः। बहुदेवत्यं तृतीयमहः कौ० २०.४. जागतमेतदहर्यत्तृतीयम् तां० १२.७.३. उद्धतमिव वै तृतीयमहः। तां० १२.४.४. अन्तरिक्षदेवत्यमेतदहर्यत्तृतीयम्। तां० १२.१.८.२.]

तृत्सवः शत्रूणां हिंसकाः (वीरा राजपुरुषाः) ७.१८.१५. हिंस्राः (राजादयो जनाः) ७.१८.१९. **तृत्सवे**=हिंसकाय (शत्रवे) ७.१८.१३. **तृत्सुभ्यः**=हिंसकेभ्यः (शत्रुभ्यः) ७.१८.७. **तृत्सूनाम्**=अनाहतानाम् (अध्येतृ-

जनानाम्) ७.३३.६. [उतृदिर् हिंसानादरयोः (रुधा०) धातोरिच्छायामर्थे सनि 'सनाशंसभिक्ष उः' अ० ३.२.१६८. सूत्रेण उः प्रत्ययः । 'छन्दसि वे' ति द्विर्वचनं न भवति]

तृन्धि हिन्धि ५.१२.२. [उतृदिर् हिंसानादरयोः (रुधा०) धातोर्लोट्]

तृपत् तृप्यति ७.५६.१०. तृप्यतु ३.३२.२. [तृप तृप्तौ (तुदा०) धातोर्लेट्]

तृपत् तृप्तः सन् (इन्द्रः=विद्वज्जनः) २.११.१५. तृप्यत् (सुतः=पुत्रः) २.३६.५. तृप्यन् (सूर्यः), प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शः २.२२.१. [तृप प्रीणने (दिवा०) धातोः शतृप्रत्ययः । विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययः । तृप् तृप्तौ (तु०) धातोर्वा शतृ । तृप प्रीणने (दिवा०) धातोर्वा 'संश्चत्तृपद्वेहत्' उ० २.८५. सूत्रेणातिः प्रत्ययः]

तृप्णवः ये तृप्यन्ति ते (सोमलतादयः) ३.४२.२. [तृप प्रीणने (दिवा०) धातोर्बाहुलकादौणादिको णुः प्रत्ययः]

तृप्णुत सुखयत १.११०.१. **तृप्णुहि**=तृप्तो भव २.१६.६. [तृप तृप्तौ (तु०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

तृप्ताः प्रीताः (विप्राः=विद्वांसो जनाः) २१.११. प्रीणिताः (विप्राः=मेधाविनो जनाः) ७.३८.८. [तृप प्रीणने (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

तृप्तांशवः तृप्ता अंशवो येभ्यस्ते (सोमासः=सोमाद्योषधिरसाः) १.१६८.३. [तृप्त-अंशुपदयोः समासः]

तृप्तिः पूर्ण तृप्ति, सं० वि० १९७, ९.११३.१०. [तृप प्रीणने (दिवा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । तृप्तिः उदकनाम निघं० १.१२.]

तृप्यतु प्रीणातु ८.३७. **तृप्यन्तु**=प्रीणन्तु ७.१५. [तृप प्रीणने (दिवा०) धातोर्लोट्]

तृम्पताम् सुखयतम् ३.१२.३. **तृम्पतु**=प्रीणयति प्र०—अत्र लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२३.७. **तृम्पन्तु**=प्रीणन्तु ७.१५. [तृम्प तृप्तौ (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्तर्गतो ण्यर्थश्च]

तृळ्हा हिंसितानि (रक्षांसि=दुष्टाञ्जनान्) ६.१६.४८. **तृळ्हाः**=हिंसिताः (अमित्राः=शत्रुजनाः) १.१३३.१. [तृहू हिंसार्थे (तुदा०) धातोः क्तः । अन्यत्र शेर्लोपः । ऊदित्त्वादिड्विकल्पः]

तृषन् तृषिता भवन्तु, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् ६.३१. [ञितृष पिपासायाम् (दिवा०) धातोर्लुङ् । पुष्पादित्वादङ्-प्रत्ययः । अडभावश्छान्दसः]

तृषाणः तृपातुर इव (राजा) ५.३६.१. **तृषाणान्**=पिपासितान् (राजसेवकान्) ४.१९.७. [ञितृष पिपासायाम् (दिवा०) धातोर्लिटः कानच् । द्वित्वं छान्दसत्वान्न भवति]

तृषितः यस्तृष्यति पिपासति सः (गौरः=गौरगुणविशिष्टो मृगः) १.१६.५. [ञितृष पिपासायाम् (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

तृषु क्षिप्रम्, प्र०—तृष्विति क्षिप्रनाम, निघं० २.१५, ४.७.११. शीघ्रम् १.५८.२. **तृषुणा**=क्षिप्रेण ४.७.११. **तृषुम्**=क्षिप्रकारिणम् (अग्निं=शिल्पिविद्वांसम्) ४.७.११. [तृषु क्षिप्रनाम निघं० २.१५. तरतेर्वा त्वरतेर्वा नि० ६.१२.]

तृषुच्यवसः तृषु क्षिप्रं ये च्यवन्ते गच्छन्ति (मरुतः=शूरवीरा जनाः) ६.६६.१०. [तृषु-च्यवस्पदयोः समासः तृषु क्षिप्रनाम निघं० २.१५. च्यवस्=च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोरसुन्प्रत्ययः]

तृषुच्युतम् क्षिप्रं पतितम् (शिशुम्), प्र०—तृष्विति क्षिप्रनाम, निघं० २.१५, १.१४०.३. [तृषु-च्युतपदयोः समासः]

तृष्टम् पिपासितम् (विद्याया इच्छुकजनम्) ३.९.३. [ञितृष पिपासायाम् (दिवा०) धातोः क्तः । इड्-अभावश्छान्दसः]

तृष्णजम् तृष्णा जायते यस्मात् तम् (मृगम्=पशुविशेषं परमेश्वरम्) प्र०—अत्र जनधातोर्डः 'ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम्' इति ह्रस्वत्वम् १.१०५.७. [तृष्णा इत्युपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'पञ्चम्यामजातौ' अ० ३.२.९८. सूत्रेण उः प्रत्ययः । पूर्वपदस्य च 'ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम्' अ० ६.३.६३. सूत्रेण ह्रस्वत्वम् । तृष्णा=ञितृष पिपासायाम् (दिवा०) धातोः 'तृषिशुषिरसिभ्यः कित्' उ० ३.१२. सूत्रेण नः प्रत्ययः, स च कित् । स्त्रियां टाप् । रषाभ्यामिति णत्वम्]

तृष्णजः प्राप्ततृष्णाः (सूर्यवज्जनाः) ७.३३.५. **तृष्णजे**=तृषितुं शीलाय (गोतमाय=भृशं मार्गं गन्त्रे जनाय) १.८५.११. यस्तृष्णाति तस्मै (जिज्ञासवे जनाय) ५.५७.१. [ञितृष पिपासायाम् (दिवा०) धातोस्तच्छीलादिष्वर्थेषु 'स्वपितृषोर्नजिङ्' अ० ३.२.१७२. सूत्रेण नजिङ्-प्रत्ययः । तृष्णाजे, तृष्णक् तृष्यतेः नि० ११.१५.]

तृष्णया तृष्यते यया पिपासया लोभगत्या वा तया १.३८.६. [ञितृष पिपासायाम् (दिवा०) धातोः 'तृषिशुषि-

रसिभ्यः कित्' उ० ३.१२. सूत्रेण नः प्रत्ययः किच्च । स्त्रियां टाप्]

तृष्यते पिपासवे (जनाय) १.१७६.६. तृपाऽऽक्रान्ताय (जनाय) १.१७५.६. तृषिताय (पायनाय=पानाय) १.११६.६. **तृष्यन्तम्**=तृषाऽऽतुरमिव (पतिम्) ५.६१.७. [ञितृष पिपासायाम् (दिवा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

तृष्वीम् पिपासिताम् (मृगीम्) ४.४.१. क्षिप्रगतिम्, प्र०—तृष्विति क्षिप्रनाम, निघं० २.१५. ततो 'वोतो गुणवचनाद्' इति ङीष् १३.६. [तृष्वीति क्षिप्रनाम तरतेर्वा त्वरतेर्वा निघं० ६.१२.]

तृꣳहतीभ्यः हन्त्रीभ्यः (सेनाभ्यः) १६.२४. [तृह हिंसायाम् (रुधा०) धातोश्शत्रन्तान् ङीप् स्त्रियाम्]

तेजनेन तीव्रेण कर्मणा १.११०.५. [तिज निशाने (भ्वा०) धातोर्ल्युडन्तात् तृतीया । तेजतेरुत्साहकर्मणः नि० १०.६. वज्रो वै तेजनम् मै० ४.२.६.]

तेजमानः तीक्ष्णीकृतः (स्वधितिः=विद्युद्वज्रः) ३.८.११. [तिज निशाने (भ्वा०) धातोः शानच् । तेजतेरुत्साहकर्मणो वा नि० १०.६. 'गुप्तिजकिद्भ्यः सन्' इति प्राप्तोऽपि सन् न भवति छान्दसत्वात्]

तेजसा तीक्ष्णेन ज्योतिषेव शत्रुदाहकत्वेन १०.३०. निर्दीनतया प्रागल्भ्येन च, ऋ० भू० १६१, प्रतापेन १.५६.२. तीक्ष्णेन (सूर्येण) ३८.२७. जलेन, प्र०—तेज इत्युदकनाम, निघं० १.१२, २३.४०. तीक्ष्णस्वरूपेण (सूर्यप्रकाशेन) २१.२३. प्रकाशेन २०.८०. निशातेन तीव्रेण कर्मणा १५.७. प्रागल्भ्येन २८.२. तीक्ष्णप्रतापेन २८.६. तीक्ष्णीकरणेन १७.७२. **तेजसे**=तेजोवर्धनाय ३०.११. न्यायादिसद्गुणप्रकाशाय, ऋ० भू० २१८, २०.३. प्रागल्भ्याय १६.७६. **तेजः**=प्रागल्भ्यम् १६.६. प्रकाशः १६.८. प्रकाशमयः, अ०—तेजोवत्सर्वविद्यादर्शकः (ईश्वरः), भा०—अग्नेर्ज्वाला ३८.२५. ज्ञानप्रकाशम् २०.२३. तीव्रप्रज्ञः (जगदीश्वरः) २०.२३. स्वप्रकाशः १.३१. प्रकाशयुक्तम् (चक्षुः=नेत्रम्) १६.८६. स्वप्रकाश अनन्ततेज अविद्याऽन्धकार से रहित (ईश्वर), आर्याभि० २.६, १६.६. तेजस्वीपन, सं० वि० १४४, अथर्व० १२.५.७. यज्ञोत्थं तेजः ३३.११. प्रकाशहेतुः (सूर्यः, ईश्वरो वा) १.३१. प्रगल्भता, धृष्टता, निर्भयता, निर्दीनता, ऋ० भू० १०२, अथर्व० १२.५.७. [तेज इत्युदकनाम निघं० १.१२. ज्वलतो नाम निघं० १.१७. तिज निशाने (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः । तेजतेरुत्साहकर्मणो वा (नि० १०.६.) असुन् । तेजो वा अग्निः श० २.५.४.८. तेजोऽसि तपसि श्रितम् । समुद्रस्य प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.३. तेजो वै वायुः तै० ३.२.६.१. तेज एव श्रद्धा श० ११.३.१.१. तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि (आज्य !) श० १.३.१.२८. तेज आज्यम् तै० ३.३.६.३. तेजो हिरण्यम् तै० ३.१२.५.१२. तेज उद्यतः (प्रवर्ग्यः) तै० आ० ५.११.४. तेजः प्रवर्ग्यः (सूर्यः) मै० २.२.८. तेजः प्रातःसवन आत्मन् दधीत तै० सं० ३.२.६.२. तेजो वसोर्धारा तै० सं० ५.४.८.१. तेजो वाऽग्निष्टोमस्तेजो विषुवत् जै० २.३८७. तेजो वै त्रिणवः स्तोमानाम् जै० २.२१६. तेजो वै त्रिवृत् तै० सं० ५.५.८.१. मै० ४.४.१० तेजो वै प्रातःसवनम् (यज्ञायज्ञीयम्) मै० ४.७.६. जै० ३.२६०. तेजो वै ब्रह्मवर्चसं ज्योतिरग्निष्टोमः जै० २.३१२. तेजो वै मदन्तीः मै० ३.७१०. तेजो वै यूपः मै० ३.६.३. तेजो वै शुक्रो ब्रह्मवर्चसम् मै० ४.६.३. तेजो वै हिरण्यम् तै० सं० ५.१.१०.५. मै० १.११.८. काठ० ११.४. पशवो वै तेजो ब्रह्मवर्चसम् मै० १.८.३. समुद्रोऽसि तेजसि श्रितः, अपां प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.४.]

तेजस्वि परमविद्यायुक्त तथा संसार में सबसे अधिक प्रकाशित (ईश्वर), आर्याभि० २.१. [तेजस् इति व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थे 'अस्मायामेधास्रजो विनिः' अ० ५.२.१२१. सूत्रेण विनिः प्रत्ययः]

तेजिष्ठया याऽतिशयेन तीव्रा तेजिष्ठा सेना नीतिर्वा तया १.५३.८. अतिशयेन तेजस्विन्या (शस्त्र्या) २.२३.१४. **तेजिष्ठा**=अतिशयेन तेजस्विनी (अरतिः=प्राप्तिः) ६.१२.३. [तेजस् इति व्याख्यातम् । ततो विनिः प्रत्ययान्तादतिशायन इष्ठन्प्रत्ययान्तात् स्त्रियां टाप् । 'विन्मतोर्लुक्' अ० ५.३.६५. सूत्रेण विनो लुक्]

तेजीयसा तेजस्विना शुद्धस्वरूपेण (मनसः=अन्तःकरणेन) ३.१६.३. [तेजस्विन्प्राति० अतिशायन ईयसुन् । 'विन्मतोर्लुक्' इति विनो लुक्]

तेतिक्ते भृशं तीक्ष्णां करोति ४.२३.७. [तिज निशाने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि 'दाधर्तिदर्धर्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेणात्मनेपदं निपात्यते]

तेतिजानः भृशं तीक्ष्णः (स्वधितिः=वज्रः) ५.४३. [तिज निशाने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि लिटि कानच्प्रत्ययः]

तेदनीम् श्रवणक्रियाम् २५.२.

तोकम् सद्योजातमपत्यम्, भा०—पुत्रपौत्रादिकम् ३४.३३. अल्पमपत्यम् २.२५.२. वर्धकम् (तनयम्=

अपत्यम्) ६.१३.६. पुत्रादिकम् (भा०—अपत्यम्) १८.७७. **तोकस्य**=सन्तानस्य १.८.६. ह्रस्वस्याऽपत्यस्य २.३०.५. **तोकाय**=सद्यो जातायाऽपत्याय बालकाय प्रजायै वा १.४३.२. ह्रस्वाय बालकाय १.११४.६. सद्योजाताय पञ्चवार्षिकाय (अपत्याय) ४.१२.५. अल्पवयसे (सन्तानाय) ६.५०.७. अल्पाय (तनयाय=कुमाराय) ५.६९.३. अतिबालकाय १.१८९.२. **तोके**=ह्रस्वे तनये, पं० वि० अल्पे (व्यवहारे) २.२.११. [तुज हिंसाबलादाननिकेतनेषु (चुरा०) धातोः संज्ञायां घः प्रत्ययः। तोकं तुद्यतेः नि० १०.७. तोकं पुत्रांश्च नि० १२.७. तोकम् अपत्यनाम निघं० २.२. प्रजा वै तोकम् श० ७.५.२.३९.]

तोकवत् प्रशंसितानि तोकान्यपत्यानि यस्मिँस्तत् (सुवीर्यं=शोभनं बलं यस्मात्तत्) ३.१३.७. [तोकं व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां मतुप्]

तोकसाता तोकानामपत्यानां विभाजने ६.१८.६. [तोक-सातिपदयोः समासः। 'सुपां सुलुग्' इति सप्तम्याः स्थाने आकारादेशः। तोकं व्याख्यातम्। सातिः=षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः क्तिन्प्रत्ययः। 'जनसनखनाम्०' अ० ६.४.४२. सूत्रेणाकारादेशः]

तोक्मभिः अपत्यैः २१.३१. [तोक्म अपत्यनाम निघं० २.२.]

तोक्मानि अपत्यानि, भा०—यज्ञाऽर्हाण्यपत्यानि, प्र०—तोक्मेत्यपत्यनाम, निघं० २.२, १९.१३. **तोक्मभिः**=बालकैः १९.८१. [तोक्म अपत्यनाम निघं० २.२.]

तोतः तुवन्ति जानन्ति प्राप्नुवन्ति हिंसन्ति वा येन सः (वाग्विद्युद्वा), प्र०—अत्र 'तु गतिवृद्धि-हिंसासु, इति धातोर्बाहुलकादौणादिकस्तन्-प्रत्ययः ४.२२.

तोदस्य प्रेरणस्य ६.६.६. व्यथायाः ६.१२.१. **तोदः**=शत्रूणां हन्ता (इन्द्रः=राजा) ४.१६.११. व्यथनम् ६.१२.३. [तुद व्यथने (तुदा०) धातोर्घञ्प्रत्ययः। कर्त्तरि वाच्प्रत्ययः। तोदः तुद्यतेः नि० ५.७.]

तोदस्येव व्यथकस्येव (शत्रुजनस्येव) १.१५०.१. [तोदस्य इव पदयोः समासः]

तोशतमाः अतिशयेन प्रीताः सन्तः (देवाः=विद्वांसो जनाः) १.१६९.५. [तोशप्राति० अतिशायने तमप्प्रत्ययः। तोशः=तुष प्रीतौ (दिवा०) धातोर् अच्-प्रत्ययः। वर्णव्यत्ययेन षस्य शकारः]

तोशमानाः सन्तुष्टिकरौ (शुनासीरा=वायुसूर्यौ), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन शः, विकरणाऽऽत्मनेपदव्यत्ययौ च १२.६९. [तुष प्रीतौ (दिवा०) धातोः शानच्। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः! वर्णव्यत्ययेन षस्य शकारः। व्यत्ययेन शप् आत्मनेपदञ्च]

तोशा वर्धकौ विज्ञातारौ (इन्द्राग्नी=सभासेनेशौ) ३.१२.४. [तुष प्रीतौ (दिवा०) धातोः कर्त्तरि अच्-प्रत्ययः। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः। वर्णव्यत्ययेन षस्य शकारः]

तौग्र्यम् बलदातृषु भवम् (प्रसिद्धं जनम्) १.१८२.६. बलवतो हिंसकस्य राज्ञः पुत्रं राजन्यम् १.११८.६. **तौग्र्यः**=तुग्रा बलिनस्तेषु भवः (जिव्रिः=जीर्णवृद्धो विद्वज्जनः) १.१८०.५. तुग्रेण बलेन निर्वृत्तः सेनावृन्दः १.११७.१५. **तौग्र्याय**=तुग्रेषु बलिष्ठेषु भवाय (दृढप्लवाय) १.१८२.५. बलेषु साधवे (कर्मणे) १.१५८.३. [तुग्रः=तुज हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिको बाहुलकाद् रक्प्रत्ययः। बाहुलकात् कुत्वम्। तुग्रप्राति० भवार्थे साध्वर्थे निर्वृत्तार्थे वा ण्यः प्रत्ययश्छान्दसः। अथवा यत् प्रत्ययान्तात् स्वार्थे प्रज्ञादित्वाद् अण्]

त्मनम् आत्मानम्, प्र०—अत्र 'वा छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इत्याकारलोप उपधादीर्घत्वनिषेधश्च। समीक्षा—सायणाचार्येणेदं पदमुपधादीर्घत्वनिषेधकरं वचनमविज्ञायाऽशुद्धं व्याख्यातम् १.६३.८. आत्मनि ४.४.९. **त्मना**=आत्मना, अ०—तीव्राऽऽत्मना, प्र०—अत्र छान्दसो वर्णलोप इत्याकारलोपः १५.३७. आत्मना जीवेन १.६९.५. आत्मनाऽन्तःकरणेन २.२५.२. आत्मना मनसा प्राणेन वा १.४१.६. भा०—सुप्रकाशिताऽऽत्मना २७.२१. **त्मने**=आत्मने (तनयाय=पुत्राय) १.११४.६. स्वात्मने १.१८४.५. आत्मनि १.१८३.३. [अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोः 'सातिभ्यां मनिन्मनिणौ' उ० ४.१५३. सूत्रेण मनिण्प्रत्ययः। आत्मन्प्राति० टाप्-प्रत्यये 'मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः' अ० ६.४.१४१. सूत्रेणाकारलोपः। अन्यत्र 'आङोऽन्यत्रापि छन्दसि लोपो दृश्यते' वा० सूत्रेणाकारलोपः। त्मना आत्मना नि० ३.२२.]

त्मन्या आत्मनि साध्व्या क्रियया १.१८८.१०. आत्मना, प्र०—अत्राऽऽकारलोपो विभक्तेर्यादेशश्च २९.१०. प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति टा–स्थाने याऽऽदेशः २०.४५. [आत्मन्प्राति० टाप्-प्रत्यये 'मन्त्रेष्वाङ्यादेरात्मनः' अ० ६.४.१४१. सूत्रेणाकारलोपः। टाप्स्थाने च यादेशश्छान्दसः। पूर्वत्र साध्वर्थे यत् प्रत्ययः। त्मन्या आत्मना आत्मानम् नि० ८.१७.]

त्यक्तेन वर्जितेन तच्चित्तरहितेन (भावेन) ४०.१. अन्याय के त्याग और न्यायाचरणरूप धर्म से, स० प्र० २३८, ४०.१. [त्यज हानौ (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। ततस्तृतीयैकवचनम्]

त्यजसः त्यक्तुं योग्यो व्यवहारः ४.४३.४. **त्यजसा**=संसारसुखत्यागेन १.११६.८. त्यागेन ६.३.१. [त्यज हानौ (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः। त्यजः क्रोधनाम निघं० २.१३.]

त्यायताम् संहन्यताम् ६.१५. [स्त्यै ष्ट्यै शब्दसंघातयोः (भ्वा०) धातोः कर्मणि लोट्। सकारलोपश्छान्दसः]

त्रययाय्यः यस्त्रयं रक्षकं याति प्राप्नोति सः (अतिथिः=विद्वज्जनः) ६.२.७. [त्रयोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोरौणादिक आय्यः प्रत्ययः। त्रयः=त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अच्-प्रत्ययः। वर्णव्यत्ययेनाकारस्य अकारः]

त्रयस्त्रिंशत् त्र्यधिका त्रिंशत् (सङ्ख्या) १८.२४. **त्रयस्त्रिंशतम्**=एतत्सङ्ख्याकान् पृथिव्यादीन् १.४५.२. [त्रि-त्रिंशत्पदयोः समासः। 'त्रेस्त्रयः' अ० ६.३ ४८. सूत्रेण त्रेः स्थाने 'त्रयस्' इत्यादेशः]

त्रयस्त्रिंशद्देवा अष्टौ वसवः, एकादश रुद्रा, द्वादशाऽऽदित्या, इन्द्रः प्रजापतिश्च, ऋ० भू० ६६, अथर्व० १४.२३, ४.२३. (त्रयस्त्रिंशत् देवपदयोः समासः। त्रयस्त्रिंशत्-पदं व्याख्यातम्]

त्रयस्त्रिंशः त्रयस्त्रिंशत्-प्रकारः (विष्टपं=व्याप्तिम्) १४.२३. एतत्सङ्ख्यायाः पूरकः (स्तोमः=स्तुतिविषयः) १४.२६. **त्रयस्त्रिंशाय**=एतत्सङ्ख्याताय (सवित्रे=ऐश्वर्योत्पादकाय पुरुषाय) २६.६० **त्रयस्त्रिंशाः**=त्र्यधिकास्त्रिंशत् (देवाः=पृथिव्यादयः) २०.११. **त्रयस्त्रिंशे**=वस्वादिसमूहे, भा०—अष्टौ वसवः; एकादश रुद्रा, द्वादशाऽऽदित्या, विद्युद्यज्ञश्चेति त्रयस्त्रिंशद्दिव्ये पदार्थसमूहे २१.२८. (त्रयस्त्रिंशत्पदं व्याख्यातम्। ततः पूरणार्थे 'तस्य पूरणे डट्' अ० ५.२.४८. सूत्रेण डट्प्रत्यये टेर्लोपः। स्तोमार्थे वा 'स्तोमे डविधिः पञ्चदशाद्यर्थः' अ० ५.१.५८. वा० सूत्रेण ड-प्रत्यये टेर्लोपः। त्रयस्त्रिंशः (स्तोमः) त्रयस्त्रिंशो वै स्तोमानामधिपतिः तां० ६.२.७. एष वै समृद्धः स्तोमो यत् त्रयस्त्रिंशः तां० १५.१२.६. ज्योतिस्त्रयस्त्रिंशः स्तोमानाम् तां० १३.७.२. त्रयस्त्रिंशः स्तोमानां (सत्) तां० ४.८.१०. सत् त्रयस्त्रिंशः स्तोमानाम् तां० १५.१२.२. अन्तो वै त्रयस्त्रिंशः परमो वै त्रयस्त्रिंशः स्तोमानाम् तां० ३.३.२. वर्म वै त्रयस्त्रिंशः तां० १६.१०.१०. तम् (त्रयस्त्रिंशं स्तोमम्) उ नाक इत्याहुः तां० १०.१.१८. देवता एव त्रयत्रिंशस्यायतनम् तां० १०.१.१६. अनूकं त्रयस्त्रिंशः। द्वात्रिंशद्वाऽएतस्य करूकराण्यनूकं त्रयस्त्रिंशम् श० १२.२.४.१४. संवत्सरो वाव प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिंशः तस्य चतुर्विंशतिरर्धमासाः षडृतवो द्वेऽअहोरात्रे संवत्सर एव प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिंशस्तद्यत्तमाह प्रतिष्ठेति संवत्सरो हि सर्वेषां भूतानां प्रतिष्ठा श० ८.४.१.१२. त्रयस्त्रिंश एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै तां० १५.१२.८. त्रयस्त्रिंशेन श्रीकामः (यजेत) जै० २.१३६. त्रयस्त्रिंशो वै स्तोमो महान् जै० ३.१३७. अग्रं त्रयस्त्रिंश स्तोमानाम् जै० ३.१३५. त्रयस्त्रिंशं स्तोममन्वारण्याः पशवः जै० २.३२.]

त्रयः त्रित्वसङ्ख्याकाः, त्रित्वसङ्ख्याविशिष्टाः (पवयः=कलाचक्राणि) १.३४.२ जलाग्निमनुष्यपदार्थस्थित्यर्थावकाशाः १.३४.६. कर्मोपासनानि ४.५८.३. तदस्मद्युष्मत्पदवाच्याः (त्रिधातवः=जीवाः) २१.३७. वायु-जल-विद्युतः ४.४५.१ अध्यापकोपदेशकवैद्याः २८.८. विद्युद्भौमसूर्याख्याऽग्नयो भूम्यप्तेजांसि वा ७.३३.७. प्रातर्मध्यसायंसवनानि, भूतभविष्यद्वर्त्तमानाः काला वा (पादाः=अधिगमसाधनानि) १७.९१. अध्यक्ष-प्रजा-भृत्याः १.१२२.१५. **त्रयाणि**=त्रीणि (कर्माणि) १२.१९. **त्रिभिः**=सत्वादिगुणैः १.१५५.४. शरीरवाङ्मनोभिः ३.२६.८. भूम्यन्तरिक्षजलेषु गमयितृभिः (रथैः=रमणीयैर्विमानादिभिर्यानैः) १.११६.४. स्थूल-सूक्ष्माऽतिसूक्ष्मैरवयवैः १.१५४.३. **त्रिषु**=नाम-स्थान-जन्मसु १.१५४.२. निकृष्टमध्यमोत्तमेषु (सानुषु=शिखरेषु) २.३.७. त्रिविधेषु जगत्सु ५.२०. भूतभविष्यद्वर्त्तमानेषु कालाऽवयवेषु १२.५५. [त्रयः तीर्णतमा संख्या नि० ३.९. तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिको ड्रिः प्रत्ययः]

त्रयाः त्रयाणामवयवाः (देवाः=दिव्यगुणाः पृथिव्यादयः) २०.११. [संख्यावाचिनः त्रिप्राति० अवयवार्थे 'संख्याया अवयवे तयप्' अ० ५.२.४२. सूत्रेण तयपि, तस्य स्थाने 'द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा' अ० ५.२.४३. सूत्रेणायजादेशः]

त्रयोदशम् दश-प्राण-जीव-महत्तत्त्वानां सङ्ख्यापूरकमव्यक्तं कारणम् (स्तोमम्) ९.३४. **त्रयोदश**=त्र्यधिकादश (संख्या) १८.२४. **त्रयोदशभिः**=दश प्राणा द्वे प्रतिष्ठे त्रयोदश आत्मा तै० १४.२९. [त्रि-दशन्पदयोः समासः 'त्रेस्त्रयः' अ० ६.३.४८. सूत्रेण त्रेः स्थाने त्रयसादेशः। 'तस्य पूरणे डट्' सूत्रेण पूरणार्थे डट्-प्रत्ययः]

त्रयोदशाक्षरेण आसुर्यानुष्टुभा (छन्दसा) ९.३४. [त्रयोदश-अक्षरपदयोः समासः]

त्रयोदशी त्रयोदशानां पूरणा (क्रिया) २५.४. ['त्रयोदशम् इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियाम् टिड्ढाणञ्०' इति ङीप्प्रत्ययः । यमस्य त्रयोदशी मै० ३.१५.४.]

त्रयोविंशतिः त्र्यधिका विंशतिः (सङ्ख्या) १८.२४. **त्रयोविंशत्या**=पश्वङ्गैः १४.३०. [त्रि-विंशतिपदयोः समासे 'त्रेस्त्रयः' सूत्रेण त्रयस्-आदेशः]

त्रयोविंश त्रयोविंशतिधा (योनिः=संयोजको वियोजको गुणः) १४.२३. [त्रि-विंशतिपदयोः समासे 'त्रेस्त्रयः' इति त्रयसादेशे पूरणार्थे डटि प्रत्यये 'ति विंशतेर्डिति' इति तेर्लोपः]

त्रसदस्युम् त्रसा भयभीता दस्यवो भवन्ति यस्मात्तम् [सत्पुरुषम्) ७.१९.३. त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात् तम् (राजानम्) ४.४२.९. यो दस्युभ्यस्त्रस्यति तम् (सेनापतिम्) १.११२.१४. **त्रसदस्युः**=त्रस्यन्ति दस्यवो यस्मात् सः (सेनापतिः) ४.३८.१. [त्रस-दस्युपदयोः समासः । त्रसः=त्रसी उद्वेगे (दिवा०) धातोरौणादिकोऽन्प्रत्ययः]

त्रसन्ति उद्विजन्ति ६.१४.४. (त्रसी उद्वेगे (दिवा०) धातोर्लट् । 'वा भ्राश०' इति सूत्रेण शप्]

त्रातः ! रक्षितः (राजन्) १.१२९.१०. रक्षक (सभेश) १.१२९.११. **त्राता**=पालकः (अग्निः=वेदविदध्यापक उपदेशको वा विद्वान्) २५.४७. रक्षिता (राजा) ३४.१३. सर्वाभिरक्षकः (देवः=विद्वज्जनः) १.१०६.७. **त्रातारम्**=रक्षितारम् (भा०—ईश्वरं सभाध्यक्षं वा) ८.४६. अभिरक्षितारम् (ईश्वरम्) १.४४.५. **त्रातारः**=रक्षकाः (मरुतः=शूरा मनुष्याः) ७.५६.२२. **त्रातुः**=रक्षकस्य (ईश्वरस्य) १.१५५.४. [त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्-प्रत्ययः । 'आदेच उपदेशेऽशिति' सूत्रेण धातोराकारान्तादेशः]

त्राध्वम् रक्षत, पालयत २.२९.६. (त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

त्राम् रक्षकम् (सेनाजनम्) ४.२४.३. [त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अच्प्रत्ययः क्विप् वा]

त्रामणे पालनव्यवहाराय ५.४६.६. **त्रामभिः**=त्रायन्ते ये धार्मिका विद्वांसः शूरास्तैः १.५३.१०. [त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोरौणादिको मनिन्प्रत्ययः]

त्रायताम् पालयतु ४.५५.७. **त्रायध्वे**=रक्षथ ७.५९.१. रक्षत ५.५३.१५. **त्रायस्व**=त्रायताम् ४.१. रक्ष ५.४२. **त्रायेथाम्**=रक्षेताम् ६.११. [त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

त्रायमाणः रक्षकः (दातृजनः) ६.५०.८. रक्षन् (सविता=ईश्वरः) ७.३५.१०. [त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः शानच्प्रत्ययः]

त्रासते उद्वेजयति १.१२८.५. **त्रासाथे**=भयं दद्यातम् ५.६२.६. [त्रसी उद्वेगे (दिवा०) धातोर्लोट् । 'वा भ्राश०' इति सूत्रेण शप् । उपधाया दीर्घश्छान्दसः । व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

त्रासीथाम् रक्षेतम् ५.४१.१. रक्षेयाम् ४.५५.१. [त्रसी उद्वेगे (दिवा०) धातोर्लिङ् । छान्दसं रूपम्]

त्रिककुप् त्रिभिः सेनाऽध्यापकोपदेशकैर्युक्ताः ककुभो दिशो यस्य सः (सम्राट्) १.१२१.४. त्रीणि कानि सुखानि स्कुभ्नाति येन कर्मणा तत्, प्र०—अत्र छान्दसो वर्णलोप इति सलोपः १५.४. [त्रि-ककुभ्पदयोः समासः । ककुभः=दिङ्नाम निघं० १.६. अथवा त्रि-कु इत्येतयोरुपपदयोः स्कुम्भु स्तम्भनार्थे (सौत्रो धातुः) धातोः क्विप्-प्रत्ययः । उदानो वै त्रिककुप् छन्दः श० ८.५.२.४.]

त्रिकद्रुकेषु त्रीणि कद्रुकानि-आह्वानानि येषु तेषु (लोकेषु) २.२२.१. त्रिभिः कद्रुकैर्विकलनैर्युक्तेषु कर्मसु २.१५.१. त्रीणि कद्रुकाणि शरीरात्ममनःपीडनानि येषु तेषु व्यवहारेषु २.११.१७. त्रय उत्पत्ति-स्थिति-प्रलयाख्याः कद्रवो विविधकला येषां तेषु कार्य-पदार्थेषु, प्र०—अत्र कदि-धातोरौणादिकः क्रुन् प्रत्ययः पुनः समासान्तः कप् च १.३२.३. [त्रि कद्रुकपदयोः, त्रिकद्रुपदयोर्वा समासः । कद्रुः कदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०), कदि वैक्लव्ये (भ्वा०) धातोर्वा औणादिकः क्रुन् प्रत्ययः, ततः समासान्तः कप्]

त्रिकशः त्रिधा कशा गमनानि गमनसाधनानि वा यस्मिन् सः (रथः) २.१८.१. [त्रि-कशापदयोः समासः । अश्वाजनीं कशेत्याहुः । कशा प्रकाशयति भयमश्वाय, कृष्यतेर्वा अणूभावात् । वाक् कशा पुनः प्रकाशयत्यर्थान्, खशया, क्रोशतेर्वा नि० ९.१८.]

त्रिचक्रः त्रीणि चक्राणि यस्मिन् सः (रथः=यानविशेषः) ४.३६.१. त्रीणि कलानां चक्राणि यस्मिन् तेन (रथेन=यानविशेषेण) १.११८.२. [त्रि-चक्रपदयोः समासः । चक्रं चकतेर्वा चरतेर्वा क्रामतेर्वा नि० ४.२७.]

त्रिणवत्रयस्त्रिंशौ ये त्रयश्च काला नवाङ्कविद्याश्च, त्रयश्च त्रिंशच्च वस्वादयः पदार्था व्याख्याता याभ्यां तयोः पूरणौ तौ (स्तोमौ=स्तुतिविशेषौ) १०.१४. त्रिणवश्च

त्रयस्त्रिशश्च ते साम्नी १३.५८. [त्रि-नवन्-त्रि-त्रिशत्पदानां समासे पूरणार्थे डट्प्रत्ययः। अथवा-त्रिणवत्रयस्त्रिशत्पदयोः समासः]

त्रिणवः सप्तविंशतिधा (क्रतुः=कर्म प्रज्ञा वा) १४.२३. **त्रिणवाय**=त्रिभिः कर्मोपासनाज्ञानैः स्तुताय (शाक्वराय=शक्तिजाय व्यवहाराय) २९.६०. **त्रिणवे**=त्रिगुणा नव यस्मिँस्तस्मिन् सप्तविंशे व्यवहारे २१.२७. [त्रि-नवन्पदयोः समासः। त्रिणवः (स्तोमः)। वज्रस्त्रिणवः श० ८.४.१.२०. ष० ३.४. वज्रो वै त्रिणवः तां० ३.१.२. इमे वै लोकास्त्रिणवः तां० ६.२.३. त्रिवृदेव त्रिणवस्यायतनम् तां० १०.१.१३. तमु (त्रिणवस्तोमं) पुष्टिरित्याहुस्त्रिवृद्ध्यैवैष पुष्टः तां० १०.१.१५. त्रिवृच्च त्रिणवश्च राथन्तरौ तावजश्चाश्वश्चान्वसृज्येतां तस्मात्तौ राथन्तरं प्राचीनं प्रधूनुतः तां० १०.२.५. त्रिणवं ब्राह्मणाच्छंसिनः जै० २.२२४. प्रतिष्ठा त्रिणवः तै० सं० ५.३.४.४.]

त्रितम् हिंसकम् (दुष्टजनम्) २.३४.१०. **त्रितस्य**=त्रिभिरुत्तम-मध्यम-निकृष्टोपायैर्युक्तस्य (राजजनस्य) २.११.२०. **त्रितः**=सम्प्लावकः (इन्द्रः=विद्युत्) प्र०—अत्रौणादिकस्तृधातोः कितच्-प्रत्ययः १.१६३.२. सम्प्लावकः (अग्निः) ५.९.५. उपरिरेखातो मध्यरेखातस्तिर्यग्रेखातश्च १.५२.५. त्रिषु वर्द्धकः (विद्वज्जनः) ५.४१.१०. त्रिषु कालेषु, प्र०—अत्र सप्तम्यर्थे तसि-प्रत्ययः ३४.७. त्रिषु क्षित्युदकान्तरिक्षेषु वर्धमानः (विद्वान् शिल्पिजनः) ५.४१.४. ब्रह्मचर्याऽध्ययन-विचारेभ्यः २.३१.६. त्रिभ्योऽध्यापनोपदेशरक्षणेभ्यः ५.८६.१. यस्त्रीन् विषयान् विद्या-शिक्षा-ब्रह्मचर्याणि तनोति सः (बृहस्पतिः=विद्वान् जनः), प्र०—अत्र त्र्युपपदात्तनोतेरौणादिको डः प्रत्ययः १.१०५.१७. त्रिभ्यो भूत-भविष्यद्वर्त्तमानकालेभ्यः १.१०५.९. सन्तारकः (अग्निः) १.१६३.३. मनोवाक्कर्मभ्यः १.१८७.१. यस्त्रीणि शरीरात्म-मनःसम्बन्धिसुखानि तनोति सः (कश्चिद् जनः) २.३४.१४. **त्रिताय**=त्रयाणामग्निकर्महविषां भावाय, भा०—शारीरिक-वाचिक-मानसिकस्थिरसुखाय १.२३. त्रिविधानां शारीरिकवाचिकमानसानां सुखानां प्राप्तिर्यस्य तस्मै (सत्पुरुषाय) २.११.१९. **त्रितेषु**=प्रसिद्धविद्युत्सूर्येषु ६.४४.२३. [त्रिप्राति० सप्तम्यर्थे तसिः। तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिको वा कितच् प्रत्ययः। त्रि-इत्युपपदे तनु विस्तारे (तना०) धातोर्डः प्रत्ययो वा। त्रिप्राति० वा भावे तल्प्रत्ययः। त्रितः तीर्णतमो मेधया बभूव। अपि वा संख्यानमेवाभिप्रेतं स्यात्, एकतो द्वितस् त्रित इति त्रयो बभूवुः नि० ४.६. त्रितः त्रिस्थानः इन्द्रः नि० ९.४५. त्रैतं भवति प्रतिष्ठायै तां० १४.११.२२.]

त्रिदिवे तीन सूर्य विद्युत् और भौम्य अग्नि से प्रकाशित सुख-स्वरूप में, सं० वि० १९७, ९.११३.९.

त्रिधा त्रिभिः प्रकारैः, भा०—त्रिप्रकारकं स्थूलसूक्ष्मकारणविज्ञापकं ज्ञानम् १७.९२. त्रिभिः प्रकारैर्मनोवाक्छरीरशिक्षादिभिः १.११७.२४. श्रद्धापुरुषार्थ-योगाभ्यासैः ४.५८.३ त्रिभिः प्रकारैर्मन्त्रब्राह्मणकल्पैः, उरसि कण्ठे शिरसि वा १७.९१. [त्रिप्राति० 'संख्याया विधार्थे धा' अ० ५.३.४२. सूत्रेण धा प्रत्ययः]

त्रिधातवः त्रयः सत्वरजस्तमांसि धातवो धारका येषान्ते (पृथिव्यादयः) ५.४७.४. दधति सर्वान् विषयानिति धातवस्त्रयो धातवो येषान्ते जीवाः, भा०—अस्थिमज्जावीर्याणि २१.३७. त्रयोऽस्थिमज्जावीर्याणि धातवो येभ्यस्ते (अध्यापकोपदेशकवैद्याः) २८.८. **त्रिधातुः**=त्रयो धातवो यस्मिन् सः (अर्कः=वज्रो विद्युद्वा) ३.२६.७. **त्रिधातुना**=त्रयो धातवो यस्मिँस्तेन (वायुयानाख्येन रथेन) १.१८३.१. [त्रि-धातुपदयोः समासः। त्रिरिति व्याख्यातम्। धातुः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'सितनिगमि०' उ० १.६९. सूत्रेण तुन्-प्रत्ययः]

त्रिधातु त्रीणि सुवर्ण-रजतायसादयो धातवो येषु तानि (वसूनि=धनानि) ३.५६.६. त्रयः सुवर्ण-रजतताम्रा धातवो यस्मिँस्तत् (छर्दिः=गृहम्) ६.४६.९. त्रयः सत्वरजस्तमांसि गुणा धारका यस्मिँस्तत् सर्वं जगत् ४.४२.४. त्रयः सत्वरजस्तमसादि-धातवो येषु तानि (भुवनानि) १.१५४.४. त्रयः सत्वादयो गुणा धातवो धारका यस्मिँस्तदव्यक्तं प्रकृत्यात्मकं जगत्कारणम् ७.५४. सत्वरजस्तमोमयं जगत् ६.४४.२३. त्रयोऽयस्ताम्रपित्तलानि धातवो यस्मिन् भू-समुद्राऽन्तरिक्षगमनार्थे याने तत् १.३४.६. **त्रिधातूनि**=त्रयो वातपित्तकफा येषु शरीरेषु वाऽयः-सुवर्णरजतानि येषु धनेषु तानि १.८५.१२. [त्रि-धातुपदयोः समासे नपुंसके रूपम्। 'स्वमोर्नपुंसकादि' ति सुप्रत्ययस्य लुक्। धातुः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणादिकस्तुन्। यज्ञस्त्रिधातुः जै० २.३९६. यदस्मिन् (इन्द्रे) त्रीणि वीर्याण्यधत्तां तस्मात् त्रिधातुः मै० २.४.६. यत् त्रिः प्रायच्छत् त्रिः प्रत्यगृह्णात् तत् त्रिधातोस्त्रिधातुत्वम्। तै० सं० २.४.१२.७.]

त्रिधातुश्रृङ्गः त्रयो धातवो शुक्ल-रक्त-कृष्णगुणाः शृङ्गवद् यस्य सः (वयोधाः=वैद्यः) ५.४३.१३. [त्रि-धातु-श्रृङ्गपदानां समासः]

त्रिनाके त्रिविध अर्थात् आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक दुःख से रहित (त्रिदिवे उस अपने सुख स्वरूप में) सं० वि० १९७, ९.११३.९. [त्रि-नाकपदयोः समासः । नाकः=कमिति सुखनाम, तत्प्रतिषिद्धं प्रतिषिध्येत नि० २.१४. नञ्-अकपदयोः समासे 'नभ्राण्नपान्नवेदा०' अ० ६.३.७५. सूत्रेण नञः प्रकृतिभावः]

त्रिनाभि त्रयो नाभयो बन्धनानि यस्मिन् तत् (चक्रम्) १.१६४.२. [त्रि-नाभिपदयोः समासः । नाभिः=णह बन्धने (दिवा०) धातोः 'नहो भश्च' उ० ४.१२६. सूत्रेण इञ् प्रत्ययो भकारादेशश्च । त्रिनाभिः त्र्यृतुः (संवत्सरः) नि० ४.२७.]

त्रिपदाः त्रीणि पदानि यासु ताः (प्रजाः) २३.३४. [त्रि-पदपदयोः समासः]

त्रिपदीम् त्रीणि वाङ्मनः शरीरस्थानि सुखानि यस्यास्ताम् (स्वाहा=वाचम्) ८.३०. [त्रि-पादपदयोः समासे 'संख्यासुपूर्वस्य' सूत्रेणान्तलोपे 'पादोऽन्यतरस्याम्' सूत्रेण ङीपि 'पादः पत्' इति पदादेशः]

त्रिपाजस्यः त्रिपु शरीरात्मसम्वन्धिवलेषु साधुः (ईश्वरः) ३.५६.३. [त्रि-पाजस्पदयोः समासे 'तत्र साधु' रिति यत्प्रत्ययः । पाजस्=अन्ननाम निघं० २.७. बलनाम निघं० २.९.]

त्रिपात् त्रयः पादा अंशा यस्य सः, भा०—कार्यजगतः पृथगंशत्रयेण प्रकाशितः सन् परमेश्वरः ३१.४. त्रयः पादा यस्मिन्, भा०—अस्येश्वरस्य सामर्थ्यस्यांशत्रयम् ३१.३. द्योतनात्मकं जगत् प्रकाशकं च तस्मात् (प्रकाश्यमानात्) त्रिगुणमीश्वरम्, ऋ० भू० १२१, ३१.४. [त्रि-पादपदयोः समासे 'संख्यासुपूर्वस्य' सूत्रेणान्तलोपः । आदित्यस्त्रिपात्-तस्येमे लोकाः पादाः गो० पू० २.८.]

त्रिपृष्ठैः त्रीणि पृष्ठानि ज्ञीप्सितव्यानि येषां तैः (महभिः=सत्कारैः) ७.३७.१. [त्रि-पृष्ठपदयोः समासः । पृष्ठम्=प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोर्बाहुलकादौणादि-स्थक् प्रत्ययः । पृपु सेचने धातोर्वा 'तिथपृष्ठ०' उ० २.१२. सूत्रेण थक्]

त्रिबन्धुरः त्रयो वन्धुरा अधोमध्योर्ध्वं बन्धा यस्मिन् (रथः) १.११८.१. त्रयो बन्धुरा बन्धा यस्मिन् सः (रथः) १.१५७.३. त्रयो बन्धुरा बन्धनानि यस्य सः, भा०—त्रैकाल्यप्रबन्धः (देवः=जीवः) २८.१९. **त्रिबन्धुरेण**=त्रीणि बन्धुराणि बन्धनानि यस्मिँस्तेन (रथेन) १.४७.२. त्रिविधबन्धनयुक्तेन (रथेन) १.११८.२. [त्रि-बन्धुरपदयोः समासः । बन्धुरः=बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः 'मद्गुरादयश्च' उ० १.४१. उरच्प्रत्ययः]

त्रिबन्धुः त्रयाणां बन्धुः (विद्वज्जनः) ७.३७.७. [त्रि-बन्धुपदयोः समासः । बन्धुः=बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः शृस्वृस्निहि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः प्रत्ययः]

त्रिबर्हिषि त्रयो वेदवेत्तारो वृद्धा यस्यां तस्याम् (सदसि=सभायाम्) १.१८१.८. [त्रि-बर्हिष्पदयोः समासः । बर्हिष्=बृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'बृंहेर्नलोपश्च' उ० २.१०९. सूत्रेण इसिः]

त्रिमन्तुः तिसृणां कर्मोपासनाज्ञानविद्यानां मन्तुर्मन्ता (विद्वज्जनः) १.११२.४. [त्रि-मन्तुपदयोः समासः । मन्तुः=मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'कमिमनिजनि०' उ० १.७३. सूत्रेण तुन् प्रत्ययः]

त्रिमाता त्रयाणां जन्म-स्थान-नाम्नां माता जनकः (जगदीश्वरः) ३.५६.५. [त्रि-मातृपदयोः समासः । मातृ=माङ् माने (जु०) धातोरौणादिकस्तृच्प्रत्ययः । 'न षट् स्वस्रादिभ्यः' अ० ४.१.१०. सूत्रेण स्त्रीप्रत्ययस्य ङीपः प्रतिषेधः]

त्रिमूर्द्धानम् त्रिषु निकृष्ट-मध्यमोत्तमेषु पदार्थेषु मूर्द्धा यस्य तम् (अग्निम्) १.१४६.१. [त्रि-मूर्धन्पदयोः समासः । मूर्धन्=मूर्वी बन्धने (भ्वा०) धातोः 'श्वनुक्षन्०' उ० १.१५९. सूत्रेग कनिन्प्रत्यये वकारस्य धकारो निपात्यते]

त्रियुगम् वर्षत्रयम् १२.७५. [त्रि-युगपदयोः समासः । त्रियुगम् त्रीणि युगानि नि० ९.२८.]

त्रिरश्मिम् त्रिभिर्वाङ्मनःशरीरैर्योऽश्यते प्राप्यते तम् (मन्त्रम्) १.१५२.२ [त्रिः-अश्रिपदयोः समासः । त्रिः=त्रिप्राति० सुच् । अश्रिम्=अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोरौणादिकः क्रिः प्रत्ययः]

त्रिरहा त्रिभिर्दिनैः, ऋ० भू० १९०, ऋ० १.८.८.४. [त्रिस्-अहन्पदयोः समासः]

त्रिवत्सम् त्रयः कर्मोपासनाज्ञानानि वत्सा इव यस्य तम् (गां=प्राप्तव्यं बोधम्) २८.२७. **त्रिवत्सः**=त्रयः कर्मोपासनाज्ञानानि वत्सा इव यस्य सः (विद्वज्जनः) १४.१०. त्रयो वत्सा यस्य सः (जनः) १८.२६. त्रीणि देहेन्द्रियमनांसि वत्सा इवाऽनुचराणि यस्य सः (विद्वान् मनुष्यः) २१.१५. **त्रिवत्साः**=त्रयो वत्सास्त्रिपु वा निवासो येषान्ते (पशुपालका जनाः) २४.१२. [त्रि-वत्स-पदयोः समासः । वत्सः=वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोरौणादिकः सः प्रत्ययः]

त्रिवत्सा त्रयो वत्सा यस्याः सा (गौः) १८.२६. [त्रि-वत्सपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

त्रिवयाः त्रीणि वयांसि यस्य सः (ब्रह्मचारिजनः) २.३१.५. [त्रि-वयस्पदयोः समासः]

त्रिवरूथम् त्रीणि वरूथानि गृहाणि यस्मिन् (शर्म=सुसुखं गृहम्) ४.५३.६. शीतोष्णवर्षासूत्तमम् (छर्दिः=गृहम्) ६.४६.९. **त्रिवरूथः**=त्रिषु भूम्यधोऽन्तरिक्षेषु वरूथानि गृहाणि यस्य सः (देवः=विद्वज्जनः) २१.५५. त्रीणि त्रिविधसुखप्रदानि वरूथानि गृहाणि यस्य सः (इन्द्रो देवः=ऐश्वर्यमिच्छुको जीवः) २८.१९. त्रीण्युत्तम-मध्यम-निकृष्टानि वरूथा गृहाणीव निवासस्थानानि यस्य सः (अग्निः=परमेश्वरः) ६.१५.९. त्रीणि वरूथान्याध्यात्मिकाऽऽधिदैविकाऽऽधिभौतिकानि सुखानि यस्मिन् सः (भा० राष्ट्रः) १५.१. **त्रिवरूथेन**=त्रीणि त्रिविधानि शीतोष्णवर्षासुखकराणि वरूथानि गृहाणि यस्य तेन (राज्ञा) ६.२६.७. त्रिषु वर्षाहिमन्तग्रीष्मसमयेषु वरूथेन वरेण (गृहेण) ५.४.८. [त्रि-वरूथपदयोः समासः। वरूथः=वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'जॄवृञ्भ्यामूथन्' उ० २.६. सूत्रेण ऊथन् प्रत्ययः। वरूथम्=गृहनाम निघं० ३.४.]

त्रिविष्टि आकाशे ४.६.४. त्रिविधे सुखप्रवेशे ४.१५.२. [त्रि-विष्टिपदयोः समासः। विष्टिः=विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः क्तिन्]

त्रिविष्टिधातु त्रिधोत्तम-मध्यम-निकृष्टा विष्टयो व्याप्तयो धातूनां पृथिव्यादीनां यस्मिँस्तत् (प्रतिमानं=जगत्) १.१०२.८. [त्रिविष्टि-धातुपदयोः समासः]

त्रिवृत् यस्त्रिभिः कर्मोपासनाज्ञानैर्वर्त्तते सः (विद्वान् पुरुषः) १३.५४. यस्त्रिधा वर्त्तते (विद्युत्) १५.१०. त्रिभिर्मनोवाक्छरीरबलानां बोधकारकः (स्तोमः) १०.१०. यस्त्रिभिः सत्वरजस्तमोगुणैः सह वर्त्तते तस्याव्यक्तस्य वेत्ता, भा०—पृथिव्यादिपदार्थानां गुणकर्मस्वभावविज्ञाता विद्वान् १५.९. यः कर्मोपासनाज्ञानेषु साधकत्वेषु वर्त्तते (विद्वज्जनः) १.१४०.२. त्रीणि कर्मोपासनाज्ञानानि वर्त्तन्ते यस्मिँस्तत् (शिरः) १२.४. यस्त्रिभिः कायिक-वाचिक-मानसैः साधनैः शुद्धं वर्त्तते (स्तोमः) १४.२४. शीते चोष्णे द्वयोर्मध्ये च वर्त्तते सः (चतुष्टोमः=संवत्सरः) १४.२३. **त्रिवृता**=त्रिभिः शिल्पक्रियाप्रकारैः प्रपूरितस्तेन (रथेन) १.४७.२. यस्त्रिषु कालेषु वर्त्तते तेन (ऋतुना) २१.२३. त्र्यावरणेन (रथेन) १.११८.२. यस्त्रिषु स्थलजलान्तरिक्षेषु पूर्णगत्या गमनाय वर्त्तते तेन (रथेन=विमानादियानस्वरूपेण) १.३४.१२. **त्रिवृते**=यस्त्रिभिः सत्वरजस्तमोगुणैर्युक्तस्तस्मै (अग्नये=पावकाय) २९.६०. ['त्रि' इत्युपपदे वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः। त्रिवृत् वज्रः नि० ७.१२. त्रिवृत् (स्तोमः)। वायुर्वाऽआशुस्त्रिवृत्स एषु त्रिषु लोकेषु वर्त्तते श० ८.४.१.९. तान् (पशून्) अग्निस्त्रिवृता स्तोमेन नाप्नोत् तै० २.७.१४.१. त्रिवृदग्निः श० ६.३.१.२५. अग्निर्वै त्रिवृत् तै० १.५.१०.४. त्रिवृद्वा अग्निरङ्गारा अर्चिर्धूम इति कौ० २८.५. तेजो वै त्रिवृत् तां० २.१७.२. तेजो वै स्तोमानां त्रिवृत् ऐ० ८.४. तेजो वै त्रिवृद् ब्रह्मवर्चसम् तां० १७.६.३. त्रिवृदेव स्तोमो भवति तेजसे ब्रह्मवर्चसाय तां० ११.१.७. ब्रह्मवर्चसं वै त्रिवृत् तै० २.७.१.१. त्रिवृदेव भर्गः गो० पू० ५.१५. ब्रह्म वै स्तोमानां त्रिवृत् ऐ० ८.४. ब्रह्म वै त्रिवृत् तां० २.१६.४, १९.१७.३, २३.७.५. शिर एव त्रिवृत् गो० पू० ५.३. तस्मात् त्रिवृत् स्तोमानां मुखम् तां० ६.१.६. मुखं वै त्रिवृत्स्तोमानाम् तां० १७.३.२. यत् त्रिवृद्भवति यदेवास्य (यजमानस्य) मुखतोऽपूतं तत्तेनापहन्ति तां० १७.५.६. प्राणो वै त्रिवृत् तां० ६.२.२, ९.३.४, ९.८.१५. प्राणा वै त्रिवृत् तां० २.१५.३, २.६.३. प्राणा वै त्रिवृत् स्तोमानां प्रतिष्ठा तां० ९.३.४. एष (त्रिवृत्) हि स्तोमानामाशिष्ठः श० ८.४.१.९. त्रिवृद् वै स्तोमानां क्षेपिष्ठः ष० ३.८. तां० १७.१२.३. वज्रो वै त्रिवृत् त्रिवृद् बर्हिर्भवति तै० १.६.३.१. वसन्तेनर्त्तुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुतम्। रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधुः तै० २.६.१९.१. त्रिवृच्च त्रिणवश्च राथन्तरौ तावजश्चाश्वश्चान्वसृज्येतां तस्मात्तौ राथन्तरं प्राचीनं प्रधूनुतः तां० १०.२.५. अग्रं वै मुखं त्रिवृत् स्तोमानाम् जै० २.२१७. इमे वै (त्रयः) लोकास्त्रिवृतः जै० १.२१२. तदु वा आहुर्ब्रह्म वै त्रिवृद्, ब्रह्म गायत्री जै० ३.३३८. तस्य (अग्निष्टोमस्य) त्रिवृत् प्रातःसवनम् मै० ४.४.१०. त्रिवृता तेजस्कामो ब्रह्मवर्चसकामोऽग्निष्टुता यजेत जै० २.१३६. त्रिवृता ब्रह्मवर्चसेन (देवाः)···ज्योतिरदधुः जै० १.६६. त्रिवृता वै स्तोमेन प्रजापतिः प्रजा असृजत मै० ३.६.७. त्रिवृति प्रातस्सवने पञ्चदशमच्छावाकस्याज्यम् जै० २.१७१. त्रिवृतैव ब्राह्मणः श्रेष्ठतां गच्छति, पञ्चदशेन राजन्यः जै० २.१३२. त्रिवृत् त्रिषामा जै० ३.१३. मुखं वै त्रिवृत् स्तोमानाम् जै० २.१३५. न्यूनं वै त्रिवृत् जै० २.८९.]

त्रिवृत्तम् कर्मोपासनाज्ञानयुक्तम् (स्तोमम्) ९.३३. [त्रि-वृत्तपदयोः समासः]

त्रिशता त्रीणि शतानि येषु (शङ्कवः=कीलाः) १.१६४.४८. त्रीणि शतानि १.१६४.४८, ऋ० भू० [त्रि-

शतपदयोः समासः]

त्रिशुक् तिस्रो मृदु-मध्य-तीव्रा दीप्तयो यस्य सः, भा०—अग्निविद्युत्सूर्यरूपेण त्रिविधः प्रकाशः ३८.२७. [त्रि-शुच्पदयोः समासः। शोचति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६.]

त्रिशोकः त्रिषु दुष्टगुणकर्मस्वभावेषु शोको यस्य विदुषः सः १.११२.१२. [त्रि-शोकपदयोः समासः। शोकः=शुच शोके (भ्वा०) धातोर्घञ्]

त्रिषधस्थ ! त्रिषु समानस्थानेषु वर्त्तमान (राजादि-जन) ६.८.७. त्रिभिः प्रजा-भृत्याऽमात्यैर्जनैः सह पक्षपात-रहितस्तिष्ठति तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ६.१२.२. **त्रिषधस्थः**= त्रिषु भूम्यन्तरिक्षसूर्यलोकेषु त्रिविधेषु समानस्थानेषु वर्त्तमानः (यजत्रः=राजा) ६.१२.२. त्रिषु समानस्थानेषु कर्मोपासनाज्ञानेषु वा तिष्ठति (बृहस्पतिः=सूर्यो विद्वान् वा) ४.५०.१. **त्रिषधस्थे**=त्रीणि भू-जलपवनाख्यानि स्थित्यर्थानि स्थानानि यस्मिँस्तस्मिन् (बर्हिषि=अन्तरिक्षे) १.४७.४. त्रिभिः सहस्थाने (विद्याधर्म-पुरुषार्थाख्यैः) ५.११.२. [त्रिसधोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः। त्रिसध=त्रि-सहपदयोः समासे सहस्थाने सधादेशः 'सध मादस्थयोश्छन्दसि' अ० ६.३.९६. सूत्रेण]

त्रिषधस्था त्रिषु समानस्थानेषु या तिष्ठति सा (वाक्) ६.६१.१२. [त्रिसधस्थं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

त्रिषु त्रिविधेषु (पदेषु=नामस्थानजन्माख्येषु) २३.४९. वेदरीत्या कर्मोपासनाज्ञानेषु १५.६०. भूत-भविष्यद्वर्त्तमानेषु कालाऽवयवेषु १२.५५. [त्रिसंख्यावाचिनः सप्तम्या बहुवचनम्]

त्रिष्टुप् एतच्छन्दोऽभिहितं विज्ञानम् १०.११. या-ऽऽध्यात्मिकाऽऽधिभौतिकाऽऽधिदैविकानि त्रीणि सुखानि स्तोभते स्तभ्नाति सा (छन्दोऽर्थविज्ञापनम्) २३.३३. त्रीणि कर्मोपासनाज्ञानानि स्तुवन्ति यया सा (छन्दः) १४.१०. यया त्रीणि सुखानि स्तोभति सा (छन्दः) १४.१८. **त्रिष्टुभे**=त्रयाणां शारीरिकवाचिक-मानसानां सुखानां स्तम्भनाय स्थिरीकरणाय २४.१२. [त्र्युपपदे स्तोभति अर्चतिकर्मा (निघं० २.१.) धातोः क्विप्प्रत्ययः त्रिष्टुप् स्तोभत्युत्तरपदा। का तु त्रिता स्यात्। तीर्णतमं छन्दः। त्रिवृद् वज्रस्तस्य स्तोभतीति वा। यत् त्रिरस्तोभत् तत् त्रिष्टुभस्त्रिष्टुप्त्वमिति विज्ञायते नि० ७.१२. त्रिवृद् वज्रस्तेन वज्रस्तस्य स्तोभमिवेत्यौपमिकम् दे० ३.१६. यत्त्रिष्टुप् ऐ० २.१६. वज्रस्त्रिष्टुप् कौ० ७.२. श० ३.६.४.२२. त्रैष्टुभो वज्रः गो० उ० १.१८. त्रिष्टुब् इन्द्रस्य वज्रः ऐ० २.२. त्रैष्टुभ इन्द्रः कौ० ३.२.२२.७. इन्द्रस्त्रिष्टुप् श० ६.६.२.७. ऐन्द्रं त्रैष्टुभं माध्यन्दिनं सवनम् गो० उ० ४.४. ऐन्द्रं हि त्रैष्टुभं माध्यन्दिनं सवनम् कौ० २९.२. त्रैष्टुभं वै माध्यन्दिनं सवनम् ऐ० ६.११. त्रैष्टुभं माध्यन्दिनं सवनम् ष० १.४. एते वाव छन्दसां वीर्यवत्तमे यद् गायत्री च त्रिष्टुप् च तां० २०.१६.८. वीर्यं वै त्रिष्टुप् ऐ० ६.१५. ष० १.७. वीर्यं त्रिष्टुप् ऐ० १.२१, ४.३, ११. बलं वै वीर्यं त्रिष्टुप् कौ० ७.२, ८.२ ११.२, १६.१. गो० उ० ५.५. बलं वीर्यं पुरस्तात् त्रिष्टुप् कौ० ११.२. ओजो वा इन्द्रियं वीर्यं त्रिष्टुप् ऐ० १.५, ८.२. इन्द्रियं वै वीर्यं त्रिष्टुप् तै० १.७.६.८. इन्द्रियं वै त्रिष्टुप् तै० १.७.९.२. उरस्त्रिष्टुप् ष० २.३. उरस्त्रिष्टुभः श० ८.६.२.७. वृषा त्रिष्टुप् कौ० २०.३. त्रिष्टुप् छन्दा वै राजन्यः तै० १.१.९.६. त्रैष्टुभो वै राजन्यः ऐ० १.२८,८.२. (राजन्यस्य) त्रिष्टुप् छन्दः। तां० ६.१.८. क्षत्रस्यैवैतच्छन्दो यत् त्रिष्टुप् कौ० १०.५. क्षत्रं वै त्रिष्टुप् कौ० ७.१०. ब्रह्म गायत्री क्षत्रं त्रिष्टुप् श० १.३.५.५. क्षत्रं त्रिष्टुप् कौ० ३.५. श० ३.४.१.१०. अथैतदधीतरसं शुक्रियं छन्दो यत्त्रिष्टुप् ऐ० ६.१२. त्रिष्टुबेव महः गो० पू० ५.१५. या राका सा त्रिष्टुप् ऐ० ३.४७. त्रिष्टुब्भीयम् (पृथिवी) श० २.२.१.२०. त्रैष्टुभो हि वायुः श० ८.७.३.१२. त्रैष्टुभेऽन्त-रिक्षलोके त्रैष्टुभो वायुरध्यूढः कौ० १४.३. यजुषां वायुर्दैवतं तदेव ज्योतिस्त्रैष्टुभं छन्दोऽन्तरिक्षं स्थानम् गो० पू० १.२९. त्रैष्टुभोऽन्तरिक्षलोकः कौ० ८.९. त्रैष्टुभमन्तरिक्षम् श० ८.३.४.११. अन्तरिक्षं त्रिष्टुप् जै० उ० १.५.३. अन्त-रिक्षसु वै त्रिष्टुप् श० १.८.२.१२. अन्तरिक्षे विष्णुर्व्यक्रंस्त त्रैष्टुभेन छन्दसा ततो निर्भक्तो योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः श० १.९.३.१० त्रिष्टुबसौ (द्यौः) श० १.७.२.१५. असावुत्तमः (लोकः=द्युलोकः) त्रिष्टुप् तां० ७.३.९. त्रैष्टुभो वा एष य एषं (सूर्यः) तपति कौ० २५.४. त्रैष्टुब्जागतो वा आदित्यः तां० ४.६.२३. त्रैष्टुभाः पशवः कौ० ८.१.१०.२. अपानः त्रिष्टुप् तां० ७.३.८. यऽएवायं प्रजननः प्राण एष त्रिष्टुप् श० १०.३.१.१. त्रैष्टुभं चक्षुः तां० २०.१६.५. आत्मा वै त्रिष्टुप् श० ६.४.२.६. आत्मा त्रिष्टुप् श० ६.२.१.२४, ६.६.२.७. आत्मा त्रिष्टुभः श० ८.६.२.३. त्रैष्टुभः पञ्चदशस्स्तोमः तां० ५.१.१४. एतद्वै बृहतः स्वमायतनं यत् त्रिष्टुप् तां० ४.४.१०. त्रैष्टुभं वै बृहत् तां० ५.१.१४. त्रैष्टुभो ब्राह्मणाच्छंसी तां०

५.१.१४. नाराशंस्या त्रिष्टुप् (अपुनीत) जै० उ० १.५७.१. त्रिष्टुब् दक्षिणा (दिक्) श० ८.३.१.१२. त्रिष्टुब् रुद्राणां पत्नी गो० उ० २.६. रुद्रास्त्रिष्टुभं समभरन् जै० उ० १.१८.५. यस्यैकादश तास्त्रिष्टुभम् कौ० ६.२. एकादशाक्षरा वै त्रिष्टुप् कौ० ३.२, १०.२. तां० ६.३.१३. ऐ० ३.१२,८.२. श० १.३.५.५. गो० उ० १.१८,३.१०. एकादशाक्षरा त्रिष्टुप् तै० ३.८.१२.१. चतुश्चत्वारिंशदक्षरा वै त्रिष्टुप् श० ८.५.१.११. चतुश्चत्वारिंशदक्षरा त्रिष्टुप् कौ० १६.७. जै० उ० ४.२.५.]

त्रिष्टुप्छन्दसम् त्रिष्टुप्छन्दोऽर्थ-बोधयितारम्, (अध्यापकम्) ८.४७. [त्रिष्टुभ्-छन्दस्पदयोः समासः। ततोऽधीते वेद वार्थे जातस्य प्रत्ययस्य लुक् छान्दसम्। राजन्यस् त्रिष्टुप्छन्दाः जै० १.६८. सुपर्णोऽसि त्रिष्टुप्छन्दाः तै० सं० ३.२.१.१.]

त्रिष्ठम् त्रिषु शरीराऽऽत्म-मनःसुखेषु तिष्ठतीति (सौभगत्वम्) १.३४.५. [त्र्युपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः]

त्रिष्ठिनम् ये त्रिषु जल-स्थलाऽन्तरिक्षेषु तिष्ठन्ति ते त्रिष्ठा, बहवस्त्रिष्ठा विद्यन्ते यस्य तम् (भा०—यान-गमकं पुरुषम्) ३०.१४. [त्रिष्ठं व्याख्यातम्। ततो भूम्नि इन्प्रत्ययः। 'स्थास्थिन्स्थॄणामिति वक्तव्यम्' अ० ८.३.९७. वा० सूत्रेण षत्वम्]

त्रिसधस्थः त्रिषु यः कर्मोपासनाज्ञानेषु स्थितः (विद्वान् जनः) १.१५६.५. ['त्रिषधस्थपदे' द्रष्टव्यम्]

त्रिसप्तसमिधः अस्य ब्रह्माण्डस्यैकविंशतिसमिधः कारणानि बुद्ध्यन्तःकरणं जीवश्चैका सामग्री परमसूक्ष्मत्वात्, दशेन्द्रियाणि, पञ्चतन्मात्राः पञ्चभूतानि च, ऋ० भू० १२८, ३१.१५. [त्रिसप्त-समिध्-पदयोः समासः]

त्रिसप्तैः एकविंशत्या (सत्वभिः=पदार्थैः) १.१३३.६. [त्रि-सप्तन्पदयोः समासः]

त्रिंशत् आकाशं द्यां च वर्जयित्वा सर्वान् भूम्यादीन् पदार्थान् ६.५९.६. त्रिंशत्संख्याकानि पृथिव्यादीनि, त्रयस्त्रिंशतो वस्वादीनां देवानां मध्ये पठितानि, अन्तरिक्षमादित्यमग्निं च विहाय (धाम=धामानि) ३.८. एतत्सङ्ख्याकान् (मूहूर्त्तान्) ३३.९३. **त्रिंशतम्**=एतत्संख्यातम् (शत्रुसमुदायम्) ४.३०.२१. **त्रिंशता** एतत्संख्याकैः (नियुद्भिः=गतिभिः) भा०—अनेकाभिर्गतिभिः २७.३३. ['पङ्क्तिविंशतित्रिंशत्०' अ० ५.१.५९. सूत्रेण त्रयाणां दशतां त्रिन् भावः शच्च प्रत्ययो निपात्यते]

त्रिंशच्छतम् त्रिंशच्छतानि यस्मिन् (सङ्ग्रामे) ६.२७.६. [त्रिंशत्-शतपदयोः समासः]

त्रिः त्रिवारम् ४.१.७. [त्रिप्राति० क्रियाभ्यावृत्तिगणने सुच्प्रत्ययः]

त्री त्रीणि (योजनानि) ३४.२४. त्रीणि त्रिप्रकारकाणि (रजांसि=लोकान्) ४.५३.५. [त्रिप्राति० नपुंसकलिंगे प्रथमाबहुवचने शेर्लोपः]

त्रीणि तीन (ज्योतींषि=अग्नि वायु और सूर्य को) आर्याभि० २.१४, ८.३६. विद्यादि व्यवहारों की वृद्धि के लिए तीन प्रकार की राजसभा, धर्म सभा और विद्यासभा, सं० वि० १८२, ३.३८.६. त्रिविधानि (पदा=पदानि) १.२२.१८. उत्पत्ति-स्थिति-प्रलयाः काला वा ३२.९. त्रिविधानि शरीरात्म-मनःसुखकराणि (आयूंषि=जीवनानि) ३.१७.३. त्रिप्रकारकाणि (रोचना=ज्योतींषि) ४.५३.५. भूम्यन्तरिक्ष-सूर्यरूपेण त्रिविधं जगत् ३४.४३. **त्रीणाम्**=त्रयाणां सकाशात् (मित्रार्यमावरुणानाम्), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे' विधयो भवन्ति, इति 'त्रेस्त्रयः' इति त्रयादेशो न ३.३१. **त्रीन्**=अधोमध्योर्ध्वस्थान् (समुद्रान्=लोकान्) अ०—शारीरिक-वाचिक-मानसानि त्रिविधानि १३.३१. जन्म-स्थान-नामवाच्यान् (लोकान्) ९.३१. [संख्यावाचिनस् त्रिप्राति० रूपाणि। 'त्रीणाम्' प्रयोगे 'त्रेस्त्रयः' अ० ७.१.५३. सूत्रेण त्रयादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

त्रैतायै त्रयाणां भवाय ३०.१८. [त्रिप्राति० तल्प्रत्ययः। इकारस्यैकारश्छान्दसः। उत्तिष्ठंस्त्रेता भवति ऐ० २.१५.]

त्रैधा त्रिभिः प्रकारैः १.१५४.१. त्रिप्रकारैः १.१८१.६. त्रिप्रकारकम् (पदं=जगत्) १.२२.१७. त्रिप्रकारकाणि (रजांसि=लोकान्) भा०—पृथिवीसूर्यत्रसरेणुभेदेन त्रिविधं जगत् ५.१८. [त्रिप्राति० विधार्थे धाप्रत्ययः। इकारस्यैकारश्छान्दसः। त्रेधा त्रिधा नि० १२.१९]

त्रैधा इव यथा त्रिभिः पठनज्ञापन-हस्तक्रियादिभिः प्रकारैस्तथा, प्र०—इवेन सह नित्यसमासो विभक्त्यलोपः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वञ्च, अ० २.१.४. अत्र सायणाचार्येण त्रेधैव त्रिभिरेव प्रकारैरित्येव शब्दोऽशुद्धो व्याख्यातः। पदपाठ इव-शब्दस्य प्रत्यक्षत्वात् १.३४.४. [त्रैधा-इवपदयोः समासः]

त्रैतनः यस्त्रीणि शरीरात्ममनोजानि सुखानि तनोति

स एव (दासः=सेवकः) १.१५८.५. [त्र्युपपदे तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्विप् । ततः स्वार्थेऽण्प्रत्ययः]

त्रैयम्बकाः त्रिष्वधिकारेष्वम्बकं लक्षणं येषान्ते (गवादयः) २४.१८. [त्रि-अम्बकपदयोः समासे प्रज्ञादेराकृतिगणत्वात् स्वार्थेऽण् । त्र्यम्बकपदे द्रष्टव्यम्]

त्रैवृष्णः यस्त्रिषु वर्षति स एव (विद्वज्जनः) ५.२७.१. [त्र्युपपदे वृषु सेचने (भ्वा०) धातोरौणादिकः कनिन्-प्रत्ययः । ततः स्वार्थेऽण् । प्रत्ययस्थाकारलोपश्छान्दसः]

त्रैष्टुभम् त्रिभिः सुखैः सम्बद्धम् (छन्दः) १२.५. त्रिष्टुभा व्याख्यातमर्थजातम् (छन्दः) ३८.६. त्रिष्टुभम् २.४३.१. त्रिष्टुभि भवम् (अर्थम्) १.१६४.२३. **त्रैष्टुभः**=त्रिष्टुप्प्रगाथोऽस्य सः (भागः=अंशः) ४.२४. **त्रैष्टुभात्**=त्रिष्टुप्-छन्दो वाच्यात् (मन्त्रात्) १.१६४.२३. **त्रैष्टुभाय**=त्रिष्टुप्छन्दसा प्रख्याताय (इन्द्राय=ऐश्वर्याय) २९.६०. **त्रैष्टुभेन**=त्रिष्टुप्-प्रोक्तेन (छन्दसा=स्वच्छेनाऽर्थेन) १३.५३. त्रीणि कर्मोपासनाज्ञानानि स्तोभन्ते स्थिरीकुर्वन्ति येन (छन्दसा) ११.६५. त्रिधा स्तुतेन (वचसा) ५.२९.६. त्रिवेदविद्यास्तवनेन १.१६४.२४. त्रिष्टुभा निर्मितेनाऽर्थेन (छन्दसा=स्वच्छन्देन) ११.९. त्रिष्टुवेव त्रैष्टुभं त्रिविध-सुखहेतुस्तेन (छन्दसा) २.२५. त्रिष्टुप्-प्रकाशितेनाऽर्थेन (छन्दसा) २३.८. त्रिष्टुप्-प्रगाथोऽस्य तेन (छन्दसा=सुखकारकेण व्यवहारेण) ५.२. [त्रिष्टुबिति व्याख्यातम् । ततो भवार्थेऽण् स्वार्थे वा । 'सोऽस्यादिरिति०' अ० ४.२.५५. सूत्रेण वा छन्दसः प्रगाथेषु अण्प्रत्ययः]

त्र्यक्षरेण दैव्याऽनुष्टुभा (छन्दसा) ९.३१. [त्रि अक्षरपदयोः समासः । छन्दोनाम]

त्र्यनीकः त्रीणि त्रिगुणान्यनीकानि सैन्यानि यस्य सः (राजा) ३.५६.३. [त्रि-अनीकपदयोः समासः । त्र्यनीक (अग्निः) इति सवनान्येवानीकानि ऐ० ३.३९.]

त्र्यम्बकम् त्रिष्वम्बकं रक्षणं यस्य रुद्रस्य परमेश्वरस्य यद्वा त्रयाणां जीवकारण-कार्याणामम्बको रक्षकस्तम् (रुद्रम्=ईश्वरम्) ७.५९.१२. सर्वाध्यक्षम् (ईश्वरम्) ३.६०. अमति येन ज्ञानेन तदम्बं, त्रिषु कालेष्वेकरसं ज्ञानं यस्य तम् (रुद्रं=परमेश्वरम्), प्र०—अत्र 'अम गत्यादिषु' अस्माद् बाहुलकेन करणकारके वः प्रत्ययस्ततः 'शेषाद्विभाषा' अ० ५.४.१५४. इति समासान्तः कप्-प्रत्ययः ३.५८. [अम्बिका ह वै नामास्य (रुद्रस्य) स्वसा, तयास्यैष सहभागस्तद्यदस्यैष स्त्रिया सह भागस्तस्मात् तस्मात् त्र्यम्बका (पुरोडाशाः) नाम श० २.६ २.९. त्र्यम्बको रुद्रः नि० १३.३५. रुद्रास्त्र्यम्बकाः काठ० ३६.१४. त्र्यम्बकाँस्तृतीयसवनमकुर्वत तै० सं० ३.२.२.३. तृतीयसवने त्र्यम्बकान् (अवाकल्पयन्) काठ० २३.७. अप्रतिष्ठितास्त्र्यम्बकाः काठ० ३६.१४.]

त्र्यरुणः त्रीणि मनःशरीरात्म-सुखान्यृच्छति (विद्यार्थी) ५.२७.३. त्रयोऽरुणा गुणा यस्य सः (विद्वान् जनः) ५.२७.१. [त्रि-अरुणपदयोः समासः । अरुणः=ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तेश्च' उ० ३.६०. सूत्रेण उनन्प्रत्ययः]

त्र्यवयः त्रिविधाश्च ता अवयश्च ताः २४.५. तिस्रोऽवयो येषां ते (पशुपालका जनाः) २४.१२. **त्र्यविम्**=या त्रिधाऽवति ताम् (गाम्=पृथिवीम्) २८.२४. कार्य-कारणजीवाख्यानि त्रीणि वस्तूनि यो रक्षति तम् (नियन्तारमीश्वरम्) ३.५५.१४. **त्र्यविः**=त्रयाणां शरीरेन्द्रियाऽऽत्मनामवी रक्षणं यस्मात् सः (गौः=विद्वज्जनः) २१.१२. त्रयोऽव्यादयो यस्मात् तम् (वृद्धियुक्तं पुरुषम्) १४.१०. तिस्रोऽवयो यस्य सः (जनः) १८.२६. [त्रि-अवि-पदयोः समासः । अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोरौणादिक इन्प्रत्ययः]

त्र्यवी तिस्रोऽवयो यस्याः सा (स्त्री) १८.२६. [त्रि-अविपदयोः समासे स्त्रियां 'कृदिकारादक्तिनः' वा० सूत्रेण ङीष्]

त्र्यायुषम् त्रीणि च तान्यायूंषि च त्र्यायुषं बाल्य-यौवनवृद्धाऽवस्थासुखकरम् (आयुः) प्र०—इदं पदम् 'अचतुर-विचतुर०' अ० ५.४.७७. इति सूत्रे समासान्तत्वेन निपातितम् ३.६२. पूर्वोक्तं त्रिगुणमायुः, प्र०—'एतेर्णिच्च' उ० २.११८. अनेनेण् धातोरुसिः प्रत्ययो णित्वाद् वृद्धिः 'ईयते प्राप्यते यत्तदायुः ३.६२. विद्याशिक्षापरोपकार-सहितं त्रिगुणमायुः ३.६२. ब्रह्मचर्य-गृहस्थ-वानप्रस्थाऽऽश्रम-सुखसम्पादकं त्रिगुणमायुः ३.६२. त्रिगुणमर्थात् त्रीणि शतानि वर्षाणि यावत्तावदायुः, ऋ० भू० ८१, ३.६२. तिगुणी अर्थात् तीन सौ वर्ष पर्यन्त (नेत्र-ज्योतिः) स० प्र० ४१९, ३.६२. [त्रि-आयुस्पदयोः समासे 'अचतुरविचतुर०' अ० ५.४.७७. सूत्रेण समासान्तोऽच् निपात्यते । आयुस्=इण् गतौ (अदा०) धातोः 'एतेर्णिच्च' उ० २.११८. सूत्रेण उसिः प्रत्ययो णिच्च]

त्र्याशिरः यास्त्रिभिर्जीवाग्नि-वायुभिरश्यन्ते भुज्यन्ते ताः (वाचः) ५.२७.५. [त्रि-आशिरपदयोः समासः । आशिरः=आङ्पूर्वाद् अश भोजने (क्र्या०) धातोरौणादिकः किरच् प्रत्ययः]

त्र्युदायम् यं मनोदेह-वचनैरुदायन्ति तम् (सोमम्=ऐश्वर्यम्) ४.३७.३. [त्रि-उदायपदयोः समासः। उदायः उत्-आङ् पूर्वाद् या प्रापणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः]

त्र्युधा त्रीणि कारण-सूक्ष्म-स्थूलान्यूधांसि यस्मिन् सः (परमेश्वरः), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन ह्रस्वः ३.५६.३. [त्रि-ऊधस् पदयोः समासे छान्दसं ह्रस्वत्वम्। ऊधस्=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० असुन्प्रत्ययः। धातोः सम्प्रसारणे कृते दीर्घत्वं धकारश्चान्तादेशः]

त्वक् यस्त्वचति संवृणोति सः (ईश्वरः सूर्यो वायुर्वा) ४.३०. त्वचति संवृणोत्यनया सा १.१९. त्वग्वत्सेविनम् (व्यवहारम्) १.१४. स्पर्शेन्द्रियसुखम् ७.४७. **त्वचम्**=त्वगिन्द्रियम् १.७९.३. शरीराऽवयवम् १.२२. सम्पर्कमिन्द्रियम् १.१३०.८. त्वगाच्छादकं रक्षकवर्म ५.३३.७. आच्छादकम् (जनम्) १.१२९.३. **त्वचः**=वाचः ४.१७.१४. **त्वचा**=मांस-रुधिरादीनां संवरकेणेन्द्रियेण २५.९. **त्वचि**=त्वगिन्द्रिये १.१४५.५. उपरिभागे १९.८२. संवरणे २३.३७. **त्वचे**=शरीराऽऽवरणदाहाय, तदन्तराऽऽवरणदाहाय ३९.१०. [तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'तनोतेरनश्च वः' उ० २.६३. सूत्रेण चिक्प्रत्ययः। धातोरन्भागस्य स्थाने वकारादेशः। त्वच् संवरणे धातोर्वा क्विप्प्रत्ययः। त्वक् प्रस्तावः जै० उ० १.३६.६. त्वक् सूददोहाः श० ८.१.४.५.]

त्वक्षसा सूक्ष्मीकरणेन ६.१८.९. शत्रुओं के बल के छेदक बल से, आर्याभि० १.३२, ऋ० १.७.१०.१५. स्वेन बलेन सामर्थ्येन, प्र०—त्वक्ष इति बलनाम, निघं० २.९, १.१००.१५. तीव्रेण (वीर्येण=बलेन) ४.२७.२. [त्वक्षः बलनाम निघं० २.९. त्वक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः]

त्वक्षीयसा प्रदीप्तेन (वयसा=आयुषा) २.३३.६.

त्वद्रिक् त्वां प्रति यतमानः (अध्यापको जनः) ५.३.१२.

त्वयतायै त्वया प्रयत्नेन साधितायै (इषे=इच्छासिद्धयेऽन्नप्राप्तये वा) ७.२१.१०. यया स्वस्मिन् यतते तस्यै (इषे=अन्नाद्यै) ७.२०.१०. [युष्मद्-यतापदयोः समासः। 'प्रत्ययोत्तरपदयोश्च' सूत्रेण त्वादेशः। यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽन् प्रत्यये स्त्रियां टापि यताशब्दः सिध्यति]

त्वष्टः ! शत्रु-बलच्छेत्तः (देव=दिव्यविद्यासम्पन्न सेनाध्यक्ष) ६.२०. सर्वदुःखच्छित् (अ०—सभापते) ६.७. देदीप्यमान (विद्वज्जन) २६.२४. विच्छेदक (विद्वज्जन) २.३६.३. छेदक (जन) ३.४.९. विद्याप्रापक (देव=विद्वज्जन) ७.२.९. **त्वष्टा**=त्वक्षति तनूकरोति दुःखानि, प्रलये सर्वान् पदार्थान् छिनत्ति वा स जगदीश्वरः २.२४. निर्माता (बृहस्पतिः=परमेश्वरः) २.२३.१७. विच्छेदकोऽग्निः १८.१७. सूर्यः, ऋ० भू० २८३, १.३२.२. सर्वतो विद्यया प्रदीप्तः (विद्वान् जनः) ४.३१.४. दुःखविच्छेदकः (ईश्वरः) २१.५५. छेत्ता (सेनापतिः) १.८०.१४. विविधरूपस्य निर्माता (पुरुषः) २.३.९. रचनकर्त्ता (परमेश्वरः), ऋ० भू० १३०, ३१.१७. प्रकाशकः (देवः=विद्वान् जनः) ३.५४.१२. तनूकर्त्ता (विद्वान् जनः) १.१६१.४. छेत्ता सूर्य इव विद्वान् १.१६१.५. मेघाऽवयवानां मूर्त्तद्रव्याणां च छेत्ता (सूर्यः) १.५२.७. विद्या-धर्मेण राजमानः (विद्वान् जनः) १.१४२.१०. विद्यया प्रकाशित ईश्वरः २७.२०. ज्ञाता (चतुरो जनः) ४.३३.६. शिक्षकः (विद्वान् जनः) ४.३३.५. विद्याऽऽदि-सद्गुणैः प्रकाशमानः अ०—विद्वान् जनः) २९.९. विद्युदिव वर्त्तमानो विद्वान् (जनः) २०.४४. प्रकाशयिता (सूर्यः) १.६१.६. सर्ववस्तु-विच्छेदकोऽग्निरिव परीक्षको विद्वान् (जनः) ७.३५.६. स्वाऽऽत्मप्रकाशितः (ईश्वरः) २९.९. दीप्तिमत्त्वेन छेदकः (इन्द्रः=सूर्यः) १.८५.९. अविद्याच्छेदकः (विद्वान् जनः) ८.१६. वेगाऽऽदिगुणविद्यावित् (विद्वान् जनः) ९.८. सर्वव्यवहाराणां तनूकर्त्ता (अध्यापको गृहपतिः) ८.१४. सुखविस्तारकः (गृहपतिः=गृहस्थो जनः), भा०—दुखिनां दुःखच्छेदनम् ८.१७. प्रकाशमानः (इन्द्रः=सूर्यः) १.१८६.६. सुरूपसाधकः (विद्वान् जनः) १.१६२.३. जैसे बिजली सब को व्याप्त हो रही है, वैसे तू (शुभानने=पत्नि), सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५३. दीप्तिमत्त्वेन छेदकः (इन्द्रः=सूर्यः), प्र०—'त्विषेर्देवतायामकारश्चोपधाया अनिट्त्वञ्च' अ० ३.२.१३५. अनेन वार्त्तिकेन त्विषधातोस्तृन् १.८५.९. **त्वष्टारम्**=तेजस्विनम् (शत्रुं जनम्) ३.४८.४. दोषविच्छेदकम्, भा०—रोगनिवारकम् (भिषज=वैद्यम्) २८.९. देदीप्यमानम् (पुरुषम्) २६.३०. छेदनकर्त्तारं सूर्यं शिल्पिनं वा १.२२.९. दुःखानां छेदकं सर्वपदार्थानां विभाजितारं वा (परमात्मानं भौतिकमग्निं वा) १.१३.१०. वियोग-संयोगादिकर्त्तारम् (देवं=विद्वांसं जनम्) २९.३४. दुःखच्छेत्तारम् (भिषजं=वैद्यवरम्) २१.३८. **त्वष्टुः**=छेदकात् कालात् १.९५.५. विद्युतो वायोर्वा १.९५.२. प्रदीप्तस्य (सूर्यादेः) २५.५. मूर्त्तद्रव्यच्छेदकस्य (अग्नेः) १.८४.५. प्रकाशस्य ४.१८.३. प्रदीप्ताच्छिक्षणात्, भा०—

सद्यो जातशिक्षस्याऽश्वस्य २६.६. सुखप्रकाशकस्य (ईश्वरस्य) १३.५०. **त्वष्ट्रा**=सर्वदुःखच्छेदकेन गुणेन ८.१०. प्रतापिना सूर्येणेव न्यायेन १०.३०. **त्वष्ट्रे**=प्रकाशकाय (जनाय) २२.२०. विद्याप्रकाशकाय (विद्वज्जनाय) २२.२०. प्रकाशाय, प्र०—त्विष इतोऽत्त्वम्, उ० २.६५. अनेनाऽयं सिद्धः २२.२०. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'नप्तृनेष्टृत्वष्टृ०' उ० २.६५. सूत्रेण तृन् तृज् वा प्रत्ययो निपात्यते । अथवा तच्छीलाद्यर्थेषु) त्विषेर्देवतायामकारश्चोपधाया अनिट्त्वञ्च' अ० ३.२.१३५. वा० सूत्रेण तृन् प्रत्ययः । त्वष्टा तूर्णमश्नुते इति नैरुक्ताः । त्विषेर्वा स्याद्दीप्तिकर्मणः, त्वक्षतेर्वा स्यात् करोतिकर्मणः । माध्यमिकः (मध्यमे स्थाने भवः । वायुर्वेन्द्रोऽन्तरिक्षस्थानः) त्वष्टेत्याहुर्मध्यमे च स्थाने समाम्नातः । अग्निरिति शाकपूणिः नि० ८.१४. त्वष्टा वाग्वै त्वष्टा वाग्घीदं ताष्टीव ऐ० २.४. इन्द्रो वै त्वष्टा ऐ० ६.१०. त्वष्टा वै पशूनामीष्टे श० ३.८.३.११. त्वष्टुर्हि पशवः श० ३.८.३.११. त्वष्टा पशूनां मिथुनानां रूपकृद् रूपपतिः तै० २.५.७.४. त्वष्टा वै पशूनां मिथुनानां रूपकृत् तै० ३.८.११.२. त्वष्टा वै पशूनां रूपाणां विकर्त्ता तां० ६.१०.३. त्वष्टा हि रूपाणि विकरोति तै० २.७.२.१. त्वाष्ट्राणि वै रूपाणि । श० २.२.३.४. त्वष्टा वै रूपाणामीशे तै० १.४.७.१. त्वष्टा वै रूपाणामीशे तै० १.४.७.१. त्वष्टा वै रूपाणामीष्टे श० ५.४.५.८. त्वष्ट्रा रूपेण तै० १.८.१.२. त्वष्टा (श्रियः) रूपाणि (आदत्त) श० ११.४.३.३. त्वष्टा वै रेतः सिक्तं विकरोति कौ० ३.६. श० १.६.२.१०. रेतः सिक्तिर्वै त्वाष्ट्रः कौ० १६.६. त्वष्टः समिधां पते तै० ३.११.४.१. त्वष्टुर्ह वै पुत्रः । त्रिशीर्षा षडक्ष आस तस्य त्रीण्येव मुखान्यासुस्तद्यदेवं रूप आस तस्माद् विश्वरूपो नाम श० १.६.३.१, ५.५.४.२. त्वाष्ट्रं दशकपालं पुरोडाशं निर्वपति श० ५.४.५.८. (श्रीः) त्वाष्ट्रं दशकपालं पुरोडाशं (अपश्यत्) श० ११.४.३.५. (प्रजापतिः) त्वाष्ट्रमविं (आलिप्सत) श० ६.२.१.५. वारुणी च हि त्वाष्ट्री चाविः श० ७.५.२.२०. त्वाष्ट्रं वडवमालभेत प्रजाकामः गो० उ० २.१. संवत्सरो वै त्वष्टा मै० ४.४.७. वाग्वै त्वष्टा, वाग्घीदं सर्वं ताष्टीव ऐ० २.४. त्वष्टा यजमानः काठ० ७.१०.]

त्वष्टृमान् त्वष्टार उत्तमाः शिल्पिनो विद्यन्ते यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ६.५२.११. **त्वष्टृमन्तः**=बहवस्त्वष्टारः प्रकाशात्मानः पदार्थाः विद्यन्ते येषु ते (जनाः स्त्रियो वा) ३७.२०. [त्वष्टृप्राति० भूम्नि प्रशंसायां वा मतुप्]

त्वष्टेव उत्तमः शिल्पीव (विद्वान्=पूर्णविद्यो जनः) ४.४२.३. [त्वष्टृ-इव-पदयोः समासः]

त्वः अन्यो द्वितीयो वा १.१४७.२. कश्चित् निन्दकः १२.४२. जो विद्वान् से भिन्न (अविद्वान्) स० प्र० ६०, १०.७१.४. [त्व इति विनिग्रहार्थीयं सर्वनामानुदात्तम् । अर्धनामेत्येके नि० १.७. त्वे अपरे नि० १.८. त्वो नेम इत्यर्धस्य त्वोऽपतत: नि० ३.२०.]

त्वाङ्कामया यया त्वां कामयते तया (गिरा=वाण्या), अत्र द्वितीयैकवचनस्याऽलुक् १२.११५. [युष्मत्-कामयापदयोः समासः । 'प्रत्ययोत्तरपदयोश्चे' ति त्वादेशः]

त्वादत्तेभिः त्वया दत्तेभिः (भेषजभिः=औषधैः) २.३३.२. [युष्मद्-दत्तपदयोः समासः । 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण भिस ऐस् न भवति]

त्वादातम् त्वया शोधितं तेन सूर्येण वा (राधः=द्रव्यम्) १.१०.७. त्वया गृहीतम् यशः=आरोग्यप्रदमुदकमन्नं धनं वा) ३.४०.६. त्वया दातव्यम् (पशुम्) ५.७.१०. [युष्मद्-आदातपदयोः समासः । आदातम्=आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) दैप् शोधने (भ्वा०) धातोर्वा क्तः । छान्दसत्वाद् 'अच उपसर्गात्तः' इति तकारादेशो न भवति । त्वादातम्=त्वया दातव्यम् नि० ४.४.]

त्वादूतासः त्वं दूतो येषां ते (विद्वांसो जनाः) २.१०.६. [युष्मद्-दूतपदयोः समासे जसोऽसुक्]

त्वायतः त्वामात्मानं तवाऽऽत्मानं वेच्छतः (जरितुः=स्तोतृजनस्य) १.५३.३. त्वां कामयमानान् (दाशुषः=दातृजनान्) २.२.२. **त्वायता**=त्वां प्राप्तेन (मनसा=विज्ञानेन) ६.४०.३. **त्वायन्तः**=त्वां कामयमानाः (प्रजापुरुषाः) ७.१८.१२. [युष्मत्-पदाद् इच्छायामर्थे क्यच् । 'प्रत्ययोत्तरपदयोश्चे' ति त्वादेशः । 'न छन्दस्यपुत्रस्य' अ० ७.४.३५. सूत्रेणेत्त्वप्रतिषेधः । क्यजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

त्वायवः त्वां तं वोपेताः (सुताः=मूर्त्तिमन्तः पदार्थाः) प्र०—'छन्दसीणः, उ० १.१२. इत्यौणादिके उण्प्रत्यये कृते आयुरिति सिध्यति, त्वदित्यत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा, इत्यनेन तकारलोपः । सूर्यपक्षे तन्निमित्तप्राप्ताऽऽयुष (मूर्त्तिमन्तः पदार्थाः) १.३.४. त्वत्कामयमानाः (जनाः) ३.४१.७. ये त्वां युवन्ति मिलन्ति ते (पदार्थाः) २०.८७. **त्वायुभिः**=त्वां कामयमानैः (नृभिः=नेतृभिर्जनैः) ४.१६.१६. **त्वायुः**=त्वां कामयमानः (प्रजाजनः) ६.४७.१०. [युष्मत्-पदाद् इच्छायामर्थे क्यचि 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः प्रत्ययः । युष्मद्-आयुस्पदयोर्वा समासः । युष्मद्-यवपदयोर्वा समासः यवः=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोरच् प्रत्ययः]

त्वाया त्वां प्राप्ते (पृथिवीद्यावा=भूमिविद्युतौ) ३.४६.५. त्वत्कामनया २.१८.६. त्वया, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयास्थानेऽयाजादेशः १.१०१.८. त्वयि, प्र०—अत्र विभक्तेः 'सुपां सुलुग्०' इत्ययाजादेशः ५.३२.१२. यस्त्वां कामयते (अग्निः=राजा) ४.२.६. त्वदीयया (मत्या) ७.२९.३. तव नीत्या ७.१८.२१. **त्वायाः**=त्वां प्राप्ताः (प्रजाजनाः), प्र०—अत्र विभक्तेराकारादेशः ४.२.१४. त्वया सहिताः (मनुष्याः) १.१०१.९. **त्वाभिः**=त्वदीयाभिः (ऊतिभिः=रक्षाभिः) २.२०.२. [युष्मत्प्राति० इच्छायां क्यच्। 'तस्येदम्' इत्यण् वा। युष्मदस्त्वादेशः]

त्वावतः त्वत्सदृशान् (नॄन्=सत्कर्त्तव्यान् जनान्) २.२०.१. त्वया सदृशस्य (शूरवीरजनस्य) ७.२१.८. त्वत्सदृशस्य (ईश्वरस्य विदुषो वा) १.९१.८. त्वया रक्षिताः (सखायः=सुहृज्जनाः) ४.३२.६. **त्वावान्**=त्वादृशः (सभाध्यक्षः), प्र०—अत्र 'वतुप्प्रकरणे युष्मदस्मद्भ्यां छन्दसि सादृश्योपसङ्ख्यानम्, अ० ५.२.३९. इति सादृश्यार्थे वतुप् १.३०.१४. त्वया सदृशः (इन्द्रः=जगदीश्वरः) ७.३२.२३. त्वत्सदृशः (कश्चिदपि पदार्थः) १.५२.१३. [युष्मत्प्राति० सादृश्येऽर्थे 'वतुप्प्रकरणे युष्मदस्मद्भ्यां छन्दसि सादृश्योपसंख्यानम्' अ० ५.२.३९. वा० सूत्रेण वतुप्। 'प्रत्ययोत्तरपदयोश्च' सूत्रेण त्वादेशः। 'आ सर्वनाम्नः' अ० ६.३.९१. सूत्रेणाकारादेशः]

त्वावसुम् त्वया प्राप्तधनम् (प्रजाजनम्) ७.३२.१४. [युष्मद्-वसुपदयोः समासः। वसु धननाम निघं० २.१०.]

त्वावृधा या त्वां वर्धयते सा (देवी=दिव्यगुणैर्वर्त्तमाना स्त्री) १.५६.५. [युष्मदुपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप् 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

त्वाष्ट्रम् तूर्णं यः सकला विद्या अश्नुते तस्येदं विज्ञानम् प्र०—त्वष्टा तूर्णमश्नुत इति नैरुक्ताः, नि० ८.१३, १.११७.२२. त्वष्ट्रा निर्मितम् (प्रजासुखम्) २.११.१९. त्वष्टुः सूर्यस्येदं तेजः ३.७.४. **त्वाष्ट्राः**=त्वष्टृदेवताकाः, भा०—सूर्यगुणाः पशवः पक्षिणश्च २४.४. [त्वष्टृपदं व्याख्यातम्। ततः 'तस्येदम्' 'सास्य देवता' इत्येतयोरर्थयोरण्प्रत्ययः। त्वाष्ट्रोऽसुर इत्यैतिहासिकाः नि० २.१६. त्वाष्ट्रं वडवमालभेत पशुकामः तै० सं० २.१.८.३. त्वाष्ट्रं दशकपालं पुरोडाशं (श्रीरपश्यत्) श० ११.४.३.५. त्वाष्ट्रमविम् (प्रजापतिरालिप्सत) श० ६.२.१.५. त्वाष्ट्रा वै पशवस्त्वष्टा पशूनां प्रजनयिता मै० २.५.५. त्वाष्ट्राणि वै रूपाणि श० २.२.३.४. त्वाष्ट्रौ लोमशसक्थौ काठ० ४८.२. त्वाष्ट्रं लोमसक्थ्यौ सक्थ्योः मै० ३.१३.२. रेतःसिक्तिर्वै त्वाष्ट्रः कौ० १९.६. प्लीहाकर्णः शुण्ठाकर्णोऽधिरूढाकर्णास्ते त्वाष्ट्राः मै० ३.१३.५.]

त्वाहतस्य त्वया हतस्य (दुर्जनस्य) ७.३२.७. [युष्मद्-हतपदयोः समासः। हतः=हन्तेः क्तः प्रत्ययः]

त्विषः प्रतापात् ४.१७.२. प्रदीप्तस्य (दक्षस्य=बलस्य) ३८.२८. **त्विषे**=शरीरात्मदीप्तिबलाय ५.५२.१२. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

त्विषिम् प्रकाशम् २१.५३. प्रकाशयुक्तम् (इन्द्रियं=श्रोत्रादि) २८.४०. प्रदीप्तिम् २१.३५. विद्याप्रकाशं तेजो वा १.७१.५. **त्विषिः**=ज्योतिः (आप्तो राजा) १०.५. विज्ञान-प्रकाशः १०.५. दीप्तिः (परमाप्तः परमात्मा) १०.१५. न्यायप्रदीप्तिरिव २०.५. दीप्तिः, शुभगुणानां प्रकाशः, सत्यगुणकामना च, ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.८. सत्यन्यायदीप्तिः, ऋ० भू० २१८, २०.५. सद्विद्यादि से तेज जो आरोग्य, शरीर और आत्मा के बल से प्रकाशमान है सं० वि० १४४, अथर्व० १२.५.८. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिक इन्प्रत्ययः। त्विषिरित्यप्यस्य दीप्तिर्नाम भवति नि० १.१७]

त्विषीमत् बह्व्यस्त्विषयो दीप्तयो विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (सदनं=स्थानम्), प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः ३.३१.१२. [त्विषीति व्याख्यातम्। ततो भूम्नि मतुप्। 'अन्येषामपि दृश्यते' इति मतुपि परे दीर्घः]

त्विषीमतीम् प्रशस्तविद्याप्रकाशयुक्ताम् (वाचम्) ५.६३.६. [त्विषीमदिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीप्प्रत्ययः]

त्विषीमते बह्व्यस्त्विषयो न्यायदीप्तयो विद्यन्ते यस्य तस्मै (सेनाधीशाय), प्र०—अत्र 'शरादीनां च' इति दीर्घः १६.१०. प्रशस्तप्रकाशान्तःकरणवते (इन्द्राय=अध्यापकायोपदेशकाय वा) १.५५.५. **त्विषीमन्तः**=विद्याविनयादिप्रकाशयुक्ताः (मरुतः=शूरवीरा मनुष्याः) ६.६६.१०. **त्विषीमान्**=बहुदीप्तियुक्तः (इन्द्रः=विद्युत्) २.२२.२. [त्विषिपदं व्याख्यातम्। ततो भूम्नि मतुबन्तस्य रूपाणि]

त्वेनम् केन अन्येन वा ४.१८.२. [त्व इति व्याख्यातम्। तस्य छान्दसं रूपम्]

त्वेषम् प्रकाशम् ३.२६.५. दीप्तिमन्तम् (विद्वांसम्) ५.५८.२. सद्गुण-प्रकाशम् ५.५३.१०. प्रकाशमानम्

(रूपम्) १.११४.५. विद्यान्यायदीप्तिमन्तम् (रुद्रं=शत्रुयोद्धारम्) १.११४.४. प्रकाशितम् (वचः=वचनम्), ५.८. प्रकाशकम् (वचः=शब्दनम्) ५.८. प्रदीप्तम् (वचः=परिभाषणम्) ५.८. स्वकान्त्या प्रकृष्टम् (तमः=अन्धकारः) ३४.३२. दीप्तिमत् (शर्धः=बलम्) ६.४८.१५. कमनीयम् (रूपम्) १.९५.८. प्रकाशयुक्तम् (क्षत्रं=धनं राज्यं वा) ५.३४.९. सूर्य्यदीप्तिम् १.१६८.६. देदीप्यमानम् (शर्धः=बलम्) ५.५६.९. अग्न्यादिप्रकाशवद्द्रव्ययुक्तम् (मारुतं गणं+मरुतामिमं समूहम्) १.३८.१५. **त्वेषस्य**=क्रोधाऽग्निना प्रदीप्तस्य (अघायोः=दुष्टाचारिणो जनस्य) १६.५०. **त्वेषः**=प्रदीप्तस्वभावः (अग्निः) १.६६.३. यस्त्वेषति प्रदीप्तो भवति सः (सभाध्यक्षः) १.७०.६. दीप्तियुक्तः (अग्निः=विद्यादिकार्यकारणस्य स्वरूपः) २.९.१. दीप्तिमान् (विद्वद्राजजनः) ५.८७.५. देदीप्यमानः (राजा) ६.३.८. **त्वेषाः**=विद्यासुशीलप्रकाशाः १.१४३.३. बाह्याभ्यन्तरघर्षणेनोत्पन्नविद्युदग्निना प्रदीप्ताः (रुद्रियासः=वायवः) १.३८.७. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्भावे घञ् प्रत्ययः। अथवा कर्त्तरि अच्-प्रत्ययः। औणादिको वा अन्प्रत्ययः। त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षा इति महान्त्स भानुरर्णवो नृचक्षा इत्येतद् (त्वेषः=महान्) श० ७.१.१.२३ एनश्च वैरहत्यञ्च त्वेषं वचः तै० १.५.९.६.]

त्वेषसा विद्यान्याय-बलप्रकाशेन कान्त्या वा १.६१.११. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन् प्रत्ययः]

त्वेषथात् प्रदीप्तात् (व्यवहारात्) १.१४१.८. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽथः प्रत्ययः]

त्वेषद्युम्नाय प्रकाशमानाय यशसे १.३७.४. [त्वेष-द्युम्नपदयोः समासः। द्युम्नम् धननाम निघं० २.१०.]

त्वेषनृम्णः त्वेषं सुप्रकाशितं नृम्णं धनं यस्य सः (अ०—वीरः), भा०—वीरत्वम् ३३.८०. [त्वेष-नृम्णपदयोः समासः। नृम्णम् बलनाम निघं० २.९. धननाम निघं० २.१०. त्वेषनृम्णः दीप्तिनृम्णः नि० १४.२४.]

त्वेषप्रतीका त्वेषस्य प्रकाशस्य प्रतीतिकारिका (प्राप्तविद्यासुशिक्षा स्त्री) १.१६७.४. [त्वेष-प्रतीकपदयोः समासे स्त्रियां टाप्। त्वेषप्रतीका भयप्रतीका, महाप्रतीका-दीप्तप्रतीका वा नि० १०.२१.]

त्वेषयामाः त्वेषे दीप्तौ सत्यां यामो गमनं येषान्ते (रथाः) १.१६६.५. [त्वेष-यामपदयोः समासः। यामः या प्रापणे (अदा०) धातोरौणादिको मन्प्रत्ययः]

त्वेषरथः त्वेषः प्रकाशवान् रथो यस्य सः (मनुष्याणां गणः) ५.६१.१३. [त्वेष-रथपदयोः समासः]

त्वेषसन्दृक् यस्त्वेषं न्यायप्रकाशं संपश्यति दर्शयति वा (इन्द्रः=राजा) ६.२२.९. **त्वेषसन्दृशः**=त्वेषं दीप्तिं पश्यन्ति ते सम्यग् दर्शयितारः (नरः=नेतारो जनाः) १.८५.८. ये त्वेषं संपश्यन्ति (विद्वज्जनाः) ५.५७.५. [त्वेषोपपदे सम्पूर्वाद् दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्विन् प्रत्ययः]

त्वेषा प्रदीप्तिः १.१६८.७. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्भावे घञ्-प्रत्ययान्तात् स्त्रियां टाप्]

त्वेषासः प्रकाशमानाः (श्येनासः=अश्वाः) ४.६.१०. त्विषन्ति दीप्यन्ते यास्ताः (अर्चयः=दीप्तयः) १.३६.२०. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्घञ्-प्रत्ययान्तात् प्रथमा बहुवचने जसोऽसुक्। त्विष धातोः कर्त्तरि अच् वा]

त्वेषी प्रकाशमाना (समृतिः=सम्यक् सत्यक्रियावान् जनः) ७.६०.१०. [त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्घञ्प्रत्यये त्वेषः। ततो मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

त्वेष्येण त्विषि प्रदीपने भवेन (बलेन) ७.५८.२. [त्वेषप्राति० भवार्थे यत्]

त्वोतयः त्वया रक्षिताः (मनुष्याः) ५.६५.५. [युष्मद्-ऊतिपदयोः समासः। ऊतिः=अवरक्षणादिषु धातोः क्तिन्]

त्वोतः त्वां कामयमानः (जनः) ३.१९.३. युष्माभिरुतः सङ्गमितः (अग्निः) १.७४.८. त्वया रक्षितः (मनुष्यः) ३.५९.२. **त्वोताः**=त्वया पालिताः (प्रजाजनाः) ६.१९.१३. त्वया रक्षिताः (प्रजाः) ५.३.६. त्वया कृतरक्षाः (मनुष्याः) १.७३.९. [युष्मद्-ऊतपदयोः समासः। ऊतः=अवरक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्ययः। आगमशासनस्यानित्यत्वाद् इट् न भवति]

त्वोतासः त्वया रक्षिता वर्धिताः (प्रजाजनाः) ४.२९.५. त्वया बलं प्रापिताः (धार्मिकाः शूरा जनाः) १.८.३. त्वया जगदीश्वरेण रक्षिताः सन्तः (जनाः) १.८.२. [त्वोत इति व्याख्यातम्। ततः प्रथमाबहुवचने जसोऽसुग्-आगमः]

त्सरत् विरुद्धं गच्छति १.७१.५. [त्सर छद्मगतौ (भ्वा०) धातोर्लेटि रूपम्]

त्सरुः कठिनो रोगः ७.५०.२. कुटिलगतिः (रोगः) ७.५०.१. कुटिलो रोगः ७.५०.३. [त्सर छद्मगतौ (भ्वा०) धातोः 'भृमृशीङ्०' उ० १.७. सूत्रेण उः प्रत्ययः]

त्सारी कुटिलगामी (विद्वान् जनः) १.१३४.५. [त्सर छद्मगतौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वा' इति नियमान्

निरुपपदादपि णिनिः प्रत्ययः]

दक्ष ! अतिचतुर (अग्ने=विद्वज्जन) ३.१४.७. **दक्षम्**=बलम् १.१५१.४. बलं चातुर्य्यम् ३.१३.२. चतुरम् (अध्यापकमुपदेशकं वा) २५.१६. विद्याचातुर्य-बलयुक्तम् (विद्वांसं जनम्) १.८९.३. **दक्षस्य**=चतुरस्य विद्याबलयुक्तस्य विदुषो जनस्य) ५.१०.२. कुशलस्य जनस्य ३३.७२. शरीराऽऽत्म-बलयुक्तस्य (पुरुषस्य) १५.४५. चतुरस्य विद्यार्थिनः (जनस्य) ३.२७.९. **दक्षः**=चतुरः (मनुष्यः) १.५९.४. बलम्, भा०—उत्तमं बलम् ३८.२७. विद्यमानशरीरात्म-बलः (मर्त्यः=मनुष्यः) १.९१.१४. चातुर्य्यम् १८.२. बलचातुर्य्ययुक्तः (विद्वान् सभेशः) १८.५३. **दक्षाणाम्**=विद्याक्रियाकौशलेषु चतुराणाम् (विदुषां जनानाम्) १.९५.६. **दक्षाय**=चातुर्य्याय बलाय ५.४३.५. बलप्राप्तये प्र०—दक्ष इति बलनामसु पठितम्, निघं० २.९, ३.५४. बलाय चतुरत्वाय वा, भा०—वृद्धये ३४.८. **दक्षेण**=बलयुक्तेन (तन्वा=शरीरेण) ४.५६.६. **दक्षैः**=विद्यासुशिक्षाचातुर्य्यगुणैः १.६८.४. विज्ञानादिगुणैः १.९१.२. बलैश्चतुरैर्गुणैर्वा ७.६०.६. [दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे च (भ्वा०) धातोः, दक्ष गतिशासनयोः (भ्वा०) धातोर्वा, दक्षतेः समर्द्धयतिकर्मणः (नि० १.७.) धातोर्वा अच्प्रत्ययः कर्त्तरि। भावे वा घञ्प्रत्यये मत्वर्थीयस्य प्रत्ययस्य लुक्। दक्षः बलनाम निघं० २.९. आदित्यो दक्ष इत्याहुः नि० ११.२०. दक्षाय अपत्याय नि० ११.३०. दक्षो ह वै पार्वतिरेतेन यज्ञेनेष्ट्वा सर्वान् कामानाप कौ० ४.४. स (प्रजापतिः) वै दक्षो नाम श० २.४.४.२. क्रतुं दक्षं वरुण संशिशाधि (ऋ० ८.४२.३.) इति वीर्यं प्रज्ञानं वरुण संशिशाधीति ऐ० १.१३. स्वैर्दक्षैर्दक्षपितेह सीदेति। स्वेन वीर्येणेह सीदेत्येतत् श० ८.२.१.६. अथ यदस्मै तत्समृध्यते स दक्षः श० ४.१.४.१ वरुणो दक्षः श० ४.१.४.१. प्राणा वै दक्षाः। जै० १.१५१. दक्षश्च मे बलं च मे (यज्ञेन कल्पताम्) तै० सं० ४.७.१.२.]

दक्षक्रतवः दक्षाः शरीरात्मबलानि क्रतवः प्रज्ञाः कर्माणि वा येषां ते (देवाः=विद्वांसो जनाः), प्र०—दक्ष इति बलनामसु पठितम्, निघं० २.९, ४.११. [दक्ष-क्रतुपदयोः समासः। दक्ष इति बलनाम निघं० २.९. क्रतुः=कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. दक्षक्रतू ते मैत्रावरुणः (ग्रहः) पातु मै० ४.८.७.]

दक्षत बलं प्राप्नुत ७.३२.९. **दक्षते**=वर्धते ७.१६.६. [दक्ष गतिशासनयोः (भ्वा०) धातोः, दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे वा (भ्वा०) धातोर्वा लोट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। अन्यत्र लट्]

दक्षन् दहेत्, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति भत्वं न १.१३०.८. [दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लेट्। 'सिब्बहुलं लेटि' सूत्रेण सिप्]

दक्षपतिः विद्याचातुर्य्य-पालकः (कालः) १.९५.६. [दक्ष-पतिपदयोः समासः। दक्ष इति व्याख्यातम्]

दक्षपिता दक्षस्य बलस्य चतुराणां भृत्यानां वा पिता पालकः (विद्वान् जनः) १४.३. **दक्षपितॄन्**=चतुरान् जनकानध्यापकान् वा ६.५०.२. [दक्ष-पितृपदयोः समासः]

दक्षसे बलाय, विद्याबलदानाय २.१.११. आत्मबलाय १.१५१.३. भा०—बलं वर्धयितुम् २७.४२. [दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे वा (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे असेन्प्रत्ययः]

दक्षाय्यः यो राजकर्मसु प्रवीणः (इन्द्रः=सेनेशः) १.१२९.२. दक्षश्चतुरो विद्वानिव (विद्युदग्निः) ७.१.२. विज्ञानकारकः (परमेश्वरो विद्वान् वा) १.९१.३. हिंसकः (अग्निः=पावकः) २.४.३. [दक्ष गतिहिंसनयोः (भ्वा०) दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे वा (भ्वा०) धातोर्वा 'श्रुदक्षि०' उ० ३.९६. सूत्रेण आय्यः प्रत्ययः]

दक्षासः विज्ञान-बलवृद्धाः शीघ्रकारिणः (मेधाविनो जनाः) १.५१.२. [दक्ष इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

दक्षिणम् उत्तमाऽङ्गं, दक्षिणभागम् ४.२७. **दक्षिणः**=वृष्टेः प्रापकः (वायुः), प्र०—दक्षधातोर्गत्यर्थत्वादत्र प्राप्त्यर्थो गृह्यते २.३. प्राप्तः (बाहुः=यज्ञः) प्र०—'दक्ष गतिहिंसनयोः, इत्यस्माद् 'द्रुदक्षिभ्यामिनन्' उ० २.५०. इतीनन्प्रत्ययः अनेन गतेरन्तर्गतः प्राप्त्यर्थो गृह्यते १.२४. एको दक्षिणपार्श्वस्थः (अश्वः) १.८२.५. **दक्षिणात्**=दक्षिणपार्श्वात् ५.१९. **दक्षिणे**=दक्षिणभागस्थेन सैन्येन प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयास्थाने शे आदेशः १.१००.९. [दक्ष गतिहिंसनयोः (भ्वा०) धातोः 'द्रुदक्षिभ्यामिनन्' उ० २.५०. सूत्रेण इनन्प्रत्ययः। दक्षिणो वा अर्द्ध आत्मनो (शरीरस्य) वीर्यवत्तरः तां० ५.१.१३.]

दक्षिणतः दक्षिणप्रदेशात् ५.११. दक्षिणपार्श्वतः १६.६२. दक्षिणायन-कालविभागात् १.९५.६. दक्षिणाद् देशात् ३७.१२. दक्षिणपार्श्वे २.४२.३. [दक्षिणं व्याख्यातम्' ततः 'आद्यादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ५.४.४४. वा० सूत्रेण तसिः]

दक्षिणतः कपर्दाः दक्षिणतः कपर्दा जटाजूटा येषां ब्रह्मचारिणां ते, (अध्यापकाऽध्येतारः) ७.३३.१. [दक्षिणतः-कपर्दपदयोः समासः। दक्षिणतः पदं व्याख्यातम्]

दक्षिणत्रा दक्षिणे ६.१८.६. [दक्षिणप्राति० सप्तम्यन्तात् 'देवमनुष्यपुरुष०' अ० ५.४.५६. सूत्रेण बहुलवचनात् त्रा-प्रत्ययः]

दक्षिणया ज्ञानसाधिकयाऽज्ञाननाशिकया (धिया=प्रज्ञया कर्मणा वा) ४.२३. सुशिक्षितया सेनया १.१२३.५. **दक्षिणा**=दक्षन्ते वर्धन्ते यया सा (प्रतिष्ठा श्रीर्वा) प्र०–अत्र 'द्रुदक्षिभ्यामिनन्, उ० २.४६. इतीनन्प्रत्ययः १.१८.५. दक्षिणया, प्र०—अत्र विभक्तिलोपः १६.३०. दक्षिणस्यां दिशि ५.१.३. दक्षिणतः १५.१६. दक्षन्ते प्राप्नुवन्ति विज्ञानं विजयञ्च यया सा (अदितिः=वाग्विद्युद् वा) ४.१६. वलकारिणी (राजनीतिः) २.११.२१. विद्यासुशिक्षादानम् २.१८.८. प्राणप्रदा (विदुषी स्त्री) २.१७.६. सत्कार से, सं० वि० १८८, १६.३०. दातुं योग्या (भा०—-सुखदुःखफला गतिः) १.१६८.७. **दक्षिणाभिः**=दानैः ३.६२.३. **दक्षिणाम्**=वर्द्धिकाम् (धनादिरूपाम्) ६.३७.४. प्रतिष्ठां श्रियं वा १६.३०. यदा सर्वतः सत्कृतः फलवान् भवति, तदा साऽस्य दक्षिणा ताम्, ऋ० भू० १००, १६.३०. सत्कारपूर्वक धनादि को, सं० वि० १८८, १६.३०. दक्षिणां दिशम् १०.११. **दक्षिणायाः**=दक्षिणस्याम् (धुरि) १.१६४.६. दिशः १.१२३.१. ज्ञानप्रापिकायाः (उषसः) ३.५८.१. **दक्षिणायै**=दानाय २६.२. सर्वस्वदानाय, ऋ० भू० ३१०, २६.२. या पूर्वमुखस्य पुरुषस्य दक्षिणबाहुसन्निधौ वर्त्तते, तस्यै (दिशे) २२.२४. **दक्षिणाः**=दक्षन्ते दीयन्ते सुपात्रेभ्यस्ताः (प्रतिष्ठाः श्रियो वा) १८.४२. दानानि ३.३६.५. कर्मानुसारेण दानानि, भा०—मानादि-व्यवहाराः १८.६४. [दक्षिणमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप् । दक्षिणा दक्षतेः समर्द्धयतिकर्मणो व्यृद्धं समर्द्धयतीति । अपि वा प्रदक्षिणागमनात् । दिशमभिप्रेत्य दिग्घस्तप्रकृतिः, दक्षिणो हस्तो दक्षतेरुत्साहकर्मणः, दाशतेर्वा स्याद् दानकर्मणः नि० १.७. तं (यज्ञं) देवा दक्षिणाभिरदक्षयंस्तद्यदेनं (यज्ञं) दक्षिणाभिरदक्षयंस्तस्माद्दक्षिणा नाम श० २.२.२.२, ४.३.४.२. तद् यद् दक्षिणाभिर्यज्ञं दक्षयति तस्माद् दक्षिणा नाम कौ० १५.१. दक्षिणा वै यज्ञानां पुरोगवी ऐ० ६.३५. एषा ह वै यज्ञस्य पुरोगवी यद् दक्षिणा गो० उ० ६.१४. शुभा वा एता यज्ञस्य यद् दक्षिणाः तां० १६.१.१४. श्लेष्म वा एतद् यज्ञस्य यद् दक्षिणा तां० १६.१.१३. यज्ञ आयुस्तस्य दक्षिणा आयुष्कृतः मै० २.३.४. यज्ञोऽदक्षिणो रिष्यति तस्मादाहुर्दातव्यैव यज्ञे दक्षिणा भवत्यल्पिकापि ऐ० ६.३५. तस्मान्नादक्षिणेन हविषा यजेत श० १.२.३.४. नादक्षिणं हविः स्यादिति ह्याहुः श० श० ११.१.३.७, ११.१.४.४. तस्माद् ऋत्विग्भ्य एव दक्षिणा दद्यान्नानृत्विग्भ्यः श० ४.३.४.५. अर्धा ह स्म वै पुरा ब्रह्मणे दक्षिणा नयन्तीति अर्धा इतरेभ्य ऋत्विग्भ्यः जै० उ० ३.१७.५. तस्मादात्रेयाय प्रथम दक्षिणा यज्ञे दीयन्ते गो० पू० २.१७. चतस्रो वै दक्षिणाः हिरण्यं गौर्वासोऽश्वः श० ४.३.४.७. अन्नं दक्षिणाः ऐ० ६.३. दक्षिणा वै स्तावाः (अप्सरसः. यजु १८.४२.) दक्षिणाभिर्हि यज्ञः स्तूयतेऽथो यो वै कश्च दक्षिणां ददाति स्तूयतऽएव सः श० ६.४.१.११. दक्षिणाः सावित्री गो० पू० १.३३. दक्षिणासु त्वेव न संवदितव्यꣳ संवादेनैवर्ऽत्विजोऽलोका इति श० ६.५.२.१६. यन्माध्यन्दिने सवने दक्षिणा नीयन्ते स्वर्ग एतेन लोके हिरण्यं हस्ते भवति गो० उ० ३.१७. एषा वै (दक्षिणा) दिक् पितॄणाम् श० १.२.४.१७. घोरा वा एषा दिग् दक्षिणा शान्ता इतराः गो० १.२.१६. तस्मादेतस्यां (दक्षिणस्याम्) दिश्येतौ पशू (गौश्चाजश्च) भूयिष्ठौ श० ७.५.२.१६. तस्मादेष (वायुः) दक्षिणैव भूयिष्ठं वाति श० ८.१.१.७, ६.१.१.७. दक्षिणया दिशा मासाः पितरो मार्जयन्ताम् मै० १.४.२. काठ० ५.५. दक्षिणा (दिक्) ब्रह्मणः श० १३.५.४.२४. दक्षिणामाहुर्यजुषामपाराम् तै० ३.१२.६.१. दक्षिणामेव दिशं सोमेन प्राजानन् श० ३.२.३.१७. दक्षिणा समुद्रः मै० ४.७.८. दक्षिणैव दिक् सर्वम् गो० १.५.१५. पितॄणां वा एषा दिग्दक्षिणा ष० ३.१.]

दक्षिणसत् यो दक्षिणे देशे सीदति सः (अ०—जनः) ३८.१०. [दक्षिणोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप् । दक्षिणसदो (देवाः) यमनेत्राः तै० सं० १.८.७.१. यमनेत्रेभ्यो देवेभ्यो दक्षिणसद्भ्यः स्वाहाः श० ५.२.४.५.]

दक्षिणः दक्षः प्रशस्तं बलं, गतिर्विद्यते यस्य तस्य (वाजिनः=राज्ञः) ६.८. [दक्ष इति व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः । दक्षिन्प्राति० षष्ठी विभक्तिः]

दक्षिणाग्निः वानप्रस्थ सम्बन्धी अग्नि, सं० वि० २१०, अथर्व० ६.६.१३. [दक्षिण-अग्निपदयोः समासः । तस्य योऽग्नेस्तृतीयो भागस्तं देवपितरः पर्यगृह्णन् दक्षिणतोऽनयन् स दक्षिणाग्निरभवत् तद् दक्षिणाग्नेर् दक्षिणाग्नित्वम् काठसंक० १५.१३. यजुर्वेदाद् दक्षिणाग्निः (अजायत) ष० ४.१.]

दक्षिणावत् दक्षिणाभिस्तुल्यम् (कार्यम्) ३.५३.६. [दक्षिणा व्याख्यातम् । ततस्तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः]

दक्षिणावताम् प्रशंसितयोर्धर्म्यधनविद्ययोर्दक्षिणा

दानं येषां तेषाम्, धर्मोपार्जिता धनविद्यादयो बहवः पदार्था विद्यन्ते येषां तेषाम् (विदुषां जनानाम्) प्र०—अत्र प्रशंसायां मतुप् १.१२५.६. **दक्षिणावन्तः**=बहुविद्यादानयुक्ताः, बह्वभयदानदातारः (ब्राह्मणा जनाः) १.१२५.६. [दक्षिणा व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां मतुप्। 'मादुपधायाश्च मतोर्वः०' अ० ८.२.९. सूत्रेण मतुपो मकारस्य वकारादेशः]

दक्षिणावाट् या दक्षिणां दिशं वहति सा (प्राची=पूर्वा दिक्) ३.६.१. ['दक्षिणा' इत्युपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' अ० ३.२.६४. सूत्रेण ण्विः प्रत्ययः]

दक्षिणावान् प्रशस्ता दक्षिणा विद्यते यस्य सः (राजा) ६.२९.३. [दक्षिणा व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां मतुप्]

दक्षिणावृतः या दक्षिणां वृण्वन्ति ताः (धियः) १.१४४.१. [दक्षिणोपपदे वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

दक्षिणासदः ये दक्षिणस्यां दिशि अवतिष्ठन्ते (देवाः=योगिनो न्यायाधीशाः) ९.३६. **दक्षिणासद्भ्यः**=ये दक्षिणस्यां दिशि सीदन्ति तेभ्यः (देवेभ्यः=विपश्चिद्भ्यो जनेभ्यः) ९.३५. ['दक्षिणा' इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्-प्रत्ययः कर्त्तरि]

दक्षिणित् दक्षिणेन पार्श्वेनैति गच्छतीति (इन्द्रः=शत्रुविदारको राजा) ५.३६.४. [दक्षिणोपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः क्विप्। पूर्वपदस्याकारस्य लोपश्छान्दसः]

दग्धा दाहकः (अग्निः) ५.९.४. [दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्प्रत्ययः]

दघ्याः तिरस्कुरु १.१२३.५. [दघ घातने पालने च (जु०) धातोर्लिङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

दङ्क्ष्णवः मांस-घासादीनां दङ्क्षणशीला व्याघ्रादयः, भा०—सिंहादिर्हिंसकाः पशवः, प्र०—अत्र दंशधातोर्बाहुलकान्नुः सुडागमश्च १५.१५. [दंश दशने (भ्वा०) धातोर् बाहु० औणादिको नुः प्रत्ययः सुडागमश्च]

दण्डा इव यष्टिका इव शुष्क-हृदयाऽभिमानिनः (अध्येतारो जनाः) ७.३३.६. [दण्डाः-इवपदयोः समासः। वज्रो वै दण्डो विरक्षस्तायै श० ३.२.१.३२.]

दतः दन्तान् ७.५५.२. [दन्तशब्दस्य 'दत्' इत्यादेशः 'पद्दन्नोमास्०' अ० ६.१.६३. सूत्रेण]

दत्त तत्तद् दानं कुरुत २.३२. दद्यात २०.७१. **दत्तम्**=गुपात्रेभ्यः समर्पितम् १८.६४. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लोटि मध्यमबहुवचनम्]

दत्रम् दानम् ३.३६.९. **दत्रे**=दातव्ये हिरण्यादिधने सति, प्र०—दत्रमिति हिरण्यनाम, निघं० १.२, ४.१७.६. [दत्रम् हिरण्यनाम निघं० १.२.]

दत्रवान् दानवान् (सज्जनः) ६.५०.८. [दत्रमिति हिरण्यनाम निघं० १.२. ततो मतुप् प्रशंसायाम्]

दत्वते दन्तवते (दशते=दंशकाय हिंसकप्राणिने) १.१२९.५. [दन्तप्राति० भूम्नि मतुप्। 'पद्दन्नोमास०' अ० ६.१.६३. सूत्रेण 'दत्' इत्यादेशः]

दद दत्त, प्र०—अत्र लोडर्थे लिट् १.३९.९. ददतु ४.३६.९. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लिटि मध्यमबहुवचनम्]

ददत् ददाति ४.२४.१०. दद्यात् ७.२८.५. दीजिये, आर्याभि० २.११, ३४.३६. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लेट्]

ददत् प्रयच्छन् (ईश्वरः) ७.४१.३. ददानः (ईश्वरः) ३४.३६. **ददत्**=दानं कुर्वतः (विदुषो राज्ञः) ७.३०.४. दानशीलान् (सज्जनान्) ५.७९.५. दानशीलाः (विद्वांसो जनाः) १.७३.५. **ददता**=दानकर्त्रा (विदुषा जनेन) ५.५१.१५. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः शतृप्रत्ययः]

ददते ददाति १.२४.७. [दद दाने (भ्वा०) धातोर्लट्। ददते धारयतिकर्मा नि० २.२.]

ददथुः दद्यातम् ४.३९.५. दत्तः ४.३८.१. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लिटि मध्यमद्विवचनम्]

ददभन्त दभ्नुयुः १.१४८.२. [दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

ददर्श पश्यति ४.१३.५. देखता है, स० प्र० ९०, १०.७१.४. दृष्टवान् दृष्टवती च ८.९. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

ददश्वान् दत्तवान् (वायुः) ४.३८.६. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः। छान्दसं धातोरुपधाया ह्रस्वत्वम्]

ददात् देता है, सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१९. **ददाति**=प्रयच्छति १.४०.४. **ददातु**=प्रयच्छतु ३.५५. ददाति वा, प्र०—अत्र पक्षे लडर्थे लोट् १.१५.८. दीजिए, आर्याभि० २.५४, ३२.१५. **ददाथ**=देहि ६.२०.११. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लेटि लटि लोटि लिटि च रूपाणि]

ददानम् दातारम् (अध्यापकम्) १.१४८.२. **ददानः**=

दाता (पिता) ५.२.३. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लिटः कानच्]

ददाभ हिनस्ति ५.३२.७. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१९. धातोर्लिट् सामान्ये]

ददार विदृणाति ६.२७.४. [दृ हिंसायाम् (स्वा०) धातोर्लिट्]

ददाश दाशति ददाति २.२७.१२. दाशति, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् १.३६.४. **ददाशत्**=दद्यात् ५.३७.५. दाशति, प्र०—अत्र लडर्थे लेट् 'बहुलं छन्दसि' इति शपः स्थाने श्लुः १.९१.२०. ददाति ३४.२१. दाशेत् ७.२०.८. **ददाशति**=ददाति, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः १.१५६.२. **ददाशः**=ददासि, प्र०—अत्र दाशृ धातोर्लेटो मध्यमैकवचने शपः श्लुः १.९४.१५. **ददाशिम**=दद्याम १.८६.६. **ददाशुः**=ददति ४.८.५. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लिट्। अन्यत्र लेटि शपः श्लुश्च छान्दसम्। अन्यत्र लिट् च]

ददाशुषे दात्रे (सज्जनाय) दातुं शीलाय (विदुषे जनाय) १.११२.२०. दातुः (विदुषो जनस्य) १.१४७.१. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः प्रत्ययः। ततः चतुर्थी विभक्तिः]

ददिः सुखानां दाता (विद्वान् जनः) १.११०.७. दाता (द्रविणोदाः=विद्यादेर्धनप्रदो जगदीश्वरः), प्र०—अत्र 'आदृगम०' अ० ३.२.१७१. इति डुदाञ् धातोः किः प्रत्ययः १.१५.१०. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'आदृगमहनजनः०' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किः प्रत्ययो लिट्वच्च]

ददीमहि गृह्णीमः, प्र०—अत्र लडर्थे लिङ् १.८.३. दद्याम २.२३.९. **ददीरन्**=प्रयच्छेयुः ७.४८.४. **ददुः**=दत्तवन्तः स्युः ५.१८.५. प्रयच्छेयुः ५.५२.१७. दद्युः ३.५३.१६. ददति २.१३.१०. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लिङ्। ददुरित्यत्र तु लिट्]

ददुषः दत्तवतः (ऐश्वर्ययुक्तस्य राज्ञः) १.५४.८. **ददुषाम्**=दातॄणाम् (सज्जनानाम्) ६.८.७. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लिटः क्वसुः]

ददृक्षे दृश्यते ६.६४.२. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लिट् कर्मणि। विकरणव्यत्ययेन क्सः प्रत्ययः]

ददृवांसः विदारकाः (मनुष्याः=मननशीला जनाः) ४.१.१४. [दृ हिंसायाम् (स्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

ददृशानम् द्रष्टव्यम् (ओजः=वेगवद्बलम्) ४.७.१०. **ददृशानः**=दृष्टवान् सन् (विद्वान् जनः) १.१२७.११. संप्रेक्षकः (इन्द्रः=ईश्वरः) ४.१७.१७. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच्-प्रत्ययः]

ददृशे दृश्यते १.९५.१. पश्यामि ६.४४.१०. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लिट् कर्मणि]

ददृश्रे दृश्यन्ते, प्र०—अत्र दृशेर्लिटि 'इरयो रे' अ० ६.४.७६. इति सूत्रेणाऽस्य सिद्धिः १.२४.१०. इति पश्येयुः ३.५४.५. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लिट् कर्मणि। 'इरयो रे' अ० ६.४.७६. सूत्रेण 'रे' आदेशः। ददृश्रे दृश्यते नि० १८.२७.]

ददृश्वान् दृष्टवान् (त्वष्टा=ज्ञाता मनुष्यः) ४.३३.६. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः प्रत्ययः]

ददृहाणम् दृंहितुं शीलम् (पर्वतं=मेघम्) १.८५.१०. **ददृहाणः**=हिंसन् (राजा) प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम्, तुजादित्वाद् दैर्घ्यम् 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः १.१३०.४. वर्धमानः (राजा) ४.२६.६. [दृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः। धातूनामनेकार्थत्वाद् हिंसायामर्थेऽपि]

दर्दृहि विदारय, प्र०—अत्र श्नः श्लुः 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदीर्घः १.१३३.६. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः स्थानीयस्य श्नः श्लुः]

ददे गृह्णामि २२.१. ददामि ४.३७.३. ददाति ७.६.७. गृह्णीयात् ४.१५.८. दद्याम् ४.३४.४. स्वीकरोमि १.२४. **ददौ**=ददाति ४.५.२. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लट् : अन्यत्र लिट्]

दद्धि देहि ४.२०.७. धर, प्र०—अत्र 'दध धारणे' इत्यस्माद् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुग्, व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च १.१७६.४. याचस्व प्र०—दद्धीति याच्ञाकर्मा, निघं० ३.१९, २.१७.७. [दध धारणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्वा लोटि छान्दसं रूपम्। दद्धि याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९.]

दद्भिः दन्तैः २५.१. [दन्तप्राति० भिसि 'पद्दन्नोमास्०' अ० ६.१.६३. सूत्रेण दत् आदेशः]

दद्रिरे विदीर्णान् कुर्वन्ति, प्र०—व्यत्ययेनाऽत्राऽऽत्मनेपदम् ३३.७०. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

दद्रुः द्रान्ति १.६२.११. गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति ४.१९.५. [द्रा कुत्सायां गतौ (अदा०) धातोर्लिटि प्रथमाबहुवचनम्]

दधत् दधाति, प्र०—दधातेर्लेटो रूपम् १८.६५.

दधातु १८.६४. धरेत् ४.२४.७. दध्यात् २१.५५. धेहि ७.२४.४. **दधतः**=धरतः अ० दध्याताम् १९.८२. **दधताम्**=धारयन्तु ३५.१५. **दधति**=धरन्ति १.५५.५. **दधतु**=धरन्तु ३२.१६. **दधथुः**=धत्तः, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ६.७२.४. **दधन्**=दधीरन् १.७१.३. **दधनत्**=अपोषयत्, प्र०—अनकारागमश्छान्दसः ३३.६४. **दधन्युः**=धरन्त प्र०—'वाच्छन्दसि' इति नुडागमो यासुडभावः ४.३.१२. **दधः**=धेहि ७.३०.३. दध्याः १.८१.३ [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लेटि, लटि, लिटि, लङि, लिङि च रूपाणि]

दधत् दधानः सन् (सविता=सूर्यः) ३४.२४. धारणं कुर्वन्, भा०—प्राप्य (जनः) २०.७१. यो दधाति सः (यज्ञः) १.१८८.२. धरन्त्सन् (अग्निः=पावकः) ४.१५.२. धरत् (चक्षुः=नेत्रम्) २८.३५. दधन् (त्वष्टा=विद्युत्) २०.४४. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शतृप्रत्ययः]

दधतीम् धरन्तीम् (सेनाम्) १.११६.१९. **दधतीः**=धरमाणाः (मधुमतीः=ओषध्यः) १०.४. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

दधन्वतः विद्यादिशुभगुण-धर्त्तॄणां धारकस्य (विदुषो जनस्य) ६.४८.१८. दृढत्वेन धर्त्तुः (दृतेः=मेघस्य) ६.४८.१८. **दधन्वान्**=धरन् सन् (वैद्यः) १९.२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शानचि चानशि (ताच्छील्ये) वा दधानः। ततो मतुपि दधानस्य दधन्भावश्छान्दसः]

दधन्विरे दधति ३.६०.३. **दधन्वे**=धरति २.५.३. पृणाति ३.३१.१. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट्। 'व्यत्ययो बहुलम्' अ० ३.१.८५. सूत्रेण बहुलवचनाद् द्विविकरणता। तेन श्नुः श्लुश्चापि भवतः]

दधर्ष धृष्णाति ५.८५.६. तिरस्कुर्यात् ६.७.५. **दधर्षति**=तिरस्करोति ७.३२.१४. धर्षितुमिच्छति १.१५५.५. धर्षयितुं शक्नोति, प्र०—अत्र लेटि व्यत्ययेन श्लुः ३५.१८. **दधर्षीत्**=धर्षेत्, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति द्विर्वचनम् १३.११. [धृष प्रसहने (चुरा०) ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोर्वा लिट्। अन्यत्र लेटि व्यत्ययेन श्लुः। अपरत्र लुङि द्वित्वमडभावश्च छान्दसौ]

दधात दधीरन् १९.६३. दधति ७.५८.३. धरत ८.१७. दध्यात ५.३.७. धरन्ति ६.६२.८. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोट्]

दधातन धरत ८.५. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोटि मध्यमबहुवचने त-प्रत्ययस्य स्थाने 'तप्तनप्तनथनाश्च' अ० ७.१.४५. सूत्रेण तनप्। दधातन धत्त नि० ९.२७]

दधाति धरति १.६६.४. धरेत् १.६६.२. निष्पादयति ७.३८.१. धारयति ४०.४. **दधातु**=धारणं करोतु ८.१४. दधाति वा, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् २.३. धारयतु ९.८. पुष्णातु ३६.२. विदधातु ८.१६. पोषयतु, ऋ० भू० १४९, **दधाते**=धरतः १.२.९. **दधाथ**=धेहि, प्र०—अत्र वचनव्यत्ययेन बहुवचनम् ४.५.६. **दधाथे**=धरथः १.१५१.९. **दधामि**=स्थापयामि ७.५. व्यवस्थापयामि ३५.१५. धरामि ९.३०. धारयामि, दधाति, पुष्णामि वा १.१८. **दधासि**=धरसि १.३१.७. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लटि लेटि वा रूपम्। अन्यत्र लोटि, लटि च रूपाणि]

दधानः धरन् (राजा) ४.२२.३. धरन्नुदारो धातेव १.६७.२. धरन् पुष्यन् सन् (विष्णुः=सर्वव्यापकः परमात्मा) ३.५५.१०. धारण करता हुआ (संन्यास लेने वाला पुरुष) सं० वि० १९५, ९.११३.१. **दधानान्**=धारकान् (पुरुषान्) ६.४७.२५. धरतः (अमन्यमानान्=शठान् जनान्) २.१२.१०. **दधानाः**=धरन्तः (उत्तमविद्वज्जनाः) ७.६०.८. धारयितारः (आप्ता विद्वांसो जनाः), अ०—सर्वासु—विद्यासु धर्म्ये पुरुषार्थे च वर्त्तमानाः १.४.५. सर्वधारकाः (मरुतः=वायवः) १.६.४. **दधाना**=धरन्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) २०.४२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शानच्। 'दधाना' प्रयोगे 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः]

दधाना धरन्ती (उषाः) १.१२३.४. **दधानाः**=धरन्त्यः (आपः=सूक्ष्मास्तन्मात्राः) २७.२६. धरन्त्यः सत्यः (आपः=व्यापिकास्तन्मात्राः) २७.२५. **दधाने**=धारयन्त्यौ (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २९.३२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

दधिक्राम् यो धारकान् क्रामति तमश्वम् ३.२०.१. पृथिव्यादिधारकाणां क्रमितारम् (अग्निम्) ७.४४.२. न्यायधर्त्तॄणां कामयितारम् (अश्वं=बोधम्) ४.३९.५. धर्त्तव्यधरम् (राजानम्) ४.३९.१. यो दधिना धारकेणाऽधिकेन सह तम् (राजजनम्) ४.३८.२. यो भूम्यादीन् दधीन् धर्त्रीन् पदार्थान् क्रामति तम् (अग्नि=विद्युतम्) ३.२०.५. **दधिक्राः**=यो दधीन् धारकान् क्राम्यति स दधिक्रा अश्वः, प्र०—दधिक्रा इत्यश्वनामसु पठितम्, निघं०

१.१४, ६.१४. अश्व इव धारकान् क्रामयिता गमयिता (अग्निः) ७.४४.५. यो दधिभिर्धर्तृभिः क्रम्यते गम्यते सः (राजा) ४.३८.१०. यो धारकैः सह क्राम्यति (राजा) ४.३८.६. धर्त्तव्यानां धारकः (वाजी=तुरङ्गः) ४.४०.४. [दधिक्राः अश्वनाम निघं० १.१४. पद नाम निघं० ५.४. तत्र दधिक्रा इत्येतद् दधत्क्रामतीति वा दधत्क्रन्दतीति वा दधदाकारी भवतीति वा। तस्याश्ववद् देवतावच्च निगमा भवन्ति नि० २.२७. देवपवित्रं वै दधिक्राः ऐ० ६.३६. अन्नं वै दधिक्राः गो० उ० ६.३६.]

दधिक्रावा धारकाणां गमयिता (अग्निः) ७.४४.४. धर्त्तव्ययानक्रमिता (राजा) ४.४०.२. **दधिक्रावाणम्**= धारकाणां यानानां क्रामयितारं गमयितारम् (अग्निं= भौतिकम्) ७.४४.३. **दधिक्रावेव**=धारकान् क्रमत इव (भा०—वेगयुक्ताऽश्ववत्) ७.४१.६. यया धारकः क्रमितोऽश्वस्तया ३४.३९. **दधिक्राव्णः**=यो दधीन् पोषकान् धारकान् वा क्राम्यति तस्य (अश्वस्य) २३.३२. यो विद्याधरान् कामयते तस्य (राज्ञः) ४.३९.२. वाय्वादिकारणं क्रामयितुः (परमेश्वरस्य) ४.४०.१. धर्तृधरस्य वायोः ४.४०.३. धर्म्मधरस्य क्रमयितुर्वा (राज्ञः) ४.३९.६. धर्त्तृणां प्रचालकस्य (इषः=अन्नादेः) ४.३९.४. धारकाणां क्रमयितुः (उषसः=प्रभातस्य) ४.३९.३. ['दधि' इत्युपपदे क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोः क्वनिप्प्रत्ययः कर्त्तरि। दधिः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'आदृगम०' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च दधिक्रावा अश्वनाम निघं० १.१४.]

दधिध्वे धरत ४.३४.३. धरध्वम् ४.३७.१. धरिष्यथ, प्र०—अत्र लोडर्थे लिट् १.३८.१. **दधिरे**=धरन्तु ३.५०.३. धरन्ति ३.१.६. दधति ६.४८.२१. दध्यासुः ५.५५.१. धरेयुः १२.२८. हितवन्तः १२.१११. दध्युः १.१३१.१. दधीरन्, प्र०—अत्र लिङर्थे लिट् १.४५.७. **दधिषे**=धरसि १५.२३. दधसि ७.२८.२. धारयेयम् ५.४५.११. **दधिष्व**=धर २०.८९. दधते १.३.६. धारय, प्र०—अत्र दध धारणे इत्यस्माल्लोट् 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकाश्रयेणेडागमः १.१०.६. [दध धारणे (भ्वा०) धातोः सामान्ये लिटि। 'छन्दसि वा' इति नियमाद् द्वित्वम् 'अत एकहल्मध्ये०' इति एत्वं च न भवति। दधिष्व प्रयोगे लोटश्छन्दस्यार्धधातुकत्वाद् इडागमः। दधिषे धत्स्व निघं० ५.२५.]

दधीचः ये दधीन् वाय्वादीनञ्चन्ति तान् (वृत्राणि= वृत्रसम्बन्धिभूतानि जलानि) १.८४.१३. विद्या-धर्मधारकानञ्चति विज्ञापयति तस्य (संन्यासिजनस्य) १.११६.६. **दधीचे**=दधीन् विद्या-धर्मधरानञ्चति पूजयति तस्मै १.११७.२२. ['दधि' इत्युपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' सूत्रेण क्विनि 'अनिदिताम्०' इति नलोपे भसंज्ञके प्रत्यये परतः 'अचः' सूत्रेणाकारलोपे 'चौ' सूत्रेण पूर्वपदस्य दीर्घत्वे रूपम्। दधिः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि' इत्यादिना वा० सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च कार्यम्]

दधीत धरत ५.४१.५. धरेत ६.१५. **दधीमहि**= धरेम ५.३५.८. **दधुः**=दधति १.८०.१५. धातुमर्हन्ति २१.१३. धरन्तु ३.३.५. दध्युः, भा०—आप्नुवन्तु २१.२६. दधीरन् २१.१२. धरेयुः, भा०—धरन्ति २१.२२. दध्यासुः २०.७५. [दध धारणे (भ्वा०) धातोर्लिङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। अथवा डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिङ्। दधुः प्रयोगे दधातेर्धातोर्लङि सामान्ये प्रथमबहुवचनम्]

दधृक् प्रागल्भ्यं प्राप्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.६६.३. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'ऋत्विग्०' इत्यादिना क्विनि निपातनाद् द्वित्वम्। पदान्ते च कुत्वम्]

दधृषम् प्रगल्भम् (विद्वांसं जनम्) ३.४२.६. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

दधृषिः अतिशयेन प्रगल्भः (योद्धृ-जनः) २.१६.७. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि' अ० ३.२.१७१. वा० सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च। वाग् वै दधृषी मै० ४.२.६.]

दधृष्वान् प्रसोढा (विद्वान् जनः) १.१६५.१०. धारयन् (इन्द्रः=राजा) ४.२२.५. धर्षितवान् ५.२९.१४. [धृष प्रसहने (चुरा०) ञिधृषा प्रागल्भ्ये (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः]

दधे धरामि २०.८५. दधामि ५.५३.५. दधाति, प्र०—अत्र 'छन्दसि लुङ्लङ्लिटः' अ० ३.४.६. अनेन वर्त्तमाने लिट् १.३.११. धारयति, ऋ० भू० ११७, १०.१२९.७. धत्ते १.१४९.५. धरति ३.२२.१. धरे, वृणोमि, कथयामि वा ५.१४. धारण करता है, स० प्र० २८१, १०.१२९.७. हितवान् दधाति, धास्यति वा ५.१५. दधामि २.३१.६. धृतवान् १.२२.१७. दधेत ३.२७.६. दधेय ३.२७.१०. स्वात्मनि धरेत् १.३६.१९. दध्यात् ३.३९.६. **दधौ**=विदधाति १.६५.२३. [डुधाञ् धारण-

पोषणयोः (जु०) धातोः सामान्ये लिट्]

दध्म गच्छेम, प्र०—दध्यतीति गतिकर्मा, निघं० २.१४, ७.५६.२१. **दध्मः**=निक्षिपामः १६.६४. संस्थापयामः १५.१५. धरामः १५.१६. हम दग्ध कर देते हैं, पं० वि०, अथर्व० ३.२७.१. [दध्यति गतिकर्मा निघं० २.१४. दध धारणे (भ्वा०) धातोर्वा छान्दसं रूपम्]

दध्मसि धरेम १.५०.१२. धरामः ११.७३. स्थापयेम १.५०.१२. [दध धारणे (भ्वा०) धातोर्लटि 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि व्यत्ययेन परस्मैपदम् । 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

दध्यङ् दधति यैस्ते दधयः सद्गुणास्तानञ्चति प्रापयति वा सः (अध्यापको जनः) प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति करणे किस्ततोऽञ्चतेः क्विप् १.८०.१६. दधीन् विद्याधर्मधारकानञ्चति प्राप्नोति सः (विद्वान् जनः) १.११६.१२. यो धारकान् विदुषोऽञ्चति प्राप्नोति (पुत्रः=तनयः) ६.१६.१४. दधीन् धारकानञ्चति (कण्वः=मेधाविजनः) १.१३९.९. यो दधीन् सुखधारकानग्न्यादिपदार्थानञ्चति सः (ऋषिः=वेदार्थवेत्ता जनः) ११.३३. ['दधि' इत्युपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्०' इत्यादिना क्विन् । दधिः=दधातेर्धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि' इति वार्तिकेन किः प्रत्ययो लिड्वच्च कार्यम् । दध्यङ् प्रत्यक्तो ध्यानमिति वा, प्रत्यक्तमस्मिन् ध्यानमिति वा नि० १२.३३. दध्यङ् वा आङ्गिरसो देवानां पुरोधानीय आसीत् तां० १२.८.६. वाग्वै दध्यङ्ङाथर्वणः श० ६.४.२.३. इन्द्रो दधीचो अस्थभिर्वृत्राण्यप्रतिष्कुतः । जघान नवतीर्नव तै० १.५.८.१.]

दध्याशिरः ये दध्नाऽश्यन्ते ते (सोमासः=ओषधिरसाः) १.१३७.२. ये धातुमशितुं योग्याः (सोमासः=ऐश्वर्ययुक्ताः पदार्थाः) ५.५१.७. ये दधत्यश्नन्ति ते (प्रजाजनाः) ७.३२.४. दधति पुष्णन्तीति दधयस्ते समन्तात् शीर्यन्ते येषु ते (सोमासः=सर्वपदार्थाः), प्र०—अत्र दधातेः प्रयोगः 'आदृगम०' अ० ३.२.१७१. अनेन किन्प्रत्ययः, शॄ हिंसार्थः, क्विप् १.५.५. [दधि-आशिरपदयोः समासः । दधिः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातो 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि' वा० सूत्रेण किन् । आशिरः=आङ्+अश भोजने (क्र्या०) धातोः 'अशेर्नित्' उ० १.५२. सूत्रेण किरच्प्रत्ययः । आङ्पूर्वाद्वा शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः क्विप्-प्रत्ययः]

दध्रिरे धरन्ति १.४८.३. **दध्रे**=दधिरे १७.२९. धरति, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् १.३७.७. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट् । 'इरयो रे' अ० ६.४.७६. सूत्रेण बहुलं रे आदेशः । 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.८. सूत्रेण रुडागमः]

दन् ददन् (विद्वान् जनः), प्र०—अत्र डुदाञ् धातोः 'शतरि छन्दसि वेति वक्तव्यम्' इति द्विर्वचनाऽभावे सार्वधातुकत्वान् ङित्त्वमार्धधातुकत्वादाकारलोपश्च १.१२०.६. ददन् (पतिः=गोः पालयिता जनः) प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१५३.४. दाता (ईश्वरः) १.१४८.१. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः शतृप्रत्ययः । छान्दसं रूपम्]

दनः अनदः, प्र०—अत्राऽऽद्यन्तवर्णविपर्ययोऽडभावश्च १.१७४.२. [णद शब्दे (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावश्छान्दसः । आद्यन्तविपर्ययश्च नकार-दकारयोः । दनः दानमनसः नि० ६.३१.]

दन्तमूलैः दन्तानां मूलैः २५.१. [दन्त-मूलपदयोः समासः]

दन्तः येन दंशति सः (वीरजनसमूहः) ६.७५.११. दाम्यते जनैः सः (मृगः=कस्तूरी-मृगः २९.४८. [दाम्यत्युपशाम्यति यो येन वेति विग्रहे दमु उपशमने (दिवा०) धातोः 'हसिमृगृ०' उ० ३.८६. सूत्रेण तन्प्रत्ययः]

दन्दशूकाः परदुःखप्रदाय दंशनशीलाः (शत्रवः) १०.१०. [दंश दंशने (भ्वा०) धातोर्यङन्ताद् 'यजजपदशां यङः' अ० ३.२.१६६. सूत्रेण तच्छीलादिष्वर्थेषु ऊकः प्रत्ययः । 'लुपसदचरजप०' सूत्रेण भावगर्हायां यङ्प्रत्यये ऽभ्यासस्य 'जपजभदहदश०' इत्यादिना नुगागमः]

दभत् हिंस्यात् १.१७८.२. **दभन्**=हिंस्युः प्र०—अत्र लिङर्थे लङडभावश्च ५.३९. दम्नुवन्तु हिंसन्तु, प्र०—अत्र लोडर्थे लङडभावश्च ८.१. दभ्नुयुः २.३२.२. हिंस्येयुः, प्र०—अत्र व्यत्ययो लिङर्थे लङ् च ४.२७. **दभन्ति**=हिंसन्ति ७.३२.१२. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१९. दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोर्लङ् लट् च । विकरणव्यत्ययेन शः । लङ्यडभावश्छान्दसः]

दभः दभ्नाति हिनस्ति येन सः (धर्मः) ५.१९.४. **दभाय**=हिंसकाय (जनाय) ५.४४.२. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१९. ततो घञर्थे कः प्रत्ययः । कर्त्तरि वौणादिकः कः प्रत्ययः]

दभाति हिनस्ति ६.२८.३. [दभ्नोति वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोर्लेट् । आडागमः]

दभीतये दुःखहिंसनाय ६.२६.६. हिंसनाय मारणाय २.१३.६. **दभीतिम्**=हिंसकम् (प्राणिनम्) २.१५.६. दम्भिनम् (पापिजनम्) १.११२.२३. **दभीतिः**=हिंस्रः (शत्रुजनः) ४.४१.४. **दभीतेः**=हिंसनात् २.१५.४. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१६. दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोः क्तिन्प्रत्यये 'तितुत्रेष्वग्रहादीनाम्०' अ० ७.२.६. वा० सूत्रेणेडागमः। तस्य दीर्घत्वं छान्दसम्]

दभ्नुवन्ति हिंसन्ति १.५५.७. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१६. दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोर्लट्]

दभ्यते हिंस्यते १.४१.१. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१६. ततः कर्मणि लट्]

दभ्रम् अल्पम् (द्रव्यम्) ४.३२.२०. ह्रस्वं वस्तु, प्र०—दभ्रमिति ह्रस्वनामसु पठितम्, निघं ३.२, १.११३.५. **दभ्रस्य**=ह्रस्वस्य (युद्धस्य) १.८१.२, **दभ्राणि**=अल्पानि कर्माणि १.१२६.७. **दभ्राः**=हिंसकाः (शत्रवो जनाः) ४.२५.५. **दभ्रेभिः**=अल्पैः ह्रस्वैर्वा (सखिभिः=सुहृज्जनैः) ४.३२.३. अल्पयुद्धसाधनैः सह, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति भिस ऐस् न १.३१.६. [दभ्नोति वधकर्मा निघं० २.१६. दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक्प्रत्ययः। दभ्रं ह्रस्वनाम निघं० २.८. दभ्रम् अर्भकमित्यल्पस्य दभ्रं दभ्नोतेः, सुदम्भं भवति नि० ३.२०.]

दम् यो दमयति तम् (अग्निम्) ६.३.७. [दमु उपशमने (दिवा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि]

दमम् दान्तस्वभावं, गृहम् १.७५.५. **दमाम्**=गृहाणाम्, प्र०—अत्र नुडभावे पूर्वसवर्णदीर्घः ३३.१. **दमाय**=जितेन्द्रियत्वाय ३.६.३. **दमे**=गृहे दमने वा ७.१.२. परमोत्कृष्टे पदे, वे० भा० न०, १.१.८. उपशमने गृहीते गृहे वा १.६७.५. गृहरूपे हृदयाऽवकाशे १.१४३.४. दाम्यन्ति जना यस्मिँस्तस्मिन् गृहे २.१.२. निजगृहे २.१.७. दान्ते गृहे ४.६.४. दाम्यन्त्युपशाम्यन्ति जना यस्मिन् गृहे संसारे वा तस्मिन् १.६१.६. दाम्त्युपशाम्यन्ति यस्मिँस्तस्मिन् स्वस्थाने परमोत्कृष्टे प्राप्तुमर्हे पदे, अ०—शान्तस्वरूपे ३.२३. दान्ते संसारे १.६१.१४. दमनशीले व्यवहारे ३.१०.२. दाम्यन्त्युपशाम्यन्ति दुःखानि यस्मिँस्तस्मिन् परमानन्दे पदे, प्र०—अत्र 'दमु' धातोः 'हलश्च' अ० ३.३.१२१. अनेनाऽधिकरणे घञ्प्रत्ययः १.१.८. [दमु उपशमने (दिवा०) धातोः 'हलश्च' सूत्रेणाधिकरणे घञ्प्रत्ययः। दमः गृहनाम निघं० ३.४. दम इति नियतं ब्रह्मचारिणः तै आ० १०.६२.१. दमेन दान्ताः किल्विषमवधून्वन्ति तै० आ० १०.६३.१. दमः शमयिता (संन्यासिनो यज्ञस्य) तै० आ० १०.६४.१.]

दमे दमे दाम्यन्ति जना यस्मिँस्तस्मिन् गृहे गृहे प्र०—दम इति गृहनामसु पठितम्, निघं० ३.४. अत्र वीप्सयां द्वित्वम् ८.२४. ['दमे' पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

दमयन् दमनं कुर्वन् (इन्द्रः=राजा) ६.४७.१६. **दमयन्तम्**=निवारयन्तम् (राजानम्) ७.६.४. [दमु उपशमने (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः। 'न पादमि०' इति परस्मैपदे प्रढिषिद्धेऽपि व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

दमिता नियन्ता (इन्द्रः=राजा) ३.३४.१०. दमनकर्त्ता (विद्वान् राजा) २.२३.११. [दमु उपशमने (दिवा०) धातोः कर्त्तरि तृच्प्रत्ययः]

दमूनसम् दमनशीलम् (अग्नि=परमविद्वांसं जनम्) ४.११.५. दमनसाधकम् (भगः=ऐश्वर्यम्) १.१४१.११. इन्द्रियान्तःकरणस्य दमकरम् (गृहपतिम्) ५.८.१. **दमूनसः**=दान्ताः (उत्तमजनाः) ५.४२.१२. **दमूनाः**=शम-दमादियुक्तः (अतिथिर्जनः) ५.४.५. दमनशीलो जितेन्द्रियः (अग्निः=राजा) ४.४.११. दाम्यति येन सः (अग्निः=भौतिकोऽग्निरिव राजा) प्र०—अत्र 'दमेरुनसिः उ० ४.२४०. इत्युनस् प्रत्ययोऽन्येषामपि० इति दीर्घः १.६०.४. सुहृद्वरः (पतिः) १.१२३.३. जितेन्द्रिय-मनस्कः (व्याप्तविद्यो विद्वज्जनः) ३.३१.१६. उपशमयुक्तः (मनुष्यः) १.६८.५. दान्तः (विद्वान् जनः) १.१४०.१०. [दमु उपशमने (दिवा०) धातोः 'दमेरुनसिः' उ० ४.२३५. सूत्रेण उनसिः प्रत्ययः। 'अन्येषामपि दृश्यते' इति सूत्रेण दीर्घः। दमूना दममना वा, दानमना वा, दान्तमना वा, अपि वा दम इति गृहनाम तन्मनाः स्यात् नि० ४.४.]

दम्पतिम् स्त्री-पुरुषाख्यं द्वन्द्वम् १.१२७.८. **दम्पती**=विवाहितौ स्त्रीपुरुषौ ५.३.२. जायापती ८.५. जाया और पति, सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.६४. **दम्पते !**=स्त्री-पुरुष ! ५.२२.४. [जाया-पतिपदयोः समासे जायाशब्दस्य दमादेशः]

दम्पतीव यथा भार्यापती २.३६.२. [दम्पती-इवपदयोः समासः]

दम्भयत् दम्भयति हिंसयति ६.१८.१०. **दम्भयः**=हिन्धि १.५४.६. [दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्। अडभावश्छान्दसः]

दम्यम् दमनीयम् (प्रजाजनम्) ७.५६.१४. दातं

शीलम् (अग्निम्) ३.२.८. **दम्येभिः**=दातुं योग्यैः (अनीकैः=सैन्यैः) ३.५४.१. [दमु उपशमने (दिवा०) धातोः 'पोरदुपधात्' सूत्रेण यत्]

दयते हिनस्ति ६.६.५. दयां करोति ७.२१.७. ददाति ६.३०.१. **दयध्वम्**=दयां कुरुत ७.३७.२. **दयन्त**=दयन्ते घ्नन्ति ३३.१४. **दयसे**=कृपां करोषि ७.२३.४. देहि ६.२२.९. **ददासि**=६.३७.४. रक्षां करोषि २.१३.६. **दयस्व**=देहि १.६८.३. [दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु (भ्वा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोटि लङि चापि रूपाणि। दयते दयतिरनेककर्मा, उपदयाकर्मा, दानकर्मा वा विभागकर्मा वा। दहतिकर्मा। हिंसाकर्मा नि० ४.१७.]

दयमानः दाता (इन्द्रः=सभेशः) १.१३०.७. ददन् सन् (अग्निः=वह्निः) ३.२.११. दातुं, विद्यादिगुणान् प्रकाशयितुं, सततं रक्षितुं, दुःखानि दोषान् शत्रूंश्च सर्वथा विनाशयितुं, धार्मिकान् स्वभक्तानादातुं समर्थः (इन्द्रः=परमात्मा), प्र०—दय दानगतिरक्षणहिंसा-दानेषु' इत्यस्य रूपम् १.१०.६. कृपालुः सन् (इन्द्रः=राजपुरुषः) ३.३४.१. सर्वेषामुपरि दयां कुर्वन् (युवाकुः=अध्यापको जनः) १.१२०.३. [दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु) (भ्वा०) धातोः शानच्प्रत्ययः। अथवा 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' अ० ३.२.१२९. सूत्रेण चानश्]

दयमाने रात्र्यौ २८.१६. [दयमानं व्याख्यातम्। तस्य प्रथमाद्विवचनम्]

दरयन् दुःखानि विदारयन् (अग्निः=सूर्य इव स्वप्रकाशः परमेश्वरः) ७.५.३. **दरयन्तः**=विदारयन्तः (विद्वांसो मनुष्याः) १.५३.४. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः। घटादिपाठान् मित्वाद् ह्रस्वत्वम्]

दरयः विदारय, प्र०—अत्र लिङर्थे लङडभावश्च १.६२.४. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्। अडभावश्छान्दसः। घटादिपाठान् मित्वे ह्रस्वत्वम्]

दरिद्र ! यो दरिद्राति तत्सम्बुद्धौ (राजप्रजाजन) १६.४७. [दरिद्रा दुर्गतौ (अदा०) धातोः पचाद्यच्प्रत्ययः। 'श्याद्व्यध०' इत्यकारान्तलक्षणस्तु णो न भवति, 'उत्तरार्धधातुके०' इत्यस्य विषयसप्तमीत्वात् प्रागेव प्रत्ययोत्पत्तेराल्लोपात्]

दरीमन् अतिशयेन विदारणे, प्र०—अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते' इति उपधा-दीर्घः 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्या लुक् १.१२९.८. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोरौणादिको बाहु० इमनिन्प्रत्ययः। 'अन्येषामपि दृश्यते' सूत्रेण दीर्घत्वम्। सप्तम्या लुक् च]

दर्त् विदृणाति ६.२०.१०. विदारितवान् भवति, प्र०—अत्र विकरणाऽभावः १.१७४.२. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्लङि रूपम्। अडभावश्छान्दसः। 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक्]

दर्त्तः ! विदारकः (इन्द्र=सभेश) १.१३०.१०. **दर्त्ता**=विदारकः (शत्रुजनः) ६.६६.८. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

दर्त्नुम् विदारकम् (राजानम्) ६.२०.३. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्त्नुः प्रत्ययः। बहुलवचनादेव गुणश्च]

दर्दरीति भृशं विदृणाति ६.७३.२. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

दर्दर्तु भृशं वर्धताम् ७.५५.४. **दर्दर्षि**=भृशं विदृणासि २.१२.१५. **दर्दः**=पुनर्विदारय, प्र०—अयं यङ्लुगन्तः प्रयोगोऽडभावश्च १.६३.७. विदारयेः ६.२०.७. विदृणाति ७.१८.१३. **दर्दृहि**=अत्यन्तं वर्धय ३.३०.२१. भृशं वर्धय ७.५५.४. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लोट्। अन्यत्र लट्, लङ्, लोट् च। धातूनामनेकार्थकत्वादत्र वर्धनेऽर्थेऽपि]

दर्द्रत् दृणीहि ६.१७.५. [दृ विदारणे (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

दर्धर्षि भृशं दधासि ५.८४.३. [धारयतेर्धृञो वा श्लौ यङ्लुकि अभ्यासस्य दीर्घत्वं णिलोपश्च निपात्यते 'दाधर्त्तिदर्धर्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेण]

दर्भासः कुशाः १.१९१.३. [दर्भप्राति० जसोऽसुक्। दर्भः=दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः 'दृदलिभ्यां भः' उ० ३.१५१. सूत्रेण भः प्रत्ययः। मेध्या वै दर्भाः श० ३.१.३.१८. आपो दर्भाः श० २.२.३.११. आपो वै दर्भाः तै० ३.३.२.१. अपां वा एतत् तेजो वर्चः यद्दर्भाः तै० २.७.९.५. पवित्रं वै दर्भाः तै० १.३.७.१. उभयम्वैतदन्नं यद्दर्भा आपश्च ह्येता ओषधयश्च या वै वृत्राद् बीभत्समाना आपो धन्व दृभन्त्य उदायंस्ते दर्भा अभवन् यद् दृभन्त्य उदायंस्तस्माद् दर्भास्ता हैताः शुद्धा मेध्या आपो वृत्राभिप्रक्षरिता यद्दर्भा यदु दर्भास्तेनौषधयः श० ७.२.३.२. एतर्हि पाञ्चाला दर्भान् कुशा इत्येवाचक्षते जै० २.१००. तासां (अपाम्) यन्मेध्यं यज्ञियं सदेवमासीत् तदपोदक्रामत् ते दर्भा अभवन् तै० सं० ६.१.१.७. ते (दर्भाः) हि शुद्धा

मेध्याः श० ७.३.२.३, ६.२.१.१२. दर्भो वा ओषधीनामपहतपाप्मा ऐ० आ० १.२.३.]

दर्मः दृणुयास्म ३.४५.२. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

दर्मा विदारकः सन् (शूरो जनः) १.१३२.६. शत्रुविदारयिता (सभापतिः) ८.५३. **दर्माणम्**=विदारयितारम् (वीरजनम्) १.६१.५. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' अ० ३.२.७५. सूत्रेण मनिन्प्रत्ययः]

दर्वि पाक साधिका होतव्य द्रव्यग्रहणार्था (चमसी) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सुलोपः ३.४९. **दर्वी**=ग्रहणाऽग्रहणसाधने १५.४३. दृणाति याभ्यां ते पाकसाधने ५.६.९. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः 'उल्मुकदर्विहोमिनः' उ० ३.८४. सूत्रेण विन्-प्रत्ययान्तो निपात्यते। 'वृदृभ्यां विन्' उ० ४.५३. सूत्रेण वा विन्प्रत्ययः। एष खलु वै स्त्रिया हस्तो यद् दर्विः मै० १.१०.१६.]

दर्विदा काष्ठच्छित् पक्षिविशेषः २४.३४.

दर्शत ! दर्शनीय (ईश्वर), आर्याभि० १.७, ऋ० १.१.३.१. ज्ञानदृष्ट्या द्रष्टुं योग्य योग्यो वा (वायो=ईश्वर भौतिको वा) १.२.१. **दर्शतम्**=दर्शनीयम् (धूमम्) ३८.१७. द्रष्टव्यं रूपम् (निखातं=क्षेत्रम्) १.११७.५. यो दर्शयति तम् (सूर्यम्) १.१६४.५२. दर्शकम् (अग्निं=विद्युदादिरूपम्) ६.१.३. **दर्शतस्य**=द्रष्टुं योग्यस्य (वपुषः=रूपस्य) १२.१०९. **दर्शतः**=द्रष्टुं योग्यः (विद्वान् जनः) ३.१०.६. द्रष्टव्यः प्रष्टव्यो वा (सूर्यः=सविता) ६.३०.२. **दर्शतात्**=सुन्दरात् रूपात् १.११६.११. [पश्यन्ति येन स दर्शत इति विग्रहे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'भृमृदृशियजिपर्वि०' उ० ३.११०. सूत्रेण अतच्प्रत्ययः। दर्शतदर्शनीय नि० १०.२.]

दर्शता द्रष्टव्या (विद्युत्) १.६४.९. द्रष्टव्या (देवी=विदुषी स्त्री) ६.६४.५. **दर्शताः**=द्रष्टुं योग्याः (प्रजाः) ३.५७.४. **दर्शते**=द्रष्टव्ये (नक्तोषासा=रात्रिदिने) २८.२९. **दर्शताभिः**=द्रष्टव्याभिः (श्रीभिः=राजनीतिशोभाभिः) ६.६३.६. [दर्शत इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

दर्शनाय प्रेक्षमाणाय (विदुषे जनाय) १.११६.२३. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति ल्युट्]

दर्शि दृश्यते ३.५६.२. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

दश्यो द्रष्टुं योग्यानि (रूपाणि) ५.५२.११. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्ण्यत्प्रत्ययः। 'शेर्लोपश्छन्दसी' ति शेर्लोपः]

दर्षि विदृणासि ६.२६.५. द्रियत्वाऽऽदरं कुरु प्र०—अत्र दृङ् आदरे इत्यस्माल्लोटि मध्यमैकवचने 'वाच्छन्दसि' इति तिपः पित्वाद् गुणः १.११०.९. विदीर्णं करोषि ४.१६.८. **दर्षीष्ट**=दृणीहि १.१३२.६. [दृ विदारणे (क्र्या०) दृङ् आदरे (तुदा०) धातोर्वा लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक्। व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च। अन्यत्र लिङि रूपम्]

दविद्युतत् प्रकाशयति १५.५१. विद्योतयति ७.१०.१. द्योतयति ६.१६.४५. **दविद्योत्**=प्रकाशते ६.३.८. [द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि शतरि अभ्यासस्य सम्प्रसारणाभावः, अत्वं विगागमश्च 'दाधर्त्तिदर्धर्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेण निपात्यते। दविद्योत्=अद्योतत नि० ११.३६.]

दविधाव भृशं चालयति १.१४०.६.

दविध्वत् भृशं धुन्वन् (सविता=सवितृलोकम्) ४.१३.२. **दविध्वतः**=दुष्टान् कम्पयन्तः (राजजनाः) प्र०—इदं पदं 'दाधर्ति०' इत्यत्र निपातितम् ७.४.६४, २.३४.३. कम्पयतः (सूर्यस्य) ४.१३.४. पदार्थान् ध्वंसयन्तः (आकेपिनासः=किरणाः) ४.४५.६. [ध्वृ हूर्च्छने (भ्वा०) धातोः 'दाधर्तिदर्धर्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेण यङ्लुगन्तस्य शतरि अभ्यासस्य विगागम ऋकारलोपश्च निपात्यते]

दविष्ठम् अतिशयेन दूरम् (स्तेनं=चोरम्) ६.५१.१३. [दूरप्राति० अतिशायन इष्ठन्-प्रत्यये 'स्थूलदूरयुव०' अ० ६.४.१५६. सूत्रेण यणादिपरस्य रेफस्याकारस्य च लोपः पूर्वस्य च गुणादेशः]

दवीयः अतिशयेन दूरम् (शत्रुं जनम्) ६.४७.२९. [दूरप्राति० अतिशायन ईयसुन्प्रत्यये 'स्थूलदूरयुव०' अ० ६.४.१५६. सूत्रेण यणादिपरस्य लोपः पूर्वस्य च गुणः। दवीयः दूरतरम् नि० ९.१३.]

दश दश दिशः १.९५.२. दशसङ्ख्याकाः (क्षिपः=अङ्गुलयः) ५.४३.४. एतत्संख्याकाः (कोशयीः=भूमीः) दशत्वसङ्ख्याविशिष्टानि (वस्तूनि) १.५१.१३. दशसंख्यायाम् १.५३.९. [दश=दस्ता दृष्टार्था वा नि० ३.१०. दशेति वै सर्वमेतावती हि संख्या ऐ० आ० २.३.४. एतद्ध वै परमं वाचः क्रान्तं यद् दशेति जै० १.२३५.]

दशग्वासः दश गाव इन्द्रियाणि जितानि यैस्ते

(नरः=नायका जनाः) ५.२९.१२. **दशग्वाः**=ये दशभिरिन्द्रियैः सिद्धिं गच्छन्ति ते (विद्वज्जनाः) २.३४.१२. **दशग्वे**=दश गावो यस्य तस्मै (पुरुषाय) ४.५१.४. **दशग्वैः**=ये रश्मयो दश दिशो गच्छन्ति तैः (विप्रैः=मेधाविजनैः) १.६२.४. दशविधा गतयो येषान्तैः (वायुभिः) ३.३९.५. [दश-गोपदयोः समासः। छान्दसं रूपम्]

दशतयस्य दशविधस्य (धासेः=विदुषो जनस्य) १.१२२.१३. दशधाविद्यस्य (सूरेः=विदुषो जनस्य) १.१२२.१२. **दशतयः**=दशगुणितः (एधः=इन्धनम्) १.१५८.४. [संख्यावाचिनो दशन्प्राति० 'संख्याया अवयवे तयप्' अ० ५.२.४२. सूत्रेण तयप्-प्रत्ययः]

दशते दंशकाय (हिंसकाय प्राणिने) १.१८९.५. [दंशु दशने (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। 'दंशसञ्ज०' सूत्रेण शपि अनुनासिकलोपः]

दशद्युम् दशभिरङ्गुलिभिः प्रकाशप्रदम् (वीरपुरुषम्) ६.२६.४. दशसु दिक्षु द्योतते तम् (वृत्रम्) १.३३.१४. [दशोपपदे दिवु क्रीडाविजिगीषादिषु (दिवा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः। दशन्-द्युपदयोर्वा समासः। द्युः=अहर्नाम निघं० १.९.]

दशपक्षाम् जिसके मध्य में दोशाला और उनके चारों दिशाओं में चार-चार शाला हों, उस को, सं० वि० १६८, अथर्व० ९.२.३.२१. [दशन्-पक्षपदयोः समासः]

दशप्रमतिम् दशधा प्रकृष्टा मतिर्यस्मिँस्तम् (वपुः=रूपम्) १.१४१.२. (दशन्-प्रमतिपदयोः समासः]

दशभिः दशविधाभिर्गतिभिः २७.३३. दशविधैर्वायुभिः ३.३९.५. [दशन्प्राति० तृतीयाया बहुवचनम्]

दशभुजिः या दशभिरिन्द्रियैर्भुज्यते सा (पृथिवी) १.५२.११. [दशोपपदे भुजपालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक इन्-प्रत्ययः। बहुलवचनादेवाऽगुणत्वम्].

दशमायम् दशाऽङ्गुलय इव माया मानं यस्य तम् (इभं=हस्तिनम्) ६.२०.८. [दशन्-मायापदयोः समासः। माया=प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

दशमास्य दशसु मासेषु जात (उत्तम बालक) ५.७८.८. **दशमास्यः**=दशसु मासेषु भवः (गर्भः), भा०—दशमासात् पूर्वं न स्खलेत् यो हि दशमासादूर्ध्वं जायते स प्रायशो बलबुद्धियुक्तो भवति, यस्तस्मात्पूर्वमुत्पद्यते नाऽयं तादृग्भवति ८.२८. [दशन्-मासपदयोः समासे जातार्थे भवार्थे वा यत्। अथवा 'द्विगोर्यप्' अ० ५.१.८२. सूत्रेण यप्-प्रत्ययो वयस्यभिधेये]

दशमी दशानां पूरणा (क्रिया) २५.४. **दशम्या**=दशानां पूरिकया (देवतया) १०.३०. [पूरणप्रत्ययान्ताद् दशमप्राति० 'वयसि पूरणात्' अ० ५.२.१३० सूत्रेण इनिः]

दशमे दशानां पूरणे (युगे=वर्षे) १.१५८.६. [दशन्-संख्यावाचिनः प्राति० पूरणार्थे 'तस्य पूरणे डट्' इति डट्-प्रत्यये 'नान्तादसंख्यादेर्मट्' अ० ५.२.४९. सूत्रेण मडागमः]

दशयन्त्रम् सूक्ष्मस्थूलानि दशभूतानि यन्त्रितानि यस्मिँस्तत् (सर्वं जगत्) ६.४४.२४. [दशन्-यन्त्रपदयोः समासः]

दशरथस्य दश रथा यस्य सेनेशस्य १.१२६.४. [दशन्-रथपदयोः समासः]

दशवीरम् दश वीराः पुत्रा यस्मात् तत् (अपत्यम्) १९.४८. [दशन्-वीरपदयोः समासः]

दशस्य दाशन्ति ददति येन तद् दशस्तदात्मानमिच्छ ६.११.६. देहि ७.४३.५. क्षयं गमय ३.७.१०. **दशस्यत**=बलयत ५.५०.३. **दशस्यतम्**=दद्यातम्, प्र०—अयं दशस्-शब्दः कण्ड्वादिषु द्रष्टव्यः १.१३९.५. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन् प्रत्यये दाशस्। छान्दसह्रस्वत्वे दशस्-शब्दाद् इच्छायां क्यजन्ताल् लोट्। दशस् शब्दो वा कण्ड्वादिषु द्रष्टव्यः कण्ड्वादेराकृतिगणत्वात्]

दशस्यन् प्रयच्छन् (इन्द्रः=राजा) ६.२६.६. अभिमतं प्रयच्छन् (मेघः) १.१८१.८. उपक्षयन् (उपकारिजनः) २.१९.५. दशति येन तद्दशस्, तदिवाऽऽचरतीति (प्रतापी मनुष्यः), प्र०—अत्र दंशधातोरसुन्-प्रत्ययः, स च कित्, तत 'उपमानादाचारे' इति क्यच् १.६१.११. **दशस्यन्तः**=विस्तारयन्तः (विद्वांसो जनाः) ५.३.४. बलयन्तः (मरुतः=उत्तमराजजनाः) ७.५६.१७. [दशस्य इति व्याख्यातम्। ततः शतृप्रत्ययः। दंश दंशने (भ्वा०) धातोर्वा असुन् किच्च। तत आचारे क्यजन्ताच्छतृ]

दशस्यन्ता बलवन्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ६.६२.७. ['दशस्य' इति व्याख्यातम्। ततः शत्रन्तात् प्रथमाद्विवचने 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेराकारादेशः]

दशस्यन्तीः इष्टान् कामान् ददतीः (पत्नीः=भार्याः) ५.४२.१२. ['दशस्य' इति व्याख्यातम्। ततः शत्रन्तान् ङीप्]

दशस्या दशा इवाऽऽचरति, तस्मै (मनवे=बोधाय,

प्राणाय) ५.१६. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोरौणादिकेऽसुन्-प्रत्यये छान्दसह्रस्वत्वे च दशस्-शब्दः सिध्यति। तत आचारे क्यचि सुपां सुलुगित्याकारादेशः]

दशस्येः दद्याः ७.३७.५. ['दशस्य' इति व्याख्यातम्। ततो लिङि मध्यमैकवचनम्]

दशाऽक्षरेण याजुष्या पङ्क्त्या (छन्दसा) ९.३३. [दशन्-अक्षरपदयोः समासः]

दशाऽङ्गुलम् पञ्च स्थूल-सूक्ष्मभूतानि दशाऽङ्गुलानि अङ्गानि यस्य तज्जगत्, भा०—पञ्चभिः स्थूलैः भूतैः सूक्ष्मैश्च युक्तं जगत् ३१.१. ब्रह्माण्ड-हृदययोरुपलक्षणम्। पञ्चस्थूलभूतानि, पञ्चसूक्ष्माणि चैतदुभयं मिलित्वा दशाऽवयवाऽऽख्यं सकलं जगत्। पञ्च प्राणाः सेन्द्रियं चतुष्टयमन्तःकरणं दशमो जीवश्च। एवमेवाऽन्यदपि जीवस्य हृदयं दशाऽङ्गुलपरिमितम् ऋ० भू० ११९, ३१.१. [दशन्-अङ्गुलिपदयोः समासे 'तत्पुरुषस्याङ्गुलेः संख्याव्ययादेः' ५.४.८६. सूत्रेण समासान्तोऽच्प्रत्ययः। दशन्-अङ्गुल-पदयोर्वा समासः]

दशाऽरित्रः दश अरित्राणि स्तम्भनसाधनानि यस्मिन् सः (रथः) २.१८.१. [दशन्-अरित्रपदयोः समासः। अरित्रम्=ऋ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अर्तिलूधू०' अ० ३.२.१८४. सूत्रेण करणे इत्रः]

दशो दशविधान् (हिरण्यपिण्डान्=सुवर्णादिसमूहान्) ६.४७.२३.

दशोणये दशोनयः परिहाणानि यस्मात् तस्मै (कवये=विपश्चिते जनाय) ६.२०.४. **दशोणिम्**=दशधोणिः परिहाणं यस्य तम् (इभं=हस्तिनम्) ६.२०.८. [दशन्-ओणिपदयोः समासः। ओणिः=ओणृ अपनयने (भ्वा०) धातोरौणादिक इन्प्रत्ययः]

दश्यान् द्रष्टव्यान् (कवीन्=अध्यापकोपदेशकान्) ४.२.१२. [दसि दर्शनदंसनयोः (चुरा०) धातोर्ण्यत्। नकारलोपश्छान्दसः, वर्णव्यत्ययेन च सकारस्य शकारादेशः]

दसत् क्षयेत् १.१२१.१५. [दसु उपक्षये (दिवा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः। विकरणव्यत्ययेन शप्]

दसमानः शत्रूनुपक्षयन् (विद्वान् रक्षको जनः) १.१३४.५. [दसु उपक्षये (दिवा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदं शप्-प्रत्ययश्च]

दसयन्त दोषानुपक्षयन्तु ५.४५.३. **दसाम**=उपक्षयेम १०.२२. [दसु उपक्षये (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्। अडभावो अडभावश्छान्दसः। अन्यत्र दसु धातोर्लङ्। अडभावो विकरणव्यत्ययेन च शप्]

दसाय शत्रूणामुपक्षयाय ६.२१.११. [दसु उपक्षये (दिवा०) धातोर्घञर्थे कः प्रत्ययः]

दस्म! अन्धकारोपक्षेतः (सभापते) १.६२.११. प्र०—दसु उपक्षये इत्यस्माद् 'इषियुधीन्धिदसि०' उ० १.१४५. अनेन मक्प्रत्ययः १.४.६. दुःखोपनाशक (अध्यापकोपदेशक वा) ४.१.३. शत्रूणामुपक्षयितः (इन्द्र=सभेश) १.१२९.३. शत्रोरुपक्षेतः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः सूर्यो वा) १.६२.१२. परदुःखभञ्जक (अग्ने=विद्वज्जन) २.९.५. **दस्मम्**=दुःखानामुपक्षेत्तारम् (सभाध्यक्षम्) १.७७.३ दुःखोपक्षयितारम् (इन्द्रं=राजानम्) २६.११. **दस्मस्य**=दुःखाऽपक्षयितुः (विदुषो जनस्य) ५.१७.४. दुःखोपक्षेतुः (इन्द्रस्य=सभाद्यध्यक्षस्य) १.६२.६. दुःखोपक्षयकरस्य (अपत्यस्य) ३.१.७. **दस्मः**=दुःखोपक्षेप्ता (अग्निः=विद्युत्) १.१४८.४. दुःखानां दुष्टानाञ्चोपक्षेता (राजा शिष्यो वा) २.१.४. मूर्त्तद्रव्याणामुपक्षयिता (अग्निः=पावकः) ३.३.२. **दस्माः**=दुःखोपक्षेत्तारः (जनाः) ५.४१.१३. दुःखानां विनाशकाः (आप्ता विद्वांसः) दुःखोपक्षयितारः (सूर्यादयः) ५.४९.३. [दसु उपक्षये (दिवा०) धातोः 'इषियुधीन्धिदसिश्याधूसूभ्यो मक्' उ० १.१४५. सूत्रेण मक्-प्रत्ययः]

दस्मत् दुःखोपक्षेत्तारम् (यज्ञम्) १.७४.४. [दस्म' इति व्याख्यातम्। ततो द्वितीयैकवचनस्याद् आगमश्छान्दसः]

दस्मतमः अतिशयेन दुःखानां क्षेत्ता (इन्द्रः=पुरुषार्थी-सभेशः) २.२०.६. ['दस्म' पदं व्याख्यातम्। ततोऽति-शायने तमप्]

दस्मवर्चाः दस्मेषु शत्रुषु वर्चस्तेजः प्रागल्भ्यं यस्य सः (इन्द्रः=विद्वान्) १.१७३.४. दस्मेषूपक्षयेषु वर्चः प्रदीपनं यस्य सः (युवा नरः) ६.५८.४. दस्ममुपक्षयितं निवासयितं निवासितं वा वर्चो दीप्तिर्येन सः (अग्निः=विद्वज्जनः) ६.१३.२. [दस्म-वर्चस्पदयोः समासः। 'दस्म' पदं व्याख्यातम् वर्चस्=वर्च दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्-प्रत्ययः]

दस्मा दुःखोपक्षयितारौ (इन्द्रावरुणौ=नृपाऽमात्यौ) ४.४१.६. ['दस्म' इति व्याख्यातम्। ततः प्रथमा-द्विवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

दस्मे उपक्षयित्र्यौ (रात्रिदिने) ३.५५.१५. ['दस्म' इति व्याख्यातम्]

दस्यन्ति क्षयन्ति ५.५४.७. [दसु उपक्षये (दिवा०)

धातोर्लट्]

दस्यवः परपीडका मूर्खा धर्मरहिता दुष्टा मनुष्याः १.५१.८. दुष्ट गुण-स्वभाव-कर्माऽऽचरणाः परहानिकरण-तत्पराः (दुर्जनाः), पं० वि० । नास्तिकाः (जनाः) १.५१.८. दस्यु अर्थात् आर्यों से विपरीत डाकू, दुष्ट, अधार्मिक और अविद्वान् जन, स० प्र० ३०७, १.५१.८. **दस्यवे**=दुष्ट-कर्म-कर्त्रे (दुर्जनाय) १.१०३.३. **दस्युभ्यः**=साहसिकेभ्य-श्चौरेभ्यः (जनेभ्यः) ४.३८.१. **दस्युम्**=साहसिकं चोरम् (जनम्) ५.४.६. दुष्टाचारं साहसिकम् (दुर्जनम्) ७.१९.४. दुष्टम् (जनम्) ६.१४.३. प्रसह्य परस्वाऽपहर्त्तारम् (दुर्जनम्) १.१७५.३. वलात्कारिणं चोरम् (दुर्जनम्) २.१५.९. दुष्टस्वभावयुक्तम् (शम्बरं=मेघम्) १.५९.६. बलात्कारेण परस्वाऽपहर्त्तारम् (जनम्) १.५३.४. दुष्टकर्मणा सह वर्त्तमानं परद्रोहिणं परस्वहर्त्तारं चौरं शत्रुं वा १.५३.४. **दस्युः**=परपदार्थाऽपहारकः (दुर्जनः) २.११.१८. **दस्यून्**=साहसेनोत्कोचान् चोरान् ३.३४.६. महादुष्टान् (जनान्) १.७८.४. दुष्टान् साहसिकाँश्चोरान् (अविदुषो जनान्) ७.१६.३. दुष्टकर्म-कारकान् (दुर्जनान्) ७.५.६. परस्वाऽपहारकान् (कुपुरुषान्) १.६३.४. भयङ्करान् चोरान् (जनान्) २.२०.८. दुष्टाचारान् मनुष्यान् २.१३.९. अतिदुष्टकर्मकारिणः (दुर्जनान्) ३.२९.९. महासाहसिकान् (चोरादीन् जनान्) ४.२८.३. सहसा पर-पदार्थाऽपहर्त्तॄन् (नीचान् जनान्) १.१०१.५. डाकुओं को, आर्याभि० १.४४, ऋ० १.७.१२.५. **दस्योः**=परस्वाऽऽदातुश्चोरस्य (जनस्य) १.१०४.५. परद्रव्याऽपहारकस्य दुष्टस्य (जनस्य) ६.३१.४. उत्कोचकस्य (जनस्य) १.११७.३. पर-पदार्थ-हर्त्तुर्दुष्टस्य (जनस्य) २.१२.१०. [दसु उपक्षये (दिवा०) धातोः 'यजिमनिशुन्धिदसिजनिभ्यो युच्' उ० ३.२० सूत्रेण युच्-प्रत्ययः । दस्युः दस्यतेः क्षयार्थाद् उपदस्यन्त्यस्मिन् रसा उपदासयति कर्माणि नि० ७.२३. त एते अन्ध्राः पुण्ड्राः शवराः पुलिन्दा मूतिबा इत्युदन्त्या बहवो भवन्ति वैश्वामित्रा दस्यूनां भूयिष्ठाः ऐ० ७.१८.]

दस्युघ्ना या दस्यून् हन्ति सा (नारी) ४.१६.१०. ['दस्यु' रिति व्याख्यातम् । तदुपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृतो बहुलं वा' इति वार्त्तिकेन बहुलवचनाट् टक्-प्रत्ययान्तात् स्त्रियां टाप्]

दस्युजूताय दुष्ट-सङ्गाय ६.२४.८. [दस्यु-जूतपदयोः समासः । दस्युरिति व्याख्यातम् । जूतः=जु इति सौत्रो धातुः, ततो भावे क्तः]

दस्युहत्याय दस्यूनां हत्या यस्मै तस्मै (श्रवसे=धनाय) १.१०३.४. दस्यूनां हननं यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.५१.६. **दस्युहत्येषु**=दस्यूनां हत्या हननानि येषु सङ्ग्रामादि-व्यवहारेषु १.५१.५. [दस्यु-हत्यापदयोः समासः । दस्युपदं व्याख्यातम् । हत्या=हनहिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनस्त च' अ० ३.१.१०८. सूत्रेण भावे क्यप्प्रत्ययः । तकारश्चान्तादेशः]

दस्युहन्तमम् यो दस्यूनतिशयेन हन्ति तम् (योद्धृजनम्) ६.१६.१५. [दस्यु-हन्तृपदयोः समासेऽतिशायने तमप् । तृचो लोपश्छान्दसः । अथवा=दस्यूपपदे हन् धातोः क्विपि अतिशायने तमप् । 'नाद्घस्य' अ० ८.२.१७. सूत्रेण घसंज्ञकस्य तमपो नुडागमः]

दस्युहा यो दस्यून् दुष्टांश्चोरान् हन्ति (राजा) ६.४५ २४. दुष्टानां चौराणां हन्ता (इन्द्रः=सेनाद्यधिपतिः) १.१००.१२. दुष्ट पापी लोगों का हनन करने वाला (परमात्मा), आर्याभि० १.३४, ऋ० १.७.१०.१२. [दस्युरिति व्याख्यातम् । तदुपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः]

दस्येत् उपक्षाययेत् ६.३७.३. [दसु उपक्षये (दिवा०) धातोर्लिङ् । अन्तर्भावितण्यर्थः]

दस्र ! दुःखोपक्षयितः (विद्वज्जन) ६.५६.४. **दस्रा**=दुःखोपक्षयितारौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) १.११२.२४. दुःखहिंसकौ (अश्विना=कृषिकर्मविद्याव्यापिनौ सभासेनाधीशौ) १.११७.५. दुःखानामुपक्षयकर्त्तारौ (अश्विनौ=अग्निजले), प्र०—अत्र 'दसु उपक्षये' इत्यस्मादौणादिको रक् प्रत्ययः १.३.३. दुष्टानां निवारकौ (विद्वांसौ जनौ) ३३.५८. दुःखदारिद्रय-नाशकौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८३.५. विद्योपयोगं प्राप्नुवन्तावशेषदुःखोपक्षयितारौ वाय्वग्नी १.९२.१८. रोगोपक्षयितारौ (भिषजौ=सद्वैद्यौ) १.११६.१६. दातारौ (नासत्या=राजधर्म-सभापती) १.११६.१०. दुःखविनाशकौ (अश्विना=सभासेनेशौ) १.११७.२१. शत्रूणामुपक्षेतारौ (अश्विनौ=वायुविद्युतौ) १.४७.६. दुःखनिवर्त्तकौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.११७.२२. क्लेशविनाशकौ (अश्विना=शिल्पविद्याविदावध्यापकोपदेशकौ) ३.५८.५. **दस्राः**=उपक्षेतारः (धेनवः=वाचः) ५.५५.५. [दसु उपक्षये (दिवा०) धातोः 'स्फायितञ्चिवञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक्प्रत्ययः । 'दस्रा' प्रयोगे 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः प्रथमाद्विवचनस्य

स्थाने । दस्त्रौ दर्शनीयौ नि० ६.२६.]

दह भस्मसात् कुरु ७.१५.१३. भस्मीभूत करो, आर्याभि० १.१६, ऋ० १.३.१०.१४. [दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

दहतात् भस्मीकुरु ३.१८.१. [दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लोटि 'तुह्योस्तातङ्०' इत्याशिषि तातङ्ङादेशः]

दहन् भस्मीकुर्वन् (अग्निः) ३.२९.६. [दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

दंशनावान् प्रशस्तकर्मयुक्तः (सज्जनः) ३.३९.४. [दंशनाशब्दात् प्रशंसायां मतुप् । दंशना=दशि दर्शनदंशनयोः (चुरा०) धातोः 'ण्यासश्रन्थो युच्' इति युच्प्रत्ययः । सकारस्य वर्णव्यत्ययेन शकारादेशः]

दंशासि उपदेशाऽध्यापनादीनि कर्माणि १.११६.२५. [दसि दर्शनदंशनयोः (चुरा०) दशि दंशने (चुरा०) धातोर्वा असुन्]

दंट्राभ्याम् मुखदन्ताभ्याम् २५.१. तीक्ष्णाऽग्राभ्यां दन्ताभ्याम् ११.७८. **दंष्ट्रै**=दद्भिः २.१३.४. [दंश दशने (भ्वा०) धातोः 'दाम्नीशसयुयुज०' अ० ३.२.१८२. सूत्रेण करणे ष्ट्रन्प्रत्ययः]

दंसना दंसनं दर्शनम्, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेराकारादेशः ३.९.७. कर्माणि ५.८७.८. [दसि दर्शनदंशनयोः (चुरा०) धातोः 'ण्यासश्रन्थो युच्' सूत्रेण युच्]

दंसनाभिः उत्तमैः कर्मभिः ४.३३.२. भाषणैः १.११८.६. **दंसनाभ्यः**=सुखकरक्रियाभ्यः ३.३.११. [दसि दर्शनदंशनयोः (चुरा०) धातोः 'ण्यासश्रन्थो युच्' अ० ३.३.१०७. सूत्रेण युचि स्त्रियां टाप्]

दंसः कर्म १.६९.४. दंसयन्ति पश्यन्ति विद्याः सुखानि च येन कर्मणा तत् १.६२.६. [दसि दर्शनदंशनयोः (चुरा०) धातोः 'हलश्च' सूत्रेण करणे घञ्प्रत्ययः । दंसः कर्मनाम निघं० २.१.]

दंसिष्ठा अतिशयेन दंसितारौ पराक्रमिणौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.२. [दंसितृप्राति० अतिशायन इष्ठन्-प्रत्ययः। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण तृचो लोपः । दंसितृ=दसि दर्शनदंशनयोः (चुरा०) धातोः कर्तरि तृच्]

दंसु दाम्यन्ति जना येषु (रश्मिषु) १.१३४.४. दमेषु १.१४१.४. [दसि दर्शनदंशनयोः (चुरा०) धातोर् बाहु० औणादिक उः प्रत्ययः]

दंसुजूतः यो दंसुभिरूपक्षयितृभिर्वीरैर्जूतः प्रेरितः सः (नहुषः=मनुष्यः) १.१२२.१०. [दंसु-जूतपदयोः समासः । दंसुरिति व्याख्यातम्]

दंसुपत्नीः दंसूनां कर्मकर्तॄणां पत्न्यः ४.१९.७. [दंसुरिति व्याख्यातम् । दंशु-पत्नीपदयोः समासः]

दंसोभिः शिष्टाऽनुष्ठितैः (कर्मभिः) १.११७.४. कर्मभिः १२.७४. [दसि दर्शनदंशनयोः (चुरा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः]

दाक्षायणम् दक्षेण चतुरेणाऽयनं प्रापणीयं तदेव, भा०—धर्म्येण वर्त्तनम् (हिरण्यं=ज्योतिर्मयम्) ३४.५१. **दाक्षायणाः**=चातुर्य्यविज्ञानयुक्ताः (सुमनस्यमानाः=सज्जनाः) ३४.५२. [दक्ष-अयनपदयोः समासे दक्षायनप्राति० स्वार्थेऽण्प्रत्ययः । दक्षः बलनाम निघं० २.९. दक्षः=दक्ष वृद्धौ शीघ्रार्थे च (भ्वा०) धातोः पचाद्यच्प्रत्ययः]

दात् दद्यात् १.१२१.१२. जन्म देता है, स० प्र० ३३०, १.२४.१. **दात**=दत्त, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति शपो लुक् २.३४.७. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः । 'गातिस्था०' सूत्रेण सिचो लुक् । अन्यत्र लङि 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि अडभावे च रूपम्]

दातवे दातुम् ७.५९.६. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोस्तुमर्थे तवेन्-प्रत्ययः । दातवे दानाय नि० ४.१५.]

दातवै दातुम् ४.२१.९. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोस्तुमर्थे तवैप्रत्ययः]

दाता दानशीलो दानहेतुर्वा (सविता=जगदीश्वरः सूर्यो वा) १.२२.८. प्रापकः (ईश्वरो भौतिकोऽग्निर्वा) ४.१६. **दातारौ**=सुखदानहेतू (इन्द्राग्नी=वायुर्विद्युदादिरूपोऽग्निश्च तौ) ३.१३. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच् । 'तृन्' अ० ३.२.१३५. सूत्रेण तच्छीलादिषु वा तृन्प्रत्ययः । अग्निर्वै दाता स एवास्मै यज्ञं ददाति कौ० ४.२.]

दाति छिनत्ति १.६५.४. ददाति, प्र०—अत्राऽभ्यासलोपः ४.८.३. [दाप् लवने (अदा०) धातोर्लट् । अथवा डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसीति' शपो लुक् । दाति दानकर्मा निघं० ३.२०.]

दातिवारम् यो दातिं दानं वृणोति तम् (विद्वांसं जनम्) ५.५८.२. **दातिवाराः**=ये दातिं लवनं छेदनं वृण्वन्ति (मरुतः=मनुष्याः) ३.५१.९. ['दाति' इत्युपपदे वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्-प्रत्ययः ।

दातिः=डुदाञ् दाने (जु०) दाप् लवने (अदा०) धातोर्वा भावे क्तिन्]

दातुः दानकर्त्तुः (सज्जनस्य) २६.२. शोधयितुः १.१३.११. [डुदाञ् दाने (जु०) दैप् शोधने (भ्वा०) धातोर्वा कर्त्तरि तृच्]

दातोः दातुम् ७.४.६. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोस्तुमर्थे तोसुन्प्रत्ययः]

दात्यौहः काकः २४.३९. **दात्यौहान्**=कृष्णकाकान् २४.२५. मासेभ्यो दात्यौहान् (आलभते) मै० ३.१४.६.

दात्रम् दातुं योग्यम् (महि=महद्राज्यम्) १.११६.६. दानम् १.१८५.३. दानयोग्यं सुखकारकत्वात् पोषकं च (सामर्थ्यम्) ऋ० भू० १९३, ऋ० ८.८.९.१. दाति रोगान् येन तद्वान् (सभेशो राजा) १०.६. **दात्रा**=दातारौ (राजसेनाऽध्यक्षौ) ४.३८.१. **दात्राणि**=दानानि ६.६१.१. **दात्रात्**=दानात् ७.५६.२१. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'दादिभ्यश्छन्दसि' उ० ४.१७०. सूत्रेण त्रन् प्रत्ययः। दाप् लवने (अदा०) धातोः 'दाम्नीशसयुयुज०' अ० ३.२.१८२. सूत्रेण करणे ष्ट्रन्]

दात्रे दानकरणशीलाय (राज्ञे) ६.४४.१०. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोस्तृजन्ताच् चतुर्थी]

दादृहाणम् दृंहितुं शीलम् (पर्वतं=मेघम्) १.८५.१०. **दादृहाणः**=दोषान् हिंसन् (इन्द्रः=विद्वज्जनः), प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम्, तुजादित्वाद् दैर्घ्यम्, बहुलं छन्दसि, इति शपः श्लुः १.१३०.४. वर्धमानः (राजा) ४.२६.६. [दृह दृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच् प्रत्ययः। 'तुजादीनाम्' इत्यभ्यासस्य दीर्घत्वम्। धातूनामनेकार्थकत्वाद् हिंसायामर्थेऽपि]

दादृहि विदारय, प्र०—अत्र श्नः श्लुः 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदीर्घः १.१३३.६. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर् लोट्। विकरणव्यत्ययेन श्नः श्लुः, 'तुजादीनाम्' इत्यभ्यासस्य दीर्घः]

दाधर्थ धरसि धरति वा, प्र०—'दाधर्त्ति०' अ० ७.४.६५. अनेनाऽयं यङ्लुगन्तो निपातितः ५.१६. [धारयतेर्धृञो वा श्लौ यङ्लुकि 'दाधर्त्तिदर्धर्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेण लिटि अभ्यासस्य दीर्घत्वं णिलोपश्च निपात्यते]

दाधार धरतु १.१५६.४. धरति पोषयति वा १.१५४.४. धरति पुष्णाति वा ३.३२.८. स्वसत्तयाऽऽकर्षणेन धरति १.६७.३. धारितवान्, ऋ० भू० ११८, ऋ० ८.७.३.१. दधाति, प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यास-दैर्घ्यम् ६.४४.२४. धरेत् १.६६.२. धृतवान्, धरति, धरिष्यति वा, प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदैर्घ्यम् २३.१. धारयति नि० १०.२३, १३.४. धारण कर रहा है, सं० वि० ५, १३.४. अपने आकर्षण से धारण किया है, स० प्र० ३१२, १०.१२१.१. रचन, धारण करता है स० प्र० ३१३, १०.१२१.१. उत्पन्न किया है, स० प्र० २०८, १०.१२१.१. [दाधार धारयति नि० १०.२२. धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्लिटि प्रथमैकवचनम्। 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासस्य दीर्घत्वम्]

दाधृविः धर्त्री (माता) ६.६६.३. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोरौणादिको बाहुलकाद् क्विन्प्रत्ययः। धातोर्द्वित्वम् अभ्यासस्य च दीर्घत्वं छान्दसम्]

दाधृषिम् भृशं प्रगल्भम् (इन्द्रं=राजानम्) ४.१७.८. **दाधृषिः**=अतिशयेन प्रगल्भः (शिल्पिजनः) २.१६.७. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि' इति वा० सूत्रेण किः, लिड्वच्च। 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासस्य दीर्घः]

दानम् यद् दीयते तत् (धनादिकम्) ७.१८.२२. दीयमानम् (वस्तुमात्रम्) ३.३४. **दानानि**=दातव्यानि (धनादीनि) २१.६१. भा०—विद्याधर्म-वर्धनाय ९.२७. विद्यादिदानाय १.४८.४. अन्येषां सत्काराय २.१४.१२. सुखवितरणाय १.११२.२. **दाने**=दीयते येन तस्मिन् (पुण्ये कर्मणि) २.१३.७. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' सूत्रेण ल्युट्]

दानवम् दुष्टप्रकृतिम् (जनम्) ५.२९.४. दुष्ट-जनम् ५.३२.१. **दानवस्य**=दुष्टकर्मकर्त्तुः (जनस्य) २.११.१०. **दानवाय**=दान-कर्त्रे (जनाय) ५.३२.७. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'दाभाभ्यां नुः' उ० ३.३२. सूत्रेण नुः प्रत्ययः। दानोरपत्यं दानव इति 'तस्यापत्यम्' इत्यण्प्रत्ययः। दो अवखण्डने (दिवा०) धातोर्वा नुः प्रत्ययः। दानुरेव दानव इति स्वार्थेऽण्। दानवम् दानकर्माणम् नि० १०.९.]

दानवे दात्रे (शिल्पिने विदुषे) ५.५९.१. **दानुनः**=दानस्य २.४१.६. **दानुम्**=दातारम् (प्रजाजनम्) ४.३०.७ जलस्य दातारम् (वृत्रं=मेघम्) २.११.१८. **दानुः**=दानशीलः (राजा=सभाध्यक्षः) १.५४.७. **दानु**=दानम् ६.५०.१३. [दानून् दातॄन् नि० ११.२१. डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'दाभाभ्यां नुः' उ० ३.३२. सूत्रेण नुः प्रत्ययः]

दानः यो ददाति सः (इन्द्रः=राजा) ७.२७.४.

दानाः=दातारः (ऋत्विजो जनाः) ७.१८.२३. ददानाः=(वाचः) ५.२७.५. **दाना**=दानानि ५.५२.१४. दानेन ५.८७.२. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति सूत्रे बहुलवचनात् कर्त्तरि ल्युट्]

दानुचित्राः अद्भुतदानाः (त्रिविधाः क्रियाः) १.१७४.७. चित्रा अद्भुता दानवो दानानि यासु ताः (उषसः=प्रभातवेलाः) ५.५९.८. चित्राण्यद्भुतानि दानवो दानानि येषां ते (विद्वांसो जनाः) ५.३१.६. [दानु-चित्र-पदयोः समासः । दानुपदं 'दानवे' पदे द्रष्टव्यम्]

दानुमत् प्रशस्ता दानवो दानानि वस्तूनि वा विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मिन् (वसु=द्रव्यम्) १.५१.४. [दानुप्राति० प्रशंसायां मतुप्प्रत्ययः । दानुपदं दानवे द्रष्टव्यम्]

दानुमत्याः बहूनि दानवो दानानि विद्यन्ते यस्यां पृथिव्यां तस्या मध्ये ५.६८.५. [दानुप्राति० भूम्नि मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप्]

दानौकसम् दानमोकश्च यस्य तम् (वीरजनम्) १.६१.५. [दान-ओकस्पदयोः समासः । दानमिति व्याख्यातम् । ओकस्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० असुन् । न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्]

दान्ति छिन्दन्ति १९.६. लुनन्ति १०.३२. [दाप् लवने (अदा०) धातोर्लट्]

दाम् देता हूँ, स० प्र० २३८, १०.४९.१. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङि उत्तमैकवचनम् । अडभावश्छान्दसः]

दाम उदरबन्धनम् २५.३१. दमनसाधनम् (रशना=व्यापिका रज्जुः) १.१६२.८. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' उ० ४.१४५. सूत्रेण मनिन्]

दामनः दात्रीः (स्त्रीः) ५.३६.१. **दामनि**=यः सुखानि ददाति तस्मिन् गृहाश्रमे १.५६.३. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोरौणादिको मनिन्प्रत्ययः]

दामन्वन्तः बहुदानक्रियायुक्ताः (विद्वांसो जनाः) ५.७९.४. वहु-वन्धनाः (प्रजाः) ६.२४.४. [दामन् इति व्याख्यातम् पूर्वपदे । ततो भूम्नि मतुवन्तात् प्रथमाबहुवचनम्]

दामा दातुं योग्यः (सोमः=ऐश्वर्यसमूहः) ६.४४.२. **दामानम्**=यो ददाति तम् (ईश्वरम्) ३३.५४. दातारम् (परमेश्वरम्) ४.५४.२. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' उ० ४.१४५. सूत्रेण मनिन्]

दामेव यथा रज्जुः २.२८.६. [दामन्-इवपदयोः समासः]

दायि दीयते १.६१.१५. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्मणि लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

दारु काष्ठम् ६.३.४. **दारुम्**=दुःखविदारकम् ७.६.१. [दारुः दृणातेर्वा द्रूणातेर्वा नि० ४.१५. दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः 'दृसनिचरिचटिरहिभ्यो ञुण्' उ० १.३. सूत्रेण ञुण्प्रत्ययः]

दार्भ्याय दर्भेषु विदारकेषु भवाय ५.६१.१७. [दर्भ प्राति० भवार्थे यत् । ततः स्वार्थेऽण्]

दार्वाघाटः शतपत्रकः २४.३५. [दारु आहन्तीति विग्रहे दारावुपपदे आङ्पूर्वाद् हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'दारावाहनोऽणन्तस्य च टः संज्ञायाम्' अ० ३.२.४९. वा० सूत्रेण अण्, अन्तस्य च टकारादेशः]

दार्व्वाहारम् यो दारूणि काष्ठानि आहरति तम् ३०.१२. ['दारु' इति व्याख्यातम् । तदुपपदे आङ्पूर्वाद् हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्प्रत्ययः]

दावने दात्रे (विदुषे जनाय) ५.६५.३. सुखं दात्रे (राधसे=धनाय) १.१३९.६. दाने ६.७१.२. दानाय २.११.१. दानशीलाय (सज्जनाय) २.१.१०. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोरौणादिको बाहुलकाद् वनिप्प्रत्ययः । दावने दानस्य नि० ४.१८]

दावपम् वनदाहकम् (जनम्) ३०.१९.

दाशत् दाश्यात् १.७०.३. दद्यात् ४.२.९. ददाति ६.१६.२०. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लेट् । दाशति दानकर्मा निघं० ३.२०.]

दाशतः सेवमानाः ७.१४.३. दातारः ७.१७.७. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः । विभक्तिव्यत्ययः]

दाशति ददाति १.१५१.७. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लट् । दाशति दानकर्मा निघं० ३.२०.]

दाशम् दाशत्यस्मै तम् ३०.१९. **दाशा**=दानाय । ग्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोः 'दाशगोघ्नौ सम्प्रदाने' अ० ३.४.७३. सूत्रेण सम्प्रदाने कारके अच्प्रत्ययो निपात्यते]

दाशराज्ञे यो दाशति सुखं ददाति राजा तस्मै ७.३३.३. दाशानां दातॄणां राज्ञे ७.३३.५. [दाश-राजन्-पदयोः समासः । दाशः=दाशृ दाने (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच्प्रत्ययः]

दाशात् ददाति १.७१.६. ददति २.२३.४. दद्यात् १.६८.३. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लेट् । आडागमः]

दाशुषे दानशीलाय जीवाय ३४.२४. दात्रे १९.६३.

विद्यादिदानकर्त्रे ३.३४. दातुं योग्याय विद्यार्थिने १२.१०६. दातुं योग्याय विदुषे ११.२५. दानशीलाय कार्याधिपतये १.७४.६. दात्रेऽपत्ये २.३२.५. शब्दोच्चारणकर्त्रे १.२.३. सर्वस्वं दत्तवते १.१.६. सर्वेषां सुखदात्रे ३.२४.५. अध्ययनार्थं राज्यप्राप्त्यर्थञ्च ध्यानं दत्तवते मनुष्याय १.८.८. विद्याग्रहणानुष्ठानं कृतवते मनुष्याय १.२७.६. दात्रे पुरुषार्थिने मनुष्याय १.४४.१. सुशीले वर्त्तमानं कुर्वते मनुष्याय १.९४.१४. अध्ययने चित्तं दत्तवते विद्यार्थिने १.९३.१. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुप्रत्यये 'दाश्वान्‌साह्वान्‌मीढ्वांश्च' अ० ६.१.१२. सूत्रेणाद्विर्वचनमनिट्त्वं च निपात्यते । दाशुषे दत्तवते नि० ११.११.]

दाशेम दद्याम ४.१०.४. स्वीकुर्याम २७.४४. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लिङि उत्तमबहुवचने रूपम्]

दाश्वध्वरः दाशुर्दाताऽध्वरोऽहिंसको यस्मिन्त्सः (विद्वान् जनः) १.७५.३. **दाश्वध्वराय**=दाशुर्देयोऽध्वरोऽहिंसामयो यज्ञो येन तस्मै (सत्पुरुषाय) ६.६८.६. [दाशु-अध्वरपदयोः समासः । दाशुः=दाशृ दाने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि औणादिक उः प्रत्ययः । अध्वरः यज्ञनाम निघं० ३.१७. अध्वर इति यज्ञनाम । ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः नि० १.८.]

दाश्वान् दानशीलः १.४०.७. दाता ४.२.७. **दाश्वांसः**=सर्वस्याभयदातारः प्र०—'दाश्वान्‌साह्वान्‌मीढ्वांश्च' अ० ६.१.१२. अनेनायं दानार्थाद् दाशेः क्वसुः प्रत्ययान्तो निपातितः १.३.७. उत्कृष्टज्ञानं दत्तवन्तः ७.३३. **दाश्वांसम्**=सुखस्य दातारम् २७.२७. [दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुप्रत्यये 'दाश्वान्‌साह्वान्‌मीढ्वांश्च' अ० ६.१.१२. सूत्रेण अद्विर्वचनमनिट्त्वं च निपात्यते । दाश्वांसः दत्तवन्तः नि० १२.४०. यजमानो वै दाश्वान् श० २.३.४.३८.]

दाष्टि दशति १.१२७.४. [दाश हिंसायाम् (स्वा०) धातोर्लटि प्रथमैकवचनम् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

दासः सेवकः १.१५८.५. सेवक इव मेघः ५.३०.९. **दासा**=उपक्षयितारौ (राजप्रजाजनौ) ६.४७.२१. **दासाः**=सुखप्रदाः (शूद्रजनाः) १.१५८.५. **दासम्**=दातुं योग्यम् २.१२.४. दातारम् ७.१९.२. **दासस्य**=जलस्य दातुः ५.३०.८. [दसि दर्शनदंशनयोः (चुरा०)। धातोः 'दंसेष्टटनौ न आ च' उ० ५.१० सूत्रेण टः प्रत्ययः नकारस्याकारादेशश्च । दासः दस्यतेरुपदासयतिकर्माणि नि० २.१७.]

दासपत्नीः दास आश्रयदाता पतिर्यासां ताः (आपः=जलानि) प्र०—अत्र सुपामिति पूर्वसवर्णादेशः । १.३२.११. ये दस्यन्त्युपक्षिण्वन्ति शत्रून् ते दासास्तेषां पत्नीरिव वर्त्तमानाः किरणाः ३.१२.६. यो जलं ददाति स दासो मेघः स पतिः पालको यासां ताः (अपः=जलानि) ५.३०.५. [दासपत्नीपदयोः समासः । दास इति पदं व्याख्यातम् । दासपत्नीः दासाधिपत्न्यः नि० २.१७.]

दासप्रवर्गम् दासानां सेवकानां प्रवर्गाः समूहा यस्मिँस्तम् (रयिम्=राज्यधनम्) १.९२.८. [दास-प्रवर्गपदयोः समासः । दास इति पदं व्याख्यातम्]

दासवेशाय दासाः सेवका विशन्ति यस्मिँस्तस्मिन् (सत्कर्मणे) २.१३.८. [दास-वेशपदयोः समासः । दासपदं व्याख्यातम् । वेशः=विश प्रवेशे (तुदा०) धातोः 'हलश्च' सूत्रेणाधिकरणे घञ्प्रत्ययः]

दासानि दासकुलानि ६.२२.१०. दानानि ६.६०.६. **दासा**=दातव्यानि ६.३३.३. [दास इति व्याख्यातम् । अथवा=दासति दानकर्मा (निघं० ३.२०.) धातोर्भावे घञ्]

दासीः दासीशीला नगरीः । प्र०—अत्र 'दंसेष्टटनौ न आ च' उ० ५.१०, १.१०३.३. सुखस्य दात्रीः (अपः=जलानि) २.२०.७. सेविकाः ४.३२.१०. दानशीलाः (विशः=प्रजाः) ४.२८.४. [दास इति व्याख्यातम् । दासप्राति० स्त्रियां 'टिड्ढाण्०' सूत्रेण ङीप्प्रत्ययः । दासति दानकर्मा (निघं० ३.२०.) धातोर्वा कर्त्तरि औणादिक इनिः प्रत्ययः । दासिशब्दात् 'कृद् इकारादक्तिनः' इति वा० सूत्रेण ङीष्प्रत्ययः]

दासीत् विगतदानो भवेत् ७.१.२१. [दासति दानकर्मा निघं० ३.२०.]

दास्वती प्रशस्तानि दानानि विद्यन्ते अस्याः सा (देवि=कन्या) १.४८.१. [दासप्राति० प्रशंसायां मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप् । दासशब्दस्याकारलोपश्छान्दसः । दासति दानकर्मा (निघं० ३.२०.) धातोर्भावे घञ्प्रत्ययः]

दाः देहि १.१६९.४. यो ददाति ६.१६.२६. छिन्द्याः १.१०४.७. ददाति १५.४८. दद्यात् । प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः १.१२१.४. दद्याः १.१०४.८. द्येरवखण्डये विनाशयेः १.१०४.५. [दाः देहि नि० १०.१९. डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङि मध्यमैकवचने रूपम् । अडभावश्छान्दसः । दो अवखण्डने (दिवा०) धातोर्वा लुङ्]

दिक् काष्ठा १५.११. अध ऊर्ध्वा १४.१३. दिशन्ति

यया सा दिक्, तद्वत् (स्त्री) १४.१२. **दिक्षु**=पूर्वादिषु १६.६. **दिग्भ्यः**=पूर्वप्रतिपादिताभ्यः सर्वाभ्यः (पूर्वादिभ्यः) ६.१९. सर्वाभ्य आशाभ्यः १०.८. [दिशन्ति तामिति विग्रहे दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण कर्मणि क्विन् निपात्यते, करणे वा। दिशः दिशतेरासदनादपि व्याभ्यशनात् नि० २.१५. पञ्च वै दिशः श० ५.४.४.६. पञ्च वा इमा दिशश्चतस्रस्तिरश्च एकोर्ध्वा ऐ० ६.३२. तद् या अमुष्मादादित्यादर्वाच्यः पञ्च दिशस्ता नाकसदः श० ८.६.१.१४. याः (अमुष्मादादित्यात्) पराच्यः (पञ्च दिशः) ताः पञ्च चूडाः श० ८.६.१.१४. सप्तदिशः श० ९.५.२.८. दिशः सप्तहोत्राः (यजु० १३.५) श० ७.४.१.२०. नव दिशः श० ६.३.१.२१, ६.८.२.१०. दश दिशः श० ६.३.१.२१, ८.४.२.२३. दिशो वै स नाकः स्वर्गो लोकः श० ८.६.१.४. स्वर्गो हि लोको दिशः श० ८.१.२.४. ता वा ऽएता देव्यः। दिशो ह्येताः श० ९.५.१.३९. दिशोऽग्निः श० ६.२.२.३४, ६.३.१.२१, ६.८.२.१०. विश्वे त्वा देवा वैश्वानराः कृण्वन्त्वानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत् (ध्रुवासि दिशोऽसि यजु० ११.५८.) इति दिशो हैतद् यजुरेतद्वै विश्वे देवा वैश्वानरा एषु लोकेषूखायामेतेन चतुर्थेन यजुषा दिशोऽदधुः श० ६.५.२.६. ता (दिशः) उ एव विश्वे देवाः जै० उ० २.२.४, २.११.५. स (प्रजापतिः) विश्वान् देवानसृजत तान् दिक्षूपादधात् श० ६.१.२.९. वायुर्दिशां यथा गर्भः श० १४.९.४.२१. दिशो लोगेष्टकाः श० ७.३.१.१३. दिशो वै हरितः श० २.५.१.५. दिशः शिक्यं दिग्भिर्हीमे लोकाः शक्नुवन्ति स्थातुं यच्छक्नुवन्ति तस्माच्छिक्यम् श० ६.७.१.१६. ऋतवो वै दिशः प्रजननः गो० उ० ६.१२. दिशो मे श्रोत्रे श्रिताः तै० ३.१०.८.६. अथ यत्तच्छ्रोत्रमासीत्ता इमा दिशोऽभवन् जै० उ० २.२.४. तद् यत् तच्छ्रोत्रं दिश एव तत् श० १०.३.३.७. श्रोत्रं दिशः जै० उ० ३.२.८. दिशो वै श्रोत्रं दिशः परं रजः श० ७.५.२.२० दिशो वै लोहमय्यः (सूच्यः) श० १३.२.१०.३. दिशो वा अयस्मय्यः (सूच्यः) तै० ३.९.६.५. अवान्तरदिशो रजताः (सूच्यः) श० १३.२.१०.३. अवान्तरदिशो रजताः (सूच्यः) तै० ३.९.६.५. दिशो वाऽअस्य (सूर्यस्य) बुध्न्या उपमा विष्ठाः (यजु० १३.३) श० ७.४.१.१४. छन्दांसि वै दिशः श० ८.३.१.१२, ९.५.१.३९. दिशा वै विष्टारपंक्तिश्छन्दः श० ८.५.२.४. दिशो वै परिभूश्छन्दः श० ८.५.२.३. दिशः परिधयः तै० २.१.५.२. ऐ० ५.२८. दिशो परिधानीया जै० उ० ३.४.२. दिशो वै प्राणः जै० उ० ४.२२.११. दिशः समानः जै० उ० ४.२२.९. दिशां वा एतत्साम यद् वैरूप्यम् तां० १२.४.७. अपरिमिता हि दिशः श० ६.५.२.७. एतद् वै देवा इमाँल्लोकानुखां कृत्वा दिग्भिरदृंहन् दिग्भिः पर्यतन्वन् श० ६.५.२.११.]

दितिम् नाशवन्तम् (पदार्थम्) १०.१६. नाशवत् कार्यम् ५.६२.८. खण्डितां क्रियाम् ४.२.११. **दितिः**=दुःखनाशिका नीतिः ७.१५.१२. अखण्डिता सामग्री १८.२२. [दो अवखण्डने (दिवा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्-प्रत्यये 'द्यतिस्यति०' अ० ७.४.४०. सूत्रेण तकारादौ किति परे इकारादेशः]

दित्यवाट् दितौ खण्डितायां क्रियायां भवा दित्यास्तान् यो वहति पृथक् करोति सः (जनः) १८.२६. दितिभिः खण्डनैर्निर्वृत्तान् यवादीन् वहति (क्रिया) १४.१०. दितये हितं वहति (गौः=जनः) २१.१३. **दित्यवाहम्**=यो दित्यान् खण्डितान् वहति गमयति तम् (भा०—शरीरम्) २८.२५. [दित्योपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' अ० ३.२.६४. सूत्रेण ण्विः प्रत्ययः। दित्यः=दितिप्राति० भवार्थे यत्प्रत्ययः। दितिः=दो अवखण्डने (दिवा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

दित्यौही तत्स्त्री १८.२६. [दित्यवाड् इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीपि 'वाह ऊठ्' अ० ६.४.१३२. सूत्रेण ऊठि 'एत्येधत्यूठ्सु' सूत्रेण वृद्धिः]

दित्सति हिंसितुमिच्छति २.२८.१०. **दित्ससि**=दातुमिच्छसि ४.३२.८. [डुदाञ् दाने (जु०) दो अवखण्डने (दिवा०) धातोरिच्छायां सनि 'सनिमीमाघु०' अ० ७.४.५४ सूत्रेणाच इसादेशेऽभ्यासलोपे सस्य तकारे च रूपम्]

दित्सन्तम् दातुमिच्छन्तम् (जनम्) २.१४.१०. [दित्सतीति व्याख्यातम्। तत्र शत्रन्ताद् द्वितीया]

दित्सु दातुमिच्छु (मनः) ५.३९.३. [दित्सतीति व्याख्यातम्। ततः 'सनाशंसभिक्ष उः' इति सूत्रेण उः प्रत्ययः]

दिदिड्ढि उपाचिनुहि, प्र०—अत्र 'वहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः २.३२.६. उपदिश २.४१.१७. दिश देहि, प्र०—अत्र दिश धातोः 'वहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः, भा०—उत्पादय ३४.१०. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोर्लोटि मध्यमैकवचनम्। 'बहुलं छन्दसीति शपः श्लुः]

दिदीहि प्रकाशय १.११३.१७. देहि २.९.६. धर्म्याणि कर्माणि प्रकाशय ३.१५.४. प्राप्नुहि, प्र०—अत्र दिव् धातोः शपः श्लुः ३.३.७. [दीयति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्लोट्। शपः स्थाने श्लौ सति श्यन् न भवति]

दिदृक्षन्ते द्रष्टुमिच्छन्ति ३.३०.१३. [दृशिर् प्रेक्षणे

(भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन् । 'ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः' अ० १.३.५७. सूत्रेणात्मनेपदम्]

दिदृक्षेण्यम् द्रष्टुं योग्यम् (महित्वनं=महिमानम्) ५.५५.४. **दिदृक्षेण्यः**=द्रष्टुमिच्छयैष्टव्यः (जेन्यः=शत्रूणां जेता जनाः) १.१४६.५. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोरिच्छायां सनि 'कृत्यार्थे तवैकेन्केन्यत्वनः' अ० ३.४.१४. सूत्रेण केन्यः प्रत्ययः]

दिदृक्षेयः द्रष्टुमिच्छायां साधुर्दर्शनीयः (नृतमः=अतिशयेन नेता जनः), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति ढः ३.१.१२. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोरिच्छायां सन्नन्तात् कृत्यार्थे 'वा छन्दसि' इति ढः प्रत्ययः । ढस्य एयादेशः]

दिदेष्टु उपदिशतु ७.४०.२. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शपः श्लौ सति शप्रत्ययो न भवति]

दिद्यवः प्रकाशमानाः (योद्धारो जनाः) ६.४६.११. विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमानास्तेजस्विनः (विद्वांसो जनाः) ४.४१.११. [दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (दिवा०) धातोः 'कुर्भ्रश्च' उ० १.२२. इति सूत्रेण बाहुलकात् कुः प्रत्ययोः द्वित्वञ्च । वकारलोपोऽपि बाहुलकादेव]

दिद्युत् देदीप्यमाना विद्युत् १.१६६.६. न्याय-दीप्तिः ७.४६.३. विच्छेदिका (विजयकर्त्री सेना) १.६६.४. भृशं द्योतमानम् (रपः=अपराधम्) ७.३४.१३. प्रकाशः ६.६६.१०. **दिद्युतः**=तडितः २.१३.७. [द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'द्युतिगमिजुहोतीनां द्वे च' अ० ३.२.१७८. वा० सूत्रेण क्विप्प्रत्ययो द्वित्वञ्च । अभ्यासस्य संप्रसारणं 'द्युतिस्वाप्योः संप्रसारणम्' अ० ७.४.६७. सूत्रेण । दिद्युत् वज्रनाम निघं० २.२०. दिद्युत् द्यतेर्वा द्युतेर्वा द्योततेर्वा नि० १०.७.]

दिद्युतानः देदीप्यमानः (अग्निः=सूर्यः) ३.७.४. [द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच् । अभ्यासस्य सम्प्रसारणं 'द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्' इति सूत्रेण]

दिद्युम् द्योतमानां विद्यां दीप्तिं वा १.७१.५. सुप्रकाशम् ६.४६.९. विद्या-न्याय-प्रकाशम् (वज्रम्) ४.४१.४. प्रज्वलितं शस्त्राऽस्त्रम् ७.५६.९. **दिद्यून्**=विद्या-धर्मप्रकाशकान् व्यवहारान् १०.१७. **दिद्योः**=अतिदुःखात्, अ०—प्रमादाद् दुःखात्, प्र०—अत्र दिवु धातोः 'कुर्भ्रश्च' उ० १.२२. इति चकारेण कुप्रत्ययो बाहुलाद् वकारलोपश्च २.२०. [दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुत्यादिषु (दिवा०) धातोर्बाहुलकाद् (उ० १.२२.) औणादिकः कुप्रत्ययो द्वित्वञ्च । अभ्यासस्य च सम्प्रसारणम् । इषवो वै दिद्यवः श० ५.४.२.२.]

दिधिषन्त उपदिशन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.१३२.५. **दिधिषन्ति**=धरन्ति २.३५.५. धारण करती हैं, सं० वि० १०४, २.३५.५. **दिधिषन्तु**=उपदिशन्तु ३.८.६. **दिधिषन्ते**=शब्दयन्ति ४.१८.७. **दिधिषामि**=शब्दयामि उपदिशामि २.३५.१२. [धिष शब्दे (जु०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च । अडभावश्छान्दसः अन्यत्र लटि रूपाणि । अत्र 'व्यत्ययो बहुलम्' सूत्रेण द्विविकरणता]

दिधिषाय्यः यथावद्धर्त्ता (अग्निः=विद्युदाख्यः पावकः) २.४.१. धारकः पोषकः (विद्वान् जनः) १.७३.२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'दधातेर्द्वित्वमित्त्वं षुक् च' उ० ३.९७. सूत्रेण आय्यः प्रत्ययः, इत्वं षुगागमश्च]

दिधिषुम् धारकम् (धर्मम्) ६.५५.५. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कूप्रत्यये 'अन्दूदृम्फू०' उ० १.९३. सूत्रेण निपात्यते । बाहुलकात् प्रत्ययस्य ह्रस्वत्वम् । दिधिषोः दातुः नि० ८.२०.]

दिधिषेय धरेयम् ७.३२.१८. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातो रूपम्]

दिधिषोः सम्बन्ध के लिए नियोग, स० प्र० १५२, १०.१८.८. ['दिधिषुम्' पदे द्रष्टव्यम्]

दिधिष्वः धारयन्त्यः (कुमार्य्यः) १.७१.३. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कूप्रत्यये 'अन्दूदृम्फू०' उ० १.९३. सूत्रेण निपात्यते]

दिधृत धरत, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः १.१३९.८. **दिधृतम्**=धरतम् ५.८६.६. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । शपः स्थाने श्लुश्छान्दसः । 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.४.७८. सूत्रेणाभ्यासस्येकारादेशः]

दिप्सति हिंसितुम् इच्छति २.२८.१०. **दिप्सन्ति**=विरोद्धुम् इच्छन्ति १.२५.१४. [दम्भ दम्भने (स्वा०) धातोरिच्छायां सन्नन्ताल् लट् । 'दम्भ इच्च' इति सूत्रेणाच इकारादेशेऽभ्यासलोपे 'सनीवन्तः' इतीडभावे 'हलन्ताच्च' इति सनः कित्त्वादनुनासिकलोपे 'खरि चे' ति चर्त्वे छान्दसत्वाद् 'एकाचः०' इति भष् न भवति]

दिप्सवः मिथ्याभिमानव्यवहारमिच्छवः शत्रवः १.३५.१४. [दिप्स धातोः 'सनाशंसभिक्ष उः' इति तच्छीलादिष्वर्थेषु उः प्रत्ययः । दिप्स=दम्भ दम्भने (स्वा०)

धातोरिच्छायामर्थे सन्]

दिप्सन्त: दम्भमिच्छन्त: (रिपव:=शत्रव:) ४.४.१३. दम्भितुमिच्छव: (दुर्जना:) २.२७.३. अस्मान् दम्भितुं हिंसितुमिच्छन्त: (रिपव:=अरय:) १.१४७.३. [दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोरिच्छायां सनि 'दम्भ इच्च' अ० ७.४.५६. सूत्रेण धातोरच इकारादेशेऽभ्यासलोपे च 'सनीवन्त०' इतीडभावे 'हलन्ताच्च' इति सन: कित्त्वादनुनासिकलोपे 'खरि च' इति भकारस्य पकारादेशे छान्दसत्वाद् 'एकाच्०' इति भषोऽभावे 'सनाद्यन्ता धातव' इति धातुसंज्ञायां लट: शतरि रूपम्]

दिव इव सूर्यप्रकाशादिव २.२.२. [दिव-इवपदयो: समास: । दिव इति व्याख्यास्यते]

दिवम् सूर्यम् ६.२१. सूर्यादिकं जगत् १२.१०२. सूर्यं विद्युद् वा १६.५६. सूर्यप्रकाशम् १.६२.८. सूर्याद्यग्निम् भा०—खगोलविद्याम् १२.५. सूर्यलोकम् ३.७. न्यायप्रकाशम् १५:६४. धर्म-प्रकाशम् १५.६४. विद्या-सूर्यम् १५.६४. विद्यादिप्रकाशम् ५.१३. विद्युतम् ४.४२.४. द्योतनाऽऽत्मकमाकाशम् ऋ० भू० १९८, ऋ० २.३.२३.४७. दिव्यं स्वरूपम् ऋ० भू० १५६, ११.४. दीप्तिम् १.८०.११ सर्वोत्तमं स्वप्रकाशमग्न्याख्यम्, पं० वि०, ऋ० ८.८.४८.३. प्रकाशमयं सूर्यम् ३.५९.७. सत्यप्रकाशम् १५.६. दिव्यविज्ञानम् १२.४. प्रकाशस्वरूपम् (परमेश्वरं विद्युतं वा) १.६८.१. अविद्यागुणप्रकाशम् ३८.१७. प्रकाशमानं सूर्यम् १७.६७. ज्ञानप्रकाशं सूर्यलोकं वा १.१८. प्रकाशमयम् (अन्तरिक्षम्=आकाशम्) १७.७२. प्रकाशम् १.२६. देदीप्यमानां राजनीतिम् ९.२४. द्यौ को, स० प्र० ३१६, १०.१९०.३. परम आकाश को, आर्याभि० १.१३. ऋ० १.४.१४.१२. **दिव:**=विद्युत्प्रकाशात् ४.२६.६. सूर्यप्रकाशात् १४.८. द्योतन-कर्मणोऽग्ने: १५.११. राज्यप्रकाशस्य १.१५१.४. प्रकाशमानस्य (विदुषो जनस्य) १.१४६.१. प्रकाशमयान्न्यायात् १.५४.४. प्रकाशकर्मण: सूर्यलोकस्य १.१००.३. सूर्यात् २९.५३. प्रकाशस्वरूपस्य (असुरस्य=शत्रुप्रक्षेपकवीरस्य) ३.५३.७. प्रकाशयुक्तस्याऽऽकाशस्य मध्ये १३.१४. कमनीयस्य (जनस्य) ६.४९.२. प्रकाशान् १.४९.१. सूर्यप्रकाशात् १.४६.१. व्यवहर्त्तॄन् (भृत्यादीन्) ५.५९.७. कामना करने योग्य शुद्ध कामना वाले (मुक्ति को प्राप्त हुए सिद्ध पुरुष) की सं० वि० १९७, ९.११३.९. बिजली अथवा बुरी कामना की, सं० वि० १९६, ९.११३.८. न्यायविनयादि-प्रकाशजातस्य १७.६५. प्रकाशमयस्य (ब्रह्माण्डस्य) १७.६०. द्योतमानस्य (सूर्यस्य परमेश्वरस्य वा) १७.६७. प्रकाशमानात् (महत्तत्वात्) २.३८.११. कमनीयान् कामयमानान् वा (राज्ञ:=नृपान्) ६.५१.४. दीप्ती: (गार्हपत्याऽऽहवनीयदाक्षिणात्यरूपा:) २.३.२. विज्ञानादिप्रकाशस्य मध्ये १९.६०. प्रकाशवत: सूर्यदिर्जगत: ३.१२. स्वप्रकाशात् १.२३.१३. प्रकाशवत: सूर्यादिलोकस्य १.१९. विज्ञानयुक्तस्य (काव्यस्य) १ ११७.१२. सूर्यादिप्रकाशकलोकान् १.१००.१५. कामनाया: ७.१५.४. सूर्यस्य १.१८३.२. व्यवहारस्य १.१८४.१. द्योतमानस्य (पदार्थस्य) १३.२. द्योतमानान् गुणान् १.४८.१५. दिव्यस्याऽऽकाशस्य ३.२.१२. प्रकाशाद्विद्युत: ३७.१३. प्रकाशमयस्य सूर्यदि: ३७.१६. किरणान् ३.४.४. कामयमानान् विद्युदादीन् वा ५.८७.३. दिव्या: (विद्युतो वृष्टय:) ५.८४.३. प्रत्यक्षाऽग्ने: प्रकाशात् । सूर्यप्रकाशान्मेघमण्डलाद् वा २.६.५. प्रकाशमयांल्लोकान् २.१३.७. विद्या-दीप्ती: ३.१.९. प्रकाशयुक्तस्य (पृथिव्या:=भूमे:) ३.१.३ विज्ञानप्रकाशात् १.५९.५. द्युलोकस्य ४.४४.२. सूर्यप्रकाशयुक्तस्याकाशस्य १.१०५.११. दिव्यगुणपदार्थयुक्तस्याकाशस्य १.१०५.१०. द्योतकस्य सूर्यमण्डलस्य १ १०५.५. सूर्यप्रकाशात् १.१०५.३. सूर्याऽऽदे: १.९३.६. कामनात: १.१४२.३. दिव्या: कामना: ५.४१.४. कामयमानस्य (यजमानस्य) ५.४१.३. विद्याप्रकाशान् ५.४१.७. कमनीयस्य सुखस्य ४.१४.५. विद्याप्रकाशमानान् (व्यवहारान्) ३.४३.६. प्रकाशमानात् पदार्थाऽन्तरात् ६.३०.१. प्रकाशा: किरणा: कमनीया: ३.५७.२. ज्योतींषि ३.५६.५. कमनीया: (ऐश्वर्यप्राप्तय:) ३.५६.६. दिव्यादाकाशात् २.२७.१५. विद्युताऽऽदे: ३.५४.११. दिव्यगुणसमूहान् १.५६.६. प्रशंसायुक्तस्याऽन्तरिक्षस्य मध्ये ४.४५.१. द्योतनात्मकात् सूर्यात् १.४७.६. प्रकाशादाकर्षणाद्वा १.५६.५. कमनीयाया: (स्वसु:=भगिन्या:) ४.५२.१. दिवसस्य पदार्थबोधस्य ६.१५.१. सत्यं कामयमाना: (नर:=नेतारो जना:) ६.२.३. दिव्यस्य (गृहाश्रमस्य) १२.५५. विद्युत्सूर्यादिविद्या-प्रकाशिका: (गिर:=सुशिक्षिता वाच:) ७.३९.५. दिव्या गुणा: स्वभावा: क्रिया वा ८.३१. कामना: ५.५७.१. द्योतकान् (पदार्थान्) १.७१.२. विद्यान्यायप्रकाशितव्यवहारान् १.११४.५. विद्यान्यायप्रकाशका: (मरुत:=विद्वांसो जना:) १.८६.१. प्रकाशमाना: (माया:=प्रज्ञा:) ५.४०.६. प्रकाश्यस्य पदार्थस्य १.११५.३. प्रकाशितस्याऽऽकाशस्य १.११०.६. द्योतमानस्य सवितु: १.९२.७. दिव्यसुखप्रदात् प्रकाशात् १.१२१.९. दीप्त्या: १.१२१.८. कमनीयस्य (गृहस्थव्यवहारस्य) १५.६४. अ०—प्रसिद्धाऽग्नेर्विद्युतो वा ५.१९. कामनाओं को, सं० वि० १०५, ५.४१.७. स्वर्ग

का, आर्याभि० १.३२. ऋ० १.७.१०.१५. प्रकाशस्वरूप परमेश्वर की, स० प्र० ४२३, ९.८३.२. **दिवा**=कामनया विद्यादीप्त्या वा ६.४९.१०. अन्तरिक्षेण सह २९.१७. धर्म-प्रकाशेन १५.६. विज्ञानाऽन्धकारप्रकाशेन सह १.९८.२. दिवसेन ५.७६.२. सूर्येण ७.१८. कामनया प्रीत्या सह वा ६.३.६. सूर्य्यादिना १७.२९. **दिवि**=सूर्यप्रकाशादाविव विद्याविनये १६.६४. अन्तरिक्षे ६.४८.६. कामे ७.३२.२१. विद्युति सूर्ये वा १.१५९.५. प्रकाशमये सूर्याऽऽदौ दिव्यव्यवहारे वा १.९१.४. विद्याप्रकाशे १.९१.१८. दिव्येऽन्तरिक्षे १.८५.२. शुद्धे व्यवहारे ५.६०.६. कामनायाम् ५.६१.१२. द्योतनात्मके विद्युदादौ १२.४८. शुभगुणप्रकाशे ६.२५. आकाशे १.८०.१३. आकाश इव दिव्ये विद्याव्यवहारे १.८३.६. प्रकाशस्वरूपे (अध्यापके) १.७३.७. द्योतनात्मके सर्वप्रकाशके (परमेश्वरे) ऋ० भू० १६३, ऋ० १.१.११.१. दिव्ये व्यवहारे प्रकाशे वा ५.७४.२. प्रकाशये जगदीश्वरे २.२२.४. सूर्यप्रकाशे १.१०५.१. सर्वविद्याप्रकाशे १.१०५.१६. द्योतके संसारे ऋ० भू० १२१, ३१.३. द्युलोकेऽन्तरिक्षे ४.३५.८. द्योतनात्मके ब्रह्मणि सूर्यादिप्रकाशे वा प्रकाशमाने परमात्मनि सूर्ये वा ४.५.११. दिव्य आकाशें ३.२.१३. कृषि-विद्या-प्रकाशे ४.५७.५. सूर्य्यादिलोके १३.६. प्रकाशवति सूर्यादौ १.१०३.१. मार्त्तण्ड-प्रकाशे, ऋ० भू० ४४, ऋ० १.२.७.५. प्रकाशमाने कमनीये सत्कर्त्तव्ये परमेश्वरे ५.११.३. प्रकाशयुक्तेऽन्तरिक्षे ५.२७.६. द्योतमाने सूर्ये १.९५.३. विज्ञान-प्रकाशे ३८.११. प्रशंसनीये राज्ये ५.३५.८. कमनीये राष्ट्रे ५.३५.८. विद्याप्रकाशे ५.२.१०. कमनीये न्यायप्रकाशे ६.१७.१४. प्रकाश-निमित्ते (सूर्यलोके) १.७.३. भा०—स्वेऽविनाशिनि मोक्षस्वरूपे, द्योतनात्मके स्वस्वरूपे ३१.३. दिव्यगुणसम्पन्ने जगति १.९८.२. आकाश में, आर्याभि० १.२१, ऋ० १.२.७.२०. विद्युति ७.१९. **दिवे**=क्रीडायै ३०.२१. सर्वथा शुभगुणस्य प्रकाशकाय (सूर्याय) १.५४.३. कामयमानाय (जनाय) ६.१८.१४. विद्याप्रकाशाय विद्युद्विद्यायै वा ३७.१९. विद्युतः शुद्धये २२.२९. दिव्यसुखाय १.१८५.१०. प्रकाशमानाय (जनाय) ४.३.५. विद्युत्प्राप्तये ३९.१. सर्वसुखद्योतनाय ६.२५. विद्यादिप्रकाशाय ६.१. द्योतकाय (विदुषे जनाय) १.१३६.६. सत्यधर्मप्रकाशाय ५.२६. [दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्प्रत्ययः। छान्दसं रूपम्]

दिवक्षसः दीप्तिं प्राप्य व्याप्ताः (धेनवः=वाचः) ३.७.२. **दिवक्षाः**=ये दिवं विज्ञानप्रकाशादिकमक्षन्ति व्याप्नुवन्ति (वाजाः=व्यवहाराः) ३.३०.२१. [दिव् इति व्याख्यातम् । अक्षः=अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अशेर्देवने' उ० ३.६५. सूत्रेण सः प्रत्ययः। दिव्-अक्षपदयोः समासे जसोऽसुक् । पूर्वसवर्णदीर्घश्च न भवति छान्दसत्वात्]

दिवस्पृथिव्योः सूर्य्यभूम्योर्मध्ये ५.४९.५. [दिव्-पृथिवीपदयोः समासः। दिव्पदस्य 'दिवसश्च पृथिव्याम्' अ० ६.३.३०. सूत्रेण दिवस्आदेशः। दिव् इति व्याख्यातम्]

दिवा दिवसे २०.१५. दिने २०.६१. दिव्यन्तरिक्षे १.१६३.६. **दिवाभिः**=अहर्निशवर्त्तमानाभिः (ऊतिभिः=रक्षादिभिः) ३८.१२. [दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुत्यादिषु (दिवा०) धातोः 'कनिन् युवृषि०' उ० १.१५६. सूत्रेण बाहुलकात् कनिन्प्रत्ययः। दिवा० अहर्नाम निघं० १.९. व्युष्टिर्वै दिवा व्येवास्मै वासयति तां० ८.१.१३.]

दिवातरात् अतिशयेन दिवा दिवातरस्तस्मात् सूर्यात् १.१२७.५. ['दिवा' इति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तरप्प्रत्ययः]

दिवापतये दिनस्य पालकाय सूर्याय २२.३०. [दिवापतिपदयोः समासः। दिवा व्याख्यातम्]

दिविक्षयम् दिवि प्रकाशे क्षयो निवासो यस्य तम् (विद्वांसं जनम्) ५.४६.५. [दिव्-क्षयपदयोः समासः। सप्तम्या अलुक् । दिव् इति व्याख्यातम् । क्षयः=क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोरधिकरणे 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' इति घः प्रत्ययः। 'क्षयो निवासे' अ० ६.१.२०१. सूत्रेण आद्युदात्तः]

दिवित्मती प्रकाशयुक्ता (उषाः) ५.७९.१. [दिवित्मत्-प्राति० स्त्रियां ङीप् । दिवित्मदिति व्याख्यास्यतेऽग्रिमे पदे]

दिवित्मते विद्या-धर्म-न्याय-प्रकाशिताय (सख्याय=मित्रत्वाय) ४.३१.११. **दिवित्मता**=दिवं प्रकाशमिन्धते यैः प्रशस्तैः स्वगुणैस्तद्वता (विदुषा जनेन) १.२६.२. [दिव् इति व्याख्यातम् । तदुपपदे ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः 'कृतो बहुलम्' इति करणे क्विप् । ततः प्रशंसायां मतुप्-प्रत्ययः]

दिविष्टिषु दिव्यासु सङ्गतिषु २७.३०. प्रकाशितासु कान्तिषु १.४८.९. दिव्यासु दृष्टिषु १.१४१.६. प्रकाशे स्थितासु क्रियासु ४.४७.१. दिव्यासु क्रियासु ४.४६.१. दिव्येषु व्यवहारेषु १.१३९.४. आकाश-मार्गेषु १.१३९.४. दिव्या इष्टयः सङ्गतानि कर्माणि सुखानि वा येषु व्यवहारेषु तेषु १.८६.४. दिवो दिव्या इष्टयो येषु पठनपाठनाख्येषु यज्ञेषु १.४५.७. पक्षेष्ट्यादिसद्व्यवहारेषु ४.९.३. [दिव्-इष्टि-

पदयोः समासः। दिव्=दिवु क्रीडाद्यर्थेषु (दिवा०) धातोः सम्पदादित्वात् स्त्रियां क्विप्। इष्टिः=इष गतौ (दिवा०) इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्वा क्तिन्। अथवा यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। यजादित्वात् सम्प्रसारणम्। दिविष्टिषु दिव एषणेषु नि० ६.२२.]

दिविसदम् न्यायप्रकाशे व्यवस्थितम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ६.२. [दिव् इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। समासे सप्तम्या अलुक्]

दिविस्पृशम् विद्याप्रकाशयुक्तम् (यज्ञम्) ३३.८५. दिवि विज्ञानप्रकाशे स्पृशन्ति येन तम् (यज्ञं=अध्यापनाऽध्ययनसङ्गतिमयम्) २.४१.२० दिवि स्पृशति येन तम् (रथं=रमणीयं यानम्) ४.४६.४. प्रकाशे स्पर्शनिमित्तम् (यज्ञं=व्यवहारम्) १.१४२.८. **दिविस्पृशः**=यो दिवि परमात्मनि सुखं स्पृशति तस्य (देवस्य=विदुषो जनस्य) ५.१३.२. ये दिवि स्पृशन्ति (अरुषासः=ज्वालाः) ७.१६.३. **दिविस्पृशा**=दिवि प्रकाशे स्पृशति येन तेन (विद्युता) १५.२७. यो दिवि प्रकाशे स्पृशति तेन (अग्निना) ५.११.१. [दिव् इत्युपपदे स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः क्विप्। 'हृद्द्युभ्यां ङेः' अ० ६.३.६. वा० सूत्रेण सप्तम्या अलुक्]

दिविस्पृशा यौ दिवि शुद्धे व्यवहारे स्पृशतस्तौ (अध्यापकाऽध्येतारौ) १.१३७.१. यौ प्रकाशयुक्त आकाशे यानानि स्पर्शयतस्तौ (इन्द्रवायू=अग्निपवनौ) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः १.२३.२. यौ दिव्यन्तरिक्षे यानानि स्पर्शयतस्तौ (अश्विनौ=अग्निजले), प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशश्च १.२२.२. [दिवि स्पृशमिति व्याख्यातम्। ततः 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

दिवीव यथा सूर्य-प्रकाशे १५.२५. यथा सूर्ये ५.१.१२. आदित्यप्रकाश इव ६.५. यथा सूर्यादिप्रकाशे विमलेन ज्ञानने स्वात्मनि वा १.२२.२०. सूर्यज्योतिषीव ७.२४.५. [दिवि-इवपदयोः समासः]

दिवे दिवे प्रतिदिनम्, प्र०—दिवे दिवे इत्यहर्नामसु पठितम् निघं० १.६, १.१.३. विज्ञानस्य प्रकाशाय प्रकाशाय १.१.७. प्रतिदिनं प्रतिक्षणं च, ऋ० भू० १३६, ऋ० ६.१.६.३. भा०—नित्यम् २५.१४. [दिवे दिवे अहर्नाम निघं० १.६.]

दिवोजाः सूर्याज्जातेव (उषाः) ६.६५.१. [दिव् इत्युपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'पञ्चम्यामजातौ' अ० ३.२.६८. सूत्रेण डः प्रत्ययः। पञ्चम्या अलुग् समासे]

दिवोदासम् दिवो विद्या-धर्मप्रकाशस्य दातारम् (सेनापतिम्) प्र०—'दिवश्च दास उपसङ्ख्यानम्' अ० ६.३.२१. इति षष्ठ्या अलुक् १.११२.१४. विद्याप्रकाशदातारम् (राजानम्) ७.१८.२५. विज्ञानमयस्य प्रकाशस्य दातारम् (विद्वांसं जनम्) ४.२६.३. प्रकाशवज्ज्ञानदानशीलम् (विद्वज्जनम्) ६.२६.५. विद्याप्रकाशस्य दातारम् (विद्वांसं जनम्) ६.६१.१. **दिवोदासस्य**=प्रकाशदातुः (सूर्यस्य) ६.१६.१६. **दिवोदासात्**=प्रकाशदातुः (प्रजाजनस्य) ६.४७.२२. कमनीयधनदातुः (राज्ञः) ६.४७.२३. **दिवोदासाय**=कमनीयस्य पदार्थस्य दात्रे (सज्जनाय) ६.१६.५. कमितस्य प्रदात्रे (पूरके=मनुष्याय) १.१३०.७. विज्ञानप्रदाय (धार्मिकाय जनाय) ६.४३.१. विज्ञानस्य दात्रे (महाविदुषे जनाय) ६.३१.४. प्रकाशदात्रे (पूज्याय जनाय) २.१६.६. प्रकाशस्य सेवकाय ४.३०.२०. विद्याप्रकाशदात्रे सेनाऽध्यक्षाय १.११६.४. न्यायविद्याप्रकाशस्य दात्रे (भरद्वाजाय सेनाध्यक्षाय) १.११६.१८. **दिवोदासेभिः**=प्रकाशस्य दातृभिः १.१३०.१०. [दिव्-दासपदयोः समासे 'दिवश्च दास उपसंख्यानम्' अ० ६.३.२१. वा० सूत्रेण षष्ठ्या अलुक्। दिव्-दासौ व्याख्यातौ]

दिवोरुचः विज्ञानप्रकाशे रुचिकराः (सज्जनाः) ३.७.५. [दिव् इत्युपपदे रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर् मूलविभुजादित्वात् कः प्रत्ययः। विभक्तेरलुक् च]

दिव्यम् दिवि शुद्धे भवम् (शर्धः=बलम्) १.१३९.१. शुद्धम् (अज्मं=मार्गम्) २६.२१. दिवि प्रकाशे भवम् (नभः=जलम्), प्र०—'द्यु-प्रागपागुदक्प्रतीचो यत्' अ० ४.२.१०१. इति शैषिको यत् २.२२. कमनीयम् (सद्मानं=गोशालम्) १.१७३.१. दिवि कामनायां साधुम् (कोशं=धनालयम्) ५.५९.८. व्यवहर्त्तव्यं शुद्धम् (नभः=जलम्) ६.२१. दिवि शुद्धगुणे भवम् (अग्नि=पावकम्) १८.५१. कमनीयं शुद्धं वा (धनम्) ७.२.१. पवित्रम् (शर्धः=बलम्) ३.१९.४. **दिव्यस्य**=कमनीयास्विच्छासु साधोः (वचनस्य) ६.३९.१. शुद्धस्य कमनीयस्य (जगतः=संसारस्य) ६.२२.९. अतिशुद्धस्य (अमृतस्य=परमात्मनः) १.११२.३. दिवि भवस्य (वस्वः=धनस्य) २.१४.११. दिवि भवस्य वृष्ट्यादिविज्ञानस्य १.१४४.६. दिवि शुद्धे व्यवहारे भवस्य (रायः=धनस्य) ५.६८.३. दिवि शुद्धगुण-कर्म-स्वभावे भवस्य (जन्मनः=प्रादुर्भावस्य) ७.४६.२. **दिव्यः**=दिवि शुद्धगुणकर्मसु साधुः (केतपूः=यः केतेन विज्ञानेन पुनातीश्वरः) ११.७. शुद्धस्वरूपः (इन्द्रः=जगदीश्वरः)

७.३२.२३. द्युषु शुद्धेषु पदार्थेषु भवो दिव्यः, जो प्रकृत्यादि दिव्य पदार्थों में व्याप्त है वह ईश्वर, स० प्र० १५, १.१६४.४६. शुद्धव्यवहारः (विद्वान् जनः) ५.४१.४. प्रकाशमानेषु क्षत्रगुणेषु भवः (वाचस्पतिः=वाण्याः पालकः प्रजाराजजनः) ६.१.दिवि भवः (ईश्वरः) १.१६४.४६. शुद्धगुणकर्मस्वभावेषु भवः (सविता=जगदीश्वरः) ७.३७.८. **दिव्यानि**=विद्यादिशुभगुणप्रकाशकानि (भेषजा=सोमादीन् ओषधीः) १.३४.६. दिवि प्रकाशे भवानि सूर्यविद्युतादीनि १.६४.३. शुद्धानि जलादीनि वस्तूनि कर्माणि वा १.६४.५. दिव्यगुणकर्मस्वभावानि वस्तूनि ६.२२.८. अतीवोत्तमानि (वसु=धनानि) ६.५९.९. दिवि सुप्रकाशे भवानि (धामानि=स्थानानि) ११.५. प्रकाशरूपाणि विद्योपासनायुक्तानि कर्माणि, ऋ० भू० १६२, ११.५. **दिव्याय**=दिव्यभोगाऽन्विताय (जन्मने) १.५८.६. **दिव्याः**=दिवि शुद्धे कमनीये गुणादौ भवाः (विद्वज्जनाः) ७.३५.१४. शुद्धगुणकर्मस्वभावाः (राजानो बहुमूल्याः पदार्था वा) ७.३५.११. शुद्धाः (आपः=जलानि) ७.४९.२. उत्तमाः पदार्थाः) ६.५०.११. **दिव्या**=शुद्धगुणसम्पन्ना (वृष्टिः) १३.३०. दिव्येषु गुणेषु भवा भा०—दिव्या क्रिया ३८.१८. शुद्धा (वृष्टिः=शक्तिः) १.१५२.७. दिवि कारणे वाय्वादिकार्ये च भवा (अशनिः=विद्युत्) १.१४३.५. दिवि शुद्धे व्यवहारे भवौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.४३.३. **दिव्यासः**=प्राप्तदिव्यशिक्षाः, भा०—सुशिक्षिता दिव्यगतयः (अश्वाः) २९.२१. दिवि क्रीडायां साधवः (आशवः=अश्वाः) १.११८.४. **दिव्ये**=दिव्यगुणकर्मस्वभावे (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २९.३१. दिव्यस्वरूपे (योषणे=भार्ये) २७.१७. **दिव्येन**=अतिशुद्धेन (रोचनेन=प्रदीपनेन) २७.१. **दिव्येभ्यः**=निर्मलेभ्यः (पदार्थेभ्यः) ७.६. शोधकेभ्यो वाय्वादिभ्यः ७.३. [दिव् इति दीव्यतेः क्विप् । ततः 'द्युप्रागपागुदक्प्रतीचो यत्' अ० ४.२.१०१. सूत्रेण भवार्थे यत् । 'तत्र साधुः' इत्यर्थे वा यत् । दिव्या=अत्र दिव्यप्राति० स्त्रियां टाप् । दिव्यासः=दिव्यप्राति० जसोऽसुगागमः]

दिव्येव यथा दिव्या (विद्युत्) १ १७६.३. यथा सूर्यस्थाः किरणारतया १.१६६.११. [दिव्या-इवपदयोः समासः । दिव्येति व्याख्यातम्]

दिशन्ता उपदिशन्तौ (कारू=शिल्पिनौ जनौ) २९.३२. उच्चारयन्तौ (देवौ=देदीप्यमानौ विद्वांसौ) २९.७. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः शत्रन्तात् 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेराकारादेशः । दिशन्ता=प्रदिशन्तौ नि० ८.१२.]

दिशमानः उपदिशन् (विद्वान् जनः) प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् ३.३१.२१. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

दिशः या दिश्यन्त उपदिश्यन्ते दिग्भिः सहचरितास्ताः प्रजाः १२.१७. ये दिशन्त्यतिसृजन्ति ते जनाः ११.६२. पूर्वाऽऽद्याः, भा०—रुद्रा वायवो वा १६.६३. उपदेष्टव्या प्रजाः १२.५९. ऐशानाद्याः ३५.९. अ० दिश इव शुद्धा विदुष्यः, भा०—सुप्रकाशितकीर्त्तयः (पत्न्यः) २३.३६. पूर्वादीन् १२.५. सर्वासु दिक्षु व्याप्तकीर्त्तयः (स्त्रियः) ११.५८. काष्ठाः ११.६३. आशाः १७.५४. सब पूर्वादि दिशाएं, आर्याभि० २.१०, ३२.११. **दिशाम्**=सर्वासु दिक्षु स्थितानां राज्यप्रदेशानाम् १६.१७. पूर्वाऽऽदीनाम् १४.५ [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण कर्मणि क्विन् निपात्यते । अथ यत्तच्छ्रोत्रमासीत्ता इमा दिशोऽभवन् श० १०.३.३.७. अपरिमिता हि दिशः श० ६.५.२.७. एष उ ह वै चतुर्थो लोको यद् दिशः जै० २.१७९. चतस्रो दिशश्चत्वारोऽवान्तरदिशः तै० सं० २.४.९.२. त एते षड् ऋतवष्षड् दिशः जै० २.५२. तस्य (धर्मरूपस्यादित्यस्य) दिशः कपालानि काठ० ३१.६. दश दिशः श० ६.३.१.२१. दिग्भ्यश्चक्रवाकः काठ० ४३.३. दिशः परिधयः मै० १.८.७. काठ० ६.६. तै० २.१.५.२. दिशः पादाः तै० सं० ७.५.२५.१. दिशः श्रोत्रम् ऐ० आ० २.१.५. दिशः सप्तहोत्राः श० ७.४.१.२०. दिशः समित्, तां प्रजापतिः समिन्द्धे मै० ४.९.२३. दिशो भूतिः श० ७.३.१.१३. दिशो वा ऋतस्य सत्यम् तै० सं० ३.३.५.५. दिशो वै परिभूश्छन्दः श० ८.५.२.३-४. दिशो वै पृष्ठानि जै० २.२१. दिशो वै लोहमय्यः (सूच्यः) श० १३.२.१०.३. दिशो वै श्रोत्रं दिशः परं रजः श० ७.५.२.२०. दिशो वै स्वर्गो लोकः मै० ४.४.४. काठ० २३.९. दिशो हरितः श० २.५.१.४. ऐ० आ० २.१.१. दिशो ह्येतस्य (सूर्यस्य) स्रक्तयः श० १४.३.१.१७. धर्मासि दिशो दृंह, रयिं देहि पोषं देहि काठ० १.७. सेयं प्राची दिक् प्रथमा यजत जै० २.२१४.]

दिशामि उपदिशामि १३.४८. कथयामि १३.५१. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोर्लटि उत्तमैकवचनम्]

दिषीय खण्डयेयम् २.३३.५. [दो अवखण्डने (अदा०) धातोर्लिङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

दिष्टाम् निर्दशिताम् (दिशम्) १.१८३.५. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । ततः स्त्रियां टाप्]

दिष्टाय दिशत्यतिसृजति येन त.मै (जनाय) ३०.७. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः 'कृतो बहुलमि' ति करणे क्तः प्रत्ययः]

दीक्षया ब्रह्मचर्यादि आश्रमों के नियम-पालन से, सं० वि० १८८, १९.३०. नाना प्रकार के ब्रह्मचर्य-सत्य-भाषणादि व्रत-धारण से, सं० वि० १४३, अथर्व० १२.५.३. सद्भिराप्तैर्विद्वद्भिः कृतसत्योपदेशया (शिक्षया) ऋ० भू० १०२, अथर्व० १२.५.३. **दीक्षाम्**=ब्रह्मचर्य-विद्यादिसुशिक्षाप्रज्ञाम् १९.३०. उत्तमाऽधिकारम्, ऋ० भू० १००, १९.३० व्राताऽऽदिशम् ५.६. व्रतोपदेशम् ५.४०. दीक्षा को, सं० वि० १९०, अथर्व० १९.४०.३. ब्रह्मचर्यादि आश्रम का उपदेश सं० वि० १८९, अथर्व० १९.४१.१. **दीक्षायाम्**=नियम-धारणाऽऽरम्भे ८.५४. **दीक्षायाः**=ब्रह्मचर्यदेः भा०—बाल्याऽवस्थामारभ्य सज्जनोपदिष्ट-विद्याग्रहणाय (सुशिक्षाप्रज्ञायाः) १४.२४. **दीक्षायै**=यज्ञसाधन-नियमपालनाय १९.१३. धर्म-नियमाऽऽचरणरीतये ४.७. [दीक्ष मौड्येज्योपनयननियमव्रतादेशेषु (भ्वा०) धातोः 'गुरोश्च हलः' अ० ३.३.१०३. सूत्रेण स्त्रियामकारः प्रत्ययः । ततष्टाप् । या वै दीक्षा सा निषत् । तत्सत्रं तस्मादेनानासदित्याहुः श० ४.६.८.१. प्राणा दीक्षा श० १३.१.७.२. तै० ३.८.१०.२. वाग्दीक्षा । तया प्राणो दीक्षया दीक्षितः तै० ३.७.७.७. वाग् दीक्षा कौ० ७.१. आपो दीक्षा । तया वरुणो राजा दीक्षया दीक्षितः तै० ३.७.७.६. पृथिवी दीक्षा । तयाग्निर्दीक्षया दीक्षितः तै० ३.७.७.४-५. अन्तरिक्षं दीक्षा । तया वायुर्दीक्षया दीक्षितः तै० ३.७.७.५. द्यौर्दीक्षा । तयादित्यो दीक्षया दीक्षितः तै० ३.७.७.५. ओषधयो दीक्षा । तया सोमो राजा दीक्षया दीक्षितः तै० ३.७.७.६-७. ऋतं वाव दीक्षा सत्यं दीक्षा ऐ० १.६. सत्ये ह्येव दीक्षा प्रतिष्ठिता भवति श० १४.६.९.२४. एतद् दीक्षायै (रूपम्) यच्छ्रद्धा श० १२.८.२.४. तपो दीक्षा श० ३.४.३.२. प्रजापतिरकामयताश्वमेधेन यजेयेति । स तपोऽतप्यत । तस्य तेपानस्य । सप्तात्मनो देवता उदक्रामन् । सा दीक्षाभवत् तै० ३.८ १०.१. दीक्षा सोमस्य राज्ञः पत्नी गो० उ० २.९. दीक्षया विराडाप्तव्या काठ० २१.५. दीक्षयैवात्मानं पुनीते काठ० ३४.७. दीक्षा पत्नी तै० आ० ३.६.१. य एव पशुमान् भवति तं दीक्षोपनामुका जै० १.२८७. स (प्रजापतिः) दीक्षाभिरेव पौर्णमासीरवारुन्धोपसद्भिरष्टकाः प्रसुतेनामावास्या जै० ३.२. सोमो दीक्षया (सहागच्छतु) तै० आ० ३.८.१.]

दीक्षातपसोः दीक्षा ब्रह्मचर्यादिनियमसेवनं च, तपो धर्माऽनुष्ठानं च तयोः ४.२. [दीक्षा-तपस्पदयोः समासः । 'अभ्यर्हितं च पूर्वं निपततीति वक्तव्यम्' अ० २.२.३४. वा० सूत्रेण दीक्षायाः पूर्वनिपातः । 'न दधिपय आदीनि' अ० २.४.१४. सूत्रेणैकवद्भावप्रतिषेधः]

दीक्षापतिः यथाव्रताऽऽदेश-पालकः (विद्वान् आचार्यः) ५.४०. व्रतादेशानामुपदेशपालको रक्षणनिमित्ता वा (अग्निः=ईश्वरोऽध्यापको विद्युद् वा) ५.६. [दीक्षा-पति-पदयोः समासः । 'दीक्षा' इति व्याख्यातम्]

दीक्षितः ब्रह्मचर्यादि-दीक्षां प्राप्य जातविद्यः (सज्जनः) २०.२४. प्राप्तदीक्षः (ब्रह्मचारिजनः), ऋ० भू० २३७, अथर्व० ११.३.६. दीक्षित होकर (ब्रह्मचारी), सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.६. दीक्षा को प्राप्त होता हुआ (वानप्रस्थिजन) सं० वि० १८९, २०.२४. दीक्षां प्राप्तः सन् (विद्वान् जनः) सं० वि० २२९. [दीक्षाप्राति० 'तदस्य संज्ञातं तारकादिभ्य इतच्' अ० ५.२.३६. सूत्रेण इतच् । तारकादिराकृतिगणः । स वै धीक्षते । वाचे हि धीक्षते यज्ञाय हि धीक्षते यज्ञो हि वाग् धीक्षितो ह वै नामैतद् यद् दीक्षित इति श० ३.२.२.३०. कस्य स्विद्धेतोर्दीक्षित इत्याचक्षते श्रेष्ठां श्रियं क्षियतीति गो० पू० ३.१९. न ह वै दीक्षितोऽग्निहोत्रं जुहुयान्न पौर्णमासेन यज्ञेन यजेत गो० पू० ३.२१. अथ न दीक्षितः काष्ठेन वा नखेन वा कण्डूयेत श० ३.२.१.३१. तस्माद् दीक्षितः कृष्णविषाणयैव कण्डूयेत नान्येन कृष्णविषाणायाः श० ३.२.१.३१. नैनं (दीक्षितं) अन्यत्र चरन्तमभ्य तमियात् । न स्वपन्तमभ्युदियात् श० ३.२.२.२७. अथ यद्दीक्षितः । अव्रत्यं वा व्याहरति क्रुध्यति वा तन् मिथ्याकरोति श० ३.२.२.२४. स यः सत्यं वदति स दीक्षितः कौ० ७.३. अथ य एतमेतद् दीक्षयन्ति तद् द्वितीयम्म्रियते जै० उ० ३.९.४. यज्ञादु ह वा एष पुनर्जायते यो दीक्षते ऐ० ७.२२. एवं वाऽएष यज्ञं सम्भरति यो दीक्षते श० ३.२.२.३. यदह दीक्षते तद्विष्णुर्भवति श० ३.२.१.१७. उभयं वाऽएषोऽत्र भवति यो दीक्षते विष्णुश्च यजमानश्च श० ३.२.१.१७. यद्वै दीक्षन्ते अग्नाविष्णू एव देवते यजन्ते श० १२.१.३.१. अग्नीषोमौ वाऽएतमन्तर्जम्भऽआदधाते यो दीक्षते श० ३.३.४.२१, ३.६.३.१९. हविर्वाऽएष भवति यो दीक्षते श० ३.३.४.२१. उद्गृभ्णीते वाऽएषोऽस्मात् लोकाद् देवलोकमभि यो दीक्षते

श० ३.१.४.१. देवान् वा ऽएष उपोत्क्रामति यो दीक्षते श० ३.१.१.१. देवान् वा ऽ एष उपावर्त्तते यो दीक्षते स देवतानामेको भवति श० ३.१.१.८-१०. देवगर्भो वा एष यद्दीक्षितः कौ० ७.२. गर्भो वा एष भवति यो दीक्षते श० ३.२.१.६. गर्भो (यज्ञस्य) दीक्षितः श० ३.१.३.२८. स (क्षत्रियः) ह दीक्षमाण एव ब्राह्मणतामभ्युपैति ऐ० ७.२३. तस्मादपि (दीक्षितं) राजन्यं वा वैश्यं वा ब्राह्मण इत्येव ब्रूयाद् ब्राह्मणो हि जायते यो यज्ञाज्जायते श० ३.२.१.४०. सिषासवो वा एते यद्दीक्षिताः ऐ० ६.७. दीक्षितस्यैव प्राचीनवंशा (शाला) नार्दीक्षितस्य श० ३.१.१.७. एष (आदित्यः) दीक्षितः गो० पू० २.१. यो वै दीक्षितानां पापं कीर्त्तयति तृतीयम् (अंशम्) तां० ५.६.१०.]

दीदयत् दीदयति प्रज्वलति, प्र०—अत्राऽडभावः 'दीदयतीति ज्वलतिकर्मा' निघं० १.१६, २.४.३. द्योतयति ६.१६.३६. प्रकाशयति ५.४५.६. **दीदयतम्**=प्रकाशयतः १.६३.१०. **दीदयति**=प्रदीप्यते ५.६.४. **दीदाय**=प्रकाशय ७.३.५. प्रकाशयेत् २.३५.४. दीपयति ७.१२.१. दीप्यते ४.६.७. प्राप्त होवे, सं० वि० १०४, २.३५.४. [दीदयति ज्वलति कर्मा निघं० १.१६. ततः लङ्। अडभावः 'दीदयति' प्रयोगे लट्। 'दीदाय' प्रयोगे सामान्ये लिट्। दीङ् क्षये (दिवा०) धातोर्वा लिट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। दीदयत् दीप्यते नि० १०.१६.]

दीदयत् प्रकाशयत् सत् (ब्रह्म) २६.३. प्रकाशकम् (विद्वांसं जनम्) २.२३.१५. [दीदयति ज्वलिकर्मा। निघं० १.१६. ततः शतृप्रत्ययः]

दीदियुः दीयन्ते। प्र०—दीदयतीति ज्वलतिकर्मसु पठितम्, निघं० १.१६. दीङ् क्षये इत्यस्माद् व्यत्ययेन परस्मैपदम्, अभ्यासस्य ह्रस्वत्वे 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इत्यनभ्यासस्य ह्रस्वः। समीक्षा—सायणाचार्येणेदं पदमन्यथा व्याख्यातम् १.३६.११. [दीदयति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. ततो लिट् सामान्ये। अनभ्यासस्य ह्रस्वश्छान्दसः]

दीदिविम् सर्वप्रकाशकम् (अग्नि=परमेश्वरम्) व्यवहारयन्तम् (जगदीश्वरं भौतिकमग्नि वा)। प्र०—अत्र 'दिवो द्वे दीर्घश्चाभ्यासस्य' उ० ४.५५. इति दिवः क्विन् प्रत्ययो द्विरवाभ्यासदीर्घौ च ३.२३. सम्यक् प्रकाशकम् (परमात्मानम्) वे० भा० न० १.१.८. सर्वप्रकाशकम् (अग्नि=परमेश्वरम्) १.१.८. [दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युत्यादिषु (दिवा०) धातोः 'दिवो द्वे दीर्घश्चाभ्यासस्य' उ० ४.५५. सूत्रेण क्विन् प्रत्ययोऽभ्यासस्य च दीर्घत्वम्। क्विन्-प्रत्ययस्य बहुलवचनादेव इत्संज्ञालोपश्च न भवतः]

दीदिवः विजयं कामयमान (अग्ने=वह्निरिव राजन्) ७.१.८. तेजस्विन् शत्रुदाहक वा (अग्ने=आप्तविद्वन्), प्र०—दीदयतिर्ज्वलतिकर्मा, निघं० १.१६. अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यास-दीर्घः १७.६. विद्यादिगुणैः शोभावन् (अ०—विद्वन्, भा०—अध्यापक) २५.४८. ये दीदयन्ति ते दीदयः प्रकाशास्ते बहवो विद्यन्ते यस्मिन् तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १५.४८ सत्यप्रद्योतक (राजन्) ५.२४.३.४. स्व-सामर्थ्येन देदीप्यमान दीप्तिमान् वा (अग्ने=जगदीश्वर भौतिकोऽग्निर्वा) १.१२.१०. यो दीव्यति शुभैर्गुणैर्द्रव्याणि प्रकाशयति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=भौतिकाऽग्ने), अयं दिवु धातोः क्वसु-प्रत्ययाऽन्तः प्रयोगः १.१२.५. प्रकाशमयाऽऽनन्दप्रद (अ०—जगदीश्वर), प्र०—अत्र दिवु धातोः 'छन्दसि लिट्' इति लिट् 'क्वसुश्च' इति लिटः स्थाने क्वसुः 'छन्दस्युभयथा' इति लिडादेशस्य क्वसोः सार्वधातुकत्वादिडभावः 'तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य' इत्यभ्यास-दीर्घः 'मतुवसो रुः सम्बुद्धौ छन्दसि' इति रुरादेशश्च ३.२६. **दीदिवान्**=देदीप्यमानः (अग्निः=विद्युदादिकार्यकारणस्य स्वरूपः) २.६.१. धर्म्यं व्यवहारं चिकीर्षुः (मनुष्यजन्मप्राप्तो जनः) ११.३६. **दीदिवांसम्**=देदीप्यमानम् (अग्नि=पावकम्) ४.३६.२. देदीप्यमानं दातारम् (विद्वांसं जनम्) ५.४३.१२. प्रदीप्यमानम् (विद्वांसं जनम्) ३.२७.१२. प्रकाशमानम् (विद्वांसं जनम्) ६.१.६. प्रकाशमानं प्रकाशयन्तं वा (अग्नि=विद्यादिरूपम्) ६.१.३. सद्गुणैर्देदीप्यमानम् (राजानम्) ३.१३.५. [दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (दिवा०) धातोर् लिटः क्वसौ छान्दसं रूपम्]

दीदिहि प्रदीपय ७.१.३. प्रकाशय १.१४०.१०. भृशं प्रकाशय १.७६.५. प्रकाशस्व प्रकाशय वा ३.५४.२२. प्रकाशितो भव २७.५. देहि ६.४८.७. कामय २७.१. कामयस्व, भा०—उपकुरु १७.७६. **दीदेत्**=प्रकाशयति २.२.८. **दीदेथ**=विजानीहि १.४४.१०. प्रकाशयेथ प्र०—अत्र शबभावः १.३६.११. [दीदयति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. तस्य लोटि लिङि च रूपाणि। शपो लुक्]

दीद्यग्नी दीदिर्दीप्तिर्हेतुरग्निर्ययोस्तौ (अश्विनौ=सूर्याचन्द्रमसौ) १.१५.११. [दीदि-अग्निपदयोः समासः। दीदिः=दीदयति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. ततः किकिन-

वुत्सर्गश्छन्दसि' इति वा० सूत्रेण किः प्रत्ययोः लिड्वच्च। तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घत्वम्]

दीद्यत् देदीप्यमानः (मनुष्यः) ३.१.१. प्रकाशमान (अग्ने=विद्वज्जन) १९.४०. **दीद्यतम्**=प्रकाशकं विज्ञानम् ३.२७.१५. [दीदयति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. ततः शतृप्रत्ययः। शपो लुक्। चक्षुर्वै दीदयैव श० १.४.३.७.]

दीद्यत् दीप्यते ७.१०.१. प्रकाशयति २.९.२. [दीदयति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. दीदयद्=दीप्यसे नि० १०.१९.]

दीद्यानः देदीप्यमान सूर्य इव, भा०—स्तूयमानः (अग्निः=शत्रुदाहकः सभेशः) १७.६६. प्रकाशमानः प्रकाशयन् वा (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.१५.५. [दीदयति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. ततः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

दीद्ये प्रकाशयेयम्, प्र०—दीदयतीति ज्वलतिकर्मा, निघं० १.१६, ३.५४.३. [दीदयति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. ततो लिङर्थे लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

दीधयन् प्रदीपयन्ति ७.७.६. [दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्। अडभावश्छान्दसः]

दीधय प्रकाशय ३.३८.१. [दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

दीधरत् धारयति ३.२.१०. धारय, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङडभावश्च ८.५१. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

दीधः नितरां कारागारे निदधाति ६.६७.४. धारयसि ६.१७.६. [दधातेर्णिजन्ताल्लुङि मध्यमैकवचनम्। अडभावश्च छान्दसः]

दीधितिभिः प्रदीपिकाभिः क्रियाभिः ७.१.१. **दीधितिम्**=धर्त्तारम् (गर्भम्) ३.३१.१. नीतिप्रकाशम् ४.२.१६. विद्याप्रकाशम् १९.६९. **दीधितिः**=दीप्तिः ३.४.३. विद्याप्रदीप्तिः २.१८६.११. प्रकाशनाना विद्या ५.१८.४. **दीधिती**=प्रकाशयन्ती (गीः=वाक्) ५.४२.१. [दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्-प्रत्ययः। दीधितयः रश्मिनाम निघं० १.५. दीधितयः अङ्गुलिनाम निघं० २.५. दीधितयो अङ्गुलयो भवन्ति, धीयन्ते कर्मसु नि० ५.१०. दीधितिम् विधानम् नि० ३.४.]

दीधिम प्रकाशयेम ३३.४१. [दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्लिङ्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

दीध्यत् युद्धे शत्रून् वञ्चित्वा स्वयं प्रकाशेत ६.२०. [दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्लिङर्थे लङ्। वचनव्यत्ययः]

दीध्यतः देदीप्यमानाः (सत्पुरुषाः) २.२०.१. [दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। विभक्तिव्यत्ययः]

दीध्यानः प्रकाशयन् (देवः=विद्वज्जनः) ४.२३.४. दीप्यमानः सन् (अर्वा=गन्ताऽश्वः) २९.२३. देदीप्यमानः (अर्वा=अश्वः) १.१६३.१२. **दीध्यानाः**=शुभैर्गुणैः प्रकाशयमानाः (विप्राः=मेधाविनो जनाः) ४.५०.१. विद्यादिसद्गुणैः प्रकाशमानाः (विद्वांसो जनाः) ३.७.८. देदीप्यमानाः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ४.३३.९. [दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोः शानच्]

दीध्ये प्रकाशये ५.३३.१. [दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्लट्]

दीनाः क्षीणाः (निरभिमाना व्यापारिणो जनाः) ४.२४.९. [दीङ् क्षये (दिवा०) धातोः 'इण् सिञ्०' उ० ३.२. सूत्रेण नक्प्रत्ययः]

दीपय: प्रकाशय ६.२२.८. [दीपी दीप्तौ (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

दीयत् गच्छेत्, प्र०—दीयतीति गतिकर्मा, निघं० २.१४, १.१८०.१. **दीयतम्**=दद्यातम् ५.७४.९. [दीयति गतिकर्मा निघं० २.१४. ततो लङ्। अडभावश्छान्दसः]

दीयथः क्षयथः ५.७३.३. **दीय**=क्षिणुहि, प्र०—व्यत्ययेनात्रात्मनेपदम् १७.३६. उपक्षयति ५.८३.७. **दीयन्ति**=क्षयन्ति प्र०—व्यत्ययेन परस्मैपदम् २.३५.१४. [दीङ् क्षये (दिवा०) धातोर्लट्। 'दीय' प्रयोगे तु लोट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। दीयति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

दीयन् गच्छन् (औशिजः=कामयमानस्य पुत्रः) प्र०—दीयतीति गतिकर्मा, निघं० २.१४, ६.४.६. [दीयति गतिकर्मा, निघं० २.१४. ततः शतृप्रत्ययः]

दीर्घतमाः दीर्घं तमो यस्मात् सः (लोभातुरो जनः) १.१५८.६. [दीर्घ-तमस्पदयोः समासः। दीर्घमिति व्याख्यायते। तमस्=तमु कांक्षायाम् (दिवा०) धातोरौणादिकोऽसुन्। तमस्तनोतेः नि० २.१६. दीर्घतमा मामतेयो दशपुरुषायुषाणि जिजीव। शा० आ० २.१७.]

दीर्घम् विशालम् (वीर्यं=सामर्थ्यम्) ५.५४.५. वर्षशतादप्यधिकम् (आयुः) १.११६.२५. महान्तं समयम् १.१२३.८. लम्बमानम् (आयुः=जीवनम्) ३४.५१. चिरञ्जीविनम् ४.२३.९. बहुकालपर्यन्तम् (आयुः) १.९६.८.

लम्बीभूतम् (आजिं=सङ्ग्रामम्) ४.२४.८. दीर्घकाल पर्यन्त, सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७५. **दीर्घः**= विस्तीर्णः (रयिः=धनम्) ४.२.५. बृहत् (ओकः=गृहम्) १.१७३.११. **दीर्घाय**=महते, निरन्तराय (चक्षसे=दर्शनाय) १.७.३. **दीर्घेण**=प्रलम्बितेन (आयुषा) १.११६.६. [द्राघृ आयामे (भ्वा०) धातोरच्प्रत्ययः। धातो 'द्रा' स्थाने 'दीर्' आदेशः। दीर्घम् द्राघतेः नि० २.१६. आयुर्वै दीर्घम् तां० १३.११.१२.]

दीर्घयशसे महद्यशसे (पुरुषाय) ५.६१.९. [दीर्घ-यशस्पदयोः समासः। दीर्घं व्याख्यातम्]

दीर्घयाथे यान्ति यस्मिन् स याथो मार्गो, दीर्घश्चासौ याथस्तस्मिन् ५.४५.९. **दीर्घयाथैः**=दीर्घा याथा गमनानि येषु तैः (पथिभिः=मार्गैः) २.१५.३. [दीर्घयाथपदयोः समासः। दीर्घं व्याख्यातम्। याथः=या प्रापणे (अदा०) धातोर् अथः प्रत्ययो बाहु० औणादिकः]

दीर्घश्मश्रुः दीर्घकालपर्यन्तं केश-श्मश्रूणि धारितानि येन सः (ब्रह्मचारी), ऋ० भू० २३७, अथर्व० ११.५.६. चालीस वर्ष तक डाढ़ी, मूंछ आदि पंच केशों का धारण करने वाला ब्रह्मचारी, सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.६. [दीर्घ-श्मश्रुपदयोः समासः। दीर्घमिति व्याख्यातम्। श्मश्रु='श्मनि श्रयतेर्डुन्' उ० ५.२८. सूत्रेण 'श्मन्' इत्युपपदे श्रयतेर्डुन्प्रत्ययः। श्मनि मुखे श्रयतीति विग्रहः। एष (आदित्यः) दीर्घश्मश्रुः गो० १.२.१.]

दीर्घश्रवसे दीर्घाणि महान्ति श्रवांसि विद्यादीन्यन्नानि धनानि वा यस्य तस्मै (मेधाविपुत्राय), प्र०—श्रव इत्यन्ननामसु पठितम्, निघं० २.७. धननामसु च, निघं० २.१०, १.११२.११. [दीर्घ-श्रवस्पदयोः समासः। दीर्घमिति व्याख्यातम्। श्रवः=अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०. अन्तरिक्षं दैर्घश्रवसम् जै० २.४.३६.]

दीर्घश्रुत् यो दीर्घं कालं शृणोति (अग्निः=राजा) ७.१६.८. यो दीर्घं विस्तीर्णानि बहुकालं वा शास्त्राणि शृणोति (विप्रः=मेधावी जनः) ७.६१.२. [दीर्घमिति व्याख्यातम्। तदुपपदे श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' इति सूत्रेण तुगागमः]

दीर्घश्रुत्तमम् यः दीर्घेण कालेन शृणोति सोऽतिशयिततमम् (राजकर्मचारिणं जनम्) ५.३८.२. **दीर्घश्रुत्तमा**=यौ दीर्घकालं शृणुतस्तावतिशयितौ (अध्यापकोपदेशकौ ५.६५.२. ['दीर्घश्रुत्' इति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने तमप्-प्रत्ययः]

दीर्घा दीर्घाणि (दिनानि) १.१४०.१३. **दीर्घाम्**= लम्बीभूताम् (प्रसितिं=बन्धनम्) ४.२२.७. विस्तृताम् (प्रसितिं=बन्धनम्) १.२०. **दीर्घाः**=स्थूलाः (तमिस्राः= रात्रयः) २.२७.१४. [दीर्घमिति व्याख्यातम्। ततो नपुंसके जसः शिरादेशे 'शेश्छन्दसि बहुलम्' अ० ६.१.७०. सूत्रेण शेर्लोपः। 'दीर्घाम्' प्रयोगे दीर्घप्राति० स्त्रियां टाप्]

दीर्घाधियः दीर्घा बृहती धीर्येषां ते (देवाः=पूर्णविद्या विद्वांसो जनाः), प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति पूर्वपदस्य दीर्घः २.२७.४. [दीर्घा-धीपदयोः समासः। 'ङ्यापोः०' इति पूर्वपदस्य ह्रस्वत्वे संहितायां दीर्घः]

दीर्घाप्साः दीर्घा बृहन्तोऽप्साः शुभगुणव्याप्तयो येषां ते (वर्णा आश्रमाश्च) १.१२२.१५. [दीर्घ-अप्सपदयोः समासः। अप्सः=रूपनाम निघं० ३.७.]

दीर्घायुत्वम् चिराऽऽयुषो भावः १८.६. **दीर्घायुत्वाय**=दीर्घ-काल जीवन के लिए, सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७५. [दीर्घ-आयुपदयोः समासे कृते भावे त्वः प्रत्ययः। आयुः=एति प्राप्नोति सर्वान् इति विग्रहे इण् गतौ (अदा०) धातोः 'छन्दसीणः' उ० १.२. सूत्रेण उण्प्रत्ययः]

दीर्घायुशोचिषम् दीर्घमायुः शोचिः पवित्रकरं यस्य तम् (अतिथिम्) ५.१८.३. [दीर्घ-आयु-शोचिष्पदानां समासः। शोचिः=ज्वलतोनाम निघं० १.१७.]

दीर्घायुः चिरमायुः (विद्वान् जनः) १२.१००. चिरञ्जीवी (कुमारः=ब्रह्मचारी) ४.१५.९. [दीर्घ-आयुपदयोः समासः]

दीवि द्यूतकर्मणि ५.८५.८. [दिवु क्रीडाविजिगीषादिषु (दिवा०) धातोः छान्दसं रूपम्]

दीष्व देहि, प्र०—अत्र शपो लुक् 'छन्दस्युभयथा, इत्यार्धधातुकत्वम् ३८.३. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लोटि छान्दसं रूपम्]

दुक्षः दुषयेः ७.४.७. [दुष वैकृत्ये (दिवा०) धातोर्लिङर्थे लुङ्। 'शल इगुपधादनिटः क्सः' इति च्लेः क्सादेशः। अडभावश्छान्दसः]

दुग्धम् पूर्णं कुरुतम्, भा०—गमयतम् ३३.८८. **दुग्धाम्**=प्रपिपूर्त्तम् १.१५८.४. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लोट्। 'दादेर्धातोर्घः' इति हकारस्य घकारे 'झषस्तथोः०' इति प्रत्ययतकारस्य धत्वे जश्त्वे च रूपम्]

दुग्धम् गवादिभ्यः पयः १९.१५. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः कर्मणि क्तः प्रत्यय औणादिकः]

दुग्धः प्रपूर्णः (अंशुः=ओषधिसारः) ३.३६.६. [दुह प्रपूणे (अदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

दुघानाः प्रपूरकाः (पन्थासः=मार्गाः), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन हस्य घः १.१००.३. प्रपूरयन्तः (सुविद्वांसः) ३.३१.१०. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः शानच्। वर्णव्यत्ययेन हस्य घकारः]

दुघे सुखानां प्रपूरिके (रात्रिदिने) २८.१६. पूरिके (ऊर्जाहुती=सुसंस्कृतान्नाहुती) २८.३९. प्रपूरिके प्रातःसायंवेले २१.५२. प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति केवलादपि कप्-प्रत्ययः २१.३४. सुष्ठु कामवर्द्धिके (देवी=रात्रिदिने) २८.१६. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'दुहः कब् घश्च' अ० ३.२.७०. सूत्रेण छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पनात् केवलादपि कप् घश्चान्तादेशः]

दुच्छुना दुष्टेन शुनेव २.२३.६. **दुच्छुनाभ्यः**=दुःखकारिणीभ्यः शत्रुसेनाभ्यः २.३२.२. **दुच्छुनाम्**=दुष्टाः श्वान इव वर्त्तमानास्तान् हिंस्यान् प्राणिनः, भा०—दुष्टाचरणादुष्टानाम्, प्र०—अत्र कर्मणि षष्ठी ३५.१६. दुतो दुष्टाश्श्वान इव वर्त्तमानास्तेषाम्, भा०—दुष्टानां जनानाम् १९.३८. **दुच्छुनायै**=दुष्टं शुनं गमनं यस्यास्तस्यै (शत्रुस्त्रियै), प्र०—अत्र शुन गतौ इत्यस्माद् 'घञर्थे क०' इति कः १.१२९.५. **दुच्छुनाः**=दुष्टाः श्वान इव वर्त्तमानाः, भा०—दुष्टाः (दुर्जनाः) २९.५६. दुष्टाः श्वान इव (शत्रवो जनाः) ६.४७.३०. दुर्गतं शुनं सुखं याभ्यस्ताः (शत्रुसेनाः), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन सस्य तः 'शुनमिति सुखनाम०' निघं० ३.६, १.११६.२१. [दुस्-श्वन्पदयोः समासः। वर्णव्यत्ययेन सकारस्य तकारादेशः। अथवा दुस्शुनपदयोः समासः। शुनम्=शुन गतौ (तुदा०) धातोः 'घञर्थे कविधानमिति कः प्रत्ययः। अथवा दुस्-शुनम्-पदयोः समासः। शुनमिति सुखनाम निघं० ३.६. वर्णव्यत्ययेनोपसर्गस्य सस्य स्थाने तकारादेशः। यो वा अभिचरति योऽभिदासति यः पापं कामयते स वै दुच्छुनः जै० १.९३.]

दुच्छुनायसे दुष्टेष्वेवाचरसि ७.५५.३. [दुस्-शुन-पदयोः समासे कृते आचारेऽर्थे क्यङ्। व्यत्ययेन सस्य तकारः]

दुदुक्षन् दोग्धुमिच्छेयुः, भा०—दोग्धुं समर्थाः स्युः प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन धस्य दः ३३.२८. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छतृप्रत्ययः ! 'एकाचो बशो भष्०' इति प्राप्तो धकारो न भवति छान्दसत्वात्]

दुदुक्षन् कामान् प्रपूरयन् (प्रजाजनः) ७.१८.४. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छतृ-प्रत्ययः]

दुदुहे प्राति ३.५७.१. पिपूर्त्ति ४.३.१०. दुह्यते ३.३१.११. दोग्धि ५.४३.४. पूरयति ६.६६.१. **दुदुह्रे**=दुहन्ति ३.५७.२. प्रपूरयन्ति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिट् 'इरयो रे, अ० ६.४.७६. अनेनेरेजित्यस्य स्थाने रे आदेशः ३.१६. **दुदोहिथ**=धोक्षि २.१३.६. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लिटि रूपाणि। लिट् च 'छन्दसि लुङ्लङ्लिटः' इति सामान्यकाले]

दुद्रवत् भृशं गच्छेत् ७.१६.२. भृशं गच्छति ५.५०.४. द्रवति १५.३४. शरीरादौ द्रवति गच्छति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लङ्, माङ्योगमन्तरेणाऽपि अडभावः १५.३३. भा०—वेगवानन्येभ्यो वेगप्रदो वर्त्तते १५.३४. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लङ्। अडभावश्छान्दसः]

दुधये हिंसकाय (दुर्जनाय) ६.३६.२.

दुधितम् पूर्णम् (तमः=अन्धकारम्) ४.१.१७. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। वर्णव्यत्ययेन हस्य धकारः। इडागमोऽपि छान्दसः]

दुधिता दुधितानि दुर्हितानि (तमांसि=रात्रीः) ४.१६.४. दुर्हितानि दूरे सन्ति सुखकारकाणि (शरीरादीनि) २.१७.४. [दुर्-हितपदयोः समासः। हस्य धकारः, उपसर्गस्थरेफस्य च लोपश्छान्दसः]

दुध्र! दुःखेन धर्त्तुं योग्य (विद्वज्जन) ६.२२.४. **दुध्रः**=बलेन पूर्णः (पौंस्यः) १.५६.३. दुःखेन धर्त्तुं योग्यः (इन्द्रः=परमैश्वर्यप्रद ईश्वरः), प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति वर्णलोपो 'घञर्थे क-विधानम्' इति धृ-धातोः कः प्रत्ययः २.१२.१५. [दुस्पूर्वाद् धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः। वर्णव्यत्ययेन सकारलोपः। 'दुध्रः' प्रयोगे तु दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोरपि औणादिके रक्प्रत्यये साधनीयम्। वर्णव्यत्ययेन हस्य धकारः]

दुध्रकृतः ये दुध्राणि धारकाणि बलादीनि कुर्वन्ति ते (मरुतः=वायवः) १.६४.११. [दुध्र इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप्प्रत्ययः। दुध्र इति व्याख्यातम्]

दुध्रवाचः दुर्धरा वाग् येषां ते (यज्ञाऽनुष्ठातारो

जनाः) ७.२१.२. [दुध्र-वाच्पदयोः समासः। दुध्र इति व्याख्यातम्]

दुन्दुभिः वादित्रविशेषः २९.५७. **दुन्दुभे**=हे दुन्दुभिरिव गर्जितसेन (वीरपुरुष) २९.५६. दुन्दुभिरिव गर्जक (विद्वज्जन) ६.४७.२९. दुन्दुभिरिव वर्त्तमान (राजन्) ६.४७.३०. दुन्दुभिरिव गम्भीरगर्जन (वीरजन) २९.५५. ['दुम्भ शब्दे' इति नैरुक्तधातोर्यङन्तात् किः प्रत्ययः औणादिकः। 'दुन्दुभिरिति शब्दानुकरणम्। द्रुमो भिन्न इति वा, दुन्दुभ्यतेर्वा स्याच्छब्दकर्मणः नि० ९.१३. परमा वा एषा वाग् या दुन्दुभौ तै० १.३.६, २.३. एषा वै परमा वाग्या सप्तदशानां दुन्दुभीनाम् श० ५.१.५.६.]

दुन्दुभ्याय दुन्दुभिषु वादित्रेषु साधवे (प्रशंसितजनाय) १६.३५. [दुन्दुभिप्राति० 'तत्र साधुः' इति यत्प्रत्ययः। दुन्दुभि व्याख्यातम्। दुन्दुभिरिति शब्दानुकरणम्, द्रुभो भिन्न वा, इति दुन्दुभ्यतेर्वा स्याच्छब्दकर्मणः। नि० ९.१२.]

दुरद्मन्यै दुष्टा अद्मनी अदनक्रिया यस्यां तस्याः (विपत्तये), प्र०—अत्र पञ्चम्यर्थे चतुर्थी २.२०. [दुस्-अद्मनीपदयोः समासः। अद्मनी=अद् भक्षणे (अदा०) धातोः 'अदेर्मुट् च' उ० २.१०५. सूत्रेण अनिः प्रत्ययो मुडागमश्च। 'कृदिकारादक्तिनः' इति वार्त्तिकेन स्त्रियां ङीष्]

दुरः शत्रून् हिंसितुं हृदयहिंसकान् प्रश्नान् वा १.१२०.२. दूर्वन्ति सर्वाणि दुःखानि यैस्तान् विद्याप्रवेशस्थान् द्वारान् १.७२.८. द्वाराणि, प्र०—अत्र पृषोदरादित्वात् सम्प्रसारणेनेष्टसिद्धिः १.११३.४. हिंसकान् (शत्रून् जनान्) १.६८.५. द्वाराणि २०.३६. दुष्टान् (शत्रु-जनान्) १.६९.५. सुखैः संवारकाणि द्वाराणि १.५३.२. गृहद्वाराणि ६.१७.६. [दुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः क्विप्-प्रत्यये 'राल्लोपः' अ० ६.४.२१. सूत्रेण वकारस्य लोपः अथवा द्वारयति संवृणोतीति विग्रहे द्वार्प्रातिपदिकस्य पृषोदरादित्वात् संप्रसारणे रूपम्। वृष्टिर्वै दुरः ऐ० २.४.]

दुराधर्षम् दुःखेन धर्षितुं योग्यम् (शर्म=गृहं सुखं वा) ६.४९.७. दुःखेनाऽऽधर्षितुं योग्यं दृढम् (वेदविज्ञानम्) ३.३१. [दुर्-आङ् पूर्वाद् ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः]

दुराध्यम् दुःखेन वशीकर्त्तुं योग्यम् (स्तेनं=चोरम्) ६.५१.१३. **दुराध्यः**=दुष्टाचारा दुष्टधियः (भाग्यहीना जनाः) ७.१८.८. दुःखेनाऽऽध्यातुं योग्यः (नावः) ७.३२.२७. [दुस्-आङ्-धी पदानां समासे 'छन्दस्युभयथा' अ० ६.४.८६. सूत्रेण यणादेशः। अथवा दुस्-आङ्पूर्वाद् ध्यै चिन्तायाम् (भ्वा०) धातोर् 'अचो यत्' इति यत्प्रत्ययः। अथवा दुराधीपदस्य प्रथमाबहुवचनम्। ये वै स्तेना रिपवस्ते दुराध्यः तां० ४.७.५.]

दुरितम् दुष्टाचरणम् २.२३.५. दुःखायेतं प्राप्तम् (पापम्) १.१२५.७. दुष्टस्वभावाऽनुष्ठानजनितं पापम् १.२३.२२. **दुरितस्य**=दुःखेनेतस्य प्राप्तस्य (पापस्य) ३.३९.८. **दुरितात्**=दुष्टाचारात् १.१४७.३. दुष्टकर्मभ्यः ऋ० भू० २०३, ४.१५. दुष्टाचाराद् दुःखाद्वा ४.४.१३. दुष्टाचारादश्रेष्ठाचारात् ३.३९.७. दुष्टाऽन्यायाऽऽचरणात् २९.४७. अधर्माऽऽचरणात् ६.५०.१०. पापजन्यात् प्राप्तव्याद् दुःखाद् दुष्ट-कर्मणो वा ४.१५. **दुरितानि**=दुःखदानि पापानि २.२७.५. दुर्गुण दुर्व्यसन और दुःखों को, सं० वि० ४, ३०.३. दुःखेनेतुं प्राप्तुं योग्यानि स्थानाऽन्तराणि ५.७७.३ दुष्ट-कर्म और दुःख, पं० वि०, दुःखानि दुष्टाचरणानि वा ४.३९.१. दुःखानि सर्वान् दुष्टगुणाँश्च, ऋ० भू० ३, ३०.३. सब पाप-जनित अत्यन्त पीड़ाओं को, आर्याभि० १.३३, ऋ० १.७.७.१. भा०—दुर्व्यसनानि २७.६. **दुरिताय**=दुष्टाचाराय १.१४७.५. **दुरिता**=दुष्टाचरणानि २७.६. दुःखेनेता प्राप्तानि (पापानि) ५.९.६. दुःखानि ७.३२.१५. दुःखस्य प्रापकाणि पापानि ६.१५.१५. दुःखेन नेतुं योग्यानि (स्थानानि) १.९९.१. दुःखप्रापकाणि कर्माणि फलानि वा ५.३.११. दुष्टानि व्यसनानि २९.५६. दुःखेन प्राप्तुं योग्यानि (स्थानानि) ५.४.९. दुःसहानि दुःखानि प्र०—अत्र शेर्लोपः १.४१.३. दुष्टानि दुःखानि, प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि०' इति लोपः १.३५.३. दुःखेनेतुं प्राप्तुं योग्यानि स्थानान्तराणि ५.७७.३. [दुस्पूर्वाद् इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः-प्रत्ययः। दुरितानि दुर्गतिगमनानि नि० ६.१२.]

दुरिष्ट्यै दुष्टा इष्टिर्यजनं यस्यां तस्याः, (दुष्टात् यज्ञात्) प्र०—अत्र पञ्चम्यर्थे चतुर्थी २.२०. [दुस्-इष्टिपदयोः समासः। इष्टिः=यज देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। यजादित्वात् सम्प्रसारणम्]

दुरुक्तैः दुष्टुरुक्तैः (वचनैः) १.१४७.४. **दुरुक्ताय**=दुष्टमुक्तं येन तस्मै (मनुष्याय) १.४१.९. [दुस्-उक्तपदयोः समासः। उक्तम्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोः क्तप्रत्यये 'वचिस्वपि०' सूत्रेण किति सम्प्रसारणम्]

दुरेवस्य दुःखेन प्राप्तुं योग्यस्य (दुर्जनस्य) २.२३.१२. **दुरेवः**=दुष्टाचरणम् ६.१६.३१. दुःखेन प्राप्तुं योग्यः (शत्रुजनः) ४.४१.४. **दुरेवाः**=ये दुष्टं यन्ति ते (रिपवः=शत्रुजनाः) ३.३०.१५. दुष्टाचरणाः २.२३.८. दुष्टमेवः प्रापणं कर्म यासां ताः (मायाः=प्रज्ञाः) ५.२.९. दुर्व्यसनाः

(पापिनो जनाः) ४.५.५. **दुरेवैः**=दुःख-प्रापकैर्दुष्टैर्मनुष्यादि-प्राणिभिः १.११७.४. [दुर्-एवपदयोः समासः । एवः=इण् गतौ (अदा०) धातोः 'इणशीभ्यां वन्' उ० १.१५२. सूत्रेण वन्प्रत्ययः]

दुरोकम् शत्रुभिर्दुःसेवम् (सभ्यं सभापतिं वा) ७.४.३. [दुस्-ओकपदयोः समासः । ओकः=अव रक्षणगतिकान्त्यादिषु (भ्वा०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिकः कक्प्रत्ययः]

दुरोकशोचिः दूरस्थेष्वोकेषु स्थानेषु शोचयो दीप्तयो यस्य सः (अग्निः=राजा) १.६६.३. [दुर्-ओक-शोचिपदानां समासः]

दुरोणम् गृहम् ४.१३.१. **दुरोणे**=निवासस्थाने गृहे ३.२५.५. [दुरोणे गृहनाम निघं० ३.४. दुरोण इति गृहनाम दुखा भवन्ति दुस्तर्पाः नि० ४.५. दुरोणे=गृहे नि० ८.५.]

दुरोणसत् यो दुरोणे गृहे सीदति सः (परमेश्वरः) प्र०—दुरोण इति गृहनाम०, निघं० ३.४. १०.२४. यो दुरोणे सर्वर्त्तुसुखप्रापके गृहे सीदति सः (ब्रह्म जीवो वा) १२.१४. ['दुरोण' इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः । दुरोण-पदं व्याख्यातम् । दुरोणसदिति विषयसदित्येतत् श० ६.७.३.११.]

दुरोषाः दुर्गतो दूरीभूत ओषः क्रोधो यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ४.२१.६. (दुर्-ओषस्पदयोः समासः । ओषस्=उष दाहे (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः]

दुरोहणम् दुःखेन रोढुमर्हम् (छन्दः=बलम्) १५.५. [दुर्-पूर्वाद् रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे,च (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

दुर्गहा यो दुर्गान् दुःखेन गन्तुं योग्यान् हन्ति (इन्द्रः=मनुष्यः) ४.१८.२. यानि दुःखेन पारं गन्तुं योग्यानि तानि घ्नन्ति (दुरिता=स्थानानि) ५.४.९. **दुर्गहाणि**=यानि दुर्गाणि दुःखेन गन्तुं योग्यानि घ्नन्ति तानि धर्म्याणि कर्माणि ६.२२.७. [दुर्गोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः । दुर्ग इति व्याख्यास्यते । अथवा दुर्पूर्वात् गाहू विलोडने (भ्वा०) धातोर्वा छान्दसं रूपम्]

दुर्गा दुःखेन गन्तुं योग्यानि (दुर्व्यसनानि) ७.६०.१२. येषु दुःखेन गच्छन्ति तानि, (दुर्गाणि) प्र०—अत्र 'सुदुरोरधिकरणे०' अ० ३.२.४८. इति दुरुपपदाद् गमेर्डः प्रत्ययः 'शेश्छन्दसि०' इति लोपः १.४१.३. **दुर्गात्**=कठिनाद् भू-जलाऽन्तरिक्षस्थमार्गात् १.१०६.१. **दुर्गाणि**=दुःखेन गन्तुं योग्यानि स्थानानि १.९९.१. दुस्सह दुःखों को, आर्याभि० १.३३, ऋ० १.७.७.१. **दुर्गे**=शत्रुभिर्दुःखेन गन्तव्ये प्रकोटे ७.२५.२. [दुर् इत्युपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सुदुरोरधिकरणे' अ० ३.२.४८. वा० सूत्रेण डः प्रत्ययः । दुर्गाणि=दुर्गमानि स्थानानि निघं० ७.२०. दुर्गमनानि स्थानानि नि० १३.३३.]

दुर्गृभिश्वनः दुःखेन गृभिर्ग्रहणं श्वाऽभिव्याप्तिर्यस्य तस्य (वृत्रस्य=मेघस्य) प्र०—अत्र ग्रहधातोः 'इक् कृषादिभ्यः' इतीक् हस्य भत्वं च 'अशूङ् व्याप्तौ' इत्यस्मात् कनिन्प्रत्ययो वुगागमोऽकारलोपश्च १.५२.६.

दुर्गृभिः दुःखेन ग्रहीतुं योग्यैः (स्त्रीभिः) १.१४०.६. [दुर् इत्युपपदे ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोश् छान्दसं रूपम्]

दुर्गृभीयसे दुःखेन गृह्णासि ५.९.४. [दुर्गृभिप्राति० आचारे क्यङ् । दुर्गृभिः=दुर्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः 'इक् कृषादिभ्यः' इतीक् । हस्य भकारश्छान्दसः]

दुर्दृशीकम् दुःखेन द्रष्टुं योग्यम् (रोगम्) ७.५०.१. [दुर् इत्युपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक ईकन्प्रत्ययः]

दुर्धरम् शत्रुभिर्दुःखेन धर्त्तुं योग्यम् (राधः=विद्याराज्यसिद्धधनं) १.५७.१. [दुर् इत्युपपदे धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽन्प्रत्ययो बाहुलकाद्]

दुर्धर्त्तवः दुःखेन धर्त्तारः (दुर्जनाः) ५.८७.९. [दुर्-धर्त्तुपदयोः समासः । धर्त्तुः=धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोरौणा० तुः प्रत्ययः]

दुर्धितात् दुःखेन धृतात् (व्यवहारात्) १.१४०.११. दुर्--धितपदयोः समासः । धितः=डुधाञ् धातोः क्तः । 'दधातेर्हिः' इति हिरादेशे वर्णव्यत्ययेन हस्य धकारः]

दुर्धुरः दुर्गता धुरो येषां ते (किरणाः) ५.५६.४. [दुर्-धुर्पदयोः समासः । धुर्=धुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः । 'राल्लोपः इति वकारलोपः]

दुर्नियन्तवः दुःखेन नियन्तुं निग्रहीतुं योग्याः (वीराः) १.१३५.९. [दुर्-नियन्तुपदयोः समासः । नियन्तुः=निपूर्वाद् यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर् बाहु० औणादिकः (उ० १.७२.) तुः प्रत्ययः]

दुर्नियन्तुः यो दुर्दुःखेन नियन्ता तस्य (विदुषो जनस्य) १.१९०.६. [दुर्-नियन्तृपदयोः समासः । नियन्तृ=निपूर्वाद् यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्प्रत्ययः]

दुर्भृतये दुष्टा भृतिर्धारणं पोषणं वा यस्य तस्मै (असज्जनाय) ७.१.२२. [दुर्-भृतिपदयोः समासः । भृतिः=डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

दुर्मतिम् दुष्टां मतिम् ११.४७. दुष्टा चाऽसौ मतिश्च

ताम् १.१२६.६. दुष्टां प्रज्ञाम् ४.११.६. **दुर्मतिः**=दुष्टा मतिः २.३३.१४. दुष्टा चाऽसौ मतिश्च दुष्टा मतिर्यस्य स वा १.१३१.७. **दुर्मतौ**=दुष्टायां बुद्धौ ५.४२.६. दुष्टायां प्रज्ञायाम् ५.४३.१५. दुष्टा मतिर्यस्य सः (दुर्जनः) १.१३७.१. दुष्टधीः (दुष्टाचारिजनः) ७.५६.६. दुष्टबुद्धिः (जनः) १६.५०. **दुर्मतीनाम्**=दुष्टानां मनुष्याणाम् १.१२६.८. दुष्टधियां मनुष्याणाम् १.१२६.१. दुष्टाचारिणां मनुष्याणाम् १.१२६.८. [दुर्-मतिपदयोः समासः। मतिः=मन ज्ञाने (दिवा०) मनु अवबोधने (तना०) धातोर्वा स्त्रियां क्तिन्प्रत्ययः 'मन्त्रे वृषेषपचमन०' अ० ३.३.९६. सूत्रेण]

दुर्मदम् दुर्गतो दुष्टो मदोऽभिमानं यस्य तम् (दुर्जनम्) ३०.८. **दुर्मदः**=दुष्टो मदो यस्य सः (अयोद्धेव मेघः) १.३२.६. [दुर्-मदपदयोः समासः। मदः=मदी हर्षग्लेपनयोः (भ्वा०) मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्वा 'मदोऽनुपसर्गे' अ० ३.३.६७. सूत्रेण अप्प्रत्ययः]

दुर्मन्मानम् यो दुष्टं मन्यते स दुर्मन्, यस्तं मिनाति तम् (विद्वांसं जनम्) १.१२६.७. [दुर इत्युपपदे मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः क्विप्। 'दुर्मन्' उपपदे मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्प्रत्यये 'मीनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च' अ० ६.१.५०. सूत्रेणाकारादेशः]

दुर्मर्षम् दुर्गतो मर्षः सेचनं यस्मात् तत् (आयुः=जीवनम्) १२.२५. दुःखेन मर्षितुं षोढुं शीलम् (आयुः=अन्नम्) १२.१. [दुर्-मर्षपदयोः समासः। मर्षः=मृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्घञ्प्रत्ययः। अथवा=दुर् इत्युपपदे मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोर्वा खल्। कर्त्तरि अच् वा प्रत्ययः]

दुर्मायवः दुष्टो मायुः प्रक्षेपो येषां ते (रिपवः=शत्रवो जनाः) ३.३०.१५. [दुर्-मायुपदयोः समासः। मायुः=डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोः 'कृवापाजिमि०' उ० १.१. सूत्रेण उण्प्रत्ययः। 'मीनातिमिनोति०' इति सूत्रेणाकारादेशः]

दुर्मित्रासः दुष्टा मित्राः सखायो येषां ते (शत्रवो जनाः) ७.१८.१५. दुष्टानि तानि मित्राणि ७.२८.४. [दुर्-मित्रपदयोः समासे प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमे रूपम्]

दुर्मित्रियाः दुःखप्रदा विरोधिन्यः (ओषधयः=सोमादयः) ऋ० भू० २०१, ६.२२. दुर्मित्राणीव, अ०—शत्रुवत् (आप ओषधयश्च) ६.२२. दुष्टानि मित्राणीव (प्राणा ओषधयश्च) ३८.२३. दुर्मित्राः शत्रव इव, भा०—शत्रुवत् पीडकाः (आपः=प्राणा जलानि वा, ओषधयः=सोमयवाद्याः) २०.१९. शत्रुरिव विरुद्धाः, भा०—शत्रुवद् दुःखदाः (आप ओषधयो वा) ३६.२३. प्रतिकूल, दुःखकारक प्राणादि, आर्याभि० २.२६, ३६.२३. [दुर् मित्रपदयोः समासे इवार्थे भवार्थे वा घः प्रत्ययश्छान्दसः]

दुर्य्य ! गृहेषु वर्त्तमान (राजपुरुष) ७.१.११. **दुर्य्यः**=गृहसम्बन्धी द्वारस्थः (यूपः) १.५१.१४. द्वारवन्ति (ओकांसि=गृहाणि) २.३८.५. [दुर्यप्राति०भवार्थे यत्। दुर्या इति गृहनाम निघं० ३.४.]

दुर्य्यान् गृहाणि, प्र०—दुर्य्या इति गृहनामसु पठितम्, निघं० ३.४, ४.३७. प्रासादान् १.९१.१९. **दुर्य्याः**=गृहाणि, अ०—गृहादयः पदार्थास्तत्रस्था मनुष्यादयः प्राणिनः, प्रासादास्तत्रस्था मनुष्याः १.११. **दुर्य्यासु**=गृहेषु ४.१.१८. गृहेषु भवासु रीतिषु ७.१.११. **दुर्य्ये**=गृहरूपे ५.१७. [दुर्याः गृहनाम निघं० ३.४. गृहा वै दुर्याः ऐ० १.१३. श० १.१.२.२२, ३.३.४.३०.]

दुर्य्योणे गृहनयने ५.२९.१०. गृहे ५.३२.८. समराङ्गणे १.१७४.७.

दुर्वर्त्तुः दुःखेन वर्त्तमानयुक्तस्य (दुर्जनस्य) ६.६५. यो दुःखेन वर्त्तते तस्य (दुष्टजनस्य) ४.३८.८. [दुर् इत्युपपदे वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोरौणादिको बाहु० तुः प्रत्ययः। दुर्वर्त्तुर्दुर्वारः नि० ४.१७.]

दुर्वाससे दुष्ट-वस्त्र-धारणाय ७.१.१९. [दुर्-वासस्पदयोः समासः। वासस्=वस आच्छादने (अदा०) धातोः 'वसेर्णित्' उ० ४.२१८. सूत्रेण असुन्प्रत्ययः]

दुर्हणायाः दुःखेन हन्तुं योग्यायाः शत्रुसेनायाः १.१२१.१४. [दुर् इत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोरौणादिको बाहुलकाद् अन्-प्रत्ययान्तात् स्त्रियां टाप्]

दुर्हणायुवम् दुःखेन हन्तुं योग्यं कामयते ताम् (उषसम्) ४.३०.८. [दुर् इत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा० धातोरौणादिकोऽन् प्रत्ययः। तत इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसि' इति सूत्रेण उः प्रत्ययः]

दुर्हार्दः दुष्ट हृदय वाली अर्थात् दुष्टात्मा (स्त्रियां) सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२९. [दुर्-हार्दपदयोः समासः। हार्दः=हृदयप्राति० भवार्थेऽण्-प्रत्यये 'हृदयस्य

हृल्लेखयदण्लासेषु' अ० ६.३.५०. सूत्रेण हृदादेशः]

दुर्हृणायुः दुष्ट-हृदयः (मनुष्यः) ७.५६.८. **दुर्हृणायून्**=शत्रुभिर्दुर्लभं हृणां प्रसह्यकरणं येषां ते दुर्हृणास्त इवाऽऽचरन्तीति दुर्हृणायवस्तान् (सुवीरान् जनान्) प्र०—यन्त्यतः 'क्याच्छन्दसि' इत्युः प्रत्ययः १.८४.१६. [दुर्हृण-प्राति० आचारे क्यङि 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः प्रत्ययः। दुर्हृणः=दुर् इत्युपपदे हृणीङ् रोषणे लज्जायां च (कण्ड्वादि०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः। दुर्हृणायून्=दुराधर्षान् नि० १३.२५.]

दुवन्यसत् परिचरणमिच्छन् (राजा) ४.४०.२. [दुवस्यति परिचरणकर्मा नि० ३.५. ततः शतरि छान्दसं रूपम्]

दुवसनासः परिचारकाः (प्रजाजनाः) ४.६.१०. [दुवस्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) ततः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्। जसोऽसुक् च]

दुवसः परिचारकाः (भृत्या जनाः) १.१६८.३. **दुवसे**=दुवस्यते परिचरते (शिल्पिने जनाय) १.१६५.१४ **दुवः**=परिचर्य्याम् १.३६.१४. [दुवस्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) ततः कर्त्तरि क्विप्]

दुवस्य सेवस्व ५.४२.११. **दुवस्यत**=सेवध्वम् ३.१. परिचरत ५.२८.६. **दुवस्यति**=परिचरति ३.३.१. सेवते १.७८.२. **दुवस्यथ**=नित्यं सेवध्वम्, ऋ० भू० २००, १.११६.१०. **दुवस्यथः** परिचरतम् १.११२.१५. सेवेथाम् १.११६.१०. **दुवस्यन्**=परिचरेयुः ३.१.१३. **दुवस्यन्ति**=परिचरन्ति १.६२.१०. दुवस्येत्=सेवेत ६.१६.४६. [दुवस्यति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. ततो लेटि, लटि, लङि च रूपाणि। दुवस्यतिराप्नोतिकर्मा नि० १०.२०. समिधाग्निं दुवस्यतेति। समिधाग्निं नमस्यतेत्येतत् श० ६.८.१.६.]

दुवस्यन् सेवमानः (यजमानो जनः) ३.१.२. [दुवस्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) धातोः शतृप्रत्ययः]

दुवस्यात् सेवमानात् (शिल्पिनो जनात्) १.१६५.१४. [दुवस्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) धातोरच् कर्त्तरि। ततः पञ्चमी]

दुवस्वद्भ्यः विद्या-विनय-धर्मेश्वरान् सेवमानेभ्यः (देवेभ्यः=सकलविद्याप्रचारकेभ्यो विद्वद्वरेभ्यः) ९.३५. **दुवस्वन्तः**=दुवो बहुविद्या-धर्म-परिचरणं विद्यते येषु ते (देवाः=आयुर्वेदविदो विद्वांसः) ९.३६. **दुवस्वान्**=दुवः प्रशस्तं परिचरणं विद्यते यस्य सः (विद्वज्जनः) १८.४५. परिचरणीय=विद्वानों से सेवनीयतम (ईश्वर) आर्याभि० २.१७, ५.३२. [दुवस्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५) धातोः क्विपि दुवस्। ततः प्रशंसायां मतुबन्तस्य रूपाणि]

दुवः परिचर्य्याम् १.४.५. परिचरणं सेवनम् ३.१६.४. कार्यसेवनम् ६.२९.३. **दुवांसि**=परिचरणानि सेवनानि ७.२०.६. [दुवस्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) धातोः सम्पदादित्वात् भावे क्विप्]

दुव प्राप्त करो, उत्तम प्रतिष्ठायुक्त सदैव रखो आर्याभि० १.१६, १.३.१०.१४. [दुवस्यतिराप्नोतिकर्मा नि० १०.२०.]

दुवोया यौ दुवः परिचरणं यातस्तौ (रोहितौ=विद्युत्पावकौ) ५.३६.६. [दुवस्-उपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः क्विप्। ततः 'सुपां सुलुग्०' इति सूत्रेणाकारादेशः]

दुवोयु दुवः परिचरणं कामयमानान् (राज्ञः=नृपान्) ६.५१.४. यो दुवः परिचरणं कामयते तस्मै (राज्ञे=नृपाय) ६.१८.१४. परिचरणाय कमनीयम् (क्षत्रं=राज्यं धनं वा) ७.१८.२५. **दुवोयुः**=परिचरणं कामयमानः (राजा) ६.३६.५. [दुवस्-प्राति० इच्छायामर्थे क्यचि 'क्याच्छन्दसि' इति सूत्रेण उः प्रत्ययः। दुवस् इति व्याख्यातम्]

दुश्चरितात् दुष्टाऽऽचरणात् ४.२८. [दुस्-उपपदे चर गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। वृजिनमनृतं दुश्चरितम् तै० ३.३.७.१०.]

दुश्च्यवनः शत्रुभिर्दुःखेन च्योतुं योग्यः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३९. **दुश्च्यवनेन**=यः शत्रुभिर्दुःखेन कृच्छ्रेण च्यवते तेन (इन्द्रेण=सेनापतिना) १७.३४. ['दुस्' इत्युपपदे च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'चलनशब्दार्थादकर्मकाद् युच्' अ० ३.२.१४८. सूत्रेण युच्प्रत्ययः]

दुष्कृतम् यो दुष्टं कर्म करोति तम् (दुर्जनम्) ६.१६.३२. **दुष्कृतः**=ये दुःखेन कुर्वन्ति तान् (दुर्भिक्षान्) ५.८३.९. दुष्टाचारान् ५.८३.२. [दुस् इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि क्विप्प्रत्ययः। दुष्कृतः पापकृतः नि० १०.११.]

दुष्कृताय दुष्टाचाराय ३०.१९. [दुस् इत्युपपदे करोतेर्धातोः क्तः प्रत्ययः]

दुष्टरम् शत्रुभिर्दुःखेनोल्लङ्घयितुं शक्यम् (विद्युद्यानम्) १.११९.१०. शत्रुभिर्दुःखेन तरितुं योग्यम् (रयिम्) १.७९.८. दुस्तरं, प्लवितुमशक्यम् (तरुतारं=ताराख्यं

यन्त्रम्) ऋ० भू० १९९, ऋ० १.८.२१.१०. **दुष्टरस्य**=दुःखेन तरितुं योग्यस्य (साधोः=सत्पुरुषस्य) ७.८.३. **दुष्टरः**=दुःखेन तरितुमुल्लङ्घयितुं जेतुं योग्यः (अग्निः=राजा) ३.२४.१. दुःखेन तरितुं संप्लवितुं योग्यः (अग्निः=विद्वान्राजा) ६.३७. **दुष्टरा**=दुःखेन तरितुमुल्लङ्घयितुं योग्यौ (इन्द्राग्नी=नरेश-सेनापती) ५.८६.२. [दुस् इत्युपपदे तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोः 'ॠदोरप्' इत्यप्प्रत्ययः । दुसो मूर्धन्यादेशश्छान्दसः । दुष्टरा दुरनुकराण्यन्यैः नि० ५.२५. दुष्टरस्तन्न रातीरिति दुस्तरो ह्येष रक्षोभिर्नाष्ट्राभिः श० ५.२.४.१६.]

दुष्टरीतये शत्रुभिर्दुःखेन तरितुमर्हाय (इन्द्राय=सभासेनेशाय) २.२१.२. [दुस् इत्युपपदे तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोरौणादिको बाहुलकाद् ईतिः प्रत्ययः]

दुष्टरीतु दुःखेन तरितुमुल्लङ्घयितुं योग्यम् (सहः) ६.१.१. [दुस् उपपदे तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक ईतुः प्रत्ययः]

दुष्टुतिः दुष्टा चाऽसौ स्तुतिः पापकीर्त्तिश्च सा १.५३.१. **दुष्टुती** दुष्टया प्रशंसया ७.३२.२१. दुष्टया स्तुत्या प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति पूर्वसवर्णः २.३३.४. [दुस्-स्तुतिपदयोः समासः]

दुः दद्युः प्र०—अत्र लुङ्चडभावः १.१२७.४. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः । 'गातिस्थाघु०' इति सिचो लोपः]

दुष्पदा दुःखेन पत्तुं प्राप्तुं योग्येन (चक्रेण=शस्त्र-समूहेन यानसमूहेन वा) १.५३.९. [दुस् इत्युपपदे पद गतौ (दिवा०) धातोः 'सम्पदादित्वात्' क्विप् । ततस्तृतीया]

दुष्परिहन्तु दुःखेन परिहननं यस्य तद्विद्याद्यभ्यासार्थम् (शर्म=गृहम्) २.२७.६. [दुस्-परिहन्तुपदयोः समासः। परिहन्तु=परि पूर्वाद् हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोरौणादिकस्तुः प्रत्ययो बाहुलकाद्]

दुष्प्राव्यः दुःखेन प्रावितुं योग्यः (इन्द्रः=राजपुरुषः) ४.२५.६. [दुस् इत्युपपदे प्रुङ् प्लुङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्ण्यत्]

दुस्तरम् दुःखेन तरितुं योग्यं बलम् १.१३९.८. [दुस्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'ॠदोरप्' इत्यप्प्रत्ययः]

दुहन्ता प्रपूरयन्तौ (अश्विना=सभासेनेशौ) १.११७.२१. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

दुहन्ति प्रपूरयन्ति १.१३७.३. पिप्रति १.६४.५. पिपुरति १.६४.६. प्रपिपुरति १.१३७.३. **दुहाते**=पिपृते ६.७०.२. प्रातः ४.२३.१०. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लट्]

दुहाना प्रपूरयन्ती (धेनुः=वाक्) ३.५८.१. **दुहानाम्**=सुखप्रपूरिकाम् (धेनुं=वाणीम्) २.३२.३. प्रपूरयन्तीम् (अदितिं=धेनुम्) १३.४९. **दुहानाः**=पूर्णशिक्षाविद्याः (धाराः=वाचः) ७.४३.४. काममलङ्कुर्वाणाः (उषसः=प्रभातवेलाः) ६.२८.१. प्रपूरयन्तः (भानवः=किरण-दीप्तयः) ३.१.१४. प्रपूरयन्त्यः (उषासः=प्रभाताः) ३४.४०. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः शानच् । ततः स्त्रियां टाप्]

दुहाम् प्रपूरिकाम् (सीतां=भूमिकर्षिकाम्) ४.५७.७. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' सूत्रेण कः । ततः स्त्रियां टाप्]

दुहितरम् कन्यामिव वर्त्तमानाम् (उषासं=प्रातर्वेलाम्) ४.३०.९. **दुहितरः**=कन्या इव किरणाः ४.५१.१०. **दुहितरा**=कन्ये इव वर्त्तमाने (अहोरात्रे) ६.४९.३. **दुहितरि**=कन्येव वर्त्तमानायाम् (उषसि) १.७१.५. **दुहितः !**=पुत्रीव उषः १.४८.१. **दुहिता**=पूर्णयुवतिः कन्या १.११७.१३. पुत्री इव (उषाः) १.४८.८. दुहितेवोषाः ३.५५.१२. पुत्रीवोषाः १९.४. दुहितेव कान्तिः ४.४३.२. दूरे हिता कन्येव कान्तिरुषा १.११६.१७. दूरे हिता पुत्री वा १.९२.५. कन्येव वर्त्तमाना (उषाः) ४.५२.१. **दुहितुः**=दूरे हितायाः कन्यायाः ३.३१.१. उषसः १.१६४.३३. **दुहित्रा**=या कन्येव वर्त्तमाना तया (उषसा=प्रभातवेलया) १.१८३.२. [दोग्धि कार्याणि प्रपूरयतीति विग्रहे दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'नप्तृनेष्टृ०' उ० २.९५. सूत्रेण तृच् निपात्यते, दुहिता दुर्हिता दूरे हिता दोग्धेर्वा नि० ३.४.]

दुहीत परिपूर्णा स्यात् २.१८.८. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लिङ्]

दुहीयत् दुह्यात्, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं यासुटो ह्रस्वश्च २.१५.१०. प्रपूरयेत् २.१७.९. प्रपूरयति २.१८.९. **दुहीयन्**=या दुग्धादिभिः प्रपिपुरति, प्र०—दुह धातोरौणादिक इः किच्च, तस्मात् क्यजन्ताल्लेड्-बहु-

वचनम् १.१२०.६. **दुहुः**=पिप्रति, प्र०—अत्र लिटि 'वाच्छन्दसि' इति द्वित्वाऽभावः २.३४.१०. **दुहे**=पिपर्मि, भा०—प्रपूरयामि २०.६०. पूर्णं कुर्याम् २०.६५. प्रपूरयति २१.३७. प्रपूरयेत् २१.३९. वर्धयेयम् १.१०५.२. दुग्धे, प्र०—लट्-प्रयोगः 'लोपस्त०' इति तलोपः २१.३६. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोरौणादिक इः प्रत्ययः किच्च। ततः क्यजन्ताल्लेट्। दुहुः प्रयोगे लिट्। छान्दसो द्वित्वाऽभावः। 'दुहे' प्रयोगे लट्। 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' इति सूत्रेण तप्रत्ययस्य लोपः]

दुहीयत् प्रतिपादयन् (मघोनी=नीतिः) २.११.२१. [दुहीय इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततः शतृप्रत्ययः]

दुहे प्रपूर्त्तिकरे व्यवहारे १९.८७. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर् इगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः]

दुहे दोहनाय प्रपूरणाय २१.३४. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः सम्पदादित्वाद् क्विप्]

दुह्रते प्रपूरयन्ति १.१३४.६. दुहन्ति १.१६४.७. **दुह्रे**=दुहन्ति ६.६६.४. पिपुरति १.१३४.६. प्रपूरयन्ति ५.६९.२. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.८. सूत्रेण झादेशस्यातो रुडागमः। 'दुह्रे' प्रयोगे 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' सूत्रेण प्रत्ययावयवस्य तस्य लोपः]

दुःशंसः दुष्टः शंसः स्तुतिर्यस्य सः (मर्त्यः=मनुष्यः) २.४१.८. दुःखेन शंसितुं योग्यः, भा०—दुष्टतमः (मर्त्यः=मनुष्यः) २०.८२. दुष्टः शंसो यस्य स चोरः २.२३.१०. दुःखेन शंसितुं योग्यास्तान् (दुःखकारिणो जनान्) १.२३.९. [दुस्-शंसपदयोः समासः। शंसः=शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्घञ्प्रत्ययः]

दुःशंसान् दुष्टाः शंसाः शासनानि येषां तान् (दस्युवादीन् जनान्) १.९४.९. ['दुस्' इत्युपपदे शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' सूत्रेणाण्प्रत्ययः। शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्वा छान्दसं रूपम्]

दुःशेवः दुःखं शाययितुमर्हः (वृकः=स्तेनः) १.४२.२. [दुस्- शेवपदयोः समासः। शेवः=शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः 'इण्शीभ्यां वन्' उ० १.१५२. सूत्रेण वन्प्रत्ययः]

दुःष्वप्न्यम् दुष्टश्चाऽसौ स्वप्नो निद्रा च तस्मिन् भवम् (अपराधम्) ३५.११. [दुस्-स्वप्नपदयोः समासे भवार्थे यत्। स्वप्नः=ञिष्वप् शये (अदा०) धातोः 'स्वपो नन्' इति नन्]

दूडभम् शत्रुभिर्दुःखेन दम्भितुमर्हम् (दक्षं=बलम्) प्र०—'दुरो दाश-नाश-दभध्येषूत्वं वक्तव्यमुत्तरपदादेश्च ष्टुत्वम्, अ० ६.३.१०९. इति वार्त्तिकेन दुर इत्यस्य रेफस्योकारः सवर्णदीर्घादेशो धातोर्दकारस्य डकारश्च, खलन्तं रूपम्। समीक्षा—सायणाचार्येण दूडभपदस्य दहधातो रूपमिति साधितं, तन्महाभाष्यकारव्याख्यानविरुद्धत्वादशुद्धमेव १.१५.६. दुःखेन दम्भितुं हिंसितुं योग्यः (रथः=विज्ञानम्), प्र०—अत्र दम्भु धातोः खल्-प्रत्ययः 'दुरो दाशनाश०' अ० ६.३.१०९. एतत्सूत्रभाष्योक्त-वार्त्तिकेन नकार-लोपेन चाऽस्य सिद्धिः ३.३६. दुःखेन हिंसितुं योग्यः (रथः=रमणीयं यानम्) ४.९.८. दुःखेन लब्धुं योग्यः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.९.२. दुःखेन दभितुं योग्यः (अग्निः) ३.२.२. [दुर्-पूर्वाद् दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोः 'ईषद् दुःसुषुकृच्छ्राकृच्छ्रार्थेषु खल्' अ० ३.३.१२६. सूत्रेण खल्-प्रत्यये 'दुरोदाशनाशदभध्येषूत्वं वक्तव्यमुत्तरपदादेश्च ष्टुत्वम्' अ० ६.३.१०९. वा० सूत्रेणानुनासिकलोपो निपातनात् दुरो रेफस्योकारः सवर्णदीर्घादेशो धातोर्दकारस्य डकारश्च। दभ्नोति गतिकर्मा निघं० २.१४. गतेश्च प्राप्त्यर्थोऽपि]

दूडभासः दुर्गतो दभो हिंसा येभ्यस्ते (देवाः=विद्वांसः सैनिकाः) ३.५६.८. दुःखेन लब्धुं योग्या विद्वांसः (जनाः) ७.६०.६. [दूडभं व्याख्यातम्। ततो 'आज्जसेरसुक्' इति जसोऽसुगागमः। दभ्नोति गतिकर्मा निघं २.१४. गतेश्च प्राप्त्यर्थोऽपि]

दूढ्यः दुःखेन ध्यातुं योग्याः (वीरसैनिकाः) ३.१६.२. दुःखेन ध्यातुं योग्यो व्यवहारः १.१०५.६. अनधिकारिभिर्दुःखेन ध्यातुं योग्यः (रथः=विमानादियानम्) प्र०—अत्र दुरुपपदाद् ध्यै धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः दुरुपसर्गस्योकारादेश उत्तरपदस्य ष्टुत्वं च पृषोदरादित्वात् १.९४.८. **दूढ्याः**=दुष्टधियः (मनुष्यान्) १.९४.९. **दूढ्ये**=यो दुष्टं ध्यायति विचारयति तस्मै (जनाय), प्र०—अत्र चतुर्थ्यर्थे सप्तमी १.१९०.५. [दुर् इत्युपपदाद् ध्यै चिन्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति क प्रत्यये 'दुरो दाशनाशदभध्येषूत्वम्०' इति वा० सूत्रेण दुरो रेफस्योकारादेश उत्तरपदस्यादेश्च ष्टुत्वम्। मूलविभुजादित्वाद्वा कर्त्तरि कः प्रत्ययः। दूढ्यं दुर्धियं पापधियम् नि० ५.२.]

दूणशा दुःखेन नशो नाशो येषान्तानि (रोचनानि=प्रकाशमानानि वस्तूनि) ३.५६.८. [दुर्-नशपदयोः समासे पृषोदरादित्वाद् दुरो रेफस्योकारादेश उत्तरपदादेश्च ष्टुत्वम्।

नशः=णश अदर्शने (दिवा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः]

दूणाशम् दुःखेन नाशनीयम् (दुर्जनम्) १.१७६.४. दुर्लभो नाशो यस्य तत् (सख्यं=मित्रत्वम्) ६.४५.२६. दुःखेन नाशयितुं योग्यं दुर्लभविनाशं वा (केतं=प्रज्ञाम्) ७.१८.२५. **दूणाशः**=दुर्लभो नाशो यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ७.३२.७. **दूणाशा**=दुर्लभो नाशो यस्याः सा (दक्षिणा) ६.२७.८. [दुर् इत्युपपदात् णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्घञ् प्रत्यये पृषोदरादित्वाद् रूपसिद्धिः। दुर्-नाश पदयोः समासो वा]

दूत ! यो दुनाति दुष्टान् तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) २.६.६. **दूतम्**=यो दुनोति पदार्थान् देशान्तरं प्रापयति तम् (विद्युतम्) १.४४.३. यो दावयति देशान्तरं पदार्थान् गमयत्युपतापयति वा तम् (अग्नि=सर्वपदार्थच्छेदकम्), प्र०—अत्र 'दुतनिभ्यां दीर्घश्च, उ० ३.८८. इति क्तः प्रत्ययो दीर्घश्च १.१२.१. दवति प्रापयति सुखज्ञाने येन तम् (अग्निम्=ईश्वरं भौतिकं वा) १.१२.८. दूतवद् देशान्तरे समाचारप्रापकम् (विद्युदाख्यं वह्निम्) ३.९.८. यो दुःखानि दुनोति दूरीकरोति तम् (अग्नि=परमात्मानम्) ६.१५.८. देशान्तरप्रापकम् (वह्निम्) १.६०.१. परितापेन दाहकम् (अमृतम्=उदकेऽपि व्यापकं कारणमग्निम्) १५.३३. परितापकम् (विद्युदाख्यमग्निम्) १५.३३. सर्वत्राऽभिगन्तारं विद्युतम् १५.३२. बहुकार्यसाधकम् (अग्नि=सत्योपदेशकम्) ७.१६.१. दूतवद्वर्त्तमानं वह्निम् ५.२१.३. सर्वतो व्यवहारसाधकम् (अग्निम्) ५.८.६. दूतवत् कार्यसाधकम् (अग्नि=वह्निम्) २२.१७. सत्योपदेशकम् (परमेश्वरम्) ऋ० भू० २४६, २२.१७. प्रशस्त-बुद्धिमन्तम् (विद्वांसं जनम्) १.४४.११. यो दुनोति शत्रूँस्तम् (राजानम्) ५.३.८. यो दुनोति सामादिभिः शत्रूंस्तम् (प्रगल्भं जनम्) १.३६.४. **दूतः**=शत्रूणामुपतापयिताऽतिप्रतापगुणयुक्तो वा (अग्निः=विद्वज्जनः) १.४४.२. यो दुनोति दुष्टान् परितापयति सः (राजहितकारिणं जनम्) ४.१.८. यो दोषान् दुनोति दूरीकरोति धर्म्मार्थकाममोक्षान् प्रापयति वा (अग्निः=सर्वदुःखदाहकः परमेश्वरः) ६.१५.९. सर्वपदार्थविद्यासमाचारप्रज्ञापकः (विद्वान् जनः) ६.१६.६. देशान्तरं प्रापकः (अग्निः=पावकवद् विद्वान् जनः) २.९.२. सर्वतः समाचारप्रदः, (अग्निः=जगदीश्वरः) २.६.७. उपतप्ता देशान्तरं प्रापयिता (जीवात्मा) १.५८.१. इतस्ततो वार्त्ताः पदार्थान्वा विजानन् (विद्वान् जनः) १.१०५.४. समाचारप्रापकः (जनः) ६.६३.१. यो दुनोति तापयति दुष्टान् सः (कविः=क्रान्तप्रज्ञो मेधाविजनः) २९.२५. सत्याऽसत्य समाचारदाता (धर्मसभाऽधिकृत उपदेशकः) ३.५४.१९. विज्ञापकः (विद्वान् जनः) १.७२.७. यो दुनोति उपतप्य भिनत्ति दुष्टान् सः (राजदूतः) १.३६.५. उपक्षेता सर्वविद्याप्रापकः (अग्निः=विद्वान् जनः) ४.९.२. अविद्यायाः पारे विद्याया गमयिता (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.११.२. यो दुनोति परितापयति शत्रुस्वान्तानि सः (राजा) १.१८८.१. समाचारदातेव (वृद्धः परमात्मा) ३.५५.९. सुशिक्षितो दूत इव (प्राप्तसमाचारो राजा) ७.७.१. यो दुनोति समाचारं दूरं दूराद्वा गमयत्यागमयति (पावकः) ५.२६.६. दूत इव वर्त्तमानः (अग्निः=पावकः) २२.१६. दुःखोपनाशकः (विद्वानीश्वरो वा) १.७४.४. धार्मिको विद्वान् दक्षो राजदूतः ५.४३.८. यो दुनोति शत्रून् भेत्तुं जानाति सः (सेनाऽध्यक्षः) १.४४.९. **दूतमिव**=यथा दूतो दौत्यमिच्छति ४.३३.१. [दु गतौ (भ्वा०) टुदु उपतापे (स्वा०) धातोर्वा 'दुतनिभ्यां दीर्घश्च' उ० ३.९०. सूत्रेण क्तः प्रत्ययः। धातोरुकारस्य दीर्घश्च। दूतः जवतेर्वा, द्रवतेर्वा वारयतेर्वा नि० ५.१.]

दूत्यम् दूतस्य कर्म्म, प्र०—'दूतस्य भागकर्मणी' अ० ४.४.१२१. अनेन दूत-शब्दाद् यत्प्रत्ययः १.१२.४. दूतस्य भावः कर्म्म वा ४.८.४. दूतस्य भागं कर्म वा १.४४.१२. **दूत्यानि**=दूतवत् कर्माणि ४.७.८. **दूत्याम्**=दूतस्य क्रियामिव ६.५८.३. **दूत्याय**=दूत-कर्मणे ७.११.२. [दूत इति व्याख्यातम्। ततो भावे कर्मणि वा 'दूतवणिग्भ्यां चेति वक्तव्यम्' अ० ५.१.१२६. वा० सूत्रेण यः प्रत्ययः। अथवा दूत प्राति० 'दूतस्य भागकर्मणी' अ० ४.४.१२०. सूत्रेण भागे कर्मणि वाभिधेये यत्]

दूदुषत् दूषयति ३.३.१. [दुष वैकृत्ये (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

दूधोत् अकम्पयत् ७.२१.४. (धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्। छान्दसं रूपम्]

दूर-आदिशम् दूरे य आदिश्यते तम् (श्लोकं=वाचम्) १.१३९.१०. [दूर-आदिशपदयोः समासः। दूरम् कस्मात्? द्रुतं भवति दुरयं वा नि० ३.१९. आदिशम्=आङ्+दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः]

दूर-आधीः दूरस्थानां पदार्थानां समन्ताच्चिन्तकम् (मनः=अन्तःकरणम्) ६.९.६. [दूर-आधीपदयोः समासः।

दूरं पूर्वपदे व्याख्यातम् । आधी=आङ्+ध्यै चिन्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'ध्यायतेः सम्प्रसारणं च' अ० ३.२.१७८. वा० सूत्रेण क्विप्-प्रत्ययः सम्प्रसारणं च]

दूर-उपब्दः दूर उपब्दिर्वाग् येषां ते (वीरा योद्धृ-जनाः) प्र०—उपब्दिरिति वाङ्नाम, निघं० १.११, ७.२१.२. [दुर्-उपब्दिपदयोः समासः उपब्दिरिति वाङ्नाम, निघं० १.११. इकारस्याकारादेशो वर्णव्यत्ययेन]

दूरके दूर एव दूरके, भा०—अतिदूरस्थमपि स्थानम् प्र०—अत्र स्वार्थे कन्प्रत्ययः १.२२.४. [दूर-प्राति० स्वार्थे कन्प्रत्ययः । दूरं कस्मात् ? द्रुतं भवति दुरयं वा नि० ३.१९.]

दूरङ्गमम् यद् दूरं गच्छति गमयति वाऽनेकपदार्थान् गृह्णाति तत्, भा०—वेगवतां वेगवत्तरम् (मनः) ३४.१. दूर-गमनशीलम् (मनः), ऋ० भू० १५२, ३४.१. स्वप्न में दूर-दूर जाने के समान (मनः=मन), स० प्र० २४६, ३४.१. दूर जाने का जिसका स्वभाव है वह (मन), आर्याभि० २.४३, ३४.१. ['दूर' इत्युपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'गमश्च' अ० ३.२.४७. सूत्रेण खच्-प्रत्ययः । 'खित्यनव्ययस्य' इति पूर्वपदस्य मुमागमः । छान्दसत्वादसंज्ञायामपि खच्]

दूरम् दूर दूर, स० प्र० २४६, ३४.१. विप्रकृष्ट-देशम् १.४२.३. **दूरे**=विप्रकृष्टे १.७९.११. विप्रकृष्टदेशे २.११.८. अधर्मात्मा, अविद्वान्, विचारशून्य, अजितेन्द्रिय, ईश्वरभक्ति-रहित इत्यादि दोषयुक्त मनुष्यों से बहुत दूर है, आर्याभि० २.१२, ४०.५. दूरम् ७.२०.७. [दुर् इत्युप-पदाद् इण् गतौ (अदा०) धातोः 'दुरीणो लोपश्च' उ० २.२०. सूत्रेण रक् प्रत्ययो धातोश्च लोपः । दुःखेनेयते प्राप्यते तद् दूरम् । दूरम् कस्मात् ? द्रुतं भवति दुरयं वा नि० ३.१९.]

दूरात् विप्रकृष्टाद् देशात् २०.४८.

दूरे अन्ते विप्रकृष्टे समीपे च (द्यावापृथिव्यौ) ३.५४.७. [दूरे अन्ते द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०.]

दूरे दृशम् दूरे द्रष्टुं योग्यम् (गृहपतिं=गृहस्वामिनम्) ७.१.१. **दूरेदृशः**=ये दूरे दृश्यन्ते पश्यन्ति वा (नरः=नायका मनुष्याः) ५.५९.२. दूरे पश्यन्ति ते (निर्मलविद्या विद्वांसो जनाः) १.१६६.११. **दूरेदृशा**=यया दूरे पश्यन्ति तया (भासा=दीप्त्या) ६.१०.४. **दूरेदृशे**=यो दूरे स्थितान् दर्शयति तस्मै (सूर्याय=परमेश्वराय सूर्यलोकाय वा) ३.३५. [दूर इत्युपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर् कर्त्तरि क्विप्प्रत्ययः । अथवा सम्पदादित्वात् स्त्रियां कः प्रत्ययः । सप्तम्या अलुक् । दूरेदृशं दूरे दर्शनम् नि० ५.१०.]

दूरे बधाय योऽरीन् दूरे बध्नाति तस्मै (शूरवीर-जनाय) १६.४०. ['दूर' इत्युपपदे बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः प्रत्ययः । सप्तम्या अलुक्]

दूरेभाः दूरदेशे भा दीप्तयो यस्य सः (अग्निः) १.६५.५. [दूरे-भापदयोः समासः । सप्तम्या अलुक् । भा=भा दीप्तौ (अदा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

दूरेऽमित्रः दूरेऽमित्राः शत्रवो यस्य सः, भा०—शत्रुद्वेषी (गणः=गणनीयो विद्वज्जनः) १७.८३. [दूर-अमित्रपदयोः समासः । समासे सप्तम्या अलुक्]

दूरोहणम् दुःखेन रोढुमर्हम् (छन्दः=ऊर्जनम्) १५.५. [दुर् इत्युपपदे रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' अ० ३.३.१३०. सूत्रेण युच् प्रत्यये 'रो रि' लोपे 'ढ्रलोपे०' इति दीर्घः । असौ वा आदित्यो दूरोहणं छन्दः श० ८.५.२.६. स्वर्गो वै लोको दूरोहणम् ऐ० ४.२०.२१.]

दूर्वे दूर्वावद् वर्त्तमाने, अ०—ओषधीवत् स्त्रि १३.२० [दुर्वी हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः गुरोश्च हलः' अ० ३.३.१०३. सूत्रेणाकारप्रत्ययः ततः स्त्रियां टाप् । क्षत्रं वा एतदोषधीनां यद् दूर्वा ऐ० ८.८. तदेतत् क्षत्रं प्राणो ह्येष रसो (यद् दूर्वा) श० ७.४.२.१२. लोमभ्यो दूर्वाः (प्रजापतेरजायन्त) जै० २.२६७. धूर्वा ह वै तां दूर्वेत्याचक्षते परोऽक्षम् श० ७.४.२.१२.]

दूषीकाभिः विक्रियाभिः २५.९. (दुष वैकृत्ये (दिवा०) धातोः 'कषिदूषिभ्यामीकन्, उ० ४.१६ सूत्रेण ईकन् प्रत्ययः । धातोरुकारस्य दीर्घत्वं बहुलवचनाद्]

दृक्षसे दृश्यते १.६.७. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्विकरणव्यत्ययेन कर्मणि क्सः । अथवा दृशिर् धातोर्लिङर्थे लेट् सिप् च । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । दृक्षसे=संदृश्यसे नि० ४.१२.]

दृढम् स्थिरम् (ऊर्वं=निरोधस्थानम्) ३.३२.१६. **दृढस्य**=अतिपुष्टस्य ६.६२.११. **दृढा**=दृढाम् (केतुम्) १.७१.२. दृढीकृता (द्यौः पृथिवी वा) ३२.६. दृढानि (वसूनि=धनानि) ३६.५. **दृढाः**=स्थिराः कृताः (गिरयः=मेघाः) १.६१.१४. [दृह दृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये 'दृढः स्थूलबलयोः' अ० ७.२.२०. सूत्रेण इडभावो हकारनकारयोर्लोपश्च निपात्यते । दृढाप्रयोगे स्त्रियां टाप्]

दृढासः दृंहिताः (किरणाः) १.६३.१. [दृढ प्राति०

जसोऽसुग् आगमः । दृढमिति व्याख्यातम्]

दृतिम् चर्ममय-सुरापात्रमिव १.१९१.१०. दृतिमिव वर्त्तमानं मेघम् ४.४५.३. यो दृणाति तं दृतिरिव जलेन पूर्णम् ५.८३.७. **दृतिः**=मेघः, प्र०—दृतिरिति मेघनाम, निघं० १.१०, ४.४५.१. **दृते!**=अविद्याऽन्धकार-निवारक जगदीश्वर विद्वन् वा ३६.१८. सकल मोहाऽऽवरणविच्छेदको पदेशक वा परमात्मन् ३६.१९. हे सर्वदुःखविनाशकेश्वर, ऋ० भू० ९८, ३६.१८. हे अनन्त-बल, महावीर, दुष्ट-स्वभाव-नाशक ईश्वर, आर्याभि० २.३, ३६.१८. हे सर्व-दुःखविदारक परमात्मन्, सं० वि० २१४, ३६.१८. [दीर्यतेऽसौ दृतिरिति विग्रहे दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः 'दृणातेर्ह्रस्वः' उ० ४.१८४. सूत्रेण तिः प्रत्ययो ह्रस्वश्च । दृतिः मेघनाम निघं० १.१०. संवत्सरो वै बाकुरो दृतिः जै० २.३६६.]

दृतेरिव मेघस्येव ६.४८.१८. [दृतेः-इवपदयोः समासः । दृतिमिति व्याख्यातम्]

दृभ्रम् सुखवर्धकम् (दृढज्ञानम्) ४.१.१५. [दृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोरौणादिको रक् । वर्णव्यत्ययेन हकारस्य धकारादेशः]

दृभीकम् भयङ्करम् (दुर्जनम्) २.१४.३. दृभी भये (चुरा०) धातोरौणादिको बाहुलकाद् ईकन् प्रत्ययः । गुणाऽभावो बाहुलकादेव]

दृवा यः शत्रून् दृणाति (राजा), प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' अ० ३.२.७५. इति क्वनिप् १०.८. [दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः क्वनिप्प्रत्ययः । दृवा (इषुः) स यया प्रथमया (इष्वा) समर्पणेन पराभिनत्ति सैका सेयं पृथिवी सैषा दृवा नाम श० ५.३.५.२९.]

दृशतिः दर्शनम् ६.३.३. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽतिः प्रत्ययः किच्च]

दृशये दर्शनाय ६.९.५. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' इति वा० सूत्रेण इक्प्रत्ययः । दृशि प्राति० चतुर्थी]

दृशानम् दृश्यमानं दर्शयितारं वा (अग्निम्) २.१०.४. संप्रेक्षणीयम् (वायुम्) ११.२३ **दृशानः**=दर्शकः अमृतः=नाशरहित ईश्वरः) १२.२५. **दृशाना**=दृश्यमाना (उषाः) प्र०—अत्र कर्मणि लटः शानच् 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणस्य लुक् च १.९२.१२. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'युधिबुधिदृशः किच्च' उ० २.९०. सूत्रेण आनच्-प्रत्ययः । अथवा दृशिर् धातोः कर्मणि शानच् । 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक् । 'दृशाना' प्रयोगे स्त्रियां टाप् । दृशानः (यजु० ११.२३.) व्यचिष्ठमन्नैरभसं दृशानमित्यवकाशवत्तमन्नैरन्नादं दीप्यमानमित्येतत् श० ६.३.३.१९.]

दृशि दर्शके ५.५२.१२. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्विप् प्रत्ययः । ततः सप्तमी]

दृशीकम् द्रष्टुमर्हम् (स्तोमम्) प्र०--अत्र बाहुलकादौणादिक ईकन् प्रत्ययः किच्च १.२७.१०. **दृशीके**=द्रष्टव्ये (तनये=कुमारे) ४.४१.६. द्रष्टव्ये ज्ञानव्यवहारे १.६९.५. दर्शके (आदित्ये) १.६६.५. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक ईकन् प्रत्ययः किच्च । दृशीकम्=दर्शनीयम् नि० १०.८.]

दृशे द्रष्टुम्, प्र०—'दृशे विख्ये च' अ० ३.४.११. अनेनाऽयं निपातितः १.२३.२१. दर्शयितुम् १.५२.८. द्रष्टुं दर्शयितुं वा १.५१.४. द्रष्टव्ये (रूपे) ४.११.१. दर्शनाय ३०.३१. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'दृशे विख्ये च' अ० ३.४.११. सूत्रेण के प्रत्ययो निपात्यते । दृशे दर्शनाय नि० १२.१५.]

दृशेयम् दर्शन कराता है, स० प्र० ३३०, १.२४.१. दृश्यासम्, इच्छां कुर्याम्, प्र०—अत्र 'दृशेरग् वक्तव्यः' अ० ३.१.८६. अनेन वार्त्तिकेनाशीर्लिङि दृशेरग् विकरणेन रूपम् १.२४.१.

दृश्यान् द्रष्टव्यान् (अ०—कवीन्) ४.२.१२. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः' अ० ३.१.१०९ सूत्रेण क्यप्]

दृषद्वत्याम् बहवो दृषदो विद्यन्ते यस्याम् (सरस्वत्यां=वाचि) ३.२३.४. [दृषद्-प्राति० भूम्नि मतुबन्तान् ङीप्-प्रत्ययः । दृषद्=दृ विदारणे (क्र्या०) धातोः 'दृणातेः षुग्घ्रस्वश्च' उ० १.१३१. सूत्रेण अदिः प्रत्ययः षुक् च]

दृष्टः समीक्षितः (रुद्रः=सेनेशः) १६.७. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

दृष्टवीर्यम् दृष्टं सम्प्रेक्षितं वीर्यं यस्य तम् (बृहस्पतिं=राजानम्) २.२३.१४. [दृष्ट-वीर्यपदयोः समासः]

दृष्ट्वा सम्प्रेक्ष्य १९.७७. पर्य्यालोच्य १९.७९. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्त्वा-प्रत्ययः]

दृह्ळम् सुस्थिरम् (राज्यम्) ४.१७.१०. निश्चयम् ३.३०.५ सुखवर्धकम् (अद्रिं=मेघमिव) ४.१.१५. ध्रुवम् (भागम्) ६.३०.५. **दृह्ळा**=दृढानि (धरुणानि=उदकानीवाचरणानि) ४.२३.९. दृढम् प्र०—अत्राकारादेशः

१.७१.२. दृढानि शत्रुसैन्यानि ७.२७.२. दृंहितानि वर्धितानि किरणशस्त्राणि १.३३.१२. **दृह्ळानि**=पुष्टानि (सैन्यानि) ४.१६.४. दृह्ळाम्=दृढाम् (पुरं=नगरम्) ५.१६.२.

दृह्ळम् ध्रुवम् (सञ्जातम्) ६.३०.५. **दृह्ळा**=दृढानि (वस्तूनि) ५.३६.३. स्थिराणि (द्युम्ना=धनानि यशांसि वा) ५.८६.१. **दृह्ळानि**=निश्चितानि (सैन्यानि) ६.४५.६. धृतानि (रजांसि=लोकविशेषाणि) ६.३०.३. **दृह्ळाः**=निष्कम्पाः (पुरः=शत्रूणां नगराणि) ६.३२.३. ध्रुवान् (गाः=किरणान्) ६.४३.३. [दृह दृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्यये 'दृढः स्थूलबलयोः' अ० ७.२.२०. सूत्रेण इडभावो निपात्यते]

दृह्य वर्द्धस्व, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन श्यन् ३.३०.१५. [दृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने श्यन्]

दृंह वर्धय ५.२७. वर्धय वर्धयति वा ५.२७. दृढीकुरु करोति वा १.१८. ब्रह्मचर्य्यराज्यधर्माभ्यां परिपालय ६.३. स्थिरीकुरु ६.३. उन्नय ६.३. वर्षय ५.१३. अ०—दृंहति, धरति १.१७. धर्माऽर्थ-काम-मोक्षादि तथा विज्ञानादि दान से अत्यन्त बढ़ा, आर्याभि० २.३, ३३.१८. सत्यगुणैः शुभगुणैश्च सदा वर्धय, ऋ० भू० ९८, ३६.१८. [दृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

दृंहत दृंहति धरति २.१७.५. वर्धयति धरति वा ५.४५.२. **दृंहत**=वर्धयति धरति वा ५.४५.२. **दृँहतम्**=वर्धेताम् १४.११. **दृँहन्ताम्**=वर्धयन्ताम्, अ०—नित्यं वर्धन्ताम्, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.११. दृंहस्व=वर्धय, वर्द्धस्व ११.६९. वर्धते 'अ०—दृंहते' प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२. वर्धयस्व वर्धयति वा, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः १.९. **दृंहेथे**=वर्धयथः ६.१७.६. [दृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लङ् अडभावश्च अन्यत्र लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

दृंहिता वर्धकः (सज्जनः) ३.३९ ४. **दृंहितानि**=वृद्धानि सैन्यानि ७.१८.१३. धृतानि वर्द्धितानि वा (गोत्रा=गोत्राणि) २.१७.१. [दृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। अन्यत्र भूते क्तः प्रत्ययः]

दृंहिताः वर्धिकाः क्रियाः १.५१.११. [दृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्ययान्तात् स्त्रियां टाप्]

दे देदीप्यमानौ देवौ (मित्रावरुणौ=अध्यापकोपदेशकौ) प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति वलोपः 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्ते-र्लुक् ५.४१.१, [देव-प्राति० प्रथमाद्विवचनम्। देव इति व्याख्यास्यते। वस्य विभक्तेश्च लोपः]

देदिश्यते भृशमुपदिश्येत २३.२९. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोर्यङन्ताल्लट्]

देदिष्टे दिशत्युपदिशति ५.३१.३. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेण श्लुः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

देभुः दभ्नुयुः १.१४७.३. [देभुः=दभ्नुवन्ति नि० ५.१२. [दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोर्लिट्। प्रथमाबहुवचनम्। 'श्रन्थिग्रन्थिदम्भि-स्वञ्जीनामिति वक्तव्यम्' अ० १.२.६. वा० सूत्रेणापितो लिटः कित्त्वेन 'दम्भेश्चेति वक्तव्यम्' अ० ६.४.१२०. वा० सूत्रेण एत्वाभ्यासलोपौ]

देव ! दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव (सवितः=प्रेरक परमेश्वर) ३०.३. दिव्यस्वरूप (सवितः=जगदुत्पादक जगदीश्वर) ३०.१. प्रकाशमान (अग्ने=विद्वज्जन) ४.१३.४. सुखप्रदातः (अ०—विद्वन् जन) १९.५. दिव्यगुणसम्पन्न (राजन्) ३४.२३. दिव्यबोधप्रद (वरुण=वरप्रापक विद्वज्जन) २०.१८. दिव्यभोगप्रद (अग्ने=विद्वन् पुरुष) १२.२६. दिव्यविद्यायुक्त (अग्ने=विद्वन्) १३.३६. व्यवहारविद्याविचक्षण (अग्ने=विद्वज्जन) २.२.६. सत्यप्रकाशक (सभापते) १.९४.७. दिव्यगुणैः सम्पन्नेश्वर विद्युद् विद्वन् वा ५.७. कमनीय (अ०—विद्वन् जन) ५.४२. आनन्दित (विद्वन् जन्) ५.४३. दिव्यगुणकर्मस्वभावप्रद (अग्ने=विद्वन् जन) ३.१४.७. कमनीयाऽऽनन्दप्रद (ईश्वर) १.८९.१. जिगीषो (अग्ने=विद्वज्जन) १.१८९.६. सकलविद्याद्योतक (सवितः=ईश्वर सभाध्यक्ष वा) ५.३९. दिव्यगुणप्रद, प्रदानहेतुर्वा (ईश्वर विद्वन् विद्युद् वा) ५.७. सर्वाऽऽनन्द-प्रापक, सर्वजगत्प्रकाशक (अ०—ईश्वर) ५.३६. हे विद्यासु द्योतमान (राजन्) ८.५०. हे विजिगीषो (पते) ८.२७. धनं कामयमान (अग्ने=विद्वन् राजन्) ७.१.२५. हे दातः (राजन्) ८.५०. हे दिव्यगुणैः कमनीय (सोम=गृहस्थजन) ८.२६. हे दिव्यविद्याव्युत्पन्न (प्रतिगृहस्थ) ८.२१. हे दिव्यशीलयुक्ताऽध्यापक ८.१९. हे कमनीयतम (गृहपते) ८.९. विद्यादातः (अग्ने=विद्वन् जन) १९.४०. सुखविद्ययोर्दातः (आप्तविद्वन्) ३४.२७. शुद्ध-स्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर, सं० वि० ४, ३०.३. सुखप्रदातः (सवितः=सत्कर्मसु प्रेरकेश्वर) १९.४३. विद्या-शिक्षा-प्रकाशक चक्षुर्हिता वा (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्ष!)

१.६३.८. सुखप्रद १.१७३.१३. योगेनाऽऽत्मप्रकाशित। (योगिजन) ७.७. योगजिज्ञासो (सोम=प्रशस्त-गुण शिष्य) ७.१४. दिव्याऽऽत्मन् ७.३. दिव्यविद्यासम्पन्न सेनाध्यक्ष ६.२०. परमविद्वन् ६.३६.१. देवः फलादीनां दाता (वनस्पतिः=अपुष्पफलवान्) १.१३.१०. सर्वाऽऽनन्दप्रद व्यवहारहेतुर्वा (ईश्वर सूर्यो वा) १.२६. विजयप्रद विजयहेतुर्वा (ईश्वर सूर्यो वा) १.२६. सूर्यादिप्रकाशकेश्वर १.२५. विद्वन् (जन) १.१४.१२. अग्निरिव द्योतमान (विद्वज्जन) २.३.४. सूर्याऽऽदिसर्वजगद्-विद्याप्रकाशक सर्वाऽऽनन्दप्रद (परमेश्वर) ऋ० भू० ३, ३०.३. सर्वप्रकाशकेश्वर प्रकाशदाहयुक्तमग्नि वा १.११२.८. दिव्य-विज्ञानप्रद, अ०—सत्ययोगविद्ययोपासनीय (सवितः=सर्वसिद्ध्युत्पादक भगवन्) ११.७. सत्यकामनाप्रद (सवितः=अन्तर्यामिरूपेण प्रेरक जगदीश) ११.८. शुभगुण-दातः (अ०—जगदीश्वर) २.२१. सर्वजगत्प्रकाशक (ईश्वर) २.२१. दिव्यविद्य (रथः=रमणीयस्वरूप विद्वन् जन) २९.५४. दिव्यसुखगुणानां दातः (जगदीश्वर) २.१२. दिव्यकर्मकारिन् (रुद्र=न्यायाधीश) १.११४.१०. दिव्यगुणप्रापक दिव्यगुणनिमित्तो वा (सोम=विद्वज्जन) १.९१.१४. सब सुखों के दाता परमेश्वर सं० वि० २१४, ४०.१६. दिव्य गुण युक्त (राज्य) आर्याभि० १.५, ऋ० १.१.१.५. **देवम्**=देदीप्यमानम्, भा०—श्रेष्ठौषधदायकम् (भिषजम्=वैद्यम्) २८.९. विजयादिलाभप्रदम्, भा०—महादेवम् (सूर्यं=परमात्मानम्) ३५.१४. दिव्यम् (बर्हिः=उदकम्) २८.४४. दिव्यगुणकर्मस्वभावं, सर्वानन्दप्रदम् (परमात्मानम्) ३.९.८. कमनीयं दातारम् (परमेश्वरम्) ३.२०.५. दिव्यगुणवन्तम् (परमेश्वरं भौतिकमग्निं वा) १.१५.७. प्रकाशमानम् (भा०—मुक्तादिरत्नम्) २८.४४. विद्याविनयाभ्यां सुशोभितम् (इन्द्रं=राजानम्) २८.२. सुखदातारम् (सवितारम्=ईश्वरम्) ४.२५. कामयमानम् (इन्द्रं=जीवम्) २८.४०. धार्मिकम् (इन्द्रं=जीवम्) २८.४५. स्त्रीव्रतं विद्वांसम् २८.३९. दातारं, हर्षकरं, विजेतारं, द्योतकं वा (अग्निं=परमेश्वरं भौतिकं वा) १.१.१. द्योतमानम् (सूर्यं=जगदीश्वरम्) २७ १०. सुखदातारम् (अग्निं=परमेश्वरं भौतिकं वा) १.१२.७. कान्तारम् (विद्वांसम्) १.१३८.२. धर्मात्मनां, मुमुक्षूणां, मुक्तानां च सर्वाऽऽनन्दस्य दातारं मोदयितारं च (ईश्वरम्) पं० वि०, ३५.१४. प्रकाशकम् (अग्निं=पावकम्) ३.२६.१. परमेश्वरं विद्यायुक्तं शुद्धव्यवहारं वा ४.२०. पूज्यतम, कमनीयतम ईश्वर को, आर्याभि० १.२, ऋ० १.१.१. द्योतकम् (इन्द्रं=सूर्यम्) २०.४१. दिव्यसुखप्रदम् (ज्योतिः=तेजः) २०.३०. दातारं सुखानां द्योतकं सर्वस्य जगतः प्रकाशकं सर्वैर्विद्वद्भिः कमनीयं स्वभक्तानां मोदकं हर्षकरं शत्रूणां मनुष्याणां कामक्रोधादीनां वा विजिगीषकम् (ईश्वरम्) वे० भा० न० **देवस्य**=यो दीव्यति दीव्यते वा स देवस्तस्य 'जो सब सुखों का देने हारा है और जिसकी प्राप्ति की कामना सब करते हैं, उस (सवितुः=परमात्मा का), स० प्र० ५१, ३६.३. द्योतमानस्य (विदुषो जनस्य) ५.१३.२. सकलजगत्प्रकाशकस्य (सवितुः=सर्वान्तियामिन ईश्वरस्य) ३७.२. स्वप्रकाशस्थेश्वरस्य १८.३६. वेदविद्याप्रकाशकस्य (सवितुः=सकलैश्वर्यवतो जगदीश्वरस्य) ६.९. प्रकाशितन्यायस्य (सवितुः=सेनेशस्य) ९.३८. सर्वजगत्प्रकाशकस्य सर्वसुखदातुरीश्वरस्य १.१०. विधातुरीश्वरस्य द्योतकस्य सूर्यस्य वा १.२१. सर्वानन्दप्रदस्य (सवितुः=प्रेरकस्येश्वरस्य सूर्यस्य वा) १.२४. दिव्यगुणकर्मस्वभावस्य (राज्ञः) ४.१.६. कर्मफल-प्रदातुः(ईश्वरस्य)३.३४. दिव्यसुखप्रापकस्य (भगस्य=ऐश्वर्यस्य) ४.५५.५. सूर्यादिजगते प्रदीपकस्य (सवितुः=प्रेरकस्येश्वरस्य) ११.९. प्रकाशमयस्य शुद्धस्य सर्वसुखप्रदातुः परमेश्वरस्य ३.३५. हर्षकरस्य (सवितुः=ईश्वरस्य) २.११. सुखप्रदातुः (सवितुः=परमेश्वरस्य) ३०.२. स्वप्रकाशकस्य परमेश्वरस्य ६.७१.२. देदीप्यमानस्य (सूर्यस्य) ३७.१२. कामयमानस्य (विदुषो जनस्य) ४.२.१९. स्वप्रकाशस्याऽऽनन्दप्रदस्य (परमेश्वरस्य) ऋ० भू० १५६, ११.३. सर्वजगत्प्रकाशकस्य (ईश्वरस्य) ऋ० भू० १५६, ऋ० ४.४.२४.१. स्वप्रकाशमानस्य, सर्वस्य जगत उत्पादकस्य परमेश्वरस्य, ऋ० भू० २१७, कमनीयस्य पत्युः ११.६२. सर्वजगत्प्रकाशकस्य परमेश्वरस्य ११.६७. सर्वतो दीप्यमानस्य (अ०—ईश्वरस्य) २०.३. सकलैश्वर्यदातुः, प्रकाशमानस्य, सर्वप्रकाशकस्य, सर्वत्र व्याप्तस्याऽन्तर्यामिणः (सवितुः=ईश्वरस्य) ३.६२.१०. अखिलविद्याशुभगुणकर्म-स्वभाव-द्योतकस्य (बृहस्पतेः=परमेश्वरस्य) ९.१०. सर्वतः प्रकाशमानस्य (सवितुः=जगदीश्वरस्य) ९.१०. धनुर्वेदादियुद्धविद्या-प्रापकस्य (इन्द्रस्य=सेनापतेः) ९.१०. सर्वेषु प्रकाशमानस्य (अग्नेः=अग्न्यादिपदार्थस्य) ६.१.४. स्वप्रकाशस्वरूपस्य सर्वैः कमनीयस्य, सर्वसुखप्रदस्य (सवितुः=परमेश्वरस्य) २२.९. स्तोतुमर्हस्य (ईश्वरस्य) २२.११. सर्वद्योतकस्य (सवितुः=जगदीश्वरस्य) ११.२. प्रकाशमानेश्वरस्य २०.११. यो दीव्यति प्रकाशयति खल्वानन्दयति सर्वं विश्वं स देवस्तस्य (ईश्वरस्य) पं० वि०, ३.६२.१०. कामना करने योग्य, सर्वत्र विजय कराने वाले

(सवितुः=परमात्मा) का, सं० वि० ७५, ३६.३. सदा मुक्त परमात्मा का, सं० प्र० ३३०, १.२४.२. **देवः**= सर्वेषां सुखानां दाता, सर्वविद्या-द्योतकः (सविता=भगवान्), प्र०—देवो दानाद्वा दीपनाद्वा द्योतनाद्वा, द्युस्थानो भवतीति वा, यो देवः सा देवता, नि० ७.१५, १.१. विद्या-प्रकाशदाता १.७१.५. जिगीषुः (राजा) १.१८८.१. विद्वान् पिता ४.५५.७. रक्षकः सन् (ईश्वरः) ३७.१८. सकलसुखदातेश्वरः भा०—मङ्गलप्रदः १७.६२. शुद्धस्वरूपः (ईश्वरः) १८.३०. अखिल-राज्येश्वरः ६.२. सुखयिता (अध्वरः=यज्ञः) ६.२३. शत्रून् विजिगीषुः (इन्द्रः=सभापती राजा) ६.३७. विद्याप्रकाशितः (सविता=ऐश्वर्यवान् सभापतिः) ६.२६. द्योतनात्मकः (सूर्यः) २.३१.४. दाता प्रकाशको वा (ईश्वरो भौतिको वा) ४.१६. प्रकाशमानः प्रकाशहेतुर्वा (सविता= जगदीश्वरः सूर्यलोको वा) १.२०. स्वप्रकाशः प्रकाशकरो वा (अग्निः=परमेश्वरो भौतिको वा) १.१.५. दिव्यगुण-कर्म-स्वभावः कमनीयः (अग्निः=आप्तजनः) ४.२.१. दिव्यगुणसम्पन्नो विद्वान् १.६८.१. जीवः २८.१६. यः स्वप्रकाशेन सर्वस्य प्रकाशकः (ईश्वरः) ४.४. सङ्गमनीयः प्रकाशको वा (वृषभः=यज्ञः शब्दो वा) १७.६१. स्वयं प्रकाशस्वरूपः परमेश्वरः १.३. सूर्य इव विद्वान् (जनः) ४.२३.५. देदीप्यमानः सूर्यः ५.१.२. दिव्यगुणप्रदः (वनस्पतिः=किरणानां पालकः सूर्यः) २८.२०. दिव्यः सभ्यः (भा०—राजपुरुषः) २८.४३. दिव्यस्वरूपः (ईश्वरः) ३२.४. दिव्यगुणो मेघः २६.३५. दिव्यगुणयुक्तो विद्युदाख्यः ३६.१०. स्वप्रकाशस्वरूपः (अ०—परमात्मा) ३७.१४. सर्वज्ञः (अग्निः=ईश्वरः) २८.४५. द्योतनात्मकः (सूर्यः) ऋ० भू० १४२, ३३.४३. प्रशस्तो विद्वान् मनुष्यः १.१०५.१४. जगदीश्वर इव (अग्निः=परमविद्वान् जनः) ४.११.६. दिव्यसुखदाता (विद्वान् जनः) १.७३.३. विजयप्रदाता (विद्वान् जनः) ४.३०.२४. विद्याप्रकाशस्थः (सभाध्यक्षो राजा) ५.३६. कामयमानः (आप्तो जनः) ४.८.३. व्यवहार-हेतुः (अग्निः=विद्युदाख्यः) २.४.१. विद्वान् प्रकाशमानो लोको वा ६.३०.४. दाता दिव्यगुणः (सूर्यो विद्वान् वा) ७.४५.१. कमनीयतमः (अध्यापकः)१.१६०.८. द्योतमानः (सविता=परमेश्वरः) ४.५३.१. प्रकाशस्वरूप (सविता=सूर्यः) स० प्र० ३१३, ३३.४३. देदीप्यमानः कामयमानो वा (विद्वज्जनः) ७.१०.२. सूर्यादीनामपि प्रकाशकः (परमेश्वरः) ७.३८.३. पूर्णविद्यः सुखप्रदः (प्रशस्तयशो राजा) ७.६.७. देदीप्यमाना (विद्युत्) ३४.३१. सकल सुखदाता परमेश्वर, सं० वि० ७, ४०.१६. दिव्यप्रकाशः (सविता=कर्मसुप्रेरक ईश्वरः) १.१२४.१. व्यवहर्त्ता (अग्निः=विद्वान् जनः) २७.१३. विद्या-दाता (अग्निः=विद्वान् जनः) १७.७६. सत्यं न्यायं कामयमानः (इन्द्रः=सभेशः) १.१२६.११. सब जगत् के बाहर और भीतर सूर्य के समान प्रकाशक ईश्वर आर्याभि० १.४६, ऋ० १.५.१६.३. दिव्यस्वभावः (वनस्पतिः=पिप्पलादिः) २१.५८. द्योतमानः (वनस्पतिः=सूर्यः) २१.५६. दिव्यस्वरूपः (अ०—वायुः, भा० - जीवः) १७.३२. आनन्दोत्पादकः (अग्निः=जगदीश्वरः) १.३१.१. सर्वस्य न्यायविनयस्य द्योतकः (अग्निः=सभास्वामी) १.३१.६. दानादिगुणयुक्तः (मेघः) १.३२.१२. दीव्यति प्रकाशयतीति सः (परमेश्वरः) १.३५.२. सर्वव्यवहारसाधकः (वायुः) १.३५.१०. **देवा**= दिव्यगुणौ (इन्द्रवायू=अग्निपवनौ), प्र०=अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.२३.२. दिव्यगुणयुक्तौ (विद्युदग्निवायू) ३.२५.४. दिव्यसुखप्रदौ (राज्य-सेनाऽधीशौ) ३.५३.१. दिव्यगुणप्रापकौ (वसुविदौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.४६.२. कमनीयौ विद्वांसौ २८.४०. सुखप्रदातारौ (अ०—वायुवह्नी) २८.१७. वैद्यविद्यया प्रकाशमानौ (भिषजा=चिकित्सकौ) २१.५३. दिव्यस्वभावौ (सुहृदौ) ५.६७.१. दातारौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८४.३. वि०—देदीप्यमानौ (अश्विनौ= अग्निजले) १.२२.२. **देवान्**=दिव्यानीन्द्रियाणि विद्यादिदिव्यगुणान्, दिव्यान् ऋतून्, दिव्यान् भोगान् वा, प्र०—ऋतवो वै देवाः, शत० ७.२.२.२६. अनेनर्त्तु-शब्देन दिव्यगुणविशिष्टा भोगा गृह्यन्ते १.१.२. दिव्यगुणसाहित्येनोत्तम-गुणप्रकाशकान् (मरुतः=शिल्पव्यहारप्रापकवायून्) १.२३.१०. धार्मिकान् विदुषः ३७.१८. शुभान् गुणान् विदुषो वा ३८.१०. विदुषो दिव्यगुणान् ऋतून्, भोगान् वा ५.१२. परमविदुषः (जनान्) १.१३.१२. दिव्यान् गुणान् विजिगीषकान् वीरान् वा २.६.६. विदुषो जीवानिन्द्रियाणि च १.२०. दिव्यान् क्रियासिद्धान् व्यवहारान् १.१४.१२. दिव्यगुणयुक्तान् पदार्थान् १.४८.१२. धार्मिकान् विदुषः ४.१.२. विदुषो वस्वादीन् वा २.२४.११. वीरान् विदुषो दिव्यगुणान् वा १.४४.७. विदुषोऽतिथीन् ५.१.११. दिव्यगुणसहितान् पदार्थान् १.१२.३. दिव्यव्यवहारान् १.१५.१२. दिव्यगुणान् मनुष्यान् ३.२२.३. दिव्यगुण-कर्मस्वभावान् पृथिव्यादीन् २१.५८. दिव्यगुणाऽन्वितान् दिव्यान् गुणान् वा १.१०५.१७. विदुषो दिव्यक्रियायुक्तान् वा (पदार्थान्) १.१०५.१४. उपासकान् योगिनः (जनान्) ऋ० भू० १५६, ११.४. प्रकाशितव्यान् दिव्यगुणान् पृथिव्यादीन् २.१२.१. दिव्यान् व्यवहारान्

२९.१०. दिव्य-गुण अर्थात् विद्यादि को, आर्याभि० १.४, ऋ० १.१.१.२. विदुषोऽध्यापकान् ७.१७.३. दिव्यविद्वद्विपश्चितः (जनान्) ५.२१.१. दिव्यगुणान् विदुषो विद्यार्थिनो वा १२.४९. विद्यां कामयमानान् (विद्यार्थिजनान्) १.१४२.११. दिव्यानीन्द्रियाणि विद्यादि दिव्यगुणान् दिव्यर्त्तून् दिव्यभोगाँश्च वे० भा० न० १.१.२. भा०—अविद्यादिक्लेशानां निवारकान् शुद्धान् गुणान् ११.३. भा०—विद्वत्सङ्ग-सत्यशास्त्र-प्राणायामाऽभ्यासान् २०.४४. **देवानाम्**=दिव्यानां गुणानां विदुषां वा १.७०.३. दिव्यगुणानां पृथिव्यादीनां मध्ये १.१८८.११. आप्तानां विदुषाम् (जनानाम्) ७.४१.४. विदुषां पृथिव्यादिलोकानां वा २.८.६. दिव्यगुणसम्पन्नानां विदुषां पदार्थानां वा १.९४.१३. दयया विद्यावृद्धिं चिकीर्षताम् (विदुषाम्) १.८९.२. विदुषां योद्धॄणां मध्ये १७.५१. धार्मिकाणां विदुषां मध्ये १४.३. सुखदातॄणां विदुषाम् (जनानाम्) २१.५३. पृथिव्यादीनामेकत्रिंशतः १.२२.९. दिव्यानां पृथिव्यादीनाम् २७.२५. देदीप्यमानानां राज्ञाम् ३.५५.२१. सूर्यादीनां विदुषां वा मध्ये ३.५५.४. दिव्यानां जलादीनाम् १.१८५.४. आप्तानां विपश्चिताम् (जनानाम्) ८.१५. धार्मिकाणामाप्तानां विदुषाम् ८.५०. आचार्यादीनां विदुषाम् (जनानाम्) १९.४७. सत्यं कामयमानानां विदुषाम् १.१३६.७. दिव्यानां विदुषां पतीनाम्, भा०—सुशिक्षितानां विदुषां यूनाम् (जनानाम्) १२.५५. दिव्यगुणवतां विदुषाम् पं० वि०, ७.४२. पूर्ण विद्वान् धार्मिक आप्त लोगों की, सं० वि० १५६, ७.४१.२४. ब्रह्मचर्य सुनियमों से पूर्ण विद्वानों के, स० प्र० ११०, ३.५५.१६. परम विद्वानों के, आर्याभि० १.४८, ऋ० १.६.३२.१३. दिव्य सूर्यादि-लोकों तथा इन्द्रियादियों और विद्वानों का, आर्याभि० २.४२, १७.२७. दातॄणाम् (विदुषां जनानाम्) २५.१५. भा०—प्रशंसितानां विदुषाम् २९.२८. सूर्यादीनाम् भा०—सूर्यकिरणवद् वर्त्तमानानां पदार्थानाम् २४.९. **देवाय**=दीपकाय (ईश्वराय सूर्याय वा) २५.११. कामाय (विदुषे जनाय) २.३५.५. दिव्याय कमनीयाय (भगाय=धनाढ्याय) ८.७. परमात्मदेव की, स० प्र० २८२, १०.१२१.१. सर्वसुखप्रदात्रे परमात्मने २३.१. विद्यां कामयमानाय (विद्यार्थिजनाय) २२.१२. कामना करने योग्य पर-ब्रह्म की प्राप्ति के लिए, सं० वि० ६, ३२.६. दिव्यसुखप्रदाय विज्ञानस्वरूपाय (ईश्वराय) १२.१०२. विदुषे, देवानां विदुषामेव सत्काराय १.१२७.९. दिव्यगुणभोगयुक्ताय (जन्मने= पुनः शरीरधारणेन प्रादुर्भावाय) १.२०.१. काम के लिए, सं० वि० १०४, २.३५.५. स्वप्रकाशाय सकलसुख-दात्रे (ईश्वराय) ३२.६. सकल ऐश्वर्य के देने वाले परमात्मा के लिए. सं० वि० ५, २३.३. सकल ज्ञान के देने वाले परमात्मा की प्राप्ति के लिए सं० वि० ५, २५.१३. द्योतमानाय (अ०—परमेश्वराय) २५.१०. सर्वसुखप्रदाय (ईश्वराय) २७.२६. प्रकाशमानाय (अ० परमेश्वराय) १३.४. दिव्यगुण-सम्पन्नाय (नृपाय) ४.३.३. विदुषे न्यायं कामयमानाय ७.४६.१. शुद्ध परमात्मा के लिए, सं० वि० ५, १३.४. कमनीयाय, भा०—धर्माऽर्थ-काम-मोक्षफलप्रापकाय (परमात्मने) २३.३. दिव्यगुणाय (सूर्याय=परमेश्वराय सूर्यलोकाय वा) ४.३५. शुद्धस्वरूपाय (ईश्वराय) ३२.७. **देवाः**=दिव्यगुणाः (पृथिव्यादयोऽष्टवसवः, प्राणादयो दश वायवो जीवात्मा च, चैत्रादयो द्वादश मासा; विद्युद्यज्ञश्च) २०.११. देव-शब्देन् मनःषष्ठानि श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि गृह्यन्ते, तेषां शब्दस्पर्श-रूप-रस-गन्धानां सत्याऽसत्ययोश्चार्थानां द्योतकत्वात् तान्यपि देवाः, ऋ० भू० ६४, ४०.४. चन्द्रादयो दिव्याः पदार्था इव विद्वांसः (जनाः) उपदेशका विद्वांसो ऽधिष्ठातारो वा ६.७५.१८. शत्रून् विजिगीषमाणाः (विद्वांसो जनाः) १२.२९. सत्योपदेशका विद्वांसः (जनाः) ११.६०. सदुपदेशप्रदातारः (विद्वांसो जनाः) ११.६५. सूर्यादय इव विद्वांसः (जनाः) २.२७.४. वस्वादयः ५.८१.३. दिव्याः पृथिव्यादयो विद्वांसो वा २०.२५. दिव्याऽऽत्माऽन्तःकरणा योगविदः (जनाः) १७.३०. पृथिवीसूर्यलोकादयः १.१६४.३९. विद्वांसो भूम्यादयो वा १.१६३.९. विद्यायाः कामयितारः (भा०—प्रशस्ता विद्वांसः) १८.६१. विद्यादिशुभगुणानां दातारः (सर्वविद्वांसो जनाः) ७.३५.११. वेदशास्त्रविदः सेनापतयः, भा०—उपदेशका राजपुरुषाः १०.१८. धार्मिका विद्वांसः (जनाः) ९.४०. विद्यासुशिक्षादान-रक्षकाः (विद्वांसो जनाः) २.२९.६. स्वस्वविषयप्रकाशकानि श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि ६.९.५. सत्याऽसत्य-स्तावका गृहस्थाः (जनाः) ८.२१. व्यवहरमाणाः (विद्वांसो जनाः) ८.१८. अध्यापकोपदेष्टारः (विद्वज्जनाः) ६.५२.८. विद्वांसो मनुष्या इन्द्रियाणि च, ऋ० भू० ३१६, १.१६४.३९. विद्वांसोऽग्न्यादयो वा १.२२.१६. सद्गुणिनो धर्मात्मानो विद्वांसः (जनाः) १.१७४.१. प्रशंसनीयाः (राजजनाः) ३३.५०. विद्वांसः सभासदः (जनाः) २५.४६. देदीप्यमाना योगिनः (पुरुषाः) ७.१२. धनुर्वेदविदो विद्वांसः, भा०—सत्पुरुषा धनुर्वेदज्ञाः परोपकारिणो विद्वांसः ७.२४. आयुर्वेदविदः (विद्वांसो जनाः) ९.३६. सर्वेभ्यः सुखदातारः, भा०—सर्वसुखैरलङ्कर्त्तारः (विद्वांसो जनाः) ९.३६. सर्वविद्याविदः

(आप्ता विद्वांसो जनाः) ९.३६. योगिनो न्यायाऽधीशाः ९.३६. दिव्याऽऽत्मानो योगिनः १७.७३. हे पूर्ण विद्वान् जनो, सं० वि० १९८, १०.७२.७. इन्द्रियाणि, ऋ० भू० १३४, ३१.२१. दिव्यगुणवन्तस्तत्सम्बुद्धौ दिव्यगुणा वा १.१०६.२. पृथिवीसूर्यलोकादयः १.१६४.३९. त्रयस्त्रिंशद् वस्वादयः, ऋ० भू० ९०, अथर्व० १०.२३.४.३८. विजिगीषवः (अ०—विद्वांसो जनाः) १७.४३. दिव्यगुणा ऋत्विजः १७.५२. मोदकाः (रुद्राः=बलवन्तो वायवः) १५.११. दिव्यस्वरूपाः (विद्वांसो जनाः) २१.५८. अ०—दिव्यगुणा भ्रमन्तः पृथिव्यादयो लोकाः १.११.५. हे विद्वानो राजप्रजा जनो, स० प्र० १८३, ९.४०. पृथिव्यादय इव विद्वांसः (जनाः) २५.१४. दिव्यगुणादियुक्ताः पृथिव्यादयः, भा०—पृथिव्यादीनि तत्त्वानि २५.२३. सुसभ्या विद्वांसः (जनाः) २७.८. देदीप्यमाना विद्वांसः (जनाः) ३१.१६. दिव्यविद्याः ३.४.११. पूर्णविद्वांसः, भा०—विद्वत्तमाः (जनाः) १७.१४. विद्वान् लोग, प्र०—विद्वांसो हि देवाः, शत० ब्राह्म०, आर्याभि० २.६, ३२.१०. सब दिव्य गुण-कर्म-स्वभाव और विद्यायुक्त (विद्वान्), स० प्र० २३६, १.१६४.३९. विद्यासुशिक्षे-जिज्ञासवः (जनाः) १.११०.७. दिव्यगुण-कर्म-स्वभावा विपश्चितः ३.८.९. दिव्याः प्राणाः १२.२. द्योतकाः (सूर्यादयः) १५.१४. भा०—योगिनो विद्वांसः ३२.१०. दिव्यसुखप्रदाः (अधिपतयः=स्वामिनो जनाः) १५.१२. आ०—उपासका विद्वांसः ३४.३८. दातारः (मर्त्ताः) १.१९०.१. विद्यादातारः (विद्वज्जनाः) १७.५६. सुशिक्षयोत्कृष्टा, विद्वांसः ऐश्वर्यभागिनो, राजभक्ताः (अ०—सभाजनाः) ९.३३. भा०—धार्मिकाः सुशीला विद्वांसो राजादयो मनुष्याः ९.३६. भा०—विवेचकाः (विद्वज्जनाः) १७.७०. कामयमानाः (विद्वांसः) १७.७८. भा०—शिल्पिनो विद्वांसः (जनाः) ३३.७. **देवेन**=सूर्यादिप्रकाशकेन (सवित्रा=सर्वान्तर्यामिणा जगदीश्वरेण) ३.१०. सर्वजगद्द्योतकेन (सवित्रा=सर्वस्य जगत उत्पादकेनेश्वरेण) ३.१०. सर्वगतेन (वातेन=वायुना सह) ६.११. दिव्यगुण-कर्म-स्वभावयुक्तेन, भा०—शुद्धेन (मनसा) ३४.२३. विदुषा (जनेन) ३७.१४. दिव्यसुखप्रदेन (त्वष्ट्रा=गुणेन) ८.१०. दिव्यगुणसम्पन्नेन (मनसा) १.९१.२२. **देवेभ्यः**=दिव्येभ्यः शत्रुभ्यः १.१६२.११. दिव्यगुणेभ्यो दिव्यगुणयुक्तपतिभ्यः ८.४३. विद्वद्भ्यो दिव्यगुणसुखेभ्यो वा (पदार्थेभ्यः) ३.४७. दिव्यसुखकारकेभ्यः पूर्वोक्तेभ्यः (य० २.५.) वस्वादिभ्यः, भा०—दिव्यपदार्थेभ्यः २.७. भा०—विद्यासुशिक्षा-ब्रह्मचर्य-सत्सङ्गिभ्यः (जनेभ्यः) २२.४. दिव्यगुणेभ्यः २२.२८. दिव्य सुखानां प्राप्तये २.८. विद्वद्भ्यो दिव्यसुखेभ्यो वा २.९. भा०—दिव्यौषध्यादिभ्यः २.५. दिव्येभ्यो जलादिभ्यः ३९.१३. क्रीडमानेभ्यो जीवेभ्यः २.३८.१. धार्मिकेभ्यः (पुरुषेभ्यः) ५.१०. सुशीलेभ्यो विद्वद्भ्यः (जनेभ्यः) ५.१०. दिव्यगुणेभ्यो विद्यां चिकीर्षुभ्यः शूरवीरेभ्यः (जनेभ्यः) ५.१०. दिव्यन्यायप्रकाशकेभ्यः (विद्वद्भ्यः) ९.३५. सकलविद्याप्रचारकेभ्यः (भा०—विद्वद्वरेभ्यो जनेभ्यः) ९.३५. दिव्यसुखप्रदेभ्यः (राजकर्मचारिभ्यः) ९.३५. विपश्चिद्भ्यः (जनेभ्यः) ९.३५. धार्मिकेभ्यो विद्वद्भ्यः ९.३५. दीव्यन्ति प्रकाशन्ते सत्कर्माऽनुष्ठानेन ये तेभ्यो धर्मिष्ठेभ्यो विद्वद्भ्यः ६.११. शुभेभ्यो गुणेभ्यः ६.११. शोधकेभ्यो वाय्वादिभ्यः ७.३. प्रशस्त-गुण-पदार्थेभ्यः ७.६. दिव्यगुणेभ्यः पृथिव्यादिभ्यः ३१.२०. इन्द्रियेभ्यः, ऋ० भू० २३८, अथर्व० ११.३.१९. दिव्यभोगेभ्यः २२.१९. कमनीयदिव्यसुखेभ्यः ८.८. दिव्यगुणेभ्यो जनेभ्यः २९.६०. भा०—दिव्यगुणकर्मसिद्धये १२.१०४. दिव्यगुणकर्मस्वभावेभ्यः (भा०—विद्वद्भ्यो जनेभ्यः) २२.४. **देवेषु**=प्रकृत्यादि-जीवेषु २७.२६. सत्य-विद्यां प्राप्तेषु (विद्वत्सु जनेषु) ५.६८.३. विद्वत्सु कामेषु वा १.१७९.६. प्रशंसकेषु (विद्वज्जनेषु) ३.१६.४. दिव्येषु गुणेषु विद्वत्सु वा १८.६२. दानसाधकेषु (अवयवेषु) १५.१२. विजिगीषमाणेषु राजसु ८.३९. अखिलविद्यासु प्रकाशमानेषु विद्वत्सु ८.४०. दिव्येषु धर्म्येषु व्यवहारेषु १८.६४. विद्याकामेषु (कुमारेषु) २.४१.१८. द्योतमानेषु लोकेषु १.१४२.११. विद्वत्सु, प्र०—विद्वांसो हि देवाः, शत० ३.७.३.१०, ३.६२. दिव्येषु पदार्थेषु विद्वत्सु वा ४.२.१. कमनीयेषु पदार्थेषु १५.१०. विद्वत्सु, दिव्येषु सूर्यादिपदार्थेषु वा, अ०—दिव्येषु कर्मसु राज्येषु, शिल्पविद्यासिद्धेषु विमानेषु वा १.१५.८. द्योतमानेषु (पदार्थेषु) ४.१५.१. विद्वद्वर्येषु (जनेषु) ८.३८. सद्विद्यादिदिव्यगुणेषु विद्वत्सु ६.१३. पितृषु ६.१५.६. सृष्ट्यादौ पुण्यात्मसु जातेषु अग्निवाय्वादित्याङ्गिरस्सु मनुष्येषु १.२७.४. प्रशंसकेषु (जनेषु) ३.१६.४. **देवैः**=सत्यवादिभिर्विद्वद्भिः, प्र०—'सत्यमेव देवाः' शत० १ का०। १ प्रप्रा०। १ ब्रा०। ४ कं०, ७.२.८. विद्वद्भिर्दिव्यगुणैर्वा ७.२.११. अन्नादि कामयमानैर्विद्वद्भिः १२.७०. विद्वद्भिर्वीरैः (जनैः) ६.४७.२९. दिव्यैर्गुण-कर्म-स्वभावैर्विद्वद्भिर्वा १.९०.१. पूर्णविद्यैः (जनैः) १४.७. परोपकाराय सत्याऽसत्यविज्ञापयितृभिः (जनैः) १४.७. भा०—आप्तविद्वदनुमतिभिः २८.३. द्योतनाऽऽत्मकैर्मन आदीन्द्रियैः ३.४८.

विद्वानों वा दिव्यगुणों के साथ वर्त्तमान आर्याभि० १.१८, ऋ० १.६.१७.१. देदीप्यमानैः (गुणैः) २८.२०. द्योतमानैः (पृथिव्यादिभिः) २०.११. भा०—धार्मिकैरध्यापकैः २०.३८. प्रकाशकैः (किरणैः) २१.५६. **देवौ**=दिव्यस्वरूपौ प्राणाऽपानौ ३४.५५. शुभगुणान् कामयमानौ मातापितरौ, भा०—विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ, २८.४०. वैद्यकविद्यया प्रकाशमानौ (भिषजा=चिकित्सकौ) २८.७. विद्यादातारौ (विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ) ४.१५.१०. दिव्यगुण-कर्म-स्वभावौ (सूर्याचन्द्रमसौ) ५.३८.३. [दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (दिवा०) धातोः पचाद्यच् प्रत्ययः । दिवु मर्दने (चुरा०) दिवु परिकूजने (चुरा०) धातोर्वा अच् । देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा, द्युस्थानो भवतीति वा । यो देवः स देवता निघं० ७.१५. दिवा वै नोऽभूदिति । तद् देवानां देवत्वम् तै० २.२.९.९. दिवा देवानसृजत नक्तमसुरान् यद्दिवा देवानसृजत तद् देवानां देवत्वम् ष० ४.१. तस्मै मनुष्यान्त्सृजानाय (प्रजापतये) दिवा (=दिवसः) देवत्रा (अभवत् । तदनु देवानसृजत । तद् देवानां देवत्वम् तै० २.३.८.३. तद् देवानां देवत्वं यद् दिवसमभिपद्यासृज्यन्त श० ११.१.६.७. तद्द्वेव देवानां देवत्वं यदस्मै ससृजानाय दिवेवास श० ११.१.६.७. मर्त्या ह वाऽअग्रे देवा आसुः स यदैव ते संवत्सरमापुरथामृता आसुः श० ११.१.२.१२. मर्त्या ह वाऽअग्रे देवा आसुः । स यदैव ते ब्रह्मणापुरथामृता आसुः श० ११.२.३.६. एतेन वै (अष्टरात्रेण) देवा देवत्वमगच्छन् । देवत्वं गच्छति य एवं वेद तां० २२.११.२-३. उभये ह वाऽइदमग्रे सहासुर्देवाश्च मनुष्याश्च श० २.३.४.४. उभयम्वैतत्. प्रजापतिर्यच्च देवा यच्च मनुष्याः श० ६.८.१.४. प्राचीनप्रजनना वै देवाः प्रतीचीनप्रजनना मनुष्याः श० ७.४.२.४०. प्राची हि देवानां दिक् श० १.२.५.१७. देवानां वा एषा दिग्यत्प्राची ष० ३.१. यद्वै मनुष्याणां प्रत्यक्षन्तद् देवानां परोक्षमथ यन्मनुष्याणां परोक्षन्तद् देवानां प्रत्यक्षम् तां० २२.१०.३. तस्मै (चन्द्रमसे) ह स्म पूर्वाह्णे देवा अशनमभिहरन्ति मध्यन्दिने मनुष्याऽपराह्णे पितरः श० १.६.३.१२. द्राघीयो हि देवायुषं ह्रसीयो मनुष्यायुषम् श० ७.३.१.१०. देवानां वै विधामनु मनुष्याः श० ६.७.४.९, ९.१.१.१९. स (सूर्यः) यत्रोदङ्ङावर्त्तते । देवेषु तर्हि भवति देवास्तर्ह्यभिगोपायति श० २.१.३.३. देवाश्च वा असुराश्च प्रजापतेर्द्वयाः पुत्रा आसन् तां० १८.१.२. उभये वा एते प्रजापतेरध्यसृज्यन्त । देवाश्चासुराश्च तै० १.४.१.१. सः (प्रजापतिः) ··· अकामयत प्रजायेयेति । स तपोऽतप्यत । सोऽन्तर्वानभवत् । स जघनादसुरानसृजत ··· स मुखाद् देवानसृजत तै० २.२.९.५-८. सः (प्रजापतिः) आस्येनैव देवानसृजत श० ११.१.६.७. (प्रजापतेः) कनीयांसः (पुत्राः) देवाः तां० १८.१.२. कानीयसा एव देवा ज्यायसा असुराः श० १४.४.१.१. कनीयस्विन इव वै तर्हि (युद्धसमये) देवा आसन् भूयस्विनोऽसुराः तां० १२.१३.३१. ते देवाश्चक्रमाचरञ्छालम् असुरा आसन् श० ६.८.१.१. एकाक्षरं वै देवानामवमं छन्द आसीत्सप्ताक्षरम् तां० १२.१३.२७. उत्तरावतीं वै देवा आहुतिमजुहवुः । अवाचीमसुराः तै० २.१.४.१. देवानां वै यज्ञं रक्षांस्यजिघांसन् तां० १४.१२.७. त्रया वै देवाः । वसवो रुद्रा आदित्याः श० ४.३.५.१. एते वै त्रया देवा यद् वसवो रुद्रा आदित्याः श० १.३.४.१२, १.५.१.१७, १.८.३.८. कतमे ते त्रयो देवा इति । इम ऽ एव त्रयो लोका एषु हीमे सर्वे देवा इति । कतमौ तौ द्वौ देवावित्यन्नं चैव प्राणश्चेति । कतमोऽध्यर्ध इति योऽयं पवत इति । कतम एको देव इति प्राण इति श० ११.६.३.१०. त्रयस्त्रिंशद् देवताः तां० ४.४.११. त्रयस्त्रिंशद्वै देवताः तै० १.२.२.५, १.८.७.१, २.७.१.३-४. त्रयस्त्रिंशद्वै सर्वा देवताः कौ० ८.६. त्रयस्त्रिंशद्वै देवाः प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशः श० १२.६.१.३७. त्रयस्त्रिंशद् देवताः प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशः तां० १०.१.१६, १२.१३.२४. अष्टौ वसवः । एकादश रुद्रा द्वादशादित्या इमेऽएव द्यावापृथिवी त्र्यस्त्रिंश्यौ त्रयस्त्रिंशद्वै देवाः प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशः श० ४.५.७.२. देवता वाव त्रयस्त्रिंशोऽष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्याः प्रजापतिश्च वषट्कारश्च तां० ६.२.५. (त्रयस्त्रिंशत्) अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्याः प्रजापतिश्च वषट्कारश्च ऐ० २.१८, ३७, ३.२२. अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्या वाग् द्वात्रिंशी स्वरस्त्रयस्त्रिंशस्त्रयस्त्रिंशद्देवाः गो० उ० २.१३. त्रयस्त्रिंशद्वै देवाः सोमपास्त्रयस्त्रिंशदसोमपा अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्याः प्रजापतिश्च वषट्कारश्चैते देवा सोमपा एकादश प्रयाजा एकादशानुयाजा एकादशोपयाजा एतेऽसोमपाः पशुभाजनाः ऐ० २.१८. त्रयस्त्रिंशद् वै सोमपा देवतायाः सोमाहुतीरन्वायत्ता अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्या इन्द्रो द्वात्रिंशः प्रजापतिस्त्रयस्त्रिंशस् त्रयस्त्रिंशत् पशुभाजनाः कौ० १२.६. कतमे ते (देवाः) त्रयस्त्रिंशदिति । अष्टौ वसव एकादश रुद्रा द्वादशादित्यास्तऽ एकत्रिंशदिन्द्रश्चैव प्रजापतिश्च श० ११.६.३.५. कतमे ते (देवाः) त्रयश्च त्री च शता त्रयश्च त्री च सहस्रेति । स (याज्ञवल्क्यः) होवाच । महिमान एवैषां (देवानाम्) एते त्रयस्त्रिंशत् त्वेव देवा इति

श० ११.६.३.४-५. पञ्चधा वै देवा व्युत्क्रामन् अग्निर्वसुभिः सोमो रुद्रैः, इन्द्रो मरुद्भिः, वरुण आदित्यैः, बृहस्पतिर्विश्वैर्देवैः गो० उ० २.२. तस्य वाऽएतस्य वाससः । अग्नेः पर्यासो भवति वायोरनुछादो नीविः पितृणां सर्पाणां प्रघाणो विश्वेषां देवानां तन्तव आरोका नक्षत्राणामेवं हि वा ऽएतत्सर्वे देवा अन्वायत्ताः श० ३.१.२.१८. अग्निर्वायुरादित्य एतानि ह तानि देवानां हृदयानि श० ९.१.१.२३. अग्निर्वै देवानामवमो विष्णुः परमस्तदन्तरेण सर्वा अन्या देवताः ऐ० १.१. तद्यदेतस्मिन्नाके स्वर्गे लोके देवा असीदंरतस्माद्देवा नाकसदः श० ८.६.१.१. द्यौर्वै सर्वेषां देवानामायतनम् श० १४.३.२.८. पृथिवी वै सर्वेषां देवानामायतनम् श० १४.३.२.४. देवगृहा वै नक्षत्राणि तै० १ ५.२.६. नरो वै देवानां ग्रामः तां० ६.९.२. स यदेव यजेत । तेन देवेभ्यः ऋणं जायते तद् ह्येभ्य एतत् करोति यदेनान् यजते यदेभ्यो जुहोति श० १.७.२.२. देवा यज्ञियाः श० १.५.२.३. दिवं तृतीयं देवान् यज्ञोऽगात् ऐ० ७.५. यज्ञ उ देवानामात्मा श० ८.६.१.२०. यज्ञो वै देवानामात्मा श० ९.३.२.७. .सर्वेषां वाऽएष भूतानां सर्वेषां देवानामात्मा यद् यज्ञः श० १४.३.२.१. एतद्वै देवानामपराजितमायतनं यद् यज्ञः तै० ३.३.७.७. यज्ञ उ देवानामन्नम् श० ८.१.२.१०. ततो देवा यज्ञोपवीतिनो भूत्वा दक्षिणं जान्वाच्योपासीदन् (प्रजापतिः) तान् (देवान्) अब्रवीद् यज्ञो वोऽन्नममृतत्वं व ऊर्वः सूर्यो वो ज्योतिरिति श० २.४.२.१. किं नु तेऽस्मासु (देवेषु) इति । अमृतमिति जै० उ० ३.२६.८. ऊर्गिति देवाः (उपासते) श० १०.५.२.२०. साम देवानामन्नम् तां० ६.४.१३. एतद्वै देवानां परममन्नं यत्सोमः । एतन्मनुष्याणां यत्सुरा तै० १.३.३.२-३. एष वै सोमो राजा देवानामन्नं यच्चन्द्रमाः श० १.६.४.५, २.४.२.७, ११.१.४.४. हविर्वै देवानां सोमः श० ३.५.३.२. एतद्वै देवानां परममन्नं यन्नीवाराः तै० १.३.६.८. इतः (हविः) प्रदानाद्धि देवा उपजीवन्ति श० १.२.५.२४. उभये देवमनुष्याः पशूनुपजीवन्ति श० ६.४.४.२२. तस्यै (वाचे) द्वौ स्तनौ देवा उपजीवन्ति स्वाहाकारं च वषट्कारं च श० १४.८.९.१. जीवं वै देवानां हविरमृतममृतानाम् श० १.२.१ २०. एकं वा एतद्देवानामहः संवत्सरः तै० ३.९.२२.१ संवत्सरो वै देवानां गृहपतिः तां० १०.३.६. संवत्सरो वै देवानां जन्म श० ८.७.३.२१. संवत्सरः खलु वै देवानां पूः तै० १.७.७.५. स प्राणेन देवान् देवलोकेऽदधात् जै० उ० २.८.३. प्राणेन वै देवा अन्नमदन्ति । अग्निरु देवानां प्राणः श० १०.१.४.१२. न ह वा अनार्षे यस्य देवा हविरश्नन्ति कौ० ३.२. नहि देवा अहुतस्याश्नन्ति तै० १.६.६.४. न ह वा अव्रतस्य देवा हविरश्नन्ति ऐ० ७.११. कौ० ३.१. सूर्यो वै सर्वेषां देवानामात्मा श० १४.३.२.९. यज्ञो वै स्वः अहर् देवाः सूर्यः श० १.१.२.२१. देवा वै स्वः श० १.९.३.१४. अहरेव देवाः श० २.१.३.१. अहर्वै देवा अश्रयन्त रात्रीमसुराः ऐ० ४.५. अहर्वै देवा आश्रयन्त रात्रीमसुराः गो० उ० ५.१. देवा वै नृचक्षसः श० ८.४.२.५. गातुविदो हि देवाः श० ४.४.४.१३. देवानां वा एतद् यज्ञियं गुह्यं नाम यच्चतुर्होतारः ऐ० ५.२३. युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस इति युञ्जन्तु त्वा देवा इत्येवैतदाह श० ५.१.४.९. देवा महिमानः श० १०.२.२. अमृता देवा २.१.३.४. देवा वै मृत्योरबिभयुस्ते प्रजापतिमुपाधावँस्तेभ्य एतेन नवरात्रेणामृतत्वं प्रायच्छत् तां० २२.१२.१. देवा वै सर्पाः । तेषामियं (पृथिवी) राज्ञी तै० २.२.६.२.२. विप्रा विप्रस्य इति प्रजापतिर्वै विप्रो देवा विप्राः श० ६.३.१.१६. स ह स न मनुष्यो य एवंविद्देवानां हैव स एकः श० १०.३.५.१३. अथ हैते मनुष्यदेवा ये ब्राह्मणाः ष० १.१. एते वै देवा अहुतादो यद् ब्राह्मणाः गो० उ० १.६. ब्राह्मणो वै सर्वा देवताः तै० १.४.४.२,४. आहुतिभिरेव देवान् प्रीणाति दक्षिणाभिर्मनुष्यदेवान् ब्राह्मणांछुश्रुवुषोऽनूचानान् श० २.२.२.६. द्वया वै देवाः । अहैव देवा अथ ये ब्राह्मणाः शुश्रुवांसोऽनूचानास्ते मनुष्यदेवाः श० २.२.२.६, ४.३.४.४. विद्वांसो हि देवाः श० ३.७.३.१०. धर्म इन्द्रो राजेत्याह तस्य देवा विशस्तऽइमऽआसत इति श्रोत्रिया अप्रतिग्राहका उपसमेता भवन्ति तानुपदिशति सामानि वेद सोऽयमिति श० १३.४.३.१४. ऋतवो वै देवाः श० ७.२.४.२६. वसन्तो ग्रीष्मो वर्षाः ते देवा ऋतवः, श० २.१.३.१. तस्मात् प्राणा देवाः, श० ७.५.१.२१. प्राणा देवाः श० ६.३.१.१५. चक्षुर्देवः गो० पू० २.११. मनो देवः गो० पू० २.१०. मनो वै देववाहनं मनो हीदं मनस्विनं भूयिष्ठं वनीवाह्यते श० १.४.३.६. वाक् च वै मनश्च देवानां मिथुनम् ऐ० ५.२३. वागेव देवाः श० १४.४.३.१३. वाग्देवः गो० पू० २.१०. वाग्वै देवानां पुरान्नमासीत् तै० १.३.५.१. वागिति सर्वे देवाः जै० उ० १.९.२. वायुर्वै देवः जै० उ० ३.४.८. सा या पूर्वाहुतिः । ते देवाः श० २.३.२.१६. अह्नः पूर्वाह्णो देवाः श० २.१.३.१. तस्मै (वृत्राय) ह स्म पूर्वाह्णे देवाः । अशनमभिहरन्ति श० १.६.३.१२. य एवापूर्यतेऽर्धमासः स देवाः श० २.१.३.१. य एवापूर्यते तं (अर्धमासं) देवा उपायन् श० १.७.२.२२. अर्धमासे देवा इज्यन्ते तै० १.४.९.१. देवाश्च वा ऽअसुराश्च । उभये

प्राजापत्याः प्रजापतेः पितुर्दायमुपेयुरेतावेवार्धमासौ (शुक्लकृष्णपक्षौ) श० १.७.२.२२. यशो देवाः श० २.१.४.९. तस्माद् (देवाः) यशः श० ३.४.२.८. देवा वै यशस्कामाः सत्रमासत तां० ७.५.६. ते (देवाः) आसत श्रियं गच्छेम यशः स्यामान्नादाः स्यामेति श० १४.१.१.३. श्रीर्देवाः श० २.१.४.९. सर्वे वै देवास्त्विषिमन्तो हरस्विनः तै० ३.८.७.३. तिर इव वै देवा मनुष्येभ्यः श० ३.१.१.८, ३.३.४.६. परोक्षं वै देवाः श० ३.१.३.२५. परोक्षकामा हि देवाः श० ६.१.१.२, ७.४.१.१०. परोक्षप्रिया इव हि देवा भवन्ति प्रत्यक्षद्विषः गो० पू० २.२१. यदु ह किं च देवाः कुर्वते स्तोमेनैव तत्कुर्वते यज्ञो वै स्तोमो यज्ञेनैव तत्कुर्वते श० ८.४.३.२. मनो ह वै देवा मनुष्यस्याजानन्ति श० २.१.४.१, २.४.१.११. मनो देवा मनुष्यस्याजानन्ति श० ३.४.२.६. (देवाः प्रजापतिमब्रुवन्) दाम्यतेति न आत्थेति श० १४.८.२.२. जाग्रति देवाः श० २.१.४.७. न वै देवाः स्वपन्ति श० ३.२.२.२२. यो वै देवानां पथैति स ऋतस्य पथैति श० ४.३.४.१६. एकं ह वै देवा व्रतं चरन्ति सत्यमेव श० ३.४.२.८. एकं ह वै देवा व्रतं चरन्ति यत्सत्यं तस्मादु सत्यमेव वदेत् श० १४.१.१.३३. सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्याः श० १.१.१.४, १.१.२.१७, ३.३.२.२, ३.९.४.१. सत्यसंहिता वै देवाः ऐ० १.६. सत्यमया उ देवाः कौ० २.८ शैशिरेणर्त्तुना देवाः । त्रयस्त्रिंशेऽमृतं स्तुतं सत्येन रैवतीः क्षत्रम् । हविरिन्द्रे वयो दधुः तै० २.६.१९.२. त्रिषत्या हि देवाः श० १.१. तै० ३.२.३.८. अपहतपाप्मानो देवाः श० २.१.३.४. अथ देवाः । अन्योऽन्यस्मिन्नेव जुह्वतश् चेरुस्तेभ्यः प्रजापतिरात्मानं प्रददौ श० ५.१.१.२, ११.१.८.२. ते देवाः प्रजापतिमेवाभ्ययजन्त । अन्योऽन्यस्यासन्नसुरा अजुहवुः । प्रजापतिर्देवानुपावर्त्तत गो० उ० १.७. अथ देवा ऊर्ध्वं पृष्ठेभ्योऽपश्यन् । त उपपक्षावग्रे ऽवपन्त । अथ श्मश्रूणि । अथ केशान् । ततस्ते ऽभवन् । सुवर्गं लोकमायन् । यस्यैवं वपन्ति । भवत्यात्मना । अथो सुवर्गं लोकमेति । तै० १.५.६.२. देवा वै छन्दांस्यब्रुवन् युष्माभिः स्वर्गं लोकमयामेति तां० ७.४.२. छन्दोभिर्हि देवाः स्वर्गं लोकं समाश्नुवत श० ३.९.२.१०. सर्वैर्वै छन्दोभिरिष्ट्वा देवाः स्वर्गं लोकमजयन् ऐ० १.९. यज्ञेन वै देवा दिवमुपोदक्रामन् श० १.७.३.१. यज्ञेन वै तद्देवा यज्ञमयजन्त यदग्निनाऽग्निमयजन्त ते स्वर्गं लोकमायन् ऐ० १.१६. तम् (अग्निं) देवा रोहिण्यामादधत ततो वै ते सर्वान् रोहानरोहन् तै० १.१.२.२. आनन्दात्मानो हैव सर्वे देवाः श० १०.३.५.१३. इन्द्रो वै देवानामोजिष्ठो बलिष्ठः कौ० ६.१४. गो० उ० १.३. इन्द्राग्नी वै देवानामोजिष्ठौ तां० २४.१७.३. ष० ३.७. इन्द्राग्नी वै सर्वे देवाः कौ० १२.६, १६.११. श० ६.१.२.२८. हव्यवाहनो वै (अग्निः) देवानाम् श० २.६.१.३०. अग्निर्वै देवानां होता ऐ० १.२८, ३.१४. अग्निरेव देवानां दूत आस श० ३.५.१.२१. वरुणो वै देवानां राजा श० १२.८.३.१०. तस्मादाहुर्विष्णुर्देवानां श्रेष्ठ इति श० १४.१.१.५. रुद्रो वै ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च देवानाम् कौ० २५.१३. विश्वे वै देवा देवानां यशस्वितमाः तै० ३.८.७.२. श० १३.१.२.८. शृतकामा इव हि देवाः तै० ३.२.८.१२. अग्नयो वै सर्वे देवाः जै० २.२२५. अन्नमु देवानां सोमः जै० ३.१७४. अभिषिक्तो (राजा) वै देवानां वरुणः मै० ४.३.७. अस्यां (पृथिव्याम्) वै प्रतिष्ठाय देवा यज्ञमतन्वत मै० ३.७.१. एष ह वै देवानां राज्ञी यच्छ्रद्धा जै० २.४२६. ओषधयो वै देवानां पत्न्यः मै० ३.१.८. तस्य (अमृतस्य) देवा आयुष्कृतः मै० २.३.४. दिवा वै मनुष्या यज्ञेन चरन्ति नक्तं देवाः । मै० ४.५.१. काठ० २३.५. देवा एकरूपाः रार्वे शुक्लाः जै० १.२७८. देवा ह धर्मणा ध्रुवाः काठ० ३५.७. न हि देवा अश्रु कुर्वन्ति मै० २.१.१०. नियुतो देवानां विशः काठ० १२.१३. प्रजापतिश्रेष्ठा वै देवाः जै० २.३७१. बिभ्यति वै देवेभ्यः पशवः काठ० ७.७.]

देवकम् देवमिव . वर्त्तमानम् (सत्पुरुषम्) ७.१८.२०. [देवप्राति० इवार्थे कन्प्रत्ययः । स्वार्थे वा कः प्रत्ययः । देवपदं व्याख्यातम्]

देवकामम् यो देवान् विदुषः कामयते तम्, भा०—विद्याकामम् (वीरमनुष्यम्) २९.९. **देवकामः**=यो देवान् विदुषः कामयते सः (यजमानो जनः) ४.२५.१. देवानां विदुषां काम इच्छा यस्य सः (वीरजनः) ७.२.९. [देवोपपदे कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोः 'कमेर्णिङ्' इति णिङन्तात् 'कर्मण्यण्' इत्यण्प्रत्ययः । देव-कामपदयोर्वा समासः]

देवकिल्विषात् देवेषु विद्वत्स्वपराधकरणात्, भा०—पापाचरणाद्, विद्वदीर्ष्या-विषयात् १२.९०. [देव-किल्विषपदयोः समासः । किलति क्रीडति विचारशून्यतया कार्येषु प्रवर्त्तते येन तत् किल्विषं पापम् । 'किलेर्बुक् च' उ० १.५०. सूत्रेण टिषच् प्रत्ययो बुगागमश्च]

देवकृतम् देवैराचरितम् (एनः=पापम्) २०.१८. विद्वद्भिर्विद्याध्ययनाय निर्मितम् (योनिं=गृहम्) ७.४.५. कामिभिरनुष्ठितम् (एनः=दुष्टाचरणम्) ८.२७. इन्द्रियकृतं कर्म ८.१५. यद् देवैरिन्द्रियैः कृतं तत् (एनः=पापम्) ३.४८. देवैर्विद्वद्भिः कृतं निष्पादितं शास्त्रम् ३.३३.४.

देवकृतस्य=दानशीलकृतस्य (एनसः=पापस्य) भा०—दानादि-प्रसक्तमनुष्यस्य ८.१३. इन्द्रिय, विद्वान् और दिव्य-गुणयुक्त जन के, आर्याभि० २.१६, ८.१३. [देव-कृतपदयोः समासः]

देवक्षत्रे देवानां धने राज्ये वा ५.६४.७. [देव-क्षत्र-पदयोः समासः । क्षत्रम्=उदकनाम निघं० १.१२. धननाम निघं० २.१०. 'क्षद' इति सौत्रो धातुः । क्षदति रक्षतीति क्षत्रम् । 'गुधृवीपचिवचि०' उ० ४.१६७. सूत्रेण क्षदधातोः स्त्रः प्रत्ययः । क्षतात् त्रायत इत्यपि विग्रहः]

देवगणाः विद्वत्समूहाः, पं० वि० ३२.१४. देवानां विदुषां समूहाः ३२.१४. विद्वानों के वृन्द, आर्याभि० २.५३, ३२.१४. पितरो विज्ञानिनश्च, ऋ० भू० १४६, ३२.१४. [देव-गणपदयोः समासः]

देवगोपाः देवा विद्वांसो गोपा रक्षका येषान्ते, यद्वा ये देवानां दिव्यानां गुणानां कर्मणां वा गोपाः (सर्वमनुष्याः) १.५३.११. यो देवान् विदुषो गोपायति (राजा) ६.६८.७. देवानां विदुषां रक्षकाः (मनुष्याः) ५.४५.११. सर्वेषां रक्षकः (पृश्निः=अन्तरिक्षमवकाशः) ७.३५.१३. [देव-गोपपदयोः समासः । अथवा=देवोपपदे गुपू रक्षणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' सूत्रेण अण्प्रत्ययः । देवगोपा=देवी गोप्त्री, देवान् गोपायत्विति, देवा एनं गोपायन्त्विति वा नि० ११.४२.]

देवजनाः देवा विद्वांसश्च ते जना धर्मे प्रसिद्धाश्च भा०—विद्वांसो विदुष्यश्च १६.३६. विद्वांसः श्रेष्ठा ज्ञानिनो विद्यादानिनः (ईश्वराज्ञापालका जनाः) ऋ० भू० २६७, १६.३६. [देव-जनपदयोः समासः]

देवजातस्य देवेभ्यो दिव्येभ्यो गुणेभ्यः प्रकटस्य (सप्तेः=अश्वस्य) १.१६२.१. देवैर्दिव्यैर्गुणैः प्रसिद्धस्य (सप्तेः=अश्वस्य) २५.२४. **देवजाताय**=देवैर्दिव्यैर्गुणैः प्रसिद्धाय (सूर्याय=परमेश्वराय सूर्यलोकाय वा) ४.३५. [देव-जातपदयोः समासः । देवजातस्य=देवैर्जातस्य नि० ६.३.]

देवजामिभ्यः विदुषां भगिनीभ्यः २४.२४. **देव-जामिः**=यो देवैः सह जमति सः (घोषः=वाक्) ७.२३.२. [देव-जामिपदयोः समासः । जामिः=या प्रापणे (अदा०) धातोर् बाहु० औणादिको मिः प्रत्ययः (उ० ४.४३.) आदेर्जत्वम् । अथवा देवोपपदे जमु अदने धातोरौणादिको बाहु० इन्प्रत्ययः]

देवजाः यो देवेषु विद्वत्सु जातः (आप्तो विद्वान्) ३.५३.६. देवाद् विद्युतो जाताः (ऋतवः) १.१६४.१५. [देवोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'सप्तम्यां जनेर्डः' सूत्रेण 'पञ्चम्यामजातौ' सूत्रेण वा डः प्रत्ययः । अथवा देवोपपदाज् जनी धातोः क्विप्प्रत्ययः । 'जनसनखनां०' इत्याकारान्तादेशः]

देवजुष्टम् विद्वद्भिः सेवितम् (अन्नम्) ४.२६.४. **देवजुष्टा**=विद्वद्भिः प्रीता सेविता वा (वाक्) १.७७.१. **देवजुष्टैः**=विद्वद्भिः सेवितैः (वचोभिः=वचनैः) ५.४५.४. [देव-जुष्टपदयोः समासः । 'देवजुष्टा' प्रयोगे स्त्रियां टाप् । जुष्टम्=जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः क्तः]

देवजूतम् देवैः प्राप्तम् (शूषं=बलम्) ७.२५.५. **देवजूतः**=देवैः प्रेरितः (आप्तो जनः) ३.५३.६. देवैर्विदित-श्चालितः (रयिः=धनम्) ४.११.४. [देव-जूतपदयोः समासः । देवजूतम्=देवगतं देवप्रीतं वा निघं० १०.२८. जूतम्=जवति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) ततो भावे क्तः प्रत्ययः]

देवतमः विद्वत्तमः (राजा) ४.२२.३. **देवतमाय**=अतिशयेन प्रकाशयुक्ताय (सूर्याय) २.२४.३. [देव इति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

देवतया दिव्यसुखप्रदया (धर्मानुष्ठानयुक्तया क्रियया) १२.५३. दिव्यगुणया (ईश्वरेण) १४.६. दिव्यगुणप्रापिकया (विद्वत्स्त्रिया) १२.५३. परमपूज्यया परमेश्वराख्यया १३.२५. दिव्यया (पत्या) १३.२४. दिव्यगुणयुक्तया (पत्याख्यया) १५.५८. पूज्यतमया व्याप्तया ब्रह्माख्यया सह १५.५७. देदीप्यमानया (राज्ञ्या) सह १०.३०. भा०—सुलक्षणया वाचा पत्न्या च सह २७.४५. दिव्यसुखप्रदान-क्रियया सह १४.१२. विवाहितपतिरूपया सुखप्रदया (पत्न्या) १३.१६. दिव्यया (पत्या सह) १३.२४. **देवता**=देव एव देवता (ईश्वरः) प्र०—स्वार्थे तल् प्रत्ययः ३३.७६. द्योतमान एव (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.५५.३. देव एव दिव्यगुणत्वात् १४.२०. देव एव देवता विद्वानेव, प्र०—देवात्तल् इति स्वार्थे तल्, जातावेकवचनञ्च ४.५८.१०. दिव्य-गुणयुक्तम् (त्वामग्निमिव वर्त्तमानं विद्वांसम्) प्र०—अत्र सुपो लुक् ३३.१३. दिव्यगुणः (अग्निः=विद्वज्जनः) ७.१.२३. जगदीश्वरः ६.४.७. उपासनीय इष्टदेव एव (सविता=ईश्वरः) २२.१०. पूज्यतमा (सविता=जगदीश्वरः) १.२२.५. विद्वांसः (जनाः), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति जसो लुक् १७.६८. विद्वान्, सूर्यादि, बुद्ध्यादि, आर्याभि० १.३२. ऋ० १.७.१०.१५. दिव्यजनानाम्,

प्र०—निर्धारणेऽत्र षष्ठी 'सुपां सुलुक्०' इत्यामो लुक् च १.१००.१५. दिव्यगुणसम्पन्नौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) ४.४४.२. दिव्यस्वरूपे (भूमिसूर्य्यौ) ६.७०.५. कर्मकाण्डे देवताशब्देन वेदमन्त्राणां ग्रहणम् । गायत्र्यादीनि छन्दांसि ह्यग्न्यादिदेवताख्यान्येव गृह्यन्ते, ऋ० भू० ६०, **देवताम्**=दिव्यगुणताम् (अग्रम्=उत्तमं सुखम्) अ०—सुखम् १३.५१. **देवतायाम्**=पूजनीयायाम् (प्रजापतौ=परमेश्वरे) ३५.६. **देवतासु**=विद्वत्सु १९.३२. **देवताः**=देवा एव देवतास्ताः (विदुषो जनान्) १९.५. दिव्या विद्वांसो गुणा वा १३.१. देवा विद्वांसः (जनाः) १९.८१. [देव इति व्याख्यातम् । ततः 'देवात्तल्' अ० ५.४.२७. सूत्रेण तल्प्रत्ययः । देवतामृगभ्यनूक्ता यां यजुः सैव देवता सर्क्सो देवता तद् यजुः श० ६.५.१.२. त्रयस्त्रिंशद् देवताः तां० ४.४.११. आपो वै सर्वा देवताः ऐ० २.१६. अग्नौ हि सर्वा देवता इज्यन्ते काठ० २५.३. एता वै सर्वा देवता यद् वसतीवर्यः जै० १.३४२. कतमैका देवतेति, प्राण इति जै० २.७७. देवता एव पृष्ठैरवरुन्धते तै० सं० ७.४.२.३. देवता यजत्राः काठ० २६.८. देवता वै यज्ञस्य शर्म यज्ञो यजमानस्य मै० ३.६.६. देवता वै विश्वा धामानि काठ० २४.७. देवता वै विश्वा धामानि काठ० २४.७. देवतैव मेधपतिरिति कौ० १०.४. न प्रजापतेरन्या पूर्वा देवतास्ति जै० २.१७४. प्रजापतिः सर्वा देवताः तै० सं० २.१.४.३. प्राणा वै देवताः मै० २.३.५. काठ० ११.८. ब्राह्मणो वै सर्वा देवताः तै० १.४४.२. मध्यायतनो वै प्रजापतिर्देवतानाम् जै० २.३४९. मुखं वा अग्निर्देवतानाम् जै० ३.३००. यतो यज्ञस्ततो देवताः मै० ३.६.६. यावतीर्वै देवतास्ताः सर्वा वेदविदि ब्राह्मणे वसन्ति तै० आ० २.१५.९. वाक् च वै वायुश्चैतं देवतानामानशानौ जै० २.३८९. विष्णुर्वै परमो देवतानाम् जै० २.१९२.]

देवतातये देवेभ्यो विद्वद्भ्यो दिव्यगुणेभ्यो वा ३३.८७. दिव्यगुणप्राप्तये ३.२६.२. देवानां विदुषामेव सत्काराय १.१३७.९. **देवताता**=देवानां विदुषां कर्मसु, प्र०—अत्र 'देवात्तातिल्, अ० ४.४.१४२. 'सुपां सुलुक्०' अ० ७.१.३९. इति डादेशश्च ९.१६. देवा एव देवतास्तासां भावः १.५८.१. देवतातौ (विद्वत्पङ्क्तौ) ४.६.१ सत्ये व्यवहारे यज्ञे ६.६८.२. देवैर्विद्वद्भिः कृता (शस्तिः=प्रशंसा) ४.३.१५. देवान् विदुषः ३.१९.१. देवैरनुष्ठातव्ये सङ्गन्तव्ये व्यवहारे ७.२.५. विद्वद्भिरनुष्ठातव्ये यज्ञे ७.३८.७ देवता विद्वांस इव वर्त्तमानाः (वाजिनः=विद्वज्जनाः) २१.१०. दिव्ये यज्ञे ६,४,१. दिव्यगुणप्रापके यज्ञे ७.४३.३. देवेनेश्वरेण विद्वद्भिर्वा सह, प्र०—अत्र देवशब्दात् 'सर्वदेवात्तातिल्' इति तातिलि कृते 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयास्थाने डादेशः १.९५.८. विद्वत्कर्त्तव्ये व्यवहारे ५.२९.१. शिल्पक्रियायज्ञसम्पत्तिहेतू यद्वा देवान् विदुषो दिव्यगुणान् वा तनुतस्तौ (अश्विनौ=द्यावापृथिव्यौ) प्र०—अत्र 'दुतनिभ्यां दीर्घश्च' उ० ३.८८. इति क्तः प्रत्ययः 'देवतातेति यज्ञनामसु पठितम्' निघं० ३.१७, १.३४.५. देवा एव देवतास्तासां भावः १.५८.१. देवेनेव १.१२८.२. **देवतातिम्**=देवतामेव परमात्मानम् १.१४१.१०. दिव्यस्वरूपाम् (घृताचीं=रात्रीम्) ३.१९.२. दिव्यस्वभावम् (शर्धः=बलम्) ३.१९.४. दिव्यसुखप्रापकं यज्ञम् ७.१.१८. देवैरनुष्ठितं यज्ञम् ७.३९.१. दिव्यगुणाऽन्विताम् (परिचर्य्याम्) ४.६.३. देवान् ४.६.९. [देव प्राति० 'सर्वदेवात् तातिल्' अ० ४.४.१४२. सूत्रेण स्वार्थे तातिल्प्रत्ययः । अथवा तनु विस्तारे (तना०) धातोः 'दुतनिभ्यां दीर्घश्च' उ० ३.९०. सूत्रेण क्तप्रत्यये तातः । देव-तातपदयोः समासे 'सुपां सुलुग्०' इति विभक्तेराकारादेशे देवताता शब्दः सिध्यति । देवताता यज्ञनाम निघं० ३.१७. देवतातौ यज्ञे नि० १२.४३.]

देवत्तम् यद् देवेनेश्वरेण दत्तं विद्वद्भिर्वाऽध्यापकेन तत् १.३७.४. [देवोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्तः प्रत्ययः । छान्दसत्वादनुपसर्गादपि ददातेस्तकारादेशः]

देवत्रा देवेषु वर्त्तमानम् (सूर्यं=जगदीश्वरम्) २७.१०. दिव्यगुणेषु देवेषु २०.२१. देवेषु विद्वत्सु दिव्यगुणेषु वा १.६३.९. प्रकाशमयेषु सूर्येषु ३५.१४. विद्वत्सु, मनुष्येषु, पृथिव्यादिषु वा वर्त्तमानम् १.५०.१०. सर्वेषु दिव्यगुणवत्सु पदार्थेषु पं० वि०, ३५.१४. देवेषु दिव्येषु पदार्थेषु ३८.२४. दिव्यान् गुणान् ६.२७. देवेषु पतिषु ६.३४. देवं देवमिति देवत्रा ६.२०. देवेषु पवित्रगुणकर्मस्वभावेषु वर्त्तमानाः (प्रजा-सभा-सेना-जनाः) ७.४६. देवेष्विति १.१८२.५. [देवप्राति० 'देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यो द्वितीयासप्तम्योर्बहुलम्' अ० ५.४.५६. सूत्रेण त्रा प्रत्ययः । देवत्रा=देवान् नि० ८.६. अ० ४.१.६. वा० सूत्रेण ङीप्प्रत्ययः]

देवत्वम् विदुषां भावम् १.१३६.१. प्रकाशमयस्य भावः १.११५.४. विद्वत्त्वम् ३१.१७. देवस्य भावम् ३३.३७. विदुषां कर्म भावं वा १७.१४. **देवत्वा**=देवानां विदुषां दिव्यगुणानां वा भावरूपाणि (गुणकर्माणि) १.६९.३. [देवप्राति० भावे कर्मणि वा त्व-प्रत्ययः । 'देवत्वा' प्रयोगे प्रथमाबहुवचने शेर्लोपः]

देवद्रीचा देवान् विदुषोऽञ्चता सत्कारिणा (मनसा)

प्र०—विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतौ वप्रत्यये, अ० ६.३.९२. अनेन देवशब्दस्य टेरद्रिरादेशः १.९३.८. देवानञ्चता प्राप्नुवता, भा०—दिव्येन (मनसा) २९.२३. [देवान् अञ्चतीति विग्रहे देवोपपदाद् अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' इति क्विन्प्रत्ययः। 'विष्वग्देवयोश्च टेरद्र्यञ्चतौ वप्रत्यये' अ० ६.३.९२. सूत्रेण देवस्य टेरद्र्यादेशः। 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' सूत्रेण पूर्वस्य दीर्घत्वम्]

देवद्रीचीम् यया देवानञ्चति ताम् (रात्रिम्) ३.६.१. [देवद्रीचेति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियाम् 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्'। यस्योर्ध्वा वाक् स आर्त्विजीनो देवत्रेव हि सः काठ० १३.४. असुर्यं पात्रमनाच्छृण्णम्, आच्छृणत्ति देवत्राऽक्तः तै० सं० ५.१.७.४.]

देवनिदः ये देवान्निन्दन्ति तान् (दुर्जनान्) १.१५२.२. ये देवान् विदुषो दिव्यगुणान्वा निन्दन्ति तान् (नास्तिकान् जनान्) २.२३.८. [देवोपपदान् णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् प्रत्ययः। आगमशासनस्यानित्यत्वान् नुमोऽभावः]

देवन्देवम् विद्वांसं विद्वांसं, दिव्यं दिव्यं पदार्थं वा ३३.९.१. ['देवम्' पदस्य वीप्सायां द्विर्वचनम्]

देवपत्नीः देवैर्विद्वद्भिः पालनीयाः (ग्नाः=वाणीः) १.६१.८. देवानां विदुषां स्त्रियः ५.४६.८. [देव-पत्नीपदयोः समासः। देवपत्नीः=देवपत्न्यः नि० १२.४६. देवपत्न्यो देवानां पत्न्यः नि० १२.४४.]

देवपणिभिः देवानां दिव्यगुणवतामग्नि-पृथिव्यादीनां विदुषां वा पणयो व्यवहाराः स्तुतयश्च ताभिः २.१७. [देव-पणिपदयोः समासः। पणिः=पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक इन्प्रत्ययः]

देवपानम् देवैः किरणैरिन्द्रियैर्वा पेयम् (चमसं=मेघम्) १.१६१.५. देवाः पिबन्ति येन तत् (चमसं=यज्ञपात्रम्) ४.३५.५. [देवोपपदे पा पाने (भ्वा०) धातोर्ल्युट् प्रत्ययः]

देवपीयवः ये देवानां विदुषां द्वेष्टारः, भा०—ये आप्तान् विदुषो द्विषन्ति ते (पणयः=व्यवहारिणो जनाः) ३५.१. (देव-पीयुपदयोः समासः। पीयुः=पा पाने (भ्वा०) धातोः 'खरुशङ्कुपीयुनीलङ्गुलिगु' उ० १.३६. सूत्रेण कु प्रत्यये धातोरीकारादेशो युगागमश्च निपात्यते। देवपीयुम्। पीयतिर्हिंसाकर्मा नि० ४.२५.]

देवपुत्रे देवस्य परमात्मनः पुत्रवद्वर्त्तमाने (रोदसी=प्रकाशभूमी) १.१८५.४. देवानां विदुषां पुत्र इव वर्त्तमाने (रोदसी=भूमिसूर्यलोकौ) ६.१७.७. देवा विद्वांसः पुत्राः पुत्रवत्पालका ययोस्ते (सूर्यभूमी) ७.५३.१. देवैर्दिव्यैः प्रकृत्यंशैः पुत्र इव प्रजाते (क्षितिसूर्यौ) १.१५९.१. देवा दिव्या विद्वांसो दिव्यरत्नादियुक्ता पर्वतादयो वा पुत्राः पालयितारो ययोस्ते (देवी=द्यावापृथिव्यौ भूमिसूर्यप्रकाशौ) १.१०६.३. देवा विद्वांसः पुत्रा ययोस्ते द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.२. [देव-पुत्रपदयोः समासे प्रथमा-द्विवचनम्]

देवप्सरस्तमम् देवैर्विद्वद्भिरतिशयेन ग्राह्यम् (वचः) १ ७५.१. [देव-प्सरस्पदयोः समासेऽतिशायने तमप्। प्सरः=रूपनाम निघं० ३.७.]

देवबन्धोः प्रकाशमानानां पृथिव्यादीनां सम्बन्धिनः (वाजिनः=जलादयः) १.१६२.१८. देवा विद्वांसो बन्धुवद् यस्य तस्य (अश्वस्य) २५.४१. [देव-बन्धुपदयोः समासः। बन्धुः=बन्धबन्धने (क्र्या०) धातोः 'शॄस्वृस्निहित्रपि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः प्रत्ययः]

देवभक्तम् देवैर्विद्वद्भिः सेवितम् (अपूपं=भोज्यपदार्थम्) १२.२६. देवैः सेवितम् (रत्नं=रमणीयं धनम्) ४.१.१०. [देव-भक्तपदयोः समासः। भक्तम्=भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

देवयजनम् देवानां विदुषां यजनं पूजनं तेभ्यो दानञ्च ४.१. देवैर्यदिज्यते येन वा देवानां यजनं देवयजनं तद् (ब्रह्म यज्ञो वा) १.३१. विद्वानों के यजन करने के समान, सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.१.३. **देवयजनात्**=देवा यजन्ति यस्मिन् तस्मात् (भा०—विद्वत्कार्याऽनुष्ठानात्) १.२६. **देवयजने**=देवानां विदुषां सङ्गतिकरणे, एतेभ्यो दाने वा ४.२२. देवा विद्वांसो यजन्ति यस्मिन् तस्मिन् (यज्ञमन्दिरे) ३७.३. विदुषां पूजने ३७.९. विद्वद्यजनाऽधिकरणे (यज्ञ-स्थाने) ३७.९. विदुषां पूजने स्थानविशेषे ३७.६. [देवोपपदे यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'करणाधिकरणयोश्च' अ० ३.३.११७ सूत्रेण ल्युट्। देवयजनम्=भौमं देवयजनम् गो० पू० २.१४. देवयजनं वै वरं पृथिव्यै ऐ० १.१३. ऋत्विजो देवयजनम् गो० पू० २.१४. श्रद्धा देवयजनम् गो० पू० २.१४. आत्मा देवयजनम् गो० पू० २.१४. ऋत्विजो हैव देवयजनं ये ब्राह्मणाः श० ३.१.१.५. एष हि पृथिव्या मूर्धा यद् देवयजनम् मै० ३.७.६. काठ० २४.१. दक्षिणतो वर्षीयसीं करोति, देवयजनस्यैव रूपमकः तै० सं० २.६.४.३. पृथिव्या ह्येष मूर्धा यद् देवयजनम् तै० सं० ६.१.८.२. ब्राह्मणा वाव

देवयजनम् काठ० २५.३. यत्र क्वचिद् ब्राह्मणो विद्यावान् मन्त्रेण करोति तद्देवयजनम् गो० १.२.१४. यद्वै (देवाः) तद्यज्ञम्विन्दꣳस्तद् देवयजनस्य देवयजनत्वम् मै० ३.८.१. वर्ष्म ह्येतत् पृथिव्या यद् देवयजनम् तै० सं० ६.२.६.३.]

देवयजनि देवा यजन्ति यस्यां सा (पृथिवी) १.२५. देवा यजन्ति यस्यां तस्याः, अ०—देवयजन्याः (पृथिवि=पृथिव्याः), प्र०—अत्र प्रातिपदिकनिर्देशानामर्थतन्त्रत्वात् षष्ठ्यर्थे प्रथमा विपरिणम्यते ३.५. [देवोपपदे यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोरौणादिको वाहु० अनिः प्रत्ययः। अथवा देवोपपदे यजतेर्ल्युट्, ततो ङीप्। छान्दसं ह्रस्वत्वम्। इयं वै पृथिवी देवी देवयजनी श० ३.२.२.२०.]

देवयजम् देवान् विदुषो दिव्यगुणान् वां यजति सङ्गतान् करोति येन यज्ञेन स देवयट्, तम्। भा०—दिव्यगुणप्रकाशकम् (अग्नि=विद्युदाख्यम्) प्र०—अत्र 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति सूत्रेण 'कृतो बहुलम्०' इति वार्त्तिकेन करणे विच्प्रत्ययः १.१७. [देवोपपदे यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' अ० ३.२.७५. सूत्रेण विच् कर्त्तरि। करणे तु 'कृतो बहुलम्' इति वार्त्तिकेन विच्]

देवयज्यया विदुषां सङ्गत्या सत्कारेण च १.११४.३. **देवयज्यायै**=देवानां विदुषां दिव्यगुणानां वा यज्या सत्क्रिया तस्यै, प्र०—'छन्दसि निष्टर्क्य०' अ० ३.१.१२३. इति देवयज्या शब्दो निपातितः १.१३. यथोत्तमगुणदानाय तथा, यथा दिव्यानां सङ्गतये तथा ५.४२. [देवोपपदे यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि निष्टर्क्यदेवहूय०' अ० ३.१.१२३. सूत्रेण यत् निपात्यते। स्त्रियां टाप्]

देवयज्याय देवानां समागमाय ७.३.६. [देवोपपदे यजतेर्धातोर्बाहु० औणादिको यः प्रत्ययः। देवयज्याय=देवयज्यायै नि० ६.२२. प्रजा वा उत्तरा देवयज्या तै० सं० ३.६.७.६. यस्य हि प्रजा भवत्यमुं लोकमात्मनैत्यथास्मिंलोके प्रजा यजते तस्मात् प्रजोत्तरा देवयज्या श० १.८.१.३१.]

देवयताम् आत्मनो देवान् विदुषः कुर्वंताम् (जनानाम्) १.१६०.२. कामयमानानाम् (जनानाम्) १७.६६. **देवयते**=देवान् कामयमानाय (सज्जनाय) ३.२६.१२. दिव्यान् गुणकर्म-स्वभावान् कामयमानाय (सज्जनाय) ३.१०.७. कुर्वंते शिल्पिने १.१५.१२. **देवयद्भिः**=दैवान् कामयद्भिः (सज्जनैः) ३.५.१. **देवयन्**=आत्मानं देवमिच्छन् (विद्वज्जनः) २.२६.१. **देवयन्तम्**=देवान् दिव्यगुणान् कामयमानम् (विद्वांसं मित्रजनम्) १.४१.८. **देवयन्तः**=आत्मनो देवान् विदुष इच्छन्तः (मनुष्याः) १.१७३.४. कामयमाना, गणित-विद्यां जानन्तो ज्ञापयन्तः (नरः=गणका जनाः) १.११५.२. प्रकाशयन्त आत्मनो देवमिच्छन्तो मनुष्याः १.६.६. विद्यावृद्धि की कामनायुक्त (कवयः=विद्वान् लोग), स० प्र० १०६, ३.८.४. देवान् विदुषः कामयन्तः (सज्जनाः) ७.२.५. कामयमानाः (राजप्रजाजनाः) ४.२.१७. देवानाचक्षाणाः (व्यवहाराः) ३.६.१. सत्यविद्याः कामयमानाः (मरुतः=आर्त्विजीना विद्वांसः) १.४०.१. [देवपदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृप्रत्ययान्तस्य रूपाणि। देवयन्तः=देवान् कामयमानाः नि० ८.१८.]

देवयतीनाम् आत्मनो देवान् दिव्यान् भोगान् गुणाँश्चेच्छन्तीनाम् (विशां=प्रजानाम्) १.३६.१. **देवयन्तीः**=दिव्यान् गुणान् विदुषो वा कामयन्तीः (विशः=प्रजाः) ३.६.३. देवान् विदुषः पतीन् कामयमानाः (कन्याः) ७.१०.३. कामयमानाः प्र०—अत्र 'वा छन्दसि' इति पूर्वसवर्णदीर्घः १.७७.३. [देवयद् इति व्याख्यातं पूर्वपदे। ततः स्त्रियां ङीप्प्रत्ययः]

देवयवः ये देवान् दिव्यान् भोगान् कामयन्ते ते (नरः=नेतारो जनाः) १.१५४.५. **देवयुवम्**=देवान् विदुषः कामयमानं विद्वांसम् (जनम्) ६.२८.२. देवान् कामयमानम् (विद्वज्जनम्) ५.३४.५. य आत्मनो देवान् कामयते तम् (जनं=प्रसिद्धं विद्वांसम्) ४.६.१. आत्मानं देवमिच्छन्तम् (जनम्) १.८३.२. देवान् विदुषो दिव्यगुणान्वा यौति प्राप्नोति प्रापयति वा तम् (यज्ञपतिम्=यज्ञस्य कामयितारं जनम्) १.१२. **देवयुः**=देवान् विदुषः कामयमानः (जनः) ५.४८.२. [देवपदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः प्रत्ययः। 'न छन्दस्यपुत्रस्य' अ० ७.४.३५. सूत्रेणेत्वं दीर्घत्वं च भवति। देवयवः=ऋत्विङ् नाम निघं० ३.१८. अथवा—देवोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः 'मृगय्वादयश्च' उ० १.३७. सूत्रेण कुः प्रत्ययः]

देवयानम् देवानां विदुषां यात्रासाधकम् (अश्वम्) १.१६२.४. देवानां प्रापणसाधनम् (अश्वम्) २५.२७. **देवयानात्**=देवा विद्वांसो यान्ति यस्मिँस्तस्मात् (भा०—विद्वन्मार्गात् ३५.७. **देवयानान्**=देवा विद्वांसो यान्ति

गच्छन्ति येषु तान् (पथः=मार्गान्), भा०—वाष्पयानान् २६.२. यान्ति यैस्तान् देवानां विदुषां गमनाऽधिकरणान् (अध्वनः=मार्गान्) १.७२.७. **देवयानाः**=याभिर्देवान् दिव्यान् भोगान् प्राप्नुवन्ति ताः (अघ्न्याः=गाः) १२.७३. **देवयाने**=यथा विदुषां गमनागमनाधिकरणे तथा (पथि=मार्गे) ५.३३. परमार्थ मार्ग में, आर्याभि० २.१८, ५.३३. **देवयानैः**=देवा विद्वांसो यान्ति येषु तैः (पथिभिः) भा०—धर्म्यमार्गैः २१.११. विद्वन्मार्गैः ७.३८.८. देवा धार्मिका विद्वांसो गच्छन्ति येषु तैः (पथिभिः=मार्गैः), भा०—विद्वत्सङ्गयोगाभ्यासधर्माऽऽचारैः १८.६०. विद्वांसो यान्ति यैर्धर्म्यैः (पथिभिः), भा०—धार्मिकाणां विदुषां मार्गैः ६.१८. देवा विद्वांसो यान्ति यैस्तैः (मार्गैः) ३.५८.५. आप्ता विद्वांसो गच्छन्ति येषु तैः (पथिभिः=मार्गैः) ५.४३.६. देवा आप्ता विद्वांसो यान्ति यैस्तैः (मार्गैः) १६.५८. [देवयानपदयोः समासः। यानम्=या प्रापणे (अदा०) धातोः करणेऽधिकरणे वा कारके ल्युट् प्रत्ययः। 'देवयानाः' प्रयोगे देवोपपदे या प्रापणे धातोः 'छन्दसि गत्यर्थेभ्यः' अ० ३.३.१२९. सूत्रेण युच्प्रत्ययः। ततः स्त्रियां टाप्। देवयाना-वै ज्योतिष्मन्तः पन्थानः ऐ० ३.३८. त्रयो वै देवयानाः पन्थानः गो० उ० २.१.१. तै० सं० २.५.११.६. ये चत्वारो पथयो देवयानाः अन्तरा द्यावा-पृथिवी वियन्ति तै० सं० ५.७.२.३. यमाहुरर्य्यम्न पन्था इत्येष वाव देवयानः पन्थाः तां० १२.१२.३. वागु देवयानः (पन्थाः) जै० २.२९८. यो देवयानः पन्थास्तेन यज्ञो देवान् अप्येतु तै० सं० १.६.३.२. बर्हिर्यजति, य एव देवयानाः पन्थानस्तेष्वेव प्रतितिष्ठति तै० सं० २.६.१.३. तस्य वा एतस्य संवत्सरस्याग्निष्टोमसामान्येव देवयानः पन्थाः जै० २.६०. एष वाव देवयानः पन्था यत् पृष्ठ्यः षडहः जै० २.४३३.]

देवयावा यो देवान् दिव्यगुणान् भोगान् याति प्राप्नोति सः (अग्निः=पावक इव विपश्चित्, ७.१०.२. [देव-यावन्पदयोः समासः। यावन्=या प्रापणे (अदा०) धातोः 'आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च' अ० ३.२.७४. सूत्रेण वनिप्प्रत्ययः]

देवयाः देवान् दिव्यान् गुणान् विदुषो वा याति प्राप्नोति येन सः (यज्ञः) १.१७७.४. ये देवान् दिव्यान् गुणान् यान्ति ते (प्राणाः) १.१६८.१. देवान् विदुषो यज-मानः पूजयन् (विप्रः=मेधावी जनः) ३.८.५. या देवान् विदुषो यान्ति ताः (वाचः=वाण्यः) ५.७६.१. नियताऽऽत्मा (विप्रः=मेधाविजनः) ३.८.५. [देवोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः। देवया=देवेज्या नि० १२.५. अत्र देवोपपदे यजतेर्ण्विन् प्रत्ययश्छान्दसः]

देवयूनि देवान् दिव्यान् गुणान् कुर्वन्ति (शोचींषि=तेजांसि) ७.४३.२. [देवोपपदाद् या प्रापणे (अदा०) धातोः 'मृगय्वादयश्च' उ० १.३७. सूत्रेण कुः प्रत्ययः। देवयुशब्दस्य नपुंसके प्रथमाबहुवचने रूपम्]

देवरम् द्वितीयं वरं नियोगेन प्राप्तम्, प्र०—देवरः कस्मात्? द्वितीयो वर उच्यते, नि० ३.१४, १.४०.२. देवर को, स० प्र० १०.४०.२. द्वितीयं वरम्, ऋ० भू० २११, ऋ० ७.८.१८.२. [दिवु क्रीडाद्यर्थेषु (दिवा०) धातोः 'अर्त्तिकमिभ्रमिचमि०' उ० ३.१३२. सूत्रेण अरः प्रत्ययः। दीव्यति क्रीडादिकं करोतीति देवरः। विधवाया द्वितीयः पतिः पत्युः कनिष्ठभ्राता। देवरः कस्मात्? द्वितीयो वर उच्यते नि० ३.१४.]

देवृषु मेरे भाई जो तेरे देवर ज्येष्ठ अथवा कनिष्ठ हैं, उनमें। सं० वि० १३५, १०.८५.४६. [दिवु क्रीडाव्यवहार-द्युतिस्तुतिमोदमदादिषु (दिवा०) धातोः 'दिवेर्ऋ' उ० २.९९. सूत्रेण ऋप्रत्यये देवृशब्दः। दीव्यति क्रीडादिकं करोतीति देवा, पत्युः कनीयान् भ्राता वा]

देवलोकम् देवानां विदुषां लोकं दर्शकं व्यवहारम् २९.१०. **देवलोकाय**=देवानां दर्शनाय ३०.१२. [देव-लोकपदयोः समासः। अथवा-देवोपपदे लोकृ दर्शने (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्प्रत्ययः। लोकः=लोकृ दर्शने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अच्, भावे वा घञ्प्रत्ययः। देव-लोकः त्रयो वै देवलोकाः गो० उ० १.१. सप्त वै देव-लोकाः ऐ० २.१६. चतस्रो दिशस्त्रय इमे लोका एते वै सप्त देवलोकाः श० १०.२.४.४. एकविंशतिर्वै देवलोकाः। द्वादशमासाः पञ्चर्त्तवः। त्रय इमे लोकाः। असावादित्य एकविंशः तै० ३.८.१०.२. वेदिर्वै देवलोकः श० ८.६.३.६. देवलोको वा एष यद् विषुवान् तां० ४.६.२. उत्तरो वै देवलोकः क्ष० १२.७.३.७. देवलोको वा इन्द्रः कौ० १६.८. देवलोको वा आदित्यः कौ० ५.७. विद्यया देवलोकः (जय्यः) श० १४.४३.२४. अन्तर्हितो हि देवलोको मनुष्य-लोकात् तै० सं० ६.१.१.१. उदञ्चं प्राञ्चं प्रश्रयत्येष वै देवलोकः काठ० २६.३. एते ह वाव द्वादश देवलोकाः जै० २.६. त्रयस्त्रिंशद् देवलोकाः जै० २.२१०. नव देव-लोकाः तै० सं० २.५.११.६. स्वराड् वै देवलोकः जै० २.१९६.]

देववतः प्रशस्तगुण-विद्वद्युक्तस्य (गोः=धेनोः भूमेर्वा)

७.१८.२२. **देववन्तम्**=देवा विद्वांसो विद्यन्ते सम्बन्धे यस्य तम् (प्रजाजनम्) ६.४७.१०. **देववान्**=बहवो देवा विद्वांसो विद्यन्ते यस्य सः (राजा) ४.२६.६. [देवप्राति० प्रशंसायां भूम्नि वा मतुप्प्रत्ययः]

देववाततमाः येऽतिशयेन देवान् विदुषः पदार्थान् वा प्राप्नुवन्ति ते (सत्पुरुषाः) ६.२९.४. [देव-वातपदयोः समासेऽतिशायने तमप् । वातः=वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोरौणादिको बाहुलकात् क्तः प्रत्ययः]

देववाता देवैर्विद्वद्भिः कृता (शस्तिः=प्रशंसा) ४.३.१५. [देव-वातपदयोः समासे स्त्रियां टाप् । वातः=वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

देववातः देवो दिव्यो वातः प्रेरको यस्य सः (अग्निः=पावकः) ३.२३.२. **देववाताः**=ये देवैर्विद्वद्भिः सह वान्ति ते (गिरः=सुशिक्षिता वाचः) ३.२०.२. [देव-वातपदयोः समासः । वातः=वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकः क्तः प्रत्ययः कर्त्तरि]

देववाहनः यो देवान् दिव्यान् वेगादिगुणान् वाहयति प्रापयति सः (अग्निः=पावकः) ३.२७.१४. [देवोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति बहुलवचनात् कर्त्तरि ल्युट् । 'कव्यपुरीषपुरीष्येषु ञ्युट्' अ० ३.२.६५. सूत्रेण वा छन्दसि देवोपपदेऽपि वह धातोर्ञ्युट् प्रत्ययः । मनो वै देववाहनम् श० १.४३.६.]

देववीतमः यो देवान् दिव्यान् गुणान्, विदुषो वेति व्याप्नोति, प्राप्नोति सोऽतिशयितः (अग्निः=विद्वज्जनः) ३८.१७. यो देवान् विदुषो व्याप्नोति सोऽतिशयितः (सभापतिः) १.३६.९. देवैर्विद्वद्भिः कमनीयतमः (अध्यापको जनः) ११.३७. [देवोपपदे वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विबन्तादतिशायने तमप्प्रत्ययः]

देववीतये देवेषु दिव्यगुणेषु व्याप्तये २.२३.७. दिव्यगुण-प्राप्तये ६.१५.१८. देवानां दिव्यानां गुणानां भोगानां वा प्राप्तये ५.९. भा०—धर्माऽर्थकामसिद्धये २२.१३. देवानां विदुषां दिव्यगुणानां वा नीतिर्ज्ञानं, प्रापणं, प्रजनं, व्याप्तिः, प्रकाशोऽन्येभ्य उपदेशनं, विविधभोगो या यस्यां तस्यै (क्रियायै) प्र०—वी गतिव्याप्तिप्रजन-कान्त्यसनखादनेषु । भा०—दिव्यसुखसम्पादनाय १.१५. दिव्यानां गुणानां व्याप्तये ३७.१८. देवानां दिव्यगुणानां भोगानां च वीतिर्व्याप्तिस्तस्यै १.१२.९. विद्वत्प्राप्तये ३.२१.२. **देववीतिम्**=विदुषां वीतिं विशिष्टां नीतिम् १.११३.१२. **देववीतौ**=देवैर्विद्वद्भिर्व्याप्तायां क्रियायाम् ५.४२.१०. देवानां वीतिः प्राप्तिर्यस्मिन् व्यवहारे तस्मिन् ७.१९.४. देवानां वीतिर्व्याप्तिस्तस्याम् ३.१७.५. [देव-वीतिपदयोः समासः । वीतिः=वी गति व्याप्ति प्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोः 'मन्त्रेवृषेषपचमन०' अ० ३.३.९६. सूत्रेण स्त्रियां क्तिन्प्रत्ययः]

देवव्यचस्तमम् देवैर्विद्वद्भिर्व्यचो व्याप्तं तदतिशयितम् (शर्म=गृहम्) १.१४२.५. **देवव्यचस्तमः**=यो देवान् पृथिव्यादीन् धरति भिनत्ति च सोऽतिशयितः (यज्ञः) ५.२२.२. यो देवेषु दिव्येषु पदार्थेष्वतिशयेन व्याप्तः (यज्ञः=सत्यव्यवहारः) ५.२६.८. [देव-व्यचस्पदयोः समासे कृतेऽतिशायने तमप्प्रत्ययः । व्यचस्=व्यच् व्याजीकरणे (तुदा०) धातोरौणादिकोऽसुन् । 'व्यचेः कुटादित्वमनसि' इति वा० सूत्रेण ङित्वनिषेधान् 'ग्रहिज्यादिना०' सम्प्रसारणं न भवति]

देवव्यचाः यो देवान् पृथिव्यादीन् व्यचति व्याप्नोति सः (अग्निः) ३.४.४. [देवोपपदे व्यच् व्याजीकरणे (तु०) धातोरौणादिकोऽसुन्]

देवशत्रवः देवानां विदुषामरयः (दुर्जनाः) ६.५९.१. [देव-शत्रुपदयोः समासः]

देवशः देवान् (विदुषो जनान्) ३.२१.५. [देवप्राति० 'वा छन्दसि' इति शस्]

देवशिष्टे देवस्य जगदीश्वरस्य शासनं नियमं प्राप्ते (रात्र्युषसौ) १.११३.३. [देव-शिष्टपदयोः समासः । शिष्टः=शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोः क्तः]

देवश्रवः ! यो देवेभ्यो विद्वद्भ्यः श्रृणोति तत्सम्बुद्धौ (शिल्पिजन) ३.२३.३. **देवश्रवाः**=देवान् य श्रृणोति सः (जनः) ३.२३.२. [देवोपपदे श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः]

देवश्रीः श्रीयते या सा श्रीर्देवेषु विद्यते यस्य सः (अ०—यजमानः) १७.५६. [देव-श्रीपदयोः समासः । श्रीः=श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'क्विप् वचिप्रच्छि०' उ० २.५७ सूत्रेण क्विप्-प्रत्ययो दीर्घश्च]

देवश्रुत् यो देवान् विदुषः श्रृणोति सः, भा०—सर्वश्रोता (देवः=जगदीश्वरः) ३७.१८. **देवश्रुतः**=या देवान् श्रृण्वन्ति ताः (अन्वये प्रजाः) ६.३०. **देवश्रुतौ**=यथा दिव्यौ विद्याश्रुतौ विद्वांसौ ५.१७. [देवोपपदे श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्प्रत्ययः । देवश्रुतम्=देवा एनं श्रृण्वन्ति नि० २.१२.]

देवसख देवानां विदुषां सुहृत् (भा०—हे विद्वन् जन) २३.४६. [देव-सखिपदयोः समासः]

देवसदम् देवेषु धार्मिकेषु विद्वत्स्ववस्थितम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ६.२. [देवोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्]

देवसेनानाम् विदुषां सेनानाम् १७.४० [देव-सेनापदयोः समासः]

देवस्तुतः देवैर्विद्वद्भिः प्रशंसितः (रथस्पतिः=शिल्पी जनः) ५.५०.५. [देव-स्तुतपदयोः समासः]

देवहविः देवेभ्यो हविरिव ६.१०. यथा देवानां हविरादातुमर्हं चरित्रमस्ति तथा ६.८. [देव-हविष्पदयोः समासः हविष्=हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'अर्चिशुचिहुसृपि०' उ० २.१०८. सूत्रेण इसिः प्रत्ययः]

देवहितम् देवेभ्यो हितकारिणम् (वाजं=विज्ञानम्) ६.१७.१५. देवेभ्यो विद्वद्भ्यो हितकारि (ब्रह्म=जगदीश्वरः) ५.४२.२. देवेभ्यो विद्वद्भ्यो हितम् (आयुः=जीवनम्) १.८६.८. देवेभ्यो हितं, दिव्यगुणवतां धर्मात्मनां, विदुषां, स्वसेवकानां च हितकारि (ब्रह्म), पं० वि०, ३६.२४. देवेभ्यो हितकरम् (सोमम्=ऐश्वर्यम्) ४.३७.३. देवेभ्यः प्रियम् (सदः=स्थानम्) १६.७. इन्द्रियों और विद्वानों के हितकारक (आयु) को, आर्याभि० २.२७, २५.२१. देव अर्थात् विद्वानों के लिए वा मन आदि इन्द्रियों के लिए हितकारक मोक्षादि सुख का दाता (ब्रह्म), आर्याभि० २.३७, ३६.२४. [देव-हितपदयोः समासः । हितम्=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः । 'दधातेर्हिः' इति हिरादेशः]

देवहूतमम् देवैर्विद्वद्भिः स्तूयते शब्द्यते सोऽतिशयितस्तम्, भा०—विद्वद्भिः स्तोतव्यम् (अ०—अग्निम्=ईश्वरं भौतिकं वा), प्र०—'ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च इत्यस्य रूपम् १.८. **देवहूतमः**=देवैर्विद्वद्भिरतिशयेन प्रशंसितः (अग्निः=विद्वान् राजा) ३.१३.६. **देवहूतमान्**=ये देवैर्विद्वद्भिर्हूयन्ते स्तूयन्ते तेऽतिशयितास्तान् (अश्वान्) ३३.४. देवैर्विद्वद्भिः स्पर्द्धितान् (अश्वान्) १३.३७. **देवहूः**=यो देवान् विदुष आह्वयति सः, आ०—आप्तैर्विद्वद्भिरुपास्यते यः सः (यज्ञः=ईश्वरः) १७.६२. [देवोपपदे ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्विप् । यजादित्वात्संप्रसारणम् । ततोऽतिशायने तमप्]

देवहूतिभिः विदुषां वेदानां वा वाग्भिराह्वानान्याहूतयस्ताभिः १.१२.१२. देवैः प्रशंसिताभिर्वाग्भिः ७.१४.१. **देवहूतिम्**=देवैराहूताम् (वषट्कृतिं=सत्यक्रियाम्) ७.१४.३. **देवहूतिः**=देवा विद्वांसः आह्वयन्ति यया सा (वाक्) ६.६५.५. देवैर्विद्वद्भिः प्रशंसिता (वाक्) ६.३८.२. **देवहूतौ**=देवानामाह्वाने ६.७३.२. दिव्यगुणानां विदुषां वा सङ्ग्रहणे ६.५२.४. [देव-हूतिपदयोः समासः । हूतिः=ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् देवहूतिदेवहूतयः, ये देवान् आह्वयन्ते नि० ५.२५.]

देवहेडनम् देवानां हेडनमनादरम्, भा०—विदुषोऽनादरम् २०.१४. देवानां विदुषा मनादराऽऽख्यम् (व्यवहारम्) ७.६०.८. [देव-हेडनपदयोः समासः । हेडनम्=हेडृ अनादरे (भ्वा०) धातोर्भावे ल्युट्]

देवाच्या या देवानञ्चति तया (प्रशंसया) १.१२७.१. (देवोपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विन् । 'अनिदिताम्०' इति नलोपे 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति दीर्घः पूर्वपदस्य । 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' अ० ४.१.६. वा० सूत्रेण ङीप् । 'विष्वग्देवयोश्चटेरद्र्यञ्चतौ वप्रत्यये' अ० ६.३.९०. सूत्रेण टिस्थाने प्राप्तस्य अद्रेरादेशस्याभावश्छान्दसः]

देवायुवम् या देवान् पृथिव्यादीन् दिव्यगुणान् विदुषो वा यावयति ताम् (वाचं=वाणीम्) ३७.१६. [देवोपपदे यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्विप् । 'वा छन्दसि' अ० ६.१.१०७. वा० सूत्रेण पूर्वैकादेशो न भवति । पूर्वपदस्य दीर्घः संहितायाम्]

देवावान् बहवो देवा विद्वांसो विद्यन्ते यस्य सः (राजा) ४.२६.६. [देव प्राति० भूम्नि मतुप् । छान्दसो दीर्घश्च]

देवावीः यो देवानवति सः (अग्निः=विद्वान् जनः) ३.२९.८. देवैः रक्षितः शिक्षितश्च (विद्वज्जनः) ११.३५. **देवाव्यम्**=उक्तानां देवानां पालकम्, भा०—यज्ञकर्माऽनुष्ठातारं वीरपुरुषम् (सेनापतिम्) ७.२२. विद्वद्-रक्षकम् (सेनापतिम्) ७.२३. यो देवानवति स देवावीस्तम् (सभापतिं पूर्णविद्यमुपदेशकं वा), प्र०—'अवि-तॄ-स्तॄ-तन्त्रिभ्य ईः' उ० ३.१५८. इति रक्षणाद्यर्थदिव-धातोरीः प्रत्ययः; ब्रह्मविदां तर्पकम् (विद्वांसं सभापतिम्), एतद्दिव्यविद्या-व्यापकम् (शिल्पिनं जनम्) दिव्यविद्याबोधकम् (विद्वांसं जनम्); प्रशस्तयोगविद्याप्रापकम् (सभापतिम्) ७.२३. देवान् दिव्यान् विदुषो गुणान् वाऽवन्ति येन स देवावीस्तम् (यज्ञं=विद्याधर्मसङ्गमयितारं व्यवहारम्), प्र०—अत्रौणादिक ई-प्रत्ययः ११.८. [अवीः=अव रक्षणगतिकान्ति-

प्रीत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अवितृस्तृतन्त्रिभ्य ईः' उ० ३.१५८ सूत्रेण ईः प्रत्ययः । देव-अवीपदयोः समासः]

देवासः ये दीव्यन्ति विद्यादिगुणैः प्रकाशन्ते तत्सम्बुद्धौ= (भा०—परमविद्वांसो जनाः) ४.५. प्र०—अत्र 'आज्जसेरसुक्' इत्यसुगागमः १.१९.३. विद्वांसः शूराः (जनाः) ३.२९.९. प्रशस्ता विद्वांसः (जनाः) १.८३.२. विद्यां कामयमानाः (सज्जनाः) ३.२.३. प्राणा इव विद्वांसः (जनाः) ७.५९.१. दिव्यस्वभावा विद्यार्थिनः ७.१७.६. विद्याभिः प्रकाशमानाः (सर्वविद्वांसः) २.४१.१५. दिव्यगुणाः १.१२३.१. दिव्यगुणविशिष्टाः (मरुद्गणाः=मरुतां समूहाः) १.२३.८. दिव्यगुणयुक्ताः (प्राणादयः) ७.१९. हे राजसभासदो विद्वांसः, अ०—राजसभायाः सभ्या जनाः ७.१९. दिव्यगुणाः पृथिवी-चन्द्रादयः प्रकाशिताः १.१९.६. [देव प्राति० जसोऽसुगागमः । देव इति व्याख्यातम्]

देवि दिव्यगुणैर्विराजमानायाः (अ०—वाचो विद्युतो वा) प्र०—अत्र 'अर्थाद्विभक्तेर्विपरिणामः' इति विभक्तेर्विपरिणामः ४.२३. देदीप्यमाने (स्त्रि) १३.२१. दिव्यगुणे स्त्रि १.४८.१५. हे दिव्य कमनीय (शाला) सं० वि० १६६, अथर्व० ९.२.३.७. दात्रि (स्त्रि) १.१२४.१२. विद्यासुशिक्षाभ्यां द्योतमाने (कन्ये) १.४८.१. विदुषि कुमारि ३४.११. देदीप्यमाना (अ०—वाग्विद्युद् वा) ४.२०. कामयमाने (विदुषि मातः) ६.६१.६. सुलक्षणैः सुशोभिते (कन्ये) १.१२३.३. विद्यायुक्ते (पत्नि !) ११.६९. सुशोभिते (विदुषि स्त्रि) ३.६१.२. **देवी**=देदीप्यमाने (उषासानक्ता=रात्रिदिने इवाऽध्यापिकाऽध्येत्र्यौ स्त्रियौ) २८.३७. दात्र्यौ (ऊर्जाहुती=सुसंस्कृताऽन्नाहुती) २८.३९. दिव्यगुणे (रोदसी=प्रकाशभूमी) ६.५०.५. दिव्यगुण-सम्पन्ने (दुर्ये=गृहरूपे) ५.१७. दिव्यगुण-कर्म-स्वभावयुक्ते (द्यावापृथिवी=प्रकाशभूमी) ३.२५.३. दिव्यगुणयुक्ते द्यावापृथिव्यौ भूमिसूर्यप्रकाशौ १.१०६.३. दिव्यगुण-प्रापिके (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २८.१६. कमनीये (दुघे=प्रातः सायंवेले) २१.५२. **देवी**=दिव्या स्त्री १२.६५. सकलविद्या-धर्माचरणेन प्रकाशमाना, भा०—पूर्ण-विद्यावती स्त्री (वैश्वदेवी) १९.४४. दिव्यशिक्षा-शास्त्र-विद्याभिर्देदीप्यमाना (धिषणा=प्रज्ञा) १.१०९.४. देदीप्यमाना विदुषी माता ४.५५.७. दिव्यगुणयुक्ता (अदितिः=विद्या) १.१०६.७. प्रकाशदात्री (सरस्वती=स्त्री) २१.५१. दिव्यगुण-शास्त्र-बोधयुक्ता (विदुषी स्त्री) ५.४३.११. सुखदात्री (स्वसदृशी विदुषी स्त्री) १.४८.३. दिव्यगुणा (धिषणा=प्रज्ञेव वर्त्तमाना स्त्री) २७.२४. दिव्यगुणैर्वर्त्तमाना स्त्री १.५६.४. सूर्यज्योतिः ऋ० भू० २०२, ऋ० ८.१.२३.७. विदुषी (अदितिः=अध्यापिका) ११.६१. प्रकाशमाना (उषाः) १.९२.१०. दिव्या (वाक्=वाणी) ८.३७. पतिव्रता विदुषी स्त्री २८.३९. धर्मात्मा स्त्री २८.३८. **देवीम्**=देदीप्यमानां विदुषीं (स्त्रियम्) ४.४३.१. दिव्यां प्रज्ञाम् ५.६९.३. दिव्यगुणकर्मस्वभावाम् (इळम्=वाचम्) ७.४४.२. देदीप्यमानां विद्वद्भिः कमनीयाम् (धियं=धारणावतीं प्रज्ञाम्) ३.१८.३. द्योतिकाम् (उषसम्) १.११५.२. **देवीः**=देव्यः (आपः=जलानि); सर्वप्रकाशकः, सर्वानन्दप्रदः सर्वव्यापक ईश्वरः, ऋ० भू० ३०८, ३६.१२. दिव्याः (आपः=जलानि) ३६.१२. दिव्यगुणप्रदाः (स्त्रियः) ११.६१. देदीप्यमानाः (वाङ्नाडीधारणशक्तयः) २०.४३. दिव्यविद्यासम्पन्ना (ग्नाः=वेदवाग्ज्ञाः स्त्रियः) ११.६१. विद्यायुक्ताः (स्त्रियः) ११.६१. कमनीयाः (स्त्रियः) ११.६१. विद्यादिगुणैः प्रकाशमानाः (सुपत्नीः=शोभनाः पत्नीः) २०.४०. विदुष्यो ब्रह्मचारिण्यः (कन्याः) ७.४७.३. आनन्दप्रदाः (नद्यः) ७.५०.४. प्रमोदिकाः (आपः=जलानि) ७.४९.१. देव्यो देदीप्यमानाः (वाक्, पृथिवी, प्रशस्त ज्ञानयुक्ता वाण्यः) ३.४.८. दिव्यगुणकर्मस्वभावाः (स्त्रियः) ४.५१.५. दिव्यरूपसुशीलाः (आपः=कन्याः) १२.३५. दिव्या विदुषीः (मातरः=जनन्यः) १२.७८. देदीप्यमानानि (द्वारः=द्वाराणि) २७.१६. देव्यः (आपः=जलानि), सर्वप्रकाशकस्सर्वानन्दप्रद ईश्वरः, पं० वि० २१२, ३६.१२. दिव्याः शुद्धाः (पत्नीः) ५.५.५. कमनीयाः (वाचः) १.१४२.६. दिव्यविद्यायुक्ताः (विदुष्यः स्त्रियः) १.१२४.१३. दिव्यगुणसम्पन्नाः (अ०—देव्य आपः), प्र०—'वाच्छन्दसि' इति जसः पूर्वसवर्णत्वम् ४.१२. दिव्यसुखप्रदाः शुद्धाः (आपः=जलानि) ६.१०. सद्विद्याप्रकाशवत्यः (अ०—विदुष्यः स्त्रियः) ६.१३. दिव्या विदुष्यो ब्रह्मचारिण्यः स्त्रियः १७.५४. विद्वान् नरों की विदुषी स्त्रियां, सं० वि० १०४, २.३५.५. द्योतमानाः (द्वारः=द्वाराणि) १.१३.६. देदीप्यमाना दिव्यगुणहेतवः (इडा-सरस्वती-महीनीतयः) १.१३.९. दिव्यगुणत्वेन दिव्यगुणप्रापिकाः (आपः=जलानि) १.२३.१८. दिव्यगुणयुक्ताः (आपः=जलानि), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्' इति पूर्वसवर्णादेशः १.१२. विद्यया प्रकाशिताः (जननी, अध्यापिकोपदेष्ट्री च) २१.५४. दिव्याः श्रियः २८.१८. देवानां विदुषामिमाः स्त्रियो देव्यः १.२२.११. त्रिविधा वाणीः (इडा, सरस्वती-भारती) २९.८. दात्र्यः (भा०—त्रिविधा वाचः) २८.३१. शुद्धा रोगनाशिकाः (आपः=जलानि) सकलविद्या-प्रकाशिकाः (इडा-सरस्वती-

भारती वाण्यः) २८.८. दिव्यानि पवित्राणि (अपः=जलानि) ११.३८. दैव्याः क्रियाः २८.१८. [दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (दिवा.) धातोः पचादिषु 'देवट्' इति पाठाद् इगुपधलक्षणं क प्रत्ययं बाधित्वाऽच्प्रत्यये टित्वान् ङीप् । देवीः=देव्यः नि० १२.४५. देवी इयं वै पृथिवी देवी देवयजनी । श० ३.२.२.२०. प्राणो वा अपानो व्यानस्तिस्रो देव्यः ऐ० २.४. अथैषः कः प्रजापतिस्तद्यद्देव्यश्च कश्च तस्माद् देविकाः पञ्च भवन्ति पञ्च हि दिशः श० ६.५.१.३६. ता वाऽएता देव्यः । दिशो ह्येताः श० ६.५.१.३६. छन्दांसि देव्यः श० ६.५.१.३६. अन्तरिक्षं देवी जै० उ० ३.४.८. तिस्रो देवीरिडा मही भारती…… मै० ३.११.११. तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्त्विडा सरस्वती भारती मही गृणाना तै० सं० ४.१.८.२-३. वाग्वै तिस्रो देवीः मै० १.१०.६.]

देवितमे! अतिशयेन विदुषि (सरस्वति स्त्रि) २.४१.१६ [देवी प्राति० अतिशायने तमप् । ततष्टाप् । 'घरूप कल्प०' अ० ३.३.४३. सूत्रेण पूर्वस्य ह्रस्वः]

देवृकामा देवर की कामना करने वाली (स्त्री), स० प्र० १५२, अथर्व० १४.२.१८. देवर से नियोग करने वाली (स्त्री), पत्र० वि०, अथर्व० १४.२.१७. नियोगेन द्वितीयवरस्य कामनावती (स्त्री), ऋ० भू० ५३२, अथर्व० १४.२.१८. देवर की कामना करती हुई अर्थात् नियोग की भी इच्छा करने हारी (स्त्री), सं० वि० १३८, १०.८५.३. ['देवृ' इत्युपपदे कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोः 'कमेर्णिङ्' इति णिङ् प्रत्ययान्ताद् 'शीलिकामिभक्ष्याचरिभ्यो णः०' अ० ३.२.१ वा० सूत्रेण् णः । ततः स्त्रियां टाप् । देवृ=दिवु क्रीडाद्यर्थेषु (दिवा०) धातोः 'दिवेॠ' उ० २.९९. सूत्रेण ऋ प्रत्ययः]

देवेद्धेषु देवैरिद्धेषु प्रज्वलितेषु (अग्निषु) ७.१.२२. [देव-इद्धपदयोः समासः। इद्धः=त्रिइन्धी दीप्तौः धातोः क्तः]

देवेभिः दिव्यैः पृथिव्यादिभिः ३४.४७. दिव्यगुणैः (जनिभिः=जन्मभिः) २६.२४. दिव्यगुण-कर्म-स्वभावैर्विद्वद्भिः ३.२४.४. दिव्याभिः प्रकाशयुक्ताभिः प्रजाभिः १७.२९. दिव्यगुणैः पदार्थैरिव विद्वद्भिः ३.१०.४. सूर्यादिभिर्दिव्यैर्वा (जनिभिः=जन्मभिर्जनकैर्वा) ६.५०.१३. विद्वद्भिः (जनैः) ७.५. जिगीपुभिर्वीरैः (जनैः) १.१८८.१. दिव्यैरवादिभिः पदार्थैः सह १.५९.१. धार्मिकैः सभ्यैर्विद्वद्भिः सह ३.४०.३. दिव्य गुणों के साथ, आर्याभि० १.५, ऋ० १.१.१.५. [देव प्राति० भिस ऐसादेशोच्छान्दसत्वान्न भवति]

देवोदेवः विद्वान् विद्वान् (जनः) ५.४२.१६. [देवपदस्य वीप्सायां द्विवचनम्]

देव्यम् देवेषु विद्वत्सु भवम् (वर्पः=रूपम्) १.१४०.७. **देव्यौ**=देवेषु विद्वत्सु कुशलौ (अध्वर्यू=विद्वांसौ) ३३.७३. देवेषु दिव्येषु विद्वत्सु गुणेषु वा कुशलौ (मनुष्यौ) ३३.३३. [देवप्राति० भवार्थे 'भवे छन्दसि' अ० ४.४.११०. सूत्रेण यत् । 'तत्र साधु' रिति वा यत्]

देव्यः देदीप्यमानाः (अ०—विदुष्यः स्त्रियः) ३७.४. **देव्या**=देदीप्यमानया (धिया=प्रज्ञया कर्मणा वा) ३३.९१. दिव्यगुणसहितया विद्यायुक्तया सेनया १.५३.५. शुद्धविद्याशिक्षाऽऽपन्नया (धिया=प्रज्ञया क्रियया वा) ११.४१. **देव्याम्**=विदुष्याम् (स्त्रियाम्) २.४१.१७. **देव्याः**=दिव्यसुखप्रापिकायाः (उषसः=प्रभातवेलायाः) ४.१.१७. **देव्यै**=दिव्यायै (शूरवीरायै राज्यै) ६.७५.१५. [देवी-शब्दस्य रूपाणि । 'देवी' इति व्याख्यातम्]

देशे स्वनिवासे स्थाने ३४.११. [दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः 'अकर्त्तरि च कारके०' इति सूत्रेण कर्मणि घञ्-प्रत्ययः]

देष्णम् दातुं योग्यम् (धनादिकम्) ७.३२.२१. दातव्यम् (धेनुं=वाचम्) ६.६३.८. **देष्णस्य**=दातुः (इन्द्रस्य=सुखप्रदातुर्जनस्य) ३.३०.१९. **देष्णे**=दातुं योग्ये (उक्थे=वक्तव्ये) ४.२०.१०. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्बाहु० औणादिक इष्णुच्-प्रत्ययः । वर्णव्यत्ययेन उकारस्याकारादेशः]

देष्म देयास्म, प्र०—डुदाञ् दाने इत्यस्मादाशीर्लिङ्युत्तमबहुवचने 'लिङ्याशिष्यङ्' इत्यङ् 'छन्दस्युभयथा' इति मस आर्धधातुकसंज्ञामाश्रित्य सकारलोपाऽभावः, सार्वधातुकसंज्ञामाश्रित्य 'अतो येयः' इतीयादेशश्च २.३२.]

देहत् वर्धये ७.५०.२. [दिह उपचये (अदा०) धातोर्लेट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न भवति]

देहि दीजिये, आर्याभि० २.३३, ३.१७. देहि ददाति वा २.२६. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लोटि मध्यमैकवचनम् । 'घ्वसोरेद्धाव् अभ्यासलोपश्च' इति सूत्रेण हौ परे एकारादेशोऽभ्यासलोपश्च]

देह्यः उपचेतुं योग्यः (इन्द्रः=राजा) ६.४७.२. उपचेतुं वर्धयितुं योग्यः (सर्वपूज्यो राजा) ७.६.५. [दिह उपचये (अदा०) धातोर्ण्यत् प्रत्ययः]

दैवताय धनसम्बन्धिने (सवित्रे=ऐश्वर्योत्पादकाय पुरुषाय) २९.६०. [देवताशब्दात् 'तस्येदम्' इति सूत्रेण

अण् प्रत्ययः । देवता=देवप्राति० 'देवात् तल्' इति तल्-प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्]

दैवम् देव आत्मनि भवम्, देवस्य जीवात्मनः साधनमिति वा (मनः=सङ्कल्पविकल्पात्मकमन्तःकरणम्), भा०–परमेश्वराज्ञासेवनं, विद्वत्सङ्गमनेकविधसामर्थ्ययुक्तं मनः ३४.१. देव अर्थात् आत्मा का मुख्य साधन, भूत भविष्यत् वर्त्तमान काल का ज्ञाता (मन) आर्याभि० २.४३, ३४.१. दिव्यगुणयुक्त (मनः=मन) **स०** प्र० २४६, ३४.१. ज्ञानादिदिव्यगुणयुक्तम् (मनः) ऋ० भू० १५२, ३४.१. **दैवेन**=देवेन निर्मितेन (सूर्येण) ३७.१४. [देव इति व्याख्यातम् । ततो भवार्थेऽण्प्रत्ययः । 'तस्येदम्' इति वा अण्-प्रत्ययः । अथवा देवप्राति० प्राग्दीव्यतीयेष्वर्थेषु 'देवाद् यञ् अञौ' अ० ४.१.८५. वा० सूत्रेण अञ्प्रत्ययः । बृहन्तः (पशवः) दैवाः मै० ३.१३.११.]

दैववातम् देवैर्विज्ञातानां सम्बन्धिनम् (अग्निं=पावकम्) ३.२३.३. **दैववाताय**=दिव्यवायुविज्ञानाय ६.२७.७. **दैववाते**=देवानां प्राप्ते भवे (सृञ्जये=सङ्ग्रामे) ४.१५.४. [देव-वातपदयोः समासे 'तस्येदम्' इति सूत्रेण अण्-प्रत्ययः । अथवा=दैव-वातपदयोः समासः]

दैवी देवानामियम् (स्वस्ति=स्वास्थ्यम्) ३.३८.९. **दैवीम्**=देवानामाप्तानाम् विदुषामियं ताम् (नावम्) २१.५. दिव्यगुणसम्पन्नाम् (धियम्) ४.११. **दैवीनाम्**=देवेषु दिव्यगुणेषु भवानां (क्षितीनां=भूमीनाम्) ३.२०.४. **दैवीः**=देवानां विदुषामिमाः (विशः=प्रजाः) ६.६. देदीप्यमानाः (द्वारः=अवकाशरूपा दिशः) २९.३०. देवानां न्यायकारिणां विदुषामिमाः (विशः=प्रजाः) २८.१४. देवसम्बन्धिनीर्दिव्याः (विशः=प्रजाः) ६.७. अ०—दिव्याः (विशः=प्रजाः) १७.८६. शास्त्रज्ञातारः वेत्तारो वा (विशः=प्रजाजनाः) १७.८६. [देवप्राति० 'तस्येदम्' इति सूत्रेण अण्-प्रत्यये 'टिड्ढाण्०' इति स्त्रियां ङीप्प्रत्ययः । दैव्येषा नौर्यद्यज्ञः जै० १.१६६. पञ्च दिशो दैवीर्यज्ञमवन्तु देवीः तै० सं० ५.४.६.२. मै० ३.३.८. ब्राह्मण उभे वाचौ वदति दैवीं च मानुषीं च काठ० १३९.५. श्रीर्हि मनुष्यस्य दैवी संसत् तै० सं० ७.४.२.१२. दैवीर्वा एता विशो यत् पशवः काठ० २६.७.]

दैव्यम् देवेषु दिव्येषु रश्मिषु भवम् (चेतनं ब्रह्म) २.५.२. देवैः सम्पादितं विद्वांसम् (जनम्) ६.१६.६. देवेषु विद्वत्सु भवम् (जनम्) १.४४.६. विद्वद्भिः सत्कृतम् (जनम्) ६.५२.१२. देवैर्विद्वद्भिर्निष्पादितम् (शर्धः=बलम्) ७.४४.५. देवेषु विद्वत्सु कुशलम् (रुद्रं=सभाध्यक्षम्) १.११४.४. देवेषु विद्वत्सु प्रियम् (सहः=बलम्) ४.४२.६. दिव्येषु गुणेषु भवम् (जनं=विद्वांसम्) ५.१३.३. **दैव्यस्य**=यो देवैः सह वर्त्तते तस्य (शिष्यगणस्य) २.३३.७. देवैर्विद्वद्भिर्लब्धस्य जगदीश्वरस्य २.३८.६. दिव्यसुखप्रापकस्य (अवसः=रक्षणस्य) ४.२१.१०. देवैः कृतस्य (अवसः=रक्षाऽऽदेः) ५.५७.७. दिव्येषु पदार्थेषु साक्षात्कृतस्य (सवितुः=जगदीश्वरस्य) ४.५४.४. **दैव्यः**=देवेषु लब्धः (विद्वान् जनः) २.३.१०. यो देवेषु विद्वत्सु जातः (जनः) प्र०—अत्र 'देवाद्यञञौ' अ० ४.१.८५. इति वार्त्तिकेन प्राग्दीव्यतीयाऽन्तर्गते जातेऽर्थे यञ्प्रत्ययः ३.५५. देवैः कृतः (व्यवहारः) ६.५०.१२. देवैः कृतो विद्वान् (सुप्रसिद्धो राजा) ७.८.४. देवेषु विद्वत्सु प्रीतः (अतिथिः=विद्वज्जनः) १२.३४. देवेषु कुशलः (अग्निः=जगदीश्वरः) प्र०—अत्र कुशलेऽर्थे देवशब्दाद् यञ्-प्रत्ययः १.२७.१२. **दैव्याय**=दिवि भवं दिव्यं, तस्य भावस्तस्मै (कर्मणे=पञ्चविधलक्षणचेष्टामात्राय), भा०—उत्तमसुखलाभाय, दिव्यसुखानामुत्पादकाय १.१३. **दैव्यानि**=देवैर्विद्वद्भिर्निर्वृत्तानि वस्तूनि १३.१३. दिव्यगुणानि (व्रतानि=कर्माणि) १.२४.२. देवैर्विद्वद्भिः कृतानि कर्माणि ४.४.५. देवेषु विद्वत्सु जातानि (व्रतानि) १.९२.१२. दिव्यैर्गुणैः कर्मभिर्वा निर्वृत्तानि (व्रतानि) १.७०.१. दिव्यगुणानि (व्रतानि=सत्यानि कर्माणि-वस्तूनि वा) १.१२४.२. **दैव्याः**=देवेषु गुणकर्मस्वभावेषु कुशलाः (ऋषयः) ३४.४९. **दैव्ये**=देवेषु विद्वत्सु कुशले (जने) ४.५४.३. **दैव्येन**=दिव्येन (वचसा=वचनेन) ४.१.१५. देवेषु पृथिव्यादिषु भवेन (सूर्येण=ईश्वरेण) ३७.१५. दिव्यस्वरूपेण (सवित्रा=विद्युद्रूपेण) ४.३४.८. देवैर्विद्वद्भिः कृतेन विदुषा (जनेन) ७.५३.२. **दैव्या**=दिव्येषु पदार्थेषु भवौ (प्रसिद्धाऽप्रसिद्धाऽग्नी), प्र०—अत्र प्राग्दीव्यतीयार्थेषु यञ्-प्रत्ययः १.१३.८. देवेषु दिव्येषु गणेषु भवौ (देवा=वायुवह्नी) २८.१७. देवेषु कुशलौ (कारू=शिल्पिनौ) २९.३२. देवेषु विद्वत्सु साधू (भिषजा=चिकित्सकौ) २८.७. कमनीयेषु कुशलौ (देवा=विद्वांसौ जनौ) २८.४०. देवेषु दिव्येषु कर्मसु साधू (कवी=मेधाविनौ जनौ) २८.३०. देवेषु लब्धौ (अश्विना=अग्निवायू) २१.३६. देवेषु भवौ (अध्यापकोपदेशकौ) २०.४२. दिव्यगुणसम्पन्नौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) २०.६२. देवेषु दिव्येषु बोधेषु कुशलौ (कवी=अध्यापकोपदेशकौ १.१८८.७. विद्वत्सु कुशलौ (महाविद्वांसौ) ३.७.८. दिव्यगुणावेव विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ) ३.४.७. देवेषु प्रयुक्तानि

(हेळांसि=अनादररूपाणि कर्माणि) ६.४८.१०. [दैवप्राति० प्राग्दीव्यतीयेषु भव-जात-कृत-कुशल-साधु-लब्धाद्यर्थेषु 'देवाद् यञञौ' अ० ४.१.८५. वा० सूत्रेण यञ्-प्रत्ययः। दैव्या वाऽएते होतारौ यत् परिधयोऽग्नयो हि श० १.८.३.१०. प्राणापानौ वै दैव्या होतारौ ऐ० २.४. वत्सा वै दैव्या अध्वर्य्यवः श० १.८.१.२७.]

दोग्ध्री प्रपूरिका (धेनुः=गौः) २२.२२. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तात् स्त्रियां ङीप्]

दोघम् प्रपूरकम् (विद्वांसं जनम्) ५.१५.५. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोश्छान्दसत्वाद् इगुपधलक्षणं कप्रत्ययं वाधित्वा अच्प्रत्ययः। हस्य घकारश्छान्दसः]

दोधतः क्रुद्ध्यतः (शत्रोर्जनस्य), प्रमाणं—दोधतीति क्रुद्ध्यतिकर्मा, निघं० २.१२, १.८०.५. हिंसकस्य (दुष्टजनस्य) २.२१.४. [दोधतीति क्रुध्यतिकर्मा निघं० २.१२. ततः शतृप्रत्ययान्तस्य रूपम्]

दोधवीति भृशं कम्पयति २.४.४. [धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

दोर्भ्याम् भुजदण्डाभ्याम् २५.३. **दोः**=भुजस्य बलम् ५.६१.५. [दमु उपशमने (दिवा०) धातोः 'दमेर्डोसिः' उ० २.६९. सूत्रेण डोसिः प्रत्ययः। दोः शिताम भवति। दोर्द्रवतेः नि० ४.३.]

दोषा रात्रौ ४.२.८. रात्रिः ७.१.६. प्रभातवेलाः ६.३९.३. रात्रीः ५.३२.११. **दोषाः**=रात्रिषु, प्र०—अत्र 'सुपाम्०' इति सुब्व्यत्ययः, दोषेति रात्रिनामसु पठितम् निघं० २.७, १.३४.३. [दुष वैकृत्ये (दिवा०) धातोर्बाहु० औणादिकः (४.१७५) आः प्रत्ययः। स्वरादिपाठादव्ययत्वम्। दोषा रात्रिनाम निघं० १.७. दोषा=रात्रौ नि० ३.१५.]

दोषावस्तः अहर्निशम्, प्र०—दोषेति रात्रिनामसु पठितम् निघं०' १.७. रात्रेः प्रसङ्गाद् वस्त इति दिननामाऽत्र ग्राह्यम् १.१.७. दोषां रात्रिं वस्ते स्वतेजसाऽऽच्छाद्य निवारयति सोऽग्निस्तम्, अ०—दोषावस्तारमग्निम् ३.२२. ['दोषा' इति व्याख्यातम्। वस्तोः=अहर्नाम निघं० १.९. तयोः समासः। अथवा दोषा इत्युपपदे वस आच्छादने (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकः क्तः प्रत्ययः]

दोहत् दोग्धि १.१६४.२६. **दोहते**=प्रपिपर्त्ति १.१३४.४. **दोहसे**=प्रपिपर्सि ७.१२. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः सामान्ये लङ्। अडभावश्छान्दसः। अन्यत्र लट्। उभयत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुङ् न। दोहत्= दोग्धि नि० ११.४३.]

दोहनाः पूरकाः (जनाः) १.१४४.२. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि नन्द्यादित्वाल् ल्युः प्रत्ययः। नन्द्यादिराकृतिगणः]

दोहम् प्रपूर्त्तिम् ३८.२८. **दोहः**=प्रपूर्णः सामग्रीसमूहः ८.६२. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः भावे घञ्-प्रत्ययः]

दोहसे दोग्धुम् ६.४५.७. कामान् दोग्धुं प्रपूरयितुम् ६.६६.५. कामानां प्रपूरणाय १.१४१.२. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'तुमर्थे सेसेनसे०' अ० ३.४.९. सूत्रेण असेप्रत्ययः]

दौर्गहे दुर्गहने (दुःखे) ४.४२.८. [दुर्गहप्राति० भवार्थे इदमर्थे वा अण्प्रत्ययः। दौर्गहः=अश्वनाम निघं० १.१४.]

दौर्व्रत्येन दुष्टाचारेण ३९.९. [दुर्व्रतप्राति० भावे कर्मणि वा ष्यञ्-प्रत्ययः]

द्यवि प्रकाशे ३३.५३. समीपस्थे प्रकाशितेऽप्रकाशिते वा (विषये) ७.३१.९. **द्यविद्यवि**=दिने दिने, अ०—प्रतिदिनम्, प्र०—'नित्यवीप्सयोः' अ० ८.१.४. अनेन द्वित्वम् 'द्यवि-द्यवि इत्यहर्नामसु पठितम्' निघं० १.९, १.४.१. **द्यवी**=द्योतमाने (द्यावापृथिवी) ४.५६.५. [द्यवि-द्यवि अहर्नाम निघं० १.९. द्युरित्यह्नो नामधेयम्, द्योतत इति सतः नि० १.६. द्युभिः=अहोभिः नि० ६.१.]

द्याम् कामनाम् ५.६३.६. विद्युतम् ५.५७.३. आकाशम् १.१८०.१०. प्रकाशम् १.१७३.६. विद्या-न्याय-प्रकाशम् १.१२१.३. सूर्यं विद्युतं वा ६.४७.२९. सर्वप्रकाशम् २३.५०. सूर्यादिकां सृष्टिं, भा०—प्रकाशसहितां सूर्यादिलोकप्रभृतिं सृष्टिम् २३.१. राजपालन-विनय-प्रकाशम् १.५२.११. सूर्यादिकं प्रकाशं वा ४.३०. सुप्रकाशाम्, भा०—बहुविधः प्रकाशो यस्यां ताम् (नावम्) २१.६. आनन्दम् प्र०—अत्र दिवुधातोर्बाहुलकाड् डो-प्रत्ययष्टिलोपे प्राप्ते वकारलोपश्च १.२६. कमनीयां विद्याम् ६.६७.६. किरणप्रकाशवद् विद्याप्रकाशम् १.५१.९. सूर्यपर्यन्त जगत् को स० प्र० २८२, १०.१२१.१. प्रकाशमयीं योगविद्याम् १७.६८. प्रकाशमयं विद्यमानं सूर्यादिलोकसमूहं वा १.६७.३. द्योतमानं सूर्यम् १.१६४.११. दिवम्, प्र०—१०.२३. नि० १३.४. प्रकाशात्मकलोकादिकम् ३.३२.८. द्युलोक को आर्याभि० २.२०, १३.४. जिसमें सूर्य का प्रतिभास आवे वैसी प्रकाशस्वरूप भूमि के समान शाला को सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१५. [द्यौरिति अहर्नाम निघं० १.९

द्योप्राति॰ द्वितीयैकवचने 'औतोऽम्शसोः' अ॰ ६.१.९३. सूत्रेणामि परत आकारान्तादेशः। द्योशब्दः=द्युत् दीप्तौ (भ्वा॰) धातोर्बाहुलकाद् औणादिको (उ॰ २.६७.) डोः प्रत्ययः। द्योतन्ते लोका अस्यां यया वा द्योतते सा द्यौः। 'गोतो णित्' सूत्रे 'ओतो णित्' इति विग्रहे सर्वनामस्थानस्य णित्वाद् वृद्धिः]

द्यामिव प्रकाशमिव ४.३१.१५. सूर्यमिव (अग्निम्=ईश्वरम्) ४.७.३ [द्याम्-इवपदयोः समासः। द्यामिति व्याख्यातम्]

द्यावः प्रकाशाः १.१५१.९. किरणाः ४.१६.१९. प्रकाशयुक्ता दिवसाः प्रकाशा वा ६.३८.४. प्रकाशमया लोकाः ३.३२.९. सूर्यादिप्रकाशाः ४.५७.३. कामयमाना विद्वांसः (जनाः) ६.४.३. सूर्याद्याः ६.२४.७. प्रकाशान् ५.५३.५. प्रकाशः १.५१.१. सत्यकामाः (गिरः=वाचः) ५.४१.१४.

द्यावा=सूर्यम् ७.४३.१. द्यौः १.१८५.२. प्रकाशः १.६१.१४. दिव्य सुख से, आर्याभि॰ १.४७, ऋ॰ ७.८.१२.२. सूर्यः २.४१.२०. प्रकाशम् १.६३.१. स्वस्वप्रकाशेन प्रकाशमानौ (रात्र्युषसौ) १.११३.२. [द्योप्रातिपदिकस्य जसि रूपम्। द्यौरिति 'द्याम्' इति पदे व्याख्यातम्]

द्यावाक्षामा प्रकाशभूमी, प्र॰—अत्र 'दिवो द्यावा' अ॰ ६.३.२९. अनेन दिवशब्दस्य द्यावाऽऽदेशः १.१०२.२. अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः १२.२. भा॰—द्यावाभूमी १७.७०. सूर्यभूमी ३.८.८. द्यावापृथिव्यौ ६.३१.२. अन्तरिक्षं भूमिश्च १.१४०.१३. क्षमा एव क्षामा, द्यौश्च क्षामा च द्यावाक्षामा सूर्यपृथिव्यौ १.१२१.११. ब्रह्माण्डम् १७.७०. [दिवा अहर्नाम निघं॰ १.९. क्षामः पृथिवीनाम निघं॰ १.१. तयोः समासः। 'दिवो द्यावा' अ॰ ६.३.२९. सूत्रेण द्यावादेशः। 'सुपां सुलुगि' त्याकारादेशः। द्यावाक्षामा—इमे वै द्यावापृथिवी द्यावाक्षामा श॰ ६.७.२.३.]

द्यावापृथिवी द्यौश्च पृथिवी च ते, प्र॰—'दिवो द्यावा' इत्यनेन द्वन्द्वे समासे दिवः शब्दस्य स्थाने द्यावाऽऽदेशः। असमत्प्राप्ते न्यायप्रकाश-पृथिवीराज्ये प्र॰—द्यावापृथिवीति पदनामसु पठितम्, निघं॰ ५.३ इत्यत्र प्राप्त्यर्थो गृह्यते २.९. सूर्यप्रकाशो भूमिश्च २.१६. विद्युदन्तरिक्षे ६.७०.४. भूम्यन्तरिक्षे ५.८३.८. विस्तृतौ सूर्यभूमिलोकौ १७.२०. राजनीति-भूराज्ये १२.२९. प्रकाशाऽन्तरिक्षे १४.६. प्रकाशाऽप्रकाशे जगती १३.४६. प्रकाशभूमिवद् वर्त्तमाने (अ॰—अध्यापिकोपदेशिके स्त्रियौ ३७.३. प्रकाशभूमी इव सभा-न्यायप्रकाशौ १.१०१.३. विद्युदन्तरिक्षे १.१८५.११. द्यौश्च पृथिवी च तौ भूमिसूर्यौ, तद्गतावभीष्टदेशदेशान्तराविति यावत् ६.२१. प्रकाशाऽप्रकाशयुक्तौ लोकसमूहौ १.५२.१४. प्रकाशाऽन्तरिक्षे ३.२६.८. प्रकाशभूमी राज्याऽर्थे ९.१९. भूमिसवितारौ १.१६०.५. दिव अर्थात् सूर्यादिलोक, सर्वोपरि आकाश तथा पृथिवी अर्थात् मध्य निकृष्ट लोक आर्याभि॰ १.१५, ऋ॰ १.४.१४.१४. द्यावा स्वर्ग, सुखविशेष और पृथिवी भूमि मध्य सुखवाला लोक आर्याभि॰ २.३६, १७.२०. सूर्य और भूमि सं॰ वि॰ १२२, अथर्व॰ १४.१.५४.

द्यावापृथिवीभ्याम्=सूर्यान्तरिक्षाभ्याम् ३८.१५. सूर्य्यभूमि-शोधनाय ३९.१३. भा॰—भूमिसूर्याभ्याम् ३८.१२. प्रकाशभूम्योः शुद्धये भा॰—प्रकाशभूमिभ्याम् ४.६. द्यावा अर्थात् स्वर्ग परमोत्कृष्ट मोक्षसुख और पृथिवी अर्थात् संसार-सुख इन दोनों के लिये आर्याभि॰ २.३१, ३८.१४.

द्यावापृथिव्योः=सूर्यचन्द्रवन्न्यायप्रकाश-भूम्योः २०.१०. दिवं दिवं प्रति पृथिवीं पृथिवीं प्रति च, ऋ॰ भू॰ २३२, प्रकाशभूम्योः २५.५. [दिव्-पृथिवीपदयोः समासे 'दिवो द्यावा' अ॰ ६.३.२९. सूत्रेण पूर्वपदस्य दिवो द्यावादेशः। द्यावापृथिवी पदनाम निघं॰ ५.३. द्यावापृथिव्यौ—(वायोः) मेनका च सहजन्या चाप्सरसाविति दिक् चोपदिशा चेति ह स्माह माहित्थिरितमे तु ते द्यावापृथिवी श॰ ८.६.१.१७. द्यावापृथिवी वै गोआयुषी कौ॰ २६.२. इमे वै द्यावापृथिवी द्यावाक्षामा श॰ ६.७.२.३. इमे हि द्यावापृथिवी प्राणोदानौ श॰ ४.३.१.२२. द्यावापृथिवी वै मित्रावरुणयोः प्रियं धाम तां॰ १४.२.४. द्यावापृथिवी वै देवानां हविर्धाने आस्ताम् ऐ॰ १.२९. द्यावाथिवी वै सत्यस्य साधयित्र्यौ कौ॰ ४.१४. द्यावापृथिव्योर्वा एष गर्भो यत्सोमो राजा ऐ॰ १.२६. द्यावापृथिवी वै प्रतिष्ठे ऐ॰ ४.१०. द्यावापृथिवी वै मित्रावरुणयोः प्रियंधाम तां॰ १४.२.४. आविन्ने द्यावापृथिवी धृतव्रते तै॰ सं॰ १.८, १२.२. इमे वै द्यावापृथिवी रोदसी श॰ ६.४.४.२. इमे (द्यावापृथिव्यौ) वै हरी विपक्षसा तै॰ ३.९.४.२. इमे (द्यावापृथिव्यौ) ह वावोधनी जै॰ ३.६७. इमौ वै लोकौ (द्यावापृथिव्यौ) रोहिणौ (पुरोडाशौ) श॰ १४.२.१.४. द्यावापृथिवी सर्व इमे लोकाः जै॰ ३.२७१. द्यावापृथिवी हि प्रजापतिः श॰ ५.१.५.२६. यदरोदीत् (प्रजापतिः) तदनयोः (द्यावापृथिव्योः) रोदस्त्वम् तै॰ २.२.९.४. वायुर्वा अनयोः (द्यावापृथिव्योः) वत्सः मै॰ २.५.४. काठ॰ १३.५.]

द्यावापृथिवीयः प्रकाश-भूमिदेवताकः (कूर्मः=कच्छपः) २४.३४. **द्यावापृथिवीयाः**=द्यावापृथिवीदेवताकाः (वशाः=पशवः) २४.१४. ['द्यावापृथिवी' इति व्याख्यातम्। ततः सास्य देवता विषये 'द्यावापृथिवी शुना-

सीर०' अ० ४.२.३२. सूत्रेण छः प्रत्ययः। द्यावापृथिवीयम् चक्षुषी द्यावापृथिवीयम् कौ० १६.४. द्यावापृथिवीयं द्विकपालम् मै० २.१.३. वशा द्यावापृथिवीया: मै० ३.१३.१२. द्यावापृथिवीया एककपाल: (सौम्यश्चरुः) मै० १.१०.१, २.६.२. द्यावापृथिवीयं (पयः) प्रह्रियमाणम् मै० १.८.१०.]

द्यावाभूमी सूर्यपृथिवी-लोकौ १७.१९. प्रकाशपृथिव्यौ ४.५५.१. भूमि से लेकर स्वर्ग पर्यन्त, आर्याभि० २.३४, १७.१९. [दिव्-भूमिपदयोः समासः। 'दिवो द्यावा' सूत्रेण पूर्वपदस्य द्यावादेशः]

द्युक्षम् प्रकाशमानम् (अग्निं=विद्युदादिस्वरूपम्) २.२.१. द्युलोकस्थम् (सादनं=गृहम्) १.१३६.२. द्योतमानम् (अर्यमणं=न्यायाधीशम्) १.१३६.६. द्यौर्नीतिः प्रकाशः क्षियति निवसति यस्मिँस्तत् (भा०=राज्यम्) ३.३१. धर्म-विद्याप्रकाशयुक्तम् (विषयम्) ५.३९.२. कमनीयम् (धर्मजं धनम्) ७.३१.२. **द्युक्षः**=द्यौरिव क्षा भूमिर्यस्य (इन्द्रः=राजादिसभ्यो जनः) ६.३७.२. यो दिवः प्रकाशान् क्षियति वासयति सः (विद्वज्जनः) ७.३४.२४. द्युतिमान् (राजा) ६.२४.१. [द्युः=अहर्नाम निघं० १.९. तदुपपदे क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोरौणादिक डः प्रत्ययः। द्यु-क्षापदयोर्वा समासः। क्षा पृथिवीनाम निघं० १.१.]

द्युक्षवचसम् द्योतकवचनस्य प्रकाशकम् (विप्रं=मेधाविजनम्) ६.१५.४. [द्युक्ष-वचस्पदयोः समासः। द्युक्षमिति व्याख्यातम्]

द्युक्षा दिवि प्रकाशे निवासो यस्याः सा (अग्नेर्ज्वाला), प्र०—अत्र 'क्षि निवासगत्योः' इत्यस्मादौणादिक डप्रत्ययः १.१००.१६. [द्युक्षमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

द्युक्षासः दिवि प्रकाशे क्षियन्ति निवासयन्ति ते (इन्दवः=सस्नेहाः पदार्थाः) ३.४०.५. [द्युक्षमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

द्युतद्यामा द्युतन्तो विद्योतमाना पदार्था यया सा (मनीषा=प्रज्ञा) ६.४९.४. द्युतद् दीप्यमानमग्निं याति तम् (वायुं=प्राणादिलक्षणम्) प्र०—अत्र विभक्तेर्लुक् 'संहितायाम्' इति दीर्घः ३३.५५. **द्युतद्यामानम्**=प्रहरान् द्योतयन्तीम् (उषसं=प्रातर्वेलाम्) ५.८०.१. [द्युतदुपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्मनिन् प्रत्ययः। द्युतद्=द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

द्युतम् कारणस्थां दीप्तिम्, प्र०—अत्र 'द्युत दीप्तौ' इत्यस्मात् क्विप्प्रत्ययः ३.१६. **द्युता**=प्रकाशेन ६.२.६. [द्युत् दीप्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

द्युतयन्त द्योतयन्तु २.३४.२. [द्युतमिति व्याख्यातम्। ततः 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिजन्ताद् धातुत्वे लङ्। अडभावः]

द्युतानम् सत्यार्थद्योतकम् (अग्निं=पावकम्) ६.१५.४. **द्युतानः**=देदीप्यमानः (सुप्रसिद्धो राजा) ७.८.४. यथा दिवं सद्विद्यागुणं विस्तारयति तथा (परमविद्वज्जनः) ५.२७. प्रकाशमानः (सूर्यः) ४.५.१०. [द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शानच्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। अथवा कर्त्तरि चानश् शप्-लुक् च। द्युतानो मारुतस्तेषां (देवानाम्) गृहपतिरासीत् तां० १७.१.७. पशवो वै द्युतानो मारुतः काठ० ३५.१६. यो वाऽयं (वायुः) पवत ऽएष द्युतानो मारुतः श० ३.६.१.१६.]

द्युभक्तम् यो दिवं भजति तम् (विद्वज्जनम्) ७.४०.२. विद्युदादिभिस्सेवितम् (रत्नं=धनम्) ४.१.१८. **द्युभक्ताः**=सूर्यादिप्रकाशेन सम्भागं प्राप्ताः (किरणाः) १.७३.६. [द्यु-भक्तपदयोः समासः। 'द्यु' इत्युपपदे वा भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिकः क्तः]

द्युभिः प्रकाशयुक्तैर्गुणैर्द्रव्यैर्वा १.५३.४. प्रकाशादिगुणविशेषैः, प्र०—दिवो द्योतनकर्माणामादित्यरश्मीनाम्, निघं० १३.२५, ३.८. धर्म्यैः कामैः ५.१६.२. दिवसैः १.११२.२५. दिनैः ३.३१.१६. प्रकाशमानैः (दिनैः रात्रिभिर्वा) ३५.१. देदीप्यमानैः (देवेभिः=किरणैः) ३.३.२. कामयमानैः (विभिः=पक्षिभिरिव) ५.५३.३. विज्ञानादिप्रकाशैः ७.३१.८. द्योतमानैर्दिनैः ६.५.६. [द्युरिति अहर्नाम निघं० १.९. द्युरित्यह्नो नामधेयं द्योतत इति सतः। द्युभिः=अहोभिः नि० ६.१.]

द्यौरिव सूर्य इव ५.५७.४. यथा सूर्यप्रकाशयुक्त आकाशे, भा०—सूर्यप्रकाशसदृशः ३.५. सूर्यप्रकाशवत् २.४.६. [द्यौः-इवपदयोः समासः। द्यौः=द्योप्राति० प्रथमैकवचनम्]

द्यौः प्रकाशयुक्तः पदार्थः ३६.१७. प्रकाशमयो विद्युत् सूर्यादिलोकसमूहः १.२२.१३. प्रकाशमानः सूर्यादिः १.९६.९. विद्युत्प्रकाशः १.८३.३. आकाशस्थः (भानुः=सूर्यः) ४.१.१७. प्रकाशात्मकः सूर्यादिलोकः, ऋ० भू० १२७, ३१.१३. सूर्यादिप्रकाशः १.१००.१९. प्रकाशमानः परमेश्वरः सूर्यादिर्वा १.८९.१०. विद्याप्रकाशः प्र०—दिवो द्योतनकर्मणामादित्यरश्मीनाम्, नि० १३.२५, १.२६. सूर्यादिप्रकाशवान् पदार्थः ३२.६. तत्प्रकाशः २६.१. आकाशस्य,

प्र०—अत्र षष्ठ्यर्थे प्रथमा ३३.११. कारणरूपेण प्रकाशः २५.२३. कान्तिः, प्र०—द्यौर्वै सर्वेषां देवानामायतनम्, शत० १४.३.२.८, १.२६. विज्ञानप्रकाशहेतुः (वसुः=यज्ञः) १.२. विद्युत्प्रकाशः १.६४.१६. विशालः सूर्यप्रकाशः १.८.५. प्रकाशरूपः (पिता=सर्वपालक ईश्वरः) २.११. प्रकाशयुक्तलोकः ३१.१३. सदैव स्वप्रकाशस्वरूप (ईश्वर) आर्याभि० १.१७, ऋ० १.६.१६.१०. सर्व-प्रकाशः ऋ० भू० १४३, अथर्व० १४.१.१. प्रकाशकर्मा (विद्या) १८.१८. प्रकाशरूपा विद्युत् २३.४३. भा०—अतीव सूक्ष्मा विद्युत् २३.५४. भा०—सूर्यवत् न्यायविद्योभयप्रकाशकः (राज्याधिकारी जनः) २०.४७. विज्ञानादिभिः प्रकाशमानः (अग्निः=सूर्यवद्विद्वान्) १२.१. स्वप्रकाशः (सुरेताः=जगदीश्वरः) १२.२५. द्योतमाना (सूर्यज्योतिः) ऋ० भू० २०२, ऋ० ८.१.२३.७. विद्युत् सूर्यो वा ६.२०.१. कामयमाना (स्त्री) ६.१७.६. सूर्यकान्तिः १.९०.७. सूर्यद्युतिः १.६५.२. दिव्या पुरुषाकृतिः ८.३२. कामयमानो विद्वान् ६.५२.२. अन्तरिक्षम् २३.४८. विद्युदादिप्रकाशः ६.१२.२. दिव्यगुणप्रदा वृष्टिः प्र०—द्यौर्वै वृष्टिः, शत० १३.२.६.१६, २३.१२. प्रकाश इव विनयः ११.२०. विद्यान्यायप्रकाशकः (अग्निः=विद्वान्राजा) १२.३३. सत्यकामः (राजा) ५.३६.५. धर्मप्रकाशः १८.२२. सब लोकों से ऊपर जो आकाश है सो, आर्याभि० २.२५, ३६.१७. [द्योप्राति० प्रथमैकवचने 'गोतो णित्' सूत्रं केचिद् 'ओतोणित्' इति पठन्ति, तन्मते सर्वनामस्थानस्य णित्वाद्वृद्धिः। द्यो=द्युत् दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको डोः प्रत्ययः। द्यौर्वैवृष्टिः श० १३.२.६.१६. द्यौर्वै सर्वेषां देवानामायतनम् श० १४.३.२.८.]

द्युमत् विज्ञानप्रकाशयुक्तम् (स्वस्ति=सुखम्) २.९.६. प्रकाशवत् (अग्निः=पावकः) ५.११.१. प्रशस्तप्रकाशवत् (सुवीर्यम्) १.७४.९. प्रशस्तप्रकाशयुक्तं मनः २६.३. द्यौर्ज्ञानप्रकाशो विद्यते यस्मिँस्तत् (वसु=विद्यासुवर्णादिधनम्) ३.१३.७. द्यौः प्रकाशोऽस्त्यस्मिन् तद्वत् (अग्निः=विद्युत्) १५.२७. प्रशस्तविज्ञानयुक्तम् (सुवीर्यं=शोभनं धनम्) ३.१०.८. द्यौः कामना विद्यते यस्य तत् (शम्=उत्तमं सुखम्) ७.८.६. यथार्थज्ञानप्रकाशयुक्तम् (विज्ञानम्) ५.१८.५. सत्यव्यवहारप्रकाशो विद्यते यस्मिन् (द्रविणं=धनम्) ऋ. भू. ३०६.२६.३. प्रकाशवत् (जलम्) ५.२३.४. **द्युमतः**=प्रशस्ता द्यौः कामना विद्यते यस्य तस्य (सज्जनस्य) ६.५०.११. विज्ञानप्रकाशयुक्तान् (विप्रान्=मेधाविनो विपश्चितः) ६.१७.१४. **द्युमतीम्**=विद्याप्रकाशवतीम् (धीतिं=धियम्) ६.३८.१. प्रशस्ता द्यौः कामना विद्यते यस्यास्ताम् (इषम्=अन्नादिकम्) ७.५.८. **द्युमते**=द्यौः प्रशस्तो विद्याप्रकाशो विद्यते यस्मिँस्तस्मै (यूने जनाय) १.६३.३ [द्युप्राति० प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुप्। द्युमतीम् प्रयोगे स्त्रियां मतुप्। द्युमत्=द्युमान्, द्योतनवान्। नि० ६.१९. द्युमत्=ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६.]

द्युमत्तम ! द्यौर्बहुः सर्वज्ञः प्रकाशो विद्याप्रकाशो वा विद्यते यस्मिन् सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभेश राजन्) १.५३.३. **द्युमत्तमम्**=द्यौः प्रशस्तः प्रकाशो यस्मिँस्तदतिशयितस्तम्) (रयिं=विद्याचक्रवर्त्यादिधनसमूहम्) ३.२५. प्रशस्ता द्यौविद्याप्रकाशो विद्यते यस्य यस्मिँस्तदतिशयितम् (दक्षं=बलम्) ६.४४.९. प्रशस्ता दिवः प्रकाशा कामना वा विद्यन्ते यस्मिन् सोऽतिशयितस्तम् (विद्वांसं जनम्) १५.४८. अतिशयेन प्रकाशवन्तम् (रयिं=धनम्), भा०—सदुपदेशाद्युत्तमगुणम् २५.४७. प्रशस्तः प्रकाशो विद्यते यस्मिन् स शब्दो द्युमान्, अतिशयेन द्युमान्, द्युमत्तमस्तम् (उलूखलव्यवहारम्) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.२८.५. **द्युमत्तमा**=अतिशयेन प्रशस्तप्रकाशयुक्तानि (शोचींषि=तेजांसि) २७.११. [द्युमदिति व्याख्यातम् ततोऽतिशायने तमप् प्रत्ययः। द्युमत्तमा—(यजु० २७.११.) द्युमत्तमेति वीर्यवत्तमेत्येतत् श० ६.२.१.३२.]

द्युमन्तम् प्रकाशवन्तम् (विद्वांसं जनम्) ५.२६.३. प्रशस्ता द्यौः प्रकाशो विद्यते यस्मिँस्तम् (भगं=सेवनीयमैश्वर्यम्) ३.३०.१९. द्यौर्बहुप्रकाशो विद्यते यस्मिँस्तम् (अग्निं=जगदीश्वरं भौतिकं वा), प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् २.४. द्यौरनन्तः प्रकाशो विद्यते यस्मिन् परमेश्वरे वा प्रशस्तः प्रकाशो विद्यते यस्मिन् भौतिके तम्, प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे प्रशंसार्थे च मतुप् ३.१८. बहुकामयुक्तम् (सज्जनम्) ६.१७.४. बहुप्रकाशवन्तम् (लोकम्) १.६४.१४. दीप्तिमन्तम् (विद्वांसं राजानम्) ७.१५.७. **द्युमन्तः**=कामयमानाः प्रकाशवन्तो वा (विद्वांसो जनाः) ५.१२.४. बहुप्रकाशवन्तः (किरणाः) ५.२५.८. प्रशस्त-कामनायुक्ताः (सर्वमित्रा जनाः) ५ ६९.२. द्यौर्बह्वीर्दीप्तिर्वर्त्तते येषु ते (अग्नयः=विद्युदादयः) ७.१.४. **द्युमान्**=बहुविद्याप्रकाशः (मनुष्यः) ५.३४.३. बहुविद्याप्रकाशयुक्तः (राजभृत्यः) ४.१५.४ विद्यादिसद्गुणप्रकाशयुक्तः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६२.१२. बहु-कलायन्त्रादिप्रकाशितः (रथः=विमानादियानविशेषः) ४.३१.१४. [द्युमदिति व्याख्यातम्। तस्य रूपाणि]

द्युमः प्रकाशवान् (अग्निः=विद्वान् जनः) ६.१०.२. [द्युप्राति० मतुबर्थे 'द्युद्रुभ्यां मः' अ० ५.२.१०८. सूत्रेण मः प्रत्ययः। द्युरिति अहर्नाम निघं० १.९.]

द्युम्नम् धनम् ४.८. यशो धनं वा ५.१०.१. प्रकाशमयं यशो धनं वा ६.१९.९. प्रकाशमयं ज्ञानम् १.९.८. सुखप्रकाशयुक्तं धनम्, प्र०—द्युम्नमिति धननामसु पठितम्, निघं० २.१०, ३.३९. प्रकाशकारकमुत्तमं यशः, भा०—कीर्तिः, प्र०—द्युम्नं द्योततेर्यंशो वाऽन्नं वा, नि० ५.५, ३.३८. विज्ञानसाधकम् (धनम्) ३.४०. विद्याप्रकाशं यशो धनं वा १.७३.४. विद्याप्रकाशयुक्तं धनम् १.५४.११. प्रकाशयुक्तं यशोऽन्नं वा ११.६७. यशः करं धनं विज्ञानं वा ३.५९.६. शुद्धं यशः ६.४६.७. धर्म्यं यशः ७.२५.३. प्रकाशमयं ज्ञानम् १.९.८. **द्युम्नानि**=यशांसि ४.४.६. यशांसि धनानि वा ५.२८.३. प्रदीप्तानि यशांसि, भा०—धनानि, वेदा, भोज्यादीनि वस्तूनि च २६.१८. यशांसि जलान्यन्नानि धनानि वा ३.४०.७. **द्युम्नस्य**=धनस्य यशसो वा ५.७.३. **द्युम्नाय**=यशसे धनाय वा ६.६०.११. **द्युम्ने**=यशसेऽन्नाय वा, प्र०—द्युम्नं द्योततेर्यंशो वाऽन्नं वा नि० ५.५, १३.३५. **द्युम्नेषु**=यशस्विषु धनप्रापकेषु वा (वीरसैनिकेषु) ३.३७.७. **द्युम्नेन**=प्रकाशेनेव विद्यासुशिक्षारूपेण १.४८.१. यशस्विना धनेन ३.२४.३. यशसा ६.५.५. **द्युम्नैः**=यशोधनयुक्तैः (नृभिः=नेतृभिर्जनैः) ४.१६.१९. यशोभिर्धनैर्वा ४.१२.१. पुण्ययशोभिस्सह १.७८.३. यशसा प्रकाशमानैः शस्त्राऽस्त्रैः १.७८.४. धनैर्विज्ञानादिभिर्गुणैः सह १.७८.१. चक्रवर्त्यादिराजधनैः सह १.९१.२. [द्युम्नम्-धननाम नि० २.१०. द्युम्नम्=द्योततेर्यंशो वा अन्नं वा नि० ५.५. द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिको नः प्रत्ययो मकारश्चान्तादेशः। द्युम्नं हि बृहस्पतिः श० ३.१.४.१९. सोमस्य त्वा द्युम्नेन (अभिषिञ्चामि) तै० सं० १.८.१४.१. मै० २.६.११.]

द्युम्ना द्योतमानानि यशांसि धनानि वा ६.१९.६. [द्युम्नमिति व्याख्यातम्। ततो जसो शेरादेशस्य लोपः]

द्युम्नवत् प्रशस्तकीर्त्तिमत् (ब्रह्म=बृहद् धनम्) ३.२९.१५. [द्युम्नमिति व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां मतुप्]

द्युम्नवत्तमः अतिशयेन यशोधनयुक्तः (विद्वज्जनः) ६.४४.१. [द्युम्नवदिति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने तमप् प्रत्ययः]

द्युम्नवान् यशस्वी (राजा) ५.२८.४. [द्युम्नमिति व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां मतुप्]

द्युम्नश्रवसे द्युम्नं यशः श्रवः श्रुतं यस्य तस्मै (विदुषे सज्जनाय) ५.५४.१. [द्युम्न-श्रवस्पदयोः समासः। द्युम्नमिति व्याख्यातम्। श्रवः=अन्ननाम निघं २.७. धननाम निघं० २.१०.]

द्युम्नसाता द्युम्नस्य प्रशंसाया विभागे १.१३१.१. [द्युम्न-सातिपदयोः समासः। द्युम्नं द्योततेर्यंशो वा अन्नं वा नि० ५.५. साति=षण् सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः क्तिन् प्रत्यये 'जनसनखनां सञ्झलोः' सूत्रेणाकारान्तादेशः। समासे कृते 'सुपां सुलुग्०' इति सप्तम्याः स्थाने डादेशः]

द्युम्नहूतिभिः द्युम्नस्य धनस्य यशसो वाऽऽह्वानैः १.१२९.७. धनविषयकवार्त्ताभिः १.१२९.७. **द्युम्नहूतौ**=धनयशसोर्हूतिः प्राप्तिर्यस्यां तस्याम् (क्रियायाम्) ४.१६.९. द्युम्नेन धनेन यशसा वा हूतिराह्वानं यस्यां तस्याम् (क्रियायाम्) ६.२६.८. [द्युम्न-हूतिपदयोः समासः। द्युम्नमिति व्याख्यातम्। हूतिः=ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तिन्। यजादित्वात् सम्प्रसारणम्]

द्युम्नसाहम् द्युम्नानि धनानि सहन्ते येन तम् (हरिं=हयम्) १.१२१.८. [द्युम्नमिति व्याख्यातम्। तदुपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण ण्विः]

द्युम्निनम् यशस्विनं श्रीमन्तम् (राजाध्यक्षम्) ३.३७.८ **द्युम्निनः**=प्रशस्तकीर्त्तिमतः (वीरजनान्) १.१३८.२. [द्युम्नमिति व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां मत्वर्थे 'अत इनिठनौ' सूत्रेण इनिः प्रत्ययः]

द्युम्निनीः प्रशस्तं द्युम्नं धनं यशो वा विद्यते यासां ताः (विदुष्यः=स्त्रियः) १०.७. [द्युम्नमिति व्याख्यातम्। ततो मत्वर्थे इनि प्रत्ययान्तात् स्त्रियां ङीप्-प्रत्ययः। द्युम्निनीराप एता इति वीर्यवत्य इत्येवैतदाह श० ५.३.५.१९.]

द्युम्निन्तमः बहूनि द्युम्नानि धनानि विद्यन्ते यस्य स द्युम्नी, अतिशयेन द्युम्नीति द्युम्निन्तमः (मदः=हर्षः), प्र०—अत्र 'नाद् घस्य' इति नुट् १.१२७.९. अतिशयेन यशस्वी (सभेशः) १.१७५.५. [द्युम्नमिति व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे इनिः। ततोऽतिशायने तमप्-प्रत्यये 'नाद् घस्य' अ० ८.२.१७. सूत्रेण नुडागमः]

द्युम्नी प्रशस्तधनी यशस्वी (परमेश्वरो विद्वान् जनो वा) १.९१.२. बहुप्रशंसा-धनयुक्तः (इन्द्रः=राजा) ३३.९५. द्युम्नानि बहुविधानि धनानि भवन्ति यस्मिन् (राजपुरुषः) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे इनिः १.३६.८.।

द्युम्नेभिः प्रकाशनर्यंशोभिः ६.६१.१३. [द्युम्नमिति व्याख्यातम्। ततो भिसि 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेण ऐसादेशो न भवति]

द्यून् दिनानि १२.२८. प्रकाशान् ४.४३.३. दिवसान् ४.४.९. विद्याप्रकाशान् २.२८.२. [द्यु-प्रातिपदिकाद् द्वितीयाया बहुवचनम् । द्युः=अहर्नाम निघं० १.९. द्युरित्यह्नो नामधेयम्, द्योतत इति सतः नि० १.६.]

द्योतताम् प्रकाशताम् १५.५२. [द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

द्योतना प्रकाशमाना (उषाः) १.१२३.४. [द्योतना उषो नाम निघं० १.८.]

द्योतनाय प्रकाशनाय ६.२०.८. [द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्भावे ल्युडन्ताच्चतुर्थी]

द्योतनिम् प्रकाशरूपां विद्याम् ३.५८.१. [द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽनिः प्रत्ययः]

द्योतयत् प्रकाशयति ६.३९.३. [द्युत् दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् सामान्ये लङ् । अडभावश्छान्दसः]

द्योः प्रकाशस्य ४.२७.३. सूर्यस्य ६.६७.६. प्रकाशमानायाः (तन्यतोः=विद्युतः) ४.३८.८. [द्युप्राति० षष्ठी। द्युः=अहर्नाम निघं० १.९.]

द्यौत् द्योतयेत् ४.४.६.

द्यौः प्रकाशः १.५२.१०. प्रकाश इव १.१३३.६. विद्युत् सूर्यप्रकाशो वा १.११२.२५. सूर्य इव वर्त्तमानः ११.५८. सूर्यादिः १.५७.५. सूर्यद्युतिः १.६५.२. प्रकाशमानः परमात्मा सूर्यादिर्वा १.८९.१०. सूर्यविद्याप्रकाशो वा १.१०५.१९. विद्युत् वा सूर्यादिप्रकाशमानपदार्थः १.११३.२०. विद्युदिव विद्या ३.५४.१९. आकाशस्थः ४.१.१७. सत्यकामः ५.३६.५. कामयमान इव ५.४५.३. कामयमानो विद्वान् ६.५२.२. दिव्या पुरुषाकृतिः ८.३२. प्रकाश इव विनयः ११.२०. विज्ञानप्रकाशहेतुः १.२. धर्मप्रकाशस्वरूपः, प्रकाशमयो वा २.११. स्वप्रकाशः १२.२५. विद्यान्यायप्रकाशकः १२.३३. प्रकाशकर्मा १८.१८. कारणरूपेण प्रकाशः २५.३३. आकाशस्य, प्र०—षष्ठ्यर्थे प्रथमा, ३३.११. दिव्यगुणप्रदा वृष्टिः । प्र०—द्यौर्वै वृष्टिः शत० १३.२.६.१४, २३.१२. द्यौरिव सूर्यप्रकाशवत् २.४.४६. सूर्य इव ५.५७.४. यथा सूर्यप्रकाशयुक्ते आकाशे ३.५. **दिवम्**=सूर्यादिकं जगत् १२.१०२. सत्यप्रकाशम् १५.६. अविद्यागुणप्रकाशम् ३८.१७. देदीप्यमानां राजनीतिम् ९.२४. **द्याम्**=कामनाम् ५.२९.६. कमनीयां विद्याम् ६.६७.५. प्रकाशमयीं योगविद्याम् १७.६८. प्रकाशसमूहं लोकम् १.३३.१४. राज्यपालनविनयप्रकाशम् १.५२.११. प्रकाशमयं दिनम् १.३२.४. जिसमें सूर्य का प्रतिभास आवे वैसी प्रकाशस्वरूपा भूमि अथर्व० ९.१५. संस्कारविधि । **दिवः**=स्वः सुखं दृश्यते यस्मात् तम् ३.२.१४. दिव्या गुणाः क्रियाः स्वभावा वा ८.३१. प्रकाशयुक्तान् किरणान् १.३४.८. कमनीयान् कामयमानान् वा ६.५१.४. दिव्यगुणसमूहम् १.५६.६. ज्योतींषि ३.५६.६. व्यवहर्त्तॄन् ५.५९.७. **दिवा**=प्रीत्या सह ६.३.६. विज्ञानान्धकारप्रकाशेन सह १.९८.२. **दिवः**=प्रकाशमानात् धर्माचरणात् १.५४.७. प्रकाशादाकर्षकाद्वा १.५६.५. **दिवः**=राज्यप्रकाशस्य १.१५१.४. द्योतनात्मकस्य परमात्मनः १५.६०. कमनीयस्य गृहस्थव्यवहारस्य १५.६४. व्यवहारस्य १.१८५.१. कमनीयार्थस्य ५.१०.३. **दिवि**=कृषिविद्याप्रकाशे ४.५७.५. प्रजाव्यवहारे १.३६.३. कमनीये शुद्धे व्यवहारे ६.३४.४. आकाशे १.८०.१३. अन्तरिक्षे १.८५.२. दिव्ये आकाशे ३.२.१३. प्रकाशयुक्तेऽन्तरिक्षे ५.२७.६. प्रकाशमयेऽग्नौ १.१६३.४. द्योतनात्मके ब्रह्मणि सूर्यादिप्रकाशे वा १.६.१. प्रकाशनिमित्ते १.७.३. द्योतनात्मके सूर्यप्रकाशेऽन्तरिक्ष इव न्यायप्रकाशे १.५१. न्यायप्रकाशे १.५२.४. प्रकाशे १.९१.१८. सर्वविद्याप्रकाशे १.१०५.१६. [दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (दिवा०) धातोः क्विप्-प्रत्ययः । द्यौः=दिव् प्राति० प्रथमैकवचने 'दिव औत्' अ० ७.१.८४. सूत्रेण औदादेशः । द्याम्=इति द्योप्राति० द्वितीयैकवचनम् । द्यौः=अद्युतदिव वा अद इति तद्दिवो दिवत्वम् तां० २०.१४.२. अथ यत्कपालमासीत् सा द्यौरभवत् श० ६.१.२.३. (प्रजापतिः) व्यानादमुं (द्यु) लोकम् (प्रावृहत् कौ० ६.१०. असौ (द्यौः) हरिणी तै० १.८.९.१. दिवा (रूपं) हिरण्यकशिपु तै० ३.९.२०.२. प्राणो वै दिवः श० ६.७.४.३. असौ (द्यौः) जगती जै० उ० १.५५.३. या द्यौः साऽनुमतिः सा एव गायत्री ऐ० ३.४८. द्यौर्वै बृहद् श० ९.१.२.३७. अयं वै (पृथिवी) लोको मित्रोऽसौ (द्युलोकः) वरुणः श० १२.९.२.१२. एषा वा प्रतिष्ठा वैश्वानरः (यद् द्यौः) श० १०.६.१.९. असौ वै (द्यु) लोकः समुद्रो नभस्वान् श० ९.४.२.५. वागिति द्यौः जै० उ० ४.२२.११. मूर्धा तु एष वैश्वानरस्य (यद् द्यौः) श० १०.६.१.९. द्यौर्महदुक्थम् श० १०.१.२.२. यत् (अग्नेः) शुचि (रूपं) तद् दिवि (न्यधत्त) श० २.२.१.१४. द्यौर्वा अस्य (अग्नेः) परमं जन्म श० ९.२.३.३९. द्यौः सावित्री गो० पू० १.३३. स सुवरिति व्याहरत् । स दिवमसृजत् तै० २.२.४.३. स्वरित्यसौ (द्यु) लोकः श० ८.७४.५. द्यौर्वै तृतीयसवनम् श० १२.८.२.१०. असौ वै (द्यु) लोकस्तृतीयसवनम् गो० उ० ४.१८. साम्नामादित्यो देवतं तदेव

ज्योतिर्जागतच्छन्दो द्यौः स्थानम् गो० पू० १.२६. आदित्येन दिवा नक्षत्रैस्तेनासौ लोकस्त्रिवृत् तां० १०.१.१. द्यौरसि वायौ श्रिता। आदित्यस्य प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.१०. वायुरस्यन्तरिक्षे श्रितः। दिवः प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.९. द्यौरन्तरिक्षे प्रतिष्ठिता ऐ० ३.६. साम वा असौ (द्युलोकः) ऋगयम् (भूर्लोकः) तां० ४.३.५. दिवमेव साम्ना (जयति) श० ४.६.७.२. असौ (द्यौः) वै जुहूः तै० ३.३.१.१. असौ (द्यु) लोक उत्तरौष्ठः कौ० ३.७. द्यौर्वाऽउत्तरꣳ सधस्थम् श० ८.६.३.२३. द्यौरुत्तरवेदिः श० ७.३.१.२७. द्यौरेव तृतीया चितिः श० ८.७.४.१४. द्यौर्वै तृतीयꣳरजः श० ६.७.४.५. द्यौर्हविर्धानम् तै० २.१.५.१. द्यौस्सूक्तम् जै० उ० ३.४.२. द्यौर्वा ऽअपां सदनं दिवि ह्यापः सन्नाः श० ७.५.२.५६. आपो वै द्यौः श० ६.४.१.९. द्यौर्वै वृष्टिः पूर्वचित्तिः श० १३.२.६.१४. वृष्टिर्वै द्यौः तै० ३.२.९.३. तस्यै वा एतस्यै वसोर्धारायै। द्यौरेवात्मा श० ६.३.३.१५. तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः तै० २.७.१६.३. द्यौर्यशः श० १२.३.४.७. द्यौ वै सर्वेषां देवानामायतनम् श० १४.३.२.८. द्यौरिन्द्रेण गर्भिणी श० १४.९.४.२१. ऐन्द्री द्यौः तां० १५.४.८. द्यौर्ब्राह्मणी जै० उ० ३.४.९. प्रजापतिर्वै स्वां दुहितरमभ्यध्यायद्दिवमित्यन्य आहुरुषसमित्यन्ये ऐ० ३.३३. असौ (द्युलोकः) भविष्यत् तै० ३.८.१८.६. सर्वेणात्मनार्त्तिमारिष्यसि क्षिप्रेऽमुंलोकं (द्युलोकं) एष्यसीति श० १.४.३.२१. (देवाः) अमुं (द्युलोकं) बर्हिर्णिधनेन (अभ्यजयन्) तां० १०.१२.३. द्यौर्लोकꣳ (द्युलोकं) शस्यया (जयति) श० १४.६.१.९. (प्रजापतिः) जीमूतैः नक्षत्रैश्च दिवम् (अदृंहत्) श० ११.८.१.२.]

द्रप्सम् कमनीयम् (आनन्दम्) ७.३३.११. अ०—सर्वत्राऽभिव्याप्तमानन्दम्, भा०—जगदीश्वरस्य सानन्दं स्वरूपं सर्वत्रोपलब्धम् १३.५. पार्थिवं भूगोलम् ४.१३.२. **द्रप्सः**=यज्ञपदार्थ-समूहः प्र०—अत्र मन्त्रे 'वा शर्प्रकरणे खर्परे लोपः' इति विसर्जनीय लोपः अ० ८.३.३६. इति भाष्य-वार्त्तिकेन ७.२६. दुष्टानां विमोहनम् ६.४१.३. हर्षकारी रसः प्र०—'दृप हर्षणमोहनयोः' इत्यस्मादौणादिकः स प्रत्ययः किच्च 'अनुदात्तस्य चर्दुपधस्याऽन्यतरस्याम्' अ० ६.१.५९. अनुनाऽमागमः १.२६. हर्षः १४.५. हर्ष उत्साहः १३.५. **द्रप्साः**=हर्षयुक्ता भृत्या ज्वालादयो गुणा वा १.९१.११. विमोहकारकाः (मेघाः) ५.६३.४. दृप्यन्ति संहृष्यन्ते बलानि सैन्यानि वा यैस्ते (इन्दवः=सोमाद्योषधिगणाः), प्र०—अत्र 'दृप हर्षणमोहनयोः' इत्यस्माद् बाहुलकात् करणकारक औणादिकः सः प्रत्ययः १.१४.४. [दृप हर्षमोहनयोः (दिवा०) धातोर्बाहु० औणादिकः सः प्रत्ययः किच्च। द्रप्सः संभृतः प्सानीयो भवति नि० ५.१४. द्रप्सः असौ वा ऽआदित्यो द्रप्सः श० ७.४.१.२०. स्तोको वै द्रप्सः गो० उ० २.२.१२.]

द्रप्सिनः बहुद्रप्सो विविधो मोहोऽस्ति येषां ते (घोरवर्पसः=वायवः) १.६४.२. [द्रप्समिति व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

द्रव धाव ५.३१.२. समीपमागच्छ ६.४८.१६. **द्रवत्**=द्रवतु १.४४.७. द्रवति प्राप्नोति सद्यो गच्छति वा ६.४५.३२. **द्रवताम्**=गच्छेताम् ३.१४.३. **द्रवन्ति**=गच्छन्ति २९.४८. धावन्ति ४.६.५. **द्रवन्तु**=गच्छन्तु ४.१६.१. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लेट्। द्रवताम्=प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्। द्रवन्ति द्रुधातोर्लट्। द्रवति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

द्रवत् द्रवं प्राप्नुवत् (इन्द्रम्=ऐश्वर्यम्) ३.३५.२. **द्रवतः**=द्रवीभूतस्य (वेः=पक्षिणः) ९.१५. धावतः (श्येनस्य) ४.४०.३. **द्रवन्ता**=गन्तारौ (प्रजापतिः प्रजाजनश्च) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' अ० ७.१.३९. इति आकारादेशः ७.१७. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

द्रवत् शीघ्रम्, प्र०—द्रवदिति शीघ्रनामसु पठितम्, निघं० २.१५, १.२.५.

द्रवत्पाणी द्रवच्छीघ्रवेगनिमित्ते पाणी पदार्थविद्याव्यवहारा ययोस्तौ (अश्विनौ=जलाऽग्नी) १.३.१. [द्रवत्-पाणि-पदयोः समासः। द्रवदिति व्याख्यातम्]

द्रवदश्वम् द्रवन्तो द्रुतं गच्छन्तोऽश्वा यस्मिँस्तम् (रथं=विमानादियानम्) ४.४३.२. [द्रवत्-अश्वपदयोः समासः]

द्रवन्ती जानन्ती गच्छन्ती वा (देवी=विदुषी स्त्री) ५.४१.१८. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्-प्रत्ययः]

द्रवयति आर्द्रीकरोति ६.३.४. [द्रवप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति वार्त्तिकेन णिच्-प्रत्ययान्ताल् लट्। द्रवः=द्रु गतौ धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप्]

द्रवरः यो द्रवे रमते, द्रवान् ददाति वा (राजा) ४.४०.२. ['द्रव' इत्युपपदे रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) रा दाने (अदा०) धातोर्वा 'अन्येष्वपि दृश्यते' अ० ३.२.१०१. सूत्रेण डः प्रत्ययः]

द्रवः स्निग्धः (राजा) ४.२०.२. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरबि' त्यप्-प्रत्ययः]

द्रविणम् धनम्, भा०—पुष्कलां श्रियम्, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् १८.५६. **द्रविणम्**=धनम् ३३.५२. धनं यशो वा ५.२८.२. बलम् १८.८. वीर्यम् ऋ० भू० २११, अथर्व० १८.३.१.१. चक्रवर्त्तिराज्यादिसिद्धं धनम् १.९४.१४. चतुर्विधपुरुषार्थेन धन-धान्योन्नतिः ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.८. श्रियम् १७.२८. विद्यादिश्रेष्ठ-धनम् ऋ० भू० २०३, अथर्व० ७.६.६७.१. द्रव्यम् ४.५.११. यशः ४.५.१२. राज्योद्भवं द्रव्यम् १०.११. द्रवन्ति भूतानि यस्मिन् तद् धनम् प्र०—द्रविणमिति धननामसु पठितम् निघं० २.९, ८.१७. धनं बलं वा ७.९.१. विद्यादिकम् ८.६०. द्रव्यरूप जगत् को आर्याभि० २.३०, १७.१७. ऐश्वर्यम् १०.१३. द्रव्योपार्जन और उसकी रक्षा को सं० वि० १४४, अथर्व० १२.५.८. **द्रविणः**=प्रशस्तानि द्रविणानि द्रव्याणि विद्यन्ते यस्य सः (अग्निः=विद्वान् जनः) ३.७.१०. **द्रविणानि**=द्रव्याणि यशांसि वा ४.३३.१०. धनानि यशांसि वा ४.५८.१०. **द्रविणाय**=ऐश्वर्याय ३.१०.६. **द्रविणा**=द्रविणं धनम्, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १५.३. धनानि, भा०—सुखानि १४.४. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'द्रुदक्षिभ्यामिनन्' उ० २.५१. सूत्रेण कर्मणि करणे वा कारके इनन् प्रत्ययः। द्रविणं धननाम निघं० २.१०. वलनाम निघं० २.९. धनं द्रविणमुच्यते यदेनदभिद्रवन्ति । बलं वा द्रविणं यदेनेनाभिद्रवन्ति नि० ८.१.]

द्रविणसः यज्ञकर्त्तारः, द्रविणसम्पादकाः (अ०—ऋत्विजः) १.१५.७. यशोधनस्य ४.३४.५. द्रव्यसमूहस्य विज्ञानं प्रापणं वा १.९६.८. [द्रविणमेव द्रविणस् । द्रविणस्य सकारोपजनश्छान्दसः । द्रविणं व्याख्यातम् । द्रविणासः=द्रविणसादिन इति वा द्रविणसानिन इति वा नि० ८.१.]

द्रविणस्यवः आत्मनो द्रविणमिच्छमानाः (मनुष्याः) ५.१३.२. **द्रविणस्युः**=आत्मनो द्रविणमिच्छुः (विद्वानुद्यमी जनः) ६.१६.३४. [द्रविणं व्याख्यातम् । तत आत्मन इच्छायां 'क्यजन्तात् क्याच्छन्दसी' ति उः प्रत्ययः । 'सुग् वक्तव्यः' अ० ७.१.५१. वा० सूत्रेण क्यचि सुगागमः]

द्रविणो धनं यशो वा ६.६९.३. [द्रविणं व्याख्यातम् । ततः प्रथमैकवचनस्योकारश्छान्दसः]

द्रविणोदसः यो द्रविणमत्ति तस्य (ऋत्विजः), प्र०—ऋत्विजोऽत्र द्रविणोदस उच्यन्ते हविषो दातारस्ते चैनं जनयन्ति, नि० ८.२, २.३७.४. [द्रविणस् उपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोरसुन् प्रत्ययः]

द्रविणोदः! यो द्रविणो ददाति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वन् श्रीमज्जन) २.६.३. ददातीति दाः, द्रविणस्याऽऽत्मशुद्धिकरस्य विद्यादेर्धनस्य दास्तत्सम्बुद्धौ (अ०—जगदीश्वर) १.१५.१०. **द्रविणोदाम्**=यो द्रव्याणि ददाति तम् (अग्निं=परमेश्वरं भौतिकं वा), प्र०—अत्र 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' इति विच् १.९६.१. द्रविण अर्थात् निर्वाह के सब अन्न, जलादि पदार्थ और विद्या आदि पदार्थों के देने वाले (ईश्वर) को आर्याभि० १.४०, ऋ० १.७.३.३. **द्रविणोदाः**=द्रविणांसि विद्यावलराज्यधनानि ददातीति सः परमेश्वरो भौतिकोऽग्निर्वा, प्र०—द्रविणमिति वलनामसु पठितम् निघं० २.९. द्रविणोदा इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.२. द्रविणं करोति द्रविणाति, अस्मात् 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' इत्यसुन् प्रत्ययः तद् ददातीति निरुक्त्या पदनामसु पठितत्वाज्ज्ञानस्वरूपत्वादीश्वरो, ज्ञानक्रियाहेतुत्वादग्न्यादयश्च गृह्यन्ते 'द्रूयन्ते प्राप्यन्ते यानि तानि द्रविणानि अत्र 'द्रुदक्षिभ्यामिनन्' उ० २.४९. अनेन द्रु-धातोरिनन् प्रत्ययः १.१५.७. धनप्रदः (देवः=विद्वज्जनः) ७.१६.११. धनदाता (भूगर्भविद्याविद्विद्वान् जनः) ११.२२. ये द्रविणं बलं ददति ते (देवाः=दिव्याः प्राणाः) प्र०—द्रविणोदाः कस्माद् ? धनं द्रविणमुच्यते यदेनदभिद्रवन्ति, बलं वा द्रविणं यदेनेनाऽभिद्रवन्ति, तस्य दाता द्रविणोदाः, नि० ८.१.२, १२.२. यो द्रविणो धनं यतो वा ददाति सः (सद्वैद्यः) २६.२२. सुष्ठूपासितो जगदीश्वरः, सम्यग् योजितो भौतिकोऽग्निर्वा १.१५.८. विभागादि-ज्ञापकः (अग्निः=परमेश्वरः) १.९६.८. यज्ञानुष्ठाता विद्वान् मनुष्यः १.१५.९. शौर्यादिप्रदः (अग्निः=परमेश्वरः) १.९६.८. जीवनविद्याप्रदः (अग्निः=ईश्वरः) १.९६.८. यो द्रविणांसि ददाति सः (अग्निः=परमेश्वरः) १.९६.८. द्रव्यदातारः (देवाः=विद्वांसो जनाः) १७.७०. **द्रविणोदेषु**=ये द्रविणांसि सुवर्णादीनि द्रव्यप्रदानि विद्याऽऽदीनि च ददति तेषु (विद्वज्जनेषु) १.५३.१. **द्रविणोदौ**=यौ द्रविणसौ दत्तस्तौ अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.४३.९. [द्रविणस् इत्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'आतो मनिन्०' अ० ३.२.७४. सूत्रेण चकाराद् विच् प्रत्ययः । अथवा=द्रविणसुपपदे ददातेः कः प्रत्ययः । द्रविणस् इति व्याख्यातम् । द्रविणोदाः कस्मात् ? धनं द्रविणमुच्यते यदेनदभिद्रवन्ति । बलं वा द्रविणं यदेनेनाभिद्रवन्ति । तस्य दाता द्रविणोदाः ।··· तत्को द्रविणोदाः ? इन्द्र इति कौष्टुकिः । स बलधनयोर्दातृतमः, तस्य च सर्वा बलकृतिः । 'ओजसो जातमुत मन्य एनम्' इति चाह । अथाप्यग्निं द्रविणोदसमाह, एष पुनरेतस्माज्जायते ।

'यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान' इत्यपि निगमो भवति। अथाप्यृतुयाजेषु द्राविणोदसाः प्रवादा भवन्ति। तेषां पुनः पात्रस्य इन्द्रपानम् इति भवति। अथाप्यैनं सोमपानेन स्तौति। अथाप्याह—'द्रविणोदाः पिबतु द्राविणोदसः' इति। अयमेवाग्निर्द्रविणोदा इति शाकपूणिः। आग्नेयेष्वेव हि सूक्तेषु द्राविणोदसाः प्रवादा भवन्ति-—'देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम्' इत्यपि निगमो भवति। यथो एतत् स बलधनयोर्दातृतम इति सर्वासु देवतास्वैश्वर्यं विद्यते। यथो एतद् 'ओजसो जातमुत मन्य एनम्' इति चाहेत्ययमप्यग्निरोजसा बलेन मथ्यमानो जायते, तस्मादेनमाह सहसस्पुत्रं सहसः सूनुं सहसो यहुम्। यथो एतदग्निं द्राविणोदसमाहेत्यृत्विजोऽत्र द्रविणोदस उच्यन्ते हविषो दातारस्ते चैनं जनयन्ति। 'ऋषीणां पुत्रो अधिराज एषः' इत्यपि निगमो भवति। यथो एतत् तेषां पुनः पात्रस्येन्द्रपानमिति भवतीति भक्तिमात्रं तद् भवतीति। यथा वायव्यानीति सर्वेषां सोमपात्राणाम्। यथो एतत् सोमपानेनैनं स्तौतीत्यस्मिन्नप्येतदुपपद्यते—'सोमं पिब मन्दसानो गणश्रिभिः' इत्यपि निगमो भवति। यथो एतद् 'द्रविणोदाः पिबतु द्राविणोदसः' इत्यस्यैव तद् भवति नि० ८.१-२. द्रविणोदाः—द्रविणोदा इति द्रविणं ह्येभ्यो ददाति श० ६.३.३.१३. प्राणा वै देवा द्रविणोदाः तै० सं० ५.१.१०.४.]

द्रविता गन्ता (राजा) ६.१२.३. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्-प्रत्ययः]

द्रविः द्रवीभूत्वोच्चारणक्रिया ६.३.४. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोरौणादिक इन् प्रत्ययः]

द्रष्टुम् देखने के लिए, सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.३. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोस्तुमुन्प्रत्ययः]]

द्रह्यत् दृढः सन् (इन्द्रः=विद्वान् जनः) २.११:१५. [दृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। व्यत्ययेन श्यन्। अमागमश् छान्दसः]

द्राघिमा दीर्घस्य भावः १८.४. [दीर्घप्राति० भावे इमनिच् प्रत्यये परे 'प्रियस्थिर०' अ० ६.४.१५७. सूत्रेण 'द्राघि' इत्यादेशः]

द्राघिष्ठाभिः अत्यन्तं दीर्घाभिः पुरुषार्थयुक्ताभिः क्रियाभिः ३.६२.१७. [दीर्घप्राति० अतिशायन इष्ठन्प्रत्यये परे 'प्रियस्थिरस्फिर०' अ० ६.४.१५७. सूत्रेण 'द्राघि' इत्यादेशः]

द्राघीयः अतिशयेन विस्तीर्णं शताद्वर्षेभ्योऽप्यधिकम् (आयुः) १.५३.११. (दीर्घप्राति० अतिशायने ईयसुन् प्रत्यये परे 'प्रियस्थिरस्फिर०' अ० ६.४.१५७. सूत्रेण 'दाघि' आदेशः]

द्रापिम् कवचम् ४.५३.२. कवचं निद्रां वा, प्र०—अत्र 'द्रै स्वप्ने' इत्यस्माद् 'इञ्वपादिभ्यः' इतीञ् १.२५.१३. **द्रापिमिव**=यथाकवचम् १.११६.१०. **द्रापे**=यो द्रः कुत्साया गतेः पाति रक्षति तत्सम्बुद्धौ (राजप्रजाजन) १६.४७. [द्रै स्वप्ने (भ्वा०) द्रा कुत्सायां गतौ (अदा०) धातोर्वा क्विपि द्रा। तदुपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' इति इक्-प्रत्ययः]

द्रापिमिव यथाकवचम् १.११६.१०. [द्रापिम्-इव-पदयोः समासः। द्रापिमिति व्याख्यातम्]

द्रुग्धः प्राप्तद्रोहः (राजपुरुषः) ५.४०.७. [द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

द्रुणः यो द्रवति सः (विद्वज्जनः) १.१६१.१. **द्रुणा**=गन्तारौ (इन्द्राग्नी=सेनापत्यध्यक्षौ) ५.८६.३. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको नक्-प्रत्ययः। 'द्रुणा' प्रयोगे 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः। अथवा द्रुण हिंसागतिकौटिल्येषु (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः]

द्रुपदादिव वृक्षात् फलादिवत् २०.२०. [द्रुपदात्-इव-पदयोः समास]

द्रुपदे सद्यः प्रापणीये वृक्षादिद्रव्यपदे वा (विज्ञानकर्मणो) ४.३२.२३. **द्रुपदेषु**=द्रूणां वृक्षादीनां पदानि फलादिप्राप्तिनिमित्तानि येषु तेषु (स्तम्भेषु) १.२४.१३. [द्रुः=वृक्षः, दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्बाहुलकाद् औणादिकः (उः १.३५) कुः प्रत्ययः। द्रोः=वृक्षस्य पादौ द्रुपदे। द्रु-पादपदयोः समासः। द्रुपदे दारुपाद्वोः नि० ४.१५.]

द्रुषद्वा यो द्रुषद् द्रवीभूतादिषु पदार्थेषु सीदति (अग्निः) ६.३.५. ['द्रु' इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि वनिप्प्रत्ययः]

द्रुहन् द्रुह्यन्तु जिघांसन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययेन श लोडर्थे लुङ् च १.५.१०. [द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोर्लुङ्। व्यत्ययेन शः। अडभावश्छादसः। पुषादित्वाद् अङ्]

द्रुहन्तरः द्रुहं तरति येन सः (परशुः=कुठारः) १.१२७.३. यो द्रोग्धॄन् तरति (सभेशः) १.१२७.३. [द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोः क्विपि द्रुह्। ततो द्रुहम्-तर-पदयोः समासः। विभक्तेरलुक्]

द्रुहम् द्रोग्धारम् (दुष्टशत्रुजनम्) ४.२३.७. **द्रुहः**=द्वेष्टुः (शत्रुजनस्य) ४.२८.२. गोहिंसकान् शत्रून् १.१२१.४. द्रोग्धॄन् (दुर्जनान्) ७.१६.८, द्रोग्धुरीर्ष्यकात् (शत्रोः)

२.३५.६. द्रोग्धारः (स्तेनाः) २.२३.१६. द्रोहयुक्ताः (राजाऽमात्याः) ४.४.१५. शत्रोः (जनात्) ५.७४.४. हन्तुमिच्छून् (शत्रून् जनान्) १.१३३.१. द्रोह आदि दुर्गुण सं० वि० १०४, २.३५.६, द्रोग्ध्रीः (अदेवीः स्त्रियः) ३.३१.१९. **द्रुहे**=द्रोग्ध्रे (दुर्जनाय) २.३०.६. [द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

द्रुह्यवः दुष्टानां निन्दकाः (सत्पुरुषाः) ७.१८.६. ये दुष्टानधार्मिकान् द्रुह्यन्ति जिघांसन्ति (अनवः=योद्धृमनुष्याः) ७.१८.१४. **द्रुह्यम्**=यो द्रोग्धि तम् (राजाऽमात्यम्] ७.१८.१२. **द्रुह्युषु**=द्रोहकारिषु (पुरुषु=मनुष्येषु), प्र०—द्रुह्युरिति मनुष्यनाम निघं० २.३, १.१०८.८. **द्रुह्यौ**=द्रोग्धुं योग्ये (जने=मनुष्ये) ६.४६.८. [द्रुह्यवः=मनुष्यनाम निघं० २.३. द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोर्बाहु० औणादिकः क्युः प्रत्ययः]

द्रुह्वणे द्रोग्ध्रे (जनाय) ६.२२.८. [द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्वनिप्प्रत्ययः]

द्रुह्वाणः द्रोहकर्त्तारः (परद्रोहयुक्ता जनाः) १.२५.१४. [द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोस्ताच्छील्ये चानश्। विकरणव्यत्ययेन शपः स्थान उकारः]

द्रूणानः शीघ्रकारी (अग्नीरक्षोहा=सेनेशः) ४.४.१. हिंसन् (सेनापतिः) १३.९. [द्रूणानः=द्रूणानः। नि० ६.१२. द्रूणाति वधकर्मा निघं० २.१९. ततः शानच्। अथवा द्रुण हिंसागतिकौटिल्येषु (तुदा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। उकारस्य च दीर्घश्छान्दसः]

द्रोघाय द्रोहाय ६.६२.९. (द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोर्घञ् भावे। हकारस्य च घकारश्छान्दसः]

द्रोणकलशम् द्रोणश्च कलशश्च तत् १९.२७. **द्रोणकलशः**=द्रोणश्चासौ कलशश्च पात्रविशेषः १८.२१. [द्रोण-कलशपदयोः समासः। द्रोणः=द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'कृवृजॄसि०' उ० ३.१०. सूत्रेण नः प्रत्ययः। द्रोणकलशः=देवपात्रं द्रोणकलशः तां० ६.५.७. प्रजापतिर्वै द्रोणकलशः श० ४.३.१.६. यज्ञो वै द्रोणकलशः श० ४.५.८.५. राष्ट्रं द्रोणकलशः तां० ६.६.१. प्राणा वै द्रोणकलशः तां० ६.५.१५. द्वयं वावेदं ब्रह्म चैव क्षत्रं च। तदुभयं द्रोणकलशे जै० १.७८. प्रजापतये त्वेति द्रोणकलशमभिमृशेत् तै० सं० ३.२.१.३. प्रजापतेर् वा एतत् पात्रं यद् द्रोणकलशः। मै० ४.८.८. मूर्धा द्रोणकलशः मै० ४.५.९. मूर्धानं ते द्रोणकलशः पातु मै० ४.८.७.]

द्रोणम् द्रवन्ति येन विमानादियानेन तत् ६.४४.२०. **द्रोणे**=परिमाणे ९.३७.२. पात्रविशेषे २६.२६. गन्तव्ये मार्गे ६.२.८. [द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'कृवृजॄसि०' उ० ३.१० सूत्रेण नः प्रत्ययः। द्रोणम्=द्रुममयं भवति नि० ५.२६.]

द्रोण्यः द्रोणेषु शीघ्रगामिषु भवः (वह्निः=अग्निः) ५.५०.४ [द्रोणम् इति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत्।]

द्र्वन्नः द्रु द्रवीभूतमन्नं यस्मात् सः (जारयायि=शरीरम्) ६.१२.४. द्रु काष्ठमन्नं यस्य सः (अग्निः) २.७.६ [द्रु-अन्नपदयोः समासः]

द्र्वन्नः द्रुः काष्ठमन्नं यस्य सः (अग्निः) २.७.६. द्रवो वृक्षादय ओषधयोऽन्नानि वा यस्य सः, भा०—यः पुरुषार्थेन बहून्यन्नादीन्यर्जितुं शक्नुयात् सः (पतिः) ११.७०. [द्रु-अन्नपदयोः समासः]

द्वयान् प्रजासेनाजनान् ६.२७.८. **द्वयेन**=द्विविधेन कर्मणा १.१४७.४. अध्ययापनोपदेशरूपेण १.१४७.५. पापाऽपराधाभ्याम् ५.३.७. कार्यकारणात्मकेन ५.१२.२. [संख्यावाचिनो द्विप्राति० अवयवे विहितस्य तयप् प्रत्ययस्य स्थाने 'द्वित्रिभ्यां तयस्यायज्वा' अ० ५.२.४३. सूत्रेणायजादेशः]

द्वयाविनः उभयपक्षाऽऽश्रिताः (जनाः) २.२३.५. प्रत्यक्षाऽप्रत्यक्षयोः परपदार्थाऽपहर्त्तुः (अघशंसस्य=स्तेनस्य) १.४२.४. [द्वाववयवावस्येति विग्रहे द्वयशब्दः पूर्वपदे व्याख्यातः। द्वयप्राति० मत्वर्थे 'छन्दसि विनिप्रकरणेऽष्ट्रामेखलाद्वयोभयरुजाहृदयानां दीर्घत्वं वेति वक्तव्यम्' अ० ५..२.१२२. वा० सूत्रेण इन् दीर्घश्च]

द्वरः यो द्वरति आवृणोति सः (वव्रः=कूप इव मेघः) १.५२.३. [द्वृ संहारे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अच्]

द्वरिषु आवरकेषु व्यवहारेषु १.५२.३. [द्वर इति व्याख्यातम्। ततो मत्वर्थ इनिः प्रत्ययः]

द्वा द्वौ (यन्तारा=नियामकौ जनौ) २५.४२. जो ब्रह्म और जीव दोनों, स० प्र० २८३,१. १६४.२०. [द्विप्राति० प्रथमाद्विवचने त्यदादीनामत्वे 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

द्वात्रिंशत् द्व्यधिकाः त्रिंशत् (सङ्ख्या) १८.२५. [द्वि-त्रिंशत्पदयोः समासे पूर्वपदस्याकारादेशः]

द्वादश द्वादश (मासान्) १.२५.२८. द्व्यधिका दश (सङ्ख्या) १८.२५. [द्वि-दशन् पदयोः समासे पूर्वपदस्याकारादेशः। द्वादश रात्रयः संवत्सरस्य प्रतिमा वै द्वादश रात्रयः तै० १.१.६.७.]

द्वादशकपालः द्वादशसु कपालेषु संस्कृतः (चरुः=पाकः) २९.६०. [द्वादश-कपालपदयोः 'तद्धितार्थोत्तरपदसमाहारे च' इति समासः]

द्वादशप्रधयः यानेषु प्रधयः सर्वकलायुक्तानामराणां धारणार्था द्वादश, ऋ० भू० १९८, ऋ० २.३.२४.४८. [द्वादशप्रधिपदयोः समासः । द्वादशः=द्वि-दशन्पदयोः समास. । प्रधिः=प्रपूर्वाद् दधातेः किः प्रत्ययः]

द्वादशाकृतिम् द्वादश मासा आकृतिर्यस्य तम् (सूर्यम्) १.१६४.१३. [द्वादश-आकृतिपदयोः समासः]

द्वादशाक्षरेण साम्न्या गायत्र्या (छन्दसा) ९.३३. [द्वादशअक्षरपदयोः समासः]

द्वादशारम् द्वादश अरा मासा अवयवा यस्य तं संवत्सरम् १.१६४.११. [द्वादश-अरपदयोः समासः]

द्वादशी द्वादशानां पूरणा (क्रिया) २५.४. [द्वि-दशन् पदयोः समासे 'द्व्यष्टनः संख्यायाम्०' अ० ६.३.४७ सूत्रेणाकारादेशे पूरणार्थे डट्प्रत्यये स्त्रियां 'ठिड्ढाण्०' इति सूत्रेण ङीप्]

द्वापराय द्वावपरौ यस्मिँस्तस्मै (सत्याचरणाय जनाय) ३०.१८. [द्वि-अपरपदयोः समासे पूर्वपदस्याकारादेशः । द्वापर-(युगम्) संजिहानस्तु द्वापरः ऐ० ७.१५.]

द्वारः द्वाराणि २७.१६. प्रवेश-निर्गमार्थानि द्वाराणि २१.४९. गमनाऽऽगमनार्थानि द्वाराणि २८.३६. विद्याविनयद्वाराणि, भा०—विद्याधर्मद्वाराणि २८.५. अवकाशरूपाः, भा०—अवकाशप्रदाः, अवकाशप्रदानेनानन्दप्रदाः (दिशः) २९.३०. द्वाराणीव सुखनिमित्ताः (पत्नीः) ५.५.५. द्वार इव सुशोभिताः (वाचः) १.१४२.६. **द्वारिषु**=आवरकेषु व्यवहारेषु १.५२.३. **द्वारौ**=बाह्याभ्यन्तरस्थे मुखे ५.३३. गृहादीन्द्रिययोः प्रवेशनिर्गमनिमित्तौ १.४८.१५. **द्वार्भ्यः**=सवर्णेभ्य आच्छादनेभ्यः ३०.१०. [वारयतीति वारः, दकारोपजनेन द्वारः । अथवा=द्वारयति संवृणोति यया सा द्वाः । बहुवचने द्वारः । बाहु० औणादिकः (उ० २.५७.) सूत्रेण क्विप् । द्वारः जवतेर्वा द्रवतेर्वा वारयतेर्वा । यज्ञे गृहद्वार इति कात्थक्यः । अग्निरिति शाकपूणिः नि० ८.९-१०.]

द्वाविंशः द्वाविंशतिधा (सम्भरणः=सम्यग्धारको गुणः) १४.२३. [द्वि-विंशतिपदयोः समासे पूर्वपदस्याकारादेशे पूरणार्थे उ प्रत्यये 'ति विंशतेर्डिति' इति तेर्लोपः । वर्चो द्वाविंशः तै० सं० ४.३.८.१. मै० २.८.४.]

द्विक्षत् द्वेष करे सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.३. [द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोर्लिङर्थे लेटि रूपम्]

द्विजन्मा विद्याजन्मद्वितीयः (विद्वज्जनः) १.१४०.२. द्वाभ्यामाकाशवायुभ्यां जन्म प्रादुर्भावो यस्य (मेघस्थ-विद्युत्) १.१४९.४. गर्भ-विद्याशिक्षाभ्यां जातः (द्विजो जनः) १.१४९.५. **द्विजन्मानम्**=द्वाभ्यां वायुकारणाभ्यां जन्म यस्य तं वह्निम् १.६०.१. **द्विजन्मानः**=द्वे उत्पत्ति-विद्याप्राप्तिरूपे जन्मनी येषान्ते (विद्वांसो जनाः) ६.५०.२. [द्वि-जन्मन्पदयोः समासः]

द्विता द्वयोर्भावः ४.४२.१. द्वयो राजप्रजयोरुपदेशकोपदेश्ययोर्वा भावः ६.४५.८. द्वयोरध्यापकाऽध्येत्रोरुपदेष्ट्र-उपदेश्ययोर्भावः ६.१६.४. द्वयोः प्रजासभाद्यध्यक्षयोर्भावः १.६२.७. [द्वि प्राति० भावे तल् प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्। द्विता=द्वैधम् नि० ५.३.]

द्विताय द्वाभ्यां जन्माभ्यां विद्यां प्राप्ताय (अतिथये) ५.१८.२. द्वयोर्वायुवृष्टि-जलशुद्ध्योर्भावाय १.२३. [द्वि-प्राति० भावे तल्प्रत्ययः । द्वि-इतपदयोर्वा समासे इकारलोपश्छान्दसः]

द्वितीयम् द्वयोः सङ्ख्यापूरकम् (भा०—गृहाश्रमम्) १२.१८. **द्वितीयः**=द्वयोः संख्यापूरको धनञ्जयः १७.३२. **द्वितीयाः**=रुद्राः २०.१२. **द्वितीये**=द्वयोः पूरणे (अहन्=दिने) ३९.६. **द्वितीयैः**=एकादशप्राणाद्यै रुद्रैः २०.२२. [द्विसंख्यावाचिनः प्राति० पूरणार्थे तीयः प्रत्ययः । द्वितीयः=द्वितीयवान् हि वीर्यवान् श० ३.७.३.८.]

द्वितीयस्याम् अस्यां भिन्नायाम् (पृथिव्यां=भूमौ) ५.९. **द्वितीया**=ताडनक्रिया २५.६. **द्वितीयया**=द्वितीयया (अध्यापनक्रियया) २७.४३. [द्वितीयमिति व्याख्यातम् । ततः सप्तमी]

द्विपक्षा दो पक्षों वाली (शाला) सं० वि० १६८, अथर्व० ९.३.२१. [द्वि-पक्षपदयोः समासे स्त्रियां टाप् प्रत्ययः]

द्विपत् द्वौ पादौ यस्य सः (मनुष्य-समूहः) प्र०—अत्र द्विपादिति भवितव्येऽयस्मयादित्वाद् भसंज्ञा, भत्वात् 'पादः पत्' इति पद्भावः १.९४.५. **द्विपदम्**=द्वौ पादौ यस्मिँस्तत् (विद्यासुशिक्षायुक्तं विद्वांसम्) २८.३२. **द्विपदः**=मनुष्यादेः (जगतः=संसारस्य) २३.३. द्वौ पादौ यस्य तस्य मनुष्यादेः २५.११. **द्विपदा**=द्वौ पादौ यस्यां सा (ऋक्) २१.२०. द्वौ पादौ यस्मिँस्तेन (वाकेन=यजुषा) १.१६४.२४. मनुष्यादिना २६.१९. **द्विपदाः**=द्वे पदे यासु ताः (प्रजाः) २३.३४. **द्विपदी**=अभ्यस्तद्विवेदा (विदुषी स्त्री)

१.१६४.४१. **द्विपदीम्**=द्वे अभ्युदय-निःश्रेयसे सुखे पदे यस्यां ताम् (स्वाहा वाचम्) ८.३०. **द्विपदे**=मनुष्याद्याय १७.६६. पुत्राद्याय ३६.८. द्वौ पादौ यस्य मनुष्यादेस्तस्मै ११ ८३. मनुष्यादि के लिए सं० वि० ११४, १७.६६. [द्वि-पादपदयोः समासे समासान्तलोपे च द्विपात् । ततः 'प्रयस्मयादीनि च छन्दसि' इति भत्वात् 'पादः पत्' इति पदादेशः । स्त्रियां 'पादोऽन्यतरस्याम्' इति वा ङीप्प्रत्ययः । 'टाब् ऋचि' सूत्रेण टाप् प्रत्यये तु 'द्विपदा' इति रूपमपि । द्विपदी-मध्यमेन चादित्येन च नि० ११.४०. द्विपदे= द्विपाद्भ्यः नि० १२.१३.]

द्विपात् द्वौ पादौ यस्य स मनुष्यादिः ४.५१.५. **द्विपादम्**=मनुष्यादिकम् १३.४७. **द्विपादे**=मनुष्याद्याय १.१२१.३. [द्वि-पादपदयोः समासे समासान्तलोपः । द्विपात्- द्विपाद् वै पुरुषः ऐ० ४.३. द्विपाद् यजमानः कौ० १६.११. चन्द्रमा द्विपात्तस्य पूर्वपक्षापरपक्षौ पादौ गो० पू० २.८. द्विपाद् वै पुरुषः श० २.३.४.३३.]

द्विबर्हज्मा यो द्वाभ्यां बृहते स द्विबर्हस्तेन द्विबर्हेण युक्ता ज्मा भूमिर्यस्य (सूर्य इव राजा) ६.७३.१. [द्विबर्ह-ज्मापदयोः समासः । द्विबर्हः='द्वि' इत्युपपदे बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः । ज्मा भूमिनाम निघं० १.१.]

द्विबर्हसः यो द्वाभ्यां विद्यापुरुषार्थाभ्यां वर्द्धते तस्य (विद्वज्जनस्य) १.१७६.५. **द्विबर्हाः**=द्वाभ्यां विद्या-विनयाभ्यां वर्हे वर्धनं यस्य सः (सभेशो राजा) ७.८.६. द्वाभ्यां विद्याविनयाभ्यां वृद्धः (विविद्वान्=विपश्चिज्जनः) ४.५.३. यो द्वाभ्यां विद्याशिक्षाभ्यां प्रतापप्रकाशाभ्यां वा वर्धयति सः (विद्वान् जनः) १.७१.६. द्वयोर्व्यवहार-परमार्थ-योर्वर्धकः (रुद्रः=न्यायाधीशः) १.११४.१०. द्वाभ्यां विद्या-पुरुषार्थाभ्यां यो वर्धते सः (सोमः=ओषधिरसः) ७.२४.२. द्वे बर्हसी व्यावहारिक-पारमार्थिक-वृद्धिकरे विज्ञाने यस्य सः, प्र०—द्विबर्हा इति पदनामसु पठितम्, निघं० ४.३, ७.३९. योऽन्तरिक्ष-वायुभ्यां द्वाभ्यां वर्धते (इन्द्रः=सूर्यः) ६.१९.१. या द्वाभ्यां रात्रिदिनाभ्यां बृंहयति वर्धयति (उषाः) ५.८०.४. [द्वि-बर्हस्पदयोः समासः । बर्हस्=बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः । द्विबर्हाः=द्वयोः स्थानयोः परिवृढो मध्यमे च स्थान उत्तमे च नि० ६.१७.]

द्विमाता द्वयोरग्निजलयोर्माता प्रमापकः (परिज्मा= वायुः) १.११२.४. द्वे वाय्वाकाशौ मातरौ यस्याऽग्नेः सः (त्ररुणः=परमात्मा) ३.५५.६. द्वयोः प्रकाशाऽप्रकाशवतो-र्लोकसमूहयोर्माता निर्माता (अग्निः=जगदीश्वरः) १.३१.२. [द्वि-मातृपदयोः समासः]

द्विरूपाः द्वे रूपे यासां ताः (ऐन्द्राग्नाः=वायुविद्यु-त्साम्नः पशवः) २४.८. [द्वि-रूपपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

द्विषतः द्वेषयुक्तस्य (मूर्खजनस्य) ६.४७.१९. शत्रोः, भा०—दुःखस्य १.२४. **द्विषते**=शत्रवे १.५०.१३. **द्विषन्तम्**=शत्रुम् (जनम्) १.५०.१३. [द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

द्विषः द्विषन्ति अप्रीणयन्ति याभ्यः शत्रुसेनाभ्यो दुःख-क्रियाभ्यो वा ताः प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इति हेतौ क्विप् ४.२९. ये धर्मे द्विषन्ति तान् (कामादीन् शत्रून्) १.९७.७. दुष्टान् १.९०.३. शत्रून् ६.५१.१६. द्वेषयुक्ताः क्रियाः ५.२५.९. शत्रोः ६.२.४. धर्मद्वेष्टॄन् (दुर्जनान्) ५.४४.१२. वैरिणः (दोषान्) ३.१५.१. शत्रूभूता व्यभि-चारिण्यौर्वृषलीः (स्त्रीः) ११.४९. द्वेषवृत्तीः २.७.३. अप्रीतेः २.७.२. **द्विषाम्**=द्वेष्टॄणाम् (दुर्जनानाम्) ७.३४.१३. [द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'कृतो बहुलम्' इति वा करणे क्विप्]

द्विष्मः न प्रीणीमः ३८.२३. अप्रीतयामः १३.४७. विरुन्ध्मः १५.१५. विरुद्ध्यामः १.२५. हम द्वेष करते हैं. आर्याभि० २.२९, ३६.२३. पीडयामः २.२५. अप्रीतिं कुर्याम, भा०—विरोधिनं जानीमः १६.६४. अप्रीणीमः १.२६. कोपयामः १.२६. न प्रसादयेम १७.१. वैरायामहे २.२५. [द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोर्लटि उत्तमबहुवचने रूपम्]

द्विः द्विवारम् (विद्याजन्मयुक्तं द्विजम्) ४.६.८. [द्वि प्राति० 'द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्' इति सूत्रेण क्रियाभ्यावृत्तिगणने सुच्]

द्वीपम् द्विधाऽपांसि यस्मिँस्तम् (महानदम्) १.१६९.३. [द्वि-अप्पदयोः समासे 'ऋक्पूरब्धूः०' अ० ५.४.७४. सूत्रेण समासान्तोऽकारः प्रत्ययः । 'द्व्यन्तरूपसर्गेभ्योऽप ईत्' अ० ६.३.९७. सूत्रेण अप आदेरीकारादेशः]

द्वीप्याय द्वीपेषु द्विर्गतजलेषु देशेषु भवाय (जनसमूहाय) १५.३१. [द्वीपमिति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत्-प्रत्ययः]

द्वे रात्रिदिने १.९५.१. शरीरात्मबले १.१५५.५. कार्यकारणे ३.५६.२. अभ्युदय निःश्रेयसे (सुखे) ४.५८.३. [द्विप्राति० नपुंसके प्रथमाद्विवचने रूपम्]

द्वेषः द्विषतः शत्रून्, प्र०—अत्र 'अन्येभ्योऽपि०' इति कर्त्तरि विच् १.३४.११. द्वेष्टॄन् दुष्टान् शत्रून् मनुष्यान्

७.५८.६. द्वेषादीन् दोषान् धर्मद्वेष्टॄन् मनुष्यान् वा १.१६७.९. ईर्ष्यादीन् दोषान् वा २.३३.२. द्वेषकान् (दुर्जनान्) ६.१. ये द्विषन्ति ते (दुर्जनाः) ५.२०.२. ये द्विषन्ति तान् (ह्वरः=शत्रून्) ३८.२०. द्वेषयुक्तानि (रपांसि=पापानि) १.१५७.४. द्वेष्टुः (मर्त्तात्=मनुष्यात्) ४.१०.७. [द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि 'अन्येभ्यो ऽपि दृश्यन्ते' इति सूत्रेण विच्]

द्वेषः द्वेष्टि येन सः (दुर्गुणः) ६.१८. अप्रीतिः ७.५६.१९. [द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोर्घञ्प्रत्ययः कर्त्तृ-भिन्नेषु कारकेषु]

द्वेषते अप्रीतयति, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुगभावः ११.८०. [द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोर्लट्। शपो न लुक् छान्दसत्वात्]

द्वेषांसि द्वेषादियुक्तानि कर्माणि, भा०—ईर्ष्याक्रोधादि-दोषान् २१.३. द्वेषयुक्तानि जन्तुजातानि (भा०—द्वेषादीन्) २८.१५. द्वेषयुक्तानि कर्माणि २.२९.२. **द्वेषोभिः**=द्वेष-युक्तैस्सह (दुर्जनैः) ७.६०.९. **द्वेषोभ्यः**=दुष्टेभ्यः, भा०—द्वेषादियुक्तेभ्यः पुरुषेभ्यः २१.४३. यथा द्विषन्ति तेभ्यस्तथा (पापिजनेभ्यः) ५.३५. शत्रुभ्यः २१.४४. विरोधिभ्यः (जनेभ्यः) २१.४५. [द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोरौणादिको ऽसुन्प्रत्ययः]

द्वेषोयुतम् द्वेषादिभी रहितम् (अग्निं=परमविद्वांसम्) ४.११.५. **द्वेषोयुतः**=द्वेषयुक्ताः (शत्रवः) ५.२.६. [द्वेषस्-युतपदयोः समासः। 'द्वेषस्' इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। युतः=युमिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

द्वेष्टि अप्रीतयति, भा०—हन्यात् २६.१०. विरुणद्धि २.२५. दुःखयति २.२५. शत्रूयति २.१५. न प्रीणयति १६.६४. कोपयति १.२६. वैरयति ३.५३.२१. विरुध्यति १.२५. अप्रीणाति १.२६. अप्रसन्नयति ३५.१२. वैरायते २.२५. द्वेष, अप्रीति, शत्रुता करता है, आर्याभि० २.२९, ३६.२३. [द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोर्लट् प्रत्ययः]

द्वौ स्वप्रकाशभूगोलौ १.३५.६. **द्वाभ्याम्**=कार्य-कारणाभ्याम् २३.३४. विद्यापुरुषार्थाभ्याम् २७.३३. **द्वयोः**=स्वात्म-परात्मनोः १.८३.३. राजप्रजाजनयोः ६.४५.५. [द्विप्राति० प्रथमाद्विवचने रूपम्। अन्यत्र तृतीया-षष्ठ्योः द्विवचने]

द्व्यक्षरेण दैव्या उष्णिहा (छन्दसा) ९.३१. [द्वि-अक्षरपदयोः समासः]

धक् दहेः १.१७८.१. दहेत् ६.१.१४. दहति २.११.२१. दह्यात् २.१५.१०. **धक्तम्**=दहतम् १.१८३.४. **धक्षत्**=दहेत् प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति भष्त्वं न १.१३०.८. दहति २.४.७. **धक्षि**=दहसि, प्र०—अत्र शपो लुक् १.१४१.८. दह, प्र०—अत्र विकरण-लुक् १३.१२. [दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'मन्त्रे घसह्वरणश०' अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक्। 'धक्षत्' प्रयोगे लेट्। अन्यत्र लटि शपो लुक्]

धक्षुषः दहतः (अग्नेः) १.१४१.७. [दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

धक्षोः दाहकस्य (अग्नेः) २.४.४. [दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकः क्सुः प्रत्ययः]

धत्त धरत ८.१८. भा०—उन्नयत १७.९८. धारयत १.१७१.१. **धत्तन**=धत्त १.६४.१४. धरत १.१०३.५. दधतु, प्र०—अत्र व्यत्ययः 'तप्तनप्०' इति तनबादेशश्च १.२०.७. **धत्तम्**=धरेतम् ७.५३.३. धरतः, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.९३.७. प्रयच्छतम् १.९३.२. धरतम् ४.५७.८. धारयतः २.१९. **धत्तः**=दध्याताम् २८.७. **धत्तात्**=दध्याः ३.८.१. **धत्ताम्**=धारयतः २.३. आच्छा-दित, शोभायुक्त करे, सं० वि० १४८, अथर्व० १४.१.५३. **धत्ते**=धरति ३.१०.३. **धत्थ**=धरत ७.३७.२. **धत्थः**=धरथः १.१५७.५. धरेतम् ६.६८.६. **धत्स्व**=धारणं कुरु ६.२५. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोटि रूपाणि धत्तात्=दास्यसि नि० ८.१८. धत्ते=धा+लट्]

धनंजितम् धनं जयत्युत्कर्षति येन तम् (यज्ञम्) ११.८. **धनंजिते**=यो धनेन जयति तस्मै (इन्द्राय=विदुषे सभासेनेशाय) २.२१.१. [धनोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' इति तुगागमः]

धनञ्जयम् यो धनं जयति तम् (कविं=विद्वांसम्) ३.४२.६. यः शत्रुभ्यो धनं जयति तम् (वीरपुरुषम्) ११.३४. **धनञ्जयः**=यो धनेन जापयति सः (ईश्वरः) १.७४.३. [धनोपपदे जि जिये (भ्वा०) धातोः 'संज्ञायां भृतॄवृजिधारि०' अ० ३.२.४६. सूत्रेण छन्दसि-असंज्ञायामपि खच्। पूर्वपदस्य मुम्]

धनदाः ऐश्वर्यदाता (अग्निः=विद्वान् राजा) ९.२८. यो धनं ददाति सः (राजा) ७.३२.१७. **धनदाम्**=वृष्टि-वद्राजनीतिम् १.३३.१०. [धनोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

धनम् यद्धिनोति वर्धयति तत्, प्र०—धनं कस्मात्? धिनोतीति सतः, नि० ३.९, १२.८२. सुवर्णादिकम् १८.५.

श्रियम्, भा०—करम् ६.१७. जगत् रूप धन को, स० प्र० २३८, १०.४८.५. वस्तुमात्रम् ४०.१. विद्यासुवर्णादिकम् १.३६.४. **धनानाम्**=द्रव्याणाम् ३.३२.१७. विद्यासुवर्णादीनाम् ३.३५.११. राज्यविभूतिनाम् १.१०२.५. पूर्ण विद्या-राज्यादि साध्यपदार्थानाम् १.४.६. **धनानि**=पृथिवीसुवर्णविद्यादीनि १.३०.१६. विद्या-धर्म-चक्रवर्त्ति-राज्यश्रीप्रसिद्धानि १.४२.६. **धनाय**=उत्तमधनप्राप्तये १.१००.८. **धने**=विद्याचक्रवर्त्तिराज्यसिद्धे द्रव्ये १.५४.६. सुवर्ण-रत्नादौ १.११६.१५. **धनेन**=ऐश्वर्येण १२.७. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणादिकः (उ० २.८१.) क्युः प्रत्ययः। धनम् धिनोतीति सतः नि० ३.६. राष्ट्राणि वै धनानि ऐ० ८.२६. तस्माद् हिरण्यं कनिष्ठं धनानाम् तै० ३.११.८.७. धनं मे शंस्य पाहि काठ० ७.३.]

धनयन् विद्यादिधनं कुर्युः १.७१.३. **धनयन्त**=आत्मनो धनमिच्छन्ति, प्र०—अत्राऽडभावः १.१६७.२. **धनयन्ते**=धनं कुर्वन्ति १.८८.३. [धनपदाद् आत्मन इच्छायां क्यजन्ताल् लङ् 'न छन्दस्यपुत्रस्य' इतीत्वं न। अटोऽभावश्छान्दसः। अथवा=धनप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिजन्तस्य रूपाणि]

धनसातौ धनानां संविभक्तौ १८.३२. [धन-सातिपदयोः समासः। सातिः=षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः क्तिन्]

धनसाम् धनानि सनन्ति संभजन्ति यया ताम् (अथर्व्यम्=सेनाम्) १.११२.१०. यो धनानि सनोति विभजति तम्' (विद्वांसं जनम्) प्र०—अत्र धनोपपदात् सन-धातोर्विट्-प्रत्ययः १.११२.७. **धनसाः**=ये धनानि सनन्ति संभजन्ति ते (विद्वांसः) २.१०.६. [धनोपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'जनसनखनक्रमगमो विट्' अ० ३.२.६७. सूत्रेण विट्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' अ० ६.४.४१. सूत्रेणाकारान्तादेशः]

धनस्पृत् यो धनं स्पृणोति सेवते सः (राजा) ३.४६.२. **धनस्पृतम्**=धनस्पृहायुक्तम् (गृहपतिम्) ५.८.२. धनं स्पृणन्ति येन तम् (सुदक्षं=उत्तमबल-चातुर्य्यम्) ६.१९.८ धनेन प्रीतं सेवितं वा (तोकम्=तनयम्) १.६४.१४. धनैर्विद्यासुवर्णादिभिः स्पृतः प्रीतः सेवितस्तम् (सभ्य-जनम्) १.३६.१०. [धनोपपदे स्पृ प्रीतिपालनयोः (स्वा०) धातोः क्विप् प्रत्ययः। तुगागमः]

धना द्रव्याणि १.१३०.६. धनानि १.६४.१३. [धनप्राति० जसः शेरादेशस्य 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति लोपे रूपम्]

धनायति आत्मनो धनमिच्छति २३.३०. [धनपदाद् आत्मन इच्छायां क्याजन्ताल्लट्]

धनिनम् वहुधनवन्तं प्रजास्थम् (जनम्) ४.२.१५. धार्मिकं धनाढ्यम् (जनम्) १ ३३.४. **धनिनः**=वहुधनयुक्तस्य (विदुषो जनस्य) १.१५०.२. [धनप्राति० भूम्न्यर्थे इनिः प्रत्ययः]

धनिष्ठा अतिशयेन धनिनी (माता=जननी) ३३.६४ [धनप्राति० मतुबन्ताद् अतिशायने इष्ठन्। 'विन्मतोर्लुक्' इति मतुपो लुक्। ततः स्त्रियां टाप्]

धनुतरौ शीघ्रं गमयितारौ (हरी=वायुविद्युतौ) ४.३५.५.

धनुत्रीः धन-धान्यादियुक्ताः (सुखैश्वर्यंणि) ३.३१.१६.

धनुष्कारम् यो धनुरादीनि करोति तम् (शिल्पिनं जनम्) ३०.७. [धनुष् उपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण्प्रत्ययः। धनुर्धन्वतेर्गतिकर्मणः, वधकर्मणो वा। धन्वन्त्यस्माद् इषवः नि० ९.१६.]

धनुष्कृद्भ्यः धनुषां निर्मातृभ्यः (शिल्पिजनेभ्यः) १६.४६. [धनुष्-उपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप्-प्रत्ययः। तुगागमः। धनुष् इति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

धनुः चापम् १६.१३. शस्त्राऽस्त्रम् २९.३९. **धनोः**=धनुषो ज्यायाः १.३३.४. धनुषः १.१४४.५. [धन धान्ये (जु०) धातोः 'अर्त्तिपॄवपियजि०' उ० २.११७. सूत्रेण उसिः प्रत्ययः। धनुः=धन्वतेर्गतिकर्मणः, वधकर्मणो वा, धन्वन्त्यस्माद् इषवः। नि० ९.१६. वार्त्रघ्नं वै धनुः श० ५.३.५.२७, वज्रो वै धनुः मै० ४.४.३.]

धन्या धनं लब्धा (धिषणा=प्रज्ञा द्यौः पृथिवी वा) ६.११.३. धनं लब्ध्री (धिषणा=प्रज्ञा) ५.४१.८. [धनप्राति० लब्धार्थे 'धनगणं लब्धा' अ० ४.४.८४. सूत्रेण यत्प्रत्ययः। स्त्रियां टाप्]

धन्या धनाऽर्हाणि (ऐश्वर्याणि) ३.१.१६. [धनप्राति० 'तदर्हति' अ० ५.१.६३. सूत्रेण यत्। प्रथमाबहुवचने शेर्लोपः]

धन्व प्राप्तव्यानि (अ०—योजनानि) प्र०—अत्र गत्यर्थात् धविधातोरौणादिकः कनिन् 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् १.३५.८. धनुरादीनि २ ३३.१०. अन्तरिक्षम्, प्र०—धन्वेति अन्तरिक्षनाम निघं० १.३, २.३८.७. धनुर्वेदम् ६.१२.५. **धन्वना**=धनुरादिना शस्त्राऽस्त्र-

विशेषेण, शतघ्न्यादिभिः शस्त्राऽस्त्रैः २९.३९. धनुषा २.२४.८. **धन्वन्**=धन्वन्यन्तरिक्षे १.१३५.९. धन्वनि २९.४०. धन्वनो बहुसिक्तस्य स्थलस्य १.११६.४. बालुकायुक्ते स्थले ६.३४.४. **धन्वनः**=धनुषः १६.९. स्थलस्याऽन्तरिक्षस्य च, ऋ० भू० १९०, ऋ०१.८.८.४. **धन्वानि**=अविद्यमानोदकादिदेशान् ५.८३.१०. अन्तरिक्षस्थानि (अपः=जलानि) ६.६२.२. धनूंषि ६.५९.७. भा०—आग्नेयाऽस्त्रादीनि १६.५६. अन्तरिक्षावयवान् १६.६३. स्थलप्रदेशान् ४.१९.७. [धवि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः 'कनिन् युवृषितक्षिराजि०' उ० १.१५६. सूत्रेण कनिन्-प्रत्ययः। धन्व=अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. धन्व अन्तरिक्षं धन्वन्त्यस्मादापः नि० ५.५. धन्वन्=धनुषि नि० ९.१८.]

धन्वचरः यो धन्वन्यन्तरिक्षे चरति सः (राजा) ५.३६.१. ['धन्वन्' इति व्याख्यातम्। तदुपपदे चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'चरेष्टः' अ० ३.२.१६. सूत्रेण टः प्रत्ययः]

धन्वच्युताः धन्वनोऽन्तरिक्षाच्च्युताः प्राप्ताः (अ०—मेघाः) १.१६८ ५. [धन्वन्-च्युतपदयोः समासः। 'धन्वन्' इति व्याख्यातम्]

धन्वन्तरये सर्वरोगनाशकाय (ईश्वराय) प० वि०, [धनुः=चिकित्साशास्त्रम्, तस्यान्तमृच्छति धनु+अन्त+ऋ+इन्].

धन्वर्णसः धन्वे स्थलेऽर्णांसि यासां ताः (नद्यः) ५.४५.२. [धन्व-अर्णस्पदयोः समासः। दधातिधान्यहेतुर्भवतीति धन्वम्। अर्णस् उदकनाम निघं० १.१२. शकन्ध्वादित्वात् पररूपम्]

धन्वाति प्राप्नुयात् ३.५३.४. [धवि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोर्लिङर्थे लेट्। आडागमः]

धन्वायिभ्यः धनूनि धनूंष्येतुं शीलमेषां तेभ्यः (सैनिकेभ्यः) १६.२२. [धन धान्ये (जु०) धातोः 'भृमृशीङ्' उ० १.७. सूत्रेण उ-प्रत्यये धनुः। तदुपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

धन्वासह यो धनुषा शत्रून् सहते सः (सभेशो राजा) प्र०—अत्र छान्दसोऽन्त्यलोपः १.१२७.३. [धनुष् उपपद षह मर्षणे (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः। पूर्वपदस्यान्त्यलोपे दीर्घश्छान्दसः]

धन्वेव यथा शस्त्रविशेषः ३.४५.१. [धनु-इव पदयोः समासः]

धमति 'प्राप्नोति १७.१९. [धमति-अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. गतिकर्मा निघं० २.१४. वधकर्मा निघं० २.१९. ततो लटि लेटि वा रूपम्]

धमनिम् वेदवाणीम् प्र०—धमनिरिति वाङ्नाम० निघं० १.११, २.११.८. धमनिः=वाङ्नाम निघं० १.११. धमति गतिकर्मा (निघं० २.१४) ततः 'अर्त्तिसृधृधम्य०' उ० २.१०२. सूत्रेण अनिः प्रत्ययः]

धमन्तः कम्पयमानाः (राजानो जनाः) १.८५.१०. कम्पयन्तः (राजप्रजाजनाः) ४.२.१७. [धमतिः=गतिकर्मा नि० ६.२. ततः शतृप्रत्ययः]

धमन्तीः शब्दयन्त्यः (वाणीः=वाचः) ३.३०.१०. [धमतिर्गतिकर्मा नि० ६.२. ततः शत्रन्तात् ङीप्-प्रत्ययः]

धमितम् प्रज्वालितम् (अग्निम्) २.२४.७. [धमति गतिकर्मा निघं० २.१४. वधकर्मा निघं० २.१९. ततः क्तः-प्रत्ययः]

धय पिब १७.८७. **धयति**=पिबति २.३५.५. आधरति १.१७९. दुग्ध पीके बढ़ता है, सं० वि० १०४, २.३५.५. [धेट् पाने (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्]

धयन् दुग्धं पिबन् (पुत्रः) १९.११. पयः पिबन् (धरुणः=पुत्रः) ८.५१. [धेट् पाने (भ्वा०) धातोः शतृ-प्रत्ययः]

धरणी आधारभूता (स्त्री) १४.२१. [धरति सर्वमिति विग्रहे धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः 'अर्तिसृधृ०' उ० २.१०२. सूत्रेणानिः प्रत्ययः। ततः स्त्रियां 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष्]

धरित्री सर्वेषां धारिका (स्त्री) १४.२२. [धरतीति धरित्री। धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः 'अशित्रादिभ्य इत्रोत्रौ' उ० ४.१७३. सूत्रेण इत्रप्रत्ययः]

धरुणम् सर्वस्य धर्तृ (सत्यं=कारणादिकम्) ५.१५.२. धर्त्तारम् (विद्वांसं जनम्) ५.१५.५. धर्त्तव्यं पुत्रम्, अ०—गर्भम् ८.५१. धारणकर्त्रीं पृथिवीम्, अ०—अन्तरिक्षम्, १.२३.१३. धरति सर्वलोकान् यत्तत् तेजश्च (अग्निः=परमेश्वरः) १.१८. आधारकम् (रजः) १.५६.५. सर्वमूर्त्तद्रव्याणामाधारम् १.५६.६. उदकम्, प्र०--धरुणमित्युदकनाम, निघं० १.१२, १.१२१.२. **धरुणः**=धारकः (अग्निः=पावकः) ५.१५.१. धर्त्ता (विद्वान् जनः) १.७३.४. आधारः (अ०—परमात्मा) १७.८२. धारणगुणः १४.२३. धर्त्ताऽऽधारभूतः, भा०—व्यर्थव्ययस्याऽकर्त्ता (राजा) १२.२२. **धरुणे**=धारक (धर्मे) ५.१५.२ **धरुणेषु**=आधारेषु ३.३.१. धारकेषु वाय्वादिषु १.५२.२. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिक उनन्प्रत्ययः। धरुणेषू दकेषु।

नि० १२.३३. धरुणमित्युदकनाम निघं० १.१२. प्रतिष्ठा वै धरुणम् श० ७.४.२.५. असावेवादित्यो धरुण एकविंशः श० ८.४.१.१२.]

धरुणह्वरम् धरुणानि धारकाणि ह्वराणि कुटिलानि यस्मिँस्तत् (तमः) १.५४.१०. [धरुण-ह्वरपदयोः समासः। धरुणं व्याख्यातम्। ह्वरः=ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोरच्प्रत्ययः]

धरुणा धर्त्री (स्त्री) १३.३४. पुष्टिकर्त्री (स्त्री) १४.२१. विद्या-धर्मधर्त्री (राजपत्नी) १३.१६. [धरुणं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

धरुणानि उदकानीव शान्तान्याचरणानि, प्र०—धरुणमित्युदकनाम, निघं० १.१२, ४.२३.९. [धरुणं व्याख्यातम्]

धर्णसि धर्त्ता (सर्वव्यापक ईश्वरः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् १.१०५.६. **धर्णसिम्**=धर्त्तारम् (विद्वांसं जनम्), प्र०—अत्र बाहुलकादसि प्रत्ययो नुडागमश्च १.१४१.११. अन्यद्धारकम् (विद्वांसं जनम्) ५.८.४. **धर्णसिः**=धर्त्ता (विद्वान् जनः) ५.४३.१३. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकोऽसिः प्रत्ययो नुडागमश्च धर्णसिरिति बलनाम निघं० २.९.]

धर्णिः यो धरति सः (अग्निः=विद्युत्) १.१२७.७. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको निः प्रत्ययः]

धर्त्तः! धारक (इन्द्र=सेनापते) १.१०२.५. **धर्त्ता**=सकलव्यवहार-धारकः (विद्वान् जनः) २२.३. पोषकः (पदार्थः) ७.३५.३. धाता (परमात्मेव राजा) ३.४९.४. पराक्रमेणाकर्षणेन वा धारकः (इन्द्रः=सेनापतिः सूर्यो वा) १.११.४. **धर्तारा**=कला-कौशल-यन्त्रेषु योजितौ होम-रक्षण शिल्पव्यवहारान् धरतस्तौ (अग्निजले) १.१७.२. धर्त्तारौ (मित्रावरुणा=प्राणोदानौ) ५.६९.४. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्प्रत्ययः। 'धर्त्तारा' प्रयोगे 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

धर्त्रम् धारणम् १४.२३. धरति यद् येन वा (सर्वधातृ ब्रह्म), भा०—सर्वधारको वायुः, प्र०—वायुर्वाव धर्त्रं चतुष्टोमः, स आभिश्चतसृभिर्दिग्भिः स्तुते तद्यत्तमाह धर्त्रमिति। प्रतिष्ठा वै धर्त्रम्। वायुरु सर्वेषां भूतानां प्रतिष्ठा, तदेव तद्रूपमुपदधाति, स वै वायुमेव प्रथममुपदधाति, वायुमुत्तमं वायुनेव तदेतानि सर्वाणि भूतान्युभयतः परिगृह्णाति शत० ८.२.१.१६. अनेन प्रमाणेन धर्त्रशब्देन वायुरीश्वरश्च गृह्येते १.१८. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः 'गुधृवीपचिवचि०' उ० ४.१६७. सूत्रेण स्त्रः प्रत्ययः। प्रतिष्ठा वै धर्त्रम् श० ८.४.१.२६. वायुर्वाव धर्त्रं चतुष्टोमः। स आभिश्चतसृभिर्दिग्भिः स्तुते श० ८.४.१.२६. धर्त्रमस्यन्तरिक्षं दृंह, प्राणं दृंहापानं दृंह तै० सं० १.१.७.१.]

धर्त्री धारिका (स्त्री), भा०—मातृवन्मान्यकर्त्री भूमिः १४.२१. [धर्तृ प्राति० स्त्रियां ङीप्प्रत्ययः। धर्तृ=धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

धर्त्रे धारणशीलाय (अ०—होत्रे जनाय) १७.५६. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

धर्म धर्माणि ३.१७.१. धर्त्तव्यम् (अहिंसाख्यं व्यवहारम्) ३.१७.५. धारणम् ९.५. धारणाम् १८.३०. सत्यधारक (पुरुष स्त्रि वा) ३८.१४. धैर्यस्वरूप (सर्व सौख्यप्रदेश्वर), आर्याभि० २.३१, ३८.१४. **धर्मन्**=धर्मे ५.१५.२. **धर्मणः**=न्यायस्य १०.२९. धर्मस्य १०.२९. धर्मात् ६.७०.३. **धर्मणा**=धर्मेण, भा०—न्यायविनययुक्तेन व्यवहारेण ३८.१९. स्वधर्मेण १.१६०.१. धारणसामर्थ्येन ३४.४५. आकर्षण-धारणादिगुणेन ६.७०.१. धर्म से सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५१. **धर्मणाम्**=धर्माणां योगेन १.५५.३. **धर्मणे**=धर्मोन्नतये ४.५३.३. **धर्मभिः**=धर्माचरणैः ५.८१.४. धर्म्मैः ३.६०.६. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको मनिन्प्रत्ययः]

धर्मम् वेदप्रतिपाद्यम् (कर्म) ऋ० भू० २११, अथर्व० १८.३.१.१. पक्षपातरहित न्यायाचरण, वेदोक्त कर्म को, सं० वि० १४४, अथर्व० १२.५.७. **धर्मः**=न्यायः, ऋ० भू० १५१, ३८.१४. वेदोक्तो न्यायः पक्षपातरहितः सत्याचरणयुक्तः सर्वोपकारः, ऋ० भू० १०३, अथर्व० १२..५.७. प्रतापः ५.१९.४. पक्षपातरहितो न्यायः २०.९. **धर्माय**=धर्मरक्षणाय ३०.६. **धर्मेण**=न्यायाचरणेन १५.६. **धर्माणि**=कर्त्तव्यानि ऋ० भू० १२९, ३१.१६. धर्मान् धारकाणि पृथिव्यादीनि वा ३४.४२. धर्म्याणि कर्माणि ५.२६.६. धारणात्मकानि (कर्माणि) ३१.१६. स्वस्वभावजन्यान् धर्मान् १.२२.१८. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तिस्तुसुहुसृधृ०' उ० १.१४०. सूत्रेण मन्प्रत्ययः। एष धर्मो य एष (सूर्यः) तपत्येष हीदं सर्वं धारयति श० १४.२.२.२९. धर्म (साम) भवति। धर्मस्य धृत्यै तां० १४.११.३५. धर्मेण सर्वमिदं परिगृहीतम् तै० आ० १०.६२.१ धर्मो मनुष्यः काठ० ३७.१७. धर्मो वा अधिपतिः तै० ३.९.१६.२. धर्मो हैनं (ब्रह्मचारिणम्) गुप्तो गोपायति गो० १.२.४. प्रेतिरसि धर्माय त्वा धर्म जिन्व तै० सं०

४.४.१.१. यो वै स धर्मः सत्यं वैं तत् तस्मात् सत्यं वदन्तमाहुर्धर्मं वदतीति, धर्मं वा वदन्तं सत्यं वदतीति श० १४.४.२.२६. वरुणाय धर्मस्य पतये यवमयं चरुं निर्वपेत् मै० २.६.६. वरुणोऽस्य प्रजां धर्मेण दाधार ऐ० आ० २.१.७. श्रीर्वै धर्मः । राज्यं वै धर्मः जै० ३.२३१.]

धर्मपतीनाम् धर्म्मस्य रक्षितॄणाम् (धार्मिकजनानाम्) ६.३६. [धर्म-पतिपदयोः समासः]

धर्माणम् पक्षपातरहितं न्यायाचरणं धर्म्मम् ३४.७. धर्मकारिणम् (सज्जनम्) १.१८७.१. [धर्मन्प्राति० द्वितीयैकवचनम् । धर्मन्=धृञ्धारणे (भ्वा०) धातोर्मनिन्प्रत्ययः]

धर्ष धृष्णुहि, प्र०—विकरणव्यत्ययेनाऽत्र शप् ६.८. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

धवध्वे कम्पयध्वे ५.६०.३. (धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोर्लट् लेट् वा । विकरणव्यत्ययेन शप्]

धवीयान् अतिशयेन कम्पकः (तायुः=स्तेनः) ६.१२.५. [धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोस्तृचि धविता । धवितृप्राति० अतिशायने ईयसुन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण तृचो लोपः]

धात् दध्यात् ७.३४.१७. दधातु ३.५४.१२. दधाति १.६७.२. **धात**=धरत ६.५०.७. धत्त ६.६५.३. धरन्ति ४.३५.८. दधति ७.३९.६. **धातन**=धत्तं ७.४७.४. **धाति**=दधाति २७.२४. **धातु**=विजयसुखं दधातु, ऋ० भू० २२० [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ्, अडभावः, 'गातिस्था०' इति सूत्रेण सिचो लोपः । 'धातन' प्रयोगे 'तप्तनप्तनथनाश्चे' ति सूत्रेण तप्रत्ययस्य तनवादेशः । 'धाति' प्रयोगे लट् शपो लुक् च । 'धातु' प्रयोगे लोट् शपो लुक् च]

धातवे धातुं पातुम् १.१६४.४९. [धेट् पाने (भ्वा०) धातोः 'तुमर्थे सेसेन०' इति सूत्रेण तवेङ् प्रत्ययः]

धाता दधाति सकलं जगत् पोषयति वा सः (ईश्वरः) पं० वि०, ऋ० ८.८.४८.३. सब जगत् का धारण पोषण करने वाला (परमात्मा) आर्याभि० २.५४, ऋ० ८.८.४८.३. गृहाश्रम-धर्त्ता (गृहपतिः=गृहस्थो जनः) ८.१७. सर्वस्य संसारस्य राज्यस्य धर्त्ता (ईश्वरः) ३२.१५. धर्त्ता पोषको वा (अधिपतिः=सर्वेषां स्वामीश्वरः) १४.२८. **धातुः**=धर्त्तुर्वायोः ३२.१२. धारकस्य (पुरुषस्य) २५.४. **धातृभिः**=धर्त्तृभिः (विद्वद्भिर्जनैः) ३३.६. यज्ञक्रियाधारकैर्विद्वद्भिः (जनैः) ३.१५. **धात्रा**=सकल विश्व के धारण करने वाले परमात्मा से, सं० वि० १९६, ९.११३.४. **धात्रे**=धारकाय (श्रीमते जनाय) २४.५. भा०—ये धातृगुणास्ते धारणाय २४.९. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच्प्रत्ययः । धाता सर्वस्य विधाता नि० ११.१०. अग्रं वै धाता मै० ४.३.५. इयं (पृथिवी) वै धाता तै० ३.८.२३.३. धाता वषट्कारः तै० सं० ३.४.९.६. मै० ४.३.५. धाता षड्ढोता तै० २.२.८.४. प्रजापतिर्धाता श० ९.५.१.३८. मृत्युस्तदभवद् धाता तै० ३.१२.९.६. यः सूर्यः स धाता स उ एव वषट्कारः ऐ० ३.४८. संवत्सरो वै धाता तै० सं० १.५.१.३, मै० ४.३.६. स य. स धातासौ स आदित्यः श० ९.५.१.३७.]

धातु यद् दधाति तत् (हविः=होतव्यं द्रव्यम्) ५.४४.३. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'सितनिगमि०' उ० १.६९. सूत्रेण तुन्प्रत्ययः]

धानस् धारणम् ३.७.६. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्ल्युट्प्रत्ययः]

धानानाम् भृष्टयवाद्यन्नानाम् १९.२२. **धानाः**=पक्वाऽन्नविशेषाः ३.३५.७. अग्नि-संस्कृतान्नविशेषान् ३.३५.३. भृष्टाऽन्नानि ६.२९.४. यवाः ४.२४.७. अग्निना भृष्टाऽन्नविशेषाः ३.५२.६. भृष्टयवादयः १९.२१. धीयन्ते यासु ता दीप्तयः प्र०—धापृवस्य०, उ० ३.६. इति नः प्रत्ययः १.१६.२. धारकाः (गृहपतयः=गृहाश्रमिणः), प्र०—अत्र दधातेरौणादिको नः प्रत्ययः ८.११. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'धापॄवस्यज्यतिभ्यो नः' उ० ३.६. सूत्रेण नः प्रत्ययः । ततः स्त्रियां टाप् । अयं शब्दोनित्यस्त्रीलिङ्गो वहुवचनान्तश्च । धाना भ्राष्ट्रे हिता भवन्ति फले हिता भवन्तीति वा नि० ५.१२.]

धानावत् परिपक्वा धाना विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (सवनम्=ऐश्वर्यम्) ३.४३.४. [धानाप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । धानेति व्याख्यातम्]

धानावन्तम् वह्वयो धाना विद्यन्ते यस्य तम् (आप्तं विद्वांसम्) ३.५२.१. सुसंस्कृतैर्धान्याऽन्नैर्युक्तम् भा०—सुसंस्कृतै रसादिभिर्युक्तमन्नम् २०.२९. [धानाप्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्ताद् द्वितीयैकवचनम् । धानेति व्याख्यातम्]

धान्यम् तण्डुलादिकम् ५.५३.१३. धातुमर्हं यद्, यज्ञात् शुद्धं, रोगनाशकेन स्वादिष्ठतमेन सुखकारकमन्नं तत्, प्र०—अत्र 'दधातेर्यत् नुट् च' उ० ५.४८. अनेन यत्प्रत्ययो नुडागमश्च १.२०. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः

'दधातेर्यन्नुट् च' उ० ५.४८. सूत्रेण यत् प्रत्ययो नुडागमश्च]

धापयन्ते धारयन्ति ५.४७.४. **धापयेते**=दुग्धं पाययतः १.९६.५. भा०—पालयतः १२.२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्णिजन्ताल्लट् । अथवा=धेट् पाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट् । 'पादिषु धेट उपसंख्यानम्' अ० १.३.८९. वा० सूत्रेण परस्मैपदप्रतिषेधः]

धाम् दधामि, प्र०—अत्र 'छन्दसि लुङ्लङ्लिटः' इति वर्त्तमाने लुङ् अडभावश्च १.२०. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ् । 'गातिस्था०' सूत्रेण सिचो लोपोऽडभावश्च]

धाम स्थानम् १.१२३.८. स्थलम् १.१२१.६. धीयन्ते सर्वे पदार्था यस्मिँस्तत् (ब्रह्मयज्ञो वा) १.३१. अधिकरणम् २.३.१०. मुक्तों का निवासस्थान, सर्वगत ईश्वर, आर्याभि० २.२४, ३२.९. दधति येषु तानि (प्रियाऽऽचरणानि) ६.६७.९. दधति यस्मिँस्तत् (व्रतम्) १.१४४.१. सुखधारण-साधकं गृहम् १.१५२.४. दधाति प्राप्नोति विद्यादिसुखं यस्मिँस्तत् (मनुष्यः) १.५७.३. मुक्तिसुखस्य स्थानम्, भा०—ईश्वरस्य मुक्तिसाधकं स्वरूपम् ३२.९. दधति सुखानि यस्मिँस्तत् (सुख-स्थानम्) १७.१४. दधति येन तत् ६.२१.३. जन्म-कर्म-स्थानानि १५.५२. दधति येषु तानि धामानि, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति शसो लुक् ३.८. जन्मनामस्थान-धर्मार्थकाममोक्षाख्यानि धामानि १७.७९. **धामन्**=धामनि आनन्दमये स्थाने १.४३.९. आधारस्वरूप परमात्मा में आर्याभि० २.६, ३२.१०. धामन्याधारभूते (ईश्वरे) ३२.१०. आधारे ४.५८.११. मोक्षस्वरूप धारण करने वाले परमात्मा में सं० वि० ७ ३२.१०. दधाति यस्मिँस्तस्मिन् (समुद्रे=आकाशमिव व्याप्तस्वरूपे संसारे) १७.९९. **धामभिः**=स्थानविशेषैः १.८५.११. दधति सर्वाणि वस्तूनि येषु तैः सह (पृथिव्यादिपदार्थैः) १.२२.१६. सर्वैः स्थानैः ३४.३२. लोकों और ऊँचे नीचे स्थानों से युक्त हुए गायत्री आदि सात छन्दों से, आर्याभि० १.११, ऋ० १.२.७.१६. **धामसु**=जन्म-स्थान-नामसु १२.११७. **धामानि**=अधिकरणानि द्रव्याणि, ४.३७. दधति सुखानि येषु तानि राज्यप्रबन्धस्थानानि देश-देशान्तर-वाणिज्यार्हाणि ६.३. मर्म-स्थानानि, भा०—मर्माणि १२.७५. जन्मस्थाननामानि २१.४६. सुखानि २१.४७. दधति पदार्थान् येषु यैर्वा तानि जन्मस्थाननामानि, भा०—वस्तूनि स्थानानि च १७.२१. जन्मानि स्थानानि वा ऋ० भू० १५७, ११.५. धाम अर्थात् स्थिति के स्थानों को आर्याभि० २.४२, १७.२७. अनेक लोक-लोकान्तरों को आर्याभि० २.६, ३२.१०. त्रिविध धामों=लोकों को आर्याभि० २.३८, १७.२१. स्थानानि ४.३४. **धाम्नः**=गृहात् १.८७.६. नाम-स्थान-जन्मनः ७.५८.१. **धाम्ना**=स्थानेन २७.१६. सुखानि यत्र दधति तेन (भा०—इहलोकेन परलोकेन, प्र०—अत्र बाहुलकाद् डुधाञ्-धातोर्मनिन् प्रत्ययः १.२. हृदयेन, स्थित्यर्थेन (स्थानेन), स्थलेन, स्थानेन २.६. **धाम्ने**=जन्म स्थाननामस्वरूपाय ५.४८.१. **धाम्ने-धाम्ने**=दधति वस्तूनि सुखानि च यस्मिन् तस्मै प्रत्यधिकरणप्राप्तये, प्र०—अत्र वीप्सायां द्वित्वम्, धामानि त्रयाणि भवन्ति स्थानानि नामानि जन्मानीति नि० ९.२८, १.३०. **धाम्नो धाम्नः**=स्थानात् स्थानात् ६.२२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणादिको मनिन्प्रत्ययः । दधाति तद् यत्र वेति धाम । धामानि त्रयाणि भवन्ति स्थानानि नामानि जन्मानीति । जन्मान्यत्राभिप्रेतानि । सप्त शतं पुरुषस्य मर्मणां तेष्वेना दधतीति वा नि० ९.२८. अङ्गानि वै धामानि श० ४.३.४.११.]

धामच्छत् यो धामानि छादयति संवृणोति सः (अग्निः=विद्वान् जनः) १८.७६. [धामन् इत्युपपदे छद अपवारणे (चुरा०) धातोः क्विप् प्रत्ययः । 'धामन्' इति व्याख्यातम् । वाग्धामच्छद् श० १०.१.३.१०.]

धामसाचम् समवयन्तम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.५१.२. ['धामन्' इत्युपपदे षच समवाये (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

धामशः धामानि धामानि १.१६४.१५. [धामन्-प्राति० वीप्सायां शस्प्रत्ययः]

धामहे धरेम, प्र०—अत्र धाञ्-धातोर्लेटि 'बहुलं छन्दसि' इति श्लोरभावः १.९२.१३. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिङर्थे लेट् । 'बहुलं छन्दसि' इति शपोलुक्]

धायसे धारणाय १.७२.९. धातुम् ३.५०.३. धर्त्तुम् ५.७०.२. धारणाय, प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिकोऽसुन् प्रत्ययः युट् च १.९४.१२. धात्रे (शिष्याय) ५.७.९. धर्त्रे (स्वभावाय) २.५.७. **धायोभिः**=धारकैर्गुणैर्वा ६.३.८. **धायसे**=यो दधाति सर्वाणि कर्माणि स धायास्तस्मै (मनुष्याय) १.३१.१३. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽसुन् प्रत्ययो युडागमश्च]

धाय्यारूपम् या धेयमर्हा तस्या रूपम् १९.२४. [धाय्यारूपपदयोः समासः । धाय्या=दधातेर्ण्यत् 'पाय्य-

सान्नाय्य०' अ० ३.१.१२६. सूत्रेण निपात्यते। छान्दसत्वाद् असामिचेन्यामपि। पत्नी धाय्या ऐ० २.२३. प्राणो धाय्या कौ० १५.४. महिषी धाय्या कौ० १५.४.]

धायि ध्रियते, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लुङ् 'वहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' इत्यडभावः ३.१५. धीयते ४.७.१. ध्रियेत १.१४१.१. ध्रियताम् ५.६६.२. निधीयते ५.४१.१५. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

धायीः धाययेः १.१४७.५. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ्, मध्यमैकवचनम्, अडभावश्छान्दसः]

धायुः यो दधाति सः (इन्द्रः=सुखदो जनः) ३.३०.७. **धायू**=धारकौ (हरी=अश्वौ) ७.३६.४. [डुधाञ् धारण-पोषणयोः (जु०) वातोर्बाहु० औणादिक उः प्रत्ययः। युडागमश्च]

धारका सुखस्य धर्त्री (प्रजा) २३.२२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्ण्वुल् कर्त्तरि। ततष्टाप्। इत्वाभावश्छान्दसः]

धारपूताः येषां विद्यासुशिक्षाभ्यां वाणी पूता पवित्रा ते (जगत्कल्याणकरा जना) २.२७.९. धारा वाणी पूता पवित्रा येषान्ते (पूर्णविद्या अध्यापकाः), प्र०—धारेति वाङ्नाम, निघं० १.११, २.२७.२. [धारा-पूतपदयोः समासः। धारेति वाङ्नाम निघं० १.११.]

धारय धारण कर, आर्याभि० २.३१, ३८.१४. भा०—धरेः २७.४. स्वीकुरु ६.८. स्थापय धारय वा ११.५८. सम्पादय १.३०.२२. **धारयत्**=धरति १.१०३.२ **धारयन्**=धारयन्ति १.९६.१. धारयेयुः १२.२. धरन्ति, प्र०—अत्राऽडभावः २.२७.८. धारण करते हैं, आर्याभि० १.४०, ऋ० १.७.३.३. अधारयन्, प्र०—अत्राऽडभावः भा०—अपालयन् १७.७०. **धारयन्त**=धरन्ते, प्र०—अत्राऽडभावः २.२७.९. **धारयन्ति** ४.१.१८. धरन्ति ४.४२.२. **धारयम्**=धरेयं धारयेयं वा ४.४२.३. **धारयाम**=सर्वाणि कार्याणि साधयेम १७.९०. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्। अन्यत्र लङि रूपाणि। अडभावश्छान्दसः]

धारयत्कवी धारयन्तौ कवी विक्रान्तदर्शनौ सूर्य-विद्युतौ ययोस्तौ (द्यावापृथिवी=विद्युदन्तरिक्षे) १.१६०.१. [धारयत्-कविपदयोः समासः। धारयत्=धृञ् धारणे (भ्वा०)+णिच्+शतृ]

धारयत्क्षितिम् भूमिं धरन्तीम् (अदितिं=दिवम्) १.१३६.३. [धारयत्-क्षितिपदयोः समासः। क्षितिः=पृथिवीनाम निघं० १.१.]

धारयन् धारणं कुर्वन् (विष्णुः=विश्वाऽन्तर्यामीश्वरः) १.२२.१८. वायुविद्युत्सूर्यादिना धारणं कारयन् (ब्रह्म) १७.२०. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

धारया सुसंस्कृतया वाचा १२.४१. धरति सकला विद्या यया सा वाक् तया, प्र०—धारेति वाङ्नाम, निघं० १.११, १२.१०. धारणकर्त्र्या २६.२५. तीक्ष्णधारया ३.३६.७. **धारा**=प्रापिका वागिव ६.५५.३. प्रवाहवद्वाणी ३.५७.६. **धाराभिः**=प्रवाहैः ३.४०.६. **धाराम्**=वाचं प्रवाहं वा १.६७.४. धारकां वाचम्, भा०—विद्यावाचम् १२.१०५. प्रगल्भां वाचम् ६.४७.१०. **धाराः**=प्रवाहाः १८.६५. वाचः १७.९६. जलप्रवाहान् १.८५.५. जलस्य गतय इव वाचः ३.१.८. प्रकाशिता वाचः ४.५८.१०. सुशिक्षिता वाचः भा०—वेदविद्याः १७.९८. [धारा वाङ्नाम निघं० १.११, 'धारा प्रपाते अ० ३.३.१०४. वा० सूत्रे धारयतेरङ्प्रत्ययः]

धारवाकेषु शास्त्र-वागुपदेशकेषु ५.४४.५. [धारा-वाकपदयोः समासः। धारा वाङ्नाम निघं० १.११.]

धारावराः धारासु शिक्षितासु वाणीष्ववरा अर्वाचीना येषान्ते (मरुतः=विद्वांसो जनाः) २.३४.१. [धारा-अवरा-पदयोः समासः। धारा वाङ्नाम निघं० १.११.]

धार्याभ्यः धर्त्तुं योग्याभ्यः (अद्भ्यः=जलेभ्यः) २२.२५. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्ण्यत् प्रत्ययान्तात् स्त्रियां टाप्]

धावतम् धावयतः १.१०९.४. गच्छतम् ५.६४.७. **धावते**=सद्यो गच्छति ३३.९०. [धावु गतिशुद्धयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्। धावति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

धावतः विषयान् प्रति पततः (मनोवागिन्द्रियादीन्) ४०.४. **धावते**=इतस्ततो धावनशीलाय (पुरुषाय), भा०—पुरुषार्थिनामुत्साहाय १६.२०. **धावद्भिः**=वेगवद्भिः (प्राणिभिः) १.११.६. **धावद्भ्यः**=शीघ्रगामिभ्यः (प्राणिभ्यः) १६.२३. [धावु गतिशुद्धयोः (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

धावमानाः शीघ्रं गच्छन्त्यः (सुपत्नीः=शोभना पत्नीः) २०.४०. [धावु गतिशुद्धयोः (भ्वा०) धातोर्लटः स्थाने शानच्। ततः स्त्रियां टाप्]

धासथ धरत, प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः

१.१११.२. **धासथः**=दध्याताम्, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१६०.५.]

धासिम् अन्नादिकम्, प्र०—धासिः इत्यन्ननाम, निघं० २.७, १.६२.३. अन्नमिव पोषकम् (राजानम्) ७.६.२. **धासिमिव**=दधति प्राणान् येन तमिव (अन्नमिव हव्यं पदार्थम्) १.१४०.१. **धासेः**=विद्यासुखधारकस्य विदुषः (जनस्य) १.१२२.१३. प्राणधारकस्याऽन्नस्य ३.५७.१. पोषकस्य मेघस्य) ३.७.३. धारकस्य (वह्नेः) ३.७.१. [धासिरिति अन्ननाम निघं० २.७. डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणादिक इन्प्रत्ययः सुडागमश्च]

धास्युः धास्यतीति धास्युरर्थात् पूर्वजन्मकृतपापपुण्य-भोगशीलः (जीवात्मा), ऋ० भू० २०३, अथर्व० ५.१.१.२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्वाहु० औणादिको युच्प्रत्ययः सुडागमश्च]

धाः दधासि १.६३.१. धर ५.३६.५. दध्याः प्र०—अत्राऽडभावः १.१७१.५. धेहि दधाति वा प्र०—अत्र लडर्थे लुङडभावश्च ५.५. दधीथाः १८.३६. धापय धापयति वा, प्र०—अत्र पक्षान्तरे व्यत्ययेन प्रथमः 'बहुलं छन्दस्यमाङ्-योगेऽपि' इत्यडभावः २.२१. देहि, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङड-भावश्च ६.११. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ्, अटोऽभावः, 'गातिस्थाघु०' सूत्रेण सिचो लोपः]

धितावानम् पदार्थानां धारकम् (अग्नि=पावकम्) ३.२७.२. धितो धृतो वानः संविभागो येन तम् (यज्ञं=पालनाख्यम्) ३.४०.३. [धित-वानपदयोः समासः। धितः=दधातेः क्तः, छान्दसमित्वम्। वानः=वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्भावे घञ्]

धित्सथः धर्त्तुमिच्छथः १.४६.६. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल् लट्। 'सनिमीमाघुरभ०' अ० ७.४.५४. सूत्रेणाच इस्। अभ्यासलोपश्च]

धिनुहि धिनोति पृणाति, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.२०. [धिवि प्रीणनार्थे (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'धिन्विकृण्व्योर च' इति सूत्रेण शपः स्थाने उः प्रत्ययः, अकारश्चान्तादेशः। 'उतश्च प्रत्ययाच्छन्दो वा वचनम्' अ० ६.४.१०६. वा० सूत्रेण हेर्लोपो न भवति]

धिप्सात् दम्भितुमिच्छेत्, अ०—छलेत् ११.८०. [दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल् लिङ्। 'दम्भ इच्च' अ० ७.४.५६. सूत्रेणाच इस् अभ्यासलोपश्च]

वियञ्जिन्वम् यो धियं प्रज्ञां जिन्वति प्रीणाति तम् (ईशानम्=ईश्वरम्) ३८.१८. यो बुद्धेस्तृप्तिकर्त्ता तम् (परमेश्वरम्) ऋ० भू० ८८, ऋ० १.६.१५.५. धियं समस्त-पदार्थचिन्तकम्, जिन्वं सर्व-सुखैस्तर्पकम् (ईशानं=परमात्मानम्) १.८९.५. **धियञ्जिन्वः**=यो धियं जिन्वति प्रीणाति सः (देवः=विद्वान् जनः) ६.५८.२. ['धी' इत्युपपदे जिवि प्रीणनार्थे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्-प्रत्ययः। विभक्तेरलुक् च]

धियञ्जिन्वा यौ धियं प्रज्ञां जिन्वतः प्रीणीतस्तौ (अध्या-पकोपदेशकौ) १.८२.१. धियञ्जिन्वमिति व्याख्यातम्। ततः प्रथमा द्विवचने 'सुपां सुलुग्०' इत्यकारादेशः]

धियध्यै धर्त्तुं समर्थाः ७.३४.२४. [डुधाञ् धारण-पोषणयोः (जु०) धातोस्तुमर्थे 'तुमर्थे सेसेन०' अ० ३.४.६. सूत्रेण कध्यै-प्रत्ययः]

धियन्धाः ये प्रज्ञां कर्म वा दधति ते (विद्वांसः) १.६७.२. ये बुद्धि कर्म वा दधति ते (जीवाः) १.७२.२. यो धियं प्रज्ञां शिल्पविद्यां कर्म दधाति सः (महाविद्वान् जनः) ४.४५.७. ये श्रेष्ठां प्रज्ञामुत्तमं कर्म दधति ते, भा०=वेदा-दिशास्त्रविदः (देवाः=विद्वांसो जनाः) २९.२७. उत्तमकर्म-धराः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ७.२.२. **धियन्धे**=यो धियं दधाति तस्मै (यतये=संन्यासिने जनाय) ७.१३.१. [धियमित्युपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कः प्रत्ययः विभक्तेरलुक् च। 'धियन्धे' प्रयोगेऽकारलोपश्छान्दसः। धियन्धाः=धियं धारयितारः नि० ८.७.]

धियन्धियम् प्रज्ञां-प्रज्ञां कर्म-कर्म वा ६.४९.८. ['धियम्' पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। धियंधियम्=कर्म कर्म नि० १२.१८.]

धियम् प्रज्ञाम् ७.४१.३. प्रज्ञानम् ५.४५.६. प्रज्ञां कर्म वा १.१४४.१. प्रज्ञां धर्म्यं कर्म वा ६.४७.१०. धारणावतीं प्रज्ञाम् १.६१.१६. प्रज्ञां क्रियां वा ४.११. प्रज्ञां शुभं कर्म वा ७.३४.८. उत्तमां प्रज्ञाम् १.१०९.१. समस्तपदार्थ-चिन्तकम् (ईश्वरम्) १.८९.५. कर्म्म धारणावतीं बुद्धि वा १.२.७. शुभविद्याऽऽदिगुणक्रियाधारिकां बुद्धिम् १.८०.१६. चिन्तनीयम् (पुरन्धिं=सर्वजगतो धर्त्तारमीश्वरम्) २.३८.१०. शास्त्रोत्थां प्रज्ञामुत्तमं कर्म वा ६.४९.७. प्रज्ञा को, सं० वि० १५६, ७.४१.३. सर्वविद्यामय, विज्ञानस्वरूप बुद्धि को, अर्याभि० १.१०, ऋ० १.६.१५.५. सर्वोत्तम-बुद्धि, सत्यबुद्धि, सत्यकर्म, सत्यगुणों को, आर्याभि० २.११, ३४.३६. विज्ञानमय, विज्ञानप्रद (ईश्वर) को, आर्याभि० २.५०, २५.१८. **धियः**=उत्तमाः प्रज्ञाः कर्माणि च १.९०.५. धारणात्मिकाऽन्तःकरणवृत्तीः ११.१. धारणवती

बुद्धीः पं० वि० ३६.३. ग्र०—बुद्धयः १.१४.२. प्रज्ञायाः कर्मणो वा २८.१०. बुद्धीः कर्माणि वा ५.१४. शिल्पकर्मणः १.२३.३. प्रज्ञाबुद्धीः प्र०—धीरिति प्रज्ञानामसु पठितम् निघं० ३.९. मनुष्याणां धारणावतीर्बुद्धीः १.३.१२. बुद्धियों को स० प्र० ५१, ३६.३. **धिया**=क्रियया १.४६.८. स्वकृपाधारवृत्त्या ऋ० भू० १५६, ११.४. कर्मणा प्रज्ञया वा प्र०—धीरिति कर्मनामसु पठितम्, निघं० २.१. 'प्रज्ञानामसु वा' निघं० ३.९, ३.२२. प्रकृष्टज्ञानयुक्तया बुद्धयोत्तमकर्म्मणा वा १.३.५. धारणावत्या बुद्ध्या कर्म्मणा वा १.२.६. व्यवहारज्ञया प्रज्ञया सुष्ठुकृतेन कर्मणा वा ४.२४.११. श्रेष्ठबुद्ध्या ८.६. श्रेष्ठया प्रज्ञया शिक्षया वा ३.२७.९. परमोत्तम बुद्धि के साथ, ग्रार्याभि० १.८, ऋ० १.१.६.१०. **धियाम्**=प्रज्ञानां कर्मणां वा ५.४४.१३. **धिये**=प्रज्ञाप्राप्तये १.१११.४. प्रज्ञायै कर्मणे वा ४.१.१८. [धीः कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. धियः=प्रज्ञानानि नि० ११.२७. ध्यै चिन्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'ध्यायतेः संप्रसारणं च' ग्र० ३.२.१७८. वा० सूत्रेण क्विप् सम्प्रसारणं च। वाग्वै धीः श० ४.२.४.१३.]

धियसानः ध्यानं कुर्वन् (विद्वान् जनः) ५.३३.२. [धीङ् ग्रादाने (दिवा०) धातोः शानच् । सुडागमश्छान्दसः]

धियाजुरः धिया प्रज्ञया कर्मणा वा प्राप्तजराऽवस्थाः (विद्वांसो जनाः) ५.४३.१५. ['धी' इत्युपपदे जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः। 'बहुलं छन्दसि' ग्र० ७.१.१०३. सूत्रेण उकारादेशो रपरत्वं च। विभक्तेरलुक् च। ग्रथव धि धारणे (तुदा०) धातोः क-प्रत्यये स्त्रियां टापि च धिया शब्दः सिध्यति]

धियायते प्रज्ञा-धारणमिच्छते (विदुषे जनाय) १.१५५.१. ['धिया-पदाद्' ग्रात्मन इच्छायामर्थे सन्नन्तात् शतृ। ग्रथवा धि-पदात् क्यजन्ताच्छतृ। ईकारस्य इयादेशश्छान्दसः]

धियायवः ये धियं विज्ञानमिच्छन्त, धीयते धार्यते श्रुतमनया सा धिया, तामात्मन इच्छन्ति ते (नरः=मनुष्याः), प्र०—धि धारणे, इत्यस्य क-प्रत्ययान्तः प्रयोगः १.८.६. [धि धारणे (तुदा०) धातोरौणादिकः क-प्रत्यये स्त्रियां टापि च धिया। तत इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् ताच्छील्ये 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः प्रत्ययः]

धियावसुः शुद्धकर्म्मणा सहवास-प्रापिका (सरस्वती=सर्वविद्याप्रापिका वाक्), प्र०—'तत्पुरुषे कृति बहुलम्' ग्र० ६.३.१४. ग्रनेन तृतीयातत्पुरुषे विभक्त्यलुक् धियावसुः कर्मवसुः नि० ११.२६. समीक्षा—सायणाचार्यस्तु बहुव्रीहिसमासमङ्गीकृत्य छान्दसोऽलुगिति प्रतिज्ञातवान्। ग्रत एवैतद् भ्रान्त्या व्याख्यातवान् १.३.१०. यो धिया प्रज्ञया कर्मणा वा वसति सः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६२.१३. कर्मप्रज्ञाभ्यां सुखेन वासयिता (विद्वज्जनः) १.६३.९. प्रज्ञाकर्मयुक्तः (विद्वान् जनः) १.६४.१५. यः प्रज्ञाः कर्माणि च वासयति सः (ग्रग्निः=पावकः) ३.३.२. यः प्रज्ञाकर्मभ्यां सह वसति सः (सभाद्यध्यक्षः) १.६१.१६. धियां बुद्धीनां वासयिता (ग्रग्निः=विद्वज्जनः) १.६०.५. धिया कर्मणा प्रज्ञया वा वासयितुं योग्यः (विद्वान् पुरुषः) १.५९.९. धिया वसुर्धनं यस्याः (सरस्वती=सुसंस्कृता वाक्) प्र०—ग्रत्र तृतीयाया ग्रलुक् २०.८४. **धियावसोः**=यो धिया प्रज्ञया सुकर्मणा वा वासयति तत्सम्बुद्धौ (ग्रग्ने=विद्वज्जन) ३.२८.१. [धी-वसुपदयोः समासः। तृतीयाया विभक्तेश्चालुक्। धियावसुः कर्मवसुः नि० ११.२६. धीः कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. वसु रात्रिनाम निघं० १.७. धननाम निघं० २.१०. वाग् वै धियावसुः ऐ० ग्रा० १.१.४.]

धिरे दधिरे दधति, प्र०—ग्रत्र छान्दसोऽभ्यासस्य लुक् १.१६६.१०. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट्। 'वा छन्दसी' ति द्वित्वं न भवति]

धिषणयोः द्यावापृथिव्योः, प्र०—धिषणे इति द्यावापृथिवीनामसु पठितम्, निघं० ३.३०, ७.२६. **धिषणा**=धृष्णोति सर्वा विद्या यया सा वाग् वेदवाणी, भा०—बुद्धिः, प्र०—'धृषेधिष् च संज्ञायाम्' उ० २.८२. ग्रनेनाऽयं शब्दः सिद्धः। धिषणेति वाङ्नामस् पठितम् निघं० १.११. समीक्षा—महीधरेण धिषणेदं पदं धियं बुद्धिं कर्म वा सनोति व्याप्नोतीति भ्रान्त्या व्याख्यातम् १.१९. प्रज्ञा, द्यौः, पृथिवी वा ६.११.३. वाणी ३.३२.१४. विद्या, सुशिक्षिता वाक्, प्रज्ञा वा १.१०२.७. प्रज्ञेव वर्त्तमाना (स्त्री) २७.२४. धारणावती द्यौः, प्र०—धिषणेति द्यावापृथिव्योर्नामसु पठितम् निघं० ३.१७, १.१९. प्रगल्भा वाक् ३.३१.१३. प्रज्ञया कर्मणा वा ६.१९.२. **धिषणानाम्**=कर्म्मोपासनाज्ञानविदाम् (विदुषां जनानाम्) ५.६९.२. **धिषणाभ्यः**=प्रज्ञाभ्यः ४.३६.८. **धिषणाम्**=प्रगल्भां धियम् ३.२.१. धृष्णोति कार्येषु यया तामग्नेर्ज्वालाप्रेरितां वाचम्, प्र०—धिषणेति वाङ्नामसु पठितम्, निघं० १.११. धृषेर्धिषच् संज्ञायाम्' उ० २.८०. इति क्युः प्रत्ययो धिषजादेशश्च १.२२.१०. **धिषणायाः**=प्रज्ञायाः १.१०९.३.

धिषणाः=धृष्टा वाचो यासां ताः (देवीः=विदुष्यः पत्न्यः) ६.२६. प्रशंसितवाग्युक्ता धियः ११.६१. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'धृषेर्धिषच् संज्ञायाम्' उ० २.८२. सूत्रेण क्युः प्रत्ययः । स्त्रियां टाप् । धिषणा वाङ्नाम निघं० १.११. धिषणा वाग्, धिषेर्दधात्यर्थे, धीसादिनीति वा धीसानिनीति वा नि० ८.३. धिषणे द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०. विद्या वै धिषणा तै० सं० ५.१.७.२. मै० ४.२.१. वाग् वै धिषणा देवी विश्वदेव्यवती मै० ३.१.८. श० ६.५.४.५. धिषणासि पार्वती तै० सं० १.१.६.१. इमे वै देवी धिषणे जै० १.८०.]

धिषणे प्रसोढ्यौ (विद्युदन्तरिक्षे) १.१६०.१. द्यावापृथिव्याविव (स्त्रीपुरुषौ) ६.३५. प्रज्ञाप्रगल्भतयोः कारणे (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ६.७०.३. सर्वस्य धारिके (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ६.८.३. द्यावापृथिव्याविव विद्यानीती ३.४९.१. धारणकर्त्र्यौ द्यावापृथिव्यौ, ऋ० भू० १४१, ऋ० ४.५.१०.३. [धिषणेति व्याख्यातम्; ततः प्रथमाद्विवचनम् । धिषणे द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०.]

धिषणेव द्यावापृथिव्याविव ३.४९.४. [धिषणा-इव-पदयोः समासः । धिषणेति व्याख्यातम्]

धिषण्यन्तः स्तुवन्तः (राजादयः) ४.२१.६. [धिषणेति व्याख्यातम् तत आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच् छतृप्रत्ययः]

धिषा प्रज्ञया १.१७३.८. स्तुत्या ४.२१.६. [धिष शब्दे (जु०) धातोः 'कृतो बहुलम्' इति करणे कः । ततष्टाप्]

धिषे दधासि १.५६.६. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचने 'वा छन्दसि' इति द्वित्वाभावे रूपम्]

धिष्ण्या दृढौ प्रगल्भौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.१. धिष्ण्यौ प्रगल्भौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८१.३. धीमन्तौ (अश्विना=सभासेनेशौ) १.११७.१९. शिल्पविद्योपदेष्टारौ (अश्विनौ=अध्येत्रध्यापकौ) १.८९.४. यौ यानेषु वेगादीनां तीव्रतासंवपने कर्त्तव्ये धृष्टौ (अश्विनौ=अग्निजले) १.३.२. भूमिवद्धर्त्तारौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) २५.१७. यौ धेष्येते शब्द्येते स्तूयेते तौ (अश्विना=अग्निवायू) २.४१.९. **धिष्ण्यासु**=धिष्ण्यायां बुद्धौ भवासु क्रियासु ४.३.६. **धिष्ण्याः**=ये दिधिषन्ति ब्रुवन्ति ते धिषाणास्तेषु साधवः (देवाः=विद्वांसो विद्यार्थिनो वा) प्र०—अत्र धि-धातोर्बाहुलकादौणादिकः कनिन् ततो यत् १२.४९. धर्षितुं योग्याः (आपः=जलानि) ३.२२.३. दिधिषन्ति शब्दयन्ति यैस्ते धिषणाः खुरोपरिभागास्तेषु साधवः (शफाः=खुराः) १२.४. [धिष शब्दे (जु०) धातोर्बाहु० औणादिकः कनिन्प्रत्ययः । धिषण्-प्राति० भवार्थे साध्वर्थे वा यत्-प्रत्ययः । 'धिष्ण्या' प्रयोगे 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः । धिषण्शब्दस्य अकारलोपश्छान्दसः । धिषण्यः धिषणाभवः नि० ८.३. ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोर्वा 'सानसिवर्णसि०' उ० ४.१०७. सूत्रेण ण्यः प्रत्यय ऋकारस्येकारश्च निपात्यते । अग्नेरेतास्तन्वो यद् धिष्ण्याः मै० ४.६.९. एतानि (स्वानः, भ्राजः, अङ्घारिः, बम्भारिः, हस्तः, सुहस्तः, कृशानुः) वै धिष्ण्यानां नामानि श० ३.३.३ ११. धिष्ण्यान्युप्यन्तेऽनयोर्लोकयोर्विधृत्यै क० ४०.४. धिष्ण्याः शफाः (सुपर्णस्य गरुत्मतः) मै० २.७.८. काठ० १६.८. भ्रातृव्या धिष्ण्येषु काठ० ३४.१५. भ्रातृव्यायतनं धिष्ण्याः मै० ३.३.२. मित्रावरुणौ धिष्ण्येभिः मै० १.९.२. काठ० ९.१०.]

धिष्ण्या धिषण्या धिया २०.८३. धारणावत्या धिया, ऋ० भू० २०३, अथर्व० ७.६.६७.१. [धिषणेति व्याख्यातम्, ततस्तृतीया । अकारयोर्लोपश्छान्दसः । धिषण्शब्दाद्वा तृतीया । धिषण्=धिष शब्दे (जु०) धातोरौणा० कनिन्]

धिष्व धर, प्र०—अत्र 'सुधित-वसुधित-नेमधित०' अ० ७.४.४५. अस्मिन् सूत्रेऽयं निपातितः १.९१.१८. धेहि ३.६.६. धत्स्व १२.११३. धरस्व ६.१८.९. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोटि मध्यमैकवचने 'सुधितवसुधित०' अ० ७.४.४५. सूत्रेण दधातेरित्वमिडागमो वा प्रत्ययस्य द्विर्वचनाभावश्च निपात्यते]

धीतयः दधात्यर्थान् याभिः कर्म-वृत्तिभिस्ताः १.२५.१६. धरन्तः (विद्वांसो जनाः) १.१३२.५. अङ्गुलयः ६.३४.३. अङ्गुलय इव गतयः, प्र०—धीतय इत्यङ्गुलिनामसु पठितम्, निघं० २.५, ३.१२.७. करपादाङ्गुलय इव (विशः=प्रजाः) १.१४४.५. धारकाः (अङ्गुलय इव मनुष्याः) १.१३९.१. **धीतये**=धीयन्ते प्राप्यन्ते सुखानि अनया क्रियया तस्यै १.४१.५. **धीतिभिः**=अङ्गुल्याद्यवयवैः ६.१४.१. धारणाऽऽकर्षणादिभिर्गुणैः १.२२.१४. अङ्गुलीभिर्निर्दिष्ट-वचनाऽर्थैः ३.५२.६. कर्मभिः १.११०.४. अङ्गुलिभिरिव विलेखनगतिभिः ४.३६.४. स्वाऽङ्गुलिभिः प्र०—धीतय इत्यङ्गुलिनामसु पठितम् निघं० २.५, १२.१०८. अङ्गुलिभिरिव धारणाभिः १.१६१.७. **धीतिम्**=धर्मस्य धारणाम् ७.१३.१. धारणायुक्तां धियम् ६.३८.१. धारणां

धियं वा ६.१५.९. धियन्ति विजयं यया ताम् (मतिम्) १.१४३.१. **धीतिः**=धारणा १८..१. शुभगुणधारिका (कन्या) ४.५.७. धीः १.११०.१. धारणम् १.६८.३. धारणावती प्रज्ञा ४.२३.८. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। धीतिः प्रज्ञानाम निघं० १०.४१. धीतयः अङ्गुलिनाम निघं० २.५. धीतिभिः कर्मभिः नि० २.२४. धीतिः=प्रजा नि० १०.४०.]

धीती धीत्या धारणेन, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०'इति पूर्वसवर्णादेशः १.१६४. ८. [धीतिरिति व्याख्यातम्। ततः 'सुपां सुलुग्०' इति सूत्रेण पूर्वसवर्णादेशः]

धीती धीत्या धारणवत्या (सुमत्या) ५.२५.३. [धीति-प्राति० तृतीयैकवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' सूत्रेण पूर्वसवर्णादेशः]

धीनाम् स्वकर्मणां प्रज्ञानाञ्च ३.३.८. उत्तमानां कर्मणाम्, प्र०—धीरिति कर्मनामसु पठितम्, निघं० २.१, ६.४४.१५. **धीषु**=दधति जना याभिस्तासु प्रज्ञासु, प्र०—धीरिति प्रज्ञानामसु पठितम्, निघं० ३.९, १.१७.८. **धीः**=प्रज्ञाः कर्माणि च २.२.९. प्रज्ञा कर्मविद्याधारिका ४.१९. कर्म प्रज्ञा वा १.१८५.८. [धियमिति पदे व्याख्यातम्]

धीमहि उपासीमहि, पं० वि०, ३६.३. दधीमहि प्र०—अत्र 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकत्वं 'वहुलं छन्दसि' इति शपो लोपश्च २.२३.१०. दधीमहि प्र०—अत्र डुधाञ्-धातोः प्रार्थनायां लिङ् 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकत्वाच्छव् न 'आतो लोप इटि च' इत्याकारलोपश्च ३.२५. धरेम, प्र०—अत्र डुधाञ्-धातोर्लिङि 'छन्दस्युभयथा' इति शवभाव आर्धधातुकत्वादीत्वम् १.१३१.२. धरेमहि, हम लोग धारण करें, स० प्र० ५१, ३६.३. ध्यायेम, भा०—परमात्मना सह स्वाऽऽत्मनो युञ्ज्महे ३६.३. निधिमन्तो भवेम ५.२१.१. स्थापयेम ३४.१५. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोराशिषि लिङ्]

धीयताम् धीयन्ताम्, प्र०—अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम् ३६.११. **धीयते**=धार्यताम्, अ०—धीयताम् ३.८. ध्रियते ३.२७.८. धरति १.८१.३. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि लोट्। अन्यत्र लट्]

धीर ! धारणादिगुणयुक्त (अग्ने=ईश्वर सभाध्यक्ष वा) १.९४.६. **धीरम्**=धैर्ययुक्तम् (पतिम्) १.१७९.४. **धीरः**=सर्वव्यवहारध्यानशीलः (गृहस्थजनः) ८.३०. मेधावी विद्वान् (जनः) ७.५६.४. ध्यानवान् मेधावी (पुरुषः) ६.४७.३. धैर्य्यवान् (राजा) १७.२५. धीमान् (विद्वान् जनः) २.३८.४. संयमी विद्वान् पुरुषः १.६४.१. ध्यानवान् योगी ५.२९.१५. ध्यानयुक्तः (विद्वान् जनः) १.१३०.६. क्षमादिगुणान्वितो ध्यानकृत् (विद्वज्जनः) ५.२.१०. **धीराः**=योगिनः (विद्वांसो धर्मात्मजनाः) ३.२८.४. धैर्ययुक्त (लोग), स० प्र० २४६, ३४.२. ध्यानवन्तो योगिनः (ऋषयः) ३४.४९. ध्यान-धैर्ययुक्ताः (पितरः=ज्ञानिनो जनाः) १.९१.१. मेधाविनो विद्वांसः (जनाः) १.६५.१. धार्मिक विद्वान् लोग, पं० वि०, ३.२८.४. ज्ञानवन्तः (विद्वांसो जनाः) १.६७.५. ध्यानवन्तो मेधाविनः (जनाः), प्र०—धीर इति मेधाविनाम, निघं० ३.१५, ३४.२. धीमन्तः (पितरः=पितृ-अध्यापकादयः) १९.५३. **धीरैः**=सुसंयमैः (भा०=विद्वद्भिः) ११.५५. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'सुसूधाञ्गृधिभ्यः क्रन्' उ० २.२४. सूत्रेण क्रन् प्रत्ययः। धीरः=मेधाविनाम निघं० ३.१५.]

धीरणासः धीः प्रशस्ता प्रज्ञा रणः सङ्ग्रामो येषान्ते (वीर जनाः) ३.३४.८. [धी-रणपदयोः समासे कृते जसोऽसुगागमः]

धीरा इव ध्यानवतीव (स्त्रीव) ५.५०.४. [धीरा-इव पदयोः समासः। धीराः धीरप्राति० स्त्रियां टाप्। धीर इति व्याख्यातम्]

धीरासः मेधाविनः (सत्पुरुषाः), प्र०—धीर इति मेधाविनामसु पठितम्, निघं० ३.१५, १.२८. धैर्ययुक्त (कवयः—विद्वान् लोग), स० प्र० १०९, ३.८.४. धीमन्तः (विद्वांसो जनाः) ३.८.४, ध्यानवन्तो विद्वांसः (पुरुषाः) १.१४६.४. योगिनो विचारवन्तः (जनाः) ४.३६.७. योगयुक्ता ध्यानवन्तः (विद्वज्जनाः) ४.३३.२. [धीर इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

धीर्या धीरेषु विद्वत्सु साधुः (विज्ञानपुरस्सरः परमात्मा) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारः २.२७.११. [धीर-प्राति० 'तत्र साधु' रिति यत्। धीर इति व्याख्यातम्। ततः सुस्थाने 'सुपां सुलुग्०' इति आकारादेशः]

धीवतोधीवतः प्राज्ञस्य प्राज्ञस्य (सज्जनस्य) ६.५५.३. [धीवतः पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। धीवत्=धीप्राति० मतुप्। 'छन्दसीरः' अ० ८.२.१४. सूत्रेण मतोर्मकारस्य वकारादेशः]

धुक्षत प्रदुहन्ति, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति भष्भावः १.१६०.३. प्रपूरयेत ६.४८.१२. अलङ्कुरुते ६.४८.१३. **धुक्षन्**=अधुक्षन् दुहन्तु प्रपिपुरतु १.१२१.८. **धुक्ष्व**=

प्रपूर्द्धि ८.४२. पिपूर्धि १२.७२. पूर्णं कुरु ४.५७.२. [दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः । 'शल इगुपधात्०' सूत्रेण क्सः । 'धुक्ष्व' प्रयोगे दुहधातोर्लोट्]

धुङ्क्षा पक्षिविशेषः २४.३१.

धुनयन्त धुनयन्ति कम्पयन्ति, प्र०—अत्राऽडभावः २.२५.५. **धुनयन्ताम्**=कम्पन्ताम् ३.५५.१६. [धूञ् कम्पने (क्रया०) धातोर्णिजन्ताल् लङ् लोट् च । 'धूञ्-प्रीञोर्नुक्' इति णिचि नुक् । धातोर्ह्रस्वत्वं छान्दसम्]

धुनयः शत्रून् कम्पयन्तः (धूतयः=वीरजनाः) १.८७.३. रश्मिगतयः २.३०.२. वायवः ७.५.५. दुष्टानां कम्पकाः (मरुतः=मानवाः) ५.६०.७. रजोवृक्षादीन् कम्पयितारः (वायवः) १.६४.५. **धुनिम्**=श्रेष्ठानां कम्पयितारम् (चमुरिं=चोरं जनम्) ७.१९.४. ध्वनितारम् (शम्बरं=मेघम्) ६.१८.८. कम्पन्तम् (दस्युं=बलात्कारिणं चोरम्) २.१५.९. चालिताम् (महीं=पृथिवीम्) २.१५.५. इन्द्रियकम्पकम् (वृजनं=योगबलम्) ७.१२. **धुनिः**=कम्पनं चेष्टाकरणम् ७.५६.८. कम्पमानः, भा०—योऽजितेन्द्रियः स चञ्चलः (मरणं प्राप्तो जीवः) ३९.७. दुष्टानां कम्पकः (विद्युदग्निः) १.७९.१. **धुनीनाम्**=कम्पनक्रियावतीनां भूम्यादीनाम् ५.८७.३. [धुञ् कम्पने (स्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको निः प्रत्ययः । धुनिः=धुनोतेः नि० ५.१३. धुनयः=नदीनाम निघं० १.१३.]

धुनिमतीः शब्दायमानाः प्रजाः ६.२०.१२. कम्पयुक्ताः (अपः=जलानि) १.१७४.९. [धुनिरिति व्याख्यातम् । ततो मतुबन्तान्ङीप्]

धुनिव्रतम् धुनिः कम्पनमिव व्रतं शीलं यस्य तम् (विद्वांसं जनम्) ५.५८.२. **धुनिव्रताय**=धुनानि कम्पितानि व्रतानि यस्य तस्मै (धीमते पुरुषाय) ५.८७.१. [धुनि-व्रतपदयोः समासः । धुनिरिति 'धुनयः' पदे व्याख्यातम्]

धुनीचुमुरी ध्वनिः शब्दश्चुमुरिर्भोगश्च तौ ६.२०.१३. [धुनि-चुमुरिपदयोः समासः । संहितायां दीर्घः पूर्वपदस्य । चुमुरिः=चमु अदने (भ्वा०) धातोर् उरिन् प्रत्ययोऽकारस्योकारश्छान्दसः]

धुनैतयः ये धुनान् धर्मात्मनां कम्पकान् कम्पयन्ति ते (राजाऽधिकारिणो जनाः) ४.५०.२. [धुन-एतिपदयोः समासः । धुनः=धुञ् कम्पने (स्वा०) धातोरौणादिको नः प्रत्ययः । एति=इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकस् तिः प्रत्ययः]

धुरस् यानाऽऽधारकाष्ठम् ५.४३.८. **धुरि**=मार्गे ५.४६.१. धारकेऽवयवे २.१८.७. अग्रभागे ५.५६.६. धारणे २५.४४. शकटादि-वाहने १.१५१.४. रथस्य युग्मे ४.२९.४. यान-मध्ये ५.५८.७. शत्रुहिंसने युद्धे १.८४.१६. या धारयति तस्याम् (भूम्याम्) १.१६४.९. सर्वाधारे जगति वा **धूर्षु**=अयःकाष्ठविशेषासु कलासु १.१००.१६. रथाऽऽधाराऽवयवेषु ३.३५.२. विमानादियानाऽवयवकाष्ठेषु ५.५५.६. रथाऽऽधारेषु ७.३४.४. **धूः**=सर्वदोषनाशकोऽन्धकारनाशको वा, अ०—सर्वाऽभिरक्षकः सर्वपदार्थच्छेदकत्वाद्धिसको वा (भा०—धातेश्वरः, शिल्पविद्याक्रियासाधकतमोऽग्निः) १.८. [धुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः क्विप् । 'राल्लोपः' अ० ६.४.२१. सूत्रेण रेफादुत्तरस्य वकारस्य लोपः । 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' अ० ८.२.७६. सूत्रेणोपधाया दीर्घः । धुरः=अङ्गुलिनाम निघं० २.५. धूः=धूर्वतेर्वधकर्मणः । इयमपीतरा धूरेतस्मादेव, विहन्ति वहं धारयतेर्वा नि० ३.८. प्राणा वै धुरः तां० १४.९.९८. प्रजापतिर्यत् प्रजा असृजत ता धूर्भिरेवासृजत जै० १.९९. द्वे एव धुरौ मनश्चैव वाक् च जै० १.३२०. एताभिस्तद् देवा असुरानधूर्वन् । यद् अधूर्वंस्तस्माद् धुरोऽभवन् जै० १.३१८. तेन पुरुषेणासुरानधूर्वन् । यदधूर्वंस्तद् धुरां धूस्त्वम् ष० २.३.]

धुरि इव यथा धुरि सर्वे यानाऽवयवा लग्नाः सन्तो गच्छन्ति तथा ७.२४.५. [धूः-इवपदयोः समासः । धूरिति व्याख्यातम्]

धुः धरेयुः, प्र०—अत्राऽडभावः २.२०.८. दध्युः ७.३४.१८. दधति ७.३६.९. धरन्ति १.७३.७. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङि प्रथमबहुवचने रूपम् । अडभावश्छान्दसः । 'गातिस्था०' इति सिचो लोपः]

धूतयः धूयन्ते युद्धक्रियासु ये ते (वीराः पुरुषाः) १.८७.३. कम्पयितारः (मरुतः=प्रियकरा विद्वांसो जनाः) ७.५८.४. ये पापं धूनयन्ति ते (परमेश्वरभक्ताः) ५.६१.१४. गन्तारः कम्पयितारश्च (मनुष्याः) १.१६८.२. ये धुन्वन्ति ते (वायवः) प्र०—अत्र क्तिच्-क्तौ च संज्ञायाम्, अ० ३.३.१७४. इति क्तिच् १.३९.१. [धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोः क्तिच्-प्रत्ययः संज्ञायाम् । बाहु० औणादिको वा तिप्रत्ययो गुणाऽभावश्च]

धूनुते कम्पयति ११.१८. **धूनुथ**=कम्पयथ ५.५७.३. शत्रून् कम्पयत १.३७.६. **धूनुहि**=कम्पय ३.४५.४. प्रेरय १.१०.८. **धूनोमि**=समन्तात् कम्पयामि प्र०—अत्राऽन्तर्गतो णिच् ८.४८. [धूञ् कम्पने (स्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट्]

धूपयतु राजविद्यया, राजनीत्या, योगविद्याऽङ्गर्वा संस्करोतु ११.६०. **धूपयन्तु**=विद्यासुशिक्षाभ्यां संस्कुर्वन्तु ११.६०. सुगन्धाऽन्नादिभि संस्कुर्वन्तु, भा०—विद्यासुशिक्षाभ्यां युक्ताः सम्पादयन्तु ११.६०. **धूपयामि**=सन्तापयामि ३७.६. [धूप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

धूमकेतवः केतुरिव धूमो ज्ञापको येषान्ते, भा०—येषां धूमो विज्ञापकस्ते (अग्नयः=पावकाः) ३३.२. **धूमकेतुना**=धूमः केतुर्ध्वजावद् यस्मिन् रथे तेन १.६४.१०. **धूमकेतुम्**=धूमकेतुर्ध्वजो यस्य तम् (दूतम्) १.४४.३. **धूमकेतुः**=धूमः केतुर्ध्वजवद् यस्य सः १.२७.११. [धूम-केतुपदयोः समासः। धूमः=धूञ् कम्पने (स्वा०) धातोरौणादिको मक्प्रत्ययः। तेतुः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

धूमगन्धिः धूमे गन्धो यस्य सः (अग्निः=पावकः) २५.३७. धूमे गन्धिर्गन्धो यस्य सः (अग्निः) १.१६२.१५. [धूम-गन्धिपदयोः समासः]

धूमम् वाष्पाख्यम् ३.२९.९. ब्रह्मचर्य-कर्मानुष्ठानाऽग्नि-धूमम् १.१६४.४३. मलम् ११.३७. धूमसदृश-मलम् १.३६.९. **धूमः**=यन्त्रज्वलनवाष्पः ६.२१. धूम इव ५.११.३. [धूञ् कम्पने (स्वा०) धातोः 'इषियुधीन्धि-दसिश्याधूसूभ्यो मक्' उ० १.१४५. सूत्रेण मक्प्रत्ययः। स यत् (मृतं शरीरम्) धुनोति तस्माद् धुनः धुनो ह वै नामैषः। तं धूम इति परोक्षमाचक्षते परोक्षेणैव। परोक्ष-प्रिया इव हि देवाः जै० १.४९.]

धूमासः धूमाः ७.१६.३. [धूमप्राति० प्रथमाबहु-वचने जसोऽसुगागमः। धूममिति व्याख्यातम्]

धूमिनः बहुर्धूमो विद्यते येषान्ते (अग्नेरर्चयः) ५.९.५. [धूमप्राति० भूम्न्यर्थे इनिः प्रत्ययः]

धूम्रनीकाशाः धूम्र इव वर्णो येषां ते (गवादयः पशवः) २४.१८. [धूम्र-नीकाशपदयोः समासः]

धूम्ररोहितः धूम्ररक्त-वर्णः (पशुः) २४.२.

धूम्रः धूम्रवर्णः (अजः=मेषः) २१.२९. **धूम्रान्**=धूम्रवर्णान् (पदार्थान्) २४.११. **धूम्राः**=धूम्रवर्णाः (पश्वादयः) २४.१०. [यो धूम्रस्ताम्रधूम्रः। (ऋषभः) स प्रजापतिः मै० ४.२.१४.]

धूर्त्तिः हिंसकः (मनुष्यः) १.१८.३. हिंसा, भा०—द्रोहः ३.३०. **धूर्त्तेः**=धूर्त्तात् (दुर्जनात्) ७.१.१३. धूर्त मनुष्य से, आर्याभि० १.१२, ऋ० १.३.१०.१५. विश्वास-घातिनः (रक्षसः=महादुष्टान्मनुष्यात्) प्र०—अत्र धुर्वी-धातोर्बाहुलकादौणादिकस्तिः प्रत्ययः १.३६.१५. अविद्या हिंसकस्य (वरुणस्य=श्रेष्ठस्य विदुषः) १.१२८.७. [धुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकस्तिः प्रत्ययः। 'राल्लोपः' इति रेफादुत्तरस्य वकारस्य लोपः। 'हलि च' अ० ८.२.७७. सूत्रेण दीर्घः]

धूर्य्यौ धुरं यज्ञस्याऽग्रं मुख्याङ्गं वहतस्तौ (अग्नि-वायू), प्र०—अत्र 'धुरो यड्ढकौ' अ० ४.४.७७. इति यत्प्रत्ययः २.१९. [धूरिति 'धुरम्' पदे व्याख्यातम्। ततो वहत्यर्थे 'धुरो यड्ढकौ' अ० ४.४.७७. सूत्रेण यत्प्रत्ययः]

धूर्व हिंसय, धूर्वति हिनस्ति वा १.८. **धूर्वति**=हिनस्ति १.८. **धूर्वन्तु**=हिंसन्तु ६.७५.१९. **धूर्वामः**=हिंसामः, अ०—ताडयामः १.८. [धुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्लोटि लटि च रूपाणि। धूर्वति वधकर्मा निघं० २.१९.]

धूर्वन्तम् हिंसाशीलं प्राणिनम्, अ०—अग्नि, सर्वहिंस-कम् (अग्निम्) १.८. [धुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः शतृ-प्रत्ययः]

धूर्षदम् यानानां धुरं गमयितारम् (अग्नि=विद्युदादि-स्वरूपम्) २.२.१. यो धूर्षु हिंसकेषु सीदति तम् (अग्नि=विद्वांसं जनम्) १.१४३.७. **धूर्षदः**=धुरि सीदन्ति (प्राज्ञा राजजनाः) २.३४.४. ['धूर्' इति व्याख्यातम्। तदुपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

धूर्षाहौ यौ धुरं पृथिव्याः शरीरस्य ज्ञानानां वा धारणं सहेते तौ (अ०—सूर्यविद्वांसौ, गावौ वृषवद्यानचालनाय) ४.३३. ['धूर्' इति व्याख्यातम्। तदुपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' सूत्रेण अण्प्रत्ययः। 'छन्दसि सहः' सूत्रेण ण्विः प्रत्ययो वा]

धृतदक्षा धृतं दक्षं बलं याभ्यां तौ (प्राणोदानतुल्यौ विद्वांसौ) ५.६२.५. [धृत-दक्षपदयोः समासः। दक्षः=बलनाम निघं० २.९. 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

धृतप्रुषा•प्रकाशसेविना (मनसा=विज्ञानेन) २०.४६. [धृतोपपदे प्रुष स्नेहनसेवनपूरणेषु (क्र्या०) धातोः क्विप् प्रत्ययः]

धृतव्रतः धृतं सत्यं येन सः (विद्वान् जनः) १.४४.१४. धृतसत्यः (न्यायाधीशो जनः) १.१४१.९. स्वीकृतसत्यः (राजा शिष्यो वा) २.१.४. धृतानि सत्याचरण-ब्रह्मचर्या-दीनि व्रतानि येन सः (भा०=नीतिविद्या-धर्मयुक्तः स्वामी, सम्राट्) १०.२७. धृतं व्रतं सत्यं येन सः (सभेशः) २०.२. धृतानि व्रतानि येन सः (सविता=सूर्यः) ४.५३.४. धृतानि व्रतानि कर्माणि येन सः (धार्मिक उद्योगिजनः) ६.१९.५. सत्याचरणशीलः (विद्वान् मनुष्यः) १.२५.१०. **धृतव्रताः**=

धृतानि व्रतानि यैस्ते (देवाः=विद्वांसः) २.२९.१. **धृतव्रतौ**= धृतानि व्रतानि सत्यादीनि याभ्यां तौ (मित्रावरुणौ= सुहृद्वरौ जनौ) १०.९. [धृत-व्रतपदयोः समासः। व्रतम्= कर्मनाम निघं० २.१. व्रतमिति कर्मनाम वृणोतीति सतः। इदमपीतरद् व्रतमेतस्मादेव निवृत्ति कर्म वारयतीति सतः। अन्नमपि व्रतमुच्यते यदावृणोति शरीरम् नि० २.१३. धृतव्रतः एष (राजा) च श्रोत्रियश्चैतौ ह वै द्वौ मनुष्येषु धृतव्रतौ श० ५.४.४.५.]

धृतव्रत धृतानि व्रतानि बलानि याभ्यां तौ (मित्रावरुणा=प्राणोदानौ), प्र० —अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेराकारादेशो व्यत्ययेन ह्रस्वत्वं च १.१५.६.धृतव्रता=धृतानि व्रतानि याभ्यान्तौ (सभासेनेशौ) ६.६८.१०. [धृत-व्रतपदयोः समासे 'सुपां सुलुक०' इत्याकारादेशे ह्रस्वत्वं छान्दसम्। व्रतं पूर्वपदे व्याख्यातम्]

धृता ध्रियते यया तया (तनूः=शरीरम्) प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इति क्विप् ४.१७. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः करणे 'कृतो बहुलम्' इति क्विप्]

धृतिः धरन्ति यया सा (धारणा) १८.७. सर्वेषां व्यवहाराणां धारणा ८.५१. धैर्य्यम् २२.१९. धैर्यरूपम् (मनः) ३४.३. निश्चयात्मकवृत्तिरूप (मनः) स० प्र० २४६, ३४.३. [धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। क्षेमो वै धृतिः श० १३.१.४.३. धृतिर्ध्रुवा तै० आ० २.१७.२.]

धृषजः धार्ष्ट्याज्जाताः (सूर्यरश्मयः) ५.१९.५. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कप्रत्यये धृषः। तदुपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोःर्डः प्रत्ययः। अथवा ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'धृषेश्चेति वक्तव्यम्' अ० ३.२.१७२. वार्ति० सूत्रेण नजिङ् प्रत्ययः]

धृषत् प्रगल्भम् (मनः=चित्तम्) ५.३५.४. शत्रुधर्षणं कुर्वन् (सभाध्यक्षः) १.५४.४. प्रगल्भः सन् (इन्द्रः=राजा) ६.४५.२१. यो धृष्णोति दृढं कर्म करोति सः मनः=विज्ञानम्) १.५४.३. दुष्टानां धर्षकः (इन्द्रः=राजा) ६.४२.३. **धृषतः**=अधार्मिकान् दुष्टान् धर्षयतस्तत्कर्मफलं प्रापयतः (सभाध्यक्षस्य) १.५४.३. **धृषता**=दृढकर्मकारिणा (त्मना=आत्मना) १.५४.४. दृढेन सैन्येन १३.१०. दृढत्वेन ६.१८.१३. प्रागल्भ्येन २.३०.४. प्रगल्भेन पुरुषेण सह ७.१९.३. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपो लुक्। औणादिको वाऽतिः प्रत्ययो गुणाऽभावश्च]

धृषतः अधार्मिकान् दुष्टान् धर्षयतस्तत्कर्मफलं प्रापयतः (सभाध्यक्षस्य) १.५४.३. [धृषदिति व्याख्यातम्। ततः षष्ठी]

धृषती प्रगल्भा (सरस्वती=विज्ञानवती राज्ञी) २.३०.८. [धृषदिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीप्]

धृषद्वर्णम् धृषत् प्रगल्भो दृढो वर्णो यस्य तम् (विप्रं=विद्वज्जनम्) ११.२६. [धृषत्-वर्णपदयोः समासः]

धृषद्विनः बहुदृढत्वादि-गुणयुक्ताः (विदुषां सखायो जनाः) ५.५२.२. [धृषद्प्राति० मत्वर्थे छान्दसो विनिः प्रत्ययः]

धृषन्मनः धृषद्=धृष्यते मनः सर्वस्याऽन्तःकरणं येन तत्सम्बुद्धौ (जगदीश्वर) १.५२.१२. दुष्टों के मन को धर्षण तिरस्कार करते हुए (जगदीश्वर) आर्याभि० १.१३, ऋ० १.४.१४.१२. [धृषत्- मनस्पदयोः समासः]

धृषमाणः शत्रूणां धर्षणाऽऽकर्षणे प्रगल्भः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.५२.५. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोस्ताच्छील्ये चानश्। विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

धृष्टिः प्रगल्भ इव यजमानः १.१७. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'कृतो बहुलम्' इति कर्त्तरि क्तिन् प्रत्ययः]

धृष्णवः प्रगल्भगुणप्रदाः (गावः=सूर्यकिरणाः) १.९२.१. धृष्टाः प्रगल्भा दृढनिश्चयाः (अध्यापकाः) ५.५२.४. **धृष्णवे**=यो धृष्णोति दृढो निर्भयो भवति तस्मै (दृढोत्साहाय पुरुषाय) १६.३६. दृढत्वाय १.८१.३. यो धृष्णोति धार्ष्ट्यं प्राप्नोति तस्मै (सभेशाय) १६.१४. **धृष्णुना**= दृढत्वादिगुणयुक्तेन (शवसा=बलेन) १.५४.२. दृढोत्साहेन (इन्द्रेण=सेनापतिना) १७.३४. दृढेन (शवसा=बलेन) १.१६७.९. धृष्टेन दृढेन (शवसा=बलेन) १.५६.४. **धृष्णुः**=दृढः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६३.३. धृष्टः प्रगल्भः (न्यायकारी राजा) ७.२०.५. **धृष्णो**=प्रगल्भ (इन्द्र=सभाद्यध्यक्ष) १.८४.१. दृढोत्साहः (इन्द्र=राजन्) ६.३७.४ दृढात्मन् (सूर्यवद्राजन्) ४.१६.७. दृढप्रगल्भ (इन्द्र=राजन्) ४.२२.५. **धृष्णोः**=दृढस्य (वीरपुरुषस्य) ७.५६.८. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः' अ० ३.२.१४०. सूत्रेण ताच्छील्ये क्नुः प्रत्ययः]

धृष्णु दार्ढ्यम् ११.६८. दृढं, प्रगल्भम् (व्यवहारम्) ६.६६.५. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोः 'त्रसिगृधिधृषिक्षिपेः क्नुः' इति विहितः क्नुः 'कृतो बहुलम्' इति भावे प्रत्ययः]

धृष्णुया दृढत्वादिगुणयुक्ता (तन्यतुः=विद्युत्) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सोः स्थाने याच्-आदेशः १.२३.११. धार्ष्ट्यादिगुणयुक्तेन धृष्टेन (सख्या=मित्रसमूहेन) १.५३.७. धर्षणेन प्रगल्भत्वेन १.६६.५. दृढत्वादिगुणयुक्ताः (सखायः) ५.५२.८. दृढत्वेन युक्तः (रथः=विमानादियान-विशेषः) ४.३१.१४. प्रगल्भत्वादिना ६.४६.१०. दृढत्वेन प्रागल्भ्येन वा ६.४६.२. दृढानि (युगा=वर्षाणि) ५.५२.४. प्रगल्भाः (विद्वांसो जनाः) ५.१०.५. प्रगल्भतया २७.३८. धृष्णूनि प्रगल्भानि याति यैस्तानि (धनानि) ४.२१.४. [धृष्णुरिति व्याख्यातम् । ततः प्रथमैकवचनस्य स्थाने 'सुपां सुलुग्०' इति याच् आदेशः । अथवा 'धृष्णु' इत्युपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः करणे क्विप्-प्रत्ययः]

धृष्णुषेणः धृष्णुः प्रगल्भा दृढा सेना यस्य सः (इन्द्रः=परमैश्वर्यो राजा) ३.५४.१५. **धृष्णुषेणाः**=धृष्णुर्दृढा सेना येषान्ते (तेजस्विनो जनाः) ६.६६.६. [धृष्णु-सेना-पदयोः समासः । धृष्णुरिति व्याख्यातम्]

धृष्णुहि धृष्टो भव १.८०.३. [ञिधृषा प्रागल्भ्ये (स्वा०) धातोर्लोटि मध्यमैकवचनम्]

धृष्ण्वोजसः धृष्णु धृष्टमोजो येषान्ते (मरुतः=विद्वांसो जनाः) २.३४.१. [धृष्णु-ओजस्पदयोः समासः । धृष्णुरिति व्याख्यातम्]

धेथे धरथः १.१५८.२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लट् मध्यमद्विवचनम् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुर्न भवति]

धेनवः दुग्धदात्र्यो गावः १.१२०.८. वाचः ३.७.२. वाण्यो गाव वा ५.६९.२. किरणा गावो वाचो वा १.८४.११. या धयन्ति पाययन्ति ताः (किरणाः) १.१५१.५. गाव इव वाचः ५.४३.१. पयःप्रदा गाव इव (पत्न्यः) १.१२५.४. **धेनवे**=दुग्ध देने वाली गौ आदि के लिए आर्याभि० १.२९, ऋ० ६.४.९.१२. **धेनुभिः**=द्रोग्ध्रीभिर्गोभिरिव वाग्भिः ४.२४.१०. **धेनुम्**=वाणीम् १.९१.२०. सुशिक्षितां वाचम् १.११८.८. गामिव वर्त्तमानां वाणीम् १.१६०.३. वत्सस्य पालिकां गामिव वाचम् ३.५७.१. दुग्धदात्री-गोरूपाम् (वाचम्) १.१६४.२६. धारणाम् ४.३३.१. दोग्ध्रीं वाचम् १.१३९.७. विद्यासहितां वाचम् ४.३४.९. विद्याऽऽधारां वाचम् ३४.२१. धयति पिबति आनन्दरसमनया ताम् (कामदुघां वेदवाचम्), प्र०—धेनुरिति वाङ्नामसु पठितम्, निघं० १.११, ७.१०. उपदेशश्रवणलक्षणां वाचम् १.२७.३. **धेनुः**=दुग्धदात्री गौः १.६६.१. या धापयति सा (गौः) २१.१९. दुग्धप्रदा गौः १.१५३.३. विद्यासुशिक्षायुक्ता वाक् २.३५.७. गौर्विद्यायुक्ता वाग्वा ७.२.६. **धेनूनाम्**=गवाम् ५.६१.१०. **धेनोः**=वाण्याः ३.३८.७. वाण्या गोर्वा ४.१.६. **धेनू**=दुग्धदात्र्यौ गावौ, भा०—धेनुवद् वर्त्तमाने (सायं-प्रातर्वेले) २८.६. धेनुवत्-पालिके (अहोरात्रे) ३.६.४. धेनुवद्रसप्रदे (रात्रि-दिवसौ) ३.५५.१२. गावाविव वर्त्तमाने (पृथ्वी=भूम्यन्तरिक्षे) ४.२३.१०. [धयन्ति पिबन्ति यस्याः सेति विग्रहे धेट् पाने (भ्वा०) धातोः 'धेट इच्च' उ० ३.३४. सूत्रेण नु-प्रत्ययः । आत्वनिवृत्यर्थमिकारादेशः धेनुः=वाङ् नाम निघं० १.११. धेनुर्धयतेर्वा धिनौतेर्वा । वागेषा माध्यमिका, घर्मधुगिति याज्ञिकाः नि० ११.४३. धेनुः आपो वै धेनवः, आपो हीदं सर्वं हिन्वन्ति कौ० १२.१. माता धेनुः श० २.२.१.२१, ५.३.१.१४. इयं (पृथिवी) वै धेनुः श० १२.९.२.११. आपो वाव धेनवस्ता हीदं सर्वं धिन्वन्ति ऐ० आ० १.३.५. दोग्ध्री धेनुः (आजायताम्) तै० सं० ७.५.१८.१. द्यावा-पृथिव्या खलु वाव धेनुर्देवतया काठ० ३४.१. धेनू भौमी काठ० ५०.१. पयस्या वै धेनुः । पयस्या भाजसौ मित्रा-वरुणौ जै० २.२०३. प्रथमा ह व्युवास सा धेनुरभवद् यमे मै० २.१३.१०. मातेव वा इयं (पृथिवी) मनुष्याणां च पशूनां च मातेव धेनुः श० १.२.१.१२. वाग्वै धेनुः ता० १८.९.२१. गो० १.२.२१. मै० ४.४.८. वाचमेव तद्देवा धेनुमकुर्वत श० ९.१.२.१७.]

धेनुरिव यथादुग्धदात्री गौः १.१३०.५. [धेनुः-इव-पदयोः समासः]

धेना वेदचतुष्टयी वाग् वाणी वा, प्र०—धेनेति वाङ्नामसु पठितम्, निघं० १.११, १.२.३. **धेनाः**=विद्या-युक्ता वाचः ४.५८.६. प्रयुक्ता वाच इव (प्रजाः) ७.२१.३. वाण्यः १.१४१.१. प्रीयमाणान्यपत्यानीव वाचः ३.१.९. **धेने !**=धेनावत् सर्वानन्दरसप्रदे (शिप्रे—द्यावापृथिव्यौ) १.१०१.१०. [धेट् पाने (भ्वा०) धातोः 'धेट इच्च' उ० ३.११. सूत्रेण नः प्रत्ययः । आत्वनिवृत्यर्थमिकारादेशश्च । स्त्रियां टाप् । धेनाः वाङ्नाम निघं० १.११. धेना दधातेः नि० ६.१७. अन्नं वै धेनाः श० ७.५.२.११. धेना बृहस्पतेः (पत्नी) तै० आ० ३.९.१.]

धेनु वाक्, प्र०—अत्र विभक्तिलोपः ६.६६.१. [धेनुरिति व्याख्यातम्]

धेनुमती प्रशस्ता बहवो धेनवो वाचः पशवो वा सन्त्यस्यां सा (पृथिवी=भूमिरन्तरिक्षं वा) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे

भूम्न्यर्थे च मतुप् ५.१६. **धेनुमत्यै**=गोः सम्बन्धिन्यै (इषे=इच्छायै) १.१२०.६. [धेनुरिति व्याख्यातम् । ततो भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा मतुबन्तान् ङीप्]

धेयाम् दध्याम् ५.६४.४. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोराशिषि लिङ् । 'एर्लिङि' सूत्रेण एकारादेशः । 'छन्दस्युभयथेति' सार्वधातुकम् आश्रित्य सलोपः]

धेयुः दध्युः, प्र०—अत्र 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकमाश्रित्य सलोपः ३.५०.२. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोराशिषि लिङि प्रथमबहुवचने रूपम् । छन्दसि सार्वधातुकमाश्रित्य सलोपः]

धेष्ठः अतिशयेन धाता (ईश्वरः) १.१७०.५. [धातृप्राति० अतिशायन इष्ठन्-प्रत्ययः । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण तृचो लोपः ।

धेहि धर ८.७. प्रचारय ३७.१६. स्थिर रखो, आर्याभि० २.६, १६.६. धारण करो, आर्याभि० २.६, १६.६. प्रयच्छ १.६.८. धारण कीजिए, सं० वि० १६६, ६.११३.७. धरिये, स० प्र० २४६, १६.६. स्थापन कीजिए, स० प्र० २४६, १६.६. दधाति ४.१०. उत्पादय, ऋ० भू० २२५, १०.८५.४४. संयोजय १.६.७. स्थापय २.२३.१५. स्थिरीकुरु ३.१८.४. देहि ३.२१.२. **धैथे**=धारयथः ६.६७.७. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोटि मध्यमैकवचनम् । धैथे प्रयोगे लेटि 'आत ऐ' इति ऐकारादेश आकारस्य । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुर्न भवति]

धैवरम् धीवरस्याऽपत्यम् ३०.१६. [धीवरप्राति० अपत्यार्थे 'तस्यापत्यम्' सूत्रेणाण्-प्रत्ययः]

धौतरीभिः शत्रूणां कम्पयित्रीभिः सेनाभिः ६.४४.७.

धौतीनाम् धावन्तीनां नदीनाम् २.१३.५. [धावु गतिशुद्ध्योः (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये ऊठागमे धौत इति रूपम् । ततः स्त्रियां छान्दसो ङीप]

ध्मातेव धमनकर्त्तेव (अग्निरिव विद्वान्) ५.६.५. [ध्माता-इवपदयोः समासः । ध्माता=ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्प्रत्ययः]

ध्यया=ध्यानेन ४.३६.२. [ध्यै चिन्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' सूत्रेण निरुपसर्गादपि छन्दसि स्त्रियाम् अङ्]

ध्रजतः गच्छतः (श्येनस्येव) ६.१५. वेगेन धावतः (श्येनस्य) ४.४०.३. **ध्रजन्तम्**=गच्छन्तम् (विद्वांसं जनम्) १.१४६.१. [ध्रज गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः । ध्रजति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

ध्रजसा गमनेन ६.३.७. [ध्रज गतौ (भ्वा०) धातोरौणादिकः असुन्-प्रत्ययः]

ध्रजीमान् गतिमान् (वातः) १.१६३.११. शीघ्रगतिः (वातः) १.७६.१. [ध्रज गतौ (भ्वा०) धातोर् औणादिके इन्प्रत्यये ध्रजिः । ततो मतुप् प्रत्यये पूर्वस्य च दीर्घे रूपम्]

ध्राजिः गतिः १.१६४.४४. **ध्राज्या**=गत्या १२.८७. **ध्राज्यै**=गत्यै, प्र०—अत्र गत्यर्थाद् ध्रजधातोः 'इञ् वपादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वार्त्तिकेन इञ्प्रत्ययः ६.१८. [ध्रज गतौ (भ्वा०) धातोः 'इञ् वपादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वा० सूत्रेण इञ्प्रत्ययः । ध्राजिः=गतिः । नि० १२.२७.]

ध्रुवक्षित् यो ध्रुवाणि सुखानि शास्त्राणि वा क्षियति निवासयति वा (विद्याक्रियामयो यज्ञः) ५.१३. [ध्रुवोपपदे क्षि निवासगत्योः (तदा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः]

ध्रुवक्षितिः ध्रुवा निश्चला क्षितिर्निवसतिर्जनपदो यस्याः सा (स्त्री) १४.१. ध्रुवा क्षितयो भूमयो यस्मिन् सः (इन्द्रः=परमेश्वरः) ७.२५. [ध्रुवा क्षितिपदयोः समासः । क्षितिः=क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः क्तिन्प्रत्ययः । क्षितिः पृथिवीनाम निघं० १.१. ध्रुवक्षितिरस्यन्तरिक्षं दृंह मै० १.२.८.]

ध्रुवक्षेमा ध्रुवं क्षेमं रक्षणं ययोस्तौ (मित्रावरुणौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७२.२. **ध्रुवक्षेमाः**=ध्रुवं क्षेमं रक्षणं येषान्ते (जनाः) ४.१३.३. [ध्रुव-क्षेमपदयोः समासः । 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः]

ध्रुवक्षेमासः ध्रुवं निश्चलं क्षेमं रक्षणं येभ्यस्ते (पर्वतासः=मेघाः) ३.५४.२०. [ध्रुव-क्षेमपदयोः समासे जसोऽसुगागमः]

ध्रुवच्युतः ये ध्रुवानपि पदार्थान् च्यावयन्ति निपातयन्ति ते (मरुतः=वायवः) १.६४.११. [ध्रुवोपपदे च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । ह्रस्वस्य तुगागमः]

ध्रुवतमः अतिशयने ध्रुवः (इन्द्रः=परमेश्वरः) ७.२५. [ध्रुवप्राति० अतिशायेन तमप्-प्रत्ययः]

ध्रुवम् निश्चलं सुखम् १.१७. निश्चयम् ७.२५. अन्तरिक्षम् ३.५४.८. **ध्रुवस्य**=निश्चलस्य (विदुषो जनस्य) १.१४६.१. **ध्रुवः**=स्थिरः (इन्द्रः=ईश्वरः) ७.२५. निश्चलो दृढः (ज्योतिः=परमात्मा) ६.६.४. न्यायेन राज्यपालनेन निश्चितः (भा०—धर्मात्मा पुरुषार्थी राजा) १२.११. दृढनिश्चयः (अ०—परमात्मा) १७.८२.

भा०—धर्मग्रहणेऽधर्मत्यागे च दृढोत्साहः (विद्वान् जिज्ञासुर्जनो वा) २७.४५. निश्चलो निश्चलकर्त्ता (ईश्वरः सभाध्यक्षो वा) ५.३०. **ध्रुवाणि**=अखण्डितानि (व्रतानि=उत्तमकर्माणि) ३.५६.१. निश्चलानि दृढानि (व्रतानि) ५.५.४. **ध्रुवाः**=निश्चलसुखहेतवः (अ०—(गावः) १.१. **ध्रुवाणाम्**=आकाशादीनां मध्ये ७.२५. **ध्रुवेण**=निष्कम्पेण (मनसा=अन्तःकरणेन) ७.२५. [ध्रुवति स्थिरं भवतीति विग्रहे ध्रु गतिस्थैर्ययोः (तुदा०) धातोर् बाहु० औणादिकः कः प्रत्ययः। ध्रुवम् यद्वै स्थिरं यत्प्रतिष्ठि तद् ध्रुवम् श० ८.२.१.४. अहर्वै ध्रुवम जै० ३.५८. तद्यदेतं (असुराः) न शेकुरुद्धन्तं तस्माद् ध्रुवो नाम श० ४.२.४.१९. यद्वै स्थिरं यत् प्रतिष्ठितं तद् ध्रुवम् श० ८.२.१.४.]

ध्रुवयः स्वस्वस्थाने स्थिराः (पर्वताः=शैलाः) ७.३५.८.]

ध्रुवयोनिः ध्रुवा योनिर्गृहं यस्याः सा (स्त्री) १४.१. [ध्रुवा-योनिपदयोः समासः। योनिः=गृहनाम। निघं०३.४.]

ध्रुवसदम् ध्रुवेषु विद्याविनय-योग-धर्मेषु सीदन्तम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ९.२. [ध्रुवोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

ध्रुवा निश्चलधर्मा (स्त्री) १४.१. निश्चलस्वरूपा (पत्नी) १३.१९. स्थिरा (स्त्री) १३.३४. निष्कम्पा, भा०—पतिव्रता (राजपत्नी) १३.१६. दृढनिश्चया, भा०—निश्चिन्ता (कन्या) १२.५४. निश्चलज्ञानयुक्ता (स्त्री) १४.१२. ध्रुवन्ति प्राप्नुवन्ति स्थिराणि सुखान्यनया विद्यया सा (घृताची=विद्या), प्र०—ध्रु गतिस्थैर्ययोः इत्यस्य कः प्रत्ययान्तः प्रयोगः 'कृतो बहुलम्०' इति करणकारके २.६. दृढा स्वकक्षायां गच्छत्यपि निश्चला (स्त्री) १४.२१. अक्षुब्धा (स्त्री) ११.५८. मङ्गलकार्येषु कृतनिश्चया (विदुषी कन्या) ११.६४. सुस्थिरा (सुभगा स्त्री) ११.५८. [ध्रुवं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्। ध्रुवा इयं (पृथिवी) एव ध्रुवा श० १.३.२.४.]

ध्रुवा ध्रुवाणि निश्चलानि वस्तूनि प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि वहुलम्, इति लोपः २.६. ध्रुवाणि=निश्चलानि दृढानि (धाम=जन्मस्थाननामानि) ४.५.४. अखण्डितानि (व्रता=उत्तमानि कर्माणि) ३.५६.१. दृढानि कार्याणि १.१६७.८. [ध्रुवं व्याख्यातम्। ततो नपुंसके प्रथमाबहुवचने जसः स्थानेभूतस्य शेर्लोपः 'शेश्छन्दसि वहुलम्' इति सूत्रेण। पशवो वै ध्रुवा मै० ४.१.१२. इयं (ध्रुवा) दिगदितिर्देवता (पृथिवी) तै० ३.११.५.३. वैकङ्कती ध्रुवा श० १.८.१.३९, तै० सं० ३.५.७.३.]

ध्रुवासः निश्चलाः (पर्वतासः=शैलाः) ६.५२.४. [ध्रुवं व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

ध्रुवेभिः निश्चलैः कालाऽवयवैः (ऋतुभिः) १.८४.१८. [ध्रुवं व्याख्यातम्। ततो 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण भिस ऐसादेशो न]

ध्वजेषु स्ववीरप्रतीतये रथाद्युपरि स्थापितेषु विजातीय-चिह्नेषु १७.४३. [ध्वज गतौ (भ्वा०) धातोरच्-प्रत्ययः]

ध्वनयीत् शब्दयेत् २५.३७. ध्वनयेत् शब्दयेत् १.१६२.१५. [ध्वन शब्दे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्। अडभावश्छान्दसः। 'नोनयतिध्वनयति०' अ० ३.१.५१. सूत्रेण च्लेश्चङ् न भवति]

ध्वन्यस्य ध्वनिषु कुशलस्य (रायः=धनस्य) ५.३३.१०. [ध्वनिप्राति० भवार्थे यत्]

ध्वरसम् हिंसकम् (शत्रुजनम्) ४.२३.७. **ध्वरसः**=हिंसाः २.२३.५. [ध्वरति वधकर्मा निघं० २.१९. औणादिकोऽसुन् प्रत्ययः]

ध्वसनौ अध-ऊर्ध्व-मध्य-पतनार्थे परिधौ १.१६४.२९. [ध्वसनौ=ध्वसने मेघे नि० २.९.]

ध्वसन्तिम् अधोगन्तारं पापिनम् १.११२.२३. [ध्वंसु अवस्रंसने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको झिच् प्रत्ययः किच्च]

ध्वसयन्तम् चाञ्चल्येनाऽधःपतन्तम् (शिशुम्), प्र०—'ध्वसु ध्वंसु अधःपतने, इत्यस्मात् स्वार्थे णिच् १.१४०.३. **ध्वसयन्तः**=ध्वसमिवाचरन्तः (मनुष्याः) १.१४०.५. [ध्वसु अधःपतने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्शतृ-प्रत्ययः]

ध्वस्मन्वत् ध्वंसवत् (पाथः=अन्नादिकम्) ६.१५.१२. ध्वस्तदोषविकारम् (पाथः=अन्नम्) ७.४.६. [ध्वस्मन्वत् उदकनाम निघं० १.१२.]

ध्वस्मानः ध्वंसकाः शत्रवः ४.६.६. [ध्वंसु अवस्रंसने (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

ध्वस्राः ध्वंसिकाः (सेनाः) ४.१९.७. [ध्वंसु अवस्रंसने (भ्वा०) धातोरौणादिको रक् प्रत्ययो वाहुलकाद्]

ध्वान्तः ध्वान्तमन्धकारं प्राप्तः, भा०—योऽविद्या-युक्तः सोऽन्धकाराऽऽवृतः (मरणं प्राप्तो जीवः) ३९.७. [ध्वान्तम्-आध्वस्तम् नि० ४.३. ध्वन शब्दे (भ्वा०) धातोः

क्तप्रत्यये ध्वान्तमिति निपात्यते तमोऽभिधानं चेत् 'क्षुब्धस्वान्तध्वान्त०' अ० ७.२.१८. सूत्रेण]

न निषेधे, प्रतिषेधे, निवारणे १.२५.१४. मत, स० प्र० २८२, १०.१२६.७. उपमार्थे, प्र०—उपरिष्टादुपचारस्तस्य येनोपमीयते, नि० १.४. यत्र कारकात् पूर्वं नकारस्य प्रयोगस्तत्र प्रतिषेधार्थीयः, यत्र च परस्तत्रोपमाऽर्थीयः १.८.५. इव २०.४५. जलाशयं प्राप्य जलं पिबतीव १.१६.५. उपमायाम् नि० १.४, १.२४.४. जैसे, आर्याभि० १.३७, ऋ० १.६.२१.१३. के समान आर्याभि० १.४६, ऋ० १.५. १९.३. प्र०—निरुक्तकार-नियमेन परः प्रयुज्यमानो नकार उपमार्थे भवतीति हेतोः सायणाचार्यस्य निषेधार्थ व्याख्यानमशुद्धमेव १.२५.६. [नेति प्रतिषेधार्थीयो भाषायामुभयमन्वध्यायम् 'नेन्द्रं देवममंसत' इति प्रतिषेधार्थीयः पुरस्तादुपचारस्तस्य यत् प्रतिषेधति। 'दुर्मदासो न सुरायाम्' इत्युपमार्थीय उपरिष्टाद् उपचारस्तस्य येनोपमिमीते नि० १.४.]

नकिः निषेधे १.१६५.९. आकांक्षायाम् ३३.७९. प्रश्ने, न किल १.८४.६. नैव १.५२.१३. नहि १.६९.४.

नकिः या न शब्दयति सा (उषाः) १.४८.६.

नकिः धर्म्म-मर्यादाया नाक्रमिता (सहन्त्यः=सहनशीलो विद्वान्) प्र०—नकिरिति सर्वसमानीयेषु पठितम्, निघं० ३.१२. अनेन क्रमणनिषेधार्थो गृह्यते १.२७.८. [नकिः सर्वपदसमाम्नायः निघं० ३.१२.]

नक्तम् रात्रौ, प्र०—नक्तमिति रात्रिनामसु पठितम्, निघं० १.७, १.३४.२. रात्रिम् १.११६.२०. रात्रिः ७.१५.१५. [नक्तमिति रात्रिनाम निघं० १.७.]

नक्तया रात्र्या ४.११.१. **नक्ता**=रात्रिम् ७.४२.५. रात्र्या १.७३.७. [नक्ता रात्रिनाम निघं० १.७. नक्ता रात्रिनाम, अनक्ति भूतान्यवश्यायेन अपि वा नक्ता अव्यक्तवर्णा नि० ८.११.]

नक्तीः रात्रीः २.२.२.

नक्तोषसा नक्तं चोषाश्चाहश्च रात्रिश्च ते, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्यौकार-स्थाने आकारादेशः 'नक्तमिति रात्रिनामसु पठितम्' निघं० १.७. नक्तोषाश्च-नक्ता च उषा च व्याख्याता। नक्तेति रात्रिनाम, अनक्ति भूतान्यवश्यायेन, अपि वा नक्ताऽव्यक्तवर्णा, नि० ८.११, १.१३.७. रात्रिदिवम् १.९६.५. रात्र्युषसौ १.११३.३. रात्रिदिने १.१४२.७ नक्तं रात्रिं चोषा दिनञ्च ते, भा०—अहोरात्रौ १२.२. [नक्त-उषस्-पदयोः समासः। 'सुपां सुलुग्०' इति द्विवचनस्याकारादेशः। नक्तं व्याख्यातम्। उषाः कस्माद्? उच्छतीति सत्या रात्रेरपरः कालः नि० २.१९.]

नक्तोषासा रात्र्युषसाविव १७.७०. रात्रिदिने २८.२९. [नक्त-उषस्पदयोः समासे उषस उषासादेशश्छान्दसः। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशोः]

नक्षत् व्याप्नोतु प्राप्नोतु वा ६.६३.६. प्राप्नोति ७.३९.६. प्राप्नुयात् १.१२१.३. **नक्षत**=प्राप्नोति, प्र०—अत्राऽडभावो व्यत्ययेनात्मनेपदम्, 'णश गतौ' इत्यस्य प्राप्त्यर्थस्य रूपम् १.३३.१४. **नक्षतः**=व्याप्नुतः ६.४९.३. **नक्षति**=प्राप्नोति प्र०—नक्षतीति गतिकर्मा, निघं० २.१४, २.२०.२. व्याप्नोति गच्छति वा १.९५.१०. व्याप्नोति ४.४३.५. **नक्षते**=प्राप्नोति, प्र०—नक्षतिर्गतिकर्मा, निघं० २.१४, ६.२२.५. **नक्षथः**=प्राप्नुथः १.१८०.२. **नक्षन्**=व्याप्नुवन्ति ३३.१८. व्याप्नुवन्तु ७.२३.४. **नक्षन्त**=व्याप्नुवन्तु ७.५५.३. **नक्षन्ति**=प्राप्नुवन्ति १.१६६.२. गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति, प्र०—नक्षतीति गतिकर्मा, निघं० २.१४, ६.३४.३. **नक्षन्ते**=व्याप्नुवन्ति ७.३७.७. व्याप्नुवन्तु प्राप्नुवन्तु ६.४५.२८. प्राप्नुवन्ति १.६६.५. **नक्षसे**=प्राप्नोषि २७.१३. **नक्षि**=सर्वत्र व्याप्तोऽसि, प्र०—अत्र 'णक्ष गतौ' इत्यस्माल्लटि मध्यमैकवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् ३.२५. प्राप्नोषि, प्र०—णक्षधातोरयं प्रयोगः २५.४७. व्याप्नुहि ५.२४.२. प्राप्नोमि, प्र०—अत्र 'णक्ष गतौ' इत्यस्माल्लडुत्तमैकवचनेऽड्विकरणयोरभावः १५.४८. [नक्षति गतिकर्मा निघं० २.१४. व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८. णक्ष गतौ (भ्वा०) धातोर् लेटि लटि लङि च रूपाणि]

नक्षत्रदर्शम् यो नक्षत्राणि पश्यत्येतैर्दर्शयति वा तम्, (भा०—ज्योतिर्विदं विद्वज्जनम्) ३०.१०. [नक्षत्रोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्-प्रत्ययः। नक्षत्रमिति द्रष्टव्यमग्रिमे पदे]

नक्षत्रः यो न क्षीयते सः (आप्तो जनः) ६.६७.६. **नक्षत्राणि**=यानि कारणरूपेण न क्षीयन्ते तानि भुवनानि १८.१८. अश्विन्यादीनि १८.४०. भा०—सत्या नियमाः ३१.२२. **नक्षत्राः**=क्षयरहिता लोकाः १.५०.२. **नक्षत्रेभ्यः**=क्षत्राणां विरोधाय प्रवृत्तेभ्यः (जनेभ्यः) ३०.२१. अक्षीणेभ्यः (पदार्थेभ्यः) २२.२८. नक्षत्रप्रकाशप्राप्तये ३९.२. तारकेभ्यः २२.२९. **नक्षत्रेषु**=कारणरूपेण नाशरहितेषु लोकान्तरेषु २३.४. **नक्षत्रैः**=कारणरूपेणाऽविनश्वरैः (पदार्थैः) ३.५४.१९. [णक्ष गतौ (भ्वा०) धातोः 'अमिनक्षियजि०' उ० ३.१०५. सूत्रेण अत्रन् प्रत्ययः। न क्षरते क्षीयत इति वा नक्षत्रम् इति विग्रहे नञ्-क्षत्रपदयोः

समासे 'नभ्राण्नपान्नवेदा०' अ० ६.३.७५. सूत्रेण नञः प्रकृतिभावः। नक्षत्राणि नक्षतेर्गतिकर्मणः। नेमानि क्षत्राणीति च ब्राह्मणम् नि० ३.२०. ज्योतिर्वै नक्षत्राणि कौ० २७.६. तन्नक्षत्राणां नक्षत्रत्वं यन्न क्षियन्ति गो० २.१.८. नक्षत्राणां वा ऽएतद्रूपं यल्लाजाः श० १३.२.१.५. न क्षत्राणि वै रोचना दिवि तै० ३.९.४.२. यानि वा पृथिव्याश् चित्राणि तानि नक्षत्राणि तै० १.५.२.६. यो वा इह यजते। अमुं स लोके नक्षते। तन्नक्षत्राणां न क्षत्रत्वम् तै० १.५.२.५. सप्तविंशतिर्दिव्यानि न क्षत्राणि जै० ३.८६. संवत्सरस्य (नक्षत्राणि) प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.१३. सुकृतां वा एतानि ज्योतींषि यन् नक्षत्राणि तै० सं० ५.४.१.३.]

नक्षत्रियेभ्यः नक्षत्राणां समूहेभ्यः २२.२८. [नक्षत्रं व्याख्यातम्। ततः 'नक्षत्राद्घः' सूत्रेण समूहार्थे घः प्रत्ययः]

नक्षद्दाभम् नक्षतां प्राप्तानां दोषाणां हिंसितारम् (परमात्मानम्) ६.२२.२. [नक्षदुपपदे दभ्नोतिवधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोरण्-प्रत्ययः। नक्षत्=नक्ष गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः नक्षद्दाभम्-अश्नुवानदाभम् अभ्यशनेन दभ्नोतीति नि० ६.३.]

नक्षन्तः प्राप्नुवन्तः (अद्रयः=मेघाः) ६.६३.३. [णक्ष गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

नक्षमाणा सर्वासु विद्यासु व्याप्नुवती (वाणी=सकलविद्यायुक्ता वाक्) ७.३१.८. [नक्षति व्याप्तिकर्मा (निघं० २.१८.) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

नक्ष्य ! नक्षेषु व्याप्तेषु साधो (अग्ने=विद्वत्राजन्) ७.१५.७. [नक्षप्राति० 'तत्र साधुः' इत्यर्थे यत्प्रत्ययः। नक्षः=नक्षति व्याप्तिकर्मा (निघं० २.१८.) धातोर् घञ्]

नखेषु न विद्यते खमाकाशं येषु तेषु १.१६२.९. [नञ्-खपदयोः समासे 'नभ्राण्नपान्०' सूत्रेण नञः प्रकृतिभावः। खं पुनः खनतेः नि० ३.१३. नह्यति बध्नाति रुधिरादिकमिति विग्रहे णह बन्धने (दिवा०) धातोः 'नहेर्हलोपश्च' उ० ५.२३. सूत्रेण खप्रत्ययो हलोपश्च]

नग्नम् निर्लज्जम् (दुष्टजनम्) ४.२५.७. [नञ्-ग्नापदयोः समासः। नञः प्रकृतिभावः। ग्नाः वाङ्नाम निघं० १.११.]

नग्नहुम् यो नन्दयति स नग्नस्तं जुहोत्याददाति यस्तम् (इन्दुं=परमैश्वर्यम्) २०.५७. यो नग्नान् दुष्टान् जुहोति कारागृहे प्रक्षिपति तम्, भा०—यो निर्लज्जान् दण्डयति तम् (पतिं=स्वामिनम्), प्र०—अत्र हु-धातोर्बाहुलकादौणादिको डुः प्रत्ययः २१.३१. **नग्नहुः**=यो नग्नान् जुहोत्याददत्ते सः (धीरः=ध्यानशीलः पतिः) १९.१४. यो नग्नं शुद्धं जुहोति गृह्णाति सः (धीरः=ध्यानशीलः पतिः) १९.८३. [नग्नोपपदे हु दानादानयोः (जु०) धातोरौणादिको डुः प्रत्ययः। नग्नं व्याख्यातम्। नग्ना वाङ्नाम निघं० १.११.]

नड्वलाभ्यः नडा विद्यन्ते यासु भूमिषु ताभ्यः ३०.१६. [नडप्राति० 'नडशादाद् ड्वलच्' अ० ४.२.८८. सूत्रेण चातुरर्थिको ड्वलच्। ततः स्त्रियां टाप्-प्रत्ययः]

नदनुमान् नदनवो बहवः शब्दा विद्यन्ते यस्मिँस्त्सः (राजकर्मचारी जनः) ६.१८.२. [नदनुप्राति० भूमन्यर्थे मतुप्-प्रत्ययः। नदनुः संग्रामनाम निघं० २.१७. णद शब्दे (भ्वा०) धातोः 'अनुङ् नदेश्च' उ० ३.५२. सूत्रेण अनुङ्। नदत्यव्यक्तं शब्दं करोतीति विग्रहः]

नदम् महाप्रवाह-युक्तम् (जलम्) १.३२.८. **नदस्य**=जलेन पूर्णस्य जलाशयस्य मध्ये २.३४.३. [णद शब्दे (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः। नदः स्तोतृनाम निघं० ३.१६. नदति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

नदस्य अव्यक्त-शब्दं कुर्वतो वृषभाऽऽदेः (पशोः) १.१७९.४. [णद शब्दे (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः। ऋषिर्णदो भवति नदतेः स्तुतिकर्मणः नि० ५.२.]

नदयन् नादं कुर्वन् (अग्निः=उत्तमो राजा) ७.७.२. [णद शब्दे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच् शतृप्रत्ययः]

नदयन्त नादयन्ति १.१६६.५. [णद शब्दे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्। अडभावश्छान्दसः]

नदी नदी इव वर्त्तमानौ (शूरजनौ) १.१३५.९. **नदीनाम्**=सरिताम् ७.३४.१६. सरितामिव वर्त्तमानानां विदुषीणाम् ३.३३.१२. अव्यक्तशब्दानाम् (सरिताम्) २.१५.३. **नदीभिः**=सरिद्भिरिव नाडीभिः ५.४१.१९. **नदीभ्यः**=सरिद्विनाशाय ३०.८. **नदीषु**=नदीनां प्रवाहेषु ७.५०.३. **नद्यः**=या नदन्ति ताः (सरितः) ५.४५.२. नदीवत् प्रवाह-रूपाः (वृत्तयः) ३४.११. [णद शब्दे (भ्वा०) धातोः पचाद्यच् प्रत्ययः। पचादिषु 'नदट्' पाठान् ङीप्। नद्यः कस्मान्नदना इमा भवन्ति शब्दवत्यः नि० २.२४.]

नदीतमे ! अतिशयेनाऽव्यक्तविद्योपदेशिके (सरस्वति=बहुविज्ञानवति विदुषि: !) २.४१.१६. [नदीप्राति० अतिशायने तमप्-प्रत्ययः। ततः स्त्रियां टापि सम्बुद्धौ रूपम्]

नदीपतये समुद्राय २४.३४. [नदी-पतिपदयो समासः]

नदीवृतम् नदीभिर्वृतो युक्तो, नदीर्वर्तयति वा तम् (वृत्रम्) १.५२.२. [नदी-वृतपदयोः समासः। नद्युपपदे वा वृतु वर्तने (भ्वा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः]

नद्धानि बन्धन और चिनाइयां, सं० वि० १६६, अथर्व० ६.२.३.१. [णह बन्धवे (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः। ततो नपुंसके प्रथमावहुवचने रूपम्]

नद्यम् नदीम् १.१३१.५. [नदीप्राति० द्वितीयैकवचने 'वा छन्दसी' ति पूर्वरूपाभावे रूपम्]

नद्येव नद्यां भवं नद्यं तद्वत् सद्यो गन्तारौ (जलाऽग्नी) २.३९.५. [नद्य-इवपदयोः समासः। नद्यम्=नदीप्राति० भवार्थे यत्]

ननक्षुः प्राप्नुवन्ति, प्र०—नक्षतिर्गतिकर्मा, निघं० २.१४, ५.१५.२. [णक्ष गतौ (भ्वा०) धातोः सामान्ये लिटि प्रथमबहुवचने रूपम्। ननक्षे व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८.]

ननमः नमेम २.१९.७. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लेटि मध्यमैकवचने 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेण शपः श्लौ द्वित्वे च रूपम्]

ननमः ननयति, प्र०—अत्राऽन्तर्भावितो ण्यर्थः। नम धातोर्लेटि मध्यमैकवचने शपः श्लुः 'श्लौ' इति द्विर्वचनम् १.१७४.८.

नानाम नमति प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदैर्घ्यम् २.३३.१२. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोः सामान्ये लिट्। अभ्यासस्य दीर्घश्छान्दसः]

ननान्दरि ननन्द में सं० वि० १३५, १०.८५.४६. [न नन्दति तुष्यतीति विग्रहे नञि उपपदे टुनदि समृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'नञि च नन्देः' उ० २.९८. सूत्रेण ऋन्प्रत्ययः। ततः सप्तमी]

नन्त्वानि नमनीयानि नमस्काराऽर्हाणि (वस्तूनि) २.२४.२. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्बाहुलकादौणादिकस् त्वन्प्रत्ययः]

नन्दन्ति परस्पर सदा आनन्दयुक्त रहते हैं पं० वि०। [टुनदि समृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

नपात् यो न पतति सः (इन्द्रः=राजा) ७.४७.२. अनाशकम् (मन्म=विज्ञानम्) ६.५२.१४. अपत्यम्, प्र०—नपादित्यपत्यनाम, निघं० २.२,२.३५.१३ .नाऽधः पतनशीलः (गृहस्थो, राजजनः प्रजाजनो वा) ८.२४. अविनाशी (जगदीश्वरः) २.३५.२. अपतनशीलः (मेघः) २.३५.९. यो न कदाचिदधः पतति (अग्निवद्विद्वान्) १.५८.८. अविनश्वरः (ऊर्मिः=जलतरङ्गः) ६.२७. यो न पतति कदाचिद् यद्वा न सन्ति पादादयोऽवयवा यस्य सः (परमेश्वरः) २.३१.६. यो न पातयति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) २.६.२. व विद्यते पातो धर्मात्पतनं यस्य सः भा०—धर्माचारी (जातवेदाः=तनयः) १२.१०८. न विद्यन्ते पादा यस्यां सा नौः ७.३५.१३. यो विद्युद्रूपोऽग्निर्न पतति सः ६.५०.१३. **नपातम्**=आत्मत्वेन नाशरहितम् (देवं=विद्वांसमुपदेशकम्) ३.९.१. अपतनशीलम् (अग्निम्=अग्निविद्याम्) १५.३२. पातरहितम् (नववास्त्वं=नवीनं निवासम्) ६.२०.११. विनाशरहितम् (विद्वांसम्) ३.२७.१२. नाशरहितमग्निम् २.३५.३. न विद्यते पातो विनाशो यस्येति तम् (सवितारं=प्रणेतारमीश्वरम्), प्र०—'नभ्राण्नपान्नवेदा०' अ० ६.३.७५. अनेनाऽयं निपातितः १.२२.६. यो न पतति, न नश्यति तं मेघमिव ७.३४.१५. अपातयितारमनाशकम् (राजानम्) ६.४८.२. अपातितारं विद्याबोधनम् २७.४४. न विद्यते पातो विनाशो यस्य तम् (मोक्षम्) ऋ० भू० २६०, १९.५६. यो न पातयति जलं तम् (मेघम्) १.३७.११. पातरहितम् (मेघम्) १.१८६.५. **नपाताः**=न विद्यते पातः पतनं येषान्ते (सूरयः=विद्वांसो जनाः) ४.३४.६. अविद्यमानह्रासाः ऋभवः=मेधाविजनाः ४.३५.१. ये धर्मान्न पतन्ति ते (देवासः=विद्वांसो जनाः ४.३५.८. अविद्यमानाऽधःपतनस्य (इन्द्रस्य=राज्ञः) ४.३७.४. पात-रहिताः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ६.५०.१५. न विद्यते पात् पतनं येषान्ते (विद्वांसो जनाः) १.१६१.१४. [नञ्-पात् पदयोः समासे 'नभ्राण्नपात्०' अ० ६.३.७५. सूत्रेण नञः प्रकृतिभावः। नपादित्यनन्तरायाः प्रजाया नामधेयम्, निर्णततमा भवति नि० ८.५. नपात्=अपत्यनाम निघं० २.२]

नपाता पातरहितौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) ४.४४.२. प्रपातरहितौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.१. न विद्यते पातो ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८४.१. अविद्यमानपतनौ (अश्विना=शिल्पिनौ) १.११७.१२. यौ न पततो विनश्यतस्तत्सम्बुद्धौ (राजाना=राजन्यायेशौ) ३.३८.५. [नञ्-पातपदयोः समासे नञः प्रकृतिभावः। ततः प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

नप्तुः पौत्रादिव वर्त्तमानात् २.३५.११. पौत्रस्य ७.१८.२२. **नप्तृभिः**=नातियों के साथ सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१.२२. **नप्त्रा**=यो न पतति तेन (जनेन) ६.१३.३. **नप्त्रे**=नप्त्र इव वर्त्तमानाय (अग्नये=विदुषे जनाय) ५.७.१. [नपतीति नप्ता। 'नप्तृनेष्टृत्वष्टृ०' उ० २.९५. सूत्रेण तृजन्तो निपात्यते]

नप्त्यम् नप्तरि भवम् (कन्याया अपत्यम्) प्र०—अत्र ‘छान्दसो वर्णलोपो वा, इति रलोपः ३.३१.१. **नप्त्यः**=पातेन नाशेन रहिताः (रश्मयः) प्र०—अत्र ‘सुपां सुलुक्०’ इति जसः स्थाने सुः। नञुपपदात्पत-धातोः ‘इक् कृष्यादिभ्यः’ अ० ३.१.८. इतीक् ‘तनिपत्योश्छन्दसि’ अ० ६.४.९९. अनेनोपधालोपः, इकारस्याऽकारादेशश्च १.५०.९. [नप्तृ प्राति० भवार्थे यत्-प्रत्ययः। छान्दस ऋकारलोपः। नञ्पूर्वाद्वा पल्लृगतौ (भ्वा०) धातोरिक् प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

नभनून् घनान् ५.५९.७. [नभन्वः—नदीनाम निघं० १.१३.]

नभन्यम् नभसि साधु (साम-गानम्) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन सस्य नः १.१७३.१. **नभन्यस्य**=नभस्यन्तरिक्षे पृथिव्यां सुखे वा भवस्य (अध्वरस्य=व्यवहारस्य) प्र०—नभ इति साधारणनाम, निघं० १.४, ७.४२.१. **नभन्यः**=नभसि भवो नभन्यो वायुः, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन नकारादेशः १.१४९.३. [नभस्-प्राति० भवार्थे यत्-प्रत्ययः। वर्णव्यत्ययेन सस्य नकारादेशः। नभ इति साधारणनाम। निघं० १.४. उदकनाम। निघं० १.१२. णह बन्धने (दिवा०) धातोः ‘नहेर्दिवि भश्च’ उ० ४.२११. सूत्रेण असुन् हस्य च भकारादेशः]

नभन्वः अरीणां हिंसका वीराः (जनाः) ४.१९.७. [नभन्वः—नदीनाम निघं० १.१३.]

नभसे जलवर्षकाय श्रावणाय २२.३१. **नभः**=सुखम्, प्र०—नभ इति साधारणनामसु पठितम् निघं० १.४, ७.३१. जलम्, प्र०—नभ इत्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२, २.२२. जलं प्रकाशं वा ५.९. अन्तरिक्षस्थं जलम् ५.९. अवकाशम् ५.९. यो नभते हन्ति परपदार्थहर्तॄन् सः (भगवान् विद्वान् जनो वा), प्र०—नभत इति वधकर्मसु पठितम् निघं० २.१९, ५.३२. अन्तरिक्षम् १.७१.१० हे निर्विकार, आकाशवत्, क्षोभरहित, अतिसूक्ष्म (परमेश्वर), आर्याभि० २.१७, ५.३२. नह्यन्ति घना यस्मिन् स श्रावणो मासः १४.१५. उदकम् २५.८. सुखम् ७.३१. **नभोभिः**=अन्नादिभिः पदार्थैः २.४.६. [णह बन्धने (दिवा०) धातोरौणादिकोऽसुन् हस्य च भकारादेशः। अथवा नभते वधकर्मा निघं० २.१९ धातोरसुन् प्रत्ययः। नभ इति साधारणनाम निघं० १.४. उदकनाम निघं० १.१२. नभस् प्राति० ‘मत्वर्थे मासतन्वोः’ सूत्रेण विहितस्य यत्-प्रत्ययस्य ‘लुगकारेकाराश्च वक्तव्याः’ अ० ४.४.१२८. वा० सूत्रेण लुक्। नभसी द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०. नभ आदित्यो भवति, नेता रसानां भासां ज्योतिषां, प्रणयोऽपि वा भ न एव स्याद् विपरीतो न न भातीति एतेन द्यौर्व्याख्याता नि० २.१४. नभः नभस्यः एतौ एव वार्षिकौ (मासौ) अमुतौ वै दिवो वर्षति तेनो हेतौ नभश्च नभस्यश्च श० ४.३.१.१९. विदेदग्निर्नभो नामाग्ने ऽअङ्गिर आयुना नाम्नेहि इति श० ३.५.१.३२. अन्तरिक्षं वै नभांसि। तस्य रुद्रा अधिपतयः तै० ३.८.१८.१. चत्वारि वै नभांसि देवाः पितरो मनुष्या असुराः मै० ४.२.१. तद् यद् वै तन्नभो नामाभीर्वै सा। न हि तत्प्राप्य कस्माच्चन बिभेति, तस्मात्तन्नभः जै० १.३०.]

नभः हिंसकान् (जनान्) १.१७४.८. [णह बन्धने (दिवा०) धातोः ‘नहेर्दिवि भश्च’ उ० ४.२११. सूत्रेणासुन् हस्य च भकरादेशः। अथवा नभते वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोरसुन्-प्रत्ययः]

नभस्यः नभस्सु भवो भाद्रपदः १४.१५. नभस्याय नभसि भवाय भाद्राय २२.३१. [नभस् प्राति० भवार्थे यत् प्रत्ययः। नभस् इति व्याख्यातम्]

नभस्वान् बहु नभो जलं विद्यते यस्मिन् सः (समुद्रः) १८.४५. [नभस् इति व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे मतुप्। नभस् उदकनाम निघं० १.१२. समुद्रोऽसि नभस्वान् तै० सं० ५.४.९.४.]

नभोजुवः विमानादिना नभसि गच्छन्तः (उपदेशकादयः) १.१२२.११. [नभस् उपपदे जु वेगितायां गतौ (सौत्रो धातुः) धातोः क्विप्-प्रत्ययो दीर्घश्च]

नभोरूपाः नभ उदकमिव रूपं येषान्ते (पशवः पक्षिणो वा) २४.६. नभ इव रूपं येषान्ते (पशवः) २४.३. [नभस्-रूपपदयोः समासः। नभः=उदकनाम निघं० १.१२.]

नभ्यानिः नहौ नाभौ साधूनि (बन्धनानि) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन हस्य भः १.१६४.४८. मध्यस्थानि मध्याऽवयव-धारणार्थानि यन्त्राणि, ऋ० भू० १९८, [नाभि-प्राति० हितार्थे ‘उगवादिभ्यो यत्’ अ० ५.१.२. सूत्रेण यत् ‘नाभि नभं च’ इति गवादिषु पाठान् नाभेर्नभादेशः। नाभि-प्राति० साध्वर्थे वा यत्]

नभ्येव यथा रथचक्र-मध्यप्रदेशाऽवयवौ २.३९.४. [नभ्या-इवपदयोः समासः]

नम नम्रो भव १.१२९.५. **नमतु**=प्राप्नोतु २६.२. **नमते**=नम्रीभवति ६.२४.८. **नमन्त**=नमन्ति ५.३२.१०. **नमन्ताम्**=नम्राः सन्तु १२.३५. प्राप्नुवन्तु ३५.२०.

नमन्ते=नम्रीभूता भवन्ति ४.५०.८. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र क्रमशो लट् लङ् लोट् च। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

नमउक्तिम् नमस्सत्कारस्याऽन्नाऽऽदेर्वा वचनम् ५.४३.६. नमसा सत्कारेण सह स्तुतिम् १.१८६.१. नमसां नमस्काराणां वचनम् ३.१४.२. नमसामन्नादीनामुक्ति वृद्धय उपदेशनम् १६.६. नमसोऽन्नस्य वचनम् २३.३८. नमसोऽन्नस्योक्ति वचनम् १०.३२. नम्रतापूर्वक प्रशंसा को सं० वि० ७.४०.१६. नमस्कार पूर्वकप्रशंसा को सं० वि० २१४.४०.१६. यया नमोभिर्उक्ति विदधति तथा ५.३६. नतिपुरस्सरां स्तुतिम् ७.४३. सत्कारपुरस्सरां प्रशंसाम् ४०.१६. [नमस्-उक्ति पदयोः समासः। नमस् इति व्याख्यास्यते। उक्तिम्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोः क्तिन्प्रत्ययः]

नमसः अन्नाद्यैश्वर्यस्य १.१७१.२. नम्रस्य (विदुषो जनस्य) १.१६०.३. **नमसा**=अन्नादिना १५.२५. अन्नेन १.१८५.७. अन्नाद्येन २.३५.१२. सत्कारेणाऽन्नादिना वा ३.१४.५. अन्नेन सत्कारादिना वा ७.१६.१. अन्नादिना वज्रवच्छेदकत्वेन गुणेन वा ६.१.४. नमस्कारेण १.६२.११. वज्रेण २१.३६. अन्नेन परिचर्यया वा १.११४.५. अत्यन्त नमस्कार आदि से आर्याभि० १.४५. ऋ० १.५.८.२. अन्नाख्येन पृथिव्यादिना सह ४.७.७. वज्रेण विद्युता सह ३.६१.५. **नमांसि**=अन्नं सत्कारे वा ४.२१.५. **नमः**=अन्नम्, प्र०—नम इत्यन्ननाम निघं० २.७, १३.६. सत्करणीयम् (अन्नम्) ६.५१.८. सत्करणम् १६.२६. सत्क्रियाम् २२.३२. नमस्करणीयं ब्रह्म ६.५१.८. वज्रम्, प्र०—नम इति वज्रनाम निघं० २.२०, १६.१. पुष्कलमन्नादिकम् १६.८. सत्कारक्रियाम् १६.३८. मान्यम् १६.४५. वज्रप्रहारः १६.२१. वज्रादिशस्त्रप्रहरणम् १६.२१. वज्रादि-शस्त्रसमूहः १६.१७. मानम् १६.४५. सुसंस्कृतमन्नादिकम् १६.२६. अन्नादिदानम् १६.२७. वेतनादिदानेन सत्करणम् १६.२७. सत्कारि वचः २.२८.८. अन्नं सत्कारो वा १८.५७. अन्नादिकं सस्यादिकं वा १६.३८. आर्द्रीभावे, निरभिमानार्थे, शीलधारणार्थे, नम्रत्वधारणे, क्रोध-त्यागे, सत्कारे, ज्ञानग्रहणार्थे २.३२. नम्रीभावार्थे २.१६. जलादिकम् ९.२२. सत्कर्माऽन्नं वा ३४.१७. नमस्कारः ५.३४. नमस्त इति वाक्यम् १.११४.११. अमृतात्मकं जलम्, भा०—शुद्धं सुखप्रापकं जलम्, प्र०—नम इत्युदकनामसु पठितम् २.७. सत्कृतिम् १६.४४. नम्रीभावे, प्र०—यज्ञो नमो यज्ञियानेवैनानेतत्करोति शत० २.३.४.२४, २.३२. नतिम् २.२१.२. अन्नादि पदार्थ देना, सं० प्र० ४५५, १६.४२. नम्रतापूर्वक स० प्र० २४८, ४०.१६. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्भावे घञ्। नमनं नमः। नमः=अन्ननाम निघं० २.७. वज्रनाम निघं० २.२०. अन्नं नमः श० ६.३.१.१७. यज्ञो वै नमः श० २.४.२.२४]

नमस्य सत्कुरु ५.५२.१३. नम्रो भव २.३३.८. **नमस्यत**=पूजयत १.८४.५. सत्कुरुत ३.६२.५. **नमस्यन्**=सत्कुर्वन्ति १.७२.५. **नमस्यन्ति**=पूजयन्ति, प्र०—नमसः पूजायाम्, अ० ३.१.१६, १.३६.१६. नमन्ति ३.६२.१२. **नमस्यामः**=सेवेमहि ३.१७.४. [नमस्यति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. नमस् शब्दाद्वा पूजायामर्थे 'नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्' अ० ३.१.१६. सूत्रेण क्यच् प्रत्ययः। ततः 'सनाद्यन्ता धातवः' इति धातुसंज्ञायां लोट् लङ् लट् च]

नमस्यन् नमस्कुर्वन् (उपासको मनुष्योऽहम्) प्र०—अत्र 'नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्' अ० ३.१.१६. इति क्यच् १.३३.२. **नमस्यन्तः**=धर्मं परिचरन्तः (कीस्तासः=मेधाविनो जनाः) १.१२७.७. नम्रतां कुर्वन्तः (मनुषः=मनुष्याः) ४.६.११. सत्कुर्वन्तः (विद्वांसः) १.११५.३. [नमस्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) धातोः शतृ-प्रत्ययः। नमस् शब्दाद्वा क्यजन्ताच् छतृप्रत्ययः]

नमस्यन्तीः सत्कारं कुर्वन्त्यः (जामयः=युवतयः स्त्रियः) ३.५७.३. [नमस्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) धातोः शत्रन्तान् ङीप्प्रत्ययः]

नमस्यम् परमेश्वरमध्यापकं विद्वांसं वा नमस्काराऽर्हम् १.७२.५. **नमस्यः**=सत्कर्त्तुं योग्यः (अग्निः=महाविद्वान् जनः) ३.२७.१३. नमस्करणीयः (सविता=जगदीश्वरः) ७.३८.३. पूज्यः (सज्जनः) ३.५.२. परिचरितुं सत्कर्त्तुं योग्यः (राजा=आप्तो भूमिपः) ३.५६.१. सब का माननीय (सभापति राजा) स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. पूजितुं योग्यः (विद्वान् जनः) १.४४.६. [नमस्-प्राति० 'तदर्हति' इत्यर्हत्यर्थे यत्प्रत्ययः। नमस्यो ह्येषः (अग्निः) श० १.४.१.२६. पितरो नमस्याः श० १.५.२.३.]

नमस्युभिः नम्रैर्विद्यार्थिभिः श्रोतृभिः (जनैः) १.५५.४. [नमस्-शब्दात् पूजायामर्थे 'नमो वरिवश्चित्रङः

क्यच्' इति क्यजन्ताद् धातोः 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण ताच्छील्य उः प्रत्ययः]

नमस्येभिः नमस्सु अन्नेषु भवैः (शूषैः=वलैः) ६.६८.३. [नमः अन्ननाम निघं० २.२. ततो भवार्थे यत्-प्रत्ययः। ततस्तृतीयाबहुवचने भिस ऐसादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

नमस्वत् नमः प्रशस्तमन्नं विद्यते यस्मिँस्तत् (दात्रं=दानम्) १.१८५.३. [नमस् अन्ननाम (निघं० २.२.) ततः प्रशंसायामर्थे मतुप्]

नमस्वन्तः प्रशस्ताऽन्नयुक्ताः (जनाः) १.१६४.८. **नमस्वान्**=सत्काराऽऽत्मकः (स्तोमः=स्तुतिविषयः) १.१७१.२. वहन्नयुक्तः सत्कृतो वा (दूतः=समाचारप्रापको जनः) ६.६३.१. वहूनि नमांस्यन्नादीनि सत्करणानि वा विद्यन्ते यस्य सः (होता=होतृजनः) ४.४१.१. [नमः=अन्ननाम निघं० २.२. ततः प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुप्-प्रत्ययः]

नमस्वन्तः वह्वन्नवन्तौ (प्राणोदानतुल्यौ विद्वांसौ जनौ) ५.६२.५. [नमः अन्ननाम (निघं० २.२.) ततो भूम्न्यर्थे मतुप्। वचनव्यत्ययः]

नमस्विनम् वह्वन्नयुक्तम् (जनम्) १.१६६.२. **नमस्विनः**=नमोऽन्नं सत्कारो वा विद्यते येषां ते (प्रजाजनाः) ७.१४.१. नमः प्रशस्तः शस्त्रसमूहो विद्यते येषां ते (मनुषः=मनुष्याः) प्र०—अत्र प्रशंसाऽर्थे विनिः १.३६.७. [नमः=अन्ननाम निघं० २.२. नमः=वज्रनाम निघं० २.२०. ततः प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा विनिः प्रत्ययः]

नमीम् नम्रम् (शिरः=मस्तकम्) ६.२०.६. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक ईः प्रत्ययः]

नमुचिम् न विद्यते मुचिर्मोक्षणं यस्य तम् (मायिनं जनम्) प्र०—अत्र 'इक् कृषादिभ्यः' इति मुच-धातोर्भाव इक् 'नभ्राण्नपान्नवेदानासत्यानमुचि०' इति निपातनान्नञः प्रकृतिभावः १.५३.७. योऽधर्मं न मुञ्चति तम् (अधर्मात्मानं जनम्) २.१४.५. यः स्वस्वरूपं न मुञ्चति तम् (वृत्रम्=आवरकं मेघम्) ७.१९.५. **नमुचेः**=यो न मुञ्चति तस्य (दासस्य=सेवकस्य) ६.२०.६. न मुञ्चति परपदार्थान् दुष्टाचारान् वा यः स्तेनस्तस्य १०.१४. प्रवाहरूपेणाऽविनाशिनो मेघस्य ५.३०.८. यः स्वं रूपं न मुञ्चति तस्य (मेघस्य) ५.३०.७. योऽपः स्वस्वरूपं न मुञ्चति तस्य मेघस्य १९.७१. धर्ममत्यजतः (सज्जनस्य) २०.७१. अविनश्वरात्कारणादुत्पन्नात् कार्यात् २०.६७. यो जलं न मुञ्चति तस्मात् (आसुरात्=असुरस्य मेघस्यायं तस्मात्) १९.३४. **नमुचौ**=प्रवाहेण नित्यस्वरूपे (आसुरे=असुरो मेघ इव तस्मिन्) २०.७६. अविनाशिकारणे (आसुरे=असुरे मेघे भवे) २०.६८. न मुञ्चति स्वकीयं कर्म यस्तस्मिन् (आसुरे=मेघस्याऽयं व्यवहारस्तस्मिन्) १०.३३. [नञ्-मुचिपदयोः समासे 'नभ्राण्नपात्०' सूत्रेण नञः प्रकृतिभावः। मुचिः=मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' वा० सूत्रेण इक्प्रत्ययः। पाप्मा वै नमुचिः श० १२.७.३.१-४.]

नमे नमामि ७.३२.२०. नमेत् ३.३९.६. **नमेते**=प्रभूतं शब्दयेते २.१२.१३. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लेटि रूपाणि। व्यत्ययेन आत्मनेपदम्]

नमोभिः बहुभिः सत्कारैः ६.५१.९. अन्नैः सत्कारैर्वा सह ३.२५.३. स्थिरेणात्मना सत्यभावेन नमस्कारैः, ऋ० भू० १५७, ११.५. सत्कर्मभिः २.३८.९. सत्काराऽन्नादिभिः ६.५०.१. [नमस्-प्राति० भिस्। 'नमस्' इति व्याख्यातम्]

नमोवाके वेदस्थस्य नम इत्यन्नस्य सत्कारस्य च वाका वचनानि यस्मिन् (समुद्रे=सम्यग्द्रवीभूते व्यवहारे) ८.२५. [नमस्-वाकपदयोः समासः। नमस् इति व्याख्यातम्]

नमोवृधम् अन्नाद्यैश्वर्य-वर्द्धकम् (यज्ञम्) ३.४३.३. [नमस् उपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। नमस् अन्ननाम निघं० २.२.]

नमोवृधा नमसोऽन्नादेर्वर्धकौ (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ३.६२.१७. [नमोवृधं व्याख्यातम्। ततः प्रथमा-द्विवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

नमोवृधासः अन्नस्य वर्द्धका, अन्नेन वृद्धा वा (प्रजाजनाः) ७.२१.९. [नमस्-वृधपदयोः समासे जसोऽसुगागमः। वृधः=वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः]

नम्नते नम्रीभवति १.१४०.६. [नम्र इवाचरतीति विग्रहे नम्रपदादाचारे क्विप्। ततो लट्। वर्णव्यत्ययेन रेफस्य नकारादेशः]

नम्नमाने ये नम्र इवाऽऽचरतस्ते (एने=राजप्रजादले) प्र०—अत्राऽऽचारे क्विप्, व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १७.२५. [नम्रपदादाचारे क्विप्। ततः शानच्-प्रत्ययः। वर्णव्यत्ययेन रेफस्य नकारादेशः]

नम्नमीति भृशं नमति ५.८३.५. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

नम्या यथा रात्रिरन्धकारेण सर्वान् पदार्थानावृणोति तथा १.५३.७. [नम्या=रात्रिनाम निघं० १.६.]

नय प्राप्नुहि प्रापय वा १८.६२. गमय ४.१६. प्राप्त

कराइये, स० प्र० २४७, ४०.१६. कृपा से प्राप्त कीजिए, स० वि० २१४, ४०.१६. **नयत्**=नयतु, बन्धनारम्भे प्रापयतु, प्र०—अयं लेट्प्रयोगः १.३६.१८. नयति ३.६.५. **नयत**=प्रापयत ३.६.१. **नयतम्**=संप्राप्नुतम् ५.१७. नयतः २.३६.५. **नयति**=प्राप्नोति १.११५.३. प्रापयति ६.७५.६. वशे स्थापयति २३.१८. गमयति २६.४३. **नयतु**=प्रापयतु १.६०.१. प्राप्नुहि २.३.१०. **नयथ**=प्राप्नुथ १.४१.५. प्रापयथ ७.५६.१. **नयथः**=प्रापयथः ५.६५.६. **नयध्वम्**=उत्कर्षत २.१४.६. **नयन्त**=प्राप्नुयुः १.१४८.३. **नयन्ति**=प्राप्नुवन्ति १.१६२.२. गमयन्ति १.४१.३. प्रापयन्ति ६.५१.१०. उत्तमं सम्पादयन्ति ३.८.४. **नयन्तु**=प्रीणयन्तु ७.१७. प्रापयन्तु वा ३३.८६. **नयसि**=प्राप्नोषि प्रापयसि वा ६.४५.६. **नयस्व**=प्रापय ३.३५.३. **नयामि**=प्राप्नोमि प्रापयामि वा ५.२५. उत्कर्षयामि ६.२८. स्वीकरोमि ७.२५. ऊर्ध्वं बध्नामि ११.८२. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोटि लेटि लटि लङि च रूपाणि]

नयत् प्राप्नुवत् (पाथः=अन्नम्) ३३.५६. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

नयन् प्राप्नुवन् (अर्यमा=नियन्ता सूर्यः) १.७६.३. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

नयन्तीः प्रापयन्त्यः (स्त्रियः) ६.६५.२. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

नयः नायकः (राजा) ४.३०.१६. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि पचाद्यच्प्रत्ययः]

नरन्धिषः यो नरान् दिधेष्टि शब्दयति सः (विष्णुः=हिरण्यगर्भ ईश्वरः) ८.५५. **नरन्धिषाय**=यो नरान् दिधेष्ट्युपदिशति तस्मै (पूष्णे=महाविद्वज्जनाय) २२.२०. [नरोपपदे धिष शब्दे (जु०) धातोर् मूलविभुजादित्वात् कः प्रत्ययः। पूर्वपदस्य मुमागमश्छान्दसः। नरन्धिषः प्रोह्यमाणः (सोमः) तै० सं० ४.४.६.१.]

नरम् नायकम् (इन्द्रं=सेनापतिम्) १.१००.८ नेतारम् (योद्धारं जनम्) १.११२.२२. **नरः**=धर्म-विद्या नेता (सज्जनः) १.१२१.२. विद्यासु नायकः (विद्वज्जनः) ५.५२.११. **नरे**=मनुष्य में सं० वि० १४५, ४.२. **नरौ**=नायकौ (अश्विना=स्त्रीपुरुषौ) १.१८०.४. [नॄ नये (भ्वा०) धातोः पचाद्यच्-प्रत्ययः कर्त्तरि। नरा मनुष्या नृत्यन्ति कर्मसु नि० ५.१.]

नरः नेतारो मनुष्याः १.३६.३. ये नयन्ति धर्म्यं विद्यासमूहं च ते नरस्तत्सम्बोधने, प्र०—अत्र 'नयतेर्डिच्च' उ० २.६६. अनेन ऋः प्रत्ययष्टिलोपश्च १.२३.११. नयनकर्त्तारो मनुष्या वायवो वा १.६४.१०. विद्याविनयनेतारः (मरुतः=मनुष्याः) ३.१६.२. विद्वत्सु नायकाः (मनुष्याः) ६.२६.४. राज्यस्य नेतारः (सेनाजनाः) ४.२४.३. स्वात्मेन्द्रियशरीराणि धर्मं प्रति नेतारः (ब्रह्मविदो जनाः) ३.३.८. सत्ये धर्मे नेतारः (मनुष्याः) ५.५४.१०. नायकान्, प्र०—अत्र व्यत्ययेन प्रथमा ५.६.७. नायका विद्वांसः (जनाः) ५.११.२. योगेन्द्रियाऽन्तःकरणस्य नेतारः (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.६२.१२. मनुष्याः ४.३३.६. विद्वन्नायकाः (वीरजनाः) ६.६८.४. ये विद्यां नयन्ति ते सर्वे मनुष्याः १.७३.४. सर्वकार्यनेतारो मनुष्यास्तत्सम्बुद्धौ १.८६.८ नयनकर्त्तारो गणकाः (जनाः) १.११५.२. विद्या-नायकाः (ऋभवः=मेधाविजनाः) १.१११.३. न्याययुक्ताः (अमात्याः) ७.१.१०. पुरुषार्थेनाऽऽप्तव्यप्रापकाः (सिद्धकामा जनाः) ७.१.४. ये नृणन्ति नयन्ति ते मनुष्यास्तत्सम्बुद्धौ १.६२.३. सज्जनाः १.१०४.२. वीरपुरुषाः ४.१.१५. **नराम्**=नायकानां विदुषाम् १२.२६. नराणाम् ६.२४.२. नायकानां नृणां मध्ये ७.१६.१० धर्मस्य नेतॄणाम् (जनानाम्) १.१७३.१०. मनुष्याणाम् २.३४.६. **नरि**=नीति-मार्गे मनुष्ये १.८५.६. **नरे**=नायकाय (जनाय) ३४.१६. नयनकर्त्रे (सभाद्यध्यक्षाय) १.६२.१. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'नयतेर्डिच्च' उ० २.१००. सूत्रेण ऋप्रत्ययो डित्वाच्च टेर्लोपः। नरः=मनुष्यनाम निघं० २.३. नरः=अश्वनाम निघं० १.१४. प्रजा वै नरः ऐ० २.४. नरो वै देवानां ग्रामः तां० ६.६.२. मनुष्या वै नरः श० ७.५.२.३६.]

नरा सुनीतिमन्तौ (विद्वांसौ जनौ) १.११६.१२. धर्मनेतारौ (नासत्या=विद्वज्जनौ) १.११६.११. सुखनेतारौ (अश्विना=सभासेनेशौ) १.११७.४. सुखप्रापकौ (अश्विनौ=अध्यापकौ) १.११६.१४. नायकौ धर्मपथनेतारौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७३.६. शिल्पविद्याफलप्रापकौ (अश्विनौ=अग्निजले) १.३.२. नयनकर्त्तारौ (इन्द्रवायू), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.२.६. प्रधानौ (अश्विनौ=राजन्यायाधीशौ) १.११७.७. नृषूत्तमौ नायकौ (सभासेनेशौ) १.११७.६. धर्माऽधर्मस्य विवेचकौ (अश्विना=सभासेनाधीशौ) १.११७.१८. विनयं प्राप्तौ भा०—(आप्तावध्यापकौ पुरुषौ) १.११६.७. [नर इति व्याख्यातम्। ततः प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः]

नराशंसम् यो नरैराशस्यते स्तूयते तम्, भा०—यः

प्रशंसनीयान् स्तौति तम् (पतिं=स्वामिनम्) २१.३१. योनरैरभितः शस्यते प्रशस्यते तं सुखसमूहकारकम् (अग्निम्) १.१३.३. यो नरैरवश्यं स्तोतव्यस्तम् (सदसस्पतिं=परमेश्वरम्) प्र०—नराशंसो यज्ञ इति कात्थक्यो नरा अस्मिन्नासीनाः शंसन्त्यग्निरिति शाकपूणिर्नरैः प्रशस्यो भवति नि० ८.६, १.१८.९. नृभिराशंसितुं योग्यं विद्वांसम् (सभाध्यक्षम्) १.१०६.४. **नराशंसस्य**=नरैः प्रशंसितस्य (यजतस्य=सङ्गन्तुं योग्यस्य व्यवहारस्य) २९.२७. नरैराशंसितस्य (अन्नपानादिकस्य) ७.२.२. **नराशंसः**=नरैः प्रशंसितः (विद्वज्जनः) १.१४२.३. यो नरान् शंसति सः (अग्निः=विद्वान् जनः) २७.१३. यो नरैः प्रशस्यते (मेधावी मनुष्यः) ५.५.२. यो नराच्छंसति स्तौति सः (इन्द्रो देवः=ऐश्वर्यमिच्छुको जीवः) २८.१९. ये नरान् शंसन्ति तान् (देवान्=विदुषो जनान्) २१.५५. नरैराशंसनीय (अग्निः=विद्वान् जनः) २.३.२. यो नरैराशस्यते स्तूयते सः, भा०—न निन्दितः (विद्वज्जनः) २०.३७. यं नरा आशंसन्ति सः (अग्निः) ३.२९.११. **नराशंसेन**=नरैराशंसितेन (तेजसा=प्रागल्भ्येन) २८.२. नरैः स्तुतेन (वचनेन) २०.५७. [नरोपपदे शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोरधिकरणे कर्मणि वा घञ्प्रत्ययः। नराशंसो यज्ञ इति कात्थक्यः। नरा अस्मिन्नासीनाः शंसन्ति। अग्निरिति शाकपूणिः। नरैः प्रशस्यो भवति नि० ८.७. मनुष्या वै नराशंसः तै० २.७.५.५२. प्रजा वै नरा वाक्शंसः ऐ० २.४. प्रजा वै नरस्ता अन्तरिक्षमनु वावद्यमानाः प्रजाश्चरन्ति यद्वै वदति शंसतीति वै तदाहुस्तस्मादन्तरिक्षं नराशंसः श० १.८.२.१२. अन्तरिक्षं वै नराशंसः श० १.८.२.१२.]

नरिष्ठायै अतिशयिता दुष्टा नरा सन्ति यस्यां तस्यै (दुर्जनगोष्ठ्यै, ३०.६. [नर-प्राति० अतिशायन इष्ठन्। ततः स्त्रियां टाप्, ततश्चतुर्थी विभक्तिः]

नरेष्ठाम् नरास्तिष्ठन्ति यस्मिँतम् (रथं=विमानादियानम्) ४.३३.८. [नरोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोरधिकरणे क्विप्। पूर्वपदस्यैकारादेशश्छान्दसः]

नर्तयन् नृत्यं कारयन् (ससेनो राजा), प्र०—अत्र 'न पादम्याङ्यमा०' अ० १.३.८८. इति निषेधे प्राप्ते व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.५१.३. [नृती गात्रविक्षेपे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच् छतृप्रत्ययः]

नर्माय कोमलत्वाय ३०.६. क्रीडायै ३०.२०. [नॄ नये (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको मन्प्रत्ययः]

नर्य! नीतियुक्तेषु नरेषु साधुस्तत्सम्बुद्धौ परमेश्वर! ३.३७. हे नरों के हितकारक ईश्वर, आर्याभि० २.३५, ३.३७. हे मनुष्यों में सज्जन वीर-स्वामिन् (पति) सं० वि० १४६, ३.३७. **नर्यम्**=नृषु साधुम् (वीरजनम्) ३३.८९. नायकेषु साधुम् (मनुष्यम्) १.११२.९. नृषु श्रेष्ठम् (वीरजनम्) ६.२३.४. नृषु बलिष्ठम् (वृषणं=योद्धृजनम्) ७.२०.५. **नर्यस्य**=नृषु साधोः (अत्यस्य=अश्वस्य) १.१८०.२. **नर्यः**=नृषु साधुर्नृभ्यो हितो वा (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६३.३. नरेषु साधुः (वैद्यः) १९.२. **नर्याय**= नृषु कुशलाय (महापुरुषाय) ४.२५.४. नृषु साधवे (द्विपादे=मनुष्याद्याय) १.१२१.३. **नर्याः**=नृभ्यो हिताः (युष्मद्रथाः) १.१६६.५. [नर-प्राति० हितार्थे साध्वर्थे कुशलार्थे वा यत्प्रत्ययः। नर्यः=नृभ्यो हितो नरापत्यमिति वा नि० ११.३६. गार्हपत्यो वै नर्यः क० ६.१]

नर्या नृषु साधू (मातापितरौ) १.१८५.९. नृषु हितानि (अपांसि=कर्माणि) ४.१९.१०. नृषु साधूनि नृभ्यो हितानि वा (भोजना=पालनान्यन्नानि वा) ४.३६.८. [नर्य इति व्याख्यातम्। ततः प्रथमा द्विवचनस्य 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः]

नर्याणि नृषु साधूनि (अपः=कर्माणि) ४.१६.६. [नर्य इति व्याख्यातम्। तस्य नपुंसके रूपम्]

नर्यापसम् नृषु साधून्यपांसि कर्माणि यस्य तम् (इन्द्रं=राजानम्) २८.४. नृषु साध्वपः कर्म यस्य तम् (भिषजं=वैद्यवरम्) २१.३८. [नर्य-अपस्-पदयोः समासः। 'नर्य-इति व्याख्यातम् अपस् इति कर्म नाम। निघं० २.१.]

नव नवगुणिताः (नवतिनाड्यः) ४.४८.४. नवत्वविशिष्टा सङ्ख्या १८.२४. [नौतीति नवन्। णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकः कनिन्। नव=न वननीया ना वाप्ता वा नि० ३.१०.]

नवग्वासः नवीनगतयः (नरः=नेतारो जनाः) ५.२९.१२. [नवग्वाप्राति० जसोऽसुगागमः]

नवग्वाः नवीनशिक्षाविद्याप्राप्ताः प्रापयितारश्च (क्षितयः=मनुष्याः) प्र०—नवगतयो नवनीतगतयो वा नि० ११.१९, १.३३.६. नवीनगतयः (चैत्रादयो मासाः) ५.४५.७. नवीन-नवीन ज्ञान के उपदेशों को करने वाले (पितरः=पितादि ज्ञानी लोग) १९.५०. सर्वासु विद्यासूत्तमकर्मसु च नवीना गतयो येषां ते (पितरः=ज्ञानिनो जनाः) ऋ० भू० २५८, १९.५०. **नवग्वे**=नव गावो विद्यन्ते यस्य तस्मै (पुरुषाय) ४.५१.४. **नवग्वैः**=

नवनीतगतिभिः (विप्रैः=मेधाविभिः किरणैर्वा) प्र०—अत्र नवोपपदात् गमधातोर्बाहुलकादौणादिको ड्वा प्रत्ययः १.६२.४. [नवोपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको ड्वा-प्रत्ययः । नव-गोपदयोर्वा समासः । नवग्वाः=नवगतयो नवनीतगतयो वा नि० ११.१६.]

नवजाः नवेषु सुनवीनेषु जातः (सूर्यः) ४.६.३. [नवोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'सप्तम्यां जनेर्डः' इति डः प्रत्ययः]

नवजातस्य नवीनविदुषः (जनस्य) ७.३.३. **नवजातः**=नवीनाऽभ्यासेन जातो विद्यावान् (मनुष्यः) ५.१५.३. [नव-जातपदयोः समासः । जातः=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

नवज्वारः यो नवो नूतनश्चासौ ज्वारः सन्तापश्च सः १.४२.८. [नव-ज्वारपदयोः समासः । ज्वारः=ज्वर रोगे (भ्वा०) धातोर्घञ्-प्रत्ययो भावे]

नवतिम् एतत्सङ्ख्याकानि (पुराणि) १.१३०.७. एतत्सङ्ख्याताः (किरणाः) २.१२.६. **नवतीः**=नवतिसंख्याकाः (वृत्राणि=वृत्रसम्बन्धिभूतानि जलानि) १.८४.१३. नवदशतः परिमाणमस्य नवतिः । 'पंक्तिविंशति०' अ० ५.१.५६. सूत्रेण 'नवतिः' इति निपात्यते]

नवदश नवोत्तरा दश (सङ्ख्या) १८.२४. एतत्सङ्ख्यातम् (गणनम्) १८.२४. **नवदशभिः**=दश प्राणा पञ्च महाभूतानि मनोवुद्धिचित्ताऽहङ्काराश्चैतैः १४.३०. [नवन्-दशन्-पदयोः समासः । नवदश (स्तोमः) यन्नवदशः प्रजननं तेन (अवरुन्धे) तां० १६.१८.३.]

नवदशः नवदशधा (अभीवर्त्तः=अभिमुखवर्त्तमानो-गुणः) १४.२३. [नवन्-दशन्पदयोः समासे कृते पूरणार्थे डट्-प्रत्ययः]

नवन्त गच्छन्ति प्र०—नवत इति गतिकर्मसु पठितम्, निघं० २.१४, १.६६.५. स्तुवन्ति ७.४२.१. प्रशंसत ४.३.११. **नवन्ते**=गच्छन्ति १.१६४.३. [नवते गतिकर्मा । निघं० २.१४ णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्वा लङि लटि रूपाणि । 'वहुलं छन्दसि' इति शपो लुङ् न भवति]

नवन्तम् स्तुवन्तं नम्रमिव (अहिं=मेघम्) ६.१७.१० [णु स्तुतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुङ् न भवति]

नवनवतीः एतत्सङ्ख्याकान् पदार्थान् ४.२६.३. [नवन्-नवति-पदयोः समासः । ततो द्वितीयाबहुवचने रूपम्]

नवपदी चतुर्वेदोपवेदव्याकरणादिशिक्षायुक्ता (विदुषी स्त्री) १.१६४.४१. [नव-पादपदयोः समासे स्त्रियां ङीप प्रत्यये 'पादः पत्' इति पदादेशः । नवपदी=दिग्भिश्चावान्तर-दिग्भिचादित्येन च नि० ११.४०.]

नवम् नवीनं स्वरूपम् २८.१६. **नवः**=नवीनविद्यावयस्कः (पुरुषः) ४.५१.४. नवीनः (रथः=यानम्) २.१८.१. **नवेन**=नूतनेन (ब्रह्मणा) ६.५०.६. [नवम्=नवनाम निघं० ३.२८.]

नवमम् नवानां पूरणम् (सज्जनम्) ५.२७.३. [नवन्संख्यावाचिनः प्राति० पूरणार्थे डट् । 'नान्तादसंख्यादेर्मट्' इति डटो मडागमः]

नवमानस्य स्तोतुमर्हस्य (अतिथि-जनस्य) १.१६०.१. स्तोतुः (सज्जनस्य) २.३४.१०. [णु स्तुतौ (अदा०) धातोः शानच् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न भवति । व्यत्ययेन चात्मनेपदम्]

नवमी नवानां पूरणा (क्रिया) २५.४. [नवममिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप्]

नवया नवीनया (गिरा=वाण्या) २.२४.१. [नवप्राति०स्त्रियां टापि तृतीयैकवचने रूपम्]

नववास्त्वम् नवीनं निवासम् ६.२०.११. नवानि नवीनानि अरण्ये निर्मितानि वास्तूनि गृहाणि येन तम् (तुर्वीतिं=दुष्टजनम्) प्र०—'अमि पूर्वः' इत्यत्र 'वा छन्दसि' इत्यनुवर्त्तनात् पूर्वसवर्णाऽभावे यणादेशः १.३६.१८. [नव-वास्तुपदयोः समासे छन्दसि पूर्वसवर्णाऽभावे रूपम्] वास्तु=वसन्ति प्राणिनो यत्र तद् वास्तु । वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'वसेरगारे णिच्च' उ० १.७० सूत्रेण तुन् प्रत्ययो णिच्च]

नवविंशतिः नवाऽधिका विंशतिः (सङ्ख्या) १८.२४. **नवविंशत्या** एतत्सङ्ख्याकैर्वनस्पतिगुणैः १४.३१. [नवन्-विंशतिपदयोः समासः]

नवस्व इव यथा नवीनसुखः (गृहस्थिजनः) ४.३४.५. [नवस्व-इव-पदयोः समासः । नवस्वः=नव-स्वपदयोः समासः]

नवा नवीनानि (वसना=आच्छादनानि) १.६५.७. नवानि (प्रज्ञानानि) १.१४४.५. [नवप्राति० स्त्रियां टाप् । नवमिति व्याख्यातम्]

नवाक्षरेण याजुष्या बृहत्या (छन्दसा) ६.३३. [नवन्-अक्षरपदयोः समासः]

नवाभिः नूतनाभिः (ऊतिभिः=रक्षादिभिः)

४.३१.१३. **नवासु**=अर्वाचीनासु प्रजासु वा १.६५.१०. **नवाः**=नवीनाः (इषः=अन्नाद्याः) ५.६.८. [नवा इति व्याख्यातम्]

नवामहे स्तुवीमहे २६.११ [णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्लेटि उत्तमबहुवचने रूपम्। छन्दसि शपो लुङ् न। व्यत्ययेन चात्मनेपदम्]

नविष्ठम् अतिशयेन नवम् (पतिम्) ५.३२.११. [नवप्राति० अतिशायन इष्ठन्प्रत्ययः]

नविष्ठया अतिशयेन नूतनया (मती=बुद्ध्या) १.८२.२. अतिशयेन नवा नविष्ठा, तया (मती=मत्या) ३.५१. [नविष्ठम् इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

नविष्ठाय अतिशयेन नवीनाय (ज्ञानाय) ५.२७.३. [नविष्ठमिति व्याख्यातम्। ततः चतुर्थ्या एकवचने रूपम्]

नवीनोत् भृशं स्तुतीभवति ६.३.७. [णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लटि रूपम्]

नवीयसम् अतिशयेन नूतनम् (धनम्) १.१३८.३. **नवीयसः**=अतिशयेन नवस्य नवीनविद्याध्येतुः (वेधसः=मेधावि जनस्य) १.१३१.६. अतिशयेन नवाध्यापकस्य १.१३१.६. **नवीयसा**=अतिशयितेन नवीनेन मन्त्रपाठ-गानयुक्तेन स्तवनेन (गायत्रेण=प्रगाथेन) १.१२.११. **नवीयसे**=अतिशयेनाऽधीतविद्याय नूतनाय (विद्यार्थिजनाय) १.१५६.२. **नवीयान्**=अतिशयेन नूतनवयस्कः (राजा) ६.४४.७. अतिशयेन नवः (विद्वान् जनः) १.११०.७. [नवप्राति० अतिशायन ईयसुन्प्रत्ययः]

नवीयसी अतिशयेन नवीना (सुमतिः=शोभना प्रज्ञा) ७.५९.४. [नवीयसमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीप्]

नवीयः अतिशयेन नूतनं वचनम् ६.१८.१५. अतिशयेन नवीनम् (शरीरम्) ६.२१.१. [नवीयसमिति व्याख्यातम्]

नवेदसः न विद्यते वेदो वित्तं येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५५.८. **नवेदाः**=न विद्यन्ते दुःखानि येषु ते (विद्वांसो जनाः) १.१६५.१३. या अविद्यां न विन्दन्ति ताः (कुमारिकाः) १.७९.१. यो न वेत्ति सः (विद्यार्थी राजजनो वा) ४.२३.४. यो न विन्दति सः (देवः=विद्वज्जनः) ५.१२.३. [नञ्-वेदस्पदयोः समासे कृते 'नभ्राण्नपात्०' अ० ६.३.७५ सूत्रेण नञः प्रकृतिभावः। वेदस्=विद ज्ञाने (अदा०) विद सत्तायाम् (दिवा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा असुन् प्रत्ययः। नवेदाः मेधाविनाम निघं० ३.१५]

नवेदसा न विद्यते वेदितव्यं ज्ञातव्यमवशिष्टं ययोस्तौ विद्वांसौ (जनौ) १.३४.१. [नवेदस इति व्याख्यातम्। ततः प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

नवेभिः नूतनाऽध्ययनैः (ऋषिभिः=आप्तैर्जनैः) ४.२०.५. [नवमिति व्याख्यातम्। ततो भिसः स्थाने 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण ऐसादेशो न भवति]

नव्यम् नवीनम् (आयुः=जीवनम्), प्र०—'नवसूरमर्त्तयविष्ठेभ्यो यत्' अ० ५.४.२५. इत्यत्र पठितेनाऽनेन वार्त्तिकेन नवशब्दात्, स्वार्थे यत् 'नव्यमिति नवनामसु पठितम्' निघं० ३.२८, १.१०.११. उत्तमेषु नवेषु नूतनेषु व्यवहारेषु भवम् (सुप्रवाचनम्=अध्यापनमुपदेशनं वा) १.१०५.१२. नूतनम् (ब्रह्म=महद् धनम्) ४.१७.२१. नवीनं नवीनम् (ब्रह्म=धनम्) ४.२२.११. नवीनमेव (आयुः=अन्नं जीवनं वा) ३.५३.१६. नवेषु विद्वत्सु भवम् (विद्वांसं जनम्) १.१४१.१०. नवेषु विद्वत्सु प्रतिष्ठितम् (अतिथिं जनम्) १.१९०.१. नवमिव वर्त्तमानम् (राजानम्) ३.३१.१९. **नव्यः**=नवेषु भवः (औरसः स्वगोत्रजो वा पुत्रः) ७.४.८. नवीनो विद्वान् (जनः) १.१०५.१५. नवेषु साधुः (विद्वज्जनः) ५.१२.३. नव एव नव्यः (विद्वज्जनः) १.१८९.२. [नवमिति नवनाम निघं० ३.१८. नवप्राति० भवार्थे यत्। अथवा नवप्राति० स्वार्थे 'नवसूरमर्त्तयविष्ठेभ्यो यत्' अ० ५.४.२५. वा सूत्रेण यत्। नव्यम्=नवनाम निघं० ३.२८. नव्यम्=नवतरम् नि० ६.६.]

नव्यः नवीना युवतयः (स्त्रियः) १.६२.११. ['नव्यम्' व्याख्यातम्। ततो लिङ्गव्यत्ययो वचनव्यत्ययश्च]

नव्यः नवान्येव नव्यानि नूतनानि (कर्माणि १.६१.१३. [नव्यमिति व्याख्यातम्। ततो लिङ्गवचन-व्यत्ययौ]

नव्यं नव्यम् नवीनं नवीनम् (विज्ञानम्) १.१५९.४. [नव्यम् पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

नव्यसः अतिशयेन नवीनस्य (विद्वच्छिल्पिनः) ६.६२.४. **नव्यसा**=अतिशयेन नवीनाध्यापनोपदेशेन वा ६.४८.११. अतिशयेन नवीने (उषासानक्ता=प्रत्यूषरात्र्यौ) २.३१.५. ['नव्यम्' इति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायन ईयसुन्-प्रत्यये छान्दसं रूपम्। 'नव्यसा' प्रयोगे 'सुपां सुलुग्०' इत्यकारादेशः]

नव्यसि ! अतिशयेन नवीने (उषः) ३.६१.३. **नव्यसी**=नवतरा प्रजा १.६०.३. अतीव नूतना प्रज्ञा कर्म

कर्म वा १.१६३.१. अतिशयेन नवीना (सुष्टुतिः=शोभना प्रशंसा) ३.६२.७. **नव्यसीनाम्**=अतिशयेन नवीनानां प्रजानाम् ५.५८.१. **नव्यसीभिः**=अतिशयेन नवीनाभिः (गीर्भिः=वाग्भिः) ७.५३.२. **नव्यसीम्**=अतिशयेन नूतनां विद्यां क्रियां वा ६.८.५. **नव्यसे**=नवीयसे (रथाय) २.३१.७. अतिशयेन नवीनाय (सुविताय=ऐश्वर्याय) ३३.८४. [नवप्राति० अतिशायन ईयसुन्-प्रत्यये स्त्रियां ङीप्-प्रत्ययः। छान्दसो वर्णलोपो वेतीकारलोपः]

नव्यसी अतिशयेन नवीने (मातरा इति मातापितृवदध्यापकोपदेशकौ) ३.५.७. [नव्यसी' इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततः प्रथमाद्विवचनस्य 'वा छन्दसी' ति पूर्वसवर्णादेशः]

नवस्या अतिशयेन नूतनया (धिया=प्रज्ञया कर्मणा वा) [नवप्राति० अतिशायन ईयसुन्-प्रत्यये स्त्रियां ङीपि छान्दसं रूपम्]

नव्याः नवा जना इव १.१७४.८.

नव्या नवेषु भवानि (सैन्यानि) ५.२९.१३. [नवप्राति० भवार्थे यत् प्रत्ययः। ततो नपुंसके शेर्लोपश्छान्दसः]

नव्यानव्याः नवीना नवीनाः (युवतयः=स्त्रियः) ३.५५.१६. नवीन नवीन शिक्षा और विद्या से पूर्ण (स्त्रियां) स० प्र० ११०, ३.५५.१६. [नव्यापदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। नव्यम् व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

नव्याः नवीनाः श्रियः ५.२९.१५. [नव्याः व्याख्यातम्]

नशत् नाशं प्राप्नुयात्, प्र०—अत्र व्यत्ययेन शप्, लेट्-प्रयोगश्च १.४१.५. नश्यति १.१६४.२२. प्राप्नुयात् २.४१.११. प्राप्नोति ७.३२.२१. व्याप्नोति, प्र०—नशदिति व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८, ६.२.५. **नशते**=प्राप्नोति ६.३.१. नश्यति १.१६५.९. व्याप्नोति ३३.७९. **नशथ**=अदृश्या भवथ २.१४.८. **नशन्**=नाशयेयुः २.२३.८. नश्यन्तु २.२७.१४. आप्नुवन्ति २.३५.६. **नशन्त**=नश्यन्ति १.१२३.११. व्याप्नुवन्तु ७.१.२२. **नशामहै**=अदृष्टा भवेम २.३०.११. **नश्य**=नश्येत् प्र०—अत्र व्यत्ययः १२.८७. **नश्यतः**=अदर्शनं प्राप्नुतः १.१२०.१२. **नश्यति**=अदृष्टं भवति १.१७०.१. नष्टो भवति १२.८५. [णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन शप्। अन्यत्र लट्, लङ्, लोट् च। नशत् व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८.]

नष्टम् अदृश्यम् (पशुं=गवादिकम्) १.२३.१३. अदृष्टम् (द्रव्यम्) ६.५४.१०. [णश अदर्शने (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

नष्टमिव यथाऽदर्शनं प्राप्तं वस्तु १.११६.२३. [नष्टम्-इव पदयोः समासः]

नसन्त प्राप्नुवन्ति, प्र०—नसत इति गतिकर्मा, निघं० २.१४, १७.९६. प्राप्नुवन्तु १.१८६.७. **नसीमहि**=गच्छेम २.१६.८. [नसते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

नसि नासिकायाम् १९.९०. **नसोः**=नासिकयोः ५.६१.८. [नासिका प्राति० सप्तम्यां रूपम्। नासिकास्थाने 'पद्दन्नोमास्०' अ० ६.१.६३. सूत्रेण 'नस्'-आदेशः]

नस्यानि नासिकायै हितानि (वस्तूनि) १९.९०. [नासिकाप्राति० हितार्थे 'शरीरावयवाद् यत्' अ० ५.१.६. सूत्रेण यत्-प्रत्ययः। 'नस् नासिकाया यत्तस् क्षुद्रेषु' अ० ६.१.६३. वा० सूत्रेण नासिकास्थाने नस्-आदेशः]

नहि निषेधे १.८०.१५. प्रतिषेधार्थे १.२२.४. **नही**=निषेधे, प्र०—अत्र 'निपातस्य च' इति दीर्घः ४.१८.४.

नहुषस्य मनुष्यस्य, प्र०—नहुष इति मनुष्यनाम, निघं० २.३, ५.१२.६. विदुषो नरस्य १.१२२.११. समीक्षा—नहुषस्येत्यत्र सायणाचार्येण नहुषनामको राजविशेषो गृहीतः, तदसत्। कस्यचिन्नहुषस्येदानीन्तनत्वात् वेदानां सनातनत्वात् तस्य गाथाऽत्र न सम्भवति। निघण्टौ नहुषस्येति मनुष्यप्रसिद्धेश्च १.३१.११. **नहुषः**=शुभाऽशुभकर्मबद्धो मनुष्यः १.१२२.८. सत्ये बद्धः (सर्वपूज्यो राजा) ७.६.५. **नहुषाः**=मनुष्याः ६.२६.७. [नहुषः=मनुष्यनाम निघं० २.३. नहुषाः=मनुष्यनाम निघं० २.३. णह बन्धने (दिवा०) धातोः 'पॄनहिकलिभ्य उषच्' उ० ४.७५. सूत्रेण उषच्-प्रत्ययः]

नंनमीति भृशं नमति ५.८३.५. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लटि रूपम्]

नंशि व्याप्नोति ६.५१.१२. **नंशे**=अदर्शयेयम् १.१२२.१२. [णश अदर्शने (दिवा०) धातोश्छान्दसं रूपम्। नशत् व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८.]

नंशे नाशनाय १.१२२.५. [णश अदर्शने (दिवा०) धातोस्तुमर्थे छान्दस एश्-प्रत्ययो नुमागमश्च]

नंसन्ते नमन्ति ७.५८.५. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लेटि रूपम्। सिव्विकरणः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

नाकम् सुखविशेषं स्वर्गम् १.८५.७. अविद्यमानदुःखं (भा०—सुखम्) ११.२२. अविद्यमान-दुःखमन्तरिक्षम् ५.११. सर्वदुःखरहितं परमेश्वरं मोक्षं च ऋ० भू० १२९,

३१.१६. अविद्यमानदुःखं, सर्वसुखयुक्तं तत्स्वरूपं मोक्षपदं, सर्वदुःख-प्रणाशकमानन्दम् ६.१०. बहुसुखम् १.६८.५. सर्वदुःखरहितम् (भा०—प्राणिनां सुःखहेतुं व्यवहारम्) १२.३. अविद्यमानदुःखं मुक्तिसुखम् ३१.१६. अविद्यमान-दुःखमाकाशम् १५.२४. आनन्दम् १५.५०. सर्वानन्द को, स० प्र०, नि० १.१८. दुःखरहित वानप्रस्थाश्रम को, सं० वि० १८६, अथर्व० ६.५.१. दुःख-विरहं सुखम् १.१६४.५०. अविद्यमानदुःखं भोगम् ६.१४. **नाकस्य**=सुखप्रापकस्य भूगोलस्य १५.१०. अविद्यमान-दुःखस्याऽऽनन्दस्य १.१२५.५. सुखहेतोः सूर्यलोकस्य १.१६.६. सुखनिमित्तस्य (दिवः=द्योतमानस्य सूर्यलोकस्य) १७.६७. उत्तमसुखरूपस्य लोकस्य १५.१३. **नाकः**=अविद्यमान-दुःखो मोक्षः ३२.६. आनन्दः १४.२३. दुःख-रहित मोक्ष सं० वि० ६, ३२.६. **नाके**=अकं दुःखं न विद्यते यस्मिन्नसौ नाकस्तस्मिन् (मोक्षे) १.२२. आनन्दे भोक्तव्ये सति १२.६३. अविद्यमानदुःखे सुखे प्राप्तव्ये सति १५.४६. [नाकः साधारणनाम निघं० १.४. कम् सुखनाम निघं० ३.६. न कम्=अकम्। ततो नञ्-अकपदयोः समासे 'नभ्राण्नपात्०' अ० ६.३.७५. सूत्रेण नञः प्रकृतिभावः। नाक आदित्यो भवति नेता रसानां नेता भासां ज्योतिषां प्रणयः। अथ द्यौः, कमिति सुखनाम, तत् प्रतिषिद्धं प्रतिषिध्येत नि० २.१४. स्वर्गो वै लोको नाकः तै० सं० ५.३.७.१. श० ६.३.३.१४. सुवर्गो वै लोको नाकः तै० सं० ५.३.३.५. संवत्सरो वाव नाकः श० ८.४.१.२४. स नाको नाम दिवि रक्षोहाग्निः मै० ४.१.६. काठ० ३१.७. नाकः षट्त्रिंशः (स्तोमः) तै० सं० ४.३.८.१. मै० २.८.४.]

नाकसदम् अविद्यमानं कं सुखं यस्मिन् तदकमेतन्नास्ति यस्मिन् परमेश्वरे धर्म्मे वा तत्रस्थम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ६.२. [नाकमिति व्याख्यातम्। तदुपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। आत्मा वै नाकसदः श० ८.६.१.१२. देवा नाकसदः श० ८.६.१.१. यऽइमे चत्वार ऋत्विजो गृहपतिपञ्चमास्ते नाकसदः श० ८.६.१.११.]

नाक्रः नक्राज्जातः (मकरः) २४.३५. **नाक्रान्**=नक्रादिजलजन्तून् २४.२१. [नक्रप्राति० जातार्थेऽण्-प्रत्ययः। नक्रः= न क्रामतीति नक्रः। नञि उपपदे क्रमु-पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्डः प्रत्ययः। 'नभ्राण्नपात्०' इति नञः प्रकृतिभावः]

नाथितात् ऐश्वर्यात् ५.९. [नाथृ याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्ययान्तात् पञ्चमी]

नाथितासः याचमानाः (सूर्यवज्जनाः) ७.३३.५. [नाथितं पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

नादेयाय नद्यां भवाय (जनसमूहाय) १६.३१. नदीषु भवाय (पुरुषाय) १६.३७. [नदीप्राति० भवार्थे 'नद्यादिभ्यो ढक्' अ० ४.२.९७. सूत्रेण ढक्प्रत्ययः]

नाद्यः नदितुं योग्यः (अपान्नपात्=सूर्याख्योऽग्निः) २.३५.१. [णद शब्दे (भ्वा०) धातोर्ण्यत्-प्रत्ययः]

नाधमानम् ऐश्वर्यवन्तं प्रशंसितम् (विप्रं=मेधाविजनम्) ४.२९.४. ऐश्वर्यं कुर्वाणम् (कविं=विद्वांसं जनम्) ४.१६.९. विद्यैश्वर्यवन्तं, सम्पादितवन्तम् (विद्वांसं जनम्) १.१८१.७. याचमानम् (रोगिमनुष्यम्) २.३३.६. **नाधमानस्य**=सकलैश्वर्यप्रापकस्य (सज्जनस्य) २.१२.६. प्राप्तैश्वर्यस्य (राज्ञः) १.१२६.२. **नाधमानाय**=याचमानाय (विद्यार्थिने) २.२९.४. उपतप्यमानाय (जनाय) ५.७८.६. **नाधमानाः**=ऐश्वर्यप्राप्तिमिच्छुकाः (मनुष्याः) १.१०९.३. याचमानाः (ऋभवः=मेधाविनो जनाः) १.११०.५. प्राप्तपुष्कलैश्वर्याः (राजपुरुषाः) १.११८.१०. [नाधृ याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु (भ्वा०) धातोः शानच्-प्रत्ययः। ताच्छील्ये चानश् वा। नाधमानाः=याचमानाः नि० ४.३.]

नाधमानेव याचमानेव (योषेव) ५.७८.४. [नाधमाना-इव-पदयोः समासः। नाधमानमिति व्याख्यातम्]

नाधितः उपतप्तः (नौयायी जनः) १.१८२.७. **नाधिताय**=ऐश्वर्ययुक्ताय (शयवे=शयानाय विद्वज्जनाय) १.११८.८. [नाधृ याञ्चोपतापैश्वर्याशीःषु (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

नानदत् भृशं शब्दयति ३.२.११. **नानदति**=पुनः पुनः शब्दयन्ति १.६४.८. [णद शब्दे (भ्वा०) धातोः क्रियासमभिहारे यङ्लुगन्ताल् लङ्। अन्यत्र लट्]

नानदत् भृशं शब्दं कुर्वन् (अग्निः=विदुषः सुसन्तानः) ११.४६. अतिशयेन नादं कुर्वन् (विद्वज्जनः) १.१४०.५. **नानदद्भिः**=भृशं शब्दायमानैः (क्रियाभिः) ६.६.२. [णद शब्दे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छतृप्रत्ययः]

नाना अनेकानि (ओकांसि=गृहाणि) २.३८.५. अनेक-प्रकारेण १९.७. अनेकविधम् (सदनं=स्थानम्) ३.५४.६. अनेकप्रकाराः (जनाः) १.१०२.५. अनेक-प्रकारौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.७३.४. अनेकान् (नॄन्=नायकान् मनुष्यान्) १.१४६.४. अनेके (आयवः=मनुष्याः) ६.१४.३. [पृथग्भावे वर्त्तमानान् नञ्प्राति० स्वार्थे 'विनञ्-

भ्यां नानाञौ न सह' अ० ५.२.२७. सूत्रेण नाञ्-प्रत्ययः]

नानाम नम्रो भवति, प्र०—अत्र 'तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य' इति दीर्घः ४.२५.२. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लिट् । तुजादीत्वादभ्यासस्य दीर्घः]

नानारथम् नाना रथा यस्मिँस्तम् (सरथं=रथैः सह वर्त्तमानं मार्गम्) ३.६.९. [नाना-रथपदयोः समासः]

नान्द्यम् नन्दयितुं समर्धयितुम् योग्यं शिल्पविज्ञानम् १ ३४.४. **नान्द्ये**=आनन्दाय १.१४५.४. [टुनदि समृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताण् ण्यत्]

नाभयः सम्बन्धिनः (जनाः) १.१३९.९. **नाभिना**=मध्याऽऽकर्षणादिबन्धनेन ६.३९.४. **नाभिः**=मध्याकर्षणेन बन्धकम् (अङ्गम्) २३.६१. बन्धनमिव १.१०४.४. मध्यवर्त्तिः (भा०—जगदीश्वरः) १.५९.२. शरीरमध्यस्था सर्वप्राणबन्धनाङ्गम् १.१०५.९. शरीरमध्यप्रदेशः २०.९. नाभिरिव जीवनहेतुः (सभेशः) २०.१. भा०—मध्याकर्षणम् ३.६२. मर्मस्थानम्, आर्याभि० २.४१, ३८.२०. मध्यभागः २९.२३. आत्मनो मध्यवर्त्ती विचारः, भा०—आप्तविचारः २९.५४. आकर्षणेन बन्धनम् १.१६४.३५. स्तम्भनं, स्थिरीकरणं, प्रबन्धनम् १७.८९. नियतस्थितेर्बन्धनम् २३.६२. प्रबन्धकर्त्ता (परमेश्वरः) ऋ० भू० २१६, २०.१. **नाभौ**=मध्ये १.११. **नाभ्या**=शरीरस्य-मध्याऽवयवेन २५.९. **नाभ्याम्**=तुन्दे २१.५४. **नाभ्याः**=अवकाशमयान्मध्यवर्तिसामर्थ्यात् ३१.१३. **नाभ्यै**=नाभेर्दहनाय ३९.२. **नाभिम्**=नाभिरिव बन्धकम् (अग्नि=विद्वांसं जनम्) ३.१७.४. मध्यभागम् ६.७.२. बन्धनम्, भा०—बन्धनस्थितिकारणं लोकत्रयस्य करणम् २३.६०. नहनं मध्यस्थमाकर्षणाख्यं बन्धनम् १.१८५.५. निबन्धनम् (त्वचम्) १३.५०. बन्धिकाम्, भा०—आधाराम् (प्रज्ञापिकां विद्युतम्) १३.४४. मध्यमाङ्गं बन्धनस्थानम्, भा०—धारकमङ्गम् २३.५९. मध्यम् (अङ्गम्) ५.४३.८. मध्यप्रदेशम् २७.२०. नह्यते बध्यते यया ताम् ६.१४. [णह बन्धने (दिवा०) धातोः 'नहो भश्च' उ० ४.१४६, सूत्रेण इञ्-प्रत्ययो हस्य च भकारादेशे । नह्यति नाडीर्बध्नातीति नाभिः । नाभिः सन्नहनान् नाभ्या सन्नद्धा गर्भा जायन्त इत्याहुरेतस्मादेव ज्ञातीन् सनाभय इत्याचक्षते नि० ४.२१. नाभिः प्राणो वा अयं सन्नाभेरिति तस्मान्नाभिस्तन्नाभेर्नाभित्वम् ऐ० १.२०. नव प्राणाः······(नाभिः) दशमी प्राणानाम् तां० ६.८.३. नाभिदघ्ना (आसन्दी) भवति । अत्र (नाभिप्रदेशे) वा अन्नं प्रतितिष्ठति······अत्रोऽएव रेतसआशयः श० ३.३.४.२८. एवं हैष गुदः प्राणः समन्तं नाभि पर्यक्नः श० ८.१.३.१०. मध्यं वै नाभिर्मध्यमभयम् श० १.१.२.२३. नाभिर्वै हिङ्कारः जै० १.३०६.]

नाभा सन्नहनस्य सुखस्थिरस्य बन्धनरूपे (धामन्=आनन्दमये स्थाने) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.४३.९. मध्यभागाऽऽकर्षणे १.१३९.१. नाभौ, मध्ये ११.७६. मध्ये वर्त्तमानोऽन्तरिक्षे ३.५.५. [नभिरिति व्याख्यातम् । ततः सप्तम्यैकवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

नाभिमिव बीच के नाल रूप काष्ठ की तरह सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.६. [नाभिम्-इवपदयोः समासः]

नाम प्रसिद्धौ १७.३. आख्या ३.६३. नामस्मरणम् ३२.३. परमेश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल अपने गुण, कर्म, स्वभाव को करते जाना रूप नामस्मरण, स० प्र० ४५५, ३२.३. नमस्करणीयो जलहेतुर्वा, (ब्रह्मयज्ञो वा) प्र०—नाम इत्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२, १.३१. प्रसिद्धम् (नभः=जलं प्रकाशं वा) ५.६. ख्यातिः, अ०—नाम्ना प्रसिद्धः ७.२९. संज्ञा ७.२. सत्कर्माऽनुष्ठानेन प्रसिद्धिः ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.९. नामकरण शास्त्रोक्त संज्ञाधारण सं० वि० १४४, अथर्व० १२.५.९. प्रसिद्धं रचनं नामकरणं वा १.८४.१५. जलम् १.१०८.३. प्रख्यातिः १.५७.३. अभ्यसनीयः (अग्निः=सूर्यरूपो भौतिकः) २२.१९. भा०—पुण्या प्रशंसा ८.४९. नामस्मरणम् भा०–यस्येश्वरस्याज्ञापालनमेव ३२.३. पदार्थानां सञ्ज्ञाम् १७.९०. उदकम् १.६.४. वाचं जलं वा, प्र०—नामेति वाङ्नाम निघं० १.११, ३.५.६. स्तुतिसाधनं शब्दमात्रम् ४.१.१६. प्रसिद्धं व्यवहारम् ६.६६.५. प्रसिद्धं लक्षणम् ७.३२.१७. आह्वानम् १.२४.२. प्रकाशता, प्रख्यातिकता वा १८.६७. **नामभिः**=आख्याभिः १.१८१.४. **नामानि**=जलानि संज्ञा वा ६.१.४. अर्थज्ञानक्रियासहिताः संज्ञाः १.७२.३. गौणिका आख्याः ८.४३. **नाम्ना**=प्रसिद्ध्या ५.९. प्रसिद्धेन (यज्ञसाधनेन) २.६. प्रख्यातेन (यज्ञसाधनेन) २.६. [म्नायतेऽभ्यस्यते येन तत् नाम । म्ना अभ्यासे (भ्वा०) धातोः 'नामन्सीमन्व्योमन्०' उ० ४.१५१. सूत्रेण मनिन्-प्रत्यये निपात्यते । नाम उदकनाम निघं० १.१२. नामयति कार्यं प्रति नामवन्तं जनम् इति विग्रहे नमतेर्वा मनिन् प्रत्यये 'नामन्' रूपसिद्धिः पूर्वसूत्रेणैव । इदमपीतरन्नामैतस्मादेव अभिसन्नामात् नि० ४.२७.]

नाम प्रसिद्धानि नामानि ३.२०.३. **नामानि**=

उदकानि ३.३८.४. ['नामन्' इति व्याख्यातम्]

नाम प्रसिद्धा: (सत्यस्त्रियः) १७.३. [व्याख्यातम्]

नामधाः यः स्वविद्यया नामानि दधाति सः (परमेश्वरः) १७.२७. नाम व्यवस्था आदि करने वाला (ईश्वर) आर्याभि० २.४२, १७.२७. ['नामन्' इत्युपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप् कर्त्तरि]

नायम् न्यायम् ६.२४.१०. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्घञ्-प्रत्ययः]

नायन् नेतुम् ६.४६.११. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

नारकाय नरके दुःखवन्धने भवाय कारागाराय ३०.५. [नरकप्राति० भवार्थेऽण् प्रत्ययः। नरकं न्यरकं नीचैर्गमनं नास्मिन् रमणं स्थानमल्पमप्यस्तीति नि० १.११.]

नाराशंसाः नारानाशंसन्ति, नराशंसानामिम उपदेशकाः ८.५८. **नाराशंसे**=नराणां प्रशंसामये सत्कारव्यवहारे १९.६१. नरैः प्रशस्येऽनुष्ठातव्ये कर्मणि, ऋ० भू० २६, **नाराशंसेन**=नराणां समन्ताच्छंसः प्रशंसनं नराशंसः, नराशंसेन निर्वृत्तो यस्तेन (स्तोमेन=स्तुतियुक्तेन व्यवहारेण ३.५३. [नराणां शंसः (प्रशंसा) नराशंसः। ततः 'तस्येदम्' इत्यण्प्रत्ययः। येन नराः प्रशस्यन्ते स नाराशंसो मन्त्रः नि० ९.१०. मनुष्याः वै नराशंसः तै० २.७.५.२. नाराशंसो ऽ (यज्ञः) ऽपसृतः काठ० ३६.३.]

नाराशंसीनाम् नृणां यत्र प्रशंसा, नृभिर्यत्र प्रशस्यते ता ब्राह्मणनिरुक्ताद्यन्तर्गताः कथा नाराशंस्यस्तासाम्, ऋ० भू० ८३, अथर्व० १५.३०.१.१. [नाराशंसा इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीप्प्रत्ययः]

नारि ! नराणामियं शक्तिमती स्त्री तत्सम्बुद्धौ ५.२६. यज्ञसहकारिणि (अ०—सभापतेः स्त्रि) ६.१. हे विधवे स्त्रि, स० प्र० १५२, १०.१८.८. हे सौभाग्यप्रदे स्त्रि, सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३२. **नारिभ्यः**=मनुष्यस्त्रीभ्यः १.४३.६. **नारी**=नरस्येयं विवाहिता भार्या १.७३.३. नरस्य स्त्री ४.१६.१०. नरस्य पत्नी गृहमध्ये १.२८.३. नरस्य स्त्रीव साध्यसाधिका (खननसाधिका 'कस्सी') ११.१०. नराणामियं क्रिया, अ०—यज्ञक्रिया ५.२२. **नारीः**=नरस्य स्त्रियः ७.५५.८. **नार्यः**=नराणां स्त्रियः २३.३६. [नरप्राति० 'तस्येदम्' इत्यण्, ततः स्त्रियां टाप्। नारी यज्ञनाम निघं० ३.१७. नार्यः यज्ञनाम निघं० ३.१७. पुमांसो वै नरः स्त्रियो नार्यः ऐ० ३.३४.]

नारिः नायकः (विद्वज्जनः) ३७.१. [नॄ नये (भ्वा०) धातोर्वाहु० औणादिक इञ्प्रत्ययः]

नार्मरम् नॄन् मारयति यः स वायुस्तस्याऽयं सम्बन्ध्यग्निस्तम् २.१३.८. [नृमरप्राति० 'तस्येदम्' इत्यण्-प्रत्ययः]

नार्मिणीम् नर्माणि क्रीडाविलासा विद्यन्ते येषां तेषामिमाम् (पुरं=नगरीम्) १.१४८.३. [नर्मप्राति० मत्वर्थ इनिः प्रत्ययः, ततः स्त्रियां ङीप्]

नार्सदाय नृषु नायकेषु सीदति तदपत्याय १.११७.८. ['नृ' इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातो. क्विप्। ततोऽपत्यार्थे ऽण्प्रत्ययः]

नावम् बृहतीं नौकाम् १.१४०.१२. नोदयन्ति प्रेरयन्ति यया ताम् (नौकाम्) २१.५. नुदन्ति चालयन्ति प्रेरते वा यां ताम् (नौकाम्) प्र०—'ग्लानुदिभ्यां डौः' उ० २.६४ अनेनाऽयं सिद्धः १.११६.५. **नावः**=पार्श्वस्था नौकाः १.१८२.६. सागरोपरि नाव इव विमानानि १०.१९. **नावा**=नौकादिना १.४६.७. नौकया ५.४.९. [णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोः 'ग्लानुदिभ्यां डौः' उ० २.६४. सूत्रेण डौः प्रत्ययः। नौः=वाङ्नाम नि० १.११.]

नावेव यथा सुदृढया नौकया समुद्रपारं गच्छन्ति तथा १.९७.७. नौवत् ३.३२.१४. [नौः इव पदयोः समासः। नौरिति व्याख्यातम्]

नावया नावा, प्र०—अत्र नौशब्दात् तृतीयैकवचनस्यायाजादेशः १.९७.८. [नौरिति व्याख्यातम्। ततस्तृतीयैकवचनस्य का स्थाने 'आङ्याजयारामुपसंख्यानम्' अ० ७.१.३९. वा० सूत्रेण अयाच्]

नाव्यानाम् नौभिस्तार्याणाम् (मार्गाणाम्) १.१२१.१३. नावा तार्याणां नदी-तडाग-समुद्राणाम्, प्र०—'नौवयोधर्म०' इत्यादिना यत् १.३३.१३. नाव्याः=नौकाः १.८०.८. [नौरिति व्याख्यातम्। ततस्तार्यमित्यर्थे 'नौवयोधर्म०' अ० ४.४.९१. सूत्रेण यत्प्रत्ययः]

नाशनी निवारयितुं शीला (ओषधिः) १२.९७. [णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् ल्युडन्तात् स्त्रियां ङीप]

नाशयित्री भा०—निवारिका (ओषधिः) १२.९७. [णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्णिजन्तात् कर्त्तरि तृच्। ततः स्त्रियां ङीप्]

नाष्ट्राभ्यः नष्टभ्रष्टस्वभावाभ्यो व्यभिचारिणीभ्यः (स्त्रीभ्यः) ३७.१२. [तथैनं (यजमानम्) रात्र्या न नाष्ट्रा विन्दति श० १.४.१.१७.]

नासत्या न विद्यतेऽसत्यं कर्म गुणो वा ययोस्तौ

(अश्विनौ=अग्निजले) प्र०—'नभ्राण्नपान्नवेदा०' अ० ६.३.७५ 'नासत्यौ चाऽश्विनौ सत्यावेव नासत्या' वित्यौर्णवाभः सत्यस्य प्रणेतारावित्याग्रायणः निघं० ६.१३, १.३.३. अविद्यमानाऽसत्याचरणौ (अश्विना=राजप्रजाजनौ) ३४.४७. सत्याचरणावध्यामपकोदेशकौ ४.४४.४. सत्यगुणकर्मस्वभावौ सभासेनेशौ १.४७.७. अविद्यमानाऽसत्याचारौ सभान्यायेशौ ४.३७.८. सत्यगुणस्वभावौ (अश्विनौ=विद्याप्राप्तिशीलौ) १.१६.५. असत्यात् पृथग्भूतौ (अश्विना=सभासेनेशौ) १.११७.१. न विद्यतेऽसत्यं ययोस्तौ (सभासेनेशौ) ३.५४.१६. सत्यव्यवहारयुक्तौ (अश्विनौ=उपदेष्ट्रुपदेश्यौ) ५.७८.१. अविद्यमानाऽसत्याचरणौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.१४.१. अविद्यमानाऽसत्यव्यवहारौ) (अश्विनौ=व्याप्तविद्यौ जनौ) ५.७५.७. असत्यद्वेषिणौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८४.३. अविद्यमानाऽसत्यौ (अश्विना=विद्वान्राजपुरुषौ) १.१८२.४. असत्याचरणरहितौ (नरा=अध्यापकोपदेशकौ) २०.७४. सत्यकर्त्तारौ (भिषजा=सद्वैद्यौ) २१.३३. सद्विद्याक्रियौ (शिल्पसाधक-चालकौ) १.१८३.३. सत्यनिष्ठौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८४.५. सत्यप्रियौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८३.५. सत्याचारिणौ (विप्रा=अध्यापकोपदेशकौ) ६.५०.१०. सत्यस्वभावौ (अश्विनौ=स्त्रीपुरुषौ) १.१८०.९. अविद्यमानाऽसत्यौ, अध्यापकोपदेशकौ योगिनौ ६.४९.५. सर्वदा सत्यपालकौ (धर्मराजसभास्वामिनौ) १.११६.११. सद्विज्ञानप्रकाशकौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.११६.१७. सत्येन सह वर्त्तमानौ (अश्विनौ=धर्मराजसभाधीशौ) १.११६.१६. असत्यत्यागेन सत्यग्राहिणौ (उपदेशकाऽध्यापकौ) १.११६.२३. असत्यविरहौ (अश्विनौ=अध्यापकौ) १.११६'१४. असत्याऽज्ञानविनाशनेन सत्यप्रकाशिनौ (अश्विनौ=अध्यापकौ) १.११६.१३. अग्निवायू इव वर्त्तमानौ (शिल्पनौ) १.११६.९. धर्मात्मानौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.४४.७. सत्येन परिपूर्णौ (सभासेनापती) १.११६.४. **नासत्याभ्याम्**=अविद्यमानाऽसत्याभ्यां पुण्यात्मभ्यां शिल्पिभ्याम् १.११६.१. न विद्यतेऽसत्यं ययोस्ताभ्यां मातापितृभ्याम् १९.८३. नित्याभ्यामग्निजलाभ्याम् १.२०.३. **नासत्याय**=अविद्यमानाऽसत्याचाराय (राज्ञे) ४.३.६. **नासत्यौ**=असत्याचरणरहितौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.८. [न-असत्यपदयोः समासे 'नभ्राण् नपात्०' अ० ६.३.७५. सूत्रेण नञः प्रकृतिभावः । अथवा सत्सु साधवः सत्याः । न सत्या असत्याः । न असत्याः=नासत्याः । नञः प्रकृतिभावः । नासत्यौ चाश्विनौ, सत्यावेव नासत्यावित्यौर्णनाभः, सत्यस्य प्रणेतारावित्याग्रायणः नि० ६.१३]

नासत्येव सूर्याचन्द्रमसाविव १.१७३.४. [नासत्य-इवपदयोः समासः]

नासिके नासिका-छिद्रे २५.२. [नासिका=नासिका नसतेः नि० ६.१६. नसते गतिकर्मा (निघं० २.१४) धातो-[र्ण्वुल्प्रत्ययान्तात् स्त्रियां टाप्]

नासेव नासिके इव २.३९.६. [नासा-इवपदयोः समासः]

नाहुषा मनुष्याणामिमानि (युगा=वर्षाणि वर्षसमूहा वा) ५.७३.३. **नाहुषाणि**=मनुष्यसम्बन्धीनि (वृत्रा=धनानि ६.२२.१०. [णह बन्धने (दिवा०) धातोः 'पृनहिकलिभ्य उषच्' उ० ४.७५. सूत्रेण उषच् । नहुष-प्राति० 'तस्येदम्' इत्यण्-प्रत्ययः । शेर्लोपः । नहुषः मनुष्य-नाम निघं० २.३.]

नाहुषीषु नहुषाणां मनुष्याणामिमास्तासु (विक्षु=प्रजासु) १.१००.१६. नहुषाणां मनुष्याणामासु प्रजासु ६.४६.७. [नाहुषमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप्]

नि नितराम् १.५६.५. निश्चयाऽर्थे १.८.२. निश्चिताऽर्थे १.२२.१०. नित्यम् १.५२.१५. नितरां क्रियायोगे १.८.२. सदैव, आर्याभि० १.१६, ऋ० १.३.१०.१४. नीचैः २७.४.

निकः निकुर्य्याः ३.३३.८. [नि-पूर्वाद् डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ् । 'मन्त्रे घसह्वरणश०' अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक्]

निकामम् यो नित्यं कम्यते तम् (वज्रं=शस्त्रविशेषम्) ६.१७.१०. **निकामः**=निकृष्टः कामो यस्य सः (स्त्रिजनः) ४.१६.१०. निश्चितकामनः (मनुष्यः) ३.१.१५. **निकामाः**=अभिलाषाएं, सं० वि० १९७, ६.११३.१०. **निकामैः**=नित्यः कामो येषान्तैः (सखिभिः=मित्रैः) ६.१६.६. [नि-कामपदयोः समासः । कामः=कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोः घञ्]

निकामे निकामे निश्चितायां प्रत्येककामनायाम् २२.२२. [निकामे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । निकाममिति व्याख्यातम्]

निकाय्यः निश्चिन्वन्ति उपसमादधते येन वायुना सः १५.५. [नि+चिञ् धातोः 'निवासचितिशरीरोपसमाधानेष्वादेश्च कः' अ० ३.३.४१. सूत्रेण घञ् धातोरादेश्च ककारादेशः]

निकारिणः नितरां कर्त्तुं स्वभावाः (पूर्वचितः=

पूर्ववृद्धा जनाः) २७.४. [नि+डुकृञ् करणे (तना०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

निक्तहस्तः शुद्धहस्तः (विचक्षणः=अतीव धीमान् जनः) ४.४५.५. [निक्त-हस्तपदयोः समासः निक्तः=णिजिर् शौचपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निक्रन् नीचैः कुर्य्युः २७.४. [नि+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ् । 'मन्त्रे घसह्वरणश०' अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक्]

निक्रमणम् निश्चितं पादविहरणम् १.१६२.१४. निरन्तरं क्रमते यस्मिँस्तत् (अश्वस्य गतिविशेषणम्) २५.३८. [नि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

निक्रमीः नितरां क्रमस्व १.५१.६. [नि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लुङ्, मध्यमैकवचनम्, अडभावश्छान्दसः]

निखातम् फालकृष्टं क्षेत्रम् १.११७.५. मध्यावकाशम् १.११७.१२. [नि+खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोः क्तः । 'ये विभाषा' इत्याकारान्तादेशः]

निखिदत् नितरां दैन्यं प्राप्नोति ४.२८.२. [नि+खिद दैन्ये (दिवा०) धातोर्लङ्, अडभावश्छान्दसः । विकरणव्यत्ययेन शः]

निगतम् निश्चितं प्राप्तम् (सकलं जगत्) ऋ० भू० ६१. [नि+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

निगल्गलीति भृशं निगलतीव वर्त्तते २३.२२. [नि+गल अदने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

निगारीत् निगलेत् ५.४०.७. [नि+गॄ निगरणे (तुदा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

निगूह्ळम् नितरां गुप्तमतीन्द्रियम् (अव्यक्तं जगत्) ६.४४.२३. [नि+गुहू संवरणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

निग्राभम् निग्रहम् १७.६४. **निग्राभेण**=निग्रहेण १७.६३. [नि+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्घञ्प्रत्ययः । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' इति हकारस्य भकारः]

निग्राभ्याः नितरां ग्रहीतुं योग्याः (देवश्रुतः=प्रजाः) ६.३०. [नि+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्ण्यत् । हस्य भकारादेशश्छन्दसि]

निघनिघ्नते यो हन्ति स निघ्नः, स इवाचरति, प्र०—अत्र निघ्नशब्दादाचारे क्विप्, ततो लट्, शपः श्लुर्व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदञ्च १.५५.५.

निचक्रमे नितरां यथायोग्यं प्रकृतिपरमाण्वादिपादांशान् विक्षिप्य साऽवयवं कृतवान् १.२२.१७ [नि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

निचखान नित्यं खातवान् खनति वा ५.२३. नितरां खनति ५.२३. [नि+खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोर्लिटि प्रथमैकवचनम्]

निचाय्य समाधाय, प्र०—अत्र निशामनार्थस्य चायृधातोः प्रयोगः १.१०५.१८. निश्चयं कारयित्वा ३.२६.१. यथावत् निश्चित्य, ऋ० भू० १५६, ११.२. [नि+चायृ पूजानिशामनयोः (भ्वा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

निचिकेथे नितरां जानीथः ५.६६.४. [नि+कि ज्ञाने (जु०) धातोर्लट् । व्यत्येनात्मनेपदम्]

निचिक्यत् नित्यं पश्यन् (राजाऽधिकारि-जनः) ४.३८.४. [नि+कि ज्ञाने (जु०) धातोः शतृप्रत्ययः । चिक्यत् पश्यतिकर्मा निघं० ३.११.]

निचिक्युः निचिनुयुः १.१६४.३८. [नि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्लिट् । 'विभाषेः चेः' इत्यभ्यासात् परस्य कुत्वम्]

निचितः निश्चितः (इन्द्रः=सूर्यः) २.१२.१३. [नि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निचिराभ्याम् नितरां सनातनाभ्याम् (मातापितृभ्याम्) १.१३६.१. [नञ्-चिरपदयोः समासः]

निचिरासः निश्चयेन चिरन्तन्यः (प्रजाः) ३.६.४. [नि-चिरपदयोः समासे जसोऽसुगागमः]

निचुम्पुण ! धैर्येण शब्दविद्याऽध्यापक !, नितरां चोपति मन्दं मन्दं चलति तत्सम्बुद्धौ, प्र०—अत्र चुपधातोर्बाहुलकादुणः प्रत्ययो मुमागमश्च "नीचैरस्मिन् क्वणन्ति नीचैर्दधतीति वा । अवभृथनिचुम्पुणेत्यपि निगमो भवति । निचुम्पुण निचुंकुणोति च" नि० ५.१८. 'निचुम्पुणेति पदनामसु पठितम्' निघं० ४.२. अनेन प्राप्तज्ञानो मनुष्यो गृह्यते ३.४८. मन्दगामिन् (वरुण=वरप्रापक विद्वज्जन) प्र०—अत्र 'चुप मन्दायां गतौ' इत्यस्मादौणादिक उणन्-प्रत्यय उमागमश्च २०.१८. हे नितरां मन्दगामिन् (पतेः) ८.२७. **निचुम्पुणः**=नित्यं कमनीयः (पतिः) ८.२७. निश्चिताऽऽनन्दयुक्तः (वरुणः=वरप्रापको विद्वान्) २०.१८. [नि+चुप मन्दायां गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक उणन्-प्रत्यय उमागमश्च । निचुम्पुणः सोमो निचान्तपृणो निचमनेन प्रीणाति ।········ समुद्रोऽपि निचुम्पुण उच्यते निचमनेन पूर्यते । अवभृथोऽपि निचुम्पुण उच्यते

नीचैरस्मिन् क्वणन्ति नीचैर् दधतीति वा ।······निचुम्पुण निचुङ्कुणेति च नि० ५.१८.]

निचेतारः ये निचय समूहं कुर्वन्ति ते (मरुतः=वायवः) ७.५७.२. [नि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्-प्रत्ययः]

निचेतारा नित्यं ज्ञानवन्तौ ज्ञापकौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८४.२. [नि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

निचेरवे यो नितरां पुरुषार्थे चरति तस्मै (सेवकाय) १६.२०. **निचेरुः**=निश्चिताऽऽनन्दप्रदः (वरुणः=वरप्रापको विद्वान् जनः) २०.१८. यो नितरां चिनोति सः (यजमानः), प्र०—अत्र निपूर्वकाच्चिञ्-धातोर्बाहुलकादौणादिको रुः प्रत्ययः ३.४८. चरन् (रथः) १.१८१.५. यो धर्मेण द्रव्याणि नित्यं चिनोति सः (पतिः) ८.२७. [नि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको रुः प्रत्ययः]

निजघन्थ नितरां हन्ति १.५२.६. **निजघान**=निहन्यात् ५.३२.४. [नि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचने रूपम् । अन्यत्र णल्]

निजस्यत नितरां मुञ्चन्तु मोचयन्तु वा १.१९१.७. [नि+जसु मोक्षणे (दिवा०) धातोर्लोट्]

निजहि नित्यं निपातय त्यज ७.१८.१८. [नि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लोटि मध्यमैकवचनम्]

निजिघ्नते नितरां हन्त्रे (मेघाय) १.८०.६. [नि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः । अभ्यासस्य चेकारादेशः 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.४.७८. सूत्रेण]

निजिहते नितरां गच्छन्ति ५.६०.२. [नि+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लटि प्रथमबहुवचनम्]

निजुरः नितरां हिंसकात् (अवपदः=आपत्कालात्) २.२९.६. हिंसकस्य (वृकस्य=स्तेनस्य व्याघ्रस्य वा) ३३.५१. [नि+जूरी हिंसावयोहान्योः (दिवा०) धातोः क्विप्]

निजूर्व नितरां हिन्धि ६.६.६. **निजूर्वात्**=नित्यं हिंस्यात्, प्र०—अत्र लुङ्डभावः 'बहुलमेतन्निदर्शनम्' इति हिंसाऽर्थस्य जुर्व-धातोर्ग्रहणम् २.११.१०. **निजूर्वाः**=नितरां हिंस्याः २.३०.५. [नि+जुर्व हिंसायां धातोर्लोट् । जूर्वति वधकर्मा निघं० २.१९.]

निजूर्वन् नितरां सद्यो गच्छन् (अग्निः=विद्युत्) ४.७.११. [नि+जूर्वति वधकर्मा (निघं० २.१९.) अत्र गत्यर्थे । ततः शतृप्रत्ययः]

निणिक् नितरां शुन्धति ४.५.८. [नि+णिजिर् शौचपोषणयोः (जु०) धातोर्लङ् । 'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् । अडभावश्छान्दसो गुणाऽभावश्च]

निण्यम् निश्चितं स्वरूपम् १.९५.४. निर्णीताऽन्तर्गतम् (विज्ञानमयं व्यवहारम्) ७.३३.९. निश्चिताऽन्तर्हितम् (अ०—शरीरम्) १.३२.१०. **निण्यः**=अन्तर्हितः (जीवः), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन णत्वम् 'निण्य इति निर्णीताऽन्तर्हितनाम' निघं० ३.२५, १.१६४.३७. [निण्यम्=निर्णीतान्तर्हितनाम निघं० ३.२५. निण्यम् निर्णामम् नि० २.१६.]

निण्या निर्णीतानि (वचांसि=वचनानि) ४.३.१६. निश्चितानि (सिद्धान्तवचनानि) ७.५६.४. [निण्यम्=निर्णीतान्तर्हितनाम निघं० ३.२५. ततः 'शेर्लोपश्छन्दसी' ति शेर्लोपः]

नितारीत् नितरामुल्लङ्घते १.१५२.३. नित्यमुल्लङ्घयेत् २.२०.८. [नि+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

नितिक्ति यन्नितरां तीव्रीकृतम् (अन्नम्=अत्तव्यं द्रव्यम्) ६.४.५. [नि+तिज निशाने (भ्वा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् । गुणाऽभावोऽपि छान्दसः]

नितुन्दते नितरां व्यथते १.५८.१. [नि+तुद व्यथने (तुदा०) धातोर्लट् । नुमागमश्छान्दसः]

नितोशनम् पदार्थानां हिंसकम् (पावकमग्निम्) ६.१.८. [नितोशते वधकर्मा निघं० २.१९. ततः कर्त्तरि ल्युट् युच् वा]

नितोशे नितरां वधे, प्र०—नितोशत इति वधकर्मा, निघं० २.१९, ४.३८.१.

नित्यम् अव्यभिचारि स्वरूपेणाऽविनाशिनम् (परमेश्वरं सभाध्यक्षं वा) १.७१.१. निरन्तरम् १.७३.४. नाशरहितं जीवम् १.१६६.२. अतिकालं प्राणधारिणम् (तनयं=पुत्रम्) ३.१५.२. **नित्यस्य**=स्थिरस्य (रायः=धनस्य) ७.४.७. **नित्यः**=सनातनः (विद्युदग्निः) ७.१.२. स्वस्वरूपेणाऽविनाशी (अग्निः=विद्वान् जनः) ३.२५.५. अविनश्वर-स्वभावः (क्रतुः=प्रज्ञा कर्म वा) १.६६.३. कारणरूपेणाऽविनाशिस्वरूपः (प्राणः=सर्वशरीरगामी वायुः) १.६६.१. नित्यस्वरूपः (जनः) १.१४१.२. **नित्याः**=शाश्वत्यो नीतयः २.२७.१२. **नित्ये**=नाशरहिते (सदने=आकाशे) १.१४८.३. सदा कर्त्तव्ये कर्मणि ७.१.२१. **नित्येन**=अविनाशिना (हविषा=प्रेम्णा) ४.४.७. [नि

अव्ययात् 'त्यब् नेर्ध्रुवे' अ० ४.२.१०४. वा० सूत्रेण त्यप्-प्रत्ययः]

नित्यारित्राम् नित्यानि अरित्राणि नौःतम्भनानि जलगाम्भीर्यपरीक्षकाणि यस्यां ताम् (नावम्) १.१४०.१२. [नित्य-अरित्रपदयोः समासः । नित्यं व्याख्यातम् । अरित्रम् ऋ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अर्तिलूधू०' अ० ३.२.१८४. सूत्रेण करणे इत्रः प्रत्ययः]

नित्यासः अविनाशिनः (वाजिनः=वेगवन्तः पदार्थाः) ५.६.१. कारणरूपेणाऽविनाशिनः (अर्वन्तः=अश्वाः) १५.४१. [नित्यं व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुगागमः]

निदधात नितरां धरत ५.२६.७. **निदधामि**=स्थिरीकरोमि ३५.६. **निदधिरे**=निश्चयेन दधीरन् १.४५.७. **निदधिषे**=नितरां धरसि २.१३.६. **निदधीत**=नितरां धरेत ६.१५.१५. **निदधुः**=निश्चयेन दधीरन् ५.२.६. निदधति १.१४८.१. **निदधे**=स्थापितवान्, ऋ० भू० २९३, ५.१५. निदधाति ३.५५.१३. नितरां हितवान् दधाति धास्यति वा ५.१५. नितरां धारये ३.५०. निश्चयेन दधेय ३.२७.१०. [नि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोटि लटि लिटि लिङि च रूपाणि]

निदध्मसि नितरां स्थापयेम १.५०.१२. [निपूर्वाद् डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लटि उत्तमबहुवचने 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

निदहाति निश्चयेन दहति १.९९.१. नित्य दहन करो, आर्याभि० १.३३, ऋ० १.७.७.१ [नि+दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लेट्]

निदः निन्दकः (मनुष्यः) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति नकारलोपः १.२४.४. ये निन्दन्ति ते (दुर्जनाः) ५.८७.६. निन्दकान् (जनान्) १.१२९.६. निन्दकात् (जनात्) ४.४.१५. ये निन्दन्ति तान् मिथ्यावादिनः (जनान्) ५.५३.१४. निन्दितारः (अ०—अविद्वांसो धूर्ता जनाः), प्र०—'णिदि कुत्सायाम्' इत्यस्मात् क्विप्, 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति नलोपः १.४.५. **निदे**=निन्दाकर्त्रे (दुर्जनाय) ६.४५.२७. निन्दनाय ३.४१.६. निन्दायै २.२३.१४. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । नकारलोपश्छान्दसः । निदः=अभिनिन्दितारम् नि० १०.४२.]

निदानम् निश्चयम् ६.३२.२. कारणम् ऋ० भू० १४७.

निदानाः निन्दां कुर्वाणाः (जनाः) ४.५.१२. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । नकारलोपश्छान्दसः]

निदायाः निन्दिकायाः प्रजायाः ६.१२.६. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् प्रत्यये नकारलोपे च निद् । ततः स्त्रियां टाप्]

निदितम् निन्दितम् (जनम्) ५.२.७. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः । नकारलोपश्छान्दसः]

निदिदीहि नितरां प्रकाशय १.११३.१७. [निपूर्वाद् दीदयति ज्वलतिकर्मा (निघं० १.१६.) धातोर्लोट्]

निदीधः निश्चयेन धारयसि ६.१७.६. **निदीध्यत्**=नितरां युद्धे शत्रून् वञ्चित्वा स्वयं प्रकाशेत ६.२०. [निपूर्वाद् डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः, दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्वा छान्दसं रूपम्]

निद्यमानान् प्राप्तनिन्दान् (जनान्) ६.५२.३. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोवः कर्मणि शानच् । नकारलोपश्छान्दसः]

निधक्षि नितरां दहसि ६.१८.१०. [नि+दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

निधत्ते नित्यं धरति १.१२५.१. [दि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लटि प्रथमैकवचनम्]

निधनम् मृत्युः, ऋ० भू० १०२, अथर्व० १२.५.३. [निपूर्वाद् डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'कृपृवृजिमन्दिनिधाञः क्युः' उ० २.८१. सूत्रेण क्युः प्रत्ययः । वज्रा वा एते यन् निधनानि जै० १.३२३. यज्ञायज्ञीयं निधनम् जै० १.२९२. वीर्यं वा एतत् साम्नो यन् निधनम् जै० १.२१९. हैमन्तो निधनम् ष० ३.१. प्रतिष्ठा वै निधनम् कौ० २७.६. प्रजा निधनम् जै० १.३००. अमावास्या निधनम् ष० ३.१.]

निधनवत् निधनं प्रशस्तं मृत्यु-व्याख्यानं विद्यते यस्मिन् तत् साम १३.५८. [निधनं व्याख्यातम् । ततः प्रशंसायां मतुप्]

निधयः राशयः १.१८३.४. धनसमूहाः ३.५८.५. **निधिम्**=निधीयन्ते पदार्था यस्मिँस्तम् (परमात्मानम्) १.१३०.३. विद्याकोशम् २.२४.६. द्रव्यपात्रम् ५.४३.८. **निधिमिव**=धनकोशमिव १.११६.११. **निधिषु**=धनकोशेषु १९.५७. **निधिः**=निधीयन्ते पदार्था यस्मिन् सः (विद्युद्रूपोऽग्निः) ३८.२२. **निधीनाम्**=विद्यादिपदार्थपोषकाणाम् (भा०—ऐश्वर्याणाम्) २३.१९. सब निधियों के, आर्याभि० २.४६, २३.१९. [नि पूर्वाद् दधातेः 'कर्मण्य-

धिकरणे च' सूत्रेण किः। पृथिवी ह्येष निधिः श० ६.५.२.३. निधिः शेवधिरिति नि० २.५.]

निधिमिव धनकोशमिव १.११६.११. [निधि-इव-पदयोः समासः। निधिरिति व्याख्यातम्]

निधातुः निश्चयेन धर्तुः (विदुषो जनस्य) ५.३०.२. **निधातोः**=अन्यायेन परपदार्थानां स्वीकर्त्तुः (दुष्टकर्मकारिजनस्य) १.४१.९. [निपूर्वाद् दधातेस्तृच् कर्त्तरि। ततः षष्ठ्येकवचनम्]

निधानम् नितरां दधाति यस्मिँस्तम् (गर्भम्) ३.३१.२. स्थापनम् ३.५३.५. [नि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

निधाना निधानानि स्थानानि २९.१६. [निधानमिति व्याख्यातम्। ततः प्रथमाबहुवचने शेर्लोपः]

निधाय धृत्वा १६.५१. [नि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

निधायि निधीयते ७.४.४. नितरां धीयते १.१४५.५. निश्चयेन ध्रियेत ५.३.३. नितरां धीयन्ते ५.४१.१५. [नि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि लुङ्]

निधारयन्तः निश्चयेन धारयन्तः (कवयः=प्राज्ञा विपश्चितः) ४.२.१२. [नि+धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच् छतृप्रत्ययः]

निधावते नितरां सद्यो गच्छति १.१४१.५. [नि+धावुगतिशुद्ध्योः (भ्वा०) धातोर्लट्]

निधिपतिम् निधीनां पालकम्, भा०—प्रदातारम्, (जगदीश्वरम्) २३.१९. [निधि-पतिपदयोः समासः। निधिरिति व्याख्यातम्]

निधिपाः विद्यावृद्धिरक्षकाः (गृहपतयः) ८.१७. [निधि इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

निधिमन्तम् बहवो निधयो विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (वृक्षं=जलं स्थलं वा) २.३९.१. [निधिरिति व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे मतुप्]

निधीतः निहितः इव (उदानः=वायुविशेषः) ६.२०. [निपूर्वाद् दधातेः क्तः। 'दधातेर्हिरि' ति 'हि' आदेशो न; छान्दसत्वात्]

निधीमहि निधरेम, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकसंज्ञा 'घुमास्था०' इत्यादिना ईत्वम् १९.६७. निधिमन्तो भवेम ५.२१.१. नितरां धारयेमहि १.१७.६. नितरां धरेम ३.२९.४. नितरां स्थापयेम ३४.१५. **निधेहि**=नितरां धर १६.१२. नितरां स्थापय १.४३.७. नितरां धारय ३.५०. [नि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः। शपो लुक् छन्दसि आर्धधातुकसंज्ञकत्वेन ईकारान्तादेशः]

निध्रुविः नितरां ध्रुवः (अग्निः=विद्युत्) ७.३.१.

निनद्धः निश्चयेन नद्धो बद्धः (इषुधिः) २९.४२. नित्यं बद्धः (इषुधिः) ६.७५.५. [नि+णह बन्धने (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निनमे नमनीये स्थाने ३.५६.१. [नि+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः]

निनंसै नितरां नमेः ३.३३.१०. [नि+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लेटि सिब् विकरणे च रूपम्]

निनित्सात् निन्दितुमिच्छेत् ६.५२.२. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल् लेट्]

निनित्सोः निन्दितुमिच्छोः (दुर्जनस्य) ७.२५.२. निन्दितुमिच्छतः (दुर्जनस्य) ७.३४.१२. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्तात् 'सनाशंसभिक्ष उः' इति सूत्रेण उः प्रत्ययः। ततः षष्ठ्या एकवचनम्]

निनेथ नयसि ७.२८.३. नय ६.१८.१३. **निन्यथुः**= नयतम् १.११६.८. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचनम्। अन्यत्र द्विवचनम्]

निन्दात् निन्देत् ११.८०. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोर्लेटि रूपम्। आडागमो 'लेटोऽडाटौ' सूत्रेण]

निन्दिता गुणेषु दोषाऽऽरोपको, दोषेषु गुणारोपकश्च (मनुष्यः) ३.३९.४. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। प्रथमैकवचनम्]

निन्दितारः गुणेषु दोषान्, दोषेषु गुणान् स्थापयन्तः (जनाः) ५.२.६. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। प्रथमाबहुवचनम्]

निन्दिम निन्देम, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति लिटि द्विर्वचनाऽभावः १.१६१.१. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोर्लिटि उत्तमबहुवचनम्। 'वा छन्दसी' ति द्विर्वचनं न भवति]

निन्द्यासः अधर्माचरणेन निन्दितुं योग्याः (जनाः) ५.२.६. [णिदि कुत्सायाम् (भ्वा०) धातोर्ण्यत्। निन्द्यप्राति० जसोऽसुगागमः]

निपक्षतिः निश्चितस्य मूलम् २५.४. निश्चितपक्षमूलम् २५.५. [नि-पक्षतिपदयोः समासः। पक्षतिः=पक्षस्य मूलमिति विग्रहे पक्षप्राति० 'पक्षात्तिः' अ० ५.२.२५.

सूत्रेण तिः प्रत्ययः]

निपप्रथन् नित्यं विस्तारयेयुः २.११.८. [नि+प्रथ प्रख्याने (चुरा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्। 'अत् स्मृद्दत्वरप्रथ०' इत्यभ्यासस्याकारादेशः]

निपातम् नितरां रक्षतः, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ४.५६.४. **निपाति**=नित्यं रक्षति १.७३.२. नितरां रक्षति ७.१.१५. **निपातु**=नित्यं रक्षतु ४.५५.७. **निपासि**=नितरां रक्षसि ४.११.६. **निपाहि**=नितरां पालय १.९१.१५. नितरां रक्ष १.७०.३. नित्य पालन करो, आर्याभि० १.१६, ऋ० १.३.१०.१४. [नि+पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लङ् सामान्ये। अडभावश्छान्दसः। अन्यत्र लट्, लोट् च]

निपातः यो नितरां पाति सः (गृहस्थो जनः) ४.५५.३. [नि+पा रक्षणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकः क्तः प्रत्ययः]

निपादाः निश्चिता निम्ना वा पादा अंशा येषान्ते (समाः=वर्षाणि) ५.८३.७. [नि-पादपदयोः समासः]

निपुरः निकृष्टान् दुष्टस्वभावान् पिपुरति पूरयन्ति ते (दुष्टा जनाः), प्र०—अत्र क्विप् २.३०. [निपूर्वात् पॄ पालन-पूरणयोः (जु०) धातोः क्विप्प्रत्ययः। प्रथमाबहुवचनम्]

निपूतम् नितरां पवित्रं दुर्गन्धप्रमादत्वगुणरहितम् (पदार्थम्) २.१४.९. [निपूर्वात् पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्तः]

निबर्हय निस्सारय १.१३३.५. नितरामुत्पाटय २.२३.८. **निबर्हयः**=नित्यं वर्द्धय १.५३.६. निःसारय १.५३.७. **निबर्हीत्**=नितरां बर्हति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लुङडभावश्च १.१००.१८. **निबर्हीः**=उत्पाटय ४.१६.१२. [नि+वृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट्। अन्यत्र लुङ्। निवर्हयति वधकर्मा निघं० २.१९.]

निबाधितम् पीडितं संन्यासिनम् १.११९.८. [नि+वाधृ लोडने (भ्वा०) धातोः क्तः]

निबाळ्हः नित्यं सुखानां प्रापयिता (ऋषिः) १.१०६.६. [नि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोरण् प्रत्ययः]

निबोधत निश्चितं वोधयेत २.३०.७. **निबोधात्**=निश्चितं वोधयेत् २.३०.७. [नि+वुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लिङर्थे लेट्]

निबोधामसि निवोधयेम ७.२१.१. [नि+वुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्लट्। 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

निबोधिषत् निश्चितं बुध्यात् २.१६.७. [नि=वुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्लेटि रूपम्]

निभरामहे नितरां धरामहे १.५३.१. [नि+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लट्। उत्तमबहुवचनम्]

निभिनत् नितरां भिनत्ति २.११.२०. [नि+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः]

निभूयपाय यो नितरां रक्षितो भूत्वाऽन्यान् पालयति तस्मै (विष्णवे=व्यापकायेश्वराय) २२.२०. [निभूयोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः। निभूय=नि+भू+क्त्वा]

निभृतम् निश्चितपोषणम् २.१४.१०. नितरां धृतम् (मनः) १.१०२.५. [नि+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निममिरे नितरां निर्मिमीरन् ३.३८.३. [नि+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचनम्]

निमामृजे नितरां मृजति शोधयति, प्र०—अत्र 'तुजा-नाम्०' इत्यभ्यासदीर्घः ७.२६.३. [नि+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अभ्यासस्य दीर्घश्छान्दसः]

निमिता नितरां मिता (स्थूणा=दृढा नीतिः) ५.६२.७. **निमिताम्**=बनाई हुई (शाला) को सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१९. [नि+माङ् माने (जु०) धातोः क्तः। 'द्यतिस्यतिमा०' इति सूत्रेण इकारादेशः। स्त्रियां टाप्]

निमितासः नित्यमितज्ञानाः (ऋत्विजो जनाः) ३.८.७. [निमितप्राति० जसोऽसुक्। निमितम्-नि+माङ् माने (जु०)+क्तः]

निमितेव नितरां मितानीव (वृत्रा=धनानि) ३.३०.४. [निमिता-इवपदयोः समासः]

निमिमृक्षुः नितरां सहन्ते १.६४.४. [नि+मृषु सहने (भ्वा०) धातोर्लिटि रूपम्। विकरणव्यत्ययेन सिप्। अभ्यासस्येकारादेशश्छान्दसः]

निमिम्युः नितरां मिनुयुः ३.८.६. [नि+डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्लिटि प्रथमबहुबचनम्]

निमिश्लः नितरां मिश्रः (इन्द्रः=शत्रुविदारको राजा) ६.२३.१. [नि-मिश्रपदयोः समासः। रेफस्य लत्वम्]

निमिश्लाम् नितरां पूर्णविद्यासुशिक्षायुक्ताम् (युवतिं स्त्रीम्) १.१६७.६. [नि+मिश्रापदयोः समासः। रेफस्य लत्वम्]

निमिषतः नेत्रादिना चेष्टां कुर्वतः (प्राणतः=प्राणिनः) २३.३. प्राणिरूप जगत् का, सं० वि० ५, २३.३. [नि+मिष स्पर्द्धायाम् (तुदा०) धातोः शत्रन्तात् षष्ठी]

निमिषति नितरां सिञ्चति ३.२९.१४.

निमिषः निरन्तरम् २.२८.६. [नि+मिष स्पर्द्धायाम् (तुदा०) धातोर्घञर्थे कविधानम्। इति कः प्रत्ययः]

निमिषि निमिषादि-कालव्यवहारे २.३८.८. विद्याऽधिक्याय स्पर्द्धिने सन्तते व्यवहारे १.७२.५. [नि+मिष स्पर्द्धायाम् (तुदा०) धातोः क्विप्]

निमृग्राः नितरां शुद्धिहेतवः (आपः=जलानि) २.३८.२. [नि+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० रक्प्रत्ययः। कुत्वं छान्दसम्]

निमृजानाः नितरां शुन्धन्तः (राजपुरुषाः) ९.१९. [नि+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

निमृजे नितरां शुन्धामि ५.५२.१७. [नि०+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

निमेघमानाः निश्चितो मेघो येषान्ते (रुद्राः=वायवः) २.३४.१३.

निमेषाः नेत्रोन्मीलनादिलक्षणाः कलाकाष्ठादिकालाऽवयवाः ३२.२. [नि+मिष स्पर्द्धायाम् (तुदा०) धातोर्घञ्]

निम्नम् अधःस्थानम् १.३३.२. [नीच भावमभ्यस्यतीति विग्रहे नि+म्ना अभ्यासे (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः। घञर्थे वा कः]

निम्नेव यथा निम्नानि स्थानानि गच्छन्ति तथा १.५७.२. [निम्ना-इवपदयोः समासः। निम्ना=निम्न-प्राति० शेर्लोपः]

निस्रुचः नित्यं प्राप्तस्य (रोगिणो जनस्य) १.१६१.१०. नितरां गच्छन्तीः (उषसः) १.१५१.५. [नि+स्रुचु गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

नियच्छ नितरां देहि ३७.१६. निगृह्णीहि ३.५१.११. **नियच्छतम्**=नितरां यच्छतो यमनं कुरुतः १.९२.१६. नितरां दद्यातम् ४.४७.४. **नियच्छतु**=नितरां गृह्णातु ९.२४. [नि+यम उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'इषुगमियमां छः' इति शिति छकारादेशः]

नियतम् निश्चितम् (ऋतं=सत्यम्) ४.३.९. [नि+यम उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

नियमते नितरां यच्छति ७.२७.४. नितरां यच्छति ददाति ६.४५.२३. **नियमन्**=नितरां यच्छन्तु ३.४५.१. विनिग्रहेण यच्छेयुः २०.५३. निग्रहं कुर्वन्तु ४.४४.५. **नियंसते**=नियच्छन्ति १.८०.३. [नि+यमु उपरमे (भ्वा०)धातोर्लट्। अन्यत्र लङ् लेट् च। 'इषुगमियमां छः' इति छकारादेशो न, छान्दसत्वात्। व्यत्ययेन आत्मनेपदञ्च]

नियात नितरां प्राप्नुत ५.४२.१०. **नियाहि**=नितरां गच्छ ५.३५.५. [नि+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्]

नियानम् नित्यं प्राप्तं भूगोलाख्यं विमानादिकं वा १.१६४.४७. निश्चितं यानम् ऋ० भू० १९८, [नि+या प्रापणे (अदा०) धातोर्ल्युट् प्रत्ययः। नियानमुनिरयणम्। नि० ७.२४.]

नियुतम् नित्यं युक्तम् (वज्रं=शस्त्राऽस्त्रसमूहम्) १.१२१.३ असङ्ख्यातम् (रायः=धनम्) १.१३८.३. लक्षम् (धेनवः=दुग्धदात्र्यो गावः) १७.२. **नियुतः**=निश्चयेन मिश्रणाऽमिश्रणकर्त्तारः (मनुष्याः) २७.२४. नियुक्ताः (धियः) १.१३४.२. नियुक्तानश्वान् १.१३५.२. निश्चितगतिमन्तः (प्राणायामक्रियाः) ६.४९.४. वायोर्वेगादि गुणानिव निश्चितान् पदार्थान् १.१८०.६. वायोर्निश्चिता गतयः इव क्रियाः ६.३६.३. नितरां मिश्रिताऽमिश्रितान् वाय्वादिगुणान् ३३.७०. वायोर्वेगादयो गुणाः ३३.१८. निश्चिताः (परोपकारस्पृहा जनाः) ६.६०.८. निश्चितान् (पदार्थान्) ३३.५५. निश्चितसत्यवादाः (गिरः=सुवाचः) ६.४७.१४. श्रेष्ठैर्मिश्रितान् दुष्टैर्वियुक्तान् (सज्जनान्) ३.३५.१. निश्चितगतयो वायवः ७.१८.१० निश्चययुक्ताः (पुरुषाः) ४.४१.१० नियुज्यन्ते ये तान् निश्चितान् शमादिगुणान्, प्र०—अत्र कर्मणि क्विप् ७.७. निश्चयेन मिश्रणाऽमिश्रणकर्त्तारः (सज्जनाः) २७.२४. **नियुताम्**=निश्चितगतीनाम् २७.२३. **नियुता**=अखिलाऽङ्गयुक्तया वायोर्गतिवद् गत्या १.१३५.७. [नि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। कर्मणि वा क्विप्। अथवा नि+यु धातोः क्तः प्रत्ययः। नियुतो नियमनाद्वा नियोजनाद्वा नि० ५.२७. अयुतं नियुतं प्रयुतं तत्तदभ्यस्तम् नि० ३.१०. पशवो वै नियुतः तै० ४.६.११. उदानो वै नियुतः। श० ६.२.२.६.]

नियुतः नितरां शुभगुणयुक्तः (इन्द्रः=परमैश्वर्ययुक्तो राजा) ६.५३.३. [नि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्तः]

नियुता निश्चितेन (व्यवहारेण) १.१३५.१. [नि+

यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्विप्। ततस्तृतीया]

नियुत्वः ! समर्थ (इन्द्र=विद्वज्जन) १.१०१.९. [नियुत्वान् ईश्वरनाम निघं० २.२२. नियुत्वत्-प्राति० सम्बुद्धौ रूपम्। नियुत्वान् नियतोऽस्याश्वाः। नियुतो नियमनाद्वा नियोजनाद्वा नि० ५.२७. नियुतो वायोः आदिष्टोपयोजनानि निघं० १.१५. नियुत्वत्=नियुत्प्राति० मतुप्। मतुपो मस्यवकारश्छान्दसः। नियुतप्राति० वा मतुप्। अन्त्याकारस्य लोपः]

नियुत्वतः नियमेन वर्त्तमानस्य (शुक्रस्य=उदकस्य) २.४१.३. **नियुत्वता**=वायुना सह २७.३०. प्रभुणा राज्ञा सह ४.४७.१. बहवो नियुतोऽश्वा विद्यन्ते यस्मिँस्तेन (रथेन) १.१३४.१. नियुत्वते=बहुबलमिश्रिताय (सेनाध्यक्षाय) १.१३५.१. नियुतो बहवोऽश्वा विद्यन्ते यस्य तस्मै (सेनाऽध्यक्षाय) १.१३५.१. बहुबलयुक्ताय (सेनाऽध्यक्षाय) १.१३५.१. **नियुत्वन्तः**=निश्चयवन्तः (नरः) ५.५४.८. **नियुत्वान्**=बलवान् समर्थो वायुः ४.४६.२. नियन्तेश्वरः ७.३९.२. नियमकर्त्ता (परमात्मेव राजा), प्र०—नियुत्वानितीश्वरनाम, निघं० २.२१, ३.४९.४. ईश्वर इव न्यायेशः (विद्वज्जनः) ६.६०.२. नियुतोऽश्वा आशुकारिणो वेगादयो गुणा यस्य सः (वायुः) ३३.४४. नियमयुक्तः (वायुः=वायुवद्वर्त्तमानो विद्वान् जनः) २.४१.१. नियताऽऽत्मा संयतेन्द्रियः (वायुः=विद्वानध्यापकः) २.४१.२. नियन्तेश्वर इव ६.४०.५. वायुवद्वेगवान् (रथः) १.१३५.४. समर्थः सन् (विद्वान् जनः) २७.३२. नियतगतिर्वायुः ४.४८.२. पूर्वपदे व्याख्यातम्]

नियुद्भिः वायोर्गतिभिः ६.६२.११. निश्चिताभिः क्रियाभिः २७.३१. निश्चितैर्मिश्रणामिश्रणैर्गमनागमनैः २७.२८. नियतैर्गुणैः २७.२७. निश्चितगतिभिरश्वैरिव ६.२२.११. मिश्रिकाऽमिश्रिकाभिः क्रियाभिः १५.२३. वायुगुणवद्वर्त्तमानैरश्वैः १.१३५.३. वायोर्वेगादिगुणैः सह १३.१५. वायुगतिभिरिव वेगैः ४.३१.४. निश्चितहेतुभिः (अश्विभिः=सूर्याचन्द्रमाआदिभिः) ६.४५.२१. [नियुत्प्राति० तृतीयाबहुवचनम्। नियुत्=नि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्विप् भावे]

नियुत्वन्ता प्रभू समर्थौ (राजाऽमात्यौ) ४.४७.३. [नियुत्वान् इति व्याख्यातम्। ततः 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः]

नियुवस्व नितरां मिश्रयस्व २७.२७. **नियुवैते**=नियोजयेताम् ७.४०.२. [नि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने शः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अन्यत्र लेटि रूपम्]

नियेमिरे नियमेन धारयन्ति, नियमं प्राप्नुवन्ति वा ऋ० भू० १४३, ८.१२.२९. **नियेमे**=नियच्छति ५.३२.१०. [नि+यम उपरमे (भ्वा०) धातोर्लिटि रूपाणि]

निरजानन् नितरां जानीयुः ३.३१.४. [निर्=ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्लङ्। 'ज्ञाजनोर्जा' इति शिति जादेशः]

निरजे नितरां गमनाय ३.३०.१०. [निर्+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्भावे क्विप्। ततश्चतुर्थी। निरजे=निरजनाय नि० ६.२.]

निरण्यथः नित्यं रणथो युद्धमाचरथः, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन श्यन् १.११२.१८. [नि=रण गतौ (भ्वा०) धातोर्लटि मध्यमद्विवचनम्। विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने श्यन्]

निरतक्षत नितरां तनूकुर्वन्ति, विस्तृणन्ति १.१६४.२३. **निरतष्ट**=नितरां तक्षेरन् १.१६३.२. [निर्+तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लङ्। अन्यत्र लुङ्]

निरततंसतम् नितरां विद्यादिभिर्भूषणैरलङ्कुरुतम् १.१२०.७. [निर्+तंसि अलंकारे (चुरा०) धातोर्लुङ्]

निरदीयम् नितरां निस्सरेयम् ४.२७.१.]

निरपिंशत नितरामवयवीकुरुत १.११०.८. [निर्+पिश अवयवे (तुदा०) धातोर्लङ्। 'शे मुचादीनाम्' इति नुम्]

निरमन्थत निरतां मथित्वा गृह्णीयात् १५.२२. [निर्+मन्थ विलोडने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

निरमुञ्चत् नितरां मुच्यात् ३.३१.८. [निर्+मुच्लृ मोक्षणे (तुदा०) धातोर्लङ्]

निरमोचि नितरां मुच्यते ५.१.२. [निर्+मुच्लृ-मोक्षणे (तुदा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

निरय नितरां प्राप्नुहि ४.१८.२. [निर्+अय गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

निरवद्यात् नितरां गर्ह्यात् (अंहसः=पापात्) १.११५.६. [निर्+अवद्यपदयोः समासः। अवद्यम् इति गर्ह्यार्थे नञ्पूर्वाद् वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्यत् प्रत्ययो निपात्यते 'अवद्यपण्यवर्या०' अ० ३.१.१०१. सूत्रेण निपात्यते]

निरवस्य निर्गतोऽवो रक्षणं यस्य तस्य (भा०—महाशयजनस्य) १.१२२.११. [निर्+अवपदयोः समासः। ततः षष्ठी। अवः=अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽन्-प्रत्ययः]

निरष्टाः ये नितरामश्यन्ते व्याप्यन्ते शत्रुभिर्बलेन ते (शत्रवो जनाः) १.३३.६. [निर्+अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निरस्तम् निःसृतम् (रक्षः=सर्वतः स्वार्थरक्षकः परार्थहन्ता दुष्टो जनः) ६.१६. **निरस्तः**=नितरां प्रक्षिप्त इव (मर्कः=अन्यायकारी पुरुषः) ७.१८. निःसारितोऽन्धकार इव, अ०—विषयवासनारहितः (योगी जनः) ७.१३. [निर्+अस्तपदयोः समासः। अस्तम्=असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निरसृजत् नितरां सृजति १.५१.११ [निर्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लङ्]

निरहतम् नितरां हन्यातम् १.११६.२१. **निरहन्**=नितरां हन्यात् १.८०.१०. नितरां हन्ति १.१०१.१. [निर्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ्]

निरामिणः नित्यं रन्तुं शीलाः (स्तेनाः) २.२३.१६. [नि+रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः। प्रथमाबहुवचनम्]

निरारत नितरां गच्छन्तु, अ०—दूरे गच्छन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.४.५. [निर्+ऋ गतौ (जु०) धातोर्लुङ्]

निरिणन्ति नित्यं प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा ५.५६.४. **निरिणाति**=नितरां प्राप्नोति १.१२७.४. नित्यं गच्छति प्राप्नोति वा ५.४१.१०. नित्यं हिनस्ति १.६१.१३. भा०—नितरां हन्तुं शक्नोति ३३.८०. **निरिणीते**=नित्यं प्राप्नोति १.१२४.७. नितरां गच्छति ५.८०.६. [नि+रि हिंसायाम् (स्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन श्नाप्रत्ययः। रि गतौ (तुदा०) धातोर्वा विकरणव्यत्यये रूपम्। निरिणातिः शीतिकर्मा दीप्तिकर्मा वा।········ निरिणातिः प्रीतिकर्मा दीप्तिकर्मा वा नि० १३.३७. निरिणीते=विवृणुते नि० ३.५.]

निरीरमत् नित्यं रमयेत् ५.५३.९. निरमयति ४.१७.१४. **निरीरमन्**=निरमयेयुः ३.३५.५. [नि+रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

निरुणधामहि नितरां निरुन्धाम, सर्वदा विरोधं करवामहै १.८.२. [निर्+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोर्लङि उत्तमबहुवचनम्। 'व्यत्ययो बहुलम्' इति द्विविकरणता श्नम् शप् च]

निरुद्धाः सरोधं प्रापिताः (अ०—गावः) १.३२.११. [नि+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निरुन्धानः निरोधं कुर्वन् (विद्वान् सभाध्यक्षः) १.५३.४. [नि+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोः शानच्]

निरुन्धानासः निरोधं कुर्वाणाः (विद्वांसो जनाः) १.१२२.७. [निरुन्धान इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

निरुहथुः नितरां वाहयेतम् १.१८२.५. नितरां प्रापयेतम् १.११७.१५. नितरां वहतम् १.११७.१४. [निर्+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट्। यजादित्वात् सम्प्रसारणम्]

निरेके निःशङ्के राजव्यवहारे ७.१८.२३. निर्गता रेकाः शङ्का यस्मात् तस्मिन् (व्यवहारे) १.५१.१४. निर्गतशङ्के स्थाने, भा०—एकान्ते २७.१४. [नि-रेकपदयोः समासः। रेकः—रेकृ शङ्कायाम् (भ्वा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः]

निरेतवे निरन्तरमेतुं गन्तुम् १.३७.९. [निर्+इण् गतौ (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्प्रत्ययः]

निरैतु निर्गच्छतु ५.७८.९. [निर्+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

निरौब्जत् नितरामुब्जति सरलीकरोति १.८५.९. [निर्+उब्ज आर्जवे (तुदा०) धातोर्लङ्]

निर्ऋतम् निरन्तरमृतं सत्यमस्मिन् तत् (अ०—वन्दनम्) १.११९.७. [निर्-ऋतपदयोः समासः। ऋतम्=सत्यनाम निघं० ३.१०.]

निर्ऋतिम् दुःखप्रदां कुनीतिम् ६.७४.२. भूमिम् २५.२. भा०—क्षेत्रभूतां भूमिम् १२.६४. **निर्ऋतिः**=भूमिः, प्र०—निर्ऋतिरिति पृथिवीनाम, निघं० १.१, ५.४१.१७. वायूनां रोगकारिका दुःखप्रदा गतिः १.३८.६. **निर्ऋते**=नितरामृतं सत्यं यस्यां तत्सम्बुद्धौ (स्त्रि) ११.६३. नित्ये सत्याचारे पृथिवीवद्वर्त्तमाने (देवि=विदुषि स्त्रि) १२.६२. नितरामृतं सत्याचरणं यस्मिन् तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ९.३५. **निर्ऋतेः**=भूमेः ७.५८.१. **निर्ऋत्यै**=पृथिव्यै ३०.९. [निर्ऋतिः पृथिवीनाम निघं० १.१. निर्ऋतिर्निरमणाद् ऋच्छतेः कृच्छ्रापत्तिरितरा सा पृथिव्या सन्दिह्यते नि० २.८. पाप्मा वै निर्ऋतिः श० ७.२.१.१. निर्ऋतिःइयं (पृथिवी) वै निर्ऋतिरियं वै तं निरर्पयति यो निर्ऋच्छति श० ७.२.१.११. घोरा वै निर्ऋतिः श० ७.२.१.१०. मूलं नक्षत्रं निर्ऋतिर्देवता मै० २.१३.२०. निर्ऋतिर् वै स्त्री मै० १.१०.१६.]

निर्गमाणि नितरां गच्छेयम् ४.१८.२. [निर्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोटि उत्तमैकवचनम् । छान्दसत्वाद् 'इषुगमियमां छः' इति छकारादेशो न भवति]

निर्गृणीषे नितरां प्रशंससि ६.३५.५. [निर्+गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । गृणाति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४]

निर्जगन्वान् निर्गतः सन्, भा०—पृथग् वर्त्तमानः (अग्निः=सूर्यस्तद्वद्राजा) १२.१३. [निर्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । 'विभाषा गमहन०' इतीडभावे 'मो नो धातोरि' ति मकारस्य नकारः]

निर्जघन्थ नित्यं हन्ति १.८०.४. नितरां हन्ति १.८०.२. [निर्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिटि मध्यमैकवचनम्]

निर्जर्जल्येन नितरां जर्जरीभूतेन (शीर्ष्णा=शिरसा) २५.२. [निर्+जॄष् वयोहानौ (दिवाः) धातोर्यङन्तादच्प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

निर्णिक् यो निर्णेनेक्ति स सारथिः ५.६२.४. **निर्णिजम्**=रूपम्, प्र०—निर्णिगिति रूपनामसु पठितम्, निघं० ३.७, १.११३.१४. सिद्धम् १.२५.१३. **निर्णिजा**=सुरूपेण (रेक्णसा=धनेन) २५.२५. नित्यं शुद्धेन (रेक्णसा) १.१६२.२. [निर्+णिजिर् शौचपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप् । निर्णिक् रूपनाम निघं० ३.७.]

निर्दह नितरां भस्मीकुरु १७.४४. [निर्+दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

निर्धमथः नितरां धमनं कुरुथः ५.३१.६. [निर्+ध्माशब्दाग्निसंयोगयोः (भ्वा०) धातोर्लट् । धमति गतिकर्मा निघं० २.१४. वधकर्मा निघं० २.१९. अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

निर्बाधेन नितरां बाधेन हेतुना २५.२. [निर्-बाधापदयोः समासः]

निर्भक्तः विभागं प्राप्तः (विष्णुः=यज्ञः) २.२५. पृथग्भूतः (विष्णुः=यज्ञः) २:२५. पृथग्भूत्वाऽन्तरिक्षं गतः (विष्णु=यज्ञः) २.२५. [निर्+भक्तपदयोः समासः । भक्तः=भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः । भज विश्राणने (चुरा०) धातोर्वा क्तः]

निर्भेत् नितरां भिन्द्याः, प्र०—अत्र 'वहुलं छन्दसि' इत्यडभावो 'झलो झलि' इति सलोपो 'हल्ङ्याब्०' इति सिब्-लोपश्च १.१०४.८. विदीर्णानि कुरु पं० त्रि०, १.१०४.८. भययुक्तान् कुरु पं० वि०, १.१०४.८. विदारण कर आर्याभि० १.४९, ऋ० १.७.१९.८. [निर्+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लुङ्]

निर्मथितः नितरां विलोडितः (अग्निः=पावकः) ३.२३.१. [निर्+मन्थ विलोडने (भ्वा०) धातोः क्तः]

निर्मिता निर्मित की हुई (शाला) सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१६. [निर्+माङ् माने (जु०) धातोः क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

निर्मीयते बनाई जाती है, सं० त्रि० १६८, अथर्व० ९.२.३.२१. [निर्+माङ् माने (जु०) धातोः कर्मणि लट्]

निर्मुच्ये नितरां मुक्तो भवामि ५.३९. [निर्+मुच्लृ मोक्षणे (तुदा०) धातोः कर्मणि लट्]

निर्युवाणः निर्गता युवानो यस्मात्, नितरां युवानो वा (अजातशत्रवो राजजनाः) ४.४८.२. [निर्-युवन् पदयोः समासः]

निर्वादिष्टम् नितरां वदतम्, विनष्टां कुरुतम् ५.१७. [निर्+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

निर्विदे नित्यं प्राप्नुयाम्, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति नुमभावः १.१२०.१२. [निर्+विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लट् । नुमोऽभावश्छान्दसः]

निर्वृणते नितरां स्वीकुर्वन्ति ४.१९.१. [निर्+वृञ् वरणे (क्र्या०) धातोर्लट्]

निवचनम् निश्चितं वचनं यस्य तत् (वपुः=शरीरम्) ५.४७.५. **निवचनानि**=परीक्षया निश्चितानि धर्म्यवचांसि १.१८९.८. [नि—वचनपदयोः समासः । वचनम्—वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्ल्युट्]

निवचना नितरामुच्यन्तेऽर्था यैस्तानि (वचांसि=वचनानि) ४.३.१६. [निवचनं व्याख्यातम् । ततः प्रथमा वहुवचने शेर्लोपश्छन्दसि]

निवतः निम्नान् (प्रदेशान्) ७.५०.४. न्यग्भूतानधस्थान् (मार्गान्) ३.२.१०. **निवत्सु**=निम्नप्रदेशेषु १.१६१.११. ['नि उपसर्गाद् धात्वर्थे 'उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे' अ० ५.१.११८. सूत्रेण वतिः प्रत्ययः । अवधातोरर्थे वत् । अवति गतिकर्मा नि० १०.२०.]

निवधिष्टाम् नितरां हन्यातम् ४.४१.४. [नि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लुङ् । 'लुङि च' अ० २.४.४३. सूत्रेण वधादेशः]

निवनते विभजति, भा०—सेवते १७.१६. [नि+वन संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

निवपतु निश्चयेन छिन्दन्तु, भा०—निवारयन्तु

१६.५२. विस्तारयन्तु २.३३.११. **निवपः**=सन्तनुहि ४.१६.१३. [नि=टुवप बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लोट्। निवपन्तु वधकर्मा निघं० २.१९.]

निवर्त्तत् निवर्तयेत्, प्र०— अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.१२१.४. [नि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावः । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

निवर्त्तनम् अन्यायाचरणात् पृथग्भवनम् ३.९.२. [नि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्भावे ल्युट्। वर्त्तते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

निवर्त्तयामि अ०—त्वदाश्रयेण सर्वाणि दुःखानि निश्चयेन निवर्त्तयामि ३.६३. [नि०+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

निवहन्ता नितरां प्रापयन्तौ अश्विनौ=दम्पती) १.११९.४. [नि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः 'सुपां सुलुग्' इत्यनेन सूत्रेण]

निवाढः नित्यं सुखानां प्रापयिता (ऋषिः=अध्यापकोऽध्येता वा) १.१०६.६. [नि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोरण्प्रत्ययः। वर्णव्यत्ययेन हकारस्य ढकारः]

निवावृतुः निवर्त्तन्ते, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिड्, व्यत्ययेन परस्मैपदम्, तुजादीनां दीर्घोऽभ्यासस्य इति दीर्घत्वम् १.१०५.१०. [नि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः सामान्ये लिट्। अभ्यासस्य दीर्घः]

निवावृधे नितरां वर्धते १.८१.४. [नि+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः सामान्ये लिट्। अभ्यासस्य दीर्घः]

निविदम् नित्यविद्याम् १.१७५.६. निश्चितप्रतिज्ञम् (योगिजनम्) १.१७६.६. **निविदः**=ये निश्चयेन विन्दन्ति तान् (पदार्थान्) १९.२५. नितरां विदन्ति याभ्यस्ता वाचः, प्र०—निविदिति वाङ्नाम निघं० १.११, २.३६.३. उत्तमा वाचः ६.६७.१०. नितरां विदन्ति याभिस्ता वाचः ४.१८.७. **निविदा**=वेदवाण्याऽभिलक्षितान् निश्चितानर्थान् विन्दन्ति यया तया वाचा १.८९.३. वेदवाचा २५.१६. [निपूर्वाद् विद ज्ञाने (अदा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा क्विप्। निवित् वाङ्नाम निघं० १.११. क्षत्रं निविद् ऐ० २.३३. पेशा वा एत उक्थानां यन्निविदः ऐ० ३.१०. गर्भा वा एतउक्थानां यन्निविदः ऐ० ३.१०. चक्षुर्निवित् जै० उ० ३.४.३. यदन्तरात्मंस्तन् निवित् कौ० १५.३. प्राणा वै निविदः कौ० १५.३.४. अथो अन्नं निविद इत्याहुः कौ० १५.३.४. निविदः—निविद्भिर्न्यवेदयन् तन्निविदां निवित्त्वम् तै० २.२.८.५.]

निविद्धः नितरां वाणैर्विच्छिन्नः (राजविरोधिजनः) ४.१८.९. [नि+व्यध ताडने (दिवा०) धातोः क्तः]

निविद्धा नितरां विद्युदादिभिस्ताडिता (माता=पृथिवी) १.१६४.८. [निविद्धं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

निविविध्वान् यो नितरां शत्रून् विध्यति सः (राजविरोधिजनः) ४.१८.९. [नि+व्यध ताडने (दिवा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

निविशते प्रलय में निश्चय प्रवेश करता है अर्थात् कार्य सब कारणात्मक होता है, आर्याभि० १.४७, ऋ० ७.८.१२.२. **निविशन्ते**=निविष्टा भवन्ति १.१६४.२२. [नि+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लट्। 'नेर्विशः' इत्यात्मनेपदम्]

निविष्टाय यो निविशते तस्मै (जनाय) २२.७. [नि+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः क्तः]

निवृणक् निवृणक्ति ७.१८.१२. **निवृणक्षि**=नितरां त्यजसि १.५४.५. [नि+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः]

निवृतम् नितरां स्वीकृतं शास्त्रबोधम् १.११२.५. [नि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः क्तः]

निवृताः निवारिताः (अपः=जलानीव) १.५७.६. [नि+वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तः। णिचोऽभावश्छान्दसः]

निवृत्रा निश्रितान् मेघवत् सुखावरकान् शत्रून्, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति शसः स्थाने आजादेशः १.८.२. [नि+वृत्रपदयोः समासे द्वितीया बहुवचनस्य आजादेशः। वृत्रः मेघनाम निघं० १.१०.]

निवृश्च नितरां छिन्धि ३.३०.१६. **निवृश्च**=नितरां छिन्धि ६.८.५. **निवृश्चसि**=नितरां छिनत्सि १.१३०.४. [नि+ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्। 'ग्रहिज्यादिना' सम्प्रसारणम्]

निवेवेति नितरां भृशं व्याप्नोति, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इतीडभावः ३.५५.९. नितरां भृशं गच्छति ४.३८.६. [नि+वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

निवेशनम् निविशन्ति यस्मिंस्तत् (गृहाश्रमम्) १७.७. **निवेशनः**=निवेशस्य कर्त्ता (सविता=ईश्वरः) ४.५३.६. यः स्त्रियां निविशते (पतिः) १२.६६. **निवेशनात्**=स्वस्थानात् ४.१९.९. **निवेशने**=सर्वे निविशन्ते यस्मिंस्त-

स्मिन् (सवीमनि=जगति) ६.७१.२. [नि+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। 'कृत्यल्युटो वहुलम्' इति सूत्रेण कर्त्तर्यपि ल्युट्]

निवेशनी या नित्यान् निवेशयति सा (पृथिवी=भूमि) ३६.३. निविशन्ते यस्यां सा (भूमिः) ३५.२१. निविशन्ति प्रविशन्ति यस्यां सा (पृथिवी=भूमिः) १.२२.१५. [नि+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। ततः स्त्रियां ङीप्]

निवेशयन् नितरां स्वस्वसामर्थ्ये स्थापयन् (सविता=परमेश्वरः) १.३५.२. प्रवेशयन् (सविता=विद्वन्मनुष्यः) ७.४५.१. स्वस्वकक्षायां व्यवस्थापयन्, प्रवेशयन् वा ऋ० भू० १४२, ३३.४३. नित्यं प्रवेशयन् (सूर्यः=विद्युत्) ३४.३१. [नि+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

निवेषि नितरां व्याप्नोषि १.७६.४. [नि+वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोर्लट्]

निवेष्यम् निश्चयेन व्याप्तुं योग्यम् (पदार्थम्) २५.२. **निवेष्याय**=नितरां व्याप्तौ साधवे (जनाय) १६.४४.

निव्याधिने नितरां व्यध्द्रुं तांडयितुं शीलमस्य तस्मै (पुरुषाय) १६.२०. [नि+व्यध ताडने (तुदा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

निशितम् नितरां तीक्ष्णम् (ब्रह्मचर्यम्) ६.१३.४. **निशितानि**=तीव्राणि अस्त्राणि १.१७१.४. **निशिताः**=नितरां तीक्ष्णगतिस्वभावाः (मत्स्यासः=महामत्स्याः) ७.१८.६. [नि+शो तनूकरणे (दिवा०) धातोः क्तः। 'शाच्छोरन्यतरस्याम्' इति तादौ किति वेत्वम्]

निशितिम् नितरां तीक्ष्णम् ६.१३.४. [नि+शो तनूकरणे (दिवा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। तादौ किति परे 'शाच्छोरन्यतरस्याम्' इति सूत्रेणेकारान्तादेशः]

निशिशाति नितरां तीक्ष्णीकरोति ७.१८.११. [नि+शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः। अभ्यासस्य इकारादेशश्च छान्दसः]

निशिशानाः नितरां तीक्ष्णीकर्त्तारः (शिल्पिजनाः) ७.३.५. [नि+शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्लिटः कानच्। अभ्यासस्येत्वं छान्दसम्]

निशिश्नथत् नित्यं शिथिलीकरोति ४.३०.१०. [नि+श्रण दौर्बल्ये (चुरा०) धातोर्लुङ्। अडभावो रेफस्य च नकारादेशश्छान्दसः। श्नथति वधकर्मा निघं० २.१९. धातोर्लङ्, अडभावः, धातोरभ्यासश्च छान्दसः। निशिश्नथद्=निरशिश्नथद् नि० ११.४७.]

निशिषन् नितरां विशेषयन् (अग्ने=विद्वज्जन) ४.२.७. [नि+शिष्लृ विशेषणे (रुधा०) धातोः शतृप्रत्ययः। विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

निशीर्य नितरां हिंसित्वा १६.१३. [नि+शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

निशृम्भाः नित्यं सम्बद्धारः (अश्वाः) ६.५५.६. [निशृम्भा निश्रथ्यहारिणः नि० ६.४.]

निश्चरति नितरां प्राप्तोऽस्ति १.९५.४. [निर्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

निश्रेत् निश्चयेनाऽऽश्रयेत् १.१७४.७. [नि+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्। शपोलुक् 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

निश्शशाः नितरामुत्प्लवस्व १.८०.१. [निर्+शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभावः। सिप आडागमश्छान्दसः]

निषङ्गधिः निषङ्गानि शस्त्राऽस्त्राणि धीयन्ते यस्मिन् सः १६.१०. [निषङ्गोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'कर्मण्यधिकरणे च' इति सूत्रेण किः प्रत्ययः। निषङ्गः=नि+षस्ज गतौ (भ्वा०) धातोर्घञ्]

निषङ्गिणः बह्वो निषङ्गाः शस्त्रविशेषा विद्यन्ते येषान्ते (रिपवः=शत्रुजनाः) ३.३०.१५. प्रशस्तबाणकोशयुक्ताः) (जनाः) १६.६१. **निषङ्गिणे**=राज्यपालने नित्यं सज्जिताय (राजजनाय) १६.२१. प्रशस्ता निषङ्गा बाणाऽसि-भुशुण्डी-शतघ्नी-तोमरादयः शस्त्रसमूहा विद्यन्ते यस्य तस्मै (जनाय) १६.२०. **निषङ्गिभिः**=निषङ्गाणि भुशुण्डी-शतघ्न्याऽऽग्नेयास्त्रादीनि बहूनि विद्यन्ते येषान्तैः (भा०—सुशिक्षितवीरभृत्यसेनाभिः) १७.३५. [निषङ्ग इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा इनिः प्रत्ययः]

निषण्णाय निश्चयेन स्थिताय (पदार्थाय) २२.८. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्तः। 'रदाभ्याम्०' इति दकारतकारयोर्नकारादेशः]

निषत्तम् निषण्णम् (गुप्तं) ५.३२.५. नितरां प्राप्तम् (अग्निं=विद्युतम्) १.१४६.१. **निषत्तः**=सर्वत्र शुभकर्मसु स्थितः (अ०—प्रजापतिः) १.६८.४. निषण्णो निश्चितः स्थितः (अग्निः=पावकः) ३.३.२. नितरामवस्थितः (परमेश्वरो जीवो वा) १.७०.४. **निषत्ताः**=कृतनिवासाः (अस्मत्तो वृद्धाः पितरः) १९.६८. **निषत्ते**=नितरां स्थिते

स्थापिते वा (रजसि=लोके) १७.२८. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्तः । 'नसत्तनिषत्तानुत्त०' अ० ८.२.६१. सूत्रेण नत्वाभावो निपात्यते]

निषत्तिः निषीदन्ति यया सा स्थितिर्नीतिर्वा ४.२१.९. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

निषद नितरां स्थिरो भव २.३६.४. **निषदतम्**=नितरां तिष्ठतम् ५.७२.२. **निषदः**=नितरां सीद प्र०—अत्र लङ्यडभावः १३.३७. **निषदाम**=नितरां सीदेम ७.१.११. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लङ् । शिति सीदादेशाऽभावश्छान्दसः]

निषदनम् निश्चितमासनम् १.१६२.१४. निवासः १२.७६. स्थापनम् ३५.४. नितरां सीदन्ति यस्मिँस्तत् (स्थानम्) २५.३८. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्ल्युड् अधिकरणे]

निषदा ये नित्यं सभायां सीदन्ति तैः (मनीषि-जनैः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयाया डादेशः २.२१.५. **निषदि**=निषीदन्ति यस्मिँस्तस्मिन् गृहे ६.२७.२. **निषदे**=स्थित्यर्थम् १.१०४.१. [नि+षद्लृ विशरण-गत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप् । तृतीयावहुवचनस्य डादेशश्छान्दसः]

निषद्य नितरां स्थित्वा २६.२३. निषण्णो भूत्वा ५.२.७. नितरां प्राप्य २.३.८. समास्य १९.६२. उपविश्य १.१७७.४. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

निषद्वरम् निषीदन्ति वराः श्रेष्ठा मनुष्या यस्य समीपे तम् (इन्द्रं=राजानम्) २८.४. निषद्-वरपदयोः समासे मतुबर्थीयस्य प्रत्ययस्य लुक् । अथवा=नि+षद्लृ विशरण-गत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः 'नौ षदेः' उ० २.१२२. सूत्रेण ष्वरच्प्रत्ययः]

निषसाद नितरां सीदेत् ३.१.१८. निषीदेत् ७.१५.२. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्]

निषादयन्तः नितरां स्थापयन्तो विज्ञापयन्तो वा (देवाः=विद्वांसो जनाः) ३.१९.५. [नि+षद्लृ विशरण-गत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच् छतृप्रत्ययः]

निषादेभ्यः ये वनपर्वतादिषु तिष्ठन्ति तेभ्यः (जनेभ्यः) १६.२७. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरण्प्रत्ययः । निषादः कस्मान्निषदनो भवति, निषण्ण-मस्मिन् पापकमिति निरुक्ताः नि० ३.८. एष ह वै न ग्रामे नारण्ये यन्निषादाः जै० २.१८३.]

निषिक्तपाम् यो धर्मे निषक्तान् अभिषेकप्राप्तान् पाति रक्षति तम् (विष्णुं=व्यापकं परमेश्वरम्) ७.३६.९. [निषिक्तोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि । निषिक्तम्=नि+षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोः क्तः]

निषिक्तम् अग्नावाज्यादिप्रक्षेपणेन नितरां सिक्त विस्तृतम् (भा०—अग्नौ हुतं द्रव्यम्) ३३.११. नितरां संस्थापितम् (रेतः=वीर्यमुदकं वा) १.७१.८. [नि+षिच क्षरणे (तुदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निषिञ्च नितरां सिञ्चति, प्र०—अत्र व्यत्ययः ५.८३.८. [नि+षिच क्षरणे (तुदा०) धातोर्लोट् । पुरुष-व्यत्ययः । नुमागमः]

निषिञ्चन् नितरां सेचनं कुर्वन् (असुरः=मेघः) ५.८३.६. [नि+षिच क्षरणे (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'शे मुचादीनाम्' इति नुमागमः]

निषीद निवस ४.३.२. **निषीदत्**=निषीद ५.११.२. **निषीदत**=नितरामुपाध्वम् २.४१.१३. नितरामासीना भवत ६.५२.७. **निषेद**=निषादयत ७.५९.७. निषीदन्ति, प्र०—अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम् ४.३५.८. **निषेदिरे**=निषीदन्ति ६.१५.८. **निषेदुः**=निषीदेयुः ५.३.४. निषीदन्ति ४.६.११. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट् । शिति सीदादेशः । अन्यत्र लङ् लिट् च । निषेदुः=निषण्णाः नि० १३.१०.]

निषीदन् नितरां स्थितोऽवस्थापयन् (अ०—ईश्वरो विद्वान्वा) १.६७.२. अवस्थितः सन् (वैद्यः) ११.४७. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः शतृ-प्रत्ययः । शिति सीदादेशः]

निष्कग्रीवः निष्कं चतुस्सौवर्ण-प्रमितमाभूषणं ग्रीवायां यस्य सः (मनुष्यः) ५.१९.३. [निष्क-ग्रीवापदयोः समासः । निष्कम्=निष्कपरिमाणे (चुरा०) धातोरच्प्रत्ययः]

निष्कम् सुवर्णाऽऽभूषणम् २.३३.१०. **निष्कान्**=सौवर्णान् (अश्वान्=तुरङ्गान्) १.१२६.२. [निष्क परि-माणे (चुरा०) धातोरच्प्रत्ययः । अथवा नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः 'नौ सदेर्डिच्च' उ० ३.४५. सूत्रेण कन् डित्वाच्च टेर्लोपः]

निष्कृण्वानाः दिनानि निष्पादयन्त्यः (उषसः=प्रातःकालस्थाः प्रकाशाः) १.९२.१. [निस्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

निष्कृतम् निष्पन्नं निश्चितं वा (धाम=स्थानम्) १.१२३.९. नितरां विज्ञातम् (योनिं=कारणमव्यक्तम्) ३.६२.१३. कर्मणां फलम् १.२.६. संसाधितं कार्यम् १.२०.६. [निस्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्तः प्रत्ययः। यद्वै निष्कृतं तत्संस्कृतम् ऐ० आ० १.१.४.]

निष्कृतीः प्रत्युपकारान् १२.८३. **निष्कृत्यै**=निवारणाय ३९.१२. प्रायश्चित्ताय ३०.९. [निस्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। द्वितीयाबहुवचने रूपम्]

निष्कृथ नितरां कुरुत, प्र०—अत्र विकरणस्य लुक् १२.८३. [निस्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लट्। छान्दसो विकरणस्य लुक्]

निष्केवल्यम् निरन्तरं केवलं स्वरूपं यस्मिँस्तत्र साधुम् (उक्थं=वेदवचनम्) प्र०—अत्र केर्धातोर्बाहुलकादौणादिको वलच्-प्रत्ययः १५.१३. **निष्केवल्यः**=नितरां केवलं सुखं यस्मिँस्तस्मिन् भवः (व्यवहारः) १८.२०. [निस्-केवलपदयोः समासे भवार्थे यत्प्रत्ययः। आत्मा यजमानस्य निष्केवल्यम् ऐ० ८.२.]

निष्क्रव्यादम् क्रव्यं पक्वमांसमत्ति तस्मान्निर्गतस्तम् भा०—न भस्मादिकं दग्धुं समर्थम् (अग्नि=विद्युदाख्यम्) १.१७. [निस्—क्रव्यादपदयोः समासः। क्रव्यादः=क्रव्योपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोरण् प्रत्ययः]

निष्टतक्षुः नितरां ततक्ष, प्र०—अत्र वचनव्यत्ययः १७.२०. नितरां तनूकुर्य्युः, भा०—व्याप्तं कुर्य्युः, १७.९२. अनेकविध रचना से·········रचा है आर्याभि० २.३६, १७.२०. [निस्+तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचनम्]

निष्टनिहि नितरां शब्दय ६.४७.३०. [नि+ष्टन शब्दे (भ्वा०) धातोर्लोट्। छान्दसं रूपम्]

निष्टप्तम् यन्नितरां तप्यते तत् (रक्षः=बन्धनेन रक्षितव्यं दुर्जनम्) १.२९. निस्सारणीयः (रक्षः=परसुखाऽसहो दुर्जनः) १.२९. नितरां तप्तं सन्तापयुक्तम् (रक्षः=स्वार्थी जनम्) १.७. **निष्टतप्ताः**=नितरां तप्यन्ते ये ते (अरातयः=विद्याविघ्नकारिणो जनाः) १.२९. नितरां तप्ताः सन्तापयुक्ताः (अरातयः) १.७. निःसारणीयाः (अरातयः=दुःखप्रदा जनाः) १.२९. [निस्+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निष्टप्ता नितरां सन्तापप्रदः (विद्वान्राजा) २.२३.११. [निस्+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

निष्ट्यः नेशन्ति समादधते येन यज्ञेन तत्सहितः साधुर्विद्वान् (अमात्यः), प्र०—अत्र निश-धातोर्बाहुलकादौणादिकस्तः प्रत्यय:ततो यत् ५.२३. शब्देन धर्षितुं योग्यो दूरस्थः सन् (राजभृत्यः) ६.७५.१९. [निष्टप्राति० स्वार्थे यत्। निष्टः=णिश समाधौ (भ्वा०) धातोरौणादिकः क्तः। निष्टयं नक्षत्रं वायुर्देवता मै० २.१३.२०. निष्टया हृदयम् (नक्षत्रियस्य प्रजापतेः) तै० १.५.२.२. वायुर्देवता, निष्टया नक्षत्रम् काठ० ३९.१३.]

निष्ट्यायताम् पृथक्तया संहन्यताम्, अ०=दूरीगच्छतु ६.१५. नितरां संहता भवन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् ३८.१८. [नि०+ष्टयै शब्दसंघातयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

निष्ठितः नितरां स्थितः (वृक्षः) १.१८२.७. [नि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः। 'द्यतिस्यति०' इति सूत्रेणेत्वम्]

निष्पर नितरां पालय, अ०—नितरां रक्ष, भा०—निरन्तरं रक्ष ६.३६. [निस्+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शप्स्थाने श्लु न भवति]

निष्पिपर्तन नितरां पालयन्तु १.१०६.१. [निस्+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लोट्। तप्रत्ययस्य तनबादेशश्छान्दसः]

निष्पिपृत नितरां व्याप्नुत, भा०—दूरे रक्षन्ति ३३:४२. [निस्+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लोट्]

निष्षपी स्त्रिया सह नितरां समवेता (सभाध्यक्षः) १.१०४.५. [निस्+षप् समवाये (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः। ततो निन्दार्थे इनिः प्रत्ययः। निष्षपी स्त्रीकामो भवति विनिर्गतसपः। सपः सपते स्पृशतिकर्मणः नि० ५.१६.]

निष्षहमाणः नितरां सहमाना वीरा यस्य सः (राजा) १.१२७.३. [निस्+षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः शानच्। ततो मत्वर्थीयप्रत्ययस्य लुक्]

निष्षाट् यो नितरां सहते सः (विद्वज्जनः) १.१८१.६. [निस्+षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण ण्विः प्रत्ययः। निष्षाट्=निष्षहमाणः नि० ३.१०.]

निष्षिधम् यन्नितरां सेधति शास्ति तत् (अद्वितीयं ब्रह्म) ३.५५.८. **निष्षिधः**=अधर्मं प्रतिषेधन्तः (विद्वांसो-जनाः) १.१६९.२. नितरां साधिकाः (प्रजाः) ३.५१.५. निःश्रेयसकर्य्यः क्रियाः ६.४४.११. **निष्षिधाम्**=नितरां शासितॄणां मङ्गलाचाराणाम् ४.२४.१. [निस्+षिधू शास्त्रे

(शासने) मांगल्ये च (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

निष्षिध्वरीः नितरां मङ्गलकारिणीः (ओषधीः= सोमाद्याः) ३.५५.२२. [निस्+षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' अ० ३.२.७५. सूत्रेण क्वनिप्-प्रत्ययः। ततः स्त्रियाम् 'वनो र च' अ० ४.१.७. सूत्रेण ङीप् रेफश्चान्तादेशः]

निष्षेधतम् नितरां गमयतम् ३४.४७. [निस्+ षिधु गत्याम् (भ्वा०) धातोर्लोट्]

निष्ठाम् नितरां स्थितानाम् (विदुषां जनानाम्) ३.३१.१०. [निर्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

निंसते चुम्बति १.१४४.१. [णिसि चुम्बने (अदा०) धातोर्लटि प्रथमबहुवचने रूपम्]

निसत्तम् नितरां प्राप्तम् (सूर्यमिव विद्वांसम्) १.१४६.१. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्तः। 'नसत्तनिषत्तानुत्त०' अ० ८.२.६१. सूत्रेण नत्वाभावो निपात्यते]

निसदतम् नितरां सीदतम् ५.७२.१. **निसदः**= नितरां साध्नुयात्, प्र०—अत्राऽडभावः ३३.४. [नि+ षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लङ्। सीदादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

निसरम् यो निश्चितं सरति गच्छति तम् (नरम्) ३०.१४. [नि+सृ गतौ (भ्वा०) धातोरच्प्रत्ययः]

निससत्थ निषीद ३.३०.६. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिटि रूपम्]

निसादयन्ते नितरां स्थापयन्ति ३.६.३. [नि+ षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

निसीद नितरां तिष्ठ १३.४७. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट्। शिति प्रत्यये सीदादेशः]

निसुषुपुः नितरां स्वपेयुः ७.१८.१४. **निसुष्वप**= निसुशयस्व ७.५५.२. [नि+ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्लिटि रूपम्! 'वचिस्वपि०' सूत्रेण संप्रसारणम्। अन्यत्र नि+सु+ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

निसेदुः नित्यं प्राप्नुयुः ३.३१.६. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्। एत्वाभ्यासलोपौ]

निस्ततक्षुः नितरां विस्तृण्वन्ति ४.५८.४. [निस्+ तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

निस्वरम् निर्मूलम् (अमीवां=रोगम्) ७.१.७.

निस्ससर्ज निरन्तरं सर्जति १.१०३.२. **निस्सृजामि**= नितरां सम्पद्ये प्रक्षिपामि वा ५.११. [निस्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लिट्। अन्यत्र लट्]

निस्सुवन्तु विस्तारपूर्वकं दूरे प्रेरयन्तु ७.५०.३. [निस्+षु प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लट्]

निस्सृजः नितरां सृजन्तो निष्पादयन्तः (स्त्रीपुरुषाः) १.१३१.३. नितरां सम्पन्नाः (स्त्रीपुरुषाः) १.१३१.३. [निस्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्प्रत्ययः]

निस्सेधतम् नितरां दूरीकृतम् १.१५७.४. [निस्+ षिधु गत्याम् (भ्वा०) धातोर्लोट्]

निहतस्य निश्चयेन कृतश्रमस्य (मनुष्यस्य) २५.३४. निपतितस्य (वज्रस्य=विद्युतः) ६.२७.४. नितरां चलितस्य (जनस्य) १.१६२.११. [नि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

निहन्तवे नितरां हन्तुम् २.१३.८. [नि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्-प्रत्ययश्छान्दसः]

निहर नितरां निस्सारय, अ०—दूरे प्रक्षिप २५.३५. [नि+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

निहराणि नितरां प्रयच्छानि, अ०—नितरां ददामि ३.५०. [नि+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

निहः योऽसत्यं नितरां जहाति सः, भा०—दुष्टाचारत्यागी (अग्निः=राजा) २७.६. [नि+ओहाक् त्यागे (जु०) धातोर् मूलविभुजादित्वात् कः]

निहाकया नितरां हातुं योग्यया पीडया १२.८७. नि+ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः 'नौ हः' उ० ३.४४. सूत्रेण कन्। स्त्रियां टाप्]

निहारम् पदार्थमूल्यम् ३.५०. मूल्येन क्रेतव्यं वस्तु, नितरां ह्रियते तत् ३.५०. धर्मव्यवहारं क्रयदानाऽऽदानाख्यम् ऋ० भू० २३६, ३.५०. [नि+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्घञ्-प्रत्ययः]

निहितम् स्थापितम् (आयुधम्) ६.७५.८. स्थितम् (पदं=मोक्षाऽऽनन्दम्) ३.७.७. धृतम् (वर्म=कवचम्) २६.४५. **निहितः**=ईश्वरेण स्थापितः (समुद्रः) १७.६०. संस्थितः (विद्वान् जनः) ३.१.२०. नितरां धृतः (अग्निः= विद्वज्जनः) १५.५१. **निहिते**=सन्धृते (कार्य-कारणे) ३.५६.२. [नि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः। 'दधातेर्हिः' इति धातोर्हिरादेशः]

निहिता स्थितानि (शास्त्राणि) १.१६४.५. धृतानि (पदानि=नामाख्यातोपसर्गाख्यानि) १.१६४.४५. निहितानि (पदानि=उत्पत्त्यादयः काला वा) ३२.६. निधिरूपाणि (सप्तपदानि) १.७२.६. [निहितं व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपः]

निहीयताम् नितरां त्यज्यताम् ६.५२.१०. [नि०+ ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः कर्मणि लोट्]

निह्वयामहे नित्यं स्पर्द्धामहि १.११४.५. स्वसुखदुःखनिवेदनं कुर्महे १.११४.४. नितरां स्पर्धामहे १.४७.१०. **निह्वये**=नितरामाह्वानं कुर्वे १.११२.२४. नितरां स्तौमि ३४.२६. [नि+ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लट्]।

निः नितरां नित्यं वा १.८०.४. क्रियायोगे १.८०.३. अत्यन्तम् ५.३२.३. निर्गते १.११८.८. निस्तारणे ७.५०.३. पृथगर्थे ६.१५.

नीक्षणम् निस्तरञ्च तदीक्षणञ्च निरीक्षणम् १.१६२.१३. निकृष्टं तदीक्षणं दर्शनञ्च तत् २५.३६. [नि+ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

नीचा नीचकर्मकर्त्तॄन् (दुर्जनान्) २.१४.४. नीचेन व्यवहारेण २.१३.१२. नीचान् (अमित्रान्=शत्रून्) ४.४.४. नीचानि कर्माणि ४.३८.५. न्यग्भूतं कृत्वा १३.१२. नीचम् (अघशंस=स्तेनम्) ६.८.५. न्यग्भूतान्नभ्रान्, भा०—नीचकर्मकारिणः (जनान्) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारः १८.७०. दुष्टकारिणः (नीचान् पुरुषान्) ८.४४. [नि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्डः। पूर्वस्य च दीर्घः। नीचप्राति० 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

नीचात् निकृष्टानि कर्माणि सेवमानात् (प्रजाजनात्) १.११६.२२. ['नीच' इति व्याख्यातम्। ततः पञ्चमी]

नीचावयाः नीचानि वयांसि यस्य मेघस्य सः १.३२.९. [नीच-वयस्पदयोः समासः। पूर्वपदस्य च दीर्घः]

नीचीनवारम् यो नीचप्रदेशे वृष्टिं करोति तम् (कबन्धं=मेघम्) ५.८५.३. [नीचीनवारम्=नीचीनद्वारम् नि० १०.४.]

नीचीनाः अर्वाचीना अवस्थाः १.२४.७. [नि+ अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विन्-प्रत्यये नीच्। ततः 'विभाषाञ्चेरदिक् स्त्रियाम्' अ० ५.४.८. सूत्रेण स्वार्थे खः प्रत्ययः। स्त्रियां टाप्]

नीचीः निम्नदेशे वर्त्तमाना भूमीः ६.१७.१२. नितरां सेव्याः (अरुषीः=विद्याः क्रिया वा) १.७२.१०. निम्नगताः (प्रजाः) ५.४४.४. अधोगताः (शत्रुसेनाः) ७.१८.१५. [नि+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विन्-प्रत्ययः। 'अनिदिताम्०' इति नलोपे 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति पूर्वस्य दीर्घः। 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति ङीप्]

नीळयासे प्रशंसय ६.३५.२. [नि+ईड स्तुतौ (चुरा०) धातोर्लेट्। वर्णव्यत्ययेनाकारस्याकारादेशः]

नीळे स्थाने ४.१.१२. गृहे ४.१.११. [नि+इल स्वप्नक्षेपणयोः (तुदा०) धातोर्घञर्थे कः। ईड स्तुतौ (चुरा०) धातोर्वा कः प्रत्ययः]

नीथा न्यायरक्षणे प्रापिता (प्रजा) १.१०४.५. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'हनिकुषि०' उ० २.२. सूत्रेण क्थन्प्रत्ययः। ततः स्त्रियां टाप्]

नीथानि प्रापितानि (वचांसि=वचनानि) ४.३.१६. [नीथं व्याख्यातम्। ततो नपुंसके प्रथमाबहुवचनम्]

नीथाविदः ये नीथान् विनयान् विन्दन्ति ते (राजप्रजासज्जनाः) ३.१२.५. [नीथोपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप्। पूर्वस्य संहितायां दीर्घः। नीथं व्याख्यातम्]

नीथेनीथे प्रापणीये प्रापणीये सत्ये व्यवहारे ७.२६.२. [नीथे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। नीथं व्याख्यातम्]

नीनशः भृशं नाशयेः ६.४८.१७. [णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लङ्। अडभावे छान्दसं रूपम्]

नीप्याय नितरामापो यस्मिन् स नीपस्तत्र भवाय (जनाय), भा०—जलप्रायदेशानां जलाय १६.३७. [नि-अप् पदयोः समासे 'ऋक्पूरब्धूः०' अ० ५.४.७४. सूत्रेण समासान्तोऽकारः प्रत्ययः। 'द्व्यन्तरुपसर्गेभ्योऽप ईत्' ६.३.९७. सूत्रेण अप आदेरीकारादेशः]

नीयते प्राप्यते २५.२६. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

नीलग्रीवः नीलमणियुक्ता ग्रीवा यस्य सः (रुद्रः=सेनेशः) १६.७. **नीलग्रीवाय**=नीलः शोभनो वर्णो ग्रीवायां यस्य तस्मै (पक्षिणे) १६.२८. शुद्धकण्ठस्वराय (सेनापतये) १६.८. **नीलग्रीवाः**=नीलवर्णा निगरणकर्मोपेताः (वृद्धिजीवनाः सर्पादयः) १६.५८. नीला ग्रीवा येषां ते (रुद्राः=जीवा वायवो वा) १६.५६. [नीला-ग्रीवापदयोः समासः]

नीलङ्गोः यो नीलं गच्छति तस्य (जनस्य) २४.३०. [नीलोपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'खरुशङ्कुपीयुनीलङ्गु

लिगु' उ० १.३६. सूत्रेण कु-प्रत्ययान्तो निपात्यते। नितरां लङ्गति गच्छतीति विग्रहे वा नि+लगि गतौ (भ्वा०) धातोः कुः प्रत्ययः]

नीलपृष्ठम् नीलं संवृतं पृष्ठं यस्य तम् (वेधसं=मेधाविनं जनम्) ४.५३.१२. **नीलपृष्ठः**=नीलो वर्णः पृष्ठे यस्य सः (आदित्यः=सूर्यमण्डलम्) ३.७.३. **नीलपृष्ठाः**=नीलं शुद्धं पृष्ठमन्ताऽवयवं कारणं येषान्ते (तन्वः=प्राणाः) ७.५९.७. [नील-पृष्ठपदयोः समासः। पृष्ठम्=पर्षति सिञ्चति येन यो वा तत् पृष्ठम् इति विग्रहे पृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'तिथपृष्ठ०' उ० २.१२. सूत्रेण थक् प्रत्ययान्तो निपात्यते]

नीललोहित ! यो नीलान् वर्णान् रोहयति तत्सम्बुद्धौ (राजप्रजाजन) १६.४७. [नीलोपपदे रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः 'रुहेरश्च लो वा' उ० ३.९४. सूत्रेण इतन्-प्रत्ययः। रेफस्य लकारादेशश्च]

नीवाराः विना वपनेनोत्पन्नाः (तण्डुलाः) १८.१२. [नि+वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः 'नौ वृ धान्ये' अ० ३.३.४८. सूत्रेण घञ्। 'उपसर्गस्य घञि०' अ० ६.३.१२२. सूत्रेण पूर्वस्य दीर्घः। नीवाराः एतद्वै देवानां परममन्नं यन्नीवाराः तै० १.३.६.८. एते ब्रह्मणा पच्यन्ते यन्नीवाराः श० ५.१.४.१. नीवाराः पीयूषः मै० ४.४.३. स (बृहस्पतिः) नीवारान्निरवृणीत् तन्नीवाराणां नीवारत्वम् तै० १.३.६.७.]

नीविः या नितरां व्ययति संवृणोति सा (शिल्पविद्या) प्र०—'नौ व्योर्यलोपः' उ० ४.१३६. इत्यौणादिकसूत्रेण 'व्येञ् संवरणे' इत्यस्मादिण्-प्रत्ययः, स च डित्, डित्वादाकारलोपः, यलोपस्तु सूत्रेणैव, पूर्वपदस्य च दीर्घत्वम् ४.१०. [नि+व्येञ् संवरणे (भ्वा०) धातोः 'नौ व्योर्यलोपः पूर्वस्य च दीर्घः' उ० ४.१३६. सूत्रेण इण्-प्रत्ययो डिच्च। दक्षिणात इव हीयं नीविः श० १.३.३.६. पितॄणां नीविः काठ० २३.१.]

नीव्याभिः नीविषु प्रापणीयेषु भवाभिः (सेनाभिः) ६.३२.४. [नीविप्राति० भवार्थे यत्। नीविरिति व्याख्यातम्]

नीहारम् प्रभातसमये सोमवद्वर्त्तमानम् २५.९. **नीहाराय**=कुहुकाय २२.२६. **नीहारेण**=धूमाकारेण कुहकेनेवाऽज्ञानेन, भा०—अज्ञानाऽन्धकारेण १७.३१. अत्यन्त अविद्या से आर्याभि० २.४४, १७.३१. [नि+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्घञ्। 'उपसर्गस्य घञि०' इति सूत्रेण पूर्वस्य दीर्घः। वैद्युतस्य नीहारः (वत्सः) तै० आ० १.१०.७.

नु क्षिप्राऽर्थे ३.५१. सद्यः ४.१७.२१. हेत्वपदेशे १.१७.८. शीघ्रम् १.५८.१. एव १८.३०. उपमाऽर्थे ३.५२. चित्रम् ७.३७.५. निश्चय से आर्याभि० २.२४, ३२.९. अनुपृष्टे १.२५.१७. तर्के ४.३९.१. यथा तथा ६.२४.३. अपि ६.२७.३. क्षिप्रम्, प्र०—न्विति क्षिप्रनामसु पठितम्, निघं० २.१५, १.१७.८. [नु इत्येषोऽनेककर्मेदं नु करिष्यतीति हेत्वपदेशे, कथं नु करिष्यतीत्यनुपृष्टे, नन्वेतदकार्षीद् इति च। अथाप्युपमार्थे भवति नि० १.४. नु=क्षिप्रम् नि० ११.५०. नु क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

नुत्थाः प्रेरयेः ६.१७.५. **नुद**=दूरे प्रक्षिप, प्रेर्ष्व १५.१. हिन्धि, विजयस्व १५.२. **नुदताम्**=प्रेरयतः प्र०—अत्र लडर्थे लोट् २.१५. **नुदन्त**=दूरीकुर्वन्तु १.१६७.४. **नुदन्ताम्**=प्रेरयन्तु २८.१३. **नुदस्व**=प्रेरय ७.३७. पृथक् कुरु १५.२. दूरीकुरु ६.२१.७. **नुदाति**=दूरीकरोतु २.३०. **नुनुदे**=प्रेरयेत् ३.३४.१०. नुदति ७.१८.१६. **नुनुद्रे**=प्रेरयन्ति १.८५.११. नुदन्ति १.८५.१०. प्रेरते १.८८.४. [णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः स्थानीयस्य शप्रत्ययस्य लुक्। अन्यत्र लोट्, लेट्, लिटि च रूपाणि]

नुवन्तम् स्तुवन्तम् (शत्रुं जनम्) १.२९.५. [णु स्तुतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

नूतना नवीनानि (साधनानि) ५.३१.६. [नवप्राति० स्वार्थे 'नवस्य नू आदेशस्त्नप्तनप्खाश्च' अ० ५.४.२५. वा० सूत्रेण तनप्-प्रत्ययो नू आदेशश्च। नूतनप्राति० शेर्लोपः। नूतनम्=नवनाम निघं० ३.२८.]

नूतनाय नवीनाय (अवसे=रक्षणाद्याय) ७.३६. **नूतनाः**=सम्प्रति गृहीतविद्याः (पितरः=जनकादयः) १२.४५. **नूतनैः**=वेदार्थाऽध्येतृभिर्ब्रह्मचारिभिस्तर्कैः कार्यस्थैर्विद्यमानैः प्राणैर्वा १.१.२. कार्यद्रव्यस्थैः ऋ० भू० ७८ वर्त्तमानस्थैः (ऋषिभिः) ऋ० भू० ७७ [नूतनमिति व्याख्यातम्। नूतनैः=नवतरैः नि० ७.१.६.]

नूतनाभिः नवीनाभिर्वर्त्तमानाभिः (गीर्भिः) ६.४४.१३. [नूतनमिति व्याख्यातम्। ततो भिस ऐसादेशाऽभावश्छान्दसः]

नूतनासः नवीनाः (राजसुहृदो जनाः) ६.२१.५. [नूतनमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

नूत्नाः नवीनाः (उषसः) ७.१८.२०. येऽधीयते ते (ऋषयः=धार्मिका वेदार्थविदो जनाः) ७.२२.९. [नवप्राति० स्वार्थे 'नवस्य नू आदेशस्त्नप्तनप्खाश्च' वा सूत्रेण त्नप्-प्रत्ययो नू आदेशश्च। नूत्नम्=नवनाम निघं० ३.२८.]

नूनम् निश्चये १.१३.६. निश्चितम् (स्वरूपम्) ५.६१.१४. निश्चयेन ६ २५.६. [नूनमिति विचिकित्सार्थीयो भाषायामुभयमन्वध्यायं विचिकित्सार्थीयश्च पदपूरणश्च]

नूनोत् भृशं स्तौति ६.३.७. [णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लङ् । नौति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

नृघ्ने यः शत्रूणां नायकान् हन्ति तस्मै (राज्ञे) ४.३.६. ['नृ' इत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृतो बहुलम्' इति वा० सूत्रेण कर्त्तरि टक्प्रत्ययः]

नृचक्षसम् नृणां द्रष्टारम् (सवितारं=परमात्मानम्) ३०.४. नृषु चक्षोऽन्तर्यामिरूपेण विज्ञानप्रकाशो मूर्त्तद्रव्यप्रकाशो वा यस्य तम् (सवितारं=परमेश्वरं सूर्यं वा) १.२२.७. **नृचक्षसः**=मनुष्याणां विद्यादृष्ट्या परीक्षकाः (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.५३.१०. नृभिर्द्रष्टव्याः (धार्मिका वीरजनाः) २.२४.८. **नृचक्षसाम्**=येऽर्था नृभिः ख्यायन्ते तेषाम् (पदार्थानाम्) १४.२४. **नृचक्षसे**=सत्याऽसत्यकर्त्तॄणां जनानां साक्षाद् द्रष्ट्रे (देवाय=नृपाय) ४.३.३. **नृचक्षाः**=नृषु चक्षो दर्शनं यस्य सः (परमेश्वरो विद्वान् वा) १.९१.२. नॄन् चक्षते सः (त्वेषः=प्रकाशः) १२.४८. नॄणां द्रष्टा (ईश्वरः) ३.५४.६. नॄन् मनुष्यान् चष्ट इति (वातः=बाह्यो वायुः) ८.५८. नॄणां कर्मणां द्रष्टा (ईश्वरः) ७.६०.२. नॄणां सदसत्कर्मद्रष्टा (अग्निः=विद्वज्जनाः) ३.१५.३. ['नृ' इत्युपपदे चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोः 'चक्षेर्बहुलं शिच्च' उ० ४.२३३. सूत्रेण असुन् प्रत्ययः । शित्त्वात् सार्वधातुकत्वे 'चक्षिङः ख्याञ्' अ० २.४.५४. सूत्रेण ख्याञ् आदेशो न भवति । अथवा 'असनयोः प्रतिषेधो वक्तव्यः' इति वा० सूत्रेण प्रतिषेधः । प्रजापतिर्वै नृचक्षाः श० ६.७.४.५. देवा वै नृचक्षसः श० ८.४.२.५. नृचक्षाः प्रतिख्यातः (सोमः) तै० सं० ४.४.९.२. ये वै विद्वांसस्ते नृचक्षसः काठ० २१.१. शुश्रुवांसो वै नृचक्षसः तै० सं० ६.७.४.३.]

नृजिते यो नृभिर्जयति तस्मै (इन्द्राय=विद्वत्सभासेनेशाय) २.२१.१. ['नृ' इत्युपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

नृणाम् मनुष्याणां मध्ये १.७७.४. विद्याधर्मेषु नायकानां मनुष्याणाम् १.४८.४. वीरपुरुषाणाम् १.४३.७. **नृभिः**=नेतृभिः (जनैः) ४.१६.१९. सेनासभाप्रजास्थैः पुरुषैः सह १.८१.१. नायकैर्मनुष्यैः ४.५४.१. विद्यादिप्रशस्तगुणयुक्तैर्मनुष्यैः १.७३.९. न्यायनेतृभिः सज्जनैस्सह ७.१९.४. सर्वोत्तम मनुष्यों सहित आर्याभि० २.११, ३४.३६. उत्तम मनुष्यों से सं० वि० १५६, ७.४१.३. **नृभ्यः**=सुशिक्षितेभ्यो नायकेभ्यः (जनेभ्यः) ६.१९.१२. मनुष्यादिभ्यः १.६९.४. **नृषु**=नायकेषु मनुष्येषु ७.३४.१८. **नॄन्**=नायकान् श्रेष्ठान् पुरुषान् ५.८०.६. विद्यासुशिक्षाधर्मयुक्तान् मनुष्यान् १.७३.९. विद्यानायकान् (जनान्) १.१२२.१३. अध्यापकान् मनुष्यान् १८.७७. प्राप्तव्यशिक्षान् (अध्यापकाञ्जनान्) १.१२१.१. उत्तमान् विदुषः (पुरुषान्) ६.५१.९. धार्मिकान् जनान् १.१२१.१२. प्रशस्तान्नरान् ६.३५.२. प्रजाधर्मनायकान् १.१२१.१३. नीतियुक्तान् मनुष्यान् ५.७.१०. अधर्माद्वियोज्य धर्मपथं गमयितॄन् (विदुषो जनान्) ५.५०.३. धर्मनेतॄन् मनुष्यान् १३.५२. **नॄणाम्**=विद्यासुशीलयुक्तानां मनुष्याणाम् ४.२५.४. वीरजनानाम् ३.१६.४. [कार्याणि नयतीति विग्रहे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'नयतेर्डिच्च' उ० २.१००. सूत्रेण ऋ-प्रत्ययः । प्रत्ययस्य डित्वाट् टिलोपः । नरो ह वै देवविशः जै० १.८९. प्रजा वै नरः ऐ० २.४. श० १.५.१.२०. मनुष्या वै नरः श० ६.७.३.११.]

नृतम ! अतिशयेन नायक (राजन्) ५.४.६. **नृतमम्**=अतिशयेन सत्याऽसत्ययोर्नेतारम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.३४.११. अतिशयेन विद्यायाः प्रापकम् (इन्द्रं=विद्वज्जनम्) ३.४३.८. अतिशयेन न्यायकारिणम् (इन्द्रम्=ईश्वरमिव राजानम्) ३.४९.५. अतिशयेन नृषूत्तमम् (प्रजास्वामिनम्) ३.३०.२२. नरोत्तमम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.४८.५. अतिशयेन प्रीतेर्नेतारं प्रापकम् (शुनं=परस्परमेलजन्यं सुखम्) ३.५०.५. शुभैर्गुणैः सर्वोत्कृष्टम् (इन्द्रं=राजाद्यध्यक्षम्) ३.३२.१७. पुरुषोत्तमम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यंजनम्) ३.३५.११. **नृतमस्य**=अतिशयेन नायका यस्य तस्य (शिक्षोः=शिक्षकजनस्य) ३.१९.३. **नृतमः**=अतिशयेन नायकः (विद्वान्)४.१६.४. अतिशयेन नेता (इन्द्रः=राजा) ४.१७.११. अतिशयेन नायको नरोत्तमः (वैश्वानरः=राजा) ४.५.२. अतिशयेन नृणां मध्य उत्तमः (राजा) ७.६.४. **नृतमाय**=अतिशयेन ना तस्मै (वैश्वानराय) १.५९.४. ['नृ' इति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

नृतमानः नृत्यन् (मनुष्यः), प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शः ५.३३.६. [नृती गात्रविक्षेपे (दिवा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदं शप्रत्ययश्च]

नृतमाभिः अत्युत्तमा नरो विद्यन्ते यासु ताभिः (ऊती=रक्षादिभिः) ६.१९.१०. [नृ-प्राति० अतिशायने तमप् । ततः स्त्रियां टाप्]

नृतमासः अतिशयेन नायकाः (चर्षणयः=मनुष्याः)

६.२५.७. [नृ-प्राति० अतिशायने तमप् । ततो जसोऽसुक्]

नृतुः नर्त्तक इव (जन इव) ५.५२.१२. **नृतू**=नेतारौ (राजसभासेनेशौ) ६.६३.५. **नृतो** !=विद्या प्राप्तयेऽङ्गानां प्रक्षेप्तः, स्वगात्राणां विक्षेप्तः (इन्द्र=सभेश) १.१३०.७. सर्वेषां नर्त्तयितः (इन्द्र=जीवात्मन्) २.२२.४. नेतः (राजन्) ६.२९.३. [नृती गात्रविक्षेपे (दिवा०) धातोर्बाहु० औणादिकः कुः प्रत्ययः । अथवा नृ नये (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकस्तुः प्रत्ययः]

नृतूरिव यथा नर्त्तको रूपाणि धरति तथा, प्र०—अत्र 'नृतिशृध्योः कूः' उ० १.९१. अनेन नृति-धातोः कू-प्रत्ययः १.९२.१. [नृतू-इवपदयोः समासः । नृतूः=नृती गात्रविक्षेपे (दिवा०) धातोः 'नृतिशृध्योः कूः' उ० १.९१. सूत्रेण कूः]

नृत्ताय नर्त्तनाय ३०.२०. नृत्त्याय ३०.६. [नृती गात्रविक्षेपे (दिवा०) धातोः क्तः । ततश्चतुर्थी]

नृपतिम् राजानम् १.७१.८. नराणां पालकम् (राजानम्) ४.३८.२ सूर्यं राजानमिव ३३.११. **नृपतिः**=नृणां पालकः (इन्द्रः=राजा) ४.२०.१. **नृपते** !=नृणां स्वामिन्नीश्वर नृप वा १.१०२.८. [नृ-पतिपदयोः समासः]

नृपत्नीः याः क्रियाकुशलानां विदुषां नृणां स्वसदृश्यः पत्न्यः (देवीः=देवानां विदुषां स्त्रियः), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति पूर्वसवर्णः १.२२.११. [नृ-पत्निपदयोः समासः । ततो जसः पूर्वसवर्णादेशः]

नृपाता नृणां रक्षकः (राजा) १.१७४.१०. [नृ-पातृ-पदयोः समासः]

नृपाय्यम् नृणां पाय्यं मानम् २०.८१. नृणां पाय्यं मानं नृपाय्यम् (वर्त्तिः=मार्गः) २.४१.७. [नृ-पाय्यपदयोः समासः । 'पाय्यम्=माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्ण्यत्-प्रत्यये 'पाय्यसान्नाय्य०' अ० ३.१.१२९. सूत्रेण माने वाच्ये धातोरादेः पत्वं निपात्यते]

नृपीतये नृणां पालनाय ७.१५.१४. **नृपीतौ**=नृभिर्या पीयते रक्ष्यते तस्याम् (सुमतौ=शोभनायां सम्मतौ) ७.२०.८. [नृ-पीतिपदयोः समासः । पीतिः=पा रक्षणे (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । छान्दसं धातोरीत्वम्]

नृपेशसः नृणां पेशो रूपमिव रूपं येषान्ते (यजमाना मनुष्याः) ३.४.५. [नृ-पेशस्पदयोः समासः । पेशस्=हिरण्य-नाम निघं० १.२. रूपनाम निघं० ३.७.]

नृमणस्यते आत्मनो नृम्णमिच्छसि ५.३८.४. [नृम्ण-पदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यचि सुगागमश्च]

नृमणः ! नृषु मनो ज्ञानं यस्य तत्सम्बुद्धौ (सभाध्यक्ष) १.५१.५. नृषु नयनकारिषु मनो यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वन् सभाध्यक्ष) १.५१.१०. नृषु न्यायाधीशेषु मनो यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ७.१९.४. **नृमणाः**=नृषु नायकेषु मनो यस्य सः (प्रजाजनः) १२.२०. यो नृषु नेतृषु पदार्थेषु मन इव सद्यो-गामी सः (अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१९. नृषु नायकेषु मनो यस्याः सा (सूर्या=सूर्यदीप्तिः) १.१६७.५. [नृ-मनस्पदयोः समासः । प्रजापतिर्वै नृमणाः श० ६.७.४.३.]

नृमादनम् माद्यन्ते हर्ष्यन्तेऽनेन तन्मादनं, नृणां मादनं नृमादनम् १.४.७. [नृ-मादनपदयोः समासः । मादनम्=मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् ल्युट्]

नृम्णम् धनम्, प्र०—नृम्णमिति धननामसु पठितम्, निघं० २.१०, १.८०.३. नृणां रमणीयं धनम् ७.४८.३. नरा रमन्ते यस्मिँस्तद्धनम् ६.२५.६. नरोऽभ्यरयन्ति यत्तत् (विद्याधनम्) ५.५४.१ **नृम्णानि**=नरै रमणीयानि धनानि ५.३३.६. सुराज्य-सुनियम-सुरत्नादीनि ऋ० भू० १५२, ३८.१४. विद्या, पुरुषार्थ, हस्ती, अश्व, सुवर्ण, हीरादि रत्न, उत्कृष्ट राज्य, उत्तम पुरुष और प्रीत्यादि पदार्थों को आर्याभि० २.३१, ३८.१४. नरो रमन्ते येषु तानि (आयुधा=शस्त्राऽस्त्राणि) ५.५७.६. [नृम्णम् बल-नाम निघं० २.९. धन-नाम निघं० २.१०. 'नृ' इत्युपपदे म्ना अभ्यासे (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः प्रत्ययः । नृम्णस्य बलस्य नि० १०.१०. अन्नं वै नृम्णम् कौ० २७.४. अमेन्यस्मे नृम्णानि धारयेत्यक्रुध्यन्नो धनानि धारयेत्येवैतदाह । (नृम्णानि=धनानि) श० १४.२.२.३०.]

नृम्णवर्धनः धनवर्धनः (सुतः=पुत्रः) २.३६.५. [नृम्ण-वर्धनपदयोः समासः । नृम्णं व्याख्यातम् । वर्धनः=वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' अ० ३.२.१४९. सूत्रेण कर्त्तरि युच्प्रत्ययः]

नृवत् नृभिस्तुल्याम् (उन्नतिम्) ५.१८.५. नायकवत् (विद्वान्) ४.५५.४. मनुष्यवत् ४.२२.४. बहवो नायका विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (उपदेशम्) ७.२६.१. न्यायशीलैर्मनुष्यैस्तुल्यः (इन्द्रः=भगवान् जगदीश्वरः) ७.३९. **नृवतः**=बहूत्तम-मनुष्यसहितस्य (सज्जनस्य) ६.५०.११. प्रशस्त-जनयुक्तान् (सूरीन्=विद्वज्जनान्) ६.१७.१४. बहुनायक-सहितान् (वाजान्=सङ्ग्रामान्) प्र०—'छन्दसीरः इति वत्वम् । समीक्षा—सायणाचार्येणेदमशुद्धं व्याख्यातम् १.९२.७. प्रशस्ता नरो यस्मिँस्तस्य (रायः=धनस्य) ६.२२.३. **नृवता**=उत्तमा नरा विद्यन्ते यस्मिँस्तेन

(रथेन=विमानादियानेन) ६.६२.१०. **नृवति**=प्रशंसिता नरा विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मिन् (क्षये=गृहे) ६.२५.६. **नृवन्तः**=बहूत्तममनुष्ययुक्ताः (प्रजाजनाः) ७.४१.३. बहुवीरमनुष्ययुक्ताः सं० वि० १५६, ७.४१.३. उत्तम-उत्तम पुरुष, स्त्री और सन्तान भृत्य वाले (हम लोग) आर्याभि० २.११, ३४.३६. [नृ-प्राति० तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः। अन्यत्र नृ-प्राति० भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा मतुप्। 'छन्दसीरः' सूत्रेण मतोर्मस्य वत्वम्]

नृवतीः नरो विद्यन्ते यासु प्रजासु ताः ७.३.८. [नृ प्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्तान् ङीप्]

नृवत्सखा नृवत्सु नायकयुक्तेषु सुहृत् (अग्निः=विद्वान् जनः) ४.२.५. [नृवत्-सखिपदयोः समासः]

नृवाहणम् यो नॄन् वहति तम् (रथम्) २.३७.५. ['नृ' इत्युपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि ल्युट्]

नृवाहसा सम्यग् योजितौ नॄन् वहतस्तौ (रथे=याने) १.६.२. नॄणां वाहकौ (हरी=हयौ) २३.६. [नृ इत्युपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहियुभ्यां णित्' उ० ३.११९. सूत्रेण असच्-प्रत्ययो णिच्च। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः। अहोरात्रे वै नृवाहसा (नृवाहसौ) तै० ३.९.४.३.]

नृषत् यो नायकेषु सीदति सः (ब्रह्म जीवो वा) १२.१४. यो नृषु सीदति सः (परमेश्वरः) १०.२४. यो नरेषु सीदति (जीवात्मा) ४.४०.५. [नृ इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। प्राणो वै नृषन् मनुष्या नरस्तद्योऽयं मनुष्येषु प्राणोऽग्निस्तमेतदाह श० ६.७.३.११. एष (सूर्यः) वै नृषत् ऐ० ४.२०.]

नृषदनम् नृणां स्थानम् ७.२०.१. **नृषदने**=नॄणां स्थाने ७.७.५. [नृ-सदनपदयोः समासः। सदनम्=षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

नृषदम् नायकेषु सीदन्तम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ९.२. **नृषदे**=यो नायकेषु सीदति तस्मै (पुरुषाय) १७.१२. [नृ इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

नृषाचः ये नॄन् सचन्ति समवयन्ति ते (मरुतः=प्राणादयः) १.५२.९. ये कर्मसु नॄन् जीवान् साचयन्ति संयोजयन्ति ते (मरुतः=शिल्पविद्याविद ऋत्विजः) १.६४.९. ये नृभिर्नायकैः सह सम्बध्नन्ति ते (वीरा योद्धृजनाः) ७.२१.२. [नृ इत्युपपदे षच समवाये (भ्वा०) धातोरण्-प्रत्ययः]

नृषाता नरः सीदन्ति यस्मिँस्तस्मिन् नृसातौ ७.२७.१.

नृषाह्याय नॄणां सहायाय, प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १.३३.१४. **नृषाह्ये**=नृभिः षोढव्ये (सङ्ग्रामे) १.११२.२२. शूरवीरैः सोढुमर्हे सङ्ग्रामे १.१००.५. [नृ-सह्यपदयोः समासः। संहितायां दीर्घः। सह्यम्=षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'शकिसहोश्च' अ० ३.१.९९. सूत्रेण यत्]

नृहा यो नॄन् हन्ति सः (दुर्जनः) ७.५६.१७. [नृ इत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्। 'सौ चे'ति दीर्घः]

नेतः! नायक (देव=विद्वज्जन) ५.५०.२. प्रापक (विद्वज्जन) ५.५०.५. **नेता**=गमकः (देवः=सुखप्रदाता विद्वान् जनः) ३.२०.४. नयनकर्त्ता (शिल्पिजनः) ३.२३.२. मर्यादायाः स्थापकः (अग्निः=स्वप्रकाशः परमेश्वरः) ७.५.२. प्रापकः (इन्द्रः=राजपुरुषः) ३.१५.४. नायकः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.४०. **नेतुः**=सर्वनायकस्य (देवस्य=सर्वजगत्प्रकाशकस्येश्वरस्य) ११.६७. सर्वनयनकर्त्तुः परमेश्वरस्य ४.८. नायकस्य (देवस्य विदुषो जनस्य) ५.५०.१. णीज् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

नेत्री या जनान् व्यवहारान् नयति सः (उषाः) १.९२.७. प्रापिका (उषाः) १.११३.४. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। ततः स्त्रियां 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इति ङीप्]

नेत्री नयनकर्त्र्यौ (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.२.

नेदिष्ठम् अतिशयेनाऽन्तिकं समीपस्थम् (गुणम्) प्र०—अत्र 'अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ' अ० ५.३.६३. अनेनाऽन्तिकशब्दस्य नेदादेशः १.१७.३. अतिनिकटम् (यतिरूपमतिथिम्) ७.१५.१. अतिशयेन समीपं (राजानम्) ६.५२.६. **नेदिष्ठः**=अतिशयेन समीपस्थः (अग्निः=अध्यापको राजा वा) ४.१.५. अतिशयेनाऽन्तिकः भा०—सन्निहितः (वह्निः) २१.४. [अन्तिकप्राति० अतिशायने इष्ठन्-प्रत्ययः। 'अन्तिकबाढयोर्नेदसाधौ' इति नेदादेशः]

नेदीयः अतिशयेनाऽन्तिकः (पक्वमन्नम्) १२.६८. [अन्तिकप्राति० अतिशायने ईयसुन्। ततोऽन्तिकस्य नेदादेशः]

नेनीयते भृशमितस्ततो नयति गमयति ३४.६. अत्यन्त इधर-उधर डुलाता है स० प्र० २४७, ३४.६. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्यङन्ताल् लट्]

नेमधिता नेमाः प्राप्ताः पदार्था धिता हिता येन सः

(मर्त्तः=मनुष्यः), प्र०—अत्र 'सुधित-वसुधित-नेमधित-धिष्वधिषीय च' अ० ७.४.४५. इति छन्दसि निपातनात् क्त-प्रत्यये हित्वं प्रतिषिध्यते 'सुपां सुलुक्०' इति सोः स्थाने आकारादेशः १.७२.४. नेमधितौ सङ्ग्रामे ७.२७.१. धार्मिकाऽधार्मिकयोर्मध्ये धार्मिकाणां ग्रहीतारः (राजपुरुषाः) ६.३३.४. [नेमपूर्वस्य दधातेः क्तप्रत्यये 'सुधितवसुधित-नेमधित०' अ० ७.४.४५. सूत्रेण इत्वमिडागमो वा निपात्यते। नेमः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'अर्तिस्तु०' उ० १.१४०. सूत्रेण मन्प्रत्ययः। नेमधिता संग्रामनाम निघं० २.१७. नेमधितिः संग्रामनाम निघं० २.१७.]

नेमन्निषः नीयन्ते इष्यन्ते च यास्ताः (गूर्त्तयः=उद्यमयुक्ताः कन्याः) १.५६.२.

नेमयः कलाचक्राणि १.३८.१२. **नेमिम्**=चक्रम् ७.३२.२० **नेमिः**=प्रापको लयः धुरि इति भाषायाम् २.५.३. रथाऽङ्गम् ५.१३.६. [नेमिः वज्रनाम निघं० २.२०. णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'नियो मिः' उ० ४.४३. सूत्रेण निः प्रत्ययः]

नेमः अर्द्धाऽधिकारी (पुमान्=अलसः पुरुषः) ५.६१.८. **नेमानाम्**=अन्नानाम्, प्र०—नेम इत्यन्ननाम निघं० २.७, ६.१६.१८. [नेम इत्यर्धस्य ⋯ ⋯ नेमोऽपनीतः नि० ३.२०. नेमः अन्ननाम निघं० २.७.]

नेमे प्रह्वीभूता भवति १.५७.५. [णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

नेमे नियन्तारः (राजभृत्याः) ४.२४.४. सर्वे (सोमपाः=धार्मिका वीरजनाः) १.५४.८.

नेशत् नश्येत् ६.५४.७. नाशयति ४.१.१७. [णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

नेषत् नयेत् १.१४१.१२. **नेषति**=नयेत् ५.४६.१. **नेषि**=नयसि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शबभावः १९.५२. प्रापयसि प्र०—अत्र नीधातोर्लेटि 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक्। अन्तर्गतो ण्यर्थः १.९१.१. प्राप्नोषि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शबभावः ८.१५. **नेषथ**=नयथ ५.५४.६. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लेटि 'व्यत्ययो बहुलम्' इति शप्सिपौ विकरणौ। 'नेषि' प्रयोगे शपो लुक्]

नेषतमैः अतिशयेन प्रापकारकैः (विद्याप्रकाशैः) १.१४१.१२. [नेषप्राति० अतिशायने तमप्। नेषः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोरौणादिकः सः]

नेष्टः ! नेतः (विद्वज्जन) २६.१. विद्युत् पदार्थशोधकत्वात् पोषकत्वाच्च, नेनेक्ति सर्वान् पदार्थानिति, अ०—नेष्ट्री विद्युत्, प्र०—नप्तृनेष्टृ० उ० २.९५. अनेन निपातनम् १.१५.३. **नेष्टुः**=नायकस्य (वेदस्य) २.५.५. [णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। 'नप्तृनेष्टृ०' उ० २.९५. सूत्रेण निपातनात् षुगागमः। अथवा तृन् प्रत्यये 'नयते षुक् च' अ० ३.२.१३५ वा० सूत्रेण षुक्। अथवा णिजिर् शौचपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

नेष्ट्रम् नयनम् (सत्कर्म) २.१.२. **नेष्ट्रात्**=विज्ञानहेतोः (व्यवहारात्) प्र०—अत्र 'णेष्टृ गतौ' इत्यस्मात् 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' उ० ४.१६३. इति बाहुलकात् ष्ट्रन् प्रत्ययः १.१५.९. प्रापणात् २.३७.३. विनयात् २६.२२. [नेषृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' इत्युणादिसूत्रेण ष्ट्रन् प्रत्ययः। णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्वा रूपम्]

नैचाशाखम् नीचा शाखा शक्तिर्यस्मिँस्तम् (नास्तिकं म्लेच्छजनम्) ३.५३.१४. [नीचा-शाखापदयोः समासः। ततः स्वार्थेऽण्प्रत्ययः। नैचाशाखं नीचाशाखो नीचैः शाखः। शाखाः शक्नोतेः नि० ६.३२.]

नैषादम् निषादस्य पुत्रम् ३०.८. [निषादो व्याख्यातः। ततोऽपत्यार्थेऽण् प्रत्ययः। एतद्वा अवरार्ध्यमन्नाद्यं यन्नैषादः कौ० २५.१५.]

नो निषेधे ६.५४.३.

नोधः स्तावकः (मनुष्यः) १.६४.१. **नोधाः**=यो नायकान् प्राप्तिकरान् धरति (सभाध्यक्षः) प्र०—अत्र णीञ् धातोर्बाहुलकादौणादिको डो प्रत्ययस्तदुपपदात् डुधाञ् धातोश्च क्विप् १.६१.१४. [णु स्तुतौ (अदा०) धातोः 'नुवो धुट् च' उ० ४.२२६. सूत्रेण असिर्धुडागमश्च। 'नो' इत्युपपदे वा दधातेः क्विप्। नो=णीञ् प्रापणे धातोरौणादिको डोः। नोधा ऋषि भवति नवनं दधाति नि० ४.१६.]

नोधाः स्तोता (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) प्र०—'नुवो धुट् च' उ० ४.२२३. अनेनौणादिकसूत्रेणाऽस्य सिद्धिः १.६२.१३. [नोधा इति व्याख्यातम्]

नोधाइव यो नौति सर्वाणि तद्वत् (विद्वज्जनवत्) प्र०—'नुवो धुट् च' उ० ४.२२३. अनेन नुधातोरसि प्रत्ययो धुडागमश्च १.१२४.४. [नोधा इति व्याख्यातम्। नोधस्-इव पदयोः समासः]

नोनाव अत्यन्तप्रशंसितः (सूर्यः) १.७९.२. [णुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् कर्त्तरि अच्]

नोनुमः अतिशयेन स्तुमः, प्र०—अयं 'णु स्तुतौ'

इत्यस्य यङ्लुकि प्रयोगः १.११.२. भृशं नमस्कुर्मः १.७८.५. भृशं नताः स्मः ४.३२.४. **नोनुवन्त**=भृशं शब्दायन्ते ४.२२.४. **नोनुवुः**=भृशं प्रशंसेयुः ६.४५.२५. [णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुकि लटि लङि लिटि च रूपाणि। नौ अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

नौभिः नौकाभिः १.११६.३. समुद्रे गमनागमनहेतुरूपाभिः ऋ० भू० १९०, ऋ० १.८.८.३. **नौः**=बृहती नौका ५.५९.२. **नावम्**=नुदन्ति चालयन्ति प्रेरते वा यां ताम् (नौकाम्), प्र०—'ग्लानुदिभ्यां डौ' उ० २.६४. अनेनाऽयं सिद्धः १.११६.५. **नावः**=सागरोपरि नाव इव विमानानि, ऋ० भू०, १०.१९. [नौः वाङ्नाम निघं० १.११. णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोः 'ग्लानुदिभ्यां डौः' उ० २.६४ सूत्रेण डौः प्रत्ययः। णौः प्रणोत्तव्या भवति, नमतेर्वा नि० ५.२३.]

न्यक्रमीत् नितरां क्रमते ३३.९३. नितरां क्रामति ६.५९.६. [नि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

न्यक्रान् नितरां कुर्वन्ति २.११.८. [नि+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ्। 'मन्त्रे घसह्वरणश०' सूत्रेण लेर्लुक्। आडागमश्छान्दसः]

न्यग्रोधः वटः, भा०—सूर्यः २३.१३. [न्यग् उपपदे रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोरच्-प्रत्ययः हस्य धकारश्छान्दसः। न्यक्=नि+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विन्। ते यन्न्यञ्चोऽरोहंस्तस्मान्न्यङ् रोहति न्यग्रोहो न्यग्रोहो वै नाम तं न्यग्रोहं सन्तं न्यग्रोध इत्याचक्षते ऐ० ७.३०. न्यञ्चो न्यग्रोधा रोहन्ति श० १३.२.७.३. परोक्षमिव ह वा एष सोमो राजा यन्न्यग्रोधः ऐ० ७.३१. क्षत्रं वा एतद्वनस्पतीनां यन्न्यग्रोधः ऐ० ७.३१.]

न्यङ् यो न्यग्भूतस्सन् (सूर्यः) ४.१३.५. यो नित्यमञ्चति सः (जीवात्मा) ४.१४.५. **न्यञ्चम्**=यो निश्चितमञ्चति तम् (मेघम्) ५.८३.७. [नि+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' इत्यादिना कर्त्तरि क्विन्]

न्यङ्कुः मृगविशेषः २४.३२. **न्यङ्कून्**=पशुविशेषान् २४.२७. [नि+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोर्डुः प्रत्ययः। 'न्यङ्क्वादीनां च' इति कुत्वम्]

न्यनमत् नितरां नमतु २.२४.२. [नि+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

न्यपद्यन्त निश्चय से प्राप्त होते हैं, सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३२. [नि+पद गतौ (दिवा०) धातोर्लङ्]

न्यपादयन् निश्चयेन विनाशयेत् २.११.१०. [नि० पद गतौ (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

न्यपावृणोः नितरां दूरीकरोति २.११.१८. [नि+अप+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लङ्]

न्ययनम् निश्चितमयनं स्थानम् १७.७. नि+इण्-गतौ (अदा०) धातोर्ल्युट्]

न्ययातन नितरां प्राप्नुत ५.५४.५. नि०+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लङ्। त-प्रत्ययस्य तनबादेशश्छान्दसः]

न्ययामि नितरां प्राप्नोमि ६.३४.४. [नि+अय गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

न्यरन्धय निश्चयेन हिंसय ७.१९.२. [नि+रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्। 'रधिजभोरचि' सूत्रेण नुम्]

न्यर्थम् निश्चितोऽर्थो यस्मिँस्तम् (न्यायेन प्राप्तपदार्थम्) ७.१८.९. **न्यर्थानि**=निश्चिता अर्था येषु प्रयोजनेषु तानि ६.२७.६. [नि-अर्थपदयोः समासः]

न्यर्बुदम् अब्जम् (इष्टकाः), (न्यर्बुदमिति खर्व-निखर्व-महापद्म-शङ्कु संख्यानामप्युपलक्षकम्) १७.२. [नि-अर्बुदम्-पदयोः समासः। अर्बुदो मेघो भवति, अरणमम्बु तद्दोऽम्बुदः, अम्बुमद् भातीति वा। अम्बुमद् भवतीति वा। स यथा महान् बहुर्भवति वर्षंस्तदिवार्बुदम् नि० ३.१०. यो वै वाचो भूमा तन्न्यर्बुदम् तै० ३.८.१६.३.]

न्यलिप्सत नितरां लिम्पन्ति १.१९१.३. [नि+लिप उपदेहे (तुदा०) धातोर्लुङ्।

न्यविक्षत नितरां प्रविशन्ति १.१९१.४. [नि+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लुङ् सामान्ये]

न्यविन्देथाम् नितरां प्राप्नुतम् ४.२८.४. [नि+विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लङ्]

न्यवृणक् नित्यं वृणक्षि १.५३.९. नितरां वृणक्ति २.१४.७. [नि+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लङ्]

न्यसदत् नितरां सीदति २.९.१. **न्यसदन्**=नितरां सीदन्ति १.१९१.४. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लुङ्। लृदित्त्वादङ्]

न्यसादयन्त नितरां स्थापयन्तु ३३.७. नित्यं कार्येषु नियोजयत। ३.९.९. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

न्यसादि नितरां साद्यत १.६०.२. नितरां सद्यते ३.४.४. [नि+षद्लृ धातोः कर्मणि लुङ्]

न्यसीदत् निषीदेत् ५.१.६. नितरां सीदति १७.१७. नित्य अवस्थित है, आर्याभि० २.३०, १७.१७. **न्यसीदः**= नितरां तिष्ठेः ६.१.२. [नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लङ् । धातोः सीदादेशः]

न्यस्फुरत् नितरां वर्धयति २.११.६. [नि+स्फुर संचलने (तुदा०) धातोर्लङ् । अत्र वर्धनेऽपि धातूनामनेकार्थकत्वात्]

न्यागात् नितरां प्राप्नोति २.३८.३. [नि+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङी' ति गादेशः]

न्यानजे नित्यमस्येच्चालयेत् १.१६१.४. [नि+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लिट् । छान्दसत्वाद् वीभावो न, नुडागमश्चाभ्यासस्य]

न्यार्चन् नित्यमर्चन्तु १.५२.१५. [नि+अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ्]

न्यावृणक् नितरां वृङ्ग्धि ५.२९.१०. [नि+आङ्+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लङ्]

न्युप्तः नित्यं स्थापितो व्यवहारः ८.५७. [नि+टुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोः क्तः]

न्युहीत् निवहेत् ७.३७.६. [नि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । छान्दसं सम्प्रसारणम् आटोऽभावश्च]

न्यूहतुः नितरां देशान्तरं प्रापयतः १.११६.१. **न्यूहथुः**=नितरां वाहयतम् १.११७.६. नितरां वहतम् १.११२.१६. [नि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट् । यजादित्वात्संप्रसारणम्]

न्यृञ्जते नितरां प्रसाध्नोति, प्र०—ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्मा नि० ६.२१, १.५४.२. **न्यृञ्जे**=नितरां प्रसाध्नुयाम् ३.७.८. नित्यं भर्जयामि ३.४.७. नितरां साध्नोमि ४.२६.१. [नि+ऋजि भर्जने (भ्वा०) धातोर्लट् । ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्मा नि० ६.२१]

न्यृण्वन् नितरां प्रसाध्नुवन् (विद्युदग्निः) ७.१.२. [नि+ऋणोति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः शतृप्रत्ययः]

न्यृण्वन् नित्यं प्रसाध्नुवन्ति ७.५.६. [नि+ऋ गतौ (क्र्या०) धातोर्लङ् । आडभावश्छान्दसः । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

न्यृषन्ति नितरां प्राप्नुवन्ति १.५२.७. [नि+ऋषी गतौ (तुदा० (धातोर्लट्]

न्यृष्टम् नितरां प्राप्तम् (अक्षयकोशम्) ४.२०.६. **न्यृष्टे**=निश्चितं स्वरूपं प्राप्ते (द्यावापृथिव्यौ) ३.५५.२०. [नि+ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः क्तः । ईदितत्वादनिट्त्वम्]

न्येरिरे निश्चयेन प्राप्नुयुः ४.१.१. नितरां कम्पयन्ति गमयन्ति २.२.३. प्रेरयन्ति ४.१.१. [नि+आङ्+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लिट् । एरिर इतीर्त्तिरुपसृष्टोऽभ्यस्तः नि० ४.२३.]

न्यैरयत् प्रेरयेत् ६.५६.३. [नि+ईर क्षेपे (चुरा०) धातोर्लङ् । ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्वा णिजन्ताल्लङ्]

न्योकसे निश्चितानि ओकांसि स्थानानि येन तस्मै (इन्द्राय=परमेश्वराय), प्र०—ओक इति निवासनामोच्यते, नि० ३.३, १.६.१०. **न्योकाः**=निश्चितस्थानः (सोमः=सोमलताद्योषधिगण ऐश्वर्यं वा) ५.४४.१४. [नि-ओकस्पदयोः समासः]

न्योषतात् नितरां दह १३.१२. निदह ४.४.४. **न्योषति**=नित्यं दहेत् १.१३०.८. [नि+उष दाहे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'तुह्योस्तातङ्०' इति तातङ् आदेशः । अन्यत्र लट्]

न्यौहते निश्चयेन प्राप्नोति प्रापयति वा ५.५२.११. [नि+आङ्+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन शप्रत्यये सम्प्रसारणम्]

न्यौहत् न्यूहते १.१६४.२६. [नि+ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लङ्]

पक्तये पाककर्त्रे (श्रेष्ठजनाय) ४.२५.७. **पक्तिम्**= पाकम् ४.२५.६. **पक्तिः**=पाकः ४.२४.५. **पक्तीः**= पाकान् ७.३२.८. नानाविधान् पाकान् २८.४६. पाचनप्रकाराणि २१.५९. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । 'कृतो बहुलम्' इति कर्त्तर्यपि क्तिन्]

पक्थासः पाकविद्याकुशलाः परिपक्वज्ञाना वा (आर्या राजजनाः) ७.१८.७. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकस्थक्-प्रत्ययः । पक्थप्राति० जसोऽसुगागमः]

पक्थी पाचकः (जनः) ६.२०.१३. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोरौणादिकस्थक्-प्रत्ययः । पक्थप्राति० मत्वर्थे इनिः]

पक्वम् परिपक्वस्वभावम् (वाजिनं=वेगवन्तमश्वम्) २५.३५. पच्यमानम् (पयः=रसम्) १.६२.९. शुद्धानन्दसिद्धम् (फलम्) ऋ० भू० १५९, १२.६८. पाकेन सम्यक् संस्कृतम् (आहारम्) १.१६२.१२. **पक्वः**=परिपक्वफलादिः ४.२०.५. उपभोक्तुमर्हः (यवः) १.६६.२. **पक्वाः**=परि-

पक्वज्ञानाः परिपक्वस्वरूपा वा (पृक्षः=सम्बन्धिनः) ४.४३.५. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः क्तः । 'पचो वः' अ० ८.२.५२. सूत्रेण तकारस्य वकारादेशः]

पक्वा पक्वफलयुक्ता (शाखा=वृक्षाऽवयवा) १.८.८. [पक्वम् इति व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थीयस्य प्रत्ययस्य लुक् । स्त्रियां टाप्]

पक्षतिः पक्षस्य परिग्रहस्य मूलम् २५.४. [पक्षप्राति० मूलार्थे 'पक्षात्तिः' अ० ५.२.२५. सूत्रेण तिः प्रत्ययः]

पक्षः परिग्रहः ६.४७.१९. **पक्षौ**=परिग्रहौ कार्यकारणरूपौ (पदार्थौ) १८.५२. पार्श्वाविव १२.४. [पणायति स्तौति व्यवहरति वा येन यत्र वा स पक्षः । पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः 'गृधिपण्योर्दकौ च' उ० ३.६९. सूत्रेण सः । णकारस्य ककारादेशः]

पक्षा पक्षौ २९.१२. [पक्षं व्याख्यातम् । ततः 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

पक्षिणम् पक्षौ विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (प्लवं=नौकादिकम्) १.१८२.५. **पक्षिणः**=विहङ्गमान् १.४८.५. [पक्ष इति व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थ इनिः प्रत्ययः]

पक्षोभिः पक्षैः २९.५. [पक्षस्प्राति० भिस् । पक्षस्=डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः 'पचिवचिभ्यां सुट् च' उ० ४.२२०. सूत्रेण असुन्]

पक्ष्माणि परिग्रहीतान्यन्यानि (वस्त्राणि) १९.८९. परिग्रहानि लोमानि वा २५.१. परिग्रहीतुं योग्यानि कर्माणि, नेत्रोर्ध्वलोमानि वा २५.१. [पक्ष परिग्रहे (चुरा०) धातोर्बाहु० औणादिको मन्प्रत्ययः]

पक्ष्या पक्षेषु साध्वी (वाणी) ३.५३.१६. [पक्ष इति व्याख्यातम् । ततः साध्वर्थे यत्, ततः स्त्रियां टाप्]

पङ्क्तराधसम् पङ्क्तेः समूहस्य राधः संसिद्धिर्यस्मात्तम् (वीर-पुरुषम्) ३३.८९. यः पङ्क्तीः समुदायान् राध्नोति तम् (यज्ञम्) ३७.७. यः पङ्क्तीर्धर्मात्मवीर-मनुष्यसमूहान् राध्नोति यद्वा पङ्क्त्यर्थं राधोऽन्नं यस्य तम् (नर्यं=हितकारिजनम्) १.४०.३. [पङ्क्ति-राधस्पदयोः समासः । राधस्=राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन् । राधः धननाम निघं० २.१०.]

पङ्क्तः पङ्क्तिनामकं छन्दः १०.१४. पञ्चाऽवयवो योगः १४.१८. **पङ्क्त्या**=विस्तृतया क्रियया २३.३३. **पङ्क्त्यै**=पङ्क्तिछन्दोऽर्थाय २४.१३. पङ्क्त्याः १३.५८. [पञ्च परिमाणमस्येति विग्रहे 'पङ्क्तिविंशति०' अ० ५.१.५९. सूत्रेण पङ्क्तिः शब्दो निपात्यते । पञ्चन्प्राति० ति प्रत्यये टिलोपः । पञ्चपदा पंक्तिः ऐ० ५.१८. पञ्चाक्षरा पङ्क्तिः तै० २.७.१०.२. चत्वारिंशदक्षरा पंक्तिः कौ० १७.३. पङ्क्तिर्विष्णोः पत्नी गो० उ० २.२.९. पंक्तिर्वै तन्त्रं छन्दः श० ८.२.४.३. पृथुरिव वै पंक्तिः श० १२.२ ४.६. पक्षौ पंक्तयः श० ८.६.२.३. श्रोत्रं पंक्तिः श० १०.३ १.१. पंक्तिरूर्ध्वा (दिक्) श० ८.३.१.२२. पंक्तिः पञ्चपदा नि० ७.१२. पचि विस्तारे (चुरा०) धातोः क्तिन् । चतुर्भ्यः पादेभ्योऽग्रे गता विस्तृता पंक्तिश्छन्दसंज्ञा । पंक्तिर्वा अन्नम् ऐ० ६.२०. यजमानो वै पङ्क्तिः मै० ३.३.९. यज्ञस्य पङ्क्तिः (पत्नी) तै० आ० ३.९.२. अन्नं वै पंक्तिः ऐ० आ० १.१.३. गो० २.६.२.]

पचत् पचेत् ६.१७.११. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोर्लेट्]

पचतम् परिपक्वम् (पितुम्=अन्नम्) १.६१.७. **पचतः**=पाकं कुर्वन् (पुरोळाः=अन्नविशेषः) प्र०—अत्र पच-धातोरौणादिकोऽतच्-प्रत्ययः ३.२८.२. **पचतैः**=परिपाकपरिणामैः (प्राणैः) २३.१२. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽतच्-प्रत्ययः]

पचता पचतानि पक्तव्यानि (वस्तूनि) प्र०—अत्रौणादिकोऽतच् २१.६०. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽतच् । पचतप्राति० शेर्लोपः]

पचता परिपक्वभावं प्राप्तेन (पुरोडाशेन=उत्तमाऽन्नेन व्यञ्जनेन च) २८.४६. **पचते**=परिपक्वं सम्पादयते (सत्पुरुषाय) २.१२.१५. **पचन्**=पाचयन् २८.३३. **पचन्तम्**=पाकं कुर्वन्तम् (सज्जनम्) २.२०.३. परिपक्वं कुर्वन्तम् (सत्पुरुषम्) २.१२.१४. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

पचत्यम् पचने साधुम् (पुरोळाशं=अन्नविशेषम्) ३.५२.२. [पचनप्राति० साध्वर्थे यत् । नकारस्य तकारो वर्णव्यत्ययेन]

पचनम् पाकसाधनम् (कार्यम्) २५.२९. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः करणे ल्युट्]

पचन्ति पकाते हैं सं० वि० २१०, अथर्व० ९.६. २.१३. **पचन्तु**=परिपक्वं कुर्वन्तु १.१६२.१०. परिपक्वां कुर्वन्तु ११.६१. भा०—अग्नौ जुहुयुः २५.३३. संस्कारयुक्तं कुर्वन्तु, दृढबलधारिणीं वा कुर्वन्तु ११.१६. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोर्लेट्]

पचात् पचेत् ४.२४.७. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोर्लेट्]

पच्यते परिपक्वो भवति १.१३५.८. **पच्यन्ताम्**= परिपक्वा भवन्तु २२.२२. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट् । अन्यत्र लोट्]

पच्यमानात् भा०—पीड्यमानात् (गात्राद्=अङ्गात्) २५.३४. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

पच्यस्व परिपक्वो भव १०.३१. परिपक्वां कुरु १९.१. पचस्व पाचय वा १९.१. उद्यतो भव, शुद्धबुद्धिमन्तं दृढपुरुषार्थं वा कुर्वन्तु १०.३१. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन श्यन्]

पज्रहोषिणा पज्रः सङ्गतो होषो घोषो वाग्ययोस्तौ (इन्द्राग्नी=अध्यापकोपदेशकौ) ६.५९.४. [पज्र-होषपदयोः समासे मत्वर्थे इनिः । ततः 'सुपां सुलुगि' ति सूत्रेणाकारादेशः । पज्रहोषिणा=प्राजितहोषिणौ नि० ५.२२. पज्रः=पद गतौ (दिवा०) धातोरौणादिको रक्-प्रत्ययः दस्य जः । होषः=घोषः । घस्य हकारश्छान्दसः]

पज्रः प्राजितैश्वर्यः (राजपुरुषः), प्र०—पृषोदरादित्वादिष्टसिद्धिः ३३.५०. बलिष्ठः (विद्वज्जनः) १.१५८.३. **पज्राः**=प्रपन्नाः (प्रजाजनाः) १.१२६.५. पद्यन्ते गच्छन्ति मार्गान् यैस्ते (रथाः) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन दस्य जः १.१२६.४. प्राप्ताः (अधर्माचारिणो जनाः) १.१९०.५. **पज्रे**=गमके (रथे) १.१२२.७. **पज्रेषु**=शिल्पव्यवहारेषु, प्र०—अत्र पन धातोर्बाहुलकादौणादिको रक् प्रत्ययो वर्णव्यत्ययेन जकारादेशश्च १.५१.१४. [पद गतौ (दिवा०) पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्वा औणादिके रक्-प्रत्यये छान्दसं रूपं, पृषोदरादित्वात् साधनीयम्]

पज्राम् गन्त्रीम् (युवतिम्) १.१६७.६. [पज्रप्राति० स्त्रियां टाप् । पज्र इति व्याख्यातम्]

पज्रासः विज्ञापयितॄणि मित्राणि १.११७.१०. [पज्रप्राति० जसोऽसुगागमः । पज्र इति व्याख्यातम्]

पज्रियः यः पज्रान् प्राप्तव्यान् बोधानर्हति सः (विद्वान् जनः) १.१२०.५. **पज्रियाय**=प्रज्रेषु पद्रेषु पदेषु भवाय (विद्यार्थिने) प्र०—अत्र पदधातोरौणादिको रक्, वर्णव्यत्ययेन दस्य जः । ततो भवाऽर्थे यः १.११६.७. **पज्रियेण**=प्राप्तव्येषु भवेन (कक्षीवता=विदुषा जनेन) १.११७.६. [पज्र इति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे घः प्रत्ययः । घस्येयादेशः]

पञ्च पञ्चानां निकृष्टमध्यमोत्तमोत्तमतरोत्तमतमानां पञ्चविधानाम् (क्षितीनां=पृथिवीलोकानाम्) १.७.९. भूतानि पञ्च २.१३.१०. ब्रह्मण-क्षत्रिय-वैश्य-शूद्र-निषादानाम् १.१७६.३. प्राणाऽपानव्यानोदानसमानान् २.३४.१४. पञ्चत्व विशिष्टा गणना १८.२४. पांच प्राण, आर्याभि० १.१७, ऋ० १.६.१६.१०. एतत्सङ्ख्याकाः (जनाः=मनुष्याः प्राणा वा) २५.२३. भूम्यादीनि पञ्चतत्त्वानि ५.३५.२. पूर्वादिचतस्रो मध्यस्था चैका (दिशः=आशाः) १७.५४. पञ्चभिरुत्क्षेपणादिभिः कर्मभिः, प्र०—'उत्क्षेपणमवक्षेपण०' वैशे० १.७. अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति भिसो लुक् १.९. अध्यापकोपदेशकाऽध्येत्र्युपदेश्यसामान्याः १.१२२.१३. यथाऽग्निवायु-मेघ-विद्युत्-सूर्य-मण्डल-प्रकाशास्तथा १.१०५.१०. पञ्चज्ञानेन्द्रियवृत्तयः ३४.४. **पञ्चभिः**=होत्रध्वर्यूद्गातृ-ब्रह्म-सभ्यैर्ऋत्विग्भिः ३.७.७. समान-चित्त-बुद्ध्यहङ्कार-मनोभिः १४.२८. **पञ्चसु**=भूतेषु तन्मात्रासु वा २३.५२. राज्य-सेना-कोश-दूतत्व-प्राड्विवाकत्वसम्पन्नेष्वधिकारिषु ३.३७.९. [पञ्च पृक्ता संख्या स्त्रीपुंनपुंसकेष्वविशिष्टा नि० ३.८. पचि व्यक्तीकरणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकः कनिन् प्रत्ययः । पञ्चति व्यक्तीकरोतीति विग्रहः]

पञ्चजनाः पञ्च-प्राणा इवोत्तम-मनुष्याः, प्र०—पञ्चजना इति मनुष्यनाम, निघं० २.३, ६.५१.११. [पञ्चन्-जनपदयोः समासः । पञ्चजनाः मनुष्यनाम निघं० २.३. पञ्चजनाः=गन्धर्वाः पितरो देवा असुरा रक्षांसीत्येके, चत्वारो वर्णा निषादः पञ्चम इत्यौपमन्यवः नि० ३.८.]

पञ्चदश पञ्चोत्तरा दश (सङ्ख्या) १८.२४. **पञ्चदशभिः**=प्रतिपदादि-तिथिभिः १४.२९. [पञ्चन्-दशन्पदयोः समासः]

पञ्चदशम् चत्वारो वेदाश्चत्वार उपवेदाः षडङ्गानि च मिलित्वा चतुर्दशविद्यास्तासां संख्यापूरकं क्रियाकौशलम् (स्तोमम्) ९.३४. **पञ्चदशः**=पञ्चदशानां तिथीनां पूरकः (पौर्णमासी) १३.५५. पञ्चदशानां पूरणः (स्तोमः=स्तोता) २९.२१. पञ्चदशानां पूरणः पञ्चदशविधः (भान्तः=प्रकाशः १४.२३. प्राणेन्द्रिय-भूतानां पञ्चदशानां पूरकः (ग्रीष्मर्त्तुः) १०.११. **पञ्चदशाय**=पञ्च दश च यस्मिन् सन्ति तस्मै (इन्द्राय=ऐश्वर्याय) २९.६०. [पञ्चन्-दशन्पदयोः समासे कृते पूरणार्थे डट् । पञ्चदशो हि वज्रः श० ४.३.३.४. पञ्चदश एव महः गो० पू० ५.१५. चन्द्रमा वै पञ्चदशः । एष हि पञ्चदश्यामपक्षीयते पञ्चदश्यामापूर्य्यते तै० १.५.१०.५. अर्धमासः पञ्चदशः तां० ६.२.२. ग्रीवाः पञ्चदशश्चतुर्दश ह्येवैतस्यां करूकराणि

भवन्ति वीर्यं पञ्चदशम् गो० पू० ५.३. प्राणो वै त्रिवृदात्मा पञ्चदशः तां० १९.११.३. क्षत्रं पञ्चदशः ऐ० ८.४. तस्माद्राजन्यस्य पञ्चदश स्तोमः तां० ६.१.८. त्रैष्टुभः पञ्चदशस्तोमः तां० ५.१.१४. पञ्चदशो वै राजन्यः तै० सं० २.५.१०.१. पञ्चदशौ ते अग्ने बाहू काठ० ३९.२. बाहू वै पञ्चदशस्तोमानाम् जै० २.१३५. यजमानो वै पञ्चदशः मै० ४.७.६. यज्ञः पञ्चदशो वज्रमेवोपरिष्टाद् दधाति, रक्षसामपहत्यै काठ० २०.१३. तै० सं० ७.३.६.२. येन प्रतितिष्ठति स पञ्चदशः जै० १.२५३. वीर्यं वै बृहद् वीर्यं पञ्चदशः जै० २.४०७. पञ्चदशं माध्यन्दिनं सवनम् मै० ४.४.१०.]

पञ्चदशाक्षरेण आसुर्य्या गायत्र्या (छन्दसा) ९.३४. [पंचदश-अक्षरपदयोः समासः]

पञ्चधा पञ्च ज्ञानेन्द्रिय-शब्दादिविषयप्रतिप्रादनेन पञ्चप्रकाराः ३४.११. [पञ्चन् संख्यावाचिनः प्राति० 'संख्याया विधार्थे धा' अ० ५.३.४२. सूत्रेण धा-प्रत्ययः]

पञ्चपञ्च पञ्चपञ्च प्राणाः ३.५५.१८. [पञ्चन्-शब्दस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

पञ्चपादम् पञ्च क्षण-मुहूर्त्त-प्रहर-दिवस-पक्षाः पादा यस्य तं संवत्सरं सूर्यं वा १.१६४.१२. [पञ्चन्-पादपदयोः समासः]

पञ्चमी पञ्चानां पूरणा (क्रिया) २५.४. (पञ्चन्-प्राति० पूरणार्थे डटि मडागमे च स्त्रियां ङीप्]

पञ्चरश्मिम् पञ्च प्राणापान-व्यानोदान-समाना रश्मय इव यस्मिँस्तम् [रथं=रमणीयं यानम्) २.४०.३. [पञ्चन्-रश्मिपदयोः समासः]

पञ्चविंशति पञ्चाधिका विंशतिः (संख्या) १८.२४. पञ्चन्विंशतिपदयोः समासः]

पञ्चविंशः पञ्चविंशतिप्रकारः (स्तोमः=स्तोतव्यो विद्वानधिपतिः) १४.२५. पञ्चविंशतिधा (ओजः=पराक्रमः) १४.२३. [पञ्चविंशतिप्राति० 'स्तोमे डविधिः पञ्चदशाद्यर्थः' अ० ५.१.५८. वा० सूत्रेण डः प्रत्ययः]

पञ्चहोता पञ्च प्राणा होतार आदातारो यस्याः सा (गीः=वाक्) ५.४२.१. [पञ्चन्-होतृपदयोः समासः। संवत्सरो वै पंचहोता तै० २.२.४.६. अग्निः पञ्चहोतृणां होता तै० २.३.५.६. सुवर्ग्यो वै पञ्चहोता तै० २.२.८.२. तस्मै (ब्रह्मणे) पञ्चमं हूतः प्रत्यशृणोत्। स पञ्चहूतोऽभवत् पञ्चहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं पञ्चहूतं सन्तं पञ्चहोतेत्याचक्षते परोक्षप्रिया इव हि देवाः तै० २.३.११.३-४.]

पञ्चाक्षरेण दैव्या पङ्क्त्या (छन्दसा) ९.३२.

पञ्चारे पञ्च तत्त्वानि अरा यस्मिँस्तस्मिन् (चक्रे) १.१६४.१३. [पञ्च-अरपदयोः समासः। अरा प्रत्यृता नाभौ नि० ४.२७.]

पञ्चावयः पञ्चाऽवयो येषान्ते (पशुपालका जनाः) २४.१२. **पञ्चाविम्**=या पञ्च प्राणान् रक्षति ताम् (गां=पृथिवीम्) २८.२६. **पञ्चाविः**=पञ्चेन्द्रियाण्यवन्ति येन सः (ओषधिः) १४.१०. पञ्चाऽवयो यस्य सः (जनः) १८.२६. यः पञ्चभिरव्यते रक्ष्यते सः (गौः=विद्वज्जनः) २१.१४. [पञ्चन्-अविपदयोः समासः। अविः=अवरक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरौणादिक इन्]

पञ्चावी तत्स्त्री १८.२६. [पञ्चाविरिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष्]

पञ्चाशतम् पञ्चाशत्संख्यायुक्तं विज्ञानम् ५.१८.५. **पञ्चाशतः**=एतत्सङ्ख्याताः (सेनाः) १.१३३.४. [पञ्च दशतः परिमाणमस्येति विग्रहे पंचाशत् शब्दो निपात्यते 'पंक्तिविंशति०' अ० ५.१.५९. सूत्रेण। पञ्चाशत् प्राति० मत्वर्थीयस्य लुक्]

पठर्वा ये पठन्ति तान् विद्यार्थिन ऋच्छति प्राप्नोति स सेनाध्यक्षः १.११२.१७. [पठ् इत्युपपदे ऋ गतौ (भ्वा०) धातोर्वनिप् प्रत्ययः। पठ्=पठ व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पड्वीशम् पादबन्धनमाच्छादनं वा १.१६२.१४. प्राप्तानां पदार्थानां विभाजकम् (विद्युदग्निम्) १.१६२.१६. यत्पादेषु विशति तत् (भा०—अश्वस्य गतिविशेषः) २५.३८. पद्भिर्विशन्तम् (अश्वम्) २५.३९. **पड्वीशात्**=न्यायविरोधाचरणात्, भा०—विरोधात् १२.९०. [पादोपपदे विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर् मूलविभुजादित्वात् कः। पादस्य पदादेशो धातोरिकारस्य च दीर्घश्छान्दसः]

पड्भिः पादैः, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन दस्य डः २३.१३. विज्ञानादिभिः ४.२.१२. [पादप्राति० तृतीयाबहुवचने 'पद्दन्नोमास्०' इत्यादिना पदादेशः। वर्णव्यत्ययेन दस्य डादेशः। पड्भिः=पानैरिति वा स्पाशनैरिति व स्पर्शनैरिति वा क्वचित् नि० ५.३.]

पणयः प्रशंसनीयाः (स्त्रियः) ४.५१.३. व्यवहरमाणाः (वणिजो जनाः) १.१५१.९. व्यवहारिणः (असज्जनाः) ३५.१. व्यवहारयुक्ताः (जनाः) १.१२४.१०. व्यवहारज्ञाः (सज्जनाः) ६.२०.४. **पणिना**=व्यवहर्त्रा वणिग्जनादिना ४.२५.७. **पणिभिः**=व्यवहारज्ञैः स्तावकैः

(आप्तैर्मनुष्यैः)१७.९२. प्रशंसितैर्व्यवहर्त्तृभिः (विद्वन्मनुष्यैः) ४.५८.४. पणयो व्यवहाराः स्तुतयश्च ताभिः २.१७. **पणिम्**=व्यवहारम् १.९३.४. प्रशंसनीयम् (वेदज्ञानम्) ६.६१.१. व्यवहर्त्तारम् (स्तेन-जनम्) ६.५१.१४. **पणिः**=प्रशंसितः (विद्वान् जनः) ५.६१.८. सत्यव्यवहारः १.३३.३. व्यवहर्त्ता (जनः) १.१८०.७. **पणीन्**=प्रशस्तव्यवहारकर्त्रीन् (अध्येतॄनुपदेश्यांश्च) १.१८४.२. प्रशंसनीयान् व्यवहारान् ६.३९.२. व्यवहर्त्तॄन् (विद्यार्थिनः) ७.१९.९. प्रशंसितान् (सज्जनान्) ६.३३.२. **पणीनाम्**=द्यूतादिव्यवहार-कर्त्तॄणाम् (कितवानाम्) ६.५३.५. प्रशंसितानां व्यवहर्त्तॄणाम् (व्यापारिकानां जनानाम्) ६.४५.३१. स्तुत्यव्यवहारकर्त्तॄणाम् (प्रजाजनानाम्) ७.९.२. व्यवहारनिष्ठानां प्रशंसनीयानां नृणाम् २.२४.६. **पणेः**=स्तूयमानस्य (प्रजाजनस्य) ५.३४.७. स्तुत्यव्यवहारस्य १.८३.४. प्रशंसितव्यवहारकर्त्तुः (सत्पुरुषस्य) ६.५३.६. द्यूतकर्त्तुः (पाखण्डिजनस्य) ६.५३.३. व्यवहारस्य ३.५८.२. सदसद्व्यवहर्त्तुः (जनस्य)१.१८२.३.[पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोरौणादिक इन्। पणिः पणनात् नि० २.१७. पणीन्=वणिजः नि० ६.२७.]

पणिनेव गोपालेन वणिग्जनेनेव १.३२.११. [पणिनाइवपदयोः समासः। पणिरिति व्याख्यातम्]

पण्यमानः स्तूयमानः (मित्रः=सुहृज्जनः) ८.५५. [पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

पत गृहाण १२.४. प्रपातय १२.८७. पतति गच्छति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च ३.४९. गच्छ ४.३४. **पतत्**=पतति ४.२७.४. पतति गच्छति प्राप्नोति वा ३.३९.३. **पतथ**=अद्य आगच्छत १.१६८.६. **पतथः**=गच्छथः १.१८३.१. **पतन्ति**=पतन्तु गच्छन्तु, प्र०—लोडर्थे लट् १.२५.४. उपरिष्टादधः पतन्ति १.७९.२. प्राप्नुवन्ति १.१६४.४७. श्येनवच्छत्रुदले सञ्चरन्ति १३.१०. **पतसि**=गच्छसि २.१६.३. **पतात्**=गच्छेत् १.४६.३. **पतामि**=प्राप्नोमि १.३३.२. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोटि लटि च रूपाणि]

पतङ्गम् यः प्रतिपातं गच्छति तम् (अग्नि=अश्वम्) १.१६३.६. सूर्यं प्रति २९.१७. **पतङ्गान्**=अश्वान्, प्र०—पतङ्गा इत्यश्वनाम, निघं० १.१४, १३.१०. अग्निकणा इव वर्त्तमानानश्वान् ४.४.२. **पतङ्गाय**=पतति गच्छतीति पतङ्गस्तस्मा अग्नये, अ०—पतन-पातनादिगुणप्रकाशिताय, भा०—तद्गुणप्रकाशाय ३.८. **पतङ्गाः**=सूर्य इव देदीप्यमानाः (आशवः=अश्वाः) १.११८.४. **पतङ्गैः**=अश्ववद् वेगिभि रथैः १.११६.४. प्रतिपातं वेगेन गन्तृभिः (रथैः) ऋ० भू० १९०, ऋ० १.८.८.४. [पतङ्गाः अश्वनाम निघं० १.१४. पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'पतेरङ्गच् पक्षिणि' उ० १.११९. सूत्रेणाङ्गच्-प्रत्ययः। बहुलवचनात् पक्षिणोऽन्यत्रापि। पतङ्गः=पतन्निव ह्येत्वङ्गेष्वेति रथमुदीरते। पतङ्ग इत्याचक्षते जै० उ० ३.३५.२. प्राणो वै पतङ्गः कौ० ८.४.]

पतङ्गरः यः पतङ्गेऽग्नौ रमते, पतङ्गं ददाति वा सः (राजा) ४.४०.२. [पतङ्गोपपदे रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः, रा दाने (अदा०) धातोर्वा डः प्रत्ययः]

पततः पतनशीलस्य (मनुष्यस्य) ६.४.५. **पतताम्**=गच्छताम् (वीनां=विमानानां सर्वलोकानां पक्षिणां वा) १.२५.७. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

पतत्रि पतनशीलम्, भा०—सद्यो गमयितारम् (शिरः=विमानम्) २९.१७. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'पतेरत्रिन्' उ० ४.६९. सूत्रेणात्रिन् प्रत्ययः]

पतत्रिणम् पतत्रः शीघ्रं गन्तुं बहुवेगो यस्यास्ति तम् (पक्षिणम्) १९.१०. **पतत्रिणः**=पक्षिणः १.५८.५. शत्रवः पक्षिणो वा १.९४.११. पतनशीलाः (वयः=पक्षिणः) प्र०—अत्र 'पतेरत्रिन्' उ० ४.६९. अनेनाऽयं सिद्धः १.४९.३. **पतत्रिणौ**=पतत्राण्यूर्ध्वगमनानि सन्ति ययोस्तौ (पक्षौ=परिग्रहौ कार्यकारणरूपौ) १८.५२. **पतत्रिभिः**=गमनशीलैः (पक्षिभिः) ६.६२.६. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'पतेरत्रिन्' उ० ४.६९. सूत्रेणात्रिन् प्रत्ययः। अथवा पत् धातोः 'अमिनक्षि०' उ० ३.१०५. सूत्रेणात्रन्-प्रत्ययः। ततो मत्वर्थं इनिः]

पतत्रिणी पतितुं विनाशयितुं कुशिक्षे १.१५८.४. **पतत्रिणीः**=पतितुं गन्तुं शीलाः (सीराः=नदीः) १२.८३. [पतत्रिन् इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' इति ङीप्]

पतत्रैः गमनशीलैः परमाण्वादिभिः, भा०—अतिसूक्ष्मैः कारणैः १७.१९. प्राप्त होने वाले (सुख-दुःख फलों से) आर्याभि० २.३४, १७.९. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अमिनक्षि०' उ० ३.१०५. सूत्रेणात्रन्-प्रत्ययः]

पतन्तीः गच्छन्तीः (हरितः=हरितवर्णाः किरणाः) ५.२९.५. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् स्त्रियाम्]

पतयत् पतिरिवाऽऽचरति इति तत् (कविः=विद्वान्) ५.४५.९. यत् पतिं करोतीति पतित्वसम्पादकं तत् (विज्ञाना-

दिधनम्), अ०—स्वामित्व-सम्पादकं, प्र० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति पतिशब्दाण्णिच् १.४.७. गच्छन् (सूर्यः) १.१५२.५. **पतयत्सु**=पतिरिवाचरत्सु (व्यवहारेषु) ६.६.५. **पतयद्भिः**=इतस्ततो धावयद्भिः (विद्वद्भिः) १.१५८.३. पतन्तं गच्छन्तम् (आत्मानम्) २९.१७. गमयन्तम् (अग्निम्=अश्वम्) १.१६३.६. **पतयन्तः**=ऊर्ध्वमधो गच्छन्तः (पक्षिणः) १.१५५.५. इतस्ततः चलन्तः सन्तः (पक्षिसमूहा, दृश्यादृश्याः सर्वलोका वा) १.२४.६. पतिरिवाचरन्तः (भूम्यादिलोकाः) ४.५४.५. [पतिप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति वा० सूत्रेण पतिशब्दाण् णिचि शतरि च रूपम्। पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्वा णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः। पतयति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

पतयत् पतिः स्वामी पालक इवाऽऽचरेत् ६.७१.५. **पतयन्त**=पतिमिवाचरन्तु, प्र०—अत्राऽडभावः १.१६६.७. **पतयन्ति**=पतिरिवाचरन्ति १.९. पतिमाचक्षन्ते ३.५५.३. पतन्ति गच्छन्ति, प्र०—चुरादित्वात् स्वार्थे णिच् १७.६५. [पतिप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिजन्ताल्लेट्। अथवा पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः स्वार्थे णिचि लेटि रूपम्]

पतयः स्वामिनः (जनाः) १९.६१. पालकाः (जनाः) २०.५१. पालकाः स्वामिनः (प्रजाजनाः) ६.४७.१२. अधिष्ठातारः (पित्रध्यापकादयः) १९.५४. **पतये**=स्वामिने (जनाय) १८.२८. रक्षकाय (सेनाधीशाय), पालकाय (सेनाधीशाय), प्र०—अत्र 'षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा' इति घिसंज्ञा १६.१७. पालकेश्वराय ७.१. विघातकाय (राजपुरुषाय) १६.२१. दण्डेन निपातयित्रे (राजपुरुषाय) १६.२१. पातयिष्णवे (प्रजाजनाय) १६.२१. दण्डादिशोषकाय (पुरुषाय) १६.२०. पालकाय (सेनापतये) १६.२०. प्रपातकाय (राजपुरुषाय) १६.२२. **पतिभ्यः**=गृहीतपाणिभ्यः (देवेभ्यः=दिव्यगुणेभ्यो जनेभ्यः) २९.३०. **पतिम्**=यः पाति रक्षति चराचरं जगत्तमीश्वरं, यः पाति रक्षति सज्जनाँस्तम् (इन्द्रं=परमात्मानं वीरपुरुषं वा) १.११.१. पालकं स्वामिनम् १.११७.७. सर्वाऽधिस्वामी (ईश्वर) को आर्याभि० १.१०, ऋ० १.६.१५.५. पालयितारम् (अग्निम्) १.६०.५. पालकं सूत्रात्मानम् ५.४६.३. अखिलैश्वर्यं स्वामिनम् १२.५६. पालकं पाणिग्रहीतारम् १.७१.१. **पतिः**=पालको यजमानः १७.५२. पालयिता पालनहेतुर्वा अ०—पालकः (अग्निः=सर्वस्वामीश्वरः, प्रकाशादिगुणवान् भौतिको वा) ३.१२. अधिष्ठाता (इन्द्रः=सेनापतिः) १.१०१.५. प्रचारेण रक्षकः (परमेश्वरः) ११.७. स्वामीश्वरो राजा वा ७.३५.१०. न्यायाधीशः स्वामी १.४०.५. पालको धनकोशेशः ६.७५.१७. **पति**=अन्योऽन्यस्य पालकौ (दम्पती) १.११६.५. पालयितारौ (इन्द्रवायू=विद्युत्पवनौ) १.२३.३. **पते!**=स्वामिन्नीश्वर १.१८.१. पालक सेनेश ५.३५.५ **पतेः**=पत्युः प्र०—अत्र 'षष्ठीयुक्तश्छन्दसि वा' इति पतिशब्दस्य घिसंज्ञा २.२४.१४. **पत्युः**=उसी नियुक्त पति का सं० वि० १५२, १०.१८.८. **पत्ये**=पति की प्रसन्नता के लिए सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.२. स्वस्वामिने १.१२४.७. [पतिः=पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'पातेर्डतिः' उ० ४.५७. सूत्रेण डतिः प्रत्ययः। पाति रक्षतीति पतिः। पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्वा औणादिक इन्प्रत्ययः]

पतयिष्णु गमनशीलम् (यानम्) १.१६३.११. पतनशीलम् (भा०—अनित्यं शरीरम्) २९.२२. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताण् 'णेश्छन्दसि' अ० ३.२.१२७. सूत्रेण ताच्छील्ये इष्णुच्-प्रत्ययः]

पतरम् पतन्तम् (अग्निम्) २.२.४. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽरः प्रत्ययः]

पतरोरिव गन्तुरिव (अर्णवस्येव) १.१८२.७. [पतरु-इवपदयोः समासः। पतरुः=पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० अरुः प्रत्ययः]

पताति पतेत् ७.२५.१. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लेट्]

पतिजुष्टा पति की सेवा में तत्पर पतिव्रता नारी आर्याभि० १.४६, ऋ० १.५.१९.३. [पति-जुष्टपदयोः समासः। जुष्टम्=जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः क्तः। ईदित्त्वादनिट्त्वम्]

पतिजुष्टेव पतिर्जुष्टः प्रीतः सेवितो यया तद्वत् १.७३.३. [पतिजुष्टा-इवपदयोः समासः]

पतित्वम् पालकभावम् १.११९.५. [पतिप्राति० भावे त्वः प्रत्ययः]

पतिरिपः पत्युर्भूमिः, प्रा०—रिप इति पृथिवीनाम निघं० १.१, ४.५.५. [पति-रिपपदयोः समासः। रिप इति पृथिवीनाम निघं० १.१.]

पतिलोकम् पतिसुखम् ऋ० भू० २११, अथर्व० १८.३.१.१. पति के घर वा सुख को सं० वि० १३४, १०.८५.४३. [पति-लोकपदयोः समासः]

पतिवेदनम् पाति रक्षति स पतिः, पतेर्वेदनं प्रापणं ज्ञानं वा यस्मात्तम् (त्र्यम्बकं=सर्वाध्यक्षं रुद्रम्) ३.६० [पति-वेदनपदयोः समासः। वेदनम्=विद्लृ लाभे (तुदा०)

विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्वा ल्युट्]

पतेम गच्छेम १८.५२. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

पत्तवे पत्तुं प्राप्तुम् ४.१८.१. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्-प्रत्ययः]

पत्तीनाम् सेनाऽङ्गानाम् १६.१६. [पद गतौ (दिवा०) धातोः 'पदिप्रथिभ्यां नित्' उ० ४.१८३. सूत्रेण तिः प्रत्ययः]

पत्नी स्त्री १६.६४. भार्या सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५१. पत्नीवद्वर्त्तमाना (उषाः=प्रभातवेला) ३.६१.४. **पत्नीभिः**=स्वस्वस्त्रीभिः १५.५०. **पत्नीभ्यः**=भार्याभ्यः २४.५. पालिकाभ्यः क्रियाभ्यः २४.६. स्त्रीभ्यः २४.२४. **पत्नीम्**=स्त्रीवद् वर्त्तमानाम् (महीं=भूमिम्) २१.५. **पत्नीः**=यज्ञसम्बन्धिनीः स्त्रियः १.१४०.६. द्रव्याणां शक्तयः, प्र०—पत्युर्नो यज्ञसंयोगे, अ० ४.१.३३. अनेन ङीष् प्रत्ययो नकारादेशश्च। इयं वै पृथिव्यदितिः सेयं देवानां पत्नी शत० ५.२.५.४. 'देवानां पत्न्य उशत्योऽवन्तु नः प्रावन्तु नः स्तुतयेऽपत्यजननाय चाऽन्न संसननाय च याः पार्थिवासो या अपामपि व्रते कर्मणि ता नो देव्यः सुहवाः शर्म यच्छन्तु शरणम्। अपि च ग्ना व्यन्तु देवपत्न्य इन्द्राणीन्द्रस्य पत्न्य ग्नाय्यग्नेः पत्न्यश्विन्यश्विनोः पत्नी राड्राजते रोदसी रुद्रस्य पत्नी वरुणानी च वरुणस्य पत्नी व्यन्तु देव्यः कामयन्तां च ऋतुः कालो जायानां य ऋतुकालो जायानाम् नि० १२.४६. देवानां विदुषां पालनयोग्याऽग्न्यादीनां स्थित्यर्थेयं पृथिवी वर्त्तते तस्माद् देवपत्नीत्युच्यते। यस्मिन् यस्मिन् द्रव्ये या याः शक्तयः सन्ति तास्तास्तेषां द्रव्याणां पत्न्य इवेत्युच्यन्ते १.२२.६. स्त्रीः ११.६१. भार्या युवतयः १.६२.११. पत्न्यः १.१०३.७. दारान् १.१८६.७. **पत्न्यः**=स्त्रियः २३.३६. **पत्न्या**=युद्धादौ संगमनीये यज्ञे संयुक्तया स्त्रिया १.८२.६. **पत्न्यौ**=स्त्रीवद्वर्त्तमाने (अहोरात्रे) ३१.२२. [पतिप्राति० स्त्रियाम् 'पत्युर्नो यज्ञसंयोगे' अ० ४.१.३३. सूत्रेण ङीष् नकारान्तादेशश्च। श्रियै वा एतद्रूपं यत् पत्न्यः श० १३.२.६.७. गार्हपत्यभाजो वै पत्न्यः कौ० ३.६. अथो अर्द्धो वा एष आत्मनः, यत्पत्नी तै० ३.३.५. जघनार्धो वा ऽएष यज्ञस्य यत्पत्नी श० १.३.१.१२. पूर्वार्धो वै यज्ञस्याध्वर्युर्जघनार्धः पत्नी श० १.६.२.३. पत्नी धाय्या गो० उ० ३.३१. पत्नी स्थाली तै० २.१.३.१. पत्नी भाजनं वै नेष्टा ऐ० ६.३. गो० उ० ४.५. अन्तभाजो वै पत्न्यः कौ० १६.७. अर्धात्मा वा एष यजमानस्य यत् पत्नी जै० १.८६. गृहा वै पत्न्यै प्रतिष्ठा श० ३.३.१.१०. पत्नी हि सर्वस्य मित्रम् तै० सं० ६.२.६.२. श्रद्धा पत्नी तै० आ० १०.६४.१. यद्वै पत्नी यज्ञे करोति तन् मिथुनम् तै० सं० ६.२.१.१.]

पत्नीवतः प्रशस्ता पत्नयो विद्यन्ते येषां तानस्मान् (सुगृहस्थान् जनान्) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.१४.७. प्रशस्ता यज्ञसम्बन्धिनी जाया यस्य तस्य (बृहस्पतिसुतस्य=गृहपत्युः पुत्रस्य) ८.६. **पत्नीवद्भिः**=बह्वयः पत्न्यो विद्यन्ते येषु तैः (वरूथैः=उत्तमैर्गृहैः) ४.५६.४. **पत्नीवन्** !=प्रशस्ता यज्ञसम्बन्धिनी पत्नी यस्य तत्सम्बुद्धौ। (गृहपते) ८.१०. **पत्नीवन्तः**=प्रशस्ता विद्यायुक्ता यज्ञसम्बन्धित्यः स्त्रियो विद्यन्ते येषान्ते. (विद्वांसो जनाः) १.७२.५. [पत्नीति व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायामर्थे मतुप्]

पत्नीशालम् पत्न्याः शाला पत्नीशालम् १६.१८. [पत्नीशाला पदयोः समासे 'विभाषा सेनासुरा०' अ० २.४.२५. सूत्रेण नपुंसकत्वे ह्रस्वत्वम्]

पत्नीसंयाजान् ये पत्न्या सह समिज्यन्ते तान् (जनान्) १६.२६. [पत्नी-संयाजपदयोः समासः। संयाजः=सम्+यज देवपूजादिषु (भ्वा०) धातोर्घञ् प्रत्यये कुत्वाभावे रूपम्]

पत्मन् धर्मात् पतनशील (दुराचारिन् पते !) हे चञ्चलचेतः (दुराचारिन् पते) ८.४८. पतन्ति यस्मिन् मार्गे तस्मिन् ५.५.७. पतन्ति गच्छन्ति यस्मिन् मार्गे तस्मिन् ६.४.६. पत्मनि मार्गे ५.४१.३. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको मनिन्]

पत्मना उद्गमनेन ६.३.७. [पत्मन् इति व्याख्यातम्]

पत्यते पतिं कुर्वते (विदुषे जनाय) २.३७.२. [पतिपदाद् इच्छायामर्थे क्यजन्ताच् छतृप्रत्ययः]

पत्यते पतिरिवाचरति ३.५४.८. **पत्यसे**=पतिभावमाचरसि २.१.८. [पतिपदादाचारे 'उपमानादाचारे' सूत्रेण क्यङ्]

पत्यते प्राप्यते १.८४.६. प्राप्नोति ३.३६.४. **पत्येते**=श्रेष्ठैः प्राप्येते ८.५६. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

पत्यमानम् गम्यमानम् (पतिम्) ६.६६.१. **पत्यमानः**=ऐश्वर्यमिच्छन् (कविः=विद्वज्जनः) ६.४६.४. पतिः स्वामीवाचरन् (इन्द्रः=परमैश्वर्यो राजा) ३.५४.१५. प्राप्नुवन् (विद्वज्जनः) ३३.५५. **पत्यमानाः**=स्वामित्वं कुर्वाणाः (विद्वज्जनाः) २७.१६. पतिरिवाचरन्तः (सैनिका वीरपुरुषाः) ६.२७.६. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्। अथवा पति-पदादाचारे 'उपमानादाचारे' सूत्रेण क्यङ्। ततः शानच्]

पत्यमानाः पतिरिवाऽऽचरन्तीः (दिवः=ज्योतींषि) ३.५६.५. प्राप्नुवन्त्यः (स्त्रियः) ६.६५.३. [पतिपदादाचारेऽर्थे क्यङ् प्रत्ययान्ताच्छानच् । ततः स्त्रियां टाप्]

पत्रम् पक्षः १९.८६. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'दाम्नीशसयुयुज०' अ० ३.२.१८२. सूत्रेण करणे ष्ट्रन्-प्रत्ययः]

पत्वभिः गमनैः ५.६.७. **पत्वा**=पतति गच्छतीति सः (अग्निः=विदुषो सुसन्तानः) ११.४६. योऽधः पतति सः (अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१९. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति वनिप्]

पत्सुतःशीः यः पादेषु अधः शेते सः (वृत्रः=मेघः) प्र०—अत्र सप्तम्यन्तात् पादशब्दात् 'इतराभ्योऽपि दृश्यन्ते' अ० ५.३.१४. इति तसिल् 'वाच्छन्दसि' इति विभक्त्यलुक्, शीङ्धातोः क्विप् च १.३२.८.

पथस्पथः मार्गस्य मार्गस्य ३४.४२. मार्गान् मार्गान् ६.४९.८. [पथः पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

पथः धर्म-राज-प्रजा-मार्गात् १.४२.२. मार्गान् २७.१२. उत्तममार्गान् १.९०.४. **पथा**=उत्तममार्गेण १.१०५.१८. गृहाश्रममार्गेण ५.४७.६. **पथाम्**=मार्गाणाम् ९.१४. **पथि**=व्यवहार-मार्ग में आर्याभि० २.१८, ५.३३. मार्गे ५.३३. **पथिभिः**=सुमार्गैः ६.४.८. ज्ञान-मार्गैः, भा०—सर्वधर्म्यमार्गैः ३७.१७. **पन्थाः**=देवप्रतिपादितो मार्गः १.१०५.१६. मुक्ति का मार्ग आर्याभि० २.८, ३१.१८. मार्गाः, प्र०—अत्र वचनव्ययत्येनैकवचनम् ३४.२७. धर्ममार्गाः, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति जसः स्थाने सुः १.३५.११. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'पतः स्थः च' उ० ४.१२. सूत्रेण इनिः प्रत्ययः । थकारान्तादेशश्च]

पथिकृत् सकलसुकृन्मार्ग-प्रचारकः (बृहस्पतिः=परमेश्वरो) विद्वज्जनो वा २.२३.६. यः पन्थानं करोति (इन्द्रः=विद्वज्जनः) ६.२१.१२. [पथिन्-उपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुग्' इति तुगागमः]

पथिरक्षयः ये पथिषु विचरतां जनानां रक्षयो रक्षकाः (भा०—राजजनाः) १६.६०. [पथिन्-रक्षिपदयोः समासः । रक्षि=रक्ष पालने (भ्वा०) धातोरौणादिक इन्प्रत्ययः]

पथीनाम् मार्गाणाम् ५.१.११. मार्गे गन्तॄणाम्, भा०—गन्तुकानाम् (जनानाम्) २२.३३. [पथिन्-प्राति० षष्ठ्या बहुवचने रूपम्]

पथेव पथा मार्गेणेव १.१३९.४. [पथिन्-इवपदयोः समासः । समासे विभक्तेरलुक् च]

पथेष्ठाम् यो धर्मे पथि तिष्ठति तम् (जनम्) ५.५०.३. [पथोपपदे ष्ठा गति निवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । पथः=पथे गतौ (भ्वा०) धातोः पचाद्यच्-प्रत्ययः]

पथ्या पथोऽनपेता (स्त्री) ३.५४.५. स्वकक्षां विहायाऽन्यत्रागन्त्री (रात्रिः) ३.५५.१५. पथिषु साध्या (नीतिः) ७.१८.३. **पथ्याः**=पथि साध्वीर्वीथीः) ३.१२.७. पथे हिताः (वर्षाः) ५.५४.९. पथि साधवः (रायः=श्रियः) ६.१९.५. पथिषु साध्वीर्गतीः ६.६६.७. या धर्मपन्थानमर्हन्ति ताः (प्रजाः) ७.७.२. **पथ्याम्**=पथि साध्वीं गतिम् ७.४४.५. धर्ममार्गम्, ऋ० भू० २०२, ऋ० ८.१.२३.७. [पथिन्-प्राति० 'धर्मपथ्यर्थन्यायादनपेते' अ० ४.४.९२. सूत्रेणानपेतेऽर्थे यत् । ततः स्त्रियां टाप् । अथवा साध्वर्थे हितार्थे वा यत्]

पथ्याय पथि भवाय गन्तुकाय १६.३७. **पथ्ये**=पथोऽनपेते कर्मणि ५.५१.१४. [पथिन्-प्राति० भवार्थे यत् । अथवा अनपेतेऽर्थे पथिन्प्राति० यत्]

पथ्येव यथा पथि साध्वी गतिः, भा०—यथा धर्ममार्गः ११.५. [पथ्या-इवपदयोः समासः । पथ्येति व्याख्यातम्]

पत्सु पादेषु ९.८. **पदः**=प्राप्तव्यान् (चतुरः=धर्मार्थकाममोक्षान्) २३.२०. पदान् १.१४६.२. **पदा**=पादेन १.१३३.२. पदार्थप्राप्त्यो १.८४.८. प्रापकेण गमनरूपेण १.१६४.१७. पादाक्रमणेन १.४२.४. **पदि**=पद्यते जानाति प्राप्नोति येन व्यवहारेण तस्मिन्, प्र०—अत्र कृतो बहुलम्०' इति करणे क्विप् ४.१९. प्राप्तव्ये विज्ञाने ४.१२.६. **पद्भ्याम्**=सेवा-निरभिमानाभ्याम् ३१.११. पृथिवी-कारणसामर्थ्यात् ३१.१३. जो पग अर्थात् नीच अंग के सदृश मूर्खत्वादि गुणों से स० प्र० ११४, ३१.११. [पादः=पद गतौ (दिवा०) 'धातोः पदरुजविशस्पृशो घञ्' इति घञ् । पादप्राति० शस्प्रभृतिषु परेषु 'पद्दन्नोमास्०' इत्यादिना पदादेशः । पदा=पादेन नि० ५.१८.]

पदज्ञाः ये पदानि प्राप्तव्यानि धर्मार्थकाम-मोक्षाख्यानि साधितुं साधयितुं वा जानन्ति ते (अङ्गिरसः=प्राणविद्याविदो जनाः) १.६२.२. ये पदं प्राप्तव्यं जानन्ति ते (पितरः=विद्वांसो जनकाः) ३.५५.२. ये पदं ज्ञातव्यं प्रापणीयमात्मस्वरूपं जानन्ति ते (पितरः=ज्ञानिनो जनाः) ३४.१७. [पदोपपदे ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः कः प्रत्ययः]

पदपङ्क्तिः अयं लोकः १५.४.

पदम् पद्यते गम्यते यत्तत् (परमाण्वादिरूपम्) प्र०—अत्र 'घञर्थे क-विधानम्०' इति कः प्रत्ययः ५.१५. प्राप्तव्यं स्थानम् ३.५.५. यत् पद्यते प्राप्यते तत् (जगत्) १.२२.१७. अन्वेष्यं ज्ञातव्यं प्राप्तव्यं वा (मोक्षाख्यम्) १.२२.२०. प्रापणीयम् (जगदीश्वरम्) १.२२.२१. वेदितव्यम् (प्राण्यादिकं जगत्) १.१६४.२३. प्राप्तुमर्हम् (स्थानम्) ६.५. पत्तुं योग्यम् (स्थानम्) ६.३. पदनीयम् (स्थानम्) १.१४६.४. पद्यते प्राप्तोऽस्ति चराचरं जगत्तम् (सवितारं=जगदीश्वरम्) १.२२.५. विचारमयं शिल्पव्यवहारम् १.१०५.१. पदनीयं सर्वोत्तमोपायर्मनुष्यैः प्रापणीयं मोक्षाख्यम् ऋ० भू० ४३, ऋ० १.२.७.५. पाद-चिह्नम् ४.५.३. पदनीय अर्थात् जानने के योग्य उस पद को कि जिसको प्राप्त होके पूर्णानन्द में रहते हैं, वहां से फिर शीघ्र दुःख में नहीं गिरते आर्याभि० १.२१ १.२.७.२०. पदनीयं गन्तव्यमार्गम् १.२५.७. ऋ० **पदानि**=ज्ञातुं प्रापयितुं वा योग्यानि कारण-सूक्ष्म-स्थूलरूपाणि (जगन्ति) ३४.४३. प्राप्तुमर्हाणि (लोकान्) १.१५४.४. वेदितुं (योग्यानि चत्वारि नामाख्यातोपसर्गाख्यानि) १.१६४.४५. ज्ञातुमर्हाणि (त्रीणि=उत्पत्तिस्थितिप्रलयाः काला वा) ३२.९. पत्तुं प्राप्तुं ज्ञातुं योग्यानि (शास्त्राणि) १.१६४.५. व्याप्तव्यानि (ज्ञानानि) १.६७.३. जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करने के सामर्थ्य आर्याभि० २.२४, ३२.९. **पदाय**=प्राप्तव्याय (ईश्वराय) ७.४१.६. प्रापणीयाय (व्यवहाराय) ३४.३९. **पदे**=तले स्थाने २.१०.१. सर्वत्र प्राप्तेऽन्तरिक्षे १.२२.१४. प्रापणीये (मोक्षे) ५.४३.१४. प्राप्ते (स्थाने) ३.२९.४. प्रतिष्ठायाम्, भा०—अधिकारे ३४.१५. प्रापणे १.१४९.१. गन्तव्ये मार्गे १.४६.९. सृष्टि में स० प्र० ४२३, ९.८३.२. प्राप्तव्ये गुणसमूहे १.७२.४. **पदेन**=प्राप्तव्येन विज्ञानेन १.१३९.९. **पदेषु**=प्राप्तुं योग्येषु नामस्थानजन्माख्येषु २३.५०. **पदैः**=विभक्त्यन्तैः (शब्दैः) १९.२५. प्रत्यक्षेण प्राप्तैर्गुणनियमैः १.६५.१. [पद गतौ (दिवा०) धातोर् 'घञर्थे कविधानम्' इति क. प्रत्ययः। आत्मा वै पदम् कौ० २३.६. पादः पद्यतेः। तन्निधानात्पदम्। पशुपादप्रकृतिः प्रभागपादसामान्याद् इतराणि पदानि नि० २.८. पशवः पदम् मै० ३.७.७.]

पदवीः यः पदानि व्येति प्राप्नोति सः (जगदीश्वरः) ३.५६.४. यः पदं व्येति सः (इनः=ईश्वरः) ७.३६.२. यः प्राप्तव्यानि पदानि व्येति व्याप्नोति सः (विप्रः=मेधाविजनः) ३.५.१. प्रतिष्ठाः ३.३१.८. **पदव्यः**=सुखं प्राप्ताः (जीवाः) १.७२.२. [पदोपपदे वी गतिकान्त्यादिषु (अदा०) धातोः क्विप्। पदवीः=पदं वेत्ति नि० १३.७२.]

पदा प्राप्तुमर्हाणि (साङ्गोपाङ्गाँश्चतुरो वेदान् त्रीन् क्रियाकौशल-विज्ञानपुरुषार्थान्) १.७२.६. ·पदानि वेद्यानि प्राप्तव्यानि वा (धामानि), प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति लोपः १.२२.१८. प्राप्ति-साधकान् मुहूर्त्तान् ३३.९३. ज्ञातुं प्रापयितुं वा योग्यानि कारणसूक्ष्मस्थूलरूपाणि ३४.४३. [पद गतौ (दिवा०) धातोर्घञर्थे कः। पदप्राति० छन्दसि शेर्लोपः]

पदिम् पद्यते गम्यते या श्रीस्ताम् १.१२५.२. [पद गतौ (दिवा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' वा० सूत्रेण इक्-प्रत्ययः]

पदीष्ट पत्सीष्ट प्राप्नुयात्, प्र०—अत्र 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकाश्रयणात् सलोपः १.३८.६. पद्यते प्र०—अत्र 'लिङः सलोपोऽन०' इति सकारलोपः 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १.७९.११. [पद गतौ (दिवा०) धातोर्लिङ्]

पदे इव यथा पादौ तथा (रात्रिदिने) ३.५५.१५. [पदे-इवपदयोः समासः]

पदेभिः ज्ञातुमर्हैः (स्थूलसूक्ष्मातिसूक्ष्मैरवयवैः) १.१५४.३. [पद-गतौ (दिवा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः। छन्दसि भिस ऐस् न भवति]

पदे-पदे प्राप्तव्ये प्राप्तव्ये, वेदितव्ये वेदितव्ये, गन्तव्ये गन्तव्ये वा पदार्थे ५.४१.१५. [पदे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

पदेव पद्यन्ते यैस्तानि पदानि चरणानीव (व्रतानि=सत्याचरणरूपाणि कर्माणि) ५.६७.३. [पदा-इवपदयोः समासः। पदा=पदप्राति० शेर्लोपः]

पदेव पद्भ्यामिव ४.३१.५. [पदा-इवपदयोः समासः। पदा=पाद-प्राति० तृतीयैकवचने पदादेशः]

पद्यते प्राप्नोति ६.५४.३. अवगच्छति ४.१३.५. **पद्यस्व**=प्राप्नुहि १७.४५. **पद्ये**=प्राप्नोमि ३.४३. प्राप्नुयाम् ३६.१. [पद गतौ (दिवा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोट्]

पद्या पादेषु अंशेषु भवा (रात्रिः) ३.५५.१४. **पद्याभिः**=पत्तुं गन्तुं योग्याभिर्गतिभिः २.३१.२. प्रापणीयाभिः क्रियाभिः २.३२.३. [पादप्राति० भवार्थे यत्प्रत्यये 'पद् यत्यतदर्थे' अ० ६.३.५३. सूत्रेण पदादेशः। पद गतौ (दिवा०) धातोर्वा 'अर्हे कृत्यतृचश्च' इति यत्]

पद्येन प्राप्तुं योग्येन (रपसा=पापेन) ७.५०.१.

प्राप्तव्येन (रपसा=पापाचरणेन) ७.५०.३. [पद गतौ (दिवा०) धातोरर्हेऽर्थे यत्]

पद्वत् पद्भ्यां तुल्यम् ३.३९.६. [पादप्राति० तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः। पादस्य पदादेशः]

पद्वतीनाम् प्रशस्ताः पादा विभागा विद्यन्ते यासां तासाम् (विद्यानाम्) १.१५२.३. **पद्वतीभ्यः**=पद्भ्यां कृताभ्यो गतिभ्यः ६.५९.६. बहवः पादा यासु प्रजासु ताभ्यः सुप्ताभ्यः प्रजाभ्यः ३३.९३. **पद्वतीम्**=पादा इव प्रशस्तानि चक्राणि विद्यन्ते यस्यां ताम् (नावम्) १.१४०.१२. [पादप्राति० प्रशंसायां मतुबन्तान् ङीप्। पादस्य पदादेशः]

पद्वते पादौ विद्येते यस्य तस्मै (पक्षिणे) १.१४०.९. **पद्वन्तम्**=बहवः पादा विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (गर्भम्=कार्यजगत्) १.१८५.२. [पादप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् पादस्य पदादेशश्च]

पनन्त स्तुवन्ति २.४.५. प्रशंसेयुः ३३.२८. **पनय**=देहि १९.६४. व्यवहारेण प्रापय ५.२०.१. [पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्लङ् अडभावः। अन्यत्र लोट्]

पनयत् प्रशंसेत् ४.३३.५. **पनयन्त**=पनं व्यवहारं कुर्वन्ति, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' इत्यडभावः। अत्र 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिजपि १.८७.३. प्रशंसत ३.६.७. स्तुवन्ति व्यवहरन्ति वा ७.१.१०. **पनयन्ति**=स्तावयन्ति ६.४.३. पनायन्ति प्रशंसन्ति प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इलि ह्रस्वः ३.३४.६. व्यवहरन्ति स्तुवन्ति वा ४.३८.९. [पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोरच्-प्रत्यये पनः। पनप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिजन्ताल् लङ्। अन्यत्र लट्]

पनस्यते यः पनायति व्यवहरति स पना इवाचरति १.५५.२. व्यवहरति ३.५१.३. स्तूयते ३३.३९. [पनस् प्राति० आचारेऽर्थे 'उपमानादाचारे' इति क्यङ्। पनस्=पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

पनस्युम् पनायति व्यवहरति येन तदात्मन इच्छुम् (मारुतं गणम्) प्र०—अत्र 'क्याच्छन्दसि' इत्युः प्रत्ययः १.३८.१५. आत्मनः पनः स्तवनमिच्छुम् (कृतब्रह्मचर्यं पतिम्) ५.५६.९. [पनस्-प्राति० आत्मन इच्छायामर्थे क्यच्। ततः 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः प्रत्ययः]

पनायत व्यवहरत स्तुत वा ६.७५.६. [पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः 'गुपूधूप०' इति आयप्रत्ययान्ताल् लोट्। पनायत=पूजयत नि० ९.१६.]

पनाय्यम् प्रशंसनीयम् (अन्तरिक्षम्=आकाशम्) ६.६९.५. स्तोतुमर्हम् (ओजः=पराक्रमम्) १.१६०.५. [पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः 'गुपूधूप०' इति आयः प्रत्ययः। ततः 'सनाद्यन्ता धातवः' इति धातुसंज्ञायां यत्प्रत्ययः]

पनितः! प्रशंसित (विद्वज्जन) ५.४१.९. **पनितारम्**=स्तावकं धर्म्येण व्यवहर्त्तारम् (देवं=विद्वांसं जनम्) ५.४१.६. **पनितारः**=स्तोतारो व्यवहर्त्तारो वा (सज्जनाः) ३.५७.१. (पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

पनिष्ट पन्यते स्तूयते ७.४५.२. [पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

पनिष्ठम् स्तोतुमर्हम् (विद्युद्रूपमग्निम्) ३.१.१३. **पनिष्ठः**=अतिशयेन प्रशंसितः (राजा प्रजाजनो वा) ६.५९.२. [पनितृप्राति० अतिशायनेऽर्थे 'तुश्छन्दसि' अ० ५.३.५९. सूत्रेण इष्ठन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः। पनितृ=पन व्यवहारे स्तुतौ च धातोः कर्त्तरि तृच्]

पनीयसी अतीव प्रशंसनीया (समित्) ५.६.४. अतिशयेन स्तोतुमर्हा व्यवहारसाधिका (तविषी=सेना) १.३९.२. अत्यन्त-प्रशंसनीया (सेना) ऋ० भू० १५१, ऋ० १.३.१८.२. उत्तम-सेना आर्याभि० १.२२, ऋ० १.३.१८.२. [पनितृप्राति० अतिशायने 'तुश्छन्दसि' सूत्रेण ईयसुन्। ततः 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः। स्त्रियां ङीप्]

पनीयसे यथायोग्यं व्यवहारं कुर्वते स्तोतुमर्हाय (सभाध्यक्षाय) १.५७.३. [पनितृप्राति० अतिशायने ईयसुन्-प्रत्यये तृचोलोपे चतुर्थ्या एकवचनम्]

पन्थाम् धर्म्यं मार्गं, पन्थानम्, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन नस्य स्थानेऽकारादेशः १.१२७.६. पन्थानम् प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति नलोपः १.११३.१६. न्यायमार्गम् ८.२३. [पथिन्प्राति० द्वितीयैकवचनम्। नलोपश्छान्दसः]

पन्थासः मार्गाः १.१००.३. [पथिन्प्राति० जसि रूपम्। वर्णव्यत्ययेन नकारस्य सकारादेशः। पन्था पततेर्वा पद्यतेर्वा पन्थतेर्वा नि० २.२८.]

पन्यतमाय अतिशयेन प्रशंसिताय (मित्राय=आप्ताय विदुषे) ३.५९.५. [पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्ण्यत् प्रत्ययान्तादतिशायने तमप्]

पन्यसा शुद्धेन व्यवहारेण ६.१८.९. [पन व्यवहारे

स्तुतौ च (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन् । अकारस्य यकारश्छान्दसः]

पन्यसीम् प्रशंसनीयाम् (धीतिं धियम्) ६.३८.१. [पनप्राति० अतिशायने ईयसुन् । ततः स्त्रियां ङीप् । पनः=पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः घञर्थे कः प्रत्ययः]

पन्यः स्तुत्यः (इन्द्रः=ऐश्वर्यमिच्छुजनः) ३.३६.३. [पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्ण्यत् । छान्दसो ह्रस्वः]

पन्वा स्तुत्येन कर्मणा १.६५.२. [पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिको वन्प्रत्ययः]

पपथुः पिबतम् १.४७.१०. **पपिरे**=पिबन्ति २.२४.४. (पा पाने (भ्वा०) धातोर्लिट् । अन्यत्र व्यत्ययेनात्मने पदम्]

पपानः पालयन् (राजा) ६.४४.७. पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लिटः स्थाने कानच्]

पपिवान् रसान् पीतवान् (वीरजनः) १.६१.७. पाता (राजजनः) २.११.१०. पानकरः सूर्यः ५.२९.३. यः पिबति सः (इन्द्रः=सूर्यः) ५.३०.११. **पपिवांसम्**= रक्षकम् (राजानम्) ५.२९.२. पिबन्तम् (इन्द्रं=राजादिकं शूरवीरम्) ६.४७.१. पीतवन्तम् (ऋषिम्=वेदमन्त्रार्थवेत्तारम्) ३.४३.५. **पपिवांसः**=पीतवन्तः (गृहस्थाः) ८.१९. [पा पाने (भ्वा०) पा रक्षणे (अदा०) धातोर्वा लिटः स्थाने क्वसुः । पपिवांसः=पीतवन्तः । नि० १२.४२.]

पपिवांसा पीतवन्तौ (इन्द्राग्नी=धनाढ्य-युद्धविद्याप्रवीणौ) १.१०८.१३. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने क्वसुः । 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

पपिः पाता (राजा) ६.२३.४. [पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'आदृगमहन०' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किः प्रत्ययः । लिड्वद्भावाच्च द्वित्वम्]

पपीयात् वर्धेत ६.३७.२. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लिङ् । धातोः स्थाने पी-आदेशो छान्दसं रूपम्]

पपुरि पालकं पुष्टिकरम् (श्रवः=अन्नं श्रवणं वा) ६.४६.५. **पपुरिम्**=पुष्टम् (पुत्रम्) १.१२५.४. पालकम् (विद्यार्थिनं राजजनं वा) ४.२३.३. **पपुरिः**=प्रपूरको विद्वान् १.१६.४. (पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'आदृगमहन०' इति सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च । 'उदोष्ठ्यपूर्वस्य' इत्युत्वम् । पिपर्त्ति पपुरिति पृणाति निगमौ वा प्रीणाति-निगमौ वा नि० ४.२४.]

पपृक्षे सम्बध्नाति ४.४३.७. सम्बध्नातु ४.४४.७. **पपृचासि**=सम्बध्नाति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन मध्यमपुरुषः १.१४१.११. **पपृच्यात्**=संयुज्येत ४.२४.५. [पृची सम्पर्चने (अदा०) पृची संपर्के (रुधा०) धातोर्वा लिट् । अन्यत्र यङ्लुगन्ताल् लट् । अपरत्र च लिङ्-विकरणव्यत्ययेन श्लुः । पपृक्षाः अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

पपृक्षेण्यम् प्रष्टुं योग्यम् (ओजः) ५.३३.६. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् कृत्यार्थे केन्यः प्रत्ययः सुडागमश्च छान्दसः]

पपृचानासः सम्पर्कं कुर्वाणाः (जनाः) १.१४१.६. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लिटः कानच् । जसोऽसुक् च]

पपौ पिबति २५.३८. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

पप्तत उत्पतत १ ८८.१. **पप्तन्**=पतन्ति ६.६३.६. पतेयुः २.३१.१. **पप्तः**=पततु, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् १.२६. **पप्तुः**=प्राप्नुवन्ति ५.५९.७. पतन्ति २.२८.४. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । लृदित्वादङि 'पतः पुम्' इति पुम् । अडभावः । पप्तता=अपतत नि० ११.१४.]

पप्तिवांसः पतनशीलाः (वयः) १.४८.६. (पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । धातोरुपधालोपश्छान्दसः]

पप्ने व्यवहारे ६.६०.४. [पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

पप्रथत् विस्तारयति २.१५.२. प्रथयति ७.४२.६. स्वतेजो विस्तार्य स्वेन तेजसा सर्वं जगत् प्रकाशयति १.१०३.२. प्रख्यापयति २.२५.२. **पप्रथः**=प्रख्यापय ३.३०.२०. प्रख्यातो भव ३.५०.४. **पप्रथन्**=विस्तारयेयुः २.११.८. [प्रथ प्रख्याने (चुरा०) धातोर्लुङ् । अडभावः । 'अत् स्मृदृत्वर०' इति सूत्रेणाभ्यासस्याकारादेशः]

पप्रथानः प्रख्यातविद्यः (विद्वान् जनः) ५.१५.४. **पप्रथानाः**=प्रख्याताः (कवयः=मेधाविनो जनाः) ३.५४.१०. विस्तीर्णविद्यासौन्दर्यादिगुणाः (देवीः=विदुष्यः) ४.५१.८. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्]

पप्रथाना विस्तीर्णानि (अर्णांसि=उदकानि) ७.१८.५. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच् । ततः शेर्लोपः]

पप्रथानेभिः भृशं विस्तृतैः (गुणैः) ४.५६.१. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच् । ततो भिस ऐसादेशो न भवति]

पप्रथुः व्याप्नुत, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ६.७२.३. **पप्रथे**=भा०—विस्तीर्णा भवति ३३.८३. प्रथते ३.६१.४. प्रथयति विस्तृणाति ६.७.७. प्रथताम् ३.३०.१६. प्रख्यापयति ५.८७.७. **पप्राथ**=प्राति पूरयति ६.१७.७. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

पप्रा स्वविद्यापूर्णः (विद्वान् मनुष्यः), प्र०—अत्र 'आदृगम०' इति किः 'सुपां सुलुक्०' इति सोर्डादेशश्च १.६६.१. [प्रा पूरणे (अदा०) धातोः किः प्रत्ययो लिड्वच्च। पप्रिप्राति० सु स्थाने छान्दसो डादेशः]

पप्रिणा परिपूर्णेन (विदुषा जनेन) २.२३.१०. **पप्रिम्**=पूर्णबलविद्यं पालकं वा (राजा सेनापतिर्वा) ३४.२०. पालनशीलम् (सेनाद्यध्यक्षम्) १.६१.२१. **पप्रिः**=पूरकः (वव्रः=कूप इव मेघः) १.५२.३. पूरयन् (द्यौः=सूर्यः) ६.५०.१३. [प्रा पूरणे (अदा०) धातोः 'आदृगमहन०' इति सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च]

पप्रितमम् प्राति प्रपूरयति सर्वाभिर्विद्याभिरानन्दैश्च जनान् स्वव्याप्त्या जगद्वा मूर्त्तं वस्तु शिल्पविद्यासाध्याऽङ्गानि च यः सोऽतिशयितस्तम्, भा०—पूर्णविद्याप्रदातारम् (ईश्वरं भौतिकं वा) १.८. [प्रा पूरणे (अदा०) धातोः 'आदृगमहन०' इति सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च। पप्रिप्राति० अतिशायने तमप्]

पप्रौ प्रपूर्त्ति १.८१.५. प्राति ३.३०.११. व्याप्नोति ३.५४.१५. [प्रा पूरणे (अदा०) धातोः सामान्ये लिट्]

पयते गच्छति १.१६४.२८. [पयते प्रप्यायते नि० ११.४२.]

पयसः दुग्धस्य जलस्य वा १६.२३. उदकस्य दुग्धस्य वा ३८.२८. **पयसा**=पयन्ते विजानन्ति सर्वान् पदार्थान् येन ज्ञानेन तेन भा०—विज्ञानेन २.२४. जलेन प्र०—पय इत्युदकनाम निघं० १.१२, ३.३३.१. अन्नादिना १७.७४. दुग्धेन १६.६५. दुग्धदानेन ५.४३.१. जलेन दुग्धेन वा १२.७०. जलवर्षणेन २८.३६. रसविशेषेण ६.६१.१४. रात्र्या, प्र०—पय इति रात्रिनामसु पठितम् निघं० १.७, ८.१६. जलेनान्नेन वा, प्र०—पय इत्यन्ननाम, निघं० २.६, ८.१४. शब्दार्थसम्बन्धरसेन २०.४३. जलेनेव १३.४१. दुग्धेनेव जलेन ३.५५.१३. **पयः**=दुग्धमुदकमन्नं वा प्र०—पय इत्युदकनाम निघं० १.१२. अन्ननाम च निघं० २.७, ६.५२.१०. रसादिकम् १.२२.१४. रसवत् (इन्द्रियं=धनम्) १६.७६. सुखकारकं रसम् १.२३.१६. रसनिमित्तम् (सूर्यः) ४.३. रसयुक्तं जलम् १७.१. सुरसम् १६.७६. सुखप्रदम् (इन्द्रियं=विज्ञानसाधकम्) १६.७७. उत्तम जल दूव सं० वि० १४५, अथर्व० १२.५.१०. सर्वौषधिरसः २१.३५. पातुमर्हम् (रसं=सारभूतम्) १६.७५. सर्वपदार्थसार-विज्ञानयुक्तम् ऋ० भू० ३०६, १६.७५. भा०—उत्तमाऽन्नं रसश्च १८.३६. **पयांसि**=जलान्यन्नानि वा १.६१.१८. जलानि दुग्धानि वा १२.११३. **पयोभिः**=जलैः १.१६४.२८. उदकैः ४.२१.८. [पीयते तत् पय इति विग्रहे पा पाने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽसुन्। बहुलवचनाद् धातोरीत्वे गुणेऽयादेशे च रूपम्। पयः रात्रिनाम निघं० १.७. पयः ज्वलतो नाम निघं० १.१७. पयः उदकनाम निघं० १.१२. पयः अन्ननाम निघं० २.७. पयः पिबतेर्वा प्यायतेर्वा नि० २.५. पयः—यत्पयस्तद्रेतः गो० उ० २.२६. क्षत्रं वै पयः श० १२.७.३.८. (यज्ञस्य) प्राणः पयः श० ६.५.४.१५. रसो वै पयः श० ४.४.४.८. आपो हि पयः कौ० ५.४. अपामेष ओषधीनां रसो यत्पयः श० १२.८.२.१३. पयो वा ओषधयः तै० ३.७.१.५. सोमः पयः श० १२.७.३.१३. आपो हि पयः कौ० ५.४. गो० २.१.२२. एतत् सोमस्य (तेजः) यत् पयः तै० सं० २.५.२.७. ऐन्द्रं पयः तै० सं० ६.२.५.३. गो० २.१.२२. द्वादश वै पयांसि मै० ४.४.८. पयो वै पुरुषः तै० सं० २.५.५.१. पयो हि रेतः श० ६.५.१.५६. परमं वा एतत्पयो यदजक्षीरम् तै० सं० ५.१.७.४. पशूनां वा एतत् पयो यद् व्रीहियवौ मै० १.८.२. प्राणः पयः श० ६.५.४.१५. कौ० १०.६. वायुर्वै पयसः प्रदाता काठ० ३५.१७.]

पयस्पाः पयस उदकस्य पातारः (विद्युदादयः) १.१८१.२. [पयस् इति व्याख्यातम्। तदुपपदे पा पाने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि कः प्रत्ययः]

पयस्या पयसि जले कुशलौ (विद्वांसौ जनौ) २६.६०. [पयस्प्राति० कुशलार्थे यत्। 'सुपां सुलुग्' इत्याकारादेशः। योषा पयस्या रेतो वाजिनम् श० २.४.४.२१. पयो वै पयस्या काठ० १२.१. मित्रावरुणयोः पयस्येति, प्राणापानौ वै मित्रावरुणौ मै० ३.१०.६.]

पयस्वती पयः प्रशस्तो रसो विद्यतेऽस्यां सा रसवती (पृथिवी), प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् 'पयस्वती रसवती' शत० १.२.५.११, १.२७. बहूदकयुक्ता (भूमिः) ४.५७.७. प्रशस्तानि पयांस्यन्नानि उदकानि वा यस्यां सा (पत्नी) ८.४२. जल, दूध रसादि से परिपूर्ण (शाला) सं० वि० १६७, अथर्व० ६.२.३.१६. **पयस्वतीः**=पयो बहुरसो विद्यते यासु ताः (प्रदिशः=प्रकृष्टा दिशः) १८.३६. [पयस् इति व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुप्। ततः

स्त्रियां ङीप् । पयस्वती रात्रिनाम निघं० १.७.]

पयस्वती प्रशस्तजलयुक्ते (उपासानक्ता=रात्रिदिने) २.३.६. बहूदकयुक्ते (रोदसी=सूर्यभूमी) ६.७०.२. रात्र्यन्धकारयुक्ते (उषासानक्ता=उषाश्च नक्तश्च ते) २०.४१. [पयस्वतीति व्याख्यातम् । ततः प्रथमा द्विवचनस्य पूर्वसवर्णादेशः । पयस्वती=उदकवत्यौ नि० ५.२. पयस्वती रात्रिनाम निघं० १.७.]

पयस्वन्तम् बहुदुग्धादिमन्तम् (करदायम्) ६.३०. **पयस्वन्तः**=प्रशस्तजल-दुग्धादियुक्ताः (मधुश्चुतः=खाद्यपदार्थाः) २१.४२. **पयस्वान्**=प्रशस्तजलविद्यादियुक्तः (जनः) २०.२२. रसवच्छरीरयुक्तो भूत्वा (जनः) १.२३.२३. [पयस् इति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसार्थे मतुप्]

पयोदुहाना अनेकरस-फलादिभिः प्राणिनः प्रपूरयती (भूमिः) ऋ० भू० १३८, ऋ० ८.२.१०.१. [पयस्-दुहानापदयोः समासः । दुहाना=दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः शानच् । ततः स्त्रियां टाप्]

पयोधाः ये पयांसि स्वगतानि दधति ते (मरुतः=बलिष्ठा राजजनाः) ७.५६.१६. [पयस् इत्युपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि कः प्रत्ययः]

पयोवृधः ये पय उदकं रात्रिं वा वर्धयन्ति ते (मरुतः=वायवः) १.६४.११. [पयस् इत्युपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पर पालय ६.३६. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसीति' शपः श्लुर्न भवति]

परम् परभागस्थम् (अन्तं=सीमानम्) २३.६१. इष्टम् (असुं=प्राणम्) १.१४०.८. शत्रुम् १.२५. विद्याशत्रुम् १.२६. शत्रुभूतम् १.२६. **परस्मात्**=श्रेष्ठात् (रजसः=लोकात्) १३.४४. **परस्य**=श्रेष्ठस्य (सज्जनस्य) ३.१८.२. **परः**=उत्तमः (पदार्थः) ८.३६. प्रकृष्टः (विद्वज्जनः) २.३५.६. उपरिष्ठो द्वितीयः (प्राप्तविद्यासुशिक्षमपत्यम्) ६.९.३. सर्वोत्तमः (परमेश्वरः) १७.२६. उत्कृष्टः (विद्वज्जनः) ६.४८.१९. प्रकृष्टगुणः (महः=महिमा) १.१९.२. अत्यन्तोत्कृष्टः (इन्द्रः=सर्वजगद्राजः) १.८.५. अ०—प्रकृष्टसामर्थ्यः (रुद्रः=शूरवीरः सेनाध्यक्षः) ३.६१. बड़ा, श्रेष्ठ (परमेश्वर) आर्याभि० २.१४, ८.३६. अन्यः (मर्त्यः=मनुष्यः) २०.८२. **पराणि**=उत्तरकालस्थानि (विषयान्) ६.२१.६. **परेषु**=सूक्ष्मेषु (व्रतेषु=सत्यभाषणादिनियमेषु) ३.५४.५. **परैः**=उत्तमैश्वर्यव्यवहारैः ७.५.

परमम् सर्वोत्कृष्टम् (पदं=प्राप्तुमर्हं स्थानम्) ६.५. सर्वथोत्कृष्टम् (पदं=पत्तुं योग्यं स्थानम्) ६.३. प्रकृष्टं प्रापणीयम् (पदम्) ४.५.१२. सर्वोत्तमगुणप्रकाशम् (पदं=जगदीश्वरम्) १.२२.२१. अत्युत्तमम् (अन्तरिक्षं=विज्ञानम्) ८.९. **परमस्य**=श्रेष्ठस्य (रायः=धनस्य) ७.६०.११. अत्युत्तमस्य (रायः=धनादेर्मध्ये) ४.१२.३. **परमः**=अतीव श्रेष्ठः (विद्वज्जनः) ५.३०.५. सर्वोत्कृष्ट (परमात्मा) आर्याभि० २.४०, १७.२६. **परमात्**=उत्कृष्टात् (सधस्थात्=समानस्थानात्) १२.११५. **परमे**=अत्युत्तमे मोक्षे पदे १.१५४.५. अत्यन्तोत्कृष्टे (सधस्थे=स्थाने) १.१०१.८. सर्वोत्कृष्टे योगसंस्कारजे (जन्मन्=जन्मनि) १७.७५. **परमेण**=प्रकृष्टसुखयुक्तेन (धाम्ना=इहलोकेन परलोकेन) १.२. **प्रकृष्टेन**=पशुना ४.२६. [अन्तो वै परमम् ऐ० ५.२१.]

परमस्याः अनुत्तमगुणरूपशीलायाः (अ०—कन्यायाः) ११.७२. अतिश्रेष्ठायाः (ईश्वर-सृष्टेः) ५.६१.१. **परमस्याम्**=उत्कृष्टगुणायाम् (पृथिव्याम्) १.१०८.९. **परमा**=उत्कृष्टा नीतिः ४.५०.३.

परमा परमाणि उत्कृष्टानि (रजांसि=लोकस्थानि) ३.३०.२. श्रेष्ठानि (इष्टानि=कर्माणि) १७.२६. दूरस्थानि (रजांसि=स्थानानि) ३४.१९. प्रकृष्टानि कर्माणि २.२७.३. [परमप्राति० शेर्लोपः]

परमाणि उत्कृष्टनि (विद्यासुशिक्षाकर्माणि) ४.१.१६.

परमेष्ठिनम् प्रजापतिम् (परमेश्वरम्) ऋ० भू० २३७. अथर्व० ११.३.७. **परमेष्ठी**=परमे प्रकृष्टे स्वरूपे तिष्ठतीति (प्रजापतिः=ईश्वरः) ८.५४. परम आकाशेऽभिव्याप्य स्थितः (परमेश्वरः) १५.५८. सर्वेषां स्वामी (विश्वकर्मा=राजा) १४.९. परमेश्वररूपे आकाशे वाऽभिव्याप्य तिष्ठतीति (प्रजापतिः=प्रजापालक ईश्वरः) १४.३१. [परमोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'परमे कित्' उ० ४.१०. सूत्रेण इनिः प्रत्ययः । सप्तम्या अलुक् । 'स्थास्थिन्स्थॄणामिति वक्तव्यम्' अ० ८.३.९७. वा० सूत्रेण स्थिन् सकारस्य मूर्धन्यः । आपो वै प्रजापतिः परमेष्ठी, ता हि परमे स्थाने तिष्ठन्ति श० ८.२.३.१३. परमेष्ठी वा एष यदोदनः तै० १.७.१०.६. ऋतमेव परमेष्ठी तै० १.५.५.१. परमेष्ठी स्वाराज्यम् तां० १९.१३.३.४. तपसा परमेष्ठी काठ० ३५.१५. परमेष्ठी राजन्यो मनुष्याणाम् मै० २.२.५. विश्वकर्मा वयः परमेष्ठी छन्दः तै० सं० ४.३.५.२.]

परशुम् कुठारम् ३.५३.२२. [परान् शत्रून् शृणाति हिनस्ति येनेति विग्रहे परोपपदे शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'आङ्परयोः खनिशॄभ्यां डिच्च' उ० १.३३. सूत्रेण कुः प्रत्ययः । परशुः वज्रनाम निघं० २.२०.]

परश्वेव यथा परशुना १.१३०.४. [परश्वा-इवपदयोः समासः । वज्रो वै परशुः श० ३.६.४.१०.]

परस्तात् परस्मिन् देशे ३.५५.६. उत्तरस्मात् (समात्) ८.६. पराः, भा०—उपरिस्थाः (जलानि वायवो वा) १२.४६. परस्मिन् वर्त्तमानं भा०—दूरे वर्त्तमानम् (ब्रह्म) ३१.१८. पृथग् वर्त्तमानम् (परमात्मानम्) ऋ० भू० १३३, रहितम् (परमात्मा को) आर्याभि० २.८, ३१.१८. परशब्दात् 'विभाषा परावराभ्याम्' अ० ५.३.२९. सूत्रेण सप्तम्यन्तादस्तातिः प्रत्ययः]

परस्पा यौ परान् पातो रक्षतस्तौ (राजाना=राजाऽमात्यौ) ५.६२.५. [परोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि कः । 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः । पूर्वपदस्य सुगागमः]

परस्पाय येन परानन्यान् पाति तस्मै (साधनप्राप्तये) ३८.१९. (परस्प इति व्याख्यातम् । ततश्चतुर्थी]

परस्पाः पारयिता रक्षकश्च (अग्निः=पावकवद् विद्वज्जनः) २.९.२. [परोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि । पूर्वपदस्य सुगागमश्छान्दसः]

परस्याः शत्रूणां सेनाया उपरि १८.७१. प्रकृष्टायाः कन्यायाः ११.७१. [परप्राति० षष्ठ्या एकवचनम्]

परस्वतः मृगविशेषान् २४.२८.

परा ऊर्ध्वाऽर्थे प्र०—प्रपरेत्यस्य प्रातिलोम्यं प्राहुः नि० १०.३, ३.४९. उपरिभावे १.२५.४. दूरार्थे ५.६१.४. पृथक् १.१.४. प्रकृष्टार्थे १.२५.१६. दूरीकरणे १.३३.५. पश्चादर्थे ६.२०.११. पराजयार्थे ६.६९.८. पराङ्मुखः ६.७५.१६.]

पराकात् दूरदेशात् १.३०.२१. [पराके दूरनाम निघं० ३.२६.]

पराके दूरे ३५.२०. पराक इति दूर-नाम निघं० ३.२६, १.१२९.९. [पराके दूरनाम निघं० ३.२६. पराके=पराक्रान्ते नि० ५.९.]

परागात् परागच्छति १.१६४.१७. **परागाः**=दूरं गच्छेः ३.५३.२. [परा+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङि' इति गादेशः । 'गातिस्था०' इति सिचो लोपः]

पराचरन्तम् प्राप्नुवन्तम् (गोपां=जगदीश्वरम्) ३७.१७. [परा+चर गतौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

पराचः पराङ्मुखान् (शत्रून्) ६.४४.१७. परभागप्राप्तान् (पदार्थान्) १.१६४.१९. पराग्भूतान् दूरस्थान् (शत्रून्) ३.३०.६. **पराचैः**=धर्मात् पराङ्मुखैः (शत्रुजनैः) प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति भिस ऐस्भावः १.२४.९. बाह्यचिह्नैः १.१०५.१. **पराञ्चः**=परत्वेन व्यपदिष्टाः (पदार्थाः) १.१६४.१९. [परा+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' इत्यादिना क्विन् । पराचैः दूरनाम निघं० ३.२६.]

पराचीना पराचीनानि दूरीभूतानि (मुखा=मुखानि) १६.५३. [पराच्प्राति० स्वार्थे 'विभाषाञ्चेरदिक् स्त्रियाम्' अ० ५.४.८. सूत्रेण खः । खस्येनादेशः । पराच्=परा+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विन्]

पराचीः याः परागञ्चन्ति ताः (विषजन्यव्याधयः) १.१९१.१५. [परा+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' इति क्विन् । ततः स्त्रियाम् 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' अ० ४.१.६. वा० सूत्रेण ङीप्]

पराचैः दूरार्थे, प्र०—अत्र बाहुलकात् परोपपदादपि चिधातोर्डैसिः प्रत्ययः १.६३.४. [पराचैः दूरनाम निघं० ३.२६. पराचैः=पराञ्चनैरचितः नि० ११.२५.]

पराजघ्नुः पराहता विनष्टा भवेयुः, अ०—निवृत्ता भवेयुः प्र०—अत्र लिङर्थे लिट् १.१३. [परा+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिट्]

पराजयातै शत्रुओं से पराजित हो स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. **पराजिग्ये**=पराजय को प्राप्त होता हूँ, स० प्र० २३८, १०.४८.५. पराजितो भवति ६.६९.८. [परा+जि जये (भ्वा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लिट् । 'विपराभ्यां जेः' इति सूत्रेणात्मनेपदम्]

पराणि उत्तरकालस्थानि (विज्ञानानि) ६.२१.६. उत्कृष्टानि (प्रियाणि=सुखानि) ३.३८.१.

पराणुदस्व परास्त कर दे आर्याभि० १.२४, ५.३.२१.२५. प्रेरय ७.३२.२५. [परा+णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लोट्]

पराणुदे दुष्टानां शत्रूणां पराजयाय, ऋ० भू० १५१, ऋ० १.३.१८.२. शत्रुओं के पराजय करने के लिए स० प्र० १८४, १.३९.२. परान्नुदन्ति शत्रून् यस्मिन् युद्धे प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इति अधिकरणे क्विप् १.३९.२. [परा+णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोः क्विप्]

पराणुनुदे दूरे नुदति ७.१८.१६. [परा+णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लिट्]

परादादाति पूर्वं प्रयच्छति १.८१.६. **परादा**=दूरे तिष्ठ पं० वि० **पराऽदात्**=दूरं गमयेत् ५.३.१२. दूरीकुर्य्यात् ६.२७.७. **परादाः**=परादद्याः १.१०४.८. दोरवखण्डयेर्विनाशयेः १.१०४.५. दूरीकुर्याः १.१८९.५. पराङ्मुखान् कुर्याः ७.१.१९. [परा+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लुङ् । 'गातिस्थाघु०' इति सिचो लोपः । दो अवखण्डने (दिवा०) धातोर्वा रूपम्]

परादादिः पराञ्छत्रूनादाता (सेनापतिः) १.८१.२. [आददिः=आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'आदृगमहन०' इति सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च । पर-आददिपदयोः समासः]

परादानम् परेभ्य आदानम् १८.६४. [पर-आदानपदयोः समासः । आदानम्=आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्ल्युट्]

परादै परादानाय त्यागाय त्यक्तव्याय ७.१६.७.

परापत ऊर्ध्वं पतति गच्छति अ०—ऊर्ध्वं द्रव्यं गमयति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च 'परा इत्येतस्य प्रातिलोम्यं प्राह नि० १.३, ३.४९. परायाहि १७.४५. दूरं गच्छ ४.३४. [परा+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

पराऽपरा या परोत्कृष्टा चाऽसावपराऽनुत्कृष्टा च सा (निर्ऋतिः=वायूनां रोगकारिका दुःखप्रदा गतिः) १.३८.६. [परा-अपरा पदयोः समासः]

परापुरः ये परागतानि स्वसुखार्थान्यधर्मकार्याणि पिपुरति ते (दुष्टा जनाः) २.३०. [परा+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'उदोष्ठ्यपूर्वस्य' सूत्रेणोत्वम्]

परापूतम् परागतं पूतं पवित्रत्वं यस्मात्तत् (रक्षः=दुष्टस्वभावो मूर्खः) १.१६. **परापूताः**=परागतः पूतः पवित्रस्वभावो येभ्यस्ते (अरातयः=शत्रवः) १.१६. [परा-पूतपदयोः समासः । पूतः=पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्तः]

परामृश विचारय १.१२६.७. [परा+मृश आमर्शने (स्पर्शे) (तुदा०) धातोर्लोट्]

परायती परागच्छन्ती (प्राप्यमाणौषधी) १.१९१.२. **परायतीनाम्**=पूर्वं गतानाम् (उषसाम्) १.११३.८. **परायतीम्**=म्रियमाणाम् (मातरं=जननीम्) ४.१८.३. [परा+या प्रापणे (अदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

परायन् परेतः सन् (न्यायाधीशो राजा) १२.२३. [परा+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

परायन्ति परागच्छन्ति पुनरागच्छन्ति च १.१२३.१२. [परा+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् प्रथमबहुवचनम्]

परायाहि दूरं गच्छ ३.५३.५. [परा+या प्रापण (अदा०) धातोर्लोट्]

परार्धः अन्तो दशवारं सङ्ख्यातः परार्द्धः १७.२.

परावत् परा गुणा विद्यन्ते यस्मिन् तत् (कर्म) ४.५०.३. **परावतम्**=दूरदेशस्थम् (राजानम्) ३.४०.९. **परावतः**=दूरदेशात् १८.७२. विप्रकृष्टाद् देशात् ३.९.५. दूरस्थाः (दिशः) १८.३२. दूरस्थितस्य (विवस्वतः=सूर्यस्य) ६.८.४. दूरतः (स्थानात्) १.१३०.९. दूरमार्गान् १.३५.३. दूरस्थानानि प्र०—परावतः प्रेरितवताः परागताः नि० ११.४८. 'परावत इति दूरनामसु पठितम्' निघं० ३.२६, १.३४.७. **परावति**=दूरे देशे ५.३०.५. दूरं दूरं देशं प्रति गमने कर्त्तव्ये १.४७.७. विप्रकृष्टे मार्गे १.१२२.१३. [परशब्दाद् मतुप् पूर्वस्य च दीर्घश्छान्दसः । परावतः दूरनाम निघं० ३.२६. परावतः प्रेरितवतः परागताद्वा नि० ७.२६. परा उपसर्गाद्वा गतार्थे वतिः प्रत्ययः 'उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे' अ० ५.१.११७. सूत्रेण । अन्तो वै परावतः ऐ० ५.२.]

परावप दूरे निक्षिप १६.९. [परा+टुवप बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

परावृक् यः परावृणक्ति सः (इन्द्रः=सूर्यः) २.१५.७. **परावृजम्**=धर्मविरुद्धगामिनम् (पुरुषम्) १.११२.८. परागता वृजस्त्यागकारा यस्मात्तम् (अन्धं=चक्षुर्विहीनं जनम्) २.१३.१२. [परा+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

परावृक्तम् अच्छिन्नवीर्यम् (पुत्रम्) ४.३०.१६.

परावृणक्ति दूरे त्यजति ६.४७.१७. [परा+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लट्]

पराशरः दुष्टानां हिंसकः (राजा) ७.१८.२१. [परा+शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः पचाद्यच्-प्रत्ययः । पराशरः=पराशीर्णस्य वसिष्ठस्य । इन्द्रोऽपि पराशर उच्यते परा शातयिता यातूनाम् नि० ६.३०.]

परास पराङ्मुखस्यति ४.१८.८. [परा+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोरण्-प्रत्ययः]

परासः भविष्यन्तः (पितरः=जनकाः) ४.२.१६. प्रकृष्टाः भा०—उत्तमाः (पितरः=रक्षितारः पित्रादयः) १९.४९.

परासुव दूरे प्रक्षिप भा०—निवारय १६.५. दूरे

गमय ऋ० भू० ३, ३०.३. दूर कर दीजिए सं० वि० ४, ३०.३. [परा+आङ्+णु प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लोट्]

पराहता दूरं प्राप्ता (पृथिवी) ५.५६.३. [परा+हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

पराऽहन् पराहन्ति ४.१६.७. दूरीकुर्याः ६.२६.३. [परा+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः सामान्ये लङ्]

परि पर्य्यायेण १.६५.६. उपरिभावे १.१०५.३. निषेधे १.५४.५. सर्वतो भावे प्र०—परीति सर्वतो भावं प्राह नि० १.३, १.७.१०. मध्ये १२.४१. वर्जने ३८.२४. परितः अ०—सर्वतः १.१०.१२. सर्वतस्त्यागे १.१६७.६. अभितः १.६१.८.

परिक्रोशम् परितः सर्वतः क्रोशन्ति रुदन्ति यस्मिन् दुःखसमूहे तम् १.२६.७. [परि+क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोरधिकरणे घञ्]

परिक्षिता सर्वतो निवसन्तौ (मातरा=जलाग्नी) ३.७.१. [परि+क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः क्तः । ततः 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

परिक्षितोः सर्वतो निवसतोः, प्र०—अत्र तुमर्थे तोसुन् १.१२३.७. [परि+क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोस्तुमर्थे तोसुन्]

परिख्यत् सर्वतो वर्जयेत् ७.३६.७. **परिख्यतम्**=वर्जनपूर्वकं निराकुरुतम् ५.६५.६. **परिख्यन्**=सर्वतो वर्जयेयुः २५.२४. वर्जितुं ख्यापयेयुः १.१६२.१. [परि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लुङ् । 'चक्षिङः ख्याञ्' अ० २.४.५४. सूत्रेण ख्याञ्-आदेशः । 'अस्यति वक्ति०' अ० ३.१.५२. सूत्रेणाङ् । अडभावः । 'वर्जने प्रतिषेधः' अ० २.४.५४. वा० सूत्रेण ज्ञाप्यते यदयं धातुर्वर्जनार्थेऽपि]

परिगत्य परितः सर्वतो गत्वा २.१५.४. [परि+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

परिगधिता परितः सर्वतो गधिता शुभैर्गुणैर्युक्ता नीतिः प्र०—गध्यतिर्मिश्रीभावकर्मा नि० ५.१५, १.१२६.६. [परि+गध+क्त+टाप् । गध्यतिरिति नैरुक्तो धातुः मिश्रीभावकर्मा]

परिगृहीतम् परितः सर्वतो गृहीतं ज्ञातम् (भूत-भुवनभविष्यत्-सम्बन्धिव्यवहारम्) ३४.४. त्रिकालिक व्यवहारों को स० प्र० २४७, ३४.४. [परि+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्तः । ग्रहिज्यादिना संप्रसारणम् । 'ग्रहोऽलिटि दीर्घः' इतीटो दीर्घः]

परिगृह्णामि समन्तात् स्वीकरोमि १.२७. अभितः सम्पादयामि १.२७. सर्वतो-भावेन सम्पादयामि, प्र०—परीति सर्वतोभावं प्राह नि० १.३, १.२७. [परि+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लट् । 'ग्रहिज्यावयिव्यधि०' इत्यादिना सम्प्रसारणम्]

परिगृह्य सर्वतो गृहीत्वा १७.५५. [परि+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

परिग्मन् परितो गच्छन्ति ४.४३.६. [परि+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'मन्त्रे घसह्वरणश०' अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक् । 'गमहनजन०' अ० ६.४.९८. सूत्रेणोपधालोपः]

परिचक्षत सर्वतो चक्षीत, प्र०—अत्र शपो लुक् १.१२१.२. [परि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लङ् । अटोऽभावः]

परिचक्ष्याणि परितः सर्वतः ख्यातुं योग्यानि (वचांसि=वचनानि) ६.५२.१४. [परि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्ण्यत्]

परिचरति सर्वतः सेवते १.५२.६. **परिचरन्ति**=सर्वतो जानन्ति गच्छन्ति वा ७.१.१५. [परि+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

परिचराणि सर्वतो गतिमन्ति प्राप्तव्यानि वा (सैन्यानि) ५.२६.१३. **परिचराय**=यो धर्मं, विद्यां, मातापितरौ, स्वमित्रादींश्च सेवते तस्मै (भा०—सेवकाय) [परि+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः प्रत्ययः । यजमानः परिचरः तां० ३.१.३.]

परिचित् विद्या-परिचयं प्राप्ता (कन्या) १२.५३. **परिचितः**=परितः सर्वतः सञ्चेतारः (विद्वांसो जनाः) १२.४६. [परि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

परिच्छिन्नाः छिन्नभिन्नविज्ञानाः (अध्येतारो जनाः) ७.३३.६. [परि+छिदिर् द्वैधीकरणे (रुधा०) धातो क्तः । 'रदाभ्याम्०' इति नकारादेशः]

परिजग्रभत् सर्वतो गृह्णाति ३२.२. [परि+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोश्छान्दसं रूपम् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' इति हकारस्य भकारः]

परिजजान सर्वतो जनयति १३.४५. [परि+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

परिजरते परितः स्तौति १२.१८. [परि+जरते अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोर्लट्]

परिजर्भुराणः परितः सर्वतोऽतिशयेन पुष्यन् (विद्वान्

जनः) १.१४०.१०. [परि+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

परिजायते सर्वत उत्पद्यते ७.५०.३. [परि+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लट् । 'ज्ञाजनोर्जा' इति धातोर्जा आ देशः]

परिजिहीते परितो गच्छतः ३.३१.१७. [परि+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लट्]

परिज्मन् परितः सर्वतो गच्छन्, उपर्य्यधः सर्वान् पदार्थानितस्ततः क्षेप्ता (अ०—वायुः) प्र०—अयमजधातोः प्रयोगः 'श्वन्नुक्षन्०' उ० १.१५७. इति कनिन्-प्रत्ययान्तो मुडागमेनाऽकारलोपेन च निपातितः १.६.९. परितः सर्वतो गच्छति यस्मिन् मार्गे १.११७.६. परितः सर्वतो वर्त्तमानायां भूमौ २.२८.४. परितः सर्वतो जहि हिनस्ति दुष्टाँस्तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाध्यक्ष) १.६३.८. परितः सर्वतो व्याप्तः (वातः=वायुः) २.३८.२. सर्वतो व्याप्तेऽन्तरिक्षे विस्तृतायां भूमौ वा प्र०—ज्मेति पृथिवीनाम निघं० १.१, ४.२२.४. **परिज्मनः**=परितः सर्वतो व्याप्तस्य (अग्नेः=पावकस्य) ३.२.९. **परिज्मने**=परितः सर्वतो ज्मा भूमिर्यस्य तस्मै (राज्ञे) ४.३.६. **परिज्मनोः**=यः परितः सर्वतोऽजतः प्रक्षिपतो गच्छतस्तयोः (सूर्याचन्द्रमसोः) १.४६.१४. **परिज्मा**=परितः सर्वतो गन्ता वायुः १.११२.४. यः परितः सर्वतो गच्छति स जीवः १.७९.३. परितो जनत्यत्ति यः सोऽग्निः १.१२२.३. परितः सर्वतो ज्मायां भूमौ गच्छति त्यजति वा यः सः (भानुः=सूर्यः) ४.४५.१. यः परितः सर्वतोऽजति गच्छति (अग्निः=यजमानः संन्यासी) ७.१३.३. **परिज्मानः**=परितो ज्मा भूमिर्येषान्ते (विद्वांसो जनाः) ५.१०.५. **परिज्मानम्**=परितः सर्वतो भोक्तारम् (विप्रं=विद्वज्जनम्) १.१२७.२. परितः सर्वतोऽजन्ति मार्गं येन तम् (सुखं रथम्) प्र०—अयं परिपूर्वकादजधातोः 'श्वन्नुक्षन्०' इत्यादिना निपातितः १.२०.३. [परि+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्बाहु० 'श्वनुक्षन्०' उ० १.१५९. सूत्रेण कनिन्-प्रत्यये मुडागमोऽकारलोपश्च निपात्यते अथवा परि-ज्मन् पदयोः समासः । ज्मा इति पृथिवीनाम निघं० १.१. अथवा परि+जमु अदने (भ्वा०) धातोः कनिन्-प्रत्ययः । उपधालोपश्छान्दसः]

परिज्मेव परितः सर्वतो गन्ता वायुरिव ६.१३.२. **परिज्मामिव**=परितः सर्वतो भोक्तारमिव [परिज्मा-इव पदयोः समासः । परिज्मेति व्याख्यातम्]

परिज्त्रयः ये परितः सर्वतो जीर्णयन्ति ते (वाताः) १.६४.५. ये परितः सर्वतो गच्छन्ति ते (विद्वज्जनाः) ५.५४.२. परितः सर्वतो ज्रयो गतिमन्तः । (विद्वांसो जनाः) ५.५४.२. [परिपूर्वाद् ज्रयति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोरच् । परि+ज्रि अभिभवे (भ्वा०) धातोर्वा अच्]

परिणयन्ति सर्वतः प्रापयन्ति प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.९५.२. सर्वतः प्राप्नुवन्ति १.१६२.४. [परि+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

परिणशे परितः सर्वतो नश्यन्त्यदृश्या भवन्ति यस्मिँस्तस्मिन् (अंहसि=पापे) १.५४.१. [परि+णश अदर्शने (दिवा०) धातोः 'घञर्थे क-विधानम्' इति कः प्रत्ययः]

परिणीयते सर्वतो नीयते ४.९.३. सर्वतः प्राप्यते ४.१५.१. [परि+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

परितक्म्या आनन्दप्रदा (रात्रिः) ५.३०.१४. **परितक्म्यायाम्**=रात्रौ प्र०—'परितक्म्या रात्रिः परित एनं तक्म 'तक्मेत्युष्णनाम तकत इति सतः, नि० ११.२५, १.११६.१५. परितः सर्वतस्तकन्ति हसन्ति यस्यां सृष्टौ तस्याम् ४.४३.३. निशि ६.२४.९. परितः सर्वतस्तक्माणि भवन्ति यस्यां तस्यां रात्रौ ५.३१.११. परितस्तक्मानोऽश्वा यस्यां तस्याम् (राज्यभूम्याम्) ४.४१.६. **परितक्म्यायाः**=परितः सर्वतस्तकन्ति हसन्ति यैः कर्मभिस्तेषु भवायाः (रात्रेः) ५.३०.१३. [परि+तक गत्याम् धातोर्मनिन् तकति गतिकर्मा निघं० २.१४. प्रत्ययस्थमकारादनन्तरं यकारोपजनश्छान्दसः । परितक्या रात्रिः, परित एनां तक्म । तक्मेत्युष्णनाम तकते इति सतः नि० ११.२५. परि+तके हसने (भ्वा०) धातोर्वा मनिन्-प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

परितक्म्ये परितः सर्वतो हर्षनिमित्ते (व्यवहारे) १.१३.६. [परि+तके हसने (भ्वा०) धातोर्मनिन् । ततो भवार्थे यत्-प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

परितनुष्व सर्वतो विस्तृणु १६.५०. [परि+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लोट्]

परितप्तम् सर्वतः संक्लिष्टम् (विद्वांसं जनम्) १.११९.६. [परि+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोः क्तः]

परितस्थुषः सर्वतस्तिष्ठन्ति तान् सर्वान् स्थावरान् पदार्थान् मनुष्यान् वा प्र०—तस्थुष इति मनुष्यनाम, निघं० २.३, १.६.१. [परि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । अथवा परि-तस्थुष्पदयोः समासः । तस्थुषः मनुष्यनाम निघं० २.३. इमे वै लोकाः परितस्थुषः तै० ३.९.४.२.]

परितंसयध्यै सर्वतो भूषयितुम् ६.२२.७. परितः सर्वतस्तंसयितुं भूषयितुम् १.१७३.७. [परि+तसि अलङ्कारे (चुरा०) धातोस्तुमर्थेऽध्यै प्रत्ययः]

परितृढाः सर्वतो हिंसिताः (अमित्राः=शत्रवः) १.१३३.१. [परि+तृहू हिंसार्थे (तुदा०) धातोः क्तः]

परित्रिधातु अयस्ताम्ररजतादि-धातुत्रयेण सर्वतो रचनीयम् (यानम्) ऋ० भू० १६६, ऋ० १.३.५.७. [परि-त्रिधातुपदयोः समासः]

परिददामि सर्वतो ददामि १८.५९. [परि+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लट्]

परिदधातु सर्वतोभावेन दधाति वा, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् २.३. [परि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोट्]

परिदधिरे सर्वतो दध्युः ५.१८.४. सर्वतो दधति २.१३.१०. [परि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट्]

परिदधे सर्वतो धरामि ४.२. [परिपूर्वाद् दधातेर्लट्]

परिदर्षीष्ट सर्वतो विदारय ८.५३. [परि+दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्लिङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

परिदेहत् सर्वतो वर्धये ७.५०.२. [परि+दिह उपचये (अदा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

परिदाय सर्वतो दत्त्वा १.१०५.२. [परि+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

परिदाशेम सर्वतो दद्याम ७.३.७. [परि+दाशृ दाने (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

परिदीय सर्वत उपक्षयति प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ५.८३.७. सर्वतः क्षिणुमहि १७.३६. **परिदीयत्**=सर्वतो गच्छेत् प्र०—दीयतीति गतिकर्मा निघं० २.१४, १.१८०.१. **परिदीयन्ति**=परिक्षयन्ति [परि+दीङ् क्षये (दिवा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । अन्यत्र लेट् । दीयतीति गतिकर्मा निघं० २.१४]

परिधत्ताम् सब ओर से आच्छादित शोभायुक्त करो सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५३. सर्वतो धारयतो वा प्र०—अत्र लडर्थे लोट् २.३. [परि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (चु०) धातोर्लोट्]

परिधयः परितः सर्वतः सूत्रवद्धीयन्ते ये ते (गायत्र्यादिछन्दांसि) ३१.१५. परिधिर्हि गोलस्योपरिभागस्य यावता सूत्रेण परिवेष्टनं भवति, ते समुद्रादयः सप्त सन्त्येते समुद्र एकस्तदुपरि त्रसरेणु सहितो वायुर्द्वितीयः, मेघमण्डलं तत्रस्थो वायुस्तृतीयः वृष्टिजलं चतुर्थस्तदुपरि वायुः पञ्चमोऽत्यन्तसूक्ष्मो धनञ्जयष्षष्ठः, सूत्रात्मा सर्वत्रव्याप्तः सप्तमश्च ऋ० भू० १२८, ३१.१५. **परिधिना**=यः परितः सर्वतो धीयते तेन (यजुर्वेदेन) १८.६३. **परिधिम्**=सर्वलोकाऽऽवरणम् ७.३३.९. सर्वतो धीयन्ते नद्यो यस्मिँस्तम् (समुद्रम्) ३.३३.६. परितः सर्वतो धीयते यस्मिँस्तम् (प्रभुत्वम्) २.१७. भा०—धर्माचरणं कार्यमधर्माचरणं त्याज्यमिति मर्यादाम् ३५.१५. **परिधिः**=परितः सर्वाणि वस्तूनि धीयन्ते येन सः (वायुः) २.३. विद्यापरिधानम् २.३. विद्याऽवधिः (अग्निः=प्रत्यक्षो भौतिकः) २.३. आवरणं मर्यादा १.१२५.७ अस्य सर्वस्य विश्वस्य पृष्ठावरणम् (गोलस्य पदार्थस्योपरि सर्वतः सूत्रवेष्टनं कृत्वा यावती रेखा लभ्यते स परिधिरित्युच्यते) ऋ० भू० १४७ **परिधीन्**=यत्र परितः सर्वतो धीयन्ते तान् (मार्गान्) १९.५३. [परि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'कर्मण्यधिकरणे च' सूत्रेण किः प्रत्ययः । दिशः परिधयः ऐ० ५.२८. इमे वै लोकाः परिधयः तै० ३.८.१८.४. गुप्त्यै वाऽभितः परिधयो भवन्ति श० १.३.४.८. आधानानि परिधयः क० ४४.९. परिधयो रश्मयः मं० ४.५.५.]

परिधीनिव सर्वत उपस्थित गोलरेखा इव १.५२.५. [परिधीन्-इव पदयोः समासः]

परिधेयाः परितः सर्वतो धातुं धापयितुमर्हाः (देवाः=विद्वांसो दिव्याः पदार्था वा) २.१८. [परि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'अचो यत्' इति यत् । 'ईद् यति' इति धातोरीकारादेशः]

परिनक्षति सर्वतो व्याप्नोति ४.४३.५. [परि+णक्ष गतौ (भ्वा०) धातोर्लट् । ननक्षे व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८.]

परिनयन्ति सर्वतः प्राप्नुवन्ति २५.२७. [परि+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

परिनिषेदथुः परितो निषीदतः ४.५६.७. [परि+नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिटि मध्यम-द्विवचनम्]

परिपतये परितः सर्वतः पतयो यस्मिँस्तस्मै (रक्षणाय) ५.५. **परिपतिम्**=स्वामिनम् ३४.४२. पतिं वर्जयित्वा वा सर्वतः स्वामिनम् ६.४९.८. [परि-पतिपदयोः समासः । परिपतिम्=अधिपतिम् नि० १२.१८. मनो वै परिपतिः तै० सं० ६.२.२.३. गो० २.२.३.]

परिपन्थिनम् प्रतिकूलं, पन्थानं परित्यज्य स्तेयाय

गुप्तं स्थितम् प्र०—अत्र 'छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि' अ० ५.२.८९. अनेन पर्यवस्थाता विरोधी गृह्यते १.४२.२. **परिपन्थिनः**=उत्कोचका दस्यवः ४.३४. [परिपन्थिन्शब्दो 'छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ पर्यवस्थातरि' अ० ५.२.८९. सूत्रेण इनि-प्रत्ययान्तो निपात्यते]

परिपन्थीव यथा दस्युस्तथा चोराणां प्राण-पदार्थ-हर्त्ता (शूरः सेनापतिः) १.१०३.६. [परिपन्थिन्-इवपदयोः समासः । परिपन्थिन् इति व्याख्यातम्]

परिपरिणः परितः सर्वतश्छलेन रात्रौ वा परस्वादायिनश्चौराः प्र०—छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ० अ० ५.२.८९. अनेनैतौ शब्दौ स्तेनविषये निपात्येते ४.३४. [परिपरिन् शब्दो निपात्यते 'छन्दसि परिपन्थिपरिपरिणौ०' अ० ५.२.८९. सूत्रेण]

परिपश्यन्ति सर्वतोऽवीक्षन्ते २५.३५. परितः सर्वतः प्रेक्षन्ते ऋ० भू० १.३२. [परि+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लट् । धातोः पश्यादेशः शिति]

परिपातम् सर्वतो रक्षतम् ३४.३०. **परिपातः**=सर्वतो रक्षतः १.१३६.५. **परिपातु**=सर्वथा पालन करो, सदा सब उपद्रवों, पीड़ाओं से पृथक् रखो, यथावत् रक्षा करो आर्याभि० १.४७, ऋ० ७.८.१२.२. [परि+पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लोट्]

परिपानम् परितः सर्वतः पानम् ५.४४.११. [परि+पा पाने (भ्वा०) धातोर्भावे ल्युट्]

परिपासतः सर्वतो रक्षेताम् ७.३४.२३. [परि+पा रक्षणे (अदा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

परिपाहि परितो रक्ष ३३.६९. सर्वतो रक्ष ३३.८४. [परि+पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लोट्]

परिपिन्वस्व सर्वतो सेवस्व भा०—प्रशंसितो भव १२.१०. [परि+पिवि सेवने (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

परिपूतः सर्वतः पवित्रः (सोमः) १.१३५.२. [परि+पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्तः]

परिप्रयाथ सर्वतः प्राप्नुयात ४.५१.५. [परि+प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लट्]

परिप्ररोहन्ती सर्वतः प्रकृष्टतया वर्द्धमाना (दूर्वा=ओषधी) १३.२०. [परि+प्र+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

परिप्रासृजः सर्वतः प्रासृज ३.३२.६. [परि+प्र+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लोडर्थे लङ्]

परिप्रीतः सर्वतः प्रसन्नः (मित्रः) १.१९०.६. [परि+प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः क्तः]

परिप्लवेभ्यः तारकेभ्यः नक्षत्रेभ्यः) २२.२९. [देवचक्रं वा एतत् परिप्लवम् कौ० २०.१.]

परिबभूव सर्वथा तिरस्कार करता है सं० वि० ६, १०.१२१.१०. **परिबभूवतुः**=सर्वतो भवतः ५.१६.४. **परिबभूवुः**=परितो भवन्ति ४.३३.१. [परि+ भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

परिबाधमानः सर्वतो निरुन्धानः (राजभृत्यः) ६.७५.१४. सर्वतो निवारयन् (पुमान्=पुरुषार्थी सेनापतिः) २९.५१. [परि+बाधृ विलोडने (प्रतिघाते) धातोः शानच्]

परिबाधः सर्वतो बाधनानि ५.२.१०. [परि+बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः]

परिबोभवीति सर्वतो भृशं भवति ३.५३.८. [परि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

परिभुज समन्तात् पालय १६.११. **परिभुजत्**=सर्वतो भुञ्ज्यात् पालयेत् प्र०—अत्र भुज धातोर्लिटि विकरणव्यत्ययेन शः १.१००.१४. [परि+भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शः]

परिभुवः परितः सर्वतो विद्यासु भवन्ति ते (विपश्चितः=विद्वांसो जनाः) १.१६४.३६. **परिभूः**=यः परितः सर्वतः पदार्थेषु भवति सः (अग्निः=परमेश्वरो भौतिको वा) प्र०—परीति सर्वतोभावं प्राह नि० १.१३, १.१.४. सर्वतो भावयिता (विद्वान् जनः) ५.३.६. सर्वोपरि विराजमानः (जगदीश्वरः) १.९७.६. परितः सर्वतो भवतीति अ०—यज्ञप्रदः (जगदीश्वरः) ४.३७. व्याप्तः (परमेश्वरः) वे० भा०, ऋ० १.१.१४. सर्वतः सामर्थ्ययोगेन सर्वोपरि विराजमानः (ईश्वरः) पं० वि० यः सर्वतो भवति सर्वेषामुपरि विराजमानः (सविता=परमेश्वरः) ४.५३.५. सर्वतः पुरुषार्थी (जगदीश्वरः) १५.४. सब दिशाओं और सब जगहों में परिपूर्ण हो रहा सबके ऊपर विराजमान (ईश्वर) आर्याभि० २.२, ४०.८. यो दुष्टान् पापिनः परिभवति तिरस्करोति सः (ईश्वरः) ४०.८. [परि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् । संवत्सरेण परिभूः (इन्द्रः) तै० सं० ४.४.८.१.]

परिभूष सर्वतोभावेन भूषयति अलङ्करोति १.१५.४. **परिभूषति**=सर्वतोऽलङ्करोति ३.३.२. **परिभूषथः**=परितोऽलङ्कुरुथः ३.१२.६. [परि+भूष अलंकारे (भ्वा०)

धातोर्लोट्। अन्यत्र लटि रूपाणि]

परिभ्वे परिभवनीयः भा०—परिभवमाप्नोति २.१६.३. [परि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

परिमर्मृज्यते सर्वतोऽतिशयेन शुध्यते १.९५.८. [परि+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

परिमन्यवः परितः सर्वतो मन्युः क्रोधो येषां वीराणां ते १.३९.१०. [परि-मन्युपदयोः समासः]

परिमंसते वर्जनीयं विरुद्धं वा परिणमति ७.५९.३. [परि+मनु अवबोधने (तना०) धातोर्लेट्। सिब् विकरणः]

परिमिता परिमाणयुक्तानि (पदानि=नामाख्यातोपसर्गनिपाताख्यानि) १.१६४.४५. [परि+माङ् माने (जु०) धातोः क्तः। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

परिमिताम् चारों ओर से समचौरस परिमाण वाली (शाला) को सं० वि० १६६, अथर्व० ९.२.३.१. [परिमितं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

परिमिमीते सर्वतो जनयति ३.१.५. [परि+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लट्]

परियज सर्वतः सङ्गच्छस्व ६.४७.२७. [परि+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लट्]

परियन् परितः सर्वतः प्राप्नुवन् (यज्ञः=राजधर्मः) १.१७३.११. [परि+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ]

परियन्ति सर्वतः प्राप्नुवन्ति १.११५.३. अच्छे प्रकार प्राप्त होती हैं सं० वि० १०४, २.३५.४. परिगच्छन्ति २.३५.९. [परि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्। 'इणो यण्' इति यणादेशः]

परियाति सर्वतः प्राप्नोति ९.२५. **परियाथः**=सर्वतः प्राप्नुतम् १.११२.१३. **परियासि**=सर्वतो याहि १.१२१.९. सर्वतः परित्यजसि ६.३७.४. [परि+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लट्]

परि-याथन सर्वतः प्राप्नुत ५.५५.७. [परि+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्। 'तप्तनप्तनथनाश्चे' ति तस्य थनादेशः]

परि-रक्षसि सर्वतो रक्षसि ४.९.८. [परि+रक्ष पालने (भ्वा०) धातोर्लट्]

परिरापः परितो रपः पापं यस्य तम् (पापिजनम्) २.२३.१४. सर्वतः पापात्मकं कर्म्म २.२३.३. [परि-रपपदयोः समासः। रिपो रिप्रमिति पापनामनी भवतः नि० ४.२२.]

परिरिहन् परित्यजन् (अग्निः) १.१४०.९. [परि+रह त्यागे (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। धातोरुपधाया इकारो वर्णव्यत्ययेन]

परिवक्ष्व परिवह ८.२६. [परि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन सिप्]

परिवञ्चते सर्वतः कापट्येन वर्त्तमानाय भा०—कपटव्यवहारेण छलयते (प्रजाजनाय) १६.२१. [परि+वञ्चु गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्ताच् चतुर्थी]

परिवत्सरः वर्जितव्यो वत्सर इव दुष्टाचार-त्यागी (विद्वान् जिज्ञासुर्वा) २.४५. **परि-वत्सराय**=द्वितीयवर्षनिर्णयाय ३०.१५. [सूर्यः परिवत्सरः तां० १७.१३.७. परिवत्सरो बलीवर्दः तै० ३.८.२०.५.]

परिवनवत् सर्वतः संविभाजयेत् ५.४४.७. [परि+वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लेट्। तिप आदौ वकारोपजनश्छान्दसः]

परिवरत् परिवृणुयात् ४.२.१०. **परिवरन्त**=सर्वतो वारयन्ति ३.३२.१६. [परि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन शप्। अन्यत्र लङ्। अडभावः]

परिवर्गे परितः सर्वतः सम्बन्धे १.१२९.८. [परि-वर्गपदयोः समासः]

परिवर्त्तमाने परितः सर्वतः वर्त्तमाने (पञ्चारे चक्रे) १.१६४.१३. [परि-वर्त्तमानपदयोः समासः। वर्त्तमानः=वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः शानच्]

परिवर्त्तयाते सब ओर से सिद्ध कर सकते हैं सं० वि० १०५, ५.३७.३. [परि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

परिवाहिणीः अपने अनुकूल पतियों के साथ प्रसन्न रहने वाली या अपने समान प्यारी (राजस्त्रियां) १०.३. [परि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिनिः। ततः स्त्रियां ङीप्]

परिवित्तम् कृतविवाहे कनिष्ठे बन्धावविवाहितं ज्येष्ठम् ३०.९. [परि+विद्+क्तः। परिभाषितोऽयं शब्दो मनुना मनुस्मृतौ ३.१७१.]

परिविवव्रुः परितो वृण्वति ४.१.१५. [परि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लिट्। छान्दसमभ्यासस्येत्वम्]

परिविविदानम् अप्राप्तदाये ज्येष्ठे प्राप्तदायं कनिष्ठम् ३०.९. [परि+विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लिटः कानच्]

परिविन्दन् सर्वतो लभन्ते १.७२.२. [परि+विद्लृ

लाभे (तुदा०) धातोर्लङ् । अडभावः]

परिविश्वानि विश्वस्थानि सर्वाणि वस्तूनि प्राणि जातानि च ऋ० भू० २१६, ऋ० ३.२.२४.६. [परिविश्वपदयोः समासः]

परिविष्टम् सर्वतो व्याप्नुतम् (राज्यम्) १.११६.२०. [परि+विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

परिविष्टी सर्वतो विद्या व्याप्नोति यया तया क्रियया ४.३३.२. [परि+विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । ततः 'सुपां सुलुग्०' इति टा-स्थाने पूर्वसवर्णदीर्घः । विष्टी कर्मनाम निघं० २.१.]

परिवीतम् परितः सर्वतो वीतं व्याप्तं कमनीयं च जलम् १.१३०.३. **परिवीतः**=परितः सर्वतो व्याप्तशुभगुणकर्मस्वभावः (विद्वान् राजा) ४.१.७. परितः सर्वतो व्याप्तविद्यः (विद्वज्जनः) ३.८.४. परित आवृतः (जीवः) १.१६४.३२. सब ओर से यज्ञोपवीत, उत्तम-ब्रह्मचर्य और उत्तम शिक्षा, विद्या से युक्त (पुरुष) स० प्र० १०६, ३.८.४. परितः सर्वतो वीतं प्राप्तं विज्ञानं येन सः (मनुषः=विद्वज्जनः) १.१२८.१. [परि+वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोः क्तः]

परिवीः यथा परितः सर्वतः सर्वा विद्या व्येति व्याप्नोति यथा अ०—सर्वविद्याव्यापकवत् (सभाध्यक्षो राजा) ६.६. [परि+वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोः क्विप्]

परिवृङ्क्त सर्वतः त्यजत १.१७२.३. **परिवृङ्ग्धि**= सर्वतो वर्धय ६.७५.१२. सर्वतो वर्जय १३.४१. **परिवृणक्ति**=सर्वतो दूरीकरोति ६.५१.१६. परितस्त्यजति १.१२४.६. सर्वतश्छिनत्ति ३.२९.६. सर्वतो वर्जयति प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः ४.२९. परिवृणक्तु=परितो बर्जयतु ७.४६.३. परित्यजतु १६.१२. सर्वतः पृथग् भवतु ७.६०.९. सर्वतः पृथक् करोतु १६.५०. सर्वतश्छिन्नो भवतु १३.४५. **परिवृणक्षि**=सर्वतस्त्यजसि १.१२९.३. [परि+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

परिवृज्याम् परितस्त्यजेयम् २.२७.५. **परिवृज्याः**=परिवृणक्तु ६.२८.७. [परि+वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्लिङ्]

परिवृणीमहे सर्वतः स्वीकुर्महे ४.४१.७. [परि+वृञ् वरणे (क्र्या०) धातोर्लट्]

परिवृतम् सर्वतः स्वीकृतम् (राधः=धनम्) ७.२७.२. [परि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः क्तः]

परिवृताः आच्छादिता विदुष्यः (स्त्रियः) १.१४४.२. [परि+वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तः । अनित्यण्यन्ताश्चुरादय इति णिच् न]

परिवेद सर्वतो जानीयाम् १२.६४. [परि+विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्लट् । 'विदो लटो वा' इति णल्]

परिवेष्टारम् परितः सर्वतो व्याप्तविद्यं विद्वांसम् ३०.१३. परिवेषणकर्त्तारम् (पुरुषम्) ३०.१२. **परिवेष्टारः**=परितो व्याप्ताः (विद्वांसः पतयः) ६.१३. [परि+विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

परिवोचे सर्वतो वदामि ७.३३.१. [परि+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लुङ् । 'अस्यतिवक्ति०' सूत्रेणाङि प्रत्यये 'ब्रुवो वचिः' इति वचिरादेशः । 'वच उम्' इति धातोर् उमागमे आद्गुणे रूपम् । अडभावश्छान्दसः]

परिव्यत सर्वतो व्याप्नुत २.१७.२. [परि+वी गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शः । व्यय गतौ (भ्वा०) धातोर्वा रूपम्]

परिव्ययन्ताम् सर्वतो विशिष्टतया प्राप्नुवन्तु जानन्तु वा ६.६. [परि+व्यय गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

परिव्ययामसि सर्वतो संवृणुमः १७.५. सर्वतः प्राप्ताः स्म १७.४. [परि+व्यय गतौ (भ्वा०) धातोर्लट् । 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

परिव्युच्छन्ती सर्वतो निवासयन्ती (दुहिता=कन्या) ४.५२.१. [परि+वि+उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

परिशयानम् योऽन्तरिक्षे सर्वतः शेते तम् (अहिं=मेघम्) ४.१९.२. सर्वतः शयानमिव (अहिं=मेघम्) ६.३०.४. सर्वत आकाशे शयानमिव वर्त्तमानम् (अहिं=मेघम्) ३.३२.११. [परि+शीङ् शये (अदा०) धातोः शानच्]

परिशम् परितः सर्वतोऽशं लेशम् (अन्नम्) प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इत्यलोपः १.१८७.८. [परिअंशपदयोः समासः । अकारलोपश्छान्दसः]

परिषदन् परिषीदन्ति ४.३.११. [परि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लङ् । अत्र छन्दसि सीदादेशोऽडागमश्च न भवतः]

परिषदन्तः परिषदमाचरन्तः (राजप्रजाजनाः) ४.२.१७. [परि+षद्लृ धातोः शतृ-प्रत्ययः । सीदादेशो न, छान्दसत्वात्]

परिषदः परिषीदन्ति यासु ताः सभाः ३.३३.७. [परि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् स्त्रियां क्विप्]

परिषद्यम् परिषदि सभायां भवम् (रेक्णः=धनम्) ७.४.७. **परिषदः**=परिषदि भवः (भगवान् विद्वान्वा) ५.३२. सभा का आज्ञापक, सभ्य, सभापति, सभाप्रिय, सभारक्षक, सभा से ही सुखदायक (ईश्वर) आर्याभि० २.१७, ५.३२. [परिषद् इति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत् । परिषद्यं=परिहर्त्तव्यं हि नोपसर्त्तव्यम् नि० ३.२.]

परिषस्वजाते सर्वतः स्वजेते, आश्रयतः १.१६४.२०. सर्वथा आश्रय करते हैं स० प्र० २८३, १.१६४.२०. [परि+ष्वञ्ज परिष्वङ्गे (भ्वा०) धातोर्लिट् । श्रन्थिग्रन्थि०' अ० १.२.६. वा० सूत्रेण लिटः कित्वेनानुनासिकलोपः]

परिषस्वजाना परितः सर्वतः सङ्गं कुर्वाणा (योषा=स्त्री) २९.४०. परितः कृतसङ्गा (योषा=पत्नी) ६.७५.३. [परि+ष्वञ्ज परिष्वङ्गे (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच् । स्त्रियां टाप्]

परिषिक्तम् सर्वत आर्द्रीभूतं कृतम् (अन्धः=अन्नम्) ४.१.१९. सर्वतः सिक्तम् (अन्धः=अन्नम्) ६.६८.११. परितः सर्वतः श्रेष्ठैः पदार्थैः संयोजितम् (आदित्यब्रह्मचर्यम्) ४.३५.९. **परिषिक्तः**=परितः सर्वतोऽन्यैरुत्तमैर्द्रव्यैः सिक्तः (सोमः=ओषधिगणः) २.१८.६. [परि+षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोः क्तः]

परिषिक्ता परितः सर्वतः सिक्तानि (मधुराणि द्रव्याणि) १.१७७.३. [परि+षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोः क्तः । छन्दसि शेर्लोपः]

परिषिक्तेभिः सर्वथा कृतसिञ्चनैः (सेचनक्रियाभिः) १.१०८.४. [परि+षिच् क्षरणे (तुदा०)+क्तः । 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

परिषिच्यते सर्वतः सिच्यते १९.१५. [परि+षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोः कर्मणि लट्]

परिषूताः परितः सर्वतः सूता उत्पन्ना उत्पादिता वा पदार्थाः १.५३.८. [परि+षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः क्तः]

परिषूतेः परितः सर्वतो द्वितीये विद्याजन्मनि प्रादुर्भूतात् (विद्वज्जनात्) १.११९.६. [परि+षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः क्तिन् । ततः पञ्चमी]

परिष्कन्दम् सर्वतो रेतसः सेक्तारम् (पुरुषम्) ३०.१३. [परि+स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि]

परिष्कृतः सर्वतः शुद्धः सम्पादितः (पुरोळाः=अन्नविशेषः) ३.२८.२. शुद्ध होता हुआ (इन्द्रः=आनन्ददायक संन्यासी) सं० वि० १९६, ९.११३.४. **परिष्कृताः**=परितः शोभिताः (मधुश्चुत=खाद्य-पदार्थाः) प्र०—संपर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे इति सुट् २१.४२. [परि+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्तः । 'संपरिभ्यां करोतौ भूषणे इति कात्पूर्वः सुट् । पशवः परिष्कृतः जै० १.९०.]

परिष्टिः परितः सर्वत इष्टिरन्वेषणं यस्याः सा (द्यौः) प्र०—अत्र 'एमन्नादिषु पररूपं वक्तव्यम्' ६.१.९४. इति वार्त्तिकेन पररूप एकादेशः १.६५.२. **परिष्टौ**=परितः सङ्गन्तव्यायाम् (प्रजायाम्) ७.१९.७. [परि-इष्टिपदयोः समासे 'एमन्नादिषु०' इति वा० सूत्रेण पररूपम् । इष्टिः=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः क्तिन् । अथवा इष इच्छायाम् (तुदा०) धातोः बाहु० क्तिच्]

परिष्टुतिः परितः सर्वतः स्तुतिः प्रशंसा भा०—प्रशंसादृष्टान्तः ३७.२. परितः सर्वतः स्तूयते यया सा (स्वाहा=सत्या वाक्) ५.१४. परितः सर्वतः स्तुवन्ति यया सा (महती प्रशंसा) ११.४. परितो व्याप्ता चाऽसौ स्तुतिश्च ५.८१.१. [परि-स्तुतिपदयोः समासः । स्तुतिः=ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

परिष्टुभः सर्वतो धर्त्तारः (मरुतः=वायव इव) १.१६६.१. [परि+ष्टुभु स्तम्भने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

परिष्टोभत सर्वतः स्तम्भयत १.८०.९. [परि+ष्टुभु स्तम्भने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

परिष्ठात् सर्वतस्तिष्ठेत् ३.१५.६. **परिष्ठाः**=सर्वतस्तिष्ठति ४.३०.१२. [परि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अडभावः सिचो लुक् च]

परिष्ठाम् यः परितस्तिष्ठति तम् (अहिं=मेघम्) ६.७२.३. **परिष्ठाः**=सर्वतः स्थिताः (ओषधीः=सोमयवाद्याः) १२.८४. [परि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

परिष्ठितम् परितः सर्वतः स्थितम् (क्षोदः=उदकम्) ६.१७.१२. [परि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः । 'द्यतिस्यतिमास्थामि' तीत्त्वम्]

परिष्ठिताः परितः सर्वतः स्थिताः (अपः=जलानि) ७.२१.३. [परि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

परिष्ठुः सर्वतस्तिष्ठन्ति ५.१५.३. सर्वतस्त्यागे तिष्ठेयुः १.१६७.९. [परि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्, अडभावः]

परिष्वजत् सर्वतः सम्बध्नाति ६.६०.१०. [परि+ष्वञ्ज परिष्वङ्गे (भ्वा०) धातोर्लङ्, अडभावः। 'दंससञ्जस्वञ्जां शपि' इत्यनुनासिकलोपः]

परिसदाम परितः प्राप्नुयाम ७.४.६. [परि+षद्लृ विशरणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लङ्। सीदादेशोऽट् च न भवतश्छान्दसत्वात्]

परिसिञ्चत सर्वतः सिञ्चत १९.२. [परि+षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोर्लट्]

परिस्तरणम् जो सब ओर से शास्त्र, आसन आदि सामग्री सं० वि० २०८, अथर्व० ९.६.१.२. [परि+स्तृञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्ल्युट्]

परिस्तः अभितो भवतः १.६१.८. [परि+अस भुवि (अदा०) धातोर्लट्। 'श्नसोऽल्लोपः' इत्यल्लोपः]

परिस्रव यथार्थ पुरुषार्थ कर सं० वि० १९६ अथर्व० ९.११३.४. सब प्रकार से प्राप्त कर सं० वि० १९६, अथर्व० ९.११३.६. सब ओर से गमन कर सं० वि० १९५, अथर्व० ९.११३.२. सर्वथा सत्योपदेश की वृष्टि कर सं० वि० १९५, अथर्व० ९.११३.१. करुणावृष्टि कीजिए, कृपा से सर्वथा प्राप्त हूजिए सं० वि० १९७, अथर्व० ९.११३.१०, ९.११३.९. [परि+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

परिस्रुत् यः परितः सर्वतः स्रवति प्राप्नोति स रसः १९.१५. **परिस्रुतम्**=सर्वतः प्राप्तम् (सोमम्=ओषधिरसम्) १९.४. परितः सर्वतः स्रुतं सुरसयोगेन परिपक्वं फलादिकम् २.३४. माक्षिकं मधुकालपक्वं फलादिकं च ऋ० भू० २५४, २.३४. **परिस्रुतः**=सर्वतः स्रुतः पक्वात् (अन्नात्=यवादेः) १९.७५. सर्वतः प्राप्तः (प्रजापतिः=राजा) १९.७९. **परिस्रुता**=परितः स्रुता प्राप्तेन (रसेन) २१.३१. सर्वतोऽभिगतेन पुरुषार्थेन २१.३८. सर्वतो मधुरादिरसयुक्तेन (मासरेण=प्रमितेन मण्डेन) २०.६६. परितः सर्वतः सुता प्राप्तेन रसेन २१.२९. परितः सर्वतः स्रवति तेन (जलादिपदार्थेन) २०.६५. परितः सर्वतः स्रवन्ति येन तेन (जलप्रस्रवणेन) २०.६३. परितः स्रवन्ति प्राप्नुवन्ति येन (पयसा=दुग्धेन) १९.९५. परितः सर्वतः सुतम् (रसम्=आनन्दम्) प्र०=अत्र 'सुपाम्०' इत्याकारादेशः १९.८३. [परि+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

परिस्रुता परितः सर्वतो गच्छन्तावव्याहतगती (सरस्वती=प्रशंसिता गृहिणी तथा पुरुषः) प्र०—'स्रु गतौ' धातोः क्विप्, तुक्, द्विवचनस्य 'सुपाम्०' इत्यात्वम् २०.५९. [परि+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'सुपां सुलुग्' इति द्विवचनस्याकारादेशः]

परिहवामहे सर्वतः स्तुवीमः १.७.१०. सर्वतः स्वीकुर्महे ५.६४.१. [परि+हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लट्। 'वहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुर्न भवति]

परिहितम् सर्वतः सुखप्रदम् (ओजः=बलम्) १.११२.१०. [परि+दधातेः क्तः। 'दधातेर्हिः' इति हिरादेशः]

परिहिताः परितः सर्वतो हिता हितकारिणः (सर्वे मनुष्याः) ऋ० भू० १०२, अथर्व० १२.५.३. सब के हितकारी (स्त्रीपुरुषो !) सं० वि० १४३, अथर्व० १२.५.३. [परिहितं व्याख्यातम्। ततः प्रथमाबहुवचनम्]

परिह्वृत् यः परितः सर्वतो ह्वरति कुटिलां गतिं गच्छति सः (दुर्जनः) ६ ४ ५. [परि+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

परीणशे परितः सर्वतो नश्यन्त्यदृश्या भवन्ति यस्मिँस्तस्मिन् (अंहसि=पापे) प्र०—अत्र घञर्थे कः प्रत्ययो 'अन्येषामपि०' इति दीर्घश्च १.५४.१. [परि+णश अदर्शने (दिवा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' इति कः प्रत्ययः]

परीणसम् वहुविधम् (रयिं=धनम्) प्र०—परीणस इति बहुनाम निघं० ३.१, ३.२४.५. **परीणसः**=बहून् (गृहान्) १.१३३.७. बह्वचः (गूर्त्तयः=उद्यमयुक्ताः कन्याः) १.५६.२. **परीणसा**=बहुगुणया (राया=श्रिया) १.१२९.९. वहुविधेन (राया=धनेन) ४.३१.१२. [परीणसा वहुनाम निघं० ३.१. अन्नं वै परीणसम् जै० ३.१७४.]

परीणहम् परितस्सर्वतः प्रबन्धनं सुखाच्छादकत्वेन व्यापनं वा प्र०—'णह बन्धने' इत्यस्मात् 'क्विप् च' इति क्विप् 'नहिवृति०' अनेनाऽऽदेर्दीर्घः १.३३.८. [परि+णह बन्धने (दिवा०) धातोः क्विप्प्रत्यये पूर्वस्य दीर्घः]

परीत्तः सर्वतो दत्तः (जवः=वेगः) ९.९. [परि+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्तः। 'अच उपसर्गात्तः' इति तकारादेशे 'दस्ति' सूत्रेण दीर्घः]

परीत्य परितः सर्वतोऽभिव्याप्य ३२.११. सर्वत इत्वा प्राप्य विदित्वा च ऋ० भू० ८९, ३२.११. व्यापक होकर सं० वि० २१५, ३२.११. एक कण भी उसके

बिना अपर्याप्त (खाली) न रह कर आर्याभि० २.१०, ३२.११. [परि+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

परीयानम् सर्वतो गच्छन्तम् (रथं=रमणीयं विमानादियानम्) १.१८०.१०. [परि=या प्रापणे (अदा०) धातोर्ल्युट् करणे]

परीवापस्य पिष्टादेः १९.२२. **परीवापः**=परितः सर्वतो वापो बीजारोपणं यस्मिन् सः (क्षेत्रम्) १९.२१. [परि-वापपदयोः समासः । वापः=डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः । अन्नमेव परिवापः ऐ० २.२४. भारत्यै परिवापः तै० १.५.११.२. सरस्वतीवान् भारतीवान् परिवापः ऐ० २.२४. मै० ३.१०.६. काठ० २९.१.]

परीवृतम् सर्वत आवृतम् (अर्णवं=समुद्रम्) २.१३.१८. **परीवृताः**=परीतोऽन्धकारेणाऽऽवृताः (द्वारः=द्वाराणि) १.१३०.३. परितः सर्वतो वृता युक्ताः प्रकाशयितारः (सर्वे मनुष्याः) ऋ० भू० १०१, अथर्व० १२.५.२. सब ओर से संयुक्त (हे स्त्रीपुरुषो !) सं० वि० १४३ अथर्व० १२.५.२. परित आच्छादिता विदुष्यः १.१४४.२. [परि+वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तः । पूर्वस्य दीर्घश्छान्दसः]

परीवृता परितः सर्वतो वर्त्तन्ते यानि तानि (गोत्रा=गोत्राणि) २.१७.१. [परि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः । ततः शेर्लोपश्छन्दसि) पूर्वस्य दीर्घश्छान्दसः]

परीहि सर्वतः प्राप्नुहि ७.१३. [परि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

परुषः परुषः मर्मणो मर्मणः १३.२०. ['परुषः' पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । परुष् इति व्याख्यास्यते]

परुषा मर्मणा २०.२७. परुषि=कठोरे व्यवहारे ७.५०.२. **परुः**=मर्म २०.२७. **परूंषि**=मर्मस्थलानि १८.३. कठोराणि वचनानि २३.४१. कठोर स्वभाव आदि सं० वि० २०८, अथर्व० ९.६.१.१. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'अर्त्तिपॄवपियजि०' उ० २.११७. सूत्रेण उसिः प्रत्ययः]

परुषाः कठोराः (वाचः) ५.२७.५. **परुषे**=कठोरे व्यवहारे ६.५६.३. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'पॄनहिकलिभ्य उपच्' उ० ४.७५. सूत्रेण उपच् । परुषे=पर्ववति भास्वतीत्यौपमन्यवः नि० २.६.]

परुष्णीम् पालिकाम् (पृथिवीं=भूमिम्) ७.१८.८. विभागवतीम् (शत्रुसेनाम्) ४.२२.२. **परुष्ण्याम्**=पालनकर्त्र्याम् (पृथिव्याम्) ५.५२.९. [परुष् इति व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थीयो नः प्रत्ययः । ततः स्त्रियां छान्दसो ङीष् । इरावतीं परुष्णीत्याहुः पर्ववती भास्वती कुटिलगामिनी नि० ९.२५.]

परुष्परुः मर्म मर्म २५.४१. प्रतिमर्म १.१६२.१८. [परुष्पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । परुष् इति व्याख्यातम्]

परेताः सर्वतः सुखं प्राप्ताः (जनाः) १३.३१. [परा+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः]

परेहि पृथग् भव १.४.४. दूरं गच्छतु अ०—परैतु ३५.७. दूरं गच्छ १७.४४. [परा+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

परैतन दूरं प्राप्नुत प्र०—अत्र 'इण गतौ' इत्यस्माल्लोटि युष्मद्बहुवचने 'तप्तनप्तनथनाश्च' अ० ७.१.४५. इति तनबादेशः ५.६१.४. [परा+आङ् इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोटि तप्रत्ययस्य तनबादेशः]

पर्जन्य ! मेघ इव वर्त्तमान (राजपुरुष) ५.६३.४. **पर्जन्यः**=पालनजनकः (मेघः) ५.८३.४. [पर्षति सिञ्चतीति विग्रहे पृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'पर्जन्यः' उ० ३.१०३. सूत्रेण अन्यः प्रत्ययो निपात्यते । निपातनात् षकारस्य जकारः । पर्जन्यस्तृपेराद्यन्तविपरीतस्य तर्पयिता जन्यः । परो जेता वा । परो जनयिता वा । प्रार्जयिता वा रसानाम् नि० १०.१०. पर्जन्यो वा उद्गाता श० १२.१.१.३. पर्जन्यः सदस्यः गो० पू० १.१३. पर्जन्यः (संवत्सरस्य) वसोर्धाराः तै० ३.११.१०.३. पर्जन्यो वा अग्निः श० १४.९.१.१३. पर्जन्यस्य विद्युत् (पत्नी) तै० आ० ३.९.२. पर्जन्यो भूत्वा (प्रजापतिः) प्रजानां जनित्रमभवत् जै० १.३१४. पर्जन्यो मे मूर्ध्नि श्रितः तै० ३.१०.८.८. वृषा पर्जन्यः तै० सं० २.४.९.४.]

पर्जन्य इव यथा मेघो गर्जनं कुर्वन् वृष्टिं तनोति १.३८.१४. [पर्जन्य-इव पदयोः समासः । पर्जन्य इति व्याख्यातम्]

पर्जन्यरेतसे पर्जन्यस्य रेत उदकमिव रेतो वीर्यं यस्यास्तस्यै (शूरवीरायै राज्ञै) प्र०—रेत इत्युदकनाम निघं० १.१२, ६.७५.१५. [पर्जन्य-रेतस्-पदयोः समासः]

पर्जन्यवाता पर्जन्यश्च वातश्च तौ ६.५०.१२. पर्जन्यस्थौ वायू ६.४९.६. [पर्जन्य-वातपदयोः समासः]

पर्णकम् यः पर्णेषु पालनेषु कुत्सितस्तम् (भील-जनम्) ३०.१६. [पर्णप्राति० 'कुत्सिते' अ० ५.३ ७४. सूत्रेण

कः प्रत्ययः। पर्णमिति व्याख्यास्यते]

पर्णम् पत्रम् ४.२७.४. पक्षम् १.११६.१५. प्रजापालनम् ४.४०.३. **पर्णाय**=यः प्रतिपालयति तस्मै (पुरुषाय) १६.४६. **पर्णे**=पर्णवच्चञ्चले जीवने भा०—क्षणभङ्गुरे जीवने ३५.४. चलिते पत्रे १२.७९. **पर्णैः**=पक्षैः १.१८३.१. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'धापॄवस्यज्यतिभ्यो नः' उ० ३.६. सूत्रेण नः प्रत्ययः। गायत्रो वै पर्णः तै० ३.२.१.१. सोमो वै पर्णः श० ६.५.५.१. ब्रह्म वै पर्णः तै० १.७.१९.३. राष्ट्रं वै पर्णः श० ६.५.१.१.]

पर्णयम् पर्णानि परप्राप्तानि वस्तूनि याति प्राप्नोति तं चौरम् १.५३.८. [पर्णोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि कः प्रत्ययः]

पर्णशदाय यः पर्णानि शीयते छिनत्ति तस्मै (पुरुषाय) १६.४६. [पर्णोपपदे शद्लृ शातने (भ्वा०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः कर्त्तरि]

पर्णा पर्णानि १.१८२.७. [पर्णप्राति० नपुंसके जसः शेर्लोपश्छन्दसि। पर्णमिति व्याख्यातम्]

पर्णिनः पक्षिणः ६.४६.११. [पर्णप्राति० मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः]

पर्तृभिः पालकैः (शुभगुणैः) ६.४८.१०. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

पर्यक्रमीत् परिक्राम्यति ४.१५.३. [परि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

पर्यगात् परितः सर्वतोऽगाद् व्याप्तवानस्ति पं० वि० सब में व्यापक है स० प्र० २४४, ४०.८. सर्वतो व्याप्तोऽस्ति ४०.८. आकाश के समान सब जगह में परिपूर्ण (व्यापक ईश्वर), आर्याभि० २.२, ४०.८. [परि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ्। 'इणो गा लुङि' सूत्रेण गादेशे सिचो लोपे च रूपम्]

पर्यगृभ्णाः सर्वतो गृहाण ५.३१.७. [परि+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः लङ् सामान्यकाले]

पर्यतिष्ठत् सर्वत आवृत्य स्थितः १.३२.८. [परि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। शिति धातोस् तिष्ठादेशः]

पर्यधत्थाः सर्वतो दधासि दधाति वा प्र०—अत्र लडर्थे लङ् पक्षे व्यत्ययश्च २.१७. [परि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लङ्]

पर्यनुवाति सर्वतोऽनुगच्छति ९.१५. [परि+अनु+वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोर्लट्]

पर्यनेषत सर्वतोऽनेषत ३५.१८. [परि+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'व्यत्ययो बहुलम्' इति द्विविकरणता (शप् सिप् च)]

पर्यपश्यत् सर्वतः पश्येत् ३.२६.८. सर्वतः पश्यति ३२.१२. **पर्यपश्यन्**=सर्वतः पश्येयुः १.१६८.९. **पर्यपश्यन्त**=परितः पश्यन्ति १.१४६.४. [परि+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'पर्यपश्यन्त' प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

पर्यभवत् सर्वतो भवति ३२.१२. **पर्यभूवन्**=परितस्सर्वतस्तिरस्कुर्वन्ति १.३३.१०. [परि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः सामान्ये लङ्]

पर्यभूषत् सर्वतो भूषत्यलङ्करोति २.१२.१. [परि+भूष अलंकारे (भ्वा०) धातोर्लङ्। पर्यभूषत्=पर्यगृह्णात् पर्यरक्षद् अत्यक्रामदिति वा नि० १०.१०.]

पर्यभूषयन् सर्वतो भूषयेयुः, भा०—सर्वतः सुभूषिता भवन्ति ३३.२२. [परि+भूष अलङ्कारे (चुरा०) धातोर्लङ्]

पर्यमथ्नात् सर्वतो मथ्नाति १.९३.६. [परि+मन्थ विलोडने (क्र्या०) धातोर्लङ्]

पर्ययच्छत् सर्वतो यच्छेत् १.६१.११. [परि+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'इषुगमियमां छः' इति सूत्रेण छकारादेशः]

पर्यवदन् सर्वत उपदिशन्तु भा०—विद्यां प्रदद्युः १२.९१. [परि+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लङ्]

पर्यवसृष्टा सर्वतः शत्रुप्रेरिता (दिद्युत्=न्यायदीप्तिः) ७.४६.३. [परि+अव+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तः। ततः स्त्रियां टाप्]

पर्यवृञ्जन् परिवृञ्जन्ति ३.५६.४. [परि+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लङ्]

पर्यश्नोतु सर्वतोऽश्नुताम्, व्याप्नोतु अ०—सर्वतः प्राप्नोतु प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.३६. **पर्यश्याम**=सर्वतः प्राप्नुयाम ३.११.८. [परि+अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। 'पर्यश्याम' प्रयोगे लिङ्। परस्मैपदं तु व्यत्ययेनैव]

पर्यषस्वजत् परिष्वजति १.१८२.७. [परि+ष्वञ्ज परिष्वङ्गे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्]

पर्यसर्पत् परितः सर्वतो विजानीत १.१६१.१२. [परि+सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

पर्यस्थात् सर्वतस्तिष्ठेत् ४.६.४. [परि+ष्ठा गति-

निवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'गातिस्था०' इति सिचो लुक्]

पर्यहृषत सर्वतो हरत ३५.१८. [परि+हृषु अलीके (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

पर्यागुः सर्वत आभिमुख्येन प्राप्नुवन्तः १.८८.४. [परि+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङी' ति गादेशे सिचो लुकि च रूपम्]

पर्य्यानयत् सर्वत आनयति ३.६.५. [परि+आङ्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लङ्]

पर्य्याभृतम् सर्वत आभिमुख्येन धृतम् (सहः=बलम्) ६.४७.२७. [परि+आङ्+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः]

पर्य्याप सर्वतः प्राप्नोति १.७६.१. [परि+आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिट्]

पर्य्यायन्ति सर्वतः समन्तात् प्राप्नुवन्ति २.१३.२. [परि+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् । 'इणो यण्' इति यणादेशः]

पर्यायिणीम् परितः कालक्रमज्ञाम् (स्त्रीम्) ३०.१५. [परि+इण् गतौ (अदा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः । स्त्रियां ङीप् । अथवा पर्यायप्राति० मत्वर्थ इनिः । ततः स्त्रियां ङीप्]

पर्य्यावर्त्तयाते सर्वत आवर्त्तयेत प्र०—लेट्-प्रथमैक-वचन आडागमे णिजन्तस्य वर्त्तेः प्रयोगः ५.३७.३. [परि+आङ्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०)+णिच्+लेट्]

पर्य्यावृतम् सर्वत आच्छादितम् (मेघम्) ६.४७.२७. [परि+आङ्+वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तः]

पर्य्यास सर्वतोऽस्यति ७.३२.१०. [परि+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लिट्]

पर्य्यासते सर्वत उपविशन्ति ३.६.३. [परि+आस उपवेशने (अदा०) धातोर्लट्]

पर्य्यासीत् सर्वतोऽस्ति ३२.१२. [परि+अस् भुवि (अदा०) धातोर्लङ्]

पर्य्युदगन्म परित उत्कृष्टतया प्राप्नुयाम १.५०.१०. सर्वत उत्कर्षं प्राप्नुयाम २७.१०. [परि+उत्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङि 'मन्त्रे घसह्वरणश०' अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक्]

पर्य्युद्बाधस्व सर्वतोऽपि निवर्त्तय ४.२८. [परि+उत्+बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

पर्य्युपस्थात् सर्वतः समीपं तिष्ठेत् १.६८.१. [परि+उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अडभावः सिचो लुक् च]

पर्य्यूढाः परितः सर्वत ऊढाः प्राप्तवन्तः (सर्वे मनुष्याः) ऋ० भू० १०२, अथर्व० १२.५.३. सब ओर से सबको सत्याचरण प्राप्त कराने वाले (स्त्री-पुरुषो !) सं० वि० १४३, अथर्व० १२.५.३. [परि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

पर्य्यूर्णोत् सर्वत ऊर्णोत्याच्छादयति, स्वीकरोति १.६८.१. [परि+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोर्लङ् । आडभावश्छान्दसः]

पर्य्यूवुः परितः सर्वतस्तन्तुवद् विस्तारयेयुः १.६१.८. [परि+वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

पर्य्यूहामि परितो विविधतया तर्कयामि ६.३. सर्वतो वितर्कयामि ५.२७. सर्वतस्तर्केण निश्चिनोमि ५.२५. [परि+ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

पर्य्येता वर्जिता (जनः) ७.४०.३. सर्वतः प्राप्तः (इन्द्रः=राजा) ६.२४.५. सर्वतोऽनुग्रहीता (सहनशीलो विद्वान्) १.२७.८. [परि+इण् गतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच् प्रत्ययः]

पर्य्येति परितः प्राप्नोति ६.७५.१४. पर्य्यायेण प्राप्नोति १.६५.६. सर्वतः प्राप्नोति गच्छति वा ६.४८.२१. **पर्य्येमि**=भा०—सर्वतोऽनन्तस्वरूपेण पूर्णोऽस्मि, सर्वतः प्राप्तोऽस्मि २३.५०. **पर्य्येषि**=तूने अपनी व्याप्ति से व्याप्त कर रखा है स० प्र० ४२३, ६.८३.१. [परि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् । पर्येति=परिवेष्टयति नि० ६.१५.]

पर्व पालनम् २३.४०. पालकम् (राजानम्) ४.१६.६. अङ्गमङ्गम् १.६१.१२. **पर्वभिः**=पूर्णैः साधनाऽङ्गैः (नमोभिः=अन्नैः) १३.४३. **पर्वाणि**=पूर्णानि पालनानि ४.२२.२. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'स्नामदिपद्यर्त्तिपॄशकिभ्यो वनिप्' उ० ४.११३. सूत्रेण वनिप् । पर्व पुनः पृणातेः प्रीणातेर्वा, अर्धमासपर्व, देवानस्मिन् प्रीणन्तीति । तत् प्रकृतीतरत् सन्धिसामान्यात् नि० १.२०]

पर्वणा पर्वणा पूर्णेन पूर्णेन साधनेन प्र०—अत्र 'नित्यवीप्सयोः' इति द्विर्वचनम् १.९४.४. [पर्वन् इति व्याख्यातम् । पर्वणा पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

पर्वतच्युतः ये पर्वतान् मेघान् च्यावयन्ति ते (मरुतः=मानवाः) ५.५४.३. **पर्वतच्युते**=पर्वतान्मेघाच्च्युतो यः पर्वतं मेघं च्यावयति वा तस्मै (विदुषे शिल्पिने) ५.५४.१.

[पर्वतोपपदे च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। पर्वतमिति व्याख्यास्यते]

पर्वतम् पर्वताकारं मेघम् ५.३२.१. पर्वतमिवोच्छ्रितम् (अश्मानं=मेघम्) ४.५६.४. मेघाश्रितं जलमिव पर्वताश्रितं शत्रुम् १.५७.६. **पर्वतस्य**=प्र०—पर्वत इति मेघनाम निघं १.१०, १०.१६. शैलस्य ५.३६.२. **पर्वतः**=पर्वताऽऽकारो घनसमूहवान् मेघः १.५४.१०. पक्षीव पर्ववान् मेघः ५.४५.३. **पर्वतान्**=मेघान् शैलान् वा ५.४६.३. शैलानिवोच्छ्रितान् मेघान् ३.२६.४. **पर्वताः**=जलप्रदा मेघाः ५.४१.६. ह्रस्वा महान्तः शैलाः १८.१३. **पर्वते**=गिरौ मेघे वा १.५७.२. पर्वताकारे (अश्मन्=अश्मनि मेघे) १७.१. **पर्वतेन**=ज्ञानेन ब्रह्मचर्यादिना वा ३५.१५. **पर्वतेभिः**=मेघैः सह ४.३४.८. **पर्वतेभ्यः**=गिरिभ्यः ३०.१६. **पर्वतेषु**=अभ्रेषु २.१२.११. शैलेषु मेघावयवेषु वा १.८४.१४. [पर्व पूरणे (भ्वा०) धातोः 'भृमृदृशियजिपर्वि०' उ० ३.११०. सूत्रेणातच्प्रत्ययः। पर्वत इति मेघनाम निघं० १.१०. पर्ववान् पर्वतः पर्व पुनः पृणातेः प्रीणातेर्वा नि० १.२०. पर्वतम्=मेघम् नि० १०.६. 'तप् पर्वमरुद्भ्यां वक्तव्यः' इति पर्वन्प्राति० मत्वर्थे तप्]

पर्वता इव यथा मेघाः शैला वा धर्त्तारः सन्ति तथैव मूर्त्तद्रव्यधर्त्तारः (रुद्राः=वायवः) १.६४.३. [पर्वताः इव पदयोः समासः]

पर्वतासः मेघाः ६.५२.१. शैलाः ६.५२.४. पर्वताकारा मेघाः ३.३०.३. पर्वाण्युत्सवा विद्यन्ते येषान्ते (राजजनाः) ३३.५०. प्र०—अत्र 'पर्वमरुद्भ्यां तप्' इति तप्प्रत्ययः शैला इवोच्छ्रिता मेघाः ४.१७.२. [पर्वत इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः। विष्णुः पर्वतानां (अधिपतिः) तै० सं० ३.४.५.१.]

पर्वती पर्वणं=परं बहुज्ञानं विद्यतेऽस्यां क्रियायां सा पर्वती (धिषणा=धारणावती द्यौः), प्र०—अत्र सम्पदादित्वात् क्विप्, भूम्नि मतुप् 'उगितश्च' इति ङीप्। पः प्रशस्तं प्रापणं यस्यां सा (धिषणा=वाग्, वेदवाणी, बुद्धिः), अ०—ब्रह्मज्ञानवती धिषणा प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.१६.

पर्वतेष्ठाम् पर्वते मेघे स्थितां विद्युतमिव शुद्धस्वरूपम् (परमात्मानम्) ६.२२.२. [पर्वतोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। सप्तम्या अलुक्]

पर्वशः सन्धितः (भा०—शरीराऽवयवान्) २३.४२. अङ्गमङ्गम् १.५७.६. [पर्वन्प्राति० वीप्सायां शस्-प्रत्ययः। पर्वन् इति व्याख्यातम्]

पर्शवः परानन्यान् शृणन्ति हिंसन्ति ते पर्शवः पार्श्वस्था मनुष्यादयः प्राणिनः १.१०५.८. [परोपपदे शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'आङ्परयोः शमिशॄभ्यां डिच्च' उ० १.३३. सूत्रेण कुः प्रत्ययः। पर्शुः स्पृशतेः नि० ४.३. पर्शवो बृहत्यः श० ८.६.२.१०. पर्शवः (बहुवचने) परशव उ ह वै पङ्क्तयः कौ० १०.४]

पर्षणिम् सेचनीयाम् (नावम्) १.१३१.२. [पृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽनिः प्रत्ययः]

पर्षत् सिञ्चेत् १.१८६.३. पारं प्रापयतु ३.२०.४. सन्तारयति १.६१.१. **पर्षति**=पारयति ५.२५.१. **पर्षथ**=सिञ्चत, दत्त १.८६.७. **पर्षथः**=सिञ्चथः ५.७३.८. **पर्षन्**=सिञ्चन्तु ४.३६.१. पारयन्ति ७.६०.७. उल्लङ्घेयुः ७.४०.४. **पर्षि**=सिञ्चसि १.१२६.५. पालयसि प्र०—अत्र विकरणाभावः ३.१५.३. पिपूरय २.७.२. पारयसि २.३३.३. पूरयसि ७.२३.२. [पृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्लेट्। 'पर्षन्' प्रयोगे लङ्। अडभावः। 'पर्षि' प्रयोगे लट्। विकरणस्य शपो लुक्। पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्वा रूपम्]

पर्षि सिक्तमुदकम् १.१७४.६. [पृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक इन् प्रत्ययः]

पलक्षी पले चञ्चले अक्षीणी यस्याः सा (पक्षिणी) २४.४. [पल-अक्षिपदयोः समासे शकन्ध्वादित्वात्पररूपम्]

पलस्तिजमदग्नयः प्रजमिता विदिता अग्नयः पलस्तयो वयोज्ञानवृद्धाश्च जमदग्नयो यैस्ते (सज्जनाः) ३.५३.१६. [पलस्ति-जमदग्निपदयोः समासः। जमदग्नयः प्रजमिताग्नयो वा प्रज्वलिताग्नयो वा नि० ७.२५.]

पलिक्नीम् श्वेत-केशाम् (स्त्रियम्) ३०.१५. **पलिक्नीः**=श्वेतकेशाः (युवतयः) ५.३.४. [पलितप्राति० स्त्रियां 'छन्दसि क्नमित्येके' अ० ४.१.३६. वा० सूत्रेण तकारस्य क्नम् ङीप् च। पलितमिति व्याख्यास्यते]

पलितस्य प्राप्तवृद्धाऽवस्थस्य (विदुषो जनस्य) १.१६४.१. **पलितः**=जातश्वेतकेशः (युवा पुत्रः) १.१४४.४. श्वेत-केशः (दूतः=वृद्धो दूत इव परमात्मा) ३.५५.६. [पलितस्य=पालयितुः नि० ४.२५. फल निष्पत्तौ (भ्वा०) धातोः 'फलेरितजादेश्च पः' उ० ५.३४. सूत्रेणेतच् प्रत्ययः आदेश्च पकारादेशः]

पवताम् चलतु ३६.१०. **पवते**=पवित्रीकरोति १६.५. विजानीयात् प्र०—लेट्-प्रयोगः; पूतो भवेत्, ज्ञान-

वान् भवति, निर्मलो भवति, जानाति, शुद्धो भवति, दुर्गुणैर्दूरी भवति ७.२१ पवित्रा भवति ६.८.१. प्राप्नोति प्र०—पवत इति गतिकर्मा निघं० २.१४, २.१६.५. पवित्रीकरोति १६.५. **पवन्ते**=प्राप्नुवन्ति १७.६८. पवित्रीकुर्वन्ति ६.४१.१. शोधयन्ति ४.५८.६. पवित्रा भवन्ति ७.२८.४. **पवसे**=पवित्रीकुर्याः प्र०—लेट्-प्रयोगोऽयम् १६.३८. पवित्रीकरोषि ३५.१६. **पवस्व**=पवित्रो भव भा०—पवित्रय शरीरात्मानौ २६.२५. प्रापको भव ७.२७. विज्ञापय, प्रापय, गमय ७.२८. शुन्ध ८.३८. पवित्रतया प्राप्नुहि, प्रवर्त्तस्व, ज्ञानं देहि, प्रवर्त्तताम्, उपदिश, प्राप्नुहि वा ७.२७. शुद्धो भव ७.१. **पवेथाम्**=प्राप्नुतम् ७.२७. प्रापयेथाम् ७.२८. [पवते गतिकर्मा निघं० २.१४. पवस्व अध्येषणाकर्मा निघं० ३२१. पूङ् पवने (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट् लोट् च]

पवमान पवित्रकारक अ०=अग्निवत्पवित्रजन ! २२.१८. पवित्र शुद्धकारक (विद्वत्सन्तान) १६.५३. पवित्रात्मन् संन्यासिन् सं० वि० १६६, ६.११३.६. हे अविद्यादि क्लेशों के नाश करने वाले पवित्रस्वरूप (परमात्मन्) सं० वि० १६६, ६.११३.७. **पवमानः**=पवित्रः (अग्निः=विद्वज्जनः) २६.६. पवित्रकारकः (भगवान् विद्वान्वा) ५.३२. पवित्रकरो व्यवहारः ६.१७. **पवमानाय**=पवित्रकर्त्रे (इन्दवे=छात्राय) ३३.६२. [पूङ् पवने (भ्वा०) धातोः 'पूङ्यजोः शानन्' अ० ३.२.१२८. सूत्रेण शानन्। अयं वायुः पवमानः श० २.५.१.५. आत्मा वै यज्ञस्य पवमानः तां० ७.३.७. प्राणो वै पवमानः श० २.२.१.६. यज्ञमुखं वै पवमानः मै० ३.८.१०. सोमो वै पवमानः श० २.२.३.२२. सुपावः पवमानः तै० सं० ७.५.२०.१.]

पवयः वज्रतुल्यानि चालनार्थानि कला चक्राणि १.३४.३. वज्रतुल्याश्चक्रसमूहाः, ऋ० भू० १६४ ऋ० १.३.४.१. **पविना**=वाचा प्र०—पविरिति वाङ्नामसु पठितम् निघं० १.११. अ०—वचसा ६.३०. **पविभिः**=वज्रतुल्यैः पवित्रैर्गमनागमनादिसाधनचक्रैः १.६४.११. **पविभ्यः**=वज्रवत् किरणेभ्यः १.१६८.८. **पविम्**=पुनातु दुष्टान् दण्डयित्वा येन तम् (सृकं=वज्रतुल्यं शस्त्रम्) १८.७१. **पविषु**=सुशिक्षितासु वाक्षु १.१६६.१०. **पविः**=पवित्रो व्यवहारः ५.६२.२. शस्त्राऽस्त्रविद्या ६.५४.३. **पव्या**=वज्रतुल्यया चक्रधारया १.८८.२. रथचक्राणां रेखया ५.५२.६. [पविः वाङ्नाम निघं० १.११. पविः=वज्रनाम निघं० २.२०. पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः 'अच इः' उ० ४.१३६. सूत्रेण इः प्रत्ययः]

पव्येव वज्रेणेव ६.८.५. [पव्या-इवपदयोः समासः]

पवित्रपते ! पवित्रस्य पालयितः (अ०—परमात्मन्) ४.४. [पवित्र-पतिपदयोः समासः]

पवित्रपूतस्य यः पवित्रैः शुद्धैः स्वाभाविकैर्विज्ञानादिभिर्गुणैः पूतः पवित्रस्तस्य (ईश्वरस्य) ४.४. [पवित्र-पूतपदयोः समासः]

पवित्रम् शुद्धम् (ब्रह्म=बृहद्दिव्यं वेदचतुष्टयम्) १६.४१. पुनाति येन कर्मणा तत् १.२. शुद्धिनिमित्तम् (वसोः=यज्ञः) १.३. शुद्धिकरम् (पदार्थम्) १.१३५.६. शुद्धिकारकं कर्म (वसो=यज्ञः) १.३. पवित्राचरणस्वरूप तप को स० प्र० ४.२३, ६.८३.२. **पवित्रः**=शुद्धात्मा (राजा) ३३.८५. **पवित्रात्**=निर्मलात् (स्थानात्) ७.२६. **पवित्राय**=रोगनिवारणेन शुद्धिकरणाय ३०.१०. **पवित्रे**=शुद्धे व्यवहारे २०.३१. **पवित्रेण**=शुद्धिकरेण कर्मणा १६.३. शुद्धेन धर्माचरणेन १०.३१. ब्रह्मचर्यादिधर्माचरणयुक्तेन (शतायुषा), शुद्धाचरणयुक्तेन (शतायुषा) १६.३७. विद्यासुशिक्षाजितेन्द्रियत्वब्रह्मचर्यादिभिः पवित्रीकारकेण व्यवहारेण १०.६. पवित्रानिमित्तेन वेदविज्ञानकर्मणा (सुप्वा=यज्ञेन) १.३. शुद्धिकरणहेतुभिः (रश्मिभिः=किरणैः) १.१२. शुद्धिकारकेण (यज्ञेन) १.३१. **पवित्रैः**=शुद्धगुणकर्मस्वभावैः (कविभिः=मेधाविभिः) ३.१.५. शुद्धैर्व्यवहारैः ३.३१.१६. [पूङ् पवने (भ्वा०) धातोः पूञ् पवने (क्र्या०) धातोर्वा 'पुवः संज्ञायाम्' 'कर्त्तरि चर्षिदेवतयोः' सूत्राभ्यां करणे कर्त्तरि च कारके इत्र-प्रत्ययः। पवित्रम् उदकनाम निघं० १.१२. पवित्रं वै दर्भाः श० ३.१.३.१८. पवित्रं वा ऽ आपः श० १.१.१.३. अग्निर्वाव पवित्रम् तै० ३.३.७.१०. पवित्र वै वायुः तै० ३.२.५.११. प्राणापानौ पवित्रे तै० ३.३.४.४. प्राणोदानौ पवित्रे श० १.८.१.४४. पवित्रं पुनातेः। मन्त्रः पवित्रमुच्यते नि० ५.६. रश्मयः पवित्रमुच्यन्ते। आपः पवित्रमुच्यन्ते। अग्निः पवित्रमुच्यते वायुः पवित्रमुच्यते सोमः पवित्रमुच्यते सूर्यः पवित्रमुच्यते इन्द्रः पवित्रमुच्यते नि० ५.६. पवित्रवन्तः रश्मिवन्तः नि० १२.३२. अन्तरिक्षं वै पवित्रम् काठ० २६.१०. अयं वै पवित्रं योऽयं (वायुः) पवते श० १.१.३.२. पवित्रं वै वायुः तै० सं० २.२.५.१. पवित्रं पोत्राभ्याम् तै० सं० ५.७.१५.१. वसूनां वा एतद् भागधेयं यत् पवित्रम् क० ४६.८.]

पवित्रवान् बहूनि पवित्राणि कर्माणि विद्यन्ते यस्य सः (पावकः) १.१६०.३. [पवित्रप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

पवित्रे पवित्रकरणहेतू प्राणाऽपानगती, अ०—शुद्धौ (वैष्णव्यौ=पवनपावकौ) १.१२. शुद्धाचरणे (वैष्णव्यौ=अध्येत्रध्यापकौ) १०.६. [पवित्रं व्याख्यातम्। तस्य प्रथमाद्विवचने रूपम्]

पवीरवत् प्रशस्तः पवीरः फालो विद्यते यस्मिन् तत् (लाङ्गलं=काष्ठम्) १२.७१. [पवीरप्राति० प्रशंसार्थे मतुप्। पवीरः=पविः वज्रनाम (निघं० २.२०.); तत इरन् मत्वर्थीयश्छान्दसः। पविः शल्यो भवति यद् विपुनाति कायं तद्वत् पवीरमायुधम्। तद्वान् इन्द्रः पवीरवान् नि० १२.३०]

पवीरवस्य वज्रध्वनेः १.१७४.४. [पवि-रव-पदयोः समासः। पूर्वस्य दीर्घः। पविः वज्रनाम निघं० २.२०.]

पवीरवि यो धनादिरक्षायै पवीरं शस्त्रं वाति प्राप्नोति तस्मिन् (अर्ये=वैश्ये) ३३.८२. [पवीरोपपदे वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः। सप्तम्यामकारलोपश्छान्दसः]

पवेथाम् प्राप्नुतम् ७.२७. प्रापयेथाम् ७.२८. [पवते गतिकर्मा (निघं० २.१४) धातोर्लोट्]

पशवः गवादयः २०.६९. सिंहादयः १४.३०. गाय आदि सब पशु सं० वि० १४५ अथर्व० १२.५.१०. **पशु**=पशुमिव प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् ३.५३.२३. **पशुना**=व्यवहृतेन विक्रीतेन गवादिना ४.२६. **पशुभिः**=हस्त्यश्वगवादिभिः ५.२८. **पशुभ्यः**=पशुओं के लिए स० प्र० १५२ अथर्व० १४.२.१८. **पशुम्**=प्रसिद्धम् (गवादिकम्) १३.४७. द्रष्टव्यम् (अश्वादिकम् १३.४८. पश्यन्तम् (कामासक्तं स्वपतिम्) ५.६१.५. सर्वद्रष्टारम् (परमेश्वरम्) ऋ० भू० १२८, ३१.१५. **पशुः**=पश्यकश्चतुष्पात् सिंहादिः ६.६. यो दृश्यते भोग्यपदार्थसमूहः समक्षे स्थापितः सः प्र०—अत्र 'अर्जिदृशिकमि०' उ० १.२७. इत्यौणादिक-सूत्रेणाऽस्य सिद्धिः ३.५७. दृश्यः, द्रष्टव्यः (अग्निः=वह्निः) २३.१७. **पशून्**=पशुवद् वर्त्तमानान् मूर्खत्वयुक्तान् गवादीन् वा १.७२.६. गोहस्त्यश्वादीन् ६.३१. श्रियः प्रजा वा, प्र०—श्रीर्हि पशवः शत० १.६.३.३६. प्रजा वै पशवः शत० १.४.६.१७. हरिणादीनारण्यान् ९.३१. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'अर्जिदृशिकम्यमि०' उ० १.२७. सूत्रेण उः प्रत्ययः धातोश्च पशिरादेशः। पशुः=पश्यते नि० ३.१६. पशवः (अग्निः) एतान् पञ्चपशूनपश्यत्। पुरुषमश्वं गामविमजं यदपश्यत्तस्मादेते पशवः श० ६.२.१.२. तऽएते सर्वे पशवो यदग्निः। श० ६.२.१.१२. अग्निर्हि देवानां पशुः ऐ० १.१५. योनिर्वै पशूनामाहवनीयः (अग्निः) कौ० १८.६. रौद्रा वै पशवः श० ६.३.२.७. वायुप्रणेत्रा वै पशवः श० ४.४.१.१५. त्वष्टुर्हि पशवः श० ३.८.३.११. पशवो वै सविता श० ३.२.३.११. अन्तरिक्षदेवत्याः खलु वै पशवः तै० ३.२.१.३. पशवो वै वैश्वदेवम् (शस्त्रम्) कौ० १६.३. सप्त ग्राम्याः पशवः सप्तारण्याः श० ३.८.४.१६. पशवो वै घृतश्चुतः तां० ९.१.१७. पशवो वै हविष्मन्तः श० १.४.१.९. पशवो वै हविष्पङ्क्तः कौ० १३.२. पशवो वै हरिश्रियः तां० १५.३.१०. श्रीर्वै पशवः तां० १३.२.२. पशवो यशः श० १२.८.३.१. शान्तिः पशवः तां० ४.५.१८. इन्द्रियं वै वीर्यं रसः पशवः तां० १३.७.४. पशवो वै वसु तां० ७.१०.१७. पशवो वै रयिः तै० १.४.४.९. पशवो वै रायः श० ३.३.१.८. पशवो वै रायस्पोषः श० ३.४.१.१३. पुष्टिः पशवः श० ३.१.४.९. पौष्णाः पशवः श० ५.२.५.६. साहस्राः पशवः कौ० २१.५. पशवः सहस्रम् तां० १६.१०.१२. पशवः शिपिः तै० १.३.८.५. पशवो वै मरुतः ऐ० ३.१९. पशुर्वै मेधः ऐ० २.६. वाजो वै पशवः ऐ० ५.८. पशवो वै वाजिनम् तै० १.६.३.१०. अन्नं पशवः श० ६.२.१.१५. पशवो वै धानाः गो० उ० ४.६. पशवो वा इडा कौ० ३.७. प्राणाः पशवः श० ७.५.२.६. गृहा वै पशवः श० १.८.२.१४. पशवो वा उत्तरवेदिः तै० १.६.४.३. पशवो वै चतुरुत्तराणि छन्दांसि तां० ४.४.६. आत्मा वै पशुः कौ० १२.७. यजमानः पशुः तै० २.१.५.२. वज्रो वै पशवः श० ६.४.४.६. पशवो वै ग्रावाणः तां० ९.९.१३. पशवो वै उक्थानि कौ० २८.१०. पशव ऊषाः श० ७.१.१.६. पशवो वै नियुतः तां० ४.६.११. प्रजा पशवः सूक्तम् कौ० १४.४. स्तोमो वै पशुः तां० ५.१०.८. पशवो वै सप्तदशः तां० १९.१०.७. पशवो वै प्रतिहर्त्ता तां० ६.७.१५. पशवः स्वरः गो० उ० ३.२२. पशवो वै बृहद्रथन्तरे तां० ७.७.१. पशवो वै श्यैतम् (साम) तां० ७.१०.१३. पशवो वै वामदेव्यम् (साम) तां० ४.८.१५. वामं हि पशवः ऐ० ५.६. पशवो वै वैरूपम् (साम) तां० ५.३.१२. पशवो वै लोम (साम) तां० १.३.११.११. पशवो वै रौरवम् (साम) तां० ७.५.८. पशवो वै यण्वम् (साम) तां० १३.३.६. पशवो वै श्रद्धचं (साम) पशूनामवरुध्यै तां० १५.५.३४. पशवः सदो विशीयम् (ब्रह्मसाम) तां० १८.४.९. पशवो वै सुरूपं (साम) पशूनामवरुध्यै तां०

१४.११.११. पशवः कालेयम् (साम) तां० ११.४.१०. पशवो वै रयिष्ठम् (साम) तां० १४.११.३१. पशवः शक्वर्य्यः तां० १३.१.३. पशवो वै रेवत्यो मधुप्रियम् तां० १३.७.३. पशवो वै रैवत्यः तां० १३.१०.११. रेवन्तो हि पशवस्तस्मादाह रेवती रमध्वम् इति श० २.३.४.२६. कतमो यज्ञ इति पशव इति श० ११.६.३.९. पशवो वै बर्हिः ऐ० २.४. पशवो वै यूपमुच्छ्रयन्ति श० ३.७.२.४. पशवश्छन्दोमाः ऐ० ५.१६. पशवो वै छन्दांसि श० ७.५.२.४२. पाङ्क्ता वै पशवः श० १.८.१.१२. गायत्राः पशवः तै० ३.२.१.१. त्रैष्टुभाः पशवः कौ० १०.२. पशवो जगती कौ० १६.२. पशवो बृहती कौ० १७.२. वार्हताः पशवः श० १३.४.३.१५. पशवो वा उष्णिक् तां० ८.१०.४. पशवो वालखिल्याः तां० २०.९.२. पशवो वा अक्षरपङ्क्तयः कौ० १६.८. पशवः पृष्ठ्यानि कौ० २१.५. पशवः प्रगाथः ऐ० ३.१९. पशवो वै प्रयाजाः कौ० ३.४. पशवः परिमादः श० १०.१.२.८. अथ यत्स्रुचि परिशिनष्टि ते पशवः श० २.३.२.१६. पशवो वै पुरीषम् श० १.२.५.१७. पशवो वै वयांसि श० ९.३.३.७. वपुर्हि पशवः ऐ० ५.६. पुरुषः पशूनाम् (अधिपतिः) तां० ६.२.७. ओषधयः पशवः मै० २.५.१.]

पशुपतये पशूनां पालकाय (रुद्राय=दुष्टानां रोदकाय) २४.३. **पशुपतिम्**=पशूनां पालकं, जगद्धर्त्तारं रुद्रं सर्वप्राणम् ३९.८. **पशुपतेः**=पशुरक्षकस्य पुरुषस्य ३९.९. [पशु-पतिपदयोः समासः । 'पतिः समास एव' इति घिसंज्ञकत्वाद् गुणः । पशुपतिः=ओषधयो वै पशुपतिस्तस्माद् यदा पशव ओषधीर्लभन्तेऽथ पतीयन्ति श० ६.१.३.१२. यत्पशुपतिर्वायुस्तेन कौ० ६.४.]

पशुपाः यः पशून् पाति सः (जनः) ४.६.४. यः पशून् पाति रक्षति सः (देवः=विद्वज्जनः) ६.५८.२. [पशूपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पशुपा इव यथा पशुपालकस्तथा (पुरुषः) १.११४.९. यथा पशुपालको गवादिभ्यो दुग्धादिकं गृहीत्वा गोस्वामिने समर्पयति तथा १.१४४.९. [पशुपा-इवपदयोः समासः । पशुपाः=पशूपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पशुमत् पशवो विद्यन्ते यस्मिंस्तत् (श्रवः=श्रवणमन्नं वा) ४.३८.५. [पशुप्राति० भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा मतुप्]

पशुमत्यै वहवः पशवो विद्यन्ते यस्यां तस्यै (प्रजायै) ५.४१ १७. [पशुप्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्तात् ङीप्]

पशुमान् वहुपशुयुक्तः (गातुः=भूमिः) ३.५४.१८. [पशुप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । य एवं विद्वानग्निमुपतिष्ठते पशुमान् भवति तै० सं० १.५.९.३.]

पशुरक्षिः पशूनां रक्षकः (मनुष्यः) ६.४९.१२. [पशु-रक्षिपदयोः समासः । रक्षिः=रक्ष पालने (भ्वा०) धातोरौणादिक इन्]

पशुषः पशून् ५.४१.१. **पशुषे**=वन्धकाय (अग्नये=उपदेशकाय) १.१७.१०. [पशूपपदे षण् सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'जनसनखन०' अ० ३.२.६७. सूत्रेण विट् । 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' अ० ६.४.४१. सूत्रेणाकारादेशः 'सनोतेरनः' अ० ८.३.१०८. सूत्रेण मूर्धन्यः पशुषाप्राति० द्वितीयाबहुवचने रूपम्]

पशुसनि पशून् सनति सम्भजति येन तत् (अपत्यम्) १९.४८. [पशूपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातो हि० औणादिक इन्-प्रत्ययः]

पशुसाधनी पशून् साध्नुवन्ति यया सा (पशुवर्धनक्रिया) ६.५३.९. [पशु-साधनीपदयोः समासः । साधनी=साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः करणे ल्युट् । ततः स्त्रियां ङीप्]

पश्चा पश्चिमा (दिक्) २.२७.११. पश्चात् ४.१.१८. [अपरप्राति० अस्तातेरर्थे 'पश्चपश्चा च छन्दसि' अ० ५.३.३३. सूत्रेणाकारप्रत्ययः पश्चादेशश्च निपात्यते]

पश्चात् पश्चिमदेशात् ५.११. पश्चिमायां दिशि वर्त्तमानः (आदित्यः) १३.५६. पश्चिमतः (देशात्) ३७.१२. [अपरप्राति० अस्तातेरर्थे (दिग्देशकालेषु) 'पश्चात्' अ० ५.३.३२. सूत्रेणातिः प्रत्ययः पश्चादेशश्च निपात्यते]

पश्चात्सद्भ्यः ये पश्चात् सीदन्ति तेभ्यः (देवेभ्यः=दिव्यसुखप्रदेभ्यो जनेभ्यः) ९.३५. **पश्चात्सदः**=ये पश्चिमायां दिशि सीदन्ति ते (देवाः=सर्वविद्याविदो विद्वज्जनाः) ९.३६. [पश्चादिति व्याख्यातम्, तदुपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि]

पश्चादोषाय पश्चाद् दोषदानाय ३०.१७. ['पश्चा' इति व्याख्यातम् । पश्चा-दोषपदयोः समासः]

पश्य समीक्षस्व ३.२३.२. **पश्यत्**=ज्ञानदृष्ट्या पश्यति भा०—जानाति ३२.८. पश्येत् प्र०—अत्र लङ्यडभावः १.१६४.१६. **पश्यत**=संप्रेक्षध्वम् ६.४. सम्यग् विजानीत १.२२.१९. **पश्यति**=प्रेक्षते १.२५.११. **पश्यन्**=समीक्षन्ते १.१७४.६. **पश्यन्ति**=संप्रेक्षन्ते

१.२२.२०. अवलोकन्ते ६.५. देखते हैं आर्याभि० १.२१. ऋ० १.२.७.२०. **पश्यात्**=सम्प्रेक्षते ४.२५.४. **पश्यान्**=पश्येयुः १.११३.११. **पश्यामि**=संप्रेक्षे १.३०. **पश्येम**=हम देखें आर्याभि० २.२७, २५.२१. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । शिति पश्यादेशः । अन्यत्र लङ्, लोट्, लट्, लेट् लिङ् च]

पश्यद्भ्यः संप्रेक्षमाणेभ्यः (मनुष्येभ्यः) १.११३.५. **पश्यन्**=सत्याऽसत्यं प्रेक्षमाणः (सुवीरः पालको जनः) १.११६.२५. पर्य्यालोचमानः (गोतमः=विद्वज्जनः) १.८८.५. विजानन् (परमेश्वरः) ७.६०.२. समीक्षमाणः (वैश्वानरः=ब्रह्मचारी जनः) ६.९.३. दर्शयन् (सविता=सूर्यः) प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः ३३.४३. देखता हुआ (पति) सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५७. दिखाता हुआ (सविता=सूर्य) स० प्र० ३१३, ३३.४३. **पश्यन्तौ**=समीक्षमाणौ (देवौ=देदीप्यमानौ विद्वज्जनौ) २९.७. [दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः शतृ-प्रत्ययः । शिति पश्यादेशः]

पश्व इष्टिः पशोः सङ्गतिः १.१८०.४. [पश्व-इष्टि-पदयोः समासः पश्वः=पशुप्राति० षष्ठी । गुणाऽभावश्छान्दसः 'जसादिषु छन्दसि वावचनम्' अ० ७.३.१०९. (वा०) इति विकल्पनात् । इष्टिः=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

पश्वयन्त्रासः पश्वानि दृष्टानि यन्त्राणि यैस्ते (मनुष्याः) ४.१.१४. [पश्व-यन्त्रपदयोः समासे जसोऽसुगागमः]

पश्वः पशून् ४.६.३. गवादीन् (पशून्) ६.१.१२. पशोः ४.२.१८. **पश्वा**=अपहृतस्य पशोः स्वरूपाङ्गपादचिह्नाऽन्वेषणेन १.६५.१. **पश्वे**=पशुसमूहाय १.४३.२. [पशव इति व्याख्यातम् । पशुप्राति० 'जसादिषु छन्दसि वा वचनम्' अ० ७.३.१०९. वा० सूत्रेण गुणादीनां विकल्पे यणादेशे रूपम्]

पश्विषे पशूनामिषे वृद्धीच्छायै १.१२१.७. [पशूपपदे इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप् स्त्रियाम्]

पष्ठवाट् यः पष्ठेन पृष्ठेन वहति स उष्ट्रादिः प्र०—वर्णव्यत्ययेन ऋकारस्याऽत्राऽकारादेशः १४ ९. प्र०—इदं पदं पृषोदरादिना सिद्धम् २१.१७. [पृष्ठोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' अ० ३.२.६४. सूत्रेण ण्विः प्रत्ययः । ऋकारस्याकारश्छान्दसः]

पष्ठौही वडवाऽऽदिः १८.२७. [पष्ठवाट् इति व्याख्यातम् । ततः 'तस्येदम्' इत्यण्-प्रत्यये स्त्रियां ङीपि 'वाह ऊठ्' इत्यूठि 'एत्येधत्यूठ्सु' इति वृद्धिः । प्रजननं वै पष्ठौही । प्रजननं ब्रह्मा जै० २.२०३. धात्रे द्वादशकपालः, पष्ठौह्यप्रवीता दक्षिणा काठ० १५.३.]

पसः राष्ट्रम् २३.२२. लिङ्गम् २०.९. राष्ट्रं पसः श० १६.२९.६. भगस्सौभाग्यं पसः काठ० ३८.४.]

पस्त्यसदः ये पस्त्येषु गृहेषु सीदन्ति तान् (नॄन्=उत्तमविदुषो जनान्) ६.५१.९. [पस्त्योपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । पस्त्यं गृहनाम निघं० ३.४.]

पस्त्याभिः पस्त्यानि गृहाणि विद्यन्ते यासु भूमिषु ताभिः प्र०–पस्त्यमिति गृहनाम निघं० ३.४. तत 'अर्शादिभ्योऽच्' अ० ५.२.१२७. इत्यच्-प्रत्ययः १.४०.७. **पस्त्यानाम्**=गृहाणां जीवशरीराणां वा १.१६४.३०. **पस्त्याम्**=गृहम् ४.५५.३. **पस्त्यासु**=पस्त्येभ्यो गृहेभ्यो हितास्तासु प्रजासु १.२५.१०. गृहशालासु १०.७. न्यायगृहेषु १०.२६. [पस्त्यम् गृहनाम (निघं० ३.४) ततो मत्वर्थे 'अर्शआदिभ्योऽच्' अ० ५.२.१२७. सूत्रेणाच् । अथवा हितार्थे यत् । विशो वै पस्त्याः श० ५.३.५.१९.]

पस्त्यावत् गृहवत् २.११.१६. **पस्त्यावतः**=प्रशस्तानि पस्त्यानि गृहाणि विद्यन्ते यस्य (विदुषो जनस्य) १.१५१.२. प्रशंसितानि पस्त्यानि विद्यन्ते येषु तान् (क्षयान्=निवासान्) ४.५४.५. [पस्त्यमिति गृहनाम निघं० ३.४. ततः प्रशंसायां मतुप् । मतुपि पूर्वस्य दीर्घश्छान्दसः]

पस्पशे स्पृशति कर्त्तुं शक्नोति वा प्र०—अत्र लडर्थे लिट् १.२२.१९. बध्नाति प्र०—अत्र लडर्थे लिट् ६.४. समर्थ हुआ आर्याभि० १.२३. ऋ० १.२.७.१९. [स्पश बाधनस्पर्शनयोः (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

पस्पृधानम् पुनः पुनः स्पर्धमानम् (एतशं=अश्वम्) १.६१.१५. **पस्पृधानेभ्यः**=स्पर्द्धमानेभ्य ईप्समानेभ्यो वा (नृभ्यः=मनुष्येभ्यः) २.१९.४. [स्पर्द्ध सङ्घर्षे (भ्वा०) धातोः शानचि सम्प्रसारणमकारलोपश्च छान्दसम् । मुगागमोऽपि न आगमशासनस्याऽनित्यत्वात्]

पस्पृधानासः स्पर्धमानाः (प्रजाः) ७.१८.३. [स्पर्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोः शानच् । ततो जसोऽसुक् । आगमशासनस्याऽनित्यत्वान् मुग् आगमो न भवति]

पस्पृधे स्पर्द्धन्ते ६.३४.१. [स्पर्ध संघर्षे (भ्वा०)

धातोर्लिट् । संप्रसारणमकारलोपश्च छान्दसः]

पाकम् परिपक्वव्यवहारम् १.१६४.२१. पचन्ति परिपक्वं ज्ञानं कुर्वन्ति यस्मिन् धर्म्ये व्यवहारे तम् १.३१.१४. **पाकः**=ब्रह्मचर्यादितपसा परिपचनीयः (मनुष्यः) १.१६४.५. **पाकाय**=परिपक्त्वाय ३.९.७. परिपक्वव्यवहाराय ४.५.२. [डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः। पाकः प्रशस्यनाम निघं० ३.४. पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा 'अर्भकपृथुकपाका वयसि' उ० ५.५३. सूत्रेण कन् प्रत्ययो निपात्यते]

पाकारोः मुखादिपाकस्यारोर्मर्मच्छिदः शूलस्य च १२.९७. [पाक-अरुपदयोः समासः । पाकमिति व्याख्यातम्। अरुः=ऋ गतौ (भ्वा०) धातोर् औणादिको बाहु० उः प्रत्ययः]

पाक्या विद्यायोगाभ्यासेन परिपक्वधियः (देवान्=विदुषो जनान्) प्र०—अत्र विभक्तेराकारादेशः १.१२०.४. पाकोऽस्याऽस्तीति पाकी (विज्ञानपुरस्सरः परमात्मा) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति ड्यादेशः २.२७.११. [पाक इति व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थ इनिः । पाकी प्राति० 'सुपां सुलुग्०' इति डयादेशः]

पङ्क्तराधसम् यः पङ्क्तीः समुदायान् राध्नोति तम् (यज्ञम्) ३७.७. ['पङ्क्ति' इत्युपपदे राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्-प्रत्ययः]

पाङ्क्तान् पङ्क्तिरूपेण गन्तॄन् पक्षिविशेषान् २४.२६. **पाङ्क्ताय**=पङ्क्तिषु साधवे (शाक्त्वराय=शक्तिजाय यन्त्राय) २९.६०. **पाङ्क्तेन**=पङ्क्तिप्रकाशितेन (छन्दसा=स्वच्छेनाऽर्थेन) १३.५३. [पङ्क्तिप्राति० 'तत्र साधुः' इत्यर्थे भवार्थे वा अण् प्रत्ययः]

पाजः बलम् प्र०—पाजस् इति बलनाम निघं० २.९, १.११५.५. **पाजः**=बलम् ७.३.४. 'प्र० पातेर्बले जुट् च उ० ४.२०३. इत्यसुन् १३.९. अन्नादिकम् ७.१०.१: **पाजसा**=बलेन ११.४९. [पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'पातेर्बले जुट् च' उ० ४.२०३. सूत्रेणासुन्प्रत्ययः । पाजः अन्ननाम निघं० २.७. बलनाम निघं० २.९. पाजः=पालनात् नि० ६.१२.]

पाजसी रक्षणनिमित्ते (द्यावाक्षामा=सूर्यपृथिव्यौ) प्र०—अत्र विभक्तेः पूर्वसवर्णः 'पातेर्बले जुट् च' उ० ४.२०३. अनेन पा धातोरसुन् जुडागमश्च १.१२१.११. [पाजस् इति व्याख्यातम्]

पाजस्यम् पाजस्वन्नेषु साधु (यवादिकमन्नम्) २५.८. [पाजस् इति व्याख्यातम् । ततः 'तत्र साधुः' इत्यर्थे यत्]

पाञ्चजन्यम् पञ्चसु जनेषु प्राणादिषु भवां प्राप्तयोगसिद्धिम् (ऋषिं=वेदपारगाध्यापकम्) १.११७.३. पञ्चजनाः प्राणा बलवन्तो यस्य तदपत्यम् ५.३२.११. **पाञ्चजन्यः**=पञ्चसु सकलविद्येषु अध्यापकोपदेशक-राजसभा-सेना-सर्वजनाधीशेषु जनेषु भवः (इन्द्रः=सेनाद्यधिपतिः) प्र०—अत्र 'बहिर्देवपञ्चजनेभ्यश्चेति वक्तव्यम्' अ० ४.३.५८. इति वार्त्तिकेन ञ्यः प्रत्ययः १.१००.१२. पञ्चानां पञ्चसु वा जनेषु साधुः (अग्निः=विद्वज्जनः) २६.९. पाँच प्राणों का जनक (ईश्वर) आर्याभि० १.३४ ऋ० १.७. १०.१२. **पाञ्चजन्याः**=पञ्चजनेभ्यो हिताः (अग्नयः=आहवनीयादयः पावकाः) प्र०—पञ्चजना इति मनुष्यनाम निघं० २.३, १८.६७. [पञ्चन्-जनपदयोः समासे भवार्थे 'बहिर्देवपञ्चजनेभ्यश्चेति वक्तव्यम्' अ० ४.३.५८. वा० सूत्रेण ञ्यः प्रत्ययः । पाञ्चजन्यया==पञ्चजनीनया नि० ३.८. पञ्चजनाः=गन्धर्वा पितरो देवा असुरा रक्षांसीत्येके चत्वारो वर्णा निषादः पञ्चम इत्यौपमन्यवः नि० ३.८. एष वा अग्निः पाञ्चजन्यः तै० सं० ५.३.११.३.]

पाञ्चजन्यासु पञ्चसु दिनेषु प्राणेषु भवासु (कृष्टिषु=मनुष्यादिप्रजासु) ३.५३.१६. [पाञ्चजन्यमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

पाणिघ्नम् यः पाणिभ्यां हन्ति तम् (पुरुषम्) ३०.२०. [पाणीत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृतो बहुलं वा' इति वा० सूत्रेण टक्]

पाणिना स्तुतिसमूहेन १.२०. किरणसमूहेन व्यवहारेण १.१६. **पाणिभिः**=करैः २.३१.२. **पाणी**=बाहू ४.२१.९. प्रशंसनीयौ (बाहू=भुजौ) ६.७१.१. [पाणिः=पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः 'पशिपणाय्योरुडायलुकौ च' उ० ४.१३३. सूत्रेण इण्प्रत्यय आयलुक् च । पाणिः पणायतेः पूजाकर्मणः प्रगृह्य पाणी देवान् पूजयन्ति नि० २.२६. पाणी वै गभस्ती श० ४.१.१.९.]

पात् रक्षतु ४.५५.५. **पात**=रक्षत २७.२८. **पातम्**=रक्षतः, प्र०—अत्र व्यत्ययः ४.९. रक्षतम् १.१२०.४. प्राप्नुतम् १.४६.५. पालयतः १.९३.८. पिबतम् १.१५३.४. **पाताम्**=रक्षताम् १.१८५.१०. **पाति**=रक्षति ५.१२.६. प्राप्नोति ३.५.५. पालयति ४.५.८. **पातु**=रक्षति प्र०—अत्र लडर्थे लोट् २.५. रक्षतु ४.१९. पालयतु पालयति वा ४.१५. **पाथ**=रक्षका भवथ १.८६.१. प्राप्नुत ८.३१. **पाथः**=रक्षथः १.१५९.३. **पान्ति**=

रक्षन्ति ५.६७.३. प्राप्नुवन्ति २.११.१४. पालयन्ति ५.५२.२. **पान्तु**=सततं रक्षन्तु ४.११. पालयन्तु २.३.८. **पासतः**=रक्षेताम् ७.३४.२३. **पासि**=रक्षसि १.१३४.५ पालयसि २.१.६. **पाहि**=अ०—दूरे रक्ष ३.४८. पाति रक्षति २.१६. रक्षय प्र०—अत्रान्तर्गतो ण्यर्थः ३.३७. पाति वा ३.१७. पालय २.६. रक्षा कीजिए सं० वि० १४६, ३.३७. रक्षयति पाति वा १.२.१. पालन कर आर्याभि० २.३३, ३.१७. **पाः**=रक्ष ४.२०.४. [पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लोट् लट् लङ् च । पातमित्यत्र पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा लुङ् अडभावः]

पातयति जागरयति १.४८.५. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

पातल्ये पतनशीले (प्राणिनि) ३.५३.१७. [पाताल-प्राति० भवार्थे यत् । पाताल:=पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'पतिचण्डिभ्यामालञ्' उ० १.११७. सूत्रेण आलञ्]

पातवे पातुम् प्र०—अत्र पा-धातोस्तुमर्थे तवेन्-प्रत्ययः २०.५९. पातुं पानं कर्त्तुम् १.२८.६. रक्षितुम् २६.२५. [पा पाने (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्-प्रत्ययः]

पातवै पातुं रक्षितुम् ३.४६.५. [पा रक्षणे (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवैप्रत्ययः]

पाता रक्षकः (इन्द्रः=ऐश्वर्यकारी राजा) ६.२३.३. पानकर्त्ता (इन्द्रः=राजा) प्र०—अत्र तृन्-प्रत्ययः ६.४४.१५. [पा रक्षणे (अदा०) पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा कर्त्तरि तृच् तृन् वा]

पात्नीवतः प्रशस्ता पत्नी यज्ञसम्बन्धिनी तद्वतोऽयम् भा०—विवाहितस्त्रीव्रतः (जनः) १८.२०. [पत्नीशब्दात् प्रशंसायामर्थे मतुप् । 'छन्दसीरः' अ० ८.२.१४. सूत्रेण मतोर्मस्य वकारः । पत्नीवत्-प्राति० 'तस्येदमिति' अण्-प्रत्ययः । रेतः सिक्तिर्वै पात्नीवतग्रहः कौ० १६.६. रेतो वै पात्नीवतः गो० उ० ४.५. अग्निर्हि देवानां पात्नीवतः नेष्टर्त्विजाम् कौ० २८.३.]

पात्रम् पिबति पाति वा येन ६.४४.१६. दातुं योग्यम् (प्रयः=अन्नादिकम्) २.३७.४. पद्यते येन तत् (रथम्) १.८२.४. पान्ति रक्षन्ति तम् ३३.८. यः पातिस्तम् (राजानम्) ६.७.१. पालनम् १.१२१.१. पत्राणां ज्ञानानां समूहम् १.११०.५. पाति रक्षति समस्तं शिल्पव्यवहारं यस्तम् (अग्निम्) ७.२४. काष्ठादिकं पात्रम् १.१७५.३. **पात्राणि**=यैः पिबन्ति तानि १९.८६. **पात्रेषु**=पानसाधनेषु १६.६२. [पा रक्षणे (अदा०) पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा 'दादिभ्यश्छन्दसि' उ० ४.१७०. सूत्रेण त्रन्प्रत्ययः । 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' उ० ४.१५९. सूत्रेण वा ष्ट्रन् पात्रं पानात् नि० ५.१. पत्रप्राति० वा समूहार्थे अण्]

पात्रस्येव यथा पात्रस्य मध्ये १.७५.१. [पात्रस्य-इव-पदयोः समासः]

पात्रा पात्राणि सुवर्णरजतादीनि १.१०४.८. शत्रूणां यानानि ६.२७.६. भोजनाद्यर्थं सुवर्णादि पात्रों को आर्याभि० १.४९ ऋ० १.७.१९.८. [पात्रप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि । पात्रमिति व्याख्यातम्]

पाथन रक्षत १.१६६.८. [पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लोट् । त-प्रत्ययस्य थनादेशः 'तप्तनप्तनथनाश्च' इति सूत्रेण]

पाथसि अन्ने १३.५३. **पाथः**=पालकमन्नम् २१.४०. रक्षणीयमाचरणम् प्र०—पाथ इति पदनाम, निघं० ४.३, ८.५०. पृथिव्यादिकम् ७.५.७. अन्तरिक्षमार्गम् १.११३.८. पृथिव्याद्यन्नम् ३.५५.१०. अन्नाद्यैश्वर्यम् ७.४७.३. वर्त्म १.१५४.५. विज्ञानाचरणम् ८.५०. ज्ञातव्यं कर्म्म ८.५०. मार्गम् ३.८.९. रक्षकमन्नम् २.३.९. अन्नमुदकं वा ३.३१.६. पाति शरीरमात्मानञ्च येन तदन्नम्, प्र०—'अन्ने च' उ० ४.२०५. अनेन पातेरन्नेऽसुन्प्रत्ययः थुडागमश्च २.१७. उदकम् ७.३४.१०. **पाथांसि**=फलादीनि २१.४७. अन्नानि २१.४६. रक्षणीयान्याचरणानि प्र०—पाथ इति पदनाम निघं० ४.३, ८.५०.३. [पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'उदके थुट् च' उ० ४.२०४. 'अन्ने च' उ० ४.२०५. सूत्रेण वा असुन्प्रत्ययः थुडागमश्च । पाथोऽन्तरिक्षं पथा व्याख्यातम् । उदकमपि पाथ उच्यते पानात् । अन्नमपि पाथ उच्यते पानादेव नि० ६.६.]

पाथ्यः पथिषु भवः (वृषा=वर्षकस्सूर्यः) ६.१६.१५. [पाथस् इति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत् । पथिन्प्राति० वा भवार्थे यत्]

पादगृह्य पादान् ग्रहीतुं योग्यः (शत्रुर्जनः) ४.१८.१२. [पादोपपदे ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्यप् प्रत्ययश्छान्दसः]

पादम् चरणम् ७.३२.२. **पादः**=एकोंऽशो भागो वा ३१.३. प्रकाश्यमानं जगदेकगुणम् ऋ० भू० १२१, ३१.३. **पादाः**=पत्तव्याः (कर्मोपासनाज्ञानानि कालाः सवनानि वा) ४.५८.३. पद्यन्ते गच्छन्ति यैस्ते २९.२०. अधिगमसाधनानि १७.९१. **पादौ**=नीचस्थानीयौ (पदार्थौ) ३१.१०. चरणौ ६.४७.१५. [पद गतौ (दिवा०) धातोः 'पदरुजविशस्पृशो घञ्' इति घञ्प्रत्ययः । प्रतिष्ठा वै

पादः श० १३.८.३.८. पादः पद्यतेः नि० २.८. दिशः पादाः तै० सं० ७.५.२५.१.]

पादा चरणौ प्र०—अत्राऽऽकारादेशः ८.२३. पादौ ६.२९.३. मूर्खत्वादिनीचगुणैरुत्पन्नौ (शूद्रौ) ऋ० भू० १२५,३१.१०. पद्यते गम्यते याभ्यां गमनागमनाभ्यां तौ (चरणौ) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.२४.८. [पद गतौ (दिवा०) धातोर्घञ्। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

पादि गच्छ ११.४६. प्रतिपद्यताम्, प्राप्यताम् ११०५.३. पाद्येत ६.२०.५. [पद गतौ (दिवा०) धातोर्लुङि रूपम्। अडभावश्छान्दसः]

पान्तम् रक्षन्तम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) ७.३३.२. [पा रक्षणे (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः। अहर्वै पान्तम्। तां० ९.१.७. पान्तम्=पानीयम्। नि० ७.२५. पान्तो वै पुरुषः जै० ३.९५. रात्रिः पान्तम्। जै० १.२१४.]

पान्ता रक्षकौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१२२.४. [पा रक्षणे (अदा०) धातोः शत्रन्तात् प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः]

पापतीति प्रकर्षेण पुनः पुनः पतति गच्छति ६.६.५. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

पापत्वाय पापस्य भावाय ७.३२.१८. [पापप्राति० भावे त्वः प्रत्ययः]

पापया अधर्मरूपया (क्रियया) १.२९.५. [पापप्राति० स्त्रियां टाप्]

पापस्य पापाऽऽचारस्य (रक्षसः) १.१२९.११. **पापाः**=अधर्माऽऽचरणाः (जनाः) १.१९०.५. [पा रक्षणे (अदा०) धातोः "पानीविपिभ्यः पः' उ० ३.२३. सूत्रेण पः प्रत्ययः। पान्ति रक्षन्त्यस्मादिति विग्रहः। पापप्राति० मत्वर्थीयस्य लुक्। पापः पाताऽपेयानां पापत्यमानोऽवाङेव पततीति वा पापत्यतेर्वा स्यात् नि० ५.२.]

पापासः अधर्म्माचाराः (दुर्जनाः) ४.५.५. [पापप्राति० जसोऽसुगागमः। पापासः=पापाः नि० ६.२५.]

पाप्मना अधर्मात्मना जनेन ९.४. पापेन १९.११. **पाप्मने**=पापाऽऽत्मने (दुर्जनाय) ३०.१८. पापाऽऽचरणाय ३०.५ **पाप्मा**=अपराधः ६.३५. **पाप्मानम्**=दुष्टकर्मकारिणम् (भा०—दुष्टं जनम्) २६.१०. रोगादिकम् १२.९९. [पा रक्षणे (अदा०) धातोः पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा 'नामन्-सीमन्व्योमन्०' उ० ४.१५१. सूत्रेण मनिन्-प्रत्ययः पुगागमश्च निपात्यते। पाप्मा वाऽअशस्तिः श० ६.३.२.७. पाप्मा वै सपत्नः श० ८.५.१.६. पाप्मा वै वृक्षः श० ११.५.७.१३. पाप्मा वै मृधः श० ६.३.३.८. वरुणो वाऽएतं गृह्णाति यः पाप्मना गृहीतो भवति श० १२.७.२.१७. श्रमो वै पाप्मा श० ६.३.३.७. पाप्मा वै वृत्रः श० ८.५.१.६. पाप्मा सुरा काठ० १४.६. भ्रातृव्यो वै पाप्मा जै० ३.२२२.]

पायनाय पानाय १.११६.९. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् ल्युट्। योरनादेशः]

पायय पाययति वा अ०—तत्पाने हेतुरस्ति १.१४.७. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

पाययते रक्षां कार्यते १.५६.१. [पा रक्षणे (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्। लुगागमस्तु न छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पनात्]

पायवः रक्षकाः (आप्ता भृत्याः) ४.४.१३. पालकाः (राजपुरुषाः) ५.१२.४. **पायवे**=पालनाय ६.४७.२४. गुह्यावयवदाहाय ३९.१०. **पायुना**=पाय्विन्द्रियेण २५.७. **पायुभिः**=रक्षणैः रक्षकैर्वा ५.७०.३. रक्षणोपायैः १.१८९.४ रक्षकैः (विद्वद्भिः) १.१४३.८. रक्षादिभिः ३४.१३. **पायुम्**=पात्यनेन तं गुह्येन्द्रियम् ६.१४. यः पिबति तम् (जनम्) २.२.४. **पायुः**=पालनकर्त्ता (परमेश्वरः) १.८९.५. पालकः (अग्निः=नृपतिः) २.१.७. गुदेन्द्रियम् २०.८. सर्वस्य रक्षकः (ईशानः=ईश्वरः) २५.१८. निरन्तर रक्षक (ईश्वर) आर्याभि० १.१०. ऋ० १.६.१५.५. पालनहेतुः (सभाध्यक्षः) प्र०—अत्र 'पा रक्षणे' इत्यस्मादुण् १.३१.१३. [पा रक्षणे (अदा० धातोः 'कृवापाजि०' उ० १.१. सूत्रेण उण्प्रत्ययः]

पारतः पारात् ४.३०.१८. [पारप्राति० 'तसि प्रकरणे आद्यादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ५.४.४४. वा० सूत्रेण तसिः]

पारम् परभागम् १.४६.११. सर्वदुःखेभ्यः पृथग्भूतम् (परतटम्) ३.१८. परतटम् १.१८३.६. **पारः**=यः पारयिता सः (इन्द्रः=राजा) ५.३१.८. **पाराय**=मृगकर्मसमाप्त्यर्थम् ३०.१६. **पारे**=अपरभागे १.५२.१२. समुद्रभूमिपरभागे २.११.८. [पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोरच्प्रत्ययः। पारं परं भवति नि० २.२४.]

पारय दुःखात्पारं देशं गमय ६.२०.१२. पारं प्रापय १.९७.७. दुःखाचारात् पृथक्कृत्वा श्रेष्ठाचारं नय १.१८९.२. तीरे प्रापय १.१७४.९. **पारयतम्**=पारयतः २.३९.४.

पारयथ=पारं प्राप्नुथ २.३४.१५. **पारयन्ति**=पारं गमयन्ति १.१८२.६. **पारयात्**=समुद्रपारं गमयेत् १.१४०.१२. [पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लटलेटावपि]

पारयन्ता पारं गमयन्तौ (इन्द्राविष्णू=महाराजशिल्पिनौ) ६.६९.१. [पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'सुपां सुलुग्०' सूत्रेण प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः]

पारयन्ती विजयं प्रापयन्ती (ज्या=प्रत्यञ्चा) २९.४०. पारं प्रापयन्ती (योषा=पत्नी) ६.७५.३. [पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । पारयन्ती=पारं नयन्ती नि० ९.१८.]

पारयामसि रोगसमुद्रात् पारं गमयेम १२.९६. [पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोर्लेट् । 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

पारयिष्णवः रोगजदुःखेभ्यः पारं नेतुं समर्थाः (ओषधीः=सोमादीन्) १२.७७. **पारयिष्णुः**=दुःखात् पारयिता (सेनाध्यक्षो राजा) ९.९. [पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोः 'णेश्छन्दसि' अ० ३.२.१२७. सूत्रेण तच्छीलादिष्वर्थेषु इष्णुच्]

पारावतघ्नीम् पाराऽवारघातिनीम् (सरस्वतीं=विदुषीं स्त्रियम्) ६.६१.२. ['पारावत' इत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः टक् 'कृतो बहुलं वा' इति वा० सूत्रेण । ततो ङीप् । पारावतघ्नीम्=पारावारघातिनीम् नि० २.२४.]

पारावतान् कलरवान् (कपोतान्) २४.२५. **पारावताः**=परावति दूरदेशे भवाः (चित्रा=रूपाणि) ५.५२.११. [परप्राति० मतुप्प्रत्यये परवत् । छान्दसः पूर्वस्य दीर्घः । परावत्प्राति० भवार्थेऽण् । अथवा पारापतशब्दोऽयम् । पकारस्य वकारः पृषोदरादित्वात् । पारापतः=परोपपदे आङ्पूर्वात् पततेरच्प्रत्ययः]

पारिषत् सुखैः प्रजाः पालयेत् प्र०—अत्र पॄ-धातोर्लेटि सिप् 'सिब्बहुलं णिद्' इति वार्त्तिकेन णित्वाद् वृद्धिः १.१००.१४. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०)धातोर्लेट् । 'सिब्बहुलं लेटि' इति सिप् । तस्य च णित्वाद् वृद्धिः]

पारुष्णान् पक्षिविशेषान् २४.२४.

पार्जन्यः पर्जन्यवद्गुणः (सुपर्णः=पक्षिविशेषः) २४.३४. मेघदेवताकः (पशुः) २४.३. **पार्जन्याः**=मेघदेवताकाः (नभोरूपाः=पशवः पक्षिणो वा) २४.६. [पर्जन्य इति व्याख्यातम् । ततः 'सास्य देवता' इति सूत्रेण अण्प्रत्ययः]

पार्थवानाम् पृथौ विस्तीर्णायां विद्यायां भवानां राज्ञाम् ६.२७.८. [पृथुप्राति० 'तत्र भव' इत्यर्थेऽण्प्रत्ययः]

पार्थिवम् पृथिव्याः सम्बन्धि (रजः=लोकः) ३४.३२. पृथिव्या विकारम् (रजः=द्व्यणुकादिरेणुः) १३.२८. पृथिव्यां विदितम् (रजः=अणुत्रसरेण्वादि) १.९०.७. पृथिवीमयं पृथिव्यामन्तरिक्षे वा विदितम् (रजः) १.८१.५. **पार्थिवस्य**=पृथिव्यां विदितस्य पदार्थविज्ञानस्य १.१४४.६. **पार्थिवः**=पृथिव्यां विदितः (पदार्थः) २७.३६. **पार्थिवात्**=पृथिवीसंयोगात् (दिवः=प्रकाशात्) प्र०—'सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ' अ० ५.१.४१. इति सूत्रेण पृथिवीशब्दादञ्प्रत्ययः १.६.१०. **पार्थिवानाम्**=पृथिव्यामन्तरिक्षे विदितानां मध्ये १.९५.३. **पार्थिवानि**=पृथिव्यामन्तरिक्षे भवानि विदितानि वा (परमाण्वादीन्) ६.६१.११. पृथिव्या विकारा अन्तरिक्षे विदितानि च (रजांसि=लोकान्) प्र०—अत्र 'तत्र विदित इति च' अ० ५.१.४३. अनेनाऽञ्-प्रत्ययः ५.१८. पृथिवीविकारजातानि (शारीरिकबलादीनि) १.१५५.४. अन्तरिक्षे विदितानि कार्याणि (रजांसि=लोकान्) प्र०—पृथिवीत्यन्तरिक्षनाम निघं० १.३, ५.८१.३. पृथिव्यादिकृतानि वा (कार्याणि) ६.६.६. **पार्थिवाः**=पृथिव्यां विदिता राजानो बहुमूल्याः पदार्था वा ७.३५.११. **पार्थिवे**=पृथिवीसम्बन्धिभूगर्भविद्यायाम् ऋ० भू० २६४ [पृथिवीप्राति० विदितार्थे 'तत्र विदित इति च' सूत्रेण निमिते संयोगोत्पत्तौ च 'सर्वभूमिपृथिवीभ्यामणञौ' सूत्रेणाञ्प्रत्ययः । अथवाभवार्थेऽञ्]

पार्थिवा पृथिवीत्याख्यस्य कारणस्य विकारभूतानि भूगोलाख्यानि कार्याणि १.६४.३. पृथिव्यां विदितानि (वसूनि=द्रव्याणि) ६.४५.२०. [पार्थिवप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि । पार्थिव इति व्याख्यातम्]

पार्थिवासः पृथिव्यां विदिताः (अग्नयः=पावकाः) ३५.८. पृथिव्यां भवाः (पदार्थाः) ६.५०.११. [पार्थिवप्राति० जसोऽसुगागमः । पार्थिव इति व्याख्यातम्]

पार्यम् पार्य्यते समाप्यते कर्म येन तम् (वीरजनम्) १.१२१.१२. **पार्याणि**=परितुं पूरयितुं योग्यानि (पक्ष्माणि=कर्माणि नेत्रोर्ध्वलोमानि वा) २५.१. **पार्याय**=दुःखेभ्यः पारे वर्त्तमानाय (जनाय) १६.४२. पारभवाय (व्यवहाराय) ४.१६.११. दुःखपारं गमयते (अवसे=रक्षणाद्याय) ४.२५.१. **पार्याः**=परितुं पालयितुं

योग्याः (इक्षवः=गुडादिनिमित्ताः) २५.१. पालनीयाः (धियः=प्रज्ञाः) ७.२७.१. **पार्ये**=पालयितव्ये (शूरसातौ=सङ्ग्रामे) ६.२६.१. पालनीये पूर्णे वा (दिवि=प्रकाशे) ७.३२.१४. पालयितुं पूरयितुं योग्ये (दिवि=कामे) ७.३२.२१. पूरयितव्ये (शर्मन्=गृहे) ६.३३.५. पारयितव्ये (भरद्वाजे=राज्यपोषकव्यवहारे) ६.१७.१४. [पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोर्णिजन्ताद् यत् अथवा पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'ऋहलोर्ण्यत्' इति ण्यत्-प्रत्ययः]

पार्वतेयी पर्वतस्य मेघस्य दुहितेव या सा पार्वतेयी (धिषणा=धारण वती द्यौः) प्र०—पर्वत इति मेघनामसु पठितम्, निघं० १.१०., पर्वतस्येयं घनपङ्क्तिः पार्वती तस्याऽपत्यं दुहितेव पार्वतेयी वृष्टिः 'स्त्रीभ्यो ढक्' अ० ४.१.१२०. अनेन ढक्-प्रत्ययः १.१९. [पर्वत इति मेघनाम निघं० १.१०. ततः 'तस्येदम्' इत्यण्प्रत्ययान्तान् ङीप्। ततः 'स्त्रीभ्यो ढक्' इत्यपत्यार्थे ढक्। 'टिड्ढाणञ्०' इति ङीप्]

पार्श्वतः समीपात्, उभयतः इतस्ततोऽङ्गात् २१.४४, ४३, ४५ [स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः 'स्पृशेः श्वण्शुनौ पृ च' उ० ५.२७. सूत्रेण श्वण्प्रत्ययः 'पृ' आदेशश्च। स्पृशति येन स पार्श्वः। ततः 'तसिप्रकरणे आद्यादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ५.४.४४ वा० सूत्रेण तसिः]

पार्श्वयोः वाम-दक्षिणभागयोः २४.१. **पार्श्वे**=अग्रे पृष्ठे ३१.२२. [पूर्वपदे व्याख्यातम्। पार्श्वौ द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०.]

पार्ष्ण्या पार्ष्णिषु कक्षासु साधूनि (ताडनानि) २५.४०. स्पर्शकारकेण (कशया) १.१६२.१७. [पर्षति सिञ्चतीति विग्रहे पृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'घृणिपृश्निपार्ष्णि०' उ० ४ ५२ सूत्रेण निः प्रत्ययो वृद्धिश्च निपात्यते। पार्ष्णि प्राति०'तत्र साधुः' इत्यर्थे यत्। ततः शेर्लोपः]

पावक! पवित्रकारक पवित्रताहेतोर्वा (विश्वेश्वरः भौतिकाऽग्ने वा) १.१३.१. पवित्रकर्त्तः शुद्धिहेतुर्वा (अग्ने=जगदीश्वर भौतिकोऽग्निर्वा) १.१२.१०. पुनाति पवित्रतां करोति तत्सम्बुद्धावीश्वर! पवित्रताहेतुरग्निर्वा १.१२.९. वह्निवत् पवित्रकारक (विद्वज्जन) ३.१०.८. जनाऽन्तःकरणशोधक (अग्ने=विद्याप्रकाशोपदेशक) १७.८. **पावकम्**=पवित्रकारकम् (मरुतां गणम्) १.६४.१२. पवित्रकरं वह्निम् ५.४.३. **पावकः**=पवित्रकरः (अग्निरिव विद्वज्जनः) ५.७.४. शुद्धिप्रचारकः (विद्वान् राजा वा) १७.१५. शोधकः (भा०—पवित्रो जनः) १७.११. पवित्रकारी (विद्वान् गृहस्थो जनः) १७.७. प्रकाशितयशाः (राजा) ७.३.९. पवित्रीकरः (विद्वज्जनः) ७.९.१. **पावकाः**=पवित्राः पवित्रकराः (प्रजासेनाध्यक्षाः) ३.३१.२०. **पावके**=वह्निरिव पवित्रस्तस्मिन् (राजनि) ६.५.२. [पूङ् पवने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि ण्वुल्-प्रत्ययः। यद्वै शिवं शान्तं तत्पावकम् श० ९.१.२.३०. अन्नं वै पावकम् श० २.२.१.७.]

पावकया पावकस्य क्रियया ६.१५.५. पवित्रकारिकया (कृपा=सामर्थ्येन) १७.९१. **पावका**=पावं पवित्रकारकं व्यवहारं काययति शब्दयति या सा (सरस्वती=सर्वविद्याप्रापिका वाक्) प्र०—'पूञ् पवने' इत्यस्माद्भावार्थे घञ्, तस्मिन् सति 'कै शब्दे' इत्यस्माद् 'आतोऽनुपसर्गे कः' अ० ३.२.३. इति कः प्रत्ययः 'उपपदमतिङ्' अ० २.२.१९. इति समासः १.३.१०. पवित्रकारिका (सरस्वती=सुसंस्कृता वाक्) २०.८४. पवित्रस्वरूप और पवित्र करने वाली सत्यभाषणमय मङ्गलकारक वाणी आर्याभि० १.८ ऋ० १.१.६.१०. **पावकायै**=पवित्रकर्त्र्यै (सरस्वत्यै=वाचे) २२.२०. **पावकाः**=पवित्रकर्त्र्यः (आपः=जलानि) ७.४९.२. पवित्राः (मिहः=सेचका वृष्टयः) ३.३१.२०. पवित्रकर्मकर्त्र्यः (उषसः=प्रभातवेलेव दुहितरः) ४.५१.२. वह्नय इव वर्त्तमानाः (मरुतः=मनुष्याः) ७.५६.१२. [पूङ् पवने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि ण्वुल्। ततः स्त्रियां टाप्। 'पावकादीनां छन्दस्युपसंख्यानम्' अ० ७.३.४५. वा० सूत्रेण इत्वं न भवति। अथवा पाव-कपदयोः समासे स्त्रियां टाप्। पावः=पूङ् पवने (भ्वा०) धातोर्घञ्। कः=कै शब्दे (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः]

पावकवर्चाः पवित्रीकारिकाया विद्युतो वर्चो दीप्तिरिव वर्चोऽध्ययनं यस्य सः (पुत्रः) १२.१०७. [पावका-वर्चस्-पदयोः समासः। पूर्वपदस्य ह्रस्वः]

पावकवर्णम् अग्निवत् प्रकाशमानम् (यज्ञं=गृहाश्रमाख्यम्) १७.६. **पावकवर्णाः**=पावकवत् पवित्रो गौरो वर्णो येषां ते ब्रह्मवर्चस्विनः (विपश्चितः=विद्वांसो जनाः) ३३.८१. [पावक-वर्णपदयोः समासः]

पावकशोचिषम् पवित्रकरदीप्तिम् (विद्युदाख्यं वह्निम्) ३.९.८. पावकस्य शोचिरिव शोचिर्दीप्तिर्यस्य तम् (अग्नि=वह्निम्) ४.७.५. **पावकशोचिषः**=पावकस्याऽग्नेः शोचिर्दीप्तिरिव शोचिर्यस्य विदुषस्तस्य ३.११.७. **पावक-**

शोचिषे=पावकस्य शोचिः प्रकाश इव प्रकाशो यस्य तस्मै (विदुषे जनाय) ५.२२.१. **पावकशोचे**=पावकस्याऽग्नेः शोचिर्दीप्तिरिव द्युतिर्यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) ३.२.६. पवित्रप्रकाशक (परमेश्वर) ६.१५.१४. [पावकशोचिष्पदयोः समासः । शोचिष् ज्वलतो नाम निघं० १.१७. पावकशोचिषम्=पावकदीप्तिम् नि० ४.१४. 'पावकशोचे' पदे 'शोचि' रितीकारान्तं पदं न तु सकारान्तम्]

पावकासः पवित्रकारकाः (सत्वानः=बलपराक्रमप्राणिभूतगणाः) १.६४.२. पवित्रकारिकाः (वाचः) १.१४२.६. [पावकप्राति० जसोऽसुगागमः]

पावकेभिः पवित्रैः (मरुद्भिः=मनुष्यैः) ५.६०.८. [पावकप्राति० भिस ऐसादेशो न भवति 'बहुल छन्दसि' सूत्रेण]

पावीरवी शोधयित्री (विदुषी कन्या) ६.४९.७. [पविरिति वज्रनाम (निघं० २.२०) ततो मत्वर्थीय इरन् छान्दसः । पवीरमायुधं तद्वान् पवीरवान् । पवीरवत्प्राति० 'सास्य देवता' इत्यण्प्रत्यये छान्दसं रूपम् । पविः शल्यो भवति यद् विपुनाति कायं तद्वत् पवीरमायुधम्, तद्वान् इन्द्रः पवीरवान् । ······तद्देवता वाक् पावीरवी, पावीरवी च दिव्या वाक् नि० १२.३०. वाग्वै सरस्वती पावीरवी ऐ० ३.३६.]

पाशद्युम्नस्य पाशात् प्राप्तं द्युम्नं यशोधनं येन तस्य (उत्तमजनस्य) ७.३३.२. [पाश-द्युम्नपदयोः समासः । पाशमिति व्याख्यास्यते । द्युम्नम्=धननाम निघं० २.१०.]

पाशम् बन्धनम् भा०—पापबन्धनम् १२.१२. धर्म्यं बन्धनम् १२.६५. बन्धन को, सं० वि० १६६, अथर्व० २.३.२४. **पाशान्**=बन्धनानि ५.२.७. बन्धकान् (मोहादीन्) ७.५९.८. अधर्माचरणजन्यबन्धान् १.२४.१३. **पाशाः**=बन्धनानि २.२७.१६. **पाशैः**=बन्धनसाधनैः प्र०—'पश बन्धने' इत्यस्यं रूपम् १.२५. अ०—बन्धनहेतुभिः किरणैः १.२६. साम-दाम-दण्ड-भेदादिकर्मभिः १.२६. [पश बन्धने (चुरा०) धातोर्घञ्प्रत्ययः । पाशः पाशयतेर्विपाशनात् नि० ४.२. वारुणो वै पाशः तै० ३.३.१०.१. नैर्ऋतो वै पाशः श० ७.२.१.१५.]

पाशिनः बहुपाशयुक्ता व्याधाः २०.५३. पाशवन्तो बन्धनाय प्रवृत्ताः (जनाः) ३.४५.१. [पाशमिति व्याख्यातम् । ततो भूम्न्यर्थ इनिः प्रत्ययः]

पाष्या पोषणयोग्यानि कर्माणि प्र०—अत्र पिष्लृधातोर्ण्यत्, वर्णव्यत्ययेन पूर्वस्याऽऽकारः 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशश्च १.५६.६. [पिष्लृ संचूर्णने (रुधा०) धातोर्ण्यत् । धातोरिकारस्याकारश्छान्दसः । पाष्यप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

पास्त्यस्य गृहे भवस्य (जनस्य) ४.२१.६. [पस्त्यप्राति० भवार्थेऽण् । पस्त्यमिति गृहनाम निघं० ३.४.]

पाꣳसव्याय पांसुषु धूलिषु भवाय (जनाय) १६.४५. [पांसुप्राति० भवार्थेऽण् । पांसुः=पसि नाशने (चुरा०) धातोः 'अर्जिदृशिकम्यमिपशि०' उ० १.२७. सूत्रेण कुः प्रत्ययो दीर्घश्च]

पाꣳसुरे प्रशस्ता पांसवो रेणवो विद्यन्ते यस्मिन्नन्तरिक्षे तस्मिन् प्र०—'नग-पांसु-पाण्डुभ्यश्चेति वक्तव्यम्' अ० ५.२.१०७. अनेन वार्त्तिकेन प्रशंसाऽर्थे रः प्रत्ययः १.२२.१७. पांसवो रेणवो रजांसि रमन्ते यस्मिन्नन्तरिक्षे तस्मिन् ५.१५. [पांसुरिति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततः मत्वर्थे 'नगपांसुपाण्डुभ्यश्चेति वक्तव्यम्' अ० ५.२.१०७. वा० सूत्रेण रः प्रत्ययः]

पिकः कोकिलः २४.३९. [अपि कायति शब्दायते इति विग्रहे 'अपि' उपपदे कै शब्दे (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः]

पिङ्गलः सुन्दर वर्णयुक्त (ब्रह्मचारी) सं० वि० ९३ अथर्व० ११.५.२६. [पिजि वर्णे (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकः कलः प्रत्ययः]

पिङ्गाक्षम् पिङ्गे पीतवर्णेऽक्षिणी यस्य तम् (जनम्) ३०.२१. पीताऽक्षम् (जनम्) ३०.२१. [पिङ्ग-अक्षिपदयोः समासः]

पिठीनसे पिठीव नासिका यस्य तस्मै (वीरजनाय) ६.२६.६. [पिठी-नासिकापदयोः समासे नासिकायाः स्थाने नस् आदेशः]

पिणक् पिंष्याः ३.३०.८. [पिष्लृ सञ्चूर्णने (रुधा०) धातोर्लङि छान्दसं रूपम्]

पितरम् पालकं जनकं विद्वांसं वा १.११४.७. पालकं सूर्यम् १.१६४.१८. परमात्मानम् १.१६४.२२. पितृवत् पालन-निमित्तम् (सूर्यम्) १.१६४.१२. पालयितारं जनकमध्यापकं वा पं० वि० पितृवद्वर्त्तमानम् (विपश्चितं=विद्वज्जनम्) ३.२६.९. भा०—रक्षकम् (स्वः=आदित्यम्) ३.६. **पितरः**=ये पान्ति पितृवद् रक्षन्ति विद्यासुशिक्षादिदानैस्ते (अङ्गिरसः=विद्वांसो जनाः) १.६२.२. विज्ञानवयोवृद्धाः (धर्मिष्ठा जनाः) ६.७५.९. पान्ति पालयन्ति सद्विद्याशिक्षाभ्यां ये ते तत्सम्बुद्धौ (भा०—विद्वांसोऽध्यापकाः)

२.३१. विद्याऽऽनन्ददायकास्तत्संबुद्धौ (जनकादयः) २.३१. सेवितुं योग्यास्तत्सम्बुद्धौ, ये पान्ति विद्यान्नादिदानेन तत्सम्बुद्धौ, अन्नभोगादि विद्याशिक्षकास्तत्सम्बुद्धौ, श्रेष्ठानां पालका दुष्टेषु क्रोधकारिणस्तत्सम्बुद्धौ, पापाऽऽपत्कालनिवारकास्तत्सम्बुद्धौ, प्रीत्या पालकास्तत्संबुद्धौ, विद्यादातारस्तत्सम्बुद्धौ, धर्म्यजीविकाज्ञापकास्तत्सम्बुद्धौ, दुःखनाशकत्वेन रक्षकास्तत्सम्बुद्धौ (जनकादयः) २.३२. पान्त्यन्नसुशिक्षाविद्यादानेन तत्सम्बुद्धौ (अ०—जनका विद्याप्रदाश्च जनाः) ३.५५. विज्ञानवन्तः (विद्वांसो जनकाः) ३.५५.२. ऋतव इव पालयितारः (सज्जनाः) ७.१८.१. प्रजापालकाः (विद्वांसो जनाः) १९.४५. रक्षितारः (जीवन्तो विद्वांसः) १९.४९. पालनक्षमाः (राजपुरुषाः) २९.४६. **पितरौ**=पालकौ मातापितरौ १५.५३. माता पिता च द्वौ १९.११. जननीजनकौ १.१२१.५. **पितः !**=पालयितो रुद्र (सभाध्यक्ष) १.११४.९. पितृस्वरूप (सद्वैद्य) २.३३.१. **पिता**=प्रजापालको राजा १.१६६.१६. सर्वपालकेश्वरः पालनहेतुः सूर्यलोको वा २.११. पालकोऽग्निर्विद्युद्वा १.१६०.२. जगतो जनकः (इन्द्रः=ईश्वरः) ४.१७.१७. ज्ञानप्रदानेनाऽस्तिकत्वेन वा रक्षकः (विद्वान्) ३२.९. पालयिता (सज्जनः) १.१६.४. अनूचानोऽध्यापकः १.८०.१६. सर्वपालक ईश्वरः २.११. नित्य पालन करने वाला (जनक) आर्याभि० २.४२, १७.२७. **पितुः**=जनकवद्वर्त्तमानस्याऽध्यापकस्य १.११९.८. जनकस्येश्वरस्य वा ३२.९. मध्यलोकस्य ३४.३२. उत्पादिकाया विद्युतः १७.६०. पालकस्य जनकस्य १.८७.५. **पितृभिः**=ज्ञानिभिर्ऋतुभिर्वा प्र०—त वा एते ऋतवः शत० २.१.३.२. अनेन पितृशब्दादृतवो गृह्यन्ते 'पितर इति पदनामसु पठितम्' निघं० ५.५. अनेन ज्ञानवन्तो मनुष्या गृह्यन्ते ५.११. **पितृभ्यः**=राज्यपालकेभ्यो वीरेभ्यः १.११९.४. पालकेभ्यो जनकाऽध्यापकादिभ्यः १९.३६. जनकेभ्यो विद्यासुशिक्षादातृभ्यो वा ३५.२०. पालनहेतुभ्य ऋतुभ्यः प्र०—ऋतवो वै पितरः शत० २.५.२.३२, २.७. ये चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तेन ब्रह्मचर्येण विद्यामधीत्याध्यापयन्ति ते वसुसंज्ञकाः पितरस्तेभ्यः ऋ० भू० २६५, १९.३६. **पितृभ्याम्**=जनकजननीभ्याम् ३.७.६. अविष्ठातृ-शिक्षकाभ्याम् १.१११.१ **पितॄन्**=ऋतून् ८.६०. पूर्वोक्तान् (२९-३३) मन्त्रेषूक्तगुणेभ्यो युक्तान् जनकान् विद्याप्रदाँश्च २.३४. भा०—विद्यावयोवृद्धान् पित्रादीन् १९.६१. **पितॄणाम्**=जनकानां स्वामिनां वा ६.४६.१२. जनक-जननीनाम् २४.१८. पालकानां विज्ञानवतां विदुषां रक्षाऽनुयुक्तानामृतूनां वा १.१०९.३. **पित्रा**=पालकेनाऽऽचार्येण वा ६.९.३. वायुना २२.१९. **पित्रे**=विद्या-प्रकाशदानेन पालयित्रे (दिवे=प्रकाशाय) १.७१.५. **पित्रोः**=द्यावापृथिव्योः ३.५.८. वाय्वाकाशयोः १.१६०.३. जनकजनन्योः ३.२६.९. मातापित्रोरिव विद्याऽऽचार्ययोः ६.७.४. [पाति रक्षतीति पिता। पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'नप्तृनेष्टृत्वष्टृ०' उ० २.९५. सूत्रेण तृजन्तो निपात्यते। माता च पिता चेति पितरौ। 'पिता मात्रा' अ० १.२.७०. सूत्रेण एकशेषः। पिता पाता वा पालयिता वा नि० ४.२१. पिता=गोपिता नि० ६.१५. पितरः=मनुष्या वै जागरितं पितरः सुप्तम् श० १२.९.२.१. रात्रिः पितरः श० २.१.३.१. तिर इव वै पितरो मनुष्येभ्यः श० २.४.२२.१. पितरो नमस्याः श० १.५.२.३. यानग्निरेव दहन्त्स्वदयति ते पितरोऽग्निष्वात्ताः श० २.६.१.७. ये वा यज्वानो गृहमेधिनः। ते पितरोऽग्निष्वात्ताः तै० १.६.९.६. अर्धमासा वै पितरोऽग्निष्वात्ताः तै० १.६.८.३. अथ ये दत्तेन पक्वेन लोकं जयन्ति ते पितरो बर्हिषदः श० २.६.१.७. ये वै यज्वानः, ते पितरो बर्हिषदः तै० १.६.९.६. मासा वै पितरो बर्हिषदः तै० १.६.८.३. तद् ये सोमेनेजानाः। ते पितरः सोमवन्तः श० २.६.१.७. सोमप्रयाजा हि पितरः तै० १.६.९.५. इन्दव इव हि पितरः। मन इव तां० ६.९. पितृदेवत्यो वै सोमः श० २.४.२.१२. ओषधिलोको वै पितरः श० १३.८.१.२०. षड् वा ऋतवः पितरः श० ९.४.३.८. क्षत्रं वै यमो विशः पितरः श० ७.१.१.४. यः (अर्धमासः) अपक्षीयते स पितरः श० २.१.३.१. अपक्षयभाजो वै पितरः कौ० ५.६. अपराह्णः पितरः श० २.१.३.१. अन्तभाजो वै पितरः कौ० १६.८. मर्त्याः पितरः श० २.१.३.४. अनपहतपाप्मानः पितरः श० २.१.३.४. पितृलोकः पितरः कौ० ५.७. पितरः प्रजापतिः गो० उ० ६.१५. मनः पितरः श० १४.४.३.१३. ह्लीका हि पितरः तै० १.३.१०.६. हरणभासा हि पितरः तै १.३.१०.७. ऊष्मभागा हि पितरः तै० १.३०.१०.६. देवा वा एते पितरः गो० उ० १.२४. स्विष्टकृतो वै पितरः गो० उ० १.२५. स्वधा वै पितॄणामन्नम् श० १३.८.१.४. पितरा युवाना (यजु० १५.५३) वाक् च वै मनश्च पितरो युवाना श० ८.६.३.२२. प्राणो वै पिता ऐ० २.३८. एष वै पिता य एष (सूर्यः) तपति श० १४.१.४.१५. असौ (द्यौः) पिता तै० ३.८.९.१. श० १३.१.६.१. एष वै पिता य एष (सूर्यः) तपति श० १४.१.४.१५. त्रयो वै पितरः (सोमवन्तः, बर्हिषदः, अग्निष्वात्ताः) श० ५.५.४.२८. पितरो नाराशंसः काठ० ३४.१६. संवत्सरो वै पिता वैश्वानरः

प्रजापतिः श० १.५.१.१६.]

पितरा मातापितृवद्वर्त्तमाने (भूमिसूर्यौ) १.१५६.२. विज्ञानवन्तावध्यापकोपदेशकौ ४.३५.५. सर्वथा पालकौ ४.३४.६. शरीरात्मपालनहेतू (अश्विनौ=जलाग्नी) १.२०.४१. [पितृप्राति० प्रथमाद्विवचने 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

पितरामातरा पिता च माता च ते (भा०—विद्वांसौ मातापितरौ) प्र०—अत्र 'पितरा-मातरा च छन्दसि' अ० ६.३.३३. इति पूर्वपदस्याऽऽनङ्, उत्तरपदस्याऽऽकारादेशश्च निपात्यते ६.१६. [पितृ-मातृपदयोः समासे 'पितरा-मातरा च छन्दसि' अ० ६.३.३३. सूत्रेण पूर्वपदस्य अराङ् आदेश उत्तरपदस्याकारादेशश्च निपात्यते]

पितरेव जननीजनकाविव ३.५८.२. यथा जनक-जनन्यौ तथा (राजाऽमात्यौ) ४.४१.७. [पितरा-इवपदयोः समासः]

पितामहेभ्यः ये पितॄणां पितरस्तेभ्यः १६.३६. ये चतुश्चत्वारिंशद्-वर्षपर्यन्तेन ब्रह्मचर्येण विद्यां पठित्वा पाठयन्ति ते ऋ० भू० २६६, १६.३६. [पितृप्राति० 'ताभ्यां पितरि डामहच् मातरि षिच्च' अ० ४.२.३६. सूत्रेण डामहच्-प्रत्ययः]

पितुभाजः अन्नस्य विभाजकाः (नरः=विवाहित-जनाः) १.१२४.१२. उत्तमाऽन्नसेविनः (नरः=नेतारो जनाः) ६.६४.६. [पितूपपदे भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोरण्प्रत्ययः। पितुरित्यन्ननाम निघं० २.७.]

पितुम् अन्नम् प्र०—पितुरित्यन्ननामसु पठितम् निघं० २.७, ३.३७. अन्नादिकम् १२.६५. सुसंस्कृतमन्नम् १.६७.७. **पितो!**=हे पालकाऽन्नदातः (ईश्वर) १.१८७.७. अन्नव्यापिन् पालकेश्वर १.१८७.११. पालक (अन्न) १.१८७.२. पेयम् (अन्नम्) १.८७.२. [पा रक्षणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकस्तुन् प्रत्यय इकारादेशश्च बहुलवचनादेव। पितुरित्यन्ननाम पातेर्वा पिबतेर्वा प्यायतेर्वा नि० ६.२४. अन्नं वै पितुः श० १.६.२.२०. दक्षिणा वै पितुः ऐ० १.१३.]

पितुमत् सुसंस्कृतमन्नाद्यम् (वचः) १.१०१.१. [पितुप्राति० प्रशंसायाम् मतुप्। पितुरिति व्याख्यातम्]

पितुमतीम् प्रशस्ताऽन्नयुक्ताम् (ऊर्जं=नीतिम्) १.११६.८. [पितुरित्यन्ननाम निघं० २.७. ततः प्रशंसायां मतुबन्तान् ङीप्। पितुमतीम्=अन्नवतीम् नि० ६.३६.]

पितुमतीव प्रशंसित- बह्वन्नाद्यैश्वर्ययुक्तेव (संसत्=सम्राट्-सभा) ४.१.८. [पितुमती-इवपदयोः समासः। पितुमतीति व्याख्यातम्]

पितुमान् बहूनि पितवोऽन्नादीनि विद्यन्ते यस्मिन् सः (पन्थाः=मार्गः) ३.५४.२१. [पितुरिति व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे मतुप्]

पितुमानिव यथाऽन्नादियुक्तः प्रासादस्तथा विद्यादिसम्पन्नो विद्वान् १.१४४.७. [पितुमान्-इवपदयोः समासः]

पितुषणिः स्वार्थी (दुर्जनः) पं० वि० [पितुरित्यन्ननाम निघं० २.७. तदुपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' अ० ३.२.२७. सूत्रेण इन्-प्रत्ययः]

पितृकृतस्य जनककृतस्य (एनसः=विरोधाचरणस्य) ८.१३. परमविद्यायुक्त जन के किए (एनसः=पाप से) आर्याभि० २.१६, ८.१३. [पितृ-कृतपदयोः समासः]

पितृतमः अतिशयेन पालकः (इन्द्रः=ईश्वरः) ४.१७.१७. [पितृप्राति० अतिशायने तमप्]

पितृमते पितर ऋतवो नित्ययुक्ता विद्यन्ते यस्मिन् तस्मै (सोमाय=संसाराय), प्र०—अत्र नित्ययोगे मतुप् 'ऋतवः पितरः' शत० २.३.४.२४, २.२६. पितरः पालका विज्ञानिनो विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मै (भा०—विदुषे जनाय) ३८.६. [पितृप्राति० नित्ययोगे मतुबन्ताच्चतुर्थी। संवत्सरो वै सोमः पितृमान् तै० १.६.८.२.]

पितृवित्तस्य जनकभुक्तस्य (रायः=धनस्य) १.७३.९
पितृवित्तः=पितृभ्योऽध्यापकेभ्यो वित्तः प्रतीतो विज्ञातः (रयिः=निधिसमूहः) १.७३.१. [पितृ-वित्तपदयोः समासः। वित्तः=विद ज्ञाने (अदा०) धातोः, विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा क्तः]

पितृश्रवणम् पितरो ज्ञानिनो श्रूयन्ते येन तम् (धेनुं=वाणीम्) १.६१.२०. पितुः सकाशाच्छ्रवणं यस्य तम् (भा०—पुरुषज्ञानम्) ३४.२१. ['पितृ' इत्युपपदे श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः करणे ल्युट्। पितृ-श्रवणपदयोः समासो वा]

पितृषदनम् यथा विद्यावन्तो ज्ञानिनः सीदन्ति यस्मिँस्तथा (सुशिक्षितानां स्थानम्) ५.२६. यथा विद्वत्स्थानम् (धाम) ६.१. [पितृ-सदनपदयोः समासः। सदनम् षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

पितृषदनाः यथा पितृषु ज्ञानिषु सीदन्ति तथा (लोकाः=सर्व-जनाः) ५.२६. भा०—विद्यानिष्णाताः (लोकाः=न्यायदृष्ट्या विद्वांसः) प्र०—पितर इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.५, ६.१. ['पितृ' इत्युपपदे षद्लृ

विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

पितृषदे पितरो विद्याविज्ञापका विद्वांसः सीदन्ति यस्मिँस्तस्मै (राज्ञे) १.११७.७. ['पितृ' इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे क्विप्]

पितेव यथा दयमानः पिता तथा १.१०४.९. पितृवत् २.२९.५. जनक इव ६.५२.६. [पिताइव-पदयोः समासः]

पित्तम् तेजः १७.६.]

पित्र्या पितृषु भवा (धीः=प्रज्ञा) ३.३९.२. [पितृप्राति० भवार्थे यत्। ततः स्त्रियां टाप्]

पित्र्याणि पितृभ्य आगतानि (सख्या=मित्रभावकर्माणि) १.७१.१०. पितॄणां सेवनादीनि ७.५६.२३. [पितृाति० आगतप्रार्थे 'पितुर्यच्च' अ० ४.३.७९. सूत्रेण यत्]

पित्र्यासः पितृभ्यो हिताः (मर्त्ताः=मनुष्याः) ७.१.९. [पितृप्राति० हितार्थे यत्। पित्र्यप्राति० जसोऽसुक्]

पित्वः अन्नादिकम् ६.२०.४. अन्नस्य ५.७७.४. सुरभिपानम् १९.५६.

पिद्वः मृगविशेषः २४.३२.

पिनष्टि संघर्षयति १.१९१.२. [पिष्लृ सञ्चूर्णने (रुधा०) धातोर्लट्]

पिनाकम् पाति रक्षति आत्मानं येन तद्धनुर्वर्मादिकम् प्र०—'पातेर्नुक् च' उ० ४.१५. इति पातेराकः प्रत्ययः १६.५१. [पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'पिनाकादयश्च' उ० ४.१५. सूत्रेणाकः प्रत्ययः। पिनाकं प्रतिपिनष्टचनेन नि० ३.२१.]

पिनाकावसः पिनष्टि शत्रून् येन तत् पिनाकं तेनाऽवसो वा पिनाकस्यावसो रक्षणं वा यस्मात् सः (रुद्रः=शूरवीरः सेनाध्यक्षः) ३.६१. [पिनाक-अवसपदयोः समासः। पिनाकमिति व्याख्यातम् । अवसः=अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरसच्प्रत्ययः]

पिन्व पुष्णीहि सिञ्च १४.८. सेवस्व ६.३९.५. सुशिक्षया सिञ्च १४.१७. **पिन्वत**=सिञ्चत ५.८३.६. **पिन्वतम्**=सेवेथाम् १.११८.२. तर्प्पयतम् ५.६२.३. सिञ्चतम् १.१५१.६. सुखयतम् ६.६३.८. प्रीत्या सेवेथाम् १.३४.३. प्रापयतम् १.३४.४. **पिन्वताम्**=सुखयेताम् ६.७०.६. **पिन्वते**=सेवते सिञ्चति वा प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.५४.७. प्रीणाति १.१२५.५. सेवन्ते ५.८३.४. **पिन्वथः**=प्रीणयतम् ५.६२.२. सेवेथाम् १.११२.३. **पिन्वध्वम्** =सेवध्वम् ७.३४.३. **पिन्वन्त** = सिञ्चन्ति ७.३४.३. **पिन्वन्ति**=सेवन्ते सिञ्चन्ति वा १.६४.६. प्रीणन्ति ५.५४.८. **पिन्वसि**=सेवसे १.१२९.३. ददासि ७.५.८. **पिन्वस्व**=तृप्नुहि भा०—सुखं लभस्व ३८.४. सन्तुष्टो भव ३८.४. स्वतन्त्रतया सदैव पुष्टिमतः प्रसन्नान् कुरु ऋ० भू० १५२, ३८.१४. यथावत् पुष्ट कर आर्याभि० २.३१, ३८.१४. समर्थ कर पुष्ट और बल से युक्त कर, आर्याभि० २.३१, ३८.१४. [पिवि सेवने सेचने च (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लङ् अपि]

पिन्वमानम् सिञ्चमानम् (समुद्रम्=अन्तरिक्षमिवसागरम् १३.२. **पिन्वमानः**=सिञ्चन् (वाजी=वेगवानश्वः) १७.९५. सेवमानः (अग्निः=जातप्रज्ञो जनः) २९.१. प्रसादयन् (विद्वज्जनः) ४.५८.७. [पिवि सेवने सेचने च (भ्वा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

पिन्वमाना संयुक्ता (सरस्वती=नदी) ६.५२.६. सिक्ता सेविता (सीता=काष्ठपट्टिका) १२.७०. **पिन्वमानाः**=सेवमानाः प्रीतिहेतवः (गुदाः=गुह्येन्द्रियाणि) प्र०—पिवि सेवने सेचने च १९.८६. सिञ्चमानाः प्रीणन्त्यः (नद्यः) ७.५०.४. सिञ्चन्त्यः (सिन्धवः=नद्यः) ६.५२.४. **पिन्वमाने**=सेक्त्र्यौ (नद्यौ) ३.३३.२. [पिवि सेवने सेचने च (भ्वा०) धातोः शानच्। ततः स्त्रियां टाप्]

पिपर्त्तन पूरयन्तु १.१६६.६. पिपृत, विद्याभिः सेवया वा पूर्णं कुरुत १.१५६.३. पालयन्तु १.१०६.१. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लोट्। तप्रत्ययस्य तनबादेशश्छान्दसः]

पिपर्त्ति पुष्टान् प्रसन्नान् करोति ऋ० भू० २३५, प्रपिपूर्त्ति १.१६.४. पूर्णं करोति १.१५२.३. तृप्त कर देता है सं० वि० ८० अथर्व० ११.५.४. **पिपर्त्तु**=पालयतु पूरयतु वा १८.५७. **पिपर्षि**=पालयसि, सद्गुणैः पूरयसि वा ६.१५.११. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोट्]

पिपिन्वथुः पिपूर्त्तम् १.११२.१२. (पिवि सेवने सेचने च (भ्वा०) धातोर्लिट्]

पिपिशे पिंश्यात् २.३३.९. पिनष्ट्यवयव इव वर्त्तते ६.४९.३. आश्रीयते ५.५७.६. **पिपिश्रे**=स्थूलाऽवयवानि कुर्वन्ति ५.६०.४. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोर्लिट्। 'पिपिश्रे'। प्रयोगे 'इरयो रे' सूत्रेण 'रे' आदेशः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

पिपिशे पिष्टः प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.३२.६. [पिष्लृ सञ्चूर्णने (रुधा०) धातोर्लिट्। व्यत्येनात्मनेपदम्। पकारस्य शकारो वर्णव्यत्ययेन]

पिपिष्वती पिपींषि बहवोऽवयवा विद्यन्ते यस्याः सा (रातिः=दानम्) १.१६८.७. [पिपिष्प्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्तान् ङीप्। पिपिष्=पिश अवयवे (तुदा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

पिपीळे पीडयति ४.२२.८. [पीड अवगाहने (चुरा०) धातोर्लिट्। 'अनित्यण्यन्ताश्चुरादय' इति णिचोऽभावः]

पिपीषति सोमादिरसान् पातुमिच्छति प्र०—अत्र पीङ् धातोः सन् व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च १.१५.९. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल्लट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

पिपीषते पातुमिच्छते (विदुषे=आप्ताय विपश्चिते) ६.४२.१. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच् छतृप्रत्ययः]

पिपीषवः पातुमिच्छवः (नराः=नायका राजजनाः) ७.५९.४. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्तात् 'सनाशंसभिक्ष उः' इति सूत्रेण उः प्रत्ययः]

पिपृक्त सम्यक् प्राप्नुत ३.५४.२१. **पिपृग्धि**=प्रीणीहि १९.५. [पृची सम्पर्चने (अदा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शपः स्थाने श्लुः]

पिपृत पूर्णान् कुरुत ५.३४. व्याप्नुत ३३.४२. **पिपृतम्**=पूरयेताम् ६.६०.१२. पूरयतम् ७.६०.१२. पालयतः प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ३.२६.९. प्रपिपूर्त्तम् १.९३.१२. **पिपृताम्**=प्रपिपूर्त्तं प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.२२.१३. पालयतम् १३.३२. पिपूर्त्तः ८.३२. **पिपृहि**=पालय ७.१६.१०. पूर्णं कुरु ३.३१.२०. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लोट्]

पिपेश पिंशत्यवयवान् करोति १.६८.५. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोर्लिट्]

पिप्पका पक्षिणी २४.४०.

पिप्पलम् उदकमिव निर्मलं फलं कर्मफलं वा प्र०—पिप्पलमित्युदकनाम निघं० १.१२, १.१६४.२२. परिपक्वफलं पापपुण्यजन्यं सुखदुःखात्मकं भोगं वा १.१६४.२०. फलभोगम् ५.५४.१२. पापपुण्य रूप फल को स० प्र० २८३, १.१६४.२०. [पिप्पलम् उदकनाम निघं० १.१२.]

पिप्यत् प्राप्नुत २.३४.६. **पिप्यतम्**=प्यायतो वर्द्धयतः २.३९.६. वर्धयेतम् ५.७१.२. **पिप्यताम्**=वर्धयेताम् ६.५०.१२. **पिप्यथुः**=वर्द्धेथाम् प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.११६.२२. वर्धयेतम् १.११९.६. वर्धयतः ६.६२.७. **पिप्युः**=वर्धन्ते ६.६२.७. वर्द्धयेयुः ७.२३.४. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लङि छान्दसः पीभावः। अन्यत्र लिटि 'लिडचङोश्च' इति पी-भावः। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

पिप्युषी पानकर्त्री (अन्तर्वेला) २.१३.१. वृद्धा (धेनुः=गौः) २.१६.८. प्याययन्ती (वृष्टिः) ५.७३.८. **पिप्युषीम्**=प्रवृद्धां, वर्धयित्रीं वर्द्धयतीं वा (**धेनुं**=वाणीम्) २.३२.३. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोर्लिटः क्वसुः। स्त्रियां ङीप्। ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्वा लिटः क्वसुः स्त्रियां ङीप् च]

पिप्रति पूरयन्ति ६.४८.५. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लट्]

पिप्रती सर्वानन्दं प्रपूरयन्त्यौ (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.७. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्। छन्दसि पूर्वसवर्णदीर्घः]

पिप्रतोः यौ पिपूर्त्तस्तयोः (अश्विनोः=सभासेनेशयोः सकाशात्) १.४६.१२. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः शतृप्रत्ययान्ताद् ओस्]

पिप्रयत् प्रीणीयात् ७.१७.४. **पिप्रयः**=प्रीणासि २.६.८. **पिप्रिये**=प्रीणाति ३.५१.३. **पिप्रीहि**=प्राप्नुहि ५.३३.७. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोर्लेट्। छान्दसं द्वित्वं शप् च व्यत्ययेन। अन्यत्र लिट्। अपरत्र लोटि शपः श्लुः].

पिप्रियाणाः प्रियमाणाः (विद्वज्जनाः) ७.५७.२. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोर्लिटः कानच्]

पिप्रीषति कमितुमिच्छति ४.४.७. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल् लट्]

पिप्रुम् व्यापनशीलम् (शम्बरं=मेघम्) ६.१८.८. उदरम्भरम् (मनुष्यम्) प्र०—अत्र पॄ-धातोर्बाहुलकादौणादिकः कुः प्रत्ययः सन्वद्भावश्च १.१०१.२. व्यापकम् (शत्रूणां बलम्) ४.१६.१३. प्रपूरकम् (वृत्रं=मेघं शत्रुं वा) १.१०३.८. पालकम् (राजानम्) २.१४.५. **पिप्रोः**=न्यायपूर्त्तेः कर्त्रोः (न्यायाधीशयोः) १.५१.५. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणा० कुः प्रत्ययः सन्वच्च]

पिब पिबति गृह्णाति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् १.१५.५. प्र०—अत्र पुरुष-व्यत्ययः १.१४.१०. सेवस्व ७.३७. पिबत्यन्तकरोति प्र० अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२३.१. धारणशक्त्या गृहाण १.१०.११. **पिबतु**=पिवति ५.२९.७. **पिबत**=पिवन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.१५.२. **पिबतम्**=रक्षतम्

१.४६.१५. पिवतः १.१०८.१. **पिबन्ति**=स्पृशन्ति १.२३.१८. **पिबन्तु**=पिबन्ति प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.१४.८. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्लोट्। क्षिति पिबादेशः। अन्यत्र लङ् लट् च]

पिबतः पानं कुर्वतः (जनान्=मनुष्यादिप्राणिनः) १६.६२. [पा पाने (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः। शिति पिबादेशः]

पिबध्यै पातुम् ४.२७.५. [पा पाने (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे 'तुमर्थे सेसेन०' अ० ३.४.९. सूत्रेण शध्यैन्प्रत्ययः। शिति पिबादेशः]

पिबपिब भृशं पिबति २.११.११. [पिबपदस्य 'क्रियासमभिहारे द्वे भवत इति वक्तव्यम्' अ० ८.१.१२. वा० सूत्रेण द्वित्वम्]

पिबातः पिबतः ५.७७.१. **पिबाथः**=पिबतम् ६.६३.२. **पिबासि**=पिबेः ३.३५.१. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्लेटि 'लेटोऽडाटौ' इत्याडागमः]

पिब्दना पेष्टुमर्हाणि शत्रुसैन्यानि ६.४६.६.

पियानः पिबन् (अर्यमाय=नियन्ता सूर्यः) १.७९.३. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोः शानच्। छान्दसो ह्रस्वः]

पियारुम् पानेच्छुकम् (सज्जनम्) १.१९०.५. पानकारकम् (वृत्रं=मेघमिव) १८.६९. पीयमानम् (वृत्रं=मेघम्) ३.३०.८. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोः आरुः प्रत्ययः किच्च 'वा छन्दसि' इत्यनेन। पियारुम्=देवपीयुम्। पीयतिर्हिंसाकर्मा नि० ४.२५]

पिलिप्पिला आर्द्रीभूता चिक्कणा शोभना (अविः=पृथिवी) प्र०—श्रीर्वै पिलिप्पिला शत० १३.२.६.१६, २३.११. [श्रीर्वै पिलिप्पिला तै० ३.९.५.३.]

पिशङ्ग पिशङ्गादिवर्णयुक्त (गृहस्थजन) ७.५५.२. **पिशङ्गम्**=विचित्ररूपम् ४.५३.२. सुवर्णादिवद्वर्णयुक्तम् (रयिं=श्रियम्) ३३.९०. **पिशङ्गान्**=रक्तपीतवर्णान् (पदार्थान्) २४.११. **पिशङ्गैः**=अग्निजलसंयोगजैर्वर्णैः पीतैः (अश्वैः) १.८८.२. **पिशङ्गौ**=पीतवर्णौ (पशू) २९.५९. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोर्बाहुलकाद् अङ्गच्प्रत्ययः। पिशङ्गाः (पशवः) शिशिराय मै० ३.१३.१९. पिशङ्गो वैश्वदेवः (पशुः) मै० ४.७.८. वैश्वदेवश्चरुः, पिशङ्गो दक्षिणा मै० २.६.१३.]

पिशङ्गभृष्टिम् पीतवर्णेन भृष्टिः पाको यस्य तम् (रक्षः=दुष्टं जनम्) ११३३.५. [पिशङ्ग-भृष्टिपदयोः समासः। पिशङ्ग इति व्याख्यातम्। भृष्टिः=भ्रस्ज पाके (तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

पिशङ्गराते यः पिशङ्गं सुवर्णादिकं राति ददाति तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ५.३१.२. [पिशङ्गोपपदे रा दाने (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकस् तिः प्रत्ययः]

पिशङ्गरूपः पिशङ्गं पीतं सुवर्णादिमिश्रितं रूपं यस्य सः (रथः) १.१८१.५. पिशङ्गस्य सुवर्णस्येव स्वरूपं यस्य सः (मनुष्यः) २.३.९. [पिशङ्ग-रूपपदयोः समासः]

पिशङ्गसन्दृशम् पिशङ्गं शोभनं वर्णं सम्यक् पश्यन्ति येन तम् (रयिम्) २.४१.९. यः पिशङ्गवत् सुवर्णवत् सम्यग् दृश्यते तम् (रयिं=धनम्) २०.८३. [पिशङ्गोपपदे सम् पूर्वाद् दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः करणे क्विप् कर्मणि वा 'कृतो बहुलमिति' वार्त्तिकसूत्रेण]

पिशङ्गाऽश्वाः आपीतवर्णा अश्वा येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५७.४. [पिशङ्ग-अश्वपदयोः समासः]

पिशङ्गिला या पिशं प्रकाशरूपं गिलति सा (रात्रिः) प्र०—पिशमिति रूपनाम निघं० ३.७, २३.११. सर्वेषामवयवानां निगलिका भा०—सर्वस्थूलविनाशिका (रात्रिः=प्रलयः) २३.५४. रूपाऽऽवरणकारिणी (अजा=प्रकृतिः) २३.५५. भा०—या सर्वकार्य-प्रलयाऽऽधिकारिणी, स्वकार्यं स्वस्यां प्रलापयति साऽजा प्रकृतिः २३.५६. अवयवाऽन्तःकर्त्री (रात्रिः=प्रलयः) २३.५३. [पिश-गिलापदयोः समासे 'गिलेऽगिले चेति वक्तव्यम्' अ० ६.३.७०. वा० सूत्रेण पूर्वपदस्य मुमागमः। पिशम् रूपनाम निघं० ३.७. गिला=गॄ निगरणे (तुदा०) धातोः कः प्रत्ययः। स्त्रियां टाप्। रात्रिर्वै पिशङ्गिला श० ३.९.५.३. अहोरात्रे वै पिशङ्गिले श० १३.२.६.१७.]

पिशा रूपेण ७.१८.२. [पिशम् रूपनाम निघं० ३.७. ततस्तृतीयैकवचनस्याकारश्छान्दसः]

पिशा इव यथा बलयुक्ताऽवयववन्तो गजाः १.६४.८. [पिशा-इवपदयोः समासः। पिशाः=पिश अवयवे (तुदा०) धातोः कः]

पिशाचाः ये प्राणिनां पेशितं रुधिरादिकमाचामन्ति भक्षयन्ति ते हिंसका म्लेच्छाचारिणो दुष्टाः ३४.५१. **पिशाचेभ्यः**=पिशिता नष्टाऽऽशा येषान्ते पिशाचा अथवा पिशितमवयवीभूतं सरक्तं वा मांसमाचामन्ति भक्षयन्तीति पिशाचास्तेभ्यः (दुर्जनेभ्यः) प्र०—पृषोदरादित्वात् सिद्धिः ३०.८. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोर्घञर्थे कप्रत्यये पिशम्। पिशोपपदे आङ् पूर्वाच् चमु अदने (भ्वा०) धातोर्डः प्रत्ययः। अथवा पिशितपूर्वादश् धातोरणि इतशब्दस्य लोपः शकारस्य

चकारश्शकारस्य जश्त्वाऽभावश्च पृषोदरादित्वाद् रूपसिद्धिः]

पिशाचिम् यः पिशति तम् (रक्षः=दुष्टम्) १.१३३.५

पिशानाः सञ्चूर्णयन्तः (शूरवीरा विद्वांसः) ७.५७.३. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

पिशुनम् विरुद्धसूचकम् (पुरुषम्) ३०.१३. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोः 'क्षुधिपिशि०' उ० ३.५५. सूत्रेण उनन्प्रत्ययः]

पिष्टम् अवयवीभूतम् (गणं=समूहम्) ५.५६.१. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

पिस्पृशति अत्यन्तं स्पृशति ६.४६.१२. **पिस्पृशः**= स्पर्शय ६.१५.१८. [स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लटि छान्दसं रूपम्]

पिंशति पृथक् करोति १.१६१.१०. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोर्लट् । 'शे मुचादीनाम्' इति नुम्]

पिंशती पेषणं कुर्वन्ती (ओषधी) १.१६१.२. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

पीठसर्पिणम् पीठेन सर्पितुं शीलं यस्य तम् (सर्पम्) ३०.२१. [पीठोपपदे सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

पीतयः पानानि ४.३४.५. **पीतये**=पानाय प्र०—अत्र पा-धातोर्बाहुलकात्तिः प्रत्ययः १.१६.३. रक्षणाय ४.४८.३. पानाय भोगाय वा १.४७.६. पूर्णानन्दभोगेन तृप्तये ऋ० भू० ३०८, ३६.१२. ग्रहणाय १.५.६. तृप्तये ४.३६.२. **पीतिम्**=पानम् १.१३४.६. **पीतिः**=पानम् ५.७६.३. **पीत्या**=रक्षिकया क्रियया प्र०—अत्र 'पा रक्षणे' इत्यस्मात् क्तिन् १.४६.३. [पा पाने (भ्वा०) धातोः, पा रक्षणे (अदा०) धातोर्वा बाहु० औणा० तिः प्रत्ययो बहुलवचनात् किच्च । अथवा पा धातोः स्त्रियां क्तिन्]

पीतासः पीताः (सोमासः=सोमाद्योषधिरसाः) १.१६८.३. [पा पाने (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्ययः । पीतप्राति० जसोऽसुगागमः]

पीताः कृतपानाः (आपः=प्राणाजलादयो वा) ४.१२. [पा पाने (भ्वा०) धातोः क्तः]

पीत्वा पानं कृत्वा १.४.८. [पा पाने (भ्वा०) धातोः क्त्वा]

पीत्वी पीत्वा प्र०—'स्नात्व्यादयश्च' अ० ७.१.४६. इतीकारादेशः ८.३६. [पा पाने (भ्वा०) धातोः क्त्वा प्रत्यये 'स्नात्व्यादयश्च' अ० ७.१.४६. सूत्रेणेकारान्तादेशः]

पीपय वर्धय ३.१५.६. **पीपयतः**=वर्धयतः २.२७.१५. **पीपयन्**=वर्धयेयुः १.१५२.६. **पीपयन्त**= वर्धयन्ति १.१५३.४. आप्यायन्ति १.१८१.५. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । अन्यत्र लट् लङ् च । पीभावश्छान्दसः]

पीपयत् प्रापयति १.७७.५. पिबति ३.५७.६. **पीपयन्त**=पाययन्ति १.७३.६. तर्पयन्ति ५.३४.६. **पीपयः**= पाययसि प्र०—ण्यन्तोऽयं प्रयोगः १.६३.८. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

पीपरत् पालयेत् ५.७७.४. सुखैः पूरयेत् प्र०—अत्र लिङर्थे लुङडभावश्च १.४६.६. पारयेत् ३.३२.१४. **पीपरः**= पालय ४.२.८. पारयेः प्र०—अत्र लङि 'बहुलं छन्दसि' इत्यडभावः १.१३८.२. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् । अडभावः । पीपरत् याञ्चाकर्मा निघं० ३.१६.]

पीपाय आप्याययति वर्द्धयति १.१८१.८. आप्यायय ६.६६.१. वर्द्धते ७.२७.४. वर्धस्व ४.३.६. पीयते २.३५.७. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिटि 'लिड्यङोश्च' सूत्रेण पी भावः । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । तुजादीत्वादभ्यासस्य दीर्घः]

पीपाय पानाय ६.४४.२१.

पीपिवांसम् सम्यग् वर्द्धमानम् (घर्मं=यज्ञम्) ५.७६.१. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । धातोः पी-आदेशः]

पीपिहि प्राप्नुहि प्र०—अत्र 'पि गतौ' इत्यस्माच्छपः श्लुः तुजादित्वादभ्यासदीर्घश्च १४.२. पिब ६.१७.३. [पि गतौ (तुदा०) धातोर्लोटः । 'बहुलं छन्दसी' ति श्लुः । अभ्यासस्य च दीर्घः]

पीपेः प्यायय ४.१६.२१. वर्धय ४.१७.२१. (ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

पीप्यानाः वर्द्धमानाः (नद्यः) ७.३६.६. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच् । धातोः स्थाने पी आदेशः]

पीप्यानेव विद्यावृद्धाविव (पुरुषाविव) ३.३३.१०. [पीप्या-ना.इवपदयोः समासः । पीप्याना=पीप्यानप्राति० 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः । 'पीप्यान' इति व्याख्यातम् । पीप्यानेव—पाययमानेव नि० २.२७.]

पीयति पिबति १.१४७.२. निन्देत् प्र०—अत्र 'अनेकार्था अपि धातवो भवन्ति' इति निन्दार्थः १२.४२. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोर्लट्]

पीयूषम् पातुं योग्यम् (रसम्) २.१३.१. अमृतात्मकं रसम् ३.४८.२. अमृतमिव दुग्धम् २.३५.५. जलों में अमृतरूप रस को सं० वि० १०४, २.३५.५. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोः 'पीयेरूषन्' उ० ४.७६. सूत्रेण ऊषन् प्रत्ययः]

पीयोः पातुः (विद्वज्जनस्य) २.१९.७. स्थूलस्य (शत्रुगणस्य), प्र०—अत्र पीव-धातोर्बाहुलकादौणादिको युक् प्रत्ययः १.१७४.८. [पा पाने (भ्वा०) धातोः 'खरुशङ्कुपीयु०' उ० १.३६. सूत्रेण कुप्रत्यये धातोरीकारान्तादेशो युगागमश्च निपात्यते]

पीवरीम् यया पाययन्ति तां स्थूलाम् (गाम्=पृथिवीम्) १२.७१. [पीङ् पाने (दिवा० धातोः 'छित्वरछत्वरधीवरपीवर०' उ० ३.१. सूत्रेण ष्वरच्प्रत्ययान्तो निपात्यते। षित्वान् ङीष्]

पीवसा स्थूलानि (वस्त्राणि) १.१५२.१. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोरसुन्प्रत्यये धातोर्वुगागमः पीभावश्च छान्दसः]

पीवः प्रवृद्धिकरः (ईश्वरः) १.१८७.९. वृद्धिकरः (परमेश्वरः) १.१८७.८. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्बहु० औणादिको वन्प्रत्ययः। धातोः स्थाने पी-आदेशश्छान्दसः]

पीवानम् स्थूलम् (पदार्थम्) ३०.२१. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'ध्याप्योः सम्प्रसारणं च' उ० ४.११५ सूत्रेण क्वनिप्]

पीवो अन्ना पीवांसि पुष्टिकराण्यन्नानि येषु तानि (स्वपत्यानि=सुसन्तानानि) २७.२३. [पीवस्-अन्नपदयोः समासः]

पीवो अश्वाः पीवसः स्थूला अश्वा येषान्ते (राजपुरुषाः) ४.३७.४. [पीवस्-स्थूलपदयोः समासः]

पीवोपवसनानाम् पीवांस्युपवसनानि आच्छादनानि येषां तेषाम् (अग्निष्वात्तानाम्=गृहीताग्निजनानाम्) २१.४३. स्थूलदृढाच्छादनानाम् (अवत्तानान्=उदारचेतो जनानाम्) २१.४५. स्थूल-वस्त्रधारिणाम्;(शतरुद्रियाणाम्=विद्वदधिष्ठातृजनानाम्) २१.४४. [पीवस्-उपवसनपदयोः समासः। पूर्वपदस्य सकारलोपः]

पुच्छम् पशोरवयवम् २५.६. पुच्छमिवाऽन्त्योऽवयवः १२.४. [यज्ञाऽयज्ञीयं पुच्छम् तै० सं० ४.१.१०.५. मै० २.७.८. शरत्पुच्छम् मै० ४.९.१८. तै० ३.११.१०.३.]

पुञ्जिकस्थला समूहस्थाना दिक् १५.१५. [पुञ्जिकस्थला=(अग्नेः) पुञ्जिकस्थला च क्रतुस्थला चाप्सरसाविति दिक् चोपदिशा चेति ह स्माह माहित्थिः सेना च तु ते समितिश्च श० ८.६.१.१६.]

पुञ्जिजष्ठेभ्यः ये पुञ्जिजषु वर्णेषु भाषासु वा तिष्ठन्ति तेभ्यः (जनेभ्यः) १६.२७. ['पुञ्जि' इत्युपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः]

पुण्यगन्धा पुण्यः शुद्धो गन्धो यासां ताः (नारीः=स्त्रियः) ७.५५.८. [पुण्य-गन्धपदयोः समासः। पुण्यमिति व्याख्यास्यते]

पुण्यम् निष्पापं सुखस्वरूपम् (परमात्मानम्) २०.२५. पुण्यजन्यज्ञानेन ज्ञातुमर्हम् (लोकं=जगदीश्वरम्) धर्मात्मता के कर्म, आर्याभि० १.५२, ऋ० २.८.१२.२. पुण्य-युक्तम् (पुरुषम्) ऋ० भू० २२७, २०.२५. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः 'पूञो यण् णुग्घ्रस्वश्च' उ० ५.१५. सूत्रेण यण् प्रत्ययो णुगागमो धातोश्च ह्रस्वः। पुण्यं कर्म सुकृतस्य लोकः तै० ३.३.१०.२.]

पुत्र ! बलस्य पालक (राजन्) ५.३.१. बलस्योत्पादक (अग्ने=वैद्यराज विद्वन्) ३.१८.४. दुःखात् त्रातः (सन्तान) ४.१८.११. पवित्रकारक (अध्येत्रादिजन) ३.१४.६. पुत्रवद्वर्त्तमान (पदार्थविज्ञानविज्जन) ३.१४.४. **पुत्रम्**=प्रसिद्धं प्राणम् १.९६.३. भा०—स्वसन्तानम् २०.७७. त्रातारम् १.११७.२४. पवित्रमपत्यम् ९.४०. तनयम् १०.१८. पवित्रगुणकर्मस्वभावैर्मातापितृपालकम् १०.१८. पवित्रम् (तनयम्) १.१२५.३. सूर्यस्योत्पत्तिकर्त्तारम् (परमेश्वरम्) सं० वि० १५६, ७.४१.२. पालन करने वाले (ईश्वर) को आर्याभि० १.४० ऋ० १.७.३.३. **पुत्रः**=यः पितृपावनशीलः (सन्तानः) १.३१.११. अपत्यम् ११.७०. तनयः ४.४२.७. पुरु-दुखाद्रक्षकः (राजशिष्यः) २.१.९. औरसः क्षेत्रजादिर्विद्याजो वा (सन्तानः) १.८९.१०. यः पुनाति सः (विद्वज्जनः) १.१८१.४. पवित्रः सुखप्रदो वा (अपत्यम्) ६.९.२. यः पुम्नाम्नो वृद्धावस्थजन्यदुःखात् त्रायते सः (सुतः) प्र०—अत्राऽऽह मनुः—'पुन्नाम्नो नरकाद्यस्मात् त्रायते पितरं सुतः। तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंभुवा" मनु० ९.१३८, ८.५. जनक-पालकः (सुतः) १.१५५.३. सुशिक्षितोऽध्यापिता (अग्निः=विद्वान् मनुष्यः) ५.४. नरकादि दुःख से पवित्र और त्राण करने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.१७ ऋ० १.६.१६.१०. ईश्वरस्य पुत्र इवाऽविनाशी (भा०—जीवः) २५.२३. पवित्रोपचितः (विद्वज्जनः) १.१६४.१६. अध्येता (जनः) १.६९.१. पित्रा-

दीनां पालयिता (सन्तानः) १.६६.३. सन्तान इव सम्बन्धी (जनः) २६.४२. **पुत्रान्**=पवित्रगुणकर्मस्वभावान् (सन्तानान्) ३७.२०. पुत्रों को सं० वि० १३४, १०.८५.४५. **पुत्राय**=पवित्रकारकायाऽग्निपुत्राय वा अ०—पवित्रकर्त्रे सूर्याय परमात्मने वा ४.३५. **पुत्राः**=सुशिक्षितास्तनया इव भृत्याः ३.५३.२४. सुसन्ताना आज्ञापालका वा (अ०—प्राप्तमोक्षा विद्वांसो जनाः) ११.५. औरसाः (सुताः) १.६८.५. तदाज्ञानुष्ठातारस्तत्सेवकाः (उपासकाः) ऋ० भू० १५७, ११.५. तनयाः इव १.१६४.११ **पुत्रैः**=वृद्धावस्थाजन्यदुःखात् त्रातृभिः (सन्तानैः) १३.११. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः 'पुवो ह्रस्वश्च' उ० ४.१६५. सूत्रेण क्त्रः प्रत्ययः। पुत्रः=पुरु त्रायते पिपरणाद्वा पुन्नरकं ततस्त्रायत इति वा नि० २.११. पुत्रो हि हृदयम् तै २.२.७.४. पुत्रो वै वीरः श० ३.३.१.१२. पुत्रः=पुन्नाम नरकमनेकशततारं तस्मात् त्राति पुत्रः, तत्पुत्रस्य पुत्रत्वम् गो० पू० १.२.]

पुत्रकृथे पुत्रकरणे ५.६१.३. [पुत्रोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्बाहु० औणादिकः स्थन् प्रत्ययः]

पुत्रमिव यथाऽपत्यानि १०.३४. [पुत्रम्-इवपदयोः समासः]

पुत्रवती प्रशस्ताः पुत्रा विद्यन्ते यस्याः सा (पत्नी) ३७.१२. [पुत्रप्राति० प्रशंसायां मतुबन्तान् ङीप्]

पुत्रासः वृद्धावस्थाजन्यदुःखात् त्रातारः (सन्तानाः) २५.२२. मित्रार्यमवरुणाः (अ०-पुत्राः) ३.३३. वायुरिव बलिष्ठाः (वीराः=युद्धकुशला जनाः) ३.५३.७. [पुत्रप्राति० जसोऽसुगागमः]

पुत्रिणम् प्रशस्तपुत्रयुक्तम् (धनम्) ५.४.११. [पुत्रप्राति० प्रशंसायाम् इनिः प्रत्ययः]

पुत्रीयन्ति पुत्र की कामना करते हैं सं० वि० १४० अथर्व० १४.२.७२. [पुत्रपदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताल् लट्]

पुनती पवित्रतां कुर्वती (वैश्वदेवी विदुषी) १६.४४. पवित्रा पवित्रयन्ती (कन्या) ४.५.७. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

पुनन्ति पवित्रीभवन्ति २०.२८. पवित्रीकुर्वन्ति ३.३६.७. **पुनन्तु**=पवित्रयन्तु ४.२. भा०—सुशीलं सम्पादयन्तु १६.३६. अशुद्धाद्व्यवहारान्निवर्त्य शुद्धे प्रवर्त्य पवित्रीकुर्वन्तु १६.३७. **पुनाति**=पवित्रीकरोति १६.४. **पुनातु**=शोधयतु शुद्धं करोतु ४.४. पवित्रीकरोतु १.३. पवित्रयतु ३५.३. शुन्धतु ६.१. **पुनामि**=पवित्रयामि १.१३३.१. **पुने**=पवित्रो भवामि ४.४. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोडपि]

पुनन्निव पृथक् कुर्वन्निव, भा०—पृथक् कृत्य २३.२६. [पुनन्-इवपदयोः समासः]

पुनर्भुवा ये पुनः पुनः पर्यायेण भवतस्ते (अहोरात्रे) प्र०— अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.६२.८. [पुनर् इत्युपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्। प्रथमाद्विवचनस्य आकारादेशः]

पुनर्भूः या विवाहितपतिमरणानन्तरं नियोगेन पुनः सन्तानोत्पादिका भवति सा (स्त्री) १.१२३.२. [पुनर् इत्युपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्]

पुनर्मन्यौ पुनः पुनर्मन्येते विजानीतस्तौ (स्त्रीपुरुषौ) १.११७.१४. [पुनर् इत्युपपदे मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'आत्ममाने खश्च' अ० ३.२.८३. सूत्रेण खश्प्रत्ययः]

पुनः पश्चात् १.६.४. मनुष्यदेह-धारणाऽनन्तरम् ४.१५. अग्रे ४.१५. वारं वारम् ४.१५. पुनः पुनः ३१.४. मुहुर्मुहुः १.६४.१२. शयनानन्तरं द्वितीये जन्मनि वा ४.१५.]

पुनः पुनः प्रतिदिनम् १.६२.१०. वारं वारम् ३.५.७. [पुनर् पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

पुनःसर पुनः पुनर्दण्डदानाय प्राप्नुहि ७.५५.३. [पूनर् उपपदे सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

पुनानः पवित्रीकुर्वन् (विद्वज्जनः) ३.१.५. पवित्रयन् (वरो राजा) ७.६.२. **पुनानाः**=पवित्रयन्तः (जनाः) ३.३१.१६. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः शानच्]

पुनानासः पवित्राः (हरयः=मनुष्याः) ६.३७.२. [पुनान इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

पुनानाः पवित्रकारिकाः (पतिव्रताः स्त्रियः) २.३.५. पवित्रयन्त्यः (आपः=जलानि) ७.४९.१. [पुनानप्राति० स्त्रियां टाप्। पुनान इति व्याख्यातम्]

पुनाने पवित्रकारिके (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.६. [पुनानाप्राति० प्रथमाद्विवचनम्]

पुनीतन पुनन्ति पवित्रीकुर्वन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट्, तकारस्य तनबादेशश्च १.१५.२. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोर्लोट्। त-प्रत्ययस्य तनबादेशश्च]

पुपूर्याः अलङ्कुर्याः पालयेः ५.६.६. पूर्णं कुर्याः १५.४३. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लिङ्]

पुपोष पुष्यति ३.५५.१९. पुष्णाति १.१७९.६. [पुष

पुष्टौ (दिवा०) पुष पुष्टौ (क्र्या०) धातोर्वा लिट् । पुपोष=पोषति नि० १०.३४.]

पुमान् पुरुषार्थी (अग्निः=विद्युदिव राजा) ४.३.१०. पुरुषः ५.६१.८. **पुमांसम्**=पुरुषार्थयुक्तं नरम् ३.२९.१३. **पुंसः**=पुंस्त्वयुक्तान् पुरुषार्थिनः (जनाः) २५.४५. [पा-रक्षणे (अदा०) धातोः 'पातेर्डुम्सुन्' उ० ४.१७८. सूत्रेण डुम्सुन् प्रत्ययः । वीर्यं पुमान् श० २.५.२.३६. पुमान् पुरुमना भवति पुंसतेर्वा नि० ६.१४. पुंसः=पितॄन् नि० ३.५.]

पुर-एता यः पुर एति गच्छति सः (इन्द्रः=सुखैश्वर्य-प्रापको विद्वज्जनः) ६.२१.१२. यः पुरस्तादेति सः (ईश्वरः) ३४.३८. पूर्वं गन्ता (विद्वज्जनः) ५.४६.१. यः पुर एति अग्रगामी भवति सः (ईश्वरः) ७.४१.५. पूर्वं प्राप्तः (विश्वो-पकारको विद्वान्) १.७६.२. अग्रगामी अर्थात् आगे आगे सत्कर्मों में वढ़ाने वाला (ईश्वर) सं० वि० १५६, ७.४१.५. **पुर एतारम्**=अग्रे गन्तारं शीघ्रकारिणम् (स्पशं=दूतम्) ३३.६०. **पुर एतारः**=पूर्वं प्राप्तारः (देवाः=पूर्णा विद्वांसः) १७.१४. [पुरः=पूर्वप्राति० अस्तातेरर्थे 'पूर्वाधरावराणा-मसि०' अ० ५.३.३९. सूत्रेणासिप्रत्ययः पुर् आदेशश्च । एता=इण् गतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । पुरस्-एतापदयोः समासः]

पुरन्दरम् यो मेघस्य पुराणि दृणाति सः (सूर्यः) ६.१६.१४. **पुरन्दरस्य**=शत्रूणां पुरां विदारकस्य (राज्ञः) ७.६.२. **पुरन्दरः**=यः शत्रूणां पुरो दृणाति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सेनापते) १.१०२.७. यो रिपु-पुराणि दृणाति सः (अ०—सेनेशः) २०.३०. शत्रूणां नगराणां हन्ता (इन्द्रः=परमैश्वर्यो राजा) ३.५४.१५. यः पुरं दारयति सः (इन्द्रः=सूर्यः) २.२०.७. [पुंर् इत्युपपदे दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्णिजन्तात् 'पूःसर्वयोर्दारिसहोः' अ० ३.२.४१. सूत्रेण खच् । 'वाचंयमपुरंदरौ च' अ० ६.३.६९. सूत्रेण निपातनात् पूर्वपदस्य अम् निपात्यते]

पुरन्दरा यौ शत्रूणां पुराणि दारयतस्तौ (इन्द्राग्नी=उपदेश्योपदेष्टारौ) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारा-देशः १.१०९.८. [पुरन्दरमिति व्याख्यातम् । ततः प्रथमा-द्विवचनस्याकारः 'सुपां सुलुग्०' इति सूत्रेण]

पुरन्धिम् यो वहून् दधाति तम् (विद्वज्जनम्) ७.९.६. सर्वस्य जगतो धर्त्तारम् (परमेश्वरम्) २.३८.१०. बहूनां सुखानां धर्त्तारम् (भगम्=ऐश्वर्यम्) ७.३९.४. प्राप्तव्यं विज्ञानम् १.१८०.६. बहुसुखधरम् (वाजं=विज्ञानम्) ७.३६.८. बहुप्रज्ञाम् (स्त्रियम्) १.१३४.३. सर्वधरं सूत्रात्मानम् ६.२१.९. पुरुं बहुविद्यां धियम् प्र०—पृषोदरादि-त्वादिष्टसिद्धिः १.११६.७. **पुरन्धिः**=पुरां धारको राज्य-भावः ४.३४.२. बहुविद्यायुक्तः (विद्वज्जनः) १.११६.१३. पुष्कलप्रज्ञः (युवा जनः) १.११७.१९. या बहूञ्छुभगुणान् धरति सा (स्त्री) ३.६१.१. या पुरूणि बहूनि सुखानि दधाति सा (राजनीतिः) २२.२. यः पुरं दधाति सः (सेनेशः) ४.२६.७. जगद्धर्त्ता (भगः=भगवान्) ६.४९.१४. पूर्वी बह्वी धीर्यस्य सः (विद्वज्जनः) ५.४२.५. बहुधरः (मनुष्यः) ४.२७.२. पुरवो वहवः पदार्था ध्रियन्ते यस्मिन् स आकाशः ७.३५.२. या पुरून् बहून् दधाति सा (योषा=स्त्री) २२.२२. संसार को धारण करने वाला (ईश्वर, वायु, प्राण) आर्याभि० १.२५, ऋ० ५.३.२१.२५. सर्वजग-द्धारकः (परमेश्वरः), ऋ० भू० २०८, ऋ० ८.३.२७.१. पुराणां धर्त्ता (शिल्पी जनः) २.३१.४. **पुरन्धीः**=याः पुरूणि विज्ञानानि दधति ताः प्रज्ञाः ४.२२.१०. बहुविद्या-धराः (धियः=प्रज्ञाः) ४.५०.११. पुरन्दधति यास्ताः (धियः) १.१५८.२. या पुरं श्रितां दधति ताः (स्त्रियः) १.१२३.६. द्यावापृथिव्यौ प्र०--पुरन्धी इति द्यावापृथिवी-नाम निघं० ३.३०, ५.४१.६. **पुरन्ध्या**=पुरं पूर्णं विद्यां ध्यायति या तया (कन्यया) सह २.१.३. यया प्रज्ञया बहून् बोधान् दधति तया ३.६२.११. **पुरन्ध्याम्**=बहुशास्त्र-विद्यायुक्तायां बुद्ध्याम् प्र०—पुरन्धिरिति पदनामसु पठितम् निघं० ४.३, १.५.३. [पुरन्धिर्बहुधीः, तत्कः पुरन्धिर्भगः पुरस्तात् तस्यान्वादेशइत्येकम् । इन्द्र इत्यपरं स बहुकर्मतमः पुरां च दारयितृतमः, वरुण इत्यपरं न प्रज्ञया स्तौति नि० ६.१३. पुरन्ध्या=स्तुत्या नि० १२.३०. पुरन्धी=द्यावा-पृथिवीनाम नि० ३.३०. पुरन्धिः=पदनाम निघं० ४.३. पुरन्धिर्योषेति, योषित्येव रूपं दधाति तस्माद्रूपिणी युवतिः प्रिया भावुका श० १३.१.९.६.]

पुरम् येन सर्वान् पिपर्त्ति तत् (नगरम्) ११.२६. शत्रुनगरम् १.५३.७. **पुरः**=नगरीः ६.२०.७. पालिकाः पुरस्ताद्वा (किरणाः) ५.२९.५. पुराणि (नगराणि) ७.५३.१. महान्ति नगराणि ४.५०.१. शत्रुनगर्यः १.१७४.२. **पुराम्**=सङ्घातानां शत्रुनगराणां द्रव्याणां वा १.११.४. पूर्णानां धनानाम् ६.१८.८. [पॄ पालन-पूरणयोः (जु०) धातोः 'भ्राजभासधुर्विद्युत्०' अ० ३.२.१७७. सूत्रेण क्विप् । आत्मा वै पूः (=शरीरम्) श० ७.५.१.२१. मन एव पुरः श० १०.३.५.७. लेखा हि पुरः श० ६.३.३.२५.]

पुरयस्य यः पुरोऽयते प्राप्नोति तस्य (जनस्य)

६.६३.६. [पुरस् उपपदे अय गतौ (भ्वा०) धातोरच्-प्रत्ययः। पूर्वस्य अस्-भागस्य लोपश्छान्दसः]

पुरस्तात् प्रथमतः ३.८.६. पूर्वदेशात् ३७.१२. सृष्ट्यादौ १३.३. आदितः २४.१. पूर्वकालात् ३६.२४. पूर्वम् ४.५१.१. पूर्वस्यां दिशि १.१६१.८. [पूर्वप्राति० 'दिक्-शब्देभ्यः०' अ० ५.३.२७. सूत्रेणास्तातिः प्रत्ययः। 'अस्ताति च' अ० ५.३.४०. सूत्रेण पूर्वस्य पुर् आदेशः]

पुरः प्रथमम् १७.७६. पुरस्ताद्वर्त्तमानः ३१.५. पूर्वस्मिन् काले वर्त्तमानः १५.१५. पूर्वम् १७.४०. अग्रतः २२.१७. पूर्णम् १.१३६.१. पूर्वं पूर्वम्, भा०—अभि ३.६. पुरस्सरम् १.१०२.६. प्रथम से ही आर्याभि० २.४५, ३४.३८. अग्रगन्ता (अग्निरिव विद्वत्सभेशः) १७.६६. [पूर्व-प्राति० अस्तातेरर्थे 'पूर्वाधरावराणामसिः०' अ० ५.३.३९. सूत्रेण असिः प्रत्ययः। पूर्वस्य च पुर् आदेशः। पुरः=पुरस्तात् नि० ६.१६.]

पुरःसदः ये पूर्वं सीदन्ति शत्रून् हिंसन्ति वा (वीरजनाः) १.७३.३. ये पुरः सीदन्ति ते (वीराः=क्षात्रधर्मयुक्ता जनाः) ३.५५.२१. ईश्वराऽभिमुखसुखी (लोग) आर्याभि० १.४६, ऋ० १.५.१६.३. ये सभायां राष्ट्रे वा पुरः पूर्वस्यां दिशि सीदन्ति ते (देवाः=विद्वांसः) ६.३६. **पुरःसद्भ्यः**=ये पुरः पूर्वं सभायां राष्ट्रे वा सीदन्ति तेभ्यः (देवेभ्यः=विपश्चिद्भ्यः) ६.३५. [पुर इति व्याख्यातम्। तदुपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पुरा सृष्टेर्विद्योत्पत्तेः प्राग्वा १.१०५.७. पुरस्तात् ३२.५. पूर्वम् १२.८५. प्रथमतः ४.२८.३. प्राक् ७.५६.२३. पुराकल्पे वा १.३९.७. कार्यात् प्राक् काले १.९६.७. सम्मुख ६.२७.१. ['पुरा' इति चादिषु पाठान् निपातः]

पुरा पुरातनानि (सख्या=मित्रभावकर्माणि) १.७१.१०. ['पुरा' इति निपातत्वादव्ययम्]

पुराजाम् पूर्वजातम् (इन्द्रं=विद्युतम्) ६.३८.३. पुराजातम् (राजानम्) ३.३१.१६. **पुराजाः**=ये पूर्वं जाताः (सखायः=राजसुहृदः) ६.२१.५. पूर्वं जाता वृद्धाः (विप्रासः=मेधाविनो विद्वज्जनाः) १.११८.३. ['पुरा' इत्युपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातो 'अन्येष्वपि दृश्यते' इति डः प्रत्ययः]

पुराणम् पुरा नवम् (महदनादिभूतं ब्रह्म) ३.५४.९. सनातनम् (वेदप्रतिपाद्यं धर्मम्) ऋ० भू० २११, अथर्व० १८.३.१.१. जगतः पूर्वाऽवस्थाकथनपूर्वकाणि ब्राह्मणाऽन्तर्गतान्येव पुराणानि ऋ० भू० ८३, अथर्व० १५.३०.१. **पुराणः**=सनातनः (पन्थाः=मार्गः) ४.१८.१. **पुराणाः**=पुराऽध्ययनसमये नवीनाः (ऋषयः=वेदार्थविज्जनाः) १८.५२. अस्मदपेक्षायां प्राचीनाः (ऋषयः=वेदविद्यापुरस्सराः परमयोगिनः) १८.५८. प्रागधीतविद्याः भा०—परोपकारप्रिया वृद्धा विद्वांसः (पितरः=जनकादयः) १२.४५. **पुराणेन**=प्राचीनेन स्वरूपेण २८.१६. [पुराणं कस्मात् पुरा नवं भवति नि० ३.२०. पुरा अव्ययात् 'सायं-चिरं०' अ० ४.३.२३. सूत्रेण टयुः प्रत्ययः। तुडागमस्तु न छान्दसत्वात्]

पुराणी प्रवाहरूपेण सनातनी (उषाः) १.९२.१०. पुरातनी (प्रातर्वेला) ४.५१.६. पुरा नवीना (स्त्री) ३.६१.१. **पुराण्योः**=सनातन्योर्विद्युदाकाशरूपयोः प्रकृत्योः ३.५५.२. [पुराणप्राति० स्त्रियां ङीप्। पुराणमिति व्याख्यातम्]

पुरीतत् हृदयस्य नाडी ३९.९. **पुरीतता**=हृदयस्थया नाड्या २५.८. [पुरीं देहं तनोतीति विग्रहे 'पुरी' इत्युपपदे तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्विप्। पुरीतत् पुरीषम्। श० ८.५.४.६.]

पुरीव यथा रमणीया नगरी ६.२.७. [पुरि-इवपदयोः समासः]

पुरीषम् पूर्त्तिकरम् (पुरुषम्) १५.३. पशूनां प्रपूर्त्तिकरं साधनम्, प्र०—पुरीष्योऽसि पशव्योऽसि शत० ६.४.२.१, ५.१३. पालनम् १४.४. पूर्णं बलम् १२.४६. पूर्त्तिकरमुदकम्, प्र०—पुरीषमित्युदकनाम निघं० १.१२, ५.४५.६. व्यापनं पालनं वा, भा०—सर्वत्राऽभिव्याप्तम् (ईश्वरम्) ३८ २१. पूर्णसुखकरमुदकम् १३.३१. **पुरीषाणि**=उदकानि ६.४९.६. **पुरीषात्**=पूर्णाऽन्तःकरणात् १.१६३.१. पालकात् परमात्मनः २९.१२. उदकात् ४.२१.३. **पुरीषे**=सिकतासु १३.५३. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'शॄपॄभ्यां किच्च' उ० ४.२७. सूत्रेण ईषन्प्रत्ययः किच्च। पुरीषं पृणातेः पूरयतेर्वा नि० २.२२. पुरीषम् उदकनाम निघं० १.१२. अन्नं पुरीषम् श० ८.१.४.५. मांसं पुरीषम् श० ८.७.४.१९. स एष प्राण एव यत् पुरीषम् श० ८.७.३.६. पुरीषं वा ऽइयम् (पृथिवी) श० १२.५.२.५. ऐन्द्रं हि पुरीषम् श० ८.७.३.७. अथ यत् पुरीषं स इन्द्रः श०.१०.४.१.७. दक्षिणाः पुरीषम् श० ८.७.४.१५. देवाः पुरीषम् श० ८.७.४.१७. नक्षत्राणि पुरीषम् श० ८.७.४.१४. वयांसि पुरीषम् श० ८.७.४.१३. प्रजा पुरीषम् श० ८.७.४.१६. पशवः पुरीषम् श० ८.७.४.१२. गोष्ठः पुरीषम् तां० १३.४.१३. पुरीतत् पुरीषम् श० ८.५.४.६.]

पुरीषवाहणः यः पुरीषाणि पालनादीनि कर्माणि

वाहयति प्रापयति सः (अर्वा=विज्ञानयुक्तः पुत्रः) ११.४४. [पुरीषमिति व्याख्यातम्, तदुपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

पुरीषिणम् पुराणां सहितानां पदार्थानामीषितारम् (सूर्यम्) १.१६४.१२. **पुरीषिणः**=पुरीषं बहुविधं पोषणं विद्यते येषु ते (मरुतः=मानवाः) ५.५५.५. [पुरीषप्राति० भूम्न्यर्थे इनिः प्रत्ययः]

पुरीषिणी पुर इषिणी (नदी) ५.५३.६. [पुरीषिण्-प्राति० स्त्रियां ङीप् । पुरीषिण् इति व्याख्यातम्]

पुरीष्य पुरीषेषु पालकेषु व्यवहारेषु भवस्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=उपदेशकाऽऽचार्य) १२.५८. पृणन्ति पूरयन्ति सुखानि यैर्गुणैस्ते पुरीषास्तेषु साधुस्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=सर्वोत्तमपदार्थप्रापकेश्वर) ३.४०. **पुरीष्यम्**=पुरीषेषु पालनेषु साधुम् (अग्नि=विद्युतम्) ११.४६. पुरीष उदके साधुम् (अग्निं=विद्युदादिस्वरूपम्) प्र०—अत्र पॄ-धातोरौणादिक ईषन् किच्च 'पुरीषमित्युदकनाम निघं० १.१२, ११.६. पालनसाधनेषु भवम् (अग्निं=विद्युतम्) ११.४७. यः सुखं पृणाति स पुरीषस्तत्र साधुम् (अग्नि=भूमिस्थं विद्युतं वा) ११.१६. पुष्टिकरेषु गुणेषु भवम् (पुत्रम्) १२.६१. उत्तमसुखदातारम् (अग्नि=भूमिस्थं विद्युतं वा) ११.१६. सुखैः पूरकेषु भवम् (अग्नि=वायुस्थं विद्युतम्) ११.२८. **पुरीष्यः**=ऐकमत्यपालनेषु भवः भा०—जितेन्द्रियः (अग्निः=उपदेशको विद्वान्) १२.५९. ये पृणन्ति यानि कर्माणि तानि पुरीषाणि तेषु साधुः (अग्निः=भौतिकः) ३.४०. पुरीषेपु पशुपु साधुः (अग्निः=विद्वज्जनः) ११.३२. परीषेपु पालनेषु साधुः (अग्निः=पतिः) ११.७२. [पुरीषमिति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे साध्वर्थे वा यत्-प्रत्ययः । पुरीष्य इति वै तमाहुर्यः श्रियं गच्छति श० २.१.१.७.]

पुरीष्यासः पूर्णासु गुणक्रियासु भवाः (अग्नयः=विद्वांसः) १२.५०. पुरीषेपु पालकेषु पृथिव्यादिषु व्यापकत्वेन भवाः (अग्नयः=पावकाः) ३.२२.४. (पुरीष्य इति व्याख्यातम् ततो जसोऽसुगागमः]

पुरु बहूनि (वपांसि=रूपाणि) प्र०—शेश्छन्दसि बहुलम्, इति शेर्लोपः १.११७.६. पुरूणि बहूनि (रजांसि=लोकान्) १.१६६.३. बहु (वसु=धनम्) ४.३१.८. **पुरूणाम्**=बहूनामाकाशादिपृथिव्यन्तानां पदार्थानाम् १.५.२. बहुविध जगत् के पदार्थों के आर्याभि० १.६ ऋ० १.१.६.२. **पुरूणि**=बहूनि (सवना=प्रेरणानि) ६.४७.१४. [पुरु बहुनाम निघं० ३.१. पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'पॄभिदिव्यधि०' उ० १.२३. सूत्रेण कुः प्रत्ययः]

पुरुकुत्सम् बहवः कुत्सा वज्रा शस्त्रविशेषा यस्मिँस्तम् (यानम्) १.११२.७. **पुरुकुत्साय**=बहुशस्त्राय (राज-पुरुषाय) ६.२०.१०. पुरवो बहवः कुत्सा वज्राः किरणा यस्मिँस्तस्मै (यूने=संसाराय) १.१७४.२. बहुभिरवक्षिप्ताय (पूरवे=प्रपूर्णाय सुखाय) १.६३.७. [पुरु-कुत्सपदयोः समासः । पुरु बहुनाम निघं० ३.१. कुत्सः=वज्रनाम निघं० २.२०.]

पुरुकुत्सानी पुरूणि कुत्सानि यस्यां सा (शस्याढ्या पृथिवी) ४.४२.६. [पुरु-कुत्समिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां रूपम्]

पुरुकृत् यः पुरूणि बहूनि करोति सः (सेनेशः) २.१३.८. बहुकृत् (इन्द्र=राजन्) ६.२१.५. यः पुरूणि बहूनि वस्तूनि करोति सः (विद्वान् सेनेशः) २.१३.८. ['पुरु इति बहुनाम निघं० ३.१. तदुपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप्]

पुरुकृत्वा बहुकृत्वा ६.३२.३. [पुरु-कृत्वापदयोः समासः । 'पुरु' इति व्याख्यातम् । कृत्वा=डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्त्वा]'

पुरुक्षु यत् पुरुषु बहुषु क्षियति वसति तत् (रायस्पोषम्=धनस्य पुष्टिम्) भा०—बहुव्यापकम् २७.२०. [पुरु बहुनाम निघं० ३.१. तदुपपदे क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोर् बाहु० औणादिको डुन्प्रत्ययः]

पुरुक्षुः पुरूणि बहून्यन्नानि यस्य सः (धार्मिक उद्योगी जनः) ६.१९.५. **पुरुक्षुम्**=बहुधनधान्यसहितम् (रयिं=धनम्) ४.३४.१०. पुरूणि क्षूण्यन्नानि यस्य सः (मनुष्यः) १.६८.५. पुरुभिः शब्दितम् (रायस्पोषं=धनादेः षोषकम्) २.४०.४. **पुरुक्षो** !=पुर्ूणि क्षुधोऽन्नादीनि यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) प्र०—क्षुदित्यन्ननाम निघं० २.७, ३.२५.२. **पुरुक्षोः**=बह्वन्नादियुक्तस्य (राज्ञः) ४.२९.५. बह्वन्नं यस्मिँस्तस्य (रायः) ६.५०.११. बहुध्यानयुक्तस्य (रायः=धनस्य) ६.२२.३. बह्वन्नस्य ३.५४.२१. [पुरु-क्षुपदयोः समासः । पुरु बहुनाम निघं० ३.१. क्षु अन्ननाम निघं० २.७.]

पुरुगूर्त्तः बहुभिरुद्यमितः कृतपुरुषार्थकः (रथः=विमानादियानम्) ६.३४.२. [पुरु-गूर्त्तपदयोः समासः । पुरु बहुनाम निघं० ३.१. गूर्त्तः=गुर्वी उद्यमने (भ्वा०) धातोः क्तः]

पुरुचेतनः बहवश्चेतना यस्मिन् सः (अग्निः=तेजस्वी सूर्यः) ६.१६.१६. [पुरु-चेतनपदयोः समासः]

पुरुजातः पुरुषु वहुषु नरेषु प्रसिद्धः (अर्यमा=न्यायाधीशः) ७.३५.२. अनन्तसामर्थ्ययुक्त (ईश्वर) आर्याभि० १.२५, ऋ० ५.३.२१.२५. [पुरु-जातपदयोः समासः]

पुरुणीथा पुरून् नयन्ति येषु तानि धर्म्यकर्माणि ७.६.६. [पुरूपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकः क्थन् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

पुरुणीथे यत् पुरुभिर्बहुभिः प्राणिभिः पदार्थैर्वा नीयते तस्मिन् (शातवनेये=जगति) १.५९.७. [पुरुणीथ इति व्याख्यातम्]

पुरुतमम् अतिशयेन बहुप्रकारम् (ज्योतिः=तेजः) ४.५१.१. पुरून् बहून् दुष्टस्वभावान् जीवान् पापकर्मफलदानेन तमयति ग्लापयति तं परमेश्वरं तत्फलभोगहेतुं वायुं वा प्र०—पुरुरिति वहुनामसु पठितम् निघं० ३.१, १.५.२. यः पुरून् बहून् ताम्यति तम् (सज्जनम्) ४.४४.१. बहुतमम् (उदकम्) ५.५६.५. अतिशयेन बहुविद्यम् (भा०—विद्याविनयधर्म्याचिरणम्) ६.४५.२६. **पुरुतमस्य**=अतिशयेन वहुगुणस्य (कारोः=शिल्पिनः) ६.२१.१. अतिशयेन बहुविद्यायुक्तस्य (कारोः) ३.३९.७. **पुरुतमः**=अतिशयेन बहुः (राजा) ३.६२.२. [पुरु बहुनाम निघं० ३.१. ततोऽतिशायने तमप् । अथवा पुरूपपदे तमु कांक्षायाम् (दिव०) धातोरच् प्रत्ययः]

पुरुतमा या बहून पदार्थान् ताम्यति काङ्क्षति सा (विदुषी स्त्री) १.१२४.६. [पुरूपपदे तमु कांक्षायाम् (दिवा०) धातोरच्प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्]

पुरुतमानि अतिशतेन बहूनि (वचांसि=वचनानि) ६.३२.१. [पुरुप्राति० अतिशायने तमप्]

पुरुत्रा पुरुषु बहुषु पतितः सन् (वृत्रः=मेघः) प्र०—अत्र 'देवमनुष्यपुरुष०' अ० ५.४.५६. इति त्रा प्रत्ययः १.३२.७. वहून् (रश्मीन्) ११.१७. पुरुषु बहुषु पदार्थेषु वर्त्तमानौ (वाय्वग्नी) २.३६.१. पूर्वासु (प्रकृत्यादिषु) ३.५५.४. पुरुरूपम् (भानुं=सूर्यम्) ३.६१.७. पुरुषु पदार्थेषु भवान् (गुणान्) ६.४७.२६. पुरूणि बहूनि (धाम=धामानि) १२.१६. पुरूणि देयानि (भा०—कार्याणि वस्तूनि) १.७०.५. वहुविधम् (पृथिवीम्=अन्तरिक्षम्) २६.५५. [पुरुप्राति० 'देवमनुष्यपुरुष०' अ० ५.४.५६. सूत्रेण द्वितीयान्तात् सप्तम्यन्ताद्वा त्रा-प्रत्ययः]

पुरुत्रा यः पुरून् बहून् त्रायते सः (जनिता=पर्जन्यः) १७.३२. [पुरूपपदे त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि]

पुरुदत्र बहुदानकृत् (इन्द्र=राजन्) ६.१८.६. [पुरुदत्रपदयोः समासः । दत्रमिति हिरण्यनाम निघं० १.२.]

पुरुदस्मम् पुरूणि बहूनि दुःखानि दस्मान्युपक्षीणानि यस्मात्तम् (विष्णुं=व्यापकमीश्वरम्) ३.५४.१४ **पुरुदस्मः**=पुरुर्बहुर्दस्म उपक्षयो दुःखानां यस्मात् सः (गृहस्थो जनः, ८.३०. [पुरु-दस्मपदयोः समासः । पुरु बहुनाम निघं० ३.१. दस्मम्=दसु उपक्षये (दिवा०) धातोः 'इषियुधीन्धिदसि०' उ० १.१४५. सूत्रेण मक्प्रत्ययः । पुरुदस्मः=बहुदान इति श० ४.५.२.१२.]

पुरुदꣳसम् बहुकर्म-साधकम् (सर्वविद्यामन्थनसारम्) ३.५.११. बहुकर्मयुक्तम् (स्वरूपम्) ३.६.११. पुरूणि बहूनि दंसानि कर्माणि भवन्ति यस्मात्तम् (सनिं=संविभागम्) १२.५१. पुरूणि दंसानि कर्माणि भवन्ति यस्यास्ताम् (इळां=स्तुत्यां वाचम्) ३.१.२३. बहुशुभकर्माणम् (सनिं=विद्यादिशुभगुणदानम्) ३.२३.५. [पुरु-दंसपदयोः समासः । पुरु बहुनाम निघं० ३.१. दंसः=कर्मनाम निघं० २.१.]

पुरुदꣳससा पुरूणि दंसास्युत्तमानि कर्माणि ययोस्तौ (राजसेनेशौ) ६.६३.१०. पुरूणि बहूनि दंसांसि शिल्पविद्यार्थानि कर्माणि याभ्यान्तौ (अश्विनौ=अग्निजले) प्र०—दंस इति कर्मनामसु पठितम् निघं० २.१, १.३.२. [पुरु-दंसस्पदयोः समासः । 'सुपां सुलुक्०' इति सूत्रेण प्रथमा द्विवचनस्याकारादेशः । दंसस् कर्मनाम निघं० २.१.]

पुरुद्रप्साः बहुमोहाः (विद्वांसो जनाः) ५.५७.५. [पुरुद्रप्सपदयोः समासः । द्रप्स इति दृप हर्षणमोहनयोः (दिवा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

पुरुद्रुहः ये पुरून् बहून् द्रुह्यन्ति तान् (अरातीः=शत्रून्) ३.१८.१. [पुरूपपदे द्रुह जिघांसायाम् (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पुरुधप्रतीकः पुरून् बहून् दधति ते पुरुधाः, यः पुरुधान् प्रत्याययति सः (सूर्यः) ३.४८.३. पुरून् बहून् दधति येन तत् पुरुधं, पुरुधं प्रतीतिकरं कर्म यस्य सः (आदित्यः) ३.७.३. [पुरुध-प्रतीकपदयोः समासः । पुरुधः=पुरूपपदे दधातेः कः प्रत्ययः । प्रतीकम्=प्रति+इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकः कन्प्रत्ययः]

पुरुधा बहुभिः प्रकारैर्धारितानि (वसूनि=द्रव्याणि) ६.१.१३. बहुभिः प्रकारैर्धारितानि (वसूनि=द्रव्याणि)

६.१.१३. ये पुरून् बहून् धरतस्ते (उषासानक्ता=रात्रिदिने) १.१२२.२. [पुरूपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कः प्रत्ययः। ततः शेर्लोपश्छन्दसि। अन्यत्र प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

पुरुधा बहुधा (जगत्) ३.५५.१९. बहुभिः प्रकारैः ३.५०.३. बहुप्रकारैः ४.२.१९. [पुरुप्राति० प्रकारवचने धा-प्रत्ययः। पुरु बहुनाम निघं० ३.१. 'बहुगणवतु०' सूत्रे बहुपर्यायवाचिनोऽपि छन्दसि ग्रहणात् संख्यासंज्ञा। पुरुधा=बहुधा नि० १०.३४.]

पुरुनिष्षिधे पुरूणि बहूनि शास्त्राणि मङ्गलानि च नितरां सेधतीति तस्मै (इन्द्राय=जीवाय) १.१०.५. [पुरूपपदे निस्पूर्वात् षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पुरुनिष्षिध्वानम् बहवः शत्रवो निष्षध्यन्ते येन तम् (राजजनम्) ४.३८.२. [पुरूपपदे निस्पूर्वात् षिधू शास्त्रे मांगल्ये च (भ्वा०) धातोः क्वनिप्प्रत्ययः]

पुरुनिःष्ठः पुरवो बहुविधा निष्ठा यस्य सः, बहुस्थानो वा (विद्वान् जनः) ५.१.६. [पुरु-निःष्ठापदयोः समासः]

पुरुनीथे यत् पुरुभिर्बहुभिः प्राणिभिः पदार्थैर्वा नीयते तस्मिन् (शातवनेये=जगति) १ ५९.७. [पुरूपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्थन्प्रत्ययः]

पुरुपन्थाः पुरु बहुविधश्चाऽसौ पन्थाश्च ६.६३.१०. [पुरु-पथिन्पदयोः संमासः]

पुरुपुत्राम् बहवोऽन्नादिव्यक्तिमन्तः पुत्रा यस्यास्ताम् भा०—बहुपुष्पफलप्रदाम् (महीं=भूमिम्) ३३.२८. [पुरु-पुत्रपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

पुरुपेशसम् बहूरूपम् (यज्ञं=संसारम्) ३.३.६. पुरु-पेशस्पदयोः समासः। पेशस् हिरण्यनाम निघं० १.२. रूपनाम निघं० ३.७.]

पुरुपेशासु पुरूणि पेशानि रूपाणि यासु तासु ओषधीषु २.१०.३. [पुरु- पेशस्पदयोः समासः। पृषोदरादित्वात् सलोपः]

पुरुप्रशस्तः बहुषूत्तमः (रथः=विमानादियानम्) ६.३४.२. बहुषु श्रेष्ठतमः (पूर्णविद्यो जनः) १.७३.२. बहुभिः सत्कृतः (रथः=विमानादियानम्) ६.३४.२. [पुरु-प्रशस्तपदयोः समासः]

पुरुप्रिय यः पुरून् बहून् प्रीणाति बहूनां प्रियो वा तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) १.४५.६, ६५.३१. **पुरुप्रियम्**=बहूनां विदुषां प्रीतिजनको वा पुरूणि बहूनि प्रियाणि सुखानि भवन्ति यस्मात्तम् (अग्नि=परमेश्वरं विद्युद्रूपं वा) १.२२.२. यः पुरूणां बहूनां प्रियस्तम् (दूतं=विद्वांसं जनम्) १.४४.३. **पुरुप्रियः**=बहुभिः कमितः सेवितो वा (अतिथिः) ५.१८.१. पुरूणां बहूनां जनानां मध्ये प्रियः प्रीतः (अग्निः=पतिः) ११.७२. यः पुरून् बहून् प्रीणाति सः (अग्निः=पावक इवेश्वरः) ३.३.४. [पुरु-प्रियपदयोः समासः। पुरु बहुनाम निघं० ३.१. प्रियः=प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' अ० ३.१.१३५. सूत्रेण कः]

पुरुप्रैषः पुरुभिर्बहुभिः सज्जनैः प्रैषः प्रेरितः (शिशुः) १.१४५.३. [पुरु-प्रैषपदयोः समासः। प्रैषः=प्र+इष गतौ (दिवा०) धातोर्घञ्]

पुरुभुजा पुरूणि बहूनि भुञ्जि भोक्तव्यानि वस्तूनि याभ्यां तौ (अश्विनौ=जलाऽग्नी) प्र०—पुर्विति बहुनामसु पठितम् निघं० ३.१. भुगिति क्विप्प्रत्ययान्तः प्रयोगः 'सम्पदादिभ्यः क्विप्' इत्यनेन भवति 'रोगाऽऽख्यायां०' अ० ३.३.१०८. इत्यस्य व्याख्याने १.३.१. बहुपालकौ (अश्विनौ=वायुविद्युतौ) ५.७३.१. पुरून् बहून् जनान् भोजयितारौ (अश्विनौ=अध्यापकौ) १.११६.१४. पुरून् बहूनानन्दान् भुङ्क्तस्तौ (अध्यापकौ) १.११६.१३. यौ पुरून् बहून् पालयतस्तौ (अश्विना=राजप्रजाजनौ) ५.४९.१. [पुरूपपदे भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोः क्विप्। 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः]

पुरुभू यौ पुरून् भावयतस्तौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) ४.४४.४. [पुरूपपदे भू प्राप्तौ (चुरा०) धातोः क्विप्। णिचोऽभावः। प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इति लुक्]

पुरुभूतमा अतिशयेन बहुव्यापकौ (अश्विनौ=वायुविद्युतौ) ५.७३.२. [पुरूपपदे भू प्राप्तौ (चुरा०) धातोः क्विप्। ततोऽतिशायने तमपि प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

पुरुभोजसम् बहूनां रक्षितारम् (वीरपुरुषम्) ७.९.२. बहूनां पालकं बह्वन्न-भोक्तारं वा (गां=वाणीं भूमिं वा) ३.३४.९. [पुरूपपदे भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोरौणादिकोऽसुन्]

पुरुमन्तू पुरुभिबहुभिर्मन्तव्यौ (सभाशालेशौ) १.१५८.१. [पुरूपपदे मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'कमिमनिजनि०' उ० १.७३. सूत्रेण तुः प्रत्ययः]

पुरुमायम् पुर्व्या मायया प्रज्ञया सम्पादितम् (रथं=

यानम्) १.११६.१. **पुरुमायस्य**=बहुकपटस्य दुष्टस्य (दुर्जनस्य) ६.२१.२. बहुशुभ-कर्मप्रज्ञस्य (सज्जनस्य) ६.१८.१२. **पुरुमायः**=बहूनां निर्माता (परमेश्वरः) ६.२२.१. यः पुरून् बहून् मिनोति सः (सेनेशः) ३.५१.४. पुरुः-मायापदयोः समासः। माया=प्रज्ञानाम निघं० ३.९. माया=मा माने (अदा०) धातोः 'माछाशसिभ्यो यः' उ० ४.१०९. सूत्रेण यः प्रत्ययः। ततः स्त्रियां टाप्। अथवा पुरूपपदे माङ् माने (जु०) धातोरण्प्रत्ययः]

पुरुमित्रस्य बहुसुहृदः (सज्जनस्य) १.११७.२०. [पुरु-मित्रपदयोः समासः]

पुरुमीढस्य पुरुभिर्बहुभिर्गुणैः सिक्तस्य (विदुषो जनस्य) १.१५१.२. **पुरुमीढः**=पुरुभिर्बहुभिः पदार्थैः सिक्तः (गोतमः=नौकादियानयायी जनः) १.१८३.५. **पुरुमीढाय**=बहुवीर्यसेक्त्रे (पुरुषाय) ५.६१.९. [पुरु-मीढपदयोः समासः। मीढः=मिह सेचने (भ्वा०) धातोः क्तः]

पुरुराव्णः बहुदुःखप्रदात् (रिषः=हिंसनात्) २०.१८. पुरवो बहवो राव्णोऽपराधदानशीला यस्मिन् तस्मात् (रिषः=धर्मस्य हिंसनात्) ८.२७. यः पुरूणि बहूनि दुःखानि राति ददाति स पुरुरावा, तस्मात् (रिषः=हिंसकाच्छत्रोः पापाच्च) प्र०—अत्र 'आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च' इति वनिप्प्रत्ययः ३.४८. [पुरूपपदे रा दाने (अदा०) धातोः कर्त्तरि वनिप् प्रत्ययः]

पुरुरुणा बहुतरम् (अवः=रक्षणादिकम्), प्र० अत्र—'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः ५.७०.१.]

पुरुरूपम् बहुरूपयुक्तं सुन्दराऽऽकृतिम् (गृहपतिम्) ५.८.२. बहुरूपम् (भिषजं=वैद्यम्) २८.९. **पुरुरूपः**= बहुशरीरधारणेन विविधरूपः (इन्द्रः=जीवः) ६.४७.१८. [पुरु-रूपपदयोः समासः]

पुरुवसुम् बहुषु धनेषु वासयितारम् (शूरं=सेनापतिम्) १.८१.८. **पुरुवसुः**=असङ्ख्यधनः (प्रजाजनः) ५.३६.३. पुरूणां बहूनां वासयिता (इन्द्रः=जीवात्मा) ७.३२.२४. [पुरु-वसुपदयोः समासः। वसुः वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'शॄस्वृस्निहि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः प्रत्ययः]

पुरुवाजाभिः बहुज्ञानपुरुषार्थ युक्ताभिः (ऊती=रक्षादिक्रियाभिः) ६.१०.५. [पुरु-वाजपदयोः समासे स्त्रियां टाप्। वाजः=बलनाम निघं० २.९. अन्ननाम निघं० २.७.]

पुरुवार ! यः पुरून् बहूनाप्तान् वृणोति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=धार्मिक राजन्) ४.२.२०. बहुभिर्वरणीय (अग्ने=विद्वज्जन) २.२.२. **पुरुवारम्**=पुरुभिर्बहुभिर्विद्वद्भिः सत्कृतम् (धीमन्तं जनम्) ६.१५.७. पुरूणि बहूनि वरितुं योग्यानि कर्माणि यस्मात्तम् (विद्युद्यानम्) १.११९.१०. बहुभिर्विद्वद्भिः स्वीकर्त्तव्यं बहूत्तमगुणयुक्तम् (ताराऽऽख्यं यन्त्रम्) ऋ० भू० १९९, ऋ० १.८.२१.१०. **पुरुवारस्य**=बहूत्तमजनस्वीकृतस्य (राज्ञः) ४.३९.२. **पुरुवारः**=बहुभिर्वरणीयस्वरूपः (वैश्वानरः=राजा) ४.५.१५. बहुभिर्वृतः स्वीकृतः (महाविद्वज्जनः) ६.५.१. **पुरुवारेभिः**=पुरवो बहवो वारा वरितव्या गुणा येषान्तैः (विद्वद्भिः) १.१३९.१०. [वारः=वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्घञ्प्रत्ययः। पुरुवारपदयोः समासः। अथवा पुरूपपदे वृञ् वरणे (स्वा०) धातोरण्प्रत्ययः]

पुरुवारपुष्टिः पुरुः बहु वारा वरणीया पुष्टिर्यस्मात् सः (मातरिश्वा=वायुः) १.९६.४. [पुरुवारा-पुष्टिपदयोः समासः]

पुरुवीरम् पुरवो बहवो वीरा यस्मात्तम् (रयिं=धनम्) ६.४९.१५. बहुवीरप्रदम् (रयिं=धनम्) ६.६.७. **पुरुवीरस्य**=बहुवीर-प्रापकस्य (रायः=धनस्य) ६.२२.३. बहुप्रवीणशूरस्य (विदुषः पितुः) २.२८.३. **पुरुवीराः**= पुरवो बहवो वीराः शरीरात्मबला येषां ते (प्रजाजनाः) २.२७.७. [पुरु-वीरपदयोः समासः। वीरो वीरयत्यमित्रान् वेतेर्वा स्याद् गतिकर्मणो वीरयतेर्वा नि० १.७.]

पुरुवीराभिः पुरवो बहवो वीरा यासु तासु सेनासु ताभिः ६:३२.४. [पुरु-वीरपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

पुरुशाक ! बहुशक्तिमन् (इन्द्र=राजन्) ७.१९.६. बहुशक्त (इन्द्र=दुःखविदारक राजन्) ६.२४.४. बहुशक्ते (परमेश्वर) ६.२१.१०. **पुरुशाकाय**=बहुशक्तये (शिल्पिजनाय) ३.३५.७. [पुरूपपदे शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोरण्प्रत्ययः]

पुरुशाकतमा अतिशयेन बहुशक्तिमन्तौ (वायुविद्युतौ) ६.६२.५. ['पुरुशाक' इति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने तमप्-प्रत्यये प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

पुरुश्चन्द्रम् बहुहिरण्यादियुक्तम् (गृहपतिम्) ५.८.१. बहुसुवर्णम् प्र०—अत्र 'ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे, इति सुडागमः ३.३१.१५. **पुरुश्चन्द्रस्य**=बहु चन्द्रं सुवर्णं यस्मिँस्तस्य (रायः=श्रियः) ६.३६.४. पुष्कलसुवर्णादियुक्तस्य (रायः=धनस्य) २.२.१२. **पुरुश्चन्द्रः**=पुरुर्बहुश्चन्द्र आह्लादो यस्य सः (अग्निः=सूर्यो विद्युद्वा) ३.२५.३.

पुरूणां बहूनां चन्द्र आह्लादकः (महागुणविशिष्टो भौ० अग्निः) १.२७.११. **पुरुश्चन्द्राः**=बहुसुवर्णादीनि (वसूनि=धनानि) ५.६१.१६. **पुरुश्चन्द्रैः**=पुरवो बहवश्चन्द्रा आह्लादकारका सुवर्णरजतादयो धातवो वा येभ्यस्तैः (वाजेभिः=विज्ञानादिगुणैः संग्रामैर्वा) १.५३.५. [पुरुचन्द्रपदयोः समासे 'ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे' अ० ६.१.१५१. सूत्रेण सुडागमः। चन्द्रश्चन्दतेः कान्तिकर्मणः नि० ११.५. चन्द्रम्=हिरण्यनाम निघं० १.२.]

पुरुषम् पुरुषार्थयुक्तम् (भा०—मनुष्यादिश्रेष्ठप्राणिनम्) १६.३. स्वस्वरूपेण पूर्णम् (भा०—परमात्मानम्) ३१.१८. सहस्रशीर्षादिविशेषणोक्त सर्वत्र परिपूर्ण (परमात्मा) को, प्र०—'पूर्णत्वात् पुरि शयनाद्वा पुरुषः' इति निरुक्तोक्तेः आर्याभि० २.८, ३१.१८. **पुरुषः**=सब में पूर्ण, जड़ और जीव से अतिरिक्त, जगत् को बनाने वाला (परमात्मा) स० प्र० २८२, ३१.२. सर्वत्र पूर्णो जगदीश्वरः, प्र०—पुरुषः पुरिषादः, पुरिशयः, पूर्यतेर्वा पूरयत्यन्तरित्यन्तःपुरुषमभिप्रेत्य, यस्मात्परं नाऽपरमस्ति किञ्चिद्, यस्मान्नाऽणीयो न ज्यायोऽस्ति किञ्चिद् वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकस्तेनेदं पूर्णं पुरुषेण सर्वम्; इत्यपि निगमो भवति नि० २.३, ३१.१. सत्यैर्गुणकर्मस्वभावैः परिपूर्णः (ईश्वरः) ३१.२. पालकः (परमेश्वरः) ३१.४. यः पुरि सर्वस्मिन् संसारेऽभिव्याप्य सीदति वर्त्तते, स्वयमिदं सर्वं जगत् स्वस्वरूपेण पूरयति व्याप्नोति तस्मात् सः (पुरुषः परमात्मा) ऋ० भू० ११८, ३१.१. विद्यापुरुषार्थयुक्तोऽयं मनुष्यः २.३३. **पुरुषात्**=पूर्णाद्विभोः (ईश्वरात्) ३२.२. **पुरुषाय**=पुरुषभृतये ३.५९. [पुर अग्रगमने (तुदा०) धातोः 'पुरः कुषन्' उ० ४.७४. सूत्रेण कुषन् प्रत्ययः। पुरुषः पुरिषादः पुरिशयः पूरयतेर्वा। पूरयत्यन्तरित्यन्तरपुरुषमभिप्रेत्य नि० २.३. पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्वा कुषन् प्रत्ययः। पुरुषः स वाऽअयं पुरुषः सर्वासु पूर्षु पुरिशयः श० १४.५.५.१८. इमे वै लोका पूरयमेव पुरुषो योऽयं (वायुः) पवते सोऽस्यां पुरि शेते तस्मात्पुरुषः श० १३.६.२.१. प्राण एष स पुरि शेते स पुरि शेत इति पुरिशयं सन्तं प्राणं पुरुष इत्याचक्षते गो० पू० १.३९. स यत् पूर्वोऽस्मात् सर्वस्मात् सर्वान् पाप्मन औषत् तस्मात् पुरुषः श० १४.४.२.२. पुरुषो वाऽअक्षितिः श० १४.४.३.७. पुरुषो वै सहस्रस्य प्रतिमा श० ७.५.२.१७. प्राजापत्यो वै पुरुषः तै० २.२.५.३. पुरुषः प्रजापतिः श० ६.२.१.२३. पुरुषः पशूनाम् (अधिपतिः) तां० ९.२.७. पशवः पुरुषः तै० ३.३.८.२. पुरुषो वै यज्ञः जै० उ० ४.२.१. अपाङ्गर्भः पुरुषः स यज्ञः गो० पू० १.३९. पुरुष उद्गीथः जै० उ० १.३३.९. पुरुषोऽग्निः श० १०.४.१.६. पुरुषो वै समुद्रः जै० उ० ३.३५.५. पुरुषः सुपर्णः श० ७.४.२.५. पुरुषो वाव संवत्सरः श० १२.२.४.१. पुरुष एव सविता जै० उ० ४.२७.१७. पुरुषो वाव होता गो० उ० ६.६. पुरुष एव षष्ठमह कौ० २३.४. अथैष एव पुरुषो योऽयं चक्षुषि जै० उ० १.२७.२. षोडशकलो वै पुरुषः तै० १.७.५.५. सप्तदशो वै पुरुषो दश प्राणाश्चत्वार्यङ्गान्यात्मा पञ्चदश ग्रीवाः षोडश्यः शिरः सप्तदशम् श० ६.२.२.९. असङ्गो ह्ययं पुरुषः श० १४.७.१.१७. काममय एवायं पुरुष इति स यथाकामो भवति तथा क्रतुर्भवति श० १४.७.२.७. व्याममात्रो वै पुरुषः श० ७.१.१.३७. द्विप्रतिष्ठो वै पुरुषः ऐ० २.१८. द्विपाद्वै पुरुषः ऐ० ४.३. पुरुषो वै ककुप् तां० ८.१०.६. वैराजो वै पुरुषः तां० २.७.८. गायत्रो वै पुरुषः ऐ० ४.३. औष्णिहो वै पुरुषः ऐ० ४.३. पाङ्क्तोऽयं पुरुषः पंचधा विहितो लोमानि त्वङ् मांसमस्थि मज्जा ऐ० २.१४. पाङ्क्तो ह्ययं पुरुषः पञ्चधा विहितो लोमानि त्वगस्थि मज्जा मस्तिष्कम् गो० उ० ६.८. षड्विधो वै पुरुषः षडङ्गः ऐ० २.३९. सप्तपुरुषो ह्ययं पुरुषो यच्चत्वार आत्मा त्रयः पक्षपुच्छानि श० ६.१.१.६. अवछितो हि वै पुरुषः। शतायुर्वै पुरुषः शतपर्वा शतवीर्यः शतेन्द्रिय उपाय एकशततमः स आत्मा कौ० १८.१०. शतायुर्वै पुरुषः शतवीर्यः तै० १.७.६.४. शतायुर्वै पुरुषः शतवीर्यः शतेन्द्रियः ऐ० २.१७.]

पुरुषघ्नम् पुरुषाणां हन्तारम् (दुष्टाचारिणं प्राणिनम्) १.११४.१०. [पुरुषोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः कः प्रत्ययः]

पुरुषता पुरुषस्य भावः १९.६२. पुरुषाणां भावेन पुरुषार्थतया ७.५७.४. [पुरुषप्राति० भावे तल्प्रत्ययः]

पुरुषत्रा पुरुषेषु ४.१२.४. पुरुषान् ३.३३.८. [पुरुषप्राति० द्वितीयान्तात् सप्तम्यन्ताद्वा 'देवमनुष्यपुरुष०' अ० ५.४.५६. सूत्रेण त्रा प्रत्ययः]

पुरुषत्वता उत्तमाः पुरुषा विद्यन्तेऽस्मिँस्तेन (पुरुषार्थेन) ४.५४.३. बहुपुरुषार्थेन सह ५.४८.५. [पुरुषप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुप्]

पुरुषन्तिम् पुरूणां बहूनां सन्ति विभाजितारम् (विद्वांसं जनम्) १.११२.२३. [पुरु-सन्तिपदयोः समासः। सन्तिः=षण् सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० तिः प्रत्ययः]

पुरुषमृगः यः पुरुषान् मार्ष्टि स पशुविशेषः २४.३५.

पुरुषोपपदे मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः]

पुरुषवाक् पुरुषस्य वागिव वाग् यस्य सः (पक्षिविशेषः) शुकः २४.३३ [पुरुष-वाच्पदयोः समासः]

पुरुषव्याघ्राय व्याघ्र इव पुरुषस्तस्मै (दुर्जनाय) ३०.८. [पुरुष-व्याघ्रपदयोः समासः]

पुरुषु परिपूर्णसद्गुणविद्याकर्मसु मनुष्येषु, प्र०—पुरु इति पञ्चविंशति मनुष्यनाम नि० २.३, १.१०८.८. [पूरवः मनुष्यनाम निघं० २.३. पूरवः पूरयितव्या मनुष्या नि० ७.२३.]

पुरुष्टुत बहुभिः प्रशंसित (इन्द्र=महाराज) ४.२१.१०. पुरुभिर्बहुभिः स्तुतस्तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=जगदीश्वर) १.५७.४. **पुरुष्टुतः**=बहुभिर्विद्वद्भिर्गुणैर्वा स्तोतुमर्हः (इन्द्रः=सेनापतिः सूर्यो वा) १.११.४. [पुरु-स्तुतपदयोः समासः । स्तुतः=ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

पुरुष्याः पुरुषेषु साधवः (वरतमा अध्यापकाः) ७.२९.४. [पुरुषप्राति० साध्वर्थे यत्प्रत्ययः]

पुरुस्पृहम् यत् सत्पुरुषैर्बहुभिः स्पृह्यते ईप्स्यते तत् (रयिम्) १.४७.६. बहुभिः स्पृहणीयम् (रयिं=श्रियम्) ३३.९०. **पुरुस्पृहः**=बहुभिः स्पृहणीयाः क्रियाः ४.४७.४. याः पुरुभिः स्पृह्यन्त ईप्स्यन्ते ताः (वाचः) १.१४२.६. पुरून् बहूनुत्तमान् कामानभिकाङ्क्षन्ति याभिस्ताः (परोपकारेच्छाः) ६.६०.८. [पुरूपपदे स्पृह ईप्सायाम् (चुरा०) धातोर् घनर्थे कविधानमिति कः प्रत्ययः]

पुरुहूत बहुभिः प्रशंसित (इन्द्र=राजन्) ४.१६.८. बहुभिः स्पर्द्धित (सूर्य=प्रजापालक) १.१२१.९. बहुभिर्विद्वद्भिः पूजित (इन्द्र=परमात्मन्) १.६६.२. अनेकैः सत्कृत (इन्द्र=सभापते) १.१०४.७. बहूनामाह्वयक (इन्द्र=राजन्) ४.२०.७. बहुभिः कृताऽऽह्वान (इन्द्र=राजन्) ६.१८.११. बहुभिः प्रशंसित स्वीकृत (राजन्) ७.३२.१७. बहुभिः कृतसत्कार (राजन्) ५.३६.२. पुरुभिर्बहुभिर्हूयते स्तूयते तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विशिष्टज्ञानयुक्तविद्वन्) १.४४.७. बहुभिः सेवित (इन्द्र=सुखद जन) ३.३०.७. **पुरुहूतम्**=पुरुभिर्विद्वद्भिराहूतम् (इन्द्रं=राजानम्) २०.५०. पुरुभिर्विद्वद्भिः स्तुतम् (इन्द्रं=राजानम्) १.५१.१. बहुभिः शूरैः सुसेवितम् (राजानम्) ऋ० भू० २२०, २०.५०. बहुभिराहूतं प्रशंसितं वा (इन्द्रं=परमैश्वर्यप्रदं सेनाऽध्यक्षम्) ३.३७.५. **पुरुहूतः**=पुरुभिर्बहुभिर्विद्वद्भिः शूरवीरैर्वा हूतः स्पर्धितो वा (इन्द्रः=सेनापतिः) १.१००.६. बहुभिराहूतः प्रशंसितः (इन्द्रः राजा) ४.१७.५. बहुभिः पूजितः (सभाद्यध्यक्षः) १.१००.१८. बहुभिः स्तुतः (वीरपुरुषः) ५.३०.१. **पुरुहूताय**=बहुभिराहूताय (राजपुरुषाय) ३.३५.२. [पुरु-हूतपदयोः समासः । पुरु बहुनाम निघं० ३.१. हूतः=ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तः । यजादित्वात् संप्रसारणम् । पुरुहूतं बहुभिराहूतम् उदकं भवति नि० ६.२.]

पुरुः मननशीलो मनुष्यः ५.२७.१. **पुरोः**=विदुषो मनुष्यस्य, प्र०—पुरव इति मनुष्यनाम निघं० २.३, १.१२९.५.

पुरूचीः याः पुरूणि बहूनि वर्षाण्यञ्चन्ति ताः (शतं शरदः) ३५.१५. पुरूणि सुखान्यञ्चन्तीः (इषः=इच्छासिद्धीः) ३.५८.८. ['पुरु' इत्युपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' इति क्विन्-प्रत्यये 'अनिदिताम्' इति नलोपे 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति ङीपि भत्वे 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति पूर्वपदस्य दीर्घे रूपम्]

पुरूतमम् पुरून् बहून् दुष्टस्वभावान् जीवान् पापकर्मफलदानेन तमयति ग्लापयति तं परमेश्वरं तत्फलभोगहेतुं वायुं वा, प्र०—पुरुरिति बहुनामसु पठितम् निघं० ३.१. अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः १.५.२. अतिशयेन बहुविद्यम् (उत्तमविद्वांसम्) ६.४५.२९. अत्यन्त उत्तम और सर्वशत्रुविनाशक (ईश्वर) को आर्याभि० १.६, ऋ० १.१.६.२. [पुरुतमं व्याख्यातम् । पूर्वपदस्य 'अन्येषामपि दृश्यते' इति पूर्वपदस्य दीर्घः]

पुरूरवसे पुरवो बहवो रवाः शब्दा यस्य विदुषस्तस्मै (विद्वज्जनाय) प्र०—पुरूरवा बहुधा रोरूयते नि० १०.४६. 'पुरूरवा इति पदनामसु पठितम्' निघं० ५.४. अनेन ज्ञानवान् मनुष्यो गृह्यते । अत्र पुरूपपदाद् 'रु शब्दे' इत्यस्मादसि प्रत्ययत्वात् पुरूरवा इति निपातितः १.३१.४. **पुरूरवाः**=पुरूणि बहूनि शास्त्राण्युपदिशति येनाऽध्ययनाऽध्यापनेन यज्ञेन सः (आग्नेयास्त्रादिसिद्धिकरः पावकः) प्र०—पुरूरवा इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.४. 'पुरूरवाः' उ० ४.२३२ अयमनेन पुरूपपदाद् रु-धातोरसिप्रत्ययान्तेन निपातितः ५.२. [पुरूपपदे रु शब्दे (अदा०) धातोः 'पुरूरवाः' उ० ४.२३२. सूत्रेण असिः प्रत्ययः । पूर्वपदस्य दीर्घः । पुरूरवाः बहुधा रोरूयते नि० १०.४६.]

पुरूरुणा बहुतरम् (अवः=रक्षणादिकम्) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः ५.७०.१.]

पुरूरूपम् बहूनि रूपाणि यस्य तम् (बहुविधपदार्थ-

विज्ञानम्) २.२.६. [पुरु-रूपपदयोः समासे पूर्वपदस्य दीर्घः]

पुरूवसुः पुरूणि बहूनि वसूनि धनानि यस्य सः (ईश्वरः) ७.३८.१. प्र०—अत्र 'संहितायाम्' इत्याद्यपदस्यदैर्घ्यम् ७.३८.१. **पुरूवसू**=पुरूणां बहूनां विदुषां मध्ये कृतवासौ (अश्विनौ=धर्मन्यायप्रकाशकौ जनौ) १.४७.१०. **पुरूवसो !**=बहुधन (विद्वज्जन) ६.२२.४. पुरूणां बहूनां वासयिता (राजा शिष्यो वा) २.१.५. [पुरु-वसुपदयोः समासे पूर्वपदस्य दीर्घः]

पुरूवसो पुरुषु बहुषु वासकर्त्तः (अ०—परमात्मन्) ३३.८१. [पुरु-वसुपदयोः समासः]

पुरूहूते बहुभिर्व्याख्याते (उषासानक्ता=रात्रिप्रातर्वेले) ७.२.६. [पुरु-हूतपदयोः समासे 'अन्येषामपि दृश्यते' इति पूर्वपदस्य दीर्घः । हूतः=ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तः]

पुरो अग्निः अग्रगन्ता पावक इव (अ०—विद्वान् जनः) १७.६६. [पुरस्-अग्निपदयोः समासः]

पुरोगाः अग्रगण्या अग्रगामिनो वा भा०—ये सर्वोत्तमा गण्यन्ते ते (देवाः=विद्वांसो जनाः) २९.११. पुरोगामिनः (विद्वांसो जनाः) अग्रगामी (अग्निः=विद्याप्रकाशितो विद्वान्) २९.३६. पुरस्सराः (भा०—पुण्याः प्रशंसाः) ८.४९. [पुरस् उपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अन्येष्वपि दृश्यते' सूत्रेण डः प्रत्ययः । पुरोगाः=पुरोगामी नि० ८.२१.]

पुरोडाशम् पुरोडाशनामकं यज्ञभागम् २५.२६. पाकविशेषम् २८.२३. सुसंस्कृताऽन्नविशेषम् ४.३२.१६. अनेकविधसंस्कारैर्निष्पादितम् (अन्नविशेषम्) ३.२८.३. रोगनिवारकमन्नम् ३.२८.५. पुरस्ताद् दातुं योग्यम् (राजप्रजैश्वर्यम्) ३.५२.३. यज्ञे हुतं पदार्थम् २८.४६. सुसंस्कृतमन्नादिकम् ३.२८.४. **पुरोडाशेन**=उत्तमेनाऽन्नेन व्यञ्जनेन च २८.४६. **पुरोडाशैः**=पचनक्रियासंस्कृतैः (उत्तमपदार्थैः) १९.२०. संस्कृताऽन्नविशेषैः २१.६१. **पुरोडाः**=यो विधिना संस्कृतः (अन्नविशेषः) ३.२८.२. पुरस्सरः (सज्जनः) ७.१८.६. [पुरस् उपपदे दाशृ दाने (भ्वा०) धातोः 'मन्त्रे श्वेतवहोक्थशस्पुरोडाशो ण्विन्' अ० ३.२.७१. सूत्रेण कर्मणि ण्विन् प्रत्ययो डत्वं च निपात्यते । सः (पुरोडाशः) वा एभ्यः (मनुष्येभ्यः) तत्पुरोऽदशयत् । य एभ्यो यज्ञं प्रारोचयत्तस्मात् पुरोदाशः, पुरोदाशो ह वै नामैतद् यत् पुरोडाश इति श० १.६.२.५. पुरो वा एतान् देवा अक्रत यत्पुरोडाशस्तत्पुरोडाशानां पुरोडाशत्वम् ऐ० २.२३. आत्मा वै यजमानस्य पुरोडाशाः कौ० १३.५.६. पशोर्वै प्रतिमा पुरोडाशः तै० ३.२.८.८. ततिर्वै यज्ञस्य पुरोडाशः कौ० १०.५. शिरो ह वा ऽएतद् यज्ञस्य यत्पुरोडाशः श० १.२.१.२. मस्तिष्को वै पुरोडाशः तै० ३.२.८.७. विड्डुत्तरः पुरोडाशः श० ११.२.७.१६. आग्नेयः पुरोडाशो भवति श० २.४.४.१२. अन्नं वै पुरोडाशः तै० सं० ७.१.९.१. अर्धो वा एष यज्ञस्य यत्पुरोडाशः श० २.२.१.४. पशवो वै पुरोडाशाः तै० सं० ७.१.९.१. तस्य (यज्ञस्य) एतच्छिरः यत्पुरोडाशः तै० ३.२.८.३. ब्रह्मवर्चसं पुरोडाशः काठ० २२.१३. मेधो वा एष पशूनां यत्पुरोडाशः कौ० १०.५. यजमानो वै पुरोडाशः तै० सं० १.५.२.३. यत्पुरोडाशस्तेन पौर्णमासम् जै० २.३८. यथा मस्तिष्क एवं पुरोडाशः मै० ४.१.९.]

पुरोऽनुवाक्याभिः अथर्ववेद-प्रकरणैः २०.१२. [प्राण एव पुरोऽनुवाक्या श० १४.६.१.१२. पृथिवीलोकमेव पुरोऽनुवाक्यया जयति श० १४.६.१.९.]

पुरोभूः यः पुरस्ताद्भावयति सः (पूर्णविद्यो जनः) ३.३१.८. [पुरस् उपपदे भू प्राप्तौ (चुरा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पुरोयावानम् नगरं यान्तम् (रथम्) ५.३५.७. [पुर् इत्युपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्वनिप्प्रत्ययः । समासे विभक्तेरलुक्]

पुरोयुधा पूर्वं युध्येते यौ तौ (इन्द्रापर्वता=सभासेनेशौ) १.१३२.६. [पुरस् उपपदे युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

पुरोयोधः पुरस्ताद् योद्धा (दुष्टानां हन्ता राजा) ७.३१.६. [पुरस् उपपदे युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोरण्]

पुरोरुचा प्राक् प्रसृतया दीप्त्या २०.३६. [पुरस् उपपदे रुच दीप्तौ (भ्वा०) क्विप् सम्पदादित्वात् । पुरोरुग् वै वाक् कौ० १४.५. वीर्यं वै पुरोरुक् श० ४.४.२.११. अथ वै पुरोरुगात्मैव कौ० १४.४. अथ वै पुरोरुगसावेव यो ऽसौ (सूर्यः) तपत्येष हि पुरस्ताद् रोचते कौ० १४.४.]

पुरोहा पुराणां हन्ता (राजा) ६.३२.३. [पुरस् उपपदे हन् हिंसागत्योः (अदा०) क्विप्]

पुरोहितम् यः पुरस्तात् सर्वं जगद् दधाति, छेदनधारणाऽऽकर्षणादिगुणाँश्चापि तम् (अग्नि=परमेश्वरं भौतिकं वा) प्र०—पुरोहितः पुर एनं दधति नि० २.१२, १.१.१. सर्वहितोपकारक सब जगत् के हितसाधक (ईश्वर) को आर्याभि० १.२, ऋ० १.१.१.१. **पुरोहितः**=यं यजमानः पुरः पूर्वं दधाति सः (हितसाधको जनः) प्र०—पुरोहितः पुर एनं दधति नि० २.१२ ११.८१. पूर्वं ग्रहीता

(देवः=देदीप्यमानो जीवात्मा) १.५८.३. पुरोहितवदुपकारी (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.५५.३. सर्वेषां हितसाधकः (अग्निः=वह्निः) ३.११.१. पुर एनं विद्वांसो दधति सः (राजपुरुषः) २.२४.९. पुरस्ताद्धितकारी (ईश्वरः) ३३.४०. सर्वसाधनसुखसम्पादयिता (विद्वान्) १.४४.१०. पुरस्ताद्धिताय मध्ये धृतः (सूर्यः) ३१.२०. पुरोऽयं दधाति (विद्वज्जनः) १.४४.१२. यः सर्वैः सुखैः सह मोक्षे विदुषो दधाति सः (परमेश्वरः) ऋ० भू० १३३, ३१.२०. यः सर्वजगतः, स्वभक्तानां धर्मात्मानां मुक्तेरारम्भात् पूर्वमेव सकलपदार्थोत्पादनेन विज्ञानादिदानेन चैनं जीवं दधाति सः (परमात्मा) वे० भा० न० १.१.१. **पुरोहिताः**=सर्वेषां हितकारिणः (अमात्यादयो भृत्याः) ९.२३. [पुरोहितः=पुर एनं दधति नि० २.१२. आदित्यो वाव पुरोहितः ऐ० ८.२७. वायुर्वा पुरोहितः ऐ० ८.२७. अग्निर्वाव पुरोहितः ऐ० ८.२७. अर्धात्मा ह वा एष क्षत्रियस्य यत् पुरोहितः ऐ० ७.२६.]

पुरोहितिः पुरस्ताद्धिता क्रिया ७.६०.१२. [पुरस्-हितिपदयोः समासः। हितिः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) क्तिन्]

पुरोहिते पुरस्ताद्धितं दधत्यौ (विद्युदन्तरिक्षे) ६.७०.४. [पुरस् उपपदे दधातेः क्तः। 'दधातेर्हिः' इति हिरादेशः]

पुर्वणीक पुरु बहु अनीकं सैन्यं यस्य तत्सम्बुद्धौ (अ०—विद्वन् राजपुरुष) १५.३६. बहूनां सम्भाजक (अग्ने=विद्वज्जन) ६.१०.२. पुरूणि अनेकानि सैन्यानि यस्य तत् सम्बुद्धौ (भूपते) ६.५.२. पुरवोऽनेकाः सेना यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जनाधिप) १.७९.५. [पुरु-अनीकपदयोः समासः। पुरु बहुनाम निघं० ३.१. अनीकम्=अन प्राणने (अदा०) 'अनिहृषिभ्यां किच्च' उ० ४.१७. सूत्रेण ईकन्]

पुलस्तये महाकायक्षेप्त्रे (जनाय) प्र०—अत्र पुल महत्त्वे धातोर्बाहुलकादौणादिकः कस्तिः प्रत्ययः १६.४३. [पुलं महत्त्वमसत गच्छति प्राप्नोतीति पुलस्तिः। पुलोपपदे अस गतिदीप्त्यादानेषु (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० तिः]

पुलुकामः बहुकामः (मर्त्यः) १.१७९.५. [पुलुकामः=पुरुकामः नि० ६.४.]

पुषम् पुष्टिकरम् (रयिं=धनम्) २५.४५. [पुष पुष्टौ (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

पुषा पुष्टिकर्त्ता (जगदीश्वरः) ४.१९. [पुष पुष्टौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० कनिन्प्रत्ययः]

पुषेयम् पुष्टो भवेयम् ४.२६. [पुष पुष्टौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

पुष्करसादः यः पुष्करे सीदति सः (जलचरजन्तुः) २४.३१. पुष्करोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरण्। पुष्करम् अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. पुष पुष्टौ (क्र्या०) धातोः 'पुषः कित्' उ० ४.४. इति करन्]

पुष्करस्रजम् विद्याग्रहणार्था स्रग् धारिता येन तम् (कुमारं=ब्रह्मचारिणम्) २.३३. पुष्पमालाधारिणम् (ब्रह्मचारिणम्) ऋ० भू० २५६, २.३३. [पुष्कर-स्रज्-पदयोः समासः। पुष्करं व्याख्यातम्। स्रज्=सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः 'ऋत्विग्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण कर्मणि क्विन् अमागमश्च निपात्यते]

पुष्करात् अन्तरिक्षात् १२.७३. **पुष्करे**=अन्तरिक्षे प्र०—पुष्करमित्यन्तरिक्षनाम निघं० १.३, १३.२. [पुष्करं व्याख्यातम्। पुष्करम् अन्तरिक्षम् पोषति भूतानि। उदकं पुष्करं पूजाकरं पूजयितव्यं वा! इदमपीतरत् पुष्करमेतस्मादेव, पुष्करं वपुष्करं वा नि० ५.१४.]

पुष्करिणीम् अल्पान् तडागान् ५.७८.७. [पुष्कर-प्राति० नित्ययोग इनिः। ततः स्त्रियां ङीप्]

पुंष्टम् रोगरहितत्त्वेन बलिष्ठम् भा०—पुष्टिमत् (जगत्) १६.४८. दृढम् (ऋत्=सत्याचरणम्) १.१०३.५. पोषण के अर्थ तत्पर (वधू) को सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२७. **पुष्टानाम्**=अरोगाणाम् (जनानाम्) १६.१७. **पुष्टे**=पुष्टियुक्ते व्यवहारे १.१६२.७. [पुष पुष्टौ (भ्वा०) क्तः। पुष्टेषु=पोषेषु नि० १३.४.]

पुष्टयः शरीरात्मबलानि २.२७.१२. **पुष्टिम्**=धातुसाम्योपचयम् १.७७.५. सर्वाऽवयवदृढत्वम् ४.३३.२. पोषणाऽर्हान् पदार्थान् २.१३.४. धातुसाम्याद् बलादियोगम् ६.२.१. पोषणम् ९.२५. **पुष्टिषु**=पुष्टिकरणेषु कर्मसु १.१६६.८. **पुष्टिः**=पुष्टिकरणम् १८.१०. धातुवृद्धिः २.४.४. शरीरेन्द्रियसौख्यवर्द्धिका १.६५.३. **पुष्टौ**=पोषणे ५.४१.३. **पुष्ट्यै**=रक्षणाय ३०.११. [पुष पुष्टौ (क्र्या०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। सरस्वती पुष्टिः पुष्टिपत्नी तै० २.५.७.४. सरस्वती पुष्टिः पुष्टिपतिः श० ११.४.३.१६. पुष्टिः खलु वै वाक् तै० सं० २.४.६.२. पुष्टिः पौष्णाः (पशुः) मै० ४.७.८. पुष्टिर्वै पूषा मै० ४.२.१०.]

पुष्टिमत् बहुविधा पुष्टिर्विद्यते यस्मिँस्तत् (वसु=विद्यासुवर्णादि धनम्) ३.१३.७. [पुष्टिप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

पुष्टिमान् प्रशस्तशरीरात्मबलसहितः (अग्निः=उपदेशको विद्वान्) १२.५९. [पुष्टिप्राति० प्रशंसायां मतुप्।

पुष्टिः=पुष पुष्टौ (क्र्या०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

पुष्टिम्भराय शरीराऽऽत्मबलयुक्ताय (शिष्याय) ४.३.७. ['पुष्टि' इत्युपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च' अ० ३.२.२६. सूत्रेण (चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थत्वात्) इन्-प्रत्ययः पूर्वपदस्य च मुमागमः]

पुष्टिवर्धनम् पुष्टेः शरीरात्मबलस्य वर्द्धनस्तम् (त्र्यम्बकं=उक्तार्थं रुद्रं जगदीश्वरम्) प्र०—अत्र नन्द्यादित्वाल्ल्युः प्रत्ययः ३.६०. यः पुष्ट्या वर्धयति तम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) २८.३२. यः पुष्टिं वर्धयति तम् (त्र्यम्बकं=रुद्रं परमेश्वरम्) ७.५९.१२. **पुष्टिवर्धनः**=शरीरात्मपुष्टेर्वर्धयिता (ईश्वरो विद्वान् वा) १.९१.१२. वर्द्धयतीति वर्द्धनः, पुष्टेर्वर्द्धनः पुष्टिवर्धनः (अग्निः=पूर्वोक्तो भौतिकः) ३.४०. पुष्टिं शरीरात्मबलं धातुसाम्यञ्च वर्द्धयतीति (परमात्मा) ३.२९. यः शरीरात्मनोः पुष्टिं वर्धयतीति (ब्रह्मणस्पतिः=जगदीश्वरः) १.१८.२. शरीर, इन्द्रिय, मन और आत्मा की पुष्टि का बढ़ाने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.३८, ऋ० १.६.२१.१२. [पुष्टि-वर्धनपदयोः समासः। पुष्टिरिति व्याख्यातम्। वर्धनः=वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' अ० ३.२.१४९. सूत्रेण युच्]

पुष्टिवर्धना यौ पुष्टिं वर्धयतस्तौ (इन्द्राग्नी=वाय्वग्नी) २१.२०. [पुष्टिवर्धनम् इति व्याख्यातम्। ततः प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः। पुष्टिवर्धनम्=पुष्टिकारकम् नि० १३.३५.]

पुष्टीः पोषणानि २.१२.५. [पुष्टिप्राति० द्वितीयाबहुवचनम्। पुष्टिः=पुष पुष्टौ (भ्वा०) धातोः क्तिन्-प्रत्ययः]

पुष्णः प्रजापोषकस्य (विदुषो जनस्य) १.१३८.१. [पुष पुष्टौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कनिन्]

पुष्पम् पोषितुं योग्यम् (विषयुक्तं शरीरावयवम्) १.१९१.१२. [पुष्प विकसने (दिवा०) धातोरच्। पुष्पं पुष्पतेः नि० ५.१४.]

पुष्पवतीः श्रेष्ठानि पुष्पाणि यासां ताः (ओषधीः) ११.४८. प्रशस्तानि पुष्पाणि यासां ताः (ओषधीः=सोमादीन्) ११.७७. [पुष्पप्राति० प्रशंसायां मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप्]

पुष्पिणीः बहुपुष्पाः (ओषधयः) १२.८९. बहूनि पुष्पाणि यासु ताः (अवनीः=पृथिवीः) २.१३.७. [पुष्पं व्याख्यातम्। पुष्पप्राति० भूम्न्यर्थे इनिः। ततः स्त्रियां ङीप्]

पुष्यतम् पालन पोषण करो सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३७. **पुष्यति**=पुष्टं करोति १.६५.१३. पुष्टो भवति १.८३.३. **पुष्यन्ति**=आनन्दन्ति १.८१.९. **पुष्यसि**=पोषयसि १.९४.६. **पुष्यसे**=पुष्टो भवेः प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम्, लेट्-प्रयोगोऽयम् ४.८. पुष्टो भवसि ५.५०.१. **पुष्यात्**=पुष्टङ्कुर्यात् २०.४७. पुष्टिं कुर्यात् ५.३७.५. पुष्टं भवेत् ४.२१.१. **पुष्यास्म**=पुष्टा भवेम २६.१९. **पुष्येम**=पुष्टा भवेम १.६४.१४. [पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लेटि, लटि, लङि च रूपाणि]

पुष्यता पुष्टिमाचरता (जनेन) ५.३४.५. **पुष्यन्**=पुष्यन्तौ (स्त्रीपुरुषौ) प्र०—अत्र विभक्ति-लुक् २.२७.१५. पुष्टं कुर्वन् (जनः) ४.२. [पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोः शतृ]

पुष्यन्ती पुष्टं कारयित्री (विट्=उत्तमा प्रजा) ७.५६.५. [पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

पुष्यसे पुष्टये ७.५७.५.

पुँश्चली या पुंभिश्चलितचित्ता व्यभिचारिणी (स्त्री) ३०.२२.

पुँश्चलूम् पुंभिः सह चलितचित्तां व्यभिचारिणीम् (स्त्रीम्) ३०.५.

पुंसः पुरुषस्य ७.६.१. पुरुषान् १.१६४.१६. पुंस्त्वयुक्तान् पुरुषार्थिनः (पुत्रान्) २५.४५. [पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'पातेर्डुम्सुन्' उ० ४.१७८ सूत्रेण डुम्सुन्]

पूतदक्षम् पूतं पवित्रं, दक्षं बलं यस्मिँस्तम् (मित्रं=सूर्यम्) प्र०—दक्ष इति बलनामसु पठितम् निघं० २.९, १.२.७. पवित्रबलम् (मित्रजनम्) ३३.५७. **पूतदक्षः**=पवित्रं दक्षो बलं यस्य सः (विद्वान् जनः) ३.१.३. [पूतदक्षपदयोः समासः। पूतः=पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्तः। दक्षः बलनाम निघं० २.९.]

पूतदक्षसा पूतं पवित्रं दक्षो बलं ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.६६.४. पवित्रं बलं याभ्यान्तौ (प्राणोदानवायू) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.२३.४. [पूतदक्षस्पदयोः समासे प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण]

पूतनाः शत्रुसेनाः ३.२४.१.

पूतबन्धनी या पूतान् पवित्रान् गुणान् बध्नाति गृह्णाति सा (मतिः=प्रज्ञा) ५.४४.९. [पूत-बन्धनीपदयोः

समासः । बन्धनी=बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्ल्युडन्तान् ङीप्]

पूतबन्धू पूताः पवित्रा बन्धवो ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ६.६७.४. [पूत-बन्धुपदयोः समासः]

पूतभृत् येन पूतं बिभर्त्ति तच्छुद्धिकरं शूर्पादिकम् १८.२१. [पूतोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप् । वैश्वदेवो वै पूतभृत् श० ४.४.१.१२.]

पूतम् पवित्रम् (कर्म) ४.१.१९. शुद्धो निर्मलो वा (सोमः=सोमलताद्योषधीनां गणो रसो वा) १९.३. **पूताय**=पवित्रकरणाय ३९.२. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्तः]

पूतासः शुद्धाः शोधिताश्च(सुताः=मूर्त्तिमन्तः पदार्थाः) १.३.४. पवित्राः (पदार्थाः) २०.८७. [पूतप्राति० जसोऽसुगागमः]

पूताः पवित्रकारिकाः (गिरः) १.७९.१०. [पूतप्राति० स्त्रियां टाप्प्रत्ययः]

पूतेव पवित्रेव (स्वधितिः=वज्र इव) ७.३.९. [पूता-इवपदयोः समासः]

पूयमानः पवित्रीकृतः (शुक्रः=वीर्यसमूहः) ८.५७. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः कर्मणि शानच्]

पूयमानाः पवित्राः सत्यः (धेनाः=वाचः) १७.९४. भा०—पवित्रीभूताः (धेनाः) १३.३८. पवित्रतां कुर्वाणाः (धेनाः=विद्यायुक्ता वाचः) ४.५८.६. [पूयमानप्राति० स्त्रियां टाप् । पूयमानं व्याख्यातम्]

पूरवः मनुष्याः ६.२०.१०. हे जीवो स० प्र० २३८, १०.४८.५. **पूरवे**=धार्मिकाय मनुष्याय प्र०—पूरव इति मनुष्यनाम निघं० २.३, ४.२१.१०. प्रपूरणाय सुखाय १.६३.७. अलं साधनाय मनुष्याय १.१३०.७. **पूरुम्**=पालकं सेनापतिम् ७.८.४. पालकं धारकं वा (सत्पुरुषम्) ७.१९.३. पूर्णप्रज्ञं मनुष्यम् ७.१८.१३. पूर्णबलं सेनाध्यक्षम् १२.३४. **पूरुः**=मनुष्यः ४.३८.३. मरणशीलो मनुष्यः ५.१७.१. **पूरौ**=पूर्ण-बले (जने=मनुष्ये) ६.४६.८. [पूरवः=पूरयितव्याः मनुष्याः नि० ७.२२. पूरवः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

पूरुष प्रयत्नशील (सुसन्तान) १२.७८. पुरि देहे शयान देहधारक वा (भिषक्) १२.८२. **पूरुषम्**=सर्वत्र पूर्णं परमात्मानम् ३५.४. अन्नादिना पूर्णं देहम् १२.७९. **पूरुषः**=परिपूर्णः परमात्मा ३१.५. पुमान् १२.९१. [पुरुष इति व्याख्यातम्। 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः ।

पूरुषघ्नम् पुरुषाणां हन्तारम्(प्राणिनम्) १.११४.१०. [पुरुषघ्नं व्याख्यातम् । 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः]

पूरुषत्वता उत्तमाः पुरुषा विद्यन्ते यस्मिँस्तेन (सत्कर्मणा) ४.५४.३. ['पुरुषत्वता' व्याख्यातम् । 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः]

पूर्णगभस्तिम् पूर्णा गभस्तयो रश्मयो यस्य सूर्यस्य तद्वद् वर्त्तमानम् (नरम्) ७.४५.४. [पूर्णा-गभस्तिपदयोः समासः । गभस्तयः रश्मिनाम निघं० १.५.]

पूर्णतरम् अतिशयेन पूर्णाऽऽभरणादिकम् १८.१०. पूर्णप्राति० अतिशायने तरप्]

पूर्णबन्धुरः यः पूर्णश्चाऽसौ बन्धुरश्च सः, पूर्णस्य जगतो बन्धुरो बन्धनहेतुर्वा (इन्द्रः=जगदीश्वरः सूर्यो वा) ३.५२. **पूर्णबन्धुरैः**=पूर्णैः सत्यैः प्रेमबन्धनैर्युक्तः (इन्द्रः=सेनाध्यक्षः) १.८२.३. [पूर्ण-बन्धुरपदयोः समासः । बन्धुरः=बध्नाति मार्दवेनेति विग्रहे बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः 'मद्गुरादयश्च' उ० १.४१. सूत्रेण उरच्]

पूर्णम् समग्रशस्त्राऽस्त्रसामग्री-सहितम् (रथम्) १.८२.४. अलङ्कारि (कर्म्म) १८.१०. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्बाहु० नक्-प्रत्ययः । सर्वं वै पूर्णम् श० ४.२.२.२. सर्वमेतद्यत्पूर्णम् श० ९.२.३.४३. पूर्णमित्युदकनाम निघं० १.१२. पूर्ण एष यत् संवत्सरः जै० २.३९३. पूर्णः प्रजापति तै० सं० ५.१.९.१.]

पूर्णा पूर्णौ (गभस्ती=हस्तौ) ७.३७.३. [पूर्णप्राति० प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

पूर्णा परिपूर्णा अ०—होतव्यद्रव्येण पूर्णा (दर्वि) ३.४९. [पूर्णप्राति० स्त्रियां टाप्]

पूर्तम् पूर्त्तिकरम् (सत्याचारम्) ६.१६.१८. पूर्णां सामग्रीम् १८.६४. ऐश्वर्यादि की पूर्णता सं० वि० २१०, अथर्व० ९.६.३.१. मनसा वाचा कर्मणा सम्यक् पुरुषार्थेनैव सर्ववस्तुसम्भारैश्चोभयाऽनुष्ठानपूर्त्तिम् ऋ० भू० १०५, अथर्व० १२.५.१०. यज्ञ की सामग्री पूरी करना सं० वि० १४५, अथर्व० १२.५.१०. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः क्तः । 'न ध्याख्यापॄ०' इति निष्ठानत्वनिषेधः]

पूर्धि पूरय ७.२४.६. पिपूर्द्धि प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् 'श्रुशृणुपॄ०' इति हेर्धिः १.३६.१२. प्रीणीहि, सर्वाणि सुखानि सम्प्राप्नुहि १.४२.९. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपो लुक् । पूर्धि याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९. पूर्द्धि पूरय देहीति वा नि० ४.३.]

पूर्पतिम् पुरां पालकम् (सभेशम्) १.१७३.१०. [पुर्-पतिपदयोः समासः । 'अन्येषामपि दृश्यते' इति पूर्वपदस्य दीर्घः]

पूर्भित् पुरां भेत्ता (इन्द्रः=राजपुरुषः) ३.३४.१. **पूर्भिदम्**=शत्रूणां नगराऽभिदारकम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.५१.२. [पुर् इत्युपपदे भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पूर्भिद्ये शत्रूणां पुराणि भिद्यन्ते यस्मिन् सङ्ग्रामे तस्मिन् १.११२.१४.

पूर्भिः पूर्णाभिः पालनसमर्थाभिः क्रियायुक्ताभिरन्नमयादिभिः (क्रियाभिः) १.५८.८. पूरणपालनसुखयुक्तैर्नगरैः १.१६६.८. नगरैः ५.६६.४. **पूर्षु**=पुरीषु २.३५.६. **पूः**=पुररूपा (पृथ्वी) १.१८९.८. नगरीव रक्षिका (मही=राज्ञी) ७.१५.१४. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः क्विप्प्रत्ययः]

पूर्येथाम् अ०—पूर्णौ कुर्यातम् ५.२८. [पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लिङ् । 'वहुलं छन्दसि' इति शपो लुक्]

पूर्व-ऋषयः येऽधीतवन्तो वेदार्थविदो विद्वांसः १.४८.१४. [पूर्व-ऋषिपदयोः समासः]

पूर्वकृत् पूर्वं करोतीति पूर्वकृत् (इन्द्रः=सूर्यः) २०.३६. [पूर्वोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पूर्वचितः पूर्वैः प्राप्तविज्ञानादिभिर्वृद्धाः (भा०—पूर्ववृद्धजनाः) २७.४. [पूर्वोपपदे चिञ् चयने (स्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । तुगागमः]

पूर्वचित्तये पूर्वा चाऽसौ चित्तिश्चयनं च तस्यै १.१५९.३. पूर्वैः कृतचयनाय १.११२.१. पूर्वेषां संज्ञानाय संज्ञापनाय वा १.८४.१२. **पूर्वचित्तिम्**=पूर्वा चित्तिश्चयनं यस्य तम् (अग्निं=विद्युतम्) १३.४३. **पूर्वचित्तिः**=पूर्वा प्रथमा चित्तिः संज्ञानं यस्याः सा (अप्सराः) १५.१९. पूर्वा चाऽसौ चित्तिश्च प्रथमा स्मृतिविषया (द्यौः=वृष्टिः) २३.११. प्रथमं चयनम् भा०—प्रथमा परिणतिः (द्यौः=अतीव सूक्ष्मा विद्युत्) २३.५४. पूर्वस्मिन्ननादौ सञ्चयनाऽऽख्या (द्यौः=विद्युत्) २३.५३. [पूर्व-चित्तिपदयोः समासः । चित्तिः=चिती संज्ञाने (भ्वा०) स्त्रियां क्तिन्]

पूर्वजाय पूर्वं जाताय ज्येष्ठाय भ्रात्रे, ब्राह्मणाय वा १६.३२. [पूर्वोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः प्रत्ययः]

पूर्वजे पूर्वस्माज्जाते (द्यावापृथिवी=भूमिविद्युतौ) ७.५३.२. [पूर्वजप्राति० स्त्रियां टाप्]

पूर्वतराम् अतिशयेन पूर्वाम् (उषसं=प्रभातसमयम्) १.११३.११. [पूर्वप्राति० अतिशायने तरबन्तात् स्त्रियां टाप्]

पूर्वथा पूर्वैः प्रकारैः १.१३२.४. पूर्वमिव ५.४४.१. पूर्वाणि (ब्रह्माणि=अन्नानि धनानि वा) १.८०.१६. पूर्वैरिव (शिल्पिभिरिव) ३.२९.१. पूर्वा इव ५.८०.६. पूर्वेषां योगिनामिव ७.१२. पूर्व इव प्र०—अत्र प्रयत्नपूर्वेत्याकारकेण योगेनेवाऽर्थे थाल् प्रत्ययः १.९२.२. [पूर्वप्राति० इवार्थे 'प्रत्नपूर्वविश्वेमात् थाल् छन्दसि' अ० ५.३.१११. सूत्रेण थाल्प्रत्ययः । पूर्वथा=पूर्व इव नि० ३.१६.]

पूर्वपाः यः पूर्वान् पाति सः (विद्वान् जनः) ४.४६.१. [पूर्वोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पूर्वपीतये पूर्वं पीतिः पानं सुखभोगो यस्मिन् तस्मा आनन्दाय १.१९.९. पूर्वस्य पानाय १.१३५.१. पूर्वेषां पानायेव १.१३४.१. पूर्वेषां पीतिः पानं तस्यै १.१३४.१. [पूर्व-पीतिपदयोः समासः । पीतिः=पा पाने (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । पूर्वपीतये पूर्वपानाय नि० १०.३६.]

पूर्वपेयम् पूर्वैः पातुं योग्यम् (अन्धसः=अन्नम्) १.१३५.४. [पूर्व-पेयपदयोः समासः । पेयम्=पा पाने (भ्वा०) धातोर्यत्]

पूर्वभाजम् पूर्वैर्भजनीयम् (बृहस्पतिं=सूर्यम्) ४.५०.७. **पूर्वभाजः**=ये पूर्वान् भजन्ति ते (कवयः=मेधाविजनाः) ५.७७.१. [पूर्वोपपदे भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'भजो ण्विः' इति ण्विः]

पूर्वम् प्रथमम् (धार्मिकं जनम्) ६.४७.१५. प्राक् १.३४.१०. पुरस्सरं पूर्णम् (ब्रह्म) ४०.४. **पूर्वस्य**=पूर्णस्य (पितुः=विद्युतः) १७.६०. **पूर्वः**=शुभगुणैः पूर्णः (कण्वः=मेधावी जनः) १.१३९.९. अर्वाग् वर्त्तमानः (सूर्यः) १.६०.२. पालकः प्रथमः (सूर्यः) ३.३८.५. पूर्वविद्यः (प्राचीनो विद्वान्) ३.१७.५. **पूर्वाणि**=सनातनानि (अपांसि=कर्माणि) ४.१९.१०. प्राचीनानि (साधनानि) ५.३१.६. **पूर्वे**=सम्मुखे वर्त्तमाने (संसारे) १.१२४.५. पूर्वस्मिन् (काले) २२.२. **पूर्वेभ्यः**=अधीतपूर्वविद्येभ्यः (विद्वज्जनेभ्यः) १.१७५.६. कृतयोगाभ्यासपुरस्सरेभ्यः (जनेभ्यः) १.७६.६. **पूर्वेषाम्**=अतीतानां विदुषाम् (जनानाम्) ३४.४९. [पूर्व पूरणे (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः]

पूर्वया पूर्वैः स्वीकृतया (निविदा=वेदवाचा) २५.१६. सनातन्या (वेदवाण्या) १.८९.३. प्राचीनया (वेदवाचा) १.९६.२. **पूर्वाम्**=प्राचीम् (प्रदिशम्) १.९५.३. **पूर्वा**=प्रथमा भा०—पूर्वभाविनी (उषाः) ३३.९३. पूर्णाऽग्रस्था वा (विद्युत्) ६.५९.६. **पूर्वासाम्**=ज्येष्ठानाम (उषसाम्) १.१२४.९. **पूर्वासु**=प्राचीनतमासु सनातनीषु प्रजासु ३.५५.५. **पूर्वाः**=अतीताः (उषसः) १.४४.१०. **पूर्वे**=प्रथमतो वर्त्तमाने (द्यावापृथिवी=प्रकाशभूमीव संगते) १७.२५. [पूर्वा=पुराणनाम निघं० ३.२७. पूर्वप्राति० स्त्रियां टाप्]

पूर्वयावा प्राचीनराजनीतिं प्राप्तः (इन्द्रः=सर्वाधीशो जनः) ३.३४.२. (पूर्वोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्वनिप् प्रत्ययः]

पूर्ववत् यथा पूर्वे विद्वांसो विद्यादानार्थं गच्छन्ति तद्वत् १.३१.१७. [पूर्वप्राति० तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः]

पूर्वसूनाम् याः पूर्वमपत्यानि सूयन्ते तासाम् (स्त्रीणाम्) २.३५.५. प्रथम प्रसूत हुई स्त्रियों का सं० वि० १०४, २.३५.५. [पूर्वोपपदे षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः क्विप्]

पूर्वहूतिम् पूर्वा हूतिराह्वानं यस्य तम् (पतिम्) १.२२.२. **पूर्वहूतौ**=पूर्वेषां सत्कर्त्तव्यानां वृद्धानामाह्वाने ६.६४.५. पूर्वेषां हूतिः प्रशंसा यस्मिन् येन वा तस्याम् (शिल्पविद्यायाम्) ७.३५.५. पूर्वेषां विद्यावृद्धानां हूतिराह्वानं यस्मिन् गृहाश्रमे तस्मिन् १.१२३.२. पूर्वैर्विद्वद्भिः कृतायां स्तुतौ ७.३९.२. [पूर्व-हूतिपदयोः समासः। हूतिः=ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। पूर्वहूतौ=पूर्वस्यामभिहूतौ नि० ५.२७.]

पूर्वहूतौ पूर्वैः शब्दितौ (वायुसूर्यौ) ३३.४४. पूर्वैः शिष्टैर्विद्वद्भिराहूतौ (श्रेष्ठौ मनुष्यौ) ८.५९. [पूर्व-हूतपदयोः समासः। हूतः=ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तः]

पूर्वः पूर्वः आदिम आदिमः (यजमानः=सज्जनः) ५.७७.२. [पूर्वः पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

पूर्वा पूर्वौ (राजसेनाध्यक्षौ) ४.३८.१. [पूर्वप्राति० प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

पूर्वानिव यथा पूर्वांस्तथा वर्त्तमानान् (सखीन्) ५.५३.१६. पूर्वान्-इवपदयोः समासः]

पूर्वासः अस्मत्तो वृद्धाः (पितरः=प्रजाशोधका जनाः) १९.६८. [पूर्वप्राति० जसोऽसुगागमः]

पूर्वी पूर्व्यौ (मातरा=मातापितरौ) ७.२.५. [पूर्वी प्राति० प्रथमाद्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः]

पूर्वी पूर्व्यं सनातन्यः (रातयः=दानानि, ऊतयः=रक्षणादीनि) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति पूर्वसवर्णादेशः १.११.३. पूर्वभूताः प्रजाः १.७०.१. प्राक्तनैर्धार्मिकैः प्राप्तशिक्षाः (प्रजाः) ८.४६. [पूर्वीप्राति० प्रथमाबहुवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः]

पूर्वीभिः पुरातनीभिः (शरद्भिः) १.८६.६. प्राचीनाभिः प्रजाभिः सह ५.५६.४. **पूर्वीषु**=प्राचीनासु प्रजासु ५.३५.६. **पूर्वीः**=प्राचीनाः सनातनीः प्रजाः १.५६.१. प्रागुत्पन्नाः प्रजाः ६.३९.४ पूर्वे स्थिताः (अपः=जलानि) ७.२१.३. पूर्वेणेश्वरेण कृताः (प्रजाः) ३.१५.३. पूर्वं वर्त्तमानाः प्रजाः ३.७.९. पूर्वैर्न्यायाधीशैः प्रापिताः (विशः=प्रजाः) १७.२४. पूर्णा बह्वचो विद्याः ३.५.२. पूर्वैः प्राप्ताः (इषः=इच्छाः) ३.३०.१८. पूर्वं सम्पादिताः (आहुतयः) ३.४.५. पुरातनीः (गिरः) १.५९.४. पूर्वं प्राप्ताः (इषः=प्रजाः) १.१८१.६. प्राचीना वेदोदिताः (प्रणीतयः=प्रकृष्टा नीतयः) ६.४५.३. पूर्वतनीः (उषसः=प्रभातवेलाः) ४.१९.८. पूर्वंभूताः (चर्षणीः=मनुष्यादिप्रजाः) ३.४३.२. पूर्वेषां सम्बन्धिनीः (पुरः) १.६३.२. प्राचीनाः पितापितामहादिभ्यः प्राप्ताः (विशः=विदुषीः प्रजाः) ७.३१.१०. पुरातन्यः (ऊतयः=रक्षाः) ७.२६.४. पूर्वैर्विद्वद्भिः सुशिक्षयोत्तमाः कृताः (तविषीः=सेनाः) २०.४७. पूर्व वर्त्तमान (शरदः=शरद् ऋतुओं को) स० प्र० ११०, १.१७९.१. पूर्णसुखान् (इषः=अन्नादीन्) ६.३९.५. [पूर्वीशब्दस्य रूपाणि]

पूर्वे पूर्वं विद्या अधीतवन्तोऽनूचाना विद्वांसः १.६२.२. पूर्वजाः (पितरः=ज्ञानिनो जनकाः) १९.५१. प्रथमजाः (पितरः) ३.५५.२. इतः पूर्वसम्भवाः (देवाः=विद्वांसः) ३१.१६. पूर्णविद्यया सर्वस्य पोषकाः (विद्वज्जनाः) १७.२८. अधीतपूर्णविद्याः (देवाः=विद्वांसो जनाः) १७.२९. शुभगुणैः पूर्णाः (मेधाविनो जनाः) १.१३९.९. प्राक्तना जनाः १३.३१. प्राचीनाः (विद्वांसः) ५.२५.२. आदिमाः (आप्ताः पुरुषाः) ६.१९.४. [पूर्वप्राति० प्रथमाबहुवचनम्। 'पूर्वपरावर०' अ० १.१.३४. सूत्रेण सर्वनामसंज्ञा]

पूर्वेभिः अधीतविद्यैर्वर्त्तमानैः प्राक्तनैर्वा विद्वद्भिः (ऋषिभिः=कारणस्थैः प्राणैः) १.१.२. ये वेदादिशास्त्राण्यधीत्य विद्वांसो भूत्वाऽध्यापयन्ति ते प्राचीनास्तैः ऋ० भू० ७५, १.१.२. प्रथमोत्पन्नैः (ऋषिभिः) ऋ० भू० ७७,

१.१.२. पूर्वकालाऽवस्थास्थैः कारणस्थैः प्राणैः (ऋषिभिः) ऋ० भू० ७८, १.१.२. विद्या पढ़े हुए प्राचीन (ऋषियों) से आर्याभि० १.४, ऋ० १.१.१.२. [पूर्वप्राति० तृतीया-बहुवचने भिसः स्थाने 'बहुलं छन्दसि' इति ऐस् न भवति]

पूर्वौ प्रथमाऽधीतविद्यौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.६५.३. [पूर्वप्राति० प्रथमाद्विवचनम्]

पूर्व्ये पूर्वैर्विद्वद्भिः कृतो विद्वान् तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) २.२.६. **पूर्व्यम्**=पूर्वैः कृतं निष्पादितम् (पाथः=अन्नमुदकं वा) ३.३१.६. पूर्वैर्योगिभिः प्रत्यक्षीकृतम् (ब्रह्म=बृहद्व्यापकमीश्वरम्) ११.५. पूर्वं लब्धम् (पाथः=अन्नम्) ३३.५६. पूर्वैर्विद्वद्भिरुपदिष्टम् (वचः=वचनम्) ३.१०.५. पुरातनं सनातनम् (ब्रह्म) ऋ० भू० १५७, ११.५. पूर्वम् (वाजं=वेगम्) ४.१६.८. पूर्वैं राजभिः कृतसत्कारम् (राजानम्) ५.३५.६. सनातन (वसु=ज्ञानादि धन को) स० प्र० २३८, १०.४६.१. **पूर्व्यः**=पूर्वैः साक्षात्कृतः (जगदीश्वरः) १.७४.१. पूर्वैः कृतविद्यः (विद्वज्जनः) ३३.४. पूर्वेषु विद्वत्सु कुशलः (अग्निरिव विद्वान्) ३.११.३. सबसे पूर्व विद्यमान (ईश्वर) स० प्र० २३८, १०.४८.१. **पूर्व्यान्**=पूर्वैर्निष्पादितान् (सोमान्=सोमैश्वर्यादियुक्तान् रसान्) ३.३६.३. **पूर्व्याय**=पूर्वेषु कुशलाय (जनाय) ४.४४.३. पूर्वैर्विद्वद्भिः सुशिक्षया निष्पादिताय (विद्यार्थिजनाय) १.१५६.२. पूर्वेषु लब्धविद्याय (विदुषे जनाय) ५.१५.१. पूर्वेषु भवाय (जनुषे=जन्मने) ५.४५.३. **पूर्व्याः**=पूर्वेषु कुशलाः (विद्वांसो जनाः) ३.५४.४. पूर्वैर्विद्वद्भिः सेविताः (निविदः=वाचः) २.३६.६. **पूर्व्यम्**=पूर्वैर्योगिभिः प्रत्यक्षीकृतम् (ब्रह्म) ६.४४.१३. पूर्वलब्धम् (पाथः=अन्नम्) ३३.५६. **पूर्व्याणि**=पूर्वैर्विद्वद्भिः कृतानि (कर्माणि) १.११७.२५. पूर्वैः साक्षात्कृतानि (धामानि=जन्मनामस्थानानि) ४.५५.२. पूर्वनिर्मितानि वस्तूनि ६.४.३. (पूर्वप्राति० कृतार्थे कुशलार्थे लब्धार्थे वा यत् प्रत्ययश्छान्दसः पूर्व्यमिति पुराणनाम निघं० ३.२७. पूर्वप्राति० वा 'पूर्वैः कृतमिनयौ च' अ० ४.४.१३३. सूत्रेण कृतार्थे यः प्रत्ययः]

पूर्व्या पूर्वैः कृतेषु कुशलौ (राजामात्यौ) ४.४४.५. [पूर्वप्राति० कृतार्थे कुशलार्थे वा यत् । पूर्व्यप्राति० प्रथमा-बहुवचनस्याकारादेशः 'सुपां सुलुक्' सूत्रेण]

पूर्व्या पूर्वैः कृतानि (विद्याप्रचाररूपाणि कार्याणि) १.११७.४. प्राचीनानि (कृतानि=कर्माणि) २.११.६. पूर्वैः राजभिः कृतानि (व्रतानि=कर्माणि) ७.६.२. [पूर्वप्राति० कृतार्थे 'पूर्वैः कृतमिनयौ च' इतिः यः । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

पूर्व्या पूर्वैर्विद्वद्भिर्निष्पादिता (सुन्दरी स्त्री) ३.३६.२. **पूर्व्याभिः**=पूर्वैः सेविताभिः (गीर्भिः) ६.४४.१३. [पूर्व्यमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

पूर्व्यासः पूर्वैराप्तैः सेविताः (पन्थाः=मार्गाः) ३४.२७. [पूर्व्यमिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुगागमः]

पूर्व्येभिः पूर्वेषु साधुभिः (स्तोमेभिः=प्रशंसितैः कर्मभिः) ३.३२.१३. पूर्वैः कृतैः (विज्ञानादिभिः) १.११७.१४. [पूर्व्यमिति व्याख्यातम् । ततो भिस ऐसादेशो न भवति 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

पूषणम् पुष्ट्यौषध्यादिसमूहप्रापकं चन्द्रलोकम् प्र०—पूषेति पदनामसु पठितम् निघं० ५.६. अनेन पुष्टिप्राप्त्यर्थश्चन्द्रो गृह्यते १.१४.३. पुष्टिकरमोषधिगणम् ७.४४.१. पोषकम् (विद्वज्जनम्) १.१८६.१०. पुष्टिकर्त्तारम् (ईश्वरम्) ३३.४६. पुष्टिकरं भोगम् ३४.३४. पुष्टिम् २५.३. शरीराऽऽत्मनोः पोषयितारम् (सेनाध्यक्षम्) १.१०६.४. सभासेनाध्यक्षम् १.४२.१०. **पूषन्**=विद्याशिक्षाभ्यां पुष्टिकर्त्तः (विद्वज्जन) १.६०.५. पोषक (शिष्य जन) १.१८४.३. पालक (राजन्) ६.५४.६. भूमिरिव पुष्टियुक्त (विद्वज्जन) ६.५८.३. पुष्टिकारक (अ०—परमेश्वराऽऽप्तविद्वज्जन वा) ३४.४१. हे वृद्धिकारक पुरुष सं० वि० १३६ अथर्व० १४.२.३८. पोषयतीति पूषा सूर्यलोकः प्र०—अत्राऽन्तर्गतो णिच् 'श्वन्नुक्षन्पूषन्-प्लीहन्' उ० १.१५६. अनेनाऽयं निपातितः १.२३.१३. **पूषा**=यः स्वाभिव्याप्त्या सर्वान् पदार्थान् पोषयति स परमेश्वरः १.२३.१४. पुष्टिकर्त्ता (परमेश्वरः) ऋ० भू० २०२, ऋ० ८.१.२३.७. पुष्टिकरो दुग्धादिः ५.५१.११. पुष्टिकरब्रह्मचर्यादिव्यवहारः ७.३५.६. पोषको वैद्यः १०.६. भूमिवत् पुष्टः पुष्टिकर्त्ता वा (युवा नरः) ६.५८.४. भूमिरिव पोषिका (स्त्री) ३८.३. चन्द्र इव सर्वस्य पोषकः (भा०—सर्वस्य पालको राजा) ६.३२. पोषणप्रद (ईश्वर) आर्याभि० २.५०, २५.१८. **पूष्णः**=पृथिव्याः प्र०—'पूषेति पृथिवीनामसु पठितम्' निघं० १.१, ६.६. पुष्टिकर्त्र्या भूमेः १४.२५. पूर्णबलस्य (पुरुषस्य) २०.३. पुष्टिनिमित्तस्य प्राणस्य ६.१. पुष्टिकरस्याऽऽदित्यस्य ६.१८. सोमाद्योषधिगणस्य ६.३०. पुष्टिकर्त्तुर्वैद्यस्य ६.३८. पुष्टिकारिकायाः पृथिव्याः ५.२२. पुष्टिमतो वीरस्य ५.२६. पुष्टेः २५.२७. पुष्टिकर्त्र्याः (विद्युतः) ११.६. पुष्टिहेतोः समानस्य वायोः

२.११. पुष्टिहेतोर्वायोः प्र०—वृषा पूषा शत० २.५.१.११, १.२४. पोषकस्य वायोर्धारणपोषणाभ्यामिव ६.३०. **पूष्णा**=पृथिव्या प्र०—पूषेति पृथिवीनाम निघं० १.१, १०.३०. पुष्टेन स्वीकीयेन सैन्येन ११.१५. **पूष्णे**=पुष्टिकरणाय ४.७. पुष्टिकराय (पुरुषाय) ३८.१५. पोषणाय १.१२२.५. प्राणपशुपालनाय १०.५. पोषकाय (शिष्याय) ४.३.७. पुष्टिकर्त्रे (भा०—वायुशुद्धये) २२.२०. पुष्टाय (पदार्थाय) २२.२०. [पूष पुष्टौ (क्वचिद् वृद्धौ पाठः) (भ्वा०) धातोः 'श्वनुक्षन्पूषन्०' इति कनिन् । पूषा पृथिवीनाम निघं० १.१. पदनाम निघं० ५.६. पूषेत्यपरं सोऽदन्तकः । 'अदन्तकः पूषा' इति च ब्राह्मणम् नि० ६.३१. पूषा स शौद्रं वर्णमसृजत पूषणमियं (पृथिवी) वै पूषेयं हीदं सर्वं पुष्यति यदिदं किं च श० १४.४.२.२५. अयं वै पूषा योऽयं पवतेऽएष हीदं सर्वं पुष्यति श० १४.२.१.९. पूषाऽपोषयत् तै० १.६.२.२. पुष्टिर्वै पूषा तै० २.७.२.१. असौ वै पूषा योऽसौ (सूर्यः) तपति कौ० ५.२. अन्नं वै पूषा कौ० १२.८. पशवो वै पूषा श० १३.१.८.६. पूषा वै पशूनामीष्टे श० १३.३.८.२. पूषा विशां विट्पतिः तै० २.५.७.४. प्रजननं वै पूषा श० ५.२.५.८. पूषा वै पथीनामधिपतिः श० १३.४.१.१४. पूषा वै श्लोण्यस्य भिषक् तै० ३.९.१७.२. (श्रियः) भगम् योषा वै सरस्वती वृषा पूषा श० २.५.१.११. पूषा वै देवानां भागदुघः श० ५.३.१.९. इयं पृथिवी वै पूषा मै० २.५.५.३. श० ६.३.२.८. पूषा भगं भगपतिः श० ११.४.३.१५. पूषा विश्ववेदाः मै० २.६.९. पूषा पूषा वै श्लोण्यस्य भिषक् तै० ३.९.१७.२. पूषा हि सनीनामीशे काठ० २३.६. पूष्ण एकादशकपालः मै० २.६.१३. पूष्णः करम्भः तै० १.५.११.१३. श० ४.२.५.२२. प्रतिष्ठ पूषा तै० सं० ५.३.४.४. [योषा वै सरस्वती वृषा पूषा श० २.५.१.११रेवती नक्षत्रं, पूषा देवता तै० सं० ४.४.१०.३.]

पूषणा सर्वेषां पोषकम् (सज्जनम्) ६.५७.१. [पूषणमिति व्याख्यातम् । 'सुपा सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

पूषण्वते बहवः पूषणः पुष्टिकरा विद्यन्ते यस्य तस्मै (राज्ञे) ३.५२.७. बहवः पूषणः पुष्टिकर्त्तारो गुणा विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मै (इन्द्राय=धनाय) १.१४२.१२. **पूषण्वन्तम्**=बहुपुष्टियुक्तम् (इन्द्रं=स्वकीयं जीवस्वरूपम्) २८.२७. **पूषणवन्तः**=बहवः पूषणो विद्यन्ते येषान्ते (ऋभवः=मेधाविसज्जनाः) ३.५४.१२. **पूषण्वान्**=पूषणः पुष्टिकरा गुणा विद्यन्ते यस्मिन् सः (अग्निः=जनः) २१.१५. अरिशक्तिनिरोधको वीरः (सेनाध्यक्षः) १.८२.६. [पूषणमिति व्याख्यातम् । पूषन्प्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

पूषरातयः पुष्टे रातिं दानं येषां ते (मरुद्गणाः=मनुष्याणां समूहाः) २.४१.१५. पूष्णः सूर्याद्रातिर्दानं येषान्ते (मरुद्गणाः) १.२३.८. [पूषन्-रातिपदयोः समासः । 'पूषन्' इति व्याख्यातम् । रातिः=रा दाने (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

पूषेव पुष्टिकर्त्ता सूर्य इव १.१८१.९. भूमिरिव ६.६१.६. [पूषा-इवपदयोः समासः]

पृक्षप्रयजः ये पृक्षेण शुभगुणैरार्द्रीभावेन प्रयजन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ३.७.१०. [पृक्षोपपदे प्रपूर्वाद् यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः क्विप् । पृक्षमिति व्याख्यास्यते]

पृक्षम् सुखैः सेचकम् (विद्वांसम्) १.१२९.२. सम्पृक्तारम् (न्यायाधीशम्) १.१२७.५. अन्नम् ६.६२.४. सेचनीयम् (क्षेत्रम्) २.३४.३. **पृक्षस्य**=सर्वत्र सम्बद्धस्य सम्पृक्तस्य (विदुषो जनस्य) ६.८.१. **पृक्षः**=सम्पर्कः ४.४४.२. **पृक्षाय**=सेचनाय २.१३.८. **पृक्षाः**=सम्पर्चनीयाः (प्रजाजनाः) ६.३५.४. **पृक्षे**=सम्पर्के १.१८३.२. पृचन्ति संयुञ्जन्ति यस्मिन् (आणौ=सङ्ग्रामे) १.६३.३. जलादिभिः सिक्ते (पृथिवीमण्डले) २.३४.४. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्बाहु० औणा० क्सः प्रत्ययः । पृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्वा क्सः]

पृक्षः सम्पर्काः ५.७३.८. सम्बन्धिनः (जनाः) ४.४३.५. सम्पर्चनीयाः (प्रजाजनाः) ६.३५.४. [पृक्ष इति व्याख्यातम् । वचनव्यत्ययः]

पृक्षः सम्पर्चनीयमन्नम् ७.३६.५. सम्पृक्तम् (शर्धः=बलम्) २.१.६. विद्यासम्पर्चनम् २.१.१५. पृङ्क्ते येन तत् (अ०—विद्यासम्पर्कम्) प्र०—अत्र पृचीधातोः 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' बाहुलकात् सुडागमश्च १.३४.४. सुखसम्पर्कनिमित्तं विज्ञानम् १.४७.६. संस्पृष्टव्यमन्नादिकम् ४.२३.९. ज्ञापयितुमिष्टमन्नम् १.१७८.४. प्रष्टव्यम् (वपुः=सुन्दरं रूपम्) १.१४१.२. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोरौणादिकोऽसुन् बहुलवचनाच्च सुडागमः । पृक्ष इत्यन्ननाम निघं० २.७. पृक्षे इति संग्रामनाम निघं० २.१७.]

पृक्षः याः पृचन्ते विद्यासम्पर्कं कुर्वन्ति ताः पुत्र्यः १.७१.७. सम्प्राप्तव्याः (इषः=अन्नाद्याः) ६.६३.७. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्बाहु० औणा० क्सः । लिङ्गवचनयोश्च व्यत्ययः]

पृक्षयामेषु पृच्छ्यन्ते ये ते पृक्षास्तेषामिमे यामास्तेषु (जिज्ञासुषु) प्र०—अत्र पृच्छधातोर्बाहुलकादौणादिकः क्सः प्रत्ययः १.१२२.७. [पृक्ष-यामपदयोः समासः। पृक्षः=प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोर्बाहु० क्सः]

पृक्षासः आर्द्रीभूताः (विद्वांसो जनाः) ३.७.८. सम्पर्काः (व्रतपाः=विद्वज्जनाः) ३.४.७. सम्बद्धाः (वायु-जलविद्युतः) ४.४५.१. संसिक्ताः (सूर्यकिरणाः) ४.४५.२. [पृक्ष इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

पृक्षुधः प्रकर्षेण क्षोधितुं भोक्तुमिष्टाः (वीरुधः=लताः) प्र०—क्षुध बुभुक्षायाम्, अतः कर्मणि क्विप्, पृषोदरादित्वात् पूर्वसम्प्रसारणञ्च १.१४१.४. [प्र+क्षुध बुभुक्षायाम् (दिवा०) धातोः कर्मणि क्विप्। पूर्वपदस्य सम्प्रसारणं च पृषोदरादित्वात्]

पृङ्क्त बध्नीत, संसर्गं कुरुत १९.११: **पृङ्क्तम्**=सम्बध्नीतम् ६.६८.८. संयोजयतम् २.३७.५. स्पर्शं कुरुतम् ९.४. सम्पृङ्क्तम् १.१०९.४. **पृङ्ग्धि**=सम्बधान २.२४.१५. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लोट्]

पृचः कामनाः ५.७४.१०. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः कर्मणि क्विप्]

पृचीमहि सम्बध्नीयाम १.१२९.७. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लिङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

पृच्छ सन्देहान् दृष्ट्वोत्तराणि गृहाण १.४.४. **पृच्छत**=प्रश्नों को पूछो आर्याभि० २.३६, १७.२०. **पृच्छम्**=पृच्छामि २३.५७. **पृच्छसे**=पृच्छ (अत्र लेट्) ३३.२७. **पृच्छै**=पृच्छेयम् ४.१८.२. [प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लङ् लेट् च। लङि अटोऽभावः।

पृच्यताम् सम्बध्यताम् २०.२७. **पृच्यते**=सम्बध्यते ३.३४. संयुज्यते १.१०३.१. **पृच्यन्ताम्**=परिपच्यन्ताम् १०.४. मेल्यन्तां पृच्यन्ते वा युक्त्या वैद्यकशास्त्ररीत्या १.२१. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः कर्मणि लोट्।

पृञ्चता सम्पर्चकौ (नरौ) १.४७.८. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

पृञ्चतीः स्पर्शयन्त्यः (अम्बयः=रक्षणहेतव आपः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति पूर्वसवर्णादेशोऽन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२३.१६. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः शत्रन्तात् ङीप्]

पृञ्चते सम्बध्नाति १.१२८.५. **पृञ्चन्ति**=सम्बध्नन्ति ५.७४.१०. **पृञ्चीत**=सम्बध्नीत १.४०.८. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लिङ्। 'पृञ्चते' प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

पृण पूरयति ३.१७. पूरय प्र०—अत्राऽन्तर्भावितणिजर्थः ५.२७. योजय ६.२१. तर्पय १२.५४. सुखय १५.५६. पिपूर्द्धि १५.५६. **पृणत**=तृप्यत २.१४.१०. पूरयत २.१४.११. **पृणताम्**=सुखयतु ३.५०.१. **पृणति**=सुखयति ३.३६.६. **पृणते**=पालयति ७.३२.८. **पृणध्वम्**=पालयध्वम् ३.३३.१२. पूरयत ७.१६.११. पूरयध्वम् १.१६२.५. सुखयत २५.२८. **पृणन्ति**=सुखयन्ति २.३५.३. पूरयन्ति ५.८५.६. पिपुरति ३३.१३. सुखयेयुः १.५२.४. पालयन्ति विद्याः पूरयन्ति वा ५.११.५. **पृणस्व**=प्रीणीहि प्रीणय वा ५.१९. सुखय ६.४१.४. सुखी भव १७.७९. **पृणात्**=पालयेत् ६.४७.१५. तर्पयेत् २.३०.७. **पृणाति**=पालन करता है सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.४. विद्या-सुशिक्षा-संस्कृताऽन्नाद्यैः स्वयं पुष्यति सन्तानान् पोषयति च १.१२५.५. प्रसन्नान् करोति ऋ० भू० २३५, अथर्व० ११.३.५.४. **पृणातु**=सुखयतु २३.४३. [पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोर्लोट्। पृण प्रीणने (तुदा०) धातोर्वा लोट्। अन्यत्र लट् लङ् च। पृणाति दानकर्मा निघं० ३.२०.]

पृणक् पृणक्ति ६.२०.६. **पृणक्तु**=सम्पर्कं करोतु १.८४.१. सम्बध्नातु ४.३८.१०. **पृणक्षि**=संयुनक्षि १.८३.१. सम्बध्नासि १२.१०७. [पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लङ्। अडभावः। अन्यत्र लोट् लट् च]

पृणध्यै सुखयितुम् ६.६७.७. [पृण प्रीणने (तुदा०) धातोस्तुमर्थे कध्यै प्रत्ययः]

पृणतः विद्यादिभिः प्रपूरकस्य (विदुषः) १.१६८.७. पालकस्य विद्यादिभिः प्रपूरकस्य वा १.१६८.७. पालयतः पुष्टान् प्राणिनः १.१२४.१०. **पृणते**=सुखयते (प्रजाजनाय) ६.२८.२. **पृणन्**=पालयन् (विद्वज्जनः) ७.३२.८. **पृणन्तम्**=पुष्यन्तम् (पुत्रम्) १.१२५.४. **पृणन्तः**=स्वं स्वकीयाँश्च पुष्यन्तः (जनाः) १.१२५.७. सुखयन्तः (रसाः) २.११.११. [पृण प्रीणने (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

पृणानः पूर्वं कुर्वन् भा०—रक्षन् (जनः) २०.४५. [पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोः शानच्]

पृणीत प्रपूरयन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२३.२१. **पृणेथाम्**=प्रपूरयेतम् ६.६९.७. **पृणैथे**=पूरयतम् ७.६१.२. [पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोर्लोट्]

पृणीतन अलङ्कुरुत ५.५.५. [पॄ पालनपूरणयोः

(क्र्या०) धातोर्लोट् । तप्रत्ययस्य तनबादेशश्छान्दसः]

पृतनाज्ये पृतनायाः सेनायाः सङ्ग्रामे ३.३७.७. **पृतनाज्येषु**=सङ्ग्रामेषु ३.८.१०. [पृतनाज्यम्=संग्रामनाम निघं० २.१७. पृतनाज्यमिति संग्रामनाम, पृतनानाम अजनाद्वा जयनाद्वा नि० ६.२४.]

पृतनायतः आत्मनः पृतनां सेनामिच्छतः (भा०—शत्रून्) १२.६६. **पृतनायन्तम्**=आत्मनः पृतनां सेनामिच्छन्तम् (मर्त्यं=मनुष्यम्) १.१६६.७. [पृतनापदाद् आत्मन इच्छायां क्यजन्ताच्छतृ प्रत्ययः । पृतनाः मनुष्यनाम निघं० २.३. संग्रामनाम निघं० २.१७.]

पृतनायून् पृतनासु सेनासु पूर्णमायुर्येषां तान् (अदेवान्=अविदुषो जनान्) ३.१.१६. सेनां कामयमानान् (राजपुरुषान्) ७.१.१३. [पृतना-आयुपदयोः समासः । अथवा पृतनापदाद् आत्मन इच्छायां क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः प्रत्ययः । पृतनाः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

पृतनाषहः ये पृतनां शत्रुसेनां सहन्ते ते (उत्तमाऽमात्याः) ४.४५.८. [पृतनोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पृतनाषाट् पृतनां नृसेनां सहते येन सः (मदः=ओषधिसारः) १.१७५.२. यः पृतनां सहते सः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३९. **पृतनाषाहम्**=यः पृतनाः सेनाः सहते तम् (शुष्मं=बलम्) ६.७२.५. [पृतनोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण ण्विः प्रत्ययः]

पृतनाषाह्याय ये मनुष्या पृतनाः सहन्ते ते पृतनासाहस्तेषु साधवे (शवसे=बलाय) १८.६८. पृतना सह्या येन तस्मै (शवसे) ३.३७.१. ['पृतनाषाट्' इति व्याख्यातम्, ततः 'तत्र साधु' रिति यत् । पृतना-सह्यपदयोर्वा समासः । छान्दसो दीर्घः]

पृतनासु मनुष्येषु, प्र०—पृतना इति मनुष्यनाम, निघं० २.३, १.१३१.५. शूरवीर-मनुष्यसेनासु ७.५६.२२. वीरसेनासु ३.४९.२. राजसेनाकार्येषु ऋ० भू० १९९, ऋ० १.८.२१.१०. स्वेषां शत्रूणां वा सेनासु १.१०२.९. **पृतनाः**=बल-सुशिक्षाऽन्विता वीरमनुष्यसेनाः ९.३७. स्वसेना मनुष्यान्वा ७.२०.३. वीरसेनाः ३.३४.४. [पृतनाः मनुष्यनाम निघं० २.३. संग्रामनाम निघं० २.१७. युधो वै पृतनाः श० ५.२.४.१६.]

पृतनाहवेषु सेनाभिः प्रवृत्तेषु युद्धेषु १.१०९.६. [पृतना-आहवपदयोः समासः । आहवः=आङ्पूर्वाद् ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः 'आङि युद्धे' इति अप्]

पृतन्यतः आत्मनः पृतनामिच्छतः शत्रून् ससेनान् प्र०—पृतना-शब्दात् क्यच् 'कव्यध्वर पृतनस्यर्चि लोपः' अ० ७.४.३९. अनेन ऋचि=ऋग्वेद एवाऽऽकारलोपः १.८.४. पृतना मनुष्यास्तानिवाऽऽचरतः (मनुष्याः) १.१३२.१. आत्मनः पृतनां सेनामिच्छन्तः (शत्रून्) १८.७०. आत्मनः पृतनामिच्छतो जनस्य भा०—वीरसेनस्य ११.२०. [पृतनापदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच् छतृप्रत्ययः । 'कव्यध्वरपृतनस्य०' इति क्यचि आकारलोपः]

पृतन्यवः युद्धायाऽऽत्मनः पृतनां सेनामिच्छवः (भा०–शत्रवः) १५.५१. **पृतन्युम्**=पृतनां सेनामिच्छतीव पृतन्यति, पृतन्यतीति पृतन्युस्तम् (वृत्रमिव शत्रुम्) प्र०—'कव्यध्वरपृतनस्यर्चि लोपः अ० ७.४.३९, १.३३.१२. **पृतन्यून्**=आत्मनः पृतनां सेनामिच्छून् (राजप्रजाजनान्) ४.२०.१. [पृतनापदाद् इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उः प्रत्ययः 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण । क्यचि आकारलोपः 'कव्यध्वर०' इति]

पृतन्यसि आत्मनः पृतनां सेनामिच्छसि १.५४.४. **पृतन्यात्**=आत्मनः पृतनां सेनामिच्छेत् ८.५३. [पृतनापदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताल् लट् । अन्यत्र लिङ्]

पृत्सु सङ्ग्रामेषु प्र०—पृत्स्विति सङ्ग्रामनामसु पठितम् निघं० २.१७, ६.२९. पृतनासु प्र०—पदादिषु मांस्पृत्स्नूनामुपसङ्ख्यानम् अ० ६.१.१६३. इति वार्त्तिकेन पृतना-शब्दस्य पृदादेशः १.६४.१४. स्पर्द्धमानेषु सङ्ग्रामेषु ३.४९.३. वीरमनुष्यसेनासु ६.४४.१८. [पृत्सु इति संग्रामनाम निघं० २.१७. पृतनाप्राति० सप्तमीबहुवचने परे 'पदादिषु मांस्पृत्स्नूनामुपसंख्यानम्' अ० ६.१.६३. वा० सूत्रेण पृतनास्थाने पृदादेशः]

पृत्सुतिः वीरसेना १.१६९.२. **पृत्सुतीः**=याः सम्पर्ककारकाणां सुतय ऐश्वर्यप्रापिकाः सेनास्ताः प्र०—अत्र पृचीधातोः क्विपि वर्णव्यत्ययेन तकारः, तदुपपदादैश्वर्याऽर्थात् सु-धातोः संज्ञायां क्तिच् प्रत्ययः १.११०.७.]

पृत्सुतूर्षु पृत्सु पृतनासु सेनासु त्वरमाणेषु हिंसकेषु (शत्रुषु) ३.३७.७. [पृतना-तूर्पदयोः समासे पूर्वपदस्य पृदादेशः सप्तम्याश्चालुक् । तूर्=ञित्वरा सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विपि 'ज्वरत्वर०' इति वकारस्योपधायाश्च स्थाने ऊठ्]

पृथक् विभागेन ऋ० भू० १५८, १२.६७. [पृथक्=प्रथतेः नि० २.५. प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः 'प्रथेः कित्

संप्रसारणं च' उ० १.१३७. सूत्रेणाजिः प्रत्ययः]

पृथिम् विशालबुद्धिम् (सेनापतिम्) १.११२.१५. [पृथ प्रक्षेपे (चुरा०) धातोर्बाहु० औणा० इनिः प्रत्ययो गुणाभावश्च । प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्वा इन् । बहुलवचनात् सम्प्रसारणञ्च]

पृथिवि भूमिरिव पृथुविद्ये (देवि=विद्यायुक्ते पत्नि) ११.६९. पृथुशुभगुणलक्षणे (मातः=मान्यकर्त्रि जननि) १०.२३. भूमिवत् क्षमाशीले (राज्ञि) ३.५४.४. भूमिरिव वर्त्तमाने स्त्रि ३५.२१. विस्तीर्णा सती विशालसुखदात्री भूमिः प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः १.२२.१५. विस्तृताया भूमेः अ०—देवयज्ञाधिकरणायाः प्र०—अत्र व्यत्ययः १.२५. **पृथिवी**=भूमिः ३३.४२. अन्तरिक्षम् १.१०२.२. भूमिवद्वर्त्तमाना विदुषी स्त्री १२.६१. विस्तीर्णा भूमिः १.८९.४. भूमिरिव क्षमा ३.५४.१९. अवनिरिव (माता) १.१९१.६. विस्तृतशीला क्षमाधारणादिशक्तिमती (स्त्री) ८.३२. अप्रकाशगुणानां पृथिव्यादीनां समूहः १.२२.१३. विस्तृतः (वसोः=यज्ञः) १.२. पृथुसुखदात्री विद्या २.१०. पृथुसुखनिमित्ता (अ०—विद्या) २.१०. भूमिरिव सुखप्रदा (विदुषी प्रजापालिका राज्ञी) १३.१७. पुथुसुखकारिणी (ब्रह्मचारिणी कुमारिका) ११.५८. विस्तीर्णा भूमिः २५.१७. **पृथिवीम्**=भूमिराज्यम् ६.२. भूमिं तत्स्थं पदार्थसमूहं वा ५.१३. पृथिव्यादिकम् १२.५. प्रकाशरहितं भूगोलादिकम् १३.४. भूमिमन्तरिक्षं वा ६.४७.२९. भूमितलम् १२.३९. विस्तीर्णाम् भा०—महतीम् (नावम्) २१.६. प्रकाशरहित लोकलोकान्तर पदार्थ का स० प्र० ३१३ विस्तृतां भूमिं तत्स्थं प्राणिसमूहञ्च १.१७. विस्तृतप्रजायुक्ताम् (भूमिम्) १.२८. स्वराज्यभूमिम् १३.१६. अन्तरिक्षं भूमिं वा ३.३०.११. प्र०—पृथिवीत्यन्तरिक्षनामसु पठितम् निघं० १.३, ५.१६. अन्तरिक्षस्थानन्यांल्लोकान् १.६७.३. **पृथिव्या**=भूगर्भविद्यया १५.६. भूम्या सह ७.१३. **पृथिव्याम्**=विस्तृतायां भूमौ ५.९. अन्तरिक्षे भूमौ वा ७.५.२. स्वराज्ययुक्तायां भूमौ १.१००.१८. बहुसुखप्रदायाम् १.२५. बहुपदार्थप्रदायाम् (भूमौ), बहुप्रजायुक्तायाम् (भूमौ) १.२६. पृथिवी में सं० वि० ९३, अथर्व० ११.५.२६. **पृथिव्याः**=अन्तरिक्षस्याऽवकाशस्य मध्ये प्र०—पृथिवीत्यन्तरिक्षनामसु पठितम् निघं० १.३, ४.३०. भूमेरन्तरिक्षाद्वा ६.४७.२७. विस्तृताया भूमेः १.८०.१. भूम्यादेः पदार्थमात्रस्य ७.६०.७. विस्तृतस्याकाशस्य १.५२.१३. भूम्यादेश्च जगतः ८.५२. पृथिवीमारभ्य प्र०—पञ्चमीविधाने ल्यब्लोपे कर्मण्युपसङ्ख्यानम् अ० २.३.२८. अनेन वार्त्तिकेन पञ्चमी १.२२.१६. प्रकाशरहितस्य पृथिव्यादेर्जगतः ३.१२. विस्तीर्णाया भूमेः ३४.१५. भूमेः सकाशात् ५.१९. पृथिवीलोकस्याऽन्तरिक्षस्येव पृथिवीराज्यस्य प्र०—'पृथिवीत्यन्तरिक्षनाम' निघं० १.३. पदनामसु च निघं० ५ ३. अनेन सुखप्राप्तिहेतु-सार्वभौमराज्यं गृह्यते १.३३.१०. **पृथिव्यै**=भूमिराज्याय ६.१. विस्तृतायैर्भूमये ९.१२. पृथिव्याः प्र०—अत्र पञ्चम्यर्थे चतुर्थी २३.४७. पृथिवीवद् वर्त्तमानायै स्त्रियै ४.३.५. भूमिराज्यप्राप्तये ३.५४.२. अन्तरिक्षाय भूमये वा ५.५९.१. पृथिव्याम् प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तमी-स्थाने चतुर्थी १.२६. विस्तृतायै धरित्र्यै २२.२९. पृथिवीस्थपदार्थपुष्ट्ये ५.२६. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः 'प्रथेः षिवन्षवन्ष्वनः सम्प्रसारणं च' उ० १.१५०. सूत्रेण षिवन्प्रत्ययः सम्प्रसारणं च। पृथिवी अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. पदनाम निघं० ५.३. पृथ्वी पृथिवीनाम निघं० १.१. पृथ्वी द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०. प्रथनात् पृथिवीत्याहुः नि० १.१४. पृथिवी वा अन्नानां शमयित्री कौ० ६.१४. परिमण्डलः (=गोलाकारः) उ वा ऽअयं (पृथिवीम्—) लोकः श० ७.१.१.३७. समुद्रो हीमां (पृथिवीं) अभितः पिन्वते श० ७.४.१.९. पृथिव्यस्यप्सु श्रिता तै० ३.११.१.६. अप्रथत पृथिवी तै० सं० २.१.२.३. अग्निगर्भा पृथिवी श० १४.९.४.२१. अयस्मयी पृथिवी गो० २.२.७. आग्नेयी पृथिवी जै० ३.१८६. तां० १५.४.८. इयं वा अग्निहोत्रस्य वेदिः मै० १.८.७. इयं विश्वधायाः काठ० ३१.२. इयं वाऽस्य सर्वस्य प्रतिष्ठा श० ४.५.२.१५. इयं वै माता तै० ३.८.९.१. श० १३.१.६.१. इयं वै यज्ञायज्ञीयम् जै० १.१७३. इयं वै रथन्तरम् तां० ६.८.१५. श० ५.५.३.५. दाधार विष्णुः पृथिवीमभितो मयूखैः तै० सं० १.२.१३.२. पृथिव्यामिमे लोकाः प्रतिष्ठिताः जै० उ० १.२.३.२.]

पृथिविष्ठाः ये पृथिव्यां तिष्ठन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ७.१८.२३. ['पृथिवी' इत्युपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः। पूर्वपदस्य 'ङ्यापोः०' अ० ६.३.६३. सूत्रेण ह्रस्वः]

पृथिविसदम् पृथिव्यां गच्छन्तम् (इन्द्रं=सम्राजम्) प्र०—अत्र 'ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोर्बहुलम्' अ० ६.३.६३. इति पूर्वपदस्य ह्रस्वः ९.२. ['पृथिवी' इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

पृथिवी विस्तीर्णे (द्यावाक्षामा=सूर्यभूमी) ३.८.८. [पृथिवीति व्याख्यातम्। ततः प्रथमाद्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः]

पृथिवीद्यावा भूमिविद्युतौ ३.४६.५.

पृथु विस्तीर्णम् (ज्रयः=तेजः) प्र०—'प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च' उ० १.२८. इति प्रथधातोः कुः प्रत्ययः सम्प्रसारणञ्च १.१०१.७. विस्तीर्णं प्रख्यातं वा (सद्म=गृहम्) ५.८७ ७. सर्वर्त्तुस्थानाऽवकाशयोगेन विशालम् (छर्दिः=गृहम्) १.४८.५. नानाविद्यासु विस्तीर्णम् (श्रवः=सुवर्णादिधनम्) १.९.७. अतिविस्तीर्णम् (यानं=रथः) ऋ० भू० १९६ **पृथूनि**=विस्तीर्णानि (सुखानि) ६.६.२. [पथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः 'प्रथिम्रदिभ्रस्जां संप्रसारणम्०' उ० १.२८. सूत्रेण कुः प्रत्ययः सम्प्रसारणञ्च। पृथु महान्तं लोकम् नि० १२.२२.]

पृथुः विस्तृतसुखः (अर्वा=विज्ञानयुक्तः पुत्रः) ११.४४. विस्तीर्णपुरुषार्थः (अग्निः=राजा) ४.२.१३. अतीव विस्तृतो व्यापकः परमेश्वरः ऋ० भू० १६२, अथर्व० १३.४.५२. विस्तीर्णबलः (इन्द्रः विद्याप्रकाशको राजा) २.२१.४. महान् (अग्निः=विद्युत्) १०.२९. **पृथू**=विस्तीर्णौ (गभस्ती=हस्तौ) ६.१९.३. [पृथुरिति व्याख्यातम्। अदो वै पृथु यस्मिन् देवाः श० १.४.१.२७. श्रोत्रं वै पृथु श्रवाय्यम् श० १.४.३.४.]

पृथुज्रयम् विस्तीर्णं बहुगतिम् (रथं=रमणीयं यानम्) ४.४४.१. **पृथुज्रयाः**=पृथुस्तीव्रो ज्रयो वेगो यस्य सः (सर्वबलाध्यक्षो राजा) ३.४९.२. [पृथु-ज्रयपदयोः समासः। पृथुरिति व्याख्यातम्। ज्रयः=जि अभिभवे (भ्वा०) धातोरच्प्रत्ययः। अन्यत्र औणादिकोऽसुन्। पृथुज्रयाः पृथुजवः नि० ५.९.]

पृथुज्रयी बहुवेगा (असुर्येव=असुषु प्राणेषु भवा विद्युदिव) १.१६८.७. [पृथुज्रयं व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीष् गौरादित्वात्]

पृथुपाजसः बहुबलाः (अश्वाः=व्याप्ताः किरणाः) ३.६१.२. **पृथुपाजसा**=विस्तीर्णबलेन (रथेन=रमणीयेन यानेन) ४.४६.५. **पृथुपाजसे**=बलाबलाय (गातवे=स्तावकाय जनाय) ३.३.१. **पृथुपाजाः**=बृहद्-बलः (विप्रः=मेधाविजनः) ३.५.१. विस्तीर्णबलः (अग्निः=वह्निः) ३.२.११. पृथु विस्तीर्णं पाजो बलं यस्य सः (अग्निः=वह्निः) ३.२७.५. [पृथु-पाजस्पदयोः समासः। पाजः=अन्ननाम निघं० २.७. बलनाम निघं० २.९. पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'पातेर्बले जुट् च' उ० ४.२०३. सूत्रेण असुन्]

पृथुपाणिः पृथवो विस्तीर्णाः पाणिरिव किरणा यस्य सः (सविता=जगदीश्वरः) २.३८.२. [पृथु-पाणिपदयोः समासः। पाणिः=पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः 'अशिपणायोरुडाय्यलुकौ च' उ० ४.१३३. सूत्रेण इण् आयप्रत्ययस्य च लुक्]

पृथुप्रगाणम् पृथूनि प्रकृष्टानि गानानि स्तवनानि यस्मिँस्तम् (अ०—स्वस्वभावाख्यं गृहम्) ३.५.७. [पृथु-प्रगानपदयोः समासः]

पृथुप्रगामा पृथुभिर्विस्तृतैर्यानैः प्रकृष्टो गामो गमनं यस्य सः (सूनुः=कार्यकारी सन्तानः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेराकारादेशः १.२७.२. [पृथु-प्रगामपदयोः समासः। विभक्तेराकारादेशश्छान्दसः। प्रगामः=प्र+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्घञ्]

पृथुबुध्नः पृथु विस्तीर्णं बुध्नमन्तरिक्षं निवासार्थं यस्य सः (मेघः) प्र०—बुध्नमन्तरिक्षं बद्धा अस्मिन् धृता आप इति नि० १०.४४, १.१४. विस्तीर्ण-प्रबन्धः (अग्निः=विद्वान् जनः) ४.२.५. पृथु महद् बुध्नं मूलं यस्य सः (ग्रावा=पाषाणः) १.२८.१. [पृथु-बुध्नपदयोः समासः। बुध्नः=बन्धबन्धने (क्र्या०) धातोः 'बन्धे ब्रधिबुधी च' उ० ३.५. सूत्रेण नक् प्रत्ययो धातोश्च बुधादेशः। बुध्नमन्तरिक्षं बद्धा अस्मिन् धृता आप इति वा। इदमपीतरद् बुध्नमेतस्मादेव बद्धा अस्मिन् धृता प्राणा इति नि० १०.४४.]

पृथुबुध्नासः विस्तीर्णाऽन्तरिक्षाः (अ०—जनाः स्त्रियश्च) १.१६९.६. [पृथुबुध्न इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

पृथुयामन् बहुप्रापक (ऋष्वे=महागुणयुक्त विद्वज्जन) ६.६४.४. [पृथूपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्मनिन्प्रत्ययः]

पृथुश्रवसः पृथूनि विस्तृतानि श्रवांस्यन्नानि यासां ताः (अरातीः=शत्रुसेनाः) १.११६.२१. [पृथु-श्रवस्पदयोः समासः। श्रवस्=अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०.]

पृथुष्टुके पृथुर्विस्तीर्णः ष्टुका स्तुति केशभारः कामो वा यस्याः तत्सम्बुद्धौ, महास्तुते, पृथुकेशभारे, पृथुकामे वा (देवि=कुमारि) ३४.१०. विस्तीर्णजघने (सिनीवालि=विद्वत्कुलस्य कन्ये) २.३२.६. [पृथु-ष्टुकापदयोः समासः। ष्टुका=स्त्यै संघाते (भ्वा०) धातोरौणादिको डुकन्प्रत्ययः। पृथुष्टुके पृथुजघनें, स्तुकः स्त्यायतेः संघातः पृथुकेशस्तुके पृथुस्तुके वा नि० ११.३२.]

पृथ्वी भूमिः १.६५.३. **पृथ्वीम्**=भूमिम् १३.९.

पृथ्वीः=भूमीः ७.३४.३. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः 'प्रथेः षिवन्षवन्ष्वन्: संप्रसारणं च' उ० १.१५०. सूत्रेण ष्वन्प्रत्ययः सम्प्रसारणञ्च]

पृथ्वी विस्तीर्णे (द्यावापृथिवी=भूमिसूर्यौ) ६.७०.१. भूम्यन्तरिक्षे ४.२३.१०. पृथ्वीति व्याख्यातम् । ततः प्रथमाद्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः]

पृदाकुः मूढवदभिमानी व्याधवद्वा हिंसकः (विद्वज्जनः) ६.१२. कुत्सितवाक् (अहिः=विषधरः) ८.२३. सर्प्पः २४.३३. [पर्द कुत्सिते शब्दे (भ्वा०) धातोः 'पर्देर्नित् सम्प्रसारणमलोपश्च' उ० ३.८०. सूत्रेण काकुः प्रत्ययः सम्प्रसारणमकारलोपश्च]

पृशनायुवः आत्मनः स्पर्शमिच्छन्त्यः (धेनवः=किरणा गावो वाचो वा) प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति सलोपः १.८४.११. [पृशनपदाद् आत्मन इच्छायां क्यजन्ताद् उः प्रत्ययः । स्त्रियामूङ् । पृशनम्=स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

पृशन्यः पर्शिता (देवः=सूर्यः) १.७१.५.

पृश्नयः प्रष्टव्याः (पशवः) २४.१४. विचित्रचिह्नाः (प्राणिनः) २४.१५. याः स्पृशन्ति ताः (धेनवः=किरणा गावो वाचो वा) प्र०—अत्र 'घृणिपृश्नि०' उ० ४.५४. अनेनाऽयं निपातितः १.८४.११. सुस्पर्शास्तन्वङ्ग्यः (भा०-स्वसदृशः रूपगुणसम्पन्नाः स्त्रियः) प्र०—अत्र स्पृशधातोर्निः प्रत्ययः सलोपश्च १२.५५. प्रष्ठ्यः (विशः=प्रजाः) १५.६०. **पृश्निम्**=सूर्यम् १.१६०.३. अन्तरिक्षम् ५.५२.१६. आकाशम् १.१६४.४३. **पृश्निः**=स्पर्ष्टव्यः (पशुः पक्षी वा) २४.४. अन्तरिक्षमवकाशः ७.३५.१३. अन्तरिक्षमिव गम्भीराशयोऽक्षोभः (धीरः=मेधावी विद्वान्) ७.५६.४. अन्तरिक्षमिव बुद्धिः ५.६०.५. विचित्रवर्णः सूर्यः १७.६०. अन्तरिक्षस्था (यज्ञे कृताऽऽहुतिः) प्र०—पृश्निरिति साधारणनामसु पठितम् निघं० १.४, २.१६. आदित्य इव १.१६८.९. अन्तरिक्षे प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' सप्तम्येकवचने प्रथमैकवचनम् ३.६. जल के सहित सूर्य स० प्र० ३१३, ३.६. **पृश्नेः**=अन्तरिक्षस्य मध्ये ६.६.४. [पृश्निरिति पृश्निगर्भाः पदे द्रष्टव्यम् अन्नं वै देवा पृश्नीति वदन्ति तां० १२.१०.२४. अन्नं वै पृश्निः श० ८.७.३.२१. इयं (पृथिवी) वै पृश्निः तै० १.४.१.५. त्रय पृश्नयः सर्वदेवत्याः काठ० ४९.१०. पृश्नयो मारुताः मै० ३.१३.१२. पृश्नियै पयसो मरुतो जाताः तै० सं० २.२.११.४. पृश्नियै प्रियङ्गवः तै० सं० २.२.११.४. वाग्वै पृश्निः काठ० ३४.१. व्याघ्ररूपं वै पृश्निः मै ४.२.२४. यत् पृश्निस्तेन मारुतः तै० सं० २.१.३.३. मारुती पृश्निः पष्ठौही गर्भिणी मै० २.६.१३.]

पृश्निगर्भाः पृश्निमन्तरिक्षं गर्भो येषां ते पृश्निगर्भाः (लोकाः) ७.१६. [पृश्नि-गर्भपदयोः समासः । पृश्निः=स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः 'घृणिपृश्नि०' उ० ४.५२. सूत्रेण निः प्रत्ययः सलोपश्च निपात्यते । पृश्निः साधारणनाम निघं० १.४. पृश्निगर्भाः प्राष्टवर्णगर्भा आप इति वा नि० १०.३९. पृश्निरादित्यो भवति प्राश्नुत एनं वर्ण इति नैरुक्ताः संस्पृष्टा रसान् । संस्पृष्टा भासं ज्योतिषां संस्पृष्टो भासेति वा । अथ द्यौः संस्पृष्टा ज्योतिर्भिः पुण्यकृद्भिश्च नि० २.१४.]

पृश्निगावः पृश्निवदन्तरिक्षवद् गावो येषान्ते (नियतः=निश्चिद्गतयो वायवः) ७.१८.१०. [पृश्निगोपदयोः समासः । पृश्निपदं व्याख्यातम्]

पृश्निगुम् अन्तरिक्षे गन्तारम् (यानम्) १.११२.७. [पृश्निपदं व्याख्यातम् । तदुपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ३.२.१८०. वा० सूत्रेण डुः प्रत्ययः]

पृश्निनिप्रेषितासः पृश्नावन्तरिक्षे नितरां प्रेषिता यैस्ते (नियतः=निश्चिद्गतयो वायवः) ७.१८.१०. [पृश्निनिप्रेषितपदयोः समासे जसोऽसुगागमः । निप्रेषितः=नि+प्र+इष गतौ (दिवा०) धातोः क्तः]

पृश्निमातरः पृश्निराकाशमन्तरिक्षं मातोत्पत्तिनिमित्तं येषां ते (मरुतः=शिल्पव्यवहारप्रापका वायवः) प्र०—पृश्निरिति साधारणनामसु पठितम् निघं० १.४, १.२३.१० आकाशादुत्पद्यमानाः (मरुतः=वायवः) इव १.८९.७. पृश्निरन्तरिक्षं माता येषां वायूनां त इव १.८५.२. अन्तरिक्षमातरः (वायवः) ५.५७.३. [पृश्नि-मातृपदयोः समासः । पृश्निरिति व्याख्यातम् । पृश्निमातरो हि मरुतः मै० २.५.७. मरुतः पृश्निमातर इति वा आहुः जै० २.१७६.]

पृश्न्याः अन्तरिक्षे भवा सृष्टयः ६.४८.२२. पृश्नावन्तरिक्षे भवम् (ऊधः=पयोऽधिकरणम्) २.३४.१०. अन्तरिक्षस्य मध्ये २.२.४. [पृश्निप्राति० भवार्थे यत् । पृश्निरिति व्याख्यातम्]

पृषतः स्थूलान् (पदार्थान्) २४.११. मृगविशेषः २४.४०. [पृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'वर्त्तमाने पृषद्बृहन्०' उ० २.८४. सूत्रेण अतिप्रत्ययः शतृवच्च कार्यम्]

पृषतान् मृगविशेषान् २४.२७. [पृषु सेचने (भ्वा०)

धातोः 'पृषिरञ्जिभ्यां कित्' ·उ० ३.१११. सूत्रेण अतच् किच्च । पृषतो वैश्वदेवः काठ० ४७.७.]

पृषती अङ्गैः सुसिक्ता (पशु-जातिः) २४.२. **पृषतीभिः**=स्वगमनागमनवेगादिगुणैः १.६४.८. मरुद्गतिभिः २.३६.२. वेगादिभिः ५.५८.६. वायुगतिसदृशगतिविशिष्टाभिर्धाराभिः २.३४.३. पर्षन्ति सिञ्चन्ति धर्मवृक्षं याभिरद्भिः १.३७.२. **पृषतीषु**=सेचनकर्त्रीषु (भा०—उत्तमासु विद्यासु) ५.६०.२. **पृषतीः**=अग्निवायुयुक्ता अपः १.८५.५. मरुत्सम्बन्धिनीरपः १.८५.४. सेचननिमित्ता गतीः ३.२६.४. सेचनकर्त्रीरुदकधाराः ५.५७.३. वायुजलगतीः ५.५५.६. पर्षन्ति सिञ्चन्ति याभिर्नाडीभिर्नदीभिस्ताः (अ०—नाडीर्नदीर्वा) २.१६. पर्षन्ति सिञ्चन्ति याभिस्ताः शीघ्रगती मरुतां धारणवेगादयोऽश्वाः प्र०—पृषत्यो मरुतामित्यादिष्टोपयोजननामसु पठितम् निघं० १.१५, १.३९.६. [पृषदिति शत्रन्तं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप् । पृषती गौर्धेनुर्दक्षिणा, सा हि वैश्वदेवी मै० २.३.२. वैश्वदेवी हि पृषती काठ० १२.२.]

पृषती सेक्तारौ जलगुणौ १.१६२.२१. स्थूलौ (हरी=हरणशीलावश्वौ) २५.४४. [पृषदिति व्याख्यातम् । ततो नपुंसके प्रथमाद्विवचने रूपम् । लिङ्गव्यत्ययः]

पृषदश्वः पृषदिव वेगवन्तस्तुरङ्गा यस्य सः (सेनापतिः) १.८७.४. **पृषदश्वान्**=सिञ्चकानाशुगामिनः पदार्थान् वा ५.४२.१५. **पृषदश्वाः**=सिक्तजलाग्निनाऽऽशुगामिनो महान्तः (मरुतः=विद्वांसो मनुष्याः) ७.४०.३. पृषतः पुष्ट्यादिना संसिक्ताऽङ्गा अश्वा येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) २५.२०. सेनायाः पृषन्तोऽश्वा येषान्ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १.८९.७. [पृषद्-अश्वपदयोः समासः । पृषदिति व्याख्यातम्]

पृषदश्वासः पृषतः स्थूलाः सिञ्चिता अश्वा यैस्ते (प्राज्ञा राजजनाः) २.३४.४. पृषतः पृष्टाः पुष्टा अश्वा येषान्ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १.१८६.८. पृषतः सेचका अश्वा वेगादयो गुणा येषु ते (गन्तारः=वायवः) ३.२६.६. [पृषद्-अश्वपदयोः समासे जसोऽसुगागमः । पृषदिति व्याख्यातम्]

पृषदाज्यम् दध्याज्यादिभोज्यं वस्तु ३१.६. पर्षन्ति सिञ्चन्ति क्षुन्निवृत्त्यादिकारकमन्नादि वस्तु यस्मिँस्तत् पृषच्चाऽऽज्यं घृतं मधुदुग्धादिकञ्च तत् (भक्ष्याऽन्नोपलक्षणं वस्तु) ऋ० भू० १२३, ३१.६. [पृषद्-आज्यपदयोः समासः । पृषदिति व्याख्यातम् । आज्यम्='आङ् पूर्वादञ्जेः संज्ञायामुपसंख्यानम्' अ० ३.१.१०९. वा० सूत्रेण अञ्जेराङ्पूर्वात् क्यप् । अन्नं हि पृषदाज्यम् श० ३.८.४.८. प्राणो हि पृषदाज्यम् श० ३.८.४.८. पयः पृषदाज्यम् श० ३.८.४.८. पशवो वै पृषदाज्यम् तै० १.६.३.२. प्राणापानौ वै पृषदाज्यम् मै० ३.१०.२.४. प्राणापानौ वा एतौ पशूनां यत् पृषदाज्यम् तै० सं० ६.३.९.६. ऐन्द्राग्नं पृषदाज्यं देवतया काठ० ३६.२.]

पृषद्योनिः स्पृषतिर्वृष्टिर्योनिर्यस्याः सा (गीः=वाक्) ५.४२.१. [पृषद्-योनिपदयोः समासः । पृषद् इति व्याख्यातम् । योनिः=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अ०) धातोः 'वहिश्रिश्रुयुद्रु०' उ० ४.५१. सूत्रेण निः प्रत्ययः । योनिः=परियुतो भवति नि० २.८.]

पृषद्वत् सेचकवत् ७.२.४. [पृषत्प्राति० तुल्यार्थे वतिः । पृषदिति व्याख्यातम्]

पृषन्तम् विद्यादिशुभगुणान् सिञ्चन्तम् (जनम्) ४.५०.२. **पृषन्तः**=स्थूलाऽङ्गाः (त्रैयम्बकाः=गवादयः) २४.१८. [पृषु सेचने (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽतिः प्रत्ययः शतृवच्च]

पृष्टबन्धो यः पृष्टान् जनानुत्तरेषु बध्नाति तत्सम्बुद्धौ [अग्ने=प्रकाशात्मन् विद्वन्) ३.२०.३. [पृष्ट-बन्धुपदयोः समासः । पृष्टः=प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोः क्तः]

पृष्टः विदुषः प्रति यः पृच्छ्यते प्रष्टव्यो वा सः (अग्निः=विज्ञानस्वरूप ईश्वर विद्युदग्निर्वा) १.९८.२. सिक्तः स्थितः (अग्निः=सूर्यः) ३३.९२. प्रष्टुं योग्यः (रथः=रमणीयं यानम्) ३.४९.४. ज्ञातुमिष्टः (अग्निः=प्रसिद्धः पावकः) १८.७३. [प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोः क्तः]

पृष्ट्यामयी पृष्टौ पृष्ठ आमयः क्लेशरूपो रोगो विद्यते यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१०५.१८. [पृष्टयामयी=पृष्ठरोगी नि० ५.२१.]

पृष्ठम् ज्ञीप्सितम् (स्वः=सुखम्) १७.६५. उपरिभागम् १.१६६.५. भूम्याद्यधिकरणम् ऋ० भू० १५४ अर्वाग् व्यवहारः ११.२०. पृथिवी आदि सब लोक का आधार आर्याभि० २.१३, १८.२९. परभागम् (नाकं=मोक्षसुखम्) ३.२.१२. ज्ञातुमिच्छा १८.२९. प्रश्नं शिष्टं च २२.३३. प्रच्छनीयम् (धनम्) ४.५.६. पश्चाद्-भागम् १.११५.३. प्रच्छन्नम् ९.२१. पृष्ठभागम् १.५८.२. आधारम् २३.५०. अधिकरणम् (समुद्रम्=अन्तरिक्षमिव सागरम्) १३.२. **पृष्ठात्**=समीपात् १७.६७. उपरिभागात्

१०.१६. **पृष्ठे**=उपरि अ०—पृष्ठोपरि ३.५. परभागे १.१६४.१०. पश्चाद्भागे २६.४२. ज्ञीप्सिते (लोके=द्रष्टव्ये स्थाने) १५.५०. सेचके भागे १५.११. तले १३.२४. [पृष्ठं स्पृशतेः संस्पृष्टमङ्गैः नि० ४.३. स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः 'तिथपृष्ठगूढयूथप्रोथः' उ० २.१२. सूत्रेण थक्प्रत्यय आदेः सकारस्य च लोपो निपात्यते। प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोर्वा रूपम्। पृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्वा रूपम्। पृष्ठानि=पृष्ठैर्वै देवाः स्वर्गं लोकमस्पृक्षन् कौ० २४.८. स्वर्गो लोकः पृष्ठानि तां० १६.१५.६. तदाहुर्नाना लोकानि पृष्ठानि तां० १६.१५.६. एतानि खलु वै सामानि यत्पृष्ठानि. तै० १.८.८.३. स्वराणि पृष्ठानि भवन्ति कौ० २४.८. सर्वाणि हि पृष्ठानीन्द्रस्य निष्केवल्यानि तां० ७.८.५. पिता वै वामदेव्यं पुत्राः पृष्ठानि तां० ७.६.१. आत्मा वै पृष्ठानि कौ० २५.१२. ऋतवो वै पृष्ठानि श० १३.३.२.१. सप्त पृष्ठानि श० ६.५.२.८. अन्नं पशवः पृष्ठानि तां० १६.१५.८. वीर्यं वै पृष्ठानि तां० ४.८.७. तेजो ब्रह्मवर्च्चसं श्रीर्वै पृष्ठानि ऐ० ६.५. एषा ह वा उत्तरावती श्रीर्यत्पृष्ठानि जै० २.४२५. ऐन्द्राणि पृष्ठानि काठ० ३४.१६. ओज एव वीर्यं पृष्ठानि तै० सं० ७.३.५.३. चक्रियौ पृष्ठानि मै० ४.७.३. पृष्ठानि वै यज्ञस्य दोहः काठ० ३३.८. यज्ञो वै पृष्ठानि काठ० ३२.६.]

पृष्ठयज्वने यः पृष्ठेन यजति तस्मै (विदुषे जनाय) ५.५४.१. [पृष्ठ-यज्वन्पदयोः समासः। यज्वन्=यज देवपूजादिषु (भ्वा०) धातोः 'सुयजोर्ङ्वनिप्' अ० ३.२.१०३. सूत्रेण ङ्वनिप्प्रत्ययः]

पृष्ठीः पृष्ठदेशः पश्चाद्भागः प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सोः स्थाने सुः २०.८.

पृष्ठेव पृष्ठानीव ४.२.११. [पृष्ठा-इव पदयोः समासः। पृष्ठा=पृष्ठप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

पृष्ठ्येन पश्चाद्भवेन सुखेन ४.२०.४. पृष्ठे भवेन दिनेन ४.३.१०. [पृष्ठप्राति० भवार्थे यत्। पृष्ठमिति व्याख्यातम्। पृष्ठ्यः=(आङ्गिरसाः) सर्वैः पृष्ठ्यैः स्वर्गं लोकमभ्यस्पशन्त यदभ्यस्पशन्त तस्मात् स्पश्यस्तं वा एतं स्पश्यं सन्तं पृष्ठ्य इत्याचक्षते परोक्षेण गो० पू० ४.२३. पिता वा अभिप्लवः पुत्रः पृष्ठ्यः गो० पू० ४.१६. पृष्ठ्यानि—श्रीः पृष्ठ्यानि कौ० २१.५. पशवः पृष्ठ्यानि कौ० २१.५.]

पेचे पचति ४.१८.१३. [डुपचप् पाके (भ्वा०) धातोर्लिट्]

पेतथुः पतेतम् १.१८२.५. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

पेत्वः पतनशीलः (कृष्णः पशुः) २६.५८. शीघ्रगामी (पशुः) २६.५६. **पेत्वेन**=प्रापणेन ७.१८.१७. [पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा 'अन्येऽपि दृश्यन्ते' उ० ४.१०५. सूत्रेण इत्वन्। पततेः तस्य लोपः]

पेदवे गमनाय प्र०—अत्र पद-धातोरौणादिक उ० प्रत्ययः वर्णव्यत्ययेनाकारस्य एकारश्च १.११७.६. प्राप्तुं गन्तुं वा १.११६.१०. गमनाऽऽगमनाय १.११८.६. परमोत्तमव्यवहारसिद्धि-प्रापणाय ऋ० भू० १६६ [पद गतौ (दिवा०) धातोरौणादिक उः प्रत्ययः। धातोरकारस्य एकारो वर्णव्यत्ययेन]

पेयाः पिबेः ५.२६.३. [पा पाने (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

पेरुके पालके (कर्मणि) ६.६३.६. [पेरुप्राति० स्वार्थे कन्। पेरुरिति व्याख्यास्यते]

पेरुम् पूरकम् (स्तुत्यं जनम्) ५.८४.२. **पेरुः**=पाता (विद्वज्जनः) १.१५८.३. पारयिता (नपात्=नौः) ७.३५.१३. रक्षकः (शिष्यो जनः) ६.१०. [पीङ् पाने (दिवा०) धातोः 'मीपीभ्यां रुः' उ० ४.१०१. सूत्रेण रुः प्रत्ययः। पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्वा रुः प्रत्ययः। धातोर्गुणे रपरत्वे च अकारस्य एकारादेशो वर्णव्यत्ययेन]

पेशलम् उत्तमाऽङ्गवत् (वपुः=शरीरमुदकं वा) १६.८३. [पिश अवयवे (तुदा०) धातोरौणादिकः कलः प्रत्ययः]

पेशसा रूपेण २०.४१. **पेशः**=रूपम् १६.८६. सुरूपम् ७.४२.१. सुन्दरं रूपं हिरण्यञ्च प्र०—पेश इति रूपनाम निघं० ३.७. हिरण्यनाम निघं० १.२, ४.३६.७. हिरण्यादिधनम् श्रेष्ठं रूपं वा १.६.३. **पेशांसि**=रूपाणि १.६२.४. [पेशः रूपनाम निघं० ३.७. हिरण्यनाम निघं० १.२. पेश इति रूपनाम पिंशतेर्विपिंशितं भवति नि० ८.११.]

पेशस्कारीम् रूपकर्त्रीम् (व्यभिचारिणीं स्त्रीम्) ३०.६. [पेशस् उपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण्। ततः स्त्रियां ङीप्। पेशस् व्याख्यातम्]

पेशस्वतीः प्रशस्तसुरूपवतीः (त्रिविधा वाचः) २८.३१. [पेशस्प्राति० प्रशंसायां मतुबन्तान् ङीप्]

पेशितारम् विद्याऽवयवेत्तारम् भा०—विद्यान्यायप्रकाशकम् (पुरुषम्) [पिश अवयवे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

पेषी पेष्याकारं गर्भस्थं वीर्यं कृतवती (युवतिः) ५.२.२.

पैङ्गराजः पक्षिविशेषः २४.३४.

पैजवनस्य वेगयुक्तस्य (नप्तुः=पौत्रस्य) ७.१८.२२. क्षमाशीलस्य पुत्रस्य ७.१८.२३. क्षमाशीलाज्जातस्य पुत्रस्य ७.१८.२५. [पैजवनः पिजवनस्य पुत्रः । पिजवनः पुनः स्पर्द्धनीयजनो वाऽमिश्रीभावगतिर्वा नि० २.२४.]

पैतृमत्यम् पितृमतां भावमेव ७.४६. [पितृमत्प्राति० भावे ष्यञ्-प्रत्ययो ब्राह्मणादित्वात् । अथवा 'वाङ्मतिपितृमतां छन्दस्युपसंख्यानम्' अ० ४.१.८५. वा० सूत्रेण प्राग्दीव्यतीयेष्वर्थेषु ण्यः प्रत्ययः]

पैद्वः सुखेन प्रापकः (वाजी=ज्ञानवान् जनः) १.११६.६. यो यानं मार्गे शीघ्रवेगेन गमयिता ऋ० भू० १९४, ऋ० १.८.९.१. [पैद्वः अश्वनाम निघं० १.१४.]

पोता पवित्रकर्त्ता (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.९.३. पवित्रः पवित्रकर्त्ता वा (पुरोहितः) १.९४.६. शोधकः (सूर्यः) २५.२. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः कर्त्तरि तृच्-प्रत्ययः]

पोत्रम् पवित्रम् (कर्म्म) २.१.२. पवित्रकारकम् (श्रेष्ठं वस्तु) १.७६.४. **पोत्रात्**=पुनाति येन गुणेन तस्मात् प्र०—अत्र 'सर्वधातुभ्यः ष्ट्रन्' उ० ४.१६३. इति पूञ्धातोः ष्ट्रन्-प्रत्ययः स्वरव्यत्ययश्च १.१५.२. पवित्रकर्त्तुः (विदुषो जनात्) २.३७.२. [पूञ् पवने (क्र्या०) धातोरौणादिकः ष्ट्रन्प्रत्ययः । अथवा पूञ्धातोः 'हलसूकरयोः पुवः' अ० ३.२.१८३. सूत्रेण करणे ष्ट्रन्-प्रत्ययः]

पोषम् शरीरात्मपुष्टिकारकम् (सुवीर्यं=विद्याभ्यासम्) १.९३.२. पुष्टिम् २३.३१. आत्मशरीरयोः पुष्ट्या सुखप्रदम् (रयिं=विद्यासुवर्णादि-सुधनम्) १.१.३. पोषकम् (हिरण्यं=तेजो सुवर्णं वा) ३४.५०. महापुष्टि करने वाले (रयिं=विद्यादि तथा सुवर्ण आदि धन को) आर्याभि० १.३. ऋ० १.१.१.३. उत्तमानां धनानां भोगम् ३.२०. **पोषस्य**=पोषकस्य जनस्य १२.८. **पोषः**=बहुगुणयोगेन पुष्टः (पदार्थः) प्र०—भूमा वै रायस्पोषः शत० ३.१.१.१२, ३.२०. **पोषाय**=पुष्यन्ति प्राणिनो यस्मिन् व्यवहारे तस्मै ३.२३. पोषणकराय (पुरुषाय) ११.७६. पुष्टिकराय (राये=धनाय) १.१४२.१०. **पोषे**=पुष्टौ १७.५४. पुष्यन्ति=यस्मिँस्तस्मिन् (यज्ञे) ५.५.९. पोषणे १७.५४. **पोषेण**=पालनेन १२.८. पोषणेन १७.५०. घृतदुग्धादिपुष्टिकारकपदार्थप्राप्त्या पं० वि० । पुष्यन्ति येन तेन (पदार्थेन) ४.२२. **पोषैः**=पुष्टिकारकैराप्तविद्याजनितैर्बोधयुक्तैर्व्यवहारैः ३.३७. उत्तम पुष्टिकारक व्यवहारों से सं० वि० १४६, ३.३७. [पुष पुष्टौ (भ्वा०) धातोर्घञ् अथवा कर्त्तरि अच्]

पोषयत् पोषयेत् ५.९.७. [पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

पोषयित्नु पोषकम् (अध्यापनासनम्) ७.२.९. पोषयित्री (धर्मशिक्षा) ३.४.९. पुष्टिकरम् (द्रव्यम्) ४.५७.१. [पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोः 'स्तनिहृषिपुषि०' उ० ३.२९. सूत्रेण णिजन्ताद् इत्नुच् प्रत्ययः । पोषयित्नु=पुष्टं पोषयितृ नि० १०.१५.]

पोष्या पोषयितुमर्हाणि (वार्य्याणि=धनादीनि) १.११३.१५. [पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोर्ण्यत् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

पोष्या पोषण करने योग्य पत्नी सं० वि० १४७, अथर्व० १४.१.५२. **पोष्याणाम्**=पोषितुं योग्यानाम् (हरीणां=मनुष्याणाम्) ४.४८.५. [पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोर्ण्यत् । ततः स्त्रियां टाप्]

पोष्यावतः बहवः पोष्याः पोषणीया विद्यन्ते येषान्तान् (नॄन्) ५.४१.८. [पोष्यप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । मतुप्प्रत्यये परे दीर्घश्छान्दसः]

पौञ्जिष्ठम् पुक्कसम् ३०.८.

पौर पुरोर्मनुष्यस्याऽपत्यं तत्सम्बुद्धौ ५.७४.४. **पौरम्**=पुरि भवं मनुष्यम् ५.७४.४. **पौरः**=पुरि भवः (इन्द्रः=वैद्यः) २.११.११. **पौराय**=पुरि भवाय (मनुष्याय) ५.७४.४. [पुरवः मनुष्यनाम निघं० २.३. ततोऽपत्यार्थेऽण् । उकारलोपश्छान्दसः । अथवा पुर्-प्राति० भवार्थेऽण्]

पौरुकुत्सिम् पुरवो बहवः कुत्साः शस्त्राऽस्त्रविद्यायोगा यस्य तस्याऽपत्यम् (सत्पुरुषम्) ७.१९.३. [पुरु-कुत्सपदयोः समासे कृतेऽपत्यार्थे 'अत इञ्' इतीञ् प्रत्ययः । पुरु=बहुनाम निघं० ३.१. कुत्सः=वज्रनाम निघं० २.२०.]

पौरुकुत्स्यस्य बहुवज्रादिशस्त्राऽस्त्रविदोऽपत्यस्य (सूरेः=मेधाविनो जनस्य) ५.३३.८. [पुरु-कुत्सपदयोः समासे कृतेऽपत्यार्थे यञ्-प्रत्ययः]

पौरुषेयः पुरुषाणां समूहः १५.१५. [पुरुषप्राति० समूहार्थे 'पुरुषाद् वधविकारसमूह तेनकृतेष्विति वक्तव्यम्' अ० ५.१.१०. वा० सूत्रेण ढञ् । ढस्य एयादेशः]

पौरुषेयीम् पौरुषेयस्य रीतिम् ७.४.३. **पौरुषेय्याः**=पुरुषसम्बन्धिन्याः (युक्ताहारविहारक्रियायाः) २१.४४.

पुरुषाणां समूहे साध्व्यः (स्त्रियः) २१.४३. [पौरुषेय इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां 'टिड्ढाणञ्०' इति ङीप्]

पौल्कसम् पुक्कसस्याऽन्त्यजस्याऽपत्यम् प्र०—अत्र पृषोदरादित्वादभीष्टसिद्धिः ३०.१७.

पौष्णः पूष्णः पृथिव्या अयं सम्बन्धी (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. पूषदेवताकाः (श्यामः पशुः) २९.५८. **पौष्णाः**=पुष्टिनिमित्तमेघदेवताकाः (श्यामाः पशवः) २४.७. पुष्टिकरमेघदेवताकाः (श्यामाः पशवः) २४.१४. पुष्टिकर-सम्बन्धिनः (कुलुङ्गाऽज-नकुलादयः) २४.३२. **पौष्णौ**=पूषदैवत्यौ (पिशङ्गौ=पीतवर्णौ पशू) २९.५९. [पूषन् इति व्याख्यातम् । ततः 'सास्य देवता' इत्यण्-प्रत्यये 'अन्' अ० ६.४.१६७. सूत्रेण प्रकृतिभावे प्राप्ते 'षपूर्वहन्धृतराज्ञामणि' अ० ६.४.१३५. सूत्रेणाकारलोपः]

पौंस्यम् पुंसु साधु (बलम्) ४.३०.२३. पुंभ्यो हितम् (वीर्यं=पराक्रमम्) ४.३०.८. पुरुषार्थम् २.१३.१०. पुरुषार्थस्य भावम् १.१५५.४. पुंसो भावम् १.१५५.३. पुंसो भावः कर्म बलं वा १.८०.१०. पुरुषार्थयुक्तं बलम् १.१०१.३. **पौंस्यानि**=वचनानि ६ ३६.३. **पौंस्याय**=पुंसु भवाय बलाय ७.३०.१. **पौंस्ये**=पुंसो भवे यौवने १.५६.३. [पौंस्यानि बलनाम निघं० २.९. पौंस्ये संग्रामनाम निघं० २.१७. पुंस्प्राति० भावे कर्मणि वा ष्यञ् प्रत्ययः । अथवा हितार्थे साध्वर्थे भवार्थे वा यञ् छान्दसः]

पौंस्या पुंभ्यो हितानि बलानि ४.३२.११. पुंसो बलानि प्र०—पौंस्यानीति बलनामसु पठितम् निघं० २.९. 'शेर्लुगत्र १.५.९. पुंसामिमानि बलानि ५.५९.४. पुरुषार्थजानि बलानि ६.४६.७. पुंसु साधूनि बलानि १.१३९.८. पौंस्यमिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

पौंस्येभिः उत्कृष्टैः शरीरात्मबलैः १.१००.१०. पुरुषार्थैः १.१६५.७. [पौंस्यमिति व्याख्यातम्, ततः 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

प्यायताम् सर्वतो वर्धताम् ३८.१८. वर्धयताम्, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः ५.७. **प्यायध्वम्**=आप्यायामहे वा प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः १.१. **प्यायन्ताम्**=पुष्टा भवन्तु १.९३.१२. **प्यायय**=वर्धय वर्धयति वा ५.७. **प्यायस्व**=पुषाण ३८.२१. प्यायते वा २.१४. वर्धस्व वर्धयेद् वा ५.७. [ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्यासिषीमहि स्तुवीमहि प्र०—अत्र 'प्यैङ् स्तुतौ' धातोः 'सिब्बुत्सर्गश्छन्दसि' अ० ३.१.३४. अनेन वार्त्तिकेन सिप् प्रत्ययः २.१४. सर्वतो वर्द्धेमहि ३८.२१. [प्यैङ् वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिङ् । सिब्विकरणश्छान्दसः]

प्र प्रकृष्टार्थे क्रियायोगे १.१०.११. गुणैर्यत्प्रकृष्टं तदर्थे क्रियायोगे २.११. अत्यन्तम् ८.३. प्रगतः १०.३०. प्रकृष्टतया २.१५. प्रकृष्टम् २.१२. प्रयत्नेन १७.३९. अधिक आर्याभि० २.११, ३४.३६. [आ इत्यर्वागर्थे, प्र परेत्यस्य प्रातिलोम्यम् नि० १.३. प्रेव नश्यसि पराचीव नश्यसि नि० ९.२८. अन्तरिक्षं वै प्र ऐ० २.४१. प्राणो वै प्र ऐ० २.४०.]

प्रउगम् प्रयोगाऽर्हम् (उक्थ्यम्=उपदेष्टुं योग्यं वचनम्) १५.११. [प्राणाः प्रउगम् कौ० १४.४. आतिच्छन्दसः प्रउगः कौ० २३.६. ग्रहोक्थं वा एतद्यत्प्रउगम् ऐ० ३.१.]

प्रकङ्कताः प्रकृष्टपीडाप्रदाश्चञ्चलाः (सर्पादयः) १.१९१.८. [प्र-कङ्कतपदयोः समासः । कङ्कतम्=ककि गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽतच्]

प्रकरत् प्रकृष्टतया कुर्यात् ४.२९.३. [प्र+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ् । 'कृमृदृरुहिभ्यः०' इति च्लेः स्थानेऽङ्]

प्रकरितारम् विक्षेप्तारम् (पुरुषम्) ३०.१२. [प्र+कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

प्रकलवित् यः प्रकृष्टं कलनं सङ्ख्यां वेत्ति सः (इन्द्रः=राजा) ७.१८.१५. [प्रकलोपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । प्रकलविद् वणिग् भवति, कलाश्च वेद प्रकलाश्च नि० ६.६.]

प्रकामाय प्रकृष्टकामनासिद्धये ३०.१२. [प्र-कामपदयोः समासः । कामः=कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोर्घञ्]

प्रकामोद्याय यः प्रकृष्टैः कामैरुद्यतस्तस्मै (पुरुषाय) ३०.९.

प्रकुपितान् प्रकोपयुक्तान् शत्रूनिव वर्त्तमानान् (पर्वतान्=मेघान्) २.१२.२. [प्र+कुप क्रोधे (दिवा०) धातोः क्तः प्रत्ययः]

प्रकृणुध्वम् प्रकुरुध्वम् १.१२२.४. **प्रकृण्वे**=प्रकर्षतया करोमि १.१३८.२. [प्र+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

प्रकृथ प्रकर्षेण कुरुथ प्र०—अत्र लोडर्थे लट् विकरणस्य लुक् च १.११२.८. [प्र+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लट् । विकरणस्य लुक्]

प्रकेतम् प्रकृष्टं विज्ञानम् २.१७.७. **प्रकेतः**=प्रकृष्टा केतः प्रज्ञा यस्य सः (भा०—अध्यापक उपदेष्टा च जनः)

३४.१८. प्रकृष्टप्रज्ञः (वसिष्ठः=पूर्णविद्वान् जनः) ७.३३.१२. प्रकृष्टप्रज्ञावान् प्रज्ञापकः (अग्निः=स्वप्रकाशस्वरूपो जगदीश्वरः) ७.११.१. **प्रकेतेन**=प्रकृष्टेन विज्ञानेन १५.६. **प्रकेतैः**=प्रकृष्टाभिः प्रज्ञाभिः ७.३३.९. [प्र+केतपदयोः समासः। केतः प्रज्ञानाम निघं० ३.९. प्रकेतः=प्रकेतनम् प्रज्ञाततमम् नि० २.१९.]

प्रक्रमते प्रकर्षेण प्राप्नोति १.१४४.१. [प्र=क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रक्रीळान् प्रकृष्टान् विहारान् ४.४१.११. **प्रक्रीडेन**=उत्तमक्रीडया ३९.९. [प्र+क्रीड़ृ विहारे (भ्वा०) धातोर्घञ् प्रत्ययः]

प्रक्रीळिनः प्रकृष्टा क्रीळा विद्यते येषान्ते (वत्सासः=सद्यो जाता वत्साः) ७.५६.१६. [प्रक्रीडाप्राति० प्रशंसायाम् इनिः प्रत्ययः]

प्रखादः अतिभक्षकः (इन्द्रः=सेनेशः) १.१७८.४. [प्र+खादृ भक्षणे (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि]

प्रखिदते प्रकृष्टतया क्षीणाय (जनाय) १६.४६. [प्र+खिद दैन्ये (दिवा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन शः]

प्रगर्द्धिनः प्रकर्षोऽभिकाङ्क्षिणः (श्येनस्य) ९.१५. प्रलुब्धस्य (श्येनस्य) ४.४०.३. [प्र+गृधु अभिकाङ्क्षायाम् (दिवा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

प्रगाथाः ये प्रकर्षेण गीयन्ते ते (विद्वांसो जनाः) १९.२४. [प्र+गाथपदयोः समासः। गाथः=गै शब्दे (भ्वा०) धातोः 'उषिकुषिगार्त्तिभ्यस्थन्०' उ० २.५. सूत्रेण थन्। मनः प्रगाथः जै० उ० ३.१.४.३. प्राणापानौ वै बार्हतः प्रगाथः कौ० १५.४.]

प्रगाय अधिकं स्तुहि ६.४०.१. **प्रगायत**=प्रशंसत ५.६८.१. [प्र+गै शब्दे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रगाहमानः प्रयत्नेन विलोडनं कुर्वन् (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३९. [प्र+गाहू विलोडने (भ्वा०) धातोः शानच्]

प्रगिरिभ्यः प्रकर्षेण शैलेभ्यः १.१०९.६. [प्र-गिरिपदयोः समासः]

प्रगूर्त्त उद्यच्छत १.१७३.२. [प्र+गुर्वी उद्यमने (भ्वा०) धातोर्लोट्। विकरणस्य शपो लुक्]

प्रघासिनः प्रघस्तुमत्तुं शीलमेषां तान् (अ०—अतिथीन्) ३.४४. **प्रघासी**=बहवः प्रकृष्टा घासा भोज्यानि विद्यन्ते यस्य सः (भा०—बह्वन्नसामर्थ्यो गृहस्थ-जनः) १७.८५. [प्र+घस्लृ अदने (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः। अथवा प्र-घासपदयोः समासे मतुबर्थे इनिः]

प्रचक्षय प्रख्यापय १.१३४.३. [प्र+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

प्रचर विजानीह्यनुतिष्ठ ४.३७. [प्र+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रचर्षणी सम्यक् सुख-प्रापकौ (इन्द्राग्नी=विद्युद्भौतिकाग्नी) प्र०—चर्षणिरिति पदनाम निघं० ४.२, १.१०९.५. [प्र-चर्षणिपदयोः समासः। चर्षणिः=चायिता नि० ८.१४]

प्रचाकशत प्रकाशते ४.५३.४. [प्र+काशृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

प्रचातयस्व प्रकर्षेण हिंसय हिन्धि वा ५.४.६. प्रकृष्टतया नाशं प्रापय प्र०—चततिर्गतिकर्मा निघं० २.१४, ७.१.७. [प्र+चतति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

प्रचिकितः प्राप्तविज्ञानः (पित्रादिजनः) १९.५२. [प्र-चिकितपदयोः समासः]

प्रचिकितुः विजानन्ति ७.११.३. [प्र+कि ज्ञाने (जु०) धातोर्लिट्]

प्रचिकित्स रोगनिवारणायेव विघ्ननिवारणोपायं कुरु ३४.२३. [कित निवासे रोगापनयने च (भ्वा०) धातोः प्रपूर्वाद् 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्' इति स्वार्थे सन्नन्ताल् लोट्]

प्रचेकिते प्रकृष्टतया जानाति १.५५.३. [प्र कि ज्ञाने (जु०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रचेतयति प्रकृष्टतया सम्यङ् ज्ञापयति १.३.१२. प्रज्ञापयति २०.८६. [प्र+चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

प्रचेतसम् प्रकर्षेण ज्ञापयितारम् (अध्यापकम्) ७.१६.१२. प्रकर्षेण सञ्ज्ञापकम् (अग्निं=पावकम्) ३.२९.५. प्रकृष्टं चेतो विज्ञानं यस्य यस्माद् वा तम् (विद्यावन्तं जनम्) १.४४.११. प्रकृष्टप्रज्ञायुक्तम् (विद्वांसम्) ४.१.१. विविधप्रज्ञानयुक्तम् (अग्नि=विद्वांसं जनम्) ४.१.१. प्रकृतप्रज्ञम् (पुरुषम्) प्र०—चेता इति प्रज्ञानाम निघं० ३.९, १२.११०. **प्रचेतसः**=प्रकृष्टं चेतः संज्ञानं येभ्यस्ते (वायवः) १.६४.८. शिक्षया प्रकर्षेण विज्ञापितान् (अश्वान्=तुरङ्गान्) २९.५०. प्रकृष्टं चेतो विज्ञानं यासां ताः (सेनाः) १.८४.१२. प्रकृष्टं चेतो ज्ञानं यस्य तस्य (परमेश्वरस्य) २.२३.२. प्रज्ञापकाः (विद्वज्जनाः) ५.८७.९. **प्रचेतसे**=प्रकृष्टं चेतः प्रज्ञा यस्य तस्मै (महाराजाय) ७.३१.१०. **प्रचेतसौ**=प्रकृष्टविज्ञानयुक्तौ (भिषजा=

चिकित्सकौ) २८.७. **प्रचेतः**=प्रकृष्ट-प्रज्ञ (विद्वज्जन) १.११३.१. प्रकृष्टविज्ञान (अग्ने=विद्वज्जन) ६.१३.३. प्रकर्षेण प्रज्ञया युक्त (अध्यापक) ७.१७.५. **प्रचेताः**=प्रकृष्टं चेतः प्रज्ञा यस्य सः, भा०—यो न मूढः (विद्वान् जनः) २०.३७. यः शयानान् प्रचेतयति सः (अग्निः=विद्युत्) २.१०.३. प्रकृष्टञ्चेतः संज्ञानमस्य सः (कविः=क्रान्तप्रज्ञो मेधाविजनः) २९.२५. प्रकृष्टयुक्तो विज्ञापको वा (अग्निः=विद्वान्) ३.२५.१. यथा प्राणः प्रचेतयति तथा (जगदीश्वरो विद्वान् वा पुरुषः) ५.३१. प्राज्ञः प्रज्ञापकः (अग्निः=विद्वान् जनः) ४.६.२. प्रज्ञापयिता (महाविद्वज्जनः) ७.४.४. प्रकर्षेण प्रज्ञापकः (अग्निरिव गृहपालको मनुष्यः) ७.१६.५. प्रकृष्ट ज्ञानस्वरूप, प्रकृष्ट ज्ञान को देने वाला (ईश्वर) आर्याभि० २.१६, ५.३१. यः प्रकृष्टविज्ञानः (विश्वकर्मा=विद्वान् जनः) यया प्रकृष्टतया चेतन्ति संजानन्ति सा (वाक्) ५.११. प्रकृष्टतया सदर्थज्ञापिका (स्त्री) ३.६१.१. [प्र-चेतस्पदयोः समासः। चेतस्=चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोरसुन्। चेतः प्रज्ञानाम निघं० ३.९. प्रचेताः=प्रवृद्धचेताः नि० ८.५. प्रचेतसः=प्रवृद्धचेतसः नि० ९.१९.]

प्रचेतसा प्रकृष्टतया प्रज्ञाननिमित्ते (क्षितिसूर्यौ) १.१५९.१. प्रकृष्टज्ञानौ (मित्रावरुणौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७१.२. प्रकृष्टं चेतो विज्ञानं ययोस्तौ (कवी=मेधाविनौ) २८.३०. [प्र-चेतस्पदयोः समासे 'सुपां सुलुक्०' इति प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः]

प्रचेतुने प्रचेतयन्त्यानन्देन यस्मिँस्तस्मिन् (पदे=प्राप्तुं योग्ये व्यवहारे) १.२१.६. [प्र+चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

प्रचोदयन् प्रज्ञापयन् (अध्यापकः) ३.२७.७. [प्र+चुद सञ्चोदने (चुरा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रचोदयन्ता प्रेरयन्तौ (कारू=शिल्पिनौ जनौ) २९.३२. [प्र+चुद् सञ्चोदने (चुरा०)+शतृ। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः। प्रचोदयन्ता=प्रचोदयमानौ नि० ८.१२.]

प्रचोदयात् सद्गुणकर्मस्वभावेषु प्रेरयतु ३.६२.१०. भा०—अधर्माचरणान्निवर्त्य धर्माचरणे प्रेरयेत् २२.९. प्रकृष्टं प्रेरयेत् भा०—नित्यं प्रवर्त्तयेत् ३.३५. प्रेरणा करे सं० वि० ७५, ३६.३. बुरे कामों से छुड़ाकर अच्छे कामों में प्रवृत्त करे स० प्र० ५१, ३६.३. [प्र+चुद सञ्चोदने (चुरा०) धातोर्लेट्]

प्रच्छत् प्रयत्नेन दुष्टस्वभावदूरीकरणार्थं कर्म्म १५.५. [प्र+छद अपवारणे (चुरा०) धातोः क्विप्]

प्रच्छिदम् यः प्रच्छिनत्ति तम् (नरम्) ३०.१७. [प्रोपपदे छिदिर् द्वैधीकरणे (रुधा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

प्रच्यावयति प्रकर्षेण चालयति ७.१९.१. **प्रच्यावयन्ति**=प्रकृष्टतया प्रचालयन्ति १.६४.३. निपातयन्ति ५.५६.४. **प्रच्यावयसि**=प्रापयसि ३.४३.७. [प्र+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

प्रच्यावयन्तः विमानादीनि यानानि प्रचालयन्तः सन्तः (सभाद्यध्यक्षादयः) १.८५.४. [प्र+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच् छतृप्रत्ययः]

प्रजज्ञिवान् प्रजातः सन् (अग्निः=वह्निः) ३.२.११. [प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लिटः क्वसुः प्रत्ययः]

प्रजज्ञे प्रकृष्टतया जायताम् १.१२१.६. [प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लिट्। 'गमहन०' इत्युपधालोपः]

प्रजननम् प्रजनयन्ति येन तत् (अपत्यम्) १९.४८. प्रकटनम् ३.२९.१. **प्रजननाय**=सन्तानोत्पादनाय ३.६३. [प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः करणे ल्युट्। प्रजापतिः प्रजननम्। जैं० २.९५. प्रजननं वै सोमः जैं० ३.१९१. प्रजननं सप्तदशः काठ० २१.१. प्रजा वै पशवः प्रजननम्' जैं २.१०८. यानि द्वादश (अक्षराणि) प्रजननं तत् जैं० १.२०४. संवत्सरो वै प्रजननम् काठ० ७.१५.]

प्रजनय प्रकटय ३४.३६. प्रकट कीजिए सं० वि० १५६, ७.४१.३. अच्छे प्रकार से उत्पन्न कर आर्याभि० २.११, ३४.३६. [प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

प्रजनयन् निष्पादयन्नेव (योगी) ७.१३. परमेश्वर इव प्रकटयन् (न्यायाधीशो राजा) ७.१८. [प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

प्रजभ्रुः प्रकर्षेण धरन्तु ३.५४.१. [प्र+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' इति हकारस्य भकारादेशः]

प्रजया सर्वेण संसारेण ८.३६. स्वसन्तानादिना ८.१७. राज्येन सन्तानसमूहेन वा ५.२८. प्रजातया (सृष्ट्या) ३२.५. सुसन्तानाद्यया सह १.१३६.६. सुपुत्रादियुक्तया १.९३.३. सुसन्तानैः २०.२२. सन्तानेन १२.७. **प्रजा**=सुसन्ताना यज्ञसम्पादिका (सृष्टिः) १.२३. **प्रजानाम्**=प्राणिमात्राणाम् ३४.२. उत्पन्नानां पदार्थानाम् ३७.१४. सर्वेषां व्यवहाराणाम् ३४.५. मनुष्यादीनाम् १६.४७. पालनीयानाम् (सन्ततीनाम्) १८.२८. **प्रजाभिः**=प्रजातैः

(पशुभिः) ६.७०.३. पालनीयाभिः (सन्ततिभिः) ५.४.१०. अनुकूलाभिः स्त्र्यौरसविद्यासन्तान-मित्र-भृत्य-राज्य-पश्वादिभिः ३.३७. भा०—सभ्यसैन्य-प्रजाजनैः ७.२९. पुत्रपौत्रादि उत्तमगुणवाली प्रजाओं से आर्याभि० २.३५, ३.३७. **प्रजाभ्यः**=उत्पन्नाभ्यः सृष्टिभ्यः ४.२५. स्वसन्तानेभ्यः १२.७२. पालनीयाभ्यः (प्राणिभ्यः) ११.३८. प्रसिद्धाभ्यः (मानुषीभ्यः=मनुष्यादिभ्यः) ११.४५. प्रजाताभ्यो विद्युदादिभ्यः १३.५७. **प्रजाम्**=या प्रजायते ताम् (सृष्टिम्) ४.१३. स्वसन्तानान् संरक्षणीयान् जनान् ६.३. पुत्रपौत्रप्रभृतिम् १९.४८. पुत्रपौत्रादिकाम् १.१२५.१. उत्तमान् सन्तानान् राष्ट्रं वा ४.३६.९. सुसन्तानरूपाम् (सृष्टिम्) ३४.१०. उत्पन्नां सृष्टिम् ५.१७. पालनीयाम् (सृष्टिम्) ९.२५. उत्पादनीयाम् (सन्ततिम्) ५.२७. सन्ततिम् २५.७. सुसन्तानम् ११.५८. सत्यबलधर्मयुक्ताम् (सृष्टिम्) ११.५८. सुप्रजाताम् (सन्तानोत्पत्तिम्) ११.५८. राज्यम् १.१७९.६. प्रजा को सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.३१. **प्रजायाः**=मनुष्यादिसृष्टये प्र०—अत्र चतुर्थ्यर्थे षष्ठी १.१५९.२. विद्यमानायाः (सृष्टेः) ३.३९. **प्रजायै**=प्रजासुखाय ७.५७.६. **प्रजासु**=प्रकृतिजीवादिषु ३२.८. जनेषु ३४.३. प्रजाओं में स० प्र० २४७, ३४.३. **प्रजाः**=प्रादुर्भूताः पालनीयाः (सृष्टयः) १.४३.९. समुत्पन्नाः (सृष्टयः) १.६७.५. मनुष्यादिसृष्टयः ४.२५. जगत्स्थाः (सृष्ट्यः) ४.२५. प्रजननीयाः (प्रजाजनाः) ६.२६. प्रजा एव ७.१८. संरक्षणीयाः (सृष्टयः) ७.१७. प्रजायन्ते यास्ताः (सन्ततयः) १.९६.२. पालनीयाः (सन्ततयः) १४.२६. तदधीनपालनाः (सन्ततयः) ९.२१. प्रजाताः (सर्वलोकाः) ३.५५.१९. [प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'उपसर्गे च संज्ञायाम्' अ० ३.२.९९. सूत्रेण डः प्रत्ययः। स्त्रियां टाप्। प्रजा अपत्यनाम निघं० २.२. प्रजा वै तोकम् श० ७.५.२.३९. प्रजा वै सूनुः श० ७.१.१.२७. प्रजा वै तन्तुः ऐ० ३.११. प्रजा वा अप्नुरित्याहुः गो० पू० ५.९. प्रजा वा ऽअरीः श० ३.९.४.२१. प्रजा वा ऽइषः श० १.७.३.१४. प्रजा वै भूतानि श० २.४.२.१. प्रजा वै बर्हिः कौ० ५.७, १८.१०. प्रजानुरूपः ऐ० ३.२३. प्रजाशस्त्रम् श० ५.२.२.२०. प्रजा पशवः सूक्तम् कौ० १४.४. प्रजा वा उक्थानि तै० १.८.७.२. प्रजाः सतो बृहती गो० उ० ६.८. आदित्या वा इमाः प्रजाः तां० १८.८.१२. द्वय्यो ह वा ऽइदमग्रे प्रजा आसुः। आदित्याश्चाङ्गिरसश्च श० ३.५.१.१३. वैश्वदेव्यो वै प्रजाः तै० १.६.२.५. आगस्त्यो वै प्रजाः श० १३.३.४.५. आयास्यो वै प्रजाः तै० ३.९.११.४. आद्याः हीमाः प्रजा विशः श० ४.२.१.१७.]

प्रजवः प्रकृष्टो वेगः ७.३३.८. [प्र+जु इति सौत्रो धातुः, वेगितायां गतौ। ततः 'जवसवौ छन्दसि वक्तव्यौ' अ० ३.३.५६. वा० सूत्रेण अच्प्रत्ययः]

प्रजवेते प्रगच्छतः ३.३३.१. [प्र+जु इति सौत्रो धातुः। ततो लट्]

प्रजातम् उत्पन्नम् (मनः) १.१६४.१८. **प्रजातः**=प्रसिद्ध उत्पन्नः (पुत्रः=अध्येता) १.६९.१. [प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः। धातोः स्थाने जादेशः]

प्रजानतीव यथा विज्ञानवती विदुषी तथा (उषाः) १.१२४.३. [प्रजानती-इवपदयोः समासः। प्रजानती=प्र+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०)+शतृ+ङीप्]

प्रजानन् प्रकृष्टतया जानीयुः १.७२.१०. [प्र+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्लङ्। अटोऽभावः]

प्रजानन् प्रज्ञावान् सन् (सम्राट्=चक्रवर्त्ती राजा) ९.२४. प्रकृष्टतया जानन् (पतिः) १३.३४. प्रकर्षेण जानन् सन् (न्यायाधीशः) ३५.१. प्रकृष्टतया बुद्ध्यमानः (इन्द्रः=शिल्पिजनः) ३.३५.४. प्रकर्षेण विदन्त्सन् (अश्वः=शीघ्रगामी वह्निः) २९.१०. प्रकर्षता से जानता हुआ गृहस्थ जनः) सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. विद्वान् (पुरुषार्थिजनः) ३.२९.१६. [प्र+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः शतृ-प्रत्ययः]

प्रजापतये प्रजापालकाय (विदुषे जनाय) २२.५. प्रजायाः पालकाय (विदुषे गृहस्थाय) २२.४. प्रजास्वामिने (राज्ञे) २४.२९. प्रजारक्षकाय (राजपुरुषाय) १८.२८. **प्रजापतिम्**=विश्वस्थं पालकं स्वामिनम् (परमेश्वरम्) २३.६४. **प्रजापतिः**=प्रजापालक ईश्वरः १४.३. प्रजापालको जीवः १९.७८. प्रजापालकः सूर्यः २३.६३. प्रजायाः स्वामी (परमेश्वरः) ८.५४. विश्वस्याऽध्यक्षः (ईश्वरः) ८.३६. सन्तानादिपालकः (गृहपतिः) ८.१०. सर्वस्याः प्रजायाः स्वामित्वात् (ईश्वरः) ३२.१. प्रजायाः पालकोऽधिष्ठाता (परमेश्वरः) ३२.५. प्रजापालकः सभेशो राजा १९.७५. सब जगत् का पति (स्वामी) और पालन करने वाला (परमात्मा) आर्याभि० २.४, ३२.१. सब संसार का अधिष्ठाता पालक (ईश्वर) आर्याभि० २.५४. सकल सृष्टि की उत्पत्ति और पालन करने हारा सर्वव्यापक स्वामी परमात्मा सं० वि० १८७, १९.७७. **प्रजापते**=प्रजायाः स्वामिन्नीश्वर १०.२०. प्रजारक्षक (राजन्) २३.८. **प्रजापतेः**=सन्तानादिरक्षकस्य (गृहपतेः) ८.१०. प्रजायाः

पालकस्य (ईश्वरस्य) २२.११. प्रजानां पतिः पालनहेतुः सूर्यस्तस्य ४.२६. विश्वम्भरस्य जगदीश्वरस्यैव धार्मिकस्य राज्ञः ९.२१. **प्रजापतौ**=प्रजायाः पालके परमेश्वरे ३५.६. [प्रजा-पतिपदयोः समासः। 'पतिः समास एव' इति घि-संज्ञकत्वेन गुणादयः। प्रजापतिः यज्ञनाम निघं ३.१७. प्रजापतिः पाता वा पालयिता वा नि० १०.४१. तद् यदब्रवीत् (ब्रह्मा) प्रजापतेः प्रजाः सृष्ट्वा पालयस्वेति तस्मात् प्रजापतिरभवत् तत् प्रजापतेः प्रजापतित्वम् गो० पू० १.४. एष वै प्रजापतिः, यदग्निः तै० १.१.५.५. यो ह खलु वाव प्रजापतिः, स उ वेवेन्द्रः तै० १.२.२.५. एष प्रजापतिर्यद्धृदयम् श० १४.८.४.१. यः प्रजापतिस्तन्मनः जै० उ० १.३३.२. वाग्वै प्रजापतिः श० ५.१.५.६. स एष संवत्सरः प्रजापतिः षोडशकलः श० १४.४.३.२२. प्रजापतिर्वै सप्तदशः तां० २.१०.५. संवत्सरो वै पिता वैश्वानरः प्रजापतिः श० १.५.१.१६. एष वै प्रत्यक्षं यज्ञो यत्प्रजापतिः श० ४.३.४.३. प्रजापतिरश्वमेधः श० १३.२.२.१३. एष ह प्रजानां प्रजापतिर्यद् विश्वजित् गो० पू० ५.१०. यो ह्येव सविता स प्रजापतिः श० १२.३.५.१. प्राणो हि प्रजापतिः प्रजापतिं ह्येवेदं सर्वमनु (प्रजायते) श० ४.५.५.१३. अन्नं वा ऽअयं प्रजापतिः श० ७.१.२.४. वायुर्ह्येव प्रजापतिः ऐ० ४.२६. अर्धं ह प्रजापतेर्वायुरर्धं प्रजापतिः श० ६.२.२.११. स एष वायुः प्रजापतिः श० ८.३.४.१५. प्रजापतिः प्रणेता तै० २.५.७.३. प्रजापतिर्वै भूतः तै० २.१.९.३. प्रजापतिर्बन्धुः तै० ३.७.५.५. प्रजापतिरूनातिरिक्तयोः प्रतिष्ठा ऐ० ५.२४. एकविंशो वै प्रजापतिः ऐ० १.३०. हिरण्मयः प्रजापतिः श० १०.१.४ ९. प्रजापतिर्वै हिरण्यगर्भः श० ६.२.२.५. प्रजापतिर्वै ब्रह्मा गो० उ० ५.८. ब्रह्म वै प्रजापतिर्ब्राह्मो हि प्रजापतिः श० १३.६.२.८. प्रजापतिर्वै चन्द्रमाः श० ६.१.३.१६. सोमो हि प्रजापतिः श० ५.१.५.२६. प्रजापतिः स्वरः ष० ३.७. प्रजापतिः स्वरसामानः कौ० २४.४. सर्वाणि छन्दांसि प्रजापतिः श० ६.२.१.३०. पाङ्क्तः प्रजापतिः श० १०.४.२.२३. आनुष्टुभः प्रजापतिः तै० ३.३.२.१. अतिच्छन्दो वै प्रजापतिः कौ० २३.४,८. प्रजापतेर्वा एतदुक्थं यत्प्रातरनुवाकः ऐ० २.१७. (योऽयं चक्षुषि पुरुषः) एष प्रजापतिः जै० उ० १.४३.१०. प्रजापतिः सदस्यः गो० पू० ५.४. प्रजापतिर्वाऽउद्गाता श० ४.३.२.३. प्रजापतिरुद्गीथः तै० ३.८.२२.३. अथर्वा वै प्रजापतिः गो० पू० १.४. सत्यं हि प्रजापतिः श० ४.२.१.२६. प्रजापतिर्वै गार्हपत्यः कौ० २७.४. घृतञ्च वै मधु च प्रजापतिरासीत् तै० ३.३.४.१. प्रजापतिर्ह्यात्मा श० ६.२.२.१२. पुरुषः प्रजापतिः श० ६.२.१.२३. एष उ एव प्रजापतिर्यो यजते ऐ० २.१८. पितरः प्रजापतिः गो० उ० ६.१५. अंशुर्वै नाम ग्रहः स प्रजापतिः श० ४.१.१.२. ऋषभो वै पशूनां प्रजापतिः श० ५.२.५.१७. प्रजननं प्रजापतिः श० ५.१.३.१०. स प्रजापतिरब्रवीदथ कोऽहमिति यदेवैतदवोच इत्यब्रवीत्ततो वै को नाम प्रजापतिरभवत् को वै नाम प्रजापतिः ऐ० ३.२१. कम् वै प्रजापतिः श० २.५.२.१३. स (प्रजापतिः) उ वाव भुवनस्य गोपाः जै० उ० ३.२.११. प्रजापतिर्वै बृहदुक्षः श० ४.४.१.१४. प्रजापतिर्वै बृहन् विपश्चित् ६.३.१.१६. प्रजापतिर्वै नृमणाः श० ६.७.४.३. प्रजापतिर्वै नृचक्षाः श० ६.७.४.५. प्रजापतिर्धाता श० ९.५.१.३८. प्रजापतिर्वै जमदग्निः श० १३.२.२.१४. प्रजापतिर्वै चतुर्होता तै० २.२.३.५. प्रजापतिर्वै दशहोता तै० २.२.१.१. प्रजापतिर्वै होतॄणां होता तै० २.३.५.६. प्रजापतिर्वै द्रोणकलशः श० ४.३.१.६. प्रजापतिरेव निधनम् जै० उ० १.५८.९. प्रजापतिर्वै क्षत्रम् श० ८.२.३.११. प्रजापतिर्वै चित्पतिः श० ३.१.३.२२. इमे लोकाः प्रजापतिः श० ७.५.१.२७. प्रजापतिर्वा ऽअतीतान् (त्रीन्) लोकांश्चतुर्थः श० ४.६.१.४. द्यावापृथिवी हि प्रजापतिः श० ५.१.५.२६. प्राजापत्यो वा ऽअयं (भू) लोकः तै० १.३.७.५. प्रजापतिर् वै पृथिव्यै जनिता श० ७.३.१.२०. सप्तविधो वा ऽअग्रे प्रजापतिरसृज्यत श० १०.२.३.१८. स एव पुरुषः प्रजापतिरभवत्। यान् वै तान् सप्तपुरुषान् एकं पुरुषमकुर्वन्त्स प्रजापतिरभवत् श० १०.२.२.१. एक उ वै प्रजापतिः कौ० २९.७. प्रजापतिः सर्वा देवताः तै० ३.३.७.३. उभयम्वैतत् प्रजापतिर्यच्च देवा यच्च मनुष्याः श० ६.८.१.४. मातेव च हि पितेव च प्रजापतिः श० ५.१.५.२६. रूपं वै प्रजापतिः''' नाम वै प्रजापतिः तै० २.२.७.१. सर्वमु ह्येवेदं प्रजापतिः श० ५.१.१.४. प्रजापतिर्वै विश्वजित् कौ० २५.१२. अपरिमितो हि प्रजापतिः गो० उ० १.७. उभयम्वेतत् प्रजापतिर्निरुक्तश्चानिरुक्तश्च परिमितश्चापरिमितश्च श० ६.५.३.७. अनिरुक्त उ वै प्रजापतिः कौ० २३.२,६. प्रजापतिर्वै देवानामन्नादो वीर्यवान् तै० ३.८.७.१. प्रजापतिर्वै देवानां वीर्यवत्तमः श० १३.१.२.५. अथ यत्परं भाः (सूर्यस्य) प्रजापतिर्वा सः श० १.९.३.१०. यत्परं भाः प्रजापतिर्वा स इन्द्रो वा श० २.३.१.७. प्रजापतिर्वा अमृतः श० ६.३.१.१७. प्रजापतिश्चतुस्त्रिंशो देवानाम् तां० १७.११.३. पूर्ण इव हि प्रजापतिः तै० २.१.२.१. प्रजापतिर्हि स्वाराज्यम् तां० १९.१३.३. अन्तो वै प्रजापतिः श० ५.१.३.१३. प्रजापतिर्विराजम् (साम) तां० १६.५.१०. साहस्रः

प्रजापतिः तै० सं० ५.२.८.३.]

प्रजापतिगृहीतया प्रजापतिर्गृहीतो यया स्त्रिया तया १३.५४. [प्रजापति-गृहीतपदयोः समासः। गृहीतः=ग्रह उपादाने (क्र्या०)+क्तः]

प्रजापतिभक्षितस्य प्रजास्वामिनेश्वरेण सेवितस्य भक्षितस्य वा (पयसः=उदकस्य दुग्धस्य वा ३८.२८. [प्रजापति-भक्षितपदयोः समासः]

प्रजायन्ते प्रकृष्टतयोत्पद्यन्ते ३.३६.५. **प्रजायेमहि**= प्रकृष्टतया जायेमहि १.९७.४. [प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लङ् अडभावश्च]

प्रजावत् प्रजा विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (ब्रह्म=धनमन्नं वा) ६.१६.३६. प्रशस्ताः प्रजा भवन्ति यस्मात्तत् (आयुः= अन्नम्) १.११३.१७. बह्वचः प्रजा विद्यन्ते यस्य तत् (सौभगं=महदैश्वर्यम्) ५.८२.४. **प्रजावता**=प्रशस्ताः प्रजा विद्यन्ते यस्मिँस्तेन (राधसा=विद्यासुवर्णादिधनेन) १.९४.१५. **प्रजावतः**=प्रशस्ता प्रजा येषु तान् (वाजान्= सङ्ग्रामान्) १.९२.७. प्रशस्ताः प्रजा विद्यन्ते यस्मिँस्तस्य (वाजस्य=अन्नादेर्विज्ञानस्य वा) ३.१६.६. [प्रजाप्राति० प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुप्]

प्रजावती प्रजापालनतत्परा (विधवा स्त्री) ऋ० भू० २१४, अथर्व० १४.२.१८. उत्तम पुत्र-पौत्रादि से सहित (स्त्री) स० प्र० १५२, अथर्व० १४.२.१८. प्रजा को प्राप्त होने वाली (सौभाग्यप्रदा नारी) सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३२. **प्रजावतीषु**=प्रशस्तप्रजायुक्तासु (रीतिषु) ७.१.११. **प्रजावतीः**=बहुप्रजा विद्यन्ते यासु ताः (उषसः=प्रभातवेलाः) ६.२८.१. बहुप्रशंसितप्रजायुक्ताः (इषः=अन्नादीच्छाः) ६.५२.१६. भूयस्यः प्रजा वर्त्तन्ते यासु ताः (अघ्न्याः=गाः) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् १.१. प्रशस्ताः प्रजा विद्यन्ते यासां ताः (गाः) ६.२८.७. [प्रजा-प्राति० प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुबन्तान् ङीप्]

प्रजावतः बह्वचः प्रजा उत्पन्ना विद्यन्ते येषु मासेषु तान् प्र०—अत्र भूमार्थे मतुप् १.२५.८. **प्रजावन्तम्**= बहुप्रजायुक्तम् (रयिं=धनम्) ४.५३.७. बह्वचः प्रजा विद्यन्ते यस्य तम् (रयिं=धनम्) ४.५१.१०. **प्रजावन्तः**= बह्वचः सुसन्तानराष्ट्राख्याः प्रजा विद्यन्ते येषान्ते (मनुष्याः) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् ३.५६. **प्रजावान्**=सन्तानवान् (गातुः=भूमिः) ३.५४.१८. बह्वचः प्रजा विद्यन्ते यस्य सः (परमेश्वरः) ३.५६.३. बह्वयः प्रजा विद्यन्ते यस्मिन् सः (भगः=ऐश्वर्यम्) ३.३०.१८. [प्रजाप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

प्रजासनि प्रजाः सनति येन तत् (अपत्यम्) १९.४८. [प्रजोपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसन-रक्षिमथाम्' अ० ३.२.२७. सूत्रेण इन् प्रत्ययः]

प्रजिगतः प्रकर्षेण भृशं प्राप्नुतः प्र०—अत्र यङन्तात् परस्य लटः शतृ यङो लुक् 'वाच्छन्दसि' इत्यभ्यासस्येत्वम् १.१५०.२. **प्रजिगाति**=प्रकर्षेण गच्छति ६.६.१. प्रकृष्ट-तया प्रशंसति १.८७.५. प्रकर्षेण स्तौति ३.२७.१. [प्रपूर्वाद् गा स्तुतौ (जु०) धातोर्यङन्ताच्छतृ। यङो लुक् च। अन्यत्र लट्]

प्रजिन्व प्रकृष्टतया प्रीणीहि ३.१५.६. **प्रजिन्वन्**= प्रकृष्टतया तर्प्पयन्तु १.७१.१. [प्रपूर्वाज् जिवि प्रीणनार्थे (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लङ्। अडभावश्छान्दसः]

प्रजिहीते प्रकर्षेण प्राप्नोति १.१६६.५. [प्रपूर्वाद् ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लट्]

प्रजुजुषुः प्रकृष्टतया सेवेरन् १.१५२.५. [प्रपूर्वाज् जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेन परस्मै-पदम्]

प्रजुहोमि प्रकर्षेण क्षिपामि १.१६२.१९.

प्रज्ञानम् प्रजानाति येन तद् बुद्धिस्वरूपम् (मनः) ३४.३. उत्कृष्ट ज्ञान वाला (मनः=मन) स० प्र० २४६, ३४.३. **प्रज्ञानाय**=प्रकृष्टज्ञानवर्द्धनाय भा०—प्रज्ञादानाय ३०.१०. [प्र+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः करणे ल्युट्। प्रज्ञानं ब्रह्म ऐ० आ० २.६.]

प्रज्ञानीः प्रज्ञापिनी व्यवहारसाधिका (दिशः) ऋ० भू० ५ [प्र+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्ल्युडन्तान् ङीप्]

प्रज्ञेषम् प्रकर्षेण जानीयाम् प्र०—जानातेर्लेटि सिपि रूपम् २०.२५. [प्र+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्लेटि सिपि च रूपम्]

प्रणक् प्रणश्यतु प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् 'मन्त्रे घस-ह्वरणश०' अ० २.४.८०. अनेन सूत्रेण च्लेर्लुक् च १.१८.३. प्रणष्टो भवेत् २.२३.१२. प्रणाशयेत् ७.५६.९. [प्र+णश् अदर्शने (दिवा०) धातोर्लुङ्। 'मन्त्रे घसह्वरणश०' इति च्लेर्लुक्]

प्रणयति प्राप्नोति २.२६.४. डालता है सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.१४. **प्रणयन्ति**=प्रकर्षेण प्राप्नुवन्ति १.८३.२. **प्रणयन्तु**=प्रीणयन्तु ७.१७. **प्रणयसि**= प्रापयसि १.१२९.१. [प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रणवैः ओङ्कारैः १९.२५. [प्रणवः=अमृतं वै

प्रणवः गो० उ० ३.११. ब्रह्म वै प्रणवः कौ० ११.४.]

प्रणिदधात प्रणिधरत ५.२२.२. [प्र+नि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोट्]

प्रणिनाय प्रकर्षेण प्रापय ३.८.११. यथा त्वं प्रणयेस्तथा अ०—प्रापयति ५.४३. [प्र=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

प्रणीतयः प्रकृष्टा नीतयः ६.४५.३. [प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

प्रणीतम् प्रकृष्टतया प्रापितम् (तमः=अन्धकाररूपं दुःखम्) १.११७.१७. **प्रणीतः**=प्रकृष्टतया सम्मिलितः (अग्निः=पावकः) १६.१७. [प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रणीतिषु प्रकृष्टासु नीतिषु १.११४.२ **प्रणीतिः**=प्रकृष्टा नीतिः ६.४८.२०. **प्रणीतौ**=प्रकृष्टायां नीतौ ३.१५.१. प्रकृष्टायां धर्म्यायां नीतौ ११.४६. [प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

प्रणीती प्रकृष्टा चाऽसौ नीतिस्तया प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति पूर्वसवर्णदीर्घः १.९१.१. प्रकृष्टां नीतिम् प्र०—अत्र पूर्वसवर्णादेशः ७.३५. प्रकृष्टनीत्या ७.२८.३. [प्रणीतिप्राति० तृतीयैकवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

प्रणीयते प्रकर्षेण प्राप्यते ३.२७.८. **प्रणीयन्ते**=प्रयुक्त किये जाते हैं सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.१.५. [प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

प्रणुद प्रकृष्टतया दूरे क्षिप १५.१. प्रकर्षेण हिन्धि १५.२. **प्रणुदाति**=प्रकर्षेण दूरीकरोतु २.३०. [प्र+णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लेटि आडागमः]

प्रणेतः प्रकर्षेण प्रापक (ईश्वर) ७.४१.३. पुरुषार्थं प्रति प्रेरक (ईश्वर) ३४.३६. यः सत्याऽसत्ये प्रणयति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=परमैश्वर्ययुक्त जन) ३.३०.१८. सर्वेषां नयनकर्त्तः (विद्वत्पितः) २.२८.३. सब के उत्पादक सत्याचार में प्रेरक (ईश्वर) सं० वि० १५६, ७.४१.३. **प्रणेता**=प्रकृष्टतया नेता (अग्निः=पावकवद्विद्वज्जनः) २.९.२. प्रेरकः (अग्निः=पावकः) ३.२३.१. **प्रणेतारः**=प्रकृष्टं न्यायं कुर्वन्तः (विद्वज्जनाः) ७.५७.२. प्रसाधकाः (देवाः=वायुविद्यावेत्तृजनाः) १.१६९.५. प्रेरकाः (मेधाविनो जनाः) ५.६१.१५. [प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

प्रणेनीः प्रकर्षेण न्यायकृत् (इन्द्रः=राजा) ६.२३.३. [प्र पूर्वान् णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् क्विप्]

प्रणेषत् प्रकृष्टं नय प्राप्नुयात् प्रापयेद् वा २.२०.३. [प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लेट्। 'व्यत्ययो बहुलम्' इति शप्सिपौ]

प्रणोनुमः प्रकृष्टमतिशयेन स्तुमः, पुनः पुनर्नमस्कुर्म्मः प्र०—अयं 'णु स्तुतौ' इत्यस्य यङ्लुकि प्रयोगः 'उपसर्गादसमासेऽपि णोपदेशस्य' अ० ८.४.१४. इति णकारादेशश्च १.११.२. प्रकर्षेण भृशन्नमेम ७.३१.४. [प्र+णु स्तुतौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

प्रण्यः प्रकृष्टा नीतिर्यासां ताः (सत्स्त्रियः) ३.३८.२. [नी=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्विप्। प्र-नीपदयोः समासः]

प्रतक्वा यथा प्रतकति प्रकर्षेण हर्षतीति तथा (भगवान्) प्र०—अत्र 'अन्येषामपि दृश्यन्ते' इति वनिप् ५.३२. सब का ज्ञाता, सत्यासत्यकारी जनों के कर्मों की साक्ष्य रखने वाला (ईश्वर) आर्याभि० २.१७, ५.३२. [प्र+तक हसने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि वनिप्]

प्रतताः विस्तीर्णाः स्वरूपगुणाः (प्रजासेनाध्यक्षाः) ३.३१.२०. [प्र+तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्तः। 'अनुदात्तोपदेश०' इत्यनुनासिकलोपः]

प्रतनु प्रकृष्टतया विस्तृणुहि १३.२०. [तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लोट्]

प्रतरणः दुःखात् प्रकृष्टतया तारकः (विद्वान् जनः) १.९१.९. यः प्रकृष्टतया दुःखानि तरति (अग्निः=अध्यापकः) २.१.१२. प्रतरति दुःखानि येन सः (यज्ञः) ४.३७. प्रतारकः (राजा) ६.४७.२६. शत्रुबलस्योल्लङ्घकः (वनस्पतिः=वनादिपालको विद्वान् राजा) २९.५२. **प्रतरणाय**=नौकादिना परतटादर्वाचीनतटप्राप्ताय प्रापयित्रे वा (पुरुषाय) १६.४२. [प्र+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः करणे ल्युट्। कर्त्तरि वा 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति ल्युट्। प्रतरणः प्रतारयिता ऐ० ३.१३.]

प्रतरणी दोष और शोकादि से पृथक् रहने वाली (वरानना स्त्री) सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२६. **प्रतरणीम्**=प्रतरन्ति यया ताम् (विद्याम्) ५.४६.१. [प्र+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्ल्युडन्तान् ङीप्]

प्रतरत दुःखान्युल्लङ्घयत भा०—दुःखसागरं सहजतः सन्तरत ३५.१०. [प्र+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रतरम् प्रकृष्टतया तरति प्लावयति दूरीकरोति दुःखं येन तत् (आयुः=जीवनम्) १.५३.११. प्रतरन्ति दुःखं येन

तम् (उत्तमाऽन्नम्) ५.३४.१. प्रकर्षेण दुःखात्तारकं व्यवहारम् ५.५५.३. पाकस्य सन्तारकम् (पाचकम्) भा०—पाक-कर्त्तारम् १२.२६. प्रतरन्ति येन तत् (आयुः=जीवनम्) ४.१२.६. प्रकृष्टम् (पुरुषार्थमाश्रित्य) १.६४.४. पुष्कलम् (आयुः=जीवनम्) २.३२.१. शत्रूणां बलोल्लङ्घनम् ६.४७.७. प्रतरति शत्रुबलानि येन तत्सैन्यम् १.१४१.१३. पारस्य सन्तारकम् (पाककर्त्तारं जनम्) १२.२६. [प्र+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप्प्रत्ययः]

प्रताम् प्रतरन्त्युल्लङ्घयन्ति शत्रुबलानि यया नीत्या ताम् १७.५१. [प्रतरं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

प्रतवसः प्रकृष्टानि तवांसि बलानि सैन्यानि येषां ते (नृतमासः=नायका जनाः) १.८७.१. **प्रतवसे**=प्रकृष्टबलाय (वाताय=विज्ञानाय) ४.३.६. [प्र-तवस्पदयोः समासः । तवस् बलनाम निघं० २.९.]

प्रतस्थुः प्रतिष्ठन्ते २.१५.५. [प्र+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

प्रतारि प्रकर्षेण प्लूयते ४.१२.६.]प्र+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

प्रतारिषत् प्रकृष्टतया वर्द्धयेत् ४.३९.६. **प्रतारिषः**=सन्तारयसि ३४.८. **प्रतारिष्टम्**=प्रकर्षेण वर्धयतम् ३४.४७. प्रयत्नेन पारयतम् १.१५७.४. **प्रतारीः**=प्रतारय उल्लङ्घय ६.८.७. [प्र+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लेटि सिपि च रूपम् । 'सिब् बहुलं णिद् वक्तव्यः' इति वा० सूत्रेण सिपो णित्वेन वृद्धिः]

प्रति आभिमुख्येन १.४८.२. वीप्सायाम् १.१६९.७. प्रतिनिधौ २.१.१५. क्रमाऽर्थे १.९२.१. योगे १.५५.१. क्रियार्थे पश्चादर्थे १.१४. प्रत्यक्षे १५.३७. इत्थंभूताख्याने १.१९. व्याप्तौ २०.३७. प्रतीतार्थे १.२५.२०. क्रियायोगे १.१६. वीप्सार्थे, अ०—पुनः पुनः १.१२.५. प्राप्त्यर्थे १.५७.४. प्रतिबन्धने १.८८.६. इन्द्रियागोचरेऽर्थे अ०—इत्थंभूतम् प्र०—प्रतीत्येतस्य प्रातिलोम्यं प्राह नि० १.३, १.९.४. [अभि इत्याभिमुख्यम्, प्रतीत्यस्य प्रातिलोम्यम् नि० १.३]

प्रतिकामम् कामं कामं प्रति (सोमं) ३.४८.१. कामं कामं प्रतीति प्रतिकामम् भा०—प्रतिक्षणं सुखम् १९.५१. [प्रति-कामपदयोः समासः]

प्रतिक्षत्रे धर्मेण प्रतीते क्षत्रे विद्याधर्मप्रचारिते देशे ऋ० भू० २२०, २०.१०. [प्रति-क्षत्रपदयोः समासः]

प्रतिक्षियन्तम् प्रत्यक्षं निवसन्तम् (वायुम्) ११.२३. पदार्थं पदार्थं प्रति वसन्तम् (अग्निम्) २.१०.४. [प्रति-क्षियन्पदयोः समासः । क्षियन्=क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रतिख्यातः ख्यातं ख्यातं प्रतीति (वातः=बाह्यो वायुः) ८.५८. [प्रति-ख्यातपदयोः समासः । ख्यातः=ख्या प्रकथने (अदा०) धातोः क्तः]

प्रतिगात् प्रत्येति १.१०४.५. [प्रति+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । अटोऽभावः । 'इणो गा लुङी' ति गादेशः]

प्रतिगृभाय प्रतीत्या गृहाण ६.४७.२८. प्रतिगृहाण ४.४.१५. [प्रतिपूर्वाद् ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लोट् । 'छन्दसि शायजपि' इति श्नः स्थाने शायजादेशः । धातोर्हकारस्य भकारो 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' वा० सूत्रेण]

प्रतिगृभ्णन्ति प्रतिगृह्णन्ति २५.३७. **प्रतिगृभ्णाति**=प्रतिगृह्णाति १.५५.२. **प्रतिगृभ्णातु**=प्रतिगृह्णाति अ०—प्रतिगृभ्णाति प्र०—अत्र हृग्रहोर्भश्छन्दसि हस्य भत्वं वक्तव्यम् अ० ५.२.३२. इति हकारस्य स्थाने भकारः लडर्थे लोट् च १.१६. **प्रतिगृभ्णीत**=स्वीकुर्वीत १२.३५. [प्रति+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लेट् । हस्य भकारादेशः । अन्यत्र लोट् लिङ् चापि]

प्रतिगृह्णतः प्रतिग्रहण करने हारों (गृहस्थ जनों) को सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१६. [प्रति+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रतिगृह्णामि प्रतिग्रहण करता हूँ सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१५. [प्रति+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लेट्]

प्रतिगृह्य प्रत्यक्षेण दत्त्वा गृहीत्वा च १.१२५.१. [प्रति+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

प्रतिचक्षणाय प्रत्यक्षं कथनाय ६.४७.१८. [प्रति+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्ल्युट् । 'बहुलं संज्ञाछन्दसोरिति वक्तव्यम्' अ० २.४.५४. वा० सूत्रेण ख्याञ्-आदेशस्य प्रतिषेधः]

प्रतिचक्ष्य निषेध्य २.२४.७. प्रत्यक्षेण प्रत्याख्याय २.२४.६. [प्रति+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप् । 'वर्जने प्रतिषेधो वक्तव्यः' इति ख्याञ् न भवति]

प्रतिचक्ष्या प्रत्यक्षेण द्रष्टुं योग्या (उषाः) १.११३.११. [प्रति+चक्षिङ् व्याक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्ण्यत् । स्त्रियां टाप्]

प्रतिचक्ष्येव प्रत्यक्षं दृष्ट्वेव १.१२४.८. [प्रतिचक्ष्य-इवपदयोः समासः । प्रतिचक्ष्येति व्याख्यातम्]

प्रतिजन्यानि प्रत्यक्षेण जनितुं योग्यानि (लोक-लोकान्तराणि) ४.५०.७. [प्रतिपूर्वाज् जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'तकिशसि०' वा० सूत्रेण यत्प्रत्ययः]

प्रतिजन्यानि जनं जनं प्रति योग्यानि (धनानि) ४.५०.६. [प्रति-जन्यपदयोः समासः]

प्रतिजरन्ते स्तुवन्ति ५.८०.१. [जरते अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

प्रतिजागरासि प्रत्यक्ष सब कामों में जागती रहे सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.३१. [प्रति+जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लेट् । 'लेटोऽडाटौ' इत्याडागमः]

प्रतिजागृहि यजमानं प्रबोधयाऽविद्यानिद्रां पृथक्कृत्य विद्यायां जागरूकं कुरु १८.६१. अविद्यानिद्रां त्यक्त्वा विद्यया चेत १५.५४. अविद्याऽन्धकारनिद्रातः सर्वान् जीवान् पृथक्कृत्य विद्यार्कप्रकाशे जागृतवान् कुरु ऋ० भू० ३०५, १५.५४. [प्रति+जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लोट्]

प्रतिजानते प्रतिज्ञया व्यवहारस्य साधकाय (सज्जनाय) ३.४५.४. [प्रति+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः शतृ]

प्रतिजूतिवर्पसः प्रतीतं जूतिर्वेगवद् वर्पो रूपं येषां ते (राजपुरुषाः) ३.६०.१. [प्रति-जूति-वर्पस्-पदानां समासः जूतिः=जु वेगितायां गतौ (सौत्रो धातुः) धातोः स्त्रियां 'ऊतियूतिजूति०' अ० ३.३.९७. सूत्रेण क्तिन् उदात्तश्च निपात्यते । वर्पः=रूपनाम निघं० ३.७.]

प्रतितिष्ठामि प्रतिनिधिभावेन तिष्ठामि भा०—सर्वभूज्यो भवामि २०.१०. [प्रति+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रतिदधानेभ्यः ये शत्रून् प्रति शस्त्राणि दधति तेभ्यः (सैनिकेभ्यः) १६.२२. [प्रति+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शानच्]

प्रतिदह प्रत्यक्षं भस्मीकुरु १५.३७. पुनः पुनर्दहति प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१२.५. [प्रति+दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रतिदीधिम प्रतीत्या प्रकाशयेम ३३.४१. [प्रति+दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्लिङ्]

प्रतिदुवस्व प्रत्यक्षं सेवस्व ५.४६.२. [प्रति+दुवस्यति परिचरणकर्मा (निघं० ३.५.) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रतिदुहीयत् प्रतिपादयन् (इन्द्रः=राजा) २.११.२१ [प्रति+दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः शतरि छान्दसं रूपम्]

प्रतिदृक्षत प्रत्यक्षं दृश्यन्ते १.४८.१३. [प्रति-दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । क्सो विकरणश्छान्दसः । व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

प्रतिदोषम् यथा रात्रिं रात्रिं प्रति सूर्यस्तथा ६.७१.४. प्रति-जनं यो दोषस्तम् प्र०—अत्रोत्तरपदलोपः ३४.२६. रात्रिं रात्रिं प्रति, प्र०—अत्र रात्रेरुपलक्षणत्वाद् दिवसस्यापि ग्रहणमस्ति प्रतिसमयमित्यर्थः 'दोषेति रात्रिनामसु पठितम्' निघं० १.७, १.३५.१०. [प्रति-दोषापदयोः समासः दोषेति रात्रिनाम निघं० १.७.]

प्रतिद्रवन्ती प्रत्यक्षं जानन्ती गच्छन्ती वा (देवी=विदुषी) ५.४१.१२. [प्रति+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तात् ङीप्]

प्रतिधत् प्रतिदधाति ४.२७.५. [प्रति+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शः]

प्रतिधर्ता प्रत्यक्षं धारकः (त्रिवृत्=विद्युत्) १५.१० प्रतीत्या धर्ता (बृहस्पतिः=सूर्यः) १५.१४. [प्रति+धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

प्रतिधातवे प्रतिधर्त्तुम् ८.२३. प्रतिधातुम् प्र०—अत्र 'तुमर्थे सेसेन०' इत्यनेन तवेन्प्रत्ययः १.२४.८. [प्रति+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोस्तुमर्थे तवेन्-प्रत्ययः]

प्रतिधिना प्रतिदधाति यस्मिँस्तेन (पृथिव्या=भूगर्भविज्ञानेन) १५.६. [प्रति+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'कर्मण्यधिकरणे चे' ति किः प्रत्ययः]

प्रतिधीयताम् प्रतिधीयन्ताम् प्र०—अत्र वचनव्यत्ययेनैकवचनम् ३६.११. स्थापन करो आर्याभि० २.२३, ३६.११. [प्रति+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि लोट्]

प्रतिधीयमानम् सम्यग् ध्रियमाणम् (ज्ञानम्) १.१५५.२. [प्रति+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि शानच्]

प्रतिपचता प्रत्यक्षं पचतानि पक्तव्यानि (खाद्यान्नानि) २१.६०. [प्रति-पचतपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि पचत=डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोरौणादिकः अतच्]

प्रतिपत् पद्यते विचार्यते योऽर्थविषयः स पत्, पतं पतं प्रतीति प्रतिपत् (इन्द्रः=सभासेनापतिः) ७.३८. प्रतिपद्यते प्राप्यते या सा (लक्ष्मी) १५.८. [प्रति-पत्पदयोः समासः । पत्-पद गतौ (दिवा०) धातोः कर्मणि क्विप्]

प्रतिपदे ऐश्वर्याय १५.८. [प्रतिपूर्वाद् पद गतौ

(दिवा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

प्रतिपप्रथे प्रत्यक्षं प्रख्याति २.२४.११. [प्रति+प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

प्रतिपश्यति प्रत्यक्ष देखता है सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.१.३. [प्रति+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रतिपस्थानः यः प्रस्थानं गमनं प्रति वर्त्तते सः (व्यवहारः) १८.१९. [प्रति-प्रस्थानपदयोः समासः। प्रस्थानम्=प्र+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्। पापीयः प्रतिप्रस्थानम् मै० ४.६.२.]

प्रतिप्रसिस्रते प्रत्यक्षं प्रसरन्ति गच्छन्ति ५.१.१. [प्रति+प्र+सृ गतौ (जु०) धातोर्लट्। अभ्यासस्येत्वमात्मनेपदञ्च छान्दसम्]

प्रतिबुद्धाः प्रतीतेन ज्ञानेन युक्ताः (जनाः) १.१९१.५ [प्रति+बुध अवगमने (दिवा०) धातोः क्तः]

प्रतिभूषति प्रत्यक्षतयाऽलङ्करोति १.४६.१२, ६.५२.८. [प्रति+भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रतिभृतस्य धृतं धृतं प्रति वर्त्तमानस्य (भृत्यवर्गस्य) ४.२०.४. [प्रति-भृतपदयोः समासः। भृतम्=डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः]

प्रतिमन्वानः प्रत्यक्षेण विजानन् (परमेश्वरः) २३.५२. [प्रति+मनु अवबोधे (तना०) धातोः शानच्]

प्रतिमा प्रतिमीयन्ते परिमीयन्ते सर्वे पदार्था यया सा भा०—परिमाणसाधनं पदार्थतोलनार्थम् (वस्तु) १५.६५. प्रतिमीयते यया तत्परिमापकं सदृशं तोलनसाधनं प्रतिकृतिराकृतिर्वा ३२.३. प्रतिमीयते यया क्रियया सा १४.१८. परिमाण, सादृश्य वा मूर्त्ति स० प्र० ४३२, ३२.३. प्रतिनिधिः प्रतिकृतिः, प्रतिमानं तोलनसाधनं, परिमाणं, मूर्त्यादिकल्पनम् ऋ० भू० ३००, ३२.३. प्रतिमीयतेऽनया सा (यया परिमाणं क्रियते) ऋ० भू० १४७, ऋ० ८.७.१८०.३. **प्रतिमाम्**=प्रतीयन्ते सर्वे पदार्था यया ताम् (बुद्धिम्) भा०—परिमाणम् १३.४१. [प्रति=माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः स्त्रियाम् 'आतश्चोपसर्गे' इति अङ्, ततष्टाप्। असौ वै लोकः प्रतिमैष ह्यन्तरिक्षलोके प्रतिमित इव श० ८.३.३.५.]

प्रतिमानम् परिमाणसाधनम् ४.१८.४. सादृश्यं परिमाणं वा १.३२.७. समन्तात् प्रतिमीयते परिणीयते प्रतिक्रियते येन तत् (स्वः=सुखमन्तरिक्षं वा) १.५२.१२. प्रतिमीयते यत् (जगत्) १.१०२.८. अतिसमर्थानामुपमा १.१०२.६. परिमाणसाधकः (इन्द्रः=परमेश्वरो विद्युद्वा) २.१२.९. परिमाणसाधकम् (ज्ञानम्) ३.३१.८. प्रतिमान अर्थात् परिमाण का कर्त्ता (ईश्वर) आर्याभि० १.१३, ऋ० १.४.१४.१२. [प्रति+माङ् माने (जु०) धातोः करणे ल्युट्]

प्रतिमिताम् प्रतिमान अर्थात् एक द्वार, कोण और कक्ष के सम्मुख दूसरे द्वार, कोण और कक्ष वाली (शाला) को सं वि० १६६, अथर्व० ९.२.३.१. [प्रति+माङ् माने (जु०) धातोः क्तः। 'द्यतिस्यति०' इतीत्वम्। स्त्रियां टाप्]

प्रतिमिमाति प्रतिगच्छति १.१६४.२९. [प्रति+माङ् माने (जु०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

प्रतिमिमीते प्रत्यक्षतया रचयति १.१६४.२४. [प्रति+माङ् माने (जु०) धातोर्लट्]

प्रतिमुचः प्रत्यक्षतया छोड़े सं० वि० १६९, अथर्व० ९.२.३.२४. [प्रति+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः। 'शे मुचादीनाम्' इति नुमागमोऽपि न भवति, आगमशासनस्यानित्यत्वात्]

प्रतिमुचीष्ट प्रतिमुञ्चत ७.५९.८. [प्रति+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोराशिषि लिङ्। 'छन्दस्युभयथे' ति सार्वधातुकत्वात् सलोपः]

प्रतिमुच्यते प्रत्यक्षतया त्यजति ५.८१.२. प्रकाश्यते १२.३. [प्रति+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोः कर्मणि लट्]

प्रतिमुञ्चमानाः मुञ्चन्ते आभिमुख्यं ये प्रतीतं मुञ्चन्ते त्यजन्ति ते (असुराः=दुष्टा मनुष्याः) २.३०. [प्रति+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोः शानच्]

प्रतिमै प्रतिमातुम् ३.६०.४. (प्रति+माङ् माने (जु०) धातोस्तुमर्थे कैः प्रत्ययश्छान्दसः]

प्रतिमोदध्वम् प्रत्यक्षतयाऽऽनन्दयत १२.७७. [प्रति+मुद हर्षे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रतियन् प्राप्नुवन्ति ३.४.५. **प्रतियन्ति**=प्राप्नुवन्ति १.१८०.४. प्रापयन्ति १.११९.२. [प्रति+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्। आटोऽभावश्छान्दसः। अन्यत्र लट्]

प्रतिर प्रकृष्टतया तारय ५.३३. सन्तारय १.९४.१६. विस्तारय ३.१७.२. क्लेश मत होने दे आर्याभि० २.१८, ३.५५. **प्रतिरत**=निष्पादयत ७.५७.५. **प्रतिरते**=प्रत्यक्षं प्लवते सन्तरति वा प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् विकरणव्यत्ययेन शश्च १.१०४.४. **प्रतिरन्तु**=सुशिक्षया वर्द्धयन्तु १.८९.२. पूर्णं भोजयन्तु २५.१५. **प्रतिरन्ते**=प्रकृष्टतया तरन्ति उल्लङ्घयन्ति १.११३.१६. प्रकर्षेणोल्लङ्घयन्ते ३.५३.७. सन्तरन्ति १.१२५.६.

प्रतिरः=प्रकृष्टतया प्लव दुःखात्पारं गच्छ ३.४०.३. **प्रतिरेत**=प्रवर्धये ७.५८.३. [प्र+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन शपः स्थाने शः। अन्यत्र लट्, लङ्, लिङ् च। 'प्रतिरते' प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्। प्रतिरन्तु प्रवर्धयन्तु। नि० १२.३७. प्रतिरते=प्रवर्धयते नि० ११.६.]

प्रतिरक्षन् प्रत्यक्षतया पालयन् (गृहस्थो राजजनः प्रजाजनो वा) ८.२४. [प्रति+रक्ष पालने (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रतिरन् प्रकर्षेण दुःखात्तरन् (नमस्यः=पूजितुं योग्यो विद्वान्) १.४४.६. [प्र+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन शः]

प्रतिरवेभ्यः ये रवान् प्रति रुवन्ति शब्दायन्ते तेभ्यः (पुरुषेभ्यः) ३८.१५. [प्रति+रु शब्दे (अदा०) धातोरच्-प्रत्ययः। प्राणा वै प्रतिरवाः प्राणान् हीदं सर्वं प्रतिरतम् श० १४.२.२.३४.]

प्रतिरूपः तदाकारवर्त्तमानः (इन्द्रः=जीवः) ६.४७.१८. [प्रतिरूपपदयोः समासः। य आदित्ये (पुरुषः) स प्रतिरूपः जै० उ० १.८.२.४.]

प्रतिलामि प्रत्यक्षतया स्निह्यामि २३.२४. [प्र+तिल स्नेहने (तुदा०) धातोर्लट्]

प्रतिलोभयन्ती प्रत्यक्षं मोहयन्ती (स्वसेना) १७.४४. [प्रति+लुभ गार्ध्ये (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ। ततः स्त्रियां ङीप्। प्रतिलोभयन्ती प्रतिलोभयमाना नि० ९.३१.]

प्रतिवद प्रत्यक्षतयोपदिश १.१६. **प्रतिवदत्**=प्रतिवदेत् १.११९.९. [प्रति+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लेट्]

प्रतिवस्तोः दिनं दिनं प्रति अ०—प्रतिदिनम् भा०—नित्यम् प्र०—वस्तोरित्यहर्नामसु पठितम् निघं० १.९, ३.८. [प्रति-वस्तोः पदयोः समासः। वस्तोः अहर्नाम निघं० १.९.]

प्रतिविध्य प्रतिताडय १३.१३. [प्रति+व्यध ताडने (दिवा०) धातोर्लोट्। 'ग्रहिज्या०' सूत्रेण सम्प्रसारणम्]

प्रतिवेत्तु प्रतिजानातु अ०—प्रतिजानन्तु १.१९. पश्चाद् जानातु ज्ञापयतु वा प्र०—प्रतीत्येतस्य प्रातिलोम्यं प्राह नि० १.३, १.१४. अ०—यथावज्जानन्तु १.१९. [प्रति+विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्लोट्]

प्रतिवेदयन् स्वगुणं प्रत्यक्षतया प्रज्ञापयन् (प्राज्ञो जनः) १.१६२.४. विज्ञापयन् (अजः=पशुविशेषः) २५.२७. [प्रति+विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

प्रतिवेशाः प्रतीता वेशा धर्मप्रवेशा येषां ते (सज्जनाः) ११.७५. विरुद्ध-व्यवहाराः (असज्जनाः) पं० वि० प्रतिकूलाः (प्रजाजनाः) ऋ० भू० २६८, अथर्व० १९.७.७. [प्रति-वेशपदयोः समासः। वेशः=विश प्रवेशे (तुदा०) धातोर्घञ्]

प्रतिवोचे प्रतिवदेयमुपदिशेयं वा ४.५.१०. [प्रति+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लुङ्। अडभावः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रतिश्रवाय यः प्रतिशृणोति प्रतिजानीते तस्मै (भा०—अध्यापकाय) १६.३४. [प्रति+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोरच्]

प्रतिश्रुत्कायै प्रतिज्ञात्र्यै (स्त्रियै) ३०.१९. प्रतिश्राविकायै (ध्वन्याख्यायै क्रियायै) २४.३२.

प्रतिशृणीहि प्रतिहिन्धि ३.३०.१७. (प्रति+शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्लोट्]

प्रतिष्कभे प्रतिष्कम्भते प्रतिबध्नाति शत्रून् येन कर्मणा तस्मै प्र०—अत्र सौत्रात् स्कम्भु-धातोः प्रतिपूर्वात् क्विप् १.३९.२. प्रतिष्टम्भनाय पराङ्मुखतया पराजयकरणाय च ऋ० भू० १५१. शत्रुओं के वेग को थामने के लिए आर्याभि० १.२२, ऋ० १.३.१८.२. [प्रति+स्कम्भु (सौत्रो धातुः) धातोः क्विप्]

प्रतिष्टोभति प्रतिबन्धेन बध्नाति १.८८.६. **प्रतिष्टोभन्ति**=प्रत्यक्षतया स्तुवन्ति ५.८४.२. प्रस्तभ्नन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.१६८.८. [प्रति+ष्टुभु स्तम्भे (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रतिष्ठ प्रतिष्ठति वा प्र०—अत्राऽन्त्यपक्षे व्यत्ययो लडर्थे लोट् च अ०—कृपयेमं यज्ञं विद्यां च प्रतिष्ठापय २.१३. **प्रतिष्ठत**=प्रकृष्टतया प्रतिष्ठां प्राप्नुत अ०—प्रतिष्ठध्वम् प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति नियमात् 'समवप्रविभ्यः स्थः' अ० १.३.२२. इत्यात्मनेपदं न भवति १.१५.९. **प्रतिष्ठात्**=प्रतितिष्ठति २.१५.७. [प्र+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'पाघ्राध्मा०' इति शिति तिष्ठादेशः। 'समवप्रविभ्यः स्थः' इत्यात्मनेपदं न भवति छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पनात्। 'प्रतिष्ठात्' प्रयोगे लेट्]

प्रतिष्ठा प्रतिष्ठन्ति यस्यां सा (सत्क्रिया) १४.२३. **प्रतिष्ठायै**=सर्वत्र सत्काराय १५.६४. सत्कृतये भा०—सत्काराय १३.१९. प्रतितिष्ठन्ति सत्कारं प्राप्नुवन्ति यस्यां तस्यै (सत्क्रियायै) २.२५. [प्रति+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०)

धातोः स्त्रियाम् 'आतश्चोपसर्गे' इत्यङ् । ततष्टाप् । प्रतिष्ठा ह्रस्वनाम निघं० ३.२. इमेऽ उ लोकाः प्रतिष्ठा चरित्रम् श० ८.३.१.१०. एषा वै कृत्स्ना प्रतिष्ठा यज्ज्योतिरतिरात्रः । जै० २.३१३. प्रतिष्ठा पुच्छं वयसाम् । ऐ० आ० १.४.२. प्रतिष्ठा यज्ञायज्ञियम् मै० ३.३.५. प्रतिष्ठा वै रथन्तरम् ऐ० २.४. प्रतिष्ठा वै स्विष्टकृत् ऐ० २.१०. प्रतिष्ठोदरमन्नाद्यानाम् ऐ० आ० १.५.१. याश्चतस्रः प्रतिष्ठा इमा एव ताश्चतस्रो दिशः जै० उ० १.६.१.२. यत् प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिंश इत्यन्तो हि सः जै० ३.३०६.]

प्रतिष्ठितम् प्रतिष्ठित रहता हुआ स० प्र० १६, अथर्व० ११.२४.२. **प्रतिष्ठितः**=प्राप्तप्रतिष्ठः (सभेशः) २०.९. **प्रतिष्ठिताः**=प्राप्तप्रतिष्ठाः (मनुष्याः) ऋ० भू० १०२, अथर्व० १२.५.३. प्रतिष्ठा को प्राप्त हुए (हे स्त्री-पुरुषो) सं० वि० १४३, अथर्व० १२.५.३. [प्रति+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः । 'द्यतिस्यतिमा०' इतीत्त्वम्]

प्रतिष्ठिता प्रतिष्ठितानि (ऋग्यजुःसामानि) ३४.५. प्रतिष्ठित होते हुए (ऋग्, यजुः, साम, अथर्व वेदों के ज्ञान) स० प्र० १८४, ३४.५. [प्रतिष्ठितमिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

प्रतिष्ठित्यै प्रतिष्ठायै १५.१२. प्रतितिष्ठन्ति यस्यां तस्यै १५.१०. [प्रति+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । द्वाभ्यां खनति प्रतिष्ठित्य तै० सं० ५.१.४.१. द्विपाद्वै यजमानः प्रतिष्ठित्यै जै० ३.२९५.]

प्रतिष्ठिः प्रतिष्ठितः प्रतिष्ठावान् (सज्जनः) ६.१८.१२. [प्रति+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० इन् किच्च बहुलवचनात्]

प्रतिसदृक्षासः आप्तसदृशाः (मनुष्याः) १७.८४. [प्रति-सदृक्षपदयोः समासे जसोऽसुक् । सदृक्षः=समानोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) 'दृशेः क्सश्च वक्तव्यः' अ० ३.२.६० वा० सूत्रेण क्सः । समानस्य सभावः]

प्रतिसदृङ् यस्तं तं प्रति सदृशं पश्यति सः (अ०—पुरुषः) १७.८१. [प्रति-सदृक्पदयोः समासः । सदृक्=समानोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'त्यदादिषु०' सूत्रेण क्विन् । 'क्विन्प्रत्ययस्य कुः' इति कुत्वम्]

प्रतिसर्य्याय ये प्रतीते धर्मे सरन्ति तेषु भवाय (धार्मिकाय जनाय) १६.३३. [प्रति+सृ गतौ (भ्वा०) धातोरच् प्रत्ययः । प्रतिसरप्राति० भवार्थे यत्]

प्रतिस्पशः बाधनानि १३.११. [प्रति+स्पश बाधन-स्पर्शयोः (भ्वा०) धातोः क्विप्प्रत्ययः । घञर्थे को वा । वचनव्यत्ययः]

प्रतिस्फुर पुरुषार्थय ४.३.१४. [प्रति+स्फुर संचालने (तुदा०) धातोर्लोट्]

प्रतिहर्य प्रत्यक्षतया कामयस्व १.१४४.७. प्रतिकामयते ५.५७.१. **प्रतिहर्यन्ति**=प्रत्यक्षं कामयन्ते १.१६५.४. **प्रतिहर्यथ**=पुनः पुनर्विजानीथ १.४०.६. [प्रति+हर्य-धातोर्लोट् । हर्यति कान्तिकर्मा निघं० २.६. हर्यति गतिकर्मा निघं० २.२४. प्रतिहर्यते प्रतिकामयते नि० ११.१३.]

प्रतिहिताभिः प्रत्यक्षेण धृताभिः (सेनाभिः) १७.३५. **प्रतिहिताः**=प्रतीत्या धृताः (ऋषयः=विषय-प्रापकाः पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि मनो बुद्धिश्च ३४.५५. [प्रति-हितापदयोः समासः । हिता=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तप्रत्ययान्तात् टाप् । 'दधातेर्हिः' इति हिरादेशः]

प्रतीकम् प्रत्येति येन तत् सैन्यम् ७.८.१. प्रतीतिकरम् (ज्योतिः) ७.३६.१. येन प्रत्येति तल्लिङ्गम् २९.३८. विजयप्रतीतिकरम् (बलम्) ७.३.६. [प्रति+इण् गतौ (अदा०) धातोः कक्-प्रत्ययो बाहु० औणादिकः । प्रतीकं प्रत्यक्तं भवति प्रतिदर्शनमिति वा नि० ७.३१. मुखं प्रतीकम् श० १४.४.३.७.]

प्रतीचः पश्चात् स्थितान् (शत्रून्) ३.३०.६. यत् प्रत्यग् गच्छति तस्य (तमसः) १.१७३.५. [प्रति+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इति क्विन् । 'अनिदिताम्०' इति नलोपे द्वितीयाबहुवचने शस्-प्रत्यये 'अचः' इत्यल्लोपे 'चौ' इति दीर्घे रूपम्]

प्रतीची प्रतीचीनं गच्छन्ती (उषाः) १.९२.९. प्रत्यञ्चतीति (उषाः) १.१२४.७. पश्चिमदिशां प्राप्ता (योषा) ५.८०.६. पश्चिमा (दिक्) १५.१२. प्रत्यञ्चति प्राप्नोति सा (उषः=उषाः) ३.६१.३. **प्रतीचीम्**=पश्चिमां दिशम् १०.१२. पश्चिमां क्रियाम् ५.१२.१. पश्चिम द्वार युक्त (गृह) सं० वि० १६८, अथर्व० ९.२.३.२२. **प्रतीचीः**=पश्चिमाः (दिशः) १६.६४. प्रतीतमञ्चन्त्यः (प्रजाः) ४.३.२. प्रतिकूलं वर्त्तमानाः (क्षितयः=मनुष्याः) ३.१८.१. **प्रतीच्यै**=या प्रत्यगञ्चति पूर्वमुखस्थितपुरुषस्य पृष्ठभागा तस्यै (दिशे) २२.२४. [प्रतीच इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियाम् 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति ङीप् । प्रतीची अभिमुखी नि० ३.५.

प्रतीची दिक्सोमो देवता काठ० ७.२. तै० ३.११.५.२. प्रतीची दिङ् मरुतो देवता मै० १.५.४. प्रतीच्येव महः गो० १.५.१५. या प्रतीची सा सर्पाणाम् श० ३.१.१.७. सम्राडसि प्रतीची दिक् तै० सं० ४.३.६.२.]

प्रतीचीनम् अस्मान् प्रत्यभिमुखं प्राप्नुवन्तम् (राजानम्) ५.४४.१. अविद्यादिदोषेभ्यः प्रतिकूलम् भा० — अविद्याध्वान्तौघध्वंसनम् (वृजनं=योगवलम्) ७.१२. पश्चाद्भूतम् (विश्वं=सर्वं जगत्) ३.५५.८. **प्रतीचीनः**= पूर्वाऽभिमुख (गृह) सं० वि० १६८, अथर्व० ९.२.३.२२. [प्रतीच इति व्याख्यातम् । ततः 'विभाषाञ्चेरदिक् स्त्रियाम्' अ० ५.४.८. सूत्रेण स्वार्थे खः प्रत्ययः]

प्रतीतये सुखप्राप्ताय ज्ञानाय वा १.३६.२०. [प्रति+ इण् गतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

प्रतीत्येन प्रतीतौ भवेन (वचसा=वचनेन) ४.५.१४. [प्रतीतिप्राति० भवार्थे यत् । प्रतीतिः=प्रति+इण् गतौ (अदा०)+क्तिन्]

प्रतूर्तम् अतितूर्णम् भा०—शीघ्रम् ११.१२. [प्र+ ञित्वरा सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये 'ज्वरत्वर०' सूत्रेण वकारस्य उपधायाश्च स्थाने ऊठ् । प्रतूर्तम्= यद्वै क्षिप्रं तत् तूर्त्तम् यत् क्षिप्रात्क्षेपीयस्तत्प्रतूर्त्तम् श० ६.३.२.२.]

प्रतूर्तये सद्योऽनुष्ठानाय १.१२९.२. **प्रतूर्तिषु**=हनन-कर्मसु सङ्ग्रामेषु ३३.६६. **प्रतूर्तिः**=शीघ्रगतिः १४.२३. प्रकृष्टा तूर्णा गतिर्यस्य सः (पराक्रमः) ९.६. [प्र+ञित्वरा सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्प्रत्यये 'ज्वरत्वर०' इति सूत्रेण वकारस्योपधायाश्च स्थाने ऊठ् । संवत्सरो वाव प्रतूर्तिः श० ८.४.१.१३.]

प्रतूर्वतः शीघ्रं कर्त्तुः (मित्रस्य) ५.६५.४. **प्रतूर्वन्**=हिंसन् (स्वस्तिगव्यूतिः=राजा) ११.१५. [प्र+ञित्वरा सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोः शतरि छान्दसं रूपम् । प्रतूर्वन्=(त्वरमाणः) प्रतूर्वन्नेह्यपक्रामन्नशस्ती-रिति पाप्मा वा ऽअशस्तिस्त्वरमाण एह्यवक्रामन् पाप्मान-मित्येत् श० ६.३.२.७.]

प्रतृदः प्रकर्षेणाऽविद्यादिदोषहिंसकः (वसिष्ठो= आप्तो विद्वान् ७.३३.१४. [प्र+उतृदिर् हिंसानादरयोः (रुधा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

प्रत्न प्राचीन दीर्घायुष्क (राजन्) ६.३९.५. **प्रत्नम्**=प्राक्तनम (विद्युदाख्यं वह्निम्) ३.९.८. पुरातनम् (सधस्थं=गर्भाशयम्) ११.४८. प्राचीनम् (गृहाश्रमिणाम्) ५.८.१. कारणरूपेणाऽनादिम् (अ०—विश्वं राज्यम्) प्र०—नश्च पुरा पुराणे प्राद् वक्तव्यः अ० ५.४.२५. इति पुराणाऽर्थे प्र०—शब्दात् त्नप्-प्रत्ययः १.३६.४. **प्रत्नस्य**=पुरातनस्याऽनादेः (पितुः=जगदीश्वरस्य) १.८७.५. प्राक्तनस्य (रेतसः=वीर्यस्य) ३.३१.१०. **प्रत्नः**=प्राचीनविद्याऽध्येता (होता=सुखदाता राजा) १.११७.१. प्रागधीतविद्यः (मनुष्यः) ६.६२.४. प्राक्तनः (अग्निः=भौतिकमग्निम्) २.७.६. **प्रत्नाय**=प्राचीनाय (इन्द्राय=सभाद्यध्यक्षाय) १.६१.२. [प्रप्राति० 'नश्च पुराणे प्रात्' अ० ५.४.२५. वा० सूत्रेण पुराणार्थे त्नप् प्रत्ययः । प्रत्नम्=पुराणनाम निघं० ३.२७. प्रत्नः पुराणः नि० १२.३१. प्रत्नम्=अयं वा गर्भ—ऋत्वियः प्रत्नं सधस्थमासदद् इत्ययं वो गर्भ ऋतव्यः सनातनंसधस्थमासदद् इत्येतत् श० ६.४.४.१७. स्वर्गो लोकः प्रत्नः तै० सं० १.५.७.१.]

प्रत्नथा प्रत्नः प्राचीन इव (इन्द्रः=दुष्टविदारको राजा) ६.१७.३. प्राक्तनानां योगिनामिव (योगिजनाः) ७.१२. प्राचीनम् (वाः=जलमिव) १.१३२.३. प्राचीनेनेव (बलेन) ५.८.५. प्रत्नः प्राक्तन इव (वैश्वानरः=पावकः) ३.२.१२. प्रत्नमिव (वृजनं=बलम्) ५.४४.१. [प्रत्नं व्याख्यातम् । तत इवार्थे 'प्रत्नपूर्व०' इति थाल्प्रत्ययः । प्रत्नथाः=प्रत्न इव नि० ३.१६.]

प्रत्नवत् प्रत्नः प्राचीनो निधिर्विद्यते यस्मिँस्तत् (रेवत्=प्रशस्तपदार्थयुक्तं द्रव्यम्) १.१२४.९. प्रत्नं प्राचीनं कारणं विद्यते यस्मिँस्तद्वत् (आकाशवत्) ६.६५.६. प्राचीनवत् (सूर्यवत्) ६.१६.२१. पुरातनम् (परमात्मानम्) ६.२२.७. [प्रत्नं व्याख्यातम् । ततो मतुप् अथवा तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः]

प्रत्ना पूर्वकालीनि (विज्ञानानि) ६.२१.६. प्राचीनानि (वस्तूनि) १.१०५.५. [प्रत्नं व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

प्रत्नानि प्राक्तनानि (सख्या=सख्युः कर्माणि) १.१०८.५. [प्रत्नं व्याख्यातम्]

प्रत्नाम् अनादिवर्त्तमानां पुराणीमनादिस्वरूपेण नित्याम् (द्युतम्=कारणस्थां दीप्तिम्) प्र०—प्रत्नमिति पुराणनामसु पठितम् निघं० ३.२७, ३.१५. [प्रत्नं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

प्रत्नासः प्राक्तनाः पूर्वमधीतविद्याः (विप्राः=मेधाविजनाः) ४.५०.१. प्राचीनाः (राजसुहृदः) ६.२१.५. भूता

(पितरः=जनकाः) ४.२.१६. [प्रत्नं व्याख्यातम् ततो जसोऽसुक्]

प्रत्ने पुरातन्यौ (रोदसी=भूमिसूर्यलोकौ) ६.१७.७. [प्रत्नं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टापि प्रथमाद्विवचने रूपम्]

प्रत्यक्षम् साक्षात्कारता से सं० वि० २०८, अथर्व० ६.६.१.१. [प्रति-अक्षिपदयोः समासे 'अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः' अ० ५.४.१०७ सूत्रेण टच्प्रत्ययः]

प्रत्यख्यत् प्रकाशयति ४.१३.१. [प्रति+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोर्लुङि 'अस्यतिवक्तिख्यातिभ्य०' इति च्लेः स्थाने अङ्]

प्रत्यग्रभीत् प्रतिगृह्णाति २८.२३. [प्रति+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लुङ् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' इति हस्य भकारादेशः]

प्रत्यग्रभीष्म प्रतिगृह्णीयाम ६.४७.२२. [प्रति+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लुङ् । हस्य भकारश्छान्दसः]

प्रत्यङ् यः प्रत्यञ्चति सः (जगदीश्वरः) १.५०.५. प्रतिपदार्थमञ्चति प्राप्नोति यः सः (देवः=ईश्वरः) ३२.४. यः प्रत्यक्षमञ्चति प्राप्नोति सः (सोमः=निष्पादितौषधिरसः) १६.३. प्रत्यञ्चतीति (विद्वज्जनः) १.१४४.७. पूजितो भवः (अ०—राजप्रजाजनः) १०.३१. **प्रत्यञ्चम्**=पश्चात्स्थितम् (सेनाध्यक्षम्) १०.८. यः प्रत्यञ्चति तम् (अग्निं=विद्युतम्) ७.१२.१. प्रत्यञ्चन्तम् (अग्निम्) २.१०.५. प्रत्यगञ्चतीति शरीरस्थं वायुम् ११.२४. **प्रतीचः**=पश्चात् स्थितान् (जनान्) ३.६०.६. यः प्रत्यगञ्चति तस्य (तमसः=अन्धकारस्य) १.१७३.५. [प्रति+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्०' इति क्विन्प्रत्यये 'अनिदिताम्०' इति नलोपे 'उगिदचाम्०' नुमि हल्ङ्यादिसंयोगान्तलोपयोः 'क्विन्-प्रत्ययस्य कुः' इति कुत्वे रूपम् । 'प्रतीचः' प्रयोगे तु शसि भसंज्ञायाम् 'अचः' इत्यल्लोपे 'चौ' इति दीर्घे रूपम्]

प्रत्यदर्शि प्रत्यक्षतया दृश्यते ४.५२.१. प्रतियोक्तुं दृश्यते १.६२.५. [प्रति+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

प्रत्यदृक्षत प्रतिदृश्यन्ते ४.५२.५. [प्रति+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पनान् 'न दृशः' इति क्सप्रत्ययस्य प्रतिषेधो न भवति]

प्रत्यधत्तम् प्रत्यक्षतया भरतम् १.११६.१५. [प्रति+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लङ्]

प्रत्यधायि प्रतिध्रियते १.१८४.६. [प्रति+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि लुङ्]

प्रत्यनुगृभ्णातु पश्चात् प्रतिगृह्णातु प्रतिगृह्णाति वा अ०—प्रत्यनुगृह्णातु प्रकृष्टतयाऽनुगतं गृह्णाति प्र०—अत्र 'हृग्रहो०' इति हस्य भः, पक्षे लडर्थे लोट् च १.२०. [प्रति+अनु+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लोट् । हस्य भकारश्छान्दसः]

प्रत्यन्वमदन् प्रत्यक्षतया पुनर्हृष्यन्तु १.५२.१५. [प्रति+अनु+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शप्]

प्रत्यपद्महि प्रत्यक्षतया व्याप्त्या प्राप्नुयाम ४.२६. [प्रति+पद गतौ (दिवा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुकि श्यनोऽप्यभावः]

प्रत्यभूत्स्महि प्रत्यक्षतया विजानीयाम ४.५२.४. [प्रति+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम् व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रत्यस्तम् प्रतीक्षितम् (शिरः=उत्तमाऽङ्गम्) १०.१४. [प्रति+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः क्तः]

प्रत्यहन् प्रतिहन्ति १.३२.१२. [प्रति+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ्]

प्रत्यायम् प्रतीत्या प्राप्नुयाम् प्र०—अत्र लिङर्थे लङ् १.११.६. [प्रति+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्]

प्रत्याश्रावः यः प्रतिश्राव्यते सः (विद्वान् जनः) १६.२४. [प्रति+आङ्+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

प्रत्युदायन् प्रत्युदायन्ति, उद्यन्ति प्रतियन्ति वा ३.३१.४. [प्रति+उत्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्]

प्रत्युष्टम् प्रतिदग्धव्यम् (रक्षः=विघ्नकारी प्राणी) १.२६. यत् प्रतीतं च तदुष्टं दग्धं च तत् (रक्षः=रक्षःस्वभावो दुष्टो मनुष्यः) १.७. नित्यं प्रजापालनाय तापनीयः (रक्षः=परसुखासहो मनुष्यः) १.२६. [प्रति+उष दाहे (अदा०) धातोः क्तः]

प्रत्युष्टाः प्रत्यक्षतया उष्टा दग्धव्यास्ते (अरातयः=शत्रवः) १.७. प्रत्यक्षं ज्वालनीयाः (अरातयः=परसुखासोढारो मनुष्याः) १.२६. प्रतिदग्धव्याः (अरातयः) १.२६. [प्रति+उष दाहे (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रत्येतन प्रतीतिं कुरुत ६.४२.४. [प्रति+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट् । तप्रत्ययस्य तनबादेशः]

प्रत्येति प्रतीतं प्रापयति ८.४. प्रत्यक्षं प्राप्नोति ३३.६८. प्रतीतं प्राप्नोति प्रापयति वा प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.१०७.१. प्रत्यक्षं प्राप्नोति विजानाति वा

५.४४.१२. [प्रति+इण् गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रत्यैरयतम् प्रत्यक्षतया प्रापयताम् १.११७.२२. [प्रति+ईर गतौ (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

प्रत्यौहताम् प्रतीत्या वितर्केण साध्नुताम् २७.६. [प्रति+ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लङ्। प्रत्यौहत=प्रत्यूहते नि० २.६.]

प्रत्वक्षसः प्रत्यक्षतया शत्रूणां छेत्तारः (नृतमासः=नायका जनाः) १.८७.१. प्रत्यक्षेण सूक्ष्मकर्त्तारः (मरुतः=मनुष्याः) ५.५७.४. [प्र+त्वक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः]

प्रथताम् विस्तारयतु १.२२. **प्रथते**=विस्तृणोति १.१२४.५. प्रकटयति २६.२६. **प्रथन्ताम्**=प्रख्यान्तु २.३.५. **प्रथन्तु**=उपदिशन्तु प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १५.१०. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'प्रथते' प्रयोगे लट्। 'प्रथन्तु' प्रयोगे व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

प्रथमच्छत् यः प्रथमान् विस्तृतान् छादयति सः (परमेश्वरः) १७.१७. विस्तीर्ण जगत् को रच के अनन्तस्वरूप से आच्छादित करने वाला (परमात्मा) आर्याभि० २.३०, १७.१७. [प्रथमोपपदे छद अपवारणे (चुरा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। प्रथमः=प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः 'प्रथेरमच्' उ० ५.६८. इति अमच्प्रत्ययः]

प्रथमजम् प्रथमे वयसि ब्रह्मचर्याश्रमे वा जातम् (ओजः=बलपराक्रमम्) ३४.५१. [प्रथमोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः प्रत्ययः]

प्रथमजान् प्रथमाद्विस्तीर्णात् कारणादुत्पन्नान् (पदार्थान्) २४.१६. **प्रथमजाम्**=यः प्रथमं जायते तम् (मेघम्) प्र०—अत्र 'जनसन०' इत्यादि अ० ३.२.६७. अनेन जनधातोर्विट् प्रत्ययः १.३२.३. सृष्टिकालयुगपदुत्पन्नं मेवम् १.३२.४. यश्च प्रथमानि सूक्ष्मभूतानि जनयति तं परमानन्दस्वरूपं मोक्षाख्यं परमेश्वरम् ऋ० भू० ८६, ३२.११. सब महत्तत्त्वादि सृष्टि को धारण करके पालन कर रहे (ईश्वर) को सं० वि० २१५, ३२.११. **प्रथमजाः**=प्रथमात्कारणाज्जाताः (पूर्वोक्ता महत्तत्त्वादयः) १.१६४.३७ प्रथमे विस्तीर्णे ब्रह्मणि जाताः प्रसिद्धाः (ऋषयः=वेदार्थविदः पुरुषाः) १८.५२. यः प्रथमं जातः सः (सूर्य इव राजा) ६.७३.१. प्रथमाद्विस्तीर्णात् कारणाज्जाता वायवः १५.१२. अस्मदादौ जाताः (ऋषयः=वेदविद्यापुरस्सराः परमयोगिनः) १८.५८. आदिजाः (ऋषयः=वायवः प्राणाः) १५.१४. प्रथमतो जाता वायवः १५.१०. आदौ जाता विद्वांसः (जनाः) १५.११. [प्रथमोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः प्रत्ययः। प्रथमजाम्=अत्र प्रथमोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'जनसनखनक्रमगमो विट्' इति विट्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' अ० ६.४.४१. सूत्रेण नकारस्याकारादेशः]

प्रथमजाम् प्रथमोत्पन्नां वेदचतुष्टयीम् भा०—धर्माचरण-वेद-योगाभ्यास-सत्सङ्गादिभिः कर्मभिर्जातां शरीरपुष्टिमात्माऽन्तःकरणशुद्धिं च ३२.११. **प्रथमजाः**=प्रथमाज्जाताः (देव्यः=सतिस्त्रयः) ३७.४. [प्रथमज इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

प्रथमभाजम् यः प्रथमान् भजति सेवते तम् (देवं=दातारं विद्वांसं जनम्) ६.४९.९. [प्रथमोपपदे भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'भजो ण्विः' अ० ३.२.६२. सूत्रेण ण्विः। अण् प्रत्ययो वा]

प्रथमम् आदिमं कार्यम् १३.३४. आदौ (दामानं=दातारं जनम्) ४.५४.२. विस्तृतमनादि (गर्भं=प्रकृत्याख्यम्) १७.३०. प्रख्यातम् (अग्नि=पावकम्) ३.२९.५. सब कार्यों से पहले वर्त्तमान और सब के मुख्य कारण (ईश्वर) को आर्याभि० १.४०, ऋ० १.७.३.३. विस्तृतं विस्तारयितृ (ब्रह्म=सर्वेभ्यो बृहत् परमेश्वरम्) १३.३. विस्तीर्णम् (केतुं=प्रज्ञाम्) १४.१. सर्वोत्कृष्टम् (सभाध्यक्षम्) १.७७.३. सब जगत् के आदि-कारण (ईश्वर) को आर्याभि० २.२८, १३.३. सर्वेष्वग्रगन्तारम् (प्रजापतिम्) १.३१.११. जीवनस्याऽऽदिमनिमित्तम् (अग्नि=रूपगुणम्) १.३५.१. पुरः १.१८५.१०. आदिमं पृथिव्यां गमनम् २.१८.२. **प्रथमस्य**=विस्तीर्णस्याऽऽदिमाऽवयवस्य वा १.१२३.९. आदिमाऽऽश्रमब्रह्मचर्यस्य ३.१५.४. अनादि सदा मुक्त परमात्मा का स० प्र० ३३०, १.२४.२. **प्रथमः**=प्रख्यातो विद्वान् (जनः) १.८३.५. विस्तीर्णोऽग्निः १५.२६. आदिमः प्रख्यातो वा (सभेशः) १.१३४.६. सर्वस्य प्रथयिता (इन्द्रः=सेनापतिः) प्र०—अत्र 'प्रथेरमच्' उ० ५.६८, १.१०१.५. जन्मादेः पृथगादिमः (जगदीश्वरः) १२.१०२. विस्तीर्णगुणकर्मा (अग्निः) २.१०.१. यज्ञक्रियायामुपास्य आदिमं साधनं वा (अग्निः) ३.१५. प्रख्यातिमान् (शिल्पिजनः) १.१६३.२. पहिला (विवाहित पति) स० प्र० १५३, १०.८५.४०. अनादिस्वरूपो जगतः कल्पादौ सदा वर्त्तमानः (अग्निः=विज्ञान स्वरूप ईश्वरः) १.३१.१. कारणरूपेणाऽनादिर्वा कार्येष्वादिमः (अग्निः=ईश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.३१.३. अनादिस्वरूपः पूर्वं मान्यो वा (अग्निः=ईश्वरः) १.३१.२.

आदिमः साधकः (विद्वान् जनः) ७.४४.४. **प्रथमाः**= आदिमाः पृथिव्यादयोऽष्टौ वसवः २०.१२. पृथुबुद्धयः (विद्वांसो जनाः) २.३४.१२. प्रख्याता आदिमाः (विप्राः= धीमन्तो जनाः) ४.२.१५. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः 'प्रथेरमच्' उ० ५.६८ सूत्रेण अमच्प्रत्ययः। प्रथम इति मुख्यनाम, प्रतमो भवति नि० २.२२. प्रथमम्=परमम् नि० ३.७.]

प्रथमश्रवस्तमः अतिशयेन प्रथमं श्रवः श्रवणमन्नं वा यस्मात् सः (रयिः=श्रीः) ४.३६.५. [प्रथम-श्रवस्पदयोः समासे अतिशायने तमप्। श्रवस् अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०.]

प्रथमा विस्तारकौ (विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ) ३.४.७. आदिमौ विद्याबलविस्तारकौ (कवी=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८८.७. प्रख्यातौ (विद्वदुपदेशकौ) ३.७.८. [प्रथमप्राति० 'सुपां सुलुक्०' इति सूत्रेण प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः]

प्रथमा आदिमा (क्रिया) २५.६. विस्तृताऽऽदिमा (उषाः) १.११३.८. प्रख्याता (वैद्या स्त्री) ३३.५६. [प्रथमप्राति० स्त्रियां टाप्। प्रथम इति व्याख्यातम्]

प्रथमा प्रख्यातानि (धर्म=धर्माणि) ३.१७.१. आदिमानि (असुर्याणि=मेघादीनामिमानि चिह्नानि) ४.४२.२. [प्रथम-प्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

प्रथमानम् प्रख्यातम् (यानम्) २६.४. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोश्शानच्]

प्रथमानि अनादिभूतानि मुख्यानि (धर्माणि) भा०— अनादिकालीनधर्माणि ३१.१६. आदिमानि ब्रह्मचर्याख्यानि १.१६४.४३. ब्रह्मचर्य-विद्याग्रहण-दानादीनि ६.७२.१. [प्रथमं व्याख्यातम्। ततो नपुंसके प्रथमाबहुवचनम्]

प्रथमानाः प्रख्याताः (पुरुषाः) २०.४०. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः ताच्छील्यादिषु चानश्]

प्रथयन् विस्तारयन् (परमेश्वरः) ४.५३.२. प्रकटीकुर्वन् (अग्न्यादिपदार्थविद्यो मनुष्यः) ३.१४.४. **प्रथयन्तः**=प्रख्यापयन्तः (विप्राः=मेधाविजनाः) ५.४३.७. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृप्रत्ययः]

प्रथयस्व विस्तारय १२.१०६. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

प्रथस्व प्रख्याता भव १३.१७. विस्तारय १.२२. प्रख्याहि ५.५.४. विस्तृतसुखो भव ११.२९. प्रख्यातो भव १३.२. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रथस्वतीम् बहु प्रथः प्रख्यातिः प्रशंसा विद्यते यस्यां ताम् (सतीं स्त्रियम्) १५.६४. प्रथा प्रख्याता कीर्त्तिर्विद्यते यस्यास्ताम् (विदुषीं प्रजापालिकां राज्ञीम्) १३.१७. उत्तम-विस्तीर्णविद्यायुक्ताम् (स्त्रीम्) १४ १२. [प्रथस्=प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्। प्रथस्-प्राति० प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुबन्तान् ङीप्]

प्रथः सर्वजगत्-प्रसारकः (ईश्वरः) ऋ० भू० १६८ [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अच्]

प्रथानाम् विस्तीर्ण-सौन्दर्य-प्रख्याताम् (भार्याम्) ६.६४.३. **प्रथाना**=प्रथते तरङ्गैः शब्दायमाना (सिन्धुः= नदी) १.९२.१२. पक्षिशब्दैः शब्दायमाना (उषाः) १.९२.१२. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोः शानच्प्रत्ययान्ताट् टाप्। 'आने मुग्' इति न भवत्यागमशासनस्यानित्यत्वाच्छान्दसत्वाद्वा]

प्रथिना पृथोर्भावस्तेन (अ०—सुविस्तृतेन स्वप्रकाशेन) प्र०—पृथुशब्दादिमनिच् 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति मकारलोपः १.८.५. [पृथुप्राति० भावे कर्मणि वा 'पृथ्वादिभ्यः०' अ० ५.१.१२२. सूत्रेणेमनिच्। मकारलोपश्छान्दसः। 'र ऋतोहलादेर्लघोरि' ति ऋकारस्य रेफादेशः]

प्रथिमा पृथोर्भावः (विस्तीर्णपदार्थसमूहः) १८.४. [पृथुप्राति० भावे इमनिज् इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। पृथु महान्तम् नि० १२.२३]

प्रथिष्ट प्रथते ५.५८.७. [प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

प्रथुयामन् बहुप्रापक (विवाहितजन) ६.६४.४. [प्रथूपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि मनिन्]

प्रदक्षिणित् यः प्रदक्षिणामेति सः (शिल्पिजनः) प्र०—अत्र व्यत्ययेनैकवचनम् २.४३.१. यः प्रदक्षिणमेति गच्छति सः (जनः), प्र०—अत्र इण्-धातोः क्विप् 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इत्यन्त्यस्याऽकारलोपः ३.१९.२. यः प्रदक्षिणां नयति सः (विद्वान् जनः) ५.६०.१. यः प्रदक्षिणमेति सः (आपूर्णः कलशः) प्र०—अत्र शकन्ध्वादेराकृतिगणत्वात् पररूपमेकादेशः ३.३२.१५. या प्रदक्षिणमेति सा (घृताची= रात्रिः) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यलोपः ४.६.३. दक्षिणेन पार्श्वेनैति गच्छतीति (विद्वान् जनः) ५.३६.४. [प्रदक्षिणोपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। शकन्ध्वादित्वात् पररूपं छान्दसो वर्णलोपो वेत्याकारलोपः]

प्रदद्रिरे विदीर्णान् कुर्वन्ति भा०—विदृणन्ति प्र०— व्यत्ययेनाऽत्राऽऽत्मनेपदम् ३३.७०. [प्र+दॄ विदारणे (क्र्या०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रदधन्युः प्रधरन्त प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति नुडागमो यासुडभावः ४.३.१२. [प्र+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिङि छान्दसं रूपम्]

प्रदधिरे प्रकर्षेण दधति १.१५१.२. [प्र+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट्]

प्रदरान् उदराऽवयवान् २५.७. [प्र+दॄ विदारणे (क्र्या०) धातोरप् प्रत्ययः 'ऋदोरप्' इति]

प्रदशस्यतम् प्रकृष्टतया दत्तम् १.१५८.१. [प्र+दाशृ दाने धातोर्लोट्। धातोर्ह्रस्वश्छान्दसः। विकरणव्यत्ययेन द्विविकरणता]

प्रदातारम् प्रकृष्टतया दानशीलम् (पुरुषम्) ७.४६. [प्र+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच्। ताच्छील्ये तृन् वा]

प्रदातुः प्रकृष्टतया शोधयतुः (विदुषो जनस्य) प्र०—'दैप शोधने' इत्यस्य रूपम् १.१३.११. [प्र+दैप् शोधने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

प्रदिवः प्राचीनः (अग्निः=विद्युत्) ४.७.८. [प्रदिवः पुराणः नि० ८.१८. प्रदिवः पुराणनाम निघं० ३.२७.]

प्रदिवः प्रकृष्टप्रकाशस्य (परमेश्वरस्य) ६.६२.८. प्रकृष्टा द्यौः प्रकाशो येषां ते (प्रियाचारा जनाः) ३.४३.१. प्रकृष्टान् विद्याविनयप्रकाशान् ३.३८.५. सुप्रकाशान् (लोकान्) ४.६.४. प्रकर्षेण कमनीयान् (मघोनः=धनाढ्यान् जनान्) ६.४४.१२. प्रकृष्टा द्यौः प्रकाशमाना विद्या येषान्ते (सोमाः=पदार्थाः) ३.३६.२. प्रकर्षेण विद्याविनयप्रकाशस्य ३.४७.२. प्रकृष्टं सूर्यात् १.१०९.६. प्रकर्षेण विद्यादिसद्गुणान् कामयमानान् (मेधाविजनान्) ४.३४.३. प्रकृष्टा द्यौः, प्रकाशिता विद्या २.३.१. प्रकृष्टस्य न्यायप्रकाशस्य १.५३.२. प्रकृष्टद्युतिमतः (विदुषो जनस्य) १.१४१.३. **प्रदिवा**=प्रकृष्टप्रकाशवता (केतुना=प्रज्ञया) ५.६०.८. **प्रदिवि**=प्रद्योतनात्मकेऽग्नौ ५.६२.४. प्रकृष्टायां कामनायाम् ६.२१.८. प्रकृष्ट-प्रकाशे ३.४६.४. प्रकर्षेण कमनीये व्यवहारे ६.४१.३. [प्र+दिव्पदयोः समासः। दिव्=दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (दिवा०) धातोः क्विप्। प्रदिवः=पूर्वेष्वप्यहःसु नि० ४.८.]

प्रदिशम् प्रकृष्टां दिशम् १७.६६. दिशोपदिग्युक्तं देशम् २.४२.२. प्रदिश्यते सर्वैर्जनैस्ताम् (दिशाम्) १.९५.३. **प्रदिशः**=दिक्प्रदिक्स्थाञ्छत्रून् ६.७५.२. दिशोपदिशः २९.३९. प्रकृष्टगुणयुक्ता दिशः २७.१. आग्नेयाद्या उपदिशः ३२.११. ऐशान्यादि उपदिशाएँ, ऊपर नीचे आर्याभि० २.१०, ३२.११. दिशो विदिशश्च २५.१२. अभ्यन्तरदिशः ६.१९. प्रकृष्टा दिशः १८.३६. पूर्वाद्या ऐशान्याद्या वा ७.३५.८. याः प्रदिश्यन्ते ताः १८.६२. उपदिशाओं को सं० वि० २१५, ३२.११. **प्रदिशा**=उपदिशा २०.३९. प्रदेशेन ज्ञानमार्गेण प्र०—अत्र 'घञर्थे कविधानम्' इति कः 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशश्च १.१०१.७. वेदादिशास्त्रप्रदेशेन निर्देशेन प्रमाणेन २९.३२. प्रकृष्टया दिशा निर्देशेन २९.२९. आज्ञया १.१६४.३६. **प्रदिशि**=प्रदिशन्ति यया तस्याम् (वाचि=वाण्याम्) २९.३६. उपदिशि २.१९.७. [प्र-दिश्पदयोः समासः। दिश्=दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इत्यादिना कर्मणि क्विन् निपात्यते। प्रदिशाप्रयोगे-प्रपूर्वाद् दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः 'घञर्थे कविधानमि' ति कः प्रत्ययः, तृतीयैकवचनस्य चाकारादेशः। प्रदिशो दिगाश्रयाणि भूतानि नि० ११.३७.]

प्रदिशमानः प्रकर्षेणोपदिशन् (भा०=गुरुजनः) प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् ३.३१.२१. [प्र+दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रदिशा प्रकर्षेण बोधयन्तौ (देवौ=देदीप्यमानौ विद्वांसौ) २९.७. [प्र+दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः 'घञर्थे कविधानमि' ति कः। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

प्रदिष्टाः याः प्रदिश्यन्ते ताः (दिशः=पूर्वाद्याः) ३.३०.१२. [प्र+दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः क्तः]

प्रदीध्याना प्रदीप्यमाना (उषाः) १.११३.१०. [प्र+दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोः शानच्, ततः स्त्रियां टाप्]

प्रदृप्तिः प्रकृष्टो मोहः ६.३.२. [प्र+दृप हर्षमोहनयोः (दिवा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

प्रदोधुवत् प्रकृष्टतया कम्पयन् (इन्द्रः=वैद्यः) २.११.१७. [प्र+धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोः शतृप्रत्ययः। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लु। यङ्लुगन्ताद्वा शतृ]

प्रदोषम् रात्र्यारम्भे १.१९१.५. [प्र+दोषापदयोः समासः। दोषा रात्रिनाम निघं० १.७.]

प्रधनस्य प्रकृष्टस्य धनस्य १.१६९.२. **प्रधने**=प्रकृष्टानि धनानि यस्मात्तस्मिन् (आजा=सङ्ग्रामे) १.११६.२. [प्र+धनपदयोः समासः। प्रधन इति संग्रामनाम, प्रकीर्णान्यस्मिन् धनानि भवन्ति नि० ९.२१.]

प्रधयः धारिका धुरः १.१६४.४८. **प्रधीन्**=चक्रस्थानि तीक्ष्णानि कीलकानीव वर्त्तमानान् जगत्कण्टकान्

दुष्टान् ४.३०.१५. [प्र+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'उपसर्गे घोः किः' अ० ३.३.९२. सूत्रेण किः प्रत्ययः । प्रधिः प्रहितो भवति नि० ४.२७.]

प्रधाक् प्रकृष्टतया दहेत् प्र०—अत्र 'मन्त्रे घसह्वर०' इत्यादिना लेर्लुग् 'बहुलं छन्दसि' इत्यडभावः १.१५८.४. [प्र+दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । मन्त्रे घसह्वर०' इति लेर्लुक् अटोऽभावश्च]

प्रधीव यथा सर्वस्य धर्त्री रथाऽवयवा २.३९.४. [प्रधी-इवपदयोः समासः । प्रधी=प्रधिप्राति० ङीष्]

प्रनक्षन्त प्रकर्षेण व्याप्नुवन्तु ७.४२.१. [प्र+नक्षति व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८. धातोर्लङ् अटोऽभावश्च]

प्रनय प्रकृष्टतया प्राप्नुहि १२.२६. [प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रपत प्रपातय १२.८७. [प्र+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रपथिन् प्रकृष्टः पन्था विद्यते यस्य' तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ६.३१.५. [प्र—पथिन्पदयोः समासः]

प्रपथिन्तमम् अतिशयेन प्रकृष्टपथगामिनम् (इन्द्रं= सेनेशम्) १.१७३.७. [प्र-पथिन्पदयोः समासेऽतिशायने तमप् । 'नाद् घस्य' अ० ८.२.१७. सूत्रेण नुडागमः]

प्रपथेषु प्रकृष्टेषु सरलेषु मार्गेषु १.१६६.९. [प्र-प्रथिन्पदयोः समासे 'ऋक्पूर०' इति समासान्तोऽकारः]

प्रपथ्याय प्रकृष्टेषु धर्मपथिषु साधवे (जनाय) १६.४३. प्रकर्षेण पथ्यकरणाय २२.२०. [प्रपथमिति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततः साध्वर्थे यत्]

प्रपदैः प्रकृष्टैः पदैर्गमनैः ६.७५.७. प्रकृष्टैः पारगमनैः २९.४४. [प्र+पद गतौ (दिवा०) धातोर् 'घञर्थे कविधानम्' इति भावे कः]

प्रपद्यस्व प्राप्नुहि १७.४५. **प्रपद्ये**=प्राप्नोमि ३.४३. प्राप्नुयाम् ३३.१. यथावत् प्राप्त होऊं आर्याभि० २.४९, ३.४३. प्राप्त होता हूँ सं० वि० १४७, ३.४३. प्राप्नोमि ऋ० भू० २४०, ३.४३ [प्र+पद गतौ (दिवा०) धातोर्लोट्]

प्रपश्यन् प्रकर्षेण समीक्षन्ते १.१७४.६.. [प्र+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लङ् । अटोऽभावश्छान्दसः]

प्रपा जलपान स्नान आदि का स्थान स० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.६. [प्र+पा पाने (भ्वा०) धातोः 'घञर्थे कविधानम्' अ० ३.३.५८. वा० सूत्रेण कः । स्त्रियां टाप्]

प्रपितामहेभ्यः ये पितामहानां पितरस्तेभ्यः १९.३६. येऽष्टाचत्वारिंशद्वर्षप्रमितेन ब्रह्मचर्येण विद्यापारावारं प्राप्याऽध्यापयन्ति ते आदित्याख्याः प्रपितामहास्तेभ्यः ऋ० भू० २६६, १९.३६. [प्र—पितामहपदयोः समासः । पितामहः=पितृप्राति० 'ताभ्यां पितरि डामहच्' अ० ४.२.३६. वा० सूत्रेण पितरि डामहच्]

प्रपित्वम् प्रकृष्टं प्रापणम् ३.५३.२४. प्राप्तिम् ५.३१.७. **प्रपित्वे**=प्राप्तव्ये समये स्थाने वा १.१०४.१. उत्तरस्मिन् (उत्तरायणे) १.१३०.९. पदार्थानां प्रापणे ३४.३७. प्राप्तौ ६.३१.३. प्रकृष्टप्राप्ते (दिवसे) ४.१६.१२. प्रकर्षेण प्राप्ते समये १.१८९.७. प्रकर्षेणैश्वर्यस्य प्राप्तौ ७.४१.४. प्रकर्षता उत्तमता की प्राप्ति में सं० वि० १५६, ७.४१.४. [प्रपित्वेऽभीक इत्यासन्नस्य । प्रपित्वे प्राप्ते नि० ३.२०. प्रपित्वे उत्तराणि पदानि निघं० ३.२९.]

प्रपिन्वध्वम् प्रकृष्टतया सेवध्वम् ३.३३.१२. [प्र+पिवि सेवने सेचने च (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रपिस्पृशति प्रकर्षेणाऽत्यन्तं स्पृशति ६.४९.१२. [प्र+स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

प्रपीताः प्रकर्षेण पीता वृद्धाः (उषासः=प्रभाताः) ३४.४०. प्रकर्षेण पीता वर्धयित्र्यः (विदुष्यः स्त्रियः) ७.४१.७. [प्र-पीतापदयोः समासः । पीताः=ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्तः । 'प्यायः पी' इति पीभावे स्त्रियां टाप्]

प्रपीनम् प्रकृष्टतया स्थूलम् (स्तनम्=दुग्धाधारम्) १७.८७. [प्र-पीनपदयोः समासः । पीनम्=ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्तः । 'प्यायः पी' इति पीभावे 'ओदितश्च' इति निष्ठानत्वम्]

प्रपीनाम् प्रवृद्धाम् (सुमतिं=प्रज्ञाम्) १७.७४. [प्रपीनं व्याख्यातम् । स्त्रियां टाप्]

प्रपीपय प्रकर्षेण वर्द्धय ३.१५.६. **प्रपीपयन्त**= प्रकृष्टतया वर्द्धयन्ति १.१८१.६. (प्र+ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लोट् । व्यत्ययेन शप् । अन्यत्र लङ्यटोऽभावः]

प्रपृञ्चती प्रकृष्टा चाऽसौ पृञ्चती चाऽर्थसम्बन्धेन सकलविद्यासम्पर्क-कारयित्री शब्दोच्चारणसाधिका (धेना= वेदचतुष्टयी वाक्) १.२.३. [प्र—पृञ्चतीपदयोः समासः । पृञ्चती=पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

प्रप्र अतिप्रकर्षम् ७.८.४. अतिप्रकृष्टे १.१३८.१. अतिप्रकर्षेण ३.९.३. प्रत्यर्थे प्र०—अत्र 'प्रसमुपोदः

पादपूरणे' अ० ८.१.६. इति द्वित्वम् १.४०.७. प्र०—अत्र पादपूरणाय द्वित्वम् १.१२९.८. [प्र-पदस्य पादपूरणे द्वित्वम्। आ इत्यर्वागर्थे प्र परेत्येतस्य प्रातिलोम्यम् नि० १.३.]

प्रप्रधेहि अतिप्रकृष्टतया धेहि ११.८३. [प्र+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोट्। प्र-पदस्य पादपूरणे द्वित्वम्]

प्रप्रपिब प्रकृष्टतया पिब ५.३८. प्रकृष्टमिव पिब ५.४१. [प्र+पा पाने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रप्रणीतन अतिप्रकर्षेणाऽलङ्कुरुत ५.५.५. [प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। तप्रत्ययस्य तनादेशश्छान्दसः]

प्रप्ररोचते अतिप्रकर्षेण प्रकाशते १२.३४. [प्र+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रप्रविवाय अतिप्रकर्षेण दूरं गमयति ७.६.३. [प्र+वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोर्लिट्]

प्रप्रशंसिषम् अतिप्रकर्षेण प्रशंसेयम् २७.४२. [प्र+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

प्रप्राऽतियन्ति अतिप्रकर्षेण गच्छन्ति ३.९.३. [प्र+अति+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्। 'इणो यण्' इति यणादेशः]

प्रप्रुथ्य प्रपूर्य्य ३.३२.१. [प्र+प्रोथृ पर्याप्तौ (भ्वा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्। धातोरोकारस्य ह्रस्वश्छान्दसः]

प्रप्रोथाय अत्यन्तं पर्याप्ताय (पदार्थाय) २२.७. [प्र+प्रोथृ पर्याप्तौ (भ्वा०) धातोर्घञ्]

प्रप्लुतः प्रकृष्टगुणैः प्राप्तः (समुद्रः=अन्तरिक्षम्) ८.५९. [प्र+प्लुङ् गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रफर्व्यम् प्रफर्वितुं गमयितुं योग्यम् (रथवाहनम्=रथवहनसाधनम्) १२.७१. [प्र+फर्व गतौ (छान्दसो धातुः) धातोर्ण्यत्]

प्रबभसत् प्रकर्षेण प्रदीप्येत् प्रभर्त्सेत् ४.५.४. [प्र+भस भर्त्सनदीप्त्योः (जु०) धातोर्लेट्]

प्रबुधाय प्रकृष्टज्ञानवते (जनाय) २२.७. **प्रबुधे**=जागरिते (समये) ४.१४. [प्र+बुध अवगमने (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कर्त्तरि कः। 'प्रबुधे' प्रयोगे घञर्थे कः प्रत्ययः]

प्रबुध्यस्व प्रकृष्ट-ज्ञान और उत्तम व्यवहार को यथावत् जान सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७५ [प्र+बुध अवगमने (दिवा०) धातोर्लोट्]

प्रबोधयन्ती प्रकृष्टतया जागरणं प्रापयन्ती (उषाः) १.११३.१४. जागरयन्ती (उषाः=प्रभातवेला) ४.१४.३. **प्रबोधयन्तीः**=जागरयन्त्यः (उषसः=प्रभाताः) ४.५१.५. [प्र+बुध अवगमने (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच्छत्रन्ताच्च ङीप्]

प्रब्रवाम प्रकृष्टतयोपदिशेम ४.५८.२. प्रकर्षेणाऽध्यापयेमोपदिशेम वा भा०—वेदानध्यापयेम सत्यमुपदिशेम ३६.२४. **प्रब्रवीत्**=प्रकृष्टतया ब्रूयात् १.१६१.१३. **प्रब्रवीषि**=प्रकर्षेणोपदिशति ४.४२.७. [प्र+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न। अन्यत्र लङि शपो लुक् 'ब्रुव ईट्' इतीडागमः। 'प्रब्रवीषि' प्रयोगे लट्]

प्रब्रुवाणः यः प्रकर्षेण वाचयत्युपदेशयति वा सः (अध्यापक उपदेशको वा) १.५५.४. प्रकृष्टतया वदन् (उपदेशकः) २.४२.१. [प्र+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः शानच्]

प्रब्रूहि प्रत्यक्षं कथय १.६१.१३. [प्र+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर् लोट्]

प्रभञ्जन् यः प्रभग्नान् करोति सः भा०—हिंसन् (बृहस्पतिः=सेनापतिः) १७.३६. [प्र+भञ्जो आमर्दने (रुधा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रभर प्रकृष्टतया धर १.६१.१२. **प्रभरत**=प्रकर्षेण दधाति ४.२६.४. प्रधरत ३.१०.५. **प्रभरध्वम्**=प्रकृष्टतया धरत ३४.१७. प्रधरध्वम् १.१२२.१. **प्रभरध्वे**=प्रकृष्टतया धरत ५.५९.४. **प्रभरन्त**=प्रभरन्ति २.१३.२. प्रदधति १.१७३.४. **प्रभरामहे**=प्रकृष्टतया पुष्येम २.२०.१. प्रकर्षेण धरामहे १६.४८. **प्रभरे**=प्रकृष्टतया धरे १.५७.१. प्रकर्षेण धरामि ५.१२.१. [प्र+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लङ्लटावपि]

प्रभर्ता प्रकृष्टानां विद्यानां धर्त्ता (इन्द्रः=सेनेशः) १.१७८.३. [प्र+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

प्रभर्त्ति प्रकृष्टतया बिभर्त्ति प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१७३.६. [प्र+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

प्रभर्त्तुम् प्रकर्षेण धर्त्तुम् ३.४८.१. [प्र+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोस्तुमुन्]

प्रभर्मणि प्रकर्षेण बिभर्त्ति राज्यादीन् यस्मिँस्तस्मिन् (विदुषि राजनि) १.७६.७. (प्र+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्मनिन्प्रत्ययः]

प्रभवति प्रकृष्टतया वर्त्तते १.५५.४. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रभवन्तम् उत्पद्यमानम् (पृष्ठम्=आधारं) २.१३.४. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रभवः उत्पत्तिः २.३८.५. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इति अप्प्रत्ययः]

प्रभासि प्रदीप्यसे १.१२१.७. [प्र+भा दीप्तौ (अदा०) धातोर्लट्]

अभिन्दन् यथा शत्रुदलं विदारयँस्तथा (अग्निः=पापिनां दग्धा वीरसेनापतिः) ५.३७. [प्र+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रभु उत्तमप्रभावकारकम् (राधः=धनम्) १.६.५. समर्थम् (भा०—ब्रह्म) २.२४.१०. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्' अ० ३.२.१८०. सूत्रेण डुः प्रत्ययः]

प्रभुञ्जती प्रकृष्टं पालनं कुर्वती (उषाः) १.४८.५. [प्र+भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

प्रभुवत् प्रकृष्टतया भवेत् प्र०—अत्र लेट् १.११६.७. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शः]

प्रभुः समर्थः (ईश्वरः) १.१८८.६. सर्वसामर्थ्ययुक्त सर्वशक्तिमान् (परमात्मा) स० प्र० ४२३, ६.८३.१. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्' अ० ३.२.१८०. सूत्रेण डुः प्रत्ययस्ताच्छील्ये यज्ञ इव प्रभूर्भूयासम् ऐ० आ० ५.१.१.]

प्रभूतम् पुष्कलम् (रत्नं=सुवर्णहीरकादिकम्) ३.५४.३. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिकः क्तः]

प्रभूती समर्थौ (राजाऽमात्यौ) ४.४१.७. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । ततः द्विवचनम्]

प्रभूती बहुत्वेन (अभिमानेनाऽज्ञानेन वा) ४.५४.३. [पूर्वपदे द्रष्टव्यम्]

प्रभूतौ बहुत्वे (भावे) ३.१६.३. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः संज्ञायां क्तिच् । ततः सप्तमी]

प्रभूवरीः प्रभुत्वयुक्ताः (वाचः) २३.३५. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते 'अ ३.२.७५. सूत्रेण क्वनिप् । ततः स्त्रियां 'वनो र च' अ० ४.१.७. सूत्रेण ङीप् रेफश्चान्तादेशः]

प्रभूवसो प्रभुः सर्वसमर्थश्च वसुः सुखेषु वासप्रदश्चासौ तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=जगदीश्वर) १.५७.४. यः समर्थश्चाऽसौ वासयिता च तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ७.२२.२. [प्रभु—वसुपदयोः समासः । पूर्वपदस्य दीर्घश्छान्दसः]

प्रभूषतः प्रकृष्टतयाऽलङ्कुरुतः १.१५६.१. [प्र+भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रभूषन् अलङ्कुर्वन् (अद्वितीयं ब्रह्म) ३.५५.१. [प्र+भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोः शतृ]

प्रभूः समर्थः (अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१६. [प्र+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

प्रभृतम् प्रकर्षेण धृतम् (तृणं=घासविशेषम्) २५.३१. **प्रभृतस्य**=प्रकर्षेण धारकस्य पोषकस्य वा (वचसः) १२.४२. **प्रभृतः**=प्रकर्षेण हवनादिना पोषितः (अद्रिः) ३३.७८. **प्रभृताः**=प्रकृष्टतया धृताः (अ०—विद्वांसो जनाः) १.५१.१२. [प्र+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रभृता प्रकर्षेण धारणे पोषणे वा ५.३२.५. [प्रभृतं व्याख्यातम् ततः 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्या आकारादेशः]

प्रभृतिम् प्रकृष्टां धारणां पोषणं वा २.२४.१. **प्रभृतौ**=प्रकृष्टधारणे ५.३२.७. प्रकृष्टतया धारणे ७.३८.२. [प्र+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

प्रभृथस्य प्रकर्षेण ध्रियमाणस्य (आयोः=जीवनस्य) ५.४१.६. **प्रभृथे**=प्रकृष्टे पालने २.३४.११. प्रकर्षेण धारिते जगति ७.४०.५. शुद्धकरणे व्यवहारे ५.४१.४. **प्रभृथेषु**=प्रकर्षेण धर्त्तव्येषु (धर्मेषु) ५.३३.५. [प्र+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणादिकः थक्प्रत्ययः। प्रभृथस्य=प्रभृतस्य नि० ११.४६.]

प्रभेदति प्रकृष्टतया भिनत्ति ५.८६.१. [प्र+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

प्रभ्रियन्ते प्रकृष्टतया ध्रियन्ते १.१४.४. [प्र+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

प्रभ्वीः समर्थाः (भा०—त्रिगुणात्मिका मात्राः) १.१८८.५. [प्रभुरिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियाम् 'वोतो गुणवचनात्' इति ङीष्]

प्रमगन्दस्य यः कुलीनो मां गच्छति सः तस्य (सज्जनस्य) ३.५३.१४. [प्रमीयते प्रकृष्टं निर्मीयते यस्मिन् मेघः प्रमा=अन्तरिक्षम् । अन्तरिक्षलोको वै

प्रमा श० ८.३.३.५. प्रमोपपदे गदी देवशब्दे (चुरा०) धातोरच् कर्तरि नुम् छान्दसः। प्रमिण=अन्तरिक्षे गन्दस्य गर्जनशीलस्येत्यर्थः। मगन्दः कुसीदी, माङ्गदो मामागमिष्यतीति च ददाति, तदपत्यं प्रमगन्दोऽत्यन्तकुसीदिकुलीनः नि० ६.३२.]

प्रमतिम् प्रकृष्टां प्रज्ञाम् ४.१६.१८. प्रकृष्टं ज्ञानम् १.७१.७. **प्रमतिः**=प्रकृष्टा चाऽसौ मतिश्च प्रमतिः १.१०९.१. प्रकृष्टा मतिः २.२९.२. प्रकृष्टा बुद्धिः १.९४.१. [प्र-मतिपदयोः समासः। मतिः=मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। 'मन्त्रे वृषेषपचमन०' इत्युदात्तः]

प्रमतिः प्रकृष्टा मतिर्ज्ञानं यस्य सः (सर्वमङ्गलकारकः सभाध्यक्षः) १.३१.९. प्रकृष्टप्रज्ञः (वरतमोऽध्यापकः) ७.२९.४. प्रकृष्टा मतिर्भानं यस्य सः (अग्निः=सभाध्यक्षः) १.३१.१०. [प्र-मतिपदयोः समासः। मतिरिति व्याख्यातम्। मतयः=मेधाविनाम। निघं० ३.१५]

प्रमत्या प्रकृष्टा मतिर्मननं यस्यां तया (देव्या सेनया १.५३.५. [प्र-मतिपदयोः समासः]

प्रमदे प्रमादाय ३०.६. [प्र+मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'प्रमदसंमदौ हर्षे' अ० ३.३.६८. सूत्रेण अप्प्रत्ययो निपात्यते]

प्रमन्द प्रशंसय ६.१८.९. **प्रमन्दते**=प्रकर्षेणानन्दयति १२.६४. [प्र+मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्]

प्रमन्दुः प्रकृष्टमानन्दमाप्नुवन्ति ७.३३.१. [प्र+मदि स्तुतिमोदादिषु (दिवा०) धातोर्लिट्। 'वा छन्दसीति' द्वित्वं न भवति]

प्रमन्महे याचामहे प्र०—मन्मह इति याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९, ३४.१६. प्रकृष्टतया मन्यामहे याचामहे वा १.६२.१. [मन्महे याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९.]

प्रमहसः प्रकृष्टस्य महतः (राज्ञः) ५.२८.४. [प्र—महस्पदयोः समासः महस्=मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्। महः=महन्नाम निघं० ३.३.]

प्रमा प्रमाणं यथार्थविज्ञानम् १५.६५. यया प्रमीयते सा प्रज्ञा १४.१८. यथार्थज्ञानं यथार्थज्ञानवान् तत्साधिका बुद्धिः ऋ० भू० ४७. [प्र+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः स्त्रियाम् 'आतश्चोपसर्गे' इत्यङ्। ततष्टाप्। अन्तरिक्षलोको वै प्रमा, अन्तरिक्षलोको ह्यस्माल्लोकात् प्रमित इव श० ८.३.३.५.]

प्रमिनतः प्रकर्षेण हिंसतः (वेशस्य=प्रवेशस्य) ४.३.१३. [प्र+मिनाति वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोर्लट्]

प्रमिनती प्रकृष्टतया हिंसन्ती (उषाः) १.९२.११. [प्र+मिनाति वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

प्रमिनन्ति परिमातुं शक्नुवन्ति १.२४.६. प्रकर्षेण हिंसन्ति ४.५.४. [प्र+मिनाति वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोर्लट्]

प्रमिमय प्रक्षिपेयम् २.२९.५. [प्र+डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्लिट्। 'मिनातिमिनोतिदीङां ल्यपि च' इति प्राप्तमात्वं न भवति छान्दसत्वात्]

प्रमिमीतः प्रजनयतः ५.७६.२. [प्र+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

प्रमियम् प्रहिंसितुम् ४.५५.७. [प्र+मिनाति वधकर्मा (निघं० २.२९.) धातोश्छान्दसं रूपम्]

प्रमिये मरणं प्राप्नुयाम् ४.५४.४. [प्र+मिनाति वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोश्छान्दसं रूपम्]

प्रमीनती प्रकृष्टतया हिंसन्ती (उषाः) १.१२४.२. [प्र+मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

प्रमीयसे प्रकर्षेण म्रियसे ५.७९.१०. [प्र+मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः कर्मणि लट्]

प्रमुञ्च प्रकृष्टतया त्यज १६.९. [प्र+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट्। 'शे मुचादीनाम्' इति नुम्]

प्रमुञ्चन् प्रकर्षेण मुक्ताः कुर्वन् (अग्निः=राजा) २७.७. प्रकृष्टतया हापयन् (विद्वान् पतिः) १.१४०.८. [प्र+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोः शतृ]

प्रमुदः प्रकृष्ट प्रसन्नताएं सं० वि० १९७, ९.११३.११. **प्रमुदा**=प्रकृष्टेन हर्षेण ३९.९. **प्रमुदे**=प्रकृष्टाऽऽनन्दाय ३०.१०. [प्र+मुद हर्षे (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वाद् भावे क्विप्]

प्रमुदितः प्रकृष्टत्वेन हर्षितः (पुत्रः) १९.११. [प्र+मुद हर्षे (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रमुमुग्धि प्रमोचय २१.३. प्रकृष्टतया मुञ्च पृथक्कुरु ४.१.४. [प्र+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

प्रमुषायति प्रकृष्टतया चोरयति ५.४४.४. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोः प्रपूर्वाण् णिजन्ताल् लट्। गुणाऽभावश्छान्दसः]

प्रमृक्षः प्रकृष्टतया सिञ्च ४.३०.१३. [प्र+मृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः। क्सो विकरणः]

प्रमृण प्रकर्षेण बाधस्व ६.४४.१७. प्रकृष्टतया हिन्धि ४.१६.१२. [प्र+मृण हिंसायाम् (तुदा०) धातोर्लोट्]

प्रमृणन् प्रकर्षेण हिंसन् (इन्द्रः=सैनिकजनः) ३.३०.६. **प्रमृणन्तम्**=प्रकृष्टतया शत्रून् हिंसन्तम् (इन्द्रं=सेनापतिम्) १७.३८. [प्र+मृण हिंसायाम् (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रमृणः ये प्रकृष्टतया मृणन्ति हिंसन्ति तान् (शत्रुसेनाजनान्) १७.३६. [प्र+मृण हिंसायाम् (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

प्रमृणीहि प्रकर्षेण हिन्धि १३.१३.

प्रमृशाय प्रकृष्टविचारशीलाय भा०—सुविचाराय (जनाय) १६.३६. [प्र+मृश आमर्शने (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कर्त्तरि कः]

प्रमृषन्त प्रकृष्टतया सहन्ते ७.१८.२१. [प्र+मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन शः। अटोऽभावः]

प्रमृषे सुखैः संयोजयेः ३.९.२. [प्र+मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन शः। धातूनामनेकार्थकत्वेन गिश्रणेऽपि। प्रमृषे=प्रमृष्यते नि० ४.१५.]

प्रमोदाः प्रकृष्टा आनन्दयोगाः भा०—पराऽऽनन्दाः २०.६. [प्र=मुद हर्षे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

प्रमोषीः प्रकृष्टतया स्तेनयेः १.१०४.८. प्रकर्षेण चोरयेः २१.२. प्रकृष्टतया मुष्णीयात् खण्डयेत् प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् ४.२३. प्रकर्षेण पृथक्कुरु पं० वि० अ०—खण्डनं कुर्य्यात् ४.२३. प्रत्यक्ष चुरा और चुरवा आर्याभि० १.४६, ऋ० १.७.१६.८. [प्र+मुष स्तेये (क्र्या०) धातोर्लुङ्]

प्रम्लोचन्ती प्रकृष्टतया सर्वानोषध्यादिपदार्थान् म्लोचयन्ती (दीप्तिः) १५.१७. [प्र+म्लुचु गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तात् ङीप्]

प्रय इव यथा प्रीतमन्नम् १.६१.२. [प्रयः-इवपदयोः समासः। प्रयः=अन्ननाम निघं० २.७. उदकनाम निघं० १.१२.]

प्रयक्षतमम् अत्यन्तपूजनीयम् (कर्म्म) १.६२.६. [प्रयक्षपदयोः समासेऽतिशायने तमप्। यक्षः=यजधातोरौणा० सः प्रत्ययः]

प्रयक्षन् प्रकृष्टतया यजन्ते २.५.१. **प्रयक्षन्त**=प्रकृष्टतया रोषत हिंस्त १.१३२.५. [प्र+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभावः। विकरणव्यत्ययेन सिप्]

प्रयक्षे प्रकर्षेण यष्टुं सङ्गन्तुम् ३.३१.३. [प्र+यज-देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे से प्रत्ययः]

प्रयच्छतु प्रकृष्टतया ददातु ६.२६. **प्रयच्छन्ति**=प्रकृष्टं ददति ३.३३. [प्र+दाण् दाने (भ्वा०) धातोर्लट्। शिति प्रत्यये 'पाघ्रा०' इत्यादिना यच्छादेशः]

प्रयज प्रकर्षेण सङ्गच्छस्व ३.१७.५. **प्रयजे**=प्रकृष्टतया सङ्गच्छेयम् २.६.३. प्रकर्षेण सङ्गच्छे १७.७५. [प्र+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्रयज्यवः प्रकर्षेण यज्ञसम्पादकाः (अमात्यजनाः) ६.४८.२०. प्रकर्षेण सङ्गन्तारः (मरुतः=गृहस्थिजनाः) ७.५६.१४. प्रकृष्टयज्यवः सङ्गन्तारो मनुष्याः ५.५५.१. प्रकृष्टं यज्यवो येषां तत्सम्बुद्धौ (मरुतः=सभाध्यक्षादयः) १.८६.७. प्रकृष्टो परोपकाराख्यो यज्ञो येषां राजपुरुषाणां तत्सम्बुद्धौ १.३९.९. **प्रयज्यवे**=प्रयजन्ति येन तस्मै (धीमते जनाय) ५.८७.१. **प्रयज्यो**=यो यत्नेन यष्टुं सङ्गन्तुं योग्यस्तत्सम्बुद्धौ (परमेश्वर) ६.२१.१०. यः प्रकर्षेण यजति तत्सम्बुद्धौ (यजमान कवे) ६.४९.४. यः प्रयजति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वन् जन) ३.६.२. प्रकर्षेण यज्ञकर्त्तः (देव=विद्वज्जन) ६.२२.११. **प्रयज्योः**=प्रयोक्तुं योग्यस्य अत्यस्य=अश्वस्य) १.१८०.२. [प्र+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'यजिमनिशुन्धि०' उ० ३.२०. सूत्रेण युच्प्रत्ययः। प्रयज्युम्=प्रततयज्यम् नि० ५.२.]

प्रयतदक्षिणम् प्रयताः प्रयत्नेन दत्ता दक्षिणा यस्मात्तत् (वसु=धनम्) ६.५३.२. प्रयताः प्रकृष्टतया यता विद्याधर्मोपदेशरूपा दक्षिणा येन तम् (नरं=विनयाभियुक्तं मनुष्यम्) .१.३१.१५. [प्रयता-दक्षिणापदयोः समासः। प्रयता=प्र+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः, ततष्टाप्। दक्षिणा दक्षतेः समर्द्धयतिकर्मणो व्यृद्धं समर्द्धयतीति नि० १.७.]

प्रयतम् प्रयत्नसाध्यम् (विजयम्) ४.२७.५. प्रयत्नेन सिद्धम् (यज्ञम्) ३.३५.१०. **प्रयतस्य**=प्रयत्नं कुर्वतः (जीवस्य) ४.५.१०. **प्रयतः**=प्रयतमानाः (भा०—अध्यापकाः) ४.१५.८. **प्रयता**=प्रयत्नेन ५.३०.१२. [प्र+यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः क्तः। 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति तलोपः। अथवा यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रयता प्रकर्षेण दत्तानि (धनानि) ५.३४.४. प्रयत्नेन साधितानि (हवींषि=अन्नानि) १९.६६. प्रयत्नसाध्यानि (द्रव्याणि) ५.४२.३. [प्र+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः

क्तः । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

प्रयतान् सुशिक्षितान् (अश्वान्=तुरङ्गान्) १.१२६.२. **प्रयताः**=प्रयतमानाः (गावः=धेनवः) ५.३३.१०. [प्र+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः । ततो द्वितीया]

प्रयतानि प्रयत्नेन साधितानि (हवींषि=अन्नादीनि) १९.५९. [प्र+यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः क्तः । तलोपश्छान्दसः । यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्वा प्रोपसर्गात् क्तः]

प्रयतासु नियतासु (अ०—वृष्टिषु) १.१६६.४. [प्र+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तान्ताट् टाप् स्त्रियाम्]

प्रयति प्रैति प्रकृष्टं ज्ञानं ददातीति प्रयत् तस्मिन् (अध्वरे=यज्ञे) प्र०—'इण् गतौ' इत्यस्माल्लटः स्थाने शतृ-प्रत्ययः १.१६.३. प्रयतन्ते यस्मिँस्तत्र (यज्ञे=सङ्गन्तव्ये यज्ञादिव्यवहारे) २८.१४. प्रयत्नसाध्ये (यज्ञे) ६.१०.१. **प्रयत्सु**=प्रयत्नसाध्येषु वर्त्तमानेषु (अध्वरेषु=यज्ञेषु) २७.१४. **प्रयद्भ्यः**=प्रयत्नं कुर्वद्भ्यः (मरुद्भ्यः=मनुष्यादिभ्यः) ५.५४.९. **प्रयन्तम्**=प्रयत्नं कुर्वन्तम् (विद्वांसं जनम्) ५.६४.२. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्यये 'इणो यण्' इति यणादेशः । यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्वा प्रोपसर्गात् क्विप्]

प्रयति प्रकृष्टं सुखमेति येन तस्मिन् (अध्वरे=अहिंसनीये यज्ञे) प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति करण-कारके कृत् ४.५. प्रयत्यते जनैर्यस्तस्मिन् (यज्ञे) प्र०—'कृतो वहुलम्' अ० ३.३.१३. इति वार्त्तिकेन कर्मणि क्विप् ८.२०. प्रयतन्ते यस्मिँस्तत्र (यज्ञे=सङ्गन्तव्ये यज्ञादिव्यवहारे) २८.१४. [प्र+यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः 'कृतो बहुलम्' इति कर्त्तृभिन्नकारकेष्वपि क्विप्]

प्रयतिम् प्रयतन्ते यया ताम् (सभाम्) १.१२६.५. **प्रयतिः**=प्रयतन्ते यया सा (त्वक्) २०.१२. प्रयतते येन सः (भा०—यज्ञः) प्र०—अत्र 'सर्वधातुभ्य०' इत्यौणादिक इ-प्रत्ययः १८.१. प्रयतनशीलः (रश्मिः=किरणो दीप्तिः) ३३.७४. [प्र+यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोरौणादिक इः प्रत्ययः]

प्रयती प्रयत्यै प्रदानाय प्र०—अत्र प्रपूर्वाद् यमधातोः क्तिन्, तस्माच्चतुर्थ्येकवचने 'सुपां सुलुक्०' इतीकारादेशः १.१०९.२. [प्र०+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । ततश्चतुर्थ्याः स्थाने 'इयाङ् इयाजीकाराणामुपसंख्यानम्' अ० ७.१.३९. वा० सूत्रेण ईकारादेशः । प्रयतीप्रदानेव नि० ६.९.]

प्रयत्येतन प्रतीतिं कुरुत ६.४२.२. ['प्रयति' उपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट् । तस्य तनबादेशः]

प्रयन् प्रकृष्टतया गच्छन् (गौः=पृथिवीगोलः) ३.६. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ-प्रत्ययः]

प्रयन्त प्रयच्छत प्र०—अत्र शपो लुक् ३३.४८. [प्र+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोटि शपो लुक्]

प्रयन्तम् प्रयत्नं कुर्वन्तम् (सूर्यम्) १.१५२.४. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रयन्तः प्रकृष्टनियमकर्त्तः (परमेश्वर विद्वन्वा) १.७६.४. **प्रयन्ता**=प्रकर्षेण नियन्ता (इन्द्रः=राजा) ७.१९.१. प्रकर्षेण यमनकर्त्ता सन् (इन्द्रः=सर्वाधीशः) १.५१.१४. [प्र+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

प्रयन्तारा प्रयच्छन्ति याभ्यां तौ (पाणी=बाहू) ४.२१.९. [प्र+यमु उपरमे (भ्वा०)+तृच् । 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

प्रयन्ति प्रकृष्टतया गच्छन्ति १.९७.५. प्रकर्षेण प्राप्नुवन्ति ३.४०.४. **प्रयन्तु**=प्रकृष्टतया गच्छन्तु ७.३४.१८. **प्रयन्धि**=प्रयच्छ ३.३६.९. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट् । 'प्रयन्धि' प्रयोगे प्रोपसर्गाद् यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोटि शपो लुकि च रूपम्]

प्रयम्यमानान् प्रकर्षेण प्रापितनियमान् (व्यवहारान्) ३.३६.२. [प्र+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

प्रययुः प्रकृष्टतया प्राप्नुवन्ति ५.५३.१२. प्रयान्ति ४.१९.५. [प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लिट्]

प्रयवयन् प्रकर्षेण संयोजयन् विभाजयन् वा (अ० राजा) ३.४८.३. [प्र+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ । वृद्ध्यभावश्छान्दसः]

प्रयष्टे प्रकर्षेण यष्टुम् ३.७.१. [प्र+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

प्रयसः कमनीयस्य (अन्धसः=अन्नस्य) २.१९.१. **प्रयसा**=येन प्रीणन्ति तृप्यन्ति कामयन्ते वा शिष्टान् विदुषः शुभान् गुणान् तेन (अन्नेन) सह १.७१.३. प्रयत्नेन ३.५४.३. प्रीतेन (प्रयत्नेन) ४.५.६. **प्रयसे**=प्रयतमानाय (वरुणाय=उत्तमाय व्यवहाराय) ५.६६.१. [प्र+यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोः क्विप्, 'कृतो बहुलम्' इति वार्तिकेन]

प्रयस्ता प्रेरिता (उखा=पाकस्थाली) ३.५३.२२. [प्र+यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोः क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

प्रयस्वतीः प्रयो बहुविधं तर्प्पणं विद्यते यासु ताः

(विशः=प्रजाः) ३.६.३. [प्रयस्प्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्तान् ङीप् । प्रयस् इति व्याख्यास्यते]

प्रयस्वन्तः प्रयतमानाः (जनाः) ३.५२.६. बहुप्रयत्नशीलाः (राजप्रजाजनाः) १.१३०.१. प्रशस्तानि प्रयांसि प्रज्ञानानि विद्यन्ते येषां ते (मानुषासः=१.६०.३. **प्रयस्वान्**=प्रयत्नवान् (मर्त्तः=मनुष्यः) ३.५९.२. [प्रयस्प्राति० प्रशंसायां मतुप् । प्रयस्=प्र+यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोः क्विप्]

प्रयंसत् प्रकर्षेण नियच्छेत् १.९६.८. प्रेरयेत् १.१९०.३. **प्रयंसि**=प्रकृष्टतया यच्छसि १.६१.२. प्रकर्षेण प्राप्नोषि नियच्छसि वा ५.३६.४. [प्र+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लेट् । 'प्रयंसि' प्रयोगे लटि शपो लुक्]

प्रयः प्रीणाति यः सः (शिल्पि-जनः) प्र०—अत्रौणादिकोऽसुन्-प्रत्ययः १.११९.१. प्रियमाणं स्थानम् १.११८.४. कमनीयम् (वस्तु) ४.४६.३. प्रीयते काम्यते यत्तत्सुखम् १.३१.७. प्रीणन्ति तृप्यन्ति येन तदन्नम् १.४५.८. प्रीतिम् १.१३४.१. प्रीतिकारकं वचः १.१३२.३. तृप्तिकारकमन्नम् १.६१.१. अन्नादिकम् ६.६३.७. अतीव प्रियम् (भा०—सुखम्) ५.५१.७. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोरौणादिकोऽसुन् प्रयः अन्ननाम निघं० २.७. उदकनाम निघं० १.१२.]

प्रयाजेभिः प्रयजन्ति यैस्तैः (कर्म्मभिः) १९.१९. [प्र+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्घञ् । 'प्रयाजानुयाजौ यज्ञांगे' अ० ७.३.६२. सूत्रेण कुत्वाभावो निपात्यते । 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति । अथ किन्देवताः प्रयाजानुयाजाः आग्नेया इत्येके । छन्दो देवता इत्यपरम् । ऋतुदेवता इत्यपरम् । पशुदेवता इत्यपरम् प्राणदेवता इत्यपरम् । आत्मदेवता इत्यपरम् आग्नेया इति तु स्थितिः । भक्तिमात्रमितरत् नि० ८.२२. प्रजया ह वै नामैतद् यत्प्रयाजा इति श० १.५.३.१. ते (प्रयाजा) वाऽआज्यहविषो भवन्ति श० १.५.३.४. ऋतवो ह वै प्रयाजाः तस्मात् पञ्च (प्रयाजाः) भवन्ति, पञ्च ह्यृतवः श० १.५.३.१. प्रयाजाः प्राञ्चो हूयन्ते तद्धि प्राणरूपम् । शं० ११.२.७.२७. य इमे शीर्षन्प्राणास्ते प्रयाजाः ऐ० १.१७. प्राणा वै प्रयाजाः ऐ० १.११. रेतः सिच्यं वै प्रयाजाः कौ० १०.३. पशवो वै प्रयाजाः कौ० ३.४. वसवः प्रयाजेषु काठ० ३४.१६. यज्ञमुखं वै प्रयाजाः वीर्यं वै प्रयाजाः मै० १.७.३. पञ्च प्रयाजाः । इमऽएवास्य ते शीर्षण्याः पञ्च प्राणाः श० ११.२.६.४. एकादश प्रयाजाः मै० १.१०.८.]

प्रयाणम् गमनम् ४.४६.७. प्रयान्ति सर्वाणि सुखानि येन तत् प्रकृष्टं प्राणम् ११.६. प्रकृष्टं प्रापणम् १२.३. यात्राम् ५.४९.२. प्रकर्षेण याति गच्छति येन तत् (महिमानम्) ५.८१.३. [प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्ल्युट्]

प्रयातन प्राप्नुवन्तु १.१६५.१३. [प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट् । तप्रत्ययस्य तनबादेशः]

प्रयातु प्रकृष्टतया गच्छतु २६.८. **प्रयाथः**=प्रकर्षेण गच्छथः १.१८०.९. **प्रयासि**=प्रकृष्टं प्राप्नोषि प्रापयति वा अ०—प्रापयसि प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः ३.५२. **प्रयाहि**=प्रयाणं कुरु ६.३२.४. प्रकृष्टतया प्राप्नुहि १२.३२. प्रकर्षेण गच्छ १.१६९.६. [प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट् । 'प्रयाथः' प्रयोगे तु लट्]

प्रयाभिः कमनीयाभिः (नियुद्भिः=नियतैर्गुणैः) २७.२७. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोरौणादिकोऽकारः । ततः स्त्रियां टाप्]

प्रयामनि प्रयाणे १.११९.३. [प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोरौणादिको बहुलवचनान् मनिन्]

प्रयाः ये सद्यः प्रयान्ति ते (जनाः) ३.२९.१५. [प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

प्रयांसि प्रीतानि कान्तानि वस्तूनि १.८६.७. प्रियतमानि (वस्तूनि) ६.१६.४४. कमनीयानि (वस्तूनि) १.१६९.३. कमनीयान्यन्नादीनि ३.११.७. कमनीयानि विज्ञानादीनि ३४.१८. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोरौणादिकोऽसुन्]

प्रयुक्ति प्रयुज्यते यस्मिँस्तत् कर्म ६.११.१. [प्र+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्तिच् प्रत्ययः]

प्रयुक्तिः प्रकृष्टा युक्तिर्यस्यः सः (विद्वान् जनः) १.१५३.२. **प्रयुक्तिषु**=प्रकृष्टेषु योजनेषु १.१५१.८. [प्र-युक्तिपदयोः समासः । युक्तिः=युजिर् योगे (रुधा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

प्रयुग्भ्यः ये प्रयुञ्जते तेभ्यः (भा०—दुष्टेभ्यो जनेभ्यः) ३०.८. ये प्रयुञ्जन्ति तेभ्यः (दुर्जनेभ्यः) ३८.८. **प्रयुजम्**=व्यवहारेषु प्रयुक्तम्, यः सर्वान् युनक्ति तं सम्प्रयुक्तं वा (अग्निं=योगाभ्यासजनितां विद्युतम्) ११.६. **प्रयुजः**=प्रकर्षेण युञ्जन्ति ते (राजानः) १.१८६.९. **प्रयुजे**=या धर्मक्रिया प्रकृष्टैर्गुणैर्युनक्ति योजयति वा तस्यै ४.७. [प्र+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुहदुह०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्]

प्रयुच्छसि अत्यन्तं प्रमाद्यसि ८.३. [प्र+युच्छ प्रमादे (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रयुज्याताम् प्रयुक्तौ भवतः ७.४२.१. [प्र+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः कर्मणि लोटि छान्दसं रूपम्]

प्रयुञ्जती प्रयोगं कुर्वती (माता) ५.४७.१. [प्र+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

प्रयुञ्जते अभ्यस्यन्ति १.४८.४. [प्र-युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लट्। 'प्रोपाभ्यां युजेरयज्ञपात्रेषु' अ० १.३.६४. सूत्रेणात्मनेपदम्]

प्रयुतम् दश लक्षाणि (धेनवः=दुग्धदात्र्यो गाव इव (प्र०—प्रयुतमिति कोटेरप्युपलक्षकम् १७.२. एतत्सङ्ख्याकम् (शत्रुसैन्यम्) ६.१८. बहुविधम् (अहिं=मेघम्) ५.३२.२. [अयुतं नियुतं प्रयुतं तत्तदभ्यस्तम् नि० ३.१०.]

प्रयुतः विभक्तः सन् मिलितः (राजा=प्रकाशमानः सूर्यः) ३.५५.४. [प्र+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्तः]

प्रयुताम् असङ्ख्यबोधाम् (धेनुं=वाचम्) ३.५७.१. [प्रयुतं व्याख्यातम्। ततष्टाप्]

प्रयुधः ये प्रकर्षेण युध्यन्ते ते (नरः=नायका जनाः) ५.५९.५. [प्र+युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

प्रयुयुधुः प्रकृष्टतया सङ्ग्रामं कुर्य्युः ५.५९.५. [प्र+युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्लिट् व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

प्रयै प्रयातुम् १.१४२.६. [प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोस्तुमर्थे 'प्रयै रोहिष्यै अव्यथिष्यै' अ० ३.४.१०. सूत्रेण कै-प्रत्ययो निपात्यते]

प्रयोभिः कमनीयैर्लक्षणैः (अ०—पदार्थैः सह) ७.८. कमनीयैर्गुणकर्मस्वभावैः ३३.५६. तृप्तिकरैरन्नादिभिः पदार्थैः सह प्र०—'प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च' इत्यस्मादौणादिकोऽसुन् प्रत्ययः १.२.४. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोरौणा० असुन्प्रत्ययः]

प्ररप्शे प्रकर्षेणाऽतिरिणक्ति ६.१८.१२.]

प्रराध्यम् प्रकर्षेण साद्धुं योग्यम् (श्रुतं=ज्ञानम्) ५.३९.३. [प्र+राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्ण्यत्]

प्ररिक्वा यः सर्वाः प्रजाः प्रकृष्टतया निर्माय व्याप्तवान् सः (इन्द्रः=जगदीश्वरः) १.१००.१५. प्रकृष्टता से इनमें व्यापक होके इनसे अतिरिक्त=विलक्षण भिन्न ही परिपूर्ण हो रहा (जगदीश्वर) आर्याभि० १.३२, ऋ० १.७.१०.१५ [प्र+रिचिर् विरेचने (रुधा०) रिच वियोजनसम्पर्चनयोः (चु०) धातोर्वा क्वनिप्। न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्]

प्ररिरिचे प्रकृष्टतयाऽन्यायात् पृथग्भव ७.४२.३. प्रकृष्टतया रिणक्ति अधिकं वर्त्तते १.६१.९. प्ररिणक्ति १.१६४.२५. अतिरिच्यते ३.४६.३. अतिरिक्तो भवति ६.३०.१. प्रकृष्टतया रिणक्ति १.५९.५. [प्र+रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लिट्]

प्ररीयते प्रकृष्टतया श्लिष्यति ५.७.८. [प्र+रीङ् श्रवण (दिवा०) धातोर्लट्। अत्र श्लेषणेऽर्थे धातूनामनेकार्थकत्वात्। रीयते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

प्ररुज प्रकर्षेण भङ्ग्धि १.१०२.५. प्रभग्न, रुग्ण करके नष्ट कर दे आर्याभि० १.४३, ऋ० १.७.१४.४. **प्ररुजन्ति**=आभञ्जन्ति ५.२.१० [प्र+रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्]

प्ररुरुहुः प्रादुर्भवेयुः ६.२४.३. [प्र+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लिट्]

प्ररेके प्रकृष्टा रेका शङ्का यस्मिँस्तस्मिन् व्यवहारे ३.३०.१९ [प्र+रेकापदयोः समासः। रेका=रेकृ शङ्कायाम् (भ्वा०) धातोर्घञ्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

प्ररेचनम् प्रकृष्टतया रेचनं पुष्कलं व्ययार्थम् १.१७.६. [प्र+रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्ल्युट्]

प्ररेजयत् प्रकर्षेण कम्पयते ४.२२.३. [प्र+रेजति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

प्ररोचि प्रकृष्टतया जगति प्रकाश्येत १.१२१.६. [प्र+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

प्ररोहन्ती प्रकृष्टतया वर्धमाना (दूर्वे=दूर्वावद्वर्त्तमानौषधिः) १३.२०. [प्र+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

प्रवक्षणाः नदीः ऋ० भू० २८३, १.३२.१. [प्र+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्युच्। स्त्रियां टाप्]

प्रवक्ष्यामः प्रवदिष्यामः २५.२४. [प्र+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लृट्]

प्रवणे प्रवन्ते गच्छन्ति वीरा यस्मिन् तस्मिन् (रणे=सङ्ग्रामे) १.११९.३. निम्नप्रवाहे १.१०४.३. निम्ने देशे ५.४४.४. निम्नस्थाने १.५२.५. गमने १.५२.६. **प्रवणेषु**=निम्नमार्गेषु १.५४.१०. [प्रुङ् गतौ (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। प्रवते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

प्रवणेभिः गमनादिभिः ३.२२.४. [प्रवणमिति व्याख्यातम् । ततो भिस ऐसादेशो न भवति 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

प्रवतम् निम्नं स्थलम् ५.३१.१. **प्रवतः**=अधोमार्गान् ४.१६.३. निम्नदेशान् ४.१७.७. प्रवणं प्राप्तान् बाणानिव १.१४४.५. नम्रान् (निम्नदेशान्) ६.४७.१४. निम्नान् (देशान्) ७.३२.२७. अधस्ताद् वर्त्तमानान् (लोकान्) ४.२२.४. गमनाऽर्हान् (देशान्) ७.५०.४. **प्रवता**=निम्नमार्गेण ३.५.८. अर्वाचीनेन मार्गेण ३.३०.६. **प्रवताम्**=गच्छताम् (अपां=जलानाम्) २.१३.२. **प्रवत्सु**=निम्नासु (भूम्यादिषु) ६.४७.४. **प्रवद्भिः**=ये नीचमार्गैः प्रवन्ते प्लवन्ते तैः (अ०—मार्गैः) १.३३.६. **प्रवद्भ्यः**=प्रयत्नं कुर्वद्भ्यः (मरुद्भ्यः=मनुष्यादिभ्यः) ५.५४.६. ['प्र' इत्युपसर्गाद् अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) इति धात्वर्थे 'उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे अ० ५.१.११८. सूत्रेण वतिः प्रत्ययः । यद्वा प्रोपसर्गाद् गत्यर्थकावधातोः शतृप्रत्यये धातोरकारस्य लोपे रूपम् । प्रवत उद्वतो निवत इत्यवतिकर्मा नि० १०.२०. प्रवतः गतिकर्मा० निघं० २.१४. संवत्सरो वै प्रवतः शश्वतीरपः तां० ४.७.६.]

प्रवतः नम्रत्वादिगुणप्रदानाम् (विद्वज्जनानाम्) ७.३७.५. [प्रवतमिति पदे द्रष्टव्यम्]

प्रवतेव निम्नस्थलेनेव ४.३८.३. [प्रवता-इवपदयोः समासः]

प्रवत्वति प्रवणदेशयुक्ते ! (पृथिवि=भूमे !) ५.८४.१. **प्रवत्वती**=निम्नदेशयुक्ता (पृथिवी) ५.५४.६. प्रवणवती (द्यौः=प्रकाशः) ५.५४.६. **प्रवत्वतीः**=निम्नगामिनीः (वर्षाः) ५.५४.६. [प्रवत्प्राति० मतुबन्तान् ङीप् । प्रवत्वति प्रवणवति नि० ११.३३.]

प्रवत्वन्तः प्रवणशीलाः (पर्वताः=मेघाः) ५.५४.६. **प्रवत्वान्**=प्रशस्ताः प्रवतो वेगादयो गुणा विद्यन्ते यस्मिन् सः (रथः=यानम्) १.१८१.३. [प्रवत्प्राति० प्रशंसायां मतुप्]

प्रवदाति प्रवदेत् ७.३३.१४. [प्र+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लिडर्थे लेट्]

प्रवदामसि प्रकृष्टतया वदामः अ०—उपदिशामो वा १.८७.५. [प्र+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लट् । 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

प्रवद्यामना प्रकृष्टं याति गच्छति यस्तेन (रथेन) १.११८.३. [प्रवद् उपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि मनिन् । 'अल्लोपोऽनः' इति लोपस्तु न भवति छान्दसत्वात् । प्रवत्='प्र' उपसर्गाद् 'उपसर्गाच्छन्दसि धात्वर्थे' इति वतिः । प्रवतमिति व्याख्यातम्]

प्रवन्त गच्छन्तु ४.५८.८. गच्छन्ति प्र०–अत्र लङ्यड-भावः १७.९६. [प्रुङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावः]

प्रवन्तवे प्रविभागं कर्त्तुम् १.१३१.५. [प्र+वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेङ् प्रत्ययः]

प्रवया कान्तिमता (अह्ना=अर्हविद्यया) १५.६. [प्र+वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यादिषु (अदा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

प्रवयाः यः प्रकर्षेण व्याप्नोति सः (जगदीश्वरः) २.१७.४. [प्रवयाः पुराणनाम निघं० ३.२७. प्रपूर्वकाद् वय गतौ (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्प्रत्ययः]

प्रवर्त्तमानकः प्रकृष्टतया वर्त्तमानः (नकुलः) १.१९१.१६. [प्र+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः शानच् । प्रवर्त्तमान-प्राति० स्वार्थे कन्]

प्रवर्धयन्ति प्रकृष्टतयोन्नयन्ति १.५४.८. [प्र+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

प्रववाच प्रकृष्टतयोक्तवान् १.६७.४. [प्र+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लिट् । 'लिट्यभ्यासस्य०' इति प्राप्तं सम्प्रसारणं न भवति छान्दसत्वात्]

प्रववृधे प्रकर्षेण वर्धते ३.५.२. [प्र+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

प्रवसथानि प्रवासान् २.२८.७. [प्र+वस निवासे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽथः प्रत्ययः].

प्रवसन् प्रवासं कुर्वन् (अ०—अतिथिः) ३.४२. परदेश को गया हुआ मनुष्य सं० वि० १४६, ३.४२. [प्र+वस निवासे (भ्वा०) धातोः शतृ-प्रत्ययः]

प्रवहत प्रकृष्टतया वहन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२३.२२. अ०—अपनयत ६.१७. **प्रवहन्ति**=प्रकर्षेण प्राप्नुवन्ति ४.२. [प्र+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

प्रवा गमयितारौ (अश्विना=वायुसूर्याविव शिल्पिनौ) १.३४.८. [प्रुङ् गतौ (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि । ततः 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारः]

प्रवाचनम् उपदेशनम् ४.३६.१. [प्र+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्णिजन्ताल् ल्युट्]

प्रवाच्यम् प्रकर्षेण वक्तुं योग्यं शास्त्रम् १.११७.८. अध्यापनोपदेशार्थं विद्याज्ञापकं वचः १.१०५.१०. प्रवक्तुमर्हम्

(जन्म) १.१५१.३. प्रवक्तुं योग्यम् (वीर्यं=बलरूपं कर्म) ३.३३.७. प्रकृष्टतया वक्तुं योग्यं यथा स्यात् तथा (पन्थाः=वेदप्रतिपादितो मार्गः) १.१०५.१६. [प्र+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्ण्यत्]

प्रवाच्यः प्रवक्तुं योग्यः (विद्यार्थिजनः) ४.३६.५. [प्र+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्ण्यत्]

प्रवाच्या प्रकृष्टतया वक्तुं योग्या (मेना=वाणी) १.५१.१३. [प्रवाच्य इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

प्रवाच्या प्रकर्षेण वक्तुं योग्यानि (राज्यानि) ४.२२.५. [प्रवाच्य-प्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

प्रवावृजे प्रकृष्टतया व्रजति गच्छति ३३.४४. प्रव्रजति ७.३९.२. [प्र+व्रज गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः । धातो रेफस्य ऋकारश्छान्दसः]

प्रवावृते प्रवर्त्तते १.१९१.१५. [प्र+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लिट् । तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

प्रवाहणः यथा वायुर्महानदो वा तथा (जगदीश्वरो विद्वान्वा) ५.३१. स्व-स्व नियमपूर्वक चलाने वाला तथा सब का निर्वाह करने वाला (ईश्वर) आर्याभि० २.१६, ५.३१. [प्र+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति ल्युट्]

प्रवाह्याय ये प्रवोढुं योग्यास्तेषु साधवे (जनाय) १६.४३. [प्र+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्ण्यत् । ततः 'तत्र साधु' रिति यत्]

प्रविक्ते प्रकर्षेण चलितव्ये (अध्वनि=मार्गे) ६.५०.५.

प्रविगृभ्णन्ति प्रविग्राहयन्ति प्र०—अत्र णिज्लोपः १.१६२.१५. [प्र+वि+ग्रह उपादाने (क्रया०) धातोर्णिजन्ताल्लट् । णिचो लोपश्छान्दसः । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' इति वा० सूत्रेण धातोर्हकारस्य भकारः]

प्रवितिरते प्रविवर्धयति ७.५९.२. [प्र+वि+तॄ प्लवनतरणयोः (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन श-प्रत्यय आत्मनेपदञ्च । तिरते प्रवर्धयते नि० ११.६.]

प्रविदा प्रकृष्टविज्ञानेन ३.७.६. [प्र+विद ज्ञाने (अदा०) धातोः 'कृतो बहुलम्' इति भावे क्विप्]

प्रविद्धम् प्रकर्षेण व्यथितम् (तौग्र्यं=बलदातृषु भवं जनम्) १.१८२.६. [प्र+व्यध ताडने (तुदा०) धातोः क्तः । 'ग्रहिज्या०' इति सूत्रेण सम्प्रसारणम्]

प्रविद्वान् प्रकर्षेण वेत्तीति प्रविद्वान् (मर्त्तः=मनुष्यः) १.१४७.५. प्रकृष्टो विद्वान् (पूर्णो विद्वज्जनः) ७.३३.१२. [प्र+विद ज्ञाने (अदा०) धातोः शतृ । 'विदेः शतुर्वसुरिति वसुरादेशः]

प्रविन्दसे प्रकृष्टतया लभसे २.१३.११. [प्र+विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लट् । 'शे मुचादीनाम्' इति नुम्]

प्रविवक्मि प्रकृष्टतया विशेषेण वदामि प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति कुत्वम् १.१६७.७. [प्र+वि+वच् परिभाषणे (अदा०) धातोर्लट् । कुत्वं छान्दसम्]

प्रविश प्रवेश कर सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२६. **प्रविशन्ति**=प्रविष्ट होते (डूबते) हैं, महाक्लेश भोगते हैं स० प्र० ३०६, ४०.९. [प्र+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

प्रविशत् प्रवेशं कुर्वत् सत् (इन्द्रियम्=उपस्थः पुरुषलिङ्गम्) १९.७६. [प्र+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः शतृ-प्रत्ययः]

प्रविष्टः प्रवेशं कुर्वाणः सन् (अग्निः=विद्वान् मनुष्यः) ५.४. (प्र+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः क्तः]

प्रविहि प्राप्नुहि प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन ह्रस्वम् २.२६.२. [प्र+वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोर्लोट् । धातोर्ह्रस्वश्छान्दसः]

प्रवीता कमिता (विद्वज्जनः) ३४.१४. प्रकर्षेण व्याप्ता विद्युत् ३.२९.३. [प्र+वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोः क्तान्तात् स्त्रियां टाप् । यद्वा वी धातोः प्रोपसर्गात् कर्त्तरि तृच् । गुणाऽभावश्छान्दसः । वेति कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

प्रवीथः प्रकृष्टतया व्याप्नुथः १.१५१.३. [प्र+वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लट्]

प्रवीरः प्रकृष्टश्चाऽसौ वीरश्च (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. [प्र-वीरपदयोः समासः । वीरो वीरयत्यमित्रान् वेतेर्वा स्याद् गतिकर्मणो वीरयतेर्वा नि० १.७.]

प्रवृक्तम् प्रवर्जितम् (नौकादिकम्) १.११६.२४. **प्रवृक्तः**=शरीरात् पृथग्भूतः (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. [प्र+वृजी वर्जने (रुधा० अदा०) धातोः क्तः]

प्रवृजे प्रवृजते यस्मिँस्तस्मिन् (न्यायालये) ५.३०.१५. [प्र+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्घञर्थे कः प्रत्ययः]

प्रवृञ्जते प्रकर्षेण त्यजन्ति ७.२.४. **प्रवृञ्जे**=प्रकृष्टतया छिनद्मि १.११६.१. [प्र+वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रवृणे स्वीकरोमि ३.१९.१. [प्र+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्ना]

प्रवृत् यः प्रवर्त्तते सः (सत्पुत्रः) ३.३१.३. यत् कार्य-

रूपेण प्रवर्त्तते तस्य ज्ञाता (विद्वान् मनुष्यः) १५.९. [प्र+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

प्रवृद्ध महोत्तमगुणविशिष्ट (इन्द्र=शत्रूणां दारयितो राजन्) १.३३.३. अतिशयेन विद्यया प्रतिष्ठित (ईश्वर) १.१६५.९. सर्वेभ्यो महन् (ईश्वर) ३३.७९. [प्र+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रवृह प्रकर्षेण पृथक् कुरु ६.४४.११. [प्र+वृहू उद्यमने (तुदा०) धातोर्लोट् ।

प्रवृहतात् प्रवर्द्धयन्तु १.१७४.५. [प्र+वृहू उद्यमने (तुदा०) धातोर्लोट् । 'तुह्योस्तातङ्०' इति आशिषि तातङ्]

प्रवेतु प्रकृष्टतया व्याप्नोतु प्राप्नोतु ७.४२.१. [प्र+वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लोट्]

प्रवेपनी गच्छन्ती (भा०—व्यवहारधनविद्योन्नतिः) ५.३४.८. [प्र+टुवेपृ कम्पने (भ्वा०) धातोर्ल्युडन्तान् ङीप्]

प्रवेपयन्ति प्रकर्षेण कम्पयन्ति ३.२६.४. [प्र+टुवेपृ कम्पने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

प्रवोच उपदिशामि ६.५९.१. **प्रवोचत्**=उपदिशेत् ३.५४.५. प्रोच्यात् ४.५.३. **प्रवोचति**=उपदिशति ५.२७.४. **प्रवोचम्**=प्रकृष्टतया कथयेयम् अ०—आश्रये ५.१८. प्रकर्षेण वदेयम् २.२१.३. प्रकृष्टतया वच्मि २.१५.१. उपदिशेयम् ५.८५.५. **प्रवोचाम**=उपदिशेम ४.३२.१०. **प्रवोचेत्**=गुणकर्मस्वभावत उपदिशेत् ३२.९. [प्र+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः । 'प्रवोचेत्' पदे लिङ् । विकरणव्यत्ययेन अङ् । प्रवोचम्=सुब्रवीमि नि० ११.३९.]

प्रवोढ़न् प्रकृष्टतया वहतः (जनान्) २.१५.४. [प्र+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः तृच्]

प्रव्राजे प्रव्रजन्ति यस्मिँस्तस्मिन् देशे ७.६०.७. [प्र+व्रज गतौ (भ्वा०) धातोर्घञ्]

प्रशस्त प्रशंसनीय (अ०—राजन्) १.३६.९. श्लाघ्य (अग्ने=विद्वत्तमाध्यापक) ११.३७. **प्रशस्तम्**=उत्तमम् (गृहपतिम्) ७.१.१. उत्कृष्टम् (रयिं=राज्यश्रियम्) २०.७९. श्रेष्ठतमम् (वह्निम्) १.६०.१. **प्रशस्तः**=अत्युत्कृष्टः (न्यायाधीशो जनः) २.२७.१२. श्रेष्ठः (अ०—मनुष्यः) १.६६.२. उत्तमः (विद्वज्जनः) १.१८०.८ [प्र+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः क्तः प्रत्यय औणादिकः]

प्रशस्तयः सत्कीर्त्तयः ६.४५.३. प्रशंसनीयाः प्रजाः १५.३९. प्रशंसाः १५.३८. **प्रशस्तये**=उत्कृष्टतायै १.१७४.४. प्रशंसायै ५.३८.४. प्रशंसनाय १.७४.६. प्रशंसनीयसुखाय १.२१.३. उत्कर्षाय १.२३.१९. प्रशस्ताय (रथवते सज्जनाय) १.१२२.११. **प्रशस्तिभिः**=प्रशंसिताभिः क्रियाभिः १.१४८.३. प्रशंसनीयाभिः धर्म्याभिः क्रियाभिः ६.१५.२. प्रशंसाभिः ५.९.६. **प्रशस्तिम्**=श्रैष्ठ्यम् २.४१.१६. प्रशस्तव्यवहारम् १.७०.५. प्रशंसिताम् (वाचम्) ७.२२.३. प्रशंसाम् ५.५७.७. **प्रशस्तिषु**=गुणानां प्रशंसासु ९.६. [प्र+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

प्रशस्ता श्रेष्ठौ (विद्वांसौ जनौ) ५.६८.२. [प्रशस्त इति व्याख्यातम् । ततः 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

प्रशस्ताम् उत्तमाम् (धियं=प्रज्ञाम्) ७.१.१०. [प्रशस्त-प्राति० स्त्रियां टाप्]

प्रशस्तिकृत् प्रशंसां विधात्री (स्त्री) १.११३.१९. ['प्रशस्ति' इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्विप्]

प्रशस्यते प्रशस्तो जायते २.८.३. [प्र+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

प्रशस्यः सर्वत्र स्तुति करने योग्य (ईश्वर) आर्याभि० १.२६, ऋ० ५.८.३५.२. [प्र+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः 'शंसिदुहिगुहिभ्यो वेति वक्तव्यम्' अ० ३.१.१०९. वा० सूत्रेण क्यप्]

प्रशंसत प्रस्तुवीत तद्गुणान् प्रकाशयत प्र०—अत्रान्तर्गतो ण्यर्थः १.२१.२. **प्रशंसात्**=प्रशंसेत् ४.२.८. **प्रशंसामः**=प्रकृष्टतया स्तुमः १.६०.५. **प्रशंसिषः**=प्रशंसे १.८४.१९. प्रशंस प्र०—लेड्-मध्यमैकवचने ६.३७. [प्र+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लेट् लट् च]

प्रशासत् प्रशासनं कुर्वन् सन् (अ०—अहोरात्रः) १.९५.३. [प्र+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रशास्ता धर्म-सुशिक्षोपदेशप्रचारकः (पुरोहितो जनः) १.९४.६. प्रशासनकर्त्ता (विद्वान् जनः) २.५.४. **प्रशास्त्रोः**=सर्वस्य प्रशासनकर्त्रोः (सभासेनेशयोः) १०.२१. [प्र+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

प्रशास्त्रम् प्रशासनम् २.१.२. [प्र+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकः ष्ट्रन्प्रत्ययः]

प्रशिक्षति प्रकर्षेण विद्यां गृह्णाति ग्राहयति वा प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.५९.२. [प्र+शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

प्रशिषम् प्रशासनम् भा०—कृता मर्यादा २५.१३. प्रत्यक्ष सत्यस्वरूप शासन और न्याय अर्थात् शिक्षा को सं० वि० ५, २५.१३. अनुशासन शिक्षा, मर्यादा को

आर्याभि० २.४८; २५.१३. **प्रशिषः**=प्रकृष्टानि शासनानि १.१४५.१. **प्रशिषा**=प्रशासनेन १०.२१. शिक्षा से सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५३. [प्र+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोः क्विप्। 'क्वौ च शासु इत्वं भवतीति वक्तव्यम्' अ० ६.४.३४. वा० सूत्रेणेत्वम्। 'शासिवसिघसीनाञ्चे' ति षत्वम्। प्रशिषं प्रशासाभ्यां (प्रीणामि) तै० सं० ५.७.१९.१.]

प्रश्नविवाकम् यः प्रश्नान् विवेचयति तम् भा०—प्रश्नोत्तरविवेचकम् (प्रतिष्ठितजनम्) ३०.१०. [प्रश्नोपपदे विपूर्वाद् वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्घञ्]

प्रश्निनम् प्रशस्ताः प्रश्ना विद्यन्ते यस्य तम् (सज्जनम्) ३०.१०. [प्रश्न-प्राति० मत्वर्थे इनिः प्रत्ययः। प्रश्नः=प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोः 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्' अ० ३.३.९०. सूत्रेण नङ्प्रत्ययः]

प्रश्रवसः प्रकृष्टं श्रवणमन्नं वा येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.४१.१६. [प्र-श्रवस्पदयोः समासः। श्रवः अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०.]

प्रष्टिभिः प्रश्नैः १.१००.१७. **प्रष्टिः**=पृच्छन्ति ज्ञीप्सन्त्यनेन सः (अग्नेर्वेगादिगुणसमूहः) १.३९.३. [प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोर्बाहु० औणादिकस्तिः प्रत्ययः]

प्रष्टिमतः प्रष्टयोऽनीप्सा विद्यन्ते येषु तान् (रथान्) ६.४७.२४. [प्रष्टिप्राति० मतुप्]

प्रष्णुवन्ति प्रकृष्टतया स्नेहयन्ति १.१६८.८. [प्र+ष्णु प्रस्रवणे (अदा०) धातोर्लट्]

प्रसक्षत् प्रसङ्गं कुर्यात् ४.१२.१. [प्र+षस्ज गतौ (भ्वा०) धातोर्लेट्]

प्रसत्तः प्रसन्नः (विद्वज्जनः) ५.६०.१. [प्र+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्तः। नत्वाऽभावश्छान्दसः]

प्रसद्य प्रगत्य १२.३८. [प्र+षद्लृ (भ्वा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

प्रसन्ता विभाजकौ (अश्विना=द्यावाऽन्तरिक्षे) ६.६२.१. [प्र+षण् सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः तृच्। 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

प्रसर्गे प्रकृष्ट उत्पादने १.१२१.४. [प्र+सृज (तुदा०) धातोर्घञ्प्रत्ययः]

प्रसर्पथ अ०—विजानीत १२.८६. **प्रसर्पामि**=प्रगत्य चलामि १०.३०. [प्र+सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् थप्रत्ययस्य तादेशो न छान्दसत्वात्]

प्रसर्स्राणस्य प्रकर्षेण भृशं धर्मं प्रापमाणस्य (मनुष्यस्य) ५.१२.६. **प्रसर्स्राणः**=प्रकर्षेण भृशं गच्छन् (राजा) ५.४४.३. [प्र+सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रसर्स्राते प्रसरतः प्राप्नुतः ३.७.१. **प्रसस्रे**=प्रसर्पन्ति २.३५.५. [प्र+सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रसवम् प्रसूयन्ते यस्मात्तं मेघम् ३.३६.६. प्रकृष्टमैश्वर्यम् ३.३३.२. **प्रसवः**=सन्तानः ३.३३.४. प्रसूतः (सम्राट्=चक्रवर्ती राजा) ९.२४. ऐश्वर्यम् १८.१. उत्पादकः (इन्द्रः=पतिरीश्वरः) १७.६३. यः प्रसूते सः (राजा=विद्वान् सभाध्यक्षः) ९.२५. ऐश्वर्ययुक्तः (परमेश्वरः) ९.२३. प्रकृष्टैश्वर्यसमूहः ९.१९. **प्रसवाय**=उत्पादकाय भा०—अपत्यशोधकाय (मनुष्याय) २२.३२. ऐश्वर्याय सन्तानोत्पादनाय वा १८.२८. **प्रसवे**=प्रसूतेऽस्मिन् जगति १०.६. ऐश्वर्ये ९.५. सृष्टौ ५.२२. उत्पादिते संसारे ४.१८. उत्पादने १८.३०. उत्पत्तौ ३३.२९. उत्पन्नेऽस्मिन् जगति २.११. निष्पन्नैश्वर्ये ११.९. प्रसूयन्ते प्राणिनो यस्मिन् संसारे तस्मिन् २२.१. प्रकृष्टतयोत्पद्यन्ते सर्वे पदार्था यस्मिँस्तस्मिन् संसारे १.३१. प्रेरणे ऐश्वर्यहेतौ वा १.२४. जगदुत्पादे ९.३०. प्रसूयते विश्वस्मिन् यस्तस्मिन् (जगति) ६.९. प्रजायाम् ऋ० भू० २१७, २०.३. प्रकृष्टतया सुवन्ति प्रेरयन्ति वीरा यस्मिन् राज्ये तस्मिन् १.१०२.९. उत्पत्तिधर्मके (संसारे) ३८.१. सवितृप्रसूतेऽस्मिन् जगति १.१०. **प्रसवेन**=प्रेरणेन १०.२१. प्रकृष्टतया युद्धविद्याप्रेरणेन, ऐश्वर्यार्थमुत्पादितेन, उत्पादनेन, प्रकृष्टैश्वर्येण सह वा २.१५. [षू प्रेरणे (तुदा०) षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) धातोर्वा 'ऋदोरबि' ति त्यप्-प्रत्ययः। प्र-सवपदयोः समासः। प्रसवाय सावित्रः (पशुः) मै० २.४.२. सविता त्वा प्रसवानां सुवताम् तै० सं० १.८.१०.१. सविता प्रसवानामीशे कौ० ५.२.]

प्रसविता उत्पादकः (सविता=जगदीश्वरः) ४.५३.६. **प्रसवित्रा**=सकलचेष्टोत्पादकेनेव शुभकर्मणा १०.३०. [प्र+षू प्रेरणे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। षूञ् अभिषवे धातोर्वा तृच्। सविता सर्वस्य प्रसविता नि० १०.३२. आदित्योऽपि सवितोच्यते नि० १०.३२.]

प्रसस्रुः प्रकृष्टतया स्रवन्ति ५.५३.७. [प्र+सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

प्रसाहम् प्रकर्षेण सोढारम् (सज्जनम्) ६.१७.४.

[प्र+षह मर्षणे (भ्वा०) धातोरण्प्रत्ययः]

प्रसितयः प्रकृष्टानि प्रेमबन्धनानि ७.३२.१३. **प्रसितिम्**=बन्धनं जालम् १३.९. प्रकृष्टं सिनोति बध्नात्यनया ताम् (बन्धनरूपाम्) १.२०. प्रबद्धाम् (पृथिवीं=भूमिम्) ४.४.१. भा०—अनेकविधं पाशम् प्र०—प्रसयनात्तन्तुर्वा जालं वा नि० ६.१२, १३.९. **प्रसितिः**=प्रकर्षं बन्धनम् ७.३.४. प्रबन्धः १८.१. प्रकृष्टं बन्धनम् १८.१. **प्रसितौ**=प्रकर्षेण बन्धने ७.४६.४. **प्रसित्यै**=प्रकृष्टा चाऽसौ सितिबन्धनं यस्यां तस्याः (दुखप्रदायाः क्रियायाः) प्र०—अत्र पञ्चम्यर्थे चतुर्थी २.२०. [प्र-सितिपदयोः समासः। सितिः=षिञ् बन्धने (क्र्या०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। प्रसितिः प्रसयनात् तन्तुर्वा जालं वा नि० ६.१२.]

प्रसितस्य बद्धस्य (वेः=पक्षिणः) ४.२७.४. [प्र+षिञ् बन्धने (क्र्या०) धातोः क्तः]

प्रसिन्धुभ्यः प्रकृष्टं समुद्रेभ्यः १.१०९.६. [प्र-सिन्धुपदयोः समासः। सिन्धुः=स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोः 'स्यन्देः सम्प्रसारणं धश्च' उ० १.११. सूत्रेण उः प्रत्ययः]

प्रसिसर्त्ति प्रकृष्टतया गच्छति २.३८.२. [सिसर्ति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

प्रसिसृतम् प्राप्नुतम् २१.९. [प्र+सिसर्ति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्लोट्]

प्रसिस्रते प्रसरन्ति २.११.३. [सिस्रति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः प्रोपसर्गाल्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रसीषधाति प्रकृष्टतया साध्नुयात् भा०—प्रददाति ३४.५२. प्रसाधयति ६.४९.८. [प्र+साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्लेटि छान्दसं रूपम्]

प्रसुतिर प्रकर्षेण शोभनतया सन्तारय प्र०—तरतेर्विकरणव्यत्ययेन शः 'ॠत इद्धातोः' इतीकारः १.१०.११. [प्र+सु+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शः। सवितुः प्रसूतिः (पत्नी) तै० आ० ३.९.२.]

प्रसुधक्षि प्रकृष्टतया सुष्ठु दहसि १.७६.३. [प्र+सु+दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

प्रसुभरे प्रकर्षेण सुष्ठु धरामि ५.४२.१३. [प्र+सु+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रसुव प्रेरय १८.६७. प्रेष्व ९.१. [प्र+षू प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लोट्]

प्रसुवन् प्रसुवन्ति यस्मिँस्तदैश्वर्य्यम् ७.४५.१. उत्पादयन् (सविता=सूर्यः) २१.२१. [प्र+षू प्रेरणे (तुदा०) धातोः शतृप्रत्ययः। षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्वा शतृ। व्यत्ययेन शः प्रत्ययः]

प्रसुवाति प्रेरयेत् ५.८२.९. प्रकाशयति ऋ० भू० १५७, [प्र+षू प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लेट्]

प्रसूतः प्रेरितः (जनः) १०.३०. उत्पन्नः सन् धर्म-सभाऽधिकृत उपदेशकः) ३.५४.१६. [प्र+षू प्रेरणे (तुदा०) धातोः क्तः]

प्रसूता प्रेरिता सती (सेना) २९.४८. उत्पन्ना (रात्री) १.११३.१. [प्र+षू प्रेरणे (तुदा०) धातोः क्तान्ताट् टाप् स्त्रियाम्]

प्रसूरयः प्रकर्षेण मेधाविनो विद्वांसः १.९७.३. [प्र-सूरिपदयोः समासः। सूरिः स्तोतृनाम निघं० ३.१६.]

प्रसूवरीः सुखप्रसाविकाः (ओषधीः=सोमादीन्) १२.७७. [प्र+षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) धातोः क्वनिप्। 'वनो र चे' ति ङीप् स्त्रियाम्, रेफश्चान्तादेशः]

प्रसूषु प्रसूयन्ते यास्तासु (नवासु=प्रजासु) १.९५.१०. येभ्यो ये वा प्रसूयन्ते तेषु (कार्यकारणद्रव्येषु) १.६७.५. **प्रसूः**=या प्रसूतमुत्पादयति सा (वृत्तिः) १८.७. **प्रस्वः**=याः प्रसूयन्ते ता ओषधयः ७.३५.७. प्रसावित्रीः (अवनीः=पृथिवीः) २.१३.७ [प्र+षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) धातोः क्विप्]

प्रस्कण्वस्य प्रकृष्टश्चाऽसौ कण्वो मेधावी च तस्य (विद्वज्जनस्य) १.४४.६. [प्र-कण्वपदयोः समासः। कण्वः मेधाविनाम निघं० ३.१५. 'प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी' अ० ६.१.१५३. सूत्रेण सुडागमः। प्रस्कण्वः—कण्वस्य पुत्रः कण्वप्रभवो यथा प्राग्रम्। नि० ३.१७.]

प्रस्तरेण आसनेन १८.६३. [प्र+स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोः 'ॠदोरवि' त्यप्। यज्ञो वै प्रस्तरः श० ३.४.३.१६. यजमाना वै प्रस्तरः श० १८.१.४.४. क्षत्रं वै प्रस्तरः श० १.३.४.१०. अयं वै स्तुपः प्रस्तरः। श० १.३.३.७]

प्रस्तरेष्ठाः शुभे न्यायाविद्याऽऽसने तिष्ठन्ति ते (देवाः=विद्वांसो दिव्याः पदार्था वा) प्र०—तत्पुरुषे कृति बहुलम्, अ० ६.३.१४. इति सप्तम्या अलुक् २.१८. [प्रस्तरमिति व्याख्यातम्। तदुपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः। समासे सप्तम्या अलुक्]

प्रस्तवते प्रकृष्टतया स्तौत्युपदिशति प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो ह्यलुक् ५.२०. [प्र+ष्टुञ् स्तुतौ

(अदा०) धातोर्लट् । शपो न लुक्]

प्रस्तुतिः प्रकृष्टा स्तुतिर्यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१५३.२. [प्र-स्तुतिपदयोः समासः । स्तुतिः=ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातो क्तिन्]

प्रस्तुत्येव प्रकरणेन संश्लाध्येव २१.४६. [प्रस्तुत्या-इवपदयोः समासः]

प्रस्तुभानः प्रकर्षेण धरन् (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.३.१२. [प्र+ष्टुभु स्तम्भे (भ्वा०) धातोः शानच्]

प्रस्तुषे प्रशंससि ५.३३.६. [प्र+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लट्]

प्रस्तृणीत प्रकृष्टतयाऽऽच्छादयत ५.२६.८. [प्र+स्तृञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्लोट्]

प्रस्तोकः यः प्रस्तौति सः (प्रजाजनः) ६.४७.२२. [प्र+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकः कन्]

प्रस्थावत् प्रशस्तं प्रस्थानं यस्याऽस्ति तत् (रथ-वाहनं=वृषभादिकम्) १२.७१. [प्रस्था-प्राति० प्रशंसायां मतुप् । प्रस्था—प्र+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियाम् 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.३.१०६. सूत्रेणाङ् । ततष्टाप्]

प्रस्थितम् प्रकर्षेण स्थितम् (नित्यं सुखम्) २.३६.४. ओषधिभ्यो निष्पादितम् (मधु=मधुरगुणयुक्तं रसम्) २.३७.२. [प्र+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः । 'द्यतिस्यतिमास्थाम्०' इतीकारादेशः]

प्रस्थितस्य देशान्तरं प्रति गच्छतः (हविषः) १.६३.७. **प्रस्थितान्**=इतस्ततश्चलितान् (पदार्थान्) १.२३.१. **प्रस्थिताः**=कृतप्रस्थानाः (मधुश्चुतः=खाद्य-पदार्थाः) २१.४२. [प्रस्थितमिति व्याख्यातम्]

प्रस्थिता प्रस्थितानि (रजांसि=लोकान्) ३.४.४. [प्रस्थितं व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

प्रस्थाम प्रकर्षेण भवेम ३४.३६. अच्छे प्रकार होवें सं० वि० १५६, ७.४१.३. [प्र+अस भुवि (अदा०) धातोर्लिङ्]

प्रस्रवणस्य प्रकर्षेण गतस्य (वातस्य) १.१८०.८. [प्र+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

प्रस्वनितासः प्रकृष्टतया शब्दायमानाः (ऊर्मयः) १.४४.१२. [प्र+स्वन शब्दे (भ्वा०) धातोः क्तः । ततो जसो ऽसुक्]

प्रस्वः प्रकृष्टाः स्वे स्वकीया जना यस्य सः (विवस्वान्=सूर्य इव अतिथिः) ७.६.३. [प्र—स्वपदयोः समासः]

प्रहरयन्त प्रकृष्टतया कामयन्ताम् ४.३७.२. [प्र+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ् । अडभावः]

प्रहरेम प्रहरण करते हैं सं० वि० १३६, अथर्व० १४.२.३८. [प्र+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

प्रहर्मि प्रकृष्टतया हरामि १.६१.१. [प्र+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लट् । शपो लुक्]

प्रहावान् विजयं प्राप्तवान् (इन्द्रः=राजा) ४.२०.८. [प्र+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोः क्तवतु]

प्रहिणोमि प्रकृष्टतया गमयामि ३५.१६. [प्र+हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्लट्]

प्रहुतम् प्रष्टतया गृहीतम् (सोमं=सदोषधिरसम्) २.३६.१. [प्र+हु दानाऽदानयोः (जु०) धातोः क्तः]

प्रहूयसे प्रकृष्टतयाऽध्वरसिद्ध्यर्थं शब्द्यते प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१६.१. [प्र+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

प्रहेतिः प्रकर्षेण वर्द्धकः (जनः) १५.१८. प्रकृष्टो वज्र इव १५.१६. प्रकृष्टो हेतिर्वज्र इव वर्त्तमानः (पौरुषेयः=पुरुषाणां समूहः) १५.१५. [प्र-हेतिपदयोः समासः । हेतिः=हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोः 'ऊतियूति०' इति सूत्रे क्तिन्-प्रत्यये निपात्यते । हेतिः वज्रनाम निघं० २.२०.]

प्रहोषि प्रजुहोसि ६.४४.१४. [प्र+हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

प्रहोषे यो जुहोति तस्मै (विदुषे जनाय) १.१५०.२. [प्र+हु दानादानयोः (जु०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

प्राक् पूर्वम् ३.५३.११. पूर्वस्याः (दिशः) ६.३६. **प्राचः**=प्राचीनाँल्लोकान् २.१५.३. **प्राचा**=प्राक्तेन (मनसा=अन्तःकरणेन) ३.३१.५. प्राचीनेन विज्ञानेन २.२६.४. [प्र+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा० धातोः क्विप् । प्राच्-प्राति० 'अञ्चेर्लुक्' अ० ५.३.३०. सूत्रेणास्तातिप्रत्ययस्य लुक्]

प्राऽकृत प्रकृष्टतया करोति १.१२४.५. [प्र+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लुङ्]

प्राऽक्षिणाः प्रक्षयति प्रहन्ति ४.१८.१२. [प्र+क्षि क्षये (भ्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्ना]

प्राऽगुः प्रकृष्टतयाऽगमन् ६.७. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ् । 'इणो गा लुङी' ति गादेशः]

प्राग्रुवः या अग्रङ्गच्छन्ति ता नद्यः प्र०—अग्रुव

इति नदीनाम निघं० १.१३, ४.१९.७. [प्र-अग्रुवपदयोः समासः । अग्रुवः नदीनाम निघं० १.१३.]

प्राघर्मसत् यः प्रकृष्टं समन्ताद् घर्मं प्रतापं सनति सः (सूर्यं इव राजा) ६.७३.१. [प्र+आङ्+घर्म इत्युपपदे षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । नस्य तश्छान्दसः]

प्राङ् यः प्रकृष्टतयाऽञ्चति सः (सोमः=सोमलताद्योषधिगणः) १९.३. प्रकृष्टमञ्चतीति (जीवः) १.१६४.३८. **प्राञ्चम्**=प्राक्प्रबन्धस्य कर्त्तारम् (राजानम्) १०.८. यः प्रागञ्चति प्राप्नोति तम् (यज्ञं=सत्सङ्गाख्यं व्यवहारम्) ३.१.२. यः प्रकृष्टमञ्चति प्राप्नोति तम् (अध्वरं=जगत्) १.१८.८. **प्राञ्चः**=प्राक्तनाः चिरमायवः (मनुष्याः) ५.४५.५. प्राचीनाः (यतयो जनाः) १.११०.२. प्रकृष्टविद्यायुक्ताः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ३.७.७. [प्र+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' त्यादिना क्विन् । प्राङ् पशु प्राणिति काठ० २०.९. भूपतये स्वाहेति प्राक् काठ० २५.७.]

प्राचाजिह्वम् प्राग् दुग्धप्रदानादितः पूर्वं समन्ताज्जिह्वा यस्य तम् (शिशुम्) १.१४०.३. [प्राचा-जिह्वापदयोः समासः । समासे तृतीयाया अलुक्]

प्राची या प्रागञ्चति सा पूर्वा दिक् ३.६.१. यत्र स्वस्य मुखं सा प्राची दिक् तथा यस्यां सूर्यं उदेति साऽपि प्राची दिक् पं० वि०, अथर्व० ३.२७.१. **प्राचीम्**=पूर्वाम् (दिशम्) १७.६६. **प्राचीः**=याः प्रणश्चन्ति ताः (प्रजाः) ७.६.४. **प्राच्यै**=या प्राञ्चति प्रथमादित्यसंयोगात् तस्यै (दिशे) २२.२४. ['प्राङ्' इति व्याख्यातम् । प्राच्-प्राति० स्त्रियाम् 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति ङीप् । इयमेव प्राची दिग् रथन्तरम् (साम) जै० २.२१. एषा (प्राची दिक्) दिशां वीर्यवत्तमा जै० १.७२. तेजो वै ब्रह्मवर्चसं प्राची दिक् ऐ० १.८. प्राच्येव भर्गः गो० १.५.१५. राज्ञ्यसि प्राची दिक् तै० सं० ४.३.६.२.]

प्राची प्रकृष्टमञ्चति याभ्यां ते रोदसी प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति प्रथमाद्विवचनस्य लुक् ५.१७. प्राग्वर्त्तमाने (द्यावापृथिवी) २.२.७. प्राक्तने (सूर्यभूमी) ३.६.१०. [प्राचीति व्याख्यातम् । ततः प्रथमाद्विवचनस्य लुक् पूर्वसवर्णदीर्घो वा । प्राचीम् प्रवृद्धाम् नि० ११.९.]

प्राचीनम् प्राक्तनम् (बर्हिः=विज्ञानम्) १.१८८.४ पुरातनम् (ज्योतिः=प्रकाशम्) २०.४२. प्राची दिक् २.२७.११. **प्राचीनः**=यः प्रागञ्चति सः (यज्ञः) ७.७.३. **प्राचीनान्**=पूर्वतो वर्त्तमानान् (पर्वतानिव मेघान्) २.१७.५. **प्राचीनेन**=सनातनेन (मनसा=विज्ञानेन) १.५४.५. [प्राच्-प्राति० 'विभाषाञ्चेरदिक् स्त्रियाम्' अ० ५.४.८. सूत्रेण स्वार्थे खः प्रत्ययः । प्राच्=प्र+अञ्चु गतौ (भ्वा०)+क्विन्]

प्राचुच्युवुः प्रकृष्टतया च्यावयेयुः ५.५९.७. [प्र+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । पूर्वस्य दीर्घः]

प्राऽचेतयत् प्रकर्षेण चेतयेत् संज्ञापयेत् ३.३४.५. [प्र+चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

प्राचैः प्राचीनैर्विद्वद्भिः १.८३.२.

प्राऽचोदयत् प्रकृष्टतया प्रेरयति ५.३१.३. [प्र+चुद सञ्चोदने (चुरा०) धातोर्लङ्]

प्राजापत्यः प्रजापतिदेवताकः (चरुः=स्थालीपाकः) २९.६०. **प्राजापत्याः**=प्रजापतिः सूर्यो देवता येषान्ते (अश्वस्तूपरो गोमृगाः पशवः) २४.१. प्रजापतिदेवताकाः (अशूद्राः अब्राह्मणाः) ३०.२२. प्रजापतेरिमे ते (प्रजा—जनाः) ३०.२२. प्रजापति परमात्मा को जानने का आश्रम धर्मानुष्ठान रूप (यज्ञः=यतिधर्म) सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.२.११. [प्रजापतिप्राति० 'सास्य देवता' इत्यर्थे 'दित्यदित्यादित्यपत्युत्तरपदाण्ण्यः' अ० ४.१.८५. सूत्रेण ण्यः]

प्राजापत्यः प्रजापतिदेवताकः (मयुः=किन्नरः) २४.३१. [प्रजापतिप्राति० 'सास्य देवता' इत्यर्थे ण्यः प्रत्ययः]

प्राऽऽजिगात प्रकृष्टतया समन्तात् स्तुत्यानि कर्म्माणि कुरुत १.८५.६. [प्र+आङ्+गा स्तुतौ (जु०) धातोर्लोट्]

प्राणतः जीवतः (जगतः) १.१०१.५. प्राणिनः (जगतः=संसारस्य) २३.३. चेतना वाले जगत् का आर्याभि० १.४४, ऋ० १.७.१२.५. प्राण वाले (जगतः=जगत् का) सं० वि० ५. २३. [प्र+अन प्राणने (अदा०) धातोः शतृ]

प्राणथेन येन प्राणन्ति सुखयन्ति तेन (प्राणवायुना) ११.३९. [प्र+अन प्राणने (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकोऽथः प्रत्ययः]

प्राणदाः याः प्राणं जीवनं बलं च ददाति ताः (हेतयः=शस्त्राऽस्त्रोन्नतयः) १७ १५. [प्राणोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः । स्त्रियां टाप्]

प्राणनम् प्राणधारणम् १.४८.१०. [प्र+अन प्राणने (अदा०) धातोर्ल्युट्]

प्राणपाः यः प्राणं पाति रक्षति सः (विद्वान् जनः) २०.३४. [प्राणोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

प्राणम् प्राणिति येन तं जीवनहेतुम् ६.१४. शरीरस्थं वायुमिव प्रजाजनम् ९.३१. बलयुक्त जीवनम् १३.५४. नाभेरूर्ध्वंगामिनम् (वायुम्) १४.८. प्राण को आर्याभि० २.५, ३६.१. **प्राणः**=सर्वशरीरगामी वायुः १.६६.१. जीवनहेतुः (वायुः) १८.२२. येन प्राणिति सः (प्राणवायुः) १३.५४. प्राणादिवायुः २०.५. शरीरधारकः (प्राणवायुः) ४.१५. शरीरस्थो वायुविशेषः ६.२०. जीवनहेतुर्बलकारी (वायुः) ९.२१. योगसिद्धबलयुक्तः (वायुविशेषः) ७.४७. हृदिस्थो वायुः १८.२. जीवनमूलो वायुः २२.३३. जीवननिमित्तः (प्राणादिवायुः) ३१.१२. शरीराद् बाह्यदेशं यो वायुर्गच्छति सः ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.९. **प्राणात्**=ब्रह्माण्ड-शरीरयोर्मध्य ऊर्ध्वंगमनशीलात् (वायोः) ३.७. **प्राणाय**=धनञ्जयगमनाय ३९.३. शरीरस्याऽवयवान् जगत्प्राणे गमनाय ३९.३. प्रकृष्टमन्यते जीव्यते येन तस्मै जीवनधारणहेतवे बलाय १.२०. जीवनसुखाय १५.६४. प्राणिति जीवयतीति प्राणो हृदयस्थो वायुस्तस्मै ७.२७. य आभ्यन्तराद् बहिर्निःसरति तस्मै (वायवे) २२.२३. प्राणिति सुखं येन तस्मै (वायवे) १३.२४. प्राणपोषणाय २३.१८. सब शरीर और इन्द्रियों के वशी प्राण के समान सब जगत् के वशी परमेश्वर के लिए स० प्र० १६, अथर्व० ११.२४.२. **प्राणाः**=जीवसाधनाः (वायवः) १७.७१. **प्राणेन**=जीवनेन २०.८०. बलेन ६.१८. **प्राणेभ्यः**= जीवनहेतुभ्यः (वायुभ्यः) ३९.१. [प्र+अन प्राणने (अदा०) धातोः 'हलश्चे' ति करणे घञ्। प्राणः यद्वै प्राणेनान्नमात्मन् प्रणयते तत्प्राणस्य प्राणत्वम् श० १२.९.१.१४. प्रेति वै प्राण एति उदानः श० १.४.१.५. प्राणो वा ऽर्कः श० १०.४.१.२३. प्राणो वै सविता ऐ० १.१९. प्राणो वै सावित्रग्रहः कौ० १६.२. प्राणः सोमः श० ७.३.१.२. चन्द्रमा वै प्राणः जै० उ० ४.२२.११. प्राणोऽमृतं तद्ध्यग्ने रूपम् श० १०.२.६.१८. वायुर्वै प्राणः कौ० ८.४. यो वै प्राणः स वातः श० ५.२.४.९. प्राणो मातरिश्वा ऐ० २.३८. प्राणो वनस्पतिः कौ० १२.७. यः प्राणः स वरुणः गो० उ० ४.११. प्राजापत्यः प्राणः तै० ३.३.७.२. प्राणा इन्द्रियाणि तां० २.१४.२. प्राणो वै यज्ञस्योद्गाता श० १४.६.१.८. प्राणः सामवेदः श० १४.४.३.१२. प्राणो भरतः ऐ० २.२४. प्राणो बृहत् तां० ७.६.१४. प्राणो वाचस्पतिः श० ६.३.१.१९. वाग्वाऽइदं कर्म प्राणो वाचस्पतिः श० ६.३.१.१९. वाक् च वै प्राणश्च मिथुनम् श० १.४.१.२. तस्याः (वाचः) उ प्राण एव रसः जै० उ० १.१.७. प्राणा दीक्षा तै० ३.८.१०.२. प्राणाः पशवः तै० ३.२.८.९. प्राणा मनुष्याः श० १४.४.३.१३. उपाꣳश्वायतनो वै प्राणः श० १०.३.५.१५. त्रय इमे पुरुषे प्राणाः श० १.३.५.१३. स वा अयं त्रेधा विहितः प्राणः, प्राणोऽपानो व्यान इति कौ० १३.९. पञ्चधा विहितो वा ऽअयं शीर्षन्प्राणो मनो वाक् प्राणश्चक्षुः श्रोत्रम् श० ९.२.२.५. षड् वा ऽइमे शीर्षन् प्राणाः श० १२.९.१.९. षड्ढि प्राणाः श० ६.७.१.२०. सप्त शिरसि प्राणाः तां० २.१४.२. सप्त वै शीर्षन् प्राणाः ऐ० १.१७. अष्टौ प्राणाः श० ९.२.२.६. नव प्राणाः श० ६.३.१.२१. नव वै प्राणाः सप्त शीर्षन् नवाञ्चौ द्वौ श० ६.४.२.५. नव वै पुरुषे प्राणा नाभिर्दशमी तै० १.३.७.४. दश प्राणाः श० ६.३.१.२१. दश वा ऽइमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशो यस्मिन्नैते प्राणाः प्रतिष्ठिताः श० ३.८.१.३. द्वादशेमे पुरुषे प्राणाः गो० पू० ५.५. त्रयोदशेमे पुरुषे प्राणा नाभिस्त्रयोदशी श० १२.३.२.२. एतावन्तः (त्रीणि च शतानि षष्टिश्च) एव पुरुषस्य प्राणाः गो० पू० ५.५. को हि तद्वेद यावन्ते इमेऽन्तरात्मन् प्राणाः श० ७.२.२.२०. बहुधा ह्येवैष निविष्टो यत्प्राणः जै० उ० ३.२.१३. तस्मात् सर्वे प्राणाः प्राणोदानयोरेव प्रतिष्ठिताः श० १२.९.१.१०. प्राणो वै हृदयमतो ह्ययमूर्ध्वः प्राणः संचरति श० ३.८.३.१५. प्राणो हृदये (श्रितः) तै० ३.१०.८.५. तस्मादयमात्मन् प्राणो मध्यतः श० ७.३.१.२. नासिके ऽउ वै प्राणस्य पन्थाः श० १२.९.१.१४. बर्हिर्हि प्राणः तां० ७.६.१४. प्राणो वै ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च श० १४.९.२.१. प्राणा वै समिधः ऐ० २.४. लेखासु हीमे प्राणाः श० ७.२.२.१८. शिरो वै प्राणानां योनिः श० ७.५.१.२२. प्राणो हि रेतसां विकर्त्ता श० १३.३.८.१. प्राणो रेतः ऐ० २.३८. अध्रुवं वै तद् यत्प्राणः श० १०.२.६.१९. प्राणा वै रुद्राः जै० उ० ४.२.१.६. प्राणो वा उपाꣳशुः मै० ४.५.५. प्राणो वै वसिष्ठ ऋषिः श० ८.१.१.६. प्राणो वै वाक् मै० ३.२.८. प्राणो वै स्वरः तां० २४.११.९. प्राणो वै हिंकारः मै० ४.६.४.]

प्राणाऽपानौ प्राणश्चाऽपानश्च तावुच्छ्वास-निःश्वासौ ३६.१. प्राण कि जिससे ऊर्ध्व चेष्टा होती है और अपान कि जिससे नीचे की चेष्टा होती है, ये दोनों आर्याभि० २.५, ३६.१. प्राण दीर्घ-जीवन, अपान दुःखों, क्लेशों का नाश सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.२४. [प्राण-अपानपदयोः समासः तौ मित्रावरुणौ प्राणापानौ जै० १.१०९. प्राणापानौ देवः (ब्रह्म) गो० १.२.११. प्राणो वै मित्रोऽपानो वरुणः काठ० २१.१.]

प्राणायनः प्राणा निर्वृत्ता यस्मात् सः (वसन्तः= यः सुगन्धादिभिः वासयति) १३.५४. [प्राण-अयनपदयोः

समासः । अयनः=अय गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

प्रातरित्वः प्रातःकालमारभ्य प्रयत्नकर्त्त ! (विद्वज्जन) १.१२५.२. **प्रातरित्वा**=यः प्रातरेव जागरणमेति सः (जनः) प्र०—अत्र प्रातरुपदादिण्धातोः क्वनिप् १.१२५.१. [प्रातर्-उपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः क्वनिप् । प्रातरित्वः प्रातरागामिन्नतिथे नि० ५.१९.]

प्रातर्जितम् प्रातरेव जेतुमुत्कर्षयितुं योग्यम् (भगम्=ऐश्वर्यम्) ७.४१.२. प्रातः प्रभाते स्वपुरुषार्थेन लब्धम् (भगम्=ऐश्वर्यम्) ३४.३५. [प्रातर्-जितपदयोः समासः । जितम्=जि जये (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रातर्दनिः प्रातःकाले दनिर्दानं यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ६.२६.८. [प्रातर्-दनिपदयोः समासः । दनिः=डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्बाहु० औणा० अनिः प्रत्ययः किच्च]

प्रातर्यावाणः ये प्रातर्यन्ति राजकार्याणि प्रापयन्ति ते अमात्यादयो राजपुरुषाः) ३३.१५. ये प्रातः प्रतिदिनं पुरुषार्थं यान्ति ते (देवाः=विद्वांसो जनाः) १.४४.१३. **प्रातर्यावभिः**=ये प्रातर्यान्ति तैः (विद्वद्भिर्जनैः) ५.५१.३. **प्रातर्याव्णः**=ये प्रातः प्रतिदिनं यान्ति पुरुषार्थं गच्छन्ति तान् (विदुषो जनान्) १.४५.९. [प्रातर् इत्यव्ययम्, तदुपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि 'आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च' अ० ३.२.७४. सूत्रेण वनिप् । एते वाव देवाः प्रातर्यावाणो यदग्निरुषा अश्विनौ ऐ० २.१५.]

प्रातर्यावाणा यौ सूर्योषसौ प्रातर्यातस्तौ ५.७७.१. ['प्रातर्यावन्' इति व्याख्यातम् । ततः 'सुपां सुलुगि' त्याकारः]

प्रातर्युजा प्रातः प्रथमं यङ्क्तस्तौ (अश्विनौ=द्यावापृथिव्यौ) प्र०–अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.२२.१. [प्रातर्-उपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुहे०' ति क्विप् । 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारः प्रातर्युजा प्रातर्योगिनौ नि० १२.४.]

प्रातः प्रातःकाले १.६०.५. दिनाऽऽरम्भे १.५८.९. प्रभाते २०.२९. प्रतिदिनम् १.१६.३. प्रभातवेला में स० वि० १५५, ७.४१.१. पांच घड़ी रात्रि रहने पर सं० वि० १५६, ७.४१.२. प्रभातसमये ५.७७.२. [प्र+अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोः 'प्राततेररन्' उ० ५.५९. सूत्रेण अरन् । स्वरादित्वाद् अव्ययम्]

प्रातःसवनम् प्रातःकाले सवनं यज्ञः क्रियाप्रेरणम् १९.२६. [प्रातः-सवनपदयोः समासः । सवनम्=षू प्रेरणे (तुदा०) धातोर्ल्युट् । षु प्रसवैश्वर्ययोः (अदा०) धातोर्वा ल्युट् । अग्नेर्वै प्रातःसवनम् कौ १२.६. आग्नेयं वै प्रातस्सवनम् जै० उ० १.३७.२. वसूनां वै प्रातःसवनम् कौ० १६.१. अथेमं विष्णुं यज्ञं त्रेधा व्यभजन्त । वसवः प्रातःसवनं रुद्रा माध्यन्दिनसवनम् आदित्यास्तृतीयसवनम् । ऐ० ६.२.९. अयं वै लोकः (पृथिवी) प्रातःसवनम् श० १२.८. २.८. तस्य (पुरुषस्य) य ऊर्ध्वाः प्राणास्तत् प्रातःसवनम् कौ० २५.१२. ब्रह्म वै प्रातःसवनम् कौ० १६.४. त्रिवृत् पञ्चदशौ (स्तोमौ) प्रातःसवनम् (वहतः) तां० १६.१०.५. अनिरुक्तं प्रातःसवनम् तां० १८.६.७. पीतवद्वै प्रातःसवनम् ऐ० ४.४. एकच्छन्दः प्रातःसवनम् ष० १.३. गायत्रीं प्रातःसवनं संपद्यते जै० २.२०२. वज्रः प्रातःसवनम् तै० सं० ६.६.११.३. वैश्वदेवं प्रातःसवनमकुर्वत् (देवाः) तै० सं० ३.२.२.३. म० ३.६.१०.]

प्रातःसावे यः प्रातः सूयते निष्पद्यते तस्मिन् (यज्ञादिकर्मणि) ३.५२.४. प्रातःसवने ३.२८.१. [प्रातर्-उपपदे षु प्रसवैश्वर्ययोः (अदा०) धातोर्घञ्]

प्राता व्यापिका (इळा=वाक्) ७.१६.८. [प्र+अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽन् । स्त्रियां टाप् । प्रा पूरणे (अदा०) धातोर्वा बाहु० औणा० क्तः । ततष्टाप्]

प्रातिपर्षि प्रकृष्टतयाऽतिपालयसि ६.२०.१२. [प्र+अति+पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

प्रातिरतम् प्रतरेतम् १.११६.१०. [प्र+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन शः]

प्रातिरिरिचाथे प्रातिरिक्तौ भवतः १.१०९.६. [प्र+अति+रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लिट्]

प्रादाः प्रदेहि १९.६६. [प्र+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङ्]

प्राऽऽदुः प्रकृष्टतया समन्ताद् दद्युः ५.४९.५. [प्र+आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङ्]

प्राऽऽद्रव प्रकर्षेण समन्ताद् धाव ५.३१.२. [प्र+आङ्+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

प्राध्वने प्रकृष्टतया गन्तव्याय मार्गाय ४.५८.७. प्रकृष्टश्चाऽसावध्वा च तस्मिन् प्र०—अत्र सप्तम्यर्थे चतुर्थी १७.९५. [प्र-अध्वन्पदयोः समासः । अध्वन्=अद भक्षणे (अदा०) धातोः 'अदेर्ध च' उ० ४.११७. सूत्रेण क्वनिप्]

प्राऽऽनट् प्रकृष्टतयाऽश्नुवीत प्र०—व्यत्ययेन श्नम् परस्मैपदं च १.१२१.२. [प्र+अशूङ् व्याप्तौ संघाते च

(स्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन श्नम् परस्मैपदञ्च]

प्राऽऽनशुः प्राप्नुयुः ५.१०.३. [प्र+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

प्राऽपशोशुचत् प्रकृष्टतया दूरीकुर्यात् १.९७.३. [प्र+अप+ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लेट्]

प्राऽभिदद्रुः प्रकृष्टतयाऽऽभिमुख्येन गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति ४.१९.५. [प्र+अभि+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटि छान्दसं रूपम्]

प्रामिणात् प्रकर्षेण हिंस्यात् ३३.२६. प्रकृष्टतया हिंसेत् ३.३४.३. [प्र+मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्लङ् । धातोर्ह्रस्वश्छान्दसः]

प्रामुञ्चतम् प्रमुञ्चेतम् १.११६.१०. [प्र+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लङ् । 'शे मुचादीनामि' ति नुम्]

प्राऽयच्छत् प्रयच्छति ददाति ८.१८.१७. प्रदद्यात् ११.५९. [प्र+दाण् दाने (भ्वा०) धातोर्लङ् । शिति प्रत्यये 'पाघ्रा०' इत्यादिना यच्छादेशः]

प्रायणीयस्य प्रकृष्टं सुखयन्ति येन व्यवहारेण तत्र भवस्य (जनस्य) १९.१३. [प्रायणीयः (यागः) स्वर्गं वा एतेन लोकमुपप्रयन्ति यत् प्रायणीयस्तत्प्रायणीयस्य प्रायणीयत्वम् ऐ० १.७. आदित्य एव प्रायणीयो भवति श० ३.२.३.६. प्राणो वै प्रायणीयः ऐ० १.७. प्रायणीयम् (अहः) प्रायणीयेन वा अह्ना देवा स्वर्गं लोकं प्रायन्यत् प्रायँस्तत् प्रायणीयस्य प्रायणीयत्वम् तां० ४.२.२. त्रिवृत् प्रायणीयमहः तां० १०.५.४. ब्रह्म प्रायणीयमहः तां० ११.४.६. ततिर्वै यज्ञस्य प्रायणीयम् कौ० ७.६. प्राणोदानावेव यत् प्रायणीयोदयनीये कौ० ७.५. अहरेव प्रायणीयो रात्रिरुदयनीयः जै० ३.३३७. गायत्रं प्रायणीयमहः तै० सं० ७.२.८.१. तद् यत् प्राणैत् तस्मादप्येतत् प्रायणीयमहः जै० २.५७. प्राण एव प्रायणीयः काठ० ३४.६. यदवारे तीर्थं तत् प्रायणीयम् काठ० ३४.१६.]

प्राऽऽयन् प्रकृष्टतयाऽऽगच्छन्ति ३.३६.६. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्]

प्रायवे प्रापणाय १.१४०.८. [प्र+अय गतौ (भ्वा०) धातोरौणादिक उः प्रत्ययः । ततश्चतुर्थी]

प्रायश्चित्त्यै पापनिवारणाय भा०—प्राणायामादिसाधनैः सर्वं किल्विषं निवारयितुम् ३९.१२. [प्राय-चित्ति-पदयोः समासे 'पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम्, अ० ६.१.१५७. सूत्रेण सुट् । यज्ञो हि यज्ञस्य प्रायश्चित्तिः मै० १.८.३.]

प्रायासाय प्रयाणाय ३९.११. [प्र+यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोर्घञ् । प्रयासप्राति० स्वार्थेऽण्]

प्राऽयासिष्ट प्रयातु ५.५८.६. [प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लुङ् पुरुषव्यत्ययः । 'यमरमनमातामि०' ति सगागम इट् च]

प्राये प्राये कमनीये कमनीये (गभस्तौ=विज्ञानप्रकाशे) २.१८.८. [प्राये-पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । प्रायः=प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोर्घञ्]

प्राऽरदः प्रकृष्टतया विलिखति ४.१९.२. [प्र+रद विलेखने (भ्वा०) धातोर्लङ् । पुरुषव्यत्ययः]

प्रारन् प्रापयति. १.४९.३. [प्र+ऋ गतौ (जु०) धातोर्लुङ् । 'सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्च' इत्यङ् । 'ऋदृशोऽङि' इति गुणः]

प्राऽऽरभामहे प्रकर्षेण समन्तादारम्भं कुर्याम ६.५७.५. [प्र+आङ्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्राऽरिच्यत् प्रकृष्टतया रिच्यतेऽतिरिक्तो भवति २.२२.२. [प्र+रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्यन्]

प्राऽरिणाः प्राप्नोषि २.२२.४. [प्र+ऋ गतौ (क्र्या०) धातोर्लङ् । 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकत्वात् श्न इडागमः]

प्राऽरुजः प्रकृष्टतया रुज १.५१.५. [प्र+रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लङ्]

प्राऽऽरुः प्रकर्षेण गच्छेयुः ३.७.१. [प्र+ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्लिट्]

प्राऽरोचत् प्रकृष्टतया प्रकाशते ३.२९.१४. [प्र+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

प्राऽरोचयत् प्रकाशयेत् १.१४३.१. [प्र+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

प्राऽर्च प्रकृष्टतया सत्कुरु ५.५२.१. **प्राऽर्चत**=प्रदत्तेन पूजयत १.१०१.१. सत्कुरुत १.१५५.१. **प्राऽर्चत्**=प्रकृष्टतया सत्कुर्यात् १.१२०.३. **प्राऽर्चन्**=प्राऽर्चन्ति सत्कुर्वन्ति ७.४३.१. **प्राऽर्चन्ति**=सत्कुर्वन्ति ३.१२.५. प्राऽर्चान्=प्रकृष्टतया सत्कुर्य्युः ४.५५.२. [प्र+अर्च पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लङ्लटावपि । 'प्रार्चान्' प्रयोगे लेट्]

प्राऽर्णोः प्राप्नुयाः १.१७४.६. [प्र+ऋ गतौ (क्र्या०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

प्राऽऽर्त्त प्रकृष्टतया प्राप्नुयाः ४.१.१२. [प्र+ऋ गतौ (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

प्रार्पणः प्रापकः भा०—प्रदः (राजा=प्रकाशमानो जनः) १२.२२. [प्र+ऋ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

प्रार्पयतु प्रकृष्टतया संयोजयतु १.१. [प्र+ऋ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् 'अर्तिह्री०' इति सूत्रेण णिचि पुगागमः]

प्राऽर्प्य प्रकर्षेणार्पयित्वा १.११३.४. [प्र+ऋ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

प्राऽव प्रकृष्टतया रक्ष १.४९.२. प्रापय १.१०२.३. **प्राऽवत्**=प्रकृष्टतया रक्षेत् १.६१.१५. प्ररक्षति ४.१६.७. प्रकर्षेण रक्षेत् ७.३३.३. **प्राऽवतम्**=प्रवेशयतम् १.११७.२३. पालयतम् १.११२.५. प्रकर्षेण हन्यातम् १.११२.२३. **प्राऽवताम्**=प्रकृष्टतया रक्षणादिकं कुरुताम् १३.३५. **प्राऽवन्**=प्रकर्षेण रक्षन्ति ३.३०.१० **प्रावन्तु**= प्राप्नुवन्तु १.१२७.२. प्रकृष्टतया कामयन्ताम् १८.७६. **प्राऽवः**=प्रकृष्टतया रक्ष, सदैव रक्षको भव १.४.८. प्रकर्षेण रक्षेः ४.३०.६. प्रकृष्टं रक्ष रक्षति वा प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययो लिड्लटोरर्थे लङ् च १.४.८. प्रावेत् २.१५.९. **प्राऽवाथः**=प्रकृष्टं रक्षेताम् ७.६१.२. [प्र+अव रक्षणाद्यर्थकाद् (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लेट् लङ् च]

प्राऽवमृणीहि प्रकृष्टतयाऽवहिन्धि ४.४.५. [प्र+अव+मृ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्लोट् । 'प्वादीनां ह्रस्वः' इति ह्रस्वः]

प्रावणेभिः विज्ञानैः १२.५०. [प्रुङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट् । प्रवणप्राति० भिस ऐसादेशो न भवति। 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः]

प्राऽवर्द्धयत् प्रवर्द्धयेत् २८.१२. (प्र+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

प्राविता प्रकृष्टतया ज्ञाता सुखप्रापको वा (अग्निः=परमेश्वरो भौतिको वा) १.१२.८. प्रकर्षेण रक्षकः (अग्निः=महाविद्वज्जनः) ३.२१.३. रक्षणादिकर्त्ता (सेनापतिः) १.८७.४. [प्र+अव रक्षणाद्यर्थकाद् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

प्राऽविदत् प्राप्नुयात् ३.५७.१. (प्र+विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लुङ् । लृदित्त्वादङ्]

प्राऽविषत् प्रकृष्टतया रक्षादिकं व्याप्नोतु १.८१.१. **प्राविषुः**=प्रकर्षेण व्याप्नुयुः भा०—प्राप्नुयुः २३.२९. [प्र+विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्लेट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुर्न भवति]

प्रावीत् प्रकर्षेण रक्षेत् ७.२०.२. **प्रावीः**=प्रकृष्टतया देहि प्र०—अत्र लोडर्थे लुङडभावश्च ३७.१८. [प्र+अव (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

प्रावीः प्रकृष्टविद्याव्यापी (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.६.२. [प्र+अव (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक ईः प्रत्ययः]

प्रावृतस्य प्रकर्षेणाऽऽच्छादितस्य (मेघस्य) १.६२.२. युक्तस्य (जनस्य) २५.२५. **प्रावृताः**=प्रकृष्टतयाऽऽवृता आच्छन्नाः सन्तः (अब्रह्मविदो जनाः) १७.३१. [प्र+आङ्+वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तः]

प्रावोचति प्रकृष्टतया समन्ताद् वदति, प्र०—अत्र वचेर्लेट्यङ् 'वच उम्' इत्युमागमः १९.६५. **प्रावोचम्**= प्रकृष्टतयोपदिशेयम् ४.४५.७. [प्र+आङ्+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेनाङ् । 'वच उम्' इत्युमागमः । अन्यत्र लुङ्]

प्राऽऽशत प्रकृष्टतया व्याप्नुत ३.४५.३. [प्र+अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

प्राऽशान प्रकर्षेण भुङ्क्ष्व ३.२१.१. [प्र+अश भोजने (क्र्या०) धातोर्लोट् । 'हलः श्नः शानज्झौ' इति श्नः शानच्]

प्राशुषाट् यः प्राशून् वेगवतश्शत्रून् सहते सः (इन्द्रः=राजपुरुषः) ४.२५.६. [प्राशूपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' इति ण्विः प्रत्ययः । प्राशुः=प्र-आशुपदयोः समासः । आशुः=अशूङ् व्याप्तौ (भ्वा०) धातोः 'कृवापाजिमि०' उ० १.१. सूत्रेण उण् प्राशुः क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

प्राशूः यः प्राश्नाति सः (ब्रह्मणस्पतिः विद्वज्जनः) ३४.५६. यः प्राश्नुते प्रकृष्टतया व्याप्नोति सः (बृहस्पतिः=परमेश्वरः) १.४०.१. [प्र+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः अश भोजने (क्र्या०) धातोर्वा 'कृवापाजिमि०' उ० १.१. सूत्रेण उण्]

प्राशृङ्गाः प्रकृष्टानि शृङ्गाणि येषान्ते (संचराः=मार्गाः) २४.१७. [प्र-शृङ्गपदयोः समासः । पूर्वस्य दीर्घश्छान्दसः । शृङ्गः=शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'शृणातेर्ह्रस्वश्च' उ० १.१२६. सूत्रेण गन्प्रत्ययो नुडागमः किच्च । शृङ्गं श्रयतेर्वा शृणातेर्वा शम्नातेर्वा शरणायोद्गत-

मिति वा शिरसो निर्गतमिति वा नि० २.८.]

प्राऽश्नामि गुणैर्यत्प्रकृष्टं तदर्थेन भुञ्जे, प्र०—प्रपरेत्येतस्य प्रातिलोम्यं प्राह नि० १.३, २.११. **प्राऽश्नोतु**=प्राप्नोतु प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.५१.१२. प्रकृष्टतया व्याप्नोतु १.१७.६. **प्राऽश्याः**=प्राप्नुयाः ५.४२.१४. [प्र+अश (क्र्या०) धातोर्लेट् । अन्यत्र अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

प्राश्रथयन्ते प्रकृष्टतया शिथिलीकुर्वन्ति ५.५९.१. [प्र+आङ्+श्रथ दौर्बल्ये (चुरा०) धातोर्लट्]

प्रासहम् प्रकृष्टतया सहनशीलम्, प्रकर्षेण सोढारम् (राजानम्) ६.१७.४. अतीव सोढारम् (योद्धृंजनम्) १.१२९.४. [प्र+षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः पूर्वपदस्य दीर्घश्छान्दसः]

प्रासहाः याः प्रकर्षेण शत्रुबलानि सहन्ते ताः सेनाः ५.३३.१. [प्रासहमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप् । इन्द्रो वै प्रासहस्पतिस्तुविष्मान् ऐ० ३.२२. सेना वा इन्द्रस्य प्रिया जाया वावाता प्रासहा नाम ऐ० ३.२२.]

प्राऽसावीत् प्रसुवति १.१५७.१. प्रकृष्टतया सुनोति १.१२४.१. प्रकर्षेणोत्पादयति १२.३. [प्र+षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्लुङ्]

प्राऽस्थात् प्रतिष्ठते १.७४.८. **प्राऽऽस्थुः**=प्रकृष्टतयाऽऽतिष्ठन्तु ४.३४.३. [प्र+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'गातिस्था०' इति सिचो लुक्]

प्रास्य प्रकृष्टतया प्रापय १.१२१.१३. [प्र+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लोट्]

प्राऽस्राक् प्रकर्षेण सृजति ४.५३.४. [प्र+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लुङ् । लेर्लुक् छान्दसत्वात्]

प्राऽऽहुः प्रकृष्टं ब्रुवन्तु २.१२. [प्र+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट् । 'ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः' इति ब्रुवः स्थाने आहादेशो णलादयश्च]

प्रियङ्गवः धान्यविशेषाः १८.१२. [भोज्यं वा एतदोषधीनां यत् प्रियङ्गवः ऐ० ८.१६. पृश्निर्वै यद (पयः) अदुहत स प्रियङ्गुरभवत् मै० २.१.८. एतन्मरुतां स्वं पयो यत् प्रियङ्गवः काठ० १०.११.]

प्रियतमम् अतिशयेन प्रियम् (रथं=विमानादियानम्) ५.७५.१. [प्रियप्राति० अतिशायने तमप् । प्रियमिति व्याख्यास्यते]

प्रियधामाय प्रियं धाम यस्य तस्मै (अध्येत्रे पुरुषाय) १.१४०.१. [प्रिय-धामपदयोः समासः । धामानि त्रयाणि भवन्ति स्थानानि नामानि जन्मानीति नि० ९.२८.]

प्रियपतिम् कमनीयं पालकम् भा०—विधातारम् (जगदीश्वरम्) २३.१९. [प्रियपतिपदयोः समासः]

प्रियम् सर्वान् जनान् प्रीणन्तम् (जनम्=मनुष्यम्) १.३१.१७. यः प्रीणाति तम् (अग्निम्) १.१५१.१ कमनीयं पतिम् ४.५२.७. कमनीयं प्रीतम् (अग्निं=सत्योपदेशकम्) ७.१६.१. प्रीत्युत्पादकम् (अग्निम्=अग्निविद्याम्) १५.३२. प्रीतिविषयं प्रसन्नकरं प्रसन्नं वा (परमेश्वरम्) ३२.१३. प्रीतिकारकम् (ब्रह्म यज्ञं वा) १.३१. **प्रियस्य**=प्रसन्नकारकस्य (मारुतस्य=कलायन्त्रवायोः प्राणस्य वा) १.८७.६. कमनीयस्य (मित्रस्य) ५.६४.२. **प्रियः**=प्रीतः (मित्रः) १.९१.३. योऽन्यान् प्रीणाति सः (जनः) ४.२५.५. हर्षशोकरहितः (जनः) ४.२५.५ प्रीतिविषयः (विश्पतिः सभाध्यक्षः) १.२६.७. प्रीतिसम्पादकः (यज्ञः=सङ्गतो व्यवहारः) ३.३२.१२. यः प्रीणाति कामयत आनन्दयति वा (आत्मा=स्वस्वरूपम्) २५.४३. कामयमानः प्रियकारी (विद्वज्जनः) १.७५.४. कमनीयः सेवनीयो वा (अतिथिजनः) ५.१.९. कान्तः भा०—सर्वस्य प्रियः (जनः) १२.२७. **प्रियाणि**=कमनीयानि सेवनीयानि सुखानि ३.३८.१. **प्रियान्**=प्रसन्नान् (विदुषो जनान्) १.१२७.७. **प्रियाय**=प्रीत्यै ३०.१३. **प्रियाः**=प्रीतियुक्ताः सन्तः (मेधाविनो जनाः) १.८२.२. स्त्र्यादेः प्रीत्युत्पादकानि (तन्वः=शरीराणि) १६.१५. प्रीतिविषयाः (वायवः) २.३६.२. **प्रिये**=कमनीये परमात्मस्वरूपे २८.२७. प्रीतिकामनासिद्धिकार्याम् (सदसि=सभायाम्) १.४७.१०. प्रसन्नताकारके (अहनि) १.११०.७. प्रीतिकरे (बर्हिषि=अन्तरिक्षे) १.८५.७. कमनीये प्रीतिकारके (ऐहिकपारलौकिक-सुखे) ३.३२.७. **प्रियेण**=सुखैस्तर्पकेण कमनीयेन (धाम्ना=स्थानेन) २.६. प्रीतिहेतुना (धाम्ना=स्थलेन) २.६. प्रीतिसाधकेन (धाम्ना=हृदयेन) २.६. **प्रियेषु**=प्रीतिकारकेषु (निधिषु=धनकोशेषु) १९.५७. इष्टेषु (धामसु=जन्मस्थाननामसु) १२.११७. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' इति कर्तरि कः प्रत्ययः]

प्रियम् प्रीणाति यत्तत् (ब्रह्म=वेदचतुष्टयम्) १.७५.२. प्रसन्नतासम्पादिसुखम् अ०—प्रेमोत्पादकं सुखम् ६.११. प्रीतये सुखयत्यारोग्येन यत्तत् (सदः=औषधसेवनं पथ्याचरणं च) २.६. प्रीणाति सुखयति यत्तत् (सदः=गृहम्) २.६. आनन्दकरम् (सदः=वस्तु) २.६. प्रीति-

जनकम् (पाथः=अन्नम्) २.१७. प्रीणन्ति यस्मिँस्तत् (अभीष्टस्थानम्) २९.१. सुखैस्तर्पकम् (पाथः=कर्म) ८.५०. कमनीयं प्रीतिकरम् (ब्रह्म=जगदीश्वरः) ५.४२.२. [प्रियमिति व्याख्यातम् । प्रजा वै प्रियाणि पशवः प्रियाणि तां० ८.५.१५.]

प्रियमेधवत् प्रिया तृप्ता कमनीया प्रदीप्ता मेधा बुद्धिर्यस्य तेन तुल्यः (हवं=अध्ययनाध्यापनाख्यं व्यवहारम्) १.४५.३. [प्रिया-मेधापदयोः समासे कृते तुल्यार्थे वतिः प्रत्ययः । 'ङ्यापोः संज्ञाछन्दसोरि०' ति ह्रस्वः]

प्रियमेधः प्रिया मेधा प्रज्ञा यस्य सः (कण्वः=मेधाविजनः) १.१३९.९. **प्रियमेधाः**=सत्यविद्याशिक्षा-प्रापिका प्रिया मेधा येषान्ते (विद्वांसो जनाः) १.४५.४. [प्रिया-मेधापदयोः समासः]

प्रियरथे कमनीये रथे १.१२२.७. [प्रिय-रथपदयोः समासः]

प्रियस्तोत्रः प्रियं प्रति प्रियकारि स्तोत्रं गुणस्तवनं यस्य सः (सोमः=सत्कर्मसु प्रेरकः परमेश्वरः) १.९१.६. [प्रिय-स्तोत्रपदयोः समासः । स्तोत्रम्=ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः 'दाम्नीशस०' इति करणे ष्ट्रन्]

प्रिया तर्पकाणि (पाथांसि=फलादीनि) २१.४७. कमनीयानि (धाम=जन्मस्थाननामानि) ४.५.४. प्रियाणि (धामानि=सुखानि) २१.४७. सेवनीयानि वस्तूनि सुखानि वा ५.४३.५. अभीष्टानि (क्रतूनि) पं० वि० [प्रियमिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

प्रिया यौ सर्वान् प्रीणीतस्तौ (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ६.६७.३. प्रसन्नताकरौ (सखाया=अध्यापकोपदेशकौ) ३.४३.१. [प्रियं व्याख्यातम् । ततः प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुगि०' त्याकारादेशः]

प्रिया या प्रीणाति सर्वान् सा (उषाः) १.४६.१. सुखकारिणी (क्षितिः=पृथिवी) १.१५१.४. कमनीया (सरस्वती=सत्या वाणी) ३.६१.१०. **प्रियाम्**=प्रीतिकारिणीम् (जायाम्) १.८२.५. **प्रियासु**=सुखप्रदासु क्रियासु स्त्रीषु वा ६.६१.१०. **प्रियाः**=अभीप्सिताः (तन्वः=शरीराणि) १.११४.७. याः तर्पयन्ति ताः (धेनवः=किरणा गावो वाचो वा) १.८४.११. **प्रिये**=कमनीये प्रीतिकारिके (ऐहिकंपारलौकिकसुखे) ३.३२.७. [प्रियं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

प्रियासः प्रीतिमन्तः प्रीता वा (प्रजाजनाः) ७.१९.८. प्रीताः कामयमानाः (जनाः) २.१२.१५. कमनीयाः सेवनीयाः (पञ्चप्राण-मनोवुद्धयः) ४.१.१२. प्रीतिकराः भा०—विद्वत्प्रिया मनुष्यप्रिया वा (जनाः) ३३.१४. प्रसन्नाः (सदाचारिजनाः) ५.८५.८. प्रीतिमन्तः (सूरयः=धार्मिका विद्वांसः) ७.१६.७. [प्रियप्राति० जसोऽसुगागमः]

प्रियेभिः स्वाऽऽत्मवत् प्रियैः (ऋभुभिः=मेधाविजनैः) ३.५४.१७. [प्रियप्राति० 'वहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

प्रीणानः प्रसन्नः सत्याऽसत्यविज्ञापकः (अतिथिः) १.७३.१. प्रसादयन् (अग्निः=राजा) ४.३.१४. कामयमानः (अग्निः=विद्वज्जनः) २७.१३. तर्प्पयन् (इन्द्रः=वैद्यो जनः) २.११.१७. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः शानच्]

प्रीणीते कामयते ७.७.३. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोर्लट्]

प्रीतम् प्रशस्तम् (वह्निम्) २९.३. **प्रीतस्य**=कमनीयस्य (अ०—यज्ञस्य) १८.५६. **प्रीतः**=कमितः (विद्वज्जनः) ५.६.३. कमनीयः (अ०—मनुष्यः) १.६६.२. प्रसन्नः (सभाध्यक्षः) १.६९.३. **प्रीताः**=प्रसन्नाः (देवाः=विद्वांसो गुरवः) ३.५७.२. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः क्तः]

प्रीता प्रसन्ना (होत्रा=ग्राह्या क्रिया) ४.२.१०. (प्रीतं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

प्रुषायत् प्रुष्णीयात् सिञ्चेत् प्र०—अत्र शायच् १.१२१.२. [प्रुष स्नेहनसेवनपूरणेषु (क्र्या०) धातोर्लेट् । 'छन्दसि शायजपि' अ० ३.१.८४. सूत्रेण श्नः शायच्]

प्रुषायन् छिन्दन्ति १.१८०.१. प्राप्नुवन्ति ४४३.५. **प्रुषायन्त**=सेवन्ताम् १.१८६.९. **प्रुषायन्ते**=मधूनि स्रवन्ति १.१३९.३. [प्रुष दाहे (भ्वा०) प्रुष स्नेहन-सेवनपूरणेषु (क्र्या०) धातोर्वा लेट् 'छन्दसि शायजपि' इति शायच्]

प्रुषितप्सवः प्रुषितं दग्धं प्सु इन्धनादिकं यैस्ते (अश्वासः=वेगादयो गुणाः) ५.७५.६. **प्रुषितप्सुम्**=यः प्रुषितान् स्निग्धान् पदार्थान् प्साति भक्षयति तम् (राजजनम्) ४.३८.२. [प्रुषित-प्सुपदयोः समासः । प्रुषितम्=प्रुषु दाहे (भ्वा०) प्रुष स्नेहनसेवनपूरणेषु (क्र्या०) धातोर्वा क्तः । प्सुः रूपनाम निघं० ३.७. प्सा भक्षणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणादिकः कुः प्रत्ययः]

प्रुषितस्य स्निग्धस्य (पूर्णस्येश्वरस्य) मध्ये १.५८.२. [प्रुषितमिति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

प्रुष्णते पुष्टिं पूरयते (मेघाय) २२.२६. [प्रुष स्नेहनसेवनपूरणेषु (क्र्या०) धातोः शत्रन्ताच्चतुर्थी]

प्रुष्णवत् सुष्ठ्वैश्वर्ययुक्तम् (वसु=धनम्) ३.१३.४. [प्रुष्णप्राति० मतुप् । प्रुष्णम्=प्रुष स्नेहनसेवनपूरणेषु (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० नक्प्रत्ययः]

प्रुष्णुते अभिदहति ६.७१.१. **प्रुष्णुवन्ति**= स्नेहयन्ति १.१६८.७. [प्रुषु दाहे (भ्वा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

प्रुष्वाभ्यः पूर्णाभ्यः (ह्रादुनीभ्यः=विद्युद्भ्यः) २२.२६. **प्रुष्वाः**=प्रुष्णन्ति सिञ्चन्ति याभिस्ताः(क्रियाः) २५.९. [प्रुष स्नेहनसेवनपूरणेषु (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० वन्प्रत्ययः । स्त्रियां टाप्]

प्रेक्षते ज्ञान-दृष्टि से देखता है सं० वि० २०९, अथर्व० ६.६.१.३. [प्र+ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रेळे अध्यन्विच्छामि ४.५५.३. [प्र+ईड स्तुतौ (चुरा०) धातोर्लट्]

प्रेणिम् शत्रुनाशाय प्रेरितुमर्हम् (अश्व्यम्=तुरङ्गेषु वेगादिषु वा साधुम्) १.११२.१०. [प्र+ई गतौ (अदा०) धातोरौणादिको निः । शकन्ध्वादिन्यायेन पररूपम्]

प्रेत प्रकृष्टं प्राप्नुवन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च ३.४७. प्राप्नुत ७.४५. **प्रेतम्**=प्रकृष्टतया प्राप्तौ भवतः ५.१७. **प्रेताम्** प्राप्नुतः २.४१.१९. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

प्रेतम् मृतम् (पतिम्) ऋ० भू० २११, अथर्व० १८.३.१.१. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः]

प्रेतारः प्रीतिकर्त्तारः (जनाः) १.१४८.५. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

प्रेतारा प्राप्तारौ (इन्द्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ४.४१.५. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । 'सुपां सुलुग्०' इति प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः । 'एङि पररूपम्' इति पररूपम्]

प्रेतिना प्रकृष्टविज्ञानयुक्तेन (धर्मेण=न्यायाचरणेन) १५.६. **प्रेतिम्**=प्रयन्ति म्रियन्ते येन तं मृत्युम् १.३३.४. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

प्रेतीषणिम् प्रकर्षेण प्राप्तानामेषितारम् (पावकमग्निम्) ६.१.८. [प्रेति-इषणिपदयोः समासः । प्रेति=प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । इषणिम्=इष गतौ (दिवा०) धातोरौणादिकोऽनिः प्रत्ययः]

प्रेत्य मरणं प्राप्य ४०.३. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

प्रेत्यै प्रकर्षेण प्राप्त्यै भा०—प्रकर्षगतये प्रयत्य २७.४५. [प्रेतिप्राति० चतुर्थी । प्रेतिः=प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

प्रेद्धः प्रकृष्टतया प्रदीप्तः भा०—शुद्धाऽऽत्मा (अग्निः=अग्निरिव शत्रुदाहको योगी) १७.७६. प्रकर्षेणेद्धः प्रदीप्तः (अग्निः=विद्युदग्निः) ७.१.३. (प्र+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः क्तः]

प्रेयक्षसि प्रकृष्टतया सङ्गच्छसे व्याप्नोषि वा प्र०—इयक्षतीति गतिकर्मा निघं० २.१४, ६.४९.४. प्रकर्षेण यष्टुं सङ्गन्तुमिच्छसि ३३.५५. [प्र+इयक्षति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्लट् । यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्वा प्रोपसर्गाच्छान्दसं रूपम्]

प्रेर्मि प्रकृष्टतया प्राप्नोमि ३.१९.२. [प्र+ऋ गतौ (जु०) धातोर्लट्]

प्रेयः अतिशयेन प्रियम् (मनः) १.१४०.११. [प्रियप्राति० अतिशायने ईयसुन् । 'प्रियस्थिर०' अ० ६.४.१५७. सूत्रेण प्रियस्य प्रादेशः]

प्रेरय नियोजय ८.१९. [प्र+ईर क्षेपे (चुरा०) धातोर्लोट्]

प्रेव प्रकटं यथा स्यात्तथा १.१०३.७. [प्र-इवपदयोः समासः । प्रेव=पराद्धीव नि० ९.२९.]

प्रेषत् प्रीणीत प्र०—लेट्-प्रयोगः तिपि १.१८०.६. [प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोर्लोटि सिपि च रूपम्]

प्रेषाः प्रेष्यन्ते प्रकृष्टमिष्यन्ते बोधसमूहास्ते १.६८.३. [प्र+इष गतौ (दिवा०) धातोर्घञ् । 'एङि पररूपम्' इति पररूपम्]

प्रेषितः प्रेरितः (देवः=विद्वज्जनः) २१.६१. [प्र+इष गतौ (दिवा०) धातोः क्तः]

प्रेष्ठम् अतिशयेन प्रियम् (नमः=अन्नादिकम्) ७.३६.५. [प्रियप्राति० अतिशायने इष्ठन् । 'प्रियस्थिर०' इत्यादिना प्रादेशः]

प्रेष्ठः अतिशयेन प्रियः (घर्मः=यज्ञस्तापो वा) ५.४३.७. **प्रेष्ठौ**=प्रीणीत इति प्रियौ अतिशयेन प्रियौ=प्रेष्ठौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८१.१. [पूर्वपदे द्रष्टव्यम्]

प्रेष्ठा अतिशयेन प्रियौ (सभासेनेशौ) ६.६३.१. प्रेष्ठं व्याख्यातम् । ततः प्रथमाद्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

प्रेष्ठा अतिशयेन प्रियाणि (सुम्ना=सुखानि) १.१६९.१. [प्रेष्ठं व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

प्रेष्ठाम् अतिशयेन प्रियाम् (देवीं=विदुषीं स्त्रीम्) ४.४३.१. [प्रेष्ठं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

प्रेष्ये प्राप्नोमि ४.३३.१. [प्र+इष गतौ (दिवा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

प्रेहि प्राप्नुहि १७.६६. प्रकृष्टतयाऽऽप्नुहि १.८०.३. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

प्रैतन प्राप्नुत १.११०.२. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट् । त-प्रत्ययस्य तनवादेशः]

प्रैतु प्राप्नोतु ३३.८६. **प्रैमि**=प्रकर्षता से प्राप्त होता हूँ सं० वि० १६८, अथर्व० ६.२.३.२२. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् । 'एत्येधत्यूठ्सु' इति सूत्रेण वृद्धिः]

प्रैनोत् प्रकृष्टतया प्राप्नोति १.६६.५. **प्रैनोः**= प्रकर्षेण प्रेरयः ४.१६.७. [प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

प्रैषान् प्रैषणीयान् भृत्यान् भा०—सुशिक्षितसेवकान् १९.१९. [प्र+इष गतौ (दिवा०) धातोर्घञ् । प्रैषाः= बार्हता वै प्रैषाः श० १२.८.२.१४.]

प्रैषेभिः प्रैषणकर्मभिः १९.१९. [प्रैषप्राति० भिस ऐसादेशो न भवति छान्दसत्वात् । प्रैषः=प्र+इष गतौ (दिवा०) धातोर्घञ्। प्राहोदूढोढ्येषैष्येषु' इति एङि पररूपापवादो वृद्धिः]

प्रो प्रकृष्टार्थे १.१६१.१२. प्रवेशाऽर्थे १.३६.५.

प्रो अग्मन् प्रकृष्टतया प्राप्नुवन्ति ६.३७.२. [प्रो इत्युपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'मन्त्रे घसह्वर'० अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक्]

प्रोक्षणीः प्रकृष्टतया सिञ्चन्ति याभिः क्रियाभिः पात्रैर्वा ताः १.२८. [प्र+उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्ल्युट् । ततः स्त्रियां ङीप्]

प्रोक्षामि शोधयामि २.१. शोधितेन घृतेनाऽऽर्द्रीकरोमि २.१. प्रकृष्टतया सिञ्चामि ५.२५. प्रकृष्टतयाऽभिसिञ्चामि २२.५. सेचयामि प्रेरयामि वा १.१३. [प्र+उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लट्]

प्रोक्षितम् जलेन सिक्तम् (भौतिकमग्निम्) २२.१६. [प्र+उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रोक्षिताः प्रकृष्टतया सिक्ताः सेचिता वा (अपः) १.१३. [प्र+उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोः क्तान्तात् स्त्रियां टाप्]

प्रोढः प्रकर्षेणोढः प्राप्तः (कृतब्रह्मचर्यो जनः) १.११७.१५. [प्र-ऊढपदयोः समासः । ऊढः=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

प्रोतः तिर्य्यक्तन्तुषु पट इव (विभूः=व्यापकेश्वरः) ३२.८. [प्र-उतपदयोः समासः । उतः =वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोः क्तः । यजादित्वात् किति सम्प्रसारणम्]

प्रोथ जेतुं पर्याप्तो भव शत्रूनसमर्थान् कुरु ६.४७.३०. परिप्राप्नुहि २९.५६. **प्रोथत्**=पर्याप्नुयात् १५.६२. [प्रोथृ पर्याप्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लेट्]

प्रोथत् शब्दं कुर्वन् (अश्वः=तुरङ्गः) ७.३.२. **प्रोथते**=पर्याप्ताय (पदार्थाय) २२.७. [प्रोथृ पर्याप्तौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः]

प्रोद्यच्छध्वम् प्रकर्षेणोद्यमिनः कुरुत ७.४३.२. [प्र+उत्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'समुदाङ्भ्यो यमोऽग्रन्थे' इत्यात्मनेपदम्]

प्रोपेट्टे प्रकृष्टतयैश्वर्यवान् भवेत् ३.५२.५. [प्र+उप+ईश ऐश्वर्ये (अदा०) धातोर्लट्]

प्रोपेहि प्रकृष्टतया गच्छ ६.१२. [प्र+उप+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्]

प्रोर्णुवाथाम् प्रकृष्टतयाऽऽच्छादयताम् ६.१६. प्राप्नुयाथाम् २३.२०. [प्र+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोर्लोट्]

प्रोष्ठेशयाः याः प्रोष्ठेऽतिशयेन प्रोढे गृहे शेरते ताः (नारीः=नरस्य स्त्रियः) ७.५५.८. [प्रोष्ठोपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः 'अधिकरणे शेतेः' अ० ३.२.१५. सूत्रेण अच्]

प्रोहामि प्रकृष्टैर्विविधैस्तर्कैः सुखानि प्राप्नोमि २.१५. प्रकर्षेण विविधशुद्धतर्केण योजयामि २.१५. [प्र+ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

प्रोह्यमाणः प्रकृष्टतर्केणाऽनुष्ठितः (सोमः=ऐश्वर्यसमूहः) ८.५६. [प्र+ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

प्रौक्षन् प्रकर्षेण सिञ्चन्ति ३१.९. प्रकृष्टतया यस्यैवाऽभिषेकं कृतवन्तः कुर्वन्ति करिष्यन्ति च ऋ० भू० १२४, ३१.९. [प्र+उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

प्लवम् प्लवन्ते पारावारौ गच्छन्ति येन तं नौकादिकम् १.१८२.४. **प्लवः**=वर्त्तिका (पक्षिविशेषः) २४.३४. [प्लुङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' त्यप्प्रत्ययः । प्लवं वाव नो भूत्वेदं साम स्वर्गं लोकमवाक्षीदिति । तदेवप्लवस्य प्लवत्वम् जै० ३.११५. यत् प्लवो भवति स्वर्गस्य लोकस्य

समष्टचै तां० १४.५.१७.]

प्लाशिभिः प्रकर्षेणाऽशनक्रियाभिः २५.८. [प्र+अश भोजने (क्र्या०) धातोः 'इञ् अजादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वा० सूत्रेण इञ्प्रत्ययः। रेफस्य लत्त्वम्]

प्लाशिः यः प्रकृष्टतयाऽश्नुते सः भा०—पुरुषार्थी (वीर्यवान् पुरुषः) १९.८७. [प्र+अश भोजने (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० इञ्प्रत्ययः]

प्लीहाकर्णः प्लीहेव कर्णो यस्य सः (पशुः पक्षी वा) २४.४. [प्लीहा-कर्णपदयोः समासः। प्लीहन् इति व्याख्यास्यते]

प्लीहा हृदयस्थाऽवयवेन २५.८. [प्लिह गतौ (भ्वा०) धातोः 'श्वन्नुक्षन्प्लीहन्०' अ० १.१५९. सूत्रेण कनिन्-प्रत्यये धातोरुपधादीर्घत्त्वं निपात्यते]

प्लुषी दाहकौ दुःखप्रदौ (चञ्चलपुरुषौ) १.१९१.१. **प्लुषीन्**=जन्तुविशेषान् २४.२९. [प्लुषु दाहे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणादिक इन् किच्च]

प्सरः यं प्सान्ति भुञ्जते स भोगः १.४१.७. [प्सा भक्षणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० अरन्प्रत्ययः। बहुलवचनात् किच्च। प्सरः रूपनाम निघं० ३.७.]

फट् विशीर्णः (शत्रुः) ७.३. ['फट्' इति निपातश्चादिषु पाठात्]

फलम् सेवाफलदं शूद्रकुलम् भा०—ये जना आलस्यं विहाय सर्वदा पुरुषार्थमेवाऽनुतिष्ठन्ते ते सच्छूद्रान् प्राप्य फलवन्तो जायन्ते १०.१३. [फल निष्पत्तौ (भ्वा०) धातोरच्प्रत्ययः]

फलवत्यः बहूत्तमफलाः भा०—मधुरफलयुक्ताः (ओषधयः=यवादयः) २२.२२. [फलप्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्तान् ङीप्]

फलिगम् मेघम् प्र०—फलिग इति मेघनाम निघं० १.१०, ४.५०.५. फलीनां गमयितारं मेघम् १.६२.४. [फलिगः मेघनाम निघं० १.१०.]

फलिनीः बहुफलाः (ओषधयः) १२.८९. [फलप्राति० भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा इनिः। ततः स्त्रियां ङीप्]

फल्गूः या फलानि गच्छति प्राप्नोति सा (मारुताः—पवनगुणिनी पक्षिणी) २४.४. [फल निष्पत्तौ (भ्वा०) धातोः 'फलिपाटिनमिमनिजनाम्०' उ० १.१८. सूत्रेण उप्रत्यये गुगागमः। फल्गुप्राति० स्त्रियाम् 'ऊङुतः' अ० ४.१.६६. सूत्रेण ऊङ्]

फल्ग्वेन महता (वचसा=वचनेन) ४.५.१४. [फल्गूरिति व्याख्यातम्। तस्य छान्दसं रूपम्]

फालाः फलन्ति विस्तीर्णां भूमिं कुर्वन्ति यैस्ते (कृषिसाधकाः) १२.६९. अयोनिर्मिता भूमिविलेखनार्थाः (कृषिसाधनपदार्थाः) ४.५७.८. [फल निष्पत्तौ (भ्वा०) धातोः 'हलश्च' इति करणे घञ्]

फेनम् चक्रवृद्ध्यादिना वर्धितं धनम् १.१०४.३. **फेनेन**=वर्द्धनेन १९.७१. [स्फायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'फेनमीनौ' उ० ३.३. सूत्रेण नक्प्रत्यये धातोः 'फे' आदेशो निपात्यते स (फेनः) यदोपहन्यते मृदेव भवति श० ६.१.३.३.]

फेन्याय फेनेषु बुदबुदाऽऽकारेषु साधवे (पुरुषाय) १६.४२. [फेनमिति व्याख्यातम्। ततः 'तत्र साधुरि' त्यर्थे यत्]

बकुरेण भासमानेन सूर्येण १.११७.२१. [बकुरः पदनाम निघं० ४.३. बकुरो भास्करो भयंकरो भासमानो द्रवतीति वा नि० ६.२६. बकुरेण ज्योतिषा नि० ६.२६.]

बट् सत्यम् प्र०—बडिति सत्यनाम निघ० ३.१०, ५.८४.१. अनन्तज्ञानम् (ईश्वरम्) ३३.३९. [बट् सत्यनाम निघं० ३.१०. बट्=सत्यम् नि० १०.३७.]

बदरम् बदरीफलवद्वर्णयुक्तम् (रूपम्) १९.२२. **बदरैः**=बदर्याः फलैः २१.३०. बदरीफलैरिव २१.३१. बदरी-फलैः १९.९०. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अरः प्रत्ययः। वकारस्य बकारो वर्णव्यत्ययेन। बद स्थैर्ये (भ्वा०) धातोर्वा अरः प्रत्ययः। यत् स्नीहा तद् बदरम् (अभवत्) श० १२.७.१.३.]

बद्धम् लग्नम् (एनः=कुपथ्यादिकमपराधं वा) ६.७४.३. **बद्धः**=नियुक्तः (अग्निः) १.१५८.४. नियमेन नियोजितः (अ०—वायुलोकः) १.२४.१३. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः क्तः]

बद्बधानस्य बन्धकस्य (वृत्रस्य=मेघस्य) प्र०—अत्र बन्ध-धातोश्चानश् 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः, हलादिशेषाऽभावश्च १.५२.१०. **बद्बधानान्**=प्र-बद्धान् (नदीकूलान्) ५.३२.१. सम्बद्धान् (उत्सान्=कूपान्) ५.३२.२. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोश्चानश्। विकरणव्यत्ययेन श्लुः। हलादिशेषश्च न भवति छान्दसत्वात्। बध संयमने (चुरा०) धातोर्वा यङ्लुगन्ताद् आत्मनेपदं कर्मणि कानच् छान्दसः। बद्बधानान्=बाबध्यमानान् नि० १०.९.]

बद्बधानाः बधं कुर्वाणाः (सीराः=नद्यः) ४.१९.८. प्रबन्धकर्त्र्यः (विदुष्यः स्त्रियः) ४.२२.७. [बद्बधान इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

बद्बधे वीभत्सते १.८१.५. प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति सन् हलादिशेषो न भवति १.८०.१३. [वध संयमने (चुरा०) धातोर्लिटि छान्दसं रूपम्]

बधस्नैः ये वधेन स्नान्ति पवित्रा भवन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ५.४१.१३. [वधोपपदे ष्णा शौचे (अदा०) धातोः 'आतोऽनुपसर्गे कः' इति कः प्रत्ययः]

बधान बन्धय बध्नाति वा प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः १.२६. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्लोटि 'हलः श्नः शानज्झौ' इति शानच्]

बधिरम् श्रोत्रविकलम् ३०.१०. [वधिरो बद्धश्रोत्रः नि० १०.३९. वन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः 'इषिमदिमुदि०' उ० १.५१. सूत्रेण किरच्]

बधिरा बधिराणि (कर्णा=कर्णानि) ४.२३.८. [बधिरं व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

बधेत् हन्यात् १०.८. हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिङि वधादेशश्छान्दसः ।

बध्नन् वध्नन्ति २१.५९. **बध्नीताम्**=बद्धां कुरुताम् ४.१९. [वन्ध वन्धने (क्र्या०) धातोर्लङ् अडभावः]

बध्नन् वद्धं कुर्वन् (यजमानः) २८.२३. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः शतृ]

बध्यमाने ताड्यमाने (दौर्गहे=दुर्गहने व्यवहारे) ४.४२.८. [बन्ध वन्धने (क्र्या०) धातोः कर्मणि शानच्]

बन्धनात् लया-सम्बन्धात् ३.६०. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्ल्युट्]

बन्धनानि प्रयोजनानि १.१६३.३ [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्ल्युट्]

बन्धनासः बन्धकाः (विनाशका व्यवहाराः) ५.१२.४. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट् । ततो जसोऽसुक्]

बन्धम् बध्नाति येन तम् (अज्ञानम्) १२.६३. **बन्धानाम्**=दुःखकारकत्वेन निरोधकानाम् (व्यवहाराणाम्) १२.६४. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्घञ्]

बन्धुक्षिद्भ्यः बन्धून् निवासयद्भ्यः (पुरुषेभ्यः) १.१३२.३. [बन्धूपपदे क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः क्विप् । 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुग्' इति तुगागमः]

बन्धुता बन्धूनां भावः (भ्रातृत्वम्) ३.६०.१. [बन्धु-प्राति० भावे तल् । ततष्टाप्]

बन्धुपृच्छा यौ वन्धून् पृच्छतस्तौ (सभासेनेशौ) ३.५४.१. [वन्धूपपदे प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोः 'वा छन्दसि' इति शः प्रत्ययः । 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

बन्धुरे प्रेम-वन्धने ६.४७.९. दृढबन्धनयुक्ते (रथे) १.१३९.४. **बन्धुरेषु**=यानयन्त्राणां बन्धनेषु १.६४.९. [वध्नाति मार्दवेनेति विग्रहे बन्ध वन्धने (क्र्या०) धातोः 'मद्गुरादयश्च' उ० १.४१. सूत्रेण उरच्]

बन्धुरेव यथा बन्धुरे तथा ३.१४.३. [वन्धुर-इवपदयोः समासः]

बन्धुः दुःखविनाशकत्वेन सुखप्रदः (ईश्वरः) १.१५४.५ भ्रातेव मान्यः सहायः भा०—सर्वदा सहायकारी (ईश्वरः) ३२.१०. भ्रातृवत्प्राणः १.१६४.३३. भ्राता के समान सुखदायक (परमात्मा) सं० वि० ६, ३२.१०. दुःखनाशक और सहायक (ईश्वर) आर्याभि० २.६, ३२.१०. [प्रेम्णा बध्नातीति विग्रहे वन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः 'शृस्वृस्निहि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः प्रत्ययः । बन्धुः धननाम निघं० २.१०. बन्धुः संबन्धनात् नि० ४.२१.]

बन्ध्वेषे बन्धूनामिच्छायै ५.५२.१६. [बन्धूपपदे इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोस्तुमर्थे से-प्रत्ययः । प्रत्ययसकारस्य लोपश्छान्दसः]

बप्सतः भक्षयतः (जनस्य) ७.५५.२. [भस भर्त्सनदीप्त्योः (जु०) धातोर्लटि 'घसिभसोर्हलि' इति उपधालोपे 'खरि चे' ति चर्त्वम् । बप्सति अत्तिकर्मा निघं० २.८.]

बप्सता बप्सन्तौ (अ०—स्त्रीपुरुषौ) प्र०—अत्र 'भस भर्त्सनदीप्त्योः' इत्यस्माल्लटः शत्रादेश 'घसिभसोर्हलि च' अ० ६.४.१००. अनेनोपधालोपः, सुगममन्यत् । भस धातोर्भर्त्सन इत्यर्थो नवीनो भक्षण इति प्राचीनोऽर्थः १.२८.७. [भस भर्त्सनदीप्त्योः (जु०) धातोः शतृ । ततः प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः । शेषं स्पष्टम् । बप्सता=भुञ्जाते नि० ९.३५.]

बबाधे बाधते ४.२३.७. [बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

बबृहाणस्य प्रवृद्धस्य (अद्रेः=मेघस्य) ५.४१.१२. [बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

बभसत् दीपयेत् भर्त्स्येत् ४.५.४. [भस भर्त्सनदीप्त्योः (जु०) धातोर्लेट्]

बभाज सेवते १.१६४.८. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

बभूतु भवतु प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः १.१२७.१०. **बभूथ**=भवति प्र०—अत्र 'बभूथाततन्थ-जगृभ्म०' अ० ७.२.६४. इति निपातनादिडभावः १.६९.१. भवसि १.१७८.१. भवेः ६.२१.८. भव ४.१०.२. भवत ६.५१.६. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। शपः श्लुश्छान्दसः। अन्यत्र लिट्]

बभूयात् भवेत् प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति लिटः स्थाने लिङ् तद्वत् कार्यञ्च। समी०—अत्र सायणाचार्येण लिटः स्थाने लिङित्युच्चार्य तिङां तिङो भवन्तीत्यशुद्धं व्याख्यातम् १.२७.२. भृशं भूयात् ४.५१.४. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिटः स्थाने लिङ्। लिङ्वच्च कार्यम्। क्रियासमभिहारे वा यङ्लुगन्ताल् लिङ्]

बभूव भवसि प्र०—अत्र 'बभूथाततन्थ०' इतीडभावो निपातनात् १.१०२.९.भवतु प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः १.१२७.१०. भवेत् १६.११. भवति १७.३१. भवत ६.५१.६. है सं० वि० ५, २३.३. भवेः १४.४५. **बभूवतुः**=भवतः ५.१६.४. **बभूवथुः**=भवतः १.९३.९. **बभूवुः**=भवन्ति ४.३३.१. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

बभूवान् भविता १.१६५.८. भवति ४.१८.९. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

बभूवुषी अतिशयेन विद्यासु भवन्ती (विदुषी स्त्री) १.१६४.४१. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः। ततः स्त्रियां ङीप्। धातोर्वुगागमश्छान्दसः]

बभ्रवः नकुलवर्णवद्वर्णयुक्ताः भा०—धारकाः (पशवः) २४.९. सर्वस्य धारकाः पोषका वा (पशवः) २४.१४. पुष्टिकर्त्तारः (गवादयः) २४.१८. **बभ्रुम्**=धारकं पोषकं वा (विद्वांसं जनम्) ७.४४.३. **बभ्रुः**=नकुलसदृशवर्णः (पशुः) २४.२. धारकः पोषको वा (अश्ववद्राजा) ५.३०.१४. पिङ्गधूम्रवर्णः (भा०—राजा) १६.६. पालकः (सद्वैद्यः) २.३३.५. पूर्ण विद्याओं का धर्त्ता (ब्रह्मचारी जन) सं० वि० ९३, अथर्व० ११.५.२६. धूम्रवर्णः (पशुः) २९.५८. **बभ्रू**=सत्यधारकौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.३२.२४. सकलविद्याधारकावध्यापकोपदेशकौ ४.३२.२२. **बभ्रूणाम्**=भरणानां धारकाणां रोगिणाम् १२.७५. **बभ्रो**=धर्त्तः पोषक (रुद्र=सर्वरोगनिवारक वैद्य) २.३३.१५. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'कुर्भ्रश्च' उ० १.२२. सूत्रेण कुः प्र० द्वित्वं च। बभ्रूणाम्=बभ्रुवर्णानां हरणानां भरणानामिति वा नि० ९.२८. सोमो वै बभ्रुः श० ७.२.४.२६. एतद्वै ब्रह्मणो रूपं यद् बभ्रूः (गौः) काठ० १३.८. बभ्रुः पिङ्गलो भवति मै० २.५.१.]

बभ्राणः पुष्यन् (सूनुः=सन्तानः) ३.१.८. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शतृ]

बभ्रिः धर्त्ता (राजपुरुषः) ३.१.१२. भर्त्ता धर्त्ता वा (राजा) ६.२३.४. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'आदृगमहनजनः०' इति किः लिड्वच्च]

बभ्रुकान् नकुलजातिविशेषान् (जन्तून्) २४.२६. [बभ्रुरिति व्याख्यातम्। ततः संज्ञायां कन्]

बभ्रुधूताः बभ्रुभिर्धृतविद्यैर्धूताः पवित्रीकृताः (सोमाः=पदार्थाः) ५.३०.११. [बभ्रु-धूतपदयोः समासः। बभ्रुरिति व्याख्यातम्। धूतः=धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोः क्तः। अत्र धातोः पावनमर्थो धातूनामनेकार्थत्वात्]

बभ्रुनीकाशाः पालक-सदृशाः (त्रैयम्बकाः=गवादयः) नकुलसदृशाः (धूम्राः=धूम्रवर्णा गवादयः) २४.१८. [बभ्रु-नीकाशपदयोः समासः। नीकाश उपमार्थे। नीकाशः=नि+काशृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्घञ्। 'इकः काशे' इत्युपसर्गस्य दीर्घः]

बभ्रूषु धर्मं धरन्तीषु (स्त्रीषु) १, १४०.६. **बभ्रूवै**=बलधारकाय (अन्नाद्याय) २०.२८. [बभ्रु प्राति०=स्त्रियामूङ्। बभ्रुरिति व्याख्यातम्]

बभ्रे बिभर्त्ति ३.१.१०. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लट्]

बभ्लुशाय यो बभ्लुषु राज्यधारकेषु शेते तस्मै (व्याधिने=रोगिणे जनाय) १६.१८. [बभ्रूपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोर्डः। रेफस्य लत्वं कपिलकादित्वात्]

बम्भारिः बन्धस्याऽरिः (भगवान्) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन धस्य भः ५.३२. स्वभक्तों और सर्वजगत् का पालन तथा धारण करने वाला (ईश्वर) आर्याभि० २.१७, ५.३२. **बम्भारे**=बन्धनानां सुविचारनिरोधकानां शत्रुस्तत्सम्बुद्धौ (मित्र=विद्वान् सभाध्यक्ष) ४.२७. [बन्ध-अरिपदयोः समासे वर्णव्यत्ययेन धस्य भकारः]

बर्जहम् अन्धकारवर्जकं प्रकाशं हन्ति तत् (तमः=अन्धकारम्) १.९२.४. [बर्जोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्डः। बर्जः=वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्घञ्]

बर्स्वैः दन्तपृष्ठैः २५.१.

बर्हणा सर्वसुखप्रापिकया क्रियया प्र०—बर्हणा इति

पदनामसु पठितम् निघं० ४.३. अनेन प्राप्त्यर्थो गृह्यते १.५२.११. वर्धनेन ६.४४.६. वृद्धियुक्तेन (व्यवहारेण) १.५४.३. [बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोरौणादिको बाहु० अन्। बर्हणा पदनाम निघं० ४.३. बर्हणा परिबर्हणा नि० ६.१८.]

बर्हणा वर्धते या सा (दिद्युत्=विद्युत्) १.१६६.६. **बर्हणाः**=वर्धमानाः (तुजः=सेनाः) ३.३४.५. [बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोश्छान्दसः स्त्रियां युच् । ततष्टाप्]

बर्हणा वृह्यते येन तत् (रजः=पृथिव्यादिलोकजातम्) १.५६.५. [बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्ल्युटि 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

बर्हणा वर्धकौ (मित्रावरुणौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७१.१. [बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि छान्दसो युच् । ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

बर्हणावत् बर्हणं वृद्धिकारकं विज्ञानं धनं वा विद्यते यस्मिँस्तत् (ज्योतिः=विज्ञानदीप्तिः) ३.३९.८. **बर्हणावता**=बहुविधं बर्हणं वर्द्धनं विद्यते यस्य तेन (मनसा) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् १.५४.५. [बर्हणेति व्याख्यातम् । ततो भूम्न्यर्थे मतुप्]

बर्हय वर्धय ७.३१.१२. नितरामुत्पादय २.२३.८. निस्सारय १.१३३.५. [बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

बर्हिरिव परिबृंहकं छेदकमुदकमिव प्र०—वर्हिरित्युदकनाम निघं० १.१२, १.११६.१. जलमिव ५.६२.५. कुशपिञ्जुली के समान सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.१.८. [वर्हिष्-इवपदयोः समासः । बर्हिष् इति व्याख्यास्यते]

बर्हिषदम् यो बर्हिष्याकाशे सीदति तम् (यज्ञम्) १९.३२. यो बर्हिरन्तरिक्षे सीदति तम् (वृजनं=योगबलम्) ७.१२. **बर्हिषदः**=ये बर्हिष्युत्तमायां सभायां सीदन्ति ते (पितरः=न्यायेन पालका पित्रादयः) १९.५५. उत्तमाऽऽसने सीदन्ति ते (पितरः) १९.५६. ये बर्हिषि सर्वोत्तमे ब्रह्मणि विद्यायां च निषण्णाः (पितरः) ऋ० भू० २६०, १९.५६. **बर्हिषदाम्**=ये बर्हिषि सभायां सीदन्ति ते (पितॄणां=जनकजननीनाम्) २४.१८. **बर्हिषदे**=यः प्रजाया वर्धके व्यवहारे तिष्ठति तस्मै भा०—प्रजावर्धकाय (विद्वत्पुरुषाय) १७.१२. [बर्हिष् उपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप् । पूर्वपदस्य षकारलोपश्छान्दसः । बर्हिष् इति व्याख्यास्यते]

बर्हिषदम् बृहत्सु पदार्थेषु सीदन्तम् (शर्धः=बलम्) २.३.३. वर्हिष्युत्तमाऽऽसनेऽन्तरिक्षे वा सीदन्तम् (राजानम्) ५.४४.१. [व्याख्यातम् मासा वै पितरो बर्हिषदः तै० १.६.८.३. बर्हिषत् महन्नाम निघं० ३.३.]

बर्हिषदा ये बर्हिष्यन्तरिक्षे सीदतस्ते (उषासानक्ता=रात्रिप्रातर्वेले) ७.२.६. [बर्हिषदिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः]

बर्हिषः जलस्य २३.३८. अवकाशस्य ६.१२.१. विद्यावर्धकान् (नॄन्=नायकाञ्जनान्) ७.३३.१. वृद्धाः (विद्वत्पुरुषाः) १०.३२. प्रवृद्धाः (विद्वांसो जनाः) ७.४३.३. अन्नादिप्रापकाः (यवमन्तः=कृषीवलाः) १९.६. **बर्हिषा**=महता पुरुषार्थेन १९.१७. उत्तमेन कर्म्मणा १८.६३. अन्तरिक्षेण २१.४८. सुखवर्द्धकेन कर्मणा २०.५९. **बर्हिषि**=बृंहन्ते वर्धयन्ते येन तत् बर्हिर्ज्ञानं प्राप्तं कर्मकाण्डं वा तस्मिन् २.१८. उत्तमे व्यवहारे १.८६.४. उपवर्धयितव्ये (यज्ञे=शिल्पव्यवहारे) १.१०९.५. उत्तम आसने स्थाने वा ६.५२.१३. अत्युत्तमे (यज्ञे) १.१०१.९. सभायाम् ७.१३.१. आकाशमिव व्याप्ते (प्रिये=कमनीये परमात्मस्वरूपे) २८.२७. अवकाशे ६.६८.११. हृदयाऽन्तरिक्षे ऋ० भू० १२४, ३१.९. उत्तमे साधुनि (यज्ञे) २६.२३. उत्तमायां विद्वत्सभायाम् २८.४. मानसे ज्ञानयज्ञे ३१.९. यज्ञकुण्डे ६.५२.१७. बृहन्ति वर्धन्ते सर्वे पदार्था यस्मिन्नन्तरिक्षे तस्मिन् प्र०—बृंहेर्नलोपश्च उ० २.१०९. अनेन इसिः प्रत्ययो नकारलोपश्च १.१६.६. अन्तरिक्षस्थे जगति २.६.८. वृद्धिकरे व्यवहारे ७.४४.२. **बर्हिषे**=अन्तरिक्षगमनाय प्र०—बर्हिरित्यन्तरिक्षनामसु पठितम् निघं० १.३, २.१. **बर्हिः**=बृहन्ते सर्वे पदार्था यस्मिँस्तदन्तरिक्षम् २.२२. शुद्धमुदकम् २.१. संवर्द्धितं तेज इव विज्ञानम् १.१८८.४. उत्तममासनम् ४.९.१. अतीव विशालम् (छर्दिः=गृहम्) ६.६७.२. बृहत् (गृहम्) १.१४२.५. वर्द्धनम् १.१४४.६. अन्तरिक्षमुत्तमं वस्तुजातम् १.४७.८. उपगतं वृद्धम् (व्यवहारम्) १.१४२.९. उत्तमं स्थानमाकाशं वा ७.२४.३. उत्तमां सभाम् २८.४. अतीवोत्तमम् (सदः=आसनम्) ३.२४.३. वृद्धमुदकम् ३.३५.७. उपवर्द्धको दर्भसमूहः १८.२१. उत्तमं प्रवृद्धं हविः ७.७.३. घृतम् ६.११.५. प्रतिगृहादिकम् प्र०—बर्हिरिति पदनामसु पठितम् निघं० ५.२. तस्मादत्र ज्ञानार्थो गृह्यते १.१३.९. निवासप्रापकं स्थानम् प्र०—अत्र प्राप्त्यर्थो गृह्यते १.१३.७. वर्द्धनम् १९.९१. अन्तरिक्षवद् व्यापकं ब्रह्म भा०—यथाऽऽकाशं सर्वासु दिक्षु पृथिव्यादिषु च व्याप्तमस्ति तथा जगदीश्वरः सर्वत्र व्याप्तो-

ऽस्ति २६.२६. उत्तमं सर्वेषां वर्धकं कर्म्म ७.३६.२. उत्तमं घृतादिकम् ७.२.४. उत्तमं गृहं शरीरं वा ७.२.८. अन्तरिक्षस्थमुत्तममासनम् ७.५७.२. **बर्हींषि**=अन्तरिक्षाऽवयवाः २८.२१. [वृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'बृंहेर्नलोपश्च' उ० २.१०९. सूत्रेण इसिः प्र० नलोपश्च। बर्हिः अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. उदक नाम निघं० १.१२. पदनाम निघं० ५.२. बर्हिः परिबर्हणात् नि० ८.६. प्रजा वै बर्हिः कौ० ५.७. पशवो वै बर्हिः ऐ० २.४. ओषधयो बर्हिः ऐ० ५.२८. अयं लोको बर्हिः श० १.४.१.२४. शरद् वै बर्हिरिति श० १.५.३.१२. क्षत्रं वै प्रस्तरो विश इतरं बर्हिः श० १.३.४.१०. भूमा वै बर्हिः श० १.५.४.४.]

बर्हिष्ठम् बर्हिषि यज्ञे तिष्ठतीति (विद्वांसं जनम्) ३.१३.१. [बर्हिष् उपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः। सलोपश्छान्दसः। बर्हिष्ठः महन्नाम निघं० ३.३.]

बर्हिष्ठाम् यो बर्हिषि अन्तरिक्षे तिष्ठति तम् (सोमम्=ओषधिगणमिवैश्वर्यम्) ३.४२.२. [बर्हिष् इति व्याख्यातम् तदुपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। सलोपश्छान्दसः]

बर्हिष्मतः अन्तरिक्षस्य सम्बन्धो विद्यते येषां तान् (भा०—वायुजलादिपदार्थान्) २८.१२. **बर्हिष्मते**=बर्हिषः प्रशस्ता ज्ञानादिगुणा विद्यन्ते यस्मिन् व्यवहारे तन्निष्पत्तये १.५१.८. उत्तमगुणकर्मस्वभावविज्ञानप्राप्तये पं० वि० विज्ञानवते (कारवे=कर्मकर्त्रे मनुष्याय) १.५३.६. प्रवृद्धविज्ञानाय (विद्वज्जनाय) ५.२.१२. सर्वोपकारक यज्ञ के विध्वंस करने वाले (दुष्ट) के लिए आर्याभि० १.४. [बर्हिष्प्राति० मतुप्]

बर्हिष्मती प्रशस्त-वृद्धियुक्ता (रातिः=दत्तिः) १.११७.१. [बर्हिष्प्राति० मतुबन्तान् ङीप्]

बर्हिष्येषु बर्हिष्षूत्तमेषु साधुषु (निधिषु=धनकोशेषु) १६.५७. [बर्हिष्प्राति० 'तत्र साधु' रिति यत्]

बर्हीत् बर्हति १.१००.१८. **बर्हीः**=उत्पाटय ४.१६.१२. [बृहू उद्यमने (तुदा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

बलगम् बलप्रापकं, बलं गच्छन्तं, राज्यबलप्रापकम्, आत्मबलप्रापकम् (अ०—यज्ञम्) ५.२३. [बलोपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्डः प्रत्ययः]

बलगह्नम् यो बलानि गाहते तम् (बलवत्पुरुषम्) प्र०—अत्र गाहू-धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्युः प्रत्ययो ह्रस्वत्वं च ५.२३. **बलगह्नः**=यथा यो बलानि शत्रुसैन्यानि गाहते तथाभूतोऽहम् (यजमानः पुरुषः) ५.२५. यथाऽहं बलानि स्वसैन्यानि गाहे तथा व्यूहशिक्षया विलोडयन् (यजमानपुरुषः) ५.२५. **बलगह्नौ**=यौ बलानि गाहेथे, तौ (प्रजासभाद्यध्यक्षौ) ५.२५. [बलोपपदे गाहू विलोडने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्युः, धातोर्ह्रस्वश्च]

बलदाः यो बलं ददाति सः (जगदीश्वरः) २५.१३. शरीर, आत्मा और समाज के बल का देने वाला (परमात्मा) सं० वि० ५, २५.२३. मानसिक-विज्ञानबल इन्द्रियसम्बन्धि-श्रोत्रादि की स्वस्थता तेजोवृद्धि शरीरसम्बन्धि-महापुष्टि दृढाङ्गता और वीर्यादिवृद्धि इन तीनों बलों का दाता (ईश्वर) आर्याभि० २.४८ २५.१३. शरीरेन्द्रिय-प्राणाऽऽत्ममनसां पुष्ट्युत्साहपराक्रमदृढत्वप्रदः (ईश्वरः) ऋ० भू० ६, २५.१३. [बलोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

बलम् सामर्थ्यम् ११.८२. सर्वाऽङ्गदृढत्वम् १६.६. बलयुक्तं मेघम् १.६२.४. सेनादिकम् १.३७.१२. बलं पराक्रमं वा ३.५३.१८. ब्रह्मचर्यादिसुनियमाचरणेन शरीर-बुद्ध्यादि-रोगनिराकरणं, दृढाङ्गतानिश्चलबुद्धित्वसम्पादनं, भीषणादिकर्मयुक्तम् (व्यवहारम्) ऋ० भू० १०२, अथर्व० १२.५.७. महाबलेश्वरः ऋ० भू० १४६, १६.६. आवरकं मेघम् २.२४.३. भा०—स्वाऽङ्गपुष्टिम् २५.६. अनन्तबलयुक्त (ईश्वर) स० प्र० २४६, १६.६. **बलस्य**=बलवतः शत्रोर्मेघस्य १.५२.५. **बलाय**=योगसामर्थ्याय १६.६१. बलवृद्धये ३०.६. पुष्टत्वाय २०.३. **बलेन**=सैन्येन पराक्रमेण वा ६.६. भा०—ब्रह्मचर्येण शरीरात्मबलं तेन २१.३२. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः पचाद्यच्। भकारस्य बकारो रेफस्य लकारश्च बाहुलकादेव। बल प्राणने (भ्वा०) धातोर्वा अच्प्रत्ययः। बलं कस्मात् बलं भरं भवति बिभर्तेः नि० ३.६. बल इति मेघनाम निघं० १.१०. बलं वा द्रविणं यदेनेनाभिद्रवन्ति नि० ८.१. बलं हृदये (श्रितम्) तै० ३.१०.८.८. इन्द्रो बलपतिः श० ११.४. ३.१२. बलं वै मरुतः काठ० २६.६. बलं वै सहः श० ६.६.२.१४. बलं विश्वे देवाः मै० ४.७.८. आत्मा वै बलम् काठसंक० ७२.५.]

बलवान् बहुबलयुक्तः (सेनाऽध्यक्षो राजा) ६.६. [बलप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

बलविज्ञायः यो बलं बलयुक्तं सैन्यं कर्त्तुं जानाति सः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. [बलोपपदे विपूर्वाज् ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः कः। युगागमः]

बलः बलवान् (इन्द्रः=राजा) ३.३०.१०. [बल-प्राति० मतुबर्थीयस्य लुक्]

बलाका विशेषपक्षिणी २४.३३. **बलाकाः**=बलाकानां स्त्रियः २४.२२. [बलाकप्राति० स्त्रियां टाप् । सौरी बलाका मै० ३.१४.१४.]

बलाशस्य आविर्भूतकफस्य १२.९७.

बलिम् भोग्यं पदार्थम् ७.१८.१९. भक्ष्यभोज्यादिपदार्थसमुदायम् ५.१.१०. संवरणम् (स्वः) १.७०.५. [बल संवरणे सञ्चरणे च (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्य इन्' उ० ४.११८. सूत्रेण इन् । अथवा वर्णिः सौत्रो धातुः, ततः 'वर्णेर्बलिश्चाहिरण्ये' उ० ४.१२४. सूत्रेण इन्प्रत्ययो निपात्यते । वस्य बकारश्छान्दसः]

बलिहृतः या बलिं हरन्ति ताः (विशः=प्रजाः) ७.६.५. ['बलि' इत्युपपदे हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

बल्मीकान् मार्गान् २५.८. [बल संवरणे सञ्चरणे च (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कीकन् मुडागमश्च]

बष्कये द्रष्टव्ये (वत्से) १.१६४.५. [बष्क दर्शने (चुरा०) धातोरौणा० इन्]

बष्किहान् चिरप्रसूतान् (भा०—पशून्) २४.१६.

बस्तः आच्छादकः (भा०—मूर्खो जडधीः) १.१६१.१३. [वस आच्छादने (अदा०) धातोरौणादिकः क्तो बहुलवचनात् । व-बयोरभेदः]

बस्रि सुख-स्तम्भनात् प्र०—'वसु-स्तम्भे' इत्यस्मादौणादिको रिक्, विभक्ति-लुक् च १.१२०.१२. [वसु स्तम्भे (दिवा०) धातोरौणा० रिक् । विभक्तेश्च लुक्]

बहवः अनेके (दभ्राः=हिंसका जनाः) ४.२५.५. **बहुभ्यः**=अनेकेभ्यः पदार्थेभ्यः १.९३.४. **बहुम्**=अधिकं कर्म्म १७.५०. **बहुः**=अधिकः, भा०—अत्यन्तः (सौमनसः=आनन्दः, सुहृद्भावः) ३.४२. बहुगुणः (इषुधिः) २९.४२. वहुत (प्रीति) सं० वि० १४६, ३.४२. **बहोः**=बहुविधस्य संसारस्य २९.९. [बृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'लङ्घिबंह्योर्नलोपश्च' उ० १.२९. सूत्रेण उः । अनन्तो वै बहुः ऐ० ५.२.]

बहिर्द्धा या वहिर्बाह्ये देशे धरति शब्दान् सा (वाक्) ५.११.[वहिर्‌उपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप्]

बहु अधिकम् (भा०—शूद्रकुलम्) २३.३१. अनेक (शुभगुणकर्मस्वभाव) सं० वि० ९३, अथर्व० ११.५.२६. [बहु कस्मात् प्रभवतीति सतः नि० ३.१३.]

बहुकार बहूनां सुखानां कर्त्त (राजन्) १०.२८. [वहूपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण्]

बहुधा वहुप्रकारैः ३१.१९. वहुत प्रकार के सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. [बहुसंख्यावाचिनः प्राति० 'संख्याया विधार्थे धा' अ० ५.३.४२. सूत्रेण धा]

बहुपाय्ये बहुभी रक्षणीये (स्वराज्ये=स्वकीये राष्ट्रे) ५.६६.६. [वहूपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोर्ण्यत्]

बहुप्रजाः वहुजन्मा (जीवः) १.१६४.३२. [बहूपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः । समासान्तोऽसिच् छान्दसः]

बहुरूपाः बहूनि रूपाणि येषां ते (पशवः) २४.१४. बहुवर्णयुक्ताः (सञ्चराः=मार्गाः) २४.१७. [बहु-रूपपदयोः समासः]

बहुलम् पुष्कलम् (रयिं=धनम्) ३.१.१९. बहुपदार्थान्वितम् (शर्म=गृहम्) ६.५१.५. [बहूपपदे ला आदाने (अदा०) धातोः कः]

बहुलः यो बहूनि सुखानि लाति सः (अग्निः=अध्यापकः) २.१.१२. **बहुलाः**=ये वहूनि सुखानि युद्धकर्माणि लान्ति प्रयच्छन्ति ते (चमूषदः) १.५४.९. [बहुलमिति व्याख्यातम्]

बहुला या बहून् पदार्थान् लाति सा (पृथ्वी) १.१८९.२. **बहुलाम्**=वहूनि सुखानि ददाति या ताम् (प्रजां=पुत्रपौत्रप्रभृतिम्) १९.४८. **बहुले**=ये बहूनि वस्तूनि लातो गृह्णीतस्ते (द्यावापृथिवी) १.१८५.७. वहुपदार्थयुक्ते (पृथ्वी=भूम्यन्तरिक्षे) ४.२३.१०. बहूनर्थान् लान्ति याभ्यान्ते (अ०—विद्युदन्तरिक्षे) ११.३०. [बहुलं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप् । बहुले द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०.]

बहुला याभ्यां बहून् लाति तौ (गभस्ती=हस्तौ) ६.१९.३. [बहुलप्राति० प्रथमाद्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

बहुलाभिमानः बहुलो वहुविधोऽभिमानो यस्य सः (बहुसुसभ्यावृतो राजा) ३३.६४. [वहुल-अभिमानपदयोः समासः]

बहुसूवरी वहूनामपत्यानां जनयित्री (सूत्तमा पत्नी) २.३२.७. [वहूपपदे षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः क्वनिप् । 'वनो र च' इति स्त्रियां ङीप् रेफश्चान्तादेशः]

बह्वीनाम् अनेकासां द्यावापृथिव्यादीनां दिशां वा १.९५.४. **बह्व्यः**=अनेकाः (वीतपृष्ठाः=पूर्णविद्यासुशिक्षायुक्ता बालिकाः) १९.४४. **बह्वीः**=अनेकाः (त्रिगुणात्मिका मात्राः) १.१८८.५. बह्व्यः (अ०—गावः) प्र०—अत्र

वा च्छन्दसि' अ० ६.१.१०६. अनेन पूर्वसवर्णदीर्घादेशः १.१. [बहुप्राति० स्त्रियां 'बह्वादिभ्यश्च' अ० ४.१.४५. सूत्रेण ङीष् । बह्वीनाम्-बहुनाम नि० ६.१३.]

बंहिष्ठम् अतिशयेन वृद्धम् (शर्म्म=गृहम्) ५.६२.६ [बहुलप्राति० अतिशायन इष्ठन्प्रत्यये 'प्रियस्थिर०' इति 'बंहि' आदेशः]

बाढसृत्वा यो वाढेन प्रशस्तेन बलेन सरति सः (शूरो जनः) १.१२२.१०. [बाढोपपदे सृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्वनिप्]

बाढे प्रापणे १.१८१.७.

बाणवान् बहवो बाणा विद्यन्ते यस्य सः (सेनापतिः) १६.१०. [बाणप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

बाणाः ये बणन्ति शब्दायन्ते ते शस्त्राऽस्त्रसमूहाः १७.४८.

बाधताम् निवारयतु ६.४७.१२. **बाधते**=विलोडयति ६.६४.३. निवर्त्तयति ३३.९२. निवारयति १.३५.९. **बाधसे**=निवारयसि २.२३.५. **बाधस्व**=निर्वत्तय १९.३८. निवारय ३.१५.१. **बाधिष्ट**=बाधयन्तु ७.२३.३. **बाधे**=ताडयामि १.६१.२. नाशयामि ६.१६. [बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् लुङ् चापि]

बाधमानः निवारयन् भा०—दूरीकारयन् (दुन्दुभिः=दुन्दुभिरिव गर्जितसेनः दूरी कुर्वन्) २९.५६. १.३५.३. **बाधमानाः**=निवारयन्तः (विद्वांसः) १.९०.३. [बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोः शानच्]

बाधमाना निवारयन्ती (उषाः) ३.१५.१५. **बाधमानाः**=निवारयन्त्यः (देवीः=दिव्या विदुष्यो ब्रह्मचारिण्यः स्त्रियः) १७.५४. [बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

बाधः निरोधः ६.११.१. [बाध इति बलनाम निघं २.९.]

बाधितः विलोडितः (इन्द्रः=परमैश्वर्ययुक्तो जनः) ३.३०.३. **बाधिताय**=विलोडिताय (जनाय) ६.१८.१४. पीडिताय (मनवे=मनुष्याय) ६.४९.१३. [बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोः क्तः]

बाबधे बध्नाति ६.२९.५. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्लिट् । तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

बार्हताय बृहतां सम्बन्धिने (इन्द्राय=ऐश्वर्याय) २९.६०. [बृहत्प्राति० 'तस्येदमि' त्यण्]

बार्हस्पत्यः बृहस्पतिदेवताकः (शितिपृष्ठः पशुः) २४.२. **बार्हस्पत्याः**=बृहस्पतिदेवताकाः (शितिबाह्वादिपशवः) २४.२. [बृहस्पतिप्राति० 'सास्य देवता' इत्यर्थे ण्यः प्रत्ययः]

बाहवः भुजाः १७.४६. **बाहुभिः**=हस्तक्रियाभिः १.८५.६. **बाहुभ्याम्**=बलवीर्याभ्याम् ६.१. बलाऽऽकर्षणाभ्याम् ११.९. भुजाभ्याम् २५.३. अ०—धारणाकर्षणाभ्याम् २२.१. तेजोदृढत्वाभ्याम् १.२१. अनन्त बल और पराक्रम रूप दोनों बाहुओं से आर्याभि० २.३४, १७.१८. **बाहुम्**=बाधकं शत्रुम् २९.५१. **बाहुषु**=प्रचण्डदोर्दण्डेषु १.१६६.१०. **बाहुः**=बलं बलकारी वा (वायुः) २.३. वीर्यवत्तमकिरणसमूहस्थो यज्ञः १.२४. **बाहू**=बलवीर्ये ११.८२. बाधकौ भुजौ १.१६३.१. अतिबलपराक्रमयुक्तौ भुजौ १.१०२.६. बाधते याभ्यां बलवीर्याभ्यां तौ १०.२५. बलवीर्याभ्यामुपेतौ भुजौ ६.४७.८. बलवीर्याख्यौ २.५. बल और वीर्य नाम वाले बाहु प्र०—बाहुर्वै बलं, बाहुर्वै वीर्यम् शत० ५.४.१.१. स० प्र० ११४, ३१.११. **बाहून्**=बाहुवत् सहायिनः (दुर्जनान्) २.१४.४. **बाह्वोः**=बलाकर्षणयोरिव भुजयोः १.५२.८. [बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोः 'अर्जिदृशि०' उ० १.२९. सूत्रेण कुः । हकारश्चान्तादेशः । बाहू बाहुनाम निघं० २.४. बाहू कस्मात् ? प्रबाधत आभ्यां कर्माणि नि० ३.८. पञ्चदशौ हि बाहू श० ८.४.४.६. वीर्यं वाऽएतद्राजन्यस्य यद् बाहू श० ५.४.१.१७. तस्माद् बाहुवीर्यो (राजन्यः) बाहुभ्यां हि सृष्टः तां० ६.१.८. तस्माद्राजा बाहुबली भावुकः श० १३.२.२.५. बाहू वै मित्रावरुणौ श० ५.४.१.१५. बाहू वै स्रुचौ श० ७.४.१.३६.]

बाहवा बाहुना ५.६४.२. [बाहुप्राति० तृतीयैकवचनस्य स्थाने 'आङ्याजयारामुपसंख्यानम्' इति आङादेशः]

बाहवा बाहू इव (अध्यापकोपदेशकौ) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः २१.९. [बाहुप्राति० प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः]

बाहुजूतः बाहुभ्यां बलवान् (वीरपुरुषः) ५.५८.४. [बाहूपपदे जु (सौत्रो धातुः) वेगितायां गतौ धातोः क्तप्रत्यये दीर्घश्छान्दसः]

बाहुतेव यथा बाधते दुःखानि याभ्यां भुजाभ्यां बलवीर्याभ्यां वा तयोर्भावस्तथा १.४१.२. [बाहुता-इवपदयोः समासः । बाहुता=बाहुप्राति० भावे तल्]

बाहुवृक्तः यो बाहुभ्यां दुष्टान् वृङ्क्ते छिनत्ति सः (वीरजनः) ५.४४.१२. [बाहूपपदे वृजी वर्जने (रुधा०) धातोरौणा० बाहु० क्तः]

बाहुशर्द्धी बाह्वोः शर्द्धो बलं यस्य सः (इन्द्रः=सर्वसेनाऽधिपतिः) १७.३५. [बाहु-शर्धपदयोः समासे मत्वर्थे इनिः । शर्धः=बलनाम निघं० २.९.]

बाह्यतः बहिरपि वर्त्तमानः (ईश्वरः) ४०.५. भा०—सर्वस्य प्रकृत्यादेर्बाह्याभ्यन्तराऽवयवानभिव्याप्तं ब्रह्म ४०.५.

बाह्यम् बहिर्भवम् (अङ्गम्) २५.२. [बहिर्प्राति० भवार्थे 'बहिषष्टिलोपश्च' अ० ४.१.८५. वा० सूत्रेण यञ्]

बाह्वोजसः भुजबलस्य १.१३५.९. [बाहु-ओजस्-पदयोः समासः]

बिभर्त्ति दधाति १.१०५.४. धरति पुष्यति वा ३.५५.२२. धारण करता है सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.२४. **बिभर्षि**=धरसि १.५५.८. **बिभृत**=धरत पुष्यत ८.२६. धरत तेन पुष्यत वा १.३९.१०. **बिभृतः**=धरतः ३.४६.५. बिभृताम्=धरेताम् २९.४१. **बिभृथः**=धरथः ५.६२.६. बिभ्रति=धरन्ति ५.४७.४. भरन्ति ६.१६.४०. धरन्ति पोषयन्ति वा १.१०२.२. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोडपि]

बिभाय बिभेति ५.८३.२. **बिभीत**=भयं कुरुत ३.४१. डरो सं० वि० १४६, ३.४१. **बिभीयात्**=भयं कुर्य्यात् १.४१.९. [ञिभी भये (जु०) धातोर्लिट् । अन्यत्र लोट् लिङ् च । विभाय=विभ्यति नि० १०.११.]

बिभिदुः भिन्दन्तु १.८५.१० भिन्दन्ति ४.१६.६. **बिभेद**=भिन्द्यात् ३.३४.१० भिनत्ति २.४१.६. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लिट्]

बिभृतम् सबका धारण और पोषण करने वाला (ब्रह्म) आर्याभि० २.२४, ३२.९. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणादिके क्तप्रत्यये छान्दसं द्वित्त्वम्]

बिभृतः यो विविधं बिभर्त्ति सः (अग्निः=पावकः) २.१०.२. विविधद्रव्यविद्याधारकः (वायुः) १.७१.४. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

बिभ्यतुः भीषयेते प्र०—अत्र लडर्थे लिडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.६५.५. **बिभ्युः**=भयं प्राप्नुवन्तु १.९४.११. [ञिभी भये (जु०) धातोर्लिट्]

बिभ्युषः यो बिभेति तस्य (शत्रोः) ६.२३.२. **बिभ्युषे**=भयं प्राप्ताय (कण्वाय=मेधाविने जनाय) १.३९.७. [ञिभी भये (जु०) धातोर्लिटः क्वसुः]

बिभ्युषी भयप्रदा (उषाः=प्रातर्वेला) ४.३०.१०. [ञिभी भये (जु०) धातोर्लिटः क्वसौ स्त्रियां ङीप्]

बिभ्रत् विद्यां धरन् (वसिष्ठः=आप्तो विद्वान्) ७.३३.१४. धरन्तसन् (इन्द्रः=राजा) ४.२२.१. धारयन् (पुरुषः) ३.४१. धारण करता हुआ सं० वि० १४६, ३.४१. **बिभ्रतम्**=धरन्तम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) २८.३२. **बिभ्रतः**=विद्यासुखेन सर्वान् पुष्यतः (विदुषो जनस्य) १.१२२.१३. धारकान् पोषकान् (भा०—शरीरात्मपुष्टिकरान् पदार्थान्) ६.५५.६. धारयन्तः (गृहाः=गृहाश्रमस्था मनुष्याः) ३.४१. धारयन्तः पोषयन्तश्च (मनुष्याः) ३.५६. धरन्तः (अ०—वीरजनाः) १७.६५. **बिभ्रते**=धत्रे (वेधसे=मेधाविने जनाय) ३.१०.५. **बिभ्रतौ**=धरन्तौ (नरा=राजामात्यौ) ५.६४.७. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शतृ]

बिभ्रता धरन्तौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.४६.६. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शत्रन्ताद् प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

बिभ्रती धरन्ती (इन्द्रः=विद्युत) ३.३०.१४. **बिभ्रतीः**=धरन्त्यः पोषयन्त्यः (आपः=जलानि) २.१३.२. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

बिभ्रती धरन्त्यौ (भूमिसूर्यौ) ५.५६.८. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शत्रन्तान् ङीपि द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः]

बिलम् भरणं धारणम् अ०—ब्रह्मचर्यधारणम् ११.५९. जलसमूहम् १.११.५. गर्त्तम् १.३२.११. [बिलं भरं भवति बिभर्त्तेः नि० २.१७.]

बिल्मिने प्रशस्तं बिल्मं धारणं वा विद्यते यस्य तस्मै (पुरुषाय) १६.३५. [बिल्मप्राति० मत्वर्थे इनिः]

बिल्मैः प्रदीप्तसाधनैः २.३५.१२. [बिल्मं भिल्मं भासनमिति वा नि० १.२०]

बिसखा इव यो बिसं कमलतन्तुं खनति तद्वद्वर्त्तमानाः (विद्वांसो जनाः) ६.६१.२. [बिसखा-इवपदयोः समासः । बिसखा=बिसोपपदे खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोः 'जनसनखनक्रमगमो विट्' इति विट् । 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इत्याकारादेशः । बिसं बिस्यतेर्भेदनकर्मणो वृद्धिकर्मणो वा नि० २.२३.]

बीजम् यवादिकं सिद्धिमूलं वा १२.६८. वपनाऽर्हम् ५.५३.१३. विज्ञानाऽऽख्यम् (सिद्धिमूलम्) ऋ० भू० १५९, १२.६८. वीर्य को सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३८. [बीजमित्यपत्यनाम निघं० २.२.]

बीभत्सायै भर्त्सनाय ३०.१७. [बध संयमने (चुरा०)

धातोः 'मानवधदान्०' इति स्वार्थे सन्नन्तात् स्त्रियाम् अ-प्रत्ययः]

बीभत्सुः याऽभयप्रदा सा (माता=पृथिवी] १.१६४.८. [बध संयमने (चुरा०) धातोः स्वार्थे सन्नन्ताद् उः]

बीभयत् भयितुं शक्नोति १.८०.१२. [ञिभी भये (जु०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन द्विविकरणता]

बीरिटे अन्तरिक्षे ७.३९.२. [बीरिटं तैटीकिरन्तरिक्षमेवमाह। पूर्वं वयतेरुत्तरमिरतेर्वयांसीरयन्त्यस्मिन् भांसि वा नि० ५.२७. बीरिटमन्तरिक्षं भियो वा भासो वा ततिः। बीरिटे गणे मनुष्याणाम् नि० ५.२७.]

बुधन्त बोधयन्ति ७.९.४. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन श आत्मनेपदं च। अडभावश्च]

बुधानः बोधयन् (श्लोकः=वाक्) ४.२३.८. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोः 'युधिबुधिदृशः किच्च' उ० २.९०. सूत्रेण आनच् किच्च बुध। अवगमने (भ्वा०) धातोर्वा शानच्। व्यत्ययेन शः। मुकोऽभावश्च। बुधानः=बोधयन् नि० १०.४०.]

बुधानाः प्रवोधयन्त्यः (देवीः=विदुष्यः स्त्रियः) ४.५१.८. [बुवान इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

बुधि वोधे प्र०—अत्र सम्पदादिलक्षणः क्विप् १.१३७.२. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

बुध्नम् प्राणवलसम्वन्धिविज्ञानम् प्र०—इदमपीतरद् बुध्नमेतस्मादेव वद्धा अस्मिन् धृताः प्राणा इति नि० १०.४४, १.९५.८. शरीरम् १.५२.६. **बुध्नः**=यो बोधयति सर्वान् पदार्थान् वेदद्वारा सः (अग्निः=परमेश्वरः) १.९६.६. बुध्नमन्तरिक्षं निवासस्थानं विद्यते यस्य सः (सूर्यः) प्र०—अत्राऽर्शआदित्वादच् ३.५५.७. बद्धा आपो यस्मिन् स बुध्नो मेघः १.२४.७. **बुध्नात्**=अन्तरिक्षात् १.१४२.३. **बुध्ने**=वघ्नन्त्यापो यस्मिँस्तस्मिन्नन्तरिक्षे ३.३९.३. [बुध्नमन्तरिक्षं बद्धा अस्मिन् धृता आप इति वा। इदमपीतरद् बुध्नमेतस्मादेव वद्धा अस्मिन् धृता प्राणा इति नि० १०.४४. बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः 'बन्धेर्ब्रधिबुधी च' उ० ३.५. सूत्रेण नक् धातोर्बुधादेशश्च]

बुध्न्यम् बुध्नेऽन्तरिक्षे भवम् (अहिं=मेघम्) १०.१९. **बुध्न्यः**=अन्तरिक्षस्थः (अहिः=मेघः) १.१८६.५. अन्तरिक्षे भवः (अहिः) ६.४९.१४. सब जगत् के मूल कारण और अन्तरिक्ष में भी सदा पूर्ण (ईश्वर) आर्याभि० २.१८, ५.३३. बुध्नेऽन्तरिक्षे व्याप्तः (मेघः) २.३१.६. **बुध्न्याः**=अन्तरिक्षाऽन्तर्गत दिशादि पदार्थ आर्याभि० २.२८, १३.३. बुध्ने जलसम्बन्धेऽन्तरिक्षे भवाः सूर्यचन्द्रपृथिवीतारकादयो लोकाः १३.३. बुध्नेऽन्तरिक्षे भवा मेघाः ७.५६.१४. **बुध्न्याय**=बुध्ने जलबन्धनेऽन्तरिक्षे भवाय मेघायेव वर्त्तमानाय दात्रे १६.३२. [बुध्नप्राति० भवार्थे यत्। योऽहिः स बुध्न्यः बुध्नमन्तरिक्षं तन्निवासात् नि० १०.४४. दिशा वाऽअस्य (सूर्यस्य) बुध्न्या उपमा विष्ठाः श० ७.४.१.४४.]

बुध्न्या बुध्न्यानि अन्तरिक्षस्थानि (वसूनि=द्रव्याणि) ७.६.७. [बुध्न्यमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

बुध्यमाना उत्तम शिक्षा को प्राप्त (वरानना स्त्री) सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.३१. सज्ञान हुई (वरानना स्त्री) सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७५. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

बुध्यस्व जानीहि १५.५४. अच्छी प्रकार जान सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७५. [बुध अवगमने (दिवा०) धातोर्लोट्]

बुबुधानः विजानन् (विद्वज्जनः) ७.४४.३. **बुबुधानाः**=सम्बोधयुक्ताः (नरः=नायका जनाः) ५.३०.२. विजानन्तः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ४.१.१८. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्। शानचि वा द्वित्वं छान्दसम्। विकरणव्यत्ययेन शः]

बुबोध बुद्धयाः ७.३७.६. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

बुभुजिरे भुञ्जते १.१३८.३. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोर्लिट्]

बुभूषन् भवितुमिच्छन् (वृत्रः=मेघः) १.३२.७. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच् छतृ]

बृबुम् मुख्यं शिल्पिनम् ६.४५.३३. **बृबुः**=छेत्ता (शिल्पिजनः) ६.४५.३१.

बृसयस्य आच्छादकस्य (सूर्यस्य) प्र०—'वस आच्छादने' इत्यस्मात् पृषोदरदित्वादिष्टसिद्धिः १.९३.४. अविद्याच्छेदकस्य (मायिनः=प्रशंसितप्रज्ञस्य विदुषो जनस्य) ६.६१.३.

बृहच्छरीरः बृहत् महच्छरीरं यस्य सः (युवा जनः) १.१५५.६. [बृहत्-शरीरपदयोः समासः]

बृहच्छ्रवाः बृहच्छ्रवणं यस्य सः (अ०—विद्वन्मनुष्यः) १.५४.३. [बृहत्-श्रवस्पदयोः समासः]

बृहज्ज्योतिः अनन्तप्रकाशम् (दिवं=दिव्यं स्वस्व-

रूपम्) ऋ० भू० १५६, ११.४. [बृहत्-ज्योतिष्पदयोः समासः]

बृहत् महद्वस्तु ब्रह्म २.२.१३. महान्तम् (वह्निं=अग्निम्) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्यमो लुक् ३.२.१४. वर्धकम् (धनम्) ४.५.६. महाविद्यादिगुणयुक्तम् (ऋतम्) १.७५.५. महान् (अग्निः=सूर्यः) ३३.९२. महदर्थम् (साम=एतदुक्तं कर्म) १५.११. महत्तमम् (श्रवः=अन्नम्) १.४४.२. विस्तीर्णम् (भगः=धनम्) २.११.२१. अनेकैः शुभगुणैर्भोगैश्च महत् (श्रवः=सुवर्णादिधनम्) १.९.७. उपबृंहितम् (द्युम्नं=ज्ञानम्) १.९.८. सर्वथा वृद्धम् (शूषं=बलं सुखं च) १.९.१०. महदर्थयुक्तम् (वचः=वचनम्) ३.१०.५. महत्सुखकारकम् (हविः) १.४५.८. महद्विद्याजं विज्ञानशास्त्रम् २.१७.९. महद्विज्ञानम् २.३९.८. महत्साम २०.३०. सब से बड़े (परब्रह्म) को आर्याभि० १.५३, ऋ० २.८.१२.३. **बृहतः**=महाशयान् (विदुषो जनान्) ५.४३.११. अतिवृद्धस्य (राज्यप्रकाशस्य) १.१५१.४ महतः सत्यशुभगुणयुक्तात् (दिवः=प्रकाशमयान्न्यायात्) १.५४.४. महतो गुणान् प्राप्तस्य (विप्रस्य=सर्वशास्त्रविदो मेधाविजनस्य) ११.४. महतः कार्यस्य ३.२.८. विद्यादिशुभगुणैर्वृद्धस्य (अग्नेः=विदुषः) ३.१५.१. महाविषयस्य (क्रतोः=प्रज्ञायाः) १५.४५. व्यापकस्य वा (विप्रस्य=जगदीश्वरस्य) ५.१४. महत्परिमाणयुक्तस्य (सूर्यस्य) २३.६०. **बृहता**=महागुणविशिष्टेन १.४८.१. **बृहते**=वृद्धाय (विदुषे जनाय) ५.४३.१५. वर्धमानाय (शर्धाय=बलाय) ४.३.८. गुणैर्महते (मंहिष्ठाय=सभाध्यक्षाय) १.५७.१. सर्वोत्कृष्टगुणैर्महते व्यापकाय (इन्द्राय=परमेश्वराय) १.९.१०. विद्यादिगुणैर्वृद्धाय (दिवे=राज्याय) १.५४.३. **बृहद्भ्यः**=महद्भ्यः (पर्वतेभ्यः=मेघादिभ्यः) ४.५४.५. [बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'वर्त्तमाने पृषद्बृहन्महज्जगच्छतृवच्च' उ० २.८४. सूत्रेण अतिः। बृहत्=महन्नाम निघं० ३.३. बृहदिति महतो नामधेयं परिवृढं भवति नि० १.७. बृहतः=महतः नि० ९.६. बृहत् (साम) वर्ष्म वै बृहत् तां० ११.९.४. बृहद् विराट् तै० १.३.३.३. एतद्वै बृहतः स्वमायतनं यत् त्रिष्टुप् तां० ४.४.१०. बृहन्मर्या इदं स ज्योगन्तरभूदिति तद् बृहतो बृहत्त्वम् तां० ७.६.५. साम वै बृहत् तां० ७.६.१७. भारद्वाजं वै बृहत् ऐ० ८.३. द्व्यक्षरं बृहत् तै० २.१.५.७. बृहद् हि पूर्वं रथन्तरात् तां० ११.१.४. यद् ह्रस्वं तद्रथन्तरं यद्दीर्घं तद् बृहत् कौ० ३.५. यद्वै बृहत्तद्रैवतम् ऐ० ४.१३. बृहदेतत् परोक्षं यद्वै रूपम् (साम) तां० १२.८.४. यद्वै बृहत तद् वैराजम् (साम) ऐ० ४.१३. श्रैष्ठ्यं वै बृहत् ऐ० ८.२. ज्यैष्ठ्यं वै बृहत् ऐ० ८.२. यथा वै पुत्रो ज्येष्ठं एवं बृहत् प्रजापतेः तां० ७.६.६. ऊर्ध्वमिव हि बृहत् तां० ८.९.११. द्यौर्वै बृहद् श० ९.१.२.३७. स्वर्गो लोको बृहत् तां० १६.५.१५. आदित्यो बृहत् ऐ० ५.३०. प्राणो बृहत् तां० ७.६.१४. क्षेत्रं बृहत् ऐ० ८.१.२. मनो वै बृहत् तां० ७.६.१७.]

बृहती महदर्था (ककुप्=लालित्ययुक्तं छन्दः) २३.३३. महती (दिक्) १५.१४. महापुरुषार्थयुक्ता (विदुषी कन्या) ११.६४. महासुखवर्धिका (स्त्री) १.११३.१९. बृहद्-ब्रह्मादिवस्तुप्रकाशिका (गीः=वाक्) ५.४३.८. महत्त्वम् (छन्दः=पराक्रमम्) १४.९. **बृहतीम्**=विस्तीर्णाम् (महीं=भूमिम्) ३३.२८. बृहत्पदार्थविषयाम् (महीं=वाचम्) ५.४३.६. **बृहतीः**=बृहद्विषयाः (गिरः=विदुषां वाचः) ३.५१.१. महत्यः (आपः=जलानि) ३२.७. महतीः (द्वारः=अवकाशरूपा दिशः) २९.३०. महागुणविशिष्टाः अ०—महत्यः (आपः=प्राणा जलानि वा) ४.७. बृहत्यः (आपः) २७.२५. **बृहत्यै**=बृहती-छन्दोऽर्थाय २४.१३. महत्यै सेनायै ४.३.७. [बृहदिति व्याख्यातम्। तत्र शतृवद्भावेन ङीप्। बृहत्या=महत्या नि० २.२५. बृहती परिबर्हणात् नि० ९.७. बृहती (छन्दः) बृहती बृंहतेर्वृद्धिकर्मणः दे० ३.११. बृहती मर्या ययेमान् लोकान् व्यापामेति तद् बृहत्या बृहत्त्वम् तां० ७.४.३. यस्य नवता बृहतीम् कौ० ९.२. षट्त्रिंशदक्षरा बृहती श० ८.३.८.३. गोऽश्वमेव हि बृहती कौ० ११.२. पशवो बृहती कौ० १७.२. स्वाराज्यं छन्दसां बृहती तां० २४.६.३. श्रीर्वै बृहती कौ० २८.७. बृहती स्वर्गो लोकः श० १०.५.४.६. अयं मध्यमो (लोकः=अन्तरिक्षम्) बृहती तां० ७.३.९. बृहती हि संवत्सरः श० ६.४.२.१०. वाग्वै बृहती श० १४.४.१.२२. मनो बृहती श० १०.३.१.१, प्राणा वै बृहत्यः ऐ० ३.१४. व्यानो बृहती तां० ७.३.८. आत्मा वै बृहती ऐ० ६.२८. एतद्वै रथन्तरस्य स्वमायतनं यद् बृहती तां० ४.४.१०. बृहती द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३.]

बृहती वर्धमाने उषासानक्ता २०.४१. महान्त्यौ (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २९.३१. [बृहतीशब्दाद् द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

बृहतीव यथा महागुणयुक्ता पूज्या माता १.५९.४. [बृहती-इवपदयोः समासः]

बृहत्केतुम् महाप्रज्ञम् (गृहपतिम्) ५.८.२. [बृहत्-केतुपदयोः समासः। केतुः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

बृहत्सुकीर्त्तिः महोत्तमप्रशंसः (विद्वज्जनः) ५.१०.४. [बृहत्-सुकीर्त्तिपदयोः समासः]

बृहत्सुम्नः महतः सुखस्य ४.५३.६. [बृहत्-सुम्नपदयोः समासः । सुम्नम् सुखनाम निघं० ३.६.]

बृहथः वर्द्धयेथाम् २.३०.६. [बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लट् व्यत्ययेन शः]

बृहदुक्थम् बृहन्महदुक्थं प्रशंसनं यस्य तम् (जेतारं=जयशीलं सेनापतिम्) ११.७६. **बृहदुक्थः**=महत्प्रशंसितः (मनुष्यः) ५.१९.३. [बृहत्-उक्थपदयोः समासः । उक्थम्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोः 'पातॄतुदिवचिरिचि०' उ० २.७. सूत्रेण थक्]

बृहदुक्षः बृहदुक्षः सेचनं येभ्यस्ते (मरुतः=वायवः) ३.२६.४. **बृहदुक्षाय**=यो बृहद्वीर्यमुक्षति सिञ्चति तस्मै (गृहपतये) प्र०—बृहदिति महन्नामसु पठितम् निघं० ३.३, ८.८. [बृहत्-उक्षपदयोः समासः । बृहत्=महन्नाम निघं० ३.३. उक्षः=उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । कर्त्तरि वा अच् । प्रजापतिर्वै बृहद् उक्षः श० ४.४.१.१४.]

बृहद्गिरयः बहुप्रशंसाः (कवयः=विद्वांसो जनाः) ५.५७.८. बृहन्तो गिरयो मेघा इवोपकारका गुणा येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५८.८. [बृहत्-गिरिपदयोः समासः गिरिः मेघनाम निघं० १.१०.]

बृहद्ग्रावा बृहच्चाऽसौ ग्रावा च सः (यज्ञः) १.१५. [बृहत्-ग्रावापदयोः समासः । ग्रावा मेघनाम निघं० १.१०.]

बृहद्दिवस्य बृहतः प्रकाशमानस्य (राज्ञः) ४.२९.५. **बृहद्दिवेषु**=बृहती द्यौः प्रकाशो येषु तेषु (अमृतेषु=जीवेषु) २.२.९. बृहत्सु दिव्येषु पदार्थेषु ४.३७.३. **बृहद्दिवैः**=बृहती द्यौर्विद्या येषां तैः (अवोभिः=रक्षणादिभिः) १.१६७.२. [बृहत्-दिवपदयोः समासः । दिव=दिवु क्रीडाविजिगीषादिपु (दिवा०) धातोर्घञर्थे कः]

बृहद्दिवः बृहतः प्रकाशस्य ५.४३.१३. [बृहत्-दिव्-पदयोः समासः]

बृहद्दिवा बृहती द्यौः प्रकाशो यस्याः सा (उर्वशी=प्रज्ञा) ५.४१.१९. बृहती द्यौर्विद्याप्रकाशो यस्यां सा (सरस्वती=वाक्) ५.४२.१२. [बृहद्दिवा महद्दिवा नि० ११.४५. दिवा=दिवु क्रीडाविजिगीषादिपु (दिवा०) धातोर्घञर्थे कः । ततः स्त्रियां टाप्]

बृहद्भानुः बृहन्तो भानवः प्रकाशा यस्य सः (अग्निः) १.२७.१२. **बृहद्भानो** !=बृहन्ति भानवो विद्यैश्वर्यतेजांसि यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=सभाध्यक्ष महाराज) १.३६.१५. अग्निवद् बृहन्तो महान्तो भानवो विद्याप्रकाशा यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) १२.१०६. बृहन्तो भानवः किरणा इव कीर्त्तयो यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ३३.९५. हे महातेज (ईश्वर) आर्याभि० १.१२, ऋ० १.३.१०.१५. [बृहत्-भानुपदयोः समासः । भानुः=अहर्नाम निघं० १.९. भानुः=भा दीप्तौ (अदा०) धातोः 'दाभाभ्यां नुः' उ० ३.३२. सूत्रेण नुः]

बृहद्भाः महाप्रकाशः (अग्निः=सेनेशः) १२.३४. [बृहत्-भापदयोः समासः । बृहदुपपदे भा दीप्तौ (अदा०) धातोर्वा]

बृहद्रथन्तरे बृहद्भी रथैस्तरन्ति दुःखानि याभ्यां सामभ्यां ते १२.४. बृहच्च रथन्तरञ्च ते १८.२३. [बृहत्-रथन्तरपदयोः समासः । प्राणापानौ वै बृहद्रथन्तरे तां० ७.६.१२. पशवो वै बृहद्रथन्तरे तां० ७.७.१. बृहद्रथन्तरे (महाव्रतस्य) पक्षौ तां० १६.११.११. पक्षौ वै बृहद्रथन्तरे शिर एतद् आरम्भणीयम् अहः ऐ० ४.१३. पादौ वै बृहद्रथन्तरे शिर एतद् (आरम्भणीयम्) अहः ऐ० ४.१३. एते वै यज्ञस्य नावौ संपारिण्यौ यद् बृहद्रथन्तरे ताभ्यामेव तत्संवत्सरं तरन्ति ऐ० ४.१३. बृहद्रथन्तरे छन्दो द्यावापृथिवी देवते पक्षौ श० १०.३.२.४. बृहद्रथन्तरे (सामनी) अनड्वाहौ वा एतौ देवयानौ यजमानस्य यद् बृहद्रथन्तरे तां० १२.४.१४.]

बृहद्रथम् बृहन्तो रथा रमणसाधका यस्य तम् (तुर्वीतिं=दुष्टजनम्) १.३६.१८. [बृहत्-रथपदयोः समासः । रथः=रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः 'हनिकुषि०' उ० २.२. सूत्रेण क्थन्]

बृहद्रथा महान्तो रथा यस्याः सा (उषाः=प्रातर्वेला) ५.८०.२. [बृहत्-रथपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

बृहद्रयिम् महान् रयिर्यस्मात् तम् (वायुं=पवनम्) ६.४९.४. बृहन्तो रायो यस्मिँस्तम् (भा०—अखिलं धनम्) ३३.५५. **बृहद्रये**=बृहन्तो रायो धनानि यस्य तस्मै (मंहिष्ठाय सभाध्यक्षाय) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन ऐकारस्य स्थान एकारः १.५७.१. [बृहत्-रयिपदयोः समासः । बृहत्-रैपदयोर्वा समासे वर्णव्यत्ययेन ऐकारस्य एकारादेशः । रयिरिति धननाम रातेर्दानकर्मणः नि० ४.१७.]

बृहद्रवाः यथा बृहच्छब्दवान् (विद्वज्जनः) ५.२२. [बृहत्-रवपदयोः समासः । रवः=रु शब्दे (अदा०) धातोरप्]

बृहद्रेणुः बृहन्तो रेणवो यस्मिँस्सः (राजकर्मचारी)

६.१८.२. [बृहत्-रेणुपदयोः समासः । रेणुः =री गतिरेषणयोः (क्र्या०) धातोः 'अजिवृरीभ्यः०' उ० ३.३८. सूत्रेण णुः]

बृहद्वते प्रशस्तानि बृहन्ति कर्माणि यस्य तस्मै (इन्द्राय=सेनापतये) ७.२२. [बृहत्-प्राति० प्रशंसायां मतुप् । बृहत्=महन्नाम निघं० ३.३.]

बृहन् वर्धमानः (अग्निः=अध्यापकः) २.१.१२. महान् (क्रतुः=प्रज्ञा कर्म वा) ३.५२.४. वर्धमानो वर्धयन् (विद्वज्जनः) ५.२२. **बृहन्तम्**=अतिप्रवृद्धम् (रयिं=धनम्) १.११७.२३. वर्धमानम् (रयिं=श्रियम्) २.४.८. सर्वदा वृद्धियोगेन महत्तमम् (रयिम्) १.९२.८. महान्तम् (क्रतुं=सर्वं सङ्गतं संसाराख्यं यज्ञम्) १.२.८. पृथिव्याः सकाशादतिविस्तीर्णम् (युवानं जनम्) ६.१९.२. सर्वेभ्यो महान्तं सुखवर्धकमीश्वरं, बृहतां कार्याणां साधकं भौतिकं वा (अग्निम्) २.४. वर्धकम् (रुद्रं=परमात्मानम्) ६.४९.१०. **बृहन्तः**=वर्धकाः (शबलाः=पश्वादयः) २४.१०. वर्धमाना वर्धयन्तश्च (देवाः=विद्वांसो दिव्याः पदार्था वा) २.१८. [बृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन शः । 'वर्त्तमाने पृषद्बृहत्०' उ० २.८४. सूत्रेण वा अतिः शतृवच्च । बृहन् एष ते शुक्रो य एष (सूर्यः) तपत्येष उ ऽएव बृहन् श० ४.५.९.६.]

बृहन्ता सद्गुणैर्महान्तौ (इन्द्रावरुणौ=राजसेनेशौ) ४.४१.११. ['बृहत्' इति व्याख्यातम् । ततः प्रथमा-द्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

बृहस्पतये बृहत्या वाचो बृहतामाकाशादीनाञ्च पतिः स्वामी तस्मै जगदीश्वराय ४.७. बृहत्या वेदवाण्याः पालकाय (विदुषे जनाय) २.१२. बृहतामाप्तानां पालकाय (ईश्वराय) २६.३. बृहतां प्रकृत्यादीनां पत्युरीश्वरस्य विज्ञानाय १०.५. अध्ययनाऽध्यापनाभ्यां विद्याप्रचाररक्षकाय (राजपुरुषाय) ९.११. चत्वारिंशद्वर्षपर्यन्तं ब्रह्मचर्यं सेवित्वा बृहत्या वेदविद्यावाचः पालकाय (ब्रह्मचारिणे) ७.४७. **बृहस्पतिना**=बृहतां पालकेन चतुर्वेदविदा विदुषेव विद्यासुशिक्षाप्रचारेण १०.३०. **बृहस्पतिम्**=बृहतः शास्त्रबोधस्य पालकमतिथिम् १.१९०.१. बृहतीनां स्वामिनम् (विद्वांसं जनम्) ५.५१.१२. वाग्विद्यारक्षकम् (वेदार्थविद्वज्जनम्) ३.६२.५. बृहतां पालकं राजानम् ३.६२.६. बृहत्या वाचः स्वामिनं विद्वांसम् २५.३. महतां पतिम् (वेधसं=विद्वांसं जनम्) ५.४३.१२. बृहत्या ऋग्वेदादिवेदवाचः पालकं परमात्मानम् ७.१०.४. बृहतां पालनहेतुं सूर्यप्रकाशम् प्र०—'तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च' अ० ६.१.१५७. अनेन वार्त्तिकेन 'बृहस्पतिः' सिद्धः । 'पातेर्डतिः' उ० ४.५८. अनेन पतिशब्दश्च १.१४.३. सकलविद्याऽध्यापकम् (विद्वांसं जनम्) ९.२७. बृहतां पालकं वायुम् ३.२०.५. सम्राजमनूचानमध्यापकं वा ९.११. वेदशास्त्रपालकम् (वाजं=सङ्ग्रामम्) ९.१२. **बृहस्पतिः**=बृहत्या वेदवाचः पालयिता (विद्वान्) १.१९०.२. बृहतां वेदानामध्यापनोपदेशाभ्यां पालयिता (विद्वान् जनः) १.१९०.८. बृहतां पालको वैश्यः १४.२९. बृहतां पतिः सूर्य इव (विद्वान् शिल्पिजनः) १.१६१.६. बृहत्या वेदवाचः पालिकाऽध्यापिका (विदुषी स्त्री) १२.५४. बृहतां पालको विद्युद्रूपोऽग्निः २८.१९. बृहत्या वाचो, बृहतो वेदशास्त्रस्य, बृहतामाकाशादीनाञ्च पतिरीश्वरः पं० वि० बृहतो वचनस्य ब्रह्माण्डस्य वा पालकः (परमात्मा) १४.२५. बृहतां प्रकृत्याकाशादीनां पतिः पालको जगदीश्वरः २.१३. बृहत् शब्दपूर्वक पा रक्षणे इस धातु से डति प्रत्यय, बृहत् के तकार का लोप और सुडागम होने से बृहस्पति शब्द सिद्ध होता है 'यो बृहतामाकाशादीनां पतिः स्वामी पालयिता स बृहस्पतिः 'जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि ब्रह्माण्डों का स्वामी है, वह परमात्मा सब का अधिष्ठाता है स० प्र० २०, ३६.९. बृहत्याः सभायाः सेनाया वा पालकः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.४८. बृहतां पालकः सूत्रात्मा ३९.६. बृहतामधिकाराणामध्यक्षः (सेनाध्यक्षः) १७.४०. बृहतां महत्तत्त्वादीनां स्वामी पालकः (इन्द्रः=ईश्वरः) बृहतां व्यवहाराणां रक्षकः (जनः) १८.१६. महाविद्यावाचोऽधिपति, सबसे बड़े सुख का देने वाला परमात्मा आर्याभि० १.१, ऋ० १.६.१८.९. बड़ी प्रजा का पालन करने वाला श्रेष्ठ न्यायकारी राजा सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५४. **बृहस्पते**=बृहत्या वेदवाचः पते पातः परमविद्वन् ६.८. विद्याद्युत्तमपदार्थानां पालक (राजन्) ५.४२.८. बृहत्या वाचः स्वामिन् (विद्वन्नध्यापक) २.२४.१. बृहत्सत्यप्रचारक (परमेश्वर विद्वन् वा) २.२३.६. बृहतः पापाद्वियोजकः (परमेश्वर विद्वन्वा) २.२३.७. बृहतां प्रकृत्यादीनां जीवानाञ्च पालकेश्वर २६.३. बृहतां धार्मिकाणां वृद्धानां सेनानां वा पतिस्तत्सम्बुद्धौ (भा०—राजन्) १७.३६. बृहतां विदुषां पालक अ०—परीक्षक (ईश्वर) १३.२३. **बृहस्पतेः**=बृहतां प्रकृत्यादीनां पालकस्य (सवितुः=जगदीश्वरस्य) ९.१०. बृहत्याः सेनायाः स्वामिनः (सेनापतेः) ९.१९. बृहत्या वेदवाचः पालकस्य (ईश्वरस्य) १४.२५. बृहतां पालकस्य महतत्त्वस्य २५.४. महतां वीराणां पालयितुः सेनाध्यक्षस्य ९.९. [बृहत्-पति-

पदयोः समासे 'तद्बृहतोः करपत्योश्चोरदेवतयोः सुट् तलोपश्च' अ० ६.१.१५७. वा० सूत्रेण सुट् तलोपश्च । बृहस्पतिः=बृहतः पाता वा पालयिता वा नि० १०.१२. बृहस्पतिर्ब्रह्मासीत् सोऽस्मै वाचमयच्छत् । बृहदुपव्याख्यातम् नि० २.१२. अयं वै बृहस्पतिर्योऽयं (वायुः) पवते श० १४.२.२.१०. एष (प्राणः) उ एव बृहस्पतिः श० १४.४.१.२२. अथ यस्सोऽपान आसीत् स बृहस्पतिरभवत् जै० उ० २.२.५. यच्चक्षुः सः बृहस्पतिः गो० उ० ४.११. द्युम्नं हि बृहस्पतिः श० ३.१.४.१६. बृहस्पतिर्वै सर्वं ब्रह्म गो० उ० १.३.४. ब्रह्म वै बृहस्पतिः ऐ० १.१३. बृहस्पतिर्ब्रह्म ब्रह्मपतिः तै० २.५.७.४. बृहस्पते ब्रह्मणस्पते तै० ३.११.४.२. बृहस्पतिर्वै देवानां ब्रह्मा श० १.४.१.१. बृहस्पतिर्वा आंगिरसो देवानां ब्रह्मा गो० उ० १.१. बृहस्पतिः पुर एता तै० २.५.७.३. बृहस्पतिर्वै देवानां पुरोहितः ऐ० ८.२६. यजमानदेवत्यो वै बृहस्पतिः श० १.८.३.१. मित्राबृहस्पती वै यज्ञपथः श० ५.३.२.४.]

बृहस्पतिपुरोहिताः बृहस्पतिः सूर्यः पुरः पूर्वो हितो धृतो येषु ते (त्रयस्त्रिंशा देवाः पृथिव्यादयः) २०.११. [बृहस्पति-पुरोहितपदयोः समासः । पुरोहितः=पुर एनं दधति नि० २.१२.]

बृहस्पतिप्रसूताः बृहतां पतिनेश्वरेणोत्पादिताः भा०--ईश्वरेण निर्मिताः (ओषधयः) १२.८९. बृहतः कारणस्य पालकेश्वरस्य निर्माणादुत्पन्नाः (ओषधीः=ओषध्यः) १२.९३. [बृहस्पति-प्रसूतपदयोः समासः । प्रसूतः=प्र+पूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः क्तः]

बृहस्पतिसुतस्य बृहत्या वेदवाण्याः पतेः पालकस्य पुत्रस्य ८.९. [बृहस्पति-सुतपदयोः समासः]

बोध जानीहि ७.२२.३. अवगच्छ १२.४२. विजानीहि ७.२२.४. बोधय ७.२१.१. **बोधत्**=बोधय ४.१५.७. **बोधतम्**=विजानीतम् २.३६.६. **बोधति**=विजानाति २.२५.२. **बोधतु**=जानातु २.३२.४. **बोधन्तु**=जानन्तु १.२९.४. **बोधय**=प्रदीपय ५.१४.१. सचेतनं कुरु २७.८. बोधयति प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१२.४. अवगमय १.२२.१. **बोधयत**=प्रदीपयत ऋ० भू० २.४६, ३.१. चेतयत १२.३०. उद्दीपयत ३.१. **बोधाति**=जानीयात् १.७७.२. **बोधि**=बुध्येत प्र०—अत्र लिङर्थे लुङभावश्च १.४४.६. जानीहि १.७६.४. विदितो भव, विदितगुणो वा भवति प्र०—अत्र लोडर्थे लडर्थे च लुङभावश्च १.२४.११. बोधय प्र०—अत्र लोडर्थे लङडभावोऽन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.३१.९. जानाति २.६.४. जानीहि २.२४.१६. बुध्यस्व ४.३.४. बुध्यसे ३.४.१. बोधयति प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् 'बहुलं छन्दसि' इत्यडभावोऽन्तर्गतो ण्यर्थश्च ३.२६. विज्ञापय ६.४६.४. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लटि लुङि लेटि च रूपाणि । 'बोधय' एतदादिषु तु णिजन्ताल्लोट्]

बोधयन्ती जागरयन्ती (उषाः स्त्री वा) १.१२४.४. चेतयन्ती (उषाः) १.९२.९. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्णिचि शतरि स्त्रियां ङीपि च रूपम्]

बोधयितारम् ज्ञापयितारम् (प्राज्ञं जनम्) १.१६१.१३. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् तृच्]

बोधामसि बोधयेम ७.२१.१. [बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्लेटि 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

बोधिन्मनसा बोधितं मनो ययोस्तौ (अश्विना=विद्याध्यापकोपदेशकौ) ५.७५.५. [बोधित-मनस्पदयोः समासे पूर्वपदस्यान्त्याकारलोपश्छान्दसः । द्विवचनस्याकारः]

बोभवीति भृशं भवति ३.५३.८. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्यङ्लुकि लटि रूपम्]

ब्रजः यो ब्रजति गच्छेत् सः (इन्द्रः=राजा) ३.३०.१०. [व्रज गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अच् । वकारस्य बकारश्छान्दसः]

ब्रज्याय ब्रजिषु क्रियासु भवाय (भा०—मनुष्याय) १६.४४. [व्रज गतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां 'इक् कृष्यादिभ्यः' इतीक् । ब्रजिप्राति० भवार्थे यत्]

ब्रध्नम् महान्तं परमेश्वरं शिल्पविद्यासिद्धय आदित्यमग्निं प्राणं वा १.६.१. महान्तम् (सूर्यम्) ७.४४.३. सर्वानन्दवर्धकं महान्तं परमेश्वरम्, सर्वाऽवयववृद्धिकरं प्राणम् ऋ० भू० १६३, ऋ० १.१.११.१. **ब्रध्नस्य**=अश्वस्य ३०.१२. सबसे बड़े प्रकाशमान सूर्य का सं० वि० १९७, ९.११३.१०. महतः (परमेश्वरस्य) १८.५१. [ब्रध्नः अश्वनाम निघं० १.१४. ब्रध्नः महन्नाम निघं० ३.३. बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः 'बन्धेर्ब्रधिबुधी च' उ० ३.५. सूत्रेण नक् ब्रध्यादेशश्च]

ब्रन्दिनः निन्दिता ब्रन्दाः सन्ति येषां तान् दुष्टान् १.५४.५. निन्दिता ब्रन्दा मनुष्यादि समूहा विद्यन्ते येषां तान् मायिनः १.५४.४. [ब्रन्द-प्राति० निन्दायामर्थे इनिः । ब्रन्दः=वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'अब्दादयश्च' उ० ४.९८. सूत्रेण दन् नुम् च । ऋकारस्य रेफश्छान्दसः]

ब्रवत् उपदिशेत् ६.५४.१. ब्रूयात् ६.५४.२. **ब्रवसि**=ब्रूयाः १.१३९.७. **ब्रवः**=वद ७.६०.१. ब्रूयाः ४.३.६. **ब्रवाणि**=उपदिशानि ६.१६.१६. उपदिशेयम् २६.१३. **ब्रवाम**=अध्यापयेमोपदिशेम वा ३६.२४. वदेम ६.५६.४. **ब्रवामहै**=उपदिशेम ५.५१.१२. **ब्रवावहै**=परस्परमुपदेशश्रवणे करवावहै १.३०.६. **ब्रवीत्**=वदतु १.१६४.७. **ब्रवीतु**=उपदिशतु १.३५.६. वदतु १.१६४.७. **ब्रवीमि**=उपदिशामि ३.५४.१०. **ब्रवीषि**=उपदिशसि ४.४२.७. **ब्रवैते**=ब्रूयाताम् ६.२५.४. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लेट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न। अन्यत्र लोट् लट् लिङ् लङ् च]

ब्रवीतन उपदिशत १.८४.५. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लोट्। तप्रत्ययस्य तनबादेशः]

ब्रह्म बृहद्विद्यं वेदचतुष्टयम् १९.४१. बृहत् सर्वेभ्यो महदनन्तम् (परमेश्वरम्) २३.४८. ब्राह्मणं विद्वांसम् १८.४२. सर्वेषां सत्योपदेशेन वर्धकं ब्राह्मणकुलम् १८.४१. वेदो जगदीश्वरो ब्रह्मवित्कुलं वा १०.१०. चतुर्वेदाखिलराजप्रजासुखनिमित्तानां पदार्थानां निर्माता भा०—वेदप्रवीणः (राजा) १०.२८. पूर्णविद्यादिसद्गुणयुक्त ब्राह्मण आर्याभि० २.३१, ३८.१४. विद्यां विद्वांसं वा ५.२७. विद्वत्कुलम् १८.३९. वेदेश्वरविज्ञानं तद्वत्कुलम् ३२.१६. सर्वेभ्यो महत्त्वादीश्वरः ३२.१. बृहद्धनम् ३.२९.१५. असङ्ख्यं धनम् ४.१६.२१. वेदविद्याम् १.१०.४. धनं ब्रह्माण्डं वा ३.५३.१२. सच्चिदानन्दलक्षणं चेतनं वाच्यम् ४.११. शब्द, अर्थ और सम्बन्ध के ज्ञानपूर्वक साङ्गोपाङ्ग चारों वेदों को सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.२४. वेदविज्ञानम् भा०—विद्या, योगबलं, धर्माचरणम् ११.८१. ब्राह्मणवर्णम् ऋ० भू० १५२, ३८.१४. सर्वोत्तमविद्यागुणकर्मवत्त्वं सद्गुणप्रचारकरणत्वञ्च ब्राह्मणलक्षणम् ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.८. सर्वव्यापकं चेतनम् (परमेश्वरम्) ६.७५.१९. विद्याधनम् ४.२१.११. धनादियुक्तमन्नम् १.१५२.५. बृहद्व्यापाकम् (ईश्वरम्) ११.५. धनमन्नं वा ३३.९६. वेदचतुष्टयम् १.७५.२. वेदाध्यापनम् १.८८.४. बड़ों से भी बड़ा (महीय ईश्वर) आर्याभि० २.२८, १३.३. सर्वेभ्यो गुणकर्मस्वरूपतो बृहत (ईश्वरः) ४०.१७. पूर्णविद्यादि शुभगुण और सबके उपकारक शमदमादि गुणयुक्त ब्रह्मकुल सं० वि० १४४ अथर्व० १२.५.१०. ८. **ब्रह्मणः**=परमेश्वरस्य १७.१४. धनस्य, वेदस्य ३४.३४. ब्रह्मविदः (भा०—विदुषो जनस्य) ३८.१९. ब्रह्माण्डस्य राज्यस्य वा २.२३.९. धननिधेः २.२६.४. बृहत्याः प्रजायाः २.२४.२. सकलैश्वर्यस्य ७.४१.१. विद्याधनस्य २.२४.५. **ब्रह्मणा**=वेदेन धनेनाऽन्नेन वा ५.४२.४. बृहता बलेन २.२४.३. अन्नादिसामाग्रचा सह १.८४.३. वेदविज्ञानेन २१.२. वेदेश्वरविज्ञानप्रदेन (प्रचारेण) ११.८२. अधीतचतुर्वेदेन (विद्वज्जनेन) १९.७५. जलेन धनेन वा ८.३३. बृहता वेदज्ञानेन ८.१५. परमेश्वरेण वेदचतुष्टयेन वा १९.३१. वेदार्थज्ञानेन ज्ञापनेनेवोपदेशकेन १०.३०. **ब्रह्मणि**=ब्राह्मणसभायाम् १.१०८.७. **ब्रह्मणे**=परमेश्वराय वेदाय वा १.११३.१९. चतुर्वेदाध्ययनेन ब्रह्मत्वाधिकारं प्राप्ताय (विदुषे जनाय) २.१२. बृहत्तमाय परमात्मने ब्रह्मविदुषे वा भा०—ईश्वरं विद्वांसं च सेवितुम् ३९.१३. सत्य वेदविद्या के लिए आर्याभि० २.३१, ३८.१४. वेदेश्वरविज्ञानप्रसाराय ३०.५. **ब्रह्माणि**=बृहन्ति धनानि ७.१.२०. महान्ति अन्नानि धनानि वा ७.१८.४. विज्ञातवेदार्थान् ब्राह्मणान् प्र०—ब्रह्म वै ब्राह्मणः शत० १३.१.५.३, १.३.५. धनधान्यानि ७.२३.१. वेदस्थानि स्तोत्राणि १.३.६. अधीतानि वेदवचांसि ७.२९.२. धर्म्येण प्राप्तव्यानि (धनानि) ८०.८९. सुसंस्कृतानि बृहत्सुखकराण्यन्नानि धनानि वा १.६१.१. बृहत्तमानि अन्नानि १.५२.७. महान्ति धनानि ५.२.६. प्रकृष्टान्यन्नानि धनानि वा १.८०.१६. बृहन्ति यानि धनान्यन्नानि वा तानि १.१६५.२. [ब्रह्मन्=बृहि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'बृंहेर्नोऽच्च' उ० ४.१४६. सूत्रेण मनिन् नकारस्य चाकारादेशः। ब्रह्म उदकनाम निघं १.१२. अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०. ब्रह्मा सर्वविद्यः सर्वं वेदितुमर्हति। ब्रह्मा परिवृढः श्रुततो ब्रह्म परिवृढं सर्वतः नि० १.८. ब्रह्माणि कर्माणि नि० १२.३४. (वागिति) एतदेषां (नाम्नां) ब्रह्मैतद्धि सर्वाणि नामानि बिभर्त्ति श० १४.४.४.१. वाग् ब्रह्म गो० पू० २.१०. ब्रह्म वै वाचः परमं व्योम तै० ३.९.५.५. तस्यै वाचः सत्यमेव ब्रह्म श० २.१.४.१०. सत्यं ब्रह्म श० १४.८.५.१ ब्रह्म वै ब्रह्मणस्पतिः कौ० ८.५. ब्रह्म ब्रह्माऽभवत् स्वयम् तै० ३.१२.९.३. चन्द्रमा वै ब्रह्म ऐ० २.४१. असौ वा ऽआदित्यो ब्रह्म श० ७.४.१.१४. अयमग्निर्ब्रह्म श० ९.२.१.१५. मुखं ह्येतदग्नेर्यद् ब्रह्म श० ६.१.१.१०. अयं वै ब्रह्म योऽयं (वायुः) पवते ऐ० ८.२८. प्राणो वै सम्राट् परमं ब्रह्म श० १४.६.१०.३. प्राणापानौ ब्रह्म गो० पू० २.१०. ब्रह्म हि पूर्व्यं क्षत्रात् तां० ११.१.२. सैषा क्षत्रस्य योनिर्यद्ब्रह्म श० १४.४.२.२३. अभिगन्तैव ब्रह्म कर्त्ता क्षत्रियः श० ४.१.४.१. विद्युद् ह्येव ब्रह्म श० १४.८.७.१. यदमृतं तद् ब्रह्म गो० पू० ३.४. अभयं वै ब्रह्म श०

१४.७.२.३१. ब्रह्म वै भूतानां ज्येष्ठम् तै० २.८.८.१०. तस्मादाहुर्ब्रह्मैव देवानां श्रेष्ठमिति श० ८.४.१.३. कतम एको देव इति स ब्रह्म इत्याचक्षते श० १४.६.९.१०. तद् (ब्रह्म) इदमन्तरिक्षम् जै० उ० २.९.६. ब्रह्म वै त्रिवृत् तां० २.१६.४.]

ब्रह्मकाराः ये ब्रह्म धनमन्नं वा कुर्वन्ति ते (सज्जनाः) ६.२९.४. [ब्रह्मन्-उपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण् कर्त्तरि]

ब्रह्मकृतः ये ब्रह्म धनमन्नं वा कुर्वन्ति ते (धार्मिका विद्वांसः) ७.३२.२. **ब्रह्मकृता**=येन ब्रह्म धनमन्नं वा करोति तेन (गणेन=समूहेन) ७.९.५. ['ब्रह्मन्' उपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

ब्रह्मकृतिम् ब्रह्मणः परमेश्वरस्य कृतिं संसारम् ७.२९.२. ब्रह्मणो धनस्य कृतिः क्रिया यस्य तम् (इन्द्रं=दुष्टशत्रुविदारकं राजानम्) ७.२८.५. परमेश्वरोपदिष्टां प्रियां गाम् (वेदवाणीम्) ७.३०.५. वेदोक्तां सत्यक्रियाम् ७.२९.५. (ब्रह्मन्-कृतिपदयोः समासः। कृतिम्=डुकृञ् करणे (तना०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

ब्रह्मचर्येण वेदाऽध्ययनेन ब्रह्मविज्ञानेन ऋ० भू० २३८ अथर्व० ११.५.१९. ब्रह्मचर्य-सेवन से स० प्र० ९८, अथर्व० ३.१४.११.१८. पूर्ण ब्रह्मचर्य रूप तप से सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.१७. ['ब्रह्मन्' उपपदे चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'गदमदचर०' अ० ३.१.१.१००. इति यत्]

ब्रह्मचारिणम् ब्रह्मचारी को सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.३. **ब्रह्मचारी**=ब्रह्मणि वेदे चरितुं शीलं यस्य सः ऋ० भू० २३५, अथर्व० ११.३.५.५. [ब्रह्मन्नुपपदे चर गतौ (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

ब्रह्मचोदनीम् विद्या-धनप्राप्तये प्रेरिकाम् (राजनीतिम्) ६.५३.८. [ब्रह्मन्-चोदनीपदयोः समासः। चोदनी चुद सञ्चोदने (चु०) धातोर्ल्युडन्तान् स्त्रियां ङीप्]

ब्रह्मचोदनौ आत्माऽन्नप्राप्तिप्रेरकौ (घूर्षाहौ=सूर्यविद्वांसौ) ४.३३. [ब्रह्मन्-चोदनपदयोः समासः। चोदनः=चुद सञ्चोदने (चु०) धातोः कर्त्तरि ल्युट् छान्दसः]

ब्रह्मजूतः धनानि प्राप्तः (इन्द्रः=राजपुरुषः) ३.३४.१. ब्रह्मणा धनेनाऽन्नेन युक्तः (इन्द्रः=शत्रुविदारकः सेनेशः) ७.१९.११. [ब्रह्मन्-जूतपदयोः समासः। जूतः='जू' इति सौत्रो धातुः, ततः क्तः]

ब्रह्मज्येष्ठम् ब्रह्मैव परमेश्वरो विद्या वा ज्येष्ठा सर्वोत्कृष्टा यस्य तम् (ब्रह्मचारिणम्) ऋ० भू० २३२, [ब्रह्मन्-ज्येष्ठपदयोः समासः। ज्येष्ठम्=प्रशस्यप्राति० अतिशायन इष्ठन्प्रत्यये 'ज्य च' इति ज्यादेशः]

ब्रह्मणस्पतिम् ब्रह्माण्डस्य स्वामिनं परमात्मानम् ७.४४.१. ब्रह्मणो वेदस्य ब्रह्माण्डस्य सकलैश्वर्यस्य वा स्वामिनं जगदीश्वरम् ७.४१.१. ब्रह्माण्डस्य वेदस्य वा पालकम् (ईश्वरम्) ३३.४९. अपने उपासक वेद और ब्रह्माण्ड के पालन करने वाले (ईश्वर) को सं० वि० १५५, ७.४१.१. **ब्रह्मणस्पतिः**=बृहत्या प्रजायाः पालकः (राजसेनाऽधीशः) २.२४.२. धनस्य वेदस्य वा पालकः स्वामी (ईश्वरः) ३३.८९. धनकोशेशः (राजा) ६.७५.१७. ब्रह्माण्डस्य पालयिता परमेश्वरः) १.१८.४. वेदविद्यायाः पालकः (अ०—परमात्मा) ३४.५७. **ब्रह्मणस्पते**=ब्रह्माण्डस्य पालकेश्वर १.१८.५. वेदविद्याप्रचारक (अलंविद्यो जनः) २.१.३. ब्रह्माण्डस्य रक्षक (भा०—जगदीश्वर) ३४.५८. वेदस्य ब्रह्माण्डस्य वा स्वामिन् (ईश्वर) प्र०—'षष्ठ्याः पतिपुत्र०' इति विसर्जनीयस्य सत्वम् १.१८.३. सनातनस्य वेदशास्त्रस्य पालकेश्वर ३.२८. हे ब्रह्माण्ड और वेदों के पालन करने वाले (परमात्मन्) सं० प्र० ४२३, ९.८३.१. [ब्रह्मन्-पतिपदयोः समासः। षष्ठ्या अलुक्। 'षष्ठ्याः पतिपुत्र०' अ० ८.३.५३. सूत्रेण विसर्जनीयस्य सत्वम्। ब्रह्मणस्पतिः=ब्रह्मणः पाता वा पालयिता वा नि० १०.१२. ब्रह्मणस्पतिः पदनाम निघं० ५.४. एष वै ब्रह्मणस्पतिर्य एष (सूर्यः) तपति श० १४.१.२.१५]

ब्रह्मण्यन्तः आत्मनो ब्रह्मेच्छन्तः (यतस्रुचः=ऋत्विजः) २.३४.११. ब्रह्म महद्धनं काम्यमानाः (नरः=विद्वज्जनाः) २.१९.१. ब्रह्म धनं कामयन्तः (विद्वज्जनाः) २.१९.८. धनं प्राप्तुमिच्छतः (ज्ञान-वृद्धाञ्जनान्) ६.२१.८. **ब्रह्मण्यते**=आत्मनो धर्मेण धनमिच्छते (मर्त्याय=मनुष्याय) ४.२४.२. ['ब्रह्मन्' इति व्याख्यातम्। तत आत्मन इच्छायां क्यजन्ताच्छतृ]

ब्रह्मद्विषम् धनस्य द्वेष्टारम् (दुर्जनम्) ६.५२.२. **ब्रह्मद्विषः**=ये ब्रह्म वेदं परमात्मानं वा द्विषन्ति तान् (नास्तिकाञ्जनान्) ५.४२.९. वेदेश्वरविरोधिनः (पापाचारिणो जनस्य) २.२३.४. **ब्रह्मद्विषे**=यो ब्रह्म परमात्मानं वेदं वा द्वेष्टि तस्मै (दुष्टजनाय) ३.३०.१७. वेदविद्याद्वेष्ट्रे (दुर्जनाय) ६.५२.३. ['ब्रह्मन् उपपदे द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि। ब्रह्मद्विषे

ब्राह्मणद्वेष्ट्रे नि० ६.११.]

ब्रह्मन् चतुर्वेदवित् (शिक्षित-पुत्र) २३.२५. विद्यादिना सर्वेभ्यो महन् परमात्मन् २२.२२. ब्रह्मविद्विद्वन् २३.५१. प्राप्तब्रह्मविद्य (राजन्) १०.२८. विद्यया वृद्ध (विद्वज्जन) २२.४. सकलवेदवित् (वसिष्ठ=पूर्णविद्वज्जन) ७.३३.११. **ब्रह्मा**=चतुर्वेदविद्विद्वान् (जनः) १८.२९. महान् योगी विद्वान् २३.१४. चतुर्वेदज्ञाता यज्ञाऽनुष्ठानकर्त्ता (पुरुषार्थिजनः) ऋ० भू० १५४ १८.२९. अखिलवेदाऽध्येता (अलंविद्यो जनः) २.१.३. चतुर्वेदविज्जनश्चतुर्णां वेदानां प्रकाशकः परमात्मा वा १.१६४.३५. चारों वेदों का जानने वाला विद्वान् (पुरुष) सं० वि० १९६, ९.११३.६. अन्तरिक्षस्थः पवनः २१.१६. **ब्रह्माणम्**=अधीतसाङ्गोपाङ्गचतुर्वेदम् (राजानम्) ९.२६. **ब्रह्माणः**=चतुर्वेदाऽध्ययनेन 'ब्रह्मा' इति संज्ञां प्राप्ताः (विद्वांसो जनाः) १२.४४. वेदान् विदित्वा क्रियावन्तः (ईश्वरोपासका जनाः) १.१०.१. ['ब्रह्मन्' इति व्याख्यातम् । ब्रह्मा सर्वविद्यः सर्वं वेदितुमर्हति । ब्रह्मा परिवृढः श्रुततः नि० १.७. यमेवामुं त्रय्यै विद्यायै तेजो रसं प्रावृहत् तेन ब्रह्मा ब्रह्मा भवति कौ० ६.११. अथ केन ब्रह्मत्वं क्रियत इति त्रय्या विद्ययेति ऐ० ५.३३. एष ह वै विद्वान्त्सर्वविद् ब्रह्मा यद् भृग्वङ्गिरोविद् (अथर्ववेदविद्) गो० पू० २.१८ यज्ञस्य हैष भिषग् यद् ब्रह्मा यज्ञायैव तद् भेषजं कृत्वा हरति ऐ० ५.३४. शरद् ब्रह्मा तस्मात् यदा सस्यं पच्यते ब्रह्मण्वत्यः प्रजा इत्याहुः श० ११.२.७.३२. चन्द्रमा ब्रह्मा (आसीत्) गो० पू० १.१३. चन्द्रमा वै ब्रह्माऽधिदेवं मनोऽध्यात्मम् गो० पू० ४.२. मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा श० १४.६.१.७. हृदयं वै (यज्ञस्य) ब्रह्मा श० १२.८.२.२३. चक्षुर्ब्रह्मा तै० २.१.५.९. बलं वै ब्रह्मा तै० ३.८.५.२. ब्रह्मा ब्रह्माऽभवत् स्वयम् तै० ३.१२.९.३. प्रजापतिर्वै ब्रह्मा गो० उ० ५.८. प्राणदेवत्यो वै ब्रह्मा ष० २.९.]

ब्रह्मन् ब्रह्मणि धने ३.१३.६. [ब्रह्मन् इति व्याख्यातम् ततः 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्या लुक्]

ब्रह्मपुत्र इव ब्रह्मणश्चतुर्वेदवेत्तुः पुत्रस्तया २.४३.२. [ब्रह्मन्-पुत्रपदयोः समासे कृते पुनः इवपदेन समासः]

ब्रह्मप्रियम् ईश्वरो वेदो वा प्रियो यस्य तम् (जनम्) १.८३.२. ब्रह्म वेदाध्ययनं प्रियं यस्य तम् (अपत्यम्) १.१५२.६. [ब्रह्मन्-प्रियपदयोः समासः]

ब्रह्मयुजः ब्रह्माणं युञ्जन्ति यैस्ते (अत्याः=अश्वाः) १.१७७.२. ['ब्रह्मन्' उपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्विप्]

ब्रह्मयुजा यौ ब्रह्म धनं योजयतस्तौ (हरी=जलाग्नी) ३.३५.४. ['ब्रह्मयुज' इति व्याख्यातम् । ततो प्रथमाद्विवचनस्याकारः]

ब्रह्मराजन्याभ्याम् ब्रह्म ब्राह्मणश्च राजन्यः क्षत्रियश्च ताभ्याम् २६.२. ब्राह्मण और क्षत्रिय के लिए स० प्र० ९७, २६.२. [ब्रह्मन्-राजन्यपदयोः समासः । राजन्यः=राजन्प्राति० 'राज्ञोऽपत्ये जातिग्रहणम्' अ० ४.१.१३७. वा० सूत्रेण यत्]

ब्रह्मवनि यो ब्राह्मणं विद्वांसं वनति तम् (परमेश्वरम्) प्र०—'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' अ० ३.२.२७. अनेन ब्रह्मोपपदे वनधातोरिन् प्रत्ययः 'सुपां सुलुक्०' इत्यमो लुक् च भा०—यो ब्रह्मभिर्वेदविद्भिर्ब्राह्मणैर्वन्यते संसेव्यते तम् (ईश्वरम्) १.१७. यो वेदं वनयति तम् (परमेश्वरं भौतिकमग्निं वा) १.१८. ब्रह्मणो वेत्तृणां संविभक्तारं तत्तथा (अ०—सभाध्यक्षम्) ६.३. यथा बलविद्यासम्भाजितारं तथा (परमविद्वज्जनम्) ५.२७. सर्वमनुष्यार्थं ब्रह्मणो वेदस्य विभाजितारं ब्रह्माण्डस्य मूर्त्तद्रव्यस्य प्रकाशकं वा (परमेश्वरं भौतिकाग्निं वा) १.१८. ['ब्रह्मन्' उपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' अ० ३.२.२७. सूत्रेण इन् । विभक्तेश्च लुक्]

ब्रह्मवनिः यया ब्रह्मविदो मनुष्या ब्रह्म परमात्मानं वेदं वा वनन्ति सम्भजन्ति सा (स्वाहा=वाक्) ५.१२. [ब्रह्मन्-उपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'कृतो बहुलं वा' इति करणे इन्प्रत्ययः]

ब्रह्मवर्चसाय वेदाऽध्ययनाय २०.३. पूर्णविद्याप्रचाराय ऋ० भू० २१८, २०.३. [ब्रह्मन्-वर्चस्पदयोः समासे 'ब्रह्महस्तिभ्यां वर्चसः' अ० ५.४.७८. सूत्रेण समासान्तोऽच् । गायत्री ब्रह्मवर्चसम् जै० १.९३. तेजो ब्रह्मवर्चसं गायत्री ऐ० आ० १.१.३. ब्रह्मवर्चसं वै रथन्तरम् तै० सं० ३.५.९.३. सोमो वै शुक्रो ब्रह्मवर्चसम् मै० १.६.८. शुक्ला व्रीहय एवमिव वै ब्रह्मवर्चसम् काठ० ११.५.]

ब्रह्मवर्चसी वेदविद्या-प्रदीप्तः (ब्राह्मणः=वेदेश्वरविज्जनः) २२.२२. [ब्रह्मन्-वर्चस्पदयोः समासे कृते सुस्थाने 'इयाडियाजीकाराणामुपसंख्यानम्' अ० ७.१.३९. वा० सूत्रेण ईकारः । समासान्ताऽभावश्च]

ब्रह्मवाहसम् वेदानां शब्दाऽर्थसम्बन्धस्वराणां प्रापकम् (आप्तं विद्वज्जनम्) ६.४५.७. **ब्रह्मवाहसे**=धनप्रापकाय (जनाय) ५.३४.१. वेदेश्वरविज्ञानप्रापणाय ६.४५.४.

यो ब्रह्माणि धनानि वहति प्राप्नोति तस्मै (जनाय) ५.३९.५ [ब्रह्मन्-उपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् औणा० असुन्]

ब्रह्मवाहः ये ब्रह्म धनं धान्यं प्रापयन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ६.२१.६. अनन्तधनवेदविद्याप्रापक (विद्वज्जन) १.१०१.९. धनप्रापिकाः (क्रियाः) ३.४१.३. [ब्रह्मन्-उपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' अ० ३.२.६४. सूत्रेण छान्दसो ण्विः । अन्यत्र 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

ब्रह्मवाहस्तमम् अतिशयेन वेदेश्वरविद्याप्रापकम् (विद्वत्तमं जनम्) ६.४५.१९. [ब्रह्मवाहस्-प्राति० अतिशायने तमप्]

ब्रह्मसंशिते ब्रह्मणा वेदविदा सेनापतिना प्रशंसिते (सेने) ६.७५.१६. ब्रह्मभिश्चतुर्वेदविद्भिः प्रशंसिते शिक्षया सम्यक् तीक्ष्णीकृते (अ०—सेनानीपत्नि) १७.४५. [ब्रह्मन्-संशितपदयोः समासः । संशितः=सम्+शो तनूकरणे (दिवा०) धातोः क्तप्रत्यये 'शाच्छोरन्यत०' इतीकारादेशः]

ब्रह्महत्यायै ब्रह्मणो वेदस्येश्वरस्य विदुषो वा हनननिवारणाय ३९.१३. ['ब्रह्मन्' उपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनस्त च' अ० ३.१.१०८. सूत्रेण क्यप् तकारान्तादेशश्च । स्त्रियां टाप्]

ब्रह्मा धनानि प्र०—अत्राऽऽकारादेशः २.२०.५. [ब्रह्मन् इति व्याख्यातम् । ततः सु-स्थान आकारादेशश्छान्दसः]

ब्रह्माणेव यथा समग्रवेदविदौ (विद्वांसौ पुरुषौ) २.३९.१. [ब्रह्माणा० इवपदयोः समासः]

ब्राह्मणम् वेदेश्वरविदम् (विद्वज्जनम्) ३०.५. ब्रह्मनिष्ठात्वम् ऋ० भू० २०३, अथर्व० ७.६.६७.१. **ब्राह्मणः**=वेदोपवेदवित् भा०—विद्वत्तमः (अ०—वैद्यो जनः) १२.९६. ब्रह्मणा वेदेन परमेश्वरस्योपासनेन च सह वर्त्तमानो विद्याद्युत्तमगुणयुक्तः पुरुषः ऋ० भू० २२३, ९.४०. वेदेश्वरवित् (जनः) २२.२२. वेदेश्वरविदनयोः सेवक उपासको वा (पुरुषः) ३१.११. **ब्राह्मणात्**=ब्रह्मणो बृहतोऽवयवात् (राधसः=पृथिव्यादिधनात्) प्र०—अत्र 'अनुदात्तादेश्च' अ० ४.३.१४०. इत्यवयवार्थेऽञ्प्रत्ययः १.१५ ५. **ब्राह्मणानाम्**=ब्रह्मणः परमेश्वरस्य वेदचतुष्टयस्य वा सेवकानाम् (जनानाम्) ९.४०. ब्रह्मवेदभक्तानाम् (प्रजापुरुषाणाम्) १०.१८. वेदविदां सभासदाम् ऋ० भू० २२२ **ब्राह्मणाः**=व्याकरणवेदेश्वरवेत्तारः (विद्वांसो जनाः) १.१६४.४५. ब्रह्मविदः (जनाः) २७.३. [ब्रह्मन्प्राति० 'तदधीते तद्वेद' इत्यर्थेऽण् । 'अनुदात्तादेश्च' अ० ४.३.१४० सूत्रेण वाऽवयवार्थेऽञ् । ब्राह्मणाः=एते वै देवा अहुतादो यद् ब्राह्मणाः गो० पू० १.६. अथ हैते मनुष्यदेवा ये ब्राह्मणाः ष० १.१. दैव्यो वै वर्णो ब्राह्मणः तै० १.२.६.७. आग्नेयो ब्राह्मणः तां० १५.४.८. सोमराजानो ब्राह्मणाः तै० १.७.४.२. सोम्या हि ब्राह्मणाः तै० २.७.३.१. तस्मादपि (दीक्षितम्) राजन्यं वा वैश्यं वा ब्राह्मण इत्येव ब्रूयाद्, ब्रह्मणो हि जायते यो यज्ञाज् जायते श० ३.२.१.४०. स (क्षत्रियः) ह दीक्षमाण एव ब्राह्मणतामभ्युपैति ऐ० ७.२३. य उ वै कश्च यजते ब्राह्मणो भूयेवैव यजते श० १३.४.१.३. गायत्रो वै ब्राह्मणः ऐ० १.२८. ब्राह्मणो मनुष्याणां (मुखम्) तां० १.६.१. अस्य सर्वस्य ब्राह्मणो मुखम् श० ३.९.१.१४. ब्राह्मणो हि रक्षसामपहन्ता श० १.१.४.६. वसन्तो वै ब्राह्मणस्यर्त्तुः तै० १.१.२.६. सामवेदो ब्राह्मणानां प्रसूतिः तै० ३.१२.९.२. तस्माद् ब्राह्मणो वसन्तऽआदधीत ब्रह्म हि वसन्तः (ऋतुः) श० २.१.३.५. आग्नेयो हि ब्राह्मणः काठ० २९.१०. ब्राह्मणो व्रतभृत् तै० सं० १.६.७.२.]

ब्राह्मणासः वेदेश्वरवेत्तारः (विद्वज्जनाः) ६.७५.१०. वेदेश्वरविदः (अ०—विद्वांसो जनाः) २९.४७. [ब्राह्मण इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

ब्राह्मम् ब्रह्मोपासकम् (विद्वज्जनम्) भा०—उपदेशनाध्यापन-धार्मिकत्व-जितेन्द्रियत्व-शरीराऽऽत्मबलवर्द्धनम् ३१.२१. ब्रह्मणः सकाशाज्जातं ज्ञानम् ऋ० भू० १३३, [ब्रह्मन्-प्राति० जातार्थेऽण् । 'ब्राह्मोऽजातौ' इति टेर्लोपः]

ब्राह्मये यो ब्रह्मणः परमेश्वरस्याऽपत्यमिव तस्मात् (सूर्यात्) प्र०—अत्र पञ्चम्यर्थे चतुर्थी ३१.२०. यो देवेभ्यो विद्वद्भ्यो ब्रह्मोपदेशं प्राप्य वर्त्तमानस्तस्मै, ब्रह्मरुचिर्ब्राह्मिस्तस्यै, ब्रह्मणोऽपत्यमिव वर्त्तमानो यस्तस्मै (ब्रह्मसेवकाय) ऋ० भू० १३३, ३१.२०. [ब्रह्मन्प्राति० 'तस्येदम्' इत्यणि ब्राह्म, ततोऽपत्यार्थं इञ्]

ब्राह्मणवर्चसेन पूर्णविद्यया सह ऋ० भू० १६१, अथर्व० १६.४.४९. [ब्राह्मण-वर्चस्पदयोः समासे समासान्तोऽच्]

ब्रुवते परस्परमुपदिशन्ति १.३७.१३. **ब्रुवन्ति**=उपदिशन्ति ७.२६.३. **ब्रुवन्तु**=उपदिशन्तु १.७४.३. उपदिशन्त्वध्यापयन्तु वा १९.५८. **ब्रुवाते**=वदतः ३.५४.७. **ब्रुवीत**=उपदिशत ५.४९.२. **ब्रुवे**=उपदिशामि ७.३१.६.

कथयामि ३.३७.५. उपदिशेयम् १.१८५.७. **ब्रूहि**=आज्ञापय १.११४.१०. कथय १.६१.१३. उपदिश १.३५.११. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लोटि रूपाणि]

ब्रुवन् अधिकं ब्रुवन्तु प्र०—लेट्-प्रयोगोऽयम् १७.५२. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लेट् लङ् वा]

ब्रुवन्तः उपदिशन्तः (सखायः) ५.१२.५. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः शतृ]

ब्रुवाणः उपदिशन् (सज्जनः) ६.३८.२. उपदेशेन प्रेरयन् (मित्रः=सुहृज्जनः) ३.५९.१. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः शानच्। ब्रुवाणः=प्रब्रुवाणः शब्दं कुर्वन् नि० १०.२२.]

ब्रुवाणा उपदिशन्ती (माता) ५.४७.१. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः शानजन्ताट् टाप् स्त्रियाम्]

ब्रूतात् उपदिशतु ब्रवीतु वा ४.२४. ब्रूहि ८.४३. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लोट्। 'तुह्योस्तातङ्०' इति तातङ्]

भक्तम् सेवितम् (आयुः=जीवनम्) १.१२७.५. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः]

भक्षणम् सूर्यप्रकाशस्याऽभ्यवहरणम् १.११०.३. [भक्ष अदने (चुरा०) धातोर्ल्युट्]

भक्षत सेवध्वम् ३३.४१. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। सिब् विकरणः। भक्षत विभक्षमाणाः नि० ६.८.]

भक्षम् भजनं सेवनम् ८.३७. **भक्षः**=सेवनीयः (पदार्थः) ८.१२. भोज्यसमूहः ८.५८. **भक्षान्**=भक्षितुमर्हान् भोज्यान् पदार्थान् १९.२९. **भक्षाय**=भोजनाय १.१८७.७. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिकः सः। भक्ष अदने (चुरा०) धातोर्वा घञर्थे कः। प्राणो वै भक्षः श० ४.२.१.२९.]

भक्षयामि भुञ्जे भोजयामि वा १९.३४. पालयामि ८.३७. [भक्ष अदने (चुरा०) धातोर्लट्]

भक्षि सेवस्व ३४.३५. भजेयम्, सेवेय ७.४१.२. सेवन करता हूँ सं० वि० १५६, ७.४१.२. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लेट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

भक्षीय सेवेय अ०—स्वीकुर्याम् ३.२०. सेवेय भुञ्जीय वा ४.२१.१०. अद्याम् ३.२०. भजेयम् ५.५७.७. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लिङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

भक्ष्यमाणः भुज्यमानः (भक्षः=भोज्यसमूहः) ८.५८. [भक्ष अदने (चुरा०) धातोः कर्मणि शानच्]

भग सकलैश्वर्यप्रद (ईश्वर) ३४.३८. अखिलशोभायुक्त (ईश्वर) ३४.३८. विद्यैश्वर्यप्रद (ईश्वर) ३४.३६. भजमान (ईश्वर) ३४.३६. भजनीय (ईश्वर) ३४.३६. ऐश्वर्ययुक्त (ईश्वर) ३४.३६. भजनीयतम (सवितः=जगदीश्वर) ३.५६.६. भजनीयस्वरूप (ईश्वर) सं० वि० १५६, ७.४१.३. भजनीयवस्तुप्रद (ईश्वर) ७.४१.५. सर्वसामग्रीप्रद (ईश्वर) ७.४१.३. सत्याचरण करने वालों को ऐश्वर्यदाता (परमेश्वर) सं० वि० १५६, ७.४१.३. सेवनीयतम (ईश्वर) ७.४१.३. **भगम्**=भजते सुखानि येन तच्चक्रवर्त्यादिराज्यधनम् प्र०—अत्र भजधातोः 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' अ० ३.३.११८. अनेन घः प्रत्ययः १.१४.३. धर्मं सेवमानम् (अर्यमणं=न्यायाधीशम्) १.१३६.६. ऐश्वर्ययुक्तम् (व्यवहारम्) ३४.३९. ऐश्वर्यवन्तम् (सोमं=विद्वज्जनम्) १.८९.३. सेवनीयमैश्वर्यम् २८.३३. ऐश्वर्यं भजमानम् (धार्मिकं जनम्) १.१४१.११. विद्याश्रीसमूहम् १.९१.७. सकलैश्वर्यप्रदं व्यवहारम् ३.२०.५. भजनीयस्वरूप (ईश्वर) को सं० वि० १५६, ७.४१.२. ऐश्वर्यकारकं राजानम् ३३.४९. **भगस्य**=सूर्यस्येव १.१३६.२. सकलैश्वर्ययुक्तस्य (सवितुः=जगदीश्वरस्य) ५.८२.१. **भगः**=भजनीयः पदार्थसमुदायः ४.५५.१०. सेवितुमर्हो धनसमूहः १.२४.४. ऐश्वर्यवान् (आप्तो जनः) ३४.५४. भजनीयः सेवनीयः (ईश्वरः) ३४.३८. ऐश्वर्यप्रदः सूर्यः ३.५५.१७. सकलैश्वर्यसम्पन्नः (परमेश्वरः) ऋ० भू० २०८, ऋ० ८.३.२७.१. ऐश्वर्यम् १.६२.७. प्रभावम् २.१९.८. सौभाग्यवान् (विद्वज्जनः) १.९०.४. ऐश्वर्यकर्त्ता वायुः ५.५१.११. ऐश्वर्ययोगः (राजा) ५.३३.५. धनैश्वर्यम् ७.१५.१२ ऐश्वर्यभागी (सूर्यः) २.३१.४. भगवान् ६.४९.१४. ऐश्वर्यमिच्छुः (सज्जनः) ६.२८.५. भजनीयः प्राणः ६.५०.१३. **भगाय**=धनाद्याय सेवनीयैश्वर्याय ८.७. ऐश्वर्ययुक्ताय धनाय ३०.१. अखिलैश्वर्याय ११.७. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेणे' ति घः। भगः धननाम निघं० २.१०. भगः पदनाम निघं० ५.६. भगो भजतेः नि० १.६. भगस्य भागधेयस्य नि० ९.३१. स्त्रीभगस्तथा स्याद् भजतेः नि० ३.१६. यज्ञो भगः श० ६.३.१.१९. भगो व्याख्यातः। तस्य कालः प्रागुत्सर्पणात् नि० १२.१३. तस्य (भगस्य) चक्षुः परापतत् तस्मादाहुरन्धो वै भग इति गो० २.१.२. श० १.७.४.६.]

भगवती बह्वैश्वर्ययुक्ता विदुषी (स्त्री) १.१६४.४०.

सत्यभाषणयुक्ता वाणी, स० प्र० ४२०. [भग-प्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्तान् ङीप् । भग इति व्याख्यातम्]

भगवन् अत्यन्तैश्वर्यसम्पन्न (ईश्वर) ३६.२१. **भगवन्तः**=बहूत्तमैश्वर्ययुक्ताः (जनाः) ७.४१.४. सकलैश्वर्ययुक्ताः (जनाः) ३४.३७. सकलशोभायुक्ताः (भा०—सिद्धाः श्रीमन्तो जनाः) ३४.३८. **भगवान्**=सकलैश्वर्यसम्पन्नः (ईश्वरः) ७.४१.५. प्रशस्तैश्वर्ययुक्तः (परमेश्वरः) ३४.३८. पूजनीय देव (परमात्मा) सं० वि० १५६, ७.४१.५. [भग इति व्याख्यातम् । ततो भूम्न्यर्थे मतुप्]

भगवः भाग्यवन् (सेनापते) १६.५३. ऐश्वर्यसम्पन्न (भा०—सभेश राजन्) १६.५२. ऐश्वर्ययुक्त (अ०—सेनापते) १६.६. [भगप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । ततः सम्बुद्धौ 'मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि' अ० ८.३.१. सूत्रेण रुत्वम्]

भङ्गुरावताम् कुत्सिता भङ्गुराः प्रहताः प्रकृतयो विद्यन्ते येषां तेषाम् (शत्रूणाम्) ११.२६. [भङ्गुराप्राति० निन्दायां मतुबन्तात् षष्ठ्या बहुवचनम् । भङ्गुरा=भञ्जो आमर्द्दने (रु०) धातोः 'भञ्जभासमिदो घुरच्' अ० ३.२.१६१. सूत्रेण घुरच् । घित्वात् कुत्वम् । ततः स्त्रियां टाप्]

भङ्गेन मर्दनेन ७.३. [भञ्जो आमर्द्दने (रुधा०) धातोर्घञ् । घित्वात् कुत्वम्]

भज सेवस्व ७.४६.४. अभिलष १.१२१.१५. स्थापय ४.२८. **भजति**=भागं करोति ५.३४.७. **भजतु**=विभागं करोतु ६.४५. **भजते**=सेवते १.१२३.४. **भजन्त**=भजन्ते सेवन्ते १९.५६. **भजन्तु**=सेवन्ताम् ऋ० भू० १६०, अथर्व० १९.१.८.२. **भजस्व**=सेवस्व ४.३२.२१. **भजाति**=विभजेत् २.२६.१. **भजामहे**=सेवामहे १.१८७.९. **भजेमहि**=सेवेमहि १.१५७.२. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लटि लङि लोटि लेटि च रूपाणि]

भजतन सेवध्वम् ७.५६.२१. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् । तप्रत्ययस्य तनबादेशश्छान्दसः]

भद्रजानयः ये भद्रं कल्याणं जानन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ५.६१.४.

भद्रम् भन्दनीयं धर्माचरणं सुखं वा ३०.३. कल्याणकरम् (मोक्षमार्गम्) ४.१०.१. जननीयं सुखम् १२.३. भन्दनीयं कल्याणयुक्तम् (विश्वं=जगत्) २.२४.१६. कल्याणं सर्वदुःखरहितं सत्यविद्याप्राप्त्याऽभ्युदयनिःश्रेयससुखकरम् (धर्माचरणम्) ऋ० भू० ३, ३०.३. शरीराऽऽत्मसुखम् १.८९.८. कल्याणं सर्वैः शिष्टैर्विद्वद्भिः सेवनीयम् (ऐहिकपारमार्थिकं सुखम्) १.१.६. वृष्ट्यादिद्वारा कल्याणकरम् (नाभ=जलम्) १.१०८.३. कल्याणकारकं शीलम् १.९४.१४. सेवनीयसुखप्रदम् (गृहम्) ५.१.१०. भन्दनीयं वच २.४३.३. भजनीयं कल्याणकारकम् (शर्म=गृहम्) ७.६०.८. भन्दनीय कल्याणकरं शुद्धवायूदकवृक्षम् (गृहम्) ६.२८.६. सत्यलक्षणकरं वचः २५.२७. कल्याणकारक गुण-कर्म-स्वभाव और पदार्थ को सं० वि० ४.३०.३. व्यावहारिक और पारमार्थिक सुख आर्याभि० १.६, ऋ० १.१.२.१. **भद्रस्य**=आनन्दकरस्य (पुरुषस्य) १५.४५. **भद्रः**=कल्याणकारकः सेवनीयो वा (परमेश्वर ओषधिराजो वा) १.९१.५. भजनीयः (अग्निः=पावकः) १५.३८. सुखकारी (भुवस्पतिर्विद्वान्) ५.३४. भद्रस्वरूप भद्र करने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.१९, १.६.१९.५. **भद्राः**=कल्याणकारकाः (देवाः=विद्वांसो जनाः) १.८९.१. कल्याणहेतवः (विद्वांसो जनाः) १.११५.३. भजनीयाः (गोपाः=रक्षका जनाः) १.१६३.५. कल्याणकराः (क्रतवः=यज्ञाः प्रज्ञा वा) २५.१४. **भद्रे**=कल्याणकरे व्यवहारे ऋ० भू० २५८, १९.५०. **भद्रेण**=भजनीयेन व्यवहारेण भा०—धर्माऽऽचरणेन १९.११. सुखकारकेण (शवसा=शरीरात्मबलेन) १.९४.१५. [भदि कल्याणे सुखे च (भ्वा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रक् । अयं वै लोको भद्रः ऐ० १.१३. अन्नं वै भद्रम् तै० १.३.३.६. भद्रमेभ्योऽभूदिति कल्याणमेवैतन् मानुष्यै वाचो वदति श० ४.६.९.१९. भद्रं भगेन व्याख्यातं भजनीयम् भूतानामभिद्रवणीयम् भवद्रमयतीति वा भाजनवद्वा नि० ४.९. श्रीर्वै भद्रम् जै० ३.१७२.]

भद्रम्भद्रम् कल्याण-कल्याणकारकम् (क्रतुं=कर्म) १.१२३.१३. [भद्रपदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

भद्रया मङ्गलकारक रीति से सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.३. **भद्रा**=कल्याणकारिणी (सन्दृक्=समानदृष्टिः) ४.६.६. मङ्गलकारिणी (रातिः=दानक्रिया) ६.४५.३२. कल्याणकरी (सुमतिः=शोभना प्रज्ञा) २५.१५. कल्याणरूपा (सुमतिः) १.११४.९. सेवनीया (रातिः=दानम्) १५.३८. **भद्रायाम्**=कल्याणकर्य्याम् (सन्दृष्टौ=सम्यग्दर्शने) ६.१.४. **भद्राः**=शुभकरीः (रशनाः=रज्जवः) २९.१६. भन्दनीयाः (प्रशस्तयः=प्रशंसनीयाः प्रजाः) १५.३९. कल्याणप्रतिपादिकाः (प्रशस्तयः=प्रशंसाः) १५.३८. कल्याणकर्य्यः (सर्गाः=सृष्टयः) ४.५२.५. [भद्रं व्याख्यातम् ।

ततः स्त्रियां टाप्। भद्रे-भन्दनीये भाजनवति वा कल्याणे मनसि स्यामेति नि० ११.१७. भद्रा=भाजनवती नि० १२.१९]

भद्रवाचः या भद्राः कल्याणकर्य्यः सत्यभाषणान्विता वाचश्च ताः ६.२८.६. [भद्रा-वाच्पदयोः समासः पूर्वपदस्य ह्रस्वः]

भद्रवाच्याय भद्रं वाच्यं यस्मै तस्मै (मनुष्याय) २१.६१. [भद्र-वाच्यपदयोः समासः]

भद्रवादी भद्रं कल्याणं वदितुं शीलं यस्य सः (उपदेशकः) २.४२.२. [भद्रोपपदे वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

भद्रशोचे भद्रा भजनीया शोचिर्दीप्तिर्यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वन् पुरुष) १२.२६. कल्याणदीपक (अग्ने=वह्निरिव विद्वज्जन) ७.१४.२. कल्याणप्रकाशक (राजन्) ५.४.७. [भद्रा-शोचिपदयोः समासः। शोचिः=ज्वलतो नाम निघं० १.१७.]

भद्रहस्ता भद्रकरणहस्ताविव गुणा ययोस्तौ (इन्द्राग्नी=विद्युद्भौतिकाग्नी) १.१०९.४. [भद्र-हस्तपदयोः समासे 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

भद्रा कल्याणकर्मकरौ (पाणी=बाहू) ४.२१.९. [भद्रप्राति० प्रथमाद्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

भद्रा भजनीयसुखप्रदानि (द्रविणानि=धनानि यशांसि वा) ४.५८.१०. सेवनीयानि कल्याणकराणि (वस्त्राणि) ३.३९.२. भद्राणि (नामानि) १.१२३.१२. कल्याणकारकाणि (तविषाणि=बलानि) १.१६६.९. [भद्रप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

भद्राणि कल्याणकराणि कर्म्माणि ७.२६.४. **भद्रे**=सुखप्रदे (रात्रिदिने) १.९५.६. [भद्रं व्याख्यातम्। तस्य नपुंसके रूपम्]

भद्रेभिः कल्याणकारकैर्गुणैः १.४९.१. [भद्रप्राति० भिसि 'बहुलं छन्दसि' इति ऐसादेशो न भवति]

भनक्ति शत्रुसेनां मर्दयति ६.६८.६. [भञ्जो आमर्दने (रु०) धातोर्लट्]

भनति वदति ६.११.३. **भनन्त**=वदन्ति ४.१८.७. भनन्तूपदिशन्तु ७.१८.७. **भनन्ति**=शब्दयन्ति ४.१८.६. [भण शब्दार्थे (भ्वा०) धातोर्लट्। 'भनन्त' प्रयोगे लङ् व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च। भनति अर्चतिकर्मा नि० ३.१४.]

भन्त्स्यामि बद्धं करिष्यामि २२.४. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्लृट्]

भन्दते सुखयति ३.३.४. [भदि कल्याणे सुखे च (भ्वा०) धातोर्लट्। भन्दते अर्चतिकर्मा नि० ३.१४. भन्दते इति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६.]

भन्ददिष्टये कल्याणसुखसङ्गतये (धीमते जनाय) ५.८७.१. [भन्दद्-इष्टिपदयोः समासः। भन्दत्=भदि कल्याणे सुखे च (भ्वा०) धातोरौणा० अतिः। इष्टिः=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः क्तिन्]

भन्दनानाम् कल्याणाऽऽचरणानाम् (पत्नीनाम्) ८.४८. [भदि कल्याणे सुखे च (भ्वा०) धातोर्ल्युट्। भन्दनां भन्दतेः स्तुतिकर्मणः नि० ५.२.]

भन्दमानः कल्याणं कुर्वाणः (वैश्वानरः=पावकः) ३.२.१२. [भदि कल्याणे सुखे च (भ्वा०) धातोः शानच्]

भन्दमाने सुखकारके (उषसौ=रात्र्यहनी) ३.४.६. कल्याणकारके (नक्तोषासा=रात्रिदिने) १.१४२.७. [भदि कल्याणे सुखे च (भ्वा०) धातोः शानच्]

भन्दिष्ठस्य अतिशयेन कल्याणाऽऽचरणस्य (नरस्य) ५.१.१०. अतिशयेन कल्याणकारकः (अग्निः=सेनापतिः) १.९७.३. [भदि कल्याणे सुखे च (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्ताद् अतिशायन इष्ठन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

भयते बिभेति ४.१७.१०. भयं करोति ७.५८.२. भयं जनयति प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदञ्च १.५८.५. कम्पते १.१६६.५. **भयन्ते**=कम्पन्ते १.१६६.४. बिभ्यति ४.६.५. [ञिभी भये (जु०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुर्न भवति। व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

भयमानः भयं प्राप्नुवन् (राजपुरुषः) प्र०—अत्र व्यत्ययेन शप् ३३.५१. भयं प्राप्तः (इन्द्रः=राजा) प्र०—अत्र व्यत्ययेन शानच् ३.३०.१०. अधर्माचरणाद् भीत्वा पृथग् वर्त्तमानो दुष्टानां भयङ्करः (विद्वान् जनः) १.१००.१७ [ञिभी भये (जु०) धातोः शानच्। व्यत्ययेन शप् आत्मनेपदञ्च]

भयस्थे भये तिष्ठतीति तस्मिन् (स्थाने) २.३०.६. [भयोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः]

भया भयानि ६.६.६. [भय-प्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

भये बिभेति यस्मात् तस्मिन् १.४०.८. [ञिभी भये (जु०) धातोः 'एरच्' इत्यच्]

भर धर ४.२.१३. धेहि ३.४५.४. सम्यग् धारय प्रदेहि १.४.७. समन्तात् पुष्णीहि ५.१६.५. प्रापय १.८१.

धारय धारयति वा १.१२.११. **भरत्**=पुष्यात् ४.२६.५. धरति ४.२६.६. धरेत् ५.३१.११. भरेत् १.१७३.३. भरेः १.१२१.१३. दधाति ४.२६.४. **भरत**=धरत २.१४.६. स्वीकुरुत १.१३६.१. पुष्णीत २.१४.७. धरत हरत वा ६.१६.४१. **भरतम्**=धारयतम् १.१०९.७. **भरति**=धरति ४.१६.१६. दधाति २.१६.२. **भरते**=धरति २.२४.९. धरते १.१७३.२. दधाति २.२६.३. अन्यायेन स्वीकरोति १.१०४.३. **भरथः**=धरतम् १.११२.२१. धरथः १.१५१.३. **भरध्वम्**=धरध्वम् १.६२.२. पोषयत ७.१३.१. पालयत ७.४.१. **भरध्वे**=धरत ५.५९.४. **भरन्त**=भरन्ति २.१३.२. धरन्तु १.७०.५. **भरन्ति**=पुष्यन्ति १.१५१.८. अन्यायेन परपदार्थान् धरन्ति भा०—सञ्चिन्वन्ति २.३०. **भरन्तु**=पुष्णन्तु १२.३१. धरन्तु १७.५३. **भरन्ते**=धरन्ति पुष्णन्ति वा ३.५५.७. पुष्यन्ति प्र०—अत्र पक्षेऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.१०४.४. दधति १.१७३.४. **भरस्व**=धर १.७९.१०. **भरात्**=धरेत् ४.२.७. **भरः**=धर ६.२६.४. **भराति**=धरति ५.३.७. भरेत् १.१८०.२. **भरामः**=धरामः ११.४७. **भरामहे**=पुष्येम २.२०.१. धरामहे १.५३.१. **भरामि**=धरामि १.६१.३. पुष्णामि १.६१.२. धारयामि २.१७. **भरिष्यामः**=धरिष्यामः ११.१६. **भरे**=बिभृयात २.१६.१. धरामि ५.१२.१. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन शप्। अन्यत्र लेटि, लटि लङि लृटि च रूपाणि। भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्वा रूपाणि। भर आहर नि० ६.३२.]

भरतम् धारकम् (अग्नि=परमेश्वरम्) १.९६.३. पृथिवी आदि जगत् रूप अन्न के पोषण और धारण करने वाले (परमेश्वर) को आर्याभि० १.४०, ऋ० १.७.३.३. **भरतस्य**=पालितव्यस्य राज्यस्य १२.३४. सेनाया धर्त्तृ रक्षकस्य (राजादिसज्जनस्य) ३.५३.२४. **भरतः**=धर्त्ता पोषकः (सज्जनः) ६.१६.४. **भरताय**=धारणपोषणाय ५.५४.१४. **भरताः**=देहधारकपोषकाः (भा०—धीमन्तो बालकाः) ७.३३.६. सर्वेषां धर्त्तारः पोषकाः (प्राज्ञा विद्वज्जनाः) ३.३३.११. **भरतेभ्यः**=धारणपोषणकृद्भ्यो मनुष्येभ्यः ५.११.१. आदित्येभ्यः १५.२७. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'भृमृदृशियजि०' उ० ३.११०. सूत्रेण अतच्। भरताः ऋत्विङ्नाम निघं० ३.१८. प्रजापतिर्वै भरतः स हीदं सर्वं बिभर्त्ति श० ६.८.१.१४. अग्निर्वै भरतः स वै देवेभ्यो हव्यं भरति कौ० ३.२. प्राणो भरतः ऐ० २ २४. भरत आदित्यः नि० ८.१४. एष वो भरतो राजा तै० सं० १.८.१०.२.]

भरद्वाजम् विद्यासद्गुणान् भरतां वाजं विज्ञापयितारम् (विप्रम्=मेधाविजनम्) १.११२.१३. **भरद्वाजः**=वाजोऽन्नं विज्ञानं वा बिभर्त्ति येन श्रोत्रेण तत् (ऋषिः=विज्ञापकः कर्णः) १३.५५. धृतविज्ञानः (यजमानो जनः) ६.५१.१२. **भरद्वाजान्**=ये वाजानन्नादीन् भरन्ति तान् (उत्तमपुरुषान्) ६.४७.२५. **भरद्वाजाय**=भरन्तः पुष्यन्तः पुष्टिमन्तो वाजा वेगवन्तो योद्धारो यस्य तस्मै (सेनाध्यक्षाय) १.११६.१८. धृतविज्ञानाऽन्नाय ६.१६.३३. विज्ञानधर्त्रे (महाविदुषे जनाय) ६.३१.४. धृतविज्ञानाय (सज्जनाय) ६.१५.३. **भरद्वाजाः**=धृतशुद्धविज्ञानाः (भा०—सुभटा वीराः) ६.२५.९. **भरद्वाजे**=विज्ञानादिधारके (व्यवहारे) ६.४८.७. राज्यस्य पोषके पालके वा व्यवहारे ६.१७.१४. **भरद्वाजेषु**=ये भरन्ति ते भरतः वज्यन्ते ज्ञायन्ते यैस्ते वाजाः भरतश्च ते वाजाश्च तेषु पृथिव्यादिषु १.५९.७. ये वाजानन्नादीन् भरन्ति तेषु (परोपकारकेषु जनेषु) ६.१०.६. धृतविज्ञानेषु (विद्वज्जनेषु) ६.२३.१०. [भरतवाजपदयोः समासः। पूर्वपदस्यान्त्याकारलोपश्छान्दसः। भरणाद् भारद्वाजः नि० ३.१७. भरतमिति व्याख्यातम्। वाजः अन्ननाम निघं० २.७. वाजः बलनाम निघं० २.९. मनो वै भरद्वाज ऋषिरन्नं वाजो यो वै मनों बिभर्त्ति सोऽन्नं वाजं भरति तस्मान्मनो भरद्वाज ऋषिः श० ८.१.१.९. भरद्वाजो ह वा ऋषीणामनूचानतमो दीर्घजीवितमस्तपस्वितम आस ऐ० आ० १.२.२. भरद्वाजो बृहदाचक्रे अग्नेः ऐ० आ० ३.१.२. एष उ एव बिभ्रद्वाजः प्रजा वै वाजस्ता एष बिभर्त्ति यद् बिभर्त्ति तस्माद् भरद्वाजस् तस्माद् भरद्वाज इत्याचक्षत एतम् (प्राणम्) एव सन्तम् ऐ० आ० २.२.२.]

भरद्वाजवत् श्रोत्रवत् ६.६५.६. [भरद्वाजमिति व्याख्यातम्। ततस्तुल्यार्थे वतिः]

भरध्यै भर्त्तुम् ६.६६.३. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोस्तुमर्थे अध्यैप्रत्ययः]

भरन् धरन् (होता=आदातृजनः) २१.३०. **भरन्तम्**=धरन्तम् (अग्नि=प्रसिद्धं विद्युतं वा) ११.१३. **भरन्तः**=धरन्तः पुष्णन्तः (सिद्धिमन्तो राजप्रजाजनाः) ३.३६.७. धारयन्तः (क्रियाकाण्डाऽनुष्ठातारो जनाः) ३.२२. [भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः शतृ]

भरन्त यो भरति सर्वं विश्वं सर्वान् गुणांस्तत्सम्बुद्धौ (जगदीश्वर) १.७०.५. [भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्गौणादिको बाहु० झच्। झस्यान्तादेशः]

भरन्ति हरन्ति ३३.३८. **भराम**=हरेम प्र०—अत्र हस्य भत्वम् १.९४.४. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लट् अन्यत्र लोट् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसीति' हस्य भकारः]

भरन्ती धरन्ती (गौः=पृथिवी) ३.३१.११. धरन्ती पोषयन्ती वा (रात्रिः) ३.६.१. [भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । भरन्ती हरन्ती नि० ११.३६.]

भरम् पालनम् ५.२९.८. पोषणम् १.११७.१८. **भराय**=धारकाय (राज्ञे) ४.२१.७. पालनाय ६.२३.९. भरणीयसङ्ग्रामाय ३.५१.८. **भरे**=देवाऽसुर-विद्वदविद्वत्सङ्ग्रामे ३.४३.८. पालनीये राज्ये ३.३८.१०. भरणीये संसारे ३.३९.९. बिभ्रति धनानि यस्मिँस्तस्मिन् (वाजसातौ=सङ्ग्रामे) ३.३०.२. भर्त्तव्ये राज्ये ३.४८.५. मूर्ख-विद्वदज्ञान-ज्ञानविषयविरोधरूपे युद्धे ३.३४.११. **भरेषु**=पालनपोषणनिमित्तेषु पदार्थेषु १.१००.१. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरप् । भर इति संग्रामनाम भरतेर्वा हरतेर्वा नि० ४.२४. भरे संग्रामनाम निघं० २.१७.]

भरमाणाः विद्यां धरन्तः (विद्यार्थिजनाः) ७.२.४. धरमाणाः (गृहपतयः) ८.१८. [भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः शानच्]

भरहूतये भराणां पालकानां हूतये स्पर्द्धायै १.१२९.२. भरा पालिका धारिका हूत यस्यास्तस्यै (विशे=प्रजायै) ५.४८.४. **भरहूतौ**=भरे सङ्ग्रामे हूतिराह्वानं तत्र ३३.५० [भर-हूतिपदयोः समासः । भरमिति व्याख्यातम् । हूतिः=ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

भरामसि भरेम १२.१०४. भरामः ६.१६.४७. स्वीकार करते हैं सं० वि० १६९, अथर्व० ९.२.३. [भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लट् । 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तत्वम्]

भरित्रैः धृतैः पोषितैः साधनैः ३.३६.७. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणादिको बाहु० इत्र् । भरित्रे इति बाहुनाम नि० २.४.]

भरिभ्रत् भृशं धरन् (अग्निः) २.४.४. अत्यन्तं धरन् पुष्यन् (अग्निः=कारणाख्य ईश्वरः) १२.२४. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छतृ । दाधर्त्ति-दर्द्धर्त्ति० अ० ७.४.६५. सूत्रेण 'भृञामिदि' तीत्त्वजश्त्वाऽभावोऽभ्यासस्य रिगागमश्च निपात्यते]

भरिषः धारणपोषणचतुरः (राजा) ४.४०.२. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणादिको बाहु० इसन्]

भरिष्यन्तौ सर्वान् पालयन्तौ (अ०—स्त्रीपुरुषौ) ११.३१. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लृटः शत्रन्तान् ङीप्]

भरीमभिः धारणपोषणाद्यैः कर्म्मभिः १३.३२. धारणपोषणादिगुणयुक्तैर्व्यवहारैर्वा पदार्थैः सह ८.३२. धारणपोषणकरैर्गुणैः प्र०—अत्र भृञ् धातोर्मनिन् प्रत्ययो 'बहुलं छन्दसि' इतीडागमः १.२२.१३. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्मनिन् । छन्दसीडागमः]

भरे भरे धर्त्तव्ये धर्त्तव्ये पदार्थे युद्धे युद्धे वा १.१००.२. सङ्ग्रामे सङ्ग्रामे ५.४३.२. [भरे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । भरमिति व्याख्यातम्]

भरेषुजाम् बिभ्रति राज्यं यैस्ते भराः, भराश्च ते इषवस्तान् भरेषून् जनयति तम् (सेनाद्यध्यक्षम्) प्र०—अत्र विट् प्रत्यय अनुनासिकस्याऽऽत्त्वं च १.९१.२१. भरेषु भरणीयेषु सङ्ग्रामेषु जेतारम् (राजानं सेनापतिं वा) ३४.२०. [भर-इषुपदयोः समासे कृते तदुपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्विट् । 'विड्वनोरनुनासिकस्यादि' त्यात्त्वम्]

भर्गः भृज्जन्ति पापानि दुःखमूलानि येन तत् (ईश्वरस्वरूपम्) प्र०—'अञ्च्यञ्जियुजि०' उ० ४.२१६. इति भ्रस्ज-धातोरसुन्प्रत्ययः कवर्गादेशश्च ३.३५. सर्वदुःखप्रणाशकं तेजःस्वरूपम् ३६.३. भृज्जन्ति दुःखानि यस्मात्तत् (स्वरूपम्) ३०.२. शुद्धं तेजः १.१४१.१. यन्निरुपद्रवं, निष्पापं, निर्गुणं, शुद्धं, सकलदोषरहितं, पक्वं, परमार्थविज्ञानस्वरूपम् पं० वि० सर्वदोषप्रदाहकम् (ईश्वरस्वरूपम्) २२.९. सब क्लेशों को भस्म करने वाला शुद्ध-स्वरूप सं० वि० ७५, ३६.३. पवित्र करने वाला चेतन ब्रह्म-स्वरूप स० प्र० ५१, ३६.३. [भृजी पाके (भ्वा०) धातोर् 'अञ्च्यञ्जियुजिभृजिभ्यः कुश्च' उ० ४.२१६. सूत्रेण असुन् कुत्वञ्च । घञ्प्रत्यये वा कुत्वम् । अयं वै (पृथिवी) लोको भर्गः श० १२.३.४.७. ऋग्वेदो वै भर्गः श० १२.३.४.९. होतैव भर्गः गो० पू० ५.१५. अग्निर्वै भर्गः श० १२.३.४.८. वसव एव भर्गः गो० पू० ५.१५. वाग्वै भर्गः श० १२.३.४.१०. वसन्तो भर्गः गो० पू० ५.१५. गायत्र्येव भर्गः गो० पू० ५.१५. प्राच्येव भर्गः गो० पू० ५.१५. आदित्यो वै भर्गः जै० उ० ४.२८.२. चन्द्रमा वै भर्गः जै० उ० ४.२८.२. भर्गो देवस्य कवयो अन्नमाहुः गो० पू० १.३२. वीर्यं वै भर्गः एष विष्णुर्यज्ञः श० ५.४.५.१. त्रिवृदेवः भर्गः गो० पू०

५.१५. इन्द्रियं वै वीर्यं भर्गः श० ७.३.३.१. तच्छ्रीर्वै भर्गः जै० ३.२५८. वसन्त एव भर्गः गो० १.५.१५.]

भर्त्ति बिभर्ति प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१७३.६. दधाति ६.१३.३. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसीति'. शपो लुक्]

भर्वति हिनस्ति १.१४३.५. [भर्व हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्। भर्वति-अत्तिकर्मा निघं० २.८.]

भर्वन् भर्जनं दहनं कुर्वन् (अग्निः=पावकः) ६.६.२. [भर्व हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः शतृ]

भर्षत् बिभर्ति ६.३८.१. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लेट्। सिब् विकरणः]

भलानसः भलाः परिभाषणीया नासिका येषां ते (आर्या राजजनाः) ७.१८.७. [भला-नासिकापदयोः समासे नासिकाया नसादेशः। भला=भल परिभाषणहिंसादानेषु (भ्वा०) धातो रूपम्]

भव भवसि प्र०—अत्र लडर्थे लोट् ३.२४. भवतु प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ३६.१३. निवर्त्तस्व १.५१.८. भव भवति वा १.१२.८. सम्पद्यस्व ४.१३. निष्पद्यस्व ४.१७. होवे स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. **भवत**=स्त १.२३.१९. नित्यं सम्पद्येरन् ४.१२. **भवतम्**=स्यातम् ५.३. भवेतम् ५.३. भवतः, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.३४.१२. **भवति**=वर्त्तते १.१७.५. होता है स० प्र० १०९, ३.८.४. **भवतु**=आप तत्पर होवो आर्याभि० १.३२, ऋ० १.७.१०.१५. **भवथः**=भवतम् १.११२.२०. **भवन्तु**=भावयतु प्रयच्छतु पं० वि० **भवाति**=भवतु ६.२०. भवेत् ४.१६.१७. **भवाथः**= तुम दोनों हूजिये सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३७. **भवासि**=भवेः २.४२.१. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लोटि लटि लेटि च रूपाणि]

भवतः वर्त्तमानस्य (कार्यकारणजगतः) १.९६.७. **भवन्तम्**=सन्तं जगदीश्वरं सभाद्यध्यक्षं वा १.६७.४. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः शतृ]

भवतात् भवेत् ३.२३.२. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लोटि मध्यमपुरुषे 'तुह्योस्तातङ्०' इति तातङ्]

भवन्ती वर्त्तमाना (विद्युत्) १.१६४.२९. **भवन्तीः**= वर्त्तमानाः (सुयमाः प्रजाः) ३.७.३. वर्त्तमाना होती हुई (युवतयः=स्त्रियां) स० प्र० ११०, ३.५५.१६. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

भवम् यः सर्वत्र भवति तम् (देवं=परमात्मानम्) ३९.८. **भवस्य**=संसारस्य १६.१८. यः प्रशंसितो भवति तस्य (जनस्य) ३९.९. **भवाय**=यः शुभगुणादिषु भवति तस्मै (जनाय) १६.२८. **भवाः**=वर्त्तमानाः (रुद्राः=जीवा वायवश्च) १६.५५. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोरच्। 'ऋदोरप्' इति वा अप्। पर्जन्यो वै भवः पर्जन्याद्धीदं सर्वं भवति श० ६.१.३.१५. एतान्यष्टौ (रुद्रः, सर्वः (शर्वः) पशुपतिः, उग्रः, अशनिः, भवः, महान्देवः, ईशानः) अग्निरूपाणि। कुमारो नवमः श० ६.१.३.१८. यद्भव आपस्तेन अग्निर्वै स देवस्तस्यैतानि नामानि, शर्व इति यथा प्राच्या आचक्षते भव इति यथा वाहीकाः पशूनां पती रुद्राऽग्निरिति श० १.७.३.८.]

भवित्रम् भवितव्यम् (शम्=आनन्दम्) ७.३५.९. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिको बहुलवचनाद् इत्रः]

भविष्यत् यदुत्पत्स्यमानं भावि (वस्तुजातम्) ३४.४. आगामि (अनुष्ठानम्) १८.११. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लृटः शतृ। असौ (द्युलोकः) भविष्यत् तै० ३.१८.६. उदकनाम निघं० १.१२.]

भवीत्वा भव्यानि (भुवनानि) २.२४.५.

भवीयसा यदतिशयितं भवति तेन (वसुना=धनेन) १.८३.१. [भव-प्राति० अतिशायन ईयसुन्]

भव्यस्य आगामिसमयस्य १२.११७. **भव्याय**=यो विद्याग्रहणेच्छुर्भवति, तस्मै (जनाय) १.१२९.६. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्यत्। परिमितं वै भूतमपरिमितं भव्यम् ऐ० ४.६.]

भषम् परिभाषकम् (पुरुषम्) भा०—संवादादिव्यवहारम् ३०.१९. [भष भर्त्सने (भ्वा०) धातोरच्]

भसत् दीपनम् २५.८. भगेन्द्रियम् २०.९. [भस भर्त्सनदीप्त्योः (जु०) धातोरौणादिकोऽतिः]

भसत् भासयति ६.३.४. प्रकाशेत ६.१४.१. [भस भर्त्सनदीप्त्योः (जु०) धातोर्लेट्]

भसथः व्यर्थं वादं वदतः ६.५९.४. [भसथ इति अत्तिकर्मा निघं० २.८. भसथः अश्नीथः नि० ५.२२.]

भस्म प्रदीपकं तेजः १२.३५. दग्धदोषः (विद्वान् जनः) १२.४६. **भस्मना**=दग्धेन (शरीरेण) १२.३८. दग्धशेषेण निस्सारेण (वस्तुना) २५.८. [भस भर्त्सनदीप्त्योः (जु०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति मनिन्]

भस्मन् भस्मन्यभ्रे प्र०—अत्र सप्तमी-लुक् १३.५३. [भस्मन् इति व्याख्यातम्। ततः 'सुपां सुलुग्०' इति सप्तम्या लुक्]

भस्मसा कृत्स्नं भस्मेति भस्मसा प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति तलोपः ११.८०. [भस्मन्-प्राति० कार्त्स्न्ये साति: । तलोपश्छान्दसः]

भस्मान्तम् भस्म अन्ते यस्य तत् (शरीरम्) ४०.१५. भस्म-करने पर्यन्त (शरीर) सं० वि० २१८, ४०.१५. [भस्म-अन्तपदयोः समासः]

भाऋजीकम् भासु दीप्तिसु सरलम् (अग्निं=पावकम्) ३.१.१४. भाति प्रकाशयति या सा भाः सभाकान्तिर्वा, तां योऽर्जयते तम् (दूतम्) १.४४.३. **भाऋजीकः**=भाभिर्विद्यादीप्तिभिर्ऋजुः सरलः (सुशिक्षको जनः) ३.१.१२. [भा-ऋजीकपदयोः समासः । भा=भा दीप्तौ (अदा०) धातोः क्विप् । ऋजीकम्=ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु (भ्वा०) धातोः 'ऋजेश्च' उ० ४.२२. सूत्रेण ईकन् किच्च । भाऋजीकः=प्रसिद्धभाः नि० ६.४.]

भाक् भजति ७.१८.१३. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङ् अडभावो लेर्लुक् च छान्दसः]

भागदाः अंशप्रदाः (राजभृत्याः) १७.५१. [भागोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः]

भागदुघम् यो भागान् दोग्धि प्रपिपर्त्ति तम् (विद्वांसम्) ३०.१३. [भागोपपदे दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'दुहः कप् घश्च' अ० ३.२.७०. सूत्रेण कप् घकारश्चान्तादेशः]

भागधेयम् भाग्यम् ३.२८.४. [भागप्राति० स्वार्थे 'भागरूपनामभ्यो धेयः' अ० ५.४.२५. वा० सूत्रेण धेयः]

भागधेयीः विभागविज्ञानयुक्ताः (ब्रह्मचारिण्यः कन्याः) प्र०—नामरूपभागेभ्यः स्वार्थे धेयः प्रत्ययः अ० भा० वा० ५.४.३६. 'केवलमामकभागधेय०' अ० ४.१.३०. इत्यादिना ङीप् ६.२४. [भागधेयमिति व्याख्यातम् । ततः 'केवलमामक०' इति स्त्रियां ङीप्]

भागम् भजनीयम् (स्थानम्) १.१२३.३. सेवनीयम् (परमात्मानम्) १७.१३. भागानां धनानां ज्ञानानां वा भाजनम् (ईश्वरम्) १.१. शुभगुणभाजनं यज्ञम् १.४. सेवनम् ९.९. भगानामिमम् (धनम्) ५.८२.३. भागसमूहम् १.७३.५. **भागस्य**=भजनीयस्य (सज्जनस्य) २.३६.४. **भागः**=सेवितुं योग्यः (भजनीयो न्यायः) ९.३५. सेवनीयोंऽशः, स्वीकुर्त्तुमर्हो वा (होतव्यः पदार्थः) ४.२४. ऐश्वर्यसङ्घातः १८.८. भजनीयोऽधिकारः १.१८३.४. विभजनीयः (संवत्सरः) १४.२४. भा०—प्रियः (विद्वज्जनः) १४.२५. **भागे**=सेवने १.१५६.५. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्घञ् । अथवा भग-प्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थे समूहार्थे वा अण्]

भाजयत सेवयत ३६.१५. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

भाजयुः अर्थिप्रत्यर्थिनां न्यायव्यवस्थया विभाजयिता (अ०—राजा) २.१.४. [भाज पृथक्कर्मणि (चु०) धातोरौणादिके उप्रत्यये छान्दसं रूपम् । भाज-प्राति० वा इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उः । भाजः=भाज पृथक्कर्मणि (चु०) धातोर्घञर्थे कः]

भाति प्रकाशते प्रकाशयति वा ५.४४.१२. **भासि**=प्रकाशयसि ३३.३६. **भाहि**=विविधतया प्रकाशते प्रकाशयति वा १.९५.११. प्रकाशय १.९६.९. [भा दीप्तौ (अदा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट् । आभाति आभासयति नि० ७.२३.]

भात्वक्षसः भाः विद्याप्रकाशस्त्वक्षं बलं यासां ताः (सिन्धवः=प्रवाहरूपा विद्याप्रकाशाः) प्र०—त्वक्ष इति बलनाम निघं० २.९, १.१४३.३. [भा-त्वक्षस्पदयोः समासः । त्वक्षः बलनाम निघं० २.९.]

भानवः सूर्यस्य किरणाः १.९२.२. दीप्तयः ५.१.१. प्रदीप्ताः किरणाः १.९७.५. किरणदीप्तयः ३.१.१४. **भानवे**=विद्याप्रकाशाय ७.४.१. प्रकाशाय ५.१६.१. **भानुना**=किरणेन ६.४८.६. दीप्त्या १७.१०. तेजसा ३.२१.४. प्रकाशेन २.८.४. किरणसमूहेन १२.२१. सूर्येण १.४८.९. प्रदीप्त्या २.१६.४. सदर्थप्रकाशकत्वेन १.४८.१५. धर्मप्रकाशेन १२.१०७. **भानुभिः**=दिवसैः १.८७.६. विद्याप्रकाशकैर्गुणैः १२.३२. **भानुम्**=कान्तम् (पेशः=रूपम्) १.९२.५. सूर्यम् १.९२.२. सूर्यदीप्तिम् १.९२.१. प्रकाशकम् (सूर्यम्) ६.६२.२. प्रकाशयुक्तम् (राजानम्) ७.३.६. विद्याविनयदीप्तिमन्तम् (राजानम्) ७.६.२. किरणम् ४.१३.२. कान्तिम् १.९२.५. **भानुः**=किरणयुक्तः सूर्यः ७.३४.७. दीप्तिः ५.५२.६. प्रकाशमानः (अ०—सूर्यः) ४.१.१७. प्रभाकरः (सूर्यः) १२.४८. दीप्तिमान् (अर्णवः=समुद्रः) ३.२२.२. [भा दीप्तौ (अदा०) धातोः 'दाभाभ्यां नुः' उ० ३.३२. सूत्रेण नुः । भानुरिति अहर्नाम निघं० १.९. भानुम्=भानुना निघं० १२.७. अजस्रेण भानुना दीद्यतमित्यजस्रेणार्चिषा दीप्यमानमित्येतत् श० ६.४.१.२. भानुना भात्यन्तः तै० सं० ४.२.१.२.]

भानुमद्भिः बहवो भानवः किरणा विद्यन्ते येषु तैः (अर्कैः=वज्रवच्छेदकैः किरणैः) ६.४.६. **भानुमन्तम्**=दीप्तिमन्तम् (रथम्) ५.१.११. **भानुमः**=भानुवन् (अग्ने=विद्वज्जन) ५.१.११. [भानुप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । 'भानुमः' प्रयोगे 'मतुवसो रुः छन्दसि' इति रुत्वम्]

भान्तः प्रकोशः १४.२३. [भा दीप्तौ (अदा०) धातोरौणादिको बहुलवचनाद् झच् । भान्तः पञ्चदशः (यजु० १४.२३.) वज्रो वै भान्तो वज्र पञ्चदशोऽथो चन्द्रमा वै भान्तः पञ्चदशः स च पञ्चदशाहान्यापूर्यते पञ्चदशापक्षीयते तद् यत्तमाह भान्त इति भाति इति चन्द्रमाः श० ८.४.१.१०.]

भामम् तेजः ३.२६.६. क्रोधम् २१.३९. **भामः**=क्रोधः १८.४. भाति येन सः (स्वराट्=बुद्धिः) २०.६. [भाम क्रोधे (भ्वा०) धातोर्घञ् । अथवा भा दीप्तौ (अदा०) धातोरौणा० मन् । भामः क्रोधनाम निघं० २.१३.]

भामासः क्रोधाः ६.६.३. [भाममिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

भामितः क्रुद्धः सन् (रुद्रः=राजपुरुषः) १.११४.८. पापाऽनुष्ठानेनाऽस्माभिः क्रोधितः (रुद्रः=राजपुरुषः) पं० वि० [भाम क्रोधे (भ्वा०) धातोः क्तः । भामते क्रुध्यतिकर्मा निघं० २.१२.]

भामिनः क्रुद्धान् (वीरान् शत्रून्) १६.१६. शत्रूणामुपरि क्रोधकारिणः (मयोभून्=सुवीरान् जनान्) १.८४.१६. **भामिने**=प्रशस्तो भामः क्रोधो विद्यते यस्य तस्मै (विद्वज्जनाय) १.७७.१. [भामप्राति० भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा । इन् भामः क्रोधनाम निघं० २.१३. भामिनः=भानुमतः नि० १३.३८.]

भायै दीप्त्यै ३०.१२. [भाप्राति० चतुर्थी । भा दीप्तौ (अदा०) धातोः क्विप्]

भारत धर्त्तः (अग्ने=विद्वज्जन) ६.१६.४५. धारक (अग्ने=विद्वज्जन) २.७.१. **भारतम्**=भारत्या वाचोऽयं वेत्ता धर्त्ता वा तम् (जनं=प्रसिद्धं मनुष्यादिकम्) ३.५३.१२. **भारतः**=धारकस्याऽयं धर्त्ता (अग्निरिवोत्तमजनः) ४.२५.४. धर्त्ता पोषको वा (अग्निः=सूर्यः) ६.१६.१९. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणा० अतच् णिच्च बहुलवचनात् । बिभर्त्तेर्वाऽतच्-प्रत्यये भरतः । तत इदमर्थेऽण् । भारतीप्राति० वा अध्येतृवेदित्रोरण् 'तस्येदम्' इत्यर्थे वा एष (अग्निः) उ वा ऽइमाः प्रजा प्राणो भूत्वा बिभर्त्ति तस्माद्वेवाह भारतेति श० १.४.२.२.]

भारता धारकपोषकौ (शिल्पविद्याऽध्येत्रध्यापकौ) २.२३.२. [भारत इति व्याख्यातम् । ततो प्रथमाद्विवचनस्याकार छान्दसः]

भारति सकलविद्याधारिके (विदुषि कन्ये) १.८८.८.

भारती=विद्याशिक्षाधृता वाक् ३.४.८. सुष्ठु विद्याया धारिका पोषिका वा वाणी भा०—योगधारणायुक्ता वाक् २८.८. सर्वविद्याधर्त्री सर्वथा पोषिका (भा०—वाणी) २९.८. शिल्पविद्याधारिका क्रिया २९.३३. सद्यः शास्त्राणि धृत्वा सर्वस्य पालिका वागिव विदुषी (स्त्री) ७.२.८. धारिका माता भा०—धीः २०.६३. धारणपोषणकर्त्री (देवी=देदीप्यमाना शक्तिः) २०.४३. शुभान् गुणान् धरन्ती (उपदेशिका स्त्री) २.३.८. सकलविद्यां भरन्ती वाणी ३.६२.३. धारणावती प्रज्ञा २१.३७. सर्वशास्त्रधारिणी (भा०—सत्यव्यवहारधर्त्री वाणी २७.१९. धारणपोषणकर्त्री (विद्यावाणी) १.१४२.९. **भारतीभिः**=सुशिक्षिताभिर्वाणीभिः ३.४.८. **भारतीम्**=यो यया शुभैर्गुणैर्बिभर्त्ति पृथिव्यादिस्थान् प्राणिनः स भरतः तस्येमां भारतीम् (धिषणां=वाचम्) प्र०—भरत आदित्यस्तस्य भा इळा नि० ८.१३, १.२२.१०. **भारतीः**=धारिकाः (देवीः=वाचः) २८.३१. [भारतीति वाङ्नाम निघं० १.११. भरत आदित्यस्तस्य भा इळा नि० ८.१३. डुभृञ्धातोरौणा० अतच्प्रत्यये भरतः । ततः इदमर्थेऽण् । ततः स्त्रियां ङीप्]

भारद्वाजः धृतविज्ञानः (होता=होतृजनः) ६.५१.१२. [भरणाद् भारद्वाजः नि० ३.१७.]

भारम् पोषम् १.१५२.३. **भारान्**=पञ्चतत्त्वानि महत्तत्वञ्च ३.५६.२. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्घञ् । राष्ट्रं वै भारः तै० ३.९.७.१. श्रीर्वै राष्ट्रस्य भारः श० १३.२.९.३.]

भारहारः डाली पत्ते फल फूल अन्य पशु और धान्य आदि भार का उठाने वाला (स्थाणुः=वृक्ष) स० प्र० समु० ३, नि० १.१८. [भारोपपदे हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोरण्]

भारि भ्रियते प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् भृञ् धातोश्चिणि परेऽडभावो 'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' इत्यनेन सूत्रेण ६.३. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि लुङि अडभावे च रूपम्]

भार्वरस्य प्रजाभर्त्तृ-राज्ञः ४.२१.७. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणा० ष्वरच् । बहुलवचनाद् वृद्धिश्च]

भाव्यम् उत्पतस्यमानम् (जगत्) ऋ० भू० १२०, ३१.२. **भाव्यस्य**=भवितुं योग्यस्य (विदुषो जनस्य) १.१२६.१. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्ण्यत् । भाव्यस्य भावयव्यस्य नि० ९.१०.]

भासदौ यौ भासं प्रकाशं दद्यातां तौ (क्रुञ्चौ=पक्षिविशेषौ) २५.६. [भासोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः]

भासन् प्रकाशकः सन् (ज्योतिष्मान् सूर्यः) १२.३२. [भासृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

भासः प्रकाशमानायाः (विद्यायाः) ४.३३.४. दीप्तीः ६.१२.५. **भासा**=प्रकाशेन ११.४१. स्वकीयप्रकाशेन ७.५.४. दीप्त्या ६.१.११. **भासे**=विज्ञानाय १३.३९. **भाः**=यो भाति प्रकाशयति सः (सूर्यः) १.४६.१०. यो भाति प्रकाशते सः (परमात्मा सभाध्यक्षः प्रजापुरुषो वा) ४.२५. या भान्ति प्रकाशयन्ति ताः (क्रियाः) १.४५.८. प्रकाशमानः (अर्चिः=विद्युत्तेजः) ४.७.९. प्रकाशः १२.३४. [भासृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'भ्राजभास०' अ० ३.२.१७७. सूत्रेण ताच्छीलिकः कर्त्तरि क्विप् । श्रीर्वै भाः जै० उ० १.१.४.१.]

भासांसि प्रकाशान् ६.४.३. [भास् इति व्याख्यातम् । तस्य नपुंसके रूपम्]

भाषथाः वदेः ४३.२३. [भाष व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लङि अटोऽभावे रूपम्]

भास्वती दीप्तिमती (उषाः) १.९२.७. प्रशस्ता भाः कीर्तिर्विद्यते यस्याः सा (उषाः) १.११३.४. **भास्वतीम्**=देदीप्यमानाम् (स्त्रीम्) १५.६३. [भास् इति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसायामर्थे मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप् । भास्वतीति उषो नाम निघं० १.८. भास्वत्यः नदीनाम निघं० १.१३.]

भिक्षते याचते ७.३२.१७. **भिक्षन्त**=याचन्ते ३.५६.७. **भिक्षे**=याचे १.१७१.१. **भिक्षेत**=याचेत १.१५२.६. [भिक्ष भिक्षायाम् अलाभे लाभे च (भ्वा०) धातोर्लट् अन्यत्र लङ् लिङ् च]

भिक्षमाणः याचमानः (योगिजनः) ३.६१.६. **भिक्षमाणाः**=नित्यं याचमाना उन्नतिशीलाः (जनासः=उत्तमा धार्मिका विद्वज्जनाः) ७.६.६. लम्भमानाः (यज्ञियासः=यज्ञक्रिया कुशला विद्वांसः) १.७३.७. [भिक्ष भिक्षायाम् अलाभे लाभे च (भ्वा०) धातोः शानच्]

भित्थाः भेदं कुर्याः ११.६८. **भिनत्**=भिनत्ति प्र—अत्र लडर्थे लङ् अडभावश्च १.६२.३. अभिनत् १.६२.३. विदृणाति १.५४.४. भिनत्ति १.६२.३. **भिनदत्**=भिन्द्यात् १२.२७. **भिनद्मि**=पृथक् करोमि १.१९१.१५. **भिन्त**=भिनत्सि १८.५५. **भिन्दन्**=विदृणन्ति ४.५८.७. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लुङ् अडभावश्च । अन्यत्र लङ् लट् च]

भिदः भिन्नाः (शत्रूणां नगरीः) १.१७४.८. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

भिन्दन् विदारयन् (वाजी=वेगवानश्वः) १७.९५. **भिन्दन्तः**=विदारयन्तः (पितरः=जनकादयः) १९.६९. विदृणन्तः (पितरः=जनकाः) ४.२.१६. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः शतृ]

भिन्दानाः विदृणन्तः वीरा राजपुरुषाः) ६.२७.६. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः शानच्]

भिन्दुः भेदकः (इन्द्रः=विद्वान् सेनापतिः सूर्यो वा) १.११.४. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः 'पृभिदि०' उ० १.२३. सूत्रेण कुः । बहुलवचनान्नुम्]

भिन्नम् विदीर्णतटम् (नदं=महाप्रवाहयुक्तं नद्यादिकम्) १.३२.८. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः क्तः]

भियसम् भयम् २.२८.६. **भियसा**=भयेन ५.५९.२. दुःखभयेन १.५२.९. धारणेन ५.३२.९. **भियसे**=भयाय ५.२९.४. [ञिभी भये (जु०) धातोर् औणा० असुन् । बहुलवचनात् कित्त्वाद् इयङ्]

भियः रोगदोषादिकाः (भीतयः) २७.७. **भिया**=भयेन १.६१.१४. **भीः**=भयम् १.३२.१४. [ञिभी भये (जु०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

भियानाः भयं प्राप्ताः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ६.९.७. [ञिभी भये (जु०) धातोस् 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' इति ताच्छील्ये चानश् । अथवा लटः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

भियाने भयं प्राप्तौ (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) २.११.९. [ञिभी भये (जु०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

भिषक् निदानादिविज्ञानेन रोगनिवारकः (वैद्यो जनः) १६.५. यो भिषज्यति चिकित्सति सः (वैद्यः) प्र०—अत्र भिषज् धातोः क्विप् १२.८०. चिकित्साद्यङ्गवित् (वैद्यः) १९.१२. रोगनिवारकः (वैद्यः) २१.३३. रोगविनाशकः (वैद्यः) २१.५८. **भिषजम्**=वैद्यवरम् २१.३८. **भिषजः**=सद्वैद्याः ६.५०.७. **भिषजाम्**=वैद्यानाम् २१.४०. **भिषजौ**=सद्वैद्यौ १.११६.१६. [भिषज् चिकित्सायाम् (कण्ड्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । अथवा ञिभी भये (जु०) धातोः 'भियः षुग्घ्रस्वश्च' उ० १.१३८. सूत्रेण अजिः धातोर्ह्रस्वः षुगागमश्च]

भिषक्तमम् वैद्यशिरोमणिम् २.३३.४. [भिषज् प्राति० अतिशायने तमप्]

भिषजा औषधानि २७.९. चिकित्सकौ २८.७. वैद्यकशास्त्रविदौ (जनौ) १९.८२. आयुर्वेदविदौ (विद्वज्जनौ) १९.१२. सद्वैद्यवदरोगौ (अश्विना=सिद्धसाधकौ विद्वांसौ) १९.९३. सद्वैद्यौ (स्त्रीपुरुषौ) २०.५७. शरीरात्मरोगनिवारकौ (चिकित्सकोपदेशकौ) २०.७५. वैद्यकविद्यावेत्तारौ (अश्विना=स्त्रीपुरुषौ) २०.५६. वैद्यवद्रोगाऽपहारकौ (अश्विना=अग्निवायू) २१.३६. रोगनिवारकौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.१५७.६. (भिषज् चिकित्सायाम् (कण्ड्वा०) धातोः क्विप् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि । प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशश्छन्दसि । अपूतो ह्येषोऽमेध्यो यो भिषक् तै० सं० ६.४.९.१.]

भिषज्यतः चिकित्सां कुरुतः भा०—रोगान् निवारयतः २८.७. [भिषज् चिकित्सायाम् (कण्ड्वा०) धातोर्लट्]

भिषज्यन् चिकित्सां कुर्वन् (सविता=सद्वैद्यः) १९.८५. चिकित्सुः सन् भा०—औषधानि दत्त्वाऽरोगयन् (वैद्यो जनः) १९.८०. [भिषज् चिकित्सायाम् (कण्ड्वा०) धातोः शतृ]

भीतः भयं प्राप्तः (कपोतः) १.३२.१४. **भीताय**—प्राप्तभयाय (जनाय) ५.७८.६. [ञिभी भये (जु०) धातोः क्तः]

भीमम् भयङ्करम् (राजानम्) २१.३९. **भीमः**=दुष्टान् प्रति भयङ्करः, श्रेष्ठान् प्रति सुखकरः (सभाध्यक्षः) १.५५.१. विभेति यस्मात् सः, भा०—भयप्रदः, भयं प्राप्तः (मरणं प्राप्तो जीवः) ३९.७. विभेत्यस्मात् सः (कालः) १.९५.७. विभ्यति जीवा अस्मादिति व्याघ्रः प्र०—'भीमादयोऽपादाने' इति निपातनात् ५.२०. न्याय-आज्ञा को छोड़ने वालों पर भय देने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.३४, ऋ० १.७.१०.१२. **भीमाय**=विभेति यस्मात्तस्मै भयङ्कराय (जनाय) १६.४०. [ञिभी भये (जु०) धातोः 'भियः षुग् वा' उ० १.१४८. सूत्रेण मक् । 'भीमादयोऽपादाने' अ० ३.४.७४. सूत्रेणापादाने निपात्यते]

भीमयुः यो भीमं भयङ्करं योद्धारं याति सः (वीरजनः) ५.५६.३. [भीमोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः 'मृगय्वादयश्च' उ० १.३७. सूत्रेण कुः]

भीमलम् यो भीमान् भयङ्करान् लात्याददाति तम् (दुर्जनम्) ३०.६. [भीमोपपदे ला आदाने (अदा०) धातोः कर्त्तरि कः]

भीमसंदृशः भीमं भयङ्करं सन्दृग् दर्शनं येषां ते (जनाः) ५.५६.२. [भीम-संदृश्पदयोः समासः । संदृश्=सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्विन्]

भीमा बिभेति यस्मात् सा (सेना) ६.१८.१०. भयङ्करी (धीः=प्रज्ञा) ६.३.३. [भीम-प्राति० स्त्रियां टाप् । भीममिति व्याख्यातम्]

भीमासः बिभ्यति येभ्यस्ते (दुर्जनाः) ७.५८.२. [भीममिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

भीरवे भयस्वभावाय (प्रजाजनाय) २.२८.१०. **भीरुभिः**=कातरैः (मनुष्यैः) १.१०१.६. [ञिभी भये (जु०) धातोस्ताच्छील्ये 'भियः क्रुक्लुकनौ' अ० ३.२.१७४. सूत्रेण क्रुः]

भीषा भयेन १.१३३.६. [ञिभी भये (जु०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप् । षुगागमश्छान्दसः]

भुज पालय १६.११. **भुजेम**=अभ्यवहरेम ४.३.१६. पालयेम ५.७०.४. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लिङ् । व्यत्ययेन शः]

भुजन्ता पालकौ (विद्युत्पवनौ) ६.६२.६. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन शः]

भुजम् भोक्तव्यां प्रजाम् १.१०४.६. यो भुनक्ति तम् (रयिम्) ५.२०.१. पालिकाम् (समिधम्) ३.२.९. **भुजः**=भोगक्रियाः ५.७४.१०. **भुजे**=भोगाय ५.७३.२. पालनाय १.१२७.११. शरीरे विद्यानन्दभोगाय १.१२७.८. भुज्यते यः स भुक् तस्मै (सुखाय) प्र०—अत्र 'कृतो वहुलम्०' इति कर्मणि क्विप् १.३०.२०. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोः 'कृतो वहुलमिति' वा० सूत्रेण क्विप् । प्राणो वै भुजः श० ७.५.१.२१.]

भुज्म सुखानां भोजयिता (गिरिः) १.६५.३. पालकं सुखभोक्तारं वा (पुरुषम्) १.११६.३. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोरौणादिको मक्]

भुज्युम् भोक्तारम् (जनम्) ४.२७.४. भोगमर्हम् १.११९.४. भोक्तुं योग्यमानन्दम् ६.६२.६. राज्यपालकं सुखभोक्तारं वा (नौयायिनं जनम्) १.११६.३. शरीराऽऽत्मपालकं पदार्थसमूहम् १.११७.१४. सुखस्य भोक्तारं पालकं वा (सभाध्यक्षादिराजपुरुषम्) १.११२.२०. भोगसमूहम् १.११६.५. पालनभोगमयं धनादिपदार्थभोगम् ऋ० भू० १८९, अथर्व० १.८.८.३. **भुज्युः**=भुज्यते सुखानि यस्मात् सः (यज्ञः=भा०—अग्निहोत्रादिः) १८.४२. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोः 'भुजिमृङ्भ्यां युक्त्युकौ' उ० ३.२१. सूत्रेण युक् । यज्ञो वै भुज्युर्यज्ञो हि सर्वाणि भूतानि भुनक्ति श० ९.४.१.११.]

भुञ्जीथाः भोगमनुभवेः ४०.१. अपने आत्मा से आनन्द को भोग स० प्र० २३८, ४०.१. **भुनक्तु**=परमानन्द का भोग कर आर्याभि० २.१. तै० ब्रह्मा० १०.१. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोर्लिङ् । अन्यत्र लोट्]

भुरजन्त प्राप्नुवन्ति ४.४३.५.

भुरणा सुखं धरन्तौ (अश्विनौ=राजप्रजाजनौ) १.११७.११. [भुरण धारणपोषणयोः (कण्ड्वा०) धातोरच् । ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

भुरण्यति धरति ५.७३.६. [भुरण धारणपोषणयोः (कण्ड्वा०) धातोर्लट्]

भुरण्यन् धरन् पुष्यन् वा (राजा) ४.२७.३. **भुरण्यन्तम्**=पालयन्तम् (मनुष्यम्) ३३.३२. धरन्तम् (लोकम्) १.५०.६. [भुरण धारणपोषणयोः (कण्ड्वा०) धातोः शतृ]

भुरण्यवः धर्त्तारो गतिमन्तश्च (अग्न्यादयः पदार्थाः) ३३.१. **भुरण्युम्**=पोषकम् (अग्नि=विद्युतम्) प्र०—अत्र भुरण-धातोर्युः प्रत्ययः १३.४३. **भुरण्युः**=धर्त्ता पोषको वा (जगदीश्वरो विद्युद्वा) प्र०—अत्र भुरणधातोः कण्ड्वादित्वाद् यक् तत उः १.६८.१. भर्त्ता (विद्वान् सभेशः) १८.५३. **भुरण्यू**=धारणपोषणकर्त्तारौ (पितरौ) १.१२१.५. पोषयितारौ धारकौ वा (अध्यापकोपदेशकौ) ६.६२.७. [भुरण धारणपोषणयोः (कण्ड्वा०) धातोरौणादिको युक् । कण्ड्वादित्वाद् यगन्ताद्वा उः प्रत्ययः । भुरण्युरिति भर्त्तेत्येतत् श० ८.६.३.२०. भुरण्युः क्षिप्रनाम निघं० २.१५. भुरण्युरिति क्षिप्रनाम । भुरण्युः शकुनिर् भूरिमध्वानं नयति स्वर्गस्य लोकस्यापि वोळ्हा तत्सम्पाती भुरण्युः नि० १२.२२. भुरण्यति गतिकर्मा निघं० २.२४.]

भुरन्त धरन्ति ५.६.७. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन शः । 'बहुलं छन्दसी' त्युत्वं रपरत्वं च]

भुरमाणम् पुष्टिकारकम् (भुज्युं=भोगमर्हं पदार्थम्) प्र०—अत्र डुभृञ्धातोः शानचि व्यत्ययेन शो 'बहुलं छन्दसि' इत्युत्वं च १.११९.४ [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शानच् । व्यत्ययेन शः । धातो ऋकारस्योत्त्वे रपरत्वे च रूपम्]

भुरिजोः धारकपोषकयोः (भा०—प्रजाराज्ययोः) ४.२.१४. [भुरिजौ बाहुनाम निघं० २.४.]

भुर्वणि धारणवति पोषणवति वा (व्यवहारे) १.१३४.५. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणा० वाहु० क्वणिः । ततः 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्या लुक्]

भुर्वणिः बिभर्ति यः सः (अध्यापकः) प्र०—अत्र भृञ्धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्वणिः प्रत्ययः १.५६.१.

भुवत् भवति प्र०—अत्र लडर्थे लेट् 'वहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् 'भूसुवोस्तिङि' अ० ७.३.८८. अनेन गुणनिषेधः १.२३.६. भूयात् प्र०—भू धातोराशिषि लिङि प्रथमैकवचने 'लिङ्याशिष्यङ्' अ० ३.१.८६. इत्यङि सति 'किदाशिषि' इति कित्त्वे, आगमानित्यत्वे प्रयोगः १.५.३. भवेत् प्र०—अत्र गुणनिषेधादुवङ्ङादेशः १.५२.११. **भुवन्**=भवन्ति ६.३५.१. भवेयुः १.१८६.२. भवन्तु ५.४६.६. **भुवम्**=हूँ स० प्र० २३८, १०.४९.१. **भुवः**=भव प्र०—अत्र लुङि विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययोऽडभावश्च १.१३८.४. भवेः ५.१९.५. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शः । अन्यत्र लिङ् लुङ् च]

भुवनच्यवानाम् य भुवनान्युत्तमानि गृहाणि च्यवन्ते प्राप्नुवन्ति तेषाम् (देवानां=विदुषां पुरुषाणाम्) १७.४१. [भुवनोपपदे च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोरच्]

भुवनपतये भुवनानां सर्वेषां लोकानां पतिः पालक ईश्वरः पालनहेतुभौतिकः (अग्निः) वा तस्मै २.२. सर्वजगत्स्वामिने (ब्रह्मणे) २२.३२. [भुवन-पतिपदयोः समासः । 'पतिः समास एव' इति घिसंज्ञकत्वाद् गुणः । एतानि वै तेषामग्नीनां नामानि यद् भुवपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिः श० १.३.३.१७.]

भुवनम् भवन्ति भूतानि यस्मिन् जगति तत् (जगत्) १.१०२.८. लोकजातम् २९.९. सर्वेषामधिकरणम् १.१०८.२. उदकम् भा०—जीवनमूलं जलम् २२.३. भवतीति भुवनं वर्त्तमानकालस्य सम्वन्धि (व्यवहारम्) प्र०—अत्रौणादिकः क्युः ३४.४. **भुवनस्य**=सर्वसंसारस्य ऋ० भू० ९०, अथर्व० १०.२३.४.३८. जलादेर्लोकसमूहस्य ७.५१.२. गृहस्य १८.४४. भवन्ति भूतानि यस्मिन् राज्ये तस्य १३.१८. भूताऽधिकरणस्य ३.४६.२. ब्रह्माण्डस्य ५.८५.३. लोकजातस्य १.१४३.४. निवासाऽधिकरणस्य स्थावरस्य जगतः प्राणिसमुदायस्य च २.२७.४. लोकमात्रस्य १२.२३. अनेकभूगोलाऽलङ्कृतस्य (संसारस्य) ७.२५. जगतो, मध्ये ५.६३.२. अखिलसंसारस्य ५.६२.९. **भुवनात्**=जगत्पदार्थसमूहात् १.१२३.२. **भुवनानाम्**=लोकलोकान्तराणाम् ३४.४५. भवन्ति भूतानि येषु तेषां गृहाणाम् १४.५. सब भुवनों का आर्याभि० १.३१, ऋ० १.७.६.१. **भुवनानि**=स्थानानि ८.३६. भवन्ति येषु तानि लोक-

जातानि ३१.१६. सर्वपदार्थाधिकरणानि १७.२७. निवासाऽधिकरणानि २६.७. भा०—मूर्त्तद्रव्याणि ३३.४३. लोकान् २६.३४. माण्डलिकराजनिवासस्थानानि ६.२५. गृहाणि ६.२४. भवनाधिकरणानि वस्तूनि ३४.३१. लोकजातानि भूताधिकरणानि ६.५.२. भवन्ति येषु तानि वस्तूनि ११.२३. सब पदार्थों के निवासस्थान असंख्यात लोकों को आर्याभि० २.१४, ८.३६. लोक-लोकान्तरों को आर्याभि० २.६, ३२.१०. **भुवनाय**=जाताय लोकाय १.६२.४. **भुवनेषु**=स्थित्यधिकरणेषु (लोकलोकान्तरेषु) ३.२.१०. निवासाधिकरणेषु १.१५७.५. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'भूसूधूभ्रस्जिभ्यश्छन्दसि' उ० २.८०. सूत्रेण क्युन्। भुवनम् उदकनाम निघं० १.१२. भुवनस्य=भूतानाम् नि० ३.१२. भुवनं विचष्टे भूतान्यभिविपश्यति नि० १०.४६. भुवनानि भूतान्युदकानि नि० १०.३३. भुवनाय=भावनाय नि० ७.२५. यज्ञो वै भुवनम् तै० ३.३.७.५.]

भुवना भवन्ति भूतानि येषु तानि गृहाणि प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि बहुलम्' अ० ६.१.७०. इति लुक् ८.३०. भुवनानि लोकाः १.८५.८. लोकस्थपदार्थान् १७.२७. भूताधिकरणानि (स्थानानि) ४.६.५. सर्वाणि भूतानि लोकान् वस्तूनि वा ३.६२.६. लोकाः प्राणिनश्च १.१०१.६. लोकलोकान्तरान् ७.१३.३. [भुवनमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि। इमे वै लोका भुवनम्। काठसंक० १४१.७. यज्ञो वै भुवनस्य नाभिः तै० ३.६.५.५.]

भुवन्तये यो भवत्याचारवाँस्तस्मै (भृत्याय) १६.१६. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

भुवपतये भवन्त्युत्पद्यन्ते भूतानि यस्मिन् संसारे तस्य पतिस्तस्मै जगदीश्वराय आहवनीयाख्याऽग्नये वा प्र०—अत्र वाहुलकाद् भूधातोरौणादिकः कः प्रत्ययः २.२. [भुवपतिपदयोः समासः। भुवः=भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिकः कः। एतानि वै तेषामग्नीनां नामानि यद् भुवपतिर्भुवनपतिर्भूतानां पतिः श० १.३.३.१७.]

भुवस्पते ! पृथिव्याः स्वामिन् ४.३४. [भुवस्पतिपदयोः समासः। भुवस्=भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'भूरञ्जिभ्यां कित्' उ० ४.२१७. सूत्रेण असुन् किच्च]

भुवः अन्तरिक्षम् ३.५. भुवरित्यपानः यः सर्वं दुःखमपनयति सोऽपानः जो सब दुखों से रहित है जिसके सङ्ग से जीव सब दुःखों से छूट जाते हैं वह (परमेश्वर) स० प्र० ५१, ३६.३. उपासनाविद्याम् ३६.३. बलनिमित्त उदानः ३.३७. यो भवति सः (अ०—अग्निः) १३.५४. यो मुमुक्षूणां मुक्तानां स्वसेवकानां धर्मात्मनां सर्वं दुःखमपानयति दूरी करोति सोऽपान ईश्वरो दयालुत्वात् पं० वि०। वायु आदि पदार्थों को रचने वाला (ईश्वर) आर्याभि० २.३५, ३.३७. सब दुःखों को दूर करने वाला (ईश्वर) सं० वि० ११४, १०.८५.४४. अन्तरिक्षवदवकाशरूपत्वाद् (ईश्वरः) ऋ० भू० १६२, अथर्व० १३.४ ५१. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'भूरञ्जिभ्यां कित्' उ० ४.२१७. सूत्रेण असुन् किच्च। भुव इत्यन्तरिक्षलोकः श० ८.७.४.५. अग्निर्वै भुवोऽग्नेर्हीदं सर्वं भवति श० ८.१.१.४. भुव इति व्याहृतिः जै० ३.८७.]

भुवः भवतीति तस्य (यज्ञस्य=व्यवहारस्य) १५.२३. भूमयः १.८६.५. पृथिव्या मध्ये ४.१६.२. अन्तरिक्षस्य ७.२६. अन्तरिक्षस्थान् (लोकान्) २३.८. भवतीति भूस्तस्याः (भूम्याः) १.५२.१३. **भुवा**=पृथिव्या ३.५५.१३. **भुवाम्**=पृथिवीनाम् ३७.१८. **भूः**=भूरिति वै प्राणः यः प्राणयति जीवयति सर्वान् प्राणिनः स प्राणः प्राणादपि प्रियस्वरूपो वा स ईश्वरः पं० वि०। प्रियस्वरूपः प्राणः ३.३७. यः प्राणयति चराचरं जगत् स भूः स्वयम्भूरीश्वरः, जो सब जगत् के जीवन का आधार, प्राण से भी प्रिय और स्वयम्भू है वह प्राण का वाचक ईश्वर स० प्र० ५१, ३६.३. प्राणदाता (परमात्मा) सं० वि० ११४, १०.८५.४४. भवतीति भूः (भूमिः) १३.१८. जो प्राणों का भी प्राण है वह ईश्वर सं० वि० ७५, ३६.३. हे सदा वर्त्तमान सर्वमङ्गलकारकेश्वर आर्याभि० २.३५, ३.३७. कर्मविद्याम् ३६.३. इमं लोकम् २३.८. भूमिः प्र०—भूरिति वै प्रजापतिरिमामजनयत श० २.१.४.११, ३.५. सत्ताऽऽत्मिकाम् (प्रकृतिम्) २०.२३. भूभेः ७.२६. भूमौ भा०—पृथिव्यादिपदार्थविद्या २०.१२. [भू० सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्। भूर्हीयं (पृथिवी) श० ७.४.२.७ भूरिति पृथिवीनाम निघं० १.१. भूरिति अन्तरिक्षनाम निघं० १.३.]

भूत् भवेत् प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' इत्यडभावः १.३८.५. वर्त्तते १.७३.२. भवति प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् अडभावश्च २.६. भवतु ६.६१.१०. **भूत**=भवत प्र०—अत्र लेटि मध्यमबहुवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१०६.२. **भूतम्**=भवतः प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.६३.७. भवेताम् ६.६८.४. भवेतम् ६.७४.१. **भूतु**=भवतु प्र०—अत्र शपो लुग् 'भूसुवोस्तिङी'ति गुणाऽभावः १२.५१. **भूथः**=भवथः ६.६७.५. **भूम**=भवेम प्र०—अत्र लुङ्यडभावश्च १.८८.२. **भूयाः**=भवेः

२.२७. भव नि० ६.११. **भूयात्**=भवतु ५.३३. भवेत् १.२३. **भूयाम**=समर्था भवेम प्र०—'शकि लिङ् च' अ० ३.३.१७२. इति लिङ् 'वहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् च १.१७.४. **भूयास्तम्**=भूयास्ताम् प्र०—अत्र व्यत्ययः २.७. **भूः**=भवेः प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् ६.१२. भव प्र०—अत्राऽडभावः ७.१९.१०. भवसि प्र०—अत्र लडर्थे लुङ् १.९१.२. भव प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् 'न माङ्योगे' इत्यडभावः १.३३.३. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः। 'गातिस्थाघु०' इति सिचो लुक्। अन्यत्र शपो लुकि लोटि लटि लिङि लुङि च रूपाणि]

भूतन भवत ७.५९.१०. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। तप्रत्ययस्य तनप्। भूतन भवत नि० ६.२२.]

भूतम् उत्पन्नं सर्वं जगत् ५.१६. अतीतम् (वस्तुजातम्) ३४.४. निष्पन्नम् (जगत्) १.१८५.११. रूपम् १८.१४. पुष्कलम् (ऋतं=प्राप्तुं योग्यं कारणम्) ३.५४.३. भूतस्थ (जगत्) को स० प्र० २८२, ३१.२. **भूतस्य**= उत्पन्नस्य कार्यरूपस्य (अ०—जगतः) २३.१. उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का सं० वि० ४, १३.४. **भूतानाम्**= पृथिव्यादीनाम् १४.२८. पृथिव्यादितत्त्वानां तत्कार्याणां लोकानाम् २०.३२. प्राण्यप्राणिनाम् १६.५९. भूतान्युत्पन्नानि यावन्ति वस्तूनि तेषाम् २.२. **भूतानि**=पृथिव्यादीनि १४.२८. महान्ति तत्त्वानि १४.३१. **भूताय**= उत्पन्नानां प्राणिनां सुखाय १.११. **भूतेभ्यः**=मनुष्यादिप्राणिभ्यः ५.१२. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः। भूतम् उदकनाम निघं० १.१२. अयं वै (पृथिवी) लोको भूतम् तै० ३.८.१८.५. भूतं ह प्रस्तोतैषां (विश्वसृजाम्) आसीत् तै० ३.१२.९.३. परिमितं वै भूतमपरिमितं भव्यम् ऐ० ४.६. प्रजा वै भूतानि श० २.४.२.१. तद् यानि तानि भूतानि ऋतवस्ते श० ६.१.३.८. देवा वै भूताः मै० ३.८.५. भूतं वाव रथन्तरम् तै० सं० ३.१.७.२.]

भूतसाधनी भूतानां साधिका (सत्क्रिया) २६.१. [भूत-साधनीपदयोः समासः। साधनी=साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्ल्युडन्तान् ङीप्]

भूतिम् ऐश्वर्यम् १.१६१.१. **भूतिः**=ऐश्वर्यम् १८.१४. **भूत्यै**=ऐश्वर्याय ३०.१७. ऐश्वर्यकारिकायै (स्त्रियै) १२.६५. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। भूतिः—(प्राणः) प्राणं वा अनुप्रजापशवो भवन्ति जै० उ० २.४.६. योऽयम् (अग्निः) इदानीं स भूतिः मै० ३.८.६.]

भूत्वा भावयित्वा प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः २.१६. होकर सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.१.७. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्त्वा]

भूत्वी भूत्वा ७.१०४.१८. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्त्वाप्रत्यये 'स्नात्व्यादयश्च' अ० ७.१.४९ सूत्रेणेदन्तत्वं निपात्यते]

भूना भूमना प्र०—अत्र पृषोदरादित्वान्मकारलोपः १७.२८. [बहुप्राति० भावे 'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' इति इमनिच्प्रत्यये 'बहोर्लोपो भू च बहोः' सूत्रेण भूमन् इति रूपम्। ततष्टाप्रत्यये मकारलोपः]

भूमनः बहुरूपस्य (जगतः) ६.७१.२. **भूमना**= बहुत्वेन प्र०—अत्रोभयसंज्ञान्यपीति भसंज्ञाऽभावादल्लोपाऽभावः १.११०.२. [बहुप्राति० भावे इमनिच्। बहोश्च भूरादेशः 'बहोर्लोपो भू च बहोः' सूत्रेण। ततः षष्ठ्येकवचनेऽल्लोपो न भवति छन्दसि]

भूमा भूमानि बहूनि (जन्मानि) १.७०.३. भूमानि वस्तूनि १.१७३.६. भूमिम् प्र०—अत्र पृषोदरादिना रूपसिद्धिः ४.२२.३. प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति डादेशः १.६२.८. पृथिव्याः ७.५.७. भूमौ ६.५०.५. बहुविधम् (त्रिधातु=सर्वजगत्) ४.४२.४. भूम्ना (व्यवहारेण) २.४.७. व्यापकः (हेडः=अनादरः) ६.६२.८. बहुत्वेन २.४.२. [भूमन् इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। अथवा भूमिप्राति० 'सुपां सुलुक्०' इति डादेशः। पुष्टिर्वै भूमा तै० ३.९.८.३. भूमा वै प्रजापतिः जै० २.२१८. भूमा वै सहस्रम् श० ३.३.३.८. भूमा सूक्तम् जै० ३.२४१. श्रीर्वै भूमा श० ३.१.१.१२.]

भूमि प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् २६.१६. **भूमिम्**=भूगोलम् भा०—भूम्याद्युपलक्षितम् (जगत्) ३१.१. सर्वाऽऽधारां क्षितिम् १.५२.१२. पृथिवीम् १.६४.५. बहवः पदार्था भवन्ति यस्यां ताम् ३.३०.९. पृथिवीराज्यम् ४.२६.२. भूमिमारभ्य प्रकृतिपर्यन्तं सर्वं जगत् ऋ० भू० ११९, ३१.१. **भूमिः**=पृथिवीवत् १३.१८. भवन्ति भूतानि यस्यां सा पृथिवी २३.४६. जिसमें सब भूत (प्राणी) होते हैं वह (परमात्मा) स० प्र० १५, १३.१८. **भूमीः**=अध-ऊर्ध्व-मध्यस्था उत्तमाऽधममध्यमाः क्षितीः १.१०२.८. **भूम्याम्**=पृथिव्याम् १६.५४. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'भुवः कित्' उ० ४.४५. सूत्रेण मिः। भूमिः पृथिवीनाम निघं० १.१. अभूद् इव वा इदमिति तद्भूमेर्भूमित्वम् ता० २०.१४.२. अभूद्वाऽइयं

प्रतिष्ठेति तद्भूमिरभवत् श० ६.१.१.१५. यदभवत्तद् भूमिः काठ० ८.२. कर्णिनी वै भूमिरिति जै० १.१२६.]

भूम्ना- विभुना भा०—स्वव्याप्त्या ३.५. **भूम्ने**=बहुत्वाय ३०.१३. [बहुप्राति० भावे इमनिच्-प्रत्यये बहोः स्थाने भूरादेशे 'बहोर्लोपो भू च बहोः' सूत्रेण रूपसिद्धिः]

भूम्यस्य भूमौ भवस्य (रथस्य) ५.४१.१०. **भूम्याः**=भूमिषु साधवः (व्यवहाराः) १.६२.५. [भूमि-प्राति० भवार्थे साध्वर्थे वा यत्]

भूयसः बहून् ५.३०.४. अधिकात् (संख्यानात्) १.१०२.७. **भूयसा**=बहुना (राया=धनेन) ३.१६.६. **भूयः**=अधिकम् (आनन्दम्) ५.७९.१०. बहु (वारम्) २.१४.१०. अतिशयेन बहुः (वसु) ४.१६. पुनः ३.३४. [बहुप्राति० अतिशायन ईयसुन् प्रत्यये 'बहोर्लोपो भू च बहोः' सूत्रेण रूपसिद्धिः]

भूयसीः अधिकाः (रातयः=दानानि) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति जसः पूर्वसवर्णत्वम् १.११.८. बह्वीः (उषासः=दिनानि) २.२८.९. पुनः पुनरधिकाः (अ०—अण्व्यो मात्राः) १.१८८.५. [बहुप्राति० अतिशायन ईयसुन् । ततः स्त्रियां ङीप् । बहोर्लोपो भू च बहोः' इति भूरादेशः । विड् वै भूयसी मै० ४.२.६.]

भूयस्कर हे पुनः पुनरनुष्ठातः (राजन्) १०.२८. [भूयसुपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोस्ताच्छील्ये टः]

भूयामो भवेम प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यस्योत्वम् ४.३२.६. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिङ् । अकारस्योत्वं छान्दसम्]

भूयांसः तेभ्योऽप्यधिकाः (रुद्राः=प्राणजीवाः) १६.६३. [बहुप्राति० अतिशायन ईयसुन् । 'बहोर्लोपः०' इति रूपसिद्धिः]

भूयिष्ठम् अतिशयेन बहु (अन्नम्) ५.७७.४. **भूयिष्ठः**=अधिकः (अग्निः=पावकः) १.१६१.९. [बहुप्राति० अतिशायन इष्ठन् । 'इष्ठस्य यिट् च' इति भूरादेशः]

भूयिष्ठाम् अधिकाम् (उक्तिं=स्तुतिम्) १.१८९.१. बहुतमाम् (नम उक्तिं=नमोभिरुक्तिम्) ५.३६. भूयसीम् (नम-उक्तिम्) ७.४३. बहुत प्रकार की प्रशंसा को सं० वि० २१४, ४०.१६. **भूयिष्ठाः**=अधिकाः (आपः) १.१६१.९. [बहुप्राति० अतिशायन इष्ठन् । 'इष्ठस्य यिट् च' अ० ६.४.१५९. सूत्रेण बहोः स्थाने भूरादेशः प्रत्ययस्य च यिट् । ततः स्त्रियां टाप्]

भूयोभूयः वारं वारम् ६.२८.२. ['भूयस्' पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । भूयस्=बहुप्राति० अतिशायने ईयसुन्]

भूरयः बह्व्यः (क्रतवः=प्रज्ञाः) १.५५.८. [भूरि इति बहुनाम निघं० ३.१. भूरि इति बहुनो नामधेयं प्रभवतीति सतः नि० २.८. भूरि बहूनि नि० ११.२१. भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'अदिशदि०' इत्युणादिसूत्रेण क्रिन्]

भूरि बहु (अर्थं=गुणं द्रव्यं वा) प्र०—अत्र 'अदिशदिभू० उ० ४.६५. अनेन भू-धातोः क्रिन् प्रत्ययः १.१०.२. बहूनि बलानि ५.२९.१४. **भूरीणि**=बहूनि (वृत्रा=मेघाऽवयवान्) ४.१७.१९. **भूरेः**=बहुपदार्थान्वितस्य (क्षयस्य=गृहस्य) ८.६. बहुविधस्यैश्वर्यस्य १.६१.१५. बहोः (जलस्य) १.८४.३६. व्यापकस्य (सतः=कारणस्य) १.९६.७. बहुविधस्य (कवेः=विदुषो जनस्य) २.२८.१. बहुरूपस्य (जनस्य) २.३३.९. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'अदिशदिभूशुभिभ्यः क्रिन्' उ० ४.६५ सूत्रेण क्रिन्]

भूरिकर्मणे बहुकर्मकारिणे (इन्द्राय=सेनापतये) १.१०३.६. [भूरि-कर्मन्पदयोः समासः]

भूरिदात्रः भूरि बहुविधं दात्रं दान यस्य सः (इन्द्रः=राजपुरुषः) ३.३४.१. [भूरि-दात्रपदयोः समासः । दात्रम्=डुदाञ् दाने (जु०) धातोरौणादिकः ष्ट्रन्]

भूरिदावत्तरा अतिशयेन बहुधन-दानप्राप्तिनिमित्तौ (इन्द्राग्नी=विद्युद्भौतिकाग्नी) १.१०९.२. [भूरि-दावन्-पदयोः समासेऽतिशायने तरप् । ततः 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशः । तरप्प्रत्यये 'नाद् घस्य' अ० ८.२.१७. सूत्रस्थेन 'भूरिदान्नस्तुड् वक्तव्यः' वा० सूत्रेण तुट् । भूरिदावत्तरा=बहुदातृतरौ नि० ६.९.]

भूरिदाव्नः बहुदातुः (सर्वव्यापकस्येश्वरस्य) २.२७.१७. [भूरि-दावन्पदयोः समासः । दावन्=डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्वनिप्]

भूरिदाः बहुदाः (प्रजाजनः) ४.३२.२०. बहूनां दाता (दानशीलो मनुष्यः) ४.३२.१९. ['भूरि' इत्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

भूरिधारे भूरि बह्व्यो धारा ययोस्ते (रोदसी=सूर्य-भूमी) ६.७०.२. (भूरि-धारापदयोः समासः । भूरिधारे बहुधारे नि० ५.२.]

भूरिपोषिणः भूरि बहुविधः पोषः पुष्टिर्विद्यते येषां ते (विद्वज्जनाः) ३.३.९. (भूरि-पोषपदयोः समासे मत्वर्थे इनिः]

भूरिभारः भूरि बहुर्भारो यस्मिन् सः (कालः) १.१६४.१३. [भूरि-भारपदयोः समासः]

भूरिम् विपुलम् (अद्रिं=मेघम्) ४.१६.८. बहुविधम् (राशिं=समूहम्) ४.२०.८. [व्याख्यातम्]

भूरिरेतसा भूरीणि बहूनि रेतांसि उदकानि यस्मिन्नन्तरिक्षे तेन ३.३.११. **भूरिरेताः**=बहुवीर्यः (त्वष्टा=विद्युत्) २०.४४. [भूरि-रेतस्पदयोः समासः]

भूरिरेतसा भूरि बहुरेतो वीर्यमुदकं वा याभ्यां ते (द्यावापृथिवी=भूमिसूर्यौ) प्र०—रेत इत्युदकनाम निघं० १.१२, ६.७०.१. भूरि बहुरेत उदकं ययोर्वा भूरीणि बहूनि रेतांसि वीर्याणि याभ्यां ते (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ३४.४५. [भूरि-रेतस्पदयोः समासः । 'सुपां सुलुक्०' इति द्विवचनस्याकारः । रेतस् उदकनाम निघं० १.१२. रेतस्=रि गतौ (तुदा०) धातोः 'स्रुरिभ्यां तुट् च' उ० ४.२०२ सूत्रेण असुन् तुडागमश्च]

भूरिवर्पसः बहूनि प्रशंसनीयानि वर्पांसि रूपाणि यासु ताः (मात्रादयोऽध्यापिकाः) प्र०—वर्प इति रूपनाम निघं० ३.७, १२.१०८. [भूरि-वर्पस्पदयोः समासः । वर्पस् रूपनाम निघं० ३.७. वर्पस्=वृङ् संभक्तौ (क्रया०) धातोः 'वृङ्शीङ्भ्यां रूपस्वाङ्गयोः पुट् च' उ० ४.२०१. सूत्रेण असुन् पुडागमश्च]

भूरिवर्पसा भूरि बहु च तद्वर्पश्च तेन (योगाभ्यासविज्ञानेन) सह ३.३.४. [भूरि-वर्पस्पदयोः समासः]

भूरिवाराः ये भूरि बहुविधं सुखं वृण्वन्ति ते (प्रजाः ३.५७.४. ['भूरि' इत्युपपदे वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

भूरिशृङ्गाः भूरीणि शृङ्गाणि प्रकाशा यासु ताः (गावः=रश्मयः) प्र०—शृङ्गाणीति ज्वलतो नामसु पठितम् निघं० १.१७, ६.३. भूरि बहु शृङ्गाणीवोत्कृष्टानि तेजांसि येषु ते (गावः=किरणाः) १.१५४ ६. [भूरि-शृङ्गपदयोः समासः। भूरिशृङ्गा बहुशृङ्गाः । भूरीति बहुनो नामधेयं प्रभवतीति सतः शृङ्गं श्रयतेर्वा, शृणातेर्वा शरणायोद्गतमिति वा, शिरसो निर्गतमिति वा नि० २.७.]

भूर्णयः ये बिभ्रति ते (सारथयः) १.५५.७. भूर्णिम्=धर्त्तारम् (अग्नि=वह्निम्) ३.३.५. भूर्णिः=धर्त्ता (अग्निः=पावकः) १.६६.१. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'घृणिपृश्निपार्ष्णिचूर्णिभूर्णयः' उ० ४.५२. सूत्रेण निः]

भूर्यक्षाः भूरि बहून्यक्षीणि दर्शनानि येषान्ते (पूर्णविद्याः परीक्षका जनाः) २.२७.३. [भूरि-अक्षिपदयोः समासः]

भूवन् अभूवन्, भवन्तु प्र०—अत्राडभावः १.१३९.८. भवेयुः १.१८६.२. [भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

भूष भूषयलङ्करोति १.१५.४. अलङ्कुरु ७.७. **भूषतम्**=अलङ्कुरुतम् ३३.८८. **भूषतः**=अलङ्कुरुतः ६.६२.४. **भूषति**=अलङ्करोति १.४६.१२. **भूषथः**=अलङ्कुरुथः ३.३२.९. **भूषन्**=अलङ्कुर्य्युः १.१५१.३. **भूषन्ति**=अलङ्कुर्वन्ति २५.३६. **भूषसि**=अलङ्करोषि १.३१.२. **भूषात्**=अलङ्कुर्य्यात् ४.१६.११. [भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लटि लङि लेटि च रूपाणि]

भूषन् अलङ्कुर्वन् (सज्जनः) १.१४०.६. [भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोः शतृ]

भृगवः विद्ययाऽविद्याया भर्जका निवारकाः (विद्वांसो जनाः) प्र०—भृगव इति पदनाम निघं० ५.५, १.१४३.४. अविद्याऽधर्मनाशनशीला दुःखभर्जका वा (विद्वज्जनाः) १.१२७.७. परिपक्वविज्ञाना मेधाविनो विद्वांसः (जनाः) १.५८.६. परिपक्वज्ञानाः (भा०—विद्वांसो जनाः) ३३.६. देदीप्यमानाः शिल्पिनः (जनाः) ४.१६.२०. विद्वांसो मनुष्याः ६.१५.२. यज्ञविद्यावेत्तारः (अ०—विद्वांसो जनाः) प्र०—भृगव इति पदनामसु पठितत्वादत्र ज्ञानवत्त्वं गृह्यते ३.१५. **भृगवे**=भर्जनाय परिपाचनाय १.६०.१. **भृगुभिः**=परिपक्वविज्ञानैर्विपश्चिद्भिः १७.६९. **भृगुभ्यः**=भर्जमानेभ्यः (पदार्थेभ्यः) ३.५.१०. **भृगूणाम्**=अविद्यादाहकानाम् (सज्जनानाम्) ३.२.४. भृज्जन्ति यैस्तेषाम् (अङ्गिरसां=प्राणानाम्) १.१८. [भ्रस्ज पाके (तुदा०) धातोः 'प्रथिम्रदिभ्रस्जां सम्प्रसारणं सलोपश्च' उ० १.२८. सूत्रेण कः सम्प्रसारणं सलोपश्च । भृगवः पदनाम निघं० ५.५. भृगुः=अर्चिषि भृगुः सम्बभूव भृगुः भृज्यमानो न देहे नि० ३.१७. वायुरापश्चन्द्रमा इत्येते भृगवः गो० पू० २.८. तस्य (प्रजापतेः) यद् रेतसः प्रथमम् उददीप्यत तदसावादित्योऽभवद् यद् द्वितीयमासीत्तद् भृगुरभवत् तं वरुणो न्यगृह्णीत तस्मात् स भृगुर्वारुणिः ऐ० ३.३४.]

भृगवाणम् परिपाककर्त्तारम् (अग्निम्) ४.७.४. **भृगवाणः**=भृज्जन्ति पदार्थविद्ययाऽनेकान् पदार्थानिति भृगवाणस्तद्वत् (गृहीतविद्याः कुमार्यः) १.७१.४. **भृगवाणे**=यो भृगुः परिपक्वधीर्विद्वानिवाचरति तस्मिन् (घोषे=वाचि) प्र०—भृगु-शब्दादाचारे क्विप् ततो नाम-

धातोर्व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदे शानच् 'छन्दस्युभयथा' इति शानच आर्धधातुकत्वाद् गुणः १.१२०.५.

भृज्जाति भृज्जेत् ४.२४.७. [भ्रस्ज पाके (तुदा०) धातोर्लेट्]

भृतम् घृतम् (हुतं द्रव्यम्) २८.१२. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः]

भृत्याम् भृत्येषु साध्वीं सेनाम् १.८४.१६. [भृत्यप्राति० साध्वर्थे यत् । ततः स्त्रियां टाप् । भृत्यः=बिभर्त्तेः क्यप्]

भृथे धारणे २.१४.४. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणादिकः क्थन् बहुलवचनात्]

भृमयः भ्रमणानि ३.६२.१. **भृमिम्**=अनवस्थाम् भा०—अन्यायदशाम् २.३४.१. भ्रमणशीलम् (विद्वज्जनम्) ७.५६.२०. **भृमिः**=यो नित्यं भ्रमति सः (विद्वान् मनुष्यः) प्र०—'भ्रमेः सम्प्रसारणं च' उ० ४.१२६. अनेन भ्रमु-धातोरिन् प्रत्ययः सम्प्रसारणञ्च, स च कित् १.३१.१६. भ्रमणशीलः (इन्द्रः=राजा) ४.३२.२. [भ्रमु चलने (भ्वा०) धातोः 'भ्रमेः सम्प्रसारणञ्च' उ० ४.१२१. सूत्रेण इन् संप्रसारणं च । भृमिर्भ्राम्यतेः नि० ६.२०.]

भृमात् भ्रान्तेः प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन रेफस्य स्थाने ऋकारो 'वाच्छन्दसि' इति सम्प्रसारणं वा ७.१.२२. [भ्रमु चलने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । वर्णव्यत्ययेन रेफस्य ऋकारः]

भृष्टिमता भृज्जन्ति यया सा भृष्टिः कान्तिरिव नीतिः सा प्रशस्ता विद्यते यस्मिंस्तेन १.१५. [भ्रस्ज पाके (तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । भृष्टिप्राति० प्रशंसायां मतुप्]

भृष्टिः भृज्जन्ति परिपचन्ति यस्यां वृष्टौ सा १.५६.३. [भ्रस्ज पाके (तुदा०) धातोः क्तिन् स्त्रियाम्]

भेकुरयः या भां दीप्तिं कुर्वन्ति ताः (अप्सरसः=आकाशगताः किरणाः) प्र०—पृषोदरादिनाऽभीष्टसिद्धिः १८.४०. [भेकुरयो नामेति भाकुरयो ह नामैते भाँ हि नक्षत्राणि कुर्वन्ति श० ९.४.१.९.]

भेजाते भजतः ७.३९.१. **भेजिरे**=सेवन्ताम् ५.५७.५. सेवन्ते ७.१.९. **भेजे**=भजति ७.१८.१६. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

भेजानासः भजमानाः (प्रजाजनाः) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेनाऽस्यैत्वम् ४.२९.५. [भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः शानच् । वर्णव्यत्ययेन धातोरकारस्यैत्त्वम्]

भेत् भिनत्ति ७.१८.२०. भिन्द्यात् १.५९.६. भिन्द्याः प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इतीडभावो 'झलो झलि' इति सलोपो 'हल्ङ्याब्भ्यो०' इति सिब्लोपश्च १.१०४.८. अलग कर, नष्ट कर आर्याभि० १.४९, ऋ० १.७.१९.८. **भेदति**=भिनत्ति ५.८६.१. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लुङि छान्दसं रूपम् । 'भेदति' प्रयोगे लटि व्यत्ययेन शप् । भेत्=अभिनत् नि० ७.२३.]

भेत् बिभेति ७.१८.२०. **भेम**=बिभयाम, भयं करवाम प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् 'बहुलं छन्दसि' इति च्लेर्लुक् 'छन्दस्युभयथा' इति लिङ आर्धधातुकसंज्ञामाश्रित्य मसो ङित्वाऽभावाद् गुणश्च १.११.२. **भेः**=बिभीहि प्र०—अत्र लोडर्थे लङ् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.२३. बिभीयाः, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् ६.३५. भयं प्रापयेः १६.४७. [ञिभी भये (जु०) धातोर्लुङि छान्दसं रूपम् । अन्यत्र लङपि]

भेदम् विदारणं भेदभावं वा ७.१८.१९. भेदनीयं विदारणीयम् (शत्रुम्) ७.३३.३. **भेदस्य**=विदारणस्य द्वैधीभावस्य ७.१८.१८. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्घञ्]

भेदि भिद्यताम् ११.६४. [भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः कर्मणि लुङ् । अटोऽभावश्छान्दसः]

भेषजम् शरीराऽन्तःकरणेन्द्रियाऽऽत्मनां सर्वरोगाऽपहारकमौषधम् १.२३.२१. औषध-सेवनम् २१.३२. रोगनिवारकम् (रुद्रम्=ईश्वरम्) ३.५९. रोगनाशकव्यवहारम् १.२३.२१. रोगप्रणाशकमोषधिरूपम् (यज्ञं=सुखप्रदं व्यवहारम्) भा०—पथ्यौषधिब्रह्मचर्य-सेवनम् १९.१२. अविद्यादिक्लेशनिवारकम् (ईश्वरम्) ३.५९. चिकित्सकम् (जनम्) २१.३१. चिकित्सनीयम् (जनम्) २१.४०. सर्वदुःखनिवारकमौषधम् १.८९.४. उदकम् प्र०—भेषजमित्युदकनाम निघं० १.१२, २१.३३. **भेषजः**=भिषग् जनः २.३३.७. **भेषजाय**=सुखाय भा०—सुखप्राप्तये प्र०—भेषजमिति सुखनाम निघं० ३.६, ३९.१२. **भेषजैः**=जलैः २१.३६. [भिषज् चिकित्सायाम् (कण्ड्वा०) धातोरच् कर्त्तरि । भेषजम्=भैषज्यानि नि० १०.३५. भेषजम् उदकनाम निघं० १.१२. भेषजम् सुखनाम निघं० ३.६. यद् भेषजं तदमृतम् गो० पू० ३.४. शान्तिर्वै भेषजमापः कौ० ३.६.]

भेषजा भेषजानि २५.४६. औषधानि प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति लोपः १.२३.२०. रोगनिवारकाणि (वार्याणि=साधनानि) १.११४.५. [भेषजमिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

भेषजानि औषधानि ६.७४.३. [भिषज् चिकित्सायाम् (कण्ड्वा॰) धातोः संज्ञायां घः]

भेषजी औषधानीव रोगनिवारिका, अधिविनाशिनी (तनूः=धर्मनीतिः) १६.४९. [भेषजप्राति॰ स्त्रियां ङीप्]

भेषजेभिः रोगाऽपहन्तृभिर्वैद्यैः १.१५७.६. [भेषजमिति व्याख्यातम्। ततो 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

भैषज्येन भिषजां वैद्यानां भावेन २०.३. भिषजामोषधीनां भावेन २०.३. सर्वरोगनिवारकेण (औषधिसमूहेन) ऋ॰ भू॰ २१८, २०.३. [भिषज्प्राति॰ भावे ष्यञ्। भिषज्=भिषज् चिकित्सायाम् (कण्ड्वा॰) धातोः क्विप्]

भोगैः सुखभोगैः २९.५१. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा॰) धातोः 'हलश्च' इति संज्ञायां घञ्]

भोगघनः ये भोज्यन्ते ते भोजो, हन्यन्ते ते हनः, भोजश्च ते हनो भोगघनः (रुद्राः=स्पर्शवन्तो वायवः) १.६४.३. [भोज्-हन्पदयोः समासः]

भोजते भुङ्क्ते प्र॰—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप् १.७२.८. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा॰) धातोर्लट्। व्यत्ययेन शप्। भोजते क्रुध्यतिकर्मा निघं॰ २.१२.]

भोजन पालक (परमेश्वर) १.४४.५. **भोजनम्**=पालनं भोक्तव्यं वा ५.८२.१. भक्षणम् ३.४४.३. भक्षणीयं वस्तु २.१३.४. भोग्यमानन्दम् १.८३.४. पालनमन्नादिकं वा ५.३४.७. **भोजनानि**=भोक्तव्यानि पालनानि वा ७.१९.६. पालनव्यवहाराऽन्नानि वा १९.६. भोजनवस्तूनि १.१०४.८. प्रजापालनानि भोक्तव्यान्यन्नानि वा ५.४.५. पालनाऽर्थान्यन्नानि २३.३८. भोगों को आर्याभि॰ १.४९, ऋ॰ १.७.१९.८. **भोजनाय**=पालनायाऽभ्यवहरणाय वा ३.३०.१४. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा॰) धातोर्ल्युट्। 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तर्यपि ल्युट्। भोजनमिति धननाम निघं॰ २.१०. भोजनानीति वा धनानीति वा नि॰ ४.५.]

भोजना भोजनानि पालनानि भोक्तव्यानि (वस्तूनि) वा ७.१८.१५. पालनान्यन्नानि वा ४.३६.८. [भोजनमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

भोजम् पालकम् (इन्द्रं=शत्रुविनाशकं राजानम्) ६.२३.९. भोक्तारम् (विद्वांसं जनम्) २.१७.८. भोक्तुं योग्यम् (पदार्थम्) ४.४५.७. **भोजस्य**=पालनस्य भोजनस्य वा ७.१८.२१. **भोजान्**=पालकान् (जनान्) ५.५३.१६. **भोजाः**=भोक्तारः प्रजापालकाः (वीराः=व्याप्तयुद्धविद्या जनाः) ३.५३.७. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा॰) धातोरच्। औणादिको वा अन्]

भोजम् भुञ्जेः प्र॰—अत्र विकरणव्यत्ययेन शबडोऽभावश्च २.२८.९. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा॰) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन शप्। अडभावश्च]

भोजसे पालनाय भोगाय वा १.५५.३. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा॰) धातोरसुन्]

भोज्या भोक्तुं योग्यानि (वस्तूनि) १.१२६.६. पालयितुं योग्यानि (वस्तूनि) १.१२८.५. [भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा॰) धातोर्ण्यत्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

भौमाः भूमिदेवताकाः (कृष्णाः पश्वादयः) २४.१०. [भूमि-प्राति॰ 'साऽस्य देवता' इत्यर्थेऽण्]

भौमी पृथिवीदेवताका (श्वावित्=सेधा पशुविशेषः) २४.३३. [भूमि-प्राति॰ 'साऽस्य देवता' इत्यर्थेऽणन्तान् ङीप् स्त्रियाम्]

भौवनाय भुवने भवाय (सूर्याय) २२.३२. भुवनेषु प्रभवाय (सूर्याय) ९.२०. भुवनानामयं सम्बन्धी तस्मै (जनाय) १८.२८. [भुवन-प्राति॰ भवार्थे 'तस्येदम्' इत्यर्थे वा अण्। ततश्चतुर्थी]

भौवायनः भुवेन सता रूपेण कारणेन निर्वृत्तः (प्राणः) १३.५४. [भुव-प्राति॰ निर्वृत्तार्थे ढक् छान्दसः। भुवः=भू सत्तायाम् (भ्वा॰) धातोर्घञर्थे कः]

भ्रजः भ्राजते प्रकाशते योऽग्निः सः १५.५. दीप्तम् (छन्दः) प्र॰—अत्र वर्णव्यत्ययेन ह्रस्वत्वम् १५.४. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा॰) धातोरच् कर्त्तरि। वर्णव्यत्ययेन धातोरुपधाया ह्रस्वः। अग्निर्वै भ्रजश्छन्दः श॰ ८.५.२.५.]

भ्रमः भ्रमणम् ६.६.४. [भ्रमु चलने (भ्वा॰) धातोर्घञर्थे कः]

भ्रमासः भ्रमणशीला वीराः (जनाः) १३.१०. भ्रमणानि ४.४.२. [भ्रम इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

भ्रशत् नष्टं स्यात् १२.११. [भ्रंशु अधःपतने (दिवा॰) धातोर्लेट्। व्यत्ययेन शः]

भ्राज यो भ्राजते प्रकाशते तत्सम्बुद्धौ (मित्र=विद्वन् सभाध्यक्ष) ४.२७. **भ्राजम्**=प्रकाशम् ४.१७. **भ्राजाय**=प्रकाशकाय (सूर्याय=प्राणाय सवित्रे वा) ८.४१. जीवनादिप्रकाशाय ८.४०. सर्वत्र प्रकाशमानाय (सूर्याय=जगदीश्वराय) ८.४०. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा॰) धातोः कर्त्तरि अच्। भावे घञ् वा]

भ्राजज्जन्मानः भ्राजद् देदीप्यमानं जन्म येषान्ते

(मरुतः=शूरवीरा जनाः) ६.६६.१०. [भ्राजत्-जन्मन्-पदयोः समासः। भ्राजत्=भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ]

भ्राजत् प्रकाशमान होता हुआ (ब्रह्मचारी जनः) सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.२४. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

भ्राजते प्रकाशते १.५६.३. **भ्राजन्ते**=प्रकाशन्ते ७.५७.३. प्रकाशयन्ते १.८५.४. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

भ्राजदृष्टयः भ्राजन्तः शोभमाना ऋष्टय आयुधानि येषान्ते भा०—प्रकाशिताऽऽत्मानः (मरुतः=मनुष्याः) ३४.१२. भ्राजन्त ऋष्टयो गतयो येषान्ते (मरुतः=वायवः) १.१६८.४. प्रदीप्ताऽऽयुधाः (धूतयः=वीरा जनाः) १.८७.३. प्राप्तप्रकाशाः (मरुतः=विद्वज्जनाः) २.३४.५. भ्राजत् प्रकाशमाना विद्या ऋष्टिर्ज्ञानं येषान्ते (कवयः=विद्वांसो जनाः) १.३१.१. भ्राजन्तः प्रदीप्ता ऋष्टयो व्यवहारप्रापिकाः कान्त्यो येभ्यस्ते (व्यवहारज्ञाः पुमांसः) १.१६४.११. भ्राजत्यः प्रदीप्ता ऋष्टयो व्यवहारप्रापिका येभ्यस्ते (मरुतः=वायवः) १.६४.११. भ्राजन्त ऋष्टयो विज्ञानानि येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५५.१. **भ्राजदृष्टिम्**=भ्राजद् ऋष्टिः दृष्टिः सम्प्रेक्षणं यस्य तम् (सूनुं=पुत्रम्) ६.६६.११. [भ्राजद्-ऋष्टिपदयोः समासः। भ्राजत्=भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ। ऋष्टिः=ऋषी गतौ (तुदा०) धातोः क्तिन्]

भ्राजन्तः अन्यान् प्रकाशयन्तः (विद्वांसो जनाः) ५.१०.५. प्रकाशमानाः (अग्नयः=सूर्यविद्युत्प्रसिद्धास्त्रयः) ८.४०. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

भ्राजन्ती प्रकाशमाना (उखा=पाकस्थाली) १.१६२.१५. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

भ्राजमानः प्रकाशमानः (परमेश्वरः) ४.३२. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शानच्]

भ्राजसा दीप्त्या ३५.३. तेजसा १०.१७. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्। भ्राजसा भ्राजमानाः भ्राजस्वन्तः नि० ३.१५.]

भ्राजिष्ठ हे अतिशयेन सुशोभित (सूर्य=गृहपते राजन्) ८.४०. [भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्ताद् अतिशायन इष्ठन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

भ्रातरम् सहोदरम् ५.३४.४. प्रियं बन्धुमिव (वरुणं=श्रेष्ठं जनम्) ४.१.२. भाई को सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.३. **भ्रातरः**=बन्धवः १.१७०.२. **भ्रातः**=बन्धो (विद्वज्जन) १.१६.१. **भ्राता**=बन्धुः ६.६. बन्धुवद्वर्त्तमानः (शिल्पी जनः) १.१६४.१. भाई सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.३. **भ्रात्रा**=बन्धुनेव वर्त्तमानेन ४.१०.८. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोस्तृच्-प्रत्यये 'नप्तृनेष्टृत्वष्टृ०' उ० २.९५. सूत्रेण रूपसिद्धिः। भ्राता भरतेर्हरतिकर्मणो हरते भागं भर्तव्यो भवतीति वा नि० ४.२६.]

भ्रातरा बन्धू ६.५९.२. [भ्रातृप्राति० प्रथमाद्विवचनस्य आकारादेशः]

भ्रातृव्यस्य द्विषतः शत्रोः १.१७. [भ्रातृप्राति० 'व्यन् सपत्ने' अ० ४.१.१४५. सूत्रेण व्यन्]

भ्रातेव सनाभिरिव १.६५.४. [भ्राता-इवपदयोः समासः]

भ्रात्रम् भ्रातृ-भावम् ४.२५.२. भ्रातुरिदं कर्म तद्वद्वर्त्तमानम् (सख्यम्) ४.२३.६. **भ्रात्राय**=बन्धुभावाय २.१.९. [भ्रातृ-प्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण्। भावे वा अण्]

भ्रियन्ते ध्रियन्ते १.१४.४. **भ्रियाते**=धरेतम् ५.३१.१२. **भ्रियासम्**=धारयेयम् २.८. [डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि लट्। 'भ्रियासम्' प्रयोगे लिङ्]

भ्रीणन्ति भर्त्सयन्ति २.२८.७. [भ्रीणातीति क्रुध्यतिकर्मा निघं० २.१२]

भ्रुवि नेत्रललाटयोर्मध्ये १९.९१. **भ्रूभ्याम्**=नेत्रगोलकोर्ध्वाऽवयवाभ्याम् २५.१. [भ्रमु चलने (भ्वा०) धातोः 'भ्रमेश्च डूः' उ० २.६८ सूत्रेण डूः]

भ्रेषते प्राप्नोति ७.२०.६. [भ्रेषृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। भ्रेषतीति क्रुध्यतिकर्मा निघं० २.१२.]

मक्षः मक्षिकाः ७.३२.२. [मश शब्दे (भ्वा०) धातोर् औणा० सः]

मक्षः मक्षिराजः ४.४५.४. [मशशब्दे रोषकृते च (भ्वा०) धातोर् औणा० बाहु० सः]

मक्षिका मशति शब्दयति या सा मक्षिका प्र०—अत्र 'हनिमशिभ्यां सिकन्' उ० ४.१५४. इति मशधातोः सिकन् १.११९.६. [मश शब्दे रोषकृते च (भ्वा०) धातोः 'हनिमशिभ्यां सिकन्' उ० ४.१५४. सूत्रेण सिकन्। ततः स्त्रियां टाप्]

मक्षु शीघ्रम् १.६०.५. सद्यः ७.५६.१५. त्वरितगत्या प्र०—मक्ष्विति क्षिप्रनामसु पठितम् निघं० २.१५, १.२.६. [मक्षु क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

मक्षूजवस्तमा सद्योऽतिशयेन वेगयुक्ता (ऊतिः=रक्षाद्या क्रिया) ६.४५.१४. [मक्षु-जवपदयोः समासेऽतिशायने तमप्]

मक्षू मक्षू शीघ्रं शीघ्रम् प्र०—अत्र निपातस्य च इति दीर्घः ३.३१.२०. [मक्षु क्षिप्रनाम निघं० २.१५. तस्य 'निपातस्ये' ति दीर्घः। ततो वीप्सायां द्वित्वम्]

मखस्य प्राप्तस्य सङ्गतस्य व्यवहारस्य ३.३४.२. सुखवर्द्धकस्य (पुरुषस्य) ३७.७. साङ्गोपाङ्गस्य योगस्य ज्ञानस्य ३७.८. प्रियाचरणाख्यस्य व्यवहारस्य विद्याबुद्धिकरस्य व्यवहारस्य ३७.६. सुखरक्षणस्य धर्मरक्षणस्य सुखवर्धकस्य (पुरुषस्य) ३७.७. ब्रह्मचर्याख्यस्य मननाख्यस्य गृहस्थसद्व्यवहारसिद्धेः ३७.८. शोधकस्य (यज्ञस्य) तत्त्वबोधस्य ३७.९. भा०—सर्वोपकाराऽऽख्यस्य यज्ञस्य ३७.१०. ऐवर्श्यप्रदस्य (व्यवहारस्य) ३७.८. विद्याबुद्धिकरस्य व्यवहारस्य ३७.६. सङ्गतिकरणस्य ३७.५. **मखः**=यज्ञ इव सुखकर्त्ता (सविता=राजा) ६.७१.१. पालनशिल्पाख्यो यज्ञः प्र०—मख इति यज्ञनामसु पठितम् निघं० ३.१७, १.६.८. यज्ञवद्वर्त्तमानः (विद्वान्) १.१३८.१. प्राप्तविद्यो जनः १.१३८.१. **मखाय**=सत्काराऽऽख्याय (यज्ञाय) ३७.५. शिल्पयज्ञविधानाय विज्ञानोद्भावनाय धार्मिकाणां सत्कारनिमित्ताय (यज्ञाय) ३७.६. विद्यावृद्धये सर्वसुखकारकाय धर्माचरणनिमित्ताय ३७.७. विद्याग्रहणाऽनुष्ठानाय. गार्हस्थ्यव्यवहाराय, गृहस्थकार्यसङ्गविकरणाय, योगाभ्यासाय, ऐश्वर्यप्रदाय (यज्ञाय) ३७.८. वायुशुद्धिकरणाय, पृथिव्यादिविज्ञानाय, उपयोगोय (यज्ञाय) ३७.९. विदुषां सत्काराय (यज्ञाय) ३७.१० न्यायानुष्ठानाय ३७.११. भा०—सर्वसङ्गत्यधिष्ठानाय यज्ञाय ३७.३. भा०—उत्तमशिक्षायै ३७.४. **मखाः**=यज्ञा इवोपकर्त्तारः (वीरयोद्धृजनाः) १.११९.३. यष्टुमर्हा यज्ञाः १.६४.११ **मखेभ्यः**=सङ्ग्रामादिभ्यः सङ्गन्तव्येभ्यः ६.६६.९. [मख इति यज्ञनाम निघं० ३.१७. यज्ञो वै मखः तै० ३.२.८.३. मख इत्येतद्यज्ञनामधेयं छिद्रप्रतिषेधसामर्थ्यात्, छिद्रं खमित्युक्तं तस्य मेति प्रतिषेधः। मा यज्ञं छिद्रं करिष्यतीति गो० उ० २.५. स उ एव मखः स विष्णुः श० १४.१.१.१३. एष वै मखो य एष (सूर्यः) तपति श० १४.१.३.५.]

मखस्यन् आत्मनो मखं यज्ञमिच्छन् (अर्यः=मनुष्यः) ३.३१.७. [मखमिति व्याख्यातम्। तत आत्मन इच्छायां क्यजन्ताच्छतृ। क्यचि 'सुग्वक्तव्यः' अ० ७.१.५१. वा० सूत्रेण सुक्]

मघत्तये धनदानाय ५.७९.५. पूजितधनप्राप्तये ४.३७.८. [मघोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्तिन्। 'वा छन्दसि' इत्यनुपसर्गादपि 'अच उपसर्गात्तः' इति धातोस्तकारादेशः]

मघम् प्रकृष्टं विद्यासुवर्णादिधनम् १.११.३. महदैश्वर्यम् १.१५१.९. परमपूजनीयं धनम् ३.१३.३. परमपूज्यम् (बलम्) २०.६८. पूज्यम् (वसु) २०.६७. **मघस्य**=धनस्य ४.२०.७. **मघानि**=पूजितव्यानि धनानि ३.१९.१. विद्याधनादीनि ७.१९.१०. **मघैः**=धनैः ५.७९.४. [मघम् धननाम निघं २.१०. मघमिति धननामधेयं मंहतेर्दानकर्मणः नि० १.७. मघा=धनानि नि० ५.१६.]

मघा पूजनीयानि (राधांसि=धनानि) ७.१६.१०. मघानि धनानि ५.३२.१२. [मघमिति व्याख्यातम्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

मघवत्त्वस्य बहुधनयुक्तानां भावस्य ६.२७.३. [मघम् इति व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे मतुबन्ताद् भावे त्वः]

मघवत्सु प्रशस्तधनयुक्तेषु राजसु १.६४.१४. प्रशस्तपूज्यधनयुक्तेषु स्थानेषु व्यवहारेषु विद्वत्सु वा १.९३.१२. बहुधनयुक्तेषु प्रजाजनेषु ६.८.६.बहुधनेषु १.१४०.१० पूजितेषु धनेषु १.१२३.३. **मघवद्भिः**=बहुपूजितधनयुक्तैः (नृभिः=नेतृभिर्जनैः)४.१६.१९. **मघवद्भ्यः**=बहुधनेभ्यः (जनेभ्यः) ६.४६.९. विद्यादिधनयुक्तेभ्यः (विद्वज्जनेभ्यः) १.५८.९. प्रशंसितधनेभ्यः (धनाढ्यजनेभ्यः) १.१२४.१०. पूजितधनेभ्यः (मनुष्येभ्यः) २.३३.१४. **मघवन्**=बहुधनयुक्त भा०—अखिलैश्वर्य (ईश्वर) ३३.७९. परमपूजितधनयुक्त (इन्द्र=अध्यापकोपदेशक गृहपते वा) ८.१५. प्रशंसितधनयुक्त (इन्द्र=पते) ८.२. हे सर्वशक्तिमन् (ईश्वर) आर्याभि० १.४९. ऋ० १.७.१९.८. पूजनीयवित्त (राजन्) ३.३१.१९. पूजनीयविद्याध्यापक (विद्वज्जन) ७.१९.९. परमोत्कृष्टधनयुक्तेश्वर धनप्राप्तिहेतुः (सूर्यः) वा ३.५२. प्रशस्तानि मघानि धनानि विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (सेनापते) १७.४२. बह्वैश्वर्य (इन्द्र=राजन्) ४.१६.१९. प्रशस्तगुण प्रापक (इन्द्र=सेनाद्यध्यक्ष) १.८२.१. प्रशस्तगुणधनप्रापक (इन्द्र)

१.८२.३. पूजितैश्वर्य (राजन्) ५.३१.६. धनाऽऽढ्य (राजन्) ५.३६.४. परमधनप्रापक (धार्मिक मनुष्य) १.८४.१९. परमपूजितैश्वर्येश्वर ७.४१.४. प्रशस्तबल (सेनापते) १.१०२.४. प्रकृष्टधन (मनुष्य) २.३६.५. परमधनवन् (अग्ने=विद्वज्जन) १.५८.९. ईश्वर इव समृद्ध (इन्द्र=सभापते राजन्) ६.२७. हे परम पूजित असंख्य धन देने वाले (ईश्वर) सं० वि० १५६, ७.४१.४. सभाध्यक्ष १.३३.१५. **मघवा**=उत्तमधनसम्बन्धी (सभेशः) १.१७४.७. न्यायार्जितधनत्वात् पूजनीयः (इन्द्रः=राजा) ४.२०.२. बहुपूजितधनः (शूरवीरो जनः) ४.२७.५. प्रशंसितधनवान् (जनः) ५.३४.३. बहुधनः (मनुष्यः) ५.३४.२. मघं पूज्यं बहुविधं प्रकाशो धनं विद्यते यस्मिन् सः (सेनापतिः) १.३२.१३. बह्वैश्वर्ययुक्तः (इन्द्रः=सूर्यवद्राजा) ४.१७.१९. भूयांसि मघानि धनानि विद्यन्ते यस्य सः (वज्री=सेनापतिः) १.१०३.४. सूर्यः १.१०३.२. प्रशस्तविद्याधनवान् (अध्यापक उपदेशको वा) १.५५.४. मघं परमं विज्ञानादिधनं विद्यते यस्मिन् सः (परमेश्वरः) ऋ० भू० १४९, २.१०. **मघवान्**=परमपूजितधनयुक्तः (इन्द्रः=राजा) ४.१६.१. **मघवानम्**=परमपूजितबहुधनम् (राजानम्) ४.३१.७. परमपूजितधनवन्तम् (इन्द्रं=जीवात्मानम्) ७.२६.१. धर्म्येण वहुजातधनम् (गुरुजनम्) ७.२६.२. प्रशस्तविद्याधनवन्तम् (इन्द्रम्=अध्यापकम्) ७.२९.५. वहुधनैश्वर्योपपन्नम् (इन्द्रं=राजानम्) ७.३०.५. **मघवानः**=मघं परमपूज्यं विद्याधनं विद्यते येषां विदुषां राज्ञां वा ते १.९८.३. मघानि वहूनि धनानि विद्यन्ते येष्वैश्वर्ययोगेषु ते (जनाः) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् मघमिति धननामधेयम् मंहतेर्दानकर्मणः नि० १.७, २.१०. नित्यं धनाढ्याः (राजप्रजाजनाः) ७.२१.१०. प्रशस्तधनाः (विद्वांसो जनाः) १.७७.४. **मघोनः**=प्रशस्तधनयुक्तस्य (सर्वव्यापकस्येश्वरस्य) २.२७.१७. परमधनयुक्तान् (मनुष्यान्) ५.२७.१. **मघोनाम्**=वह्वैश्वर्ययुक्तानाम् (चर्षणीनाम्=मनुष्यानाम्) ५.३८.४. वहुधनवताम् (नृणाम्) ५.८२.५. **मघोनोः**=वहुधनयुक्तयोः (सेनापत्यध्यक्षयोः) ५.८६.३. [मघमिति व्याख्यातम् । ततो भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा मतुप् । 'मघोनः' इत्यादिषु भसंज्ञके प्रत्यये 'श्वयुवमघोनामतद्धिते' अ० ६.४.१३३. सूत्रेण सम्प्रसारणम् इन्द्रो वै मघवान् श० ४.१.२.१५. स उ एव मखः स विष्णुः । ततः इन्द्रो मखवान् अभवत्, मखवान् ह वै तं मघवानमित्याचक्षते परोक्षम् श० १४.१.१.१३.]

मघवाना पूजितधनवन्तौ (प्रजाराजजनौ) २.२४.१२. बहुधनयुक्तौ राजप्रजाजनौ ४.२८.५. [मघवत्-प्राति० प्रथमा द्विवचनस्याकारश्छन्दसि । मघवत्=मघप्राति० भूम्न्यर्थे प्रशंसायामर्थे मतुप्]

मघेव यथा धनानि तथा १.१०४.५. [मघा-इवपदयोः समासः । मघा=मघप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

मघोनि ! प्रशंसितधनकारिके (विदुषि स्त्रि) ४.५५.९. परमधनयुक्ते (स्त्रि) ३.६१.१. **मघोनी**=प्रशस्तानि मघानि पूज्यानि धनानि प्राप्तानि यस्यां सा (उषाः) १.११३.५. परमपूजितधनयुक्ता (राजनीतिः) २.११.२१. बहुधनादियुक्ता (दक्षिणा) २.२०.९. पूजनीया विद्या प्रतिष्ठा च २.१६.९. प्रशस्तानि मघानि पूज्यानि धनानि यस्याः सन्ति सा (उषाः) १.४८.८. प्रशस्तधनप्राप्तिनिमित्ता (उषाः) १.११३.१३. **मघोनीः**=सत्कृतधनानां स्त्रियः ४.५१.३. [मघप्राति० प्रशंसायां मतुबन्तात् स्त्रियां ङीपि 'श्वयुवमघोनामतद्धिते' इति सम्प्रसारणम् । मघोनी=मघवती । मघमिति धननामधेयं मंहतेर्दानकर्मणः नि० १.६.]

मघोनी बहुधननिमित्ते (योषणे=विदुष्यौ स्त्रियौ) ७.२.६. [मघोनीति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छन्दसि]

मङ्गलीः शुभगुणयुक्त स्त्री लोग सं० वि० १३४, १०.८५.४३. [मगि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः 'मङ्गेरलच्' उ० ५.७०. सूत्रेण अलच्। ततः स्त्रियां गौरादित्वान् ङीष् । मङ्गलं गिरतेर्गृणात्यर्थे गिरत्यनर्थानिति वा । अङ्गलमङ्गवत् । मज्जयति पापकमिति नैरुक्ताः । मां गच्छत्विति वा मा च त्वा काचिदभिभूतिः सर्वतो विदत् नि० ९.३.]

मज्जभ्यः अस्थ्यन्तर्गतेभ्यो धातुभ्यः ३९.१०. तदन्तर्गतेभ्यः (धातुभ्यः) ३९.१०. [टुमस्जो शुद्धौ (तुदा०) धातोः 'श्वनुक्षन्पूषन्०' उ० १.१५९. सूत्रेण कनिन् । हारिद्र इव हि मज्जा श० १३.४.४.८. षष्टिश्च ह वै त्रीणि च शतानि पुरुषस्य मज्जानः श० १०.५.४.१२. मज्जा यजुः श० ८.१.४.५. मज्जानो ज्योतिस्तद्धि यजुष्मतीनां रूपम् श० १०.२.६.१८. मज्जानः स्वरूपम् ऐ० आ० ३.२.१.]

मज्मना शुद्धि-धारण-क्षेपणाऽऽख्येन बलेन प्र०—अत्र मस्जधातोरौणादिको मनिन्प्रत्ययो बाहुलकात् सकारलोपश्च १.६४.३. अनन्तेन बलेन १.१४३.४. स्वकीयेन शुद्धेन बलेन १.५१.१०. [टुमस्जो शुद्धौ (तुदा०) धातोरौणादिको मनिन् । मज्मना बलनाम निघं० २.९.]

मणिकारम् यो मणीन् करोति तम् (शिल्पिजनम्)

३०.७. ['मणि' इत्युपपदे करोतेरण्]

मणिग्रीवम् मणयो ग्रीवायां यस्य तम् (अयं=वैश्यम्) १.१२२.१४. [मणि-ग्रीवापदयोः समासः]

मणिना आभूषणेन १.३३.८. [मण शब्दार्थे (भ्वा०) धातो 'सर्वधातुभ्य इन्' उ० ४.११८. सूत्रेण इन्]

मणिवालः मणिरिव बाला यस्य सः (पशुः) २४.३. [मणि-वालपदयोः समासः। वकारस्य वकारश्छान्दसः]

मण्डूकः मण्डूकः २४.६६. [मडि भूषायाम् (भ्वा०) धातोः 'शलिमण्डिभ्यामूकण्' उ० ४.४२. सूत्रेण ऊकण्। मण्डूका मज्जूका मज्जनात्, मदतेर्वा मोदयतिकर्मणः मन्दतेर्वा तृप्तिकर्मणः, मण्डयतेरिति वैयाकरणाः, मण्ड एषामोक इति वा। मण्डो मदेर्वा मुदेर्वा नि० ९.५.]

मण्डूकि सुभूषिते (अ०—स्त्रि) १७.६. [मण्डूक इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीष्]

मतयः मननशीला मनुष्याः १.१६५.४. प्रज्ञायुक्ता मनुष्याः ३.४१.५. मेधाविनः (जनाः) ३३.७८. मनुष्या बुद्धयो वा ५.८७.१. मन्यन्ते विजानन्ति ये ते विद्वांसः (जनाः) १.६२.११. प्रज्ञा इव वर्त्तमानाः कन्याः ७.१०.३. **मतिभिः**=विद्वद्भिस्सह ४.३.१६. मननशीलैर्मनुष्यैः ३.३०.२०. बुद्धिभिः ७.१६. **मतिम्**=भा०—प्रज्ञाम् २१.५३. विज्ञानम् १.१०५.१५. मननशीलां प्रज्ञाम् ७.४.१. यो वेदादिशास्त्रैर्विद्वद्भिश्च मन्यते तम् (सभाध्यक्षम्) ४.२५. **मतिः**=मननशीलाऽन्तःकरणवृत्तिः ५.६७.५. प्रज्ञा ५.६७.५. मेधावी (परमात्मा) ३.५५.८. मननम् १८.११. **मतीनाम्**=विदुषां मनुष्याणाम् १.८६.२. मननशीलानां मेधाविनां मनुष्याणाम् ३७.१४. विपश्चिताम् ३.५.३. **मतीः**=प्रज्ञाः १.११४ १. भा०—धीमन्तः (जनाः) १६.४८. **मत्यै**=प्रज्ञायै २४.३९. [मनु अवबोधे (तना०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। मतय इति मेधाविनाम निघं० ३.१५. वाग्वै मतिर्वाचा हीदं सर्वं मनुते श० ८.१.२.७. प्रजा वै मतयः तै० आ० ५.६.८.]

मतवचसा मतानि वचांसि वेदवचनानि याभ्यां तौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.१६.५. [मत-वचस्-पदयोः समासे प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशश्छन्दसि। मतम्=मन्यतेः क्तः]

मतस्नाभ्याम् हृदयपार्श्वाऽवयवाभ्याम् ३९.८. ग्रीवोभयभागाभ्याम् २५ ८. **मतस्ने**=हृदयोभयपार्श्वस्थेऽस्थिनी १९.८५.]

मती मत्या प्र०—अत्र सुपां सुलुक्० इति पूर्वसवर्णादेशः ३.५१. बुद्ध्या १.८२.२. मत्या विज्ञानेन २.२४.९. [मतिप्राति० 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण टा-स्थाने पूर्वसवर्णदीर्घः]

मतीविदे यो मतिं ज्ञानं विन्दति तस्मै (देवाय=विद्यां कामयमानाय जनाय) प्र०—अत्र 'संहितायाम्' इति दीर्घः २२.१२. ['मति' इत्युपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप्। पूर्वपदस्य संहितायां दीर्घः]

मत्कृतानि मया कृतानि (ऋणा=ऋणानि) २.२८.९. [अस्मद्-कृतपदयोः समासः। 'प्रत्ययोत्तरपदयोश्च' इति पूर्वपदस्य मपर्यन्तस्य मादेशः]

मत्सत् आनन्देत् ५.४०.४. आनन्दति ६.४४.१६. आनन्दयेत् २७.४०. आनन्दयति ३६.५. **मत्सथ**=आनन्दत ३३.३४. **मत्सि**=आनन्दयसि १.१७६.१. हृष्यसि १.१७५.१. तृप्तो भव प्र०—मद तृप्तौ शपो लुक् ३३.२५. हर्षयिताऽसि भवति वा प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्यनो लुक् पक्षे पुरुषव्यत्ययश्च १.९.१. **मत्स्व**=आनन्दितो भव अ०—हर्षितो भव ८.५. आनन्द ३.४१.८. अस्माभिः स्तुतः सन् सदा हर्षय प्र०—बहुलं छन्दसि इति श्यनो लुक् १.९.३. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लेटि सिब्विकरणे रूपम्। 'बहुलं छन्दसी' ति श्यनोरलुक्। मद-तृप्तयोगे (चुरा०) धातोर्वा रूपम्। अन्यत्र लटि लोटि च रूपम्]

मत्सरस्य हर्षनिमित्तस्य (अंशोः=शरीरभागात्) १.१२५.३. **मत्सरः**=आनन्दः २.४१.१४. सुखकरः (ओषधिसारः) १.१७५.२. हर्षकरः (मदः=पथ्यौषधिसेवनम्) १.१७५.१. **मत्सराः**=माद्यन्ति हर्षन्ति यैस्ते (इन्दवः=सोमाद्यौषधिगणाः) प्र०—अत्र 'कृधूमदिभ्यः कित्' उ० ३.७१. अनेन मदेः सरन् प्रत्ययः १.१४.४. आनन्दयुक्ताः (जनाः) १.१३७.१. आनन्दप्रापकाः (सोमासः=सोमाद्योषधिसमूहाः) १.१३७.१. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'कृधूमदिभ्यः कित्' उ० ३.७३. सूत्रेण सरन् किच्च। मत्सरः सोमो मन्दतेस्तृप्तिकर्मणः। मत्सर इति लोभनाम, अभिमत्त एनेन धनं भवति नि० २.५.]

मत्सरासः आनन्दन्तः सन्तः (राजप्रजाजनाः) ६.१७.४. हर्षहेतवः (इन्दवः=जलरसाः) १.१५.१. [मत्सर इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

मत्स्यासः समुद्रस्था मत्स्या इव ७.१८.६. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'ऋतन्यञ्जि०' उ० ४.२. सूत्रेण

स्यन् । ततो जसोऽसुक् । मत्स्या=मधौ उदके स्यन्दन्ते, मादयन्तेऽन्योन्यं भक्षणायेति वा नि० ६.२७.]

मथायति मथ्नाति प्र०—अत्र 'छन्दसि शायजपि' इति शायच् १.१४१.३. [मन्थ विलोडने (क्र्या०) धातोर्लट् । 'छन्दसि शायजपि' इति श्नः शायजादेशः]

मथायन् मन्थनं कुर्वन् (सूर्य इव राजा) ५.३०.८. [मन्थ विलोडने (क्र्या०) धातोः शतरि छन्दसि श्नः शायजादेशः]

मथितः विलोडितः (सर्वाऽन्तस्थाऽग्निः) ६.४८.५. [मन्थ विलोडने (क्र्या०) धातोः क्तः]

मथीत् मथति १.७१.४. मथ्नाति १.१४८.१. [मन्थ विलोडने (क्र्या०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः । धातोर्नकारस्य लोपश्छान्दसः]

मथीः यो दुष्टान् मथ्नाति सः (विद्वज्जनः) [मन्थ विलोडने (क्र्या०) धातोरौणादिक इन् किच्च]

मथ्नन्तः मन्थनं कुर्वन्तः (विद्वांसो जनाः) १.१२७.७. [मन्थ विलोडने (क्र्या०) धातोः शतृ]

मथ्ना मथ्नानि मथितानि (रजांसि=लोकान्) १.१८१.५. [मथिन्-प्राति० छान्दसं रूपम्]

मथ्यमानः विलोड्यमानः (विद्वान् जनः) ५.११.६. संघृष्यमाणः (अग्निः) १५.२८. [मन्थ विलोडने (क्र्या०) धातोः कर्मणि शानच्]

मदच्युतम् मदा हर्षादयश्च्युता यस्मात्तम् (इन्द्रं=सभेशम्) १.५१.२. यो मदं हर्षं च्योतति तम् (शत्रुनिरोधकं मनुष्यम्) १.८५.७. **मदच्युतः**=ये मदान् च्यवन्ते ते (अत्यान्=अश्वान्) १.१२६.४. [मद-च्युतपदयोः समासः]

मदच्युता यौ मदान् हर्षान् च्यवेते प्राप्नुतः तौ (हरी=अश्वौ) १.८१.३. [मदच्युतप्राति० प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशः । मदच्युत इति व्याख्यातम्]

मदत आनन्दत १.१८२.१. **मदताम्**=आनन्दतु १.१२१.११. **मदति**=आनन्दति ४.३८.३. **मदत**=आनन्दत ४.३४.११. आनन्दथ ५.५४.१०. **मदन्**=आनन्दयन्ति ६.१८.१४. **मदन्ति**=आनन्दयन्ति १.१५४.५. हर्षन्ति ३.६.८. मदन्ते कामयन्ते प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति नुमभावो व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च १.१०९.३. प्राप्नुवन्ति ७.४९.४. हृष्यन्ति ३.४.७. परमानन्द में रहते हैं आर्याभि० २.४०, १७.२६ **मदन्तु**=आनन्दयन्तु १.१३९.६. हर्षन्तु हृष्यन्तु वा ६.७५.१८. हर्षयन्तु २.११.११. उत्साहयन्तु १७.४९. **मदथः**=हर्षथः १.१०८.७. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शप् । अन्यत्र लटि लङि च रूपाणि । 'मदताम्' प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम् । अथवा मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातो रूपाणि । तत्र नुमभावो परस्मैपदं च छान्दसम् । मदति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. मदन्ति सम्मोदन्ते नि० १०.२५.]

मदन्तम् हर्षन्तम् (मेघमिव दुर्जनम्) ५.३२.४. स्तुवन्तम् (विपश्चितं=विद्वांसम्) ३.२६.९. **मदन्तः**=आनन्दन्तः (विद्वांसो जनाः) ४.३३.१०. हर्षन्तः (विद्वज्जनाः) ३.५४.२०. हृष्यन्तः (जनाः) १९.४४. सुखयन्तः (जनाः) १.१८५.९. प्राप्तानन्दाः (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.५३.१०. आनन्दयन्तः (राजाधिकारिजनाः) ४.५०.२. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन शप् । अथवा मदि स्तुतिमोदमदादिषु (भ्वा०) धातोः शतरि रूपम् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

मदन्ता कामयमानौ विद्वांसौ (राजसेनाधीशौ) ३.५३.१. [मदन्तमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारश्छन्दसि]

मदन्ती आनन्दन्त्यौ (स्त्रियौ) ३.५४.६. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । व्यत्ययेन शप्]

मदन्ती हर्षन्ती (पृथिवी=भूमिः) ५.५६.३. **मदन्तीः**=आनन्दतीः (देवीः=विदुष्यः स्त्रियः) ७.४७.३. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । विकरणव्यत्ययेन शप् । तेजो वै मदन्तीः मै० ३.७.१०.]

मदपती आनन्दस्य पालकौ (सभासेनेशौ) ६.६९.३. [मद-पतिपदयोः समासः]

मदम् आनन्दम् ४.३३.११. आनन्दकरम् (सोमम्=ऐश्वर्य्यम्) ४.२६.६. हर्षम् १.८४.४. हर्षकम् [सोमम्=ओषधिरसं प्रेरणाख्यं व्यवहारं वा) २०.६३. **मदः**=मदन्ति हर्षन्ति नैरोग्येण येनाऽसौ (पथ्यौषधिसेवनम्) १.१७५.१. ओषधिसारः १.१७५.२. आनन्दितः (राजा) ६.२४.१. आह्लादकारकः (सभाध्यक्षः) १.८०.२. हर्षकरः (इन्द्रः=सूर्यः) १.४.२. आनन्दकरः (सोमः=ऐश्वर्यसमूहः) ६.४४.२. अतिहर्षः ६.१९.७. आनन्ददः (सोमः=ऐश्वर्यम्) ६.४४.१. **मदानाम्**=हर्षाणाम् २७.४०. **मदाय**=आनन्दप्रदाय (क्रत्वे=प्रज्ञानाय) ६.४०.२. हर्षकरणाय १.८१.१. रोगनिवृत्तेरानन्दाय १.११७.१. नित्यानन्दाय ४.३५.६. **मदाः**=आनन्दयुक्ताः सुभटाः ७.२३.५.

आनन्दिता आनन्दयितारः (शूरवीराः) १.५३.६. **मदे**=आनन्दनिमित्ते सति (प्रसर्गे=प्रकृष्ट उत्पादने) १.१२१.४. आनन्दकारके (ब्रह्मणि) १.८०.१. माद्यन्ति हृष्यन्त्यानन्दन्ति यस्मिन् व्यवहारे तस्मिन् १.४६.१२. आनन्दकरे रसे ६.४४.१४. **मदेन**=आनन्दप्रदेन (रसेन) १९.३३. **मदेषु**=हर्षेषु १.१३१.५. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'मदोऽनुपसर्गे' अ० ३.३.६७. सूत्रेण अप् । मदाय मदनीयाय जैत्राय नि० ४.८. यो वा ऋचि मदो यः सामन्त्रसो वै सः श० ४.३.२.५. रसो वै मदः जै० १.२१५.

मदासः आनन्दा (सभ्या जनाः) ४.१७.६. [मदमिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

मदे आनन्दाय ५.२.१०. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप् । ततश्चतुर्थी]

मदवृद्धः मदो हर्षो वृद्धो यस्य यस्माद्वा सः (मेघः) १.५२.३. [मद-वृद्धपदयोः समासः]

मदासः आनन्दकाः (प्रजाजनाः) ६.३६.१. आनन्दाः ४.३५.१. [मदप्राति० जसोऽसुक्]

मदिन्तम मदः प्रशस्तो हर्षो विद्यतेऽस्मिन् सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.९१.१७. अतिशयेन मदितुं हर्षितुं शील (सोम=ऐश्वर्ययुक्त पुरुष) १२.११४. **मदिन्तमः**=मदयतीति मदी सोऽतिशयितः (भागः) प्र०—'नाद् घस्य' अ०—८.२.१७. इति मदिन् शब्दान्नुडागमः ६.२७. **मदिन्तमानाम्**=अतिशयिताऽऽनन्दितानां परस्त्रीणां समीपे ८.४८. [मद-प्राति० प्रशंसायाम् इनिः, ततोऽतिशायने तमप्प्रत्यये 'नाद् घस्ये' ति नुडागमः । मदिन्तम इति स्वादिष्ठ इत्येवैतदाह श० ३.९.३.२५.]

मदिरम् आनन्दप्रदम् (सोमं=सोमलतादिरसम्) २.१४.९. मादकं द्रव्यम् ६.२०.६. आनन्दकरम् (ईम्=उदकम्) ५.६१.११. **मदिरस्य**=आनन्दप्रदस्य रसस्य १.१६६.७. **मदिराणि**=आनन्दकराणि (अन्धांसि=अन्नानि) ६.६९.७. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'इषिमदिमुदि०' उ० १.५१. सूत्रेण किरच्]

मदिष्ठया अतिशयेनाऽऽनन्दप्रदया (धारया क्रियया) २६.२५. [मदिष्ठ इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

मदिष्ठः अतिशयेनाऽऽनन्दप्रदः (ओषधिसारः) ६.४७.२. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः तृजन्तादतिशायन इष्ठन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

मदे मदे हर्षे हर्षे १.८१.७. [मदे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

मदेम आनन्देम ६.५२.१४. हर्षेम १९.३२. हृष्येम ७.२०. सुखयेम प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययः ४.१. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लिङ् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

मद्गुः जलकाकः २४.३४. **मद्गून्**=जलकाकान् २४.२२. [टुमस्जो शुद्धौ (तुदा०) धातोः 'भृमृशीङ्तॄचरि०' उ० १.७. सूत्रेण उः । न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्]

मद्यम् तृप्तिप्रदम् (अन्धः=अन्नम्) ७.७. येन माद्यति हृष्यत्यानन्दति तम् (सोमं=महौषधिरसम्) ६.६८.१०. **मद्यः**=आनन्दयिता (राजा) ४.२२.८. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'गदमदचरयमश्चानुपसर्गे' इति यत् । औणा० वा कर्त्तरि यः]

मद्यासु हर्षणीयासु (प्रजासु) १.१५३.४. [मद्यमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

मद्रिक् यो मद्रं काममञ्चति सः (इन्द्रः=राजा) १.१७७.१. अस्मानञ्चन् प्राप्नुवन् (राजा) १.१७७.३. यो मामञ्चति स मदभिमुखः (राजा) ६.३१.५. [अस्मदुपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विप्-प्रत्यये 'विष्वग्देवयोश्च टेरद्रि०' अ० ६.३.९२. सूत्रेण सर्वनाम्नः टेरद्रिरादेशः । अञ्चतेरकारलोपश्छान्दसः]

मद्र्यक् मत्सदृशः (सज्जनः) ६.३८.२. मामञ्चतीति मद्र्यक् (अन्नपानादि) ३.४१.१. **मद्र्यञ्चम्**=मामञ्चन्तम् (तवसं=बलम्) ७.२४.३. [अस्मदुपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विप्-प्रत्यये सर्वनाम्नः टेरद्रिरादेशः]

मद्रयद्रिक् मदभिमुखः (देवः=विद्वज्जनः) ६.२२.११.

मधवे मधुरादिगुणोत्पादकाय चैत्राय २२.३१ चैत्रमासाय ७.३०. **मधुः**=मधुरसुगन्धयुक्तश्चैत्रः १३.२५. **मधोः**=मधुरादिगुणयुक्तात् (आचरणात्) ५.४३.६. मधुरगुणांशान् १.१४.८. मधुरगुणान्वितस्य द्रव्यस्य १८.६५. **मधौ**=मधुरे (सर्वार्थ-ऐश्वर्ये) ७.५९.६. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'फलिपाटिनमिमनिजनाम्०' उ० १.१८. सूत्रेण उः, धातोर्नकारस्य धकारश्च । 'मधोर्ञ च' अ० ४.४.१२९. सूत्रेण मत्वर्थीयस्य प्रत्ययस्य लुक्]

मधु मधुरादिना गुणेन युक्तम् (ओषधिरसम्) ३३.३०. मधुरगुणान्वितमन्नम् १९.८६. माधुर्यगुणोपेतम् (वस्तु) १९.७८. विज्ञानम् १९.९१. येन मन्यते तत् (इन्द्रियं=धनम्) १९.७६. मन्तव्यम् (इन्द्रियं=विज्ञानसाधकम्) १९.७७. मधुविद्यासमन्वितम् (इन्द्रियं=जीवेन जुष्टं सुखम्) १९.७४. मधुरादिगुणयुक्तं घृतादि ३८.१६. ज्ञातं सत् (इन्द्रियं=ईश्वरेण सृष्टं धनम्) १९.७९. मधुरम् (विज्ञानम्)

प्र०—मन-धातोरयं प्रयोगः १.११७.२२. मन्यन्ते प्राप्नुवन्ति सुखानि येन तत् मधुर-सुखकारकम् (रसम्) १.१९.९. कर्म उपासनं विज्ञानं वा ३७.१३. मिष्टादिकं रसम् २०.६५. मधुरविज्ञानम्=२०.९०. ज्ञानवर्द्धकं मधुरादिगुणयुक्तम् (भेषजम्=औषधम्) २०.५७. क्षौद्रम् १९.१३. मधुरमुदकम् २.३६.४. माधुर्यगुणोपेतं विज्ञानम् ६.११.३. माधुर्यसुखकारिका (द्यौः=सूर्यकान्तिः) १.९०.७. मधुरा (रात्रिः) १.९०.७. मधुताम् १.९०.६. मिष्टमन्नादिकम् १.११२.२१. मधुरं यथा स्यात्तथा मधुर्वा १३.२७. मधुरं जलम् १.११२.११. **मधुनः**=मधुरस्य (घृतस्य=उदकस्य) ३.१.८. मधुरादिगुणयुक्तस्य (सारघस्य) ३८.६. ज्ञानजन्यस्य (यज्ञस्य) ४.३५.४. **मधुना**=मधुरगुणेन सह १.२३.१६. मधुरस्वभावेन ३.८.१. माधुर्यादिगुणोपेतेन (व्यवहारेण) ४.४५.३. क्षौद्रेण शर्करादिना वा १२.७०. **मधुने**=विज्ञाताय मार्गाय ४.४५.३. **मधूनाम्**=मधुरादिगुणयुक्तानां पदार्थानाम् ३.४३.३. उदकानाम् १.११७.६. **मधूनि**=क्षौद्रादीनि ७.२४.२. मधुयुक्तानि रसविशेषाणि पेयानि (वस्तूनि) ३.५७.५. विज्ञानानि ५.४३.३. **मधोः**=मधुरम् (अन्नम्) १.१८७.२. मधुर (पितो=पालकान्नदातरीश्वर) १.१८७.७. [मधुरिति व्याख्यातम्। मधु उदकनाम निघं० १.१२. मधु सोममित्यौपमिकं माद्यतेः। इदमपीतरन्मध्वेतस्मादेव नि० ४.८. मधुनोदकेन···मधु धमतेर्विपरीतस्य नि० १०.३१. प्राणो वै मधु श० ६.४.३.२. ओषधीनां वा ऽएष परमो रसो यन्मधु श० ११.५.४.१८. रसो वा एष ओषधिवनस्पतिषु यन्मधु ऐ० ८.२०. एतद्वै प्रत्यक्षात् सोमरूपं यन्मधु श० १२.८.२.१५. अन्नं वै मधु तां० ११.१०.३. परमं वा एतद् देवतायै रूपं यन्मधु तै० ३.८.१४.२. सर्वं वाऽइदं मधु यदिदं किं च श० ३.७.१.११. अन्तो वै रसानां मधु जै० १.२२४. आत्मा वै पुरुषस्य मधु तै० सं० २.३.२.९. एतद्वै देवानां मधु यद्घृतम् मै० ३.९.३. एतावेव (मधुश्च माधवश्च) वासन्तिकौ (मासौ) श० ४.३.१.१४. परमं वा एतदन्नाद्यं यन् मधु तां० १३.११.१७. परमो वै मधुनि रसः जै० २.४०५. प्रजा वै मधु जै० १.८८. मिथुनं वै मधु प्रजा मधु ऐ० आ० १.३.४. यज्ञो ह वै मधु सारघम् श० ३.४.३.१४. सौम्यं वै मधु काठ० ११.२.]

मधुजिह्वम् मधुरगुणसम्पादिका जिह्वा ज्वाला यस्य तम् (अग्निम्) प्र०—'जिह्वा जोहुवा' नि० ५.२६. "काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्त जिह्वाः" इति मुण्डकोपनिषदि मु० १ खण्ड० २ मं० ४, १.१३.३. मधुरजिह्वम् (भोगम्) १.६०.३. **मधुरजिह्वः**=मधुरगुणयुक्ता जिह्वा यस्य सः (विद्वज्जनः), प्र०—अत्र 'फलिपाटिनमि० उ० १.१८. अनेन मनधातोरुः प्रत्ययो नस्य धकारादेशश्च १.४४.६. मधुरगुणयुक्ता जिह्वा ज्वाला प्रयुज्यते यस्मिन् सः (कुक्कुटः=यज्ञः) १.१६. [मधुजिह्वापदयोः समासः]

मधुदुघे ये मधुनोदकेन दुग्धः कामान् प्रपूरयतस्ते (भूमिसूर्यौ) ६.७०.५. ये मधूदकं प्रपूरयतस्ते (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ३४.४५. मधुरादिरसैः प्रपूरिके (भूमिसूर्यौ) ६.७०.१. [मधूपपदे दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'दुहः कब् घश्च' अ० ३.२.७०. सूत्रेण कप्। घश्चान्तादेशः]

मधुधा या मधूनि दधाति सा (उषाः=प्रभातवेला) ३.६१.५. [मधूपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कः। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

मधुधारम् मधुराणां रसानां धर्त्तारम् (अश्मास्यं=मेघस्य मुख्यभागम्) २.२४.४. [मधूपपदे धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

मधुन्तमानाम् अतिशयेन माधुर्यगुणोपेतानाम् (स्त्रीणाम्) प्र०—'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति नुडागमः ८.४८. [मधु-प्राति० अतिशायने तमप्-प्रत्यये नुडागमश्छान्दसः]

मधुपम् यो मधूनि पाति तम् (मेघम्) ५.३२.८. **मधुपौ**=मधुरं पिबन्तौ (स्त्रीपुरुषौ) १.१८०.२. [मधूपपदे पा रक्षणे (अदा०) पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा कः]

मधुपृचम् मधुरादिसम्बन्धिनम् (अग्नि=पावकम्) २.१०.६. [मधूपपदे पृची सम्पर्चने (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

मधुपेभिः ये मधुरान् रसान् पिबन्ति तैः (वीरपुरुषैः) सह ४.४५.३. मधूनि जलानि पिबन्ति यैस्तैः (आसभिः=मुखैः) १.३४.१०. [मधुप इति व्याख्यातम्। ततो 'बहुलं छन्दसि' इति भिस ऐसादेशो न भवति]

मधुपेयम् मधुरैर्गुणैर्युक्तं पातुं योग्यम् (पदार्थम्) ३४.४७. मधुभिर्गुणैर्युक्तं पेयं द्रव्यम् १.३४.११. **मधुपेयः**=मधुना सह पातुं योग्यः (रसः) ६.४४.२१. **मधुपेयाय**=मधुरैर्गुणैः पातुं योग्याय (पदार्थाय) ४.१४.४. [मधुपेयपदयोः समासः। पेयम्=पा पाने (भ्वा०) धातोर्यत्]

मधुप्सरसः मधुप्सरःस्वरूपं सुन्दरं येषान्ते (पितरः) ४.३३.३. [मधु-प्सरस्पदयोः समासः। प्सरः रूपनाम निघं० ३.७.]

मधुमत् मधुरगुणयुक्तम् (रजः=द्व्यणुकादि रेणु) १३.२८. मधुरसवत् (वचः) १.७८.५. मधुराणि विज्ञानानि वर्त्तन्ते यस्मिँस्तत् (सुखम्) ३.७.२. प्रशस्तविज्ञानयुक्तं कर्म्म ४.५८.१०. बहूनि मधुरादिगुणयुक्तानि वस्तूनि विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (भोगम्) ३.३२.४. मधवो मधुरादयः प्रशस्ता गुणा विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (अ०—वस्तु) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.२८.८. मधुराणि विज्ञानानि वर्त्तन्ते यस्मिँस्तत् (सुखम्) ३.७.२. **मधुमतः**=मधुरादिगुणयुक्तस्य (पयसः=उदकं दुग्धं वा) ३८.२८. **मधुमता**=स्वादिष्ठगुणेन (सोमेन=सोमलताद्योषधिसमूहेन) १९.१. बहूदकयुक्तेन (पथा=मार्गेण) २१.३०. **मधुमद्भिः**=बहुभिर्मधुरादिगुणयुक्तैः (अर्णोभिः=जलैः) ४.३.१२. [मधुप्राति० भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा मतुप्]

मधुमती प्रशस्तमाधुर्यगुणयुक्ता (कशा=वाणी) ७.११. मधुरगुणा (कशा=वाक्) १.२२.३. बहूनि मधूनि सत्यभाषणानि विद्यन्ते यस्यां सा (जिह्वा=वाणी) ३.५७.५. **मधुमतीभिः**=मधुर्बहुविधो रसो वर्त्तते यासु ताभिरोषधीभिः प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् १.२१. मधुरादिगुणयुक्ताभिर्वसन्तादिभिर्ऋतुभिः १०.४. **मधुमतीम्**=प्रशस्त-मधुरगुणयुक्ताम् (अ०—ओषधीम्) १९.१. माधुर्यगुणयुक्त (वाणी) को सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.२. **मधुमतीः**=मधुरगुणवतीः (इषः=अन्नानि) ७.२. मधु प्रशस्तो रसो विद्यते यासु ता मधुमत्य आपः प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् 'सुपां सुलुगि' ति पूर्वसवर्णादेशश्च १.२१. प्रशस्तमधुरादिगुणयुक्ताः (आपः=जलानि प्राणान् वा) १०.१. प्रशस्ता मधवो मधुरादयो गुणा विद्यन्ते यासु ताः (अपः=जलानि) ११.३८. **मधुमत्या**=बहुजलवाष्पवेगयुक्तया (कशया=गत्या शिक्षया वा) १.१५७.४. [मधुप्राति० प्रशंसायां मतुबन्तान् ङीप्]

मधुमत्तमम् अतिशयेन मधुरादिगुणयुक्तम् (ऊर्मि=तरङ्गम्) ७.४७.२. अतिशयेन प्रशस्तैर्मधुरादिगुणैरुपेतम् (सोमम्=वीररसादिकम्) १.४७.३. **मधुमत्तमस्य**=अतिशयेन मधुरादिगुणयुक्तस्य (सोमस्य=महौषधिरसस्य) ६.६८.११. **मधुमत्तमः**=प्रशस्ता मधुरादयो गुणा विद्यन्ते यस्मिन् सोऽतिशयितः (सोमः=ओषधीरसः) १.४७.१. **मधुमत्तमैः**=अतिशयेन मधुरजलादियुक्तैः (पथिभिः=धर्म्यैर्मार्गैः) २८.२. [मधुप्राति० मतुबन्तादतिशायने तमप्]

मधुमन्तम् मधवः प्रशस्ता रसा विद्यन्ते यस्य तम् (यज्ञम्) १.१३.२. प्रशस्तमध्वादि-पदार्थयुक्तम् (अध्वरं=निष्कौटिल्यम्) ६.३०. बहूनि मधूनि हवींषि विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (यज्ञम्) ३.४.२. **मधुमन्तः**=प्रशस्तविज्ञानयुक्ताः भा०—विज्ञानवन्तः (राजप्रजाजनाः) ३३.७०. प्रशस्तमधुरगुणयुक्ताः (पदार्थाः) १.१३५.१. बहूनि मधुराणि कर्माणि विद्यन्ते येषान्ते (द्रप्साः=मेघाः) ५.६३.४. मधुरादयो गुणा विद्यन्ते येषु ते (विद्वज्जनाः) ७.६०.४. मधुगत्योपेताः (हंसासः=अश्वाः) ४.४५.४. **मधुमान्**=मधुरगुणयुक्तः (ऊर्मिः=तरङ्गः) १७.८९. मधुरगुणः (ऊर्मिः) ४.५८.१. विज्ञानसम्बन्धी (मत्सरः=आनन्दः) २.४१.१४. प्रशस्ता मधवो गुणा विद्यन्ते यस्मिन् सः (वनस्पतिः=अश्वत्थादिः) १३.२९. प्रशस्तो मधुः प्रतापो विद्यते यस्य सः (सूर्यः=सविता) १३.२९. प्रशस्तानि मधूनि सुखानि विद्यन्ते यस्मिन् सः (वनस्पतिः) १.९०.८. प्रशस्तो मधुरः प्रकाशो विद्यते यस्मिँन्त्सः (सूर्यः) १.९०.८. [मधुमदिति व्याख्यातम्]

मधुला माधुर्यप्रदा मधुविद्या १.१९१.११. मधु लात्याददाति सा (विषहरणविद्या) १.१९१.१०. [मधूपपदे ला आदाने (अदा०) धातोः क्विप्]

मधुवचाः मधुरवाक् (अग्निः=परमात्मा) ४.६.५. मधु वचो यस्य यस्या वा स सा वा (पिता माता वा) ५.४३.२. मधूनि मधुराणि वचांसि यस्य सः (राजा) ७.७.४. [मधुवचस्पदयोः समासः]

मधुवर्णम् यन्मधुरञ्च वर्णोपितञ्च तत् (घृतम्=उदकम्) १.८७.२. [मधु-वर्णपदयोः समासः]

मधुवर्णः मधुर्द्रष्टव्यो वर्णो यस्य सः (रथः=विमानादियानम् ५.७७.३. [मधु-वर्णपदयोः समासः]

मधुवाहनः मधुना जलेन वाहनीयः (रथः) प्र०—मध्विति उदकनाम निघं० १.१२, १.१५७.३. **मधुवाहने**=मधुरगुणयुक्तानां द्रव्याणां वेगानां वा वाहनं प्रापणं यस्मात्तस्मिन् (रथे) १.३४.२. मधुरगतिमति रथे ऋ० भू० १९४, ऋ० १.३.४.१. [मधु-वाहनपदयोः समासः। वाहनम्=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्ल्युट्]

मधुव्रते मधूनि व्रतानि कर्म्माणि ययोस्ते (भूमिसूर्यौ) ६.७०.५. [मधु-व्रतपदयोः समासः। व्रतमिति कर्मनाम वृणोतीति सतः नि० २.१३.]

मधुशाखः मधुराः शाखा यस्य सः (वनस्पतिः=किरणानां पालकः) २८.२०. [मधु-शाखापदयोः समासः। शाखा=शाखा शक्नोतेः नि० ६.३२. 'शाखा खशयाः

शक्नोतेर्वा नि० १.४.]

मधुश्चुतम् मधुरादिगुणयुक्तम् (विज्ञानम्) ४.५७.२. [मधु-श्चुतपदयोः समासः । श्चुतम्=श्चुतिर् क्षरणे (भ्वा०) धातोर् घञर्थे कः । श्चोतति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

मधुश्चुतः मधुरादिगुणा विश्लिष्यन्तो येभ्यस्ते (पदार्थाः) २१.४२. [मधूपपदे श्चुतिर् क्षरणे (भ्वा०) धातोः क्विप् । पशवो मधुश्चुतः जै० १.२२४.]

मधुश्चुतः मधुरादिगुणैर्निष्पन्नाः (आपः=जलानि) ७.४६.३. या मधुनो मधुराद् रसात्प्राप्ताः (सत्यस्त्रियः) १७.३. [मधु-श्चुतपदयोः समासः]

मधुश्चुता मधूदकस्य वर्षयित्र्यौ (भूमिसूर्यौ) ६.७०.५. [मधुश्चुत इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

मधुषत् यो मधूनि मधुराणि सनोति सः (अग्निः=राजा) ४.३.३. [मधूपपदे षणु दाने (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

मधुषुत्तमः यो मधूनि सुनोति सोऽतिशयितः (सोमः=ऐश्वर्यलाभः) ३.५८.६. [मधुषुत्प्राति० अतिशायने तमप् । मधुषुत्=मधूपपदे षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

मधुहस्त्यः मधुहस्तेषु साधुः (कविः=मेधाविजनः) ५.५.२. [मधु-हस्तपदयोः समासे 'तत्र साधुः' इति यत्]

मधुयुवा माधुर्यगुणोपेतौ (विद्वज्जनौ) ५.७४.६. यो मधूनि यावयतस्तौ (अश्विनौ=सूर्यवायू) ५.७३.८. [मधूपपदे यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्वनिप् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

मध्यतः मध्ये भवात् (व्यवहारात्) २१.४४. मध्यात् २१.४३. [मध्यप्राति० तसिः]

मध्यन्दिनात् मध्यदिने वर्त्तमानात्तापात् ४.२८.३. **मध्यन्दिने**=मध्याह्ने ५.६९.३. [मध्य-दिनपदयोः समासः । अथवा मध्यप्राति० 'मध्यो मध्यं दिनण् चास्मात्' इति वा० सूत्रेण भवादन्यत्राप्यर्थे दिनण् । आत्मा मध्यन्दिनः कौ० २५.१२.२८.६. आत्मा यजमानस्य मध्यन्दिनः ऐ० ३.१८. मध्यन्दिनो मनुष्याणाम् श० २.४.२.८.]

मध्यम् मध्ये भवम् ३.३०.७. **मध्ये**=अन्तः १.३२.१०. **मध्येन**=मध्यमाऽवस्थाविशेषेण ६.२. [मध्यप्राति० भवार्थे यत् । श्रीर्वै राष्ट्रस्य मध्यम् श० १३.२.९.४. प्रजा वै पशवो मध्यम् श० १.६.१.१७. त्रिष्टुप्छन्द इन्द्रो देवता मध्यम् श० १०.३.२.५.]

मध्यमम् मध्ये भवम् (वसु=द्रव्यम्) ७.३२.१६. मध्यस्थम् (पाशं=बन्धनम्) १२.१२. उत्कृष्टाऽनुत्कृष्टयोरन्तर्भवम् (पाशं=बन्धनम्) १.२५.२१. उत्तमाऽधमयोर्मध्यस्थम् (पाशं=बन्धनम्) १.२४.१५. मनुष्यदेहाद्याकाशपर्यन्तम् (जगत्) ऋ० भू० १३५, अथर्व० १०.४.८. **मध्यमः**=मध्ये भवः पृथिव्यादिस्थो द्वितीयः (अग्निः) १.१६४.१. **मध्यमाय**= मध्ये भवाय बन्धवे क्षत्रियाय वैश्याय वा १६.३२. **मध्यमेन**=मध्यमाऽवस्थाविशेषेण ६.२. **मध्यमेषु**=मध्यमसुखविशिष्टेषु (वाजेषु=युद्धेषूत्तमेष्वन्नेषु वा) १.२७.५. [मध्यप्राति० 'मध्यान्मः' अ० ४.३.८. सूत्रेण भवार्थे (शैषिको) मः]

मध्यमस्याम् मध्यमगुणायाम् (पृथिव्याम्) १.१०८.९. [मध्यमप्राति० सप्तमी । 'वा छन्दसी' ति सर्वनामकार्यम्]

मध्यमा मध्यमानि मध्यस्थानि (धामानि=जन्मस्थान-नामानि) १७.२१. [मध्यमप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

मध्यमवाट् यो मध्ये पृथिव्यां भवान् पदार्थान् वहति सः (रथः=रमणीयं यानम्) २.२९.४. [मध्यमप्राति० वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्चे' ति ण्विः]

मध्यमशीरिव यो मध्यमानि मर्माणि शृणाति सः (जनः) इव १२.८६. मध्यमशीर्-इवपदयोः समासः । मध्यमशीः=मध्यमोपपदे]

मध्यमस्थाः मध्ये भवा मध्यमाः पक्षपातरहितास्तेषु तिष्ठतीति (अग्निः=न्यायप्रकाशको राजा) २७.५. [मध्यमोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः]

मध्यमासः मध्ये भवाः (राजसुहृदः) ६.२१.५. पक्षपातरहिताः (विद्वांसोऽविद्वांसश्च जनाः) ४.२५.८. [मध्यमप्राति० जसोऽसुक्]

मध्यमेभिः मध्ये भवैः (साधुभिः) ३.३२.१३. [मध्यमप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न]

मध्यमेष्ठ्याय मध्ये पक्षपातरहिते भवे न्याये तिष्ठति तस्य भावाय १०.२९. [मध्यमेष्ठप्राति० भवार्थे यत् । मध्यमेष्ठः=मध्यमोपपदे तिष्ठतेः कः]

मध्या पूर्णाऽऽयुषो भोगस्य मध्ये २५.२२. प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्याः स्थाने डाऽऽदेशः १.८९.९. अत्र सप्तम्येकवचनस्याकारः १.११५.४. [मध्यप्राति० सप्तम्या डादेशश्छान्दसः । मध्यम्-मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'अघ्न्यादयश्च' उ० ४.११२. सूत्रेण यक् । नकारस्य च धकारः]

मध्या याऽऽकाशस्य मध्ये भवा सा (वयन्ती=गच्छन्ती पृथिवी) २.३८.४. [मध्यप्राति० स्त्रियां टाप्]

मध्यायुवः य आत्मनो मध्यं मध्यस्थमिच्छवो विद्वांसः १.१७३.१०. [मध्यप्राति० इच्छायामर्थे सन्नन्ताद् उः]

मध्वदः ये मधूनि कर्मफलानि वाऽदन्ति ते (जीवाः) १.१६४.२२. [मधूपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोः क्विप्]

मध्वर्णसः मधूनि मधुराण्युदकानि यासु ताः (नद्यः) १.६२.६. [मधु-अर्णस्पदयोः समासः। अर्णस् उदकनाम निघं० १.१२.]

मध्वः मधुरगुणयुक्तानि जलानि प्र०—मध्वित्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२. अत्र लिङ्गव्यत्ययेन पुंस्त्वम् 'वा छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति पूर्वसवर्णप्रतिषेधात् यणादेशः १.३४.१०. माधुर्यादिगुणोपेताः (योगिन्यो विदुष्यः) ७.१५. मधूनि (वस्तूनि) १.१८१.६. मधुरस्य विज्ञानस्य १.१३५.८. विज्ञानयुक्तस्य (विदुषो जनस्य) १.१४१.३. उत्पन्नस्य मधुरादिगुणयुक्तस्य पदार्थसमूहस्य रसभोगम् १.१४.७. मधुरगुणवन्तः (इन्दवः=सोमाद्योषधिगणाः) १.१४.४. मधुरस्य रसस्य २१.११. मन्यमानाः (विद्वज्जनाः) ७.५७.१. मधुरं वैद्यशास्त्रसिद्धं रसम् प्र०—अत्र कर्मणि षष्ठी ३३.८८. मधुरस्वभावाञ्जनान् ३.३१.१६. मधुनो मधुरस्य रसस्य प्र०—अत्र कर्मणि षष्ठी ६.१८. माधुर्यादिगुणोपेतस्य (भृत्यवर्गस्य) ४.२.४. विज्ञेयस्य (जगतः) मध्ये २.१९.२. मधुना प्र०—अत्र तृतीयार्थे षष्ठी १.१८२.२. **मध्वा**=माधुर्येण २९.२६. कोमलसामग्र्या ३३.३३. मधुरेण विज्ञानेन २८.१०. मधुना जलेन २१.८. क्षौद्रेण ४.३८.१०. [मधु इति व्याख्यातम्। व्यत्ययेन पुंस्त्वम्। 'जसादिषु छन्दसि वा वचनम्०' अ० ७.३.१०९. वा सूत्रेण गुणो न भवति]

मननाः मन्तुं विज्ञातुं योग्याः (कारवः=कारुकाः शिल्पिनः) ३.६१. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्बहुलवचनादौणादिको युच् 'कृ यल्युटो बहुलम्' इति ल्युड् वा]

मनवः मननशीला विद्वांसः १५.४९. **मनवे**=मन्यते येन ज्ञानेन तस्मै बोधाय अ०—प्राणाय ५.१६. मननशीलाय (वैश्वानराय=जगदीश्वराय) ११.६६. मननशीलधार्मिकमनुष्यरक्षणाय १.१३०.८. धार्मिकप्रजापतये राज्ञे १.११२.१६. मनुष्याय ४.२६.४. **मनुना**=मननशीलेन विदुषा ७.२.३. **मनुम्**=मननशीलं मनुष्यम् ६.२१.११. युद्धज्ञातारम् (शूरं=शूरवीरं जनम्) १.११२.१८. **मनुः**=विज्ञानवान् (अध्यापकः) १.८०.१६. मननशीलो विद्वानिव सर्वविद्याविज्ञापकः (सृष्टिकर्त्तेश्वरः) ४.२६.१. ज्ञाता (विद्वज्जनः) १.१३९.९. मान्यकारक (परमेश्वर) आर्याभि० १.४५, ऋ० १.८.५.२. विद्वद्भिः क्रियासिद्ध्यर्थं यो मन्यते सः (भौतिकोऽग्निः) १.१३.४. वैद्यकविद्यावित् (जनः) २.३३.१३. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'शॄस्वृस्निहि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः। मनुः पदनाम निघं० ५.६. मनुः मननात् नि० १२.३४. प्रजापतिर्वै मनुः स हीदं सर्वममनुत श० ६.६.१.१९. अश्वा ह वा ऽइयं (पृथिवी) भूत्वा मनुमुवाह सोऽस्याः पतिः प्रजापतिः श० १४.१.३.२५. ये विद्वांसस्त मनवः श० ८.६.३.१८. आयुर्वै मनुः कौ० २६.२७.]

मनसपते ! विज्ञानस्य पालक भा०—सर्वसाक्षिन् (देव=सर्वजगत्प्रकाशकेश्वर) २.२१. निगृहीतमनाः (पतिगृहस्थजन) ८.२१. [मनस्-पतिपदयोः समासे षष्ठ्या अलुक् छान्दसम्]

मनसस्य यन्मन्यते तस्य (क्षत्रस्य=राष्ट्रस्य) ५.४४.१०. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोरौणा० बहुलवचनाद् असच्]

मनसः संकल्पविकल्पाऽऽत्मकात् १८.५८. मननशीलात् सामर्थ्यात् ३१.१२. अन्तःकरण-पुरुषार्थात् ७.३३.११. विज्ञानात् ४.६. सङ्कल्पविकल्पादिवृत्तियुक्तस्याऽन्तःकरणस्य ३७.१८. मननशीलाद्वेगवत्तरात् १.११७.२. चित्तस्य १.७६.१. **मनसा**=मन्यन्ते ज्ञायन्ते सर्वे व्यवहारा येनाऽन्तःकरणेन तेन २.२४. शुद्धाऽन्तःकरणेन १७.९४. सुविचारेण ७.२६. विज्ञानवता चित्तेन १३.३८. भावेन ३४.२३. स्वाऽन्तेन १.९६.८. विज्ञानेनेश्वरध्यानेन वा ऋ० भू० २५२, १९.३९. प्रज्ञया १.१३८.२. शिल्पादिविचारेण १.९१.२३. **मनसे**=विज्ञानवृद्धये ४.७. विज्ञानवतेऽन्तःकरणाय ३७.१९. सदसन्मननाय ६.२५. विज्ञापयितुम् १.१०८.२. मनननिमित्ताय संकल्पविकल्पात्मने २२.२३. मननशीलाय (सज्जनाय) ६.२१.४. **मनः**=मननात्मिकाऽन्तःकरणवृत्तिः ११.१. अन्तःकरणस्याऽहङ्कारादिवृत्तिम् ३.५६. योगमननम् ७.६. मननशीलं ज्ञानसाधनम् २.१३. संकल्पविकल्पात्मकम् ३७.२. मननात्मकं चित्तम् ६.१६.१७. ज्ञानसाधनमन्तःकरणम् १८.४३. धारणावतीं बुद्धिम् ३.५५. शुद्धं विज्ञानम् ७.३. मननशीलं प्रेरकं कर्म्म १३.५५. इच्छासाधनम् ११.६६. स्वाऽन्तम् ९.७. सङ्कल्पो विकल्पः १५.४. सर्वकर्मसाधनम् ३४.३. सङ्कल्पो-

ऽभिलाषेच्छादि विकल्पोऽप्रीतिद्वेषादि तदात्मकम् ऋ० भू० ६३, ऋ० ८.८.४९.३. स्मरणात्मकं चित्तम् ३.५४. **मनांसि**=अन्तःकरणानि ७.५६.८. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोरौणा० असुन्। मनु अवबोधने (तना०) धातोर्वा असुन्। मनो मनोतेः नि० ४.५. मनो ह वायुर्भूत्वा दक्षिणतस्तस्थौ श० ८.१.१.७. मनो ह वाऽअस्य सविता श० ४.४.१.७. मनः सावित्रम् कौ० १६.४. यन्मनः स इन्द्रः गो उ० ४.११. मनः प्रगाथः जै० उ० ३.४.३. स एष ह्रदः कामानाम्पूर्णो यन् मनः जै० उ० १.५८. वाग्वै समुद्रो मनः समुद्रस्य चक्षुः तां० ६.४.७. तस्य (मनसः) एषा कुल्या यद् वाक् जै० उ० १.५८.३. कामः संकल्पो विचिकित्सा श्रद्धाऽश्रद्धा धृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत् सर्वं मन एव श० १४.४.३.९. नैव हि सन्मनो नेवासत् श० १०.५.३.२. अनिरुक्तं हि मनो अनिरुक्तं ह्येतद् यत् तूष्णीम् श० १.४.४.५. अपरिमिततरमिव हि मनः परिमिततरेव हि वाक् श०१.४.४.७. अनन्तं वै मनः श० १४.६.१.११. मनो देवः गो० पू० २.१०. वृषा हि मनः श० १.४.४.३. वाक् च वै मनश्च देवानां मिथुनम् ऐ० ५.२३. वागिति मनः जै० उ० ४.२२.११. वाक् च वै मनश्च हविर्धाने कौ० ९.३. मनो हि पूर्वं वाचो यद्धि मनसाभिगच्छति तद्वचा वदति तां० १.११.३. वाग् वै मनसो ह्रसीयसी श० १.४.४.७. वाचो मनो देवता मनसः पशवः जै० उ० १.५९.१४. न ह्ययुक्तेन मनसा किंचन सम्प्रति शक्नोति कर्त्तुम् श० ६.३.१.१४. अन्यत्र मना अभूवं नादर्शमन्यत्रमना अभूवं नाश्रौषमिति मनसा ह्येव पश्यति मनसा शृणोति श० १४.४.३.८. अर्द्धभाग्वै मनः प्राणानाम् ष० १.५. मनसि हि सर्वे प्राणाः प्रतिष्ठिताः श० ७.५.२.६. मनो वै प्राणानामधिपतिर्मनसि हि सर्वे प्राणाः प्रतिष्ठिताः श० १४.३.२.३. असंप्रेषितं वा इदं मनः ऐ० ६.२. मनो हृदये (श्रितम्) तै० ३.१०.८.६. मनसि हृदयमात्मा प्रतिष्ठितः श० ६.७.१.२१. मनो वा ऽध्वर्युः श० १.५.१.२१. मनो वाव साम्नश्श्रीः जै० उ० १.३९.२. तयोः (सदसतोः) यत् सत् तत् साम तन्मनस्स प्राणः जै० उ० १.५३.२. चन्द्रमा मनसि श्रितः तै० ३.१०.८.५. मनश्चन्द्रमाः जै० उ० ३.२.६. मनो वै देववाहनं मनो हीदं मनस्विनं भूयिष्ठं वनीवाह्यते श० १.४.३.६.]

मनस्वान् मनो विज्ञानं विद्यते यस्य सः (इन्द्रः=सूर्यः) २.१२.१. [मनस्प्राति० मतुप्। मनस्वान् मनस्वी नि० १०.१०.]

मनःसदम् मनसि विज्ञाने तिष्ठन्तम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ९.२. ['मनस्' उपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्]

मना ज्ञानसाधिका (वाग्विद्युद् वा) ४.१९. **मनायै**=मन्तव्यायै विद्यायै ४.३३.२. मन्यमानायै प्रज्ञायै २.३३.५. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० अन्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

मनानाः मन्यमानाः मननं कुर्वाणाः (विद्वांसो जनाः) ६.६७.१०. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः शानच्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

मनाम् मननशीलानाम् (विदुषां जनानाम्) १.१७३.२. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

मनामहे याचामहे २२.१४. जानीमहे ५.४८.१. विजानीमः १.१५९.५. विजानीयाम ५.३५.८. याचेमहि ४.११. जानें सं० प्र० ३३०, १.२४.२. विजानीयाम प्र०—अत्र प्रश्नार्थे लेट् व्यत्ययेन श्यनः स्थाने शप् च १.२४.१. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन च शप्। मनामहे इति याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९. मनामहे मन्यामहे। नि० ६.२५.]

मनायतः आत्मनो मन आचरतः (जनात्) २.२६.२. [मनस्प्राति० आचारेऽर्थे क्यजन्ताच्छतृ। सलोपश्च]

मनायति आत्मनो मन इवाऽऽचरति १.१३३.४. [मनस् प्राति० 'कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च' इति क्यङन्ताल्लट् व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

मनायुः यो मन इवाऽऽचरति सः (जनः) ४.२५.५. मनोविज्ञानं कामयमानः (विद्वज्जनः) ४.२५.५. **मनायोः**=प्रशंसां कामयमानस्य (राजपुरुषस्य) ४.२४.७. यो मान इवाऽऽचरति तस्य (विश्वस्य=प्राणिजातस्य) प्र०—अत्र मान-शब्दस्य ह्रस्वत्वं पृषोदरादित्वात् १.९२.९. [मनस् पदादाचारेऽर्थे क्यङ्। ततः 'क्याच्छन्दसी' ति उः]

मनावसू यौ मनो वासयतस्तौ (अश्विना=व्याप्तविद्यौ विद्वांसौ) ५.७४.१. [मनस् उपपदे वस निवासे (भ्वा०) धातोरौणा० बहुलवचनाद् उः]

मनिष्ये विचारं करिष्ये ६.९.६. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लृट्। व्यत्ययेन शप्]

मनीषया विद्याक्रिया सुशिक्षाजातया प्रज्ञया १.९४.१. मनस ईषणकर्त्र्या प्रज्ञया २३.३६. **मनीषा**=मेधा ३३.३४. प्रिया (स्त्री) ७.२४.२. विद्यासुशिक्षायुक्ता प्रज्ञा ६.६७.२. मनो विज्ञानमीषते यया प्रज्ञया सा १.५४.८.

सुसंस्कृतया प्रज्ञया प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्येकारादेशो न १९.५२. बुद्ध्या १.१२६.१. मनीषया प्रशस्तबुद्ध्या प्र०—अत्र' 'सुपां सुलुगि०' ति तृतीयाया एकवचनस्याऽऽकारादेशः १.१०१.७. मनस ईषया प्रज्ञाऽनुरूपया प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयास्थाने डादेशः १.९१.१. मनीषया विज्ञानेन १.७०.१. **मनीषाणाम्**=प्रज्ञानाम् याभिर्मन्यन्ते जानन्ति ता मनीषाः प्रज्ञास्तासाम् १२.२२. मनस ईषिणीम् (उत्तमप्रज्ञाम्) ३.५८.२. योगविज्ञानवतीं बुद्धिम् १.११२.२४. **मनीषाः**=प्रमाः ४.११.३. ये मनांसि विज्ञानानीषन्ते ते (मतयः=विद्वांसो जनाः) प्र०—अत्र शकन्ध्वादित्वात् पररूपम् १.६२-११. मनस्विनः (सज्जनाः) ६.६६.११. मनस ईषिणो गमनकर्त्तारः (योग्या जनाः) ६.३४.१. [मनस् ईषापदयोः समासे शकन्ध्वादित्वात् पररूपम् । मनीषया=मनस ईषया स्तुत्या प्रज्ञया वा नि० २.२५. नि० ९.१०. ईषा=ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोः 'गुरोश्च हलः' इत्यङ् स्त्रियाम् । ततष्टाप्]

मनीषिणः मेधाविनो विद्वांसः १.१३.५. मनस ईषिणो योगिनः १७.२०. मनसो दमनशीलाः (विद्वांसः) १.१६४.४५. प्र०—अत्र शकन्ध्वादिना पररूपम् ३.१०.१. जितमनस्काः (नरः=विद्वज्जनाः) २.१९.१. मनस ईषिणो दमनकर्त्तारः (धीराः=मेधाविजनाः) ३४.२. **मनीषिभिः**=मेधाविभिः विद्वद्भिः शिल्पिभिः १.३४.१. **मनीषी**=यः सर्वेषां मनसामीषी साक्षी ज्ञाताऽस्ति सः (ब्रह्म=परमेश्वर) ऋ० भू० ३६, ४०.८. सर्वेषां जीवानां मनोवृत्तीनां वेत्ता (ब्रह्म=परमेश्वरः) ४०.८. मेधावी (बुद्धिमज्जनः) ७.२२.६ सब जीवों के मन=विज्ञान का साक्षी, सबके मन का दमन करने वाला (परमात्मा) आर्याभि० २.२, ४०.८. सबका अन्तर्यामी (परमात्मा) स० प्र० २४४, ४०.८. सर्वाऽऽत्मनां साक्षी (ईश्वरः) पं० वि० [मनीषी इति मेधाविनाम निघं० ३.१५. मनस्-ईषिन्पदयोः समासे कृते शकन्ध्वादित्वात् पररूपम् । ईषिन्=ईष गतिहिंसादर्शनेषु (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

मनुजातम् यो मनोर्मननशीलान्मनुष्यादुत्पन्नस्तम् (जनम्) १.४५.१. [मनु-जातपदयोः समासः । जातम्=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः]

मनुताम् विजानातु ६.४७.२९. [मनु अवबोधने (तना०) धातोर्लोट् । मनुताम् मन्यताम् नि० ९.१२.]

मनुर्हितम् मनुष्याणां हितकारकम् (विद्वांसं जनम्) ३.२.१५. मनुष्येभ्यो हितम् (घृतम्=उदकम्) ६.७०.२. मनुषो मनसो हितकारिणम् (शं=सुखम्) १.१०६.५. **मनुर्हितः**=मनुषो मननकर्त्तारो मनुष्यादयो हिता धृता येन सः (जगदीश्वरः) १.१४.११. मनुष्याणां हितकारी (अग्निः=विपश्चिद्राजा) ६.१६.९. मनुः=विद्वद्भिः क्रियासिद्ध्यर्थे यो मन्यते हितो धृतो येन स हितकारी (भौतिको ऽग्निः) १.१३.४. [मनुष्-हितपदयोः समासः । मनुष्=मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० उसिः । मनुषः मनुष्यस्य नि० ८.५. हितः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः । 'दधातेर्हिः' इति धातोर्हिरादेशः]

मनुवत् विद्वद्वत् २.१०.६. [मनु-प्राति० तुल्यार्थे वतिः]

मनुषः मन्यन्ते जानन्ति ये सभ्या मर्त्यास्ते, प्र०—अत्र मनधातोर्बाहुलकादौणादिकः उसिः प्रत्ययः १.२६.४. मनुष्याः ४.६.११. मानवान् ४.२.१. मननशीलस्य मानवस्य १.७६.५. मननधर्माणः (विद्वांसो जनाः) ३.२६.२. अमात्यप्रजाजनांन् ४.१.९. मनुष्यजातस्य पदार्थसमूहस्य २.१८.२. **मनुषे**=जनाय ५.२९.३. मानवाय १.५२.८. [मन-ज्ञाने (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० उसिः । मनुषः मनुष्यस्य नि० ८.५.]

मनुषः मनुष्यः ६.४.१. **मनुषाय**=मननशीलाय १.११७.२१. [मनु अवबोधने (तना०) धातोर्बाहु० औणा० उषच् । मनुषाय=मनुष्याय नि० ६.२६.]

मनुषेव मनुष्यवत् १.१३०.९. [मनुषा-इवपदयोः समासः । मनुषा=मनुष्-प्राति० तृतीया]

मनुष्यकृतस्य साधारणजनेन रचितस्य (एनसः=अपराधस्य) ८.१३. [मनुष्य-कृतपदयोः समासः]

मनुष्यजाः चतुर्थमारभ्य दशमपर्यन्ता नियुक्तपतयः, ऋ० भू० २१४, ऋ० ८.३.२८.५. मनुष्य नाम से कहाने वाले (पतयः=पति लोग) स० प्र० १५३, १०.८५.४०. [मनुष्योपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः]

मनुष्यराजाय नरेशाय २४.३०. [मनुष्य-राजन्पदयोः समासे 'राजाहसखिभ्यष्टजि' ति समासान्तष्टच्]

मनुष्यलोकाय मनुष्यत्वदर्शनाय ३०.१२. [मनुष्यलोकपदयोः समासः । लोकः=लोकृ दर्शने (भ्वा०) धातोर्घञ्]

मनुष्यः मानवः १.५९.४. मननशीलः (सज्जनः) २.१८.१. **मनुष्यान्**=मननशीलान् (जनान्) ५.३९. मनुष्यग्रहणमुभयलक्षकं प्राणिमात्रस्य, तस्मात् सर्वप्राणिनः ३४.६. **मनुष्याः**=साधारणा जनाः १.१६४.४५. ये मनन-

शीलाः समन्तात् ते ४.१.७३. मनुष्य लोग सं० वि० १३६, अथर्व० १४.२.३८. **मनुष्ये**=मनुष्येभ्यो हिते (द्वे पुरुषः स्त्री च) ३.१.१०. **मनुष्येषु**=मनस्विषु प्र०—मनुष्याः कस्मात् ? मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति, मनस्यमानेन सृष्टा मनस्यतिः पुनर्मनस्वीभावे मनोरपत्यं मनुष्यो वा नि० ३.७, ८.३८. विद्यान्यायाचरणे प्रकाशमानेषु मानवेषु ८.४०. [मनुप्राति० 'मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च' अ० ४.१.१६१. सूत्रेण यत् षुक् चागमः। मनुष्याः मनुष्यनाम निघं० २.३. मेधाविनाम निघं० ३.१५. मनुष्याः कस्मान्मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति, मनस्यमानेन सृष्टाः। मनस्यतिः पुनर्मनस्वीभावे। मनोरपत्यं मनुषो वा नि० ३.७. देवानां वै विधामनु मनुष्याः श० ६.७.४.६. स (प्रजापतिः) पितॄन् सृष्ट्वा मनस्यैत्। तदनु मनुष्यानसृजत। तन्मनुष्याणां मनुष्यत्वम्। य एवं मनुष्याणां मनुष्यत्वं वेद, मनस्व्येव भवति, नैनं मनुः (मननशक्तिः) जहाति तै० २.३.८.३. अनृतसंहिता वै मनुष्या इति ऐ० १.६. बहिः प्राणो वै मनुष्यः तै० सं० ६.१.१.४. मनुष्या वै विश्वे देवाः काठ० १९.१२. रयिरिति मनुष्याः (उपासते) श० १०.५.२.२०. वर्षं मनुष्याः (उपजीवन्ति) मै० १.६.५.]

मनुष्या मनुष्याणां सम्बन्धीनि (युगानि) १.९२.११. मानुषसम्बन्धीनि (युगानि=वर्षाणि) १.१२४.२. [मनुष्य-प्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

मनुष्यासु मनुष्यसम्बन्धिनीषु (प्रजासु) १.१४८.१. [मनुष्प्राति० भवार्थे यत्। ततः स्त्रियां टाप्]

मनुष्येभिः मननशीलैः (जनैः) ३.४.८. अनृतवादिभिर्जनैः प्र०—अनृतं मनुष्याः शत० १.१.१.४, ७.२.८. [मनुष्य-प्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न]

मनुष्वत् मनुष्येण तुल्यम् ३.१७.२. मनुष्येण तुल्यः (यज्ञः=शिष्यः) ६.६८.१. मननशालिना विदुषा तुल्यः (सज्जनः) ३.३२.५. मननशील विद्वद्वत् (जनः) ४.३४.३. मनुषु मनुष्येष्विव १.१०५.१३. यथोत्तमा मनुष्याः श्रेष्ठानि कर्माण्यनुष्ठाय पापानि त्यक्त्वा सुखिनो भवन्ति तथा १.१०५.१४. मननशीलेन मनुष्येण तुल्यम् १.४४.११. यथा मनुष्या रक्षन्ति तद्वत् १.४६.१३. मानववत् २६.३३. [मनुष्-प्राति० तुल्यार्थे वतिः। नभोऽङ्गिरो मनुषां वत्युपसंख्यानम्' अ० १.४.१८. वा० सूत्रेण भसंज्ञकत्वाद् रुत्वं न भवति]

मनै मन्यै भा०—जानीयाम् प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप् १२.७५. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शप्। मनै मन्ये नि० ६.२८.]

मनोजवसा मनोवद्वेगेन गच्छता (रथेन) १.११७.१५. [मनस्-जवस्पदयोः समासः]

मनोजवाः मनसो जवो वेग इव जवो वेगो येषान्ते (पादाः) २६.२०. मनोवद्वेगाः (सेनाः) ४.२६.५. मनोवद् गतयः (अश्वासः=अग्न्यादयः) ६.६३.७. मन इव वेगवन्तः (अग्न्यादयः) ५.७७.३. [मनस्-जवपदयोः समासः। जवः=जुरिति सौत्रो धातुर्वेगितायां गतौ, ततोऽप्। मनोजवेषु=मनसां प्रजवेषु नि० १.६.]

मनोजवाः मनोवज्जवो वेगो यस्य यस्याः स सा वा (विश्वकर्मा=विद्वान् वाग्वा) ५.११. [मनोजव-प्राति० स्त्रियां टाप्। अथवा मनस्-जवस्-पदयोः समासः]

मनोजवेभिः मनोवद्वेगवद्भिः (भा०—वायुविद्युद्गुणैः) ६.६२.३. [मनोजवप्राति० भिस ऐस् न भवति छान्दसत्वात्]

मनोजाताः ये मनसा विज्ञानेन जायन्ते ते (देवाः=विद्वज्जनाः) ४.११. [मनस्-जातपदयोः समासः]

मनोजुवम् मनोवद् वेगवन्तम् भा०—अनलसम् (सर्वाधिपतिं राजानम्) १७.२३. मनोगतिम् (ईश्वरं सभेशं वा) ८.४५. **मनोजुवः**=मनस इव जूर्वेगो येषान्ते (विद्युदादयः) १.१८१.२. मनोवद् गतयः (सभाद्यध्यक्षादयः) १.८५.४. मनसो जूर्वेग इव वेगो येषां ते विद्युदादयः १.१८६.५. **मनोजुवा**=मनोवद्वेगेन ६.२२.६. [मनस्-जूपदयोः समासः। जूः=जुरिति सौत्रो धातुः, ततः 'भ्राजभास०' अ० ३.२.१७७. सूत्रेण क्विप् ताच्छील्यादिषु जवतेर्दीर्घत्वं च। अथवा 'क्विब् वचिप्रच्छि०' अ० ३.२.१७८. वा० सूत्रेण क्विप् दीर्घश्च]

मनोजुवा यौ मनोवद् वेगेन जवेते तौ (इन्द्रवायू=विद्युत्पवनौ) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः 'क्विप् चे' ति क्विप् प्रत्ययः १.२३.३. [मनोजू-प्राति० द्विवचनस्याकारादेशः]

मनोतरा अतिशयितं मनो ययोस्तौ (वसुविदौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.४६.२. [मनस्-प्राति० अतिशायने तरप्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

मनोता प्रज्ञापकः (अग्निः=विद्वज्जनः) प्र०—अत्र मनधातोर्बाहुलकादौणादिक ओतन् प्रत्ययः २.९.४. मनोवद्गन्ता (अग्निः=अग्निरिव विद्वान् जनः) ६.१.१. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० ओतन्। मनोता=तिस्रो वै देवानां मनोतास्तासु हि तेषां मनांस्योतानि, वाग्वै देवानां मनोता तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि, गौर्वै देवानां मनोता

तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि, अग्निर्वै देवानां मनोता तस्मिन्हि तेषां मनांस्योतान्यग्निः सर्वा मनोता, अग्नौ मनोताः संगच्छन्ते ऐ० २.१०.]

मनोधृतः मनो विज्ञानं धृतं यैस्ते (सत्पुरुषाः) ३.३८.२. [मनस्-धृतपदयो समासः]

मनोयुजः मनसा विज्ञानेन युज्यन्ते ते (वह्नयः=विद्युदादयः) प्र०—अत्र 'सत्सूद्विष०' अ० ३.२.६१. अनेन 'कृतो बहुलं' इति कर्मणि क्विप् १.१४.६. ये मनसा सदसद्विज्ञानेन युञ्जन्ति योजयन्ति वा ते (देवाः=विद्वज्जनाः) ४.११. ये मनसा युज्यन्ते ते भृत्याः १.५१.१०. ये मनसा ब्रह्म युञ्जते ते (आप्तजनाः) ४.४८.४. ये मन इव युञ्जते ते वेगवत्तराः (अश्वासः=वेगादयो गुणाः) ५.७५.६. [मनसुपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'सत्सूद्विष०' इति क्विप् । 'कृतो बहुलमि' ति कर्मणि क्विप्]

मनोवाताः मन इव वातो वेगो यासां ताः (सत्स्त्रियः) ३.३८.२. [मनस्-वातपदयोः समासः]

मन्तवः ज्ञातुं योग्याः (वस्त्रादयः पदार्थाः) १.१५२.१. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'कमिमनिजनि०' उ० १.७३. सूत्रेण तुः]

मन्तवे विज्ञातुम् १.११२.२. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

मन्तवै मन्तुं योग्यः (अन्यगोत्रजोऽनौरसो वा पुत्रः) ७.४.८. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोस्तुमर्थे तवै । मन्तवै मन्तव्यः नि० ३.३.]

मन्तुमः प्रशस्तविज्ञानयुक्त (विद्वज्जन) ६.५६.४. मन्तु प्रशस्तं ज्ञानं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (अ०—विद्वज्जन) १.४२.५. [मन्तुप्राति० प्रशंसायां मत्वर्थे मः प्रत्ययश्छान्दसः । मन्तुः=मन ज्ञाने (दिवा०) धातोस्तुः]

मन्त्रम् उच्चार्यमाणं वेदाऽवयवं विचारं वा १.३१.१३. वेदस्थं विज्ञानहेतुं (भा०—वेदमन्त्रम्) ३.११. वेदाख्यम् (भा०—सर्वेषां जीवानां हितसाधकं वेदोपदेशम्) ३४.५७. वेदस्थमन्त्रसमूहम् १.४०.५. मन्वते गुप्तान् पदार्थान् परिभाषन्ते येन तम् (श्रुतिसमूहम्) प्र०—मन्त्रा मननात् नि० ७.१२, १.४०.६. **मन्त्रः**=ईश्वरमारभ्य पृथिवीपर्यन्तानां गुप्तप्रसिद्धसामर्थ्यगुणानां पदार्थानां भाषणमुपदेशनं ज्ञानं वा भवति यस्मिन् येन वा सः (वेदोपदेशः) ऋ० भू० ६३, ऋ० ८.८.४६.३. विचारः १.१५२.२. विचारवान् (गुरुः) १.१४७.४. **मन्त्रान्**=वेदाऽवयवान् विचारान् वा १.६७.२. **मन्त्राः**=विचारसाधकाः (वेदोपदेशाः) ३४.५३. वेदस्य श्रुतयो विचारा वा ६.५०.१४. [मत्रि गुप्तभाषणे (चुरा०) धातोर्घञ् । मन्त्रा मननात् नि० ७.१२. वाग् वै मन्त्रः श० ६.४.१.७. ब्रह्म वै मन्त्रः श० ७.१.१.५.]

मन्त्रयन्ते गुप्तं भाषन्ते १.१६४.१०. [मत्रि गुप्तभाषणे (चुरा०) धातोर्लट् । मन्त्रयते अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

मन्त्रिणे विचारकर्त्रे राजपुरुषाय (अमात्याय) १६.१६. [मन्त्र-प्राति० मत्वर्थे इनिः । अथवा मत्रि गुप्तभाषणे (चुरा०) धातोः 'वा छन्दसि' नियमेन निरुपपदादपि ताच्छील्ये णिनिः]

मन्त्रेभिः ज्ञानयुक्तैर्विचारैः १.६७.३. [मन्त्र-प्राति० भिस ऐस् न छान्दसत्वात्]

मन्थत मन्यनं कुरुत ३.२६.५. **मन्थन्ति**=विलोडयन्ति ३.२६.६. **मन्थामि**=विलोड्य निवारयामि, विलोडनादिक्रियया निष्पादयामि ५.२. [मन्थ विलोडने (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

मन्थाम् घृतादि निस्सारणं मन्थानम् प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति नकारलोपः १.२८.४. [मन्थ विलोडने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० आनच् । न लोपश्छान्दसः । अथवा मथिन्प्राति० द्वितीयैकवचनम्]

मन्थिनम् मन्थितुं शीलं यस्य तम् (सोमम्=ऐश्वर्यकारकं पेयम्) ३.३२.२. **मन्थिनः**=न्यायकारिणः (पुरुषस्य) ७.१८. **मन्थी**=मथितुं शीलः (पदार्थः) १८.१६. मन्थितुं शीलमस्य न्यायाधीशस्य सः (राजा) ७.१८. पदार्थानां मन्थनसाधनः १३.५७. मथ्नातीति (पदार्थः) ८.५७. [मन्थ विलोडने (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः । मन्थी=अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी श० ४.२.१.३. चन्द्रमा एव मन्थी श० ४.२.१.१. मन्थी सक्तुश्रीः तै० सं० ४.४.६.१.]

मन्थिपाः ये मन्यन्ति शत्रून् तान् वीरान् पान्ति ते (देवाः=विद्वांसो जनाः) ७.१७. ['मन्थिन्' उपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः]

मन्थिशोचिषा सूर्यदीप्त्येव ७.१८. [मन्थिन्-शोचिष्-पदयोः समासः]

मन्द प्रशंसय ६.१८.६. **मन्दतु**=आनन्दयतु ७.२२.१. प्रशंसतु ६.१७.३. **मन्दन्तु**=कामयन्तु १.१३४.२. **मन्दसे**=हर्षसि १.५१.१२. सर्वत्राऽऽनन्दयसि ३६.७. **मन्दस्व**=आनन्दय २.३६.३. आनन्द ६.२३.८. **मन्दामहे**=स्तुमः १.१२२.१३. [मदि स्तुतिमोदमदस्वप्न-

कान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्लोट् व्यत्ययेन परस्मैपदम्। अन्यत्रलडपि। मन्दस्व=मन्दस्व धीतिभिर्हित इति दीप्यस्व धीतिभिर्हित इत्येतत् श० ७.३.१.३३.]

मन्दध्यै मन्दितुमानन्दितुम् ४.१६.२. [मदि स्तुतिमोदादिषु (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे अध्यैप्रत्ययः]

मन्दमानाय आनन्दस्वरूपाय भा०—आनन्दमयाय (ईश्वराय) ३३.२३. **मन्दमानाः**=आनन्दन्तः प्राप्तसत्काराः स्तुवन्तो वा (देवासः=आप्ता विद्वांसो जनाः) ६.६७.५. [मदि स्तुतिमोदमदादिषु (भ्वा०) धातोः शानच्। ताच्छील्ये चानश् वा। मन्दमानाय मोदमानाय स्तूयमानाय शब्दायमानायेति वा नि० ११.७.]

मन्दमाने कल्याणकारके (रात्रिदिने) १.१४२.७. [मन्दमानमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनं नपुंसके]

मन्दय हर्षय ३.३०.२०. प्रापय ३.५०.४. [मदि स्तुतिमोदमदादिषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

मन्दयत्सखम् मन्दयन्तो विद्याज्ञापकाः सखायो यस्मिँस्तद् (अ०—विज्ञानादिधनम्) १.४.७. [मन्दयत्-सखिपदयोः समासः। मन्दयत्=मदि स्तुत्यादिषु धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

मन्दयध्यै आनन्दयितुम् ४.२९.३. [मदि स्तुतिमोदादिषु (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे अध्यै]

मन्दयुः आत्मनो मन्दं प्रशंसनमिच्छुः (यजत्रः=विद्वज्जनः) १.१७३.२. [मन्दप्राति० आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उः]

मन्दसानम् स्तूयमानम् (राजानम्) ५.२९.२. **मन्दसानः**=स्तुतः सर्वस्य ज्ञाता सन् (इन्द्रः=सर्वानन्दस्वरूप ईश्वरः) प्र०—'ऋञ्जिवृधिमन्दि०' उ० २.८४. अनेन मन्देरसानच् प्रत्ययः १.१०.११. प्रशंसितः (इन्द्रः=राजा) २.११.३. कामयमानः (इन्द्रः=वैद्यः) २.११.१७. आनन्दितः (इन्द्रः=बलप्रदो विद्वज्जनः) २.११.१५. आनन्दन् (राजा) ४.१७.३. आनन्दस्वरूप आनन्दयिता (ईश्वरः) ४.२६.३. प्रशस्यमानः (इन्द्रः=सभापती राजा) २.३०.५. प्रशंसादियुक्तः (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्षः) १.१००.१४. **मन्दसानाः**=आनन्दन्तः (मानवाः) ५.६०.७. कामयमानाः (ऋभवः=प्राज्ञा जनाः) ४.३५.६. कामयमाना आनन्दितः सन्तः (मरुतः=विद्वांसो मनुष्याः) ७.३६.७. [मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोः 'ऋञ्जिवृधिमन्दि०' उ० २.८७. सूत्रेण असानच्]

मन्दानम् आनन्दन्तम् (इन्द्रं=राजानम्) २६.११. **मन्दानः**=स्तुवन् आनन्दन् (इन्द्रः=वैद्यराजः) ६.४३.४. प्रकाशितः (इन्द्रः=दुष्टविदारको राजा) ६.४४.१७. आनन्दयन् (इन्द्रः=राजा) १.८२.५. कामयमानो हर्षयन् वा (राजा) १.८०.६. प्राप्तः (इन्द्रः=सूर्यः) २.१९.२. [मदि स्तुतिमोदमदादिषु (भ्वा०) धातोः शानच्। आगमशासनस्यानित्यत्वान् मुक् न]

मन्दाना आनन्दप्रदौ (सभासेनाध्यक्षौ अध्यापकोपदेशकौ) प्र०—अत्र विभक्तेर्डादेशः ३३.७६. [मन्दानमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

मन्दिनम् कमनीयम् (हरिं=हयम्) १.१२१.८. स्तुत्यं जनम् १.१२१.१२. **मन्दिनः**=स्तोतुमर्हाः (रसाः) २.११.११. सर्वस्याऽऽनन्दस्य जनयितुः (राजजनस्य) २.११.२०. सुखं कामयमानाः (मनुष्याः) १.१३४.२. आनन्दयितारः (हंसासः=अश्वाः) ४.४५.४. **मन्दिना**=हर्षकारेण बलिना (परमेश्वरेण) १.५४.४. **मन्दिने**=आनन्दिन आनन्दप्रदाय (पुरुषाय) १.१०१.१. मन्दितुं मन्दयितुं शीलवते (इन्द्राय=ऐश्वर्यमिच्छवे जीवाय) १.९.२. **मन्दिभिः**=तज्ज्ञापकैर्हर्षकरैश्च गुणैः (स्तोमेभिः=स्तोत्रैः) १.९.३. [मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः। मन्दिने=मन्दी मन्दतेः स्तुतिकर्मणः नि० ४.२४.]

मन्दिनिस्पृशः आनन्दस्य स्पर्शयितारः (हंसासः=अश्वाः) ४.४५.४. [मन्दिन्-उपपदे नि+स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः क्विप्]

मन्दिम् मन्दन्ति हर्षयन्त्यस्मिँस्तम् (चक्रिं=यानशीघ्रचालनस्वभावम्) १.९.२. [मन्दप्राति० मत्वर्थे इनिः। नकारलोपश्छान्दसः]

मन्दिषीमहि शयीमहि ४.१४. [मदि स्तुत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

मन्दिष्ठ अतिशयेन मन्दिता तत्सम्बुद्धौ (सभाऽध्यक्ष) १.५१.११. [मदि स्तुतिमोदमदादिषु (भ्वा०) धातोः तृजन्तादतिशायन इष्ठन्। तृचो लोपः]

मन्दू आनन्दितावानन्दकारकौ (वायुसूर्यौ) प्र०—मन्दू इति पदनामसु पठितम् निघं० ४.१, १.६.७. [मदि स्तुतिमोदादिषु (भ्वा०) धातोः उः। मन्दू मदिष्णू नि० ४.१२.]

मन्दे आनन्देय आनन्दयामि वा ५.४.१. [मदि स्तुतिमोदमदादिषु (भ्वा०) धातोर्लट्]

मन्द्रजिह्वम् मन्द्रा आनन्दजनिका जिह्वा वाणी यस्य तम् (अग्निं=परमविद्वज्जनम्) ४.११.५. मन्द्रा मोद·

कारिणी जिह्वा यस्य तम् (अतिथिम्) १.१६०.१. मन्द्रा प्रशंसनीया जिह्वा यस्य तम् (राजानम्) ५.२५.२. मन्द्रा आनन्ददा कल्याणकारी जिह्वा यस्य तं विद्वांसम् ४.५०.१. **मन्द्रजिह्वः**=मन्द्रा आनन्दप्रदा कमनीया जिह्वा वाणी यस्य सः (सविता=विद्वान्राजा) ६.७१.४. [मन्द्रा-जिह्वा-पदयोः समासः। मन्द्रा=मदि स्तुतिमोदमदादिषु (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक्। ततष्टाप्। मन्द्रजिह्वं मन्दनजिह्वं मोदमानजिह्वमिति वा नि० ६.२३.]

मन्द्रजिह्वा मन्द्रा प्रशंसिता जिह्वा ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१४२.८. [मन्द्रा-जिह्वापदयोः समासः। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

मन्द्रतमम् अतिशयेन प्रशंसादिसत्कृतम् (विद्वज्जनम्) ३३.१३. अतिशयेनाऽऽनन्दकरम् (सज्जनम्) ६.४.७. **मन्द्रतमः**=अतिशयेनाऽऽनन्दयुक्तः (विद्वज्जनः) ५.२२.१. अतिशयेनाऽऽनन्दयिता (होताः=दातृ-जनः) ६.११.२. [मन्द्रप्राति० अतिशायने तमप्। मन्द्रः=मदि स्तुतिमोदादिषु (भ्वा०) धातोरौणा० रक्]

मन्द्रतरः अतिशयेनाऽऽह्लादकः (विद्वान् जनः) ३.७.९. [मन्द्रप्राति० अतिशायने तरप्]

मन्द्रम् प्रशंसनीयम् (सोमम्=ऐश्वर्यम्) ४.२६.६. आनन्दप्रदम् (अतिथिं=सत्योपदेशकं जनम्) ४.२.७. **मन्द्रस्य**=आनन्दत आनन्दयतः (वचनस्य) ६.३९.१. आनन्दप्रदस्य (विदुषः पुरुषस्य) ३.६.७. **मन्द्रः**=प्रशंसितः (होता=विद्यादाता जनः) १.१४१.१२. आनन्दितः (अग्निः=विद्यार्थिजनः) ५.११.३. आनन्दप्रद आनन्दितः (अग्निः=परमात्मा) ४.६.५. कमनीयो हर्षयिता (वेधाः=मेधाविजनः) ३.१४.१. आह्लादकः (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.१०.७. स्तुत आनन्दप्रदः (राजा) ३३.६४. स्तोतुमर्हो धार्मिकः (सज्जनः) प्र०—अत्र 'स्फायितञ्चिवञ्चि०' उ० २.१३. इति रक्प्रत्ययः १.२६.७. पदार्थप्रापकत्वेन हर्षहेतुः (राजदूतः) १.३६.६. **मन्द्राः**=आह्लादयितारः (उपदेशका जनाः) १.१२२.११. **मन्द्रैः**=प्रशंसितैः (हरिभिः=अश्वैः) २०.५३. आनन्दप्रदैः (हरिभिः=अश्वैः किरणैर्वा) ३.४५.१. [मदि स्तुत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. इति रक्]

मन्द्रया विज्ञानानन्दप्रदया (वाण्या) ५.२६.१. प्रशंसितयाऽऽनन्दप्रदया (जिह्वया=वाचा) ७.१६.९. आह्लादकामना विज्ञानप्रदया स्तुत्या १.७६.५. आनन्दसाधिकया (जिह्वया=सत्यप्रियया वाचा) १७.८. **मन्द्रा**=आनन्दप्रदा (अग्नेर्ज्वाला) १.१००.१६. **मन्द्राभिः**=आनन्दकारिकाभिः (जिह्वाभिः=वाग्भिः) ६.१६ २. [मन्द्रमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्। मन्द्रा वाङ्नाम निघं० १.११.]

मन्द्रा आनन्दप्रदानि हवींषि २७.१५ [मन्द्र-प्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

मन्धातारम् यानेन सद्यो दूरदेशं गमयितारं मेधाविनम् १.११२.१३. [मन्धाता मेधाविनाम निघं० २.१५.]

मन्म मन्तव्यं विज्ञानम् ७.१०.२. विज्ञानजनकं शास्त्रम् १.१३१.६. मन्तुं योग्यं ज्ञानम् १.१२९.६. ज्ञातुं योग्यम् (ज्ञानम्) १.१२९.६. ज्ञानोत्पादकं कारणम् ५.१२.२. मन्तव्यम् (अनेकविधं सुखम्) २.१९.८. मन्तव्यं वेदोक्तं ज्ञानम् १.१२०.३. **मन्मना**=येन मन्यते विजानाति तेन (मनसा=विज्ञानेन) १८.७५. मन्यते जानाति येन तेन (ज्ञानेन) १.१४०.१. विज्ञानवता (मनसा=चित्तेन) ३.१४.५. **मन्मभिः**=ज्ञानविशेषैः सह ३.११.८. मन्यन्ते जानन्ति यैस्तैः (भा०—गुणप्रकाशैः विद्यासाक्षात्कारैः) प्र०—अत्र सर्वधातुभ्यो मनिन् उ० ४.१४५. इति मनिन्-प्रत्ययः ३.५३. विद्वद्भिः ४.३.१५. विज्ञानैर्मन्यमानैर्वा (विप्रेभिः=विपश्चिद्भिः) १.१२७.२. **मन्मानि**=विज्ञानानि १.१६५.१३. मन्तव्यानि विज्ञानानि ७.६१.२. यानानि २९.२६. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोरौणादिको मनिन्। मन्म मनः नि० ६.२२. मन्म मननानि नि० १०.४२. मन्मभिः मननीयैः नि० १०.५.]

मन्मनः मम मनः १.१४०.११. [अस्मद्-मनस्-पदयोः समासः। 'प्रत्ययोत्तरपदयोश्च' इति अस्मदो मादेशः]

मन्मनाम् मन्यमानाम् (प्रज्ञाम्) १.१५१.६.

मन्मसाधनः यो मन्मानि विचारयुक्तानि कार्याणि साधयति सः (परमेश्वरः) १.९६.६. मन्म विज्ञानं साधनं यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१५१.७. [मन्म इति व्याख्यातम्। तदुपपदे साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्ल्युट्। 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तर्यपि ल्युट्]

मन्महे विजानीमः ५.५८.३. मन्यामहे याचामहे वा १.६२.१. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपो लुकि श्यनोऽप्यभावः। मन्महे याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९.]

मन्यत मन्येत ४.१७.४. मन्यसे ४.१७.१. **मन्यताम्**=विज्ञापयतु स्वीकुरुताम् ४.२०. स्वीकरोतु स्वीकार-

यति वा ५.६. **मन्यते**=जानाति मन्यते वा २३.३१. **मन्यथाः**=जानीयाः १.१२६.७. **मन्यसे**=जानासि १.१२६.५. **मन्यासै**=मन्यस्व ३४.८. **मन्ये**=जानीयाम् १.१२७.१. सत्करोमि १५.४७. विजानीयाम् १.१०४.७. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लङ् । छन्दसि अटोऽभावः । अन्यत्र लोटि लटि च रूपाणि । मन्यते इति कान्तिकर्मा निघं० २.६. मन्यते इति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. मन्यासै मन्यस्व नि० ११.२७.]

मन्यमानम् अभिमानिनम् (जनम्) ६.१६.१२. **मन्यमानस्य**=विज्ञातुः (विदुषो जनस्य) ३.३२.४. **मन्यमानः**=विजानन् (ईश्वरः) ३४.३५. सत्याभिमानी (राजा) ४.२६.२. जानने वाला (ईश्वर) सं० वि० १५६, ७.४१.२. अभिमानी (राज्यशासकः) २.२३.१२. **मन्यमानान्**=अभिमानिनः (शूरान् जनान्) १.१७८.५. **मन्यमानाः**=विजानन्तः (जनासः=युद्धवीरा जनाः) ३.५३.२३. **मन्यमानैः**=विद्याऽऽर्जवयुक्तैर्दुराग्रहरहितैर्मनुष्यैर्ज्ञानसम्पादकैः किरणैर्वा १.३३.६. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः शानच् । 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' इति शक्तौ चानश् वा]

मन्यवः क्रोधादयो व्यवहाराः ४.३१.६. **मन्यवे**=आन्तर्यक्रोधाय ३०.१४. न्यायव्यवस्थापालनहेतवे १.८०.११. शत्रूणामुपरि क्रोधाय १३.३६. क्रोधयुक्ताय वीराय १६.१. क्रोधात् प्र०—अत्र पञ्चम्यर्थे चतुर्थी ३३.६७. मन्यन्तेऽभिमानं कुर्वन्ति यस्मिन् स मन्युः क्रोधो दुष्टाचरणेषु दुष्टेषु तद्भावनाय प्र०—यजिमनि० उ० ३.२०. अनेन मन्यतेर्युच् प्रत्ययः २.३२. **मन्युना**=दुष्टाचारिणः पापं च प्रति वर्त्तमानेन क्रोधेन ३९.८. **मन्युभिः**=क्रोधादिभिः ७.५६.२२. **मन्युम्**=मननम् भा०—आज्ञाम् २१.५७. **मन्युः**=अभिमानः १८.४. दुष्टकाम और दुष्टों पर क्रोधकारी (ईश्वर) स० प्र० २४६, १६.६. दुष्टानामुपरि क्रोधकृत् (ईश्वरः) आर्याभि० २.६, १६.६. दुष्टाचारोपरि क्रोधकृत् (मनः) भा०—दुष्टेषु क्रोधाविष्करणम् २०.६. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'यजिमनिशुन्धि०' उ० ३.२०. सूत्रेण युच् । मन्युरिति क्रोधनाम निघं० २.१३. मनधातोर्दीप्त्यर्थाद्वा युच् । मन्यते कान्तिकर्मा निघं० २.६. मन्युः=मन्यतेर्दीप्तिकर्मणः क्रोधकर्मणो वधकर्मणो वा मन्यन्त्यस्माद् इषवः नि० १०.२६. पशूनां वा एष मन्युर्यद्वराहः तै० १.७.६.४.]

मन्याभिः विज्ञानक्रियाभिः २५.२. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'वा छन्दसि' इति स्त्रियां शः । ततष्टाप्]

मन्युमत्तमः प्रशंसितो मन्युः क्रोधो यस्य सोऽतिशयितः (राजा) ४.३०.७. [मन्युप्राति० प्रशंसायां मतुप् । ततोऽतिशायने तमप्]

मन्युमीः यो मन्युं मीनाति हिनस्ति सः (इन्द्रः=सेनापतिः) १.१००.६. यो मन्युं मिनोति सः (जगदीश्वरो विद्वान् वा) २.२३.४. ['मन्यु' इत्युपपदे मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

मन्ये सत्करोमि १५.४७. विजानीयाम् १.१०४.७. **मन्येथाम्**=विजानीतम् ३.५८.४. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लट् । मन्यते इति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

मन्वत मन्यन्ते ४.१.१६. [मनु अवबोधने (तना०) धातोर्लङ् । अडभावश्छान्दसः]

मन्वानः मननशीलः (विद्वत्सङ्गप्रियो जनः) ५.५२.१५. [मनु अवबोधने (तना०) धातोस्ताच्छील्ये चानश्]

ममकस्य मादृशस्य (पितुः=जनकस्य) प्र०—अत्र बाहुलकान्मन्धातोर्डमकन् प्रत्ययः १.३१.११. **ममकाय**=ममाऽयं ममकस्तस्मै (सूनवे=औरसाय विद्यापुत्राय वा) प्र०—अत्र 'संज्ञापूर्वको विधिरनित्यः अ० ६.४.१४६. इति वृद्ध्यभावः १.३४.६. [अस्मत्प्राति० शैषिकेऽण्-प्रत्यये 'तवकममकावेकवचने' अ० ४.३.३. सूत्रेण ममकादेशः । वृद्धयभावश्छान्दसः । 'संज्ञापूर्वको विधिरनित्यः' इति वा वृद्धिर्न । अन्यत्र मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० उमकन्]

ममत् प्रमादयन्ती (युवतिः=प्रमदा) ४.१८.८. हर्षन् (विरोधिजनः) ४.१८.६. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन श्लुः]

ममतुः परिमीयेते ३.३२.७. [माङ् माने (जु०) धातोर्लिट् । वचनव्यत्ययः । परस्मैपदं च व्यत्ययेन]

ममत्तु आनन्दतु ३.५१.११. आनन्दयतु ७.२२.२. हर्षयतु १.१२२.३. आनन्द प्र०—अत्र विकरणस्य श्लुः १.१२१.६. **ममत्सि**=हर्षयसि ४.२१.६. **ममदन्**=हर्षन्ति ४.४२.६. **ममदः**=आनन्द ७.२४.१. **ममन्द**=मन्दते कामयते २.३३.६. **ममाद**=हृष्येत् २.२२.१. हर्षति ६.४७.२. हर्षयति ७.२६.१. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः । शपोऽभावे तत्स्थानीयश्यनोऽप्यभावः । अन्यत्र लटि लङि लिटि चं रूपाणि । 'ममन्द' प्रयोगे मदि स्तुतिमोदमदादिषु (भ्वा०) धातोर्लिटि व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ममन्दुषी प्रशंसनीयाऽऽनन्दकरी (स्त्री) ५.६१.६.

[मदि स्तुतिमोदादिषु (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसु । ततो ङीप्]

ममहन्त सत्कुर्वन्तु प्र०—-अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदैर्घ्यम् ७.५२.२. **ममहन्ताम्**=वर्धन्ताम् प्र०—व्यत्ययेनाऽत्र शपः श्लुः १.९४.१६. सत्कारेण वर्धयन्ताम् १.१००.१९. सत्कारहेतवो भवन्तु १.९६.९. **ममहस्व**=भृशं सत्कुरु ३.५२.६. **ममहे**=मह्यति प्र०—अत्र 'मह पूजायाम्' इत्यस्माल्लटि 'बहुलं छन्दसि' इति श्लुर्विकरणो व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदं तुजादित्वाद् दीर्घः १.६५.१३. सत्कुर्याम् ५.२७.१. **ममुः**=मानं कुर्वन्ति १.११०.५. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन श्लुरात्मनेपदञ्च । अन्यत्र लोटि लटि च रूपाणि]

ममाते मिमाते परिच्छिन्तः प्र०—-अत्र 'बहुलं छन्दसि' इत्यभ्यासेत्वप्रतिषेधः ३.३२.७. **ममिरे**=निर्मिमते ७.२१.७. मिमीते १.५७.५. व्याप्नुवन्ति ५.५५.२. निर्मिमीरन् ३.३८.३. मिनुयुः २९.१९. **ममे**=सृजति ५.८५.५. मिमीते १.५७.५. मापयति १.१६०.४. [माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लट् । 'वा छन्दसी' त्यभ्यासेत्वप्रतिषेधः । अन्यत्र लिट्]

ममृड्युः सुखयन्ति ४.१८.८. [मृड सुखने (तुदा०) धातोर्लिटि छान्दसं रूपम्]

ममृवान् मृतः सन् १.११६.३. योगक्षेमविरहः ऋ० भू० १८९, १.११६.३. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

मम्नाते अभ्यासाते ७.३१.७. [म्ना अभ्यासे (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । कर्मणि वा रूपम्]

मम्रुषीः=म्रियमाणाः (स्त्रियः) १.१४०.८. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोर्लिटः क्वसुः । ततः स्त्रियां ङीप्]

मय इव सुखमिव १.१७५.६. [मय-इवपदयोः समासः]

मयः ऐहिकं सुखम् १८.८. सुखकारी (अग्निः=भौतिकः सूर्यरूपः) २२.१९. सुखं सुखविशेषो वा ७.४७. [मय इति सुखनाम निघं० ३.६. यद्वै शिवं तन्मयः तै० २.२.५.५.]

मयन्दम् यन्मयं सुखं ददाति तम् (छन्दः=विद्याधर्मशमादिकर्म) १४.९. ['मयम्' इत्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः । मयन्दम्=यद्वा अनिरुक्तं तन्मयन्दम् श० ८.२.३.१३.]

मयस्कराय यः सर्वेषां प्राणिनां मयः सुखं करोति तस्मै (परमेश्वराय सेनाधीशाय वा) १६.४१. मन, इन्द्रिय, प्राण और आत्मा को सुख करने वाले (ईश्वर) के लिए आर्याभि० २.२६, १६.४१. सुखकारकाय पं० वि० [मयस्-उपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु' अ० ३.२.२०. सूत्रेण टः । मयस् सुखनाम निघं० ३.६.]

मयुम् जाङ्गलम् (पशुं=चतुष्पादं गवादिकम्) १३.४७. शस्यादिहिंसकम् पशुम् १३.४७. **मयुः**=किन्नरः २४.३१. [डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोः 'भृमृशीङ्तॄ०' उ० १.७. सूत्रेण उः]

मयूखैः ज्ञानप्रकाशादिगुणैः रश्मिभिर्वा प्र०—मयूखा इति रश्मिनामसु पठितम् निघं० १.५, ५.१६. [माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः 'माङ ऊखो मय च' उ० ५.२५. सूत्रेण ऊखो मयादेशश्च । मयूखाः रश्मिनाम निघं० १.५.]

मयूररोमभिः मयूराणां लोमानीव लोमानि येषान्तैः (हरिभिः=अश्वैः किरणैर्वा) ३.४५.१. मयूरस्य रोमाणीव रोमा येषान्तैः (हरिभिः=अश्वैः) २०.५३. [मयूररोमन्-पदयोः समासः]

मयूर्यः मयूराणां स्त्रियः १.१९१.४. [मयूरप्राति० स्त्रियां ङीष् । प्रथमाबहुवचने रूपम् । मयूरः=मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'मीनातेरूरन्' उ० १.६७. सूत्रेण ऊरन्]

मयोभवाय मयः सुखं भवति यस्मात्तस्मै (परमेश्वराय सेनाधीशाय वा) १६.४१. सर्वोत्तमसौख्यप्रदाय (ईश्वराय) पं० वि० सांसारिक सुख के करने वाले (ईश्वर) के लिए आर्याभि० २.२६, ३६.४१. [मयस्उपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप्]

मयोभु मयः सुखं भवति यस्मात्तत् (सज्ज्ञानम्) २.२७.५. परमसुखं भवति यस्मात्तत् (भेषजम्=औषधम्) १.८९.४. सुखं भावुकम् (ब्रह्म=जगदीश्वरम्) ५.४२.२. सुखकारि (भेषजम्=औषधम्) २५.१७. **मयोभुना**=यो मयांसि सुखानि भावयति तेन (राया=धनेन) ३.१६.६. [मयस्-उपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ३.२.१८०. वा० सूत्रेण डुः]

मयोभु सुखं भावुकानि (भेषजा=रोगनिवारकौषधानि) २.३३.१३. ['मयोभु' इति व्याख्यातम् । ततः शेः 'सुपां सुलुक्०' इति लुक्]

मयोभुवम् सुखकारकम् (देवं=विद्वांसं जनम्) १.१३८.२. सुखं भावुकम् (विदुषं जनम्) १.१३८.१. **मयोभुवः**=सुखं भावुकाः (मनुष्याः) ५.५८.२. सुख-

कारिकाः (ऊतयः=रक्षणादिक्रियाः) १.६१.६. सुखस्य भावयितारः (वैद्याः) १.८६.४. या मयः सुखं भावयन्ति ताः (आपः=सत्स्त्रियः) प्र०—मय इति सुखनाम निघं० ३.६, ३६.१४. **मयोभुवा**=सुखं भावुकेन (अवसा=अन्नादिना) ६.७६.५. सुखसाधकेन (अवसा=रक्षणादिना) ५.७७.५. या मयः सुखं भावयति तया सत्यप्रियमङ्गलकारिण्या (वाचा=वेदवाण्या) प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः 'क्विप् चे' ति क्विप् ३.४७. **मयोभूः**=मयः सुखं भावयन् (स्वस्तिगव्यूतिः=राजा) ११.१५. यो मय आनन्दं भावयति सः भा०—सुखकारी (विद्वज्जनः) १८.४५. सुखं भावुकः (विद्वज्जनः) १८.४५. मयः सुखं भावयति या सा (ऊतिः=नीतिः) १.११७.१६. [मयस्-उपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् । मयोभुवः सुखभुवः नि० ६.२५.]

मयोभुवा सुखं भावयितारौ (अश्विनौ=वाय्वग्नी) १.६२.१८. सुखं भावुकौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.४२.१८. ['मयोभू' रिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

मयोभुः सुखं भावुकः (राजा) ६.५२.६. [मयस्-उपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्डुः]

मयोभून् मयः सुखं भावुकान् (सुवीरान्) १.८४.१६. [मयस्-उपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् । मयोभून्=सुखभूनि नि० १३.३६.]

मराति म्रियते १.१६१.१०. **मराम**=म्रियेमहि १.१६१.१०. **मरामहे**=अकालमृत्युं क्षणभङ्गुर-देहे प्राप्नुयाम प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययः १.६१.६. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शप् परस्मैपदं च । अन्यत्र लडपि । मरते=म्रियते नि० ११.३८.]

मरीचयः किरणाः प्र०—'मृकणिभ्यामीचिः' उ० ४.७०, १६.३६. **मरीचीः**=किरणान् २५.६. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोः 'मृकणिभ्यामीचिः' उ० ४.७०. सूत्रेण ईचिः । मरीचिः एता वाऽआपः स्वराजो यन्मरीचयः श० ५.३.४.२१. सूर्यस्य मरीचिः (पत्नी) तै० आ० ३.६.२.]

मरीचिपेभ्यः रश्मिभ्यः ७.६. किरणरक्षितृभ्यः (देवेभ्यः=वाय्वादिभ्यः) इव ७.३. ['मरीचि' इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः । मरीचिपाः रश्मिनाम निघं० १.५.]

मरुतः वायवः प्र०—'मृग्रोरुति' उ० १.६४. इति मृङ्-धातोरुतिप्रत्ययः मरुत इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.५. अनेन गमनागमनक्रियाप्रापका वायवो गृह्यन्ते १.१५.२. सभाद्यध्यक्षादयो मनुष्याः १.८७.२. मरणधर्माणः (मर्याः=मनुष्याः) ३.५४.१३. विद्वांसो मनुष्याः ५.५८.६. सुशिक्षिता मानवाः ५.५८.४. मननशीलाः (मनुष्याः) ५.५६.४. मरणधर्माणो मनुष्यास्तत्सम्बुद्धौ १.८५.१२. पुरुषार्थिनो मनुष्याः ५.५४.१४. शिल्पिनो मनुष्याः ५.६३.५. विद्वत्तमाः (जनाः) १.१६५.१५. मरुद्वत्सुचेष्टाः (जनाः) १.१६६.६. महाबलिष्ठाः (जनाः) १.१६७.६. ब्रह्माण्डस्था अन्ये वायवः १८.१७. हिरण्यानि रूपाण्यृत्विजो विद्वांसश्च (गृहस्थाः) ८.३१. मरणधर्मयुक्ताः (विद्वांसो जनाः) २.३४.१. मरणधर्मस्य (देवस्य=विदुषो जनस्य) ६.४८.२०. उत्तमा मनुष्याः ६.६६.८. परीक्षका विपश्चितः १.८६.२. प्राणादयः १.५२.६. प्राण इव प्रियाः सभासदः १.१७१.४. प्राणवायुवत्प्रियाः (विद्वज्जनाः) २.३४.७. वायव इव व्याप्तविद्या मनुष्याः ७.५७.७. वायव इव वेगबलयुक्ताः (धार्मिका विद्वज्जनाः) ३.३२.४. वायुवद् बलिष्ठाः शूरवीराः १७.४०. पवनाः १.१०७.२. सूक्ष्माऽवयवाः १.१६१.१४. वायव इव ज्ञानयोगेन शीघ्रं गन्तारो मनुष्याः १.८५.६. युवत्या सेविता वायवः १.६४.१३. वायुवच्छीघ्रगमनकारिणो जनाः १.३८.३. योगाभ्यासिनो व्यवहारसाधका वा जनाः १.३८.११. प्राण इव नेतारः (मनुष्याः) ७.५६.१. शरीरत्यागहेतवः (वायवः) १.६४.६. वायुविद्यावेत्तारः (जनाः) १.१६६.५. प्राण इव प्रियाचरणाः (मनुष्याः) ५.५५.४. मरणशीलाः (मनुष्याः) ५.५७.८. ज्ञानक्रियानिमित्तेन शिल्पव्यवहारप्रापकान् (वायून्) प्र०—मरुत इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.५. अनेन प्राप्त्यर्थो गृह्यते १.२३.१०. मननशीलान् मनुष्यान् ३३.४६. विदुषोऽतिथीन् अ०—ऋत्विजः भा०—यज्ञसम्पादका मनुष्याः ३.४४. **मरुताम्**=विदुषाम् (जनानाम्) १८.४५. मनुष्याणां वायूनां वा ५.५३.१. पशूनाम् १४.२५. ऋतावृतौ यजतां विदुषाम् १.११४.६. प्राणानामृत्विजां वा १०.२३. पूर्णविद्याबलयुक्तानां पुरुषाणाम् १७.४१. प्राणादि पवनों के आर्याभि० १.२७, ऋ० ५.३.२७.२५. **मरुत्सु**=मनुष्येषु ४.१.३. स्तावकेषु (जनेषु) १.१४२.८. **मरुद्भिः**=वायुभिरिव स्वमित्रैः सह ३.४७.४. प्राणैरिव वर्त्तमानैः श्रेष्ठैर्जनैः सह १.१३६.७. दिव्यगुणैर्देवैः सह १.१६.६. धनञ्जयाख्यैः सूक्ष्मैः १.१६.८. अनेकविधैर्निमित्तभूतैर्वायुभिः १.१६.६. उपर्यधोगमनशीलैर्वायुभिः १.१६.७. प्राप्तहेतुभिः सह १.१६.५. विद्वद्भिः पवनैर्वा १.१०७.२. **मरुद्भ्यः**=पश्वादिभ्यः प्रजाभ्यः ३०.५. वायुवद् वर्त्तमानेभ्यो मनुष्येभ्यः २४.१६. वायूनामाधारबलाकर्षणेभ्यः १.८५.८. मनुष्येभ्यः

५.५.११. प्राण इव प्रियेभ्यः (भा०—विद्वज्जनेभ्यः) २४.१६. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोः 'मृग्रोरुतिः' उ० १.९४. सूत्रेण उतिः। मरुतः ऋत्विङ्नाम निघं० ३.१८. पदनाम निघं० ५.५. मरुत् हिरण्यनाम निघं० १.२. मरुत् रूपनाम निघं० ३.७. मरुतो मितराविणो वा मितरोचिनो वा महद् द्रवन्तीति वा नि० ११.१४. मरुतो रश्मयः तां० १४.१२.९. युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस इति युञ्जतु त्वा देवा इत्येवैतदाह श० ५.१.४.९. गणशो हि मरुतः तां० १९.१४.२. मरुतो गणानां पतयः तै० ३.११.४.२. सप्त सप्त हि मारुता गणाः श० ९.३.१.२५. मारुतः सप्तकपालः (पुरोडाशः) तां० २१.१०.२३. मरुतो वै देवानां भूयिष्ठाः तां० १४.१२.१. मरुतो ह वै देवविशो ऽन्तरिक्षभाजना ईश्वराः कौ० ७.८. अहुतादो वै देवानां मरुतो विट् श० ४.५.२.१६. मरुतो वै देवानामपराजितमायतनम् तै० १.४.६.२. अप्सु वै मरुतः श्रितः गो० उ० १.२२. आपो वै मरुतः ऐ० ६.३०. पंक्तिश्छन्दो मरुतो देवताष्ठीवन्तः श० १०.३.२.१०. मरुत् स्तोमो वा एषः (षोडशस्तोमः) तां० १७.१.३. ओजो वै वीर्यं मरुतः जै० ३.३०९. कीनाशः (कृषौ कर्मकराः) आसन्मरुतः सुदानवः तै० २.४.८.७. चत्वारिंशन्मरुतो देवाः जै० १.३४. मरुतो गणानां पतयः तै० ३.११.४.२ वीर्यं मरुतः जै० १.३०३.]

मरुत्तमा अतिशयेन विद्वद्युक्तौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.२. [मरुत्प्राति० अतिशायने तमप्। ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

मरुत्वतः प्रशंसितविद्वद्युक्तस्य (राज्ञः) ५.४२.६. **मरुत्वते**=मरुतो बहवो मनुष्याः कार्यसाधका विद्यन्ते यस्य तस्मै (शिल्पिजनाय) ३.३५.७. प्रशस्तानि मरुदस्त्राणि विद्यन्ते यत्र तस्मै (इन्द्राय=रणाय) ७.३८. प्रजासम्बन्धाय प्र०—अत्र सम्बन्धे मतुप् 'झयः' इति मस्य वत्वम् ७.३५. प्रशंसितप्रजायुक्ताय (इन्द्राय=सभापतये) ७.३६. प्रजापालनसम्बद्धाय (राज्यैश्वर्याय) ७.३८. प्रशंसिता मनुष्या यस्मिन् तस्मै (विद्युद्रूपाग्नये) ५.८७.१. **मरुत्वन्तम्**=प्रशस्तप्रजायुक्तम् (इन्द्रं=सम्राजं प्रजापतिम्) ७.३६. प्रशस्ता मरुतो मनुष्या विद्यन्ते यस्य तम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यवन्तं राजानम्) ३.४७.५. सर्वप्राणियुक्तमृत्विग्युक्तं वा (इन्द्रं=जगदीश्वरं सभाध्यक्षं वा) १.१०१.३. प्रशस्ता मरुतो विद्यावन्त ऋत्विजोऽध्यापका विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (अ०—अध्यापकम्) १.१०१.१. मरुतः सम्बन्धिनो विद्यन्ते यस्य तम् (इन्द्रं=विद्युतम्) प्र०—अत्र सम्बन्धार्थे मतुप् 'तसौ मत्वर्थे' अ० १.४.१९. इति भत्वाज्जश्त्वाऽभावः १.२३.७. **मरुत्वः**!=प्रशस्तविद्यायुक्त (विद्वज्जन) १.१०१.८. प्रशंसितधनयुक्त (इन्द्र=राजन्) ३.५१.७. मरुतः प्रशस्ता धर्मसम्बद्धाः प्रजा यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सम्राट्) ७.३५. **मरुत्वान्**=मरुतो बहवो वायवो विद्यन्ते यस्मिन् सः (सूर्यः) ६.४७.५. प्रशस्ता मरुतः प्रजाः सेना वा विद्यन्ते यस्य सः (इन्द्रः=शत्रुजित् सेनापतिः) ७.३८. प्रशस्तवायुमान् (इन्द्रः=सूर्यः) १.८०.११. यस्य सृष्टौ सेनायां वा प्रशस्ता वायवो मनुष्या वा विद्यन्ते सः (इन्द्रः=परमेश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.१००.२. प्रशस्तरूपवान् (इन्द्रः=विद्युदादिरूपोऽग्निः) ३.४.६. मनुष्यादिबहुप्रजायुक्तः (वैद्यो जनः) २.३३.६. अत्यन्त बलवान् (इन्द्रः=परमात्मा) आर्याभि० १.३२. ऋ० १.७.१०.१५. [मरुत्-प्राति० सम्बन्धार्थे प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुप्। 'झयः' इति मतुपो मस्य वत्वम्। 'तसौ मत्वर्थे' इति भत्वाज्जश्त्वं पदकार्यं न भवति। मरुत्वान्=मरुद्भिस्तद्वान् नि० ४.८.]

मरुत्वती प्रशस्तरूपयुक्ता (राज्ञी) २.३०.८. प्रशस्ता मरुतो मनुष्या विद्यन्ते यस्यां सा (वाणी=सकलविद्यायुक्ता वाक्) ७.३१.८. **मरुत्वतीः**=मनुष्यादिप्रजासम्बन्धिनीः (अपः=जलानि) १.८०.४. [मरुत्-प्राति० मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप्]

मरुत्वतीयम् बहवो मरुतो व्याख्यातारो मनुष्या विद्यन्ते यस्मिँस्तत्र भवम् (उक्थं=वाच्यम्) १५.१२. [मरुत्-प्राति० भूम्न्यर्थे=मतुप्। ततः 'सास्य देवता' इत्यर्थे 'द्यावापृथिवी शुनासीर०' अ० ४.२.३२. सूत्रेण छः। छस्येयादेशः। छन्दसि भवार्थेऽपि]

मरुत्वतीयाः मरुतां सम्बन्धिनो व्यवहाराः १८.२०. [मरुत्वत्-प्राति० भवार्थे छः। मरुद्वतीयम्—(शस्त्रम्) पवमानोक्थं वा एतद् यन् मरुत्वतीयम् ऐ० ८.१. तदेतद् वार्त्रघ्नमेवोक्थं यन्मरुत्वतीयमेतेन इन्द्रो वृत्रमहन्। कौ० १५.२. तदेतत् पृतनाजिदेव सूक्तं यन्मरुत्वतीयमेतेन ह इन्द्रः पृतना अजयत् कौ० १५.३. वज्रो वै मरुत्वतीयाः (ग्रहाः) मै० ४.६.८.]

मरुत्स्तोत्रस्य मरुतां वेगादिगुणैः स्तुतस्य (वृजनस्य=व्यवहारस्य) १.१०१.११. [मरुत्-स्तोत्रपदयोः समासः]

मरुद्गण मरुतां मनुष्याणां वायूनां वा गणः समूहो वा यस्य तत्सम्बुद्धौ भा०—न्यायाधीश (इन्द्र=राजन्) ३३.९५. **मरुद्गणः**=मरुतामुत्तमानां मनुष्याणां गणः समूहो यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ६.५२.११. **मरुद्गणाः**=मरुतां मनुष्याणां समूहाः २.४१.१५. [मरुत्-गणपदयोः समासः]

मरुद्वृधः मनुष्यैर्वर्धमानान् (भा०—धनैश्वर्योपायान्) ३.१३.६. [मरुदुपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। मरुद्वृधः=सर्वा नद्यः, मरुत एना वर्धयन्ति नि० ९.२४.]

मरुन्नेत्राः मरुति ब्रह्माण्डस्थे वायौ नेत्रं नयनं येषां ते (देवाः=सर्वेभ्यः सुखदातारो विद्वज्जनाः) ९.३६. **मरुन्नेत्रेभ्यः**=मरुतामृत्विजां प्रजास्थानां सज्जनानां वा नेत्रमिव नायकत्वं येषां तेभ्यः (देवेभ्यः=दिव्यन्याय-प्रकाशकेभ्यो विद्वद्भ्यः) ९.३५. [मरुत्-नेत्रपदयोः समासः। मरुत इति व्याख्यातम्। नेत्रम्=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोरौणा० ष्ट्रन्। ये देवाः पश्चात्सदो मरुन्नेत्राः मै० २.६.३.]

मर्कटः वानरः २४.३०. [मर्क इति सौत्रो धातुः। ततो बाहु० औणा० अटन्]

मर्कः मृत्युनिमित्तः खल्वन्यायकारी (दुर्जनः) ७.१८. मरणदुःखदो दुर्नयः ७.१७. **मर्काय**=मृत्युनिमित्ताय वायवे अ०—दुष्टानां प्रशमनाय श्रेष्ठव्यवहारस्थापनाय ७.१६. [मर्च इति सौत्रो धातुः चेष्टायामर्थे। ततः 'इण्-भीकापा०' उ० ३.४३. इति कन्]

मर्चयति शब्दयति १.१४७.५. उच्चरति १.१४७.४. बाधते ५.३.७. **मर्चयात्**=सुमार्गे नयेत् २.२३.७. [मर्च शब्दार्थे (चुरा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लिङ्]

मर्जयध्वम् शोधयत ७.२.४. **मर्जयन्त**=शोधयन्तु ५.३.३. शोधयन्ति १.६१.२. घर्षणादिना शोधयन्तु ७.३.५. **मर्जयेम**=शोधयेम ४.४.८. [मृजू शौचालङ्करणयोः (चुरा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लङि लिङि च रूपाणि। वृद्ध्यभावश्छान्दसः]

मर्जयन्तः शोधयन्तः (गोतमासो जनाः) १.६०.५. [मृजू शौचालंकरणयोः (चुरा०) धातोः शतृ। वृद्ध्यभावः। मर्जयन्त गमयन्त नि० १२.४२.]

मर्डिता सुखप्रदाता (धार्मिको मनुष्यः) १.८४.१९. सुखयिता (इन्द्रः=ईश्वरः) ४.१७.१७. **मर्डितारम्**=सुखकरम् (इन्द्रं=राजानम्) ४.१८.१३. [मृड सुखने (तुदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। मर्डिता सुखयिता नि० १३.२८.]

मर्त्त मरणधर्मयुक्त (मनुष्य) ५.६६.१. **मर्त्तम्**=मनुष्यम् १.१३६.५. **मर्त्तस्य**=मरणधर्मसहितस्य प्राणिजातस्य १.९२.१०. मननशीलस्य नरस्य ६.२८.४. **मर्त्ताः**=मनुष्यः ४.८. **मर्त्ताः**=अविद्वांसो मनुष्याः ४.१७.१९. मरणधर्माणो मनुष्याः ३.९.६. साधारणमनुष्याः १.१००.१५. **मर्त्तेषु**=मरणधर्मेषु कार्येषु ५.१८.१. [मर्त्त इति मनुष्यनाम निघं० २.३. मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोः 'हसिमृग्रिण्०' उ० ३.८६. सूत्रेण तन्]

मर्त्तभोजनम् मर्त्तेभ्यो मनुष्येभ्यो भोजनं मर्त्तानां पालनं वा १.८१.६. मर्त्तेभ्य इदं भोजनम् ७.३८.२. मर्त्तानां मनुष्याणां भोज्यं वस्तु १.११४.६. [मर्त्त-भोजन-पदयोः समासः। भोजनम्=भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोर्ल्युट्]

मर्त्तभोजना मर्त्तानां मनुष्याणां भोजनानि पालनानि ७.१६.४. [मर्त्त-भोजनपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि]

मर्त्तासः शरीरयोगेन जन्म-मरणसहिताः (मनुष्याः) २.१.१४. मननशीला मनुष्याः ३.९.१. मरणधर्माणः (मनुष्याः) १.१०५.१६. [मर्त्तप्राति० प्रथमाबहुवचने जसोऽसुक्]

मर्त्यकृतम् साधारणमनुष्याऽऽचरितम् (एनः=दुष्टाचरणम्) ८.२७. मर्त्यैराचरितम् (एनः=पापम्) २०.१८. अनित्यदेहेन निष्पादितम् भा०—अज्ञानादनुष्ठितम् (एनः=पापम्) ३.४८. [मर्त्य-कृतपदयोः समासः]

मर्त्यम् प्रजास्थं मनुष्यम् ६.३७. पृथिव्यात्मकं लोकम् ऋ० भू० १४२, ३३.४३. मनुष्य-लोकम् ऋ० भू० १४२, ३३.४३. मनुष्यशरीरधारिणम् (शत्रुम्) ५.३५.५. नाशसहितं कार्य्यम् ३४.३१. मनुष्यादिप्राणिजातम् ३३ ४३. विद्वांसं मनुष्यम् १.१८.५. कर्म्म, प्रलयप्राप्तिव्यवस्थया कालव्यवस्थया वा मरणधर्मयुक्तं प्राणिनम् १.३५.२. **मर्त्यस्य**=साधारणमनुष्यस्य ६.४८.२०. मरणधर्मकस्य विश्वस्य मनुष्यस्य ऋ० भू० १३०, ३१.१७. अविदुषः (पुरुषस्य) २.७.२. पीडितस्य मनुष्यस्य मर्त्तस्य ७.२५.३. **मर्त्यः**=सुशिक्षितो धार्मिको भृत्यो मनुष्यः १.८३.१. अविद्वान् मनुष्यः १.१९.२. **मर्त्यान्**=मरणधर्मान् मनुष्यादीन् ४.५८.३. **मर्त्यानाम्**=अविदुषाम् (जनानाम्) ४.१२.५. मरणधर्माणां शत्रूणाम् ५.४.१. विद्याविज्ञानरहितानां मनुष्याणाम् ऋ० भू० २०५, १९.४७. **मर्त्याय**=मरणधर्माय (मनुष्याय) ४.१२.३. मनुष्यसुखाय ५.४१.७. नराय पतये १.१२४.१२. मनुष्य के लिए सं० वि० १०५, ५.४१.७. **मर्त्ये**=मर्त्यलोके ३.२.९. **मर्त्येन**=मरणधर्मेण शरीरेण १.१६४.३०. मरणधर्मसहितेन शरीरादिना १.१६४.३८. **मर्त्येषु**=नश्यमानेषु पदार्थेषु १.७७.१. मरणधर्मेषु मनुष्येषु कार्येषु वा ४.१६. **मर्त्यैः**=अविद्वद्भिर्मनुष्यैः २०.१८. मृत्युधर्मैः (मनुष्यैः) ८.२७. मरणधर्मैः

शरीरैः ३.४८. [मर्त्य इति मनुष्यनाम निघं० २.३. अनात्मा हि मर्त्यः श० २.२.२.८. मर्त्यान्=मनुष्यान् नि० १३.७.]

मर्त्यत्रा मर्त्येषूपदेशकाः (जनाः) ७.५२.१. मर्त्येषु मनुष्येषु ६.६२.८. [मर्त्यप्राति० 'देवमनुष्यपुरुषपुरुमर्त्येभ्यः०' अ० ५.४.५६. सूत्रेण सप्तम्यन्तात् त्रा प्रत्ययः]

मर्त्यासः मनुष्याः १.११३.११. [मर्त्यप्राति० प्रथमा बहुवचने जसोऽसुक्]

मर्त्येषितः मर्त्यैः सेनास्थैरितरैश्चेषितो विजयः १.३९.८. [मर्त्य-इषितपदयोः समासः। इषितः=इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः क्तः]

मर्धतः हिंसतः ६.६०.४. **मर्धति**=हिंसति ७.५६.४. **मर्धन्ति**=योधयन्ति १.१६६.२. हिंसन्ति ३.५४.१४. **मर्धिषत्**=अभिकाङ्क्षेत् ७.३२.५. **मर्धिष्टम्**=हिंस्तम् ३३.८८. **मर्धीः**=अभिकाङ्क्षेः ७.२५.४. उन्दितान् कुरु ४.२०.१० [मृधु उन्दने (भ्वा०) धातोर्लेट्। धातूनामनेकार्थकत्वादत्र हिंसने। अन्यत्र लेट् लुङ् च]

मर्म जीवननिमित्तम् १.६१.६. गुह्याऽवयवम् ५.३२.५. यस्मिन् प्रहते म्रियते तत् ३.३२.४. **मर्माणि**=शरीरस्थान् जीवनहेतूनवयवान् ६.७५.१८. यानि ताडितानि सन्ति सद्यो मरणजनकान्यङ्गानि १७.४९. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोर्मनिन्। 'कृतो बहुलं वे' ति वार्तिकेन कर्त्तृभिन्ने कारकेऽपि मनिन्]

मर्मर्त्तु भृशं प्राप्नोतु २.२३.६. मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लोट्]

मर्मृजत शुद्धा भूत्वा शोधयन्ति ४.१.१४. **मर्मृजतः**=भृशं शोधयतः ४.२.१९. **मर्मृजन्त**=अत्यन्तं मार्जयन्तु शोधयन्तु १.१३५.५. [मृजू शौचालंकरणयोः (चुरा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लोट्। अन्यत्र लटि लङि च रूपाणि]

मर्मृजेन्यः अत्यन्तमलङ्करणीयः (विद्वान् राजा) १.१८९.७. भृशं शोधकः (अग्निः) २.१०.१. [मृजू शौचालंकरणयोः (चुरा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् कृत्यार्थे केन्यः]

मर्मृज्मा भृशं शुद्धः शोधयिता (अग्निः=वैद्यराजो विद्वान्) ३.१८.४. [मृजू शौचालंकरणयोः (चुरा०) धातोर्यङ्लुगन्तान् मनिन्]

मर्मृज्यते अतिशयेन शुद्ध्यते १.९५.८. **मर्मृज्यन्ते**=शोधयन्ति ४.१५.६. [मृजू शौचालंकरणयोः (चुरा०) धातोः क्रियासमभिहारे यङन्ताल् लट्]

मर्मृज्यमानाः भृशं शुद्धाः (युवतयः=स्त्रियः) २.३५.४. उत्तम ब्रह्मचर्यव्रत और सद्विद्याओं से अत्यन्त युक्त (युवतियां) सं० वि० १०४, २.३५.४. [मृजू शौचालंकरणयोः (चुरा०) धातोर्यङन्ताच्छानच्। ततः स्त्रियां टाप्]

मर्मृशत् अतिशयेन सहमानः (सज्जनः) १.१४०.५. भृशं विचारयन् (विद्वज्जनः) ३.३८.१. [मृश आमर्शने (तुदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छतृ]

मर्य इव यथा मनुष्यः १.९१.१३. प्राप्त होने वाले पति के समान सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३७. **मर्या इव**=यथा विद्वांसो मनुष्याः ५.५९.३. [मर्य-इवपदयोः समासः]

मर्यः मनुष्यः ४.२०.५. मरणधर्मा मनुष्यः १.१६३.८. पतिर्मनुष्यः १.११५.२. **मर्याः**=मरणधर्माणः (नरः=नेतारो जनाः) ५.५३.३. मरणधर्मशीला मनुष्यास्तत्सम्बोधने प्र०—मर्या इति मनुष्यनामसु पठितम् निघं० २.३, १.६.३. मरणधर्मकाः (वायवः) १.६४.२. [मर्य इति मनुष्यनाम निघं० २.३. मर्यो मनुष्यो मरणधर्मा नि० ३.१४. मर्या इति मनुष्यनाम। मर्यादाभिधानं वा स्यात् नि० ४.२.]

मर्यकम् मर्यम् (अपत्यम्) ५.२.५. [मर्य-प्राति० स्वार्थे कन्]

मर्यश्रीः मर्याणां श्रीः शोभा यस्मात् सः (अग्निः=पावकः) २.१०.५. मर्याणां मनुष्याणां श्रीरिव ११.२४. (मर्य-श्रीपदयोः समासः]

मर्यादायै न्यायाऽन्यायव्यवस्थायै भा०—प्रश्नोत्तरकरणसामर्थ्याय ३०.१०. [मर्यादा=मर्यैरादीयते। मर्यादामर्यादिनोर्विभागः नि० ४.२.]

मर्यासः मनुष्याः ५.६१.४. [मर्यप्राति० जसोऽसुक्]

मर्षिष्ठाः विनाशयेः १.७१.१०. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोर्लिङ्]

मलम् अशुद्धिकरम् अ०—अविद्यारूपम् ६.१७. [यत् मृज्यते शोध्यत इति विग्रहे मृजू शौचालंकरणयोः (चुरा०) धातोः 'मृजेष्टिलोपश्च' उ० १.११०. सूत्रेण कल धातोष्टिलोपश्च]

मलादिव यथा मलिनतायाः २०.२०. [मलाद्-इव पदयोः समासः]

मलिम्लवः ये मलिनाः सन्तो म्लोचन्ति गच्छन्ति ते (स्तेनासः=गुप्ताश्चौराः) ११.७९. **मलिम्लून्**=मलिनाचारान् सिंहादीन् भा०=गवादिहिंसकान् पशून् पुरुषान् वा ११.७८ [मलिन्-उपपदे म्लुचु गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः

क्विप्-प्रत्यये पृषोदरादित्वाद् रूपसिद्धिः]

मलिम्लुचाय स्तेनाय प्र०—मलिम्लुच इति स्तेननाम निघं० ३.२४, २२.३०. [मलिन्-उपपदे म्लुचु गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः कः]

मशर्शारस्य यो मशान् दुष्टान् शब्दान् शृणाति हिनस्ति तस्य (राज्ञः) प्र०—अत्र पृषोदरादिना पूर्वपदस्य रुगागमः १.१२२.१५. [मशोपपदे शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोरण्]

मस्तिष्केण शिरस्थमज्जातन्तुसमूहेन २५.२. [मस्तं मस्तकम् इष्यति स्वाधारत्वेन प्राप्नोतीति विग्रहे मस्तोपपदे इषु गतौ (दिवा०) धातोः कः। पृषोदरादित्वाद् रूपसिद्धिः]

महत् पुष्कलम् (वीर्यं=पराक्रमम्) २.१७.३. सर्वेभ्यो बृहत् (चेतनमात्रस्वरूपं ब्रह्म) ३.५५.५. पूज्यं बृहत् (यशः) ३२.३. विस्तीर्णम् (आवपनं=क्षेत्रम्) २३.९. बड़े (असुरत्वम्=चेतनमात्र ब्रह्म) स० प्र० ११०, ३.५५.१६. बड़ा (यशः=धर्मयुक्त कामों का करना) स० प्र० ४५५, ३२.३. महोत्तमगुणविशिष्टम् (पौंस्यं=पुरुषार्थयुक्तं बलम्) १.१०१.३. **महान्ति**=विज्ञानादीनि ५.५९.४. [महत् उदकनाम निघं० १.१२. महत् महन्नाम निघं० ३.३. महति पूजयति पूज्यते वा तन्महदिति विग्रहे मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोः 'वर्त्तमाने पृषद्बृहन्महत्'० उ० २.८४. सूत्रेण अतिः। महान् कस्मान् मानेनान्याञ्जहातीति शाकपूणिः। मंहनीयो भवतीति वा नि० ३.१३. महद्वा अन्तरिक्षम् ऐ० ५.१८,१९. अन्तो वै महत् ऐ० ५.२, १२. एष ह वै महान् देवा यद्यज्ञः गो० १.२.१६.]

महतः पूज्यस्य व्यापकस्य वा (सत्यस्य=जगदीश्वरस्य) २.१५.१. पूजनीयस्य (राज्ञः) ४.२२.५. प्रबलान् (शत्रून्) १.१७८.५. आकाशादेः २०.३२. **महति**=विशाले (सधस्थे=सहस्थाने) ११.१८. व्यापकत्वादिमहागुणविशिष्टे (अन्तरिक्षे=अन्तरिक्षय आकाशे) १६.५५. **महते**=बृहते पूजिताय वा (इन्द्रियाय=धनाय) १.१०४.६. बहुविधाय (धनाय) १.१०४.७. बड़े (क्षत्राय=चक्रवर्त्ति राज्य के लिए) स० प्र० १८३, ९.४०. विशिष्टाय पूज्यतमाय (सौभगाय=सुष्ठु ऐश्वर्याणां भावाय) ५.४३. सत्कर्त्तव्याय (क्षत्राय=क्षत्रियकुलाय) १०.१८. **महत्सु**=महाप्रबलेषु (आजिषु=सङ्ग्रामेषु) १.८१.१. **महद्भिः**=महाशयैः (राजप्रजाजनैः) ४.४१.२. महासुखकारकैर्गुणैः १.७२.९. महागुणविशिष्टैः (वाजेभिः=सैन्यैः) ४.२२.३. **महद्भ्यः**=महाशयेभ्यो विद्यावयोभ्यां वृद्धेभ्यः पूज्येभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२६. **महद्भ्याम्**=पूज्याभ्याम् (पित्राचार्यादिभ्याम्) ३.७.६. **महान्**=सर्वोत्कृष्टः पूज्यतमश्च (इन्द्रः=भगवान् जगदीश्वरः) ७.३९. महागुणकर्मस्वभावः (इन्द्रः=ईश्वरः) ७.४०. महाशयः (इन्द्रः=राजा) ६.४५.१३. सर्वेभ्यो ज्येष्ठः (विद्युद्रूपोऽग्निः) ३८.२२. सर्वेभ्यो वरीयान् सर्वैः पूज्यश्च (ईश्वरः) १३.२. गुणैर्महत्त्वयुक्तः (वरः) १.५६.३. पूज्यतमो महाशयः (इन्द्रः=ऐश्वर्यवान् विद्वज्जनः) ३.३६.५. सर्वोत्कृष्टः (सेनापतिः) १.८१.४. सर्वेभ्यो महत्तमः (इन्द्रः=परमेश्वरः) १.४.१०. सर्वोत्कृष्ट ईश्वरः सूर्यलोको वा परिमाणेन महत्तमः १.९.१. सर्वथाऽनन्तगुणकर्मस्वभावसामर्थ्येन युक्तः (इन्द्रः=सर्वजगद्राजः) १.८.५. महत्त्वपरिमाणतः सर्वेभ्योऽधिकः (वेदविद् आप्तो विद्वज्जनः) ३.५३.९. महत्त्वादिगुणविशिष्टः (ईश्वरः) ३३.३९. पूजनीयतमः (राजा) ३३.६५. व्याप्तः सन् (परमात्मा) ३.५५.९. अतिविस्तीर्णः (अग्निः=विद्युत्) ४.७.७. व्याप्त्यादिमहागुणविशिष्टः (कविः=कालः) १.९५.४. महत्त्वपरिमाणः (अग्निः=सूर्यलोकः) ३.६.४. **महान्तम्**=विद्यावयोवृद्धं जनम् पं० वि०। १.११४.७. वृद्धतमम् (परमेश्वरम्) ऋ० भू० १३१, ३१.१८. महागुणविशिष्टं पूज्यं जनम् १६.१५. महत्परिमाणम् (कोशं=मेघम्) ५.८३.८. बड़ों से भी बड़े (ईश्वर) को आर्याभि० २.८, ३१.१८. **महान्तः**=परिमाणेनाऽधिकाः (विद्वांसो=जनाः) १.१६६.११. [महदिति व्याख्यातम्। 'महान्' इत्येवमादौ 'सान्तमहतः संयोगस्ये' ति दीर्घः। प्रजापतिर्वाव महान् तां० ४.१०.२. अग्निर्वै महान् जै० उ० ३.४.७. प्राण एव महान् श० १०.४.१.२३.]

महय पूजयोपकुरु वा १.५२.१. **महयसे**=सत्क्रियसे ६.१५.२. **महयन्**=सत्कुर्वन्ति ७.४२.३. **महयन्तः**=पूजयेयुः ३.३.३. **महेत्**=पूजयेत् १.१११.३. **महेम**=सत्कुर्याम ७.२.३. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्। अन्यत्र लट् लङ् च। 'महेत्' इत्यादौ लिङ् मह पूजायाम् इति चुरादावपि। महयति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

महयते महते (राये=धनाय) ७.३२.१९. **महयन्**=सत्कुर्वन् (प्रजाजनः) १.५४.२. **महयन्तम्**=सत्कर्त्तव्यम् (कामम्) १.१७८.१. **महयन्तः**=महानिवाऽऽचरन्तः (प्रजाजनाः) ४.१७.१८. पूजयन्तः (विद्वांसो जनाः) ५.३१.४. [मह पूजायाम् (चुरा०) धातोः शतृ। महत्-प्राति० वा 'उपमानादाचारे' सूत्रेणाचारे क्यजन्ताच्छतृ]

महयमानः पूज्यमानः (अग्निः=आप्तो विद्वज्जनः) ३.२५.५. [मह पूजायाम् (चुरा०) धातोः शानच्]

महयामसि पूजयाम ३.३७.४. [मह पूजायाम् (चुरा०) धातोर्लट्। 'इदन्तो मसि' रितीदन्तता मस्प्रत्ययस्य]

महसा महता (वलेन) १.१६२.१७. महत्त्वेन २५.४०. वड़े प्रेम से सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२४३. **महसे**=महते (व्यवहाराय) ३०.१६. पूजनाय ३०.२०. **महः**=महस्त्वयुक्तं पूज्यं वस्तु १८.५. महत्सुखम् २.३२.१. महद्विज्ञानम् ६.२६.१. महिमा १.१६.२. महान्तम् भा०—सत्यम् (धर्माणाम्) ३४.७. महत् (अनीकं=विजयमानं सैन्यम्) ४.१२.२. महसे (सूर्याय=परमेश्वराय) सूर्यलोकाय वा) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति ङेर्लुक् ४.३५. महता (शर्मणा=गृहसम्वन्धिसुखेन) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् १.२२.११. महान्ति पूजनीयानि (वपूंषि=रूपवन्ति शरीराणि) ३.५७.३. महते (सख्याय=मित्रत्वाय) ४.३१.११. पूज्यवेदशास्त्रबोधयुक्ता (वाङ्) २०.६. महतीम् (धियं=प्रज्ञाम्) १.१०२.१. महान् पूजनीयः (देवः=परमात्मा) ४.५८.३. महत्तरम् (भा०—महान्तमानन्दम्) ३.४६. कीर्त्तियोगान्महत् (नाम=प्रख्यातिम्) ६.४४.८. महत्तत्वात् अ०—अव्यक्तात् ५.१६. महत् (अर्णः=शब्दसमुद्रम्) प्र०—अत्र 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' इत्यसुन् प्रत्ययः १.३.१२. अ०—महांसि क्रियासिद्धिकराणि (वस्तूनि) ३.२०. महति (बुध्ने=अन्तरिक्षे) ४.१.११. महागुणसमूहम् ३.२०. महान् (अध्यापकः) १.१९०.८. महागुणविशिष्टस्य (नृम्णस्य=धनस्य) १.५५.३. **महांसि**=महान्ति सैन्यानि ५.२८.३. तेजांसि ३३.१२. **महोभिः**=महद्भिर्गुणकर्मस्वभावैः ३.४.६. बृहद्भिर्गुणैः ५.६२.३. सुपूजितैर्गुणैः २०.४०. सत्कारैः ७.३७.१. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन् । महः उदकनाम निघं० १.१२. महन्नाम निघं० ३.३. महो महतः नि० ९.२५. पशवो वै महस्तस्माद् यस्यैते बहवो भवन्ति भूयिष्ठमस्यकुले महीयन्ते श० ११.८.१.३. यज्ञो वै देवानां महः श० १.९.१.११. अध्वर्युरेव महः गो० पू० ५.१५. यजुर्वेदो महः श० १२.३.४.९. वायुर्महः श० १२.३.४.८ प्राणो महः श० १२.३.४.१०. प्रतीच्येव महः गो० पू० ५.१५. सुवर्गो वै लोको महः तै० ३.८.१८.५. रुद्रा एव महः गो० पू० ५.१५. ग्रीष्म एव महः गो० पू० ५.१५. त्रिष्टुबेव महः गो० पू० ५.१५. पंचदश एव महः गो० पू० ५.१५.]

महस्वन्तः महांसि पूजनानि सत्करणानि विद्यन्ते येषां ते (सोमाः=सभासदः पुरुषाः) २१.४२. [महस् इति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसायां मतुप्]

महाकुलः महत्कुलं यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१६१.१. [महत्-कुलपदयोः समासः]

महागयम् महान्तो गया गृहाणि, प्रजा धनं वा यस्य तम् (विद्वांसं जनम्) प्र०—गयमिति गृहनाम निघं० ३.४. 'अपत्यनाम' निघं० २.२. धननाम च निघं० २.१०, २६.९. [महत्-गयपदयोः समासः]

महाञ्जिः महागतिः २४.४. [महत्-अञ्जिपदयोः समासः । अञ्जिः=अञ्जू (गत्यर्थे) धातोरौणा० इन्]

महादेवम् महांश्चाऽसौ देवश्च तं परमात्मानम् ३९.८. **महादेवस्य**=महतो विदुषः (पुरुषस्य) ३९.९. [महत्-देवपदयोः समासः । 'आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः' अ० ६.३.४६. सूत्रेणाकारादेशो महतः । देवाश्च महादेवाः तै० आ० १.९.३.]

महाधने महान्ति धनानि प्राप्नुवन्ति यस्मिँस्तस्मिन् सङ्ग्रामे ७.३२.२५. महान्ति धनानि यस्मात्तस्मिन् सङ्ग्रामे प्र०—महाधन इति सङ्ग्रामनामसु पठितम् निघं० २.१७, १.७.५. युद्ध में आर्याभि० १.२४, ऋ० ५.३.२१.२५. [महत्-धनपदयोः समासः । महाधने संग्राम नाम निघं० २.१७.]

महानाम् महतां पूज्यानाम् (देवानां=विदुषां जनानाम्) १.१८७.६. [महत्-प्राति० षष्ठ्या बहुवचनम् । छान्दसो वर्णलोपो वे' ति तलोपः]

महानाम्न्यः महन्नाम यासां ताः भा०—महाकीर्त्तयः (वाचः) २३.३५. [महत्-नामन्पदयोः समासे स्त्रियां ङीबन्तात् प्रथमाबहुवचनम्]

महानि पूजनीयानि बृहत्तमानि (कृतानि=कर्माणि) २.११.६. महान्ति (व्रता=शीलानि) ३.६.५. महान्ति पूज्यानि (करणानि=कर्माणि) २.१५.१. [महत्-प्राति० नपुंसके प्रथमाबहुवचने रूपम् । तलोपश्छान्दसः]

महान्ता महागुणौ (इन्द्राग्नी=वाय्वग्नी) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.२१.५. महान्तौ पूजनीयौ (अश्वा=तुरंगौ महान्तौ जनौ वा) ६.६७.४. [महत्-प्राति० द्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

महाम् महताम् (पुरुषाणाम्) प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति तलोपः ४.५.९. महान्तम् (अग्निम्) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति नकारतकारलोपः सवर्णदीर्घत्वेनाऽस्य सिद्धिः ३.२.३. पूज्यं (सेनापतिम्) १.११२.१४. पूजनीयम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.४९.१. पूज्यतमम् (उरुं=

बलादिगुणविशिष्टमनीकम्) १.५७.६. महत्तमम् (सिन्धुं=समुद्रम्) २.११.९. महान्तं महाशयं सर्वाऽध्यक्षम्) ६.२९.१. [महत्-प्राति० षष्ठ्या बहुवचने 'छान्दसो वर्णलोपो वे' ति तलोपे रूपम्]

महाम्नसाम् महान्ति मनांसि विज्ञानानि येषां तेषाम् (देवानां=विद्वत्पुरुषाणाम्) १७.४१. [महत्-मनस्पदयोः समासः]

महारथः महान्तो रथा वीरा वा यस्य सः (राजन्यः=राजपुत्रः) २२.२२. [महत्-रथपदयोः समासः]

महावद्दूरिणा महावर्णयुक्तेन (पदा=पादेन) १.१३३.२. [महत्-वद्दूरिपदयोः समासः]

महावधः महान् वधो नाशनं येन सः (महारोगः) ५.३४.२. **महावधात्**=महतो हननात् ५.८३.२. [महत्-वधपदयोः समासः। वधः=हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनश्च वधः' अ० ३.३.७६. सूत्रेणाप् वधादेशश्च। महावधात्=महान् ह्यस्य वधः नि० १०.११. वधः बलनाम निघं० २.९. वज्रनाम निघं० २.२०.]

महावीरम् महाँश्चासौ वीरश्च तमिव महाकर्षण-प्रकाशादिना युक्तं सूर्यलोकम् १.३२.६. **महावीरस्य**=महाँश्चासौ वीरश्च तस्य (सेनापतेः) १९.१४. [महत्-वीरपदयोः समासः]

महावैलस्थे महागर्त्तयुक्ते (स्थाने) १.१३३.३. [महत्-वैलपदयोः समासः। ततो महावैलोपपदे तिष्ठतेः कः। वैलम्=विल-प्राति० स्वार्थेऽण्]

महावैश्वदेवः महतां विश्वेषां सर्वेषामयं व्यवहारः १८.२०. [महत्-वैश्वदेवपदयोः समासः। वैश्वदेवः=विश्व-देव-प्राति० स्वार्थेऽण्। देवः=दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यव-हारादिषु (दिवा०) धातोर्घञ्]

महाव्रातः महान्तो व्राता व्रतेषु कुशला जना सखायो यस्य सः (इन्द्रः=परमैश्वर्ययुक्तो जनः) ३.३०.३. [महत्-व्रातपदयोः समासः। व्रातः=व्रतप्राति० कुशलार्थेऽण्। व्रतमिति कर्मनाम वृणोतीति सतः नि० २.१३.]

महासेनासः महती सेना येषान्ते (वीरजनाः) ७.३४.१९. [महतीसेनापदयोः समासः। ततो जसोऽसुक्]

महि पूज्यं महत् (श्रवः=श्रवणम्) १२.१०६. महत् पूजितम् (जातं=विज्ञानम्) १.१५६.२. महत्तमं पूजनीयम् (शर्म=सुखं गृहं वा) १.९३.८. महासुखप्रदं पूज्यतमम् (क्षत्रम्) १.५४.११. महागुणविशिष्टम् (क्षत्रम्=राज्यम्) १.५४.८. महत् (नमः=अन्नम्) १.६२.२. महान्तम् (श्रेष्ठजनम्) ४.३.१४. महान् (वृद्धो जनः) ५.६०.३. महते पूजिताय (पूरवे=मनुष्याय) १.१३०.७. महान्तः (अर्चयः=दीप्तयः) ५.६.७. [महि महत् नि० ११.९. महि=मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० इन्]

महिकेरवः महयो महान्तः केरवः कारवः शिल्पविद्या-साधका येषान्ते (प्रियमेधाः=महाविद्वांसो जनाः) प्र०—अत्र कृञ्-धातोरुण् प्रत्ययो वर्णव्यत्ययेनाकारस्य एकारश्च १.४५.४. [महि-केरुपदयोः समासः। 'महि' व्याख्यातम्। केरुः=करोतेरुण्, वर्णव्यत्ययेनाकारस्य एकारः]

महिक्षत्रौ महत्क्षत्रं ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.६८.१. [महि-क्षत्रपदयोः समासः। क्षत्रम् धननाम निघं० २.१०.]

महित्वनम् महिमानम् ५.५५.४. महत्वम् (वीर्यं=सामर्थ्यम्) ५.५४.५. महत्त्वम् ४.३६.३. महिमा २.२३.४. **महित्वना**=महिम्ना प्र०—महित्वनेनेति प्राप्ते 'वा छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति विभक्तेराकारादेशः। समीक्षा—अत्र सायणाचार्येण व्यत्ययेन नाभावः कृतः सोऽशुद्धः १.८५.७. महत्त्वेन ५.२.९. स्वमहिम्ना प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिक इत्वनिः प्रत्ययः ११.६. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इत्वनिः। 'महित्वना' प्रयोगे महित्वन्-प्राति० टास्थान आकारादेशः]

महित्वम् महेर्महतो भावम् १.११६.१. महत्वम् १.५९.६. महागुणस्वभावम् (प्रभावम्) १.५९.४. महत्त्वम् ७.४०.५. मह्यते पूज्यते सर्वैर्जनैरिति महिस्तस्य भावः प्र०—अत्रौणादिकः 'सर्वधातुभ्य इन्' इति इन्प्रत्ययः ततो भावार्थे त्व-प्रत्ययः १.८.५. महिमानम् ३३.३७. महिमा १.१३८.१. पूज्यत्वं महागुणविशिष्टत्वं परिमाणेनाधिक-त्वञ्च १.६१.९. [महि-प्राति० भावे त्वः। महिः=मह-पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० इन्। महित्वम्=माहा-भाग्यम् नि० ७.२३.]

महित्वा महत्त्वं प्राप्य ५.५८.३. प्रशंसय्य १.१०९.६. सत्कृत्य १.६७.५. पूजितो भूत्वा १.६८.१. सत्कार को प्राप्त होकर सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३२. पूजयित्वा ४.४२.३. सत्कारं प्राप्य ७.२०.४. महत्या व्याप्त्याऽभिव्याप्य १.५२.१३. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोः क्त्वा]

महित्वा स्वमहिम्ना २३.३. महागुणवत्त्वेन प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.९१.२. महत्त्वेन पूज्येन १.१६४.२५. अपनी अनन्त महिमा से सं० वि० ५, २३.३. ['महित्वम्' इति व्याख्यातम्। ततो विभक्तेराकारादेशः]

महिन महत्तम (इन्द्र=सर्वसुखप्रद राजन्) ६.२६.८. **महिनस्य**=महतः (राज्ञः) ६.३३.५. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोः 'महेरिनण् च' उ० २.५६. सूत्रेण चकारेणानुवृत्त इनन्]

महिनः महान्तः (देवाः=दिव्यगुणा विद्वांसो जनाः) ६.५२.१५.[महिन्-प्राति० जस् महिन्=महिनि महत्युदकवतीति वा नि० ११.३७. महिन्=मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० इन्]

महिना महिम्ना प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति मकारलोपः १.३२.८. महत्त्वेन १.१२२.११. स्वस्य महिम्ना व्यापकत्वेन २७.२६. अपनी महिमा से आर्याभि० २.३२, १७.१८. **महिने**=सत्कर्त्तव्याय (राज्ञे) ७.३१.११. [महिमन्-प्राति० टा-प्रत्यये मकारलोपश्छान्दसः। महिमन्=महत्-प्राति० भावे 'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' इतीमनिच्]

महिना महती (सरस्वती=वाक्) ६.६१.१३. [महिन-प्राति० स्त्रियां टाप्। महिनः=मह पूजायां धातोरौणा० इनन्]

महिनि पूज्ये (पृथिवि=भूमे) ५.८४.१. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० इन्। ततः स्त्रियां ङीपि सम्बुद्धौ रूपम्]

महिनी महत्यौ (द्यावापृथिवी) १.१६०.२. [महिनीति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः]

महिमघस्य महन्मघं पूज्यं धनं यस्य तस्य (पुरुषार्थिनो जनस्य) १.१२२.८. महि-मघपदयोः समासः। 'महि' इति व्याख्यातम्। मघम् =धननाम निघं० २.१०]

महिम्नः महिम्नः ६.२७.३. [महत्-प्राति० भावे पृथ्वादित्वाद् इमनिच्। ततः षष्ठ्यादौ विभक्तौ अकारलोपाऽभावश्छान्दसः]

महिमा महतो भावः १८.४. महती प्रशंसा ७.४५.२. माहात्म्यम् भा०—महत्त्वम् ३१.३. प्रशंसासमूहः ७.२८.२. प्रतापः ६.५९.२. **महिमानम्**=स्तुत्यस्य, पूज्यस्य, व्यवहारस्य भावम् १.६१.८. उत्तमप्रतिष्ठाम् १.८५.२. स्तुतिविषयम् (प्रयाणं=प्रकृष्टं प्राणम्) ११.६. पूज्यं ब्रह्मचर्यजितेन्द्रियत्वादिशुभकर्म संस्कारजन्यम् (अपत्यम्) ८.३०. स्वप्रभावम् २.१७.२. महत्त्वम् २९.२७. **महिमानः**=महत्त्वयुक्ताः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ३१.१६. पूज्यमानाः (मनुष्याः) ३३.७४. पूज्याः सन्तः (देवाः=देवगणाः) ऋ० भू० १२९, ३१.१६. पूज्यतां प्राप्नुवन्तः (देवाः=विद्वांसो जनाः) १.१६४.५०. **महिम्नः**=महतो भावस्य सकाशात् २३.६४. **महिम्ने**=महतो भावाय २३.२. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० अतिप्रत्यये महत्। महत्-प्राति० भावे 'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' इतीमनिच्। प्राणा हि महिमानः काठ० ३७.१६. यज्ञो वै महिमा श० ६.३.१.१८. राजा महिमा तै० ३.९.१०.१. श० १३.२.११.२.]

महिरत्न पूज्यैर्गुणै रमणीय (विद्वज्जन) १.१४१.१०. [महि-रत्नपदयोः समासः। 'महि' इति व्याख्यातम्। रत्नम्=रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः 'रमेस्त च' उ० ३.१४. सूत्रेण नः तकारश्चान्तादेशः]

महिवृधे महतां वर्धकाय (महाराजाय) ७.३१.१०. ['महि' इत्युपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

महिव्रतः महान्ति व्रतानि धर्म्याणि कर्माणि यस्य सः (महाराजः) ६.६८.९. **महिव्रत**=महि महद्व्रतं शीलं यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.४५.३. [महि-व्रतपदयोः समासः। व्रतमिति कर्मनाम वृणोतीति सतः नि० २.१३.]

महिष पूजनीयतम (महाराज) ३.४६.२. **महिषम्**=महान्तम् (पुत्रं=सन्तानम्) ४.१८.११. **महिषस्य**=महतो लोकसमूहस्य १.९५.९. **महिषः**=महान् (सूर्यः) १.१२१.२. सर्वगुणैर्महान् (अग्निः) ३.७. **महिषाणाम्**=महतां पदार्थानाम् ५.२९.८. **महिषान्**=महतः (पदार्थान्) ६.१७.११. **महिषाः**=महान्तः (अमूराः=विद्वांसो जनाः) ७.४४.५. महान्तः पूजनीयाः (यजमानाः) १९.३२. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोः 'अविमह्योष्टिषच्' उ० १.४५. सूत्रेण टिषच्। महिषः महन्नाम निघं० ३.३. महिषाः महान्तः नि० ७.२६. अग्निर्वै महिषः स हीदं जातो महान्त्सर्वमैष्णात् श० ७.३.१.२३. प्राणा वै महिषाः श० ६.७.४.५. ऋत्विजो वै महिषाः श० १२.८.१.२.]

महिषा महिषाणां महतां पशूनाम् ५.२९.७. [महिष इति व्याख्यातम्। ततः षष्ठ्याः स्थाने आकारादेशश्छान्दसः]

महिषासः पूजितगुणा महान्तः (गिरयः=मेघाः) १.६४.७. [महिषप्राति० जसोऽसुक्]

महिषी महारूप-बल-शीलादियोगेन पूजनीया (युवतिः) ५.२.२. **महिषीम्**=महाशुभगुणाम् (पत्नीम्) ५.३७.२. उत्तम कुल में उत्पन्न हुई विद्या-शुभगुण-रूप-सुशीलतादियुक्त (विदुषी स्त्री) सं० वि० १०५, ५.३७.३. [महिष इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टित्त्वान् ङीप्। महिषीयैव प्रथमा वित्ता (भार्या) सा महिषी श० ६.५.३.१.

महिषी हीयं (पृथिवी) श० ६.५.३.१. महिषी हि वाक् श० ६.५.३.४. महिषी धाय्या कौ० १५.४. भूरिति महिषी तै० ३.९.४.५.]

महिषीव यथा राज्ञी तथा २६.१२. ज्येष्ठा राज्ञीव ५.२५.७. [महिषी-इवपदयोः समासः]

मही सर्वपूज्या वाङ्मयी वेदचतुष्टयी पृथ्वी वा १.८.८. महती वाग् भूमिर्वा ५.४१.१५ प्रकृतिः १.१३१.१. पूजितुं सत्कर्त्तुमर्हा (विद्यावाणी) १.१४२.९. बलवती पुष्टा (पृथिवी) ऋ० भू० १४३, अथर्व० १४.१.२. महागुणविशिष्टा (धिषणा=वाक्) १.१०२.७. महती पूज्या वाक् २.३३.१४. अतीव सत्कर्त्तव्या (धिषणा=प्रगल्भा वाक्) ३.३१.१३. पूजनीया (माता) ५.४७.१. पूज्यतमा (पत्नी) ८.४३. महागुणा (द्यावापृथिवी) ४.५६.५. **महीनाम्**=भूमीनाम् ५.४५.३. पूजनीयानां सेनानाम् ३.१.१२. पृथिवीनाम् ४.३. महतीनां वाचाम् १.२०. **महीभिः**=महतीभिः (ऊतिभिः=रक्षादिभिः) ४.३२.१. **महीम्**=पूज्यतमाम् (धियं=प्रज्ञाम्) १.१०२.१. महतीम् (सुमतिम्) २२.११. पृथिवीम् १२.११०. पूज्यां वाणीम् ५.८५.५. परिमाणेन महतीम् (भूमिम्) ३.३०.९. **महीः**=भूमीः ३.५६.२. महत्संयुक्ताः (देवीः=वाचः) २८.३१. श्रेष्ठा धरा इव पूज्याः (गिरः=वाचः) ५.११.५. महतीर्वाचः ३.२२.४. महत्यः (प्रणीतयः=प्रकृष्टा नीतय) ६.४५.३ पूज्यतमा वाचः १.१४२.६. **मह्यै**=महत्यै वाचे २२.२०. [मही पृथिवीनाम निघं० १.१. वाङ्नाम निघं० १.११. गोनाम निघं० २.११. द्यावापृथवीनाम निघं० ३.३०. मही महती नि० ४.२१. मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० इन् ततः स्त्रियां ङीप् । इयं (पृथिवी) एव मही जै० उ० ३.५.७. मह्य इति ह वाऽएतासामेकं नाम यद्गवाम् श० १.२.१.२२.]

मही महत्यां मह्याम् १.१५१.५. [महीति व्याख्यातम् । ततः सप्तम्या लुक्]

मही महत्यौ (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.७. पूज्ये महत्यौ (मातरा=जनकजनन्यौ) ३.१.७. [मही-शब्दाद् द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः]

महीयते आत्मानं त्यागबुद्ध्या बहु मनुते १.१८२.३. सत्क्रियते ५.५६.९. महत्त्व को प्राप्त होकर सत्कार को प्राप्त होता है सं० वि० १९६, ९.११३.६. [महीङ् पूजायाम् (कण्ड्वा०) धातोर्लट्]

महीयमानाम् विस्तीर्णाम् (उपासं=प्रातर्वेलाम्) ४.३०.९. [महीङ् पूजायाम् (कण्ड्वा०) धातोः शानजन्ताट् टाप् स्त्रियाम्]

महीयै पूज्यायै नीतये १.११३.६.

महे महते सौभाग्याय ३.७.१०. महापूज्याय गुणाय १.९१.७. महोत्तमगुणविशिष्टाय (राज्ञे) १.५३.१०. महत्यै (देववीतये=दिव्यानां गुणानां विदुषां वा प्राप्तये) २२.१३. विद्यया परिमाणेन महते (पित्रे) १.७१.५. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् । महे महते नि० ९.२७.]

महे महति महासुखप्रापके (सदने) १.५३.१. पूज्ये व्यवहारे १.५६.१. महति सुखप्रदे (व्यवहारे) १.३५.१. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । कर्त्तरि अच् वा]

महेन्द्राय अनुत्तमायैश्वर्याय ७.३९. मोक्षप्रापकाय महैश्वर्याय ७.४०. महद्गुणविशिष्टाय (राज्ञे) २६.१०. योगजाय महैश्वर्याय ७.४०. [महत्-इन्द्रपदयोः समासः । इन्द्रः=इदि परमैश्वर्ये (भ्वा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्रवज्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रन् । यन्महान् इन्द्रोऽभवत्तन् महेन्द्रस्य महेन्द्रत्वम् ऐ० ३.२१. इन्द्रो वाऽएष पुरा वृत्रस्य वधादथ वृत्रं हत्वा यथा महाराजो विजिग्यानं एवं महेन्द्रोऽभवत् श० १.६.४.२१.]

मह्ना महत्त्वेन ४.२.१. स्वमहिम्ना १.१६६.११. महता (युधा=सङ्ग्रामेण) ३.३४.७. महागुणविशिष्टेन (धर्म्यव्यवहारेण) १.७२.९ [मह्ना=महत्त्वेन नि० १०.१०.]

मह्या महत्या (स्वस्त्या=सत्क्रियया) १५.६४ [महीप्राति० तृतीयाया एकवचनम्]

मंश्चतोः मन्यमानान् विदुषो याचमानस्य (वरुणस्य=विदुषो जनस्य) ७.४४.३. [मंश्चतुः अश्वनाम निघं० १.१४. मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः क्विपि मन् । तदुपपदे चते याचने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उः]

मंसते मन्यते १.८४.७. जानाति १.८४.१८. मन्यन्ताम् ५.४६.४. **मंसन्ते**=परिणमन्ते ७.३४.३. **मंसीमहि**=जानीयाम १.१३६.७. **मंसीष्ट**=मन्यताम् ७.३८.६. **मंसीष्ठाः**=मन्येथाः १३.४१. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्लेट् । सिब्-विकरणः । अन्यत्र लिङ्]

मंहते ददाति १.११.३. वर्धते ६.४५.३२. **मंहथ**=महतः कुरुत ५.३८.१. **मंहसे**=वर्धयसि ४.३१.८. [मंहते दानकर्मा निघं० ३.२०. महि वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

मंहना पूजनीया (देवी=विदुषी स्त्री) ६.६४.५. महती (द्यौः=सूर्यः) ४.१७.१. (महि वृद्धौ (भ्वा०) धातो-

बाहु० औरणा० युच् । ततः स्त्रियां टाप्]

मंहना महत्त्वेन ३.३१.१७. महत्या नौकया ५.६१.१०

मंहना सत्कर्त्तारः (देवासः=आप्ता विद्वांसः) ६.६७.५.

मंहनेव महान्ति पूजनीयानीव (कर्माणि) ४.१.६. [मंहना-इवपदयोः समासः]

मंहिष्ठम् अतिशयेन महान्तम् (इन्द्रं=शत्रुविनाशकं नृपम्) ६.४४.४. अतिशयेन पूजितम् (इन्द्रं=सभाध्यक्षम्) १.१३०.१. अतिशयेन मंहिता वृद्धस्तम् (सूरिम्=शास्त्रविज्जनम्) १.६१.३. **मंहिष्ठस्य**=अतिशयेनोरोर्बहुप्रज्ञस्य (वचसः=वचनस्य) १.१४७.२. अतिशयेन भाषितुं योग्यस्य महतः (वचसः) १२.४२. मंहिष्ठः=अतिशयेन महत्त्वयुक्तः (अ०—विद्वान् जनः) २७.४०. अतिशयेन महान् (मनुष्यः) ४.३१.२. अतिशयेन वृद्धः (सत्यः=प्रजापतिरीश्वरः) २६.५. **मंहिष्ठाय**=योऽतिशयेन मंहिता दाता तस्मै (सभाध्यक्षाय) प्र०—मंह इति दानकर्मसु पठितम् निघं० ३.२०, १.५७.१. **मंहिष्ठाः**=अतिशयेन सुखविद्यादिभिर्वर्द्धमानाः (मनुष्याः) १.१२१.१५. [मंहतिः दानकर्मा निघं० ३.२०. महि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तादतिशायन इष्ठन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

मंहिष्ठरातिम् अतिशयेन मंहित्री रातिर्दानं यस्य यस्माद्वा तम् (इन्द्रं=विद्वांसं जनम्) १.५२.३. [मंहिष्ठरातिपदयोः समासः। रातिः=रा दाने (अदा०) धातोः क्तिन्]

मंहिष्ठा अतिशयेन सत्कर्त्तव्यौ (राजाऽमात्यौ) ४.४१.७. अतिशयेन पूजनीयौ (सभासेनेशौ) ६.६८.२. [मंहिष्ठ-प्राति० 'सुपां सुलुक्०' इति द्विवचनस्याकारादेशः]

मा निषेधाऽर्थे क्रियायोगे १.११.२. मत आर्याभि० १.२२, ऋ० १.३.१८.२. निषेधे १.१०५.३. [मेति प्रतिषेधे नि० १.५.]

मा यया मीयते सा (साध्या धर्म्यकृतिः) १४.१८. **माः**=मातृः ४.३३.४. [माङ् माने (जु०) धातोः करणे क्विप् । अयं वै (पृथिवी) लोको मा अयं हि लोको मित इव श० ८.३.३.५. माः—चन्द्रमा वै मा मासः जै० उ० ३.१२.६.]

माकिः निषेधे प्र० – अत्र मकि-धातोर्बाहुलकादिञ् नुमभावश्च १३.११. [माकिः=सर्वपदसमाम्नायः निघं० ३.१२.]

माकीम् न ६.५४.७

मागधम् नृशंसम् (दुष्टजनम्) ३०.५. [मगधप्राति० 'सोऽस्य निवासः' इत्यण्]

माघोनम् बहुधनवन्तम् (शवः=बलहेतुं रसमन्नं वा) ६.४३.४. [मघवन्प्राति० 'तस्येदम्' इत्यण् । 'वा छन्दसी' ति तद्धितेऽपि सम्प्रसारणम्]

मातरम् मान-सन्मानकर्त्रीं जननीं विदुषीं वा १.११४.७. मान्यप्रदां जननीम् १६.१५. मान्यकर्त्रीं जनयित्रीं विद्यां वा पं० वि० । मान्यनिमित्ताम् (महीं=महतीं भूमिम्) १८.३०. सयोनिमपः जलनिमित्तेन पृथिव्युत्पत्तेः ३.६. मातृवत् परिपालिकाम् (मेनां=वाचम्) १.१२१.२. **मातरः**=जनन्यः १२.७८. मातृवत्सर्वेषां मान्यकारिण्यः (किरणाः) १.९२.१. मान्यप्रदाः (गावः) ६.४५.२५. मातृवत् पालिकाः (अपः=जलानि) ४.२. गावः ३.४१.५. **मातरि**=आकाशे ३.२९.११. **मातः**=मान्यकर्त्रि जननि १०.२३. **माता**=मान्यहेतुर्जननी विद्या वा १.८९.१०. पृथिवीवज्जननी २३.२५. मान्यकर्त्री (जननी) १.१८५.१०. उत्पादिका (जननी) १.७२.९. धर्मार्थकाम-मोक्षसिद्ध्या मान्यदात्री (पृथिवी-विद्या) २.१०. मान्यकरणहेतुः (पृथिवी=भूमिः) २.१०. सर्वस्य जगतो जननी प्रकृतिः २५.२३. मान्यप्रदा जननीव रात्रिः ३.५५.१२. पृथिवी १.१६४.८. सुख देने और मान करने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.१७, ऋ० १.६.१६.१०. **मातुः**=मान्यप्रदायाः पृथिव्याः १.१४०.९. परिमाणकर्त्तुः (सभाध्यक्षस्य) १.६१.७. जनन्या इव भूमेः ६.१६.३५. मातृवद्वर्त्तमानाया विद्यायाः ४.२.१५. वायोः ३.२९.१४. माननिमित्तायाः (भूमेः) ३.८.१. मातृवद्वर्त्तमानस्य (परमात्मनः) ४.५.१०. अन्तरिक्षस्य १.३७.९. **मातृभिः**=भा०—अम्बाभिः १२.३९. **मातृभ्यः**=मानविधायकेभ्यः क्षणादिभ्यः १.९५.७. **मातृषु**=नदीषु ३.२३.३. आकाशादिषु ४.७.६. मन्यकारिकासु (सृष्टिषु) १.१४१.२. **मातॄः**=मातृवन्मान्यप्रदा ओषधीः १.१४१.५. उत्तम-मध्यम-निकृष्टरूपा भूमीः १.१६४.१०. **मात्रा**=गर्भमानकर्त्र्या (जनन्या) ८.२९. जनन्या २.२८.५. माता के साथ सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.२. **मात्रे**=मान्यनिमित्तायै (पृथिव्यै=भूमये) ९.२२. मान्यकर्त्र्यै (जनन्यै) ८.५१. **मात्रोः**=मातृवन्मान्यकारकयोर्विद्याऽऽचार्ययोः ५.११.३. जननीपालिकयोः ७.३.९. [मानयति सत्करोतीति माता । माङ् माने (जु०) धातोः 'नप्तृनेष्टृत्वष्टृ ट्+ऋ=ट्होतृ०' उ० २.९५.

सूत्रेण तृच् । स्वस्रादित्वाट्टाप्न । मातरः नदीनाम निघं० १.१३. माता अन्तरिक्षम्, निर्मीयन्तेऽस्मिन् भूतानि नि० २.८.]

मातरा जलाग्नी ३.७.१. मातृवन्मान्यकर्त्र्यौ (रोदसी=भूमिसूर्यलोकौ) ६.१७.७. मानकारकौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१२२.४. मातरौ धातृजनन्यौ १.१४०.३. मातापितरौ १२.१०७. मान्यप्रदे (रात्रिदिने) ५.५.६. मानयित्र्यौ (नक्तोषासा=रात्रिदिने) १.१४२.७. मान्यकर्त्तारौ मातापितरौ १.५५.३. जनकजनन्यौ ३.१.७. जनकौ ७.७.३. मातापितृरूपौ राजप्रजाजनौ अ०—द्यावाभूमी ४.२२.४. मातृवद्वर्त्तमाने (धेनू=दुग्धदात्र्यौ गावौ) २८.६. [मातृ-प्राति० द्विवचनस्याकारादेशः 'सुपां सुलुक्०' इति सूत्रेण]

मातरापितरा जनकजनन्यौ ४.६.७. [मातृ-पितृपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः । पूर्वपदस्य च अराङ् आदेशश्छान्दसः]

मातरिश्वा यो मातर्यन्तरिक्षे श्वसिति स वायुः १.७१.४. प्राणः १.१४१.३. अन्तरिक्षशयानः (अग्निः) ३.५.१०. आकाशे शयिता वायुः १.६०.१. अन्तरिक्षे शयानो वायुः १.१४८.१. यो वायौ श्वसिति सः (भौतिकोऽग्निः) ३.२९.११. अन्तरिक्षस्थ वायु सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५४. मातर्यन्तरिक्षे श्वसिति प्राणान् धरति वायुस्तद्वद्वर्त्तमानो जीवः ४०.४. **मातरिश्वनः**=मातर्यन्तरिक्षे श्वसिति आश्वनिति वा तस्य वायोः प्र०—'श्वन्नुक्षन्०' उ० १.१५७ अनेनाऽयं शब्दो निपातितः १.२. **मातरिश्वने**=अन्तरिक्षस्थाय वायवे १.१४३.२. **मातरिश्वानम्**=मातरिश्वा वायुस्तल्लक्षणम् (ईश्वरम्) १.१६४.४६. यो मातरिश्वा वायुरिव बलवान् तम् जो वायु के समान अत्यन्त बलवान् है उस (ईश्वर) को स० प्र० १५, १.१६४.४६. यो मातरि वायौ श्वसिति तम् (अग्नि=विद्युदादिरूपं वह्निम्) ३.२६.२. [मातरि अन्तरिक्षे श्वयति गच्छति वर्धते वेति विग्रहे 'मातरि' इति सप्तम्यन्तोपपदे टुओश्वि वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'श्वनुक्षन्-पूषन्०' उ० १.१५९ सूत्रेण कनिन् । अथवा मातरि श्वसिति जीवयति शेते वेति विग्रहे 'मातृ' इत्युपपदे श्वस प्राणने (अदा०) धातोः कनिन्-प्रत्यये निपातनाद्रूपसिद्धिः । शीङ् शये (अदा०) धातोर्वा कनिन् । मातरिश्वा वायुर्मातर्यन्तरिक्षे श्वसिति मातर्याशु अनितीति वा नि० ७.२६. प्राणो मातरिश्वा ऐ० २.३८. अयं वै वायुर्मातरिश्वा योऽयं पवते श० ६.४.३.४.]

मातवै मानाय १.१६४.२८. [माङ् माने (जु०) धातोस्तुमर्थे तवैप्रत्ययः]

मातृतमाम् अतिशयेन मातरो मातृवत्पालिका नद्यः प्र०—मातर इति नदीनाम निघं० १.१३, अत्र 'सुपां व्यत्ययः ३.३३.३. **मातृतमासु**=अतिशयेन शास्त्रोक्तशिक्षया मानकर्त्रीषु धात्रीषु १०.७. **मातृतमाः**=अतिशयेन मातर इव वर्त्तमानाः (नद्यः) १.१५८.५. अतिशयेन मातृवत् कृपालवः (जनित्रीः=जनन्यः) ६.५०.७. [मातृ-प्राति० अतिशायने तमबन्तात् स्त्रियां टाप्]

मातृमृष्टेव विदुष्या मात्रा सत्यशिक्षाप्रदानेन शोधितेव (युवतिः) १.१२३.११. [मातृमृष्टा-इवपदयोः समासः । मातृमृष्टा='मातृ' उपपदे मृजू शौचे (चुरा०) धातोः क्तान्ताट् टाप्]

मात्या मतेर्भावः कर्म वा (वाक्=वक्ति यया सा) १३.५८. [मतिप्राति० भावे कर्मणि वा ष्यञ् । ततः स्त्रियां टाप्]

मात्रया यया सर्वं मिमीते तया (बुद्ध्या) १३.२. भागेन १५.११. लेशविशेषेण १५.१०. **मात्रा**=मीयते यया सा भा०—परिमाणम् २३.४७. भा०—व्यवहारसाधकं वस्तु २३.४८. **मात्राभिः**=शब्दादिभिः सूक्ष्मैर्व्यवहाराऽवयवैः ३.४६.३. सूक्ष्माऽवयवैः ३.३८.३. [माङ् माने (जु०) धातोः 'हुयामाश्रुभसिभ्यस् त्रन्' ४.१६८. सूत्रेण त्रन् । ततः स्त्रियां टाप् । मात्रा मानात् नि० ४.२५. यद्धेव मिमीते तस्मान्मात्रा श० ३.१.४.८.]

मादनम् आनन्दनम् ७.३१.१. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् ल्युट्]

मादयध्यै मोदयितुम् प्र०—अत्र 'मदी हर्षग्लेपनयोः इति' णिजन्तादध्यै प्रत्ययः ३.१३. मादयितुमानन्दयितुम् ६.२२.३.

मादयध्वम् सुखयत ६.५२.१७. परस्परानानन्दयत ४.३४.८. आनन्दं प्रापयत १.८५.६. हर्षयत ३३.५३. हर्षयध्वम् २.१८. **मादयन्ताम्**=आनन्दयन्तु ७.३९.५. आनन्दयन्ताम् ७.५१.२. तृप्ता भूत्वाऽस्मानानन्दयन्तु २०.४६. हृष्यन्तु भा०—सुखिनो भवन्तु भावयन्तु वा २.१३. **हर्षयन्तु**=३.४.११. **मादयन्तु**=हर्षयन्तु ७.२३.५. **मादयन्ते**=हर्षयन्ति १.५९.१. **मादयस्व**=आनन्दं प्रापय १.८१.८. हर्षयस्व १७.८८. आनन्दयस्व २७.२८. आनन्दय हर्षितो वा भव १.१०१.९. आनन्दानन्दय वा ६.४१.५. **मादयाते**=मादयेः हर्षयेत् ७.४७.२. **मादयाध्वै**=आनन्दत १.१६१.८. मादयध्वम् प्र०—लेट्

प्रयोगोऽयम् १.३७.१४. **मादयासे**=हर्षयसे १.१०१.८. **मादयेथाम्**=हर्षयेतम् ४.४९.६. आनन्दयतम् ४.१४.४. आनन्दयेथाम् १.१८४.२. मादयेते हर्षयतः १.१०९.५. **मादयेथे**=हर्षयतः १.१०८.१२. **मादयैते**=सुखयेताम् ४.४१.३. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्। अन्यत्र लट् लेट् चापि]

मादयिष्णवः हर्षनिमित्ताः (इन्दवः=सोमाद्योषधिगणाः) प्र०—अत्र 'णेश्छन्दसि' अ० ३.२.१३७. अनेन ण्यन्तान्मदेरिष्णुच् प्रत्ययः १.१४.४. [मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्णिजन्तात् 'णेश्छन्दसि' सूत्रेण इष्णुच् तच्छीलादिषु]

माद्भिः मासैः २.२४.५. [मासप्राति० भिस्प्रत्यये 'पदन्नोमास्०' अ० ६.१.६३. सूत्रेण मास् आदेशः। 'स्ववःस्वतवसोर्मास उषसश्च तकारादेश इष्यते छन्दसि भकारादौ' इत्युपसंख्यानात् तकारादेशः]

माधवः मधुरादिफलनिमित्तो वैशाखः १३.२५. **माधवाय**=वैशाखमासाय ७.३०. [मधुप्राति० मत्वर्थे 'मधोर्ञ च' अ० ४.४.१२९. सूत्रेण ञः]

माधूचीभ्याम् यौ मधुविद्यामञ्चतस्ताभ्याम् (अध्यापकोपदेशकाभ्याम्) ३७.१८. [मधूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' इति क्विन्। 'अनिदितामि' ति नकारलोपे 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति स्त्रियां ङीपि भसंज्ञायां सत्याम् 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' सूत्रेण पूर्वस्य दीर्घत्वे रूपम्। पूर्वस्य दीर्घश्च छान्दसः]

माध्यन्दिनम् मध्ये भवम् (सवनं=भोजनम्) प्र०—अत्र 'मध्योमध्यं दिनण् चाऽस्मात्' इति वार्त्तिकेन मध्यशब्दो मध्यमिति मान्तमापद्यते भवेऽर्थे दिनण् च प्रत्ययः ३.३२.१. मध्ये दिने भवं भोजनादिकम् ४.३५.७. मध्याह्ने भवम् (सवनं=आरोग्यकरं होमादिकम्) १९.२६. **माध्यन्दिने**=मध्यं दिने भवे (सवने=प्रेरणे) ६.४७.६. मध्याह्ने ५.४०.४. [मध्यप्राति० भवार्थे 'मध्यो मध्यं दिनण् चास्मात्' इति वार्त्ति० सूत्रेण दिनण्। मध्यस्य च मध्यं भावः। इदं (अन्तरिक्षम्) माध्यन्दिनं सवनम् जै० ३.५७. त्रैष्टुभबार्हतो वै माध्यन्दिनः जै० २.३८३. त्रिच्छन्दा माध्यन्दिनः पवमानः ष० १.३. मरुत्वद्धि माध्यन्दिनं सवनम् तां० ९.७.२. माध्यन्दिनं सवनानां तपस्वितमम् काठ० २३.१०. रुद्राणां माध्यन्दिनं सवनम् कौ० १६.१. श० ४.३.५.१. वाजवन्माध्यन्दिनं सवनम् तां० १८.६.७. स्वर्गो वै लोको माध्यन्दिनं सवनम् मै० ४.८.३. गो० २.३.१७.]

माध्वी मधुरादिगुणयुक्तां (रातिः=दानम्) १.१८४.४. मधुरा नीतिः ४.४३.५. **माध्वीभ्याम्**=सुनीति-योगरीतिभ्याम् ७.११२. मधुरादिगुणयुक्ताभ्यां विद्यासुशिक्षाभ्याम् ३७.१८. **माध्वीः**=माध्व्यः (गावः=किरणाः) १.९०.८. मधुविज्ञाननिमित्तं विद्यते यासु ताः (ओषधीः) प्र०—'मधोर्ञ च' अ० ४.४.१२८. अनेन मधुशब्दाञ्ञः 'ऋत्व्यवास्त्व्य०' इति यणादेशनिपातनम् 'वाच्छन्दसि' इति पूर्वसवर्णादेशः १.९०.६. माध्व्यो मधुरगुणयुक्ताः (ओषधीः=ओषधयः) प्र०—अत्र 'ऋत्व्यवास्त्वय०' इति मधुशब्दादणि यणादेशनिपातः १३.२७. [मधुप्राति० 'मधोर्ञ चे' ति मत्वर्थे ञप्रत्यये भवार्थे वा अण्-प्रत्यये स्त्रियां ङीपि 'ऋत्व्यवास्त्व्य०' अ० ६.४.१७५. सूत्रेण यणादेशो निपात्यते]

माध्वी माधुर्यादिगुणोपेतौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) ४.४३.४. मधुरगतिमन्तौ (अश्विना=शिल्पकार्यविदौ) ५.७५.२. मधुरादिगुणप्रापकौ (अश्विनौ=अध्यापकपरीक्षकौ) ५.७५.१. [माध्वीति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

मानम् सत्कारम् १.१००.१४. **मानस्य**=विज्ञानवतो जनस्य १.१८९.८. परिमाण के योग से वनाई हुई का सं० वि० १६८, अथर्व० ९.२.३.२१. **मानः**=यो मन्यते सः (विद्वज्जनः) ७.३३.१३. **मानैः**=परिमाणैः २.१५.३. [माङ् माने (जु०) धातोर्ल्युट्। माने निर्माणे नि० २.२२.]

मानवस्यते मानवानात्मन इच्छते (विदुषे जनाय) १.१४०.४. [मानवपदाद् आत्मन इच्छायां क्यचि सुगागमे शतरि च रूपम्]

मानवेभ्यः मननशीलेभ्यः (जनेभ्यः) ४.५४.१. [मनुप्राति० अपत्यार्थेऽण्]

मानसः मनसः ऊष्मेव वर्त्तमान (ग्रीष्मः) १३.५५. [मनस्प्राति० भवार्थेऽण्]

मानस्कृतम् मनस्कृतेषु विचारेषु कुशलम् (पुरुषम्) ३०.१४. [मनस्-कृतपदयोः समासे कुशलार्थेऽण्]

मानासः विचारवन्तः (विद्वांसो जनाः) १.१७१.५. [मानप्राति० जसोऽसुक्]

मानुष मननशील (विद्वन्नुपदेशक) ३.९.६. मनुष्यस्वभावयुक्त (धार्मिक जन) १.८४.२०. **मानुषम्**=मनुष्याणामिदम् (स्वः=सुखम्) ५.६६.२. **मानुषस्य**=मनुष्यजातस्य १.१२१.४. मनुष्यजातौ भवस्य (जनस्य) १.७०.१. **मानुषः**=सर्वशास्त्रमननशीलः (अध्यापको गुरुः) ६.८.

मनुष्य: २१.६१. मनुष्याऽऽकृति: (पुरोहित:) १.४४.१०. सभापतिर्मनुज: १.३७.४. **मानुषात्**=मानवात् २.३.३. **मानुषाणाम्**=नराणाम् १.१२७.८. मानुषेषु भवानाम् (जनानां=मनुष्याणाम्) ४.९.५. मनुष्यजातिस्थानाम् (राज्यपालनाऽर्हगुणानाम्) ६.१९.६. **मानुषाय**=मनुष्याणामस्मै (क्षयाय=गृहाय) १.१२३.१. **मानुषे**=मनुष्याणामस्मिन् संग्रामे ७.१८.९. **मानुषेषु**=मनुष्यसम्बन्धिषु (यज्ञेषु=सत्सु कर्मसु) ७.२.७. युक्त्याऽऽहारविहारकर्तृषु (विक्षु=प्रज्ञासु) १.६०.४. अविद्वत्सु (जनेषु) ४.५४.३. **मानुषान्**=मनुष्यादीन् १.४८.७. [मनुप्राति० 'मनोर्जातावञ्यतौ षुक् च' अ० ४.१.१६१. सूत्रेण अञ् षुगागमश्च। मनुष्यप्राति० वा भवार्थेऽण्। मानुषम्=यदब्रुवन्मेदं प्रजापते रेतो दुषदिति तन्मादुषमभवत् तन्मादुषस्य मादुषत्वं मादुषं ह वै नामैतद् यन् मानुषं तन्मादुषं सन् मानुषम् इत्याचक्षते। (इदं मे मादुषत्) तां० ८.२.१०. पशवो मानुषा: क० ४१.६. यन्मन्द्रं मानुषं तत् तै० सं० २.५.११.१.]

मानुषप्रधना: मनुष्याणां प्रकृष्टानि धनानि याभ्यस्ता: (मरुत:) १.५२.९. [मानुष-प्रधनपदयो: समास:]

मानुषा मनुष्याणामिमानि (युगा=वर्षाणि) ५.५२.४. मनुष्यसम्बन्धीनि (युगा=वर्षाणि वर्षसमुदितानि वा) ६.१६.२३. मनुष्येषु भवानि (युगानि=वर्षाणि) १.१०३.४. मनुष्याणां हितकारकाणि (वस्तूनि) १.५१.१. मनुष्यैर्निर्मितानि (कर्माणि) ७.४.१. [मानुषप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि। मानुषमिति व्याख्यातम्]

मानुषास: मननशीला मानवा: १.६०.३. मनुष्या: ७.७.४. [मानुषप्राति० जसोऽसुक्]

मानुषी मानुषाणामियम् (प्रजा) १.७२.८. **मानुषीणाम्**=मनुष्यसम्बन्धिनीनाम् (विशां=प्रजानाम्) ३.११.५. मनुष्यादिरूपाणाम् (प्रजानाम्) ५.१.९. **मानुषीभ्य:**=मनुष्यादिभ्य: (प्रजाभ्य:) ११.४५. **मानुषीषु**=मनुष्याणामिमासु (विक्षु=प्रजासु) ३.५.३. **मानुषी:**=मनुष्याणामिमा: प्रजा: ६.६५.१. मनुष्यसम्बन्धिन्य: (प्रजा:) ५.८.३. मानुषाणामविदुषामिमा: (विश:=प्रजा:) १७.८६. [मानुषप्राति० स्त्रियां ङीप्। मानुषम्=मनुष्यप्राति० 'तस्येदमि' त्यण्]

मानुषेभि: मनुष्यै: ७.३८.१ [मानुषप्राति० भिस ऐस् न 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

मानेभि: ये मन्यन्ते तैर्विद्वद्भि: १.१८४.५. [मानप्राति० भिस्। ऐस् न भवति छान्दसत्वात्]

मान्थाल: जन्तुविशेष: २४.३८.

मान्दार्यस्य मान्दस्य स्तोतुमर्हस्योत्तमगुणकर्मस्वभावस्य च (कारो:=शिल्पिनो जनस्य) १.१६५.१५. प्रशस्तकारुकस्य शिल्पिन: ३४.४८. सर्वेभ्य आनन्दप्रदस्योत्तमस्य (कारो:=क्रियाकुशलजनस्य) १.१६८.१०. आनन्दिनो धार्मिकस्य (कारो:) १.१६६.१५. [मान्द-आर्यपदयो: समास:। मान्द:=मदि स्तुतिमोदमदादिषु (भ्वा०) धातोरच्प्रत्यये मन्द:। तत: स्वार्थिकेऽणि मान्द:। आर्य:=ऋ गतिप्रापणयो: (भ्वा०) धातो: 'ऋहलोर्ण्यत्' इति ण्यत्]

मान्दा: ये जनान् मदन्त्यानन्दयन्ति त एव मान्दा: (राजपुरुषा:) १०.४. [मान्द इति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

मान्यमानम् मान्यानां मानं सत्कारो यस्मात्तम् (धार्मिकं प्राज्ञम्) ७.१८.२०. [मान्य-मानपदयो: समास:। मान्य:=मान पूजायाम् (चुरा०) धातोर्ण्यत्। मान:=मान+घञ्]

मान्यस्य प्रशंसितुं योग्यस्य (कारो:=शिल्पिजनस्य) १.१८४.४. सत्कर्त्तव्यस्य (कारो:=शिल्पिनो जनस्य) ३४.४८. माननीयस्य योग्यस्य (शिल्पिन:) १.१६५.१४. सत्कर्त्तुं योग्यस्य (कारो:=शिल्पिन:) १.१६७.११. ज्ञातुं योग्यस्य (कारो:) १.१६८.१०. [मान पूजायाम् (चुरा०) धातोर्ण्यत्]

मामका: मदीया: (जीवा:) १९.४६. **मामकानाम्**=मदीयानां वीराणाम् (सत्वनाम्=प्राणिनाम्) १७.४२. [अस्मद्-प्राति० शैषिकेऽण्प्रत्यये 'तवकममकावेकवचने' इति ममकादेश:]

मामतेयम् ममताया: प्रजाया अपत्यम् १.१४७.३. मम भावो ममता, तस्या इदम् (कार्यम्) ४.४.१३. **मामतेय:**=ममतायां कुशल: (लोभातुरो जन:) १.१५८.६. [ममताप्राति० अपत्यार्थे 'तस्येदमि' त्यर्थे कुशलार्थे वा ढक्। ममता=मम+तल्। मम=अस्मद्+ङस्]

मामहन्त सत्कुर्वन्तु प्र०—अत्र 'तुजादिना०' इत्यभ्यासदैर्घ्यम् ७.५२.२. **मामहन्ताम्**=सत्कारेण वर्धयन्ताम् १.१००.१९. सत्कारहेतवो भवन्तु १.६६.९. वर्धन्ताम् प्र०—व्यत्ययेनाऽत्र शप: श्लु: १.९४.१६. सत्कुर्वन्तु भा०—भूषका: सन्ति ३३.४२. **मामहे**=सत्कुर्याम् ५.२७.१. महयति प्र०—अत्र 'मह पूजायाम्' इत्यस्माल्लटि 'बहुलं छन्दसि' इति श्लुर्विकरणो व्यत्ययेनात्मनेपदं तुजादित्वाद् दीर्घ: १.१६५.१३. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभाव:। 'बहुलं छन्दसि' इति शप: श्लु:। तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घ:।

अन्यत्र लोट् लट् च । व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

मामहः पूज्यान् (सज्जनान्) २.१७.७. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्तादच्]

मामहानम् दत्तवन्तम् (प्रजाजनम्) १.११७.१७. **मामहानः**=अतिशयेन महान् पूजनीयः (धर्मः=अग्निहोत्रादिको यज्ञः) १७.५५. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोः 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' इति चानश् । विकरणव्यत्ययेन शपः श्लुः । तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः । यजमानो वै मामहानः श० ९.२.३.९.]

मामृजे मृजति शोधयति प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदीर्घः ७.२६.३. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लिट् । तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

मायया प्रज्ञया २३.५२. आडम्बरेण ५.६३.७. आच्छादनादिना प्रज्ञया वा ५.६३.३. कपटयुक्तया (वाचा) ऋ० भू० ३१७, १०.७१.५. **माया**=प्रज्ञा ३.६१.७. **मायाभिः**=प्रज्ञा-विशेषव्यवहारैः १.११.७. प्रज्ञानोपायैः १.५१.५. गर्जनाऽन्धकारविद्युदादिवत् कपटधूर्त्तताधर्म्मादिभिः १.३३.१०. **मायायै**=प्रज्ञावृद्धये ३०.७. **मायाः**=छलयुक्ताः प्रज्ञाः २.११.१०. कपटानि ६.४५.९. कपटादियुक्ताः क्रियाः १.११७.३. अन्धकाराद्या इव १.३२.४. **मायाम्**=प्रज्ञापिकां विद्युतम् १३.४४. मेधाम् ५.८५.६. [मा माने (मानमिहान्तर्भावः) (अदा०) धातोः 'माछाशसिभ्यो यः' उ० ४.१०९. सूत्रेण यः । ततः स्त्रियां टाप् । माया प्रज्ञानाम निघं० ३.९. मायया वाक्प्रतिरूपया नि० १.२०. मायाम्=प्रज्ञाम् निघं० ७.२७. मायाः प्रज्ञानानि नि० १२.१७.]

मायावान् कुत्सितप्रज्ञायुक्तः (दस्युः=दुष्टस्वभावो जनः) ४.१६.९. [मायाप्राति० निन्दायामर्थे मतुप्]

मायाविनम् दुष्टप्रज्ञम् (दुष्टाचारिणं जनम्) २.११.९. [मायाप्राति० निन्दायामर्थे 'अस्मायामेधास्रजो विनिः' अ० ५.२.१२१. सूत्रेण विनिः]

मायिनम् प्रशस्ता माया प्रज्ञा विद्यते यस्य तम् (विद्वांसं जनम्) ५.५८.२. कुत्सिता माया प्रज्ञा विद्यते यस्य तम् (अहिं=मेघम्) ५.३०.६. छलादिदोषयुक्तम् (मृगं=परस्वाऽपहर्त्तारं जनम्) १.८०.७. छलकपटयुक्तं दुष्टकर्मकारिणं मनुष्यम् १.५३.७. माया निन्दिता प्रज्ञा विद्यते यस्य तम् (दुष्टस्वभावं प्राणिनम्) प्र०—अत्र निन्दाऽर्थे इनिः १.११.७. **मायिनः**=प्रशंसिता मायाः प्रज्ञा विद्यन्ते येषान्ती (कवयः=विद्वांसो जनाः) १.१५९.४. कुत्सिता माया प्रज्ञा विद्यते यस्य तस्य (दानवस्य=दुष्टकर्मकर्त्तुर्जनस्य) २.११.१०. प्रशस्तप्रज्ञाः (राजादयो जनाः) ३.३८.९. अन्यायकारिणः (मनुष्यस्य) ऋ० भू० १५१, ऋ० १.३.१८.२. कपटादिदोषयुक्तांश्छत्रून् १.५४.४. कपटाधर्माचरणयुक्तस्य (दुर्जनस्य) प्र०—अत्र निन्दार्थं इनिः १.३९.२. **मायिनाम्**=येषां मायानिर्माणं घनाकारं सूर्यप्रकाशाच्छादकं वा बहुविधं कर्म विद्यते तेषाम् (मेघानाम्) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे इनिः १.३२.४. माया कुत्सिता प्रज्ञा विद्यते येषान्तान् (दुष्टांश्छत्रून्) प्र०—अत्र कर्मणि षष्ठी ३३.५६. **मायी**=उत्तमा प्रज्ञा विद्यते यस्य सः (इन्द्रः=सत्पुरुषः) ७.२८.४. [मायाप्राति० प्रशंसायां निन्दार्थे वा (मत्वर्थे) इनिः]

मायिना प्राज्ञौ (राजसभासेनेशौ) ६.६३.५. [माया प्रज्ञा नाम निघं० ३.९. ततो मत्वर्थं इनिः । ततो द्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

मायिनी माया प्रज्ञा विद्यते यस्यां सा (विदुषी स्त्री) ५.४८.१. [मायाप्राति० मत्वर्थे इनिप्रत्ययान्तात् स्त्रियां ङीप्]

मायुम् परिमितं मार्गम् १.१६४.२९. वाणीम् प्र०—मायुरिति वाङ्नाम निघं० १.११, १.१६४.२८. **मायोः**=शृगालविशेषस्य २४.३२. [डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोः 'कृवापाजिमिस्वदि०' उ० १.१. सूत्रेण उण् । 'मिनातिमिनोतिदीङां ल्यपि चे' त्यात्त्वम् । मायुः वाङ्नाम निघं १.११. मायुमिवादित्यमिति वा, वागेषा माध्यमिका नि० २.९.]

मारुत मरुतां मनुष्याणां मध्ये विदित (विद्वज्जन) ५.४६.२. मनुष्याणां मध्ये वर्त्तमानः (विद्वज्जन) ३३.४८. **मारुतम्**=मरुतां मनुष्याणामिदं कर्म्म २२.११.१४. मरुतां वायूनामिमम् (गणम्) १.६४.१२. महद्विषयम् (शर्धः=बलम्) २.१.६. मरुत्सम्बन्धिनम् (गणम्) ३३.४५. मरुतां समूहस्तम् प्र०—अत्र 'मृग्रोरुतिः' उ० १.९५. इति मृङ्धातोरुतिः प्रत्ययः 'अनुदात्तादेरञ्' अ० ४.२.४४. इत्यञ् प्रत्ययः । समी०—इदं पदं सायणाचार्येण मरुतां सम्बन्धि तस्येदमित्यण् व्यत्ययेनाऽऽद्युदात्तत्वम् इत्यशुद्धं व्याख्यातम् १.३७.१. मरुतो विकारो मारुतस्तम् १.३७.५. **मारुतस्य**=कलायन्त्रवायोः प्राणस्य वा १.८७.६. मरुतामयं तस्य (वेधसः=विधातुः) १.१५६.४. **मारुतः**=मरुद्देवताकः (कल्माषः पशुः) २९.५८. वायूनां समूहः ५.६१.१३. मरुतां पवनानामयं सम्बन्धी ज्ञाता (विद्वज्जनः) १८.४५. मनुष्यदेहानामयम् (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. मनुष्याणां

मध्ये वर्त्तमानः (विष्णुः=प्रधानपुरुषः) ३३.४८. **मारुताय**=मरुतां मनुष्याणामस्मै (स्वभानवे=स्वप्रज्ञा प्रदीप्तये) ६.४८.१२. **मारुताः**=मनुष्यदेवताकाः (पृश्नयः पशवः) २४.१४. मरुद्देवताकाः (भा०—वायुगुणाः पशवः पक्षिणो वा) २४.४. **मारुतेन**=मनुष्याणामनेन (शर्द्धेन=बलेन) २.३१.३. हिरण्यादिसम्बन्धेन (गणेन=समूहेन) प्र०—मरुदिति हिरण्यनाम निघं० १.२, ३.३२.२. [मरुत्-प्राति० समूहार्थे 'अनुदात्तादेरञ्' अ० ४.२.४४. सूत्रेण अञ्। विकारार्थे 'तस्येदमि' त्यर्थे, 'सास्य देवते' त्यर्थे वा अञ्। मरुत्=हिरण्यनाम निघं० १.२. रूपनाम निघं० ३.७. मरुत्=मृङ् प्राणत्यागे (तुदा) धातोः 'मृग्रोरुतिः' उ० १.९५. सूत्रेण उतिः। अन्तरिक्षलोको वै मारुतो मरुतां गणः श० ९.४.२.६. मारुतम्=मेघम् नि० ११.५०. सप्त हि मारुतो गणः श० ५.४.३.१७. सप्त सप्त मारुता गणाः मै० ३.३.१०, श० ९.३.१.२५. विण्मारुताः मै० ३.३.१०. ये ते मारुताः (पुरोडाशाः) रश्मयस्ते श० ९.३.१.२५. मारुतो हि वैश्यः (वायुः) मै० ३.४.३. काठ० ३७.३. तै० २.७.२.२. मारुतस्सप्तकपालः मै० १.१०.१. मारुतः कल्माषः काठ० ४८.१. मारुतं सप्तकपालम् तै० सं० १.८.२.१. एकविंशतिर्वै मारुता गणाः काठ० ११.१.]

मारुताश्वस्य (मरुतामिवाश्वानामयं तस्य (भृत्यजनस्य) ५.३३.९. [मारुत-आश्वपदयोः समासः। मरुत् प्राति० अश्वाच्चेदमर्थेऽण्]

मारुतीः मारुत्यो मरणधर्माणो मरुत्प्रधाना वा (प्रजाः) ऋ० भू० १४०, ऋ० ६.१.६.४. [मरुत्प्राति० समूहार्थेऽञ्प्रत्ययान्तात् स्त्रियां ङीप्]

मार्गारम् यो मृगाणामरिर्व्याधस्तस्याऽपत्यम् ३०.१६. [मृग-अरिपदयोः समासेऽपत्यार्थेऽण्]

मार्जालीयः शोधकः (भगवान्) प्र०—'स्याचतिमृजेरालज्वालञालीयचः' उ० १.११६. अनेन सूत्रेणाऽत्र मृजूष् शुद्धौ इत्यस्मादीयच्-प्रत्ययः ५.३२. पाप का मार्जन=निवारण करने वाला (ईश्वर) आर्याभि० २.१७, ५ ३२. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोः 'स्याचतिमृजेरालज्वालञ्-आलीयचः' उ० १.११६. सूत्रेण आलीयच्]

मार्जाल्यः संशोधकः (अतिथिर्जनः) ५.१.८. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० आल्यञ्]

मार्ज्मि शुद्धो भवामि शोधयामि वा २.१४. मार्ष्टि वा प्र०—अत्र पक्षे पुरुषव्यत्ययः २.७. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लट्]

मार्डीकम् मृडीकानां सुखानामिमं साधकम् (रयिम्) १.७९.९. **मार्डीके**=सुखकरे (व्यवहारे) ४.१८.१२. [मृडीकप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण्। मृडीकम्=मृड सुखने (तुदा०) धातोः 'मृडः कीकच्कङ्कणौ' उ० ४.२४. सूत्रेण कीकच्]

मार्त्ताण्डः मार्त्तण्डे सूर्ये भवः (वरुणः=वरो जीवः) प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः २.३८.८. [मार्त्तण्ड-प्राति० भवार्थेऽण्। 'अन्येषामि' ति सूत्रेण दीर्घे मार्त्ताण्डः। स (मार्त्तण्डः) वाव विवस्वान् आदित्यः मै० १.६.१२.]

मार्ष्टु पुनः पुनः शुन्धन्तु ८.१४. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लोट्]

मावतः मद्विधस्य (विप्रस्य=मेधाविनः पण्डितस्य) प्र०—'अत्र वतुप्प्रकरणे युष्मदस्मद्भ्यां छन्दसि सादृश्य उपसङ्ख्यानम्' अ० ५.२.३९. अनेन वार्त्तिकेनाऽस्मच्छब्दात् सादृश्ये वतुप् प्रत्ययः 'आ सर्वनाम्नः' अ० ६.३.९१. इत्याकारादेशश्च १.१७.२. मत्सदृशस्य (विप्रस्य=मेधाविजनस्य) १.१२९.११. **मावते**=मत्सदृशाय (दाशुषे=विदुषे जनाय) १.८.९. [अस्मद्-प्राति० सादृश्ये 'वतुप्प्रकरणे युष्मदस्मद्भ्यां छन्दसि सादृश्य उपसंख्यानम्' अ० ५.२.३९. वा० सूत्रेण वतुप्। 'प्रत्ययोत्तरपदयोश्चे' ति मादेशः। 'आ सर्वनाम्नः' इत्याकारान्तादेशः]

मासकृत् मामेकवारम्, अथवैकपद्यं—मासानां चाऽर्द्धमासादीनां च कर्त्ता (अरुणः=विद्याप्रकाशकरणो विद्वान्) अत्र मासकृदित्येकं पदं निरुक्तप्रामाण्यादनुमीयते। अथ शाकल्यस्तु 'मा सकृत्' इति पदद्वयमभिजानीते १.१०५.१८. [मासोपपदे करोतेः कर्त्तरि क्विप् मासकृत्=मासानां चार्द्धमासानां च कर्त्ता नि० ५.२१.]

मासरम् येनाऽतिथयो मासेषु रमन्ते तत् (आतिथ्यरूपं=अतिथीनां भावः कर्म वाऽऽतिथ्यं तद्रूपं च तत्) १९.१४. ओदनम् उपलक्षणमेतत् तेन सुसंस्कृतमन्नमात्रं गृह्यते २१.३५. संस्कृतभोज्यमन्नम् २१.३८. **मासरेण**=प्रमितेन मण्डेन प्र० अत्र माङ्-धातोरौणादिकः सरन् प्रत्ययः २०.६६. **मासरैः**=परिपक्वौषधिसंस्रावैः १९.८२. [माङ् माने (जु०) धातोरौणा० सरन्। अथवा मासोपपदे रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्डः]

मासः चैत्राऽऽदिः ५.४५.७. **मासान्**=मासानाम् प्र०—अत्र विभक्ति-व्यत्ययः २४.३७. [माङ् माने (जु०) धातोर्बाहु० औणा० सः। मासा मानात् नि० ४.२७. भासाः (संवत्सरस्य) कर्मकाराः तै० ३.११.१०.३. मासा

वै रश्मयः तां० १४.१२.९. मासा हवींषि श० ११.२.७.३. यव्या मासाः श० १.७.२.२६. मासा देवा अभिद्यवः गो० पू० ५.२३. मासा उपसदः श० १०.२.५६. एष (चन्द्रमाः) मासः जै० २.३. त्रिंशन्मासो रात्रयः काठ० ३४.९. त्रिंशिनो मासाः तै० सं० ७.५.२०.१. दक्षिणावृतो मासाः तै० सं० ५.३.२.४. मासा वै वाजाः तै० सं० २.५.७.४. मासाः सन्धानानि तै० सं० ७.५.२५.१.]

मासि मासे २.१७.७. [मासप्राति० सप्तम्याम् 'पदन्नोमास्०' इत्यादिना 'मास्' आदेशः। मासि=मासे नि० ६.३५]

मासि परिमिमीषे १.४२. प्रापयसि १.९२.७. **माहि**=सत्कुरु ७.२६.५. मन्यस्व ४.२२.१०. [मा माने (अदा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लोट्]

माहिनस् महत् (श्रवः=श्रवणमन्नं वा) ४.१७.२. अत्यन्तं पूज्यं महच्च (रेवत्=प्रशस्तधनवदैश्वर्यम्) १.१५१.९. महत्तमम् (दत्रम्=दानम्) ३.३६.९. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोः 'महेरिनण् च' उ० २.५६. सूत्रेण इनन्]

माहिनः महिमायुक्तः (विद्वज्जनः) प्र०—अत्र महेरिनण् च इत्युणादौ सिद्धः १.१६५.३. महान् (इन्द्रः=विद्युत्) २.१९.३. पूज्यमानो महत्त्वेन युक्तः (इन्द्रः=सभेशः) ३३.२७. **माहिनाय**=उत्कृष्टयोगान्महते (इन्द्राय=सभाद्यध्यक्षाय) १.६१.१. [माहिन इति व्याख्यातम्। माहिन महन्नाम निघं० ३.३. इयं पृथिवी वै माहिनम् ऐ० ३.३८.]

माहिनः पूज्याः महत्त्वगुणविशिष्टाः (दिवः=दिव्यगुणसमूहाः) १.५६.६. **माहिना**=महत्त्वेन १.१८०.५. **माहिने**=महिम्ने ३.६.४. [मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोस् ताच्छील्ये णिनिः]

माहिना सत्कर्त्तव्या (गीः=वाणी) ३.७.५. **माहिनायाः**=महत्त्वयुक्तायाः (उषसः) ५.४५.८. [माहिनमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

माहिनावान् बहूनि माहिनानि सत्करणानि विद्यन्ते यस्य सः (परमात्मा) ३.५६.३. प्रशस्तानि माहिनानि पूजनानि विद्यन्ते यस्य सः (सज्जनः) ३.३९.४. [माहिनप्राति० भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा मतुप्। मतुप्-प्रत्यये पूर्वस्य दीर्घः]

माहेन्द्राः=महेन्द्रदेवताकाः (सच्चराः=मार्गाः) २४.१७. [महेन्द्रप्राति० 'सास्य देवते' त्यर्थेऽण्। माहेन्द्रे सर्वे कामाः मै० ४.६.८. माहेन्द्रं दधिवासः क्षौमं दक्षिणा मै० २.६.१.]

माः रचयेः ५.२९.८. [मा माने (अदा०) धातोर्लुङ्। अटोऽभावः सिचो लुक् च छान्दसम्]

मांसभिक्षाम् मांसस्य भिक्षामलाभम् १.१६२.१२. मांसयाचनाम् भा०—मांसमत्तुमिच्छाम् २५.३५. [मांसभिक्षापदयोः समासः। मांसमिति व्याख्यास्यते। भिक्षा=भिक्ष भिक्षायामलाभे लाभे च (भ्वा०) धातोः 'गुरोश्च हलः' इति अकारः। ततः स्त्रियां टाप्]

मांसम् मृतकशरीराऽवयवम् १.१६१.१. **मांसेभ्यः**=शरीराऽन्तर्गतेभ्यः (शरीरावयवेभ्यः) ३९.१०. बहिःस्थेभ्यः (शरीरावयवेभ्यः) ३९.१०. [मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'मनेर्दीर्घश्च' उ० ३.६४. सूत्रेण सः। धातोर्दीर्घश्च। मांस=मांसं माननं वा मानसं वा मनोऽस्मिन् सीदतीति वा नि० ४.३. मांसं वै पुरीषम् श० ८.६.२.१४. मांसं सादनम् श० ८.१.४.५.]

मांस्पचन्याः मांसानि पचन्ति यस्यां तस्याः (उखायाः=पाकसाधिकायाः) प्र०—अत्र 'मांसस्य पचियुड्घञोः' इत्यन्तलोपः १.१६२.१३. मांसं पचन्ति यस्यां तस्याः (उखायाः=स्थाल्याः) २५.३६. [मांस-पचनीपदयोः समासे मांसस्यान्त्यलोपः 'मांसस्य पचियुड्घञोः' अ० ६.१.१४४. वा० सूत्रेण। पचनी=डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

मितज्ञवः मितानि जानूनि येषान्ते (ब्रह्मचारिणो जनाः) ३.५९.३. **मितज्ञुभिः**=सङ्कुचितजानुभिरासीनैर्विद्वद्भिः ६.३२.३. [मित-जानुपदयोः समासे जानुशब्दस्य ज्ञुरादेशश्छान्दसः]

मितद्रवः ये मितं द्रवन्ति गच्छन्ति ते (अश्वा योद्धारो वा) ७.३८.७. ये मितं शास्त्रप्रमितं विषयं द्रवन्ति ते (राजपुरुषाः) ९.१७. **मितद्रुः**=यो मितं द्रवति गच्छति सः (अग्निः=परमेश्वरः) ४.६.५. यो मितं शास्त्रसम्मितं द्रवति प्राप्नोति सः (विद्वज्जनः) ७.७.१. [मितोपपदे द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ३.२.१८०. वा०सूत्रेण डुः। मितद्रवः सुमितद्रवः नि० १२.४४. अथवा मितोपपदे द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'हरिमितयोर्द्रुवः' उ० १.३४. सूत्रेण कुः, डिच्च]

मितः मानं प्राप्तः (अ०—पुरुषः) १७.८१. [माङ् माने (जु०) धातोः क्तः। 'द्यतिस्यतिमास्थाम्०' इतीकारादेशः]

मिता मितानि (सद्म=स्थानानि) १.१७३.३.

['मित' इति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

मिता परिमाणयुक्त (शाला) सं वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१६. **मिताम्**=प्रमाणयुक्त अर्थात् माप में ठीक=जैसी चाहिये वैसी (शाला) को सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१९. [मितप्राति० स्त्रियां टाप्]

मिता इव विद्यया सकलपदार्थवेदित्र्यः (कन्याः) इव ४.५१.२. [मिता-इवपदयोः समासः]

मितासः परिमितविज्ञानाः (मनुष्याः) १७.८४. [मितप्राति० जसोऽसुक्]

मित्र ! सुहृत् (उपदेशक जन) १.१२२.७. सखे (वरुण=राजन्) ४.१.१८. सर्वसुहृदुपदेशक ४.५५.१. **मित्रम्**=सर्वव्यवहारसुखहेतुं ब्रह्माण्डस्थं सूर्य्यं शरीरस्थं प्राणं वा । प्र०—मित्र इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.४. अतः प्राप्त्यर्थः "मित्रो जनान् यातयति ब्रुवाणो मित्रो दाधार पृथिवीमुत द्याम् । मित्रः कृष्टिरनिमिषाभिष्टे मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत" ऋ० ३.५९.१. अत्र मित्रशब्देन सूर्य्यस्य ग्रहणम् 'प्राणो वै मित्रोऽपानो वरुणः' शत० ८.२.५.६. अत्र मित्रवरुणशब्दाभ्यां प्राणाऽपानयोर्ग्रहणम् १.२.७. प्राण इव प्रियम् (अग्नि=पावकम्) ६.५०.१. सर्वप्राणं सर्वसुहृदं वा (इन्द्रं=सभाध्यक्षम्) १.१०९.१. बाह्याऽभ्यन्तरस्थं जीवनहेतुं प्राणम् १.२३.४. **मित्रयोः**=सुहृदोरध्यापकाऽध्येत्रोर्बाह्याभ्यन्तरस्थयोः प्राणयोर्वा ६.५१.१. **मित्रस्य**=सर्वजगत्सुहृदः प्रकाशकस्य वा (दिवः=परमेश्वरस्य सूर्यलोकस्य वा) ४.३५. द्रोहरहितस्य मनुष्यस्य, सूर्यलोकस्य, प्राणस्य वा पं० वि० । सर्वगतस्य सर्वप्राणिभूतस्य (वायोः) १.१४.१०. सुहृद्भाव की सं० वि० २१४, ३६.१८. **मित्रः**=सूर्यः, प्र०—अत्र 'अमिचिमिदिश०' उ० ४.१३८. अनेन क्त्रः प्रत्ययः १.२३.६. सर्वसुखकारी (ईश्वरो विद्वज्जनो वा) १.९०.९. प्राण इव प्रियः (ईश्वरः) ५.४६.५. वायुः ४.१३.२. प्राणवद्वर्त्तमानः (देवः=विद्वज्जनः) १.१८६.२. सखेव प्रियाचारः (दारः) ७.४०.७. सुखप्रदः (उपदेशकः) १०.१६. सर्वथा सबका निश्चित मङ्गलप्रद (ईश्वर) आर्याभि० १.१, ऋ० १.६.१८.९. पक्षपातरहितः सर्वेषां सुहृत् (राजा) ३३.१५. सर्वहितकारी (अर्यमा=न्यायाधीशः) १.४४.१३. बहुसुखकारी, सर्वदुःखविनाशकः (ईश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.९४.१३. सर्वोपकारी (ईश्वर आप्तमनुष्यो वा) १.९०.१. ब्रह्मचर्येण प्राप्तबलः प्राणः १.९६.९. सूर्य इव परमात्मा, सर्वस्य सुहृद्राजा वा ३.५९.१. यो मेद्यति स्निह्यति स्निह्यते वा स मित्रः 'जो सब से स्नेह करके सबको प्रीति करने योग्य सब का सुहृत् अविरोधी है वह (ईश्वर) प्र०—'ञिमिदा स्नेहने इस धातु से औणादिक क्त्र प्रत्यय के होने से मित्र शब्द सिद्ध होता है स० प्र० २०, ३६.९. शत्रुतारहित (परमात्मा) आर्याभि० १.१८, ऋ० १.६.१७.१. **मित्राय**=सर्वोपकारकाय [सेनेशाय सभाध्यक्षाय वा) १.१३६.५. सख्ये ४.३.५. वह्नये ३.५९.१. सर्वसुहृदे (वरुणाय=विद्वज्जनाय) १.१३६.४. **मित्रे**=प्राणे ५.४२.२. **मित्रेण**=धार्मिकेण विदुषा सह भा०—सत्यधर्मप्रियेणाऽमात्येन सह २७.५. [ञिमिदा स्नेहने (भ्वा०) धातोः 'अमिचिमिशसिभ्यः क्त्रः' उ० ४.१६४. सूत्रेण क्त्रः । मित्रः पदनाम निघं० ५.४. मित्रः=मित्रः प्रमीतेस्त्रायते । सम्मिन्वानो द्रवतीति वा । मेदयतेर्वा नि० १०.२१. सर्वस्य ह्येव मित्रो मित्रम् श० ५.३.२.७. मित्र ! सत्यानामधिपतये ! तै० ३.११.४.१. ब्रह्मैव मित्रः श० ४.१.४.१. मित्रः क्षत्रं क्षत्रपतिः श० ११.४.३.११. प्राणो वै मित्रः श० ६.५.१.५. अयं वै वायुर्मित्रो योऽयं पवते श० ६.५.७.१४. अहर्मित्रः तां० २५.१०.१०. यः (अर्द्धमासः) आपूर्य्यते स मित्रः तां० २५.१०.१०. यो (अर्धमासः) ऽपक्षीयते स मित्रः श० २.४.४.१८. मित्रेणैव यज्ञस्य स्विष्टं शमयति तै० १.२.५.३. प्राणो मित्रम् जै० उ० ३.३.६. मित्रः क्षीरश्रीः (सोमः) तै० सं० ४.४.९.१. मित्रमहः मै० १.८.९. मित्रो वै यज्ञस्य शान्तिः काठ० ३५.१९. मित्रो वै शिवो देवानाम् तै० सं० ५.१.६.१. य (अर्द्धमासः) आपूर्यते स मित्रः तां० २५.१०.१०. यो (अर्धमासः) ऽपक्षीयते स मित्रः श० २.४.४.१८. सत्यं वै मित्रः मै० ४.३.९.]

मित्र इव सखेव २.४.१. [सखा-इवपदयोः समासः]

मित्रधितये मित्राणां धितिर्धारणं यस्मात्तस्मै (राये=धनाय) १.१२०.९. [मित्र-धितिपदयोः समासः । धितिः=धि धारणे (तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

मित्रधेये मित्रैर्धर्त्तव्ये व्यवहारे भा०—मन्त्रे सुसन्धौ २७.५. [मित्र-धेयपदयोः समासः । धेयम्=दधातेर्यत्]

मित्रपते मित्राणां पालक (ईश्वर) १.१७०.५. [मित्र-पतिपदयोः समासः]

मित्रमह यः सर्वमित्रैः पूज्यते तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.५०.११. मित्रं सखा महः पूजनीयो यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) ६.२.११. यो मित्रेषु महाँस्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=परमेश्वर) ७.५.६. मित्राणां महः सत्कारस्य

कारयित (अग्ने=विद्वन्) १.५८.८. यो मित्राणि महति सत्करोति तत्सम्बुद्धौ (राजन् शिष्यजन वा) २.१.५. यो मित्राणि महयति पूजयति तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) २६.२५. **मित्रमहः**=यो मित्राणां महः पूज्यः (विद्वान् जनः) १.४४.१२. [मित्र-महपदयोः समासः । महः=मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । कर्त्तरि अच् वा]

मित्रमहः ये मित्राणि महन्ति सत्कुर्वन्ति ते (राजाऽमात्याः) ४.४.१५. [मित्रोपपदे मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

मित्रमहाः यो मित्राणि पूजयति स (विद्वान् जनः) ६.३.६. [मित्रमह इति व्याख्यातम्]

मित्रयुजः ये मित्रैः सह युञ्जन्ति ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १.१८६.८. [मित्रोपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुहयुज०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्]

मित्रराजाना प्राणविद्युतौ ५.६२.३. [मित्र-राजन्-पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

मित्रा मित्रं प्राणम् प्र०—अत्र विभक्तेराकारादेशः ३३.४५. सखायौ ५.६६.६. [मित्रप्राति० विभक्तेराकारादेशः]

मित्रायुवः य आत्मनो मित्राणीच्छवः (विद्वांसो जनाः) १.१७३.१०. [मित्रपदाद् इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसी' ति उः]

मित्रावरुणनेत्राः प्राणोदानवत् सर्वान् धर्म्मं नयन्तः (देवाः=सर्वेभ्यः सुखदातारो विद्वांसः) ९.३६. **मित्रावरुणनेत्रेभ्यः**=प्राणाऽपानतुल्येभ्यः (देवेभ्यः=दिव्यन्यायप्रकाशकेभ्यो विद्वज्जनेभ्यः) ९.३५. [मित्र-वरुणयोः समासे ततो नेत्रेण सह समासः । नेत्रम्=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोरौणा० ष्ट्रन्]

मित्रावरुण मित्रश्च वरुणश्च तौ प्राणोदानौ प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्' इति विभक्तेराकारादेशो व्यत्ययेन ह्रस्वत्वं च १.१५.६. [मित्र-वरुणपदयोः समासे पूर्वपदस्यानङ्, विभक्तेश्च लुक्]

मित्रावरुणयोः सभासेनेशयोः १०.२१. प्राणोदानयोः ६.२४. **मित्रावरुणाभ्याम्**=सख्युत्कृष्टाभ्याम् (पुरुषाभ्याम्) ७.२३. **मित्रवरुणौ**=प्राणोदानवद्वर्त्तमानौ (विद्युत्पवनौ) १.१३९.२. बलपराक्रमकारकौ प्राणोदानौ १.७५.५. यः सर्वप्राणो वहिस्थो वायुर्वरुणोऽन्तस्थमुदानो वायुश्च तौ २.१६. प्राणोदानाविवाध्यापकाध्येतारौ ५.४१.१. सूर्यवायू प्र०—अत्र 'देवताद्वन्द्वे च' अ० ६.३.२६. अनेनाऽऽनङादेशः १.२.८. **मित्रावरुणा**=मित्रश्च वरुणश्च द्वौ सूर्यवायू प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.२३.५. प्राणोदानौ २८.१९. सुहृद्वरावध्यापकोपदेशकौ १.१५२.३. प्राणोदानवद्राजप्रधानाऽमात्यौ ४.३९.५. यः सर्वमित्रः सर्वेश्वरश्च तौ १.७१.९. अध्यापकोपदेशकौ ७.३३.१०. प्राणोदानाविव सखिराजानौ ७.४१.४. वायुसवितारौ ५.६३.३. यज्ञशिल्पकारिणौ ५.६३.५. वायुसूर्याविव (राजामात्यौ) ५.६३.२. मातापितरौ ५.४७.७. सर्वसुहृदुत्कृष्टौ (अश्विना=अध्यापकाऽध्येतारौ) १.१११.४. सखायावुत्तमौ जनौ ७.१०. स्त्रीपुरुषौ ७.४२.५. सत्योपदेशकौ (विद्वज्जनौ) १.५३.३. मित्रः सर्वेषां सखा वरुणः श्रेष्ठश्च तौ (सज्जनौ) ५.६७.३. प्राण उदान के समान प्रिय और सर्वशक्तिमान् (ईश्वर) सं० वि० १५५, ७.४१.१. प्राण और उदान, सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५४. [मित्र-वरुणपदयोः समासे 'देवताद्वन्द्वे च' अ० ६.३.२६. सूत्रेणानङ् । मित्रावरुणा=मित्रावरुणौ नि० ११.२३. प्राणापानौ मित्रावरुणौ तां० ६.१०.५. प्राणो वै मित्रोऽपानो वरुणः श० ८.४.२.६. प्राणोदानौ वै मित्रावरुणौ श० १.८.३.१२. अहोरात्रौ वै मित्रावरुणौ तां० २५.१०.१०. अहर्वै मित्रो रात्रिर्वरुणः ऐ० ४.१०. अर्द्धमासौ (शुक्लकृष्णपक्षौ) वै मित्रावरुणौ तां० २५.१०.१०. अथैतावेवार्धमासौ मित्रावरुणौ, य एवापूर्यते स वरुणो योऽपक्षीयते स मित्रः श० २.४.४.१८. वाहू वै मित्रावरुणौ श० ५.४.१.३५. द्यावापृथिवी वै मित्रावरुणयोः प्रियं धाम तां० १४.२.४०. गोसंस्तवौ वै मित्रावरुणौ कौ० १८.१३. चक्षुश्च मनश्च मैत्रावरुणः काठ० २७.५. मनो मैत्रावरुणः श० १२.८.२.२३. यज्ञो वै मैत्रावरुणः कौ० १३.२.]

मित्रासः सर्वस्य सुहृदः (सम्राजः=राजानः) ७.३८.४. सखायः ३.५८.४. [मित्रप्राति० जसोऽसुक्]

मित्रिणः मित्राणि यस्य सन्ति तस्य (राज्ञः) १.१७८.४. [मित्रप्राति० भूम्न्यर्थे इनिः]

मित्रियात् मित्रात् ४.५५.५. [मित्रप्राति० पंचमी । वर्णव्यत्ययेनाकारस्येयादेशः]

मित्रेरून् मित्रहिंसकान् शत्रून् प्र०—अत्र मित्रोपपदाद् रुषधातोर्बाहुलकादौणादिको डुः प्रत्ययः १.१७४.६. [मित्रोपपदे रुष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० डुः]

मित्र्यम् मित्रेषु भवम् (प्रमादम्) ५.८५.७. **मित्र्यः**=मित्रेषु साधुः (अग्निः=जगदीश्वरः) २६.७. [मित्रप्राति० भवार्थे यत्]

मिथतीः शत्रुसेना हिंसन्तीः (स्पृधः=सङ्ग्रामान्) ६.२५.२. **मिथत्या**=हिंसया ७.४८.३. [मिथृ मेथृ मेधाहिंसनयोः (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

मिथस्तुरः या मिथस्त्वरयन्ति ताः (ऊतयः=रक्षाः) ७.२६.४. [मिथस् उपपदे ञित्वरा सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोः क्विप्प्रत्यये 'ज्वरत्वर०' इति वकारस्य उपधायाश्च स्थाने ऊठ्। ऊकारस्य ह्रस्वश्छान्दसः। अथवा तुर्वी हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः क्विपि 'राल्लोपः' इति वलोपे रूपम्]

मिथस्तुरा मिथो हिंसके (अहोरात्रे) ६.४९.३. [मिथस्तुर इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

मिथस्पृध्येव यथा परस्परं पृत्सु सङ्ग्रामेषु भवा सेना तद्वत् १.१६६.९. [मिथस्पृध्या-इवपदयोः समासः। मिथस्पृध्या=मिथस्पृध्प्राति० भवार्थे यत्, ततष्टाप्। मिथस्पृध्=मिथस्-पृध्पदयोः समासः। पृत्सु संग्रामनाम निघं० २.१७.]

मिथः परस्परम् ७.३८.५. अन्योऽन्यम् ७.५६.३. [मिथस् इति स्वरादिपाठादव्ययम्]

मिथुना मिथुनौ परस्परसङ्गतौ (सूर्याचन्द्रमसौ) ३.३९.३. दम्पती १.१४४.४. द्वौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५९.४. विरोधं विहाय मिलितौ (विद्वांसौ) १.८३.३. [मिथुनप्राति० 'सुपां सुलुक्०' इति द्विवचनस्याकारः। मिथुनम्=मिथृ मेधाहिंसनयोः (भ्वा०) धातोः 'क्षुधिपिशिमिथिभ्यः कित्' उ० ३.५५. सूत्रेण उनन्। मिथुनौ सरण्यू मध्यमं च माध्यमिकां च वाचमिति नैरुक्ताः। यमं च यमीं चेत्यैतिहासिकाः नि० १२.१०. मिथुनौ कस्मात्? मिनोति श्रयतिकर्मा, थु इति नामकरणस्थकारो वा नयतिः परो वनिर्वा, समाश्रितावन्योन्यं नयतः, वनुतो वा। मनुष्यमिथुनावप्येतस्मादेव, मेथन्तावन्योन्यं वनुत इति वा नि० ७.२९. मिथुनं वा अग्नीच्च पत्नीश्च मै० ४.७.४. मिथुनं वा आपश्च पयश्च मै० १.८.३. मिथुनं वै घृतं च सोमश्च मै० ४.७.४. मिथुनं वै पशवः ऐ० ४.२१. मिथुनं चक्षुः (प्राणापानौ) काठ० १०.१.]

मिथुना मिथुनानि स्त्रीपुरुषाख्यद्वन्द्वानि १.१३१.३. [मिथुनप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

मिथुनानि युग्मानि ३.५४.७. [मिथुनमिति व्याख्यातम्]

मिथुनासः संयोगेनोत्पन्नाः (पुत्राः=तनय इव तत्त्वानि) १.१६४.११. सपत्नीकाः (विद्वांसो जनाः) ५.४३.१५. [मिथुनप्राति० जसोऽसुक्]

मिथुनाः द्वन्द्वा द्वौ द्वौ मिलिताः (वायुजलविद्युतः) ४.४५.१. **मिथुनौ**=स्त्रीपुरुषौ १.१०९.३. [मिथुनमिति व्याख्यातम्। द्वन्द्वं वै मिथुनम् ऐ० ३.५०.]

मिथू परस्परम् १.१६२.२०. मिथः २५.४३. ['मिथू' इत्यव्ययम्। अथवा मिथृ मेधाहिंसनयोः (भ्वा०) धातोः कुः]

मिथूदृशा परस्परदर्शयितारौ (उषासानक्ता=प्रत्यूषरात्र्यौ) २.३१.५. यौ मिथू विषयासक्तिप्रमादौ हिंसनं च दर्शयतस्तौ (अ०—शरीर-मनसी) प्र०—अत्र 'मिथृ मेथृ मेधाहिंसनयोः, इत्यस्मादौणादिकः कुः प्रत्ययः। तदुपपदाद् दृशेः कर्त्तरि क्विप् 'सुपां सुलुग्०' इत्याकारादेशो 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घश्च १.२९.३. [स्पष्टम्]

मिनत् हिंस्यात् ४.३०.२३. **मिनन्ति**=हिंसन्ति ७.३१.११. **मिनवाम**=हिंसेम ५.४५.५. **मिनाति**=त्यजति १.१२४.३. हिनस्ति १.१२३.९. हन्ति १.७१.१०. दूर कर देता है स० प्र० ११०, १.१७९.१. **मिनीमसि**=हिंस्मः प्र०—अत्र 'इदन्तो मसि' इति मसेरिदागमः १.२५.१. [मिनाति वधकर्मा निघं० २.१९. गतिकर्मा निघं० २.१४. ततो लेटि लटि लोटि च रूपाणि]

मिनत् हिंसत् (अनीकं=बलं सैन्यम्) ५.२.१. [मिनाति वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोः शतृ]

मिनन् हिंसन् (जगदीश्वरः) २.१३.३. [मिनाति वधकर्मा निघं० २.१९.) धातोः शतृ]

मिनन्ता हिंसन्तौ (नरौ=विद्यानेतारौ) १.११७.३. [मिनाति वधकर्मा (निघं० २.१९.) धातोः शतरि द्विवचनस्याकारादेशः]

मिनानः मानं कुर्वाणः (अ०—मनुष्यः) ५.४२.१३. [माङ् माने (जु०) धातोः शानच्। विकरणव्यत्ययेन श्ना]

मिनोति प्रक्षिपति ५.२७. **मिन्वन्**=विशेषेण प्रक्षिपन्ति ३.३१.१२. **मिमाय**=प्रक्षिपेयम् २.२९.५. [डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लङ् लिट् च]

मिमाति मिमीते प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.१६४.२८. गच्छति १.१६४.२९. मिमीते जनयति १.३८.८. **मिमाथाम्**=रचयेतम् ४.४१.४. विधत्तम् ४.४४.६. **मिमाय**=मिमीते २.१५.३ शब्दायते १.१६४.४१. [माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। 'भृञामित्' इत्यभ्यासस्येत्त्वम्। अन्यत्र लोटि लिटि च रूपाणि]

मिमानम् धर्त्तारम् (कुमारम्) ५.२.३. **मिमानः**=प्रक्षिपन् विभजन् (सविता=सूर्यः) १.५०.७. योऽनेकानुत्त-

मान् पदर्थान् मिमीते सः (विद्वज्जनः) २०.३७. निर्माता सन् (जगदीश्वरः) २.१७.२. मानं कुर्वाणः (मनुष्यः) ५.४२.१३. **मिमानाः**=शत्रून् प्रक्षेपमाणाः (जनाः) ९.१३. उत्पादयन्तः (दुर्मित्रासः=शत्रुसेनाः) ७.१८.१५. [डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेन शपः श्लुः । माङ् माने (जु०) धातोर्वा शानच् । धातूनामनेकार्थकत्वादत्र प्रक्षेपणेऽपि]

मिमाना विदधतौ (कारू=शिल्पनौ) २९.३२. निर्मातारौ ६.६२.२. निश्चेतारौ (देवौ=विद्वांसौ जनौ) २९.७. [मिमाना=निर्मिमानौ नि० ८.१२. मिमानमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छन्दसि]

मिमाने निर्माणकर्तृ णी द्यावापृथिव्यौ १.१४६.३. [मिमानमिति व्याख्यातम्]

मिमिक्षतम् सेक्तुमिच्छतम् १.२२.३. प्रापयितुमिच्छतम् १.१५७.४. मेढुं सेक्तुमिच्छतम् १.४७.४. **मिमिक्षताम्**=सुखैः सेक्तुमिच्छताम् १.२२.१३. मेढुमिच्छताम् ६.७०.५. सेक्तुमिच्छेताम् १३.३२. **मिमिक्षति**=मेढुं सिञ्चितुमलङ्कर्त्तुमिच्छति १.१४२.३. **मिमिक्षः**=संसिञ्च ६.३४.४. **मिमिक्षिरे**=मेढुमिच्छन्ति १.८७.६. **मिमिक्षुः**=सिञ्चन्ति १.१६५.१. आसिञ्चन्ति ६.२९.३. सम्बध्नन्ति ६.२९.२. **मिमिक्षे**=मेढुं सेक्तुमिच्छेयम् २.३.११. सिञ्चितुमिच्छ १७.८८. **मिमिक्ष्व**=मेढुमिच्छ १.४८.१६. [मिह सेचने (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल्लोट् अन्यत्र लट् लिट् च । इमं यज्ञं मिमिक्षतामितीमं यज्ञमवतामित्येतत् श० ७.५.१.१०.]

मिमिक्षन् सुखैः सेक्तुमिच्छन् (इन्द्रः=सूर्यवद्राजन्) ७.२०.४. [मिह सेचने (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छतृ]

मिमिक्षुम् सेक्तुमिच्छम् (इन्द्रं=विद्वांसं जनम्) ३.५०.३. [मिह सेचने (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्तात् 'सनाशंसभिक्ष उः' इति ताच्छील्य उः]

मिमीतम् मन्येथाम् १.१२०.९. **मिमीतः**=जनयतः ५.७६.२. **मिमीताम्**=सृजेथाम् ५.५१.११. **मिमीते**=रचयति १.१६४.२४. जनयति ३.१.५. **मिमीहि**=मन्यस्व ६.१९.३. मान्यं कुरु ७.१९.११. निर्मिमीहि प्र०—माङ् माने शब्दे च इत्यस्य रूपम्, व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.३८.१४. **मिमीहे**=सम्पादय ३.१.१५. [माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् लोट् च । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । मिमीहि याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९.]

मिमृक्षुः सहन्ते प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इत्यभ्यासस्येत्वम् १.६४.४. [मृष तितिक्षायाम् (भ्वा०) धातोश्छान्दसं रूपम् । मृक्ष संघाते (भ्वा०) धातोर्वा लिट्]

मिम्यक्ष तूर्णं गच्छ ६.५०.५. प्राप्नुहि १.१६७.३. [म्यक्षति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्लोट् । द्वित्वमित्वं च छान्दसम्]

मियेधः येन मिनोति दुःखं प्रक्षिपति सः (यज्ञः=सङ्गतो व्यवहारः) प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिक एधप्रत्ययः ३.३२.१२. मियेन प्रक्षेपणेनैधः प्रदीपनं यस्य सः (यज्ञः) १.१७७.४. **मियेधे**=घृतादि-प्रक्षेपणेन प्रशंसनीये यज्ञे ३.१९.१. प्रापणीये यज्ञे ३.१९.५. परिमाणयुक्ते यज्ञे ७.१.१७. **मियेधैः**=प्रेरकैः (ऋत्विग्भिः) ६.५१.१२. [डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० एधप्रत्ययः किच्च । अथवा मिय-एधपदयो समासः । मियः=मिनोतेर्घञर्थे कः । एधः=इन्धे रूपम्]

मियेध्य मिनोति प्रक्षिपति अन्तरिक्षं प्रत्यग्निद्वारा पदार्थांस्तत्सम्बुद्धौ (अ०—होतर्यजमान वा) प्र०—अत्र डुमिञ्धातोरौणादिको बाहुलकात् केध्यच्प्रत्ययः १.२६.१. दुःखानां प्रक्षेप्तः (ईश्वरः) १.४४.५. दुष्टानां क्षेपणशील (अग्ने=विद्वज्जन) ३८.१७. यो मिनोति प्रक्षिपति दुष्टान् तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=तेजस्विन् विद्वन्) प्र०—अत्र बाहुलकात् औणादिक एध्यच्प्रत्ययः किच्च ११.३७. [डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० केध्यच्]

मिश्राः मिलिताः (वीरा जनाः) १७.६५. [मिश्र सम्पर्के (चुरा०) धातोर्घञर्थे कः]

मिषतः सहजस्वभावेन पं० वि० । ऋ० ८.८.४८.२.]

मिषति सिञ्चति ३.२९.१४. [मिषु सेचने (भ्वा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन शः]

मिषन्तम् शब्दयन्तम् (वत्सम्) १.१६४.२८. [मिष स्पर्द्धायाम् (तुदा०) धातोः शतृ]

मिहम् वृष्टिम् २.३०.२. **मिहः**=वृष्टयः १.७९.२. वृष्टेः ५.३२.४. सेचकाः (पावकाः=पवित्राः पवित्रकरा जनाः) ३.३१.२०. सेचनकर्त्तारः (अ०—मरुतः) प्र०—अत्र इगुपधलक्षणः कः प्रत्ययः, 'सुपां सुलुग्०' इति जसः सुः १.३७.११. **मिहे**=वीर्यसेचनाय वेगाय वा १.६४.६. [मिह सेचने (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कर्त्तरि कः।

घञर्थे को वा। अन्यत्र क्विप् अपि]

मीढुषः वीर्यसेचकस्य (पूर्णब्रह्मचारिजनस्य) ६.६६.३. विद्यादिसद्गुणसेचकान् (मरुतः=ऋत्विजो जनान्) ३.४६. जलेनेव सुखसेचकस्य (विष्णोः=ईश्वरस्य) ७.४०.५. वीर्यवतः (सेनापतेः) ४.१५.५. **मीढुषे**=सुखं सिञ्चते (रुद्राय=राज्ञे) ५.४१.२. वारिणेव सत्योपदेशैः सेचकाय (यतिरूपायाऽतिथये) ७.१५.१. वीर्यवते (सेनापतये) १६.८. सज्जनान् प्रति सुखसेचकाय (रुद्राय=सेनाध्यक्षाय) १.१२२.१. स्निग्धाय सेचनसमर्थाय (राज्ञे) २८.५. सुखवर्धकाय (विदुषे जनाय) ४३.५. **मीढ्वः**=सुखसेचक (वैद्यराज) २.३३.१४. सुखैः सिञ्चन् (रुद्र=सभाध्यक्ष १.११४.३. सुखानां सेचक (अग्ने=राजन्) ३.१६.३. वीर्यदानकर्त्तः (इन्द्र=विवाहितपते) ऋ० भू० २१३, ऋ० ८.३.२८.५. वीर्यसेचन में समर्थ (इन्द्र=ऐश्वर्ययुक्त पुरुष) स० प्र० १४८, १०.८५.४५. हे सत्य से सब के अन्तःकरण को सींचने वाले (संन्यासिन्) सं० वि० १९५, ९.११३.२. **मीढ्वान्**=विद्यायाः सेचकः (सखा=सुहृज्जनः) २.२४.१. वृष्टिद्वारा सेचकः (सूनुः=कार्यकारी सन्तानः) प्र०—अत्र 'दाश्वान्साह्वान्०' अ० ६.१.१२. इति निपातनात् द्वित्वं न १.२७.२. [मिह सेचने (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः। 'दाश्वान्साह्वान्मीढ्वांश्च' अ० ६.१.१२. सूत्रेणाद्वित्वमनिट्त्वमुपधादीर्घत्वं ढत्वं च निपात्यते]

मीढुषी सेचनकर्त्री (भा०—कृतब्रह्मचर्या स्त्री) ५.५६.९. [मिह-सेचने (भ्वा०)+लिटः क्वसु+स्त्रियां ङीप्]

मीढुष्टम योऽतिशयेन मीढ्वान् वीर्यवाँस्तत्सम्बुद्धौ (सभासेनेश) १६.५१. अतिशयेन वीर्यस्य सेचक सेनापते १६.११. **मीढुष्टमाय**=अतिशयेन वृक्षोद्यानक्षेत्रादिसेचकाय कृषीवलाद्याय १६.२९. प्रसेक्तुतमाय (रुद्राय=परमेश्वराय जीवाय वा) १.४३.१. [मीढुष्प्राति० अतिशायने तमप्। मीढुष् इति व्याख्यातम्]

मीढुष्मतीव मीढुः सेक्ता वीर्यप्रदः प्रशस्तः पतिर्विद्यते यस्याः (पृथिवी=भूमिः) तद्वत् (पृथिवी) ५.५६.३. [मीढुष्मती-इवपदयोः समासः। मीढुष्मती=मिह सेचने (भ्वा०)+लिटः क्वसुः+मतुप्+स्त्रियां ङीप्]

मीढुष्मन्तः मीढुषो वहवो वीर्यसेचकादयो गुणा येषान्ते पृथिव्यादयः पदार्थाः प्राणिनश्च) ६.५०.१२. [मिह सेचने (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः। ततो भूम्न्यर्थे मतुप्]

मीढे सङ्ग्रामे ६.४६.४. [मीळ्हे=संग्रामनाम निघं० २.१७.]

मीयते हिंस्यते २.८.३. [मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः कर्मणि लट्]

मीयमानः सत्क्रियमाणः (पुरुषार्थिजनः) ३.८.३. [माङ् माने (जु०) धातोः कर्मणि शानच्]

मीवता हिंसता (कुमारेण=अकृतविवाहजनेन) २८.१३. [मीव स्थौल्ये (भ्वा०) धातोः शत्रन्तात् तृतीया]

मुक्षीजयेव मुक्ष्या मुञ्जाया जायते सा मुक्षीजा तयेव १.१२५.२. [मुक्षीजया-इवपदयोः समासः। मुक्षीजया=मुक्षीजाप्राति० तृतीया। मुक्षीजा='मुक्षी' इत्युपपदे जायतेर्डः। मुक्षीजा मोचनाच्च सयनाच्च ततनाच्च नि० ५.१९.]

मुक्षीय मुक्तो भवेयम् ७.५९.१२. पृथग् भूयासम् अ०— श्रद्धारहितो भूयासम्, मुक्तो भूयासम् ३.६०. [मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लिङ्। मुक्षीय=मुञ्चस्व नि० १३.३५.]

मुखतः अग्रतः २५.२५. [मुखप्राति० तसिः]

मुखम् मुखस्थानीयं श्रेष्ठम् (भा०—उत्तमाङ्गम्) ३१.१०. मुखमिवोत्तमः (ब्राह्मणः=वेदेश्वरविदनयोरुपासको जनः) ३१.११. आस्यम् २०.५. मुख्यगुणेभ्य उत्पन्नम् (पुरुषाऽङ्गम्) ऋ० भू० १२५, ३१.१०. सृष्टि में मुख के सदृश सबसे मुख्य उत्तम (ब्राह्मणः=वेदेश्वरवित्) स० प्र० ११४, ३१.११. **मुखात्**=मुख्यज्योतिर्मयाद्ब्रह्मणरूपात् ३१.१२. [खनु अवदारणे (भ्वा०) धातोः 'डित्खनेर्मुट् चोदात्तः' उ० ५.२०. सूत्रेण अल् अच् वा: डित्त्वाट्टेर्लोपो मुडागमश्च। मुखं प्रतीकम् श० १४.४.३.७.]

मुखा मुखेन सहचरितानि श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि प्रति ४.३९.६. मुखानि २३.३२. [मुखप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

मुग्धः मूढः (अविद्वज्जनः) ५.४०.५. **मुग्धाय**=प्रापितमोहाय मोहं प्राप्ताय वा (जनाय) प्राप्तमोहनिमित्ताय (अह्ने) मूर्खाय वा ९.२०. [मुह वैचित्ये (दिवा०) धातोः क्तः]

मुच त्यज प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्युपधानकारलोपः १.१७७.४. **मुचध्वम्**=त्यजत १.१७१.१. **मुचाति**=मुच्यात् प्र०—अत्र लेटि 'छान्दसो वर्णलोपो०' इति नलोपः २.३८.३. **मुचीष्ट**=मुञ्चत ७.५९.८. **मुच्यध्वम्**=मुक्ता भवत प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन श्यन् ९.१२. त्यजत १२.७३. **मुच्यन्ताम्**=त्यजन्ताम् ३५.३. **मुच्यसे**=मुक्तो भवसि १.३१.४. **मुच्ये**=मुक्तो

भवामि ५.३९. **मुञ्च**=पृथक्कुरु २०.१८. त्यज १६.९. **मुञ्चत**=त्यजत ४.१२.६. **मुञ्चतम्**=मुञ्चेतम् ६.७४.३. **मुञ्चति**=त्यजति प्रक्षिपति वा २.२३. **मुञ्चतु**=निवारयतु २०.१६. पृथक्करोतु ६.१७. **मुञ्चते**=त्यजति ४.५३.२. **मुञ्चन्ति**=उपरमन्ति २.२८.४. **मुञ्चन्तु**=मोचयन्तु १२.८९. **मुञ्चामि**=प्रक्षिपामि अ०—परित्यजामि ४.१३. [मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट्। आगमशासनस्यानित्यत्वान्नुमोऽभावः। नकारलोपो वा छान्दसः। अन्यत्र लेट्, लिङ्, लट् च]

मुचा यौ दुःखं विमुञ्चतस्तौ (सखाया=सुहृदौ) ६.४०.१. [मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। ततो द्विवचनस्य आकारादेशः]

मुञ्जनेजनम् मुञ्जैर्नेजनं शुद्धीकृतम् (उदकम्) १.१६१.८. [मुञ्ज-नेजनपदयोः समासः। मुञ्जः=मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणे क-प्रत्यये धातोः स्थाने मुञ्जादेशश्छान्दसः। मुञ्जो विमुच्यत इषीकया नि० ९.६. नेजनम्=णिजिर् शौचपोषणयोः (जुहो०) धातोर्ल्युट्]

मुदः मोदन्ते यासु ताः (ओषधयः) १८.३८. सम्पूर्ण प्रसन्नताएं सं० वि० १९७, ९.११३.११. **मुदे**=हर्षाय ५.४३.५. मोदनाय १.१४५.४. [मुद हर्षे (भ्वा०) धातोः क्विप्। ओषधयो वै मुद ओषधिभिर्हीदं सर्वं मोदते श० ९.४.१.७.]

मुनिरिव यथा मननशीलो विद्वाँस्तथा ७.५६.८. [मुनि-इवपदयोः समासः]

मुमुक्ष्वः मोक्तुमिच्छन्तः (जनाः) प्र०—अत्र 'जसादिषु वा वचनम्' इति गुणाऽभावः १.१४०.४. [मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताद् उः प्रत्ययः। गुणाऽभावश्छान्दसः]

मुमुग्धि त्यज मोचय वा प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः १.२४.९. **मुमुचः**=मोचयेः ३.४१.८. **मुमोक्तु**=मुञ्चतु मोचयतु वा १.२४.१३. मोचयति प्र०—अत्राऽन्त्यपक्षे लडर्थे लोट् 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः। अन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२४.१२. [मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

मुमुचानः पृथग्भूतः (फलादिपदार्थः) २०.२०. [मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लिटः कानच्]

मुषायत् आत्मनो मुषं स्तेयमिच्छत् (विष्णुः=सेनाध्यक्षः) प्र०—अत्र 'घञर्थे कविधानम्०' इति कः प्रत्ययः। ततः 'सुप आत्मनः क्यच्' इति क्यच्प्रत्ययः 'न छन्दस्यपुत्रस्य' अ० ७.४.३५. इतीत्वप्रतिषेधः १.६१.७. **मुषायः**=यो मुष इवाऽऽचरति (चोर-जनः) ४.३०.४. [मुषप्राति० आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ। अन्यत्र कर्त्तरि अच्। मुषः=मुष स्तेये (क्र्या०) धातोर्घञर्थे कः]

मुषायत् मुष्णाति ७.१८.१९. **मुषायति**=मुषः खण्डक इवाचरति १.१३०.९. चोरयति ५.४४.४. **मुषायः**=चोरय ६.३१.३. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोर्घञर्थे कप्रत्यये मुषः। तत आचारेऽर्थे क्यजन्ताल् लट्]

मुषीवाणम् स्तेयकर्मणा भित्तिं भित्त्वा दृष्टिमावृत्य परपदार्थापहर्त्तारम् (स्तेनम्) प्र०—मुषीवानिति स्तेयनामधेयम्, निघं० ३.२४, १.४२.३.

मुषे चोराय ५.३४.७. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

मुष्कौ मूषकौ २३.२८. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोः 'सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक्' इति कक्]

मुष्टिम् मुष्ट्या धनग्राहकं राज्यम् प्र०—राष्ट्रं मुष्टिः० शत० १३.२.९.७, २३.२४. **मुष्टिः**=मुष्टिवद् दुष्टानां हन्ता (राजा) ६.४७.३०. मुष्टिरिव (गर्जितसेनो वीरपुरुषः) २९.५६. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोः क्तिच्। मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्वा क्तिच्। मुष्टिर्मोचनाद्वा मोषणाद्वा मोहनाद्वा नि० ६.१. राष्ट्रं मुष्टिः तै० ३.९.७.५. श० १३.२.९.७.]

मुष्टिहत्यया हननं हत्या मुष्टिभिर्हत्या मुष्टिहत्या तया १.८.२. [मुष्टि-हत्यापदयोः समासः। मुष्टीति व्याख्यातम्। हत्या=हन्तेः 'हनस्त चे' ति क्यप् तकारश्चादेशः]

मुष्टिहा यो मुष्टिना हन्ति सः (वीरपुरुषः) ५.५८.४. यो मुष्ट्या हन्ति सः (इन्द्रः=राजा) ६.२६.२. [मुष्टि इत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

मुष्णताम् स्तेयकर्मकारिणाम् (प्रजापुरुषाणाम्) १६.२१. **मुष्णन्**=चोरयन् (इन्द्रः=पुरुषार्थी सेनेशः) २.२०.५. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोः शतृ]

मुहुके मोहप्रापके महुर्मुहुः करणीये सङ्ग्रामे ४.१६.१७ **मुहुकैः**=मुहुर्मुहुः कुर्वद्भिः (जनैः) ४.१७.१२. [मुह वैचित्ये (दिवा०) धातोर् बाहु० औणा० (उ० ५.५४.) कुकन्]

मुहुर्गीः मुहुर्मुहुः गिरं प्राप्तः (विद्वज्जनः) १.१२८.३. [मुहुस्-उपपदे गॄ निगरणे (तुदा०) धातोः क्विप्]

मुहुः वारं वारम् ४.२०.९. [मुह वैचित्ये (दिवा०)

धातोः 'मुहेः किच्च' उ० २.१२०. सूत्रैण उसिः। पौनःपुन्ये वार्थेऽव्ययम्। मूढ इव कालो यावदभीक्ष्णं चेति नि० २.२५.]

मुहूर्त्तम् कालाऽवयवम् ३.३३.५. घटिकाद्वयम् ३.५३.८. [हूर्च्छति कुटिलं भवतीति विग्रहे हुर्छा कौटिल्ये (भ्वा०) धातोर् बाहु० औणा० (उ० ३.८६.) क्तः। धातोर्मुडागमः। 'राल्लोपः' अ० ६.४.२१. सूत्रेण छलोपः। मुहूर्त्ताः स (प्रजापतिः) पञ्चदशाह्नो रूपाण्यपश्यदात्मनस्तन्वो मुहूर्त्तां लोकम्पृणाः पञ्चदशैव रात्रेस्तद्यन् मुहु त्रायन्ते तस्मान्मुहूर्त्ताः श० १०.४.२.१८. चित्रः केतुर्दाता प्रदाता सविता प्रसविताभिशस्तानुमन्तेति एतेऽनुवाका मुहूर्त्तानां नामधेयानि तै० ३.१०.१०.३. मुहूर्त्तो मुहुर्ऋतुः नि० २.२५.]

मुहे मुग्धो भवति ६.१८.८. [मुहे वैचित्ये (दिवा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन शः, आत्मनेपदञ्च]

मूकम् अवाचम् (जनम्) ३०.१९. [मूर्व्यते बध्यतेऽसौ मूक इति विग्रहे मूर्वी बन्धने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० (३.४१.) कक्। रेफवकारयोर्लोपः]

मूजवतः वहवो मूजा घासादयो विद्यन्ते यस्मिन् तस्मात् पर्वतात् प्र०—मूजवान् पर्वतः नि ९.८, ३.६१. [मूजवान् पर्वतो मुञ्जवान् नि० ९.८.]

मूत्रम् प्रस्रावः १९.७६. **मूत्रात्**=मूत्राऽऽधारेन्द्रियात् १९.८४. [मुच्यते यत्तद् इति विग्रहे मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोः 'सिविमुच्योष्टेरू च' उ० ४.१६३. सूत्रेण ष्ट्रन्। मूत्र प्रस्रवणे (चुरा०) धातोर्वा घञ्]

मूराः मूढाः (शत्रुजनाः) ४.२६.७. [मुह वैचित्ये (दिवा०) धातोः क्तः। वर्णव्यत्ययेन ढकारस्य रेफः। मूरा मूढाः निघं० ६.८.]

मूर्द्धन् मूर्द्धनि २०.४४. उत्तमाऽङ्गे २.३.२. ['मूर्द्धन्' इति व्याख्यास्यते। ततः सप्तम्या लुक्]

मूर्द्धनि उत्तमाऽङ्गे १.५४.५. **मूर्द्धा**=शिर इव सूर्यरूपेण वर्त्तमानः (अग्निः=प्रसिद्धः पावकः) १५.२०. मूर्द्धावदुत्तमं ब्राह्मणकुलम् १४.९. उत्तमः (सभाद्यध्यक्षः) १.४३.९. सर्वेषां शिर इव (अग्निः=सूर्यः) १३.१४. उत्कृष्टः (वैश्वानरः=जगदीश्वरः) १.५९.२. सर्वोपरि विराजमानः (अग्निः=सर्वस्वामीश्वरः, प्रकाशादिगुणवान् भौतिको वा) ३.१२. **मूर्द्धानम्**=शिरोवदुन्नतप्रदेशे सूर्यरूपेण वर्त्तमानम् (अग्निं=विद्युतम्) ३३.८. मूर्द्धेव वर्त्तमानं सूर्यम् १५.२३. आकर्षेण बद्धारम् (अग्निं=वह्निम्) ३.२.१४. सर्वोपरि विराजमानम् (अग्निम्) ६.७.१. मस्तकम् १.१६४.२८. शिरः १३.१५. **मूर्द्ध्नः** =उपरि वर्त्तमानस्य (विश्वस्य=सर्वस्य जगतः) ६.१६.१३. **मूर्द्ध्ना**=मस्तकेन २५.२. **मूर्द्ध्ने**=मस्तकशुद्धये भा०—मूर्द्धशोधनाय २२.३२. [मूर्वति बध्नाति स मूर्द्धेति विग्रहे मूर्वी बन्धने (भ्वा०) धातोः 'श्वन्नुक्षन्पूषन्०' उ० १.१५९. सूत्रेण कनिन्-प्रत्यये वकारस्य धकारो निपात्यते। मूर्द्धनि प्रधानाङ्गे नि० ९.३१. मूर्धा मूर्त्तमस्मिन् धीयते नि० ७.२७. प्रजापतिर्वै मूर्द्धा श० ८.२.३.१०. एष वै मूर्धा य एष (सूर्यः) तपति श० १३.४.१.१३.]

मूलम् वृद्धिहेतुकम् अ०—वृद्धिहेतुम् १.२५. [मव बन्धने (भ्वा०) धातोः 'मूशक्यविभ्यः क्लः' उ० ४.१०८. सूत्रेण क्लः। मूलं मोचनाद्वा मोषणाद्वा मोहनाद्वा नि० ६.३.]

मूषः आखवः प्र०—अत्र जातिपक्षमाश्रित्यैकवचनम् १.१०५.८. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। वर्णव्यत्ययेनोकारस्य दीर्घः। मूषो मूषिका······मूषोऽप्येतस्मादेव नि० ४.६.]

मृक्तवाहसे शुद्धविज्ञानप्रापकाय (आप्तायाऽतिथये) ५.१८.२. [मृक्त-वाहस्पदयोः समासः। मृक्तः=मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोः क्तः। वाहस्=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् असुन्]

मृक्षतम् मार्जयतम् ३४.४७. शोधयतम् १.१५७.४. **मृक्षः**=सिञ्चय ४.३०.१३. **मृक्षीष्ट**=शोधयतु १.१४७.४. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लुङ्, क्सो विकरणश्छान्दसः। अटोऽभावश्च। अन्यत्र लिङ्। मृक्ष संघाते (भ्वा०) धातोर्वा रूपाणि]

मृगम् परस्वाऽपहर्त्तारम् (मायिनं जनम्) १.८०.७. सिंहम् २.३३.११. **मृगस्य**=मार्जयितुं योग्यस्य (अर्णवस्य) १.१८२.७. सद्योगामिनः (मेघस्य) ५.३२.३. **मृगः**=यो मार्ष्ट्यन्विच्छति वधाय जीवानिति सः (अ०—सिंहः) ईश्वरपक्षे तु यो मार्ष्टि व्यवस्थापनाय जीवानिति सः ५.२०. मृगेन्द्रः सिंहः १८.७१. यो मार्ष्टि कस्तूर्यां सः (कुरङ्गः) २९.४८. हरिणः १.३८.५. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोः 'पुंसि संज्ञायां घः०' इति घः। मृगो मार्ष्टेर्गतिकर्मणः नि० १.२०. मार्ष्टि गतिकर्मा निघं० २.१४. मृगाणां मार्गणकर्मणामादित्यरश्मीनाम् नि० १३.७२. मृग अन्वेषणे (चुरा०)+कः प्रत्ययो वा। मृगः=मृगमयः नि० ९.१९.]

मृगयम् मृगमाचक्षाणम् (शत्रुजनम्) ४.१६.१३.

[मृगोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः कः]

मृगयसः मृगादयः २.३८.७.

मृगयुभ्यः य आत्मनो मृगान् कामयन्ते तेभ्यः (जनेभ्यः) १६.२७. **मृगयुम्**=य आत्मनो मृगान् हन्तुमिच्छति तं व्याधम् ३०.७. [मृगपदाद् आत्मन इच्छायां क्यजन्ताद् उः। अथवा मृगोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः 'मृगय्वादयश्च' उ० १.३७. सूत्रेण कुः]

मृगासः श्वापदादयः १.१९१.४. [मृगप्राति० जसोऽसुक्। मृगमिति व्याख्यातम्]

मृजन्ति शुन्धन्ति ३.४६.५. शोधयन्ति ५.४३.१४. **मृजे**=शुन्धामि ५.५२.१७. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लट्। 'मृजेरजादौ संक्रमे विभाषा वृद्धिरि' ति वा० सूत्रेण वृद्धिर्न। 'मृजे' प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

मृज्यते शुद्ध्यते ५.१.८. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोः कर्मणि लट्]

मृड मृडय प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.११४.१०. आनन्दय १.९४.१२. सुखय भा०—रञ्जय १६.४९. सुखय सुखयति वा १.१२.९. **मृडन्तु**=सुखयन्तु ७.५६.१७. **मृडयन्तु**=सुखयन्तु १५.१६. आनन्दयन्तु १५.१५. **मृडयाति**=सुखयतु १६.७. सुखयेत २.४१.११. **मृडातः**=सुखयतः भा०—सुखप्रदौ भवतः ३३.६१. **मृडाति**=सुखयति ४.४३.२. [मृड सुखने (तुदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र णिजन्ताल्लोट्। अन्यत्र लेट् चापि]

मृडयत्तमः अतिशयेन सुखयिता (ईश्वरोऽग्निर्वा) १.९४.१४. मृड सुखने (तुदा०)+णिच्+शतृ+तमप्। गुणाऽभावश्छान्दसः]

मृडयत्तमा अतिशयेन सुखकर्त्री (सुमतिः) १.११४.९. [मृड सुखने (तुदा०) धातोर्णिजन्ताच्छतरि अतिशायने तमप्। ततष्टाप्]

मृडयद्भ्याम् सुखयद्भ्याम् (मातापितृभ्याम्) १.१३६.१. **मृडयन्तः**=आनन्दयन्तः (विद्वांसो जनाः) १.१०७.१. सुखयन्तः (पूर्णविद्याराजपुरुषाः) ३३.६८. [मृड सुखने (तुदा०) धातोर्णिजन्ताच् छतृ गुणाऽभावश्छान्दसः। मृड शब्दाद्वा क्यजन्ताच्छतृ]

मृडयन्ती सुखयन्ती (देवी=विदुषी स्त्री) ५.४१.१८. [मृड सुखने (तुदा०) धातोर्णिजन्ताच् छतरि स्त्रियां ङीप्। गुणाऽभावश्छान्दसः। मृड शब्दाद्वा क्यजन्ताच् शतरि ङीप्]

मृडयाकुः सुखयिता (अध्यापको वैद्यः) २.३३.७. [मृड सुखने (तुदा०) धातोर्णिजन्ताद् बाहु० औणा० आकुः। गुणाऽभावश्च]

मृडवत्तमः अत्यन्त सुखकारकौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७३.९. [मृड सुखने (तुदा०) धातोः कप्रत्यये मृडः। ततो मतुबन्तादतिशायने तमप्]

मृडीकम् सुखप्रदम् (ज्ञानम्) २१.४. सुखकरम् (श्रेष्ठमार्गम्) ४.१.३. **मृडीकः**=सुखकर्त्ता (इन्द्रः=राजा) ६.३३.५. **मृडीकाय**=उत्तमसुखाय प्र०—अत्र 'मृडः कीकच् कङ्कणौ' उ० ४.२५. अनेन कीकच्प्रत्ययः १.२५.३. **मृडीके**=सुखकारके व्यवहारे ६.४८.१२. [मृड सुखने (तुदा०) धातोः 'मृडः कीकच्०' उ० ४.२४. सूत्रेण कीकच्]

मृण हिंसय प्र०—अत्राऽन्तर्गतो व्यर्थः १.२९.५. **मृणीहि**=हिन्धि ४.४.५. [मृण हिंसायाम् (तुदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र विकरणव्यत्ययेन श्ना]

मृतम् मृतमिव सुप्तम् (जीवम्) १.११३.८. **मृतस्य**=मरणस्वभावस्य (जगतः) १.१६४.२०. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोः 'तनिमृङ्भ्यां किच्च' उ० ३.८८. सूत्रेण तन्]

मृत्तिका प्रशंसिता मृत् १८.१३. [मृद्प्राति० 'मृदस्तिकन्' अ० ५.४.३९. सूत्रेण तिकन्। ततष्टाप्]

मृत्यवे प्राणत्यागकारिणे समयाय ३९.१३. मृत्युकरणाय ३०.७. मारणाय ३०.१८. **मृत्युम्**=मृत्यु को आर्याभि० २.८, ३१.१८. दुःखप्रदं मरणम् भा०—मरणाद्यगमाधदुःखसागरम् ३१.१८. जन्ममृत्युप्रभव-दुःखम् ऋ० भू० २३८, अथर्व० ११.३.१९. शरीरवियोगजन्यं दुःखम् ४०.११. मरणदुःखमयम् ४०.१४. **मृत्युः**=भा०—आयुःक्षयः अ०—ईश्वराज्ञा-भङ्गः २५.१३. महाक्लेशदायक (मरण) आर्याभि० २.४८, २५.१३. **मृत्योः**=मृत्युः प्र०—अत्र व्यत्ययः ३५.७. **मृत्योः**=प्राण-शरीराऽऽत्म-वियोगात् ३.६०. मरणात् १०.१५. अल्पमृत्युना प्राणत्यागात् २०.२. [मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोः 'भुजिमृङ्भ्यां युक्त्युकौ' उ० ३.२१. सूत्रेण त्युक्। मृत्युः=मृत्युर्मारयतीति सतः। मृतं च्यावयतीति वा शतबलाक्षो मौद्गल्यः नि० ११.६. एष वै मृत्युर्यत् संवत्सरः श० १०.४.३.१. मृत्युरग्निः काठ० २१.७. मृत्युर्वै यमः मै० २.५.६. मृत्योर्वा एतद्रूपं यद् व्याघ्रः मै० ४.४.४. एष एव मृत्युः। य एष (सूर्यः) तपति श० २.३.३.७. अपानान्मृत्युः ऐ० आ० २.४.१.]

मृदम् मृत्तिकाम् २५.१. कोमलाऽङ्गीम् (कन्याम्)

११.५५. [मृद क्षोदे (क्र्या०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

मृद्वीम् मृदुगुणस्वभावाम् (कन्याम्) ११.५५. [मृदु-प्राति० स्त्रियाम् 'वोतो गुणवचनात्' इति ङीष्। मृदु= म्रद मर्दने (भ्वा०) धातोः 'प्रथिम्रदि०' उ० १.२८. सूत्रेण कुः। सम्प्रसारणं च]

मृधः सङ्ग्रामान् १.१८२.४. मर्द्धन्ति उन्दन्ति परसुखैः स्वमनांसि येषु तान् सङ्ग्रामान् ७.३७. हिंस्रान् (पुत्रान्) ७.४३.१३. सङ्ग्रामेषु प्रवृत्तान् दुष्टान् ६.५३.४. मर्द्धन्त्याद्रीभवन्ति येषु तान् सङ्ग्रामान् प्र०—मृध इति सङ्ग्रामनाम निघं० २.१७, १८.७०. सङ्ग्रामस्थान् शत्रून् १.१३१.६. परपदार्थाऽभिकाङ्क्षिणः शत्रून् ११.७२. कुत्सितान् (शत्रून्=अरीन्) ५.३७. हिंसकान् (शत्रून्) ३३.६१. **मृधि**=युद्धे १.१७४.७. [मृधः संग्रामनाम निघं० २.१७. मृधु उन्दने (भ्वा०) धातोरधिकरणे क्विप्। गृधु अभिकांक्षायाम् (दिवा०) धातोर्वा कर्त्तरि क्विप्। वर्णव्यत्ययेन गकारस्य मकारः। पाप्मा वै मृधः श० ६.३.३.८. अग्ने त्वं तरा मृध इत्यग्ने त्वं तर सर्वान् पाप्मन इत्येतत् श० ६.६.३.४.]

मृधाति हिंस्यात् ६.२३.६. **मृध्याः**=हिंस्याः ३.५४.२१. [मृधु उन्दने (भ्वा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लिङ्। धातूनामनेकार्थकत्वादत्र हिंसने]

मृध्रवाचम् हिंसितवाचम् (मेघम्) ५.३२.८. मृध्रा हिंसिका वाग् यस्य तम् (पूर्णप्रज्ञं मनुष्यम्) ७.१८.१३. **मृध्रवाचः**=हिंस्रवाचो जनान् ५.२९.१०. मृध्रा हिंस्राऽनृता वाग् येषां ते (दुर्जनाः) ७.६.३. **मृध्राः**=प्रवृद्धा वाणीः १.१७४.२. [मृध्रा-वाच्पदयोः समासः। मृध्रवाचः=मृदुवाचः नि० ६.३१.]

मृन्मयीम् मृद्विकाराम् (उखां=पाकस्थालीम्) ११.५९. [मृदमिति व्याख्यातम्। ततो विकारे 'नित्यं वृद्धशरादिभ्यः' इति मयट्। ततः स्त्रियां ङीप्]

मृश विचारय १.१२६.७. [मृश आमर्शने (तुदा०) धातोर्लोट्]

मृषन्त सहन्ते ७.१८.२१. **मृष्ठाः**=सहेः प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् ३.३३.८. [मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः। 'वहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

मृषा मिथ्या १.१७९.३. [स्वरादिपाठाद् अव्ययम्]

मृष्ट मार्जय १.१४०.२. [मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लोटि मध्यमबहुवचनम्]

मृष्ट शत्रुबलं सह (इन्द्र=सेनेश) १.१७४.४. **मृष्टः**=यो मर्षति मर्षयति वा सः (भगवान् विद्वान् वा) ५.३२. शुद्धस्वरूप सब पापों का मार्जक शोधक (ईश्वर) आर्याभि० २.१७, ५.३२. [मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोः मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्वा औणा० बहुलवचनात् क्तः]

मृष्यते संशय्यते १.१४५.२. सहते ६.५४.४. **मृष्यन्ते**=सहन्ते ६.६७.७. **मृष्ये**=विचारये ७.२२.५. [मृष तितिक्षायाम् (दिवा०) धातोर्लट्]

मेखलया ब्रह्मचर्यचिह्नधारणेन ऋ० भू० २३५, अथर्व० ११.३.५.४. [मीयते प्रक्षिप्यते कायमध्यभाग इति विग्रहे डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० खलः। ततः स्त्रियां टाप्। ऊर्ग् वै मेखला क० ३६.१. मेखला पुंसो भवति, योक्त्रं स्त्रियाः काठ० २३.४. वज्रो वै मेखला काठ० २३.४. सा (मेखला) वै शाणी भवति श० ३.२.१.११.]

मेघाय यो मेहति सिञ्चति तस्मै २२.२६. [मिह सेचने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अच्। न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्। मेघः कस्मान् मेहतीति सतः नि० २.२१. अथाप्यन्तव्यापत्तिर्भवति ओघो मेघः नि० २.१. मेघः मेघनाम निघं० १.१०. मेघो हविर्धानं यज्ञस्य तै० आ० २.१४.१.]

मेडिम् सङ्गमम् ४.७.११. सुशिक्षितां वाचम् ३.२६.९. मेळिः वाङ्नाम निघं० १.११.]

मेढ्रम् मेहत्यनेन तदुपस्थेन्द्रियम् ६.१४. [मिह सेचने (भ्वा०) धातोः करणे 'दाम्नीशस०' अ० ३.२.१८२. सूत्रेण ष्ट्रन्]

मेतेव प्रमातेव (चन्द्र इव) ४.६.२. [मेता-इवपदयोः समासः। मेता=माङ् माने (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच्। आकारस्येकारश्छान्दसः]

मेथामसि हिंस्मः १.४२.१०. (मेथृ मेधाहिंसनयोरित्येके (भ्वा०) धातोर्लट्। 'इदन्तो मसि' रितीदन्तता मसः]

मेथेते हिंस्तः १.११३.३. (मेथृ मेधाहिंसनयोरित्येके (भ्वा०) धातोर्लट्]

मेदयथ स्नेहयथ स्निग्धा मधुराः कुरुत ६.२८.६. ञिमिदा स्नेहने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

मेदसः स्निग्धाः (कुल्याः) ३५.२०. स्निग्धस्य (शरीरस्य) २८.११. स्नेहयुक्तस्य पदार्थस्य २१.४१. स्नेहस्य २१.४१. **मेदोभ्यः**=स्निग्धेभ्यो धातुविशेषेभ्यः ३९.१०. सर्वशरीरावयवाऽऽर्द्रीकरेभ्यः (अवयवेभ्यः) ३९.१०.

[ञिमिदा स्नेहने (दिवा०) धातोरौणा० असुन् । मेदो मेद्यते: नि० ४.३. मेदो वै मेध: श० ३.८.४.६.]

मेदस्त: मेदस: स्निग्धान् (खाद्यपदार्थान्) २१.६०. मेदस: स्निग्धात् (पदार्थात्) २८.२३. [मेदस् इति व्याख्यातम् । तत: 'आद्यादिभ्य उपसंख्यानम्' इति तसि: सार्वविभक्तिक:]

मेद्यन्तु आत्मनो मेदं स्नेहमिच्छन्तु २.३७.३. [ञिमिदा स्नेहने (दिवा०) धातोर्लोट्]

मेधपतिम् यो मेधानां पवित्राणां पुरुषाणां वा पालयिता तम् (रुद्रम्=परमेश्वरम्) प्र०—मेध इति यज्ञनामसु पठितम् निघं० ३.१७, १.४३.४. [मेध-पतिपदयो: समास: । यजमानो मेधपति: ऐ० २.६. देवतैव मेधपतिरिति कौ० १०.४. अथो खल्वाहुर्यस्यै वाव कस्यै च देवतायै पालयति सैव मेधपतिरिति ऐ० २.६.]

मेधम् ज्ञानक्रियामयं शुद्धं यज्ञम् सर्वैर्विद्वद्भि: शुभैर्गुणै: कर्मभिर्वा सह सङ्गमम् १.३.९. पवित्रम् (शृतपाकं=सुसंस्कृतं पाकम्) २५.३३. सङ्गतम् (अन्नम्) १.१६२.१०. पवित्रकारकम् (पशुं=चतुष्पादं गवादिकम्) १३.४७. **मेधाय**=सुखसङ्गमाय १३.४७. बुद्धिप्रापणाय दुष्टहिंसनाय वा २२.१९. अध्ययनाऽध्यापनसङ्ग्रामादियज्ञेषु १.७७.३. [मेधृ संगमे (भ्वा०) धातोर्घञ् । मेध: यज्ञनाम निघं० ३.१७. धननाम निघं० २.१०. मेधायेत्यन्नायेत्येतत् श० ७.५.२.३२. सर्वेषां वा ऽएष पशूनां मेधो यद् व्रीहियवौ श० ३.८.३.१. मेदो वै मेध: श० ३.८.४.६. पशुर्वै मेध: ऐ० २.६. मेधो वा एष पशूनां यत् पुरोडाश: कौ० १०.५. मेधो वा आज्यम् तै०३.९.१२.१.]

मेधया धारणावत्या बुद्ध्या ऋ० भू० १४९, ३२.१४. **मेधा**=पवित्रकारिका प्रज्ञा समीक्षा—केचिद् भ्रान्ता मेधा इत्यत्र मेध्या इति पदमाश्रित्याद्युदात्तेन मेध्यपदार्थायैतत्पदमिच्छन्ति तच्चाऽसमञ्जसमेव कुत: ? मेधा इत्यन्तोदात्तस्य दर्शनात् भट्टमोक्षमूलरोऽपि 'मेधा' इति सविसर्गं पदं मत्वा बुद्धिपदार्थायैनत् पदं विवृणोति तच्चाऽप्यसमञ्जसमेव । कुत: ? मेधा इति निर्विसर्जनीयस्य पदस्य जागरूकत्वात् १.८८.३. **मेधाम्**=प्रज्ञां धनं वा ३२.१४. सङ्गतां प्रज्ञाम् ३२.१३. धारणावतीं बुद्धिम् १.१८.६. भा०—शुद्ध विज्ञानं धर्मजं धनं वा ३२.१४. शुद्धां धियम् ३२.१५. सर्वविद्यासम्पन्न बुद्धि को आर्याभि० २.५४, ३२.१४. यथार्थधारणा वाली बुद्धि को आर्याभि० २.५३, ३२.१४. **मेधायै**=प्रज्ञोन्नतये ४.७. [मेधा धननाम निघं० २.१०. मेधा मतौ धीयते नि० ३.१९. मेधृ संगमे (भ्वा०) धातो: मेधा आशुग्रहणे (कण्ड्वा०) धातोर्वा 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्' इति स्त्रियाम् अङ्]

मेधयुम् मेघं हिंसां कामयमानम् (शूरवीरम्) ४.३८.३. [मेधपदात् 'छन्दसि परेच्छायामिति वक्तव्यम्' अ० ३.१.८. वा० सूत्रेण क्यजन्ताद् ताच्छील्य उ: । मेध:=मेधृ मेधाहिंसनयो: (भ्वा०) धातोर्घञ्]

मेधसातये मेधानां पवित्राणां संविभागाय १.१२९.१. [मेध-सातिपदयो: समास: । मेध इति व्याख्यातम् । साति:=षण संभक्तौ (भ्वा०) धातो: स्त्रियां क्तिन् । 'जनसनखनाम्०' इत्याकारान्तादेश:]

मेधसाता शुद्धङ्गामविभक्ते ४.३७.६. मेधानां सङ्गमानां सातिर्दानं येषु (समिथेषु=सङ्ग्रामेषु) प्र०—अत्र सप्तमी-वहुवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' अ० ७.१.३९. इति डादेश: ९.१७. [मेधसातिरिति व्याख्यातम् । तत: सप्तम्या: स्थाने डादेश:]

मेधाविनम् प्रशस्ता मेधा विद्यते यस्य तम् (मनुष्यम्) ३२.१४. मेधया भाषयान्वितम् पं० वि० । [मेधाप्राति० प्रशंसायामर्थे 'अस्मायामेधास्रजो विनि' रिति विनि: । मेधावी कस्मान् मेधया तद्वान् भवति नि० ३.१९.]

मेधिर मेधाविन् (अग्ने=सत्पुरुष) ३.२१.४. **मेधिर:**=सङ्गमक: (विद्वज्जन:) ३.१.२. मेधावी (विद्वान्) प्र०—अत्र 'मेधारथाभ्यामिरन्निरचौ' अ० ५.२.१०९. इति वार्त्तिकेन मत्वर्थीय इरन्प्रत्यय: १.१०५.१४. सङ्गमयिता (विद्वज्जन:) १.१४२.११. सङ्गन्ता (इन्द्र:=राजा) ६.४२.३. **मेधिराय**=धीमते (इन्द्राय=विद्वज्जनाय) १.६१.४. **मेधिरा:**=ये मेधन्ते शास्त्राणि ज्ञात्वा दुष्टान् हिंसन्ति ते (मेधाविनो मनुष्या:) प्र०—अत्र मिधृ मेधृ मेधाहिंसनयो: इत्यस्माद् बाहुलकादौणादिक इरन्प्रत्यय: १.११.७. [मेधाप्राति० मत्वर्थे 'मेधारथाभ्यामिरन्निरचौ वक्तव्यौ' अ० ५.२.१०९. वा०सूत्रेण इरन् । अथवा मेधृ मेधाहिंसनयो: (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इरन्]

मेध्य: सङ्गमनीय: (सप्ति:=शिल्पी विद्वज्जन:) २९.३. **मेध्याय**=पवित्राय (विदुषे जनाय) ५.१.१२. मेधेषु भवाय (पुरुषाय) १६.३८. सर्वशुभलक्षणसङ्गताय पवित्राय भा०—सुशीलाय (कवये=मेधाविविद्यार्थिने) १५.२५. [मेधृ संगमे (भ्वा०) धातोर्ण्यत् । अथवा मेधप्राति० भवार्थे यत् । मेध्या वा आप: श० १.१.१.१.]

मेध्यातिथिम् मेध्या: सङ्गमनीया: पवित्रा अतिथयो

यस्य तम् (शिल्पिजनम्) १.३६.१७. **मेध्यातिथि:**=मेध्यैरतिथिभिर्युक्तोऽध्यापकः १.३६.१०. पवित्रैः पूजकैः शिष्यवर्गैर्युक्तो विद्वान् १.३६.११. [मेध्य-अतिथिपदयो: समासः। मेध्यः=मेधृ संगमे (भ्वा०) धातोर्ण्यत्। अतिथि:=अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोः 'ऋतन्यञ्जि०' उ० ४.२. सूत्रेण इथिन्]

मेध्यासः पवित्राः सन्तः (देवा:=विद्वांसो जना:) १३.५१. [मेध्य-इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

मेनका यया मन्यते सा (अप्सरा) १५.१६. [मेनाप्राति० स्वार्थे कन्। मेनका (यजु० १५.१६.) (वायोः) मेनका च सहजन्या चाप्सरसाविति दिक् चोपदिशा चेति ह स्माह माहित्थिरिमे तु ते द्यावापृथिवी श० ८.६.१.१७.]

मेना वाणी १.५१.१३. **मेनाम्**=विद्यासुशिक्षाभ्यां लब्धां वाचम् १.१२१.२. **मेने**=वत्सले स्त्रियाविव (रात्रिदिने) १.९५.६. प्रक्षेप्ये (भा०—न्यायविद्ये) प्र०—अत्र वाहुलकाद् डुमिञ्धातोर्नः प्रत्ययः आत्वनिषेधश्च १.६२.७. [मेना वाङ्नाम निघं० १.११. मेना उत्तराणि पदानि निघं० ३.२९. मेना ग्ना इति स्त्रीणाम्।……मेना मानयन्त्येनाः नि० ३.२१. मान पूजायाम् (चुरा०) धातोः 'गुरोश्च हल' इत्यङ्। पुनष्टाप् स्त्रियाम्। धातोरुपधाया एकारादेशश्छान्दसः]

मेने इव यया मेने पक्षिण्यौ २.३९.२. [मेने इव-पदयोः समासः। मेने=मेनाप्राति० प्रथमा-द्विवचनम्]

मेम्यत् भृशं हिंसन् (विद्वान् जनः) १.१६२.२. प्राप्नुवन् (अजः=जन्मादिरहितो जीवः) २५.१५. [मीञ् हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्यङन्ताच्छतृ। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। मी गतौ (चुरा०) धातोर्वा यङन्ताच्छतृ]

मेषम् सेचनकर्त्तारम् (जनम्) २१.४०. वृष्टिद्वारा सेक्तारम् (इन्द्रं=राजानम्) १.५१.१. अविम् २१.५९. सुखजलाभ्यां सर्वान् सेक्तारम् (इन्द्रं=सेनाध्यक्षम्) १.५२.१. **मेषस्य**=उपदिष्टस्य (अवेः) २१.४४. **मेषः**=पशुविशेषः २४.३८. यो मिषति स्पर्द्धते सः (पशुः) १९.९०. अविजातिविशेषः (पशुः) २४.३०. उपदेष्टा (जनः) २१.३१. **मेषान्**=स्पर्द्धकान् (भा०—लम्पटान् जनान्) १.११६.१६. **मेषाय**=मेषजातये १.४३.६. [मिष स्पर्द्धायाम् (तुदा०) धातोः कर्त्तर्यच्। मिषु सेचने (भ्वा०) धातोर्वाच् प्रत्ययः। मेष इति भूतोपमा,……मेषो मेषतेः नि० ३.१६. एष वै प्रत्यक्षं वरुणस्य पशुर्यन्मेषः श० २.५.२.१६. सारस्वतं मेषम् (आलभते) तै० १.८.५.६.]

मेषी शब्दकर्त्री मेषस्य स्त्री २४.१. [मिषु सेचने (भ्वा०) धातोः पचाद्यच्। ततो मेषस्य स्त्री मेषीति स्त्रियां जातिवाचकत्वान् ङीष्]

मेहना वर्षणेन ५.३८.३. [मिह सेचने (भ्वा०) धातोर्ल्युट्। ततः 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयास्थान आकारादेशः]

मेहना वृष्टिः ५.३९.१. धनादिसेचकाः (राजजनाः) प्र०—अत्राऽऽकारादेशः ३३.५० [मेहना पदनाम निघं० ४.१. मेहना मंहनीयं धनम्। यन्म इह नास्तीति वा त्रीणि मध्यमानि पदानि नि० ४.४. मिह सेचने (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति ल्युट्। विभक्तेश्चाकारादेशः]

मेहनावतः प्रशस्तानि मेहनानि वर्षणानि यस्मात्तस्य (बृहस्पतेः=सूर्यस्य) २.२४.१०. **मेहनावान्**=मेहनानि सेचनानि वहूनि विद्यन्ते यस्य सः (सुखदो भूपतिः) ३.४९.३. [मेहनप्राति० प्रशंसायां मतुप्। संहितायां दीर्घः। मेहनम्=मिह सेचने (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

मैघीः मेघानामिमाः भा०—मेघस्थाः (विद्युतः) २३.३५. [मेघप्राति० 'तस्येदमि' त्यर्थेऽण्। ततः स्त्रियां ङीप्]

मैत्रः मित्रस्याऽयं सम्बन्धी (प्रजापति:=जीवः) ३९.५. **मैत्राः**=प्राणदेवताकाः (पक्षिविशेषाः) २४.३३. [मित्रप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण्। 'सास्य देवता' इत्यर्थे वा अण्]

मैत्रावरुणः प्राणोदानयोरयं सहचारी (वायुः) १८.१९. मित्रावरुणयोः प्राणोदानयोरयं वेत्ता (वसिष्ठः=पूर्णविद्वान्) ७.३३.११. [मित्रावरुणप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण्। मित्रावरुणः=मित्र-वरुणपदयोः समासे 'देवताद्वन्द्वे चे' ति पूर्वपदस्यानङ्। (ऋत्विग् विशेषः) प्रणेता वा एष होत्रकाणां यन्मैत्रावरुणः ऐ० ६.६. यज्ञो वै मैत्रावरुणः कौ० १३.२. मनो वै यज्ञस्य मैत्रावरुणः ऐ० २.५. चक्षुश्च मनश्च मैत्रावरुणः ऐ० २.२६. चक्षुर्मैत्रावरुणः कौ० १३.५. गायत्रो मैत्रावरुणः तां० ५.१.१५. वामदेव्यं मैत्रावरुणसामभवति श० १३.३.३.४.]

मैत्रावरुण्यः प्राणोदानदेवताकाः (चन्द्रगुणयुक्ताः पशवः) २४.२. [मित्रावरुणप्राति० 'सास्य देवता' इत्यर्थे छान्दसो ण्यः]

मैत्र्यः मित्रस्य प्रिये वर्त्तमानाः (वशा:=वन्ध्या गावः) २४.८. [मित्रप्राति० भवार्थेऽणन्तात् स्त्रियां ङीप्]

मैनालम् यो मैनं कामदेवमलति वारयति तं जितेन्द्रि-

यम् (जनम्) ३०.१६. [मैनोपपदे ग्रल भूषणपर्याप्तिवारणेषु (भ्वा०) धातोरण्]

मो निषेधार्थे ३.४६. निवारणे ४.२३.

मोकी रात्रिः ३.३८.३. [मोकी रात्रिनाम निघं० १.७.]

मोदते हर्षति २.५.६. **मोदध्वम्**=सुखयत ११.४७. [मुद हर्षे (भ्वा०) धातोर्लट् । ग्रन्यत्र लोट्]

मोदमानः हर्षोत्साहयुक्तः (पुरुषः) ३.४१. ग्रानन्दित (पतिः) सं० वि० १४६, ३.४१. **मोदमानौ**=ग्रत्यन्त प्रसन्न हुए (स्त्री पुरुष) सं० वि० १४०, ग्रथर्व० १४.२.४३. **मोदमानाः**=ग्रानन्दिताः सन्तः (देवाः=विद्वांसो जनाः) २०.४६. [मुद हर्षे (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये चानश् । ग्रथवा लटः शानच्]

मोदमानाः ग्रानन्दयन्त्यः (वध्वः=स्त्रियः) ५.४७.६. [मुद हर्षे (भ्वा०)+शानच्+टाप्]

मोदः हर्षः १८.५. **मोदाय**=ग्रानन्दाय २२.६. **मोदाः**=हर्षा उत्साहाः २०.६. सम्पूर्ण हर्ष सं० वि० १६७, ६.११३.११. [मुद हर्षे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

मोषथ चोरयत ५.५४.६. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

मोषीः नाशय विनाशयेद्वा प्र०—ग्रत्र लोडर्थे लिङर्थे च लुङडभावोऽन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२४.११. स्तेनयेः १.१०४.८. मुष्णीयात् खण्डयेत् प्र०—ग्रत्र लिङर्थे लुङ् ४.२३. [मुष स्तेये (क्र्या०) धातोर्लुङ् । ग्रडभावश्छान्दसः]

मोहः मूढाऽवस्था ४०.७. [मुह वैचित्ये (दिवा०) धातोर्घञ्]

मौक् मोचय प्र०=ग्रत्र 'मुच्लृ मोक्षणे' इत्यस्माल्लोडर्थे लुङडभावे च्लेः सिजादेशे 'वहुलं छन्दसि' इतीडभावः 'वदव्रज०' इति वृद्धिः 'संयोगान्तस्य लोपः' इति सिज्लुक् १.२५. त्यज, त्यजतु १.२६.

मौञ्जाः मुञ्जानामिमे (मुञ्जपादपस्था जीवाः) १.१९१.२. [मुञ्जप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् । मुञ्जो विमुच्यत इषीकया नि० ९.८.]

म्यक्ष गमय २.२८.६. [म्यक्षति गतिकर्मा निघं० २.१४. ततो लोट्]

म्रद दण्डय ६.५३.३. [म्रद मर्दने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

यकृत् हृदयाद् दक्षिणे स्थितं मांसपिण्डम् १९.८५. हृदयस्थो रोहितः पिण्डः ३९.९. **यक्ना**=यकृता शरीराऽवयवेन ३९.८. [यकृद् यथा कथा च कृत्यते नि० ४.३. यजतीति यकृदिति विग्रहे यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्वाहु० ग्रौणा० ऋतिन् प्रत्ययः । वहुलवचनाद् जकारस्य ककारः । 'यक्ना' प्रयोगे यकृत्प्राति० शस्प्रभृतिषु 'पद्दन्नोमास्०' इति 'यकन्' ग्रादेशः । यकृत् सविता श० १२.९.१.१५.]

यक्षत् यजेत् दद्यात् १७.६२. सत्कुर्यात् १९.६५. सङ्गच्छेत ७.१७.४. सङ्गमयेत् २१.३७. **यक्षतः**=सङ्गच्छतः २.३.७. **यक्षताम्**=संयच्छेते १.१४२.८. सङ्गमयताम् १.१८८.७. यजतः सङ्गमयतः प्र०—ग्रत्र 'सिब् बहुलं लेटि' इति बहुलसंग्रहणात् लेटि प्रथमपुरुषस्य द्विवचने शपः पूर्वः सिप् १.१३.८. **यक्षन्त**=रोषत हिंस्त १.१३२.५. **यक्षि**=सङ्गच्छस्व ६.४.१. यजसि प्र०—ग्रत्र लडर्थे लुङ् १.७५.५. सत्करोषि सङ्गच्छसे ५.२६.१. ददासि २.६.८. यज सुखं सङ्गमय ६.१६.९. प्र०—ग्रत्र 'वहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १७.८. यजामि प्र०—ग्रत्राऽडभावो लुङ् ग्रात्मनेपद उत्तमपुरुषैकवचने प्रयोगो लडर्थे लुङ् च १.१३.१. याजय प्र०—ग्रत्र सामान्यकाले लुङडभावश्च १.३१.१७. सङ्गमयामि १.१४.१. **यक्ष्व**=सङ्गमय प्राप्नुहि वा ५.४२.११. सत्कुरु सङ्गच्छस्व १.४५.१०. **यज**=यज्ञं कुरु २८.१५. सङ्गमयाऽस्य सिद्धिं सम्पादय १.१४.११. यजति शिल्पविद्यायां सङ्गमयति प्र०—ग्रत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.१५.१२. गमय १.१८८.९. सङ्गच्छस्व १.२६.१. प्राप्नुहि २८.७. सत्कुरु देहि उपदिश वा ३३.३. एकीभव ६.११. यजते २१.४८. **यजत**=सङ्गच्छध्वम् ३८.६. पूजयत ४.१.१. **यजतम्**=सङ्गच्छेतम् ६.५८.१. सङ्गच्छेथाम् ५.६७.१. **यजतः**=सङ्गच्छेते २०.४१. **यजताम्**=गृह्णातु २१.४७. सङ्गमयतु ६.१५.१३. **यजति**=यजेत् प्र०—लेट् प्रयोगोऽयम् १.१३९.१०. सङ्गच्छते १.१३३.७. सत्करोति १.१५१.७. पूजयति १.१२०.५. **यजध्वम्**=सत्कुरुत ६.२९.१. सङ्गच्छध्वम् ५.७७.१. **यजन्ति**=पूजयन्ति सङ्गमयन्ति वा ४.३७. ददति १९.६. सङ्गच्छन्ते १०.३२. **यजन्ते**=पूजयन्ति संगतिं कुर्वते १.२८. **यजसि**=सङ्गच्छसे २९.२५. **यजस्व**=सङ्गच्छस्व १७.२१. सुखानि देहि १.७.५. सङ्गमय ६.११.१. **यजाति**=यजेत् ३.४.१०. सङ्गच्छेत १.७७.२. **यजाते**=यजेत १.८४.१८. **यजातै**=यजेत १.८४.१८. **यजाम**=प्रेरयेम ५.६०.६. दद्याम १.२७.१३. **यजामः**=पूजयामः ३.३२.७. **यजामहे**=प्राप्नुयाम १.४०.४. सत्कुर्महे १.१५३.१. पूजयामहे १.१५.१०. सङ्गच्छामहे १.२६.६. ग्र०—सत्कुर्वीमहि ३.६०.

यजासि=यजेः ३.२९.८. याजयेः ११.३५. यजेत् ६.४.१. **यजे**=सङ्गच्छे १७.७५. सङ्गच्छेय २.९.३. **यजेत**=सङ्गच्छेत ७.६०.९. [यज देवपूजादिषु (भ्वा॰) धातोर्लेट्। 'सिब् बहुलं लेटी' ति सिप्। अन्यत्र लङ्, लुङ्, लट्, लोट्, लिङ् च। यक्षि यज नि॰ ६.१३.]

यक्षदृशः ये यक्षान् पूजनीयान् पश्यन्ति ते (मरुतः=बलिष्ठा राजजनाः) ७.५६.१६. [यक्षोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा॰) धातोः क्विन्]

यक्षभृत् यो यक्षान्पूज्यान् विदुषो बिभर्त्ति सः (विद्वान् जनः) १.१९०.४. [यक्षोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु॰) धातोः क्विप्]

यक्षम् दानम् ५.७०.४. पूजनीयं सङ्गतं वा (मनः) प्र॰—अत्रौणादिकः सन् प्रत्ययः ३४.२. सङ्गन्तव्यम् (सदः=वस्तु) ४.३.१३. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा॰) धातोर्बाहु॰ औणा॰ सन्। यक्ष पूजायाम् (चु॰) धातोर्वा घञ्]

यक्षुः सङ्गन्ता (सज्जनः) ७.१८.६. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा॰) धातोर्बाहु॰ औणा॰ सन्प्रत्ययान्तादुः। यक्ष पूजायाम् (चुरा॰) धातोर्वा बाहु॰ औणा॰ उः]

यक्ष्म राजरोगः १२.८७. **यक्ष्मस्य**=क्षयस्य, राजरोगस्य भा॰—यक्ष्मादिरोगस्य १२.८५. **यक्ष्माणाम्**=महारोगाणाम् १२.९७. **यक्ष्मात्**=क्षयादिरोगात् १२.९८. [यक्ष पूजायाम् (चुरा॰) धातोः 'अर्त्तिस्तुसु॰' उ॰ १.१४०. सूत्रेण मन्]

यक्ष्यमाणम् यज्ञं करिष्यमाणम् (पुत्रम्) १.१२५.४. **यक्ष्यमाणान्**=यज्ञं निर्वर्त्स्यतः (मानुषान्) १.११३.९. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा॰) धातोः 'लृटः सद्वा' इति शानच्]

यच्छ यच्छति फलादिभिर्ददाति प्र॰—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् १.२२.१५. देहि ३५.२१. निगृहाण ७.४. उपगृह्णीहि ६.२५. गृहाण १३.२४. प्रदेहि १.५८.८. निगृह्णीहि ७.१६.८. निधेहि ६.२१. उपगृहाण ७.१६.८. ददातु ३६.१३. **यच्छत**=दत्त ७.५९.१. ददत २.२७.६. गृह्णीत ४.५१.१०. **यच्छतम्**=दद्यातम् ३४.२८. दत्तः प्र॰—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२१.६. विस्तारयतः प्र॰—अत्र पुरुषव्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.१७.८. यच्छतो यमनं कुरुतः १.९२.१६. **यच्छताम्**=संस्थापयतम् २.४१.२०. **यच्छति**=ददाति ५.८०.२. **यच्छतु**=गृह्णातु ९.२४. ददातु भा॰—दद्यात् २६.१०. अनुगृह्णातु ४.५७.७. निगृह्णातु ४.३२.१५. **यच्छध्वम्**=उद्यमिनः कुरुत ७.४३.२. **यच्छन्ताम्**=निगृह्णन्तु १.९. **यच्छन्ति**=प्रददति ७.६०.८. निगृह्णन्ति ६.७५.६. **यच्छन्तु**=ददतु ७.३९.७. **यच्छसे**=ददासि १.८४.६. **यच्छस्व**=विस्तारय विस्तारयति वा प्र॰—अत्र पक्षे लडर्थे लोट् 'आङो यम हनः' अ॰ १.३.२८. अनेनात्मनेपदम् आङ्पूर्वको यमधातुर्विस्तारार्थे ३.३८. सर्वतो देहि आयच्छति विस्तारयति वा प्र॰—अत्र पक्षे व्यत्ययः सिद्धिश्च पूर्ववत् ३.३९. **यच्छामि**=गृह्णामि ३८.६. [यमु उपरमे (भ्वा॰) धातोर्लोट्। 'इषुगमि यमां छ' इति शिति छादेशः। अन्यत्र लङ् अपि। 'यच्छध्वम्' इत्यादौ 'आङो यमहनः' सूत्रेण 'वा छन्दसी' ति नियमेन निरुपपदपि आत्मनेपदम्। यच्छताम्=नियच्छताम् नि॰ ९.३८. यच्छतु=यच्छन्तु नि॰ १२.४५.]

यच्छतात् देहि १.४८.१५. [यमु उपरमे (भ्वा॰) धातोर्लोट्। 'तुह्योस्तातङ्॰' इति तातङ्]

यच्छमानाः निग्रहीतारः (मरुतः=बलिष्ठा योद्धृजनाः) ७.५६.१३. [यमु उपरमे (भ्वा॰) धातोस्ताच्छील्ये चानश्]

यजतम् सङ्गन्तव्यम् (निष्कं=सुवर्णाभूषणम्) २.३३.१०. सङ्गतम् (शर्धः=बलम्) ५.४६.५. पूजनीयम् (गृहपतिम्) ५.८.१. **यजतस्य**=यजन्ति सङ्गच्छन्ते येन तस्य (क्षत्रस्य=राष्ट्रस्य) ५.४४.१०. सङ्गन्तुं योग्यस्य (अ॰—व्यवहारस्य) २९.२७. **यजतः**=सङ्गन्ता पूजनीयः (विद्वान् जनः) ५.४१.९. सत्कर्त्ता (जनः) ५.४४.१२. यष्टं सङ्गन्तुमर्हः (अग्निः=ईश्वरः) १.५९.७. सङ्गतिप्रकाशादयो दाता (सविता=सूर्यो वायुर्वा) १.३५.४. **यजताय**=सङ्गमाय २.१६.४. सत्सङ्गन्त्रे (इन्द्राय=विद्वत्सभासेनेशाय) २.२१.१. **यजताः**=ये सर्वा विद्याः सङ्गच्छन्ते ते (विद्वांसो जनाः) ६.५०.२. **यजतेभ्यः**=विद्वत्सेवकेभ्यः २.५.८. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा॰) धातोः 'भृमृदृशियजि॰' उ॰ ३.११०. सूत्रेणातच्। यजते=यज्ञिये नि॰ ८.११. यजतस्य=यज्ञियस्य नि॰ ८.७.]

यजतः सङ्गतान् (जनान्) २.१४.१०. **यजते**=यो यज्ञं करोति तस्मै (जनाय) १.३१.१५. **यजन्**=सङ्गच्छमानः (त्वष्टा=विद्युत्) २०.४४. **यजन्तौ**=सत्कुर्वन्तौ (स्त्रीपुरुषौ) २.३.७. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा॰) धातोः शतृ]

यजता सङ्गन्तव्या (सरस्वती=वाक्) ५.४३.११.

यजते=सङ्गन्तव्ये (द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.२. [यज देवपूजादिषु (भ्वा०) धातोरौणा० अतच् । ततः स्त्रियां टाप्]

यजता दातारावध्यापकोपदेशकौ ४.१५.८. [यज देवपूजादिषु (भ्वा०) धातोरौणा० अतच् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

यजतेभिः सङ्गतैरश्वादिभिः ५.१.११. [यजतमिति व्याख्यातम् । ततो भिस ऐस् न भवति छान्दसत्वात्]

यजत्र पूजनीयतम (इन्द्र=शत्रुविदारक राजन्) ६.२५.८. सङ्गन्तः (अग्ने=विद्युदाख्यं तेजः) ६.२२.२. सङ्गच्छमानः (वैद्य जन) १.१८९.३. पूजनीयः (इन्द्रः=ऐश्वर्यवज्जन) ३.३५.१०. सङ्गन्तुं योग्य (अग्ने=विद्वज्जन) १२.४८. दातः (परमेश्वर विद्वन्वा) १.७६.४. **यजत्रम्**=सङ्गन्तव्यम् (सेनापतिम्) ११.७६. **यजत्रः**=सङ्गमकर्त्ता (पुरुषः) १.१२१.१. सङ्गन्तव्यो ध्येयः (ईश्वरः) ७.५२.३. सङ्गन्ता (मर्यः=मनुष्यः) १.१७३.२. **यजत्रान्**=यष्टुं सङ्गमयितुमर्हान् (देवान्=विद्वज्जनान्) प्र०—अत्र 'अमिनक्षियजिवधि०' उ० ३.१०५. अनेन यज धातोरत्रन् प्रत्ययः १.१४.७. **यजत्राः**=सङ्गन्तारः पूजनीयाः (विद्वांसो जनाः) ३३.५३. सङ्गमयितुं योग्याः (मनुष्याः) १.१४.८. विदुषां सत्कर्त्तारः सङ्गतिकर्त्तारः भा०–पूज्याः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ३३.५१. सङ्गताः (अश्वाः=किरणाः) ३.६.८. पूजकाः, उपदेशका, सङ्गतिकर्त्तारो दातारश्च (धीराः=मेधाविजनाः) १.६५.१. सङ्गतिकरणशीलाः (प्राज्ञा जनाः) २.२७.१६. यजन्ति सङ्गच्छन्ते ये ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १.८९.८. सङ्गमयितारः (विद्वांसो जनाः) ६.५२.१७. सङ्गन्तव्याः (विद्वांसो जनाः) ६.५२.१३ सुसङ्गतेः कर्त्तारः (विद्वज्जनाः) २.२९.६. सद्व्यवहारं सङ्गच्छमानाः (सज्जनाः) ६.५१.९. **यजत्रैः**=यज्ञसाधकैर्विद्वद्भिः सह ६.१०. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'अमिनक्षियजिबधिपतिभ्योऽत्रन्' उ० ३.१०५. सूत्रेणात्रन् । यजत्रमिति यज्ञियमित्येतत् श० ६.६.३.९.]

यजत्रा सङ्गमयितारौ (स्त्रीपुरुषौ) १.१८०.५. सङ्गम्य सत्कर्त्तव्यौ (इन्द्राग्नी=स्वामिशिल्पिनौ) १.१०८.७. ['यजत्र' इति व्याख्यातम् । ततः 'सुपां सुलुक्०' इति द्विवचनस्याकारादेशः]

यजत्रे सङ्गते (द्यावापृथिव्यौ) ३.३१.१७. सङ्गन्तव्ये (सूर्यभूमी) ७.५३.१. [यज देवपूजादिषु (भ्वा०) धातोरौणा० अत्रन् । ततः स्त्रियां टाप्]

यजथाय यजनाय सङ्गमनाय ३.५.९. समागमाय ३.४.१. सत्करणाय २.२८.१. विद्यासङ्गमनाय ३.१९.५. [यज देवपूजादिषु (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अथः प्रत्ययः]

यजध्यै यष्टुं सङ्गन्तुम् ४.२१.५. [यज देवपूजादिषु (भ्वा०) धातोस्तुमर्थेऽध्यैन् । यजध्यै यजनाय नि० ८.१२.]

यजमानम् विद्यासुशिक्षाभ्यां सुखदातारम् (भा०—अध्यापकोपदेशकम्) १७.८६. विद्यादातारम् (विद्वांसं जनम्) १.१५६.५. सत्याऽनुष्ठानस्य यज्ञस्य कर्त्तारम् (जनम्) २०.७३. सर्वेभ्यः सुखं ददमानम् (सज्जनम्) १९.३३. अभयस्य दातारम् (आर्यम्=उत्तमगुणकर्मस्वभावम्) १.१३०.८. सुखप्रदम् (पुरुषम्) ७.१८. यज्ञानुष्ठातारम् (सभाध्यक्षं राजानम्) ६.६. सङ्गन्तारम् (विद्वांसम्) ५.४५.५. **यजमानस्य**=यज्ञाऽनुष्ठातुः (पुरुषस्य) २.३. यः परमेश्वरं सर्वोपकारं धर्म्मं च यजति तस्य विदुषः (अ०—जीवस्य) १.१. शिल्पविद्यां चिकीर्षोः, सर्वमित्रस्य वा (पुरुषस्य) २.३. सुखप्रदातुः (धनाढ्यजनस्य) २.३०.६. यज्ञनिष्पादकस्य (सज्जनस्य) १.५१.८. सर्वेषां सुखाय यज्ञकर्त्तुः (सत्पुरुषस्य) ७.५७.२. यो यजते देवान् विदुषः सत्करोति, सङ्गच्छते, सुखानि ददाति वा तस्य (राज्ञः) २२.२२. यष्टुं सङ्गन्तुं विदुषः पूजितुं च शीलं यस्य तस्य (पुरुषस्य) १२.४४. सङ्गमं कर्त्तुं योग्यस्य पूज्यस्य मनुष्यस्य ४.३४. शिल्पक्रियाविदः (विद्वज्जनस्य) ४.१०. धार्मिकस्य जीवस्य ४.३३. सत्पुरुष का स० प्र० २३८, १०.४९.१. **यजमानः**=त्रिविधस्य यज्ञस्याऽनुष्ठाता (सज्जनः) १.२४.११. यो यजते सः (विद्वज्जनः) १८.४८. विद्वत्सेवासङ्गतेः कर्त्ता (मनुष्यः) ३.३.३. यज्ञकर्त्ता (सज्जनः) ६.५१.१२. सङ्गन्ता (मनुष्यः) ३.१.१५. योगप्रद आचार्यः १७.७३. **यजमानात्**=धर्म्येण सङ्गतात् (मर्त्तात्=मनुष्यात्) ४.१०.७. **यजमानाय**=सङ्गतिकरणविद्याविदे (सत्पुरुषाय) ६.१५.१६. उपदेश्याय पालकाय वा (सज्जनाय) १.८३.३. सङ्गच्छमानाय (जनाय) २०.७१. परोपकारार्थं यज्ञं कुर्वते (सत्पुरुषाय) ७.१६.६. यजति विदुषः पूजयति सद्गुणान् सङ्गच्छते ददाति व तस्मै (पुरुषाय) ५.१२. परोपकारार्थयज्ञानुष्ठात्रे (प्रजाजनाय) ६.३३. सत्योपदेशकाय विद्यासङ्गमयित्र आचार्याय साङ्गोपाङ्गवेदाऽध्यापकाय, क्रियाकौशलसहितानां सर्वासां विद्यानां प्रवक्त्रे, धर्मेण सङ्गन्तुं शीलाय वा (परमविदुषे) ११.५८. पुरुषार्थिने (विद्वज्जनाय) २८.१५. सङ्गत्यै प्रवर्त्तमानाय जीवाय २८.१६. **यजमानाः**=ये यजन्ति ते विद्वांसः

१९.३२. सर्वेभ्यः सुखदातारः (सर्वोपकारिजनाः) १७.६९. **यजमाने**=यज्ञानुष्ठातरि (जने) ६.११. सङ्गत-धर्म्यव्यवहारकर्त्तरि (सज्जने) ३.२९.८. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'पूङ्यजोः शानन्' अ० ३.२.१२८. सूत्रेण शानन्। ताच्छील्ये वा चानश्। यद् यजते तद् यजमानः श० ३.२.१.१७. यजमानो ह्येव स्वे यज्ञे प्रजापतिः श० १.६.१.२०. इन्द्रो वै यजमानः श० २.१.२.११. यजमानो मेधपतिः ऐ० २.६. यजमानो वै मेधपतिः कौ० १०.४. यजमानो हि यज्ञपतिः श० ४.२.२.१०. यजमानो वै यज्ञपतिः श० १.१.२.१२, १.२.२.८. यजमानोऽग्निः श० ६.३.३.२१. स उ ऽ एव यजमानस्तस्मादाग्नेयो भवति श० ३.९.१.६. आहवनीयभाग्यजमानः क० ३.९. मनो यजमानस्य (रूपम्) श० १२.८.२.४. यजमानो वै दाश्वान् श० २.३.४.३८. यजमानो वै मामहानः (यजु० १७.५५.) श० ९.२.३.९. यजमानो वै सुम्नयुः श० १.४.१.२१. यजमानो वै हव्यदातिः श० १.४.१.२४. यजमानः पशुः तै० २.१.५.२. यजमानो वै यूपः ऐ० २.३. श० १३.२.६.९. एष वै यजमानो यद् यूपः तै० १.३.७.३. यजमानो वाऽ एष निदानेन यद् यूपः श०३.७.१.११. यजमानदेवत्यो वै यूपः तै० ३.९.५.२. यजमानो वै प्रस्तरः ऐ० २.३. श० १.८.१.४४, १.८.३.११. तै० ३.३.६.७. तां० ६.७.१७. यजमानो प्रस्तरः तै० ३.३.९.२. यजमानो यज्ञः श० १३.२.२.१. यजमानो वै यज्ञः ऐ० १.२८. आत्मा वै यज्ञस्य यजमानः श० ९.५.२.१६. संवत्सरो यजमानः श० ११.२.७.३२. एष वै यजमानो यत्सोमः तै० १.३.३.५. यजमानो वाऽ अग्निष्ठा श० ३.७.१.१६. यजमानो हि सूक्तम् ऐ० ६.९. यजमानः स्रुचः तै० ३.३.६.३. यजमानदैवत्या वै वपा तै० ३.९.१०.१. यजमानच्छन्दसामेवोष्णिक् कौ० १७.२. यजमानच्छन्दसं पंक्तिः कौ० १७.२. यजमानच्छन्दसं द्विपदा (ऋक्) कौ० १७.२. यजमानो वै द्वियजुः (इष्टका) श० ७.४.२.१६. यां वै काञ्च यज्ञ ऽऋत्विज ऽआशिषमाशासते यजमानस्यैव सा श० १.९.१.२१. त्वङ्मांसस्नाय्वस्थिमज्जाः एतमेव तत्पञ्चधा विहितमात्मानं वरुणपाशान्मुञ्चति (यजमानः) तै० १.५.९.८. स ह सर्वतनूरेव यजमानोऽमुष्मिँल्लोके सम्भवति य एवं विद्वान् निष्क्रीत्या यजते श० ११.१.८.६. यज्ञो वै यजमानः जै० १.२५९.]

यजमानासः विद्यासङ्गतिविदः (विद्वांसो जनाः) ३.३५.५. सम्यग् ज्ञातारः (जनाः) २.१८.३. [यजमानमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

यजिष्ठम् सुखानामतिशयितं दातारम् (ईश्वरम्) १.४४.५. अतिशयेन सङ्गमयितारम् (अग्निं=विद्युदग्निम्) ४.८.१. **यजिष्ठः**=अतिशयेन यष्टा सङ्गमयिता (विद्वज्जनः) १.७७.१. पूजितुमर्हः (आप्तो जनः) ४.२.१. अतिशयेनानन्दशिल्पविद्ययोः सङ्गतिहेतुः (अग्निः) ३.१५१.८. अतिशयेनेष्टा (अध्यापक उपदेशको वा जनः) ४.१.४. **यजिष्ठेन**=अतिशयेन यष्टृ सङ्गन्तृ तेन (मनसा=विज्ञानेन) १८.७५. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोस्तृजन्तादतिशायन इष्ठन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

यजीयान् अतिशयेन यष्टा सङ्गन्ता (विद्वज्जनः) ३.१७.५. अतिशयेन यज्ञकर्त्ता (यजमानः) ५.१.५. [यजदेवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोस्तृजन्तादतिशायन ईयसुन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः। यजीयान् यष्टृतरः नि० ८.८.]

यजुर्भिः यजन्ति सङ्गच्छन्ते यैर्यजुर्वेदविद्याऽवयवैस्तैः १९.२८. यजुर्वेदस्थमन्त्रोक्तैः कर्मभिः ४.१. **यजुर्भ्यः**=याजकेभ्यो यजुर्वेदविभागेभ्यो वा ३८.११. **यजुषा**=सत्सङ्गेन क्रियया वा ५.६२.५. **यजुः**=यजति येन स यजुर्वेदः १८.२९. **यजूंषि**=यजुर्मन्त्राः १८.६७. यजुश्श्रुतयः १२.४. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'अर्तिपृवपियजि०' उ० २.११७ सूत्रेण उसिः। यजुर्यजतेः नि० ७.१२. यजो ह वै नामैतद् यद् यजुरिति श० ४.६.७.१३. एष (वायुः) हि यन्नेवेदं सर्वं जनयत्येतं यन्तमिदमनुप्रजायते तस्माद् वायुरेव यजुः। अयमेवाकाशो जूः। यद् इदमन्तरिक्षमेतं ह्याकाशमनुजवते तदेतद् यजुर्वायुश्चान्तरिक्षं च यच्च जूश्च तस्माद् यजुः श० १०.३.५.२. यजुरित्येष (पुरुषः) हीदं सर्वं युनक्ति श० १०.५.२.२०. प्राणो वै यजुः प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि युज्यन्ते श० १४.८.१४.२. प्राण एव यजुः श० १०.३.५.४. अष्टौ (बृहतीसहस्राणि ८००० × ३६ = २८८००० अक्षराणि) यजुषाम् श० १०.४.२.२४. व्यृद्धमु वा ऽएतद् यज्ञस्य। यदयजुष्केण क्रियते श० १३.१.२.१. (प्रजापतिः) यजुर्भ्योऽधिविष्णुम् (असृजत) तै० २.३.२.४. यजूंषि विष्णुः (स्वभागरूपेणाभजत) श० ४.६.७.३. आज्याहुतयो ह वा ऽएता देवानाम्। यद् यजूंषि श० ११.५.६.५. अन्नमेव यजुः श० १०.३.५.६. (सूर्यः) यजुर्वेदे तिष्ठति मध्ये अह्नः तै० ३.१२.९.१. (आदित्यस्थः) पुरुषो यजूंषि श० १०.५.१.५. आदित्यानीमानि शुक्लानि यजूंषि वाजसनेयेन याज्ञवल्क्येनाख्यायन्ते श० १४.९.४.३३. आदित्यानीमानि यजूंषीत्याहुः श० ४.४.५.१९. अथ य एष एतस्मिन् मण्डले पुरुषः सोऽग्निस्तानि यजूंषि स यजुषां

लोकः श० १०.५.२.१. अग्निर्यजुषाम् (समुद्रः) श० ९.५.२.१२. अथ यन्मनो यजुष्टत् जै० उ० १.२५.९. मनो यजुर्वेदः श० १४.४.३.१२. मन एव यजूंषि श० ४.६.७.५. मनो वै यजुः श० ७.३.१.४०. (प्रजापतिः) भुव इत्येव यजुर्वेदस्य रसमादत्त तदिदमन्तरिक्षमभवत्। तस्य यो रसः प्राणेदत् स वायुरभवद् रसस्य रसः जै० उ० १.१.४. भुवरिति यजुर्भ्योऽक्षरत् सोऽन्तरिक्षलोकोऽभवत् ष० १.५. यजुषां वायुर्दैवतं तदेव ज्योतिस्त्रैष्टुभं छन्दोऽन्तरिक्षं स्थानम् गो० पू० १.२९. वायोर्यजुर्वेदः (अजायत) श० ११.५.८.३. अन्तरिक्षं वै यजुषामायतनम् गो० पू० २.२४. अन्तरिक्षलोको यजुर्वेदः ष० १.५. अन्तरिक्षं यजुषा (जयति) श० ४.६.७.२. यजुर्वेदं क्षत्रियस्याहुर्योनिम् तै० ३.१२.९.२. दक्षिणाम् (दिशम्) आहुर्यजुषामपाराम् तै० ३.१२.९.१. सर्वा गतिर्याजुषी हैव शश्वत् तै० ३.१२.९.१. यजुर्वेदो महः श० १२.३.४.९. यजुर्वेद एव महः गो० पू० ५.१५. श्रद्धा वै तद् यद् यजुः श० १३.८.२.७. तस्माद् यजूंषि निरुक्तानि सन्त्यनिरुक्तानि श० ४.६.७.१७. मज्जा यजुः श० ८.१.४.५. (दक्षिणनेत्रस्य) यदेव ताम्रमिव बभ्रुरिव तद् यजुषाम् (रूपम्) जै० उ० ४.२४.१२. अथ यत्कृष्णं तदपां रूपमन्नस्य मनसो यजुषः जै० उ० १.२५.९. स (प्रजापतिः) यजूंष्येव हिङ्कारमकरोत् जै० उ० १.१३.३. तस्य (यमस्य) पितरो विशः······यजूंषि वेदः······यजुषामनुवाकं व्याचक्षाणइवानुद्रवेत् श० १३.४.३.६. बह्वी वै यजुःष्वाशीः श० १.२.१.७, ३.५.२.११, ३.६.१.१७.]

यजुषे यजुषे यजन्ति येन तस्मै तस्मै प्रति १.३०. [यजुषे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। यजुष् इति व्याख्यातम्]

यज्ञ यः सङ्गम्यते तत्सम्बुद्धौ (अ०—सम्पादक विद्वन्) ८.६२. यो यजति सङ्गच्छते स यज्ञो गृहस्थस्तत्सम्बुद्धौ प्र०—अत्रौणादिको न प्रत्ययः ८.२२. इज्यते सर्वैर्जनैः स यज्ञ ईश्वरस्तत्सम्बुद्धौ क्रियासाध्यो वा प्र०—अत्राऽन्त्यपक्षे 'सुपां सुलुक्०' इति सोर्लुक् २.१९. **यज्ञम्**=यजति सङ्गच्छते येन तम् (विद्यासुशिक्षाव्यवहारम्) १.१७०.४. पूजनीयं सर्वरक्षकमग्निवत्तपनम् (ईश्वरम्) ३१.१६. यजनीयम् (भा०—विद्याज्ञानबलवर्धकं कर्म) १.१३.२. क्रियाकौशलम् १.१०.४. सङ्गन्तव्यम् (भा०—आनन्दम्) १७.६८. प्रथममन्त्रोक्तम्—इज्यतेऽसौ यज्ञस्तं महिमानं कर्म वा १.१.४. विद्वत्सत्कार-सत्सङ्ग-शुभगुण-दानाख्यम् ३.२१.१. सम्पूजनीयम् (पुरुषम्=ईश्वरम्) ३१.९. शिल्पविद्यामहिमानं कर्म च १.३.१०. धर्म्यं व्यवहारम् ७.११.५. राजधर्मानुष्ठानाख्यम् ४.२०.३. सर्वपूज्यं परमेश्वरम् ऋ० भू० १२४, ३१.९. अग्निहोत्राद्यश्वमेधान्तं शिल्पविद्यामयं च ऋ० भू० १२७.३१.१४. सङ्गतिकरणम् ५.४३.१७. सुखदानसाधकं व्यवहारम् ३४.९. अन्नाद्युत्तमपदार्थदानम् ५.४.५. गृहाश्रमव्यवहारम् ५.५.५. सुखानां सङ्गमकं व्यवहारम् ११.७. धर्माऽर्थकाममोक्षव्यवहारम् १.१६४.५०. क्रियाकाण्डजन्यं संसारम् २.२१. यात्राख्यं सङ्ग्रामाख्यं हवनाख्यं वा ३३.३३. मानसं ज्ञानमयम् ३१.१५. पूर्व्यं द्वितीय-मन्त्रोक्तं त्रिविधम्—विद्याज्ञान-धर्मानुष्ठानवृद्धानां देवानां विदुषामैहिकपारमार्थिक-सुखसम्पादनाय सत्करणं सम्यक् पदार्थगुणसंमेल-विरोधज्ञानसङ्गत्या शिल्पविद्याप्रत्यक्षीकरणं नित्यं विद्वत्समागमानुष्ठानं शुभविद्या-सुखधर्मादिगुणानां नित्यं दानकरणमिति २.६. सुखाय यष्टुमर्हम् (व्यवहारम्) २.१२. सङ्गन्तुमर्हं व्यवहारम् १९.८०. सङ्गन्तव्यं सत्कर्त्तव्यं वा गृहाश्रमम् १७.५४. कर्मोपासनाज्ञानाख्यम् २.५.८. सुशिक्षोपदेशाख्यम् १.२२.३. रागद्वेषरहितं न्यायदयामयम् ३.१.२२. विद्यावृद्धिकरं व्यवहारम् ४.३४.६. सत्सङ्गाख्यं व्यवहारम् ३.१.२. अध्ययनाध्यापनादिकम् ४.३३.३. विद्याप्रज्ञावर्द्धकम् (सत्कर्म्म) ४.३४.१. सर्वविद्यामयम् (ऋतं=सत्यमुदकं वा) १.१०५.४. सत्यजनकं व्यवहारम् ५.८७.९. परोपकाराख्यम् ६.१०.६. प्रजापालनाख्यम् ४.२०.२. विद्याविनयाभ्यां सङ्गतं पालनाख्यम् ३.४०.३. विज्ञानसङ्गतिमयम् ५.८७.३. सङ्गन्तव्यं धर्म्मम् १२.६०. योगम् ७.११. विद्याप्रचाराख्यं व्यवहारम् ५.५.२. विद्याधर्मसङ्गमयितारम् (व्यवहारम्) ११.८. राजप्रजासम्बद्ध व्यवहारम् ७.१९. विज्ञानशिल्पसङ्गमनीयम् (व्यवहारम्) ५.१७. सर्वशास्त्रबोध और पूजनीयतम (ईश्वर) को आर्याभि० १.८. ऋ० १.१.६.१०. धनादिसङ्गमकम् (सद्व्यवहारम्) १.१८८.७. प्राप्तव्यमानन्दम् २९.८. सर्वसुखावहं गृहाश्रमम् ८.२१. सङ्गतं योग्यं बोधम् २९.८. अनेकविधव्यवहारम् २९.३६. विद्वत्सत्कारादिमयं व्यवहारम् ३.२५.४. सर्वं सङ्गतं व्यवहारम् ६.६२.२. पुरुषार्थसाध्यम् (व्यवहारम्) १.२०.२. सर्वेषां सुखजनकं राजधर्मम् ९.१. **यज्ञस्य**=शिल्पविद्यासिद्धस्य (व्यवहारस्य) ४.९. सङ्गन्तुमर्हस्य जगतः २.५.२. सत्यव्यवहारस्य २०.३७. सङ्गमनीयस्य विद्याबोधस्य १.९६.६. अग्निहोत्राद्यश्वमेधान्तस्य क्रियासमूहजन्यस्य सर्वजगदुपकारकस्य (व्यवहारस्य) यद्वा परमेश्वरस्य सामर्थ्यात् प्रकृत्यादिपृथिव्यन्तकार्यकारणसङ्गत्योत्पन्नस्य जगतोऽथवा सत्सङ्गतिकरणादुत्पन्नस्य विद्यादिविज्ञानयोगादेः वे० भा० न० संयोगादुत्पन्नस्य जगतः २३.५७. यजनकर्म्मणः १९.३१. योगविद्याप्रापकस्य

विज्ञानस्य ७.२३. इज्यतेऽसौ यज्ञस्तस्य महिम्नः कर्म्मणो वा । विदुषां सत्कारस्य सङ्गतस्य सत्सङ्गत्योत्पन्नस्य विद्याऽऽदिदानस्य शिल्पक्रियोत्पाद्यस्य वा (व्यवहारस्य) १.१.१. ज्ञानक्रियाभ्यामनुष्ठेयस्य (भा०—क्रियाकाण्डस्य) २.१९. **यज्ञः**=इज्यते यस्मिन् सः (व्यवहारः) १.२३. सङ्गन्ता (सेनाध्यक्षः) १७.४०. अभिधेयः (अग्निसंज्ञको व्यवहारः) ४.११. स्त्रीपुरुषाभ्यां सङ्गमनीयः (गृहाश्रमः) ८.४०. पूजनीयः (अ०—ईश्वरः) १७.६२. सङ्गतः संसारः १.१८.७. राजपालनीयो व्यवहारः ७.३४.१७. सत्सङ्गत्यादिस्वरूपः ६.३८.४. अनुष्ठातुमर्हो व्यवहारः ४.५८.९. अध्यापनोपदेशाख्यः (व्यवहारः) ४.३४.३. सङ्गमनीयः शिष्यः ६.६८.१. रेखागणिते व्यासाख्यो मध्यरेखाख्यः ऋ० भू० १४७, २३.६२. यष्टुं सङ्गन्तुमर्हः सूर्यः १.१६४.३५. व्यापकः परमेश्वरः २२.३३. सर्वैः पूजनीयो जगदीश्वरः २३.६२. सत्यः सङ्गतो व्यवहारः ५.२६.८. अग्निष्टोमादिर्विज्ञानमयो व्यवहारो वा ३४.४. सम्पूजनीयः प्रजारक्षणनिमित्तो विद्याप्रचारार्थो गृहाश्रमः ८.२२. य इज्यते सङ्गम्यते सः (भा०—अग्निहोत्रादिः) १८.४२. यजनीयः (अग्निः) १.१८८.२. यजधातोरर्थः (देवपूजा-सङ्गतिकरण-दानाख्यः) ९.२१. राजधर्म्मशिल्पकार्यसङ्गत्योन्नतः (व्यवहारः) १.१७७.४. सङ्गन्तव्यो धर्म्मः १८.२९. अच्छे प्रकार करने योग्य यतिधर्म सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.११. योगरूप (व्यवहार) स० प्र० २४७, ३४.४. जो जो अच्छा काम है आर्याभि० २.१३, १८.२९. सद्विद्याव्यवहारवर्धको व्यवहारः ६.४०.४. सङ्गन्तुमर्हो ब्रह्मचर्याख्यः (व्यवहारः) १.१५६.१. **यज्ञात्**=सच्चिदानन्दादिलक्षणात् पूर्णात् पुरुषात् (परमेश्वरात्) ऋ० भू० ९, ३१.६. अध्ययनाऽध्यापनाद्धोमलणाद्वा ५.११. पूजनीयात् पुरुषात् (जगदीश्वरात्) ३१.६. पूजनीयतमात् (पुरुषात्) ३१.७. **यज्ञान्**=विद्यादिप्रापकान् व्यवहारान् ३.९.६. **यज्ञानाम्**=अग्निहोत्राद्यश्वमेधान्तानां योगज्ञान-शिल्पोपासनाज्ञानानाम् १.४४.३. सङ्गतानां व्यवहाराणाम् ३.३.३. सङ्गन्तव्यानां पदार्थानाम् २९.६. **यज्ञाय**=यो यजति सत्येन सङ्गच्छते तस्मै (विद्वज्जनाय) ६.४०.१. ज्ञानक्रियामयाय यागाय १.९३.६. विद्वत्सत्काराद्यनुष्ठानाय ३.३९.८. सङ्गतिविज्ञानाय ३.३०.१५. **यज्ञाः**=सत्या व्यवहाराः ४.३७.२ अग्निहोत्राद्याः शिल्पान्ताः (व्यवहाराः) ७.३५.७. **यज्ञे**=सङ्गन्तव्ये कर्त्तव्ये १.१३.७. व्यापके परमेश्वरे सर्वोपकारकेऽश्वमेधादौ शिल्पविद्याक्रियाकुशलत्वे च ऋ० भू० १०८, अथर्व० १२.५.३. विद्यादानाख्ये (व्यवहारे) १.१४२.५. वर्षादिजलव्यवहारे ४.५८.२. सम्यग् ज्ञातव्ये (गृहाश्रमे) ५.७५.८. अग्निहोत्रादौ धर्मेण सङ्गतव्यवहारे योगाभ्यासे वा ३४.२. विद्वत्सेवा-सङ्ग-विद्यादानादिक्रियायाम् २०.१०. शिल्पसम्पाद्ये व्यवहारे ३.३५.६. विद्वानों के सत्कार शिल्पविद्या और शुभगुणों के दान में सं० वि० १४३, अथर्व० १२.५.३. यष्टव्ये (अ०—संसारे) १.१३.३. **यज्ञेन**=सत्यभाषणादिव्यवहारेण १८.६. सुनियमानुष्ठानाख्येन भा०—सुनियमपालनेन १८.७. सुखसिद्धिकरेणेश्वरेण १८.८. धर्मपालनेन १८.४. सत्कर्त्तव्येन परमात्मना १८.३. पूजनीयेन परमेश्वरेण जगदुपकारकेण व्यवहारेण वा १८.१. सत्यधर्मोन्नतिकरेणोपदेशाख्येन १८.५. होमादिना ६.५२.१. सङ्गत्याख्येन २.२१.५. ब्रह्मचर्याद्याचरणेन धर्मेणेश्वराज्ञापालनेन धर्मेण विद्याभ्यासेन शिष्टाचरितेन प्रत्यक्षविषयेण शब्दप्रमाणाभ्यासेन वा ९.२१. विद्वत्सत्काराख्येन ६.५.५. योगाभ्यासादिना २२.३३. सङ्गमनेन १२.१०३. स्तुतिप्रार्थनोपासनरीत्या पूजनेन ऋ० भू० १२९ परमेश्वरस्य विदुषां च सत्करणेन सङ्गतेन कर्मणा विद्यादिदानेन सह २२.३३. अग्न्यादिदिव्यपदार्थसमूहेन १.१६४.५०. विद्यैश्वर्योन्नतिकरणेन १८.१६. सङ्गतिकरणेन योगेन दानेन वियोगेन वा अ०—योगतो विपरीतेन दानरूपेण मार्गेण उक्तः पुनः पुनर्योगेन गुणनेन मार्गेण भा०—यजधातोर्हि यः सङ्गतिकरणार्थस्तेन सङ्गतिकरणं कस्याश्चित् संख्यायाः कयाचित् सह योगकरणम् यश्च दानार्थस्तेनैवं सम्भाव्यं कस्याश्चिद् दानं व्ययीकरणमिदमेवम् । एवं गुणन-भाग-वर्ग-वर्गमूल-घन-घनमूल-भागजाति-प्रभागजातिप्रभृतयो ये गणितभेदाः सन्ति, ते योगवियोगाभ्यामेवोत्पन्नत्वाद्यज्ञस्तेन १८.२४. सङ्गतिकरणयोग्येन परमात्मना १८.२२. सर्वपदार्थवर्धकेन कर्म्मणा १८.९. शमदमादियुक्तेन योगाभ्यासेन १८.११. वायुविद्याविधानेन १८.२३. कालचक्रज्ञानधर्माद्यनुष्ठानेन १८.२३. पशुपालनविधिना १८.२६. सर्वान्नप्रदेन परमात्मना १८.१२. पुरुषार्थानुष्ठानेन १८.१५. पृथिवी-कालविज्ञापकेन (व्यवहारेण) १८.१८. प्रशस्तधनप्रापकेणेश्वरेण १८.१०. **यज्ञेभिः**=कर्मोपासनाज्ञाननिष्पादकैः कर्म्मभिः प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति भिस ऐस् न १.२४.१४. विद्वत्सेवासत्यभाषाणादिभिः ६.३.२. **यज्ञेषु**=सत्कारेषूपासनादिष्वग्निहोत्रादिषु शिल्पेषु वा ४.१६. विद्याधर्मप्रचाराख्येषु व्यवहारेषु ६.१६.३. क्रियाकाण्डादिविज्ञानान्तरेषु सङ्गमनीयेषु १.१४.११. सन्ध्योपासनादिषु सत्कर्मसु ६.१४.२. **यज्ञैः**=विद्वत्सङ्गादिभिः ७.२१.१. विद्याविज्ञानप्रचारैः

१.८३.५. सत्कर्मानुष्ठानैः ६.२४.६. विद्वत्सत्कार-सङ्ग-दानैः ६.३४.२. सङ्गन्तव्यैः साधनैः ७.२.२. विद्वत्सत्कार-शिल्प-क्रिया-विद्यादिदानाख्यैर्व्यवहारैः ३.३२.५. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'यजयाचयतविच्छप्रच्छरक्षो नङ्' अ० ३.३.९०. इति नङ्। बहुलवचनादौणादिको वा नः। यज्ञः=यज्ञ नाम निघं० ३.१७. यज्ञः कस्मात्? प्रख्यातं यजतिकर्मेति नैरुक्ताः। याच्ञ्यो भवतीति वा यजुरुन्नो भवतीति वा बहुकृष्णाजिन इत्यौपमन्यवो यजूंष्येनं नयन्तीति वा नि० ३.१९. यज्ञः=यज्ञोखा नि० १०.४५. स (सोमः) तायमानो जायते स यन् जायते तस्माद् यञ्जो यञ्जो ह वै नामैतद् यद् यज्ञ इति श० ३.९.४.२३. प्राणः (यज्ञस्य) सोमः कौ० ९.६. अध्वरो वै यज्ञः श० १.२.४.५. यज्ञो वै मखः श० ६.५.२.१. तै० ३.२.८.३. तां० ७.५.६. मख इत्येतद् यज्ञनामधेयम् गो० उ० २.५. यज्ञो वै नमः श० ७.४.१.३०, २.४.२.२४, २.६.१.४२. यज्ञो वै स्वाहाकारः श० ३.१.३.२७. यज्ञो वै भुज्युः (यजु० १८.४२.) यज्ञो हि सर्वाणि भूतानि भुनक्ति श० ९.४.१.११. यज्ञो भगः (यजु० ११.७.) श० ६.३.१.१९. गातुं वित्त्वेति यज्ञं वित्त्वेत्येवैतदाह। (गातुः=यज्ञः) श० १.९.२.२८, ४.४.४.१३. यज्ञो वा ऽऋतस्य योनिः (यजु० ११.६.) श० १.३.४.१६. यज्ञो ह वै मधुसारघम् श० ३.४.३.१३. यज्ञो वै महिमा (यजु० ११.६.) श० ६.३.१.१८. यज्ञो वै देवानां महः श० १.९.१.११. एष ह वै महान् देवो यद् यज्ञः गो० पू० २.१६. यज्ञो वै बृहन्विपश्चित् श० ३.५.३.१२. यज्ञो वा अर्यमा तै० २.३.५.४. यज्ञो वै तार्प्यम् तै० १.३.७.१, ३.९.२०.१. यज्ञो वै वसुः (यजु० १.२.) श० १.७.१.९. यज्ञो विदद्वसुः तां० १५.१०.४. यज्ञो वै विदद्वसुः तां० ११.४.५. यज्ञोऽसुरेषु विदद्वसुः तां० ८.३.३. यत् संयद्वसुः (यजु० १५.१८.) इत्याह यज्ञं हि संयन्तीतीदं वस्विति श० ८.६.१.१९. यज्ञो वै सुतर्मा नौः कृष्णाजिनं वै सुतर्मा नौः ऐ० १.१३. यज्ञो वै स्वः (यजु० १.११.) अहर्देवाः सूर्यः श० १.१.२.२१. यज्ञो वै सुम्नम् (यजु० १२.६७.) श० ७.२.२.४, ७.३.१.३४. यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म (यजु० १.१.) श० १.७.१.५. यज्ञो हि श्रेष्ठतमं कर्म तै० ३.२.१.४. यज्ञो वै विट् (यजु० ३८.१९.) श० १४.३.१.९. यज्ञो वै विशो यज्ञे हि सर्वाणि भूतानि विष्टानि श० ८.७.३.२१. ब्रह्म यज्ञः श० ३.१.४.१५. ब्रह्म हि यज्ञः श० ५.३.२.४. ब्रह्म वै यज्ञः ऐ० ७.२२. सैषा त्रयी विद्या (=ऋक्सामयजूंषि) यज्ञः श० १.१.४.३. एष वै प्रत्यक्षं यज्ञो यत् प्रजापतिः श० ४.३४.३. यज्ञः प्रजापतिः श० ११.६.३.९. यज्ञ उ वै प्रजापतिः कौ० १०.१.१३.१. तै० ३.३.७.३. एष वै यज्ञ एव प्रजापतिः श० १.७.४.४. प्रजापतिर्यज्ञः ऐ० २.१७, ४.२६. श० १.१.१.१३, १.५.२.१७. तै० ३.२.३.१. गो० उ० ३.८, ४.१२, ६.१. प्रजापतिर्वै यज्ञः गो० उ० २.१८. तै० १.३.१०. प्राजापत्यो यज्ञः तै० ३.७.१.२. इन्द्रो यज्ञस्यात्मा श० ९.५.१.३३. इन्द्रो यज्ञस्य देवता ऐ० ५.३४, ६.९. श० २.१.२.११. इन्द्रो वै यज्ञस्य देवता श० १.४.१.३३, १.४.५.४. तदाहुः किन्दैवत्यो यज्ञ इति ऐन्द्र इति ब्रूयात् गो० उ० ३.२३. एते वै यज्ञस्यान्त्ये तन्वौ यदग्निश्च विष्णुश्च ऐ० १.१. विष्णुर्यज्ञः गो० उ० १.१२. तै० ३.३.७.६. यज्ञो वै विष्णुः स यज्ञः श० ५.२.३.६. स यः स विष्णुर्यज्ञः सः, स यः स यज्ञोऽसौ अ आदित्यः श० १४.१.१.६. विष्णुर्वै यज्ञः ऐ० १.१५. यज्ञो विष्णुः तां० १३.३.२. गो० उ० ६.७. पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ (यजु० १.१२.) इति यज्ञो वै विष्णुर्यज्ञिये स्थ इत्येवैतदाह श० १.१.३.१. यज्ञो वै विष्णुः (यजु० २२.२०.) श० १३.१.८.८. यज्ञो वै विष्णुः कौ० ४.२. तां० ९.६.१०. श० १.१.२.१३. गो० उ० ४.६. तै० १.२.५.१. यज्ञो वै विष्णुः शिपिविष्टः तां० ९.७.१०. विष्णवे हि गृह्णाति यो यज्ञाय (हविः) गृह्णाति श० ३.४.१.१४. अथेमं विष्णुं यज्ञं त्रेधा व्यभजन्त, वसवः प्रातःसवनं रुद्रा माध्यन्दिनं सवनमादित्यास्तृतीयसवनम् श० १४.१.१.१५. तद् यदेनेन (यज्ञेन विष्णुना) इमां सर्वां (पृथिवीम्) समविन्दन्त तस्माद् वेदिर्नाम श० १.२.५.७. तं (यज्ञं) वेद्यामन्वविन्दन् ऐ० ३.९. यज्ञो वै वैष्णुवारुणः कौ० १६.८. मित्राबृहस्पती वै यज्ञपथः श० ५.३.२.४. यज्ञमुखं वा ऽउपांशुः श० ५.२.४.१७. देवा यज्ञियाः श० १.५.२.३. एतद्ध वै देवानामपराजितमायतनं यद् यज्ञः तै० ३.३.७.७. सर्वेषां वा ऽएष भूतानां सर्वेषां देवानामात्मा यद् यज्ञः श० १४.३.२.१. यज्ञ उ देवानामात्मा श० ८.६.१.१०. यज्ञो वै देवानामात्मा श० ९.३.२.७. (प्रजापतिर्देवानब्रवीत्) यज्ञो वोऽन्नम् श० २.४.२.१. यज्ञ उ देवानामन्नम् श० ८.१.२.१०. देवरथो वा एष यद् यज्ञः ऐ० २.३७. कौ० ७.७. एते वै यज्ञमवन्ति ये ब्राह्मणाः शुश्रुवाꣳसो ऽनूचानो एते ह्येनं तन्वत ऽएतऽएनं जनयन्ति श० १.८.१.२८. एतैर्ह्यत्र (यज्ञे) उभयैरर्थो भवति यद् देवैश्च ब्राह्मणैश्च श० ३.३.४.२०. यज्ञो वै देवेभ्योऽपाक्रामत्स सुपर्णरूपं कृत्वाचरत् तं देवा एतैः (सौपर्णैः) सामभिरारभन्त तां० १४.३.१०. वय इव ह वै यज्ञो विधीयते श० ४.१.२.२५. त्रिवृद्धिर्यज्ञः श० १.१.४.२३. त्रिवृत्प्रायणा हि यज्ञास् त्रिवृदुदयनाः श० २.३.

४.१७. ते वै पञ्चान्यद् भूत्वा पञ्चान्यद् भूत्वा कल्पेतामाहावश्च हिंकारश्च प्रस्तावश्च प्रथमा च ऋगुद्गीथश्च मध्यमा च प्रतिहारश्चोत्तमा च निधनञ्च वषट्कारश्च ते यत् पञ्चान्यद् भूत्वा पञ्चान्यद् भूत्वा कल्पेतां तस्मादाहुः पाङ्क्तो यज्ञः पाङ्क्ताः पशव इति ऐ० ३.२३. गो० उ० ३.२०. पाङ्क्तो यज्ञः श० १.५.२.२६, ३.१.४.२०. गो० पू० ४.२४. गो० उ० २.३. पाङ्क्तो वै यज्ञः ऐ० १.५. कौ० १.३.४. तै० १.३.३.१. श० १.१.२.१६. पाङ्क्तो यज्ञः तां० ६.७.१२. ऐ० ३.२३. यज्ञो वा आश्रावणम् श० १.५.१.१. एष वै यज्ञो यदग्निः श० २.१.४.१६. अग्निर्यज्ञः श० ३.२.२.७. अग्निरु वै यज्ञः श० ५.२.३.६. अग्निर्वै यज्ञः श० ३.४.३.१६. तां० ११.५.२. अग्निर्वै योनिर्यज्ञस्य श० १.५.२.११. शिर एतद् यज्ञस्य यदग्निः श० ९.२.३.३१. अग्निर्वै यज्ञमुखम् तै० १.६.१.८. एष हि यज्ञस्य सुक्रतुर् (ऋ० १.१२.१.) यदग्निः श० १.४.१.३५. वाग्घि यज्ञः श० १.५.२.७. वाग्वै यज्ञः ऐ० ५.२४. श० १.१.२.२. वागु वै यज्ञः श० १.१.४.११. वाग्यज्ञस्य (रूपम्) श० १२.८.२.४. अयं वै यज्ञो योऽयं (वायुः) पवते ऐ० ५.३३. श० १.९.२.२८. अयं वाव यज्ञो योऽयं (वायुः) पवते जै० उ० ३.१६.१. अयमु वै यः (वायुः) पवते स यज्ञः गो० पू० ३.२. वान्तो वै यज्ञः श० ३.१.३.२६. संवत्सरो यज्ञः श० ११.२.७.१. संवत्सरो यज्ञः प्रजापतिः श० २.२.२.४. संवत्सरसंमितो वै यज्ञः पञ्च वा ऽऋतवः संवत्सरस्य तं पञ्चभिराप्नोति तस्मात् पञ्च जुहोति श० ३.१.४.५. यज्ञ एव सविता गो० पू० १.३३. जै० उ० ४.२७.७. स यः स यज्ञो ऽसौ स आदित्यः श० १४.१.१.६. यज्ञो वै यजमानभागः ऐ० ७.२६. यजमानो वै यज्ञः ऐ० १.२८. यजमानो यज्ञः श० १३.२.२.१. आत्मा वै यज्ञः श० ६.२.१.७. पुरुषो वै यज्ञः कौ० १७.७. गो० उ० ५.४. श०.१.३.२.१. तै० ३.८.२३.१. जै० उ० ४.२.१. गो० पू० ४.२४. गो० उ० ६.१२. सः (पुरुषः) यज्ञः गो० पू० १.३९. पुरुषो सम्मितो यज्ञः श० ३.१.४.२३. पशवो यज्ञः श० ३.२.३.११. कतमो यज्ञ इति पशव इति श० ११.६.३.९. शतोन्मानो वै यज्ञ. श० १२.७.२.१३. यज्ञो वै भुवनज्येष्ठः कौ० २५.११. यज्ञो वै भुवनस्य नाभिः तै० ३.९.५.५. यज्ञो वै भुवनम् तै० ३.३.७.५. यज्ञो वा अनः श० १.१.२.७. आपो वै यज्ञः ऐ० २.२०. श० ३.८.५.१. यज्ञो वा ऽआपः कौ० १२.१. श० १.१.१.१२. तै० ३.२.४.१. ऋतेरक्षा वै यज्ञः ऐ० २.७. परोक्षं यज्ञः श० ३.१.३.२५. अयज्ञो वा एषः योऽपत्नीकः त० २.२.२.६. पूर्वार्धो वै यज्ञस्याध्वर्युर्जघनार्धः पत्नी श० १.९.२.३. अथ त्रीणि वै यज्ञस्येन्द्रियाणि । अध्वर्युर्होता ब्रह्मा तै० १.८.६.६. ज्येष्ठयज्ञो वा एष यद् द्वादशाहः ऐ० ४.२५. यज्ञं वा ऽअनुप्रजाः श० १.८.३.२७. यज्ञाद् वै प्रजा प्रजायन्ते श० ४.४.२.९. रेतो वा ऽअत्र यज्ञः श० ७.३.२.९. (यज्ञस्य) प्राणो धूमः श० ६.५.३.८. एतच्छिरो यज्ञस्य यद् विषुवान् कौ० २६.१. शिरो वै यज्ञस्यातिथ्यम् श० ३.२.३.२०. शिरो वा एतद् यज्ञस्य यदातिथ्यम् ऐ० १.१७.२५. कौ० ८.१. एतद्वै यज्ञस्य शिरो यन्मन्त्रवान् ब्रह्मौदनः गो० पू० २.२६. शिरो वै यज्ञस्योत्तर आधारः श० १.४.५.५. उत्तरत उपचारो हि यज्ञः श० ८.६.१.१९. चक्षुषी वा ऽएते यज्ञस्य यदाज्यभागौ श० ११.७.४.२. एतद्वै प्रत्यक्षाद् यज्ञरूपं यद् घृतम् श० १२.८.२.१५. मृगधर्मा (=पलायनशीलः) वै यज्ञः तां० ६.७.१०. यज्ञो वै मैत्रावरुणः कौ० १३.२. मनो (वै यज्ञस्य) मैत्रावरुणः श० १२.८.२.२३. ऐ० २.५. विराड् वै यज्ञः श० १.१.१.२२. वैराजो यज्ञः गो० पू० ४.२४. गो० उ० ६.१५. यज्ञो वै स्तोमः श० ८.४.३.२. नासामा यज्ञो अस्ति श० १.४.१.१. एते वै यज्ञा वागन्ता ये यज्ञायज्ञीयान्ताः तां० ८.६.१३. यद्वै यज्ञस्यान्यूनातिरिक्तं तच्छिवम् श० ११.२.३.९. यद्वै यज्ञस्यान्यूनातिरिक्तं तत् स्विष्टम् श० ११.२.३.९. विष्णुर्वै यज्ञस्य दुरिष्टं पाति ऐ० ३.३८. यद्वै यज्ञस्य दुरिष्टं तद्वरुणो गृह्णाति तां० १३.२.४. यज्ञो यज्ञस्य प्रायश्चित्तिः ऐ० ७.४. यद् यज्ञेऽभिरूपं तत् समृद्धम् कौ० ९.६. गो० उ० ४.१८. एतद्वै यज्ञस्य समृद्धं यद् रूपसमृद्धं यत्कर्म क्रियमाणमृगभिवदति ऐ० १.४. व्यृद्धं वै तद् यज्ञस्य यन्मानुषम् श० १.४.१.३५. हवींषि ह वा ऽआत्मा यज्ञस्य श० १.६.३.३९. आहुतिर्हि यज्ञः श० ३.१.४.१. यज्ञो विकंकतः श० १४.१.२.५. यज्ञो वा अवति तां० ६.४.५. भैषज्ययज्ञा वा एते यच्चातुर्मास्यानि तस्माद् ऋतुसन्धिषु प्रयुज्यन्ते ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायते गो० उ० १.१९. कौ० ५.१. एष ह वै यजमानस्यामुष्मिँल्लोक ऽआत्मा भवति यद् यज्ञः श० ११.१.८.६. यज्ञेन वै देवा दिवमुपोदक्रामन् श० १.७.३.७. स्वर्गो वै लोको यज्ञः कौ० १४.१. यज्ञेन वै तद् देवा यज्ञमयजन्त यदग्निनाऽग्निमयजन्त ते स्वर्गं लोकमायन् ऐ० १.१६.]

यज्ञकेतुः यज्ञस्य प्रापकः (विद्वान् जनः) ४.५१.११. [यज्ञ-केतुपदयोः समासः । केतुः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

यज्ञनीः यज्ञं त्रिविधं नयति प्रापयतीति सः (भौतिको ऽग्निः) प्र०—अत्र 'सत्सूद्विषद्रुह०' इति क्विप् १.१५.१२.

[यज्ञोपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुह०' इति क्विप्]

यज्ञन्यम् यज्ञं नयति प्रापयतीति यज्ञनीस्तम् (यज्ञपतिं=यजमानम्) प्र०—अत्र 'अमि पूर्वः' अ० ६.१.१०६. इत्यत्र 'वा छन्दसि' इत्यनुवर्त्तनात्पूर्वरूपादेशो न भवति २.६. [यज्ञोपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्विप् । ततोऽमि पूर्वरूपैकादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

यज्ञपतिम् यज्ञस्याऽनुष्ठातारं स्वामिनं यज्ञस्य कामयितारं वा (मनुष्यम्) १.१२. उपदेशेन धर्मरक्षकम् भा०—पूर्णविद्यं प्रगल्भं निष्कपटमाप्तं जनम् १२.६०. एतस्य यज्ञस्य पालकम् (जनम्) ११.७. राज्यपालकम् (अ०—स्वामिनम्) १७.५४. सङ्गम्यानां गृहाश्रमिणां पालकं राजानम् ८.२२. गृहाश्रमस्य पालकं पुरुषम् पालिकां स्त्रियं वा ८.७. सङ्गतस्य न्यायस्य पालकम् (पुरुषम्) ७.२०. यथा होत्रादयो यज्ञपतिं रक्षन्तो यतन्ते तथा ५.३८. यज्ञपालयितारन् (यजमानं यज्ञसम्पादकं विद्वांसं वा) ५.३. यज्ञस्य राज्यस्य पालकम् (राजानम्) ३०.१. **यज्ञपतिः**=यज्ञस्य स्वामी यज्ञकर्त्ता यजमानः समीक्षा—धात्वर्थाद्यज्ञाऽर्थस्त्रिविधो भवति—विद्याज्ञानधर्मानुष्ठानवृद्धानां देवानां विदुषामैहिक-पारमार्थिक-सुखसम्पादनाय सत्करणं सम्यक् पदार्थगुणसम्मेलविरोधज्ञानसङ्गत्या शिल्पविद्या-प्रत्यक्षीकरणं नित्यं विद्वत्समागमाऽनुष्ठानं शुभविद्या-सुख-धर्मादिगुणानां नित्यं दानकरमिति १.२. यज्ञस्य स्वामी पालकः (देवः=जगदीश्वरः सूर्यलोको वा) १.२२. **यज्ञपते**=राजधर्माऽग्निहोत्रादिपालक (गृहपते) ८.२२. गृहाश्रमस्य पालक (गृहपते) ८.२५. **यज्ञपतौ**=यज्ञस्य युक्तस्य व्यवहारस्य पालके स्वामिनि ३३.३०. [यज्ञ-पतिपदयोः समासः । यजमानो हि यज्ञपतिः श० ४.२.२.१०. यजमानो वै यज्ञपतिः श० १.१.२.१२. वत्सा उ वै यज्ञपतिं वर्धन्ति यस्य ह्येते भूमिष्ठा भवन्ति स हि यज्ञपतिर्वर्धते श० १.८.१.२८.]

यज्ञप्रीः यो यज्ञं प्राति पूरयति सः (विद्वज्जनः) २७.३१. [यज्ञोपपदे प्रा पूरणे (अदा०) धातोः क्विप् । आकारस्येकारश्छान्दसः]

यज्ञबन्धुः यज्ञस्य न्यायव्यवहारस्य भ्रातेव वर्त्तमानः (अग्निः=राजा) ४.१.६. [यज्ञ-बन्धुपदयोः समासः]

यज्ञं यज्ञम् प्रतिव्यवहारम् ३.६.१०. [यज्ञम् पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

यज्ञवनसम् यज्ञस्य विद्याव्यवहारस्य विभाजकं राज्यव्यवहारस्य विभक्तारम् (अध्यापकं राजानं वा) ४.१.२. [यज्ञ-वनस्पदयोः समासः । वनस्=वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्]

यज्ञवन्तः प्रशस्ता यज्ञाः प्रयत्ना येषां ते (जनाः) ३.२७.६. [यज्ञप्राति० प्रशंसायां मतुप्]

यज्ञवाहसम् या यज्ञं परमेश्वरस्योपासनं शिल्पविद्यासिद्धं वा वहति प्रापयति ताम् (धियम्) ४.११. **यज्ञवाहसः**=यज्ञान् वोढुं शीलं येषां ते (मरुतः=परीक्षका विपश्चितो जनाः) १.८६.२. **यज्ञवाहसि**=यज्ञान् सङ्गतान् राजधर्मादीन् वहन्ति यस्मिन् राज्ये तस्मिन् ९.३७. **यज्ञवाहसे**=यज्ञस्याऽध्ययनाऽध्यापनस्य प्राप्तये ३.८.३. यज्ञस्य प्रापकाय (सज्जनाय) ३.२४.१. [यज्ञोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् औणा० असुन्]

यज्ञवाहसा यज्ञान् हुतद्रव्यान् वहतः प्रापयतस्तौ (अश्विनौ=सूर्याचन्द्रमसौ) प्र०—'अत्र सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.१५.११. यज्ञप्रापकौ (इन्द्रवायू=राजाऽमात्यौ) ४.४७.४. ['यज्ञवाहस्' इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

यज्ञवृद्धम् यज्ञे पूज्यं विद्वांसम् ६.२१.२. [यज्ञ-वृद्धपदयोः समासः]

यज्ञश्रियम् चक्रवर्त्तिराज्यादेर्महिम्नः श्रीलक्ष्मीः शोभा ताम् प्र०—राष्ट्रं वा अश्वमेधः शत० १३.१.६.३. अनेन यज्ञशब्दाद्राष्ट्रं गृह्यते 'यज्ञो वै महिमा' शत० ६.२.३.१८, १.४.७. [यज्ञ-श्रीपदयोः समासः]

यज्ञसाधनः यज्ञस्य विद्वत्सत्कारस्य साधनानि यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१४५.३. [यज्ञ-साधनपदयोः समासः]

यज्ञसाधम् यो यज्ञं प्रजापालनं साध्नोति तम् (रुद्रं=सभाध्यक्षम्) १.११४.४. यो यज्ञैर्विज्ञानादिभिर्ज्ञातुं शक्यस्तम् (अग्निं=परमेश्वरम्) १.९६.३. यज्ञं साध्नुवन्तम् (विद्वांसं जनम्) १.१२८.२. सब संसार और विज्ञानादि यज्ञ का साधक सब का जनक (ईश्वर) आर्याभि० १.४०, ऋ० १.७.३.३. [यज्ञोपपदे साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

यज्ञायज्ञा यज्ञे यज्ञे प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः २७.४२. [यज्ञे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । सप्तम्या आकारादेशश्छान्दसः]

यज्ञायज्ञियम् यज्ञाः सङ्गतव्या व्यवहारा अयज्ञास्त्यक्तव्याश्च तान् यदर्हति तत् (साम=तृतीयो वेदः) १२.४. [यज्ञ-अयज्ञपदयोः समासे 'तदर्हती' त्यर्थे घः । चन्द्रमा वै

यज्ञायज्ञियम् श० ९.१.२.३९. स्वर्गो वै लोको यज्ञायज्ञियम् श० ९.४.५.१०. (साम) योनिर्वै यज्ञायज्ञियम् तां० ८.६.३. देवा वै ब्रह्म व्यभजन्त तस्य यो रसोऽत्यरिच्यत तद् यज्ञायज्ञियमभवत् तां० ८.६.१. एषा वै प्रत्यक्षमनुष्टुब् यद् यज्ञायज्ञियम् तां० १५.९.१५. यज्ञायज्ञीयं ह्येव महाव्रतस्य पुच्छम् ता० ५.१.१८. अतिशयं वै द्विपदां यज्ञायज्ञीयम् तां० ५.१.१९. वाचो रसो यज्ञायज्ञीयम् तां० १८.५.२१. वाग् यज्ञायज्ञीयम् तां० ५.३.७. एते वै यज्ञा वागन्ता ये यज्ञायज्ञीयान्ताः तां० ८.६.१३. एषा वै शिशुमारी यज्ञपथेऽप्यस्ता यज्ञायज्ञीयम् तां० ८.६.९. पशवोऽन्नाद्यं यज्ञायज्ञीयम् तां० १५.९.१२. पन्था वै यज्ञायज्ञीयम् तां० ४.२.२१. कथमिव यज्ञायज्ञीयङ्गेयमित्याहुर्यथाऽनड्वान् प्रस्नावयमाण इत्थमिव चेत्थमिव चेति तां० ८.७.४.]

यज्ञायते यज्ञं कामयमानाय (जनाय) ५.४१.१. [यज्ञपदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताल्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

यज्ञासः सर्वे धर्म्या व्यवहाराः ६.२३.८. सङ्गन्तव्याः (विद्वांसो जनाः) ५.९.२. [यज्ञप्राति० जसोऽसुक्]

यज्ञियम् यज्ञकर्माऽर्हतीति यज्ञियो देशस्तम् प्र०—तत्कर्माऽर्हतीति उपसंख्यानम् अ० ५.१.७१. इति वार्त्तिकेन घः प्रत्ययः १.६.४. यज्ञं कर्त्तुमर्हम् (विद्वज्जनम्) ६.१६.४. राज्यव्यवहारनिष्पादकम् (स्तोमं=स्तुतिं प्रशंसाम्) ३.६०.७. यज्ञाऽर्हम् (भागम्) ३.६०.१. यज्ञसम्बन्धिनम् (भागम्) २.२३.२. यज्ञाऽनुष्ठानार्हं स्वरूपम् १२.१०४. यो यज्ञमर्हति तम् (भागम्) १.१६१.६. यज्ञाऽङ्गसमूहनिष्पादकम् (तेजः) ५.९. यथायोग्यं देशं गन्तुमर्हम् (रथं=यानम्) १.११९.१. यज्ञनिष्पन्नम् (सुखम्) १.२०.८. यज्ञसम्पादकम् (अग्निं=पावकम्) ३.२.१३. **यज्ञियस्य**=यज्ञमर्हतः (सज्जनस्य) ३.१.२१. यज्ञमनुष्ठातुमर्हस्य (राज्ञः) २०.५२. पूजनार्हस्य (परमेश्वरस्य) ३.३२.७. विद्वत्सेवा-सङ्ग-विद्यादानानि कर्त्तुमर्हस्य (राज्ञः) ६.४७.१३. **यज्ञियः**=यज्ञं कर्त्तुमर्हः (विद्वज्जनः) १.१४२.३. यो यज्ञमर्हति सः (अग्निः=विद्वान्) ४.१५.१. यज्ञेषु कुशलः (इन्द्रः=परमैश्वर्यप्रापको (जनः) ३.३२.१२. **यज्ञियान्**=यज्ञसाधकान् (देवान्=विदुषो जनान् १.१८८.३. **यज्ञियानाम्**=यज्ञं सम्पालितुमर्हाणाम् (प्रजाजनानाम्) ६.४१.१. यज्ञस्य साधकानाम् (प्राज्ञानां विद्वज्जनानाम्) ३.३३.११. सत्सङ्गतिमर्हाणाम् (विदुषां जनानां) ६.६३.५. यज्ञसिद्धिकर्त्तॄणाम् (सज्जनानाम्) ४.४३.१. ये यज्ञमर्हन्ति तेषाम् (पित्रादीनाम्) १९.५०. यज्ञस्य पतिं विधातुमर्हाणाम् (देवानाम्=आप्तानां विपश्चिताम्) ८.१५. यज्ञसम्पादनकुशलानाम् (विद्वज्जनानाम्) १७.१३. **यज्ञियाय**=यज्ञाऽर्हाय (वैदिक-कर्मणे) ३८.११. यज्ञकर्माऽर्हतीति यज्ञियो योद्धा तस्मै १.१२७.१०. **यज्ञियाः**=यज्ञं सम्पादितुमर्हाः (विद्वज्जनाः) ५.८७.९. विद्यावृद्धिमययज्ञप्रचाराऽर्हाः (देवाः=विद्वांसो जनाः) २.४१.२१. ये यज्ञं कर्त्तुमर्हन्ति ते (देवाः=विद्वत्तमा जनाः) ७.३५.१५. ये सत्सङ्गतिं कर्त्तुमर्हाः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ६.५२.१४. यज्ञकर्त्तारः (विद्वज्जनाः) ५.५२.१. यज्ञसाधनाऽर्हाः (विद्यार्थिजनाः) १.१४२.९. **यज्ञिये**=यज्ञसम्बन्धिनि कर्मणि ७.२.६. **यज्ञियेभ्यः**=यज्ञमनुष्ठातुं योग्येभ्यः (विद्वज्जनेभ्यः) १.१३९.७. यज्ञसिद्धिकरेभ्यः (देवेभ्यः=विद्वद्भ्यः) ३३.५४. सत्यभाषणादियज्ञाऽनुष्ठातृभ्यः (देवेभ्यः=जीवेभ्यः) ४.५४.२. **यज्ञियेषु**=राजपालनादिसङ्गतेषु व्यवहारेषु ७.३२.१३. [यज्ञप्राति० 'तदर्हतीत्यर्थे' यज्ञर्त्विग्भ्यां घखञौ' अ० ५.१.७१. वा०सूत्रेण घः । 'तत्कर्मार्हतीत्युपसंख्यानम्' अ० ५.१.७१. वा०सूत्रेण वा घः । घस्येयादेशः यज्ञियाय यजनाय नि० १०.८. यज्ञियानाम्=यज्ञसम्पादिनाम् नि० ७.२७. यज्ञिया देवा यज्ञसम्पादिनः नि० ९.२७. वनस्पतयो हि यज्ञिया नहि मनुष्या यजेरन् यद्वनस्पतयो न स्युः श० ३.२.२.९.]

यज्ञिया या यज्ञमर्हति सा (भा०—सर्वोत्तमा वाग् विद्युद्वा) ४.१९. **यज्ञियाम्**=या यज्ञमर्हति ताम् (अरमतिं=पूर्णां प्रज्ञाम्) ७.४२.३. [यज्ञियमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

यज्ञियानि कर्मोपासनाज्ञानसम्पादनाऽर्हाणि कर्म्माणि १.७२.३. यज्ञसिद्धयेऽर्हाणि (नामानि=जलानि संज्ञा वा) ६.१.४. शिल्पादियज्ञार्हाणि (नामानि=जलानि) १.८७.५. [यज्ञियमिति व्याख्यातम्]

यज्ञियासः या यज्ञमर्हन्ति ताः अ०—यज्ञियाः (आशिषः=इच्छाः) ४.५. ये यज्ञमर्हन्ति ते (देवासः=विद्वांसः) ४.५. यज्ञक्रियाकुशलाः (विद्वांसो जनाः) १.७३.७. यज्ञसम्पादने योग्याः (विद्वांसो जनाः) १.७२.६. यज्ञसिद्धिकराः (देवाः=विद्वज्जनाः) ७.३९.४. अहिंसया यज्ञस्याऽनुष्ठातारः (विद्वज्जनाः) ३.५४.१८. शिल्पव्यवहारकर्त्तारः (विद्वांसो जनाः) ३.५४.१३. ये शिल्पाख्यं यज्ञमर्हन्ति ते (जनाः) १.१४८.३. ये सत्यप्रियं व्यवहारं कर्त्तुमर्हन्ति ते (जगद्धितैषिणो जनाः) ६.४९.११. [यज्ञियमिति

व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

यज्ञे यज्ञे प्रतियज्ञम् १.१३६.१. सङ्गन्तव्ये सङ्गन्तव्ये व्यवहारे ५.५.६. [यज्ञे पदस्य वीप्सायां द्वित्त्वम्]

यज्ञेषम् यज्ञकरणेच्छाविशिष्टम् (लोकं=देशम्) ऋ० भू० २१६, २०.२५. [इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्घञर्थे कप्रत्यये सति 'इष' इति रूपम् । यज्ञ-इषपदयोः समासः]

यज्यवः सत्कर्त्तव्याः (जनासः=सज्जनाः) ३.१९.४. सङ्गन्तारः (नरः=नायका जनाः) २.१४.८. **यज्यवे**=यज्ञानुष्ठानाय यजमानाय वा ५.४१.३. सङ्गताय (वरुणाय=श्रेष्ठाय) २६.१७. होमादिशिल्पविद्यासाधकाय विदुषे प्र०—अत्र 'यजिमनिशुन्धिदसि०' उ० ३.२०. अनेन यजधातोर्युच् प्रत्ययः १.३१.१३. **यज्यून्**=सत्यभाषणादियज्ञाऽनुष्ठातॄन् (विदुषो जनान्) ५.३१.१३. यज्योः=सङ्गन्तुमर्हस्य सत्यव्यवहारस्य ४.२३.२. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'यजिमनिशुन्धि०' उ० ३.२०. सूत्रेण युच्]

यज्वनः विदुषां सेवकस्य सङ्गच्छमानस्य (सज्जनस्य) ६.२८.४. यज्ञाऽनुष्ठातुः (सज्जनस्य) प्र०—अत्र 'सुयजोर्ङ्वनिप्' अ० ३.२.१०३. अनेन यजधातोर्ङ्वनिप्प्रत्ययः १.१३.१२. यज्ञ करने वाले (प्रजाजन) का स० प्र० २३८, १०.४९.१. **यज्वने**=यज्ञस्य कर्त्रे (सज्जनाय) ६.२८.२. **यज्वा**=सङ्गन्ता (परमेश्वरः) ६.१५.१४. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'सुयजोर्ङ्वनिप्' अ० ३.२.१०३. सूत्रेण ङ्वनिप् । कर्त्तरि वनिप् वा]

यज्वरीः शिल्पविद्यासम्पादनहेतून् १.३.१. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्वनिप् ङ्वनिप् वा ततः स्त्रियां 'वनो र च' इति ङीप् रेफश्चान्तादेशः]

यतङ्करः यः प्रयत्नं करोति सः (मनुष्यः) ५.३४.४. [यतोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि खच् छान्दसः। यतः=यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्वा क्तः]

यतति यतते प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ७.३६.२. **यतथः**=यतेथे ५.७४.२. प्रेरयथः ५.६५.६. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

यतते व्यवहारयति १.९५.७. संयतो भवति १.९८.१. साध्नोति ३.१६.४. यत्नं करोति १.१८६.११. **यतन्ते**=यातयन्ति प्र०—अत्र भावितण्यर्थः १.१६३.१०. **यतस्व**=प्रयत्नं कुरु ७.४५. **यतेम**=प्रयत्नं कुर्याम ६.१.१०. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट् लिङ् च। यतते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

यतन् यत्नं कुर्वन् (राजा) ५.४८.५. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

यतमानः प्रयतमानः (राजा) ५.४.४. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः शानच्]

यतमानाः प्रयत्नं कुर्वन्त्यः (उषसः) १.१२३.१२. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः शानच्-प्रत्ययान्तात् स्त्रियां टाप्]

यतयः संन्यासी लोग सं० वि० १९८, १०.७२.७. **यतये**=यतमानाय संन्यासिने ७.१३.१. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः संज्ञायां क्तिच् । यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्वौणा० इन्]

यतरश्मयः यता निगृहीता रश्मयः किरणा रज्जवो वा येषान्ते (अश्वासः=अग्न्याद्यास्तुरङ्गा वा) ५.६२.४. [यत-रश्मिपदयोः समासः । यतः=यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः]

यतस्रुक् उद्यतक्रियासाधनः (मनुष्यः) ४.२.१०. यता उद्यता स्रुचो येन सः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.१२.१. **यतस्रुचः** यता गृहीता स्रुचो यैस्ते (ऋत्विजो मनुष्याः) ३.२.५. यता स्रुक् यज्ञसाधनं यैस्ते ऋत्विजः ३.८.७. यताः स्रुचो यज्ञपात्राणि यैस्तान् ऋत्विजः २.३४.११. प्राप्तोद्यमाः (जनाः) १.१४२.५. उद्यताः कर्मसाधनानि यैस्ते (जनाः) ३.२७.६. **यतस्रुचे**=उद्यतयज्ञपात्राय यजमानाय १.१४२.१. [यत-स्रुच्पदयोः समासः। यतः=यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः । यतः=यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः । यतस्रुचः ऋत्विङ्नाम निघं० ३.१८.]

यतस्रुचा यता नियताः स्रुचः साधनानि याभ्यामुपदेशाभ्यां तौ (विद्वांसौ जनौ) १.८३.३. यता उद्यता स्रुचः स्रुग्वत्कलादयो ययोस्तौ (इन्द्राग्नी=वायुविद्युतौ) १.१०८.४. [यतस्रुगिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

यतः जिस सामर्थ्य से आर्याभि० १.११, ऋ० १.२.७.१६. जिस देश से आर्याभि० २.७, ३६.२२. यस्मात् १२.५२. यस्य प्रकृत्याख्यकारणस्य सकाशात् १७.२०. येन विज्ञानेन ६.४. हेत्वर्थे १.२५.१७. [यत्-सर्वनाम्नः 'पञ्चम्यास्तसिल्' इति तसिल्]

यतः प्रापकान् (देवान्=दिव्यान् गुणान्) ११.३. [इण् गतौ (अदा०) धातोः शत्रन्ताद् द्वितीयाबहुवचनम्]

यति प्रयतन्ते यस्मिन् तस्मिन् (सन्मार्गे) ७.४३.४. **यते**=यत्नशीलाय (विद्यार्थिने) ५.२७.४. प्रयतमानाय

(जीवाय) २२.८. गच्छते (जनाय) १.१८८.२. **यन्**=गच्छन् (रथः=यानम्) प्र०—अत्र 'इण' धातोः शतृप्रत्ययो यणादेशश्च १.१८३.२. य एति सः (अग्निः=भौतिकः) ६.३.७. **यन्तम्**=गच्छन्तं प्राप्नुवन्तं वा (विद्यार्थिजनम्) ५.६४.२. १.१०५.१८. प्रयत्नं कुर्वन्तम् (सज्जनम्) १७.६८. प्राप्नुवन्तः **यन्तः**=उपयन्तः (अ०—सुविद्वांसः) १.१४०.१३. **यन्तौ**=गमयन्तौ (पुरुषार्थिमनुष्याः) (अध्यापकोपदेशकौ) १.१३९.४. [इण् गतौ (अदा०) धातोः शतरि यणादेशे रूपम्]

यता प्राप्ता (घृताची=रात्रिः) ४.६.३. [यतते गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोरौणा० अन्। ततः स्त्रियां टाप्]

यतानाः प्रयतमानाः (हंसाः=पक्षिविशेषाः) ३.८.९. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः शानच्। मुकोऽभावश्छान्दसः]

यति या सङ्ख्या येषान्तान् अ०—यावतः (पितॄन्) १९.६७. [यत्सर्वनाम्नः संख्यापरिमाणे डतिश्छान्दसः]

यती गच्छन्ती (भूमिः) ५.५९.२. यतमाना (विदुषी स्त्री) ५.४५.७. **यतीषु**=नियतासु सेनासु ४.३८.७. [इण् गतौ (अदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

यतीरिव प्रयत्नसाध्या क्रिया इव ५.५३.५. [यतीः-इवपदयोः समासः]

यतुनस्य यत्नशीलस्य (विद्वज्जनस्य) ५.४४.८. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उनन्]

यतोजाः यस्माज्जातः भा०—यस्मादुत्पन्नः (चन्द्रमाः) २३.५९. भा०—उपादानकारणम् (प्रकृतिः) २३.६०. [यतस्-उपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः। यतस्=यत्सर्वनाम्नः पञ्चम्यन्तात् तसिल्]

यतोयतः यस्माद्यस्मात् स्थानात् ३६.२२. [यतस्-पदस्य वीप्सायां द्विर्वचनम्। यतः=यत्सर्वनाम्नस् तसिल्]

यत्कामः यः कामो यस्य सः (जनः) ४.४. **यत्कामाः**=यः पदार्थः कामो येषान्ते (अस्मदादिजनाः) २३.६५. यस्य यस्य कामः कामना येषान्ते (प्रजाजनाः) १०.२०. जिस जिस पदार्थ की कामना वाले हम लोग सं० वि० ६, १०.१२१.१०. [यत्-कामपदयोः समासः]

यत्र यस्मिन् ब्रह्मणि १७.३०. यस्मिन् देशे १.८३.६. यस्मिन् समये २.२४.८. येषु ६.३. जिस परमात्मा के सामर्थ्य से आर्याभि० २.४०, १७.२६. [यत्सर्वनाम्नः 'सप्तम्यास्त्रल्' इति त्रल्]

यथा येन प्रकारेण १२.८५. जिस प्रकार से आर्याभि० १.५३, ऋ० २.८.१२.३. जैसे आर्याभि० २.५०, २५.१८. [यत्सर्वनाम्नः 'प्रकारवचने थाल्' अ० ५.३.२३. सूत्रेण थाल्। यथा=इव नि० ३.१५.]

यथाकृतम् येन प्रकारेणाऽनुष्ठितम् (कर्म-फलम्) ७.१८.१०. [यथा-कृतपदयोः समासः]

यथापूर्वम् जैसे पूर्व कल्प में स० प्र० २९९, १०.१९०.३. यथा पूर्वकल्पसृष्टौ पं० वि०। १.१९०.३. [यथा-पूर्वपदयोः समासः]

यथाभागम् भागमनतिक्रम्य कुर्वन्तीति भा०—यथा-योग्यं भोगम् २.३१. भागं भागं प्रतीति प्र०—अत्र वीप्सार्थे प्रतिः २.३१. [यथा-भागपदयोः समासः]

यथायथम् यथायोग्यम् २१.५८. यथाऽर्थम् ५.४०. [यथा-पदस्य 'यथास्वे यथायथम्' अ० ८.१.१४. सूत्रेण द्वित्वं नपुंसकता च निपात्यते]

यथावशम् वशं कामनामनतिक्रम्य करोतीति १९.६०. वशमनतिक्रम्य वर्त्तते तत् ३.४८.४. वशमनतिक्रम्य करोति ५.३४.६. वशमनतिक्रम्य यथा स्यात्तथा २.२४.१४. [यथा-वशपदयोः समासः]

यदवे मनुष्याय ५.३१.८. **यदुम्**=इतरधनाय यततेऽसौ यदुर्मनुष्यस्तम् प्र०—अत्र यती प्रयत्ने इत्यस्माद् बाहुलकादौणादिक उः प्रत्ययस्तकारस्य दकारः १.३६.१८. यत्नशीलं मनुष्यम् ६.२०.१२. प्रयतमानम् (नरम्) ६.४५.१. **यदुषु**=प्रयत्नकारिषु मनुष्येषु प्र०—यदु इति मनुष्यनाम निघं० २.३, १.१०८.८. [यदवः=मनुष्यनाम निघं० २.३. यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोरौणा० उः। तस्य दकारादेशः]

यदा यस्मिन् काले ४.२४.८. [यत्सर्वनाम्नः 'सर्वैकान्यकियत्तदः काले दा' इति दा]

यदि आकाङ्क्षार्थे १.११.३. सामर्थ्यानुकूलविचारे १.२७.१३. चेत् ४.५.११.

यदिव सङ्गतमिव १.१६४.३७. [यत्-इवपदयोः समासः। यत्=इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ]

यन् गच्छेयुः प्र०—अत्राऽडभावः १.१७३.३. प्राप्नुवन्ति ३.४.५. **यन्त**=प्राप्नुवन्ति ५.४६.१२. ददति ६.५१.५. **यन्ति**=प्राप्नुवन्ति गच्छन्ति वा १७.२७. यान्ति प्राप्नुवन्ति १.५.५. प्रापयन्ति १.११९.२. इच्छन्ति १.१२३.१२. **यन्तु**=प्राप्नुवन्तु २०.४० गच्छन्तु १७.४० आगच्छन्तु १९.५८. गमयन्तु ५.६२.४. [इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्। आडभावश्छान्दसः। अन्यत्र लट् लोट् च। यन्ति याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९.]

यन्त प्रयच्छत प्र०—अत्र यम-धातोः 'बहुलं छन्दसि'

इति शपो लुक् १.८५.१२. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

यन्तन वियच्छत ५.५५.९. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोटि शपो लुकि च रूपम् । तप्रत्ययस्य तनबादेशः]

यन्ता नियमकर्त्ता (परमेश्वरः) ५.३५. नियामकः (विद्वज्जनः) १८.२८. निग्रहीता (अग्निः=पावक इव सज्जनः) ३.१३.३. नियन्ता (मनुष्यः) ९.२२. **यन्तारम्**=नियन्तारमुपरतम् (चेतनं=परमात्मानम्) ३.३.८. **यन्तारः**=ये यान्ति प्राप्नुवन्ति ते (सूरयः=धार्मिका विद्वांसः) ७.१६.७. निगृहीतेन्द्रियाः (वीराः पुरुषाः) ३३.१४. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । यन्ता=अपानो वै यन्ताऽपानेन ह्ययं यतः प्राणो न पराङ् भवति ऐ० २.४०. वायुर्वै यन्ता ऐ० २.४१.]

यन्ता यन्तौ प्राप्नुवन्तौ (जनौ) १.१३१.३. [इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ । द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

यन्तारा नियन्तारौ (कालसृष्टिक्रमौ) १.१६२.१९. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

यन्तुरम् यन्तारम् (अग्निं=विद्वांसम्) प्र०—अत्र यम-धातोर्बाहुलकात्तुरः प्रत्ययः ३.२७.११. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० तुरः]

यन्त्रम् यन्त्रयति सङ्कुचति चालयति निबध्नाति वा येन तत् (कलायन्त्रम्) ४.१८. यन्त्र्यते, यन्त्रयन्ति सङ्कोचयन्ति विलिखन्ति चालयन्ति वा येन तत् (भा०—यानकलाकीलयन्त्रादिकम्) १.३४.१. **यन्त्रेण**=कलाकौशलतयोत्पादितेन (साम्राज्येन) १८.३७. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः 'गुधृवीपचि०' उ० ४.१६७. सूत्रेण स्त्रः । अथवा यत्रि संकोचने (चुरा०) धातोर्घञ्]

यन्त्रिये शिल्पविद्यासिद्धानां यन्त्राणामर्हे योग्ये निष्पादने ९.३०. [यन्त्रप्राति० अर्हत्यर्थे घश्छान्दसः]

यन्त्री यन्त्रनिमित्ता भा०—यन्त्रवज्जितेन्द्रिया अ०—भूमिरिव (स्त्री) १४.२२. यन्त्रवत्स्थिता (भा०—भूमिवत् क्षमान्विता स्त्री) १४.२२. [यत्रि संकोचने (चुरा०) धातोरौणा० इन् । ततः स्त्रियाम् 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष्]

यन्धि नियच्छ ६.२४.९. प्रयच्छ ४.३२.७. यच्छ १.१२१.१४. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट् । शपो लुक् । यन्धि याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९.]

यमत् उपरमेत १२.११. नियच्छेत् ५.३४.२. यच्छति ५.४६.५. यमति=नियमयति प्र०—अत्र 'छन्दस्युभयथा' इति शप आर्धधातुकत्वाण् णिलोपः १.१००.९. यच्छेत् प्र०—अत्र लेटि 'बहुलं छन्दसि' इति शबभावः १.१४१.११. **यमतुः**=संयच्छतः ६.६७.१. **यमते**=यच्छति प्र०—'वाच्छन्दसि' इति छादेशो न १.१२७.३. **यमन्**=निग्रहं कुर्वन्तु ५.४४.५. यच्छन्तु ३.४५.१. **यमसे**=निगृह्णासि ५.३३.३. नियच्छसि १०.२२. **यमिष्ट**=नियच्छेत् ५.३२.७. **यमुः**=नियच्छेयुः ५.६१.३. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लेट् । 'वा छन्दसी' ति छादेशो न । अन्यत्र लट् लङ् लुङ् लिट् च]

यमनः यः सद्गुणान् यच्छति सः, भा०—जितेन्द्रियः (विद्वज्जनः) १८.२८. उपयन्ता (मनुष्यः) ९.२२. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

यमनी आकर्षणेन नियन्तुं शीला आकाशवद् दृढा (स्त्री) १४.२२. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्ल्युडन्तात् स्त्रियां ङीप्]

यमनेत्राः यमेष्वहिंसादिषु योगाङ्गेषु नीतिषु वा नेत्रं प्रापणं येषां ते (देवाः=योगिनो न्यायाधीशाः) ९.३६. **यमनेत्रेभ्यः**=यमस्य वायोर्नेत्रं नयनमिव नीतिर्येषां तेभ्यः (देवेभ्यः=विपश्चिद्भ्यः) ९.३५. [यम-नेत्रपदयोः समासः । यममिति व्याख्यास्यते । नेत्रम्=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोरौणा० ष्ट्रन्]

यमम् नियन्तारम् (वीरजनम्) २.५१. यच्छति येन तम् (श्रवः=सर्वविद्याश्रवणम्) १.७३.१०. सुनियमम् ३.२७.३. वेगवाला होने से वायु को सं० वि० २१९, ८.२४.२२. **यमस्य**=उपरतस्य मृत्योरिव शत्रुसमूहस्य १.११६.२. न्यायाधीशस्य (राज्ञः) २५.४. सर्वनियन्तुः (ईश्वरस्य) १.८३.५. वायोः १.३५.६. **यमः**=सर्वोपरतः (सेनेशः) १.६६.४. नियन्ता न्यायाधीश इव (अर्वा=वेगवान् वह्निरिव वर्त्तमानो जनः) २९.१४. यन्ता (परमेश्वरः) ३५.१. वायु, विद्युत् और सूर्य सं० वि० २१९, ८.५७. न्यायी संयमी सन्तानः १९.५१. यच्छति सोऽयं सूर्यः ८.५७. सत्यविद्याव्यवस्थापकः (परमेश्वरः) ऋ० भू० २६०, १९.५१. **यमाय**=नियन्त्रे न्यायाधीशाय वायवे वा ३९.१३. दण्डदानाय ३०.१४. **यमेन**=नियामकेन (वायुना) १.१६३.२. वायुना विद्युता वा सह ७.३३.१२. नियन्त्रा जगदीश्वरेण ७.३३.९. न्यायाधीशेन १२.६३. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि पचाद्यच् । यमः=यच्छतीति सतः नि० १०.१९: यमः पदनाम निघं० ५.४.

एष वै यमो य एष (सूर्यः) तपति श० १४.१.३.४. अथैष एव गार्हपत्यो यमो राजा श० २.३.२.२. अग्निर्वाव यमः गो० उ० ४.८. अग्निर्वै यमः श० ७.२.१.१०. यमो ह वा ऽअस्याः (पृथिव्याः) अवसानस्येष्टे श० ७.१.१.३. अयं वै यमो योऽयं (वायुः) पवते श० १४.२.२.११. यमः पन्थाः तै० २.५.७.३. (यमाय) दण्डपाणये स्वाहा ष० ५.४. यामं शुकं हरितमालभेत गो० उ० २.१. क्षत्रं वै यमो विशः पितरः श० ७.१.१.४. यमो वैवस्वतो राजेत्याह तस्य पितरो विशः श० १३.४.३.६. पितृलोको यमः कौ० १६.८. किं देवतोऽस्यां दक्षिणायां दिश्यसीति यमदेवत इति श० १४.६.९.२२. अनुराधाः प्रथमं अपभरणीरुत्तमं तानि यमनक्षत्राणि तै० १.५.२.७.]

यमराज्यम् यमस्य न्यायाधीशस्य स्थानम् ३५.१९. **यमराज्ये**=यमस्य सभाधीशस्य राष्ट्रे १९.४५. राजसभायाम् ऋ० भू० २५८, १९.४५. [यम-राज्यपदयोः समासः]

यमसानः नियन्ता सन् (अश्वः=तुरङ्गः) ६.३.४. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० असानच्]

यमसूम् या यमान् नियन्तॄन् सूते ताम् (स्त्रियम्) ३०.१५. **यमसूः**=या यमं सूर्यं सूते सा विद्युत् ३.३९.३. [यमोपपदे षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

यमा यमौ उपरतौ (सूर्याचन्द्रमसौ) ३.३९.३. [यमप्राति० द्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

यमितवा इव निग्रहीतुमर्हं इव (सूर्यो वा सारथिरिव) प्र०—अत्र यमधातोस्तवै प्रत्ययः 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इतीडागमः १.२८.४. [यमितवै-इवपदयोः समासः। यमितवै=यमु उपरमे (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवैः। इडागमश्छान्दसः]

यमिष्ठा अतिशयेन यन्तारौ (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ६.६७.१. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोस्तृजन्तादतिशायन इष्ठन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु०' इति तृचो लोपः। द्विवचनस्याकारः]

यमिष्ठासः अतिशयेन नियन्तारः (सारथयः) १.५५.७. [यमिष्ठप्राति० जसोऽसुक्। यमिष्ठ इति व्याख्यातम्]

यमुना नियन्तारः (राजादयो जनाः) ७.१८.१९. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः 'अजियमि०' (उ० ३.६१.) इत्युणादिसूत्रेण उनन्। विभक्तेर्लुक्]

यमुनायाम् यमनियमान्वितायां क्रियायाम् ५.५२.१७. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः 'अजियमि०' उ० ३.६१. सूत्रेणोनन् ततष्टाप् स्त्रियाम्]

यमे यच्छन्ति बलपराक्रमौ याभ्यां ते (अन्नजले) २.७. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः 'यमः समुपनिविषु च' इति चानुकृष्टानुपसर्गेऽप्यप्]

यम्यः यमाय न्यायकारिणे हितः (भा०—राजा) ५.४४.४. [यमप्राति० हितार्थे यत्]

यम्या या सर्वान् प्राणिनो निद्रया नियच्छति सा रात्रिः प्र०—यम्येति रात्रिनाम निघं० १.७, ३.५५.११. रात्रिदिने ५.४७.५. [यम्या रत्रिनाम निघं० १.७.]

यम्या न्यायकर्त्र्या (स्त्रिया) १२.६३. **यम्यै**=यमस्य न्यायकर्त्तुः स्त्रियै २५.५.

यय गच्छत ५.६१.२. **ययथुः**=यातम् १.११७.१९. **ययन्थ**=यच्छति १.५९.१. **ययाथ**=प्राप्नुयाः ३.३३.१० गच्छ ६.७०.४. प्राप्नुत ५.२९.९. **ययाम**=प्राप्नुयाम ७.३८.१. **ययुः**=प्राप्नुवन्ति ६.६५.२. गच्छन्ति ५.८१.३. यान्ति २३.१६. प्राप्नुयुः २.५.५. **ययौ**=याति गच्छति ४.२६.५. प्राप्नोति ३.३३.९. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लिटि मध्यमवहुवचने रूपम्। 'ययन्थ' प्रयोगे यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लिट्। अन्यत्र लिट्लकारे रूपाणि। 'ययाम' प्रयोग इडभावश्छान्दसः]

ययातिवत् यथा प्रयत्नवन्तः पुरुषाः कर्माणि प्राप्नुवन्ति प्रापयन्ति च तद्वत् प्र०—अत्र 'यती प्रयत्ने' इत्यस्मादौणादिक इन्प्रत्ययः स च बाहुलकाण्णित् सन्वच्च। समीक्षा—इदं सायणाचार्येण भूतपूर्वस्य कस्यचित् ययाते राज्ञः कथासम्बन्धे व्याख्यातं तदशुद्धम् १.३१.१७. [ययातिप्राति० तुल्यार्थे वतिः। ययाति=यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोरौणा० इन्। स च बहुलवचनान् णित् सन्वच्च]

ययिम् प्राप्तव्यं मार्गम् १.८७.२. याति सोऽयं मेघस्तम् १.५१.११. **ययिः**=यो याति सः (नियमपालको जनः) ५.७३.७. याता (विद्वज्जनः) ५.८७.५. [या प्रापणे (अदा०) धातोः 'आदृगमहन०' इति किर्लिट्वच्च]

ययुः यो याति सः (अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१९. [या प्रापणे (अदा०) धातोः 'यो द्वे च' उ० १.२१. सूत्रेण उः सन्वच्च]

यय्यम् ययिं यातारम् (रथम्) प्र०—अत्र 'आदृगमहन०' इति किः प्रत्ययः 'अमि पूर्वः' इत्यत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यनुवर्त्तनात् पूर्वसवर्णाऽभावपक्षे यणादेशः २.३७.५. [या प्रापणे (अदा०) धातोः 'आदृगमहन०' इति किः।

लिट्वच्च । ततो 'अमि पूर्वः' इति पूर्वसवर्णादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

यवन्त वियोज्येयुः ५.२.५. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लङ् । अटोऽभावः, शपश्च लुङ् न छान्दसत्वात्]

यवस् अन्नविशेषम् ७.३.४. धान्यसमूहम् २३.३८. यवादिधान्यम् १९.६. **यवस्य**=उत्तमस्य यवादेरन्नस्य १.५३.२. **यवः**=सुखकारी धान्यविशेषः १.६६.२. मिश्राऽमिश्रव्यवहारः १.१३५.८. मिश्रणाऽमिश्रणकर्त्ता (पुरुषः) ५.२६. संयोगविभागकर्त्ता (सभाध्यक्षः) ६.१. **यवानाम्**=मिश्रितानाम् (पदार्थानाम्) १४.२६. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप् । यदयुवत तस्माद् यवा नाम श० ३.६.१, ८.९. निर्वरुणत्वाय एव यवाः तां० १८.९.१७. वरुण्यो यवः श० ४.२.१.११. वरुण्यो ह वाऽग्रे यवः श० २.५.२.१. वारुणं यवमयं चरुं निर्वपति तै० १.७.२.६. वारुणो यवमयश्चरुः श० ५.२.४.११. तस्य (सोमस्य) अश्रु प्रास्कन्दत् ततो यवः समभवत् श० ४.२.१.११. स यः सर्वासामोषधीनां रसऽआसीत्तं यवेष्वदधुस्तस्माद् यत्रान्या ऽओषधयो म्लायन्ति तदेते मोदमाना वर्धन्ते श० ३.६.१.१०. सैनान्य वा एतदोषधीनां यद् यवाः ऐ० ८.१६. देवाः तं (मेधम्) खनन्त इवान्वोषुस्तमन्वविन्दंस्ताविमौ व्रीहियवौ श० १.२.३.७. सर्वेषां वा एष पशूनां मेधो यद् व्रीहियवौ श० ३.८.३.१. विड् वै यवः श० १३.२.९.८. राष्ट्रं यवः तै० ३.९.७.२. अथ ये फेनास्ते यवाः श० १२.७.१.४. ते (पूर्वपक्षाः) हीदं सर्वं युवते श० ८.४.२.११. स यो देवानाम् (अर्धमासः=शुक्लपक्षः) आसीत् । स यवायुवत हि तेन देवाः श० १.७.२.२५. योऽसुराणाम् (अर्धमासः=कृष्णपक्षः) स यवायुवत हि तं देवाः श० १.७.२.२६. पूर्वपक्षा वै यवाः श० ८.४.२.११.]

यवसल्लः बह्वो यवा विद्यन्ते येषां ते (अ०—कृषीवलाः) १९.६. बहुयवादिधान्ययुक्ताः (अ०—कृषीवलाः) २३.३८. [यवप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

यवय प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' अ० १.४.९. इति भाष्यवार्त्तिकेन वृद्ध्यभावः ६.१. श्रेष्ठैर्गुणैः सह मिश्रय दोषेभ्यश्च दूरीकारय ५.२६. वियुहि ६.१. मिश्रय प्र०—'प्रातिपदिकाद्धात्वर्थे बहुलमिष्ठवच्च' इति यवशब्दाद्धात्वर्थे णिच् १.५.१०. [यवप्राति० 'प्रातिपदिकाद् धात्वर्थे बहुलम् इष्ठवच्चे' ति वा०सूत्रेण णिजन्ताल्लोट् । वृद्ध्यभावश्छान्दसः]

यवसप्रथमानाम् यवसो यवाऽन्नं प्रथमं येषां तेषाम् (अग्निष्वात्तानां=गृहीताग्निजनानाम्) २१.४३. यवसस्य विस्तारकाणाम् (अवत्तानाम्=उदारचेतोजनानाम्) २१.४५. मिश्रिताऽमिश्रिताद्यानाम् (शतरुद्रियाणां=विद्वदधिष्ठातृजनानाम्) २१.४४. [यवस-प्रथमपदयोः समासः । यवसः=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'वहियुभ्यां णित्' उ० ३.११९. सूत्रेण असच् । बहुलवचनान् णित्वं न]

यवसम् धान्यपलादिकम् ३.४५.३. सोमलताम् ५.८७.२. **यवसात्**=भक्षणीयाद् घासाद्यात् ७.१८.१०. **यवसे**=घासे ७.३.२. बुषादौ ५.५३.१६. **यवसेन**=बुसादिनेव ४.४२.१०. अभीष्टेन तृणबुसादिना ७.१०. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० असच्]

यवसादः ये यवसमन्नादिकमदन्ति ते (द्रप्साः=भृत्या ज्वालादयो गुणा वा) १.९४.११. [यवसोपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोरण्]

यवसे अद्याय घासाय ५.९.४. बुसाद्याय ६.२.९. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोरौणा० असुन्]

यवसेव बुसादिनेव ४.४१.५. [यवसा-इवपदयोः समासः । यवसा=यवस्प्राति० तृतीया]

यवाशिरम् यो यवानश्नाति तम् (सोमं=रसम्) २.२२.१. यवा अश्यन्ते यस्मिँस्तम् (भोजनम्) ३.४२.७. **यवाशिरः**=यवाद्योषधिसंयोगेन संस्कृतस्य (अन्नस्य) १.१८७.९. [यव-अशिरपदयोः समासः । अशिरः=अश भोजने (क्र्या०) धातोः 'अशेर्नित्' उ० १.५२. सूत्रेण किरच्]

यविष्ठ अतिशयेन युवन् (अग्ने=श्रोतृजन) १२.४२. अतिशयेन प्राप्तयौवन (अग्ने=विद्याविनयप्रकाशितजन) ४.१२.४. अतिशयेन सङ्गमयितो विभाजक वा (अग्ने=जगदीश्वर) ६.१५.१४. यौति मिश्रयति विविनक्ति वा सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=पदार्थविद्यावेत्तर्विद्वन्) १.२२.१०. शरीरात्मबलाभ्यां युक्त (अग्ने=राजन्) ६.४८.८. **यविष्ठम्**=बलवत्तरम् (अग्निं=विद्वज्जनम्) १.४४.४. अतिशयेन विभाजकम् (अग्निं=विद्युतम्) ७.१२.१. **यविष्ठः**=अतिशयेन युवा (जनः) १.१४१.४. अतिशयेन यौवनं प्राप्तः (प्रशंसमानो जनः) ७.७.३. [युवन्-प्राति० अतिशायन इष्ठन् । 'स्थूलदूरयुव०' अ० ६.४.१५६. सूत्रेण यणादिपरस्य लोपः पूर्वस्य च गुणः । युवन्=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'कनिन् युवृषितक्षि०' उ० १.१५६. सूत्रेण कनिन् । एतद्वास्य (अग्नेः) प्रियं धाम

यद् यविष्ठ इति यद्वै जात इदं सर्वमयुवत तस्माद् यविष्ठः श० ७.५.२.३८.]

यविष्ठ्य यो वेगेन पदार्थान् यौति संयुनक्ति संहतान् भिनत्ति वा स युवाऽतिशयेन युवा यविष्ठो यविष्ठ एव यविष्ठ्यस्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=सुखप्रदातः सभेश) १.३६.६. येऽतिशयेन युवानस्तेषु साधो (राजन्) ७.१६.१०. अतिशयेन ब्रह्मचर्यविद्याभ्यां प्राप्तयौवन (विद्वदुपदेशक) ३.९.६. यविष्ठ्येष्वतिशयेन युवसु कुशलस्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) ३.२८.२. योऽतिशयेन युवा पदार्थानाममिश्रीकरणे बलवान् स यविष्ठः यविष्ठ एव यविष्ठ्यस्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने) प्र०—अत्र युवन्-शब्दादिष्ठन् प्रत्ययस्ततो 'नवसूर्त्तमर्त्तयविष्ठेभ्यो यत्' अ० ५.४.३६. इति वार्त्तिकेन स्वार्थे यत्प्रत्ययः ३.३. हे बलवत्तम (ईश्वर) आर्याभि० १.१२. **यविष्ठ्यम्**=योऽतिशयितेषु युवसु भवम् (ऋत्विजम्) ५.२६.७. [यविष्ठः=युवन्प्राति० अतिशायन इष्ठन्। यविष्ठप्राति० 'नवसूर्त्तमर्त्तयविष्ठेभ्यो यत्' अ० ५.४.३६. वा०सूत्रेण स्वार्थे यत्। साध्वर्थे कुशलार्थे वा यत्। यविष्ठो ह्यग्निः श० १.४.१.२६.]

यव्यम् यवानां भवनं क्षेत्रम् १.१४०.१३. [यवप्राति० 'यवयवकषष्टिकाद् यत्' अ० ५.२.३. सूत्रेण भवने क्षेत्रेऽभिधेये यत्]

यव्या यवेषु साधूनि हवींषि यव्यानि प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि०' इति शेर्लोपः ३.४६. [यवप्राति० 'तत्र साधु' रित्यर्थे यत्। यव्यप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

यव्या नदीव १.१७३.१२. [यव्या नदीनाम निघं० १.१३. यव्या मासाः श० १.७.२.२६.]

यव्या मिश्रिताऽमिश्रितगत्या १.१६७.४. [यव्यप्राति० तृतीयैकवचनस्य 'सुपां सुलुग्०' इति डादेशः। यव्यमिति व्याख्यातम्]

यव्यावत्याम् यवे भवा यव्याः पाका विद्यन्ते यस्यां सेनायाम् ६.२७.६. [यव्यप्राति० मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप् ततः सप्तमी। यव्यः=यवप्राति० भवार्थे यत्]

यशसम् अतिकीर्तियुक्तम् (रयिम्) १.९२.८. यशस्विनम् (पतिम्) ५.३२.११. कीर्तिकारकम् (रयिं=श्रियम्) ३.१.१९. सर्वोत्तमकीर्त्तिवर्धकम् (रयिं=विद्यासुवर्णाद्युत्तमधनम्) १.१.३. यशः कीर्त्तिर्विद्यते यस्य तम् (देवं=दातारं विद्वांसम्) ६.४९.९. शिष्टाचारादिकीर्त्तिमत् (धनम्) वे० भा० न० १.१.३. **यशसः**=यशस्विनः (मनुष्याः) ४.५१.११. **यशसे**=प्रशंसिताय (विदुषे जनाय) ५.१५.१. **यशसौ**=कीर्त्तिधनयुक्ते (द्यावापृथिवी=द्यौर्भूमिश्च) ५.४३.२. [यशस्प्राति० प्रशंसायां मतुबर्थे 'अर्शादिभ्योऽच् अ० ५.२.१२७. सूत्रेणाच्। यशस् इति व्याख्यास्यते]

यशसा सत्कीर्त्त्या १.१२२.४. उत्कृष्टं गुणग्रहणं सत्याचरणं यशस्तेन ऋ० भू० १०१, अथर्व० १२.५.२. सर्वोत्तमसत्कर्मानुष्ठानोद्भूतसत्यकीर्त्त्या ऋ० भू० १६१, अथर्व० १३.४.४९. उदकेनाऽन्नेन धनेन वा ५.८.४. **यशसे**=सत्कीर्त्त्यै २०.३. **यशः**=कीर्त्तिकरं धर्म्यकर्माचरणम् भा०–ईश्वराज्ञापालनम् ३२.३. परमकीर्त्तिसाधकम् (राधः=धनम्) जलं वा १.१०.७. कीर्त्तिः १८.८. सत्कीर्त्तिकथनम् २०.५. धर्मयुक्त कामों का करना स० प्र० ४५५, ३२.३. [अशूङ् व्याप्तौ संघाते च (स्वा०) धातोः 'अशेर्देवने युट् च' उ० ४.१९१. सूत्रेणासुन् युडागमश्च। यशः उदकनाम निघं० १.१२. अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०. सामवेद एव यशः गो० पू० ५.१५. सामवेदो यशः श० १२.३.४.९. उद्गातैव यशः गो० पू० ५.१५. आदित्यो यशः श० १२.३.४.८. आदित्य एव यशः गो० पू० ५.१५. चक्षुर्यशः श० १२.३.४.१०. चक्षुरेव यशः गो० पू० ५.१५. प्राणा वै यशः श० १४.५.२.५. द्यौर्यशः श०१२.३.४.७. द्यौरेव यशः गो० पू० ५.१५. वर्षा एव यशः गो० पू० ५.१५. जगत्येव यशः गो० पू० ५.१५. सप्तदशः (स्तोमः) एव यशः गो० पू० ५.१५. उदीच्येव यशः गो० पू० ५.१५. पशवो यशः श० १२.८.३.१. यशो वै सोमो राजा ऐ० १.१३. यशो वै सोमः श० ४.२.४.९. सोमो वै यशः तै० २.२.८.८. यश उ वै सोमो राजान्नाद्यम् कौ० ९.६. यशो हि सुरा श० १२.७.३.१४. यशो वै हिरण्यम् ऐ० ७.१८. यशो देवाः श० २.१.४.९. तस्माद् (देवाः) यशः श० ३.४.२.८. श्रीर्वै यशः जै० ३.२५८.]

यशस्तमम् अतिशयेन कीर्त्तिकारकम् (अग्निम्) ७.१६.४. **यशस्तमस्य**=अतिशयेन यशस्विनो बहुजलयुक्तस्य वा (अग्नेः=पावकस्य) २.८.१. [यशस्प्राति० अतिशायने तमप्। 'यशस्' इति व्याख्यातम्]

यशस्वतः यशो विद्याधर्मसर्वोपकाराख्या प्रशंसा विद्यते येषां तान् (मनुष्यान्) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.९.६. **यशस्वता**=बहु यशो विद्यते यस्मिँस्तेन (राया=धनेन) ३.१६.६.

यशस्वतीः पुण्यकीर्त्तिमत्याः (कुमारिकाः) १.७९.१. [यशस्प्राति० प्रशंसायां मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप्]

यशोभगिन्यै यशांसि सत्यवचनादीनि कर्माणि

भजितुं शीलं यस्यास्तस्यै भा०—कीर्त्तिहेतुभूतायै (सरस्वत्यै=वेदवाण्यै) २.२०. ['यशस्' इत्युपपदे भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिप्रत्यये छान्दसं रूपम्। अथवा यशस्-भगिनीपदयोः समासः। भगिनी=भगप्राति० मत्वर्थ इनिः। ततः स्त्रियां ङीप्]

यष्टवे यष्टुम् प्र०—अत्र यजधातोस्तवेन्प्रत्ययः १.१३.६. सङ्गन्तुम् ४.३७.७. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

यष्टा सङ्गन्ता, सुष्ठु विज्ञाता दाता वा (गोपाः=गवां पाता जनः) २.६.६. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

यहो क्रियाकौशलयुक्तस्याऽपत्यं तत्सम्बुद्धौ प्र०—यहुरित्यपत्यनामसु पठितम् निघं० २.२, १.२६.१०. सुसन्तान १५.३५. पुत्र १.७४.५.

यह्व हे महागुणविशिष्ट (अग्ने=पावकवत्पवित्र राजन्) २६.२८. **यह्वम्**=गुणैर्महान्तम् (अग्निं=परमेश्वरम्) १.३६.१. **यह्वः**=महान् (अग्निः) ३.१.१२. [यह्वः= महन्नाम निघं० ३.३. यह्व इति महतो नामधेयं यातश्च हूतश्च भवति नि० ८.८. यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'शेवायह्वजिह्वा०' उ० १.१५४. सूत्रेण वन्प्रत्यये जकारस्य हकारो निपात्यते]

यह्वतीः यह्वान् महत इवाऽऽचरन्तीः (अपः=जलानि) प्र०—यह्व इति महन्नाम निघं० ३.३. यह्व-शब्दादाचारे क्विप् १.१०५.११. बड़े व्यापक आकाशस्थ (आपः=प्राणप्रद वायुएं) सं० वि० १६६, ६.११३.८. [यह्वः आचारे क्विबन्ताच्छतृ। ततः स्त्रियां ङीप्]

यह्वा इव महान्तो वृक्षा इव ५.१.१. महान्तो धार्मिका जना इव १५.२४. [यह्वाः इवपदयोः समासः]

यह्वाः महत्यः (सिन्धोः प्रवाहाः) ४.५८.७. [यह्वप्राति० स्त्रियां टाप्]

यह्वी महती महत्यौ (उषे=स्त्रियौ) २१.१७. कारणसूनू (रात्रिदिने) १.१४२.७. बड़े ही शुभ गुण कर्म स्वभाव वाले दोनों स्त्रीपुरुष सं० वि० १०५, ५.४१.७. [यह्वप्राति० स्त्रियां ङीप् छान्दसः। ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णश्छान्दसः]

यह्वी महती (विदुषी स्त्री) ५ ४१.७. **यह्वीः**=महत्यः स्त्रियः ३.१.४. महतीः (गिरः) १.५६.४. महाविद्यागुणस्वभावयुक्ताः (युवतयः=प्राप्तयौवनाः स्त्रियः) ३.१.६. महत्यो रुधिरविद्युदादिगतयः १.७१.७. [यह्वः महन्नाम निघं० ३.३. ततः स्त्रियां ङीप्]

यंसत् ददाति ६.४६.७. यच्छेत् प्राप्नुयात् ४.२५.४. यच्छन्तु प्रददतु प्र०—अत्र वचनव्यत्ययेन बहुवचनस्थाने एकवचनम् १.१०७.२. प्रदद्यात् ४.५४.६. दद्यात् ५.२.२. नियच्छेत् १.६६.८. प्रेरयेत् १.१६०.३. **यंसते**=रक्षति १.१४३.७. यच्छन्ति १.८०.३. **यंसन्**=प्रयच्छन्ति प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्युसभावो लुङ्यडभावश्च १.३६.७. यच्छन्तु ददतु १.६०.३. **यंसि**=दुष्टाचारान्निरुणत्सि, प्र०—अत्र शपो लुक् १.६३.८. प्राप्नोषि नियच्छसि वा ५.३६.४. यच्छ, दुष्टेभ्यः कर्मभ्यः उपरतोऽसि प्र०—अत्र लोडर्थे लट् १.४२.६. [यंसन्=यच्छन्तु नि० ६.१८. यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लेटि सिपि च रूपम्। अन्यत्र लुङ् लट् च]

याचति याचना करता है सं० वि० २०६, अथर्व० ६.६.१.४. [टुयाचृ याच्ञायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्। याचति वधकर्मा निघं० २.१६.]

याच्छ्रेष्ठाभिः शत्रुवधकर्मण्युत्तमाभिः (ऊतिभिः=रक्षादिभिः) ३.५३.२१.

याज्याभिः याभिः क्रियाभिरिज्यन्ते ताभिः १६.२०. यज्ञसम्बद्धक्रियाभिः २०.१२. **याज्याः**=यज्ञक्रियाः २०.१२. [याज्यम्=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्ण्यत्। ततः स्त्रियां टाप्। यजूꣳषि याज्याः काठ० ११.१०. वृष्टिर्वै याज्या ऐ० २.४१.]

यात् यायात् प्र०—लेट्-प्रयोगः १.८०.१५. **यात**=गच्छत भा०—अर्थकाममोक्षान् प्राप्नुत २१.११. गमयत १.८६.१०. अभीष्टं स्थानं प्राप्नुत १.३७.१४. समन्तात्प्राप्नुत १.१७१.२. **यातम्**=प्राप्नुतम् ४.१३.१. आगच्छतम् ६.६७.३. प्राप्नुयातम् ७.५३.२. उपागतम् १.११८.११. गच्छतः प्र०—अत्र व्यत्ययः १.२.५. प्राप्नुतः १.२.६. गमयतः १.३.३. प्रापयतम् १.३०.१७. गच्छतम् १.४७.२. **यातः**=गमयत आगमयतश्च ऋ० भू० १६६, ऋ० १.३.५.७. **याताम्**=गच्छताम् ४.२८.३. **याति**=प्राप्नोति प्रापयति वा। प्र०—अत्र पक्षेऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.३५.२. **यातु**=गच्छतु १.११८.१. आगच्छतु ४.१६.१. प्राप्नोति प्राप्नोतु वा १.३५.१०. **याथ**=गच्छत ६.५०.२. प्राप्नुथ २.३४.३. प्राप्नुत १.३६.१. गच्छथ ३.६०.४. **याथः** गच्छथः १.१८३.३. प्राप्नुतम् १.३४.२. प्राप्नुथः १.१३५.७. **यान्ति**=गच्छन्ति १.८८.२. **यान्तु**=प्राप्नुवन्तु १.१६७.२. **यामः**=प्राप्नुयामः ३.३३.६. **यामि**=

गच्छामि २.१६.७. प्राप्नोमि १.२४.११. **यासत्**=उपागच्छेत् ५.४०.५. प्राप्नुयात् ४.२०.१. प्रापयेत् ६.६६.५. प्राप्नोति १७.१६. यायात् २०.४८. प्रापयति १.७१.६. प्रयतेत ६.१६.२८. **यासिष्टम्**=प्राप्नुतः ७.४०.५. यातम् १.११६.४. **यासिसीष्ठाः**=प्रेरयेथाः, प्र०—अत्र 'वा छन्दसि' इति मूर्धन्यादेशाभावः ४.१.४. यायाः प्राप्नुयाः २१.३. **यासीष्ट**=प्राप्नुयात प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.१६५.१५. **याहि**=प्राप्तो भव भवति वा १.३.४. गच्छ गच्छति वा प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः १.२.१. याति समन्तात् प्रापयति १.३.६. **यासि**=गच्छसि ४.१६.११. प्राप्नोषि प्रापयति वा प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः ३.५२. याति प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः १.१२.४. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लङ्, लोट्, लट्, लिङ् च । याति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

यात् यावन्ति (विज्ञानानि) प्र०—'छान्दसो वर्णलोपो वा इति वलोपः । 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति शेर्लोपः ६.२१.६. [यत् सर्वनाम्नः परिमाणे 'यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्' अ० ५.२.३९. सूत्रेण वतुप् । आ सर्वनाम्नः इति वतुपि प्रत्यय आकारादेशे यावदिति रूपम्]

यातन प्राप्नुत ४.३४.६. प्राप्नुवन्तु १.१६५.१३. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोटि म० बहुवचने तस्य तनवादेशः]

यातयज्जनः यातयन्तः प्रयत्नकारयितारो जना यस्य सः (अर्यमा=न्यायाधीशः) १.१३६.३. प्रेरयन् (मित्रः=आप्तो विद्वज्जनः) ३.५९.५. पुरुषार्थवत्पुरुषः (अर्यमा=न्यायेशः) १.१३६.३. [यातयत्-जनपदयोः समासः । यातयत्=यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

यातयज्जना यातयन्तो जना ययोस्तौ (मित्रावरुणौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७२.२. ['यातयज्जन' इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

यातयति पुरुषार्थयति ३.५९.१. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट् । यातयति वधकर्मा निघं० २.१९.]

यातयन्तम् सन्तानाय प्रयतन्तम् (पतिम्) ५.३२.१२. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

यातयमानः दण्डं प्रयच्छन् (अग्निः=विद्वज्जनः) ६.६.४. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छानच्]

यातयासे प्रेरयेः ५.३.९. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लिङि छान्दसं रूपम्]

यातवः सङ्ग्रामं ये यान्ति ते (योद्धृजनाः) ७.२१.५. [या प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'कमिमनिजनि०' उ०' १.७३. सूत्रेण तुः]

यातवे यातुं प्राप्तुम् प्र०—अत्र 'तुमर्थे से०' इति तवेन् प्रत्ययः १.४४.४. यातुं गन्तुम् १.१५७.१. [या प्रापणे (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

यातः गमनादिव्यवहारप्रापकः (अ०—सभापतिः) १.३२.१५. प्राप्तः (रथः=रमणीयं यानम्) १.१४१.८. **याताः**=ये प्राप्तारते (नरः=नायका जनाः) ५.३३.५. [या प्रापणे (अदा०) धातोः 'गत्यर्थाकर्मक०' अ० ३.४.७२. सूत्रेण कर्त्तरि क्तः]

यातारम् देशान्तरे प्रापयितारम् (सूर्यादन्यं कमप्यर्थम्) १.३२.१४. [या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

यातुजूनाम् ये यान्ति ये च जवन्ते तेषाम् (दुष्टाधर्माचारिणां जनानां) १३.१३. प्राप्तवेगानाम् (जनानाम्) ४.४.५. [यातु-जूपदयोः समासः । यातुः=या प्रापणे (अदा०) धातोरौणा० तुः । जूः=जु (सौत्रो धातुः) धातोः 'भ्राजभासधुर्विद्युत्०' अ० ३.२.१७७. सूत्रेण क्विप्]

यातुधानान् अन्यायेन परपदार्थधारकान् (रक्षसः=दुष्टाञ्जनान्) ३४.२६. यातवो यातनाः पीडा धीयन्ते येषु तान् दस्यून् १.३५.१०. **यातुधानानाम्**=ये यान्ति परपदार्थान् दधति तेषाम् (भा०—उत्कोचकानाम्) १३.७. **यातुधानाः**=प्रजापीडकाः (जनाः) १५.१६. **यातुधानेभ्यः**=यान्ति येषु ते यातवो मार्गास्तेभ्यो धनं येषां तेभ्यः (महात्मजनेभ्यः) ३०.८. [यातूपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट् । यातुरिति व्याख्यातम् । यातुधाना हेतिः मै० २.८.१०.]

यातुधान्यः रोगकारिण्यो व्यभिचारिण्यश्च स्त्रियः १६.५. यातूनि दुराचरणशीलानि दधति ताः (दुर्व्यथाः) १.१९१.८. [यातुधानमिति ल्युडन्तं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप्]

यातुम् गन्तुम् ५.१२.२. [या प्रापणे (अदा०) धातोस्तुमुन्]

यातुमतीनाम् बहवो यातवो हिंसका विद्यन्ते यासु सेनासु तासाम् १.१३३.२. हिंस्राणां सेनानाम् १.१३३.३. [यातुप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्-प्रत्ययान्तात् स्त्रियां ङीप् । यातुः=या प्रापणे (अदा०) धातोरौणा० तुः । यातयति वधकर्मा निघं० २.१९.]

यातुमावतः यान्ति प्राप्नुवन्ति ते यातवः मत्सदृशा

इति मावन्तः यातवश्च ते मावन्तश्च तान् (प्रजाजनान्) समी०—अत्र सायणाचार्येण यातुरिति पूर्वपदं मावानित्युत्तरपदं चाऽविदित्वा यातुमावत्पदान्मतुप् कृतस्तदिदं पदपाठाद् विरुद्धत्वादशुद्धम् १.३६.२०. **यातुमावान्**=गच्छन्मत्सदृशः (विद्वज्जनः) ७.१.५. [यातु-मावत्पदयोः समासः। यातुरिति व्याख्यातम् । मावत्=अस्मत्प्राति० 'वतुप्-प्रकरणे युष्मदस्मद्भ्यां छन्दसि सादृश्य उपसंख्यानम्' अ० ५.२.३९. वा०सूत्रेण सादृश्ये वतुप् । 'आ सर्वनाम्न' इत्याकारादेशः। 'प्रत्ययोत्तरपदयोश्च' इति मपर्यन्तस्यास्मदो मादेशः]

यातेव यथा दण्डप्रापकः (भा०—राजा) १.७०.६. गच्छन्निव (पथिक इव) ७.३४.५. [याता-इवपदयोः समासः]

याथन प्राप्नुत प्र० अत्र तकारस्य स्थाने थनादेशः १.२३.११. गच्छथ ५.५७.२. प्राप्नुथ प्र०—अत्र 'तप्तनप्तन०' इति थस्य स्थाने थनादेशः १.३९.३. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोटि तस्य थनादेशः]

याथातथ्यतः यथार्थतया ४०.८. यथावत् रीतिपूर्वक स० प्र० २७३, ४०.८. [यथातथप्राति० भावे ष्यञ् । ततः सार्वविभक्तिकः तसिः]

यादमानः याचमानः (विद्वज्जनः) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन चस्य दः ३.३६.१ [टुयाचृ याच्ञायाम् (भ्वा०) धातोः शानच् । वर्णव्यत्ययेन चकारस्य दकारः]

यादमानाः अभिगच्छन्त्यः (सिन्धवः=नद्यः) ६.१९.५. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप् । धातोर्वृद्धिः तस्य च दकारश्छान्दसः]

यादसे जलजन्तवे ३०.२०. [यादः=उदकनाम निघं० १.१२.]

यादुरी प्रयत्नशीला (नीतिः) प्र०—अत्र यतधातोर्बाहुलकादौणादिक उरी-प्रत्ययः तस्य दः १.१२६.६.]

यादृश्मिन् यादृशे व्यवहारे ५.४४.८. [यादृश्मिन्=यादृशे नि० ६.१५.]

याद्राध्यम् ये यान्ति ते यातस्तैराध्यं याद्राध्यं संसाधनीयम् (योनिं=कारणं वह्निम्) २.३८.८. [यात-राध्य-पदयोः समासः । यातः=या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्तः । राध्यम्=राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्ण्यत्]

याद्वम् ये यान्ति तान् यो याति तम् (सज्जनम्) ७.१९.८. [या प्रापणे (अदा०) धातोरौणा० तुप्रत्यये यातुः । ततः 'वा छन्दसी' ति पूर्वसवर्णो न भवति । तस्य दकारश्छान्दसः]

यानान् यान्ति येषु तान् (पथः=मार्गान्) २९.२६. [या प्रापणे (अदा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

यान्तम् गच्छन्तम् (सज्जनम्) ३.३२.१४. **यान्तः**=प्राप्नुवन्तः (जनाः) ४.२५.८. [या प्रापणे (अदा०) धातोः शतृ]

यान्ता गच्छन्तौ (अश्विना=शिल्पिनौ) १.११७.१२. [या प्रापणे (अदा०) धातोः शतरि द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

याम प्राप्तव्यं कर्म २.३४.१०. **यामनि**=प्रापणीये मार्गे ३.५४.१४. यान्ति यस्मिँस्तस्मिन् वर्त्तमाने समये ७.३२.२६. यातरि (मर्त्ते) १.१३८.३. **यामभिः**=प्रहरैः यमोद्भवैः कर्मभिर्वा ५.६६.५. यान्त्यायान्ति यैस्तैः स्वकीयैः गमनागमनैः १.३७.११. [या प्रापणे (अदा०) धातोरौणा० मनिन्]

यामः याति गच्छति येन स यामो रथः १.३४.१. यान्ति यस्मिँस्तस यामः प्रहरः ६.६६.७. यो याति सः (पुरुषः) ४.५१.४. मर्यादा १.१००.२. गमनम् प्रापणम् १.१६६.४. **यामम्**=प्रहरं प्राप्तव्यं वा (सुखम्) ७.५६.६. **यामाय**=यथार्थव्यवहारप्रापणाय प्र०—अर्त्तिस्तुसु० उ० १.१३९. इति या-धातोर्म-प्रत्ययः १.३७.७. **यामाः**=वायुदेवताकाः (कर्णाः=पशवः) २४.३. **यामे**=यान्ति येन यानेन तस्मिन् ११.१३. **यामेन**=उपरतेन (भा०—विद्यादिशुभगुणदानेन) ५.५३.१२ **यामेषु**=यमादियुक्तशुभव्यवहारेषु प्रहरेषु वा ५.५६.७. स्व-स्वगमनरूपमार्गेषु १.३७.८. यान्ति येषु मार्गेषु तेषु १.८७.३. [या प्रापणे (अदा०) धातोः 'अर्त्तिस्तुसुहु०' उ० १.१४०. सूत्रेण मन् । अथवा यमप्राति० 'सास्य देवते' त्यर्थेऽण्]

यामन् याति गच्छति प्राप्नोति स यामा तस्मिन्नस्मिन् संसारे प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् १.३३.२. यान्ति यस्मिन् मार्गे तस्मिन् प्र०—अत्र 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' इत्यौणादिको मनिन्प्रत्ययः १.८५.१. याम्ने सुखप्राप्तये प्र०—अत्र या-धातोरौणादिको मनिन् १.११६.१३. यामनि मार्गे १.१६६.१. यान्ति येन यस्मिन् वा तस्मिन् (रथे मार्गे वा) ७.५८.२. यामनि मार्गे प्रहरे वा १७.१०. यान्ति गच्छन्ति यस्मिन् मार्गे ३.२.१४. [या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि मनिन् । औणादिको वा मनिन् अधिकरणे]

यामनः ये यान्ति ते (वायव इव मनुष्याः) ५.५७.३.

[या प्रापणे (अदा०) धातोर्मनिन् । 'वा छन्दसी' ति दीर्घत्वं न]

यामकोशाः यान्ति येषु ते यामा मार्गास्तेषां कोशाः ३.३०.१५. [याम-कोशपदयोः समासः । कोशः मेघनाम निघं १.१०.]

यामयन्ति नियमयन्ति २५.३९. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

यामश्रुतेभिः यामाः श्रुता यैस्तैः (सूरिभिः=विद्वद्भिः ५.५२.१५. [याम-श्रुतपदयोः समासः]

यामहूतमा यौ यामानाह्वयतस्तावतिशयितौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७३.९. [यातहूप्राति० अतिशायने तमप् । ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः । यातहूः=यामोपपदे ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

यामहूतिषु उपरमाऽऽह्वानरूपकर्म्मसु ५.६१.१५. [याम-हूतिपदयोः समासः । 'याम' इति व्याख्यातम् । हूतिः=ह्वेञ् स्पर्द्धायाम् (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

यामासः यम-नियमान्विताः (अध्यापकोपदेशकाः) ५.३.१२. [यामप्राति० जसोऽसुक्]

याम्याय यो यामेषु न्यायकारिषु साधुस्तस्मै (न्यायाधीशाय) १६.३३. [यामप्राति० 'तत्र साधु' रित्यर्थे यत् । 'याम' इति व्याख्यातम्]

यावत् यावत्परिमाणाः (सिन्धवः=समुद्राः) ३८.२६. **यावती**=यावत्परिमाणे (द्यावापृथिवी) ३८ २६. [यत् सर्वनाम्नः 'यत्तदेतेभ्यः परिमाणे वतुप्' इति वतुप् । 'आ सर्वनाम्नः' इति वतुप्प्रत्यय आकारादेशः]

यावय वियोजय प्र०—अत्र तुजादीनाम्० इत्यभ्यासदैर्घ्यम् ६.४६.१२. संयोजय ६.४६.९. **यावयन्तु**=दूरीकुर्वन्तु प्र०—अत्र 'संहितायाम्' इत्याद्यचो दीर्घत्वम् ७.४४.३. **यावयस्व**=अमिश्रितान् कुरु ५.४२.९. **यावीः**=अयावीः पृथक्करोषि १.१२९.३. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । 'यावीः' प्रयोगे लुङ्]

यावयद्द्वेषसम् यावयन्तं द्वेष्टारं द्वेषसं द्वेष्टारं पृथक्कारयन्तीम् (स्त्रियम्) ४.५२.४. **यावयद्द्वेषाः**= यवयन्ति दूरीकृतानि द्वेषांस्यप्रियकर्माणि यया सा (उषाः=उषर्वत्सत्स्त्री) १.११३.१२. [यावयत्-द्वेषस्पदयोः समासः । यावयत्=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ । द्वेषस्=द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोरौणा० असुन्]

यावा यो याति सः (विद्वज्जनः) ७.१.५. [या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि वनिप्]

याशूनाम् प्रयतमानानाम् (सज्जनानाम्) प्र०—अत्र यसु प्रयत्ने धातोर्बाहुलकादुण्प्रत्ययः सस्य शश्च १.१२६.६.

यासिषत् यातुमिच्छतु १.१७४.५. [या प्रापणे (अदा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल्लेट् । 'वा छन्दसी' ति द्वित्वं न]

युक्तग्रावा युक्तो ग्रावा मेघो येन सः (पावकः) ५.३७.२. युक्तो ग्रावा मेघो यस्मिन् सः (वीरः सन्तानः) ३.४.९. युक्तो योजितो ग्रावा मेघो येन सः (वीरपुरुषः) ७.२.९. **युक्तग्राव्णः**=युक्ता ग्रावाणो मेघा पाषाणो वा यस्मिंस्तस्य (महतः पदार्थस्य) २.१२.६. [युक्त-ग्रावन्पदयोः समासः । ग्रावा मेघनाम निघं० १.१०. ग्रावाणः पदनाम निघं० ५.३. ग्रावाणो हन्तेर्वा गृणातेर्वा गृह्णातेर्वा नि० ९.८.]

युक्तः सहितः (विद्वज्जनः) १.६९.४. कृतप्रयोजनः (अश्वः) १.८२.५. **युक्तान्**=नियुक्तान् (अध्यक्षान्) १.२६.५. सुखसम्पादकान् (वसन्तादीनृतून्) १.२३.१५. **युक्तानाम्**=समाहितानाम् (प्रजाजनानाम्) ४.३२.१७. **युक्ताः**=सम्बद्धाः (पदार्थाः) १.१६४.१९. एकीभूताः (ग्रावाणः=मेघाः) ३४.१९. उद्युक्ताः (ग्रावाणः=मेघाः) ३.३०.२. कृतयोगाः (हरयः=मनुष्याः) ७.२८.१. योजिताः (हरयः=मनुष्याः) ३.५३.४. **युक्तेन**=कृतयोगाभ्यासेन (मनसा=विज्ञानेन शक्त्या=सामर्थ्येन च) ११.२. योगयुक्तेन (मनसा) ऋ० भू० १५६, ११.३. [युजिर् योगे (रुधा०) युज समाधौ (दिवा०) धातोर्वा क्तः]

युक्ता सम्यक् सम्बद्धौ (हरी=अश्वौ) १.८४.३. युक्तौ (हरी) ८.३३. कृतयोगाभ्यासौ (अश्विनौ=सभासेनाधीशौ) १.११६.१८. युक्तेन (राया=धनेन) ७.४३.५. [युक्तप्राति० द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

युक्ताऽश्वम् युक्ता अश्वा येन तत् (रयिं=धनम्) ५.४१.५. [युक्त-अश्वपदयोः समासः]

युक्तासः संयोजिताः (आशवः=अश्वाः) १.११८.४. नियोजिताः (हरयः=शिल्पिनो मनुष्याः) ६.३७.१. कृतयोगाभ्यासाः (आप्ता जनाः) ४.४८.४. [युक्तप्राति० जसोऽसुक्]

युक्त्वा संयोज्य १.१७७.१. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्त्वा]

युक्त्वाय सम्यक् युक्त्वा ऋ० भू० १५६, ११.४.

युक्तं कृत्वा ११.३. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्त्वा । 'क्त्वो यक्' अ० ७.१.४७. सूत्रेण क्त्वो यगागमः]

युक्ष्व सर्वविद्याप्रकाशाय युङ्क्ष्व योजय प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति नलोपः १.१०.३. युनक्ति प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणस्य लुक् १.९२.१५. योजय ३३.४. प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुकि श्नमभावः १.१४.१२. संयोजय ६.१६.४३. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि श्नमोऽप्यभावः]

युगम् वर्षम् ३.५३.१७. **युगानि**=वर्षाणि कृतत्रेताद्वापर-कलिसंज्ञानि वा १.११५.२. संवत्सरादीनि १.९२.११. **युगे**=अपरजन्मनि १.१६६.१३. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्घञ् । उञ्छादिपाठादगुणत्वम्]

युगा युगानि १२.१११. वर्षाणि वर्षसमुदितानि वा ६.१६.२३. वर्षसमूहाः ५.७३.३. योगयुक्तानि कर्म्माणि ऋ० भू०१५६, १२.६७. [युगप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

युगे युगे वर्षे वर्षे सत्ययुगादौ वा ६.१५.८. वर्षसमुदाये वर्षसमुदाये ६.८.५. ['युगे' पदस्य वीप्सायां द्विर्वचनम्]

युगेव अश्वादिवत्संयोजितौ (वायुविद्युतौ) २.३९.४. [युगा-इवपदयोः समासः । युगा=युगाद् द्विवचनस्याकारः]

युङ् समाधाता (ब्रह्म) १०.२५. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' इत्यादिना क्विन्]

युङ्क्ते युक्तो भवति १.८४.१६. कलाकौशलेन प्रेरितः सम्पर्चयति १.१४.३. समवैति १.१२४.११. **युङ्क्ष्व**=युक्तो भव ७.४२.२. **युङ्ग्ध्वम्**=संयोजयत ५.५६.६. **युजन्त**=युञ्जते ६.६६.६. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट् लङ् च]

युच्छतः हर्षं कुरुतः ५.५४.१३. **युच्छति**=प्रमाद्यति ५.५४.१३. **युच्छसि**=अत्यन्तं प्रमाद्यसि ८.३. [युच्छ प्रमादे (भ्वा०) धातोर्लट्]

युजम् योक्तुमर्हम् भा०—प्रशंसनीयम् (रयिं=ऐश्वर्यम्) १९.६४. योजकम् (विद्वत्तमं जनम्) ६.४५.१९. युक्तम् (अग्निं=विद्युतम्) २.२५.१. योक्तारम् (योद्धृजनम्) १.१२९.४. योगयुक्तम् (सखायम्) १.१२९.४. यो युज्यते तम् (सखायं=मित्रम्) प्र० अत्र क्विप् १.३३.१०. समाधातुमर्हम् (रयिम्) ४.३७.५. **युजः**=यो युञ्जते तान् (प्रजाजनान्) ४.३२.६. समाहिताः (स्त्रियः) २३.३७ प्रियस्य यो युनक्ति स युक् सखा तस्य सख्युः प्र०—अत्र युजिर् योगे इत्यस्माद् 'ऋत्विग्दधृग्०' इति क्विन् १.१०.९. **युजा**=कृपया धार्मिकेषु स्वसामर्थ्यसंयोजकेन (इन्द्रेण=युद्धोत्साहप्रदेश्वरेण) १.८.४. योगयुक्तया (पुरन्ध्या=प्रज्ञया) ७ ३२.२०. यो न्यायेन युनक्ति तेन (विदुषा राज्ञा) ७.३१.६ यो युनक्ति मूहुर्त्तादिकालाऽवयवपदार्थैः सह तेन (इन्द्रेण=सूर्येण (विद्युता वा) १.२३.९. युक्तेन (सेनाधीशेन) १.१०२.४. यो युङ्क्ते तेन राज्ञा ६.४४.२२. युनक्ति यया तया (सेनया) प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति करणे क्विप् १.३९.४ [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'कृतो बहुलमि' ति वा करणे क्विप्]

युजा समाहितौ (भिषजा=सद्वैद्यौ) २१.१८. [युजमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

युजानम् समादधानम् (नमः=सत्कारम्) प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिक आनच्प्रत्ययः किच्च १.६५.१. **युजानः**=धारयन् (सूर्यः) ६.३९.२. युक्तः सन् (इन्द्रः=यानम्) २.१८.५. **युजानाः**=समाहितात्मानः (हरयः=राज्यकर्माधिकारिजनाः) ६.४४.१९. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्बाहु० औणा० आनच् किच्च । शानचि वा विकरणस्य लुक्]

युजाना युक्ता (प्रातर्वेला) ५.८०.३. [युजानमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

युजे युनज्मि ७.२३.३. आत्मनि समादधे ११.५. **युज्महे**=समादधीमहि प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्यनो लुक् १.१६५.५. [युज समाधौ (दिवा०) धातोर्लटि विकरणस्य लुक्]

युजेव यथा संयुक्तौ (अश्वौ) २.२४.१२. [युजा-इवपदयोः समासः । युजेति व्याख्यातम्]

युज्यम् योक्तुमर्हम् (रयिं=धनम्) ७.३६.७. समाधातुमर्हम् (पयः=दुग्धमुदकमन्नं वा) ६.५२.१०. **युज्यः**=युञ्जन्ति व्याप्त्या सर्वान् पदार्थान् ते युजो देशकालाकाशादयस्तत्र भवः (विष्णुः=व्यापकेश्वरः) १.२२.१९. उपयुक्ताऽऽनन्दप्रदः (परमेश्वरः) १३.३३. युक्तः (राजप्रजाजनः) १०.३१. युनक्ति सदाचारेणेति युज्यः (सभाध्यक्षः) प्र०—अत्रौणादिकः क्यप् ६ ४. युक्तः समाधातुमर्हो वा (सोमः=ओषधिरसः) १९.३. योग्य (परमेश्वर) आर्याभि० १.२३, ऋ० १.२.७.१९. **युज्याय**=योक्तुं योग्याय व्यवहाराय ७.१९.९. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोरौणा० क्यप् । अथवा=युजिर-धातोः कर्त्तरि क्विपि युज् । ततो भवार्थे यत्]

युज्यमानः समाहितः सन् (वाजी=राजा) ९.८. [युज समाधौ (दिवा०) धातोः शानच्]

युज्यमाना संयुक्तौ (हरी=अश्वौ) ३.३५.१ ['युज्यमान' इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

युज्यसे समादधासि १.२८.५. **युज्याताम्**=युक्तौ भवतः ७.४२.१. **युज्येथाम्**=युज्येते युक्तौ कुरुतः ४.३३. [युज समाधौ (दिवा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट्]

युज्याभिः योजनीयाभिः (विद्याभिः) ७.३७.५. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्बाहु० 'औणा० क्यप् । ततः स्त्रियां टाप्]

युज्येभिः योजनीयैः कर्म्मभिः १.१६५.७. योजितुं योग्यैः (गुणैः) १.१४५.४. योक्तव्यैः (शुष्मैः=बलैः) ६.३.८. [युज्यप्राति० भिसि 'बहुलं छन्दसी' ति ऐस् न । युज्यः=युजिर् योगे (रुधा०) धातोरौणा० क्यप्]

युञ्जते स्थिराः कुर्वते ५.१४. समादधते ५.१४. समादधति ३७.२. युक्तं कुर्वन्ति ऋ० भू० १५६, ११.१. अभ्यस्यन्ति १.४८.४. **युञ्जन्ति**=युक्तं कुर्वन्ति २३.५. युञ्जन्तु प्र०—अत्र लोडर्थे लट् १.६.२. योजयन्ति १.६.१. परमानन्दं प्राप्नुवन्ति ऋ० भू० १५९, १२.६७. **युञ्जन्तु**=प्रेरताम् ९.८. **युञ्जाथे**=नियुक्तौ भवतः १.१५१.४. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लट्]

युञ्जा युञ्जानौ (हरी=धारणाकर्षणगुणौ) १.१६२.२१. योजकौ (हरी=हरणशीलावश्वौ) २५.४४. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृग्०' इत्यादिना क्विन् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

युञ्जानः योगं कुर्वाणः सन् (मनुष्यः) ऋ० भू० १५६, ११.१. योगाभ्यासं भूगर्भविद्यां च कुर्वाणः (सविता=ऐश्वर्यमिच्छुर्मनुष्यः) ११.१. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः शानच्]

युतद्वेषसः युता अमिश्रिताः पृथग्भूता द्वेषा येभ्यस्ते (भा०—सर्वप्रजामनुष्याः) १.५३.४. [युत-द्वेषस्पदयोः समासः । युतः=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्तः । द्वेषस्=द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोरसुन्]

युत्कारेण यो व्यूहैर्युतो मिश्रितानमिश्रितान् भृत्यान् करोति तेन भा०—युद्धविद्याकुशलेन (इन्द्रेण=सेनापतिना) १७.३४. ['युत्' इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण् । युत्=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्विप्]

युत्सु मिश्रिताऽमिश्रितकरणेषु युद्धेषु १७.३९. सङ्ग्रामेषु प्र०—अत्र सम्पदादिलक्षणः क्विप् १.९२.२१. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः सम्पदादिलक्षणः क्विप्]

युधम् युध्यमानम् (शत्रुजनम्) १.५३.७. **युधः**=यो युध्यते सः (इन्द्रः=सर्वसेनाधिपतिः) १७.३५. युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

युधः ये युध्यन्ते ते (नराः=नायका मनुष्याः) १७.३४. **युधा**=यो योधयति तेन (ओजसा) १.५३.७. युध्यन्ते यस्मिन् सङ्ग्रामे तेन १.५९.५. युध्यमानेन सैन्येन ५.२५.६. सम्प्रहारेण २.२२.२. युद्धेन १.१७४.४. **युधि**=युद्धे २.२४.९. **युधे**=युध्यन्ति यस्मिन् सङ्ग्रामे तस्मै १.६१.१३. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोः क्विप्]

युधये युद्धाय ५.३०.४. सङ्ग्रामाय ५.३०.९. [युध संप्रहारे (दिवा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वा० सूत्रेण इक्]

युध्मस्य योद्धुं शीलस्य (इन्द्रस्य=राज्ञः) ३.४६.१. **युध्मः**=यो युध्यते सः (इन्द्रः=सूर्यं इव सभाध्यक्षः) १.५५.२. अविद्याकुटुम्बस्य प्रहर्त्ता (उपदेशकः) १.५५.५. योद्धा (इन्द्रः=विद्युदिव राजा) ७.२०.३. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोः 'इषियुधीन्धि०' उ० १.१४५. सूत्रेण मक्]

युध्य युध्यस्व प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.९१.२३. योधय गमय प्र०—अत्राऽन्तर्भावित ण्यर्थः, युध्यतिर्गतिकर्मा निघं० २.१४, ३४.२३. **युध्यन्**=युद्धं कुर्वन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदमडभावश्च १.६३.७. **युध्यै**=युद्धं कुर्याम ४.१८.२. **युयुधाते**=युध्येते १.३२.१३. **युयुधुः**=सङ्ग्रामं कुर्युः ५.५९.५. युध्यन्ते ४.३०.३. **युयोध**=युध्येत् ६.२५.५. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । अन्यत्र लङ्, लोट्, लिट् च । युध्यते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

युध्यतः युद्धं कुर्वतः (शत्रोः) १.५२.५. प्रहरतः (योद्धृजनस्य) प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.५५.८. युद्धमाचरतः (सैनिकस्य) १.५२.१४. **युध्यते**=युद्धङ्कुर्वते (जनाय) ४.३०.४. **युध्यन्तम्**=युद्धे प्रवर्त्तमानम् (वृषभं=मेघम्) १.३३.१४. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

युध्यमानाः युद्धं कुर्वन्तः (राजपुरुषाः) ४.२५.८. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोः शानच्]

युध्यामधिम् यो युधि सङ्ग्राम आमं रोगं दधाति तं

शत्रुम् ७.१८.२४. [युधि-ग्रामधिपदयोः समासे सप्तम्या अलुक् । ग्रामधिः=ग्रामोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जुहो०) धातोः 'कृतो बहुलं वे' ति कर्त्तरि किः]

युनक्त युग्ध्वम् भा०—कृषिं योगं च कुरुत १२.६८. **युनक्ति**=नियुक्तं करोति योजयति भा०—आदिशति प्र०—अत्र सर्वत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः प्रयोजनाय १.६. **युनजत**=युनक्ति ७.३६.४. **युनजते**=युञ्जते प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इत्यलोपो न ७.२७.१. **युनज्मि**=समादधे १०.२१. संयोजयामि ७.१९.६. सुगन्धैर्द्रव्यैर्युक्तं करोमि १८.५१. नियुक्त करता हूँ सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.६. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लङ् । अडभावः । अन्यत्र लङ् लट् । 'वा छन्दसी' त्यल्लोपोऽपि न भवति]

युनजन् युञ्जन् (जनः) ६.६७.११. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः शतृ । अल्लोपस्तु न 'वा छन्दसीति' नियमेन]

युयवन् युवन्तु पृथक्कुर्वन्तु प्र०—अत्र लेटि शपः श्लुः ९.१६. वियुज्यन्ताम् ७.३८.७. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लङि शपः श्लौ सति छान्दसं रूपम् । युयवन् यावयन्तु नि० १२.४४.]

युयुजानसप्ती युयुजानौ सप्ती वेगाकर्षणौ ययोस्तौ (वायुविद्युतौ) ६.६२.४. [युयुजान-सप्तिपदयोः समासः । 'युयुजान' इति व्याख्यास्यते । सप्तिः अश्वनाम निघं० १.१४.]

युयुजानः समादधन् (अग्निः=विद्वान् पुत्रः) ४.२.२. युक्तान् कुर्वन् (विद्युद्विद्याविज्जनः) ६.५९.५. [युज समाधौ (दिवा०) धातोर्लिटः कानच्]

युयुजे युञ्जीत १.१६१.६. **युयुज्रे**=युञ्जते ५.५३.१. युञ्जन्ति ६.२५.३. योज्यन्ताम् प्र०—अत्र लोडर्थे लिट् 'इरयो रे' अ० ६.४.७६. इति रे आदेशः १.४६.८. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लिट् । 'युयुज्रे' प्रयोगे 'इरयो रे' इति 'रे' आदेशः]

युयुतम् विभाजयतम् ६.५९.८. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लोटि 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लौ सति रूपम्]

युयुत्सन्तम् योद्धुमिच्छन्तम् (शत्रुम्) ५.३२.५. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छतृ]

युयुधयः साधु युद्धकारिणः (पुरुषाः) प्र०—'उत्सर्गश्छन्दसि सदादिभ्यो दर्शनात्' अ० ३.२.१७१. अनेन वार्तिकेनाऽत्र युधधातोः किन्प्रत्ययः १.८५.८. [युध सम्प्रहारे 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि सदादिभ्यो दर्शनात्' अ० ३.२.१७१. वा० सूत्रेण किः । लिट्वच्च]

युयूषतः संविभाजयतः ६.६२.१. मिश्रयितुमिच्छतः १.१४४.३. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोरिच्छायां सन्नन्ताल्लट्]

युयूषन् मिश्रयितुमिच्छन् (राजा) ४.१६.११. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छतृ]

युयोत प्रापयत त्याजयत ३.५४.१८. गृह्णीत वा पृथक्कुरुत २.२९.२. पृथक्कुरुत प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः 'तप्तनप्तन०' इति तबादेशः १.३९.८. **युयोतन**=संयोजयत ५.८७.८. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लोटि, शपः श्लौ च रूपम्]

युयोति मिश्रयति १.९२.११. **युयोतु**=वियोजयतु ५.५०.३. पृथक्करोतु ६.४७.१३. **युयोथाः**=पृथक्कुर्य्याः २.३३.१. **युयोधि**=वियोजय ७.४३. पृथक्कुरु १.१८९.३. दूरीकुरु प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः ५.३६. पृथक्करोषि २.३३.३. अधर्माचरण से सदा दूर रखिये सं० वि० २१४, ४०.१६. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लेट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः । अन्यत्र लोट्]

युयोप युप्यति विमोहं करोति १.१०४.४. [युप विमोहने (दिवा०) धातोर्लिट्]

युवत् मिश्रणाऽमिश्रणयुक्तम् (भा०—कारणम्) प्र०—अत्र यु-धातोरौणादिको बाहुलकात् कतिन्प्रत्ययः १.१११.१. मिश्रयित्रमिश्रकौ वा (इन्द्राग्नी=विद्युद्भौतिकावग्नी) १.१०९.१. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० कतिन्]

युवतयः मिश्रामिश्रत्वकर्मणा सदाऽजराः (दशदिशः) १.९५.२. प्राप्तयौवनावस्था ब्रह्मचारिण्यः (कन्याः) ३.५५.१६. प्रौढयौवनाः (कन्याः) २.३५.११. पूर्णयुवावस्थास्थस्त्रियः स० प्र० ११०, ३.५५.१६. बीसवें वर्ष से चौबीसवें वर्ष वाली कन्याएँ सं० वि० १०४, २.३५.४. **युवतिः**=नवयौवना (दुहिता) १.११८.५. प्राप्तयौवनाऽवस्था (स्त्री) ५.६१.९. युवाऽवस्थायां विद्यामधीत्य कृतविवाहा (माता) ५.४७.१. चतुर्विंशतिवार्षिकी (कन्या) १.१२३.१०. पूर्णाऽवस्था सती कृतविवाहा (माता) ५.२.१. **युवती**=प्राप्तयौवनाऽवस्थे (स्वसारा=भगिन्यौ) ३.५४.७. **युवत्योः**=युवावस्थां प्राप्तयोः स्त्रीपुरुषयोः ६.४९.२. [युवन्प्राति० स्त्रियां 'यूनस्तिः' अ० ४.१.७७. सूत्रेण तिः । 'युवन्' इति व्याख्यास्यते । युवतिं प्रयुवतीम् नि० १०.२९.]

युवते ब्रह्मचर्येणाधीत्यविद्ये पूर्णयुवावस्थे (कन्ये) ५.२.२.

युवते युनक्ति ७.४.२. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन शः। व्यत्ययेन चात्मनेपदम्]

युवद्रिक् युवां प्रापकः (कामः=इच्छा) ४.४४.७. युवां प्राप्नुवन् (कामः=इच्छा) ४.४३.७. [युष्मदुपपदे अञ्चु गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'विष्वग्देवयोश्च०' अ० ६.३.९२. सूत्रेण टेरद्र्यादेशः। युष्मदो युवादेशश्छान्दसः]

युवधिता युवयोर्हितानि (धाम=धामानि) ६.६७.९. [युष्मद्-धितपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि। युष्मदो युवादेशश्छान्दसः। धितः=दधातेः क्तः। 'दधातेर्हि' रिति हिरादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

युवन् यौवनं प्राप्नुवन् (विद्वज्जन) १.१४१.१०. **युवभिः**=प्राप्तयुवावस्थैः (मनुष्यैः) ३.३१.७. **युवा**=प्राप्तयौवनः (जनः) २२.२२. बलिष्ठः (विद्वज्जनः) ५.१.६. युवाऽवस्थास्थः (पुत्रः) १.१४४.४. सुखैः संयोजको दुःखैर्वियोजकश्च (इन्द्रः=परमेश्वर आप्तो जनो वा) २ २०.३. शरीरात्मबलयुक्तः (इन्द्रः=राजा) ६.४५.१. पूर्णेन ब्रह्मचर्येण युवावस्थां प्राप्य कृतविवाहः (गृहपतिः) ७.१५.२. मिश्रणाऽमिश्रणकर्त्ता (इन्द्रः=विद्वान् सेनापतिः सूर्यो वा) १.११.४. यौति मिश्रयति पदार्थैः सह पदार्थान् वियोजयति वा (अग्निः=प्रसिद्धो रूपवान् दहनशीलः) १.१२.६. तरुणावस्थः (इन्द्रः=सभापतिः) ७.३२. विभाजकः (अग्निः=पावकः) ३.२३.१. **युवानम्**=युवत्वसम्पादकम् (रेतः) ३३.११. सर्वस्य जगतः संयोजकं विभाजकं वा (इन्द्रं=परमेश्वरम्) ३.३२.७. बलवन्तम् (तौग्र्यं=राजपुत्रम्) १.११८.६. पूर्णबलम् (वीरपुरुषम्) २.३३.११. सम्प्राप्तयौवनम् (पतिम्) २.३५.४. सम्पादितयौवनम् (पतिम्) १.११७.१३. भेदकम् (इन्द्रं=विद्युतम्) २.१६.१. **युवानः**=प्राप्ताऽऽत्मशरीरयौवनाः (नरः=नायका जनाः) ५.५८.८. मिश्रणामिश्रणकर्तृत्वेन बलिष्ठाः (रुद्राः=वायवः) १.६४.३. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'कनिन् युवृषितक्षि०' उ० १.१५६. सूत्रेण कनिन्। युवा प्रयौति कर्मणि नि० ४.१९. प्राणो वै सुवासाः ऐ० २.२.]

युवन्यून् आत्मनो मिश्रितानमिश्रितान् पदार्थानिच्छून् (विद्वद्गणान्) ५.४२.१५. [युवन्-पदाद् आत्मन इच्छायां क्यजन्ताद् उः]

युवमानः संयोजको भेदकश्च (जीवात्मा) प्र०—अत्र व्यत्ययेन श आत्मनेपदञ्च १.५८.२. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः शानच्। विकरणव्यत्ययेन शः। आत्मनेपदञ्च व्यत्ययेन]

युवयुजम् युवाभ्यां युज्यते तम् (रथम्) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति अप्राप्तोऽपि युवादेशः १.११९.५. [युष्मदुपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातो क्विप्। युष्मदो युवादेशश्छान्दसः]

युवयुः युवां कामयमानः (सज्जनः) ६.६३.३. [युष्मत्पदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उः। युवादेशश्छान्दसः]

युवयूः युवां कामयमानाः (प्रजाः) ४.४१.८. [युवयुरिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियामूङ्प्रत्ययः]

युवशा युवानो विद्यन्ते ययोस्तौ (शिल्पिनौ) प्र०—अत्र लोमादिपामादिना मत्वर्थीयः शः १.१६१.७. युवैर्मिश्रितामिश्रितैस्तद्वत्कृतानि विस्तृतानि (कर्त्तव्यानि) १.१६१.३. [युवन्प्राति० मत्वर्थे 'लोमादिपामादिपिच्छादिभ्यः शनेलचः' अ० ५.२.१००. सूत्रेण शः]

युवसे संयोजयसि ६.६०.२. मिश्रय प्र०—अत्र विकरणात्मनेपदव्यत्ययः १५.३०. **युवस्व**=संयोजय ७.५.९. कर्म्मसु प्रेर्ष्व ४.४८.५. प्रेरयस्व ४.४८.५. मिश्रयस्व २७.२७. **युवामहे**=विभजामहे ६.५७.६. **युवासे**=मिश्रय ६.३५.३. **युवेथे**=सङ्गमयथः १.१८०.६. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन श आत्मनेपदञ्च। अन्यत्र लोट् लेट् चापि]

युवाकवः सम्पादितमिश्रितामिश्रितक्रियाः (वृक्तबर्हिषः=शिल्पविद्याविदो विद्वांसः) प्र० 'यु मिश्रणेऽमिश्रणे च' इत्यस्माद्धातोरौणादिक आकुः प्रत्ययः १.३.१. ये युवां कामयन्ते ते (विद्वांसः) ३३.५८. **युवाकुः**=सुसंयोजकः (विद्वज्जनः) ७.६०.३. मिश्रिताऽमिश्रितः (सोमः=ऐश्वर्यलाभः) ३.५८.९. यो यावयति मिश्रयति संयोजयति सर्वाभिर्विद्याभिः सह जनान् सः (अध्यापक उपदेशको वा) १.१२०.३. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० आकुः। स च कित्]

युवाकु मिश्रीभावं पृथग्भावं वा प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिकः काकुः प्रत्ययः 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् च १.१७.४. सुखेन मिश्रिताय दुःखैः पृथग्भूताय **वा** (राये=धनाय) १.१२०.९. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० काकुः]

युवाना संयोजकौ वायुविद्युतौ ६.६२.४. युवानौ युवसदृशौ (पितरा=मातापितरौ) १.११०.८. पूर्णयुवाऽवस्थास्थौ (मातापितरौ) १५.५३. मिश्रितामिश्रितयोः कर्त्तारौ (अध्यापकोपदेष्टारौ) २१.६. [युवन्प्राति० प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

युवायवः युवामिच्छवः (सोमासः=ऐश्वर्ययुक्ता जनाः १.१३५.६. [युष्मत्प्राति० आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उः। अस्मदो युवादेशश्छान्दसः]

युवायुजम् युवाभ्यां युज्यते तम् (रथं=सैन्यादियुक्तं यानम्) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इत्यप्राप्तोऽपि युवादेशः १.११६.५. [युष्मदुपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः कर्मणि क्विप्। युष्मदो युवादेशश्छान्दसः]

युवावते त्वां रक्षते (राजपुरुषाय) ३.६२.१. [युष्मद्-अवत्पदयोः समासः। युवादेशश्छान्दसः। अवत्=अव रक्षणे (भ्वा०) धातोः शतृ]

युष्मयन्तीः या युष्मानाचक्षते ताः (गिरः=सुशिक्षिता वाणीः) २.३६.७. [युष्मत्प्राति० 'तत्करोति तदाचष्ट' इति वा० सूत्रेण णिजन्ताच्छत्रन्ताच्च ङीप्]

युष्माकाभिः युष्माभिरनुकम्पिताभिः सेनाभिः १.३६.८. [युष्मत्प्राति० अनुकम्पायामर्थे 'अव्यय सर्वनाम्नामकच् प्राक् टेः' इति सूत्रेणाकच्]

युष्माकेन युष्माकं सम्बन्धेन प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यनण्यपि युष्माकादेशः १.१६६.१४. [युष्मत्प्राति० शैषिकेऽणि 'तस्मिन्नणि च युष्माकास्माकौ' अ० ४.३.२. इति विहितो युष्माकादेशोऽनण्यपि भवति छान्दसत्वात्]

युष्मादत्तस्य युष्माभिर्दत्तस्य (रायः=धनस्य) ५.५४.१३. [युष्मद्-दत्तपदयोः समासे पूर्वपदस्याकारादेशश्छान्दसः]

युष्मानीतः युष्माभिरानीतः (सज्जनः) २.२७.११. [युष्मद्-आनीतपदयोः समासे पूर्वपदस्याकारादेशश्छान्दसः]

युष्मावत्सु युष्मत्सदृशेषु (विद्वज्जनेषु) २.२६.४. [युष्मत्प्राति० 'वतुप्प्रकरणे युष्मदस्मद्भ्यां छन्दसि सादृश्ये उपसंख्यानम्' अ० ५.२.३९. वा०सूत्रेण वतुप्। 'आ सर्वनाम्न' इत्याकारादेशः]

युष्मे युष्मान् ४.१०.८. युष्माकम् ६.१८.५. [युष्मत्प्राति० 'सुपां सुलुक्०' इति सुपां स्थाने 'शे' आदेशः]

युष्मेषितः यो युष्माभिर्जेतुमिषितः सः (अ०—शत्रुजनः) प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति दकारलोपः समी०–इदं सुगमपक्षं विहाय सायणाचार्येण प्रत्ययलक्षणादिकोलाहलः कृतः १.३६.८. [युष्मद्-इषितपदयोः समासः। पूर्वपदस्य दकारलोपश्छान्दसः। इषितः=इष गतौ (दिवा०) धातोः क्तः]

युष्मोतः युष्माभिः पालितः संरक्षितो रक्षितो वा (अर्वा=अश्व इव सहनशीलो जनः) सम्राट् विप्रो वा ७.५८.४. [युष्मद्-ऊतपदयोः समासे पूर्वपदस्य दकारलोपश्छान्दसः। ऊतः=अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः क्तः। 'ज्वरत्वरस्रिव्यविमवामुपधायाश्च' इत्युपधाया ऊठ्]

यूथम् समूहम् ४.३८.५ सेनासमूहम् ५.२.४. **यूथेन**=सुखप्रापकपदार्थसमूहेनाऽथवा वायुगणेन सह प्र०—'तिथपृष्ठयूथगूथप्रोथाः' उ० २.१२ अनेन यूथ-शब्दो निपातितः १.१०.२. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः' उ० २.१२. सूत्रेण थक् निपात्यते]

यूथा समूहान् १.८१.७. [यूथमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

यूथेव यूथानि समूहा इव ७.६०.३. सैन्यानीव ४.२.१८. गोसमूहान् वृषभ इव १.७.८. समूह इव ६.४६.१२. [यूथा-इवपदयोः समासः]

यूपः स्तम्भः १.५१.१४. मिश्रितो व्यवहारयत्नोदयः १६.१७. **यूपात्**=मिश्रितादमिश्रिताद् बन्धनात् ५.२७. **यूपे**=स्तम्भ में सं० वि० २०६, अथर्व० ९.६.२.५. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'कुयुभ्यां च' उ० ३.२७. सूत्रेण पः प्रत्ययो दीर्घश्च। यूथं यौतेः समायुतं भवति नि० ४.२४. (देवाः) तं वै (यं) यूपेनैवायोपयंस्तद् यूपस्य यूपत्वम् ऐ० २.१. (देवाः) यदेनेन (यूपेन यज्ञं) अयोपयंस्तस्माद् यूपो नाम श० १.६.२.१. तस्माद् यूपऽएव पशुमालभन्ते नऽर्त्ते यूपात् कदाचन श० ३.७.३.२. पशवो वै यूपमुच्छ्रयन्ति श० ३.७.२.४. गर्तन्वान् यूपोऽतीक्ष्णाग्रो भवति श० ५.२.१.७. अष्टाश्रिर्यूपो भवति श० ५.२.१.५. सप्तदशारत्निर्यूपो भवति तै० १.३.७.२. खादिरो यूपो भवति श० ३.६.२.१२. स्तुप एवास्य (यज्ञस्य) यूपः श० ३.५.३.४. यूपः स्थाणुः श० ३.६.२.५. खलेवाली यूपो भवत्येतया हि तं रसमुत्कृषन्ति तां० १६.१३.८. वैष्णवो हि यूपः श० ३.६.४.१. असौ वा अस्य (अग्निहोत्रस्य कर्त्तुः) आदित्यो यूपः ऐ० ५.२८. आदित्यो यूपः तै० २.१.५.२. वज्रो यूपः श० ३.६.४.१६. वज्रो वा एष यद् यूपः कौ० १०.१. ऐ० २.१. वज्रो वै यूपः ष० ४.४. वज्रो वै यूपशकलः श० ३.८.१.५. एष वै यजमानो यद् यूपः तै० १.३.७.३. (चतुर्द्धा विभक्तस्य वज्रस्य) यूपस्तृतीयं वा

यावद्वा श० १.२.४.१. यजमानो वै यूपः ऐ० २.३. श० १३.२.६.९. यजमानदेवत्यो वै यूपः तै० ३.९.५.२ यजमानो वाऽएष निदानेन यद् यूपः श० ३.७.१.११.]

यूपवाहाः ये यूपं वहन्ति प्रापयन्ति ते (मनुष्याः) १.१६२.६. [यूपोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यण्]

यूपव्रस्काः यूपस्य स्तम्भस्य छेदकाः (शिल्पिनो जनाः) २५.२९. यूपाय स्तम्भाय ये वृश्चन्ति ते (मनुष्याः) १.१६२.६. [यूपोपपदे ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोः क्विप्]

यूपेव स्तम्भ इव दृढौ (पितरा=पितरौ) ४.३३.३. [यूपा-इवपदयोः समासः। यूपा=यूपप्राति० द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

यूयवन् पृथक्कुर्वन्तु २१.१०. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लङि छान्दसे द्वित्वे तुजादित्वाद् अभ्यासस्य दीर्घत्वे रूपम्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो न लुक्]

यूयुविः विभागकर्त्ता (विद्वज्जनः) ५.५०.३. [यु-मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० विन्। बहुलवचनाद् धातोर्द्वित्वेऽभ्यासस्य च दीर्घत्वे रूपम्]

यूष्णः वर्द्धकस्य (पुरुषस्य) २५.३६. रसस्य १.१६२.१३. **यूष्णा**=क्वथितेन रसेन २५.९. [यूषप्राति० शस्प्रभृतिषु 'पद्दन्नोमास्हृत्०' अ० ६.१.६३. सूत्रेण 'यूषन्' आदेशः। यूष=यूष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरच्]

येजे यजति ६.३६.२. [यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्]

येतिरे प्रयतन्ते १.८५.८. यतन्ते ५.५९.२. [यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

येमतुः नियच्छतः ५.६१.९. गमयतम् ५.७३.३. देशान्तरे यच्छथः प्र०—अत्र लडर्थे लिट् १.३०.१९. **येमाते**=नियमेन गच्छतः ४.४८.३. **येमिरे**=संयमं कुर्वन्ति ३३.९५. प्राप्नुवन्तु १२.११६. नियमेन धारयन्ति ऋ० भू० १३९, ऋ० ६.१.६.३. आकर्षणधारणनियमं प्राप्नुवन्ति ऋ० भू० १४०, ऋ० ६.१.६.४. स्थितिं लभन्ते ऋ० भू० १४०. यच्छन्ति ३.५९.८. यच्छेयुः १.१३५.१. उद्युञ्जन्ति १.१०.१. **येमुः**=नियच्छन्ति ६.२१.६. यच्छेयुः ४.२१.४. **येमे**=यच्छति ५.३२.१०. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'येमे' एतदादिषु व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

येमानम् नियन्तारम् (दृढज्ञानम्) ४.१.१५. **येमानः**=नियच्छन्तः (सज्जनाः) ४.४४.३. नियमयन्तः (धार्मिका जनाः) ४.२३.१०. [यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्। 'अत एकहल्मध्ये०' इत्यकारस्यैकारादेशोऽभ्यासलोपश्च]

येषन्ती स्रवन्ती (उखा=पाकस्थाली) ३.५३.२२. [यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्। अकारस्यैकारः]

येषम् प्रयतेयम् २.२७.१६. [यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोर्लङ्। धातोरकारस्य एकारश्छान्दसः। अटोऽभावः। 'यसोऽनुपसर्गादि' ति श्यनो विकल्पे शप्]

येष्ठः अतिशयेन याता (शिल्पी जनः) ५.७४.८. [या प्रापणे (अदा०) धातोः तृजन्तादतिशायन इष्ठन्प्रत्यये तृचो लोपः]

येष्ठा अतिशयेन नियन्तारौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.४१.३. ['येष्ठ' इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

यो या समी—अत्र महीधरेण 'याः' इत्यशुद्धं व्याख्यातम् ५.६. [यद् सर्वनाम्नः स्त्रियां प्रथमैकवचने 'या' इति रूपम्। अकारस्यौकारो वर्णव्यत्ययेन]

योक्तारम् योजकम् भा०—योगाभ्यासकर्त्तारम् (पुरुषम्) ३०.१४. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

योक्त्रम् योजनम् ५.३३.२. **योक्त्रे**=अश्वादि यान के जोटे सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.६. [योक्त्राणि अङ्गुलिनाम निघं० २.५. योक्त्राणि योजनानि निघं० ३.९. युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'दाम्नीशसयुयुज०' अ० ३.२.१८२. सूत्रेण करणे ष्ट्रन्]

योगक्षेमः अप्राप्तस्य प्राप्तिलक्षणो योगस्तस्य रक्षणं क्षेमः (भा०—काम०) २२.२२. [योग-क्षेमपदयोः समासः योगक्षेमः=यद् योक्त्रं स योगः। यदास्ते स क्षेमः। योगक्षेमस्य क्लृप्त्यै तै० ३.३.३.३.]

योगम् संयोजनम् १.१८.७. **योगः**=युज्यते यस्मिन् सः १.३४.९. **योगाय**=युञ्जन्ति यस्मिँस्तस्मै ३०.१४. **योगे**=सर्वसुखसाधनप्राप्तिसाधके (व्यवहारे) १.५.३. अप्राप्तस्य प्राप्तिलक्षणे २२.२२. अनुपात्तस्योपात्तलक्षणे ७.५४.३. समागमे यमाद्यनुष्ठाने वा ४.२४.४. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्घञ्। योगः=यद् योक्त्रं स योगः तै० ३.३.३.३.]

योगे योगे युञ्जते यस्मिन् यस्मिन् (वाजे वाजे=सङ्ग्रामे सङ्ग्रामे) ११.१४. अनुपात्तस्योपात्तलक्षणो योगः तस्मिन् प्रति योगे १.३०.७. [योगे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

योग्याभिः पृथिवीभिः ३.६.६. [युजिर् योगे (रुधा०)

धातोर्ण्यत् । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

योज योजयति अ०—संयोजय, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप् लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थः ३.५१. युक्तान् कुरु १.८२.१. योजय युङ्क्ते वा ३.५२. **योजते**=युनक्ति प्र०—अत्र व्यत्ययेन शप् १५.३३. **योजम्**=युनज्मि २.१८.३. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शप् अन्यत्र लट् लङ् च]

योजनम् योक्तुमर्हं विमानादियानम् १.८८.५. युजन्ति येन तदाकर्षणाख्यम् (वीर्यं=सामर्थ्यम्) ५.५४.५. **योजनानि**=क्रोशान् १.१२३.८. **योजनेन**=योगेन १.९२.३. **योजनेषु**=बन्धनेषु १.१६४.९. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्ल्युट् । योजनानि अंगुलिनाम निघं० २.५.]

योजना योजनानि बहून् क्रोशान् ९.१३. युज्यन्ते सर्वाणि वस्तूनि येषु भुवनेषु तानि प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि०' इति शेर्लोपः १.३५.८. [योजनप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

योजनेभिः अनेकैर्योजनैर्युक्तैः (रजोभिः=ऐश्वर्यप्रदैर्मार्गैः) ६.६२.६. [योजनप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

योजि अयोजि २.१८.१. [युजिर् योगे (रुधा०) धातोः कर्मणि लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

योतोः मिश्रिताऽमिश्रितकर्त्तुः (निर्णायकस्य राज्ञः) ६.१८.११. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० तुः । ततः षष्ठी]

योत्सि युध्यसे प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्यनभावः १.१३२.४. [युध सम्प्रहारे "(दिवा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि श्यनोऽप्यभावः]

योधत् युध्यते ६.३९.२. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्लेट् । व्यत्ययेन शप्]

योधम् युद्धकर्त्तारम् (युद्धकुशलं वीरम्) ६.२६.४. **योधः**=प्रहर्त्ता १.१४३.५. योद्धा (निरभिमानी राजा) ७.३१.६. [युध संम्प्रहारे (दिवा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः कर्त्तरि]

योधानः योद्धुं शीलः (वीरपुरुषः) १.१२१.८. [युध संप्रहारे (दिवा०) धातोस्ताच्छील्ये चानश् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

योधि वियोजय ५.३.८. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लोट् । 'अङितश्च' अ० ६.४.१०३. सूत्रेण हेर्धिरादेशः]

योधिष्टम् युध्येयाताम् ६.६०.२. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

योधीयान् अतिशयेन योद्धा (सेनापतिः) १.१७३.५. [युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोस्तृजन्ताद् ईयसुन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

योना गर्भाशये १.१६४.३२. जन्मनिमित्ते (दम्पती) १.१४४.४. योनौ निमित्ते सति १.६५.२. गृहे ४.१.१२. [योनिप्राति० 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण सप्तम्याः प्रथमाद्विवचनस्य च स्थाने डादेशः]

योनिम् सुखसाधकं दुःखविच्छेदकमुपदेशम् १२.५९. गृहम् ६.१५.१६. कारणम् १७.६०. परमात्माख्यं गृहम् १७.७३. जन्मस्थानम् १९.७६. स्वरूपम् ३१.१९. उदकम् ३.३३.४. मिश्रिताम् (उखां=पाकस्थालीम्) ११.५९. स्थानमाकाशम् १३.३. राजधर्मासनम् १२.१७. सत्यधर्मानुष्ठानं वेदविज्ञानमेव प्राप्तिकरणम् ऋ० भू० १३२, ३१.१९. देहधारणकारणम् भा०—गर्भाशयम् १२.३८. प्रकृतिं, स्वात्मस्वभावम् ८.२२. आदिकारण (परमात्मा) को आर्याभि० २.२८, १३.३. **योनिषु**=युवन्ति मिश्रीभवन्ति येषु कार्येषु कारणेषु वा तेषु प्र०—अत्र 'वहिश्रिश्रुयु०' उ० ४.५३. अनेन यु-धातोर्निः प्रत्ययो निच्च १.१५.४. निमित्तेषु २.३६.४. **योनिः**=दुःखवियोजकः सुखसंयोजको व्यवहारः १२.५२. वसतिः ७.२१. स्थित्यर्थः स्थानविशेषः ७.२२. ऐश्वर्यकारणम् ८.३९. निवसतिः ९.२. न्यायासनम् १.१०४.१. निमित्तं प्रयोजनम् ११.१२. जगत्कारणं प्रकृतिः ३३.२. विद्यासम्बन्धः २०.३३. गृहे न्यायकर्त्री (राजपत्नी) १०.२६. असमं प्रमाणम् ८.४१. राज्यभूमिः ८.३८. सन्ताननिमित्ता ३.५३.४. संयोगवियोगवित् (अ०—विद्वज्जनः) ११.२९. जलम् २३.४. **योनीः**=चितीः १७.७९. **योनेः**=स्वकारणात् २.३५.१०. **योनौ**=जन्मनि स्थले वा ३.२१. यज्ञे प्र०—'यज्ञो वा ऋतस्य योनिः' श० १.३.१.१६, २.६. कालाख्ये कारणे २९.३१. युवन्ति यस्यां सा योनिर्गृहं जन्मान्तरं वा तस्याम् २.२०. आधारे ३.१.७. समुद्रे १३.५३. बन्धच्छेदके मोक्षप्रापके (विद्याबोधे) १२.५४. क्षेत्रे १२.६८. गृहाश्रमे १५.५९. **योन्याम्**=गर्भाऽऽधारे १९.८७. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः 'वहिश्रिश्रुयु०' उ० ४.५१. सूत्रेण निः । योनिः=उदकनाम निघं० १.१२. गृहनाम निघं० ३.४. योनिरन्तरिक्षं महानवयवः परिवीतो वायुना । अयमपीतरो योनिरेतस्मादेव परियुतो भवति नि० २.८. योनिर्वाऽउखा श० ७.५.२.२.

योनिर्वाऽउत्तरवेदिः श० ७.३.१.२८. योनिर्वै गार्हपत्या चितिः श० ७.१.१.८. योनिरेव वरुणः श० १२.९.१.१७. योनिर्वै पुष्करपर्णम् श० ६.४.१.७. योनिर्मुञ्जाः श० ६.६. २.१५. परिमण्डला हि योनिः श० ७.१ १.३७. अन्धमिव वैतमो योनिः जै० उ० ३.९.२. मांसेन वाऽउदरं च योनिश्च संहिते श० ८.६.२.१४. योनिरुलूखलम् श० ७.५.१.३८. योनिर्वै वामदेव्यम् जै० ३.३०१.]

योषणः मिश्रणशीला युवतयः १.१४१.२. भार्य्याः ४.५.५. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० युच्, षुगागमश्च। 'युष' इति सौत्रो धातुः। ततो युजन्ताट् टाप् स्त्रियाम्]

योषणा स्त्री ५.५२.१४. **योषणाम्**=स्वपत्नीम् ३.६२.८. भार्य्याम् ४.३२.१६. स्वस्त्रियम् ३.५२.३. **योषणाः**=योषा इव वर्त्तमानाः (दिवः=ज्योतींषि) ३.५६.५. **योषणे**=स्त्रियाविव (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २९.३१. ['युष' इति सौत्रो धातुः। ततो बाहु० औणा० युच्। स्त्रियां टाप्]

योषत् वियोजयेः २.३३.९. विनश्येत् २.१८.८. युज्येत ४.२.९. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लेट्। सिब्-विकरणः]

योषा प्राप्तयौवना (युवतिः) १.१२३.११. विवाहिता स्त्री ऋ० भू० २११, ऋ० ७.८.१८.२. विद्याभिर्मिश्रिताऽविद्याभिः पृथग्भूता स्त्री प्र०—अत्र यु-धातोर्बाहुलकात्कर्मणि सः प्रत्ययः १.१०१.७. विदुषी स्त्री २९.४१. कामिनी स्त्रीव (उषाः) १.९२.११. भार्य्या १.१२३.९. प्रौढा ब्रह्मचारिणी युवतिः १.११९.५. **योषाम्**=स्वभार्याम् १.११५.२. युवतिं कन्याम् १.११७.२०. **योषे**=कृतपूर्वापरविवाहे परस्परं विरुद्धे स्त्रियाविव १.१०४.३. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्व्राहु० औणा० सः। ततः स्त्रियां टाप्। योषा यौतेः नि० ३.१५. योषा वाऽइयं वाग्यदेनं न युवता श० ३.२.१.२२. योषा हि वाक् श० १.४. ४.४. वागिति स्त्री (योषा) जै० उ० ४.२२.११. योषा वै वेदिः श० १.३.३.८. योषा वै वेदिर्वृषाग्निः श० १.२. ५.१५. योषा वाऽअग्निः श० १४.९.१.१६. योषा हि स्रुक् श० १.४.४.४. योषा वै स्रुग्वृषा स्रुवः श० १.३.१.९. योषा वै पत्नी श० १.३.१.१८. न वै योषा कंचन हिनस्ति श० ६.३.१.३९. तस्मात्पुमान् दक्षिणतो योषामुपशेते जै० उ० १.५३.३. दक्षिणतो वै वृषा योषामुपशेते श० ६.३. १.३०. अरत्निमात्राद्धि वृषा योषामुपशेते श० ६.३.१.३०. तस्माद् यदा योषा रेतो धत्तेऽथ पयो धत्ते श० ७.१.१.४४. पुरन्धिर्योषा (यजु० २२। २२) इति। योषित्येव रूपं दधाति तस्माद्रूपिणी युवतिः प्रिया भावुका श० १३.१.९.६. पुरन्धिर्योषेत्याह। योषित्येव रूपं दधाति तस्माद्रूपिणी युवतिः प्रिया भावुका तै० ३.८.१३.२. योषा वै सिनीवाली (यजु० ११। ५६) एतदु वै योषायै समृद्धरूपं यत् सुकपर्दा सुकुरीरा स्वौपशा श० ६.५.१.१०. पश्चाद् वरीयसी पृथुश्रोणिरिति वै योषां प्रशंसन्ति श० ३.५.१.११.]

योः गच्छतो गमयितुः (रथस्य) प्र०—अत्र या प्रापणे इत्यस्माद्धातोर्बाहुलकादौणादिकः कुः प्रत्ययः १.७४.७. त्यक्तव्यस्य (रोगस्य) २.३३.१३. [या प्रापणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० कुः। ततः षष्ठी]

योः पदार्थानां पृथक्करणम् प्र०—अत्र युधातोर्डोसिः प्रत्ययोऽव्ययत्वञ्च १.९३.७. धर्मार्थकाममोक्षप्रापणम् १.१०६.५. प्रापकः (परमेश्वरः) १.१८९.२. मिश्रितम् (भेषजम्=औषधम्) ५.५३.१४. दुःखात्पृथग्भूतम् (शं=सुखम्) ५.४७.७. संयुक्तम् (शम्) ५.६९.३. सुखनिमित्तौ (इन्द्रापूषणा=विद्युद्वायू) ७.३५.१. दूरीकरणे १९.५५. दुःखवियोजनम् १.११४.२. दुःखवियोजकः सुखसंयोजकः (अग्निः=वैद्यराजो विद्वज्जनः) ३.१८.४. मिश्रयिता भेदको वा (विद्वान् जनः) ३.१७.३. सुकृताज्जनितम् (शं=सुखम्) ४.१२.५. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० डोसिः]

योः प्रापयति ६.५०.७. प्रजा के रोगों का नाश कर आर्याभि० १.४५, ऋ० १.८.५.२. **यौमि**=मिश्रयाम्यग्नौ प्रक्षिप्य वियोजयामि वा १.२२. **यौष्म**=युक्ता भवेम ४.२२. **यौः**=पृथक् कुर्य्याः २.३२.२. [यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लङ् अडभावः। वृद्धेरभावश्च। अन्यत्र लट् लुङ् लङ् च]

रक्ष पालय ३.३०. रक्षति ४.१४. रक्षा करो आर्याभि० १.२०, ऋ० १.६.२०.८. **रक्षतम्**=रक्षतः १.९३.८. **रक्षताम्**=आप दोनों रक्षा करें सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१९. **रक्षध्वम्**=सततं पालयत प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् ४.२७. **रक्षन्ति**=पालयन्ति १.४१.१. **रक्षन्ते**=रक्षन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.९०.२. पालयन्ति १.६२.१०. **रक्षसि**=पालयसि ३.३६. **रक्षस्व**=पालय प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् ५.३९. **रक्षिषत्**=रक्षेत् ७.१२.२. **रक्षथे**=रक्षतम् प्र०—अत्र लोडर्थे लट् व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च १.३४.८.

रक्षेथे ३.५४.१६. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् लेट्, व्यत्ययेनात्मनेपदमपि]

रक्षणेभिः अनेकविधैरुपायैः ४.३.१४. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोर्ल्युट् । ततो भिस ऐस् न भवति छान्दसत्वात्]

रक्षमाणः रक्षन् सन् (अ०—सभेश्वरः) प्र०—अत्र व्यत्ययेन शानच् १.३१.१२. **रक्षमाणाः**=रक्षां कुर्वन्तः (विद्वांसो जनाः) १.७२.५. ये रक्षन्ति ते (विद्वांसः) १.१४६.४. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

रक्षमाणा यौ रक्षतस्तौ (प्राणोदानतुल्यौ विद्वांसौ) ५.६२.५. [रक्ष+शानच्=रक्षमाणः । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

रक्षमाणासः ये रक्षन्ति ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १.९६.६. [रक्षमाणप्राति० जसोऽसुक्]

रक्षसः दस्युचोरादीन् ३४.२६. दुष्टान् मनुष्यान् दोषान् वा १.७६.३. दुष्टाचारान् मनुष्यान् ५.४२.१०. दुष्टाः (द्विषः=व्यभिचारिणीर्वृषलीः) ११.४९. परपीडकस्य (दुर्जनस्य) १.१२९.११. राक्षस, हिंसाशील, दुष्टस्वभाव-देहधारी से आर्याभि० १.१२, ऋ० १.३.१०.१५. **रक्षसाम्**=दुष्टकर्मकारिणां प्राणिनाम् ५.२६. रक्षन्ति परार्थहननेन स्वार्थमिति रक्षांसि तेषाम् (स्वार्थिजनानाम्) ६.१६. **रक्षसे**=दुष्टानां विनाशाय ५.२.९. **रक्षः**=दुष्टकर्मकारी मनुष्यः १.८६.९. दुर्गन्धादिदुःखजालम् १.९. रक्षःस्वभावो दुष्टो मनुष्यः १.७. दुष्ट-व्यवहारान् प्र०—अत्र व्यत्ययेनैकवचनम् १.२१.५. विघ्नकारी प्राणी परसुखाऽसहो मनुष्यः, बन्धनेन रक्षितव्यम् १.२९. दुष्टाचारम् राक्षसम् ९.३८. रक्षति सर्वतः स्वार्थनिमित्तीभूतं कर्म अ०—दुष्टस्वभाविनम् ६.१६. सर्वथा स्वार्थरक्षकः परार्थहन्ता (दुष्टो जनः) ६.१६. दस्युस्वभावः १.१६. दुःखं निवारणीयम् १.१९. दुष्टस्वभावो जन्तुः १.१४. **रक्षांसि**=दुष्टान् दोषान्वा १८.५२. रक्षयितव्यानि (कार्याणि) ७.१५.१०. दुष्टानि कर्माणि दुष्टस्वभावान् प्राणिनः १.७९.१२. हिंसकान् दस्यून् ९.१६. दुष्टाचारान् ६.१६.२९. परपीडकाः स्वार्थिनः (असुराः) २.२९. पालयितव्यानि (अस्ना=रुधिराणि) २५.९. अन्यान् प्रपीड्य स्वात्मानमेव ये रक्षन्ति ते (भा०—चोराः) ३४.५१. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' उ० ४.१८९. इत्यसुन् । रक्षो रक्षितव्यमस्माद् । रहसि क्षणोतीति वा । रात्रौ नक्षत इति वा नि० ४.१८. अग्निर्वै रक्षसामपहन्ता श० १.२.१.६. अग्निर्वै रक्षसामपहन्ता कौ० ८.४. अग्निर्वै ज्योतीरक्षोहा श० ७.४.१.३४. ते (देवाः) ऽविदुः । अयं (अग्निः) वै नो विरक्षस्तमः श० ३.४.३.८. अग्नेर्वा ऽएतद्रेतो यद्धिरण्यं नाष्ट्राणां रक्षसामपहन्ता श० १.३.४.८. तत् (रक्षः) सीसेनापजघान । तस्मात् सीसं मृदु सृतजवं हि श० ५.४.१.१०. ते (देवाः) एतं रक्षोहणं वनस्पतिमपश्यन् कार्ष्मर्य्यम् श० ७.४.१.३७. देवा ह वा ऽएतं वनस्पतिषु रक्षोघ्नं ददृशुर्यत् कार्ष्मर्य्यम् श० ३.४.१.१६. यदापामार्गहोमो भवति रक्षसामपहत्यै तै० १.७.१.८. अपामार्गैर्वै देवा दिक्षु नाष्ट्रा रक्षांस्यपासृजत श० ५.२.४.१४. ब्राह्मणो हि रक्षसामपहन्ता श० १.१.४.६. साम हि नाष्ट्राणां रक्षसामपहन्ता श० ४.४.५.६. स यां वै दृप्तो वदति यामुन्मत्तः सा वै राक्षसी वाक् ऐ० २.७. आपो वै रक्षोघ्नीः तै० ३.२.३.१२. वज्रो वाऽआपस्तद्वज्रेणैवैतन्नाष्ट्रा रक्षांस्यतोऽपहन्ति श० १.७.१.२. असृग् भाजनानि ह वै रक्षांसि कौ० १०.४. रक्षसां हि स भागः (असृग् रूपः) श० १.९.२.३५.]

रक्षस्विनः रक्षांसि दुष्टस्वभावा निन्दिता मनुष्या विद्यन्ते येषु सङ्घातेषु तान् १.१२.५. रक्षांसि निन्दिताः पुरुषाः सन्ति येषु व्यवहारेषु ते प्र०—अत्र निन्दितार्थे विनिः १.३६.२०. **रक्षस्विने**=पापी हिंसक दुष्टात्मा के लिए आर्याभि० १.२९. [रक्षस्प्राति० निन्दायां मत्वर्थे विनिः । पुरुषः पुरुषो हि रक्षस्वी तै० आ० ५.९.४.]

रक्षिता रक्षणकर्त्ता (ईशानः=ईश्वरः) २५.१८. रक्षा करने में तत्पर (ईश्वर) आर्याभि० १.१०, ऋ० १.६.१५.६. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

रक्षो रक्षैव १.१७४.३. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोर्लोट् । वर्णव्यत्ययेनाकारस्योकारादेशः]

रक्षोयुजे यो रक्षांसि दुष्टान् मनुष्यान् युनक्ति तस्मै (अधर्मात्मने जनाय) ६.६२.८. [रक्षसुपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्विप्]

रक्षोहणम् रक्षसां दुष्टानां हन्तारम् (विद्वज्जनम्) २.२३.३. यथा येन धार्मिकेण पुरुषेण रक्षांसि हन्यन्ते तथा (पुरुषम्) ५.२३. **रक्षोहणः**=यथा यूयं रक्षांसि दुष्टान् दस्य्वादीन् हथ तथा तान् ५.२५. **रक्षोहणौ**=यथा रक्षसां हन्तारौ प्रजासभाद्यध्यक्षौ तथाऽहम् ५.२५. यथा रक्षसां शत्रूणां हन्तारौ भवथस्तथाऽहम् ५.२५. **रक्षोहा**=यो रक्षांसि दुष्टान् हन्ति सः (सूर्यो विद्वज्जनो वा) ५.२४. यो दुष्टानां रोगाणां हन्ता सः (भिषक्=वैद्यः) १२.८०.

दुष्टगुणकर्मस्वभावहन्ता (विद्वज्जनः) १.१२९.६. [रक्षस्-उपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप् । 'इन्हन्पूषार्यम्णां शौ, सौ च' इति नियमादुपधाया न दीर्घः । अग्निर्वै देवानां रक्षोहा मै० २.१.११. साम वै रक्षोहा तै० सं० ६.६.३.१. तै० आ० ५.९.४.]

रक्षोहत्याय दुष्टानां हननाय ६.४५.१८. [रक्षस्-हत्यपदयोः समासः । हत्यम्=हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनस्त च' इति क्यप् तान्तादेशश्च]

रघवः सद्यःकारिणः (मनुष्याः) ४.५.१३. **रघुः**= लघुः (श्येन इव सूर्यः) ५.४५.९. [लघुप्राति० जस् । 'बालमूल०' अ० ८.२.१८. वा० सूत्रेण वा लत्वम्]

रघुद्रुवः ये रघून्यास्वादनीयान्यन्नानि द्रवन्ति ते (कृषीवलाः) १.१४०.४. ये रघु लघु द्रवन्ति गच्छन्ति ते (सूरयः=विद्वांसो जनाः) प्र०—अत्र कपिलकादित्वाल्लत्वम् १५.४२. [लघूपपदे द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर् क्विप् । 'बालमूललघ्वसुरालमङ्गूलीनां वा रो लत्वमापद्यत इति वक्तव्यम्' अ० ८.२.१८. इति वा० सूत्रेण वा लत्वम्]

रघुपत्मजहाः यो लघुपतनं जहाति सः (अग्निः) ६.३.५. [रघुपत्मोपपदे ओहाक् त्यागे (जु०) धातोश्छान्दसः शः । रघुपत्म=रघु-पत्मपदयोः समासः । रघुः=लघुः । पत्म=पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोरौणा० मन्]

रघुपत्वानः ये रघून् पथः पतन्ति ते (सप्तयः= अश्वाः) प्र०—अत्र 'अन्येभ्योऽपि०' इति वनिप्प्रत्ययः १.८५.६. [रघूपपदे पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि वनिप् । रघुः=लघुः]

रघुमन्यवः लघुक्रोधाः (वीरयोद्धारः) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन लस्य रः १.१२२.१. [लघु-मन्युपदयोः समासः लस्य रेफः । मन्युः क्रोधनाम निघं० २.१३.]

रघुयत् सद्योगन्त्री (भा०—गौरिव वस्तु) ४.५.९. [रघूपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ]

रघुया रघवः क्षिप्रं गन्तारः (वयः=पक्षिणः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति जसः स्थाने याजादेशः २.२८.४. [लघुप्राति० जसः स्थाने याच् 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण]

रघुष्यत् सद्यः स्यन्दमानम् (सैन्यम्) ४.५.९. **रघुष्यदम्**=यो रघु लघु स्यन्दति तम् (अग्नि=विद्युदादिरूपं वह्निम्) ३.२६.२. लघुगमनम् ५.२५.६. यो लघु स्यन्दति तम् (रथं=विमानादियानम्) ५.७३.५. **रघुष्यदः**= ये रघुषु स्यन्दन्ते ते (कृषीवलाः) १.१४०.४. ये मार्गान् स्यन्दन्ते ते (सप्तयः=अश्वाः) प्र०—गत्यर्थाद्रिघिधातोर्बाहुलकादौणादिक उः प्रत्ययो नकारलोपश्च १.८५.६. [रघूपपदे स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

रघुस्पदः रघव आस्वादाः स्पदश्च प्रस्रवणानि प्रकृष्टगमनानि येषां ते (गिरयः) १.६४.७. [रघु-स्यद् पदयोः समासः । वर्णव्यत्ययेन यस्य पकारः । स्यद्=स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

रघ्वी लघ्वी (क्रिया) ६.६३.९. **रघ्वीः**=गमनशीला नद्यः १.५२.५. [लघुप्राति० स्त्रियां ङीष् । लघुः=लघि गतौ (भ्वा०) धातोः 'लङ्घिबंह्योर्नलोपश्च' उ० १.२९. सूत्रेण उः । नलोपश्च । लकारस्य रेफः]

रघ्वीरिव लघ्व्यो ब्रह्मचारिण्य इव ४.४१.९. यथा गमनशीला नद्यः १.५२.५. [रघ्वीः-इवपदयोः समासः । रघ्वीः=रघु+ङीप्+जस्प्रत्यये पूर्वसवर्णदीर्घः]

रजतनाभी रजतवर्णनाभियुक्तौ (पिशङ्गौ= पीतवर्णौ पशू) २९.५९. [रजत-नाभिपदयोः समासः]

रजतम् रागविषयमानन्दस्वरूपम् (ब्रह्म) ऋ० भू० १६२. [रञ्ज रागे (भ्वा०) धातोः 'पृषिरञ्जिभ्यां कित्' उ० ३.१११. सूत्रेण अतच् किच्च]

रजताः अनुरक्ताः भा०—परस्परस्मिन् प्रीताः (स्त्रियः) २३.३७. [रजतमिति व्याख्यातम् ततो जस्]

रजयित्रीम् विविधरागकारिणीम् (ओषधिम्) ३०.१२. [रञ्ज रागे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् तृच् । ततः स्त्रियां ङीप् । णिचि रञ्जेर्णौ मृगरमणे अ० ६.४.२४. वा०सूत्रेण नलोपः]

रजसः लोकस्यैश्वर्यस्य वा १३.१५. लोकसमूहस्य ४.१.११. लोकान् १.१९.३. रागविषयस्य १.५२.१४. अन्तरिक्षस्य मध्ये १.५२.६. लोकजातस्य ७.३५.५. भूगोलस्य १.९२.१. उस घर का सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१५. पृथिवीलोकस्य १.३३.७. **रजसा**=अन्धकारलक्षणेन ३४.२५. लोकसमूहेन ३३.४३. रजोरूपेण रजतरूपेण वा (रथेन) पं० वि० । किरण द्वारा स० प्र० ३१३, ३३.४३. **रजसि**=ऐश्वर्ये २.२.४. **रजसी**=रात्र्यहनी ६.९.१. रजोभिर्निर्मिते (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ४.५६.३. **रजः**= सकारणं लोकसमूहम् १.५८.५. लोकलोकान्तरम् ५.४८.२. अणुत्रसरेण्वादि १.९०.७. ऐश्वर्यम् ३.१.५. पृथिव्यादिलोकजातम् १.५६.५. सूक्ष्मं सर्वलोककारणं परमाण्वादिकम् १.८३.२. द्व्यणुकादिरेणु १३.२८. कणः १.१४१.७. सर्वलोकैश्वर्यसहितम् (ब्रह्म) ऋ० भू० १६२, अथर्व०

११.४.५१. **रजांसि**=लोकविशेषाणि ६.३०.३. उत्तम-मध्यम-निकृष्टानि (लोकलोकान्तराणि) ४.५३.५. स्थानानि ३४.१९. लोकानैश्वर्याणि वा ४.४५.७ लोकस्थानानि २.३९.७. पृथिव्यादीनि स्थूलानि तत्त्वानि १.१६४.६. **रजोभिः**=ऐश्वर्यप्रदैर्मार्गैः ६.६२.६. परमाणुभिर्लोकैर्वा सह ६.६२.२. [रञ्ज रागे (भ्वा०) धातोः 'भूरञ्जिभ्यां कित्' उ० ४.२१७. सूत्रेणासुन् किच्च । रजः=रात्रिनाम निघं० १.७. पदनाम निघं० ४.१. रजसी=द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०. रजतेर्ज्योती रज उच्यते, उदकं रज उच्यते, लोका रजांस्युच्यन्ते, असृगहनी रजसी उच्येते नि० ४.१९. रजसः=अन्तरिक्षलोकस्य नि० १२.७. रजस्सु=उदकेषु नि० १०.४४. इमे वै लोका रजांसि श० ६.३.१.१८. द्यौर्वै तृतीयं रजः श० ६.७.४.५.]

रजस्तुरम् यो रजांसि लोकान् तुरति तं तूर्णंगमनागमनहेतुम् (मरुतां गणम्) १.६४.१२. **रजस्तूः**=यो रज उदकं तौति वर्धयति सः (वीरजनः) ६.६६.७. यो रजांसि लोकान् वर्धयति सः (विद्वज्जनः) ६.२.२. ['रजस्' इत्युपपदे तुर त्वरणे (जु०) धातोः क्विप्]

रजस्याय रजःसु लोकेषु परमाणुषु वा भवाय (जनाय) १६.४५. [रजस्प्राति० भवार्थे यत्]

रजःशया या रजःसु सूर्यादिलोकेषु शेते सा (तनूः=व्याप्तिः) ५.८. [रजस्-उपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः 'अधिकरणे शेतेः' अ० ३.२.१५. सूत्रेणाच् । ततः स्त्रियां टाप्]

रजिम् पङ्क्तिम् ६.२६.६. [रञ्ज रागे (भ्वा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' इति वासूत्रेण स्त्रियाम् इक्]

रजिष्ठम् अतिशयेन ऋजु कोमलम् (पन्थाम्=पन्थानम्) प्र०—अत्र ऋजु-शब्दादिष्ठनि 'विभाषर्जोश्छन्दसि' अ० ६.४.१६२. इति ऋकारस्य रेफादेशः १.९१.१. **रजिष्ठाः**=अतिशयेन रजितारः (देवाः=आदित्यादयः) ७.५१.२. **रजिष्ठैः**=अतिशयेन रजस्वलैः (मार्गैः) १.७९.३. [ऋजुप्राति० अतिशायन इष्ठन्-प्रत्यये 'विभाषर्जोश्छन्दसि' अ० ६.४.१६२. सूत्रेण ऋजोर् ऋकारस्य रेफः । रजस्प्राति० वा अतिशायन इष्ठन रजस्-शब्दान् मतुबर्थकप्रत्ययस्य लोपश्छान्दसः । रजिष्ठैः=ऋतुतमै रजस्वलतमैः प्रपिष्टतमैरिति वा नि० ८.१९]

रज्जुसर्जम् यो रज्जुं सृजति तम् (शिल्पिजनम्) ३०.७. [रज्जूपपदे सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

रज्जुः रज्जुः १.१६२.८. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः 'सृजेरसुम् च' उ० १.१५. सूत्रेण उः प्रत्ययोऽसुमागम आदिसकारलोपश्च । पुनर्ऋकारस्य यणादेश आगम सकारस्य जश्त्वं च । अथाप्याद्यन्तविपर्ययो भवति नि० २.२. वरुण्या वै यज्ञे रज्जुः श० ६.४.३.८. वरुण्या रज्जुः श० १.३.१.१४. वरुण्या वा ऽएषा यद्रज्जुः श० ३.२.४.१८.]

रण उपदिश ५.५१.८. **रणन्**=उपदिशन्तु ४.३३.७. **रणन्त**=रमध्वम् ७.५७.५. **रणन्ति**=शब्दायन्ते ३.७.५. [रण शब्दे (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लङ् लट् च । रणऽशब्दाद्वाचारे क्विप् ततां लङि 'रणन्त' इति रूपम्]

रणन् उपदिशन् (विद्वज्जनः) ५.५३.१६. [रण शब्दे (भ्वा०) धातोः शतृ]

रणयन् शब्दयन्तु स्तुवन्तु प्र०—अत्र लङ्यडभावः १.१००.७. **रणयन्त**=शब्दयन्ति ४.७.७. रणः सङ्ग्राम इवाचरन्ति ३ ५७.२. रमेरन् रमयेयुर्वा ६.१.४. शब्दयेयुः १.१४७.१. **रणयन्तु**=शब्दयन्तु ६.२८.१. [रण शब्दे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ् अडभावः । रणप्राति० वा आचारे क्यच्-प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

रणाय सङ्ग्रामाय ३६.१४. युद्धाय १.६१.६. **रणाः**=रममाणाः (गृहस्था जनाः) ६.२७.१. [रण शब्दे (भ्वा०) धातोः 'वशिरण्योरुपसंख्यानम्' अ० ३.३.५८. वा० सूत्रेण कर्त्तरि कारके अप् । रणः संग्रामनाम निघं० २.१७. रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्वा बाहु० औणा० नक् । रणाय रमणीयाय संग्रामाय नि० ४.८. रणाय रमणीयाय नि० ९.२७.]

रणिष्टन शब्दयत २.३६.३. वदत २६.२४. [रण शब्दे (भ्वा०) धातोर्लङ् अडभावः । तस्य तनबादेशः]

रणे रणे युद्धे युद्धे १.७४.३. ['रणे' पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

रण्यति रमते ५.१८.१. उपदिशति प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययः १.८३.६. **रण्यथः**=रमयथः ५.७४.३. **रण्यन्ति**=रणन्ति शब्दयन्ति प्र०—अत्रः व्यत्ययेन शप स्थाने श्यन् १.३८.२. [रण-शब्दे (भ्वा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन शपः श्यन्]

रण्यवाचः रमणीयभाषाः ३.५५.७. [रण्या-वाच्-पदयोः समासे पूर्वपदस्य ह्रस्वः । रण्या=रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः 'पोरदुपधाद्' इति यत्, ततष्टाप् स्त्रियाम् । मकारस्य नकारो वर्णव्यत्ययेन । रमु धातोर्वा बाहु० औणा० डण्यन्प्रत्ययः । रण्यौ रमणीयौ संग्राम्यौ

वा नि० ६.३३.]

रण्यानि रमणीयानि लोकजातानि ३.५५.७. रणेषु साधूनि कर्म्माणि १.८५.१०. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्यत्प्रत्यये मकारस्य नकारश्छान्दसः। रणशब्दाद्वा साध्वर्थे यत्]

रण्वभिः रमणीयैः (धनैः) ५.४४.१०. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० वः। ततो भिस ऐसादेशो न छन्दसि]

रण्वम् उपदेशकम् १.१२९.७. शब्दायमानम् (अग्निं=पावकम्) ३.२६.१. रमणीयम् (उपदेशकम्) ६.२९.१. **रण्वः**=रमयिता (जगदीश्वरः) २.२४.११. रमणीयस्वरूपः (अग्निः=राजा) ४.१.८. रममाणः (सूनुः=अपत्यम्) ६.२.७. शब्दविद्यावित् (विद्वज्जनः) १.१४४.७. रमणीयः (वाजी=अश्वः) प्र०—अत्र रमधातोर्बाहुलकादौणादिको वः प्रत्ययः १.६९.३. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० बहुलवचनाद् वः। मकारस्य नकारो वर्णव्यत्ययेन]

रण्वया रमणीयया (गातुमत्या=प्रशस्तवाग्भूमियुक्तया) ७.५४.३. **रण्वा**=या रण्वति सुखं प्रापयति सा (पुष्टिः) १.६५.३. प्रशंसनीया (पुष्टिः=धातुवृद्धिः) २.४.४. रमणीया (पुष्टिः) ४.१६.१५. (रण्वमिति व्याख्यातम्, ततष्टाप् स्त्रियाम्। अथवा रवि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः 'गुरोश्च हलः' इत्यकारः। ततष्टाप्]

रण्वसन्दृक् या रण्वान् रमणीयान् पदार्थान् सन्दर्शयति सा (उषाः=प्रभातवेला) ३.६१.५. रमणीयं यः सम्यक् पश्यति सः (वीरपुरुषः) ७.१.२१. **रण्वसन्दृशम्**=रमणीयसदृशम् (विद्वज्जनम्) ६.१६.३७. [रण्वोपपदे सम्पूर्वाद् दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्विन्। रण्वमिति व्याख्यातम्]

रण्विते शब्दायमाने (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २.३.६. [रवि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः क्तः]

रताः ये रमन्ते ते (सम्भोगिजनाः) ४०.९. रममाणाः ४०.१२. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्तः। 'गत्यर्थाकर्मक०' इति वा कर्त्तरि क्तः]

रतिः रमणम् ८.५१. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

रत्नधातमम् रत्नानामतिशयेन धर्त्तारम् (राजानम्) ५.८.३. रमणीयानि पृथिव्यादीनि सुवर्णादीनि च रत्नानि दधाति धापयतीति रत्नधा अतिशयेन रत्नधा इति रत्नधातमस्तम् (अग्निं=परमेश्वरं भौतिकं वा) १.१.१. रत्नानि सर्वजनै रमणीयानि प्रकृत्यादिपृथिव्यन्तानि ज्ञान-हीरक-सुवर्णादीनि च जीवेभ्यो दानार्थं दधातीति रत्नधाः अतिशयेन रत्नधाः स रत्नधातमस्तम् (अग्निम्) वे० भा० न० १.१.१. रत्न अर्थात् रमणीयपृथिव्यादिकों को अपने सेवकों के लिए धारण करने वाले (ईश्वर) को आर्याभि० १.२, ऋ० १.१.१.१. **रत्नधातमः**=रत्नानि रमणीयानि सुखानि दधाति येन सोऽतिशयितः (स्तोमः=स्तुतिसमूहः) १.२०.१. [रत्नधाप्राति० अतिशायने तमप्। रत्नधा=रत्नोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप् कर्त्तरि। रत्नधातमम्=रमणीयानां धनानां दातृतमम् नि० ७.१५.]

रत्नधाभिः या रत्नानि द्रव्याणि दधति ताभिः (स्वपत्नीभिः) ४.३४.७: **रत्नधाम्**=यो रत्नानि रमणीयानि विज्ञानानि हीरकादीनि भुवनानि वा दधातीति तम् (परमेश्वरम्) ४.२५. **रत्नधाः**=यो रत्नानि दधाति सः (पुरुषः पतिर्वा) ३८.५. रत्नानि रमणार्थानि पृथिव्यादीनि वस्तूनि दधातीति सः (विद्युदग्निः) १.१५.३. रत्नानि रमणीयानि वस्तूनि दधाति सः (सुपुत्रः) १.१६४.४९. रमणीयवस्तु धर्त्ता (विद्वज्जनः) २६.२१. [रत्नोपपदे दधातेर्धातोः कप्रत्ययान्ताट् टाप् स्त्रियाम्। अथवा रत्नोपपदे दधातेः कर्त्तरि क्विप्]

रत्नधेभिः ये रत्नानि दधति तैः [ऋभुभिः=मेधाविभिर्जनैः) ४.३५.७. ये रत्नानि द्रव्याणि दधति तैः (सिन्धुभिः=नदीभिः सुमुद्रैर्वा) ४.३४.८. [रत्नोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कः। ततश्छन्दसि भिस ऐसादेशो न]

रत्नधेयम् रत्नानि धीयन्ते यस्मिँस्तत् (पात्रम्) ४.३४.४. रत्नानि धेयानि यस्मिँस्तत् (दुरोणं=गृहम्) ४.१३.१. रत्नानि धेयानि येन तम् (जनम्) ५.४२.७. **रत्नधेयानि**=रत्नानि धीयन्ते येषु तानि (धनाधिकरणानि) ७.५३.३. **रत्नधेयाय**=रत्नानि धीयन्ते यस्मिन् कोषे तस्मै ४.३४.११. [रत्न-धेयपदयोः समासः। रत्नमिति व्याख्यास्यते। धेयम्=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'अचो यत्' इति यत्]

रत्नधेया रत्नानि धनानि धीयन्ते यया तस्यै (प्रज्ञायै) ४.३४.१. [रत्नधेयमिति व्याख्यातम्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

रत्नम् सुवर्णहीरकादिकम् ३.५४.३. रमन्ते जनानां मनांसि यस्मिँस्तत् (वसु=उत्तमद्रव्यम्) १.४१.६. धनम् ३.८.६. रमणीयं सुवर्णादिकम् १.५३.१. रमणीयं ज्ञानं

साधनं वा १.१४१.१०. रमणीयस्वरूपम् १.५८.७. रम्यानन्दं वस्तु १.१२५.१. रमणीयं जगत् २.३८.१. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः 'रमेस्त च' उ० ३.१४. सूत्रेण नः। तकारश्चान्तादेशः। रत्नं धननाम निघं० २.१०.]

रत्नवन्तम् बहूनि रत्नानि धनानि विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (अध्वरम्=अहिंसादिलक्षणं धर्म्यं व्यवहारम्) ३.२८.५. [रत्नप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

रत्ना विद्यादिरमणीयप्रज्ञाधनानि ७.१७.७. [रत्नप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

रत्निनः बहूनि रत्नानि धनानि विद्यन्ते येषु तान् (प्रजाजनान्) ७.४०.१. [रत्नप्राति० भूम्न्यर्थं इनिः]

रत्निनीम् रमणीयाम् (वाचम्) १.१८२.४. [रत्नप्राति० भूम्न्यर्थं इनिप्रत्ययान्तात् स्त्रियां ङीप्]

रत्सि रमसे ५.१०.१. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्लटि शपो लुकि वर्णव्यत्ययेन च तादेशे रूपम्। परस्मैपदमपि व्यत्ययेनैव]

रथ रमणीयस्वरूप (विद्वज्जन) २९.५४. **रथम्**=विमानादियानविशेषम् ६.४७.२७. रमणीयस्वरूपं संसारम् १.७०.४. रमणसाधनं यानम् १.११२.२. रमणीयं विद्याप्रकाशं यानं वा ८.३३. रमणीयं सूर्यलोकम् ६.४४.२४. रमणीयं भू-समुद्राकाशयानम् १७.३७. रमते येन तद् विमानादियानम् ५.७५.१. रमणस्याधिकरणम् (यानम्) १.५४.६. रमणीयं किरणम् ६.६३.५. ज्ञानम् १.८२.४. विद्याप्रकाशम् ८.३३. **रथः**=रयते जानाति येन स रथः अ०—विज्ञानम् ३.३६. रमणीयो व्यवहारः ६.४९.५. रमणाय तिष्ठति यस्मिन् सः १.१२०.११. रन्तुं योग्यः (यानविशेषः) १.१८३.२. रमणसाधनः २३.१४. वाहनम् १.१२३.१. गमनसाधनं यानम् २.१८.१. युद्धक्रीडासाधकतमः १.११७.२. सद्यो गमयिता विमानादियानविशेषः ४.३१.१४. **रथाय**=समुद्रादिषु रमणाय १.१४०.१२. विमानादियानसमूहसिद्धये १.१११.३. **रथे**=रमणीये यान इव शरीरे ६.४७.१९. रमणीये जगति ६.५५.६. गमनहेतौ रमणसाधने विमानाऽऽदौ १.१३.४. भूजलाकाशगमनार्थे याने प्र०—यज्ञसंयोगाद्राजा स्तुतिं लभेत० नि० ९.११. रथ इति पदनाम निघं० ५.३. आभ्यां प्रमाणाभ्यां रथशब्देन विशिष्टानि यानानि गृह्यन्ते १.६.२. रमयति येन तस्मिन् (याने)१.१६.२ रमणीये लोके १.५०.८. **रथेन**=रमणहेतुना यानेन ३३.७३. गमकेन यानेन ३३.३३. रमणानन्दादिव्यवहारसाधक-ज्ञानतेजोरूपेण (यानेन) ऋ० भू० १४२, ३३.४३. रम्येण स्वरूपेण १.१२३.७. रमणीयेनानन्दस्वरूपेण पं० वि०। [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः 'हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन्' उ० २.२. सूत्रेण क्थन्। रथः पदनाम निघं० ५.३. रथः=रंहतेर्गतिकर्मणः। स्थिरतेर्वा स्याद् विपरीतस्य रममाणोऽस्मिंस्तिष्ठतीति वा, रपतेर्वा, रसतेर्वा नि० ९.११. वज्रो वै रथः तै० सं० ५.४.११.२. काठ० २१.१२. वैश्वानरो वै देवतया रथः तै० २.२.५.४. तं वा एतं रसं सन्तं रथ इत्याचक्षते मो० १.२.२१.]

रथ इव रमणीयाऽऽकाश इव ६.६१.१३. [रथः-इवपदयोः समासः]

रथकारम् विमानादिरचकं शिल्पिनम् ३०.६. **रथकारेभ्यः**=ये रथान् विमानादियानसमूहान् कुर्वन्ति तेभ्यः शिल्पिभ्यः १६.२७. [रथोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण्]

रथक्षयाणि रथस्य निवासरूपाणि गृहाणि ६.३५.१. [रथ-क्षयपदयोः समासः। क्षयम्=क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोः 'एरच्' इत्यच्]

रथगृत्सः रथस्य प्रवेता गृत्सो मेधावीव वर्त्तमानः (सारथिः) प्र०—गृत्स इति मेधाविनाम निघं० ३.१५. गृत्सो मेधावी गृणातेः स्तुतिकर्मणः नि० ९.५, १५.१५. [रथ-गृत्सपदयोः समासः। गृत्सः मेधाविनाम निघं० ३.१५. गृत्स इति मेधाविनाम गृणातेः स्तुतिकर्मणः नि० ९.५.]

रथतुरम् यो रथेन सद्यो गच्छति तम् (शत्रुम्) ४.३८.३. **रथतूर्भिः**=यो रथान् विमानादियानानि तूर्वन्ति शीघ्रं गमयन्ति तैः (अश्वैः) १.८८.२. [रथोपपदे तुर्वी हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'राल्लोपः' सूत्रेण वलोपः। अथवा रथोपपदे तुर त्वरणे (जु०) धातोः क्विप्]

रथनाभाविव यथा रथस्य रथचक्रस्य मध्यमे काष्ठे सर्वेऽवयवा लग्ना भवन्ति तथा ३४.५. जैसे रथ के मध्य धुरा में स० प्र० २४७, ३४.५. [रथनाभौ-इवपदयोः समासः। रथ-नाभौ=रथ-नाभिपदयोः समासे कृते सप्तमी]

रथन्तरम् रथैस्तरन्ति येन तत् (साम) १०.१०. यद्रथै रमणीयैस्तारयति तत् (सुखम्) १३.५४. रथै रमणीयैर्यानैस्तरन्ति येन तत् (मार्गम्) ११.८. यदस्मिन् लोके तारकं वस्त्वस्ति तत् १५.५. रथैस्तारकम् (साम=एतदुक्तं कर्म) १५.१०. सामस्तोत्रविशेषः १८.२९. क्रियासिद्धिफलभोगः शिल्पविद्याजन्यं वस्तु च ऋ० भू० १५४,

रथन्तराय यो रथैः समुद्रादींस्तरति तस्मै (अग्नये=पावकाय) २९.६०. **रथन्तरे**=अन्तरिक्षे १.१६४.२५. **रथन्तरेण**=यत्र रथेन तरति तत्र तेन (तेजसा=सूर्यप्रकाशेन) २१.२३. [रथोपपदे तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'ॠदोरप्' इत्यप् । नुडागमश्छान्दसः । इयं (पृथिवी) वै रथन्तरम् कौ० ३.५. ष० २.२. तां० ६.८.१८. श० ५.५.३.५. अयं वै (पृथिवी) लोको रथन्तरम् ऐ० ८.२. रथन्तरो वा अयं (भू०) लोकः तै० १.१.८.१. रथन्तरं हीयम् (पृथिवी) श० १.७.२.१७. उपहूतं रथन्तरं सह पृथिव्या तै० ३.५.८.१. श० १.८.१.१९. वाग्वै रथन्तरम् ऐ० ४.२८. वाग् रथन्तरम् तां० ७.६.१७. ब्रह्मवर्चसं वै रथन्तरम् तै० २.७.१.१. ब्रह्म वै रथन्तरम् ऐ० ८.१.२. तां० ११.४.६. ऋग् रथन्तरम् तां० ७.६.१७. अपानो रथन्तरम तां० ७.६.१४. यद्ध्रस्वं तद् रथन्तरं यद्दीर्घं तद् बृहत् कौ० ३.५. देवरथो वै रथन्तरम् तां० ७.७.१३. अन्नं वै रथन्तरम् ऐ० ८.१. राथन्तरी वै रात्री ऐ० ५.३०. गायत्री वै रथन्तरस्य योनिः तां० १५.१०.५. गायत्रं वै रथन्तरम् तां० ५.१.१५. गायत्रं वै रथन्तरं गायत्रश्छन्दः तां० १५.१०.९. एतद्वै रथन्तरस्य स्वमायतनं यद् बृहती तां० ४.४.१०. अग्निर्वै रथन्तरम् ऐ० ५.३०. उप वै रथन्तरम् तां० १६.५.१४. ऐड् रथन्तरम् तां० ७.६.१७. त्रिवृच्च त्रिणवश्च राथन्तरौ तावजश्चाश्वश्चान्वसृज्येतां तस्मात्तौ राथन्तरं प्राचीनं प्रधूनुतः तां० १०.२.५. चतुरक्षरं रथन्तरम् तै० २.१.५.७. प्रजननं वै रथन्तरम् तां० ७.७.१६. यद्रथन्तरं तच्छाक्वरम् ऐ० ४.१३. रथन्तरमेतत् परोक्षं यच्छक्वर्यः तां० १३.२.८. यद्वै रथन्तरं तद्वैरूपम् (साम) ऐ० ४.१३. रथन्तरमेतत्परोक्षं यद् वैरूपम् (साम) तां० १२.२.५. रथन्तरं ह्येतत् परोक्षं यच्छचैतम्(साम)तां० ७.१०.८ रथन्तरं वै सम्राट् तै० १.४.४.९. रथन्तरं साम्नाम् (प्रतिष्ठा) तां० ९.३.४. तेजो रथन्तरं साम्नाम् तां० १५.१०.६. वसन्तेनर्तुना देवा वसव स्त्रिवृतास्तुतम् । रथन्तरेण तेजसा । हविरिन्द्रे वयो दधुः तै० २.६.१९.१. (सामवेद उवाच) रथन्तरं नाम ते सामाघोरश्चाक्रूरश्च गो० पू० २.१८. श्रीरेषा यद् रथन्तरम् जै० १.३३०. समुद्र एष यद् रथन्तरम् जै० १.३३२.]

रथप्राम् यो रथानि यानानि पूर्यंते तम् (वायुं=पवनम्) ६.४९.४. यो रथान् यानानि प्राति व्याप्नोति तम् (वायुं=प्राणादिलक्षणम्) ३३.५५. [रथोपपदे प्रा पूरणे (अदा०) धातोः क्विप्]

रथप्रोतः रथो रमणीयस्तेजसमूहः प्रोतो व्यापितो येन सः (सेनापतिः) १५.१७. [रथ-प्रोतपदयोः समासः प्रोतः=प्र+वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोः क्तः । तस्य (आदित्यस्य) रथप्रोतश्चामरसश्च सेनानीग्रामण्याविति वार्षिकौ तावृतू श० ८.६.१.१८.]

रथयुजम् रथेन युक्तम् (पवनम्) ५.४१.६. **रथयुजः**=ये रथं युञ्जते ते (शिल्पनो जनाः) १.१३९.४ [रथोपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्विप्]

रथयुः आत्मनो रथमिच्छुः (इन्द्रः=सर्वाऽधीशः) १.५१.१४. रथं कामयमानः (जनः) ७.२.५. [रथपदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उः । क्यचि प्राप्ते त्वस्य 'न छन्दस्यपुत्रस्य' इति निषेधः]

रथवत् प्रशस्तरथादियुक्तम् (परमैश्वर्यम्) ७.२७.५. प्रशंसितरथसहितम् (राधः=धनम्) ५.५७.७. [रथप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुप्]

रथवते वहवो रथा विद्यन्ते यस्य तस्मै (महाशयजनाय) १.१२२.११. [रथवदिति व्याख्यातम् । ततश्चतुर्थी]

रथवाहनम् रथान् वहन्ति गमयन्ति येन तत् [हविः=आदातव्याग्नीन्धनजलकाष्ठधात्वादि) २९.४५. रथं वहति येन तत् (साधनम्) १२.७१. [रथोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्ल्युट् करणे]

रथवीतिः यो रथेन व्याप्नोति मार्गं सः (विद्वज्जनः) ५.६१.१९. **रथवीतौ**=रथानां गतौ ५.६१.१८. [रथवीतिपदयोः समासः । वीतिः=वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् औणा० वा तिः किच्च]

रथस्पतिः रथस्य स्वामी ५.५०.५. [रथ-पतिपदयोः समासः । सुडागमश्छान्दसः]

रथस्वनः रथस्य स्वनः शब्द इव शब्दो यस्य सः (सेनापतिः) १५.१६. [रथ-स्वनपदयोः समासः । स्वनः=शब्दे (भ्वा०) धातोः 'स्वनहसोर्वा' सूत्रेणाप् । तस्य (वायोः) रथस्वनश्च रथेचित्रश्च सेनानीग्रामण्याविति ग्रैष्मौ तावृतू श० ८.६.१.१७.]

रथा जलस्थलाऽन्तरिक्षेषु गमयितारौ (यानविशेषौ) ७.१८.२२. [रथप्राति० 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेणाकारादेशः]

रथासः रमणीयानि यानानि भा०—रमणीया गतयः २७.३२. रमणसाधनाः (विमानादियानविशेषाः) २.१२.७. रमणीयाः (वायुवेगाः) २.४१.१. [रथप्राति० जसोऽसुक्]

रथाँ इव यथा रथानधिष्ठाय १.१३०.५. [रथान्-

इवपदयोः समासः]

रथिनः प्रशस्ता रथा येषान्ते (नरः=नायका जनाः) ६.४७.२१. प्रशस्तरथयुक्ता वीराः (जनाः) २९.५७. प्रशस्तरथस्य (महिमघस्य जनस्य) १.१२२.८. **रथीनाम्**=नित्ययुक्ता रथा विद्यन्ते येषां योद्धृणां तेषाम् प्र०—अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते' अ० ६.३.१३७. अनेन दीर्घः १.११.१. प्रशस्तानां वीराणाम् प्र०—अत्र 'छन्दसीवनिपौ' इतीकारः १२.५६. **रथिभ्यः**=प्रशस्ता रथा विद्यन्ते येषां तेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) २२.१९. **रथीः**=रथस्वामी (सज्जनः) प्र०—अत्र 'वा छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति सोर्लोपो न १.२५.३. प्रशस्ता रथा यस्य सन्ति सः (अग्निः=विद्वज्जनः) प्र०—अत्र 'छन्दसीवनिपौ च वक्तव्यौ' अ० ५.२.१०९. अनेन रथ-शब्दान्मत्वर्थ ई-प्रत्ययः १.४४.२. बहवो रथा विद्यन्ते यस्य सः (अग्निः=पावकः) ३.३.६. बहुरथवान् (विद्वज्जनः) ६.५५.१. प्रशस्ता रथा रमणसाधनानि यानानि विद्यन्ते यस्य सः (अग्निः=विद्वज्जनः) १५.४५. बहुप्रशंसितरथः (अग्निः=विद्वज्जनः) ६.४८.९. [रथप्राति० प्रशंसायां नित्यसम्बन्धे वा मत्वर्थ इनिः। 'रथीनाम्' प्रयोगे छान्दसं दीर्घत्वम्। अथवा=रथप्राति० मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' वक्तव्यौ' अ० ५.२.१०९. वा० सूत्रेण ईकारः प्रत्ययः]

रथिनीः बहवो रमणसाधका रथा विद्यन्ते यासु ताः (इषः=सेनाः) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे इनिः 'सुपां सुलुक्०' इति पूर्वसवर्णादेशश्च १.९.८. [रथप्राति० भूम्न्यर्थ इनिः। ततः स्त्रियां ङीप्, ततः शसः पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः।

रथियन्तीव आत्मनो रथिन इच्छन्तीव सेना १.१६६.५. [रथिन्-शब्दाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच् छतरि ङीपि रथियन्तीति रूपम्। रथियन्ती-इवपदयोः समासः]

रथिरम् यो रथिषु रमते तम् (राजानम्) ७.७.४. रथा रमणीयानि यानानि भवन्ति यस्मिँस्तम् (अग्निं=पावकम्) ३.२६.१. **रथिरः**=रथादियुक्तः (इन्द्रः=राजा) ३.३१.२०. प्रशस्ता रथा विद्यन्ते यस्य सः (मनुष्यः) ३.१ १७. ['रथिन्' इत्युपपदे रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर् कर्त्तरि डः। अन्यत्र रथप्राति० प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मत्वर्थे 'मेधारथाभ्यामिरन्निरचौ' अ० ५.२.१०९ वा०सूत्रेण इरन्]

रथीतमम् बहवो रथा रमणाधिकरणाः पृथिवीसूर्यादयो लोका विद्यन्ते यस्मिन् स रथीश्वरः सोऽतिशयितस्तम्। रथाः प्रशस्ता रमणविजयहेतवो विमानादयो विद्यन्ते यस्य सोऽतिशयितः शूरस्तम् (इन्द्रम्=परमात्मानं वीरपुरुषं वा) प्र०—'रथिन ईद्वक्तव्यः' अ० ८.२.१७. इत्यत्र पठितेनाऽनेन वार्त्तिकेनेकारादेशः १.११.१. अतिशयेन प्रशस्तरथयुक्तम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) १२.५६. अतिशयेन रथी यस्तम् (इन्द्रं=सभेशम्) १५.६१. प्रशस्ता रथाः सुखहेतवः पदार्था विद्यन्ते यस्मिन् सोऽतिशयितस्तम् (इन्द्रं=परमात्मानम्) १७.६१. **रथीतमः**=अतिशयेन रथयुक्तः (इन्द्रः=सूर्येणेव राजा) ६.५६.२. बहवो रथा विद्यन्ते यस्य सोऽतिशयितः (राजा) ६.४५.१५. [रथप्राति० मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' अ० ५.२.१०९. वा०सूत्रेण ईकारप्रत्यये रथी। ततोऽतिशायने तमप्। अथवा रथिन्प्राति० अतिशायने तमप्-प्रत्यये घसंज्ञके परे 'ईद्रथिनः' अ० ८.२.१७. वा० सूत्रेण रथिन ईकारादेशः]

रथीतमा प्रशंसितरथयुक्तौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८८.२. प्रशस्ता रथा विद्यन्ते ययोः सकाशात्तावतिशयितौ (अश्विनौ=अग्निजले) १.२२.२. [रथीतममिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

रथीतरः अतिशयेन रथयुक्तो योद्धा (इन्द्रः=सेनेशः) १.८४.६. [रथीप्राति० अतिशायने तरप्। रथी=रथप्राति० मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ वक्तव्यावि' ति ईकारः]

रथीरिव प्रशंसितो रथवान् यथा ५.६१.१७. यथा सारथिस्तथा ३३.४. प्रशस्तरथादियुक्तः सेनेश इव ४.१५.२. यथा शत्रुभिः सह बहुरथादिसेनाङ्गवान् योद्धा युध्यति तथा भा०—महारथिवत् १३.३७. [रथीः-इवपदयोः समासः। रथीः=रथप्राति० मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ वक्तव्यौ' इति वा० सूत्रेण ईकारः]

रथीव बहवो रथा विद्यन्ते यस्य तद्वत् (सारथिः) ५.८३.३. [रथी-इवपदयोः समासः। रथी=रथप्राति० मत्वर्थ ईप्रत्ययः]

रथेचित्रः रथे रमणीये चित्राण्याश्चर्यरूपाणि चिह्नानि यस्य सः (ग्रामणीः) १५.१६. [रथ-चित्रपदयोः समासे सप्तम्या अलुक्]

रथेशुभम् यो रथे शुम्भते तम् (शर्धं=बलम्) ५.५६.९. रमते गच्छति येन तस्मिन् विमानादियाने शोभनम् (शर्धः=बलम्) १.३७.१. [रथे सप्तम्यन्तोपपदे शुभ दीप्तौ (भ्वा०) शुभ शोभार्थे (तुदा०) धातोर्वा इगुपधलक्षणः कर्त्तरि कः। घञर्थे को वा भावे]

रथेष्ठाम् यो रथे तिष्ठति तम् (शिल्पिनम्) ६.२१.१. रथे तिष्ठन्तम् (इन्द्रं=हृद्यं पतिम्) ६.२२.५. **रथेष्ठाः**=यो रथे तिष्ठति सः (युवा=प्राप्तयौवनजनः) २२.२२. ये रथे तिष्ठन्ति ते (वीरजनाः) ६.२९.२. [रथोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। सप्तम्या अलुक्]

रथौजाः रथेनौजो बलं यस्य सः (सूर्य-रश्मिः) १५.१५. [रथ-ओजस्पदयो-समासः]

रथ्यम् रथेभ्यो हितमश्वमिव प्रापकम् (पतिं=जगदीश्वरम्) ७.५.५. रथं वोढुमर्हम् (अग्निम्) ६.७.२. रथाय हितम् (अश्वं=तुरङ्गम्) ६.४६.२. रथस्य वोढारम् (अश्वम्) २७.३८. रथेषु विमानादियानेषु हितम् (रयिं=श्रियम्) ६.४९.१५. **रथ्यस्य**=रथे याने भवस्य (वातस्य=वायोः) ५.४१.३. रथेषु रमणीयेषु साधोः (पुष्टेः) ४.४१.१०. **रथ्यः**=यो रथं वहति सः (सप्तिः=अश्वः) २.३१.७. रथाय हितोऽश्वः ७.२१.३. रथे साधू रथ्यः सारथिः भा०—सुशिक्षितः सारथिः ३४.४९. बहुरथादियुक्तः (मरुतः=प्राणवत्प्रिया जनाः) ५.५४.१३. रथस्य वोढा (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.१२१.१४. [रथप्राति० हितार्थे भवार्थे साध्वर्थे वा यत्। रथप्राति० वा वहत्यर्थे 'तद्वहति-रथयुगप्रासङ्गम्' अ० ४.४.७६. सूत्रेण यत्। रथे योगाय रथ्या नि० १०.३.]

रथ्यः बहुरथवन्तः (अमात्यादिजनाः) ४.१७.२१. रमणीयबहुरथादियुक्ताः (राजपुरुषाः) ४.१९.११ रथेषु साधवः (तुरङ्गाः) १.१४८.३. बहवो रथा विद्यन्ते येषां ते (वीरजनाः) ७.५६.२१. [रथीप्राति० जस्। रथी=रथ-प्राति० मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ वक्तव्या' विति ईकारः प्रत्ययः]

रथ्या यो रथं वहति तेन (चक्रेण) १.५३.९. [रथ-प्राति० वहतीत्यर्थे यत्। ततः 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण टा-स्थाने डादेशः]

रथ्या रथेषु साधू (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७५.५. [रथ्यमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

रथ्यासः रथेषु साधवः (अश्वाः=तुरङ्गाः) ६.३७.३. [रथ्यमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

रथ्येव यथा रथेषु साधू अश्वौ ७.३९.१. यथा रथाय हितावश्वौ २.३९.२. रथेषु साधूनीव (उत्तमस्थानानि) ४.१.३. यथा रथेषु साधूनि (चक्राणि) १.१८०.४. यथा रथाय हितानि (वस्तूनि) २.३९.३ [रथ्या-इवपदयोः समासः। रथ्या=रथ्यप्राति० द्विवचनस्याकारादेशः शेर्लोपो वा छन्दसि]

रथ्येव रथेषु साध्वी गतिरिव ३.३६.६. रथाय हितेव (ध्वनिः) २.४.६. [रथ्या-इवपदयोः समासः। रथ्या=रथ्यमिति व्याख्यातम्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

रद विलिख १.१६९.८. संसेध १.६१.१२. **रदति**=विलिखति १.१६६.६. [रद विलेखने (भ्वा०) धातोर्लोट् अन्यत्र लट्]

रदन्ता सुष्ठु लिखन्तौ (अश्विनौ=राजप्रजाजनौ) १.११७.११. (रद विलेखने (भ्वा०) धातोः शत्रन्ताद् द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

रदन्ती लिखन्ती (उषाः=प्रातर्वेला) ५.८०.३. **रदन्तीः**=भूमिं विलिखन्त्यः (धुनयः=रश्मिगतयः) २.३०.२. [रद विलेखने (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

रदावसो यो रदेषु विलेखनेषु वसति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ७.३२.१८. [रदोपपदे वस निवासे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उः। ततः सम्बुद्धौ रूपम्। संहितायां दीर्घः]

रधम् हिंसेयम् १.५०.१३. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्लङ् अटोऽभावः। व्यत्ययेन शप्]

रध्य संराध्नुहि १०.२८. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्लोट्]

रध्रचोदनम् धनस्य प्राप्तये प्रेरकम् (राजानम्) ६.४४.१०. [रध्र-चोदनपदयोः समासः। रध्रम्=रध हिंसा-संराध्योः (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० रक्। चोदनम्=चुद सञ्चोदने (चुरा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति ल्युट्।

रध्रचोदः यो रध्रान् संरोधकान् चुदति प्रेरयति सः (इन्द्रः=विद्याप्रकाशको जनः) २.२१.४. [रध्रोपपदे चुद सञ्चोदने (चुरा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

रध्रतुरः हिंसकहिंसकः (राजा) ६.१८.४. [रध्रोपपदे तुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः क्विप्। वचनव्यत्ययः]

रध्रम् संराधनम् २.३४.१५. समृद्धिमन्तम् (अदारिद्रयम्) ७.५६.२०. **रध्रस्य**=संराध्नुवतः (यजमानस्य=धनाढ्यजनस्य) २.३०.६. हिंसकस्य (दुर्जनस्य) २.१२.६. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० रक्]

रन् ददमानौ (वसू=अध्यापकोपदेशकौ) प्र०—दन्वदस्य सिद्धिः १.१२०.७. [डुदाञ् दाने (जु०) धातोः शतृ। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। वर्णव्यत्ययेन दस्य रेफः]

रन्त रमन्ते प्र०—अत्र लङि 'बहुलं छन्दसि' इति

शपो लुक् १.६१.११. रमन्ताम् ७.३६.३. **रन्ते**=रमते ७.३६.३. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ् । शपो लुक् । अन्यत्र लोट् लट् च । रन्त=अरमन्त नि० । १२.४३.]

रन्तयः येषु रमन्ते ते (वायवः) ७.१८.१०. **रन्ति**= रमणम् २२.१६. **रन्ते**=हे रमणीये (पत्नि) ८.४३. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोः क्तिच् । 'न क्तिचि दीर्घश्च' अ० ६.४.३६. सूत्रेण दीर्घस्यानुनासिकलोपस्य च निषेधः । क्तिनि वा छान्दसो दीर्घानुनासिकलोपयोर्निषेधः]

रन्धय निवारय ३.५३.१०. ताडय ६.५३.७. हिंसय ६.१६.१२. हिन्धि १.१३२.४. संसाधय पं० वि०, समूलेन विनाशय, मूलसहित नष्ट कर दीजिये आर्याभि० १.१४, **रन्धयत्**=संराध्नोति २.१६.६. **रन्धयस्व**=ताडयस्व ३.३०.१६. **रन्धयः**=हिंसय ६.४३.१. **रन्धि**=नाशय ४.२२.६. **रन्धीः**=संराध्नुहि, प्र०—अत्राडभावः १.१७४.२. हिंस्याः ४.१६.१३. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । 'रधिजभोरचि' अ० ७.१.६१. सूत्रेण नुम् । अन्यत्र लङ् लुङ् लोट् च । रन्धय=रध्यति । नि० ६.३२.]

रन्धयन् हिंसन् (विद्वान् राजा) १.५०.१३. सेनया सामादिभिर्वा हिंसयन् (इन्द्रः=सभासेनाशालान्यायाधीशः) १.५१.६. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ । 'रधिजभोरची' ति नुम्]

रन्धिम् वशीकरणम् ७.१८.१८. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोरौणा० इन्]

रपत् व्यक्तं वदेत् १.१७४.७. [रप व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लेट्]

रपसा पापेन ७.५०.१. अपराधेन ७.५०.२. **रपः**= बाह्येन्द्रियचाञ्चल्यजन्यमपराधम् ३५.११. पापफलमिव रोगाख्यं दुःखम् १२.८४. **रपांसि**=हिंसनानि ६.३१.३. व्यक्तोपदेशप्रकाशकानि शोभनानि वचनानि १.६९.४. पापानि दुःखप्रदानि १.३४.११. [रपः=रपो रिप्रमिति पापनामनी भवतः नि० ४.२१.]

रप्शते विशेषेण राजते ४.४५.१.

रप्शदूधभिः व्यक्तशब्दघनैः २.३४.५. [रप्शत्-ऊधन्-पदयोः समासः । रप्शत्=रप व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः शतृ । शपो शस्य न लोपश्छान्दसत्वात् । ऊधन्= ऊध उद्धततरं भवति उपोन्नद्धमिति वा । स्नेहानुप्रदानासामान्याद् रात्रिरप्यूध उच्यते नि० ६.१६.]

रप्सुदा ये रप्सुं रूपं दत्तस्ते (मही=द्यावापृथिव्यौ) ३३.१६. सुरूपप्रदे (पृथिवीसूर्यौ) ३३.७१. [रप्सूपपदे डुदाञ दाने (जु०) धातोः कः । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

रभध्वम् प्रारम्भं कुरुत ३५.१०. युद्धारम्भं कुरुत १७.३८. **रभन्ते**=प्रवर्त्तयन्ति ३.२६.१३. **रभस्व**= आरम्भं कुरु २७.५. **रभामहे**=आरम्भं कुर्याम ६.५७.५. **रभे**=आरम्भं कुर्वे ४.६. **रभेमहि**=आरम्भं कुर्वीमहि १.५३.४. शत्रुभिस्सह युध्येमहि आरम्भं कुर्याम १.५३.५. [रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्, लिङ् च]

रभसम् वेगम् ६.६१.१. वेगवन्तम् (वायुम्) ११.२३ वेगवन्तम् (अग्निम्) २.१०.४. **रभसः**=वेगम् प्र०—अत्र द्वितीयार्थे प्रथमा २१.३८. **रभसाय**=वेगयुक्ताय (केतवे= विज्ञानाय) १.१६६.१. [रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोः 'अत्यविचमि०' उ० ३.११७. सूत्रेणासच् । व्यचिष्ठमन्नै रभसं दृशानमित्यवकाशवन्तमन्नैरन्नादं दीप्यमानमित्येतत् श० ६.३.३.१६.]

रभः महान् (शिशुः) १.१४५.३. [रभसः=महन्नाम निघं० ३.३. रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

रभसा रोगरहितानि (वपूंषि=रूपवन्ति शरीराणि ३.१.८. [रभसमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

रभसानः वेगवान् (राजा) ६.३.८. [रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० असानच्]

रभसासः वेगवन्तः (क्षुराः=धर्म्यशब्दाः) १.१६६.१०. [रभसमिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

रभसाः वेगयुक्ताः (सुतासः=सुशिक्षिता भृत्याः) १.८२.६. [रभसमिति व्याख्यातम् । ततो जस्]

रभस्वतः कार्यारम्भं कुर्वत आलस्यरहितान् पुरुषार्थिनः (मनुष्यान्) ६.१.६. [रभस्प्राति० मतुबन्तात् द्वितीयाबहुवचनम्]

रभिष्ठाः अतिशयेनाऽऽरब्धारः (मनुष्याः) ५.५८.५. [रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोः तृजन्तादतिशायन इष्ठन् । इष्ठन्-प्रत्यये तृचो लोपः]

रभीयस इव अतिशयेनाऽऽरब्धस्येव २१.४६. [रभीयसः-इवपदयोर्लोपः । रभीयसः=रभ राभस्ये (भ्वा०) +तृच्+ईयसुन्+ङस्]

रभोदाम् रभसो वेगयुक्तबलस्य दातारम् (इन्द्रं= हृद्यं पतिम्) ६.२२.५. [रभस् उपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

रभ्यसः अतिशयेन रभस्विनः सततं प्रौढपुरुषार्थान्

(विदुषो जनान्) प्र०—अत्र रभधातोरसुन् प्रत्ययः ततो मतुप्, तत ईयसुनि 'विन्मतो०' इति मतुब्लोपः 'टेः' इति टिलोपः 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इतीकारलोपः १.१२०.४.]

रम रमस्व प्र०—अत्राऽऽत्मनेपदे व्यत्ययेन परस्मैपदम् ६.७. **रमताम्**=क्रीडतु २२.१९. **रमते**=क्रीडते २.३८.२. **रमध्वम्**=रमणं कुर्वन्तु प्र०—अत्र व्यत्ययः ३.२१. क्रीडध्वम् ३.३३.५. **रमस्व**=क्रीडस्व १३.३५. रमतां रमयतु वा ४.२२. **रमेथाम्**=अ०—अनुतिष्ठत ५.१७. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। अन्यत्र यथा प्राप्तात्मनेपदे लोट्]

रमय क्रीडयाऽऽनन्दय ५.५२.१३. **रम्णातु**=रमयतु प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थो विकरणव्यत्ययश्च ४ २१. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्। अन्यत्र रमतेर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन श्ना]

रम्भिणीव यथाऽऽरम्भिका गृहकार्येषु चतुरा स्त्री १.१६८.३. [रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिन्यन्तान् ङीपि रम्भिणीति रूपम्। 'रभेरशब्लिटोः' अ० ७.१.६३. सूत्रेण नुम्। रम्भिणी-इवपदयोः समासः]

रम्भी आरम्भी (पुरुषार्थी जनः) २.१५.९. [रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः। नुमागमः]

रयिदौ श्रीप्रदौ (सभासेनेशौ) ३.५४.१६. [रयि-इत्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः]

रयिन्तमः अतिशयेन धनाढ्यः (प्रजाजनः) ६.४४.१. [रयिप्राति० अतिशायने तमप्। नुडागमश्छान्दसः]

रयिपतिः धनस्वामी (अग्निः=पावकवद्विद्वज्जनः) २.९.४. धनरक्षकः (सोमः=पदार्थसमूहः) २.४०.६. धनानां पालयिता (अग्निः=भौतिकः) १.६०.४. श्रीशः (वेदविज्जनः) १.७२.१. **रयिपते**=धनस्वामिन् (इन्द्र=राजन्नीश्वर वा) ६.३१.१. [रयि-पति-पदयोः समासः]

रयिभिः चक्रवर्त्तिराज्यक्रियादिभिः १.६४.१०. **रयिम्**=द्रव्यम् २.१५.५. विद्याराज्यश्रियम् १.९२.८. चक्रवर्त्तिराज्यसिद्धं धनम् १.३४.१२. ऐश्वर्यम् १९.६४. विद्यासुवर्णाद्युत्तमं धनम् १.१.३. प्रशस्तद्रव्यसमूहम् १.७९.८. सम्पत्तिम् १५.५६. धर्म-मोक्ष-विद्या-चक्रवर्त्तिराज्याऽऽरोग्यादिस्वरूपं धनम् वे० भा० न० १.१.३. धर्मश्रियम् २०.५८. विद्यादि तथा सुवर्णादि धन को आर्याभि० १.३, ऋ० १.१.१.३. **रयिः**=निधिसमूहः १.७३.१. विद्याश्रीः १८.१०. द्रव्यरूपः (अग्निः=अध्यापकः) २.१.१२. द्रव्यसमूहः १.६६.१. **रयीणाम्**=राज्यश्रियादिधनानाम् १.६८.४. परमोत्तमानां चक्रवर्त्तिराज्यादिधनानाम् ३.१३. वर्त्तमानां पृथिव्यादिकार्यद्रव्याणाम् १.९६.७. विद्याचक्रवर्त्तिराज्योत्पन्नश्रियाम् १०.२०. धनैश्वर्यों के सं० वि० ६,१०.१२१.१०. [रयिः=उदकनाम निघं० १.१२. धननाम निघं० २.१०. रयिरिति धननाम रातेर्दानकर्मणः नि० ४.१७. रयिरिति मनुष्याः (उपासते) श० १०.५२.२०. वीर्यं वै रयिः श० १३.४.२.१३. पुष्टं वै रयिः श० २.३.४.१३. पशवो वै रयिः तै० १.४.४.९. एष वै रयिर्वैश्वानरः श० १०.६.१.५. रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु तै० २.८.१.६.]

रयिमान् प्रशस्ता रययो धनानि विद्यन्ते यस्मिन् सः (अग्निः=भौतिकः पावकः) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् 'रयिरिति धननामसु पठितम्' निघं० २.१०, ३.४०. विद्याविज्ञानधनयुक्तः (अग्निः=उपदेशको विद्वज्जनः) १२.५९. [रयि प्राति० प्रशंसायां मतुप्]

रयिमिव यथोत्तमां श्रियम् १.६०.१. [रयिम्-इवपदयोः समासः]

रयिवतः बहुधनवतः (जनान्) ६.६८.५. **रयिवः**=प्रशस्ता रययो विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (सेनेशः) प्र०—अत्र 'छन्दसीरः' इति मस्य वः १८.७४. बहुधनयुक्त (विद्वन्राजन्) ६.५.७. श्रीमन् (जिज्ञासो) १.१२९.७. [रयिप्राति० मतुप् प्रशंसायामर्थे भूम्न्यर्थे वा। 'छन्दसीरः' इति मतुपो मस्य वकारः। 'रयिवः' प्रयोगे सम्बुद्धौ 'मतुवसो रु सम्बुद्धौ छन्दसि' अ० ८.३.१. सूत्रेण रुत्वम्]

रयिवित् द्रव्यवेत्ता (विद्वज्जनः) ३.७.३. पदार्थविद्यायुक्तः (अलंविद्यो जनः) २.१.३. [रयि इत्युपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः क्विप्]

रयिवृधः ये रयिं वर्धयन्ति ते (स्वपत्यानि=सुसन्तानाः) २७.२३. [रयि इत्युपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

रयिषाचः ये रयिणा सह समवयन्ति ते (मनुष्याः) १.१८०.९. [रयि इत्युपपदे षच समवाये (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

रयिषाट् यो रयिं द्रव्यं सहते सः (देवः=जीवात्मा) १.५८.३. ['रयि' इत्युपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' इति ण्विः]

रयिस्थानः रायस्तिष्ठन्ति यस्मिन् सः (इन्द्रः=सेनेशः) ६.४७.६. [रयि-स्थानपदयोः समासः। स्थानम्=ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

रयीयन् आत्मनो रयिमिच्छन् (राजा) ३.६२.२. [रयिशब्दाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ]

रय्या धनेन १२.१०. विद्याश्रिया १२.७. प्राश्रीपिकया (धारया=संस्कृतया वाचा) १२.४१. **रय्यै**=लक्ष्म्यै १४.२२. श्रियै ९.२२. [रयिप्राति० तृतीया । अन्यत्र चतुर्थी]

ररक्ष रक्षेत् १.१४७.३. पालय ४.४.१३. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

ररते राति ददाति ५.७७.४. **रराथाम्**=दद्यातम् प्र०—अत्र रा-धातोर्लोटि 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च १.११७.२३. **रराथे**=रातम् ६.७२.५. **ररिम**=दद्याम ३.३५.१. रमेमहि २.५.७. दद्मः प्र०—अत्र रा दाने लिट् १८.७५. **ररिषे**=प्रयच्छसि २.१.५. **ररीथाः**=दद्याः ६.४४.११. **ररीध्वम्**=दत्त ५.८३.६. **ररे**=दद्याम् ७.३९.६. ददामि ७.५९.५. [रा दाने (अदा०) धातोर्लेट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः । व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च । अन्यत्र लिट्]

ररप्शे अतिरिणक्ति ६.१८.१२. स्तूयते प्र०—अत्र रभ-धातोर्लिटि सस्य शः ४.२०.५. [रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्लिटि थास् । तस्य स्थाने 'से' इत्यादेशः । तस्य सस्य शकारो वर्णव्यत्ययेन । 'अत एकहल्मध्ये०' इत्येत्वमभ्यासलोपश्च छान्दसत्वान्न भवति]

रराटम् परिभाषितं जगत् ५.२१. **रराटे**=ललाटे २४.१.]

रराणता रममाणेन मनसा १.१७१.१]

रराणः विद्या ददत् सन् (देवः=विद्वज्जनः) ७.२.९. रममाणः (विद्वान् जनः) ३.४.९. दाता (वैद्यः) ५.४१.८. ददन् (इन्द्रः=ऐश्वर्यधर्त्ता सज्जनः) ६.२३.७. दाता सन् (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.१.२२. भृशं दाता (अग्निः=विद्वान्) ४.२.१०. **रराणाः**=ददमानाः (ऋभवः=मेधाविजनाः) ४.३६.८. [रा दाने (अदा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः । लिटः कानज्वा । रराणः रातिरभ्यस्तः नि० २.१२.]

रराणा दातारौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.१७७.२४. [रा दाने (अदा०)+लिटः कानच् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

रराणा सुष्ठु-दात्री (सुलक्षणा विदुषी स्त्री) २.३२.५. ['रराणा' इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

ररद विलिखति वर्षयति ७.४९.१. [रद विलेखने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

ररिवान् दाता (विद्वान् पुरुषः) १.१३८.४. [रा दाने (अदा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

रवथः महाशब्दकारी (वज्रः=शस्त्राऽस्त्रसमूहः) १.१००.१३. [रु शब्दे (अदा०) धातोः 'शीङ् शपिरुगमि०' उ० ३.११३. सूत्रेण अथः प्रत्ययः]

रवम् शब्दम् ३.३१.६. **रवः**=ध्वनिः १.९४.१०. **रवेण**=विद्युतः शब्देन १.६२.४. स्तुतिसमूहेन १.७१.२. [रु शब्दे (अदा०) धातोः 'ऋदोरब्' इत्यप्]

रशनया रश्मिना २१.४६. **रशना**=व्याप्नुवती (रज्जुः) २५.३७. व्यापिका (रज्जुः) १.१६२.८. **रशनाम्**=स्नेहिकां क्रियाम् १.१६३.२. रशनावत् किरणगतिम् २९.१३. अङ्गुलिम् २८.३३. व्यापिकां रज्जुमिव २२.२. **रशनाः**=रज्जवः २९.१६. आस्वादनीयाः (गोपः=रक्षका जनाः) १.१६३.५. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अशेरश् च' उ० २.७५. सूत्रेण युच् धातोरशादेशश्च । स्त्रियां टाप्। रशनाः अङ्गुलिनाम निघं० २.५. ऊर्ग् वै रशना तै० सं० ६.३.४.५. ओषधयो रशना काठ० ३४.१५.]

रश्मयः रज्जवः किरणा वा २९.४२. **रश्मये**=शोधनाय ३८.६. **रश्मिना**=किरणसमूहेन १५.६. **रश्मिभिः**=प्रकाशकैर्गुणैः किरणैर्वा १.३१. अन्तःप्रकाशकैर्गुणैः १.३१. प्रकाशैर्गमनागमनैः ४.४. सूर्यकिरणैः सह १.१९.८. **रश्मिम्**=प्रकाशम् ५.७.३. सूर्यप्रकाशम् ४.२२.८. **रश्मिः**=येनाऽश्नाति सः (व्यवहारः) प्र०—अत्र 'अश भोजने' धातोर्बाहुलकान् मिः प्रत्ययो रशादेशश्च उ० ४.४६, १८.१९. किरणो दीप्तिः ३३.७४. प्रकाशकः प्रकाशमयो वा (सूर्यः=जगदीश्वरो विद्वान् जीवो वा) २.४६. ज्योतिः १.३५.७. **रश्मीन्**=विद्याविज्ञानतेजांसि १.१०९.३. अश्वनियमनार्था रज्जूः १०.२२. **रश्मे**=रश्मिवद्वर्त्तमान (विद्वज्जन) ५.६९.५. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अश्नोतेरश् च' उ० ४.४६. सूत्रेण मिः प्रत्ययो रशादेशश्च । अश भोजने (क्र्या०) धातोर्वा बाहु० औणा० मिः रशादेशश्च । रश्मयः रश्मिनाम निघं० १.५. रश्मिः=यमनात् नि० २.१५. अथ यः कपाले रसो लिप्त आसीत्ते रश्मयोऽभवन् श० ६.१.२.३. युक्ता ह्यस्य (इन्द्रस्य) हरयः शता दशेति । सहस्रं हैत आदित्यस्य रश्मयः जै० उ० १.४४.५. अभीशवो वै रश्मयः श० ५.४.३.१४. रश्मयो ह्यस्य (सूर्यस्य) विश्वे देवाः श० ३.९.२.६. तस्य (सूर्यस्य)

ये रश्मयस्ते विश्वे देवा: श० ४.३.१.२६. एते वै विश्वे देवा रश्मय: श० २.३.१.७. एते वै रश्मयो विश्वे देवा: श० १२.४.४.६. तस्य (सूर्यस्य) ये रश्मयस्ते सुकृत: श० १.६.३.१०. रश्मय एव हिंकार: जै० उ० १.३३.६. रश्मयो वाव होत्रा: गो० उ० ६.६. रश्मयो वै दिवाकीर्त्यानि (सामानि) तै० १.२.४.२. रश्मयो वा एत आदित्यस्य यद् दिवाकीर्त्यानि तां० ४.६.१३. तस्य (सूर्यस्य) ये रश्मयस्ते ते देवा मरीचिपा: श० ४.१.१.१५. मासा वै रश्मयो मरुतो रश्मय: तां० १४.१२.६. ये ते मारुता: (पुरोडाशा:) रश्मयस्ते श० ६.३.१.२५. अन्नं रश्मि: श० ८.५.३.३. प्राणा रश्मय: तै० ३.२.५.२. एते वा ऽउत्पवितारो यत् सूर्यस्य रश्मय: श० १.१.३.६. एते वै पवितारो यत्सूर्यस्य रश्मय: श० ३.१.३.२२. तद् यदेकैकस्य रश्मेर्द्वौ द्वौ वर्णौ भवत: गो० उ० ६.६. (सविता) रश्मिभिर्वर्षं (समदधात्) गो० पू० १.३६.]

रश्मीरिव यथा किरणान् तथा १.१४१.११. [रश्मी:-इवपदयो: समास:]

रश्मीवतीम् प्रशस्तविद्याप्रकाशयुक्ताम् (स्त्रीम्) १५.६३. [रश्मिप्राति०प्रशंसायामर्थे मतुबन्तान् ङीप्]

रश्मेव किरणवद् रज्जुवद् वा ६.६७.१. [रश्मा-इवपदयो: समास: । रश्मा=रश्मिप्राति० 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण डादेश:]

रसम् आनन्दम् १६.८३. विद्याऽऽनन्दम् १६.७६. सारभूतम् १६.७५. सारम् ६.३. विद्यौषधिफलम् १.७१.५. स्वादिष्ठमोषध्यादिभ्यो निष्पन्नं सारम् १.१०५.२. **रसस्य**=भुक्ताऽन्नत उत्पन्नस्य शरीरवर्द्धकस्य १.३७.५. **रस:**=सर्वद्रव्यसार: १८.६. आनन्दवर्धक: स्नेहरूप: (भा०—होमादिना शुद्धजलम्) ३६.१५. दुग्ध-घृतादि: ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.१०. मधुरादि: ३६.४. वीर्यं धातु: ६.३. **रसात्**=जिह्वाविषयात् ३१.१७. **रसानाम्**=मधुरादीनाम् १.१८७.५. **रसाय**=रसभूताय विज्ञानानन्दप्रापणाय २.३१. **रसा:**=स्वाद्वन्नानि षड्विधा: १.१८७.४. **रसेन**=स्वाभाविकेन रसगुणेन सह १.२३.२३. सारेणाऽऽर्द्रेणाऽऽनन्दकारकेण १.२१. [रस:=वाङ्नाम निघं० १.११. उदकनाम निघं० १.१२. अन्ननाम निघं० २.७. रस आस्वादनस्नेहनयो: (चुरा०) धातोरच् । घञर्थे को वा । रसो वै मधु श० ६.४.३.२. अपो देवा मधुमतीरगृभ्णन्नित्यपो देवा रसवतीरगृह्णन्नित्येवैतदाह (मधु=रस:) श० ५.३.४.३. स्वधायै त्वेति रसाय त्वेत्येवैतदाह (स्वधा=रस:) श० ५.४.३.७. रसो वा ऽआप: श० ३.३.३.१८.]

रसवत् बहुरसयुक्तम् (पय:=दुग्धम्) ५.४४.१३. [रसप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

रसवान् महौषधिप्रशस्तरसप्रचुर: (ओषधिसार:) ६.४७.१. [रसप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुप्]

रसा रसाऽऽनन्दप्रदा जना: प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति डादेश: ३३.२१. [रसप्राति० जस: स्थाने डादेशश्छान्दस:]

रसा रसादिगुणयुक्ता (मही=वाग् भूमिर्वा) ५.४१.१५. पृथिवी ५.५३.६. **रसाम्**=प्रशस्तं रसं जलं विद्यते यस्यां ताम् (नदीम्) प्र०—रस इत्युदकनाम निघं० १.१२. अर्शादित्वान्मत्वर्थीयोऽच्प्रत्यय: १.११२.१२. [रसप्राति० मत्वर्थेऽर्शादित्वादच् । तत: स्त्रियां टाप् । रसा-नदी रसते: शब्दकर्मण: नि० ११.२५.]

रसाशिर: यो रसानश्नाति स: (सूर्य:) ३.४८.१. [रसोपपदे अश भोजने (क्र्या०) धातो: 'अशेर्नित्' उ० १.५२. सूत्रेण किरच्]

रसिन: प्रशस्तो रसो विद्यते यस्मिँस्तस्य (पदार्थस्य) १६.३५. [रसप्राति० प्रशंसायामर्थे इनि:]

रहसूरिव या रह एकान्ते सूते सा (जननी) २.२६.१. [रहसू:-इवपदयो: समास: । रहसू:=रहस्-उपपदे षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातो: क्विप् । पूर्वपदस्य सकारस्य लोपश्छान्दस:]

रहूगणा: रहवोऽधर्मत्यागिनो गणा: सेविता यैस्ते (विद्वांसो जना:) १.७८.५. [रहु-गणपदयो: समास: । पूर्वपदस्य दीर्घ: संहितायाम् । रहु:=रह त्यागे (भ्वा०) धातोर् उ:]

रंसु रमणीयम् (अभ्वम्=उदकम्) २.४.५. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० सु: प्रत्यय: । रमु धातोर्वा विच् । ततो रम्प्राति० सप्तमी । रंसु रमणीयेषु नि० ६.१७.]

रंसुजिह्व: रमणीयवाक् (अग्नि:=राजा) ४.१.८. [रंसु-जिह्वपदयो: समास:]

रँहमाण: गच्छन् (भौतिकोऽग्नि:) २२.१८. [रहि गतौ (भ्वा०) धातो: शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

रंहयन्त: गमयन्त: (मरुत:=वायव:) १.८५.५. [रहि गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

रंह्य: गमयितुं योग्य: (रथ:) २.१८.१. [रहि गतौ

(भ्वा०) धातोर्ण्यत्]

रंह्या गमनीयानि (उत्तमस्थानानि) ४.१.३. [रहि गतौ (भ्वा०) धातोर्ण्यत् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

रंह्यै गत्यै अ०—युद्धभूमिषु गत्यै यथार्थतया युद्धकर्मणि प्रवृत्त्यै ६.१८. [रहि गतौ (भ्वा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' इति वा० सूत्रेण इक् । ततश्चतुर्थी । रंहिः=गतिः नि० १०.२६.]

राका राति ददाति सुखं या सा (सरस्वती=वाक्) प्र०—राकेति पदनाम निघं० ५.५, ५.४२.१२. पौर्णमासीवद्वर्त्तमाना (विदुषी स्त्री) २.३२.८. **राकाम्**=पूर्णप्रकाशयुक्तेन चन्द्रेण युक्तां रात्रीम् २.३२.४. **राके**=सुखप्रदे रात्रिरिव (विदुषि स्त्रि) २.३२.५. [रा दाने (अदा०) धातोः 'कृदाधारार्चिकलिभ्यः कः' उ० ३.४०. सूत्रेण कः । ततः स्त्रियां टाप् । राका पदनाम निघं० ५.५. अनुमती राकेति देवपत्न्याविति नैरुक्ताः, पौर्णमास्याविति याज्ञिकाः, या पूर्वा पौर्णमासी साऽनुमतिर्योत्तरा सा राकेति विज्ञायते नि० ११.३०. राका रातेर्दानकर्मणः नि० ११.३०. योत्तरा (पौर्णमासी) सा राका ऐ० ७.११. ष० ४.६. गो० उ० १.१०. योषाः सा राका ऐ० ३.४८. या राका सा त्रिष्टुप् ऐ० ३.४७.]

राजति प्रकाशते १.१४३.४. प्रकाशयति प्र०—अत्राऽन्तर्भावितो ण्यर्थः १.३.१२. **राजथः**=प्रकाशेते ५.३८.३. प्रकाशेथे ५.६३.२. **राजसि**=प्रकाशयसि १.१४४.६. प्रकाशसे १.१८८.१. **राजामि**=प्रकाशे ४.४२.२. [राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लट् । राजति ऐश्वर्यकर्मा निघं० २.२१.]

राजन् प्रकाशमान (राजपुरुष) १२.६६. सभापते ६.२२. विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमान (नृप) ६.४६.६. सत्यप्रकाशक (राजपुरुष) २.२७.१७. सर्वाधिपते (परमेश्वर विद्वन् वा) १.६१.४. सब ओर से प्रकाशयुक्त (संन्यासिन्) सं० वि० १६५, ६.११३.४. **राजनि**=राजसभायाम् १.१०८.७. **राजभ्यः**=न्यायप्रकाशकेभ्यः सभासद्भ्यः २.२७.१२. न्यायाधीशेभ्यः १.१३६.७. नृपेभ्यः ३४.५४. **राजसु**=क्षत्रियेषु राजपुत्रेषु १८.४८. राजाओं में स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. **राजा**=यो राजते प्रकाशते सः (वरुणः=जलसमूहः सूर्यलोको वा) प्र०—अत्र 'कनिन्युवृषितक्षि०' उ० १.१५६. अनेन कनिन्प्रत्ययः १.२४.७. शरीरात्ममनोभिस्तेजस्वी (नृपः) २.१.४. सर्वत्र विद्याधर्मसुशिक्षाप्रकाशकः (अधिष्ठाता) १०.१८. प्रशस्तगुणकर्मस्वभावैः प्रकाशमानः (सभेश्वरो गृहपतिर्वा) ८.२३. सर्वप्रकाशकः (जगदीश्वरः) ४.५०.७. अधिष्ठाता (परमात्मा) २३.३. सर्वाध्यक्षो विद्याध्यक्षो रोगनाशकगुणप्रकाशको वा (परमेश्वर ओषधिराजो वा) १.६१.५. न्यायविनयाभ्यां प्रकाशमानः (परमात्मा) ७.४६.४. सर्वेषां न्यायकर्त्ता (परमेश्वरः) ६.१५.१३. देदीप्यमानः (प्रेरको जनः) १६.७२. प्रकाशमानो राजन्यः १२.६८. न्यायविनयाभ्यां राजमानः (नृपः) १.१७४.१. विराजमान (ईश्वर) सं० वि० ५, २३.३. न्यायाधीशः सर्वाधिपतिरीश्वरः प्रकाशमानो विद्युदग्निः १.६८.१. **राजानम्**=राजानमिव सूर्यम ६.८.४. प्राणं जीवं वा १.२३.१४. **राजानः**=क्षात्रधर्मयुक्ता वीराः १२.८०. **राजानौ**=प्रकाशमानौ सूर्याचन्द्रमसाविव सभासेनेशौ ६.६२.६. **राज्ञः**=सर्वस्य जगतोऽधिपतेर्विद्याप्रकाशवतो वा (परमेश्वरस्य विदुषो वा) १.६१.३. **राज्ञा**=प्रधानेन १२.६६. **राज्ञाम्**=धार्मिकाणां राजाधिराजानां मध्ये २७.५. **राज्ञे**=न्यायविनयविद्यागुणैर्देदीप्यमानाय (राजपुरुषाय) १.५३.१०. [राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'कनिन् युवृषितक्षि०' उ० १.१५६. सूत्रेण कनिन् । राजा राजतेः नि० २.३. स राजसूयेनेष्ट्वा राजेति नामाधत्त गो० पू० ५.८. राजा वै राजसूयेनेष्ट्वा भवति श० ५.१.१.१२. राज्ञ एव राजसूयम् श० ५.१.१.१२. यो वै राजा ब्राह्मणादबलीयानमित्रेभ्यो वै स बलीयान् भवति श० ५.४.४.१५. तस्माद्राजा बाहुबली भावुकः श० १३.२.२.५. तस्माद् राजोरुबली भावुकः श० १३.२.२.८. राजानो वै राष्ट्रभृतस्ते हि राष्ट्राणि बिभ्रति श० ९.४.१.१. नाऽराजकस्य युद्धमस्ति तै० १.५.९.१. तद् यथा महाराजः पुरस्तात् सेनानीकानि प्रत्युह्याभयं पन्थानमन्वियात् कौ० ५.५. राजा महिमा तै० ३.९.१०.१. श० १३.२.११.२. तस्माद् राजा दण्डचः श० ५.४.४.७. एतद्ध वै सजनं यद् राजा जै० २.१८३. यद् राजा करोति तद् विट् करोति मै० १.१०.१३.]

राजन्तम् प्रकाशमानम् (जगदीश्वरं भौतिकमग्निं वा) ३.२३. [राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ]

राजन्ती प्रकाशमाने (रोदसी=सूर्यभूमी) ६.७०.२. [राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः]

राजन्यः राजपुत्रः वीरः २२.२२. क्षत्रिय (राजपुत्र) स० प्र० ११४, ३१.११. भा०—योऽधिकवीर्यो बाहुवत् कार्यसाधकः स क्षत्रियः ३१.११. [राजन्प्राति० 'राजश्व-

सुराद्यत्' अ० ४.१.१३७. सूत्रेणापत्ये यत् । 'राज्ञोऽपत्ये जातिग्रहणम्' अ० ४.१.१३७. वा०सूत्रेण जातौ यत् । 'राजेरन्यः' उ० ३.१००. सूत्रेणान्यः प्रत्ययो वा । चतुरक्षरः प्रजापतिश्चतुरक्षरो राजन्यः श० ५.१.५.१४. तस्माद् बाहुवीर्यों (राजन्यः) बाहुभ्यां हि सृष्टः तां० ६.१.८. क्षत्रं राजन्यः ऐ० ८.६. श० १३.१.५.३. क्षत्रस्य वा ऽएतद्रूपं यद्राजन्यः श० १३.१.५.३. ओजः क्षत्रं वीर्यं राजन्यः । ऐ० ८.२. वृषा वै राजन्यः तां० ६.१०.९. युद्धं वै राजन्यस्य वीर्यम् श० १३.१.५.६. युद्धं वै राजन्यस्य तै० ३.९.१४.४. तस्माद् राजन्यस्य पञ्चदश स्तोमस्त्रिष्टुप् छन्द इन्द्रो देवता ग्रीष्म ऋतुः तां० ६.१.८. त्रिष्टुप् छन्दा वै राजन्यः तै० १.१.९.६. आनुष्टुभो राजन्यः तै० १.८.८.२. तां० १८.८.१४. ऐन्द्रो वै राजन्यः तै० ३.८.२३.२. ऐन्द्रो राजन्यः तां० १५.४.८. औदुम्बरेण राजन्य अभिषिञ्चति तै० १.७.८.७. पार्थरश्म राजन्याय ब्रह्मसाम कुर्वीत तां० १३.४.१८. तस्मादपि (दीक्षितं) राजन्यं वा वैश्यं वा ब्राह्मण इत्येव ब्रूयात् ब्रह्मणो हि जायते यो यज्ञाज् जायते श० ३.२.१.४०.]

राजपुत्रा राजा पुत्रो यस्याः सा (अदितिः=मातेव) २.२७.७. [राजन्-पुत्रपदयोः समासः]

राजयातै प्रकाशमान हो सं० वि० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. [राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लेट्]

राजस्वः राजवीरप्रसविकाः (अध्यापिकाः परिचारिका अध्येत्र्यश्च स्त्रियः) १०.६. राजजनिकाः (अपः=जलानि प्राणान् वा) १०.१. [राजसूप्राति० प्रथमाबहुवचनम् । राजसूः=राजोपपदे षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

राजाना देदीप्यमानावध्यापकोपदेशकौ २.३६.६. प्रकाशमानौ सभासेनेशौ १.१३६.४. विद्यादिशुभगुणैः प्रकाशमानौ राजप्रजाजनौ ३.३८.६. राजमानौ (सभासेनेशौ, राजामात्यौ) ५.६२.९. [राजन्प्राति० द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

राजासन्द्यै राजानः सीदन्ति यस्यां तस्यै (वेद्यै=यज्ञस्थल्यै) १९.१६. [राजासन्दीप्राति० चतुर्थी । राजासन्दी=राजन्-आसन्दीपदयोः समासः]

राजेव यथा सभाध्यक्षः १.६७.१. प्रकाशमानो नृप इव ६.४.४. [राजा-इवपदयोः समासः]

राज्ञी राजमाना (स्त्री) १४.१३. राजमाना प्रधाना भा०—उत्तमा (स्त्री) १५.१०. [राजन्प्राति० स्त्रियां ङीप्]

राट् यो राजते सः (राजा) १.१२१.३. या राजते सा (नीतिः) १८.२८. प्रकाशमाना (स्त्री) १४.२२. राजमाना (स्त्री) १४.२१. [राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुह०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्]

राततमा अतिशयेन दातव्यानि (ब्रह्माणि धनानि अन्नानि वा) १.६१.१. [राततमप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि । राततमः=रा दाने (अदा०)+क्त+अतिशायने तमप्]

रातम् दत्तम् (औषधम्) २५.३४. [रा दाने (अदा०) धातोः क्तः]

रातहविषे दत्तदातव्याय (जनाय=सत्पुरुषाय) २.३४.८. [रात-हविष्पदयोः समासः]

रातहव्यस्य दत्तदातव्यस्य (विदुषो जनस्य) ५.६६.३.

रातहव्यः=प्रदत्तहविः (राजा) १.११८.११. रातानि दत्तानि हव्यानि येन सः (सत्पतिः=सभाध्यक्षो जनः) १.५४.७. रातं गृहीतुं योग्यं हव्यं दत्तं येन सः (अग्निः=विद्युत्) ४.७.७. [रात-हव्यपदयोः समासः । रातम्=रा दाने (अदा०) धातोः क्तः । हव्यम्=हु दानादानयोः (जु०) धातोर्यत्]

रातहव्या रातं दत्तं हव्यं गृहीतुं योग्यं वस्तु याभ्यां तौ (इन्द्रावरुणा=विद्युज्जले) ७.३५.१. दातव्यदानौ (इन्द्राविष्णू=वायुसूर्यौ) ६.६९.६. रातं दत्तं हव्यमादातव्यं सुखं याभ्यान्ते (इन्द्रावरुणा=विद्युज्जले) ३६.११. [रातहव्यमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

रातहव्याम् रातानि हव्यानि दातव्यानि दानानि यया ताम् (महीं=वाचम्) ५.४३.६. [रात-हव्यपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

राता दत्तानि (हवींषि=अन्नादीनि) ३.३५.७. [रातप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि । रातम्=रा दाने (अदा०)+क्तः]

रातानि दत्तानि (ऐश्वर्याणि) १.१३१.१. [रातप्राति० नपुं० प्रथमाबहुवचनम्]

रातिनी बहवो राता दातारो विद्यन्ते यस्याः सा (घृताची=रात्रिः) ४.६.३. **रातिनीम्**=रातानि दत्तानि विद्यन्ते यस्यां ताम् (घृताचीं=रात्रिम्) ३.१९.२. [रातप्राति० भूम्न्यर्थ इनिः । ततः स्त्रियां ङीप् । रातम्=रा दाने (अदा०) धातोः क्तः]

रातिम् दातारम् (वह्निम्) १.६०.१. विद्यादान-

क्रियाम् २.१.१६. धनम् १.१६९.४. **रातौ**=सुपात्रेभ्यो दाने ७.१.२५. [रा दाने [अदा०) धातोः स्त्रियां 'मन्त्रे वृषेषपच०' अ० ३.३.९६ सूत्रेण क्तिन्, स चोदात्तः। रातिः=दत्तिः। नि० १२.१०. इहैव रातयः सन्त्वितीहैव नो धनानि सन्त्वित्येवैतदाह (रातयः=धनानि) श० १४.२.२.२६.]

रातिः विद्यादानम् प्र०—अत्र 'मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः' अ० ३.३.९६ अनेन भावे क्तिन् स चाऽन्तोदात्तः १.८९.२. दानक्रिया ३.३०.७. विद्यादिदानम् २५.१५. दत्तिः १.११७.१. सर्वेभ्यः सुखदायकः (गृहपतिः=गृहस्थो जनः) ८.१७. या रातिं ददाति सा (स्त्री) १.१२२.७. वेगादीनां दानम् १.३४.१.

रातिषाचम् दानसम्वन्धिनम् (वाजं=विज्ञानम्) ७.३६.८. **रातिषाचः**=ये रातिं षचन्ते सम्बध्नन्ति ते (विद्वांसो राजपुरुषाः) ७.३४.२२. या रातिं दानं सचन्ते ताः (आपः=जलानि) ७.३४.२३. ये रातिं विद्यादिदानं सचन्ते ते (राजानः) ७.३५.११. दानकर्त्तारः (आप्ता जनाः) ७.४०.६. दानं सेवमानाः (विद्यार्थिजनाः) २.१.१३. दानस्य दातुः (विद्वज्जनस्य) ७ ३८.५. [राति इत्युपपदे षच समवाये (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

रात्रि रात्रिः प्र०—अत्र लिङ्ग-व्यत्ययः ३४.३२. [रा दाने (अदा०) धातोः 'राशदिभ्यां त्रिप्' उ० ४.६७. सूत्रेण त्रिप्। लिङ्गव्यत्ययेन नपुंसकम्]

रात्रिः रात्रिम् प्र०—अत्र विभक्तिव्यत्ययः ३८.१६ रात्रिवद्वर्त्तमानः प्रलयः २३.५४. [रात्रिरिति व्याख्यातम्]

रात्री या प्रलयाऽनन्तरं भवति सा पं० वि०। रात्रीवत् ३३.३७. **रात्रीम्**=रजनीम् १५.६. **रात्रीः**=रात्रयः ३६.११. रात्रियों को आर्याभि० २.२३, ३६.११. **रात्र्या**=रात्रिविद्यया १५.६. तमोरूपया ३.१०. [रात्रिप्राति० स्त्रियां 'रात्रेश्चाजसौ' अ० ४.१.३१. सूत्रेण ङीप्। रात्रिः प्ररमयति भूतानि नक्तञ्चारीण्युपरमयतीतराणि ध्रुवीकरोति दातेर्वा स्याद् दानकर्मणः प्रदीयन्तेऽस्यामवश्यायाः नि० २.१८. अन्धो रात्रिः तां० ९.१.७. तमः पाप्मा रात्रिः कौ० १७.६.९. गो० उ० ५.३. तम इव हि रात्रिर्मृत्युरिव ऐ० ४.५. मृत्योस्तम इव हि रात्रिः गो० उ० ५.१. रात्रिर्वरुणः ऐ० ४.१०. तां० २५.१०.१०. वारुणी रात्रिः तै० १.७.१०.१. सगरा रात्रिः श० १.७.२.२६. अहर्वै शवलो रात्रिः श्यामः कौ० २.९. रात्रिरेव श्रीः श० १०.२.६.१६. रात्रिर्वै व्युष्टिः श० १३.२.१.६. रात्रिः सावित्री गो० पू० १.३३. रात्रिव कृष्णा शुक्लवत्सा तस्या असावादित्यो वत्सः श० ९.२.३.३०. रात्रिर्वात्सप्रम् (सूक्तम्) श० ६.७.४.१२. अहोरात्रे वात्सप्रम् (सूक्तम्) श० ६.७.४.१०. रात्रिर्वै पिशङ्गिला तै० ३.९.५.३. रात्रयः क्षपाः ऐ० १.१३. रात्रिर्वै संयच्छन्दः श० ८.५.२.५. रजता (कुशी) रात्रिः (अभवत्) तै० १.५.१०.७. अथ यदस्तमेति (आदित्यः) एतामेव तद्रजतां कुशीमनुसंविशति (रजता कुशीरात्रिः) तै० १.५.१०.७. एतत् (रजतं) रात्रिरूपम् ऐ० ७.१२. सोमो रात्रिः श० ३.४४.१५. क्षेमो रात्रिः श० १३.१.४.३. ब्रह्मणो वै रूपमहः क्षत्रस्य रात्रिः तै० ३.९.१४.३. यजमानदैवत्यं वा अहः। भ्रातृव्यदैवत्या रात्रिः तै० २.२.६.४. आग्नेयी वै रात्रिः तै० १.१.४.२. आग्नेयी रात्रिः तै० १.५.३.४ राथन्तरी वै रात्री ऐ० ५.३०. पञ्चच्छन्दांसि रात्रौ शंसत्यनुष्टुभं गायत्रीमुष्णिहं त्रिष्टुभं जगतीमित्येतानि वै रात्रिच्छन्दांसि कौ० ३०.११. एषा वा अग्निंष्टोमस्य सम्मायद् रात्रिः द्वादशस्तोत्राण्यग्निष्टोमो द्वादशस्तोत्राणि रात्रिः तां० ९.१.२३. एषा वा उक्थस्य सम्मायद् रात्रिः तां० ९.१.२५-२६.

राथ्यः रथेषु हिता रथ्यास्तासु कुशलः (वृषा=अश्वः) २३.१३. [रथ्यप्राति० कुशलार्थेऽण्। रथ्यः=रथप्राति० हितार्थे यत्]

राथ्येभिः रथवाहकैः (अश्वैः) प्र०— अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते' इत्याद्यचो दीर्घः १.१५७.६. [रथप्राति० वहत्यर्थे 'तद् वहति रथयुगप्रासङ्गम्' इति यत्। दीर्घश्छान्दसः भिस ऐस् न भवति]

राधत् राध्नुयात् १.१२०.१. **राधसि**=संसाध्नोसि ४.३२.२१. **राधाम**=साध्नुयाम प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययः १.४१.७. **राध्नुहि**=सम्यक् सिद्धो भव २२.४. **राध्य**=संराध्नुहि १०.२८. [राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन शप्। अन्यत्र लट् लोट्, लिङ् च। राध्य-प्रयोगे श्यन्]

राधसः पृथिव्यादिधनात् प्र० —अत्र 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' इत्यसुन्प्रत्ययः १.१५.५. विद्यासुवर्ण-चक्रवर्त्तिराज्यादिधनस्य १.२२.७. राध्नुवन्ति सम्यङ् निर्वर्त्तयन्ति सुखानि येभ्यः साधनेभ्यस्तानि धनानि ३.१३. शरीरात्मबलवर्धकस्य (रायः=विद्याधनस्य) ७.२९.५. सुसमृद्धिकरस्य (रायः=धनस्य) ७.३०.५. धनाऽन्नस्य ४.२०.७. वृद्धिकारकस्य

कार्यरूपस्य धनस्य प्र०—अत्र शेषत्वात्कर्मणि षष्ठी १.८१.६ समृद्धस्य (रायः=धनस्य) ७.२८.५. **राधसा**=राध्नुवन्ति संसिद्धिं प्राप्नुवन्ति येन तेन (चन्द्रेण=सुवर्णेन) १.१३५.४. **राधसे**=राध्नुवन्ति संसेधयन्ति सुखानि येन तस्मै धनाय १.१७.७. संसिद्धिकराय धनाय ३.४१.६. संसिद्धाय धनाय १.८१.८. धनैश्वर्याय ४.२४.१. **राधः**=द्रव्यम् ५.३९ १. राध्नुवन्ति सुखानि येन तद् विद्यासुवर्णादिधनम् १.१०.७. संसिद्धिकरं धनम् १.१२१.५. विद्या-राज्यसिद्धं धनम् १.५७.१. सुखसाधनं धनम् १५.३४. **राधांसि**=समृद्धिकराणि धनानि ७.१५.११. **राधोभिः**=धनैः ६.६०.३. [राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोरौणा० असुन् । राधः=धननाम निघं० २.१०. राधसा धनेन नि० ११.२४.]

राधसो राधसः धनस्य धनस्य ६.२७.३. [राधसः पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

राधोगूर्त्ताः धनवर्द्धिन्य एव (पत्नीः=विद्वत्स्त्रियः) ६.३४. [राधस्-गूर्त्तपदयोः समासः । गूर्त्ता=प्राति० स्त्रियां टाप् । गूर्त्तः=गुर्वी उद्यमने (भ्वा०) धातोः क्तः]

राधोदेयाय धनं दातुं योग्याय व्यवहाराय ४.५१.३. [राधस्-देयपदयोः समासः । देयम् दा+यत्]

राध्यताम् संसेध्यताम् १.५. सम्यक् सिद्धं क्रियताम् ऋ० भू० ९९, १.५. सम्यक् सिद्ध करें आर्याभि० २.४७, १.५. [राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः कर्मणि लोट्]

राध्यम् राद्धुं संसाद्धुं योग्यम् (कर्म्म) १.११६.११. [राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्ण्यत्]

राध्यः संशोधितुं योग्यः (यज्ञः=ब्रह्मचर्याख्यः) १.१५६.१. [राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्ण्यत्]

राध्या सुखानि साधयितुमर्हाणि (वस्तूनि) २.२४.१०. [राध्यमिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

राध्यानि संसाधनीयानि (द्रव्याणि) ४.११.३. [राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्ण्यत् । ततः प्रथमाबहु० रूपम्]

राध्यासम् संसाधयेयम् ३७.३. सम्यक् सिद्धो भवेयम् २२.४. [राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्लिङ्]

रान्द्रचा रान्द्रचाणि रन्तुं योग्यानि (आचरणानि) ६.२३.६. [रान्द्रचप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि । रान्द्रचम्=रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० द्रचण्]

रामयत् रामं रमणं कारयितृ (शवः) १.५६.३. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

रामयः आनन्देन क्रीडय प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १.१२१.१३. **रामयन्ति**=रमयन्ति ७.५६.१९. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । 'वा छन्दसी' ति सिपो हिर्न भवति । अन्यत्र लट्]

रामीः आरामप्रदा रात्रीः २.३४.१२. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्निरुपपदादप्यण् । ततः स्त्रियां ङीप्]

राम्याणाम् रात्रीणाम् ७.९.२. रमणीयानाम् (विद्यावाचां जनानाम्) ३.३४.३. रमयन्ति आनन्दयन्ति तेषाम् (विदुषां जनानाम्) ३३.२६. **राम्यासु**=रात्रिषु ६.६५.१. **राम्याः**=रात्रीः २.२.८. [राम्या रात्रिनाम निघं० १.७.]

राय रासु धनेषु साधो (गृहस्थजन) ७.५५.३. [राप्राति० साध्वर्थे यत् । ततः सम्बुद्धौ रूपम् । रा=रा दाने (अदा०) धातोर्घञ् । क्विप् कर्मणि वा]

रायतः शब्दयतः (दुष्टान् जनान्) १.१८२.४. [रै शब्दे (भ्वा०) धातोः शतृ]

रायसि रा इवाचरसि ७.५५.४. शब्दयसि ७.५५.३. [रै शब्दे (भ्वा०) धातोर्लट् । राप्राति० वा क्यजन्ताल्लट्]

रायस्कामः रायो धनस्य काम इच्छा यस्य सः (विद्वान् जनः) यो धनानि कामयते सः (प्रजाजनः) ७.३२.३. धनमीप्सुः (विद्वज्जनः) १.७८.२. [रायः=कामपदयोः समासे षष्ठ्या अलुक्]

रायस्पोषदे यो रायो विद्याधनसमूहस्य योषं पुष्टिं ददाति तस्मै (हवन-कर्मणे) ५.१. धनस्य पुष्टिप्रदाय (सभापतये राज्ञे) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति ङे स्थाने 'शे' इत्यादेशः ६.३२. [रायस्-पोषपदयोः समासे षष्ठ्या अलुक् । पोषदः=पोषोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः । चतुर्थ्या एकवचनस्य स्थाने 'सुपां सुलुक्०' इति शे आदेशः]

रायस्पोषम् उत्तमानां धनानां भोगम् अ०—बहुशुभगुणैः पोषम् ३.२०. **रायस्पोषः**=या बहुगुणभोगेन पुष्टयः अ०—वहुगुणसमूहयुक्ताः पदार्थाः ३.२०. **रायस्पोषाय**=विज्ञानादिधनस्य पुष्टये १३.१. रायो विद्यासुवर्णादिधनस्य पोषाय पुष्यन्ति यस्मिँस्तस्मै ३.६३. **रायस्पोषेण**=चक्रवर्तिराज्यलक्ष्म्या ऋ० भू० २६८, अथर्व० १९.७.७. [रायस्पोषपदयोः समासे षष्ठ्या अलुक् । रायः=रैप्राति० षष्ठ्या एकवचनम् । भूमा वै रायस्पोषः श० ३.५.२.१२.]

रायस्पोषवनि रायो धनस्य पोषो दृढता तस्याः संविभाजिनम् (सभाध्यक्षम्) ६.३. यथा रायो धनसमूहस्य पोषं पुष्टिं वनन्ति सेवन्ते यस्मात्तथा (परमविद्वांसम्) ५.२७. [रायस्-पोष-वनिपदानां समासः । पूर्वपदस्य षष्ठ्या अलुक् । वनिः=वन संभक्तौ (भ्वा०, धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' अ० ३.२.२७. सूत्रेण इन्]

रायस्पोषवनिः यया रायो विद्याधनसमूहस्य पोषं पुष्टिं वनति संभजति सा (स्वाहा=वाक्) ५.१२. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

रायः धनस्य ८.५१. धर्म्यस्य धनस्य १.१६६.३. ऋ०—विद्याधनसमृद्धीः ४.२२. ऋद्धिसिद्धिधनानि ७.४. सर्वविद्याजनितस्य बोधधनस्य ७.१४. विद्याराज्यसमृद्धयः ४.२२. श्रियः ११.७६. साधारणधनस्य ६.५५.२. रातुं दातुं योग्यस्य (धनस्य) २.६.५. समग्रैश्वर्यस्य ११.५८. द्रव्यस्य ५.१५.१. प्रशस्तलक्ष्म्याः १८.१०. विद्याचक्रवर्त्ति-राज्यश्रियादीनि धनानि २.२४. **राया**=विद्यादिधनेन १.७१.६. राज्यश्रिया ६.१६.१३. **राये**=परमोत्तमधन-लाभाय प्र०—राय इति धननाम निघं० २.१०, १.५.३. योग विज्ञानरूप धन की प्राप्ति के लिए सं० वि० २१४, ४०.१६. परमश्री-मोक्षसुखप्राप्तये ५.३६. उत्तमश्रिये १.८४.१७. [रायः पशवो वै रायः श० ३.३.१.८. रैप्राति० षष्ठी । अन्यत्र तृतीया चतुर्थी च । रै=रा दाने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० डैः प्रत्ययः]

रारक्षाणः भृशं रक्षन् सन् (अग्निः=राजा) ४.३.१४. [रक्ष पालने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

रारणत् उपसंवदते प्र०—अत्र रण धातोः 'बहुलं छन्दसि' इति शपः स्थाने श्लुः लडर्थे लेट् च तुजादित्वाद् दीर्घः १.६१.१४. अतिशयेनोपदिशति प्र०—यङ्लुगन्तस्य रणधातोर्लेट्-प्रयोगः १.१०.५. [रण शब्दार्थे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लेट्]

रारधुः हिंसन्ति ७.१८.१८. **रारन्धि**=रन्धय हिन्धि प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यास-दैर्घ्यम् ६.२५.६. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्लिट् । 'रधिजभोरचि' सूत्रेण प्राप्तो नुम् न भवति, छान्दसत्वात् अन्यत्र लोट्]

रारन् दद्युः १.१२२.१२. [रा दाने (अदा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

रारन्त रमन्ते ५.५४.१३. **रारन्तु**=भृशं रमताम् ३.४२.८. **रारन्धि**=रमस्व रमय वा ३.४१.४. रमस्व रमेत वा, प्र०—अत्र रमधातोर्लोटि मध्यमैकवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपः स्थाने श्लुः व्यत्ययेन परस्मैपदम् 'वाच्छन्दसि' इति हेः पित्त्वाद् 'अङितश्च' इति धिः १.६१.१३.]

रारपीति भृशं शब्दयति ६.३.६. [रप व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

रारभे रेभे १.१६८.३. [रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्लिट् । एत्त्वाभ्यासलोपौ न भवतश्छान्दसत्वात्]

रारहाणाः त्यक्तारः (वायवः) प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदीर्घः १.१३४.१. गच्छन्तः (अश्वाः) १.१४८.३. [रह त्यागे (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्]

रावा दाता (प्रजाजनः) ६.३०. [रा दाने (अदा०) धातोर्वनिप् कर्त्तरि]

राशिम् समूहम् ४.२०.८. [अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'अशिपणाय्योरुडायलुकौ च' उ० ४.१३३. सूत्रेण इण् रुडागमश्च]

राष्टि राजते प्र०—अत्र विकरणस्य लुक् १.१०४.४. [राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लटि शपो लुकि च रूपम्]

राष्ट्रदाः राज्ञां कर्मप्रदाः राज्यप्रदाः राष्ट्रं ददातीति भा०—राज्याधिकारं राज्यश्रियं ददाति स चक्रवर्त्ती राजा १०.२. राज्यप्रदाः सभासदः १०.३. [राष्ट्रोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः]

राष्ट्रम् राज्यम् १२.११. राजमानम् (राज्यम्) २०.८. सत्पुरुषसभया सुनियमैः सर्वगुणाढ्यं शुभगुणान्वितं च राज्यम् ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.८. राज्य की इच्छा सं० वि० १८६, अथर्व० १६.४१.१. **राष्ट्रानाम्**=राज्यानाम् प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति णत्वाऽभावः ७.३४.११. **राष्ट्रे**=प्रकाशमाने राज्ये २०.१०. [राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० ष्ट्रन् । श्रीर्वै राष्ट्रस्य मध्यम् तै० ३.६.७.१. श० १३.२.६.४. श्रीर्वै राष्ट्रमश्वमेधः श० १३.२.६.२. तै० ३.६.७.१. राष्ट्रं वाऽश्वमेधः श० १३.१.६.३. तै० ३.८.६.४. राष्ट्रं सान्नाय्यम् (हविः) श० ११.२.७.१७. अष्टौ वै वीरा राष्ट्रं समुद्यच्छन्ति राजभ्राता च राजपुत्रश्च पुरोहितश्च महिषी च सूतश्च ग्रामणी च क्षत्ता च संग्रहीता चैते वै वीरा राष्ट्रं समुद्यच्छन्त्येतेष्वेवाध्यभिषिच्यते तां० १६.१.४. क्षत्रं हि राष्ट्रम् ऐ० ७.२२. राष्ट्रं पसः तै० ३.६.७.४. श० १३.२.६.६. राष्ट्रं मुष्टिः श० १३.२.६.७. तै० ३.६.७.५. राष्ट्रं हरिणः (यजु० २३.३०.) श० १३.२.६.८. राष्ट्राणि वै विशः ऐ० ८.२६. राष्ट्रं सप्तदशः (स्तोमः) तै० १.८.८.५. सविता राष्ट्रं राष्ट्रपतिः श० ११.४.३.१४. तै० २.५.७.४. श्रीर्वै राष्ट्रम् श० ६.७.३.७.]

राष्ट्री ईश्वरः प्र०—राष्ट्रीतीश्वरनाम निघं० २.२२, ६.४.५. [राष्ट्रप्राति० मत्वर्थे इनिः । राष्ट्री ईश्वरनाम निघं० २.२२. वाग् वै राष्ट्री ऐ० १.६.]

रासत् ददाति ५.२५.१. ददातु ३४.४२. दद्यात्

६.४९.८. **रासते**=रातु ददातु प्र०—लेट्-प्रयोगो व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.९६.८. ददाति ४.५५.८. **रासन्**=प्रयच्छन्ति ७.४०.६. प्रदद्युः ७.३४.२२. **रासन्ताम्**=ददतु ७.३५.१५. **रासाथाम्**=दद्यातम् १.४६.६. **रास्व**=राहि देहि प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् २.२७.१०. ददाति ४.१६. **रासि**=ददासि १.१४०.१२. **रासीय**=दद्याम् ७.३२.१८. [रा दाने (अदा०) धातोर्लेटि सिपि च विकरणे रूपम् । रासति दानकर्मा निघं० ३.२०. अन्यत्र लट्, लङ्, लोट्, लिङ् च । रासत्=ददातु नि० १२.१८.]

रासभम् जलाग्न्योर्वेगगुणाख्यमश्वम् ११.१३. **रासभस्य**=रासन्ति शब्दयन्ति येन वेगेन तस्य, प्र०—रासभावश्विनोरित्यादिष्टोपयोजननामसु पठितम् निघं० १.१५, १.३४.९. अश्वसम्बन्धस्य २५.४४. विद्युदादिसम्बन्धिनः (रथस्य) ३.५३.५. शब्दायमानस्य (रथस्य) १.१६२.२१. **रासभः**=आदिष्टोपयोजनपृथिव्यादिगुणसमूहवत् पुरुषः १.११६.२. दातुं योग्यः (अग्निः=विद्वत्सन्तानः) ११.४६. [रासृ शब्दे (भ्वा०) धातोः 'रासिबल्लिभ्यां च' उ० ३.१२५. सूत्रेणाभच् । रासभावश्विनोः=आदिष्टोपयोजननामसु पठितम् निघं० १.१५. रासभः=यदरसदिव स रासभोऽभवत् श० ६.१.१.११. यत्तदरसदिवैष रासभः श० ६.३.१.२८. वैश्यं च शूद्रं चानुरासभः श० ६.४.४.१२.]

रास्ना दात्रीं (विदुषी स्त्री) ३८.१. रसहेतुभूता क्रिया प्र०—'रास्नासास्ना-स्थूणा-वीणाः' उ० ३.१५. अनेन रसधातोर्निपातनात् नः प्रत्ययः १.३०. [रासृ शब्दे (भ्वा०) धातोः 'रास्नासास्नास्थूणावीणाः' उ० ३.१५. सूत्रेण नः । ततः स्त्रियां टाप् । रासति दानकर्मा (निघं० ३.१५.) धातोर्वा नः । रस शब्दे (भ्वा०) धातोः, रस आस्वादनस्नेहनयोः (चुरा०) धातोर्वा नः । 'रास्नासास्ना०' इति निपातनाद् रूपसिद्धिः । रास्ना=हिरो वै रास्ना श० १.३.१.१५.]

रास्पिनस्य आदातुमर्हस्य (आयोः=जीवनस्य) १.१२२.४. [रास्पिनो रास्पी रपतेर्वा रसतेर्वा नि० ६.२१.]

रास्पिरासः ये रा दानानि स्पृणन्ति ते (आयवः=मनुष्याः) ५.४३.१४. [रा इत्युपपदे स्पृ प्रीतिपालनयोः (स्वा०) धातोः मूलविभुजादित्वात् कः । ततो जसोऽसुक्]

रिक्थम् धनम् प्र०—रिक्थमिति धननाम निघं० २.१०, ३.३१.२. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोः 'पातृतुदिवचि०' उ० २.७. सूत्रेण थक्]

रिक्थाः अतिरिणक्षि प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति विकरणाऽभावः ३.६.२. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लङ् 'वा छन्दसी' ति विकरणो न भवति]

रिख लिख ६.५३.७. [लिख अक्षरविन्यासे (तुदा०) धातोर्लोट् । वर्णव्यत्ययेन लकारस्य रेफः]

रिच्यते अधिको भवति ७.३२. **रिच्यसे**=पृथग्भवसि २.१.१५. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्यन्]

रिणक् हिनस्ति २.१५.८. रिणक्ति २.१९.५. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लङ् । अटोऽभावः]

रिणते गच्छन्ति ५.५८.६. **रिणाति**=गच्छति १.१६६.६. हिनस्ति ३३.८०. प्राप्नोति १.१८७.४. **रिणाः**=हिंस्याः ४.१९.३. **रिणीते**=प्राप्नोति १.१२४.७. गच्छति ५.८०.६. **रिणीथः**=हिंस्तम् १.११७.१९. [रिणाति गतिकर्मा निघं० २.१४. रि हिंसायाम् (स्वा०) धातोर्लट् । व्ययत्येन श्ना । रि गतौ (तुदा०) धातोर्वा लट् । व्यत्ययेन श्ना]

रिणन् प्राप्नुवन् (इन्द्रः=जीवः) २.२२.४. [रिणाति गतिकर्मा (निघं० २.१४) धातोः शतृ]

रितः गन्त्रीः (महीः=भूमीः) ६.५७.४.

रिपवः अरयः १.१४७.३. शत्रवः ४.४.१३. **रिपुणा**=शत्रुणा स्तेनेन १७.९३. **रिपुम्**=विद्याशत्रुम् (स्तेनं=चोरम्) ६.५१.१३. [रिपुः स्तेननाम । निघं० ३.२४. रप व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः 'रपेरिच्चोपधायाः' उ० १.२६. सूत्रेण कु-प्रत्यय उपधाया इकारादेशः]

रिपः पृथिवी, प्र०—रिप इति पृथिवीनाम निघं० १.१, २.३२.२. पृथिव्याः ३.५.५.

रिपः शत्रवः ७.३२.१२. पापात्मिकाः क्रियाः ७.६०.९.

रिप्तम् लिप्तं प्राप्तम् (रसयुक्तपदार्थभागम्) प्र०—अत्र लकारस्य रेफादेशः १९.३५. [लिप उपदेहे (तुदा०) धातोः क्तः । वर्णव्यत्ययेन लकारस्य रेफः । लीङ् श्लेषणे (दिवा०) धातोर्वा 'लीरीङोर्ह्रस्वः०' उ० ५.५५. सूत्रेण तः प्रत्ययः पुडागमश्च]

रिप्रम् व्यक्तवाणीप्राप्तव्यं वेदितव्यम् (सुखम्) प्र०—अत्रः 'लीरीङोर्ह्रस्वः' उ० ५.५५. अनेनायं सिद्धः ४.२. [रिप्रम्=पापनाम । नि० ४.२१. तद यदमेध्यं रिप्रं तत् श० ३.१.२.११. रीङ् श्रवणे (दिवा०) धातोः 'लीरीङोर्ह्रस्वः पुट् च०' उ० ५.५५. सूत्रेण रः प्रत्ययः पुडागमश्च]

रिप्रवाहः ये रिप्रं पापं वहन्ति तान् (दुष्टान् जनान्) ३५.१९. [रिप्रोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' अ० ३.२.६४. सूत्रेण ण्विः]

रिरिक्वांसः अधर्माद् विनिर्गताः (विद्वांसो जनाः) १.७२.५. रेचनं कारयन्तः (सेनाजनाः) ४.२४.३. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लिटः क्वसुः। न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्]

रिरिक्षतः हन्तुमिच्छतो दुष्टाच्छत्रोः ७.३६.४. **रिरिक्षन्तम्**=रेष्टुं हिंसितुमिच्छन्तम् (प्राणिनम्) १.१२९.१०. रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छतृ]

रिरिक्षोः हिंसितुमिच्छोः (प्राणिनः) १.१८९.६. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताद् उः]

रिरिचथुः रेचताम् ४.२८.५. **रिरिचाथे**=अतिरिक्तौ भवतः १.१०९.६. **रिरिचे**=अतिरिच्यते १.१०२.७. रिणक्त्यधिकं वर्त्तते १.६१.९. **रिरिच्यात्**=अतिरिच्यात् ४.२४.५. **रिरेच**=रिणक्ति ४.१६.६. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोर्लिट्। अन्यत्र लिङ् अपि]

रिरिपुः आरोपयन्ति ५.८५.८.

रिरिषेः हिन्धि प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्लुः १.१२९.१०. प्रयच्छसि २.१.५. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

रिरीहि याचस्व ६.३९.५. [रिरीहि याच्ञाकर्मा निघं० ३.१९.]

रिरेभ रेभ उपदिशानि प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.१२०.६. [रेभृ शब्दे (भ्वा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

रिशन्तीः भक्षयन्तीः (गाः) ६.२८.७. [रिश हिंसायाम् (तुदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

रिशादसम् शत्रुनिवारकम् (विद्वज्जनम्) ५.६४.१. रिशा रोगाः शत्रवो वा हिंसिता येन तम् (वरुणं=बहिःस्थं प्राणम्) १.२.७. हिंसकानां हिंसकम् (वरुणं=धार्मिकं जनम्) ३३.५७. **रिशादसः**=रिशान् दोषान् शत्रूँश्चादन्ति हिंसन्ति तान् (प्रघासिनः=अतिथीन्) ३.४४. हिंसकानां नाशकाः (मरुतः=मानवाः) ५.६०.७. रिशानां हिंसकानां रोगाणां वा दस उपक्षयितारः (अ०—दुष्टहिंसकाः सभ्या जनाः) १.२६.४. ये रिशान् शत्रून् दसन्ति नाशयन्ति ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १.१८६.८. हिंसकहिंसकाः (विद्वांसो जनाः) ५.६१.१६. रिशा रोगा अदसोऽत्तारो यैस्ते (मरुतः=वायवः) १.१९.५. **रिशादाः**=यो रिशान् हिंसकान् शत्रूनत्ति नाशयति सः (सभाध्यक्षः), प्र०—अत्राऽदधातोरसुन् १.७७.४. [रिशादसः=रेशयदासिनः नि० ६.१४. रिशोपपदे दसु उपक्षये (दिवा०) धातोः क्विप्। अथवा रिशोपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोरौणा० असुन्। रिशः=रिश हिंसायाम् (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

रिशादसा अविद्यादिदोषनाशकावध्यापकोपदेशकौ ३३.७२. दुष्टहिंसकौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.७१.१. [रिशादस् इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

रिषण्यति आत्मना हिंसितुमिच्छति २.२३.१२. **रिषण्यः**=हिंस्याः ७.९.५. [रिष्टपदादात्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताल्लट्। 'दुरस्यु···रिषण्यति' अ० ७.४.३६. सूत्रेण रिषण्भावः]

रिषण्यवः आत्मनो रेषणामिच्छवः (शत्रवः) १.१४८.५. [रेषणपदाद् इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उः। 'दुरस्युः···रिषण्यति' अ० ७.४.३६. सूत्रेण रिषण्भावो निपात्यते]

रिषत् हिंस्यात् २७.२. **रिषः**=हिंस्याः ११.६८. **रिषाथ**=हिंसथ ७.३३.४. **रिषाम**=हिंस्याम ४.१२.५. रुष्टा भवेम ६.४४.११. हिंसिता भवेम १.९४.१. पीडयेम ऋ० भू० २६८ [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लेट्। व्यत्ययेन शः। अन्यत्र लिङ्]

रिषतः हिंसाहेतुदोषान् १.१२.५. **रिषते**=हिंसकाय (प्राणिने) १.१८८ ५. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः शतृ। विकरणव्यत्ययेन शः]

रिषयध्यै रिषयितुम् १.१२९.८. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् तुमर्थेऽध्यै-प्रत्ययः। गुणाऽभावश्छान्दसः]

रिषः हिंसकाद्धिंसाया वा ५.६७.३. हिंसकात् (प्राणिनः) ५.५२.४. दुष्टाचारात् ६.२४.१०. धर्मस्य हिंसनात् ८.२७. हिंसकाच्छत्रोः पापाच्च अ०—हिंसालक्षणात्पापात् भा०—मनोवचःकर्मभिः कृतात् पापात् ३.४८. हिंसकान् (जनान्) २.२६.४. हिंसकाः (शत्रुजनाः) ६.६३.२. **रिषे**=हिंसनाय ७.३४.१७. प्रन्नाय ५.४१.१६. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०, दिवा०) धातोः क्विप्। रिषे=रेषणाय नि० १०.४५.]

रिषाथन अलग होओ स० प्र० २३८, १०.४८.५. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। तस्य थनादेश-

श्छान्दसः 'तप्तनप्तनथनाश्चे' ति । विकरणव्यत्ययेन शः]

रिष्टम् हिंसितम् (दुष्टं जनम्) १.१३१.७. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः]

रिष्यति हिनस्ति ६.५४.३. विनश्यति १.१८.४. **रिष्यथ**=हिंस्यथ ५.५४.४. **रिष्यसि**=हिन्धि २३.१६. हंसि २५.४४. **रिष्याति**=रोगैर्हिंसितो भवेत् १२.९१. **रिष्येत्**=हिंसितो भवेत् १.९१.८. विनष्ट होता है आर्याभि० १.२०, ऋ० १.६.२०.८. **रिष्येम**=हिंस्याम ६.५४.९. [रिष हिंसायाम् (दिवा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लेट् लिङ् च]

रिहती घ्नन्ती (रात्रिः) ३.५५.१३.

रिहन्ति लिहन्ति आस्वादन्ते प्र०—अत्र व्यत्ययेन लस्य रेफः २.३५.१३. प्राप्नुवन्ति १.१८६.७. आददते श्लाघन्ते वा १.२२.१४. सत्कुर्वन्ति प्र०—रिहन्तीत्यर्चतिकर्मसु पठितम् निघं० ३.१४, ७.१६. अथवा लिह आस्वादने (अदा०) धातोर्लट् । वर्णव्यत्ययेन लस्य रेफः]

रिहन् परित्यजन् (ज्रयः=वेगयुक्तोऽग्निः) १.१४०.९. [रह त्यागे (भ्वा०) धातोः शतृ । वर्णव्यत्ययेनाकारस्येकारादेशः]

रिहाणाः अर्चकाः (जनाः) प्र०—रिहतीत्यर्चतिकर्मसु पठितम् निघं० ३.१४, २.१६. [रिहति अर्चतिकर्मा धातोस्ताच्छील्ये चानश्]

रिहाणे आस्वदित्र्यौ (गावौ=धेनुवृषभौ) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन लस्य स्थाने रः ३.३३.१. स्वादयन्त्यौ (मातरा=मातापितरौ) ७.२.५. [रिहाणे संरिहाणे नि० ९.३९. लिह आस्वादने (अदा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । लस्य च रेफः]

रीतिः श्रेष्ठा नीतिः २.२४.१४. श्लिष्टो गन्ता गमयिता वा (रयिः=धनम्) ६.१३.१. श्लेषणम् २.३९.५. [रीङ् श्रवणे (दिवा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

रीत्यापा रीतिश्चापश्च ययोस्तौ (वायुविद्युतौ) ५.६८.५. [रीति-अप्-पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः । अपोऽकारस्य दीर्घश्छान्दसः]

रीयते श्लिष्यते सम्बध्यते १.१३५.७. गच्छति ३५.१०. विजानाति १.३०.२. श्लिष्यति ५.७.८. [रीयते गतिकर्मा निघं० २.१४. ली श्लेषणे (क्र्या०) धातोः कर्मणि लट् । वर्णव्यत्ययेन लस्य रेफः । अथवा री गतिरेषणयोः (दिवा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन श्यन् आत्मनेपदं च]

रीयमाणाः चालनेन गच्छन्त्यः (नावः=विमानानि) १०.१९. [रीयते गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः शानजन्ताट् टाप् स्त्रियाम्]

रीरधत् हिंस्यात् २.३३.५. **रीरधत**=भृशं हिंसत ६.५१.६. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् । अटोऽभावश्छान्दसः]

रीरधः संराधय प्र०—अत्र रध हिंसासंराध्योः इत्यस्माण्णिजन्ताल्लोडर्थे लुङ् १.२५.२. हिंस्यात् २.३२.२. रध्याः हिंस्याः ३.१६.५. [रध हिंसासंराध्योः (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्]

रीरमत् रमयेत् १.१६५.२. रमयति ७ ३२.१०. **रीरमन्**=रमन्ताम् ७.३२.१. रमयन्ति २.१८.३. **रीरमाम**=सर्वान् रमयेम १.१६५.२. [रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्]

रीरिषत् हिंस्यात् ३.५३.२०. **रीरिषत**=घ्नत २५.२२. हिंस्त १.८९.९. **रीरिषः**=हिंस्याः प्र०—अत्र लिङर्थे लुङडभावश्च १६.१५. हिंसको भव १६.१६. जहि प्र०—अत्र तुजादित्वाद् दीर्घः १.११४.७. विनाशय पं० वि० । **रीरिषीष्ट**=भृशं हिंस्यात् ६.५१.७. [रिष हिंसायाम् (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् । अडभावश्छान्दसः । अन्यत्र लिङ् अपि]

रीषतः हिंसकात् व्याघ्रादेः प्राणिनः १.३६ १५. हिंसाहेतुदोषान् १.१२.५. **रीषन्तम्**=हिंसन्तम् (दुर्जनम्) प्र०—अत्र 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः २.३०.९. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः शतृ । धातोर्दीर्घश्छान्दसः । विकरणव्यत्ययेन शः]

रीषते हिनस्ति ५.३.१२. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन शप्रत्यये धातोरुपधाया दीर्घश्छान्दसः]

रुक्म इव रुचिकरः सुवर्णादिपदार्थो यथा ५.६१.१२. [रुक्म-इवपदयोः समासः]

रुक्मम् रुचिकरं भास्वरम् (कर्म्म) ५.१.१२. सुवर्णम् प्र०—रुक्ममिति हिरण्यनाम निघं० १.२, १.११७.५. आदित्यम् १५.२५. **रुक्मः**=देदीप्यमानः (विद्वान् शिल्पी) १.८८.२. दीप्तिमान् (जनः) १२.१. रोचमानः सूर्यः ७.३.६. स्वप्रकाशस्वरूपः (प्राणः) १.९६.५. **रुक्मान्**=विद्युज्जाठराग्निप्रकाशान् १.६४.४. **रुक्माः**=सुवर्णालङ्काराः ५.५४.११. **रुक्मेषु**=सुवर्णादिषु ५.५३.४. **रुक्मैः**=रोचमानैः प्रदीप्तैः (सद्व्यवहारैः) ५.५२.६. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः 'युजिरुचितिजां कुश्च' उ० १.१४६. सूत्रेण मक् कुत्वञ्च । असौ वाऽआदित्य

एष रुक्म एष हीमाः सर्वाः प्रजा अतिरोचते रोचो ह वै तं रुक्म इत्याचक्षते परोक्षम् श० ७.४.१.१०. आदित्यस्य (रूपं) रुक्मः तै० ३.९.२०.२. असौ वाऽआदित्य एष रुक्मः श० ६.७.१.३. तस्य (अश्वस्य श्वेतस्य) रुक्मः पुरस्ताद् भवति । तदेतस्य रूपं क्रियते य एष (आदित्यः) तपति श० ३.५.१.२०. सत्यं हैतद् रुक्मः ।……तद् यत् सत्यम् असौ स आदित्यः श० ६.७.१.१-२. प्रजातिस्तेजो वीर्यं रुक्मः श० ६.७.१.९. रुक्मो वै समुद्रः (यजु० १३.१६) श० ७.४.२.५. सत्यं रुक्मः तै० आ० १.२५.१.]

रुक्मवक्षसः रुक्ममिव वक्षो येषान्ते (मरुतः=विद्वांसो मनुष्याः) २.३४.८. रुक्मं रोचकं वक्षो हृदयं येषान्ते (मरुतः) २.३४.२. रुक्माणि सुवर्णादियुक्तान्याभूषणानि येषान्ते (मरुतः) ५.५५.१. रुक्माणि जटितान्याभूषणानि वक्षःसु येषान्ते (विद्वज्जनाः) ५.५७.५. [रुक्म-वक्षस्पदयोः समासः]

रुक्मी प्रशस्तानि रुक्माणि रोचकानि कर्माणि गुणा वा सन्ति यस्य सः (अग्निः) १.६६.३. [रुक्ममिति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसायामर्थे इनिः]

रुक्मेभिः रोचमानैः सुवर्णादिभिर्वा ५.५६.१.

रुक्षः तेजस्वी (अग्निः) ६.३.७. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० सः]

रुग्णम् रोगाऽऽविष्टम् (पतिम्) ३.३१.६. रोगिणम् (जनम्) ३३.५९. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोः क्तः । 'ओदितश्चे' ति निष्ठातकारस्य नकारः]

रुचम् कामनाम् १३.२३. रुचिकरम् भा०—वेदेश्वरधर्मादिकम् ३१.२१. प्रेम प्रीतिम् १८.४८. **रुचः**=रुचयः प्रीतयो वा १३.२३. दीप्तयः १३.२२. **रुचाय**=रुचिकराय (ब्रह्मणे) ऋ० भू० १३३, ३१.२०. रुचिकरात् (सूर्यात्) प्र०—अत्र पञ्चम्यर्थे चतुर्थी ३१.२०. [रुचदीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । इगुपधलक्षणो वा कः प्रत्ययः कर्त्तरि]

रुचयन्त रुचिमाचक्षते ३.६.७. [रुचिप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिचि लङि अटोऽभावे च रूपम्]

रुचा रुचिकर्य्यौ (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ४.५६.१. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः । रुचप्राति० द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

रुचानः प्रीतिमान् (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.१५.६. प्रकाशयन् (सूर्यः) ६.३९.४. प्रदीपकः (अमृतः=नाशरहित ईश्वरः) १२.२५. रोचकः (जनः) १२.१. **रुचानाः**=रोचमानाः (मरुतः=बलिष्ठा योद्धृजनाः) ७.५६.१३. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः 'बहुलमन्यत्रापि' उ० २.३७. सूत्रेण क्वुन् । शानचि वा शपो लुकि रूपम्]

रुचानाः रुचिकर्य्यः (उषसः=प्रभातवेलाः) ४.५१.९. [रुचान इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

रुचे रुचिकारकाय (जनाय=प्रसिद्धाय मनुष्याय) १३.२२. प्रीतिकराय भा०—सत्ये रुचिजनकाय (जनाय) १८.४६. प्रीतये १३.३९. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । सम्पदादित्वाद्वा भावे क्विप्]

रुज प्रभग्नं कुरु ४.३.१४. रुग्णान् कुरु ३.३०.१६. **रुजत्**=रुजति ६.३२.२. भनक्ति ६.३९.२. **रुजन्**=भञ्जन्ति १.७१.२. भञ्जति १.७१.२. **रुजन्ति**=भञ्जन्ति ४.१८.६. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लेट् लङ् लट् च]

रुजन् भग्नानि कुर्वन् (सेनापतिः) ४.१६.८. **रुजन्तः**=शत्रून् भग्नान् कुर्वन्तः (विद्युद्व्रतपवित्रा जनाः) ६.६.३. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोः शतृ]

रुजः रोगान् ६.२२.६. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोः क्विप्]

रुजा शत्रूणां रोगकारकः (राजा) प्र०—अत्रौणादिकः कनिन् १०.८. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्बाहु० औणा० कनिन् । रुजा (इषुः) अथ यया विद्धः शयित्वा जीवति वा म्रियते वा सा द्वितीया तदिदमन्तरिक्षं सैषा रुजा नाम श० ५.३.५.२९.]

रुजानाः नद्यः १.३२.६. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोरौणा० बहुलवचनाद् आनच् किच्च । ततः स्त्रियां टाप् । रुजानाः=नदीनाम निघं० १.१३. पदनाम निघं० ४.३. रुजाना नद्यो भवन्ति रुजन्ति कूलानि नि० ६.४.]

रुजामि प्रभग्नान् करोमि ४.४.११. **रुजेम**=प्रभग्नान् कुर्य्याम ४.२.१५. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लिङ्]

रुणधामहै निरुन्ध्याम १.८.२. [रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोर्लेटि रूपम्]

रुतस्य रुग्णस्य (जनस्य) प्र०—अत्र पृषोदरादित्वाज्जलोपः १६.४९. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोः क्तप्रत्यये पृषोदरादित्वाज्जलोपे रूपम्]

रुदतः रोदनं कुर्वतः (अ०—दुष्टकर्मकारिणो जीवान्) १.३३.७. [रुदिर् अश्रुविमोचने (अदा०) धातोः शत्रन्ताद् द्वितीया]

रुद्र दुष्टानां शत्रूणां रोदयितः (राजन्) प्र०—'रोदेर्णिलुक् च' अनेनोणादिगणसूत्रेण रोदिधातो रक्प्रत्ययो णिलुक् च १६.१. रोदयत्यन्यायकारिणो जनान् स रुद्रः स्तोता तत्सम्बुद्धौ, प्र०—रुद्र इति स्तोतृनामसु पठितम् निघं० ३.१६. रुद्र इत्यस्य त्रयस्त्रिंशद् देवव्याख्याने प्राणसंज्ञेत्युक्तम् ३.५७. रुतः सत्योपदेशान् राति ददाति तत्सम्बुद्धौ (सभाध्यक्ष) १.११४.३. राजवैद्य १६.४९. सर्वरोगनिवारक (सद्वैद्य) २.३३.१५. युद्धसेनाधिकृतविद्वन् (सेनापते) १६.१५. रोगाणां प्रलयकृत् (सद्वैद्य) २.३३.३. दुष्टानां भयङ्कर, श्रेष्ठानां सुखकर (भा०—शिक्षक) १६.२. दुष्टानां रोदक (राजन्) ७.४६.२. दुष्टों के रुलाने वाले ईश्वर आर्याभि० १.४५, ऋ० १.८.५.२. हे परमेश्वर प्राणादि वायु, जीव, अग्नि स० प्र० ४.२०, १६.१. दुष्ट-रोग-दोष-पापिजन-निवारकेश्वर प० वि०। **रुद्रम्**=यो रुद् रोगं द्रावयति तम् (परमात्मानम्) ६.४९.१०. पापफलदानेन पापिनां रोदयितारम् (ईश्वरम्) पापफलभोगेन रोदकं जीवं वा ७.४१.१. दुष्टानां भयप्रदम् (पितरम्) ५.५२.१६. **रुद्रस्य**=शत्रुरोदकस्य स्वसेनापतेः ११.१५. रोगाणां द्रावकस्य निस्सारकस्य (सज्जनस्य) ७.५६.१. प्राणादिरूपस्य वायोः ५.४२.१५. वायुवद्बलिष्ठस्य (कृतब्रह्मचर्यस्य जनस्य) ६.६६.३. सभेशस्य १६.५०. रोदयितू रोगस्य २.३३.१३. रौद्रकर्मकर्त्तुः (वीरजनस्य) ६.२८.७. अन्यायकारिणो रोदयितुः (जनस्य) ५.५९.८. समष्टिप्राणस्य १.६४.२. **रुद्रः**=दुष्टानां रोदयिता विद्वान् ४.२१. परमेश्वरश्चतुश्चत्वारिंशद्वर्षकृतब्रह्मचर्यो विद्वान् वा ४.२०. दुष्टदण्डकः (विद्वज्जनः) ५.५१.१३. दुष्टानां भयङ्करः (विद्वान् राजा वा) ५.४६.२. जीवः **रुद्रान्**=आचरितचतुश्चत्वारिंशद्वर्षब्रह्मचर्यान् ८.५८. महाबलान् विदुषः १.४५.१. प्राणान् ३.२०.५. **रुद्राणाम्**=प्राणादीनां मध्यमानां विदुषां वा १४.२५. **रुद्राय**=शत्रुषूग्राय (विदुषे वीरपुरुषाय) ४.३.७. शत्रुरोदकाय (सेनापतये) १६.४८. **रुद्राः**=मध्यमस्थाः (विद्वांसः) १२.४४. दश प्राणा एकादश आत्मा मध्यमविद्वांसो वा २१.२४. रुद्रसंज्ञका विद्वांसः (जनाः) ११.५८. प्राणाऽपानव्यानोदानसमाननागकूर्मकृकलदेवदत्तधनञ्जयाख्या दश प्राणा एकादशो जीवश्चेत्येकादश रुद्राः २.५. सजीवाऽजीवाः प्राणादयो वायवः १६.५४. मध्यमकल्पा विद्वांसः २३.८. मरणज्वरादिपीडाहेतुत्वाद् रोदयितारः (वायवः) १.६४.४. चतुश्चत्वारिंशद्वर्ष-प्रमितेन-ब्रह्मचर्येणाऽधीतविद्याः (विद्वज्जनाः) ७.३५.१४. **रुद्रेभ्यः**=प्राणजीवेभ्यः २२.२८. **रुद्रैः**=मध्यकक्षास्थैः (विद्वद्भिर्जनैः) २८.४. [रुदिर् अश्रुविमोचने (अदा०) धातोर्णिजन्ताद् 'रोदेर्णिलुक् च' २.२२. सूत्रेण रक् णेर्लुक् च। रुत् इत्युपपदे वा द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्डः 'अन्येष्वपि दृश्यते' सूत्रेण। रुत्=रु शब्दे (अदा०) धातोः क्विपि तुगागमे रूपम्। रुद्रः=रौतीति सतः रोरूयमाणो द्रवतीति वा रोदयतेर्वा यदरुदत् तद् रुद्रस्य रुद्रत्वम् इति काठकम्। यदरोदीत् तद् रुद्रस्य रुद्रत्वम् इति हारिद्रविकम् नि० १०.६. अग्निरपि रुद्र उच्यते नि० १०.७ रुद्रः स्तोतृनाम निघं० ३.१६. अग्निर्वै रुद्रः श० ५.३.१.१०. रुद्रोऽग्निः तां० १२.४.२४. यो वै रुद्रः सोऽग्निः श० ५.२.४.१३. एष रुद्रः यदग्निः तै० १.१.५.८. तान्येतान्यष्टौ (रुद्रः, शर्वः, पशुपतिः, उग्रः, अशनिः, भवः, महादेवः, ईशानः) अग्निरूपाणि कुमारो नवमः श० ६.१.३.१८. अथ यत्रैतत् प्रथमं समिद्धो भवति। धूष्यत ऽइव तर्हि हैष (अग्निः) भवति रुद्रः। श० २.३.२.९. रुद्र पशूनां पते तै० ३.११.४.२. रुद्रः (एवैनं राजानं) पशूनां (सुवते) तै० १.७.४.१. रुद्रं हि नाति पशवः श० ३.२.४.२०. रौद्रा वै पशवः श० ६.३.२.७. रौद्री वै गौः तै० २.२.५.२. यद् गौस्तेन रौद्री श० ५.२.४.१३. यद् रुद्रश्चन्द्रमास्तेन कौ० ६.७. अयं देवः (रुद्रः) पशूनामीष्टे श० १.७.३.१. वास्तव्यो वाऽएष देवः (रुद्रः) श० ५.२.४.१३. य उ एव मृगव्याधः स (रुद्रः) उ एव स ऐ० ३.३३ रुद्रो वै स्विष्टकृत् कौ० ३.६. रुद्रः स्विष्टकृत् श० १३.३.४.३. कौ० ३.४. रुद्रो वै ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च देवानाम् कौ० २५.१३. घोरो वै रुद्रः कौ० १६.७. रुद्रो ह वा एष देवानामशान्तः सञ्चितो भवति तमेवैतच्छमयति कौ० १९.४. अम्बिका ह वै नामास्य (रुद्रस्य) स्वसा श० २.६.२.९. शूलपाणये (रुद्राय) स्वाहा ष० ५.११. शरद्वा अस्य (रुद्रस्य) अम्बिका स्वसा तै० १.६.१०.४. आखुस्ते (रुद्रस्य) पशुः श० २.६.२.१०. तै० १.६.१०.२. रौद्रो गावेधुकश्चरुः श० ५.२.४.११. उच्छेषणभागो वै रुद्रः तै० १.७.८.५. (रुद्रः) तं (प्रजापतिम्) अभ्यायत्याविध्यत् ऐ० ३.३३. तं (प्रजापतिम्) रुद्रोऽभ्यायत्य विव्याध श० १.७.४.३. स (रुद्रः) यज्ञमभ्यायम्याविध्यत् गो० उ० १.२. तद् यद्रुदितात् समभवंस्तस्माद्रुद्राः श० ९.१.१.६. उषा (उदीची) वै रुद्रस्य दिक् तै० १.७.८.६. एषा (उदीची) ह्येतस्य देवस्य (रुद्रस्य) दिक् श० २.६.२.७. उत्तरार्द्धे जुहोत्येषा ह्येतस्य देवस्य (रुद्रस्य) दिक् श० १.७.३.२०. रौद्रौ वै प्रतिहर्त्ता गो० उ० ३.१९. एतद्ध वा ऽस्य (रुद्रस्य) जान्धितं प्रज्ञातमवसानं यच्चतुष्पथम् श० २.६.२.७. प्राणा वै रुद्राः। प्राणा हीदं सर्वं रोदयन्ति जै० उ० ४.२.६. कतमे रुद्रा इति। दशेमे पुरुषे प्राणा आत्मैकादशस्ते यदस्मा-

न्मर्त्याच्छरीरादुत्क्रामन्त्यथ रोदयन्ति । तद् यद्रोदयन्ति तस्माद्रुद्रा इति श० ११.६.३.७. रुद्रा एकादशकपालेन माध्यन्दिने सवने तै० १.५.११.३. रुद्राणां माध्यन्दिनं सवनम् कौ० १६.१. श० ४.३.५.१. अथेमं विष्णुं यज्ञं त्रेधा व्यभजन्त, वसवः प्रातःसवनं रुद्रा माध्यन्दिनं सवनमादित्यास्तृतीयसवनम् श० १४.१.१.१५. त्रिष्टुब् रुद्राणां पत्नी गो० उ० २.९. रुद्रास्त्रिष्टुभं समभरन् जै० उ० १.१८.५. रुद्रास्त्वा त्रैष्टुभेन छन्दसा संमृजन्तु तां० १.२.७. रुद्रास्त्वा दक्षिणतोऽभिषिञ्चन्तु त्रैष्टुभेन छन्दसा तै० २.७.१५.५. अथैनं (इन्द्रं) दक्षिणस्यां दिशि रुद्रा देवाः···अभ्यषिञ्चन् ऐ० ८.१४. रुद्रा एव महः गो० पू० ५.१५. वसवो वै रुद्रा आदित्याः संस्रावभागाः तै० ३.३.९.७. सोमो रुद्रैः (व्यद्रवत्) श० ३.४.२.१. रुद्रांणां वा ऽएतद् रूपं यत् पृथुकाः तै० ३.८.१४.३.]

रुद्रवते प्रशस्ताः कृतचतुश्चत्वारिंशद्वर्षब्रह्मचर्या विद्वांसो वीराः शत्रुरोदयितारो रुद्रा भवन्ति यत्र तस्मै (कर्मणे) ६.३२. बहवो रुद्राः प्राणा विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मै (इन्द्राय=दुःखविदारकाय पुरुषाय) ३८.८. [रुद्रप्राति० प्रशंसायां मतुप्]

रुद्रवर्तनी रुद्रस्य प्राणस्य वर्त्तनिरिव वर्त्तनिर्मार्गो ययोस्तौ (अश्विना=विद्याव्यापिजनौ) १९.८२. रुद्रस्य प्राणस्य वर्त्तनिर्मार्गो ययोस्तौ (अश्विनौ=अग्निजले) १.३.३. [रुद्र-वर्त्तनिपदयोः समासः]

रुद्रहूतये रुद्राः प्राणा जीवा वा हूयन्ते स्तूयन्ते येन तस्मै भा०—प्राणानां जीवनस्य समाजस्य च रक्षणाय ३८.१६. [रुद्र-हूतिपदयोः समासः । हूतिः=ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तिन्]

रुद्रा या प्राणवायुसम्बन्धिनी चतुश्चत्वारिंशद्वायनाऽत्रधिसेवितब्रह्मचर्यैः स्त्रीकृता सा (वाग् विद्युद्वा) ४.२१. [रुद्रप्राति० स्त्रियां टाप्]

रुद्रा रुतो रोदनाद् द्रावयितारौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.७०.२. दुष्टानां भयङ्करौ (अश्विना=विद्यायुक्तौ महाविद्वज्जनौ) ५.७५.३. चतुश्चत्वारिंशद्वर्षप्रमितब्रह्मचर्येणाधीतविद्यौ (सभाशालेशौ) १.१५८.१. [रुद्रप्राति० द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

रुद्रासः वायवः १.८५.२. मध्यमा विद्वांसः ५.८७.७. दुष्टानां रोदयितारः (विद्वज्जनाः) ५.५७.१. [रुद्रप्राति० जसोऽसुक्]

रुद्रियम् रुद्रस्येदं कर्म्म प्र०—अत्र पृषोदराद्याकृतिगणान्तर्गतत्वादिदमर्थे घः १.४३.२. प्राणसम्बन्धि (महित्वं=महिमानम्) ७.४०.५. **रुद्रियाय**=रुद्रैर्लब्धाय (विद्यार्थिने) ५.४१.११. **रुद्रियाः**=रुद्रस्य मध्यमस्य विदुषः सम्बन्धिनः (मरुतः=विद्वज्जनाः) २.३४.१०. रुद्रेऽग्नौ भवाः (सिंहाः=व्याघ्राः) ३.२६.५. शत्रून् दुष्टान् रोदयतां सम्बन्धिनो रुद्राः (विद्वांसो जनाः) १.७२.४. **रुद्रियेषु**=रुद्राणां प्राणानां प्रतिपादकेषु (उक्थेषु=वाक्येषु) २.११.३. [रुद्रप्राति० 'तस्येदमि' त्यर्थे शैषिको घश्छान्दसः । 'शेषे' सूत्रं लक्षणमधिकारश्चेति वा घः प्रत्ययः]

रुद्रियासः रुद्र इवाऽऽचरन्तः (मरुतः=शूरा मनुष्याः) ७.५६.२२. रुद्राणां जीवानामिमे जीवननिमित्ता रुद्रिया वायवः प्र०—'तस्येदम्' इति शैषिको घः 'आज्जसेरसुक्' इत्यसुगागमः १.३८.७. रुद्रेषु दुष्टरोदयितृषु भवाः (विद्वांसो जनाः) ५.५८.७. रुद्रेषु साधनकर्तृषु भवाः (मरुतः=मनुष्याः) ५.५७.७. प्राणा जीवाश्च ६.६२.८. [रुद्रप्राति० 'तस्येदमि' त्यर्थे शैषिको घः । 'शेषे' इति सूत्रं लक्षणमधिकारश्च । रुद्रियप्राति० जसोऽसुक्]

रुद्रेभिः प्राणैर्विद्यार्थिभिः सह १.१०१.७. दुष्टान् रोदयद्भिर्वीरैः ३.३२.३. जीवैः प्राणैर्वा ७.३५.६. [रुद्रप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

रुधतः रेतो निरोद्धुः (नदस्य=वृषभादेः) १.१७९.४. [रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन शः । रुधतः संरुद्धप्रजनस्य नि० ५.२.]

रुधिक्राम् यो रुधीनावरकान् क्रामति तम् (राजद्रोहिणं जनम्) २.१४.५. [रुधि इत्युपपदे क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोः 'जनसनखनक्रमगमो विट्' इति कर्त्तरि विट् । 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' अ० ६.४.४१. सूत्रेणाकारादेशः]

रुपः आरोपणकर्त्तुः (ईश्वरस्य) प्र०—अत्र कर्त्तरि क्विप् ४.५.७. पृथिव्याः प्र०—रुप इति पृथिवीनाम निघं० १.१, ४.५.८. [रुंप विमोहने (दिवा०) धातोः क्विप् । रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्वा क्विप् । वर्णव्यत्ययेन हस्य पकारः]

रुरुक्वान् रुचिमान् (विद्वान् जनः) १.१४९.३. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्]

रुरुचन्त सुशोभन्ते ४.५५.२. **रुरुचुः**=रोचन्ते ४.१६.४. **रुरुचे**=प्रदीप्यते ६.१५.५. रोचते १७.१०. **रुरुच्याः**=रुचितवान् कुर्याः ६.३५.४. **रुरोच**=रोचते

४.५.१५. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लौ द्वित्वम्। अन्यत्र लिट् लिङ् च]

रुरुचानम् शुम्भमानम् (अग्निम) ३.२.३. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्]

रुरुशीर्ष्णी रुरोः शिर इव शिरो यस्याः सा (शूरवीरा राज्ञी) ६.७५.१५. [रुरु-शिरस्पदयोः समासे 'शीर्षंश्छन्दसी' ति शिरः शब्दस्य शीर्षन् आदेशः। ततः स्त्रियां ङीपि रूपम्]

रुरुहुः प्रादुर्भवन्ति ६.७.६. प्रादुर्भवेयुः ६.२४.३. वर्धन्ते ५.७.५. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लिट्]

रुरुः मृगविशेषः २४.३९. **रुरून्**=मृगविशेषान् २४.२७. [रु शब्दे (अदा०) धातोः 'रु-शातिभ्यां क्रुन्' उ० ४.१०३. सूत्रेण क्रुन्]

रुरोज रुजति भनक्ति ६.३२.३. रुजेत् ४.५०.५. **रुरोजिथ**=भनक्षि ६.१६.३९. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लिट्]

रुरोधिथ रुद्धवानसि १.१०२.१०. [रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोर्लिट्]

रुव शब्दविद्यां प्रकाशय १.१०.४. **रुवत्**=शब्दायते १.१७३.३. [रु शब्दे (अदा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन शः अन्यत्र लेटि शविकरणे च रूपम्]

रुवण्युम् सुशब्दायमानम् (उत्तमोपदेशम्) १.१२२.५. [रु शब्दे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० कन्युः प्रत्ययः]

रुवत् प्रशस्तशब्दवत् (विद्वज्जनः) ४.५६.१. [रु शब्दे (अदा०) धातोः क्विबन्तात् प्रशंसायां मतुप्]

रुवन्तम् शब्दयन्तम् (मेघम्) ५.४२.१४. [रु शब्दे (अदा०) धातोः शतृ]

रुशत् सुन्दरं रूपम् ४.५.१५. सुरूपम् ३४.१४. सुस्वरूपम् (नाकम्=अविद्यमानदुःखम्) ५.५४.१२. तमो हिंसत् (अर्चिः=दीप्तिः) १.९२.५. ज्वलितवर्णम् (पाजं=बलम्) १.११५.५. शुक्लं शुद्धस्वरूपम् (पाजः=बलम्) ३३.३८. हिंसन् (पुत्रः) ३.२९.३. **रुशतः**=सुरूपस्य रुचिकरस्य (विदुषो जनस्य) ४.७.९. प्रकाशितस्य (वप्ससः=सुरूपस्य विदुषः) १.१८१.८. **रुशता**=सुस्वरूपेण (पयसा=दुग्धेन, धासिना=अन्नेन) ४.३.९. रूपेण ६.६५.१. **रुशद्भिः**=प्रापकै रूपादिगुणैः १.६२.८. हिंसकैर्गुणैः ४.५१.९. **रुशन्तम्**=हिंसन्तम् (भानुं=सूर्यम्) १.९२.२. **रुशन्तः**=चोरदस्य्वन्धकारादीन् हिंसन्तः (अर्चयः) १.४८.१३. [रुशत् वर्णनाम रोचतेर्ज्वलतिकर्मणः नि० २.२०. नि० ६.१३. रुच दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० अतिप्रत्यये गुणाऽभावे वर्णव्यत्ययेन चकारस्य शकारे रूपम्। अथवा=रुश हिंसायाम् (तुदा०) धातोः शतृ]

रुशती रक्तवर्णयुक्ता (उषाः) १.११३.२. **रुशतीम्**=प्रकाशिकां विद्याम् १.११७.८. [रुशदिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीप्]

रुशत्पशुः पालितः पशुर्येन सः (ऋत्वियः=ऋतुयाजको जनः) प्र०—रुशदिति पशुनाम निघं० ४.३, ५.७५.९. [रुशत्-पशुपदयोः समासः]

रुशदूर्मे रुशन्त्य ऊर्मयो ज्वाला यस्य तत् सम्बुद्धौ (अग्ने) १.५८.४. [रुशद्-ऊर्मिपदयोः समासः। ऊर्मिः=ऊर्णोतेर्नौ प्रणोतव्या भवति नमतेर्वा नि० ५.२३.]

रुशद्गवि प्रकाशमानरश्मियुक्ते (देवक्षत्रे=देवानां घने राज्ये वा) ५.६४.७. [रुशद्-गोपदयोः समासः]

रुशद्वत्सा रुशज्ज्वलितः सूर्यो वत्सो यस्याः सा (उषाः) १.११३.२. [रुशद्-वत्सपदयोः समासः। ततष्टाप् स्त्रियाम्। रुशद्वत्सा सूर्यवत्सा। रुशदिति वर्णनाम रोचतेर्ज्वलतिकर्मणः। सूर्यमस्या वत्समाह साहचर्याद्रसहरणाद्वा नि० २.२०.]

रुशमानाम् हिंसकमन्त्रीणाम् ५.३०.१४. **रुशमाः**=ये रुशान् हिंसकान् मिन्वन्ति ते (हिंसकहिंसकजनाः) ५.३०.१२. **रुशमासः**=हिंसकहिंसकाः जनाः) ५.३०.१३. [रुश हिंसायाम् (तुदा०) धातोर्बाहु० औणा० अमः। बहुलवचनादेव गुणाऽभावः। रुशमासः प्रयोगे जसोऽसुक्। अथवा रुशोपपदे डुमिञ् प्रक्षेपणे धातोः क्विप्। 'मीनातिमिनोतिदीङाम्०' इत्यात्त्वम्। रुशः=रुश हिंसायाम् (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

रुशमे हिंसके (अर्ये=धनस्वामिनि वैश्यादौ) ३३.८२. **रुशमेषु**=हिंसकमन्त्रिषु ५.३०.१५. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

रुहत् रोहेत् प्र०—अत्र 'कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि' इति च्लेरङ् 'बहुलं छन्दस्यमाङ्योगेऽपि' इत्यडभावो लिङर्थे लुङ् च १.३४.५. रोहति ५.३६.२. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लुङि कृमृदृरुहिभ्यः०' इति च्लेरङि अटोऽभावे च रूपम्]

रुहः नाड्यङ्कुराः १२.७६. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः क्विप्]

रुहाणाः प्रादुर्भवन्तः (मनुष्याः) ११.२२. रोहतः (मनुष्याः) १८.५१. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०)

धातोर्बाहु० औणा० आनच्, स च कित् । अथवा शानचि मुकोऽभावे विकरणव्यत्ययेन च शप्रत्यये रूपम्]

रुहाणाः प्रादुर्भवन्त्यश्चलन्त्यो नद्यः १.३२.८. [रुहाणप्राति० स्त्रियां टाप्]

रुहेम अधितिष्ठेम २१.६. वर्धेमहि ५.४३. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लिङ् । व्यत्ययेन शः]

रूपम् स्वरूपम् १९.८१. आकृतिम् २१.५५. रूपवद्वस्तु १.७१.१०. सच्चिदानन्दस्वरूपम् (ब्रह्म) १८.६०. चक्षुर्विषयम् (वस्तु) २१.३७. सुरूपकरणम् १९.१४. सुक्रिया रूपं वा १९.१६. चक्षुर्ग्राह्यं गुणम् १.११५.५. विषयासक्ति कुपथ्य रोग और अधर्माचरण को छोड़ कर अपने स्वरूप को सं० वि० १४४, अथर्व० १२.५.९. **रूपाणि**=शिल्पसिद्धानि चित्ररूपाणि यानादीनि वस्तूनि १.१०८.५. इच्छारूपादिगुणविशिष्टानि १०.२०. स्वरूपयुक्तानि (अ०—वस्तूनि) भा०—पृथिव्यादीनि भूतानि २३.६५. सर्वाणि विविधस्वरूपाणि स्थूलानि वस्तूनि १.१८८.९. अन्तस्थानि ज्ञानमध्ये यादृशानि ज्ञानानि सन्ति तानि २०.३०. सूर्यादीनि ५.८१.२. **रूपाय**=सुरूपनिर्मापकाय (शिल्पिजनाय) ३०.७. **रूपे**=सत्यानृतस्वरूपे (सुतासुतौ=धर्माधर्मौ) १९.७८. प्रसिद्धाऽप्रसिद्धलक्षणौ (धर्माधर्मौ) ऋ० भू० ९७, १९.७७. भिन्न-भिन्न स्वरूप वाले (धर्म, अधर्म) को सं० वि० १८७, १९.७७. निरूपिते (सत्यानृते=सत्यञ्चानृतं च ते) १९.७७. **रूपैः**=विचित्राभिराहूतिभिः २९.३४. सुखस्वरूपैः (पशुभिः=गवादिभिः) १०.३०. शुक्लादिभिः १.१६०.२. [रु शब्दे (अदा०) धातोः 'खष्पशिल्पशष्पवाष्परूपपर्पतल्पाः' उ० ३.२८. सूत्रेण प-प्रत्यये दीर्घत्वं निपात्यते । रूपं रोचतेः नि० २.३. रूपाणि प्रज्ञानानि नि० १२.१३. अन्नं वै रूपम् श० ९.२.१.१२. कुमारीं रूपं (गच्छति) गो० पू० २.२. योषित्येव रूपं दधाति श० १३.१.९.६. तै० ३.८.१३.२. रूपं हिरण्यम् मै० ४.८.२.]

रूपं रूपम् प्रतिरूपम् ३.५३.८. प्र०—अत्र वीप्सायां द्वित्वम् २०.६४. [रूपम् पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

रूपशः रूपैः सह १.१६४.५. [रूपप्राति० बह्वल्पार्थात्०' अ० ५.४.४२. सूत्रेण 'वा छन्दसि' नियमाच्छस्]

रूपा रूपाणि १२.६६. [रूपप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

रूपेभिः रूपैः ५.४३.१०. [रूपप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

रेकु शङ्कितम् (वस्तु) ४.५.१२. [रेकृ शङ्कायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उः]

रेक्णसा धनेन २५.२५. **रेक्णः**=धनम् प्र०—'रिचेर्धने घिच्च' उ० ४.१९९. अनेन रिच्धातोर्धनेऽर्थेऽसुन् प्रत्ययः स च घिन्नुडागमश्च १.३१.१४. प्रशस्तं धनमिव (पयः=दुग्धम्) १.१२१.५. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोः 'रिचेर्धने घिच्च' उ० ४.१९९. सूत्रेणासुन् नुडागमो घित्वात्कुत्वञ्च । रेक्णः धननाम निघं० २.१०. रेक्ण इति धननाम, रिच्यते प्रयतः नि० ३.२.]

रेचि विरिच्यते ४.१६.५. [रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोः कर्मणि लुङि चिणि अटोऽभावे च रूपम्]

रेजत् रेजते कम्पते ४.१७.२. **रेजत**=कम्पयति ४.२२.४. रेजते ४.१७.२. कम्पते ५.६०,३. **रेजति**=कम्पते १.१६८.५. उपार्जति १.१२९.६. **रेजते**=कम्पते चलति १.३७.८. **रेजथ**=कम्पध्वम् ५.५९.४. **रेजन्ते**=कम्पन्ते गच्छन्ति वा ६.५०.५. [भ्यसते रेजत इति भयवेपनयोः नि० ३.२१. रेजति कम्पयति नि० १०.४२. रेजति गतिकर्मा निघं० २.१४. रेजते उत्तराणि पदानि निघं० ३.२९.]

रेजमानः कम्पमानः (सत्पुत्रः) ३.३१.३. **रेजमानाः**=कम्पमाना गच्छन्तः (शत्रवः) ७.६०.१०. [रेजते वेपने (नि० ३.२१.) धातोः शानच्]

रेजमाने चलन्त्यौ भ्रमन्त्यौ (क्रन्दसी=द्यावापृथिव्यौ) ३२.७. [रेजमानप्राति० स्त्रियां टाप् । ततो द्विवचनम्]

रेजयत् कम्पयते ५.८७.५. **रेजयन्ति**=कम्पयन्ति ७.५७.१. [रेजते वेपने (नि० ३.२१.) धातोर्णिजन्ताल्लेट् । अन्यत्र लट्]

रेट् शत्रु-हिंसकः (वीरमनुष्यः) प्र०—अत्र रिषतेहिंसार्थात् कर्त्तरि विच् ६.१८. [रिष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति विच्]

रेणुककाटम् रेणुकैर्युक्तं कूपम् २८.१३. **रेणुककाटः**=रेणुकाकूप इवाऽन्धकारहृदयः (दुर्जनः) ६.२८.४. [रेणुकाकाटपदयोः समासः । काटः कूपनाम निघं० ३.२३.]

रेणुम् धूलिम् ४.३८.७. अपराधम् ४.१७.१३. विद्यादिशुभप्राप्तम् १.५६.४. रजः ४.४२.५. **रेणुः**=धूलिः १.३३.१४. [रि गतौ (तुदा०) धातोः 'अजिवृरीभ्यो निच्च' उ० ३.३८. सूत्रेण णुः]

रेतसः वीर्यस्य १.१००.३. **रेतसा**=जलेन ५.८३.४. **रेतसे**=वीर्यस्य वर्द्धनाय १.१५५.३. **रेतः**=उदकमिव

विज्ञानम् ७.३३.१३. विद्याशिक्षाजं शरीरात्मवीर्यम् १.६८.४. पराक्रमम्, अ०—वीर्यम् २३.२०. वीर्यकरं जलम् ३३.११. **रेतांसि**=भा०—बलानि ३.१२. [रि गतौ (तुदा०) धातोः 'स्त्रुरिभ्यां तुट् च' उ० ४.२०२. सूत्रेणासुन् तुडागमश्च । रेतः=उदकनाम निघं० १.१२. रेतो वै प्रजातिः श० १४.९.२.६. उभयतः परिगृहीतं वै रेतः प्रजायते श० २.३.१.३२. रेतः पुरुषस्य प्रथमं सम्भवतः सम्भवति ऐ० ३.२. रेतो हृदये (श्रितम्) श० ३.१०.८.७. अर्वाग्वै नाभे रेतः श० ६.७.१.९. रेतो वै नाभा नेदिष्ठः ऐ० ६.२७. गो० उ० ६.८. रेतो वै वृष्ण्यम् श० ७.३.१.४६. सोमो वै वृष्णो अश्वस्य रेतः तै० ३.९.५.५. रेतः सोमः श० ३.३.२.१. तै० २.७.४.१. कौ० १३ ७. रेतो वै सोमः श० १.९.२.९. सोमो रेतोऽदधात् तै० १.६.२.२. आपो रेतः प्रजननम् तै० ३.३.१०.३. आपो मे रेतसि श्रिताः तै० ३.१०.८.६. आपो हि रेतः तां० ८.७.९. रेतो वा आपः ऐ० १.३. यत्पयस्तद्रेतः गो० उ० २.६ पयो हि रेतः श० ९.५.१.५६. रेतः पयः श० १२.४.१.७. रेतो वै घृतम् श० ९.२.३.४४. रेत आज्यम् श० १.३.१.१८. एतद् रेतः यदाज्यम् तै० १.१.९.४. रेतो वा ऽओदनः श० १३.१.१.४. तै० ३.८.२.४. रेतो वा अन्नम् गो० पू० ३.२३. प्राणो रेतः ऐ० २.३८. रेतो वै तनूनपात् श० १.५.४.२. रेतो हिरण्यम् तै० ३.८.२.४. वागु हि रेतः श० १.५.२.७. वाग् रेतः श० १.७.२.२१. शुक्लं वै रेतः ऐ० २.१४. योषा पयस्या रेतो वाजिनम् श० २.४.४.२१. रेतो वाजिनम् तै० १.६.३.१०. रेतः सिक्तिर्वै पात्नीवतग्रहः कौ० १६.६. रेतो वै पात्नीवतः (ग्रहः) ऐ० ६.३. गो० उ० ४.५. रेतो वा अच्छिद्रम् ऐ० २.३८. सौर्यं रेतः तै० ३.९.१७.५. द्रप्सीव हि रेतः श० ११.४.१.१५. त्रिवृद्धि रेतः तां० ८.७.१४. पञ्चविंशं हि रेतः श० ७.३.१.४३. रेतो वा ऽअत्र यज्ञः श० ७.३.२.९. संवत्सरे संवत्सरे वै रेतः सिक्तिर्जायते कौ० १९.९. कामार्त्तो वै रेतः सिञ्चति गो० उ० ६.२५. आण्डौ वै रेतः सिचौ । यस्य ह्याण्डौ भवतः स एव रेतः सिञ्चति श० ७.४.२.२४. पृष्ट्यौ वै रेतःसिचौ श० ७.५.१.१३. दक्षिणतो हि रेतः सिच्यते तां० ८.७.१०. दक्षिणतो वा उदग्योनौ रेतः सिच्यते श० ६.४.२.१०. आनुतुन्नाद्धि रेतो धीयते तां० १२.१०.११. हिंकृताद्धि रेतो धीयते तां० ८.७.१३. उपांशु वै रेतः सिच्यते श० ९.३.१.२. उपांश्विव वै रेतसः सिक्तिः ऐ० २.३८. यदा वै स्त्रियै च पुंसश्च संतप्यतेऽथ रेतः सिच्यते श० ३.५.३.१६. अन्ततो हि रेतो धीयते श० ९.५.१.५६. वायुर्वै रेतसां विकर्त्ता श० १३.३.८.१. प्राणो हि रेतसां विकर्त्ता श० १३.३.८.१. प्राणोदानाऽउ वै रेत सिक्तं विकुरुतः श० ९.५.१.५६.]

रेतोधसः पराक्रमधारकस्य (गृहपतेः) ८.१०. **रेतोधाम्**=वीर्यधारकमिति पराक्रमवन्तं पुत्रम् ८.१०. **रेतोधाः**=यो रेतः श्लेषमाऽऽलिङ्गनं दधाति सः (वाजी=राजा) २३.२०. यो रेत उदकमिव वीर्यं दधाति सः (सूर्यः) ३.५६.३. यो रेतो वीर्यं दधाति सः (वरुणः=उत्तमकर्मकारी पतिः) ५.६९.२. [रेतस् उपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । रेतोधसः=रेतस्-उपपदे+डुधाञ् (जु०) धातोरसुन् । बहुलवचनात् किच्च । वायुर्वै रेतोधाः जै० २.१९८. सोमो वै रेतोधाः तै० सं० १.७.४.]

रेतोधाः ये रेतो वीर्यं दधाति ते (मनुष्याः) ३३.७४. [रेतस्-उपपदे दधातेः कः । ततः प्रथमाबहुवचनम्]

रेपः अपराधम् ४.६.६. [रप व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः 'रपेरत एच्च' उ० ४.१९०. सूत्रेणासुन् धातोरकारस्य-एकारादेशः]

रेभति अर्चति १.१०५.९. **रेभन्**=स्तुवन्ति ७.१८.२२. [रेभृ शब्दे (भ्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लङ् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । रेभति अर्चतिकर्मा नि० ३.१४.]

रेभम् सकल विद्यागुणस्तोतारम् (ऋषिम्) १.११७.४. **रेभः**=बहुश्रोता (पतिः) प्र०—अत्र रीङ् धातोरौणादिको भ-प्रत्ययः १.११३.१७. पूजनीयो विद्वान् विदुषां सत्कर्त्ता वा, प्र०—रेभतीत्यर्चतिकर्मा निघं० ३.१४, ६.३.६. उपदेशकः १.१२७.१०. **रेभाः**=विदितशब्दविद्याः (कवयः=मेधाविनः) १.१६३.१२. सर्वविद्यास्तोतारः (कवयः) २९.२३. [रेभः स्तोतृनाम निघं० ३.१६. रेभति अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोरच् । रीङ् श्रवणे (दिवा०) धातोर्वौणा० भः]

रेरिहत् अतिशयेन त्यजेत् १.१४०.९. ताडयति १२.२१. भृशं युध्यस्व १२.३३. भृशं फलानि ददाति भा०—बहुफलप्रदा वर्त्तते १२.६.

रेरिहाणा आस्वादयन्त्यौ (सेनाराजनीती) ६.२७.७. [लिह आस्वादने (अदा०) धातोर्लिटः कानच् । शानचि वा शपः 'बहुलं छन्दसी' ति श्लौ द्वित्वे द्विवचनस्याकारादेशे च रूपम् । वर्णव्यत्ययेन लकारस्य रेफः]

रेरिहाणा भृशं लिहन्ती (उषाः) ३.५५.१४. [रेरिहाण इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

रेवत् प्रशस्तपदार्थयुक्तं द्रव्यम् १.१२४.९. प्रशस्तधनवत् नित्यं सम्बद्धं धनं वा १.१२४.१०. बहवो रायो विद्यन्ते

यस्मिँस्तदैश्वर्यम् १.१५१.८. द्रव्यवत् ३.७.१०. प्रशस्तधनेन तुल्यम् ३.२३.४. प्रशस्तधनयुक्तम् (सहः=बलम्) ५.२३.४. परमोत्तमधनवते (श्रवसे=श्रवणायाऽन्नाय वा) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति चतुर्थ्या एकवचनस्य लुक् १.६५.११. राज्यादिप्रशस्ताय श्रीमते १.६६.६. प्रशस्तानि रायो धनानि विद्यन्ते यस्मिन् सुखे तत् १.६२.१४. श्रीमत् (अपत्यम्) २.३५.४. **रेवतः**=पदार्थप्राप्तिमतः पुरुषार्थिनो जीवस्य प्र०—अत्र 'छन्दसीरः' इति वत्वम् १.४.२. **रेवता**=प्रशस्तधनवता (पणिना=वणिग्जनादिना) ४.२५.७. [रयिप्राति० प्रशंसायां मतुप् । 'रयेर्मतौ बहुलम्' अ० ६.१.३७. वा०सूत्रेण सम्प्रसारणम् । 'छन्दसीरः' अ० ८.२.१४. सूत्रेण मतोर्मकारस्य वत्वम्]

रेवती प्रशस्तधनकारिणी (उषाः=प्रातर्वेला) ३.६१.६. **रेवतीः**=रयिश्शोभा धनं प्रशस्तं विद्यते यासु ताः प्रजाः प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् 'रयेर्मतौ बहुलम्' अ० ६.१.३७. अनेन सम्प्रसारणं 'छन्दसीरः' इति मस्य वत्वं 'सुपां सुलुक्०' इति पूर्वसवर्णादेशश्च १.३०.१३. रायः प्रशस्तानि धनानि विद्यन्ते यासु ताः प्रजाः ६.८. विद्याधनसहिताः प्रशस्ता नीतयो गाव इन्द्रियाणि पशवः पृथिवीराज्यादियुक्ता यासु ताः अ०—प्रशस्ता नीतयो रेवत्यः ३.२१. रेवत्य आपः १.२१. बहुधनशोभायुक्ताः (उषसः=प्रभातवेलाः) ४.५१.४. प्रशस्तश्रीयुक्ताः (पुरन्धीः=धियः) १.५८.२. धनवतीः शत्रुसेनोल्लङ्घिकाः प्रजाः २१.२८. [रेवदिति रयिप्राति० मतुपि व्याख्यातम् । ततः स्त्रियाम् 'उगितश्च' इति ङीप् । रेवत्यः=नदीनाम निघं० १.१३. रेवती (नक्षत्रम्) रेवत्यामरवन्त तै० १.५.२.६. पूष्णो रेवती । गावः परस्ताद् वत्सा अवस्तात् तै० १.५.१.५. पूषा रेवत्यन्वेति पन्थाम् तै० ३.१.२.६. (रैवतं साम) स (प्रजापतिः) रेवतीमसृजत तद् गवां घोषोऽन्वसृज्यत तां० ७.८.१३. ज्योती रेवती साम्नाम् तां० १३.७.२. यद् बृहत् तद् रैवतम् ऐ० ४.१३. गायत्री वै रेवती तां० १६.५.१६. या हि का च गायत्री सा रेवती तां० १६.५.२७. रेवत्यो मातरः तां० १३.६.१७. रेवत्य आपः श० १.२.२.२. आपो वै रेवतीः तै० ३.२.८.२. आपो वै रेवत्यः तां० ७.६.२०. अपां वा एष रसो यद्रेवत्यः तां० १३.१०.५. रेवन्तो हि पशवस्तस्मादाह रेवती रमध्वमिति श० ३.७.३.११. पशवो वै रेवत्यः तां० १३.१०.११. वाग्वै रेवती श० ३.८.१.१२. रेवत्यः सर्वा देवताः ऐ० २.१६. वज्रो वै रेवती श० ३.८.१.१२.]

रेवान् विद्याद्यनन्तधनवान् (ब्रह्मणस्पतिः=जगदीश्वरः) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् 'रयेर्मतौ बहुलं सम्प्रसारणम्' अ० ६.१.३७. इति वार्त्तिकेन सम्प्रसारणम् 'छन्दसीरः' अ० ८.२.१५. इति मकारस्य वकारः १.१८.२ **बहुधनवान्** (मर्त्तः=विद्वज्जनः) ७.१.२३. प्रशस्ता रायो विद्यन्ते यस्य सः (न्यायाधीशो जनः) २.२७.१२. [रयिप्राति० प्रशंसायां मतुपि रेवदिति व्याख्यातम् । ततः पुंसि सौ 'रेवान्' इति रूपम्]

रेषणाः हिंसकाः (शत्रवः) १.१४८.५. [रिष हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति कर्त्तरि ल्युट्]

रेषत् हिनस्ति ७.२०.६. [रिष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्लेट्]

रेषयन्ति हिंसयन्ति १.१४८.५. [रिष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लट्]

रेष्माणम् हिंसकम् अ०—अविद्यादिरोगम् २५.२. [रिष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि मनिन्]

रेष्म्याय रेष्मेषु हिंसकेषु भवाय (जनाय) १६.३९. [रेष्मप्राति० भवार्थे यत् । रेष्मः=रिष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोरौणा० बहुलवचनान् मन्]

रैवताय धनसम्बन्धिने (व्यवहाराय) २९.६०. [रेवदिति व्याख्यातम् । ततः 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् । रैवतः मेघनाम निघं० १.१०.]

रैवतासः रेवतीषु पशुषु भवा (मनुष्याः) ५.६०.४. [रेवतीप्राति० भवार्थेऽण् । ततो जसोऽसुक् । पशवो वै रेवत्यः तां० १३.१०.११.]

रोक् रोगं कुर्य्याः १६.४७. [रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लुङि लेर्लुकि अटोऽभावे च रूपम्]

रोकः शब्दायमानः (तेजस्विजनः) ६.६६.६. **रोकाः**=रुचिकराः प्रकाशाः ३.६.७. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोरौणा० बहुलवचनात् कः]

रोचत रोचन्ते ४.१०.६. प्रकाशते ४.१.१७. **रोचते**=प्रकाशते ४.१०.५. दीप्यते १.१८८.११. प्रदीप्यते ३.२९.७. रुचिकारी वर्त्तते १.४३.५. प्रकाशमान होता है सं० वि० ९३, अथर्व० ११.५.२६. **रोचन्ते**=परमानन्देन प्रकाशन्ते ऋ० भू० १६३, रुचिहेतवो भवन्ति १.६.१. **रोचसे**=प्रकाशसे २.७.४. **रोचस्व**=प्राप्तो भव, अभितः प्रीतो भव ३८.१७. [रोचते ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावः । अन्यत्र लट् लोट् च । रोचते ज्वलतिकर्मणः नि० २.२०.]

रोचनम् रोचन्ते यस्मिँस्तत् (विश्वम्) ३.४४.४. रुचिकरम् (विश्वं=सर्वराज्यम्) ३३.३६. अभिप्रीतम्

(विश्वं=सर्वं जगत्) १.५०.४. देदीप्यमानं रुचिकरम् (विश्वं=सर्वं जगत्) १.४९.४. **रोचनस्य**=दीप्तिमतः (रजसः=लोकस्य) ५.६९.४. **रोचनात्**=सूर्यप्रकाशाद्रुचिकरान्मेघमण्डलाद्वा १.६.९. प्रकाशनात् १.१४.९. रुचिविषयात् ५.५६.१, देदीप्यमानात् (भा०—सूर्यप्रकाशात्) १.४९.१. **रोचनानि**=सूर्यविद्युद्भूमिसम्बन्धीनि तेजांसि १.१४९.४. **रोचने**=रुचिनिमित्ते (दिवि=सूर्यप्रकाशे) १.१९.६. दीप्तौ १३.८. **रोचनेन**=प्रदीपनेन २७.१. स्वप्रकाशेन ३.५५.९. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। अन्यत्र भावे कर्त्तरि च ल्युट्। रुच दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्वा 'बहुलमन्यत्रापि' उ० २.७८. सूत्रेण युच्। रोचनः (यजु० १२.४९.) रोचनो ह नामैष लोको यत्रैष (सूर्यः) एतत् तपति श० ७.१.१.२४. नक्षत्राणि वै रोचना दिवि तै० ७.९.४.२.]

रोचनस्थाम् रोचने प्रदीपने तिष्ठतीति तम् (अग्निं=(वह्निम्) ३.२.१४. **रोचनस्थाः**=रोचने प्रदीपने तिष्ठतीति (अग्निः=पावकः) ६.६.२. [रोचनोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

रोचना रोचनानि प्रदीपनानि ६.७.७. विद्युद्भौतिकसूर्यरूपाणि ज्योतींषि ४.५३.५. प्रकाशनानि १.१४६.१. प्रदीपकानि ज्ञानानि २.२७.९. प्रकाशकानि (कर्मोपासनाज्ञानानि) ५.२९.१. विद्याशब्दसूर्यादीनि न्यायबलराज्यपालनादीनि च १.१०२.८. रुचिकराणि (कर्माणि) ३.१२.९. [रोचनमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

रोचना रुचिकरी (उषाः=प्रभातवेला) ३.६१.५. सूर्यादिदीप्तिः १.८१.५. **रोचनाः**=प्रकाशिताः प्रकाशकाश्च (अ०—मनुष्याः) १.६.१. दीप्तयः २३.५. [रुच दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० युच्। ततः स्त्रियां टाप्]

रोचमानः रुचिं कुर्वन् (इन्द्रः=विद्युद्रूपोऽग्निः) ३.४६.३. प्रकाशमानः (पावकः=अग्निः) ७.३.९. **रोचमानाः**=रुचिमन्तः (सज्जनाः) ३.७.५. प्रकाशमानाः (विद्वांसः) ४.१४.१. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः शानच्]

रोचमाना विद्याविनयाभ्यां प्रकाशमाना (देवी=विदुषी स्त्री) ६.६४.२. **रोचमानाम्**=रुचिकारिकाम् (उषसम्) १.११५.२. **रोचमानाः**=रुचिमत्यः (वराः स्त्रियः) ६.६४.१. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः शानच्। ततः स्त्रियां टाप्]

रोचयत् रोचयेत् प्र०—अत्राऽडभावः ३.२.२. प्रकाशयति ६.३९.४. [रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्। अडभावश्छान्दसः]

रोचिषा प्रकाशेन १७.८. अतिरुचियुक्तया (वाण्या) ५.२६.१. [रुच दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इसिन्]

रोचिष्णू विषयासक्तिविरहत्वेन देदीप्यमानौ (विवाहितस्त्रीपुरुषौ) १२.५७. [रुच दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'अलंकृञ्निराकृञ्०' अ० ३.२.१३६. सूत्रेण ताच्छीलादिषु इष्णुच्]

रोदसी द्यावापृथिव्यौ २०.६०. भूमिसूर्यौ ३.२६.९. सूर्यादिप्रकाशकं पृथिव्याद्यप्रकाशकं द्विविधं जगत् ७.५.४. प्रकाशभूमी १२.२३. प्रकाशपृथिवी-लोकसमूहौ ५.१६. सूर्यभूलोकौ ४.४२.३. भूमिराज्यं विद्याप्रकाशं वा १.७२.४. द्यावापृथिव्याविव राजप्रजे जनसमूहौ १.१०५.१. द्यावापृथिव्याविव विद्याविनयौ ३.३४.१. अग्निभूमी १२.३३. प्रकाशाऽप्रकाशे जगती ३.५६.७. भूमिविद्याप्रकाशौ ३.३८.३. न्यायभूमिराज्ये ३.५४.१५. रोदननिमित्ते (द्यावापृथिव्यौ) २.१.१५. विद्यानयौ ३.३९.८. अहोरात्राविव १.१८५.३. राजप्रजाव्यवहारौ ३.३८.८. विद्युद्भूमी ६.५०.३. रोदस्योः=प्रकाशाऽप्रकाशयोर्भूमिसूर्ययोः १.५९.२. [रोदसी द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०. रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोरौणा० असुन्। वर्णव्यत्ययेन धकारस्य दकारः। पदनाम निघं० ५.५. रोदसी रुद्रस्य पत्नी नि० ११.४९. रोदसी द्यावापृथिव्यौ नि० ५.२१. रोदसी रोधसी द्यावापृथिव्यौ विरोधनात् नि० ६.१. यदरोदीत्(प्रजापतिः)तदनयोः (द्यावापृथिव्योः) रोदस्त्वम् तै० २.२.९.४. इमे वै द्यावापृथिवी रोदसी श० ६.४.४.२. इमे (द्यावापृथिव्यौ) ह वाव रोदसी जै० उ० १.३२.४. द्यावापृथिवी वै रोदसी ऐ० २.४१.]

रोधचक्राः रोधाश्चक्राणि च यासु ता नद्यः १.१९०.७. [रोधस्-चक्रपदयोः समासे पूर्वपदस्यान्त्यलोपः। रोधचक्राः नदीनाम निघं० १ १३.]

रोधत् निरुणद्धि स्वीकरोति १.६७.५. [रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

रोधना रक्षणार्थानि (कृतानि) १.१२१.७. रोधनानि २.१३.१०. [रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोर्ल्युट्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

रोधस्वतीः रोधो वहुविधमावरणं विद्यते यासां

नदीनां नाडीनां वा ता रोधस्वत्यः १.३८.११. [रोधस्-प्राति० मतुबन्तान् स्त्रियां ङीप्। रोधस्वत्यः=नदीनाम निघं० १.१३.]

रोधः रोधनम् ४.५.१. **रोधांसि**=आवरणानि २.१५.८. रोधनानि ४.२२.४. [रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोरौणा० असुन्। रोधः कूलं निरुणद्धि स्रोतः नि० ६.१.]

रोपणाकासु रोपणं समन्तात् कामयन्ति तासु क्रियासु लिप्तास्वोषीषु १.५०.१२. [रोपणोपपदे कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोर्डः। ततः स्त्रियां टाप्। रोपणम्=रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् ल्युट्। 'रुहेः पोऽन्यतरस्याम्' इति धातोर्हस्य पकारादेशः]

रोपुषीणाम् विमोहयन्तीनाम् (विषसम्बन्धिपीडातरङ्गानाम्) १.१९१.१३. [रुप विमोहने (दिवा०) धातोर्लिटः क्वसुः। ततः स्त्रियां ङीप्। 'वा छन्दसी' ति धातोर्द्वित्वं न]

रोमशा प्रशस्ता लोमा (राज्ञी) १.१२६.७. [लोमन्-प्राति० प्रशंसायाम् मत्वर्थे 'लोमादिपामादि०' सूत्रेण शः ततः स्त्रियां टाप्। वर्णव्यत्ययेन लकारस्य रेफः। कपिलकादित्वाद्वा लत्वम्]

रोमा रोमाणि ओषध्यादीनि १.६५.४. [लोमन्-प्राति० शेर्लोपश्छन्दसि। कपिलकादित्वाद् वा लत्वम्]

रोमाणि लोमानि १.१३५.६. [लोमन्प्राति० प्रथमा बहुवच०। कपिलकादित्वाद् वा लत्वम्। लोमन्=लूञ् छेदने (क्रया०) धातोः नामन्सीमन्०' उ० ४.१५१. सूत्रेण मनिन्]

रोरवीति ऋग्वेदादिना सवनक्रमेण वा शब्दायते १७.९१. भृशमुपदिशति ४.५८.३. भृशं शब्दायते ३.५५.१७. विद्युदादिना भृशं शब्दं करोति ६.७३.१. [रु शब्दे (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट्]

रोराभ्याम् कथनश्रवणाभ्याम् २५.३. [रु शब्दे (अदा०) धातोर्विट्, प्रत्यये रो शब्दः रीङ् श्रवणे (दिवा०) धातोश्च क्विपि रा शब्दश्छान्दसः। तयोः समासः]

रोरुचानः भृशं देदीप्यमानः (विद्वान् राजा) ४.१.७. [रुच दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्तादौणा० युच्]

रोरुवत् पुनः पुनरारोह १.५४.१. भृशं रौति शब्दं करोति ६.६१.८. [रु शब्दे (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छतृ]

रोरुवत् अतिशयेन शब्दयन् (जनः) १.१४०.६. पुनः पुना रोदनं कारयन् सन् (सभाध्यक्षो विद्वान्) १.५४.५. [रु शब्दे (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छतृ। रोरुवत् रोरूयमाणः नि० ५.१६.]

रोह उन्नतिं गमय गमयति वा ३.१४. आरूढो भव १२.५. वर्धयस्व ३.८.११. दर्शयसि दर्शयति वा ४.३२. प्रादुर्भव ५.४३. प्रसिद्धो भव १०.१०. **रोहति**=वर्धते १.१४१.४. **रोहते**=वर्द्धते २.५.४. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्। रोहते प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

रोहणम् आरोहन्ति येन तत् (भा०—विद्याधनम्) १.५२.९. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः करणे ल्युट्]

रोहम् प्रादुर्भावम् १३.५१. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्घञ्। स्वर्गो वै लोको रोहः श० ७.५.२.३६.]

रोहय सन्तानों से बढ़ा सं० वि० १७० वेदार्षे अथर्व० १४.२.३७. **रोहयत्**=उपरि स्थापितवान् १.७.३. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्। अन्यत्र लङ् अटोऽभावः]

रोहांसि आरोहणानि ६.७१.५ [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

रोहिणीषु रोहणशीलासु (ओषधीषु) १.६२.९. **रोहिण्यः**=आरोढुमर्हाः (त्र्यवयः) २४.५. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः 'रुहेश्च' उ० २.५५. सूत्रेण इनन् जातिवाचकत्वात् स्त्रियां ङीष्। अथवा रुहधातोस्ताच्छील्ये णिनिः। ततः स्त्रियां ङीष्। रोहिणी (नक्षत्रम्) सा (विराट्) तत ऊर्ध्वारोहत्। सो रोहिण्यभवत्। तद्रोहिण्यै रोहिणीत्वम् तै० १.१.१०.६. विराट् सृष्टा प्रजापतेः। ऊर्ध्वारोहद्रोहिणी। योनिरग्नेः प्रतिष्ठितिः तै० १.२.१.२७. प्रजापती रोहिण्यामग्निमसृजत तं देवा रोहिण्यामादधत ततो वै ते सर्वान् रोहानरोहन् तद्रोहिण्यै रोहिणीत्वम् तै० १.१.२.२. ता अस्य (प्रजापतेः) प्रजाः सृष्टा रुकरूपा उपलब्धास्तस्थू रोहिण्य इवैव तद्वै रोहिण्यै रोहिणीत्वम् श० २.१.२.६. या (प्रजापतेर्दुहिता) रोहित् सा रोहिणी (अभूत्) ऐ० ३.३३. प्रजापते रोहिणी तै० १.५.१.१. रोहिणी देव्युदगात् पुरस्तात्…प्रजापतिं हविषा वर्धयन्ती तै० ३.१.१.२. इन्द्रस्य रोहिणी तै० १.५.१.४. आत्मा वै प्रजा पशवो रोहिणी श० ११.१.१.७. यद् ब्राह्मणः (ब्राह्मणनक्षत्रम्) एव रोहिणी। तस्मादेव तै० २.७.९.४.]

रोहित् अधस्ताद्रक्तवर्णा (अग्नेर्ज्वाला) १.१००.१६. रक्तगुणविशिष्टो मृगविशेषः २४.३०. **रोहितः**=नद्यः ७.४२.२. रोहयन्त्यारोहयन्ति यानानि यास्ताः (अरुषीः=गमनहेतवो ज्वालाः) प्र०—अत्र 'हृसृरुहियुषिभ्य इतिः' उ० १.९७. अनेन रुहधातोरितिः प्रत्ययः १.१४.१२. रक्तगुणविशिष्टाः (ज्वालाः) ५.५९.६. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः 'हृसृरुहियुषिभ्य इतिः' उ० १.९७. सूत्रेण इतिः। रोहितः=नदीनाम निघं० १.१३. रोहितः=अंगुलिनाम निघं० २.५.]

रोहितम् प्रादुर्भूतम् (रसम्=आनन्दम्) १९.८३. **रोहितः**=रक्तवर्णः (पशुः) २४.२. रक्तगुणविशिष्टस्याग्नेर्वेगादिगुणसमूहः प्र०—रोहितोऽग्नेरित्यादिष्टोपयोजननामसु पठितम् निघं० १.१५, १.३९.६. **रोहिताय**=वृद्धिकराय (सेनापतये) १६.१९. **रोहिताः**=रक्तवर्णाः (पशवः पक्षिणो वा) २४.६. **रोहितौ**=विद्युत्प्रसिद्धवह्नी ५.३६.६. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः 'रुहेरश्च लो वा' उ० ३.९४. सूत्रेण इतन्प्रत्ययः। रोहितम् (छन्दः) रोहितं वै नामैतच्छन्दो यत् पारुच्छेपमेतेन वा इन्द्रः सप्त स्वर्गांल्लोकानरोहत् ऐ० ५.१०. एतद्वा आसां (गवाम्) बीजं यद्रोहितं रूपम् मै० ४.२.१४.]

रोहिता रोहितानि रक्तगुणविशिष्टान्यग्न्यादीनि द्रव्याणि १.१३४.३. रक्तादिगुणविशिष्टौ (अश्विनौ=धारणाकर्षणाख्यौ गुणौ) २.१०.२. रोहितेन वह्निगुणेन सहितौ (वाय्वग्नी) ४.२.३. दृढबलादिगुणोपेतौ (अश्वौ) प्र०—अत्र द्विवचनस्याकारादेशः १.९४.१०. रत्नगुणविशिष्टावश्वौ ३.६.६. [रोहितमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

रोहिता रोहणकर्त्री (युवतिः स्त्री) ५.६१.९. **रोहिताः**=रक्तवर्णाः (भा०—पृथिव्यादीनां धारणक्रियाः २४.६. [रोहितमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

रोहिताञ्जिः रोहिता रक्ता अञ्जयो लक्षणानि यस्य सः (अनड्वान्=वृषभः) २९.५९. [रोहित-अञ्जि-पदयोः समासः]

रोहितासः वर्द्धिकाः (हरितः=अङ्गुलयः) ४.६.९. [रोहितप्राति० जसोऽसुक्]

रोहिदश्व रोहितोऽश्वा वेगादयो गुणा यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने) १.४५.२. **रोहिदश्वः**=रोहितोऽग्न्यादयोऽश्वा वाहनानि यस्य सः (अग्निः=पतिः) ११.७२. रोहिता रक्तादिगुणविशिष्टा अग्न्यादयोऽश्वा आशुगामिनो यस्य सः (अग्निः=राजा) ४.१.८. [रोहित्-अश्वपदयोः समासः। रोहिदिति व्याख्यातम्]

रौद्रः रुद्रदेवताकः (रुरुः=मृगविशेषः) २४.३९. **रौद्राः**=प्राणादिदेवताकाः (पशवः) २४.३. **रौद्रेण**=शत्रुरोदयितॄणामिदं तेन (अनीकेन=सैन्येन) ५.३४. [रुद्रप्राति० 'सास्य देवते' त्यर्थेऽण् 'तस्येदमि' त्यर्थे वाऽण्]

रौहिणम् रोहणशीलं मेघम् २.१२.१२. रोहिण्यां प्रादुर्भूतम् (मेघम्) १.१०३.२. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः। वर्णव्यत्ययेनोकारस्यौकारः। अथवा 'रोहिणी' शब्दाद् भवार्थेऽण्। रोहिणीति व्याख्यातम्। रौहिणः मेघनाम निघं० १.१०. (पुरोडाशौ) अग्निश्च ह वा आदित्यश्च रौहिणावेताभ्यां हि देवताभ्यां यजमानाः स्वर्गं लोकम् आरोहन्ति श० १४.२.१.२. अहोरात्रे वै रौहिणौ श० १४.२.१.३. इमौ वै लोकौ (द्यावापृथिव्यौ) रौहिणौ श० १४.२.१.४. चक्षुषी वै रोहिणौ श० १४.२.१.१५.]

लक्षम् लक्षितुं योग्यम् (भा०—कर्म्म) २.१२.४. [लक्ष दर्शनाङ्कनयोः (चुरा०) धातोर्बाहु० औणा० अन्]

लक्ष्मण्यस्य सुलक्षणेषु भवस्य (विदुषो जनस्य) ५.३३.१०. [लक्षण-लक्ष्मणशब्दौ समानार्थौ। लक्ष्मणप्राति० भवार्थे यत्। लक्ष्मणम्=लक्ष दर्शनांकनयोः (चु०) धातोः 'लक्षेरट् मुट् च' उ० ३.७. सूत्रेण नः प्रत्ययो मुडागमश्च]

लक्ष्मीः सर्वमैश्वर्य्यम् ३१.२२. विद्या शोभा और चक्रवर्त्ती राज्यश्री पं० वि०। शुभलक्षणवती धनादिश्च ऋ० भू० १३४, ३१.२२. [लक्ष दर्शनांकनयोः (चु०) धातोः 'लक्षेर्मुट् च' उ० ३.१६० सूत्रेण ईः प्रत्ययो मुडागमश्च। लक्ष्मीः=लाभाद्वा लक्षणाद्वा (लप्स्यनाद्वा) लाञ्छनाद्वा लषतेर्वा स्यात् प्रेप्साकर्मणो लग्यतेर्वा स्यादाश्लेषकर्मणो लज्जतेर्वा स्यादश्लाघाकर्मणः नि० ४.९. तस्माद् यस्य मुखे लक्ष्म भवति तं पुण्यलक्ष्मीक इत्याचक्षते श० ८.४.४.११. तस्माद् यस्य दक्षिणतो लक्ष्म भवति तं पुण्यलक्ष्मीक इत्याचक्षते श० ८.४.४.११. तस्माद् यस्य सर्वतो लक्ष्म भवति तं पुण्यलक्ष्मीक इत्याचक्षते श० ८.५.४.३]

लघुः छोटा (भारः=भार) सं० वि० १६९, अथर्व० ९.२.३.२४. [लघि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः 'लङ्घिबंह्योर्नलोपश्च' उ० १.२९. सूत्रेण कुः। धातोर्नकारस्य च लोपः]

लभते प्राप्नोति २४.११. [डुलभष् प्राप्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

लयः लीयन्ते यस्मिन् सः (विषयो विद्यादिगुणो वा) १८.७. [लीङ् श्लेषणे (दिवा०) धातोः 'एरच्' इत्यच्]

ललामगुम् येन न्यायेनेप्सां गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति तम् अ०—न्यायम्, भा०—प्राप्तव्यं सुखम् २३.२६. [ललामोपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ३.२.१८. वा०सूत्रेण डुः। ललामः=लल ईप्सायाम् (चुरा०) धातोर्बाहु० औणा० आमन्]

ललामीः शिरोवदुपरिभागः प्रशस्तो यस्याः सा (अग्नेर्ज्वाला) १.१००.१६. ['ललाम इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' इति वा०सूत्रेण ईः प्रत्ययः]

लाङ्गलम् सीरापश्चाद्भागे दार्ढ्याय संयोज्यं काष्ठम् १२.७१. हलाऽवयवः ४.५७.४. [लगि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः 'लङ्गेर्वृद्धिश्च' उ० १.१०८. सूत्रेण कलः प्रत्ययो वृद्धिश्च। लाङ्गलं लङ्गतेर्लाङ्गूलवद्वा। लाङ्गलं लगतेर्लङ्गतेर्लम्बतेर्वा नि० ६.२६.]

लाजाः प्रफुल्लिता व्रीहयः १९.१३. लाजैः=प्रफुल्लितैरन्नैः २१.३२. भर्जितैः (अन्नैः) २१.४२. [लाज भर्जने (भ्वा०) धातोर्घञ्। लाजा-लाजतेः नि० ६.९. लाजाः=आदित्यानां वा एतद्रूपं यल्लाजाः तै० ३.८.१४.४. नक्षत्राणां वा ऽएतद्रूपं यल्लाजाः श० १३.२.१.५.]

लाजीन् स्वस्वकक्षायां चलितान् (लोकान्) २३.८. [लजति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्बाहु० औणा० इणप्रत्यये लाजिः]

लिप्यते लिप्यमान होता है सं० वि० १४५, ४०.२. [लिप उपदेहे (तुदा०) धातोः कर्मणि लट्]

लेखीः लिखेः ५.४३. [लिख अक्षर विन्यासे (तुदा०) धातोर्लुङ्। अटोऽभावश्च]

लोकम् दृश्यमानं भुवनसमूहम् १.९३.६. द्रष्टव्यसुखं लोकं वा ६.७३.२. सर्वस्य द्रष्टारम् (ईश्वरम्) २०.२६. दर्शनीयम् (भा०—विद्याप्रकाशम्) २३.४३. द्रष्टुं योग्यम् (राज्यम्) २.३०.६. द्रष्टव्यमानन्दम् भा०—ब्रह्म १८.५२. दर्शनसुखसङ्घातं मोक्षपदं वा १८.५८. दर्शनमभ्युदयं वा ६.४७.८. कर्मानुकूलं सुखदुःखप्रापकम् (लोकलोकान्तरम्) ३५.२. सम्प्रेक्षितव्यम् (भा०—समावर्त्तनानन्तरं स्वयंवरं (विवाहम्) १२.५४. आर्षं दर्शनम् १२.४५. जीवात्मानम् ३४.५५. द्रष्टव्यं जन्मान्तरे लोकान्तरं वा ७.२०.२. देखने योग्य वानप्रस्थाश्रम को सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. **लोकः**=निवासस्थानम् ३.३७.११. लोक्यते सर्वैर्जनैर्लोकयति सर्वान् वा (ईश्वरः) ऋ० भू० १६२, सभा दर्शनं वा १९.४५. लोकनीयः पुत्रपत्यादिसम्बन्धसुखकरो गृहाश्रमः ८.२६. राष्ट्रं राज्यस्थानम् ६.६. दर्शनीयः (यमः=परमेश्वरः) ३५.१. मनुष्यलोकः अथर्व० १२.५.३, सं० वि० १७५, **लोकात्**=स्थानादस्मद्दर्शनाद्वा २.३०. **लोकान्**=द्रष्टव्यान् सृष्टिस्थान् भूगोलान् ३२.१२. दर्शनीयान् (भूगोलान्) ९.३२. सर्वान् प्राणिनः ऋ० भू० २३५, अथर्व० ११.३.५.४. **लोकाय**=दर्शनाय सङ्घाताय वा ३०.१३. **लोकाः**=न्यायदृष्ट्या समीक्षणीयाः (विद्वांसो जनाः) ६.१. **लोके**=द्रष्टव्ये स्थाने १५.५०. विज्ञातव्ये (देशे) १५.११. दर्शने ३.२९.८. संसारे ३.२१. द्रष्टव्य अपने स्वरूप में सं० वि० १९६, ९.११३.७. ज्ञान से देखने योग्य (ईश्वर) में सं० वि० १९६, ९.११३.७. **लोकेभ्यः**=संहतेभ्यः (स्थानेभ्यः) ३०.१२. [लोकृ दर्शने (भ्वा०) धातोर्घञ्। छन्दांसि वै सर्वे लोकाः जै० १.३३२. त्रयो वाव लोकाः। मनुष्यलोकः पितृलोको देवलोक इति श० १४.४.३.२४. इमे वै लोकाः (पृथिवी, अन्तरिक्षम्, द्यौः) देवास्साध्याः मै० ३.७.१०. इमे वै लोका विश्वा सद्मानि श० ६.७.३.१०. इमे वै लोका विष्णोर्विक्रमणं विष्णोर्विक्रान्तं विष्णोः क्रान्तम् श० ५.४.२.६. इमे वै लोकास्संतनयः ऐ० ४.१९. इमे वै लोकाः सरिरम् तै० ३.३.१.२. श० ७.५.२.३४. इमे वै लोकाः सर्पास्ते हानेन सर्वेण सर्पन्ति यदिदं किं च ७.४.१ २५.]

लोकसनि लोकान् सनति सम्भजति येन तत् (अपत्यम्) १९.४८. [लोकोपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' अ० ३.२.२७. सूत्रेण इनिः]

लोधम् लोभ्धारम् (दुर्जनम्) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन भस्य घः ३.५३.२३· [लुभ विमोहने (तुदा०) धातोः पचादिलक्षणोऽच्। भस्य धश्छान्दसः]

लोपामुद्रा लोप एव आमुद्रा समन्तात्प्रत्ययकारिणी यस्याः सा (स्त्री) १.१७९.४. [लोप-आमुद्रापदयोः समासः]

लोपाशः वनचरपशुविशेषः २४.३६. [अर्यम्णो लोपाशः काठ० ४७.११.]

लोप्याय लोपेषु छेदनेषु साधवे (पुरुषाय) १६.४५. [लोप-प्राति० 'तत्र साधुः' इत्यर्थे यत्। लोपः=लुप्लृ छेदने (तुदा०) धातोर्घञ्]

लोम अनुकूलं वचनम् २३.३६. **लोमभ्यः**=त्वगुपरिस्थेभ्यो बालेभ्यः ३९.१०. नखादिभ्यः ३९.१०. **लोमानि**=रोमाणि १९.८१; [लूञ् छेदने (क्र्या०) धातोः

'नामन्सीमन्व्योमन्०' उ० ४.१५१. सूत्रेण मनिन्-प्रत्ययान्तो निपात्यते । लोम लुनातेर्वा लीयतेर्वा नि० ३.५. लोमानि हृदये (श्रितानि) तै० ३.१०.८.८. छन्दांसि वै लोमानि श० ६.४ १.६. ओषधिवनस्पतयो मे लोमसु श्रिताः तै० ३.१०.८.७. लोमैव हिंकारः जै० उ० १.३६.६. भरद्वाजस्य लोम (साम) भवति तां० १३.११.११. तदु (लोमसाम) दीर्घमित्याहुः तां० १३.११.१२. पशवो वै लोम (साम) तां० १३.११.११.]

लोमशसक्थौ लोमानि विद्यन्ते यस्य तल्लोमशं सक्थि ययोस्तौ (पशू) २४.१. [लोमश-सक्थिपदयोः समासः । लोमशः=लोमन्प्राति० मत्वर्थे 'लोमादिपामादि०' इति शः]

लोहम् सुवर्णम् प्र०—लोहमिति सुवर्णनाम निघं० १.२, १८.१३. [लोहम्=हिरण्यनाम निघं० १.२. रजतेन लोहम् (सन्दध्यात्) गो० पू० १.४४. लोहेन सीसम् (सन्दध्यात्) गो० पू० १.१४. दिशो वै लोहमय्यः (सूच्यः) श० १३.२.१०.३.]

लोहिताय रक्ताय हृदयस्थाय लोहितपिण्डाय ३९.१०. **लोहितेन**=शुद्धेन रक्तेन भा०—रुधिरेण ३९.९. [रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः 'रुहेरश्च लो वा' उ० ३.९४. सूत्रेण इतन् । रेफस्य च लकारादेशः]

लोहिताहिः लोहितश्चासावहिश्च २४.३१. [लोहित-अहिपदयोः समासः]

लोहितोर्णी लोहिता ऊर्णा यस्याः सा (भा०—सूर्यगुणा पशूः) २४.४. [लोहिता-ऊर्णापदयोः समासे मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' इति वा०सूत्रेण ईकारः]

वक्तवे वक्तव्याय ७.३१.५. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

वक्त्वानाम् वक्तुं समुचितानां वाक्यानाम् ३.२६.९. **वक्त्वानि**=वक्तुं योग्यानि (वचनानि) ६.९.२. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० त्वन्]

वक्मनि उपदेशे १.१३२.२. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० मनिन्]

वक्मराजसत्याः वक्मेषु वक्तृषु राजसु सत्यप्रतिपादकाः (महाविद्वज्जनाः) ६.५१.१०. [वक्मराज-सत्यपदयोः समासः । वक्मराजः=वक्मन्-राजन्पदयोः समासे समासान्तष्टच् । वक्मन् इति व्याख्यातम्]

वक्म्यः वक्तुं योग्यः (सत्यो महिमा) १.१६७.७.]

वक्वरी प्रशंसिते (द्यावापृथिव्यौ) १.१४४.६. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोरौणा० वनिप् । बहुलवचनात् कुत्वम् । 'वनो र चे' ति ङीप् रेफश्च । द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

वक्वरी वचन-शक्तिमती (कन्या) ६.२२.५. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्वनिप् । ततः स्त्रियां 'वनो र चे' ति ङीप् रेफश्च]

वक्वा वक्ता (विद्वज्जनः) १.१४१.७. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० वनिप् । बहुलवचनात् कुत्वम्]

वक्वाः वक्राः (ध्वस्राः=ध्वंसिकाः सेनाः) ४.१९.७. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० वन्]

वक्षणा वहनेन ५.५२.१५. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्ल्युट् सुडागमश्छान्दसः । 'सुपां सुलुक्०' इति टास्थाने डादेशः]

वक्षणानि प्रापकाणि (आचरणानि) ६.२३.६. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट् । सुडागमश्छान्दसः]

वक्षणाभ्यः वोढ्रीभ्यो नदीभ्यः १.१३४.४. वहमानाभ्यः (नदीभ्यः) १.१३४.४. **वक्षणाः**=नदीः २५.२८. वहन्ति जलानि यास्ताः (नद्यः) १.३२.१. [वक्षणाः=नदीनाम निघं० १.१३. वक्षणप्राति० स्त्रियां टाप् । वक्षणम्=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति ल्युट् । सुडागमश्च छान्दसः]

वक्षणेस्थाः या वाहने तिष्ठन्ति ताः (रश्मयः) ५.१९.५. [वक्षणोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

वक्षत् वहेत् प्रापयेत् ६.२२.७. प्रापयति २८.१६. **वक्षतः**=वहतः प्र०—अत्र लिडर्थे लेट् १.१६.२. **वक्षति**=प्राप्ता भवतु १.१२९.८. उच्यात् १.१२९.८. प्राप्नोति प्रापयति वा १.१४.९. **वक्षन्**=वहन्तु प्रापयन्तु १.१०४.२. **वक्षः**=प्राप्नुहि ५.३३.२. **वक्षि**=वह ६.१५.१८. वहसि प्रापयसि ५.४.४. कामयसे प्राप्नोषि वा १७.८८. वदसि ३.१.१. प्रापय ३.७.९. आवह ५ ४३.१०. उपदिशति १७.८. **वक्ष्व**=प्रापय, वह ८.२६. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लेटि सिपि च रूपम् । अन्यत्र लोटि विकरणव्यत्ययेन सिपि च रूपम् । वक्षि=वह नि० ८.९.]

वक्षथः रोषः ७.३३.८. **वक्षथेन**=रोषेण ४.५.१. [वक्ष रोषे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अथः प्रत्ययः]

वक्षस्सु उरस्सु १.१६६.१०. हृदयदेशेषु ७.५६.१३.

हृदयेषु १.६४.४. **वक्षः**=वक्षस्थलम् १.९२.४. प्राप्तं **वक्षांसि**=उरांसि १.१२३.१०. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोः 'पचिवचिभ्यां सुट् च' उ० ४.२२०. सूत्रेणासुन् सुट् च। वक्षो भासोऽध्यूढमिदमपीतरद् वक्ष एतस्मादेवाध्यूढं काये नि० ४.१६.]

वक्षः प्राप्तं वस्तु प्र०—वक्ष इति पदनामसु पठितम् निघं० ४.२, १.१२४.४. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोरौणा० सः। लिङ्गव्यत्ययः]

वक्ष्यः वोढ्र्यः (रश्मयः) ५.१९.५.

वक्ष्यन्तीव यथा वदिष्यन्ती विदुषी स्त्री तथा २९.४०. यथा कथयिष्यन्ती विदुषी स्त्री ६.७५.३. [वक्ष्यन्ती-इव-पदयोः समासः। वक्ष्यन्ती=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लृटः शतृप्रत्यये स्यविकरणे च रूपम्। ततः स्त्रियां ङीप्]

वग्नुना वाण्या १.८४.३. अ०—वेदवाचा ८.३३. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोः 'वचेर्गश्च' उ० ३.३३. सूत्रेण नुः। गश्चान्तादेशः। वग्नुः वाङ्नाम निघं० १.११.]

वङ्कुतरा अतिशयेन कुटिलौ (अ०—शत्रूदासीनौ मनुष्यौ) १.५१.११. [वङ्कुप्राति० अतिशायने तरप्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वङ्कुम् दुष्टशत्रून् प्रति कुटिलम् (सभाध्यक्षम्) १.११४.४. **वङ्कुः**=धनेच्छुः (वणिक्=व्यापारी) ५.४५.६. **वङ्कू**=कुटिलौ शत्रूदासीनौ १.५१.११. [वकि कौटिल्ये (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उः]

वङ्क्रीः कुटिला गतीः २५.४१. [वकि कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः 'वङ्क्र्यादयश्च' उ० ४.६६. सूत्रेण क्रिन्]

वङ्गृदस्य यो वङ्गून् वक्रान् विषादीन् पदार्थान् व्यवहारान् ददात्युपदिशति वा तस्य दुष्टस्य १.५३.८. [वङ्गृ इत्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः। वङ्गृ=वगि गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० ऋः]

वचसम् सर्वैः स्तुत्या परिभाषितं मनुष्यम् १.११२.२. [वचस्प्राति० मत्वर्थेऽर्शआदित्वादच्]

वचसः वचनात् ५.१२.४. वचनस्य ४.५.८. **वचसा**=परिभाषणीयौ (वायुविद्युतौ) ६.६२.५. भाषणेन २.१८.३. वेदोक्तन्यायोपदेशकवचनेन ९.५. **वचसे**=गृहाश्रमवाग्व्यवहाराय ८.५. **वचः**=उपदेशकारकं वेदवचनम् १.५७.४. विद्या-शिक्षा-सत्यप्रापकं वचनम् १.५४.३. परिभाषणम् (वचनम्) ५.८. वचसा प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति टालोपः २.३१.५. विद्यायुक्तं स्तुतिसम्पादकं वचनम् १.२६.१०. **वचोभिः**=स्तुतिवाक्यैः १.१८७.११. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोरौणा० असुन्। वचः वचनानि नि० २.२७.]

वचस्यते परिभाष्यते सर्वतः स्तूयते १.५५.४. [वचस्-शब्दाद् आचारे क्यङ्]

वचस्यया अतिशयितया प्रशंसया ४.३६.६. **वचस्या**=वचसा वचनेन प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सूत्रेण विभक्तेर्यादेशः ३४.४२. वचसि भवा (विभूतिः=ऐश्वर्यम्) ६.२१.१. वचनैः सुसाध्या (जुह्वा=ग्रहणसाधनया क्रियया) २.१०.६. **वचस्याम्**=वचसि उदके भवाम् (क्रियाम्) २.३५.१. [वचस्-शब्दादाचारे क्यङ्। ततः 'अ-प्रत्ययाद्' इत्यप्रत्यये स्त्रियां टाप्। अन्यत्र वचस्प्राति० भवार्थे यत्। ततष्टाप्। वचस्या वचनेन नि० १२.१८.]

वचस्यवे आत्मनो वचः शास्त्रोपदेशमिच्छवे (जनाय) १.५१.१३. आत्मनो वच इच्छवे (विप्राय=मेधाविजनाय) १.१८२.३. **वचस्युभिः**=आत्मनो वचनमिच्छुभिः (जनैः) ५.१४.६. **वचस्युवम्**=आत्मनो वच इच्छन्तम् (शिल्पिनम्) २.१६.७. [वचस्-पदादात्मन इच्छायां क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण ताच्छील्य उः]

वचस्या वचसि साधूनि (प्रवचनानि) ६.४९.८. [वचस्प्राति० साध्वर्थे यत्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

वचोयुजा वचोभिर्युक्तौ (हरी=गमनधारणगुणौ) १.२०.२. वाणीर्योजयितोः (इन्द्रयोः=वायुसूर्ययोः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति षष्ठीद्विवचनस्याऽऽकारादेशः १.७.२. यौ वचसा युङ्क्तस्तौ (हरी=अश्वौ) ६.२०.९. [वचस्-उपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

वचोविदः विदितवेदितव्याः (विद्वांसो जनाः) १.९१.११. शास्त्रवित् (विद्वान् लोग) आर्याभि० १.३६, ऋ० १.६.२१.११. ['वचस्' उपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

वच्यते उच्यते १.१४२.४. **वच्यन्ताम्**=उच्यन्ताम् ३.६.३. **वच्यन्ते**=स्तुवन्ति प्र०—अत्र व्यत्ययेन श्यँश्च १.१८४.३. उच्येरन् प्र०—'सम्प्रसारणाच्च' इत्यत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यनुवृत्तेः पूर्वरूपाऽभावाद्यणादेशः १.४६.३. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोः कर्मणि लट्। अन्यत्र लोट्। 'वा छन्दसी' ति नियमेन पूर्वरूपाऽभावे यणादेशः]

वच्यमाना उच्यमाना प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति सम्प्रसारणाऽभावः ३.३९.१. [वच परिभाषणे (अदा०)

धातोः कर्मणि शानजन्ताट् टाप् स्त्रियाम् । संप्रसारणाऽभावश्छान्दसः]

वज्रदक्षिणाम् वज्रा अविद्याच्छेदका दक्षिणा यस्मात्तम् (अध्यापकम्) १.१०१.१. [वज्रा-दक्षिणापदयोः समासः]

वज्रबाहुम् वज्राः शस्त्राणि बाह्वोर्यस्य तम् (इन्द्रं=सेनापतिम्) १७.३८. वज्रवद्भुजम् (इन्द्रं=शत्रुविदारकं राजानम्) २०.५४. शस्त्राऽस्त्रभुजम् (राजपुरुषम्) ४.३९.४ वज्रः प्राणो बलं बाहुर्यस्य तम् (राजानम्) ऋ० भू० २२४, अथर्व० ६.१०.९७.३. **वज्रबाहुः**=वज्रमिव दृढौ बाहू यस्य सः (इन्द्रः=राजा) २०.४८. वज्रो बाहौ यस्य सः (इन्द्रः=सूर्यः) २०.३६. वज्रः शस्त्रसमूहो बाहौ यस्य सः (इन्द्रः=सभासेनापतिः) १.३२.१५. बाहुवत् किरणबलः (इन्द्रः=सूर्यः) २.१२.१३. शस्त्रहस्तः (राजा) ४.२९.४. बाहुरिव वज्रः किरणसमूहो यस्य सः (इन्द्रः=सूर्यलोकः) २.१२.१२ शस्त्रपाणिः (राजपुरुषः) ७.१८.१२. शस्त्रभुजः (इन्द्रः=राजा) ३.३३.६. **वज्रबाहू**=वज्रौ बलवीर्य्ये बाहू ययोस्तौ (इन्द्राग्नी=अध्येत्रध्यापकौ) १.१०९.७. **वज्रबाहो**=वज्रवदौषधं बाहौ यस्य तत्सम्बुद्धौ (सद्वैद्य) २.३३.३. [वज्र-बाहुपदयोः समासः। वज्र इति व्याख्यास्यते]

वज्रभृत् यो वज्रं शस्त्रास्त्रं बिभर्त्ति सः (इन्द्रः=सेनाद्यधिपतिः) १.१००.१२. जो अच्छेद्य अर्थात् दुष्टों के छेदक सामर्थ्य से सर्वशिष्टहितकारक, दुष्टविनाशक न्याय को धारण कर रहा है वह (ईश्वर) आर्याभि० १.३४, ऋ० १.७.१०.१२. [वज्रोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

वज्रम् शस्त्राऽस्त्रम् ४.२२.३. विद्युद्रूपम् ४.२०.६. छेदकं शस्त्रम् २.१६.३. तापसमूहं किरणसमूहं वा १.८४.११. किरणरूपम् ४.१६.७. शस्त्रसमूहम् १.६१.१२ शस्त्रमिवाऽज्ञानच्छेदकमुपदेशकम् १.५५.५. स्वकिरणजन्यं विद्युतम् ऋ० भू० २७३, ४.२०.६. तीव्रं शस्त्रम् १.१३०.४. प्रकाशसमूहम् १.५२.७. मेघम् १.५२.८. दुष्टानां वज्रमिव दण्डप्रदम् (परमेश्वरम्) १.१३१.३. शत्रूणां बलच्छेदकमाग्नेयादिशस्त्रास्त्रसमूहम् १.८.३. कुलिशमिव (रथं=यानम्) २९.५३. शस्त्रविशेषम् ६.१७.१०. प्रहारम् ६.४७.२७. आज्ञापनम् १.६३.२. **वज्रस्य**=शस्त्रप्रहारस्य ५.३२.७. **वज्रः**=किरणनिपातः २.११.१०. किरणसमूहः १.८०.३. प्रहारः शब्दो वा ६.४७.२८. किरण इव शस्त्रसमूहः ३.३०.६. विज्ञापकः (राजा) १०.२१. प्रापकः (राजा) १०.२८. ऊष्मसमूहः १.५७.२. वज्र इव शत्रुच्छेदकः (वीरसेनापतिः) ९.५. **वज्रात्**=विद्युत्पातशब्दात् २.११.९. विद्युत्प्रहारात् ६.१७.९. **वज्रेण**=शस्त्रास्त्रविद्याबलेन ८.५३. तीव्रेण तेजसा १.८०.५. प्रापणेन १.८०.१३. शस्त्रेणेवोपदेशेन १.१३०.७. विज्ञानेन २.१५.३ किरणाख्येन वज्रेण २.१५.६. शस्त्रसमूहेन तेजोवेगेन वा १.६१.१०. गतिमता तेजसा १.३३.१३. [वज गतौ (भ्वा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्रवज्रविप्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रन्। वज्रः=वर्जयतीति सतः नि० ३.११. वृजी वर्जने (भ्वा०, रुधा०, चुरा०) धातोर्वा 'ऋज्रेन्द्राग्र०' सूत्रेण रन्-प्रत्ययान्तो निपात्यते। वज्रो वा ऽअभ्रिः श० ३.५.४.२. वज्रो वै परशुः श० ३.६.४.१०. वज्रः शासः श० ३.८.१.५. त्रिवृद्वै वज्रः कौ० ३.२. वज्रो वा ऽआपः श० १.१.१.१७. तै० ३.२.४.२. पञ्चदशः (स्तोमः) वै वज्रः श० १.३.५.७. कौ० ७.२. ष० ३.४. तै० २.२.७.२. तां० २.४.२. वज्रो वै भान्तः (यजु० १४.२३.) वज्रः पञ्चदशः श० ८.४.१.१०. वज्रो वै स्फ्यः तै० १.७.१०.५. श० १.२.५.२०. वज्रो वै शरः श० ३.१.३.१३. वज्रो यूपः श० ३.६.४.१९. वज्रो वा एष यद् यूपः कौ० १०.१. ऐ० २.१. ष० ४.४. वज्रो वै यूपशकलः श० ३.८.१.५. वज्रो वै रथः तै० १.३.६.१. श० ५.१.४.३. वज्रो वै विकंकतः श० ५.२.४.१८. वज्रो वै पशवः श० ६.४.४.६. वज्रो वा ऽअश्वः श० ४.३.४.२७. वज्रो वै चक्रम् तै० १.४.४.१०. वज्रो वै ग्रावा श० ११.५.९.७. वज्रो वा ऽआज्यम् श० १.४.४.४. वज्रो वै त्रिष्टुप् श० ७.४.२.२४. वज्र एव वाक् ऐ० २.२१. वाग्घि वज्रः ऐ० ४.१. वज्रो वै वषट्कारः ऐ० ३.८. कौ० ३.५. श० १.३.३.१४. गो० उ० ३.१.५. वज्रो वा एष यद् वषट्कारः ऐ० ३.६. वज्रो वै हिंकारः कौ० ३.२. वज्रो वै महानाम्न्यः (ऋचः) ष० ३.११. वज्रो वै सामिधेन्यः कौ० ३.२. वज्रो वै वैश्वानरीयम् (सूक्तम्) ऐ० ३.१४. वज्रो वै यौधाजयम् (साम) तां० ७.५.१२. शाक्वरो वज्रः तै० २.१.५.११. वज्रा वा ऽउपसदः श० १०.२.५.२. वज्रो वै त्रिणवः (स्तोभः) तां० ३.१.२. आनुष्टुभो वा एष वज्रो यत् षोडशी (शस्त्रम्) कौ० १७.१. वज्रो वा एष यत्षोडशी ऐ० ४.१. वज्रः षोडशी ष० ३.११. वज्रो वै षोडशी गो० उ० २.१३. तां० १२.१३.१४. संवत्सरो वज्रः श० ३.६.४.१९. संवत्सरो हि वज्रः श० ३.४.४.१५. वीर्यं वज्रः श० १.३.५.७. वीर्यं वै वज्रः श० ७.३.१.१९. वज्रो वा ऽओजः श० ८.४.१.२०. अष्टाश्रिर्वै वज्रः ऐ० २.१. पुरो गुरुरिव हि वज्रः तां०

८.५.२. दक्षिणत उद्यामो हि वज्रः श० ८.५.१.१३. वज्रेणैवैतद्रक्षांसि नाष्ट्रा अपहन्ति श० ७.४.१.३४.]

वज्रवाहः शस्त्राऽस्त्रविद्यावोढारः (राज्यकर्माधिकारिजनाः) ६.४४.१६. [वज्रोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्चे' ति ण्विः]

वज्रहस्त शस्त्राऽस्त्रपाणे (इन्द्र=शिल्पिजन) ६.४६.२. वज्रतुल्यानि शस्त्राणि हस्तयोर्यस्य तत्सम्बुद्धौ [इन्द्र=सभेश राजन्) १०.२२. शस्त्रास्त्रबाहो (राजन्) ५.३३.३. **वज्रहस्तम्**=शस्त्रास्त्रपाणिम् (इन्द्रं=हृद्यं पतिन्) ६.२२.५. **वज्रहस्तः**=किरणपाणिः (इन्द्रः=सूर्यः) २.१६.२. वज्राः किरणा हस्ता यस्य सः (सूर्य;) २.१२ १३. वज्राणि शस्त्रास्त्राणि हस्ते यस्य सः (देवः=विद्वान् राजा) २८.३. वज्रो हस्तयोर्यस्य सः (राजा) २६.१०. शस्त्राऽस्त्रशासनपाणिः (इन्द्रः=सभेशः) १.१७३.१०. [वज्र-हस्तपदयोः समासः । वज्र इति व्याख्यातम्]

वज्रहस्ता वज्रहस्तौ वज्रं विद्यारूपं वीर्यं हस्त इव ययोस्तौ (इन्द्राग्नी=उपदेश्योपदेष्टारौ) प्र०—वज्रो वै वीर्यम् शत० ७.४.२.२४. अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः १.१०९.८. [वज्र-हस्तपदयोः समासे कृते द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

वज्रासः शस्त्रकलासमूहाः १.८०.८. [वज्रप्राति० जसोऽसुक्]

वज्रिन् वज्रः सर्वदुःखनाशनो बहुविधो दृढो बोधो यस्याऽस्तीति तत्सम्बुद्धौ (सभाध्यक्ष) १.३०.१२. वज्रोऽविद्यानिवारक प्रशस्तो बोधो यस्य तत्सम्बुद्धौ (सभासेनाध्यक्ष) प्र०—अत्र वजेर्गत्यर्थाद् ज्ञानार्थे औणादिको रन्, ततः प्रशंसायां मतुबर्थे इनिः १.३०.११. शस्त्रास्त्रभृत् (इन्द्र=राजन्) ६.२२.१०. बहुशस्त्रास्त्रयुक्त (राजन्) ५.४०.३. शस्त्रास्त्रसम्पन्न (सभाध्यक्ष) १.६३.७. प्रशस्तो वज्रः शस्त्रसमूहो विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) १.६३.५. प्रशंसितशस्त्रास्त्र (राजन्) ४.१६.१. शस्त्रास्त्रधारिन् (राजन्) १.५७.६. शस्त्राऽस्त्रवित् (राजन्) ५.३६.५. प्रशस्तवज्रवन् (राजन्) ५.३२.२. **वज्रिणम्**=किरणवन्तं जलवन्तं वा (इन्द्रं=सूर्यं वायुं वा) प्र०—वज्रो वै भान्तः शत० ८.२.४.१०. अनेन प्रकाशरूपाः किरणा गृह्यन्ते। वज्रो वा आपः शत० ७.४.२.४१, १.७.५. **वज्रिणः**=वज्रं बहुविधं शस्त्रं विद्यते यस्य तस्य (राज्ञः) ३.४६.१. वज्रोऽनन्तं प्रशस्तं वीर्यमस्यास्तीति तस्य (इन्द्रस्य=ईश्वरस्य) प्र०—अत्र भूमार्थे प्रशंसार्थे च मतुप् वीर्यं वै वज्रः। शत० ७.४.२.१४, १.७.७. बलिनः (सर्वसभाध्यक्षस्य) ४०.८. **वज्रिणे**=धनुर्वेदविदे (इन्द्राय=राज्ञे) ३.५३.१३. वज्रो न्यायाख्यो दण्डोऽस्यास्तीति तस्मै (इन्द्राय=ईश्वराय) प्र०—वज्रो वै दण्डः शत० ३.१.५.३२, १.८.५. **वज्री**=प्रशस्तशस्त्राऽस्त्रयुक्तः (वीरसेनेशः) ५.३२.४. प्रशस्तशस्त्रविद्याशिक्षितः (इन्द्रः=सेनाधीशः) २०.४६. वज्रः प्रकाशः प्राणो वाऽस्यास्तीति (सूर्यः) ऋ० भू० २८३, १.३२.१. वज्रो दण्डः शासनार्थो यस्य सः (इन्द्रः=ईश्वरः) १.१३०.३. वज्राः प्राप्तिच्छेदनहेतवो वहवः शस्त्रसमूहाः किरणा वा विद्यन्ते यस्य सः (इन्द्रः=सेनापतिः सूर्यो वा) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे इनिः १.११.४. प्रशस्तो वज्रः शत्रुच्छेदकः शस्त्रसमूहो विद्यते यस्य सः (इन्द्रः=राजा) १.५२.५. वज्रः संवत्सरस्तापो वाऽस्यास्तीति सः (इन्द्रः=सूर्यलोकः) प्र०—संवत्सरो हि वज्रः शत० ३.३.५.१५, १.७.२. शस्त्रबाहुः (राजकर्मचारी) ६.१८.६. प्रशस्तशस्त्रविद्याशिक्षकः (सेनाधीशः) २०.४६. सर्वपदार्थविच्छेदकः किरणवानिव शत्रुच्छेदी (सेनापतिः) १.३२.१. [वज्र इति व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मत्वर्थं इनिः। अश्वेन च रथेन च वज्री (इन्द्रः) तै० सं० ४.४.८.६.]

वज्रिणा प्रशस्तशस्त्राऽस्त्रयुक्तौ (इन्द्राग्नी=वायुविद्युतौ) ६.५६.३. [वज्रप्राति० प्रशंसायाम् इन्नन्ताद् द्विवचनस्याकारादेशः]

वज्रिवः प्रशस्ता वज्रयो विज्ञानयुक्ता नीतयो विद्यन्तेऽस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाध्यक्ष) प्र०—वज धातोरौणादिक इः प्रत्ययो रुडागमश्च ततो मतुप् च १.१२१.१४. प्रशस्तशस्त्रास्त्रप्रयोगकुशल (इन्द्र=राजन्) ६.४५.१८. प्रशस्तशस्त्रास्त्रयुक्त (राजन्) ६.३७:४. [वज गतौ (भ्वा०) धातोर् इः प्रत्ययो रुट् च। ततो वज्रिप्राति० प्रशंसायां मतुबन्तात् सम्बुद्धौ 'मतुवसो रुः०' इति रुत्वे रूपम्। वज्रिन्प्राति० वा 'छन्दसीवनिपौ च वक्तव्यौ' इति मत्वर्थे चानुकृष्टो वः]

वञ्चति प्रलम्भते २३.२२. वञ्चितो भवति २३.२३. [वञ्चु गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्। वञ्चु प्रलम्भने (चुरा०) धातोर्वा लट्। णिचोऽभावः वञ्चति गतिकर्मा निघं० २.१४]

वञ्चते छलेन परपदार्थानां हर्त्रे भा०—छलयते (प्रजाजनाय) १६.२१. कापट्येन वर्त्तमानाय (अधार्मिक-

जनाय) १६.२१. [वञ्चु प्रलम्भने (चुरा०) धातोर्णिचोऽभावे शत्रन्ताच्चतुर्थी]

वट्टूरिणा वेष्टितेन (पदा=पादेन) प्र०—अत्र वट वेष्टने इति धातोर्बाहुलकादौणादिक ऊरिः प्रत्ययः १.१३३.२. [वट वेष्टने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० ऊरिः]

वणिक् व्यापारी, वैश्यः ५.४५.६. **वणिजे**=व्यवहर्त्तुं शीलाय (मेधाविपुत्राय) १.११२.११. [वणिक्=पथ्यां नेनेक्ति नि० २.१७.]

वतन्तः वनन्तः सम्भजन्तः (जनाः) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन नस्य तः ७.६०.६. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ। वर्णव्यत्ययेन धातोर्नस्य तः]

वतेम सम्भजेम ७.३.१०. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्। वर्णव्यत्ययेन धातोर्नस्य तः]

वत्सतर्य्यः अतिशयेन वत्सा अल्पवयसः (गावः) २४.५. ह्रस्वा वत्सा यासां ताः (गावः) २४.१४. [वत्सप्राति० तनुत्वे द्योत्ये 'वत्सोक्षाश्वर्षभेभ्यश्च तनुत्वे' अ० ५.३.९१. सूत्रेण ष्टरच्। ततः स्त्रियां ङीष्]

वत्सम् वसन्ति भूतानि यस्मिँस्तं संसारं, वदति सततमिति वत्सो बालस्तं वा ३३.५. महत्तत्त्वादिकम् ३.५५.४. जातं संसारम् १.९५.१. प्रसूतं मनुष्यादिकं संसारम् १.१६४.१७. वत्सवद्वर्त्तमानोऽहोरात्रः १.१४६.३. सुखेषु निवासयन्तं व्यक्तवाचं प्रसिद्धं वेदचतुष्टयम् प्र०—अत्र 'वृत०' उ० ३.६१. इति सूत्रेणास्य सिद्धिः १.७२.२. वत्सवत्पालनीयम् (भा०—पृथिवीस्थपदार्थम्) ३.५५.१३. स्वाऽपत्यम् १.३८.८. **वत्सस्य**=यो वदति तस्य (स्तोतुः) ७.४०. **वत्सः**=स्वव्याप्त्या सर्वाऽऽच्छादकः (कविः=कालः) १.९५.४. **वत्साय**=सन्तानाय १.१११.१. **वत्से**=अपत्ये १.१६४.५. **वत्सेन**=बालेन १.११०.८. वत्सवद्वर्त्तमानेन (कुमारेण=अकृतविवाहजनेन) २८.१३. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) वस निवासे (अदा०) धातोर्वा 'वृतृवदिवचि०' उ० सूत्रेण सः। वत्सा वै दैव्या अध्वर्य्यवः श० १.८.१.२७. मन एव वत्सः श० ११.३.१.१. अयमेव वत्सो योऽयं (वायुः) पवते श० १२.४.१.११. अग्निर्ह वै ब्रह्मणो वत्सः जै० उ० २.१३.१. वत्सा उ वै यज्ञपतिं वर्धन्ति यस्य ह्येते भूयिष्ठा भवन्ति स हि यज्ञपतिर्वर्धते श० १.८.१.२८.]

वत्समिव यथा गोर्वत्सम् ३.३३.३. [वत्सम्-इव-पदयोः समासः]

वत्सरः वर्षः २७.४५. **वत्सराय**=सामान्याय (संवत्सराय) ३०.१५. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'वसेश्च' उ० ३.७१. सूत्रेण सरन्]

वत्सासः सद्यो जाता वत्साः ७.५६.१६. [वत्समिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

वद सत्यमुपदिश ९.२८. वद वादय वा प्र०—अत्र पक्षेऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.२८.५. **वदत्**=वदेत् १.११९.९. बोला करो सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.३. **वदत**=अध्यापयतोपदिशत वा ९.११. **वदतम्**=उपदिशतः ५.१७ **वदति**=उपदिशति १.१३५.७. **वदन्ति**=उच्चारयन्ति १.१६४.४५. **वदः**=वदेः २३.२५. **वदाति**=वदेत् ६.९.२. **वदान्**=वदेयुः १.३७.३. **वदामि**=उपदिशामि १.१०५.७. **वदेम**=उपदिशेम ३४.५८. अध्यापयेम २.३९.८. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लेट् लट् लिङ् च। वदति गतिकर्मा निघं० २.१४. यद्वै वदति शंसतीति वै तदाहुः श० १.८.२.१२.]

वदन् उपदिशन् (इन्द्रः=ऐश्वर्यवान्नरः) ५.३१.१२. उपदेश करता हुआ (संन्यासी) सं० वि० १९५, ९.११३.४. **वदन्तः**=उच्चरन्तः (शिल्पिनः) १.१६१.९. कहते हुए (गृहस्थादि मनुष्यो) सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.५. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः शतृ]

वदामसि वदेम १६.४. वदामः १.८७.५. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लट्। 'इदन्तो मसि' रिति मस इदन्तता]

वद्मा सत्यहितोपदेष्टा (अग्निः=विद्वज्जनः) ६.१३.६. यो वदति सः (अग्निः=ईश्वरः) ६.४.४. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर् मनिन्। इटोऽभावश्छान्दसः]

वधत्रैः वधैः ४.२८.४. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'अमिनक्षियजिवधिपतिभ्योऽत्रन्' उ० ३.१०५. सूत्रेणात्रन्। हनः स्थाने वधादेशश्च निपात्यते]

वधनम् हननम् १.५.१०. ताडनम् २.३०.३. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्ल्युट्। 'बहुलं संज्ञाछन्दसोरिति वक्तव्यम्' अ० २.४.५४. वा०सूत्रेण हन्तेर्वधादेशः]

वधः वधम् प्र०—अत्र हन्तेर्बाहुलकादौणादिकेऽसुनि वधादेशः १.३२.९. नाशः २.२१.४. घ्नन्ति यस्मिन् सः (राजव्यवहारः) ५.३२.३. वध्यन्ते शत्रवो यस्मात्तच्छस्त्रम् २.१९.७. वज्र इव प्र०—वध इति वज्रनामसु पठितम् निघं० २.२०, १.१०१.४. वध-साधनम् ४.२२.९. हन्ति येन सः (दण्डः) ७.५६.१७. **वधाय**=विनाशाय ९.३८

वधैः=गोहिंस्राणां मारणोपायैः १.१२१.९. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोरौणा०असुन्-प्रत्यये बहुलवचनाद् वधादेशः अथवा=हनधातोः 'हनश्च वधः' अ० ३.३.७६. सूत्रेणाप् वधादेशश्च वधः बलनाम निघं० २.९. वज्रनाम निघं० २.२०.]

वधर्यन्तीम् भूमिम् १.१६१.९. [वृधु वृद्धौ (भ्वा० धातोर्णिजन्ताच्छत्रन्तात् स्त्रियां ङीप्]

वधस्नैः यानि वधेन स्नापयन्ति शस्त्राणि तैः १.१६५.६. ववेन शोधकैर्भृत्यैर्न्यायाधीशैः ७.६.५. ये ववेन स्नान्ति पवित्रा भवन्ति तैः (क्षुब्धैर्मनुष्यैः) ५.४१.१३. [वधोपपदे ष्णा शौचे (अदा०) धातोः कः]

वधिषः हन्याः ६.१७.१. **वधिष्टम्**=हन्यातम् ४.४. **वधीत्**=हन्ति ४.१७.३. नाशयतु, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.३८.६. हन्यात् २.४२.२. **वधीम्**=हन्मि १.१६५.८. **वधीः**=हिन्धि प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ्भावश्च १.३३.४. हन्याः ६.३३.३. हंसि ४.३०.८. हिंस्याः १६.१५. दूरे प्रक्षिप पं० वि० । नष्ट करो आर्याभि० १.५०, ऋ० १.८.६.७. वध कर आर्याभि० १.४९, ऋ० १.७.१९.८. वियोजय पं० वि० । हिंसा अर्थात् ताडना कर स० प्र० ४३९, १६.१५. हिंसय पं० वि० । **वधेत्**=हन्यात् १०.८. **वध्यासम्**=हन्याम् १.२६. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लुङ् 'लुङि च' इति हन्तेर्वधादेशः । अन्यत्र लिङ्]

वधूमन्तः प्रशस्ता वध्वो विद्यन्ते येषान्ते (योद्धृजनाः) ६.२७.८. प्रशस्ता वध्वः स्त्रियो विद्यन्ते येषु ते (रथासः=यानानि) १.१२६.३. [वधू-प्राति० प्रशंसायां मत्वर्थे मतुप्]

वधूमन्ता प्रशस्ते वध्वौ विद्येते ययोस्तौ (रथौ) ७.१८.२२. [वधूप्राति० प्रशंसायां मतुप् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वधूमिव स्त्री के समान सं० वि० १६९, अथर्व० ९.२.३.२४. [वधूम्-इवपदयोः समासः]

वधूयुरिव यथाऽऽत्मनो वधूमिच्छुः (जनः) ३.५२.३. पतिरिव ४.३२.१६. आत्मनो वधूमिच्छन्निव (स्त्रीकामः पतिरिव) ३.६२.८. [वधूयुः-इवपदयोः समासः । वधूयुः=वधूपपदादात्मन इच्छायां क्यजन्ताद् उः]

वधूयुः वधू की कामना करने वाला पति सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१.९. [वधूपपदादात्मन इच्छायां क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसी' ति सूत्रेण उः]

वधूः भार्य्या ५.३७.३. स्त्री स० वि० १०५, ५.३७.३. **वध्वः**=युवत्यः स्त्रियः ५.४७.६. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहेर्धश्च' उ० १.८३. सूत्रेण ऊः । वध्वः नदीनाम निघं० १.१३.]

वध्यमाने ताड्यमाने (दुर्जने) ४.४२.८. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः कर्मणि शानच् । वधादेशश्छान्दसः]

वध्रिमत्याः वर्धिकाया विद्यायाः १.११७.२४. वध्रयः प्रशस्ता वृद्धयो विद्यन्ते यस्यास्तस्याः सत्स्त्रियः प्र०—अत्र वृधु-धातोरौणादिको रिक्-प्रत्ययो बाहुलकाद् रेफ-लोपः १.११६.१३. बहवो वध्रयो वर्धनानि विद्यन्ते यस्यां तस्या भूमेरन्तरिक्षस्य वा ६.६२.७. [वध्रिप्राति० प्रशंसायां (मत्वर्थे) मतुप् । ततः षष्ठी । वध्रिः=वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० रिक् रेफलोपश्च]

वध्रिवाचः वध्रयो वर्धिका वाचो येषान्ते (विद्वज्जनाः) ७.१८.९. [वध्रि-वाच्पदयोः समासः]

वध्रिः वध्यते स वध्रिः निर्वीर्यो नपुंसक इव प्र०—अत्र बन्ध-धातोर्बाहुलकादौणादिकः क्रिन्-प्रत्ययः १.३२.७. **वध्रीन्**=वृद्धान् वृषभान् २.२५.३. [बन्ध बन्धने (क्र्या०) वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्वौणा० रिक् । वृधुधातो रेफलोपश्च]

वध्र्यश्वाय वध्रयो वर्द्धिका अश्वा यस्य तस्मै (जनाय) ६.६१.१. [वध्रि-अश्वपदयोः समासः । वध्रिरिति व्याख्यातं वध्रिमत्यांः पदे]

वनतम् यौ सम्यक् वाणीसेविनौ स्तः, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.३.२. **वनते**=सम्भजमानाय (राये=धनप्राप्तये) ३.१९.१. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ । अमि नुमोऽभावश्छान्दसः]

वनतम् सम्भजतः १.९३.९. **वनताम्**=सम्भजताम् २५.४५. सेवताम् १.१६२.२. **वनते**=सम्भजति ६.१५.६. सम्भजसि ५.४१.१७. **वनथः**=संसेवेथाम् ४.४४.२. संविभजथः ७.२.७. सम्भजेथाम् १.४६.१४. **वनन्ति**=संसेवन्ते ६.६.३. **वनसे**=सम्भजसि १.१४०.११. **वनाति**=सम्भजेत् ७.१५.४. **वनामहे**=सम्भजामहे प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.१५.८. याचामहे २६.१८. सम्भजामः ५.७.३. **वनेम**=विभज्य दद्याम, सम्भजेम १.१२९.७. संविभागेनानुतिष्ठेम १.७०.१. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् लिङ् च । वनु याचने (तना०) धातोर्वा रूपम् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

वनदः प्रशंसितारः (विद्वांसो जनाः) २.४.५.]

वनधितिः वनानां धृतिः १.१२१.७. [वन-धितिपदयोः समासः। धितिः=दधातेः स्त्रियां क्तिन्]

वनपम् जङ्गल-रक्षकम् (पुरुषम्) ३०.१९. [वनोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि कः]

वनम् सम्भजनीयं कारणवनम् १७.२०. जङ्गलम् ५.७८.८. **वनस्य**=वननीयस्य संसारस्य १.२४.७. **वनानाम्**=सम्भजनीयानां पदार्थानां रश्मीनां वा १.७०.२. **वनानि**=वनन्ति सम्भजन्ति सुखानि यैस्तानि ३.५१.५. भजनीयानि (दिनानि) १.१७१.३. सूर्यकिरणानिव धनानि ७.७.२. अरण्यानि १.६५.४. **वने**=एकान्ते १.५५.४. **वनेषु**=सम्यग् विभाजकेषु किरणेषु १.७०.५. वननीयेषु जङ्गलेषु ४.७.१. रश्मिषु वृक्षसमूहेषु वा, प्र०—वनमिति रश्मिनामसु पठितम् निघं० १.५, ४.३१. [वन शब्दे (भ्वा०) वन सम्भक्तौ (भ्वा०) वनु याचने (तना०) धातोर्वा घञर्थे कः। वनम् रश्मिनाम निघं० १.५. उदकनाम निघं० १.१२. वनं वनोतेः नि० ८.३. वनानाम्=रश्मीनाम् नि० १३.७२.]

वनर्गुः वनगामी (मृगः) प्र०—अत्र वनोपपदादृजुधातोरौणादिक उ-प्रत्ययो बाहुलकात् कुत्वं च १.१४५.५. [वनोपपदे ऋज गतिस्थानार्जनोपार्जनेषु (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उः। बहुलवचनादेव च कुत्वम्। अथवा वनोपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्मितद्र्वादित्वाट् डुः। रुडागमश्छान्दसः। वनर्गुः स्तेननाम निघं० ३.२४. वनर्गू वनगामिनौ नि० ३.१४.]

वनर्षदः ये वनेषु रश्मिषु सीदन्ति ते (वायवः=पवनाः) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति रुडागमः ३३.१. ये वने सीदन्ति ते (वयः=पक्षिणः) २.३१.१. [वनोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्] रुडागमश्छान्दसः]

वनवत् किरणवत् २.२६.१. वनेन जङ्गलेन तुल्यम् (रयिं=श्रियम्) २.२५.२. [वनप्राति० तुल्यार्थे वतिः। वनमिति रश्मिनाम निघं० १.५.]

वनवत् याचते ६.३३.१. सम्भजते ५.३७.२. सेवयसि ५.३.५. सम्भजसे ५.३७.२. संविभाजयेत ५.४४.७. **वनवसे**=सम्भज ६.१६.१८. [वनु याचने (तना०) धातोर्लेटि अडागमे च रूपम्। अथवा 'व्यत्ययो बहुलम्' इति द्विविकरणता उः, शप् च]

वनसदे यो वनेषु सीदति तस्मै भा०—अरण्यस्थाय (विद्वज्जनाय) १७.१२. [वनोपपदे पद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) कर्त्तरि क्विप्]

वनस्पतयः वनस्य किरणसमूहस्येव न्यायस्य पालकाः (इन्द्राः=राजानः) प्र०—वनमिति रश्मिनाम निघं० १.५, ९.१२. अश्वत्थादयः १४.३१. वटादयः ३६.१७. वनानां जङ्गलानां पालकाः (इन्द्राः=राजानः) ९.१२. **वनस्पतये**=वनानां पालकायाऽश्वत्थप्रभृतये १०.२३. **वनस्पतिम्**=वनानां पालकम् (प्रजादुःखध्वंसका मनुष्याः) २१.४०. वनानां किरणानां पालकं स्वामिनं सूर्यम् २८.१०. **वनस्पतिः**=सम्भक्तस्य पदार्थसमूहस्य जङ्गलस्य वा पालकः श्रेष्ठतमो वा (परमेश्वर ओषधिराजो वा) १.९१.६. वनानां पालयिताऽग्निसंज्ञकः (ब्रह्म, सूर्यः) ४.११. अश्वत्थादिः १३.२९. वनस्य वृक्षसमूहस्य पतिः पालकः (आज्ञप्तः पुरुषः) २०.४५. रश्मिपालकः (सूर्यः) २१.५६. वनस्य किरणसमूहस्य पालकः सूर्यः २८.२३. पिप्पलादिः २१.५८. वनानां मध्ये रक्षणीयो वटादिवृक्षसमूहो मेघो वा १.९०.८. **वनस्पती**=काष्ठमयौ (भा०—मुसलोखलौ) १.२८.८. **वनस्पतीन्**=वटाश्वत्थादीन् ५.४२.१६. **वनस्पतीनाम्**=पिप्पल्यादीनाम् ९.३९. **वनस्पते**=किरणानां रक्षकः सूर्य इव वनादीनां पालक विद्वन् राजन् २९.५२. यो वनानां वृक्षौषध्यादिसमूहानामधिकवृष्टिहेतुत्वेन पालयिताऽस्ति सोऽपुष्पफलवान् (अ०—वनस्पतिः), प्र०—अपुष्पाः फलवन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः मनु० १.४७, १.१३.११. वनस्य सम्भजनीयस्य शास्त्रस्य पालक (जिज्ञासु-विद्वन्) २७.२१. वननीयस्य धनस्य रक्षक (पुरुषार्थिजन) ३.८.३. वनस्य रश्मिसमूहस्य पालकः सूर्यस्तद्वद्वर्त्तमान (विद्वज्जन) ३.८.१. वनानां विद्याप्रकाशकानां पतिः पालयिता तत्सम्बुद्धौ (अ०—विद्वज्जन) ४.१०. [वन-पतिपदयोः समासे 'पारस्करप्रभृतीनि च संज्ञायाम्' अ० ६.१.१५७. सूत्रेण सुडागमः वनस्पतिः पदनाम निघं० ५.२. वनस्पतिः=वनानां पाता वा पालयिता वा नि० ८.३. अग्निर्वै वनस्पतिः कौ० १०.६. प्राणो वनस्पतिः कौ० १२.७. प्राणो वै वनस्पतिः ऐ० २.४. स (वनस्पतिः) उ वै पयोभाजनः कौ० १०.६. वनस्पतयो वै द्रु तै० १.३.९.१. यदुग्रो देव ओषधयो वनस्पतयस्तेन कौ० ६.५. भोज्यं वा एतद् वनस्पतीनां (यदुदुम्बरः) ऐ० ७.३२. अथो एव ऽएते वनस्पतयो यदुदुम्बरः श० ७.५.१.१५. तेजो ह वा ऽएतद् वनस्पतीनां यद् बाह्याः शकलस् तस्माद् यदा बाह्याः शकलमपतक्ष्णुवन्त्यथ शुष्यन्ति श० ३.७.१.८. वनस्पतयो हि यज्ञियाः, नहि मनुष्या यजेरन् यद् वनस्पतयो न स्युः श० ३.२.२.९. सोमो वै वनस्पतिः मै० १.१०.९. श० ३.८.३.३३. वायुर्गोपा वै वनस्पतयः मै० ३.९.४. ओषधयो

वै वनस्पतयः काठ० २६.३. चराचरा हि वनस्पतयः मै० २.३.२. वनस्पतयो वालाः तै० सं० ७.५.२५.१.]

वना सम्भक्तानि वस्तूनि १.५४.१. सम्भजनीयानि (सुखानि) ६.६.३. अरण्यानि किरणान् वा १.६६.१. जङ्गलानि ५.५७.३. वनानि याचनीयानि (ज्ञानानि) ३.६.२. जलानि १.६४.७. [वनमिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि । वना वनानि नि० ४.१५.]

वनाः किरणाः ६.४८.५. [वनमिति रश्मिनाम निघं० १.५. लिङ्गव्यत्ययः]

वनिता याचकः (जनः) ३.१३.३. [वनु याचने (तना०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

वनिनम् वनानि किरणा विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (किरणसंयुक्तं मेघम्) ६.८.५. वनं बहूदकं विद्यते यस्मिँस्तम् (रथं=यानम्), प्र०—वनमित्युदकनाम निघं० १.१२, १.११९.१. सम्भक्तारम् (मारुतं गणम्) १.६४.१२. **वनिनः**=रश्मिमतः (सूर्यस्य) १.१८०.३. वनसम्बन्धो विद्यते येषान्ते (गृहस्था जनाः) ७.४३.१. वनस्य संविभागस्य रश्मीनां वा प्रशस्तः सम्बन्धो विद्यते यस्य तस्य (विदुषः शिल्पिजनस्य), प्र०—अत्र सम्बन्धार्थे इनिः १.९४.१०. याच्ञावन्तः (सज्जनाः) ३.४०.७. वनानि सन्ति येषु ते वृक्षाः ७.३५.५. किरणवन्तः (विद्युदादयः पदार्थाः) ७.३४.२५. वनानि बहवः किरणा विद्यन्ते येषु तान् (धर्मप्रकाशकानाचारान्) ७.४.५. बहुकिरणयुक्ता वनस्था वृक्षादयः ७.५६.२५. वनसम्बन्धिनः (वयाः=पक्षिणः) ६.१३.१ वनानि जलानि १.१४०.२. वनानि प्रशस्तविद्यारश्मयो विद्यन्ते येषान्ते (अध्यापका जनाः) १.१३९.१०. प्रशस्ता रश्मयो वनानि वा येषां येषु वा तान् (प्राणान्) १.५८.४. वनं रश्मिसम्बन्धो विद्यते येषां ते वायवः, प्र०—अत्र सम्बन्धार्थे इनिः १.३९.३. [वनप्राति० सम्बन्धार्थे भूम्न्यर्थे प्रशंसायामर्थे वा मत्वर्थं इनिः । वनमिति व्याख्यातम्]

वनिषीष्ट याचेत १.१२७.७. [वनु याचने (तना०) धातोराशिषि लिङ्]

वनिष्ठः अतिशयेन वनिता संविभाजकः (इन्द्रः=राजा) ७.१८.१. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्ताद् अतिशायन इष्ठन्-प्रत्यये तृचो लोपः]

वनिष्ठुना याचनेन २५.७. आन्त्रविशेषेण ३९.८. **वनिष्ठुः**=सम्भाजी (भा०—वीर्यवान् पुरुषः), प्र०—अत्र वन सम्भक्तौ इत्यस्मादौणादिक इष्ठुप् प्रत्ययः १९.८७. आन्त्रविशेषः, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्यमः स्थाने सुरादेशः ३९.९. [वनु याचने (तना०) वन संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्वा औणा० इष्ठुप् बाहुलकात्]

वनीयान् अतिशयेन विभाजकः (सज्जनः) ५.७७.२. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोस्तृजन्तादतिशायन ईयसुन् । तृचो लोपः । वनीयान् वनयितृतमः नि० १२.७.]

वनुथः याचेथाम् २.३०.६. कामयेथे ७.१७. **वनुयाम**=सम्भजेम १.१३२.१. याचेमहि ५.३.६. इच्छेम याचेम १.७३.९. **वनुषे**=याचसे ४.४४.३. **वनुष्यात्**=याचेत ६.५.४. **वनुष्व**=प्रयच्छ १.१६९.१. **वनोति**=याचते, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.१३३.७. **वनोषि**=याचसे सम्भजसि वा १.३१.१३. [वनु याचने (तना०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । अन्यत्र लिङ् लोट् च । वनोति कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

वनुषः याचमानस्य (पाखण्डिजनस्य) ७.२५.३. याचकाः (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.२७.११. संविभाजकस्य (विदुषो जनस्य) १.१५०.३. सेवमानस्य (मर्त्यस्य=मनुष्यस्य) ४.२२.९. सेवनीयान् (सज्जनान्) ६.६.६. संविभाजकान् (गुप्तचरान् जनान्) ६.२५.३. **वनुषाम्**=राज्यस्य, याचकानां शत्रूणां जनानाम् ६.६८.६. [वनु याचने (तना०) वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्वा बाहु० औणा० उसिः]

वनुष्यतः याचमानान् (मनुष्यान्) ६.१५.१२. हिंसन्तम् (अग्निं=विद्युतम्), प्र०—अत्र विभक्तिव्यत्ययः वनुष्यतिर्हन्तिकर्मेति निरुक्ते २.२५.१. हिंसतः (दुर्जनात्) २.२६.१. सम्भक्तान् (जनान्) १.१३१.१. क्रुध्यतः (उत्तमजनस्य), प्र०—वनुष्यतीति क्रुध्यतिकर्मा निघं० २.१२, ७.५६.१९. **वनुष्यताम्**=क्रुध्यतां बाधमानानां वा (दुष्टानां शत्रूणाम्) ६.६२.१०. **वनुष्यन्**=सेवयन् (विद्वान् राजा) ६.६ ६. [वनु याचने (तना०) वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्वा शतृ । 'व्यत्ययेन उ-स्य-विकरणौ परस्मैपदञ्च । वनुष्यति क्रुध्यतिकर्मा निघं० २.१२. वनुष्यति पदनाम निघं० ४.२. वनुष्यतिर्हन्तिकर्मानिवगतसंस्कारो भवति नि० ५.२.]

वनून् अधर्मसेविनः (जनान्) ४.३०.५. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उः । ततो द्वितीयाबहु० रूपम्]

वनेजाः किरणसमुदाये जायते सः (विद्वान् जनः) ६.३.३. [वनोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः । सप्तम्या अलुक् । वनमिति रश्मिनाम निघं० १.५.]

वनेराट् या वने सेवनीये किरणे वा राजते सा (दीप्तिः) ६.१२.३. [वनोपपदे राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । सप्तम्या अलुक्]

वनेव रश्मय इव, प्र०—वनमिति रश्मिनाम निघं० १.५, १.१२७.४. यथा वनानि तथा १.१२७.३. [वन-इव-पदयोः समासः]

वने वने जङ्गले जङ्गले अग्नाविव जीवे जीवे ५.११.६. रश्मौ रश्मौ पदार्थे पदार्थे वा १५.२८. [वने-पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

वन्त सम्भजत, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.१३९.१०. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । शपो लुक् 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

वन्तारः सम्भाजकाः (प्रजाजनाः) ७.८.३. विभाजकाः (रायः=धनानि) ३.३०.१८. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । इटोऽभावश्छान्दसः]

वन्दते कामयते ४.५०.७. स्तौति तद्गुणान् प्रकाशयति ३.४६. **वन्दस्व**=कामय १.३८.१५. **वन्दामहे**=कामयामहे ४.५७.६. **वन्दे**=प्रशंसामि सत्करोमि वा ५.२८.४. नमस्करोमि ७.६.१. स्तौमि २.३५.१२. अभिवादये १.४७.२. स्तुवे १२.४२. [वदि अभिवादन-स्तुत्योः (भ्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट् चापि । वन्दते अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

वन्दयध्यै अभिवन्दितुं स्तोतुम् १.६१.५. वन्दितुम्, प्र०—अत्र 'तुमर्थे सेसेनसे०' इति कध्यै प्रत्ययः १.२७.१. [वदि अभिवादनस्तुत्योः (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् तुमर्थे कध्यै प्रत्ययः]

वन्दनम् स्तुत्यं यानम् १.११८.६. वन्दनीयम् (विप्रं=मेधाविजनम्) १.११९.७. गुणकीर्त्तनम् १.११२.५. **वन्दनः**=स्तोतुमर्हः (विद्वज्जनः) १.११९.६. **वन्दनानि**=अभिवादनानि स्तवनानि वा ३.४३.४. **वन्दनाय**=अभितः सत्काराऽर्हायाऽपत्याय प्रशंसायै वा १.११६.११. स्तवनाय १.११७.५. [वदि अभिवादनस्तुत्योः (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

वन्दनश्रुत् येन वायुना वन्दनं स्तवनं शृणोति श्रावयति वा तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाद्यध्यक्ष) १.५५.७. [वन्दनोपपदे श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

वन्दना वन्दनानि स्तुत्यानि कर्म्माणि ७.२१.५. [वन्दनमिति व्याख्यातम् । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

वन्दनेष्ठाः स्तवने तिष्ठति यः (इन्द्रः=मित्रः) १.१७३.६. [वन्दनोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । सप्तम्या अलुक्]

वन्दमानम् स्तूयमानम् (अध्यापकम्), प्र०--अत्र कर्मणि शानच् २.३३.१२. **वन्दमानः**=स्तुवन्नभिगायन् (मनुष्यः) १.२४.११. [वदि अभिवादनस्तुत्योः (भ्वा०) धातोः शानच्]

वन्दारु वन्दनशीलम् (स्वभावम्) ४.४३.१. प्रशंसनीयं धर्म्यम् (वचः) ५.१.१२. प्रशंसनीययज्ञम् १५.२५. [वदि अभिवादनस्तुत्योः (भ्वा०) धातोः 'शृवन्द्योरारुः' अ० ३.२.१७३. सूत्रेण ताच्छील्य आरुः]

वन्दारुः अभिवादनशीलः (अध्यापको जनः) १२.४२. [पूर्वपदे व्याख्यातम् । वन्दारुष्टे तन्वं वन्देऽग्नऽइति वन्दिता तेऽहं तन्वं वन्देऽग्नऽइत्येतत् श० ६.८.२.६.]

वन्दितारम् स्तावकम् (सज्जनम्) २.३४.१५. [वदि अभिवादनस्तुत्योः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

वन्दिषीमहि नमस्कुर्मः १.८२.३. नमेम स्तुवीमहि ३.५२. [वदि अभिवादनस्तुत्योः (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

वन्द्य अभिवदितुं प्रशंसितुं योग्य (सभाध्यक्ष) १.७९.७. वन्दितुं स्तोतुं योग्य (राजन्नीश्वर वा) ३४.१३. **वन्द्यः**=स्तोतुमर्हः (अग्निः=विद्वज्जनः) २.७.४. पूजनीयः (परमेश्वरः) ऋ० भू० २२२, अथर्व० ६.१०.९८.१. प्रशंसनीयः (सविता=परमात्मा) ४.५४.१. नमस्कर्त्तुं योग्यः, भा०—मान्यः (सप्तिः=शिल्पिजनः) २९.३. सत्करणीय (सभापति राजा) स० प्र० १८३, अथर्व० ६.१०.९८.१. नमस्करणीयः, भा०—धर्मात्मा सन् सर्वत्र सत्कृतः (अग्निः=पावकवत्पवित्रो विद्वान्) २९.२८. [वदि अभिवादनस्तुत्योः (भ्वा०) धातोर्ण्यत् । वन्द्यः=वन्दितव्यः नि० ८.८.]

वन्द्यासः वन्दितुं कामयितुमर्हाः (गावः=धेनवः) १.१६८.२. स्तोतव्याः सत्कर्त्तव्याश्च (मरुतः=मनुष्याः) १.९०.४. [वन्द्य इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

वन्द्येभिः वन्दितुं स्तोतुं योग्यैः (शूषैः=बलैः) ५.४१ ७. कामना के योग्यों (विद्यायुक्त सन्तानों) से सं० वि० १०५, ५.४१.७. [वन्द्यमिति व्याख्यातम् । 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

वन्धुरः बन्धनविशेषाः, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति जसः स्थाने सुः १.३४.९. **वन्धुरे**=प्रेमबन्धने ६.४७.९. दृढबन्धनयुक्ते (रथे) १.१३९.४. **वन्धुरेषु**=यन्त्राणां बन्धनेषु १.६४.९. [बन्ध बन्धने (क्र्या०), धातोः

'मद्गुरादयश्च' उ० १.४१. सूत्रेण उरच् । वर्णव्यत्ययेन बस्य वकारः]

वन्धुरायुः वन्धुरमायुर्यस्य सः (सज्जनः) ४.४४.१. [वन्धुर-आयुपदयोः समासः]

वन्धुरेष्ठाः यो वन्धुरे बन्धने तिष्ठति सः (रथः) ३.४३.१. [वन्धुरोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

वन्याय वने जङ्गले भवाय (पुरुषाय) १६.३४. [वनप्राति० भवार्थे यत्]

वन्वन् याचन्ते ७.४८.३. **वन्वन्तु**=याचन्ताम् ७.२१.६. [वनु याचने (तना०) धातोर्लङ् । अटोऽभावः । अन्यत्र लोट्]

वन्वन् सम्भजन् (जनः) ६.१२.४. धर्म्मं सेवमानः (विद्वत्सन्तानः) १९.५३. सम्भजमान (सूर्य=प्रजापालक) १.१२१.६. **वन्वते**=सत्याऽसत्ययोर्विभाजकाय (इन्द्राय=सभासेनेशाय) २.२१.२. **वन्वन्तः**=विभजन्तः (दुर्जनाः) ६.१६.२७. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन उः]

वन्वानः सम्भजमानः (सज्जनः) ३.८.२. याचमानः (राजा) ५.२९.८. **वन्वानाः**=याचमानाः (सज्जनाः) १०.४. [वनु याचने (तना०) धातोः शानच्]

वप निक्षिप १६.६. **वपतु**=स्थापयतु ३५.५. **वपते**=बीजानि सन्तनुते १.१६४.४४. **वपन्त**=वपन्ति ७.५६.३. **वपन्ति**=बोते हैं सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३८. **वपन्तु**=छिन्दन्तु १६.५२. विस्तारयन्तु २.३३.११. **वपः**=सन्तनुहि ४.१६.१३. **वपामि**=विस्तारयामि १.२१. [डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् चापि]

वपन्ता वपन्तौ (अश्विना=सभासेनाधीशौ) १.११७.२१. [डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोः शतृ । ततो द्विवचनस्याकारादेशः वपन्ता निवपन्तौ नि० ६.२६.]

वपम् यो वपति क्षेत्राणि कृषीवल इव विद्यादिशुभान् गुणांस्तम् (अहिंसकं जनम्) ३०.७. [डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि पचाद्यच्]

वपाम् वपन्ति यस्यां भूमौ ताम् ३५.२०. वपनम् १२.१०३. **वपायाः**=वर्द्धिकाया रीत्याः २१.४१. बीजतन्तुसन्तानिकायाः क्रियायाः बीजवर्द्धिकायाः क्रियाया वा २१.४१. **वपाः**=वपन्ति याभिः क्रियाभिस्ताः २१.३१. [डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । ततः स्त्रियां टाप् । शुक्ला वपा ऐ० २.१४. आत्मा वपा कौ० १०.५. यजमानदेवत्या वै वपा तै० ३.९.१०.१. हुत्वा वपामेवाग्रेऽभिधारयति श० ३.८.२.२४. प्रातः पशुमालभन्ते तस्य वपया प्रचरन्ति तां० ५.१०.६.]

वपावन्तम् विद्याबीजं विस्तारयन्तम् (विद्यार्थिजनम्) ५.४३.७. बहूनि वपनाधिकरणानि विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (अग्नि=विद्यादिरूपम्) ६.१.३. **वपावान्**=वपन्ति यया क्रियया सा वपा सा प्रशस्ता विद्यते यस्य सः (विद्वज्जनः) २०.३७. [वपेति व्याख्यातम् ततः प्रशंसायामर्थे भूम्न्यर्थे वा मतुबन्ताद् द्वितीयैकवचनम्]

वपुर्भिः स्वाऽऽकृत्यादिभिः शरीरैः १.६२.८. **वपुषः**=सुरूपस्य १.११८.५. **वपुषाम्**=रूपवतां शरीराणाम् ४.७.६. **वपुषे**=शरीरधारणपोषणाऽग्निरूपप्रकाशाय १.६४.४. रूपाय १.१४८.१. शरीरहिताय ३०.१४. **वपुः**=सुरूपं शरीरम् ६.४४.८. शरीरमुदकं वा १९.८३. **वपूंषि**=रूपवन्ति शरीराणि ३.१.८. रूपाणि ४.२३.९. [डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तिपृवपियजि०' उ० २.११७ सूत्रेण उसिः ।. वपुः उदकनाम निघं० १.१२. रूपनाम निघं० ३.७. वपुर्हि पशवः ऐ० ५.६.]

वपुषाय वपूंषि रूपाणि विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मै व्यवहाराय, प्र०—अत्र 'अर्श आदिभ्योऽच्' इति वेद्यम् ३.२.१५. [वपुष्प्राति० मत्वर्थे 'अर्श आदिभ्योऽच्' इत्यच्]

वपुष्टरा अतिशयेन रूपलावण्ययुक्तौ (स्त्रीपुरुषौ) २.३.७. [वपुष्प्राति० अतिशायने तरप् । ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

वपुष्यन् आत्मनो वपू रूपमिच्छन् (विद्वज्जन) ३.१.४. [वपुष्पदादात्मन इच्छायां क्यजन्ताच्छतृ]

वपुष्यः वपुष्षु रूपेषु भवः (अग्निः=राजा) ४.१.८. वपुषि सुन्दरे रूपे भवः (अतिथिः) ५.१.६. वपुष्षु साधुः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.१.१२. [वपुष् इति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे साध्वर्थे वा यत्]

वपुष्या वपुषि भवानि (सुरूपाणि यानानि) १.१८३.२. [वपुष्य इति व्याख्यातम् । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

वपुष्ये वपुषि रूपे भवे (भूमिसूर्यौ) १.१६०.२. [वपुष्प्राति० भवार्थे यत् । ततो द्विवचने रूपम्]

वप्ससः सुरूपस्य (विद्वज्जनस्य) १.१८१.८. [वप्सः=रूपनाम निघं० ३.७.]

वभ्रः उद्गलितोदानः (प्राणवायुः) ११.७४. [वभ्र

गत्यर्थे (भ्वा०) धातोरच्]

वम्रम् रोगनिवृत्तये वमनकर्त्तारम् (सद्वैद्यम्) १.११२.१५. **वम्रः**=उद्गिरकस्त्यक्ता (धार्मिको जनः) १.५१.९. [टुवम उद्गिरणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० रक्]

वम्रीभिः उद्गीर्णाभिः (वर्षाभिः) ४.१९.९. **वम्रचः**=अल्पवयस्यः (देव्यः=स्त्रियः) ३७.४. [वम्रमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप् छान्दसः । वम्रचो वमनात् नि० ३.२०. वम्रीभिरुपजिह्विका इति सीमिकानाम् नि० ३.२०.]

वय इव यथा पक्षिणस्तथा १.८७.२. [वयस्-इव-पदयोः समासः]

वयतः प्राप्नुवतः (विद्यार्थिजनस्य) २.२८.५. **वयन्तः**=व्याप्नुवन्तः (वसिष्ठाः=विद्वज्जनाः) ७.३३.९. [वय गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

वयति सन्तनोति १९.८२. विस्तृणाति १९.८३. **वयन्ति**=व्याप्नुवन्ति ६.९.२. निर्मिमते १९.८०. [वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लट् । अथवा वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लट् 'बहुलं छन्दसी' ति शपो न लुक्]

वयन्ती गच्छन्ती (पृथिवी) २.३८.४. [वय गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

वयसा व्याप्त्या १८.५१. जीवनेन ११.२३. कमनीयेन (जीवनेन) २.१०.४. **वयः**=प्रजननात्मकम् (अश्वः=महत्तत्त्वम्) २३.५३. कमनीयं जीवनं विज्ञानं वा ६.४५.२. यो वेति गच्छति स पक्षी २३.११. कामम् २.४.९. आयुः १.१११.२. कमनीयं धनम् ४.१७.१८. प्रदीपकं तेजः ५.१६.१. अवस्थात्रये सुखभोगं जीवनम्, चिरञ्जीवसुखं वा ७.४७. प्रजननं प्रापणं वा १४.१०. तृप्तिम् २१.१४. येन व्येति व्याप्नोति तत् (तर्पणम्) २१.१५. गमनम् २८.२८. विद्याः कामयमानाः, प्राप्तविद्या वा (राजप्रजाजनाः) १.१२७.८. व्यापिनः (पदार्थाः) ४.४३.६. पक्षिण इव गायत्र्यादीनि छन्दांसि २.१६. ज्ञानिनः (जनाः) १.१०३.७. पराक्रमम्, कमनीयं कर्म, विविधव्यवहारव्यापी (छन्दः=स्वाधीन्यम्), सुखप्रापकम् (छन्दः), कमिता (छन्दः) बलवान् (पुरुषः), प्रजनकः (छन्दः=स्वाधीनः पुरुषः), न्यायविनयपराक्रमव्याप्तम् (छन्दः=विद्याधर्मशमादिकर्म), बलिष्ठः (पुरुषः) १४.९. बलम्, इच्छाम्, कामनाम् १४.१० व्याप्तिशीलाः (अश्वासः=वेगादयो गुणाः) ५.७५.६. शत्रुबलव्यापकम् (शूषं=बलम्) २८.४१. व्याप्तव्यम् (चिरञ्जीवनम्) २१.२१. आयुर्वर्धकम् (भा०—वासन्तिकं सुखम्) २१.२३. प्राप्तव्यं वस्तु २१.१९. कालविज्ञानम् २१.२५. प्राणधारणम् २८.३७. कमितारः (जनाः) १.१३६.२. **वयांसि**=कमनीयान्यन्नानि ३.३.७. **वयोभिः**=व्यापकैर्गुणैः १२.२५. यावज्जीवनैः १२.१. [वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोरौणा० असुन् । वयः=अन्नताम निघं० २.७. वयो वेर्बहुवचनम् नि० ४.३. वयः=अन्नम् नि० ६.४. एतद्वै वयसामोजिष्ठं बलिष्ठं यच्छ्येनः श० ३.३.४.१५. स (श्येनः) हि वयसामाशिष्ठः तां० १३.१०.१४. श्येनो वै वयसां क्षेपिष्ठः ष० ३.८. पशवो वै वयांसि श० ९.३.३.७. निर्ऋतेर्वा एतन्मुखं यद्वयांसि यच्छकुनयः ऐ० २.१५. देवाननु वयांस्योषधयो वनस्पतयः श० १.५.२.४. प्राणो वै वयः ऐ० १.२८. पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तम् (यजु० ११.२३.) इति पृथुर्वाऽएष (अग्निः) तिर्यङ् वयसो बृहन्धूमेन (वयः=धूमः) श० ६.३.३.१९. धूमो वाऽअस्य (अग्नेः) श्रवो वयः श० ७.३.१.२९. दिव्यं सुपर्णं वयसा बृहन्तम् (यजु० १८.५१.) इति दिव्यो वाऽएष (अग्निः) सुपर्णो वयसो बृहन्धूमेन (वयः=धूमः) श० ९.४.४.३. अथ यदश्रु संक्षरितमासीत्तानि वयांस्यभवन् श० ६.१.२.२. ताक्ष्यों वै पश्यतः राजेत्याह तस्य वयांसि विशः श० १३.४.३.१३. उरस एवास्य (इन्द्रस्य) हृदयात्त्विषिरस्रवत् स श्येनोऽपाष्ठिहाभवद् वयसां राजा श० १२.७.१.६.]

वयस्कृत् यद्वयस्करोति तज्जीवनसाधनम् १५.५. यो वयो वृद्धावस्थापर्यन्तं विद्यासुखयुक्तमायुः करोति स (सभाध्यक्ष) १.३१.१०. **वयस्कृतम्**=यो वयः करोति तम् (जगदीश्वरं भौतिकमग्निं वा) ३.१८. [वयस् इति व्याख्यातम् । तदुपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

वयस्वन्तः प्रशस्तं वयो जीवनं विद्यते यस्य तस्य राय:=धनस्य) ५.५४.१३. प्रशस्तं वयो जीवनं विद्यते यस्मिँस्तस्य (रायः=धनस्य) २.२४.१५. प्रशस्तं पूर्णमायुर्विद्यते येषान्ते (जनाः), प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् ३.१८. **वयस्वते**=बहुजीवनं विद्यते यस्य तस्मै (इन्द्राय=सेनापतये) ७.२२. [वयस्प्राति० मतुप् । ततः प्रथमाबहुवचनम्]

वया इव यथा विस्तीर्णाः शाखाः २.५.४. **वयामिव**=यथा वृक्षस्य सुदृढां विस्तीर्णां शाखाम् ६.५७.५. [वयस्-इवपदयोः समासः]

वयाकिनम् व्यापिनम् (विद्वज्जनम्) ५.४४.५. [वी गतिव्यप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० आकिन् प्रत्ययः]

वयाम् वयसामवस्थावतां प्राणिनाम्, प्र०—अत्राऽऽमि टिलोपश्छान्दसः ३४.४८. व्यापिकां सुखनीतिम् १५.२४. शाखाम् ५.१.१. **वयाः**=शाखाः २.३५. प्रापकः (रुद्रः=शूरवीरजनः) ७.४०.५. पक्षिणः ६.१३.१. [वयस् इति व्याख्यातम् । तत आमि टिलोपश्छान्दसः । वयाः शाखा वेतेर्वातायना भवन्ति नि० १.४.]

वयावन्तम् बहुपदार्थयुक्तम् (क्षयं=गृहम्) ६.२.५.

वयिष्यन् व्ययं करिष्यन् (वसिष्ठः=पूर्णविद्वज्जनः) ७.३३.१२. [वय गतौ (भ्वा०) धातोर्लृटः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

वयुनम् कर्म्म प्रज्ञानं वा ५.४८.२. प्रज्ञाम् ३.३.४. **वयुनानि**=विज्ञानानि, भा०—विद्याः २९.५१. ज्ञानानि ६.७५.१४. प्रशस्तानि कर्माणि प्रज्ञाश्च ५.३६. प्रज्ञान और उत्तम कर्म सं० वि० ७, ४०.१६. **वयुनेषु**=पृथिवीमारभ्य परमेश्वरपर्यन्तानां विज्ञानेषु ६.७.५. प्रज्ञापनेषु २.३४.४. [अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोः 'अर्जियमिशीङ्भ्यश्च' उ० ३.६१. सूत्रेण उनन् । 'अजेर्व्यघञपोः' अ० २.४.५६. सूत्रेणाजेर्वीत्ययमादेशः । वयुनम्=प्रशस्यनाम निघं० ३.८. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. पदनाम निघं० ४.२. वयुनं वेतेः कान्तिर्वा प्रज्ञा वा नि० ५.१५. वयुनानि प्रज्ञानानि नि० ८.२०.]

वयुनवत् प्रज्ञावत् ६.२१.३. [वयुनमिति व्याख्यातम् । ततो मतुप्]

वयुनशः प्रज्ञानेन ६.५२.१२. [वयुनप्राति० 'बह्वल्पार्थाच्छस्०' अ० ५.४.४२. सूत्रेण शस्]

वयुना प्रज्ञानानि कर्माणि वा १.१६२.१८. वयुनानि प्रशस्यानि कमनीयानि वा कर्म्माणि १.९२.६. [वयुनप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

वयुनावत् प्रज्ञानवत् ४.५१.१. [वयुनप्राति० मतुप् । संहितायां दीर्घः । वयुनावत् प्रज्ञानवत् नि० ५.१५.]

वयुनावित् यो वयुनानि प्रज्ञानानि वेत्ति सः, भा०—सर्वज्ञः (अ०—जगदीश्वरः) ३७.२. यो वयुनानि प्रशस्तानि कर्म्माणि वेत्ति सः (योगिजनः), प्र०—वयुनमिति प्रशस्यनामसु पठितम् निघं० ३.८. अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः ५.१४. सर्वेषां जीवानां शुभाऽशुभानि यानि प्रज्ञानानि प्रजाश्च तानि यो वेद सः (परमेश्वरः), ऋ० भू० १५६. [वयुनोपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः । वयुनाविदित्येष (प्रजापतिः) हीदं वयुनमविन्दत् श० ६.३.१.१६.]

वयोधसम् चिरायुर्धारकम् (इन्द्रं=राजानम्) २८.३१. चिरञ्जीविनम् (इन्द्रम्) २८.४२. प्राणधारिणम् (इन्द्रं=जीवम्) २८.३९. आयुषो धर्त्तारम् (इन्द्रम्) २८.४५. बहुवयो धारकम् (इन्द्रं=राजानम्) २८.४४. जीवनधारकम् (इन्द्रम्) २८.४१. कमनीयसुखधारकम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) २८.३०. वयोवर्धकम् (इन्द्रं=सूर्यम्) २८.३५. कमनीयानां विद्याबोधादीनां धातारम् (इन्द्रं=विद्वज्जनम्) २८.२८. कामनाधारकम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) २८.२९. त्रयः कर्मोपासनाज्ञानानि वत्सा इव यस्य तम् (जीवस्वरूपम्) २८.२७ **वयोधसा**=वयो जीवनं दधाति येन तेन (आधीतेन=अध्ययनेन) १५.७. **वयोधाः**=यो वयः प्रजननं दधाति सः (मनुष्यः) २.३.९. यो वयः कमनीयमायुर्दधाति सः (वैद्यः) ५.४३.१३. अ०—जितेन्द्रियत्वेन जीवनवर्धयिता (अग्निः=पावक इव सेनापतिः) १५.५२. यो वयो जीवनं कमनीयं वस्तु दधाति सः (इन्द्रः=ईश्वरः) ४.१७.१७. यः कमनीयानि वयांसि जीवनधनादीनि दधाति सः (अग्निः=विद्युदिव राजा) ४.३.१०. [वयस् इति व्याख्यातम् । तदुपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'वयसि धाञः' उ० ४.२२९. सूत्रेण असिः । वयोधा इति श्रोत्रम् तै० सं० ५.३.६.२.]

वयोनाधैः वयांसि विज्ञानानि नह्यन्ति यैर्विद्वद्भिः, वेदादिशास्त्रप्रज्ञापनप्रबन्धकैः (देवैः=विद्वद्भिः), वयांसि जीवनादीनि गायत्र्यादिछन्दांसि वा नह्यन्ति यैः प्राणैस्तैः, पूर्णविद्याविज्ञानप्रचारप्रबन्धकैः (देवैः), ये वयः कामयमानं जीवनं नह्यन्ति तैः (देवैः) १४.७. [वयस् इति व्याख्यातम् । तदुपपदे णह बन्धने (दिवा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण् 'नहो धः' इति ह्स्य धः]

वयोवयः कमनीयं जीवनं जीवनम् ५.१५.४. [वयस्पदस्य वीप्सायां द्विर्वचनम्]

वयोवृधः ये वयसा वर्धन्ते, वयो वर्धयन्ति वा (विद्वज्जनाः) ५.५४.२. [वयस् इत्युपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

वयोवृधा ये वयः कमनीयं जीवनं वर्धयतस्ते (रात्रिदिने) ५.५.६. [वयस् इत्युपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसम्]

वय्यम् यो वयते जानाति तम् (विद्वज्जनम्), प्र०—अत्र वयधातोर्बाहुलकादौणादिको यत्प्रत्ययः १.५४.६. ज्ञातारम् (विद्वांसं जनम्) १.११२.६. **वय्याय**=तन्तुसन्तान-

काय (जनाय) २.१३.१२. प्राप्तव्याय सुखाय ४.१६.६.

वय्येव पदसाधिका नलिकेव २.३.६. [वय्या-इवपदयोः समासः]

वरत् वृणुयात् ६.४५.२४. **वरते**=स्वीकरोति ४.४२.६. **वरथः**=स्वीकुरुथः ५.३१.६. **वरन्त**=वारयन्ति ३.३२.६. वृण्वन्तु, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप् १.१२१.१५. निवारयन्ति ४.६.६. वरयन्ति २.२४.५. स्वीकुर्युः १.१४०.१३. **वरन्ते**=स्वीकुर्वन्ति ४.३२.८. **वराते**=वृणुयाताम् ५.३२.६. वृणुते १.६५.३. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लेट् । व्यत्ययेन शप् । अन्यत्र लट् लङ् चापि वरन्ते=वारयन्ति नि० १०.२६.]

वरत्राः रश्मयः ४.५७.४. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'वृञश्चित्' उ० ३.१०७. सूत्रेणात्रन्]

वरम् अतिश्रेष्ठम् (सूरिं=युद्धविद्याकुशलं जनम्) १.११६.३. परमोत्तमं विज्ञानधनम् १.४.४. वरणीयं वन्धुसमुदायम् २.५.५. रत्नादिकम् १.१४०.१३. **वराय**=स्वीकरणाय १.१४३,५. श्रैष्ठ्याय १.७६.१. श्रेष्ठत्वाय ७.५६.२. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोरच् । अथवा वृणोतेः 'ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च' अ० ३.३.५८. सूत्रेण घञोपवादोऽप् । वरो वरयितव्यो भवति नि० १.७. वर इव वै स्वर्गो लोकः जै० २.६६. वरो न प्रतिगृह्यः तै० सं० ७.१.६.५. सर्वं वै वरः श० २.२.१.४.]

वरशिखस्य वरा श्रेष्ठा शिखा यस्य तस्य (सूर्यं इव राज्ञः) ६.२७.४. वरा शिखा यस्य तद्वत् मेघस्य ६.२७.५. [वरा-शिखापदयोः समासः]

वरसत् यो वरेषूत्तमेषु पदार्थेषु सीदति सः (परमेश्वरः) १०.२४. यो वरेषु श्रेष्ठेषु सीदति सः (जीवात्मा) ४.४०.५. य उत्तमेषु विद्वत्सु सीदति सः (ईश्वरो जीवो वा) १२.१४. [वरोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । एष (सूर्यः) वै वरसद् वरं वा एतत् सद्मनां यस्मिन्नेष आसन्नस्तपति ऐ० ४.२०.]

वरस्या अतिशयेन वरौ (भा०—स्त्रीपुरुषौ) ५.७३.२. [वरपदाद् इच्छायामर्थे क्यच्प्रत्ययान्तात् कर्त्तर्यच् । ततो द्विवचनस्याकारः । क्यचि च 'सुग् वक्तव्यः' अ० ७.१.५१. वा०सूत्रेण सुगागमः]

वरस्याम् स्वीकर्त्तव्यां प्रशंसाम् ६.४६.११. [वरस्येति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततः स्त्रियाम् । 'अ प्रत्ययादि' त्यकारः । ततष्टाप्]

वरा श्रेष्ठ तुल्य गुण कर्म स्वभाव वाले (स्त्रीपुरुष) सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१.६. श्रेष्ठौ श्रोतृश्रावकौ ५.४४.१२. [वरप्राति० 'सुपां सुलुक्०' इति द्विवचनस्याकारादेशः]

वरा इव यथा प्रशस्तविद्याधर्मकर्मस्वभावाः (विद्वांसो जनाः) १.८३.२. वरैस्तुल्याः (मनुष्याः) ५.६०.४. [वराः-इवपदयोः समासः]

वराहम् मेघम् १.६१.७. [वराहो मेघो भवति वराहारः, 'वरमाहारमाहार्षीः' इति च ब्राह्मणम् नि० ५.४. अङ्गिरसोऽपि वराहा उच्यन्ते नि० ५.४. वराहः मेघनाम निघं० १.१०. पशूनां वा एष मन्युर्यद् वराहः तै० १.७.६.४. तां (पृथिवीं प्रजापतिः) वराहो भूत्वाऽहरत् तै० सं० ७.१.५.१. अग्नौ ह वै देवा घृतकुम्भं प्रवेशयांचक्रुस्ततो वराहः सम्बभूव श० ५.४.३.१६. आण्डाभ्यां वराहौ (अजायेताम्) जै० २.२६७.]

वराहुम् वराणां धर्म्याणां व्यवहाराणां धार्मिकाणां जनानाञ्च हन्तारं दस्युं शत्रुम् १.१२१.११. **वराहून्**=वरमाह्वयतः शब्दायमानान् (रथान्) १.८८.५. [वरोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'डुप्रकरणे मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यान्म्' अ० ३.२.१८०. वा०सूत्रेण डुः । वरोपपदे ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्वा डुः । अथाप्येते माध्यमिका देवगणा वराहव उच्यन्ते नि० ५.४.]

वरांसि वरणीयानि धर्म्याणि कर्माणि ४.२१.८. वराणि (कर्म्माणि) १.१६०.२. उत्तमानि वस्तूनि ६.६२.१. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोरसुन् । वरस्प्राति० प्रथमाबहुवचने रूपम्]

वरिमता बहुस्थूलत्वेन सह १.१०८.२. [उरु बहुनाम निघं० ३.१. ततो भाव इमनिच्-प्रत्यये वरादेशे च छान्दसं रूपम्]

वरिमन् बहुगुणयुक्त (विद्वज्जन) ४.५४-४. अतिशयेन श्रेष्ठे (सुम्ने=सुखे) ६.६३.११. वहुशीलसत्ययुक्तम् (व्रतं=स्वीकृतक्षमादिगुणम्) ३.५६.३. **वरिमा**=वरस्य श्रेष्ठस्य भावः १८.४. **वरिम्णा**=श्रेष्ठगुणसमूहेन ३.५. बहोर्भविन १५.११. अतिशयेनोरुर्बहुस्तेन व्यापकत्वेन १३.२. महापुरुषार्थेन १५.१०. [उरु बहुनाम (निघं० ३.१.) उरुप्राति० भावे 'पृथ्वादिभ्य इमनिज्वा' अ० ५.१.१२२. सूत्रेणेमनिच् । ततश्च 'प्रियस्थिर०' इत्यादिना वर्-आदेशः]

वरिवस्यन् सेवमानः (इन्द्रः=विद्वान् राजा) ६.२०.११. **वरिवस्यन्तः**=परिचरन्तः (मरुतः=उत्तम-

राजजनाः) ७.५६.१७. [वरिवस्प्राति० परिचर्यायामर्थे 'नमोवरिवश्चित्रङः क्यच्' अ० ३.१.१९ सूत्रेण क्यच्। ततः शतृ]

वरिवस्यन्तु सेवन्ताम् ६.५२.१५. परिचरन्तु १.१२२.३. [वरिवस्प्राति० परिचर्यायां क्यच् ततो लोट्]

वरिवस्या वरिवसि परिचर्यायां भवानि सेवनकर्माणि १.१८१.१. [वरिवस्प्राति० भवार्थे यत्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

वरिवः विद्वत्परिचरणम् १५.५. सुखकारकं सेवनम् ७.४४. सत्यसेवनम् १५.४. भृशं रक्षणम् ५.३७. चक्रवर्त्ती राज्य और साम्राज्य धन को आर्याभि० १.४३. [वरिवः धननाम। निघं० २.१०.]

वरिवोदाः सत्यधर्मविद्वत्सेवाप्रापिकाः हेतयः= शस्त्रास्त्रोन्नतयः) १७.१५. [वरिवस् इत्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः। ततः स्त्रियां टाप्]

वरिवोधाम् वरिवः परिचरणं सुखसेवनं दधाति येन तम् (रथं=यानम्) १.११९.१. [वरिवस् उपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः करणे क्विप्]

वरिवोवित् परिचरणवेत्ता (विद्वज्जनः) २६.१७. **वरिवोविदम्**=येन वरिवः परिचरणं विन्दति तम् (रयिं=धनम्) २०.८३. वरिवः सेवनं विन्दति येन तम् (रयिम्) २.४१.९. **वरिवोविदः**=ये वरिवः परिचरणं विन्दन्ति जानन्ति यद्वा वरिवो धनं वेदयन्ति प्रापयन्ति ते (भा०—समर्था विद्वांसो जनाः) ३३.९४. **वरिवोविदा**—परिचरणं विन्दति प्राप्नोति येन तेन पराक्रमेण १.१७५.५. [वरिवस् उपपदे विद् ज्ञाने (अदा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि। विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा क्विप्]

वरिवोवित्तरा याऽतिशयेन परिचरणलब्ध्री (सुमतिः=शोभना प्रज्ञा) ३३.६८. वरिवः सेवनं विद्वद्वन्दनं वा यया सुमत्या साऽतिशयिता ६.१०७.१. वरिवः सत्यं व्यवहारं वेत्त्यनया साऽतिशयिता (सुमतिः) ८.४. [वरिवोविदिति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने तरबन्ताट् टाप्]

वरिष्ठम् अतिश्रेष्ठम् (वज्रं=शस्त्रविशेषम्) ५.४८.३. **वरिष्ठः**=अतिशयेन वरिता (इन्द्रः=राजा) ६.३७.४. **वरिष्ठे**=अतिशयेन वरे (बन्धुरे=प्रेमबन्धने) ६.४७.९. [वरप्राति० अतिशायन इष्ठन्॥ वृञ् वरणे (स्वा०) धातोस्तृजन्तादतिशायन इष्ठनि तृचो लोपः। वरिष्ठं वर्षिष्ठम्। नि० ५.१.]

वरिष्ठया अतिशयेन स्वीकर्त्तव्यया (सुमत्या) ५.२५.३. **वरिष्ठा**=अतिशयेनोत्तमा (काकुत्=सुशिक्षिता वाक्) ६.४१.२. **वरिष्ठाम्**=अतिशयेन वरां गतिम् ११.१२. [वरिष्ठमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्। इयं (पृथिवी) वै वरिष्ठा संवत्। श० ६.३.२.२.]

वरीमन् अतिशयेन वरे (सुखे) ६.६३.३. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० ईमनिन्]

वरीमभिः वृण्वन्ति ये तैः शिल्पिभिः १.५५.२. स्वीकर्त्तुमर्हैः (गुणैः) १.१५९.२. वरणीयैः (ऐश्वर्यैः) १.१३१.१. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० ईमनिन्]

वरीयसी अतिशयेन वरा (गातुः=भूमिः) १.१३६.२. [वरप्राति० अतिशायन ईयसुन्। ततः स्त्रियां ङीप्]

वरीयः अतिशयेन वरणीयं वरम् (स्योनं=सुखम्) २९.२९. अत्युत्तमं धनादिकम् ५.४९.५. अतिशयितं बह्वैश्वर्य्यम् १७.४९. अतिशयेन बहु (अन्तरिक्षम्=आकाशम्) २.१२.२. [वरप्राति० अतिशायन ईयसुन्। बहुवाचिन उरुशब्दाद्वातिशायन ईयसुन्। प्राति० वरादेशः। वरीयः वरतरम् उरुतरं वा नि० ८.९.]

वरीवर्त्ति समन्ताद् भृशमावृणोति समन्ताद्वर्त्तते वा ३७.१७. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

वरीवृजत् भृशं वर्जय ७.२४.४. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोः शतरि 'दाधर्त्तिदर्धर्त्ति०' अ० ७.४.६५ सूत्रेण श्लौ रीगागमोऽभ्यासस्य निपात्यते]

वरुण सर्वोत्कृष्ट जगदीश्वर १.५०.६. शत्रुच्छेदक उत्कृष्टसेनापते १०.१६. वरतम (राजन्) २.२७.१०. प्रशस्त (राजन्) ६.२२. न्यायकारिन् (राजन्) ६.२२. उत्तमकर्मकारिन् (मित्र) ५.६९.२. उदान इवोत्तम विद्वन् (जन) ३३.४६. अतिश्रेष्ठ (विद्वज्जन) ३३.४८. अत्युत्तम (अ०—विद्वज्जन) २१.२. वायुरिव वर्त्तमान (सत्पुरुष) २.२८.७. शत्रूणां बन्धक (भा०—धार्मिक जन) १२.१२. वरप्रापक (विद्वज्जन) २०.१८. श्रेष्ठ सचिव ४.४१.६. **वरुणम्**=बहिःस्थं प्राणं शरीरस्थमपानं वा १.२.७. ऊर्ध्वगमनबलहेतुमुदानं वायुम् १.२३.४. ईप्सितव्यम् (अर्यमणं=न्यायेशम्) ६.५१.३. जलमिव शान्त्यादिगुणम् (राजपुरुषम्) ४.३९.४. श्रेष्ठगुणम् (मित्रं=सखायम्) ४.२.४. क्रियाहेतुमुदानं वरगुणयुक्तं विद्वांसं वा १.१०६.१. **वरुणयोः**=उदान इव वर्त्तमानयोः (अध्यापकाध्येत्रोः) ६.५१.१. **वरुणस्य**=वायोर्जलस्य वा, प्र०—वरुण इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.४. अनेन प्राप्तिसाधनो गृह्यते

३.३१. आह्लादकस्य जलचन्द्रादेः १.११५.१. वरस्य (परमेश्वरस्य विदुषो वा) १.६१.३. सर्वोत्कृष्टस्य (राज्ञः) १७.४१. सर्वेभ्यो वरस्य श्रेष्ठस्य जगदीश्वरस्य ३४.४५. वरेषु श्रेष्ठेषु कर्मसु गुणेषु वर्त्तमानस्य (ईश्वरस्य) पं० वि० मेघस्य, प्र०—वरुण इति पदनाम निघं० ५.६, २.२८.४. वीरगुणोपेतस्य (राज्ञः) ८.२३. उदानस्येव बलवतो रोगस्य ६.७४.४. सूर्यस्य वायोर्वा ६.७०.१. दुःखेनाच्छादकस्य तिरस्कर्त्तुः (सभाध्यक्षस्य राज्ञः) ५.३६. वरितुं प्राप्तुं योग्यस्य श्रेष्ठस्य जगतः वरपदार्थसमूहस्य उत्कृष्टगुणसमूहस्य, वायोः, प्र०—अनेन ज्ञानप्राप्तिर्गमधातोरर्थस्य ग्रहणम् ४.३६. वरस्य प्राप्तव्यस्य सुखस्य १३.५०. सम्बन्धस्योत्तमस्य (कृष्टेः=मनुष्यस्य) ४.४२.२. उत्कृष्ट व्यवहार के सं० वि० १२२. अथर्व० १४.१.५७. अग्नेर्विद्युतो वा ७.४२. **वरुणः**=जलं वायुश्चन्द्रो वा १.१७.५. बाह्याऽभ्यन्तरस्थो वायुः १.२३.६. श्रेष्ठतम उत्तमव्यवहारहेतुर्वा (राजा=परमेश्वरः सूर्यो वा) १.२४.१३. उदान इव श्रेष्ठः (इन्द्रः=राजा) २५.२४. शमादिगुणान्वितः (महाविद्वज्जनः) ६.६२.६. आपः २.३८.६. वरणीयः (विद्वज्जनः) ५.६८.२. दुष्टानां बन्धकृच्छ्रेष्ठः (राजा) ५.३.१. सर्वोत्तमोऽधिपतिः परमेश्वरः पं० वि०। जलाधिपतिः (राजपुरुषः) ७.५६.२५. जलमिव शान्तिप्रदः (दारः) ७.४०.७. वरो विद्वान् ७.३८.४. वरस्वभावः (राजा) १०.२८. धर्माचरणेन श्रेष्ठः (मित्रः=सर्वस्य सुहृज्जनः) ६.३६. पुरुषोत्तमः (सम्राट्) १०.२७. जलसमूहः ८.५६. श्रेष्ठाचारः (ऋभुक्षाः=महाविद्वज्जनः) ५.४१.२. सर्वोत्कृष्ट स्वीकरणीय, परमोत्तम (ईश्वर) आर्याभि० १.१. ऋ० १.६.१८.६. वरगुणाढ्योऽर्थः १४.२०. सर्वोत्तमप्रबन्धकर्त्ता (जगदीश्वरः) ४.४२.२. विविधपाशैः शत्रूणां बन्धकः (राजा) १.२५.१३. सकलविद्यासु वरः (मनुष्यः) १.२६.४. चन्द्रसमुद्रतारकादिसमूहः १.४०.५. उत्तमगुणयोगेन श्रेष्ठत्वात् सर्वाध्यक्षत्वाऽर्हः (भा०—सभासेनाध्यक्षः) १,४१.१. वरो जीवः २.३८.८. वरगुणप्रदः वरः, सर्वोत्तमः, प्रशस्तविद्योऽनूचानो विद्वानध्यापकः, सत्योपदेष्टाऽऽप्ता ७.४७. जलं यस्याऽवयवः सः (मेघः) २६.१. यः सर्वान् शिष्टान् मुमुक्षून् धर्मात्मनो वृणोति, अथवा यः शिष्टैर्मुमुक्षुभिर्धर्मात्मभिर्व्रियते वर्य्यते वा स वरुणः परमेश्वरः, जो आत्मयोगी, विद्वान्, मुक्ति की इच्छा करने वाले, मुक्त और धर्मात्माओं से ग्रहण किया जाता है, वह ईश्वर; अथवा 'वरुणो नाम वरः श्रेष्ठः' जिसलिए परमेश्वर सबसे श्रेष्ठ, सर्वोत्तम है इसलिए उसका नाम वरुण है, प्र०—वृञ् वरणे, वर ईप्सायाम् इन धातुओं से औणादिक उनन्-प्रत्यय होने से वरुण शब्द सिद्ध होता है स० प्र० २०, ३६.६. **वरुणाय**=समुद्रादिषु गमनाय ३६.२. उत्तमाय व्यवहाराय ५.६६.१. प्रशस्तैश्वर्याय ८.२३. **वरुणे**=स्वीकर्त्तव्ये जने ३३.१७. **वरुणेन**=वरेण पुरुषार्थेन ४.३४.७. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'कॄवृदारिभ्य उनन्' उ० ३.५३. सूत्रेण उनन्। वरुणो वृणोतीति सतः नि० १०.३. वरुणः पदनाम निघं० ५.४. (आपः) यच्च वृत्वाऽतिष्ठंस्तद्वरुणोऽभवत्तं वा एतं वरणं सन्तं वरुण इत्याचक्षते परोक्षेण। परोक्षप्रिया इव हि देवा भवन्ति प्रत्यक्षद्विषः गो० पू० १.७. वरुणो वै जुम्बकः (यजु० २५.६.) श० १३.३.६.५. तै० ३.६.१५.३. रात्रिर्वरुणः ऐ० ४.१०. तां० २५.१०.१०. वारुणी रात्रिः तै० १.७.१०.१. यः प्राणः स वरुणः गो० उ० ४.११. यो वै वरुणः सोऽग्निः श० ५.२.४.१३. यो वा ऽग्निः स वरुणस्तदप्येतद् ऋषिणोक्तं त्वमग्ने वरुणो जायसे यदिति ऐ० ६.२६. अथ यत्रैतत् प्रदीप्ततरो भवति तर्हि हैष (अग्निः) भवति वरुणः श० २.३.२.१०. स यदग्निर्घोरसस्पर्शस्तदस्य वारुणं रूपम् ऐ० ३.४. वरुण्यो वाऽएष योऽग्निना शृतोऽथैष मित्रो य ऊष्मणा शृतः श० ५.३.२.८. यः (अर्द्धमासः) अपक्षीयते स वरुणः तां० २५.१०.१०. यः (अर्द्धमासः) एवापूर्यते स वरुणः श० २.४.४.१८. क्लोमा वरुणः श० १२.६.१.१५. श्रीर्वै वरुणः कौ० १८.६. वरुणः (श्रियः) साम्राज्यम् (आदत्त) श० ११.४.३.३. द्यावापृथिवी वै मित्रावरुणयोः प्रियं धाम तां० १४.२.४. अयं वै (पृथिवी) लोको मित्रोऽसौ (द्युलोकः) वरुणः श० १२.६.२.१२. व्यानो वरुणः श० १२.६.१.१६. अपानो वरुणः श० ८.४.२.६. योनिरेव वरुणः श० १२.६.१.१७. वरुणो दक्षः श० ४.१.४.१. वरुण एव सविता जै० उ० ४.२७.३. स वा एषो (सूर्यः) ऽपः प्रविश्य वरुणो भवति कौ० १८.६. वरुण आदित्यैः (उदक्रामत्) ऐ० १.२४. वरुण आदित्यैः (व्यद्रवत्) श० ३.४.२.१. संवत्सरो वरुणः श० ४.४.५.१८. संवत्सरो हि वरुणः श० ४.१.४.१०. क्षत्रं वरुणः श० ४.१.४.१. गो० उ० ६.७. क्षत्रं वै वरुणः श० २.५.२.६. कौ० ७.१०. क्षत्रस्य राजा वरुणोऽधिराजः तै० ३.१.२.७. इन्द्र उ वै वरुणः स उ वै पयोभाजनः कौ० ५.४. इन्द्रो वै वरुणः स उ वै पयोभाजनः गो० उ० १.२२. तद् यदेवात्र पयस्तन्मित्रस्य सोम एव वरुणस्य श० ४.१.४.६. वारुणं यवमयं चरुं निर्वपति तै० १.७.२.६. वारुणो यवमयश्चरुः श० ५.२.४.११. वरुण्यो ह वा ऽअग्रे यवः श० २.५.२.१. वरुण्यो यवः श० ४.२.१.११. निर्वरुणत्वाय एव यवाः तां० १८.६.१७.

वरुणः पर्णानि ऐ० १.२५. यत् पश्चाद्वासि वरुणो राजा भूतो वासि जै० उ० ३.२१.२. एषा (उत्तरा) वै वरुणस्य दिक् तै० ३.८.२०.४. यद्वै यज्ञस्य दुरिष्टं तद्वरुणो गृह्णाति तां० १३.२.४. यद्वस्य (ईजानस्य) दुरिष्टं भवति वरुणो ऽस्य तद् गृह्णाति श० ४.५.१.६. वरुणेन (यज्ञस्य) दुरिष्टं (शमयति) तै० १.२.५.३. वरुणः (यज्ञस्य) स्विष्टम् (पाति) ऐ० ३.३८. सत्यानृते वरुणः तै० १.७.१०.४. अनृते खलु वै क्रियमाणे वरुणो गृह्णाति तै० १.७.२.६. वरुणो वा एतं गृह्णाति यः पाप्मना गृहीतो भवति श० १२.७.२.१७. वरुण धर्मणां पते तै० ३.११.४.१. वरुणः (एवैनं) धर्मपतीनां (सुवते) तै० १.७.४.२. वरुणो वा ऽआर्पयिता श० श० ५.५.४.३१. सवो वै देवानां वरुणः श० ५.३.१.५. वरुणो ऽन्नपतिः श० १२.७.२.२०. वरुणः सम्राट् सम्राट्पतिः तै० २.५.७.३. श० ११.४.३.१०. वरुणो वै देवानां राजा श० १२.८.३.१०. विराड् वरुणस्य पत्नी गो० उ० २.९. अथ यदप्सु वरुणं यजति स्व एवैनं तदायतने प्रीणाति कौ० ५.४. अप्सु वै वरुणः तै० १.६.५.६. वरुण्यो वा अवभृथः श० ४.४.५.१०. वरुण्या वाऽएता आपो भवन्ति याः स्यन्दमानानां न स्यन्दन्ते श० ५.३.४.१२. वरुणस्य वा अभिषिच्यमानस्याप इन्द्रियं वीर्यं निरघ्नन्। तत् सुवर्णं हिरण्यमभवत् तै० १.८.९.१. वरुण्यो वै ग्रन्थिः श० १.३.१.१६. वरुण्यो हि ग्रन्थिः श० ५.२.२.१७. वरुण्या वा ऽएषा यद्रज्जुः श० ३.२.४.१८. वरुण्या वै यज्ञे रज्जुः श० ६.४.३.८. वरुण्या रज्जुः श० १.३.१.१४. वारुणो वै पाशः तै० ३.३.१०.१. श० ६.७.३.८. वारुणम् एककपालः पुरोडाशो भवति श० ४.४.५.१५. वारुणो दशकपालः (पुरोडाशः) तां० २१.१०.२३. तद्धि वारुणं यत्कृष्णं (वासः) श० ५.२.५.१७. वरुणस्य सायम् (कालः) आसवोऽपानः तै० १.५.३.१. खलतेर्विक्लिधस्य शुक्लस्य पिङ्गाक्षस्य मूर्द्धन् जुहोति। एतद्वै वरुणस्य रूपम् तै० ३.९.१५.३. वारुणो वा अश्वः तै० २.२.५.३. (प्रजापतिः) वारुणमश्वम् (आलिप्सत) श० ६.२.१.५. स हि वारुणो यदश्वः श० ५.३.१.५. एष वै प्रत्यक्षं वरुणस्य पशुर्यन्मेषः श० २.५.२.१६. वारुणी च हि त्वाष्ट्री चाविः श० ७.५.२.२०. यज्ञो वै वैष्णुवारुणः कौ० १६.८. वरुणसवो वा ऽएष यद् राजसूयम् श० ५.३.४.१२. यो राजसूयः स वरुणसवः तै० २.७.६.१. मैत्रो वै दक्षिणः वारुणः सव्यः तै० १.७.१०. वरुण्या वा ऽएता ओषधयो याः कृष्टे जायन्ते श० ५.३.३.८. वरुण्या वा ऽएषा (शाखा) या परशुवृक्णाथैषा मैत्री (शाखा) या स्वयम्प्रशीर्णा श० ५.३.२.५ वरुण्यं वा ऽएतद् यन् मथितम् (आज्यम्) अथैतन् मैत्रं यत् स्वयमुदितम् श० ५.३.२.६.]

वरुणध्रुतः वरुणेन ध्रुतः स्थिरीकृतः (अर्यमा=न्यायाधीशः) ७.६०.९. [वरुण-ध्रुतपदयोः समासः। ध्रुतः=ध्रु गतिस्थैर्ययोः (तुदा०) धातोः क्तः]

वरुणमिव पाशैर्बन्धकं व्याधमिव ६.४८.१४. प्राणोदानाविव वर्त्तमानौ राजाऽमात्यौ ५.६२.८. [वरुणम्-इवपदयोः समासः]

वरुणशेषसः वरुण उत्तमो जनः शेषो येषान्ते (मनुष्याः) ५.६५.५. [वरुण-शेषपदयोः समासः]

वरुणा श्रेष्ठौ (होतृयजमानौ) ८.५९. उत्तमौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.६४.६. [वरुण इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वरुणानी वरस्य भार्य्या ५.४६.८. **वरुणानीम्**=श्रेष्ठस्य स्त्रियम् २.३२.८. यथा वरुणस्य जलस्येयं शान्तिमाधुर्यादिगुणयुक्ता शक्तिस्तथाभूतम् (स्त्रियम्) १.२२.१२. [वरुणप्राति० स्त्रियाम् 'इन्द्रवरुणभव०' अ० ४.१.४९. सूत्रेण स्त्रियां ङीष् आनुक् च। वरुण इति व्याख्यातम्। वरुणानी वरुणस्य पत्नी नि० १२.४६.]

वरुणानी जलादिपदार्थयुक्ते (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ७.३४.२२. [वरुणानीति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

वरुण्यात् वरुणेषु वरेषु भवादपराधात्, भा० श्रेष्ठापराधात् १२.९०. [वरुणप्राति० भवार्थे यत्]

वरूता वरिता स्वीकर्त्ता (इन्द्रः=विद्वज्जनः), प्र०—'असित०' इत्यादिषु निपातः १.१६९.१. श्रेष्ठः (इन्द्रः=परमैश्वर्यप्रदो राजा) ६.२५.७. वारयिता (इन्द्रः=विद्वज्जनः) २.२०.२. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'असितस्कभित०' अ० ७.२.३४. सूत्रेण तृच्-प्रत्यय ऊडागमो निपात्यते]

वरूत्री वर्त्तुमर्हा (वरणीया विद्या) ७.४०.६. वरणीया नीतियुक्ता माता ७.३८.५. वरसुखप्रदा (माता) ५.४१.५. **वरूत्रीभिः**=वरणीयाभिर्विद्याभिः ७.३४.२२. **वरूत्रीम्**=वरयित्रीम्, भा०—आकर्षणसम्बन्धनीम् (मायां=प्रज्ञापिकां विद्युतम्) १३.४४. वरितुं स्वीकर्त्तुमर्हाम् (धिषणां=वाचम्) १.२२.१०. **वरूत्रीः**=अत्यन्तं वराः (श्रीमन्तो विद्वांसः) ३.६२.३. वराः (देवीः=कमनीयाः स्त्रियः) ११.६१. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तात् स्त्रियां ङीष्। 'असितस्कभित०' अ० ७.२.३४. सूत्रेणोडागमः। अहोरात्राणि वै वरूत्रयोऽहोरात्रैर्हीदं सर्वं

वृतम् श० ६.५.४.६.]

वरूथम् -गृहम् ७.३०.४. स्वीकर्त्तुमर्हम् (पदार्थम्) १.१८९.६. प्रशस्तं गृहम् ७.३२.७. वरणीयमुत्तमम् (कर्म्म) १.११६.११. वरं श्रेष्ठम् (भेषजं=रोगनाशक-व्यवहारम्) प्र०—अत्र 'जॄवृभ्यामूथन्' उ० २.६. अनेन वृञ्-धातोरूथन् प्रत्ययः १.२३.२१. वर्त्तुमर्हं गृहम् ५.३५. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'जॄवृञ्भ्यामूथन्' उ० २.६. सूत्रेण ऊथन्। वरूथम्=गृहनाम निघं० ३.४.]

वरूथिने प्रशस्तानि वरूथानि गृहाणि विद्यन्ते यस्य तस्मै (जनाय) १६.३५. [वरूथप्राति० प्रशंसायां मत्वर्थे इनिः। ततश्चतुर्थी। वरूथमिति व्याख्यातम्]

वरूथ्यम् वरूथे गृहे भवम् (छर्दिः) ६.६७.२. गृहेषु साधु (शर्म=गृहम्) ५.४६.५. [वरूथमिति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे साध्वर्थे वा यत्]

वरूथ्यः उत्तमेषु गृहेषु भवः (राजा) ५.२४.१२. वरः (विद्वान्) १५.४८. यो वरूथेषु श्रेष्ठेषु गुणकर्मस्वभावेषु भवः (अग्निः=सर्वाभिरक्षकेश्वरः) ३.२५. वरूथेषु गृहेषु साधुः (अग्निः=वेदविदध्यापकोपदेशकः) २५.४७. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

वरेण्यम् अतिश्रेष्ठम् (भर्गः=सकलदोषनाशकं परमात्मस्वरूपम्) प्र०—अत्र 'वृञ एण्यः' उ० ३.९८. अनेन वृञ्-धातोरेण्यः प्रत्ययः ३.३५. वर्त्तुमर्हमत्युत्तमम् (भर्गः शुद्धस्वरूपम्) ३०.२. स्वीकर्त्तव्यम् (भर्गः=सर्वदुःखप्रणाशकं तेजःस्वरूपम्) ३६.३. अतिशयेन वर्त्तव्यम् (गृहपतिम्) ५.८.१. सर्वेभ्य उत्कृष्टं प्राप्तुं योग्यम् (भर्गः=दुःखमूलभर्जक-परमात्मस्वरूपम्) ३.६२.१०. स्वीकर्त्तुमर्हम् (वसु=द्रव्यम्) ६.१६.३३. प्रशस्तगुणकर्मस्वभावकारकम् (रयिम्) १.७९.८. स्वीकार करने योग्य, अतिश्रेष्ठ (भर्गः=शुद्धस्वरूप) स० प्र० ५१, ३६.३. अतीवोत्तमम् (अवः=रक्षणादिकं कर्म्म) ५.३५.३. यद्वरं वर्त्तुमर्हमतिश्रेष्ठम् (भर्गः=परमात्मस्वरूपम्) पं० वि०। वरितुं स्वीकर्त्तुमर्हम् (सुतं=पुत्रं विद्यार्थिनं वा) ३.१२.१. स्वीकर्त्तुं भोक्तुमर्हम् (सोमं=महौषधिविशिष्टमन्नम्) ३.४०.५. वरीतुमर्हं श्रेष्ठम् (शेवं=सुखस्वरूपं जीवम्) १.५८.६. अतिश्रेष्ठ, ग्रहण और ध्यान करने योग्य (भर्गः=परमात्मस्वरूप) सं० वि० ७५, ३६.३. **वरेण्यः**=वर्त्तुं स्वीकर्त्तुमर्हः (ओषधिसारः) १.१७५.२. वरणीयो जनः २१.१२. वरितुमर्होऽतिश्रेष्ठः (विद्वज्जनः) ३.२७.९. सर्वत उत्कृष्टतमः (परमेश्वरः) १.२५.३. स्वीकर्त्तुं योग्यः (विश्पतिः=सभापती राजा) १.२६.७. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'वृञ एण्यः' उ० ३.९८. सूत्रेण एण्यः वरेण्यः=वरणीयः नि० १२.१३. अग्निर्वै वरेण्यम् जै० उ० ४.२८.१. आपो वै वरेण्यम् जै० उ० ४.२८.१. चन्द्रमा वै वरेण्यम् जै० उ० ४.२८.१.]

वर्क् वर्जयसि, प्र०—अत्र 'मन्त्रे घसह्वर०' इति च्लेर्लुक् १.६३.७. छिनत्सि ६.२६.३. **वर्क्तम्**=त्यजेताम् ६.५९.७. त्यजतम् १.१८३.४. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्लुङि 'मन्त्रे घसह्वर०' अ० २.४.८०. सूत्रेण च्लेर्लुक्। अडभावश्छान्दसः]

वर्चसा वर्चन्ते दीप्यन्ते सर्वे पदार्था यस्मिन् वेदाध्ययने तेन २.२४. तेजसा ८.१६. प्रकाशेन ३५.३. विद्यादीप्त्या १३.४०. साङ्गोपाङ्गवेदाध्ययनेन २०.२२. अन्नाऽध्ययनादिना १२.७. **वर्चसे**=अध्यापनाय २६.९. स्वप्रकाशाय वेदप्रवर्त्तकाय (अग्नये=विज्ञानमयाय न्यायव्यवहाराय) ८.३८ निजात्मप्रकाशाय, योगबलप्रकाशाय, सद्गुणप्रकाशाय, रोगाऽपहारकायौषधाय ७.२८. शब्दार्थसम्बन्धविज्ञानाय, शुद्धसिद्धान्तप्रकाशाय, प्रागल्भ्याय, अध्ययनदीप्त्यै, पराक्रमाय, अन्नाय ७.२७. **वर्चः**=वर्चन्ते दीप्यन्तेऽनेन तद्वर्चो विद्याप्रापणम्, अ०—वेदचतुष्टयम्, विद्याव्यवहारप्रापकम्, अ०—शरीरात्मबलम्, प्रकाशकं विद्युत्सूर्यप्रसिद्धाग्न्याख्यं तेजः ३.९. अध्यापनतेजः ३.८.३. अन्नम् ३.२४.१. विद्याप्राप्ति दीप्ति वा ३.१७. विज्ञानं तेजो वा ४.१७. विज्ञानप्रकाशः १२.४८. यः सर्वविदां ज्योतिषां, ज्ञानवतां जीवानां वर्चोऽन्तर्यामितया सत्योपदेष्टा (परमेश्वरः), ऋ० भू० २४८, ३.९. सद्विद्याप्रचारं सम्यगध्ययनाऽध्यापनप्रबन्धं कर्म ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.८. विद्याबलन्यायदीपनम् ९.३७. पढ़ी हुई विद्या का विचार सं० वि० १४४, अथर्व० १२.५.८. **वर्चांसि**=प्रकाशमानाऽध्ययनानि ९.२२. [वर्च दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणादिकोऽसुन्। वर्चः अन्ननाम निघं० २.७. सूर्यस्य वर्चसा तां० १.३.५. सूर्यस्य वर्चसा (त्वाभिषिञ्चामीति) श० ५.४.२.२. ततोऽस्मिन् (अग्नौ) एतद् वर्च आस श० ४.५.४.३. वर्च्चो वा ऽएतद् हिरण्यम् श० ३.२.४.९. वर्चो वै हिरण्यम् तै० १.८.९.१. यद् वै वर्चस्वी कर्म चिकीर्षति शक्नोति वै तत् कर्त्तुम् श० ५.२.५.१२. वर्चो द्वाविंशः (यजु० १४.२३) संवत्सरो वाव वर्चो द्वाविंशस्तस्य द्वादश मासाः सप्तर्त्तवो द्वेऽहोरात्रे संवत्सर एव वर्चो द्वाविंशस्तद् यत् तमाह वर्च इति संवत्सरो हि सर्वेषां भूतानां वर्चस्वितमः श० ८.४.१.१६.]

वर्चस्यम् वर्चसेऽध्ययनाय हितम् (हिरण्यं=तेजोमयं

सुवर्णम्) ३४.५०. [वर्चस्प्राति० हितार्थे यत्]

वर्चस्वत् प्रशस्तानि वर्चांस्यन्नानि यस्मात्तत् (हिरण्यं=तेजोमयं सुवर्णम्) ३४.५०. [वर्चस्प्राति० प्रशंसायां मत्वर्थे मतुप्। मतुप्सूत्र 'इतिकरणस्ततश्चेद् विवक्षा' इति नियमेन पञ्चम्यर्थेऽपि मतुप्]

वर्चस्वान् विद्याविज्ञानवान् (विद्वज्जनः) १३.४०. सर्वविद्याऽध्ययनयुक्तः (सभापती राजा) प्रशस्तविद्याध्ययनः (प्रजासभासेनाजनः) ८.३८. [वर्चस्प्राति० प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुप्]

वर्चस्विन् बहु वर्चोऽध्ययनं विद्यते यस्मिन् तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=तेजोमय सभापते) ८.३८. [वर्चस्-प्राति० भूम्न्यर्थे (मत्वर्थे) 'अस्मायामेधास्रजो विनिः' अ० ५.२.१२१. सूत्रेण विनिः]

वर्चिनम् देदीप्यमानम् (शम्बरं=मेघम्) ६.४७.२१. **वर्चिनः**=बह्वधीतस्य (दासस्य=सेवकस्य) ४.३०.१५. प्रदीप्तस्य (सर्वबलस्य राज्ञः) २.१४.६. [वर्च दीप्तौ (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

वर्चोदसौ सूर्याचन्द्रमसाविवाऽतिथ्याध्यापकौ ७.२७. न्यायप्रकाशकौ सर्वाधिष्ठातारौ सभापतिन्यायाधीशाविव योगाऽऽरूढ-योगजिज्ञासू ७.२८. **वर्चोदाः**=योगब्रह्मविद्याप्रद, विद्याप्रद, वर्चो बलं ददातीति तत्सम्बुद्धौ भा०—पूर्णविद्य (अ०—विद्वज्जन) ७.२८. दीप्ति ददातीति (सूर्यः) ४.३. सकलविद्याध्ययनप्रदाः (हेतयः=शस्त्रास्त्रोन्नतयः) १७.१५. यो वर्चो विज्ञानं ददातीति, तत्प्राप्तिहेतुर्वा (अग्निः=सर्वविद्यामयेश्वरो विद्याहेतुर्भौतिकोऽग्निर्वा) ३.१७. वर्चो विद्यां दीप्तिं वा ददातीति, भा०—प्रकाशहेतुर्विद्याप्रदो वा (सूर्यः=जगदीश्वरो विद्वान् जीवो वा) २.२६. यथायोग्यं प्रकाशं ददाति तत्सम्बुद्धौ, दीप्तिप्रदो जाठराग्निरिव, वर्चो विद्याबलं ददातीति, सत्यवक्तृत्वप्रदः, तज्ज्ञानदः, विज्ञानप्रदः (अध्येताऽध्यापको वा) ७.२७. विद्यादि तेज अर्थात् विज्ञान देने वाला (ईश्वर) आर्याभि० २.३३, ३.१७. [वर्चस् इत्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोरौणा० असुन्]

वर्चोधाम् या वर्चो विद्यां दीप्तिं दधाति ताम् (धियम्) ४.११. [वर्चस् इत्युपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कः। ततः स्त्रियां टाप्]

वर्णम् रूपम् २.१२.४. स्वीकर्त्तव्यम् (आर्यं=धार्मिकं जनम्) ३.३४.९. आज्ञापालन-स्वीकरणम् १.१०४.२. स्वीकर्त्तुमर्हंमतिसुन्दरम् (रूपम्) ४.२. स्वीकरणीयम् (इदं=जलम्) २.५.५. स्वीकारम् ३.३४.५. चक्षुर्विषयम् (वस्तुस्वरूपम्) १.७३.७. स्वस्वरूपम् १.११३.२. **वर्णः**=वरीतुं योग्यः (सूर्य-प्रकाशः) ४.२६. **वर्णाय**=स्वीकरणाय ३०.९. सुरूपसम्पादनाय ३०.१७. **वर्णे**=शुक्लादिगुणे २.१.१२. **वर्णेन**=तेजसा ४.५.१३. **वर्णौ**=परस्परेण व्रियमाणौ सुन्दरस्वरूपौ (स्त्रीपुरुषौ) १.१७२.६. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'कृवृजृ०' उ० ३.१०. सूत्रेण नः प्रत्ययः। वर्णः वृणोतेः नि० २.३. चत्वारो वै वर्णाः। ब्राह्मणो राजन्यो वैश्यः शूद्रः श० ५.५.४.९.]

वर्त वर्त्तते १.१०५.१४. **वर्तस्व**=वर्तस्व वर्त्तते वा १२.१०३. **वर्ते**=वर्त्तमानो भवेयम् २.२७. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लोट्। पुरुषव्यत्ययः। परस्मैपदञ्च व्यत्ययेन। अन्यत्र लोट् लट् च]

वर्तनिम् वर्त्तन्ते यस्मिँस्तं मार्गम् ३.७.२. स्वकीयमार्गम् ऋ० भू० १३८, ऋ० ८.२.१०.१. वर्त्तन्ते यस्मिँस्तं न्यायमार्गम् ७.१८.१६. **वर्तनिः**=वर्त्तमानः (श्येनी) १.१४०.९. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोरधिकरणे 'वृतेश्च' उ० २.१०६. सूत्रेणानिः]

वर्तनी गमनागमनसत्क्रिया १.५३.८. वर्त्तते यया क्रियया सा १.५३.८. **वर्तनीम्**=मार्गम् ५.६१.९. **वर्तनीः**=मार्गान् ४.१९.२. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः करणे ल्युट्। ततो ङीप् स्त्रियाम्]

वर्तम् वर्त्तयतम् ६.६२.११. **वर्तयतु**=प्रवृत्तं कारयतु ४.२०. **वर्तयथ**=निष्पादयथ १.३९.३. **वर्तया**=दूरीकुरु २.२३.७. **वर्तयाते**=वर्तयेत, प्र०—प्रथमैकवचनस्य आडागमे णिजन्तस्य वर्तेः प्रयोगः ५.३७.३. **वर्तयासि**=वर्तयेः २३.७. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट्। 'छन्दस्युभयथेति' आर्धधातुकत्वान् णेर्लोपः। अन्यत्र लट् लेट् च]

वर्तमानः वर्ततेऽसौ वर्त्तमानः (पदार्थः) १.३५.२. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः शानच्]

वर्तयध्यै वर्तयितुम् ५.४३.२. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् तुमर्थेऽध्यैः प्रत्ययः]

वर्तयाम्सि प्रवर्तयामः १८.६८. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्। 'इदन्तो मसि' रिति मस इदन्तता]

वर्तवे वरितुं स्वीकर्त्तुम् ३.३३.४. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेन् प्रत्ययः]

वर्ता वर्तयिता (असाधुजनः) ६.६६.८. स्वीकर्त्ता

(शत्रुजनः) ५.२९.१४. निवारकः (प्रतिरोधिजनः) ४.२०.७. विपरिवर्तयिता (भा०—राजपुरुषः), प्र०—अत्र वृणोतेस्तृच् 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकत्वादिडभावः १.४०.८. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) वृतु वरणे (दिवा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । वृणोतेर्वा कर्त्तरि तृच् । 'छन्दस्युभयथे' ति सार्वधातुकत्वाद् इटोऽभावः]

वर्तिका सङ्ग्रामे प्रवर्त्तमाना (सेना) १.११७.१६. 'बत्तख' इति भाषायाम् २४.३०. **वर्त्तिकाम्**=विनयादिसहितां नीतिम् १.११८.८. चटकापक्षिणीम् १.११६.१४. शकुनि-स्त्रियम् १.११२.८. **वर्तिकाः**=पक्षिविशेषाः २४.२०. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि ण्वुल् । ततः स्त्रियां टापि 'वर्त्तका शकुनौ प्राचामुपसंख्यानम्' अ० ७.३.४५. वा०सूत्रेण वेत्वम्]

वर्तिः वर्त्तन्ते व्यवहरन्ति यस्मिन्मार्गे तम्, प्र०—'हृपिषिरुहिवृति०' उ० ४.११९. इत्यधिकरण इ-प्रत्ययः 'सुपां सुलुक्०' इति द्वितीयैकवचनस्य स्थाने सुरादेशः १.३४.४. वर्तन्ते यस्मिन् गमनाऽऽगमनकर्मणि तत् (रथं=रमणयानम्) १.९२.१६. मार्गः ६.४९.५. वर्त्तमानं (मार्गम्) २०.८१. सन्मार्गम् १.१८४.५. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः 'हृपिषिरुहिवृति०' उ० ४.११९. सूत्रेणाधिकरण इः]

वर्तोभ्याम् गमनाऽऽगमनाभ्याम् २५.१. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोरौणा० असुन् । ततस्तृतीयायां द्विवचने रूपम्]

वर्त्मानि मार्गान् १.८५.३. [वर्त्मन्प्राति० प्रथमावहुवचनम् । वर्त्मन्=वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोरौणा० बाहु० मनिन्]

वर्ध वर्धस्व, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ६.१८.१. वर्धय ५.५६.२. **वर्धत्**=वर्धते ५.६२.५. वर्धयेत् ५.६२.५ **वर्धतम्**=वर्धेथाम् ४.५०.११. **वर्धतु**=वर्द्धताम् ४.५३.७. **वर्धन्**=वर्धयन्तु ६.५१.११. **वर्धन्त**=वर्धन्ते ५.१९.३. **वर्धन्ति**=वर्धन्ते ५.३९.५. वर्धयन्ति ६.१.५. **वर्धन्तु**=वर्धयन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं णिजर्थोऽन्तर्गतः ३.१०.६. वर्धन्ताम् ३.५२.८. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । अन्यत्र लेट्, लोट्, लङ्, लट् च । वर्धन्तु वर्धयन्तु नि० १.११.]

वर्धतः यो गुणैर्दोषैर्वा वर्धते तस्य (वृद्धस्य सज्जनस्य) १.५१.९. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शतृ । ततः षष्ठ्या एकवचनम्]

वर्धनम् विद्यादिगुणानां वर्धकम् (उक्थं=स्तोत्रम्) १.१०.५. येन वर्धयन्ति तत् (सुखोन्नयनम्) १.८०.१. वर्धते येन तत् (ब्रह्म=धनम्) ६.२३.५. वृद्धिकरम् (वचः=वचनम्) १.११४.६. वर्द्धयितारम् (शिशुं=बालकम्) १.१४०.३. सब का ज्ञान बढ़ाने वाले (ईश्वर) को स० प्र० २३८, १०.४९.१. **वर्धनः**=उन्नेता (यज्ञः=सङ्गतो संसारः) ३.३२.१२. **वर्धनेन**=वृद्धिनिमित्तेन न्यायेन सह ८.४६. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः 'नन्दिग्रहिपचादिभ्यः०' अ० ३.१.१३४. सूत्रेण ल्युः । करणे ल्युट् वा । 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' अ० ३.२.१४९. सूत्रेण वा तच्छीलादिषु युच्]

वर्धना सुखानां वर्द्धनानि १.५२.७. यानि वर्धन्ते तानि (ब्रह्माणि=धनान्यन्नानि वा) ५.७३.१०. उन्नतिकराणि कर्माणि ७.२२.७. [वर्धनः इति व्याख्यातम् ततः प्रथमाबहुवचने शेर्लोपः]

वर्धनानि वृद्धिकराणि (ब्रह्माणि=धनानि) ६.२३.६ [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट् करणे]

वर्धनेभिः वर्धकैः साधनैः ३.३६.१. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट् । वर्धनप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न भवति]

वर्धमानम् हानिरहितम् (जगदीश्वरं भौतिकमग्निं वा) ३.२३. ह्रासरहितम् (अग्निं=परमेश्वरम्) १.१.८. अत्यन्तं वृद्धिमन्तम् (अग्निं=परमेश्वरम्) वे० भा० न० **वर्धमानः**=यो वर्धते सः (जीवः) ६.९.४. सर्वथोत्कृष्टः (ईश्वरः) १३.२. यो विद्यया क्रियाकौशलेन नित्यं वर्धते सः (विद्वज्जनः) ११.२९. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शानच्]

वर्धमानाः वृद्धिशीलाः (सत्स्त्रियः) ३.३८.२. [वर्धमानमिति व्याख्यातम् । ताच्छील्ये चानश् वा]

वर्धय उन्नय १.१२५.३. सर्वोत्कृष्टतां सम्पादय सम्पादयति वा, अ०—वर्द्धयति ३.१४. उत्कृष्टं सम्पादय १.१०.४. **वर्धयन्ति**=उन्नयन्ति १.५४.८. **वर्धयन्तु**=बढ़ाया करो सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५४. **वर्धयाति**=वर्द्धयेत् १८.३४. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट् । अन्यत्र लट् लेट् चापि]

वर्धयन् उन्नयन् (सोमः=सखा) ३.६२.१५. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

वर्धयन्तीः उन्नयन्त्यः (कुमार्य्यः) १.७१.३. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ । ततः स्त्रियां ङीप्]

वर्धयमानः विद्यासुशिक्षयोन्नयमानः (जनः) १.१२५.१.

[वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छानच्]

वर्धयामसि वर्द्धयामः, अ०—प्रदीपयामः, प्र०—अत्र 'इदन्तो मसि' इतीकारादेशः ३.३. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट् 'इदन्तो मसि' इति मस इदन्तत्वम्]

वर्धसे शमादिषु स्वात्मानमुन्नयसि ७.१२. **वर्धस्व**=वर्धस्व वर्धते वा, अ०—वर्धय, प्र०—अत्राऽन्त्यपक्षे व्यत्ययो लडर्थे लोट् च २.१४. **वर्धात्**=वर्द्धयेत् ६.३८.४. **वर्धान्**=वर्धयेयुः, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.७०.४. वर्धयेरन् ६.३८.४. **वर्धासे**=वर्धसे ६.१६.१६. वृद्धो भव २६.१३. **वर्धिषीमहि**=पूर्णां वृद्धिं प्राप्नुयाम ३८.२१. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट्, लेट्, लङ्, लिङ् च]

वर्धः यो वर्धयति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विज्ञानप्रद जन) १.७१.६. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

वर्पणीतिः वर्पस्य रूपस्य नीतिर्नायकः (इन्द्रः=राजा), प्र०—अत्र नीतौ कर्त्तरि क्तिच् ३.३४.३. वर्पाणां नानाविधानां रूपाणां नीतिः प्राप्तिर्यस्य सः (सभेशो राजा) ३३.२६. [वर्प-नीतिपदयोः समासः । वर्पः रूपनाम निघं० ३.७. नीतिः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्तिन् कर्त्तरि क्तिच् वा]

वर्पसः रूपस्य, प्र०—वर्प इति रूपनाम निघं० ३.७, १.१४१.३. **वर्पः**=रूपयुक्तः (राजसेनाधीशरथः) ३.५८.९. रूपम् १.१४०.५. **वर्पांसि**=सुन्दराणि रूपाणि ६.४४.१४. [वृङ् सम्भक्तौ (क्र्या०) धातोः 'वृङ्शीङ्भ्यां रूपस्वाङ्गयोः पुट् च' उ० ४.२०१. सूत्रेणासुन् । वर्प इति रूपनाम वृणोतीति सतः नि० ५.८.]

वर्म कवचम् २९.४५. रक्षकम् (कवचम्) १८.३ सर्वतो रक्षणम् ११.३०. वर्म इव रक्षकम् (ईश्वरम्) ६.७५.१९. [वर्म गृहनाम निघं० ३.४. वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्मनिन्]

वर्मिणः कवचिनः (वीरराजपुरुषाः) ६.२७.६. **वर्मिणे**=बहूनि वर्माणि शरीररक्षासाधनानि विद्यन्ते यस्य तस्मै (पुरुषाय) १६.३५. **वर्मी**=कवचवान् (योद्धृजनः) २९.३८. कवचधारी (सैनिकः) ६.७५.१. [वर्मन्-प्राति० मत्वर्थे इनिश्छान्दसः]

वर्मेव कवचमिव १.१४१.१० [वर्मन्=इवपदयोः समासः]

वर्वर्त्ति भृशं वर्तते १.१६४.११. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

वर्वृतति भृशं गच्छति ६.४६.१४. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट् । व्यत्ययेन शः]

वर्षतु शब्दविद्याया वृष्टिं करोतु १.२६. सिञ्चतु १.२६. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

वर्षते यो वर्षति तस्मै (मेघाय) २२.२६. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोः शतृ]

वर्षनिर्णिजः वर्षस्य वृष्टेः शोधकाः पोषका वा (वाय्वादिपदार्थाः) ३.२६.५. ये वर्षं निर्णेनिजन्ति ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५७.४. [वर्षोपपदे निरुपसृष्टान् णिजिर् शौचपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप्]

वर्षम् वृष्टिरिव १६.६४. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'अज्विधौ भयादिभ्य उपसंख्यानम्०' इति वा०सूत्रेण अच्]

वर्षवृद्धम् शस्त्राऽस्त्राणां वर्धयितारम् वृष्टेर्वर्द्धकं यज्ञम् १.१६. [वर्षोपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्तः]

वर्षाभिः वर्षन्ति मेघा यासु ताभिः (वृष्टिभिः) २१.२५. **वर्षाभ्यः**=बर्षर्त्तौ कार्यसाधनाय २४.११. **वर्षाः**=यासु मेघा वर्षन्ति ताः (वृष्टयः) १३.५६. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'अज्विधौ भयादिभ्य उपसंख्यानम्०' इत्यच् । ततः स्त्रियां टाप् । वर्षाः वर्षत्यासु पर्जन्यः नि० ४.२७. (ऋतुः) यद् वर्षति तद् वर्षाणाम् (रूपम्) श० २.२.३.८. यदा वै वर्षाः पिन्वन्ते ऽथैनाः सर्वे देवा सर्वाणि भूतान्युपजीवन्ति श० १४.३.२.२२. मरुतो वै वर्षस्येशते श० ९.१.२.५. षड्भिः पार्जन्यैर्वा मारुतैर्वा (पशुभिः) वर्षासु (यजते) श० १३.५.४.२८. वर्षं सावित्री गो० पू० १.१३. वर्षा वै सर्व ऽऋतवः श० २.२.३.७. वर्षा ह त्वेव सर्वेषामृतूनां रूपम् श० २.२.३ ७. वर्षाः पुच्छम् (संवत्सरस्य) तै० ३.११.१०.४. वर्षा उत्तरः (पक्षः संवत्सरः) तै० ३.११.१०.३. वर्षा एव यशः गो० पू० ५.१५. वर्षा उद्गाता तस्माद् यदा बलवद् वर्षति साम्न इवोपब्दिः क्रियते श० ११.२.७.३२. (प्रजापतिः) वर्षामुद्गीथम् (अकरोत्) जै० उ० १.१२.७. वर्षा उद्गीथः ष० ३.१. वर्षाशरदौ सारस्वताभ्याम् (अवरुन्धे) श० १२.८.२.३४. वर्षाभिर्ऋतुनादित्याः स्तोमे सप्तदशे स्तुतं वैरूपेण विशौजसा तै० २.६.१९.१. वर्षा ह्यस्य (वैश्यस्य) ऋतुः तां० ६.१.१०. तस्माद् वैश्यो वर्षास्वादधीत विड्ढि वर्षाः श० २.१.३.५. तस्य (आदित्यस्य) रथप्रोतश्चासमरथश्च (यजु० १५.१७. सेनानीग्रामण्याविति वार्षिकौ तावृतू श० ८.६.१.१८.]

वर्षाहूः या वर्षा आह्वयति सा भेकी २४.३८.

[वर्षोपपदे ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्विप्]

वर्षिमा वृद्धस्य भावः १८.४. [वृद्धप्राति० भाव इमनिच् प्रत्यये 'प्रियस्थिर०' अ० ६.४.१५७. सूत्रेण वर्षिरादेशः]

वर्षिष्ठम् अतिशयेन वृद्धम् (ऋतं=सत्यं कारणम्) ३.५६.२. वृद्धिकारकम् (रयिं=धनम्), प्र०—अत्र वृद्धशब्दादिष्ठन् वर्षिरादेशश्च १.८.१. **वर्षिष्ठाय**=अतिवृद्धाय श्रेष्ठाय (नाकाय=अविद्यमानदुःखाय मोक्षाय) ३०.१२. अतिशयेन वृष्टिकराय (विदुषे जनाय) ५.७.१. **वर्षिष्ठे**=अतिशयेन वृद्धो वर्षिष्ठस्तस्मिन् विशाले सुखस्वरूपे (नाके=मोक्षे) १.२२. [वृद्धप्राति० अतिशायन इष्ठन्-प्रत्यये 'प्रियस्थिर०' अ० ६.४.१५७. सूत्रेण वर्षिरादेशः। वृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्वा तृजन्ताद् इष्ठन्प्रत्यये तृचो लोपः]

वर्षिष्ठया अतिशयेन वृद्धया (इषा=उत्तमान्नादिसमूहेन) १.८८.१. **वर्षिष्ठा**=अतिशयेन वृद्धा (तनूः) ५.८. [वर्षिष्ठमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

वर्षिष्ठा अतिशयेन वृद्धानि (नृम्णानि=धनानि) ४.२२.६. [वर्षिष्ठप्राति० प्रथमाबहुवचने शेर्लोपश्छन्दसि]

वर्षीयसि सर्वसुखमभिवर्षति (यज्ञे) ६.११. **वर्षीयसे**=अतिशयेन विद्यावृद्धाय (विदुषे जनाय) १६.३०. **वर्षीयान्**=अतिशयेन वृद्धो महान् (इन्द्रः=सूर्यः) २३.४८. [वृद्धप्राति० अतिशायन ईयसुन्प्रत्यये 'प्रियस्थिर०' अ० ६.४.१५७. सूत्रेण वर्षिरादेशः]

वर्षीयः अतिशयेन श्रेष्ठम् (वयः=कमनीयमायुः) ६.४४.६. वृद्धम् (इन्द्रः=सूर्यः) २३.४७. [वृद्धप्राति० अतिशायन ईयसुन्प्रत्यये 'प्रियस्थिर०' इति वर्षिरादेशः]

वर्षः यज्ञकर्मणा सर्वसुखसेचक (यजमान वातो वा) ६.११. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

वर्ष्मन् यो वर्षति तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) ४.५४.५. सद्गुणानां सेचक (पुरुषार्थिजन) ३.८.३. **वर्ष्माणम्**=वर्षकम् (सूर्यकिरणसमूहम्) ६.४७.४. वर्षं के मेघमण्डले २८.१. सेचने ३.५.६. सुखवृष्टिनिमित्ते (अ०—जगति) ५.१७. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि मनिन्]

वर्ष्यम् वर्षासु भवम् (नभः=अन्तरिक्षम्) ५.८३.३. **वर्ष्यान्**=वर्षासु साधून् (मेघान्) ५.८३.३. [वर्षाप्राति० भवार्थे यत्]

वर्हि उत्सन्नाऽभूत् ३.५३.१७.]

वलम् वक्रगतिम् ४.५०.५. मेघम् ६.१८.५. बलयुक्तम् (मेघम्) १.६२.४. बलम् २.१४.३. **वलस्य**=बलवतः शत्रोः १.५२.५. **वलः**=बलः, बलवान् (इन्द्रः=विद्वज्जनः) ३.३०.१०. [वलः मेघनाम निघं० १.१०. वलम्=वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः कर्त्तर्यच्। छान्दसं लत्वम्। वलो वृणोतेः नि० ६.२.]

वलंरुजः यो वलं मेघं रुजति सः (इन्द्रः=सूर्यः) ३.४५.२. [वलोपपदे रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोश्छान्दसः खश्]

वल्गते गच्छते (जनाय) २२.७. [वल्ग् गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः शतृ]

वल्गू अत्युत्तमौ (वायुविद्युतौ) ६.६२.५. शोभनवाचौ (सभासेनेशौ), प्र०—वल्गु इति वाङ्नाम निघं० १.११, ६.६३.१. [वल संवरणे सञ्चरणे च (भ्वा०) धातोः 'वलेर्गुक्' च उ० १.१६. सूत्रेण उः। गुगागमश्च। वल्गुः वाङ्नाम निघं० १.११.]

वल्गूयति सत्करोति ४.५०.७. [वल्गूयति गतिकर्मा निघं २.१४. अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

वल्मीकान् मार्गान् २५.८. [वल संवरणे सञ्चरणे च (भ्वा०) धातोः 'अलीकादयश्च' उ० ४.२५. सूत्रेण कीकन्। बहुलवचनान् मुडागमश्च। श्रोत्रं ह्येतत् पृथिव्या यद् वल्मीकः तै० १.१.३.४. ऊर्जं वा एतं रसं पृथिव्या उपदीका उद्दिहन्ति यद् वल्मीकम् तै० १.१.३.४. प्राजापत्यो वै वल्मीकः। तै० ३.७.२.१. सर्पाणां वल्मीको गृहाः मै० ४.१.१३.]

वल्हामसि प्रधाना भवामः भा०—प्रधानपुरुषा भवेम २३.५१. [वल्ह प्राधान्ये (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ववक्ष वहतु, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिटि 'वाच्छन्दसि' इति सुडागमः ३.७.६. वहति ४.७.११. **ववक्षिथ**=वोढुं प्राप्तुमिच्छथ २.२४.११. वोढुमिच्छ ३.६.३. वहति, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः २.२२.३. वोढुमिच्छसि, प्र०—अत्र लडर्थे लिट्, सन्नन्तस्य वहधातोरयं प्रयोगः 'बहुलं छन्दसि' इत्यनेनाऽभ्यासस्येत्वाऽभावः १.१०२.८. **ववक्षिरे**=रुष्टाः स्युः २.३४.४. **ववक्षे**=रुष इव विरुध्यति ३.५.८. वक्षति रोषं सङ्घातं करोति १.६१.६. संहन्ति, प्र०—अयं वक्ष सङ्घाते इत्यस्य प्रयोगः १.१४६.२. वहति ७.८.२. **ववक्षुः**=वक्षयन्ति रोषयन्ति १.६४.३. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिटि छान्दसः सुट्। अथवा वक्ष रोषे संघाते च (भ्वा०) धातोर्लिट्। ववक्षिथ महन्नाम निघं० ३.३. ववक्षे प्रब्रूषे नि० ५.८.]

ववन्द वन्दति नमस्करोति ६.६३.३. प्रशंसति ६.५१.१२. **ववन्दिम**=प्रशंसेम ५.२५.६. **ववन्दिरे**=प्रणमन्तु ३.५४.४. आनन्दन्तु ३.५४.४. [वदि अभिवादन-स्तुत्योः (भ्वा०) धातोर्लिट् ; व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ववन्म याचामहे ७.३७.५· [वनु याचने (तना०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ववर्जुषीणाम् भृशं दोषान् वर्जयन्तीनाम् (विशां=प्रजानाम्), प्र०—अयं यङ्लुगन्ताद् व्रजेः क्विबन्तं रूपम् १.१३४.६. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्लिटः क्वसुः । ततः स्त्रियां ङीप्]

ववर्त वर्त्तते, प्र०—अत्र शपः श्लुस्तस्य स्थाने तप् च १.१६५.२. **ववर्तत्**=वर्तते ४.४४.३. वर्तयेत् ४.२४.१. **ववर्थ**=वर्तते ३.४३.७. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः । तप्रत्ययस्य च स्थाने तबादेशश्छान्दसः । अन्यत्र लङि छान्दसं द्वित्वम् । ववर्थ प्रयोगे लिटि वृतुधातोर्तलोपश्छान्दसः]

ववर्थ वृणोषि, प्र०—अत्र वर्तमाने लिट् १.६१.२२. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लिटि 'बभूथाततन्थ०' अ० ७.२.६४. सूत्रेण निपातनाद् इडभावे रूपम्]

ववर्ध वर्धते ५.२.२. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिट् व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ववर्ह वर्धयति २.२३.१३. [वृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

ववव्रुषः रूपवतः (तमसः=अन्धकारस्य), प्र०—अत्र वव्रिरिति रूपनाम धातोर्लिटः क्वसुः १.१७३.५.]

ववाच उक्तवान्, प्र०—'सम्प्रसारणाच्च' इत्यत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यनुवर्त्तनाद् यजादेशः १.६७.४. [वच परि-भाषणे (अदा०) धातोर्लिट् । 'वा छन्दसी' ति पूर्वरूपाऽभावे यणादेशे च रूपम्]

ववार वृणात्युद्धाऽटयति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिट् १.३२.११. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लिट्]

ववाशिरे शब्दायन्ते २.२.२. [वाशृ शब्दे (दिवा०) धातोर्लिट्]

ववृक्तम् छिनत्तम् ६.६२.१०. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः । व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च]

ववृजुः त्यक्तवन्तः १.३३.५. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

ववृतत् वर्त्तते ६.१७.१०. **ववृतीमहि**=भृशं वर्त्तेमहि १.१३८.४. **ववृतीय**=वर्त्तेयम् १.१८६.१०. वर्त्तयामि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति साऽभ्यासत्वम् १.१८०.५. **ववृत्यात्**=वर्त्तेत, प्र० —अत्र व्यत्ययेन, परस्मैपदम्, शपः स्थाने श्लुश्च १.१०७.१. वर्त्तयेत् ६.१७.१३. वर्त्तताम् ८.४. वर्त्तेत, १.१०७.१. आवर्त्तताम् प्र०—वृतु-धातोर्लिङि विकरणाऽऽत्मनेपदं व्यत्ययेन श्लुर्द्वित्वञ्च ३३.३८ **ववृत्याम्**=वर्त्तयेयम् लिङ्-प्रयोगोऽयं 'बहुलं छन्दसि' इत्यादिभिर्द्वित्वादिकम् १.५२.१. **ववृत्याम**=वर्त्तयेम ७.२७.५. **ववृत्याः**=वर्त्तयेः ६.११.१. वर्त्तेथाः १.१७३.१३. प्रवर्त्तयेः ६.५०.६. प्रवर्त्तय ७.४२.३. **ववृत्युः**=वर्त्तेरन् १.१३५.५. **ववृत्स्व**=वर्त्तस्व ३.६१.३ वर्त्तते ३.३२.५. वर्त्तताम् २.१६.८. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अटोऽभावः । 'वा छन्दसी' ति द्वित्त्वम् । 'वृद्भ्यः स्यसनोः' इति परस्मैपदम् । अन्यत्र लिङ् लोट् च]

ववृतन वर्त्तन्ते ५.६१.१६. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लोट् व्यत्ययेन परस्मैपदम् । शपः स्थाने श्लुः, तस्य च तनप्]

ववृधन्त वर्धयन्ति ४.२.१७. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

ववृधध्युः वर्धयितुम्, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुस्तुजादित्वाद् दीर्घश्च १.१२२.१.

ववृमहे वृणुयाम ३.९.१. स्वीकुर्महे ६.४.७. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लिट्]

वव्ने सम्भजति ५.७४.७. याचते, प्र०—वनु याचने इत्यस्माल्लडर्थे लिट्, वन सम्भक्तौ इत्यस्माद् वा 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इत्यनेनोपधालोपः १.३६.१७.

वव्रम् वरणीयम् (मेघम्) ५.३२.८. **वव्रः**=कूपः १.५२.३. [वव्रः कूपनाम निघं० ३.२३.]

वव्राज व्रजति प्राप्नोति ३.१.६. [व्रज गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

वव्रासः सद्यो गन्तारः (भा०—धन्या मनुष्याः), प्र०—अत्र व्रजधातोर्बाहुलकादौणादिको डः प्रत्ययो द्वित्वञ्च १.१६८.२. [व्रज गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० डो द्वित्वञ्च । ततो जसोऽसुक्]

वव्रिणा रूपेण १.५४.१०. **वव्रिम्**=संविभक्तारम् (दातृजनम्) १.११६.१०. रूपयुक्तं पदार्थसमूहम् १.४६.९. वर्त्तुमर्हम् (पदम्) १.१६४.७. स्वकीयं रूपम् १.१६४.२९. रूपम् ५.७४.५. **वव्रिः**=अङ्गीकर्त्ता (भा०—प्राणी) ५.१९.१. **वव्रेः**=स्वीकर्त्तव्यस्य (कृष्टेः=मनुष्यस्य)

४.४२.२. स्वीकर्त्तुः (मनुष्यस्य) ६.२०.२. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'आदृगमहन०' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किः। लिड्वद्भावेन द्वित्वञ्च। वव्रिः=रूपनाम निघं० ३.७. वव्रिरिति रूपनाम वृणोतीति सतः नि० २.८.]

वव्रिवांसम् विभजन्तम् (अहिं=मेघम्) ६.२०.२. आवरकम् (वृत्रं=मेघम्) २.१४.२. विवृतम् (वृत्रम्) ४.१६.७. व्रियमाणम् (शत्रुम्) ३.३२.६. [वृञ् वरणे (स्वा०) वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोर्वा लिटः क्वसुः]

वव्रुः विवृण्वति ४.१.१५. वृणुयुः १२.२८. **वव्रे**=वृणोति ३.३८.८. व्रियते १.६२.७. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लिट्]

वशम् स्वाधीनताम् १.११६.२१. कमनीयम् (अश्व्यम्=अश्वेषु साधुम्) १.११२.१०. **वशस्य**=वशवर्त्तिनः (प्रजाजनस्य) ६.२४.५. **वशः**=कामयमानः (विद्वज्जनः) १.१२९.१. वशित्वगुणप्रापकः (परमेश्वर ओषधिराजो वा) १.९१.६. **वशान्**=शमदमादियुक्तान् धार्मिकाञ्जनान् १.८२.१३. कामयमानान् पदार्थान्, अ०—उत्कृष्टव्यवहारसाधकान् कामान् ३.५२. वशवर्त्तिनः (जनान्) १.१८१.५. **वशानाम्**=कमनीयानाम् (विद्वज्जनानाम्) ३.६०.४. **वशाः**=देदीप्यमानाः (पशवः) २४.१४. **वशे**=प्रकाशन्ते यस्मिँस्तस्मिन्, प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिकोऽन् प्रत्ययः ४.११. वश में स० प्र० १६, अथर्व० ११.२४.२. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः 'वशिरण्योरुपसंख्यानम्' अ० ३.३.५८. वा०सूत्रेण भावेऽप्। बाहु० औणा० वा अन्। वश्मि कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

वशा कमनीयानि (धना=धनानि) २.२४.१३. [वशमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

वशा वन्ध्या गौः १८.२७. अप्रसूता (गौः) २१.२१. कमिताऽऽहुतिः २.१६. **वशाभिः**=कमनीयाभिर्गीर्भिः २.७.५. **वशाः**=देदीप्यमानाः (द्यावापृथिवीयाः पशवः) २४.१४. [वश कान्तौ (अदा०) धातोरच्। ततष्टाप्। यद् वशमस्रवत्सा वशाऽभवत् तस्मात्सा हविरिव ऐ० ३.२६. यदा न कश्चन रसः पर्यशिष्यत तत एषा मैत्रावरुणी वशा समभवत्तस्मादेषा न प्रजायते श० ४.५.१.९. सा हि मैत्रावरुणी यद् वशा श० ५.५.१.११. वशामनूवन्ध्यामालभते श० २.४.४.१४. इयं (पृथिवी) वै वशा पृश्निः श० १.८.३.१५. इयं (पृथिवी) वै वशा पृश्निर्यदिदमस्यां मूलं चामूलं चान्नाद्यं प्रतिष्ठितं तेनेयं वशा पृश्निः श० ५.१.३.३.]

वशाम कामयेमहि १.१६५.७. **वश्मि**=कामये २.३१.७. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लट्]

वशासः ये वशं प्राप्ताः (सहाय्या जनाः) ६.६३.९. [वशमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

वशिम् वशकर्त्तारम् (इन्द्रं=जीवम्) २८.३३. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० इन्]

वशी वशं कर्त्तुं शीलः (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्षः) १.१०१.४. जितेन्द्रियः (राजा) ८.५०. वशीकर्त्तुं समर्थः (सविता=परमेश्वरः) ४.५३.६. वशं कर्त्तुं शीलमस्य सः (ईश्वर) पं० वि०। जितेन्द्रियाऽन्तःकरणः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३५. [वश कान्तौ (अदा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

वषट् क्रियाकौशलम् ११.३९.

वषट्कारान् ये वषड् धर्म्यां क्रियां कुर्वन्ति तान् (भा०—सत्क्रियान् मनुष्यान्) १९.२०. **वषट्काराः**=उत्तमाः क्रियाः २०.१२. **वषट्कारेण**=होम क्रिया के तुल्य सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.२.५. **वषट्कारैः**=श्रेष्ठैः कर्म्मभिः २१.५३. उत्तमकर्म्मभिः २०.१२. [वषट् इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण्। स वै वौगिति करोति। वाग्वै वषट्कारो वाग्रेतो रेत एवैतत् सिञ्चति षडित्यृतवो वै षट् तद् ऋतुष्वेवैतद् रेतः सिच्यते तद् ऋतवो रेतः सिक्तमिमाः प्रजाः प्रजनयन्ति तस्मादेवं वषट् करोति श० १.७.२.२१. वाक् च वै प्राणापानौ च वषट्कारः ऐ० ३.८. वाक् च ह वै प्राणापानौ च वषट्कारः गो० उ० ३.६. तस्यै (वाचे) द्वौ स्तनौ देवा उपजीवन्ति स्वाहाकारं च वषट्कारं च श० १४.८.९.१. प्राणो वै वषट्कारः श० ४.२.१.२९. एष एव वषट्कारो य एष (सूर्यः) तपति श० १.७.२.११ एष वै वषट्कारो य एष (सूर्यः) तपति श० ११.२.२.५. यः सूर्यः स धाता स उ एव वषट्कारः ऐ० ३.४८. यो धाता स वषट्कारः ३.४७. निमेषो वषट्कारः तै० २.१.५.९. त्रयो वै वषट्काराः वज्रो धामच्छद् रिक्तः ऐ० ३.७. त्रयो वै वषट्कारा वज्रो धामच्छद् रिक्तः। स यदेवोच्चैर्बलवषट्करोति स वज्रः……। अथ यः सभः सन्ततो निर्हाणच्छत्स्व धामच्छत्……। अथ येनैव षट् पराध्नोति स रिक्तः गो० उ० ३.३. वज्रो वै वषट्कारः ऐ० ३.८. कौ० ३.५. गो० उ० ३.५. वज्रो वषट्कारः श० १.३.३.१४. वज्रो वा एष यद् वषट्कारो यं द्विष्यात्तं ध्यायेद् वषट्करिष्यंस्तस्मिन्नेव तं वज्रमास्थापयति ऐ० ३.६. देवेषुर्वा एषा यद् वषट्कारः तां० ८.१.२. देवपात्रं वाऽएष यद् वषट्कारः श० १.७.२.१३. देवपात्रं वा एतद्

यद् वषट्कारः ऐ० ३.५. देवपात्रं वै वषट्कारः गो० उ० ३.१. एत एव वषट्कारस्य प्रियतमे तनूर्यदोजश्च सहश्च कौ० ३.५. ओजश्च ह वै सहश्च वषट्कारस्य प्रियतमे तन्वौ ऐ० ३.८. तस्य वाऽएतस्य ब्रह्मयज्ञस्य चत्वारो वषट्कारा यद् वातो वाति यद् विद्योतते यत् स्तनयति यदवस्फूर्जति तस्मादेवं विद्वान् वाति विद्योतमाने स्तनयत्यवस्फूर्जत्यधीयीतैव वषट्काराणामच्छम्बट्काराय श० ११.५.६.९. वषट्कारो हैष परोक्षं यद् वेट्कारः श० ९.३.३.१४.]

वषट्कारेभिः भा०–श्रेष्ठकार्य्यैः, कर्म्मभिः १९.१९. [वषट्कारप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न भवति]

वषट्कृतम् क्रियया निष्पादितम् (सोमं=सदोषधिरसम्) २.३६.१. सङ्कल्पितमिव (यज्ञपदार्थसमूहम्) ७.२६. क्रियासिद्धम् (अश्वम्) २५.३७. **वषट्कृतस्य**=क्रियानिष्पादितस्य शिल्पविद्याजन्यस्य (विज्ञानस्य) १.१२०.४. [वषट्-कृतपदयोः समासः]

वषट्कृति वषट् करोति येन यज्ञेन तस्मिन्, प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति वार्त्तिकमाश्रित्य करणे क्विप् १.१४.८. [वषट् इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः करणे क्विप् ततः सप्तमी]

वषट्कृतिम् सत्यक्रियाम् ७.१४.३. सत्क्रियाम् ७.१५.६. वषट् क्रिया क्रियते यया रीत्या ताम् १.३१.५. [वषट् इत्युपपदे करोतेः क्तिन्]

वष्टयः कामयमानाः (किरणसमूहाः) ५.७९.५. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः क्तिन्]

वष्टि कामयते २.३७.१. प्रकाशते १.३३.३. **वष्टु**=प्रकाशयतु २०.८४. कामयताम् २९.८. कामसिद्धिप्रकाशिका भवतु १.३.१०. कामना-युक्त हो आर्याभि० १.८, ऋ० १.१.६.१०. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोट्। वष्टि कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

वसतः निवसतः ६.३८.२. **वसः**=निवासय ७.८.३. **वसाते**=वसेताम् १९.८९. **वसाथाम्**=आच्छादयतम् ११.३०. **वसाथे**=आच्छादयथः १.१५२.१.[वस निवासे (भ्वा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लङ् लेट् च। वस आच्छादने (अदा०) धातोर्वा रूपम्]

वसतिम् निवासम् ५.२.९. **वसतिः**=निवसतिः ३५.४. यत्र वसन्ति सा १८.१५. यो निवसति सः (विद्वान् जनः) ६.३.३. **वसत्या**=वसन्ति यस्यां तया १.६६.५. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'वहिवस्यर्त्तिभ्यश्चित्' उ० ४.६०. सूत्रेणातिः]

वसना आच्छादनानि १.९५.७. [वस आच्छादने (अदा०) धातोर्ल्युट्। ततः प्रथमाबहुवचने शेर्लोपश्छन्दसि]

वसन्तः यः सुगन्धादिभिर्वासयति सः (ऋतुः) १३.५४. **वसन्ताय**=वसन्तर्त्तौ सुखाय २४.११. **वसन्तेन**=वसन्ति सुखेन यस्मिँस्तेन (ऋतुना) २१.२३. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'तॄभूवहिवसिभासि०' उ० ३.१२८. सूत्रेण झच्। एतौ (मधुश्च माधवश्च) एव वासन्तिकौ (मासौ) स यद् वसन्तऽओषधयो जायन्ते वनस्पतयः पच्यन्ते ते नो हैतौ मधुश्च माधवश्च श० ४.३.१.१४. तस्य (अग्नेः) रथगृत्सश्च रथौजाश्च (यजु० १५.१५.) सेनानीग्रामण्याविति वासन्तिकौ तावृतू श० ८.६.१.१६. यदेव पुरस्ताद् वाति तद् वसन्तस्य रूपम् श० २.२.३.८. तस्य (संवत्सरस्य) वसन्त एव द्वारं हेमन्तो द्वारं तं वाऽएतं संवत्सरं स्वर्गं लोकं प्रपद्यते श० १.६.१.१९. मुखं वा एतद् ऋतूनां यद् वसन्तः तै० १.१.२.६ तस्य (संवत्सरस्य) वसन्तः शिरः तै० ३.११.१०.२. ऊर्ग् वै वसन्तः ऐ० ४.२६. वसन्त आग्नीध्रस्तस्माद् वसन्ते दावाश्चरन्ति तद् ह्यग्निरूपम् श० ११.२.७.३२. वसन्तः समिद्धोऽन्यानृतून् समिन्धे श० १.३.४.७. वसन्तो वै समित् श० १.५.३.९. समिधो यजति वसन्तमेव वसन्ते वा इदं सर्वं समिध्यते कौ० ३.४. वसन्तो हिंकारः। ष० ३.१. स (प्रजापतिः) वसन्तमेव हिंकारमकरोत् जै० उ० १.१२.७. षड्भिराग्नेयैः (पशुभिः) वसन्ते (यजते) श० १३.५.४.२८. वसन्तेनर्त्तुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुतम्। रथन्तरेण तेजसा। हविरिन्द्रे वयो दधुः तै० २.६.१९.१. वसन्त एव भर्गः गो० पू० ५.१५. वसन्तो वै ब्राह्मणस्यर्त्तुः तै० १.१.२.६. श० १३.४.१.३. तस्माद् ब्राह्मणो वसन्तऽआदधीत ब्रह्म हि वसन्तः श० २.१.३.५.]

वसया निवासहेतुना जीवनेन २५.९. **वसाम्**=वीररसनीतिम् ६.१९. [वस निवासे (भ्वा०) धातोरौणा० अन्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

वसर्हा वसानां वासहेतूनामर्हकः (परिज्मा=अग्निः), प्र०—अत्र शकन्ध्वादिना पररूपम् १.१२२.३. [वस-अर्हन्-पदयोः समासे शकन्ध्वादिना पररूपम्। वस=वस निवासे (भ्वा०) धातोरौणा० अन्। अर्हन्=अर्ह पूजायाम् (भ्वा०)+शतृ]

वसवः ये वसन्ति तत्सम्बुद्धौ (देवाः=विद्वांसो जनाः) ४.५५.१. पृथिव्यादय इव प्रथमविद्याकल्पाः, (अ०—विद्वांसो जनाः) ३८.६. वसु-सञ्ज्ञकाः (मरुतः=विद्वज्जनाः) २.३४.९, सुखवासप्रदाः (पिता, माता, भ्राता च) ६.५१.५.

ये विद्यादिषु वसन्ति ते (जिज्ञासवो विद्यार्थिजनाः) ६.५०.१५. आदिकोटिस्था विद्वांसः ६.५०.४. निवसन्तः (उपदेशका जनाः) ७.५२.१. चतुर्विंशतिवार्षिक-ब्रह्मचर्येण कृतविद्याः (विद्वज्जनाः) १.१६३.२. ये विद्यायां वसन्ति ते (देवासः=विद्वांसो जनाः) ७.४८.४. वासकर्त्तारः (नरः) ५.५५.८. अग्न्यादयोऽष्टौ २.५. भा०—वासहेतवः पृथिव्यादयः प्राथमकल्पिका विद्वांसो वा २१.२३. वासयितारः (मरुतः=उत्तमराजजनाः) ७.५६.१७. विद्यायां कृतवासाः (देवाः=विद्वज्जनाः) ७.३९.३. वसन्ति विद्या येषु ते विद्वांसः ७.३८.३. ये वसन्ति सद्गुणकर्मसु ते (देवाः=व्यवहरमाणा गृहपतयः) ८.१८. ये विद्यासु वसन्ति, अन्यान् वासयन्ति ते (मनुष्याः) ३.३९.८. विद्यां जिज्ञासवः (विद्वज्जनाः) ३.५७.२. **वसवे**=योऽस्मिन् शरीरे वसति तस्मै जीवाय २२.३०. धनाय ५.३.१२. वासाय १८.२८. विद्यानिवासाय ९.२०. **वसुभिः**=अग्न्यादिभिः कृतचतुर्विंशतिवर्षब्रह्मचर्य्यैर्वा सह ५.११. वासहेतुभूतैर्विद्वद्भिस्सह २९.२८. उषितसर्वविद्यैर्विद्वद्भिस्सह ४.२१. भूम्यादिवद् गुणाढ्यैर्जनैः २.३१.१. **वसुम्**=सकलविद्यानिवासम् (दूतम्) १.४४.३. धनप्रदम् (विप्रम्=आप्तमेधाविनम्) १५.४७. **वसुः**=यः शरीरादिषु वसति सः (जीवः) ४.४०.५. वसन्ति सर्वाणि भूतानि यस्मिँन्तसः (रुद्रः=सेनानायकः) १.४३.५. वस्ता वासयिता वा (ईश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.९४.१३. द्रव्यप्रदः (अग्निः) ५.२५.१. सर्वत्र निवस्ता (अग्निः) १५.४१. द्रव्यस्वरूपः ५.६.२. यः सर्वेषु भूतेषु वसति सः (अग्निः=सर्वाभिरक्षकेश्वरः) ३.२५. विद्यासु वासयिता (अग्निः=वेदविदध्यापक उपदेशको वा) २५.४७. सबको अपने में वसाने वाला और सब में आप वसने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.३०, ऋ० ६.३.४०.२४. निधिस्वरूप (वाणी) आर्याभि० १.८, ऋ० १.१.६.१०. **वसू**=वासयितारौ (सभाशालेशौ) १.१५८.१. **वसूनाम्**=धनाढ्यानाम् (जनानाम्) ४.१७.६. प्रथमकल्पानां विदुषां पृथिव्यादीनां वा २.११.१. अग्न्याद्यष्टानां वासहेतूनां लोकानाम् १.७.९. वासाधिकरणानाम् (पृथिव्यादीनाम्) १.७६.४. **वसो**=सुखेषु वासयितः (धार्मिकमनुष्य) १.८४.२०. वासहेतो (महाविद्वज्जन) ३.२१.५. वसन्ति सर्वाणि भूतानि यस्मिन् वा वसति सर्वेषु भूतेषु यस्तत् सम्बुद्धौ (इन्द्र=जगदीश्वर) १.१०.४. सुवासप्रद (अग्ने=पावकविद्वज्जन) २७.४३. वसुप्रद (इन्द्र=परमेश्वर) २.१४.१२. सर्वत्र वसन् (जातवेदः=ईश्वर) ३.५७.६. **वसोः**=वसुः, अ०—वसुरयं यज्ञः, प्र०—प्रत्राऽर्थाद्विभक्तेर्विपरिणाम इति प्रथमाविभक्तिर्विपरिणम्यते, यज्ञो वै वसु श० १.५.४.९. वस्तु-जातस्य १.२२.७. सुखवासहेतोर्विद्यादिधनस्य १.९.९. उत्तमोत्तमपदार्थस्य १९.५५. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'शृस्वृस्निहित्रप्यसिवसि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः। वसवः रश्मिनाम निघं० १.५. वसवः पदनाम निघं० ५.६. वसु रात्रिनाम निघं० १.७. धननाम निघं० २.१०. वसवो यद् विवसते सर्वमग्निर्वसुभिर्वासव इति समाख्या तस्मात् पृथिवीस्थानाः। इन्द्रो वसुभिर्वासव इति समाख्या तस्मान्मध्यस्थानाः। वसव आदित्यरश्मयो विवासनात् तस्माद् द्युस्थानाः नि० १२.४२. पशवो वसु श० ३.७.३.११. पशवो वै वसु तां० ७.१०.१७. यज्ञो वै वसुः श० १.७.१.९. स एषो (अग्निः) ऽत्र वसुः श० ९.३.२.१. वसुरन्तरिक्षसत् (यजु० १२.१४.) श० ५.४.३.२२. कतमे वसव इति। अग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं चादित्यश्च द्यौश्च चन्द्रमाश्च नक्षत्राणि चैते वसव एते हीदं सर्वं वासयन्ते। ते यदिदं सर्वं वासयन्ते तस्माद् वसव इति श० ११.६.३.६. प्राणा वै वसवः। प्राणा हीदं सर्वं वस्वाददते जै० उ० ४.२.३. प्राणा वै वसवः तै० ३.२.३.३. गायत्री वसूनां पत्नी गो० उ० २.९. वसवस्त्वा गायत्रेण छन्दसा संमृजन्तु तां० १.२.७. वसवो गायत्रीं समभरन् जै० उ० १.१८.४. वसवस्त्वा पुरस्तादभिषिञ्चन्तु गायत्रेण छन्दसा तै० २.७.१५.५. अथैनं (इन्द्रं) प्राच्यां दिशि वसवो देवाः······अभ्यषिञ्चन्······साम्राज्याय ऐ० ८.१४. अग्निर्वसुभिरुदक्रामत् ऐ० १.२४. वसव एव भर्गः गो० पू० ५.१५. वसूनामेव प्रातःसवनम् श० ४.३.५.१. वसूनां वै प्रातःसवनम् कौ० १६.१. अथेमं विष्णुं यज्ञं त्रेधा व्यभजन्त। वसवः प्रातःसवनं रुद्रा माध्यन्दिनं सवनमादित्यास्तृतीयसवनम् श० १४.१.१.१५. तं (आदित्यम्) वसवोऽष्टकपालेन (पुरोडाशेन) प्रातःसवनेऽभिषज्यन् तै० १.५.११.३. वसन्तेनर्त्तुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुतम्। रथन्तरेण तेजसा। हविरिन्द्रे वयो दधुः तै० २.६.१९.१. वसूनां वा एतद्रूपम्। यत्तण्डुलाः तै० ३.८.१४.३. वसवो वै रुद्रा आदित्या संस्रवभागाः तै० ३.३.९.७. वसूनां श्रविष्ठाः (नक्षत्रम्) तै० १.५.१.५. अष्टौ देवा वसवः सोम्यासः। चतस्रो देवीरजराः श्रविष्ठाः ते यज्ञं पान्तु रजसः पुरस्तात्। संवत्सरीणममृतं स्वस्ति तै० ३.१.२.६. शितिभ्रुवो वसूनाम् मै० ३.१३.७. वायुर्वै वसुरन्तरिक्षसत् श० ६.७.३.११.]

वसवानः निवासयन् (विद्वज्जनः) ५.३३.६. वसोर्धनस्याऽऽनः प्राप्तिर्यतः सः (राजा) १.१७४.१. **वस-**

वानाः=स्वगुणैः सर्वानाच्छादयन्तः (विद्वांसो जनाः), प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुङ् न शानचि व्यत्ययेन मकारस्य वकारः १.६०.२. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । मकारस्य वकारो वर्णव्यत्ययेन । वस आच्छादने (अदा०) धातोर्वा शानचि छान्दसं रूपम् । अन्यत्र वसु आनपदयोः समासे छान्दसं रूपम्]

वसव्यम् वसुषु द्रव्येषु भवम् (राधः=धनम्) २.१३.१३. वसुषु पृथिव्यादिषु भवम् (राधः) २.१४.१२. **वसव्यस्य**=वसुषु धनेषु साधोः (सौभगस्य=महदैश्वर्यस्य) ४.५५.८. [वसुप्राति० भवार्थे साध्वर्थे वा यत्]

वसव्या वसुषु धनेषु साध्वी (सूनृता=सत्यप्रियवाणी) ७.३७.३. [वसव्यम् इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

वसानम् आच्छादयन्तम् (सूर्यम्) १.१५२.४. **वसानः**=प्राप्तः (वैश्वानरः=राजा) ४.५.१५. वासयन् (सूर्यः) १३.३१. शरीरमाच्छादयन् (सभासेनेशः) १६.५१. आच्छादितः (विद्वज्जनः) ३.१.५. धारयन् (राजा) ६.२९.३. स्वीकुर्वाणः (विश्वरूपोऽग्निः) ३३.२२. धरन् (राजा) ५.४८.५. आच्छादकः (अग्निः) २.१०.१. गृह्णन् (सूर्यः) ३.३८.४. [वस आच्छादने (अदा०) धातोः शानच्]

वसाना परिदधती (पत्नी) १.१२२.२. स्वीकुर्वंती (उषाः) १.१२४.३. धारयन्ती (सुन्दरी स्त्री) ३.३९.२. **वसानाः**=वस्त्राभूषणैराच्छादिताः (विदुष्यः स्त्रियः) १०,७. [वस आच्छादने (अदा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

वसापावानः वसां निवासं पान्ति ते (वीरजनाः) ६.१९. [वसोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि वनिप् । वसा=वस निवासे (भ्वा०) धातोरच् । ततष्टाप्]

वसाम् वसतां प्राणिनाम् ५.२.६. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः क्विप् । ततः षष्ठी विभक्तिः]

वसिष्ट वसेत् २.३६.१. **वसिष्व**=धर, प्र०—अत्र 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकमाश्रित्य लोट्यपि वलादिलक्षण इट् १.२६.१. [वस निवासे (भ्वा० धातोर्लुङ् । अटोऽभावः । व्यत्ययेनात्मनेपदम् इडागमश्च छान्दसः । अन्यत्र लोट्]

वसिष्ठ अतिशयेन वसो (अग्ने=वह्निरिव राजन्) ७.१.८. प्रशस्तविद्वन् (जन) ७.३३.१०. **वसिष्ठम्**=यो वसति धर्मादिकर्मसु सोऽतिशयितस्तम् (नर्य्यं=नृषु साधुं सत्पुरुषम्) १.११२.९. उत्तमं विद्वांसम् ७.३३.१३, **वसिष्ठस्य**=अतिशयेन विदुषः ७.३३.५. **वसिष्ठः**=अतिशयेन वसुमान् (पूर्णविद्वज्जनः) ७.३३.१२. अतिशयेन विद्यादिधनयुक्तः (आप्तो विद्वान्) ७.३३.१४. अतिशयेन वसुः (विद्वज्जनः) ७.४२.६. अतिशयेन विद्यासु कृतवासः (विद्वज्जनः) ७.२६.५. अतिशयेन धनाढ्यः (मनुष्यः) ७.९.६. अतिशयेन वासयिता (ऋषिः) १३.५४. **वसिष्ठाः**=धनेऽत्यन्तं वासं कुर्वन्तः (नरः=नेतारो जनाः) ७.३३.४. अतिशयेन सद्गुणकर्मसु निवासिनः (सज्जनाः) ७.३७.४. येऽतिशयेन धनिनः (पितरः=ज्ञानिनो जनकाः) १९.५१. अतिशयेन वसवः (विद्वांसः पितरः) ७.७.७. अतिशयेन ब्रह्मचर्ये कृतवासाः (विद्वज्जनाः) ७.३३.३. सर्वविद्याद्युत्तमगुणेष्वतिशयेन रममाणाः (पितरः) ऋ० भू० २६०, [वस निवासे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तादतिशायन इष्ठन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः । यद्वै नु श्रेष्ठस्तेन वसिष्ठोऽथो यद् वस्तृतमो वसति तेनोऽएव वसिष्ठः श० ८.१.१.६. येन वै श्रेष्ठस्तेन वसिष्ठः (हिंकारः) गो० उ० ३.९. एष (प्रजापतिः) वै वसिष्ठः श० २.४.४.२. प्रजापतिर्वै वसिष्ठः कौ० २५.२. प्राणा वै वसिष्ठ ऋषिः श० ८.१.१.६. सा ह वागुवाच । (हे प्राण) यद्वा ऽहं वसिष्ठाऽस्मि त्वं तद् वसिष्ठोऽसीति श० १४.९.२.१४. अग्निर्वै देवानां वसिष्ठः ऐ० १.२८. वसिष्ठस्य जनित्रे (सामनी) भवतो वसिष्ठो वा एते पुत्रहतः सामनी अपश्यत् स प्रजया पशुभिः प्राजायत तां० १९.३.८. ततो वै वसिष्ठपुरोहिता भरताः प्राजायन्त तां० १५.५.२४. ये वै ब्राह्मणाः शुश्रुवांसस्ते वसिष्ठाः जै० २.२४२. रथन्तरमाजभार वसिष्ठः ऐ० आ० ३.१.६.]

वसिष्ठहनुः वसिष्ठस्याऽतिशयेन वासहेतोर्हनुरिव हनुर्यस्य तम् (राजतुल्यं जनम्), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्यमः स्थाने सुः ३९.८. [वसिष्ठ-हनुपदयोः समासः]

वसिष्ठासः अतिशयेन वासयितारः (सेनाजनाः) ७.२३.६. अतिशयेन वसवः (प्रजाजनाः) २०.५४. [वसिष्ठ इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुगागमः]

वसीयः अतिशयेन वस्तृ वसीयः (प्राणः) १८.८. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः तृजन्तादतिशायन ईयसुन् । तृचो लोपः]

वसु सुखेषु वसन्ति येन तद्धनं विद्याऽऽरोग्यादिसुवर्णादिकं वा, प्र०—वस्विति धननामसु पठितम् निघं० २.१०, १.१०.६. वसन्ति सुखेन यत्र तद् विज्ञानम् १.५५.८. सुखेषु वासयितृ (राधः=धनम्) २.२२.३. परं प्रकृष्टं द्रव्यम्

१.५३.३. वस्तु १८.१५. धनप्रदम् (भौतिकमग्निम्) १५.४७. विद्यादिधनसमूहम् १.४७.६. कार्यकारणद्रव्यम् १.४७.९. वस्तुजातम् १.८१.६. जलाख्यं द्रव्यम् ६.४७.२२. **वसुना**=प्रशस्तेन धनेन १.८३.१. **वसूनाम्**=पृथिव्यादितत्त्वानां धनानां वा ७.७.७. पृथिव्यादिपदार्थानाम् १२.६६. **वसूनि**=विज्ञानादिधनानि १.८४.२०. विद्याचक्रवर्त्तिराज्यप्राप्याणि उत्तमानि धनानि १.१५.८. [वसुरिति वसवः पदे व्याख्यातम्]

वसु वसूनि धनानि ६.७. द्रव्याणि २७.४०. विज्ञानानि धनानि वा ६.४८.१५. वासस्थानानि १.८१.७. [वसुरिति व्याख्यातम् । ततः 'सुपां सुलुक्०' इति जसो लुक्]

वसुता वसूनां द्रव्याणां भावः ६.१.१३. [वसुप्राति० भावे तल् । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

वसुतातिम् धनमेव १.१२२.५. **वसुतातिः**=धनाद्यैश्वर्ययुक्तः (सभाध्यक्षः) १.१२२.१२. [वसुप्राति० स्वार्थे तातिल् छान्दसः]

वसुदानः उत्तमोत्तमपदार्थस्य दाता (परमेश्वरः) ऋ० भू० २४६, [वसूपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि ल्युट् 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति सूत्रेण]

वसुदावन् यो वसूनि द्रव्याणि ददाति तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) २.६.४. यो वसूनि धनानि सुपात्रेभ्यो ददाति तत्सम्बुद्धौ (सूरे=विद्वज्जन) १२.४३. **वसुदावा**=यो वसूनि ददाति सः (न्यायाधीशो जनः) २.२७.१२. [वसूपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि वनिप्]

वसुदेयाय वसूनि द्रव्याणि देयानि येन तस्मै (विद्वज्जनाय) ६.३९.५. देयं वस्तु यस्य तस्मै (विदुषे जनाय) २.३५.७. दातव्यधनाय १.५४.९. [वसु-देयपदयोः समासः । वसुरिति व्याख्यातम् । देयम्=डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्यत्]

वसुधातमः योऽतिशयेन वसूनि दधाति सः, भा०—अतिधनी (अग्निः=पावकः) २७.१५. [वसूपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप् । ततोऽतिशायने तमप्]

वसुधितिम् पृथिव्यादिवसूनां धितिर्यस्मात्तम् (वायुम्) २७.२४. वसूनां द्रव्याणां धारकम् (अग्निं=विद्युदग्निम्) ४.८.२. वसूनां धितयो यस्य तम् (विद्वांसं जनम्) १.१२८.८ **वसुधिती**=यौ वसूनि धरतस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८१.१. वसूनां पदार्थानां धर्त्र्यौ द्यावापृथिव्यौ ३.३१.१७ विद्याधारिके (भा०—अध्यापिकोपदेशिके स्त्रियौ) २८.३८. वसूनां धितिर्ययोर्द्यावापृथिव्योस्ते (द्यावापृथिवी) ४.४८.३. द्रव्यधारिके (उषासानक्ता) २८.१५. [वसु-धितिपदयोः समासः । वसुरिति व्याख्यातम् । धितिः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तिन् । औणादिको वा तिः । 'दधातेर्हि' रिति न भवति छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पनात् । धातोरित्त्वमपि छान्दसम् । वसुधिती वसुधान्यौ नि० ९.४१.]

वसुधेयस्य वसुधेयं यस्मिँस्तस्य (विदुषो जनस्य) २१.४८. कोषस्य २८.१४. संसारस्य २१.५८. पृथिव्याद्याधारस्य (भा०—संसारस्य) २१.५७. द्रव्याधारस्य (संसारस्य) २८.३५. धनाऽऽधारस्य कोषस्य २८.३६. वसूनि धेयानि यस्मिँस्तस्य जगतः २८.१२. अन्तरिक्षस्य मध्ये २८.१५. वस्वैश्वर्यं धेयं यत्र तस्येश्वरस्य २८.१६. सर्वपदार्थाधारस्य संसारस्य २१.५६. धनकोशस्य २१.४९. [वसु-धेयपदयोः समासः । धेयम्=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्यत् । वसुधेयस्य वसुधानाय नि० ९.४१. इन्द्रो वसुधेयः श० १.८.२.१६.]

वसुनीथ वेदादिशास्त्र-बोधाख्यं सुवर्णादिधनञ्च यो नयति तत्सम्बुद्धौ (अध्यापक श्रोतर्वा) १२.४४. [वसूपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि 'हनिकुषिनीरमिकाशिभ्यः क्थन्' उ० २.२. सूत्रेण क्थन्]

वसुपतिम् वसूनामग्निपृथिव्यादीनां पतिं पालकं स्वामिनम् (इन्द्रं=धारकमीश्वरम्), प्र०—कतमे वसव इति ? अग्निश्च पृथिवी च वायुश्चान्तरिक्षं चाऽऽदित्यश्च द्यौश्च चन्द्रमाश्च नक्षत्राणि चैते वसवः, एतेषु हीदं सर्वं वसु हितम्, एते हीदं सर्वं वासयन्ते, तद्यदिदं सर्वं वासयन्ते तस्माद्वसव इति श० १४.५.७.४, १.९.९. धनस्वामिनम् (विद्वज्जनम्) ३.३६.९. **वसुपतिः**=धनपालकः (विद्वज्जनः) ७.४५.३. वसूनां पदार्थानां पालकः (विद्वान् जनः) ६.५२.५. पृथिवी आदि वासहेतु भूतों का पति (ईश्वर) आर्याभि० १.३०, ऋ० ६.३.४०.२४.

वसुपत्नी वसूनां पालिका (पृथिवी) १.१६४.२७. [वसु-पत्नीपदयोः समासः । पत्नी=पतिप्राति० स्त्रियां 'पत्युर्नो यज्ञसंयोगे' अ० ४.१.३३. सूत्रेण ङीप् नकारादेशश्च]

वसुमता प्रशस्तानि सुवर्णादीनि विद्यन्ते यस्मिँस्तेन (रथेन) १.११८.१०. प्रशंसितधनयुक्तेन (रथेन) १.१२५.३ बहुधनयुक्तेन (रथेन=यानेन) ४.४.१०. **वसुमते**=बहवो वसवश्चतुर्विंशतिवर्षब्रह्मचर्यसम्पन्ना विद्वांसो विद्यन्ते यत्र तस्मै कर्मणे ६.३२. **वसुमन्तम्**=बह्वैश्वर्यम् (जनम्) ६.६८.६. बहुविधद्रव्यसहितम् (रयिं=धनम्) ४.३४.१०.

प्रशस्तधनप्रापकं देशम् २.२४.२. [वसुप्राति० प्रशंसायां मतुप् । भूम्न्यर्थे वा]

वसुमती बहूनि वसूनि द्रव्याणि विद्यन्ते यस्यां सा (इडा=प्रशंसनीया वाणी) २८.१८. **वसुमतीम्**=वसूनि बहूनि वस्तूनि भवन्ति यस्यां ताम्, भा०—बहु-सुखप्रापिकाम् (छायाम्=आश्रयम्), प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् २.८. [वसुप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । ततः स्त्रियां ङीप्]

वसुमती बहवो वसवो विद्यन्ते ययोस्ते (द्यावापृथिवी) ३.३०.११. [वसुमतीति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

वसुवनिम् धनानां सम्भाजनम् ७.१.२३. [वसूपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' इति सूत्रेण इन् । अग्निर्वै वसुवनिः श० १.८.२.१६.]

वसुवने ऐश्वर्यसेवकाय (जनाय) २१.५८. धनसेविने (पुरुषाय) २८.३९. द्रव्ययाचिने (पुरुषाय) २८.३६. धनविभाजकाय (मनुष्याय) २८.३५. धनसेवनाय २१.४९. वसुप्रदाय जीवाय २८.२०. पदार्थविद्यायाचिने (भा०—सुपात्राय याचमानाय) २८.२१. यो वसूनि वनुते याचते तस्मै (पुरुषाय) २८.१९. धनेच्छुकाय (नृपाय जनाय वा) २१.५६. पृथिव्यादिसेवकाय (जीवाय) २१.५७. धनप्रापणाय २१.४८. [वसूपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । वनु याचने धातोर्वा क्विप् । वसुवने वसुवननाय नि० ६.४१.]

वसुवने पृथिव्यादीनां संविभागे जगति २८.१५. धनदानाधिकरणे (जगति) २८.१६. [वसूपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

वसुवाहनम् वसूनां द्रव्याणां वाहनम् (रथं=विमानादियानम्) ५.७५.१. [वसु-वाहनपदयोः समासः । वाहनम्=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् ल्युट्]

वसुवित् यो वसूनि धनानि विन्दति प्राप्नोति सः (पुरुषः पतिर्वा) ३८.५. वसूनि सर्वाणि द्रव्याणि विदन्ति ये येन वा (ईश्वरो विद्वान्वा) १.९१.१२. यो वसूनि सर्वाणि वस्तूनि यथावद्वेत्ति वेदयति वा सः (परमात्मा) ३.२९. सब पृथिवी आदि वसुओं का जानने वाला, सर्वज्ञ और विद्यादि धन का दाता (ईश्वर) आर्याभि० १.३८, ऋ० १.६.२१.१२. [वसूपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

वसुवित्तमम् वसून् पृथिव्यादिलोकान् वेत्ति सोऽतिशयितस्तम्, पृथिव्यादिलोकान् वेदयति सूर्यरूपेणाग्निरेतान् प्रकाश्य प्रापयति स वसुवित्, अतिशयेन वसुविदिति वसुवित्तमो वा तम् (परमेश्वरं भौतिकमग्निं वा) ३.३८. योऽतिशयेन वसुं वेत्ति तम् (देवं=दातारं जनम्) ६.१६.४१. यो वसूनि विन्दति स वसुवित्, सोऽतिशयितस्तम् (अग्निं=बहुश्रुतं सज्जनम्) १.४५.७. **वसुवित्तमः**=यो वसूनि द्रव्याणि वेदयति प्रापयति सोऽतिशयितः, भा०—पदार्थप्राप्तये साधकतमः (अग्निः=ईश्वरो भौतिकोऽग्निर्वा) ३.३९. [वसुविदिति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

वसुविदा बहुधनप्रदौ (अ०—अध्यापकौपदेशकौ) १.४६.२. वसुविदावग्निजलवद् वर्त्तमानावध्यापकोपदेशकौ १.४६.२. [वसुविद्प्राति० प्रथमाद्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः । वसुविद्=वसूपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) विद सत्तायाम् (दिवा०) धातोर्वा क्विप्]

वसुश्रवाः वसूनि सर्वाणि श्रवांसि श्रवणानि यस्य सः (अग्निः=सर्वाभिरक्षकेश्वरः) ३.२५. वसूनि धनानि श्रवणे यस्य सः (अग्निः=वेदविदध्यापकोपदेशकः) २५.४७. धनधान्ययुक्तः (राजा) ५.२४.२. वसूनि धनानि श्रवांस्यन्नानि च यस्मात् सः (अग्निः=भौतिकः) १५.४८. [वसुश्रवस्पदयोः समासः । वसु धननाम निघं० २.१०. श्रवः अन्ननाम निघं० २.७.]

वसूयन्तः आत्मनो वसूनि विज्ञानादीनि धनानीच्छन्तः (आयवः=विद्वांसो जनाः) १.१३०.६. [वसु सुबन्ताद् आत्मन इच्छायां क्यजन्ताच्छतृ]

वसूया आत्मनो वसूनां धनानामिच्छया १.१६५.१. आत्मनो वसूनीच्छन्ति तया (सुक्षेत्रिया=सुनीत्या) १.९७.२. [वसुसुबन्ताद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यच् । ततः स्त्रियां 'अ प्रत्ययाद्' इत्यकारः । ततष्टाप्]

वसूयवः आत्मनो वसूनि विद्याधनानीच्छन्तः (मतयः=विद्वज्जनाः) १.६२.११. ये वसून् पृथिव्यादीन् युवन्ति मिश्रयन्त्यमिश्रयन्ति ते विद्वांसः १.४९.४. आत्मनो वस्विच्छवः (मनुष्याः) ५.२५.९. वसूनि धनानि कामयमानाः (धार्मिका मनुष्याः) ७.३२.२. य आत्मनो वसूनि द्रव्याणीच्छन्ति ते (मनुष्याः), प्र०—अत्र वसु-शब्दात् 'सुप आत्मनः क्यच्' इति क्यच् प्रत्ययः 'क्याच्छन्दसि' इत्युः प्रत्ययः 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १.१२८.८. ये वसूनि युवन्ति मिश्रयन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ३.२६.१. **वसूयुम्**=आत्मनो वसु द्रव्यमिच्छुम् (सज्जनम्) ४.४४.१. **वसूयुः**=आत्मनो धनमिच्छुः (जनः) ५.२९.१५. वसूनि धनानि कामयमानः (राजा) ७.३४.२१. या वसूनि द्रव्याणि कामयति

सा (भार्या) ७.१.६. [वसु सुबन्ताद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः। अथवा वसूपपदे यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्विप्। 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः। वसूयवः वसुकामाः नि० ६.५.]

वस्त वस्ते आच्छादयति, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लङडभावश्च १.२५.१३. **वस्तम्**=निवासं कुर्याताम् ऋ० भू० २०६, ऋ० ८.३.२८.२. **वस्ताम्**=आच्छादयताम् १७.४६. छादयतु ६.७५.१८. **वस्ते**=आच्छादयति ३.५५.१४. कामयते ४.२५.२. धरति २६.४८. [वस आच्छादने (अदा०) धातोर्लङ् अटोऽभावश्च। अन्यत्र लोट् लट् च। व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च]

वस्तवे निवस्तुम् १.४८.२ [वस निवासे (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

वस्तः व्यवहारैराच्छादितो युक्तः (पुरुषः) १४.६. आच्छादकः (प्राज्ञो जनः) १.१६१.१३. दिन में स० प्र० १५१, १०.४०.२. [वस आच्छादने (अदा०) धातोः क्त औणादिको बहुलवचनात्]

वस्ता आच्छादयिता (परमात्मेव राजा) ३.४६.४. [वस आच्छादने (अदा०) धातोस्तृच्। इडभावश्छान्दसः]

वस्तिना नाभेरधोभागेन २५.७. **वस्तिः**=वासहेतुः (पुरुषः) १६.८८. [वस आच्छादने (अदा०) वस निवासे (भ्वा०) धातोर्वा 'वसेस्तिः' उ० ४.१८०. सूत्रेण तिः]

वस्तोः दिनम् ६.४.२. दिनात् २६.२६. दिने २८.१२. दिवसस्य मध्ये ६.२५.६. प्रतिदिनम् १.१७७.५. दिनं दिनम् ३.८. [वस्तोः अहर्नाम निघं० १.६. वस्तोः दिवा नि० ३.१५.]

वस्तोः वासयितुम् १.१७४.३. [वस निवासे (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तोसुन्]

वस्तोः वसथः ऋ० भू० २१०, [वस निवासे (भ्वा०) धातोर्लट्। शपो लुक्। वर्णव्यत्ययेनाकारस्योकारः]

वस्त्रदाः ये वस्त्राणि ददति ते (धनाढ्या जनाः) ५.४२.८. [वस्त्रोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः]

वस्त्रमथिम् यो वस्त्राणि मथ्नाति तम् (तायुं=तस्करम्) ४.३८.५. [वस्त्रोपपदे मथे विलोडने (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' इति इन्। वस्त्रमथिम्=वस्त्रमाथिनम् नि० ४.२४.]

वस्त्रा वस्त्राणि ५.४७.६. आच्छादनानि १.१३४.४. [वस्त्रप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

वस्त्राणि शरीराच्छादकानि १.१५२.१. कार्पासौर्णकौषेयकादीनि १.२६.१. **वस्त्रैः**=वासोभिः २.१४.३. [वस आच्छादने (अदा०) धातोरौणा० ष्ट्रन्। वस्त्रं वस्तेः नि० ४.२४.]

वस्त्रेणेव यथा पटेन १.१४०.१. [वस्त्रेण-इवपदयोः समासः]

वस्त्रेव यथा वस्त्राणि प्राप्यन्ते तथा ५.२६.१५. [वस्त्रा-इवपदयोः समासः। वस्त्रा=वस्त्रप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

वस्नम् हट्टस्रस्तरम् (विविधव्यापारम्) ४.२४.६. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'धाप्वस्य०' उ० ३.६. सूत्रेण नः]

वस्नयन्ता वस्नमिवाचरन्तौ राजप्रजाजनौ ६.४७.२१. [वस्नप्राति० आचारेऽर्थे क्यच्। ततः शत्रन्ताद् द्विवचनस्याकारादेशः]

वस्नेव पण्यक्रियेव ३.४६. [वस्ना-इवपदयोः समासः]

वस्म निवास-स्थानम् ४.१३.४. **वस्मनः**=निवसन्तः (वयः=पक्षिणः) २.३१.१. [वस निवासे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० मनिन्]

वस्यःइष्टये वसीयसोऽतिशयितस्य धनस्य सङ्गमनाय १.१७६.१. वसीयस इष्टये सङ्गतये, प्र०—अत्र वसु-शब्दान्मतुप् ततोऽतिशय ईयसुनि 'विन्मतोर्लुक्' अ० ५.३.६५. इति मतोर्लुक् 'टेः' अ० ६.४.१५५. इति टेर्लोपस्ततः 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इतीकारस्य लोपश्च १.२५.४. [वस्यस्-इष्टिपदयोः=समासः। इष्टिः=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। यजादित्वात् किति सम्प्रसारणम्]

वस्यसः येऽतिशयेन वसन्ति ते वसीयांसस्तान् (भा०—सुखनिवासान्), प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इतीकारलोपः ३.५८. अतिशयेन वसीयसो वसुमतः (जनान्) २.१७.८. [वसुप्राति० प्रशंसायां मतुबन्तादतिशायन ईयसुन्। अन्यत् पूर्वपदे व्याख्यातम्]

वस्यसी अतिशयेन वसुमती (स्त्री) ५.६१.६. [वस्यस् इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीप्]

वस्यः अतिशयेन वासहेतुम् (धनधान्यादिकम्) ६.४४.७. अतिशयेन धनम्, प्र०—अत्र वसुशब्दादीयसुन् प्रत्ययः 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इतीकारलोपः १.३१.१८. वसुषु साधुः (विद्वज्जनः) १.१०६.१. वशीयः (स्वस्वामिनं राजानम्) ७.३२.१६. अत्युत्तमं धनम् २.३६.५. वसीयसो-

ऽतिधनाढ्यान् (जनान्) ५.५५.१०. वसीयोऽतिशयेन सुष्ठु धनम् ६.४७.७. वसीयान् (राजा) ५.३१.२. अतिशयेन वासयितृ (महद्वस्तु ब्रह्म) २.२.१३. अत्युत्तमं वासः स्थानम् २.१.१६. वस्तुं योग्यः (विद्वान् जनः) १.१४१.१२. अतिशयेन वसु तत् (अपूपं=भोज्यं पदार्थम्) १२.२६. अतिशयेन श्रेष्ठं धनम् ४.२१.४. [वसुप्राति० अतिशायन ईयसुन्। ईकारलोपश्छान्दसः। अथवा वसुप्राति० 'तत्र साधु' रिति यत्]

वस्यान् अतिशयेन वासकर्त्ता (सोमः=महैश्वर्ययोगः) ६.४१.४. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्ताद् अतिशायन ईयसुन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः 'छान्दसो वर्णलोपो वे' ति प्रत्ययस्थेकारस्य लोपः]

वस्वः धनानि ४.१७.११. वसुनो धनस्य १९.६३. वसुना सुखेन वासहेतोर्धनस्य ३.१९.३. वसोर्धनस्य १.५१.१. वसूनि १.७१.९. द्रव्याणि, प्र०—'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति नुमभावे 'जसादिषु छन्दसि वा वचनम्' इति गुणाभावे च यणाऽऽदेशः १.९०.२. पृथिव्यादेः ५.१५.१.

वस्वी याऽग्न्यादिपदार्थाख्यवसुविद्यासम्बन्धिनी वसुभिश्चतुर्विंशतिवर्षकृतब्रह्मचर्यैः प्राप्ता सा (वाग् विद्युद्वा) ४.२१. पृथिव्यादिवसुसम्बन्धिनी (सन्दृष्टिः=विद्यादर्शनम्) ६.१६.२५. वसूनामियम् (दक्षिणा) ६.६४.१. धनसम्बन्धिनी (शक्तिः=सामर्थ्यम्) ७.२०.१०. धनकारिणी (शक्तिः) ७.२१.१०. **वस्वीभिः**=धनप्रापिकाभिः क्रियाभिः ३.१३.५. **वस्वीः**=बहुपदार्थयुक्ताः (पुरन्धीः=द्यावापृथिव्यः) ५.४१.६. [वसुरिति वसवः पदे द्रष्टव्यम्। ततः स्त्रियाम् 'वसुशब्दाद् गुणवचनाद् ङीबाद्युदात्तार्थम्' अ० ४.१.४४ वा०सूत्रेण ङीप्। वस्वी रात्रिनाम निघं० १.७.]

वह प्राप्नुहि ३५.२०. प्रापय ३३.७०. प्राप्नोतु ६.६४.५. गमय ६.६४.४. वहसि प्रापयसि, वहति प्रापयति वा, प्र०—अत्र पक्षान्तरे पुरुषव्यत्ययः १.१३.१. **वहत**=वहन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२३.२२. **वहतम्**=प्रापयतम् १.४७.६. प्राप्नुतम् ३.५३.१. प्राप्नुतः १.३४.१२. **वहताम्**=प्रापयताम् ३.४१.९. **वहति**=प्राप्नोति प्रापयति वा ३.५८.१. **वहतु**=प्राप्नोतु १३.३४. **वहते**=प्राप्नोति प्रापयति वा ५.३०.३. **वहथ**=प्राप्नुथ ६.६५.४. **वहथः**=प्राप्नुथः १.११९.३. **वहध्वे**= प्राप्नुत ५.६०.७. वहत ५.५२.१३. **वहन्ति**=चालयन्ति १.१६४.३. प्रापयन्ति १.१६४.१४. प्राप्नुवन्ति १.५०.१. **वहन्तु**=प्राप्नुवन्तु प्रापयन्तु वा ६.४४.१९. गमयन्तु ५.३१.९. **वहन्ते**=प्राप्नुवन्ति ५.५८.१. **वहसि**=धारण करता है सं० वि० २०८, अथर्व० ९.५.१७. प्राप्नोषि १८.६२. **वहसे**=प्राप्नोषि प्रापयसि वा ५.३६.५ **वहातः**=प्राप्नुतः ३.४३.४. वहेताम् ३.३५.२. **वहाते**=वहेताम् ५.३७.३. उठा सकते हैं सं० वि० १०५, ५.३७.३. **वहान्**=वहन्तु प्राप्नुवन्तु २०.५६. समन्तात् प्राप्नुयुः १.८४.१८. **वहामि**=प्राप्नोमि प्रापयामि वा ५.४६.१. **वहासि**=प्राप्नुयाः १.७४.६. **वहेथे**=प्राप्नुथः १.१८०.९. प्रापयतः १.१३५.८. प्रापयेताम्, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ४.४५.३. **वहेयुः**=प्राप्नुवन्तु ६.३७.३. **वहतः**=प्रापयतः ३३.७८. प्राप्नुतः १.८४.२. धरतः ५.४१.७. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्, लेट्, लिङ, लङ् च। वहते गतिकर्मा निघं० २.२४.]

वहतः वहनशीलाः (शक्तयः) ३.७.४. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः शतृ। विभक्तिव्यत्ययः]

वहतुम् वहति प्राप्नोति स्त्रियमिति वहतुर्भर्त्ता तम्, भा०—स्वाभीष्टं पतिम् १७.९७. वोढारम् (भा०—स्वसदृशं पतिम्) ४.५८.९. प्रापकम् (जनम्) १.१८४.३. **वहतू**=प्रापकौ (यजमानपुरोहितौ (७.१.१७. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'एधिवह्योश्चतुः' उ० १.७७. सूत्रेण चतुः। वहतुम्=वहनम् नि० १२.११.]

वहन् प्राप्नुवन् प्रापयन्वा (रथः=विमानादियानम्) ५.७७.३. **वहन्तः**=उपदेशेन प्राप्नुवन्तः (मनुष्याः) १.६९.५. ब्रह्मचर्यादि तप का आचरण करते हुए (मनुष्य लोग) स० प्र० ४२३, ९.८३.१. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः शतृ]

वहन्ता प्रापयन्तौ (वायुविद्युतौ) ६.६२.४. प्राप्नुवन्तौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.११६.१९. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः शत्रन्ताद् द्विवचनस्याकारादेशः]

वहन्तीः प्रवाहं प्रापयन्त्यः (नद्यः) २.३५.९. प्रापयन्तीः स्वादिष्ठा आपः २.३४. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तात् ङीप् स्त्रियाम्]

वहमानः प्राप्नुवन् प्रापयन् वा (सूर्यः) ७.४५.१. **वहमानाः**=नयन्तो धूर्त्ताः (शत्रवः) १.१७४.६. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः शानच्]

वहमाना प्रापयन्तौ (विद्युदाघातौ) ५.३१.९. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः शानच्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

वहमानाः प्राप्नुवत्यः (उषसः) १.१२३.१२. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः शानच् । ततः स्त्रियां टाप्]

वहिष्ठयोः अतिशयेन वोढ्रोः (अश्वयोः) ६.४७.६. **वहिष्ठान्**=अतिशयेन वोढॄन् विद्याधर्मप्रापकान् (नॄन्) १.१२१.१२. **वहिष्ठाः**=अतिशयेन वोढारः (अग्न्यादिपदार्थाः) ५.५६.६. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तादतिशायन इष्ठन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

वहिष्ठा अतिशयेन वोढा (वायुः=पवनः), प्र०—अत्राऽऽकारादेशः १.१३४.३. [वहिष्ठ इति पूर्वपदे द्रष्टव्यम्, ततः 'सुपां सुलुक्०' इति सोराकारादेशः]

वहिष्ठेभिः अतिशयेन वोढृभिः (किरणाकर्षणादिभिः) ४.१३.४. [वहिष्ठ इति व्याख्यातम् । ततो भिस ऐस् न भवति छन्दसि]

वहीयसः सद्यो देशान्तरे प्रापकानग्न्यादीन् १.१०४.१. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तादतिशायन ईयसुन् । तृचो लोपः]

वहेन प्रापणेन २५.३. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

वह्नयः वहन्ति प्रापयन्ति वार्त्ताः पदार्थान् यानानि च यैस्ते (अ०—विद्युदादयः), प्र०—अत्र 'वहिश्रिश्रुयु०' उ० ४.५१. अनेन करणे निः प्रत्ययः १.१४.६. सुखस्य वोढारः (विश्वेदेवासः=समस्ता वेदपारगा विद्वांसः) १.३.६. शुभकर्मगुणानां वोढारः (ऋभवः=मेधाविजनाः) १.२०.८. विद्वांसो जितेन्द्रियाः सुशीला मनुष्याः) १.४८.११. वोढारोऽश्वाः २.२४.१३. अग्नय इव वर्त्तमानाः (विद्वज्जनाः) ५.७६.४. **वह्नये**=राज्यभारं वोढ्रे (वेधसे=विवेकिजनाय) २.२१.२. **वह्निभिः**=वोढृभिर्मरुद्भिस्सह १.६.५. वहनसमर्थैः (देवैः=विद्वद्भिः) १.४४.१३. कार्यनिर्वाहकैः (देवैः=विद्वज्जनैः) ३३.१५. **वह्निम्**=प्रापकम् (अपत्यम्) ३.३१.२. वाहकम् (मनुष्यम्) ३.१.१. पदार्थानां वोढारम् (अग्निम्) १.६०.१. **वह्निः**=पावकवद् वोढा विद्वान् १.११३.१७. वोढा वायुः ३.२०.१. विद्याया वोढा (विद्वज्जनः) २७.१४. सद्यो वोढाऽग्निः ३५.१३. वोढा विद्यासुखप्रापकः (अग्निः=राजा) ७.१६.६. सुखानां प्रापकः (परमेश्वरो विद्वान् वा) १.७६.४. स्वप्रकाशक, सर्वरसवाहक (ईश्वर) आर्याभि० २.१६, ५.३१. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहि श्रिश्रुयुद्रुग्लाहात्वरिभ्यो नित्' उ० ४.५१. सूत्रेण निः । वह्निः अश्वनाम निघं० १.१४. वह्नि वोळ्हा नि० ३.४. वह्निम् पुत्रम् नि० ३.६. वह्नयः=वोढारः नि० ८.३. वह्निर्वा अनड्वान् तै० १.१.६.१०. वह्निर्होता तै० सं० २.२.१०.५. वह्निरसि हव्यवाहनः मै० १.२.१२. काठ० २.१३. वह्निना हि तत्र गच्छति यत्र जिगमिषति जै० २.६६.]

वह्नितमम् वहति प्रापयति यथायोग्यं सुखानि स वह्निः सोऽतिशयितस्तम् (ईश्वरं भौतिकमग्निं वा) १.८. **वह्नितमः**=अतिशयेन वोढा (विद्वज्जनः) २१.३. **वह्नितमान्**=अतिशयिता वह्नयो वोढारस्तान् (विदुषो जनान्) ६.७. [वह्निरिति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

वह्येशयाः या वह्ये प्रापणीये शेरते ताः (नारीः=स्त्रियः ७.५५.८. [वह्योपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः 'अधिकरणे शेतेः' सूत्रेणाच् । सप्तम्या अलुक् । वह्यम्=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वह्यं करणम्' अ० ३.१.१०२. सूत्रेण करणे यत् । वहधातोर्वा बाहु० 'अघ्न्यादयश्च' उ० ४.११२. सूत्रेण यक्]

वंशनर्तिनम् वंशे नर्त्तितुं शीलं यस्य तम् (शैलूषं नटं वा) ३०.२१. [वंशोपपदे नृती गात्रविक्षेपे (दिवा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः]

वंशमिव यथोत्कृष्टैर्गुणैः शिक्षणैश्च स्वकीयं वंशमुद्यमवन्तं कुर्वन्ति तथा १.१०.१. [वंशम्-इवपदयोः समासः]

वंसगः यो वंसं सम्भजनीयं गच्छति गमयति वा स वृषभः १.५५.१. यो वंसान् सत्यासत्यविभाजकान् गच्छति सः (राजा) ५.३६.१ सम्भक्ता (इन्द्रः=सभेशः) १.१३०.२२. वंसं धर्मसेविनं, संविभक्तपदार्थान् गच्छतीति (इन्द्रः=ईश्वरः सूर्यो वा) १.७.८. यो वंसं सम्भजनीयं व्यवहारं गच्छति सः (उग्रः=तेजस्विजनः) ६.१६.३९. [वंसोपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्डः प्रत्ययः 'अन्येष्वपि दृश्यते' सूत्रेण । वंसाः=वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० बाहु० सः]

वंसत् विभजेत् ६.६८.५. **वंसाम**=विभजेम ६.१९.८. **वंसि**=सम्भजसि ५.७०.१. **वंसीमहि**=विभजेम ६.१९.१०. **वंस्व**=सम्भज १.४८.११. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लेट् । सिब् विकरणश्छन्दसि । 'व्यत्ययो बहुलम्' इति द्विविकरणता । अन्यत्र लटि शपो लुक् । लोटि चाप्यग्रे शपो लुक् । व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

वा पक्षान्तरे १.८.६. चाऽर्थे १८.३२. अथवा ५.८५.७. यद्वा आर्याभि० २.३९, ३६.२. व्यवहाराऽन्तरे

१.८.६. समुच्चये ७.२६. विकल्पे १.७१.६. अन्यत्र १.१०८.७. विचारणे १.८३.६. [वा विचारणार्थे समुच्चयार्थे नि० १.५]

वाक् वक्ति यया सा वाणी १८.२९. उच्यते यया सा ३.८. यो वदति सः (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. कर्मेन्द्रियाणामुपलक्षणम् २२.३३. सब शास्त्र के उपदेशक, अनन्तविद्यास्वरूप (ईश्वर) आर्याभि० २.१८, ५.३३. सत्य प्रिय वाणी अथर्व० १२.५.७, सं० वि० १४४. **वाचम्**= वचन्ति वाचयन्ति सर्वा विद्या यया ताम्, सत्यलक्षणां वेदचतुष्टयीम् २.१८. वक्त्यनया तां वाणीम् ६.१४. विद्याधर्मसत्यान्वितां वाणीम् १.१३०.६. उत्तम वाणी को सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.२४. उपदेशम् ६.२१.११. ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी को स० प्र० ९७, २६.२. सुखदायक वाणी को सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.३. **वाचा**=वेदवाण्या स्वकीयया वा ३.४७. **वाचे**= वागिन्द्रियहोमाय ३९.३. वेदार्थसुशिक्षायुक्तवाणीविज्ञानाय ९.३९. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोः 'क्विब् वचिप्रच्छिश्रि०' उ० २.५७. सूत्रेण क्विप् धातोर्दीर्घत्वं सम्प्रसारणाऽभावश्च। वाक् कस्माद् वचेः नि० २.२३. वाचि आस्ये नि० ८.२१. वाक् वाङ्नाम निघं० १.११. वाक् पदनाम निघं० ५.५. वाग्वै गीः (यजु० १२.६८. श० ७.२.२.५. वाग्वै धेनुः गो० पू० २.२१. तां० १८.९.२१. वाचं धेनुमुपासीत। तस्याश्चत्वारः स्तनाः स्वाहाकारो वषट्कारो हन्तकारः स्वधाकारस् तस्यै द्वौ स्तनौ देवा उपजीवन्ति स्वाहाकारं च वषट्कारं च हन्तकारं मनुष्याः स्वधाकारं पितरस्तस्याः प्राण ऋषभो मनो वत्सः श० १४.८.९.१. वाग्वै शबली तां० २१.३.१. वाक् तु सरस्वती ऐ० ३.१. वागेव सरस्वती ऐ० २.२४. वाग्घि सरस्वती ऐ० ३.२. वाग्वै सरस्वती कौ० ५.२. तां० ६.७.७. श० २.५.४.६. तै० १.३.४.५. गो० उ० १.२०. ऐ० ६.७. वाग्वै सरस्वती पावीरवी ऐ० ३.३७. सरस्वती वाचमदधात् तै० १.६.२.२. अथ यत् स्फूर्जयन् वाचमिव वदन् दहति तदस्य (अग्नेः) सारस्वतं रूपम् ऐ० ३.४. सा (वाक्) ऊर्ध्वो दातनोद् यथापां धारा संततैवम् (सरस्वती=वाक्) तां० २०.१४.२. वाग्वै समुद्रः तां० ७.७.९. वाग्वै समुद्रो मनः=समुद्रस्य चक्षुः तां० ६.४.७. वाग्वै समुद्रो (ऋ० ४.५८.१.) न वै वाक् क्षीयते न समुद्रः क्षीयते ऐ० ५.१६. वाग्वै सरिरं छन्दः (यजु० १५.४.) श० ८.५.२.४. वाग्वै सरिरम् (यजु० १३.५३.) श० ७.५.२.५३. वाग्वै सोमक्रयणी (गौः) निदानेन श० ३.२.४.१०. वाग्वाऽएषा निदानेन यत्साहस्री (गौः) तस्या एतत् सहस्रं वाचः प्रजातम् श० ४.५.८.४. तदाहुः किं तत् सहस्रम् (ऋ० ६.६९.८.) इतीमे लोका इमे वेदा अथो वागिति ब्रूयात् ऐ० ६.१५. वाग्वै सिनीवाली (यजु० ११.५५) श० ६.५.१.९. वाक् सावित्री गो० पू० १.३३. जै० उ० ४.२७.१५. वाग्वै सार्पराज्ञी कौ० २७.४. वागेव सुपर्णी (माया) श० ३.६.२.२. वाग्वाव शतपदी ष० १.४. वाग्वै रेवती श० ३.८.१.१२. वागषाढा श० ६.५.३.४. वाग्वाऽअषाढा श० ७.४.२.३४. वाग्वै पथ्या स्वस्तिः कौ० ७.६. श० ३.२.३.८. वाग्घ्येषा (पथ्या स्वस्तिः) श० ३.२.३.१५. जूरसि (यजु० ४.१७.) (जूः) इत्येतत् ह वा अस्याः (वाचः) एकं नाम श० ३.२.४.११. तस्यै (वाचे) जुहुयाद् बेकुरा नामासि तां० ६.७.६. वाग्वै धिषणा (यजु० ११.६१.) श० ६.५.४.५. वाग्वै मतिः (यजु० १३.५८.) वाचा हीदं सर्वं मनुते श० ८.१.२.७. वाग्वै बृहती श० १४.४.१.२२. यदस्यै वाचो बृहत्यै पतिस्तस्माद् बृहस्पतिः जै० उ० २.२.५. बृहस्पतिः (एवैनं) वाचां (सुवते) तै० १.७.४.१. अथ बृहस्पतये वाचे नैवारं चरुं निर्वपति श० ५.३.३.५. वाग्वै राष्ट्री ऐ० १.१९. इयं (पृथिवी) वै वागदो (अन्तरिक्षम्) मनः ऐ० ५.३३. इयं (पृथिवी) वै वाक् श० ४.६.९.१६. वागिति पृथिवी जै० उ० ४.२२.११. वागेवायं (पृथिवी) लोकः श० १४.४.३.११ वागित्यन्तरिक्षम् जै० उ० ४.२२.११. वागिति द्यौः जै० उ० ४.२२.११. वाग्वै लोकम्पृणा (इष्टका) श० ८.७.२.७. वाग्वै विराट् श० ३.५.१.३४. वाग्वै विश्वामित्रः कौ० १०.५. वाग्वै विश्वकर्मऽर्षिः (यजु० १३.५८.) वाचा हीदं सर्वं कृतम् श० ८.१.२.९. वागेव संस्तुत् छन्दः (यजु० १५.५.) श० ८.५.२.५. वाग्वा अनुष्टुप् ऐ० १.२८. श० १.३.२.१६. गो० उ० ६.१६. वागनुष्टुप् कौ० ५.६. श० १०.३.१.१. तै० १.८.८.२. तां० ५.७.१. महिषी हि वाक् श० ६.५.३.४. वागित्यृक् जै० उ० १.९.२. वागृक् जै० उ० ४.२३.४. सा या सा वागृक् सा जै० उ० १.२५.८. वागेवऽर्ग्वेदः श० १४.४.३.१२. वागेवऽर्चश्च सामानि च मन एव यजूꣳषि श०४.६.७.५. वाग् ब्रह्म गो० पू० २.१०, वाग्घि ब्रह्म ऐ० २.१५. वाग्वै ब्रह्म ऐ० ६.३. श० २.१.४.१०. वागिति तद् ब्रह्म जै० उ० २.९.६. सा या सा वाग् ब्रह्मैव तत् जै० उ० २.१३.२. ब्रह्मैव वाचः परमं व्योम तै० ३.९.५.५. वाग्वै ब्रह्म च सुब्रह्म चेति ऐ० ६.३. वाग्वै सुब्रह्मण्या ऐ० ६.३. वागुक्थम् ष० १.५. वाग्घि शस्त्रम् ऐ० ३.४४. वाक् शंसः ऐ० २.४. गो० उ० ६.८. वाग्वै रथन्तरम् ऐ० ४.२८. वाग्वै

त्वष्टा वाग्घीदं सर्वं ताष्टीव ऐ० २.४. वाग्वै दध्यङ्ङाथर्वणः (यजु० ११.३३.) श० ६.४.२.३. वाग्वा अर्बुदम् तै० ३.८.१६.३. वाग्वै भर्गः श० १२.३.४.१०. वागेव भर्गः गो० पू० ५.१५. वाग्वा उत्तरनाभिः श० १४.३.१.१६. वागुदयनीयम् कौ० ७.९. वाग् वामभृत् श० ७.४.२.३५. वाग्वै शर्म (ऋ० ३.१३.४.) ऐ० २.४०. वाग्वै स्रक् श० ६.३.१.८. वागेवादाभ्यः (ग्रहः) श० ११.५.९.१. वाग्वै सीतासमरः श० ७.२.३.३. वागिति श्रोत्रम् जै० उ० ४.२२.११. वाग्वा इन्द्रः कौ० २.७. वाग्घ्यैन्द्री ऐ० २.२६. एतद्ध वा इन्द्राग्न्योः प्रियं धाम यद् वागिति ऐ० ६.७. गो० उ० ५.१३. अग्निर्मे वाचि श्रितः तै० ३.१०.८.४. सा या सा वागग्निस्सः जै० उ० १.२८.३. सा या सा वाग् आसीत् सोऽग्निरभवत् जै० उ० २.२.१. या वाक् सोऽग्निः गो० उ० ४.११. वागेवाऽग्निः श० ३.२.२.१३. वाग्वाऽअग्निः श० ६.१.२.२८. जै० उ० ३.२.५. तपो मे तेजो मेऽन्नम् मे वाङ् मे। तन्मे त्वयि (अग्नौ) जै० उ० ३.२०.१६. वाग्वाऽअस्य (अग्नेः) स्वो महिमा श० १.४.२.१७. वाग्वाऽअस्य (प्रजापतेः) स्वो महिमा श० २.२.४.४. प्रजापतिर्वा इदमेक आसीत्तस्य वागेव स्वमासीद् वाग् द्वितीया स ऐक्षते मामेव वाचं विसृजा इयं वा इदं सर्वं विभवन्त्येष्यतीति स वाचं व्यसृजत काठकसंहितायाम् १२.५. प्रजापतिर्हि वाक् तै० १.३.४.५. वाग्घि प्रजापतिः श० १.६.३.२७. वाग्वै प्रजापतिः श० ५.१.५.६ प्रजापतिर्वै वाक्पतिः श० ३.१.३.२२. तदेता वाऽअस्य (प्रजापतेः) ताः पञ्च मर्त्यास्तन्व आसन् लोम त्वङ् मांसमस्थि मज्जायैता अमृता मनो वाक् प्राणश्चक्षुः श्रोत्रम् श० १०.१.३.४. वाग्वाऽइदं कर्म प्राणो वाचस्पतिः श० ६.३.१.१९. नमो वाचे प्राणपत्न्यै स्वाहा ष० २.९. वाक् च वै प्राणश्च मिथुनम् श० १.४.१.२. सा ह वागुवाच हे प्राण यद्वा ऽअहं वसिष्ठाऽस्मि त्वं तद् वसिष्ठोऽसीति श० १४.९.२.१४. वाग्वातस्य पत्नी गो० उ० २.९. वाग्वै वायुः तै० १.८.८.१. तां० १८.८.७. तस्मात् सर्वे प्राणा वाचि प्रतिष्ठिताः श० १२.८.२.२५. तस्याः (वाचः) उ प्राण एव रसः जै० उ० १.१.७. यावद्धै प्राणेष्वापो भवन्ति तावद्वाचा वदति श० ५.३.५.१६. वाक् च वै मनश्च देवानां मिथुनम् ऐ० ५.२३. तस्य (मनसः) एषा कुल्या यद्वाक् जै० उ० १.५८.३. वाग्दैवत्यं साम वाचो मनो देवता जै० उ० १.५९.१४. वाग्वै मनसो ह्रसीयसी श० १.४.४.७. अपरिमिततरमिव हि मनः परिमिततरेव हि वाक् श० १.४.४.७. मनो ह पूर्वं वाचो यद्धि मनसाभिगच्छति तद्वाचा वदति तां० १.१.१.३. वागिति मनः जै० उ० ४.२२.११. वाक् च वै मनश्च हविर्धाने कौ० ९.३. सा या सा वागसौ स आदित्यः श० १०.५.१.४. वागिति चन्द्रमाः जै० उ० ३.१३.१२. वाग्घ चन्द्रमा भूत्वोपरिष्टात् तस्थौ श० ८.१.२.७. वाग् वै देवानां मनोता ऐ० २.१०. कौ० १०.६. वाग्यज्ञस्य (रूपम्) श० १२.८.२.४. वाग्घि यज्ञः श० १.५.२.७. वाग्वै यज्ञः ऐ० ५.२४. श० १.१.२.२. वागु वै यज्ञः श० १.१.४.११. वाचो रसो यज्ञायज्ञीयम् (साम) तां० १८.५.२१. वाग् यज्ञायज्ञीयम् (साम) तां० ५.३.७. वाग्वै रूपम् (साम) तां० १६.५.१६. वाग्यज्ञस्य होता ऐ० २.५.२८. वाग्वै यज्ञस्य होता श० १२.८.२.२३. वाग्घोता श० १.५.१.२१. गो० उ० ५.४. वागेव होता गो० पू० २.१०. गो० उ० ३.८. वाग् वै होता (यजु० १३.७.) कौ० १३.९. वाग्घोता षड् होतॄणाम् तै० ३.१२ ५.२. अग्निर्वै होताधिदेवतं वागध्यात्मम् श० १२.१.१.४. गो० पू० ४.४. वाग्वै हविष्कृत् श० १.१.४.११. उद्गातारो वै वाचे भागधेयं कुर्वन्ति तां० ६.७.५. वाक् सर्व ऋत्विजः गो० उ० ३.८. वाचा पशून् दाधार तस्माद् वाचा सिद्धा वाचाहूता आयन्ति तस्मादु नाम जानते तां० १०.३.१३. त्र्यावृद् वै० वाक् तां० १०.४.६.९. त्रेधा विहिता हि वाग्-ऋचो यजूꣳषि सामानि श० ६.५.३.४. सा वाऽएषा वाक् त्रेधा विहिता ऋचो यजूꣳषि सामानि श० १०.४.५.२. वागिति सर्वे देवाः जै० उ० १.९.२. वागेव देवाः श० १४.४.३.१३. वाग् देवः गो० पू० २.१०. वज्र एव वाक् ऐ० २.२१. वाग्घि वज्रः ऐ० ४.१. वज्रस्तेन यद् वाक् ऐ० २.१६. वाक् च ह वै प्राणापानौ च वषट्कारः गो० उ० ३.६. वाक् च वै प्राणापानौ च वषट्कारः ऐ० ३.८. वाग्वै वषट्कारो वाग्रेतः श० १.७.२.२१. वागु हि रेतः श० १.५.२.७. शीर्ष्णो हीयमधि वाग् वदति श० १.४.४.११. वाग्घृदये (श्रिता) तै० ३.१०.८.४. तदेतत् तुरीयं वाचो निरुक्तं यन्मनुष्या वदन्ति श० ४.१.३.१६. वाग्वै देवानां (पुरान्नमास) तै० १.३.५.१. वाग् वै वाजस्य प्रसवः तै० १.३.२.५. वाग् योनिः ऐ० २.३८. उदीचीमेव दिशम्। पथ्यया स्वस्त्या प्राजानंस्तस्मादत्रोत्तरा हि वाग् वदति कुरु पंचालत्रा श० ३.२.३.१५. तस्मादुदीच्यां दिशि प्रज्ञाततरा वागुद्यत उदञ्च उ एव यन्ति वाचं वाचं शिक्षितुं यो वा तत आगच्छति तस्य वा शुश्रूषन्त इति कौ० ७.६. अयातयाम्नी वा ऽइयं वाक् श० ४.५.८.३. वागु सर्वं भेषजम् श० ७.२.४.२८. प्रादेशमात्रं हीदमभिवाग्

वदति श० ६.३.१.३३. सेयं वागृतुषु प्रतिष्ठिता वदति श० ७.४.२.३७. तस्मात् संवत्सरवेलायां प्रजाः (शिशवः) वाचं प्रवदन्ति श० ७.४.२.३८. स (प्रजापतिः) वाचमयच्छत् स संवत्सरस्य परस्ताद् व्याहरद् द्वादशकृत्वः ऐ० २.३३. वाक् संवत्सरः तां० १०.१२.७. सर्वां वाचं पुरुषो वदति तां० १३.१२.३. तां वनस्पतयश्चतुर्द्धा वाचं विन्यदधुर्दुन्दुभौ वीणायामक्षे तूणवे तस्मादेषा वदिष्ठैषा वल्गुतमा वाग्या वनस्पतीनां देवानां ह्येषा वागासीत् तां० ६.५.१३. परमा वा एषा वाग्या दुन्दुभौ तां० १.३.६.२. एषा वै परमा वाग् या सप्तदशानां दुन्दुभीनाम् श० ५.१.५.६. एतद् वाचश्छिद्रं यदनृतम् तां० ८.६.१३. वाचो वा एतौ स्तनौ सत्यानृते वाव ते गो० उ० ४.१९. वाचो वाव तौ स्तनौ सत्यानृते वाव ते ऐ० ४.१. एतद्वै वाचो जितं यद् ददामीत्याह ऐ० ८.९. एकाक्षरा वै वाक् तां० ४.३.३. योषा हि वाक् श० १.४.४.४. योषा वा ऽइयं वाग् यदेनं न युविता श० ३.२.१.२२. वागिति स्त्री जै० उ० ४.२२.११.]

वाकम् अथर्ववेदम् यजुः १.१६४.२४. **वाकाः**=उच्यन्ते यास्ताः (आशिषः=इच्छासिद्धयः) १७.५७. **वाकेन**=यजुषा १.१६४.२४ [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्घञ् । 'चजोः कुः०' इति कुत्वम्]

वाक्पतिः यो वाचो वेदविद्यायाः पतिः स्वामी पालयिता सः (परमात्मा) ४.४. [वाच्-पतिपदयोः समासः । प्रजापतिर्वै वाक्पतिः श० ३.१.३.२२. वाक्पतिर्होता तै० आ० ३.१.१. अयं वाव वाक्पतिर्योऽयं (वायुः) पवते श० ४.१.३.१५.]

वाघतः यज्ञविद्यानुष्ठानेन सुखसम्पादिन ऋत्विजः १.३.५. मेधावी (सज्जनः), प्र०—वाघत इति मेधाविनाम निघं० ३.१५, ३.२.१ ये वाचा दोषान् घ्नन्ति ते मेधाविनः (ऋत्विजो जनाः) ३.३७.२. सुशिक्षिताभिर्वाग्भिरविद्या हन्यते येन स मेधावी (अ०—विद्वान् जनः) १५.२२. यश्शिक्षितया वाचा हन्ति जानाति सः (इन्द्रः=विद्वान् जनः) २०.८२. वाग्विद्यायुक्ताः (ऋभवः=मेधाविनो जनाः) १.११०.४. **वाघते**=वाक् हन्यते ज्ञायते येन तस्मै विदुष ऋत्विजे मनुष्याय १.३१.१४. [वाघतः मेधाविनाम निघं० ३.१५. ऋत्विङ्नाम निघं० ३.१८. वाघतः वोढारो मेधाविनो वा नि० ११.१६.]

वाचस्पतिम् वाचो वेदवाण्याः पालकम् (राजानम्) १७.२३. [वाच्-पतिपदयोः समासे षष्ठ्या अलुक् । वाचस्पतिः=वाचः पाता वा पालयिता वा नि० १०.१७. वाचस्पतिर्होता मै० १.९.१. यो वै वाचो ऽध्यक्षः स वाचस्पतिः मै० २.२.५.]

वाच्यः वाचो भावः कर्म्म वा १३.५८ [वाच्प्राति० भावे कर्मणि वा ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ् । ब्राह्मणादिराकृतिगणः]

वाजजठरः वाजो क्षुद्रवेगो जठरे यस्मात् सः (घर्मः=प्रतापः) ५.१९.४. [वाज-जठरपदयोः समासः । वाज इति व्याख्यास्यते]

वाजजित् वाजमन्नं जयति येन सः (अग्निः), प्र०—वाज इत्यन्ननामसु पठितम् निघं० २.७. अत्र 'कृतो बहुलम्०' इति करणे क्विप् २.७. वाजं सर्वस्य वेगं जयति स ईश्वरः वाजं जयति येन वा स भौतिकः (अग्निः) २.१४. सङ्ग्रामं विजयमानः (सेनाध्यक्षो राजा) ९.९. **वाजजितम्**=वाजं युद्धं जयति येन तम् (भौतिकमग्निम्) २.७. यो येन वा वाजं सङ्ग्रामं जयति तम् (ईश्वरं भौतिकमग्निं वा) २.१४. **वाजजितः**=सङ्ग्रामं जेतुं शीलाः (जनाः) ९.९. सङ्ग्रामं जयन्तः (वाजिनः=योद्धृजनाः) ९.९. विजितसङ्ग्रामाः (विद्वांसो राजपुरुषाः) ९.१९. [वाजोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप् । वाजजिद् (साम) भवति सर्वस्याप्त्यै सर्वस्य जित्यै तां० १३.९.२०.]

वाजदा विज्ञानप्रदौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१३५.५. [वाजोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः । ततो द्विवचनस्याकारः]

वाजदाव्नाम् वाजस्य विज्ञानस्याऽन्नस्य दातॄणामुपदेशकानां वा १.१७.४. [वाजोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि वनिप् । ततः षष्ठी]

वाजदाः यो वाजमन्नादिकं ददाति सः (इन्द्रः=ऐश्वर्यवान् विद्वान्) ३.३६.५. [वाजोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

वाजपतिः अन्नाद्यधिष्ठाता, भा०—अन्नवान् (भा०—पुरुषः) १८.३३. अन्नादिरक्षकः (जनः) १८.३४. अन्नादीनां स्वामी (अग्निः) ४.१५.३. अन्नादिरक्षको गृहस्थ इव ११.२५. [वाज-पतिपदयोः समासः । वाज इति व्याख्यास्यते एष (अग्निः) हि वाजानां पतिः ऐ० २.५.]

वाजपस्त्यः वाजानि अन्नानि पस्त्ये गृहे यस्य सः (देवः=विद्वज्जनः) ६.५८.२. [वाज-पस्त्यपदयोः समासः । पस्त्यं गृहनाम निघं० ३.४. वाजपस्त्यम्=वाजपतनम् नि० ५.१५.]

वाजपेशसम् वाजस्य विज्ञानस्य पेशो रूपं यस्यां ताम्

(धियं=प्रज्ञाम्) २.३४.६. [वाज-पेशस्पदयोः समासः। पेशः रूपनाम निघं० ३.७. हिरण्यनाम निघं० १.२.]

वाजप्रमहः वाजैर्विज्ञानादिभिर्विद्वद्भिर्वा प्रकृष्टतया मह्यते पूज्यते यस्तत्सम्बुद्धौ (मघवन्=जगदीश्वर) १.१२१.१५. [वाज-प्रमहपदयोः समासः। प्रमहः=प्र+मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर् औणा० असुन्]

वाजप्रसूता वाजेन सूर्यस्य गमनेन प्रसूतोत्पन्ना (उषाः) १.९२.८. **वाजप्रसूताः**=विज्ञानादिगुणैः प्रकाशिताः (सभासदः) १.७७.४. [वाज-प्रसूतापदयोः समासः। प्रसूता=प्र+षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०)+क्त+टाप्]

वाजम् वेगम् ४.३१. विज्ञानम् १.११७.१०. विज्ञानमन्नं वा ७.४२.६. सङ्ग्रामम् ९.१९. वेगादिगुणसमूहम् १.६४.१३. विज्ञानकरम् (सूर्यम्) १ ६३.९. पृथिव्यादिकन्नम् १.११०.६. वेगवन्तम् (अग्निम्) ३.२.३. अन्नाद्यैश्वर्यम् ४.१६.१६. विज्ञानमयं बोधम् १.१२४.१३. सङ्ग्रामविजयम् १८.७४. परमैश्वर्यं शत्रुविजयाख्यं युद्धं वा ९.११. अन्नादिसामग्रीयुक्तं पदार्थसमूहम् २.२४.९. धनम् ६.५४.५. भा०—शीघ्रगमनहेतुम् (भौतिकमग्निम्) २.७. **वाजस्य**=वजन्ति प्राप्नुवन्ति सुखानि यस्मिन् व्यवहारे तस्य १.११.३ विद्याविज्ञानजन्यस्य कार्य्यस्य २७.३७. राज्यस्य ९.२४. वेदादिशास्त्रार्थप्रसूतज्ञानबोधस्य ९.१९. प्राप्तस्य (ज्ञानस्य) ७.२१.७. प्रेरणाऽप्रेरणवेगप्राप्तेः २.१५. विज्ञानवेगयुक्तस्य स्वामिनः १२.११२. **वाजः**=शास्त्रबोधो वेगो वा १८.३२ विज्ञानवान् ऐश्वर्ययुक्तो वा (मनुष्यः) ७.४८.२. अन्नम् १८.१. बलविज्ञानाऽन्नयुक्तः (इन्द्रः=परमैश्वर्ययुक्तो राजा ७.४८.३. **वाजान्**=वेगवतः (अर्वतः=अश्वान्) ६.४५.१२ प्राप्तव्याञ्छुभगुणकर्मस्वभावान् ४.३.१५. विज्ञानधनादिपदार्थान् ४.४.१४. ज्ञानोत्कृष्टान् (ऋभून्=मेधाविनो जनान्) १.१११.४. हिंसकान् (दुर्जनान्) ६.१७.२. विज्ञानवेगयुक्तान् सम्बन्धिनः १.१२१.१४. अत्युत्तमान्नादिभोगान् ३५.१०. **वाजानाम्**=वजन्ति प्राप्नुवन्ति जयपराजयौ येषु युद्धेषु तेषाम् १.११.१. ज्ञानादिगुणयुक्तानाम् जीवानाम् १७.६१. **वाजाय**=विज्ञानप्रदाय (विद्वज्जनाय) ३.१९.१. **वाजाः**=धनुर्वेदबोधजा वेगाः १२.११३. विज्ञानादयः पदार्थाः ३.२७.१. प्राप्तसुशीला वेगवन्तः (ऋभवः=सूरयः) ४.३६.७. प्राप्तहस्तक्रियाः (ऋभवः=मेधाविजनाः) ४.३६.२. प्राप्तब्रह्मचर्याः (आप्ता विद्वांसः) ४.३४.५. प्राप्तव्याः पदार्थाः ७.१.३. दातारः (प्रजाजनाः) ४.३७.८. प्रशंसिताः सूरयः=विद्वज्जनाः) ३७.७. विभवयुक्ताः (ऋभवः=विपश्चितो जनाः) ४.३६.४. **वाजेषु**=अन्ननिमित्तक्षेत्रेषु ६.२९. विज्ञानान्नसेनादिषु १.६३.६. [वाजः अन्ननाम निघं० २.७. बलनाम निघं० २.९. वाजेभिरन्नैः नि० ११.२६. वज गतौ (भ्वा०) धातोर्घञ्। अन्नं वै वाजः तै० १.३.६.२. श० ५.१.४.३. तां० १३.९.१३. अन्नं वाजः श० ५.१.१.१६. अन्नं वै वाजाः श० १.४.१.९. वीर्यं वै वाजाः श० ३.३.४.७. ओषधयः खलु वै वाजः तै० १.३.७.१. वाजो वै पशवः ऐ० ५.८. वाजो वै स्वर्गो लोकः तां० १८.७.१२. गो० उ० ५.८. वाग्वै वाजस्य प्रसवः तै० १.३.२.५. सोमो वै वाजः मै० ४.५.४. सर्वः सोमं पिपासति वाजं ह गच्छति मै० १.११.५. अमृतोऽन्नं वै वाजः जै० २.१९३.]

वाजम्भरम् यो वाजं वेगं बिभर्त्ति तम् (अग्निम्) १.६०.५. **वाजम्भरः**=प्राप्तं बहुभारं धरति सः (विद्युदादि स्वरूपोऽग्निः) ४.११.४. [वाजोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'संज्ञायां भृतृवृजि०' अ० ३.२.४६. सूत्रेण खच्]

वाजयतः सङ्ग्रामयतः (रथान्) १.१३०.५. **वाजयताम्**=प्रापयताम् (विदुषां जनानाम्) ६.४५.२९. **वाजयद्भिः**=वेगवद्भिः (रथैः) ५.६०.१. **वाजयन्**=प्राप्तुमिच्छन् (मर्त्यः=मनुष्यः) ७.३२.११. वेगं कारयन् (अत्यः=अश्वः) ७.२४.५. प्रापयन् (वैद्यः) १२.८५. विज्ञापयन्तो योधयन्तो वा (प्रजाजनाः), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्' इति जसः स्थाने सुः १.१०६.४. **वाजयन्तम्**=कृताऽन्वेक्षणम् (रथम्) ५.३५.७. भूगोलान् गमयन्तम् (रथम्) ५.३१.१. **वाजयन्तः**=विज्ञानमन्नं वेच्छन्तः (विप्राः=मेधाविजनाः) ४.१७.१६. विज्ञापयन्तः (राजपुरुषाः) ४.२५.८. जानन्तो ज्ञापयन्तो वा (नरः=नायका जनाः) ४.४२.५. हर्षयन्तः (शूरा जनाः) ६.२४.६. सङ्ग्रामयन्तो योधयन्तः (प्रजाजनाः) १८.७४. गच्छन्तो गमयन्तो वा (अश्वाः=तुरङ्गा वह्न्यादयो वा) ६.७५.७. कुर्वन्तः कारयन्तो वा (मनुष्याः) ५.४.१. जलं चालयन्तो वायवः १.३०.१. [वज गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ। वाज इति व्याख्यातम्। तत इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ वा। वाजयति अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोर्वा शतृ]

वाजयते गमयति ४.७.११. **वाजयामः**=विज्ञापयामः, प्र०—वज गतौ इत्यन्तर्गतण्यर्थेन ज्ञापनार्थोऽत्र गृह्यते १.४.९.

वाजयध्यै विज्ञापयितुम् ४.२९.३. [वज गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् तुमर्थेऽध्यै]

वाजयन्ता वाजमन्नादिकमिच्छन्तौ (इन्द्राग्नी=वायुविद्युतौ) ६.६०.१. गमयन्तौ (हरी=किरणौ) २.११..७. [वज गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ । ततोद्विवचनस्याकारश्छान्दसः। अथवा वाजः अन्ननाम निघं० २.७. बलनाम निघं० २.९. तत इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ]

वाजयन्ती प्रापयन्ती (विदुषी स्त्री) ५.१.३. **वाजयन्तीम्**=सबलानां विद्यानां प्रज्ञापिकाम् (धियं=प्रज्ञाम्) १.१०९.१. सत्याऽसत्यविज्ञापयन्तीम् (गिरं=वाचम्) ३.६२.८. **वाजयन्तीः**=ज्ञापयन्त्यः (धियः=प्रज्ञाः कर्माणि वा) ४.४१.८. [वज गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ । ततः स्त्रियां ङीप्]

वाजयन्ती प्रज्ञापयन्त्यौ (उषसा=प्रातःसायं सन्धिवेले) ३.१४.३. [वाजयन्तीति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

वाजयन्निव यथा गमयन् (अग्निः=विद्वज्जनः) २.८.१. [वाजयन्-इवपदयोः समासः]

वाजयुम् यो वाजयति वेगेन गच्छति तम् (रथम्) २.३१.२. **वाजयुः**=यो वाजं वेगं कामयते सः (सज्जनः) २.२०.१. य आत्मनो वाजमिच्छुः (अपान्नपात्=सूर्याख्योऽग्निः) २.३५.१. वाजमन्नं कामयमानः (मनुष्यः) ५.१९.३. वाजं प्रशस्तमन्नं धनं वाऽऽत्मन इच्छति (धर्मात्माऽऽप्तोविद्वान् राजाऽध्यापकः परीक्षको वा) ७.३१.३. [वज गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्तादौणा० बाहु० उः । अथवा वाजशब्दाद् इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसी' त्युः प्रत्ययः]

वाजरत्ना वाजो बोधो रत्नं धनं ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.४३.७. [वाज-रत्नपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

वाजरत्ना विज्ञानधनप्राप्तिसाधिका (सुमतिः) ४.४४.७ **वाजरत्नाः**=धनधान्योन्नतिकरीः (धियः=प्रज्ञा उत्तमानि कर्माणि वा) ६.३५.१. [वाज-रत्नपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

वाजरत्नाः विज्ञानादीनि रत्नानि येषान्ते (ऋभवः=मेधाविजनाः) ४.३४.२. वाजा अन्नादयो रत्नानि सुवर्णादीनि च येषान्ते (ऋभवः) ४.३५.५. विज्ञानधनवन्तः (पतयः=स्वामिनः) ५.४९.४. [वाज-रत्नपदयोः समासः । वाजः अन्ननाम निघं० २.७. वाजः बलनाम निघं० २.९.]

वाजवत् वाजो बहुविधं भोक्तव्यमन्नमस्त्यस्मिन् तत् (श्रवः=विद्यासुवर्णादिधनं च), प्र०—वाज इत्यन्ननाम निघं० २.७. अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् १.९.७. [वाजप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

वाजवतीः प्रशस्ता वाजा वेगादयो गुणा विद्यन्ते यासु नौकादिषु ताः, प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.३४.३. प्रशस्तविज्ञानयुक्तान् (इषः=अन्नादीन्) ६.६०.१२. **वाजवत्या**=वाजः प्रशस्तमन्नं युद्धं वा विद्यते यस्यां तया (शक्ती=शक्त्या) १.३१.१८. **वाजवत्यै**=वाजः प्रशस्तं ज्ञानं विद्यते यस्यां तस्यै (इषे=इच्छायै) १.१२०.९. [वाजप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप्]

वाजवन्तम् बह्वन्नविज्ञानसाधकम् (रयिं=धनम्) ४.३४.१०. वाजाः शुष्कान्नविशेषा विद्यन्ते यस्य तम् (विद्वांसमध्यापकम्) ३.५२.६. [वाजप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

वाजश्रवसम् वाजो वेगः श्रवोऽन्नं यस्मात्तम् (अग्नि=पावकम्) ३.२.५. **वाजश्रवसः**=वाजोऽन्नं विद्या श्रवणं च पूर्णं येषान्ते (प्रजाजनाः) ६.३५.४. [वाज-श्रवस्पदयोः समासः । श्रवः अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०]

वाजश्रुतासः वाजं विज्ञानं श्रुतं यैस्ते (नरः=नायका विद्यार्थिजनाः) ४.३६.५. [वाज-श्रुतपदयोः समासे जसोऽसुक्]

वाजसनिम् वाजस्य सनिर्विभागो यस्य तम् (रयिं=राज्यश्रियम्) २०.७९. अन्नविज्ञानविभाजकम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.५१.२. [वाजोपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' अ० ३.२.२७. सूत्रेण इन् । अथवा वाज-सनिपदयोः समासः । सनिः=षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० इन्]

वाजसातम अतिशयेन वाजानां विज्ञानादिपदार्थानां विभाजक (विद्वज्जन) ५.२०.१. **वाजसातमम्**=यो वाजान् प्रशस्तान् बोधान् सम्भजते सोऽतिशयितस्तम् (विद्वज्जनम्) १.७८.३. वाजानां विज्ञानानां वेगानामतिशयेन विभाजकम् (विद्वांसं जनम्) ५.१३.५. [वाजसाप्राति० अतिशायने तमप् । वाजसाः=वाजोपपदे षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोः 'जनसनखनक्रमगमो विट्' अ० ३.२.६७. सूत्रेण विट् । 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' अ० ६.४.४१. सूत्रेणाकारादेशः]

वाजसातमा वाजस्य विज्ञानस्य धनस्य वाऽतिशयेन विभक्तारौ (इन्द्राग्नी=सभासेनेशौ) ३.१२.४. वाजान् युद्धसमूहान् सनन्ति सम्भज्य विजयन्ते याभ्यां तावतिशयितौ (अ०—स्त्रीपुरुषौ) १.२८.७. [वाजसातम इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छन्दसि । वाजसातमा=

अन्नानां सम्भक्ततमे नि० ६.३५.]

वाजसातये वाजस्य वेगस्य सम्भजनाय ३३.७५. युद्धविभागाय पदार्थविभागाय वा १.१३०.१. वाजस्य सङ्ग्रामस्य सम्यक् सेवनाय २.३१.३. धनादिसंविभागाय ३.३७.५. सङ्ग्रामान्नादीनां विभागाय वा ५.३५.६. विज्ञानस्य धनस्य वा प्राप्तायाऽथवा सङ्ग्रामाय ६.५३.४. अन्नादीनां विभागो यस्मिँस्तस्मै (न्यायव्यवहाराय) ६.५७.१ सङ्ग्रामविभाजिकायै (धिये=प्रज्ञायै) ६.५३.१. वाजानां वेगादीनां सम्भागाय ३३.६१. परोपकार के अर्थ विज्ञान और अन्न आदि के दान के लिए सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७२. **वाजसातौ**=वाजान् धनाद्यान् पदार्थान् सनन्ति विभजन्ति यस्मिँस्तस्मिन् सङ्ग्रामे ३.३०.२२. विज्ञानाविज्ञान-सत्यासत्यविभाजके (भरे=युद्धे) ३.३४.११. पदार्थानां विभागविद्यायाम् ३.३९.६. वाजानामन्नादीनां विभागो यस्मिँस्तस्मिन् (भरे=पोषणे) ३.३६.११. वाजान्यन्नानि सम्भजन्ति यया तस्यां युधि ३६.११. स्वस्य स्वस्यांऽशस्य दानमये व्यवहारे ३.४६.५. [वाज-साति-पदयोः समासः। वाज इति व्याख्यातम्। सातिः=षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। 'जनसनखनां सञ्झलोः' अ० ६.४.४२. सूत्रेणाकारादेशः। वाजसातौ संग्रामनाम निघं० २.१७. वाजसातये अपत्यजननाय चान्नसंसननाय च नि० १२.४५.]

वाजसाम् वाजस्याऽन्नादेर्विभाजिकाम् (धियं=प्रज्ञाम्) ६.५३.१०. [वाजोपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्विट्। 'विड्वनोरि' त्याकारादेशः। स्त्रियां टाप्]

वाजसाः वाजान् सङ्ग्रामान् सनन्ति सम्भजन्ति येन सः (पराक्रमः) ६.६. यो वाजान् संग्रामान् विभजति सः (वीरसेनापतिः) ६.५. [वाजोपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि विट्। 'विड्वनोरि' त्याकारादेशः]

वाजा अन्नानि ६.४८.४. [वाज इति व्याख्यातम्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

वाजासः अन्नाद्यैश्वर्ययोगाः ४.८.७. वेगवन्तः (विद्वज्जनाः) ५.६.२. विज्ञानवन्तः (ऋभवः=प्राज्ञाः) ४.३५.६. [वाजप्राति० जसोऽसुक्]

वाजिन् जिज्ञासो (विद्यां पिपठिषुच्छात्र) २३.१५. वेगवन् (अ०—सेनाध्यक्ष राजन्) ६.६. शास्त्रोक्तक्रिया-कुशलतावोधयुक्त (राजन्) ६.८. प्रशस्तज्ञानयुक्त विद्वन् ११.१२. प्रशस्तविज्ञानवन् (अ०=विद्वन्सभेश राजन्) ११.१६. प्राप्तैश्वर्य (अ०—विद्वज्जन) ११.२१. अश्व इव वेगादिगुण सेनाधीश २६.१६. प्रशस्तशास्त्रयोगाभ्यासकृत्य-सहित (अ०—सेनाध्यक्ष राजन्) ६.६. **वाजिनम्**=वाजिनां विज्ञानवतामिदमवयवभूतं विज्ञानम् १३.३६. ज्ञानबल-प्रदम् (आदित्यम्) ६.५५.४. विज्ञानयुद्धविद्याकुशलम् (सेनाध्यक्षम्) १.१०६.४. बहूनि वाजा अन्नादीनि यस्मिँस्त-माहारम् १.१६२.१२. बहुवेगवन्तम् (राजजनम्) ४.३८.२. अश्वम् १.१२६.२. धार्मिकं शूरवीरं मनुष्यं प्राप्तिनिमित्तं सूर्यलोकं वा, प्र०—वाजिन इति पदनाम निघं० ५.६. अनेन युद्धेषु प्राप्तवेगहर्षाः शूरा सूर्यलोका दा गृह्यन्ते १.४.८. प्रशस्तज्ञानवन्तम् (जनम्) १.१२६.१. वेगवन्तमश्वम् २५.३५. विजयप्रापकम् (इन्द्रं=ईश्वरम्), प्र०—वाजिन इति पदनामसु पठितत्वात् प्राप्त्यर्थोऽत्र गृह्यते १.४.६. प्रशस्तो वाजो वेगो यस्यास्ति तम् (पुरुषम्) १.६४.६. बलवन्तम् (सेनेशम्) १.१७६.५ वाजाः प्रशस्तानि अन्नानि विद्यन्ते येषु तेषामिदं सारं वस्तु १९.२१. बह्वन्नसाररूपम् १९.२३. वाजिनः=गन्तुं योग्यस्य (सूर्यस्य) २.२४.१०. वेगगुणवतो जलादयः १.१६२.१८. प्रकृष्टविज्ञानवन्तः (सूरयः=विद्वांसो जनाः) २.२.११. वाजः प्रशस्तः परा-क्रमो बलं वा येषां ते (अश्वाः=अश्व इव वेगवन्तो जनाः) ६.६. बहुविज्ञानाऽन्नबलवेगयुक्ताः (विप्राः=मेधावि-जनाः) ७.३८.८. तुरङ्गाः ३४.३६. वाजः परमोत्कृष्ट-विद्याबलाभ्यामात्मनो देहस्य प्रशस्तो बलसमूहो येषामस्ति ते विजानन्तः (भा०—मनुष्याः) १.११.२. प्रशस्तो बोधो येषामस्ति ते (देवाः=विद्वज्जनाः), प्र०—अत्र प्रशंसार्थ इनिः, गत्यर्थाद् विज्ञानं गृह्यते १.२३.१६. प्रशस्तयुद्ध-विद्याविदः सुशिक्षितास्तुरङ्गाः ६.१६. प्रशस्तप्रज्ञाः (राजपुरुषाः) ६.१७. अश्वानग्न्यादीन्वा २६.४३. ज्ञानवन्तो योद्धारः ७.३८.७. **वाजी**=वेगवानश्वः ११.१८. विज्ञान-वान् (औरसः स्वगोत्रजो वा पुत्रः) ७.४.८. वेगबलादि-युक्तः (तनयः=पुत्रः) ७.१.१४. बलवानश्व इव (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.१५.१. प्रशस्तविज्ञानः (ब्रह्मणस्पतिः=राजपुरुषः) २.२४.१३. विज्ञापको दिवसः ५.१.४. प्राप्त-नीतिः (अर्वा=विज्ञानयुक्तः पुत्रः) ११.४४. बह्वन्नवान् (धार्मिको जनः) ४.३.१२. प्रशस्तो वेगोऽस्याऽस्तीति (अग्निः) १.७४.८. महाबलवान् और वेगवान् (ईश्वर) आर्याभि० १.५२. ऋ० २.८.१२.२. प्रशस्तो वाजो शास्त्र-बोधो यस्य सः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. वेगः १.१६२.२१. [वाज इति व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे प्रशंसायामर्थे वा इनिः। वाजिनम्=अन्नवन्तम्। नि० १०.२८. वाजी अश्वनाम निघं० १.१४. वाजी वेजनवान्

नि० २.२८. यत् सद्यो वाजान्त्समजयत् तस्माद् वाजीनाम तैं० ३.९.२१.२. (हे ऽश्व त्वं) वाज्यसि तां० १.७.१. वाजिनो ह्यश्वाः श० ५.१.४.१५. (अश्वो) वाजी (भूत्वा) गन्धर्वान् (अवहत्) १०.६.४. देवाश्वा वै वाजिनः कौ० ५.२. देवाश्वा वै वाजिनो ऽत्र देवाः साश्वा अभीष्टाः प्रीता भवन्ति गो० उ० १.२०. अग्निर्वायुः सूर्यः। ते वै वाजिनः तैं० १.६.३.९. आदित्यो वाजी तैं० १.३.६.४. इन्द्रो वै वाजी ऐ० ३.१८. पशवो वै वाजिनः गो० उ० १.२०. ऋतवो वै वाजिनः कौ० ५.२. श० २.४.४.२२. गो० उ० १.२०. छन्दांसि वै वाजिनः गो० उ० १.२०. तैं० १.६.३.९. उक्थ्या वाजिनः गो० उ० १.२२. इन्द्रियं वै वीर्यं वाजिनम् ऐ० १.१३. योषा पयस्या रेतो वाजिनम् श० २.४.४.२१. रेतो वाजिनम् तैं० १.६.३.१० पशवो वै वाजिनम् तैं० १.६.३.१०. एष (तार्क्ष्यः) वै वाजी देवजूतः ऐ० ४.२०]

वाजिन इव सुशिक्षितानश्वानिव ३४.६. [वाजिनः-इवपदयोः समासः। वाजी अश्वनाम निघं० १.१४.]

वाजिना ज्ञान-गमन-प्राप्तिरूपाणि (भा०—ब्रह्मचर्याध्ययनमननानि) ३.२०.२. बहुवेगविज्ञानयुक्तौ (तुरङ्गौ, अध्यापकोपदेशकौ वा) ६.६७.४. वेगवन्तावश्वौ २.२४.१२. [वाजप्राति० मत्वर्थ इनिः ततस्तृतीया। विभक्तिव्यत्ययः। अथवा वाजिन्प्राति० द्विवचनस्याकारादेशः]

वाजिनानि शीघ्रगमनानि १७.४२. **वाजिनेषु**=वाजिनानां सङ्ग्रामाणामवयवेषु कर्मसु १३.४८. [वाजिन्प्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण्। ततः प्रथमाबहुवचनम्। वाजिनः पदनाम निघं० ५.६. वाजिनेषु वाग्ज्ञेयेषु बलवत्स्वपि नि० १.२०.]

वाजिनि प्रशस्तविज्ञानयुक्ते (सरस्वति=विदुषि स्त्रि) ६.६१.६. विज्ञानवति (उषर्वद्वर्त्तमाने स्त्रि) ३.६१.१. **वाजिनी**=वजितुं प्राप्तुं शीलं यस्याः सा (प्राची=पूर्वा दिक्) ३.६.१. **वाजिनीम्**=बलवेगवतीम् (अ०—सेनाम्) १.२९. [वाजप्राति० प्रशंसायामर्थे इनिः। ततः स्त्रियां ङीपि सम्बुद्धौ रूपम्। अथवा वज गतौ (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः। ततो ङीप्। वाजिनी उषोनाम निघं० १.८.]

वाजिनीवति बहवो वाजिन्यः क्रिया विद्यन्ते यस्यास्तत्सम्बुद्धौ (विदुषि स्त्रि) १.४८.१६. वाजयन्ति ज्ञापयन्ति गमयन्ति वा यासु क्रियासु ताः प्रशस्ता वाजिन्यो विद्यन्ते ऽस्यां तत्सम्बुद्धौ (उषः) १.९२.१५. विज्ञानक्रियायुक्ते सरस्वति=विद्यायुक्ते स्त्रि) ६.६१.४. बह्वन्नाद्यैश्वर्ययुक्ते (उषः=प्रभातवेले) ३४.३३. **वाजिनीवती**=प्रशस्तविद्यायुक्ता (सरस्वती=सुसंस्कृता वाक्) २०.८४. सर्वोत्तम क्रिया, विज्ञानयुक्त (वाणी) आर्याभि० १.१८. ऋ० १.१.६.१०. प्रशस्तविज्ञानक्रियासहिता (देवी=विदुषी माता) ६.६१.४. सर्वविद्यासिद्धक्रियायुक्ता, वाजिनः क्रियाप्राप्तिहेतवो व्यवहारास्तद्वती (सरस्वती=सर्वविद्याप्रापिका वाक्), प्र०—वाजिन इति पदनाम निघं० ५.६. अनेन वाजिनी इति गमनार्था प्राप्त्यर्था च क्रिया गृह्यते १.३.१०. [वाजनीति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा मतुबन्तान् स्त्रियां ङीप्। ततः सम्वुद्धौ रूपम्। वाजिनीवती उषो नाम निघं० १.८. वाजिनीवती अन्नवति नि० १२.६. वाजिनीवती अन्नवती नि० ११.२६.]

वाजिनीवतोः प्रशस्ता विज्ञानादियुक्ता सभा सेना च विद्यते ययोस्तयोः (सभासेनेशयोः) १.१२०.१०. **वाजिनीवान्**=प्रशस्तवेगक्रियायुक्तः (शिल्पिजनः) १.१२२.८. वेगक्रियाज्ञानयुक्तः (शिल्पी जनः) ५.३६.६. [वाजिनीशब्दात् प्रशंसायामर्थे मतुप्। वाजिनीति व्याख्यातम्]

वाजिनीवसू यौ वाजिनीमन्नादियुक्तां सामग्रीं वासयतस्तौ (अश्विना=विद्यायुक्तौ महाविद्वांसौ) ५.७५.३. धनधान्यप्रापकौ (सज्जनौ ५.७४.७. यौ विज्ञानक्रियां वासयतस्तौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) ५.७८.३. यौ वाजिनीं वेगवतीं क्रियां वासयतस्तौ (शिल्पिजनौ) २.३७.५. उषोवत्प्रकाशवेगयोर्वसतः (इन्द्रवायू=सूर्यपवनौ), प्र०—वाजिनीत्युषसो नामसु पठितम् निघं० १.८, १.२.५. यौ वाजिनीं बह्वन्नादिक्रियां वासयतस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.७४.६. वाजिनीवसो=यो वाजिनीमुषसं वासयति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=विद्वन् जन) ३.४२.५. [वाजिनीति व्याख्यातम्। तदुपपदे वस निवासे (भ्वा०) धातोर् औणा० उः]

वाजिनेयः वाजिन्या ज्ञानवत्या अपत्यम् (वाजी=ज्ञानी जनः) ६.२६.२. [वाजिनीति व्याख्यातम्। ततोऽपत्यार्थे 'स्त्रीभ्यो ढक्' अ० ४.१.१२० सूत्रेण ढक्। ढस्य स्थान एयादेशः]

वाजिन्तमम् प्रशंसिता बहवोऽतिशयिता वाजिनो विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (रयिं=धनम्) ४.३७.५. [वाजी अश्वनाम निघं० १.१४. वाजिन्प्राति० अतिशायने तमप्। 'नाद्घस्ये' ति नुडागमः]

वाजेध्यायै वाजेनान्नेन युद्धेन वा इध्या दीपनीया सेना यज्ञपात्रे वा यया क्रिया तस्यै (सेनायै) वाजेन बहुसाधनसमूहेन सङ्ग्रामेण सेनया यज्ञेन वा प्रकाशनीयायै सत्यनीत्यै १.२६. [वाज-इध्यापदयोः समासः। इध्या=ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्बाहु० औणा० यक्। स्त्रियां टाप्]

वाजेभिः वाजैरन्नादिसामग्रीभिः १.११०.९. विज्ञानै-रन्नैः सङ्ग्रामैर्वा १.११०.७. सर्वविद्याप्राप्तिनिमित्तै-रन्नादिभिः सह, प्र०—वाज इत्यन्ननाम निघं० २.७, १.३.१०. विमानादियानै. सह १.५.३. वेगविज्ञानादिगुणवद्भिः (महाशयैः) ६.३२.४. [वाज इति व्याख्यातम्। ततो 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

वाजे वाजे सङ्ग्रामे सङ्ग्रामे ७.३८.८. युद्धे-युद्धे २१.११. व्यवहारे व्यवहारे ६.६१.१२. [वाजे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। वाजे संग्रामनाम निघं० २.१७.]

वाञ्छन्तु अभिलषन्तु, भा०—अनुकूलाः स्युः १२.११. [वाञ्छि इच्छायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् वाञ्छति कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

वाट् वहन्ति सुखानि यया क्रियया सा वाट्, प्र०—निपातोऽयम् २.१८. क्रियार्थे २.२०. सुष्ठु ३८.६. [वाट् निपातोऽयं चादिषु पाठात्]

वाट् येन वहति सः (अग्निः) १८.३८. वहनम् १८.३९. अ०—धर्मप्रापणम् १८.४३. **वाहः**=ये वहन्ति ते (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.३०.२०. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' सूत्रेण निरुपपदादपि ण्विः]

वाढे प्रापणे १.१८१.७.]

वाणम् वाणादिशस्त्राऽस्त्रसमूहम् १.८५.१०. वाणीम् ४.२४.९. [वण शब्दार्थे (भ्वा०) धातोः 'हलश्च' इति संज्ञायां घञ्। वाणः वाङ्नाम निघं० १.२१. (वाणः) शततन्त्रीको भवति तां० ५.६.१३. अन्तो वै वाणः (वाद्या नाम) तां० ५.६.१२. वाणः शततन्तुर्भवति तै० सं० ७.५.९.२.]

वाणिजम् वणिगपत्यम् ३०.१७. **वाणिजाय**=वणिजां व्यवहारेषु कुशलाय (पुरुषाय) १६.१९. [वणिज्-प्राति० अपत्यार्थे कुशलार्थे वाऽण्। वणिक् पण्यं नेनेक्ति नि० २.१७.]

वाणी वाक् ७.३१.८. वेदवाक् ६.६३.६. **वाणीः**=सप्तद्वारावकीर्णा वाचः ३.७.१. वेदचतुष्टयीः १.७.१. वेदवाचः १.१६४.२४. [वण शब्दार्थे (भ्वा०) धातोः 'इण् अजादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वा०सूत्रेण इञ्। ततः स्त्रियां 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष्। वाणी वाङ्नाम निघं० १.११. वाणीः=वहनाद् वाचो वा वदनात् नि० ६.२.]

वाणी उपदेशकाविव, प्र०—इञ् वपादिभ्यः इति शब्दार्थाद् वणधातोरिञ् १.११९.५. [वाणीति व्याख्यातम्]

वाणीची वाक् ५.७५.४. [वाणीची वाङ्नाम नि० १.११.]

वात इव वायुवत् २९.२२. [वात-इवपदयोः समासः]

वातचोदितः वायुना प्राणेन वा प्रेरितः (विद्वज्जनः) १.१४१.७. [वात-चोदितपदयोः समासः। चोदितः=चुद सञ्चोदने (चुरा०) धातोः क्तः]

वातजूतः वायूनां वेगं प्राप्तः (अग्निः) १.६५.४. वायुना प्राप्तवेगः (अ०—सूर्यः) ३३.३०. वातेन वायुना जूतः प्राप्तवेगः (अग्निः=विद्युद्वद्वर्त्तमानो जीवः) १.५८.४. **वातजूताः**=वात इव जूतं शीघ्रगमनं येषान्ते (कृषीवलाः) १.१४०.४. वायुना प्राप्ततेजस्काः, भा०—येषां वायुः प्रदीपकस्ते (अग्नयः=पावकाः) ३३.२. वायुप्रेरितास्त्रसरेण्वादिपदार्थाः ४.३३.१. [वात-जूतपदयोः समासः। जूतः=जवति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः क्तः]

वातजूता वायुवद्वेगौ (अश्वौ) १.९४.१०. [वात-जूतपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

वातजूतासः वायुरिव वेगवन्तः (भामासः=क्रोधाः) ६.६.३. [वातजूत इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

वातत्विषः वातस्य त्विट् कान्तिर्येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५७.४. वातविद्यया त्विषः कान्तयो येषान्ते (मरुतः) ५.५.४३. [वात-त्विष्पदयोः समासः। त्विष्=त्विष दीप्तौ (भ्वा०) धातोः संपदादित्वात् क्विप्]

वातप्रमियः वातेन प्रमातुं ज्ञातुं योग्याः (तरङ्गाः) १७.९५. या वातं वायुं प्रमिन्वन्ति ताः (नदीप्रवाहाः) ४.५८.७. [वातोपपदे प्रोपसृष्टान् माङ् माने (जु०) धातोः क्विप्। धातोरीकारादेशश्छान्दसः। अथवा 'वातप्रमीः' उ० ४.१. सूत्रेण वातोपपदे डुमिञ् प्रक्षेपणे (क्र्या०) धातोर्निपातनाद् रूपसिद्धिः]

वातम् वायुम् २५.२. प्राप्तम् (रेतः=वीर्यम्) १९.८४. **वातस्य**=प्राणस्य १.१८१.१२. **वातः**=वाति गच्छतीति (वायुः) १८.४१. पवनः १४.२०. गन्ता (भृत्यः) १५.६२. बाह्यो वायुः ८.५८. मध्यो वायुः १.१६१.१४. **वातान्**=वायुवद् वेगयुक्तान् (अरातीः=शत्रून्) ४.२७.२.

वाताय=विज्ञानाय ४.३.६. यो वाति तस्मै (वायवे) २२.२६. वायोः शुद्धये सुखवृद्धये वा १.६. गृहस्थाय वायवे ओषधिस्थवायुविज्ञानाय, वायुवेगगतिविज्ञानाय, वायुविद्यायै वायोः शोधनाय वा, उदानाय, प्राणशक्तिविज्ञानाय ३८.७. **वाते**=विज्ञातव्ये व्यवहारे, प्र०—वात इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.४, ८.२१. वायाविव ६.६. [वातः=वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोः क्तः। 'निर्वाणोऽवाते' इति प्रतिषेधान् निष्ठानत्वं न भवति अथवा 'हसिमृ०' उ० ३.८६. सूत्रेण तन्। वातः पदनाम निघं० ५.४. वातः=वातीति सतः नि० १०.३४. वातो हि वायुः श० ८.७.३.१२. यो वै प्राणः स वातः श० ५.२.४.६. प्राणो वै वातः श० १.१.२.१४. एष (वातः) हीदं सर्वं व्यचः करोति श० ६.४.१.१०. न वै वातात् किञ्चनाशीयोऽस्ति न मनसः किञ्चनाशीयोऽस्ति तस्मादाह वाता वा मनो वेति श० ५.१.४.८. वातो वै यज्ञः श० ३.१.३.२६. युक्तो वातोऽन्तरिक्षेण ते सह तां० १.२.१. वाग् वातस्य पत्नी गो० उ० २.६. तस्मादेषोऽर्वाचीनमेव वातः पवते श० ८.७.३.६. मनसा संकल्पयति तत् प्राणमभिपद्यते, प्राणो वातं वातो देवेभ्य आचष्टे श० ३.४.२.६. वातो हि वायुः श० ८.७.३.१२.]

वातयामसि वात इवं प्रेरयेम १.१२८.२. [वात-प्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' वा० सूत्रेण णिजन्तालट्। 'इदन्तो मसि' इतीदन्तत्वम्। वात सुखसेवनयोः (चुरा०) धातोर्वा लट्]

वातरंहसः वातस्य रंहो गमनमिव गमनं येषान्ते (विद्युदादयः) १.१८.२. **वातरंहाः**=वात इव रंहो गमनं यस्य सः (रथः) १.११८.१. वायुवद्वेगवन्तोऽग्न्यादयः ५.७७.३. [वात-रंहस्पदयोः समासः। रंहस्=रहि गतौ (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्। वातरंहाः क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

वातस्वनसः वातस्य स्वनः शब्द इव शब्दो येषान्ते (गृहस्थाः) ७.५६.३. [वात-स्वनस्पदयोः समासः। स्वनस्=स्वन शब्दे (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

वातापे वात इव सर्वान् पदार्थान् व्याप्नोति यस्तत्-सम्बुद्धौ (परमेश्वर) १.१८७.८. वातवत्सर्वव्यापिन् (ईश्वर) १.१८७.६. [वातोपपदे आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोरौणा० इन्। ततः सम्बुद्धिः। इन्द्र उ वै वातापिः स हि वातमाप्त्वा शरीराण्यर्हन् प्रति प्रैति कौ० २७.४. वातापयो हवनश्रुतः मै० १.६.१.]

वाताप्यम् वातेन शुद्धेन वायुनाऽऽप्तुं योग्यम् (गोरभसं=गवां महत्त्वम्) १.१२१.८, [वात-आप्यपदयोः समासः। आप्यम्=आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्ण्यत्। वाताप्यं पदनाम निघं ४.३. वाताप्यमुदकं भवति वात एतदाप्याययति नि० ६.२८.]

वाति गच्छति ६.१५. **वातु**=प्रापयतु १.८६.४. गच्छतु ७.३५.४. **वान्ति**=गच्छन्ति ५.८३.४. [वा गति-गन्धनयोः (अदा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोडपि। वाति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

वात्याय वायुविद्यायां भवाय (जनाय) १६.३६. [वातप्राति० भवार्थे यत्]

वादिष्टम् वदतम् ५.१७. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अटोऽभावश्छान्दसः]

वानस्पत्यः वनस्पतेर्विकारो रसमयः (अद्रिः=मेघः) १.१४. यो वनस्पतेर्विकारस्तं हविः संस्कारार्थम् (मूसलादिः) १.१५. [वनस्पतिप्राति० विकारेऽर्थे 'दित्यदित्यादित्यपत्युत्तर-पदाण्ण्यः' अ० ४.१.८५. सूत्रेण ण्यः]

वापुषः वपुषि भवः (पृक्षः=अन्नम्) ५.७५.४. [वपुष्प्राति० भवार्थेऽण्। वपुष् रूपनाम निघं० ३.७. उदकनाम निघं० १.१२.]

वामजाताः वामेषु प्रशस्येषु कर्मसु वा जाताः प्रसिद्धाः (गात्रादयः), प्र०—वाम इति प्रशस्यनाम निघं० ३.८, १२.१०८. [वाम-जातपदयोः समासः। वामः प्रशस्यनाम निघं० ३.८.]

वामदेवस्य सुरूपयुक्तस्य विदुषः ४.१६.१८. [वाम-देवपदयोः समासः। वामः प्रशस्यनाम निघं० ३.८.]

वामदेव्यम् वामदेवेन दृष्टं विज्ञातं विज्ञापितं वा (साम=तृतीयो वेदः) १२.४. [वामदेवप्राति० दृष्टं सामेत्य-स्मिन्नर्थे 'वामदेवाड् ड्यड्ड्यौ' अ० ४.२.६. सूत्रेण ड्यत्। तौ (मित्रावरुणौ) अब्रूतां वामं मर्या इदं देवेष्व-जानीति तस्माद् वामदेव्यम् (साम) तां० ७.६.१. पिता वै वामदेव्यं पुत्राः पृष्ठानि तां० ७.६.१. वामदेव्यं वै साम्नां सत् तां० ४.८.१०. सत् वै वामदेव्यं साम्नाम् तां० १५.१२.२. वामदेव्यमात्मा (महाव्रतस्य) तां० १६.११.११. शान्तिर्वै वामदेव्यम् तै० १.१.८.२. शान्तिर्वै भेषजं वामदेव्यम् कौ० २७.२. सर्वदेवत्यं वै वामदेव्यम् तां० ७.८.२. प्राजापत्यं वै वामदेव्यम् तां० ४.८.१५. प्रजापतिर्वै वामदेव्यम् श० १३.३.४. प्रजननं वै वामदेव्यम् श० ५.१.३.१२. वामदेव्यं मैत्रावरुणसाम भवति श०

१.३.३.४. प्राणो वै वामदेव्यम् श० ६.१.२.३८. पशवो वै वामदेव्यम् तां० ४.८.१५. इदं वा वामदेव्यं यजमानलोकोऽमृतलोकः स्वर्गो लोकः ऐ० ३.४६. उपहूतं वामदेव्यं सहान्तरिक्षेण श० १.८.१.१६. अन्तरिक्षं वै वामदेव्यम् तै० १.१.८.२. तां० १५.१२.५. अन्तरिक्षं वामदेव्यम् श० २.१.५.७.]

वामनम् ह्रस्वाङ्गम् ३०.१०. **वामनः**=वक्राऽङ्गः (पशुः) २४.७. **वामनाय**=वामं प्रशस्तं विज्ञानं विद्यते यस्य तस्मै पुरुषाय, प्र०—वाम इति प्रशस्यनाम निघं० ३.८. अत्र 'पामादित्वान्नः' अ०—५.२.११०, १६.३०. **वामनाः**=वक्राऽवयवाः (पशवः पक्षिणो वा) २४.८. [वाम प्रशस्यनाम निघं० ३.८. ततो मत्वर्थे 'लोमादिपामादि०' अ० ५.२.१००. सूत्रेण नः। वामनो ह विष्णुरास श० १.२.५.५. स हि वैष्णवो यद् वामनः (गौः) श० ५.२.५.४. वैष्णवो वामनः (पशुः) श० १३.२.२.६. वैष्णवं वामनम् (पशुम्) आलभन्ते तै० १.२.५.१.]

वामनीतिः वामा प्रशंसिता नीतिर्यस्य सः (इन्द्रः= राजा) ६.४७.७. [वामा-नीतिपदयोः समासः। वामा= वामप्रशस्यनाम निघं० ३.८. ततः स्त्रियां टाप्]

वामभाजः प्रशस्यकर्मसेविनः, भा०—माङ्गलिकाः सन्तः (गृहपतयः) ८.६. ये वामं भजन्ति ते (प्रजाजनाः) ६.७१.६. प्रशस्तकर्मसेविनश्श्रेष्ठभोगा वा (सखायः= सुहृज्जनाः(३.५५.२२. [वामोपपदे भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'भजो ण्विः' अ० ३.२.६२. सूत्रेण ण्विः। वामः प्रशस्यनाम निघं० ३.८.]

वामम् वमत्युद्गिरति येन तम् (भा०—वायुम्), प्र०— 'टुवम उद्गिरणे' अस्माद्धातोः 'हलश्च' इति घञ् उपधावृद्धिनिषेवे प्राप्ते 'अनाचमिकमिवमीनामिति वक्तव्यम्' अ० ७.३.३४. इति वार्त्तिकेन वृद्धिः १.३३.३. प्रशस्यं गृहाश्रमं धर्म्मम् ८.५. प्रशस्त-वस्तु ४.५.१३. अत्युत्कृष्टम् (सुखम्) ६.७१.६. श्रेष्ठं विज्ञानम्, भजनीयं धनम्, प्राप्तव्यम् (न्यायम्) ४.३०.२४. प्रशस्तं गुणकर्मसमूहम् ४.५. सुरूपम् (प्रकाशात्मानम्) १.१४१.१२. अत्युत्कृष्टम् प्रशंसनीयम्, प्रशस्यसुखम् (भा०—सुखम्) ६.७१.६. **वामस्य**=शिल्पगुणैः प्रशस्तस्य (विदुषो जनस्य) १.१६४.१. **वामानि**=वननीयानि सम्भजनीयानि धनानि ५.८२.६. **वामेन**=प्रशंसितेन प्रकाशेन १.४८.१. [टुवम उद्गिरणे (भ्वा०) धातोर्'हलश्चे' ति घञ्। वामः प्रशस्यनाम निघं० ३.८. वामम्=वननीयम् नि० ६.२२. वामम् वसूनि वननीयानि नि० ११.४६. प्राणा वै वामम् श० ७.४.२.३५. वामं हि पशवः ऐ० ५.६. यं वै गां यमश्वं यं पुरुषं प्रशंसन्ति वाम इति तं प्रशंसन्ति तां० १३.३.१६.]

वामं वामम् प्रशस्यं प्रशस्यम् (सत्यमुपदेशम्) ४.३०.२४. [वामम् पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। वामः प्रशस्यनाम निघं० ३.८.]

वामा प्रशस्ता वाक् १.४०.६. [वामः प्रशस्यनाम निघं० ३.८. ततः स्त्रियां टाप्]

वामा प्रशस्यानि कर्म्माणि ६.१.६. [वामः प्रशस्यनाम निघं० ३.८. ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

वामी बहुप्रशस्तकर्म्मा (आप्तो राजा) ६.४८.२०. **वामीः**=प्रशस्ताः (इषः=अन्नाद्याः) ३.५३.१. [वामः प्रशस्यनाम निघं० ३.८. ततो भूम्न्यर्थे (मत्वर्थे) इनिः]

वायतस्य विज्ञानवतः (उत्तमजनस्य) ७.३३.२.

वायवः सर्वक्रियाप्राप्तिहेतवः स्पर्शगुणा भौतिकाः प्राणादयः, अ०—प्राणाऽन्तःकरणेन्द्रियाणि, प्र०—वायुरिति पदनाम निघं० ५.४. अनेन प्राप्तिसाधका वायवो गृह्यन्ते वा गतिगन्धनयोः इत्यस्मात् 'कृवापा०' उ० १.१. अनेनाऽप्युक्तार्थो गृह्यते १.१. विज्ञानबलयुक्ताः (जनाः) २.११.१०. **वायवे**=वायुवद् गत्यादिसिद्धये यद्वा वाति प्रापयति योगबलेन व्यवहारानिति वायुर्योगविचक्षणस्तस्मै तादृशसम्पन्नाय ७.८. बलवते (इन्द्राय=पुरुषाय) ५.५१.४. वायुवद्बलाय ५.५१.७. प्राप्तुं योग्याय (इन्द्राय=धनाय) १.१४२.१२. वायुस्पर्शाय ३०.२१. वायुविद्यायै २७.२३. पवनाय २२.५. **वायुना**=स्पर्शवता गतिमता पवनेन सह १.१४.१०. **वायुम्**=प्राणादिलक्षणम् ३३.५५. वातम् ३३.१३. प्राणादिकम् ६.४.७. वेगवन्तम् (पवनम्) ५.४१.६. **वायुः**=यो वाति सः (पवनः) ६.४.५. पवन इव बलवान् (परमात्मेव राजा) ३.४९.४. गमनागमनशीलः पवनः १.२४. विज्ञानवान् अनन्तबल (ईश्वर) आर्याभि० २.५४, ३२.१५. प्राण इव प्रियः (अधिपतिः=स्वामीश्वरः) १४.१४. सूक्ष्मः पवनः, स्थूलः पवनः १.१३४.३. बलिष्ठो बलप्रदः (ईश्वरः) ३२.१५. अनन्तबलवत्वसर्वधात्तृत्वाभ्यां परमेश्वरो वायुशब्दवाच्यः (ईश्वरः) ३२.१. धनञ्जयादिस्वरूपः पवनः २०.२६. सब जगत् का धारण करने वाला, अनन्त बलवान्, प्राणों से भी प्रियस्वरूप (ईश्वर) आर्याभि० २.४, ३२.१. **वायो**=वाति जानाति सूचयति सदसत्पदार्थानिति वा वायुस्तत्सम्बुद्धौ, अ०—हे गुणग्राहक सदसद्विवेचनशील शिष्य ६.१६. ज्ञानस्वरूपेश्वर १.२.५.

वायुरिव कमनीय (विद्वन्) १.१३४.२. परमबलयुक्त (विद्वन् वैद्यजन) ५.५.१५. वायुरिव वर्त्तमान (योगिन्) ७.७. वेदवाणी-प्रकाशकेश्वर १.२.३. अनन्तबलेश्वर गमनशीलो विमानादिशिल्पविद्यानिमित्त पवन १.२.२. दुष्टानां हिंसक (सेनेश) १.१३५.४. भा०—वायुरिव सर्वशोधक सर्वत्र गन्तः सर्वप्रियेश्वर २७.२९. बलिष्ठ राजन् ४.४८.४. अनन्तबल सर्वप्राणाऽन्तर्यामिन्नीश्वर तथा सर्वमूर्त्तद्रव्याऽधारो जीवनहेतुभौतिको वा, प्र०—प्र वाञ्जे सुप्रया बर्हिरेषामा० यजु० ३३.४४. अस्योपरि निरुक्तव्याख्यानरीत्येश्वरभौतिकौ पुष्टिकर्त्तारौ नियन्तारौ द्वावर्थौ वायुशब्देन गृह्येते । तद्यथा—'अथातो मध्यस्थाना देवतास्तासां वायुः प्रथमागामी भवति, वायोर्वातेर्वेत्तेर्वा स्याद् गतिकर्मण एतेरिति स्थौलाष्ठीविरनर्थको वकारस्तस्यैषा भवति (वायवा याहि०) वायवा याहि दर्शनीयेमे सोमा अरङ्कृता अलङ्कृतास्तेषां पिब शृणु नो हानमिति' निरु० १०.१.२. अन्तरिक्षमध्ये ये पदार्थाः सन्ति तेषां मध्ये वायुः प्रथमगाम्यस्ति । वाति सोऽयं वायुः सर्वगतत्वादीश्वरो गतिमत्त्वाद्भौतिकोऽपि गृह्यते । वेति सर्वं जगत् स वायुः परमेश्वरोऽस्ति, तस्य सर्वज्ञत्वात् । मनुष्यो येन वायुना तन्नियमेन प्राणायामेन वा परमेश्वरं शिल्पविद्यामयं यज्ञं वा वेत्ति जानाति इत्यर्थेन भौतिको वायुर्गृह्यते । एवमेवैति प्राप्नोति चराचरं जगदित्यर्थेन परमेश्वरस्यैव ग्रहणम्, तथा एति=प्राप्नोति सर्वेषां लोकानां परिधीनित्यर्थेन भौतिकस्यापि कुतः ? अन्तर्यामिरूपेणेश्वरस्य मध्यस्थत्वात्प्राणवायुरूपेण भौतिकस्यापि । मध्यस्थत्वादेतद्द्वयार्थस्य वाचिका वायवा याहीत्यृक् प्रवृत्ताऽस्तीति विज्ञेयम् । 'वायुः सोमस्य रक्षिता०' निरु० ११.५. वायुः सोमस्य सुतस्योत्पन्नस्याऽस्य जगतो रक्षकत्वादीश्वरोऽत्र गृह्यते । कस्मात् ? सर्वेण जगता सह साहचर्य्येण व्याप्तत्वात् सोमवल्ल्यादेरोषगधिणस्य रसहरगणात्तथा समुद्रादेर्जलग्रहणाच्च भौतिको वायुरप्यत्र गृह्यते ।

"वायुर्वा अग्निः सुषमिद्वायुर्हि स्वयमात्मानं समिन्धे०···हव्यं वहति" ऐत० २.३४. वायुर्भौतिकोऽग्निदीपनस्य सुषमिदिति ग्राह्यः । वायुसंज्ञोऽहमीश्वरः स्वयमात्मानं यदिदं किञ्चिज्जगद्वर्त्तते तदिदं सर्वं स्वयं समिन्धे=प्रकाशयामि तथा स एवान्तरिक्षलोके भौतिकमिमं वायुमायातयति=विस्तारयति स एव वायुर्भौतिको वा यज्ञानां प्रापकोऽस्तीत्यत्र वायुशब्देनेश्वरश्च । तथा वायुर्वै तूर्णिरित्यादिना भौतिको गृह्यत इति १.२.१. [वायुः=वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोः 'कृवापाजि०' उ० १.१. सूत्रेण उः । वायुः पदनाम निघं० ५.४. वायुर्वातेर्वेत्तेर्वा स्यात् गतिकर्मणः, एतेरिति स्थौलाष्ठीविः अनर्थको वकारः नि० १०.१. वायुः सोमस्य रक्षिता, वायुमस्य रक्षितारमाह साहचर्याद् रसहरणाद्वा नि० ११.५. अयं वै वायुर्योऽयं पवते श० २.६.३.७. अयं वै वायुर्योऽयं पवत ऽएष वा इदं सर्वं विविनक्ति यदिदं किञ्च विविच्यते श० १.१.४.२२. वातो हि वायुः श० ८.७.३.१२. वायुर्वातिहोमाः श० ९.४.२.१. वायुर्वा उशन् तां० ७.५.१९. वायुरनुवत्सरः तां० १७.१३.१७. तै० १.४.१०.१. वायुर्वै निकायश्छन्दः (यजु० १५.५.) श० ८.५.२.५. अयं वा ऽअवस्युरशिमिदो यो ऽयं (वायुः) पवते श० १४.२.२.५. वायुर्वै देवः जै० उ० ३.४.८. अयं वै ब्रह्म योऽयं (वायुः) पवते ऐ० ८.२८. अयं वै बृहस्पतिः (यजु० ३८.८.) योऽयं (वायुः) पवते श० १४.२.२.१०. अयं वै पवित्रं (यजु० १.१२.) योऽयं (वायुः) पवते श० १.१.३.२. पवित्रं वै वायुः तै० ३.२.५.११. अयं वायुः पवमानः श० २.५.१.५. (वायुः) यत् पश्चाद् वाति । पवमान एव भूत्वा पश्चाद् वाति तै० २.३.९.६. वायुर्ह्येव प्रजापतिस्तदुक्तमृषिणा पवमानः प्रजापतिरिति ऐ० ४.२६. स योऽयं (वायुः) पवते स एष एव प्रजापतिः जै० उ० १.३४.३. स एष वायुः प्रजापतिरस्मिँस्त्रैष्टुभेऽन्तरिक्षे समन्तं पर्यक्नः श० ८.३.४.१५. एतद्वै प्रजापतेः प्रत्यक्षं रूपं यद् वायुः कौ० १९.२. अर्धं ह प्रजापतेर्वायुरर्धं प्रजापतिः श० ६.२.२.११. यो वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः श० ४.१.३.१९. अयं वै वायुर्मित्रो (यजु० ११.६४.) यो ऽयं पवते श० ६.५.४.१४. अयं वै यमो (यजुः० ३८.९. यो ऽयं (वायुः) पवते श० १४.२.२.११. वायुर्वै यन्ता (ऋ० ३.१३.३.) वायुना हीदं यतमन्तरिक्षं न समृच्छति ऐ० २.४१. अयं वै वायुर्मातरिश्वा यो ऽयं पवते श० ६.४.३.४. (वायुः) यद् दक्षिणतो वाति मातरिश्वैव भूत्वा दक्षिणतो वाति तै० २.३.९.४. वायुर्वै जातवेदा वायुर्हीदं सर्वं करोति यदिदं किंच ऐ० २.३४. वायुर्वा अग्नेः स्वो महिमा कौ० ३.३. तेजो वै वायुः तै० ३.२.९.१. अयं वै पूषा (यजु० ३८.३.) योऽयं (वायुः) पवता ऽएषा हीदं सर्वं पुष्यति श० १४.२.१.९. यो वा ऽयं पवता ऽएष द्युतानो मारुतः श० ३.६.१.१६. यो वा ऽअयं (वायुः) पवत ऽएष तनूनपाच्छाक्वरः सोऽयं प्रजानामुपद्रष्टा प्रविष्टस्ताविमौ प्राणोदानौ श० ३.४.२.५. यो वा ऽअयं (वायुः) पवत ऽएष तनूनप्ता शाक्वरः श० ३.४.२.११. वायुर्वै तार्क्ष्यः कौ० ३०.५. अयं वै तार्क्ष्यो योऽयं (वायुः) पवते एष स्वर्गस्य लोकस्याभिवोढा ऐ० ४.२०. एष (तार्क्ष्यः=वायुः) वै सहावांस्तरुता (ऋ० १०.१७८.१.) एष

हीमाँल्लोकान्तद्व्यस्तरति ऐ॰ ४.२०. वायुर्वाऽआशुस्त्रिवृत्स एष त्रिषु लोकेषु वर्त्तते श॰ ८.४.१.६. वायुर्वै देवानामाशुः सारसारितमः तै॰ ३.८.७.१. वायुर्वै देवानामाशिष्ठः श॰ १३.१.२.७. (वायो) त्वं वै नः (देवानाम्) आशिष्ठोऽसि श॰ ४.१.३.३. एष (वायुः) हि सर्वेषां भूतानामाशिष्ठः श॰ ८.४.१.६. वायुर्वै तूर्णिर्हव्यवाड् वायुर्देवेभ्यो हव्यं वहति ऐ॰ २.३४. वायुर्वै तूर्णिर् वायुर्हीदं सर्वं सद्यस्तरति यदिदं किं च ऐ॰ २.३४. वायुः सप्तिः तै॰ १.३.६.४. वायुर्वै चरन् तै॰ ३.९.४.१. अयं वै सरिरः (यजु॰ ३८.७.) योऽयं (वायुः) पवत एतस्माद्वै सरिरात् सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि सहेरते श॰ १४.२.२.३. अयं वै समुद्रः (यजु॰ ३८.७.) योऽयं (वायुः) पवतऽएतस्माद्वै समुद्रात्सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि समुद्द्रवन्ति श॰ १४.२.२.२. य एवायं (वायुः) पवत एष एव स समुद्र एतं हि संद्रवन्तं सर्वाणि भूतान्यनुसंद्रवन्ति जै॰ उ॰ १.२५.४. अयं वै साधुः (यजु॰ ३७.१०. योऽयं (वायुः) पवतऽएष हीमाँल्लोकान्त्सिद्धोऽनुपवते श॰ १४.१.२.२३. वायुरेव सविता गो॰ पू॰ १.३३. जै॰ उ॰ ४.२७.५. अयं वै सविता (यजु॰ ३८.८.) योऽयं (वायुः) पवते श॰ ११.२.२.६. (वायुः) यदुत्तरतो वाति। सवितैव भूत्वोत्तरतो वाति तै॰ २.३.९.७ तस्मादुत्तरतः पश्चादयं भूयिष्ठं पवमानः (=वायुः) पवते सवितृप्रसूतो ह्येष एतत् पवते ऐ॰ १.७. वायुर्वै वसुरन्तरिक्षसत् (यजु॰ १२.१४) श॰ ६.७.३.११. अयमेव वत्सो योऽयं (वायुः) पवते श॰ १२.४.१.११ योऽयं वायुः पवतऽएष सोमः श॰ ७.३.१ १. एष (वायुः) वै सोमस्योद्गीथो यत्पवते तां॰ ६.६.१८. अयं वै वायुर्विश्वकर्मा (यजु॰ १३.४४.) योऽयं पवतऽएष हीदं सर्वं करोति श॰ ८.१.१.७. एष वै पृथग्वर्त्मा वैश्वानरः (यद् वायुः) श॰ १०.६.१.७. प्राणस्त्वाऽ एष वैश्वानरस्य (यद् वायुः) श॰ १०.६.१.७. वायुर्वै मध्यमा विश्वज्योतिः (इष्टका) श॰ ८.३.२.१. वायुर्वै विकर्णी (इष्टका) श॰ ८.७.३.९. तस्माद् वायुरेव साम जै॰ उ॰ ३.१.१२. अयमेव स्रुवो योऽयं (वायुः) पवते श॰ १.३.२.५. वायुर्वै स्तोता तै॰ ३.९.४.४. श॰ १३.२.६.२. वायुरेव हिंकारः जै॰ उ॰ १.३६.९. वायुरेकपात्तस्याकापादः गो॰ पू॰ २.८. वायुर्धिष्ण्या जै॰ उ॰ ३.४.२. वायुरापश्चन्द्रमा इत्येते भृगवः गो॰ पू॰ २.८. यस्स प्राणो वायुस्सः। जै॰ उ॰ १.२९.१. प्राणा उ वा वायुः श॰ ८.४.१.८. वायुर्वै प्राणः कौ॰ ८.४. जै॰ उ॰ ४.२२.११. वायुर्हि प्राणः ऐ॰ २.२६. प्राणो हि वायुः तां॰ ४.६.८. प्राणो वै वायुः कौ॰ ५.८. श॰ ४.४.१.१५. गो॰ उ॰ १.२६. यः स प्राणोऽयमेव स वायुर्योऽयं पवते श॰ १०.३.३.७. प्राणो वै वायव्या (ऋक्) कौ॰ १६.३.४. वायुर्मे प्राणे श्रितः तै॰ ३.१०.८.४. प्राणापानौ मे श्रुतम्मे। तन्मे त्वयि (वायौ) जै॰ उ॰ ३.२१.१०. स (वायुः) यत्पुरस्ताद् वाति। प्राण एव भूत्वा पुरस्ताद् वाति। तस्मात् पुरस्ताद् वान्तं सर्वाः प्रजाः प्रतिनन्दन्ति तै॰ २.३.९.४. वायुर्वै प्रणीर्यज्ञानां यदा हि प्राणित्यथ यज्ञोऽस्याग्निहोत्रम् ऐ॰ २.३४. वायुप्रणेत्रा वै पशवः श॰ ४.४.१.१५. यत्पशुपतिर्वायुस्तेन कौ॰ ६.४. ते (पशवः) अब्रुवन् वायुर्वा अस्माकमीशे जै॰ उ॰ १.५२.४. एताभिः (एकोनविंशतिभी रात्रिभिः) वायुरारण्यानां पशूनामाधिपत्यमाश्नुत तां॰ २३.१३.२. वायुर्वाऽउग्रः श॰ ६.१.३.१३. वायुर्वाव पुरोहितः ऐ॰ ८.२७. वायुर्वा उपश्रोता गो॰ उ॰ २.१९. तै॰ ३.७.५.४. वायुरेव महः गो॰ पू॰ ५.१५. वायुर्महः श॰ १२.३.४.८. मनो ह वायुर्भूत्वा दक्षिणतस्तस्थौ श॰ ८.१.१.७. इमे वै (त्रयो) लोका पूरयमेव पुरुषो योऽयं (वायुः) पवते सोऽस्यां पुरि शेते तस्मात् पुरुषः श॰ १३.६.२.१. अयं वै यज्ञो योऽयं (वायुः) पवते ऐ॰ ५.३३. श॰ १.९.२.२८. अयं वाव यज्ञो योऽयं (वायुः) पवते जै॰ उ॰ ३.१६.१. अयमु वै यः (वायुः) पवते स यज्ञः गो॰ पू॰ ३.२. वाग्वै वायुः तै॰ १.८.८.१. तां॰ १८.८.७. वायुर्वै रेतसां विकर्त्ता श॰ १३.३.८.१. वायुर्वै पयसः प्रदापयिता तै॰ ३.७.१.५. वायुर्वै सर्वेषां देवानामात्मा श॰ १४.३.२.७. सर्वेषामु हैष देवानामात्मा यद् वायुः श॰ ९.१.२.३८. एका ह वावे कृत्स्ना देवताऽर्धदेवता एवान्याः। अयमेव (वायुः) योऽयम्पवते जै॰ उ॰ ३.१.१. द्यौरसि वायुश्रिता तै॰ ३.११.१.१०. वायुरस्यन्तरिक्षे श्रितः। दिवः प्रतिष्ठा तै॰ ३.११.१.९. वायुर्वै नभसस्पतिः गो॰ उ॰ ४.९. वायुर्वा अन्तरिक्षस्याध्यक्षः तै॰ ३.२.१.३. (प्रजापतिः) भुव इत्येव यजुर्वेदस्य रसमादत्त। तदिदमन्तरिक्षमभवत्। तस्य यो रसः प्राणेदत् स वायुरभवद्रसस्य रसः जै॰ उ॰ १.१.४. वायुर्दिशां यथागर्भः श॰ १४.९.४.२१. वायुरेव यजुः श॰ १०.३.५.२. वायोर्यजुर्वेदः (अजायत) श॰ ११.५.८.३. यजुषां वायुर्दैवतं तदेव ज्योतिस्त्रैष्टुभं छन्दोऽन्तरिक्षं स्थानम् गो॰ पू॰ १.२९. त्रैष्टुभो हि वायुः श॰ ८.७.३.१२. वायुरध्वर्युः गो॰ पू॰ १.१३. वायुर्वा अध्वर्य्युः। गो॰ पू॰ २.२४. वायुर्वा एतं (आदित्यं) देवतानामानशे तां॰ ४.६.७. तदसावादित्य इमांल्लोकान्त्सूत्रे समावयते तद् यत् तत् सूत्रवायुः सः श॰ ८.७.३.१०. एष वाऽपां रसो योऽयं पवते स

एष (वायुः) सूर्ये समाहितः सूर्यात् पवते श० ५.१.२.७. अयं वै वायुर्योऽयं पवतऽएष वाऽइदं सर्वं प्रप्याययति यदिदं किंच वर्षत्येष वाऽएतासां (गवां) प्रप्याययिता श० १.७.१.३. अयं वै वर्षस्येष्टे योऽयं (वायुः) पवते श० १.८.३.१२. तस्माद् यां दिशं वायुरेति तां दिशं वृष्टिरन्वेति श० ८.२.३.५. यस्माद् गायत्रमध्यो द्वितीयः (त्रिरात्रः) तस्मात् तिर्यङ् वायुः पवते तां० १०.५.२. तस्मादेष (वायुः) दक्षिणैव भूयिष्ठं वाति श० ८.१.१.७. शुक्लो हि वायुः श० ६.२.२.७. तथेति वायुः पवते जै० उ० ३.६.२. अनिरुक्तो हि वायुः श० ८.७.३.१२. शान्तिर्हि वायुः तां० ४.६.६. वायोर्निष्टचा तै० १.५.१.३. (वायोः) मेनका च सहजन्या (यजु० १५.१६) चाप्सरसाविति दिक् चोपदिशा चेति ह स्माह माहित्थिरिति तु ते द्यावापृथिवी श० ८.६.१.१७. तस्य (वायोः) रथस्वनश्च रथेचित्रश्च (यजु० १५.१५) सेनानीग्रामण्याविति ग्रैष्मौ तावृतू श० ८.६.१.१७. तम् (वायुं) एताः पञ्च देवता परिम्रियन्ते विद्युद् वृष्टिश्चन्द्रमा आदित्योऽग्निः ऐ० ८.२८. सोऽयं (वायुः) पुरुषेऽन्तः प्रविष्टस्त्रेधा विहितः प्राण उदानो व्यान इति श० ३.१.२.२०]

वायव्यः वायौ भवः (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. वायुदेवताकः (श्वेतः पशुः) २४.१. **वायव्यान्**=वायुवद् गुणान् (पशून्) ३१.६. वायुसहचरितान् पक्षिणः, ऋ० भू० १२३, ३१.६. **वायव्याः**=वायुवद् दिव्यगुणाः (पशवः) २४.१९ **वायव्यैः**=वायुषु भवैर्वायुदेवताकैर्वा (पदार्थैः) १९.२७. वायुषु साधुभिर्मार्गैः १९.८५. [वायुरिति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत् । साध्वर्थे वा यत् । वायुप्राति० वा 'सास्य देवता' इत्यर्थे 'वाय्वृतुपित्रुषसो यत्' अ० ४.२.३१. सूत्रेण यत्]

वायव्यानि वायुषु भवानि वायुदेवताकानि वा (कर्माणि) १९.२७. वायुषु साधूनि (वस्तूनि) १८.२१. [वायव्यमिति व्याख्यातम् । ततो नपुंसके प्रथमाबहुवचने रूपम्]

वायसम् अतिगन्तारम् (सूर्यम्), प्र०—वा गतिगन्धनयोः इत्यतोऽसुन् युगागमश्चोणादिः १.१६४.५२. [वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोरौणा० असुन् । बहुलवचनाद् युगागमः]

वायुकेशान् वायुरिव केशाः प्रकाशा येषान्तान् (आप्तान् विदुषः) ३.३८.६. वायुवद् द्रुतप्रचारेण विदितसर्वव्यवहारान्, केशाः सूर्यरश्मयस्तद्वत्सत्यन्यायप्रकाशकान् (सभासदः) ऋ० भू० २१६. [वायु-केशपदयोः समासः । केशा रश्मयः । काशनाद्वा प्रकाशनाद्वा नि० १२.२५.]

वाय्ये ज्ञापनीये (साध्वि स्त्रि) ५.७९.२. तन्तुसदृशे सन्ताननीये विस्तारणीये सन्ततिरूपे (स्त्रि) ५.७९.१. गमनीये (दुहितः=विदुषि स्त्रि) ५.७९.३. [वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोर्ण्यत् । अथवा वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोर्ण्यत्]

वारणम् वरणीयम् (अन्नम्) ६.४.५. **वारणः**=सर्वदोषनिवारकः (विद्वज्जनः) १.१४०.२. **वारणेषु**=वारयन्ति यैर्युद्धैस्तेषु वा वारयन्ति ये चोरदस्युव्याघ्रादयो येषु तेषु ३.३२. [वृञ् वरणे (स्वा०) वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोर्वा णिजन्ताल्ल्युट् । अन्यत्र कर्त्तरि युच् औणादिकः । 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट् वा]

वारम् वर्त्तुमर्हम् (दुग्धम्) १.१५१.५. वरणीयम् (हव्यम्) ५.१६.२. **वारः**=वरीतुमर्हः (देवः=मेघः) १.३२.१२. **वारान्**=वालानिव वरणीयान् लोकान् २.४.४. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्घञ्]

वारम् पुनः पुनर्वर्त्तुम् १.१२८.६. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोराभीक्ष्ण्ये णमुल्]

वारयन्ते निषेधयन्ति ४.१७.१९. [वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

वारवन्तम् बालवन्तम् (अश्वं=वेगवन्तं वाजिनम्), प्र०—एतद्यास्कमुनिरेवं व्याचष्टे—"अश्वमिव त्वा वालवन्तं, वाला दंशवारणार्था भवन्ति, दंशो दंशतेः" नि० १.२०, १.२७.१.

वारि जलम् २१.६१. [वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः 'वसिवपियजिराजि०' उ० ४.१२५ सूत्रेण इञ् । वारि उदकनाम निघं० १.१२]

वारितीनाम् वरणीयानां पदार्थानाम् मध्ये २८.२१. वारिणि जले इतिर्गतिर्येषां तेषाम् (जनानाम्) २१.५७. अन्तरिक्षस्थसमुद्राणाम् २८.४४. [वारि-इतिपदयोः समासः । शकन्ध्वादित्वात् पररूपम् । इतिः=इण् गतौ+क्तिन् । अथवा वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्णिजन्तादौणा० बाहु० इतिः प्रत्ययः]

वारिव जलमिव ४.५.८. [वार्-इवपदयोः समासः । वाः उदकनाम निघं० १.१२.]

वारिवस्कृताय वरिवः सेवनं कृतं येन तस्मै (भृत्याय), प्र०—अत्र स्वार्थेऽण् १६.१९. [वरिवस्-कृतपदयोः समासः । ततः स्वार्थेऽण्]

वारुणः वरुणदैवत्यः (पेत्वः=कृष्णः पशुः) २९.५८. जलगुणः (पेत्वः=शीघ्रगामी पशुः) २९.५९. **वारुणाः**= वरुणदेवताकाः (कृष्णाः प्राणिनः) २४.१५. [वरुणप्राति० 'सास्य देवता' इत्यर्थेऽण्]

वार्कार्याम् जलमिव निर्मलां सम्प्रापत्तव्याम् (धियं= प्रज्ञाम्) १.८८.४. [वार्-कार्यापदयोः समासः। वार् उदकनाम निघं० १.१२. कार्या=डुकृञ् करणे (तना०)+ ण्यत्+टाप्]

वार्त्रघ्नम् मेघविनाशकम् (भा०—विद्यावर्धनं कर्म) १०.८. [वार्त्रोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः। वार्त्रः=वृत्रः मेघनाम निघं० १.१०. ततः स्वार्थेऽण्]

वार्त्रहत्याय वृत्रहत्याया इदं तस्मै (शवसे=बलाय) ३.३७.१. विरुद्धभावेन वर्त्ततेऽसौ वृत्रः, वृत्र एव वार्त्रः, वार्त्रस्य वर्त्तमानस्य शत्रोर्हत्या हननं तत्र साधुस्तस्मै (शवसे) १८.६८. [वृत्र-हत्याशब्दाद् भवार्थेऽण्। 'तत्र साधु'रित्यर्थे वाण्। वृत्रहत्या=वृत्रोपपदे 'हनस्त च' अ० ३.१.१०८. सूत्रेण भावे क्यप् तकारश्चान्तादेशः]

वार्ध्रीनसः कण्ठे स्तनवान् महानजः २४.३९.

वार्भ्यः वरणीयेभ्यः (अद्भ्यः=जलेभ्यः) २२.२५. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्घञ्। वारप्राति० भ्यस्प्रत्यये ऽकारलोपश्छान्दसः]

वार्यम् वरितुमर्हं पदार्थसमूहम् १.२६.८. वर्त्तुमर्हं धनम् ३.२१.२. वरणीयेषु वा जलेषु भवम् (छर्दिः=गृहम्) ४.५३.१. वरेषु पदार्थेषु भवं विद्युदग्निम् ५.१७.५. स्वीकर्त्तुमर्हम् (जगत्) १.८१.९. वरणीयं व्यवहारम् ६.१५.६. वर्त्तुं योग्यमुपदेशम् ५.४८.५. **वार्याणाम्**+वराणां वरणीयानामत्यन्तोत्तमानां मध्ये (पुरूणां=बहूनामाकाशादिपृथिव्यन्तानां पदार्थानाम्) १.५.२. स्वीकर्त्तुमर्हाणां पृथिव्यादिपदार्थानाम् १.२४.३. **वार्याणि**=वरितुमर्हाणि (अपत्यानि) ३८.५. वारिषूदकेषु साधूनि (भा०—सुखानि) २८.१५. वर्त्तुमर्हाण्युदकानि २८.१७. स्वीकार्याणि भोग्यवस्तूनि २९.२४. ग्रहीतुं योग्यानि साधनानि १.११४.५. [वृञ् वरणे (स्वा०)• धातोर्ण्यत्। अथवा वारिप्राति० साध्वर्थे यत्। वार्यं वृणोतेरथापि वरतमम् नि० ५.१. वार्याणाम् अश्वनाम निघं० १.१४.]

वार्या वर्त्तुमर्हाणि वस्तूनि ४.५५.९. स्वीकर्त्तुमर्हाणि (वस्तूनि) ६.१६.५. [वार्यमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

वार्षागिराः वृषस्योत्तमस्य गीर्भिर्निष्पन्नाः पुरुषाः १.१००.१७. [वृष-गिर्पदयोः समासे 'तेन निर्वृत्तम्' अ० ४.२.६८. सूत्रेणाण्। 'वृषो हि भगवान् धर्म' इति मनोर्वाक्याद् वृषो धर्मः। गीः वाङ्नाम निघं० १.११.]

वार्षिकौ वर्षासु भवौ (ऋतू) १४.१५. [वर्षाप्राति० भवार्थे 'छन्दसि ठञ्' अ० ४.३.१९. सूत्रेण ठञ्]

वार्षी वर्षाणां व्याख्यात्री (जगती=जगद्गता) १३.५६. [वर्षप्राति० 'तस्य व्याख्यान०' अ० ४.३.६६. सूत्रेणाण्। ततः स्त्रियां ङीप्]

वालः बालकः १९.८८. [वालं पर्व, वृणोतेः नि० ११.३१.]

वावक्रे वक्रा गच्छन्ति ७.२१.३.

वावदत् भृशं वदति ३३.९३. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः क्रियासमभिहारे यङ्लुगन्ताल्लङ्। अटोऽभावश्छन्दसि]

वावदीति भृशं वदति ६.४७.२१. [वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

वावनः सम्भज ४.११.२. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लोटि लङि वा छान्दसं रूपम्]

वावन्धि बध्नन्ति ५.३१.१३.

वावशतीः भृशं कामयमानाः प्रजाः ४.५०.५. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छत्रन्तान् ङीप्]

वावशन्त पुनः पुनः प्रकाशयन्त १.६२.३. **वावशुः**= कामयन्ते ६.५१.१४. **वावशे**=भृशं कामयते २.१४.९. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः क्रियासमभिहारे यङ्लुगन्ताल्लङ्। अडभावः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अन्यत्र लिट्। तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

वावशानः भृशं कामयमानः (जनः) १२.४७. **वावशानाः**=कमनीयाः (गिरः=वाचः) ७.५.५. [वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लिटः कानच्। यङ्लुगन्ताद्वा शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

वावशाना भृशं कामयमाना (उषाः) १.११३.१०. **वावशानाः**=कमनीयाः (गिरः=वाचः) ७.५.५. अत्यन्तं कामयमानाः (गावः) १.७३.५. [वावशान इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्। वावशानः पदनाम निघं० ४.२. वावशानो वष्टेर्वा वाश्यतेर्वा नि० ५.१.]

वावसानस्य आच्छादकस्य (अ०—अरिपक्षस्य), प्र०–अत्र यङ्लुगन्ताद् 'वस आच्छादने' धातोः कर्त्तरि ताच्छीलिकः चानश् 'बहुलं छन्दसि' इति श्लुः १.५१.३.

वावसानाः=आच्छाद्यमानाः (सज्जनाः) ६.११.६. [वस आच्छादने (अदा०) धातोः 'ताच्छील्यवयोवचनशक्तिषु चानश्' इति कर्त्तरि चानश्। शपः श्लुश्छान्दसः]

वावसाना सुखेष्वतिशयेन वस्तारौ (अ०—अध्यापकोपदेशकौ) १.४६.१३. [वस निवासे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् कर्त्तरि ताच्छीलिकः चानश्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः। तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

वावाता दोषहन्त्री विद्याजनयित्री (गीः=वाणी) ४.४.८. [ओवै शोषणे (भ्वा०) धातोरौणा० बाहु० कर्त्तरि क्तः। ततः स्त्रियां टाप्। द्वित्वं छान्दसं दीर्घत्वं च]

वावान वनते, प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदैर्घ्यम् ६.२३.५. [वन सम्भक्तौ (भ्वा०) वनु याचने (तना०) धातोर्वा लिट्। तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

वावृजे व्रजति गच्छति ३३.४४. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्लिट्। तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घत्वम्। धातूनामनेकार्थकत्वादत्र गत्यर्थः]

वावृतुः वर्त्तेरन् ४.३०.२. वर्त्तन्ते, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिट् व्यत्ययेन परस्मैपदम् 'तुजादीनां दीर्घो०' इति दीर्घत्वम् १.१०५.१०. **वावृते**=वर्त्तते १.१६६.६. प्रवर्त्तते १.१६१.१५. पुनः पुनरावर्त्तते १.१६४.१४. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लिटि व्यत्ययेन परस्मैपदम् तुजादित्वाच्चाभ्यासदीर्घः]

वावृधध्यै अतिशयेन वर्धयितुम् ६.६७.१. पुनः पुनर्वर्धितुम् १.६१.३. वर्धयितुम्, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः तुजादित्वाद् दीर्घश्च १.१०२.२. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् तुमर्थेऽध्यैः प्रत्ययः। अभ्यासदीर्घश्च तुजादित्वात्]

वावृधन्त भृशं वर्धन्ते ५.५२.७. प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इत्यभ्यासदैर्घ्यम् ६.६६.२. **वावृधस्व**=भृशमेधस्वैधय वा, प्र०—अत्र वृधु धातोर्लेटि मध्यमैकवचने विकरणव्यत्ययेन श्लुः 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः १.३१.१८. वृद्धो भव ६.१७.३. **वावृधाति**=वर्धयेत्, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.३३.१. **वावृधाते**=वर्धयतः ७.७.५. **वावृधीथाः**=वर्धेथाः, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्युपधागुणो न १.१३०.१०. **वावृधुः**=वर्धेरन् २.२०.४. वर्धन्ते २.३४.१३. वर्धयन्ति २.८.५. वर्धयेयुः ५.१४.६. वर्धन्ताम् ५.५६.५. वर्धयन्तु ५.५५.३. **वावृधे**=वर्द्धयति ३३.६७. पुनः पुनर्वर्धते १.५२.२. वर्धेत ३.३६.१. अतिशयेन वर्धते १.५२.२. अत्यन्तं वर्धते ७.४०. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अभ्यासदीर्घश्च तुजादित्वात्। अन्यत्र लोट् लेट्, लिट् च। वृधु धातोर्वा लोटि तु शपः श्लुः]

वावृधा वर्द्धमानौ (किरणौ अश्वौ वा) ऋ० भू० १३९. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताद् इगुपधलक्षणः कः। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वावृधानम् अतिशयेन शुभगुणकर्मसु वर्द्धमानम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ७.३६. वर्द्धयितारम् (इन्द्रम्) ३.४७.५. अतिवर्द्धमानम् (इन्द्रम्) ६.१९.११. वर्धयन्तम् (क्षयं=गृहम्) ७.१.१२. **वावृधानः**=अत्यन्तं वर्धयमानो जनः २०.४७. भृशं वर्धनः (अग्निः) ५.८.७. सदा वर्धयिता (अग्निः=स्वप्रकाश ईश्वरः) ७.५.२. **वावृधानान्**=विवर्धमानान् (अविद्वज्जनान्) ५.४२.९. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्। शानच्-प्रत्यये वा 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लौ रूपम्। वावृधानः वर्धयमानः नि० १०.२७.]

वावृधाना शुद्ध्या [वर्द्धमानौ वर्द्धकौ (वायुसूर्यौ) ६.६९.६. [वावृधानमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वावृषाणाः वृषं बलं कुर्वाणाः (विशः=मनुष्यादिप्रजाः) ६.२६.१. [वृष शक्तिबन्धने (चुरा०) धातोर्लिटः कानच्]

वाशति वाणीवाऽऽचरन्ति ५.५४.२. [वाशी वाङ्नाम निघं० १.११. तत आचारेऽर्थे क्विप्। ततो लटि रूपम्]

वाशाः य उशन्ति कामयन्ते ते, भा०—शुभगुणैः कमनीयाः (राजपुरुषाः) १०.४. [वश कान्तौ (अदा०) धातोः 'वा छन्दसि' नियमेन 'कर्मण्यण्' इत्यण् निरुपपदादपि भवति]

वाशीमन्तः प्रशस्ता वाशी वाग् विद्यते येषान्ते (मनीषिणः=विद्वांसो जनाः) ५.५७.२. [वाशीप्राति० प्रशंसायामर्थे (मत्वर्थे) मतुप्। वाशी वाङ्नाम निघं० १.११. वाशी वाङ्नाम वाश्यत इति सत्याः नि० ४.१६.]

वाशीः वेदविद्यायुक्ता वाणीः १.८८.३. [वाशृ शब्दे (दिवा०) धातोरौणा० इन्। ततः स्त्रियां ङीष्। वाशी वाङ्नाम निघं० १.११. वाशीभिरश्ममयीभिरिति वा वाग्भिरिति वा नि० ४.१९.]

वाश्राः वत्सान् कामयमानाः (गावः) १.९५.६. [वश कान्तौ (अदा०) धातोरौणा० रक्। बहुलवचनाद् धातोर्दीर्घः। वाशृ-शब्दे (दिवा०) धातोर्वा रक्]

वाश्रेव यथा शब्दायमाना गावो वत्सानभितो गच्छन्ति तथा १.३७.१०. यथा कामयमाना धेनुः १.३८.८. कमनीय इव (स्तावको जन इव) २.३४.१५. [वाश्रा-इवपदयोः समासः]

वासन्तिकौ वसन्ते भवौ (चैत्रवैशाखमासौ) १३.२५. [वसन्तप्राति० भवार्थे 'वसन्ताच्च' अ० ४.३.२०. सूत्रेण ठञ्]

वासन्ती वसन्तस्य व्याख्यात्री (गायत्री) १३.५४. [वसन्तप्राति० 'तस्य व्याख्यान०' इत्यर्थे 'सन्धिवेलाद्यृतुनक्षत्रेभ्योऽण्' अ० ४.३.१६. सूत्रेण अण् । ततः स्त्रियां ङीप्]

वासय आच्छादय १.१४०.१ कलायन्त्रादिषु स्थापय, विद्युद्विद्यया स्थापय वा १.१३४.३. **वासयः**=वासयेः ६.३५.१. [वस आच्छादने (अदा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट् । अन्यत्र वस निवासे धातोर् णिजन्ताल् लङ् । अटोऽभावः]

वासरीम् निवासयित्रीम् (धेनुमिव सोमवल्लीम्) १.१३७.३. [वस निवासे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् 'अर्त्तिकमि०' उ० ३.१३२.सूत्रेण अरः प्रत्ययः। स्त्रियां ततो ङीप् छान्दसः । वासरम् अहर्नाम निघं० १.९.]

वाससः वसन्ति यस्मिँस्तद्वासो दिनं तस्य मध्ये, प्र०—दिवसोपलक्षणेन रात्रिरपि ग्राह्या १.३४.१. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'वसेर्णित्' उ० ४.११९. सूत्रेणासुन् णिच्च]

वासः आच्छादनम् ३३.३७. वसत आच्छादयन्ते शरीरं येन तद्वस्त्रादिकम् २.३२. वस्त्रादिकं निकेतनं वा १२.७८. वसनम् १.११५.४. [वस आच्छादने (अदा०) धातोः 'वसेर्णित्' उ० ४.२१९. सूत्रेणासुन् णिच्च । णिद्वद्भावेन वृद्धिः । रूपं वाऽएतत् पुरुषस्य यद् वासः श० १३.४.१.१५. तस्मादु सुवासा इव बुभूषेत् श० ३.१.२.१६. ओषधयो वै वासः श० १.३.१.१४. सर्वंदैवत्यं वै वासः तै० १.१.६.११. सर्वदैवत्यं वासः ऐ० ७.३. सौम्यं हि देवताया वासः तै० १.६.१.११. तस्य वाऽएतस्य वाससः । अग्नेः पर्यासो भवति वायोरनुछादो नीविः श० ३.१.२.१८. त्वग्घि वासः श० ४.३.४.२६. तद्वै निष्पेष्ट वै ब्रूयाद् यदेवास्य (वाससः) अत्रामेध्या (स्त्री) कणति वा वयति वा तदस्य (वाससः) मेध्यमसदिति श० ३.१.२.१९.]

वासः पल्पूलीम्=वाससां शुद्धिकरीम् (ओषधिम्), भा०—वस्त्रादिपवित्रताम् ३०.१२. [वासस्-पल्पूलीपदयोः समासः । पल्पूली=पल्यूललवनपवनयोः (चुरा०) धातोष्टः प्रत्ययो हेतौ छान्दसः । ततः स्त्रियां ङीप् । वर्णव्यत्ययेन यकारस्य पकारः]

वास्तव्याय वास्तुनि निवासस्थाने भवाय (जनाय) १६.३९. [वास्तुप्राति० भवार्थे यत् । अथवा वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'वसेस्तव्यत् कर्त्तरि णिच्च' अ० ३.१.९६. वा०सूत्रेण कर्त्तरि तव्यत् । णिद्वद्भावाद् धातोर्वृद्धिश्च । वास्तु=वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'वसेरगारे णिच्च' उ० १.७०. सूत्रेण तुन् । णिद्वद्भावाद् वृद्धिश्च]

वास्तुपाय वास्तुनि निवासस्थानानि पाति तस्मै (जनाय) १६.३९. [वास्तु इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि कः]

वास्तूनि वासाधिकरणानि १.१५४.६. **वास्तोः**=निवासस्थानस्य ५.४१.८. वासहेतोर्गृहस्य ७.५४.१. [वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'वसेरगारे णिच्च' उ० १.७० सूत्रेण तुन् । णिद्वद्भावाद् वृद्धिश्च । अवीर्यं वै वास्तु श० १.७.३.१७.]

वास्यम् आच्छादयितुं योग्यं सर्वतोऽभिव्याप्यम् (जगत्) ४०.१. [वस आच्छादने (अदा०) धातोर्ण्यत्]

वाहवा बाहू, प्र०—'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः २.३८.२. [बाहुप्राति० 'सुपां सुलुक्०' इति द्विवचनस्याकारः । वर्णव्यत्ययेन बस्य वकारः]

वाहसः अजगरः सर्पविशेषः २४.३४. [वह प्रापणे भ्वा०) धातोः 'वहियुभ्यां णित्' उ० ३.११९. सूत्रेणासच्]

वाहाः वृषभादयः ४.५७.४. **वाहैः**=वहन्ति यैस्तैर्वृषभादिवाहनैः १२.६९. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः करणे 'हलश्च' अ० ३.३.१२१. सूत्रेण घञ्]

वाहिष्ठम् अतिशयेन वाहयितारम् (राजानम्). २६.१२. **वाहिष्ठः**=अतिशयेन वोढा (रथः=रमणीयं यानम्) ७.३७.१. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् कर्त्तरि तृजन्तात् 'तुश्छन्दसि' सूत्रेणातिशायन इष्ठन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण तृचो लोपः । वाहिष्ठः वोढृतमः नि० ५.१.]

वाहे सर्वान् सुखं प्रापयित्रे (तेजस्विजनाय) ७.२४.५. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' इति निरुपपदादपि ण्विः]

वाः वारि १.११६.२२. वाह्यमुदकम्, प्र०—वा इत्युदकनामसु पठितम् निघं० १.१२, ५.११. [वाः उदकनाम नि० १.१२.]

वि क्रियायोगे १.११.३. विविधार्थे १.१२.४. अच्छे प्रकार ३.३.१. सं० वि० २०२ वेदार्थे। विशेषेण ४०.८. [वि इत्येकीभावस्य प्रातिलोम्यम् नि० १.३.]

विकक्करान् विकिरकान् पक्षिविशेषान् २४.२०.

विकस्तम् विविधतया कस्यते शिष्यते यत्तत् (हृदयम्=अन्तःकरणम्) ११.३९. विविधतया शासितारम् (सज्जनम्) १.११७.२४. [वि+कसि गतिशासनयोः (अदा०) तत्रैव कस इत्येके पठ्यते। ततः क्तः। 'ग्रसितस्कभित०' अ० ७.२.७४. इति निपातनाद् रूपम्]

विकिरिद्र विशेषेण किरि सूकर इव द्रायति शेते, विशिष्टं किरिं द्राति निन्दति वा तत्सम्बुद्धौ (सभेश राजन्) १६.५२. [विपूर्वात् किरि इत्युपपदे द्रा कुत्सायां गतौ (अदा०) धातोः कः। द्रै स्वप्ने (भ्वा०) धातोर्वा कः]

विकृतम् प्राप्तविकारम् (अपः=कर्म्म २.३८.६. विकृतानि=विकारमवस्थान्तरं प्राप्तानि (तत्त्वानि) १.१६४.१५. [वि+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्तः]

विकृन्तन्तम् विच्छेदयन्तम् (पुरुषम्) ३०.१८. [वि+कृती छेदने (तुदा०) धातोः शतृ]

विकृन्तानाम् विविधोपायैर्ग्रन्थिं छित्त्वा परस्वाऽपहर्त्तृणाम् (प्रजापुरुषाणाम्) १६.२१. [वि+कृती छेदने (तुदा०) धातोरौणा० बाहु० अन्। नुमागमोऽपि छान्दसः]

विकृषन्तु भा०—विचारेण कृषिं कुर्वन्तु १२.६९. [वि+कृष विलेखने (तुदा०) धातोर्लोट्]

विक्त वियुज्यात् पृथक्कुर्यात् १.१६२.१५. विजानीत २५.३७. **विक्थाः**=भयं कम्पनं च कुर्य्याः ६.३५. चल, प्र०—ओविजी भयचलनयोः इत्यस्माल्लोडर्थे लङ्, लङि मध्यमैकवचने 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणाभावश्च १.२३. [ओविजी भयचलनयोः (तुदा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसीति' शपो लुकि शप्रत्ययस्याप्यभावः। अटोऽभावश्चापि छान्दसः]

विक्रमणम् विक्रमतेऽस्मिँस्तत् १०.१९. विक्रमन्ते यस्मिन् जगति तत् १९.५६. विविधक्रमेण जगद्रचनम् ऋ० भू० २६०, १९.५६. **विक्रमणेषु**=विविधक्रमेषु ५.२०. विविधेषु सृष्टिक्रमेषु १.१५४.२. [वि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। भावे वा ल्युट्]

विक्रमस्व पुरुषार्थी भव ४.१८.११. पादैः विद्याऽङ्गैः सम्पद्यस्व ५.४१. विविधतया गच्छ ५.३८. [वि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'वृत्तिसर्गतायनेषु क्रमः' इत्यात्मनेपदम्]

विक्रमान् सत्याचारों को सं० वि० २१०, अथर्व० ९.६.२.१२. [वि+क्रमु पाद विक्षेपे (भ्वा०) धातोर्घञ्। 'नोदात्तोपदेश०' इति वृद्धिप्रतिषेधः]

विक्रान्तम् विविधतया क्रान्तम् (यानम्) १०.१९. [वि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोः क्तः]

विक्रीणावहै विशेषेण व्यवहारयोग्यानि वस्तूनि दद्याव गृह्णीयाव वा ३.४९. [वि+डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये (क्र्या०) धातोर्लोटि उत्तमपुरुषस्य द्विवचने रूपम्]

विक्षिणत्केभ्यः ये शत्रून् विक्षयन्ति तेभ्यः (जनेभ्यः) १६.४६. [वि+क्षणु हिंसायाम् (तना०) धातोरौणा० बाहु० कत्कन्]

विक्षिपः यो विक्षिपति विक्षेपं प्राप्नोति सः (मरणं प्राप्तो जीवः) ३९.७. [वि+क्षिप (तुदा०) धातोर् इगुपधलक्षणः कर्त्तरि कः]

विक्षु प्रजासु ४.३१. उत्पन्नासु प्रजासु १.६६.२. मनुष्यादिप्रजासु ४.३७.३. **विट्**=प्रजाः १.७२.८. वणिग्जनः १०.१२. [विशः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

विख्यन् प्रकाशयन्ति ३.३१.१२. [वि+ख्या प्रकथने [अदा०) धातोर्लुङ्। 'अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्' इति च्लेरङ्। अटोऽभावश्छान्दसः]

विख्याय प्रसिद्धीकृत्य ११.२०. [वि+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

विगात् विशेषेण प्राप्नोति ५.४५.१. [वि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लुङ्। 'इणो गा लुङी' ति गादेशः। अडभावश्छान्दसः]

विगामभिः विविधप्रशंसायुक्तैः (सत्वादिगुणैः) १.१५५.४.

विगाहम् विविधान् पदार्थान् गाहन्ते विलोडयन्ति येन तम् (अग्नि=वह्निम्) ३.३.५. [वि+गाहू विलोडने (भ्वा०) धातोः 'हलश्चे' ति करणे घञ्]

विग्रम् मेधाविनम् (इन्द्रं=विद्वांसं जनम्), प्र०—'वेर्ग्रो वक्तव्यः' इति वेः परस्या नासिकायाः स्थाने ग्रः समासान्तादेशः 'उपसर्गाच्च' अ० ५.४.११९. इति सूत्रस्योपरि वार्त्तिकम्। विग्र इति मेधाविनामसु पठितम् निघं० ३.५. १.४.४. [वि नासिकापदयोः समासे 'वेर्ग्रो वक्तव्यः' अ० ५.४.११९ वा०सूत्रेण नासिकास्थाने ग्रः समासान्तादेशः।

विघनिना विशेषेण हन्तारौ (सभासेनाधीशौ) ३३.६१. [वि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्बाहु०

औणा० इन् । बहुलवचनादेव हन्तेर्घनादेशः]

विघृते विशेषेण प्रकाशिते (स्त्रियौ) ३.५४.६. [वि+घृ क्षरणदीप्त्योः (जु०) धातोः क्तः । ततो द्विवचनम्]

विचक्र विदधथ ४.३५.४. कुर्वन्ति ४.३५.२. विदधति ४.३५.४. **विचाक्रिरे**=विविधतया कुर्वन्ति १.८५.१०. [वि+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिट् मध्यमबहु० । अन्यत्र प्रथमपुरुषे बहु०]

विचक्रमाणः यथायोग्यं जगद्रचनाय कारणपादान् प्रक्षिपन् नियोजयन् (विष्णुः=परमेश्वरः) ५.१८. [वि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच् । शानचि वा शपः श्लुः]

विचक्रमे विविधतया क्रमते १७.६०. विक्रामति ३४.४३. विक्रान्तवान्, विक्षिप्तवान्, विक्राम्यति, विक्रमिष्यति वा, प्र०—अत्र सामान्येऽर्थे लिट् ५.१५. विविधतया रचितवान् १.२२.१६. विविधतया विहितवान् १.२२.१८. विक्रमते ५.४७.३. विस्तृत विद्यायुक्त वेद को बनाया, लोकों को विविध प्रकार से रचा आर्याभि० १.११. ऋ० १.२.७.१६. [वि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । विचक्रमे विक्रमते नि० १२.१९.]

विचक्षणः विविधान् दर्शक (सूर्य) १.५०.८. प्राज्ञ (जिज्ञासो) ४.३२.२२. अतिचतुर (वैश्वानर=प्रधानपुरुष) ३.३.१०. **विचक्षणम्**=वाग्विषयम् १.१६४.१२. **विचक्षणः**=अतीव धीमान् (जनः) ४.४५.५. विविधपदार्थानां प्रकाशकः (परमेश्वरः) ४.५३.२. प्रशस्तचातुर्यादिगुणोपेतः (विद्वज्जनः) १.१०१.७. विविधतया दर्शकः (विद्वान्) १.११२.४. यो विविधान् सत्योपदेशान् चष्टे सः (वृहस्पतिः=परमेश्वरो विद्वज्जनो वा) २.२३.६. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) अयं दर्शनेऽपि, ततो विपूर्वाद् 'अनुदात्तेतश्च हलादेः' अ० ३.२.१४९. सूत्रेण कर्त्तरि युच् । 'कृत्यल्युटो वहुलं वे' ति कर्त्तरि ल्युट् । 'असनयोः प्रतिषेधो वक्तव्यः' अ० २.४.५४. वा०सूत्रेण ख्याञ् आदेशस्य प्रतिषेधः । विचष्टे पश्यतिकर्मा निघं० ३.११. चक्षुर्वै विचक्षणं वि ह्येनेन पश्यतीति ऐ० १.६. चक्षुर्वै विचक्षणं चक्षुषा हि विपश्यति कौ० ७.३. सोमो राजाऽसि विचक्षणः । शां० आ० ४.९. सोमो वै विचक्षणः जै० २.६४.]

विचक्षते विविधतया दर्शयति १.१६४.४४. **विचक्षे**=प्रकाशयति ४.१६.४. **विचचक्षिरे**=व्याख्यातवन्तः ४०.१३. व्याचक्षते ४०.१०. [वि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोर्लट् । वचनव्यत्ययः । 'बहुलं छन्दसी' ति वा शपो लुङ् न । अन्यत्र विचक्षे प्रयोगे लिट् । 'वा छन्दसी' ति द्वित्वं न 'विचचक्षिरे' प्रयोगे तु लिटि प्रथमपुरुषे बहुवचनम्]

विचक्षे विख्यापयितुम् १.११६.१४. विविधदर्शनाय २.२७.१०. विविधप्रकटत्वाय १.११३.५. [चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोस्तुमर्थे के-प्रत्ययश्छान्दसः]

विचयत् विचिनोमि ५.६०.१. **विचयेम**=विचिनुयाम १.१३२.१. [वि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्लङ् विकरणव्यत्ययेन शप् । अडभावश्च । अन्यत्र लिङ्]

विचयिष्ठः अतिशयेन वियोजकः विद्वज्जनः) ४.२०.९. [वि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तात् 'तुश्छन्दसि' सूत्रेणातिशायन इष्ठन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण तृचो लोपः]

विचरति विविधतया गच्छति १.११३.१३. **विचरन्त**=विचरन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् ३.४.५. **विचरन्ति**=विचलन्ति ५.६३.५. **विचारीत्**=विशेषेण चरति ७.२५.१. [वि+चर गत्यर्थे (भ्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लङ् लुङ् च]

विचरन्ती विविधगत्या प्राप्नुवन्ती (रात्रिः) ६.४९.३. [वि+चर गत्यर्थे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् स्त्रियाम्]

विचर्मणीव चर्मण्याकर्षितानि लोमानीव ऋ० भू० १४१ [विचर्मणि-इवपदयोः समासः]

विचर्षणिम् विलेखकम् (मारुतं गणम्) १.६४.१२. **विचर्षणे**=तेजस्विन् (राजन्) ६.१६.२९. **विचर्षणिः**=विलेखनस्वभावेन विच्छेदकः (सविता=सूर्यलोकः), प्र०—'कृषेरादेः' उ० २.१०४. इति कृष विलेखने धातोरनिः प्रत्ययः १.३५.९. विविधविद्याप्रद=ईश्वरः १९.४२. साक्षाद् द्रष्टा (परमेश्वरः) १.७९.१२. पश्यकः (अग्निः=पावकः) ३.२.८. विचक्षणो द्रष्टा (इन्द्रः=वीरपुरुषो राजा) ६.४५.१६. सर्वद्रष्टव्यद्रष्टा मनुष्यः ४.३६.५. विद्याप्रकाशयुक्तो विद्वान् २.२२.३. प्रकाशकः (अग्निः=वह्निः) ३.११.१. दर्शकः (इन्द्रः=सूर्यः), प्र०—विचर्षणिरिति पश्यतिकर्मा निघं० ३.११, २.४१.१०. [विचर्षणिः पश्यतिकर्मा निघं० ३.११. वि+कृष विलेखने (तुदा०) धातोः 'कृषेरादेश्च०' उ० २.१०४ सूत्रेणानिः आदेश्च चकारो बाहु०]

विचष्टे दर्शयति १.९८.१. विख्यायते ५.१६.१. विशेषेणोपदिशति ३.५५.६. प्रकाशयति २६.७. [वि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोर्लट्]

विचाकशत् विशिष्टतया प्रकाशमानः (चन्द्रमाः=चन्द्रलोकः) १.२४.१०. [वि+काशृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शतरि 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः। तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः। 'बहुलं छन्दसीति वक्तव्यम्' अ० ७.३.८७. वा० सूत्रेण धातोरुपधाह्रस्वत्वम्]

विचारिणि विचारितुं शीलं यस्यास्तत्सम्बुद्धौ (विदुषि स्त्रि) ५.८४.२. [वि+चर गत्यर्थे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् ताच्छील्ये णिनिः। ततः स्त्रियां ङीपि सम्बुद्धौ रूपम्]

विचिकिते विशेषेण जानाति २.२७.११. विशेषेण ज्ञापयति १.७१.७. **विचिकेतत्**=विजानाति १.१५२.२. [वि+कि ज्ञाने (जु०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अन्यत्र कित निवासे रोगापनयने च (भ्वा०) धातोर्लेटि छान्दसद्वित्वे च रूपम्। अत्र जानात्यर्थे धातुः]

विचिकित्सति संशय को प्राप्त होता है सं० वि० २१५, ४०.६. [वि+कित निवासे रोगापनयने च (भ्वा०) धातोः 'गुप्तिज्किद्भ्यः सन्' अ० ३.१.५. सूत्रेण स्वार्थे सन्नन्ताल् लटि रूपम्]

विचितन विज्ञापयत ४.३७.७. [वि+चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लोट्। शपो लुक्। मध्यमबहुवचने तप्रत्ययस्य तनबादेशः]

विचितः विविधविद्याशुभगुणधनादिभिश्चितः संयुक्तः (शिष्यः) ४.२४. [वि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोः क्तः]

विचिनवत् विचिनुयात् ४.२.११. **विचिन्वन्तु**=विविधतया वर्धयन्तु, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः ४.२४. विशेषेण सञ्चितं कुर्वन्तु, भा०—प्राप्नुवन्तु २३.३६. [वि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्लिङर्थे लेट्। 'लेटोऽडाटाव्' इति सूत्रेणाडागमः]

विचिन्वत्केभ्यः ये विचिन्वन्ति तेभ्यः (जनेभ्यः) १६.४६. [वि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोः शत्रन्तात् स्वार्थे कः]

विचियन्तु विशेषेण चिन्वन्तु, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति विकरणलुक्, इयङादेशश्च १.९०.४. [वि+चिञ् चयने (स्वा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि श्नोरपि लुक्]

विचृतन्ति विशेषेण ग्रथ्नन्ति १.६७.४. [वि+चृती हिंसाग्रन्थनयोः (तुदा०) धातोर्लट्]

विचृतामसि अच्छे प्रकार हम ग्रन्थित अर्थात् बन्धन युक्त करते हैं सं० वि० १६६, अथर्व० ६.२.३.१. [वि+चृती हिंसाग्रन्थनयोः (तुदा०) धातोर्लट्। 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तता]

विचृत्ताय ग्रन्थकाय (जनाय) २२.७. **विचृत्ताः**=विस्तृताः (मायाः=प्रज्ञाः) २.२७.१६. [वि+चृती हिंसाग्रन्थनयोः (तुदा०) धातोः क्तः। औणा० वा कर्त्तरि क्तः]

विचृत्य विविधतया ग्रन्थित्वा बद्ध्वा ३२.१२. [वि+चृती हिंसाग्रन्थनयोः (तुदा०) धातोः क्त्वा। क्त्वो ल्यप् समासे]

विचेतत् विचेतेत् १.१६४.१६. **विचेति**=विजानाति ४.५५.४. [वि+चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लटि तुलोपः]

विचेतसम् विगतं चेतो यस्मात्तम् (अग्नि=परमेश्वरम्) ४.७.३. **विचेतसः**=विविधं चेतः शास्त्रोक्तबोधयुक्ता प्रज्ञा येषां ते (देवाः=विद्वांसो जनाः) १.४५.२. विगतं चेतं सञ्ज्ञानं=याभ्यस्ताः (आपः) १.८३.१. विविधप्रज्ञायुक्ताः (मानुषासः=मनुष्याः) ७.७.४. विज्ञापकस्य (विद्वज्जनस्य) ५.१७.४. **विचेताः**=विविधानि चेतांसि संज्ञानानि ज्ञापनानि वा यस्य सः (वैश्वानरः=राजा) ४.५.२. विविधं चेतो ज्ञानं यस्मात् सः (अग्निः=पावकः) २.१०.२ विविधाश्चेताः प्रज्ञा यस्य सः (विद्वान्), प्र०—चेत इति प्रज्ञानाम निघं० ३.९, १.१९०.४. विगतं चेतो विज्ञानं यस्मात् स जडः (अग्निः) २.१०.१. विविधप्रज्ञः (राजा) ६.२४.२. [वि-चेतस्पदयोः समासः। चेतस्=चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्। चेतः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

विचेतसा विविधविज्ञानौ (विद्वज्जनौ) ५.७४.६. [विचेतस् इति व्याख्यातम्! ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

विच्छन्दाः विविधानि छन्दांस्यूर्जनानि यासु ताः (प्रजाः) २३.३४. [वि-छन्दस्पदयोः समासः। छन्दस्=चदि आह्लादने दीप्तौ च (भ्वा०) धातोः 'चन्देरादेश्च छः' उ० ४.२२०. सूत्रेणासुन्]

विच्युताः विशेषेण चलिताः (शूरा जनाः) २.१७.३. [वि+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

विज इव भयेन सञ्चलित इव (दुर्जनः) २.१२.५. [विजः-इवपदयोः समासः। विजः=ओविजी भयचलनयोः (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

विजगृभ्रे विशेषेण गृह्णन्ति ७.१८.८. [वि+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लिट् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसी' ति हस्य भकारः । 'इरयो रे' सूत्रेण रे-आदेशः]

विजघान विविधतया हन्ति ३.३३.७. विशेषेण हन्यात् ७.२१.४. [वि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लिट् । 'अभ्यासाच्च' अ० ७.३.५५. सूत्रेण कुत्वम्]

विजभ्रिरे विशेषेण हरन्ति १.१६१.१४. [वि+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लिटि प्रथमवहुवचने रूपम् । हस्य भकारश्छान्दसः]

विजरेथाम् विशेषेण स्तुयातम् ३.५८.२. [वि+जरते अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४.) धातोर्लोट्]

विजर्जराम् विशेषेण जर्जरीभूताम् (स्त्रीम्) ३०.१५ [वि+जॄष् वयोहानौ (दिवा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् स्त्रियामङ् । ततष्टाप्]

विजर्भृतः विविधं धरतः १.२८.७. [वि+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लट् । प्रथमद्विवचने रूपम् । विजर्भृतः=विह्रियेते नि० ९.३६.]

विजः इतस्ततश्चलतः पक्षिणः १.९२.१०. [ओविजी भयचलनयोः (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

विजानतः विशेषेण समीक्षमाणस्य (योगिजनस्य) ४०.७. विज्ञानयुक्त संन्यासी का सं० वि० २१५, ४०.७. **विजानन्**=सर्वविद्या अनुभवन् (विद्वज्जनः) १.६९.२. विशेषेण विदन् (विद्वान् जनः) ३.३९.७. [वि+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः शतृ । 'ज्ञाजनोर्जा' इति शित्प्रत्यये जादेशः]

विजानात् विशेषेण जानीयात् १.१६४.१६. **विजानाति**=जानता है स० प्र० नि० १.१८. **विजानीहि**= विशेषतया विद्धि १.५१.८. [वि+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्लङ् । अन्यत्र लट् लोट् च । शिति प्रत्यये धातोर्जादेशः]

विजामन् विजानन् (मनुष्यः) ७.५०.२. [वि+जायति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः शतृ । वर्णव्यत्ययेन यकारस्य मकारः]

विजामातुः विगतो विरुद्धश्च जामाता च तस्मात् (स्यालात्=स्वस्त्रीभ्रातुः) १.१०९.२. [वि-जामातृपदयोः समासः । विजामातुरसुसमाप्ताज्जामातुः । विजामातेति शश्वद् दक्षिणाजाः क्रीतापतिमाचक्षते । असुसमाप्त इव वरोऽभिप्रेतः । जामाता=जा अपत्यं तन्निर्माता नि० ६.९. जामाता=जायोपपदे मा माने (जुहो०) धातोः 'नप्तृनेष्टृ०' उ० २.९७. सूत्रेण तृजन्तं निपात्यते । विजामातुः पदनाम निघं० ४.३.]

विजायते विशिष्टतया प्रकटो भवति ३१.१९. विशेषेणोत्पद्यते ३.२९.११. [वि+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लट् । 'ज्ञाजनोज' सूत्रेण जादेशः]

विजावा विशेषेण जातः (सूनुः=अपत्यम्) ३.५.११ विशिष्टतया प्रादुर्भूतः (सूनुः) ३.१.२३. विशेषेण प्रसिद्धः (सूनुः) ३.७.११. विशिष्टतया सर्वेषां सुखजनकः (शिष्यः) ३.२३.५. विविधैश्वर्यजनकः (तनयः=पुत्रः) १२.५१. सत्याऽसत्ययोर्विभाजकः (सूनुः) ३.२२.५. विजयशीलः (तनयः=धार्मिकः पुत्रः), प्र०—अत्र जिधातोरौणादिको वन् प्रत्ययो बाहुलकादाकारादेशश्च ३.१५.७. [वि+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः कर्त्तरि 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' अ० ३.२.७५. सूत्रेण वनिप् । 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' अ० ६.४.४१. सूत्रेणात्वम् । अथवा वि+जि जये (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० वन् । वहुलवचनादेव चात्वम्]

विजिहीत विशेषेण गच्छति ५.४५.३. **विजिहीष्व**= विशिष्टतया त्यज ५.७८.५. [वि+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लोट् । अन्यत्र 'ओहाक् त्यागे' (जु०) धातोर्लोट्]

विजुहुरे विरुद्धतया कुटिलयन्ति ५.१९.२. [वि+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोर्लिट् । सम्प्रसारणं छान्दसम् । 'इरयो रे' इति रे-आदेशः । जुहुरे पदनाम निघं० ४.१.]

विजृम्भमाणाय विशेषेणाऽङ्गविनामकाय (जनाय) २२.७. [वि+जृभि गात्रविनामे (भ्वा०) धातोः शानच्]

विजेन्यम् विजेतुं योग्यम् (सैन्यम्) १.११९.४. [वि+जि जये (भ्वा०) धातोर्यत् । नुगागमश्छान्दसः]

विजेहमानः शब्दायमानः (अश्वः=तुरङ्गः) ६.३.४. [वि+जेहते गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः शानच्]

विज्ञानम् सम्यग्ज्ञानं विविधज्ञानं वा २०.८. [वि-ज्ञानपदयोः समासः । ज्ञानम्=ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्ल्युट्]

विज्यम् विगता ज्या यस्मात्तत् (धनुः) १६.१०. [वि-ज्यापदयोः समासः । ज्या पदनाम निघं० ५.३.]

विञ्चन्ति विभञ्जन्ति १.३९.५. [विचिर् पृथग्भावे (रुधा०) धातोर्लट्]

वितक्षत् विशेषेण तक्षतु १.१५८.५. [वि+तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोर्लेट् । लङि वाऽटोऽभावे रूपम्]

विततन्थ वितनोषि ६.४.६. [वि+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिटि 'बभूथाततन्थ०' अ० ७.२.६४. सूत्रेण निपात्यते]

विततम् व्याप्तम् (अन्तरिक्षम्) २.३८.४. विस्तृतम् (घोषं=वाचम्) ५.५४.१२. व्यापक (स्वरूप) स० प्र० ४२३, ९.८३.१. **विततः**—विस्तीर्णः (दोहः=सामग्रीसमूहः) ८.६२. [वि+तनु विस्तारे (तना०) धातोः क्तः। 'अनुदात्तोपदेश०' इत्यनुनासिकलोपः]

वितता विस्तृतानि तेजांसि १.१५२.४. [विततम् इति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

वितता विस्तृता (ज्या=प्रत्यञ्चा) २९.४०. [विततमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

विततान विशेषेण विस्तारितवान् विस्तारयत वा ४.३१. **वितत्निरे**=विविधतया विस्तृणन्ति १.१६४.५. विस्तारयन्ति ८.६१. **वितनुध्वम्**=विविधं विस्तृणीत १२.६८. **वितनोति**=विस्तीर्णां करोति ५.४८.१. **वितन्वते**=विस्तृणन्ति १२.६७. विस्तारयन्ति १.११५.२. [वि+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिट्। अन्यत्र लोट् लट् च। वितत्निरे प्रयोगे 'तनिपत्योश्छन्दसि' अ० ६.४.९९. सूत्रेणोपधालोपः]

वितन्तसाय्यः भृशं विस्तारणीयः (राजकर्मचारी) ६.१८.६. यो वितन्तस्यति विजयते सः (इन्द्रः=राजा) ६.४५.१३. [वि+तनु विस्तारे (तना०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

वितन्तसैते भृशं युध्येताम् ६.२५.६.

वितपति विशेषेण सन्तापयति ३.५३.२२. [वि+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लेट्]

वितरम् विविधानि दुःखानि तरन्ति येन कर्मणा तत् १.१२४.५. विशेषेण तरणीयमुल्लङ्घनीयम् (अंहः=पापं कुपथ्यादिकं वा) २.३३.२. विविधप्रकारेण तरितुं योग्यम् (अज्ञानम्) ४.१८.११. विविधतया तरन्ति येन तम् (अग्निम्) ६.१.११. सुखदातारम् (पतिम्) १.१२३.११. विशेषेण सन्तारकम् (स्योनम्=सुखम्) २९.२९. विशेषेण प्लवनम् ५.२९.४. [वि+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'ॠदोरप्' इत्यप्। कर्त्तरि वा विपूर्वात् तरतेरच्। वितरम् विकीर्णतरमिति वा विस्तीर्णतरमिति वा नि० ८.९.]

वितरित्रता विविधतयाऽतिशयेन तरितुमिच्छन्तौ सम्पादयितुमिच्छन्तौ (सञ्चिक्षिष्यौ), प्र०—अत्र विभक्तेराकारादेशः १.१४४.३. [वि+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'दाधर्त्तिदर्धर्त्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेण शतरि निपात्यते। विभक्तेराकारादेशः]

विततुरम् अतिशयेन विविधप्लवे तरणार्थम्, प्र०—अत्र यङ्लुगन्तात्तॄधातोरच्प्रत्ययो 'बहुलं छन्दसि' इत्युत्वम् १.१०२.२. [वि+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्तादच्। धातोरुत्वं छान्दसम्]

वितर्तुराणः विशेषेण भृशं हिंसन् (इन्द्रः=सूर्य इव राजा) ६.४७.१७. [वि+तुर्वी हिंसायामर्थे (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्। छान्दसत्वादभ्यासस्योकारस्याकारः]

वितस्तम्भ विशिष्टतया धरेत् ४.५०.१. विशेषेण स्तभ्नाति १.१६४.६. [वि+स्तम्भु स्तम्भार्थे सौत्रो धातुः। ततो लिट्]

वितस्थानाम् विशेषेण स्थिताम् (नदीम्) ४.३०.१२ [वि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्ल्युटि छान्दसद्वित्वे टापि च रूपम्। वितस्ताऽविदग्धा विवृद्धा महाकूला नि० ९.२५.]

वितस्थिरे विविधतया तिष्ठन्ति १६.६३. **वितस्थुः**=विशेषेण तिष्ठन्ति ५.६९.२. विविधतया तिष्ठेयुः २७.२३. **वितस्थे**=विशेषेण तिष्ठामि १.७२.९. वितिष्ठते ६.२१.७. **वितिष्ठते**=विशेषतया वर्त्तते १.५८.४. आक्रमते, व्याप्नोति ३४.३२. [वि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट्। अन्यत्र लड् अपि। 'समवप्रविभ्यः स्थः' अ० १.३.२२. सूत्रेणात्मनेपदम्]

वितार्ढि आजहि १८.७१. [वि+तृहू हिंसार्थे (तुदा०) धातोर्लोटि छान्दसं रूपम्। 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक्]

वितारीत् विशेषेण दुःखात् सन्तारयेत् १.६९.३. विशिष्टतया सुखानि ददाति १.७३.१. [वि+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

वितिराति विहन्ति ७.५८.३.

वितृषन् विरुद्धतया तृषिता भवन्तु, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् ६.३१. [वि+ञितृष् पिपासायाम् (दिवा०) धातोर्लुङ्। अटोऽभावः। पुषादित्वाच्च्लेरङ्]

वितेनिरे विशेषेण विस्तृतं कुर्वन्ति, भा०—विस्तारयन्ति १७.६८. [वि+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिट्]

वित्तजानिम् वित्ता प्रतीता जाया हृद्या स्त्री येन तम् (सद्वैद्यम्), प्र०—अत्र 'जायाया निङ्, अ० ५.४.१३४. इति जायाशब्दस्य समासान्तो निङादेशः १.११२.१५. [वित्ता-जायापदयोः समासे 'जायाया निङ्' सूत्रेण समासान्तो निङ्। वित्ता=वित्तप्राति० स्त्रियां टाप्। वित्तम्=विद्लृ लाभे (तुदा०) विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्वा क्तः। 'वित्तो भोगप्रत्यययोः' अ० ८.२.५८. सूत्रेण नत्वाभावः]

वित्तधम् यो वित्तं धन दधाति तम् (धनिकं जनम्) ३०.११. [वित्तोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कः]

वित्तम् विजानीतम् १.१०५.१. **विद**=बुद्ध्यध्वम् १८.६०. विजानीत १.१५६.३. वित्थ १.८६.८. **विदत्**=प्राप्नोतु, प्राप्नुयात् १.६२.३. जानाति १.७२.४. विद्यात् १.८४.१४. विन्दति १.१००.८. लभते ५.४४.८. वेत्ति ५.४५.८. विन्देत ५.३२.५. लभते १.७२.८. जानीयात्, प्र०—अत्राऽडभावः ३३.५९. लभेत ५.७.६. **विदतम्**=प्राप्नुतम् १.१५१.२. **विदथुः**=विजानीथः १.१८२.४. **विदन्**=लभन्ताम्, विन्दन्तु, प्राप्नुवन्तु, प्र०—अत्र 'वा छन्दसि' इति नुमटोरभावो लोडर्थे लुङ् च ४.३४. **विदन्त**=जानन्ति ४.१.१४. **विदन्ति**=जानन्ति १.६७.२. व्याप्नुवन्ति ७.४३.१. **विदम्**=प्राप्नुयाम् २.२७.१७. **विदः**=लभस्व १.१७३.१३. वेदय ५.३०.४. प्राप्नुयाः ४.१.३. प्राप्नुहि, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति गुणविकल्पो लेट्-प्रयोगोऽन्तर्गतो ण्यर्थश्च। समी०—सायणाचार्येणेदमडागमेन साधितम्। गुणप्राप्तिर्न बुद्धाऽतोऽस्यानभिज्ञता दृश्यते १.४२.७. **विदाः**=विज्ञापय १.७१.७. लम्भय, प्र०—अत्र लोडर्थे लेट् १.३६.१४. **विद्रात्**=प्राप्नुयात् २.२२.४. **विदाथ**=जानीथ, प्र०—लेट्-प्रयोगः १७.३१. **विदाम्**=विदताम्, प्र०—विद ज्ञाने इत्यस्माल्लटि प्रथमबहुवचने 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' अ० ७.१.४८. अनेन तकारलोपे सवर्णदीर्घे विदामिति रूपम् ६.३६. **विदुः**=जानीयुः २.२३.१६. जानन्ति १.१९.३. जानते हैं सं० वि० २१५, १.१६४.३९. **विदे**=प्राप्नुयाम १.१२०.१२. वेद्मि, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.१३२.३. प्राप्नोमि ७.४०.५. **विदेत्**=प्राप्नुयात् विजानीयात् ५.९. **विदेय**=अन्यायेन विन्देय, समी०—अत्र वैयाकरणेन महीधरेण भ्रान्त्या विद्लृ लाभे इत्यस्य व्यत्ययेन 'तुदादिभ्यः शः' इति प्रत्ययेन लिङि रूपमित्यशुद्धं व्याख्यातम्। कुतः ? विद्लृ लाभे धातोः स्वत एव तुदादित्वं वर्त्तते ४.२३. **विदेयम्**=प्राप्नुयाम, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति नलोपः ७.४६. **विद्धि**=जानीहि २.२०.१. **विद्म**=जानीयाम, प्र०—अत्र 'विदो लटो वा' इति णलादय आदेशाः १२.१९. विजानीम १.८१.८. विजानीयाम ३.४२.६. विजानीमः १२.१९. विद्यते=भवति २३.४८. **विद्यात्**=वेत्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लिङ् १.२३.२४. विजानीयात् ३१.२१. **विद्याम्**=जानीयां लभेय वा २.२७.५. **विद्याम**=प्राप्ता भवेम १.१६८.१०. लभेमहि १.१६५.१५. जानीयाम १.४.३. **विद्युः**=विदन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लिङ् १.२३.२४. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लेट्, लट्, लिङ् चापि। वित्तम्=जानीतम् नि० ४.६.]

वित्तम् धनं भोगं वा ५.४२.९. **वित्ते**=भोगने योग्य धनादि के प्रयत्न में सं० वि० १४३, [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्तः। 'वित्तो भोगप्रत्यययोः' इति नत्वप्रतिषेधः। एतावान् खलु वै पुरुषो यावदस्य वित्तम् तै० १.४.७.७. वित्तं धननाम निघं० २.१०.]

वित्तम् लब्धम् (धनम्) १८.१४. विचारितम् (विषयमात्रम्) १८.११. [विद्लृ लाभे (तुदा०) विद विचारणे (रुधा०) धातोः क्तः]

वित्तात् विजानीहि ६.२. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोराशिषि लोट् 'तुह्योस्तातङ्०' इति तातङ्]

वित्तायनी या वित्तानां भोगानां प्रतीतानां पदार्थानामयनी प्रापिका सा (अ०—विद्युत्), प्र०—'वित्तो भोगप्रत्यययोः' अ० ८.२.५८. अनेन वित्त-शब्दः प्रतीतार्थे भोगार्थे च निपातितः ५.९. [वित्त-अयनीपदयोः समासः। अयनी=अय गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्। ततो ङीप्]

वित्तिः प्राप्तिः १८.१४. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः स्त्रियाम् क्तिन्]

वित्वक्षणः विशेषेण दुःखस्य विच्छेत्ता (आर्यः=राजा) ५.३४.६. [वि+त्वक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति कर्त्तरि ल्युट्। छान्दसो युज् वा]

वित्वा विज्ञाय ८.२१. लब्ध्वा २.२१. [विद ज्ञाने (अदा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा क्त्वा। इडागमस्तु न छान्दसत्वात्]

विथुरा व्यथायुक्तानि (पिब्दना=शत्रुसैन्यानि) ६.४६.६. व्यथकानि (शवांसि=बलानि) ६.२५.३. [व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोः 'व्यथेः सम्प्रसारणं धः किच्च' उ० १.३९. सूत्रेण उरच्। सम्प्रसारणञ्च। विथुरप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

विथुरेव यथा व्यथितानि (वस्तूनि) १.१६८.६. [विथुरा-इवपदयोः समासः। विथुरेति व्याख्यातम्]

विथुरेव शीतज्वरव्यथितोद्विग्ना कन्येव १.८७.३. [विथुरा-इवपदयोः समासः। विथुरेति व्याख्यातम्]

विदत् लम्भयन् (ईश्वरः) १.९६.४. प्राप्नुवन् १.६१.६. लभमानः (राजभृत्यः) ४.२१.८. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः शतृ]

विदथम् विज्ञानकारकमध्ययनाध्यापनं यज्ञम्

१.११७.२५. विज्ञानस्वरूपम् (परमेश्वरम्) २.१२.१५. **विदथस्य**=विज्ञानयुक्तस्य (विदुषः सकाशात्) १.५६.२. लब्धुं योग्यस्य (भृत्यस्य) ५.३३.६. विज्ञानकरस्य (व्यवहारस्य) ३.३८.५. विज्ञातव्यजगतो मध्ये १.६०.१. पदार्थविज्ञानस्य ३.३.३. **विदथानि**=विज्ञातव्यानि (कार्याणि) ४.१६.३. विज्ञानानि ३.१.१८. वेदितुं योग्यानि कर्मोपासनाज्ञानानि ६.५१.२. **विदथे**=विज्ञानमये यज्ञे ६.५२.१७. विद्याप्रचारे २.१८.६. यज्ञे २.१५.१०. विज्ञान-सङ्ग्राममये यज्ञे २.१४.१२. विज्ञानप्रापके व्यवहारे ३.३८.६. विद्वत्सत्काराख्ये यज्ञे ३.१.१. युद्धे ऋ० भू० २१५, ऋ० ३.२.१४.६. विज्ञापनीये व्यवहारे ३३.३४. शिल्पाख्ययज्ञे २.३६.१. सुखप्राप्ति और विज्ञान वृद्धिकारक राजा प्रजा के सम्बन्धरूप व्यवहार में स० प्र० १८१, ३.३८.६. औषधिविज्ञानव्यवहारे २.३४.१५. **विदथेषु**=विज्ञातव्येषु पृथिव्यादिषु ३.५५.७. वेदितव्येषु पदार्थेषु १.१५६.१. यज्ञों और युद्धों में आर्याभि० १.२६, ऋ० ५.८.३५.२. धर्म्येषु व्यवहारेषु १.१६७.६. [विद ज्ञाने (अदा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा 'रुविदिभ्यां ङित्' उ० ३.११५. सूत्रेण अथः प्रत्ययः । ङित्वाच्च गुणप्रतिषेधः । विदथः यज्ञनाम निघं० ३.१७. विदथानि पदनाम निघं० ४.३. विदथानि वेदनानि नि० ६.७. विदथा वेदनेन नि० ३.१२. विदथेषु यज्ञेषु नि० ८.१२.]

विदथा विज्ञानानि २३.५७. विदथे विज्ञानमये (परमेश्वरे) १.१६४.२१. विविधानि विज्ञानानि ३.१.२. [विदथम् इति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

विदथानीव सङ्ग्रामानिव १.१३०.१. [विदथानि-इवपदयोः समासः । विदथमिति व्याख्यातम्]

विदथ्यम् विदथेषु यज्ञेषु युद्धेषु वा साधुम् (व्यवहारम्) १.९१.२०. सङ्ग्रामेषु साधुम् (शूरवीरजनम्) ७.३६.८. सङ्ग्रामविज्ञानादिषु भवम् (रयिं=धनम्) ६.८.५. **विदथ्यः**=विज्ञातुं योग्यः (क्रतुः=प्रज्ञा राज्यपालनाख्यो यज्ञो वा) ४.२१.२. [विदथमिति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे साध्वर्थे वा यत्]

विदथ्या विदथेषु सङ्ग्रामादिषु व्यवहारेषु भवा (विदुषी माता) ७.४०.१. **विदथ्याम्**=गृहेषु साध्वीं नीतिम् ७.४३.३. [विदथमिति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे साध्वर्थे वा यत् । ततः स्त्रियां टाप्]

विदथ्येव विदथेषु सङ्ग्रामेषु विज्ञानेषु भवेव (सभावती वाक्) १.१६७.३. [विदथ्या-इवपदयोः समासः । विदथ्येति व्याख्यातम्]

विददृशे विशेषतया दृश्यते १.१३५.७. [वि+दृशिरे प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

विदद्वसुम् विद्वद्भिः सुखज्ञापकैर्वसुभिर्युक्ताम् (मतिं=बुद्धिम्) १.६.६. **विदद्वसुः**=विदन्ति सुखानि येन सः (इन्द्रः=राजपुरुषः) ३.३४.१. **विदद्वसो**=लब्धधन (राजन्) ५.३९.१. [विदद्-वसुपदयोः समासः । विदद्=विद ज्ञाने (अदा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा शतृ । विदद्वसुः वित्तधनः नि० ४.४. यज्ञोऽसुरेषु विदद्वसुः तां० ८.३.३. यज्ञो वै विदद्वसुः तां० ११.४.५. यज्ञो विदद्वसुः तां० १५.१०.४. विदद्वसुः वै तृतीयसवनम् तां० ८.३.६.]

विदधत् विधानं कुर्वन् (त्वष्टा=तनूकर्त्तेश्वरः) ३१.१७. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शतृ]

विदधः विदधाति ७.१७.७. **विदधाति**=विशेषेण निष्पादयति ७.३८.१. **विदधातु**=करोतु ८.१४. **विदधुः**=विदध्यासुः ४.५१.६. विदध्युः ४.५५.२. **विदधे**=विविधतया धृतवान्, अ०—विहितवानस्ति १.२२.१७. विदधाति ३७.२. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लङि छान्दसं रूपम् । अन्यत्र लट् लोट् च]

विदयते विविधं दापयति १.८४.७. **विदयसे**=विशेषेण दयां करोषि ३३.१८. [वि+दय दानगतिरक्षणहिंसादानेषु (भ्वा०) धातोर्लट्]

विदर्दः विशेषेण विदारय ४.१६.१३. विशिष्टतया विदारयेः ६.२०.७. विदृणाति ७.१८.१३. [वि+दृ विदारणे (क्र्या०) धातोर्लोट् 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

विदलकारीम् या विगतान् दलान् करोति ताम् ३०.८. [विदलोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि अण् ततः स्त्रियां ङीप्]

विदसत् विशिष्टतया क्षयेत् १.१२. **विदसाम**=विशेषेणोपक्षयेम १०.२२. विदस्यन्ति विशेषेणोपक्षयन्ति १.११.३. [वि+दसु उपक्षये (दिवा०) धातोर्लेट् विकरणव्यत्ययेन शप्]

विदा विदन्ति येन ज्ञानेन, प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इति करणे क्विप् १.३१.१८. **विदे**=विदन्ति युद्धविद्याविजयान् यया क्रियया तस्यै, प्र०—अत्र सम्पदादित्वात्क्विप् १.१००.१०. ज्ञानवते (विद्वज्जनाय) १.१३२.२. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

विदानः विद्यमानः (अग्निः=विद्युदादिकार्यकारणस्य

स्वरूपः) २.६.१. विद्वान्, भा०—अनन्तविद्यः (परमेश्वरः) ३३.७६. जानन् (विद्वज्जनः) ६.२१.२. विविदिषुः सन् (कुलदेशोद्दीपको जनः) ११.३६. **विदानाः**=लभमानाः (सोमाः=पदार्थाः) ३.३६.२. [वि+विद सत्तायाम् (दिवा०) धातोः शानच् विकरणस्य लुक्। अन्यत्र विद ज्ञाने (अदा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः शानच्-प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

विदाना ज्ञापयन्ती (उषाः) ५.८०.५. **विदाने**=विज्ञायमाने (उषासानक्ता=रात्रिदिने) १.१२२.२. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। ततः स्त्रियां टाप्। विद ज्ञाने धातोर्वा बाहु० औणा० आनच् ततष्टाप्]

विदानासः विद्वांसः सन्तः (आप्ता जनाः) १.१६६.२. ज्ञानवन्तो विद्याग्रहणाय कृतप्रतिज्ञाः (ऋभवः=मेधाविजनाः) ४.३४.२. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० आनच् ततो जसो ऽसुक्। विदान इति विद्वानित्येतत् श० ६.४.२.७.]

विदासीत् विगतदानो भवेत् ७.१.२१ [वि+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लुङ्। अटोऽभावः 'वा छन्दसि' इति सिचो लुङ् न]

विदाः विद्वांसः (जनाः) ५.४५.१. विज्ञानवन्तः (विद्वांसः) ६.४८.६. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः कर्त्तरि इगुपधलक्षणः कः]

विदित्वा विज्ञाय, भा०—ज्ञात्वा ३१.१८. जान कर आर्याभि० २.८, ३१.१८. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः क्त्वा]

विदिद्युतः विद्योतमानान् (उसषः=दिवसान्) २.२.७. विशेषेण प्रकाशयतः (सेनाऽमात्यजनान्) ५.३०.४. [वि+द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'द्युतिगतिजुहोतीनां द्वे च' अ० ३.२.१७८. वा०सूत्रेण क्विप् द्वित्वञ्च। 'द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्' अ० ७.४.६७. सूत्रेण अभ्यासस्य सम्प्रसारणम्]

विदिद्युतानः विशेषेण प्रकाशमानः (परमेश्वरः) ६.१६.३५. [वि+द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शानच्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः 'द्युतिस्वाप्योः०' इत्यभ्यासस्य सम्प्रसारणम्]

विदिशः विरुद्धदिशः ६.१६. [वि+दिश्पदयोः समासः]

विदीद्ये विशेषेण प्रकाशयेयम्, प्र०—दीदयतीति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६, ३.५५.३. [वि+दीदयति ज्वलतिकर्मा (निघं० १.१६.) धातोर्लट्]

विदुक्षः विदूषयेः ७.४.७. [वि+दुष वैकृत्ये (दिवा०) धातोर् लुङ्। च्लेः क्सादेशः। विदुक्षः=अदूदुषः नि० ३.२.]

विदुषः विपश्चितः (जनान्) ३.१४.२. **विदुषा**=आप्तेन विपश्चिता (जनेन) १.१५६.१. **विदुषे**=प्राप्तविद्याय (जनाय) १.११७.१०. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः शतृ। 'विदेः शतुर्वसु' रिति वसुः। 'वसोः सम्प्रसारणम्' इति सम्प्रसारणम्]

विदुषीव पूर्णविद्या स्त्रीव ५.४१.७. जैसे विदुषी स्त्री सं० वि० १०५, ५.४१.७. [विदुषी-इवपदयोः समासः। विदुषी=विद्वस्प्राति० स्त्रियां ङीपि सम्प्रसारणे च रूपम्]

विदुष्टरम् अतिशयितमीश्वरम् ६.१५.१०. **विदुष्टरः**=विज्ञानवत्तमः (अग्निः=विपश्चिद्राजा) ६.१६.६. अतिशयेन विद्वान् (राजा) ७.१६.६. अतिशयेन वेत्ता (विद्वज्जनः) १.१०५.१४. यो विविधानि दुरिष्टानि तारयति प्लावयति सः (न्यायाधीशः) १.३१.१४. [विदुष्-प्राति० अतिशायने तरप्। विदुष्=विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० उसिः किच्च। अथवा वि+दुष्-पूर्वात् तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अच्]

विदुष्टरा अतिशयेन विद्वांसौ (स्त्रीपुरुषौ) २.३.७. [विदुष्टरमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

विदुह्रे विशेषेण प्रपिपर्त्ति १.१३९.७. [वि+दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लट्। 'आत्मनेपदेष्वनतः' अ० ७.१.५. सूत्रेण झस्यादादेशे 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.८. सूत्रेण रुडागमे 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' अ० ७.१.४१. सूत्रेण तलोपः]

विदुः विद्वान् (मघवा=राजा) ७.१८.२. वेत्ता (विद्वज्जनः) १.७१.१०. [विद् ज्ञाने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० उः प्रत्ययः कर्त्तरि]

विदूधोत् विशेषतयाऽकम्पयत् ७.२१.४. [वि+धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसी' ति श्लुः]

विदध्यद्रुचः शस्त्रैः दुष्टाँस्ताडयद्रुचः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२३. [वि+दघ घातने पालने च (स्वा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन श्यन्]

विद्मना वेत्ति येन तेन विज्ञानेन १.११०.६. [विद् ज्ञाने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० मनिन्]

विद्मना विज्ञातव्यानि (जनूंषि=जन्मानि) ७.४.१.

[विद्मन् इति व्याख्यातम् । विभक्तिव्यत्ययः]

विद्मनापसः विज्ञानेन युक्तानि कर्माणि येषान्ते (ऋभवः=मेधाविनो जनाः), प्र०—अत्र तृतीयाया अलुक् १.१११.१. वेदनं विद्म तद्विद्यते येषु तानि विज्ञाननिमित्तानि समन्तादपांसि कर्माणि येषां ते (अ०—मनुष्याः) १.३१.१. विद्मनानि विदितान्यपांसि कर्माणि येषान्ते, भा०—विज्ञाननिमित्तानि कर्माणि येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) ३४.१२. [विद्मना-अपस्पदयोः समासः । समासे तृतीयाया अलुक् । विद्मनेति व्याख्यातम् । अपस् कर्मनाम निघं० २.१. विद्मनापसम्=विदितकर्माणम् नि० ११.३३.]

विद्यद्भिः विद्यमानैः (ग्रावभिः=मेघैः), प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् २६.४. [विद सत्तायाम् (दिवा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

विद्यया यथार्थ ज्ञान से स० प्र० ३१३, ४०.१४. आत्मशुद्धाऽन्तःकरणसंयोगधर्मजनितेन पदार्थदर्शनेन ४०.१४. **विद्यायाम्**=शब्दार्थसम्बन्धविज्ञानमात्रेऽवैदिकाचरणे ४०.१२. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः 'संज्ञायां समजनिषदनिपत०' अ० ३.३.९९. सूत्रेण स्त्रियां क्यप् । ततष्टाप् । विद्या वै धिषणा तै० ३.२.२.२. विद्या ह वै ब्राह्मणमाजगाम नि० २.४. विद्यया देवलोकः (जय्यः) देवलोको वै लोकानां श्रेष्ठस्तस्माद् विद्यां प्रशंसन्ति श० १४.४.३.२४. विद्यया सह म्रियेत न विद्यामूषरे वपेद् । मनु० २.११३]

विद्युत् स्तनयित्नुः १.६४.९. विद्युतम् २५.१. विशेषेण द्योतमानाम् २५.२. **विद्युतः**=सौदामिन्यः १.१०५.१. विशेषेण द्योतमानात् (पुरुषात्=ईश्वरात्) ३२.२. विविधतया द्योतयन्ते यास्ताः १.२३.१२. **विद्युता**=विद्युन्निष्पन्नेनाऽस्त्रसमूहेन १.८६.९. **विद्युते**=विद्युदिवाऽभिव्याप्ताय (भगवते=परमेश्वराय) ३६.२१. [वि+द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप् 'भ्राजभासधुर्विद्युत्०' अ० ३.२.१७७ सूत्रेण । (प्रजापतिः) तान् (देवान्) व्यद्यत् । यद् व्यद्यद् तस्माद्विद्युत् तै० ३.१०.९.१. विद्युद् ब्रह्मेत्याहुः । विदानाद् विद्युत्० श० १४.८ ७.१. विद्युद् वाऽशनिः श० ६.१.३.१४. विद्युत् सावित्री जै० उ० ४.२७.९. विद्युदेव सविता गो० पू० १.३३. अथैतस्याम् उदीच्यान्दिशि भूयिष्ठं विद्योतते ष० २.४. वृष्टिर्वै याज्या विद्युदेव, विद्युद्धीदं वृष्टिमन्नाद्यं संप्रयच्छति ऐ० २.४१. वृष्टिर्वै विराट् तस्या एते घोरे तन्वौ विद्युच्च ह्रादुनिश्च श० १२.८.३.११. विद्युद्वाऽअपां ज्योतिः श० ७.५.२.४९. (वसोर्धारायै) विद्युत्स्तनः श० ९.३.३.१५. यो विद्युति (पुरुषः) स सर्वरूपः । सर्वाणि ह्येतस्मिन् रूपाणि जै० उ० १.२७.६.]

विद्युतयन्त विद्युतयन्तु २.३४.२. [विद्युदिति व्याख्यातम् । ततः 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिजन्ताल् लङ् । अडभावः]

विद्युत्याय विद्युति भवाय (पुरुषाय) १६.३८. [विद्युत्प्राति० भवार्थे यत्]

विद्युद्रथः विद्युता चालितो रथः ३.१४.१. **विद्युद्रथाः**=विद्युद्युक्ता रथा यानानि येषान्ते (मर्याः=मनुष्याः) ३.५४.१३. [विद्युत्-रथपदयोः समासः]

विद्युन्मद्भिः तारयन्त्रादिसम्बद्धा विद्युतो विद्यन्ते येषु तैः (रथेभिः=विमानादिभिर्यानैः) १.८८.१. [विद्युत्प्राति० सम्बन्धे (मत्वर्थे) मतुप्]

विद्युन्महसः ये विद्युद्विद्यायां महसो महान्तः (मरुतः=मनुष्याः) ५.५४.३. [विद्युत्-महस्पदयोः समासः महस्=मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० असुन् । महः महन्नाम निघं० ३.३.]

विद्योत् दीप्यमानाऽऽग्नेयास्त्रादेः, प्र०—अत्र द्युत्धातोर्विच्, पञ्चम्येकवचनञ्च व्यत्ययेन २०.२. [वि+द्युत् दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्विच् । विभक्तिव्यत्ययः]

विद्योतमानाय विद्युतः प्रवर्त्तकाय (सघन-मेघाय) २२.२६. [वि+द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शानच्]

विद्रधे विशेषेण दृढे (विज्ञानकर्मणी) ४.३२.२३. [विद्रधे पदनाम निघं० ४.१. विद्रधे विद्धे नि० ४.१५]

विद्रे विन्दन्ति लभन्ते, प्र०—अत्र 'छन्दसि वा द्वे भवतः' अ० ६.१.८. इत्यनेन वार्त्तिकेन द्विर्वचनाऽभावः १.८७.६. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लिटि प्रथमबहुवचनम् । द्वित्वं न भवति छान्दसत्वात् । 'इरयो रे' इति रे-आदेशः]

विद्वान् यो वेत्ति सः (राजा) १२.१५. सकलविद्यावित् (पूर्णविद्यो जनः) ४.४२.३. साङ्गोपाङ्गां विद्यां विदन् (इन्द्रः=शिल्पिजनः) ३.३५.४. यो वेत्ति सर्वा विद्याः सः (विद्वज्जनः) १.४५.५. सकलविद्याप्रापकः, परिमितविद्याप्रदो वा (परमेश्वरो वैद्यो वा) १.९४.१६. सकलशास्त्रवित् (इन्द्रः=विद्वज्जनः) २.१५.७. ज्ञानवान् (विद्वज्जनः) १.२४.१३. अनन्तविद्य ईश्वर आप्तमनुष्यो वा १.९०.१. जानन् सन् (गृहपतिः) ८.१३. पण्डितः ३२.९. सबको जानने वाला (परमात्मा) स० प्र० २४७, ४०.१६. सर्वविद्याऽऽधारः (ईश्वरः) २.६.८. आविर्विद्यः

(सज्जनः) ६.१५.१०. सत्याऽसत्यवेत्ता (मनुष्यः) ३.१७.३. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः शतृ । 'विदेः शतुर्वसुरि' ति शतृस्थाने वसुरादेशः । विद्वांसो हि देवाः श० ३.७.३.१०. ये वै विद्वांसस्ते पक्षिणो ये ऽविद्वांसस्ते ऽपक्षास्त्रिवृत्पञ्चदशावेव स्तोमौ पक्षौ कृत्वा स्वर्गं लोकं प्रयन्ति तां० १४.१.१३. विद्वान् प्रजानन् नि० ८.२०]

विद्वांसा पूर्णविद्यायुक्तावध्यापकोपदेशकौ १ १२०.३. सर्वशुभगुणविद्याविज्ञापकौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१२०.३. [विद्वान् इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

विद्विषते परस्पर विद्वेष करते हैं सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.४. **विद्विषामहै**=परस्पर हम विद्वेष अप्रीति करते हैं आर्याभि० २.१. तै० ब्रा० १०.१. [वि+द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोर्लेटि प्रथमबहुवचनम्]

विधतः परिचरतः (मित्रस्य) ५.६५.४. यो विधानं करोति तस्य (विद्वज्जनस्य) १.७३.१. ताडयितॄन् (विद्युदग्नीन्) १.१६७.५. सेवकान् (जनान्) २.१.६. **विधते**=विधात्रे (मनुष्याय) १.११९.७. सेवमानाय (मर्त्याय=मनुष्याय) ६.६५.३. विधानं कुर्वते (जनाय=परोपकारे प्रसिद्धायाध्यापकाय) ७.१६.१२. सत्कर्त्रे (सज्जनाय) ६.५.३. पुरुषार्थं कुर्वते (जनाय) ४.४४.४. विविधव्यवहारं यथावत् कुर्वते (वाघते=मेधाविजनाय) ४.२.१३. **विधन्तः**=परिचरन्तः (भृगवः=विद्वांसो जनाः) २.४.२. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शतृ । 'वा छन्दसी' ति द्वित्वं न भवति]

विधन् विदधतु १.१४९.७. **विधन्त**=सेवन्ते ३.३.१. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लङ् । छन्दसि द्वित्वाऽभावे झेर्जुसादेशोऽपि न भवति]

विधर्त्तः यो विविधान् शुभान् गुणान् धरति तत्सम्बुद्धौ (विद्वन् पते) २.१.३. **विधर्त्ता**=विविधानां लोकानां धर्त्ता (परमात्मा) ७.४१.२. यो विविधान् पदार्थान् धरति सः (ईश्वरः) ३४.३५. विशेषेण धर्त्ता (वीरः=रक्षको मनुष्यः) ७.५६.२४. विविधाऽऽकर्षणेन पृथिव्यादिधारकः, अ०—पोषकः (सूर्यः) १५.११. विविधस्य शीतस्य धर्त्ता (सोमः=चन्द्रः) १५.१३. विविधानां रत्नानां धारकः (राजा) १५.१२. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच् । विधर्त्ता विधारयिता नि० १२.१४]

विधर्मणि विशिष्टे धर्मे ६.७१.१. विविधञ्च तद्धर्म च तस्मिन् ३.२.३. विरुद्धधर्मण्याकाशे १.१६४.३६.

विधर्मन्=विशेषधर्माऽनुचारिन् (विद्वज्जन) ५.१७.२. [वि-धर्मन्पदयोः समासः । धर्मन्=धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्मनिन्]

विधवाम् विगतो धवः पतिर्यस्यास्ताम् (मातरं=जननीम्) ४.१८.१२. [वि-धवपदयोः समासः । विधवा विधातृका भवति, विधवनाद्वा विधावनाद्वेति चर्मशिरा, अपि वा धव इति मनुष्यनाम, तद्वियोगाद् विधवा नि० ३.१५.]

विधाता विधानकर्त्ता (ईश्वरः) ६.५०.१२. निर्माता (ईश्वरः) १७.२६. सर्वेषां पदार्थानां कर्मफलानाञ्च विधानकर्त्ता (परमेश्वरः) ३२.१०. कर्मानुसारेण फलप्रदाता जगन्निर्माता (परमेश्वरः) १७.२७. सब कामों का पूर्ण करने वाला (परमात्मा) सं० वि० ६, ३२.१०. विविध विचित्र जगत् का उत्पादक (ईश्वर) आर्याभि० २.४०, १७.२६. सब मोक्षसुखादि कामों का विधायक सिद्धिकर्त्ता (ईश्वर) आर्याभि० २.४२, १७.२७. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच् । विधाता मेधाविनाम निघं० ३.१५. चन्द्रमा एव धाता च विधाता च गो० उ० १.१०. विधाता धात्रा व्याख्यातः नि० ११.११]

विधाति विदध्यात् १.१२०.१. **विधाः**=विविधतया दधासि १.७२.७. विधेहि ४.६.११. **विधिषे**=विशेषेण दधासि १.७०.५. **विधेम**=कुर्याम १.१८९.१. विचेरम २.९.३. विधानं कुर्याम ४.७. वदेम ५.३६. परिचरेम १३.४. प्राप्नुयाम सेवेमहि वा, प्र०—विधेमेति गतिकर्मा निघं० २.१४, २.३५.१२. सत्कुर्याम ६.१.१०. निष्पादयेम ८.२५. किया करें सं० वि० ७, ४०.१६. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लेट् । 'वा छन्दसी' ति द्वित्वं न भवति । अन्यत्र लुङ् लिङ् च । विधेम परिचरणकर्मा निघं० ३.५. विधतिर्दानकर्मा नि० १०.२३.]

विधाभिः अद्भिः, विविधानि वस्तूनि ददति याभिः प्राणचेष्टाभिस्ताभिः, विविधाभिः सत्क्रियाधारिकाभिः क्रियाभिः, समस्ताभिः सुखव्यापिकाभिर्वा (क्रियाभिः) १४.७. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.३.१०६. सूत्रेण स्त्रियामङ् । ततष्टाप्]

विधायि विशिष्टतया ध्रियते १.१५८.३. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

विधारयः यो विशेषेण धारयति सः (अ०—परमात्मा) १७.८२. [वि+धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् 'अनुपसर्गाल्लिम्पविन्दधारि०' अ० ३.१.१३८. सूत्रेण छन्दसि सोपसर्गादपि शः । छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पनात्]

विधारे विधारयामि २२.१८. [वि+धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट् । 'छन्दस्युभयथा' सूत्रेणार्धधातुकत्वान् णेर्लोपः]

विधावतः विविधान् मार्गान् धावतः (रथान्) १.८८.५. [वि+धावु गतिशुद्ध्योः (भ्वा०) धातोः शतृ]

विधूताय येन विविधं धूतं कम्पितं तस्मै (जीवाय) २२.८. [वि+धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोः क्तः । ततश्चतुर्थी]

विधूनुथ विशेषेण कम्पयथ ५.५४.१२. [वि+धूञ् कम्पने (क्र्या० धातोर्लट्]

विधून्वानाय यो विविधं धुनोति तस्मै (जीवाय) २२.८. [वि+धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोः शानच् । ततश्चतुर्थी ।

विधृतिम् विशेषेण धारणाम् २५.९. विविधं धारणाम् (अग्नि=योगाभ्यासजनितां विद्युतम्) ११.६६. **विधृतिः**=विविधा धारणा यस्याः सा (पत्नी) ३७.१२. [वि+धृतिपदयोः समासः । धृतिम्=धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । तस्मात् (द्वे तृणे) तिरश्ची निदधाति तस्माद्द्वेव (अनयोः) विधृती (इति) नाम श० १.३.४.१०.]

विध्य ताडय २.३०.४. **विध्यत्**=विध्यति १.६१.७. **विध्यताम्**=ताडयतम् ६.७५.४. ताडयेताम् २९.४१. **विध्यति**=ताडयति ४.८.८. [व्यध ताडने दिवा०) धातोर्लोट् । 'ग्रहिज्या०' सूत्रेण सम्प्रसारणम् । अन्यत्र लेट् लट् च ।

विध्यता ताडनकर्त्रा (सभाध्यक्षादिजनेन) १.८६.९. [व्यध ताडने (दिवा०) धातोः शतृ । 'ग्रहिज्या०' सूत्रेण सम्प्रसारणम्]

विनक्तु वेचयति वेचयतु वा, प्र०—अत्राऽऽद्ये पक्षे लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.१६. [विचिर् पृथक्भावे (रुधा०) धातोर्लोट्]

विनयन्ति विविधतया प्राप्नुवन्ति १.६४.६. [वि+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

विनयः विविधो नयो यस्य सः (राजपुरुषः) २.२४.९. [वि+नयपदयोः समासः । नयः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'एरच्' इत्यच्]

विनशन् व्याप्नुवन्ति, अ०—प्राप्नुवन्ति, प्र०—नशतीति व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८, २.३५.६. विनाश कर सकते हैं सं० वि० १०४, २.३५.६. [वि+नशत् व्याप्तिकर्मा (निघं० २.१८.) । ततो लङ्, अडभावश्छान्दसः । अथवा वि+णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन शप् । अथवा लुङि पुषादित्वाच् च्लेरङि रूपम्]

विनंशिने विनष्टुं शीलाय (दुर्जनाय) ९.२०. [वि+णश अदर्शने (दिवा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः । ततश्चतुर्थी]

विनाशम् विनश्यन्त्यदृष्टाः पदार्था भवन्ति यस्मिन् तम् ४०.११. **विनाशेन**=नित्यस्वरूपेण विज्ञातेन कारणेन सह ४०.११. [वि+णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्घञ्]

विनाशयन् अविद्याऽदर्शनं प्रापयन् (सभाद्यध्यक्षः) १.५५.६. [वि+णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

विनिक्षे विनाशाय ५.२.९. [विनिक्षे विनिक्षणाय नि० ४.१८. वि+नि+क्षणु हिंसायाम् (तना०) धातोस्तुमर्थे केः]

विनिश्चक्रुः विशेषेण नितरां कुर्याम ४.३६.४. [वि+निस्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिट्]

विनीनशः विशिष्टतया भृशं नाशयेः ६.४८.१७. [वि+णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्]

विनुदः विविधतया प्रेरकस्य (जगदीश्वरस्य) २.१३.३ [वि+णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

विन्द प्राप्नुहि ७.१३.३. लभेरन् ७.१८.१८. **विन्दत्**=विन्दति ६.४४.२३. **विन्दते**=प्राप्नोति ७.३२.२१. लभते ४.२९. प्राप्त होवे स० प्र० ९८, अथर्व० ३.२४.११.१८. **विन्दन्**=जानन्ति ४.१.१६. लभन्ते १.१०५.१. **विन्दन्ति**=लभन्ते १.१०५.१. **विन्दसि**=लभसे १.१७६.१. **विन्दसे**=लभसे २.१३.११. **विन्धे**=विन्दामि, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन दकारस्य धकारः १.७.७. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लोट् । 'शे मुचादीनाम्' इति नुम् । अन्यत्र लङ् लट् च]

विन्दमानः प्राप्नुवन् (वीरः=पुरुषार्थिजनः) ३.५५.२०. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः शानच् । 'शे मुचादीनाम्' इति नुम्]

विपक्षसा विविधैः परिगृहीतौ (हरी=हयौ) २३.६.

विविधानि यन्त्रकलाजलचक्रभ्रमणयुक्तानि पक्षांसि पार्श्वे स्थितानि ययोस्तौ (रथे=याने), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति आकारादेशः १.६.२. [वि-पक्षस्पदयोः समासे प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः। पक्षस्=डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोः 'पचिवचिभ्यां सुट् च' उ० ४.२२१. सूत्रेणासुन्। सुडागमश्च]

विपणिः व्यवहर्त्ता (जनः) १.१८०.७. [वि+पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोरौणा० इन्]

विपतथ विशेषेणाऽध आगच्छथ १.१६८.६. [वि+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

विपतयतः विशिष्टतया पतिरिवाऽऽचरतः (कर्णा=कर्णौ) ६.६.६. [वि-पतिपदयोः समासे कृत आचारेऽर्थे क्विप्। ततो लट्]

विपत्मनः विशेषेण गमनशीलस्य (अत्यस्य=अश्वस्य) १.१८०.२. [वि+पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्मनिन्। ततः षष्ठी]

विपथयः विविधा विरुद्धा वा पन्थानो येषान्ते (विद्याधर्ममार्गाः) ५.५२.१०. [वि-पथिपदयोः समासः। पथिः=पथे गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इन्]

विपन्यया विशेषव्यवहारयुक्तया (क्रियया) ३३.६. विशिष्टोद्यमेन ६.१६.३४. विशेषेण स्तुत्या प्रशंसितया प्रज्ञया क्रियया वा ३.२८.५. स्तोतुं योग्यया धर्म्यया नीत्या १.११६.७. **विपन्या**=विपणे विविधव्यवहारे साध्व्या (प्रशंसया) ४.१.१२. [वि+पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः 'अवद्यपण्यवर्या०' अ० ३.१.१०१. सूत्रेण यत्। ततः स्त्रियां टाप्। णकारस्य नकारो वर्णव्यत्ययेन। पनधातोर्वा यत्]

विपन्यवः विशेषेण प्रशंसिताः (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.१०.६. विशेषेणाऽऽत्मनः पनं स्तवनमिच्छवः (जनाः) १.१३८.३. विशेषेण स्तावकाः (आयवः=मनुष्याः) ५.४३.१४. विशेषेण स्तुत्या व्यवहर्त्तारः (सत्पुरुषाः) २.२०.१. विविधं जगदीश्वरस्य गुणसमूहं पनायन्ति स्तुवन्ति ये ते (विप्रासः=मेधाविनः), प्र०—अत्र बाहुलकादौणादिको युच् प्रत्ययः १.२२.२१. विविधव्यवहारकुशलाः (मेधाविनः) १.१०२.५. विशेषेण स्तोतुमर्हा ईश्वरस्य वा स्तावकाः विप्रासः=मेधाविजनाः) ३४.४४. [वि+पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्घञर्थे क-प्रत्यये विपनम्। तत आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उ-प्रत्यये विपन्युः। अथवा व्यवहारस्तुत्यर्थकात् पनधातोर्बाहु० औणा० युच्। विपन्यवः मेधाविनाम निघं० ३.१५.]

विपन्यामहे विशेषेण स्तुमहे १.१८०.७. [वि+पन व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन श्यन्]

विपपृच्यात् विशेषेण संयुज्येत ४.२४.५. [वि+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लिङ्। द्विर्वचनं छान्दसम्]

विपयन्ति विशेषतया गच्छन्ति ७.२१.२. [वि+पि गतौ (तुदा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

विपरेतन विरुद्ध चली जावें, फिर पास कभी न आवें सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२९. [वि+परा+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्। तस्य तनवादेशः]

विपर्वम् विविधैरङ्गोपाङ्गैः पूर्णम् (वृत्रं=धनम्) १.१८७.१. विगतानि पर्वाणि ग्रन्थयो यस्य तम् (वृत्रं=मेघम्) ३४.७. [वि-पर्वन्पदयोः समासः। न लोपश्छान्दसः। पर्वन्=पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'स्नामदिपद्यर्तिपॄशकिभ्यो वनिप्' उ० ४.११४. सूत्रेण वनिप्। विपर्वम् विपर्वाणम् नि० ९.२५.]

विपश्चितम् पण्डितम् ३.२७.२. विद्वांसम्, य आप्तः सन्नुपदिशति तम् (इन्द्रं=विद्यापरमैश्वर्ययुक्तं मनुष्यम्) १.४.४. **विपश्चितः**=अनन्तविद्यात् (सदसस्पतेः=परमेश्वरात्) १.१८.७. अनन्तविद्यस्य (ईश्वरस्य) ३७.२. अखिलविद्यायुक्तस्याऽऽप्तस्येव वर्त्तमानस्य (विप्रस्य=मेधाविजनस्य) ११.४. सदसद्विवेका विद्वांसः (उपदेशका जनाः) ४.३६.७. [विपश्चित् मेधाविनाम निघं० ३.१५. यज्ञो वै बृहन् विपश्चित् श० ३.५.३.१२.]

विपश्य विविधतया प्रचक्ष्व ७.४५. **विपश्यति**=विविधतया प्रेक्षते ३.६२.९. [वि+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्। शिति प्रत्यये धातोः पश्यादेशः]

विपः मेधावी (सज्जनः), प्र०—विप इति मेधाविनाम निघं० ३.१५, ६.४४.६. विविधं पातीति विपो मेधावी (प्रजाजनः) ७.१७. **विपाम्**=मेधाविनाम् (जनानाम्), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति नुडभावः ३.१०.५. [वि+पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.१.१३६. सूत्रेण कः। विपः मेधाविनाम निघं० ३.१५.]

विपा यौ विविधप्रकारेण पातस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.६७.१. [विप इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

विपाका विविधगुणैः परिपक्वा (त्वेषा=प्रदीप्तिः)

१.१६८.७. [वि-पाकपदयोः समासे स्त्रियां टाप्। पाकः= पच्+घञ्]

विपाट् या विविधं पटति गच्छति विपाटयति वा सा (नदी) ३.३३.१. **विपाशम्**=विगता पाड् बन्धनं यस्यां ताम् (विदुषीम्) ३.३३.३. **विपाशि**=विगतपाशे बन्धनरहिते (मार्गे) ४.३०.११. [वि+पट गतौ (भ्वा०) धातोश्छान्दसो ण्विः। अथवा-वि+पश बन्धने (चुरा०) धातोः ण्विः। विपाड् विपाटनाद्वा विप्राशनाद्वा विप्रापणाद्वा पाशा अस्यां व्यपाश्यन्त वसिष्ठस्य मुमूर्षतस्तस्माद् विपाड् उच्यते पूर्वमासीदुरुञ्जिरा नि० ९.२५.]

विपानम् विविधं पानं रक्षणं यस्मात्तत् (अमृतम्) १९.७५. विविधं पानं येन तत् (इन्द्रियं=जिह्वादिकम्) १९.७६. विशिष्टेन पानेन युक्तम् (इन्द्रियं=विदुषा जुष्टमात्मबलम्) १९.७९. विविधरक्षाऽन्वितम् (इन्द्रियं= प्रज्ञानम्) १९.७४. विविधशब्दार्थसम्बन्धयुक्ताम् (इन्द्रियं= दिव्यां वाचम्) १९.७३. विविधपाननिमित्तम् (इन्द्रियं= धनम्) १९.७८. विविधराजधर्मरक्षणम् ऋ० भू० ३०६, [वि-पानपदयोः समासः। पानम्=पा रक्षणे (अदा०) पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा ल्युट्]

विपिपानम्=औषधरसानां विविधं पानं कर्त्तुं शीलम् (सद्वैद्यम्) १.११२.१५. **विपिपानस्य**=विविधानि पानानि यस्मात्तस्य (अद्रेः=मेघस्य) ७.२२.४. **विपिपानः**=विशेषेण रक्षन् (विद्वज्जनः) ४.१६.३. **विपिपानाः**=विविधरक्षादिकर्त्तारः (अध्यापकोपदेशकाः) २०.७६. [वि+पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लिटः कानच्। अभ्यासस्येकारादेशश्छान्दसः]

विपिपाना विविधं राज्यं रक्षमाणौ (अश्विना= सभासेनेशौ) १०.३३. [विपिपानमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

विपीपयन्त व्याप्याययन्ति १.१८१.५. [वि+ ओप्यायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङि धातोः पी इत्यादेशे छान्दसं रूपम्]

विपृक्तः विशेषेण सम्बद्धः (अर्वा=वह्निरिव वर्त्तमानो जनः) २९.१४. स्वरूपेण सम्पर्करहितः (अग्निः) १.१६३.३ [वि+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः क्तः]

विपृक्वत् विशेषेण सम्बद्धम् (अमृतम्) ५.२.३. [वि+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्भावे क्विप्प्रत्यये विपृच्। ततः सम्बन्धे (मत्वर्थे) मतुप्। 'झयः' इति मतोर्मस्य वकारः]

विपृङ्क्त विसंसर्गं कुरुत १९.११. [वि+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लोट्]

विपृचः ये वियुञ्जते वियुक्ता भवन्ति ते (मनुष्याः) १९.११. **विपृचे**=वियोजनाय ४.१३.३. **विपृचौ**=विगतसम्पर्कौ (राजप्रजाजनौ) ९.४. [वि+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

विप्र मेधाविन् (जन) १.१२७.२. विविधज्ञानेन पदार्थान् प्राति पूरयति स विद्वान् तत्सम्बुद्धौ १.१४.२. **विप्रम्**=आप्तं मेधाविनम् (जनम्) १५.४७. विद्यासुशिक्षायोगेन मेधाविनम् १.११९.७. विद्याविनयाभ्यां धीमन्तम् (सज्जनम्) ६.१५.७. **विप्रस्य**=विशेषेण प्राति व्याप्नोति तस्य (सवितुः=परमात्मनः) ५.८१.१. अनन्तप्रज्ञाकर्मणो जगदीश्वरस्य ५.१४. सर्वशास्त्रविदो मेधाविनः (जनस्य) ११.४. **विप्रः**=मेधावीव सर्ववेत्ता (ईश्वरः) ४.२६ १. **विप्राः**=विविधमेधाव्यापिनो मेधाविनः (योगिनः) ३७.२. विद्यासुशिक्षाजातप्रज्ञाः (राजपुरुषाः) ९.१८. **विप्रैः**= विविधान् पदार्थान् प्रान्ति तैः किरणैः १.६२.४. [वि+ प्रा पूरणे (अदा०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.१.१३६. सूत्रेण कर्त्तरि कः। अथवा—वपति धर्ममिति विग्रहे डुवप बीजसन्ताने छेदने च (भ्वा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्रवज्रविप्र०' उ० २.२९. सूत्रेण रन्प्रत्ययान्तो निपात्यते। बहुलवचनाद् धातोरुपधाया इत्वम्। विप्रा मेधाविनः नि० ७.१८. ये वै ब्राह्मणाः शुश्रुवांसोऽनूचानास्ते विप्राः श० ३.५.३.१२. विप्रा ह्येते यच्छुश्रुवांसः तै० २.५.९.२. विप्रः मेधाविनाम निघं० ३.१५. (यजु० ११.४.) विप्रा विप्रस्येति प्रजापतिर्वै विप्रो देवा विप्राः श० ६.३.१ १६. एते वै विप्रा यद् ऋषयः श० १.४.२.७.]

विप्रजूतः विप्रैर्मेधाविभिर्जूतः शिक्षितः (विद्वज्जनः) २०.८८. विप्रैर्मेधाविभिर्विद्वद्भिर्ज्ञातः (इन्द्रः=परमेश्वरः) १.३.५. [विप्र-जूतपदयोः समासः। विप्र इति व्याख्यातम्। जूतः=जू सौत्रो धातुः, वेगितायां गतावर्थे, ततः क्तः]

विप्रतमः अतिशयेन योगी (मर्यः=मनुष्यः) ३.३१.७ [विप्रप्राति० अतिशायने तमप्]

विप्रथन्ताम् विशेषेण प्रख्यान्तु २.३.५. **विप्रथस्व**= विशेषतया प्रख्याहि ५.५.४. [वि+प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लोट्]

विप्रदुहन्ति विशिष्टतया पूरितान् कुर्वन्ति ४.२४.९. [वि+प्र+दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लट्]

विपप्रथे विविधतया प्रथते १.५५.१. [वि+प्रथ

प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

विप्रमन्मनः विप्रस्य मन्म विज्ञानं यस्मिँस्तस्य (वचनस्य) ६.३६.१. [विप्र-मन्मन्पदयोः समासः। मन्मन्= मन ज्ञाने (दिवा०) धातोर्मनिन्]

विप्रयच्छतात् विषशेतया प्रत्यक्षं देहि १.४८.१५. [वि+प्र+दाण् दाने (भ्वा०) धातोर्लोटि 'पाघ्रा०' सूत्रेण यच्छादेशे 'तुह्योस्तातङ्०' इत्याशिषि तातङ्]

विप्रराज्ये विप्राणां मेधाविनां राज्ये राष्ट्रे ३३.८३. [विप्र-राज्यपदयोः समासः]

विप्रवाहसा यौ विद्वद्भिः प्रापणीयौ (सज्जनौ) ५.७४.७. [विप्र-वाहसपदयोः समासे द्विवचनस्याकारश्छान्दसः। वाहसः=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहियुभ्यां णित्' उ० ३.११९. सूत्रेणासच्]

विप्रासः भा०—योगाभ्यासादिना शुद्धाऽन्तःकरणात्मानः (जनाः) ३४.४४. [विप्र इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

विप्रेभिः विपश्चिद्भिः १.१२७.२. मेधाविभिः (ऋभुभिः=मेधाविमनुष्यैः) १.२०.१. [विप्रप्राति० 'वहुलं छन्दसि' सूत्रेण भिस ऐसादेशो न भवति]

विप्रुतम् विविधानां व्यवहाराणां वेत्तारम् (ऋषिम्=अध्यापकम्) १.११७.४. विप्रवमाणम् (नौकादिकम्) १.११६.२४. **विप्रुद्भिः**=विशेषेण पूर्णैः (पदार्थैः) २५.९. [वि+प्रुङ् गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

विबध्नते विशिष्टतया बध्नन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.२८.४. [वि+बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

विबभाज विशेषेण भजेत सेवेत ७.१८.२४. [वि+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

विबलम् विविधं बलं यस्मात् तत् (छन्दः=स्वाधीन्यम्) १४.९. [वि-बलपदयोः समासः]

विबाधते विशेषतया विलोडयन्ति १.५१.१०. **विबाधसे**=निवारयसि २.२३.५. **विबाधिष्ट**=विशिष्टतया बाधयन्तु ७.२३.३. [वि+बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लुङ्, अटोऽभावश्छान्दसः]

विबाध्य निःसार्य २.२३.३. [वि+बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

विबाल्यम् विगतं बाल्यं यस्य तम् (सिन्धुं=नदम्) ४.३०.१२. [वि+बाल्यपदयोः समासः]

विबीभयत् विशेषेण भयितुं शक्नोति १.८०.१२. [वि+ञिभी भये (जु०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

विबोधय विविधतया बोधयति, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१२.४. विशिष्टतयाऽवगमय १.२२.१. [वि+बुध अवगमने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

विभक्ता सत्याऽसत्ययोर्विभाजकः (इन्द्रः=परमैश्वर्ययुक्तो राजा) ७.२६.४. विभज्य दाता (विद्वज्जनः) ५.४६.६. विविधानां पदार्थानां संभागकर्त्ता (विद्वज्जनः) १.२७.६. विभागकर्त्ता (राजा) ४.१७.११. **विभक्तारम्**=जीवेभ्यस्तत्तत्कर्मानुकूलफलविभाजयितारम् विविधपदार्थानां पृथक् पृथक् कर्त्तारं वा (सवितारं=परमेश्वरं सूर्यं वा) १.२२.७. [वि+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

विभक्ता विभागं प्राप्ताः (प्रजाजनाः) ६.३६.१. भिन्ने-भिन्ने (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ७.१८.२४. [वि+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

विभज विशेषेण सेवस्व १.८१.६. **विभजतु**=विभागं करोतु ७.४५. **विभजाति**=विभजेत् २.२६.१. **विभजामि**=पालन के लिए विभाजित करता हूँ स० प्र० २३८, १०.४८. **विभजासि**=विभजेः १.१२३.३. [वि+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लेट् लट् च]

विभजन् विभागं कुर्वन् (शूरः=निर्भयो जनः) १.१०३.६. **विभजन्तः**=विविधतया सेवमानाः (जनाः) २.१३.४. [वि+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः शतृ]

विभञ्जनुः शत्रूणां विभञ्जकः (इन्द्रः=राजा) ४.१७.१३. [वि+भञ्जो आमर्द्दने (रुधा०) धातोर्बाहु० औणा० अनुङ्]

विभरन्ते विशेषेण धरन्ति ५.११.४. [वि+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

विभराः ये विशेषेण भरन्ति पोषयन्ति ते (विद्वज्जनाः) ५.३१.६. [वि+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच्]

विभवः व्यापकाः (अश्वाः=किरणाः) ३.६.९. **विभुभिः**=सद्गुणादिषु व्याप्तैः (सज्जनैः) ७.४८.२. **विभुवे**=व्यापकाय वायवे २२.३०. **विभुः**=सर्वव्यापकः सर्वसभासेनाङ्गैः शत्रुबलेषु व्यापनशीलो वा (जगदीश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.३१.२. सर्वमार्गव्यापनशीलः (यामः=रथः) १.३४.१. व्यापक ईश्वरः १.१४१.९. **विभून्**=व्यापकान् (भा०—आकाशकालदिशः) २०.२३. [वि+

भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्' अ० ३.२.१८०. सूत्रेण डुः]

विभाक् यो विभजति (इन्द्रः=राजा) ७.१८.१३. [वि+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'भजो ण्विः' इति ण्विः]

विभागे विभजन्ति यस्मिँस्तस्मिन् व्यवहारे ७.५६.२१. विशेषेण भजनीये व्यवहारे ७.४०.१. सेवनव्यवहारे १.१०९.५. [वि+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्घञ्]

विभाति विशेषेण प्रकाशते ३७.१६. विशेषेण प्रकाशयन् प्रकाशयिता भवति ३२.७. विविधतया प्रकाशते १.९२.९. प्रदीप्यते १२.२२. विशिष्टतया प्रकाशयति १.९२.११. **विभासि**=विविधान् दीपयति १.९२.८. **विभाहि**=प्रकाशय १७.६६. विविधतया भाहि १.११३.१९. [वि+भा दीप्तौ (अदा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोडपि]

विभाती विविधानि मूर्त्तद्रव्याणि प्रकाशयन्ती (उषाः) १.९२.६. विविधतया सद्गुणैः प्रकाशमाना (युवतिः) १.१२३.१०. प्रकाशन्ती (उषाः) १.१२४.६. **विभातीनाम्**=प्रकाशयन्तीनां सूर्यकान्तीनाम् १.११३.१५. **विभातीः**=विशेषेण प्रकाशयन्तीः (उषसः) ३.६.७. विविधतया प्रकाशवतीः (उषसः) १.११३.१७. प्रकाशयन्त्यः (उषसः) ४.५१.१. विशेषेण दीप्तिमत्यः (उषसः) ७.३५.१०. विशिष्टप्रकाशान् १.१२३.६. [वि+भा दीप्तौ (अदा०) धातोः शत्रन्तात् स्त्रियां ङीप्]

विभावम् विशेषेण भावुकम् (विद्युतम्) १.१४८.१. [वि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

विभावरि विविधा दीप्तयो यस्यास्तत्-सम्बुद्धौ (देवि) १.४८.१. प्रशस्तविविधप्रकाशयुक्ते (स्त्रि) ४.५२.६. या विविधतया भाति प्रकाशयति तत्सम्बुद्धौ (उषः) १.४८.१०. प्रकाशमाने (स्त्रि) ५.७९.१०. प्रकाशयुक्तोषर्वद्वर्त्तमाने (विदुषि स्त्रि) ५.७९.४. विविधं जगत् भाति दीपयति सा विभावरी, प्र०—अत्र 'वनो र च' अ० ४.१.९. अनेन ङीप् रेफादेशश्च १.३०.२०. [विभाप्राति० मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' अ० ५.२.१०९. वा०सूत्रेण वनिप् अथवा वि+भा दीप्तौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि वनिप्। तत्र उभयत्रापि स्त्रियां 'वनो र च' इति ङीप् रौ। विभावरी उषो नाम निघं० १.८.]

विभावसुम् प्रकाशयुक्तं वसु धनं यस्य तम् (राजानम्) ५.२५.२. **विभावसुः**=यो विविधा भा वासयति सः (अग्निः) ३.२.२. यो विविधासु भासु विद्याप्रकाशेषु वा वसति सः (अग्निः=सभेशो विद्वज्जनः) १७.५३. येन विविधा भा विद्यादीप्तिर्वास्यते सः (अग्निः=विद्वज्जनः) १२.३१. **विभावसो**=विशिष्टां भां दीप्तिं वासयति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने) १.४४.१०. यो विविधायां भायां वसति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) १२.१०६. विविधतया भाया दीप्त्या सहितं वसु धनं यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=गृहपते) ११.४०. प्रकाशितधन (राजन्) २६.२. स्वप्रकाश (विद्वज्जन) ५.२५.७. [विभा-वसुपदयोः समासः। विभा=वि+भा दीप्तौ (अदा०) धातोः स्त्रियाम् 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.३.१०६. सूत्रेणाङ्। ततष्टाप्। वसुरिति व्याख्यातम् (यजु० १२.१०६.) (प्रभूवसुः) महि भ्राजन्ते अर्चयो विभावसविति महतो भ्राजन्ते ऽर्चयः प्रभूवसवित्येतत् श० ७.३.१.२९.]

विभावः विभावय १.५८.९. [वि+भू प्राप्तौ (चुरा०) धातोर्लङ्। णेर्लोपो ऽडभावश्च छान्दसत्वात्]

विभावा यो विविधान् पदार्थान् भाति प्रकाशयति सः (अग्निः) १.६६.१. विशेषेण प्रकाशकः (परमेश्वरः) ६.१०.१ यो विशेषेण भाति प्रकाशयति सः (अग्निः) १.५९.७. यः सर्वं विभातीति सः (विद्वान् सूर्यो वा) १.६९.५. विशेषेण भानवान् (अतिथिः) ५.१.९. विभववान् (अग्निः=राजा) ४.१.८. विविधविद्याप्रकाशयुक्तः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.१.१२. विशेषदीप्तिमान् (जनः) ६.११.४. यो विभाति सः (अग्निः) १.१४८.४. [वि+भा दीप्तौ (अदा०) धातोः 'आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च' अ० ७.२.७४. सूत्रेण वनिप्]

विभाः यो विभाति सः (अग्निः=पावकः) ७.८.२. [वि+भा दीप्तौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

विभिदुः विदृणन्ति ६.६५.५. **विभिनत्**=विभिनत्ति २.१५.८. [वि+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्लिट्। 'वा छन्दसी' ति द्वित्वं न भवति]

विभिन्दन् विदारयन् सन् (विद्वान् सेनाद्यध्यक्षः) १.१०३.३. [वि०+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः शतृ]

विभिन्दुना विविधभेदकेन (रथेन) १.११६.२०. [वि+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोर्बाहु० औणा० उः। बहुलवचनाच्च नुमागमः]

विभिः वयन्ति गच्छन्ति ये ते वयः पक्षिणस्तैः १.११६.३. वियति गन्तृभिः पक्षिभिरिव (अश्वैः=यानैः)

१.११७.१४. **विम्**=पक्षिणम् २०.५३. **विः**=पक्षी ४.२६.४. [वा गतौ (अदा०) धातोः 'वार्तेर्डिच्च' उ० ४.१३५. सूत्रेण इण् । डित्वाद् आकारलोपः । विः शकुनि-नाम नि० २.६.]

विभीषणः भयप्रदः (आर्य राजा) ५.३४.६. [वि+ञिभी भये (जु०) धातोर्नन्द्यादित्वाण् ण्यन्ताल्ल्युः]

विभु अखिलविषयेषु व्याप्तं मन-आदि १८.१०. व्यापकम् (ओजः) १.१६५.१०. बहुसुखव्यापकम् (राधः=धनम्) १.९.५. [वि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'विप्रसंभ्यो ड्वसंज्ञायाम्' अ० ३.२.१८०. सूत्रेण डुः]

विभुमते विभवः पदार्था विदिता येन तस्मै (पुरुषाय) ३८.८. [विभुप्राति० मतुप् । विभुरिति व्याख्यातम्]

विभुवत् विशेषेण भवेत् १.६८.१. [वि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शः । तस्य ङित्वाद् उवङ्]

विभूः व्यापकः (ईश्वरः) ३२.८. यथा व्यापक आकाशो वैभवयुक्तो राजा वा ५.३१. सर्वत्र प्रकाशित वैभव ऐश्वर्ययुक्त व्यापक ईश्वर आर्याभि० २.१६, ५.३१. **विभ्वम्**=विभुं विद्युदाख्यमग्निम् ३३.६. **विभ्वः**=समर्थाः (विद्वज्जनाः) १.१६६.११. सकलविद्यासु व्याप्ताः (ऋभवः=मेघाविजनाः) ४.३६.३. सकलशुभगुणकर्मस्वभाव व्यापिनः (विद्वांसः) ७.४८.२. विभवो व्याप्तशुभगुणाः (योग्या जनाः) ६.३४.१. [वि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि । एष (अग्निः) हीदं सर्वं विभूः मै० १.५.५.]

विभूतद्युम्नः विशिष्टानि भूतानि द्युम्नानि धनानि यशांसि वा यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१५६.१. [वि+भूत-द्युम्नपदयोः समासः । द्युम्नम् धननाम निघं० २.१०.]

विभूतयः विविधैश्वर्यप्रदाः (विद्वांसो जनाः) १.१६६.११. विविधा भूतय ऐश्वर्याणि यासु ताः (ऊतयः=रक्षादयः) १.८.९. **विभूतिम्**=महदैश्वर्यम् (सज्जनम्) ६.१७.४. **विभूतिः**=विविधैश्वर्यम् १.३०.५. [वि-भूति-पदयोः समासः । भूतिः=भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । याष् षड् विभूतय ऋतवस्ते जै० उ० १.२१.१.]

विभूषति अलङ्करोति १.११२.४. [वि+भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोर्लट्]

विभूषन् अलङ्कुर्वन् (अग्निः=सर्वदुःखदाहकः परमेश्वरः) ६.१५.९. [वि+भूष अलङ्कारे (भ्वा०) धातोः शतृ]

विभृत विशेषतया धरत, पुष्यत ८.२६. [वि+भृञ् भरणे (धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

विभृतम् विशेषेण धृतम् (अमृतम्=ईश्वरम्) ३२.९. **विभृतः**=विविधद्रव्यविद्याधारकाः (मातरिश्वा=वायुः) १.७१.४. धरतः (अहनी=अहर्निशम्) १.१८५.१. यो विविधं बिभर्त्ति सः (अग्निः=पावकः) २.१०.२. [वि+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कर्त्तरि क्तः । अथवा वि+भृञ् धातोः कर्त्तरि क्विप् । तुगागमः]

विभृता विशेषेण धर्त्तुं योग्यानि (धाम=धामानि) १२.१९. [वि+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः क्तः । विभृत-प्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

विभृत्रम् विविधक्रियाधारकम् (अहोरात्रव्यवहारम्) १.९५.२. **विभृत्राः**=विशिष्टानि भृत्राणि धारणानि यासां ताः (कुमार्यः) १.७१.३. विशेषेण पोषकाः (पुत्राः) ७.४३.३. [वि+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः ष्ट्रन् औणा० स च कित् बहुलवचनादेव]

विभेजिरे विशिष्टतया सेवन्ते ७.१.९. [वि+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

विभ्राजते विशेषेण प्रकाशते ५.६२.७. **विभ्राजन्ते**=विशेषतया शोभन्ते ५.६१.१२. [वि+भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

विभ्राजमानः विशेषेण विद्यान्यायाभ्यां देदीप्यमानः, अ०—विद्याधर्माऽनुष्ठानेन पवित्रः (अग्निः=पावक इव सेनापतिः) १५.५२. **विभ्राजमानान्**=प्रकाशमानान् (चमसान्=मेघान्) ४.३३.६. [वि+भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः शानच्]

विभ्राट् यो विशेषेण भ्राजते सः (सूर्यः) ३३.३०. [वि+भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'भ्राजभास०' अ० ३.२.१७७. सूत्रेण क्विप्]

विभ्राष्टिम् विविधा भ्राष्टयः प्रकाशनानि यस्मिँस्तम् (अग्निम्) १५.४७. विविधतया भृज्जन्ति परिपचन्ति येन तम् (अग्निम्) १.१२७.१. [वि+भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

विभ्वतष्टम् विभुना जगदीश्वरेण निर्मितम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.४९.१. विभूनां मेधाविनां मध्ये तष्टं तीव्र-प्रज्ञम् (राजानम्) ५.५८.४. **विभ्वतष्टः**=यो विभुषु पदार्थेष्वतष्टोऽविचक्षणः सः (विद्यार्थिजनः) ४.३६.५. [विभ्वन् विभूततमम् । नि० २.१९. विभ्वन्-तष्टपदयोः

समासः । तक्षति करोतिकर्मा (नि० ४.१९) ततः क्तप्रत्यये तष्टम्]

विभ्वने विभुत्वाय ६.६१.१३. [वि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कनिन्]

विभ्वान्=विभून् विद्याव्याप्तानमात्यान् ७.४८.३. [वि+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० वन् । स च डित्]

विभ्वासहम् यो विभूनासहते तम् (रयिं=धनम्) ५.१०.७. [विभूपपदे आङ्+षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

विभ्वीः व्यापिकाः (त्रिगुणात्मिका मात्राः) १.१८८.५. [विभूरिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां 'भुवश्च' सूत्रेण ङीष्]

विमदाय विविधाऽऽनन्दाय १.११२.१९. विविधा मदा हर्षा यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.५१.३. विशेषमदयुक्ताय (शयवे=शयानाय पुरुषाय) १.११७.२०. विशिष्टो मदो हर्षो यस्मात्तस्मै (अर्भकाय=ह्रस्वाय बालकाय) १.११६.१. [वि-मदपदयोः समासः । मदः=मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'मदोऽनुपसर्गे' अ० ३.३.६७. सूत्रेण अप् । विमदेन वै देवा असुरान् व्यमदन् कौ० २२.६.]

विमध्ये विशेषान्धकारे ४.५१.३. [वि-मध्यपदयोः समासः]

विमनाः विविधं मनो विज्ञानं यस्य सः (परमेश्वरः) १७.२६. विविध अनन्त विज्ञान वाला (परमात्मा) आर्याभि० २.४०, १७.२६. [वि-मनस्पदयोः समासः मनस् इति व्याख्यातम् । विमना विभूतमना नि० १०.२६.]

विममिरे व्याप्नुवन्ति ५.५५.२. **विममुः**=मानं कुर्वन्ति १.११०.५. **विममे**=विविधतया मिमीते ५.१८. विशिष्टतया मापयति १.१६०.४. विशेषेण रचयति १.१५४.१. विशिष्टतया सृजति ५.८५.५. विशेषेण विधत्ते ५.८१.३. विमानयानवन्निर्मिमीते ११.६. [वि+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लिट् । 'विममुः' प्रयोगे मा माने (अदा०) धातोर्लिटि रूपम्]

विमहसः विविधतया पूजनीयाः (मरुतः=विद्वांसो गृहस्थाः) ८.३१. विशेषेण महागुणविशिष्टान् (विद्वज्जनान्) ५.८७.४. विविधानि महांसि पूज्यानि कर्माणि येषां तत्सम्बुद्धौ (विद्वांसो जनाः) १.८६.१. [वि-महस्पदयोः समासः । महस् महन्नाम निघं० ३.३. महस्=मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

विमानम् वियतिगमकम् (रथं=रमणीयं यानम्) २.४०.३. विशेष मान परिमाणयुक्त (लम्बी ऊँची छत) सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१५. **विमानः**=विमानमिव स्थितः (सूर्यः) १७.५९. विविधं मानं यस्य सः (अर्वा=वज्रो विद्युद्वा) ३.२६.७. विमानयानमिव धर्त्ता (धर्मः=यज्ञः) १८.६६. विविधं मानं यस्मिन् सः (देवः=ईश्वरः) ३२.६. विशेष मानयुक्त, सब लोकों का निर्माणकर्त्ता (ईश्वर) सं० वि० ८, ३२.६. **विमाने**=विगतं मानं परिमाणं यस्याऽन्तरिक्षस्य तस्मिन् ७.१६. [वि-मानपदयोः समासः । मानम्=माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्ल्युट्]

विमितानि विशेषेण परिमितानि (सानूनि=प्रान्तदेशान्) ६.७.६. [वि-मितपदयोः समासः । मितम्=माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः क्तः]

विमिन्वन् विशेषेण प्रक्षिपन् (विद्वज्जनः) ४.५६.१. [वि+डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोः शतृ]

विमिन्वन् विशिष्टतया प्रक्षिपन्ति ३.३१.१२. [वि+डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्लङ् । अडभावश्छान्दसः]

विमिमानः विशेषेण निर्माता सन् (शिल्पिजनः) १.१८६.४. [वि+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लिटः कानच् । लटः शानज्वा । 'भृञामित्' इत्यभ्यासस्येत्वम्]

विमिमाय विमिमीते २.१५.३. [वि+डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्लिट् । मा माने (जु०) धातोर्वा विपूर्वाल् लिटि छान्दसं रूपम्]

विमुच विशिष्टतया त्यज, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्युपधा-नकारलोपः १.१०७.४. **विमुचध्वम्**=विशेषतया त्यजत १.१७१.१. **विमुचन्ति**=उपरमन्ति २.२८.४. त्यजन्ति ५.६२.१. **विमुचः**=विमुञ्च १.४२.१. मोचय ६.५५.१. [वि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् लङ् चापि । 'शे मुचादीनामि' ति प्राप्तो नुम् न भवति 'वा छन्दसी' ति नियमात्]

विमुचम् विमुचन्ति येन तम् (अज्ञानम्) ५.४६.१. [वि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्घञर्थे कः]

विमुचा यौ दुःखं विमुञ्चतस्तौ (राजप्रजाजनौ) ६.४०.१. [वि-मुचपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः मुचः=मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः कर्त्तरि]

विमुच्य विशेषेण त्यक्त्वा ३.३२.१. [वि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

विमुच्यध्वम् विमुक्ता भवत, प्र०—विकरणव्यत्ययेन श्यन् ६.१२. **विमुच्यन्ताम्**=विशेषेण त्यजन्ताम् ३५.३. [वि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन श्यन्]

विमुञ्च विशेषेण त्यज २७.३३. **विमुञ्चति**=विशिष्टतया त्यजति, विविच्य प्रक्षिपति, विविधतया त्यजति २.२३. [वि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

विमुमुग्धि विशेषेण मोचय ५.२.७. **विमुमुचः**=विमोचयेः ३.४१.८. [वि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

विमृधे विशिष्टा मृधः शत्रवो यस्मिँस्तस्मै सङ्ग्रामाय, विगतशत्रवे (इन्द्राय=परमानन्दप्राप्तये) ८.४४. [विमृध्पदयोः समासः । मृधः संग्रामनाम निघं० २.१७.]

विमोक्तारम् दुःखाद्विमोचकम् (पुरुषम्) ३०.१४. [वि+मोक्तृपदयोः समासः । मोक्तृ=मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोः तृच्]

विमोचनम् पृथक्करणम् ३.५३.५. [वि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्ल्युट्]

वियत् विविधैः प्रकारैर्यतते येन तत् (छन्दः=धैर्यम्) १५.५. **वियतम्**=अजितेन्द्रियम् (दुर्जनम्) ४.१९.३. [वि+यती प्रयत्ने (भ्वा०) धातोः क्विप् करणे । अन्यत्र विपूर्वाद् यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः । वियत् अन्तरिक्षनाम निघं० १.३.]

वियन्त विशिष्टतया ददति ६.५१.५. प्रयच्छत १.८५.१२. [वि+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट् । विकरणस्य लुक्]

वियन्तन वियच्छत ५.५५.९. [वि+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् । तप्रत्ययस्य तनबादेशः]

वियन्तः विशेषेण प्राप्नुवन्तः (विद्वज्जनाः) ४.३८.९. [वि+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ]

वियन्ता विविधान् प्राप्नुवन्तौ (जडचेतनौ) १.१६४.३८. [वि+इण् गतौ (अदा०) धातोः शतृ । द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

वियन्ति व्याप्नुवन्ति ७.४३.१. [वि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

वियमुः विशेषतया नियच्छेयुः ५.६१.३. **वियेमिरे**=विशेषेण नियच्छन्ति ४.५४.५. **वियंसत्**=विशेषेण यच्छेत् १.१८९.६. [वि+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लिङ् । अन्यत्र लिट् लेट् च । 'बहुलं छन्दसीति' शपो लुक्]

विययथुः विशिष्टतया यातम् १.११७.१६. **वियात**=विगमयत विनष्टं कुरुत १.८६.१०. **वियाति**=विविधतया प्राप्नोति १.४८.७. **वियासि**=विशेषेण प्राप्नोषि ६.१२.६. **वियाहि**=विशेषेण प्राप्नुहि, अ०—दूरीकुरु ३.३१.१९. [वि+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लिट् । अन्यत्र लोट् लट् च]

वियवन्त वियोजयेयुः ५.२.५. **वियोषत्**=वियुज्येत् ४.२.१०. विनश्येत् २.१८.८. सन्दधीत ४.१६.२०. **वियौष्टम्**=वियुक्तौ भवेतम् ऋ० भू० २०९, ऋ० ८.३.२८.२. वियुक्त होवो सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१.२२. विरोधी वा पृथक् पृथक् भाव वाले करो सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.५. **वियौष्म**=वियुक्ता मा भवेम, वियुक्ता भवेम ४.२२. [वि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लङ् । शपो न लुक् । अडभावश्च । अन्यत्र लेट् लुङ् च]

वियासाय विविधप्राप्तये ३९.११. [वि+या प्रापणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० असच् । ततश्चतुर्थी]

वियुता वियुक्तानि (शरीराणि) ४.७.७. [वियुतप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि । वियुतः=वि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्तः]

वियुताः वियुक्ताः (गावः) ५.३०.१०. **वियुते**=मिश्रितामिश्रिते (द्यावापृथिव्यौ) ३.५४.७. [वि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्तः । स्त्रियां टाप् । वियुते द्यावापृथिव्यौ वियावनात् निघं० ४.२५.]

वियुयुवत् वियोजयति ६.४४.१६. [वि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्णिजन्ताल् लुङ्]

वियूय पृथक्कृत्य, अ०—सत्यासत्ये विविच्य १०.३२. विभज्य १९.६. वियोज्य सम्मिश्र्य च २३.३८. [वि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

वियोतारः विभाजकाः (आप्ता विद्वज्जनाः) ४.५५.२. [वि+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

विरक्षति विविध प्रकार से पालन करता है

सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.१७. [वि+रक्ष पालने (भ्वा०) धातोर्लट्]

विरद विशेषतया संसेध १.६१.१२. [वि+रद विलेखने (भ्वा०) धातोर्लोट्। राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्वा लोटि छान्दसं रूपम्]

विरप्शम् महान्तं संसारम् ४.५०.३. [विरप्शी महन्नाम निघं० ३.३.]

विरप्शिन् महागुणविशिष्टेश्वर वा महैश्वर्यमिच्छुक मनुष्य, प्र०—-विरप्शीति महन्नामसु पठितम्, निघं० ३.३, १.२८. महन् (इन्द्र=राजन्) ६.४०.२. **विरप्शिनः**=सर्वसामग्रचा महान्तः (नृतमासः) १.८७.१. पूर्णविद्या शिक्षावीर्याः (मरुतः=वायव इव विद्वज्जनाः) १.१६६.८. **विरप्शिने**=प्रशंसिताय (वीरपुरुषाय) ६.३२.१. **विरप्शी**=महान् (इन्द्रः=सेनाधीशः) २०.४९. महाविद्यायुक्ता (मही=वेदचतुष्टयी पृथिवी वा) १.८.८. विविधाः प्रसिद्धा उपदेशा विद्यन्ते यस्य सः (पुरुषोत्तमः) ३.३६.४. [विरप्शी महन्नाम निघं० ३.३.]

विररप्शे=विशेषेण स्तूयते, प्र०—अत्र रभधातोर्लिटि सस्य शः ४.२०.५.

विराजतः विशेषेण देदीप्येते १.१८८.६. **विराजति**=विशेषं प्रकाशयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः ३.८. विशेषेण प्रकाशते ३३.३०. अ०—विविधतया प्रकाशयति १.३.१२. **विराजथ**=विशेषेण प्रकाशध्वम् १.१८८.४. **विराजथः**=विशिष्टतया प्रकाशेथे ५.६३.७. [वि+राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

विराजम् विविधानां पदार्थानां प्रकाशकम् (छन्दः) २८.३१. विविधैः पदार्थैः राजमानम् (गां=पृथिवीम्) १३.४३. विराट्छन्दो वाच्यम् (अर्थम्) ९.३३. **विराजः**=विविधैर्गुणैः राजमानाः प्रकाशमानाः (सत्यस्त्रियः) १७.३. विविधोत्तमराजपालिताः (प्रजाः) ऋ० भू० २२२, अथर्व० ६.१०.९८.२. **विराजा**=विशेषेण प्रकाशेन ३८.२७. **विराजे**=विराट्छन्दसे २४.१३. **विराट्**=यद् विविधं राजते तत् (छन्दः=बलम्) २१.१९. विविधशास्त्रश्रवणयुक्तम् (श्रोत्रम्) २०.५. यो विविधतया राजते (अग्निः=पावकः) २०.५५. विशेषेण राजमानः (अग्निः=राजा) २७.७. विविधैः पदार्थैः राजमाना (स्त्री) १५.११. विविधविद्याविनयप्रकाशयुक्ता (स्त्री) १४.१३. विविधविद्याप्रकाशनम् १४.१८. या विविधासु राजते (अ०—स्त्री) १३.२४. विविधैः पदार्थैं राजते प्रकाशते स विराट् ब्रह्माण्डरूपः, भा०—सर्वं समष्टिरूपं जगत् ३१.५. यो विविधेषु गुणेषु कर्मसु वा राजते सः (विद्वज्जनः) १.१८८.५ सूर्यचन्द्रनेत्रा वायुप्राणः पृथिवीपाद इत्याद्यलङ्कारलक्षणलक्षितो हि सर्वशरीराणां समष्टिदेहः (ब्रह्माण्डशरीरः) ऋ० भू० १२२, ३१.५. [वि+राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। विराट् विराजनाद्वा विराधनाद्वा विप्रापणाद्वा। विराजनात् सम्पूर्णाक्षरा, विराधनादूनाक्षरा, विप्रापणादधिकाक्षरा नि० ७.१३. वृष्टिर्वै विराट् तस्या एते घोरे तन्वौ विद्युच्च ह्रादुनिश्च श० १२.८.३.११. विराडग्निः श० ६.२.२.३४. वाग्वै विराट् श० ३.५.१.३४. विराड्ढीयम् (पृथिवी) श० २.२.१.२०. इयं (पृथिवी) वै विराट् श० १२.६.१.४०. गो उ० ६.२. (यजु० १३.२४) अयं वै (पृथिवी) लोको विराट् श० ७.४.२.२३. (यजु० १३.४३) विराड् वै गौः श० ७.५.२.१९. एषा वै स्तनवती विराड् यं कामं कामयते तमेतां दुग्धे। अन्नं विराट् कौ० ९.६. तै० १.६.३.४. तां० ४.८.४. अन्नं वै विराट्, तस्माद् यस्यैवेह भूयिष्ठमन्नं भवति स एव भूयिष्ठं लोके विराजति तद् विराजो विराट्त्वम् ऐ० १.५. अन्नं विराट् श० ७.५.२.१९. ऐ० १.५. विराडन्नम् ऐ० ५.१९. अन्नं वै श्रीर्विराट् गो० पू० ५.४. गो० उ० १.१९. श्रीर्विराडन्नाद्यम् कौ० १.१. श्रीर्वै विराड् यशोऽन्नाद्यम् गो० पू० ५.२०. गो० उ० ६.१५. एतद्वै कृत्स्नमन्नाद्यं यद् विराट् कौ० १४.२. विराडन्नाद्यम् ऐ० ४.१६. ऊर्ग्विराट् तै० १.२.२.२. वैराजीर्वा आपः कौ० १२.३. वैराजो वै पुरुषः तां० २.७.८ तै० ३.९.८.२. विराड् वै यज्ञः श० १.१..१.२२. वैराजो यज्ञः गो० पू० ४.२४. गो० उ० ६.१५. विराड् वाऽग्निष्टोमः कौ० १५.५. वैराजः सोमः कौ० ९.६. श० ३.३. २.१७. विराड् वरुणस्य पत्नी गो० उ० २.९. अथैतद् वामेऽक्षणि पुरुषरूपम्। एषाऽस्य पत्नी विराट् श० १४.६. ११.३. सा (विराट्) तत ऊर्ध्वारोहत्। सा रोहिण्यभवत् तै० १.१.१०.६. विराट् सृष्टा प्रजापतेः। ऊर्ध्वारोहद् रोहिणी योनिरग्नेः प्रतिष्ठितिः तै० १.२.२.२७. सर्वदेवत्यं वा एतच्छन्दो यद् विराट् श० १३.४.१.१३. सत् विराट् छन्दसा तां० १५.१२.२. विराड् वै छन्दसां ज्योतिः तां० ६.३.६. विराड् ढि छन्दसां ज्योतिः तां० १०.२.२. विराजो वा एतद् रूपं यदक्षरम् तां० ८.६.१४. दशाक्षरा वै विराट् श० १.१.१.२२. दशात्तरा विराट् ऐ० ६.२०. गो० पू० ४.२४. गो० उ० १.१८. तां० ३.१३.३. दशदशिनी विराट् कौ० २.३. दश च ह वै चतुर्विराजोऽक्षराणि गो० पू० ५.२०. त्रिंशदक्षरा वै विराट् ऐ० ४.१६. श० ३.५.१.७.

त्रिंशदक्षरा वा एषा विराट् तै० ३.८.१०.४. तां० १०.३.१२. तै० १.६.३.४. सा विराट् त्रयस्त्रिंशदक्षरा भवति ऐ० २.३७. त्रयस्त्रिंशदक्षरा वै विराट् कौ० १४.२. श० ३.५.१.८. एषा वै परमा विराड् यच्चत्वारिंशद् रात्रयः पङ्क्तिर्वै परमा विराट् तां० २४.१०.२. सहस्राक्षरा वै परमा विराट् तां० २५.९.४. विराड् वाऽनाधृष्टं छन्दः (यजु० १४.९) श० ८.२.४.४. स (प्रजापतिः) पुरुषमेधेनेष्ट्वा विराडिति नामाधत्त गो० पू० ५.८. बृहद् विराट् तै० १.४.४.९.]

विराषाट् वीरान् ज्ञानवता प्राप्तिशीलान् जीवान् सहते सः (विद्युदाख्या दीप्तिः), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन दीर्घेकारस्य स्थाने ह्रस्वेकारोऽकारस्थाने आकारश्च 'स्फायितं चि०' उ० २.१३. इत्यजधातोरक्-प्रत्ययः 'छन्दसि सह' अ० ३.२.६३. इति ण्विः 'सहे साढः सः' अ० ८.२.५६. इति षत्वम् १.३५.६. [वीरोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' इति ण्विः। वर्णव्यत्ययेन दीर्घेकारस्य ह्रस्वेकारः, अकारस्य चाकारादेशः। वीरः=अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक्। 'अजेर्व्यघञपोः' अ० २.४.५६. सूत्रेणाज्धातोः स्थाने वीरित्यादेशः]

विरिष्यथ विशेषेण हिंस्यथ ५.५४.४. [वि+रिष हिंसायामर्थे (भ्वा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन श्यन्]

विरुक्मता विविधा रुचो भवन्ति यस्मात्तेन (ओजसा=बलेन) १.१२७.३. **विरुक्मन्तः**=प्रशस्ता विविधा रुचो दीप्तयो विद्यन्ते येषु ते (वीरजनाः) १.८५.३. **विरुक्मान्**=विविधदीप्तियुक्तः (योगिजनः) ६.४९.५. [वि-रुच्पदयोः समासे कृते ततः प्रशंसायामर्थे मतुप्। रुच्=रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः क्विप्]

विरुज विशेषेण प्रभग्नं कुरु ४.३.१४. [वि+रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लोट्]

विरुद्धे विरुद्धस्वरूपे (रात्र्युषसौ) १.११३.३. [वि+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोः क्तः। ततो द्विवचनम्]

विरुद्रस्य विविधा रुद्राः प्राणा यस्मिँस्तस्य (प्रस्रवणस्य=वातस्य) १.१८०.८. [वि-रुद्रपदयोः समासः। रुद्र इति व्याख्यातम्]

विरुरुचुः विरोचन्ते प्रकाशन्ते १५.२६. विशेषेण दीपयेयुः ३३.६. विदीपयन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् ३.१५. [वि+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेन परस्मैदम्]

विरुहेम विविधतया वर्द्धेमहि ५.४३. विशेषेण वर्द्धेमहि ३.८.११. [वि=रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लिङ्। 'लिङ्याशिष्यङ्' अ० ३.१.८६. सूत्रेण अङ्]

विरूपम् विविधानि रूपाणि यस्मिँस्तम् (विद्युदग्निम्) ३.१.१३. **विरूपान्** विविधस्वरूपान् (पदार्थान्) ३०.२२. **विरूपेभ्यः**=विविधानि रूपाणि येषां तेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२५. [वि-रूपपदयोः समासः। विरूपो नानारूपः नि० ३.१७.]

विरूपवत् विविधानि रूपाणि यस्य तद्वत् १.४५.३. [वि-रूपपदयोः समासे कृते ततस्तुल्यार्थे वतिः]

विरूपा विविधानि रूपाणि येषु तानि (वस्तूनि) ३.३८.९. [वि-रूपपदयोः समासः। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

विरूपाः विविधरूपा विकृतरूपा वा (वीराः=व्याप्तयुद्धविद्याजनाः) ३.५३.७. विविधानि रूपाणि यासां ताः (प्रजाः) १.७०.४. **विरूपे**=विविधं रूपं ययोरह्नो रात्रेश्च ते १.६२.८. तमः प्रकाशाभ्यां विरुद्धरूपे (द्यावाक्षामा=प्रकाशभूमी) १२.२. विरुद्धस्वरूपे (रात्रिदिने) ५.१.४. विविधरूपे विरुद्धरूपे वाऽहोरात्रे ६.४९.३. [वि-रूपपदयोः समासः। विरूपासः बहुरूपाः नि० ११.१७.]

विरेचि विरिच्यते ४.१६.५. [वि+रिचिर् विरेचने (रुधा०) धातोः कर्मणि लुङ्। अटोऽभावश्छान्दसः]

विरोकिणः विविधो रोको रुचिर्विद्यते येषु ते (रश्मयः=किरणाः) ५.५५.३. [वि-रोकपदयोः समासे विरोकः। ततो मत्वर्थ इनिः। रोकः=रुच दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्घञ्]

विरोके अभिप्रीते प्रदीपने वा ३.५.२. विविधतया रुचिकरे व्यवहारे १०.१६. [वि-रोकपदयोः समासः। रोकः=रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्घञ्]

विरोचते विशेषेण प्रकाशते ३.२९.६. [वि+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लट्]

विरोचमानम् विविधदीप्तियुक्तम् (बुध्नं=विज्ञानम्) १.९५.९. विविधप्रकारेण प्रकाशमानम् (अहोरात्रव्यवहारम्) १.९५.२. **विरोचमानः**=प्रकाशमानः (राजा) ५.४४.२. [वि+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः शानच्]

विरोधत् विशेषेण निरुणद्धि स्वीकरोति १.६७.५. [वि+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

विरोह विविधतया प्रादुर्भव ५.४३. विशेषेण वर्द्धस्व ३.८.११. [वि+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्लोट्]

विरोहिता विरोहणकर्त्री (युवतिः=स्त्री) ५.६१.६. [वि+रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् क्तः। ततष्टाप्]

विलायकः येन विविधतया लीयते श्लिष्यते सः (विद्वज्जनः) २०.३४. [वि+लीङ् श्लेषणे (दिवा०) धातोः कर्त्तरि ण्वुल्]

विलिष्टम् परिपूर्णम् (सर्वव्यवहारशोधनम्), प्र०—अत्र विरुद्धार्थे वि-शब्दः २.२४. विरुद्धमल्पमपि व्यसनम् २३.४१. विशेषेण न्यूनमङ्गम् ८.१४. रोमादिमललेशम् ८.१६. [वि+लिश अल्पीभावे (दिवा०) धातोः क्तः]

विलोहित विविधान् पदार्थानारूढस्तत्सम्बुद्धौ (सभेश राजन्) १६.५२. **विलोहितः**=विविधैः शुभगुणकर्मस्वभावैः रोहितो वृद्धः (रुद्रः=सेनेशः) १६.७. **विलोहिताः**=विविधरक्तवर्णाः (भा०=वृद्धिजीवना सर्पादयः) १६.५८. [वि-लोहितपदयोः समासः। लोहितः=रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोः 'रुहे रश्च लो वा' उ० ३.९४. सूत्रेण इतन् रेफस्य च लकारः]

विल्मैः प्रदीप्तसाधनैः (अन्नैः) २.३५.१२. [बिल्मं भिल्मं भासनमिति वा नि० १.२०.]

विवक्तन वदत, उपदिशत १.१५६.३. [वि+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लोट्। तस्य तनबादेशः। कुत्वञ्च छान्दसम्]

विवक्मि विशेषेण वदामि, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति कुत्वम् १.१६७.७. विशेषेणोपदिशामि ३.५७.४. विवेकेन परीक्षयामि ७.२२.५. [वि+वच् परिभाषणे (अदा०) धातोर्लट्। कुत्वं छान्दसम्]

विवक्षत इव वक्तुमिच्छोरिव (जनस्येव) २३.२३. [विवक्षतः-इवपदयोः समासः। विवक्षतः=वच परिभाषणे (अदा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छतृ]

विवधः विशेषेण बध्नन्ति पदार्था यस्मिँस्तदन्तरिक्षम् १५.५. [वि-बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः 'हलश्चे' त्यधिकरणे घञ्। वर्णव्यत्ययेन बकारस्य वकारः]

विवधीत् विशिष्टतया हन्ति ५.४४.१२. [वि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लुङ्। अडभावः। 'लुङि च' सूत्रेण वधादेशः]

विवरे अवकाशे १.११२.१८.

विवर्त्तनम् विशेषेण वर्त्तन्ते यस्मिँस्तत् (कार्यम्) २५.३८. विविधं वर्त्तनम् १.१६२.१४. [वि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

विवर्त्तमानाय विशेषेण वर्त्तमानाय (पदार्थसमूहाय) २२.८. [वि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः शानच्]

विवर्त्तः विविधं वर्त्तते यस्मिन्त्सः (संवत्सरः) १४.२३. [वि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोरधिकरणे घञ्]

विवर्हि उत्सन्नाभूत् ३.५३.१७.

विवलम् विविधं बलं यस्मात् तत् (छन्दः=आनन्दम्) १४.६. [वि-बलपदयोः समासः। बकारस्य वकारो वर्णव्यत्ययेन]

विववर्थ विगन्तुं वृणोषि, प्र०—अत्र वर्त्तमाने लिट् 'बभूथाततन्थ०' अ० ७.२.६४. सूत्रेण निपातनाच्च साधु १.९१.२२. [वि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लिटि 'बभूथाततन्थ०' अ० ७.२.६४. सूत्रेण निपात्यते]

विववार विगतार्थत्वेन विवृणोति २०.३६. **विवव्रुः**=विशेषेण वृणुयुः १२.२८. **विवव्रे**=विशेषतया व्रियते १.६२.७. [वि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लिट्]

विववृते विशिष्टतया वर्त्तते १.१६६.९. [वि+वृतु-वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लिट्]

विवष्टि विशेषेण कामयते ७.१६.११. [वि+वश कान्तौ (अदा०) धातोर्लट्]

विवसः विशेषतया निवासय ७.८.३. **विवस्व**=विशेषेण वस, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.१८७.७. [वि+वस निवासे (भ्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अन्यत्र लङि मध्यमैकवचनेऽटोऽभावे च रूपम्]

विवस्वतः सूर्यस्य ३.५१.३. सवितुः ३.३४.७. प्रकाशमानस्य (सूर्यस्य) १.५३.१. परमेश्वरस्य १.५८.१. **विवस्वते**=सूर्यलोकाय १.३१.३. **विवस्वन्**=विविधे स्थाने वसति तत्सम्बुद्धौ (विद्वन् गृहपते) ८.५. **विवस्वान्**=सूर्य इव ७.९.३. [विवस्वतः आदित्यात्। विवस्वान् विवासनवान् नि० ७.२६. असौ वाऽआदित्यो विवस्वानेष ह्यहोरात्रे विवस्ते तमेष वस्ते सर्वतो ह्येनेन परिवृतः श० १०.५.२.४. विवस्वान्नादित्य एष ते सोमपीथः श० ४.३.५.१८. (देवाः आदित्याः) यं (मार्तण्डम्) उ ह तद् विचक्रुः स विवस्वानादित्यस्तस्येमाः प्रजाः श० ३.१.३.४.]

विवस्वत्याः या विवस्वति साध्व्यः (उषसः=प्रभातान्) ३.३०.१३. [विवस्वत्प्राति० साध्वर्थे यत्। ततः स्त्रियां टाप्]

विवहन्ति विशेषेण प्रापयन्ति ४.२१.८. [वि+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

विवः विशेषेण वृणोषि १.६२.५. विवृणोति, प्र०—अत्र 'मन्त्रे घसह्वर०' इति च्लेर्लुगडभावश्च १३.३. विवृत विभक्त करता है आर्याभि० २.२८, १३.३. [वि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लुङ्। 'मन्त्रे घसह्वर०' सूत्रेण च्लेर्लुक्। अडभावश्छान्दसः। विवः व्यवृणोः नि० १०.६.]

विंशतिः एतत्सङ्ख्याकानि (शता=शतानि सैन्यानि) १.८०.६. **विंशती**=चत्वारिंशत् (गतयः) २७.३३. [विंशतिः द्विदशतः नि० ३.१०. प्रजापतेर्विस्रस्तादाप आयंस्तास्वितास्वविशद् यदविशत् तस्माद् विंशतिः श० ७.५.२.४४.]

विवाचः विविधा वाणीः ३.३४.१०. विविधविद्याशिक्षायुक्ता वाचो येषान्ते (चर्षणयः=मनुष्याः) ६.३१.१ **विवाचि**=विरुद्धा वाचो यस्मिन् सङ्ग्रामे भवन्ति तस्मिन् ७.३०.२. विविधविद्यासुशिक्षायुक्ते (वाग्-व्यवहारे) १.१७८.४. विविधासु विद्यासु प्रवृत्ता वाक् तस्याम् ७.२३.२. विविधार्थसत्यार्थप्रकाशिका वाचो यस्मिन् व्यवहारे ६.४५.२६. [वि-वाच्पदयोः समासः। विवाक् संग्रामनाम निघं० २.१७.]

विवाय संवृणोति १.७१.४. दूरं गमयति ७.६.३. गच्छेत् १.१५६.५. [वि गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लिट् अथवा अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'अजेर्व्यघञपोरि' ति वी-आदेशः]

विवावृते विशेषेण पुनः पुनरावर्तते, प्र०—अत्र 'तुजादीनाम्०' इति दीर्घः १.१६४.१४. [वि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लिट्। तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

विवावृधुः विशिष्टतया वर्धन्ते ५.५९.६. **विवावृधे**=विशेषेण वर्द्धते १.१४१.५. [वि+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिट्। तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

विवास विवसति ५.५३.१. **विवासत**=परिचरत ६.१५.६. **विवासते**=परिचरति १.११७.१. **विवासथः**=सेवेथाम् १.११९.९. **विवासन्ति**=परिचरन्ति ७.३५. **विवाससि**=परिचरसि १.७४.९. **विवासान्**=सेवेरन् १.१७३.१. **विवासे**=परिचरामि १.४१.८. वासयामि ७.५८.५. **विवासेत्**=सेवेत ६.१६.४६. **विवासेम**=नित्यं परिचरेम ६.३८.५. **विवासेयम्**=परिचरेयम् २.३३.६. [विवासति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. विवाससि परिचरसि। विवासतिः परिचर्यायाम् नि० ११.२३. विवासेम परिचरेम नि० २.२४.]

विवासाय विविधप्राप्तये ३९.११. [विवासति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. ततो भावे घञन्ताच्चतुर्थी वि+वस निवासे (भ्वा०) धातोर्वा घञ्। प्राप्त्यर्थेऽपि वसिर् धातूनाम् अनेकार्थकत्वात्]

विविक्तः पृथक्कुरुतः ३.५४.८. [विचिर् पृथग्भावे (रुधा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन श्लुः]

विविक्त्यै विवेकाय ३०.१३. [वि+विचिर् पृथग्भावे (रुधा०) धातोः क्तिन्। ततश्चतुर्थ्या एकवचनम्]

विविक्वान् विविक्तः (मनुष्यः) ३.५७.१. [विचिर् पृथग्भावे (रुधा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

विविचिम् विवेचकं विभागकर्त्तारम् (राजानम्) ५.८.३. [वि+विचिर् पृथग्भावे (रुधा०) धातोरौणा० इन् कर्त्तरि]

विविड्ढि व्याप्नुहि, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति नियमात् 'निजां त्रयाणां गुणः श्लौ' अ० ७.४.४५. अनेनाभ्यासस्य गुणनिषेधः १.२७.१०. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्लोट्। गुणाऽभावश्छान्दसः। विविड्ढि कुरु नि० १०.८.]

विवित्से विशेषेण प्राप्नोषि, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् १.३२.४. **विविदत्**=प्राप्नोति ७.२१.६. **विविदथुः**=विन्दतः, प्र०—अत्र व्यत्ययः ६.७२.१. **विविदुः**=वेदयन्ति १.७१.२. **विविदे**=विन्देत २.१५.९. लभते ४.१८.१३. विज्ञायते ७.७.१. विन्दति ४.२६.५. प्राप्त होता है स० प्र० १५३, १०.८५.४०. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति श्लुः। अन्यत्र लेट् लिट् च। आत्मनेपदं व्यत्ययेन]

विविद्रिरे लभन्ते २.२१.५. **विविद्रे**=लभन्ते ६.२७.२. विदन्ति ६.२७.१. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लिट्। आत्मनेपदं व्यत्ययेन। रुडागमश्छान्दसः। अन्यत्र 'इरयो रे' इति रे-आदेशः]

विविद्वान् विशेषेण विपश्चित् ४.५.३. विशेषतया वेत्ता (जनः) ३.३१.१५. [वि+विद् ज्ञाने (अदा०) धातोः शतृ। 'विदेः शतुर्वसुरि' ति वसुरादेशः]

विविध्यन्ति बाणा इव सक्षतान् कुर्वन्ति, भा०—विषादिना घ्नन्ति १६.६२. [वि+व्यध ताडने (दिवा०) धातोर्लट् 'ग्रहिज्यावयिव्यधि०' इति सम्प्रसारणम्]

विविध्यन्तीभ्यः शत्रुवीरान् निहन्त्रीभ्यः (स्त्रीभ्यः)

१६.२४. [वि+व्यध ताडने (दिवा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

विविनक्तु विशेषेण वेचयति वेचयतु वा, अ०—पृथक्करोति प्र०—अत्राऽऽद्ये पक्षे लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.१६. [वि+विचिर् पृथग्भावे (रुधा०) धातोर्लोट्]

विविप्रे विशेषतया क्षिपन्ति ३.३२.४.

विविवर्ह विशेषेण वर्द्धयति २.२३.१३. [वि+वृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । अभ्यासस्येत्वं छान्दसम्]

विविशुः आविशन्ति ५.१९.२. प्रविशेयुः ३.७.१. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लिट्]

विविषुः व्याप्नुवन्ति ६.३२.५. **विविष्मः**=व्याप्नुमः ६.२३.५. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्लिट्]

विवृक्णा विविधतया छिन्नानि (अ०—स्कन्धांसि), प्र०—अत्र ओव्रश्चू छेदने इत्यस्मात्कर्मणि निष्ठा 'ओदितश्च' इति नत्वं निष्ठादेशः 'षत्वस्वरप्रत्ययेड्विधिषु सिद्धो वक्तव्यः' अ० ८.२.६. इति वार्त्तिकेन झलि षत्वे कर्त्तव्ये झल्परत्वाभावात् षत्वं न भवति 'चोः कुः' इति कुत्वं 'शेश्छन्दसि०' इति शेर्लोपः १.३२.५. विविधच्छेदनसाधनेन वज्रेण १.३२.३. ऋ० भू० २८४. [वि+ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोः क्तः । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

विवृत् यद्विविधैराकारैर्वर्त्तते तज्जगदुपकर्त्ता (विद्वज्जनः) १५.९. **विवृते**=जगदुपकाराय १५.९. [वि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः क्विप्]

विवृत्ताय विविधतया कृतवर्त्तमानाय (जीवाय) २२.८. [वि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः क्तः । ततश्चतुर्थी]

विवृश्चत् विविधतया छिनत्ति १.६१.१०. **विवृश्चति**=विशेषेण छिनत्ति ३.५३.२२. **विवृश्चः**=विशेषतया छिन्धि ४.१७.७. [वि+ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोर्लेट् अन्यत्र लट् लङ् च]

विवृश्चन् विविधतया छिन्दन् (इन्द्रः=सूर्यः) २.१५.६. [वि+ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोः शतृ]

विवेक्षि व्याप्नोषि ७.३.४. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्लेट्]

विवेति विशेषतया व्याप्नोति १.४८.६. **विवेषि**=प्रानोषि १.१८९.७. **विवेः**=प्राप्नोषि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्लुः १.६९.४. [वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लट् 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः । अन्यत्र लट् लङ् च]

विवेद विन्दति ३.३९.५. वेत्ति ४.५.९. विजानाति १.१८५.१. विजानीयात् ३.३२.४. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लिट् । विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्वा लटि 'विदो लटो वा' इति तिपो णल् । विवेद जानाति नि० ३.२२.]

विवेनतम् विरुद्धं कामयेथाम् ५.७८.१. **विवेनः**=कामयेः ५.३१.२. विरोवेन कामयथाः ६.४४.१०.

विवेश विशति १.१६४.२१. प्रविष्टवान् ३.३.४. प्रविष्टोऽस्ति १.९८.२. विशेत् ३.३४.५. विश ३.३१.५. व्याप्नोति ४.५८.३. **विवेशुः**=विशन्ति ४.२३.९. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लिट् । विवेश विशति नि० १०.४६.]

विवेष वेवेष्टि ५.७७.४. व्याप्नोति २.३५.१३. व्याप्नुयात् ७.२१.४. **विवेषः**=व्याप्नोति ७.३७.५. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्लिट् । अन्यत्र लङ्]

विवोचति विविच्योच्याद्वदेत्, प्र०—अत्र लेटि वचधातोर्व्यत्ययेनौकारादेशः १.१०५.४. **विवोचन्**=विशेषेणोपदिशन्ति ४.१.१४. **विवोचः**=उपदिश ४.५.१२. व्यवोचो विवदेः ६.२२.४. **विवोचेः**=विशेषतया ब्रूयाः १.१३२.३. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेनाङि 'वच उम्' इत्युमागमे गुणे च रूपम् । अन्यत्र लुङ् । तत्र 'अस्यतिवक्ति०' सूत्रेण अङ् । अन्यत्र लिङि 'लिङ्याशिष्यङ्' अ० ३.१.८६. सूत्रेणाङ् । विवोचत् विवक्ष्यति नि० ७.३०.]

विव्यक् व्याप्नुयात् ७.२१.६.

विव्यथुः सन्तनुतं वेष्टयतम् ६.७२.५. [वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लिटि मध्यमद्विवचने रूपम्]

विव्याच छलयति ३.३६.४. [व्यच व्याजीकरणे (तुदा०) धातोर्लिट्]

विव्ये कामयते ४.२२.२. संवृणोति १.१७३.६. [वी गतिव्याप्ति···कान्त्यादिषु (अदा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

विव्रता विविधानि व्रतानि शीलानि याभ्यां तौ (हरी=सेनान्यायप्रकाशौ) १.६३.२. [वि-व्रतपदयोः समासः । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

विश विशति, अ०—प्रविशति ३.२२. प्राप्नुहि १.१७६.१. **विशत**=प्रवेशं कुरुत ४.१३. **विशतु**=

प्रविशतु १२.१०५. **विशन्ति**=प्राप्नुवन्ति ६.३६.३. प्रविशन्ति ३.४६.४. **विशन्तु**=आविष्टा भवन्तु १.५.७. प्राप्नुवन्तु ४.५०.१०. **विशस्व**=प्रवेशं कुरु १४.३. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लडपि। विशस्व प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

विशतात् विशतु, तिष्ठतु ३४.५०. विशताम् ८.४२. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लोटि 'तुह्योस्तातङ्०' इति तातङ्]

विशम् वैश्यवर्णं प्रजाञ्च ३८.१४. ऋ० भू० १५२. उत्तम प्रजा को सं० वि० १४४, अथर्व० १२.५.८. अनेक विद्योद्यम, बुद्धि, विद्या, धन और धान्य आदि बलयुक्त प्रजा को आर्याभि० २.३१, ३८.१४. **विशः**=प्रजाः भा०—सुसन्तानाः १२.५५. प्रजायाः १३.११. मनुष्याः ६.१४.२. धनानि २.२४.१०. या विशन्ति ताः (प्रजाः) १५.६०. मनुष्याद्याः प्रजाः २१.१९. **विशाम्**=पालनीयानाम् (प्रजानाम्) १.१२१.३. **विशे**=प्रजा के अर्थ सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२७. [विशः मनुष्यनाम निघं० २.२. विशाम् मनुष्याणाम् नि० ५.२७. यज्ञो वै विशो यज्ञे हि सर्वाणि भूतानि विष्टानि श० ८.७.३.२१. यज्ञो वै विट् श० १४.३.३.९. विडुक्थानि तां० १८.८.६. विट् शस्त्रम् ष० १.४. विट् सूक्तम् ऐ० २.३३. विशो ग्रावाणः श० ३.९.३.३. विड् वै ग्रावाणः तां० ६.६.१. विड् वै गर्भः श० १३.२.९.६. तै० ३.९.७.३. विड् वै शकुन्तिका (यजु० २३.२२.) श० १३.२.९.६. तै० ३.९.७.३. विड् वै हरिणी तै० ३.९.७.२. विशो वै पस्त्याः श० ५.३.५.१९. विशो वै सूच्यः श० १३.२.१०.२. विशो होत्राशंसिनः ऐ० ६.२१. गो० उ० ६.३. विट् सप्तदशः तां० १८.१०.९. विड् वै सप्तदशः तां० २.७.५. विशः सप्तदशः ऐ० ८.४ वर्षाभिर्ऋतुनादित्याः स्तोमे सप्तदशे स्तुतं वैरूपेण विशौजौ सा तै० २.६.१९.१. राष्ट्राणि वै विशः ऐ० ८.२६. विट् सुरा श० १२.७.३.८. आद्या हीमाः प्रजा विशः श० ८.२.१.१७. अन्नं वै विशः श० ४.३.३.१२. अन्नं विशः श० २.१.३.८. अन्नं वै क्षत्रियस्य विट् श० ३.३.२.८. तस्माद् राष्ट्री विशं घातुकः श० १३.२.९.६. तस्माद् राष्ट्री विशमत्ति श० १३.२.९.८. दैव्यो वा ऽएता विशो यत्पशवः श० ३.७.३.९. अपरजना ह वै विशो ऽदेवीः गो० उ० ६.१६. क्षत्रं वै प्रस्तरो विश इतरं बर्हिः श० १.३.४.१०. तस्माद् ब्रह्म च क्षत्रं विशि प्रतिष्ठते श० १२.२.७.१६. स्वरिति (प्रजापतिः) विशम् (अजनयत) श० २.१.४.१२. स विशमसृजत यान्येतानि देवजातानि गणश आख्यायन्ते वसवो रुद्रा आदित्या विश्वे देवा मरुत इति श० १४.४.२.२४. पूषा विशां विट्पतिः तै० २.५.७.४. तस्याः (विशः) राजा गर्भः तां० २.७.५. अहुतादो वै विशः श० २.५.२.२४. भूमो वै विट् श० ३.९.१.१७. अनिरुक्तेव हि विट् श० ९.३.१.१५.]

विशल्यः विगतानि शल्यानि यस्य सः (सेनापतिः) १६.१०. [वि-शल्यपदयोः समासः]

विशस्त विशेषेण ताडयत हिंस्त १.१६२.१८. विशिष्टतया छिन्त २५.४१. [वि+शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

विशस्ता विच्छेदकः (ऋतुः=वसन्तादिः) २५.४२. [वि+शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

विशारि विशेषतया हिंस्यात् ३.५३.१७. [वि+शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः कर्मणि लुङ् अटोऽभावः]

विशालम् विस्तीर्णम् (छन्दः) १४.९. विस्तीर्णं कर्म्म १५.५.

विशासतु उपदिशन्तु, भा०—शिक्षेयुः २३.४२. **विशास्ति**=विशेषेणोपदिशति २३.३९. [वि+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्]

विशिक्षुः सुशिक्षकः (अग्निः=राजा) २.१.१०. [वि+शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि बाहु० औणा० कुः]

विशिखासः विगतशिखाः संन्यासिनः, भा०—परिव्राजः १६.५९. [वि-शिखापदयोः समासः। ततो जसोऽसुक्]

विशिखा इव शिखारहिताः (कुमाराः) इव ६.७५.१७. यथा विगतशिखा विविधशिखा वा (कुमाराः=बालकाः) १७.४८. [विशिखा-इवपदयोः समासः। विशिखाः=वि-शिखापदयोः समासः]

विशिप्रियाणाम् विविधे धर्म्ये कर्म्मणि हनु-नासिके येषां तेषाम् (गृहाश्रमिणाम्), प्र०—शिप्रे हनुनासिके वा नि० ६.१७., ९.४. [वि-शिप्रपदयोः समासः। शिप्रे हनुनासिके वा नि० ६.१७.]

विशिशिप्रम् विशी शिप्रे शोभने हनुनासिके यस्य तम् (सखायम्) ५.४५.६. [विशिन्-शिप्रपदयोः समासः शिप्रे हनुनासिके वा नि० ६.१७.]

विशिश्रथ विशिष्टतया हिन्धि २.२८.७.

विशृण्विरे विश्रृण्वन्ति ४.८.६. [वि+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लिट्। 'छन्दस्युभयथा' अ० ३.४.११७. सूत्रेण लिटः सार्वधातुसंज्ञायां 'श्रुवः शृ च' इति श्नुः शृ

आदेशश्च । 'वा छन्दसी' ति द्वित्वं न भवति । व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

विशे विशे प्रजायै प्रजायै १५.२६. विशोविशः= प्रजायाः प्रजाया मध्ये ६.४६.२. [विशे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । अन्यत्र विशः पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

विशौजाः विशा प्रजया सहौजः पराक्रमो यस्य सः (राजा) १०.२८. [विशा-ओजस्पदयोः समासः । समासे तृतीयाया अलुक्]

विश्पतिम् प्रजायाः पालकम् (सूर्यम्) १.१६४.१. विशिष्टानां पालकम् (राजानम्) ३.१३.५. विशः प्रजास्तासां स्वामिनं पालनहेतुं वा (अग्निं=परमेश्वरं विद्युदग्निं वा) १.१२.२. प्रजापतिः ७.५५.५. **विश्पतिः**= विशां प्रजानां पालकः सभापती राजा, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति नियमाद् 'व्रश्चभ्रस्जसृज०' इति षत्वं न भवति १.२६.७. [विश्-पतिपदयोः समासः । 'व्रश्चभ्रस्ज०' इति प्राप्तं षत्वं न भवति छान्दसत्वात् । विशः मनुष्यनाम निघं० २.३. विश्वपतिं सर्वस्य पातारं वा पालयितारं वा नि० ४.२६.]

विश्पतीव प्रजापालकाविव (वायुसूर्यौ) ३३.४४. [विश्पती-इवपदयोः समासः । विश्पतिरिति व्याख्यातम्]

विश्पत्नीम् प्रजायाः पालिकाम् (शक्तिम्) ३.२६.१. **विश्पत्न्यै**=विशः प्रजायाः पालयित्र्यै (उत्तमपत्न्यै) २.३२.७. [विश्पतिप्राति० स्त्रियां 'विभाषा सपूर्वस्य' अ० ४.१.३४. सूत्रेण नकारादेशो ङीप्]

विश्पलाम् विशां पालिकां विद्याम् १.११७.११. विशः प्रजाः पात्यनेन सैन्येन तल्लाति यया ताम् (सेनाम्) १.११२.१०, **विश्पलायाः**=प्रजायाः १.११८.८. **विश्पलायै**=विशां प्रजानां पलायै सुखप्रापिकायै नीत्यै। १.११६.१५. [विश्पोपपदे ला आदाने (अदा०) धातोः कः ततष्टाप् स्त्रियाम् । विश्पा=विश् इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः । ततः स्त्रियां टाप्]

विश्पलावसू विशां पालयितारौ च तौ वासकौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.१. [विश्पल-वसुपदयोः समासः । विश्पलेति व्याख्यातम् पूर्वपदे]

विश्या इव यथा विक्षु प्रजासु साधवो वणिग्जनाः १.१२६.५ [विशः मनुष्यनाम निघं० २.३. ततः साध्वर्थे यत् । ततः स्त्रियां टापि विश्या रूपम् । विश्या-इवपदयोः समासः]

विश्येषु विक्षु प्रजासु भवेषु वणिग्जनेषु १८.४८. [विशः मनुष्यनाम निघं० २.३. ततो भवार्थे यत्]

विश्रथय विशेषेण हिन्धि २.२८.५. [वि+श्रथ दौर्बल्ये (चुरा०) धातोर्लोट्]

विश्रयध्वम् विशिष्टतया सेवध्वम् ५.५.५. **विश्रयन्ताम्**=विविधतया सेवन्ताम् १.१३.६. **विश्रयाति**= विशेष कर आश्रय करती है सं० वि० १३६, अथर्व० १४.२.३८. [वि+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लेट्]

विश्रिता विविधैराप्तैः श्रिता सेविता (गीः=वाक्) १.११७.१. विश्रिताः=विविधप्रकारैः सेवमानाः (नद्यः) १.५५.२. [वि+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

विश्रुतम् यद्विविधं श्रूयते तद्यशः १.५२.११. [वि+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

विश्रुताय विशेषेण श्रुता गुणा यस्मिँस्तस्मै (नरे=नायकाय) ३४.१६. यो विविधैर्गुणैः श्रूयते तस्मै (सभाद्यध्यक्षाय) १.६२.१. [वि-श्रुतपदयोः समासः । श्रुतम्=श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

विश्रुति विविधाः श्रुतयः श्रवणानि तद्वति (पत्नि) ८.४३ [वि-श्रुतिपदयोः समासः । श्रुतिः=श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

विश्वकर्मणः विश्वं सर्वं कर्म्म क्रियमाणमस्य स विश्वकर्मा तस्य परमेश्वरस्य ऋ० भू० १३०, ३१.१७. विश्वानि सर्वाणि सत्यानि कर्माणि यस्याऽऽश्रयेण तस्मात् सूर्यात् ३१.१७. **विश्वकर्मणा**=विश्वानि समग्राणि धर्म्यकर्माणि यस्य पत्युस्तेन १३.१६. **विश्वकर्मणे**= विश्वं कर्म क्रियमाणं कृतं येन तस्मै (पत्ये=जगदीश्वराय) १७.७८. अखिलकर्मणोत्पादनाय (इन्द्राय=ऐश्वर्याय), अखिलकर्मसाधनाय (इन्द्राय) ८.४५. अखिलशुभकर्मानुष्ठानाय १२.४३. **विश्वकर्मन्**=अखिलशुभकर्मसेविन्) (सर्वसभेश) १७.२४. समग्रोत्तमकर्मकारिन् (अ०—जगदीश्वर) १७.२१. **विश्वकर्मा**=विश्वानि सर्वाणि कर्माणि यस्या यस्य वा सा वाक्, स विद्वान् वा ५.११. विश्वं सम्पूर्णं क्रियाकाण्डं सिध्यति यया सा (वाक्) १.४. अखिलोत्तमक्रियः (प्रजापतिः=परमेश्वरः) १२.६१. विश्वान्यखिलानि कर्म्माणि यस्मात् सः (अ०—वायुः) १३.५५. सर्वोत्तमकर्मा सभापतिः ८.५४. विश्वं सर्वं जगत् कर्म्म क्रियमाणं यस्य सः, भा०—सर्वजगत्स्रष्टा (परमेश्वरः) १७.२६. अखिलशुभक्रियाकुशलः (पतिः) १४.११.

सकलेष्टक्रियः (पतिः) १४.१४. **विश्वकर्माणम्**=अखिलेषु कर्मसु कुशलम् (अ०—महात्मानम्) १७.२३. विश्वानि सर्वाणि धर्म्याणि कर्म्माणि यस्य तम् (ईश्वरं सभेशं वा) ८.४५. [विश्व-कर्मन्पदयोः समासः। विश्वम् बहुनाम निघं० ३.१. विश्वकर्मा पदनाम निघं० ५.४. विश्वकर्मा सर्वस्य कर्त्ता नि० १०.२५. विश्वम् सर्वम् नि० ३.२२. यद्वै विश्वं सर्वं तत् श० ३.१.२.११. तदन्नं वै विश्वम्प्राणो मित्रम् जै० उ० ३.३.६. कर्मन् इति व्याख्यातम्। अथो विश्वकर्मणे। विश्वं वै तेषां कर्म कृतं सर्वं जितं भवति ये संवत्सरमासते श० ४.६.४.५. वाग्वै विश्वकर्मऽर्षिर्वाचा हीदं सर्वं कृतम् श० ८.१.२.९. प्रजापतिर्वै विश्वकर्मा। श० ७.४.२.५. संवत्सरो विश्वकर्मा ऐ० ४.२२. असौ वै विश्वकर्मा योऽसौ (सूर्यः) तपति कौ० ५.५. गो० उ० १.२३. विश्वकर्मा त्वादित्यैरुत्तरतः पातु। श० ३.५.२.७. असौ (द्यौः) विश्वकर्मा तै० ३.२.३.७. (इन्द्रः) विश्वकर्मा भूत्वाऽभ्यजयत् तै० १.२.३.३. इन्द्रो वै वृत्रं हत्वा विश्वकर्माऽभवत् प्रजापतिः प्रजाः सृष्ट्वा विश्वकर्माऽभवत् ऐ० ४.२२. विश्वकर्माऽयमग्निः श० ९.२.२.२. अयं वै वायुर्विश्वकर्मा योऽयं पवतेऽएष हीदं सर्वं करोति श० ८.१.१.७. वैश्वकर्मण एककपालः पुरोडाशो भवति। विश्वं वा एतत् कर्म कृतं सर्वं जितं देवानामासीत् साकमेधैरीजानानां विजिग्यानानाम् श० २.५.४.१०. (प्रजापतिः) वैश्वकर्मणं पुरुषम् (आलिप्सत) श० ६.२.१.५.]

विश्वकाय विश्वस्याऽनुकम्पकाय (विद्वज्जनाय) १.११६.२३. अनुकम्पिताय समग्राय राज्ञे १.११७.७. [विश्वमिति व्याख्यातम्। ततः 'अनुकम्पायाम्' अ० ५.३.७६ सूत्रेण कः प्रत्ययः]

विश्वकृष्टयः विश्वा कृष्टिर्येभ्यस्ते (मरुतः=वायवः) ३.२६.५. **विश्वकृष्टिम्**=विश्वे सर्वे कृष्टयो मनुष्या विजयिनो यस्मात्तम् (राजपुरुषम्) ४.३८.२. **विश्वकृष्टिः**=विश्वाः सर्वाः कृष्टीर्मनुष्यादिकाः प्रजाः १.५९ ७. [विश्वा-कृष्टिपदयोः समासः। कृष्टयः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

विश्वगूर्त्तः विश्वं सर्वं भोज्यं वस्तु निगलितं येन स (इन्द्रः=सूर्यः सभाध्यक्षो वा) १.६१.९. [विश्व-गूर्त्तपदयोः समासः) गूर्त्तम्=गुर्वी उद्यमने (भ्वा०) धातोः क्तः। गॄ निगरणे (तुदा०) धातोर्वा क्तः प्रत्ययः]

विश्वगूर्त्तौ समग्रोद्यमौ (स्त्रीपुरुषौ) १.१८०.२. [विश्वोपपदे गुर्वी उद्यमने (भ्वा०) धातोः क्तिन्]

विश्वचक्षसे विश्वस्य चक्षुर्दर्शनं यस्मात्तस्मै सूराय=सूर्यलोकाय) १.५०.२. **विश्वचक्षाः**=यो विश्वं सर्वं जगच्चष्टे पश्यति सः (अ०—जगदीश्वरः) १७.१८. सब संसार का द्रष्टा (ईश्वर) आर्याभि० २.३२. १७.१८. [विश्वचक्षस्पदयोः समासः। चक्षस्=चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोरौणा० असुन्]

विश्वश्चन्द्राः विश्वानि समग्राणि चन्द्राणि सुवर्णादीनि येषां ते (अपः=जलानीव व्याप्तविद्याः), प्र०—अत्र 'ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे' इति सुडागमः ३.३१.१६. विश्वानि चन्द्राणि सुवर्णादीनि याभ्यस्ताः (श्रियः) १.१६५.८. [विश्व-चन्द्रपदयोः समासः। चन्द्रम् हिरण्यनाम निघं० १.२. 'ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे' इति सुडागमः]

विश्वचर्षणिम् सर्वदर्शकम् (तनयं=विद्वांसं पौत्रम्) १.६४.१४. विश्वे चर्षणयो धार्मिका मनुष्याः कार्यद्रष्टारो यस्य तम् (इन्द्रं=दुष्टाचारिशत्रुविनाशकं नृपम्) ६.४४.४. विश्वप्रकाशकम् (अग्निम्) ५.१४.६. **विश्वचर्षणिः**=विश्वे सर्वे चर्षणयो मनुष्या रक्ष्या यस्य स (सेनाध्यक्षः), प्र०—अत्र 'कृषेरादेश्च चः' उ० २.१००. अनेनाऽनिः प्रत्यय आदेश्चकारादेशश्च १.२७.९. विश्वप्रकाशकः (अग्निः) ५.६.३. अखिलविद्याप्रकाशः ५.२३.४. विश्वे चर्षणयो मननशीला मनुष्या यस्य सः (विद्वज्जनः) ६.२.२. **विश्वचर्षणे**=समस्तद्रष्टव्यदर्शन (राजन्) ५.३८.१. विश्वस्य सर्वस्य जगतश्चर्षणिर्द्रष्टा तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=भगवन्) १.९.३. [विश्व-चर्षणिपदयोः समासः। चर्षणयः मनुष्यनाम निघं० २.३. चर्षणिः=कृष विलेखने (भ्वा०) धातोः 'कृषेरादेश्च चः' उ० २.१०० सूत्रेण अनिः। कृष्धातोश्चादेः ककारस्य चकारादेशः। विश्वचर्षणिः पश्यतिकर्मा निघं० ३.११.]

विश्वजनस्य विश्वस्मिन् जगति सर्वस्य जनसमूहस्य ५.२८. [विश्व-जनपदयोः समासः]

विश्वजन्यम् विश्वाञ्जनितुं योग्यं विश्वसुखजनकं वा (राधः=धनम्) ६.४७.२५. [विश्व-जन्यपदयोः समासः। विश्वजन्यम् सर्वजन्यम् नि० ११.१०. जन्यम्=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'तकिशसिचतियतिजनीनाम्०' अ० ३.१.९७. वा०सूत्रेण यत्। 'भव्यगेय०' अ० ३.४.६८. सूत्रेण कर्त्तरि यत्]

विश्वजन्या या विश्वं जनयन्ति ताः (अ०—अपः), प्र०—अत्र 'भव्यगेय०' इति कर्त्तरि जन्यशब्दः 'सुपां

सुलुक्०' इति जसः स्थाने आकारादेशः १.१६६.८.

विश्वजन्याम्=या विश्वमखिलं जगज्जनयति प्रकटयति ताम् (सुमतिं=प्रज्ञाम्) १७.७४. विश्वं समग्रमपत्यं जायते यस्यास्ताम् (सुमतिं=शोभनप्रज्ञां स्त्रियम्) ३.५७.६. विश्वं जन्यं यया ताम् (अदितिं=कालविद्याम्) ७.१०.४.

विश्वजन्ये=सर्वस्य जनयित्र्यौ (द्यावापृथिवी=प्रकाशभूमी) ३.२५.३. [विश्व जन्यपदयोः समासः। ततः स्त्रियां टाप्। 'सुपां सुलुक्०' इति जसः स्थान आकारः]

विश्वजन्याः विश्वानि जन्यानि सुखानि येषु ते (प्रजाजनाः) ६.३६.१. [विश्व-जन्यपदयोः समासः। जन्यम्=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'तकिशसि०' इति यत्]

विश्वजिते यो विश्वं जयति तस्मै (इन्द्राय=विद्वत्सभासेनेशाय) २.२१.१. [विश्वोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। विश्वजित् (यज्ञः) (देवाः) विश्वजिता विश्वमजयन् तां० २२.८.४. विश्वजिता वै प्रजापतिः सर्वाः प्रजा अजनयत् सर्वमुदजयत् तस्माद् विश्वजित् कौ० २५.१३. एष ह प्रजानां प्रजापतिर्यद् विश्वजित् गो० पू० ५.१०. प्रजापतिर्विश्वजित् कौ० २५.११. ततो वा इदमिन्द्रो विश्वमजयद् यद् विश्वमजयत्तस्माद् विश्वजित् तां० १६.४.५. इन्द्रो विश्वजिद् इन्द्रो हीदं सर्वं विश्वमजयत् कौ० २४.१. अथ यद् विश्वजितमुपयन्ति। इन्द्रमेव देवतां यजन्ते श० १२.१.३.१५. सर्वं विश्वजित् कौ० २५.१४. सर्वं वै विश्वजित् श० १०.२.५.१६. स वा एष विश्वजिद् यः सहस्रसंवत्सरस्य प्रतिमा गो० पू० ५.१०. एकाहो वै विश्वजित् कौ० २५.११. स कृत्स्नो विश्वजिद् योऽतिरात्रः कौ० २५.१४. चक्रीवान् वा एष (विश्वजित्) यज्ञः कामाय तां० १६.१५.४.]

विश्वजिन्व विश्व-पोषक (महाविद्वज्जन) ६.६७.७. [विश्वोपपदे जिवि प्रीणनार्थे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि अच्]

विश्वजुवम् समग्रवेगाम् (धेनुं=वाचम्) ४.३३.८. [विश्व-जूपदयोः समासः। जूः=जूरिति सौत्रो धातुः। ततः क्विप्]

विश्वतश्चक्षुः विश्वतः सर्वस्मिञ्जगति चक्षुर्दर्शनं यस्य सः (परमेश्वरः) १७.१९. सब जगत् में जिसकी दृष्टि है, जिससे अदृष्ट कोई वस्तु नहीं है वह (ईश्वर) आर्याभि० २.३४, १७.१९. [विश्वतस्-चक्षुस्पदयोः समासः। विश्वतः=विश्वप्राति० आद्यादित्वात् तसिः। चक्षुस्=चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोः 'चक्षेः शिच्च' उ० २.१२१. सूत्रेण उसिः]

विश्वतस्पात् विश्वतः सर्वत्र पात् गतिर्व्याप्तिर्यस्य सः, भा०—सर्वत्राऽभिव्याप्तः (परमेश्वरः) १७.१९. [विश्वतस्-पादपदयोः समासः। विश्वतः=विश्व+तसिः। पादः=पद गतौ (दिवा०) धातोः भावे घञ्। 'पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः' इति समासान्तो अन्त्यलोपः]

विश्वतः सर्वतः सर्वेषां जलपृथिवीमयानां पदार्थानां विविधाश्रयात्, प्र० —षष्ठ्या व्याश्रये अ० ५.४.४८. इत्यनेन तसिः प्रत्ययः १.१.४. सर्वाः, प्र०—अत्र प्रथमान्तात्तसिः ५.२९. सर्वेभ्यः (जनेभ्यः) १.७.१०. विश्वस्य मध्ये १.१०.१२. सब प्राणियों से, आर्याभि० १.२०, ऋ० १.६.२०.८. सर्वाभ्यो दिग्भ्यः १.८९.१. [विश्वमिति व्याख्यातम्। ततः 'आद्यादिभ्य उपसंख्यानमि' ति तसिः]

विश्वतुरा यद्विश्वं सर्वं तुरति त्वरयति तेन (राया=प्रशस्तधनेन) १.४८.१६. [विश्वोपपदे तुर त्वरणे (जु०) धातोः क्विप्। ततः तृतीयैकवचनम्]

विश्वतूर्त्तिः विश्वस्मिँस्त्वरमाणा (सरस्वती=प्रशस्तज्ञानवती वाक्) २०.४३. या विश्वं सर्वं जगत् त्वरति (उपदेशिका स्त्री) २.३.८. [विश्व-तूर्त्तिपदयोः समासः। तूर्त्तिः=ञित्वरा सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। 'ज्वरत्वर०' सूत्रेण ऊठ् उपधावकारयोश्च लोपः]

विश्वतूः विश्वान् शत्रून् तूर्यति हिनस्ति सः (युद्धविद्यासु कुशलो राजा) ३३.६६. [विश्वोपपदे तूरी गतित्वरणहिंसनयोः (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

विश्वतोधारम् विश्वतः सर्वतो धाराः सुशिक्षिता वाचो यस्मिँस्तम् (यज्ञम्) १७.६८. [विश्वतस्-धारापदयोः समासः। धारा वाङ्नाम निघं० १.११. विश्वतोधारं सर्वतोधारम् नि० १३.८.]

विश्वतोबाहुः सर्वतो बाहुर्बलं वीर्यं वा यस्य सः, भा०—अनन्तसामर्थ्यः (परमेश्वरः) १७.१९. [विश्वतस्-बाहुपदयोः समासः]

विश्वतोमुख सर्वत्र व्यापकत्वादन्तर्यामितया सर्वोपदेष्टः (जगदीश्वर) १.९७.६. विश्वतः सर्वतो मुखमुत्तममैश्वर्यं यस्य तत्सम्बुद्धौ (परमात्मन्) १.९७.७. स्वशक्ति से सब जीवों के हृदयों में नित्य सत्योपदेश करने वाले (ईश्वर) आर्याभि० १.३९, ऋ० १.७.५.६. **विश्वतोमुखः**=विश्वतः सर्वतो मुखमुपदेशनमस्य सः (परमेश्वरः) १७.१९. [विश्वतस्-मुखपदयोः समासः]

विश्वथा सर्वथा १.१४१.९. विश्वस्मिन् २.२४.११.

विश्वानिव ५.४४.१. सर्वेषामिव ७.१२. [विश्वसर्वनाम्नः 'प्रकारवचने थाल्' अ० ५.३.२३. सूत्रेण थाल्। अथवा इवार्थे 'प्रत्नपूर्वविश्वेमात् थाल् छन्दसि' अ० ५.३.१११. सूत्रेण थाल्। विश्वथा=विश्व इव नि० ३.१६.]

विश्वदर्शतम् विश्वस्य प्रकाशकम् (राजानम्) ५.८.३ सर्वविद्याबोधस्य द्रष्टारम् (अग्नि=विद्वांसं जनम्) १२.१११. सर्वैविद्वद्भिर्द्रष्टव्यं जगदीश्वरम्) १.२५.१८. **विश्वदर्शतः**=यो विश्वस्य दर्शयिता (सूर्यः) १.५०.४. यो विश्वैः सर्वैः सम्प्रेक्षितुं योग्यः (विद्वज्जनः) १.४४.१०. विश्वेन द्रष्टव्यः (राजपुरुषः) ३३.३६. [विश्व-दर्शतपदयोः समासः। दर्शतः=दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'भृमृदृशि०' उ० ३.११०. सूत्रेणातच्]

विश्वदानीम् विश्वं समग्रं दानं यस्यास्ताम् (विद्वद्-वृत्तिम्) १.१६४.४० [विश्व-दानपदयोः समासे स्त्रियां ङीप्। दानम्=डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्ल्युट्]

विश्वदानीम् सर्वदा ६.५२.५. सर्वस्मिन् काले ४.५०.८. [विश्वसर्वनाम्नः सप्तम्यन्ताद् काले वर्त्तमानाद् दानीं छान्दसः। विश्वदानीम् सर्वदा नि० ११.४४.]

विश्वदृष्टः विश्वेन दृष्टः (सूर्यः) १.१९१.८. सर्वैर्दृष्टः (भिषग्जनः) १.१९१.९. **विश्वदृष्टाः**=विश्वैस्सर्वैर्दृष्टा ये ते (जनाः) १.१९१.६. [विश्व-दृष्टपदयोः समासः]

विश्वदेवनेत्राः विश्वेषु देवेषु नेत्रं प्रज्ञानं येषान्ते (देवाः=विद्वांसः) ९.३६. **विश्वनेत्रेभ्यः**=सर्वविद्वत्तुल्या नेत्रा नीतिर्येषां तेभ्यः (देवेभ्यः) ९.३५. [विश्वदेवपदयोः समासे ततो विश्वदेव-नेत्रपदयोः समासः। नेत्रम्=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोरौणा० ष्ट्रन्]

विश्वदेवम् विश्वस्य प्रकाशकम् (सवितारं=परमात्मानम्) ५.८२.७. **विश्वदेवः**=विश्वेषां सर्वेषां देवः प्रकाशकः (आप्तो जनः) ६.६७.६. **विश्वदेवाय**=विश्वेऽखिला देवा विद्वांसो यस्मिँस्तस्मै (इन्द्राय=धनाय) १.१४२.१२. विश्वस्य प्रकाशाय ४.५०.६. **विश्वदेवाः**=सर्वे विद्वांसः ७.३५.११. [विश्वदेवपदयोः समासः। देवः=दिवु क्रीडाविजिगीषाव्यवहारद्युतिस्तुतिमोदमदस्वप्नकान्ति-गतिषु (दिवा०) धातोः कर्त्तरि अच्। भावे वा घञ्]

विश्वदेवेभिः स्वकीयैः रश्मिभिः, प्र०—'रश्मयो ह्यस्य विश्वे देवाः' श० ३.७.३.६, २.२२. [विश्व-देवपदयोः समासे 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

विश्वदेव्य विश्वेषु देवेषु साधो (विद्वज्जन) ३.६२.४ **विश्वदेव्यम्**=विश्वेषु देवेषु पृथिव्यादिषु भवम् (अग्नि=विद्युतम्) १.१४८.१. विश्वेभ्यो देवेभ्यो हितम् (भगम्=ऐश्वर्यम्) २२.१४. **विश्वदेव्यः**=विश्वान् समग्रान् देवान् दिव्यगुणानर्हति (समुद्रः) १.११०.१. विश्वेषु सर्वेषु देवेषु दिव्यगुणेषु साधुः (छागः=छागदुग्धम्) १.१६२.३. [विश्वदेवप्राति० साध्वर्थे भवार्थे हितार्थे वा यत्]

विश्वदेव्यावती विश्वेषु देवेषु विद्वत्सु भवं विज्ञानं प्रशस्तं विद्यते यस्यां सा (अदितिः=अध्यापिका), प्र०—अत्र 'सोमाश्वेन्द्रियविश्वदेव्यस्य मतौ' अ० ६.३.१३१. इति दीर्घत्वम् ११.६१. [विश्वदेव्यप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुप्। ततः स्त्रियां ङीप्। 'मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रिय०' इति मतौ परे पूर्वस्य दीर्घः]

विश्वदेव्यावते विश्वानि देव्यानि विद्यन्ते यस्मिं-स्तस्मै (सर्वरक्षकाय पुरुषाय) ३८.८. [विश्वदेव्यमिति व्याख्यातम्। ततो मतुबन्ताच् चतुर्थी]

विश्वदोहसम् विश्वं सर्वविज्ञानान् दोग्धि यया ताम् (धेनुं=विद्या-युक्तां वाचम्) ६.४८.१३. [विश्वोपपदे दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः करण औणा० असुन्]

विश्वदोहसः विश्वं सर्वं जगद् गुणैर्दुहन्ति पिपुरति ते, विश्वस्मिन् सुखप्रपूरकाः (विद्वांसो जनाः) १.१३०.५. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

विश्वध विश्वं दधातीति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=ईश्वर) १.६३.८. यो विश्वं दधाति सः (राजा सेनेशो वा), प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति सलोपः ७.२२.७. [विश्वो-पपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्कः]

विश्वध विश्वैः सर्वैः प्रकारैरिति विश्वध, प्र०—अत्र छान्दसो ह्रस्वः १.१७४.१०. [विश्वप्राति० प्रकारे धाप्रत्ययश्छान्दसः। ह्रस्वश्च वर्णव्यत्ययेन]

विश्वधायसम् सर्वव्यवहार-धनधर्त्तारम् (गृहपतिम्) ५.८.१. विश्वस्य धारणसमर्थम् (भा०—परमेश्वरम्) २.१७.५. यो विश्वाः समग्रा विद्या दधाति तम् (ब्रह्म-चारिणम्) ७.४.५. **विश्वधायाः**=यो विश्वं दधाति सः (विद्वज्जनः), प्र०—अत्र विश्वोपपदाद् बाहुलकादसुन् युडा-गमश्च १.७३.३. या विश्वं सर्वं जगद्विद्यागुणैः सह दधाति सा (वाक्), प्र०—अत्र विश्वोपपदे डुधाञ्-धातोरसुन् प्रत्ययो बाहुलकाणिणच्च १.४. या विश्वं सर्वं गृह्णाति गृहाश्रमं राजव्यवहारं दधाति सा (राजपत्नीः) १३.१८. [विश्वोप-पदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणा० असुन्, स च णित्। णित्वाद् युगागमः। विश्वधायाः (यजु० १३.१८.) (=पृथिवी) अस्यां हीदं सर्वं हितम् श० ७.४.२.७.

वृष्टिर्वै विश्वधायाः तै० ३.२.३.२.]

विश्वधाः विश्वं दधातीति, अ०—संसारस्य सुखधारकः (वसोः=यज्ञः) १.२. [विश्वोपपदे दधातेः कर्त्तरि क्विप्]

विश्वधेनाम् समग्रवाचम् ४.१९.६. **विश्वधेनाः**=विश्वाः सर्वा धेना वाचो येषान्ते (देवाः=विद्वांसः) ४.१९.२. [विश्वा-धेनापदयोः समासः। धेना वाङ्नाम निघं० १.११.]

विश्वपिशः विश्वस्याऽवयवभूताः (शूरवीरा विद्वज्जनाः) ७.५७.३. [विश्व-पिशपदयोः समासः। पिशः=पिश अवयवे (तुदा०) धातोर्घञर्थे कः]

विश्वपेशसम् विश्वानि सर्वाणि पेशांसि रूपाणि यस्यां ताम् (धियम्) १.६१.१६. **विश्वपेशसा**=विश्वानि सर्वाणि पेशांसि रूपाणि यस्मात्तेन (राया) १.४८.१६. सर्वस्वरूपेण ४.४८.३. [विश्व-पेशस्पदयोः समासः। पेशस् रूपनाम निघं० ३.७. हिरण्यनाम निघं० १.२.]

विश्वप्स्न्या विश्वं सर्वं योग्यं वस्तु प्सायते भक्ष्यते यया (धारया=वाचा) १२.१०. विश्वान् सर्वान् भोगान् यया प्साति तया (धारया=वाचा) १२.४१. [विश्वोपपदे प्सा भक्षणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० अनिः किच्च बाहुलकात्। ततः स्त्रियां 'कृदिकारादवितनः' इति ङीष्]

विश्वप्सु विविधरूपम् (ब्रह्म=धनम्) ६.३५.३. [विश्वप्सुपदयोः समासः। प्सुः रूपनाम निघं० ३.७.]

विश्वप्स्न्यस्य विश्वेषु समग्रेषु प्स्नुषु स्वरूपेषु भवस्य (अग्नेः) ७.४२.६. **विश्वप्स्न्याय**=विश्वस्य पालनाय।

विश्वभरसम् संसारस्य धारकम् (अग्निं=विद्युद्रूपम्) ४.१.१९. **विश्वभराः**=यो विश्वं बिभर्त्ति सः (विद्वज्जनः) ११.३२. [विश्वोपपदे भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

विश्वभानुषु विश्वस्मिन् भानुषु सूर्येष्विव प्रकाशकेषु (मरुत्सु=मनुष्येषु) ४.१.३. [विश्व-भानुपदयोः समासः]

विश्वभृतः ये विश्वं बिभ्रति ते, भा०—विश्वम्भराः (राजपुरुषाः) १०.४. [विश्वोपपदे भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

विश्वभेषजीः विश्वाः सर्वा भेषज्य ओषध्यो यासु ताः (आपः=जलानि), प्र०—अत्र 'केवलमामक०' अ० ४.१.३०. अनेन भेषजशब्दान् ङीप् प्रत्ययः १.२३.२०. [विश्वा-भेषजीपदयोः समासः। भेषजी=भेषजप्राति० स्त्रियां 'केवलमामक०' इति ङीप्। भेषजम् उदकनाम निघं० १.१२. सुखनाम निघं० ३.६.]

विश्वभोजसम् विश्वस्य समग्रस्य जनस्य पालकम् (इषम्=अन्नम्) ६.४८.१३. **विश्वभोजाः**=यो विश्वं भुनक्ति पालयति सः (विद्वान् शिल्पी) ५.४१.४. [विश्वोपपदे भुजपालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोरौणा० असुन् 'विदिभुजिभ्यां विश्वे' उ० ४.२३९. सूत्रेण]

विश्वभोजसा विश्वस्य पालकौ (अरुषा=जलाग्नी) ७.१६.२ [विश्वभोजस् इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

विश्वम् जगत् १.८१.६. कृतप्रवेशम् (गर्भं=प्रधानं प्रकृतिम्) २७.२५. विशन्ति परस्मिँस्तत्सर्वम् (भुवनम्) ५.६३.७. **विश्वस्य**=सर्वप्राणिसमूहस्य २.३. संसारस्य ३६.८. अखिलपदार्थजातस्य १५.३३. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः 'अशूप्रुषिलटिकणि०' उ० १.१५१. सूत्रेण क्वन्। सर्वादिगणे पाठाच्च सर्वनामसंज्ञश्चापि। यद्वै विश्वं सर्वं तत् श० ३.१.२.११. तदन्नं वै विश्वम्प्राणो मित्रम् जै० उ० ३.३.६.]

विश्वमायुः विविधसुखरूपमायुः ऋ० भू० २०६, ऋ० ८.३.२८.२. शतवार्षिकं सुखयुक्तमायुः ऋ० भू० २२५, अथर्व० १९.७.५५.६. [विश्व-आयुपदयोः समासः। विभक्तेरलुक्। इयं (पृथिवी) वै विश्वायुः तै० ३.२.३.७.]

विश्वमिन्व यो विश्वं मिनोति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ७.२९.१. विश्वं सर्वं जगन्मिन्वं व्याप्तं येन तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=परमेश्वर) ३.२०.३. **विश्वमिन्वः**=विश्वं मिनोति व्याप्नोति यस्सः (सोमः=पदार्थसमूहः) २.४०.६. [विश्वोपपदे मिनोति गतिकर्मा (निघं० २.१४) धातोरच्-प्रत्यये छान्दसं रूपम्। अथवा मिवि सेवने (भ्वा०) धातोरच्। धातूनामनेकार्थकत्वादत्रव्याप्तिरर्थः। अथवा विश्वोपपद इवि व्याप्तौ (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि। विभक्तेरलुक्]

विश्वमिन्वम् यद्विश्वं सर्वं विज्ञानमिन्वति प्राप्नोति तत् (स्तोमम्) प्र०—अत्र विभक्त्यलुक् १.६१.४. [विश्वोपपदे इवि व्याप्तौ (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि। विभक्तेरलुक्]

विश्वमिन्वा या विश्वं सर्वं जगन्मिनोति सा (उषाः=प्रातर्वेला) ५.८०.२. **विश्वमिन्वाः**=विश्वव्यवहारव्यापिन्यः (जनयः=जायाः) २९.३०. **विश्व-**

मिन्वे=विश्वतर्पके (रोदसी) १.७६.२. विश्वव्यापिके (रोदसी=राजप्रजाव्यवहारौ) ३.३८.८. [विश्वोपपद इवि व्याप्तौ (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि । औणादिको वा अन् । विभक्तेरलुक् । विश्वमिन्वप्राति० स्त्रियां टाप् । विश्वमिन्वाः विश्वमाभिरेति नि० ८.१०.]

विश्वमिन्वेभिः सर्वं जगद्व्यवहारं प्रापयद्भिः (मरुद्भिः=मनुष्यैः) ५.६०.८. [विश्वमिन्व इति व्याख्यातम् । ततो भिस ऐसादेशो न भवति 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेण]

विश्वयत् यो विश्वं करोति सः (सत्पुरुषः) ७.५०.१. [विश्वप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' वा०सूत्रेण णिच् । ततः शतृ]

विश्वरूपम् विश्वस्य रूपं यस्मिन् परमात्मनि वा विश्वः सर्वो रूपं गुणो यस्य तम् (भौतिकमग्निम्) १.१३.१०. विश्वानि बहूनि रूपाणि यस्मिन् प्रकाशे तम् १.३५.४. विचित्रस्वरूपम् (निष्कं=सुवर्णाभूषणम्) २.३३.१०. विश्वानि कर्माणि वस्तूनि वा रूपयन्तम् (बृहस्पतिं=राजानम्) ३.६२.६. विविधस्वरूपम् (प्रजासुखम्) २.११.१९. सर्वरूपवत्पदार्थदर्शकम् (आदित्यं=सूर्यम्) १३.४१. **विश्वरूपः**=विश्वं रूपं यस्य सः (अजः=जन्मादिरहितो जीवः) २५.२५. विश्वं समग्रं रूपं यस्य सः (भा०—सर्वपदार्थस्थो विद्युदाख्योऽग्निः) ३३.२२. विश्वानि रूपाणि यस्मात् सः (सूर्यः) ३.३८.४. अखिलं रूपं यस्मिन् यस्माद्वा सः (ईश्वरः) ३.५६.३. [विश्वरूपपदयोः समासः । विश्वरूपः सर्वरूपः नि० १०.३४. स (इन्द्रः) यत्र त्रिशीर्षाणं त्वाष्ट्रं विश्वरूपं जघान श० १.२.३.२. त्वष्टुर्ह वै पुत्रः । त्रिशीर्षा षडक्ष आस तस्य त्रीण्येव मुखान्यासुस्तद् यदेवं रूप आस तस्माद् विश्वरूपो नाम श० ५.५.४.२. तस्य (विश्वरूपस्य) सोमपानमेवैकं मुखमास । सुरापाणमेकमन्यस्माऽअशनायैकं तमिन्द्रो विद्वेष तस्य तानि शीर्षाणि प्रचिच्छेद श० १.६.३.२.]

विश्वरूपा विविध सुन्दर रूप को धारण करने वाली (स्त्री) सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३२. **विश्वरूपाम्**=समग्रशास्त्रस्वरूपविदम् (धेनुं=वाचम्) ४.३३.८. विश्वानि सर्वाणि रूपाणि यस्यां पृथिव्यां ताम् १.१६१.६. **विश्वरूपाः**=नानारूपाः (धेनवः=गावः) ३.१.७. विविधरूपगुणाः (द्वारः=द्वाराणि) २९.५. [विश्व-रूपपदयो· समासे स्त्रियां टाप् । विश्वरूपमिति व्याख्यातम्]

विश्वरूपी विश्वं सर्वं रूपं यस्याः सा (संहिता=विद्युत्), प्र०—अत्र 'जातेरस्त्रीविषयादयोपधात्' अ० ४.१.६३. इति ङीष् प्रत्ययः ३.२२. [विश्व-रूपपदयोः समासे कृते ततः स्त्रियां 'जातेरस्त्रीविषयाद्०' इति ङीष् । विश्वरूपी (=कामधेनुः) इयं (पृथिवी) वै देव्यदितिर्विश्वरूपी (विश्वरूपा धेनुः कामदुघा मे अस्तु अथर्व० ४.३४.८. विश्वरूपा धेनुः कामदुघाऽस्येका अथर्व० ९.५.१०.) तै० १.७.६.७.]

विश्वरूप्यम् विश्वेष्वखिलेषु रूपेषु भवम् (पदार्थविद्याभावम्) १.१६४.९. [विश्व-रूपप्राति० भवार्थे यत्]

विश्ववार विश्वैः सर्वैर्वरणीय (अग्ने=विज्ञानस्वरूपेश्वर) ७.५.८. विश्वान् सर्वानानन्दान् वृणोति तत्सम्बुद्धौ (योगिजन) ७.७. **विश्ववारम्**=यो विश्वं सर्वमुत्तमं व्यवहारं वृणोति तम् (वायुं=पवनम्) ६.४९.४. यो विश्वं सर्वं सुखं करोति तम् (रथम्) ६.३७.१. **विश्ववारस्य**=विश्वे सर्वे वाराः स्वीकारा यस्मिँस्तस्य (रायः=धनस्य) ६.२३.१०. समग्रस्वीकरणीयस्य (विदुषः) ५.४४.११. समग्रं सुखं स्वीकृतं यस्मात्तस्य (रायः) ३.३६.१०. **विश्ववारः**=यो विश्वं वृणोति सः (अग्निः=पावकः) ३.१७.१. [विश्वोपपदे वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

विश्ववारम् येन विश्वं सर्वं वृणोति तत् (रयिम्) १.४८.१३. अखिलवरपदार्थयुक्तम् (रयिं=श्रियम्) ५.४.७. **विश्ववाराणि**=विश्वैः सर्वैर्वरणीयानि (द्रविणानि=द्रव्याणि) ६.५.१. [विश्व-वारपदयोः समासः । वारः=वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्घञ्]

विश्ववारा विश्वस्मिन् वारो वरणं यस्याः सा (दीधितिः=दीप्तिः) ३.४.३. सर्वैरेव स्वीकर्त्तुं योग्या (संस्कृतिः=विद्यासुशिक्षाजनिता नीतिः) ७.१४. सर्वैर्मनुष्यैर्वरणीया (उषाः) ५.८०.३. **विश्ववाराभिः**=सर्वैः स्वीकरणीयाभिर्गतिभिः ६.२२.११. **विश्ववारायाः**=चारों ओर की वायु को स्वीकार करने वाले द्वार के सं० वि० १६६, अथर्व० ९.२.३.१. **विश्ववाराः**=याः सर्वं जगद् वृण्वन्ति ताः (उषसः) १.१२३.१२. **विश्ववारे**=सर्वसुखवरितारौ (मातरा=जनकौ) ७.७.३. या विश्वं सर्वं भद्रं वृणोति तत्सम्बुद्धौ (कुमारि !) १.११३.१९. सर्वतो वरणीये (उषर्वद्वर्त्तमाने स्त्रि) ३.६१.१. [विश्ववारपदयोः समासे कृते ततः स्त्रियां टाप् । विश्वोपपदे वृञ् वरणे (भ्वा०) धातोर्वाऽण् । ततः स्त्रियां टाप् छान्दसः]

विश्वविदम् यो विश्वानि सर्वाणि शास्त्राणि वेत्ति

तम् (अग्निं=मेधाविजनम्) ३.१९.१. यः समग्रं विन्दति तम् (अग्निम्) ३.२९.७. विश्वे विदन्ति ताम् (वाचम्) १.१६४.१०. [विश्वोपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

विश्वविदा विश्वं सर्वं सुखं विन्दति याभ्यां ते रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ६.७०.६. [विश्वोपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

विश्ववेदसम् विश्वानि सर्वाणि सुखानि विन्दति यस्मात्तम् (विद्वज्जनम्) १.४४.७. विश्वस्मिन् विद्यमानम् (विद्युदग्निम्) ४.८.१. समग्रविदितारम् (अग्निम्=ईश्वरम्) १.४३.४. यो विश्वं वेत्ति स विश्ववेदाः परमेश्वरः विश्वं सर्वं सुखं वेदयति प्रापयति स भौतिकोऽग्निर्वा तम्, प्र०—अत्र 'विदिभुजिभ्यां विश्वे' उ० ४.२३८. अनेनाऽसिः प्रत्ययः ३.३८. विश्वानि सर्वाणि शिल्पादिसाधनानि विन्दन्ति यस्मात्तं सर्वप्रजासमाचारज्ञं वा (अग्निम्) १.३६.३. **विश्ववेदसः**=सकलविद्यावेत्तारः (मरुतः=विद्वांसो मनुष्याः) ९.८. समग्रैश्वर्य्याः (मरुतः) ५.६०.७. ये विश्वानि सर्वाणि कर्माणि वेदयन्ति प्रापयन्ति ते (वायवः) १.६४.८. विश्वानि सर्वाणि वस्तूनि विदन्ति येभ्यस्ते (नरः=नायका जनाः) १.६४.१०. यैर्विश्वं विन्दन्ति ते (मरुतः=वायवः) ३.२६.४. **विश्ववेदाः**=विश्वस्य वेदो विज्ञानं विश्वेषु सर्वेषु पदार्थेषु वेदः स्मरणं वा यस्य सः (ईश्वरः) १.८९.६. विश्वं सर्वमौषधं विदितं येन सः (पूषा=पोषको वैद्यः) १०.९. समग्रधनः (इन्द्रः=राजा) २०.५१. यथा सूत्रात्मा पवनस्तथा ५.३१. समग्रवित् (अग्निः=राजा) ४.४.१३. यो विश्वं धनं विन्दति सः (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.२५.१. विश्वं सर्वं जगद्वेदो धनं यस्य सः (इन्द्रः=परमेश्वरः) २५.१९. सब जगत् में विद्यमान प्राप्त और लाभ कराने वाला (परमात्मा) आर्याभि० २.१६, ५.३१. [विश्वोपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) विद ज्ञाने (अदा०) विद सत्तायाम् (दिवा०) विद विचारणे (रुधा०) विद चेतनाख्याननिवासेषु (चुरा०) धातोर्वा 'विदिभुजिभ्यां विश्वे' उ० ४.२३९. सूत्रेण असुन्। विश्व-वेदस्पदयोर्वा समासः। वेदः धननाम निघं० २.१०.]

विश्ववेदसा विश्वं वेदो विज्ञानं ययोस्तौ (विद्वांसौ जनौ) १.१३९.३. विश्वान्यखिलान्यन्नानि धनानि वा ययोस्तौ (अश्विनौ=क्षत्रधर्मव्यापिनौ सभासेनेशौ) १.४७.४. [विश्ववेदसमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

विश्वव्यचसम् विश्वव्यापकम् (इन्द्रं=विद्युतम्) ३.४६.४. **विश्वव्यचाः**=यथा विश्वस्मिन् व्यचो व्याप्तिर्यस्यास्ति तथा (ईश्वरः) ५.३३. विश्वं व्यचति प्रकाशेनाऽभिव्याप्य प्रकटयति सः (सूर्यः) १३.५६. विश्वं व्यचति व्याप्नोति स विद्युद्रूपोऽग्निः १५.१७. सहज से सब जगत् को विस्तृत करने वाला (परमात्मा) आर्याभि० २.१८, ५.३३. [विश्व-व्यचस्पदयोः समासः। व्यचस्=व्यच व्याजीकरणे (तुदा०) धातोरौणा० असुन्। (यजु० १३.५६.) असौ वा ऽआदित्यो विश्वव्यचा या ह्येवैष उदेत्यथेदं सर्वं व्यचो भवति श० ८.१.२.१. (यजु० १८.४१. वातः) एष (वातः) हीदं सर्वं व्यचः करोति श० ९.४.१.१०. अन्तरिक्षं विश्वव्यचाः तै० ३.२.३.७.]

विश्वशम्भुवम् यः सर्वस्मै जगते शं सुखं भावयति प्रकटयति तम् (अग्निं=विद्युदाख्यम्), प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः 'क्विप् च' इति क्विप्प्रत्ययः १.२३.२०. **विश्वशम्भुवः**=या विश्वस्मै शं सुखं भावयन्ति ताः (आपः=प्राणा जलानि वा) ४.७. **विश्वशम्भुवा**=विश्वस्मिन् शं सुखं भावुकेन (धर्म्मेण) १.१६०.४. **विश्वशम्भूः**=विश्वस्मै शं सुखं भावुकः, भा०—पूर्णशरीरात्मबलः (सर्वाधिपती राजा) १७.२३. विश्वं सर्वं शं सुखं भावयति सः (सभापतिः) ८.४५. [शम्भूः=शम् उपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः=कर्त्तरि क्विप्। अन्तर्गतो ण्यर्थः। शम् सुखनाम निघं० ३.६. ततो विश्व-शम्भूपदयोः समासः]

विश्वशर्धसौ समग्रबलयुक्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.३४.८. [विश्व-शर्धस्पदयोः समासः। शर्धस् बलनाम निघं० २.९.]

विश्वशुचे यो विश्वं सर्वं जगच्छोधयति तस्मै (यतये=संन्यासिने) ७.१३.१. [विश्वोपपदे ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। शोचति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६.]

विश्वश्चन्द्राः विश्वानि चन्द्राणि सुवर्णानि याभ्यस्ताः (श्रियः) १.१६५.८. समग्राणि सुवर्णादीनि येषान्ते (व्याप्तविद्या विद्वज्जनाः) ३.३१.१६. [विश्व-चन्द्रपदयोः समासः। चन्द्रम् हिरण्यनाम निघं० १.२.]

विश्वश्रुष्टिः विश्वाः श्रुष्टयस्त्वरिता गतयो यस्य सः (मनुष्यः) प्र०—अत्र श्रुधातोर्बाहुलकादौणादिकः क्तिन् प्रत्ययः १.१२८.१. [विश्व-श्रुष्टिपदयोः समासः। श्रुष्टीति पदनाम निघं० ४.३. श्रुष्टि इति क्षिप्रनाम। आशु अष्टीति नि० ६.१२.]

विश्वसामन् विश्वानि सामानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) ५.२२.१. **विश्वसामा**=विश्वं सर्वं साम सन्निधौ समीपे यस्य सः (राजा) १८.३९. [विश्व-सामन् पदयोः समासः]

विश्वसाहम् यो विश्वानि सर्वाणि शत्रुसैन्यानि सहते तम् (इन्द्रं=नृपम्) ६.४४.४. सर्वसहम् (इन्द्रं= राजानम्) ३.४७.५. [विश्वोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सह' इति कर्त्तरि ण्विः]

विश्वसुविदः विश्वानि सर्वाणि सुष्ठुतया विदन्ति याभ्यस्ताः (सूनृताः=सुष्ठुसत्यप्रियवाचः) १.४८.२. [विश्वोपपदे सुपूर्वाद् विद ज्ञाने (अदा०) धातोः 'कृतो बहुलमि' ति अपादाने क्विप्]

विश्वसौभग विश्वेषां सर्वेषां सुभगानां श्रेष्ठानामैश्वर्याणां भावो यस्य तत्सम्बुद्धौ (पृथिवीराज्यादियुक्त सभाध्यक्ष) १.४२.६. **विश्वसौभगः**=विश्वे सुभगाः शोभनैश्वर्या भोगा येन सः (रथः) १.१५७.३. [विश्व-सौभगपदयोः समासः। सौभगः=सुभगप्राति० 'तस्येदम्' इत्यण्]

विश्वह विश्वेष्वहस्सु, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इत्यलोपः 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् २.१२.१५. [विश्व-अहन्पदयोः समासः। अह्नोऽकारलोपश्छान्दसः]

विश्वहा सर्वाणि दिनानि २.३२.३. प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्' इत्यधिकरणे क्त्रिप् 'सुपां सुलुक्०' इत्यधिकरणस्य स्थाने आकारादेशः १.१११.३. विश्वानि च तान्यहानि च विश्वहानि, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इत्युत्तरपदादिलोपः २.३५.१४. बहूनि च तानि अहानि च प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि०' इति लुक् 'विश्वमिति बहुनाम' निघं० ३.१, ८.५.

विश्वहा विश्वं हन्ति जानाति प्राप्नोति वा सः (सज्जनः) २.१४.१५. विश्वान् सर्वान् हन्ति सः (इन्द्रः= सभाध्यक्षः) १.१०२.११. [विश्वोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्। 'सौ चे' ति दीर्घः]

विश्वाची या विश्वं सर्वं जगदञ्चति व्याप्नोति सा (दीप्तिः) १५.१८. **विश्वाचीः**=या विश्वमञ्चन्ति प्राप्नुवन्ति ता द्युतीः १७.५९. [विश्वोपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इति क्विन्। 'अनिदिताम्०' इति नलोपे 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति स्त्रियां ङीपि भसंज्ञायाम् 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति पूर्वपदस्य दीर्घः। वेदिरेव विश्वाची श० ८.६.१.१९. [अप्सराः वेदिः यजु० १७.५९.) विश्वाचीरभिचष्टे घृताचीरिति स्रुचश्चैतद् वेदीश्चाह श० ९.२.३.१७.]

विश्वानरः यो विश्वानि सर्वाणि भूतानि नयति सः (सविता=ईश्वरः) १.१८६.१. विश्वेषां नायकः (उपदेशकः) ३३.३४. **विश्वानराय**=विश्वे नरा नायका यस्मात्तस्मै, भा०—सर्वाध्यक्षाय (परमेश्वराय) ३३.२३. [विश्व-नरपदयोः समासे पूर्वपदस्य दीर्घश्छान्दसः। विश्वानरः कस्माद् विश्वान् नरान्नयति। विश्व एनं नरा नयन्तीति वा। अपि वा विश्नानर एव स्यात् प्रत्यृतः सर्वाणि भूतानि तस्य वैश्वानरः नि० ७.२.]

विश्वापुषम् समग्रपुष्टिकरम् (रयिं=धनम्) २५.४५. सर्वपुष्टिप्रदम् (रयिम्) १.१६२.२२. [विश्वोपपदे पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोः क्विप्। पूर्वपदस्य दीर्घः]

विश्वाप्सुम् विश्वं समग्रं रूपं गुणो यस्य तम् (अग्निम्) १.१४८.१. [विश्व-प्सुपदयोः समासः। प्सुः रूपनाम निघं० ३.७.]

विश्वाभुवे यो विश्वे भवते प्राप्नोति विश्वाभूर्यस्य वा विश्वं भवति यस्मादिति वा तस्मै भा०—सर्वव्याप्ताय (ईश्वराय) ३३.२३. [विश्वोपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः, भू प्राप्तौ (चुरा०) धातोर्वा क्विप्। पूर्वपदस्य संहितायां दीर्घः। विश्वाभुवे=सर्वं विभूताय नि० ११.९.]

विश्वामित्रः विश्वं मित्रं येन भवति सः (ऋषिः) १३.५७. सर्वेषां सुहृत् (भा० वेदविदाप्तजनः) ३.५३.९. **विश्वामित्राय**=विश्वं सर्वं जगन्मित्रं यस्य तस्मै (सज्जनाय) ३.५३.७. [विश्व-मित्रपदयोः समासः। पूर्वपदस्य 'मित्रे चर्षौ' अ० ६.३.१३०. सूत्रेण दीर्घः। विश्वामित्रः सर्वमित्रः नि० २.२४. विश्वस्य ह वै मित्रं विश्वामित्र आस, विश्वं हास मित्रं भवति य एवं वेद ऐ० ६.२०. (यजु० १३.५७.) श्रोत्रं वै विश्वामित्र ऋषिर्यदेनेन सर्वतः शृणोत्यथो यदस्मै सर्वतो मित्रं भवति तस्माच्छ्रोत्रं विश्वामित्र ऋषिः श० ८.१.२.६. तदन्नं वै विश्वम्प्राणो मित्रम् जै० उ० ३.३.६. वाग्वै विश्वामित्रः कौ० १०.५. राष्ट्र आहिसन्त स विश्वामित्रो जाह्नवो राजैतम् (चतूरात्रम्) अपश्यत् स राष्ट्रमभवदराष्ट्रमितरे तां० २१.१२.२.]

विश्वायु विश्वं सम्पूर्णमायुर्यस्मात्तत् (क्षत्रं=धनं राज्यं वा) ७.३४.११. सम्पूर्णमायुष्करम् (राधः=धनम्) ५.५३.१३. सर्वं जीवनम् ६.२०.५. [विश्व-आयुपदयोः समासः। आयुः अन्ननाम निघं० २.७.]

विश्वायुम् प्राप्तसमग्रशुभगुणम् (सखायम्) १.१२९.४.

यो विश्वं सर्वं बोधयति तम् (पुरुषम्) १.१२८.८. **विश्वायुः**=पूर्णमायुर्यस्यां सा (वाक्) १.४. विश्वं सम्पूर्णमायुर्यस्मात् सः (धर्मः=यज्ञः) १.२२. विश्वं शतवार्षिकमधिकं वाऽऽयुर्यस्मात् सः (श्रवः=धनम्) १.९.७. अखिलं जीवनं यस्य सः (विद्वज्जनः) १.७३.४. विश्वं सर्वमायुर्यस्माद्यस्य वा (१.६८.३.) पूर्णायुः (इन्द्रः=राजा) ३.३१.१८. [विश्व-आयुपदयोः समासः। आयुः=इण् गतौ (अदा०) धातोः 'छन्दसीणः०' उ० १.२. सूत्रेण उण्। 'एतेर्णिच्च' उ० २.१२०. सूत्रेण वा उसिः। इयं (पृथिवी) वै विश्वायुः तै० ३.२.३.७.]

विश्वायुपोषसम् अखिलाऽऽयुः पुष्टिकारकम् (रयिम्) १.७९.९. समग्रायुःपुष्टिकराम् (रयिं=श्रियम्) ६.५९.९. [विश्वायूपपदे पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोरौणा० असुन्]

विश्वावसुः विश्वं वासयति यः सः (अग्निः=परमेश्वरः) २.३. [विश्वोपपदे वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'शॄस्तृ०' उ० १.१०. सूत्रेण उः। पूर्वपदस्य संहितायां दीर्घः]

विश्वासाहम् विश्वान् सर्वान् सहते तम् (इन्द्रं=सम्राजम्), प्र०—अत्र विश्वपूर्वात् सहधातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.१.६३. इति ण्विः 'अन्येषामपि०' इति दीर्घश्च ७.३६. [विश्वोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्ण्विः]

विश्वाहा सर्वाणि दिनानि ७.१०. [विश्व-अहन्पदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि]

विश्वे अन्तरिक्षे प्रविष्टे (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ४.५६.४. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः 'अशूप्रुषि०' उ० १.१५१. सूत्रेण क्वन्]

विश्वेदेवासः सर्वे विद्वांसः २.१३. विश्वे सर्वे च ते देवा विद्वांसश्च ते, प्र०—विश्वेदेवा इति पदनाम निघं० ५.६, १.३.७. समस्ता विद्यावन्तो विद्वांसः (जनाः) १.३.८. [विश्व-देवपदयोः समासे जसो ऽसुक्। विभक्तेरलुक्। अथैष स्वर्ग एव लोको विश्व एव देवाः जै० १.३३५. अनन्ता विश्वेदेवाः श० १४.६.१.११. एते वै विश्वेदेवा यत् सर्वे देवाः गो० २.१.२०. ता (दिशः) उ एव विश्वेदेवाः जै० उ० २.१.२. श्रोत्रं विश्वेदेवाः श० ३.२.२.१३. सर्वं वै विश्वेदेवाः श० १.७.४.२२. विशो विश्वेदेवाः श० २.४.३.६.]

विश्वेदेवाः सर्वे दिव्यगुणयुक्ता मनुष्याः पदार्थाश्च १४.२०. विश्व प्रकाशका ईश्वरगुणाः सर्वे विद्वांसो वा पं० वि०। सब विद्वान् द्योतक वेदमन्त्र, इन्द्रियां, सूर्यादिकरणें तथा तत्रस्थ गुण आर्याभि० २.३५, ३६.१७. [विश्व-देवपदयोः समासः। विभक्तेरलुक्। विश्वेदेवाः पदनाम निघं० ५.६.]

विश्व्या विश्वस्मिन् भवा (अभिभा=अभितः कान्तिः) २.४२.१. [विश्वप्राति० भवार्थे यत्। ततः स्त्रियां टाप्। विश्व्या सर्वतः नि० ६.३.]

विषक्ताम् विविधैः पदार्थैर्युक्ताम् (गां=पृथिवीम्) १.११७.२०. [वि+षस्ज गतौ (भ्वा०) धातोः षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्वा क्तः। ततः स्त्रियां टाप्]

विषम् व्याप्नोत्यङ्गानि यत्तत् १.१९१.११. प्राणहरम् (वस्तु) १.१९१.१४. उदकम् ६.६१.३. **विषेण**=विपर्ययकरेण निजबलेन १.११७.१६. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। विष विप्रयोगे (क्र्या०) धातोर्वा कः। विषम् उदकनाम निघं० १.१२. विषमित्युदकनाम विष्णातेर्विपूर्वस्य स्नातेः शुद्धयर्थस्य, विपूर्वस्य वा सचतेः नि० १२.२६. यवमात्रं वै विषस्य न हिनस्ति गो० उ० १.३.]

विषमेभ्यः विकटदेशेभ्यः ३०.१६. [वि-समपदयोः समासः। 'सुविनिर्दुर्भ्यः सुपिसूतिसमाः' अ० ८.३.८८. इति षत्वम्]

विषह्य विशेषेण सोढ्वा ७.२१.७. [वि+षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

विषाणम् प्रविष्टम् (दुष्टजनम्) ५.४४.११.

विषाणिनः विषाणमिव तीक्ष्णा हस्ते नखा येषान्ते (राजजनाः) ७.१८.७. [विषाणप्राति० मत्वर्थे इनिः]

विषाहि विशेषेण कर्मसमाप्ति कुरु ४.११.२. [वि+षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्लोट्। बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

विषितस्तुका विविधतया सिता बद्धा स्तुका स्तुतिर्यया सा (प्रवरा स्त्री) १.१६७.५. [विषिता-स्तुकापदयोः समासः। विषितः=वि+षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः क्तः। स्तुका=ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० कन्। ततः स्त्रियां टाप्। बहुलवचनादेव गुणाऽभावः। विषिते विमुक्ते नि० ९.३९.]

विषितः व्याप्तः (वायुः=स्तेनः) ६.१२.५. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः क्तः। इडागमश्छान्दसः]

विषितासः व्याप्ताः (आप्ताः पुरुषाः) ६.६.४. [विषित इति व्याख्यातम्। ततो जसो ऽसुक्]

विषिते विद्याशुभगुणकर्मव्याप्ते (अध्यापिकोपदेशिके) ३.३३.१. [विषित इति व्याख्यातम्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

विषुणक् वेविषत्यधर्मेण ये ते विषवः तान् नाशयति

सः (इन्द्रः=शूरवीरजनः), प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.३३.४. [विषूपपदे णश् अदर्शने (दिवा०) धातोः क्विन् छान्दसः। विषुः=विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्बाहु० औणा० कुः]

विषुणम् यो विष्वगगच्छति तम् (ध्रुवम्=अन्तरिक्षम्) ३.५४.८. **विषुणस्य**=विषमस्य (समाचारस्य) ४.६.६. शरीरे व्याप्तस्य (जन्तोः=जीवस्य) ७.२१.५. **विषुणः**=व्याप्ताविद्यस्य (मनुष्यस्य) ५.३४.६. **विषुणाः**=विद्यां व्याप्नुवन्तः (सखायः) ५.१२.५. [विषुणः पदनाम निघं० ४.१. विषुणस्य विषमस्य नि० ४.१९. विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्बाहु० औणा० उनन् स च कित्]

विषुरूपम् व्याप्तस्वरूपम् (धनम्) ७.२७.३. व्यापकं विविधरूपं वा (सलक्ष्म=परस्परं युद्धलक्षणम्) ६.२०. **विषुरूपः**=प्राप्तविद्यः (विद्वज्जनः) ५.१५.४. विषूणि व्याप्तानि रूपाणि येन सः (गृहस्थो जनः) ८.३०. **विषुरूपे**=विरुद्धस्वरूपे (पयसि=उदके) १.१८६.४. [विषुरूपपदयोः समासः। विषु=विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्बाहु० औणा० कुः। विषुरूपे विषमरूपे नि० १२.१७.]

विषुरूपाणि व्याप्तरूपाणि (सव्रता=समानकर्माणि) ६.७०.३. **विषुरूपे**=व्याप्तस्वरूपे (अहनी=रात्रिदिने) ६.५८.१. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

विषुवतः प्रशस्ता विषुर्व्याप्तिर्यस्य तस्य (मध्वः=मधुरादिगुणयुक्तस्य रसस्य) १.८४.१०. **विषुवता**=व्याप्तिमता (धूमेन) १.१६४.४३. [विषुप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुप्। विषुरिति विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोरौणा० बाहु० कुप्रत्यये रूपम्]

विषूचः व्याप्तान् (अश्वान्=विद्युदादीन्) ६.५९.५. [विषूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इति क्विन्। 'अनिदिताम्' इति नलोपः। शस्-प्रत्यये भसंज्ञायाम् 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति दीर्घत्वे रूपम्]

विषूचिका या विविधानर्थान् सूचयति सा (विदुषी राज्ञी) १९.१०. [वि+सूच पैशुन्ये (चुरा०) धातोर् ण्वुल्। ततः स्त्रियां टाप्। अथवा 'रोगाख्यायां ण्वुल् बहुलम्' इति ण्वुल्। ततष्टाप्]

विषूची या विषून् व्याप्तानञ्चति सा (रात्रिः) ३.५५.१५. **विषूचीम्**=विषूच्यादिरोगम् ६.७४.२. **विषूचीः**=व्याप्नुवतीः (विशः=प्रजाः) ६.२५.२. समग्रशरीरव्यापकान् रोगान् २.३३.२. विविधा गतीः १.१६४.३१ [विषूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विन्। 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति ङीप्]

विषूचीना विष्वगञ्चितारौ (जडचेतनौ) १.१६४.३८. [विषूच इति व्याख्यातम्। ततः विभाषाञ्चेः०' अ० ५.४.८. सूत्रेण स्वार्थे खः। ततः स्त्रियां टाप्]

विषूचीनान् विरुद्धमाचरतः (सपत्नान्=अरीन्) १७.६४. [विषूपपदे अञ्चुधातोः क्विन्। ततः स्वार्थे खः]

विषूचोः व्याप्तविद्या-धर्म-सुशीलयोर्द्वयोः (सुहृज्जनयोः) ७.१८.६. [विषूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इति क्विन्। विषुरिति व्याख्यातम्]

विषूवृतम् विषुणा व्यापकेन गमनेन वृतम् (रथम्) २.४०.३. [विषु-वृतपदयोः समासः। पूर्वपदस्य संहितायां दीर्घः]

विष्कभायत् विशेषेण दधाति ६.४४.२४. विशेषेण स्कभ्नाति ५.२९.४. [वि+स्कम्भु धारणार्थे सौत्रो धातुः। ततो लङ्। 'स्तम्भुस्तुम्भु०' इति प्राप्तस्य श्नु-विकरणस्य 'छन्दसि शायजपि' अ० ३.१.८४. सूत्रेण शायजादेशः। अडभावश्छान्दसः]

विष्कभिते विशेषेण धृते दृढीकृते (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ३४.४५. [वि+स्कम्भु धारणार्थे सौत्रो धातुः। ततः क्तः]

विष्कभ्नन्तः ये विशेषेण स्कभ्नन्ति धरन्ति ते (कृतकृत्या विद्वज्जनाः) ३.३१.१२. [वि+स्कम्भु धारणार्थे सौत्रो धातुः। ततः शतरि 'स्तम्भुस्तुम्भु०' इति श्ना]

विष्टपम् व्याप्तिम्, प्र०—अत्र विषधातोर्बाहुलकादौणादिकस्तपः प्रत्ययः १४.२३. विष्टान् प्रविष्टान् पाति येन तत् (नाकं=सुखम्) १८.५१. विशिष्ट सुख सं० वि० १९७, **विष्टपाय**=विशन्ति यत्र तस्मै मार्गाय ३०.१२. **विष्टपि**=अन्तरिक्षे १.१६.३. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्बाहु० औणा० तपः प्रत्ययः। अथवा विष्टोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'कृतो बहुलम्' इति करणे कः। विष्टः=विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः क्तः। अथवा विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्बाहु० औणा० तपः। विष्टपि प्रयोगेऽकारलोपश्छान्दसः। विष्टपम्=साधारणनाम निघं० १.४.

विष्टवादित्यो भवति आविष्टो रसान्। आविष्टो भासं ज्योतिषाम्। आविष्टो भासेति। अथ द्यौराविष्टा ज्योतिर्भिः पुण्यकृद्भिश्च नि० २.१४.]

विष्टम् व्याप्तम् (सत्यम्) ३.३०.६. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः क्तः]

विष्टम्भनीम् आधारभूताम् (स्त्रियम्) १४.५. [वि+स्तम्भु धारणार्थे सौत्रो धातुः। ततो ल्युट्-प्रत्ययान्तात् स्त्रियां ङीप्। 'स्तम्भेः' अ० ८.३.६७. सूत्रेण षत्वम्]

विष्टम्भः विशो वैश्यस्य विष्टम्भो रक्षणं येन सः (अधिपतिः) १४.९. **विष्टम्भेन**=विशेषेण स्तभ्नोति शरीरं येन तेन (आहार-रसेन) १५.६. [वि+स्तम्भु धारणार्थे सौत्रो धातुः। ततो घञ्। प्रजापतिर्वै विष्टम्भः श० ८.२.३.१२.]

विष्टः प्रविष्टः (वायुः) १.१४८.१. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः क्तः]

विष्टारपङ्क्तिः सर्वा दिशः १५.४. [(यजु० १५.४.) दिशो वै विष्टारपङ्क्तिश्छन्दः श० ८.५.२.४.]

विष्टारः प्रसारः ५.५२.१०. [वि+स्तृञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोः 'छन्दोनाम्नि च' अ० ३.३.३४. सूत्रेण घञ्। 'छन्दोनाम्नि च' अ० ८.३.९४. सूत्रेण षत्वम्]

विष्टिभिः व्याप्तिभिः १.९२.३. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

विष्टिरः ये विशेषेण तरन्ति ते ऋतवः २.२३.१०. [वि+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'ऋत इद्धातोः' इतीत्वं रपरत्वश्च। सुडागमश्छान्दसः]

विष्टी व्यापनशीलावश्विनौ, प्र०—अत्र 'क्तिच्-क्तौ च संज्ञायाम्' अ० ३.३.१७४. अनेन क्तिच्प्रत्ययः १.२०.४. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः क्तिच्। विष्टी कर्मनाम निघं० २.१.]

विष्टीमिनम् विशिष्टा बहवः ष्टीमा आर्द्रीभूताः पदार्था विद्यन्ते यस्मिँस्तम्, भा०—आर्द्रीभावम्, अ०—लालामगुं=न्यायम् २३.२९. [विष्टीमप्राति० भूम्न्यर्थ इनिः। विष्टीमः=वि+ष्टीम आर्द्रीभावे (दिवा०) धातोर्घञ्]

विष्टुतीः विविधाश्च ताः स्तुतयश्च ताः १९.२८. [वि-स्तुतिपदयोः समासः]

विष्ट्वी कर्म्म ३.६०.३. व्यापनशीलानि (शमी=कर्माणि) १.११०.४. [विष्ट्वी कर्मनाम निघं० २.१. कृत्वा नि० ११.१६. विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः क्त्वा। 'स्नात्व्यादयश्च' अ० ७.१.४९. सूत्रेण निपातनाद् ईत्वम्]

विष्ठाः या विविधेषु स्थानेषु तिष्ठन्ति ताः (बुध्न्याः=सूर्यादयो लोकाः) १३.३. विशेषेण तिष्ठति यज्ञो यासु ताः (ऋतवः) २३.५७. भा०—स्थितिसाधिकाः (षडृतवः) २३.५८. निवासों के स्थान आर्याभि० २.२८, १३.३. [वि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः। ततष्टाप् स्त्रियाम्। क्विप्-प्रत्ययान्तं वा]

विष्ठितम् व्याप्तम् (जगत्) २९.५५. विशेषेण स्थितम् (जगत्) ६.४७.२९. [वि-स्थितपदयोः समासः। स्थितम्=ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः। विष्ठितम् स्थावरम् नि० ९.१३.]

विष्ठिता विशेषेण स्थितानि (शृङ्गाणि=सेनाङ्गानि) २९.२२. [विष्ठितमिति व्याख्यातम्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

विष्णवि व्यापके परमेश्वरे, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति घिसंज्ञाकार्याऽभावे गुणादेशेऽवादेशः ३३.९७. [विष्णु-प्राति० सप्तम्या एकवचने 'वा छन्दसि' इति नियमेन घिसंज्ञाकार्ये 'अच्च घेः' इत्यस्याभावे गुणेऽवादेशे च रूपम्]

विष्णवे व्यापकाय विद्युद्रूपाय (अग्नये) २२.६. व्यापनशीलाय, यज्ञाय, अ०—उपासनादियज्ञाय ५.१८. सर्वविद्याकर्मव्यापनस्वभावाय (सोमभृते=यजमानाय) ५.१. व्याप्तिशीलाय विज्ञानप्राप्तिलक्षणाय वा यज्ञाय ५.१. **विष्णुना**=व्यापकेन परमेश्वरणेव शुभगुणकर्मस्वभावेन १०.३०. **विष्णुम्**=व्यापकं व्यानं धनञ्जयं वा हिरण्यगर्भम् ६.२१.९. **विष्णुः**=वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत् स परमेश्वरः, प्र०—'विषेः किच्च' उ० ३.३८. अनेन विष्लृधातोः नुः प्रत्ययः किच्च १.२२.१६. सर्वविद्याङ्गव्यापनशीलः (योग्यः सेनाध्यक्षः) १.६१.७. सकलविद्यायोगाङ्गव्यापी योगिराजः ११.६०. स्वदीप्त्या व्यापकः सूर्यः १.१५६.४. सर्वशुभगुणकर्मसु व्याप्तः (गृहपतिः) ८.१७. व्यापिका विद्युत् ८.५७. यो वेवेष्टि व्याप्नोत्यन्तरिक्षस्थलवाय्वादिपदार्थान् स यज्ञः, प्र०—यज्ञो वै विष्णुः श० १.१. २.१३, २.२५. विश्वान्तर्यामीश्वरः १.२२.१८. परमेश्वर इव न्यायकारी (अ०—सर्वप्रधानपुरुषः) ९.३१. शिल्पविद्याव्यापनशीलो मनुष्यः १.८५.७. चर और अचर रूप जगत् में व्यापक परमात्मा स० प्र० २१, ३६.९. **विष्णो**=सर्वाऽन्तःप्रविष्ट (जगदीश्वर) ५.१९. सर्वव्यापिन् जगदीश्वर व्यापनशीलः प्राणो वा ५.१६. **विष्णोः**=व्याप्तुं शीलस्य विद्युद्रूपाऽग्नेः १२.५. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः 'विषेः किच्च' उ० ३.३८. सूत्रेण नुः प्रत्ययः। विष्णुः यज्ञनाम निघं० ३.१७. पदनाम निघं० ४.२. पदनाम निघं० ५.६. यद् विषितो भवति तद् विष्णुर्भवति, विष्णुर्विशतेर्वा व्यश्नोतेर्वा नि० १२.१८. यज्ञो वै विष्णुः शिपिविष्टः तां० ९.७.१०. तद् यदेवेदं क्रीतो विशतीव तदु हास्य (सोमस्य)

वैष्णवं रूपम् कौ० ८.२. यो वै विष्णुः स यज्ञः श० ५.२. ३.६. विष्णुर्यज्ञः गो० उ० १.१२. तै० ३.३.७.६. विष्णुर्वै यज्ञः ऐ० १.१५. पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ (यजु० १.१२.) इति यज्ञो वै विष्णुर्यज्ञिये स्थ इत्येवैतदाह श० १.१.३.१. यज्ञो वै विष्णुः श० १३.१.८.८. यज्ञो वै विष्णुः कौ० ४.२. श० १.१.२.१३. गो० उ० ४.६. तै० १.२.५.१. यज्ञो वै विष्णुः शिपिविष्टः तां० ९.७.१०. यज्ञो वै वैष्णुवारुणः कौ० १६.८. यज्ञो विष्णुः श० १.९.३.९. तां० १३.३.२. गो० उ० ६.७. विष्णवे हि गृह्णाति यो यज्ञाय (हविः) गृह्णाति श० ३.४.१.१४. अथेमं विष्णुं त्रेधा व्यभजन्त। वसवः प्राप्तःसवनं रुद्रा माध्यन्दिनं सवनमादित्यास्तृतीयसवनम् श० १४.१.१.१५. स यः स विष्णुर्यज्ञः सः। स यः स यज्ञोऽसौ स आदित्यः श० १४.१.१.६. स उ एव मखः स विष्णुः श० १४.१.१.१३. (प्रजापतिः) यजुर्भ्योऽधि विष्णुम् (असृजत)। तद् विष्णुं यशः आर्च्छत्। तम् (विष्णुम्) आलभत। विष्णोरध्योषधीरसृजत तै० २.३. २.४. यजूꣳषि विष्णुः श० ४.६.७.३. यो वै विष्णुः सोमः सः श० ३.३.४.२१. यत्तदन्नमेष स विष्णुर्देवता श० ७.५.१.२१. वीर्य्यं विष्णुः तै० १.७.२.२. प्रादेशमात्रो वै गर्भो विष्णुः श० ६.५.२.८. अग्निर्वाऽअहः सोमो रात्रिरथ यदन्तरेण तद् विष्णुः श० ३.४.४.१५. यदह दीक्षते तद्विष्णुर्भवति श० ३.२.१.१७. विष्णुः सर्वा देवताः ऐ० १.१. तस्माद् आहुर्विष्णुर्देवानां श्रेष्ठ इति श० १४.१. १.५. अग्निर्वै देवानामवमो विष्णुः परमः ऐ० १.१. अन्तो विष्णुर्देवतानाम् तां० २१.४.६. अग्निर्वै देवानामवरार्ध्यो विष्णुः परार्ध्यः कौ० ७.१. अग्निर्वै यज्ञस्यावरार्ध्यो विष्णुः परार्ध्यः श० ५.२.३.६. एते वै यज्ञस्यान्त्ये तन्वौ यदग्निश्च विष्णुश्च ऐ० १.१. अग्नाविष्णू वै देवानामन्तभाजौ कौ० १६.८. आग्नावैष्णवमेकादशकपालं पुरोडाशं निर्वपति श० ३.१.३.१. यज्ञो विष्णुः श० १.९.३.९. यज्ञो वै विष्णुः श० १.१.२.१३. इमे वै लोका विष्णोर्विक्रमणं विष्णोर्विक्रान्तं विष्णोः क्रान्तम् श० ५.२.२.६. स (विष्णुः) इमाँल्लोकान् विचक्रमेऽथो वेदानथो वाचम् ऐ० ६.१५. वामनो ह विष्णुरास श० १.२.५.५. स हि वैष्णवो यद् वामनः (गौः) श० ५.२.५.४. वैष्णवं वामनम् (पशुम्) आलभन्ते तै० १.२.५.१. वैष्णवो वामनः (पशुः) श० १३.२.२.९. चक्रपाणये (विष्णवे) स्वाहा ष० ५.१०. विष्णुर्वै देवानां द्वारपः ऐ० १.३०. विष्णवाशानां पते तै० ३.११.४. विष्णुर्वै यज्ञस्य दुरिष्टं पाति ऐ० ३.३८. पंक्तिर्विष्णोः पत्नी गो० उ० २.९. विष्णोः श्रोणा तै० १.५.१.४. यच्छ्रोत्रं स विष्णुः गो० उ० ४.११. वैष्णवाः पुरुषाः श० ५.२.५.२. वैष्णवो हि यूपः श० ३.६.४.१. वैष्णवस्त्रिकपालः (पुरोडाशः) तां० २१.१०.२३. अथ यद् वैष्णवः। त्रिकपालो वा पुराडाशो भवति चरुर्वा श० ५.२.५.४. तान् (पशून्) विष्णुरेकविंशेन स्तोमेनाप्नोत् तै० २.७.१४.२. विष्णुस्तेजनम् ऐ० १.२५. तथैवैतद् यजमानो विष्णुर्भूत्वेमाँल्लोकान् क्रमते। स यः स विष्णुर्यज्ञः सः श० ६.७.२.१०. तद् यदेनेन (यज्ञेन विष्णुना) इमां सर्वां (पृथिवीं) समविन्दन्त तस्माद् वेदिर्नाम श० १.२. ५.७. यन्वेवात्र विष्णुमन्वविन्दँस्तस्माद् वेदिर्नाम श० १.२. ५.१०. वैष्णवं हि हविर्धानम् श० ३.५.३.१५. या सा द्वितीया (ओंकारस्य) मात्रा विष्णुदेवत्या कृष्णा वर्णेन यस्तां ध्यायते नित्यं स गच्छेद् वैष्णवं पदम् गो० पू० १.२५. पंक्तिर्विष्णोः पत्नी गो० उ० २.९. विष्णुर्वै यज्ञस्य दुरिष्टं पाति ऐ० ३.३८.]

विष्णाप्वम् विष्णानि कृषिव्याप्तानि कर्माण्याप्नोति येन पुरुषेण तम् १.११७.७. विष्णान् विद्याव्यापिनो विदुष आप्नोति बोधस्तम्, प्र०—अत्र विष्लृ-धातोर्नक् तत आप्लृधातोरु 'वाच्छन्दसि' इति पूर्वसवर्णप्रतिषेधात् यण् १.११६.२३. [विष्णोपपदे आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्बहु० औणा० उः। विष्णः=विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्बहु० औणा० नक्]

विष्णुपत्न्यै विष्णुना व्यापकेन पालितायै (अन्तरिक्षरूपायै) २९.६०. [विष्णु-पत्नीपदयोः समासः। पत्नी=पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'पातेर्डतिः' उ० ४.५८. इति डतिः। ततः स्त्रियां ङीप् नकारश्च]

विष्पट् यो विषो व्याप्नुवतः पटति प्राप्नोति सः (विद्वज्जनः) १.१८९.६. [विष् इत्युपपदे पट गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। विष्=विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः क्विप्]

विष्पतिम् प्रजापालकम् (अग्नि=पावकम्) ३.२.१०. विशः सर्वस्याः प्रजायाः पालकं स्वामिनम् (चेतनं=परमात्मानम्) ३.३.८. **विष्पते**=प्रजास्वामिन् (विद्वज्जन) ६.२.१०. [विश्-पतिपदयोः समासः। विशः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

विष्पतीव विशां प्रजानां पालको राजेव ७.३९.२. [विष्पति-इवपदयोः समासः]

विष्पर्धसः ये विशेषेण स्पर्द्धन्ते तान् (विद्वज्जनान्) ५.८७.४. परस्परं विशेषतः स्पर्द्धमानाः (विद्वांसः) १.१७३.१०. **विष्पर्धाः**=विशेषेण यः स्पर्द्धते सः

(छन्दः=प्रकाशः) १५.५. [वि+स्पर्द्ध (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

विष्पितस्य व्याप्तस्य कर्म्मणः ७.६०.७. [विष्पितो विप्राप्तः नि० ६.२०]

विष्पुलिङ्गकाः ह्रस्वाः पक्षिणः १.१९१.१२. [विष्पुलिङ्गप्राति० 'ह्रस्वे' अ० ५.३.८६. सूत्रेण कः]

विष्फुरन्ती विशेषेण चालयन्त्यौ (धनुर्ज्ये) २९.४१. कम्पयन्त्यौ (योषा=पत्न्यौ) ६.७५.४. [वि+स्फुर संचलने (तुदा०) धातोः शत्रन्तात् स्त्रियां ङीप् । 'स्फुरतिस्फुलत्योर्निर्निविभ्यः' इति षत्वम् । विष्फुरन्ती विघ्नत्यौ नि० ९.४०.]

विष्य अन्तं कुरु ५.८५.८. **विष्यताम्**=अन्ते भवताम् २.४०.४. **विष्यतु**=विमुञ्चतु २७.२०. **विष्यन्**=व्याप्नुवन्ति ५.४५.१. **विष्यन्ति**=विशेषेण कार्याणि समापयन्ति १.८५.५. **विष्यस्व**=स्वराज्येन विशेषतः प्राप्नुहि १.१०१.१०. **विष्यामि**=व्याप्त ह्योता हूं सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५७. [वि+षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

विष्वक् सर्वशः ४.४.२. सर्वतः ४.१२.४. विषु व्याप्तमञ्चतीति ७.४३.१. व्याप्तम् (रपः=अपराधम्) ७.३४.१३. यः सर्वमञ्चति (सज्जनः) ६.६.३. [विषूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विप् । विषु=विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्बाहु० औणा० उः किच्च]

विष्वङ् यो विषु सर्वत्राऽञ्चति प्राप्नोति सः (पुरुषः=परमेश्वरः) ३१.४. **विषूचोः**=व्याप्तविद्याधर्मसुशीलयोर्द्वयोः (सुहृज्जनयोः) ७.१८.६. [विषूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' अ० ३.२.५९. सूत्रेण क्विन्]

विष्वद्र्यक् यद् विष्वगञ्चति व्याप्नोति तत् (मनः=चित्तम्) ७.२५.१. [विष्वक् इत्युपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'विष्वग्देवयोश्च टेरद्रि०' अ० ६.३.९२. सूत्रेण विष्वक् शब्दस्य टेरद्रिरादेशः]

विष्वाचः विविधगतिमतः(शत्रुमण्डलस्य)१.११७.१६. [विषूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विप् । अकारस्य वर्णव्यत्ययेनाकारादेशः]

विसदृशा विविधधर्म्यव्यवहारैस्तुल्यानि (जीविता=जीवनानि) १.११३.६. [वि-सदृशपदयोः समासात् 'शेर्लोपश्छन्दसी' ति शेर्लोपः । सदृशः=समानोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'समानान्ययोश्चेति वक्तव्यम्' अ० ३.२.६०. वा०सूत्रेण कञ् । 'दृग्दृशवतुषु' अ० ६.३.८९. सूत्रेण समानस्य सादेशः]

विसर्जनम् यजमानेन होतृभिश्च हविषस्त्यागो मौनं वा १.१५. [वि+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्भावे ल्युट्]

विसर्पत विशेषेण गच्छत १२.४५. **विसर्पति**=विविधतया गच्छति, भा०—सर्प इव गच्छति २३.५६. [वि+सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

विसर्माणम् यो विसृजति तम् (वित्तं=धनं भोगं वा) ५.४२.९. [वि+सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि मनिन्]

विसस्त्रे विशेषेण सरति गच्छति ७.३६.१. विविधतया प्रकाशयति ऋ० भू० ३१७, ऋ० १०.७१.४. [वि+सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । विसस्त्रे विवृणुते नि० १.१९.]

विसात् विभजति ५.४५.२. [वि+षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लङि छान्दसं रूपम्]

विसारे विशेषेण स्थिरत्वे १.७९.१. [वि+सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सृ स्थिरे' अ० ३.३.१७. सूत्रेण घञ्]

विसीमतः विशेषेण सीमातो मर्य्यादातः, भा०—सुनियमेन स्वकक्षायाः, प्र०—अत्राऽऽह यास्कः अपि वा सीमेत्येतदनर्थकमुपबन्धमाददीत पञ्चमीकर्माणं सीम्नः सीमतः सीमातो मर्यादातः सीमा मर्यादा विषीव्यति देशाविति नि० १.७, १३.३. [वि-सीमन्पदयोः समासे पञ्चम्यन्तात् तसिः । सीमतः सर्वतः नि० १.७. सीमिति परिग्रहार्थीयो वा पदपूरणो वा नि० १.७. अपि वा सीमेत्येतद् अनर्थकमुपबन्धमाददीत पञ्चमीकर्माणम्-सीम्नः सीमतः सीमातो मर्यादातः । सीमा मर्यादा विसीव्यति देशाविति नि० १.७.]

विसृज विसर्जय ३८.१७. निष्पादय १३.९०. **विसृजति**=विविधतया सृजति १.४८.६. [वि+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

विसृजद्भ्यः शत्रूणामुपरि शस्त्रादिकं त्यजद्भ्यः (राजजनेभ्यः) १६.२३. [वि+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः शतृ]

विसृजानः उत्पादयन् (सविता=जगदीश्वरः) ७.३८.२. [वि+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

विसृतः ये विशेषेण सरन्ति तान् (सिन्धून्=नदीः)

४.१६.५. [वि+सृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विबन्ताच्छस्]

विसृपः योद्धृभिर्विविधं यत् सृप्यते तस्य (क्रूरस्य=युद्धस्य), प्र०—'सृपितृदोः कसुन्' अ० ३.४.१७. अनेन भावलक्षणे सृपि-धातोः कसुन् १.२८. [वि+सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सृपितृदोः कसुन्' अ० ३.४.१७. सूत्रेण कसुन्]

विसृष्टधेना विविधविद्यायुक्ता धेना वाग् यस्याः सा (स्त्री) ७.२४.२. [विसृष्टा-धेनापदयोः समासः। धेना वाङ्-नाम निघं० १.११. विसृष्टा=वि+सृज विसर्गे(तुदा०)+क्त+टाप्]

विसृष्टरातिः विविधाः सृष्टा रातयो दानादीनि येन सः (शूरजनः) १.१२२.१०. (विसृष्टा-रातिपदयोः समासः। राति=दानकर्मा (निघं० ३.२०) धातोः क्तिन् स्त्रियाम्]

विसृष्टिः विविधा सृष्टिः ऋ० भू० ११६, ऋ० १०.१३०.७. [वि+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तिन् स्त्रियाम्]

विस्तिरः सुखविस्तारकः (विद्वज्जनः) १.१४०.७. [वि+स्तॄ आच्छादने (क्र्या०) धातोर् मूलविभुजादित्वात् कर्त्तरि कः। 'ऋत इद्०' इतीत्वं रपरत्वञ्च। विसस्रे विवृणुते नि० १.१६.]

विस्तृणीताम् वितनोतु ७.१७.१. [वि+स्तॄ आच्छादने (क्र्या०) धातोर्लोट्]

विस्पन्दमाने विशेषेण गम्यमाने (मरुति) ३६.५. [वि+स्पदि किञ्चिच्चलने (भ्वा०) धातोः शानच्]

विस्रसः जीर्णावस्थायाः २.३९.४. [वि+स्रंसु अवस्रंसने (भ्वा०) धातोः क्विप् सम्पदादित्वात् स्त्रियाम्]

विस्रुतिः विविधतया स्रवणं गमनं यस्मिन् सः (मार्गः) १.४६.११. [वि+स्रुतिपदयोः समासः। स्रुतिः=स्रु गतौ (भ्वा०)+क्तिन्]

विस्रुहः विसरन्ति विशेषेण गच्छन्ति ताः (आपः) ६.७.६. [विस्रुहः आपो भवन्ति विस्रवणात् नि० ६.३. वि+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। तुक्स्थाने हुक् आगमश्छान्दसः]

विस्रुहा यो विश्रून् रोगान् हन्ति सः (राजा) ५.४४.३. [विस्रु इत्युपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप् 'सौ चे' ति दीर्घः]

विहत्य विविधवधैर्हत्वा ५.४.५. [वि+हन हिंसा-गत्योः (अदा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

विहन् विहन्ति ६.४७.२. [वि+हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः]

विहन्ता विशेषेण नाशकः (सूर्य इव योद्धृजनः) १.१७३.५. [वि+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

विहरन् विचरन् (सविता=सूर्यः) ४.१३.४. [वि+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः शतृ]

विह्वन्त विशेषेणाऽऽह्वयन्ति ७.२८.१. [वि+ह्वेञ् स्पर्द्धायाम् शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः। 'बहुलं छन्दसि' अ० ६.१.३४. सूत्रेण सम्प्रसारणम्]

विहवे विशेषेण ह्वयति शब्दयति यस्मिँस्तस्मिन् उत्तमाङ्गमस्तके) ३.८.१०. [वि+ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः 'ह्वः सम्प्रसारणं च न्यभ्युपविषु' अ० ३.३.७२. सूत्रेण अप् सम्प्रसारणञ्च]

विहव्यः विहोतुमर्हः (इन्द्रः=धनकामो जनः) २.१८.७. विविधैः साधनैरादातुमर्हः (मन्त्री) १७.२४. विविधतया ग्रहीतुं योग्यः (सोमः=उत्पन्नः) पदार्थसमूहः १.१०८.६. विविधानि हव्यानि साधनानि यस्य सः (राजा) ८.४६. विशेषेण स्तोतुं योग्यः (अग्निः=राजा) २७.५. [वि+हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'अचो यत्' सूत्रेण यत्। 'वान्तो यि प्रत्यय' इति वान्तादेशः। विहव्यम् (सूक्तम्) जमदग्नेश्च वा ऋषीणाञ्च सोमौ संसुतावास्तां तत एतज् जमदग्निर्विहव्यमपश्यत् तमिन्द्र उपावर्त्तत यद् विहव्यं होता शंसतीन्द्रमेवैषां वृङ्क्ते तां० ९.४.१४.]

विहायाः योऽनर्थान् विजहाति सः (ऋभुः=मेधाव्याप्तो जनः) ३.३६.२. विजिहीते सद्यो गच्छति येन सः (विद्युदादिस्वरूपोऽग्निः) ४.११.४. विविधेषु पदार्थेषु व्याप्तः (परमेश्वरः), प्र०—अत्र ओहाङ् गतौ इत्यस्मादसुन् णित्कार्यञ्च १७.२६. महान् (अग्निः=विद्वज्जनः), प्र०—विहायेति महन्नाम निघं० ३.३, ६.१३.६. महती (अर्या=वैश्यकन्या) १.१२३.१. [वि+ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः, ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्वौणा० असुन् णिच्च। णित्वाद् युगागमः। विहाया व्याप्ता नि० १०.२६. विहायाः महन्नाम निघं० ३.३.]

विहि व्याप्नुहि, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति ह्रस्वः ४.४८.१. प्राप्नुहि ३.२१.५. [वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लोट्। धातोर्ह्रस्वश्छान्दसः]

विहितानि रचितानि (तत्त्वानि) १.१६४.१५.

[वि+डुधाञ् धारणपोषणयो: (जु०)+क्तः। 'दधातेर्हि' रितिधातोर्ह्यादेशः]

विहुत्मतीनाम् जुह्वति स्वीकुर्वन्ति याभिस्ता विहुतो, विहुतो मतयो यासु तासाम् (विशां=प्रजानाम्) १.१३४.६. [विहुत्मतिपदयो: समासः। विहुत्=वि+हु दानादानयो: (जु०) धातो: क्विप् करणे]

विहोत्राः विविधतया ये जुह्वत्याददति वा ते (विप्राः=मेधाविजनाः) ५.१४. [वि+हु दानादानयो: (जु०) धातोर्बाहु० औणा० ष्ट्रन्। अथवा वि-होत्रापदयोः समासः। होत्रा वाङ्नाम निघं० १.११. यज्ञनाम निघं० ३.१७.]

विह्रुतः विशेषेण कुटिलान् (अ०—सर्पान्) २५.७. [वि+ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये पृषोदरादिना रूपम्]

विह्वयन्ते विशेषतया स्पर्द्धन्ते ४.२४.३. विशेषेण प्रशंसेयुः ४.३६.५. विह्वयामहे=विविधैः शब्दैः स्तुमः १.३६.१३. विशेषेण स्पर्द्धामहे ११.४२. **विह्वयेते**=विस्पर्द्धेते २.१२.८. [वि+ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लट्]

विंशतिम् एतत्संख्याताम् (सेनाम्) ७.१८.११. विंशतीः=चत्वारिंशत् (गतयः) २७.३३. [विंशतिः द्विदशतः नि० ३.१०. प्रजापतेर्विस्रस्तादाप आयंस्तास्वितास्वविशद् यदविशत् तस्माद् विंशतिः श० ७.५.२.४४. द्वौ दशतौ परिमाणमस्य संघस्येति विग्रहे 'पंक्तिविंशति०' अ० ५.१.५९. सूत्रेण द्वयोर्दशतोर्विन्भावः शतिच् प्रत्ययश्च निपात्यते]

वीक्षिताय विशेषेण कृतदर्शनाय (जीवाय) २२.८. [वि+ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोः क्तः]

वीडयस्व दृढान् कारय ६.४७.२६. प्रेरयस्व ३.५३.१९. बलयस्व ६.४७.३०. स्तुहि २.३७.३ **वीडयेथाम्**=दृढबलौ भवेताम् ६.३५. [वीडयस्व संस्तम्भस्व नि० ९.१२. वीडयति व्रीडयतिश्च संस्तम्भकर्माणौ नि० ५.१६. वीडयस्व=दृढीभव नि० ८.३.]

वीडवे प्रशंसनीयाय बलाय ६.२४.८. **वीडुः**=प्रशंसितः (इन्द्रः=ऐश्वर्यवान् जनः) ३.५३.१७. **वीडोः**=बलवन् प्रशंसितस्वभाव (आचार्य) ३.५३.१९. **वीडोः**=बलवतः (असुन्वतः=यज्ञकर्त्तुर्विरोधिजनस्य) १.१०१.४. **वीडौ**=प्रशंसनीये बले ३.३१.५. [वीडु बलनाम निघं० २,९. वि+ईड स्तुतौ (चुरा०) धातोर्बाहु० औणा० उः]

वीडितः विविधैर्गुणैः स्तुतः (इन्द्रः=राजा) २.२१.४. [वि+ईड स्तुतौ (चुरा०) धातोः क्तः]

वीडिता स्तुतानि (कर्म्माणि) ६.२२.६. प्रशंसितानि (वस्तूनि) २.२४.३. [वीडित इति व्याख्यातम्। ततो शेर्लोपश्छन्दसि]

वीडु दृढं बलम् १.६.५. **वीडूनि**=दृढानि बलकारीणि (आयुधा=अस्त्रशस्त्राणि), प्र०—अत्र ईषा अक्षादित्वात् प्रकृतिभावः १.३९.२. अत्यन्त दृढानि प्रशंसितानि च (शस्त्रास्त्राणि) ऋ० भू० १५१, [वीळु बलनाम निघं० २.९.]

वीडुजम्भम् वीडु बलवज्जम्भो मुखमिव ज्वाला यस्य तम् (अग्निम्) ३.२९.१३. [वीडु-जम्भपदयोः समासः]

वीडुद्वेषाः दृढद्वेषाः (दुष्टाचारिजनाः) २.२४.१३. [वीडु-द्वेषपदयोः समासः। द्वेषः=द्विष अप्रीतौ (अदा०) धातोर्घञ्]

वीडुपत्मभिः बलेन पतनशीलैः (जूतिभिः=युद्धक्रियाभिः) १.११६.२. [वीडु-पत्मन्पदयोः समासः। पत्मन्=पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्मनिन्]

वीडुपविभिः दृढचक्रैः (रथेभिः) ५.५८.६. [वीडुपविपदयोः समासः। पविः वज्रनाम निघं० २.२०]

वीडुपाणिभिः वीडूनि दृढानि बलानि पाणयो ग्रहणसाधनव्यवहारयोर्येषां तैः (अ०-पवनैः) प्र०—वीड्विति बलनाम निघं० २.९, १.३८.११. **वीडुपाणिः**=वीडु बलं पाणयो यस्य सः (तनयः=पुत्रः) ७.१.१४. [वीडु-पाणिपदयोः समासः]

वीडुहर्षिणः बलेन बहु हर्षो विद्यते यस्य तस्य (कुपुरुषस्य) २.२३.११. [वीडु-हर्षिन्पदयोः समासः। हर्षिन्=हर्षप्राति० भूम्न्यर्थं इनिः]

वीड्वङ्गम् वीडूनि बलयुक्तानि दृढानि अङ्गानि यस्य तम् (अश्वं=विद्युतम्) १.११८.९. **वीड्वङ्गः**=वीडूनि दृढानि बलिष्ठान्यङ्गानि यस्य सः (अर्वा=विज्ञानयुक्तः पुत्रः) ११:४८. प्रशंसिताङ्गः (वनस्पतिः=वनादिपालको विद्वान् राजा) २९.२२. [वीडु-अङ्गपदयोः समासः। वीडु बलनाम निघं० २.९. वीड्वङ्ग दृढाङ्गः नि० ९.१२.]

वीड्वी बलवती (स्त्री), प्र०—वीड्वीति बलनाम निघं० २.९, ६.३५. **वीड्वीः**=विशेषेण स्तोतुं योग्याः (द्वारः=द्वाराणि) २८.१३. [वीडु बलनाम निघं० २.९. ततो 'वोतो गुणवचनात्' सूत्रेण स्त्रियां ङीष्। अथवा वि+ईड स्तुतौ (चुरा०) धातोर्बाहु० औणा० विन्]

वीणावादम् वाद्यविशेषम् ३०.१९. [वीणा-वादपदयोः समासः। वीणा=वी गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) धातोः 'रास्नासास्ना०' उ० ३.१५. सूत्रेण न-प्रत्ययान्तो निपात्यते। ततः स्त्रियां टाप्]

वीत विविधतया प्राप्नुत १२.४५. **वीतम्**=व्याप्नुतः १.९३.७. प्राप्नुतं व्याप्नुतं वा ६.६०.१५. **वीताम्**=व्याप्नुताम् २८.१४. प्राप्नुताम् २८.७. **वीथः**=व्याप्नुथ १.१५१.३. कामयेथाम् १.१५१.७. **वीहि**=प्राप्नुहि कामय वा ६.५०.२. व्याप्नुहि १.४. [वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोर्लोट् वीथः प्रयोगे लडपि]

वीततमानि अतिशयेन व्याप्तुं समर्थानि (उत्तमहवींषि) ७.१.१८. [वीतप्राति० अतिशायने तमप्। वीतम्=वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोः क्तः]

वीतपृष्ठः वीतं व्याप्तं पृष्ठं यस्य सः (अ०—यज्ञः) २५.३०. वीता व्याप्ताः पृष्ठा विद्यासिद्धान्ता येन सः (विद्वज्जनः) १.१६२.७. **वीतपृष्ठाः**=वीतं व्याप्तं पृष्ठं पृथिव्यादितलं यैस्ते (विद्युदादयोऽश्वाः) १.१८१.२. विविधानीतानि विदितानि पृष्ठानि प्रच्छन्नानि याभिस्ताः (पूर्णविद्या-सुशिक्षायुक्ता बालिकाः) १९.४४. वीतानि व्याप्तानि लोकलोकान्तराणां पृष्ठानि यैस्ते (हरितः=किरणाः) ५.४५.१०. [वीत-पृष्ठपदयोः समासः। वीतम्—वी गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) धातोः क्तः। अथवा वि+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः। पृष्ठम्=पृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'तिथपृष्ठगूथयूथप्रोथाः' उ० २.१२. सूत्रेण थक्-प्रत्ययान्तो निपात्यते]

वीतपृष्ठा वीते व्याप्तिशीले पृष्ठे ययोस्तौ (अश्वौ) ३.३५.५. [वीतपृष्ठमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वीतम् प्राप्तम् (अश्वम्) २५.३७. गमनशीलम् (हविः) १७.५७. व्याप्तिशीलम् (अग्निम्) १.१६२.१५. व्याप्तम् (अग्नि=विद्युदाख्यम्) ४.७.६. [वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोः क्तः। वीतम् अश्नीतम् नि० ४.१९.]

वीतये विज्ञानादिप्राप्तये ५.५१.५. ज्ञानाय भोगाय वा, प्र०—वी गति-व्याप्ति-प्रजनकान्त्यसनखादनेषु इत्यस्मात् 'मन्त्रे वृषेष-पच-मन-विद-भू-वी-रा उदात्तः' अनेन क्तिन्—प्रत्यय उदात्तत्वं च १.५.५. विद्यादिशुभगुणव्याप्तये ६.१६.१०. विज्ञानाय १.७४.४. धर्मप्रवेशाय, आनन्दप्राप्तये १.१३५.४. कामनायै १.१३५.३. [वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (भ्वा०) धातोः 'मन्त्रे वृषेष०' सूत्रेण क्तिन्। वीतये पानाय नि० ५.१८. वीतिः (यजु० ११.४६) अग्नऽआयाहि वीतयऽइत्यवितवऽइत्येतत् श० ६.४.४.९.]

वीतहव्यम् प्राप्तप्राप्तव्यम् (सत्पुरुषम्) ७.१९.३. **वीतहव्ये**=वीतं व्याप्तं हव्यं ग्रहीतव्यं वस्तु येन तस्मिन् (व्यवहारे) ६.१५.२. [वीत-हव्यपदयोः समासः। वीतम्=वी गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) +क्तः। हव्यम्=हु दानादानयोः (जु०) धातोर्यत्]

वीता वीतानि प्राप्तानि (वृजिना=बलानि) ४.२.११. [वीतप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि। वीतमिति व्याख्यातम्]

वीतिहोत्रम् वीतयो विज्ञापिता होत्राख्या यज्ञा येनेश्वरेण तं यद्वा वीतयः प्राप्तिहेतवो होत्राख्या यज्ञक्रिया भवन्ति यस्मात्तं परमेश्वरं भौतिकं वा (अग्निम्), प्र०—वी गतिव्याप्ति०' इत्यस्य रूपम् २.४. गृहीतेश्वरव्याप्ति (जगत्) २.३८.१. वीतेर्व्याप्तेर्होत्रं ग्रहणं यस्मात्तम् (विद्वज्जनम्) ५.२६.३. **वीतिहोत्रः**=वीतानां शुभगुणव्याप्तानां विद्यानां होत्रं स्वीकरणं यस्य सः (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.२४.२. प्राप्ताऽप्राप्तविज्ञानः (ऋत्विग्जनः) १.८४.१८. **वीतिहोत्राः**=वीतिः सर्वतः प्रकाशितो होत्रो यज्ञो येषां ते (देवाः=कामयमाना विद्वांसः) १७.७८. [वीति-होत्रपदयोः समासः। वीतिः=वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोः 'मन्त्रे वृषेषपच०' सूत्रेण क्तिन्। होत्रम्=हु दानादानयोः (जु०) धातोरौणा० ष्ट्रन्। होत्रा यज्ञनाम निघं० ३.१७. वाङ्नाम निघं० १.११.]

वीती कामनया ६.१६.४६. वीत्या व्याप्त्या ६.६.१. [वीतिप्राति० 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण टा-स्थाने पूर्वसवर्णदीर्घः। वीतिपदं व्याख्यातम्]

वीध्र्याय विविध्रेषु ईधेषु दीपनेषु भवाय (भृत्याय), प्र०—अत्र विपूर्वकादिन्धिधातोरौणादिको रक् प्रत्ययः १६.३८. [वीध्रप्राति० भवार्थे यत्। वीध्रम्=वि+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः 'वाविन्धेः' उ० २.२६. सूत्रेण रक् प्रत्ययः]

वीनुहि विशेषतया व्याप्नुहि ६.१०.७. **वीनोषि**=प्रेरयसि ६.५.३. **वीनोति**=विशेषेण प्राप्नोति, प्र०—इन्वनीति गतिकर्मा निघं० २.१८, ६.४.३. [वि+इन्वति गतिकर्मा (निघं० २.१८.) व्याप्तिकर्मा निघं० २.१८. ततो लोट्, अन्यत्र लट्। अथवा-वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लोट्लटौ। विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

वीयते विशेषेण गच्छति ५.१८.३. [वि+वी गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) धातोर्लट् । अथवा वी धातावीकारप्रश्लेषः । व्यत्ययेन यगात्मनेपदञ्च]

वीर शुभगुणेषु व्यापनशील (विद्वज्जन) २.२६.२. शौर्यादिगुणोपेत (इन्द्र=विद्वज्जन) ६.२१.६. अजति वेद्यं जानाति प्रक्षिपति विनाशयति सर्वाणि दुःखानि वा यस्तत्सम्बुद्धौ (विद्वन् सभासेनाध्यक्ष), प्र०—अत्र 'स्फायितञ्चिवञ्चि०' उ० २.१२. अनेनाजेरक्प्रत्ययः १.३०.५. **वीरम्**=पूर्णशरीरात्मबलप्रदम् (यज्ञं=पठनपाठनश्रवणोपदेशाख्यम् १.४०.३. उत्तम-सन्तानम् २.३२.४. प्राप्तविज्ञानादिगुणम् (राधः=धनम्) २७.२७. शत्रूणां हन्तारं युद्धकुशलं निर्भयम् (राजानम्) ऋ० भू० २८४, बलवन्तम् (पुरुषम्) २०.४०. शत्रुबलानि व्याप्नुवन्तम् (राजाऽध्यापकोपदेशकजनं) विक्रान्तं जनम् ४.२३. वीरवन्तम् (जनम्) ६.५०.६. दोग्धारम् (राजपुरुषम्) ७.३४.६. सर्वदुःखप्रक्षेप्तारम् (यज्ञम्) ३७.७. **वीरः**=अजति व्याप्नोति शत्रुबलानि यः (वायुः परमेश्वरः, सोमलतादिसमूहरसो वा) १.१८.४. अजति सकलविद्याः प्राप्नोति सः (मनुष्यः) २.३.९. विद्यमानबलः (पुरुषार्थिजनः) ३.५५ २०. विज्ञानवान् शत्रूणां प्रक्षेप्ता (जनः) २२.२२. विद्यया प्राप्तशरीरात्मबलः (विद्यार्थी राजपुरुषो वा) ४.२३.२. व्याप्तविद्याशौर्यादिगुणः (पुत्रः) ४.२४.१. शत्रूणां सेनाबलं व्याप्तुं शीलः (सेनापतिः) १.८१.२. शुभगुणकर्मस्वभावव्यापकः (इन्द्रः=सूर्य इव राजा) ७.२०.२. निर्भयः (राजा) ७.३२.६. बलिष्ठः (इन्द्रः=राजपुरुषः) ४.२५.६. शत्रूणां दारिता (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३९. **वीराः**=क्षात्रधर्मयुक्ताः (जनाः) ३.५५.२१. प्राप्तविज्ञानाः (जनाः) ७.१.१५. **वीरेषु**=सुभटेषु (वीरजनेषु) २.२४.१५. **वीरैः**=प्रशस्तबलैः (जनैः) २६.९. शौर्य-धैर्य-विद्या-शत्रुनिवारण-प्रजापालनकुशलैः (जनैः) ३.३७. [अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्जि०' उ० २.१२. सूत्रेण रक् । 'अजेर्व्यघञपोः' सूत्रेण धातोर्वी-आदेशः । अथवा वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० रक् । वीरो वीरयत्यमित्रान् वेतेर्वा स्याद् गतिकर्मणो वीरयतेर्वा नि० १.७. अथवा वीर विक्रान्तौ (चुरा०) धातोः कर्त्तर्यच् । पुत्रो वै वीरः श० ३.३.१.१२. अत्ता हि वीरः श० ४.२.१.९. प्राणा वै दशवीराः (यजु० १९.४८) श० १२.८.१.२२.]

वीरतमः वेति स्वबलेन शत्रुबलं व्याप्नोति सोऽतिशयितः (अग्निः=पावक इव सेनापतिः) १५.५२. **वीरतमाय**=अत्युत्तमाय वीराय (राज्ञे) ३.५२.८. [वीरप्राति० अतिशायने तमप्]

वीरतमा अतिशयेन वीरौ (होतृ-यजमानौ), प्र०—अत्राऽऽकारादेशः ८.५९. [वीरप्राति० अतिशायने तमप् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वीरताम् वीरस्य भावम् ७.१२. [वीरप्राति० भावे तल् । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

वीरपत्नी वीरः पतिर्यस्याः सा (कन्या=विदुषी पत्नी) ६.४९.७. [वीर-पतिपदयोः समासे स्त्रियां ङीप् नकारादेशश्च]

वीरपस्त्यः वीरा पस्त्ये गृहे यस्य सः (तनयः=जनः) ५.५०.४. [वीर-पस्त्यपदयोः समासः । पस्त्यं गृहनाम निघं० ३.४.]

वीरपेशाः वीराणां पेशो रूपमिव रूपं येषान्ते (मनुष्याः) ४.११.३. [वीरपेशपदयोः समासः । पेशः रूपनाम निघं० ३.७.]

वीरयध्वम् विक्रमयध्वम् १७.३८. **वीरयस्व**=आरब्धस्य कर्मणः समाप्तिमाचर ११.६८. [वीर विक्रान्तौ (चुरा०) धातोर्लोट्]

वीरया वीरयुक्तया (सेनया) ३३.७०. [वीरप्राति० स्त्रियां टाप्]

वीरवक्षणम् वीराणां वहनम् (वयुनं=कर्म प्रतापं वा) ५.४८.२. [वीर-वक्षणपदयोः समासः । वक्षणम्=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्ल्युट् । सुगागमश्छान्दसः । अथवा वक्ष रोषे (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

वीरवत् प्रशस्तवीरसदृशमन्नादिपदार्थमयं यज्ञम्, प्र०—अत्रार्श आदित्वादच् ८.६३. बहवो वीरा विद्यन्ते यस्मिन् विज्ञाने तत् १.१९०.८. वीरा विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (यशः=कीर्त्तिम्) ५.७९.६. प्रशस्तवीरकारकम् (श्रवः=अन्नं श्रवणं वा) ४.३६.८. वीरैस्तुल्यम् (सुदेवम्=शोभनं विद्वज्जनम्) २८.१२ शूरवीरतुल्याः (स्त्रियः) ६.६५.३. वीरैर्युक्तम् (राज्यम्) २०.५४. [वीरप्राति० प्रशंसायां मतुप्]

वीरवतीम् प्रशस्ता वीरा विद्यन्ते यस्यां ताम् (इषं=सत्क्रियाम्), प्र०—अत्र प्रशंसायां मतुप् १.१२.११. **वीरवतीः**=बहवो वीरा सन्ति यासु ताः (उषासः=प्रभाताः) ३४.४०. [वीरप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुबन्तान् ङीप्]

वीरवत्तमम् वीरा विद्वांसः शूराश्च विद्यन्ते यस्मिन् तदतिशयितं वीरवत्तमम् (रयिं=विद्यासुवर्णाद्युत्तम-धनम्) १.१.३. विद्या, शौर्य, धैर्य, चातुर्य, बल, पराक्रम, दृढाङ्गता, धर्मात्मिता और न्याययुक्त अत्यन्त वीर-पुरुष को आर्याभि० १.३, ऋ० १.१.१.३. प्रतिदिनं बुद्धि बलवीर्यशौर्यधैर्यादिगुणयुक्ताः पुत्रबन्धुमित्रभृत्यादयो वीरा भवन्ति यस्मिन् धने तत् वे० भा० न० । [वीरवत्-प्राति० अतिशायने तमप् । वीरवत्=वीरप्राति० भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा मतुप्]

वीरवन्तम् प्रशस्ता वीरा विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (रयिम्) १.६४.१५. बहुवीराऽऽढ्यम् (धनम्) ५.४.११. वीरा भवन्ति यस्मात्तम् (रयिं=श्रियम्) २.११.१३. **वीरवन्तः**= वीरपुत्राः (जनाः) ४.५०.६. [वीरप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुप् । ततो द्वितीयैकवचनम्]

वीरवाहः ये वीरान् वहन्ति प्रापयन्ति ते (देवाः= विद्वांसः) ७.४२.२. [वीरोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' अ० ३.२.६४. सूत्रेण ण्विः]

वीरशुष्मया वीराणां योद्धॄणां शुष्माणि बलानि यस्यां तया सेनया सह १.५३.५. [वीर-शुष्मपदयोः समासात् स्त्रियां टाप् । शुष्मम् बलनाम निघं० २.९.]

वीरसूः वीरसन्तानोत्पादिका (स्त्री) ऋ० भू० २१४, शूरवीर पुत्रों को जनने वाली (स्त्री) स० प्र० १५२, अथर्व० १४.२.१८. [वीरोपपदे षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः 'सत्सूद्विष०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्]

वीरहणम् यो वीरान् हन्ति तम् (जनम्) ३०.५. [वीरोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्]

वीरा विक्रान्तकर्माणौ (अध्यापकाऽध्येतारौ) २.३९.१. [वीरप्राति० द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

वीरासः व्याप्तविद्यावलाः (मर्यासः=मनुष्याः) ५.६१.४. शूरवीराः (जनाः) ६.७.३. [वीरप्राति० प्रथमाबहुवचने जसोऽसुगागमः]

वीरिटे अन्तरिक्षे ३३.४४. [वीरिटं तैटीकिरन्तरिक्ष-मेवमाह पूर्वं वयतेरुत्तरमिरतेर्वयांसीरयन्त्यस्मिन् भांसि वा नि० ५.२७. बीरिटम् अन्तरिक्षं भियो वा भासो वा ततिः नि० ५.२७.]

वीरुत्सु सत्तारचनाविशेषेण निरुद्धेषु कार्यकारण-द्रव्येषु, प्र०—वीरुध इति पदनाम निघं० ४.३, १.६७.५. **वीरुधः** अतिविस्तृता लताः १.१४१.४. ओषधयः २.३५.८. सोमादीन् (ओषधीः) १२.७७. वृक्षप्रभृतयः (ओषधयः) १२.९४. गुल्मविशेषाः १८.१४. वनस्थान् वृक्षान् १२.३३. **वीरुधाम्**=लतावृक्षादीनां मध्ये २.१.१४. [वि+रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोः क्विप् । रुह बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च (भ्वा०) धातोर्वा क्विप् । उपसर्गस्य दीर्घत्वं धातोर्हकारस्य धकारश्च । वीरुध ओषधयो भवन्ति विरोहणात् नि० ६.३. वीरुधः पदनाम निघं० ४.३.]

वीरेभिः वीरैः (पुरुषैः) १९.५३. [वीरप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

वीर्यकृतः यो वीर्य्यं करोति तस्य (इन्द्रस्य= परमैश्वर्यस्य) १०.२५. [वीर्योपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । ह्रस्वस्य तुगागमः]

वीर्यम् पृथिव्यादिलोकानां बलम् १.९३.४. पराक्रमं बलं वा १.५७.५. सर्वाऽङ्ग-स्फूर्त्तिः १९.९. अनन्तपराक्रम-वान् (परमात्मा) १९.९. सामर्थ्य को सं० वि० १९५, ९.११३.१. वीरस्य कर्म्म पराक्रमं वा २.८. शरीरबलकरं घृतादि २०.५८. वीरेषु साधु (भा०—बलारोग्यम्) २१.३१. विद्याधर्माभ्यां सुष्ठ्वात्मबलम् १.१२९.७. **वीर्यस्य**= वीरकर्म्मणः, प्र०—अत्र 'अधिगर्थदयेशां कर्मणि' अ० २.३.५२. इति कर्मणि षष्ठी ३४.२३. वीरस्य कर्मणः ३.४६.१. **वीर्याणि**=आकर्षणप्रकाशयुक्तादिवत्कर्माणि १.३२.१. पराक्रमयुक्तानि कर्म्माणि १.१०८.५. वीरेषु साधूनि बलानि ३.३०.३. **वीर्याय**=योगबलाय १९.९०. पराक्रमसम्पादनाय १.६१.१४. वीर्यवृद्धये ३०.११. **वीर्यैः**=पराक्रमविज्ञानादिभिः २.२२.३. [वीरप्राति० भवार्थे साध्वर्थे हितार्थे वा यत् । वीर्यायि वीरकर्मणे नि० १०.१९. वीर्यं विष्णुः तै० १.७.२.२. वीर्यं वा इन्द्रः तां० ९.७.५.८. गो० उ० ६.७. वीर्यं वा अग्निः तै० १.७.२.२. गो० उ० ६.७. वीर्यं षोडशी तां० २१.२.२.७. इन्द्रियं वीर्यं षोडशी तां० २१.५.६. इन्द्रियं वै वीर्यं वाजिनम् ऐ० १.१३. वीर्यं त्रिष्टुप् श० ७.४.२.२४. तिष्ठन्वै वीर्यवत्तरः श० ६.६.२.१.]

वीर्या वीर्ययुक्तानि सैन्यानि ५.२९.१३. विद्यादि-वीर्याणि १.८०.१५. बलपराक्रमयुक्तानि कर्माणि ४.३२.१० वीरेषु शत्रुप्रक्षेपकेषु विद्वत्सु साधूनि (वस्तूनि) २.१६.२. वीरेभ्यो हितानि धनानि २.३०.१०. पराक्रमयुक्तानि कर्म्माणि २.२१.३. [वीर्यमिति व्याख्यातम् । ततश्शेर्लोप-श्छन्दसि]

वीव पक्षीव ७.५५.२. [वि-इवपदयोः समासः ।

विरिति शकुनिनाम वेतेर्गतिकर्मणः नि० २.६.]

वीः व्यापकः (विद्वज्जनः) १.४३.६. [वी गति-व्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोः क्विप्]

वुरीत वृणुयात्, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदं 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक्, लिङ्-प्रयोगोऽयम् २२.२१. वृणीयात् ४.८. स्वीकुर्यात् ११.६७. [वृञ् वरणे (क्र्या०) धातोर्लिङि छान्दसं रूपम्]

वृकतातिः वृको वज्र एव २.३४.९. [वृकप्राति० स्वार्थे तातिल् छान्दसः। वृकः वज्रनाम निघं० २.२०.]

वृकतिः वृकवच्छत्रुहिंसकः (शत्रुजनः) ४.४१.४. [वृकप्राति० प्रशंसायामर्थे 'वृकज्येष्ठाभ्याम्०' अ० ५.४.४१. सूत्रेण तिल्]

वृकद्वरसः वृकस्य मेघस्य द्वाराणि २.३०.४. [वृक-द्वरस्पदयोः समास.। वृकः पदनाम निघं० ४.२.]

वृकम् अजादीनां हन्तारम् (पशुविशेषम्) १९.१०. विद्युतम् १.१०५.११. स्तेनम् ७.३८.७. चोरम् ९.१६. **वृकस्य**=वृक इव वर्त्तमानस्य चोरस्य २.२९.६. व्याघ्रस्य ३३.५१. वन्यस्य पशुनः १.११७.१६. यो वृश्चति छिनत्ति तस्य (पशुविशेषस्य) १९.९२. **वृकः**=स्तेनो व्याधः १.१०५.७. चित्रकः २४.३३. वृकवदुत्कोचकश्चोरः २.२८.१०. वज्रः २१.३८. यथा चन्द्रमाः शान्तगुणस्तथा १.१०५.१८. **वृकेन**=छेदकेन शस्त्राऽस्त्रादिना १.११७.२१ [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक्' उ० ३.४१. सूत्रेण कक्। वृकः वज्रनाम निघं० २.२०. स्तेननाम निघं० ३.२४. पदनाम निघं० ४.२. वृकश्चन्द्रमा भवति विवृतज्योतिष्को वा विकृतज्योतिष्को वा विक्रान्तज्योतिष्को वा। आदित्योऽपि वृक उच्यते यदा वृङ्क्ते। श्वापि वृक उच्यते। विकर्त्तनात् नि० ५.२०-२१. वृको लांगलं भवति विकर्त्तनात् नि० ६.२६. अथ यत् कर्णाभ्यामद्रवत् ततो वृकः समभवत् श० ५.५.४.१०. मूत्रादेवास्यौजोऽस्रवत्। स वृकोऽभवद् आरण्याणां पशूनां जूतिः श० १२.७.१.८.]

वृकीः स्तेनस्त्री, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सोः स्थाने सुः १.११७.१८. [वृद्धवाशिन्यपि वृक्युच्यते नि० ५.२१. वृकप्राति० स्त्रियां ङीष्। जातिवाचित्वात्]

वृक्कः रोगादिवर्जयिता (ईश्वरः) १.१८७.१०. **वृक्काभ्याम्**=याभ्यां वर्जन्ति ताभ्याम् (क्रियाभ्याम्) २५.८. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० कन् स च कित्]

वृक्णासः छिन्नाऽविद्याः (ऋत्विजः) ३.८.७. [ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोः क्तः। 'ओदितश्चे' ति निष्ठानत्वम्। 'ग्रहिज्या०' इत्यादिना सम्प्रसारणम्। ततो जसोऽसुक्]

वृक्तबर्हिषः वृक्तं वर्जितं बर्हिर्यैस्ते (विद्वज्जनाः) ३३.५८. वृक्तं छेदितं धूमेन बर्हिरन्तरिक्षं यैस्ते ऋत्विजः ३.२.५. शिल्पफलनिष्पादिन ऋत्विजः १.३.३. वृक्तं विदीर्णीकृतं हुतपदार्थैरन्तरिक्षं यैस्त ऋत्विजः ५.३५.६. वृक्तं छेदितं बर्हिरुदकं येन तस्य (विद्युत इवाऽध्यापकस्य), प्र०—बर्हिरित्युदकनाम निघं० १.१३, ६.६८.१. श्रोत्रिया ऋत्विज इव सर्वविद्यासु कुशलाः ५.२३.३. वृक्तं वर्जितं बर्हिर्यस्मिन् तस्य (निवासस्य) ५.९.२. [वृक्त-बर्हिष्पदयोः समासः। वृक्तम्=वृजी वर्जने (अदा०) धातोः क्तः। बर्हिष्—बर्हिः अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. उदकनाम निघं० १.१२. पदनाम निघं० ५.२. वृक्तबर्हिषः ऋत्विङ्नाम निघं० ३.१८.]

वृक्ये वृकेषु स्तेनेषु भवे व्यवहारे ६.५१.६. वृकस्य स्तेनस्य स्त्रियै स्तेन्यै १.११६.१६. [वृकप्राति० भवार्थे यत्। वृकीप्राति० वा चतुर्थी। आटोऽभावश्छान्दसः]

वृक्षकेशाः वृक्षाः केशा इव येषां शैलानां ते ५.४१.११ [वृक्ष-केशपदयोः समासः]

वृक्षम् यो वृश्च्यते छिद्यते तं कार्यकारणाख्यं वा (जगत्) १.१६४.२०. वृश्चनीयं जलं स्थलं वा २.३९.१. वटादिकम् ५.५४.६. अनादिमूलरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त (जगत्) स० प्र० २८३, १.१६४.२०. **वृक्षस्य**=छेद्यस्य (तरोः) ६.५७.५. व्रश्चितुं छेत्तुं योग्यस्य संसाराख्यस्य राज्यस्य २३.२४. **वृक्षः**=यो वृश्च्यते छिद्यते स संसारः १७.२०. **वृक्षे**=व्रश्चनीये छेदनीये शत्रुसैन्ये १६.५१. **वृक्षेभ्यः**=ये शत्रून् वृश्चन्ति छिन्दन्ति तेभ्यः (जनेभ्यः) पादपेभ्यो वा १६.४०. **वृक्षान्**=छेत्तुमर्हान् (वटादिकान्) ५.८३.२. [ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोः 'स्नुव्रश्चिकृत्युषिभ्यः कित्' उ० ३.६६. सूत्रेण सः प्रत्ययः। कित्त्वाद् गुणो न भवति। वृक्षः व्रश्चनात्। वृत्वा क्षां तिष्ठतीति वा नि० २.६. श्रीर्वै वृक्षस्याग्रम् तै० ३.९.७.४.]

वृक्षि वर्जयेयम्, प्र०—अत्र वृजी वर्जने, इत्यस्माल्लिडर्थे लुङ् 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकाश्रयणादिण् न। समीक्षा—वृजीत्यस्य सिद्धे सति सायणाचार्येण ओव्रश्चू इत्यस्य व्यत्ययं मत्वा प्रमादादेवोक्तमिति

१.२७.१३. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्लुङि छान्दसं रूपम्]

वृङ्क्त त्यजत १.१७२.३. [वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लोट्]

वृङ्ग्धि वर्जय १३.४१. वर्धय ६.७५.१२. वर्चय २९.४९. [वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लोट्]

वृचयाम् छेदन-भेदन-प्रकाराम् (अर्भाम्=शिल्पक्रियां वाचं वा) १.५१.१३. [ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

वृचीवतः वृचिरविद्याछेदनं प्रशस्तं यस्य तस्य (विद्वज्जनस्य) ६.२७.५. छेदनवतः (शिल्पिजनस्य) ६.२७.७ **वृचीवन्तः** रोगाच्छादितवन्तः (वीरा राजपुरुषाः) ६.२७.६. [वृचिप्राति० प्रशंसायां मतुप्। वृचि=ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोरौणा० इन् किच्च]

वृजध्यै वर्जितुम् ३.३१.१७. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोस्तुमर्थेऽध्यैप्रत्ययः]

वृजनम् वर्जन्ति दुःखानि येन तद् बलम् ३४.४८. शरीरात्मबलम् १.१८४.६. सन्मार्गम् १.१७३.१३. गमनम् १.१८०.१०. वर्जनीयं बलम् ६.११.६. दुःखत्यागम् १.१७६.६. सद्गतिम् १.१७७.५. धर्म्यं मार्गम् १.१७४.१०. शत्रुनिकन्दनं बलम् १.१६८.१०. व्रजन्ति येन यस्मिन् वा (बलम्) ६.३५.५. योगबलम् ७.१२. **वृजनस्य**=दुःखवर्जितस्य व्यवहारस्य १.१०१.११. बलस्य पराक्रमस्य १.९१.२१. **वृजनाः**=वृजन्ति येषु यैस्सह वा ते (नौकादयः) ७.३२.२७. **वृजने**=वर्जन्ति दुःखानि येन बलेन तस्मिन् १.५१.१५. अनित्ये कार्ये जगति २.२४.११. वर्जन्ति दुःखानि जना यत्र तस्मिन् व्यवहारे १.१०१.८. वृजते शत्रून् येन तस्मिन् (आजौ=सङ्ग्रामे) १.६३.३. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोः 'कृपृवृजिमन्दि०' उ० २.८१. सूत्रेण क्युः। वृजनं वलनाम निघं० २.९.]

वृजना वृजन्ति यैस्तानि (यानानि) ५.५४.१२. [वृजनमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

वृजनीषु वर्जनीयासु कक्षासु १.१६४.९. [वृजी वर्जने (अदा०) 'कृपृवृजि०' उ० २.८१. सूत्रेण क्युः। स्त्रियां ङीप् छान्दसः]

वृजिनम् वर्जनीयम् (स्तेनं=चोरम्) ६.५१.१३. **वृजिनानि**=धनानि बलानि वा ५.१२.५. बाधकानि (बलानि) ६.५२.२. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोः 'वृजेः किच्च' उ० २४७. सूत्रेण इनच्। वृजिनानि=वर्जनीयानि नि० १०.४१.]

वृजिनवर्त्तनिम् वृजिनस्य बलस्य वर्त्तनिर्मार्गो यस्य तम् (नरं=मनुष्यम्), प्र०—अत्र 'सह सुपा' इति समासः १.३१.६. [वृजिन-वर्त्तनिपदयोः समासः]

वृजिना वृजिनानि बलानि ४.२.११. वर्जितव्यानि पापानि २.२७.३. [वृजिनमिति व्याख्यातम्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

वृजिनान् पापान् ३.३४.६. **वृजिनाः**=पापाऽऽचारा वर्जनीयाः (चौराः) ५.३.११. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोः 'वृजेः किच्च' उ० २.४७. सूत्रेण इनच्]

वृज्यते त्यज्यते १.८३.६. **वृज्याम्**=त्यजेयम् २.२७.५. **वृज्याः**=वृणक्तु ६.२८.७. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोः कर्मणि लट्। अन्यत्र लिङ्]

वृज्याः वर्जनीया पीडाः २.३३.१४. [वृजी वर्जने (अदा०) धातोः 'ऋदुपधाच्च०' अ० ३.१.११०. सूत्रेण क्यप्। ततष्टाप्]

वृञ्जते त्यजन्ति ७.२.४. **वृञ्जन्ति**=त्यजन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ६.३६.२. **वृञ्जे**=वृञ्जते, प्र०—अत्र 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' इति तलोपो व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदञ्च १.१४२.५. त्यजामि ६.११.५. छिनद्मि १.११६.१. [वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

वृणक् वृणक्ति ७.१८.१२. छिनत्ति ६.१८.८. **वृणक्ति**=छिनत्ति ३.२९.६. सम्भजति ४.७.१०. वर्जयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः ४.२९. दूरीकरोतु ६.५१.१६ त्यजति १.१२४.६. **वृणक्तु**=पृथक्करोतु १६.५०. परित्यजतु १६.१२. छिन्नो भवतु १३.४५. **वृणक्षि**=त्यजसि १.५४.५. [वृजी वर्जने (रुधा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः। अन्यत्र लोट्। वृणक्ति वधकर्मा निघं० २.१९.]

वृणते स्वीकुर्वन्ति ६.१७.८. सम्भजन्ति १.१४१.६. सम्भजन्ते १.५८.७. **वृणीत**=स्वीकुर्यात् ४.८. वृणीते, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.१३. **वृणीते**=स्वीकुरुते ४.२५.३. **वृणीध्वम्**=स्वीकुरुत ५.२८.६. **वृणीमहि**=संभरेमहि १.१३९.१. **वृणीमहे**=स्वीकुर्महे १.१२.१. **वृणीष्व**=स्वीकुर्य्याः ४.३१.११. **वृणे**=स्वीकरोमि ३.१२.३. शुभगुणैराच्छादयामि ३.३७.९. प्राप्नुयाम् ३.१२.५. **वृण्वते**=सम्भजन्ते १.५.४. स्वीकुर्वन्ति ७.३२.१६, **वृण्वे**=स्वीकुर्य्याम् ४.२१.८, [वृञ् वरणे

(क्रया०) धातोर्लट् । अन्यत्र लिङ् लोट् च । वृण्वते प्रयोगे वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लट्]

वृणानः स्तूयमानः (सोमः=उत्पन्नः पदार्थसमूहः) १.१०८.६. **वृणानाः**=स्वीकुर्वाणाः (प्रजापुरुषाः) ७.१८.१२. [वृञ् वरणे (क्र्या०) धातोः शानच्]

वृतञ्चयः यो वर्त्तते तं चिनोति स (शमादिशुभकर्माचारिजनः) २.२१.३. [वृतोपपदे चिञ् चयने (स्वा०) धातोः खश्छान्दसः । वृतम्=वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कः]

वृतम् स्वीकृतम् (क्षोदः=उदकम्) ६.१७.१२. स्वीकर्त्तव्यम् (अंशं=सेवाविभागम्) १.१०२.४. **वृताः**=कृतस्वीकाराः (नरः=नायका जनाः) ४.४२.५. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः क्तः । वृतम् धननाम निघं० २.१०.]

वृतया आवरकया क्रियया ५.४८.२. [वृतप्राति० स्त्रियां टाप् । वृतम् इति व्याख्यातम् । वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तः]

वृता या वर्त्तते तया (शचिष्ठया=अतिशयितया क्रियया) २७.३९. संयुक्तया (शचिष्ठया) ४.३१.१. वर्त्तमानया (शचिष्ठया=प्रज्ञया) ३६.४. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कः । ततः स्त्रियां टाप्]

वृतासः स्वीकृताः (सूर्यवज्जनाः) ७.३३.५. [वृतमिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

वृतेव वर्त्तन्ते यस्मिँस्तेन मार्गेण ६.१.३. [वृत+इव-पदयोः समासः]

वृतौ संवृतावाच्छादने ५.३७.५. [वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तः]

वृत्तम् सर्वतो दृढम् (चक्रम्) ४.३१.४. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः क्तः । 'णेरध्ययने वृत्तम्' अ० ७.२.२६. सूत्रेण वाऽध्ययने णेर्लुक् इडभावश्च निपात्यते]

वृत्रखादः यो वृत्रं मेघं खादति किरणो वायुर्वा ३.४५.२. यो वृत्रं खादति स्थिरीकरोति (राजा) ३.५१.९. [वृत्रोपपदे खादृ भक्षणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण् वृत्रः मेघनाम निघं० १.१०.]

वृत्रघ्ना वृत्रं मेघं हन्ति यस्तेन सूर्येणेव (पराक्रमेण) १.१७५.५. **वृत्रघ्ने**=यः सूर्यो वृत्रं मेघं हन्ति तद्वद्वर्त्तमानाय (सज्जनाय) ३.३१.१४. [वृत्रोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर् मूलविभुजादित्वात् कः । टक् वा 'कृतो बहुलं वे' ति वार्तिकेन । या रोहिणी (गौः) सा वार्त्रघ्नी यामिदं राजा संग्रामं जित्वोदाकुरुते श० ३.३.१.१४. वार्त्रघ्नं वै धनुः श० ५.३.५.२७.]

वृत्रघ्नी मेघहन्त्री विद्युदिव (सरस्वती=वाणी) ६.६१.७. [वृत्रोपपदे हन्तेः कर्त्तरि टक् । ततः स्त्रियां ङीप्]

वृत्रतरम् अतिशयेनाऽऽवरकम् (वृत्रं=मेघम्) १.३२.५. अत्यन्तबलवन्तम् (वृत्रम्=मेघम्) ऋ० भू० ३०३. १.३२.५. [वृत्रप्राति० अतिशायने तरप्]

वृत्रतुरम् यो वृत्रं मेघं धनं वा त्वरयति तम् (इन्द्रं=सूर्यम्) ४.४२.८. वृत्रानिव शत्रूँस्तुर्वति हिनस्ति येन तम् (श्रेष्ठं विजयम्) ६.२०.१. **वृत्रतुरः**=वृत्रं मेघं तूर्वति यास्ता विद्युत इव ६.३४. [वृत्रोपपदे तुर्वी हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः क्विप् । ञित्वर सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोर्वा क्विप् । (यजु० ६.३४.) वृत्रतुर इति वृत्रं ह्येता (आपः) अघ्नन् श० ३.९.४.१४.]

वृत्रतुरा यौ वृत्राणां मेघवदुन्नतानां शत्रूणां तुरौ हिंसकौ (सभासेनेशौ) ६.६८.२. [वृत्रतुरमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वृत्रतूर्ये वृत्रस्य मेघस्य तूर्यो वधस्तस्मिन्, प्र०—वृत्र इति मेघनामसु पठितम् निघं० १.१०. तूरी गतित्वरणहिंसनयोः इत्यस्मात् कर्मणि ण्यत् वृत्रतूर्यं इति सङ्ग्रामनाम निघं० २.१७, १.१३. शत्रुवधे २.२६.२. वृत्रस्य मेघस्य तूर्यं हननं यत्र तद्वद्वर्त्तमाने सङ्ग्रामे ६.१३.१. मेघस्य हिंसने ६.६१.५. वृत्रस्य तूर्ये शीघ्रवेगे १.१३. **वृत्रतूर्येषु**=वृत्राणां शत्रूणां मेघावयवानां वा तूर्येषु हिंसनकर्मसु सङ्ग्रामेषु १.१०६.२. [वृत्र-तूर्यपदयोः समासः । वृत्रमिति व्याख्यास्यते । तूर्यम्=तूरी गतित्वरणहिंसनयोः (दिवा०) धातोर्ण्यत् । वृत्रतूर्ये संग्रामनाम निघं० २.१७.]

वृत्रपुत्रा वृत्रः पुत्र इव यस्याः सा (सूः=माता) १.३२.९. [वृत्र-पुत्रपदयोः समासः]

वृत्रम् मेघमिव न्यायाऽऽवरकं शत्रुम् १०.८. मेघमिवाऽविद्याम् ४.१८.११. प्रकाशाऽऽवरकं मेघमिव धर्माऽऽवरकम् (दुष्टं शत्रुम्) ३३.२६. आच्छादकम् (अहिं=मेघम्) ६.२०.२. जलं स्वीकुर्वन्तं प्रजासुखं स्वीकुर्वन्तं वा (मेघं शत्रुं वा) १.८०.२. धनम् ७.४८.२. वरणीयम् (धनम्) १.१८७.१. **वृत्राणाम्**=धर्माऽऽवरकाणाम् (दुर्जनानाम्) ६.२६.८. वृत्रवत् सुखावरकाणां शत्रूणां मेघानां वा १.४.८. **वृत्राणि**=आवरका घना इव शत्रुसैन्यानि ३.३०.२२. प्रेमास्पदवस्तूनि ३.५०.५. वृत्रसम्बन्धिभूतानि जलानि १.८४.१३. शत्रूणामावरकाणि कर्माणि १.५३.६. [वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३ सूत्रेण

रक्। वृत्रः मेघनाम निघं० १.१०. वृत्रं धननाम निघं० २.१०. वृत्रो वृणोतेर्वा वर्त्ततेर्वा वर्धतेर्वा। यदवृणोत्तद् वृत्रस्य वृत्रत्वमिति विज्ञायते। यदवर्त्तत तद् वृत्रस्य वृत्रत्वमिति विज्ञायते। यदवर्धत तद् वृत्रस्य वृत्रत्वमिति विज्ञायते नि० २.१७. तत्को वृत्रः ? मेघ इति नैरुक्ताः। त्वाष्ट्रोऽसुर इत्यैतिहासिकाः नि० २.१६. वृत्रो ह वाऽइदं सर्वं वृत्वा शिश्ये। यदिदमन्तरेण द्यावापृथिवी स यदिदं सर्वं वृत्वा शिश्ये तस्माद् वृत्रो नाम श० १.१.३.४. स यद् वर्त्तमानः समभवत् तस्माद् वृत्रः श० १.६.३.९. तथैवैतद् यजमानः पौर्णमासेनैव वृत्रं पाप्मानं हत्वापहतपाप्मैतत् कर्मारभते श० ६.२.२.१९. पाप्मा वै वृत्रः श० ११.१.५.७. (यजु० ११.३३) वृत्रहणं पुरन्दरमिति पाप्मा वै वृत्रः पाप्महनं पुरन्दरमित्येतत् श० ६.४.२.३. इन्द्रो वै वृत्रहा कौ ४.३. वृत्रशङ्कुं दक्षिणतोऽघस्यैवानत्ययाय श० १३.८.४.१. (यजु० १०.८.) त्वयायं वृत्रं वधेदिति त्वयायं द्विषन्तं भ्रातृव्यं वधेदित्येवैतदाह श० ५.३.५.२८. यदिमाः प्रजा अशनमिच्छन्तेऽस्माऽएवैतद् वृत्रायोदराय बलिं हरन्ति श० १.६.३.१७. (इन्द्रः) तं (वृत्रं) द्वेधान्वभिनत्तस्य यत् सौम्यं न्यक्तमास तं चन्द्रमसं चकाराथ यदस्या सूर्यमास तेनेमाः प्रजाः उदरेणाविध्यत श० १.६.३.१७. वृत्रो वै सोम आसीत् श० ३.४.३.१३. अथैष एव वृत्रो यच्चन्द्रमाः श० १.६.४.१३. महनाम्नीभिर्वा इन्द्रो वृत्रमहन् कौ० २३.२. (इन्द्रः) एताभिः (अद्भिः) ह्येनम् (वृत्रम्) अहन् श० १.१.३.८. वृत्रतुरः (यजु० ६.३४) इति वृत्रं ह्येताः (आपः) अघ्नन् श० ३.९.४.१६. आपो ह वै वृत्रं जघ्नुस्तेनैवैतद् वीर्येणापः स्यन्दन्ते श० ३.९.४.१४. महाहविषा ह वै देवा वृत्रं जघ्नुः श० २.५.४.१. एतैर्वै (साकमेधैः) देवाः वृत्रमघ्नन्नेतैर्वेव व्यजयन्त येयमेषां विजितिस्ताम् श० २.५.३.१. (वृत्रस्य वधसमये) महान् घोष आसीत् तां० १३.४.१. तस्य (वृत्रस्य) एतच्छरीरं यद् गिरयो यदश्मानः श० ३.४.३.१३. वृत्रस्य ह्येष कनीनकः (यदाञ्जनम्) श० ३.१.३.१५. मरुतो हवै सांतपना मध्यन्दिने वृत्रं सन्तेपुः स, संतप्तोऽनन्नेव प्राणन् परिदीर्णः शिश्ये श० २.५.३.३. मरुतो ह वै क्रीडिनो वृत्रं हनिष्यन्तमिन्द्रमागतं तमभितः परिचिक्रीडुर्महयन्तः श० २.५.३.२०. स यो हैवमेतं वृत्रमन्नादं वेदान्नादो हैव भवति श० १.६.३.१७. वार्त्रघ्न वै पौर्णमासं (हविः) इन्द्रो ह्येतेन वृत्रमहन्नथैतदेव वृत्रहत्यं यदामावास्यं (हविः) वृत्रं ह्यस्माऽएतज्जघ्नुषऽआप्यायनमकुर्वन् श० १.६.४.१२.]

वृत्रहणम् यो वृत्रं मेघं सूर्य इव शत्रून् हन्ति तम् (वीरपुरुषम्) ६.१७.११. येन वृत्रं हन्ति तम् (वज्रम्) ६.२०.९. शत्रूणां हन्तारम् (इन्द्रं=शालाध्यक्षम्) प्र०—अत्र 'हन्तेरत्पूर्वस्य' अ० ८.४.२२. इति णत्वम् १.१०६.६. **वृत्रहणौ**=वृत्रस्य मेघस्य हन्तारौ (इन्द्राग्नी=वायुसवितारौ) १.१०८.३. **वृत्रहन्**=मेघहन्ता सूर्य इव शत्रुहन्तः सेनापते १७.४२. यो वृत्रं धनं हन्ति प्राप्नोति तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ३.४०.८. प्राप्तधन (राजन्) ४.३२.११. **वृत्रहभिः**=यैः कर्मभिर्वृत्रं हतस्तैः ६.६०.३. **वृत्रहा**=यो वृत्रं मेघं हन्ति सः (इन्द्रः=वायुः), प्र०—अत्र 'ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्' अ० ३.२.८७. अनेन हनधातोः क्विप् १.१६.८. यो दुःखप्रदान् शत्रून् मेघदोषान्वा हन्ति सः (परमेश्वर ओषधिराजो वा) १.९१.५. मेघहन्ता सूर्य इवाऽविद्याऽन्धकारनाशक ईश्वरः १.७४.३. तत्तत्पापफलदानेन यो वृत्रान् धर्माऽवरकान् हन्ति सः (इन्द्रः=परमेश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.१००.२. यो वृत्रं मेघं हन्ति स सूर्यः २०.७५. मेघ का नाश करने वाला (सूर्य) सं० वि० १९५, ९.११३.१. [वृत्रमिति व्याख्यातम्। तदुपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'ब्रह्मभ्रूणवृत्रेषु क्विप्' अ० ३.२.८७. सूत्रेण क्विप्। वृत्रहणम्=मेघहनम् नि० ७.२३]

वृत्रहणा वृत्रं दुष्टमसुरप्रकृतिं हन्तारौ सभासेनेशौ ३.१२.४. यौ वृत्रं मेघं हतस्तौ (विद्युतौ=राजाऽमात्यौ) ६.६०.३. [वृत्रहणमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

वृत्रहत्याय मेघस्य हननाय ५.२९.७. सङ्ग्रामाय ६.१८.९. **वृत्रहत्ये**=वृत्रस्य हत्या हननमिव शत्रुहननं यस्मिन्त्सङ्ग्रामे तस्मिन् ४.१९.१. महासङ्ग्रामे ४.२४.२. वृत्रस्य शत्रुसमूहस्य मेघस्य वा हत्या हननं येन तस्मिन् सङ्ग्रामे १.१०९.५. [वृत्रोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनस्त च' अ० ३.१.१०८ सूत्रेण क्यप् तकारश्चान्तादेशः]

वृत्रहत्ये वृत्रस्य दुष्टस्य हत्ये हननाय ३३.५०. [वृत्रोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनस्त च' सूत्रेण क्यप्]

वृत्रहथानाम् वृत्रा मेघा इव वर्त्तमानाः शत्रवो हथा हता यैस्तेषाम् (पुरुषार्थिजनानाम्) ३.१६.१. [वृत्र-हथपदयोः समासः। हथः=हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनिकुषि०' उ० २.२ सूत्रेण क्थन्]

वृत्रहन्तम यो वृत्रं धनं हन्ति प्राप्नोति सोऽतिशयित-

स्तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ५.३५.६. अतिशयेन शत्रुविनाशक (राजन्) ५ ४०.२. **वृत्रहन्तमम्**=यो वृत्रं मेघं हन्ति तमतिशयितं सूर्यमिव (साम) २०.३०. [वृत्रहन् इति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

वृत्रहन्तमा अतिशयेन वृत्राणामावरकाणां पापिनां हन्तारौ (अ०—सभासेनाध्यक्षौ) ३३.७६. [वृत्रहन्तम इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वृत्रहम् शत्रुनाशकम् (शवः=बलम्), धनप्रापकम् (शवः) ६.४८.२१. [वृत्रोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः कर्त्तरि डश्छान्दसः]

वृत्रा वृत्राणि मेघाऽवयवान् ४.१७.१९. मेघावयवरूपाणि धनानि ३.३०.४. [वृत्रमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः]

वृत्वाय स्वीकृत्य, प्र०—अत्र 'क्त्वो यक्' इति यगागमः ११.१९. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः क्त्वा । क्त्वो यक्' अ० ७.१.४७. सूत्रेण यगागमः]

वृत्वी आवृत्य १.५२.६. [वृञ् आवरणे (चु०) धातोः क्त्वा । 'स्नात्व्यादयश्च' अ० ७.१.४९. सूत्रेण क्त्व ईकारान्तादेशः]

वृथक् पृथक्, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययः ३३.२. [पृथक् इति स्वरादिषु पाठादव्ययम् । पकारस्य वकारो व्यत्ययेन]

वृथा व्यर्थम् १.५८.४. मिथ्या १.१४०.५. निष्प्रयोजनाय १.१३०.५. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः था प्रत्ययश्छान्दसः । अव्ययमेतत्]

वृथाषाट् यो वृथाऽनायासेन सहते सः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६३.४. [वृथोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण ण्विः]

वृद्धम् प्रभूतं बहुरूपं धनादिकम् १८.४. वयोविद्याभ्यामधिकम् (राजाऽमात्यम्) ७.१८.१२. भुक्ताऽऽयुष्कं विद्यया महान्तं वा (इन्द्रं=परमेश्वरम्) ३.३२.७. विद्यावयोभ्यां ज्येष्ठम् (अ०—आत्मानम्) ३.९.१४. सर्वेभ्यो विस्तीर्णम् (राजानम्) ४.१९.१. **वृद्धस्य**=ज्ञानादिगुणैः श्रेष्ठस्य (सज्जनस्य) १.५१.६. **वृद्धः**=ज्ञानादिसर्वगुणग्रहणेन सर्वोपकारकरणे च श्रेष्ठः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) १.५.६. स्थविरः (इन्द्रः=राजा) ६.४४.३. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

वृद्धमहाः वृद्धैः पूजितः (इन्द्रः=राजा) ६.३७.५. वृद्धा महान्ताः सहाया यस्य सः (राजा) ६.२०.३. [वृद्ध-महस्पदयोः समासः । महः महन्नाम निघं० ३.३.]

वृद्धयः वर्ध्यन्ते यास्ताः (प्रशंसाः) १.१०.१२. वृद्ध्यन्ते यास्ताः) गिरः=स्तुतिवाचः) ५.२९. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

वृद्धवयाः वृद्धं वयो जीवनं यस्य सः (राजा) २.२७.१३. [वृद्ध-वयस्पदयोः समासः । वयः अन्ननाम निघं० २.७.]

वृद्धशवसः वृद्धं शवो बलं येषां तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जनाः) ५.८७.६. [वृद्ध-शवस्पदयोः समासः । शवः उदकनाम (निघं० १.१२) बलनाम (निघं० २.९) धननाम (निघं० २.१०.]

वृद्धशोचिषः वृद्धा शोचिर्दीप्तिर्यस्य सः (मित्रः) ५.१६.३. [वृद्धा-शोचिष्पदयोः समासः । शोचिः ज्वलतोनाम निघं० १.१७.]

वृद्धश्रवाः वृद्धं श्रवः श्रवणमन्नं वा सृष्टौ यस्य सः (इन्द्रः=परमेश्वरः) १.८९.६. वृद्धं श्रवः सर्वशास्त्रश्रवणं यस्य सः (इन्द्रः=सेनाधीशः) १०.९. [वृद्ध-श्रवस्पदयोः समासः । श्रवः अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०. वृद्धोपपदाद्वा श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः 'गतिकारकोपपदयोः पूर्वपदप्रकृतिस्वरत्वञ्च' उ० ४.२२७ सूत्रेणाऽसुन्]

वृद्धसेनाः वृद्धा-प्रौढा सेना येषान्ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १.१८६.८. [वृद्धा-सेनापदयोः समासः]

वृद्धायुम् आत्मनो वृद्धमिच्छतीति तम् (इन्द्रम्=ईश्वरम्) १.१०.१२. वृद्ध इवाऽऽचरन्तम् (ईश्वरं सभाध्यक्षं वा), प्र०—अत्र 'क्याच्छन्दसि' इत्युः ५.२९. [वृद्धपदाद् इच्छायामर्थे क्यजन्ताद्; आचारेऽर्थे वा क्यङन्तात् 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः]

वृद्धिः वर्द्धन्ते यया सत्क्रियया सा १८.४. **वृद्ध्या**=वर्द्धनेन २३.१३. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

वृधन्तम् वर्धमानं वर्धयन्तं वा (सूनुं=पुत्रम्) ६.६६.११. **वृधन्तः**=वर्धमानाः (मरुतः=जगद्धितैषिणो जनाः) ६.४९.११. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शतृप्रत्ययः । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् । व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च]

वृधम् वर्द्धकं व्यवहारम् ३.१६.२. वर्धनम् १.१६७.५. **वृधः**=वृद्धिकरः (राजा) ६.४८.२. वर्धकः (राजा) ७.३२.२५. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कः]

वृधः ये युद्धे वर्द्धन्ते तान् (वीरजनान्) १.८१.२.

वर्धकस्य (रायः=धनस्य राज्यस्य वा) ७.३०.१. **वृधे**= वृद्धये ४.२३.२. वर्धनाय ४.२.१८. वृद्धि वा रक्षा के लिए आर्याभि० १.१०, ऋ० १.६.१५.५. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

वृधसानः यो वृधान् वर्द्धकान् विभजति सः (अग्निः= राजा) ४.३.६. वर्धमानः (तोदः=व्यथनम्) ६.१२.३. [वृधमिति व्याख्यातम्। तदुपपदे षण् सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। अथवा वर्धतेर्वा 'ऋञ्जिवृधिमन्दि०' उ० २.८७. सूत्रेण असानच्]

वृधसानासु वर्धमानासु प्रजासु २.२.५. [वृधसान इति व्याख्यातम्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

वृधसे वर्धितुम् ५.६४.५. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे कसेन्]

वृधस्नू यौ वृधान् प्रस्नवतस्तौ (वाय्वग्नी) ४.२.३. [वृधोपपदे ष्णु प्रस्नवणे (अदा०) धातोः क्विप्]

वृधातः वर्द्धेताम्, प्र०—अत्र, लेटि विकरणव्यत्ययेन शः परस्मैपदञ्च २०.४२. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लेट्। व्यत्ययेन शः परस्मैपदञ्च]

वृधानः वर्द्धमानो वर्धयिता वा (कालो विद्युदग्निर्वा) १.९५.११. वृद्धं कुर्वन् (जगदीश्वरः) १७.२१. वर्द्धमानः (घृतयोनिः=अग्निः), प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शानचि शपो लुक् ३५.१७. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शानच्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

वृधासः सुखवर्द्धकाः (विश्वेदेवाः=विद्वज्जनाः) १.८६.२. वर्धमाना वर्द्धयितारो वा (मरुतः=विद्वांसो जनाः) १.१७१.२. [वृधप्राति० जसोऽसुक्। वृधः=वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कः]

वृधि उद्घाटयोद्घाटयति वा, प्र०—अत्र वृञ् धातोः प्रयोगः 'बहुलं छन्दसि' अ० २.४.७३. अनेन श्नोर्लुक् 'श्रुशृणुपृकृवृभ्यश्छन्दसि' अ० ६.४.१०२. अनेन हेर्धिः १.७.६. दूरी कुरु ७.१७.२. वर्धय ४.३१,१३. वृणु वृणोति वा, प्र०—अत्र पक्षान्तरे सूर्यस्य प्रत्यक्षत्वात् प्रथमाऽर्थे मध्यमः १.१०.७. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि श्नोरपि लुक्। हेर्धिरादेशश्छान्दसः]

वृश्च छिन्धि १.५१.७. **वृश्चत्**=छिनत्ति १.६१.१०. **वृश्चति**=छिनत्ति ३.५३.२२. **वृश्चन्ति**=छिन्दन्ति ६.२.९. **वृश्चसि**=छिनत्सि १.१३०.४. **वृश्चः**=छिन्धि ४.१७.७. [ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोर्लोट्। 'ग्रहिज्या०' इति सम्प्रसारणम्। अन्यत्र लङ् लट् च। वृश्चति वधकर्मा निघं० २.१९. वृश्चति दानकर्मा निघं० ३.२०]

वृश्चद्वनम् वृश्चन् छिन्दद्वनं यस्मिन् तत् (रोगरहितमपत्यम्) ६.६१.१. [वृश्चद्-वनपदयोः समासः। वृश्चत्= ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोः शतृ]

वृश्चिक यो वृश्चति छिनत्त्यङ्गानि तत्सम्बुद्धौ (प्राणिन्) १.१९१.१६. [ओव्रश्चू छेदने (तुदा०) धातोः 'वृश्चिकृषोः किकन्' उ० २.४०. सूत्रेण किकन्]

वृषकर्मन् वृषस्य मेघस्य कर्माणीव कर्माणि यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभेश) १.१३०.१०. वृषस्य श्रेष्ठस्येव कर्माणि यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाध्यक्ष) १.६३.४. [वृष-कर्मन्पदयोः समासः। वृषः=वृषु सेचने (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

वृषक्रतुः वृषा बलवती क्रतुः प्रज्ञा यस्य सः (इन्द्रः= वीरपुरुषो राजा) ६.४५.१६. **वृषक्रतो**=वृषाणां बलवतां प्रज्ञाकर्माणीव प्रज्ञाकर्माणि यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ५.३६.५. [वृषा-क्रतुपदयोः समासः। क्रतुः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

वृषखादयः ये वृषान् रसवर्षकान् पदार्थान् खादयन्ति ते (नरः=नायका जनाः) १.६४.१०. [वृष-खादिपदयोः समासः। खाद्द भक्षणे (भ्वा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' इतीक्। अन्तर्भावितण्यर्थः]

वृषजूतिः वृषस्येव जूतिर्वेगो यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ५.३५.३. [वृष-जूतिपदयोः समासः। जूतिः=जु इति सौत्रो धातुः। ततः 'ऊतियूति०' सूत्रेण क्तिन् दीर्घश्च]

वृषणम् यो वर्षति जलं स वृषा तम् (मेघम्), प्र०—अत्र 'कनिन्युवृषि०' उ० १.१५६. इति कनिन् प्रत्ययः 'वा षपूर्वस्य निगमे' अ० ६.४.९. इति विकल्पाद् दीर्घाऽभावः १.१६.१. वर्षयितारम् (अग्नि=सूर्याख्यम्) ११.४६. विद्यावृष्टिकर्तारम् (अध्यापकम्) १.१०१.१. बलकरम् सोमं=सोमलताद्योषधिरसम्) २.१६.५. वृष्टिकरं यज्ञम् ३४.१४. बलिष्ठम् (इन्द्रं=शत्रुविदारकं राजानम्) २०.५४. सुखवर्षकम् (रथं=विमानादियानम्) ५.७५.१. सेचकम् (इन्द्रं=परमेश्वरम्) १.१३१.३. वीर्याधारम् २५.७. अग्निजलवर्षणयुक्तं यानसमूहम् १.८५.७. शत्रुसेनाया उपरि शस्त्राऽस्त्रवर्षानिमित्तम् (अश्वं=विद्युतम्) १.११८.९. शत्रूणां शक्तित्वबन्धकम् (रथम्) १.८२.४. शत्रुसामर्थ्यप्रतिबन्धकम् (शुष्मं=बलम्) ६.१९.८. दृढम् (रथम्) १.१७७.३. वीर्यवन्तम् (पतिम्) १.१७९.४.

वृषणः=वृष्टिकराः (पर्वतासः=मेघाः) ३.५४.२०. वीर्य सींचने में समर्थ पूर्ण-युवावस्थायुक्त पुरुष-गण स० प्र० ११०, १.१७९.१. बलवन्तः (शिल्पिजनाः) १.१०९.३. वर्षन्ति ये तत्सम्बुद्धौ (सभाद्यध्यक्षादयः) १.८५.१२. प्रबला युवानः (अत्याः=अश्वाः) १.१७७.२. **वृषणे**=वीर्यसेचनसमर्थाय प्राप्तचत्वारिंशद्वर्षाय ब्रह्मचारिणे ३.५७.३. **वृषन्**=वर्षति सुखानि तत्सम्बुद्धौ वर्षयति जलं स वा (इन्द्र=परमेश्वर सूर्यो वा) १.७.६. शक्तिमन् (न्यायाधीश राजन्) २३.२१. तेजस्विन् (इन्द्र=नृप) ६.३३.१. **वृषभ्याम्**=बलयुक्ताभ्याम् (हरिभ्यां=हस्ताभ्याम् ५.३६.५. **वृषा**=रसादिपूर्णः (राजा) १.१७७.३. परशक्तिबन्धकः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) २.१६.४. वेगवान् (रथः=यानम्) २.१६.६. वृष्टिहेतुः (विद्युद्रूपोऽग्निः) ३.६१.७. शुभगुणवर्षणकर्त्ता (इन्द्रः=ईश्वरः सूर्यो वा) १.७.८. सत्योपदेशवर्षकः समर्थः (अध्यापक उपदेशको वा) १.५५.४. कृषिकर्मकुशलः (वृषभः) १.१७६.२. वीर्यकारी (अग्निः) ३.२.११. वर्षकः सूर्य इव वीर्यसेचकः (पतिः) ६.१६.१५. उत्तम गुणों और पदार्थों की वृष्टि करने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.५२, ऋ० २.८.१२.२. **वृषणौ**=बलिष्ठौ राजाऽमात्यौ ७.६०.९. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'कनिन् युवृषि०' उ० १.१५६. सूत्रेण कनिन्। वृषा वर्षिता नि० ११.४७. वृषा (यजु० ३८.२२.) एष वै वृषा हर्य्यं एष (सूर्यः) तपति श० १४.३.१.२६. इन्द्रो वै वृषा तां० ९.४.३. इन्द्रो वृषा श० १.४.१.३३. समग्निरिध्यते वृषा श० १.४.१.२९. योषा वै वेदिर्वृषाग्निः श० १.२.५.१५. वृषा हि मनः श० १.४.४.३. योषा वै स्रुग्वृषा स्रुवः श० १.३.१.९. वृषा हि स्रवः श० १.४.४.३. वृषा वै राजन्यः तां० ६.१०.९. (हे ऽश्व त्वं) वृषासि तां० १.७.१. आण्डाभ्यां हि वृषा पिन्वते श० १४.३.१.२२. पश्चाद्वै परीत्य वृषा योषामधिद्रवति तस्यां रेतः सिञ्चति श० २.४.४.२३. वृषा हिङ्कारः गो० पू० ३.२३.]

वृषणा विद्यावर्षयितारौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५१.३. वृषवद् बलिष्ठौ (हरी=अश्वौ) ८.३४. वरौ (अध्वर्यू=विद्वज्जनौ) २.१६.५. सुबलौ (अश्विनौ=दम्पती) १.१७७.१५. पोषकौ (इन्द्राग्नी=वायुसवितारौ) १.१४८.२. वृष्टिकरौ वायुविद्युतौ ३.४३.४. यौ वर्षयतो दुष्टानां शक्तिं बन्धयतस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५१.२. बलिष्ठावश्वौ १.१७७.१. [वृषन् इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः। 'वा षपूर्वस्य निगमे' अ० ६.४.९. सूत्रेण विकल्पाद् दीर्घाऽभावः। वृषोपपदे णह बन्धने (दिवा०) धातोर्डश्छान्दसः]

वृषणश्वस्य वृषणो वृष्टि-हेतवो यानगमयितारो वा ऽश्वा यस्य तस्य (शिल्पक्रियामिच्छुजनस्य), प्र०—अत्र 'वृषण्वस्वश्वयोश्च' अ० १.४.१८. अनेन वार्त्तिकेन भसंज्ञाकरणान्नलोपो न णत्वं च भवति १.५१.१३. [वृषन्-अश्वपदयोः समासः। 'वृषण्वस्वश्वयोश्च' अ० १.४.१८. वा०सूत्रेण भत्वान्नलोपो न भवति णत्वं च भवति]

वृषण्वन्तम् वेगवन्तम् (रथम्) १.१००.१६. [वृषन्. प्राति० मतुप्। 'अनो नुट्' अ० ८.२.१६. सूत्रेण मतोर्नुडागमः]

वृषण्वसू वृष्णं वर्षयित्रीणां वासयितारौ (वह्निवायू) २.४१.८. यौ वृष्णौ बलिष्ठौ देहौ वासयतस्तौ (स्त्रीपुरुषौ) ५.७५.९. वृषाणो विद्याक्रियाबलयुक्ता वसवो वासकर्त्तारो मनुष्या ययोस्तौ (हरी=जलाग्न्याख्यौ) १.१११.१. वर्षकौ वसन्तौ च (सूर्यवायू इव शिल्पिनौ) ११.१३. यौ वृष्णो बलिष्ठान् वीरान् वासयतस्तौ (राजराजोपदेशकौ) ४.५०.१०. [वृषन्-वसुपदयोः समासः। 'वृषण्वस्वश्वयोः' अ० १.४.१८. वा०सूत्रेण भत्वान्नलोपो न भवति]

वृषण्वान् अन्ययानानां वेगशक्तिबन्धयिता (रथः=यानम्) १.१८२.१. वृष्टिहेतुः (वातः) १.१२२.३. बलवान् (योधीयान् नरः) १.१७३.५. **वृषण्वन्तम्**=वेगवन्तम् (रथं=विमानादियानसमूहम्) १.१००.१६. [वृषन्प्राति० मतुप्। 'अनो नुट्' अ० ८.२.१६. सूत्रेण नुडागमः]

वृषत्वा सुखवर्षकाणां भावस्तानि (तत्त्वानि), प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति शिलोपः १.५४.२. **वृषत्वेभिः**=विद्यासुखवर्षणैः १.९१.२. [वृषप्राति० भावे त्वः। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

वृषदंशः मार्जालः २४.३१.

वृषधूतस्य वृषैः सेचनैर्यो धूतो विलोडितस्तस्य (ओषधेः) ३.३६.२. वृषा बलिष्ठाः पदार्था धूताः कम्पिता येन तस्य (मित्रस्य) ३.४३.७. [वृष-धूतपदयोः समासः। धूतः=धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोः क्तः]

वृषन् वृष इवाऽऽचरन् (इन्द्र=ऐश्वर्यमिच्छुकजन) ५.४०.१. आनन्दं वर्षयन् (विद्वज्जन) १.१३१.५. [वृषप्राति० आचारे क्विबन्ताच्छतृ। अथवा वृषु सेचने (भ्वा०) धातोः शतृ 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

वृषन्तमम् सर्वानभीष्टान् कामान् वर्षतीति वृषा सोऽतिशयितस्तम् (इन्द्रं=परमेश्वरम्), प्र०—कनिन्युवृषि०' उ० १.१५४. अनेन वृषधातोः कनिन्प्रत्ययः

'अयस्मयादीनि छन्दसि' १.४.२०. इत्यनेन भसंज्ञया नलोपाऽभावः 'उभयसंज्ञान्यपि छन्दसि दृश्यन्ते' इति पदसंज्ञाऽऽश्रयणात् टिलोपाऽभावः १.१०.१०. **वृषन्तमस्य**=अतिशयेन बलिष्ठस्य (राज्ञः) ५.३५.३. अतिशयेनोत्तमानां कामानामभिवर्षयितुस्तव (इन्द्रस्य=ईश्वरस्य) १.१०.१०. **वृषन्तमः**=अतिशयेन सुखवर्षकः (इन्द्रः=परमेश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.१००.२. अतिशयेन वृष्टिकर्त्ता (इन्द्रः=विद्युत्) ६.५७.४. [वृषन् इति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप् । तस्य 'तरप्तमपौ घः' इति घसंज्ञायां 'नाद् घस्य' अ० ८.२.१७. सूत्रेण नुट्]

वृषन्धिम् बलिष्ठानां धारकम् (चतुरश्रि=सेनाम्) ४.२२.२. [वृषन् इत्युपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'कृतो बहुलम्' इति कर्त्तरि किः । वृषन्धिः मेघनाम निघं० १.१०.]

वृषपर्वा वृषाणि समर्थानि पर्वाणि पालनानि यस्य सः (ऋभुः=मेधाव्याप्तजनः) ३.३६.२. [वृष-पर्वन्पदयोः समासः । पर्वन्=पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'स्नामदिपद्यर्ति०' उ० ४.११३. सूत्रेण वनिप्]

वृषपाणयः वृषस्येव पाणिर्व्यवहारो येषान्ते (अश्वाः=तुरङ्गा वह्न्यादयो वा) ६.७५.७. रक्षका वृषा बलिष्ठा वृषभादय उत्तमाः प्राणिनः पाणिवद् येषान्ते (राजपुरुषाः) २९.४४. [वृष-पाणिपदयोः समासः। पाणिः=पण् व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः 'इण् अजादिभ्यः' इतीण्]

वृषपाणासः वर्षन्ति यैस्तानि वृषाणि पानानि येषान्ते (उद्भिदः=ओषधयः) १.१३९.६. [वृषपानपदयोः समासे जसो ऽसुक् । पानम्=पा पाने (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

वृषपाणेषु ये वर्षन्ति पोषयन्ति ते वृषाः सोमादयः पदार्थास्तेषां पानेषु १.५१.१२. [वृष-पानपदयोः समासः । 'वा भावकरणयोः' अ० ८.४.१०. सूत्रेण णत्वम्]

वृषप्रभर्मा यो वर्षणशीलं मेघं प्रबिभर्त्ति सः (सूर्यः) ५.३२.४. [वृषोपपदे प्रोपसृष्टाद् डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्मनिन्]

वृषभ श्रेष्ठ (सज्जन) २.३.११. उपदेशवर्षक (विद्वज्जन) १.१६५.७. प्राप्तशरीरात्मबल (अग्ने=विद्वज्जन) ३.१५.३. यो वर्षति तत्सम्बुद्धौ (जन) १७.८८. रोगनिवारणेन बलप्रद (रुद्र=वैद्य) २.३३.१५. परशक्तिबन्धकत्वेन बलिष्ठ (राजन्) १.१७७.३. **वृषभम्**=अत्युत्तमम् (बृहस्पतिं=राजानम्) ३.६२.६. प्रशस्तम् (विद्वांसम्) ३.४.३. सर्वाभीष्टवर्षकम् (इन्द्रं=परमेश्वरम्) १.९.४. सर्वोत्कृष्टं बलिष्ठम् (इन्द्रं=राजानम्) २८.४. वृषभ इव बलिष्ठम् (राजानम्) ४.१८.१०. सर्वलोकस्तम्भकम् (सूर्यम्) १.१६०.३. **वृषभस्य**=वर्षकस्य सूर्यस्य ४.१.११. यज्ञादिद्वारा वृष्टिकरस्य (विद्वज्जनस्य) १.१४१.२. सुखाभिवर्षकस्य सभापतेः ८.४९. पुष्टिकरस्य (सोमस्य=रसस्य) २.१६.६. **वृषभः**=यो वृषान् वृष्टिनिमित्तानि भाति सः (सूर्यः) १.५४.२. जलवद् वर्षयति शस्त्रसमूहम् १.३३.१०. बलीवर्द इव (मेघः) ५.८३.१. अनन्तबलः (परमात्मा) ३.५६.३. दुष्टसामर्थ्य-हन्ता (अलंविद्यो जनः) २.१.३. सुखानां वर्षणात् (परमात्म-बोधो धर्मव्यवहारो वा) ४.५८.३. मेघशक्तिनिरोधकः (इन्द्रः=सूर्यलोकः) २.१२.१२. शरीरात्मबलैश्वर्ययुक्तः (इन्द्रः=सेनापतिः) ७.३८. सुखानामभिवर्षकः (अ०—यज्ञः शब्दो वा) १७.९१. अत्यन्तं कर्त्ता (इन्द्रः=राजा) ६.४४.२१. अतीव बलवान् (राजा) १.१७७.१. विद्वच्छिरोमणिः (अध्यापकः) १.१९०.८. यो वर्षति सुखानि सः (जगदीश्वरः) १.३१.५. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'ऋषिवृषिभ्यां कित्' उ० ३.१२३ सूत्रेणाभच् किच्च । वृषभः पदनाम निघं० ५.३. वृषभः वर्षितापाम् नि० ४.८. वृषभः प्रजां वर्षतीति वातिबृहति रेत इति वा तद् वृषकर्मा वर्षणाद् वृषभः नि० ९.२२. वृषभ इति । एष (आदित्यः) ह्येवाऽऽसाम्प्रजानाम् ऋषभः जै० उ० १.२९.८. स एष (आदित्यः) सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मान् (ऋ० २.१२.१२. जै० उ० १.२८.२.]

वृषभान्नाय वृषभमन्नं यस्मात्तस्मै (सूर्याय) २.१६.५. [वृषभ-अन्नपदयोः समासः]

वृषभासः वर्षकाः (अद्रयः=मेघाः) २.१६.५. परशक्तिबन्धकाः (अश्वाः) १.१७७.२. [वृषभप्राति०-जसोऽसुक् । वृषभ इति व्याख्यातम्]

वृषभेव बलिष्ठवृषभवत् (राजपुरुषः) ६.४६.४. [वृषभ-इवपदयोः समासः]

वृषमणः वृषेषु शूरवीरेषु मनो विज्ञानं यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाद्यध्यक्ष) १.६३.४. वृषस्य बलयुक्तस्य मन इव मनो यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ४.२२.६. **वृषमणाः**=वृषे वीर्यसेचने मनो यस्य सः (कुमारः) १.१६७.७. [वृष-मनस्पदयोः समासः]

वृषमन्यवः वृषस्य मन्युरिव मन्युर्येषान्ते (जनाः) १.१३१.२. [वृष-मन्युपदयोः समासः]

वृषरथः बलिष्ठा वृषभा रथे यस्य सः (राजा)

५.३६.५. [वृष-रथपदयोः समासः]

वृषरथासः वृषाः शक्तिबन्धका रथा रमणसाधनानि येषान्ते (अत्याः=अश्वाः) १.१७७.२. वृषा बलयुक्ता रथाः सेनाङ्गानि येषान्ते (राजपुरुषाः) ६.४४.१९. [वृष-रथपदयोः समासे जसोऽसुक्]

वृषरश्मयः रश्मय इव विजयसुखवर्षकास्तेजस्विनः (राजपुरुषाः) ६.४४.१९. [रश्मि-वृषपदयोः समासे वृषस्य पूर्वनिपातश्छान्दसः]

वृषव्रातासः वृषाः शस्त्राऽस्त्रवर्षयितारो व्रातासो मनुष्या येषान्ते (सभाद्यध्यक्षादयः) १.८५.४. [वृष-व्रातपदयोः समासः । व्राताः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

वृषशुष्मम् वृषणां बलिनां बलम् (वाजं=विज्ञानम्) ४.३६.८. [वृषन्-शुष्मपदयोः समासः । शुष्मम् बलनाम निघं० २.९.]

वृषसेनः वृषा बलयुक्ता सेना यस्य सः (राजा) १०.२. [वृषा-सेनापदयोः समासः]

वृषस्व वृष इव बलिष्ठो भव ३.३२.२. सिञ्चस्व १.१०४.९. **वृषेथाम्**=वर्षतः, प्र०—अत्र व्यत्ययेन शः प्रत्यय आत्मनेपदञ्च १.१०८.३. बलिष्ठौ भवेथाम् ६.६८.११. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन शः, आत्मनेपदञ्च]

वृषायते वृष इवाऽऽचरति १.५५.२. **वृषायध्वम्**=आनन्दसेक्तारो वृषा इवाऽऽचरत, प्र०—'कर्त्तुः क्यङ् सलोपश्च' अ० ३.१.११. अनेन क्यङ्प्रत्ययः २.३१. **वृषायन्ते**=वृष इवाचरन्ति ३.७.९. **वृषायसे**=वृष इवाऽऽचरसि १.५८.४. **वृषायिषत**=विद्याधर्मशिक्षया हर्षकारका भवत, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् २.३१. [वृषपदाद् आचारेऽर्थे क्यङ् । ततो धातुसंज्ञायां लट् । अन्यत्र लोट् लुङ् चापि]

वृषायमाणः बलिष्ठः सन् (शूरः=शत्रुहिंसको जनः) २०.४६. वृषं बलं कुर्वाणः (राजपुरुषः) ३.५२.५. वृष इवाचरन् (इन्द्रः=सूर्यलोकः) १.३२.३. [वृषप्राति० आचारेऽर्थे क्यङन्ताच्छानच्]

वृषायुधः ये वृषेण वीर्यवता शूरवीरेण सह युध्यन्ते ते (मनुष्याः=मानवाः), प्र०—वृषोपपदे 'क्विप् च' इति क्विप् 'अन्येषामपि०' इति दीर्घः १.३३.६. [वृषोपपदे युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । पूर्वपदस्य च दीर्घः]

वृष्टयः वर्षाः ५.५३.६. **वृष्टया**=वृष्टिविद्यया १५.६. **वृष्टिम्**=वर्षणम् ५.५८.३. वर्षम् २.६.५. जलसमूहम् २.१६. **वृष्टिः**=दुष्टानां शक्तिर्बन्धिका शक्तिः १.१५२.७. जलवर्षम् १८.९. अन्तरिक्षाज्जलस्याऽधः पतनम् १.३८.८. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'मन्त्रे वृषेषपच०' अ० ३.३.९६. सूत्रेण क्तिन् उदात्तश्च । वृष्टिः (प्रजापतिः) तम् (पाप्मानम्) अवृश्चत् । यदवृश्चत् तस्माद् वृष्टिः तै० ३.१०.९.१. (सविता) रश्मिभिर्वर्षं (समदधात्) गो० पू० १.३६. वृष्टिर्वै याज्या विद्युदेव विद्युद्धीदं वृष्टिमन्नाद्यं संप्रयच्छति ऐ० २.४१. वृष्टिर्वै विराट् तस्या एते घोरे तन्वौ विद्युच्च ह्लादुनिश्च श० १२.८.३.११. तौ (अनड्वाहौ) यदि कृष्णौ स्याताम् अन्यतरो वा कृष्णस्तत्र विद्याद् वर्षिष्यत्यंषमः पर्जन्यो वृष्टिमान् भविष्यतीत्येतदु विज्ञानम् श० ३.३.४.११. अन्नं वृष्टिः गो० पू० ४.४.५. वृष्टिर्वै विश्वधायाः तै० ३.२.३.२. तस्माद्यां दिशं वायुरेति तां दिशं वृष्टिरन्वेति श० ८.२.३.५. मित्रावरुणौ त्वा वृष्टयावताम् (यजु० २.१६) श० १.८.३.१२. इतः प्रदाना वै वृष्टिरितो ह्यग्निर्वृष्टिं वनुते श० ३.८.२.२२. अर्वाचीनाग्रा हि वृष्टिः तै० ३.३.१.३. वृष्टिः सम्मार्जनानि तै० ३.३.१.२. यदा वै द्यावापृथिवी सञ्जानाथेऽथ वर्षति श० १.८.३.१२. वृष्टिर्वै वृष्ट्वा चन्द्रमसमनुप्रविशति ऐ० ८.२८.]

वृष्टिद्यावा वृष्टिश्च द्यौश्च याभ्यान्तौ (वायुविद्युतौ) ५.६८.५. [वृष्टि-दिव्पदयोः समासः । 'दिवो द्यावा' अ० ६.३.२९. सूत्रेण दिवो द्यावादेशः]

वृष्टिमानिव बह्वयो वृष्ट्यो विद्यन्ते यस्मिँस्तद्वत् ७.४०. [वृष्टिमान्-इवपदयोः समासः]

वृष्टिवनये वृष्टेः संविभाजकाय (रश्मये=शोधनाय) ३८.६. [वृष्टि इत्युपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसन०' अ० ३.२.२७. इतीन् । वृष्टिवनिम् वृष्टियाचिनम् नि० २.१२.]

वृष्टीव यथा वृष्टया, प्र०—अत्र टा-स्थाने पूर्वसवर्णादेशः २.५.६. [वृष्टी-इवपदयोः समासः । वृष्टीप्राति० टास्थाने 'सुपां सुलुक्०' इति पूर्वसवर्णदीर्घः]

वृष्ट्वी वृष्ट्वा वर्षित्वा ५.५३.१४. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोः क्त्वा । 'स्नात्व्यादयश्च' अ० ७.१.४९ सूत्रेणेदन्तत्वम्]

वृष्णम् जलेन सुसिक्तम् (धूमं=वाष्पाख्यम्) ३.२९.९. **वृष्णात्**=निकृष्टवर्णात् तमसः १.१२३.९. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० नः किच्च]

वृष्णि सुखवर्षकम् (शवः=बलम्) ५.३५.४. [वृषु

सेचने (भ्वा०) धातोः 'सुवृषिभ्यां कित्' उ० ४.४९. सूत्रेण निः]

वृष्णिः वर्षति, सुखानि वर्षयति वा (अ०—सूर्यकिरणसमूहः), प्र०—'सुवृषिभ्यां कित्' उ० ४.५१. अनेन वृषधातोर्निः प्रत्ययः स च कित् १.१०.२. सुखसेचकः (पुरुषः) १४.९. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

वृष्णोः वृष्टिकर्त्तुः (सूर्यस्य) ऋ० भू० १४७, २३.६२. [वृषु सेचने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० नुः किच्च]

वृष्ण्यम् वृष्णो वीर्यवतः कर्म १२.११२. शत्रुसामर्थ्यप्रतिबन्धकेभ्यो हितम् (क्षत्रम्) १.५४.८. वृषसु वीर्यवत्सु भवम् (शरीरात्मपोषणम्), प्र०—वृषन्-शब्दात् 'भवे छन्दसि' इति यत् 'वा छन्दसि' इति प्रकृतिभावनिषेधः पक्षेऽल्लोपः १.९१.१६. वृषसु भवं साधुं वा (जगत्) ६.८.३. वृषा समर्थस्तस्येमम् (शवः=बलमुदकं वा) ३३.९७. वृषसु हितं बलम् ६.४६.८. **वृष्ण्यानि**=दुष्टशक्तिनिरोधकानि (पौंस्यानि वचनानि) ६.३६.३. पुरुषार्थयुक्तानि कर्म्माणि १.१०८.५. वीर्याणि १२.११३. बलिष्ठानि (स्वसैन्यानि) ६.२५.३. बलेषु साधूनि (सैन्यानि) ४.२१.२. बलकराणि (अपांसि=कर्म्माणि) ४.१९.१०. वीर्यप्रापकानि (पयांसि=जलान्यन्नानि वा) १.९१.१८. [वृषन् इति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे, हितार्थे 'तस्येदम्' इत्यर्थे, साध्वर्थे वा यत्। 'वाछन्दसि' इति प्रकृतिभावस्य विकल्पेनाल्लोपः पक्षे भवति। वृष्ण्यम् (यजु० २.११२) रेतो वै वृष्ण्यम् श० ७.३.१.४६.]

वृष्ण्या वृषभ्यो वीरेभ्यो हितानि बलानि १.५१.७. सुखसेचन-समर्थानि (कर्म्माणि) १.५३.६. [वृष्ण्यमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

वृष्ण्या वृष्णां वर्षकाणां शस्त्रवृष्ट्ये हितया सेनया १.१०२.४. [वृष्ण्यमिति व्याख्यातम्। ततष्टा-स्थाने डादेशश्छान्दसः]

वृष्ण्यवतः वृष्ण्यानि वर्षितं योग्यानि अभ्राणि विद्यन्ते येषु तान् (वायून्) ५.८३.२. **वृष्ण्यवान्**=बलादिबहुप्रिययुक्तः (परमेश्वरः) ६.२२.१. [वृष्ण्यप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्। वृष्ण्यमिति व्याख्यातम्। वृष्ण्यावतः वर्षकर्मवतः नि० १०.११.]

वृष्ण्येभिः वृषसु भवैः किरणैः, प्र०—'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति प्रकृतिभावाऽभावेऽल्लोपः १.१००.१. वृषेषु बलिष्ठेषु भवैर्गुणैः (पराक्रमैः) ३.४६.२. [वृष्ण्यमिति व्याख्यातम्। ततो 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

वृह उच्छिन्धि ६.४५.९. वर्धस्व ३.३०.१७. पृथक्कुरु ६.४४.११. **वृहतम्**=छेदयतम् ६.७४.२. **वृहथः**=वर्धयेथाम् २.३०.६. **वृहः**=उच्छेदयेः ६.४८.१७. [वृह वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट् लङ् च। वृहू उद्यमने (तुदा०) धातोर्वा लोट्]

वृहतात् छिन्द्यात् ४.१६.१२. वर्धयन्तु १.१७४.५. [वृह वृद्धौ (भ्वा०) वृहू उद्यमने (तुदा०) धातोर्वा लोटि 'तुह्योस्तातङ्०' इति तातङ्]

वेट् यो न्यायासने विशति सः (न्यायाधीशः), प्र०—अत्र विशधातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' इति विच्प्रत्ययः १७.१२. अधिष्ठाता (सभेशः) १७.१२. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः कर्त्तरि 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति विच्]

वेट् सत्क्रियया १८.२९. सदा ऋ० भू० १५४, १८.२९. आज्ञा का पालन आर्याभि० २.१३, १८.२९.

वेतसवे व्याप्तैश्वर्य्ये ६.२६.४. [वेत-सवपदयोः समासः। वेतः=वी गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० क्तः। बहुलवचनादेव गुणश्च सवः=षु प्रसवैश्वर्ययोः (अदा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप्]

वेतसः कमनीयः (विद्वज्जनः) ४.५८.५. **वेतसे**=पदार्थविस्तारे १७.६. [वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० असच् तुडागमश्च]

वेतसः वेगवत्यः, भा०—समं विषमं चलन्त्यः (सरितः=नद्यः), प्र०—अत्र वीधातोर्बाहुलकादौणादिकस्तसिः प्रत्ययः १३.३८. [वी गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० तसिः। वेतसः तस्माद् वेतसो वनस्पतीनामनुपजीवनीयतमो यातयामा हि सः श० ९.१.२.२४. ताः (आपः) प्रजापतिमब्रुवन्। यद् वै नः कमभूदवाक्तदगादिति सोऽब्रवीदेष व एतस्य वनस्पतिर्वेत्त्विति वेत्तु संवेत्तु सोऽह वै तं वेतस इत्याचक्षते परोऽक्षम् श० ९.१.२.२२. अप्सुयोनिर्वै वेतसः श० १२.८.३.१५. अप्सुजा वेतसः श० १३.२.२.१९. अप्सुजो वेतसः तै० ३.८.४.३.]

वेतसुम् व्यापनशीलम् (इभं=हस्तिनम्) ६.२०.८. [वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०)धातोर्बाहु० औणा० असच् तुडागमश्च। वर्णव्यत्ययेनाकारस्योकारादेशः। अथवा बाहु० औणा० तसुः]

वेति कामयते ५.३४.४. अस्तमेति ३४.२५. प्रजनयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.३५.९. नश्यति ५.६१.१८.

व्याप्नोति ६.१५.१. प्राप्नोति १.१४१.६. **वेतु**=विद्यादिसद्गुणेषु जातविज्ञानान् करोतु ऋ० भू० २४६, ३.१०. व्याप्नोति, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् ३.१०. प्राप्नोतु ७.१५.६. व्याप्नोतु १०.२६. कामयताम् १.७७.४. [वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यसनखादनेषु (अदा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट् । वेति कान्तिकर्मा निघं० २.६. गतिकर्मा निघं० २.१४. अत्तिकर्मा निघं० २.८.]

वेत्तु जानातु ज्ञापयतु वा, अ०—-कृपया वेदयतु १.१४ **वेत्थ**=जानासि ३५.२०. **वेद**=जानासि वेत्ति वा २.२१. जानाति १.१०५.९. जानीयात् ३.४.१०. जानामि ३१.१८. जानीयाम् २.१४.१०. विदन्ति ७.५६.२. विजानीत ४०.१४. जानीहि ५.१२.३. **वेदत्**=प्राप्त होवे सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५७. विजानीयात् ५.३०.३. विद्यात् २.३५.२. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् लेट् च]

वेदः प्राप्नुहि १.४३.६. (विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लोटि छान्दसं रूपम्]

वेदनम् विज्ञानम् ४.३०.१३. धनम् १.१७६.४. प्रापणम् ७.३२.७. [विद ज्ञाने (अदा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा ल्युट्]

वेदम् वेदः ज्ञापको, वेदयिता, वेत्ति चराचरं जगत् स जगदीश्वरः, विदन्ति येन स ऋग्वेदादिर्वा २.२१.

वेदेन=ईश्वरप्रकाशितेन वेदचतुष्टयेन १९.७८. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः कर्त्तर्यच् । 'हलश्च' अ० ३.३.१२१ सूत्रेण करणे वा घञ् । (वेदः=दर्भमुष्टिः) प्राजापत्यो वेदः तै० ३.३.२.१. प्राजापत्यो वै वेदः तै० ३.३.७.२. प्रजापतेर्वा एतानि श्मश्रूणि यद् वेदःतै० ३.३.९.११. योषा वै वेदिर्वृषा वेदः श० १.९.२.२१. वृषा वै वेदो योषा पत्नी कौ० ३.६. अथो सर्वेषां वा एष वेदानां रसो यत् साम श० १२.८.३.२३. अनन्ता वै वेदाः तै० ३.१०.११.३. तदाहुः किं तत् सहस्रम् (ऋ० ६.६९.८) इतीमे लोका इमे वेदा अथो वागिति ब्रूयात् ऐ० ६.१५. वेदो ब्रह्म जै० उ० ४.२५.३. ते सर्वे त्रयो वेदाः । दश च सहस्राण्यष्टौ च शतान्यशीतीनाम् (१०८००×८०=८६४००० अक्षराणि) अभवन् श० १०.४.२.२५. चत्वारोऽस्यै (स्वाहायै) वेदाः शरीरं षडंगान्यंगानि ष० ४.७. चत्वारो वा इमे वेदा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ब्रह्मवेद इति गो० पू० २.१६. स इमानि त्रीणि ज्योतींष्यभितताप । तेभ्यस्तप्तेभ्यस्त्रयो वेदा अजायन्ताग्नेर्ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात् सामवेदः श० ११.५.८.३. नाऽवेदविन्मनुते तं बृहन्तम् तै० ३.१२.९.७. एतानि ह वै वेदानामन्तः श्लेषणानि यदेता (भूर्भुवः स्वरिति) व्याहृतयः ऐ० ५.३२. वेदाः सोऽपहतपाप्मानन्तां श्रियमश्नुते य एवं वेद यश्चैवं विद्वान् एवमेतां वेदानां मातरं सावित्रीं सम्पदमुपनिषदमुपास्ते गो० पू० १.३९. एवमिमे सर्वे वेदा निर्मिताः गो० पू० २.१०]

वेदयामसि वेदयामः प्रज्ञापयामः ४.३६.२. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लट् । 'इदन्तो मसि' इति मस इदन्तता वेदयामसि वेदयामः नि० ९.३१.]

वेदसः धनाद्विज्ञानाद्वा २.१७.६. **वेदसा**=वित्तेन ३.६०.१. **वेदसाम्**=विद्यादिधनानाम् १.८९.५. **वेदः**=विदन्ति सुखानि येन तद्धनम्, विज्ञानधनम् १.८१.९. द्रव्यम् ४.२५.७. [वेदः धननाम निघं० २.१०. विद ज्ञाने (अदा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा असुन्]

वेदि विज्ञायते ४.१६.४. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः कर्मणि लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

वेदिम् वेत्ति यया तां प्रज्ञाम् १.१७०.४. हवनार्थं कुण्डम् ७.६०.९. अग्निस्थानम् ५.३१.१२. **वेदिः**=विदन्ति शब्दान् यस्यां साऽऽकाशवायुस्वरूपा (भा०—ब्रह्माण्डाख्या) १.१६४.३५. विदन्ति सुखान्यनया सा (यज्ञस्थली) २.१. यत्र हूयते सा (यज्ञस्थली) १८.२१. मध्यरेखा, भा०—यद्यस्य भूगोलस्य मध्यस्था रेखा क्रियेत तर्हि उपरिष्टाद् भूमेरन्तं प्राप्नुवती सती व्यास-संज्ञां लभते, अयमेव भूमेरन्तोऽस्ति २३.६२. यज्ञभूमिः १९.१७. कुण्डादिकम् ७.३५.७. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोः 'हृपिषिरुहिवृति०' उ० ४.११९. सूत्रेण इन् । तं (यज्ञं) वेद्यामन्वविन्दन् यद् वेद्यामन्वविन्दंस्तद् वेदेर्वेदित्वम् ऐ० ३.९. यन्न्वेवात्र विष्णुमन्वविन्दंस्तस्माद् वेदिर्नाम श० १.२.५.१०. तद् यदेनेन यज्ञेन विष्णुना) इमां सर्वां (पृथिवीं) समविन्दन्त तस्माद् वेदिर्नाम श० १.२.५.७. वेदिर्देवेभ्योऽनिलायत । तां वेदेनान्वविन्दन् तै० ३.३.९.१०. पृथिवी वेदिः ऐ० ५.२८. तै० ३.३.६.२, इयं (पृथिवी) वै वेदिः श० ७.३.१.१५. एतावती वै पृथिवी यावती वेदिः तै० ३.२.९.१२. यावती वै वेदिस्तावती पृथिवी श० ३.७.२.१. तस्मादाहुर्यावती वेदिस्तावती पृथिवीति श० १.२.५.७. यावती वै वेदिस्तावतीयम्पृथिवी जै० उ० १.५.५. तस्याः (पृथिव्याः) एतत् परिमितं रूपं यदन्तर्वेद्यथैप भूमाऽपरिमितो यो वहिर्वेदि ऐ० ८.५. वेदिर्वै परोऽन्तः पृथिव्याः तै० ३.९.५.५. उर्वरा

वेदिर्भवत्येतत् (स्थानं) वा अस्याः (पृथिव्याः) वीर्यवत्तमम् तां० १६.१३.६. वेदिर्वै देवलोकः श० ८.६.३ ६. वेदिर्वै सलिलम् श० ३.६.२.५. वेदिरेव विश्वाची (अप्सराः) (यजु० १५.१८.) श० ८.६.१.१६. स विश्वाचीरभिचष्टे घृताचीः (यजु० १७.५६.) इति स्रुचश्चैतद् वेदीश्चाह (विश्वाची=वेदिः। घृताची=स्रुक्) श० ६.२.३.१७. योषा वै वेदिः श० १.३.३.८. योषा वै वेदिर्वृषा वेदः श० १.६.२.२१. योषा वै वेदिर्वृषाग्निः श० १.२.५.१५. सा वै (वेदिः) पश्चाद् वरीयसी स्यात्। मध्ये संह्वारिता पुनः पुरस्तादुर्वी श० १.२.५.१६. व्याममात्री (वेदिः) पश्चात्स्यादित्याहुः। एतावान् वै पुरुषः पुरुषसम्मिता हि त्र्यरत्निः प्राची श० १.२.५.१४. तस्मात् त्र्यंगुला वेदिः स्यात् श० १.२.५.६. (वेदिः) चतुरंगुलं खेया तै० ३.२.६.११. सा वै (वेदिः) प्राक् प्रवणा स्यात् श० १.२.५.१७. अथो (वेदिः) उदक्प्रवणा श० १.२.५.१७.]

वेदिषत् यो वेद्यां पृथिव्यां सीदति सः (परमेश्वरः) १०.२४. यो वेद्यां जगत्यां यज्ञशालायां वा सीदति सः (जीवो ब्रह्म वा) १२.१४. **वेदिषदः**=ये वेद्यां पृथिव्यां सीदन्ति ते (असुराः=दुष्टस्वभावाः प्राणिनः) प्र०—यावती वेदिस्तावती पृथिवी श० १.२.३.७, २.२६. [वेदि इति व्याख्यातम्। तदुपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्]

वेदी विन्दन्ति सुखानि यस्यां सा (यज्ञस्थली) ६.१.१० वेद्याम्, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति ङेर्लोपः २.३.४. **वेद्या**=यस्यां हूयते तया (यज्ञभूम्या) १८.६३. यज्ञसामग्र्या १६.१७. सुखप्रापिकया (विद्यया) ६.१३.४. **वेद्याम्**=हवनाऽऽधारे कुण्डे २८.१२. [वेदि इति व्याख्यातम्। ततः 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष्]

वेद्यम् विचार्य्यम् (विषयमात्रम्) १८.११. **वेद्यः**=वेदितुं योग्यः (परमेश्वरः) ६.४.२. [विद विचारणे (रुधा०) विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्ण्यत्]

वेद्याभिः वेदितव्याभिः (क्रियाभिः) ६.६.१. वेत्तुं योग्याभिः प्रजाभिः ३.५६.१. ज्ञातव्याभिर्नीतिभिः ७.२१.५. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्ण्यत्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

वेधसः मेधाविनः (विद्वज्जनाः) ५.५२.१३. सकलविद्याधातुर्विधातुः (परमात्मनः) १.७२.१. प्राज्ञान् (नॄन्=नायकाञ्जनान्) ४.२.१५. **वेधसे**=धारणाय (सुमखाय) १.६४.१. प्राज्ञाय (इन्द्राय=सभासेनेशाय) २.२१.२. **वेधः**=अनन्तविद्य (इन्द्र=जगदीश्वर) ४.४२.७. प्रज्ञाप्रद (जगदीश्वर) १.७३.१०. **वेधाः**=विविधशास्त्रजन्यमेधायुक्तः (विश्पतिः=प्रजापतिः), प्र०—'विधाञो वेध च' उ० ४.२३२. अनेनाऽसुन्प्रत्ययो वेधादेशश्च १.६०.२. ज्ञानवान् (जनः) १.६६.२. पोषकः (पशुः=गवादिः) १.६५.५. [वेधाः मेधाविनाम निघं० ३.१५. डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर् 'विधाञो वेध च' उ० ४.२२५. सूत्रेणासुन् वेधादेशश्च इन्द्रो वै वेधाः ऐ० ६.१०. गो० उ० २.२०. वेधसे विधात्रे नि० १०.६.]

वेधसा प्राज्ञौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८१.७. [वेधस् इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

वेधस्तम अतिशयेन सर्वविद्याधर (विद्वज्जन) १.७५.२. **वेधस्तमः**=विद्वत्तमः (जनः) ६.१४.२. [वेधस् इति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने तमप्]

वेन काम्यस्वरूप (ईश्वर) १.४३.६. **वेनस्य**=मेधाविनः (सभाद्यध्यक्षस्य) १.६१.१४. **वेनः**=कमनीयश्चन्द्रः ७.१६. आनन्दस्वरूप, कामना करने योग्य, प्राप्त करने योग्य अनन्तविद्यायुक्त (ईश्वर) आर्याभि० २.२८, १३.३. कामयमानः (राजा) ५.३६.४. पण्डितो विद्वान् (जनः) ३२.८. कमनीयः (ईश्वरः), प्र०—वेनतीति कान्तिकर्मा निघं० २.६, १३.३. [अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोः 'धापॄवस्यज्यतिभ्यो नः' उ० ३.६. इति नः। 'अजेर्वी०' इति व्यादेशः। वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यादिषु (अदा०) धातोर्वा बाहु० औणा० नः। वेनतीति कान्तिकर्मा निघं० २.६. वेनः मेधाविनाम निघं० ३.१५. यज्ञनाम निघं० ३.१७. वेनः (ऋ० १०.१२३.१.) अयं वै वेनोऽस्माद्वा ऊर्ध्वा अन्ये प्राणा वेनन्त्यवाञ्चोऽन्ये तस्माद् वेनः ऐ० १.२०. (यजु० १३.३.) असावादित्यो वेनो यद्वै प्रजिजनिषमाणो ऽवेनत्तस्माद् वेनः श० ७.४.१.१४. (ऋ० १०.१२३.१.) इन्द्र उ वै वेनः कौ० ८.५. आत्मा वै वेनः कौ० ८.५.]

वेनतम् कामयतम् ५.७५.७. **वेनः**=कामयेः ५.३१.२. कामयथाः ६.४४.१०. कामयस्व १.४३.६. [वेनति कान्तिकर्मा निघं० २.६. ततो लोट्। अन्यत्र लङ्]

वेनतः सर्वशास्त्रैः श्रुतस्य कमनीयस्य (विद्वज्जनस्य), प्र०—अत्र वेनृधातोर्बाहुलकादौणादिकोऽतन् प्रत्ययः १.८६.८. [वेनृ गतिज्ञानचिन्तानिशामनवादित्रग्रहणेषु (भ्वा०) धातोः शतृ। वेनति कान्तिकर्मा निघं० २.६.]

वेनन्ता वादित्रवादकौ (शिल्पिजनौ), प्र०—अत्र वेनृ धातोर्वादित्राद्यर्थो गृह्यते 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः

१.२५.६. [वेनत् इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

वेनाम् कमनीयां कामसिद्धिम् ऋ० भू० १६४, ऋ० १.३.४.१. कामिनां यात्राम्, प्र०—'धापॄवस्यज्यतिभ्यो नः' उ० ३.६. इत्यजधातोर्नः प्रत्ययः १.३४.२. [वेन इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

वेन्यस्य कमितुं योग्यस्य (सूर्यस्य) २.२४.१०. **वेन्यः**=कमनीयः (वेधाः=मेधावी जनः) ६.४४.८. [वेनति कान्तिकर्मा निघं० २.६. ततो ण्यत्]

वेपते कम्पते ५.३६.३. **वेपध्वम्**=कम्पध्वम् ३.४१. कम्पायमान होवो सं० वि० १४६, ३.४१. **वेपेते**=चलतः १.८०.११. [टुवेपृ कम्पने (भ्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट्]

वेपयन्ति कम्पयन्ति ३.२६.४. चालयन्ति १.३९.५. [टुवेपृ कम्पने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट् । 'निगरणचलनार्थेभ्य' इति परस्मैपदम्]

वेपसा वेगेन १.८०.१२. राज्यपालनादिकर्म्मणा, प्र०—वेपस इति कर्मनामसु पठितन् निघं० २.१, ४.११.२. [टुवेपृ कम्पने (भ्वा०) धातोरौणा० असुन् । वेपः कर्मनाम निघं० २.१.]

वेपिष्ठः अतिशयेन कम्पकः (विप्रः=मेधाविजनः) ६.११.३. [टुवेपृ कम्पने (भ्वा०) धातोः तृजन्तादतिशायन इष्ठन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

वेपी धीमती (कन्या) ६.२२.५.

वेम प्रजनम् १९.८३. [वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यादिषु (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० मन्]

वेरिव उड्डीयमानस्य पक्षिण इव १.११६.१५. [वेः-इवपदयोः समासः]

वेविजानः कम्पमानः (विः=पक्षी) ४.२६.५. [ओविजी भयचलनयोः (तुदा०) धातोर्लिटः कानच् । शानचि वा छान्दसः श्लुः]

वेविजे भृशं विभीत, प्र०—ओविजी भयचलनयोः इत्यस्माद् यङ्लुगन्ताद् व्यत्ययेनात्मनेपदमेकवचनञ्च १.१४०.३.

वेविज्यते अत्यन्तं सम्यग् बिभेति १.८०.१४. [ओविजी भयचलनयोः (तुदा०) धातोर्यङन्ताल्लट्]

वेविदानः विज्ञापयन् (विद्युदग्निः) ५.१९.५. **वेविदानाः**=अतिशयेन विज्ञानवन्तः (विद्वांसो जनाः) १.७२.४. भृशं प्रतिजानन्तः (विद्वज्जनाः) ३.५४.४. [विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

वेविदाम यथावल्लभेमहि ७.२४.६. प्राप्नुयाम ७.२५.६. [विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लेट् । 'वहुलं छन्दसी' ति श्लुः]

वेविषत् भृशं व्याप्नोति ३.२.१०. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

वेविषतः व्याप्नुवतः (सम्बन्धिजनस्य) ६.२१.५. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः शतृ]

वेविषाणाः शत्रुबलानि व्याप्नुवन्तः (वीरराजपुरुषाः) ७.१८.१५. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

वेवेति भृशं व्याप्नोति, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यडभावः ३.५५.९. गच्छति ४.३८.६. [वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

वेशम् यो विशति तम् (प्रमादम्) ५.८५.७. **वेशस्य**=प्रवेशस्य ४.३.१३. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोरच् कर्त्तरि । भावे वा घञ् । 'पदरुजविशस्पृशो घञ्' अ० ३.३.१६. सूत्रेण वा कर्त्तरि घञ् । वेशः कर्मनाम निघं० २.१.]

वेशय प्रापय १.१७६.२. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

वेश्मनि घर अर्थात् स्थान में सं० वि० २१०, अथर्व० ९.६.२.१३. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्बाहु० औणा० मनिन्]

वेश्यम् वेशेषु प्रवेशेषु भवम् (सर्वहितम्) ४.२६.३. [वेशमिति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत्]

वेश्या वेशी प्रवेशयित्री सूची तया ७.१८.१७. उपदेष्टुं योग्येन (सख्या=मित्रत्वेन) ६.६१.१४. [विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्ण्यत् । ततः स्त्रियां टाप्]

वेषणा व्याप्तेन पदार्थेन ४.३३.२. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्बाहु० औणा० युच्]

वेषणे व्याप्ते व्यवहारे ५.७.५. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्ल्युट्]

वेषत् अभिगच्छतु, प्र०–तिपि लेट्-प्रयोगः १.१८०.६. **वेषि**=व्याप्नोषि १.७६.४. प्राप्नोषि २.२४.१५. कामयसे १.१७३.८. [वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यादिषु (अदा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लट्]

वेषन्तीः व्याप्नुवन्त्यः (नद्यः) १.१८१.६. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुर्न]

वेषाय सर्वशुभगुणविद्याव्याप्तये भा०—सर्वविद्यासुखेषु व्याप्ताय, सर्वा विद्या सम्यक् पठित्वा तासां सर्वत्र प्रचारीकरणाय १.६. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोर्भावे घञ्]

वेष्पः वेवेष्टि व्याप्नोति पृथिवीमन्तरिक्षं वा स यज्ञोत्थो वाष्पो ज्ञानसमूहो वा, प्र०—'पानीविषिभ्यः पः' उ० ३.२३. इत्यनेन विषेः पः प्रत्ययः १.३०. [विष्लृ व्याप्तौ (जु०) धातोः 'पानीविषिभ्यः पः' उ० ३.२३. इति पः]

वेहत् अकाले वृषभोपगमनेन गर्भघातिनी (गौः) २४.१. यस्य वीर्यं यस्या गर्भो वा विहन्यते स सा च (गौः) १८.२७. या प्रसवं विहन्ति सा (गौः) २१.२१. **वेहतम्**=गर्भस्राविकाम् (गाम्) २८.३३. [विशेषेण हन्तीति विग्रहे विपूर्वाद् हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'संश्चत्तृपद्वेहत्' उ० २.८५. सूत्रेण अति प्रत्ययान्तो निपात्यते। निपातनाद् वेरुपसर्गस्यैकारादेशो धातोश्च टिलोपः]

वेः प्राप्नुयाः ४.३.१३. विद्धि वेदयति प्रापयति वा, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् 'वी गति०' इत्यस्य प्रयोगोऽडभावश्च २.६. आवहति १.७७.२. स्वीकुर्य्याः १.१७३.१. जानाति २.५.३. [वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लङ्। अडभावश्च]

वेः व्याप्तस्य (अध्वरस्य=शिल्पिजनस्य) ४.७.८. गन्त्र्याः (रिपः=पृथिव्याः) ३.५.५. कमनीयस्य (यज्ञस्य=विद्याबोधस्य) १.६६.६. व्यापकस्य परमेश्वरस्य ३.७.७. प्राप्तस्य (मनुष्यस्य) ३.५.६. विहगस्य पक्षिण इव ६.१५.१४. [वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोः, वा गतिगन्धनयोः (अदा०) धातोर्वा 'वातेर्डिच्च' उ० ४.१३४. सूत्रेण इण्। डित्वाट् टेर्लोपः]

वै खलु १.१०५.२. निश्चये २.३३.६. निश्चयेन २५.४४. निश्चय करके सं० वि० २१०, अथर्व० ९.६.३.१. ही सं० वि० २०६, ६.२.६. [चादिषु पाठान्निपातः। 'स्वरादिनिपातमव्ययम्' इत्यव्ययसंज्ञा]

वैकर्णयोः विविधेषु कर्णेषु श्रोत्रेषु भवयोर्व्यवहारयोः ७.१८.११. [वि-कर्णपदयोः समासे भवार्थेऽण्]

वैदथिनाय विदथिना सङ्ग्रामकर्त्रा निर्मिताय (युद्धव्यवहाराय) ५.२९.११. विज्ञानवतोऽपत्याय ४.१६.१३. [विदथिन्प्राति० अपत्यार्थे कृतार्थे वाण्। प्रकृतिभावश्च। विदथिन्=विदथप्राति० मत्वर्थ इन्। विदथः यज्ञनाम निघं० ३.१७. विदथानि पदनाम निघं ४.३.]

वैददश्विः योऽश्वान् विदन्ति स विददश्वस्तस्याऽपत्यं वैददश्विः (ऐश्वर्यवान् पुरुषः) ५.६१.१०. [विददश्वप्राति० अपत्यार्थे इञ्। विददश्वः विदद्-अश्वपदयोः समासः। विदद्=विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः शतृ। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि शस्यापि लुक्। ततो नुमपि न भवति]

वैद्युताः विद्युद्देवताकाः (शबलाः=पश्वादयः) २४.१०. [विद्युत्प्राति० 'सास्य देवतेति' अण्]

वैनंशिनाय विनष्टुं शीलं यस्य तस्याऽयं बोधस्तस्मै (जनाय) १८.२८. विनाशशीलेषु कर्मसु भवाय (मुग्धाय=मूर्खजनाय) ६.२०. [वि+णश अदर्शने (दिवा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः। ततो विनंशिन्प्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण्]

वैन्दम् निषादस्याऽपत्यम् ३०.१६.

वैरदेये वैरं देयं येन तस्मिन् (असत्कर्मणि) ५.६१.८. [वैर-देयपदयोः समासः]

वैरहत्याय वैरं हत्या च यस्मिन् कर्मणि तस्मै ३०.१३. [वैर-हत्यापदयोः समासः]

वैराजम् यद्विविधैरर्थैं राजते तदेव (साम) १०.१३. विविधानां पदार्थानामिदं प्रकाशकम् (साम=सामवेदस्य ज्ञानम्) १३.५७. विराट् प्रतिपादकम् (साम) १५.१३. **वैराजेन**=विराजि भवेनाऽर्थेन २१.२६. **वैराजाभ्याम्**=विराट्छन्दोज्ञापिताभ्याम् (मित्रावरुणाभ्याम्=प्राणोदानाभ्याम् २९.६०. [विराज्प्राति० स्वार्थे भवार्थे वा अण्। विराज्=वि+राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। वैराजम् (साम) ऐ० ४.१३. स वैराजमसृजत तदग्नेर्घोषोऽन्वसृज्यत तां० ७.८.११. यद् बृहत्तद् वैराजम् ऐ० ४.१३. प्रजापतिर्वैराजम् तां० १६.५.१७.]

वैरिणाः वीरिणेषु भवाः (कीटविशेषाः) १.१९१.३. [वीरिणप्राति० भवार्थेऽण्]

वैरूपम् विविधानि रूपाणि प्रकृतानि यस्मिँस्तत् (साम) १५.१२. विविधानि रूपाणि यस्मात्तस्येदम् (जगज्ज्ञानम्) १३.५६. **वैरूपेण**=विविधानां रूपाणां भावेन (ओजसा=बलेन) २१.२५. **वैरूपेभ्यः**=विविधस्वरूपेभ्यः (देवेभ्यः=दिव्यगुणेभ्यो जनेभ्यः) २९.६०. [वि-रूपपदयोः समासे ततः 'तस्येदम्' इत्यर्थे स्वार्थे वा अण्। वैरूपम् (साम) देवा वै तृतीयेनाह्ना स्वर्गं लोकमायँस्तानसुरा रक्षांस्यन्ववारयन्त ते विरूपा भवत विरूपा भवतेति भवन्त आयंस्ते यद् विरूपा भवत विरूपा भवतेति भवन्त आयंस्तद् वैरूपं सामाऽभवत्तद् वैरूपस्य वैरूपत्वम्

ऐ० ५.१. (यद् द्याव इन्द्र ते शतम् ऋ० ८.७०.५.) इत्यस्यामृच्युत्पन्नं वैरूपं साम इति ऐ० ४.१३. यद्वै रथन्तरं तद् वैरूपम् ऐ० ४.१३. रथन्तरमेतत् परोक्षं यद् वैरूपम् तां० १२.२.५.९. वृहदेतत् परोक्षं यद् वैरूपम् तां० १२.८.४. वाग् वैरूपम् तां० १६.५.१६. पशवो वै वैरूपम् तां० १४.९.८. दिशां वा एतत् साम यद् वैरूपम् तां० १२.४.७. वर्षाभिर्ऋतुनादित्याः स्तोमे सप्तदशे स्तुतं वैरूपेण विशौजसा तै० २.६.१९.१-२. आदित्यास्त्वा जागतेन छन्दसा सप्तदशेन स्तोमेन वैरूपेण साम्नाऽऽरोहन्तु तानन्वारोहामि स्वाराज्याय ऐ० ८.१२.]

वैलस्थानके वैलानि विलयुक्तानि स्थानानि यस्मिँस्तस्मिन् (महावैलस्थे=महागर्त्तयुक्ते स्थाने) १.१३३.३. [वैल-स्थानपदयोः समासे समासान्तः कप्]

वैलस्थानम् विलानामिदं वैलं तदेव स्थानं वैलस्थानम् १.१३३.१. [वैल-स्थानपदयोः समासः । वैलम्=विलप्राति० 'तस्येदम्' इत्यण्]

वैवस्वतः सूर्य का प्रकाश सं० वि० १९६, ९.११३.६. [विवस्वत्प्राति० 'तस्येदम्' इत्यण् । विवस्वत आदित्याद् विवस्वान् विवासनवान् प्रेरितवतः नि० ७.२६.]

वैशन्तम् वेशन्तस्य विशतो जनस्येमम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) ७.३३.२. **वैशन्ताय**=वेशन्तेषु क्षुद्रेषु जलाशयेषु भवाय (जनाय) १६.३७. [वेशन्तप्राति० भवार्थेऽण् । 'तस्येदम्' इत्यर्थे वा । वेशन्तः=विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः 'जॄविशिभ्यां झच्' उ० ३.१२६. सूत्रेण झच्]

वैशन्ताभ्यः वेशन्ता अल्पजलाशयास्ता एव ताभ्यः ३०.१६. [वेशन्तप्राति० स्वार्थेऽण् । वेशन्त इति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

वैश्यम् विक्षु प्रजासु भवम् (अपत्यम्) ३०.५. **वैश्यः**=यो यत्र तत्र विशति प्रविशति (तदपत्यम्) सः (भा० – व्यवहारविद्याकुशलो जनः) ३१.११. [विशः मनुष्यनाम निघं० २.३. ततो भवार्थे यत् । ततः स्वार्थेऽण् । विश्प्राति० वा अपत्यार्थे यञ्-प्रत्ययश्छान्दसः । वैश्यो वै पुष्यतीव कौ० २५.१५. वैश्यो वै ग्रामणीः श० ५.३.१.६. जगतीच्छन्दा वै वैश्यः तै० १.१.९.७. जगतो वै वैश्यः ऐ० १.२८. वैश्वदेवो हि वैश्यः तै० २.७.२.२. विड् उ विश्वे देवाः श० १०.४.१.९. शरद् वै वैश्यस्यर्त्तुः तै० १.१.२.७. तस्मादु वहुपशुर्वैश्वदेवो हि जागतो (वैश्यः) वर्षा ह्यस्य (वैश्यस्य) ऋतुस्तस्माद् ब्राह्मणस्य च राजन्यस्य चाद्योऽधरो हि सृष्टः तां० ६.१.१०. तस्माद् वैश्यो वर्षास्वादधीत विड्ढि वर्षाः श० २.१.३.५. तस्माद् वैशीपुत्रं नाभिषिञ्चति श० १३.२.९.८. अथ यदि दधि वैश्यानां स भक्षो वैश्यांस्तेन भक्षेण जिन्विष्यसि वैश्यकल्पस्ते प्रजायामाजनिष्यते ऽन्यस्य बलिकृदन्यस्याऽऽद्यो यथाकाम ज्येयो यदा वै क्षत्रियाय पापं भवति वैश्यकल्पोऽस्य प्रजायामाजायत ईश्वरो हास्माद् द्वितीयो वा तृतीयो वा वैश्यतामभ्युपैतोः स वैश्यतया जिज्यूषितः ऐ० ७.२९. तस्मादपि (दीक्षितं) राजन्यं वा वैश्यं वा ब्राह्मण इत्येव ब्रूयाद् ब्राह्मणो हि जायते यो यज्ञाज् जायते श० ३.२.१.४०. वैश्यं च शूद्रं चानु रासभः श० ६.४.४.१२. मारुतो हि वैश्यः तै० २.७.२.२. एतद् वै वैश्यस्य समृद्धं यत् पशवः तां० १८.४.६. विड् वै यवः श० १३.२.९.८. ऋग्भ्यो जातं वैश्यं वर्णमाहुः तै० ३.१२.९.२. विट् तृतीयसवनम् कौ० १६.४. रायोवाजीयं (साम) वैश्याय (कुर्यात्) तां० १३.४.१८.]

वैश्वकर्मणम् यस्माद्विश्वानि निर्वृतानि भवन्ति तत् (मनः=मननशीलं प्रेरकं कर्म्म) १३.५५. **वैश्वकर्मणः**=विश्वान्यखिलानि कर्माणि यस्मात् स एव, भा०—सर्वरोगनिहन्ता (अग्निः=पावकः) १८.६५. विश्वानि समग्राणि कर्माणि यस्य स एव (अग्निः=गृहस्थो जनः) १८.६४. **वैश्वकर्मणाः**=विश्वकर्मदेवताकाः (सञ्चराः=मार्गाः) २४.१७. [विश्व-कर्मन्पदयोः समासात् स्वार्थे 'सास्य देवते' त्यर्थे वा ऽण्]

वैश्वदेवम् विश्वेषां देवानामिदम् (सवनम्=आरोग्यकरं हवनादिकम्) १९.२६. यद्विश्वेषां देवानां विदुषामिदं तत् (यन्त्रम्) ४.१८. यथा विश्वेषां देवानामिदमन्तरिक्षमधिकरणं तथा ५.३०. **वैश्वदेवः**=विश्वदेवदेवताकः (शिल्पः पशुः) २९.५८. विश्वेषां देवानामयं सम्बन्धी (विचारः) १८.२०. विश्वेषां देवानां दिव्यानां जीवानां पदार्थानां वा यः सम्बन्धी सः (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. [विश्व-देवपदयोः समासे 'तस्येदम्' इत्यर्थे 'सास्य देवते' त्यर्थे वाऽण् । वैश्वदेवम् (पर्व) यद् विश्वे देवाः समयजन्त तद् वैश्वदेवस्य वैश्वदेवत्वम् तै० १.४.१०.५. प्रजापतिर्वै वैश्वदेवम् कौ० ५.१. (शस्त्रम्) पाञ्चजन्यं वा एतदुक्थं यद् वैश्वदेवम् ऐ० ३.३१. पवमानोक्थं वा एतद् यद् वैश्वदेवम् कौ० १६.३. पशवो वै वैश्वदेवम् कौ० १६.३.]

वैश्वदेवाग्निमारुते वैश्वदेवाग्निमरुद्व्याख्यायिके (वेदस्य द्वयवचने) १५.१४. [वैश्वदेव-अग्निमरुद्प्राति० 'तस्य व्याख्यान०' इत्यण्]

वैश्वदेवी विश्वासां देवीनां विदुषीणां मध्य इयं

विदुषी (स्त्री) १९.४४. [विश्व-देवपदयोः समासाद् भवार्थे ऽणन्तान् ङीप्]

वैश्वदेव्यः विश्वदेवदेवताकाः (वत्सतर्याः=वत्साः) २४.५. [विश्वदेवप्राति० 'सास्य देवता' इत्यर्थे 'देवाद् यञञौ' इति यञ्]

वैश्वव्यचसम् प्रकाशकम् (चक्षुः=नयनम्) १३.५६. [विश्व-व्यचस्पदयोः समासात् 'तस्येदम्' इत्यर्थे ऽण्]

वैश्वानर प्रधानपुरुष ३.३.१०. विश्वस्मिन् राजमान (ईश्वर) ७.५.८. यो विश्वान् नरान् धर्मकार्येषु नयति तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ६.७.४. सर्वनेतः (जगदीश्वर सभाध्यक्षो वा) १.५९.५. सर्वेषु मनुष्येषु विद्याप्रकाशक (ईश्वर विद्वन्वा) १.९८.३. विश्वस्मिन् विद्याधर्मप्रकाशनेन नायक (राजन्) ६.७.५. **वैश्वानरम्**=सर्वत्र प्रकाशमानम् (अग्नि=विद्युतम्) ६.२१. सर्वेषु नरेषु नीतिषु प्राप्तेषु पदार्थेषु व्याप्तम् (अग्निम्) ३.३.५. विश्वेभ्यो नरेभ्यो हितम् (अग्निम्) ३३.८. विश्वेषु नायकेषु विराजमानम् (अग्निम्) ३.२६.२. विश्वेषु वस्तुषु नायकम् (अग्निम्) २२.३. यो विश्वान्नरानानन्दान् नयति तम् (अग्निम्) ७.२४. **वैश्वानरस्य**=विश्वेषु नरेषु जीवेषु भवस्य (ईश्वरस्य) १.९८.१. **वैश्वानरः**=शरीरनेता जाठराग्निः सर्वस्य नेता परमेश्वरो वा ४.१५. पावकः ३.२.१२. विद्युदग्निः २६.७. विश्वस्य नेता स एव (अग्निः=विद्युत्) १८.७३. विश्वेषु नरेषु यो राजते स एव (अग्निः=सूर्यः) १८.७२. विश्वस्मिन् नरे नेतव्ये प्रकाशमानः (अग्निः) ६.९.१. यः सकलस्य जगतो नयनकर्त्ता सः (परमेश्वरः) ऋ० भू० २०३, सर्वनियन्ता (परमात्मा) १.५९.६. विश्वेषां सर्वेषां नराणामयं सत्कारः १८.२०. सर्वेषां जीवानां नेता (ईश्वरः) १.९८.१. विश्वेषां नराणां हितः (अग्निः=सूर्यः) ३३.९२. विश्वेषु नरेषु प्रकाशमानः (राजा) ४.५.२. विश्वे सर्वे नरा यस्मिन् स एव (ईश्वरः) १२.२९. विश्वस्य संसारस्य प्रकाशकः (परमेश्वरः) ६.९.७. **वैश्वानरात्**=सर्वनरहितकरात् (ईश्वरात्) ३३.६०. **वैश्वानराय**=अखिलपदार्थानां नयनाय प्रापणाय (पावकाय) १४.७. परब्रह्मोपासकाय १.५९.४. विश्वेषां नराणामिदं सुखसाधकं तस्मै (अग्नये=शास्त्रविज्ञानाय) १४.७. अग्निकर्मसाधनाय २६.७. **वैश्वानराः**=सर्वेषु मनुष्येष्विमे सत्यधर्मविद्याप्रकाशकाः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ११.६०. ये विश्वेषु नरेषु राजन्ते (देवाः=उपदेशका जनाः) ११.५८. [विश्व-नरपदयोः समासाद् भवार्थे हितार्थे 'तस्येदम्' इत्यर्थे वा अण् । वैश्वानरः कस्मात् ? विश्वान् नरान् नयति । विश्व एनं नरा नयन्तीति वा । अपि वा विश्वानर एव स्यात् प्रत्यृतः सर्वाणि भूतानि तस्य वैश्वानरः नि० ७.२१. तत्को वैश्वानरः ? मध्यम इत्याचार्याः । अथासावादित्य इति पूर्वे याज्ञिकाः ।……अथापि वैश्वानरीयो द्वादशकपालो भवति ।……अथापि ब्राह्मणं भवत्यसौ वा आदित्यो ऽग्निर्वैश्वानर इति अथापि निवित् सौर्य वैश्वानरी भवति नि० ७.२३. अग्निर्वा एष वैश्वानरो यत् संवत्सरः जै० २.३७९. आत्मा वैश्वानरः (अग्नेः) तै० सं० ५.६.६.३. प्राणो वै पूर्वो वैश्वानरो ऽपान उत्तरः जै० ३.८. वैश्वानरो द्वादशकपालः (पुरोडाशः) श० ६.६.१.५. शिर एव वैश्वानरः श० ६.६.१.९. संवत्सरो वैश्वानरः मै० ३.४.४. श० ५.२.५.१५. स एषो ऽग्निर्वैश्वानरो यत्पुरुषः श० १०.६.१.११. वैश्वानरं द्वादशकपालं निर्वपति हिरण्यं दक्षिणा तै० सं० १.८.८.१.]

वैश्वानरज्योतिः विश्वेषु नरेषु प्रकाशमानं वैश्वानरं, वैश्वानरं च तज्ज्योतिश्च वैश्वानरज्योतिः (अ०=ब्रह्म) २०.२३. [वैश्वानर-ज्योतिष्पदयोः समासः]

वैष्णवम् यद् विष्णोर्यज्ञस्येदं साधनं साधकं वा तत् (जगत्) ५.२१. विष्णोरिदं विज्ञानम् ५.२५. **वैष्णवः**=विष्णुदेवताकः (वामनः=वक्राङ्गः पशुः) २४.१. **वैष्णवान्**=यज्ञाऽनुष्टातॄन् विष्णुर्यज्ञो देवता येषान्तान् विष्णोर्यज्ञस्येमान् (सभाद्यध्यक्षादिजनान्) ५.२५. **वैष्णवाः**=विष्णोर्व्यापिकस्येश्वरस्येमे उपासकाः (सभाद्यध्यक्षादिजनाः) ५.२५. [विष्णुप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थे सास्य देवता' इत्यर्थे वाऽण्]

वैष्णवी विष्णोरियं क्रिया ५.२५. विष्णुदेवताका (जहका=जोक इति भाषायाम्) २४.३६. **वैष्णवीम्**=विष्णोर्व्यापिकस्येमां वाचम् ५.२३. विष्णोः समग्रविद्याव्यापकस्येयं रीतिस्ताम् ५.२५. [वैष्णवमिति व्याख्यातम् ततः स्त्रियां ङीप्]

वैष्णव्यौ यज्ञस्येमौ व्याप्तिकर्त्तारौ पवनपावकौ तौ १.१२. सकलविद्यासुशिक्षाशुभगुणस्वभावव्यापिनौ (अध्येत्रध्यापकौ १०.६. [विष्णुः यज्ञनाम निघं० ३.१७. ततः 'तस्येदम्' इत्यर्थे ण्यश्छान्दसः]

वोच उपदिशामि ६.५९.१. उपदिश १.१३२.१. **वोचत्**=वक्ति ६.१५.१०. उच्यात् ४.५.३. उपदिशेत् १.११७.२२. **वोचत**=वदत, प्र०—अत्राऽडभावः २.२१.२. **वोचति**=उच्याद् वदेत् १.१०५.४. उच्याः १.१२३.३. वदति, प्र०—वचेर्लेट्यट् 'वच उम्' इत्युमागमः १९.६५.

वोचतु=उपदिशतु ३.५४.१९. **वोचन्**=उपदिशन्ति ४.१.१४. **वोचन्त**=उपदिशेयुः ब्रुवन्ति ५.५२.१६. **वोचम्**=उपदिशेयम्, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङडभावश्च १.३२.१. उच्याम् १.१३६.६. कथयेयम् १.५९.६. वच्मि २.१५.१. **वोचः**=उपदिशेः ६.२.११. ब्रूहि ६.१४.६. प्रोक्तवान्, प्र०—अत्र वचधातोर्वर्त्तमाने लुङडभावश्च १.२७.४. उच्याः, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् 'छन्दस्यमाङ्योगेऽपि, इत्यडभावः ६.३३. **वोचाम**=उपदिशेम १.१६६.१. वदेम २.३०.७. **वोचावहै**=परस्परमुपदिशेव, प्र०—लेट्-प्रयोगोऽयम् १.२५.१७. **वोचासि**=उच्याः, प्र०—अत्र लेटि मध्यमैकवचने 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति उमागमः २३.५१. **वोचे**=वदेयमुपदिशेयं वा ४.५.११. वदामि ७.३३.१. **वोचेत्**=गुणकर्मस्वभावत उपदिशेत् ३२.९. **वोचेतम्**=ब्रूतम् १.१२०.३. **वोचेम**=उपदिशेम ७.२८.५. वदेम ७.२९.५. उच्याम, प्र०—अयमाशिषि लिङ्युत्तमबहुवचने प्रयोगः 'लिङ्याशिष्यङ्' इत्यङि कृते 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकमाश्रित्येय्सकारलोपौ 'वच उम्' अ० ७.४.२०. इत्यङि उमागमश्च ३.११. **वोचेमहि**=वदेम, प्र०—अत्राडभावः १.१६७.१०. **वोचेय**=उपदिशेय ४.१.१९. कथयेयम् १.१२२.५. **वोचेयम्**=उपदिशेयम् १.१२९.६. **वोचेयुः**=सम्प्रीत्या सर्वा विद्याः सर्वान् प्रत्युपदिश्यासुः, प्र०—वचेराशिषि लिङि प्रथमस्य बहुवचने प्रयोगः १.४.६. **वोचेः**=उच्याः १.१६५.३. वदेः ३३.२७. ब्रूयाः १.१३२.३. [ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लुङ् । 'ब्रुवो वचिः' इति वचिरादेशः । 'अस्यतिवक्ति०' इत्यङ् । 'वच उम्' इत्युमागमः । वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्वा लुङ् । अन्यत्र लेट् लट् लिङ् च । वोचः प्रब्रूहि नि० ८.२०. वोचत् विवक्ष्यतीति नि० ७.३०. वोचे आह्वयामि नि० ५.७. वोचेयम् प्रब्रवीमि नि० १०.४२. वचधातोर्लिङि तु 'लिङ्याशिष्यङ्' अ० ३.१.८६. सूत्रेण अङ् । व्यत्ययेन वान्येषु लकारेषु अङ्]

वोचतात् उपदिशतु ५.६१.१८. [वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्राङ् । 'तुह्योस्तातङ्०' इति तातङ्]

वोढ्वम् स्वयंवरविवाहविधिं प्राप्नुत, प्र०—अत्र 'वह प्रापणे' इत्यस्माल्लोटि मध्यमबहुवचने 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुकि कृते 'सहिवहोरोदवर्णस्य' अ० ६.३.११२. इत्यनेनोकारः, वर्त्तमाने च लोट् ६.१३. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

वोढवे विद्याप्रापणाय १.४५.६. वोढुम्, देशान्तरे वहनाय वा, प्र०—अत्र तुमर्थे तवेन्-प्रत्ययः १.१३४.३. वोढुं प्राप्तुं प्रापयितुं वा ३४.१५. विमानादियानानां वाहनाय ६.६०.१२. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

वोढा विवाहिता (स्त्री) ६.६४.३. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

वोढुः वाहक याऽश्वाऽऽदेः १.१४४.३. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । ततः षष्ठी]

वोढम् वहतः २.४१.९. वहतम् २०.८३. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । अडभावश्छान्दसः]

वोढा वाहकः (अनड्वान्=वृषभः) २२.२२. [वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

व्यकल्पयन् विशेषेण कथयन्ति ३१.१०. सामर्थ्य-गुणकल्पनं कुर्वन्ति ऋ० भू० १२५, ३१.१०. [वि+कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ् सामान्यकाले]

व्यकृतः विविधतया कृन्तसि १.६३.४. [वि+कृती छेदने (तुदा०) धातोर्लङ् । विकरणव्यत्ययेन शः]

व्यक्तम् प्रसिद्धम् (अवसानं=अवकाशम्) ३५.१. **व्यक्तः**=विविधाभिः पुष्टिभिः प्रसिद्धः (वीर्यवान् पुरुषः) १९.८७. **व्यक्ताः**=विशेषेण प्रसिद्धाः कमनीयाः (श्रेष्ठा मनुष्याः) ७.५६.१. [वि+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्ति-गतिषु (रुधा०) धातोः क्तः]

व्यक्रँस्त विविधसुखप्राप्तिहेतुना क्रमते, विविधतया क्रमते, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ्, विविधतया गच्छति २.२५. **व्यक्रामत्**=विशेषेण व्याप्नोति, भा०—व्याप्य तिष्ठति ३१.४. [वि+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्लुङ् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । अन्यत्र लङ्]

व्यख्यत् विविधतया ख्यापयति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङन्तर्गतो ण्यर्थश्च ३.७. प्रख्याति १.११३.४. विख्याति १२.२१. विविधतया प्रसिद्धतया प्रकाशेत १.४६.१०. प्रकाशयति १२.३. धर्म्यानुपदेशान् प्रकथयः १२.३३. प्रख्यापय १.१६१.१३. **व्यख्यन्**=विशेषेणोपदिशन्तु ४.१.१८. **व्यख्यम्**=विविधतयाऽन्यान् प्रति कथयेयम् १.१०९.१. **व्यख्यः**=विशेषेण प्रकाशयति ७.१३.३. [वि+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोर्लुङ् । 'अस्यतिवक्ति-ख्यातिभ्योऽङ्' इत्यङ्]

व्यचक्षयत् विविधतया दर्शयति २.२४.३. [वि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

व्यचरत् विचरति १.१०३.३. [वि+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

व्यचस्वतीम् प्रशस्तं व्यचो विज्ञानं सत्करणं विद्यते यस्यास्ताम् (स्त्रियम्) १४.१२. प्रशस्तविद्याव्यापिकाम् (सतीं स्त्रियम्) १५.६४. बहु व्यचो व्यञ्चनं विद्यागमनं सत्करणं वा विद्यते यस्यास्ताम् (विदुषीं प्रजापालिकां राज्ञीम्) १३.१७. **व्यचस्वतीः**=गमनाऽवकाशयुक्ताः (द्वारः=द्वाराणि) २८.२८. व्याप्तिमतीः (पतिव्रताः स्त्रियः) २.३.५. व्याप्तिमत्यः (दिशः) २०.६०. शुभगुणेषु व्यापिकाः (जनयः=जायाः) २९.३०. [व्यचस्प्राति० प्रशंसायामर्ये मतुबन्तान्ङीप् । व्यचस्=वि+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोरसुन् औणा० । बहुलवचनात् किच्च]

व्यचस्वती सुखव्याप्तियुक्ते (अ०—विद्युदन्तरिक्षे) ११.३०. [व्यचस्वतीम् इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः । व्यचस्वतीः व्यञ्चनवत्यः नि० ८.१०.]

व्यचस्वन्ता व्याप्नुवन्तौ (प्रजासेनाजनौ) ६.२५.६. [व्यचस्प्राति० मतुबन्ताद् द्विवचनस्याकारादेशः]

व्यचः शुभगुणव्याप्तिः १५.४. विविधं जलादिवस्त्वञ्चन्ति ताः (भा०—अनेकाः क्रियाः), प्र०—अत्र व्युपपदादञ्चेः क्विन् ततो जस् १.३०.३. व्याप्तेः १.५२.१४. यो विविधतया सर्वं जगज्जानाति तस्य (ईश्वरस्य) ऋ० भू० १६२. [वि+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इति क्विन्]

व्यचिष्ठम् अतिशयेन व्याप्तम् (अग्निम्) २.१०.४. अतिशयेन विचितारं प्रक्षेप्तारम् (वायुम्) ११.२३. **व्यचिष्ठे**=अतिशयेन व्याप्ते (स्वराज्ये) ५.६६.६. [वि+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोस्तृजन्तादतिशायन इष्ठन् । तृचो लोपः । व्यचिष्ठः (यजु० ११.२३.) व्यचिष्ठमग्नेरभसं दृशानमित्यवकाशवन्तमग्नेरन्नादं दीप्यमानमित्येतत् श० ६.३.३.१९.]

व्यचेत् विचेतयति ४.२४.८. [वि+चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् । ततः 'हल्ङ्याब्भ्यः०' इति तिपो लोपः]

व्यच्यमानम् विविधप्रकारेण पालनीयम् (गवादिकं, वीर्यसेचकं वृषभम्) १३.४९. [वि+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच । व्यच्यमानः (यजु० १३.४९.) (उपजीव्यमानः) व्यच्यमानं सरिरस्य मध्यऽइतीमे वै लोकाः सरीरमुपजीव्यमानमेषु लोकेष्वित्येतत् श० ७.५.२.३४.]

व्यजथ विशेषेण गच्छथ ५.५५.४. [वि+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लट्]

व्यजनः विशेषेण जनयति २.१३.७. [वि+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शप्, जादेशाऽभावश्च]

व्यजिहीत विविधतया प्राप्नोति २.२३.१८. [वि+ओहाङ् गतौ (जु०) धातोर्लङ्]

व्यञ्जते विशेषेण गच्छन्ति १.६४.४. [वि+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

व्यतिष्ठिपः विशेषतया संस्थापयेः १.५६.५. [वि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात्लुङ् । 'तिष्ठतेरित्' अ० ७.४.५. सूत्रेणोपधाया इत्वम्]

व्यतीन् विशेषेण प्राप्तबलान् (योद्धृजनान्) १.१५५.६ **व्यतीनाम्**=गमनकर्त्तॄणाम् (प्रजाजनानाम्) ४.३२.१७. [वि+अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इन्]

व्यथते भयं पीडां प्राप्नोति ५.३७.४. पीड्यते ५.५४.७. [व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोर्लट्]

व्यथमानाम् चलन्तीम् (पृथिवीम्) २.१२.२. [व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

व्यथय पीडय ६.२५.२. [व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

व्यथितात् भयात् सञ्चलनात् ५.९. [व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोः क्तः । ततः पञ्चमी]

व्यथिषत् व्यथते ६.१८. **व्यथेते**=स्वस्वपरिधेरितस्ततो न चलतः ३.५४.८. [व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लट्]

व्यथिः या व्यथते सा (भूमिः) ५.५९.२. व्यथकः शत्रुः भा०—प्रजाभ्यो दुःखप्रदो जनः १३.११. पीडा ४.४.३. व्यथा ६.२८.३. [व्यथ भयसञ्चलनयोः (भ्वा०) धातोरौणा० बाहु० इन् । व्यथिः क्रोधनाम निघं० २.१२.]

व्यदधात् विदधाति १७.३२. विधत्तवान् ऋ० भू० ३६, ४०.८. वेदोपदेशेनोपदिष्टवान् पं० वि० वेदद्वारा उपदेश करता है स० प्र० २७३, ४०.८. सिद्ध करे सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५३. **व्यदधुः**=विविधप्रकारेण धरन्ति ३१.१०. विविधसामर्थ्यकथनेनाऽदधुरर्थात् अनेकविधं तस्य व्याख्यानं कृतवन्तः, कुर्वन्ति करिष्यन्ति च,

ऋ० भू० १२५, ३१.१०. [वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लङ्]

व्यदन्ति विविधतया विच्छिद्य भक्षयन्ति १.१०५.८. [वि+अद भक्षणे (अदा०) धातोर्लट्]

व्यदर्दः पुनः पुनर्भृशं विदारयति २.२४.२ [वि+दॄ विदारणे (क्रया०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लङ्]

व्यदर्शि विविधतया दृश्यताम् १.४६.११. [वि+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्]

व्यदृश्रम् विशेषेण पश्येयम्, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् ८.४०. [वि+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'इरितो वा' इति च्लेरङ्। 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.८. सूत्रेण रुडागमः। 'ऋदृशोऽङि' इति प्राप्तो गुणोऽपि छान्दसत्वादेव न भवति]

व्यद्यौत् विविधतया प्रकाशते ३.१.१८. प्रकाशयति ६.५१.१. विद्योतयति १२.१. [वि+द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्। छान्दसत्वात् च्लेर्लुक्]

व्यधमत् विशेषेण धमति निराकरोति ४.५०.४. [वि+धमति गतिकर्मा निघं० २.१४. वधकर्मा निघं० २.१९. ततो लङ्]

व्यध्वनः विरुद्धोऽध्वा यस्य सः (अग्ने रजः=कणः) १.१४१.७. [वि+अध्वन्पदयोः समासः]

व्यनक् विशेषेण प्रकटीकरोति २.१५.७. [वि+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोर्लङ्। आडागमस्तु न छन्दसि]

व्यनतः प्राप्नुवन्त्यः (जनयः=जायाः) ४.५.५. [वि+अनिति गतिकर्मा निघं० २.१४. ततः शतृ]

व्यनिनस्य=यत्प्रशस्तं प्राणनिमित्तं तस्य (विद्वज्जनस्य) १.१५०.२. [वि+अन प्राणने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० इनच्]

व्यनुधिरे विशेषतयाऽनुदधिरे दधति, प्र०—अत्र छान्दसोऽभ्यासस्य लुक् १.१६६.१०. [वि+अनु+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट्। अभ्यासलोपश्छान्दसः]

व्यन्तः वेदविद्यासु व्याप्नुवन्तः (ग्रहाः=गृहाश्रमिणः) ९.४. व्याप्तविद्या क्रियाः (विद्वज्जनाः) ६.१.४. कामयमानाः (प्रजाजनाः) १.१२७.५. प्राप्नुवन्तः (राजादिजनाः) ७.२७.५. [वी गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) धातोः शत्रन्ताज्जस्। व्यन्त इत्येषोऽनेककर्मा। 'पदं देवस्य नमसा व्यन्तः' इति पश्यतिकर्मा। 'वीहि शूर पुरोडाशम्' इति खादतिकर्मा नि० ४.१९.]

व्यन्ता विविधबलोपेतौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१२२.४. [वि गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) धातोः शतृ। द्विवचनस्याकारः]

व्यन्ति प्राप्नुवन्ति ५.२३.३. कामयन्ताम्, प्र०—'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इतीयङभावे यणादेशः, लेट्प्रयोगोऽयम् १.१०५.७. **व्यन्तु**=कामयन्ताम् ५.४६.८. व्याप्नुवन्तु प्राप्नुवन्तु वा ७.५७.६. व्यन्ति प्राप्नुवन्ति, अ०—गच्छन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् २.१६. [वी गतिव्याप्तिप्रजनकान्त्यादिषु (अदा०) धातोर्लट्। लेट् वा। अन्यत्र लोट्]

व्यपिबत् गृह्णीयात् १९.७८. विशेषेण पिबेत् १९.७९. **व्यपिबः**=विविधतया पिब १०.३४. [वी+पा पाने (भ्वा०) धातोर्लङ्। शिति पिबादेशः]

व्यप्रथयः विविधतया प्रथय १.६२.५. **व्यप्रथिष्ट**=विप्रथताम् २.११.७. [वि+प्रथ प्रख्याने (चुरा०) धातोर्लङ्। अथवा प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ् अन्यत्र लुङ्]

व्यब्रवीत् विशेषेणोपदिशति १.१४५.५. [वि+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लङ्। 'ब्रुव ईट्' इतीडागमः]

व्यमिमीत विशेषेण निर्मिमीते ६.७.७. विरचयति ६.८.२. [वि+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लङ्]

व्ययन्ताम् विशिष्टतया प्राप्नुवन्तु जानन्तु वा ६.६. **व्ययस्व**=धरस्व ११.४०. व्ययं कुरु ३.५३.१९. [वि+अय गत्यर्थे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

व्ययातम् प्राप्नुयातम् १.११६.२०. [वि+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लङ्]

व्ययेयम् व्ययं कुर्याम् २.२९.६. [व्यय गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

व्ययामसि प्राप्ताः स्म १७.४. संवृणोमि १७.५. [व्यय गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्। 'इदन्तो मसिः' इति मस इदन्तत्वम्]

व्यरुजः विशेषतयाऽऽमर्दय १.५६.६. [वि+रुजो भङ्गे (तुदा०) धातोर्लङ्]

व्यर्दय विशेषेण नाशय २.२३.१४. **व्यर्दयत्**=विशेषतयाऽर्दयति नाशयति ३४.७. [वि+अर्द हिंसायाम् (चुरा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लङ्। आटोऽभावः। अथवा वि+अर्द गतौ याचने च (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

व्यवधीः विशिष्टतया हंसि १.१०३.८. [वि+हन

हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लुङ् । 'लुङि चे' ति धातोर्वधादेशः]

व्यवर्त्तयत् विशेषेण वर्त्तयति ६.८.३. विविधतया वर्त्तमानं कारयति ऋ० भू० १४१, ऋ० ४.५.१०.३. [वि+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

व्यवसाययात् निश्चयवतः कुर्यात्, प्र०—अयं व्यवपूर्वात् 'षोऽन्तःकर्मणि' इति णिजन्ताद्धातोः प्रथमपुरुषैकवचने तिपि लेट्-प्रयोगः ३.५८.

व्यवस्थिरन् विविधतया तिष्ठेरन्, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् 'वा छन्दसि' इति झस्य रनादेशः 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति सिचः सलोपः १.६४.११. [वि+अव+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । झस्य रन् छान्दसः सिचो लोपश्च]

व्यवः विशेषेण रक्ष ५.३१.३. विशेषतयाऽवति १.१५७.१. [वि+अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लङ्]

व्यवोचन्त विशिष्टतया वदन्ति ६.३१.१. [वि+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लुङ् । धातोर्वचिरादेशः]

व्यशायः विशायय ६.३३.१. [वि+शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

व्यशिश्रयुः विश्रयन्ति ७.२.५. [वि+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङ् । 'णिश्रिद्रु०' अ० ३.१.४८ सूत्रेण चङ्]

व्यशेम विविधतया प्राप्नुयाम, प्र०—अत्र अशूङ्धातोः 'लिङ्याशिष्यङ्' इत्यङ् सार्वधातुकसंज्ञया 'लिङः सलोपो०' इति सकारलोपः, आर्धधातुकसंज्ञया शपोऽभावः १.८९.८· **व्यशेमहि**=प्राप्नुयाम २५.२१. विविध सुखपूर्वक प्राप्त हों आर्याभि० २.२७, २५.२१. **व्यश्नवै**=विविधतया प्राप्नुयाम्, प्र०—लेट्प्रयोगोऽयम् १९.३७. **व्यश्नुतम्**=प्राप्नुतम् ऋ० भू० २०९, ऋ० ८.३.२८.२. **व्यश्नुहि**=विविधतया व्याप्नुहि १.५४.९. **व्यश्युः**=विशेषेण प्राप्नुयुः १.७३.९. **व्यश्नैत्**=व्याप्नोत १.९२.१२. [वि+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिङ् । 'लिङ्याशिष्यङ्' इत्यङ्-विकरणः । अन्यत्र लेट् लोट् लङ् च]

व्यश्नुविने=व्यापिने वीर्याय २२.३२. [वि+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्विन् । 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकत्वात् श्नुः]

व्यश्वम् विविधा विगता वा अश्वास्तुरङ्गा अग्न्यादयो वा यस्मिन् सैन्ये याने वा तम् १.११२.१५. [वि-अश्वपदयोः समासः]

व्यसन् विशेषेण प्रक्षिपन्ति ४.३.११. [वि+असुक्षेपणे (दिवा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शप् । आटोऽभावश्च]

व्यस्कभ्नाः विशेषतया प्रतिबध्नासि प्रतिवध्नाति वा ५.१६. [वि+स्कम्भु (सौत्रो धातुः) धातोर्लङ् । 'स्तम्भुस्तुम्भु०' इति श्नुः]

व्यस्तभ्नात् विशेषेण स्तभ्नाति धरति ६.८.३. विस्तंभितवान् ऋ० भू० १४१, ६.८.३. [वि+स्तम्भु (सौत्रो धातुः) धातोर्लङ् । 'स्तम्भुस्तुम्भु०' इति श्नुः]

व्यस्थात् विशेषेण तिष्ठेत् १.१०१.७. विविधतया तिष्ठति १.६५.४. [वि+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ् । गातिस्था०' इति सिचो लुक्]

व्यस्यताम् उत्क्षिपताम् १७.६४. **व्यस्यथ**=प्रचालयत् ५.५५.६. [वि+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । अन्यत्र लट्]

व्यस्यन् विविधतया प्रक्षिपन् (वैद्यः) ११.४७. [वि+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः शतृ]

व्यहन् विशेषेण हन्ति १.१०३.२. [वि+हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लङ्]

व्यंसम् विगता अंसा भुजमूलानि यस्य तम् (दुष्टं शत्रुम्) ३३.२६. छिन्नस्कन्धम् (वृत्रम्=मेघम्) ऋ० भू० २८४, १.३२.५. विगता अंसाः स्कन्धा यस्य तम् (शत्रुम्) १.१०१.२. विगता अंसाः स्कन्धवदवयवा यस्य तम् (शत्रुम्) १.३२.५. **व्यंसः**=विप्रकृष्टा अंसा बलादयो यस्य सः (राजविरोधिजनः) ४.१८.९. [वि-अंसपदयोः समासः । अंसः=अम गत्यादिषु (भ्वा०) धातोः 'अमेः सन्' उ० ५.२१ सूत्रेण सन्]

व्याकरोत् व्याकरोति १९.७७. भिन्न-भिन्न निश्चित करता है सं० वि० १८७, १९.७७. [वि—आङ्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लङ्]

व्याघ्रम् यो विशेषेणाऽऽजिघ्रति तम् (पशुविशेषम्) १९.१०. सिंहम् २१.३९. **व्याघ्रः**=यो विविधान् समन्ताज्जिघ्रति सः (जन्तुः) १४.९. [वि+आङ्+घ्रा गन्धोपादाने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि 'जिघ्रतेः संज्ञायां प्रतिषेधो वक्तव्यः' अ० ३.१.१३७. वा०सूत्रेण शस्य निषेधात् 'आतश्चोपसर्गे' इति कः । व्याघ्र इति पूजायाम् नि० ३.१८. क्षत्रं वा एतदारण्यानां पशूनां यद् व्याघ्रः ऐ० ८.६. ऊवध्यादेवास्य मन्युरस्रवत् स व्याघ्रोऽभवदारण्यानां पशूनां राजा श० १२.७.१.८. व्याघ्रो व्याघ्राणाद् व्यादाय हन्तीति वा नि० ३.१८. पुरो व्याघ्रो जायते पश्चात् सिंहः काठ०

२०.१०. व्याघ्रेणारण्यान् पशून् (अन्वाभवत्) काठ० ४३.४.]

व्याघ्रलोम व्याघ्रस्य लोम व्याघ्रलोम १९.९२. [व्याघ्र-लोमन्पदयोः समासः]

व्याजानन् विशेषेणाऽभितो जानन्ति १.७२.८. [वि+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्लङ्]

व्यातिरत् उल्लङ्घयतु ३.३४.१. [वि+आङ्+तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शः]

व्यात्तम् विकासितं मुखमिव, प्र०—अत्र वि आङ्पूर्वकाद् डुदाञ्धातोः तः ३१.२२. विकाशितम् (मुखम्) ऋ० भू० १३४, ३१.२२. [वि+आङ्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्तः । 'अच उपसर्गात्तः' इति तादेशः]

व्याद्रवत् व्याधावन् (अग्निः=पावक इव विपश्चिज्जनः) ७.१०.२. [वि+आङ्+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्]

व्याधिने रोगिणे (जनाय) १६.१८. [व्याधप्राति० सम्बन्धे (मत्वर्थे) इनिः । व्याधः=वि+आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' इति कः]

व्यानञ्रे विशेषेणाऽजन्तुशत्रून् प्रक्षिपन्तु, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.८७.१. [वि+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । 'इरयो रे' इति रे-आदेशः]

व्यानट् व्याप्तोऽस्ति १२.१०२. विशेषेणाऽश्नोति व्याप्नोति ७.२८.२. [वि+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लङ् । 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणलुक् । 'अश्नोतेश्चे' ति नुट् छान्दसत्वादनभ्यासादपि]

व्यानदाः या व्याप्तिविज्ञानं ददति (हेतयः=शस्त्रास्त्रोन्नतयः १७.१५. [व्यानोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः । ततष्टाप्]

व्यानम् यो विविधेषु शरीरसन्धिष्वनिति तम् (वायुम्) १४.८. विविधमनन्ति येन तम् (प्राणम्) १९.९०. **व्यानः**=सर्वसन्धिषु व्याप्तश्चेष्टानिमित्तः (वायुः) २२.३३. **व्यानाय**=विविधोत्तमव्यवहाराय १३.१९. विविधविद्याव्याप्तये १५.६४. यो विविधेष्वङ्गेषु अनिति व्याप्नोति तस्मै (वायवे) २२.२३. व्यानिति सर्वान् शुभगुणकर्मस्वभावान् येन तस्मै (वायवे) १३.२४. विविधमन्यते व्याप्यते येन तस्मै सर्वेषां शुभगुणानां कर्मविद्याऽङ्गानां चं व्याप्तिहेतवे (वायवे) १.२०. सर्वशरीरगतवायवे ७.२७. विविधमानयति यस्मा इव (वायवे) ७.३. **व्यानाः**=चेष्टानिमित्ताः सर्वशरीरस्था वायवः १७.७१. [वि+अन प्राणने (अदा०) धातोः 'हलश्चे' ति घञ् । व्यानो ह्यु पांशुसवनोऽन्तरिक्षं ह्येव व्यनन्नभिव्यनिति श० ४.१.२.२७. (यज्ञस्य) व्यान उपांशु सवनः श० ४.१.१.१. व्यानो वरुणः श० १२.९.१.१६. व्यानः प्रतिहर्त्ता कौ० १७.७. गो० उ० ५.४. व्यानो बृहती तां० ७.३.८. आपो व्यानः जै० उ० ४.२२.९. (प्रजापतिः) व्यानादमुं (द्यु-लोकम्) (प्रावृहत्) कौ० ६.१०. (तं संज्ञप्तं पशुम्) दक्षिणा दिग्व्यानेत्यनुप्राणाद्व्यानमेवास्मिंस्मतददधात् श० ११.८.३.६. द्विर्ऋतुनेति (यजन्ति) उपरिष्टाद् व्यानमेव तद् यजमाने दधति कौ० १३.१९. निक्रीडित इव ह्ययं व्यानः ष० २.२. व्यानः शस्या (ऋक्) श० १४.६.१.१२. व्यानस्त्रिष्टुप् मै० ३.४.४.]

व्यानशिः व्याप्तः (भगः=ऐश्वर्ययोगः) ३.४९.३. [वि+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि०' इति किर्लिड्वच्च । व्यानशिः बहुनाम निघं० ३.१.]

व्याप्राः व्याप्नोति ४.१४.२. [वि+आङ्+प्रा पूरणे (अदा०) धातोर्लुङ् । 'मन्त्रे घसह्वर०' इति लेर्लुक्]

व्याभ्राजन्ते विशेषेण समन्तात् प्रकाशन्ते १.८५.४. [वि+आङ्+भ्राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

व्याममे विशेषतया सर्वतो मिमीते १.५८.१. [वि+आङ्+माङ् माने (जु०) धातोर्लिट्]

व्यार विशेषतया गच्छति ३.३०.१०. [वि+ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्लिट्]

व्यावः विरक्ष ४.५२.६. विविधतया वृणोति १.९२.४. अभितो वृणोषि १.६३.५. विविध नियमों से पृथक् पृथक् यथायोग्य वर्त्ता रहे हो आर्याभि० २.२८, १३.३. [वि+अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लङ् । अन्यत्र वि+वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लुङ् । 'मन्त्रे घसह्वर०' अ० २.४.८०. सूत्रेण लेर्लुक्]

व्याश व्यश्नाति ३.३६.८. [वि+अश भोजने (क्र्या०) धातोर्लिट्]

व्यास्यत् व्यसेच्छिन्द्यात् ४.३०.२०. [वि+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्लङ्]

व्याहृतायाम् उपदिष्टायां सत्याम् (वाचि=वेदवाण्याम्) ८.५४. [वि+आङ्+हृञ् हरणे (भ्वा०)+क्तः+स्त्रियां टाप्]

व्युच्छ दुःखानि विवासय १.११३.७. सुखे स्थिरी-

कुरु १.११३.१६. विविधतया विवस १.४८.१. **व्युच्छति**=विवासयति १.९२.१४. **व्युच्छन्ति**=दुःखं विवासयन्ति १.११३.१८. **व्युच्छसि**=विविधप्रकारेण विवससि १.४६.१. **व्युच्छात्**=प्राप्नुयात् १.१२४.११. विवसेत् १.११३.१३. **व्युच्छान्**=निवसेयुः ७.१८.२१. निवासयेयुः ४.५५.२. **व्यौच्छः**=विवासयति ५.७९.२. निवासितवती वर्त्तते ५.७९.३. [वि+उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोर्लोट् अन्यत्र लट् लेट् लङ् च]

व्युच्छन्ती निवासं कुर्वन्ती (उषाः) १.४८.६. विविधानि तमांसि विवासयन्ती (उषाः) १.११३.७. तमो नाशयन्ती (उषाः) विविधतया वासयन्ती (उषाः) १.४९.४. **व्युच्छन्तीम्**=निद्रां विवासयन्तीम् (उषसम्) १.११३.११. [वि+उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

व्युच्छान् व्युच्छन्ति तान् (पदार्थान्) १.११३.१०. विवासितान् (देवान्=विद्वज्जनान्) ७.३०.३. [वि+उच्छी विवासे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि मूलविभुजादित्वात् कः]

व्युतम् विविधतयोतं विस्तृतं वस्त्रम् १.१२२.२. **व्युते**=विगताऽऽवरणे प्रसिद्धे (पथि=मार्गे) ३.५४.९. [वि-उतपदयोः समासः। उतम्=वेञ् तन्तुसन्ताने (भ्वा०) धातोः क्तः। यजादित्वात् किति सम्प्रसारणम्]

व्युद्यते विशेषेण क्लिद्यते १.१६४.४७. [वि+उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोः कर्मणि लट्]

व्युनत्ति विशेषेण क्लेदयति ५.८५.३. **व्युन्दन्ति**=विशिष्टतया क्लेदन्ति १.८५.५. **व्युन्धि**=विशेषेणोन्दयति क्लेदयति ५.८३.८. [वि+उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोडपि]

व्युनोति विशेषेण प्रेरयति ५.३१.१.

व्युन्दनम् विविधानामोषध्यादीनामुन्दनं क्लेदनं येन तत् (यज्ञ-काण्डम्) २.२. [वि+उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोर्ल्युट्]

व्युप्तकेशाय विशेषतयोप्ताश्छेदिताः केशा येन तस्मै संन्यासिने १६.२९. [व्युप्त-केशपदयोः समासः। व्युप्तः=वि+डुवप् बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोः क्तः। यजादित्वात् सम्प्रसारणम्। अयं छेदनेऽपि दृश्यते केशान् वपतीति]

व्युप्रथते विस्तृणोति १.१२४.५. [वि+उ+प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर्लट्। उ इति वितर्के]

व्यूर्णोति निष्पादयति १.१०५.१५. [वि+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोर्लट्]

व्युषि सेवसे ५.३.८. **व्यूषुः**=विवसन्ति ३.५५.१. [व्युष विभागे (दिवा०) धातोर्लटि शपो लुकि सिपः सलोपे च रूपम्। अन्यत्र वि+वस निवासे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

व्युषि विशिष्टे विवासे ५.४५.८. विशेषेण दाहे ६.६२.१. [व्युष दाहे (दिवा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

व्युष्टिषु विविधा उष्टयः कामनाश्च तासु १.४४.३. विशिष्टासु कामनास्वध्योषितासु सतीषु १.४४.४. कामनासु १.४४.८. विविधासु सेवासु ४.४५.२. विविधासु वसतिषु १.१७१.५. विशेषेण दहन्ति यासु क्रियासु तासु ३.२०.१. प्रतापेषु २.३४.१२. **व्युष्टौ**=विविधरूपायां सेवायाम् ४.३९.३. विशेषेणोष्यन्ते दह्यन्ते यया कान्त्या तस्याम् १.४८.६. विशेषदीप्तौ ४.२३.५. विशेषेण दाहे ४.१.५. विशिष्टप्रतापे ४.१४.४. विशिष्टे निवासे १.१२४.१२. प्रभातवेलायाम् ५.३०.१३. विविधैर्गुणैः सेवमानायामुषसि ६.४४.६. विशेषेण कामयमाने समये १.११८.१. **व्युष्ट्यै**=प्रदीप्तायै दाहक्रियायै २२.३४. [वि-उष्टिपदयोः समासः। उष्टिः=वश कान्तौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। ग्रहिज्यादिना सम्प्रसारणम्। अथवा वि+वस निवासे (भ्वा०) धातोः क्तिन्। यजादित्वात् सम्प्रसारणम्। अथवा व्युष दाहे (दिवा०) धातोर्वा क्तिन्। व्युष विभागे (दिवा०) धातोर्वा क्तिन्। व्युष्टिर्वै दिवा, व्येवास्मै वासयति तां० ८.१.१३. व्युष्टिर्वा एष द्विरात्रो व्यवास्मै (यजमानाय) वासयति तां० १८.११.११. अहर्व्युष्टिः तै० ३.८.१६.४. रात्रिर्वै व्युष्टिः श० १३.२.१.६.]

व्यूर्णुते आच्छादयति ६.५०.८. **व्यूर्णुषे**=स्वव्याप्त्याऽऽच्छादयसि ४.५४.२. विस्तारयसि ३३.५४. **व्यौर्णोत्**=विशेषेण स्वीकरोति १.६८.५. विविधतयोर्णुत आच्छादयति १७.१८. [वि+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लङ्]

व्यूर्ण्वती विविधान् पदार्थानाच्छादयन्ती (उषाः) १.९२.११. विशेषेणाऽऽच्छादयन्ती (योषा) ५.८०.६. [वि+ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

व्यृण्वति विशिष्टतया कर्माणि साध्नोति १.५८.३. [वि+ऋण्वति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्लट्]

व्यृण्वन् विशेषेण हिंसन्ति १.६९.५. [वि+ऋणोति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः शतृ]

व्यृद्धचै विगता चाऽसौ ऋद्धिश्च व्यृद्धिस्तस्यै ३०.१७. [वि-ऋद्धिपदयोः समासः]

व्येति निस्सरति ३२.८. **व्येतु**=व्याप्नोतु ऋ० भू० १५७. **व्येषि**=विशेषेण प्राप्तोऽसि १.५०.७. [वि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोडपि]

व्येनसा विनष्टपापाचरणेन ३.३३.१३. [वि-एनस्-पदयोः समासः]

व्येनी या विशिष्टा मृगीवद् वेगवती (उषाः) ५.८०.४. [वि-एनीपदयोः समासः । एनी=एतप्राति० 'वर्णादनुदात्तात्०' अ० ४.१.३९. सूत्रेण ङीप् । तकारस्य च नकारादेशः]

व्यैताम् विविधतया प्राप्नुतः १४.३०. [वि+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लङ्]

व्यैरत् विशिष्टतयैरयति २.१९.६. **व्यैरम्**=प्रेरयेयम् ४.२६.३. [वि+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लङ् । वचनव्यत्ययः]

व्यैरयत् विविधतया वीरयत्, वीरयत्यूर्ध्वमधोगमयति प्र०—अत्र लडर्थे लङ् १.७.३. विशेषेण प्रेरयति २.२०.७. विशिष्टतया गमयति १.५१.११. [वि+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

व्योम स्थानम् २३.६२. व्यापकमवकाशम् १.१६४.३४. आकाशरूपं स्थानम् २३.६१. अवकाशः १.१६४.३५. **व्योमनः**=आकाशस्य १.५२.१२. **व्योमनि**=व्योमेव प्रकाशिते व्यापके परमात्मनि ५.६३.१. व्योमवद् व्यापके सर्वरक्षणादिगुणान्विते ब्रह्मणि १.१४३.२. [व्ययति संवृणोतीति विग्रहे व्यय गतौ (भ्वा०) धातोः 'नामन्सीमन्व्योमन्०' उ० ४.१५१. सूत्रेण मनिन् निपातनाच्च रूपसिद्धिः । व्योम अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. व्योमन् व्यवने नि० ११.४०. व्योम दिङ्नाम निघं० १.६. उदकनाम निघं० १.१२. इमे वै लोकाः परमं व्योम श० ७.५.२.१८. एष उ ह वै व्योमा ये ऽर्वाञ्चः प्रजापतेर् देवाः जै० २.८८.]

व्योमन् व्योम्नि व्यापके परमेश्वरे १.१६४.३९. व्योमवद् व्याप्तेऽक्षुब्धे (परमेश्वरे) १.१६४.४१. बुद्ध्यवकाशे १९.७. व्याप्तेऽन्तरिक्षे १३.४९. [व्योमन् पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततः सप्तम्याः 'सुपां सुलुक्०' इति लुक्]

व्योमसत् यो व्योमनि सीदति सः (परमेश्वरः) १०.२४. यो व्योमवद् व्यापके परमेश्वरे सीदति सः (जीवः) १२.१४. **व्योमसदम्**=विमानैर्व्योमनि गच्छन्तम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ९.२. [व्योमन् इत्युपपदे पद्लृ विशरण-गत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप् । व्योमसद् एष (सूर्यः) वै व्योमसद् व्योम वा एतत् सद्मनां यस्मिन्नेष आसन्नस्तपति ऐ० ४.२०.]

व्योमा व्योमवद् विस्तृतः (भान्तः=प्रकाशः) १४.२३. [व्योमन् इति व्याख्यातम् । व्योमा (यजु० १४.२३.) व्योमा हि संवत्सरः श० ८.४.१.११. प्रजापतिर्वै व्योमा श० ८.४.१.११.]

व्रजनम् गमनम् ७.३.२. [व्रज गतौ (भ्वा०) धातोर् भावे ल्युट्]

व्रजन्तीः गच्छन्तीः (आपः=प्राणाः) ३.५६.४. [व्रज गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

व्रजम् व्रजन्ति जानन्ति जना येन तं सत्सङ्गम्, व्रजन्ति विद्वांसो यस्मिन् सन्मार्गे तम् १.२६. व्रजन्ति गच्छन्ति प्राप्नुवन्त्यापो यस्माद् यस्मिन् वा तं व्रजं मेघम् १.२५. निवासस्थानम् १.९२.४. गोस्थानम् १२.८४. व्रजन्ति यस्मिंस्तम् (गोष्ठम्) ६.४५.२४. यो व्रजति तम् (अद्रिं=मेघम्) ४.१.१५. प्राप्तं देशम् १.१५६.४. ज्ञातव्यम् (जनम्) १.१३२.४. अधर्ममार्गम् १.१३२.४ समूहं ज्ञानं वा १.१०.७. गोष्ठानम् २.३८.८. शस्त्राऽस्त्रम् ४.२०.८. **व्रजस्य**=व्रजितुं गन्तुं योग्यस्य (गव्यस्य) १.१३१.३. व्रजन्ति घना यस्मिँस्तस्य मेघस्य ६.१०.३. **व्रजः**=यो व्रजति गच्छति सः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) ३.३०.१०. **व्रजे**=गवां स्थित्यधिकरणे ५.३४.५. [व्रज गतौ (भ्वा०) धातोः 'गोचरसंचर०' अ० ३.३.११९. सूत्रेण करणाधिकरणयोर्घः । व्रजः मेघनाम निघं० १.१०. व्रजः=व्रजत्यन्तरिक्षे नि० ६.२.]

व्रजश्रितः व्रजान् गवादिस्थित्यर्थान् देशान् श्रियन्ति निवासयन्ति ते (राजपुरुषाः) १०.४. [व्रजोपपदे श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः]

व्रजा वेगान् ५.६.७. [व्रज गतौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । ततः 'सुपां सुलुक्०' इति शस आकारादेशः]

व्रजिनीः वर्जनक्रियाः ५.४५.१. [व्रज गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इनिः ततः स्त्रियां ङीप्]

व्रजेव व्रजन्ति यया गत्या तद्वत् ५.६४.१. [व्रजा-इव-पदयोः समासः]

व्रतपते व्रतं नियतं यन्न्यायं कर्म्म तत्पतिस्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=सत्यस्वरूपेश्वर) २.२८. सत्यपते (परमेश्वर) ऋ० भू० ९९, १.५. सत्यभाषणादीनां व्रतानां कर्मणां

वा पालक (अग्ने=स्वप्रकाशस्वरूपेश्वर), प्र०—व्रतमिति कर्म्मनाम निघं० २.१, २०.२४. व्रतानां वेदादिविद्यानां पालयितः पालननिमित्तो वा (अग्ने=परब्रह्मन् विद्युद्वा) ५.६. नियमपालकेश्वर सं० वि० १८६, २०.२४. [व्रत-पतिपदयोः समासः। व्रतमिति कर्मनाम निघं० २.१. अग्निर्वै देवानां व्रतपतिः गो० उ० १.१४.]

व्रतनीः व्रतं स्वकीयभ्रमणादिसत्यनियमं प्रापयन्ती (गौः=पृथिवीगोलः) ऋ० भू० १३८, ऋ० ८.२.१०.१. [व्रतोपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

व्रतपाः यो व्रतानि कर्माणि रक्षति सः (सूर्यरूपः) ६.८.२. सत्यनियमरक्षकः (नरः) १.८३.५. यो व्रतं सत्यं धर्माचरणनियमं पाति रक्षतीति (ईश्वरोऽग्निर्वा) ४.१६. व्रतानि सत्यभाषणादीनि पाति यस्माद्यया वा, व्रतानि सुशीलादीनि पाति येन यया वा सः (अग्निः=ईश्वरो-ऽध्यापको विद्युद्वा) ५.६. यथा सत्यपालको विद्वांस्तथा तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विज्ञानोन्नतविद्वन्) ५.४०. सुशील-रक्षकाः (विद्वज्जनाः) ३.४.७. सत्यनियमरक्षकाः (विद्वांसः) १.८३.५. सत्याचाररक्षकाः (विद्वांसो जनाः) ३.७.८. [व्रतोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क्विप्]

व्रतम् नियमपूर्वकं धर्म्यानुचरणम् ४.११. सत्यलक्षणम् २.२८. सत्यमानं, सत्यभाषणं, सत्यकरणञ्च १.५. क्षमां न्यायप्रकाशं वा कर्म्म ३.५९.३. सत्याचरणनियमपालनम् १८.२३. सत्यधर्मम् ऋ० भू० ९९, १.५. सत्याचरणशीलम् १.१४४.१. सुशीलं सुशीलतां वा १.१३६.५. कर्म शीलं वा ५.६९.१. शीलं नियमं वा २.३८.३. सामर्थ्यं शीलं वा १.१०१.३. तत्तद्धर्म्यनियमम् १.३१.२. ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यासादि सत्याचार को आ० २.४७, १.५. ब्रह्मचर्यादि आश्रमों के धारण को सं० वि० १८९, २०.२४. **व्रतानि**=सत्यपालनादीनि कर्म्माणि १.९१.३. नियतधर्म-युक्तानि कर्म्माणि गुणस्वभावांश्च १.२२.६. वर्त्तमानानि सत्यानि वस्तूनि कर्माणि वा १.१२४.२. ब्रह्मचर्यादीनि ५.६. नियमानुगतानि धर्म्याणि कर्माणि १.८४.१२. [व्रतम् इति कर्मनाम निघं० २.१. व्रतं कर्मनाम वृणोतीति सतः नि० २.१३. इदमपीतरद् व्रतमेतस्मादेव निवृत्तिकर्म वारयतीति सतः। अन्नमपि व्रतमुच्यते यदावृणोति शरीरम् नि० २.१३. अन्नं वै व्रतम् श० ७.५.१.२५. तां० २२.४.५. अन्नं व्रतम् तां० २३.२७.२. अन्नं हि व्रतम् श० ६.६.४.५. तदु हाषाढः सावयसो ऽनशनमेव व्रतं मेने श० १.१.१.७. एतत् खलु वै व्रतस्य रूपं यत् सत्यम् श० १२.८.२.४. संवत्सरो वै व्रतं तस्य वसन्त ऋतुर्मुखं ग्रीष्मश्च वर्षाश्च पक्षौ शरन्मध्यं हेमन्तः पुच्छम् तां० २१.१५.२. वीर्यं वै व्रतम् श० १३.४.१.१५. अमानुष इव वाऽएतद् भवति यद् व्रतमुपैति श० १.९.३.२३. न ह वा ऽअव्रतस्य देवा हविरश्नन्ति ऐ० ७.११. कौ० ३.१. श्रीर्वै व्रतम् जै० २.४१४. एतत् खलु वै व्रतस्य रूपं यत् सत्यम् श० १२.८.२.४. संवत्सरं हि व्रतं नाति तै० सं० २.५.४.४.]

व्रता शरीरात्म-मनोजानि धर्म्याणि कर्म्माणि २.२७.८. गुण-कर्म-शीलानि २.३८.७. विद्या-धर्मानुष्ठान-शीलानि १.७०.१. [व्रतप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि। व्रतमिति व्याख्यातम्]

व्रतेभिः सत्कर्म्मभिः ७.३५.९. [व्रतप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेण भिस ऐसादेशो न भवति]

व्रतेव कर्म्माणीव ५.६६.२. [व्रता-इवपदयोः समासः]

व्रन् वृण्वन्ति ४.५५.६. वृणुयुः ४.२.१६. अपवृणोति ४.५.८. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्लङ्। अटोऽभावः। 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणलुक्]

व्रन्दिनः निन्दिता व्रन्दा सन्ति येषां तान् दुष्टान् १.५४.५. निन्दिता व्रन्दा मनुष्यादिसमूहा विद्यन्ते येषां तान् (मायिनः=शत्रून्) १.५४.४. [व्रन्दप्राति० निन्दायां मत्वर्थ इनिः। व्रन्दी व्रन्दतेर्मृदुभावकर्मणः नि० ५.१५.]

व्रयः वर्जनीयाः (दुर्जनाः), प्र०—अयं 'बहुलमेतन्नि-दर्शनम्' इति व्रीधातुर्ग्राह्यः २.२३.१६. [व्री वर्जने 'बहुल-मेतन्निदर्शनम्' इत्यपठितोऽपि धातुः। ततः 'एरच्' इत्यच्]

व्राणाः आवृताः (जलानि) १.६१.१०. [वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोः क्तप्रत्यये पृषोदरादिना रूपम्]

व्रातपतिभ्यः मनुष्याणां पालकेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२५. [व्रात-पतिपदयोः समासः। व्राताः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

व्रातम् व्रतानां सत्यभाषणादीनां समूहस्तत् ३.५५. [व्रतप्राति० 'तस्य समूह' इति समूहार्थेऽण्]

व्रातं व्रातम् वर्त्तमानं वर्त्तमानम् (गणं गणं=समूहं समूहम्) ३.२६.६. [व्राताः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

व्रातसाहाः ये व्रातान् शत्रुसमूहान् सहन्ते ते (राज-पुरुषाः) ६.७५.९. ये व्रातान् वीराणां समूहान् सहन्ते ते (पितरः=पालनक्षमा राजपुरुषाः) २९.४६. [व्रातोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। व्राताः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

व्रातासः व्रतेषु सत्याचारेषु भवाः (विद्वांसो जनाः) १.१६३.८. मनुष्याः २६.१६. वेगवन्ति यानानि ऋ० भू० १९६, ऋ० १.६.६.४. [व्रातप्राति० जसोऽसुक् । व्रातः=व्रतप्राति० भवार्थेऽण् । व्राताः मनुष्यनाम निघं २.३. विषम इव वै व्रातः तां० १७.१.५.११.]

व्रात्यम् असंस्कृतम् (दुष्टजनम्) ३०.८. [व्रातात् समूहात् च्यवतीति विग्रहे व्रातप्राति० यत् । सावित्रीपतिता व्रात्या इति स्मृतिः]

व्रात्यः महोत्तमगुणविशिष्टः सेवनीयोऽतिथिः ऋ० भू० २७१ [व्रातप्राति० 'तत्र साधु' रिति यत्]

व्राधतः अतिवृद्धान् शत्रून् १.१००.९. विरोधिनः (जनान्) १.१२२.१०. [व्राधत् महन्नाम निघं० ३.३.]

व्राधन्त वर्धन्ते ५.६.७. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्लट् । पृषोदरादिना ऋकारस्य रेफोऽकारस्य चाऽऽकारादेशः]

व्राधन्तम् व्याधमिव प्रजाहिंसकम् (शत्रुम्) ४.३२.३. **व्राधन्तः**=वर्धमानाः, (जनाः) प्र०—अत्र पृषोदरादिना पूर्वस्याऽऽकारादेशो व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च १.१३५.९. [वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । पृषोदरादिना रूपम् । व्राधत् महन्नाम निघं० ३.३.]

व्राधन्तमः अतिशयेन वर्द्धमानः (विद्वज्जनः) १.१५०.३. [व्राधन् महन्नाम (निघं० ३.३.) ततोऽतिशायने तमप् । अथवा व्राधम् महन्नाम निघं० ३.३. ततोऽतिशायने तमप् । नुडागमश्छान्दसः]

व्राम् वरीतुमर्हाम् (मेनां=वाचम्), प्र०—वृञ् धातोर्घञर्थे कः १.१२१.२. **व्राः**=या वृणोति सा (उषाः) १.१२४.८. ये व्रजन्ति ते (पज्राः=धनसम्पन्ना जनाः), प्र०—अत्र व्रजधातोर्बाहुलकादौणादिको डः प्रत्ययः व्रा इति पदनाम निघं० ४.२, १.१२६.५. या व्रियन्ते ताः (वाणीः) ४.१.१६. [वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्घञर्थे कः । व्रज गतौ (भ्वा०) धातोर्वा बाहु० औणा० डः । व्राः व्रात्याः नि० ५.३.]

व्रिशः प्रजाः, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन वस्य स्थाने व्रः १.१४४.५. [विशः मनुष्यनाम निघं० २.३. वकारस्य व्रादेशो वर्णव्यत्ययेन । व्रिशः अङ्गुलिनाम निघं० २.५.]

व्रीहयः तण्डुलाः १८.१२. [व्री वरणे (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० हिः । व्रीहयः शक्वर्यः जै० १.३३३.]

व्रशीनाम् दिव्यानामपामिव निर्मलविद्या सुशीलव्याप्तानाम् (अ०—पत्नीनाम्), प्र०—एता वै दैवीरापस्तद्याश्चैव दैवीरापो याश्चेमा मानुष्यस्ताभिरेवास्मिन्नैतदुभयीभी रसं दधाति श० ११.५.६.८, ८.४८.

शकत् शक्नोति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङडभावश्च १.१०.६. **शकः**=समन्ताच्छक्नुहि ७.२०.९. **शकेम**=समर्थयेम २.५.१. शक्नुयाम, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शः ३.२७.३. **शकेयम्**=शक्नुयाम ४.४. यथा समर्थो भवेयम् १.५. **शक्नवाम**=समर्था भवेम १.२७.१३. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्लुङ् । 'अडभावश्छान्दसः । लृदित्त्वादङ् । अन्यत्र लिङ् लेट् च । 'लिङ्याशिष्यङ्' अ० ३.१.८६. सूत्रेण लिङ्यङ्]

शकपिण्डैः शक्तेः सङ्घातैः २५.७. [शक-पिण्डपदयोः समासः । शकः=शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्घञर्थे कः । शक उदकनाम निघं० १.१२.]

शकमयम् शक्तिमयम् (धूमम्) १.१६४.४३. [शकप्राति०—'तत्प्रकृतवचने मयट्' अ० ५.४.२१. सूत्रेण मयट्]

शका शकः शक्तिमान् (पशुविशेषः), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः २४.३२. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्घञर्थे कः । ततः 'सुपां सुलुक्०' इति सोराकारादेशः]

शकुनः पक्षी ४.२६.६. शक्तिमान् (विद्वान् सभेशः) १८.५३. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः 'शकेरुनोन्तोन्त्युनयः' उ० ३.४९. सूत्रेण उनः प्रत्ययः]

शकुनिसादेन येन शकुनीन् सादयन्ति तेन (व्यवहारेण) २५.३. [शकुन्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् 'कृतो वहुलं वे' ति वार्तिकेन करणे मूलविभुजादित्वात् कः]

शकुनिः पक्षी २४.४०. **शकुने**=पक्षिवच्छक्तिमन् (वेदपाठिजन) २.४३.२. शकुनिवद्वर्त्तमान (उपदेशक जन) २.४२.१. वक्तृत्वशक्तियुक्त उपदेशक जन) २.४३.२. सर्वशक्तिमन्नीश्वर आर्यामि० १.५२, ऋ० २.८.१२.२. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः 'शकेरुनोन्तोन्त्युनयः' उ० ३.४९. सूत्रेण उनिः । शकुनिः शक्नोत्युन्नेतुमात्मानं, शक्नोति नदितुम् इति वा, शक्नोति तकितुमिति वा, सर्वतः शंकरोऽस्त्विति वा शक्नोतेर्वा नि० ९.३.]

शकुन्तकः निर्बलः पक्षी (अध्वर्युः=राजा) २३.२३. [शकुन्तप्राति० अल्पार्थे ह्रस्वार्थे वा कः । शकुन्तः=शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः 'शकेरुनोन्तोन्त्युनयः' उ० ३.४९. सूत्रेण उन्तः]

शकुन्तयः शक्तिमन्तः (वयः=पक्षिणः) २.४३.१.

शकुन्ते=शक्तिमन् (सदुपदेशक जन) २.४२.३. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः 'शकेरुनोन्तोन्त्युनयः' उ० ३.४९ सूत्रेण उन्तिः]

शकुन्तिका अल्पा पक्षिणीव निर्बला, भा०—क्षीणा (प्रजाः) २३.२२. कपिञ्जली १.१९१.११. [शकुन्तिप्राति० अल्पार्थे कः, ततः स्त्रियां टाप् । शकुन्तिरिति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

शकुलाविव ह्रस्वौ मत्स्याविव २३.२८. [शकुलौ-इवपदयोः समासः । शकुलः=शक्नोति तरितुमिति विग्रहे शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर् 'मद्गुरादयश्च' उ० १.४१ सूत्रेण उरच् । प्रत्ययरेफस्य लत्वम्]

शकृत् विष्ठेव १.१६१.१०. **शक्ना**=शकृता दुर्गन्धादिनिवारणसामर्थ्येन धूमादिना ३७.९. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः 'शकेर्ऋतिन्' उ० ४.५८ सूत्रेण ऋतिन् । 'शक्ना' प्रयोगे शकृत्प्राति० तृतीयैकवचने 'पद्दन्नोमास्०' अ० ६.१.६३ सूत्रेण शकन् आदेशः]

शक्तम् समर्थम् (क्षत्रं=राज्यं धनं वा) ५.६८.३. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः क्तः]

शक्तिम् तीक्ष्णाग्राम् २.३९.७. **शक्तिः**=सामर्थ्यम् ४.२२.८. समर्थता १.८३.३. **शक्तीः**=सामर्थ्यानि ३.३१.१४. **शक्त्या**=पाकविद्यासामर्थ्येन ११.५७. योगबलोन्नत्या ऋ० भू० १५६, ११.३. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । शक्तिः कर्मनाम निघं० २.१.]

शक्तिवन्तः सामर्थ्ययुक्ताः (पितरः=पालनक्षमा राजपुरुषाः), प्र०—अत्र 'छन्दसीरः' इति वत्वम् २९.४६. प्रशस्ता बह्वी शक्तिः सामर्थ्यं विद्यते येषान्ते (राजपुरुषाः) ६.७५.९. [शक्तिप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । 'छन्दसीरः' इति मतोर्मस्य वकारः । शक्तिभिः कर्मभिः नि० ७.२८.]

शक्ती आत्मसामर्थ्येन, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयैकवचनस्य पूर्वसवर्णादेशः १.३१.१८. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । ततः 'सुपां सुलुक्०' इति पूर्वसवर्णदीर्घादेशः]

शक्तीवः शक्तिर्बहुविधं सामर्थ्यं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ५.३१.६. [शक्तिप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । 'छन्दसीरः' अ० ८.२.१४. सूत्रेण मतोर्मस्य वकारः । शक्तिवत्प्राति० सम्बुद्धौ 'मतुवसोः०' अ० ८.३.१. सूत्रेण रुत्वम् । पूर्वस्य दीर्घः संहितायाम्]

शक्म शक्यं कर्म्म २.३८.४. **शक्मना**=कर्मणा २२.१८. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः 'असिशकिभ्यां छन्दसि' ४.१४७. सूत्रेण मनिन् । शक्म कर्मनाम निघं० २.१.]

शक्र शक्नोति सर्वं व्यवहारं कर्त्तुं तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र= सभापते) १.१०४.८. शक्तिमन् (इन्द्र) ६.३५.५. समर्थ (पुत्र), आर्याभि० १.४९, ऋ० १.७.१९.८. **शक्रम्**=शक्तिमन्तम् (राजानम्) ऋ० भू० २२०, २०.५०. सद्यः सर्वजगत्कर्त्ताऽनन्तवीर्यवान् (ईश्वरः) पं० वि० । आशुकर्त्तारम् (इन्द्रं=राजानम्) २०.५०. **शक्रः**=समर्थः शक्तिमान् कृपायमाणः सन् (जगदीश्वरः) १.१०.५. दातुं समर्थः (इन्द्रः=परमात्मा) १.१०.६. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३ सूत्रेण रक्]

शक्रा शक्तिनिमित्ता (माता) ५.४१.१५. [शक्रप्राति० स्त्रियां टाप् । शक्रः=शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोरौणा० रक्]

शक्रा शक्तिमन्तौ (अग्निवायू) २.३९.३. [शक्र इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शक्वने शक्तिमद्वीरसैन्यप्राप्तये ५.५. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' इति वा०सूत्रेण वनिप्]

शक्वरयः शक्तयः १८.२२. **शक्वरीषु**=शक्तिमतीषु सेनासु ७.३३.४. **शक्वरीः**=शक्तिनिमित्ता गाः २१.२७. शक्तिमत्यः (राजपुरुषाणां स्त्रियः) १०.४. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' इति वनिप् । ततः स्त्रियां 'वनो र च' सूत्रेण ङीप् रेफश्चान्तादेशः । 'शक्वरयः' प्रयोगे छान्दसो ह्रस्वः । शक्वरी बाहुनाम निघं० २.४. गोनाम निघं० २.११. शक्वर्य ऋचः शक्नोतेः । तद् यद् आभिर्वृत्रमशकद् हन्तुं तच्छक्वरीणां शक्वरीत्वमिति विज्ञायते नि० १.८. शक्लृ धातोर्वा 'स्नामदिपद्यर्त्तिपॄशकिभ्यो वनिप्' उ० ४.११३ सूत्रेण वनिप् । शक्वर्यः (ऋचः) यदिमाँल्लोकान् प्रजापतिः सृष्ट्वेदं सर्वमशक्नोद् यदिदं किं च तच्छक्वर्योऽभवँस्तच्छक्वरीणां शक्वरीत्वम् ऐ० ५.७. इन्द्रः प्रजापतिमुपाधावद् वृत्रं हनानीति तस्मा एतच्छन्दोभ्य इन्द्रियं वीर्यं निर्माय प्रायच्छदेतेन शक्नुहीति तच्छक्वरीणां शक्वरीत्वम् तां० १३.४.१. एताभिर्वा इन्द्रो वृत्रमशकद् हन्तुं तद् यदाभिर्वृत्रमशकद् हन्तुं तस्माच्छक्वर्यः कौ० २.३.२. एताभिः (भूरिग्भिः शक्वरीभिः) वा इन्द्रो वृत्रमहन् क्षिप्रं वा एताभिः पाप्मानं हन्ति क्षिप्रं वसीयान् भवति तां० १२.१३.२३. पशवः शक्वर्यः तां० १३.१.३. पशवो वै

शक्वर्यः तां० १३.४.१३. पशवो वै शक्वरीः तै० १.७.५.४. पशवः शक्वरीः तां० १९.७.६. श्रीः शक्वर्यः तां० १३.२.२. शाक्वरो वज्रः तै० २.१.५.११. वज्रः शक्वर्यः तां० १२.१३.१४. रथन्तरमेतत् परोक्षं यच्छक्वर्यः तां० १३.२.८. ब्रह्म शक्वर्यः तां० १६.५.१८. सप्तपदा वै तेषां (छन्दसां) पराध्यर्या शक्वरी श० ३.९.२.१७ सप्तपदा शक्वरी तै० २.१.५.११. तां० १९.७.६. स (प्रजापतिः) शक्वरीरसृजत तदपाङ्घोषोऽन्वसृज्यत तां० ७.८.१२. व्रीहयः=शक्वर्यः जै० १.१३३. आपो वै शक्वर्यः जै० ३.९२.]

शग्धि दातुं शक्नुहि, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति विकरणलुक् २.२.१२. देहि ४.२१.१०. समर्थो भव ५.१७.५. सुखदानाय समर्थोऽसि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्नोर्लुक् १.४२.९. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपो लुकि तत्स्थानभूतस्य श्नोरपि लुक्]

शग्मम् सुखम्, भा०—चक्रवर्त्तिराज्यादिकमैहिकं सुखम् ३.४३. सांसारिकमाभ्युदयिकम् (सुखम्) ऋ० भू० २४०, ३.४३. [शग्मम् सुखनाम निघं० ३.६. शग्म कर्मनाम निघं० २.१.]

शग्मः शग्मं सुखं विद्यते यस्य सः (सोमः=ऐश्वर्यसमूहः) प्र०—अत्र 'अर्श आदिभ्योऽच्' इत्ययेन मत्वर्थीयोऽच्प्रत्ययः ६.४४.२. **शग्मैः**=सुखप्रापकैः (विद्वज्जनैः) १.१४३.८. [शग्मम् सुखनाम (निघं० ३.६.)। ततो मत्वर्थे 'अर्श आदिभ्योऽच्' इति सूत्रेणाच्]

शग्मया सुखरूपया (गातुमत्या=प्रशस्तवाग्भूमियुक्तया सभया) ७.५४.३. **शग्माम्**=सुखरूपाम् (तनूः=शरीरम्) ४.२. सुखमयीम् (वाचं=वाणीम्) ५.४३.११. [शग्मम् सुखनाम निघं० ३.६. ततः स्त्रियां टाप्]

शग्मानि सुखकारकाणि (इन्द्रियादीनि अष्टविंशानि) ऋ० भू० १६०, अथर्व० १९.१.८.२. [शग्मम् सुखनाम निघं० ३.६. ततो नपुंसके प्रथमाबहुवचनम्]

शग्मासः बहुसुखयुक्ताः (पुत्राः) ७.६०.५. [शग्मप्राति० जसोऽसुक्। शग्मः=शग्मम् सुखनाम निघं० ३.६. ततो मत्वर्थेऽच्]

शग्म्येन शग्मेषु सुखेषु भवेन (मनसा=अन्तःकरणेन) ३.३१.१. [शग्ममिति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत्। शग्म्यम् सुखनाम निघं० ३.६.]

शङ्कराय यः सर्वेषां सुखं करोति तस्मै (परमेश्वराय सेनाधीशाय वा) १६.४१. कल्याणकारकाय (ईश्वराय) प० वि० [शम् इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु' अ० ३.२.२०. सूत्रेण ताच्छील्ये टः। शम् सुखनाम निघं० ३.६.]

शङ्कवः कीलाः १.१६४.४८. यन्त्रकलाः ऋ० भू० १९८. [शकि शङ्कायाम् (भ्वा०) धातोः 'खरुशङ्कुपीयु०' उ० १.३६. सूत्रेण कु-प्रत्ययान्तो निपात्यते। शङ्कु (साम) तद् (शंकुसाम) उ सीदन्तीयमित्याहुः तां० ११.१०.१२. शंकु भवत्यह्नो धृत्यै यद्वा अधृतं शंकुना तद् दाधार तां० ११.१०.११.]

शङ्खध्मम् यः शङ्खान् धमति तम् (पुरुषम्) ३०.१९ [शंखोपपदे ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः (भ्वा०) धातोः कः। शंखः=शमु उपशमने (दिवा०) धातोः 'शमेः खः' उ० १.१०२ सूत्रेण खः]

शङ्गयः शं सुखं गमयति सः (राजा शिष्यो वा) २.१.६. [शम् इत्युपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० डिः प्रत्ययः। अन्तर्भावितो ण्यर्थः]

शङ्गवे शं सुखं गच्छति प्राप्नोति तस्मै (जनाय) १६.४०. [शम् इत्युपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्, अ० ३.२.१८०. वा०सूत्रेण कर्त्तरि डुः]

शचिष्ठया अतिशयितया क्रियया २७.३९. अतिशयेन श्रेष्ठया वाचा प्रज्ञया कर्मणा वा ४.३१.१. अतिशयेन शची प्रज्ञा तया वृता वर्त्तमानया (युक्त्या) ३६.४. [शचीति व्याख्यास्यते। ततोऽतिशायन इष्ठन्। ततः स्त्रियां टाप्]

शचिष्ठः अतिशयेन प्राज्ञः (विद्वज्जनः) ४.२०.९. [शचीप्राति० अतिशायन इष्ठन्]

शचीनाम् वाणीनां सत्कर्म्मणां वा १.१७.४. प्रज्ञानां वाचां वा ४.४३.३. **शचीभिः**=कर्मभिः प्रज्ञाभिर्वा २७.९. **शच्या**=प्रज्ञया प्रजया वा ६.१७.६. [शच व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोरौणा० इन्। ततः स्त्रियां 'कृदिकारादक्तिनः' इति ङीष्। शची वाङ्नाम निघं० १.११. कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. शचीभिः=कर्मभिः नि० १२.२७.]

शचीपतिम् वेदवाचः पालकम् (इन्द्रं=शालाध्यक्षम्) १.१०६.६. **शचीपतिः**=प्रजापतिर्वाक्पतिर्वा (इन्द्रः=राजा) ४.३०.१७. **शचीपते**=प्रजास्वामिन् (उत्तमराजन्) ६.४५.९. वाचः प्रज्ञायाः पालक (राजन्) ४.३१.७. [शची-पतिपदयोः समासः। शचीति व्याख्यातम्]

शचीवते प्रशस्ता प्रज्ञा विद्यते यस्य तस्मै (शक्राय=

सभाद्यध्यक्षाय) १.५४.२. **शचीवः**=शची प्रशस्ता वाक्प्रज्ञा कर्म वा विद्यतेऽस्मिन् तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाध्यक्ष) १.६२.१२. शची बहुविधं कर्म बह्वी प्रज्ञा वा विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=न्यायाधीश), प्र०—शचीति प्रज्ञानामसु पठितम् निघं० ३.९. कर्मनामसु च निघं० २.१. अत्र 'छन्दसीरः' इति मतुपो मस्य वः 'मतुवसो रु०' अ० ८.३.१. इति रुत्वञ्च १.२९.२. **शचीवान्**=बहुप्रजावान् (राजा) ४.२२.२. [शचीति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसायामर्थे मतुप् । 'छन्दसीरः' इति वत्वं मतोर्मस्य । शचीवः कर्मवन् नि० ५.११.]

शचीवसू शचीं प्रज्ञां वासयितारौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१३९.५. [शची-वसुपदयोः समासः । शचीति व्याख्यातम्]

शण्डः शमादिसहितः (योगिजनः) ७.१३. शमाऽन्वितः, भा०—शमादिगुणप्रसक्तः पुरुषः ७.१२. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० डः]

शण्डिकानाम् शत्रूणां तस्याऽवयवभूतानाम् २.३०.८.

शतक्रतुम् असङ्ख्यप्रज्ञं बहुकर्माणं वा (राजानम्) २१.३९. अनेककर्मप्रज्ञायुक्तम् (इन्द्रं=सेनेशम्) १.५१.२. अमितप्रज्ञम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.५१.२. **शतक्रतुः**=शतमसङ्ख्याताः क्रतवः प्रज्ञाः कर्माणि वा यस्य सः (सेनापतिः) ३३.९६. अतुलप्रज्ञः (विद्वज्जनः) २०.७५. **शतक्रतो**=शतान्यसङ्ख्याताः क्रतवः कर्माणि यस्य शूरवीरस्य सूर्यलोकस्य वा तत्सम्बुद्धौ, प्र०—शतमिति बहुनाम निघं० ३.१. क्रतुरिति कर्मनाम निघं० २.१, १.४.८. शतं बहूनि कर्माणि प्रज्ञानानि वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=परमेश्वर) १.१०.१. शतेष्वसंख्यातेषु वस्तुषु क्रतुः प्रज्ञा यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र), प्र०—क्रतुरिति प्रज्ञानाम निघं० ३.९, १.४.९. असङ्ख्यप्रज्ञोत्तमकर्मन्वा (इन्द्र=रक्षक राजन्) ६.४१.५. शतविधप्रज्ञाकर्मयुक्त सभेश राजन् १.३०.१५. अमितबुद्धे (इन्द्र=राजन्) ३.३७.९. बहुप्रज्ञान (इन्द्र=राजन्) ३.३७.३. असङ्ख्यातोत्तमप्रज्ञ बहूत्तमकर्मन्वा न्यायाध्यक्ष १.१०५.८. हे अनन्तक्रियेश्वर आर्याभि० १.३५, ऋ० १.१.३१.९. शतमसंख्यातानि क्रतवः कर्माण्यनन्ता प्रज्ञा वा यस्य तत्सम्बुद्धौ सर्वकामप्रदेश्वर १.१६.९. [शत-क्रतुपदयोः समासः । शतं दशदशतः नि० ३.१०. शतम् बहुनाम निघं० ३.१. क्रतुः कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. शतक्रतुः इन्द्र आसीत् सीरपतिः शतक्रतुः तैं० २.४.८.७.]

शतग्विनम् शतग्वोऽसङ्ख्याता गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (रयिं=धनम्) ४.४९.४. शतानि गावो विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (रयिम्) १.५९.५. [शतगुप्राति० भूम्न्यर्थे इनिः । शतगुः=शत-गोपदयोः समासः]

शततमम् अतिशयेनाऽसङ्ख्यातम् (वेश्यं=सर्वहितं पदार्थम्) ४.२६.३. [शतप्राति० अतिशायने तमप् । शतम् बहुनाम निघं० ३.१.]

शततमा अतिशयेन शतानि (अब्दलानि) ७.१९.५. [शततमम् इति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

शततेजाः शतानि बहूनि तेजांसि यस्मिन्त्स सूर्यः, प्र०—शतमिति बहुनाम निघं० ३.१. १.२४. [शत-तेजस्. पदयोः समासः]

शतदायम् असङ्ख्यदायभागिनम् (जनम्) २.३२.४. [शत-दायपदयोः समासः । दायः=डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'ददातिदधात्योर्विभाषा' अ० ३.१.१३९. सूत्रेण णः । आतो युगागमः]

शतदाव्नि असङ्ख्यदाने (राज्यपालनाख्ये व्यवहारे) ५.२७.६. [शतोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'कृतो बहुलं वे' ति भावे वनिप्]

शतदुरेषु शतावरेषु मेघाऽवयवेषु घनेषु १.५१.३.

शतद्वसुम् शतान्यसङ्ख्यातानि वसूनि यस्मिँस्तम् (रथं=यानम्), प्र०—अत्र पृषोदरादित्वात् पूर्वपदस्य तुगागमः १.११९.१. [शत-वसुपदयोः समासः । पूर्वपदस्य तुगागमश्छान्दसः]

शतधन्यम् असङ्ख्ये धने साधुम् (सोमम्=ओषधिसारम्) ४.१८.३. [शत-धनयोः समासात् साध्वर्थे यत्]

शतधन्वने धनुर्विद्याद्यसङ्ख्यशास्त्रविद्याशिक्षकाय (विद्वज्जनाय) १६.२९. [शत-धन्वन्पदयोः समासः । धन्वन् धनुषि नि० ९.१८. धन्वान्तरिक्षं धन्वन्त्यस्मादापः नि० ५.५.]

शतधारम् शतं बहुविधमसङ्ख्यातं विश्वं धरतीति तम्, अ०—शतधा (वसोः=यज्ञः), प्र०—शतमिति बहुनाम निघं० ३.१, १.३. शतधा धारा सुशिक्षिता वाग् यस्य तम् (विपश्चितं=विद्वज्जनम्) ३.२६.९. शतमसङ्ख्याता दुग्धधारा यस्मात्तम् (गवादिकं वीर्यसेचकं वृषभं वा) १३.४९. **शतधारः**=शतशो धारा वाचो यस्य सः(वीर्यवान् पुरुषः) १९.८७. **शतधारेण**=बहुविद्याधारकेण परमेश्वरेण वेदेन वा १.३. [शतोपपदे धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण् । अथवा शतधारापदयोः समासः ।

धारा वाङ्नाम निघं० १.११.]

शतनीथम् शतैः प्राप्तव्यम् (आजि=सङ्ग्रामम्) १.१७९.३. **शतनीथः**=शतानि नीथानि यस्य सः (इन्द्रः=सेनाद्यधिपतिः) १.१००.१२. सैकड़ों असङ्ख्यात पदार्थों की प्राप्ति कराने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.३४, ऋ० १.७.१०.१२. [शत-नीथपदयोः समासः। नीथः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'हनिकुषिनीरमि०' उ० २.२. सूत्रेण क्थन्]

शतपद्भिः शतैर्गमनशीलैः पादवेगैः (रथैः) १.११६.४ शतेनाऽसङ्ख्यातेन वेगेन पद्भ्यां यथा गच्छेत् तादृशैरत्यन्तवेगवद्भिः (यानैः) ऋ० भू० १९०, १.११६.४. [शत-पादपदयोः समासे 'पद्दन्नोमास्०' अ० ६.१.६३. सूत्रेण पदादेशः]

शतपयाः शतानि पयांसि दुग्धादीनि वस्तूनि यस्य सः (अ०—यजमानः) १७.५६. [शत-पयस्पदयोः समासः]

शतपर्वणा शतान्यसङ्ख्यातानि पर्वाण्यलङ्कर्माणि वा यस्मात्तेन (वज्रेण) १.८०.६. शतस्याऽसङ्ख्यातस्य जीवजातस्य पर्व पालनं यस्मात्तेन (वज्रेण) ३३.९६. [शत-पर्वन्पदयोः समासः। पर्वन्=पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'स्नामदिपद्यर्त्तिपॄशकिभ्यो वनिप्' उ० ४.११३ सूत्रेण वनिप्]

शतपवित्राः शतैरुपायैर्ये शुद्धाः (देवीः=विदुष्यः स्त्रियः) ७.४७.३. [शत-पवित्रपदयोः समासः। शतपवित्राः बहूदकाः नि० ५.६.]

शतभुजिः शतमसङ्ख्याता भुजयः पालनानि यस्याः सा (मही=राज्ञी) ७.१५.१४. **शतभुजिभिः**=शतमसङ्ख्यं सुखं भोक्तुं शीलं येषां तैः (पूर्भिः=नगरैः) १.१६६.८. [शत-भुजिपदयोः समासः। भुजिः=भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्यः' इति इक्]

शतम् शतसङ्ख्याकान् (हिमाः=वर्षाणि) १.६४.१४ शतवार्षिकम्, भा०—यदा शतवार्षिकमायुर्व्यतीतं तदा शरीराणां जराऽवस्था भवेत् २५.२२. असङ्ख्याताः (प्राणाः) १७.७१. शतादधिकानि वा (हिमाः=हेमन्तर्त्तवः) २.२७. सौ (साल) सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५२. असङ्ख्यम् (राधः=धनम्) ४.३१.९. अनेकानि (धामानि=मर्मस्थानानि) १२.७५. भा०-शतशः (आवृतः=क्रियाः) १२.८. **शतस्य**=अनेकेषाम् (यक्ष्माणां=महारोगाणाम्) १२.९७ **शतानि**=बहूनि (आशून्=अश्वान्) ४.२९.४. **शतैः**=शतसङ्ख्याकैरसङ्ख्यैर्वा (वधैः=हननैः) ६.२०.४. [शतम् बहुनाम निघं० ३.१.। एषा वाव यज्ञस्य मात्रा यच्छतम् तां० २०.१५.१२.]

शतमन्युः शतधा मन्युः क्रोधो यस्य सः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३९. [शत-मन्युपदयोः समासः। मन्युः क्रोधनाम निघं० २.१३.]

शतमानम् शतमसङ्ख्यं मानं यस्य तत् (आयुः=जीवनम्) १९.९३ [शत-मानपदयोः समासः। मानम्=माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्ल्युट्]

शतमूतिः शतमसङ्ख्याता ऊतयो रक्षणादिका-क्रिया यस्य सः (सेनापतिः), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति सुपो लुगभावः १.१०२.६. शतमसंख्याता, ऊतयो रक्षा यस्मात् सः (इन्द्रः=राजा) १.१३०.८. **शतमूते**=असंख्यरक्षाकर्त्तः (इन्द्र=शूरवीर राजन्) ७.२१.८. [शत-ऊतिपदयोः समासः। ऊतिः=अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियाम् 'ऊतियूतिजूति०' इति क्तिन् उदात्तश्च]

शतमूर्द्धन् शतेष्वसंख्यातेषु मूर्द्धा मस्तकं यस्य तत्सम्बुद्धौ (अ०—अग्ने=योगिराज) १७.७१. [शत-मूर्द्धन्पदयोः समासः। मूर्द्धन्=मूर्धा मूर्त्तमस्मिन् धीयते नि० ७.२७.]

शतयातुः यः शतैः सह याति सः (वीरसैनिकः) ७.१८.२१. [शतोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः 'कमिमनि०' उ० १.७३. सूत्रेण तुः]

शतरुद्रियाणाम् शतानां रुद्राणां दुष्टरोदकानाम् (अवत्तानाम्=उदारचेतोजनानाम्) २१.४५. बहूनां मध्ये विद्वदधिष्ठातॄणाम् (जनानाम्) २१.४४. शतं रुद्राः शतरुद्राः, शतरुद्रा देवता येषां तेषाम् (अग्निष्वात्तानां=गृहीताऽग्निजनानाम्) २१.४३. [शत-रुद्रपदयोः समासे 'सास्य देवते' त्यर्थे 'शतरुद्राच्छश्च घश्च' अ० ४.२.२८. वा० सूत्रेण छः। अहोरात्रे (संवत्सरस्य) शतरुद्रीयम् तै० ३.११.१०.३.]

शतवन् शतानि बलानि विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ६.४७.९. [शतप्राति० मतुप्]

शतवल्शः शतानि वल्शा अङ्कुरा यस्य सः (वंशादिवृक्षविशेषः) ३.८.११. यथा बह्वङ्कुरो वृक्षस्तथा ५.४३. [शत-वल्शपदयोः समासः]

शतवल्शा शतमसंख्याता वल्शा अङ्कुरा यस्याः सा (ओषधीः) १२.१००. [शतवल्श इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

शतविचक्षणाः शतमसङ्ख्या विचक्षणा गुणा यासु ताः (ओषधीः=सोमाद्याः) १२.९२. [शत-विचक्षणपदयोः समासः। विचक्षणः=वि+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्युच्। 'असनयोश्च प्रतिषेधः' इति ख्याञ् न भवति]

शतव्रजाः अपरिमितगतयः (धाराः) ४.५८.५. शतमसंख्याता व्रजा मार्गा यासां ताः, भा०—अनेकमार्गाः (वाचः) १७.९३. [शत-व्रजपदयोः समासः। व्रजः=व्रज गतौ (भ्वा०) धातोः 'गोचरसञ्चर०' इति घः]

शतशारदाय शतं शरदो जीवनाय ३४.५२. शत वर्ष पर्यन्त जीवन के लिए सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७५ [शत-शारदपदयोः समासः। शारदम्=शरच्छब्दाद् भवार्थेऽण्]

शतसाः यः शतानि सनति विभजति सः (सभेशो राजा) ७.८.६. [शतोपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'जनसनखन०' अ० ३.२.६७. सूत्रेण विट्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इत्याकारादेशः। शतसाः शतसानिनी नि० १०.२९.]

शतसेयाय शतादिसङ्ख्यापरिमितधनावसानाय ३.१८.३. [शत-सेयपदयोः समासः। सेयम्=षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्यत्]

शतस्वी शतमसङ्ख्यं स्वं धनं विद्यते यस्य सः (विप्रः=मेधाविजनः) ७.५८.४. [शत-स्वपदयोः समासान् मत्वर्थ इनिः]

शतहिमा शतं हिमानि यस्या आयुषि सा (इडा=शास्त्रपारङ्गता वाणी) २.१.११. **शतहिमाः**=यावच्छतं वर्षाणि तावत् ६.४.८. शतं हिमानि येषान्ते (सुवीरा जनाः) ६.१२.६. शतवर्षजीविनः (वीरपुरुषाः) ६.१७.१५. शतं हिमानि यासु समासु ताः १.७३.९. शतं हिमा हेमन्तर्त्तवो गच्छन्ति येषु संवत्सरेषु ते ऋ० भू० २४७, अथर्व० १९.७.४. [शत-हिमपदयोः समासे स्त्रियां टाप्। हिमम्=हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हन्तेर्हि च' उ० १.१४७. सूत्रेण मक्। धातोश्च हिरादेशः]

शता शतान्यसङ्ख्यातानि वस्तूनि १.१२६.६ [शत-प्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

शताऽऽत्मा शतेष्वसङ्ख्यातेषु पदार्थेष्वात्मा विज्ञानं यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१४९.३. [शत-आत्मन्पदयोः समासः। आत्मन्=आत्माऽततेर्वाप्तेर्वा, अपि वाप्त इव स्याद् यावद् व्याप्तिभूत इति नि० ३.१५.]

शतानीकाय शतान्यनीकानि सैनिकानि यस्य तस्मै (राज्ञे) ३४.५२. [शत-अनीकपदयोः समासः। अनीकम्=अन प्राणने (अदा०) धातोः 'अनिहृषिभ्यां किच्च' उ० ४.१७. इति सूत्रेण ईकन्]

शतायुषम् शतवर्षजीविनम् (मनुष्यम्) ६.२.५. शतवर्षपरिमितजीवनम् (तनयम्) १३.४१. **शतायुषा**=शतं वर्षाणि यस्मिन्नायुषि तेन १९.३०. [शत-आयुष्पदयोः समासः]

शतारित्राम् शतसङ्ख्याकान्यरित्राणि जलपरिमाणग्रहणार्थानि स्तम्भनानि वा यस्यां ताम् (नावम्) १.११६.५ शतान्यरित्राणि लोहमयानि समुद्रस्थलान्तरिक्ष-मध्येस्तम्भनार्थानि गाधग्रहणार्थानि च भवन्ति यस्यां ताम् (नावम्) ऋ० भू० १३३, १.११६.५. [शत-अरित्रपदयोः समासः। अरित्रम्=ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः करणे कारके 'अर्तिलूधू०' अ० ३.२.१८४. सूत्रेण इत्रः प्रत्ययः]

शतावयम् शतान्यवयवा यस्मिँस्तम् (पशुम्) ५.६१.५ [शत-अवयवपदयोः समासः। वलोपश्छान्दसः]

शताश्रिम् यः शतान्याश्रयति तम् (वज्रम्) ६.१७.१० [शतोपपदे आङ्पूर्वात् श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

शतिनम् शतशो विद्यायुक्तम् (वाजं=बोधम्) १.१२४.१३. अपरिमितमसङ्ख्यम् (पदार्थविज्ञानम्) २.२.९. शतधा योद्धृसेनासहितम् (वाजं=सङ्ग्रामम्) ६.८.६. **शतिनः**=प्रशस्तगुणैः सह शतधा वर्त्तमानस्य (वाजस्य=अन्नस्य) १५.२१. शतमसङ्ख्यातं बलं येषामस्ति ते (मरुतः=व्याप्तविद्या जनाः) ७.५७.७. शतमसङ्ख्याताः प्रशंसिता विद्याकर्माणि वा विद्यन्ते येषां ते (विद्वांसो मनुष्याः), प्र०—अत्र प्रशंसाऽर्थे इनिः १.३१.१०. [शतम् बहुनाम निघं० ३.१. ततो भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वा मत्वर्थ इनिः]

शतिनीभिः शतानि बहवो वीरा विद्यन्ते यासु सेनासु ताभिः १.१३५.१. प्रशस्तसङ्ख्यातसेनाङ्गयुक्ताभिः चमूभिः १.१३५.३. शतसंख्याताः प्रशस्ता गतयो यासु क्रियासु ताभिः १.५९.७. शतं बहूनि कर्माणि विद्यन्ते यासु ताभिः (गतिभिः) २७.२८. [शतप्राति० भूम्न्यर्थे मत्वर्थ इनिः। ततः स्त्रियां ङीप्]

शतेषुधे शतमसंख्याः शस्त्रास्त्रप्रकाशा यस्य तत्सम्बुद्धौ (अ०—सेनाध्यक्ष) १६.१३. [शत-इषुधिपदयोः समासः। इषुधिः=इषूपपदे दधातेः 'कर्मण्यधिकरणे चे' ति किः]

शतोतिम् शतान्यूतयो येन तम् (रथं=किरणम्) ६.६३.५. [शत-ऊतिपदयोः समासः। ऊतिः=अव रक्षण-गत्यादिषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियाम् 'ऊतियूति०' इति क्तिन्। स चोदात्तः]

शत्रवः अमित्राः (जनाः) १.५.४. **शत्रुम्**=विरोधिनम् (जनम्) १.१२६.४. शातयितारम् (दुर्जनम्) २.२३.११. वैरिणम् (दुर्जनम्) २.३०.३. **शत्रून्**=सत्य-न्यायविरोधे प्रवर्त्तमानान् (कुपुरुषान्) ७.३७. धर्मविरोधिनः (असज्जनान्) ६.४४.१७. अरीन्. १३.१३. दुष्टकर्मकर्त्तॄन् (जनान्) ३.३०.६. अस्माकं शातकान् सुख-विच्छेदकान् (जनान्) २.३०.८. मेघाऽवयवान् १.३३.१३. [शद्लृ शातने (भ्वा०) धातोः 'रु-शातिभ्यां क्रुन्' उ० ४.१०३. सूत्रेण क्रुन्। शत्रुः=शमयिता शातयिता वा नि० २.१६.]

शत्रिम् दुःखविच्छेदकम् (केतुं=प्रज्ञाम्) ५.३४.६. [शद्लृ शातने (भ्वा०) धातोः 'राशदिभ्यां त्रिप्' उ० ४.६७. सूत्रेण त्रिप्]

शत्रुतूर्याय शत्रूणां हिंसनाय ६.२२.१०. [शत्रु-तूर्य-पदयोः समासः। तूर्यम्=तूरी गतित्वरणहिंसनयोः (दिवा०) धातोर्ण्यत्]

शत्रूयतः आत्मनः शत्रुमाचरतः (पुरुषस्य) १२.५. **शत्रूयताम्**=शत्रूणामिवाचरताम् (सैनिकानाम्) ५.४.५. शत्रुत्वमिच्छताम् (जनानाम्) ३३.१२. **शत्रूयन्तम्**=शत्रून् कामयमानम् (राजद्रोहिजनम्) ७.२०.३. [शत्रु-पदादाचारेऽर्थे, आत्मन इच्छायामर्थे वा क्यच्]

शन्तमम् अतिशयितं सुखम् १.४३.१. **शन्तमानि**=अतिशयेन कल्याणकराणि (वचांसि) ६.३२.१. अतिशयेन सुखकराणि (आचरणानि) ६.२३.६. [शम् सुखनाम निघं० ३.६. ततोऽतिशायने तमप्]

शन्तमया अतिशयेन सुखप्रापिकया, भा०—धर्म्यया (नीत्या) १६.२. **शन्तमा**=अतिशयेन सुखप्रापिका (प्रज्ञा) १.७६.१. अतिशयेन सुखकरी (गीः=वाक्) ५.४२.१. अतिशयेन कल्याणकारिणी (गीः) ५.४३.८. [शन्तमम् इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

शन्तमः अतिशयेन सुखकारी (जनः) १.१३६.४. अतिशयेनाऽऽनन्दप्रदः (विद्वज्जनः) १.७७.२. शं सुखमति-शयितं यस्मिन्त्सः (स्तोमः) प्र०—शमिति सुखनाम निघं० ३.६, १.१६.७. **शन्तमेन**=अतिशयितं शं सुखं तेन (अवसा=रक्षाद्येन) १६.५५. अत्यन्तसुखरूपेण कर्म्मणा १३.१६. अतिशयसुखेन १५.६४. अतिशयेन सुखकारकेण (विज्ञानेन) १४.१२. [शम् सुखनाम निघं० ३.६. ततोऽति-शायने तमप्। ततो मत्वर्थ अर्श आदित्वाद् अच्]

शन्तमा अतिशयेन शङ्कराणि (शर्माणि), सुखकराणि (औषधानि) ३.१३.४, २.३३.१३. [शन्तमम् इति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

शन्तमेभिः अतिशयेन सुखकारकैः (भेषजेभिः=औषधैः) २.३३.२. [शन्तममिति व्याख्यातम्। ततो भिस ऐसादेशो न भवति छन्दसि]

शन्ताती शं सुखस्य कर्त्तारौ (अश्विना=सभासेनेशौ), प्र०—अत्र 'शिवशमरिष्टस्य करे' अ० ४.४.१४३. इति तातिल्-प्रत्ययः १.११२.२०. [शम् सुखनाम निघं० ३.६. ततः करोत्यर्थे 'शिवशमरिष्टस्य करे' सूत्रेण तातिल्]

शपथ्यात् शपथे भवात् कर्मणः १२.९०. [शपथ-प्राति० भवार्थे यत्। शपथः=शप आक्रोशे (दिवा०) धातोः 'शीङ्शपिरुगमि०' उ० ३.११३. सूत्रेण अथः]

शपन्तम् आक्रोशन्तम् (मनुष्यम्) १.४१.८. [शप आक्रोशे (भ्वा०) धातोः शतृ]

शपामहे उपालम्भामहे २०.१८. शपामहे ६.२२. [शप आक्रोशे (भ्वा०) धातोर्लट्]

शफच्युतः शफेषु गवादिखुरचिह्नेषु च्युतः पतित आसिक्तो यः सः (रेणुः=धूलिः) १.३३.१४. [शफ-च्युत-पदयोः समासः]

शफवत् शफा विद्यन्ते यस्मिन् पदे तत् ३.३९.६. शफेन तुल्यम् ५.८३.५. [शफप्राति० मतुप्। शफप्राति० वा तुल्यार्थे वतिः]

शफात् खुरात्, शं फणति प्रापयतीति शफो वेगस्त-स्माद्वा, प्र०—अत्र 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' इति डः, पृषोदरादि-त्वान्मलोपश्च १.११७.६. खुरादिव जलसेकस्थानात् १.११६.७. **शफानाम्**=शं फणन्ति तेषाम् (वेगानाम्) १.१६३.५. [शम् उपपदे फण गतौ (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' इति डः। पृषोदरादिना पूर्वस्य मलोपः]

शफाविव यथा खुरौ परस्परेण सम्बद्धौ २.३९.३. [शफौ-इव-पदयोः समासः]

शबलाः किञ्चिच्छ्वेताः (पश्वादयः) २४.१०. [शप आक्रोशे (भ्वा० दिवा०) धातोः 'शमेर्बश्च' उ० १.१०५. सूत्रेण कलः बकारश्चान्तादेशः]

शम् कल्याणकारकं ज्ञानम् ८.२६. रोगनिवारणम् ८.२६. सुखं कल्याणं वा ५.७४.६. सुखकरः (भगः=ऐश्वर्य्यम्) ७.३५.२. सुखकरम् (वचः) ५.११.५. कल्याण-

कारिणी (स्त्री) १२.९२. सुखकारी, आरोग्यसुखदः, शान्तिप्रदः, ऐश्वर्यसौख्यप्रदः, विद्याव्याप्तिप्रदः (ईश्वरो विद्वज्जनो वा) १.९०.९. सुखकारक, सुखस्वरूप, सुखप्रचारक, सकल ऐश्वर्यदायक, विद्याप्रद, कल्याणकारक (परमात्मा) स० प्र० १९, ३६.९. सुखरूपम् (राज्यम्) ७.६.२. सुखकारिणौ, सुखकर्त्तारौ (सोमारुद्रौ=राजवैद्यौ) ६.७४.१. सुखकारकौ (इन्द्राग्नी=विद्युत्पावकौ) ७.३५.१. [शम् सुखनाम निघं० ३.६. शम् सुखम् नि० ११.३०.]

शमम् शाम्यन्ति येन तम् (शान्तिव्यवहारम्) १.३३.१५. **शमस्य**=शाम्यन्ति येन तस्य शान्तियुक्तस्य मनुष्यस्य १.३२.१५. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोर्घञ् 'नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्य०' अ० ७.३.३४. इति वृद्धिनिषेधः]

शमाये शममिवाचरामि ३.१.१. [शममिति व्याख्यातम् । आचारेऽर्थे क्यङन्ताल्लट्]

शमि कर्म्माणि ३.५५.३. कर्म्मणि, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन ह्रस्वः 'सुपां सुलुक्०' इति सुलोपः २.३१.६. **शमी**=उत्तमं कर्म्म ४.२२.८. [शमी कर्मनाम निघं० २.१. शमी=कर्माणि नि० ११.१६. शमी (वृक्षः) प्रजापतिरग्निमसृजत सोऽबिभेत्प्र मा धक्ष्यतीति तं शम्याशमयत् । तच्छम्यै शमीत्वम् तै० १.१.३.११. तद् यदेतं शम्याशमयँस्तस्माच्छमी श० ९.२.३.३७. शमीमयं (शंकुं) उत्तरतः, शं मेऽसदिति श० १३.८.४.१. शं वै प्रजापतिः प्रजाभ्यः शमीपलाशैरकुरुत श० २.५.२.१२. यया ते सृष्टस्याग्नेः हेतिमशमयत्प्रजापतिः तामिमामप्रदाहाय शमीं शान्त्यै हराम्यहम् तै० १.२.१.६.]

शमितम् उपशान्तम् (हविः) १७.५७. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोर्णिजन्तात् क्तः । 'निष्ठायां सेटि' सूत्रेण णेर्लोपः]

शमिता यज्ञः २०.४५. यज्ञस्य कर्त्ता (यजमानः) २३.३९. उपशमादिगुणयुक्तः (गृहाश्रमी जनः) १७.५७. उपशमकः (विद्वज्जनः) २.३.१०. शान्तिप्रदः, भा०—सर्वरोगप्रणाशकः (सविता=सूर्यः) २१.२१. यज्ञसम्बन्धी (अग्निः=पावकः) २७.२१. शान्तिकरः (देवः=मेघः) २९.३५. **शमितारम्**=शान्तिकरम् (वनस्पतिं=किरणपालकं सूर्यम्) २८.३३. यजमानम् २८.१०. **शमितारः**=अध्ययनाऽध्यापनाख्ये यज्ञे शमादिगुणानां प्रापकाः (भा०—ब्राह्मणाः, क्षत्रियाः, वैश्याः) २३.४०. सङ्गताऽन्नस्य निष्पादितारः) (विद्वांसो जनाः) १.१६२.१०. **शमितुः**=यज्ञाऽनुष्ठातुः (जनस्य) १.१६२.९. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । शमिता अध्रिगुश्चापापश्च । उभौ देवानां शमितारौ तै० ३.६.६.४. मृत्युस्तदभवद्धाता शमितोग्रो विशां पतिः तै० ३.१२.९.६. मृत्युः शमिता तां० २५.१८.४.]

शमितारा शान्त्या यज्ञकर्मकर्त्तारौ (बाहू) ५.४३.४. [शमु उपशमने (दिवा०)+तृच् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शमितेव यथा यज्ञमयः (यजमानः) ५.८५.१. [शमिता-इवपदयोः समासः]

शमी उत्तमं कर्म्म ४.२२.८. कर्माणि १.११०.४. **शमीभिः**=क्रियाभिः ४.१७.१८. श्रेष्ठैः कर्म्मभिः ४.३३.४. **शमीम्**=कर्म्म ५.४२.१०. **शम्या**=शान्तियुक्तक्रियया १.८३.४. [शमी कर्मनाम निघं० २.१. शमी कर्माणि नि० ११.१६.]

शमीष्व दुःखनिवृत्तये सुखसम्पादनार्थं कुरुष्व, प्र०—शमु उपशमे इत्यस्माद् 'बहुलं छन्दसि' इति श्यनो लुक् 'तुरुस्तुशम्यमः' सार्वधातुके अ० ७.३.९५. इतीडागमः । समीक्षा—महीधरेणाऽत्र शपो लुगित्यशुद्धं व्याख्यातम् १.१५. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोर्लोट् । श्यनो लुक् छन्दसि । 'तुरुस्तु०' इतीडागमः]

शम्बरम् शं सुखं वृणोति यस्मात्तं मेघम् ४.३०.१४. बलम् १.५१.६. शङ्करम् (दासं=सेवकम्) ६.२६.५. अधर्मसम्बन्धिनम् (शत्रुम्), प्र०—अत्र शम्बधातोरौणादिकोऽरन् प्रत्ययः १.१०१.२. शं सुखं वृणोति येन तं मेघमिव शत्रुम् १.५४.४. **शम्बरस्य**=मेघस्य बलवतः शत्रोर्वा, प्र०—शम्बर इति मेघनाम निघं० १.१०. बलनामसु च निघं० २.९, १.१०३.८. **शम्बराणि**=शम्बरस्य मेघस्य सम्बन्धीनि अभ्राणि २.२४.२. [शम्बरः मेघनाम निघं० १.१०. शम्बरम् उदकनाम निघं० १.१२. बलनाम निघं० २.९. शम् सुखनाम निघं० ३.६. शम्-वरपदयोः समासः। वरः=वृञ् वरणे (स्वा०) धातोः 'ग्रहवृदृनिश्चिगमश्च' अ० ३.३.५८. सूत्रेणाप् । वकारस्य बकारो वर्णव्यत्ययेन । शम्ब संबन्धने (चुरा०) धातोर्वा बाहु० औणा० रन् । शम्बरं मेघम् नि० ७.२३.]

शम्बरहत्ये शम्बरस्य बलस्य हत्या हननं यस्मिन् युद्धादिव्यवहारे तस्मिन् १.११२.१४. [शम्बर-हत्यापदयोः समासः । हत्या=हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्भावे 'हनस्त च' अ० ३.१.१०८. सूत्रेण क्यप्]

शम्भवाय शं सुखं भावयति तस्मै परमेश्वराय

सेनाधीशाय वा, प्र०—अत्राऽन्तर्भावितो ण्यर्थः १६.४१. सुखस्वरूपाय (परमेश्वराय) पं० वि०, १६.४१. कल्याणस्वरूप, कल्याणकर, मोक्षसुखस्वरूप, मोक्षसुख के करने वाले (ईश्वर) के लिए आर्याभि० २.२६, १६.४१. [शम् इत्युपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि पचाद्यच् । अन्तर्भावितो ण्यर्थः]

शम्भविष्ठः योऽतिशयेन शं भावयति सः (जनः) ५.४२.७. सुखस्य भावयितृतमः (विद्वज्जनः) १.१७१.३. अतिशयेन कल्याणकारकः (परमेश्वरः) ४.४३.२. [शम्-भविष्ठपदयोः समासः । भविष्ठः+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोस्तृजन्तादतिशायन इष्ठन् । अन्तर्भावितो ण्यर्थः]

शम्भविष्ठा अतिशयेन सुखं भावुकौ (जलाग्नी) २.३९.५. अतिशयेन सुखस्य भावयितारौ (अश्विना+स्त्रीपुरुषौ) ५.७६.२. [शम्भविष्ठ इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शम्भु यः शं सुखं भावयति सः (पतिः स्वामीश्वरो राजा वा) ७.३५.१०. सुखसम्पादकम् (क्षोदः=जलम्) १.६५.३. [शम्-उपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'मितद्र्वादिभ्य उपसंख्यानम्' अ० ३.२.१८०. वा०सूत्रेण डुः । शम्भुः सुखभूः नि० ५.३.]

शम्भुवः ये शं सुखं भावयन्ति ते (आदित्या देवाः) १.१०६.२. सुखं भवति यस्मात्तस्य (विदुषः), प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इत्यपादाने क्विप् १.१०५.३. [शम् उपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्]

शम्भुवा यौ शं सुखं सम्भावयतस्तौ (स्त्रीपुरुषौ) २.४१.१९. यौ सुखं भावयतस्तौ (इन्द्राग्नी=सभासेनेशौ) ६.६०.७. [शम्भूरिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शम्भू शं सुखं भावुकौ (राजामात्यौ) ४.४७.७. [शम्भुरिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचने रूपम्]

शम्भूः यः शं सुखं भावयति सः, शं कल्याणं भावयति सः (विद्वज्जनः) १८.४५. सुखं भावुकः (छन्दः=आनन्दकरोऽनुभवः) १५.४. सुखकर्त्ता (वरानना स्त्री) सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२६. [शम् उपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् । अन्तर्भावितो ण्यर्थः]

शम्यति शाम्यति शमं प्रापयति, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति दीर्घत्वाऽभावः २३.३९. **शम्यन्तु**=भा०—शान्त्या जितेन्द्रियत्वं प्रापयन्तु २३.३५. अ०—शमं प्रापयन्तु २३.३४. आनन्दन्तु २३.३७. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट् । 'शमामष्टानाम्०' इति दीर्घत्वं न भवति छान्दसत्वात्]

शम्यन्तः शान्ति प्रापयन्तः (मरुतः=मनुष्याः) २३.४१. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोः शत्रन्ताज्जस् । दीर्घत्वाऽभावश्छान्दसः]

शम्यन्तीः दुष्टस्वभावं निवारयन्त्यः (मातरः) २३.४२. शमं प्राप्नुवतीः प्रापयन्त्यो वा (स्त्रियः) २३.३७. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । दीर्घत्वाऽभावश्छान्दसः]

शम्याः शम्यां कर्मणि भवाः (आपः=जलानि) ३.३३.१३. [शमी कर्मनाम निघं० २.१. ततो भवार्थे यत् । ततष्टाप् । जिह्वेव शम्या श० १.२.१.१७.]

शयते शेते, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुङ् न १.३२.५. **शयथे**=शयनं करोति ६.१७.९. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्लट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुग् न भवति । शयथे प्रयोगे तकारस्य थकारो वर्णव्यत्ययेन]

शयथाय शयनाय ६.१८.८. 'शीङ्शपि०' उ० ३.११३. सूत्रेण [शीङ् शये (अदा०) धातोर् अथः प्रत्ययः]

शयध्यै शयितुम् ६.६२.३. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोस्तुमर्थेऽध्यैप्रत्ययः]

शयवे शयानाय (जसुरये=हिंसकाय जनाय) १.११६.२२. सुखेन शयनशीलाय (मनवे=राज्ञे) १.११२.१६. **शयुम्**=यः शेते तम् (पुत्रम्) ४.१८.१२. **शयुः**=योऽभिव्याप्य शेते (वरुणः=परमात्मा) ३.५५.६. यः प्रलये सर्वाणि भूतानि शाययति सः (ईश्वरः) [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः 'भृमृशीङ्तृचरि०' उ० १.७. सूत्रेण उः]

शयाण्यकः पक्षिविशेषः २४.३३. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० अण्डन् । अकारस्याकारश्छान्दसः]

शयानम् कृतशयनमिव वर्त्तमानम् (अहिं=मेघम्) २.१२.११. शयानमिवाचरन्तम् (मेघम्) ५.३२.२. **शयानाय**=यो शेते तस्मै (जनाय) २२.७. **शयानेभ्यः**=प्राप्तनिद्रेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२३. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः शानच् । अथवा शयानप्राति० वा आचारे क्विप्]

शयाना यौ शयाते तौ (पितरा=पितरौ) ४.३३.३. [शयानमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शयासु शेरते यासु विद्युदादयः पदार्थास्तासु (प्रकृत्या-

दिषु) ३.५५.४. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः 'संज्ञायां समजनिषदनिपत०' अ० ३.३.९९. सूत्रेण क्यप्। ततः स्त्रियां टाप्। 'अयङ् यि क्ङिती' ति अयङ्। यलोपश्छान्दसः। शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः 'एरच्' इत्यच्। ततष्टाप्]

शयुत्रा यौ शयून् शयानान् त्रायतस्तौ (अश्विनौ=शिल्पिजनौ) १.११७.१२. [शयुत्रप्राति० द्विवचनस्याकारादेशः शयुत्रः=शयूपपदे त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोर्डः। शयुरिति व्याख्यातम्]

शयुत्रा शयनस्थानम् ऋ० भू० २१०, ऋ० ७.८.१८.२. [शयुत्रा शयने नि० ३.१५.]

शये शयनं कुर्याम् ४.३०.११. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्लटि उत्तमैकवचनम्]

शये शेते, प्र०—अत्र 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' अ० ७.१.४१. इति तलोपः १.३२.९. गर्भाशय में ठहरता है अथर्व० ९.३.६. स० वि० २०४, [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्लट्। 'लोपस्त आत्मनेप्रदेषु' इति तलोपः शये आशेते नि० ११.४८.]

शरणम् आश्रयितुं योग्यम् (छर्दिः गृहम्) ६.४६.९. आश्रयम् २.३.८. **शरणे**=शरणागतपालने कर्म्मणि ७.१९.८. गृहे १.१५०.१. **शरणैः**=दुःखादीनां हिंसनैः ३.६२.३. [शरणम् गृहनाम निघं० ३.४. शरणा शरणम् नि० ५.२२.]

शरणा शरणौ शत्रूणां हिंसकौ (बाहू=भुजौ) ६.४७.८. [शरणप्राति० द्विवचनस्याकारादेशः। शरणः=शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० युच्]

शररिणम् अविद्यादिदोषहिंसिकां विद्याम्, प्र०—अत्र श्रृधातोर्बाहुलकादौणादिकोऽरिणः प्रत्ययः १.३१.१६. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० अनिः]

शरत् श्रृणाति येन सा (ऋतुः) १३.५७. शरदृतुः १०.१३. अर्द्धरात्रः ३१.१४. **शरदः**=शरदृत्वन्तान् संवत्सरान् १.७२.३. शरदाद्यृतून् ६.४७.१७. शरदृतूपलक्षितान् संवत्सरान् १.८९.९. शरदृतवः २.२७.१०. शतं वर्षाणि ३.३६.१०. शत वर्ष पर्यन्त सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.४२. **शरदे**=शरदृतौ सुखाय २४.११. **शरद्भिः**=शरदादिभि ऋतुभिः १.८६.६. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'शॄदृभसोऽदिः उ० १.१३०. सूत्रेणादिः। शरदः=शरच्छता अस्यामोषधयो भवन्ति शीर्णा आप इति वा नि० ४.२५. शरद् वै बर्हिरिति हि शरद् बर्हिर्या इमा ओषधयो ग्रीष्महेमन्ताभ्यां नित्यक्ता भवन्ति ता वर्षा वर्धन्ते ताः शरदि बर्हिषो रूपं प्रस्तीर्णाः शेरे तस्माच्छरद् बर्हिः श० १.५.३.१२. बर्हिर्यजति शरदमेव शरदि हि बर्हिष्ठा ओषधयो भवन्ति कौ० ३.४. शरदि ह खलु वै भूयिष्ठा ओषधयः पच्यन्ते जै० उ० १.३५.५. तस्माच्छरदमोषधयो ऽभिसंपच्यन्ते तां० २१.१५.३. स्वधा वै शरद् श० १३.८.१.४. शरत् प्रतिहारः ष० ३.१. (प्रजापतिः) शरदम् प्रतिहारम् (अकरोत्) जै० उ० १.१२.७. शरद् वै वैश्यस्यर्त्तुः तै० १.१.२.७. शरद्वा अस्य (रुद्रस्य) अम्बिका स्वसा तै० १.६.१०.४. शरदुत्तरः पक्षः (संवत्सरस्य) तै० ३.११.१०.४. शरत्पुच्छम् (संवत्सरस्य) तै० ३.११.१०.३. यद् विद्योतते तच्छरदः (रूपम्) श० २.२.३.८. षड्भिर्मैत्रावरुणै (पशुभिः) शरदि (यजते) श० १३.५.४.२८. वर्षा शरदौ सारस्वताभ्याम् (अवरुन्धे) श० १२.८.२.३४. शरद्ब्रह्मा तस्माद् यदा सस्यं पच्यते ब्रह्मण्वत्यः प्रजा इत्याहुः श० ११.२.७.३२. शरदेव सर्वम् गो० पू० ५.१५. अन्नं वै शरद् मै० १.६.९.]

शरद्वान् शरदो या ऋतवस्ता विद्यन्ते यस्मिन् सः (वृषभः=सूर्यः) १.१८१.६. [शरद्प्राति० मतुप्]

शरभम् शल्यकम्, अ०—शल्यकीम् १३.५१. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'कॄशॄशलिकलिगर्दिभ्योऽभच्' ३.१२२. सूत्रेणाभच्]

शरवे हिंसनाय ६.२७.६. दुष्टानां हिंसकाय (सेनापतये) ४.३.७. **शरुः**=दुष्टानां हिंसका ऋष्टिः १.१७२.२. हिंसकः (सैनिकजनः) १.१८६.९. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'शॄस्वृस्निहित्रपि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः]

शरव्यायै शराणां निर्माणाय ३०.७. शरवीषु कुशलायै (स्त्रियै) २४.४०. **शरव्ये**=ये शरान् व्याप्नुवन्ति तत्र साध्वि (सेने) ६.७५.१६. शरेषु बाणेषु साध्वी स्त्री तत्सम्बुद्धौ (सेनानीपत्नि) १७.४५. [शरवीप्राति० 'तत्र साधु' रित्यर्थे कुशलार्थे वा यत्। ततः स्त्रियां टाप् शरवीः=शरोपपदे वी गतिव्याप्त्यादिषु (अदा०) धातोः क्विप् शरुप्राति० वा कुशलार्थे छान्दसो यत्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

शरसि तडागे ३९.५. [शरस्प्राति० सप्तमी। सरस्-शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोरौणा० असुन्। सरस्प्राति० वा सप्तमी। वर्णव्यत्ययेन सकारस्य शकारः]

शरसे हिंसकाय (पुरुषाय) ३८.१५. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोरौणा० असुन्]

शरस्य हिंसकस्य (दुष्टजनस्य) सकाशात् १.११६.२२ [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः पचाद्यच् कर्त्तरि]

शरासः वेणुदण्डसदृशा अन्तश्छिद्रास्तृणविशेषस्थाः (दर्भासः=कुशाः) १.१९१.३. [शरप्राति० जसोऽसुक्। शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'ऋदोरब्' त्यप्। कर्त्तरि वाऽच्। शरः शृणातेः नि० ५.४.]

शरिरस्य अन्तरिक्षस्य १३.४९. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० इरच्]

शरीतोः शरीतुं दुष्टस्वभावं हिंसितुं शक्नोति यः (इन्द्रः=ऐश्वर्यवान् राजा) ३.५३.१७. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'कृतो बहुलं वा' इति कर्त्तरि तोसुन्। इटो दीर्घश्च छान्दसः]

शरीरम् शीर्यते हिंस्यते यत्तत् (वपुः) १.३२.१०. **शरीराणि**=आश्रयान् ३५.५. देहाः १८.३. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'कॄशॄपॄकटि०' उ० ४.३०. सूत्रेण ईरन्। शरीरं शृणातेः शम्नातेर्वा नि० २.१६. शरीरे आदित्ये नि० १२.३७. अथ यत्सर्वमस्मिन्नश्रयन्त तस्मादु शरीरम् श० ६.१.१.४. अशरीरं वै रेतोऽशरीरा वपा यद्वै लोहितं यन्मांसं तच्छरीरम् ऐ० २.१४. शरीरं हृदये (श्रितम्) तै० ३.१०.८.७.]

शर्ध प्रशंसितबलयुक्त (विद्वज्जन) ५.२८.३. दुष्टगुणशत्रुनाशकं बलम्, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सोर्लुक् ३३.१२. **शर्धम्**=बलयुक्तम् (धाम=स्थानम्) १.१२२.१२. बलहेतुम् (रेतः) ३३.११. बलिनम् (युवानम्) १.७१.८. **शर्धः**=शरीराऽऽत्मबलम् ७.४४.५. सैन्यम् १७.४१. [शर्धः बलनाम निघं० २.९. शृधु प्रसहने (चुरा०) धातोः पचाद्यच्]

शर्धत् उत्सहेत् ७.२१.५. [शर्धत्=उत्सहताम् नि० ४.१९. शृधु प्रसहने (चुरा०) धातोर्लेट्]

शर्धतः बलवतः (दुर्जनस्य) २.२३.१२. **शर्धताम्**=बलं कुर्वताम्, (वीरजनानाम्), प्र०—बलवाचिशर्धशब्दात् करोत्यर्थे क्विप् ततः शतृ १५.४०. **शर्धते**=यः शर्द्धं करोति तस्मै (दुर्जनाय) २:१२.१०. बलाय ६.२४.८. **शर्धन्तम्**=बलं कुर्वन्तम् (दुष्कर्म) ७.१८.५. **शर्धन्तः**=बलयन्तः (अर्यः=अरयश्शत्रवः) ७.३४.१८. [शर्धः बलनाम निघं० २.९. ततः करोत्यर्थे क्विबन्ताच्छतृ]

शर्धनीतिः शर्द्धस्य बलस्य नीतिर्नयनं प्रापणं यस्य सः (सभेशः) ३३.२६. बलस्य सैन्यस्य नीतिर्नायकः (सेनापतिः), प्र०—अत्र नीतौ कर्त्तरि क्तिच् ३.३४.३. [शर्ध-नीतिपदयोः समासः। शर्धः बलनाम निघं० २.९. नीतिः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। कर्त्तरि क्तिज् वा]

शर्धमानः सहमानः (विद्वज्जनः) २०.३८. [शृधु प्रसहने (चुरा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

शर्धस्तरः अतिशयेन बलवान् (शूरवीरो जनः) १.१२२.१०. [शर्धः बलनाम निघं० २.९. ततोऽतिशायने तरप्]

शर्ध्यम् शर्द्धेषु बलेषु भवम् (रथं=यानम्) १.११९.५ [शर्धः बलनाम निघं० २.९. ततो भवार्थे यत्]

शर्म शृण्वन्ति दुःखानि यस्मिन् तद् गृहम् २६.१०. सर्वदुःखरहितं सुखम्, शृणाति हिनस्ति दुःखानि यत्तत् (सुखम्) १.१७.८. सुखं निवासं वा १.४६.१५. गृहस्वरूपं सुखकारकं वा (यानम्) १.३४.६. श्रेष्ठं शरणं सुखं वा ३४.२८. सुखसाधकं गृहम् १७.४८. सुखहेतुः, अ०—सुखदः (यज्ञः) १.१९. **शर्मणा**=विग्रहेण ७.५१.१. गृहसम्बन्धिसुखेन १.२२.११. **शर्मणि**=नित्यसुखे, अ०—खल्वाज्ञापालनाख्ये व्यवहारे १.४.६. आश्रये ३३.१७. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' उ० ४.१४५. सूत्रेण मनिन्। शर्म गृहनाम निघं० ३.४. सुखनाम निघं० ३.६. शर्म शरणम् नि० ९.१९. चर्म वाऽएतत् कृष्णस्य (मृगस्य) तन्मानुषं शर्म देवत्रा श० ३.२.१.८. (ऋ० ३.१३.४.) वाग्वै शर्म ऐ० २.४०. (ऋ० ३.१३.४.) अग्निर्वै शर्माण्यन्नाद्यानि यच्छति ऐ० २.४१.]

शर्म शर्माणि सुखानि १.८५.१२. गृहाणि ६.४६.१२. [शर्मन् इति व्याख्यातम्। ततो जसः 'सुपां सुलुग्०' इति लुक्]

शर्मन् न्यायगृहे, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' अ० ७.१.३९. इति ङेर्लुक् 'न ङि-सम्बुद्धयोः' अ० ८.२.८. इति नलोपाभावः ७.३५. [शर्मन् इति व्याख्यातम्। ततः 'सुपां सुलुग्०' इति ङेर्लुक्]

शर्मसदः ये शर्मणि सुखे सीदन्ति ते (वीरजनाः) १.७३.३. ये गृहे सीदन्ति ते (वीराः=क्षात्रधर्मयुक्ता जनाः) ३.५५.२१. [शर्मन् इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। शर्मन्निति व्याख्यातम्]

शर्यणावति शर्यणोऽन्तरिक्षदेशस्तस्याऽदूरभवे (स्थाने) १.८४.१४. हिंसनीय पदार्थों से युक्त भूमितल में सं० वि० १९५, ९.११३.१. [शर्यणप्राति० अदूरभवार्थे मतुप् छान्दसः। पूर्वस्य च दीर्घः]

शर्यहा हन्तव्यहन्ता (तिग्मशृङ्गः=सूर्यः) ६.१६.३९. [शर्योपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप्। शर्यम्=शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्यत्]

शर्यातम् शरो हिंसकान् प्राप्तम् (सेनाध्यक्षम्) १.११२.१७. [शर्-यातपदयोः समासः। शर्=शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति विट्। यातम्=या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्तः]

शर्याभिः गतिभिः ७.१७. **शर्याम्**=वायुताडनाऽऽख्यां क्रियाम् १.१४८.४. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्यत् ततः स्त्रियां टाप्। औणा० वा यत्। शर्याः अङ्गुलिनाम निघं० २.५. शर्या अङ्गुलयो भवन्ति। सृजन्ति कर्माणि। शर्या इषवः शरमय्यः नि० ५.४.]

शर्यैः हिंसतुं ताडितुमर्हैर्यन्त्रैः १.११६.१०. पुनः पुनर्हननप्रेरणगुणैः ऋ० भू० १९६, ऋ० १.८.२१.१०. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्यत्]

शर्वम् विज्ञातारम् (परमेश्वरम्) ३९.८. **शर्वस्य**=सुखप्रापकस्य (जनस्य) ३९.९. **शर्वाय**=दुष्टानां हिंसकाय (राजपुरुषाय) १६.२८. **शर्वाः**=हिंसकाः (जनाः) १६.५७. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० वन् प्रत्ययः]

शर्वरीः रात्रीः ५.५२.३. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'कॄगॄशॄ०' उ० २.१२१. सूत्रेण ष्वरच्। षित्वान् ङीष् स्त्रियाम्। शर्वरी रात्रिनाम निघं० १.७.]

शर्वा शासनवज्रेण २.१२.१०. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः कर्त्तरि वनिप्। 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण टास्थाने सुः]

शर्वा सर्वदुःखहिंसकः (सभाद्यध्यक्षः) १.१००.१८. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

शर्वा शर्वाणि हिंसनानि ४.२८.३. [शर्वन् इति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

शर्वाः हिंसकाः १६.५७. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० वन्। यच्छर्वोऽग्निस्तेन कौ० ६.३. अग्निर्वै स देवस्तस्यैतानि नामानि। शर्व इति यथा प्राच्या आचक्षते भव इति यथा वाहीकाः, पशूनां पती रुद्रोऽग्निरिति श० १.७.३.८. आपो वै शर्वः, अद्भ्यो हीदं सर्वं जायते श० ६.१.३.११. एतान्यष्टौ (रुद्रः, शर्वः, पशुपतिः, उग्रः, अशनिः, भवः, महान्देवः, ईशानः) अग्निरूपाणि। कुमारो नवमः श० ६.१.३.१८.]

शल्मलिः वृक्षविशेषः २३.१३. **शल्मलौ**=शल्मलिवृक्षादौ ७.५०.३. [शल्मलिः सुशरो भवति शरवान् वा नि० १२.८. शल्मलिर्वनस्पतीनां वर्षिष्ठं वर्धते श० १३.२.७.४.]

शल्यकः कण्टकपक्षयुक्तः श्वावत् (पशुः) २४.३५. [शल्यप्राति० संज्ञायां कन्। शल्यः=शल चलनसंवरणयोः (भ्वा०) धातोः 'सानसिवर्णसि०' उ० ४.१०७. सूत्रेण यत् निपात्यते। शल्यकः तस्याः (गायत्र्याः) अनु विसृज्य कृशानुः सोमपालः सव्यस्य पदो नखमच्छिदत् तच्छल्यकोऽभवत् तस्मात् स नखमिव ऐ० ३.२६.]

शल्यानाम् शस्त्राणाम् १६.१३. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

शवसः अनन्तबलस्य प्रमितबलस्य वा १.११.२. बलस्य सैन्यस्य ६.४४.४. बलवन्तः (सूरयः=विद्वज्जनाः) ४.३४.६. **शवसा**=विद्यासुशिक्षाबलेन १.११०.७. शरीरात्मबलेन १.१००.१४. बलेन परिचरणेन वा, प्र०—शवतीति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. अस्मादसुनि कृति रूपसिद्धिः ५.११.५. बलयुक्तेन सैन्येन १.१००.१२. **शवसे**=सैन्यबलाय १.५७.१. **शवः**=बलमुदकं वा ३३.९७. बलहेतुम् (रसमन्नं वा) ६.४३.४. गमनम् ५.५८.७. **शवोभिः**=सेनाद्यैर्बलैः १.१३०.४. [शव गतौ (भ्वा०) शवति गतिकर्मा निघं० २.१४. परिचरणकर्मा निघं० ३.५. तत औणा० असुन्। शवः उदकनाम निघं० १.१२. धननाम निघं० २.१०. बलनाम निघं० २.९. शवसा बलेन नि० १०.२९. शवसो महतो बलस्य। नि० १२.२१. (यजु० १२.१०६.) बलं वै शवः श० ७.३.१.२९.]

शवलाः किञ्चिच्छ्वेताः (पशवः) २४.१०. [शप आक्रोशे (भ्वा०) धातोः 'शमेर्वश्च' उ० १.१०५. सूत्रेण कलः। वकारश्चान्तादेशः]

शवसान बलयुक्त (इन्द्र=सभाध्यक्ष) १.६२.१३. **शवसानम्**=बलवन्तम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.३७.३. **शवसानाय**=विज्ञानाय ३४.१६. ज्ञानवते (सभाद्यध्यक्षाय) १.६२.२. ज्ञानबलयुक्ताय (सभाद्यध्यक्षाय) १.६२.१. ब्रह्मचर्यसुशिक्षाभ्यां शरीरात्मबलयुक्ताय (पुरुषाय) ३४.१७. [शवस् बलनाम निघं० २.९. ततस्तत्करोति इत्यर्थे क्विप्। ततः क्विबन्तात् शवस्धातोः शानच्। शवसानम् अभिबलायमानम् नि० १०.३. शव गतौ (भ्वा०) धातोर्वा 'छन्दस्यसानच् शुजॄभ्याम्' उ० २.८६. सूत्रेणासानच्]

शवसावन् बलयुक्त (सभापते) १.६२.११. [शवस् बलनाम निघं० २.९. ततो मतुप्-प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

शवसिन् बहुविधं शवो बलं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ७.२८.२. [शवस् बलनाम निघं० २.९. ततो मत्वर्थं इनिः]

शवस्यानि शवःसु धनेषु साधूनि वीरसैन्यानि

१.१००.५ .[शवस् धननाम निघं० २.१. ततः साध्वर्थे यत्]

शविष्ठ बहु शवो बलं विद्यते यस्य स शवस्वान् सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ (सभापते), प्र०—अत्र शवशब्दाद् भूम्न्यर्थे मतुप् तत इष्ठन् 'विन्मतोर्लुक्' अ० ५.३.६५. इति मतुपो लुक् 'टेः' अ० ६.४.१५५. अनेन टिलोपः ६.३७. अतिशयेन बलवत्, प्राप्तविद्य (विद्वज्जन) १.१२७.१. **शविष्ठाः**=अतिशयेन बलवन्तः (अ०—राजपुरुषाः) १०.४. [शवस् बलनाम निघं० २.९. ततो मतुवन्तादतिशायन इष्ठन् । 'विन्मतोर्लुक्' अ० ५.३.६५. इति मतुपो लुक्]

शविष्ठा अतिशयेन नित्यबलसाधकौ (होतृयजमानौ) ८.५९. अतिशयेन बलवन्तौ (सभासेनेशौ) ६.६८.२. [शविष्ठ इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शवीरया वेगवत्या (धिया=क्रियया प्रज्ञया वा), प्र०—शव गतौ इत्यस्माद्धातो **रन्**-प्रत्यये टापि च शवीरेति सिद्धम् १.३.२. देशान्तरप्रापिकया गत्या, प्र०—शु गतौ इत्यस्माद्धातोर्बाहुलकादौणादिक ईरन्प्रत्ययः १.३०.१७. [शव गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० **औणा**० **ईरन्** । ततः स्त्रियां टाप्]

शशमते शाम्येत् ६.२.४१. **शशमे**=शाम्यति निरुपद्रवो भवति, प्र०–अत्र एत्वाऽभ्यासलोपाऽभावश्छान्दसः ३३.८७. प्रशंसामि, प्र०—शशमान इति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४, ६.१.९. [शमु उपशमने (दिवा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शप् । द्वित्वं छान्दसम् । अन्यत्र लिट् । 'अत एकहल्मध्ये०' इति प्राप्तावेत्वाऽभ्यासलोपौ न भवतश्छान्दसत्वात् । शशमान इति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

शशमानम् अन्यायमुल्लङ्घमानम् (सज्जनम्) २.२०.३ अधर्ममुल्लङ्घमानम् (सत्पुरुषम्) २.१२.१४. **शशमानस्य**=विज्ञातव्यस्य (विद्वज्जनस्य), प्र०—अत्र 'अधिगर्थ०' इति शेषत्वविवक्षायां षष्ठी १.८६.८. प्रशंसितस्य (यज्योः=सत्यव्यवहारस्य) ४.२३.२. दुःखमुल्लङ्घतः (मेधाविजनस्य) १.१४२.२. **शशमानः**=प्रशंसन् (देवः=विद्वज्जनः) ४.२३.४. प्लवमानः (मनुष्यः) ४.२.१०. प्राप्तप्रशंसः सन् (पुरुषः) ४.५१.७. स्तोतुमर्हः (भगः=धनसमूहः) १.२४.४. वर्द्धमानः (वनस्पतिः) २०.६५. **शशमानाय**=विज्ञानवते (मनुष्याय) १.८५.१२. अधर्ममाप्लुत्य धर्मं प्राप्नुवते (जनाय) १.१४१.१०. सर्वेषां दुःखानामुल्लङ्घकाय (वाघते=मेधाविजनाय) ४.२.१३. प्रशंसिताय (विदुषे जनाय) ४.३१.८. **शशमानाः**=अविद्या उल्लङ्घमानाः (नरः=नायका जनाः) ५.२९.१२. **शशमानेभ्यः**=प्रशंसमानेभ्यः (नृभ्यः=मनुष्येभ्यः) ४.४१.३. **शशमानेषु**=भोगाभ्यासोल्लङ्घमानेषु ३.१८.४. [शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । शशमान इति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. शशमानः शंसमानः नि० ६.८.]

शशमानासः शत्रुबलस्योल्लङ्घकाः (सेनाऽमात्यादिजनाः) ४.१६.१५. [शशमानमिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

शशयम् खशयं मेघम्, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन खस्य शः ३.५७.२. **शशयः**=शेते यस्मिन् सः (स्तनः=दुग्धाधारमङ्गम्) ३८.५. शयान इव (स्तनः=शुद्धो व्यवहारः) १.१६४.४९. **शशयाः**=कुमारी अवस्था को उल्लङ्घन करने वाली (युवतयः=स्त्रियां) स० प्र० ११०, ३.५५.१६ शयाना इव (धेनवः=वाचः) ३.५५.१६. [खोपपदे शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः 'अधिकरणे शेतेः' अ० ३.२.१४. सूत्रेणाऽच् । वर्णव्यत्ययेन खस्य शकारः । अन्यत्र शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः 'एरच्' इत्यच् । 'वा छन्दसी' ति धातोर्द्वित्वम् । अथवा शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोर्वाऽच् । द्वित्वं छान्दसम्]

शशयानः कृतशयनः (कुमारः) ५.७८.९. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्लिटः कानच् । 'वा छन्दसी' ति गुणः । शशयानाः शिश्यानाः नि० ९.६.]

शशः पशुविशेष इव वायुः २३.५६. [शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोः पचाद्यच्]

शशाधि शिक्षय ७.१.२०. **शशास**=शाधि २.२९.५. **शशासुः**=शासति ४.२.१२. अनुशासतु ३.१.२. [शासु अनुशिष्टौ(अदा०) धातोर्लोट् । द्वित्वं छान्दसम् । अन्यत्र लिट् शशाः=उत्प्लवस्व १.८०.१. [शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । अटोऽभावः]

शशीयसी अतिशयेन दुःखं प्लावयन्ती (स्त्री) ५.६१ ६. [शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तात् 'तुश्छन्दसि' अ० ५.३.५९. सूत्रेणातिशायन ईयसुन् । ततः स्त्रियां ङीष् । तृचो लोपः]

शशीयांसम् धर्ममुत्प्लवमानम् (शत्रुजनम्) ४.३२.३. [शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोस्तृजन्तादतिशायन ईयसुन् । तृचो लोपः]

शश्रमाणः भृशं श्रमं कुर्वन् (बलाध्यक्षो न्यायाधीशः) ४ १२.२. [श्रमु तपसि खेदे च (दिवा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

शश्रमाणा तपोऽन्विता (विदुषी स्त्री) १.१७९.१. [शश्रमाण इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीष्]

शश्वचै परिष्वङ्गाय ३.३३.१०. [शश्वचै परिष्वजनाय नि० २.२७.]

शश्वच्छश्वत् व्यापकं व्यापकं वस्तु ३.३६.१. [शश्वत्पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । शश्वदिति निपातश्चादिषु पठ्यते]

शश्वत् निरन्तरम् ६.२१.८. अनादिरूपम् (कं=सुखसम्पादकं ज्ञानम्) १.४७.१०. अनादिस्वरूपत्वाज्जगत्कारणात् १.३०.१६. **शश्वतः**=निरन्तरान् (पथिकान्) ५.५२.२. सनातन जगत्कारण का स० प्र० २३८, १०.४८.१. सनातनविद्यायुक्तान् (विद्वज्जनान्) १.१३५.७. अनादिभूतस्य (प्रजाजनस्य) ७.१९.१. अनादिस्वरूपान् पदार्थान् २.१२.१०. अनादिस्वरूपस्य परमेश्वरस्य सम्बन्धात् १.७२.१. **शश्वता**=सनातनेन गुणेन १९.४. **शश्वन्तम्**=अनादिभूतं वेदविद्याविषयम् ६.६१.१. **शश्वन्तः**=निरन्तरं वर्त्तमानाः (वाजाः=विज्ञानवन्तो जनाः) १७.७६. अनादिभूता जीवाः ५.१४.३. अनादिभूताः प्रवाहेप्यनित्याः पृथिव्यादयः ७.१.३. निरन्तराः (शत्रवः) ७.१८.१८. [शश्वन्तौ शश्वद्गामिनौ विश्वगामिनौ बहुगामिनौ वा नि० १३.३७. शश्वत् बहुनाम निघं० ३.१. शश्प्राति० मतुप् । शश्=शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

शश्वतः निरन्तरो व्याप्तः धर्मः ५.१२.४.

शश्वतीनाम् अनादिभूतानां घटिकानाम् १.११३.१५. सनातनीनामुषसां प्रकृतीनां वा १.१२४.२. प्रवाहरूपेणानादीनाम् (उषसाम्) १.११३.८. अनादिभूतानां प्रकृतिजीवाख्यानां प्रजानाम् ३.५६.३. **शश्वतीः**=सनातन्यः (प्रजाः) ३.९.४. अविनश्वराः (इषः=प्रजाः) ६.२९. अनादिस्वरूपाः (प्रजाः) १.२७.७. [शश्वत्प्राति० स्त्रियां ङीप्]

शश्वत्तमम् अतिशयेनाऽनादिभूतम् (सोमम्=ऐश्वर्ययोगम्) ३.३५.६. अनादिस्वरूपमनुत्पन्नं कारणम् २.८.१. अतिशयितमनादिरूपं वेदबोधम् १२.५१. सदैव वर्त्तमानम् (विज्ञानम्) ३.७.११. [शश्वत्प्राति० अतिशायने तमप् । शश्वत्तमा शाश्वतिकतमा नि० ४.१६.]

शश्वत्तमा याऽतिशयेन सनातनी (उषाः) १.१२४.४. [शश्वत्तममिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

शश्वधा शश्वदेव ३.३३.७.

शश्वन्ता सनातनौ (जडचेतनौ) १.१६४.३८. [शश्वन्तौ शश्वद्गामिनौ नि० १३.१७. द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

शश्वान् शीघ्रगतिमान् (विद्वज्जनः), प्र०—शश प्लुतगतौ इति धातोः क्विबन्तान्मतुप् २.३८.६. [शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोः क्विप्-प्रत्यये शश् इति रूपम् । ततो मतुप्]

शष्पाणि आहृत्य संशोध्य ग्राह्याणि धान्यानि १९.१३. **शष्पैः**=हिंसकैः (जनैः), प्र०—अत्रौणादिको बाहुलकात् कर्त्तरि पः २१.४२. हिंसनैः २१.२९. दीर्घैर्लोमभिः १९.८१. [शष हिंसायामर्थे (भ्वा०) धातोः खष्पशिल्पशष्प०' उ० ३.२८ सूत्रेण प्रत्ययान्तो निपात्यते]

शष्पिञ्जराय षडुत्प्लुतं पिञ्जरं बन्धनं येन तस्मै (सेनाधीशाय) १६.१७. **शष्पिञ्जराः**=षड्ढसकः पिञ्जरो वर्णो येषान्ते (सर्पादयः) १६.५८. [शष् पिञ्जरपदयोः समासः । शष्=शश प्लुतगतौ (भ्वा०) शष हिंसायामर्थे (भ्वा०) धातोर्वा क्विप् । पिञ्जरः=पिजि वर्णे (अदा०) धातोर् बाहु० औणा० अरः]

शष्प्याय शष्पेषु तृणादिषु साधवे (पुरुषाय) १६.४२. [शष्पप्राति० साध्वर्थे यत् । शष्पमिति व्याख्यातम्]

शसनम् हिंसनं ताडनम् १.१६३.१२. शंसन्ति हिंसन्ति यस्मिँस्तद् युद्धम् २९.२३. [शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

शसा प्रशंसया ५.४१.१८. [शंसु प्रशंसायाम् (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप् । ततस्तृतीयैकवचनम्]

शस्त प्रशंसत ४.३७.८. छिन्त २५.४१. ताडयत हिंस्त १.१६२.१८. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् । अथवा शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् । शपो लुक्]

शस्तम् प्रशंसनीयम् (शं=सुखम्) ५.४७.७. प्रशंसितम् (बर्हिः=उत्तमस्थानम्) ३.५३.३. स्तुत्यं कर्म ३३.२४. **शस्ते**=प्रशंसिते (उक्थे=वक्तव्ये) ४.२०.१०. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

शस्तिम् प्रशंसाम् ४.३.३. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

शस्तोक्थस्य शस्तानि प्रशंसितानि उक्थानि ऋक्सूक्तानि येन तस्य (वीरगृहपतेः) ८.१२. [शस्त-उक्थ-पदयोः समासः । शस्तम्=शंसु स्तुतौ (भ्वा०)+क्त । उक्थम्=वच परिभाषणे (अदा०) 'पातृतुदिवचि०' उ० २.७. धातोः थक्]

शस्त्राणाम् शंसन्ति यैस्तेषाम् १९.२५. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्त्रः । शस्त्रं तद् यदेनच्छचति तस्माच्छस्त्रं नाम श० ४.३.२.३. विट् शस्त्रम् ष० १.४. प्रजा शस्त्रम् श० ५.२.२.२०. वाग् हि शस्त्रम् ऐ० ३.४४.]

शस्मन् स्तोतुमर्हे (प्रयामनि=प्रयाणे) १.११९.२. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्मनिन् । किच्च बहुलवचनात् । ङेर्लुक् च छन्दसि]

शस्यते स्तूयते १.८६.४. उच्चार्यते ३.६२.७. प्रशंसितो भवति १.५३.१. **शस्यन्ते**=स्तूयन्ते ७.५६.२३. **शस्यसे**=स्तूयसे ६.५.६. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

शस्यमानम् प्रशंसितं सत् (नाम=पदार्थानां संज्ञा) १७.९०. प्रशंसितव्यम् (स्तोमं=यशः) ४.४.१५. प्रशंसनीयम् (सिद्धान्तम्) ४.५८.२. **शस्यमाने**=प्रशंसनीये (उक्थे=वचने) ६.२३.१. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

शस्यमानः स्तूयमानः (सज्जनो राजा) ७.८.३. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

शस्यमाना स्तवनीया (तनूः=शरीरम्) ६.२४.७. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

शस्यमानासः प्रशंसिताः (स्तोमासः=स्तुतयः) ६.६९.३. [शस्यमान इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

शंयुना सुखमयेन (व्यवहारेण) १९.२९. **शंयोः**= सुखस्य ऋ० भू० ३०८, ३६.१२. कल्याणवतः साधनात् कर्मणः सुखवतो वा, सुखात्, प्र०—अत्र 'कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयसः अ० ५.२.१३८. इति शमो युस्प्रत्ययः ३.४३. शं लौकिकं पारमार्थिकं सुखं यस्मिँस्तस्य (मोक्षस्य) १.४३.४. भा०—सुखाऽमृतस्य ३६.१२. [शम् सुखनाम निघं० ३.६. ततो मत्वर्थे 'कंशंभ्यां बभयुस्तितुतयसः' अ० ५.२.१३८. सूत्रेण युस् प्रत्ययः । शंयुः सुखयुः नि० ४.२१.]

शंस स्तुहि ४.३.३. अनुशाधि १.३७.५. प्रशंस ७.३१.२. **शंसत्**=शंसेत् ६.२३.५. **शंसत**=प्रशंसत ४.३५. स्तुवीत तद्गुणान् प्रकाशयत, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.२१.२. **शंसन्ति**=प्रशंसन्ति ५.७७.१. स्तुवन्ति ३.३.८. **शंसन्तु**=सुखकारका भवन्तु १.५.७. **शंससि**= स्तौषि २.४३.२. **शंसा**=प्रशंसे ४.४.१४. **शंसाति**= प्रशंसेत् ४.६.११. **शंसामः**=स्तुमः १.६०.५. **शंसामि**= प्रशंसामि ४.३२.२२. **शंसाव**=प्रशंसेव, ३.५३.३. **शंसि**= स्तौषि २.४.८. **शंसिषम्**=प्रशंसेयम् ६.४८.१६. **शंसिषः**=प्रशंसेः १.८४.१९. प्रशंस, प्र०—लोड्मध्यमैकवचनप्रयोगः ६.३७. **शंसे**=प्रशंस ७.३१.२. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लेट्, लट् चापि]

शंसते प्रशंसकाय (जनाय) ५.४२.७. **शंसन्**= प्रशंसन् (पुरुषः) ४.५१.७. **शंसन्तम्**=प्रशंसां कुर्वन्तम् (सज्जनम्) २.१२.१४. **शंसन्तः**=स्तुवन्तः (व्रतपाः= विद्वांसः) ३.४.७. उपदिशन्तः (सज्जनाः) ६.२९.४. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः शतृ]

शंसन्तीम् गुण-कीर्त्तन करने वाली वधू सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१.६. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

शंसम् प्रशंसनम् ७.३४.१२. प्रशंसाम् ३.१८.२. प्रशस्तम् (व्यवहारम्) १.१२२.५. शंसन्ति येन तम् (अग्निम्) ५.३.४. स्तुतिम् १.१८२.४. प्रशंसितम् (मर्त्तं= मनुष्यम्) १.१४१.६. प्रशंसनीयम् (सवितारं=परमात्मानम्) ५.४६.३. शंसन्ति येन तं स्तुतिसमूहम् १.२७.३. शंसन्ति येन शास्त्रबोधेन तम् १.३३.७. प्रशंसकम् (सज्जनम्) ७.५६.१९. **शंसः**=शंसन्ति स्तुवन्ति यस्मिन् सः ३.३०. शंसन्ति यत्र सः १.१८.३. स्तुत्यः (विद्वज्जनः) २.२६.१. शस्यते यः सः (विद्वान् जनः) १.९४.८. अनुशासनं प्रशंसा वा ७.३५.२. स्तुतिः २.३४.६. **शंसाः**= प्रशंसाः ७.२५.३. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

शंसय प्रकृष्टगुणवतः कुरु १.२९.२. प्रशंसायुक्तान् कुरु १.२९.४. प्रशस्तान् कुरु १.२९.१. प्रकृष्टज्ञानवतः कुरु १.२९.३. सत्याननपराधान् सम्पादय १.२९.५. प्रशंसय १.२९.६, सुखिनः सम्पादय १.२९.७. [शंसु (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

शंसा प्रशंसितौ (मातापितरौ) १.१८५.९. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोर्घञ् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शंस्ता प्रशंसकः (अध्वर्युः=अहिंसायज्ञमिच्छुर्जनः) २५.२८. प्रशंसितः (विद्वज्जनः) १.१६२.५. [शंसु स्तुतौ

(भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् 'तृन्तृचौ शंसिक्षदादिभ्यः' उ० २.९४. सूत्रेण]

शंस्तिभिः प्रशंसाभिः १.१८६.३. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। नलोपाऽभावश्छान्दसः। औणा० वा तिः]

शंस्य शंसितुं सर्वथा स्तोतुमर्हः (अ०—जगदीश्वर) ३.३७. **शंस्यम्**=स्तुत्यं संसिद्धिकरम् (कर्म) १.११६.११. प्रशंसनीयम् (कर्म) १.११७.६. स्तोतुं योग्यम् (वचः) ५.३६.५. शंसितुं योग्यम् (उक्थं=स्तोत्रम्) १.१०.५. [शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः 'शंसिदुहिगुहिभ्यो वेति वक्तव्यम्' अ० ३.१.१०९ वा० सूत्रेण क्यपो विकल्पेन ण्यत्]

शंस्या प्रशंसनीये कर्मणी १.८.१०. [शंस्यम् इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शाकाः शक्तिमत्यः (गावः) ६.२४.४. [शाकप्राति० मत्वर्थे अर्श-आदित्वादच्। ततष्टाप् स्त्रियाम्। शाकः=शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्घञ्। अथवा शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० कन्]

शाकिनम् शक्तिमन्तम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.५१.२. **शाकिने**=प्रशस्ताः शाकाः शक्तिगुणयुक्ता गुणा विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मै (शक्राय=सभाद्यध्यक्षाय) १.५४.२. शक्तिमते (वीरपुरुषाय) ६.४५.२२. **शाकी**=अवश्यं शक्तुं शीलः भा०—बहुवलसामर्थ्यः (गृहस्थः) १७.८५. प्रशस्तः शाकः शक्तिर्विद्यते यस्य सः (सभाध्यक्षः) १.५१.८. परमशक्तियुक्त, शक्ति देने वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.१४. [शाकप्राति० प्रशंसायामर्थे भूम्न्यर्थे वा इन्। अथवा शाकीप्राति० मत्वर्थे 'शाकीपलालीदद्द्र्वां ह्रस्वत्वं च' अ० ५.२.१००, वा० सूत्रेण नः प्रत्ययो ह्रस्वत्वं च। शाकी=शाकप्राति० स्त्रियां गौरादित्वान् ङीष्। शाकमिति व्याख्यातम्]

शाके शक्तिनिमित्ते (धर्मे) ५.१५.२. **शाकैः**=शक्तिविशेषैः ६.१९.४. शक्तिभिः ४.१७.११. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

शाक्वररैवते शाक्वरश्च रैवतश्च ते १०.१४. शक्त्यैश्वर्यप्रतिपादिके (सामनी=एतदुक्ते कर्मणी) १५.१४. शक्तिधनप्रतिपादिके (पदार्थसमूहे) १३.५८. [शाक्वररैवतपदयोः समासः। शाक्वरः=शक्वरप्राति० भवार्थेऽण्। शक्वरः=शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० वरट्। छान्दसो वा वरच्। रैवतम्=रैप्राति० मतुबन्ताद् 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण्]

शाक्वराय शक्तिजाय (यन्त्रशिल्पविज्जनाय) २९.६०. शक्तिजननाय ५.५. [शक्वरप्राति० भवार्थेऽण्। शक्वरः=शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० वरट्। वरच् छान्दसो वा]

शाखाः याः खेऽन्तरिक्षे शेरते ताः ७.४३.१. वृक्षाऽवयवाः १.८.८. [शाखाः अंगुलिनाम निघं० २.५. शाखा खशयाः शक्नोतेर्वा नि० १.४.]

शाचीन् व्यक्तान् (लोकान्) २३.८. [शच व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोः 'इणजादिभ्यः' अ० ३.३.१०८. वा० सूत्रेण इण्]

शाण्डः यः श्यति तनूकरोति तथाऽयम् (विद्वज्जनः), प्र०—अत्र शो तनूकरणे इत्यस्मादौणादिकोऽडच् प्रत्ययः ६.६३.९.

शातवनेये शतान्यसङ्ख्यातानि वनयः सम्भक्तयो येषान्ते शतवनयस्तैर्निर्वृत्ते (जगति) १.५९.७. [शतवनिपदयोः समासे निर्वृत्तेऽर्थे ढञ्]

शादम् शीयते छिनत्ति यस्मिँस्तं शादम् २५.१. [शद्लृ शातने (भ्वा०) धातोर्घञ्। शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्वा 'शाशपिभ्यां ददनौ' उ० ४.९७. सूत्रेण दः]

शाधि शिक्षस्व २.२८.९. ताडय पं० वि०। [शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्लोट्। 'शा हौ' इति शादेशः]

शान्तमया अतिशयेन सुखप्रापिकया (तन्वा=देहेन विस्तृतोपदेशनीत्या वा) १६.२. [शम् सुखनाम निघं० ३.६. ततोऽतिशायने तमबन्तात् स्त्रियां टाप्। वर्णव्यत्ययेनाकारस्याकारः]

शान्तमेन अतिशयेन सुखकारकेण (विज्ञानेन) १४.१२. अतिशयसुखेन १५.६४. अत्यन्तसुखरूपेण कर्मणा १३.१९. [शम् सुखनाम निघं० ३.६. ततोऽतिशायने तमप्। अकारस्याकारो वर्णव्यत्ययेन]

शान्तिः शान्तिकरम् (अन्तरिक्षम्=आकाशम्) ३६.१७. दुष्टक्रोधादि उपद्रव रहित (जन) आर्याभि० २.२५, ३६.१७. शान्त निरुपद्रव सुखकारक (द्युलोकादि) आर्याभि० २.२५, ३६.१७. आध्यात्मिक शरीर में ज्वरादि पीड़ा से होने वाले, आधिभौतिक शत्रु, सर्प, चौरादिकों से होने वाले, आधिदैविक मन, इन्द्रिय, अग्नि, वायु, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, अतिशीत, अत्युष्णतादि से होने वाले सन्ताप की निवृत्ति आर्याभि० २.१, त० ब्रा० १०.१. **शान्त्यै**=सुखाय, भा०— विज्ञानधर्मपुरुषार्थैरैहिकपारमार्थिकसुखसंसाधनाय ३.४३. निरुपद्रवता के लिए सं० वि० १४७, ३.४३.

[शमु उपशमने (दिवा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । 'अनुनासिकस्य क्विझलोः क्ङिति' सूत्रेणोपधाया दीर्घः । शान्तिरापः श० १.२.२.११.]

शापम् शपन्त्याक्रुश्यन्ति येन तम् (निन्दितवचनम्) ७.१८.५. [शप् आक्रोशे (भ्वा०) धातोर्घञ् । शापः नैनं शप्तम् । नाभिचरितमागच्छति य एवं वेद तै० ३.१२.५.१.]

शाबल्याम् शबलस्य कर्बुर-वर्णस्य सुताम् (दोषिनीं वैश्याम्) ३०.२०. [शबलप्राति० 'तस्येदम्' इत्यणन्तात् स्त्रियां ङीप्]

शाम्बरम् शम्बरे मेघे भवम् (वसु=जलाख्यं द्रव्यम्) ६.४७.२२. **शाम्बरे**=शम्बरस्याऽयं सङ्ग्रामस्तस्मिन् ३.४७.४. [शम्बरप्राति० भवार्थेऽण् । शम्बरम् मेघनाम निघं० १.१०.]

शारदी शरदो व्याख्यात्री (अनुष्टुप्) १३.५७. **शारदीः**=शरदृतुसम्बन्धिनीः (पुरः=शत्रुनगर्यः) १.१७४.२. शरदि भवाः (दासीः=सेविकाः) ६.२०.१०. शरद इमाः (अपः=जलानि) १.१३१.४. [शरद्प्राति० व्याख्यानार्थे तस्येदमर्थे भवार्थे वाऽणन्तान् ङीप् स्त्रियाम्]

शारदेन शरदि भवेन (ऋतुना) २१.२६. **शारदौ**= शरदि भवौ (आश्विनकार्त्तिकौ) १४.१६. [शरद्प्राति० भवार्थेऽण् । शरद् इति व्याख्यातम्]

शारि हिंस्यात् ६.५४.७. हिंस्याः २.२८.५. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः कर्मणि लुङ् । अटोऽभावश्छान्दसः]

शारिः शुकी २४.३३. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'श्रः शकुनौ' उ० ४.१२८. सूत्रेण इञ्]

शारीः शराणामिमा गतीः १.११२.१६. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'ॠदोरब्' इत्यप्-प्रत्यये शरः । ततः तस्येदमर्थेऽणन्तात् स्त्रियां ङीप्]

शार्गः शारङ्गश्चातकः प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा, इति ङ्लोपः २४.३३. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'गण् शकुनौ' उ० १.१२७. सूत्रेण गण्प्रत्यये नुडागमे गण्-प्रत्ययस्य णित्वाद् वृद्धौ च शार्ङ्गः । 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति ङकारलोपः]

शार्दूलः व्याघ्रविशेषः २४.३३. **शार्दूलाय**= महासिंहाय २४.३०. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'खर्जिपिञ्जादिभ्य ऊरोलचौ' उ० ४.९०. सूत्रेण ऊलच् । बहुलवचनाद् धातोर्दुक् वृद्धिश्च]

शार्यातस्य यो वीरसमूहं शरितुं हिंसितुं योग्यान् समन्तान्निरन्तरमतति व्याप्नोति तस्य (वीरपुरुषस्य) १.५१.१२. **शार्याते**=यः शरीरे हिंसकान् याति प्राप्नोति तस्याऽस्मिन् व्यवहारे ३.५१.७. शर्याभिरङ्गुलिभिर्निवृत्तानि कर्माणि शार्याणि, तान्यतति व्याप्नोति स शार्यातस्तस्मिन् (पुरुषार्थे) प्र०—शर्या इत्यङ्गुलिनामसु पठितम् निघं० २.५, ७.३५. [शार्योपपदे अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण् । शार्यम्=शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्ण्यत् अथवा शार्यम्=शर्याः अङ्गुलिनाम निघं० २.५. ततो निर्वृत्तार्थेऽण्]

शाला शाला को सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१९. **शाले**=हे शालागृह सं० वि० १६८, अथर्व० ९.२.३.२२.

शाशदानः अतिशयेन शीयते शातयति छिनत्ति यः सः (इन्द्रः=सूर्यः) १.३३.१३. [शद्लृ शातने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

शाशदाना छेदकौ (सभासेनापती) १.११६.२. [शाशदान इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शाशदाना अतीव सुन्दरी (विदुषी स्त्री) १.१२४.६. व्यवहारेष्वतितीक्ष्णमाचरन्ती (देवी=विदुषी स्त्री) १.१२३.१० [शाशदान इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

शाशदुः दुष्टान् छिन्द्युः २.२०.४. [शद्लृ शातने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लिट्]

शाशद्रे शातयेः १.१४१.९. [शद्लृ शातने (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लिट् । 'इरयो रे' इति रे-आदेशः । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

शाश्वतीभ्यः सनातनीभ्योऽनादिस्वरूपाभ्यः स्वस्वरूपेणोत्पत्तिविनाशरहिताभ्यः (समाभ्यः=प्रजाभ्यः) ४०.८. सर्वदैकरसमानाभ्यः (प्रजाभ्यः) पं० वि० । नित्याभ्यः (समाभ्यः=प्रजाभ्यः) ४०.८. ऋ० भू० ३२०, [शश्वत् प्राति० भवार्थेऽणन्तात् स्त्रियां ङीप्]

शाश्वसद्भिः अतिशयेन प्राणवद्भिश्चरैः (पदार्थैः) १.३०.१६. [श्वस प्राणने (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छतृ]

शासत् शिष्यात् ३.३१.१. विद्याशिक्षाभ्याञ्च शाधि पं० वि० । यथायोग्य शासन (दण्डनिपातन) करो आर्याभि० १.१४, ऋ० १.४.१०.८. शासतु=उपदिशन्तु २३.४०. **शासते**=आशां कुर्वन्ति ३३.७८. इच्छन्ति १.१६५.४. **शासः**=शिष्याः १.१३१.४. **शास्ति**= विशेषेणोपदिशति २३.३६. **शास्ते**=इच्छति २१.२.

शास्महे=इच्छामः १.३०.१०. **शास्व**=शिक्ष २१.६१. **शास्सि**=उपदिशसि १.३१.१४. [शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लोट् लट् लङ् च । अथवा आङः शासु इच्छायाम् (अदा०) धातोर्लटि शास्ते, शास्महे इत्येते रूपे । शासत् प्रशास्ति नि० ३.४.]

शासत् शासनं कुर्वन् (सभाध्यक्षः) १.५१.८. [शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोः शतृ]

शासनम् शंसन्ति हिंसन्ति यस्मिँस्तद्युद्धम् २९.२३. **शासने**=शिक्षायामाज्ञायां वा ३.७.५. [शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोरधिकरणे ल्युट् भावे वा । अथवा शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट् । दीर्घश्छान्दसः]

शासनीम् शास्ति सर्वान् विद्याधर्माचरणशीलान् यया सत्यनीत्या ताम् । समी०—अत्राऽपि सायणाचार्येण मनोः पुत्री गृहीता तदप्यशुद्धमेव १.३१.११. [शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्ल्युडन्तात् स्त्रियां ङीप्]

शासम् शासितारम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ७.३६. शास्ति येन तं न्यायम् १.५४.७. शासनम् १.६८.५. पक्षपातं विहाय शासनकर्त्तारम् (इन्द्रम्) ६.१९.११. **शासा**=शासनेन ७.४८.३. **शासाम्**=शासनकर्त्रीणाम् (राज्यशासकानाम्) २.२३.१२. [शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । घञर्थे को वा । वज्रः शासः श० ३.८.१.५. असिं वै शास इत्याचक्षते श० ३.८.१.४.]

शासुरिव यथा पूर्णविद्यस्याऽध्यापकस्य सकाशात् १.११६.१३. [शासुः-इवपदयोः समासः । शासुः=शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० ऋः]

शासुः न्यायेन प्रजायाः प्रशासितुः (राज्ञः) १.६०.२. [शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० ऋः]

शासुः शासनकर्त्तोपदेष्टा (मनुष्यः) १.७३.१. [शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० उः]

शास्यः शासितुं योग्यः (दुष्टजनः) १.१८९.७. [शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्ण्यत्]

शिक्वभिः कीलकबन्धनादिभिः १.१४१.८. **सेचनैः** प्र०—शीकृधातोः क्वनिपि 'वाच्छन्दसि' इत्याद्यचो ह्रस्वत्वम् २.३५.४. वीर्यादि से सं० वि० १०४, २.३५.४. **शिक्वसः**=प्रकाशमानस्य (विद्वज्जनस्य) ६.२.९. शक्तिमन्तः (रुद्राः=वायवः) ५.५४.४. [शीकृ सेचने (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति क्वनिप् । धातोर्ह्रस्वत्वं छान्दसम्]

शिक्ष अनुशास्ति २.११.२१. सर्वा विद्या ग्राह्य १.२७.५. उपदिश २.१७.९. **शिक्षतम्**=विद्योपादानं कारयतम् १.१०९.७. सुशिक्षया विद्यां ग्राह्यतम् १.३४.४. **शिक्षति**=विद्या गृह्णाति ग्राहयति वा, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.५९.२. **शिक्षतु**=विद्यामुपाददातु १.८१.६. **शिक्षते**=विद्यां ग्राहयति १.२८.३. **शिक्षन्ति**=शिक्षां प्रददति १.१७३.१०. **शिक्षसि**=विद्यां ददासि १.८१.२. **शिक्षात्**=साध्वीं शिक्षां कुर्यात् १.६८.१. **शिक्षाः**=शिक्षस्व, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.४३.५. **शिक्षेयम्**=सुशिक्षां कुर्याम् ७.३२.१९. [शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । अन्यत्र लट्, लेट्, लङ्, लिङ् च । शिक्षति दानकर्मा नि० ३.२०. शिक्ष देहि नि० १.७.]

शिक्षन् विद्योपार्जनं कारयन् (इन्द्रः=राजा) ७.१९.२. विद्यां ददन् (विद्वज्जनः) ६.२७.५. विद्यामुपादापयन् (इन्द्रः=अध्यापकजनः) १.१३२.४. विद्याग्रहणं कारयन् (विद्वान्) ७.२०.७. [शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

शिक्षा विद्याग्रहणसाधिका (सत्क्रिया) २.१५.१०. शासनम् ७.२७.२. [शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोः 'अ प्रत्ययात्' अ० ३.३.१०२. सूत्रेण स्त्रियामकारः । ततष्टाप्]

शिक्षानरः यः शिक्षां नृणाति प्राप्नोति स शिक्षाया नरः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) १.५३.२. विद्योपादानेन नेता (इन्द्रः=राजा) ४.२०.८. [शिक्षा-नरपदयोः समासः]

शिक्षिते विद्वद्भिरुपदिष्टे (उषासानक्ता रात्रिदिने) २८.१६. कृतशिक्षे सत्यौ (उषासानक्ता) २८.१५. [शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोः क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

शिक्षितौ विज्ञापितौ (देवा=वायुवह्नी) २८.१७. [शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोः क्तः]

शिक्षोः शिक्षकस्य (पूर्णविद्याप्रकाशवतः पुरुषस्य) ३.१९.३. [शिक्ष विद्योपादाने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उः]

शिग्रवः अव्यक्तशब्दकर्त्तारः (राजादयो जनाः), प्र०—अत्र शिजिधातोरौणादिको रुक्-प्रत्ययः ७.१८.१९. [शिजि अव्यक्ते शब्दे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० रुक्]

शिङ्क्ते अव्यक्तं शब्दं करोति ६.७५.३. [शिजि अव्यक्ते शब्दे (अदा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्नम् । शिङ्क्ते शब्दायते नि० २.९.]

शिङ्गीनि ज्ञातं प्राप्तुं योग्यानि (वस्तूनि), प्र०—अत्र स्रगिधातोः पृषोदरादिनाऽभीष्टरूपसिद्धिः ३६.८.

शिताम् तीक्ष्णधाराम् (अशनिं=विद्युतम्) १.५४.४. [शिञ् निशाने (स्वा०) धातोः क्तान्तात् स्त्रियां टाप्]

शितामतः तीक्ष्णस्वभावात् २१.४४. शितस्तीक्ष्ण आमोऽपरिपक्वं यस्मिँस्तस्मात् (अङ्गादङ्गात्=प्रत्यङ्गात्) २१.४३. तीक्ष्णत्वेनोच्छिन्नरोगात् २१.४५. [शित-आम-पदयोः समासः। ततः तसिः। दोः शिताम भवति। दोर्द्रवतेः। योनिः शितामेति शाकपूणिः विषितो भवति। श्यामतो यकृत्त इति तैटीकिः। श्यामं श्यायतेः यकृद् यथाकथा च कृत्यते। शितिमांसतो मेदस्त इति गालवः नि० ४.३.]

शितिकक्षः शिती श्वेतौ कक्षौ पार्श्वौ यस्य सः (पशुः पक्षी वा) २४.४. [शिति-कक्षपदयोः समासः]

शितिकण्ठाय शितिस्तीक्ष्णीभूतः कृष्णो वा कण्ठो यस्य तस्मै (पक्षिणे) १६.२८. **शितिकण्ठाः**=शितिः श्वेतः कण्ठो येषान्ते (शर्वाः=हिंसका जीवाः) १६.५७. शितयस्तीक्ष्णाः श्वेता वा कण्ठा येषान्ते (रुद्राः=जीवा वायवो वा) १६.५६. [शिति-कण्ठपदयोः समासः। शितिः=शो तनूकरणे (दिवा०) धातोः क्तिच् औणादिकः। शिञ् निशाने (स्वा०) धातोर्वा क्तिन्। शिति श्यतेः नि० ४.३.]

शितिपादः शितयः शुक्लाः पादा अंशा येषां किरणानां ते १.३५.५. [शिति-पादपदयोः समासः। समासान्तलोपः]

शितिपृष्ठस्य शितिः (सूक्ष्मः) पृष्ठं प्रश्नो यस्य तस्य (वह्नेः) ३.७.१. **शितिपृष्ठः**=शितिस्तनूकरणं पृष्ठं यस्य सः (पशुः) २४.७. कृष्णपृष्ठः (पशुः) २९.५८. **शितिपृष्ठानाम्**=शितयस्तीक्ष्णा गतयः पृष्ठे येषां तेषाम् (पशूनाम्) २८.१९. [शिति-पृष्ठपदयोः समासः]

शितिबाहुः शितयो बाह्वोर्यस्य सः (पशुः) २४.२. शिती तनूकर्त्तारौ बाहू इव बलं यस्य सः (पशुः) २४.७. [शिति-बाहुपदयोः समासः]

शितिभ्रुवः शितिश्श्वेता भ्रू भ्रूर्कुटिर्यासां ताः पक्षिण्यः २४.६. [शिति-भ्रूपदयोः समासः]

शितिरन्ध्रः शितिः श्वेतता रन्ध्रे यस्य सः (पशुः) २४.२. [शिति-रन्ध्रपदयोः समासः]

शिथिरा शिथिलौ दृढौ (बाहू=भुजौ) ७.४५.२. [श्रन्थ विमोचनप्रतिहर्षयोः (क्र्या०) धातोः 'अजिरशिशिर-शिथिल०' उ० १.५३. सूत्रेण किरच् निपात्यते। धातोरुपधाया इत्वं रेफस्य लोपः निपातनात्। ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

शिथिराम् शिथिलाम् (पदार्थविद्याम्) ६.५८.२. [पूर्वपदे शिथिर इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

शिपिविष्टः शिपिषु पदार्थेषु प्रविष्टः (विष्णुः=धनञ्जयः) ८.५५. **शिपिविष्टाय**=शिपिष्वाक्रोशत्सु प्राणिषु व्याप्त्या प्रविष्टाय (विष्णवे=परमेश्वराय) २२.२०. शिपिषु पशुषु पालकत्वेन विष्टाय प्रविष्टाय वैश्यप्रभृतये १६.२९. [शिपि-विष्टपदयोः समासः। शिपिविष्टो विष्णुरिति विष्णोर्द्वे नामनी भवतः नि० ५.८. शिपयोऽत्र रश्मय उच्यन्ते तैराविष्टो भवति नि० ५.८. यज्ञो वै विष्णुः शिपिविष्टः तां० ९.७.१०. एषा वै प्रजापतेः पशुष्ठा तनूर्यच्छिपिविष्टः तां० १८.२.२६. यमुपैत्सीत् तमपाराप्सीत् तच्छिपितमिव यज्ञाय भवति तस्माच्छिपिविष्टायेति श० ११.१.४.४.]

शिप्रवान् शिप्रे सुन्दरे हनुनासिके विद्येते यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ६.१७.२. [शिप्रप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुप्। शिप्रे हनू नासिके वा नि० ६.१७.]

शिप्राः उष्णिषः ५.५४.११. [शिप्रे हनू नासिके वा नि० ६.१७.]

शिप्रिणीनाम् शिप्रे ऐहिकपारमार्थिकव्यवहारज्ञाने विद्येते यासां ता विदुष्यः स्त्रियस्तासाम्, प्र०—शिप्रे इति पदनाम निघं० ४.३. अनेनात्र ज्ञानार्थो गृह्यते १.३०.११. [शिप्रे इति पदनाम (निघं० ४.३.) ततो मत्वर्थ इनिः। ततः स्त्रियां ङीष्। ततः षष्ठी]

शिप्रिणे उत्तमहनुनासिकाय (वीर-पुरुषाय) ६.४४.१४. **शिप्रिन्**=शोभनहनुनासिकः (इन्द्र=आप्त-विद्वन्) ३.३६.१०. सुमुख (राजन्) ७.२५.३. शिप्रे प्राप्तुमर्हे प्रशस्ते व्यावहारिकपारमार्थिके सुखे विद्येते यस्य सभापतेः तत्सम्बुद्धौ, प्र०—अत्र प्रशंसार्थ इनिः शिप्रे इति पदनाम निघं० ४.१, ३.३६.१०. **शिप्री**=शत्रूणामाक्रोशकः (सेनापतिः) १.८१.४. [शिप्रे हनू नासिके वा नि० ६.१७। ततः प्रशंसायामर्थे इनिप्रत्ययान्ताच्चतुर्थी]

शिप्रे हनुनासिके, हनुप्रभृत्यङ्गानि, प्र०—शिप्रे इत्युपलक्षणमन्येषाञ्च नि० ६.१७, ८.३९. मुखावयवाविव ३.३२.१ सर्वसुखप्रापिके द्यावापृथिव्यौ १.१०१.१०.

सुशोभिते (हनू=मुखनासिके) ५.३६.२. [शिप्रे हनू नासिके वा नि० ६.१७.]

शिफायाः नद्याः, प्र० अत्र शिञ् निशाने धातोरौणादिकः फक्-प्रत्ययः १.१०४.३. [शिञ् निशाने (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० फक् । ततः स्त्रियां टाप्]

शिमीवतः प्रशस्तकर्मयुवतान् (मयोभून्=सुवीरान्) १.८४.१६. **शिमीवान्**=प्रशस्तानि कर्माणि भवन्ति यस्य सकाशात् (वज्रः=शस्त्राऽस्त्रसमूहः) प्र०—अत्र 'छन्दसीरः' इति मतुपो मकारस्य वत्वम् 'शिमीति कर्मनाम' निघं० २.१, १.१००.१३. प्रशस्तकर्मयुक्तः (शिल्पविद्याविज्जनः) २.२५.३. प्रशस्तकर्मवान् (जनः) ५.५६.३. [शिमी कर्मनाम निघं० २.१. ततः प्रशंसायामर्थे मतुप् । 'छन्दसीर' इति मतुपो मकारस्य वत्वम् । शिमीति कर्मनाम । शमयतेर्वा शक्नोतेर्वा नि० ५.१२. शिमीवतः कर्मवतः नि० १३.३९.]

शिम्बलम् शल्मलीपुष्पं पत्रं वा ३.५३.२२.

शिम्या सुकर्मयुक्तया (क्रियया) १.१५१.३. कर्म्मणा १.१५१.१. [शिमी कर्मनाम निघं० २.१.]

शिम्युम् आत्मनः शिमि कर्म कामयमानम् (दुष्टजनम्) ७.१८.५. **शिम्यून्**=शान्तान् प्राणिनः १.१००.१८. [शिमी कर्मनाम निघं० २.१ तत इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसि' इत्युः]

शिरः यच्छ्रीयते तदुत्तमाऽङ्गम् १.१६३.६. शृणाति हिनस्ति दुःखानि येन तत् (उत्तमाङ्गम्) १२.४. मूर्द्धेव (विद्वान्) ३७.८. घनाऽऽकारमुपरिभागम् १९.७१. शिरोवद्वर्त्तमानं घनम् ५.३०.८. मस्तकम् ६.२०.६. दूराच्छिर इव लक्ष्यमाणम् (आत्मानम्) २९.१७. शिरोवन्मुख्यं वचनम् ६.५९.६. उत्तमगुणम् ३७.५. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'श्रयतेः स्वाङ्गे शिरः किच्च' उ० ४.१९४. सूत्रेणासुन् शिरादेशश्च । अपि वा शिर आदित्यो भवति यदनुशेते सर्वाणि भूतानि मध्ये चैषां तिष्ठति । इदमपीतरच्छिर एतस्मादेव समाश्रितान्येतद् इन्द्रियाणि भवन्ति नि० ४.१३. यच्छ्रियं समुदौहंस्तस्माच्छिरस्तस्मिन्नेतस्मिन् प्राणा अश्रयन्त तस्मादेवैतच्छिरः श० ६.१.१.४. शिरो वै प्राणानां योनिः श० ७.५.१.२२. प्राणोऽग्निः शीर्षम् कौ० ८.१. गायत्री छन्दोऽग्निर्देवता शिरः श० १०.३.२.१. गायत्रं हि शिरः श० ८.६.२.६. शिरस्सूवतम् जै० उ० ३.४. त्रिधातु हि शिर इति । तै० ३.३.७.११. त्रिवृद्धि शिरः श० ८.४.४.४. त्रिवृद् ह्येव शिरो लोम त्वगस्थि तां० ५.१.३. शिर एवास्य त्रिवृत् । तस्मात् त्रिविधं भवति त्वगस्थिमस्तिष्कः श० १२.२.४.९. त्रिवृतं ह्येव शिरो भवति त्वगस्थिमज्जामस्तिष्कम् गो० पू० ५.३. शिरो वा अग्रे सम्भवतः सम्भवति चतुर्द्धा विहितं वै शिरः प्राणश्चक्षुः श्रोत्रं वाग् तां० २२.९.४. शिरो वै प्रथमं जायमानस्य जायते श० ८.२.४.१८. शीर्षतो वाऽग्रे जायमानो जायते श० ३.४.१.१९. यस्माच्छीर्षण्येवाग्रे पलितो भवति श० ११.४.१.६. द्विकपालं हि शिरः श० १०.५.४.१२. तस्मादष्टाकपालं पुरुषस्य शिरः तै० ३.२.७.४. प्रादेशमात्रमिव हि शिरः श० ७.५.१.२३. मध्ये संगृहीतमिव हि शिरः श० १४.१.२.१७. तस्माच्छिरोऽङ्गानि मेद्यन्ति नानुमेद्यति न कृश्यन्त्यनुकृश्यति तां० ५.१.६. अर्वाग् बिलश्चमस ऊर्ध्वबुध्नः । इदं तच्छिरः श० १४.५.२.५. शिर एतद् यज्ञस्य यदुखा श० ६.५.३.८. शिर एव षष्ठी चितिः श० ८.७.४.२१. श्रीः (=उत्कृष्टं वस्तु) वै शिरः श० १.४.५.५.]

शिरिणायाम् हिंसितायाम् (पृथिव्याम्) २.१०.३. [शिरिणा रात्रिनाम निघं० १.७. शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० इनच् किच्च । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

शिल्पः नानावर्णः (पशुः) २९.५८. [शिल्पम् रूपनाम निघं० ३.७.]

शिल्पाः सुरूपाः शिल्पकार्यसाधिकाः (विश्वदेवदेवताकास्त्र्यवयः) २४.५. **शिल्पे**=मानसप्रसिद्धक्रियया सिद्धे (विश्वे) ४.९. [शिल्पम् कर्मनाम निघं० २.१. रूपनाम निघं० ३.७. शील समाधौ (भ्वा०) धातोः 'खष्पशिल्प०' उ० ३.२८ सूत्रेण प-प्रत्ययान्तो निपात्यते । निपातनादेव धातोर्ह्रस्वादेशः]

शिवतमः अतिशयेन सुखकारी (रसः=आनन्दः) ११.५१. अतिशयेन मङ्गलकारी (अग्निः=जीवः) १२.३९. **शिवतमाः**=अतिशयेन शिवाः कल्याणकारकं कर्म्म कुर्वन्तः कारयन्तश्च (सखायः) १.५३.११. [शिवप्राति० अतिशायने तमप् । शिवम् सुखनाम निघं० ३.६. शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः 'सर्वनिघृष्व०' उ० १.१५३. सूत्रेण वन्-प्रत्ययान्तो निपात्यते । धातोर्ह्रस्वत्वं निपातनात्]

शिवतमाम् अतिशय कल्याण करने वाली स्त्री को सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२ ३८. **शिवतमाः**=अतिशयेन सुखकराः (दिशः) ३५.९. [शिवप्राति० अतिशायने तमप् ।

ततः स्त्रियां टाप् । शिवम् सुखनाम निघं० ३.६.]

शिवतराय अतिशयेन मङ्गलस्वरूपाय (भा०—सर्वमङ्गलप्रदाय परमेश्वराय) १६.४१. अत्यन्त कल्याणस्वरूप और कल्याणकारक (परमेश्वर) के लिए आर्याभि० २.२६, १६.४१. [शिवप्राति० अतिशायने तरप् । शिवम् सुखनाम निघं० ३.६]

शिवम् कल्याणम्, भा०=पारमार्थिकं सुखम्, प्र०—शिवं शग्मं चेति सुखनामसु पठितम् निघं० ३.६, ३.४३. कल्याणकारकम् (यज्ञं=गृहाश्रमाख्यं शुभाचरणम्) १७.६. सुखकरम् (अन्तरिक्षम्) ३५.९. मङ्गलकारिणम् (अग्नि=विद्युतम्) ११.४७. निश्श्रेयसं सुखम् ऋ० भू० २४०, ३.४३. मोक्ष-सुख को आर्याभि० २.४९, ३.४३. **शिवः**=कल्याणकारी (अग्निः=वेदविदध्यापकोपदेशकः) २५.४७. मङ्गलस्वरूपो ज्ञानमयो विज्ञानप्रदः (रुद्रः=उपदेशको जनः) ३.६३. मङ्गलमयो जीवानां मङ्गलकारी (अग्निः=सर्वाभिरक्षकेश्वरः) १.३१.१. न्यायकारी (सभापतिः) १७.११. मङ्गलाचारी (अग्निः=शत्रुविदारको राजा) १२.१७. सुखप्रदः (रुद्रः=सेनाध्यक्षः) ३.६१. **शिवेन**=सर्वसुखनिमित्तेन (मनसा=अन्तःकरणेन) २.२४. [शिवम् सुखनाम निघं० ३.६. (यजु० १२.१७.) शिवः शिव इति शमयत्येवैनम् (अग्निम्) एतद् हिंसायै तथो हैष (अग्निः) इमांल्लोकाञ्छान्तो न हिनस्ति (शिवः=रुद्रः=शान्तोऽग्निः) श० ६.७.३.१५. श्यति पापमिति विग्रहे शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० वन् । पृषोदरादिना रूपसिद्धिः । शिवु कल्याणे (बहुलमेतन्निदर्शनम् इति धातुष्वपठिता अपि धातवो गृह्यन्ते) धातोरौणा० कः । कर्त्तरि वा इगुपधलक्षणः कः । स (परमात्मा) ब्रह्मा स शिवः सेन्द्रः सोऽक्षरः परमः स्वराट् तै० आ० १०.११.२.]

शिवसङ्कल्पम् शिवः कल्याणकारी धर्मविषयः सङ्कल्प इच्छा यस्य तत् (मनः=सङ्कल्पविकल्पात्मकम्) ३४.१. धर्मेष्टम् (मनः=मननविचारात्मकम्) ३४.२. शिवे कल्याणकरे परमात्मनि सङ्कल्प इच्छाऽस्य तत् (मनः=सर्वकर्मसाधनम्) ३४.३. शिवो मोक्षरूपसङ्कल्पो यस्य तत् (मनः=योगयुक्तं चित्तम्) ३४.४. शिवः कल्याणकरो वेदादिसत्यशास्त्रप्रचारसङ्कल्पो यस्मिँस्तत् (भा०—मनः=विद्याधर्माचरणेन पवित्रम्) ३४.५. मङ्गलनियमेष्टम् (भा०—मनः=यज्जितं सिद्धिप्रदम्) ३४.६. कल्याणप्रियं सत्यार्थप्रकाशकञ्च (मनः) ऋ० भू० १०७, ३४.१. कल्याणेष्टधर्मशुभगुणप्रियम् (मनः) ऋ० भू० १५२, ३४.१. अपने और दूसरों के लिए कल्याण की इच्छा करने वाला, धर्म, कल्याण का सङ्कल्प करने वाला, शुद्ध गुणों की इच्छा करके दुष्ट गुणों से पृथक् रहने वाला, योग-विज्ञान से युक्त होकर अविद्यादि क्लेशों से वियुक्त, अविद्या का अभाव करके विद्याप्रिय, अधर्माचरण से रोक कर इन्द्रियों को धर्म-पथ में सदा चलाने वाला (मनः=मन) ३४.१.६. स० प्र० २४६-४७. [शिव-संकल्पपदयोः समासः । शिवम् सुखनाम निघं० ३.६. संकल्पः=सम्+कृपू सामर्थ्ये (भ्वा०) धातोर्घञ् । 'कृपो रो लः' इति लत्वम्]

शिवा मङ्गलप्रदा (पृथिवी) १.२७. प्रियदर्शना, सुखप्रदा, कल्याणकारिणी च (तनूः धर्मनीतिः) १६.४९. **शिवाम्**=मङ्गलमयीम् (जरां=वृद्धावस्थाम्) ५.१४१.१७. कल्याणकारिकाम् (तनूः=शरीरम्) ४.२. **शिवे**=मङ्गलकारिण्ये (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ६.७५.१०. कल्याणसाधिके (क्रिये), प्र०—सर्वनिघृष्व० उ० १.१५१ इत्ययं सिद्धः २.१९. [शिव इति व्याख्यातम् । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

शिवानि मङ्गलमयानि (सख्युः कर्माणि) १.१०८.५. [शिव इति व्याख्यातम्]

शिवासः मङ्गलाचरणाः (सखायः) ५.१२.५. [शिव इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

शिवेभिः सुखकारकैर्मङ्गलविधायकैः (पायुभिः=रक्षणैः) ६.७१.३. [शिवप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न भवति]

शिशवे पुत्राय ४.१८.८. **शिशुम्**=शासनीयं कुमारं बालकम् ७.१६. वत्सम् १.१८६.७. बालकमिव वर्त्तमानं जगत् १७.७०. **शिशुः**=अविद्यादिदोषाणां तनूकर्त्ता (विद्वज्जनः) १.१४५.३. यः श्यति तनूकरोति सः (अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१९. **शिश्वः**=शासनीयाः (वर्णा आश्रमा अध्यक्षप्रजाभृत्याश्च) १.१२२.१५. [शो तनूकरणे (दिवा०) धातोः 'शः कित् सन्वच्च' उ० १.२०. सूत्रेण उः । सन्वद्भावेन द्वित्वादिकम् । शिशुः शंसनीयो भवति । शिशीतेर्वा स्याद् दानकर्मणः । चिरलब्धो गर्भो भवति नि० १०.३९. अयं वाव शिशुर्योऽयं मध्यमः प्राणः श० १४.५.२.२.]

शिशाति तीक्ष्णीकरोति ७.१८.११. **शिशातु**=क्षयतु, प्र०—अत्र शो तनूकरणे इत्यस्मात् श्यनः स्थाने 'बहुलं छन्दसि' इति श्लुः, ततः 'श्लौ' इति द्वित्वम् १.१११.५. **शिशाधि**=सम्यक्तया शिक्षय ६.१५.१९.

शिशाः=शिक्षय ६.१८.१३. **शिशीत**=तीक्ष्णीकरोति ६.३ ५. तीक्ष्णीकुरुत ६.१६.४२. **शिशीतम्**=तीक्ष्णीकुर्यातम् २.३९.७. तीक्ष्णबुद्धियुक्तान् कुरुतम् १.१२२.३. **शिशीते**=तनूकरोति ५.९.५. तेजते ५.२.९. कृशं करोति, प्र०—शो तनूकरणे इत्यस्माल्लटि विकरणव्यत्ययेन श्यनः स्थाने श्लुरात्मनेपदं 'बहुलं छन्दसि' इत्यभ्यासस्येत्वम् 'ई हल्यघोः' अ० ६.४.११३. इत्यनभ्यासस्येकारादेशः १.३६.१६. **शिशीहि**=तीक्ष्णान् सम्पादय ३.२४.५. तीक्ष्णप्रज्ञान् कुरु ७.१८.२. सुखेन शयनं कुरु, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.४२.९. शिनु, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्लुः 'अन्येषामपि०' इति दीर्घश्च १.८१.७. तीव्रोद्योगिनः कुरु ७.१६.६. [शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन श्लुः। 'बहुलं छन्दसी' त्यभ्यासस्येत्वम्। अन्यत्र लोट् चापि। 'शिशाधि' इत्यादौ शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्लोट्। शपः श्लुश्छन्दसि। शिशीहि=शिशीतिर्दानकर्मा निघं० ५.२३.]

शिशानः तनूकर्त्ता (वृषभः=बलीवर्दः) १७.३३. [शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्लिटः कानच्। अभ्यासस्येत्वं छान्दसम्]

शिशिराय शिशिरर्त्तौ व्यवहारसाधनाय २४.११. शिशिराय ऋतवे २४.२०. [शश प्लुतगतौ (भ्वा०) धातोः 'अजिरशिशिर०' उ० १.५३. सूत्रेण किरच् निपात्यते। शिशिरं शृणातेः शम्नातेर्वा नि० १.१०. षड्भिरैन्द्राबार्हस्पत्यैः (पशुभिः) शिशिरे यजते श० १३.५.४.२८.]

शिशीते उदके १.५५.१

शिशीमसि शत्रून् सूक्ष्मान् जीर्णान् कुर्म्मः, प्र०—अत्र शो तनूकरणे इत्यस्माल्लटि श्यनः स्थाने व्यत्ययेन श्लुः 'छन्दस्युभयथा' इति श्लोरार्धधातुकत्वादाकारादेशः १.१०२.१०. [शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन श्यनः श्लुः। छन्दसि श्लोरार्धधातुकत्वादाकारादेशः। 'इदन्तो मसि' इति मस इदन्तता]

शिशुमती प्रशस्ताः शिशवो विद्यन्ते यस्याः सा (अश्वा=वडवा) २१.३३. शिशुमतीः=प्रशस्ता बालका विद्यन्ते यासां ताः (स्त्रियः) १.१४०.१०. [शिशुरिति व्याख्यातम्। ततो मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप्]

शिशुमारः बालहन्ता (पक्षिणी) २४.३०. **शिशुमारान्**=ये स्वशिशून् मारयन्ति तान् (जलचरजन्तून्) २४.२१. [शिशूपपदे मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

शिश्नथत् हिंसति, प्र०—श्नथतीति हिंसाकर्मा निघं० २.१९, २.२०.५. प्रलयं करोति ६.४.३. शिथिलीकरोति ४.३०.१०. **शिश्नथे**=श्नथति हिनस्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् ३.३१.१३. [श्नथति वधकर्मा निघं० २.१९. ततो लेट्। द्वित्वमभ्यासस्येत्वं च छान्दसम्]

शिश्नदेवाः=अब्रह्मचर्याः कामिनो ये शिश्नेन दीव्यन्ति क्रीडन्ति ते (लम्पटाः कामातुरा जनाः) ७.२१.५. [शिश्नोपपदे दिवु क्रीडाविजिगीषादिषु० (दिवा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। शिश्नदेवा अब्रह्मचर्याः। शिश्नं श्नथतेः शिश्ना=अस्नातानि सूत्राणि नि० ४.६.]

शिश्ना अशुद्धानि सूत्राणि १.१०५.८. [शिश्नं पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि। शिश्नं वै शोचिष्केशं (ऋ० ३.२७.४.) शिश्नं हीदं शिश्निनं भूयिष्ठं शोचयति श० १.४.३.९. वृत्तमिव हि शिश्नम् श० ७.५.१.३८. योनिरुलूखलम्······शिश्नं मुसलम् श० ७.५.१.३८.]

शिश्रथः शिथिलीकुरु वियोजय ४.१२.४. विज्ञानदानेन शिथिलानि करोतु १.२४.१४. प्रयतस्व हिन्धि वा ५.८५.७. श्रथ्नाति ४.३२.२२. **शिश्रथत्**=श्रथयेत्, प्र०—अत्राऽडभावः १.१२८.६. [श्रथि शैथिल्ये (भ्वा०) श्रन्थ विमोचनप्रतिहर्षयोः (क्र्या०) श्रथ प्रयत्ने (चुरा०) धातोर्वा लेटि लङि वा छान्दसानि रूपाणि]

शिश्रियाणम् श्रयन्तम् (अग्निम्) १५.२८. व्याप्तम् (परमेश्वरम्) ५.११.६. विविधाश्रयम् १.३२.२. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः शानच्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

शिश्रियाणाम् मेघाऽवयवानां मध्ये स्थितां विद्युतम् १७.१. [शिश्रियाणमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

शिश्रिये समाश्रये ९.२४. श्रयति ५.४४.१३. **शिश्रीत**=श्रयेत १.१४९.२. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन श्लुः। अन्यत्र लिङ्, शपः श्लुश्च]

शिश्वः शासनीयाः (अध्यक्षप्रजाभृत्याः) १.१२२.१५. **शिश्वा**=शिशुना वत्सादिना १.६५.५. **शिश्वे**=वत्साय २.३४.८. [शिशुरिति व्याख्यातम्। 'जसादिषु छन्दसि वेति वक्तव्यम्' अ० ७.३.१०९. वा०सूत्रेण गुणादिनामभावे यणादेशे च रूपाणि]

शिषः शिष्टं त्यजेत् १७ ४५. शिष्टं त्यज ६.७५.१६. [शिष असर्वोपयोगे (चुरा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन शः]

शिष्टम् शिष्यते यस्तम् (सोमम्=उत्तमौषध्यभिषवम्) १.२८.९. [शिष असर्वोपयोगे (चुरा०) धातोः क्तः]

शिंशपायाम् एतत्काष्ठे वृक्षविशेषे ३.५३.१९. [शिवोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क-प्रत्यये टापि च पृषोदरादिना रूपसिद्धिः]

शिंशुमारः शिंशून् धर्मोल्लङ्घिनः शत्रून् मारयति येन सः (रथः=रमणीयो यानादिः) १.११६.१८. [शिंशूपपदे मृङ् प्राणत्यागे (तुदा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। शिंशुः शिशुपदेन विज्ञेयम्। शिशुः शंसनीयो भवति नि० १०.३९.]

शीकायते यः शीकं सेचनं करोति तस्मै (मेघाय) २२.२६. [शीकशब्दादाचारेऽर्थे क्यजन्ताच्छतृ। शीकः=शीकृ सेचने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

शीघ्रम् तूर्णम् २२.२६.

शीघ्र्याय शीघ्रगतौ साधवे (जनाय) १६.३१. [शीघ्रप्राति० साध्वर्थे यत्]

शीनम् सङ्कुचितम् (घृतम्) २५.९. [श्यैङ् गतौ धातोः क्तप्रत्यये 'द्रवमूर्त्तिस्पर्शयोः श्यः' अ० ६.१.२४. सूत्रेण सम्प्रसारणम् 'श्योऽस्पर्शे' इति निष्ठानत्वम्]

शीभम् क्षिप्रम् ३.३३.१२. [शीभम् क्षिप्रनाम निघं० २.१५]

शीभ्याय शीभेषु क्षिप्रकारिषु भवाय (जनाय), प्र०—शीभ इति क्षिप्रनाम निघं० २.१५, १६.३१. [शीभम् क्षिप्रनाम निघं० २.१५. ततो भवार्थे यत्]

शीरम् विद्युद्रूपेण सर्वत्र शयानम् (वह्निम् ३.९.८. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३ सूत्रेण रक्। शीरम् अनुशयिनमिति वा शिनमिति वा नि० ४.१४.]

शीर्यते हिंस्यते १.१६४.१३. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः कर्मणि लट्]

शीर्षणि शिरसि २.१६.२. **शीर्षसु**=शिरस्सु ५.५४.१. मस्तकेषु ५.५७.६. **शीर्षाणि**=शिरांसि ७.१८.१९. **शीर्षे**=शिरसी प्रायणीयोदयनीये नित्यः कार्यश्च शब्दात्मानौ वा १७.९१. शिरसी इव (अभ्युदयनिःश्रेयसे) ४.५८.३. **शीर्ष्णः**=शिर इवोत्तमसामर्थ्यात् ३१.१३. शिरसः १.१६४.७. शिरोवदुत्तमसामर्थ्यात् प्रकाशमयात् ऋ० भू० १२७, ३१.१३. **शीर्ष्णा**=शिरोवत् कर्मणा १.११६.१२. **शीर्ष्णे**=उत्तमाऽङ्गाय (मखाय यज्ञाय) ३७.३. उत्तमव्यवहाराय (मखाय=गृहस्थकार्यसङ्गतिकरणाय) ३७.८. उत्तमगुणप्रचारकाय (मखाय=शिल्पयज्ञविधानाय) ३७.६. शिरोवत्सर्वोपरिवर्त्तमानाय (मखाय) ३७.८. उत्तमसुखप्रदाय (मखाय) ३७.७. सर्वोत्कर्षाय ३७.८. शिरः सम्बन्धिने वचसे (मखाय) ३७.६. उत्तमत्वाय (मखाय) ३७.५. [शिरस्प्राति० सप्तम्यां विभक्तौ 'शीर्षंश्छन्दसि' अ० ६.१.६०. सूत्रेण शीर्षन् इत्यादेशः]

शीर्षण्या शिरसि भवा (रज्जुः) २५.३१. या शीर्ष्णि साधुः सा (रज्जुः) १.१६२.८. [शिरस्प्राति० भवार्थे साध्वर्थे वा यत्प्रत्यये 'ये च तद्धिते' अ० ६.१.६१. सूत्रेण शीर्षन्नादेशः]

शीर्षन् शिरसि १९.९२. [शिरस्प्राति० सप्तम्येकवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण लुक्। शिरसः शीर्षन्नादेशश्च]

शीर्षा शीर्षाणि १.१३३.२. शिरांसि ६.६२.१०. [शिरस् शब्दस्य जसि शीर्षन्नादेशः। शेर्लोपश्छन्दसि]

शीर्ष्णा शीर्ष्णा शिरसा शिरसा १.१३२.२. [शीर्ष्णापदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। शीर्ष्णा=शिरसः शीर्षन्नादेशष्टा-विभक्तौ परतः]

शीर्ष्णे शीर्ष्णे शिरोवदुत्तमायोत्तमाय सुखाय ७.१८.२४. [शीर्ष्णेपदस्य वीप्सायां द्वित्वम्। शीर्ष्णे=शिरसश्चतुर्थ्येकवचने शीर्षन्नादेशः]

शीलाय जितेन्द्रियत्वादिशीलिने (पुरुषाय) ३०.१४. [शील समाधौ (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

शुक् शोचन्ति विचारयन्ति यया सा प्रदीप्तिः, सूर्यस्येव प्रदीप्तिर्वा ३८.१८. शोकः; प्र०—अत्र भावे क्विप् १३.४७. **शुचा**=होमसाधनेन ३.४.१. **शुचे**=पवित्राय (व्यवहाराय) ३९.११. [शुच शोके (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्। शोचति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६.]

शुकबभ्रुः शुकस्येव बभ्रुर्वर्णो यस्य सः (पशुः) २४.२. [शुक-बभ्रुपदयोः समासः। शुकः=शुभ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'शुकवल्कोल्काः' उ० ३.४२. सूत्रेण कक्प्रत्ययान्तो निपात्यते। बभ्रुः=भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः 'कुर्भ्रश्च' उ० १.२२. सूत्रेण कुः प्रत्ययो द्वित्वञ्च]

शुकरूपाः शुकस्येव रूपमिव रूपं येषान्ते (पशवः) २४.७. [शुक-रूपपदयोः समासः]

शुकः शुद्धिकृत् पक्षिविशेषः २४.३३. **शुकेषु**=शुकवत् कृतेषु कर्मसु १.५०.१२. [शुभ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'शुकवल्कोल्काः' उ० ३.४२. सूत्रेण कक्-प्रत्ययान्तो निपात्यते। यामं शुकं हरितमालभते गो० उ० २.१.]

शुक्र शक्तिमन् (विद्वज्जन) ५.२१.४. आशुकारिन्

वीर्यवन् (अग्ने=वह्निरिव राजन्) ७.१.८. आशुकर्त्तः (अग्ने=विद्वन्) ६.४८.७. **शुक्रम्**=वीर्यकरमुदकम् २१.३४. वीर्यम् ३.६.३. शीघ्रं सुखकरम् (सोमं=महौषधिरसम्) १९.७९. शुद्धं शुद्धिहेतुर्वा (ब्रह्म यज्ञो वा) १.३१. पराक्रमप्रदम् (इन्द्रियं=धनम्) १९.७८. शुद्धिकरम् (इन्द्रियं=चित्तम्) १९.७७. पवित्राम् (इन्द्रियं=दिव्यां वाचम्) १९.७३. आशु कार्यकरम् (इन्द्रियम्) १९.७२. वीर्यवत् (भा०—विदुषा जुष्टं शरीरात्मबलम्) १९.७९. सर्वजगत्कर्तृ शुद्धम् (ब्रह्म) पं० वि० । वीर्यवन्तम् (पतिम्) ८.४८. आशुकारित्वाच्छुद्धभावाच्च (ब्रह्म) ३२.१. क्षिप्रं कार्यकरम् (वर्णं=स्वीकारम्) ३.३४.५. अनन्तं सामर्थ्यम् (ब्रह्म) ऋ० भू० १४०, ऋ० ६.१.६.५. **शुक्रस्य**=शोधकस्य योगस्य ७.१३. शोषकस्योदकस्य २.४०.३. शुद्धिकरस्य (वचसः=वचनस्य) २.९.४. शुद्धस्य धर्मस्य ८.४९. **शुक्रः**=आशुकारी (अग्निः=विद्युत्) ६.१६.३४. वीर्यवान् (योगिजनः) ७.१३. पवित्रः पवित्रकारको वा (विद्वानुपदेशकः) ४.२४. शीघ्रकर्त्ता शुद्धस्वरूपो वा (अ०—ईश्वरः) १७.८०. भास्वरः (भानुः=सूर्यः) ११.५४. य आशु पांसु-वर्षा-तीव्रतापाभ्यामन्तरिक्षं मलिनं करोति स ज्येष्ठः (मासः) १४.६. तेजस्वी (सूर्यः) १.४३.५. वीर्यसमूहः ८.५७. वायुः १८.५०. शुद्धस्वभावः (विद्वज्जनः) ४.४७.१. पावकः सूर्यः आशुकारी बालश्च ३३.५. शुद्धः पवित्रो बलिष्ठो वा जनः ६.४३. [शुक्रम् उदकनाम निघं० १.१२. ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्रवज्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रन् । शुक्रं शोचतेर्ज्वलतिकर्मणः नि० ८.११. (यजु० १८.५०.) असौ वा आदित्यः शुक्रः श० ९.४.२.२१ तां० १५.५.९. एष वै शुक्रो य एष (आदित्यः) तपति श० ४.३.१.२६. एष वै शुक्रो य एष (आदित्यः) तपत्येष उऽएव बृहन् श० ४.५.९.६. तद्वाऽएष एव शुक्रो य एष (आदित्यः) तपति तद् यदेष तपति तेनैष शुक्रः श० ४.२.१.१. तत्र ह्यादित्यः शुक्रश्चरति गो० पू० २.९. अस्य (अग्नेः) एवैतानि (घर्मः, अर्कः, शुक्रः, ज्योतिः, सूर्यः) नामानि श० ९.४.२.२५. अत्ता वै शुक्रः (ग्रहः) श० ५.४.४.२०. अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी (ग्रहः) श० ४.२.१.३. शुक्रः सोमः तां० ६.६.९. एतौ (शुक्रश्च शुचिश्च) एव ग्रैष्मौ (मासौ) स यदेतयोर्बलिष्ठं तपति तेनो हैतौ शुक्रश्च शुचिश्च श० ४.३.१.१५. ज्योतिः शुक्रमसौ (आदित्यः) ऐ० ७.१२. शुक्रं हिरण्यम् तै० १.७.६.३. ज्योतिर्वै शुक्रं हिरण्यम् ऐ० ७.१२. शुक्रं ह्येतच्छुक्रेण क्रीणाति यत् सोमं हिरण्येन श० ३.३.३.६. (यजु० १.३१.) तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि (आज्य) श० १.३.१.२८. शुक्रा ह्यापः तै० १.७.६.३. सत्यं वै शुक्रम् श० ३.९.३.२५.]

शुक्रज्योतिः शुक्रं शुद्धं ज्योतिर्यस्य सः (अ०—ईश्वरः) १७.८०. शुक्रं शुद्धाचरणं ज्योतिः प्रकाशो यस्य सः (विद्वान् राजा) १२.१५. [शुक्र-ज्योतिष्पदयोः समासः]

शुक्रदुघस्य आशुः पूर्त्तिकर्त्र्याः (धेनोः=वाचः) ६.३५.५. [शुक्रोपपदे दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'दुहः कब् घश्च' अ० ३.२.७०. सूत्रेण कप् घश्चादेशः]

शुक्रपाः शुक्रं योगवीर्यं योगबलं वा पान्ति ते (देवाः=योगिजनाः) ७.१२. **शुक्रपेभ्यः**=शुक्रं वीर्यं रक्षन्ति तेभ्यः (देवेभ्यः=विद्वद्भ्यः) ६.२७. [शुक्रोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः]

शुक्रपिशम् शुक्रं भास्वरं, पिशं तद्विपरीतं कृष्णञ्च (भा०—विलक्षणस्वरूपमहोरात्रम्) २९.३१. [शुक्र-पेशपदयोः समासः । एकारस्येकारश्छान्दसः । पेशः रूपनाम निघं० ३.७. शुक्रपिशं शुक्रपेशसं श्रियम् । शुक्रं शोचतेर्ज्वलतिकर्मणः । पेश इति रूपनाम, पिंशतेर्विपिशितं भवति नि० ८.११.]

शुक्रवर्चाः शुक्रस्य सूर्यस्य प्रकाश इव वर्चो न्यायाचरणं यस्य सः (पुत्रः) १२.१०७. [शुक्र-वर्चस्पदयोः समासः । वर्चस्=वर्च दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

शुक्रवर्णम् शुद्धस्वरूपम् (रथम्) १.१४०.१. [शुक्र-वर्णपदयोः समासः]

शुक्रवर्णाम् शुद्धस्वरूपाम् (धियं=प्रज्ञाम्) १.१४३.७ [शुक्र-वर्णपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

शुक्रवासाः शुक्राणि शुद्धानि वासांसि यस्याः सा शुद्धवीर्या वा (उषाः) १.११३.७. [शुक्र-वासस्पदयोः समासः]

शुक्रशोचिषम् शुक्रमाशुकरं शोचिस्तेजो यस्मिँस्तम् (अग्निं=विद्युदादिस्वरूपम्) २.२.३. **शुक्रशोचिषा**=शुक्रस्य शोधकस्य सूर्यस्य शोचिर्दीपनं तेनेव ७.१३. **शुक्रशोचिषे**=शुक्रेण वीर्येण शोचिर्दीप्तिर्यस्य तस्मै (देवाय=विदुषे यतये) ७.१४.१. **शुक्रशोचिः**=शुद्धतेजस्कः (अग्निः=राजा सेनेशो वा) ७.१५.१०. [शुक्र-शोचिष्पदयोः समासः । शोचिः ज्वलतोनाम निघं० १.१७. शुक्र इति व्याख्यातम्]

शुक्रसद्मनाम् शुद्धस्थानानाम् ६.४७.५. [शुक्र-सद्मन्पदयोः समासः । सद्मन्=गृहनाम निघं० ३.४.]

शुक्रा शुद्धाऽन्तःकरणा आशुकारिणी (कन्या) ७.३४.१. शुद्धिकरी (उषाः) १.१२३.६. **शुक्राः**=प्रदीप्ताः (उषसः=प्रभातवेलाः) ४.५१.६. शुद्धाः (किरणाः) १.१३५.३. [शुक्रप्राति० स्त्रियां टाप्। शुक्र इति व्याख्यातम्]

शुक्रा शुद्धानि (शोचींषि=तेजांसि) २७.११. शुक्राणि उदकानि ३.८.६. शरीरात्मवीर्याणि ३.१.८. [शुक्रप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि। शुक्र इति व्याख्यातम्]

शुक्रासः शुद्धवीर्याः (जनाः) १.१३४.५. [शुक्रप्राति० जसोऽसुगागमः]

शुक्रेभिः शुद्धैरुदकैर्वीर्यैर्वा २.३५.४. वीर्यवद्भिः (अङ्गैः) ३.१.५. [शुक्रप्राति० 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण भिस ऐसादेशो न भवति]

शुक्लम् शुद्धम् (पिङ्गाक्षं=पीतवर्णाक्षं जनम्) ३०.२१. [ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रन्। 'कपिलकादीनां संज्ञाछन्दसोर्वा रो लमापद्यते' अ० ८.२.१८. वा०सूत्रेण लत्वम्। शुक्लम् तद् यच्छुक्लं तद् वाचो रूपमृचोऽग्नेर्मृत्योः जै० उ० १.२५.८.]

शुचतः शोकाऽऽतुरस्य (विद्वज्जनस्य) ६.३.३. **शुचन्तः**=पवित्राचरणं कुर्वन्तः, कारयन्तः (राजप्रजाजनाः) ४.२.१७. विद्याविनयाभ्यां पवित्राः प्रशंसिताः (जनाः) ४.२.१५. [शुच शोके (भ्वा०) धातोः शतृ। विकरणव्यत्ययेन शः। शुचन्तम् जाज्वल्यमानम् नि० ५.३.]

शुचते पवित्रयति विचारयति वा ४.२३.१. [शुच शोके (भ्वा०) ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोर्वा लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदं श-प्रत्ययश्च]

शुचद्रथाः शुचन्तः पवित्रा रथा यानानि येषान्ते (राजपुरुषाः) ४.३७.४. [शुचद्-रथपदयोः समासः]

शुचध्यै शोचितुं पवित्रीकर्त्तुम् ४.२.१. [शुच शोके (भ्वा०) ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोर्वा तुमर्थेऽध्यै-प्रत्ययः]

शुचन्तिम् पवित्रकारकम् (विद्वज्जनम्) १.११२.७. [शुच शोके (भ्वा०) ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोर्वा बाहु० औणा० झिच् किच्च]

शुचमानः पवित्रः पवित्रयन् (गुरुवत् जनः) ४.२३.८. [शुच शोके (भ्वा०) ईशुचिर् पूतिभावे (दिवा०) धातोर्वा शानच्। विकरणव्यत्ययेन शः। व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च। शुचमानः दीप्यमानः नि० १०.४०.]

शुचयद्भिः पवित्रयद्भिः (गुणैः) ४.५६.१. शुचिमाचक्षाणैः (देवेभिः=विद्वद्भिर्दिव्यैर्गुणैर्वा) ४.५६.२. **शुचयन्तः**=ये शुचीनात्मन इच्छन्ति (देवाः=विद्वांसो जनाः) १.१४७.१. [शुचिपदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ। 'तत्करोती' ति वा णिजन्ताच्छतृ]

शुचयः पवित्रकारकाः (जनाः) १.१३४.५. पवित्राः (उषासः=प्रभातवाताः) १.१३४.४. पवित्रीभूताः (विपश्चितो जनाः) ३३.८१. **शुचये**=पवित्रकरायाऽऽषाढाय २२.३१. **शुचिः**=पवित्रः पवित्रकारको वा (परमेश्वरो विद्वान्वा) १.६१.३. **शुचीनाम्**=पवित्राऽऽचाराणाम् (जनानाम्) ७.५६.१२. **शुचे**=विद्याविनयाभ्यां प्रकाशित (अग्ने=राजन्) ६.४८.१३. [ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोः 'इगुपधात् कित्' उ० ४.१२०. सूत्रेण इन् किच्च। शुचिः शोचतेर्ज्वलतिकर्मणः। अयमपीतरः शुचिरेतस्मादेव। निष्षिक्तमस्मात् पापकमिति नैरुक्ताः नि० ६.१. एतौ (शुक्रश्च शुचिश्च) एव ग्रैष्मौ (मासौ) स यदेतयोर्बलिष्ठं तपति तेनो हैतौ शुक्रश्च शुचिश्च श० ४.३.१.१५. यत् (अग्नेः) शुचि (रूपम्) तद्दिवि (न्यधत्त) श० २.२.१.१४ वीर्यं वै शुचि यद्वाऽअस्य (अग्नेः) एतदुज्ज्वलत्येतदस्य वीर्यं शुचि श० २.२.१.८.]

शुचाशुचा होमसाधनेन ३.४.१.

शुचि पवित्रं शुद्धिकरम् (ऋतं=सत्यं न्यायम्) ४.२.१६. पवित्रं कर्म्म ४.१.१६. [ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोः 'इक् कृष्यादिभ्य' इतीक्। 'इगुपधात् कित्' उ० ४.१२०. इति वा इन् किच्च]

शुचिजन्मनः शुचेः पवित्राज्जन्म यस्य तस्य (विद्वज्जनस्य) १.१४१.७. शुचे रवेर्जन्म यस्यास्तस्याः (उषसः=प्रभातवेलायाः) ६.३९.३. **शुचिजन्मानः**=पवित्रजन्मवन्तः (मरुतः=मनुष्याः) ७.५६.१२. [शुचि-जन्मन्पदयोः समासः]

शुचिजिह्वः शुचिः पवित्रा जिह्वा यस्मात् सः (अग्निः) २.९.१. शुचिः पवित्रा सत्यभाषणेन जिह्वा वाग् यस्य सः (भा०—कुलदेशोद्दीपको नरः) ११.३६. [शुचि-जिह्वापदयोः समासः। जिह्वा जोहुवा नि० ५.२७.]

शुचिदन् पवित्रदन्तः (पुत्रः) ७.४.२. शुचयः पवित्रा दन्ता यस्य सः (मेधावी राजा) ५.७.७. [शुचि-दन्तपदयोः समासः। 'छन्दसि च' अ० ५.४.१४२. सूत्रेण दन्तस्य दतृ-आदेशः]

शुचिपाः शुचिं पवित्रतां पालयतीति शुचिपाः पवित्र-

पालक (योगिजन) ७.७. [शुचि इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क्विप्]

शुचिपेशसम् पवित्ररूपाम् (धियम्) १.१४४.१. [शुचि-पेशस्पदयोः समासः ! पेशस् रूपनाम निघं० ३.७.]

शुचिप्रतीकम् पवित्रप्रतीतिकरम् (विद्वज्जनम्) १.१४३.६. [शुचि-प्रतीकपदयोः समासः । प्रतीकम् प्रत्यक्तम् नि० ७.३१.]

शुचिभ्राजाः शुचयः पवित्रा भ्राजाः प्रकाशा यासान्ताः (कुमारिकाः) १.७९.१. [शुचि-भ्राजपदयोः समासः । भ्राजः=भ्रांजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्घञ्]

शुचिवर्णम् पवित्रस्वरूपमतिसुन्दरं वा (कुमारम्) ५.२.३. [शुचि-वर्णपदयोः समासः]

शुचिव्रतः पवित्रधर्माचरणशीलः (जनः) २१.१३. [शुचि-व्रतपदयोः समासः]

शुचिव्रता पवित्रकर्म्माणौ (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ३.६२.१७. पवित्रशीलौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.१. शुचिः पवित्रकरं व्रतं शीलं ययोस्तौ (अश्विनौ=सूर्याचन्द्रमसौ) १.१५.११. [शुचि-व्रतपदयोः समासः । ततो द्विवचनस्याकारश्छान्दसः । व्रतम् कर्मनाम निघं० २.१.]

शुचिव्रते पवित्रकर्मयुक्ते (रोदसी=सूर्यभूमी) ६.७०.२. [शुचि-व्रतपदयोः समासः । व्रतम् कर्मनाम निघं० २.१.]

शुचिषत् यः शुचिषु पवित्रेषु पदार्थेषु सीदति सः (परमेश्वरः) १०.२४. पवित्रेषु व्यवहारेषु वर्त्तमानः (ब्रह्म जीवो वा) १२.१४. यः पवित्रेषु विद्वत्सु सः (हंसः=विवेकी जनः) १९.७४. [शुचि इत्युपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्]

शुचिष्मः दीप्तिमन् (अग्ने=विद्वज्जन) ६.६.४. [शुचिष्प्राति० मतुप् । 'मतुवसो रुः०' अ० ८.३.१. इति रुत्वम्]

शुची पवित्रे (द्यावापृथिवी) ४.५६.५. [शुचिरिति व्याख्यातम् । ततो प्रथमाद्विवचनम्]

शुची शुचीनि पवित्राणि (धर्माचरणानि) ७.५६.१२. [शुचिरिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

शुचीनि पवित्राणि (भेषजा=रोगनिवारकौषधानि) २.३३.१३. [शुचिप्राति० प्रथमाबहुवचनम्]

शुण्ठाकर्णः शुण्ठौ शुष्कौ कर्णौ यस्य सः (पशुः पक्षी वा) २४.४. [शुण्ठ-कर्णपदयोः समासः । शुठि शोषणे (भ्वा०) धातोर्घञ् पूर्वपदस्य संहितायां दीर्घः] .

शुतुद्री शु शीघ्रं तुदति व्यथयति सा (नदी) ३.३३.१. [शु क्षिप्रनाम निघं० २.१५. शु इत्युपपदे तुद व्यथने (तुदा०) धातोः छान्दसष्ट्रक् । ततः स्त्रियां ङीप् । रुडागमश्च छान्दसः । शुतुद्री शुद्राविणी क्षिप्रद्राविण्याशुतुन्नेव द्रवतीति वा नि० ९.२६.]

शुद्धम् अविद्यादिदोषरहितत्वात् सदा पवित्रम् (ब्रह्म) ४०.८. अविद्यादिदोषेभ्यः सर्वदा पृथग् वर्त्तमानम् (ब्रह्म) ऋ० भू० ३६, ४०.८. अविद्यादि दोष, जन्म-मरण, हर्ष-शोक, क्षुधा-तृषा आदि दोषोपाधियों से रहित सदैव निर्मल (परमात्मा) आर्याभि० २.२, ४०.८. निर्दोषम् (ब्रह्म) ४०.८, ऋ० भू० ३२०, [शुध शौचे (दिवा०) धातोः क्तः]

शुद्धवालः शुद्धा वाला यस्य सः (पशुः) २४.३. [शुद्ध-वालपदयोः समासः]

शुद्धाः सत्कर्माऽनुष्ठानपूताः (देवीः=विदुष्यः सत्स्त्रियः) ६.१३. निर्मलाः (अपः=जलानि) ६.२८.७. [शुध शौचे (दिवा०) धातोः क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

शुद्धयतु शुद्धचतु ६.१५. [शुध शौचे (दिवा०) धातोर्लोट् । 'व्यत्ययो बहुलम्' इति द्विविकरणता । तेन शः प्रत्ययः]

शुनम् ज्ञानवृद्धम् (प्रजास्वामिनम्) ३.३०.२२. वर्धकम् (वीरजनम्) ३.३१.२२. सुखम् १२.६९. सुखप्रदम् (राजानम्) ३.३४.११. [टुओश्वि गतिवृद्धयोः (भ्वा०) धातोः क्तः । यजादित्वात् सम्प्रसारणम् । 'ओदितश्चे' ति निष्ठानत्वम् । 'हलः' अ० ६.४.२. सूत्रेण प्राप्तं दीर्घत्वमपि छान्दसत्वान्न भवति । शुनम् सुखनाम निघं० ३.६. यद् वै समृद्धं तच्छुनम् श० ७.२.२.९. या वै देवानां श्रीरासीत् साकमेधैरीजानानां तच्छुनम् श० २.६.३.२.]

शुनहोत्रेषु शुनं सुखं जुह्वति ददति तेषु (द्रव्येषु) २.१८.६. शुनानां विज्ञानवृद्धानां होत्रेषु दानेषु २.४१.१४. प्राप्तयोगजविद्याद्येषु (सर्वविद्वत्पतिषु) २.४१.१७. [शुन-होत्रपदयोः समासः । शुनः सुखनाम निघं० ३.६. शुनमिति व्याख्यातम् । होत्रम्=हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'हुयामाश्रुभसिभ्यस्त्रन्' उ० ४.१६८. सूत्रेण त्रन्]

शुनः कुक्कुरान् १.१८२.४. कुक्कुरस्य ४.१८.१३. [श्वन्=टुओश्वि गतिवृद्धयोः (भ्वा०) धातोः 'श्वनुक्षन्-पूषन्०' उ० १.१५९ सूत्रेण कनिन् । श्वन्प्राति० शस् । अन्यत्र ङस्]

शुनःशेपम् सुखस्य प्रापकमिन्द्रियाऽऽरामम् (जनम्) ५.२.७. शुनःशेपः=शुनो विज्ञानवत इव शेपो विद्यास्पर्शो

यस्य सः (विद्वान् पुरुषः) प्र०—शेपः शपते स्पृशतिकर्मणः नि० ३.२१, १.२४.१२. [शुनः-शेपपदयोः समासः। 'शेपपुच्छलाङ्गूलेषु शुनः संज्ञायां षष्ठ्या अलुग् वक्तव्यः' अ० ६.३.२१. वा०सूत्रेण छन्दस्यसंज्ञायामपि षष्ठ्या अलुक्। शुनः सुखनाम निघं० ३.६. श्वन्प्राति० षष्ठ्या एकवचने रूपम्। शुनः वायुः शु एत्यन्तरिक्षे नि० ९.३९. शेपः शपतेः स्पृशतिकर्मणः नि० ३.२१.]

शुनासीरा यथा वायुसूर्यौ, प्र०—शुनासीरौ शुनो वायु सरन्त्यन्तरिक्षे, सीर आदित्यः सरणात् नि० ९.४०, १२.६६. सुखदस्वामिभृत्यौ, कृषीवलौ ४.५७.८. [शुनसीरपदयोः समासे द्विवचनस्याकारश्छान्दसः। पूर्वपदस्य 'देवताद्वन्द्वे च' इत्यनङ्। शुनासीरौ=शुनो वायुः शु एत्यन्तरिक्षे। सीर आदित्यः सरणात् नि० ९.४०. संवत्सरो वै शुनासीरः। गो० २.१.२६.]

शुनासीरीयाः शुनासीरदेवताकाः कृषिसाधकाः (पशवः) २४.१९. [शुनासीराव् इति व्याख्यातम्। ततः 'सास्य देवता' इत्यर्थे 'द्यावापृथिवीशुनासीर०' अ० ४.२.३२ सूत्रेण छः]

शुनासीरौ क्षेत्रपतिभृत्यौ ४.५७.५. [व्याख्यातम्। शुनासीर्यो द्वादशकपालः पुरोडाशो भवति श० २.६.३.५. शान्तिर्वै भेषजं शुनासीरौ कौ० ५.८. संवत्सरो वै शुनासीरः गो० उ० १.२६. अथ यस्माच्छुनासीर्येण यजेत। या वै देवानां श्रीरासीत् साममेधैरीजानानां विजिग्यानानां तच्छुनम्, अथ यः संवत्सरस्य प्रजितस्य रस आसीत् तत् सीरम् श० २.६.३.२.]

शुन्धध्वम् शुन्धन्ति शोधयत् वा, प्र०—अत्र व्यत्यय आत्मनेपदञ्च १.१३. पवित्रीकुरुत २९.२४. **शुन्धन्ताम्**=पवित्रीकुरुताम् ५.२६. **शुन्धन्तु**=पवित्रयन्तु २०.२०. **शुन्धस्व**=शोधय ५.१०. **शुन्धामि**=निर्मलीकरोमि पवित्रीकरोमि वा १.१३. [शुन्ध शुद्धौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अन्यत्र लडपि]

शुन्धयन्तु बाह्यदेशं पवित्रं कुर्वन्तु ४.२. [शुन्ध शुद्धौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

शुन्ध्युवः पवित्रहेतवो रश्मयोऽश्वाः, प्र०—अत्र 'तन्वादीनां छन्दसि बहुलमुपसङ्ख्यानम्' अ० ६.४.७० अनेन वार्त्तिकेनोवङादेशः १.५०.९. शोधिकाः (विद्युतः) ५.५२.९. आदित्यकिरणाः १.१२४.४. **शुन्ध्यूः**=शुद्धः (भगवान्) ५.३२. शुद्धस्वरूप और सबका शोधक (ईश्वर) आर्याभि० २.१७, ५.३२. [शुन्ध शुद्धौ (भ्वा०) धातोः 'यजिमनिशुन्धि०' उ० ३.२०. सूत्रेण युच्। शुन्ध्युप्राति० जसि 'तन्वादीनां छन्दसि बहुलमुपसंख्यानम्' अ० ६.४.७०. वा० सूत्रेणोवङ्। शुन्ध्युरादित्यो भवति शोधनात्। शकुनिरपि शुन्ध्युरुच्यते शोधनादेव। ···आपोऽपि शुन्ध्यव उच्यन्ते शोधनादेव नि० ४.१६.]

शुप्तौ शयने कृते सति, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन शः १.५१.५. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोः क्तः। 'वचिस्वपि०' इति किति सम्प्रसारणम्। वर्णव्यत्ययेन सकारस्य शकारः]

शुभम्=कल्याणयुक्तं सुखम् १.२३.११. कल्याणम् ४.५१.६. उदकम् ६.६२.४. धर्म्यं व्यवहारम् ५.५५.१. कल्याणं सङ्ग्रामं वा ५.५७.२. शुभे=शोभनाय (वपुषे) १.६४.४. कल्याणाय ५.६३.५. [शुभम् उदकनाम निघं० १.१२. शुभ शोभार्थे (तुदा०) धातोर्घञर्थे कः। शुभे प्रयोगे क्विप् कर्मणि]

शुभयद्भिः शुभमाचरद्भिः (मरुद्भिः=मनुष्यैः) ५.६०.८. [शुभमिति व्याख्यातम्। तत आचारेऽर्थे क्यजन्ताच्छतृ]

शुभयन्त शुभ इवाऽऽचरन्ति ७.५६.१६. **शुभयन्ते**=शुभमाचक्षते १.८५.३. [शुभप्राति० 'तत्करोति०' इति णिजन्ताल्लङ्। अडभावश्छान्दसः। अन्यत्र लट्]

शुभस्पती धर्मस्य पालकौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.१२०.६. कल्याणकरव्यवहारस्य पालकौ (अश्विना=प्राप्तविद्यौ स्त्रीपुरुषौ) ५.७५.८. शुभस्य शिल्पकार्यप्रकाशस्य पालकौ (अश्विनौ=जलाग्नी), प्र०—शुभ शुम्भ दीप्तौ इत्येतस्य रूपमिदम् १.३.१. [शुभ-पतिपदयोः समासः। सकारोपजनश्छान्दसः]

शुभंयावा यः शुभं जलं याति सः (मनुष्यगणः) ५.६१.१३. **शुभंयावानः**=ये शुभं कल्याणं यान्ति प्राप्नुवन्ति ते (देवाः=विद्वांसो जनाः), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति द्वितीयाया अलुक् २५.२०. शुभस्य प्रापकाः (देवाः), प्र०—अत्र 'तत्पुरुषे कृति बहुलम्' इति बहुलवचनाद् द्वितीयाया अलुक् १.८९.७. [शुभमित्युपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति क्वनिप् वनिब् वा। द्वितीयाया अलुक्। शुभम् उदकम् निघं० १.१२.]

शुभंये यः शुभं याति प्राप्नोति तस्मै (राज्ञे) ४.३.६. [शुभमित्युपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोर्डः। द्वितीया या अलुक्]

शुभः कल्याणकरस्य व्यवहारस्य १०.३३. शुम्भमानाः (वीरजनाः) ५.५४.११. कल्याणकरस्य कर्मणः शुभगुणसमूहस्य वा ५.७५.८. यत्कल्याणकारकं मनुष्याणां कर्म तस्य, प्र०—अत्र सम्पदादित्वात् क्विप् १.३४.६. **शुभा**=शोभनेन (आचरणेन) ७.५६.६. शुभगुणकर्मणा १.१६५.१. **शुभे**=कल्याणाय भा०—सुखाय १८.७६. श्रेष्ठाय व्यवहाराय १.८८.२. शुभ्यते यस्तस्मै शुभाय विजयाय, प्र०—अत्र कर्मणि क्विप् १.८७.३. शुभगुणप्राप्तये १.११९.३. शुभाचरणाय ३०.७. उदकाय ५.५७.३. [शुभ शोभार्थे (तुदा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्। शुभम् उदकनाम निघं० १.१२.]

शुभानैः मङ्गलमयैर्वचनैस्सह, भा०—मृदुवचनैः ३३.२७. [शुभ शोभार्थे (तुदा०) धातोर्बाहु० औणा० आनच् स च कित्]

शुभ्र शुद्धाचरण (राजन्) ५.५.४. **शुभ्रम्**=भास्वरम् (शुष्मं=बलम्) २.११.४. **शुभ्रः**=शुद्धः प्रशंसनीयः (बलयुक्तो देहः) ७.५६.८. **भ्राः**=शुद्धाऽऽचाराः (देवाः=विद्वज्जनाः) ७.३९.३. शुद्धस्वरूपाचाराः (पत्नीः=भार्याः) ५.४२.१२. श्वेताः (पुरः=नगराणि) ५.४१.१२. स्वगुणैः शोभमानाः (मरुतः=वायवः) १.१९.५. शुद्धधर्माः (वीरजनाः) १.८५.३. स्वच्छाः (मरुतः=वायवः) १.१६७.४. विद्युतः २.११.३. **शुभ्रे**=शोभमाने सुखे १.५७.३. शोभायमाने (अध्यापकोपदेशिके) ३.३३.२. [शुभ शोभार्थे (तुदा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३ सूत्रेण रक्। शुभ्राः शोभायमानाः नि० १२.४३.]

शुभ्रयामा शुभ्राः शुद्धा यामा दिवसा यया सा (धेनुः=वाक्) ३.५८.१. [शुभ्र-यामपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

शुभ्रा श्वेतवर्णा (उषाः) ५.८०.५. [शुभ्र इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्। शुभ्रे शोभने नि० ९.३९.]

शुभ्रासः श्वेतवर्णाः (वायवः) २.३६.२. [शुभ्रप्राति० जसोऽसुगागमः]

शुभ्रिषु शुभगुणेषु ५.३४.८. शुद्धेषु व्यवहारेषु १.२९.६. शोभनसुखप्रदेषु (गोष्वश्वेषु) १.२९.१. शोभनेषु विमानादियानेषु तत्साधकतमेषु वा १.२९.२. शुभ्राः प्रशस्ता गुणा विद्यन्ते येषु तेषु (गोष्वश्वेषु) १.२९.३. शुद्धभावेन धर्मव्यवहारेण गृहीतेषु (गोष्वश्वेषु) १.२९.५. [शुभ्रप्राति० प्रशंसायाम् (मत्वर्थे) इनिः]

शुम्भ्वा सुशोभमानः (महाराजः) ४.३८.६. [शुभ शोभार्थे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्वनिप्]

शुम्भत सर्वत्र यानादिकृत्येषु प्रदीपयत १.२१.२. **शुम्भति**=शोभयति १.२२.८. **शुम्भते**=सुशोभते, प्र०=अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.१४०.६. **शुम्भन्ति**=शुभाचरणयन्ति ५.३९.५. पवित्रयन्ति ५.२२.४. विराजन्ते ५.१०.४. **शुम्भन्ते**=शोभन्ते १.८५.१. **शुम्भस्व**=शोभायुक्तान् कुरु ५.१०. [शुम्भ शोभार्थे (तुदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट् चापि]

शुम्भन्तः=प्राप्तशोभाः (विद्वज्जनाः) १.१३०.६. [शुम्भ शोभार्थे (तुदा०) धातोः शतृ]

शुम्भमाना सुशोभायुक्ता (देवी=विदुषी स्त्री) ६.६४.२. प्रकाशवन्ती (उषाः) १.९२.१०. **शुम्भमानाः**=शोभमानाः (तन्वः=शरीराणि) ७.५६.११. सुशोभिताः (द्वारः=गृहद्वाराणि) २९.५. [शुम्भ शोभार्थे (तुदा०) धातोः शानच्। ततष्टाप् स्त्रियाम्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

शुम्भमानाः शोभायुक्ताः (हंसासः=हंसाः) ७.५९.७. शुभगुणाढ्याः सम्पादयन्तः (मनुष्याः) १.१६५.५. [शुम्भ शोभार्थे (तुदा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। शुम्भमानाः सुशोभिषमाणाः नि० ८.१०]

शुम्भमाने सुशोभिते (दम्पती=भार्यापती) २.३९.२. [शुम्भ शोभार्थे (तुदा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

शुरुधः यः शुरुमन्धकारनाशकं तेजो दधाति स सूर्यः ६.३.३. [शुरूपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कः]

शुरुधः सद्यो रोधिकाः (वाचः) ६.४९.८. याः शुरुधो दुःखानि रुन्धन्ति ताः (चन्द्राग्राः साधनानि) ३४.४२. याः शुः सद्यो रुन्धन्ति ताः स्वसेनाः, प्र०—शुरुध इति पदनाम निघं० ४.३, ४.२३.८. ये सद्यो रुन्धन्ति ते (विद्वज्जनाः) ७.२३.२. प्राप्तव्यानि सुखानि १.७२.७. ये शुरून् हिंसकान् सूर्यकिरणान् दधति धरन्ति ते गो अग्रा अपः) १.१६९.८. [शु इत्युपपदे रुधिर् आवरणे (रुधा०) धातोः क्विप्। शु क्षिप्रनाम निघं० २.१५. शुरूपपदे वा दधातेः क्विप्। शुरुधः आपो भवन्ति। शुचं संरुन्धन्ति नि० ६.१६.]

शुशुक्वनम् अतिशयेन प्रदीप्तम् (क्षयं=निवासम्) १.१३२.३. [शोचति ज्वलतिकर्मा (निघं० १.१६) धातोर्यङ्लुगन्तादौणा० क्वनिप्। ल्युट् प्रत्यये वा वकारोपजनः]

शुशुक्वान् विद्याविनयाभ्यां प्रकाशितः (विद्वान् सद्वैद्यः) १.१८९.४. शोचकः (जारः=वयोहन्ता सूर्यः)

१.६६.१. **शुशुक्वांसः**=शोकयुक्ताः (दुर्जनाः) ५.८७.६. [शोचति ज्वलतिकर्मा (निघं० १.१६.) शुच शोके (भ्वा०) धातोर्वा लिटः क्वसुः]

शुशुग्धि शोधय प्रकाशय, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन श्लुः १.९७.१. **शुशुचीत**=शुन्धत २.२.१०. **शुशोच**=शोचते प्रकाशते ७.८.४. शोचति ७.४.३. शोच १.१३३.६. [शुच शोके (भ्वा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन श्लुः । अन्यत्र लिङ् लिट् च]

शुशुचान पवित्रकारक (अध्यापकोपदेशक वा) ४.१.३. **शुशुचानम्**=शुद्धगुणकर्मस्वभावम् (अग्निं=विद्युद्रूपम्) ४.१.१९. **शुशुचानस्य**=भृशं शोधकस्य (गोः=स्तावकस्य जनस्य) ४.२२.८. **शुशुचानः**=प्रकाशयन् (विद्युदिव विद्वज्जनः) १.१४९.४. **शुशुचानाः**=शुद्धाः शोधका वा (मरुतः=विद्वज्जनाः) २.३४.१. [शुच शोके (भ्वा०) धातोः शानच् । विकरणव्यत्ययेन श्लुः]

शुशुचानासः भृशं पवित्रकारकाः (अग्नयः=पावकाः) १.१२३.६. [शुशुचान इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

शुशूवांसम् सर्वसुखज्ञापकं प्रापकं वा (रयिम्) १.६४.१५. [टुओश्वि गतिवृद्धयोः (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । यजादित्वात् सम्प्रसारणम्]

शुश्रव शृणोमि १.१०९.५. **शुश्रवत्**=श्रुत्वा श्रावयेत् १.८४.८. **शुश्राव**=श्रावयति ५.५३.२. श्रुतवान् १.१०५.१७. **शुश्रुम**=शृणुमः ४०.१०. श्रुतवन्तः ४०.१३. **शुश्रुयातम्**=प्राप्नुयातम् ५.७४.१०. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः सामान्ये लिट् । अन्यत्र लेट् लिङ् च । विकरणव्यत्ययेन श्लुः । शुश्रवत् श्रोष्यति नि० ५.१७]

शुश्रूषमाणः श्रोतुमिच्छमानो विद्याश्रवणाय सेवां कुर्वाणः (इन्द्रः=राजा) ७.१९.२. सेवमानः (राजा) ४.३८.७. **शुश्रूषमाणाय**=श्रोतुमिच्छते (जीवाय) २२.८. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छानच् । 'ज्ञाश्रुस्मृदृशां सनः' अ० १.३.५७. सूत्रेणात्मनेपदम्]

शुषन्तम् द्वेषेण प्रतापेन क्षीणम् (वृत्रं=मेघमिव न्यायावरकं शत्रुम्) १.६१.१०. [शुष शोषणे (दिवा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन शः]

शुष्ककण्ठेन शुष्केन कण्ठेन २५.२. [शुष्क-कण्ठपदयोः समासः]

शुष्कम् अस्नेहम् (पदार्थम्) २.१३.६. अनाऽऽर्द्रम् (अतसं=काष्ठम्) १३.१२. जलार्द्रभावरहितम् (अतसं=कूपम्) ४.४.४. **शुष्कात्**=धर्माऽनुष्ठानतपसो नीरसात्काष्ठादेः १.६८.२. [शुष शोषणे (दिवा०) धातोः क्तः । 'शुषः कः' सूत्रेण निष्ठातकारस्य ककारः । अथवा शुष शोषणे (दिवा०) धातोः 'सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक्' उ० ३.४१. सूत्रेण कक्]

शुष्क्याय शुष्केषु नीरसेषु भवाय (जनाय), भा०—शोषणकारकाय वायवे १६.४५. [शुष्कप्राति० भवार्थे यत् । शुष्कमिति व्याख्यातम्]

शुष्णम् बलवन्तम् (मायिनं=प्रशंसितप्रज्ञादियुक्तं जनम्) १.५६.३. शोषकं बलवन्तम् (दुर्जनम्) ७.१९.२. बलम् २.१९.६. शुष्कम् (पदार्थम्) २.१४.५. शोषणकर्त्तारम् (मेघम्) १.३३.१२. शोककरं दुःखम् ३.३१.८. शोषयति धार्मिकाञ्जनान् तं दुष्टस्वभावं प्राणिनम् १.११.७. नीरसम् (अशुषम्=असुरं दुःखम्) ४.१६.१२. **शुष्णस्य**=बलिष्ठस्य (जनस्य) ६.२०.४. **शुष्णाय**=परेषां हृदयस्य शोषकाय (दुर्जनाय) १.१७५.४. [शुष शोषणे (दिवा०) धातोः 'तृषिशुषिरसिभ्यः कित्' उ० ३.१२. सूत्रेण नः किच्च । शुष्णम् बलनाम निघं० २.९. शुष्णस्य आदित्यस्य नि० ५.१६. शुष्णो दानवः प्रत्यङ् पतित्वा मनुष्याणाम क्षीणि प्रविवेश स एष कनीनकः कुमारक इव परिभासते श० ३.१.३.११.]

शुष्णहत्येषु शुष्णानां बलानां हत्या हननं येषु सङ्ग्रामेषु तेषु १.५१.६. [शुष्ण-हत्यापदयोः समासः}

शुष्मम् बलम् २०.४४. बलिष्ठम् (भोजनम्) ४.२४.७. शत्रूणां शोषकं बलम् ३३.६७. **शुष्मः**=बलयुक्तो देहः ७.५६.८. बलवान् (राजभृत्यः) ४.२१.७. शुष्मं बलं विद्यते यस्मिन् सः (रसः=आनन्दः) १९.३३. प्रशस्तानि शुष्माणि बलानि विद्यन्तेऽस्मिन् (इन्द्रः=ईश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.१००.२. बलकरः (अद्रिः=मेघः) ३३.७८. उत्तमबलः (वृषभः=बलिष्ठो जनः) ६.१९.९. पुष्कलबलयुक्तः (सेनापतिः) ७.२७.२. **शुष्मात्**=बलाच्छोषणात् ६.२७.४. **शुष्मैः**=प्रशंसितबलैः (महाशयैः) ६.३२.४. [शुष शोषणे (दिवा०) धातोः 'अविसिविसिशुषिभ्यः कित्' उ० १.१४४. सूत्रेण मन् किच्च । शुष्मम् बलनाम निघं० २.९. शुष्ममिति बलनाम शोषयतीति सतः नि० २.२४.]

शुष्मासः अतिबलवन्तः (विद्वज्जनाः) ५.३८.३. [शुष्ममिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

शुष्माः प्रशस्तबलकारिण्यः (गावः=धेनवः किरणा वा) १२.८२. बलवत्यः शोषणकारिण्यो वा (ऊतयः=

रक्षणाद्याः प्रजाः) १.५२.४. [शुष्ममिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

शुष्मिणम् बहुबलयुक्तम् (सेनापतिम्) ७.२३.५. **शुष्मिणः**=बहु शुष्मं बलं भवति यस्मात्तस्य (अन्नस्य) ११.८३. **शुष्मिणे**=शुष्यति बलयति येन व्यवहारेण स बहुर्विद्यते यस्मिँस्तस्मै (प्रकाशमानाय यशसे) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे इनिः १.३७.४. **शुष्मिन्**=प्रशंसितबलयुक्त (इन्द्र=न्यायाधीश राजन्) ६.२५.१. अनन्तबलवन् पूर्णबलवन् वा (इन्द्र=जगदीश्वर सुवीरजन वा) ३.४६. **शुष्मिभिः**=बलिष्ठैः (वीरपुरुषैः) १.१३३.६. **शुष्मी**=महाबलिष्ठः (इन्द्रः=राजा) ४.२२.१. बहुबली विद्वज्जनः) ७.४०.३. शुष्मं बलिष्ठं सैन्यं विद्यते यस्य सः (राजा) ५.४०.४. [शुष्ममिति व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायामर्थे भूम्न्यर्थे वा इनिः]

शुष्मिणा बलिष्ठौ (राजाऽमात्यौ) ४.४७.३. [शुष्मिन् इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

शुष्मिणी बहु शुष्मं बलं यस्यामस्ति सा (सुरा=सोमवल्ल्यादिलता) १९.७. [शुष्मिन् इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीप्]

शुष्मिन्तमम् प्रशंसितं बहुविधं वा बलं विद्यते यस्य तमतिशयितम् (राजाध्यक्षम्) ३.३७.८. अतिशयेन बलवन्तम् (रयिं=श्रियम्) २.११.१३. **शुष्मिन्तमः**=अतिशयेन बलवान् (विद्वज्जनः) १.१२७.९. [शुष्मिन्-प्राति० अतिशायने तमप्। 'तरप्तमपौ घः' इति तमपो घसंज्ञकत्वान् 'नाद् घस्य' अ० ८.२.१७. सूत्रेण नुट्। शुष्मिन्=शुष्मम् बलनाम निघं० २.९. ततो मत्वर्थं इनिः]

शूकरः सूकरः २४.४०. **शूकराय**=क्षिप्रकारिणे (जीवाय) २२.८. [शूपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तर्यच्। शूः क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

शूकृतस्य शीघ्रं निष्पादितस्य (विद्युदग्नेः) १.१६२.१७. शीघ्रं शिक्षितस्य (अश्वस्य), प्र०—श्विति क्षिप्रनाम निघं० २.१५, २५.४०. **शूकृताय**=क्षिप्रं कृताय (जीवाय) २२.८. क्षिप्रकारिणे (सज्जनाय) २२.८. [शूकृतपदयोः समासः। शूः क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

शूघनासः आशु गन्त्यः (नदीप्रवाहाः) ४.५८.७. क्षिप्रगमनाः, भा०—तूर्णगामिनः (वातप्रमयः=तरङ्गाः) १७.९५. [शूघनासः क्षिप्रनाम निघं २.१५.]

शूद्रम् प्रीत्या सेवकं शुद्धिकरम् (जनम्) ३०.५. **शूद्रः**=मूर्खकुलोत्पन्नः (जारः=व्यभिचारेण वयोहन्ता जनः) २३.३१. मूर्खत्वादि गुण वाला (जन) स० प्र० ११४, ३१.११. मूर्खत्वादिगुणविशिष्टो मनुष्यः, भा०—यः सेवायां साधुर्विद्याहीनः पादाविव मूर्खत्वादिनीचगुणयुक्तः सः ३१.११ **शूद्राय**=चतुर्थवर्णाय (जनाय) २६.२. **शूद्रे**=अनार्य अर्थात् अनाड़ी में स० प्र० ३०८, [शुच शोके (भ्वा०) धातोः 'शुचेर्दश्च' उ० २.१९. सूत्रेण रक् धातोरुकारस्य दीर्घो दकारश्चान्तादेशः। असुर्यः शूद्रः तै० १.२.६.७. वैश्यं च शूद्रं चानु रासभः श० ६.४.४.१२. तस्मात् पुरस्तात् प्रत्यञ्चः शूद्रा अवस्यन्ति तै० ३.३.११.२. स शौद्रं वर्णमसृजत पूषणमियं (पृथिवी) वै पूषा श० १४.४.२.२५. अनृतं स्त्री शूद्रः श्वा कृष्णः शकुनिस्तानि न प्रेक्षेत श० १४.१.१.३१. असतो वा एष सम्भूतो यच्छूद्रः तै० ३.२.३.९. अयज्ञियान् वा ऽएतद् यज्ञेन प्रसजति शूद्रांस्त्वद्यांस्त्वत् श० ५.३.२.४. अथ यद्यपः शूद्राणां स भक्षः शूद्रांस्तेन भक्षेण जिन्विष्यसि शूद्रकल्पस्ते प्रजायामाजनिष्यतेऽन्यस्य प्रेष्यः कामोत्थाप्यो यथाकामवध्यो यदा वै क्षत्रियाय पापं भवति शूद्रकल्पोऽस्य प्रजायामाजायत ईश्वरो हास्माद् द्वितीयो वा तृतीयो वा शूद्रतामभ्युपेतः स शूद्रतया जिज्यूषितः ऐ० ७.२९. स पत्त एव प्रतिष्ठाया एकविंशमसृजत तमनुष्टुप् छन्दोऽन्वसृज्यत न काचन देवता शूद्रो मनुष्यस्तस्माच्छूद्र उत बहुपशुरयज्ञियो विदेवो हि नहि तं काचन देवतान्वसृज्यत तस्मात् पादावनेज्यन्नातिवर्धते पत्तो हि सृष्टः तां० ६.१.११.]

शूद्रा शूद्रस्य स्त्री, भा०—दासी २३.३०. [शूद्र-प्राति० स्त्रियां 'शूद्राच्चामहत्पूर्वा जातिः' अ० ४.१.४. वा०सूत्रेण टाप्]

शूद्राऽऽर्यौ शूद्रश्चाऽऽर्यो द्विजश्च तौ १४.३०. [शूद्र-आर्यपदयोः समासः। शूद्रमिति व्याख्यातम्। आर्यः=ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्ण्यत्]

शूनम् वर्द्धनम २.२७.१७. सुखम्, प्र०—शूनमिति सुखनाम निघं० ३.६, २.२९.७. **शूने**=शूः सद्यःकरणं विद्यते यस्मिँस्तस्मिन् सैन्ये, प्र०—अत्र शू इति क्षिप्रनाम निघं० २.१५. तस्मात् पामादित्वान्मत्वर्थीयो नः प्रत्ययः ७.१.११. [टुओश्वि गतिवृद्धचोः (भ्वा०) धातोः भावे क्तः। यजादित्वात् सम्प्रसारणम् 'ओदितश्च' इति निष्ठा तस्य नत्वम्, 'हलः' अ० ६.४.२. सूत्रेण दीर्घत्वम्। अन्यत्र शूः क्षिप्रनाम (निघं० २.१५.) ततो मत्वर्थे पामादित्वान् नः। अथवा शुनम् सुखनाम निघं० ३.६.]

शूर शृणाति शत्रून् तत्सम्बुद्धौ (सभापते) ८.५३.

शत्रुहिंसक (राजन्) १.१७४.९. निर्भय निर्भयहेतुर्वा (इन्द्र=राजन्) १.६३.८. पापाचाराणां हिंसक (इन्द्र=परमात्मन्) ७.३२.२२. दुष्टदोषविनाशक (अग्ने=परमेश्वर) ६.१५.११. तमोहिंसक सवितेव शत्रुहिंसक (इन्द्र=प्रकाशमान राजन्) २.११.३. शत्रुहन्तः (राजन्) ४.३२.२१. निर्भयत्वादिगुणोपेतम् धार्मिक, दुष्टनिवारक, विद्याबल-पराक्रमवन् सभाध्यक्ष १.११.६. **शूरम्**=निर्भयत्वादिगुणोपेतम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.४७.११. भा०—श्रेष्ठतमं पुरुषम् २०.४१. **शूरः**=निर्भयो वीरः शत्रुहन्ता (वीरपुरुषः) ५.६३.५. विक्रान्तः (वीरजनः) १.१५८.३. शूरवीरः (सभाध्यक्षः) १.७०.६. बलपराक्रमादियोगेन निर्भयः (वीरपुरुषः) ६.६४.३. **शूराय**=शौर्यादिगुणोपेताय (विद्वज्जनाय) १.१५५.१. [शु इति सौत्रो धातुः। ततः 'शुसिचिमीनां दीर्घश्च' उ० २.२५. सूत्रेण क्रन् धातोर्दीर्घश्च। शूरः शवतेर्गतिकर्मणः नि० ४.१३. शूर विक्रान्तौ (चुरा०) धातोर्वा कर्त्तर्यच्। अथवा शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० अच् किच्च। 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.१०३. सूत्रेणोत्वं रपरत्वं च। उकारस्य दीर्घश्छान्दसः]

शूरणासः हिंसकाः कलायन्त्रताडनेन प्रकाशमानाः (अश्वाः=अग्न्यादयः) १.१६३.१०. सद्यो रणो युद्धविजयो येभ्यस्ते, भा०—विजयहेतवः (अश्वाः) २९.२१. [शूरणासः=शूराः नि० ४.१३. अथवा शू-रणपदयोः समासे जसोऽसुक्। शूः क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

शूरपत्नीः शूराणां स्त्रियः १.१७४.३. [शूर-पत्नी-पदयोः समासः। पत्नी=पतिप्राति० स्त्रियां 'पत्युर्नो यज्ञसंयोगे' अ० ४.१.३३. सूत्रेण ङीप् नकारान्तादेशः]

शूरसाता शूरैः सम्भजनीये सङ्ग्रामे १.१५७.२. शूराणां साति सम्भजनं यस्मिँस्तस्मिन् सङ्ग्रामे १.३१.६. [शूर-सातिपदयोः समासे 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण सप्तम्याः स्थाने डादेशः। शूर इति व्याख्यातम्। सातिः=षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः क्तिन्। शूरसातौ संग्रामनाम निघं० २.१७.]

शूरसातौ शूराणां विभागे (समिथे=सङ्ग्रामे) ३.५४.४. शूरैर्विभक्ते सङ्ग्रामे ६.२३.२. शूराः सनन्ति विभजन्ति यस्मिन् सङ्ग्रामे तस्मिन् ६.१९.१२. [शूरसाताविति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

शूरस्येव यथा शत्रून् हिंसतः (योद्धृजनस्य) ३.५५.८. यथा शूरवीरस्य १.१४१.८. [शूरस्य-इवपदयोः समासः]

शूरा निर्भयौ शत्रुहिंसकौ (राजाऽमात्यौ) ४.४१.७. शूरप्राति० द्विवचनस्याकारादेशः]

शूरा इव यथा शस्त्रास्त्र-प्रक्षेप-युद्धकुशलाः पुरुषास्तथा १.८५.८. [शूराः इवपदयोः समासः]

शूरेभिः सर्वोत्कृष्टशूरवीरैर्योद्धृभिः १.८.४. [शूरप्राति० 'बहुलं छन्दसि' इति भिस ऐसादेशो न भवति]

शूर्ताः विमर्द्दिताः (शत्रवो जनाः) १.१७४.६. [शूरी हिंसास्तम्भनयोः (दिवा०) धातोः क्तः। शूर्त्ताः क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

शूलम् शु शीघ्रं लाति बोधं गृह्णाति येन तद् वचः प्र०—पृषोदरादित्वात्सिद्धम् २५.३४. शूलमिव पीडाकरं शत्रुम् १.१६२.११. [शूः क्षिप्रनाम निघं० २.१५. तदुपपदे ला आदाने (अदा०) धातोः कः। शूल रुजायां संघाते च (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच्]

शूशवाम वर्धेमहि १.१६६.१४. **शूशुवत्**=विजानाति, प्र०—अत्राऽडभावो लडर्थे लुङ् च २.२५.१., ज्ञापयति वर्धयति वा, प्र०—अथ ण्यन्तस्य श्विधातोर्लुङि प्रयोगेऽडभावश्च १.५४.७. **शूशुवे**=उपगच्छति ७.३२.६. [टुओश्वि गतिवृद्धयोः (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् अडभावश्छान्दसः। 'णौ च संश्चङोः' अ० ६.१.३१. सूत्रेण सम्प्रसारणम्। शूशुवे प्रयोगे लिट्]

शूशुचन् भृशं शोकं कुर्य्युः ३५.८. [शुच शोके (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्। अटोऽभावश्छान्दसः]

शूशुवानः=भृशं वर्धमानः (इन्द्रः=सूर्य इव राजा) ७.२०.२. [टुओश्वि गतिवृद्धयोः (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्। यजादित्वात् सम्प्रसारणं तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

शूशुवांसम् व्याप्नुवन्तम् (इन्द्रं=सूर्यम्) ६.१९.२. बलेन वृद्धम् (शत्रूणां बलम्) ४.१६.१३. शुभगुणव्यापिनम् (सन्तानम्) ६.१९.७. सर्वसुखज्ञापकं प्रापकं वा (रयिम्) १.६४.१५. **शूशुवांसः**=वर्धमानाः (वीरपुरुषाः) १.१६७.९. [टुओश्वि गतिवृद्धयोः (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः। यजादित्वात् सम्प्रसारणम् तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घश्च]

शूषम् बलं सुखं वा २१.५४. **शूषस्य**=बलवतः (पुरुषस्य) १.१३१.२. **शूषाय**=बलाय सैन्याय २२.३०. **शूषैः**=शरीराऽऽत्मबलों से सं० वि० १०५, ५.४१.७. [शूषम् बलनाम निघं० २.९. सुखनाम निघं० ३.६.]

शूष्यम् शूषे बले साधु यत्तत् (वचः) १.५४.३. शूषे बले भवम् (श्रवः=अन्नम्) ५.८६.६. [शूषम् बलनाम

निघं० २.९. ततः साध्वर्थे यत्]

शृङ्गम् उपरिभागम् ५.५९.३. **शृङ्गाणि**=शृङ्ग इवोच्छ्रितानि कर्माणि १.१६३.१.१. शृङ्गाणीवोच्छ्रितानि सेनाङ्गानि २९.२२. [शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः शृणातेर्ह्रस्वश्च उ० १.१२६. सूत्रेण गन्। धातोर्ह्रस्वो नुडागमश्च। शृङ्गाणि ज्वलतो नाम निघं० १.१७. शृङ्गम्=श्रयतेर्वा शृणातेर्वा शम्नातेर्वा शरणायोद्गतमिति वा शिरसो निर्गतमिति वा नि० २.७.]

शृङ्गा शृङ्गाणि १.१४०.६. शृङ्गाणीव चत्वारो वेदा नामाख्यातोपसर्गनिपाता वा १७.९१. [शृङ्गमिति व्याख्यातम्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

शृङ्गा-इव शृङ्गवत् सम्बन्धिनौ हिंसकौ (अग्निवायू) २.३९.३. [शृङ्गौ-इवपदयोः समासः। शृङ्गा प्रयोगे द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

शृङ्गिणम् शृङ्गवदुन्नतविद्युद्गर्जनाकारणघनीभूतं मेघम् १.३३.१२. **शृङ्गिणः**=शृङ्गयुक्तस्य गवादेः पशुसमूहस्य १.३२.१५. [शृङ्गमिति व्याख्यातम्। ततो मत्वर्थ इन्नन्ताद् द्वितीयैकवचनम्]

शृङ्गिणाम् महिषादीनाम् ३.८.१०. [शृङ्गमिति व्याख्यातम्। ततो मत्वर्थ इन्नन्तात् षष्ठी]

शृणवत् शृणोति ७.२६.१. शृणुयात् ३.४३.४. **शृणवन्**=शृण्वन्तु ३.५४.१०. **शृणवः**=शृणुयाः ६.४०.४. शृणु ७.२९.२. **शृणीहि**=हिन्धि ३.३०.१७. **शृणुतम्**=श्रवणं कुरुतम् १.८९.४. **शृणुधि**=शृणुहि, प्र०—अत्र हेर्ध्यादेशः १३.५२. **शृणुहि**=शृणु १.१०४.९ **शृणोति**=शब्दविद्यां गृह्णाति १.३७.१३. **शृण्वन्तु**=प्रख्यातौ जानन्तु ऋ० भू० १५७, ११.५. **शृण्विरे**=शृण्वन्ति ५.८७.३. श्रूयन्ते, प्र०—अत्र श्रुधातोः 'छन्दसि लुङ्लङ्लिटः' इति लडर्थे लिट् 'छन्दस्युभयथा' इति सार्वधातुकत्वेन श्नुविकरण आर्धधातुकत्वाद्यगभावः। विकरणव्यवहितत्वाद् द्वित्वं च न भवति १.१५.८. **शृण्विषे**=शृणोषि ४.४२.७. **शृण्वे**=शृणुयाम् ४.२०.९. शृणोमि, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.३७.३. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लोट्, लट्, लिट् च। शृण्वद् 'श्रवद्व इन्द्रः शृण्वद्वोऽग्निः' (यजु० २८.६.) शृणोतु व इन्द्रः शृणोत्वग्निरित्याशिषमेव तद् वदते कौ० २८.६.]

शृण्वते यः शृणोति तस्मै (जनाय) ३५.७. श्रवणं कुर्वते (अग्ने=परमेश्वराय) १.७४.१. भा० —सर्वं शृण्वन् वर्त्तते तस्मै (अग्नये=जगदीश्वराय) ३.११. **शृण्वन्**=सुनता हुआ (अविद्वान् जन) स० प्र० ९०, १०.७१.४. **शृण्वन्तम्**=सकलशास्त्रश्रोतारम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.३६.११. सत्याऽसत्ये निश्चित्याज्ञापयन्तम् (इन्द्रम्) ३.४८.५. सम्यक् परीक्षां कुर्वन्तम् (इन्द्रं=विद्वज्जनम्) ३.४३.८. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः शतृ। 'श्रुवः शृ च' इति धातोः शृ इत्यादेशः]

शृतपाकम् शृतश्चासौ पाकश्च तम् (अन्नम्) १.१६२.१०. शृतः पक्वः पाको यस्य तत्, भा०—सुसंस्कृतं पाकम् २५.३३. [शृत-पाकपदयोः समासः। शृतः=श्रा पाके (भ्वा०) धातोः क्तः। 'शृतं पाके' अ० ६.१.२७. सूत्रेण शृभावः। पाकः=डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोर्घञ्]

शृतपाम् यः शृतं परिपक्वं पयसं पिबति तम् (सेनेशम्) ७.१८.१६. [शृतं पूर्वपदे व्याख्यातम्। तदुपपदे पा पाने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

शृतासः पूर्वोक्त ब्रह्मचर्यादि तप से शुद्ध (मनुष्य लोग) स० प्र० ४२३, ९.८३.१. [शृतप्राति० जसोऽसुक्। शृतम्=श्रा पाके (भ्वा०) धातोः क्तः। धातोः शृभावः]

शृतेन परिपक्वेन (पदार्थेन) १९.८९. [श्रा पाके (भ्वा०) धातोः क्तः। 'शृतं पाके' सूत्रेण शृभावः]

शृध्याम् शब्दकुत्साम् २.१२.१०. [शृधु शब्दकुत्सायाम् (भ्वा०) धातोः 'ऋदुपधाच्चाक्लृपिचृतेः' इति क्यबन्ताट् टाप् स्त्रियाम्]

शेक सद्यो गामिनो भवत ५.६१.२. [शक्लृ शक्तौ (स्वा०) धातोर्लिटि मध्यमबहुवचने रूपम्]

शेपः उपस्थेन्द्रियम् १९.८८. **शेपेन**=लिङ्गेन २५.७. [शेप वैतस इति पुंस्प्रजननस्य। शपतेः स्पृशतिकर्मणः नि० ३.२१.]

शेपे आक्रुश्यामि ६.१७. कश्चित् साधुजनमाक्रुष्टवान् १.२३.२२. [शप आक्रोशे (भ्वा०) धातोर्लिटि रूपम्]

शेरते भा०—स्वपन्ति १३.७. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्लट्, प्रथमबहुवचनम्। 'शीङो रुट्' अ० ७.१.६. सूत्रेण झादेशस्यातो रुडागमः]

शेवधिपाः यः शेवधिं निधिं पाति रक्षति धर्मादिकार्ये करे च न व्येति स शेवधिपाः, भा०—धनादिकरस्य दाता (शत्रुः प्रजाजनो वा), प्र०—निधिः शेवधिरिति यास्कः नि० २.४, ३३.८२. [शेवधि इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। निधिः शेवधिः नि० २.४.]

शेवधिभ्यः सुख के आधारभूत अनेक कक्षाओं से सं० वि० १६७, अथर्व० १४.३.१५. **शेवधिम्**=शेवं सुखं धीयते यस्मिँस्तं निधिम् १८.५९. [शेवोपपदे डुधाञ् धारण-पोषणयोः (जु०) धातोः 'कर्मण्यधिकरणे च' इति किः। शेवम् सुखनाम निघं० ३.६.]

शेवम् सुखम् ३.७.५. सुखस्वरूपम् (जीवम्) १.५८.६ **शेवः**=सुखकारी (भा०—विद्वज्जनः) १.६९.२. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोः 'इण्शीभ्यां वन्' उ० १.१५२. इति वन्। शेवः सुखनाम निघं० ३.६. शेवः सुखनाम शिष्यते-र्वकारो नामकरणोऽन्तस्थान्तरोपलिङ्गी नि० १०.१७.]

शेवृधम् सुखम् १.५४.११. **शेवृधः**=सुखवर्धकान् (विद्वज्जनान्) ५.८७.४. [शेवृ इत्युपपदे डुधाञ् धारण-पोषणयोः (जु०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः। अन्यत्र क्विप्। अथवा शेव इत्युपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। वलोपश्छान्दसः। शेवृधम् सुखनाम निघं० ३.६.]

शेवृधासः शेवॄन् सुखानि दधति येभ्यस्ते (रायः=श्रियः) ३.१६.२. [शेवृधमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

शेव्यः सुखयितुं योग्यः (मित्रः=विद्वज्जनः) १.१५६.१. [षेवृ सेवने (भ्वा०) धातोर्ण्यत्। सकारस्य शकारो वर्णव्यत्ययेन]

शेषन् शयेरन्, प्र०—अत्र लेटि व्यत्ययेन परस्मैपदम् १.१७४.४. **शेषे**=स्वपिषि १२.३९. [शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्लेटि सिपि विकरणे च रूपम्। अन्यत्र लट्]

शेषसा अपत्यैः सह ५.७०.४. शेषीभूतेन (स्वजन्मना) ७.१.१२. [शेषः अपत्यनाम निघं० २.२. शेष इत्यपत्यनाम। शिष्यते प्रयतः नि० ३.२.]

शेषः अवशिष्टो भागः १.९३.४. यः शिष्यते सः (निवासः) ५.१२.६. **शेषे**=बाकी (पुरुषगण) में से स० प्र० १५२, १०.१८.८. [शिष असर्वोपयोगे (चुरा०) धातोर्घञ्]

शैलूषम् गायनम् ३०.६. [शिलूषप्राति० भवार्थेऽण्]

शैशिरेण शिशिरेण (ऋतुना) २१.२८. **शैशिरौ**=शिशिरऋतु-सम्पादकौ, शिशिरर्त्तौ भवौ (माघ-फाल्गुनमासौ) १५.५७. [शिशिरप्राति० भवार्थेऽण्]

शोकः मरणम् २.३८.५. परितापः ४०.७, सं० वि० २६२. **शोकात्**=शोषकात् (दिवः=सूर्यात्) १३.४५. **शोकाय**=शोचन्ति यस्मिँस्तस्मै (सद्व्यवहाराय) ३९.११. **शोकाः**=प्रकाशाः ४.६.५. विलापाः १.१२५.७. [शुच शोके (भ्वा०) धातोर्घञ्। शोचति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६.]

शोच शोचति प्रकाशते, प्र०—अत्र व्यत्ययेन लडर्थे लोट् ३.३. विचारय, प्रापय ३.१३.६. पवित्रीकुरु ७.२.१. **शोचस्व**=प्रकाशितो भव, प्र०—शुचि दीप्तौ इत्यस्माल्लोट् १.३६.९. विचारय ४.२.२०. पवित्रो भव ११.३७. **शोचीः**=शोकं कुर्य्याः ११.४५. शोकयुक्तां कुर्याः १२.१५. [शुच शोके (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लुङ्। शोचति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोर्वा लोट्। व्यत्ययेन शप्]

शोचतः पवित्रस्य (यज्ञस्य=व्यवहारस्य) ७.१५.५. **शोचते**=शुद्धिकर्त्रे (सद्व्यवहाराय) ३९.११. **शोचद्भिः**=पवित्रकारकैः (गुणकर्मस्वभावैः) ५.७९.८. **शोचन्**=पवित्रीकुर्वन् (अग्निः) ७.५०.२. [शुच शोके (भ्वा०) धातोः शतृ]

शोचमानाय विचारप्रकाशाय ३९.११. [शोचति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६. ततः शानच्। शुच शोके (भ्वा०) धातोर्वा शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

शोचय शोकं प्रापय ६.२२.८. [शुच शोके (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

शोचिषः प्रकाशस्य ५.६.५. प्रकाशमानस्य (सूर्यस्य) ४.५.१०. **शोचिषा**=प्रदीप्तयाऽग्निज्वालया १.१७५.३. ज्योतिषा ६.१६.२८. तेजसा ३.१८.४. न्यायसेनाप्रकाशेन १.१२७.४. पवित्रेण विज्ञानेन १.४५.४. **शोचिषे**=शोधिते दोषनिवारके, अ०—शोचिषि (रूपादिगुणस्वभावे) ३.२. पवित्रकराय (अग्नये) ५.५.१. पवित्राय (सभापतये) १७.११. **शोचिः**=सूर्यज्योतिः १.३९.१. विद्युद्रूपां दीप्तिम् ५.२८.१. उत्तमा नीतिः ६.६४.२. भा०—तेजस्वी (विद्वज्जनः) ३७.११. प्रदीप्तम् (रूपम्) ४.७.१०. प्रदीपनम् ७.३.२. दीप्तिमन्तम् (अग्निम्) ७.३.५. प्रकाशः १५.६२. **शोचींषि**=तेजांसि २७.११. [शोचिः ज्वलतोनाम निघं० १.१७. शुच शोके (भ्वा०) धातोः 'अर्चिशुचिहुसृ०' उ० २.१०८. सूत्रेण इसिः प्रत्ययः (यजु० २७.११) (=अर्चींषि) ऊर्ध्वा शुक्रा शोचींष्यग्नेरित्यूर्ध्वानि ह्येतस्य (अग्नेः) शुक्राणि शोचिंष्यर्चींषि भवन्ति श० ६.२.१.३२.]

शोचिष्केशम् शोचींषीव केशा यस्य तम् (विप्रं=विद्वज्जनम्) १.१२७.२. शोचिषः केशाः सूर्यस्य रश्मय इव तेजांसि यस्य तम् (अग्निम्)१५.३१. शोचींषि केशा दीप्तयो रश्मयो यस्य तं सूर्यलोकम् १.५०.८. शोचिषः शुद्धाचाराः

केशाः प्रकाशका यस्य तम् (अग्निविद् विद्वज्जनम्) १.४५.६ शोचींषि न्यायव्यवहारप्रकाशाः केशा इव यस्य तम् (गृहपतिम्) ५.८.२. **शोचिष्केशः**=शोचींषि तेजांसि केशा इव यस्य सः (अग्निः=विद्युदिव विद्वज्जनः) ३.२७.४. प्रदीप्तविज्ञानः (शिल्पिजनः) ५.४१.१०. तेजांसि केशा इव ज्वाला यस्य सः (अग्निः) ३.१४.१. [शोचिष्-केशपदयोः समासः। शोचिष् इति व्याख्यातम्। केशा रश्मयः। …काशनाद्वा प्रकाशनाद्वा नि० १२.२६. (ऋ० ३.२७.४.) शिश्नं वै शोचिष्केशं शिश्नं हीदं शिश्निनं भूयिष्ठं शोचयति श० १.४.३.६. शोचन्तीव ह्येतस्य (अग्नेः) केशाः श० १.४.१.३८.]

शोचिष्ठ सद्गुणैः प्रकाशमान (दीदिवः=विद्वज्जन) २५.४८. पवित्रतम (जगदीश्वर) ३.२६ अतिशयेन शोधक (राजन्) ५.२४.३. अतिशयेन तेजस्विन् (विद्वन्) १५.४८. शोचिष्प्राति० अतिशायन इष्ठन्। 'टेः' अ० ६.४.१५५. सूत्रेण इष्ठन्प्रत्यये टेर्लोपः। शोचिष् इति व्याख्यातम्। अथवा शोचिष्मत्प्राति० अतिशायन इष्ठन्। 'विन्मतोर्लुक्' अ० ५.३.६५. सूत्रेण मतुपो लुक्। टेः इति टिलोपे रूपम्]

शोचिष्मान् वहूनि शोचींषि विद्यन्ते यस्मिन् सः (अग्निः) २.४.७. [शोचिष्प्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्]

शोणा रक्तगुणविशिष्टौ (अश्वौ) ३.३५.३. वर्ण-प्रकाशकौ गमनहेतू च (रथे=याने) १.६.२. [शोणप्राति० द्विवचनस्याकारादेशः। शोणः=शोणृ वर्णगत्योः (भ्वा०) धातोरच्प्रत्ययः]

शोणाः रक्तगुणविशिष्टा अश्वाः १.१२६.४. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

शोभसे शोभितुम् १.८४.१०. [शुभ दीप्तौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थेऽसेन्]

शोभसे शोभां प्राप्नुयाः ५.४४.५. **शोभे**=प्रदीप्तो भवेयम् १.१२०.५. [शुभ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लेट्]

शोभिष्ठाः अतिशयेन शोभायुक्ताः (पतिव्रताः स्त्रियः) ७.५६.६. [शोभावत्प्राति० अतिशायन इष्ठन्। 'विन्मतोर्लुक्' इति मतोर्लुक्। 'टेः' इति टिलोपे च रूपम्]

शोशुचत् भृशं शोधयतु ३५.२१. दूरीकुर्यात्, शोशुच्यात् वा १.९७.१. भृशं शोषयतु ३५.६. **शोशुचन्**=शोधयन्ति ६.६६.२. **शोशुचन्त**=शोधयन्ति ७.१.४. [शुच शोके (भ्वा०) ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोर्वा यङ्लुगन्ताल्लेट्। अन्यत्र लङ्]

शोशुचत् भृशं पवित्रयन् (अग्निः=राजा) ६.४८.३. **शोशुचता**=अत्यन्तं प्रकाशमानेन (रथेन) १.१२३.७. [शुच शोके (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छतृ। शोचति ज्वलतिकर्मा निघं० १.१६.]

शोशुचानः भृशं प्रकाशमानः (अध्यापक उपदेशको वा) ४.१.४. भृशं पवित्रः सन् (विद्वज्जनः) ३.१५.१. शुद्धः शोधयन् सन् (विद्वान्) २१.३. भृशं शुचिः (पतिः) ११ ४९. शुद्धः संशोधकः (अग्निः) ७.१०.१. पवित्रं विज्ञानम् ७.५.३. भृशं पवित्राचरणः (अग्निः=सेनापतिः) १३.१०. [शुच शोके (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल् लिटः कानच्। अथवा शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम् (यजु० ११.४९.) विपाजसा पृथुना शोशुचान इति। विपाजसा पृथुना दीप्यमान इत्येतत् श० ६.४.४.२१.]

शोषाय दुःखानां शत्रूणां वा निवारणाय २.३२. [शुष शोषणे (दिवा०) धातोर्घञ्]

शौचद्रथे पवित्रे रथे ५.७९.२. [शौचत्-रथपदयोः समासः। शौचत्=शुच शोके (भ्वा०) ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोर्वा शतृ। ओकारस्य वर्णव्यत्ययेन औकारः]

शौष्कलम् यः शुष्कलैर्मत्स्यैर्जीवति तम् (मात्सिकं जनम्) ३०.१६. [शुष्कलप्राति० जीवत्यर्थेऽण् छान्दसः। शुष्कलः=शुष्कोपपदे ला आदाने (अदा०) धातोः कः]

श्चम्नन् हिंसन्तु, प्र०—श्चमुधातुर्हिंसार्थः १.१०४.२. [श्चमु हिंसार्थे छान्दसो धातुः। ततः शतृ]

श्चोतन्ति रक्षन्तु, सञ्चलन्तु १.८७.२. सिञ्चन्ति ३.२१.५. स्रवन्ते ३.१.८. [श्चोतति गतिकर्मा नि० २.१४. श्च्युतिर् क्षरणे (भ्वा०) (श्चुतिर् इत्यपि पाठः) धातोर्लेट्। श्चुतिरासेचने (भ्वा०) धातोर्वा लट्]

श्नथत् हिनस्ति ६.६०.१. **श्नथिहि**=हिंसय ७.२५.२. हिन्धि १.६३.५. [श्रथ हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्लेट्। अन्यत्र लोट्। 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकत्वाद् इडागमः। वर्णव्यत्ययेन रेफस्य नकारः। अथवा श्नथति वधकर्मा निघं० २.१९.]

श्नथनः दुष्टानां हिंसकः (इन्द्रः=विद्याप्रकाशको राजा) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन रस्य नः २.२१.४. [श्रथ हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्। रेफस्य नकारश्छान्दसः]

श्नथयन् हिंसयन् (इन्द्रः=परमविद्याद्यैश्वर्यवान् मनुष्यः) १.५१.६. [श्रथ हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ। रेफस्य नकारश्छान्दसः]

श्नथयन्त श्नथयन्ति, हता भवन्ति, प्र०—अत्राऽड-भावः ३३.६७. [श्रथ हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्। अटोऽभावः। रेफस्य नकारः]

श्नथितम् शिथिलीकृतं नौकादिकम् १.११६.२४. [श्रथ दौर्बल्ये (चुरा०) धातोः क्तः। रेफस्य नकारादेशः]

श्नथिता हिंसिता (वज्रः=ऊष्मसमूहः) १.५७.२. [श्रथ हिंसार्थे (भ्वा०) धातोः तृच्। रेफस्य नकारः]

श्नप्त्रे शुद्धे इव (अ०—जडचेतनसमूहौ इव) ५.२१. [ष्णा शौचे (अदा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

श्मश्रुभिः मुखाऽभितः केशैः २५.१. **श्मश्रुषु**=चिबुकादिषु २.११.१७. **श्मश्रूणि**=मुखकेशाः २०.५. [श्मनि मुखे श्रयतीति विग्रहे श्मन् इत्युपपदे श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'श्मनि श्रयतेर्डुन्' उ० ५.२८. सूत्रेण डुन्। श्मश्रुः लोम श्मनि श्रितं भवति नि० ३.५.]

श्मसि कामयेमहि २.३१.६. [वश् कान्तौ (अदा०) धातोर्लट् लकारस्योत्तमबहुवचने रूपम्। आद्योकारस्य लोपश्छान्दसः। मस इदन्तता च छन्दसि]

श्यत् तनूकरोति १.१३०.४. [शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्लेट्। 'ओतः श्यनि' सूत्रेणोकारस्य लोपः]

श्यामम् श्याममणिः १८.१३. [श्यैङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'इषुयुधि०' उ० १.१४५ सूत्रेण मक्]

श्यामः कृष्णवर्णः (पशुः) २४.१. श्यामवर्णः (पशुः) २९.५८. [श्यैङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'इषियुधि०' उ० १.१४५ सूत्रेण मक्। श्यामं श्यायतेः नि० ४.३. द्वे वै श्यामस्य (पशोः) रूपे शुक्लं चैव लोम कृष्णं च श० ५.१.३.९. स पौष्णो यच्छ्यामः (पशुः) श० ५.२.५.८. अहर्वै शबलो रात्रिः श्यामः कौ० २.९.]

श्यामाकाः समा इति भाषायाम् १८.१२. [श्यैङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० आको मुगागमश्च। लोमभ्य एवास्य चित्तमस्रवत्। ते श्यामाका अभवन् श० १२.७.१.९. तासाम् (ओषधीनाम्) एष उद्धारो यच्छ्यामाकः गो० उ० १.१७. सौम्यं श्यामाकं चरुं निर्वपति तै० १.६.१.११. अथ सोमाय वनस्पतये श्यामाकं चरुं निर्वपति श० ५.३.३.४. स (सोमः) एतं सोमाय मृगशीर्षाय श्यामाकं चरुं पयसि निरवपत्। ततो वै स ओषधीनां राज्यमभ्यजयत्। तै० ३.१.४.३. एते वै सोमस्यौषधीनां प्रत्यक्षतमां यच्छ्यामाकाः श० ५.३.३.४.]

श्यावम् प्राप्तविद्यम् (विद्वज्जनम्) १.११७.२४. **श्यावाय**=ज्ञानिने (जनाय), प्र०—अत्र श्यैङ्धातोरौणादिको वन्प्रत्ययः १.११७.८. श्याववर्णयुक्तायाऽश्वाय ५.६१.९. **श्यावाः**=श्यायन्ते प्राप्नुवन्ति ते (किरणाः) प्र०—श्यावाः सवितुरित्यादिष्टोपयोजननामसु० निघं० १.१५, १.३५.५. सवितुर्वेगवन्तः किरणाः ६.४८.६. [श्यैङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० वन्। श्यावा सवितुरिति निघण्टौ(१.१५)आदिष्टोपयोजननामसु पठितम्]

श्यावा प्राप्तिसाधकौ धारणाकर्षणाख्यावश्विनौ (अग्नि-विद्युतौ) २.१०.२. [श्यैङ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० वन्। द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

श्यावा उपरिष्टाच्छ्यामवर्णा (अग्नेर्ज्वाला) १.१००.१६. श्यावासु=कृष्णासु (ऊर्म्यासु=रात्रीषु ६.४८.६. [श्यैङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० वन्। ततः स्त्रियां टाप्]

श्यावाऽश्व श्यावा कृष्णशिखाऽनयोऽश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) ५.५२.१. **श्यावाश्वः**=सूर्यलोकः ५.८१.५. [श्याव-अश्वपदयोः समासः। श्यावा सवितुरिति निघण्टौ (१.१५.) आदिष्टोपयोजननामसु पठितम्। (साम) श्यावाश्वमार्वनानसं सत्रमासीनं धन्वोदवहन् स एतत् सामापश्यत्तेन वृष्टिमसृजत ततो वै स प्रत्यतिष्ठत् ततो गातुमविन्दत गातुविद्धा एतत् साम तां० ८.५.९.]

श्वावाश्वस्तुताय श्यावैरश्वैः प्रशंसिताय (वीरजनाय) ५.६१.५. [श्यावाश्व-स्तुतपदयोः समासः। श्यावाश्व इति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

श्यावी अन्धकाररूपा (याम्या=रात्रिः) ३.५५.११. **श्यावीम्**=अल्पकृष्णवर्णाम् (उषसम्) १.७१.१. [श्यावी रात्रिनाम निघं० १.७.]

श्याव्याभ्यः श्यावीषु रात्रिषु भवाभ्यः क्रियाभ्यः, प्र०—श्यावीति रात्रिनाम निघं० १.७, ६.१५.१७. [श्यावी-प्राति० भवार्थे यत्। ततः स्त्रियां टाप्। श्यावी रात्रिनाम निघं० १.७.]

श्येतम् श्वेतं शुभ्रम् (दुरोकं=शत्रुभिर्दुःसेवं राज्यम्) ७.४.३. **श्येतः**=प्राप्तः (वायुः) १.७१.४. श्वेतवर्णः (पशुः) २४.३. [श्यैङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'हृश्याभ्यामितन्' उ० ३.९३. सूत्रेण इतन्। श्वेतशब्दस्य वा वकारस्य यकारे कृते रूपम्]

श्येताक्षः श्येते अक्षिणी यस्य सः (पशुः) २४.३. [श्येत-अक्षिपदयोः समासः। समासान्तोऽच् छान्दसत्वात्]

श्येतासः श्वेतवर्णा अश्वाः ५.३३.८. [श्येतप्राति० जसोऽसुक्। श्येतमिति व्याख्यातम्]

श्येनपत्वा श्येन इव पतति (रथः), प्र०—अत्र पतधातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति वनिप् १.११८.१. [श्येनोपपदे पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि वनिप्]

श्येनम् यः शीघ्रं धावित्वाऽन्यान् पक्षिणो हन्ति तं पक्षिविशेषम् १९.१०. श्येनमिव सद्योगामिनम् (राजजनम्) ४.३८.२. **श्येनः**=श्यायति विज्ञापयतीति श्येनो विद्वान् २१.३५. श्येन इव शीघ्रगन्ता (व्यभिचारिपुरुषः) ४.१८.१३. प्रशंसनीयगतिरश्वः ५.४४.११. हिंस्रो वेगवान् पक्षी ४ २६.५. प्रवृद्धवेगः (शकुनः=पक्षी) ४.२६.६. श्येनपक्षिवत् ४.२६.७. श्येन इव (पराक्रमी विद्वान् सभेशः) १८.५३. वेगवानश्व इव वर्त्तमानः (अग्निः) १.९३.६. वेगवान् पक्षी १.३२.१४. **श्येनाय**=श्येन इव पाखण्डिहिंसनाय (अतिथये) ७.१५.४. अ०—श्येनवच्छीघ्रगमनाय ५.१. **श्येनाः**=श्येन इव पराक्रमिणः (गृहस्थाः) ७.५६.३. [श्यैङ् गतौ (भ्वा०) धातोः 'श्यास्त्याहृञविभ्यः इनच्' उ० २.४६ सूत्रेण इनच् । श्येनः शंसनीयं गच्छति नि० ४.२४. श्येन आदित्यो भवति श्यायतेर् गतिकर्मणः नि० १३.७२. श्येनासः अश्वनाम निघं० १.१४. यदाह श्येनोऽसीति सोमं वा एतदाहैष वा अग्निर्भूत्वाऽस्मिँल्लोके संश्यायति । तत् यत् संश्यायति तस्माच्छ्येनस्तच्छयेनस्य श्येनत्वम् गो० पू० ५.१२. उरस एवास्य (इन्द्रस्य) हृदयात् त्विषिरस्रवत् स श्येनोऽपाष्ठिहाभवद् वयसां राजा श० १२.७.१.६. स (श्येनः) हि वयसामाशिष्ठः तां० १३.१०.१४. श्येनो वै वयसां क्षेपिष्ठः ष० ३.८. एतद्वै वयसामोजिष्ठं बलिष्ठं यच्छ्येनः श० ३.३.४.१५.]

श्येना इव श्येनवत् पुरुषार्थिनः (देवासः=विद्वांसो जनाः) ४.३५.८. [श्येनाः-इवपदयोः समासः । श्येनम् इति व्याख्यातम्]

श्येनाभृतः यः श्येन इव विज्ञानादिगुणैः समन्ताद् भ्रियते सः (सभाध्यक्षः) १.८०.२. [श्येन-भृतपदयोः समासे संहितायां दीर्घः । भृतः=भृञ् भरणे (भ्वा०)+क्तः]

श्येनासः श्येन इव गन्तारः (आशवः=अश्वाः) १.११८.४. [श्येनम् इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

श्येनी श्येनस्य स्त्री १.१४०.९. [श्येनप्राति० स्त्रियां जातिवाचको ङीष्]

श्रत् श्रद्धां सत्याऽऽचरणं वा १.१०४.७. सत्यम् ८.५. [श्रत् सत्यनाम निघं० ३.१०.]

श्रथय हिन्धि २.२८.५. शिथिलीकुरु, प्र०—अत्र 'छन्दसि शायजपि' अ०—३.१.८४. अनेन शायजादेशः १.२४.१५ **श्रययन्त**=हिंसत ५.८५.४. हिंसन्ति ५.५४.१०. **श्रथयन्ते**=शिथिलीकुर्वन्ति ५.५९.१. **श्रथाय**=विमोचय १२.१२. [श्रथति वधकर्मा निघं० २.१९. श्रथ हिंसार्थे (भ्वा०) श्रथ दौर्बल्ये (चुरा०) धातोर्वा लोट् । अन्यत्र णिजन्ताल् लङ् लट् च । श्रथाय=श्रन्थ विमोचनप्रतिहर्षयोः (क्र्या०) धातोर्लोट् । 'छन्दसि शायजपि' इति शायजादेशः]

श्रथ्नानः पुरुषार्थ से शिथिल होता हुआ (पति) सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५७. [श्रथ दौर्बल्ये (चुरा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेन श्ना । अथवा श्रन्थ विमोचनप्रतिहर्षयोः [क्र्या०) धातोः शानच्]

श्रद्दधानः सत्कर्मसु प्रीतियुक्तः (इन्द्रः=सेनाद्यध्यक्षः) १.१०३.३. [श्रत् सत्यनाम निघं० ३.१०. तदुपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः शानच् । ताच्छील्ये वा चानश्]

श्रद्धया सत्य के धारण में प्रीति से सं० वि० १९५, ९.११३.२. सत्य, धार्मिक जनों में प्रीति से सं० वि० १८८, १९.३०. परिदृढविश्वासरूपया ऋ० भू० १०२, अथर्व० १२.५.६. **श्रद्धा**=श्रत सत्यं दधाति यया सा १८.५. सत्ये प्रीतिः ३२.१४. **श्रद्धाभिः**=सत्यस्य धारणाभिः ६.२६.६. **श्रद्धाम्**=दृढविश्वासम्, ऋ० भू० १००, १९.३०. सत्यधारिकां क्रियाम् २०.२४. श्रत् सत्यं दधाति ययेच्छया ताम् १९.३०. [श्रत् सत्यनाम निघं० ३.१०. तदुपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'श्रदन्तरोरुपसर्गवत् वृत्तिः' अ० ३.३.१०६ वा० सूत्रानुसारेण 'आतश्चोपसर्गे' अ० ३.३.१०६ सूत्रेण स्त्रियाम् अङ् । ततष्टाप् । श्रद्धा श्रद्धानात् नि० ९.३०, श्रद्धा पत्नी सत्यं यजमानः ऐ० ७.१०. श्रद्धां कामरं मातरं हविषा वर्धयामसि तै० २.८.८.८. एतद् दीक्षायै (रूपं यच्छ्रद्धा) श० १२.८.२.४. तेज एव श्रद्धा श० ११.३.१.१. श्रद्धैव सकृद् इष्टस्याक्षितिः स यः श्रद्दधानो यजते तस्येष्टं न क्षीयते कौ० ७.४. श्रद्धा वा आपः तै० ३.२.४.१. श्रद्धा वा सूर्यस्य दुहिता (यजु० १९.४) श० १२.७.३.११.]

श्रद्धामनाः श्रद्धा मनसि यस्य सः (विद्वज्जनः) २.२६.३. [श्रद्धा-मनस्पदयोः समासः]

श्रद्धितम् श्रद्धा सञ्जाताऽस्येति तम् (भावम्) १.१०४.६. [श्रद्धेति व्याख्यातम् । ततः 'तदस्य संजातं तारकादिभ्य इतच्' अ० ५.२.३६. सूत्रेण इतच्]

श्रद्धे श्रद्धारणाय १.१०२.२. [श्रत् इत्युपपदे दधाते-

र्धातोः क्विप् भावे]

श्रपयतु श्रपयति पाचयति, अ०—सुखयुक्तां करोतु, प्र०—अत्र लडर्थे लोट् १.२२. **श्रपयन्तु**=पाचयन्तु ११.६१. **श्रपयान्**=श्रपयन्तु परिपाचयन्तु अ०—अन्नादिपाकं कुर्वन्तु ११.५९. [श्रा पाके (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । घटादिषु पाठान् मित्त्वाद् 'मितां ह्रस्वः' ६.४.९२. सूत्रेण ह्रस्वः । अन्यत्र लेड् अपि]

श्रमत् श्राम्याच्छ्रमं प्रापयेत्, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप् २.३०.७. [श्रमु तपसि खेदे च (दिवा०) धातोर्लेट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

श्रमयुवः श्रमेण युक्ताः (जीवाः) १.७२.२. [श्रमोपपदे यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्विप् दीर्घश्च]

श्रमः प्रयत्नः पुरुषार्थ उद्यम इत्यादिः ऋ० भू० १०१, अथर्व० १२.५.१. **श्रमेण**=परिश्रमेण ऋ० भू० २३५, अथर्व० ११.३.५.४. सद्गुण और आनन्द से सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.४. [श्रमु तपसि खेदे च (दिवा०) धातोर्घञ्]

श्रमिष्म श्रमं कुर्यामि, प्र०—अत्राऽडभावः २.२९.४. [श्रमु तपसि खेदे च (दिवा०) धातोर्लुङ् । अटोऽभावः । पुषादित्वादत्र च्लेरङि प्राप्ते छान्दसत्वान्न भवति]

श्रयतात् उच्छ्रितं कुर्यात् २३.२७. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'तुह्योस्तातङ्०' इति तातङ्]

श्रयताम् सेवताम् ३९.४. **श्रयतु**=सेवताम् १५.११. **श्रयध्वम्**=सेवध्वम् १२.४६. **श्रयन्ताम्**=सेवन्ताम् १.१३.६. **श्रयन्ते**=तदाधारेण तिष्ठन्ति ऋ० भू० ९०, **श्रयस्व**=सेवस्व सेवते वा ४.१०. **श्रयेताम्**=सेवेयाताम् ७.२.६. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लडपि]

श्रयमाणः सेवमानः (सज्जनः) ३.८.२. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः शानच्]

श्रवत् शृणोति ४.४३.१. शृणुयात्, प्र०—अत्र श्रुधातोर्लेट् 'बहुलं छन्दसि' इति श्नोर्लुक् १.३०.८. **श्रवथः**=शृणुथः ५.७४.१. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लेट् 'श्रुवः श्रृ च' इति विहितश्नुप्रत्ययस्य लुक् । अथवा व्यत्ययेन शप् । अन्यत्र लट् । श्रवद्व इन्द्रः शृण्वद्वोऽग्निरिति (यजु० २८.६) शृणोतु वै इन्द्रः शृणोत्वग्निरित्याशिषमेव तद् वदते कौ० २८.६.]

श्रवय श्रावय ६.३१.५. **श्रवयतम्**=श्रावयतम्, प्र०—वृद्ध्यभावश्छान्दसः २१.९. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । वृद्ध्यभावश्छान्दसः]

श्रवयन् श्रवणं कारयन् (शिल्पिजनः) २.१३.१२. **श्रवयन्तः**=श्रावयन्तः १.११०.३. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ । वृद्ध्यभावश्छान्दसः]

श्रवसः अन्नस्य ४.४१.९. **श्रवसा**=श्रवणेनाऽन्नेन वा ३८.१७. यशया धनेन वा ३३.४०. **श्रवसे**=विद्याश्रवणाय ७.१८.२३. सर्वाऽन्नप्राप्तये १.९६.६. श्रूयते येन यशसा तस्मै १.७३.५. श्रोतुमर्हाय (मेधाविजनाय) १.३१.७. **श्रवः**=श्रूयमाणं यशः १.१२६.२. कीर्त्तनं श्रवणं धनं वा १.१०२.७. सामर्थ्यमन्नं वा १.१०२.२. पृथिव्यन्नादिकम् ६.१.४. सर्वविद्या श्रवणनिमित्तमन्नम् १.४४.२. विद्याश्रवणमन्नं वा १.४३.७. शृण्वन्त्यनेका विद्याः सुवर्णादि च धनं यस्मिँस्तत् १.९.७. शृण्वन्ति सर्वा विद्या येनाऽन्नेन तत् १.४०.४. प्रशंसनीयम् (शर्म=गृहम्) २६.१६. **श्रवांसि**=अन्नादीनि वस्तूनि, विद्यमानाऽन्नादिपदार्थान् १.११.७. अध्ययनाऽध्यापनादीनि कर्माणि ५.४.२. **श्रवोभिः**=श्रवण-मनन-निदिध्यासनैः १.१५६.२. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोरौणा० असुन् । श्रवः अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०. श्रवः श्रवणीयं यशः नि० ११.९. श्रवः प्रशंसाम् नि० ४.२४. श्रव इत्यन्ननाम श्रूयत इति सतः नि० १०.३.]

श्रवस्यतः आत्मनः श्रव इच्छतः (अर्वतः=अश्वादीन्) ६.४६.१३. **श्रवस्यताम्**=आत्मनः श्रवो धनमिच्छताम् (जनानाम्) १.१३८.४. **श्रवस्यते**=श्रोष्यमाणाय (सज्जनाय) १.१२८.१. विद्या, विज्ञान, अन्नाद्यैश्वर्य युक्त राजा और धनाढ्य जन के लिए आर्याभि० १.२९, ऋ० ६.४.९.१२. **श्रवस्यन्**=आत्मनः श्रवोऽन्नमिच्छन् (राजा) १.१७७.१. [श्रवस् पदादात्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ । श्रवस् इति व्याख्यातम्]

श्रवस्यम् श्रवस्यन्ने पृथिव्यादौ भवम् (अश्वं=विद्युदाख्यमग्निम्) १.११७.९. **श्रवस्यानि**=श्रवःसु धनेषु साधूनि वीरसैन्यानि १.१००.५. [श्रवस् इति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे साध्वर्थे वा यत् । श्रवस्यानि यशांसि नि० ५.२५.]

श्रवस्यया आत्मनः श्रव इच्छया १.१२८.६. **श्रवस्या**=आत्मनः श्रवः श्रवणमिच्छा १.१८४.४. [श्रवस् पदादात्मन इच्छायां क्यजन्तात् स्त्रियाम् 'अ प्रत्ययात्' इत्यकारः । ततष्टाप्]

श्रवस्यवः स्वयं श्रोतुमिच्छवः (विद्वांसो जनाः) १.१२५.४. आत्मनः श्रवोऽन्नं श्रवणं वेच्छन्तः (आयवः=

मनुष्याः) २.३१.७. **श्रवस्युम्**=आत्मनः श्रव इच्छुम् (रथम्) ५.५६.८. **श्रवस्युः**=श्रव इवाऽऽचरति इति सर्वस्य श्रोता (परमेश्वरः) ऋ० भू० २२२, अथर्व० ६.१०.९८.२. [श्रवस् इति व्याख्यातम् । तत इच्छायामर्थ आचारे वार्थे क्यच् । ततः 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण तच्छीलादिषु उः । श्रवस्युम्=श्रवणीयम् नि० ११.५०.]

श्रवस्यः श्रोतुमर्हः (अग्निः) ६.१.११. अन्नेषु साधुः (अग्निः) २.१०.१. **श्रवस्याः**=श्रवस्सु श्रवणेषु साधवः (सुवीराः=सज्जनाः) २.१३.१३. **श्रवस्यात्**=य आत्मन श्रव इच्छति तस्मात् (विद्वज्जनात्) ५.३७.३. [श्रवस् इति व्याख्यातम् । ततोऽर्हत्यर्थे साध्वर्थे वा यत् । श्रवस्यात्-प्रयोगे श्रवस्पदाद् इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् कर्त्तर्यच्]

श्रवस्या श्रवस्यन्ने भवानि (प्रयोजनानि) ६.२७.६. श्रोतुं योग्यानि (वचनानि) २.१९.७. श्रवस्स्वन्नादिषु साधूनि (कर्माणि) १.११७.१०. श्रवःस्वन्नेषु श्रवणेषु भवानि (ब्रह्माणि=धनधान्यानि) ७.२३.१. श्रवसि श्रवणे भवानि (ज्ञानानि) १.१४९.५. [श्रवस् इति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे साध्वर्थे वा यत्प्रत्ययान्ताच्छेर्लोपश्छन्दसि]

श्रवस्यात् आत्मनः श्रवणमिच्छेत् ४.४०.२. [श्रवस्-पदाद् इच्छायामर्थे क्यजन्ताल्लेट्]

श्रवः ये शृण्वन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ६.३७.३. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच्]

श्रवाय श्रोत्रे, श्रवणहेतवे वा (भा०—अध्येत्रे) १६.३४. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरवि' त्यप्]

श्रवाय्यम् श्रोतुमर्हम् (सुवीर्यं=सुवलम्) ६.१६.१२. श्रोतुं योग्यम् (रयिम्) ५.२०.१. श्रावयितुमर्हम् (रयिम्=ऐश्वर्यम्), प्र०—श्रुदक्षीत्यादिना आयः प्रत्ययः, उ० ३.९६. १९.६४. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः 'श्रुदक्षिस्पृहिगृहिभ्य आय्यः' उ० ३.९६ सूत्रेण आय्यः]

श्रवाय्या प्रशंसनीयौ (इन्द्राग्नी=नरेशसेनापती) ५.८६.२. [श्रवाय्यमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

श्रवाय्यान् श्रोतुमिष्टान् (अर्वतः=अश्वान्) ६.४५.१२. [श्रवाय्यमिति व्याख्यातम्]

श्रविष्ठाः अतिशयेन बलवन्तः (सभासदः) १.७७.४. [श्रवः धननाम निघं० २.१०. ततो मतुबन्तादतिशायन इष्ठन् । विन्मतोर्लुक् इति मतोर्लुक् । 'टेरि' ति सूत्रेण टेर्लोपः]

श्रान्तम् खिद्यन्तम् (मूढं विद्यार्थिनम्) १.१७९.३. **श्रान्तस्य**=तपसा हृतकिल्विषस्य (विद्वज्जनस्य) ४.३३.११. [श्रमु तपसि खेदे च (दिवा०) धातोः क्तः । अनुनासिकस्य क्विझलोः अ० ६.४.१५. सूत्रेणोपधाया दीर्घः]

श्रापय भा०—उन्नतिभावं नय । ऊर्ध्वं नय २३.२६.

श्राम्यन्ति स्थिरा भवन्ति २.२८.४. [श्रमु तपसि खेदे च (दिवा०) धातोर्लट्]

श्रायन्त इव समाश्रयन्त इव, भा०—सेवमाना इव, प्र०—अत्र गुणे प्राप्ते व्यत्ययेन वृद्धिः ३०.४१. [श्रायन्तः-इवपदयोः समासः । श्रायन्तः=श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः शतृ । वृद्धिश्छान्दसः । श्रायन्तः समाश्रिताः नि० ६.८.]

श्रायाः ये शृण्वन्ति श्रावयन्ति वा ते (मनुष्याः) ५.५३.४. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् कर्त्तरि अच् । वकारस्य यकारो वर्णव्यत्ययेन]

श्रावय विद्योपदेशान् कुरु १९.२४. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल् लोट्]

श्रावयत्पतिम् श्रावयन्पतिर्यस्य तम् (पुत्रम्) ५.२५.५. श्रावयत्-पतिपदयोः समासः । श्रावयत्=श्रु+णिच्+शतृ]

श्रितम् सेवमानम् (सिंहं=व्याघ्रम्) ३.९.४. स्थितम् (भुवनं=जगत्) ४.५८.११. **श्रितः**=सेवितः (योनिः=कारणम्) २.३.११. आश्रितः (कामः=इच्छा) ४.४३.७. संयुक्तः (विद्वज्जनः) ३.९.३. **श्रिताः**=चलने वाले सदा बने रहो सं० वि० १४३, अथर्व० १२.५.१. आश्रिताः सेवमानाः (रसाः) १.१८७.४. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः क्तः]

श्रियम् शोभां लक्ष्मीं च ३२.१६. राज्यलक्ष्मीम् २०.७२. विद्याराज्यैश्वर्यशोभाम् १.७२.१०. लक्ष्मीं, विद्यां, भोगान्, धनं वा १.४३.७. शोभायुक्तम्, भा०—सौन्दर्यादिगुणयुक्तम् (सभापतिम्) ३३.२१. **श्रियः**=चक्रवर्त्यादिराज्यलक्ष्मीः १.८५.२. शोभाधनानि वा ३.१.५. सम्पत्तयः ३.४४.२. **श्रिया**=शुभगुणाचरणोज्ज्वलया चक्रवर्त्तिराज्यसेवमानया प्रकृष्टया लक्ष्म्या ऋ० भू० १०१, अथर्व० १२.५.१. शोभायुक्तया राज्यलक्ष्म्या देदीप्यमानया राज्या वा ९.८. लक्ष्म्या, शोभया, विद्यया सेवया वा १.११७.१३. शुभलक्षणया लक्ष्म्या १.११६.१७. **श्रिये**=लक्ष्मीप्राप्तये ४.१०.५. सेवायै धनाय वा ४.२३.६. धनाय शोभायै वा ५.४४.२. विद्याराज्यलक्ष्मीप्राप्तये १.९२.६.

विद्याशिक्षाराज्यधनप्राप्तये १.६४.१२. सुशोभितायै राजलक्ष्म्यै २०.३. **श्रीः**=धनं शोभा वा ५.५७.६. राज्यलक्ष्मीः भा०—धनादिवस्तु १९.४६. शोभनैश्वर्यम्, भा०—प्रजाधनधान्यादिकम् ३९.४. [श्रीशब्दस्य रूपाणि। श्रीः श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'क्विब् वचिप्रच्छिश्रि०' उ० २.५७. सूत्रेण क्विप्, धातोरिकारस्य च दीर्घः। अथ यत् प्राणा अश्रयन्त तस्मादु प्राणाः श्रियः श० ६.१.१.४. इयं (पृथिवी) वै श्रीः ऐ० ८.५. तस्याः (श्रियः) अग्निरन्नाद्यमादत्त। सोमो राज्यं वरुणः साम्राज्यं मित्रः क्षत्रमिन्द्रो बलं बृहस्पतिर्ब्रह्मवर्चसं सविता राष्ट्रं पूषा भगं सरस्वती पुष्टिं त्वष्टा रूपाणि श० ११.४.३.३. श्रीर्वा एकशफम् (अश्वाश्वतरगर्दभरूपम्) तै० ३.९.८.२. श्रीर्वै पशवः श्री शक्वर्यः तां० १३.२.२. श्रीर्वै श्रायन्तीयम् (साम) तां० १२.४.५. श्रीः पृष्ठ्यानि कौ० २१.५. श्रियै वा ऽएतद् रूपं यद् वीणा श० १३.१.५.१. यदा वै पुरुषः श्रियं गच्छति वीणास्मै वाद्यते श० १३.१.५.१. श्रीर्वै स्वरः श० ११.४.२.१०. रात्रिरेव श्रीः श्रियां हैतद् रात्र्यां सर्वाणि भूतानि संवसन्ति श० १०.२.६.१६. श्रीर्वै राष्ट्रम् श० ६.७.३.७. श्रीर्वै राष्ट्रस्य भारः श० १३.२.९.३. श्रीर्वै राष्ट्रस्याग्रम् श० १३.२.९.७. श्रीर्वै पिलिप्पिला श० १३.२.६.१६. तै० ३.९.५.३. श्रीर्वै वरुणः कौ० १८.९. (सविता) श्रिया स्त्रियम (समदधात्) गो० पू० १.३४. श्रीर्देवाः श० २.१.४.९. श्रियै पाप्मा (निवर्त्तते) श० १०.२.६.१९. बहिर्धेव वै श्रीः जै० उ० १.४.६. एकस्था वै श्रीः कौ० १८.९. (एकस्था) वै श्रीः गो० उ० ६.१३. श्रीर्वै सोमः मै० १.११.६. श० ४.१.३.९. षड् वा ऋतवस्संवत्सरश्रीः जै० २.१४२.]

श्रियसे श्रयितुम् १.८७.६. श्रयितुमाश्रयितुं सेवितुं वा ५.५९.३. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे कसेन्]

श्रीणन् परिपक्वं कुर्वन् (मनुष्यः) १.६८.१. [श्रीञ् पाके (क्र्या०) धातोः शतृ]

श्रीणन्ति परिपक्वं कुर्वन्ति १२.५५. पचन्ति १.८४.११. **श्रीणातु**=परिपचतु ६.१८. **श्रीणीषे**=पचसि ५.६.९. [श्रीञ् पाके (क्र्या०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोडपि]

श्रीणानः आश्रयं कुर्वाणः (राजा) ३३.८५. [श्रीञ् पाके (क्र्या०) धातोः शानच्। धातूनामनेकार्थकत्वादत्र सेवायामर्थे]

श्रीमनाः श्रियि मनो यस्य सः (अ०—यजमानः) १७.५६. [श्री-मनस्पदयोः समासः]

श्रीयस्व सेवस्व, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन श्यन् ३७.१३. [श्रीञ् पाके (क्र्या०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन श्यन्। सेवायामत्र धातुः]

श्रुत शृणु २.४१.१५. श्रावयन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थः 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् १.२३.८. **श्रुतम्**=शृणुतम् ७.९. शृणु ५.७८.५. पठितम् १.११६.१३. अशृणुतम् ६.६२.७. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

श्रुतम् सर्वशास्त्रश्रवणकथनम् १.६.६. यश्श्रुतवान् तम् (वीरपुरुषम्) २.३३.११. प्रख्यातम् (इन्द्रं=परमेश्वरमध्यापकं वा) १.१०१.७. श्रवणम् १५.७. **श्रुतस्य**=प्रसिद्धस्य (राज्ञः) ३.४६.१. **श्रुतः**=सकलशास्त्रश्रवणेन कीर्त्तिमान् (राजा) ४.३०.२. सर्वत्र प्रसिद्धकीर्त्तिः (राजा) ४.३२.२१. यः श्रूयते सः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.५५.८. योऽश्रावि सः (पूषा=पुष्टिकर्त्ता (विद्वज्जनः) ६.५६.५. यः श्रूयते सः (सभाध्यक्षः) १.५३.९. **श्रुताय**=प्रशंसितश्रुतिविषयाय (इन्द्राय=सभेशाय) २.१४.८. अखिलविद्यानां कृतश्रवणाय (महाविद्वज्जनाय) ६.३८.५. यः शुभगुणेषु श्रूयते तस्मै (पुरुषाय) १६.३५. विषिद्धकीर्त्तये (सम्राजे=सुराजाय) ५.८५.१. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः क्तः 'नपुंसके भावे क्तः' सूत्रेण। अन्यत्र क्वचिद् वर्त्तमाने क्तः, क्वचिद् भूते]

श्रुतरथाय श्रुता रथा यस्य तस्मै (विदुषे शिल्पिने) ५.३६.५. **श्रुतरथे**=श्रुते रमणीये रथे १.१२२.७. [श्रुत-रथपदयोः समासः]

श्रुतर्यम् श्रुतानि अर्याणि विज्ञानशास्त्राणि येन तम् (नर्यम्=नृषु साधुं पुरुषम्) प्र०—अत्र शकन्ध्वादिना ह्यकारलोपः १.११२.९. [श्रुत-अर्यपदयोः समासः। श्रुत इति व्याख्यातम्। अर्यम्=ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्यत्। शकन्ध्वादिना पररूपम्]

श्रुतवित् यः श्रुतं वेत्ति सः (जनः) ५.४४.१२. [श्रुतोपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः क्विप्]

श्रुतसेनाय श्रुता प्रख्याता सेना यस्य तस्मै (सेनापतये) १६.३५. [श्रुता-सेनापदयोः समासः]

श्रुतासु विद्यासु ५.६०.२. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः क्तः। ततः स्त्रियां टाप्]

श्रुतिः श्रृण्वन्ति सकला विद्या यया सा वेदाख्या १८.१. **श्रुत्या**=श्रवणेन ६.३६.५. **श्रुत्यै**=श्रवणेन,

प्र०—अत्र सुब्व्यत्ययेन तृतीयार्थे चतुर्थी २.२.७. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

श्रुत्कर्ण अर्थिवचः श्रोतारौ कर्णौ यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वन् राजन् वा) ३३.१५. यः शृणोति कर्णाभ्यां तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.४४.१३. **श्रुत्कर्णम्**=श्रुतौ श्रवणसाधकौ कर्णौ यस्य बहुश्रुतस्य तम् (अग्नि=विद्वज्जनम्) १२.१११. यः सकला विद्याः शृणोति तम् (बहुश्रुतं सज्जनम्) १.४५.७. **श्रुत्कर्णः**=श्रुतौ कर्णौ यस्य सः (सत्पुरुषः) ७.३२.५. [श्रुत-कर्णपदयोः समासः। पूर्वपदस्यान्त्याकारलोपश्छान्दसः]

श्रुत्यम् श्रुतौ श्रवणे भवम् (नाम=संज्ञाम्) ५.३०.५. श्रुतिषु श्रवणेषु (रयिं=धनम्) २.३०.११. श्रुतिषु श्रवणेषु साधु (शरीरात्मबलम्) ६.७२.५. श्रोतुमर्हम् (रयिं=धनम्) ७.५.९. श्रोतुं योग्यम् (रयिम्) १.११७.२३. [श्रुतिप्राति० भवार्थे साध्वर्थेऽर्हत्यर्थे वा यत्]

श्रुत्या श्रुतौ भवानि (विज्ञानानि) ६.२१.६. [श्रुतिप्राति० भवार्थे यत्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

श्रुधि शृणु, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्नोर्लुक् 'शुश्रृणु०' इति हेर्ध्यादेशश्च ३.२६. शृणु श्रावय वा, प्र०—अत्रैकपक्षेऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.२६.५. श्रावयति वा १.२.१. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि तत्स्थानप्राप्तस्य श्नोरप्यभावः। श्रुधी शृणु नि० १०.२]

श्रुधीयतः आत्मनः श्रुधिमन्नमिच्छतः (जनकस्य) ६.६७.३. [श्रुधिपदाद् इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ]

श्रुवत् यः शृणोति सः (शत्रुविजयी जनः) १.१२७.३ [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः शतृ। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

श्रुवन्तु शृण्वन्तु, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शः १९.५७. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन शः]

श्रुष्टये शीघ्रत्वाय २.३८.२. **श्रुष्टिम्**=क्षिप्रम् ७.१८.१०. सद्यः २.३२.३. क्षिप्रकारिणम् (भा०—विद्वत्सङ्गम्) १.६७.१. प्राप्तव्यं वस्तु १.१६६.१३. **श्रुष्टिः**=श्रोतव्या विद्या १.१७८.१. शीघ्रम्, प्र०—श्रुष्टिरिति क्षिप्रनाम निघं० ६.१२, १२.६८. आशुकारी (विदुषी माता) ७.४०.१. **श्रुष्टौ**=प्राप्तव्ये सुखे २.१३.९. [श्रुष्टीति क्षिप्रनाम आशु अष्टीति नि० ६ १३.]

श्रुष्टिमन्तम् श्रुष्टि प्रशस्तं क्षिप्रकरं यस्मिँस्तम् (राजानम्) ५.५४.१४. शीघ्रं बहुसुखहेतुम् (अध्वरं=व्यवहार-यज्ञम्) १.९३.१२. [श्रुष्टीति व्याख्यातम्। ततो मतुप् प्रशंसायाम्]

श्रुष्टी शीघ्रम् २.३.९. सद्यः २.१४.८. क्षिप्रम् ४.३६.४. [श्रुष्टीति क्षिप्रनाम, आशु अष्टीति नि० ६.१३.]

श्रुष्टीवानम् श्रुष्टीः क्षिप्रगतीर्वनति भाजयति यस्तम् (रथं=यानम्) प्र०—अत्र वनधातोर्ण्यन्तादच् १.११९.१. आशुगन्तारं गमयितारं वा (अग्नि=पावकम्) ३.२७.२. **श्रुष्टीवानः**=ये श्रुष्टी शीघ्रं वनन्ति सम्भजन्ति ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १.४५.२. शीघ्रक्रियायुक्ताः (जनाः) १.१२७.९. [श्रुष्टीत्युपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। अथवा णिजन्ताद् वनधातोरच्]

श्रूयाः शृणुयाः २.१०.२. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोराशिषि लिङ्]

श्रेणिभिः पङ्क्तिभिः ४.३८.६. **श्रेणिम्**=पङ्क्तिम् १.१२६.४. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'वहिश्रिश्रुयुद्रु०' उ० ४.५१. सूत्रेण निः। श्रेणिः श्रयतेः समाश्रिता भवन्ति नि० ४.१३.]

श्रेणिशः पङ्क्तिवद्वर्त्तमानाः (अश्वाः=अग्न्यादयः) १.१६३.१०. बद्धपङ्क्तयः (हंसाः) २९.२१. कृतश्रेणयो विहितपङ्क्तयः (हंसाः) ३.८.९. [श्रेणीति व्याख्यातम्। ततः 'बह्वल्पार्थाच्छस्०' अ० ५.४.४२. सूत्रेण शस्]

श्रेत् आश्रयेत् १.१७४.७. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लेट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

श्रेयसः अतिशयेन प्रशस्तान् (जनान्) ३.५८. **श्रेयसे**=धर्मार्थकामप्राप्तये ३०.११. **श्रेयः**=मुक्तिसुखम् १८.८. [प्रशस्यप्राति० अतिशायन ईयसुन्। 'प्रशस्यस्य श्रः' अ० ५.३.६०. सूत्रेण श्रादेशः]

श्रेयस्कर कल्याणकर्त्तः (राजन्) १०.२८. [श्रेयस् इति व्याख्यातम्। तदुपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु' अ० ३.२.२०. सूत्रेण टः]

श्रेयान् अतिशयेन प्रशस्तः (विद्वज्जनः) ३.८.४. अतिशयेन श्रेयः (सोमः=महैश्वर्ययोगः) ६.४१.४. अतिशय शोभायुक्त मङ्गलकारी (पुरुष) स० प्र० १०९, ३.८.४. **श्रेयांसः**=अतिशयेन श्रेय इच्छन्तः (मनुष्याः) ५.६०.४. [प्रशस्यप्राति० अतिशायन ईयसुन्। 'प्रशस्यस्य श्र' इति श्रादेशः]

श्रेषाम सेवेम ४.४३.१. [श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। सिब् विकरणः]

श्रेष्ठतमा अतिशयेन प्रशंसिता (उषाः) १.११३.१२. [श्रेष्ठतम इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

श्रेष्ठतमाय अतिशयेन प्रशस्तः सोऽतिशयितस्तस्मै यज्ञाय (कर्मणे=क्रियायै) १.१. **श्रेष्ठतमाः**=अतिशयेन श्रेयस्करः (नरः=नायका जनाः) ५.६१.१. [श्रेष्ठप्राति० अतिशायने तमप् । श्रेष्ठः=प्रशस्यप्राति० अतिशायन इष्ठन् । 'प्रशस्यस्य श्रः' इति श्रादेश]

श्रेष्ठम् अतिशयेन प्रशस्यम् (पेशं=सुन्दरं रूपं हिरण्यश्च) ४.३६.७. अतिशयेन प्रशस्तम् (धनम्) ३.२१.२. अत्युत्तमम् (द्रविणं=धनं यशो वा) ४.५४.१. अतिशयेन श्रेयस्करम् (रयिं=श्रियम्) २.७.१. **श्रेष्ठः**=धर्म्यगुण-कर्मस्वभावाऽतिशययुक्तः (अग्निः=विद्वज्जनः) ६.१६.२६. श्रेयान् (अग्निः) ३.२१.३. अतिशयेन प्रशंसितः (सद्वैद्यः) २.३३.३. **श्रेष्ठे**=उत्तमे (मित्रे) ३३.१७. [प्रशस्यप्राति० अतिशायन इष्ठन् । 'प्रशस्यस्य श्रः' सूत्रेण श्रादेशः]

श्रेष्ठया अत्युत्तमया (सुमत्या) ५.२५.३. [श्रेष्ठमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

श्रेष्ठवर्चसः श्रेष्ठं वर्चोऽध्ययनं येषान्ते (महाविद्वज्जनाः) ६.५१.१०. [श्रेष्ठ-वर्चस्पदयोः समासः]

श्रेष्ठवर्चसा श्रेष्ठं वर्चोऽध्ययनं ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.६५.२. [श्रेष्ठ-वर्चस्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

श्रेष्ठा श्रेष्ठानि कर्माणि ४.१.६. धर्मजानि (द्रविणानि=धनानि) २.२१.६. [श्रेष्ठमिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

श्रोणम् खञ्जम् (प्रजाजनम्) ४.३०.१९. वधिरवद्वर्त्तमानं पुरुषम् १.११२.८. वधिरम् (जनम्) २.१३.१२. **श्रोणः**=श्रोता (इन्द्रः=विद्वज्जनः) २.१५.७. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० नः]

श्रोणाम् श्रोतव्याम् (गां=भूमिम्) १.१६१.१०. [श्रोणमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

श्रोणितः कटिप्रदेशात् २१.४३. क्रमशः २१.४५. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः 'वहिश्रिश्रुयुद्रु०' उ० ४.५१. सूत्रेण निः । श्रोणिप्राति० तसिः]

श्रोणिभ्याम् कटिप्रदेशाभ्याम् २५.६. **श्रोणी**=कटिप्रदेशौ २०.८. [पूर्वपदे व्याख्यातम् । श्रोणिः श्रोणते-र्गतिचलाकर्मणः । श्रोणिश्चलतीव गच्छतः नि० ४.३. जगती-छन्द आदित्यो देवता श्रोणी श० १०,३.२.६. श्रोणी द्वियजुः (इष्टका) श० ७.५.१.३५.]

श्रोत शृणुत, प्र०—अत्र तस्य स्थाने 'तप्तनप्तनथनाश्च' अ० ७.१.४५. अनेन तबादेशः 'बहुलं छन्दसि' अ० २.४.७३. इति श्नुलोपश्च ६.२६. **श्रोतु**=शृणोतु ५.४६.६. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । मध्यमबहु० तप्रत्ययस्य 'तप्तनप्तनथनाश्च' सूत्रेण तबादेशः । तस्य पित्त्वान् ङित्वाऽभावाद् गुणः । श्नुविकरणस्य लुक् । श्रोता शृणुत नि० १२.४३.]

श्रोता विवादानां वचनानां श्रवणकर्त्ता (राजा) ६.२४.२. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

श्रोतुरातिः श्रोतुः श्रवणं रातिर्दानं यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१२२.६. [श्रोतु-रातिपदयोः समासः । श्रोतुः=श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० तुः । रातिः=रा दाने (अदा०)+क्तिन्]

श्रोत्रपाः यः श्रोत्रं पाति सः (विद्वान् पुरुषः) २०.३४ [श्रोत्रोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

श्रोत्रम् शृणोति शब्दान् येन तच्छब्दग्राहकमिन्द्रियम् ४.१५. शब्दश्रावकम् (इन्द्रियम्) २८.३८. शब्दविषयम् (इन्द्रियम्) १९.९१. सत्यविद्यादिगुणानां विविधप्रकाशकरणम् (इन्द्रियम्) ऋ० भू० २१८, २०.५. ज्ञानेन्द्रियाणामुपलक्षणम् २२.३३. श्रवणेन्द्रियम् १८.२९. श्रवणम् १४.१७. शब्दजन्यं प्रत्यक्षम् ऋ० भू० १०४, अथर्व० १२.५.९. कर्णम् १३.५७. **श्रोत्रात्**=अवकाशमयात् (इन्द्रियात्) ३१.१३. शब्दाकाशकरणमयात् ऋ० भू० १२७, ३१.३१. श्रोत्राऽवकाशरूपसामर्थ्यात् ३१.१२. **श्रोत्राभ्याम्**=शृणोति याभ्यां गोलकाभ्यां ताभ्याम् २५.२. **श्रोत्राय**=शब्दज्ञानाय ७.२७. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः 'हुयामाश्रुभसिभ्यस्त्रन्' उ० ४.१६८. सूत्रेण त्रन् करणे । श्रोत्रं हृदये (श्रितम्) तै० ३.१०.८.६. श्रोत्रं वै ब्रह्म श्रोत्रेण हि ब्रह्म शृणोति श्रोत्रे ब्रह्म प्रतिष्ठितम् ऐ० २.४०. श्रोत्रं वै सम्राट् परमं ब्रह्म श० १४.६.१०.१२. श्रोत्रं वा अपां सन्धिः (यजु० १३.५३.) श० ७.५.२.५५. श्रोत्रं वै परं रजो दिशो वै श्रोत्रं दिशः परं रजः । श० ७.५.२.२०. यत्तच्छ्रोत्रं दिशा एव तत् श० १०.३.३.७. तद् यत्तच्छ्रोत्रं दिशस्ताः जै० उ० १.२८.९. श्रोत्रं वै विश्वामित्र ऋषिर्यदेनेन सर्वतः शृणोत्यथो यदस्मै सर्वतो मित्रं भवति तस्माच्छ्रोत्रं विश्वामित्र ऋषिः (यजु० १३.५७.) श० ८.१.२.६. श्रोत्रं विश्वे देवाः श० ३.२.२.१३. विश्वं हि श्रोत्रम् श० ७.५.२.१२. यच्छ्रोत्रं स विष्णुः गो० उ० ४.११. वागिति श्रोत्रम् जै० उ० ४.२२.११. श्रोत्रं पङ्क्तिः

श० १०.३.१.१. श्रोत्रं वै सम्पच्छ्रोत्रं हीमे सर्वे वेदा अभिसम्पन्नाः श० १४.९.२.४.]

श्रोत्री श्रोत्रस्येयं सम्बन्धिनी (शरत्) १३.५७. [श्रोत्रमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीष्]

श्रोमतम् श्रोतव्यं विज्ञानमन्नादिकं वा ७.२४.५. **श्रोमताय**=प्रशस्तकीर्त्तियुक्ताय व्यवहाराय १.१८२.७. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अतच् । बाहु० मुडागमश्च]

श्रोमतेभिः श्रावणीयैर्वचनैः ६.१९.१०. [श्रोमत-प्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

श्रोषन् शृण्वन्तु १.६८.५. **श्रोषन्तु**=शृण्वन्तु, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप् लेटि सिप् १.८६.५. **श्रोषि**=शृणोषि, प्र०—अत्र विकरणस्य लुक् ३३.१३. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लेट् । व्यत्ययेन शप् । लेटि सिब्-विकरणश्च]

श्रोषमाणाः शृण्वन्तः (विद्वज्जनाः), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति द्वित्वाऽभावः ३.८.१०. श्रवणं कुर्वन्तः (मनुष्याः) ७.५१.१. [श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः सन्नन्ताच्छानच् । द्वित्वाभावश्छान्दसः]

श्रौषट् हविर्दात्रीम् (अग्नि=विद्युतम्) १.१३९.१.

श्लोकम् विद्यासहितां वाचम् १.८३.६. श्लाघनीयां वाचम् ४.५३.३. उत्तमां वाणीम् १.९२.१७. सर्वाऽवयवैः संहितां वाचम् १.५१.१२. यशः १.१३९.३. सत्यां वाणीम् १.१९०.३. सुलक्षणां वाचम् ३.५३.१०. सत्यकीर्त्तिः ऋ० भू० १५७, ११.५. **श्लोकः**=प्रशंसिता शिक्षिता वाक् १८.१. सत्यवाक्-संयुक्तः (योगारूढो विद्वज्जनः) ११.५. **श्लोकाय** = तत्त्वसङ्घातसत्काव्य-गद्य-पद्य-छन्दोनिर्माणादिविज्ञानाय १०.५. [श्लोकः वाङ्नाम निघं० १.११. श्लोकः शृणोतेः नि० ९.९. श्लोकृ संघाते(भ्वा०) धातोर्घञ्]

श्लोकय शास्त्रश्रवणाय सम्बन्धय १४.८. [श्लोकृ संघाते (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । श्लोकशब्दाद्वा 'सत्यापपाश०' अ० ३.१.२५. इति णिजन्ताल्लोट्]

श्लोक्याय श्लोके वेदवाण्यां साधवे (विद्वज्जनाय) १६.३३. [श्लोकप्राति० साध्वर्थे यत् । श्लोकः वाङ्नाम निघं० १.११.]

श्वघ्नीव या शुनो हन्ति तद्वत् २.१२.४. वृकीव ४.२०.३. यथा वृकी शुनः श्वादीन् मृगान् कृन्तन्ती तथा (उषाः) १.९२.१०. [श्वघ्नी-इवपदयोः समासः । श्वघ्नी=श्वन् इत्युपपदे हन्धातोः 'कृतो बहुलं वे' ति टक् । ततो ङीप् । श्वघ्नी कितवो भवति स्वं हन्ति नि० ५.२२.]

श्वनिनम् बहुश्वपालम्, भा०—श्वपालिनं चण्डालादिकम् ३०.७. **श्वनिभ्यः**=ये शुनो नयन्ति शिक्षयन्ति तेभ्यः (जनेभ्यः) १६.२७. [श्वन्प्राति० भूम्न्यर्थे 'वा छन्दसी' त्यनकारान्तादपि इनिः । अथवा 'बहुलं छन्दसि' अ० ५.२.१२२ सूत्रेण विनिः । वकार-लोपश्छान्दसः]

श्वपतिभ्यः शुनां पालकेभ्यः (जनेभ्यः) १६.२८. [श्वन्-पतिपदयोः समासः । श्वन्निति व्याख्यास्यते]

श्वभ्यः कुक्कुरेभ्यः १६.२८. **श्वा**=कुक्कुरः २२.५. **श्वानम्**=प्रेरकम् (प्राज्ञं जनम्) १.१६१.१३. [टुओश्वि गतिवृद्ध्योः (भ्वा०) धातोः 'श्वनुक्षन्पूषन्०' उ० १.१५९ सूत्रेण कनिन् । अनृतं स्त्री शूद्रः श्वा कृष्णः शकुनिस्तानि न प्रेक्षेत श० १४.१.१.३१.]

श्वभ्रेव गर्त्तमिव २.२७.५. [श्वभ्र-इवपदयोः समासः । श्वभ्रः=श्वभ्र गत्याम् (चुरा०) धातोरच्]

श्वशुराय श्वशुर के लिए सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२६. [शूपपदे अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोः 'शावशेराप्तौ' उ० १.४४. सूत्रेण उरन् । शूः क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

श्वश्री सासु सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२६. [श्वशुरप्राति० स्त्रियाम् 'श्वशुरस्योकाराकारलोपश्च' अ० ४.१.६८. वा०सूत्रेण ऊङ् । वर्णव्यत्ययेनोकारस्येकारः]

श्वसनस्य श्वसन्ति येन प्राणेन तस्य १.५४.५. [श्वस प्राणने (अदा०) धातोः करणे ल्युट्]

श्वसन्तम् प्राणयन्तम् (पतिम्) १.१७९.४. [श्वस प्राणने (अदा०) धातोः शतृ]

श्वसिति अग्निना प्राणाऽपानचेष्टां करोति १.६५.५. [श्वस प्राणने (अदा०) धातोर्लट् । 'रुदादिभ्यः सार्वधातुके' इतीडागमः । श्वसिति वधकर्मा निघं० २.१९.

श्वसीवान् प्राणवान् (विद्वान् पुरुषः) १.१४०.१०. [श्वस प्राणने (अदा०) धातोर्घञर्थे कः । ततः श्वसप्राति० मतुप् । वर्णव्यत्ययेनाकारस्येकारादेशः]

श्वः आगामिदिने ६.५६.६. परस्मिन् दिने ८.६. [श्वस् इति स्वरादिपाठादव्ययम् । श्वः उपाशंसनीयः कालः । नि० १.६. न श्वः श्वमुपासीत को हि मनुष्यस्य श्वो वेद श० २.१.३.९.]

श्वात्रः ज्ञानवान् (जगदीश्वरो विद्वज्जनो वा), प्र०—श्वात्रतीति गतिकर्मसु पठितम् निघं० २.२४, ५.३१. शीघ्र व्यापनशील परमात्मा आर्याभि० २.१६, ५.३१. **श्वात्राः**=

श्वात्रं शीघ्रं कर्मविज्ञानं वर्त्तते यासां ताः (पत्नीः=विदुष्यः स्त्रियः), प्र०—अर्शादित्वादच्, श्वात्रमिति क्षिप्रनाम निघं० ५.३, ६.३४. श्वात्रं प्रशस्तं विज्ञानं धनं वा विद्यते यासां ताः (आपः=प्राणाः), प्र०—अत्र अर्शादित्वात् प्रशंसार्थेऽच् । श्वात्रमिति पदनामसु पठितम् निघं० ४.२, धननामसु च निघं० २.१०, ४.१२. **श्वात्रेण**=धनेन विज्ञानेन वा १.३१.४. [शूपपदे अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० रक् बहुलवचनाच्च णत्वम् । शूः क्षिप्रनाम निघं० २.१५. श्वात्रमिति क्षिप्रनामाशु अतनं भवति नि० ५.३. श्वात्रम् धननाम निघं० २.१०. पदनाम निघं० ४.२. श्वात्रति गतिकर्मा निघं० २.१४. (यजु० ६.३४) शिवा ह्यापस्तस्मादाह (हे आपो यूयम्) श्वात्रा स्थेति (श्वात्राः=शिवाः) श० ३.९.४.१६.]

श्वात्रासः श्वात्रं प्रवृद्धं धनं येभ्यस्ते (अग्न्यादयः पदार्थाः), प्र०—श्वात्रमिति धननाम निघं० २.१०, ३३.१. [श्वात्र इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

श्वानेव यथा चोरादिभ्यो रक्षकौ कुक्कुरौ २.३९.४. [श्वाना-इवपदयोः समासः । श्वाना=श्वन्प्राति० द्विवचनस्याकारादेशः]

श्वान्तम् श्रान्तं परिपक्वज्ञानम् (विद्वज्जनम्), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन रेफस्य स्थाने वः १.१४५.४. [श्रमु तपसि खेदे च (दिवा०) धातोः क्तः । वर्णव्यत्ययेन रेफस्य वकारः]

श्वावित् सेधा (पशुविशेषः) २४.३३. शल्यकः, सेंह, इति भाषायाम् २४.३५. पशुविशेषः २३.५६. [शुना आविध्यत इति विग्रहे श्वन् इत्युपपदे आङ्पूर्वाद् व्यध ताडने (दिवा०) धातोः क्विप् । ग्रहिज्यादिना सम्प्रसारणम्]

श्वासय प्राणय २९.५५. [श्वस प्राणने (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

श्वितानः शुभ्रवर्णः (पावकः) ६.६.२. [श्विता वर्णे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० आनच् स च कित्]

श्वितीचयः ये श्विर्तिं श्वेतवर्णं चिन्वन्ति ते (अग्न्यादयः पदार्थाः) ३३.१. [श्वित्युपपदे चिञ् चयने (स्वा०) धातोः पचाद्यच् प्रत्ययः । श्वितिः=श्विता वर्णे (भ्वा०) धातोरौणा० इन् किच्च]

श्वितीची या श्विर्तिं श्वेतवर्णमञ्चति सा (उषाः) १.१२३.९. [श्वितीच् इति व्याख्यास्यते । ततः स्त्रियाम् 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति ङीप्]

श्वितीचे यः श्वितिमावरणमञ्चति तस्मै (सद्मंद्याय) २.३३.८. **श्वित्यञ्चः**=ये श्विर्तिं वृद्धमञ्चन्ति प्राप्नुवन्ति ते (अध्यापकाऽध्येतारः) ७.३३.१. [श्विति इत्युपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' इति क्विन् । 'अनिदिताम्०' इति नलोपे चतुर्थ्येकवचने भसंज्ञायाम् 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति पूर्वस्य दीर्घे च रूपम्]

श्वित्न्येभिः श्वेतवर्णयुक्तैस्तेजस्विभिः (सखिभिः) १.१००.१८. [श्विता वर्णे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अन्यप्रत्यये कित्वेऽकारलोपे च रूपम्]

श्वित्रः विचित्रः पशुविशेषः २४.३९. [श्विता वर्णे (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक्]

श्वित्र्यम् श्वित्रायां भूमेरावरणे साधु (वृषभं=मेघम्) १.३३.१५. [श्वित्रं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टापि श्वित्रा । ततः साध्वर्थे यत्]

श्वेतनायै प्रकाशाय १.१२२.४. [श्विता वर्णे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० युच् । ततः स्त्रियां टाप्]

श्वेतम् वृद्धम्, भा०—बलादिगुणयुक्तम् (पुरुषम्) २७.२४. श्वेतवर्णम् (अरुषम्=अश्वम्) ३.१.४. प्रवृद्धम् (अश्वम्=अग्निम्) १.११६.६. सततं गन्तुं प्रवृद्धम् (विद्युद्यानम्) १.११९.१०. अग्निगुणविद्युन्मयं शुद्धधातुनिर्मितम् (तारम्) ऋ० भू० १९९, ऋ० १.८.२१.१०. **श्वेतः**=भास्वर-स्वरूपत्वाच्छुद्धः (अग्निः) १.६६.३, गन्ता वर्द्धको वा (अ०—वायुः) २७.२३, [टुओश्वि गतिवृद्ध्योः (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० तः । अथवा श्विता वर्णे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

श्वेत्या शुभ्रस्वरूपा (उषाः) १.११३.२. [श्वेत्या उषोनाम निघं० १.८. श्वेत्या श्वेतते: नि० २.२१. श्विता वर्णे (भ्वा०) धातोः 'अघ्न्यादयश्च' उ० ४.११२ सूत्रेण यक्]

श्वैतरीम् अतिशयेन शुद्धाम् (धेनुं=धारणाम्) ४.३३.१, [श्वेतप्राति० अतिशायने तरप्-प्रत्यये श्वेततरः । ततः 'तस्येदम्' (इत्यण्-प्रत्ययान्तात् स्त्रियां ङीप् । तलोपश्छान्दसः]

श्वैत्रेयस्य श्वित्रास्वन्तरिक्षस्थासु दिक्षु भवस्य जलस्य ५.१९.३. **श्वैत्रेयः**=श्वित्राया वर्णकर्त्र्या भूमेरपत्यं श्वैत्रेयः (मेघः) १.३३.१४. [श्वित्राप्राति० अपत्यार्थे 'स्त्रीभ्यो ढक्' अ० ४.१.१२० इति ढक् । ढस्यैयादेशः । श्वित्रा=श्विता वर्णे (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक् । ततः स्त्रियां टाप्]

षट् पञ्च-तत्त्वानि महत्तत्त्वञ्च ३.५६.२. षड्विधाः (उर्वीः=भूमीः) ६.४७.३. वसन्तादीन् ऋतून् १.२३.१५. ऋतवः २३.५८. [षट् पुनः सहतेः नि० ४.२७.]

षट्त्रिंशत् षडुत्तरा त्रिंशत् (संख्या) १८.२५. [षट्-त्रिंशत्पदयोः समासे 'संख्याया अल्पीयस्याः पूर्वनिपातो वक्तव्यः' इति षषः पूर्वनिपातः]

षट्त्रिंशः षट्त्रिंशत् प्रकारः (विवर्त्तः=संवत्सरः) १४.२३. [षट्-त्रिंशत्पदयोः समासे ततः पूरणार्थे डट्]

षट्पक्षा एक बीच में बड़ी और दो दो पूर्व पश्चिम तथा एक एक उत्तर दक्षिण में शाला सं० वि० १६८, अथर्व० ९.२.३.२१. [षट्-पक्षपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

षट्पदाः षट् पदानि यासु ताः (प्रजाः) २३.३४. [षट्पदपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

षडक्षरेण दैव्या त्रिष्टुभा (छन्दसा) ९.३२. [षट्-अक्षरपदयोः समासः]

षडरे षट् ऋतवोऽरा यस्मिन् तस्मिन् (सूर्ये) १.१६४.१२. [षट्-अरपदयोः समासः। अराः प्रत्यृता नाभौ नि० ४.२७.]

षडश्वैः षडश्वा आशुगमकाः कलायन्त्रस्थितप्रदेशा येषु तैः (रथैः) १.११६.४. षडश्वा आशुगमनहेतवो यन्त्राण्यग्निस्थानानि वा येषु तैः (यानैः) ऋ० भू० १९०, [षट्-अश्वपदयोः समासः]

षष्टिः एतत्सङ्ख्याकाः (वीरासः=योद्धृजनाः) ७.१८.१४. [षड् दशतः परिमाणमस्येति विग्रहे 'पङ्क्तिविंशतित्रिंशत्०' अ० ५.१.५९. सूत्रेण षण्णां दशतां षड्भावस्तिः प्रत्ययोऽपदत्वं च निपात्यते]

षष्ठी षण्णां पूरणा (क्रिया) २५.४. [षष् संख्यावाचिनः प्राति० पूरणार्थे डट्प्रत्यये परतः 'षट् कतिकतिपयचतुरां थुक्' इति थुगागमः। ततः स्त्रियां ङीप्]

षाट् सहनशीलः (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) प्र०—'वाच्छन्दसि' इति केवलादपि ण्विः १.६३.३. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण 'वा छन्दसी' ति नियमेन निरुपपदादपि ण्विः 'सहे साढः स' इति मूर्धन्यः]

षोडश षडधिका दश (संख्या) १८.२५. **षोडशम्**=प्रमाणादिपदार्थसमूहम् (स्तोमम्) ९.३४. [षट्-दशन्-पदयोः समासे 'षष उत्वं' दतृदशधासूत्तरपदादेष्टुत्वं च' अ० ६.३.१०९. वा०सूत्रेण षकारस्योत्वं ष्टुत्वं च। षोडशः (स्तोमः) हीना वा एते हीयन्ते ये व्रात्यां प्रवसन्ति न हि ब्रह्मचर्यंश्चरन्ति न कृषिन्न वाणिज्यां षोडशो वा एतत् स्तोमः समाप्तुमर्हति तां० १७.१.२. मरुत्स्तोमो वा एषः (षोडशः स्तोमः) तां० १७.१.२.]

षोडशाऽक्षरेण साम्न्यानुष्टुभा (छन्दसा) ९.३४. [षोडश-अक्षरपदयोः समासः]

षोडशिने प्रशस्ताः षोडश कला विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मै (इन्द्राय=परमैश्वर्याय) ८.३३. **षोडशी**=येन षोडश कला जगति रचितास्ता विद्यन्ते यस्मिन् यस्य वा सः (परमेश्वरः) ऋ० भू० ४४, ८.३६. प्रशस्ताः षोडश कला विद्यन्ते यस्मिन् सः (परमेश्वरः), प्र० इच्छा, प्राणः, श्रद्धा, पृथिव्यापोऽग्निर्वायुराकाशमिन्द्रियाणि, मनोऽन्नं, वीर्यं, तपो, मन्त्रो, लोको, नाम चैताः कलाः प्रश्नोपनिषदि षष्ठे प्रश्ने प्रतिपादिताः ८.३६. सोलह कला (१. ईक्षण=विचार, २. प्राण, ३. श्रद्धा, ४. आकाश, ५. वायु, ६. अग्नि, ७. जल, ८. पृथिवी, ९. इन्द्रिय, १०. अन्न, ११. मन, १२. वीर्य=पराक्रम, १३. तप=धर्मानुष्ठान, १४. मन्त्र=वेदविद्या, १५. कर्मलोक=चेष्टास्थान, १६. लोकों के नाम) वाला ईश्वर आर्याभि० २.१४, ८.३६. षोडशकलायुक्तः (इन्द्रः=राजा) २६.१०. भा०—येन प्राणादीनि षोडश वस्तूनि सृष्टानि सः (ईश्वरः) ३२.५. [षोडश इति व्याख्यातम्। ततो मत्वर्थ इनिः। षोडशी (शस्त्रं स्तोत्रं ग्रहः) अथो षोडशं वा एतत् स्तोत्रं षोडशं शस्त्रं तस्मात् षोडशीत्याख्यायते कौ० १७.१. षोडश स्त्रोत्राणां षोडश शस्त्राणां षोडशभिरक्षरैरादत्ते षोडशभिः प्रणौति षोडशपदाम् निविदं दधाति तत् षोडशिनः षोडशित्वम् ऐ० ४.१. किं षोडशिनः षोडशित्वं षोडश स्तोत्राणि षोडश शस्त्राणि षोडशभिरक्षरैरादत्तं गो० उ० ४.१९. वृषण्वद्वै षोडशिनो रूपम् ऐ० ४.४. सर्वेभ्यो वा एष सवनेभ्यः सन्निर्मितो यत् षोडशी ऐ० ४.४. सर्वेभ्यो वा एष छन्दोभ्यः सन्निर्मितो यत् षोडशी ऐ० ४.३-४) सर्वेभ्यो वा एष लोकेभ्यः सन्निर्मितो यत् षोडशी ऐ० ४.४. त्रिवृद् वै षोडशी कौ० १७.३. आनुष्टुभो वै षोडशी कौ० १७.२.३. आनुष्टुभो वा एष वज्रो यत्षोडशी कौ० १७.१. वज्रो वा एष यत् षोडशी ऐ० ४.१. वज्रः षोडशी तां० १९.६.३. वज्रो वै षोडशी तां० १२.१३.१४. गो० उ० २.१३ वज्रः षोडशी ष० ३.११. (इन्द्रियं वीर्यं षोडशी तां० २१.५.६. वीर्यं षोडशी श० १२.२.२.७. अतिरिक्तो वै षोडशी तां० ६.१.५. अपच्छिदिव वा एतद् यज्ञकाण्डं यत् षोडशी (साम) तां० १८.६.२३. एकविंशायतनो वा एष यत् षोडशी सप्त हि प्रातःसवने होत्रा वषट् कुर्वन्ति सप्त माध्यन्दिने सवने सप्त तृतीये

सवने तां० १२.१३.८. असौ वै षोडशी योऽसौ (सूर्यः) तपति कौ० १७.१.]

षोढा षट् प्रकाराः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ३.५५.१८. [षष् संख्यावाचिनः प्राति० 'संख्याया विधार्थे धा' अ० ५.३.४२. सूत्रेण धा । ततः 'षष उत्वं दतृदशधासूत्तरपदादेष्टुत्वं च' इति धा प्रत्यय उत्वं ष्टुत्वं च]

सकलम् सम्पूर्ण (भद्रं=आनन्द को) स० प्र० ३ समु०, नि० १.१८. [कलया सहेति विग्रहे सह-कला पदयोः समासे 'वोपसर्जनस्य' अ० ६.३.८२. सूत्रेण सहस्थाने सादेशः]

सकामान् समानस्तुल्यः कामो येषान्तान् (अध्वनः=मार्गान्) २६.१. [समान-कामपदयोः समासे 'समानस्य 'छन्दस्यमूर्द्ध०' अ० ६.३.८४. सूत्रेण समानस्य सादेशः]

सकृत् एकवारम् ६.४८.२२. [संख्यावाचिन एक-शब्दस्य क्रियागणने 'एकस्य सकृच्च' अ० ५.४.१९. सूत्रेण सकृदादेशः]

सकृत्स्वम् या सकृदेकवारं सूते ताम् (महीं=भूमिम्) ३३.२८. [सकृदुपपदे षूञ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः क्विप्]

सकेताः समानः केतः प्रज्ञा येषान्ते (देवाः=श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि) ६.९.५. [समान-केतस्पदयोः समासः । 'समानस्य छन्दसि०' अ० ६.३.८४. सूत्रेण सादेशः । केतः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

सक्तवः सत्तू इति भाषायाम् १९.२१. [सच्यन्ते समवेताः क्रियन्ते इति विग्रहे षच समवाये (भ्वा०) धातोः 'सितनिगमिमसि०' उ० १.६९. सूत्रेण तुन् । सक्तुः सचतेर्दुर्धावो भवति । कस्तेर्वा स्याद् विपरीतस्य विकसितो भवति नि० ४.९. देवानां वा ऽएतद् रूपं यत्सक्तवः श० १३.२.१.३. प्रजापतेर्वा एतद् रूपं यत् सक्तवः तै० ३.८.१४.५.]

सक्तुमिव जैसे सत्तू को, पं० वि० । [सक्तुम्-इव-पदयोः समासः । सक्तुरिति व्याख्यातम्]

सक्तुश्रीः यः सक्तूनि समवेतानि द्रव्याणि श्रयति सः (विद्युदादिपदार्थसमूहः) ८.५७. [सक्तूपपदे श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'क्विब्वचिप्रच्छि०' अ० ३.२.१७८. वा० सूत्रेण क्विप् दीर्घश्च]

सक्थानि सक्थीनि ५.६१.३. **सक्थना**=शरीराऽवयवेन २३.२९. **सक्थ्योः**=पादाऽवयवयोः २४.१. [षञ्ज सङ्गे (भ्वा०) धातोः 'असिसञ्जिभ्यां क्थिन्' उ० ३.१५४. सूत्रेण क्थिन् । सक्थिप्राति० तृतीयादौ विभक्तौ 'अस्थिदधि०' अ० ७.१.७५. सूत्रेणानङ् । 'अल्लोपोऽनः' इत्यल्लोपे रूपाणि भवन्ति । सक्थि सचतेरासक्तोऽस्मिन् कायः नि० ९.२०.]

सक्मन् यः सचति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=सेनापते) १.३१.६. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि मनिन्]

सक्म्यम् सचति संयुनक्ति यस्मिँस्तत्र भवम् (असुर्यं=असुरस्य मेघस्य स्वम्) ३.३८.७. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्मनिन् । ततो भवार्थे यत्]

सक्रतवः समाना क्रतुः प्रज्ञा येषान्ते (आदित्यासः=पूर्णविद्या अध्यापकाः) २.२७.२. **सक्रतू**=समानक्रियौ (भा०--वायुविद्युतौ) १.९३.५. [समान-क्रतुपदयोः समासे 'समानस्य छन्दसि०' अ० ६.३.८४. सूत्रेण समानस्य सादेशः]

सक्षणः सोढा (मेधाविजनः) ५.४१.४. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट् । पृषोदरादित्वात् संकारागमः]

सक्षणिम् सोढारम् (शत्रुम्) १.१११.३. **सक्षणिः**=समवेता (सूर्यः), प्र०—अत्र सच-धातोरनिः प्रत्ययः २.३१.४. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अनिः । पृषोदरादिना सकारागमः । षच समवाये (भ्वा०) धातोर्वाऽनिः सकारोपजनश्च]

सक्षत् सम्बघ्नीयात् १.१२९.१०. समवैति ५.३०.६. **सक्षि**=सम्बघ्नासि ५.३३.२. **सक्षीमहि**=सम्बघ्नीयाम ७.५४.३. प्राप्नुयाम ७.३९.३. **सक्ष्व**=सक्तो भव १.४२.१. [षच समवाये (भ्वा०) धातोर्लेट् । सिब्-विकरणः । शपो लुक् च । अन्यत्र लट् लिङ् लोट् च । सक्षति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

सक्षन्तः सहन्तः (स्त्रीपुरुषाः). प्र०—अत्र सहधातोः पृषोदरादिवत्सकारागमः १.१३१.३. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन परस्मैपदम् । पृषोदरादिना च सकारागमः]

सक्षितः समाननिवासाः (ऊतयः=रक्षणादीनि कर्माणि) ६.४४.६. **सक्षितौ**=सह निवसन्त्यौ (मातरा=धात्रीजनन्यौ) १.१४०.३. [समान-क्षितपदयोः समासे 'समानस्य छन्दसि०' अ० ६.३.८४. सूत्रेण समानस्य सादेशः । क्षितः=क्षि निवासगत्योः (तुदा०) धातोर्भावे क्तः]

सखा सुखप्रदः (विद्वज्जनः) १.७५.४. सर्वस्य मित्रं सर्वसुखसम्पादकत्वात् (विष्णुः=व्यापकेश्वरः) १.२२.१९. सौहार्देन सुखप्रदः (इन्द्रः=परमेश्वरः) १.४.१०. मित्रः

(राजप्रजाजनः) १०.३१. सुहृत् (इन्द्रः=राजपुरुषः) ४.२५.६. सर्वदुःखविनाशनेन सहायकारी (अग्निः=जगदीश्वरः) १.३१.१. **सखायम्**=सर्वसुहृदम् (विद्वत्तमं जनम्) ६.४५.१६. सुहृद्वद्वर्त्तमानम् (पतिम्) २६.४०. सर्वहितकारी मित्र (ईश्वर) को पं० वि०। सखायः=परस्परं सुहृदः परोपकारकाः (मनुष्याः) १.२२.८. परस्परस्य सहायिनः (जनाः) १७.३८. भा०—सर्वैः सह मैत्रीमाचरन्तः (सज्जनाः) ३४.१८. मित्रभाव रखने वाले (सज्जन) पं० वि० **सखिभिः**=धर्मानुकूल-स्वाऽऽज्ञापालकैः मित्रैः १.१००.२. **सखिभ्यः**=मित्रभावेभ्यः मित्रशीलेभ्यः (जनेभ्यः) १.४.४. [समानं ख्यातीति विग्रहे समानोपपदे ख्या प्रकथने (अदा०) धातोः 'समाने ख्यः स चोदात्तः' उ० ४.१३७. सूत्रेण इण्प्रत्यये यलोपे समानस्य च 'समानस्य छन्दसि०' इति सादेशे सखि इति रूपम्। सखिप्राति० सौ 'अनङ् सौ' इत्यनङादेशे सखेति रूपम् अन्यत्र 'सख्युरसम्बुद्धौ' अ० ७.१.९२. सूत्रेण सर्वनामस्थानस्य णिद्वद् भावे वृद्धौ च रूपाणि। सखायः समानख्यानाः नि० ७.३०. सखायः सप्तपदा अभूम तै० ३.७.७.११.]

सखाया सुहृदौ (भिषजा=चिकित्सकौ) २८.७. मित्रवद्वर्त्तमानौ (जीवेशौ) १.१६४.२०. परस्पर मित्रता युक्त (ब्रह्म और जीव) स० प्र० २८३, १.१६४.२०. [सखिप्राति० प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशे रूपम्। सखीति सखा-पदे व्याख्यातम्]

सखित्वनाय सख्युर्भावाय ६.५१.१४. [सखिप्राति० भावे त्वः। पृषोदरादिना रूपं साधनीयम्]

सखित्वम् सख्युर्भावम् ३.१.१५. **सखित्वे**=सखीनां सुखायाऽनुकूलं वर्त्तमानानां कर्मणां भावस्तस्मिन् १.१०.६. [सखिप्राति० भावे त्वः]

सखिवान् वहवो मरुतः सखायो विद्यन्ते यस्य सः (विष्णुः=सूर्यः) १.१२६.४. [सखिप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्। छन्दसीरः इति मतोर्वत्वम्]

सखिविदम् सखीन् सुहृदो विदन्ति येन तम् (यज्ञम्) ११.८. [सखीत्युपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः करणे क्विप्]

सखीयतः सखेवाऽऽचरतः (जनात्) १.१३१.५. **सखीयताम्**=सखेवाऽऽचरताम् (प्रजाजनानाम्) ४.१७.१८. [सखिप्राति० उपमानादाचारे इत्याचारे क्यजन्ताच्छतृ]

सखीयन् आत्मनः सखायमिच्छन् (मर्यः=मनुष्यः) ३.३१.७. सखेवाऽऽचरन् (जनः) ५.४९.१. [सखिप्राति० आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ। आचारे वा क्यजन्ताच्छतृ]

सख्यम् मित्रभावम् ४.२५.७. सख्युर्भावं कर्म्म वा ४.२३.५. मित्रत्वम् १.६२.९. **सख्याय**=सखित्वाय १.१३८.२. **सख्येषु**=सखीनां कर्मसु, भावेषु, पुत्रस्त्रीभृत्यवर्गादिषु वा १.१०.५. **सख्यैः**=मित्रकर्म्मभिः ६.१९.१३. [सखिप्राति० भावे कर्मणि चार्थे 'सख्युर्यः' अ० ५.१.१२६. सूत्रेण यः]

सख्या सख्युः कर्माणि २.३२.२ सख्यानि सख्युः कर्माणि १.१०८.५. मित्रभावकर्माणि १.७१.१०. [सख्यमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

सख्येभिः सखिभिः कृतैः कर्म्मभिः ३.१.१९. सखीनां कर्मभिः ३.३१.१८. [सख्यमिति व्याख्यातम्। ततो भिस ऐस् न भवति 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेण]

सगणः गणैर्विद्यार्थिनां समूहैः सह वर्त्तमानः (विद्वज्जनः) १.१०१.९. गणेन वीरसमूहेन सहितः (इन्द्रः=राजा) ३·४७.४. गणेन सह वर्त्तमानः (इन्द्रः) ३.३२.३. गणेन स्वजनसेनापरिकरेण सहितः (इन्द्रः=सेनापतिः) ७.३७. [गणैः सहेति विग्रहे सह-गणपदयोः समासः। 'वोपसर्जनस्य' इति सह शब्दस्य सादेशः]

सगराः सगरोऽन्तरिक्षमवकाशो येषान्ते (अग्नयः=नेतारो विद्वज्जनाः), प्र०—अर्श आदित्वादच् ५.३४. सगरोऽन्तरिक्षं विद्योपदेशाऽवकाशो येषान्ते (अग्नयः) ५.३४. **सगरेण**=अन्तरिक्षेण सह ५.३४. [सगरप्राति० अर्श आदित्वादच् सगरः अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. सगरा रात्रिः श० १.७.२.२६.]

सगर्भ्यः समानश्चासौ गर्भः सगर्भस्तस्मिन् भवः (भ्राता=बन्धुः), प्र०—अत्र 'सगर्भसयूथसनुताद्यन्' अ० ४.४.११४. इति सूत्रेण भवाऽर्थे यन् प्रत्ययः ४.२०. सोदरः (भ्राता=बन्धुः) ६.९. [समान-गर्भपदयोः समासे 'समानस्य छन्दसि०' सूत्रेण समानस्य सादेशे सगर्भ इति रूपम्। ततो भवार्थे 'सगर्भसयूथसनुताद् यन्' अ० ४.४.११४. सूत्रेण यन्]

सग्धिम् समानं भोजनम् २८.१६. **सग्धिः**=समानभोजनम् १८.९. [समाना-ग्धिपदयोः समासे 'समानस्य छन्दसि०' सूत्रेण समानस्य सादेशः। ग्धिः=अद भक्षणे (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। 'बहुलं छन्दसि' अ० २.४.२९. सूत्रेण घस्लृ-आदेशः। 'घसिभसोर्हलि चे' त्युपधालोपे, 'झलो झलि' इति सलोपे, 'झषस्तथोर्धोऽधः'

इति धत्वे 'न पदान्तद्विर्वचन०' इत्युपधालोपस्य स्थानिवद्भावनिषेधाद् 'झलां जश् झशि' अ० ८.४.५३. सूत्रेण जश्त्वे ग्धिरिति रूपम् । सग्धिम् सहजग्धिम् नि० ६.४३.]

सग्मे गच्छतीति ग्मा पृथिवी तया सह वर्त्तते तस्मिन् यज्ञे, भा०--परमेश्वरस्योपासनादिलक्षणे यज्ञे, प्र०—ग्मेति पृथिवीनामसु पठितम् निघं० १.१, ४.२६. [ग्मया सहेति विग्रहे सह-ग्मापदयोः समासे 'वोपसर्जनस्ये' ति सादेशे रूपम् । ग्मा पृथिवीनाम निघं० १.१. सग्मन् संग्रामनाम निघं० २.१७.]

सघत् हिंसन् (इन्द्रः=जगदीश्वरः), प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्नोर्लुक् १.५७.४. [षघ हिंसायाम् (स्वा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन शप्]

सङ्काः सङ्ग्रामस्थान् (पृतनाः=शत्रुसेनाः) ६.७५.५ समवेता विकीर्णा वा (पृतनाः) २६.४२. [सङ्काः संग्रामनाम निघं० २.१७. सङ्काः सचतेः सम्पूर्वाद्वा किरतेः नि० ६.१४.]

सङ्किर सम्यग् विक्षिप ६.४६.२. प्रापय २७.३८. [सम्+कॄ विक्षेपे (तुदा०) धातोर्लोट्]

सङ्क्रन्दनः सम्यक् शत्रूणां रोदयिता (इन्द्रः=सेनेशः) १७.३३. [सम्+क्रदि आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोः नन्द्यादित्वाल् ल्युः]

सङ्क्रमः सम्यक् क्रमंन्ते यस्मिँस्तस्य विज्ञापकः (विद्वन्मनुष्यः) १५.६. **सङ्क्रमाय**=पदार्थज्ञानाय १५.६. [सम्+क्रमु पादविक्षेपे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

सङ्क्रोशमानाः आक्रोशं कुर्वाणाः (नद्यः) ४.१८.६. [सम्+क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सङ्क्रोशैः सम्यगाह्वानैः २५.२. [सम्+क्रुश आह्वाने रोदने च (भ्वा०) धातोर्घञ्]

सङ्गच्छतु मिश्रीभावेन गच्छति २.२२. **सङ्गच्छध्वम्**=सम्यक् प्राप्नुताऽर्थात् तत्प्राप्त्यर्थं सर्वविरोधं विहाय परस्परं सङ्गता भवत ऋ० भू० ९२, १०.१९१.२. सम्यक् मिलकर प्राप्त होवो सं० वि० १८७, १०.१९१.२. **सङ्गमेमहि**=सङ्गच्छेमहि ५.५१.१५. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'समो गम्यृच्छिभ्याम्' अ० १.३.२९. सूत्रेण 'वा छन्दसि' इति विकल्पेनात्मनेपदम् । अन्यत्र लिङ्]

सङ्गच्छमाने सहगामिन्यौ (जामी=कन्ये) १.१८५.५. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः शानच् । ततष्टाप् स्त्रियाम् । 'समो गम्यृच्छिभ्याम्' इत्यात्मनेपदम्]

सङ्गत सम्यग् विजानीत ३७.१५. एकीभावेन प्राप्नुत प्र०—अत्र लोटि शपो लुक् ३७.१४. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

सङ्गतेभ्यः योग्येभ्यः (पुरुषेभ्यः) २१.६१. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

सङ्गत्य एकीभूय १२.६४. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

सङ्गथे सङ्ग्रामे १.९१.१६. [संगथे संग्रामनाम निघं० २.१७.]

सङ्गमनः यः सम्यग् गमयति सः (परमेश्वरः) १.९६.६ सम्यग् गन्ता (पुरुषः) १२.६६. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

सङ्गमे सङ्ग्रामे समागमे वा ३३.८६. मेलने २६.१५. [संगमे संग्रामनाम निघं० २.१७. संगमे संगमने नि० १०.३९.]

सङ्गवे सङ्गच्छन्ति गावो यस्मिन् सायंसमये तस्मिन् ५.७६.३. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्डुः । सङ्गुप्राति० चतुर्थी । विभक्तिव्यत्ययः । अथवा सम्-गोपदयोः समासे सङ्गुः । ततश्चतुर्थी । विभक्तिव्यत्ययः]

सङ्गृणीते सम्यगुपदिशति ४.२५.७. [सम्+गॄ शब्दे (क्र्या०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सङ्गृभाय सम्यग् गृहाण १.८१.७. **सङ्गृभायति**=सङ्गृह्णाति, प्र०—अत्र हस्य भः, श्नः शायच् १.१४०.७. [सम्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लोट् । 'छन्दसि शायजपि' इति श्नः शायच् । अन्यत्र लटि श्नः शायच् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसी' ति धातोर्हकारस्य भकारः]

सङ्गृभीता सम्यग् गृहीतानि सेनाङ्गानि, प्र०—अत्र ग्रह-धातोर्हस्य भत्वम् १.१००.९. [सम्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्तान्ताच्छेर्लोपश्छन्दसि । धातोर्हस्य भकारः । 'ग्रहोऽलिटि दीर्घ' इतीटो दीर्घत्वम्]

सङ्गृभ्णाः सङ्गृह्णीयाः ३.३०.५. [सम्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लङ् । अटोऽभावो हस्य च भकारः । सङ्गृभ्णाः सङ्गृभ्णासि नि० ६.१.]

सङ्गृभ्य सम्यग् गृहीत्वा ३.५४.१५. [सम्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप् । धातोर्हस्य भकारः]

सङ्गे सह २०.४८. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्डश्छान्दसः]

संग्मिषीय सम्यक् प्राप्नुयाम्, प्र०—अत्राऽऽशिषि

लिङि 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इतीडागमः 'गमहन जनः०' अ० ६.४.९८. इत्युपधालोपश्च ३.१९. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोराशिषि लिङ्]

सङ्ग्रहीतृभ्यः ये युद्धार्थास्सामग्रीः सम्यग् गृह्णन्ति तेभ्यः (राजपुरुषेभ्यः) १६.२६. [सम्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः कर्त्तरि तृच् । 'ग्रहोऽलिटि दीर्घ' इतीटो दीर्घः]

सङ्घातं सङ्घातम् सम्यग्घन्यन्ते जना यस्मिन् तं सङ्ग्रामं सङ्ग्रामम् १.१६. [सङ्घातम्-पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । सङ्घात इति संग्रामनाम निघं० २.१७. सम्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्घञ्]

सङ्घाते सम्बन्धे २८.१३. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

सचत प्राप्नुत ४.५.९. **सचताम्**=समवैतु १३.३०. समवेतान् करोतु ऋ० भू० १४९, २.१०. समवैति, भा०–सेवताम् १३.३०. **सचते**=समवैति १.९१.१४. प्राप्नोति १.१४०.९. सम्बध्नाति १.१८०.५. **सचन्त**=प्राप्नुत १ १५६.४. सङ्गमयन्ति २.५.५. सेवन्ताम् १.७३.४. लभन्ते १.१६४.५०. समवयन्ति ३.१.१४. सम्बध्नन्ति ५.१७.५. **सचन्ताम्**=संयुञ्जन्तु १७.४४. समवयन्तु १३.१. समवेताः प्राप्ता भवन्तु २.१०. **सचन्ते**=सेवन्ते १.१००.१३. समवयन्ति १.६०.२. **सचसे**=युनक्षि १५.२३. समवैषि १३.१५. सम्बध्नासि ४.११.६. **सचस्व**=समवेहि प्राप्नुहि १.१२९.९. संयोजय ३.२४. **सचावहै**=सम्बध्नीयाव ६.५५.१. **सचेत**=सम्बध्नीत ५.५२.१५. **सचेताम्**=प्राप्नुताम् १.१८५.९. **सचेते**=सम्बध्नीतः २.४१.६. समवेतः १.१३६.३. **सचेथे**=संवेते १.१८०.१. सङ्गच्छेथाम् १.११६.१७. संयुङ्क्थः १.१८३.२. सङ्गच्छेथे १.१५२.१. सेवेथे १.१८०.१. सम्बध्नीथः २.३९.२. **सचेमहि**=समवेयाम ३.५५. व्याप्नुयाम १.१३६.६. सङ्गता भवेम २.८.६. संयुञ्ज्महि ५.५०.२. **सचेवहि**=कटिबद्ध सदा रहें सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७२. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्लोट् । सचति गतिकर्मा निघं० २.१४. षच् सेचने सेवने च (भ्वा०) धातोर्वा लोट् । अन्यत्र लट् लिङ् च । सचता आसेवध्वम् नि० ९.२६. सचते द्विश उत्तरनाम निघं० ३.२९. सचन्ताम्=संसेव्यन्ताम् नि० ९.३३. सचन्ते सेवन्ते नि० ७.२३. सचस्वा सेवस्व नि० ३.२१.]

सचथाय प्राप्तसम्बन्धाय (विद्वज्जनाय) १.१५६.५. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अथः]

सचथ्यैः सचथेषु समवायेषु भवैः (जनैः) ५.५०.२. [सचथ इति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत्]

सचध्यै सचितुं संयोक्तुम् १.१६७.५. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोस्तुमर्थेऽध्यैन्]

सचनस्य समवेतस्य (परमविद्वज्जनस्य) ६.३९.१. **सचनः**=सर्वैः सेनाङ्गैः स्वाङ्गैश्च समवेतः (रथः) १.११६.१८. **सचनाः**=समवैतुं योग्याः (रायः=धनानि) १.१२७.११. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

सचमानाः सम्बध्नन्तः (धनाढ्या जनाः) ५.४२.८. **सचमानौ**=सम्बद्धौ (रोहितौ=विद्युत्पावकौ) ५.३६.६. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सचा ज्ञानेन, सत्कर्मसु समवायेन वा १.१०.४. शिष्टसमवायेन सह १.६३.३. सत्यसंयोगेन ४.१.३. सत्येन ४.५.१०. सम्बन्धेन ३.५४.२. प्रसङ्गेन ४.३.९. विज्ञानेन ३.६०.४. समवेतेन सत्येन ६.४५.२२. सुखसमवेतेन (बलेन) १.८१.८. सत्यसमवायेन ३४.५६. सङ्गत्या १.७१.४. सत्याचारेण ४.३२.४. विज्ञानप्रापकेण गुणसमूहेन १.५१.११. अत्यन्त प्रेम से आर्याभि० १.९, ऋ० १.१.९.२. [षच समवाये (भ्वा०) षच सेचने सेवने च (भ्वा०) अथवा सचति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोः क्विप् । ततस्तृतीयैकवचने रूपम्]

सचा सचन्ति ये ते सचास्तान् सचानस्मान् विदुषः, प्र०—अत्र शसः स्थाने 'सुपां सुलुक्०' इत्याकारादेशः सचेति पदनामसु पठितम् निघं० ४.२. अनेन ज्ञानप्राप्त्यर्थो गृह्यते १.९.३. समवेताः (शुक्राः=शुद्धाः किरणाः) १.१३५.३. सचयोः समवेतयोः (इन्द्रयोः=वायुसूर्ययोः) १.७.२. समूहे ३.५३.१०. सम्बन्धी (जनः) ५.४४.१२. सम्बद्धः (विद्वज्जनः) ५.१६.५. समवेता (राजा) ६.२४.१ यज्ञविज्ञानयुक्तान् (विदुषः) १.९३.११. संयुक्तान् (शिष्यान्) १.१६१.५. समवेतम् (सद्गुणसम्बद्धम्) १.१४०.७. सम्बन्धि (क्षयं=निवासस्थानम्) ५.४८.४. समवाये ५.७४.२. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि पचाद्यच् । ततः शसो जसो ङेः सोश्च स्थाने 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेणाकारादेशः]

सचा सत्यसमवेतौ (अश्विना=सभासेनेशौ) १०.३३. संयुक्तौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) २०.६८. सम्बन्धिनौ (इन्द्राग्नी=अध्यापकोपदेशकौ) ३.१२.२. सम्बद्धौ (रोदसी=भूमिसूर्यौ) ५.५६.८. [षच् समवाये (भ्वा०)

धातोः पचाद्यच् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः । सचा पदनाम निघं० ४.२.]

सचा सहाऽर्थे १.१३९.७. [सचा सह नि० ५.५.]

सचा समवेता (स्त्री) ५.५६.९. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोः पचाद्यच् । ततः स्त्रियां टाप् । औणा० वा अन् प्रत्ययः]

सचानः समवेतः (सूर्यः) ६.२०.२. [षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० आनच्]

सचाभुवम् सचा विज्ञानादिना भावयन्तीम् (मातरं=जननीम्) १.१११.१. यः समवाये भवति तम्, सत्यं भावुकम् (परमेश्वरम्) १.१३१.३. **सचाभुवः**=ये सचा परस्परं सङ्गत्यनुषङ्गिनो भवन्ति ते (कर्मकृतः=पुरुषार्थिजनाः) ३.४७. [सचा पदनाम निघं० ४.२. षच् समवाये (भ्वा०) धातोर्भावे क्विबन्ताट् टापि सचेति रूपम् । तदुपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सचाभुवा यौ सत्येन पुरुषार्थेन सह भवतस्तौ (अश्विना=राजप्रजाजनौ) ३४.४७. यौ सचा समवायं भावयतस्तौ (अश्विना=जलाग्नी), प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.३४.११. सहकारिणौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) १.१५७.४. सचेन गुणसमवायेन सह भवन्तौ (मित्रावरुणा=राजप्रजाजनौ) २.३१.१. [सचा इत्युपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः । सचा=षच् समवाये (भ्वा०) धातोः क्विप् । ततष्टाप्रत्ययः । सचभुवा सहभुवौ नि० ५.५.]

सचिविदम् सब से प्रीति प्रेमभाव से सब को सुख प्राप्त कराने वाले (मित्र परमेश्वर) को पं० वि० । [सचा इत्युपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप् । पूर्वपदस्येत्वं वर्णव्यत्ययेन]

सचेतसः ये चेतसा प्रज्ञया सह वर्त्तन्ते ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १८.७६. **सचेतसौ**=समानं चेतसं ज्ञानं संज्ञापनं ययोस्तौ (अध्येत्रध्यापकौ) ५.३. समानसंज्ञानौ (विवाहितस्त्रीपुरुषौ) १२.६०. **सचेताः**=समानं चेतो विज्ञानं संज्ञापनं वा यस्य सः (इन्द्रः=सेनाधिपतिः) १.६१.१०. चेतसा प्रज्ञया सहितः (सूर्यवद्राजा) ४.१६.७. [समान-चेतस्पदयोः समासे 'समानस्य छन्दसि०' इति समानस्य सादेशे रूपम् । चेतस् प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

सच्छन्दाः समानानि छन्दांसि यासु ताः (प्रजाः) २३.३४. [समान-छन्दस्पदयोः समासे समानस्य सादेशे रूपम्]

सजन्या समानैर्जन्यैः सह वर्त्तमानानि (धनानि) ४.५०.९. [सजन्यप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि । सजन्यम्=समान-जन्यपदयोः समासः । जन्यम्=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः 'तकिशसिचतियतिजनीनाम्०' इति वा० सूत्रेण यत्]

सजातवनि जातं जातं वनति स जातवनिः, समानश्चाऽसौ जातवनिस्तम्, भा०—यः समानजन्मभिर्मनुष्यैर्वन्यते संसेव्यते तम् (परमेश्वरम्), प्र०—'समानस्य छन्दस्यमूर्द्धप्रभृत्युदर्केषु' अ० ६.३.८४. अनेन समानस्य सकारादेशः, अत्राऽमो लुक् च १.१७. समाना जाता विद्या, समानं जातं राज्यं वा वनयति येन तम् (परमेश्वरं भौतिकमग्निं वा) १.१८, समानान् जातान् वेदान्, क्षत्रधर्मान्, मूर्त्तान् जगत्स्थान् पदार्थान्वा वनयति प्रकाशयति तम् (परमेश्वरं भौतिकमग्निं वा) १.१८. [समान-जातवनिपदयोः समासे समानस्य सादेशः । जातवनिः=जातोपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' इतीन् । अथवा समान-जातपदयोः समासे सजातः । तदुपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरिन्]

सजातः सहैव जातः (व्यक्तिः) ५.२३. **सजातान्**=सहोत्पन्नान् (विद्यार्थिजनान्) १.१०९.१. समानात्प्रादुर्भावादुत्पन्नान् (पुत्रान्) ११.५८. **सजातानाम्**=जातैः सह वर्त्तमानानाम् (राजप्रजाजनानाम्) १०.२९. समानजन्मनाम् (देवानाम्=विदुषां योद्धृणाम्) १७.५१. **सजाताः**=समानदेशे जाता उत्पन्नाः (सखायः=सुहृज्जनाः) १७.३८. [समान-जातपदयोः, सह-जातपदयोर्वा समासः । . सह-समानयोः स्थाने सादेशः क्रमशः 'वोपसर्जनस्य, 'समानस्य छन्दसि०' सूत्राभ्याम् । जातः=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः । प्राणा वै सजाताः प्राणैर्हि सह जायते श० १.९.१.१५. भूमा वै सजाताः श० १.२.१.७.]

सजात्यम् समानजातौ भवम् (नाम) ३.५४.१६. समानासु जातिषु भवम् (प्रेम) २.१.५. **सजात्यानाम्**=अस्मद्विधानाम् (मनुष्याणाम्) ३३.४७. [समान-जातिपदयोः समासे समानस्य सादेशे सजातिः । ततो भवार्थे यत् । सजात्यं समानजातिता नि० ६.१४.]

सजामि संयुनज्मि १.१६१.१०. [षञ्ज सङ्गे (भ्वा०) धातोर्लट् । 'दंशसञ्जस्वञ्जां शपि' अ० ६.४.२५. सूत्रेणोपधाया नकारस्य लोपः]

सजित्वरीः शरीरैः सह संयुक्तान् रोगान् जेतुं शीलाः (ओषधीः=सोमादीन्) १२.७७. [सह-जित्वरीपदयोः

समासे 'वोपसर्जनस्ये' ति सादेशे रूपम् । जित्वरी=जि जये (भ्वा०) धातोस्तच्छीलादिषु 'इण्नशजिसर्तिभ्यः क्वरप्' इति क्वरप् । ततः स्त्रियाम् 'टिड्ढाणञ्०' अ० ४.१.१५. सूत्रेण ङीप्]

सजित्वानम् समानानां शत्रूणां विजयकारकम् (रयिं=धनम्), प्र०—अत्र 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' अ० ३.२.७५. अनेन जि-धातोः क्वनिप् प्रत्ययः १.८.१. [समान-जित्वन्पदयोः समासे समानस्य सादेशे रूपम् । जित्वन्=जि जये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्वनिप्]

सजित्वाना जयशीलैः वीरैः सह वर्त्तमानौ (इन्द्राग्नी=सभासेनेशौ) ३.१२.४. [सजित्वन् इति पूर्वपदे व्याख्यातम् ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सजूः समानं सेवनं यस्य सः (इन्द्रः=विद्युदग्निः), प्र०—इदं जुषी इत्यस्य क्विबन्तं रूपम् 'समानस्य छन्दस्य०' इति समानस्य सकारादेशश्च १.२३.७. यः समानं जुषते प्रीणाति सः (अग्निः=भौतिकः) ३.१०. समानप्रीतिसेवी (विद्वज्जनः) ५.६०.८. यः समानान् जुषते सः (विद्वज्जनः) १.४४.२. सह वर्त्तमानः (उषाः=प्रभातः) १२.७४. सहितः(सूरः=सूर्यः) १२.७४. संयुक्तः(विद्वज्जनः) ६.४७.१६. मित्रमिव ६.११. [समान-जुष्पदयोः समासे समानस्य सादेशे च रूपम् । जुष्=जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः क्विप् । सजुष्प्राति० सुलोपे रुत्वे च 'र्वोरुपधाया दीर्घ इकः' अ० ८.२.७६. सूत्रेणोपधाया इको दीर्घः । सजूः=सह जोषेण नि० ६.१३. सजूः (यजु० १४.७) अथैवैतद् यजमान एताभिर्देवताभिः (ऋत्वादिभिः) सयुग्भूत्वैताः प्रजाः प्रजनयति तस्माद् सर्वास्वेव सजूः सजूरित्यनुवर्त्तते श० ८.२.२.७.]

सजोषसः समानप्रीतिसेविनः (विद्वांसो जनाः) ५.२१.३. समानसेवाप्रीतयः, भा०—परस्परं प्रीतिमन्तः (अग्नयः=विद्वांसो जनाः) १२.५०. समानोत्तमगुणकर्मस्वभावसेविनः (ऋभवः=मेधाविनः) ४.३४.८. समानं धर्मं सेवमानाः (विद्वज्जनाः) १.१३६.४. समानो जोषः प्रीतिः सेवनं वा येषान्ते (सर्वविद्वांसः) १.४३.३. **सजोषसौ**=समानसेवनौ (अश्विना=प्राणापानाविव दम्पती) १२.७४. **सजोषाः**=समानप्रीतिसेवनः (विद्वज्जनः) १.१८६.२. समानप्रेमा (राजा) १.११८.११. समानप्रीतिसेवी (ईश्वर आप्तमनुष्यो वा) १.६०.१. उत्तम प्रीतियुक्त (ईश्वर) आर्याभि० १.१८, ऋ० १.६.१७.१. समानैः सेविता इडा=स्ताविका वाक्) २६.८. समानप्रीतिः (सप्तिः=शिल्पी विद्वज्जनः) २६.३. आत्मसमानप्रीतिः सेवमानः सन् (इन्द्रः=दुःखविदारकः सज्जनः) ३.३२.२. समानसेवनप्रीतिः ३.४.८. सह वर्त्तमानः (इन्द्रः=सूर्यः) २०.३६. व्याप्तः सन् प्रीतः प्रसन्नः (अग्निः=जगदीश्वरः) ७.५.६. समानप्रीत्या सेवनीयः (मित्रः=प्राणः) ७.६०.४. समानप्रीतिसेविका (कन्या=कमनीया पत्नी) ६.४६.७. स्वात्मवदन्येषां प्रीत्या सेवकः (यज्ञः=शिष्यः) ६.६८.१. समानं जोषः प्रीतिर्यस्य सः (इन्द्रः=सेनापतिः) ७.३७. समानप्रीतिसेवनी (धिषणा=प्रज्ञा) ५.४१.८. सहैव सेवमानः (विद्वज्जनः) ५.४१.४. समानप्रीतिसेविनः (देवासः=विद्वांसो जनाः), प्र०—अत्र वचनव्यत्ययेन जसः स्थाने सुः ७.४८.४. सर्वत्र समानप्रीतिसेवनाः (धीरा जनाः) १.६५.१. समानसुखदुःखप्रीतयः २.३१.४. सह वर्त्तमानः (इन्द्रः=सूर्यः) २०.३६. **सजोषोभ्याम्**=यौ जोषसा सेवनेन सह वर्त्तमानौ ताभ्याम् (इन्द्रवायूभ्यां=विद्युत्प्राणाभ्याम्) ७.८. [समान-जोषस्पदयोः समासे समानस्य सादेशे जसि रूपम् । जोषस्=जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोरौणा० असुन् । अथवा सह-जोषस्पदयोः समासे 'वोपसर्जनस्य' सूत्रेण सादेशे रूपम् । सजोषाः=सहजोषणः नि० ८.८. सजोषसः=सहजोषणाः नि० ११.१५.]

सजोषसा समानं जोषः सेवनं ययोस्तौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) २०.६०. समानप्रीतिकामौ (इन्द्रवायू=अध्यापकोपदेशकौ) ४.४६.६. [सजोषस् इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सजोषः समानप्रीतिसेविनः (नरः=नायका जनाः) ६.२.३. [समान-जोष्पदयोः सभासे समानस्य सादेशे च रूपम् । जोष्=जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' अ० ३.२.७५ सूत्रेण विच्]

सञ्चकानः सम्यक् कामयमानः (राजा) ५.३०.७. [सम्+चक तृप्तौ प्रतिघाते च (भ्वा०) धातोः शानच्]

सञ्चक्षाणः सम्यक् कामयन्नुपदिशन्वा (देवः=विद्वज्जनः) ६.५८.२. [सम्+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः शानच्]

सञ्चक्षि समक्षे ६.१४.४. [सम्+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोः क्विप् भावे]

सञ्चक्षे सम्यक् प्रख्यातुम् ७.१८.२०. सम्यगाख्यानाय १.१२७.११. [सम्+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोस्तुमर्थे एश् छान्दसः]

सञ्चक्ष्य सम्यगध्याप्योपदिश्य वा १.१६५.१२.

[सम्+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोः क्त्वा समासे क्त्वो ल्यप्]

सञ्चरणीः याः सम्यक् चरन्ति ता भूमयः ६.२४.४. [सम्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युडन्तान् स्त्रियां ङीप्]

सञ्चरणे सङ्गमने १.५६.२. सम्यग् गमने ४.५५.६. [सम्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

सञ्चरन्ति सम्यग् गच्छन्ति, प्राप्नुवन्ति ५.१.४. **सञ्चरन्तु**=संविलसन्तु ४.८.७. [सम्+चर गतौ (भ्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट्]

सञ्चरन्ती सम्यग् गच्छन्ती (अ०—द्यावापृथिव्यौ) १.१४६.३. सम्यग्गच्छन्त्यौ जानन्त्यौ (मातरा=मातृवद्वर्त्तमानेऽध्यापिकोपदेशिके) ३.३३.३. [सम्+चर गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

सञ्चराः ये सम्यक् चरन्ति ते, भा०—नानादेशसञ्चारिणः प्राणिनः २४.१५. सञ्चरन्ति येषु ते मार्गाः भा०—पश्वादिपालनमार्गाः २४.१७. [सम्+चर गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि पचाद्यच् । अन्यत्राधिकरणे 'गोचरसंचरवहव्रज०' अ० ३.३.११९ सूत्रेण घः]

सञ्चरेण्यम् सम्यक् चरितुं ज्ञातुं योग्यम् (चित्तम्) १.१७०.१. [सम्+चर गतौ (भ्वा०) धातोः कृत्यार्थे केन्यः]

सञ्चिकित्वान् सम्यक् चिकीर्षकः (विद्वज्जनः), ४.७.८. [सम्+कित निवासे रोगापनयने च (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच् । धातूनामनेकार्थकत्वादत्र करोत्यर्थे कित]

सञ्चित्तानि संज्ञप्तानि धर्म्याणि कर्माणि १२.५८. [सम्-चित्तपदयोः समासः । चित्तम्=चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोः क्तः]

सञ्चोदय सम्यक् प्रेरय प्रापय १.९.५. [सम्+चुद सञ्चोदने (चुरा०) धातोर्लोट्]

सञ्जग्मानः सङ्गतवान् (योगिजनः) ७.१३. धीरतादिशुभगुणेष्वासक्तः (न्यायाधीशो राजा) ७.१८. सम्यक् सङ्गतः (वायुः) १.६.७. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्]

सञ्जग्मानासु सङ्गच्छन्तीषु (मनुष्यादिप्रजासु) १.७४.१. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच् । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

सञ्जग्मिरे सङ्गच्छन्ते ६.१९.५. **सञ्जग्मुः**=सम्यग् जानीयुः प्राप्नुयुर्वा ३.१.१३. **सञ्जग्मे**=सम्यक् सङ्गच्छते १.१६४.८. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट् । 'समो गम्यृच्छिभ्याम्' इत्यात्मनेपदम् । 'वा छन्दसी'ति क्वचिन्नाप्यात्मनेपदम्]

सञ्जनयन् सम्यक् कार्यरूपेण प्रकटयन् सन् (परमेश्वरः) १७.१९. [सम्+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

संजितः सम्यग् जेता (इन्द्रः=सूर्यः) ५.४२.५. [सम्+जि जये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्त औणादिकः]

सञ्जभार सम्यग्घरति १.११५.४. सञ्जहार ३३.३७. [सम्+हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लिट् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसी'ति हस्य भकारः]

सञ्जर्भुराणः सम्यक् पालयन् धरन् (विद्वज्जनः) ५.४४.५. [सम्+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्यङ्लुगन्तात् कानच् । अभ्यासस्य कुत्वं छान्दसम् । जर्भरी भर्त्तारौ नि० १३.५.]

सञ्जयामि सम्यग् विजय करने वाला हूँ स० प्र० २३८, १०.४८.१. [सम्+जि जये (भ्वा०) धातोर्लट्]

सञ्जरताम् संस्तुयात् ४.४.८. [सम्+जरते अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४) धातोर्लोट्]

सञ्जानताम् आत्मा से धर्माऽधर्म, प्रियाऽप्रिय को सम्यग् जानने वाले (देवाः=विद्वान् लोग) सं० वि० १८६, १०.१९१.२. [सम्+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः शतृ । 'ज्ञाजनोर्जा' इति शित्प्रत्यये जादेशः]

सञ्जानाथाम् सम्यग् जानीतः, प्रादुर्भूतविद्यासाधिके भवतः प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च २.१६. [सम्+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्लोट् । 'ज्ञाजनोर्जा' इति जादेशः]

सञ्जानानाः सम्यग् ज्ञानवन्तो (देवाः=विद्वांसो जनाः) ऋ० भू० ९२, १०.१९१.२. सम्यग् जानन्तः (देवाः), प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.७२.५. सम्यग् जानने वाले (विद्वान् लोग) सं० वि० १८६, १०.१९१.२. [सम्+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सञ्जिगीवान् सम्यग् विजेता सन् (अग्निः=विद्वान् राजपुरुषः) ३.१५.४. [सम्+जि जये (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । 'सन्लिटोर्जेः' इत्याभ्यासादुत्तरस्य कुत्वं गकारः]

सञ्जितम् सम्यग् जयशीलं शूरवीरम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.३८.१०. सम्यक् पालकं दातारं वा (इन्द्रम्) ३.४८.५. सम्यगुत्कर्षप्रापकम् (इन्द्रम्) ३.३४.११. सम्यग् जिताः

शत्रवो येन तम् (इन्द्रम्) ३.३२.१७. सम्यग् जयति येन तम् (इन्द्रं=विद्युतम्) ३.३९.९. **सञ्जितः**=सम्यग् जेता (इन्द्र =सूर्यः) ५.४२.५. [सम्+जि जये (भ्वा०) धातोः क्तः]

सञ्जिहानम् अधिकरणं त्यजन्तम् (सज्जनम्) ७.३३.१०. [सम्+ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः शानच् व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सञ्जुषताम् भा०—युक्त्या सेवताम् ३८.१६. [सम्+जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोर्लोट्]

सञ्ज्ञातरूपः सम्यग् ज्ञातं येन सः (विद्वज्जनः) १.६९.५. [सम्-ज्ञातपदयोः समासः । ततः 'प्रशंसायां रूपप्' अ० ५.३.६६ सूत्रेण रूपप्]

सञ्ज्ञानम् सम्यग्विज्ञानम् १२.४६. अच्छे प्रकार चिताना सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.४. **सञ्ज्ञानाय**= सम्यग् ज्ञानं कामप्रबोधं तस्मै ३०.९. [सम्+ज्ञा अवबोधने (क्र्या०) धातोर्ल्युट्]

सत् प्रकृत्यात्मकमव्यक्तं सत्संज्ञकं जगत्कारणम् ऋ० भू० ११६. यद् वर्त्तते तत् (हविः) ५.४४.३. वर्त्तमानम् (ब्रह्म) ४.५.१०. प्रमादरहितं सत्यं ज्ञानम् ६.२७.२. नित्यम् (ईश्वरम्) ३२.९. यथार्थम् ६.२७.२. विद्यमानम् (ब्रह्म) १.१६४.४६. **सतः**=अनादिवर्त्तमानस्य विनाशरहितस्य कारणस्य १.९६.७. सत्पुरुषस्य ४.६.६. विद्यमानस्य व्यक्तस्य (कार्यजगतः) १३.३. विद्यामानानुत्तमान् पदार्थान् २.३२. सत्यस्वरूपस्य (ईश्वरस्य) ३३.३९. [अस् भुवि (अदा०) धातोः शतृ । सत् उदकनाम निघं० १.१२. तयोः (सदसतोः) यत् सत् तत् साम तन्मनस्सः प्राणः जै० उ० १.५३.२. सदमृतम् श० १४.४.१.३१.]

सतः सतः विद्यमानस्य विद्यमानस्य (कार्यकारणरूपायाः सृष्टेः) ३.३१.८. [सतः पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । सतः=अस भुवि (अदा०) धातोः शत्रन्तात् षष्ठी]

सती सद्गुणयुक्ता (स्त्री) ६.३५. वर्त्तमाना (भूमिः) ६.४७.२०. पतिव्रता (स्त्री) ४.३.९. **सतीः**=विद्यमानाः प्रकृतीः ३.३१.५. विद्यासुशिक्षादिशुभगुणसहिताः (स्त्रियः) १.१६४.१६. [सती=अस भुवि (अदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

सतीनकङ्कतः सतीनमिव चञ्चलः (जनः), १.१९१.२. [सतीन-कङ्कतपदयोः समासः । सतीनम् उदकनाम निघं० १.१२. कङ्कतः=ककि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अतच्]

सतीनसत्वा यः सतीनं जलं सादयति सः (इन्द्रः= सूर्यलोकः) १.१००.१. [सतीनोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्वनिप् । सतीनम् उदकनाम निघं० १.१२.]

सतेन विभक्तेन कर्मणा १९.२७. उत्तमाऽवयवैर्विभक्तेन शिरसा १९.८८. [सत इत्युत्तरनाम निघं० ३.३९. सत इति प्राप्तस्य ··· सतः संसृतं भवति नि० ३.२०.]

सतोवीराः सतो विद्यमानस्य सैन्यस्य मध्ये वीराः प्राप्तयुद्धविद्याशिक्षा राजपुरुषाः २९.४६. सत्त्वबलोपेताः (राजपुरुषाः) ६ ७५.९. [सतः-वीरपदयोः समासे षष्ठ्या अलुक् छान्दसः । सतः=अस भुवि (अदा०) धातोः शत्रन्तात् षष्ठी]

सत्तः अविद्यादिदोषान् हिंसित्वा विज्ञानप्रदः (विद्वज्जनः), प्र०—अत्र बाहुलकात् षद्लृधातोरौणादिकः क्तः प्रत्ययः १.१०५.१३. निषण्णः (मनुष्यः) ७.४२.२. प्रतिष्ठितः (होता=दातृजनः) २.३६.६. विज्ञानवान् दुःखहन्ता (विद्वज्जनः) १.१०५.१४. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्तः]

सत्ता दत्तः (विद्वज्जनः) ३.१७.५. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः तृच् । क्तो वा । तत्राकारस्याकारादेशः]

सत्त्वभिः पदार्थैः ५.३४.८. [सत्प्राति० भावे त्वः । सत्=अस भुवि (अदा०) धातोः शतृ । सत्त्वैः कर्मभिः नि० ६.३०. सत्त्वं तु मध्ये विशुद्धं तिष्ठति नि० १३.१६.]

सत्पतिम् सदीश्वरस्य वेदस्य धर्मस्य जनस्य वा पालकम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) १२.५६. सदविनाशी चाऽसौ पतिः पालकश्च तम्, यद्वा सतामविनाशिनां कारणानां जीवानाञ्च पालकस्तम् (इन्द्रं=परमात्मानम्) १७.६१. यः सतां सद्व्यवहाराणां सत्पुरुषाणां वा पतिः पालकस्तं न्यायाधीशं राजानम् १.११.१. सत्यस्य प्रचारेण पालकम् (इन्द्रं=राजानम्) २७.३७. सतां पात्रम् (राजानम्) ६.२६.२. **सत्पतिः**—सतां पालयिता जनः १.५४.७. सतोऽविनाशिनः कारणस्य, विद्यमानस्य, कार्यस्य, सत्यपथ्यकारिणां वा पालकः (परमेश्वर ओषधिराजो वा) १.९१.५. सतां धार्मिकाणां पतिः सत्याचाररक्षको वा (इन्द्रः=राजा) १.१३०.१. वेदानां सत्पुरुषाणां वा पालकः (राजा) १.१७४.१. सत उदकस्य पालकः (सूर्यः), ६.१३.३. सतां पुरुषाणां वा पालकः (इन्द्रः=सेनापतिः) १.१००.६. [सत्-पतिपदयोः समासः]

सत्यकर्मन् सत्य वेदोक्त कर्म करने वाले संन्यासिन्, सं० वि० १६५, ९.११३.४. [सत्य-कर्मन्पदयोः समासः]

सत्यगिर्वाहसम् सत्याया गिरः प्रापकम् (पतिं=राजानम्) १.१२७.८. [सत्य-गिर्पदयोः समासे ततो वाहसपदेन समासः। गीः वाङ्नाम निघं० १.११. वाहसः=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहियुभ्यां णित्' उ० ३.११९. सूत्रेणासच्]

सत्यजित् सत्यं कारणं धर्मञ्चोन्नयति, भा०—यः सत्यकर्मोन्नयति सः (गणः=गणनीयो विद्वज्जनः) १७.८३. [सत्योपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सत्यज्योतिः सत्यमविनाशि ज्योतिः प्रकाशो यस्य सः (ईश्वरः) भा०—सत्योपदेशः १७.८०. [सत्य-ज्योतिष्पदयोः समासः]

सत्यतर अतिशयेन सत्यस्वरूप (परमात्मन् विद्वन्वा) १.७६.५. **सत्यतरः**=अतिशयेन सत्यः (विद्वज्जनः) ३.४.१०. यः सत्येन दुःखं तरति सः (वनस्पतिः=विद्वज्जनः) ७.२.१०. [सत्यप्राति० अतिशायने तरप्। अथवा सत्योपपदे तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोः पचाद्यच् कर्त्तरि]

सत्यताते सत्याऽऽचरक (राजन्) ४.४.१४. [सत्य-प्राति० भावे तातिल् छान्दसः]

सत्यधर्मा सत्यो धर्मो यस्य सः (देवः=ईश्वरः) १२.६६. **सत्यधर्माणम्**=सत्यो नाशरहितो धर्मो यस्य तम् (अग्नि=परमेश्वरं भौतिकं वा) १.१२.७. [सत्य-धर्मपदयोः समासः। 'धर्मादनिच् केवलात्' अ० ५.४.१२४. सूत्रेण समासान्तोऽनिच्]

सत्यप्रसवसः सत्योऽविनाशी प्रसवः प्रकटो बोधो यस्मात्तस्य (बृहस्पतेः=जगदीश्वरस्य) ९.१०. सत्यानां न्यायविजयादीनां प्रसवो यस्मात्तस्य (इन्द्रस्य=सेनापतेः) ९.१०. सत्यानि प्रसवांसि जगत्स्थानि कारणरूपेण नित्यानि यस्य तस्य (देवस्य=जगदीश्वरस्य) ९.१३. सत्यः प्रसव ऐश्वर्यं जगतः कारणं कार्यं यस्य तस्य, सत्यन्याययुक्तस्य (परमेश्वरस्य) ९.१०. [सत्य-प्रसवस्पदयोः समासः। प्रसवस्=प्र+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

सत्यप्रसवः सत्येन कर्मणा प्रसव ऐश्वर्यं यस्य सः (राजा) १०.२८. [सत्य-प्रसवपदयोः समासः। प्रसवः=प्र+षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः ऋदोरबि' त्यप्]

सत्यम् यद्वेदविद्यया, प्रत्यक्षादिभिः प्रमाणैः, सृष्टिक्रमेण विदुषां सङ्गेन, सुविचारेणाऽऽत्मशुद्ध्या वा निर्भ्रमं, सर्वहितं, तत्त्वनिष्ठं, सत्यप्रभवं, सम्यक् परीक्ष्य निश्चीयते तत् (व्रतं=सत्यमानं, सत्यभाषणं, सत्यकरणञ्च) १.५. सत्सु पदार्थेषु सुखस्य विस्तारकं, सत्प्रभवं, सद्भिर्गुणैरुत्पन्नं व्रतम् १.१.६. जलम् १.१०५.१२. अव्यभिचारिकर्म १५.६. यथार्थम् ४.३३.६. अव्यभिचारि सुपरीक्षितं वेदचतुष्टयजन्यञ्च (कर्म) १.५२.१३. सत्सु धर्माचरणेषु साधु (इन्द्रियं=धनम्) १९.७८. सतीष्वोषधीषु भवम् (रसम्) १९.७९. सत्सु परमेश्वरादिपदार्थेषु साधु (इन्द्रियं=प्रज्ञानम्) १९.७४. अविनश्वराम् (इन्द्रियं=दिव्यां वाचम्) १९.७३. वर्त्तमाने साधु (इन्द्रियं=जिह्वादिकम्) १९.७६. सत्सु नित्येषु पदार्थेषु व्यवहारेषु वा साधुस्तं परमेश्वरं धर्मं वा १९.३०. सत्यभाषणादिक्रियोज्ज्वलम् (महित्वं=महिमानम्) ३.३२.९. सत्सु साधु वचः, भा०—सत्यवचनम् ३९.४. नित्यम् (अध्वरं=यज्ञम्) ७.५६.१२. अविनाशिनम् (इन्द्रं=सूर्यम्) २.२२.१ अविनश्वरम् (भा०—ब्रह्म) ११.४७. व्रतम् १.९८.३. त्रैकाल्याऽबाध्यम् (विद्यासुशिक्षा सत्यधर्माचरणम्) ४.१.१८. मोक्षम्, ऋ० भू० १००. नाशरहितं पदम् १.१५९.३. सत्सु पुरुषेषु साधु सत्यं मानं भाषणं कर्म च, भा०—अव्यक्तं, जीवाख्यं, सत्यभाषणादिकम् ११.४७. स्थूलस्य सूक्ष्मस्य जगतः कारणं त्रिगुणमयं प्रकृत्यात्मकमव्यक्तम् पं० वि०। यथार्थ जिसका कभी व्यभिचार विनाश नहीं होता उस विद्यादि लक्षण धर्म को आर्याभि० २.४७, १.५. अविनाशि गमनागमनाख्यं कर्म १.३८.७. **सत्यः**=सन्तीति सन्तः, सद्भ्यो हितस्तत्र साधुर्वा (अग्निः=परमेश्वरः भौतिको वा) १.१.५. सत्सु साधुर्जीवस्वरूपेणाऽनादिस्वरूपो वा (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) १.६३.३. सत्सु पुरुषेषु साधुः (इन्द्रः=महाराजः) ४.२१.१०. अस्तीति सत्, सति साधुः सत्यः सर्वदा विनाशरहितः (ईश्वरः) वे० भा० न० १.१.५. सत्पुरुषेषु भवः (मित्रः=सर्वसुहृज्जनः) ९.३९. सत्सु व्यवहारेषु विद्वत्सु वा साधुः (सभेशो राजा) ३३.८३. सतां वेदानां सत्पुरुषाणां वा पालकः (परमेश्वरः) १.१७४.१. **सत्याय**=सति वर्त्तमाने भवाय स्थूलाय पदार्थसमूहाय, अ०—नित्यसुखाय १५.६. **सत्ये**=वेदशास्त्रप्रतिपादिते, प्रत्यक्षादिभिः प्रमाणैः परीक्षिते पक्षपातरहिते न्याय्ये धर्मे ऋ० भू० ९७, १९.७७. **सत्याः**=सत्सु कर्मसु साधवः (आशिषः=सिद्धा इच्छाः) १.१७९.६. सत्सु धर्मेषु साधवः (कामाः=अभिलाषाः) १२.४४. ये प्रतिज्ञां कुर्वन्ति ते (विद्वांसो जनाः) ६.५०.२. **सत्येन**=नित्यस्वरूपेण ब्रह्मणा, वायुना

सूर्येण च ऋ० भू० १४३, अथर्व० १४.१.१. अविनाशिस्वभावेन कारणेन १.२१.६. **सत्यैः**=सत्यप्रकाशोज्ज्वलैर्नित्यैः (मन्त्रेभिः=ज्ञानयुक्तैर्विचारैः) १.६७.३. [अस् भुवि (अदा०) धातोः शतरि सदिति रूपम्। सत्प्राति० साध्वर्थे भवार्थे यत्। सत् उदकनाम (निघं० १.१२.) ततो वा भवार्थे यत्। सत्यम् उदकनाम निघं० १.१२. सत्यं कस्मात् सत्सु तायते सत्प्रभवं भवतीति वा नि० ३.१३. सत्यम् तदेतत् त्र्यक्षरं सत्यमिति स इत्येकमक्षरं तीत्येकमक्षरमित्येकमक्षरं प्रथमोत्तमे अक्षरे सत्यं मध्यतोऽनृतम् श० १४.८.६.२. तद् यत् तत् सत्यम्। त्रयी सा विद्या श० ९.५.१.१८. सत्यं वा ऋतम् श० ७.३.१.२३. तै० ३.८.३.४. ऋतमिति (यजु० १२.१४.) सत्यमित्येतत् श० ६.७.३.११. यो वै सधर्मः सत्यं वै तत् तस्मात् सत्यं वदन्तमाहुर्धर्मं वदतीति धर्मं वा वदन्तं सत्यं वदतीति श० १४.४.२.२६. सत्यं वै सुकृतस्य लोकः तै० ३.३.६.११. एतत् खलु वै व्रतस्य रूपं यत्सत्यम् श० १२.८.२.४. एकं ह वै देवा व्रतं चरन्ति सत्यमेव ३.४:२.८. एकं ह वै देवा व्रतं चरन्ति यत्सत्यं तस्मादु सत्यमेव वदेत् श० १४.१.१.३३. सत्यसंहिता वै देवाः ऐ० १.६. सत्यमया उ देवाः कौ० २.८. सत्यमेव देवा अनृतं मनुष्याः श० १.१.१.४. सत्यं देवा अनृतं मनुष्याः श० १.१.२.१७. एकं ह वा ऽस्य जितमनपजय्यमेवं यशो भवति य एवं विद्वान्त्सत्यं वदति श० ३.४.२.८. स यः सत्यं वदति यथाग्निं समिद्धं तं घृतेनाभिषिञ्चेदेवं हैनं स उद्दीपयति तस्य भूयो भूय एव तेजो भवति श्वः श्वः श्रेयान् भवत्यथ योऽनृतं वदति यथाग्नि समिद्धं तमुदकेनाभिषिञ्चेदेवं हैनं स जासयति तस्य कनीयः कनीय एव तेजो भवति श्वः श्वः पापीयान् भवति तस्मादु सत्यमेव वदेत् श० २.२.२.१९. तस्मादु हैतद् य आसक्ति सत्यं वदत्यैषा वीरतर इवैव भवत्यनाढ्यतर इव सह त्वेवान्ततो भवति देवा ह्येवान्ततो भवन् श० ९.५.१.१६. (उद्दालकः) तस्मै (प्राचीनयोग्याय) हैतां शोकतरां व्याहृतिमुवाच यत् सत्यं तस्मादु सत्यमेव वदेत् श० ११.५.३.१३. स यः सत्यं वदति स दीक्षितः कौ० ७.३. सत्ये ह्येव दीक्षा प्रतिष्ठिता भवति श० १४.६.९.२४. तस्यै वाचः सत्यमेव ब्रह्म श० २.१.४.१०. सत्यं ब्रह्म श० १४.८.५.१. सत्यं ब्रह्मणि (प्रतिष्ठितम्) ऐ० ३.६. गो० उ० ३.२. आपः सत्येन (प्रतिष्ठिताः) ऐ० ३.६. गो० उ० ३.२. तद् यत् तत् सत्यम् आप एव तदापो हि वै सत्यम् श० ७.४.१.६. सत्यं वा एतत् यद् वर्षति तै० १.७.५.३. असावादित्यः सत्यम् तै० २.१.११.१. तद् यत् सत्यम्। असौ स आदित्यः श० ६.७.१.२. तद् यत् तत् सत्यम्। असौ स आदित्यो य एष एतस्मिन् मण्डले पुरुषः श० १४.८.६.३. सत्यमेव य एष (आदित्यः) तपति श० १४.१.२.२२. (यजु० ११.४७.) अयं वा ऽग्निर्ऋतमसावादित्यः सत्यं यदि वासो (आदित्यः) ऋतमयं (अग्निः) सत्य मुभयम्वेतदयममग्निः श० ६.४.४.१०. सत्यं वै शुक्रम् श० ३.९.३.२५. सत्यं सत्यं वै हिरण्यम् गो० उ० ३.१७. प्राणा वै सत्यम् श० १४.५.१.२३. चक्षुर्वै सत्यम् तै० ३.३.५.२. एतद्वै मनुष्येषु सत्यं यच्चक्षुः गो० उ० २.२३. इयं (पृथिवी) एव सत्यमियं ह्येवैषां लोकानामद्धा तमाम् श० ७.४.१.८. नामरूपे सत्यम् श० १४.४.४.३. श्रद्धा पत्नी सत्यं यजमानः ऐ० ७.१०. सत्यं ह होतैषामासीत् यद् विश्वसृज आसत तै० ३.१२.९.३.]

सत्यमन्त्राः सत्यो यथार्थो मन्त्रो विचारो येषान्ते (ऋभवः=मेधाविजनाः) १.२०.४. [सत्य-मन्त्रपदयोः समासः। मन्त्रः=मत्रि गुप्तभाषणे (चुरा०) धातोर्घञ्]

सत्यमन्मा यः सत्यं मन्यते विजानाति विज्ञापयति सः (पूर्णविद्यो जनः) १.७३.२. [सत्योपपदे मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः कर्त्तरि मनिन्]

सत्ययजम् यः सत्यमेव यजति सङ्गच्छते तम् (अग्नि=सूर्यमिव राजानम्) ४.३.१. यस्सत्यं यजति सङ्गमयति तम् (अग्नि=परमात्मानम्) ६.१६.४६. [सत्योपपदे यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि पचाद्यच्]

सत्ययोनिः सत्यमविनाशि योनिः कारणं गृहं वा यस्य सः (इन्द्रः=महाराजः) ४.१९.२. [सत्य-योनिपदयोः समासः। योनिः गृहनाम निघं० ३.४.]

सत्यराजन् सत्यप्रकाशक (सभेश) २०.४. हे सत्यप्रकाशक, सत्यराज्यप्रदेश्वर ऋ० भू० २१८, २०.४. सत्यकर्त्ता, पक्षपातरहित सबका न्यायकर्त्ता, धर्मराज परमात्मा स० प्र० ४८०, २०.४. [सत्य-राजन्पदयोः समासः]

सत्यराधसम् सत्यं राध्नोति यया ताम् (सुमतिं=शोभनां प्रज्ञाम्) २२.११. **सत्यराधसे**=सत्यं राधो धनं यस्य तस्मै (सत्पुरुषाय) ७.३१.२. **सत्यराधः**=सत्यं राधः प्रकृत्याख्यं धनं यस्य तत्सम्बुद्धौ (ईश्वर) ७.४१.३. सत्यानि राधांसि विद्यादिधनानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.१०१.८. सत्सु साधूनि राधांसि धनानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (ईश्वर) ३४.३६. **सत्यराधाः**=न्यायोपार्जितसत्यधनः (इन्द्रः=राजा) ४.२४.२. सत्येन राधो धनं यस्य सः

(इन्द्रः) ४.२९.१. सत्याचरणेन सत्यं वा राधो धनं यस्य सः (राजा) ५.४०.७. [सत्योपपदे राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोरौणा० असुन्। अथवा सत्य-राधस्पदयोः समासः। राधस् धननाम निघं० २.१०.]

सत्यवाचम् सत्या वाग् यस्य तम् (विपश्चितं=विद्वज्जनम्) ३.२६.९. सत्या यथार्था वाग् येषान्ते (विद्वज्जनाः) ३.५४.४. [सत्या-वाच्पदयोः समासः। पूर्वपदस्य ह्रस्वादेशः]

सत्यशवसम् सत्यं शवो बलं यस्य तम् (ऋभ्वसं=मेधाविजनम्) ५.५२.८. **सत्यशवसः**=नित्यदृढबलस्य (विदुषः) १.८६.८. नित्यं बलं येषां तत्सम्बुद्धौ (सभाद्यध्यक्षादयः) १.८६.९. [सत्य-शवस्पदयोः समासः। शवस् बलनाम निघं० २.९. धननाम निघं० २.१०. उदकनाम निघं० १.१२.]

सत्यशुष्मः सत्यं शुष्मं बलं यस्मिन् सः (विद्युदादिस्वरूपोऽग्निः) ४.११.४. सत्यवलः (सत्याचारशीलो विद्वज्जनः) ३.३०.२१. **सत्यशुष्माय**=सत्यमविनश्वरं शुष्मं बलं यस्य तस्मै (अ०—जगदीश्वराय) १.५१.१५. नित्यबलाय (इन्द्राय=सेनापतये) १.१०३.६. [सत्य-शुष्मपदयोः समासः। शुष्मं बलनाम निघं० २.९.]

सत्यश्रवसि सत्यानां श्रवणे सत्येऽन्ने वा ५.७९.१. सत्यस्य श्रवो यस्मिन् तस्मिन् (भा०—आनन्दयुक्ते गृहाश्रमे) ५.७९.२. सत्येन व्यवहारेण प्राप्ताऽन्नाद्यैश्वर्ये (दुहितः=विदुषि स्त्रि) ५.७९.३. [सत्य-श्रवस्पदयोः समासः। श्रवः अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०.]

सत्यश्रुतः ये सत्यं शृण्वन्ति ते (कवयः=विद्वांसो जनाः) ६.४९.६. ये सत्यं श्रुतवन्तः शृण्वन्ति वा ते (कवयः) ५.५७.८. ये सत्यं यथार्थं शृण्वन्ति ते (नरः=नायका जनाः) ५.५८.८. [सत्योपपदे श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। ह्रस्वस्य पिति कृति तुगिति तुगागमः]

सत्यसत्वन् सत्यानि सत्वान्यन्तःकरणादीनि यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ६.३१.५. [सत्य-सत्त्वपदयोः समासान् मतुप्। वलोपश्छान्दसः। अथवा सत्य-सत्पदयोः समासान् मतुप्]

सत्यसवम् सत्योऽविनाशी सवः सामर्थ्ययोगो यस्य तम् (सवितारं=परमात्मानम्) ५.८२.७. सत्यं सव ऐश्वर्यं जगद्वा यस्मिन् यस्य वा तम् (ईश्वरम्) ४.२५. **सत्यसवसः**=सत्यन्याययुक्तस्य (इन्द्रस्य=सम्राजः) ९.१०. सत्यं सव ऐश्वर्यं जगतः कारणं कार्यञ्च यस्य तस्य (सवितुः=जगदीश्वरस्य) ९.१०. [सत्य-सवपदयोः समासः। सवः=षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' त्यप्]

सत्या सत्सु साधूनि त्रैकाल्यावाध्यानि कर्म्माणि २७.१. अविनश्वराणि (कर्माणि) ४.१७.२०. सत्यधर्मोज्ज्वलितानि (अपांसि=कर्माणि) १.७०.४. [सत्यमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

सत्या सत्सु पदार्थेषु साध्वी (स्त्री) ६.६५.५. यथार्थोक्ता (संवाक्=राजनीतिनिष्ठा सम्यग् वाणी) ९.१२. **सत्याभिः**=सत्याचरणान्विताभिः (आह्वानैः) १.१२९.७. **सत्याः**=सत्सु गुणकर्मस्वभावेषु भवाः (कुमारिकाः) १.७९.१. सिद्धाः (आशिषः=कामनाः) २.१०. सत्सु साध्व्यः (आशिषः) ३५.२०. **सत्ये**=सत्सु साध्व्यौ हिते कारणरूपे नित्ये वा (सूर्यभूमी) ३.६.१०. [सत्यमिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

सत्यानि सत्स्वर्थेषु साधूनि (प्रवचनानि) ६.६७.१०. [सत्यप्राति० नपुं० प्रथमाबहुवचने रूपम्]

सत्यानृते सत्यञ्चाऽनृतञ्च ते, भा०—धर्माधर्मौ १९.७७. [सत्य-अनृतपदयोः समासः। सत्यानृते वाचो वा एतौ स्तनौ, सत्यानृते वाव ते (द्वे अक्षरे) गो० उ० ४.१९.]

सत्योक्तिः सत्य आज्ञा आर्याभि० १.४७, ऋ० ७.८.१२.२. [सत्या-उक्तिपदयोः समासः। उक्तिः=वच परिभाषणे (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

सत्यौजाः सत्यमोजो बलं यस्य सः (राजा) १०.२८ [सत्य-ओजस्पदयोः समासः]

सत्रम् सत्रा सत्यं विद्यते यस्मिन् विज्ञाने तत् १५.४९ **सत्रस्य**=सङ्गतस्य राजव्यवहाररूपस्य यज्ञस्य ८.५२. **सत्रे**=दीर्घे यज्ञे ७.३३.१३. [सत्रा सत्यनाम निघं० ३.१०. सीदन्ति यत्रेति विग्रहे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः 'गुधृवीपचि०' उ० ४.१६७. सूत्रेण स्त्रः। सतः सत्पुरुषान् त्रायते तत् सत्रमिति विग्रहे सदोपपदे त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोर्डः। सत्रा सत्यम्, ततो मत्वर्थे वा अर्श आदित्वाद् अच्। आत्मदक्षिणं वै सत्रम् कौ० १५.१. आत्मदक्षिणं वा एतद् यत्सत्रम् तां० ४.९.१९. सर्वान् लोकानहीनेन अथो सत्रेण (अभिजयति) तै० ३.१२.५.७. सर्वं वै सत्रम् श० ४.६.१.१५. सद्वै सत्रिणस्स्पृण्वन्ति तत् सत्रस्य सत्रत्वं, प्राणा वै सत्, प्राणानेव तत् स्पृण्वन्ति सर्वासां वा एते प्रजानां प्राणैरासते ये सत्रमासते काठ० ३४.८.]

सत्रराट् यः सत्रेषु यज्ञेषु राजते सः (सूर्यो विद्वज्जनो

वा) ५.२४. [सत्रं व्याख्यातम्। तदुपपदे राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सत्रसदौ सतां जीवात्मनां त्राणं सत्रं, तत्र सीदतस्तौ, भा०—जीवात्मरक्षणतत्परौ (देवौ=प्राणाऽपानौ) ३४.५५. [सत्रसदौ च देवौ वाय्वादित्यौ नि० १२.३७. सत्रसदौ च देवौ प्राज्ञश्चात्मा तैजसश्चेत्यात्मगतिमाचष्टे नि० १२.३७. सत्रोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सत्रा नित्यानि सत्यार्थप्रतिपादकानि (काव्यानि) १.७२.१. सत्यान् गुणकर्मस्वभावान् १.७१.९. सत्यकारणरूपेणाऽविनाशि (विश्वम्) १.५७.६. सत्याः (मदासः=आनन्दकाः प्रजाजनाः) ६.३६.१. सत्यम् ७.३२.१६. सत्येन कारणेन ६.३४.४. सत्याचारस्य ४.३०.२. सत्यानि (नृम्णानि=धनानि) ४.२२.९. सत्याः (सभ्या जनाः) ४.१७.६. [सत्रमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

सत्राकरः सत्रा सत्यं करोतीति (नायकः सेनेशः) १.१७८.४. [सत्रोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृञो हेतुताच्छील्य०' अ० ३.२.२०. इति ताच्छील्ये टः। अथवा कर्त्तरि पचाद्यच्। सत्रा सत्यनाम निघं० ३.१०.]

सत्राचीम् या सत्रा सत्यमञ्चति प्रापयति ताम् (रातिं=दानम्) ७.५६.१८. [सत्रा सत्यनाम (निघं० ३.१०.) तदुपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' इति क्विन्। ततः स्त्रियाम् अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति ङीप्]

सत्राजितम् सत्रा सत्यं जयत्युत्कर्षति येन तम् (यज्ञम्) ११.८. **सत्राजिते**=यः सत्येनोत्कर्षति तस्मै (इन्द्राय=विदुषे सभासेनेशाय) २.२१.१. [सत्रोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'ह्रस्वस्य पिति कृति०' सूत्रेण तुगागमः। सत्रा सत्यनाम निघं० ३.१०.]

सत्रादावन् सत्यं ददातीति तत्सम्बुद्धौ, सत्रं वृष्ट्याख्यं यज्ञं समन्ताद् ददातीति स वा (इन्द्र=परमेश्वर, सूर्यो वा) १.७.६. [सत्रेति व्याख्यातम्। तदुपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि 'आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च' इति वनिप्]

सत्राषाट् यः सत्राणि बहून् यज्ञान् कर्त्तुं सहते सः (इन्द्रः=राजा) ७.२०.३. [सत्रोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि सहः' अ० ३.२.६३. सूत्रेण ण्विः]

सत्रासाहम् सत्यसहम् (राजानम्) ३.५१.३. सत्यानि सह्यन्ते येन तम् (रयिम्) १.७९.८. यः सत्रा सत्यानि सहते तम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.३४.८. **सत्रासाहः**=यः सत्यं सहते सः (शुभकर्माचारिजनः) २.२१.३. **सत्रासाहे**=यः सत्रा सत्येन सहते तस्मै (इन्द्राय=सभासेनेशाय) २.२१.२. [सत्रा सत्यनाम निघं० ३.१०. तदुपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

सत्राहणम् यः सत्येनाऽसत्यं हन्ति तम् (इन्द्रं=राजानम्) ४.१७.८. [सत्रोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सत्राहम् सत्यधर्माचरणदिनम् ५.३५.४. [सत्रा-अहन्पदयोः समासः। 'राजाहसखिभ्यष्टच्' इति समासान्तष्टच्]

सत्राहा सत्यदिनानि ६.४६.३. [सत्रा-अहन्पदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि]

सत्वनाम् सेनायां सीदतां प्राणिनाम् १७.४२. प्राप्तानां पदार्थानाम् १६.२०. **सत्वने**=शुद्धाऽन्तःकरणाय (सज्जनाय) ६.४५.२२. **सत्वनैः**=रथादिद्रव्यैः ५.३७.४. **सत्वभिः**=विज्ञानवद्भिः (जनैः) १.१३३.६. पदार्थैः १.१३३.६. प्राणिभिः १.१४०.९. शत्रून् सीदयद्भिर्वीरैः सह ३.४९.२. **सत्वा**=सर्वत्र स्थितः (परमेश्वरः) ६.२२.१ सत्वगुणोपेतः (सूरिः=विद्वज्जनः) ६.३७.५. बलवान् (राजपुरुषः) ६.१८.२. गन्ता (सविता=सूर्यमण्डलम्) ४.१३.२. प्रापकः (राजा) ४.४०.२. यः सीदति स पुरुषार्थी (इन्द्रः=ईश्वरोपासको राजा) ६.२९.६. बलिष्ठः (योद्धा) १.१७३.५. **सत्वानः**=बलपराक्रमप्राणिभूतगणाः १.६४.२. सत्त्वगुणबलोपेताः (भा०—सेनास्था भृत्याः) १६.८. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः 'सुयजोर्ङ्वनिप्' अ० ३.२.१०३. सूत्रेण ङ्वनिप्। षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्वा कर्त्तरि वनिप्। दकारस्य तकारश्छान्दसः]

सत्सि सभायाम् १.७६.४. **सदसः**=सीदन्ति यस्मिँस्तस्माद् गृहात् २.१७.७. सभ्यान् (पुरुषान्) ४.५१.८ सभायाः ३२.१३. सभासदः ४.१७.४. सभाः ३.३६.६. सभातः १.१८२.८. सीदन्ति विद्वांसो धार्मिका न्यायाधीशा यस्मिँस्तत्सदः सभा तस्य, प्र०—अत्राऽधिकरणेऽसुन् प्रत्ययः १.१८.६. **सदसि**=सीदन्ति बुद्धिविषया यस्मिन्निति तत्सदोऽध्ययनाऽध्यापननिमित्ता सभा तत्र ६.२४. **सदः**=सीदन्ति प्राप्नुवन्ति सुखानि यस्मिँस्तद् गृहम्, सीदन्ति घ्नन्ति दुःखानि येन तदौषधसेवनं पथ्याचरणञ्च (तद्वस्तु) सीदति जानाति येन तद् ज्ञानं वा २.६. रहने के लिए उत्तम घर सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१९. स्थापनम्

४.३०. सुखस्थानम् १.८५.७. स्थिरम् (महिमानम्) १.८५.२. यज्ञशाला सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.७. स्थित्यर्हमासनम् ३.२४.३. सदनम् १३.८. प्राप्तव्यम् (बर्हिः=विज्ञानम्) ७.११.२. छेद्यं वस्तु ५.६१.२. **सदांसि**=सभाः ३.३८.६. सीदन्ति येषु तान्यधिकरणानि ३४.३२. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' उ० ४.१८९. सूत्रेणासुन्। सदसी द्यावापृथिवीनाम निघं० ३.३०. सत्सि प्रयोगे 'छान्दसो वर्णलोपो वे' ति नियमेनाकारलोपः। तस्य पृथिवी सदः तै० २.१.५.१. तस्मादुदीचीनवंशं सदो भवति श० ३.६.१.२३. ऐन्द्रं हि सदः श० ३.६.१.२२. तस्मात्सदस्यृक्सामाभ्यां कुर्वन्त्यैन्द्रं हि सदः श० ४.६.७.३. प्रजापतेर्वा एतदुदरं यत्सदः तां० ६.४.११. (पुरुषस्य) उदरं सदः कौ० १७.७. उदरमेवास्य (यज्ञस्य) सदः श० ३.५.३.५. उदरं वै सदः कौ० ११.८. यदस्मिन् विश्वे देवा असीदंस्तस्मात्सदो नाम तऽउऽएवास्मिन्नेते ब्राह्मणा विश्वगोत्राः सीदन्ति श० ३.५.३.५.]

सत्सि समवैषि ६.१६.१०. निषीदसि ३.१४.२. आसन्नोऽसि २.६.८. दोषान् हिनस्ति १.१२.४. **सद**=सीद ७.११.१. स्थिरो भव २.३६.४. **सदत्**=सीदति १.१२८.१ प्राप्नुयात् ३.१३.१. **सदत**=आसीदत ७.५७.२. उपविशत ७.५९.६. **सदतम्**=सीदतम् ५.७२.१. तिष्ठतम् ४.१६.१०. **सदताम्**=निषीदतम् ५.७२.३. आसीदेत ७.४२.५. गच्छतः २९.३१. **सदन्**=परिषीदन्ति ४.३.११. **सदन्तु**=तिष्ठन्तु ३.४.८. प्राप्नुवन्तु १.१८६.८. आसीदन्तु ७.४३.३ प्रापयन्तु २९.३३. अवस्थापयन्ति २.५. **सदः**=सीद १३.३७. स्थिरो भव ३३.४. **सदाम**=प्राप्नुयाम ७.४.६. सीदेम ७.१.११. **सदेम**=सीदेम ६.१.६. प्राप्नुयाम ६.७५.८. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लेट्। 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपो लुकि सीदादेशोऽपि न। अन्यत्र लोट्, लेट्, लङ्, लिङ् च। लोडादिषु सत्यपि शपि 'वा छन्दसी' ति सीदादेशो न भवति। लङ्यडभावश्छान्दसः। सदन्तु आसीदन्तु नि० ८.१३.]

सदतन सीदत २६.२४. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट्। सीदादेशश्छान्दसत्वान्न भवति। तस्य तनबादेशश्छान्दसः]

सदनम् उत्पत्ति-स्थिति-भङ्गस्य निमित्तकारणम् (ब्रह्म) १.९६.७. सीदन्ति यत्र तत् (गृहं, मोक्षाख्यं स्थानम्) ३.३१.९. अधिकरणम् (ब्रह्म) १.११७.१०. स्थानम् १.१२९.११. अवस्थितिम् १.१०४.५. गर्भस्थानम् १२.३९. रहने का घर सं० वि० १६६, अथर्व० ९.२.३.२७. सीदन्ति गच्छन्ति यत्र तत् (स्थानम्) १७.८७. **सदनानि**=स्थानान्युदकानि वा १.५५.६. भुवनानि १.१८१.५. सीदन्ति यस्मिँस्तस्मिन् (स्थाने) ७.३६.३. **सदनाय**=स्थितिमते (दिवे=कामयमानाय विदुषे) ५.४७.७. **सदने**=उत्तमे स्थले ७.२४.१. मण्डले ३.३४.७. सीदन्ति यस्मिन्नाकाशे तस्मिन् १.१४८.३. सभास्थाने ५.४३.१२. सदसि सभायाम् १.१२२.६. सर्वस्थित्यर्थे जगति ४.४२.४ गृहे १४.२. प्राप्तव्ये (सरिरे=वाचि) १३.५३. अध्ययनस्थाने, भा०—न्यायासने १२.१६. दिवि १३.५३. स्थातव्ये (प्राणे) गन्तव्ये (समुद्रे=मनसि) १३.५३. सीदन्ति ययोस्ते (द्यावापृथिवी=भूमिविद्युतौ) ७.५३.२. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। सदनम् उदकनाम निघं० १.१२. सदनात् सहस्थानात् नि० ७.२४.]

सदना सीदन्ति गच्छन्ति पुरुषार्थेन येषु तानि गृहाणि ८.१८. [सदनमिति व्याख्यातम्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सदनी दुःखविनाशनेन सुखप्रदा (विद्या) १.१८६.११ [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्भावे ल्युडन्तात् स्त्रियां ङीप्]

सदन्तः निवासयन्तः (राजादयो मनुष्याः) ४.२१.६. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः शतृ। सीदादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

सदन्यम् सदनं गृहमर्हति (पितृश्रवणं व्यवहारम्) १.९१.२०. [सदनप्राति० अर्हत्यर्थे यत्। सदनमिति व्याख्यातम्]

सदम् सीदन्ति सुखानि यस्मिँस्तं शिल्पव्यवहारं, देहादिकं वा १.२७.३. विज्ञानं गृहं वा १.८९.१. सीदन्ति विद्वांसो यस्मिँस्तत् सत्यं वचः ६.६७.८. प्राप्तं वस्तु ४.३.१२. प्राप्तव्यम् (वस्तु) ६.५०.९. स्थानम् २.३४.४. ज्ञानस्वरूपम् (रुद्रम्=ईश्वरम्) पं० वि०। स्थिरं वर्त्तमानं ज्ञानमाप्तम् १.११४.८. शत्रुहिंसकसैन्यम् १.१२२.१०. सद्यते विज्ञायते प्राप्यते यस्तम् (हव्यं पदार्थम्) ५.४. सीदन्ति यस्मिन् याने तत् १.११६.६. प्राप्तं दुःखम् ५.७७.४. यो न्याये सीदति तम् (सेनापतिम्) १६.१६. अवस्थितम् (वह्निम्) ३.२.१५. सीदन्ति प्राप्नुवन्ति यस्यां ताम् (सभाम्) २५.१४. यः सीदति तम् (अग्निं=पावक इवेश्वरम्) ७.११.२. गृहमिव स्थितिपदम् (अग्निं=विद्वज्जनम्)

४.१.१. सदा १.१८५.८. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे घः। 'पुंसि संज्ञायां घः प्रायेण' सूत्रेण 'वा छन्दसि' नियमेनासंज्ञायामपि घो भवति। घञर्थे को वा। सदम् संवत्सरम् नि० १२.३७. सदम्=सदा नि० ४.१९.]

सदमादः समानस्थानाः (हरयः=अग्न्यादयः) ३.४३.६. [सह-मादपदयोः समासे 'सधमादस्थयोश्छन्दसि' सूत्रेण सहस्य सधादेशः। धस्य दकारश्छान्दसः]

सदमित् यः सदं वेगमिदेति प्राप्नोतीतीदृशोऽश्वोऽग्निः ऋ० भू० १९४, ऋ० १.८.९.१. [सद इत्युपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोः क्विप्। विभक्तेश्चालुक् पूर्वपदस्य। सदः=षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

सदश्वः सन्तः समीचीना अश्वा यस्य सः (सुवीरजनः) ५.५८.४. [सत्-अश्वपदयोः समासः]

सदसस्पतिम् सभापति, सभाध्यक्ष, राजा (ईश्वर) को आर्याभि० २.५२, ३२.१३. **सदसस्पती**=सीदन्ति गुणा येषु द्रव्येषु तानि सदांसि तेषां यौ पालयितारौ तौ (इन्द्राग्नी=वाय्वग्नी) १.२१.५. [सदस्-पतिपदयोः समासः। षष्ठ्या अलुक्। सदस् इति व्याख्यातम्]

सदस्या सदसि सभायां भवा (शुक्=प्रदीप्तिः) ३८.१८. [सदस्प्राति० भवार्थे यत्। ततः स्त्रियां टाप्]

सदस्यैः सदसि भवैः सभ्यैर्जनैः सह ७.४५. [सदस्प्राति० भवार्थे यत्। सदस् इति व्याख्यातम्। (पुरुषस्य) प्रजातिः सदस्यः कौ० १७.७. (पुरुषस्य) प्रजापतिः सदस्यः गो० उ० ५.४. सदस्या ऋतवोऽभवन् तै० ३.१२.९.४.]

सदःसदः सीदन्ति यस्मिन् यस्मिन् तत्तद् गृहम् १९.५९. प्रतिगृहं प्रतिसभां च ऋ० भू० २६२, १९.५९. [सदः-पदस्य वीप्सायां द्वित्वम्]

सदा सर्वस्मिन् काले ६.५. सर्वेषु कालेषु ऋ० भू० ४४. निरन्तरम् ५.७३.५. यथावत् आर्याभि० १.११, [सर्वसर्वनाम्नः सप्तम्यन्तात् काले वाच्ये 'सर्वैकान्यकियत्तदः काले दा' अ० ५.३.१५. सूत्रेण दा। 'सर्वस्य सोऽन्यतरस्यां दि' अ० ५.३.६. सूत्रेण सर्वस्य सादेशः]

सदानः दानेन सह वर्त्तमानः (वसिष्ठः=पूर्णविद्वज्जनः) ७.३३.१२. [सह-दानपदयोः समासे 'वोपसर्जनस्य' सूत्रेण सहस्थाने सादेशः]

सदापृणः यः सदा पृणाति तर्प्पयति सः (जनः) ५.४४.१२. [सदोपपदे पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः]

सदावृध सदैव वर्धक (राजन्) ५.३६.३. **सदावृधः**=सदैव वर्धमानः (राजा) ४.३१.१. सदाऽऽनन्देन वर्धमानः (ईश्वरः) ऋ० भू० ३०८, २७.३९. [सदोपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कः]

सदावृधः यः सर्वदा वर्धते तस्य (पुरुषस्य) २७.३९. [सदोपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सदासहम् सर्वदा दुष्टानां शत्रूणां हानिकारकं दुःखानां च सहनहेतुम् (रयिं=धनम्) १.८.१. [सदोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सदासातमम् सदाऽतिशयेन विभजनीयम् (रयिं=धनम्) ४.३७.५. [सदासाप्राति० अतिशायने तमप्। सदासाः=सदोपपदे षण संविभक्तौ (भ्वा०) धातोः 'जनसनखनक्रमगमो विट्' इति विट्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इत्यात्त्वम्]

सदासाम् सदा संसेवनीयम् (रयिं=धनम्) ७.३९.६. [सदोपपदे षण संविभक्तौ (भ्वा०) धातोः 'जनसनखन०' इति विट्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इत्याकारान्तादेशः]

सदासाः दासैः सेवकैः सह वर्त्तमानाः (प्रजाजनाः) ४.१६.२१. ससेवकाः (राजपुरुषाः) ४.१९.११. भृत्यैः सहिताः (राजपुरुषाः) ४.२४.११. समानदानसेवकाः (अमात्यसेनाप्रजाजनाः) ४.२०.११. [सह-दासपदयोः समासः। 'वोपसर्जनस्ये' ति सहस्थाने सादेशः। दासः=दस्यतेरुपदासयति कर्माणि नि० २.१७.]

सदिवः द्यावा सह वर्त्तमानम् (कुयवं=कुत्सितसङ्गमम्) २.१९.६. [सह-दिव्पदयोः समासे सहस्य सादेशः]

सदृक्षासः पक्षपातं विहाय समानदृष्टयः (मनुष्याः) १७.८४. [समानोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'दृशेः क्सश्च वक्तव्यः' अ० ३.२.६०. वा०सूत्रेण क्सः। ततो जसोऽसुक्। 'दृक्षे चेति वक्तव्यम्' अ० ६.३.८९. सूत्रेण समानस्य सादेशः]

सदृङ् यः समानं पश्यति सः (अ०—पुरुषः) १७.८१. समानदर्शनः (देवः=सभाध्यक्षः) १.९६.७. [समानोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् च' अ० ३.२.६०. सूत्रेण क्विन्। 'दृग्दृशवतुषु' अ० ६.३.८९ सूत्रेण समानस्य सादेशः]

सदृशीः सदृश्यो रात्र्य उषसश्च १.१२३.८. समानस्वरूपाः रात्रीः ६.४७.२१. समाना गतीः ३.३५.३.

[समानोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् च' इति कञ्। 'दृग्दृशवतुषु' इति समानस्य सादेशः। ततः स्त्रियां 'टिड्ढाणञ्०' सूत्रेण ङीप्]

सद्म सीदन्ति यस्मिन् गृहे तत् १.३८.१०. स्थानम् ७.१८.२२. गृहवद्वर्त्तमानं शरीरं वा १.७३.१. **सद्मनोः**=सर्वेषां निवासस्थानयोः (विद्युदाकाशरूपयोः प्रकृत्योः) ३.५५.२. **सद्मनी**=सर्वेषां निवासाधिकरणे (द्यावापृथिवी) १.१८५.६. **सद्मानि**=प्राप्तव्यानि (वस्तूनि) १.१३९.१०. साकाराणि स्थानानि १२.१३. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे मनिन्। सद्म उदकनाम निघं० १.१२. गृहनाम निघं० ३.४. संग्रामनाम निघं० २.१७.]

सद्म सद्मानि स्थानानि १.१७३.३. उत्तमानि कर्माणि स्थानानि वा ४.१.८. [सद्मन् इति व्याख्यातम्। ततः 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण जसो लुक्]

सद्मन् सीदन्ति यस्मिँस्तस्मिन् गृहे ७.१८.११. [सद्मन्-प्राति० 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण ङेर्लुक्। सद्मनी द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०.]

सद्मबर्हिषः सद्म स्थानं बर्हिरुत्तमं यासां ताः (भा० सरित इव प्रजाः) १.५२.३ [सद्मन्-बर्हिष्पदयोः समासः। बर्हिष्=अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. उदकनाम निघं० १.१२. पदनाम निघं० ५.२.]

सद्ममखसम् सीदन्ति यस्मिँस्तत् सद्म जगत्, तन्मखः प्राप्तं यस्मिन्निति तम् (सदसस्पतिं=परमेश्वरम्) १.१८.६. [सद्मन्-मखस्पदयोः समासः। मखः यज्ञनाम निघं० ३.१७. मखस्=मख गत्यर्थे (भ्वा०) धातोरसुन् औणादिकः]

सद्मानम् सीदन्ति यस्मिँस्तम् (गोशालम्) १.१७३.१. यस्मिन् सीदति तम् (गृहम्) ६.५१.१२. [सद्मन् इति व्याख्यातम्। ततो द्वितीयैकवचनम्]

सद्मेव गृहमिव सङ्ग्राममिव १.६७.५. [सद्म-इव-पदयोः समासः]

सद्य पूर्ण करके सं० वि० ८०, अथर्व० ११.५.६.

सद्य-ऊतयः क्षिप्राणि रक्षणादीनि येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५४.१५. [सद्यस्-ऊतिपदयोः समासः। सद्यस् इति व्याख्यास्यते। ऊतिः=अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

सद्यः क्षिप्रम् ४.७.१०. शीघ्रमेव, प्र०—'सद्यः परुत्परारि०' अ० ५.३.२२. 'समानेऽहनि इति सद्यः' इति भाष्यवचनात् समानेऽहन्येतस्मिन्नर्थे सद्य इति शब्दो निपातितः १.८.९. तूर्णम् १.१२२.१४. [अहन्यभिधेये समानस्य सभावो द्यश्च प्रत्ययो निपात्यते 'सद्यः परुत्०' अ० ५.३.२२ सूत्रेण]

सद्यो अर्थम् शीघ्रगामिपृथिव्यादिद्रव्यम् १.६०.१. [सद्यस्-अर्थपदयोः समासः]

सद्योवृधम् यः सद्यो वर्धयति तम् (परमात्मानम्) ३.३१.१३. [सद्यस् इत्युपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सधनित्वम् धनिनां भावेन सह वर्त्तमानं राज्यम् ४.१.९. [सह-धनित्वपदयोः समासः। 'वोपसर्जनस्ये' ति संभावः। धनित्वम्=धनिन्प्राति० भावे त्वः]

सधन्यः समानं धनं विद्यते येषान्ते (राजभृत्याः) प्र०—अत्र मत्वर्थीय ईप् ४.४.१४. [समान-धन्यपदयोः समासे समानस्य सादेशः। धन्यः=धनप्राति० यत्]

सधन्यः धन्यैः सह वर्त्तमानः (सज्जनः) ६.५१.३. [सह-धन्यपदयोः समासः। सह स्थाने सादेशः। धन्यः=धनप्राति० अर्हत्यर्थे यत्]

सधमात् समानस्थानात् २०.४७. [सहोपपदे मदी हर्षे (दिवा०) धातोश्छान्दसो ण्विः। हस्य धकारः]

सधमात् समानस्थानाद् यः सह माद्यति ४.२१.१. **सधमादम्**=सहाऽऽनन्दम् ४.२३.२. यत्र सह माद्यन्ति आनन्दन्ति तम् (सुखम्) ७.३२.१. सह मादयितारम् (ईश्वरम्) १.१८७.१. **सधमादः**=समानस्थानाः (प्रजाजनाः) ७.४३.५. याः सह माद्यन्ति हृष्यन्ति ताः (विदुष्यः स्त्रियः) १०.७. महाऽऽनन्दिता। (सद्गुणकर्मस्वभावा मनुष्याः) १.१२१.१५. समानस्थानानि ६.६९.४. सहस्थानाः (जनाः) ५.२०.४. **सधमादेषु**=सुखेन सह वर्त्तमानेषु स्थानेषु १.५१.८. सहस्थानेषु १९.४४. उत्कृष्ट स्थानों में आर्याभि० १.१४, [सहोपपदे मदी हर्षे (दिवा०) धातोश्छान्दसो ण्विः। हकारस्य धकारादेशः। सहमादेषु प्रयोगे सहोपपदे मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। 'सधमादस्थयोश्छन्दसि' सूत्रेण सहस्य सधादेशः। सधमादम् सहमदनम्। नि० ७.३१. (यजु० १०.७.) अनतिमानिन्य इत्येवैतदाह सधमाद इति श० ५.३.५.१९.]

सधमाद्यानि सहस्थानेषु साधूनि (सख्या=कर्माणि भावा वा) ४.३.४. [सधमादिति व्याख्यातम्। ततः साध्वर्थे यत्]

सधमाः समानस्थाने मन्यमानः (इन्द्रः=राजा) ७.१८.७. [सहोपपदे मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः क्विप्। नस्याकारादेशश्छान्दसः]

सधवीर समानस्थाने वर्त्तमान वीरपुरुष (इन्द्र=राजन्) ६.२६.७. [सह-वीरपदयोः समासः। हस्य धकारश्छान्दसः]

सधस्तुति सह प्रशंसितम् (विज्ञानम्) ५.१८.५ [सह-स्तुतिपदयोः समासः। हस्य धकारश्छान्दसः]

सधस्तुतिम् स्तुत्या सह वर्त्तते ताम् (शिल्पक्रियाम्), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन हकारस्य धकारः १.१७.९. सह-कीर्त्तिम् ४.४४.६. [सह-स्तुतिपदयोः समासः। हस्य धश्छान्दसः]

सधस्थ समानस्थान (सभ्यजन) १८.५९. **सधस्थम्**=सहस्थानम् (अ०—गर्भाशयम्) ११.४८. यत्सह तिष्ठति तत्कारणम् ५.१८. तत्त्वावयवैः सहस्थानम् १.१५४.३. **सधस्थात्**=सहस्थानात्तलात् ११.९. **सधस्थे**=सह तिष्ठति यत्र (दुरोणे=गृहे) ३३.७२. समान शय्या में स० प्र० १०.४०.२. समानस्थाने मेघमण्डले ६.५२.१५. अन्तरिक्षे १३.५३. लोके शरीरे च ऋ० भू० ३०५, १५.५४. [सहोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः। हकारस्य धकारश्छान्दसः। सधस्थे सहस्थाने नि० ३.१५. (यजु० १८.५९) स्वर्गो वै लोकः सधस्थः श० ९.५.१.४६. 'सधमादस्थयोश्छन्दसि' अ० ६.३.९६. सूत्रेण सहस्य सधादेशः]

सधस्था सहस्थानानि (जलस्थलान्तरिक्षाणि) ३.५६.५. समानस्थानानि ३.२०.२. [सधस्थ इति व्याख्यातम्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सधस्थानि समानस्थानानि (तविषाणि=बलानि) ३.१२.८. [सधस्थ इति व्याख्यातम्। ततः प्रथमाबहुवचनं नपुंसके]

सधिषि समानान् शब्दान् शृणोति येन तस्मिन् श्रोत्रे १३.५३. [समान-धिष्पदयोः समासे समानस्य सादेशः। धिष्=धिष शब्दे (जु०) धातोः क्विप् करणकारके]

सधिः षोढा (अग्निः=विद्वान् जीवः) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन हस्य धः, इश्च प्रत्ययः १२.३६. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इः। हस्य धो वर्णव्यत्ययेन]

सधुराः धुरन्धर हुए (हे गृहस्थादिमनुष्यो !) सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.५. [सह-धुर्पदयोः समासे समासान्तोऽकारः]

सध्रीः समानस्थानाः (आपः=जलानि) २.१३.२. **सध्रेः**=सहस्थानस्य (क्षत्रस्य=राष्ट्रस्य) ५.४४.१०. ['सहस्य सध्रिः' अ० ६.३.९५ सूत्रेण 'वा छन्दसि' सहायेनाऽप्रत्ययेऽपि सहशब्दस्य सध्रिरित्यादेशः]

सध्रीचीना सहाऽञ्चन्ती (रात्रिः) ३.५५.१५. [सहोपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' इति क्विन्। 'अनिदिताम्०' इति नलोपे 'सहस्य सध्रिः' अ० ६.३.९५. सूत्रेण सहस्य सध्रिरादेशे 'विभाषाञ्चेरदिक्स्त्रियाम्' अ० ५.४.८ सूत्रेण स्वार्थेऽञ्च्यन्तात् खः। खस्य ईन इत्यादेशः। ततः 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति पूर्वस्य दीर्घे सध्रीचीन इति रूपम्। ततः स्त्रियां टाप्]

सध्रीचीना सहाऽञ्चतः सङ्गतौ भवतः (इन्द्राग्नी=वायुसवितारौ) १.१०८.३. [सध्रीचीनेति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सध्रीचीनान् समान लाभाऽलाभ से एक दूसरे के सहायक (गृहस्थ मनुष्यों) को सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.५. सह वर्त्तमान (गृहस्थ मनुष्यों) को सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.७. **सध्रीचीनाः**=सहवर्त्तमानाः (गुणाः) १.१०५.१०. सहाऽञ्चन्तः (विद्वांसो जनाः) १.१३४.२. **सध्रीचीनेन**=सहाऽञ्चति गच्छति तत्सध्र्यङ्, सध्र्यङ् एव सध्रीचीनं तेन (मनसा=मनोवद्वेगेन), प्र०—'सहस्य सध्रिः' अ० ६.३.९५. अनेन सध्र्यादेशः 'चौ' अ० ६.३.१३८. इति दीर्घत्वम् १.३३.११. संज्ञापकेनाऽनुष्ठापकेन वा (मनसा=अन्तःकरणेन) ४.२४.६. [सध्रीचीनेति व्याख्यातम्। ततः शसि रूपम्]

सध्रीचीः सहवर्त्तमानाः (दिशः) ३७.१७. सहैवाऽञ्चन्तीः (व्याप्तविद्या जनाः) ३.३१.१६. सह गच्छन्तीः (विविधा गतीः) १.१६४.३१. याः सहाऽञ्चन्ति ताः (ऊतयः=रक्षाद्याः क्रियाः) ६.३६.३. [सहोपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विक्०' इति क्विन्। अनिदिताम्०' इति नलोपे 'सहस्य सध्रिः' इति सध्रिरादेशः। ततः स्त्रियाम् 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति ङीप्। ततः 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति पूर्वस्य दीर्घत्वे सध्रीचीति रूपम्। ततो जसः स्थाने पूर्वसवर्णदीर्घः 'सुपां सुलुक्०' इति सूत्रेण]

सध्र्यक् यः सध्रि समानं स्थानं प्राप्नोति सः (विद्वज्जनः) २.१७.३. यः सहाऽञ्चति सः (यजमानः) ४.४७.२. सह सेवमानम् (राधः=धनम्) १.५१.७. यत्सहाऽञ्चति (पाथः=अन्नमुदकं वा) ३.३१.६. **सध्र्यञ्चः**=सहाऽञ्चन्तः (मरुतः=मनुष्याः) ५.६०.३. ये सहाऽञ्चन्ति ते (राजभृत्याः) ४.४.१२. [सहोपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। 'सहस्य सध्रि'

रिति सहस्य सध्रिरित्यादेशः]

सध्र्यञ्चा सह प्रशंसनीयौ (इन्द्राग्नी=वायुसवितारौ) १.१०८.३. [सध्रचक् इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः । 'उगिदचां सर्वनामस्थाने०' इति नुम्]

सन् वर्त्तमानः (विद्वज्जनः) १.७६.५. भवन् (परमेश्वरः सभाध्यक्षो वा) १.१००.४. [अस् भुवि (अदा०) धातोः शतृ]

सनकात् सनातनात्कारणात् ३.२९.१४. **सनकाः**= सनन्ति सेवन्ते परपदार्थान् ये ते (दस्यवो जनाः), प्र०—अत्र 'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोरपूर्वस्यापि' उ० २.३२, १.३३.४. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'क्वुन् शिल्पिसंज्ञयोरपूर्वस्यापि' उ० २.३२. इति क्वुन् । सनात्=चिरम् नि० १२.३६.]

सनजा या सनेति सनातनाज्जायते सा (द्विता) १.६२.७. सनेन विभागेन जाता (धीः=प्रज्ञा) ३.३९.२. [सनोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः । ततः स्त्रियां टाप् । सनेत्यव्ययं सदार्थे । अथवा षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

सनत् सनातनम् (अश्वादिपशुम्) ५.६१.५. सदा, यथावन्निरन्तरं वा १.१००.१८. [सनदिति स्वरादिपाठादव्ययत्वम्]

सनत् सेवेत १.१००.१८. सम्भजेत्, प्र०—लेट्-प्रयोगोऽयम् १.१००.६. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लेट्]

सनता सनतनानि सनातनानि (रत्ना=रमणीयानि धनानि) ३.३.१. नतेन सह वर्त्तमानानि (अपांसि= कर्माणि) २.३.६. [सन् इत्यव्ययं स्वरादिषु पाठात् । सन् इत्युपपदे अत सातत्यगमने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । सनतप्राति० शेर्लोपश्छान्दसः । अथवा सह-नतपदयोः समासे 'वोपसर्जनस्ये' ति सहस्य सादेशः । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सनन्तः सेवमानाः (मनुष्याः) ७.५२.१. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः शतृ]

सनयः सनातनाः (पृथिव्यादिपदार्थाः) ३.२०.४. उत्तमाः सेवाः १.१००.१३. विभक्तयः (उषसः) ४.५१.४. सम्भक्तयः (वाजाः=व्यवहाराः) ३.३०.२१. **सनये**= संविभागाय ४.२०.३. विभागाय ६.२६.८. राज्यसेवनाय १.११६.२१. सुखानां सम्भोगाय १.३०.१६. सुखसेवनाय १.११६.१२. **सनिम्**=सेवनीयां सत्यासत्ययोर्विभाजिकां वाणीम् ५.२७.४. पापपुण्यानां विभागेन फलप्रदातारम् (परमेश्वरम्) १.१८.६. सत्यासत्यविभाजिकां धियम् ६.६१.६. सनन्ति सम्भजन्ति सुखानि यस्मिन् व्यवहारे तम् प्र०—अत्र सनधातोः 'खनिकष्यजसिवसिवनिसनि०' उ० ४.१४५. इति अधिकरण इः प्रत्ययः १.२७.४. सम्भजमानाम् (इडां=वाचम्) ३.७.११. विभक्ताम् (इडाम्) ३.१.२३. सनन्ति संविभजन्ति सत्यासत्ये यया ताम् (मेधां=प्रज्ञाम्) ३२.१३. विद्यादिशुभगुणादानम् ३.२३.५. याचमानम् (लक्ष्यम्) ३.२२.५. सम्यग् भजनीय और सेव्य (ईश्वर) को आर्याभि० २.५२, ३२.३. संविभागम् ६.७०.६ संविभाजकम् (सर्वविद्यामन्थनसारम्) ३.५.११. [षण् सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'खनिकष्य' उ० सूत्रेण इः । सनये सवनाय नि० ६.२२. सनयं पुराणम् नि० ४.१९.]

सनरस्य संभज्यमानस्य (पदार्थस्य व्यवहारस्य वा), प्र०—अत्र सनधातोर्बाहुलकादौणादिकोऽरन्-प्रत्ययः १.९६.८. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अरन्]

सनवथ ओषधिदानेन सेवध्वम्, प्र०—अत्र विकरणद्वयम् १२.७९. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लट् । 'व्यत्ययो बहुलम्' इति द्विविकरणता । तेन उ-शप्-विकरणौ]

सनवित्तः यः सनातनेन वेगेन वित्तो लब्धः (अध्वा= मार्गः) ७.४२.२. [सन-वित्तपदयोः समासः । सनेत्यव्ययं सदार्थे । वित्तः=विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्तः]

सनश्रुत सत्यासत्यविवेकिनां सकाशाच्छ्रुतं येन यद्वा सनं सत्यासत्यविभाजकं वचनं श्रुतं तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र= विद्यैश्वर्ययुक्त राजन्) ३.५२.४. **सनश्रुतम्**=यः सनातनानि शास्त्राणि शृणोति तम् (सन्तानम्) ३.११.४. [सन-श्रुतपदयोः समासः । सनः=षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । अथवा सनेत्यव्ययम् सदार्थे । सनोपपदे श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । ह्रस्वस्य तुगागमे द्वितीयैकवचने सनश्रुतमिति रूपम्]

सना सनानि प्रसिद्धानि शौर्याणि १.१७४.८. सनातनानि (पौंस्यानि=बलानि) १.१३९.८. सदा ५.७५.२. सनातनम् (महदनादिभूतं ब्रह्म) ३.५४.९. [सदा इति व्याख्यातम् । दस्य नकारो वर्णव्यत्ययेन]

सना संसेविनौ (पितरा=पितरौ) ४.३३.३. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोः पचाद्यच् । ततो द्विवचनस्याकारः]

सनाजुरा सदा जरावस्थास्थौ (पितरा=पितरौ) ४.३६.३. [सना इति व्याख्यातम् । तदुपपदे जृष् वयोहानौ

(दिवा०) धातोः क्विप् । 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.१०३. सूत्रेण ॠकारस्योत्वं रपरत्वं च । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सनाजुवः सनातनी जूर्वेगो यासां ताः (ओषधीः) १.१४१.५. [सना-जूपदयोः समासः । सनेति व्याख्यातम् । जूः=जु गतौ (सौत्रो धातुः) ततः 'भ्राजभास०' इति क्विप्]

सनात् सम्भजनात् १.५१.६. **सनानि**=संविभागयुक्तानि वस्तूनि १.९५.१०. कर्मभिः संभक्तानि (ऐश्वर्यधनानि) ३.१.२०. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । ततः पञ्चम्येकवचने रूपम्]

सनात् सर्वदा १.५५.२. सनातनात् कारणात् १.६२.८. सनातनः (इन्द्रः=जीवात्मा) ७.३२.२४. नित्यम् ३४.५४. निरन्तरम् २.१६.१. [सनादित्यव्ययं स्वरादिषु पाठात् । सनात् चिरम् नि० १२.३६.]

सनाभिः समाना नाभिर्बन्धनं यस्य सः (कालः) १.१६४.१३. [समाना-नाभिपदयोः समासे पूर्वपदस्य ह्रस्वादेशे 'ज्योतिर्जनपदरात्रिनाभि०' अ० ६.३.८५. सूत्रेण समानस्य सादेशे रूपम् । सनाभयः अंगुलिनाम निघं० २.५. नाभिः सन्नहनान् नाभ्या संनद्धा गर्भा जायन्त इत्याहुरेतस्मादेव ज्ञातीन्त्सनाभय इत्याचक्षते सबन्धव इति च नि० ४.२१.]

सनायते सना सनातन इवाचरति १.६२.१३. [सनेति व्याख्यातम् । तत आचारेऽर्थे क्यङन्ताल्लट्]

सनायुवः सनातनस्य कर्मणः कर्त्तार इवाचरन्तः (मतयः=विद्वज्जनाः) १.६२.११. [सनेति व्याख्यातम् । तत आचारेऽर्थे क्यङ् । ततः 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः । 'जसादिषु छन्दसि वा वचनम्' इति गुणस्य विकल्पेन तदभाव उवङ्]

सनाः भोक्त्र्यः (युवतयः स्त्रियः) ३.१.६. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोः पचाद्यच् । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

सनिता विभाजकः (न्यायाधीशो राजा) २.२३.१३. संविभाजकः (इन्द्रः=सेनेशः) १.१२९.२. संविभक्ता (सेनेशः) १.१७५.३. विभक्ता (जनः) ५.५०.४. ज्ञानस्य सुखस्य विभक्ता (सेनाध्यक्षः) १.२७.९. **सनितुः**=रक्षणानि यमस्य, भा०—शफानां रक्षणायायसो निर्मितस्य (क्षुरस्य) २९.१६. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । सनितुः हस्तग्राहस्य नि० ३.६.]

सनिता संभक्तानि (धनानि), प्र०—अत्र वन सन संभक्तौ इति धातोर्बाहुलकात्तन् प्रत्ययः १.१००.९. [सनितप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

सनितौ भोगसंविभाग लाभे, प्र०—अत्र 'तितुत्रतथ०' अ० ७.२.९. इत्यस्य 'अग्रहादीनामिति वक्तव्यम्' इति वार्त्तिकेनेडागमः १.८.६. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० तन्]

सनिषन्त विभजन्ते ५.१२.४. **सनिषामहे**—संभज्य प्राप्नुयाम ३.११.९. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लेटि सिपि च रूपम् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सनिष्णत संभजेयुः, संभजन्तु वा १.१३१.५. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'व्यत्ययो बहुलम्' इति द्विविकरणता सिप् श्ना च]

सनिष्यति संभजेत् ५.३१.११. **सनिष्यसि**=संभजिष्यसि ४.२०.३. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लृट्]

सनिष्यन् संभक्ष्यमाणः (यजमानः सज्जनः) ३.२.३. **सनिष्यन्तः**=संविभागं करिष्यन्तः (सज्जनाः) ३.२.४. सेवनं करिष्यमाणाः (सज्जनाः) ३.१३.२. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'लृटः सद्वा' सूत्रेण लृटः स्थाने शतृ]

सनिष्यन्तीनाम् संभजन्तीनाम् (ओषधीनां=सोमयवादीनाम्) १२.८२. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्लृटः शत्रन्तात् स्त्रियां ङीप्]

सनिष्यवः विभागं करिष्यमाणाः (नद्यः=सरितः) ४.५५.६, सम्भजमानाः (जनाः) १.१३१.२. संविभागमिच्छवः (गूर्त्तयः=उद्यमयुक्ताः कन्याः) १.५६.२. आत्मनः सनिं संविभागमिच्छवः (राजपुरुषाः), प्र०—सनिशब्दात् क्यचि लालसायां सुक्, तत उः ९.१७. [सनिः=षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० इः । सनिपदाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसि' इत्युः । क्यचि 'सुग्वक्तव्यः' अ० ७.१.५१. वा०सूत्रेण सुगागमः]

सनीडाः समाना नीडा बन्धनाधारा गृहविशेषा अग्न्यागारविशेषा वा येषु ते (बन्धुराः=बन्धनविशेषाः) १.३४.९. समीपस्थाः (विद्वांसो जनाः) १.१६५.१. समानं नीडं प्रशंसनीयं गृहं येषान्ते (नरः=श्रेष्ठा मनुष्याः) ७.५६.१. समानस्थानाः (विशः=प्रजाजनाः) १.६९.३. एकेश्वराधिकरणसमानस्थानाः (जनयः=प्रजाः) १.७१.१. समीपे वर्त्तमानाः (अमृताः=विद्वज्जनाः) १.६२.१०. **सनीडे**=समीपे १.६२.७. **सनीडेभिः**=समीपवर्त्तिभिः (रुद्रेभिः=वीरजनैः) १.१००.५. [समाननीडपदयोः समासे 'समानस्य छन्दसि०' अ० ६.३.८४. सूत्रेण समानस्य सादेशः । नीडः=नितराम् इलन्ति स्वपन्ति यत्रेति विग्रहे नि+इल स्वप्न-

क्षेपणयोः (तुदा०) धातोर्घञर्थे कः। लस्य डकारो वर्णव्यत्ययेन]

सनुतरः सनातनविद्यः (राज्याधिकारिजनः) ४.३८.४ [सनुतः निर्णीतान्तर्हितनाम निघं० ३.२५. सनुतर् स्वरादिषु पाठादव्ययम्। तत अर्श आदित्वान् मत्वर्थेऽच्]

सनुतः सदैव ६.४७.१३. नैरन्तर्ये २.२९.२. सततम् १.९२.११. सनातनात् (कालात्) ५.२.४. सदा २०.५२. [सनुतर् स्वरादिषु पाठादव्ययम्]

सनुत्यः सनुतेषु नम्रादिगुणैः सह वर्त्तमानेषु भवः (प्रजारक्षको जनः) २.३०.९. निर्णीतान्तर्हितेषु सिद्धान्तेषु भवः साधुर्वा (महाविद्वज्जनः), प्र०–सनुतरिति निर्णीतान्तर्हितनाम निघं० ३.५, ६.५.४. **सनुत्येन**=सत्प्रेरणीयेन (त्यजसा=त्यागेन) ६.६२.१०. [सनुतर् निर्णीतान्तर्हितनाम निघं० ३.२५. ततो भवार्थे साध्वर्थे वा यत्। रेफस्य लोपश्छान्दसः]

सनुत्री विभाजिका (युवतिः स्त्री) १.१२३.२. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उत्रः। ततः स्त्रियां ङीप् छान्दसः]

सनुयाम दद्याम, संभजेम, प्र०—अत्र पक्षे विकरणव्यत्ययः १.१००.१९. संभजेमहि १.१०१.११. याचेम ७.२५.५. **सनेत्**=सम्यक् सेवयेत्, अ०—संसेवयेत् १.५.९. **सनेम**=विभजेम ७.५२.१. संभजेम १.१८९.८. अन्येभ्यो दद्याम १.१२४.१३. सुखानि भजेम १.१७.६. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्। विकरणव्यत्ययेन उः। अथवा षणु दाने (तना०) धातोर्लिङ्]

सनेन विभक्तेन (वस्तुना) २.२९.३. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

सनेमि सनातनम्, पुराणम् (शं=सुखकारका विद्वांसः) ७.५६.९. २१.१०. पुरातनम् (दिद्युं=शस्त्राऽस्त्रम्) ९.२५. सनातनेन नेमिना धर्मेण सह वर्त्तमानं राज्यमण्डलम् ९.२५. [सनेमि पुराणनाम निघं० ३.२७. सनेमि क्षिप्रम् निघं० १२.४४. अथवा सह-नेमिपदयोः समासः। नेमिः वज्रनाम निघं० २.२०. णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'नियो मिः' उ० ४.४३. सूत्रेण मिः]

सनेमि समानो नेमिर्यस्मिँस्तत् (चक्रम्) १.१६४.१४ [समान-नेमिपदयोः समासः। नेमिरिति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

सनेयम् संभजेयम् १८.३५. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

सनोति सम्पन्नं करोति ४.१७.९. प्राप्नोति ६.६०.१. विभजति, ददाति ३.२५.२. **सनोतु**=ददातु ६.५४.५. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन उः। अथवा षणु दाने (तना०) धातोर्लट्]

सन्तनिः सम्यक् विस्तारकः (नियमपालको जनः) ५.७३.७. [सम्+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्बाहु० औणा० इः]

सन्तपन्ति सम्यक् क्लेशयन्ति १.१०५.८. [सम्+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लट्]

सन्तम् वर्त्तमानम् (चतुर्वयं व्यवहारम्) १.११०.३. विद्यमानम् (अग्निं=विद्युदाख्यम्) ४.७.६. अभिव्याप्य स्थितम् (राजानम्) ५.८.२. **सन्तः**=वर्त्तमानाः (असुराः=दुष्टा मनुष्याः) २.३०. [अस भुवि (अदा०) धातोः शतृ। सत्प्राति० द्वितीयैकवचनम्। अन्यत्र जस्]

सन्तरन्तः दुःखस्याऽन्तं प्राप्नुवन्तः (जनाः) ४.१. [सम्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः शत्रन्ताज्जस्]

सन्तराम् अतितराम् २७.८. [सन्=अस भुवि (अदा०) धातोः शत्रन्तात् सुः। सन् सुवन्तादतिशायने तरप्। सन्तरप्राति० आमु-प्रत्ययश्छान्दसः। 'किमेत्तिङव्ययघाद्०' इति सूत्रेणाप्राप्तोऽपि 'वा छन्दसि' नियमेनामुः]

सन्तरुत्रम् दुःखात् सम्यक् तारकम् (रयिं=श्रियम्) ३.१.१९. [सम्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृचि 'ग्रसितस्कभित०' अ० ७.२.३४. सूत्रेण उडागमः]

सन्तवीत्वत् बहुबलः सन् (वाजी=तुरङ्गः) ४.४०.४ [सम्+तनु विस्तारे (तना०) धातोर्लिङ्। धातोरनुनासिकलोपः, प्रत्ययतकारस्य त्वद् आदेशश्छान्दसः। अथवा सम्+तनु विस्तारे (तना०) धातोः शतृ। 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण श्लौ, अभ्यासस्य वीगागमः, धातोश्च अनुभागस्य लोपश्छान्दसः]

सन्तः सत्पुरुषाः ६.६६.४. [अस भुवि (अदा०) धातोः शत्रन्ताज् जस्। अथवा षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० तन्]

सन्ता वर्त्तमानौ (इन्द्राग्नी=वाय्वग्नी) १.२१.४. विद्यमानौ (पितरा=पितरौ) ४.३६.३. [अस् भुवि (अदा०) धातोः शत्रन्ताद् द्विवचनस्याकारादेशः]

सन्ताप्तम् सम्यक् तपेः, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् ५.३३. सन्ताप युक्त रखो आर्याभि० २.१३, ५.३३. [सम्+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

सन्ताय्यमाने सम्यक् विस्तार्यमाणे पाल्यमाने वा

(सरसि=तडागे) ३९.५. [सम्+तायृ सन्तानपालनयोः (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

सन्तारणः यः सम्यगध्वनस्तारयति पारं करोति सः (वह्निः=अग्निः) ३५.१३. [सम्+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् 'कृत्यल्युटो वहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

सन्ति वर्त्तन्ते २.२८.१. भवन्तु, प्र०—अत्र लोडर्थे लड् वा १.८.९. भवन्ति १.११.८. **सन्तु**=भवेयुः १.२१.५ होवें स० प्र० १९०, अथर्व० १९.४०.३. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट्]

सन्तिष्ठस्व सुष्ठु साधनेन स्थिरो भव, सन्तिष्ठते वा २.१९. [सम्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'समवप्रविभ्यः स्थः' इत्यात्मनेपदम्]

सन्त्य सनन्ति सम्भजन्ति ये ते सन्तस्तेषु साधो (वसो=विद्वज्जन) १.४५.९. सन्तौ वर्त्तमाने साधो (विप्र=मेधाविजन) ५.५१.३. सन्तौ सनने क्रियासंविभागे भवः स सन्त्योऽग्निः, प्र०—अत्र सनधातोर्बाहुलकादौणादिकस्तिप्रत्ययः, ततो 'भवे छन्दसि' इति यत् १.१५.१२. सन्तिषु सत्यासत्यविभाजकेषु साधो (अग्ने=विद्वज्जन) ३.२१.३. सनन्ति सम्भजन्ति सुखानि याभिः क्रियाभिस्तासु साधो (विद्वज्जन) १.४५.५. सन्तौ दाने साधुस्तत्सम्बुद्धौ (ईश्वर) १.३६.२. [सन्तिप्राति० भवार्थे साध्वर्थे वा यत् । सन्ति=षण सम्भक्तौ (भ्वा०) षणु दाने (तना०) धातोर्बाहु० औणा० तिः]

सन्दत्त सम्यक्तया देहि १२.९३. अच्छे प्रकार देवें सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२९. [सम्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लोट्]

सन्ददस्वान् सम्यग् दाता (अग्निः=विद्वज्जनः) २.२.६. [सम्+दासृ दाने (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । धातोर्ह्रस्वश्छान्दसः]

सन्ददी याभ्यां सम्यग् ददतस्तौ (अग्निवायू) २.३९.७. [सम्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'आदृगम०' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किः । लिड्वद्भावाच्च द्वित्वम्]

सन्ददीरन् सम्यक् प्रयच्छेयुः ७.४८.४. [सम्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्लिङ्]

सन्ददृश्रे सम्यग् दृश्यते ३.८.१०. [सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लिट् कर्मणि । 'भावकर्मणोरि' त्यात्मनेपदम्]

सन्ददे सम्यक्तया ददामि ४.४४.५. [सम्+दद दाने (भ्वा०) धातोर्लट् । उत्तमपुरुषस्यैकवचने रूपम्]

सन्दधन्विरे सम्यग् धरन्ति ४.३१.६. **सन्दधन्वे**=सम्यक्तया प्रीणामि ३.३१.१. [सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट् । 'छन्दस्युभयथा' अ० ३.४.११७ सूत्रेण लिटः सार्वधातुकत्वाद् विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

सन्दधातु एकीभावेन धारयतु २.१३. **सन्दधुः**=सन्दधतु १२.१०८. सन्धिताः कुर्युः ३.२०.३. सन्दध्युः २०.५९. सम्यग् दधति १.८०.१५. [सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लिट्]

सन्दशस्य सम्यग् क्षयं गमय ३.७.१०

सन्दहामि सम्यक्तया भस्मीकरोमि १.१३३.१. [सम्+दह भस्मीकरणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

सन्दाधार सम्यग् धरति २५.१०. [सम्+धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोर्लिट् । तुजादित्वादभ्यासस्य दीर्घः]

सन्दानम् शिरोबन्धनादि २५.३९. समीचीनं दानं यस्मात्तम् (विद्युदग्निम्) १.१६२.१६. सम्यग् दीयते यत्तत् (दाम=रशना) १.१६२.८. पादादिबन्धनादीनि २५.३१. [सम्+दो अवखण्डने (दिवा०) धातोर्ल्युट् । अथवा सम्-दानपदयोः समासः]

सन्दायि सम्प्रदीयते १.१३९.१ [सम्+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्मणि लुङ् अडभावः]

सन्दितम् सम्यग् बलाऽवखण्डितम् (अश्वं=रथवोढारं वाजिनम्) १.२५.३.

सन्दिताय यः सम्यग् दीयते खण्डयते तस्मै (जनाय) २२.७. [सम्+दो अवखण्डने (दिवा०) धातोः क्तः । 'द्यतिस्यति०' इतीकारान्तादेशः]

सन्दिदीहि सम्यग् देहि ५.४.२. [सम्+दीङ् क्षये (दिवा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन श्लुः । व्यत्ययेन परस्मैपदश्च । धातूनामनेकार्थकत्वादत्र दानार्थे दीङ्]

सन्दिद्युतत् सम्यक्तया विद्योतते, भा०—सर्वान् प्रकाशयति ३८.२२. [सम्+द्युत दीप्तौ (भ्वा०)धातोर्णिजन्ताल्लुङ् । 'द्युतिस्वाप्योः सम्प्रसारणम्' इत्यभ्यासस्य सम्प्रसारणम्]

सन्दिहः सन्दिहत्यसौ सन्दिहः (इन्द्रः=सभासेनाशालान्यायाधीशः) १.५१.९. [सम्+दिह उपचये (अदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

सन्दीदिहि सम्यक् कामय २७.१. [सम्+दीधीङ् दीप्तिदेवनयोः (अदा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम् ।

धातोर् धी-स्थाने दि इत्यादेशः पृषोदरादित्वात्]

सन्दृक् सम्यग् दर्शयिता (अग्निः) १.६६.१. समान-दृष्टिः ४.६.६. यः सम्यक् पश्यति (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.१.६. यथावत् सब के पाप-पुण्यों को देखने वाला (परमात्मा) आर्याभि० २.४०, १७.२६. **सन्दृशम्**=सम्यग्दर्शनम् ६.१६.८. **सन्दृशि**=समीचीनं दिग्दर्शनं यस्मिन् व्यवहारे तस्मिन् ४.२३. सम्यग्-दर्शने समान-दर्शनविषये वा ३६.१६. सादृश्ये ५.७४.६. सम्यग् द्रष्टव्ये (वर्णे=शुक्लादिगुणे) २.१.१२. [सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'त्यदादिषु दृशोऽनालोचने कञ् च' सूत्रेण 'वा छन्दसि' नियमेनालोचनेऽपि क्विन् । संदृक् संद्रष्टा नि० १०.२६. सन्दृशि सन्दर्शनाय नि० १०.४०.]

सन्दृशे सम्यग् दर्शनाय ३.३८.१. सम्यग् द्रष्टुम् २.१३.५. [सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे 'दृशे विख्ये च' अ० ३.४.११ सूत्रेण के-प्रत्ययः]

सन्दृक्षसे सम्यग् दृश्यसे, अ०—सङ्गत्य दृश्यते, दृष्टिपथमागच्छति, प्र० – अत्र लडर्थे लेट् मध्यमैकवचन-प्रयोगः 'अनित्यमागमशासनम्' इति वचनप्रामाण्यात् 'सृजि-दृशो०' इत्यम् न भवति १.६.७. [सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लेट् । सिब्विकरणः । 'सृजिदृशोर्झल्यम्०' इत्यमागमो न भवति छान्दसत्वात्]

सन्दृष्टिः सम्यक् पश्यन्ति यया सा (विद्या) ६.१६.२५. सम्यग् दृष्टिः प्रेक्षणम् ४.१०.५. **सन्दृष्टौ**=सम्यग्दर्शने ६.१.४. [सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

सन्द्युम्नेन श्रेष्ठतया विद्याधर्मादिगुणप्रकाशवता (राया) १.४८.१६. [सत्-द्युम्नपदयोः समासः । द्युम्नम् धननाम निघं० २.१०.]

सन्द्रवन्ति सम्यग् गच्छन्ति २६.४८. [सु+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लट्]

सन्धमति सम्यक् प्राप्नोति १७.१६. यथायोग्य जन्ममरणादि को प्राप्त करा रहा है आर्याभि० २.३४, १७.१६. [सम्+धमति गतिकर्मा (निघं० २.१४) धातोर्लट्]

सन्धये परस्त्रीसमागमनाय ३०.६. [सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'उपसर्गे घोः किः' अ० ३.३.९२. सूत्रेण भावे किः]

सन्धिना सन्धानेन (अन्तरिक्षेण=आकाशेन) १५.६. [सन्धिरिति व्याख्यातम् पूर्वपदे । सन्धिः (स्तोत्रम्) एषा वा उक्थस्य सम्मायद् रात्रिः (=सन्धिस्तोत्रम्) त्रीण्युक्थानि, (अग्निरुषा अश्विनाविति) त्रिदेवत्यः सन्धिः तां० ९.१.२५-२६.]

सन्धिष्व सम्यक्तया धर १.९१.१८. [सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'सुधितवसुधित०' अ० ७.४.४५ सूत्रेण लोटि मध्यमैकवचने दधातेरित्त्वमिडागमो वा प्रत्ययस्य, द्विर्वचनाभावश्च निपात्यते]

सन्धुः सम्यग् धरन्ति १.७३.७. [सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ् । अटोऽभावः]

सन्धूनुहि सम्यक् प्रेरय १.१०.८. [सम्+धूञ् कम्पने (क्र्या०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

सन्धेहि सम्यक् संयोजय १.९.७. [सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोट् । 'घ्वसोरेद्धावभ्यास-लोपश्च' इत्येकारादेशोऽभ्यासलोपश्च]

सन्नते अनुकूले २६.१. [सम्+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोः क्तः]

सन्नद्धः तत्परः सम्बद्धो वा (वनस्पतिः=राजा) २९.५२. सम्यग् बद्धः (जीवः) १.१६४.३७. सम्यक् सज्जः (=राजा) ६.४७.२६. [सम्+णह बन्धने (दिवा०) धातोः क्तः]

सन्नद्धा सम्यग् बद्धा (वेगवती भूमिः) ६.७५.११. [सम्+णह बन्धने (दिवा०) धातोः क्तः ततः स्त्रियां टाप्]

सन्नमन्त सन्नमन्ति ७.३१.९. **सन्नमन्ताम्**=सम्यक् प्राप्नुवन्तु, भा०—सर्वतो वर्द्धन्ताम् ३५.२०. [सम्+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लङ् अडभावः, व्यत्ययेन आत्मनेपदश्च]

सन्नयथः प्रापयथः ५.६५.६. [सम्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

सन्नयः सम्यक् नयो नीतिर्यस्य सः (राजपुरुषः) २.२४.९. [सम्-नयपदयोः समासः । नयः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'एरच्' इत्यच्]

सन्नवन्त संस्तुवन्ति ६.७.२. **सन्नवन्ते**=सम्यक् स्तुवन्ति ६.७.४. [सम्+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लङ् । अडभावश्छान्दसः । अन्यत्र लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदं शप् च]

सन्नशे सम्यक् नश्येत् २३.१५. [सम्+णश अदर्शने (दिवा०) धातोर्लिङ् । त्-लोपश्छान्दसः शप् च]

सन्नः अवस्थापितः (समुद्रः=अन्तरिक्षम्) ८.५९. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्तः । 'रदा-भ्याम्०' अ० ८.२.४२ सूत्रेण दकारतकारयोर्नकारौ]

सन्निनेथ सम्यक् नयसि ७.२८.३. **सन्नेषि**= उत्तमतया नयसि ५.४२.४. [सम्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लिट् । अन्यत्र लटि शपो लुक्]

सन्नुद सबको प्रसिद्धि से प्रेरणा कीजिए सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.६४. [सम्+णुद प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लोट्]

सन्न्या समानान् पदार्थान् नयति यया तया (मेधया=प्रज्ञया) ५.७. सर्वासां विद्यानां संविभागकर्त्र्या (मेधया) १२.७. **सन्न्याम्**=सत्यं नीयते यया तस्याम् (वाचि=वेदवाण्याम्) ८.५४. [सम्+णीञ् प्रापणे(भ्वा०) धातोः क्विप् । सन्नीप्राति० टा]

सन्यसे सनां विभजतां मध्ये प्रयत्नाय ३.३१.१६. [सन्-यस्पदयोः समासः । सन्=षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । यस्=यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोर्भावे क्विप् । ततश्चतुर्थी]

सन्वन्तु संभजन्तु १.१२२.१२. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन उः]

सपत्नक्षित् सपत्नान् शत्रून् क्षयति यया सा, अ०—सपत्नक्षिता (अनिशिता=क्रियया) १.२९. समी०—अत्र 'कृतो बहुलमि' ति वार्त्तिकेन करणकारके क्विप् । क्षि क्षये इत्यस्य रूपम् । एतदुव्वटमहीधराभ्यां क्षिणु हिंसायामित्यस्य भ्रान्त्या व्याख्यातम् । सपत्नान् शत्रून् क्षयति येन सः (सङ्ग्रामः) १.२९. [सपत्नोपपदे क्षि क्षये (भ्वा०) धातोः 'कृतो बहुलमि' ति करणे क्विप् । ह्रस्वस्य पिति कृति तुगागमः]

सपत्नदम्भनम् यः सपत्नान् दम्भयतीति तम् (जगदीश्वरं भौतिकमग्निं वा) ३.१८. [सपत्नोपपदे दम्भु दम्भने (स्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' कर्त्तरि ल्युट्]

सपत्नसाही यया सपत्नान् दोषान् सहन्ते मृष्यन्ति दूरीकुर्वन्ति सा, यया दुष्टानि शीलानि सहन्ते सा, यया शत्रून् सहन्ते सा (अ०—वाक्) ५.१०. [सपत्नोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' ततः स्त्रियां ङीप्]

सपत्नहा यः सपत्नानरीन् हन्ति सः (विद्वज्जनः) १२.५. शत्रुदोषहन्ता विद्वज्जनः २७.३. यः सपत्नान् शत्रून् मेघाऽवयवान् वा हन्ति सः (सूर्यः सभाद्यध्यक्षो वा) ५.२४. [सपत्नोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्विप् । ततः सौ 'सौ च' इति दीर्घः]

सपत्नान् सपत्नीव वर्त्तमानानरीन् १५.१. विरोधे वर्त्तमानान् सम्बन्धिनः १५.२. **सपत्नाः**=शत्रवः १७.२२. [सह एकार्थे पततीति विग्रहे सहोपपदे पत्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्नः प्रत्ययः औणादिकः । सहस्य सादेशः । सपत्नो वाऽभिमातिः (यजु० ६.३७) श० ३.९.४.९. पाप्मा वै सपत्नः श० ८.५.१.६. इमं देवाः असपत्नं सुवध्वमितीमं देवा अभ्रातृव्यं सुवध्वमित्येव तदाह श० ५.४.२.३.]

सपत्नी समाना पत्नी यस्याः सा (स्त्री) ३.१.१०. [समाना-पत्नीपदयोः समासे समानस्य सभावः]

सपत्नी सपत्नी इव वर्त्तमाने (अहोरात्रे) ३.६.४. [व्याख्यातम् पूर्वपदे]

सपत्नीरिव यथाऽनेकाः पत्न्यः समानमेकं पतिं दुःखयन्ति तद्वत् १.१०५.८. [सपत्नीः-इवपदयोः समासः]

सपन्त आक्रोशन्ति ५.३.४. **सपन्ते**=आक्रुश्यन्ति ७.३८.५. **सपामि**=आक्रुशामि ५.१२.२, **सपेम**= शपथैर्नियमयेम ५.४३.१२. आक्रुश्याम निन्द्येम ४.४.६. आक्रुश्येम ६.१५.१०. सम्बन्धं कुर्याम ३७.२०. [शप आक्रोशे (भ्वा०) धातोर्लङ् । अटोऽभावः । अन्यत्र लट् लिङ् च । 'शप उपलम्भन इति वक्तव्यम्' इत्यात्मनेपदं व्यत्ययेन वा । शस्य सकारो वर्णव्यत्ययेन । षप् समवाये (भ्वा०) धातोर्वा रूपम्]

सपन्तः दुष्टानाक्रोशन्तः (सज्जनाः) २.११.१२. समवयन्तः (विद्वांसो जनाः) १.६८.२. [शप आक्रोशे (भ्वा०) धातोः शतृ । अथवा षप समवाये (भ्वा०) धातोः शतृ । सपति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४.]

सपर्य प्रीत्या सम्यक् सेवय, ऋ० भू० २१४. अथर्व० १४.२.१८. सेवन किया कर, स० प्र० १५२. अथर्व० १४.२.१८. **सपर्यत**=सेवध्वम् ५.१४.५. परिचरत ४.३५. **सपर्यतः**=सेवेते ६.४४.५. **सपर्यति**=सेवते १.१२.८. **सपर्यन्**=परिचरन्ति १.७०.५. **सपर्यन्ति**= सेवन्ते १.८४.१२. **सपर्यात्**=सेवेत १.९३.८. **सपर्यान्**= परिचरेयुः, सेवेरन् १.७२.३. **सपर्यामि**=परिचरामि १.५८.७. सेवयामि ३.५४.३. **सपर्येम**=सेवेमहि २.६.३ [सपर्यति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. ततो लोट् । अन्यत्र लट् लङ् लेट् लिङ् च । सपर्यतः=परिचरतः नि० ११.६.]

सपर्यजित् यः सपर्यान् सङ्ग्रामान् जयति सः (ऋभुः=प्रशस्तो विद्वज्जनः), प्र०—सपर्य इति सङ्ग्रामनाम निघं० २.१७, १.१११.५. [सपर्योपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप् । सपर्य संग्रामनाम निघं० २.१७. मस्य पकारो वा]

सपर्यन् सेवमानः (विद्वज्जनः) ३.३१.१. **सपर्यन्तः**=परिचरन्तः (विद्वांसो जनाः) ५.२१.३. [सपर्यति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. ततः शतृप्रत्ययः। सपर्यन् पूजयन् नि० ३.४. सपर्यतः परिचरतः नि० ११.६.]

सपर्यवः सेवकाः (देवाः=विद्वज्जनाः) ३.५.२. सत्यं सेवमानाः (विद्यार्थिजनाः) ७.२.४. आत्मनः सपर्यामिच्छवः (सज्जनाः) २.६.३. **सपर्यू**=सेवकौ (जनौ) ३.५०.२. [सपर्याशब्दाद् आत्मन इच्छायामर्थे क्यच्। ततः 'क्याच्छन्दसि' इति उः]

सपर्येण्यः सेवितुमर्हः (अग्निः=पावकः) ६.१.६. [सपर्यति परिचरणकर्मा निघं० ३.५. ततः कृत्यार्थे केन्यः]

सपित्वम् समानञ्च तत्पित्वं प्रापणं वा विज्ञानं च तत्, प्र०—अत्र पि गतौ इत्यस्माद्धातोरौणादिकस्त्वन् प्रत्ययः १.१०६.७. [समान-पित्वपदयोः समासः। 'समानस्य छन्दसि०' सूत्रेण समानस्य सभावः। पित्वम्=पि गतौ (तुदा०) धातोर्बाहु० औणा० त्वन्]

सपीतिम् पानेन सह वर्त्तमानम् (सग्धिं=समानंभोजनम्) २८.१६. **सपीतिः**=समाना पीतिः पानं यस्यां सा (सग्धिः) १८.६. [सह-पीतिपदयोः समासे सहस्य सभावः। समाना पीतिपदयोः समासे वा समानस्य सभावः-पीतिः=पा पाने (भ्वा०) धातोः स्त्रियां भावे क्तिन् 'स्थागापापचो भावे' सूत्रेण। 'घुमास्थागापाजहातिसां हलि' इतीत्त्वम्। सपीतिम्=सहपीतिम् नि० ६.४३.]

सप्त सप्तसंख्याकान् (सिन्धून्) १.३५.८. सप्तविधाः किरणाः १.५०.८. षड्तवो वायुश्च सप्तमः (पितरः=पालकाः) ४.४२.८. सप्तत्वविशिष्टा गणना १८.२४. सप्तसङ्ख्याकाः (पत्नीयजमानाभ्यां सहिता विप्राः=मेधाविजनाः) ३.७.७. सप्तछन्दोऽन्विताः (पुरः=शत्रुनगर्यः) १.१७४.२. गायत्र्यादीनि सप्त छन्दोऽन्विताः (वाणीः=वेदवाचः) १.१६४.२४. पृथिवीजलाग्निवायु-विराट्-परमाणु-प्रकृत्याख्यैः सप्तभिः (धामभिः=पदार्थैः) प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति विभक्तेर्लुक् १.२२.१६. सप्त-सप्तसंख्याकानि गायत्र्यादीनि छन्दांसि १७.७६. सप्ततत्त्वाङ्गमिश्रितस्य भावाः सप्तधा १.१०५.६. साङ्गोपाङ्गाँश्चतुरो वेदान् त्रीन् क्रियाकौशल-विज्ञानपुरुषार्थान् १.७२.६. सप्तविधे (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ७.१८.२४. **सप्तभिः**=नाग-कूर्म-कृकल-देवदत्त-धनञ्जयेच्छाप्रयत्नैः १४.२८. [सप्त सृप्ता संख्या, सप्तादित्य रश्मय इति वदन्ति नि० ४.२६.]

सप्त ऋषयः पञ्च मुख्य-प्राणा महत्तत्त्वमहङ्कारश्चेति १४.२८. **सप्त ऋषीन्**=सप्तप्राणादीन् (प्राणादयः पञ्च, सूत्रात्मा धनञ्जयश्चेति) १७.२६. [सप्तन्-ऋषिपदयोः समासः। सप्त ऋषयः रश्मिनाम निघं० १.५. पदनाम निघं० ५.६. सप्त ऋषयः=रश्मय आदित्ये सप्त। नि० १२.३७. षड् इन्द्रियाणि विद्या सप्तमी नि० १२.३७.]

सप्तचक्रम् सप्त चक्राणि यस्मिँस्तम् (रथं=रमणीयं यानम्) २.४०.३. **सप्तचक्रे**=सप्तविधानि चक्राणि भ्रमणपरिधयो यस्मिँस्तस्मिन् (सूर्ये) १.१६४.१२. [सप्तन्-चक्रपदयोः समासः]

सप्तजिह्वाः काल्यादयः सप्त जिह्वा इव ज्वाला येषां ते (वह्नयः=वोढारः पावकाः) ३.६.२. [सप्तन्-जिह्वापदयोः समासः]

सप्तथम् सप्तमम् (महत्तत्त्वम्) १.१६४.१५. [सप्तन्प्राति० पूरणार्थे डट्प्रत्यये 'थट् च छन्दसि' अ० ५.२.५०. सूत्रेण थडागमः। सप्तथम्=सप्तमः नि० १३.३२.]

सप्तथी सप्तमी (सरस्वती=उत्तमा वाणी), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति मस्य स्थाने थः ७.३६.६. [सप्तन्प्राति० पूरणार्थे डट् प्रत्यये 'थट् च छन्दसि' सूत्रेण थडागमः। ततः स्त्रियां ङीप्]

सप्तदश सप्ताधिका दश (संख्या) १८.२४. **सप्तदशभिः**=दश पाद्या अङ्गुलयश्चत्वार्यूर्वष्ठीवानि, द्वे प्रतिष्ठे यदर्वाङ् नाभेस्तत्सप्तदशं तैः १४.२६. [सप्तन्-दशन्पदयोः समासः]

सप्तदशम् चत्वारो वर्णाश्चत्वार आश्रमाः श्रवण-मनन-निदिध्यासनानि कर्माणि, अलब्धस्य लिप्सा, लब्धस्य प्रयत्नेन रक्षणं, रक्षितस्य वृद्धिर्वृद्धस्य सन्मार्गे सर्वोपकारके सत्कर्मणि व्ययकरणमेष चतुर्विधः पुरुषार्थो, मोक्षाऽनुष्ठानञ्चेति सप्तदशम् (स्तोमं=अतिप्रशंसनीयं व्यवहारम्) ६.३४. **सप्तदशः**=सप्तदशानां पूरणः (स्तोमः=स्तावको मित्रस्य भागः) १४.२४. सप्तदशविधः (धरुणः=धारणगुणः) १४.२३. सप्तदशानां पूरकः (विज्ञानम्) १३.५६. पञ्च कर्मेन्द्रियाणि, पञ्च विषयाः, पञ्च महाभूतानि, कार्यं, कारणञ्चेति सप्तदशानां पूरकः (स्तोमः=स्तुतिसमूहः) १०.१२. [सप्तन् दशन्-पदयोः समासात् पूरणार्थे 'तस्य पूरणे डट्' अ० ५.२.४८. सूत्रेण डट्। सप्तदशः (स्तोमः) प्रजापतिर्वै सप्तदशः। गो० उ० २.१३. तै० १.५.१०.६.

तां० २.१०.५. सप्तदशः प्रजापतिः तैं० १.३.३.२. सप्तदशो वै प्रजापतिः ऐ० १.१६. कौ० ८.२. श० १.५.२.१७. गो० उ० १.१६. सप्तदशो वै प्रजापतिर्द्वादश मासाः पंचर्त्तवो हेमन्तशिशिरयोः समासेन तावान्त्संवत्सरः संवत्सरः प्रजापतिः ऐ० १.१. द्वादश वै मासाः संवत्सरस्य पञ्चर्त्तव एष एव प्रजापतिः सप्तदश श० १.३.५.१०. संवत्सर एव सप्तदशस्यायतनं द्वादशमासाः पञ्चर्त्तव एतदेव सप्तदशस्यायतनम् तां० १०.१.७. सप्तदशो वै संवत्सरो द्वादशमासाः पञ्चर्त्तवः श० ६.२.२.८. संवत्सरः सप्तदशः तां० ६.२.२. तस्माऽएतस्मै सप्तदशाय प्रजापतये एतत् सप्तदशमन्नं समस्कुर्वन् य एष सौम्योऽध्वरोऽथ या अस्य ताः षोडश कला एते ते षोडशर्त्विजः श० १०.४.१.१९. तद्वै लोमेति द्वे अक्षरे। त्वगिति द्वेऽअसृगिति द्वे मेद इति द्वे मांसमिति द्वे स्नावेति द्वेऽस्थीति द्वे मज्जेति द्वे ताः षोडश कला अथ य एतदन्तरेण प्राणः सञ्चरति स एव सप्तदशः प्रजापतिः श० १०.४.१.१७. अन्नं वै सप्तदशः। तां० २.७.७. सप्तदशं ह्यन्नम् श० ८.४.४.७. प्रजातिः सप्तदशः ऐ० ८.४. तं (सप्तदशस्तोमं) उ प्रजातिरित्याहुः तां० १०.१.९. सप्तदश एव स्तोमो भवति प्रतिष्ठायै प्रजात्यै तां० १२.६.१३. विट् सप्तदशः तां० १८.१०.९. विड् वै सप्तदशः तां० २.७.५. विशः सप्तदशः ऐ० ८.४. पशवो वै सप्तदशः तां० १९.१०.७. तान् (पशून्) विश्वे देवाः सप्तदशेन स्तोमेन नाप्नुवन् तैं० २.७.१४.२. सप्तदशो वै पुरुषो दश प्राणाश्चत्वार्यङ्गान्यात्मा पंचदशो ग्रीवाः षोडश्यः शिरः सप्तदशम् श० ६.२.२.९. उरः सप्तदशः। अष्टावन्ये जत्रवोऽष्टावन्य ऽउरः सप्तदशम् श० १२.२.४.११. वर्षाभिर्ऋतुनादित्याः स्तोमे सप्तदशे स्तुतं वैरूपेण विशौजसा तैं० २.६.१९.१-२. गायत्रः सप्तदशस्तोमः तां० ५.१.१५. उदरं वा एषः स्तोमानां यत्सप्तदशः तां० ४.५.१५. राष्ट्रं सप्तदशः तैं० १.८.८.५. सप्तदशः (स्तोमः) एव यशः गो० पू० ५.१५. यत् सप्तदशो यदेवास्य (यजमानस्य) मध्यतोऽपूतं तत्तेनापहन्ति तां० १७.५.६. सर्वः सप्तदशो भवति तां० १७.५.६.]

सप्तदशाक्षरेण निचृदाख्यया गायत्र्या (छन्दसा) ९.३४. [सप्तदशन्-अक्षरपदयोः समासः]

सप्तधा सप्तभिः प्रकारैः १७.७९. [सप्तन्प्राति० विधार्थे 'संख्याया विधार्थे धा' अ० ५.३.४२. सूत्रेण धा]

सप्तधातु सुवर्णादयः सप्त धातवो यस्मिंस्तत् (धनम्) ४.५.६. [सप्तन्-धातुपदयोः समासः। ततो नपुंसके प्रथमैकवचने रूपम्]

सप्तधातुः सप्त प्राणादयो धारका यस्याः सा (वाक्) ६.६१.१२. [सप्तन्-धातुपदयोः समासः। ततः प्रथमैकवचनम्]

सप्तनामा सप्तनामानि यस्य सः (अश्वः=वायुरग्निर्वा) १.१६४.२. [सप्तन्-नामन्पदयोः समासः। सप्तनामा=आदित्यः सप्तास्मै रश्मयो रसानभिसन्नामयन्ति सप्तैनमृषयः स्तुवन्तीति वा नि० ४.२७.]

सप्तपुत्रम् सप्तविधैस्तत्त्वैर्जातम् (सूर्यम्) १.१६४.१. [सप्तन्-पुत्रपदयोः समासः। सप्तपुत्रम्=सप्तमपुत्रं सर्पणपुत्रमिति वा नि० ४.२६.]

सप्तमातृभिः सप्ताऽर्थात् पृथिव्यग्निसूर्यवायुविद्युदुदकाऽवकाशा मातरो जनका यासां ताभिः (सिन्धुभिर्द्युभिरक्तुभिश्च) १.३४.८. [सप्तन्-मातृपदयोः समासः]

सप्तमी सप्तानां पूरणा (क्रिया) २५.४. [सप्तन्-प्राति० पूरणार्थे डट्। ततः 'नान्तादसंख्यादेर्मट्' इति मडागमः। ततः स्त्रियां ङीप्]

सप्तयः संयुक्ताः शीघ्रं गमयितारोऽग्निवायुजलादयोऽश्वाः १.८५.६. वाष्पादयोऽश्वा येषान्ते (अध्वरश्रियः=चक्रवर्त्तिराज्यलक्ष्मीः) १.४७.८. **सप्तिम्**=अश्वम् १२.४७. **सप्तिः**=मूर्त्तद्रव्यसम्बन्धी (अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१९. **सप्ती**=सद्यः सर्पन्तौ (हरी=हरणशीलावश्वौ), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति गुणे कृते रेफलोपः ३.३५.२. **सप्ते**=अश्व इव पुरुषार्थिन् (अ०—शिल्पविज्जन) २९.३. अश्व इव वेगकारक (विद्वज्जन) २९.२. [सप्तिः=अश्वनाम निघं० १.१४. सप्तेः सरणस्य नि० ९.२. सृप गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० तिः। रेफस्य लोपश्छान्दसः। सप्ति (हेऽश्व त्वं) सप्तिरसि तां० १.७.१. सप्तिः=आशु सप्तिरित्याह। अश्व एव जवं दधाति। तस्मात् पुरा शुरश्वो ऽजायत तैं० ३.८.१३.२. सप्ति=वायुः सप्तिः तैं० १.३.६.४.]

सप्तरश्मिम् सप्तसु छन्दस्सु लोकेषु वा रश्मयो यस्य तम् (अग्निं=विद्वांसं जनम्) १.४६.१. सप्तविधा विद्यारश्मयो यस्मिँस्तम् (रथं=सूर्यलोकम्) ६.४४.२४. **सप्तरश्मिः**=सप्तविधा रश्मयः किरणा यस्य सः (रथः=सूर्यः) २.१८.१. सप्तविधकिरणः (बृहस्पतिः=सूर्यः) ४.५०.४. [सप्तन्-रश्मिपदयोः समासः। रश्मिरश्मिः स एष (आदित्यः) सप्तरश्मिर्वृषभस्तुविष्मान् जैं० उ० १.२८.२. (ऋ० २.१२.१२.) यस्सप्तरश्मिरिति सप्त ह्येव

आदित्यस्य रश्मयः (सप्तरश्मिः=इन्द्रः=आदित्यः) जै० उ० १.२९.८.]

सप्तवध्रये पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि मनो वुद्धिश्च सप्त हता यस्य तस्मै (जनाय) ५.७८.६. **सप्तवध्रिम्**=हत-सप्तेन्द्रियम् (भा०—अन्तःकरणादविद्याम्) ५.७८.५. [सप्तन् वध्रिपदयोः समासः। वध्रिः=हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोरिन्। रेफागमश्छान्दसः धातोर्वधादेशश्च]

सप्तविंशतिः सप्ताऽधिका विंशतिः (संख्या) १८.२४. एतत्संख्याकाः (गन्धर्वाः=वायव इन्द्रियाणि च), भा० — प्राणापानव्यानोदानसमान-नाग-कूर्म-कृकल-देवदत्त-धनञ्जया दश, जीवो, द्वादशं मनः, तत्सहचरितानि श्रोत्रादीनि दशेन्द्रियाणि, पञ्चसूक्ष्मभूतानि च मिलित्वा सप्तविंशतिः ९.७. **सप्तविंशत्या**=आरण्यपशुगुणैः १४.३०. [सप्तन्-विंशतिपदयोः समासः]

सप्तशिवासु सप्तविधासु कल्याणकारिणिषु (मातृषु) १.१४१.२. [सप्तन्-शिवापदयोः समासः। शिवा=शिव-प्राति० स्त्रियां टाप्]

सप्तशीर्षाणम् सप्तविधानि शिरांसि किरणा यस्मिँस्तम् (अग्निम्) ३.५.५. [सप्त-शिरस्पदयोः समासः। 'शीर्षंश्छन्दसि' सूत्रेण शिरसः शीर्षन् आदेशः]

सप्तस्वसा सप्तार्थात् पञ्च प्राणा मनो बुद्धिश्च स्वसेव यस्याः सा (सरस्वती=सत्या वाणी) ६.६१.१०. [सप्तन्-स्वसृपदयोः समासः। सप्तस्वसा=सप्तस्वसारम् नि० १०.५.]

सप्तहोता सप्त प्राणा होतार आदातारो यस्य सः (अग्निः) ३.२९.१४. (अग्निष्टोमः (यज्ञः) ३४.४. [सप्तन्-होतृपदयोः समासः। होतृ=हु दानादानयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि तृच्। सप्तहोता=सप्तास्मै रश्मयो रसानभिसन्नामयन्ति, सप्तैनमृषयः स्तुवन्तीति वा नि० ११.२३. तस्मै (ब्रह्मणे) सप्तमं हूतः प्रत्यशृणोत्। स सप्तहूतोऽभवत्। सप्तहूतो ह वै नामैषः। तं वा एतं सप्तहूतं सन्तम्। सप्तहोतेत्याचक्षते परोक्षेण। परोक्षप्रिया इव हि देवाः तै० २.३.११.२. इन्द्रियं वै सप्तहोता तै० २.२.८.२. इन्द्रः सप्तहोता तै० २.३.१.१. इन्द्रः सप्तहोत्रा तै० २.२.८.५ सौम्योऽवरः सप्तहोतुः (निदानम्) तै० २.२.११.६. अर्यमा सप्तहोतॄणां होता तै० २.३.५.६.]

सप्ताक्षरेण दैव्या जगत्या (छन्दसा) ९.३२. [सप्तन्-अक्षरपदयोः समासः]

सप्ताश्वः सप्तविधा अश्वा आशुगामिन किरणा यस्य सः (सूर्यः) ५.४५.९. [सप्तन्-अश्वपदयोः समासः]

सप्तास्यः सप्त किरणा आस्यानि यस्य सः (बृहस्पतिः=सूर्यः) ४.५०.४. **सप्तास्ये**=सप्त प्राणा आस्ये यस्य तस्मिन् (पत्यौ) ४.५१.४. [सप्तन्-आस्यपदयोः समासः]

सप्तिमिव यथा वेगवानश्वः १.६१.५. [सप्तिम्-इव-पदयोः समासः]

सप्ती इव यथा युग्मावश्वौ ६.५९.३. [सप्ती-इव-पदयोः समासः। सप्ती=सप्तिप्राति० प्रथमाद्विवचनम्। सप्तिरिति व्याख्यातम्]

सप्रथसम् प्रख्यातेन सह वर्त्तमानम् (अग्निं=पावकम्) २२.३. **सप्रथाः**=प्रथसा विस्तृतेन जगता सह वर्त्तमानः (मित्रः=जगदीश्वरः) ३.५९.७. प्रसिद्धकीर्त्तिः (विद्वान् जनः) ५.१३.४. सप्रख्यातिः (विद्वज्जनः) १.१५६.१. सुकीर्त्तिप्रख्यातियुक्तः (अग्निः=विद्वज्जनः) ३८.१७. विस्तीर्णसुखः (विद्वज्जन ईश्वरो वा) ३८.२०. विस्तरेण सह वर्त्तमानः (विद्वान् परमेश्वरो वा) ३८.२०. विस्तारेण सह वर्त्तमाना (स्त्री) ३६.१३. प्रथसा प्रख्यया सह वर्त्तमानः (विद्वज्जनः) १८.५४. विस्तीर्णेन प्रशंसनेन सह वर्त्तमाना (गृहिणी) ३५.२१. सर्वसामर्थ्य से विस्तीर्ण (ईश्वर) आर्याभि० २.४१, ३८.२०. [सह-प्रथस्पदयोः समासः। 'वोपसर्जनस्य' सूत्रेण सहस्य सादेशः। सप्रथाः सर्वतः पृथुः नि० ६.७. प्रथस् प्रथ प्रख्याने (भ्वा०) धातोर् औणा० असुन्]

सप्रथस्तमम् यः प्रथोभिर्विस्तृतैराकाशादिभिः सहाऽभिव्याप्तो वर्त्तते सोऽतिशयितस्तम् (सदसस्पतिं=परमेश्वरम्) १.१८.९. यः प्रथसा विद्याविस्तरेण सह वर्त्तते सोऽतिशयितस्तम् (बहुश्रुतं सज्जनम्) १.४५.७. अतिशयेन विस्तारयुक्तं व्यवहारम्) १.७५.१. प्रथसा विस्तरेण सह वर्त्तमानः ,सप्रथास्तमतिशयितम् (अग्निं=विद्वांसं जनम्) १२.१११. **सप्रथस्तमः**=अतिशयेन विस्तृतसुखकारकः (सखा=मित्रजनः) १२.११४. **सप्रथस्तमे**=अतिविस्तार-युक्ते (अवसि=रक्षणादौ कर्मणि) ५.६५.५. अतिशयितैः प्रथोभिः सुविस्तृतैः श्रेष्ठैर्गुणकर्मस्वभावैस्सह वर्त्तमाने (शर्मन्=सुखे) १.९४.१३. [सप्रथस् इति व्याख्यातम्। ततोऽतिशायने तमप्]

सप्रथः प्रख्यात्या सह वर्त्तमानः (अग्निः=सद्गृहस्थ-जनः) ६.१६.३३. सत्कीर्त्त्या प्रख्यातः (महाराजः) ६.६८.९. प्रख्यातगुणैः सह वर्त्तमानम् (शर्म=गृहम्)

१.१४२.५. विस्तृतविज्ञानेन सहितः, समानप्रख्यातिः (श्रीमज्जनः) ६.१५.३. यत्प्रथेभिः विस्तृतैः पदार्थैः सह वर्त्तते तत् (शर्म=गृहम्) १.२२.१५. सप्रख्यातिः (राजा) ७.३१.६. सप्रसिद्धिः (विद्वज्जनः), प्रथसा विस्तारेण युक्तम् (मनुष्यम्) १.१२६.३. [सप्रथस् इति व्याख्यातम्]

सप्सरासः गन्तारः (भा०—विचक्षणा राजपुरुषाः) १.१६८.९. [सप्सरप्राति० जसोऽसुक् । सप्सरः=सप्तीति गतिकर्मा (निघं० ३.१४.) तत औणा० सरः प्रत्ययः]

सबन्धवः समाना बन्धवो येषान्ते (नरः=नायका जनाः) ५.५९.५. **सबन्धुः**=यथा समाना बन्धवो यस्य मित्रस्य सः (जनः) ५.२३. **सबन्धू**=समानौ बन्धू इव वर्तमानौ (स्त्रीपुरुषौ) ३.१.१०. समानो बन्धुर्ययोस्तद्वद्वर्त्तमाने (यम्या=रात्रिदिने) ५.४७.५. [समानबन्धुपदयोः समासः । 'समानस्य छन्दसि०' सूत्रेण समानस्य सादेशः]

सबर्दुघा सर्वान् कामान् प्रपूरिका (वाक्) ३.५५.१६. सर्वान् कामान् पूरयन्ती (धेनुः=वाणी) १.१३४.४. **सबर्दुघाम्**=सर्वकामनाप्रपूरिकाम् (धेनुम्) ६.४८.११. वर्बति येन ज्ञानेन तद् बः, समानं बर्दोग्धि प्रपूरयति या ताम् (धेनुम्=उपदेशश्रवणलक्षणां वाचम्), प्र०—अत्र वर्ब गतौ इत्यस्माद्धातोः 'कृतो बहुलम्०' इति करणे क्विप्, छान्दसो वकारलोपः 'समानस्य छन्दस्य०' अनेन समानस्य सकारादेशः, ततः 'दुहः कप् घश्च' अ० ३.२.७०. इति दुहः कप्प्रत्ययो हस्य स्थाने घादेशश्च १.२०.३. **सबर्दुघायाः**= समानं सुखं बिभर्त्ति येन दुग्धेन तत्सवस्तद् दोग्धि या तस्याः (उस्रियायाः=गोः), प्र०—अत्र समानोपपदाद् भृञ्धातोर्विच् वर्णव्यत्ययेन भस्य वः १.१२१.५. **सबर्दुघा**=सब प्रकार के उत्तम व्यवहारों को पूर्ण करने वालियां (युवतयः= स्त्रियां) स० प्र० ११०, ३.५५.१६. **सबर्दुघे**=सबः पालकस्य दुग्धादेरिव रसस्य प्रपूरिके (रात्रिदिवसौ) ३.५५.१२. समानस्वीकरणप्रपूरिके (अहोरात्रे) ३.६.४. [सबर् उपपदे दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'दुहः कप् घश्च' अ० ३.२.७० सूत्रेण कप् । घकारश्चान्तादेशः । ततः स्त्रियां टाप् । सबर्=समान-बर्पदयोः समासे समानस्य सादेशः । बर्=बर्ब गतौ (भ्वा०) धातोः करणे क्विप् । बलोपश्छान्दसः । डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्वा विच् । भस्य वकारो वर्णव्यत्ययेन]

सबाधसः बाधेन सह वर्त्तमानाः (सूरयः=पण्डिता जनाः) ५.१०.६. [सह-बाधस्पदयोः समासे सहस्य सादेशः]

सबाधः बाधेन सह वर्त्तमानः (सेनेशः) ३.५१.४. **सबाधम्**=बाधसा सह वर्त्तमानम् (पितरं=जनकम्) ७.२६.२. **सबाधाः**=दुर्व्यसनानां बाधेन सह ये वर्त्तन्ते (जनाः) ३.२७.६. ये पदार्थान् सहैव बाधन्ते ते (वायवः) १.६४.८. [सह-बाधस्पदयोः समासे 'वोपसर्जनस्य' सूत्रेण सहस्य सादेशः । बाधस्=बाधृ लोडने (भ्वा०) धातोरौणा० असुन् । सबाधः ऋत्विङ्नाम निघं० ३.१८.]

सब्वम् समवेतम् (रेतः=वीर्यम्), प्र०—अत्र सप समवाये धातोरौणादिको वः प्रत्ययः १९.८४. [षप समवाये (भ्वा०) धातोरौणा० बाहु० वः]

सभरसः स्वसमानपोषकाः (मनुष्याः) १७.८४. समानपालनपोषणाः (मनुष्याः) ५.५४.१०. [समान-भरस्-पदयोः समासे समानस्य सादेशछान्दसः। भरस्=डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणा० असुन्]

सभराः समानं बिभ्रतीति सभराः, भा०—ये सत्यं धरन्त्यसत्यञ्च त्यजन्ति ते (अ०—पुरुषाः) १७.८१. समानधारणपोषणाः (जनाः) १२.६८. शान्त्यादिगुणपुष्टाः (योगवृत्तयः), ऋ० भू० १५९, १२.६८. [समान-भर-पदयोः समासे समानस्य सादेशश्छान्दसः । भरः=डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरच् कर्त्तरि]

सभाचरम् यः सभायां चरति तम् (धार्मिकं जनम्) ३०.६. [सभोपपदे चर गतौ (भ्वा०) धातोः 'चरेष्टः' इति टः]

सभापतिभ्यः सभानां पालकेभ्यो राजभ्यः १६.२४. [सभा-पतिपदयोः समासः]

सभाभ्यः या न्यायादिप्रकाशेन सह वर्त्तन्ते ताभ्यः सभाभ्यः स्त्रीभ्यः १६.२४. **सभायाम्**=विद्वत्समूहशोभितायाम् ३.४५. **सभासु**=आप्तविद्वद्भिः प्रकाशमानासु (संसत्सु) ६.२८.६. [सह-भापदयोः समासः । भा=भा दीप्तौ (अदा०) धातोर् डः । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

सभावती सभासम्बन्धिनी (वाक्=वाणी) १.१६७.३. [सभाप्राति० संसर्गे मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप्]

सभावान् प्रशस्ता सभा विद्यते यस्य सः (अग्निः= विद्वज्जनः) ४.२.५. [सभाप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुप्]

सभासदः सभासद् विद्वान् लोग स० प्र० १८२, अथर्व० १९.७.५५.६. [सभोपपदे षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सभासाहेन सभा का भार उठाने और उसकी उन्नति करने वाले (मित्रजन) के द्वारा पं० वि० । [सभोपपदे षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

सभास्थाणुम् सभायां स्थितम् (पुरुषम्) ३०.१८. [सभा-स्थाणुपदयोः समासः। स्थाणुम्=ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'स्थो णुः' उ० ३.३७. सूत्रेण णुः]

सभृतयः समाना भर्त्तारो यासां ताः (युवतयः स्त्रियः) ६.६७.७. [समान-भृतिपदयोः समासे समानस्य सादेशः। भृतिः=डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणा० तिः किच्च]

सभेयम् सभायां साधुम् (राजानमध्यापकमुपदेशकं वा) ३४.२१. [सभाप्राति० साध्वर्थे 'ढश्छन्दसि' अ० ४.४.१०६ सूत्रेण ढः सभेयो युवा (यजु० २२.२२) एष वै सभेयो युवा यः प्रथमवयसी तस्मात् प्रथमवयसी स्त्रीणां प्रियो भावुकः श० १३.१.९.८. सभेयो यो वै पूर्ववयसी। स सभेयो युवा। तस्माद् युवा पुमान् प्रियो भावुकः तै० ३.८.१३.३.]

सभ्य हे सभा के योग्य (सभापते राजन्), सं० वि० १८२, अथर्व० १९.५५.६. **सभ्याः**=सभा के योग्य (धार्मिक आप्त लोग) सं० वि० १८२, अथर्व० १९.५५.६. [सभाप्राति० साध्वर्थे 'सभाया यः' अ० ४.४.१०५. इति यः]

सम् सम्यगर्थे १.९.५. क्रियार्थे १.८.३. सङ्घाते २.१.१५. एकीभावे ८.१६. अच्छा अथर्व० १४.२.३७. सं० वि० १७० वेदार्षे [समित्येकीभावम् नि० १.३.]

समकृण्वन् सम्यक् शिक्षितान् कुर्युः १७.२८. [सम्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन श्नुः। समकृण्वन्=कुर्वन्ति नि० ६.१५.]

समक्तम् संहृतम् (हविः=होतव्यं द्रव्यम्) २.३.१०. **समक्तः**=सम्यक् प्रकटयन् (अश्वः=आशुगामी वह्निः) २९.१०. [सम्+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोः क्तः। 'यस्य विभाषा' इत्यनिट्त्वम्]

समक्तुभिः सम्यग् रात्रिभिः ३.१७.१. [सम्-अक्तुपदयोः समासः। अक्तुः रात्रिनाम निघं० १.७.]

समख्ये समक्तया प्रकथयामि, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदं, लडर्थे लुङ् च ४.२३. अ०—प्रख्यातां कुर्याम् ४.२३. [सम्+ख्या प्रकथने (अदा०) धातोर्लुङ्। 'अस्यतिवक्तिख्यातिभ्योऽङ्' इत्यङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

समगच्छन्त सम्यक् प्राप्नुवन्ति १७.३०. **समगथाः**=समागमेन गच्छसि प्राप्नोति वा, अ०—सङ्गतो भूत्वा राजते, प्र०—अत्र पक्षे व्यत्ययः, वर्त्तमाने लुङ् 'मन्त्रे घसह्वर०' अ० २.४.८०. अनेन च्लेर्लुक् च ३.१९. **समगन्महि**=एकीभावेन प्राप्नुयाम ८.१६. सम्यक् प्राप्नुमः २.२४. **समगस्महि**=सम्यक् संगच्छामहे, प्र०—अत्र लडर्थे लुङ्, वर्णव्यत्ययेन मकारस्थाने सकारादेशश्च १.२३.२३. **समग्मत**=प्राप्नुत १२.८०. प्राप्नुवन्तु ४.३४.२. संगच्छत १.११९.३. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'समो गम्यृच्छिभ्याम्' इत्यात्मनेपदम्। अन्यत्र लुङि 'मन्त्रे घसह्वर्०' इति च्लेर्लुक् च। 'समगन्महि' प्रयोगे 'म्वोश्च' अ० ८.२.६५. सूत्रेण मकारस्य नकारः 'समगस्महि' प्रयोगे मकारस्य सकारश्छान्दसः। समग्मत=सङ्गच्छन्ताम् नि० १२.३४.]

समग्निः सम्यक् प्रकाशकः (विद्वज्जनः) ३७.१४. [सम्+अग्निपदयोः समासः]

समग्रभम् सम्यग् गृहीतवानस्मि ९.४. [सम्+ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन शप्। हकारस्य भकारश्छान्दसः]

समङ्क्ताम् एकीभावेन संयोजयतु, संयुक्तभावेन संयोजयतु २.२२. मेलनेन प्रकटं संयोजयति २.२२. [सम्+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

समङ्ग्धि सम्यक् शोधय १३.४१. [सम्+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोर्लोट्]

समचयन्त सम्यक् प्राप्नुत ५.५४.१२. [सम्+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः कर्मणि लङ्]

समज विज्ञापय ६.२५.९. **समजाति**=सम्यक् प्राप्नुयात् ५.२.१२. संजानीयात् १.१००.११. **समजासि**=सम्यक् प्राप्नुयाः ७.३२.७. [सम्+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लेट्]

समजयत् सम्यग् जयेत् ४.१७.११. [सम्+जि जये (भ्वा०) धातोर्लङ्]

समजीगमम् सम्यक् प्राप्नुयाम् ८.२९. [सम्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्]

समज्यताम् एकीभावेन संयुज्यताम् १२.७०. **समज्यते**=सम्यग् व्यज्यते १.१८८.२. [सम्+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोः कर्मणि लोट्। अन्यत्र लट्]

समञ्जतः सम्यक् कामयेथाम् २.३.७. **समञ्जन्**=सम्यक् प्रकटीकुर्युः ३.३८.३. **समञ्जन्तु**=निश्चय करके जानें सं० वि० ११३, १०.८५.४७. **समञ्जाते**=सम्यक् प्रकाशयतः २१.३५. प्रसिध्यतः २०.६१. सम्यक् प्रकटयतम् ३३.७३. **समञ्जे**=सम्यक् कामये १.६१.५.

सम्यक् स्वेच्छया गृह्णामि १.६४.१. [सम्+अञ्जू व्यक्ति-म्रक्षणकान्तिगतिषु। (रुधा०) धातोर्लेट्। विकरणव्यत्ययेन शप्। अन्यत्र लङ्, लोट्, लेट् लट् च। लेटि लटि च व्यत्ययेनात्मनेपदम्। समञ्जन्ति समश्नुवन्ति नि० ६.३५.]

समञ्जन् सम्यक् प्रकटीभवन् (भौतिकोऽग्निः) २९.२. सम्यक् प्रकटयन् (शमिता=यजमानः) २८.१०. सम्यक् मिश्रीकुर्वन् (विद्वज्जनः) २९.३५. सम्यग्रक्षन् (अग्निः=विद्वान् राजा) १२.३३. सम्पृचानः (शमिता=यज्ञः) २०.४५. सम्यग् व्यक्तीकुर्वन् (विद्वज्जनः) २०.३७. सम्यक् प्रकाशयन् (सविता=सूर्यः) १२.६. [सम्+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोः शतृ]

समत्ति सम्यत्तया भक्षयति ७.४.२. [सम्+अद भक्षणे (अदा०) धातोर्लट्]

समत्सु युद्धेषु १.५.४. सङ्ग्रामेषु २९.५०. धार्मिकाऽधार्मिकविरोधाख्येषु युद्धेषु ३.४३.८. धर्म्यसङ्ग्रामेषु ३.४८.५. **समदः**=सङ्ग्रामान् ६.७५.२. **समदाम्**=सह मदेन हर्षेण वर्त्तन्ते यत्र युद्धेषु तेषाम् २९.३८. मदैस्सह वर्त्तन्ते येषु तेषां सङ्ग्रामाणाम् ६.७५.१. [समत्सु संग्रामनाम निघं० २.१७. समदो वात्तेः, सम्मदो वा मदतेः नि० ९.१७.]

समदनस्य मदनं हर्षणं यस्मिन्नस्ति तेन सहितस्य (भा०—सैनापत्याधिकारस्य) १.१००.६. [सह-मदनपदयोः समासे सहस्य सादेशः। मदनम्=मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्ल्युट्। तत अर्श-आदित्वादच्]

समदः मदेन सह वर्त्तमानाः (शत्रूणां सेनाः) २९.३९. [सह-मदपदयोः समासे सहस्य सादेशः। वचनव्यत्ययः]

समद्यौत् सम्यग् द्योतयति ३.५.२. [सम्+द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्। च्लेर्लुक्]

समद्वा यो मदेन सह वर्त्तमानान् वनति सम्भजति सः (इन्द्रः=राजा) ७.२०.३. यः सम्यगत्ति स्वादु भुङ्क्ते सः (राजकर्मचारी जनः) ६.१८.२. [सम्+अद् भक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि वनिप्। अथवा समद इत्युपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि विच्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इत्याकारान्तादेशः। पूर्वपदस्यान्त्यलोपश्छान्दसः]

समधत्त सम्यग् धरतः १.१६५.६. **समधात्**=समादधाति १९.९३. **समधातम्**=भा०—संगृह्णीतम् २०.६६. [सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लङ्। मध्यमबहुवचनम्। अन्यत्र लुङ्। 'गातिस्थाघु०' इति सिचो लुक्]

समनक्तु सम्यक् कामयताम् २०.४४. उत्तम सुख को प्राप्त कर सं० वि० १३४, १०.८५.४३. [सम्+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोर्लोट्]

समनगा इव समनमवधारितं स्थानं गच्छन्तीव (उषाः) १.१२४.८. [समगा-इवपदयोः समासः। समनगा इति व्याख्यास्यते]

समनगाः यः समनं सङ्ग्रामं गच्छति सः (नरोत्तमः) ७.९.४. [समनोपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्डः। वचनव्यत्ययः। समनम् संग्रामनाम निघं० २.१७.]

समनम् समीचीनं सङ्ग्रामम् १.४८.६. [समनम् संग्रामनाम निघं० २.१७. संमननाद्वा सम्माननाद्वा नि० ७.१७.]

समनमन्त एकीभावेन नमन्तु १७.२४. संनमन्ते, प्र०—अत्र लडर्थे लङ् ८.४६. [सम+णम प्रह्वत्वे शब्दे (भ्वा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

समनसः समानं मनः स्वान्तं यासां ताः (विशः=प्रजाः) ७.२५. समानविज्ञानाः (नरः=नायका जनाः) २७.२३. [समान-मनस्पदयोः समासे समानस्य सादेशश्छान्दसः]

समनसः समानं मनो येभ्यस्ते (जनाः) १४.२७. मनसा सह वर्त्तमानाः (अग्नयः=पावकाः) १४.६. समानं मनो विज्ञानं येषान्ते (पितरः=प्रजापालका जनाः) १९.४५. समानमनोनिमित्ताः (अग्नयः) १५.५७. सज्ञानाः समानमनसः (विद्वज्जनाः) ७.४३.२. समाने धर्मे मनो येषान्ते (जीवाः) १९.४६. समानं सहकारि साधनं मनो येषान्ते (देवाः=श्रोत्रादीनीन्द्रियाणि) ६.९.५. **समनसौ**=समानविचारौ (स्त्रीपुरुषौ) १२.६०. [समान-मनस्पदयोः समासे समानस्य सादेशः। सह-मनस्पदयोर्वा समासः। सहस्य सादेशश्छान्दसः]

समनसा समानेन मनसा विचारेण सह वर्त्तमानौ (अश्विनौ=अग्निजले) १.९२.१६. समानं मनो विज्ञानं ययोस्तौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.११६.१९. समानमनस्कौ दृढप्रीती (स्त्रीपुरुषौ) ५.३.२. [समान-मनस्पदयोः समासे समानस्य सादेशः। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

समना सङ्ग्रामे, प्र०—अत्र विभक्तेराकारादेशः ६.४.१. समानाः (देवीः=विदुष्यः स्त्रियः), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति जसो लुक् ४.५१.८. सदृशी (कन्या)

४.५.७. समनानि सङ्ग्रामान् २.११.७. समनस्कौ (अध्यापकौपदेशकौ) ४.४३.७. सान्त्वनादिगुणयुक्ता (सुमतिः) ४.४४.७. सङ्ग्रामान् २९.४२. तुल्ये (व्यवहारे) १.१६८.१. **समनाः**=समानगुणकर्मस्वभावाः (उषसः=प्रातर्वेलाः) ४.५१.८. [समनम् संग्रामनाम निघं० २.१७. समना समनसौ नि० ९.४०. समना=समनस इव योषाः। समनं समननाद्वा सम्माननाद्वा नि० ७.१७. समना समानया नि० १०.५. समने संग्रामे नि० ९.१८.]

समनुमार्ष्टु मिश्रीभावेन पश्चात् शोधयतु २.२४. [सम्+अनु+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लोट्]

समनेव समानमना इव (माता), प्र०—अत्र छान्दसो वर्णलोपो वा इति सलोपः ६.७५.४. समानं मनो यासां ता इव (योषाः=स्त्रियः) १७.९६. यथा युद्धे प्रवृत्ता सेना तथा १.१०३.१. समानमनस्का पतिव्रतेव ४.५८.८. सम्यक् प्राण इव प्रिया (योषा=विदुषी स्त्री) २९.४१. [समना-इवपदयोः समासः। समना इति व्याख्यातम्]

समन्तम् सर्वतो दृढाङ्गम् (रथम्) ५.१.११. [समन्तम् (साम) समन्तेन पशुकामः स्तुवीत, पुरोधाकामः समन्तेन स्तुवीत तां० १५.४.७.]

समन्तशितिबाहुः समन्ताच्छितयो बाह्वोर्भुजस्थानयोर्यस्य सः (पशुः) २४.२. [समन्त-शिति-बाहुपदानां समासः]

समन्तशितिरन्ध्रः समन्ततो रन्ध्राणीव शितयः श्वेतचिह्नानि यस्य सः (पशुः) २४.२. [समन्त-शिति-रन्ध्र-पदानां समासः]

समन्ते सम्यगन्तो ययोस्ते (स्वसारा=भगिन्यौ) १.१८५.५. [सम्+अन्तपदयोः समासः]

समन्यवः समानो मन्युः क्रोधो येषान्ते, भा०—ये दुष्टानामुपरि क्रोधं कुर्युस्ते (देवासः=विद्वज्जनाः) ३३.९४. मन्युना सह वर्त्तमानाः (राजजनाः) २.३४.३. [समान-मन्युपदयोः समासे समानस्य सादेशः। सह मन्युपदयोर्वा समासे सहस्य सादेशः]

समपश्यन्त सम्यक् पश्यन्ति १७.२९. [सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'दृशेश्चे ति वक्तव्यम्' अ० १.३.२९. वा० सूत्रेणात्मनेपदम्]

समपृच्यन्त सम्पृच्यन्ति १.११०.४. [सम्+पृची सम्पर्चने (अदा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन श्यन्]

समभक्त सम्यग् भजेत ३.३३.१२. [सम्+भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

समभूम अ०—संयुक्ता भवेम २.२५. [सम्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'गातिस्थाघुपाभूभ्य०' इति सिचो लुक्]

सममदः सम्यगानन्द १.८२.६. [सम्+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लङ्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

समयन्त सम्यक्तया प्राप्नुवन्ति ६.२६.१. [सम्+अय गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। आडभावश्छान्दसः]

समयंस्त सम्यग् यच्छत १.१४४.३. उपयच्छति १.१३६.२. [सम्+यमु उपरमे (दिवा०) धातोर्लुङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

समया यथासमयम् १.५६.६. काले १.११३.१०. सामीप्ये १.७३.६. [सम्+इण् गतौ (अदा०) धातोः 'आः समिण्निकषिभ्याम्' उ० ४.१७५. सूत्रेण आः प्रत्ययः। स्वरादिषु पाठादव्ययम्]

समयोधयः सम्यग् योधयसि १.८०.१३. [सम्+युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल् लङ्]

समरणम् सम्यक्तया प्रापकम् (प्रकाशम्) १.१५५.२ [सम्+ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमिति' कर्त्तरि ल्युट्]

समरणे सङ्ग्रामे १.१७०.२. [समरणं संग्रामनाम निघं० २.१७. समरणेषु संग्रामेषु नि० ९.२०.]

समरन्त संरमन्ते ४.१९.९. सम्यग् गच्छन्ति ७.२५.१. [सम्+रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ्। शपो लुक्। वचनव्यत्ययश्च। अथवा सम्+ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोर्लुङ्। 'सर्तिशास्त्यर्तिभ्यश्चे' त्यङ्। 'अर्तिश्रुदृशिभ्यश्च' अ० १.३.२९. वा०सूत्रेणात्मनेपदम्]

समराणः सम्यक् प्राप्नुवन् (विद्वज्जनः) १.१६५.३. सम्यग् गच्छन् (इन्द्रः=सभाध्यक्षः) ३३.२७. [सम्+ऋ गतिप्रापणयोः (भ्वा०) धातोः शानच्। शपो लुक्। 'अर्त्तिश्रुदृशिभ्यश्चे' त्यात्मनेपदम्]

समरिणन् सम्यक् प्राप्नुवन्तु, प्र०—रिणातीति गतिकर्मसु पठितम् निघं० २.१४, ६.१८. **समरिणीतम्**=सङ्गच्छतम् १.११७.११. [सम्+रिणाति गतिकर्मा निघं० २.१४. धातोर्लङ्]

समरूरुचत सम्यक् प्रकाशते ३७.१५. [सम्+रुच दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्]

समरे सङ्ग्रामे, भा०—युद्धे, प्र०—समर इति सङ्ग्रामनाम निघं० २.१७, १२.६६. [सम्+ऋ गति-प्रापणयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरब्' इत्यप्। अथवा षम वैक्लव्ये (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अरः प्रत्ययः]

समरोचिष्ट सम्यक् प्रकाशते ३७.१५. [सम्+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लुङ्]

समर्थयस्व समर्थं कुरु २.१३.१३. सम्यगर्थं कुरु २.१४.१२. [सम्+अर्थ उपयाञ्चायाम् (चुरा०) धातोर्लोट्। अथवा समर्थप्राति० 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णिजन्ताल्लोट्]

समर्यजित् यः समर्यान् सङ्ग्रामान् जयति सः (मेधावी नरः), प्र०—समर्य इति सङ्ग्रामनाम निघं० २.१७, १.१११.५. [समर्योपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्। समर्यं संग्रामनाम निघं० २.१७.]

समर्यता समरमिच्छता (मनसा=चित्तेन) ५.४४.७. [समरपदाद् इच्छायां क्यजन्ताच्छतृ]

समर्यम् सङ्ग्रामम् ४.२४.८ **समर्यः**=युद्धकुशलः (राजा) ७.८.१. सङ्ग्राममिच्छुः (शूरो जनः) ५.३३.१. **समर्ये**=सम्यगर्य्यें वाणिजि १.१७८.४. [समर्यं संग्रामनाम निघं० २.१७. समरप्राति० वा कुशलार्थे यत्। समरपदाद्वा इच्छायामर्थे क्यजन्तादच् कर्त्तरि। अथवा सम्+अर्यपदयोः समासः। अर्यः=='अर्यः स्वामीवैश्ययोः' सूत्रेण ऋधातोर्यत् निपात्यते वैश्येऽभिधेये]

समवदन्त परस्परं संवादं कुर्युः १२.९६. [सम्+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'विभाषा विप्रलापे' इत्यात्मनेपदम्]

समवर्त्तत सम्यगुत्पन्नः सन् वर्त्तते ऋ० भू० १२७, समभवत् १३.४. सम्यगवर्त्तत २३.१. विद्यमान था स० प्र० २८२, १०.१२१.१. वर्त्तमान था सं० वि० ५, १३.४. [सम्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लङ्]

समवावशीताम् सम्यग् भृशं कामयेथाम्, प्र०—वश कान्तौ इत्यस्य यङ्लुगन्तं लङि रूपम् १.१८१.४. [सम्+वश कान्तौ (अदा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लङ्]

समविन्दन्त सम्यग् विन्दन्ते प्राप्नुवन्ति १.८३.४. [सम्+विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्लङ्]

समवृक्त सम्यग् वृङ्क्ते ७.३.४. [सम्+वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्लङ्]

समवेत् प्राप्नुयात् ५.३४.८. [सम्+वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लङ्]

समव्यत् सम्यग् व्याप्नोति, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् २.३८.४. सर्वतः संवृणोति २.१७.४. [सम्+व्येञ् संवरणे (भ्वा०) धातोर्लुङ्। व्यत्ययेनाङ्]

समशीत सम्यग् व्याप्नुयात्, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति श्नोर्लुक् १.५७.२. [सम्+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिङ्। श्नुविकरणस्य लुक् छन्दसि]

समश्रेत् सम्यगाश्रयेत्, प्र०—अत्र शपो लुक् ३.१९.२. [सम्+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्लङ्। शपो लुक्]

समसुस्रोत् सम्यक् प्राप्नुयात्, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः श्लुः १८.५८. [सम्+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। शपः श्लुः 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

समसृक्ष्महि संसृजेम, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् २०.२२. **समसृजत्**=संसृजति २.१५.४. [सम्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लङ्। सिब्-विकरणो व्यत्ययेनात्मनेपदश्च]

समसृपत् संसर्पति १३.३१. [सम्+सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन शः]

समस्पृशन्त अच्छी प्रकार स्पर्श करते हैं सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३२. [सम्+स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

समस्य तुल्यस्य (जगदीश्वरस्य) ६.२७.३. [समस्य सर्वस्य नि० ५.२३. समशब्दः सर्वनाम तुल्यवाची च]

समह सत्कारसहित (विद्वज्जन) ५.५३.१५. यो महेन सत्कारेण सह वर्त्तते तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.१२०.११. [सह-महपदयो समासः। सहस्य सादेशः 'वोपसर्जनस्य' सूत्रेण। महः महन्नाम निघं० ३.३.]

समह्यन् सम्यग् व्याप्नुवन् (इन्द्रः=राजा) ६.४०.२. [सम्+अह व्याप्तौ (स्वा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन श्यन्]

समाकृणुष्व सम्यक्तया समन्तात् कुरुष्व ३३.१२. [सम्+आङ्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन श्नुः]

समागमेम सम्यक् प्राप्नुयाम ५.४३.१७. [सम्+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

समाचक्रे समाकरोति ३.३६.५. [सम्+आङ्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिट्]

समादधिरे समादधति ५.४४.६. [सम्+आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिट्]

समानजे सम्यग् व्यक्तीकरोति १.१८८.९. [सम्+अञ्जू व्यक्तिम्रक्षणकान्तिगतिषु (रुधा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

समानट् सम्यक्तया व्याप्नोति ३.३०.१२. **समानश**=सम्यग् व्याप्नुत ३.६०.२. **समानशुः**=

सम्यक् प्राप्नुयुः, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ३.६०.३. **समानंश**=सम्प्राप्नोति ४.२३.२. [सम्+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लिट्। तप्रत्ययस्य 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' अ० ७.१.४१. सूत्रेण लोपः। अन्यत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

समानतः सदृशेभ्यः पतिभ्यः ४.५१.८. [समानप्राति० पञ्चम्यन्तात् तसिः]

समानदक्षाः समानं दक्षो बलं विद्याचातुर्यं येषान्ते (पुत्राः) ७.२६.२. [समान-दक्षस्पदयोः समासः। दक्षस् बलनाम निघं० २.९.]

समानबन्धू यथा सह वर्त्तमानौ मित्रौ भ्रातरौ वा १.१३३.२. [समान-बन्धुपदयोः समासः। समानबन्धू समानबन्धने नि० २.२०.]

समानम् तुल्यम् (वत्सम्=अहोरात्रः) १.१४६.३ पक्षपातरहितम् [पतिं=राजानम्) १.१२७.८. सर्वत्रैव स्वव्याप्त्यैकरसम् (परमेश्वरम्) १.१३१.२. वैसा ही (वृक्षम्=अनादिमूलरूप कारण और शाखारूप कार्ययुक्त वृक्ष नामक जगत्) स० प्र० २८३, १.१६४.२०. (राजा) ४.३०.२२. एकः (राजा=सूर्यः) ३.५५.४. सदृशः (व्यक्तिः) ५.२३. समानयति रसं येन सः (वायुः) २२.३३. **समानाः**=सदृग्गुणकर्मस्वभावाः (जीवाः) १९.४६. [सह-मानपदयोः समासे सहस्य सादेशः। समानं सम्मानमात्रं भवति नि० ४.२५. दिशः समानः जै० उ० ४.२२.९. निरुक्ता निरुक्त इव ह्ययं समानः ष० १.२. तं (संज्ञप्तं पशुं) ऊर्ध्वा दिक्समानेत्यनुप्राणत् समानमेवास्मिँस्तदधात् श० ११.८.३.६]

समानयोजनः समानं तुल्यं योजनं संयोगकरणं यस्मिन्त्सः (रथः=नौकादियानम्) १.३०.१८. [समान-योजनपदयोः समासः। योजनम्=युजिर् योगे (रुधा०) धातोर्ल्युट्]

समानवर्चसा समानं तुल्यं वर्चो दीप्तिर्ययोस्तौ (वायुसूर्यौ) १.६.७. [समान-वर्चस्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

समानस्मात् तुल्यात् (सदसः=गृहात्) ५.८७.४. [समानप्राति० पञ्चमी। सर्वेषां वाचकत्वात् सर्वनामत्वम्]

समानी सर्वमनुष्यस्वतन्त्रदानसुखवर्धनायैकरसा (समितिः) ऋ० भू० ९३, ऋ० ८.८.४९.३. एकसी (प्रपा=जलपान स्नान आदि स्थानादि व्यवहार) सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.६. **समान्या**=तुल्यया (क्रियया) ५.४८.२. समं वर्त्तमानया (दिशा) १.१३२.४. [सह-मानपदयोः समासात् स्त्रियां ङीप्]

समानृचे सम्यक्तया स्तौमि १.१६०.४. [सम्+ऋच स्तुतौ (तुदा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

समान्या समानस्वभावे (द्यावापृथिव्यौ) ३.५४.७. [समानीशब्दात् प्रथमाद्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

समाप्यते सम्यक् प्राप्यते १९.१७. [सम्+आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोः कर्मणि लट्]

समाभर सम्यक्तयाऽऽधर १.५७.३. [सम्+आङ्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

समाभ्यः प्रजाभ्यः ४०.८. जीवरूपाभ्यः प्रजाभ्यः, पं० वि०। **समाम्**=शुद्धाम् (सीतां=भूमिकर्षिकाम्) ४.५७.७. वेलाम् ३८.२८. **समाः**=वर्षाणि १४.१९. संवत्सराः १९.४६. क्षणादयः १८.१८. [समानां सवत्सराणाम् नि० ११.५.]

समायजन्त सङ्गच्छेरन् १७.२८. [सम्+आङ्+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लङ्]

समायन्ति सम्यक्तयाऽऽगच्छन्ति ५.६.२. [सम्+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्]

समायुषा समीचीनेन जीवनेन ३.१९. [सम्+आयुष्पदयोः समासः]

समारत सम्यक् प्राप्नुत १.५४.१. [सम्+ऋ गतौ (जु०) धातोर्लुङ्। 'सर्त्तिशास्त्यर्त्तिभ्यश्च' इत्यङ्। 'ऋदृशोऽङि' इति गुणः]

समारभेमहि सम्यक्तयाऽऽरम्भं कुर्वीमहि १.५३.४. [सम्+आङ्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

समाराणे सम्यक् समन्ताद्राणं दानं ययोस्ते (अध्यापिकोपदेशिके) ३.३३.२. [सम्+आङ्+राणपदानां समासः। राणम्=रा दाने (अदा०) धातोर्ल्युट्]

समारिरीहि सम्यक् समन्तात्प्रापय ६.४६.८. [सम्+आङ्+री गतिरेषणयोः (क्र्या०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी ति' श्लुः]

समावतम् सम्यग् रक्षतम् १.११२.१८. [सम्+अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लोट्]

समाववर्त्ति सम्यगावर्तते, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं, शपः श्लुश्च २०.२३. सम्यगववर्त्यते २.३८.६. [सम्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन शपः श्लुः परस्मैपदञ्च]

समाशत अच्छे प्रकार प्राप्त होते हैं स० प्र० ४२३,

९.८३.१. [सम्+अशूङ् व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्लङ्। व्यत्ययेन शप्]

समाशिराम् सम्यगभितः श्रियन्ते सेव्यन्ते सद्गुणैर्ये तेषाम् (पच्यमानानां, पदार्थानाम्), प्र०—अत्र 'श्रयतेः स्वाङ्गे शिरः किच्च' उ० ४.२००. अनेनाऽसुन्प्रत्ययः शिर आदेशश्चाऽसुनि १.३०.२. [सम्+आङ्+श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'श्रयतेः स्वाङ्गे शिरः किच्च' उ० ४.१९४. सूत्रेणासुन् शिरादेशश्च। प्रत्ययसकारस्य लोपश्छान्दसः]

समासते सम्यगुपविशन्ति ३.९.७. सम्यक् प्राप्नुवन्ति ७.१.४. सम्यगासते १.१६४.३९. अच्छे प्रकार समाधियोग से स्थिर होते हैं सं० वि० २१५, १.१६४.३९. [सम्+आस उपवेशने (अदा०) धातोर्लट्]

समासत्सि समन्तात् सीदसि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् ३.३०.१८. [सम्+आङ्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लट्। शपो लुक्]

समाहितम् सम्यक् सर्वतो धृतम् (रसं=सारम्) ९.३. [सम्+आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः। 'दधातेर्हि' रिति हिरादेशः]

समाहुः सम्यक्तया कथयन्ति १५.२९. [सम्+ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लट्। 'ब्रुवः पञ्चानामादित आहो ब्रुवः' सूत्रेणाहादेशः]

समिङ्गयति सम्यक् चालयति ५.७८.७. [सम्+इगि गत्यर्थे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

समिच्छन्त सम्यक्तयेच्छन्तु १.६८.४. [सम्+इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्लङ्। आडभावश्छान्दसः। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

समिडाभिः एकीभावेन भूमिवाणीनीतिभिः १.४८.१६. [सम्+इडापदयोः समासः। इडा पृथिवीनाम निघं० १.१. वाङ्नाम निघं० १.११. अन्ननाम निघं० २.७. गोनाम निघं० २.११.]

समित् सम्यगिध्यते दीप्यतेऽनया सा विद्या काष्ठादिर्वा अ०—वेदविद्या २.१४. सम्यक् प्रदीप्तेव (ईश्वरः) ३८.२५. अग्नेरिन्धनमिव मनुष्याणामात्मनां प्रकाशकः (जगदीश्वरः) २०.२३ सम्यक् प्रदीप्तः (पति.) ८.२७. सम्यगिध्यतेऽनयाऽनेन वा सा समिदग्निप्रदीपकं काष्ठादिकं वसन्त-ऋतुर्वा २.५. प्रदीप्ता (भा०—अग्न्यादिविद्या) ५.६.४. यथा सम्यगिध्यते तथा (परमेश्वरः) ५.३५. **समिधम्**=समिध्यते प्रकाश्यतेऽर्थतत्त्वमनया क्रियया ताम् ८.२४. काष्ठमिव शत्रुम् ५.४.४. इन्धनम् २.६.१. प्रदीपिकाम् (विद्युदग्निम्) २.३७.६. काष्ठविशेषम् ७.२.१. **समिधः**=सम्यक् प्रदीपिकाः (काष्ठादिसामग्रीः) २७.११. काष्ठादिसामग्रीः ३.४. शब्दार्थसम्बन्धैः सम्यग् दीपिताः (धाराः=वाचः) १७.९६. समिध्यते प्रदीप्यते ज्ञानं याभिस्ताः (भा०—ज्ञानादिप्रकाशिकास्त्रिविधा विद्याः) २३.५८. सामग्रीभूताः (त्रिःसप्तप्रकृत्यादीनि) ३१.१५. **समिधा**=ज्ञानप्रकाशेन २८.१. सम्यक्प्रदीप्तेन स्वभावेन प्रदीपकेनेन्धनादिना वा १.९५.१. प्रदीपनसाधनेन ७.१४.१. सम्यक् प्रदीप्त्या नीत्या सह ४.४.१५. सम्यगिध्यते प्रदीप्यते यया तया, भा०—इन्धनेन, प्र०—अत्र सम्पूर्वादिन्धेः 'कृतो बहुलम्' इति करणे क्विप् ३.१. सम्यक् प्रकाशेन २१.१२. सम्यगग्निसंस्कृतेनाऽन्नादिना १२.३०. सम्यक् प्रदीप्तेन स्वभावेन १.९५.११. **समिधे**=सम्यक् प्रदीपनाय १.११३.९ [सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः 'कृतो बहुलम्०' इति करणे क्विप्। समिधः (यजु० १७.३९.) प्राणा वै समिधः, प्राणा ह्येतं समिन्धते श० ९.२.३.४४. प्राणा वै समिधः ऐ० २.४. श० १.५.४.१. यदेनं समयच्छत् तत्समिधः समित्त्वम् तै० २.१.३.८. समिधो यजति वसन्तमेव वसन्ते वा इदं सर्वं समिध्यते कौ० ३.४. वसन्तो वै समित् श० .१.५.३.९. गर्भः समित् श० ६.६.२.१५. अस्थीनि वै समिधः श० ९.२.३.४६.]

समितम् एकीभावं प्राप्नुतम् १२.५७. [सम्+इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः]

समितिम् सङ्ग्राम को सं० वि० १८२, अथर्व० १५.९.२. **समितिः**=विज्ञानमर्यादा १.९५.८. सामाजिकनियमव्यवस्थाद्यान्यायप्रचाराढ्या, सर्वमनुष्याणां मान्यज्ञानप्रदा, ब्रह्मचर्यविद्याभ्यासशुभगुणसाधिका शिष्टसभया राज्यप्रबन्धाद्याऽऽह्लादिना परमार्थव्यवहारशोधिका बुद्धिशरीरबलारोग्यवर्धिनी शुभमर्यादा ऋ० भू० ९३, ऋ० ८.८.४९.३. सङ्ग्रामादि की व्यवस्था स० प्र० १८२, अथर्व० १९.७.५५.६. **समितौ**=सङ्ग्रामे १२.८०. [सम्+इण् गतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। समितिः संग्रामनाम निघं० २.१७.]

समित्समित् प्रतिसमिधम् ३.४.१. [समित् पदस्य वीप्सायां द्विर्वचनम्। समित् इति व्याख्यातम्]

समिथानि सम्यग् यन्ति यानि विज्ञानानि तानि १.५५.५. **समिथे**=सङ्ग्रामे ६.२५.६. [सम्+इण् गतौ (अदा०) धातोः 'समीणः' उ० २.११. सूत्रेण थक्। समिथे संग्रामनाम निघं० २.१७.]

समिद्धम् प्रदीप्तम् (अग्नि=पावकम्) ७.४४.१. प्रदीपनीकृतम् (अग्निम्) ७.२.३. **समिद्धस्य**=प्रकाशमानस्य (राज्ञः) ५.२८.४. **समिद्धः**=सुप्रकाशितः (अग्निः) १.९४.१४. सम्यक् प्रदीप्तः (अग्निः) २१.१२. अग्निरिव प्रदीप्तः (राजा) १.१८८.१. विद्यया प्रदीप्तोऽध्यापकः १.१४२.१. सम्यक् प्रकाशितः (मित्रमहः=विद्वज्जनः) २९.२५. **समिद्धे**=प्रसिद्धे (अग्नौ=पावके) ४.२५.१. [सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः क्तः]

समिद्धः ज्ञानादिप्रकाशकाः समिद्रूपाः (भा०—त्रिविधा विद्याः), प्र०—अत्र छान्दसो वर्णागमस्तेन धस्य द्वित्वं सम्पन्नम् २३.५७. [सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः क्विप्। ततो जसि धस्य द्वित्वे रूपम्]

समिद्धाग्निः प्रदीप्तः पावकः ५.३७.२. [समिद्ध-अग्निपदयोः समासः। समिद्धः=सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०)+क्तः]

समिधान सम्यक् तेजस्विन् (अग्ने=सभाध्यक्ष राजन्) १३.१२. सम्यक् प्रकाशमान (अग्ने) ४.४.४. देदीप्यमान (अग्ने) ४.६.११. **समिधानम्**=सम्यक् प्रकाशमानम् (महद्यशः=अतुलां कीर्तिम्) २८.२४. **समिधानस्य**=सम्यक् प्रदीप्तस्य (विदुषो जनस्य) १.१४३.२. समिधानः=शुभगुणैर्देदीप्यमानः (अग्निरिव विद्वज्जनः) ७.२.११. **समिधाने**=समिध्यमाने (अग्नौ=पावके प्र०—अत्र यको लुक् ३४.१९. प्रदीप्यमाने (अग्नौ) ३.३०.२. [सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः शानच्]

समिधीमहि सम्यक् प्रकाशयेमहि, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि०' इति श्नमो लुक् २.४. सम्यक् प्रकाशयेम ३.२७.१५. प्रकाशितान् कुर्यामि ५.२१.१. एकीभावेन दीपयेम १९.७१. सम्यक्तया जीवेम वा, अ०—प्रकाशयेम ३.१८. **समिध्यस्व**=सम्यक् प्रदीप्तो भव २७.२. **समिन्धते**=सम्यक् प्रकाशयन्ते १.२२.२१. प्रदीपयन्ति ३.१०.९. प्रकाशयन्ति ३४.४४. सम्यक् प्रदीप्यन्ते १.४४.७. सम्यक् प्रदीपयेयुः ३.२७.११. **समिन्धे**=सम्यक् प्रकाशयते ७.१.१६. **समीधिरे**=सम्यक् प्रदीपयेयुः ५.८.१. सम्यक् प्रदीपयन्ति ५.८.७. **समीधे**=प्रापयति ६.१६.१५. प्रदीपयेय ३.५.१०. [सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोर्लिङ्। श्नमो लुक् छान्दसः। अन्यत्र लोट् विकरणव्यत्ययेन श्यन्। ततो लट्-लिटौ चापि]

समिध्यते सम्यक् प्रकाश्यते ३.२७.१४. प्रदीप्यते ४.१५.४. **समिध्यसे**=सम्यक् प्रदीप्यसे १५.३०. [सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः कर्मणि लट्]

समिध्यमानः सम्यग् देदीप्यमानः (विद्वज्जनः) ५.२८.२. सम्यक्तया प्रदीप्यमानः (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.२७.४. [सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः कर्मणि शानच्]

समिन्व सम्यक्तया व्याप्नुहि ५.४.७. **समिन्वथः**=सम्यक् प्राप्नुतम् १.११९.७. **समिन्वतम्**=सम्यक्तया वर्द्धयतम् १.१६०.५. **समिन्वतु**=सम्यग् ददातु ४.५३.७. सम्+इवि व्याप्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट् चापि]

समिषा सम्यग् धर्मेच्छयाऽन्नादिना वा १.५३.५. सम्यगिष्यते या सा समिट् तया श्रद्धया ऋ० भू० २६८, अथर्व० १९.७.७. [सम्+इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः क्विप्। ततष्टाप्रत्ययः। इषम् अन्ननाम निघं० २.७.]

समिष्टयजुषा सम्यगिष्टं येन भवति तेन (यजुः-कर्मणा) १९.२९. [सम्-इष्टपदयोः समासे ततो यजुषा सह समासः]

समीके सम्यक् प्राप्ते सङ्ग्रामे ४.२४.३. समीपे ३.३०.११. [समीके संग्रामनाम निघं० २.१७. [सम्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० ईकन्]

समीक्षन्ताम् सम्यक् प्रेक्षन्तां, पश्यन्तु ३६.१८. **समीक्षामहे**=हम देखते रहें सं० वि० २१४, ३६.१८. सुखसम्पादनार्थं सदा वर्त्तामहे ऋ० भू० ९८, ३६.१८. **समीक्षे**=सम्यक् पश्येयम् ३६.१८. सम्यक् पश्यामि ऋ० भू० ९८, ३६.१८. अपने प्राणवत् प्रिय जानूं आर्याभि० २.२३, ३६.१८. [सम्+ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्]

समीक्षयत् सम्यक्तया दर्शयेत् १.१३२.५. [सम्+ईक्ष दर्शने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लेट्]

समीची ये सम्यगञ्चतः समानं प्राप्नुतस्ते (द्यावा-पृथिव्यौ) ३.३०.११. ये एकीभावमिच्छतस्ते (मातृधात्र्यौ) १७.७०. प्राप्तसङ्गती (द्यावाक्षामा=प्रकाशभूमी) १.९६.५. सम्यगञ्चन्त्यौ (मातरा=जनकजनन्यौ) ३.१.७. सम्यगञ्चती (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २.३.६. सम्यक् प्राप्ते (द्यावापृथिव्यौ) ३.५५.२०. सम्यक् प्राप्नुवत्यौ (रात्रिदिवसौ) ३.५५.१२. [सम्=अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' इति क्विन्। 'अनिदिताम्०' इति नलोपे 'समः समि' अ० ६.३.९३ सूत्रेण सम्यादेशे

प्रथमाद्विवचनस्य छन्दसीकारादेशे भसंज्ञायाम् 'अचः' इत्यकारलोपे 'चौ' इति पूर्वस्य दीर्घत्वे रूपम्]

समीची ,या सम्यगञ्चति प्राप्नोति सा भूमिः १.६९.१. या दीप्तिं सम्यगञ्चति सा (विदुषी स्त्री) २.२७.१५. **समीचीः**=याः समानं सत्यमञ्चन्ति ताः (गिरः=विविधविद्यायुक्ता वाण्यः) ३.३१.१३. याः सम्यगच्यन्ते ताः (दिशः) १४.२५. याः सम्यगञ्चन्ति शिक्षाः प्राप्नुवन्ति ताः सेनाः ४.१७.९. [सम्यक्+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः क्विन् । 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति स्त्रियां ङीप् । 'अनिदिताम्' इति नलोपे 'अचः' इत्यकारलोपे 'समः समि' इति सम्यादेशे, 'चौ' इति पूर्वस्य दीर्घत्वे रूपम्]

समीजमानः सम्यक्तया सङ्गच्छमानः (सूरिः=विद्वज्जनः) ६.२९.५. [सम्+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः शानच् । विकरणव्यत्ययेन शः । तस्य ङित्वात् सम्प्रसारणम् । धातोरिकारस्य दीर्घश्छान्दसः]

समीयसे सम्यक्तया व्याप्नोषि ६.१५.९. [सम्+ईङ् गतौ (दिवा०) धातोर्लट् । अथवा वी गतिव्याप्त्यादिषु धातावीकारप्रश्लेषो वा । ततः कर्मणि लट्]

समीहसे सम्यक् चेष्टसे, भा०—सर्वत्राऽभिव्याप्तोऽसि ३६.१२. सम्यक् चेष्टा करते हो आर्याभि० २.७, ३६.२२. [सम्+ईह चेष्टायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्]

समुक्षितम् सम्यक् सिक्तम् (सोमम्=ऐश्वर्यम्) ३.६०.५. **समुक्षितानाम्**=सम्यक् सेक्तॄणाम् (मनुष्याणाम्) ५.५६.५. [सम्-उक्षितपदयोः समासः । उक्षितम्=उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोः क्तः]

समुच्यसि सम्यक्तया वदसि ५.८१.४. [सम् वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्यन् । तस्य ङित्वात् सम्प्रसारणम्]

समुद्र इव समुद्रवन्त्यापो यस्मिँस्तद्वत् १.८.७. सागर इवान्तरिक्षमिव वा ३३.८३. [समुद्र-इवपदयोः समासः]

समुद्रज्येष्ठाः समुद्र ज्येष्ठो यासां ताः (आपः=जलानि) ७.४९.१. [समुद्र-ज्येष्ठपदयोः समासः । ज्येष्ठः=वृद्धप्राति० अतिशायन इष्ठन् । 'वृद्धस्य चे' ति ज्यादेशः]

समुद्रतः अन्तरिक्षात् ५.५५.५. [समुद्रप्राति० पञ्चम्यन्तात् तसिः]

समुद्रम् अर्णवम् १.७१.७. अन्तरिक्षं जलमयं वा १.१९.८. समुद्रवन्त्यापो यस्मिन् तदन्तरिक्षम् १.१९.७. सागरम् १.५६.१. मेघं सागरं वा ३३.२. **समुद्रस्य**=सम्यग् द्रवन्त्यापो यस्मिँस्तस्यान्तरिक्षस्य १.११६.४. **समुद्रः**=सम्यग् द्रवन्त्यापो यस्मात् सः (सागरः) १७.६०. भा०—समुद्रवद् गम्भीरो रत्नाढ्यः १.८.४५. सागर इव गाम्भीर्यम् १५.४. सम्यगापो द्रवन्ति यस्मिँस्तदन्तरिक्षं मेघो वा ६.६९.६. उदधिः ८.२८. समुद्रवन्त्यापो यस्मिन् स सागरः ७.३५.१३. सब भूत-मात्र जिसमें डूबे हैं, वह द्रवणीय स्वरूप सबका कारण (ईश्वर) आर्याभि० २.१८, ५.३३. समुद्द्रवन्ति कामुका यस्मिन् व्यवहारे सः १३.१६. समुद्द्रवन्ति भूतानि यस्मात् सः (ईश्वरः) ५.३३. **समुद्रात्**=जलद्रावाऽऽधारात् (सागरात्) १.११७.१४. **समुद्रान्**=समुद्द्रवन्ति पदार्था येषु तान् भूत-भविष्यद्वर्त्तमानान् समयान्, अ०—लोकान् १३.३१. **समुद्राय**=महाजलाशयाय २४.२१. अन्तरिक्षे गमनाय ३८.७. **समुद्राः**=शब्दाऽर्णवाः १.१६४.४२. **समुद्रे**=अन्तरिक्षवद् व्याप्ते परमेश्वरे १८.५५. आकाशमिव व्याप्तस्वरूपे (परमेश्वरे) १७.९९. मनसि १३.५३. सम्यग् द्रवीभूते व्यवहारे ८.२५. [उन्दी क्लेदने (रुधा०) धातोः सम्पूर्वकात् 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक् । 'अनिदिताम्०' इति नलोपः । समुद्रः अन्तरिक्षनाम निघं० १.३. पदनाम निघं० ५.६. समुद्रः कस्मात् ? समुद्द्रवन्त्यस्मादापः समभिद्रवन्त्येनमापः सम्मोदन्तेऽस्मिन् भूतानि समुदको भवति समुनत्तीति वा नि० २.१०. समुद्रः आदित्यः नि० १३.१६. समुद्रम्=समुदितारम् नि० १०.३२. समुद्रः (यजु० ३८.७) अयं वै समुद्रो योऽयं (वायुः) पवतऽएतस्माद्वै समुद्रात् सर्वे देवाः सर्वाणि भूतानि समुद्रवन्ति श० १४.२.२.२. य एवायं (वायुः) पवत एष एव स समुद्र एतं हि संद्रवन्तं सर्वाणि भूतान्यनुसंद्रवन्ति जै० उ० १.२५.४. तद् यत् (आपः) समुद्रवन्त तस्मात्समुद्र उच्यते गो० पू० १.७. तद् वस्तिमभिनत् । स समुद्रोऽभवत् । तस्मात् समुद्रस्य (जलं) न पिबन्ति । प्रजननमिव हि मन्यन्ते तै० २.२.९.२-३. आपो वै समुद्रः श० ३.८.४.११. समुद्रो वाऽपां योनिः श० ७.५.२.५८. समुद्रो वाऽवभृथः तै० २.१.५.२. (यजु० १३.५३.) मनो वै समुद्रः श० ७.५.२.५२. वाग्वै समुद्रो मनः समुद्रस्य चक्षुः तां० ६.४.७. (ऋ० ४.५८.१) वाग्वै समुद्रो न वै वाक् क्षीयते न समुद्रः क्षीयते ऐ० ५.१६. वाग्वै समुद्रः तां० ७.७.९. पुरुषो वै समुद्रः जै० उ० ३.३५.५. (यजु० १३.१६) रुक्मो वै समुद्रः । श० ७.४.२.५. एष वाव स समुद्रः यच्चात्वालः तै० १.५.१०.१. तेजोऽसि तपसि श्रितम् । समुद्रस्य प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.३. समुद्रोऽसि तेजसि श्रितः । अपां प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.४. समुद्र एवास्य (अश्वस्य मेध्यस्य) बन्धुः समुद्रो योनिः श० १०.६.४.१.

तस्मादिम लोकं (=पृथिवीम्) दक्षिणावत् समुद्रः पर्येति श० ७.१.१.१३. तस्मादिमाँल्लोकान्दक्षिणावृत् समुद्रः पर्येति श० ६.१.२.३. तस्मादिमं लोकं (=पृथिवीं) सर्वतः समुद्रः पर्येति श० ७.१.१.१३. तस्मादिमाँल्लोकान्त्सर्वतः समुद्रः पर्येति श० ६.१.२.३.]

समुद्रव्यचसम् समुद्रेऽन्तरिक्षे व्यचा व्याप्तिर्यस्य तं सर्वव्यापिनमीश्वरं समुद्रे नौकादिविजयगुणसाधनव्यापिनं शूरवीरं वा (इन्द्रं=ईश्वरं राजानं वा) १.११.१. समुद्रस्य व्यचसो व्याप्तय इव यस्मिँस्तम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) १२.५६. समुद्रस्यान्तरिक्षस्य व्यचा व्याप्तिरिव व्याप्तिर्यस्य तम् (इन्द्रं=परमात्मानम्) १७.६१. [समुद्र व्यचस्पदयोः समासः । व्यचस्=वि+अञ्चु गतौ (भ्वा०) धातोः 'मिथुनेऽसिः' उ० ४.२२३ सूत्रेणासिः । बाहु० किच्च]

समुद्रसमम् समुद्रेण समानम्, भा०—मेघेन तुल्यम् (सरः=तडागः) २३.४८. [समुद्र-समपदयोः समासः]

समुद्रार्थाः समुद्रायेमाः (आपः=जलानि) ७.४६.२. [समुद्र-अर्थपदयोः समासः]

समुद्रियम् सागरे भवम् (सदनम्) १७.८७. **समुद्रियः**=समुद्रे भवो नौसमूहः १.५५.२. समुद्रेऽन्तरिक्षे जलमये वा भवः (स्वपुरुषार्थयुक्तो विद्वज्जनः) प्र०=अत्र 'समुद्राभ्राद् घः' अ० ४.४.११८. इति समुद्रशब्दाद् घः प्रत्ययः १.२५.७. [समुद्रप्राति० भवार्थे 'समुद्राभ्राद् घः' अ० ४.४.११८ सूत्रेण भवार्थे घः । घस्येयादेशः]

समुद्रियाणि समुद्राऽर्हाणि (अर्णांसि=उदकानि) ४.१६.७. [समुद्रप्राति० अर्हत्यर्थे घश्छान्दसः]

समुनप् सम्यगुम्भति पूरयति २.१३.६. [सम्+उम्भ पूरणे (तुदा०) धातोश्छान्दसं रूपम्]

समुन्नयामि उत्कृष्टतया नयामि ६.२८. [सम्+उत्+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

समुब्धम् समत्वेन गूढम् (कुमारम्) ५.२.१.

समूढम् यत् सम्यगुह्यते तर्क्यते तर्केण विज्ञायते तत् (पदं=मध्यस्थं जगत्) १.२२.१७. मोहेन सह वर्त्तमानं ज्ञानवर्जितं जडम् (परमाणुमयं जगत्) ऋ० भू० २६३, ५.१५. सम्यगुह्यतेऽनुनीयते शब्द्यते यत्तत् (परमाण्वादि-रूपम्) ५.१५. [सम्+ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोः क्तः । अथवा=सह-मूढपदयोः समासः । मूढः=मुह वैचित्ये (दिवा०) धातोः क्तः]

समूहसि सम्यक् चेतयसि १.१३१.३. [सम्+ऊह वितर्के (भ्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

समृञ्जते सम्यक् प्रसाध्नुवन्ति, प्र०—ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्मा नि० ६.२१, १.६.६. [सम्+ऋञ्जतिः प्रसाधनकर्मा (नि० ६.२१) धातोर्लट्]

समृण्वति सम्यक् प्राप्नोति, प्र०—ऋण्वतीति गति-कर्मा निघं० २.१४, ३.२.१. सम्यक्तया गच्छति जानाति वा ३.११.२. [सम्+ऋण्वति गतिकर्मा (निघं० २.१४) धातोर्लट्]

समृतः सम्यक् सत्यस्वरूपः (पूर्णकामो जनः) ४.१४.५. **समृते**=सम्यक् सत्ये व्यवहारे ३.३८.३. **समृतेषु**=सम्यक् सत्यन्यायप्रकाशचिह्नेषु (ध्वजेषु) १७.४३. [सम्+ऋतपदयोः समासः । ऋतम् सत्यनाम निघं० ३.१०. उदकनाम निघं० १.१२. धननाम निघं० २.१०.]

समृता सम्यग् ऋतं सत्यं येषु तानि (अ० —कर्माणि) प्र०—शेः स्थाने डादेशः १.३१.६. [सम्-ऋतपदयोः समासे शेर्लोपश्छान्दसः]

समृतिः सम्यक् सत्क्रियावान् (विद्वज्जनः) ७.६०.१०. युद्धम् ४.१६.१७. **समृतौ**=सम्यक् ऋतिः प्राप्तिर्यया तस्याम् (सेनायाम्) १.१२७.३. सम्यग् यथार्थबोधयुक्तायां प्रज्ञायाम् ५.७.२. [सम्-ऋतिपदयोः समासः । ऋतिः=ऋ गतौ (जु०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

समृधः सम्यगृधिमन्तः (जनाः) ६.२.१०. [सम्+ऋधु वृद्धौ (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

समेति सम्यग् गच्छति, भा०—नयति २५.४१. सम्यगेति ७.१.१४. सम्यक् प्राप्नोति ऋ० भू० २०५, **समेतु**=सङ्गच्छेताम् १२.११२. [सम्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लोट्]

समेद्धारम् सम्यक् प्रकाशकम् (अग्निम्) ६.४८.८. यः सम्यगिन्धयति प्रदीपयति तम् (यजमानम्) ७.१.१५. [सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । धातोर्नलपोश्छान्दसः]

समेयथुः सम्यक् प्राप्नुयातम्, प्र०—अत्र पुरुष-व्यत्ययः ५.७३.४. [सम्+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लिट्]

समैरत् सम्यक्तया कम्पयति, यथाक्रमं चालयति ४.५६.३. प्रेरयति ३.५५.२०. सम्यक् प्रेरयेत्, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुङ् न ३.३१.१५. **समैरयध्वम्**=सम्यक् समन्तात्प्रापयतम् ४.३४.२. **समैरयम्**=एकीभावेन प्रेरयेयम् ४.४२.३.

[सम्+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्लङ्। छन्दसि शपो लुङ् न। अन्यत्र=सम्+आङ्+ईर गतौ कम्पने च (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् लङ् च]

समोकसः सम्यगोको निवासस्थानं येभ्यस्ते (नरः=नायका जनाः) १.६४.१०. **समोकाः**=सम्यगोकांसि निवासस्थानानि यस्मिन् सः (इन्द्रः=सूर्यलोकः) १.१००.१. एकस्थानः (राजजनः) ६.१८.७. [सम्-ओकस्पदयोः समासः। ओकस्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० असुन्। न्यङ्क्वादित्वात् कुत्वम्

समोकसा समीचीनमोको निवसनं ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५९.४. समानगृहेण सह वर्त्तमानौ (दम्पती) १.११४.४. [सम्-ओकस्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

समोहम् सम्यग् गूढम् (रेणुम्=अपराधम्) ४.१७.१३. **समोहे**=सङ्ग्रामे १.८.६. [समोहे संग्रामनाम निघं० २.१७.]

सम्पत् सम्यक् प्राप्यते या सा (सम्पत्तिः) १५.८. **सम्पदे**=ऐश्वर्याय १५.८. [सम्+पद गतौ (दिवा०) सम्पदादित्वात् क्विप्। श्रोत्रं वै सम्पच्छ्रोत्रे हीमे सर्वे वेदा अभिसम्पन्नाः श० १४.९.२.४.]

सम्पर्यत एक दूसरे का हित सिद्ध किया करो सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.६.]

सम्पश्यन् सम्यक् प्रेक्षमाणः (विद्वज्जनः) १७.५८. [सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः शतृ। शिति पश्यादेशः]

सम्पश्यमानाः सम्यक् प्रेक्षमाणाः (सुविद्वांसो जनाः) ३.३१.१०. [सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः शानच्। 'दृशेश्चेति वक्तव्यम्' अ० १.३.२९. वा०सूत्रेण सम्पूर्वकाद् दृशेरात्मनेपदम्]

सम्पारणम् सम्यग् दुःखस्य पारं गच्छति येन तत् (वसु=धनम्) ३.४५.४. [सम्+पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोः करणे ल्युट्]

सम्पिणक् संपिनष्टि ४.३०.९. सञ्चूर्णय ४.३०.१३. सम्यक् पिंष्याः ३.३०.८. [सम्+पिष्लृ सञ्चूर्णने (रुधा०) धातोर्लङ् अडभावश्छान्दसः। संपिणक् सम्पिण्ढि नि० ६.१.]

सम्पिपृक्त सम्यक् प्राप्नुत ३.५४.२१. [सम्+पृची सम्पर्चने (अदा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः]

सम्पिपेश सम्पिनष्टि २.१५.६. सम्पिष्यात् ३.३४.६. [सम्+पिष्लृ सञ्चूर्णने (रुधा०) धातोर्लिट्। षस्य शकारो वर्णव्यत्ययेन]

सम्पिष्टात् सञ्चूर्णितात् ४.३०.१०. [सम्+पिष्लृ सञ्चूर्णने (रुधा०) धातोः क्तान्तात् पञ्चमी]

सम्पृङ्क्त सम्बध्नीत १९ ११. [सम्+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लोट्]

सम्पृचः ये सम्पृचन्ति ते (मनुष्याः) १९.११. संयुक्तात् (शत्रुजनात्) २.३५.६. सम्बन्ध करने वाले (स्त्री-पुरुष) सं० वि० १०४, २.३५.६. **सम्पृचौ**=राजगृहाश्रमव्यवहाराणां सम्यक् पृङ्क्तारौ राजप्रजाजनौ ९.४. [सम्+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सम्पृच्छसे सम्यक्तया पृच्छ, प्र०—अत्र लेट् ३३.२७ [सम्+प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोर्लेट्। 'समो गमादिषु विदिप्रच्छिस्वरतीनामुपसंख्यानम्' अ० १.३.२९. वा०सूत्रेणात्मनेपदम्]

सम्पृच्यन्ताम् श्रेष्ठयुक्त्या वैद्यकशिल्पशास्त्ररीत्या मेल्यन्ताम् १.२१. सम्मेल्यन्ताम्, सम्पृच्यन्ते वा १.२१. [सम्+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः कर्मणि लोट्]

सम्पृञ्चानः सम्पर्कं कुर्वन् कारयन् वा (कविः=क्रान्तदर्शनः कालः) १.९५.८. [सम्+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोः शानच्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सम्पृणक्तु सम्बध्नातु ४.३८ १०. [सम्+पृची सम्पर्के (रुधा०) धातोर्लोट्]

सम्प्रच्यध्वम् सम्यग् गच्छत १५.५३. [सम्+प्र+च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। धातोरुकारलोपश्छान्दसः]

सम्प्रजया श्रेष्ठेन सन्तानेन राज्येन वा ३.१९. [सम्-प्रजापदयोः समासः। प्रजा=प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) डः+टाप्]

सम्प्रयात सम्यक् प्राप्नुत १५.५३. [सम्+प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोट्]

सम्प्रश्नम् सम्यक् पृच्छन्ति यस्मिँस्तम् (ब्रह्म तत्सृष्टिश्च) १७.२७. [सम्+प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोः 'यजयाच०' इति नङ्। सम्·प्रश्नपदयोः समासो वा]

सम्प्रसारयाव विस्तारयावः २३.२०. [सम्+प्र+सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

सम्प्रियेण एकीभावेन प्रसन्नताकारकेण (संवर्चसा=विद्याऽध्ययन-प्रकाशेन) ३.१९. **सम्प्रियौ**=परस्परं सम्यक् प्रीतियुक्तौ, भा०—अन्योऽन्यस्य प्रियाचरणे रतौ (स्त्री-पुरुषौ) १२.५७. [सम्+प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०

धातोः 'इगुपधज्ञाप्रीकिरः कः' इति कर्त्तरि कः । ततस्तृतीयैकवचनम्]

सम्बभूव सम्भूतोऽस्ति २३.२. [सम्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

सम्बोधि सम्यक्तया बुध्यसे ५.४.६. [सम्+बुध अवगमने (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ् । अडभावः]

सम्भरणम् सम्यग् धारणं पोषणं वा ७.२५.२. [सम्+भृञ् भरणे (भ्वा०), डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्ल्युट्]

सम्भरणः सम्यग् धारकः (गुणः) १४.२३. [सम्+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

सम्भरन्ति सम्यग् धारयन्ति पोषयन्ति वा १.१६२.६ सम्यक्तया हरन्ति ३३.३८. सम्यग् धरन्ति पुष्णन्ति वा २५.२६. [सम्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लट् । हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्वा सम्पूर्वकाल्लट् । हस्य भकारश्छान्दसः । अथवा सम्पूर्वकाद् डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन शप्]

सम्भरः यः सम्भरति सः (इन्द्रः=राजा) ४.१७.११. [सम्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच्]

सम्भव अ०—एकीभव, न द्वैधमाचर ६.११. अच्छे प्रकार हो सं० वि० १३६, अथर्व० १४.२.३२. सम्यग् भव ४.१७. सम्यक् सम्पद्यस्व ४.१३. सम्यक् निष्पद्यस्व ४.१७. [सम्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्]

सम्भवात् संयोगजन्यात् कार्य्यात् (जगतः) ४०.१०. [सम्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरप्' इत्यप्]

सम्भाराः होम करने के साकल्य सं० वि० २०८, अथर्व० ९.६.१. [सम्+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

सम्भिदन्तः सम्यक्तया विदारयन्तः (अङ्गिरसः=वायवः) ४.३.११. [सम्+भिदिर् विदारणे (रुधा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन शः]

सम्भुजम् सम्भोक्तुम् २.१.४. [सम्+भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोर्घञर्थे कः । 'भाववचनाश्चे' ति तुमुन्नपवादो घञ्]

सम्भूतिम् सम्भवन्ति यस्यां तां कार्याख्यां सृष्टिम् ४०.११. **सम्भूत्या**=शरीरेन्द्रियाऽन्तःकरणरूपयोत्पन्नया कार्यरूपया, धर्म्ये प्रवर्त्तयित्र्या सृष्ट्या ४०.११. **सम्भूत्याम्**=महत्तत्त्वादिस्वरूपेण परिणतायां सृष्टौ, भा०—अनित्यं संयोगजन्यं कार्यं कारणादुत्पन्नं पृथिव्यादिस्थूलं सूक्ष्मं कार्यकारणाख्यं जगत् ४०.६. जो कारण से उत्पन्न हुए कार्यरूप पृथिवी आदि भूत, पाषाण, वृक्षादि अवयव और मनुष्यादि के शरीर में स० प्र० ४३२, ४०.६. [सम्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । सम्भूतिः (=प्राणः) प्राणं वा अनुप्रजाः पशवस्सम्भवन्ति जै० उ० २.४.५. प्राणा उ ह वाव राजन् मनुष्यस्य सम्भूतिरेवेति जै० उ० ४.७.४.]

सम्भृतक्रतो सम्भृता धारिताः क्रतवः क्रियाः प्रज्ञा वा येन तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभेश) १.५२.८. [सम्भृत-क्रतुपदयोः समासः । सम्भृतः=सम्+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः । क्रतुः=कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.६.]

सम्भृतम् सम्यक् सिद्धं जातम् (पृषदाज्यं=दध्याज्यादिभोज्यम्) ३१.६. सम्यग् धृतम् (सत्यासत्यनिर्णयम्) १८.५८. सम्यग् धृतं पोषितं वा (वस्तु) ३.३०.१४. **सम्भृतः**=सम्यक् पुष्टः (संसारः) ३१.१७. सम्यक् पोषितो धृतो वा (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. [सम्+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः]

सम्भ्रियमाणः सम्यक् पोषितः (वायुः=प्राणः) ८.५७. सम्यक् पोष्यमाणो भ्रियमाणो वा (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. [सम्+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्मणि शानच्]

सम्भ्रियासम् सम्यक्तया धारयेयम्, भा०—पुष्कलं भारं सदा चयेयम् २.८. [सम्+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लिङ् आशिषि]

सम्मदथः सम्यगानन्दत ४.३४.११. **सम्मदन्ति**=सम्यग् हर्षन्ति १७.२६. **सम्मदेम**=सम्यक्तया सुखयेम प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययः ४.१. **सम्ममदः**=सम्यगानन्द ४.२०.४. [सम्+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन शप् । अन्यत्र लिङ्]

सम्मदन्तः सम्यक्तया हर्षन्तः (प्रजाजनाः) ११.७५. [सम्+मदी हर्षे (दिवा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन शप्]

सम्मनसः परस्पर के लिए हितैषी (स्त्रीपुरुष लोग) सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.७. एक मति वाले सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.५. **सम्मनाः**=सम्यक् प्रीतियुक्त मन वाला (पुत्र) सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.२. [सम्-मनस्पदयोः समासः]

सम्मनांसि एकस्मिन् धर्मे सङ्कल्पविकल्पाद्या अन्तःकरणवृत्तयः १२.५८. [सम्-मनस्पदयोः समासः]

सम्महेत् सम्यक्तया पूजयेत् १.१११.३. **सम्महेम**=सम्यक् सत्कुर्याम १.६४.१. [सम्+मह पूजायाम् (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

सम्माय सम्यङ्मानं कृत्वा १.६७.५. [सम्+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

सम्मार्ज्मि सम्यक् प्रकारेण संशोधयामि २.३५.१२. सम्यक् शिक्षया शोधयामि १.२६ सम्यङ् मार्ष्टि वा, प्र०—अत्र पक्षे पुरुषव्यत्ययः २.७. सम्यक् शुद्धो भवामि शोधयामि वा २.१४. [सम्+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोर्लट्]

सम्मितः सम्यक् परिमितः (अ०—पुरुषः) १७.८१. [सम्-मितपदयोः समासः। मितः=माङ् माने (जु०)+क्तः]

सम्मितासः तुलावत् सत्यविवेचकाः (मरुतः=विद्वज्जनाः) १७.८४. [संमितमिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

सम्मिमिक्षिरे सम्यग् मेढुमिच्छन्ति १.८७.६. **सम्मिमिक्षुः**=सम्यक्तया सिञ्चन्ति १.१६५.१. [सम्+मिह सेचने (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल् लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सम्मिमीहि सम्मन्यस्व ६.१९.३. सम्मिमीव्व ३.५४.२२. सम्यग् विधेहि ५.४.२. [सम्+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

सम्मिश्लः पदार्थेषु सम्यक् मिश्रो मिलितः सन् (इन्द्रः=वायुः) प्र०—'संज्ञाछन्दसोर्वा कपिलकादीनामिति वक्तव्यम्' अ० ८.२.१८. अनेन वार्त्तिकेन रेफस्य लत्वादेशः १.७.२. **सम्मिश्लाः**=सम्यक् मिश्राः (वायवः) २.३६.२. सम्यक् मित्रत्वेन मिश्रिताः (पतिव्रताः स्त्रियः) ७.५६.६. सम्मिश्राः संयुक्ताः (पृषतीः=सेचननिमित्ता गतीः) ३.२६.४. [सम्-मिश्रपदयोः समासः । रेफस्य लत्वं कपिलकादित्वात्]

सम्मिश्लासः अग्न्यादितत्त्वैः सम्यक् मिश्राः (नरः=नायका जनाः) १.६४.१०. [सम्-मिश्रपदयोः समासे जसोऽसुक् । रेफस्य लत्वम्]

सम्मील्य सम्यक् निमेषणं कृत्वा १.१६१.१२. [सम्+मील निमेषणे (भ्वा०) धातोः क्त्वा । समासे क्त्वो ल्यप्]

सम्मृण सम्यक्तया हिन्धि १.१३३.५. [सम्+मृण हिंसायाम् (तुदा०) धातोर्लोट्]

सम्यक् यत्समीचीनमञ्चति तत् (क्षत्रं=धनं राज्यं वा) ५.६६.२. साधुरीत्या ४.५८.६. **सम्यञ्चम्**=यः समीचीनमञ्चति तम् (इषम्=अन्नम्) १५.२९. समीचीनम् ५.७.१. **सम्यञ्चः**=सम्यक् प्राप्ति वाले (स्त्री पुरुषो) सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.६. सम्यक् प्रेमादि गुणों से युक्त (भाई-बहिन आदि) सं० वि० १४१, अथर्व० २.३०.३. [सम्+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' इति क्विन् । 'अनिदिताम्०' इति नलोपे 'समः समि' सूत्रेण च सम्यादेशे रूपम्]

सम्यञ्चा सम्यगञ्चतौ (मिथुनौ=स्त्रीपुरुषौ) १.१७९.३. यथावद् विज्ञानयुक्तावविरुद्धौ (ब्रह्म क्षत्रञ्च=ब्राह्मणक्षत्रियौ) ऋ० भू० २१६, सम्यगेकीभावेनाऽञ्चतस्तौ (ब्रह्म च क्षत्रञ्च) २०.२५. [सम्यक् इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सम्राजम् भूगोलस्य राजानम् ६.७.१. यः सम्यग्राजते तम् (विद्युदाख्यमग्निम्) ३३.८. चक्रवर्त्तिनमिव (अग्निम्) ७.२४. **सम्राजः**=सम्यग्राजमानश्चक्रवर्त्तिनो राजानः ७.३८.४. **सम्राजे**=यः सम्यक् सूर्यवद् विद्याविनयाभ्यां राजते तस्मै (राज्ञे) ६.६८.९. **सम्राजोः**=यौ सम्यग् राजेते दीप्येते तयोः (इन्द्रावरुणयोः=सूर्याचन्द्रमसोः) १.१७.१. **सम्राट्**=यः सूर्यः सम्यग्राजते तद्वद् वर्त्तमानश्चक्रवर्त्ती राजा ७.५८.४. सम्यक् प्रकाशमानम् (चक्षुः=नेत्रम्) २०.५. यश्चक्रवर्त्तीव विद्यासु सम्यग्राजते सः (विद्वज्जनः) १.१८८.५. या सम्यक् प्रदीप्यते सा (स्त्री) १५.१२. सम्यक् सुखे भूगोले राजमाना (स्त्री) १४.१३. सार्वभौमो राजा ४.२१.१०. यो राजधर्मे सम्यग्राजते सः (भा०—चक्रवर्त्ती राजा) ९.२४. सम्यक् प्रकाशकः (अद्वितीयः परमेश्वरः) १२.११७. [सम्+राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'सत्सूद्विष०' इत्यादिना कर्त्तरि क्विप् । 'मो राजि समः क्वौ' सूत्रेण मकारस्य मकारोऽनुस्वारबाधनार्थः । सम्राट्=स यदाह सम्राडसीति सोमं वा एतदाहैष ह वै वायुर्भूत्वान्तरिक्षलोके सम्राजति तद् यत् सम्राजति तस्मात् सम्राट् तत् सम्राजः सम्राट्त्वम् । गो० पू० ५.१३. तस्य यो रसो व्यक्षरत्तं पाणिभिः सममृजुस्तस्मात् सम्राट् श० १४.१.१.११. सम्राड् वाजपेयेन (इष्ट्वा भवति) श० ५.१.१.१३. स वाजपेयेनेष्ट्वा सम्राडिति नामाधत्त गो० पू० ५.८. यो वै वाजपेयः स सम्राट्सवः तै० २.७.६.१. रथन्तरं वै सम्राट् तै० १.४.४.९.]

सम्राजा सम्यग्राजमानौ चक्रवर्त्तिनृपवद्वर्त्तमानौ (सूर्याचन्द्रमसौ) २.४१.६. [सम्राज् इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सम्राज्ञी प्रीति से प्रकाशमान (राजपत्नी) सम्यक् प्रकाशमान (चक्रवर्त्तिराजपत्नी सं० वि० १३५, १०.८५.४६. [सम्-राज्ञीपदयोः समासः । राज्ञी=राजन्-प्राति० स्त्रियां ङीप्]

सयावभिः ये समानं यान्ति ते सयावानस्तैः (देवैः=विद्वज्जनैः) १.४४.१३. ये सह यान्ति तैः (देवैः=विद्वद्भिः) ३३.५. **सयावानम्**=सेनादिना सह गच्छन्तम् (रथम्) ५.३५.७. [समान-यावन्पदयोः समासे समानस्य सादेशः। सह-यावन्पदयोर्वा समासे सहस्य सादेशः । यावन्=या प्रापणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि वनिप्]

सयावरी या सहैव याति सा (वाणी=सकलविद्यायुक्ता वाक्) ७.३१.८. **सयावरीः**=याः समानं यान्ति ताः (गौर्यः=शुभ्राः किरणा इवोद्यमयुक्ताः सेनाः) १.८४.१०. [सयावन् इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां 'वनो र च' सूत्रेण स्त्रियां ङीप् रेफश्चान्तादेशः]

सयुग्भिः ये सह युञ्जन्ते तैः (वसु-रुद्राऽऽदित्यैः) २८.४. **सयुजः**=ये समानं युञ्जते ते (प्रजाजनाः) ३.३०.११. **सयुजा**=यत्समानं युनक्ति तेन (स्वकीयेन सैन्येन) ११.१५. [सह-युज्पदयोः समासे 'वोपसर्जनस्ये' ति सहस्य सादेशः । युज्=युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'सत्सूद्विष्०' सूत्रेण क्विप्]

सयुजा यौ सहैव युङ्क्तस्तौ (कवी=मेधाविजनौ) २८.३०. यौ समानसम्बन्धौ व्याप्यव्यापकभावेन सहैव युक्तौ वा तौ (जीवेशौ) १.१६४.२०. [सयुज् इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सयूथ्यः समानश्चाऽसौ यूथः समूहस्तस्मिन् भवः (सखा=मित्रः) ४.२०. ससैन्यः (सेनापतिः) ६.६. [सयूथ-प्राति० भवार्थे 'सगर्भसयूथ०' अ० ४.४.११४. सूत्रेण यन्]

सयोनिः समानस्थानः (जीवः) १.१६४.३८. **सयोनीः**=समाना योनिर्विद्या निमित्तं वा तौ (अध्यापकोपदेशकौ) १.१५६.४. [समान-योनिपदयोः समासे समानस्य सादेशः 'समानस्य छन्दसि०' अ० ६.३.८४. सूत्रेण]

सयोनीः समाना योनिर्यासां ताः (युवतयः स्त्रियः) ३.१.६. [समान-योनिपदयोः समासे स्त्रियाम् कृदिकारादक्तिनः' इति वा०सूत्रेण ङीप्]

सरड्भ्यः युद्धे विजयकर्तृ सेनाजनादिभ्यः १.११२.२१. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सर्त्तेरटिः' उ० १.१३४. सूत्रेणाटिः]

सरण्यन् आत्मनः सरणं गमनं विज्ञानं वेच्छन् (इन्द्रः=राजा) ३.३१.१८. प्राप्नुवन् (विद्वज्जनः) ३.१.१६. [सरणपदादात्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ । सरणम्=गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

सरण्यान् सरणं प्राप्तान् (जनान्) ४.२१.६. [सरणप्राति० भवार्थे यत् । सरणम्=सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यत्]

सरण्युभिः आत्मनं सरणं गमनमिच्छुभिः (यज्ञैः=व्यवहारैः) ३.३२.५. सर्वेषु शास्त्रेषु विज्ञानगतिभिः (विप्रैः=मेधाविजनैः) प्र०—अत्र 'सृयुवचि०' इति सूत्रेणान्युच्प्रत्ययः १.६२.४. [सरणपदादात्मन इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसि' सूत्रेण उः । अथवा सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सृयुवचिभ्यः०' उ० ३.८१. सूत्रेणान्युच् सरण्यूः सरणात् उ० १२.११.]

सरत् सरति ४.३०.१०. **सरन्**=गच्छन्ति, प्र०—अत्राऽडभावः ४.१७.३. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभावश्छान्दसः]

सरथम् रथै रमणीयैः कर्मभिर्गुणैर्यानैर्वा सह वर्त्तमानस्तम् (मनुष्यं रथं वा) १.७१.६. रथेन सह वर्त्तमानम् (राजानम्) ५.२६.८. रथैः सह वर्त्तमानं सैन्यमुत्तमां सामग्रीं वा १.१०८.१. रथादिभिः सहितं सैन्यम् ४.१६.११. समानं यानम् ४.५७.३. रमणीयेन स्वरूपेण सह वर्त्तमानम् (सुखम्) ७.११.१. रथेन यानसमूहेन सहितम् (विद्वज्जनम्) ५.११.२. [सह-रथपदयोः समासे 'वोपसर्जनस्य' सूत्रेण सहस्य सादेशः]

सरथा रथादिभिः सह वर्त्तमानौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) ५.४३.८. [सरथमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारः]

सरथिना रथिभिः सह वर्त्तमानौ (देवौ=विद्वज्जनौ) २६.७. [सह-रथिन्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः। रथिन्=रथप्राति० मत्वर्थ इनिः]

सरपसः सराणि सृतान्यपांसि पापानि येन तस्य (शिल्पिजनस्य) २.१३.१२. [सर-अपस्पदयोः समासः । शकन्धुन्यायेन पररूपम् । अपः कर्मनाम निघं० २.१.]

सरम् प्राप्तव्यम् (व्यक्त-शब्दम्) २२.२. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोरच्]

सरमा समानरमणा (विदुषी स्त्री) ५.४५.७. या

सरानाप्तान् मानयति सा (विदुषी स्त्री) ५.४५.८. यया सरान् विद्याधर्मबोधान् मिमीते तथा (माता), प्र०—अत्र 'आतोऽनुपसर्गे कः' इति कः प्रत्ययः १.६२.३. या सरति सा सरला नीतिः ४.१६.८. समानं रमा रमणमस्याः सा (वैद्या स्त्री) ३३.५९. या सरान् गतिमतः पदार्थान् मिनोति सा (विदुषी स्त्री) ३.३१.६. [समान-रमापदयोः समासः। अथवा सरोपपदे माङ् माने (जु०) डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्वा कः। ततः स्त्रियां टाप्। सरमा सरणात् नि० ११.२५.]

सरयन्ते सरयन्ति गमयन्ति ४.१७.२. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लट्]

सरया स्नेहेन २५.१२.

सरयुः यः सरति सः (पदार्थः) ५.५३.९. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सरतेरयुः' उ० ३.२२. सूत्रेणायुः]

सरयोः गच्छतोः (दुर्जनयोः) ४ ३०.१८. [सरयुरिति व्याख्यातम्। तत ओसि रूपम्]

सरश्मिभिः रश्मिभिः प्रकाशैः सह १.१३५.३ **सरश्मिः**=रश्मिभिः प्रकाशैः सह वर्त्तमानः (भागः) १.१३५.३. [सह-रश्मिपदयोः समासे सहस्य सादेशः]

सरस्याय सरसि तडागे भवाय (पुरुषाय) १६.३७. [सरस्प्राति० भवार्थे यत्]

सरस्वति प्रशस्तं सरो विज्ञानं गमनं वा विद्यते यस्यां तत्सम्बुद्धौ (विदुषि कन्ये) १.१८८.८. बहुविज्ञानयुक्ते (स्त्रि) ३८.५. बहुविद्यायुक्त मातः २०.६२. या प्रशस्तविज्ञानयुक्ता प्रजा तत्सम्बुद्धौ २०.७६. विज्ञानवति (विदुषी राज्ञि) २.३०.८. ब्रह्मविज्ञानयुक्ते (विदुषि स्त्रि) २.४१.८. परमविदुषि (स्त्रि) २.४१.१७. वागिव वर्त्तमाने (विदुषि स्त्रि) १.१६४.४९. **सरस्वती**=सरसः प्रशंसिता ज्ञानादयो गुणा विद्यन्ते यस्यां सा सर्वविद्याप्रापिका वाक्, प्र०—'सर्वधातुभ्योऽसुन्' उ० ४.१८९. अनेन गत्यर्थात् सृधातोरसुन् प्रत्ययः। सरन्ति प्राप्नुवन्ति सर्वा विद्या येन तत्सरः, अस्मात्प्रशंसायां मतुप् 'सरस्वती अन्नैरन्नवती' नि० ११.२६, १.३.१०. विज्ञानाढ्या (विदुषी कन्या) ६.४९.७. अ०—वेदविद्या संस्कृता वाक् १.३.११. विज्ञानवती स्त्री २१.४९. प्रशस्तं सरो विज्ञानं विद्यते यस्याः सा (विदुषी स्त्री) १९.८३. प्रशस्तज्ञानयुक्ता पत्नी १९.८२. योगिनी स्त्री १९.९३. प्रशस्तविज्ञानसम्बन्धिनी (वाणी) १.१४२.९. विद्यासुशिक्षया युक्ता वागिव विदुषी स्त्री १.८९.३. विदुषी शिक्षिता माता २०.६४. शास्त्रविज्ञानयुक्ता वाक् २०.५५. प्रशस्तविद्यासुशिक्षायुक्ता वाङ्मती (स्त्री) २१.५३. सरः प्रशस्त-आयुर्वेदबोधो विद्यते यस्याः सा (विदुषी स्त्री) १९.१२. शुद्धा वाणी ७.४०.३. प्रशस्तं सरो वेगो यस्याः सा नदी ६.५२.६. विद्यासुशिक्षिता वागिव पत्नी १०.३४. प्रशस्तविज्ञानकारिका वागिव स्त्री २.३.८. सकलविद्यायुक्ता वाणी ३.५४.१३. सरो बहुविधं विज्ञानं विद्यते यस्याः साः (नीतिः), प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् १.१३.९. विज्ञानयुक्तया वाचाऽऽढ्या (देवी=विदुषी माता) ६.६१.४. सरो बह्वन्तरिक्षं सम्बद्धं विद्यते यस्याः सा (सत्या वाक्) ६.६१.१०. विज्ञाननिमित्ता (स्त्री) २१.५१. विशेषज्ञानवती (स्त्री) २१.५२. प्रशस्तबोधः शिक्षायुक्ता वाणी वा १८.१६. प्रशंसिता गृहिणी तथा पुरुषः २०.५९. सुसंस्कृता वाक् २०.८४. वैद्यकशास्त्रवित् प्रशस्तज्ञानवित् स्त्री २१.३६. प्रशस्तविद्यासुशिक्षायुक्ता, वाङ्मती (स्त्री) २१.५३-५४. **सरस्वतीम्**=बहुविधं सरो वेदादिशास्त्रविज्ञानं विद्यते यस्यास्तां विज्ञानयुक्तामध्यापिकां स्त्रियम् ९.२७. विज्ञानवतीं वाचम् २१.४२. प्रशस्तविद्यायुक्तां स्त्रियम् १९.३३. **सरस्वत्या**=प्रशस्तविद्याविज्ञानयुक्तया पत्न्या १९.१५. सुशिक्षितया वाचा २१.५५. प्रशस्तविज्ञानक्रियायुक्तया (वाचा=वेदवाण्या) १०.३०. गतिमत्या नीत्या २१.५६. उत्तमवाण्या २१.५७. **सरस्वत्याम्**=विज्ञानवत्यां वाचि २१.४६. **सरस्वत्याः**=नद्याः २१.४६. वाण्याः २१.४७. **सरस्वत्यै**=सरन्ति जानन्ति येन तत्सरो ज्ञानं तत्प्रशस्तं विद्यते यस्यां वाचि तस्यै २.२०. विद्यासुशिक्षासहितायै वाचे ४.७. विज्ञान सुशिक्षायुक्तायाः (वाचः=वेदवाण्याः), प्र०—अत्र षष्ठ्यर्थे चतुर्थी ९.३०. विद्यासुशिक्षितवाणीयुक्तायै स्त्रियै १९.१. प्रशस्तगुणायै विदुष्यै २०.३३. वेदार्थसुशिक्षाविज्ञापिकायै वाचे १०.५. सरो विज्ञानं विद्यते यस्यास्तस्याः (वाचः=वाण्याः) १८.३७. कृषिकर्मप्रचारिकायै वाचे १९.६. नद्यै २४.३३. प्रशस्तविज्ञानवत्यै वाचे २५.१. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सर्वधातुभ्योऽसुन्' इत्यसुन्प्रत्यये सरस् इति रूपम्। ततः प्रशंसायामर्थे भूम्नि वा मतुप्। ततः स्त्रियां ङीप्। सरस्वती=सरस् इत्युदकनाम सर्त्तेस्तद्वती नि० ९.२६. सरस्वती वाङ्नाम निघं० १.११. सरस्वत्यः नदीनाम निघं० १.१३. सरः वाङ्नाम निघं० १.११. ततो मतुबन्तान् ङीप्। वाक् सरस्वती श० ७.५.१.३१. वाग्वै सरस्वती कौ० ५.२. तां० ६.७.७. श० २.५.४.६. तै० १.३.४.५. गो० उ० १.१२०. वाग्वै सरस्वती पावीरवी ऐ० ३.३७. वागेव सरस्वती ऐ० २.२४. वाग्घि सरस्वती ऐ० ३.२.

वाक् तु सरस्वती ऐ० ३.१. सरस्वती वाचमदधात् तै० १.६.२.२. अथ यत्स्फूर्जयन् वाचमिव वदन् दहति तदस्य (अग्नेः) सारस्वतं रूपम् ऐ० ३.४. सा (वाक्) ऊर्ध्वोदातनोद् यथापां धारा संततैवम् (सरस्वती=वाक्) तां० २०.१४.२. जिह्वा सरस्वती श० १२.९.१.१४. (यजु० ३८.२.) सरस्वती हि गौः श० १४.२.१.७. अमावस्या वै सरस्वती गो० उ० १.१२. सारस्वतमेषम् (आलभते) तै० १.८.५.६. अविर्मल्हा (गलस्तनयुता इति सायणः) सारस्वती श० ५.५.४.१. वर्षा शरदौ सारस्वताभ्याम् (अवरुन्धे) श० १२.८.२.३४. योषा वै सरस्वती वृषा पूषा श० २.५.१.११. सरस्वती (श्रियः) पुष्टिम् (आदत्त) श० ११.४.३.३. सरस्वती पुष्टिः पुष्टिपत्नी तै० २.५.७.४. सरस्वती पुष्टिः पुष्टिपतिः श० ११.४.३.१६. सर्वे (प्रैषाः) सारस्वता अन्नाद्यस्यैवावरुद्ध्यै श० १२.८.२.१६. एषा वा अपां पृष्ठं यत् सरस्वती तै० १.७.५.५. ऋक्सामे वै सारस्वतावुत्सौ तै० १.४.४.९. सरस्वत्यै दधि श० ४.२.५.२२. अन्तरिक्षं सारस्वतेन (अवरुन्धे) श० १२.८.२.३२. सरस्वतीति तद् द्वितीयं वज्ररूपम् कौ० १२.२. अथ यत् (अक्ष्णः) कृष्णं तत्सारस्वतम् श० १२.९.१.१२.]

सरस्वतिकृतस्य विदुष्याः स्त्रियाः कृतस्य. भा०—सुशिक्षिता-निष्पादितस्य (अन्नस्य) प्र०—अत्र 'स्वार्थेऽण् संज्ञाछन्दसोर्बहुलम्' इति पूर्वपदस्य ह्रस्वः २०.३५. [सरस्वती-कृतपदयोः समासः]

सरस्वती सरो बहुविज्ञानं विद्यते ययोस्तौ (अश्विना=वैद्यकविद्यावेत्तारौ स्त्रीपुरुषौ) २०.५६. बहुविज्ञानयुक्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ६.५०.१२. [सरस्वतीति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

सरस्वते समुद्राय २४.३३. **सरस्वन्तम्**=सरांस्युदकानि बहूनि विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (सूर्यम्) १.१६४.५२. [सर उदकनाम (निघं० १.१२.) ततो भूम्न्यर्थे मतुप्। मनो वै सरस्वान् श० ७.५.१ ३१. स्वर्गो लोकः सरस्वान् तां० १६.५.१५. पौर्णमासः सरस्वान् गो० उ० १.१२.]

सरः सरन्ति जलानि यस्मिँस्तडागे तत् २३.४७. भा०—जलाशयः २३.४८. **सरांसि**=सरन्ति येषु जलानि तान्यन्तरिक्षादीनि ६.१७.११. मेघमण्डलभूम्यन्तरिक्षस्थानानि (जलस्थानानि) ५.२९.८. तडागान् ३०.१६. **सरोभ्यः**=तडागेभ्यः ३०.१६. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्. सर उदकनाम निघं० १.१२. वाङ्नाम निघं० १.११.]

सरातयः समाना रातयो दानानि येषान्ते (देवासः=विद्वज्जनाः) ३३.९४. [समान-रातिपदयोः समासे समानस्य सादेशः]

सरित् या सरति गच्छति सा (सरस्वती=वाणी) ३४.११. **सरितः**=नद्यः १३.३८. [सरितः नदीनाम निघं० १.१३. सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'हृसृरुहि०' उ० १.९७. सूत्रेण इतिः]

सरिरम् जलमिव सरलता कोमलता १५.४. **सरिरस्य**=सलिलस्योदकस्य, प्र०—कपिलकादित्वाद्रेफः १३.४२. अन्तरिक्षस्य १३.४६. बहोः (भा०—पूर्णसमुद्रस्य), प्र०—सरिरमिति बहुनाम निघं० ३.१, १७.८७. **सरिराय**=कमनीयाय (उदकाय) २२.२५. **सरिरे**=वाचि १३.५३. [षल गतौ (भ्वा०) धातोः 'सलिकल्यनिमहि०' उ० १.५४ सूत्रेण इलच्। कपिलकादित्वाद् रेफः। सरिरम् बहुनाम निघं० ३.१. सरिरम् (यजु० १३.४२) आपो वै सरिरम् श० ७.५.२.१८. (यजु० १३.४६) इमे वै लोकाः सरिरम् श० ७.५.२.३४. (यजु० १३.५३) वाग्वै सरिरम् श० ७.५.२.५३. (यजु० १५.४) वाग्वै सरिरं छन्दः श० ८.५.२.४.]

सरिष्यन् गमिष्यन् (पर्वतः=मेघः) २.११.७. **सरिष्यन्तम्**=सर्वान् पदार्थानन्तरिक्षं गमिष्यन्तम् (भौतिकमग्निम्) २.७. **सरिष्यन्तः**=प्राप्स्यन्तः (वाजिनः=योद्धृजनाः) ९.९. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'लृटः सद्वा' इति शतृ]

सरी सरति जानाति यः स सरः, प्रशस्तो विद्यते यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१३८.३. [सरप्राति० प्रशंसायामर्थ इनिः। सरः=सृ गतौ (भ्वा०) धातोः पचाद्यच्]

सरीमणि गमनाख्ये व्यवहारे ३.२९.११. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० ईमनिन्]

सरीसृपेभ्यः सर्प्पादिभ्यः २२.२९. [सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यङन्तात् पचाद्यचि 'यङोऽचि चे'ति यङो लुकि 'न धातुलोप आर्धधातुके' सूत्रेण गुणप्रतिषेधे च रूपम्]

सरूपा समानं रूपं यस्याः सा (नारी) ४.१६.१०. **सरूपाः**=समानं रूपं यासान्ताः (वत्सतर्यः=गोवत्साः) २४.५. [समान-रूपपदयोः समासे, स्त्रियां टापि, समानस्य सादेशे च रूपम्]

सर्गतक्तः जलस्य सङ्कोचकः (सज्जनः), प्र०—सर्ग इत्युदकनाम निघं० १.१२, ३.३३.११. यः सर्ग उत्पत्तौ तक्तो हसितः (प्रसवः=सन्तानः), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि'

इतीडभावः ३.३३.४. [सर्ग-तक्तपदयोः समासः। सर्ग उदकनाम निघं० १.१२. तिक्तः=तञ्चू संकोचने (रुधा०) धातोः क्तः। अथवा तक हसने (भ्वा०) धातोः क्तः]

सर्गप्रतक्तः यः सर्गमुदकं प्रतनक्ति सङ्कोचयति सः (सिन्धुः) १.६५.३. [सर्ग-प्रतक्तपदयोः समासः। प्रतक्तः=प्र+तञ्चू संकोचने (रुधा०) धातोः क्तः]

सर्गम् उदकम् ७.१८.११. **सर्गः**=उत्पत्तिः २.३०.१. सृष्टिः १.१९०.२. **सर्गाः**=उत्पद्यमानाः (उषसः=प्रातर्वेलाः) ४.५१.८. स्रष्टुं योग्याः (पदार्थाः) १.१५२.१. सृष्टयः ४.२३.६. **सर्गे**=संस्रष्टुमर्हे (पथि) ६.४६.१३. **सर्गेण**=संसर्जनीयेन (शवसा बलेन) ६.३२.५. **सर्गेषु**=सृष्टेषु कार्येषु ४.३.१२. **सर्गैः**=संसृष्टैः (विषयैः) १.१६९.७. [सर्गा उदकनाम निघं० १.१२. सृज विसर्गे (दिवा०) धातोर्घञ्]

सर्गमिव उदकमिव ५.५६.५. [सर्गम्-इवपदयोः समासः। सर्गा उदकनाम निघं० १.१२.]

सर्त्तवे सर्त्तुं गन्तुम्, प्र०—अत्र 'तुमर्थे सेसेन०' इति तुमर्थे तवेन् प्रत्ययः १.३२.१२. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

सर्त्तवै सर्त्तुं ज्ञातुं गन्तुं वा १.५५.६. सर्त्तव्ये गन्तव्ये ३.३२.६. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवैः]

सर्पत गच्छत १२.४५. **सर्पति**=गच्छति २३.५६. **सर्पामि**=चलामि १०.३०. [सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्। सर्पति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

सर्पदेवजनेभ्यः सर्पाश्च देवजनाश्च तेभ्यः ३०.८. [सर्प-देवजनपदयोः समासः]

सर्पाः ये सर्पन्ति तेऽहयः १५.१७. **सर्पेभ्यः**=ये सर्पन्ति गच्छन्ति ते सेवकास्तेभ्यः, भा०—दस्युभ्यो नागेभ्यो वा १३.७. दुष्टप्राणिभ्यः १३.८. ये सर्पन्ति गच्छन्ति ते लोकास्तेभ्यः १३.६. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० पः। सर्पाः=इमे वै लोकाः सर्पास्ते हानेन सर्वेण सर्पन्ति यदिदं किं च श० ७.४.१.२५. देवा वै सर्पाः। तेषामियं (पृथिवी) राज्ञी तै० २.२.२.६. रज्जुरिव हि सर्पाः कूपा इव हि सर्पाणामायतनानि, अस्ति वै मनुष्याणां च सर्पाणां च विभ्रातृव्यम् श० ४.४.५.३.]

सर्पिरासुतिः सर्पिषो घृतादेरासुतिः सवनं यस्य सः (पतिः) ११.७०. सर्पिरासुतिर्यस्य सः (अग्निः) २.७.६. **सर्पिरासुते**=सर्पिषा समन्तात्प्रदीपिते (यज्ञ-कुण्डे) ५.२१.२. सर्पिभिः सर्वतो जनिते (उपकारे) ५.७६. [सर्पिष्-आसुतिपदयोः समासः। सर्पिष् उदकनाम निघं० १.१२. आसुतिः=आङ्+षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

सर्पिषः घृताऽऽदेः ५.६.९. घृतस्य १५.४३. आज्यस्य १५.४०. गन्तुं प्राप्तुमर्हस्य (घृतस्य) १.१२७.१. [सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अर्चिशुचिहुसृपि०' उ० २.१०८ सूत्रेण इसिः। सर्पिर् उदकनाम निघं० १.१२.]

सर्माय गच्छते (शत्रवे) १.८०.५. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० मन्]

सर्वगणम् सर्वे गणाः गण्याः प्रशंसनीयाः पदार्था यस्मात्तत् (अपत्यम्) १९.४८. सर्वे गणा यस्मिँस्तत् (लोकम्) १.११६.८. सर्वे गणाः समूहा यस्मिँस्तम् (बृहस्पतिं=विद्वज्जनम्) ५.५१.१२. [सर्व-गणपदयोः समासः। सर्वगणम्=सर्वनामानम् नि० ६.३६.]

सर्वतः सर्वस्माद्देशात् ३१.१. सर्वाभ्यो दिग्भ्यः सर्वेभ्यो देशेभ्यो वा २०.८. अन्याभ्यः (दिग्भ्यः) ६.३६. [सर्वसर्वनाम्नः प्राति० पञ्चम्यन्तात् तसिल् 'पञ्चम्यास्तसिल्' सूत्रेण]

सर्वतातये सम्पूर्णसुखसाधकाय यज्ञाय, सर्वसुखकराय वा (यज्ञाय) ६.५६.६. सर्वस्मै सुखाय १.१०६.२. **सर्वतातिम्**=सर्वमेव (श्लोकं=वाचम्) ३.५४.११. [सर्वप्राति० स्वार्थे 'सर्वदेवात् तातिल्' अ० ४.४.१४२. सूत्रेण तातिल्। सर्वतातिप्राति० चतुर्थ्येकवचनम्]

सर्वताता सर्वतातौ सर्वस्मिन् व्यवहारे, प्र०—अत्र 'सर्वदेवात्तातिल्, अ० ४.४.१४२. इति सूत्रेण सर्वशब्दात् स्वार्थे तातिल्-प्रत्ययः 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्या डादेशः १.९४.१५. सर्वस्मिन्नेव सङ्गन्तव्ये जगति ४.२६.३. सर्वेषां सुखप्रदे यज्ञे ५.६९.३. सर्वानेव (अनागान्=अनपराधिप्रजाजनान्) ३.५४.१९. राजपालनाख्ये यज्ञे ७.१८.१९. सर्वसुखकरे शिल्पमये यज्ञे ६.१५.१८. [सर्वतातिरिति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततः 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्या डादेशः। सर्वतातौ=सर्वासु कर्मततिषु नि० ११.२४.]

सर्वतातेव सर्वेषां वर्द्धको यज्ञ इव ६.१२.२. [सर्वताता-इवपदयोः समासः। सर्वताता इति व्याख्यातम्]

सर्वतोमुखः सर्वतो मुखाद्यवयवा यस्य सः (देवः=ईश्वरः) ३२.४. [सर्वतस्-मुखपदयोः समासः]

सर्वधातमम् यः सर्वं दधाति सोऽतिशयितस्तम् (तुरं=सामर्थ्यम्) ५.८२.१. [सर्वधाप्राति० अतिशायने

तमप् । सर्वधाः=सर्वोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सर्वभूतेषु सर्वेषु प्रकृत्यादिषु ४०.६. सम्पूर्ण प्राणि-अप्राणियों में सं वि० २१४, ४०.६. [सर्व-भूतपदयोः समासः]

सर्वरथा सर्वे रथा यानानि यस्या सः (शतक्रतुः=सेनेशः) ५.३५.५. [सर्व-रथपदयोः समासः । सर्वरथप्राति० सु-स्थाने 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण डादेशः]

सर्वराट् यः सर्वस्मिन् राजते सः (सूर्यो विद्वज्जनो वा) ५.२४. [सर्वोपपदे राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुह०' सूत्रेण क्विप् । सर्वराट्=स सर्वमेधेनेष्ट्वा सर्वराड् इति नामाधत्त गो० पू० ५.८.]

सर्वलोकम् सर्वेषां दर्शनम् ३१.२२. [सर्व-लोकपदयोः समासः । लोकः=लोकृ दर्शने (भ्वा०) धातोर्भावे घञ्]

सर्ववीरम् सर्वे वीरा यस्मात्तत् (रयिं=धनम्) ६.२४. सर्वे वीरा प्राप्यन्ते यस्मात्तम् (रयिं) १९.५९. **सर्ववीरः**=शरीरात्मबलसुभूषिताः सर्वे वीरा यस्मात् (यज्ञः=गृहाश्रमः) ८.२२. सर्वे च वीराश्च ते १.५१.१५. [सर्व-वीरपदयोः समासः]

सर्ववीरया सर्वैर्वीरैर्युक्तया (विशा=प्रजया) १.१११.२. **सर्ववीराः**=सर्वे वीरा भवन्ति यासु सतीषु ताः (विदुष्यः स्त्रियः) १.११३.१८. [सर्व-वीरपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सर्ववेदसम् सर्वे वेदसो वेदा विज्ञायन्ते यस्मिँस्तम् (बोधम्) १८.६२. सर्वैर्वेदैरुक्तं कर्म्म १५.५५. गृहाश्रमस्थ-पदार्थ, मोह, यज्ञोपवीत और शिखा आदि को सं० वि० २०८, अथर्व० ६.५.१७. [सर्व-वेदस्पदयोः समासः । वेदस्=विद् ज्ञाने (अदा०) धातोरौणा० असुन् । अथवा सर्वोपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः 'गतिकारकोपपदयोः०' उ० ४.२२७ सूत्रेणासिः]

सर्वशासैः ये सर्वं राज्यं शासति तैः (राजपुरुषैः) ५.४४.४. [सर्वोपपदे शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

सर्वशुद्धवालः सर्वे शुद्धा वाला यस्य सः (पशुः) २४.३. [सर्व-शुद्धवालपदानां समासः]

सर्वसेनः सर्वा सेना यस्य सः (विद्वान् जनः) ५.३०.३. [सर्वा-सेनापदयोः समासः]

सर्वसेना समग्राः सेना ययोस्तौ (सभासेनेशौ) ६.६८.२. [सर्वा-सेनापदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

सर्वहुतः सर्वैर्हूयत आदीयते तस्मात् (परमेश्वरात्) ३१.६. सर्वे जुह्वति सर्वं समर्पयन्ति वा यस्मिन् तस्मात् (ईश्वरात्) ३१.७. सर्वपूज्यात् सर्वोपास्यात् सर्वशक्तिमतः परब्रह्मणः, ऋ० भू० ९, ३१.६. यतः सर्वमनुष्यैर्होतुमादातुं ग्रहितुं योग्या वेदास्तस्मात् (परमात्मनः) ऋ० भू० ९.३१.६. [सर्वोपपदे हु दानाऽदानयोः (जु०) धातोः 'कृतो बहुलं वा' इति क्विप् कर्मणि, अधिकरणे वा]

सर्वायुः सम्पूर्णजीवनम् ३८.२०. [सर्व-आयुष्पदयोः समासः]

सर्सृते भृशं सरति गच्छति २.२५.१. **सस्रांते**=प्रसरतः, प्राप्नुतः ३.७.१. **सस्रे**=प्राप्नोति ६.१८.७. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । सस्रे प्रयोगे लिट् । सर्सृते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

सलक्ष्म समानं लक्ष्म यस्य तत् (विषुरूपं=व्यापकं विविधरूपं वा विपश्चिज्जनम्) ६.२०. [समान-लक्ष्मपदयोः समासे समानस्य सादेशश्छान्दसः । लक्ष्म=लक्ष दर्शनाङ्कनयोः (चुरा०) धातोर्बाहु० औणा० मन्]

सललूकम् सम्यग् लुब्धम् (हेतिं=वज्रम्) ३.३०.१७. [सललूकं संलुब्धं भवति पापकमिति नैरुक्ताः । सररुकं वा स्यात् सर्त्तेरभ्यस्तात् नि० ६.३.]

सलिलम् आकाशरूप सब जगत् स० प्र० २८२, १०.१२९.३. **सलिलस्य**=अन्तरिक्षस्य ७.४९.१. **सलिलः**=शुद्धं जलं विद्यते यस्मिन् सः (सिन्धुः=नदी), प्र०—अत्राऽर्शादित्वादच् ८.५९. **सलिलानि**=जलानीव निर्मलानि वचनानि १.१६४.४१. [षल गतौ (भ्वा०) धातोः 'सलिकल्यनि०' उ० १.५४ सूत्रेण इलच् । सलिलम् उदकनाम निघं० १.१२. बहुनाम निघं० ३.१. सलिलम्=आपो ह वाऽइदमग्रे सलिलमेवास श० ११.१.६.१. वेदिर्वै सलिलम् श० ३.६.२.५.]

सवनम् सुवन्त्यैश्वर्यं प्राप्नुवन्ति येन तत् क्रियाकाण्डम् १.१६.५. सवति प्रसूयतेऽनेन तत् (इन्द्रियं=मन आदि) ८.३. येन सूयते तत् (धर्मपथम्) ६.६०.९. सकलैश्वर्य-प्रापकम् (आदित्यब्रह्मचर्यम्) ४.३५.९. सुखैश्वर्यम् ४.३४.४. कार्यसिद्धचर्थं कर्म्म ४.३५.४. सकलसंस्कार-रसोपेतम् (भोजनादिकम्) ४.३५.७. भोजनं होमादिकं वा ३.३२.१. सुन्वन्ति निष्पादयन्ति पदार्थान् येन तत् (कर्म्म) १.२१.४. सर्वसुखसाधनम् (विश्वं=जगत्) १.१६.८. आरोग्यकरं होमादिकम्. यज्ञक्रियाप्रेरणम् १९.२६. **सवनस्य**=शिल्प-

विद्याजनितस्य कार्यस्य ४.३६.२. कर्मविशेषस्य ३.५२.५. **सवनानि**=प्रेरणानि ७.३२.६. **सवने**=सत्कर्मणि ४.३३.११. उत्पत्त्यधिकरणे जगति २७.२८. क्रियाविशेषयज्ञे ४.१६.२. सुन्वन्ति निष्पादयन्ति येन कर्मणा तस्मिन् ७.२९.२. भोजन-समये ५.४०.४. सायंकाले कर्त्तव्ये कर्म्मणि ३.५२.६. सङ्ग्रामे ६.६. ऐश्वर्ययुक्ते राज्ये ३.६०.६. होमादिकर्मणि ३.२८.४. [षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) (अदा०) षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः करणेऽधिकरणे वा ल्युट्। सवनम् यज्ञनाम निघं० ३.१७. स्थानानि नि० ५.२५.]

सवना ऐश्वर्ययुक्तानि वस्तूनि, प्र०—षु प्रसवैश्वर्ययोः इत्यस्माद्धातोर्ल्युट्प्रत्ययः ३.३.११४. 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति शेर्लुक् १.४.२. सुन्वन्ति यैस्तानि (अध्वरकर्माणि) १.४७.८. सवनानि यज्ञसाधककर्मण्यैश्वर्याणि, कर्माणि प्रेरणानि वा ७.२२.६. ओषधिनिर्माणानि ७.२२.७. ऐश्वर्यसाधनानि (कर्म्माणि) ३.१.२०. सुन्वन्ति येषु तानि (अन्ना=अन्नानि) ३.३६.८. प्रातःसवनादीनि कर्माणि ३४.१९. [सवनमिति व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

सवम् प्रसूतं जगत् ७.३८.४. ऐश्वर्यम् १.१६४.२६. **सवान्**=निष्पन्नान् पदार्थान् ४.२६.७. ऐश्वर्ययोग्यान् (स्तोमान्=विद्याविशेषान्) १.१२६.१. **सवाय**=उत्पादनाय २.३८.१. **सवे**=जगद्रूपैश्वर्ये ५.८२.६. जगदाख्येऽस्मिन्नैश्वर्ये ११.२. विद्याप्रचारैश्वर्ये प्रेरणे वा ९.१०. परमैश्वर्ययुक्ते प्रेरितव्ये जगति २०.११. [षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) षुञ् अभिषवे (स्वा०) षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) षू प्रेरणे (तुदा०) धातोर्वा 'ऋदोरप्' अप्]

सवयसः समानं वयो येषान्ते (विद्वांसो जनाः) १.१६५.१. [समान-वयस्पदयोः समासे समानस्य सादेशश्छान्दसः]

सवयसा समानवयसौ (दम्पती) १.१४४.४. समानं वयो ययोस्तौ (शिष्यौ) १.१४४.३. [समान-वयस्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सवातरौ वायुना सह वर्त्तमानौ, भा०—वायुना प्रेरितौ (भौमविद्युतावग्नी) २८.६. [सह-वातपदयोः समासे सहस्य सादेशः। रुगागमश्छान्दसः]

सवात्यान् समानवाते भवान् (विद्यार्थिजनान्) २४.१६. [समान-वातपदयोः समासे, समानस्य सादेशे च भवार्थे यत्]

सवासः उत्पन्नाः पदार्थाः ४.५४.६. [सवमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमश्छान्दसः]

सवितः सर्वेषु जीवेष्वन्तर्यामितया सत्यप्रेरक व्यवहारप्रेरणाहेतुर्वा (ईश्वरः सूर्यो वा) १.२६. सकलैश्वर्ययुक्त (अ०—राजन्) ३३.८४. राज्यैश्वर्यप्रद (अ०—परमात्मन्) १.२५. सर्वोत्पादकव्यवहारोत्पत्तिहेतो वा (ईश्वर सूर्यो वा) १.२६. सकलैश्वर्यविधातर्जगदीश्वर २.१२. ऐश्वर्यवन् (सभाध्यक्ष) ५.३९. विद्यैश्वर्ययुक्त (पूर्णविद्योपदेशक) २७.८. सकलजगदुत्पादक जगदीश्वर ४.५४.२. सत्कर्मसु प्रेरकेश्वर १९.४३. उत्तमगुणकर्मस्वभावेषु प्रेरकेश्वर ३०.३. सर्वसिद्ध्युत्पादक (भगवन्) ११.७. अनेकपदार्थोत्पादक तेजस्विन् विद्वन्राजन् ३३.६९. हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त (परमेश्वर) सं० वि० ४, ३०.३. सर्वैश्वर्यस्य प्रसवितरीश्वर ८.६. सकलैश्वर्यसंयुक्त सम्राट् ९.१. सवितृवदैश्वर्यप्रद (ईश्वर) ३४.२७. पृथिव्याद्युत्पादक (परमात्मन्) १.२४.३. सत्यव्यवहारे प्रेरक (ईश्वर) ५.८१.५. सत्कर्मसु प्रेरक राजन् ६.७१.३. **सविता**=सर्वेषां प्रसविता, प्रकाशवृष्टिरसानां च प्रसविता (देवः=परमेश्वरः) १.३५.२. सूर्यो धर्मकृत्येषु प्रेरको वा (जनः) १.१०७.३. विद्यैश्वर्यकारकः (देवः=विद्वज्जनः) ५.४२.३. सूर्यमण्डलम् ४.१३.२. अन्तःप्रेरको वृष्टिहेतुर्वा (देवः=जगदीश्वरः सूर्यलोको वा) १.२२. प्रसवकर्त्ता सूर्यः ६.५०.१३. सर्वस्य जगतो दिव्यस्य प्रसविता उत्पादकः (परमात्मा) ४.४. वृष्टिप्रकाशद्वारा दिव्यगुणानां प्रसवहेतुः (यज्ञः) १.१६. सकलैश्वर्ययोक्ता प्रभ्वैश्वर्यदाननिमित्तो वा (परमेश्वरः) ४.५३.२. सकलजगज्जनकः (जगदीश्वरः) ४.५३.७. ऐश्वर्यवान् सूर्यवत् प्रकाशमानः (विद्वज्जनः) ७.४५.३. सर्वेषां वसूनामग्निपृथिव्यादीनां त्रयस्त्रिंशतो देवानां प्रसविता (देवः=परमेश्वरः) १.३. सकलैश्वर्यविधाता (ईश्वरः) ५.८१.३. ऐश्वर्यं प्रति प्रेरकः (अग्निः=नृपतिः) २.१.७. राजनियमैः प्रेरकः (राजा) ३३.२०. सूर्य इव भासमानः, भा०—सूर्यवद्विद्यया प्रकाशात्मा (उपदेशकः) ३३.३४. प्रसवकर्त्ता (परमात्मा) ५.८२.३. भास्करः ११.४२. सर्वस्य जगतो निर्माता (ईश्वरः) ११.६. योगपदार्थज्ञानस्य प्रसविता (उपदेष्टृजनः) ११.३. ऐश्वर्यप्रसाधकः (शिल्पिजनः) ११.११. सब जगत् की उत्पत्ति का कर्त्ता (ईश्वर) सं० वि० १२१, १०.८५.३६. धर्मयुक्त मार्ग में प्रेरक (पति) सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५१. सब जगत् को उत्पन्न और धारण करने वाला (परमात्मा) पं० वि०। वर्षादि का कर्त्ता सूर्य स० प्र० ११३, ३३.४३.

ऐश्वर्यवान् राजा, सूर्यलोको वायुर्वा, प्र०—सवितेति पदनामसु पठितम् निघं० ५.४. अनेन प्राप्तिहेतोर्वायोरपि ग्रहणम् १.३५.४. सूर्य इव स्वप्रकाशमान ईश्वरः १.१८६.१ सर्वस्य विश्वस्य जनिता (अ०—सत्यप्रेरको जगदीश्वरः) ६.२. विद्याव्यवहारेषु प्रेरकः (विद्वज्जनः) १९.८०. सब जगत् का उत्पत्तिकर्त्ता और सम्पूर्ण ऐश्वर्यों को देने वाला परमात्मा सं० वि० १४१, अथर्व० १४.२.७५. **सवितारम्**=सर्वजगदन्तर्यामिनमीश्वरम् १.२२.५. उत्पादकमैश्वर्यहेतुं वा (परमेश्वरं सूर्यं वा) १.२२.७. वेदविद्यैश्वर्योत्पादकम् (ईश्वरम्) ९.२७. सकलैश्वर्यप्रापकम् (ईश्वरम्) २२.१०. मेघोत्पादकम् (सूर्यम्) ५.४९.२. जनयितारम् (परमात्मानम्) ३०.४. देवानामग्न्यादीनां रसानां वा प्रसवितारम् (ईश्वरं सूर्यं वा) ४.२५. सकलपदार्थनिर्मातारम् (ईश्वरम्) ५.८२.७. ऐश्वर्यकारकं राजानम् ३३.४९. सर्वेषामुत्पादकम् (ईश्वरम्) ६.२१. **सवितुः**=सर्वजगदुत्पादकस्य सकलैश्वर्यप्रदातुः (ईश्वरस्य) १.१०. सवति सकलैश्वर्यं जनयति तस्य (ईश्वरस्य) १.२१. परमेश्वरस्य सूर्यलोकस्य वा १.३१. सकलैश्वर्यप्रसवितुः, समग्रविद्यावोधप्रसवितुः, शत्रुविजयप्रसवितुर्वा (परमेश्वरस्य) ९.१०. अखिलजगदुत्पादकस्येश्वरस्य ११.४. सर्वेषामैश्वर्यव्यवस्थां प्रति प्रेरकस्य (ईश्वरस्य) ११.९. सकलैश्वर्यप्रदेश्वरस्य ३६.३. सकलजगदुत्पादकस्य समग्रैश्वर्यस्येश्वरस्य ३.६.११. अन्तर्यामिणो जगदीश्वरस्य ५.८२.१. यः सुनोत्युत्पादयति सर्वं जगत्तस्य (परमेश्वरस्य) सब जगत् के उत्पादक और सब ऐश्वर्य के दाता (परमेश्वर) का स० प्र० ५१, ३६.३. योगैश्वर्यसम्प्रदस्येश्वरस्य १७.७४. सकलैश्वर्यं प्रापयत ईश्वरस्य २.३८.७. सुनोति सूयते सुवति वोत्पादयति सृजति सकलं जगत् स सर्वपिता सर्वेश्वरः सविता परमात्मा तस्य पं० वि०, ३६.३. सकलैश्वर्यस्य प्रसवितुर्जगदीश्वरस्य ६.३०. **सवित्रा**=सर्वान्तर्यामिणा जगदीश्वरेण ३.१०. विद्युद्रूपेण ४.३४.८. प्रसवहेतुना (देवेन=विद्वज्जनेन) ३७.१४. प्रेरकेणैश्वर्यकारकेण वा (ईश्वरेण सूर्येण वा) ३७.१५. **सवित्रे**=सवितृविद्याविदे (विद्वत्पुरुषाय) ३८.८. सकलरसोत्पादकाय सूर्याय २.३०.२. सन्तानोत्पादकाय (गृहपतये) ८.७. सूर्यविज्ञानाय १०.५. ऐश्वर्योत्पादकाय (पुरुषाय) २९.६०. सूर्याय २२.६. [सवितृशब्दस्य रूपाणि। सवितृ=षू प्रेरणे (तुदा०) षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) षुञ् अभिषवे (स्वा०) षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्वा कर्त्तरि तृच्। सविता पदनाम निघं० ५.६. निघं० ५.४. सविता सर्वस्य प्रसविता नि० १०.३१. सविता व्याख्यातः। तस्य कालो यदा द्यौरपहततमस्काकीर्णरश्मिर्भवति नि० १२.१२. सवितारम्=सर्वस्य प्रसवितारं मध्यमं वोत्तमं वा पितरम् नि० ७.३१. सविता-सविता वै देवानां प्रसविता श० १.१.२.१७. सविता वै प्रसविता कौ० ६.१४. सविता वै प्रसवानामीशे ऐ० १.३०. आदित्य एव सविता गो० पू० १.३३. अग्निरेव सविता जै० उ० ४.२७.१. प्रजापतिर्वै सविता तां० १६.५.१७. वरुण एव सविता जै० उ० ४.२७.३. विद्युदेव सविता जै० उ० ४.३३. स्तनयित्नुरेव सविता जै० उ० ४.२७.९. वायुरेव सविता गो० पू० १.३३. चन्द्रमा एव सविता गो० पू० १.३३. यज्ञ एव सविता गो० पू० १.३३. इयं (पृथिवी) वै सविता श० १३.१.४.२. अब्भ्रमेव सविता गो० पू० १.३३. वेदा एव सविता गो० पू० १.३३. अहरेव सविता गो० पू० १.३३. पुरुष एव सविता जै० उ० ४.२७.१७. पशवो वै सविता श० ३.२.३.११. प्राणो वै सविता ऐ० १.१९. मनो वै सविता श० ६.३.१.१३. यकृत् सविता श० १२.९.१.१५. सविता राष्ट्रं राष्ट्रपतिः तै० २.५.७.४. उष्णमेव सविता गो० पू० १.३३. (सविता) रश्मिभिर्वर्षं (समदधात्) गो० पू० १.३६. तद्वै सुपूतं यं देवः सविता पुनात् श० ३.१.३.२२.]

सवितेव यथा सूर्य आकर्षणेन भूगोलान् धरति तथा १.९५.७. यथा सूर्यः १.१९०.३. [सविता-इवपदयोः समासः। सवितेति व्याख्यातम्]

सविंशः विंशत्या सह वर्त्तमानः (वर्चः=दीप्तिः) १४.२३. [सह-विंशतिपदयोः समासे सहस्य सादेशः। समासान्तो डच् छान्दसः]

सवीमनि महैश्वर्ये ४.५३.३. उत्पादिते जगति ६.७१.२ यः सूयते संसारस्तस्मिन् (प्रसविते संसारे) ४.२५. आज्ञायाम् ३३.१७. [षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) धातोर्वा बाहु० औणा० ईमनिन्। सवीमनि प्रसवे नि० ६.७.]

सवीर्यः बलोपेतः (देवः=विद्वान् राजा) २८.३. [सह-वीर्यपदयोः समासे 'वोपसर्जनस्य' सूत्रेण सहस्य सादेशः]

सवृत् यः समानेन धर्मेण सह वर्त्तते तस्य वोधकः (विद्वज्जनः) १५.९. **सवृते**=साधर्म्यपदार्थज्ञानाय १५.९. [समानोपपदे वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सवृधे यः समानैः सह वर्धते तस्मै (पुरुषाय) १६.३० [समानोपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सवेदसा समानेन हुतद्रव्येण युक्तौ (अग्नीषोमौ=वाय्वग्नी) १.९३.९. [समान-वेदस्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

सव्यतः दक्षिणतः २.११.१८. [सव्यप्राति० तसिः। सव्यम्=षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः 'सुनोतेः' उ० ४.११०. सूत्रेण यः]

सव्यः द्वितीयो वामपार्श्वस्थः (अश्वः) १.८२.५. **सव्यान्**=वामपार्श्वान् ५.१९. **सव्येन**=सेनाया दक्षिणभागेन १.१००.९. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः सुनोतेः उ० ४.११०. सूत्रेण यः]

सव्या उत्तरा (दिक्) २.२७.११. [सव्य इति व्याख्यातम्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

सव्रता समानकर्मणि ६.७०.३. [समान-व्रतपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि। व्रतम् कर्मनाम निघं० २.१.]

सव्रताः समाननियमाः (अग्नयः=पावकाः) १५.५७. सत्यैर्नियमैः सह वर्त्तमानाः (अग्नयः) १४.६. सनियमाः (अग्नयः) १४.६. समानानि व्रतानि नियमा येषान्ते (देवाः=विद्वज्जनाः) १४.१५. व्रतैः सत्यैर्व्यवहारैः सह वर्त्तमानाः (देवाः) १३.२५. नियमैः सहिताः (जनाः) १४.२७. समान गुण, कर्म, स्वभाव वाले (गृहस्थ जन) सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.१–७. [समान-व्रतपदयोः समासः। समानस्य छन्दसि०' सूत्रेण समानस्य सादेशः]

सश्चत् सश्चति समवयति २.२२.२. संयोजयति, प्र०—अत्राऽडभावः २.२२.१. **सश्चत**=सेवन्तां सम्बध्नन्तु ७.२६.४. समवयन्तु ७.१८.२५. विजानीत प्राप्नुत वा १.६४.१२. प्राप्नुवन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययः २७.२४. भजतु, प्र०—अत्र षच सेवने लोडर्थे लङ्। सुगागमोऽडभावश्च छान्दसः। अ०—सेवते २०.७०. **सश्चति**=प्राप्नोति १.१०१.३. **सश्चसि**=जानासि प्रापयसि वा ३.३४. प्राप्नोषि ८.२. **सश्चिम**=दूरे प्राप्नुयाम, गमयेम वा ३८.२०. सदा सेवें आर्याभि० २.४१, ३८.२०. **सश्चिरे**=सज्जन्ति प्राप्नुवन्ति प्रापयन्ति वा १.११०.६. समवयन्ति प्राप्नुवन्ति ५.६४.३. गच्छन्ति ५.६७.३. **सश्चुः**=प्राप्नुयुः ६.३६.३. **सश्चे**=सम्बध्नामि ५.३३.८ [षच सेवने (भ्वा०) षच समवाये (भ्वा०) धातोर्वा लङ्। अडभावश्छान्दसः सुगागमश्च। अन्यत्र लोट्, लट्, लिट् च। सश्चति गतिकर्मा निघं० २.१४. लिटि द्वित्वाऽभावश्छान्दसः]

सश्चतः विज्ञानवतो विद्याधर्मप्राप्तान् (प्रजाजनान्) १.४२.७. समवेताः (प्रजाजनाः) ३.९.४. **सश्चते**=सम्बन्धाय २.१६.४. [षच सेवने (भ्वा०) षच समवाये (भ्वा०) धातोः शतृ। सुगागमश्छान्दसः। सश्चति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

ससतः अविद्यामुल्लङ्घमानान् (विदुषो जनान्) १.१३५.७. स्वपतः प्राणिनः १.१२४.४. **ससताम्**=स्वपतां पुरुषाणाम् १.५३.१. **ससन्तम्**=शयानम् (जीवम्) ४.५१.५. स्वपन्तं चिन्तारहितं वा (अहिं=सर्पं शत्रुं वा) १.१०३.७. **ससन्तः**=शयानाः (ऋभवः=मेधाविजनाः) ४.३३.७. [षस स्वप्ने (अदा०) धातोः शतृ। ससतः स्वपतः नि० ४.१६. सस्ति स्वपितिकर्मा निघं० ३.२२.]

ससतीमिव यथा सुप्ताम् (पुरन्धि=बहुप्रज्ञां स्त्रीम्) १.१३४.३. [ससतीम्-इवपदयोः समासः। ससतीम्=षस स्वप्ने (अदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

ससत्थ सीद ३.३०.९. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्]

ससाद निषीदति ६.१.६. अवसादयति १.६७.४. तिष्ठति, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् 'सदेः परस्य लिटि' अ० ८.३.११८. अनेन परसकारस्य मूर्धन्यादेशनिषेधः १.२५.१०. निवसेत् ७.४.५. निषीदेत् ५.१.५. सीद २०.२. सीदतु १०.२७. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्]

ससन्तु शयीरन् ७.५५.५. स्वपन्तु १.१२४.१०. **ससस्ति**=स्वपिति, भा०—निद्रालूनलसान् कर्महीनान् करोति २३.१८. **सस्तु**=शयताम् ७.५५.५. [षस स्वप्ने (अदा०) धातोर्लोट्। ससस्ति-प्रयोगे लटि शपः श्लुः]

ससर्ज सृजति १.१०३.२. **ससृज**=सृजति ७.१८.४. **ससृजे**=स्वसामर्थ्यरूपकारणादुत्पादितवान् ऋ० भू० १३५, अथर्व० १०.४.८. **ससृज्महे**=भृशं सृजेम ६.१६.३७. निष्पादयेम १.८१.८. **ससृज्यात्**=पुनः पुनर्निष्पद्येत निष्पादयेद् वा १.२४.१३. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लिट्। ससृजे-प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्। अन्यत्र यङ्लुगन्ताल्लटि व्यत्ययेनात्मनेपदे च रूपम्। अथवा शपः श्लौ लटि रूपम्। अन्यत्र ससृज्यात्-प्रयोगे लिङ्। प्रससर्ज प्रसृजति नि० १०.४.]

ससर्परीः सुखस्य प्रापिका (सत्यादिलक्षणोज्ज्वला वाणी) ३.५३.१६. भृशं सर्पणशीला (वाक्) ३.५३.१५. [सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताद् वनिप्। 'वनो र च' इति ङीप् रेफश्च। प्रत्ययस्थवकारलोपश्छान्दसः]

ससवान् प्रशस्तानि ससानि अन्नानि विद्यन्ते यस्य सः (राजा), प्र०—ससमित्यन्ननाम निघं० २७, ६.४४.७.

सम्भाजकः (जातविद्यो जनः) ३.२२.१. ददत् (जातवेदाः= उत्पन्नविज्ञानविद्वज्जनः) १२.४७. [ससम् अन्ननाम निघं० २.७. पदनाम निघं० ४.२. ससप्राति० प्रशंसायामर्थे मतुप् । ससम्=स्वपनमेतन्माध्यमिकं ज्योतिः नि० ५.३.]

ससवांसम् पापपुण्ययोर्विभक्तारम् (इन्द्रं=परीक्षकं विद्वज्जनम्) ३.३४.८. **ससवांसः**=सुशयाना इव (देवाः= विद्वज्जनाः) ४.४२.१०. संविभक्ताः (देवाः=विद्वांसः) ७.१०. ये शेरते ते (जनाः) ४.८.६. [षण संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसौ रूपम् । षस स्वप्ने (अदा०) धातोर्वा लिटः क्वसुः]

ससस्य शयानस्य (मनुष्यस्य) ३.५.६. स्वप्नस्य ४.७.६. कार्यस्य ५.२१.४. स्वपतः (पत्युः) ४.५.७. [षस स्वप्ने (अदा०) धातोः शतृ । तलोपश्छान्दसः]

ससान विभजेत् ३.३४.८. सनति विभजति ३.३१.७. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

ससार समन्ताद् गच्छति ४.३०.११. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिट्]

ससूव जनयति ४.१८.१०. [षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोर्लिटि 'ससूवेति निगमे' अ० ७.४.७४. सूत्रेण परस्मैपदं वुगागमोऽभ्यासस्य चात्वं निपात्यते]

ससृजानः स्रष्टा सन् (पूज्यो राजा) ७.८.२. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदं प्रत्ययस्य श्लुश्च सृजधातोर्लिटः कानज्वा]

ससृमाणम् भृशं गच्छन्तम् (एतशम्=अश्वम्) ४.१७.१४. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगताच्छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

ससृवांसम् सर्वं ज्ञानवन्तं शिल्पविद्यागुणप्राप्तिमन्तं वा (ईश्वरं भौतिकमग्निं वा) २.१४. **ससृवांसः**=प्राप्तवन्तः (राजपुरुषाः) ६.१६. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

ससृवांसमिव प्राप्नुवन्तमिव (अग्नि=पावकम्) ३.९.५. ससृवांसम्=[सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । ससृवांसम्-इवपदयोः समासः]

ससेन सेनासहित सेनाध्यक्ष (राजन्) १.५१.३. [सह-सेनापदयोः समासे 'वोपसर्जनस्य' सूत्रेण सादेशः]

सस्तः शयानः इन्द्रः=सुखधर्त्ता राजा) ६.२०.१३. [षस स्वप्ने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० क्तः]

सस्ताम् शयाताम् पुरुषार्थनाशं प्रापयतः १.२९.३. [षस स्वप्ने (अदा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सस्तु शेताम् ७.५५.५. [षस स्वप्ने (अदा०) धातोर्लोट्]

सस्नितमम् अतिशयेन शुद्धं शुद्धिकारकं च तथा शुद्धिहेतुं भौतिकं वा, अथवा स्वव्याप्त्या सर्वजगद्वेष्टयितारमीश्वरं, शिल्पविद्याहेतुं व्यापनशीलं भौतिकं वा, प्र०—ष्णा शौचे, अथवा ष्णौ वेष्टने इत्यस्य रूपम् १.८. [सस्निप्राति० अतिशायने तमप् । सस्निः=ष्णा शौचे (अदा०) धातोः 'आदृगमहनजनः किकिनौ लिट् च' अ० ३.२.१७१. सूत्रेण किन् । लिड्वत्त्वाद् द्वित्वम् । सस्निं संस्नातं मेघम् नि० ५.१.]

सस्निना शुचिना (विद्वज्जनेन) २.२३.१०. **सस्निम्**= ब्रह्मचर्यव्रतविद्याग्रहणाभ्यां पवित्रम् (भा०—राज्यम्) ५.३५.१. **सस्निः**=शुद्धः (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.१५.५. शेते यस्मिन् सः (रथः) २.१८.१. [सस्निरिति पूर्वपदे व्याख्यातम् । अथवा षस स्वप्ने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० निः]

सस्मिन् अन्तरिक्षे ७.३६.३. सर्वस्मिन्, प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति रेफवकारयोर्लोपः १.५२.१५. स्वस्मिन्, प्र०—अत्र वलोपः १.१५२.६. [सर्वप्राति० स्वप्राति० वा सप्तम्यां पृषोदरादिना रूपसिद्धिः]

सस्राणः सर्वगुणदोषान् प्राप्नुवन् (विद्वज्जनः) १.१४६.२. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः शानच् । शपः श्लुः । व्यत्ययेनात्मनेपदश्च]

सस्राथे प्रापयतः १.१५८.१. **सस्रुः**=स्रवन्ति १.७३.६. गच्छन्ति १.५२.५. प्राप्नुवन्ति ५.५३.२. **सस्रे**=सरति गच्छति ७.३६.१. [सृ गतौ (अदा०) धातोर्लिट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सस्रुतः याः समानं सत्यं मार्गं स्रुवन्ति गच्छन्ति ताः (वाचः) १.१४१.१. गमनशीलान् (विद्वज्जनान्) ४.२८.१. [समानोपपदे स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । समानस्य सादेशश्छान्दसः । सस्रुतः नदीनाम निघं० २.२३.]

सस्रुषीः प्राप्तव्याः (भुवः=भूमयः) १.८६.५. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । ततः स्त्रियां ङीप्]

सस्रोतसः समानं मनोरूपं स्रोतः प्रवाहो यासां ताः (वृत्तयः) ३४.११. [समान-स्रोतस्पदयोः समासः । स्रोतस्=स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'स्रुरिभ्यां तुट् च' उ० ४.२०२. सूत्रेणासिः । तुडागमश्च]

सस्वजाते स्वजेते, आश्रयतः, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.१६४.२०. [ष्वञ्ज परिष्वङ्गे (भ्वा०)

धातोर्लट् ‘दंससञ्जस्वञ्जां शपि’ इत्यनुनासिकलोपः]

सस्वती उपतापकेन शब्देन ७.५८.५. [स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । विभक्तिव्ययत्यो द्वित्वश्च छान्दसम्]

सस्वः अन्तर्हिताः (तन्वः=प्राणाः) ७.५९.७. अन्तश्चरन्तः (विद्वज्जनाः) ७.६०.१०. [सस्वः निर्णीतान्तर्हितनाम निघं० ३.२५.]

सस्वः उपदिशति, प्र०—अत्र स्वृधातोर्लङि प्रथमैकवचने ‘बहुलं छन्दसि’ इति शपः स्थाने श्लुः ‘हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्०’ इति तलोपः १.८८.५. [स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोर्लङ् । शपः श्लुश्छन्दसि । ‘हल्ङ्याब्भ्य०’ त्लोपः]

सस्वः गुप्तं (पदविज्ञानम्) ५.३०.२.

सह सङ्गे १.२३.१७. परस्परम् ३.१३. सङ्गाऽर्थे १.२३.२४. साकम् १२.२८. सार्द्धम् २०.२५. साथ सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.६. साथ ही साथ स० प्र० ३१८, ४०.१४.]

सहच्छन्दसः सह छन्दांसि वेदाध्ययनं स्वातन्त्र्यं सुखभोगो वा येषान्ते (ऋषयः ब्रह्मचर्येण धर्मानुष्ठानपुरस्सरमखिलान् वेदान् विज्ञातवन्तो जनाः) ३४.४९. [सह-छन्दस्पदयोः समासः । चदि आह्लादने दीप्तौ च (भ्वा०) धातोः ‘चन्देरादेश्च छः’ उ० ४.२१९. सूत्रेणासुन् छकारश्च धात्वादेरादेशः]

सहजन्या सहोत्पन्ना (अप्सरा) १५.१६. [सह-जन्यपदयोः समासे स्त्रियां टाप् । जन्यः=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्यत् सहजन्या (यजु० ५.१६.) (वायोः) मेनका च सहजन्या चाप्सरसाविति दिक् चोपदिशा चेति ह स्माह माहित्थिरिमे तु ते द्यावापृथिवी श० ८.६.१.२७.]

सहजानुषाणि जनुभिर्जन्मभिर्निर्वृत्तानि जानुषाणि कर्माणि तैः सह वर्त्तमानानि (भोजनानि) १.१०४.८. सहजेनाऽनुषङ्गीणि (पात्राणि) पं० वि० । सहज अनुषक्त स्वभाव से अनुकूल मित्रों को, आर्याभि० १.४९, ऋ० १.७.१९.८. [सह-जानुषपदयोः समासः । जानुषम्=जनुष्प्राति० निर्वृत्तार्थेऽण् । जनुष्=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः ‘जनेरुसिः’ उ० २.११५. सूत्रेण उसिः]

सहदानुम् यः सहैव ददाति तम् (वृत्रं=मेघमिव) १८.६९. दानेन सह वर्त्तमानम् (वृत्रम्) ३.३०.८. [सह-दानुपदयोः समासः । दानुः=डुदाञ् दाने (जु०) धातोः ‘दाभाभ्यां नुः’ उ० ३.३२. सूत्रेण नुः]

सहदेवः देवैः सह वर्त्ततेसः (विद्वज्जनः) १.१००.१७. [सह-देवपदयोः समासः]

सहध्यै सोढुम् ६.१.१. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोस्तुमर्थेऽध्यैः प्रत्ययः]

सहन्तमः अतिशयेन सहा इति सहन्तमः (विद्वज्जनः) १.१२७.९. [सहस्प्राति० अतिशायने तमप् । सकारस्य नकारश्छान्दसः]

सहन्तः सोढारः (विद्वांसो राजजनाः) ५.८७.५. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः शतृ]

सहन्ती सहनं कुर्वती (विट्=उत्तमा प्रजा) ७.५६.५. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

सहन्त्य सहन्तेषु शान्तेषु भव (अग्ने=दातः सद्गृहस्थ) ६.१६.३३. सहनशील विद्वन् (जन) १.२७.८. शत्रुओं के समूहों के घातक (ईश्वर) आर्याभि० १.२६, ऋ० ५.८.३५.२. [सहन्तप्राति० भवार्थे यत् । सहन्त=षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० झच्]

सहपत्या स्वामिना सह ३७.२०. [सह-पतिपदयोः समासः]‘वोपसर्जनस्ये’ ति विकल्पेन न सादेशः । छान्दसत्वात् ‘पतिः समास एव’ इति न घिसंज्ञा । तेन नादेशो न भवति]

सहप्रमाः सहैव प्रमा यथार्थं प्रज्ञानं येषान्ते (ऋषयः=सत्याऽसत्ये विविच्य सत्यं लब्ध्वाऽसत्यं हातवन्तो जनाः) ३४.४९. [सह-प्रमापदयोः समासः । प्रमा=माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः ‘आतश्चोपसर्गे’ इत्यङ्]

सहमानम् यः सर्वं सहते तम् (विद्वज्जनम्) ५.२५.९. शत्रूणां वेगस्य सोढारम् (राजपुरुषम्) ६.१८.१. **सहमानः**=यः सुखदुःखादिकं सहते (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. **सहमानाय**=बलयुक्ताय (जनाय) १६.२०. शत्रून् सोढुं शीलाय (इन्द्राय=सभासेनेशाय) २.२१.२. शत्रून् सोढुं समर्थाय (रुद्राय=शूरवीराय) ७.४६.१. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः शानच् । ताच्छील्ये चानश् वा]

सहमाना बलनिमित्ता, भा०—बलवर्द्धिका (ओषधिः) १२.९९. पत्यादीन् सोढुमर्हा (पत्नी) १३.२६. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

सहमूलम् मूलेन सह वर्त्तमानम् (रक्षः=दुष्टाचारम्) ३.३०.१७. [सह-मूलपदयोः समासः]

सहवत्सा वत्सेन सह वर्त्तमाना (धेनुः=दुग्धदात्री गौः) १.३२.९. [सह-वत्सपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सहवसुम् वसुभिः सह वर्त्तमानम् (नार्मरम्=

अग्निम्) २.१३.८. [सह-वसुपदयोः समासः]

सहवीरम् वीरैः सह वर्त्तमानम् (रयिं=धनम्) ३.५४.१३. [सह-वीरपदयोः समासः]

सहवीराम् वीरैस्सह वर्त्तमानां सेनाम् २७.६. [सह-वीरपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सहसः ब्रह्मचर्यबलयुक्तस्य (जनकस्य) ५.३.९. बलादिगुणैः सह वर्त्तमानस्य (ईश्वरस्य विद्युदग्नेर्वा) १.९८.२. विद्याबलवतः (विदुषः) १.१४१.१. प्रशस्तबलयुक्तस्य (जनस्य) १.७४.५. बलस्य बलवतो वायोर्वा ३.२८.३. सहनशीलस्य (सज्जनस्य) ६.१२.१. बलिष्ठस्य (पुरुषस्य) १५.४७. शरीरात्मबलवतो विदुषः ६.५०.९. सहत इति सहो वायुस्तस्य बलरूपस्य १.२६.१०. **सहसा**=बलेनोत्साहेन वा ६.६६.९. सामर्थ्येनाऽऽकर्षणेन वा १.५१.१०. **सहसे**=बलप्रदाय मार्गशीर्षाय २२.३१. **सहः**=उत्तमं बलम् ३.३८. उदकं बलं वा ३.३९. अनन्तसहनस्वरूप अनन्तसहनशक्ति वाला (ईश्वर) आर्याभि० २.९, १९.९. बलकारी मार्गशीर्षः १४.२७. बलवान् (परमात्मा) १०.१५. यस्सहते सः (विद्वज्जनः) ६.१.१. सहनम् २८.५. पराभावुकः (अग्निः=सभाध्यक्षः) १.३६.१८. निन्दा-स्तुति और स्वाऽपराधियों को सहन करने वाला (ईश्वर) स० प्र० २४६, १९.९. सहनस्वभावम् (ब्रह्म) ऋ० भू० १६२, अथर्व० १३.४.५०. यतः सर्वं सहते तस्मात् स एवैष सहः (ईश्वरः) ऋ० भू० ९१, अथर्व० १३.४.१८. शारीरं बलम् १८.३. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्। सहः उदकनाम निघं० १.१२. बलनाम निघं० २.९. सहसः बलस्य नि० ५.२५. सहस्प्राति०मत्वर्थे 'लुगकारेकाराश्च वक्तव्याः' अ० ४.४.१२८. वा०सूत्रेण यत् प्रत्ययस्य लुक्। सहः=बलं वै सहः श० ६.३.२.१४. एतौ (सहश्च सहस्यश्च) एव हैमन्तिकौ (मासौ) श० ४.३.१.१८.]

सहसस्पुत्र बलस्य पालक (अग्ने=राजन्) ५.३.६. बलस्योत्पादक (अग्ने=वैद्यराज विद्वन्) ३.१८.४. **सहसस्पुत्रः**=बलिष्ठस्य वायोः पुत्र इव वर्त्तमानः (अग्निः) २.७.६. [सहस्-पुत्रपदयोः समासे षष्ठ्या अलुक्। अयमप्यग्निरोजसा बलेन मथ्यमानो जायते तस्मादेनमाह सहसस्पुत्रम् सहसः सूनुं सहसो यहुम् नि० ८.२.]

सहसस्सूनो बलवतां पुत्रदुष्टानां हिंसक (अग्ने=राजन्) ३.२४.३. [सहस्-सूनुपदयोः समासात् सम्बुद्धौ रूपम्। षष्ठ्या अलुक्]

सहसानम् यः सर्वं सहते तम् (राजानम्) ५.२५.९. **सहसानः**=सहमानः (इन्द्रः=राजा), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन मस्य सः ४.१७.३. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः शानच्। वर्णव्यत्ययेन मकारस्य सकारः। षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्वा 'ऋञ्जिवृधि०' उ० २.८७. सूत्रेण असानच्]

सहसावन् सहोऽधिकं बलं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) प्र०—अत्र प्रथमाऽर्थे तृतीयाया अलुक् ३४.२३. बलेन तुल्य (विद्वज्जन) ५.२०.४. अत्यन्तबलवन् (सेनाध्यक्ष), प्र०—सहसा इत्यव्ययम्, भूमार्थे मतुप् च १.९१.२३. प्रशस्तबलयुक्त (अग्ने=विद्वज्जन) ३.१.२२. बहु सहो बलं सहनं वा विद्यते यस्य तत्संबुद्धौ (विद्वज्जन) १.१८९.५. [सहस्प्राति० प्रशंसार्थे भूम्न्यर्थे वा मतुप्। समासे प्रथमार्थे तृतीयाया अलुक्]

सहस्विन् बहुबलयुक्त (अग्ने=राजन्) ४.११.१. [सहस्प्राति० भूम्न्यर्थे छान्दसः इनिः]

सहसूक्तवाकः ऋग्यजुरादिलक्षणैः सूक्तैर्वाकैः सह वर्त्तमानः (यज्ञः=गृहाश्रमः) ८.२२. [सूक्त-वाकपदयोः समासे ततः सह-पदेन समासः]

सहसोमाः सोमेन श्रेष्ठगुणसमूहेन सह वर्त्तमाना इव (गृहपतयः=गृहाश्रमिणः) ८.११. [सह-सोमपदयोः समासः]

सहस्कृत यः सहसा करोति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) ६.१६.३७. सहो बलं कृतं येन तत्सम्बुद्धौ (अग्ने) १.४५.९. **सहस्कृतम्**=यः सहः सहनं करोति कारयति वा तम् (जगदीश्वरं भौतिकमग्निं वा) ३.१८. **सहस्कृतः**=सहसा बलेन निष्पन्नः (राजा प्रजाजनो वा) ३३.८३. [सहस्-कृतपदयोः समासः। सहस् बलनाम निघं० २.९. बलं वै सहः श० ६.३.२.१४.]

सहस्तमा अतिशयेन सोढारौ (इन्द्राग्नी=वायुविद्युतौ) ६.६०.१. [सहस्प्राति० अतिशायने तमप्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः। सहस्=षह मर्षणे (भ्वा०) धातोरसुन् औणादिकः]

सहस्तोमाः स्तोमैः श्लाघाभिस्सह वर्त्तमाना यद्वा सहस्तोमाः शास्त्रस्तुतयो येषान्ते (ऋषयः=रागद्वेषदोषान् त्यक्तवन्तः परस्परस्मिन् प्रीतिमन्तो जनाः) ३४.४९. [सह-स्तोमपदयोः समासः। स्तोमः स्तवनात् नि० ७.१२.]

सहस्त्रियम् सहप्राप्तां भार्याम् १२.४७. [सह-स्त्रीपदयोः समासः]

सहस्य सहसि बले साधो (अग्ने=विद्वज्जन)

२.२.११. सहसा बलेन युक्त (राजन्) ७.१६.८. सहसि भव (विद्वज्जन) १.१४७.५. य आत्मनः सहो बलमिच्छति तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) ११.२६. **सहस्यः**=सहसि बले भवः पौषः १४.२७. [सहस् बलनाम । निघं० २.९. ततो भवार्थे साध्वर्थे वा यत् । अथवा सहस् पदाद् इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् अच् कर्त्तरि । सहस्प्राति० वा 'मत्वर्थे मासतन्वोः' सूत्रेण यत् । सहस्यः (मासः)—एतौ (सहश्च सहस्यश्च) एव हैमन्तिकौ (मासौ) स यद् हेमन्त इमाः प्रजाः सहसेव स्वं वशमुपनयते तेनो हैतौ सहश्च सहस्यश्च श० ४.३.१.१८.]

सहस्रकेतुम् असङ्ख्यातध्वजम् (रथं=यानम्) १.११९.१. [सहस्र-केतुपदयोः समासः । सहस्रम् बहुनाम निघं० ३.१. केतुः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

सहस्रचक्षाः सहस्रं चक्षांसि दर्शनानि यस्माद्यस्य वा (सूर्यः) ७.३४.१०. [सहस्र-चक्षस्पदयोः समासः । सहस्रम्=बहुनाम निघं० ३.१. चक्षस्=चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोरौणा० असुन्]

सहस्रचेताः असङ्ख्यातविज्ञानविज्ञापनः (इन्द्रः=सेनाद्यधिपतिः) १.१००.१२. सहस्रों विज्ञानादि गुणों वाला (ईश्वर) आर्याभि० १.३४, ऋ० १.७.१०.१२. [सहस्र-चेतस्पदयोः समासः । चेतस्=चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

सहस्रजित् यः सहस्राणि शत्रून् जयति सः (राजा) १.१८३.१. असङ्ख्यात-विजेता (पावक इव दूतः) ५.२६.६. असहायः सन् सहस्रं योद्धॄन् जेतुं शीलः (अग्निः=विद्वान् राजा) ९.२८. [सहस्रोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुगि' ति तुगागमः]

सहस्रणीथः सहस्रैरसङ्ख्यैर्धार्मिकैर्नीथः प्राप्तः (इन्द्रः=राजा) ३.६०.७. [सहस्र-नीथपदयोः समासः । नीथः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'हनिकुषिनीरमि०' सूत्रेण क्थन्]

सहस्रदातमम् अतिशयेनाऽसङ्ख्यदातारम् (सूरिं=विद्वांसं शिल्पिनम्) ६.४५.३३. [सहस्रदाप्राति० अतिशायने तमप् । सहस्रदाः=सहस्रोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्विप्]

सहस्रदानः असङ्ख्यप्रदः (वसिष्ठः=पूर्णविद्वज्जनः) ७.३३.१२. [सहस्रोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

सहस्रदाना असङ्ख्यप्रदाना (रातिः=दानक्रिया) ३.३०.७. [सहस्रदानमिति व्याख्यातम् । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

सहस्रदाव्नाम् यः सहस्रस्याऽसङ्ख्यातस्य दातॄणां मध्ये, प्र०—अत्र 'आतो मनिन्०' अ० ३.२.७४. अनेन वनिप्-प्रत्ययः १.१७.५. [सहस्र-दावन्पदयोः समासः । दावन्=डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'आतो मनिन्०' इति वनिप्]

सहस्रदाः सहस्रमसङ्ख्यं सुखं ददातीति (विद्वज्जनः) १३.४०. [सहस्रोपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सहस्रधारम् बहुविधं ब्रह्माण्डं धरतीति तं यज्ञम् १.३. [सहस्रोपपदे धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

सहस्रधारा सहस्राण्यसङ्ख्या धाराः प्रवाहा यस्या वाचः सा ४.४१.५. **सहस्रधाराम्**=सहस्रमसंख्यानर्थान् धरति तं सर्वज्ञानप्रदाम् (सुमतिं=प्रज्ञाम्) १७.७४. सहस्रं धारा हिरण्यादयो यस्यान्तां यद्वा या सहस्रमसङ्ख्यातं प्राणिजातं धरति तां, भा०—सर्वधारिकाम् (महीं=भूमिम्) ३३.२८. [सहस्र-धारापदयोः समासः । सहस्रोपपदे वा धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण् । ततष्टाप् छान्दसः]

सहस्रपात् सहस्राण्यसंख्याताः पादा यस्मिन् सः, भा०—यस्मिन् पूर्णे परमात्मन्यस्मदादीनामसङ्ख्यातानि पादादीन्यङ्गानि सन्ति सः (पुरुषः=परमात्मा) ३१.१. [सहस्र-पादपदयोः समासः । 'संख्यासुपूर्वस्य' इति पादस्य लोपः समासान्तः]

सहस्रपाथाः सहस्राण्यमितानि पाथांस्यन्नादीनि यस्य सः (अग्निः=पावकः) ७.१.१४. [सहस्र-पाथस्पदयोः समासः । पाथस्=पा रक्षणे (अदा०)धातोः 'उदके थुट् च' उ० ४.२०४ सूत्रेणासुन्]

सहस्रपोषम् असंख्यातपुष्टिम्, भा० – असङ्ख्यातामतुलां पुष्टिम् ४.२६. [सहस्र-पोषपदयोः समासः । पोषः=पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोर्घञ्]

सहस्रपोष्यम् असङ्ख्यैः पोषणीयम् (ब्रह्म=धनम्) ६.३५.१. [सहस्र-पोष्यपदयोः समासः । पोष्यम्=पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोर्ण्यत्]

सहस्रप्रधनेषु सहस्राण्यसङ्ख्यातानि प्रकृष्टानि धनानि प्राप्नुवन्ति येषु तेषु चक्रवर्त्तिराज्यसाधकेषु महायुद्धेषु १.७.४.[सहस्र-प्रधनपदयोः समासः । सहस्रम् बहुनाम निघं०

३.१. प्रधने संग्रामनाम निघं० २.१७.]

सहस्रभरम् यः सहस्रमसङ्ख्यं बिभर्त्ति तम् (श्रेष्ठं विजयम्) ६.२०.१. [सहस्रोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः पचाद्यच्]

सहस्रभृष्टिम् भृष्टयो भर्ज्जनानि दहनानि यस्मात्तम् (वधं=दुर्भिक्षम्) ५.३४.२. सहस्राणां भृज्जकं छेदकम् (वज्रं=शस्त्रविशेषम्) ६.१७.१०. सहस्रमसंख्याता भृष्टयः पाका यस्मात्तम् (वज्रम्) १.८५.९. **सहस्रभृष्टिः**=सहस्रमसङ्ख्याता भृष्टयः पीडा दाहा वा यस्मात् सः (वज्रः) १.८०.१२. सहस्राणि बहूनि भृष्टयः पाका यस्मात् स सूर्यस्य प्रकाशः १.२४. [सहस्र-भृष्टिपदयोः समासः । भृष्टिः=भ्रस्ज पाके(तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । 'ग्रहिज्या०' इति सम्प्रसारणम्]

सहस्रम् असङ्ख्यातगुणसम्पन्नम् (इन्द्रं=सभाध्यक्षम्) १.८०.९. असङ्ख्यम् (जगत्) १.१८८.८. असङ्ख्याताः (स्तोमाः=स्तुतयः) १.११.८. असंख्याः (रुहः=नाड्यङ्कुराः) १२.७६. असंख्यमतुलं बोधम् १८.६२. सर्वमिदं जगत्सहस्रनामकम् ऋ० भू० ११९, अथर्व० ९.५.१७. सब संसार को सं० वि० २०८, अथर्व० ९.५.१७. असङ्ख्यगृहाश्रमव्यवहारम् १५.५५. **सहस्रस्य**=असङ्ख्यपदार्थयुक्तस्य जगतः, असङ्ख्यपदार्थविशेषस्य, असङ्ख्यातस्थूलवस्तुनः १५.६५. **सहस्राय**=अतुलविज्ञानाय, भा०—'पुष्कलविद्यायै' १३.४०. [सहस्रम् वहुनाम निघं० ३.१. सहस्रम्=सहस्वत् नि० ३.१०. सहस्र—सर्वं वै सहस्रम् । श० ४.६.१.१५. भूमा वै सहस्रम् श० ३.३.३.८. परमं सहस्रम् तां० १६.९.२. तदाहुः किं सहस्रमितीमे लोका इमे वेदा अथो वागिति ब्रूयात् ऐ० ६.१५. आयुर्वै सहस्रम् तै० ३.८.१५.३. पशवः सहस्रम् तां० १६.१०.१२.]

सहस्रमीळ्हे सहस्राणि मीळ्हानि धनानि यस्मात् तस्मिन् (आजौ=सङ्ग्रामे) १.११२.१०. [सहस्र-मीळ्हपदयोः समासः । मीळ्हे संग्रामनाम निघं० २.१७.]

सहस्रमुष्क असङ्ख्यवीर्य (इन्द्र=सेनापते) ६.४६.३. [सहस्र-मुष्कपदयोः समासः । मुष्कः=मुष स्तेये (क्र्या०) धातोः 'सृवृभूशुषि०' उ० ३.४१. सूत्रेण कक्]

सहस्रमूतिः सहस्रमूतयो रक्षणादीनि यस्मात् सः (राजप्रजाजनः) १.५२.२. [सहस्र-ऊतिपदयोः समासः । ऊतिः=अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

सहस्रम्भरः सहस्रस्य जगतो धर्त्ता पोषको वा (अग्निः=विद्युदादिकार्यकारणस्य स्वरूपः) २.९.१. यः सहस्रमसंख्यं शुभगुणसमूहं बिभर्त्ति सः (प्राप्तमनुष्यजन्मनरः) ११.३६. [सहस्रोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'संज्ञायां भृतॄवृजि०' अ० ३.२.४६. सूत्रेण खच् । सहस्रम्भर=एषा ह वाऽअस्य (अग्नेः) सहस्रम्भरता यदेनमेकं सन्तं बहुधा विहरन्ति ऐ० १.२८.]

सहस्रयोजने सहस्राण्यसंख्यानि चतुःक्रोशपरिमितानि यस्मिन् देशे तस्मिन् १६.५४. एतत्संख्यापरिमिते देशे १६.६३. [सहस्र-योजनपदयोः समासः । सहस्रम् बहुनाम निघं० ३.१. योजनानि अङ्गुलिनाम निघं० २.५. सहस्रयोजन—(यजु० १६.५४) अयमग्निः सहस्रयोजनम् श० ९.१.१.२९. एतद्ध परमं दूरं यत्सहस्रयोजनम् श० ९.१.१.२८.]

सहस्ररेताः अतुलवीर्यः (विविद्वान्=श्रेष्ठो विद्वज्जनः) ४.५.३. [सहस्र-रेतस्पदयोः समासः]

सहस्रवत् सहस्रमसङ्ख्यपरिमाणं विद्यते यस्मिँस्तत् (सुवीर्यम्) ३.१३.७. [सहस्रप्राति० मतुप्]

सहस्रवल्शम् सहस्राण्यसंख्या वल्शा अङ्कुरा इव शास्त्रबोधा यस्मिँस्तं विज्ञानमयं व्यवहारम् ७.३३.९. **सहस्रवल्शाः**=यथा बहुमूला वृक्षा रोहन्ति तथा ५.४३. सहस्राऽङ्कुरा वनस्पतय इवाऽङ्गोपाङ्गैः सह वर्त्तमानाः (दूर्वादयः) ३.८.११. [सहस्र-वल्शपदयोः समासः]

सहस्रवीरम् सहस्राणि वीरा यस्मिँस्तम् (बर्हिः=विज्ञानम्) १.१८८.४. [सहस्र-वीरपदयोः समासः]

सहस्रवीर्या असङ्ख्यातपराक्रमा, भा०—जितेन्द्रिया (स्त्री) १३.२६. [सहस्रवीर्यपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सहस्रशः असंख्याता वहवः (रुद्राः=शूरवीरा जनाः) १६.६. [सहस्रप्राति० वीप्सायां शस्]

सहस्रशीर्षा सहस्राण्यसंख्यातानि शिरांसि यस्मिन् सः (पुरुषः=परमात्मा) ३१.१. [सहस्र-शिरस्पदयोः समासे शिरसः शीर्षन्भावः 'शीर्षंश्छन्दसि' सूत्रेण]

सहस्रशृङ्गः सहस्राणि शृङ्गाणि तेजांसि किरणा यस्य सूर्यस्य सः ७.५५.७. [सहस्र-शृङ्गपदयोः समासः । शृङ्गाणि ज्वलतो नाम निघं० १.१७.]

सहस्रसातमम् सहस्रमसङ्ख्यातं सुखं सनुते ददाति येन तदतिशयितम् (द्युम्नं=ज्ञानम्), प्र०—'जनसनखनक्रमगमो विट्' अ० ३.२.६७. अनेन सहस्रोपपदात् सनोतेर्विट् 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' अ० ६.४.४१. अनेन नकारस्याकारादेशः, ततस्तमप् १.९.८. असंख्यानां पदार्थानामतिशयेन विभक्तारम् (सूरिं=विद्वांसं शिल्पिनम्) ६.४५.३३.

सहस्रसातमः=यः सहस्रमसङ्ख्यं सनोति ददाति सोऽतिशयितः (अग्निः=महाविद्वज्जनः) ३.३.६. अतिशयेन सहस्रस्य विभाजकः (वाजी=अश्वः) १.१७५.१. [सहस्रोपपदषण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'जनसनखनक्रमगमो विट्' इति विट्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इत्यात्त्वम्। सहस्रसाप्राति० अतिशायने तमप्]

सहस्रसातमाम् सहस्राणि बहूनि धनानि सुखानि वा सनोति ददाति यया साऽतिशयिता ताम् (ऊतिं=रक्षां प्राप्तिमवगमञ्च), प्र०—अत्र सहस्रोपपदात् षणु दाने इत्यस्माद्धातोः 'जनसन०' इत्यनेन विट् 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इति नकारस्याकारादेशः, ततस्तमप्, ततष्टाप् १.१०.१०. [सहस्रोपपदे षणु दाने (तना०) धातोर्विट्। ततोऽतिशायने तमप्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

सहस्रसाम् सहस्राणि कार्याणि सनति सम्भजति (यस्तम् अश्वं=विद्युतम्) १.११८.९. सहस्रं बह्वीर्विद्याः सनोति तम् (ऋषिं=वेदमन्त्रार्थद्रष्टारं, शुभगुणोपदेष्टारं, सकलविद्याप्रत्यक्षकारिणं जनम्) १.१०.११. या सहस्राणि असंख्यातानि कार्याणि सनोति ताम् (द्युतं=कारणस्थां दीप्तिम्) ३.१६. **सहस्रसाः**=यः सहस्राणि सनति विभजति सः (राजा) ४.३८.१०. यः सहस्राणि पदार्थान् सनोति विभजति सः (अग्निः) १.१८८.३. ये सहस्रं विद्याविषयान् सनन्ति ते (राजपुरुषाः) ९.१७. [सहस्रोपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) षणु दाने (तना०) धातोर्वा 'जनसनखनक्रमगमो विट्' अ० ३.२.६७. सूत्रेण विट्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इत्यात्त्वमनुनासिकस्य]

सहस्रसावे सहस्रस्याऽसंख्यस्य धनस्य सावः प्रसवो यस्मिन् सङ्ग्रामे ३.५३.७. [सहस्र-सावपदयोः समासः। सावः=षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्घञ्]

सहस्रस्थूणम् सहस्रमसंख्या वा स्थूणा यस्मिँस्तज्जगत्, राज्यं, यानं वा ५.६२.६. **सहस्रस्थूणे**=सहस्राणि स्थूणा स्तम्भा यस्मिँस्तस्मिन् (सदसि=सभास्थाने) २.४१.५. [सहस्र-स्थूणापदयोः समासः। स्थूणा=तिष्ठति छादनादिकमनया सा स्थूणेति विग्रहे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'रास्नासास्नास्थूणावीणाः' उ० ३.१५. सूत्रेण न-प्रत्यय आकारस्य ऊकारादेशो निपात्यते। ततः स्त्रियां टाप्]

सहस्रा सहस्राण्यसंख्यातानि (अवद्विषः=शत्रून्) १.१३३.७. बहुविधाः (ऊतयः=रक्षाः) ४.३१.१०. [सहस्रम् बहुनाम निघं० ३.१. ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सहस्राक्ष सहस्रेष्वसंख्यातेषु व्यवहारेष्वक्षि विज्ञानं यस्य तत्सम्बुद्धौ, भा०—असंख्यप्राणिशरीराणि प्रविश्यानेकनेत्रादिभिरङ्गैः दर्शनादीनि कार्याणि कर्त्तुं समर्थ (अग्ने=योगिराज) १७.७१. सहस्रेष्वसंख्यातेषु युद्धकार्येष्वक्षिणी यस्य तत्सम्बुद्धौ, भा०—सर्वतो विदितसाम-दाम-दण्ड-भेदादिराजनीत्यवयवकृत्य (सेनाध्यक्ष) १६.१३. **सहस्राक्षः**=सहस्राण्यसंख्यातान्यक्षीणि यस्मिन् सः (पुरुषः=परमात्मा) ३१.१. असंख्यदर्शनः (अग्निः=मनुष्यः) १३.४७. **सहस्राक्षाय**=सहस्रेष्वसंख्यातेषु शास्त्रविषयादिष्वक्षिणी यस्य तस्मै विदुषे ब्राह्मणाय १६.२९. सहस्रेषु भृत्येषु अक्षिणी यस्य तस्मै (सेनापतये) १६.८. [सहस्र-अक्षिपदयोः समासः। 'अक्ष्णोऽदर्शनात्' अ० ५.४.७६. सूत्रेण 'वा छन्दसि' नियमेन छन्दसि दर्शनार्थेऽपि समासान्तोऽच्]

सहस्राक्षा सहस्राण्यसंख्यातानि अक्षीणि साधनानि याभ्यान्तौ (इन्द्रवायू=विद्युत्पवनौ) १.२३.३. [सहस्राक्ष इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सहस्राक्षरा सहस्राणि असंख्यातान्यक्षराणि यस्याः सा (विदुषी स्त्री) १.१६४.४१. [सहस्र-अक्षरपदयोः समासे स्त्रियां टाप्। सहस्राक्षरा बहूदका नि० ११.४०.]

सहस्रिणम् सहस्रमसंख्यातं प्रशस्तं सुखं विद्यते यस्मिँस्तम् (रयिं=धनसमूहम्) १.६४.१५. सहस्रमसंख्याता गुणा विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (वाजं=बोधम्) १.१२४.१३. सहस्रमसंख्याः पदार्था विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (रयिं=धनम्) ४.४९.४ सहस्रैर्योद्धृभिः संयुक्तम् (वाजं=सङ्ग्रामम्) ६.८.६. असङ्ख्यं बलं विद्यते यस्मिँस्तम् (वाजं=वेगम्) ३.२२.१. सहस्राण्यसंख्यातानि सुखानि यस्मिन् सन्ति तम् (वाजं=पदार्थविज्ञानम्), प्र०—'तपःसहस्राभ्यां विनीनी' अ० ५.२.१०२. इति सहस्रशब्दादिनिः प्रत्ययः १.५.९. **सहस्रिणः**=असंख्यातसुखाङ्गयुक्तान् (पदार्थान्) २.२.७. असंख्यपुरुषधनयुक्तस्य (वायोः=राज्ञः) ४.४८.५. सहस्रमसङ्ख्याता वेगादयो गुणाः सन्ति येषान्ते (वायुवेगाः) २.४१.१. **सहस्री**=असङ्ख्यः (रयिः=धनम्) ७.४.९. सहस्राण्यसंख्याता उत्तमा मनुष्याः पदार्था वा विद्यन्ते यस्य सः (सम्राट्=चक्रवर्त्ती राजा) ७.५८.४. सहस्रं सर्वं सुखमस्मिन्निति सः (रयिः=श्रीः) ६.१५.१२. [सहस्रमिति बहुनाम निघं० ३.१. ततः 'तपःसहस्राभ्यां विनीनी' अ० ५.२.१०२. सूत्रेण इनिः]

सहस्रिणी सहस्राण्यसंख्याता विद्याविषया विद्यन्ते

यस्यां सा (वेदचतुष्टयी) ७.१५.९. असंख्याः पदार्था दीयन्ते यस्यां सा (रातिः=दानक्रिया) ६.४५.३२. **सहस्रिणीभिः**=सहस्राण्यसंख्या वेगा विद्यन्ते यासु गतिषु ताभिः २८.२८. सहस्राणि बहूनि शूरवीरसङ्घा यासु ताभिः (सेनाभिः) १.१३५.३. सहस्राणि प्रशस्तानि पदार्थप्रापणानि विद्यन्ते यासु ताभिः (ऊतिभिः=रक्षणादिभिः) प्र०—अत्र प्रशंसार्थ इनिः १.३०.८. **सहस्रिणीः**=असङ्ख्याताः (इषः=अन्नानि) २.६.५. बह्वीः (इषः) १.१८८.२. [सहस्रप्राति० मत्वर्थे 'तपःसहस्राभ्यां विनीनी' सूत्रेण इनिः। ततः स्त्रियाम् 'ऋन्नेभ्यो ङीप्' अ० ४.१.५. सूत्रेण ङीप्]

सहस्रियम् सहस्रेषु भवम् (प्रजाजनम्) ७.५६.१४. **सहस्रियः**=सहस्रेणाऽसंख्यातेन योद्धृसमूहेन सम्मितस्तुल्यः (अग्निः=पावक इव सेनापतिः) १५.५२. [सहस्रप्राति० भवार्थे 'समुद्राभ्राद् घः' अ० ४.४.११८. सूत्रेण घः]

सहस्रियासः सहस्राणि (ऊर्म्मयः=तरङ्गाः) १.१६८.८. [सहस्रियमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

सहस्व अभिभव, तिरस्कुरु, प्र०—सह अभिभवे इत्यस्य प्रयोगः ३.२४.१. बली भव, भा०—वशे नय १२.९९. क्षमस्व ९.३७. **सहः**=सहसे, प्र०—लङि मध्यमैकवचनेऽडभावः १.१७४.८. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लङ्। अटोऽभावः। व्यत्ययेन परस्मैपदञ्च]

सहस्वत् सहोऽतिशयितं सहनं विद्यते यस्मिन् तद्यथा स्यात्तथा, (मखः=पालनशिल्पाख्यो यज्ञः) प्र०—अत्राऽतिशये मतुप् १.६.८. [सहस्प्राति० अतिशायने तमप्। सहस् इति व्याख्यातम्]

सहस्वतः प्रशस्तं सहो बलं विद्यते यस्मिँस्तस्य (अग्नेः) १.९७.५. बलवतः (सेनेशस्य) २.१३.११. **सहस्वन्तः**=सहः सहनं विद्यते येषां ते (जनाः) प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् ३.१८. **सहस्वान्**=सहनकर्त्ता (विद्वज्जनः) ६.५.६. अत्यन्तबलयुक्तः (परमेश्वरः) ६.२२.१ सहो बहुबलं विद्यते यस्य सः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. **सहस्वः**=बहुबलयुक्त, सकलविद्याविद्वा (विद्वज्जनः) ३.१४.२. प्रशस्त बलयुक्त (वीरपुरुष) ७.४.४. सोढुं शील (वैद्यजन) १.१८९.४. बहुसहनादिगुणयुक्त (विद्वन्) ५.९.७. [सहस्प्राति० प्रशंसार्थे भूम्न्यर्थे वा मतुप्। सहः बलनाम निघं० २.९.]

सहावा सहन कर्त्ता (राजकर्मचारी) ६.१८.२. यः सहैव वनति सम्भंजति (देवः=विद्वज्जनः) ७.४५.३. सोढा (भूपतिः) ३.४९.३. [सहः=षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर् घञर्थे कः। सहप्राति० मत्वर्थे, वनिप्। पूर्वस्य संहितायां दीर्घः। अन्यत्र सहोपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' विच्। पूर्वस्य संहितायां दीर्घः, धातोर्नकारस्यात्त्वम्]

सहावान् बलवान् (सेनेशः) प्र०—अत्राऽन्येषामपि० दीर्घः १.१७५.३. सहो बहु सहनं विद्यते यस्मिन् सः (ओषधिसारः) १.१७५.२. [सहप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप्। सहः==षह मर्षणे (भ्वा०) धातोरच्। सहस्प्राति० वा मतुप्। वर्णव्यत्ययेन सकारस्याकारः। सहः बलनाम निघं० २.९.]

सहासः सहनशीला बलवन्तः (मरुतः=मनुष्याः) ७.३४.२४. [सहप्राति० जसोऽसुक्। सहः=षह मर्षणे (भ्वा०) धातोरच्]

सहिष्ठ अतिशयेन सोढा (राजन्) ६.१८.४. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तात् 'तुश्छन्दसि' इष्ठन्। तृचो लोपः]

सहीयसः अतिशयेन बलयुक्तान् सोढॄन् (नॄन्=मनुष्यान्) १.१७१.६. अतिशयेन सहनशीलान् बलिष्ठान् (सज्जनान्) ४.५५.१. **सहीयान्**=अतिशयेन सोढा (वीरजनः) १.६१.७. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तात् 'तुश्छन्दसि' अ० ५.३.५९. सूत्रेणातिशायन ईयसुन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण तृचो लोपः]

सहीयसि याऽतिशयेन सोढ्रि (साध्वि स्त्रि) ५.७९.२. [सहीयस् इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीबन्तात् सम्बुद्धौ रूपम्]

सहुरिः सहनशीलः (जनः) ७.५८.४. सहनस्वभावः (शमादिशुभकर्माचारिजनः) २.२१.३. **सहुरी**=सोढारौ (इन्द्राग्नी=वायुविद्युतौ) ६.६०.१. **सहुरे**=सहनशीलेन्द्र (राजन्) ४.२२.९. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'जसिसहोरुरिन्' उ० २.७३. सूत्रेण-उरिन्]

सहूतिभिः समाना हूतय आह्वानानि च सहूतयस्ताभिः १.४५.१०. **सहूती**—समाना हूतिराह्वानं ययोस्तौ (अग्नीषोमौ=वाय्वग्नी) १.९३.९. [समाना-हूतिपदयोः समासे समानस्य सादेशः। हूतिः=ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

सहूती समानप्रशंसया ७.२७.४. समानया स्पर्द्धया २.३३.४. [समाना-हूतिपदयोः समासे समानस्य सादेशः।

हूतिः=ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। ततः 'सुपां सुलुक्' सूत्रेण टास्थाने पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः]

सहृदयम् सब के समान हृदय (गृहस्थजन) सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.१. [समान-हृदयपदयोः समासे समानस्य सादेशश्छान्दसः]

सहोजाः यः सहसा बलेन प्रसिद्धः (दूतः=जीवः) १.५८.१. यः सहसा बलेन जातः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. [सहस् उपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः। वचनव्यत्ययेन सोः स्थाने जस्। सहः बलनाम निघं० २.९.]

सहोदाम् बलप्रदम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.१७.१३. यः सहो बलं ददाति तम् (इन्द्रं=सम्राजम्) ७.३६. **सहोदाः**=बलप्रदाः (राजक्रियाः) १.१७४.१०. बलप्रदः (सभेशः) १.१७१.५. [सहसुपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। सहः बलनाम निघं० २.९.]

सहोभरिः यः सहो बलं बिभर्त्ति सः (राजा) ५.४४.३. [सहसुपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'फलेग्रहिरात्मम्भरिश्च' अ० ३.२.२६. सूत्रे चकारस्यानुक्तसमुच्चयार्थकत्वाद् इन्]

सहोवृधम् यः सहसा बलेन वर्धते तं, बलस्य वर्धकं वा (आप्तं विद्वज्जनम्) ३.१०.९. सहो बलं बर्धयतीति सहो वृधम् (अग्नि=सर्वाभिरक्षकमीश्वरम्) १.३६.२. [सहस्उपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सहौजसः ओजसा बलेन सह वर्त्तमानाः (स्त्रियः) १०.४. [सह-ओजस्पदयोः समासः]

सह्यसः सहीयसोऽतिशयेन बलवतः (विद्वज्जनस्य) १.१२०.४. [प्र०—अत्र सहधातोरसुन् ततो मतुप्। तत ईयसुनि विन्मतोर्लुगिति मतुब्लोपः। टेरिति टिलोपः। छान्दसो वर्णलोपो वेतीकारलोपः]

सह्याः सहनं कुर्याः १.१५२.७. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्लिङि मध्यमैकवचने रूपम्]

सह्याः सोढुं योग्याः (दीक्षयः) २.११.४. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'शकिसहोश्च' अ० ३.१.९९. सूत्रेण यत्]

सह्योः सहनशीलस्य (सज्जनस्य) ६.१८.१२. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० युच् युन् वा]

संयक्षतः सङ्गच्छतः २.३.७. [सम्+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लेटि सिपि प्रथमद्विवचने रूपम्]

संयत् सङ्गतिः १५.१८. संयमः १५.५. **संयतः**=संयमयुक्ताः (प्रजाः) ५.३४.९. **संयता**=संयमयुक्तेन (विज्ञानेन) १.१५१.८. संयच्छन्ति येन तेन (द्युम्नेन=धनेन यशसा वा) ६.१६.२१. [सम्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' इति वा क्विप्। 'गमः क्वौ' अ० ६.४.४०. इत्यत्र 'गमादीनामिति वक्तव्यम्' इत्यनुनासिकलोपे तुगागमः। संयत् संग्रामनाम निघं० २.१७.]

संयतम् कृतसंयमम् (स्वस्ति=सुखम्) ६.२२.१०. **संयतः**=सम्यङ् नियमितः (अग्निः=विद्वज्जनः) २.२.२. [सम्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः। 'अनुदात्तोपदेश०' अ० ६.४.३७. सूत्रेणानुनासिकलोपः]

संयती सम्मिलिते (योगक्षेमसाधने) ५.३७.५. संयमेन गच्छन्त्यौ द्यावापृथिव्यौ २.१२.८. [सम्+इण् गतौ (अदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

संयद्वसुः यज्ञस्य सङ्गतिकरणः १५.१८. [संयत्-वसुपदयोः समासः]

संयद्वीरम् संयताः संयमयुक्ता वीरा यस्मिँस्तम् (अग्न्यादिपदार्थबोधम्) २.४.८. [संयत-वीरपदयोः समासः। पूर्वपदस्यान्त्यलोपश्छान्दसः]

संयन्ति प्राप्नुवन्ति २.३५.३. सम्यग् गच्छन्ति १.१९०.७. **संयन्तु**=सम्यक् प्राप्नुवन्तु १.१२५.७. [सम्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लट्। अन्यत्र लोट्]

संयासाय सम्यग् गमनाय ३९.११. [सम्+यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोर्घञ्]

संयेमुः सम्यक्तया यच्छेयुः ३.३८.३. [सम्+यमु उपरमे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

संयौमि सम्यङ् मिश्रयामि, अग्नौ प्रक्षिप्य वियोजयामि वा १.२२. [सम्+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लट्]

संरभध्वम् सम्यक् प्रारम्भं कुरुत, भा०—मङ्गलान्याचरत ३५.१०. **संरभस्व**=सम्यगारम्भं कुरु २७.५. **संरभेमहि**=सम्यक्तया शत्रुभिः सह युध्येमहि १.५३.५. [सम्+रभ राभस्ये (भ्वा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लिङ्]

सँरराणः सम्यग् दातृशीलः (प्रजापतिः=परमेश्वरः), प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् 'बहुलं छन्दसि' अ० २.४.७६. इति शपः स्थाने श्लुः ८.३६. सम्यक् सुखानि राति ददाति सः (यमः=न्यायी संयमी सन्तानः) १९.५१. सम्यग् रममाणः, भा०—व्याप्तः (प्रजापतिः=ईश्वरः) ३२.५. सर्वप्राणिभ्योऽत्यन्तं सुखं दत्तवान् सन् (ईश्वरः) ऋ० भू० ४४, ८.३६. सत्यविद्यायाः सम्यग् दानकर्त्ता (परमेश्वरः) ऋ० भू० २६०, १९.५१. [सम्+रा दाने

(अदा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । शपः श्लुश्च छान्दसः]

संरराणे ये सम्यक् सुखं रातो दत्तस्ते (द्यावापृथिव्यौ) ६.७०.६. [संरराण इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाबन्तात् प्रथमाद्विवचनम्]

संराधयन्तः परस्पर मिल के धन-धान्य राज्य-समृद्धि को प्राप्त होते हुए (गृहस्थादि मनुष्यो) सं० वि० १४२, अथर्व० ३.३०.५. [सम्+राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

संरायस्पोषेण प्रशस्तानां रायो धनानां भोगपुष्ट्या ३.१९. [सम्-रैपदयोः समासे ततः पोषपदेन सह समासः । समासे विभक्तेरलुक्]

संरिणीथः सम्यक्तया हिंस्तम् १.११७.१९. **संरिणाति**=सम्यग्गच्छति ५.३१.११. [सम्+रि हिंसायाम् (स्वा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन श्ना । रिणाति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

संरिहाणे सम्यगास्वादकर्त्र्यौ (मातरा=मातृवद्वर्त्तमानेऽध्यापिकोपदेशिके) ३.३३.३. [सम्+लिह आस्वादने (अदा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप् । ततो द्विवचने रूपम् । धातोर्लस्य रेफश्छान्दसः]

संरोचते एकीभावेन प्रकाशते ३७.१४. [सम्+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्लट्]

संवतः संसेवमानः (मनुष्यः) ५.१५.३. संविभक्तान् (अवरान्=नीचाननुत्कृष्टगुणकर्मस्वभावान् नरान्) ११.७१. विभागवत्यः (विषयजन्या व्याधयः) १.१९१.१५. **संवतम्**=सम्यग् विभक्ताम् (यानगतिम्) ११.१२. [सम्+वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः । 'अनुदात्तोपदेश०' अ० ६.४.३७. सूत्रेणानुनासिकलोपः । संवतः संग्रामनाम निघं० २.१७.]

संवत्सम् सङ्गतं वत्समिव, एकीभूतं वात्सल्येन पालितं सन्तानम् ४.३३.४. [सम्-वत्सपदयोः समासः]

संवत्सरः क्षणादिलक्षणः कालः, पं० वि० । ऋ० ८.८.४८.२. संवत्सर इव नियमेन वर्त्तमानः (विद्वज्जनो जिज्ञासुर्वा) २७.४५. द्वादशभिर्मासैरलङ्कृतः (वर्षः) १८.२३. **संवत्सराय**=वर्षाय २४.२५. चतुर्थ्याऽनुवत्सराय, प्र०—अत्राऽनोः पूर्वपदस्य लोपः ३०.१५. [सम्+वस निवासे (भ्वा०) धातोः 'संपूर्वाच्चित्' उ० ३.७२. सूत्रेण सरन् । 'सः स्यार्धधातुके' अ० ७.४.४९. सूत्रेण सकारादावार्धधातुके परतस्तकारादेशः । संवत्सरः=संवसन्तेऽस्मिन् भूतानि नि० ४,२७. षष्टिश्च ह वै त्रीणि च शतानि संवत्सरस्याहोरात्राः इति च ब्राह्मणं समासेन नि० ४.२७. स ऐक्षत प्रजापतिः । सर्वं वाऽअत्सारिषं य इमा देवता असृक्षीति स सर्वत्सरो ऽभवत् सर्वत्सरो ह वै नामैतद् यत् संवत्सर इति श० ११.१.६.१२. यः स भूतानां पतिः संवत्सरः सः श० ६.१.३.८. संवसरो वै प्रजापतिः श० २.३.३.१८. संवत्सरो वै प्रजापतिरेकशतविधः श० १०.२.६.१. संवत्सरः प्रजापतिः ऐ० १.१. तां० १६.४.१२. गो० उ० ३.८. तै० १.४.१०.१०. स (संवत्सरः) एव प्रजापतिस्तस्य मासा एव सह दीक्षिणः तां० १०.३.६. स वै संवत्सर एव प्रजापतिः श० १.६.३.३५. प्रजापतिः संवत्सरः ऐ० ४.२५. स एष प्रजापतिरेव संवत्सरः कौ० ६.१५. संवत्सरो यज्ञः प्रजापतिः श० १.२.५.१२. संवत्सरो वै यज्ञः प्रजापतिः तस्यैत द् द्वारं यदमावास्या चन्द्रमा एव द्वारपिधानः श० ११.१.१.१. संवत्सरो यज्ञः श० ११.२.७.१. संवत्सरसंमितो वै यज्ञः पञ्च वा ऽऋतवः संवत्सरस्य तं पञ्चभिराप्नोति तस्मात्पञ्च जुहोति श० ३.१.४.५. संवत्सरो वै पञ्चहोता तै० २.२.३.६. संवत्सरो वाव होता गो उ० ६.६. संवत्सरो वै होता कौ० २९.८. संवत्सरो वै धाता तै० १.७.२.१. पुरुषो वै संवत्सरः श० १२.२.४.१. पुरुषो वाव संवत्सरः गो० पू० ५.३. प्राणो वै संवत्सरः तां० ५.१०.३. वाक् संवत्सरः तां० १२.१२.७. बृहती हि संवत्सरः श० ६.४.२.१०. तदाहुस्संवत्सर एव मामेति जै० उ० १.३५.१. संवत्सरः स्वर्गाकारः तै० २.१.५.२. अग्निः संवत्सरः तां० १७.१३.१७. अग्निर्वाव संवत्सरः तै० १.४.१०.१. संवत्सरोऽग्निः श० ६.३.१.२५. तां० १०.१२.७. संवत्सर एवाग्निः श० १०.४.५.२. संवत्सर एषोऽग्निः श० ६.७.१.१८. संवत्सरो वा अग्निवैश्वानरः तै० १.७.२.५. श० ६.६.१.२०. संवत्सरोऽग्निवैश्वानरः ऐ० ३.४१. संवत्सरो वैश्वानरः श० ५.२.५.१५. संवत्सरो वै वैश्वानरः श० ४.२.४.४ संवत्सरो वै पिता वैश्वानरः प्रजापतिः श० १.५.१.१६. संवत्सरो वै सोमो राजा (ऋ० ४.५३.७.) कौ० ७.१०. संवत्सरो वै सोमः पितृमान् तै० १.६.८.२. संवत्सरो वा इन्द्राशुनासीरः तै० १.७.१.१. इन्द्राय शुनासीराय=(संवत्सराय पुरोडाशं द्वादशकपालं निर्वपति तै० १.७.१.१. संवत्सरो वै शुनासीरः गो० उ० १.२६. स यः स संवत्सरो ऽसौ स आदित्यः श० १०.२.४.३. एष वै संवत्सरो य एष (आदित्यः) तपति श० १४.१.१.२७. एष वै मृत्युर्यत्संवत्सरः एष हि मर्त्यानामहोरात्राभ्यामायुः क्षिणोत्यथ म्रियन्ते श० १०.४.३.१. संवत्सरो विश्वकर्मा ऐ० ४.२२. संवत्सरो वरुणः श०

४.४.५.१८. संवत्सरो हि वरुणः श० ४.१.४.१०. व्योमा (यजु० १४.१३.) हि संवत्सरः श० ८.४.१.११. सुमेकः संवत्सरः स्वेको ह वै नामैतद् यत् सुमेक इति श० १.७.२.२६. संवत्सरो वै समस्तः सहस्रवांस्तोकवान् पुष्टिमान् ऐ० २.४१. संवत्सरो वै परिक्षित्। संवत्सरो हीमाः प्रजाः परिक्षेति संवत्सरं हीमाः प्रजाः परिक्षियन्ति ऐ० ६.३२. संवत्सरो वै परिक्षित् संवत्सरो हीदं सर्वं परिक्षियतीति गो० उ० ६.१२. संवत्सरो वै प्रवतः शश्वतीतीरपः तां० ४.७.६. संवत्सरो वज्रः श० ३.६.४.१९. संवत्सरो हि वज्रः श० ३.४.४.१५. संवत्सरो यजमानः श० ११.२.७.३२. अभ्रातृव्या तत्संवत्सरः ऐ० ५.२५. कौ० २७.५. अग्निष्टोम उक्थ्योऽग्निर्ऋतुः प्रजापतिः संवत्सर इति। एतेऽनुवाका यज्ञक्रतूनाश्चर्त्तूनाञ्च संवत्सरस्य च नामधेयानि तै० ३.१०.४. संवत्सरो वै देवानां जन्म श० ८.७.३.२१. संवत्सरः खलु वै देवानां पूः तै० १.७.७.५. तस्य (संवत्सरस्य) वसन्त एव द्वारं हेमन्तो द्वारं तं वा एतं संवत्सरं स्वर्गं लोकं प्रपद्यते श० १.६.१.१९. संवत्सरः सुवर्गो लोकः तै० २.२.३.६. श० ८.४.१.२४. तां० १८.२.४. मध्ये ह संवत्सरस्य स्वर्गो लोकः श० ६.७.४.११. संवत्सरो वाव नाकः षट्त्रिंशस्तस्य चतुर्विंशतिरर्धमासा द्वादशमासास्तद्यत्तमाह नाक इति न हि तत्र गताय कस्मै च नाकं भवति श० ८.४.१.२४. संवत्सरो वै देवानां गृहपतिः तां० १०.३.६. एकं वा एतद् देवानामहः। यत् संवत्सरः तै० ३.९.२२.१. सद्यो वै देवानां संवत्सरः तां० १६.६.११. इमऽउ लोकाः संवत्सरः श० ८.२.१७.१७. सर्वं वै संवत्सरः श० १.६.१.१९. संवत्सर इदं सर्वम् श० ८.७.१.१. संवत्सरो वा ऽऋतव्याः (इष्टकाः) श० ८.६.१.४. ऋतवः संवत्सरः तै० ३.९.९.१. ऋषभो वा एष ऋतूनाम्। यत् संवत्सरः। तस्य त्रयोदशो मासो विष्टपम् तै० ३.८.३.३. त्रयो वा ऽऋतवः संवत्सरस्य श० ३.४.४.१७. त्रेधा विहितो वै संवत्सरः कौ० १९.३. पञ्चऽर्त्तवः संवत्सरस्य श० १.५.२.१६. षड् वा ऽऋतवः संवत्सरस्य श० १.२.५.१२. सप्तार्त्तवः संवत्सरः श० ६.६.१.१४. द्वादश वा वै त्रयोदश वा संवत्सरस्य मासाः श० २.९.३ २७. संवत्सरस्य प्रतिमा वै द्वादश रात्रयः तै० १.१.६.७. त्रयोदश वै मासा संवत्सरस्य श० ३.६ ४.२४. एतावान् वै संवत्सरो यदेष त्रयोदशो मासस्तदत्रैव सर्वः संवत्सर आप्तो भवति कौ० १९.२. एतावान् वै संवत्सरो यदेष त्रयोदशो मासस्तदत्रैव सर्वः संवत्सर आप्तो भवति कौ० ५.८. स एष संवत्सरः प्रजापतिः षोडशकलः श० १४.४.३.२२. संवत्सरः सप्तदशः तां० ६.२.२. सप्तदशो वै संवत्सरो द्वादशमासाः पञ्चर्तवः श० ६.२.२.८. संवत्सर एव सप्तदशस्यायतनं द्वादशमासाः पञ्चर्त्तव एतदेव सप्तदशस्यायतनम् तां० १०.१.७. द्वादश वै मासाः संवत्सरस्य पञ्चर्तव एष एव प्रजापतिः सप्तदश श० १.३.५.१०. सप्तदशो वै प्रजापतिर्द्वादशमासाः पञ्चर्तवो हेमन्तशिशिरयोः समासेन तावान्त्संवत्सरः। संवत्सरः प्रजापतिः ऐ० १.१. संवत्सरो वाव प्रतूर्त्तिरष्टादशः (यजु० १४.२३.) तस्य द्वादशमासाः पञ्चर्तवः संवत्सर एव प्रतूर्त्तिरष्टादशस्तद्यत्तमाह प्रतूर्त्तिरिति संवत्सरो हि सर्वाणि भूतानि प्रतिरति श० ८.४.१.१३. संवत्सरो वाव तपो नवदशः (यजु० १४.२३.) तस्य द्वादश मासाः षड् ऋतवः संवत्सर एव तपो नवदशस्तद्यत्तमाह तप इति संवत्सरो हि सर्वाणि भूतानि तपति श० ८.४.१.१४. संवत्सरो वाव वर्चो द्वाविंशः (यजु० १४.२३.) तस्य द्वादशमासाः सप्तर्तवो द्वेऽअहोरात्रे संवत्सर एव वर्चो द्वाविंशस्तद् यत्तमाह वर्च इति संवत्सरो हि सर्वेषां भूतानां वर्चस्वितमः श० ८.४.१ १६. संवत्सरो वाव सम्भरणस्त्रयोविंशः (यजु० १४.२३.) तस्य त्रयोदश मासाः सप्तर्तवो द्वेऽअहोरात्रे संवत्सर एव सम्भरणस्त्रयोविंशस्तद् यत्तमाह सम्भरण इति संवत्सरो हि सर्वाणि भूतानि सम्भृतः श० ८.४.१.१७. चतुर्विंशो वै संवत्सरः तां० ४.१०.५. चतुर्विंशत्यर्धमासो वै संवत्सरः ऐ० ८.४. संवत्सरो वाव गर्भाः पञ्चविंशस्तस्य चतुर्विंशतिरर्धमासाः संवत्सर एव गर्भाः पञ्चविंशः श० ८.४.१.१९. संवत्सरो वाव प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिंशः (यजु० १४.२३.) तस्य चतुर्विंशतिरर्धमासाः षड् ऋतवो द्वे ऽहोरात्रे संवत्सर एव प्रतिष्ठा त्रयस्त्रिंशस्तद्यत्तमाह प्रतिष्ठेति संवत्सरो हि सर्वेषां भूतानां प्रतिष्ठा श० ८.४.१.२२. संवत्सरो वाव ब्रध्नस्य विष्टपं चतुस्त्रिंशस्तस्य चतुर्विंशतिरर्धमासाः सप्तर्त्तवो द्वे अहोरात्रे संवत्सर एव ब्रध्नस्य विष्टपं चतुस्त्रिंशः (यजु० १४.२३.) श० ८.४.१.२३. संवत्सरो वाव विवर्त्तोऽष्टाचत्वारिंशः (यजु० १४.२३.) षड्विंशतिरर्धमासास्त्रयोदशमासाः सप्तर्त्तवो द्वे अहोरात्रे तद्यत्तमाह विवर्त्त इति संवत्सराद् हि सर्वाणि भूतानि विवर्त्तन्ते श० ८.४.१.२५. त्रीणि वै षष्टि शतानि संवत्सरस्याह्नाम् कौ० ११.७. त्रीणि च ह वै शतानि षष्टिश्च संवत्सरस्याहोरात्राणि गो० पू० ५.५. एतावान् वै संवत्सरो यदहोरात्रे कौ० १७.५. विरूपः (नानारूपः) संवत्सरः तां० १४.९.८. यस्मादेषा समाना सती षडह विभक्तिर्नानारूपा तस्माद् विरूपः संवत्सरः

तां० १०.६.७. षडहो वा उ सर्वः संवत्सरः कौ० १९.१०. नवाहो वै संवत्सरस्य प्रतिमा ष० ३.१२. संवत्सरस्य प्रतिमां यां (एकाष्टकारूपां) त्वा रात्रि यजामहे मं० २.२.१८. संवत्सरस्य या पत्नी (एकाष्टकारूपा) सा नो अस्तु सुमङ्गली (अथर्व० ३.१०.२.) मं० २.२.१६. एषा वै संवत्सरस्य पत्नी यदेकाष्टका तां० ५.९.२. मुखं वा एतत् संवत्सरस्य यत्फाल्गुनी पौर्णमासी कौ० ४.४. तां० ५.९.८. गो० उ० १.१९. मुखं (संवत्सरस्य) उत्तरे फल्गुन्यौ पुच्छं पूर्वे गो० उ० १.१९. एषा ह संवत्सरस्यप्रथमा रात्रिर्यत् फाल्गुनी पौर्णमासी श० ६.२.२.१८. एषा वै प्रथमा रात्रिः संवत्सरस्य यदुत्तरे फाल्गुनी तै० १.१.२.६. एषा वै जघन्या रात्रिः संवत्सरस्य यत्पूर्वे फाल्गुनी तै० १.१.२.६. किं नु ते मयि (संवत्सरे) इति। अयम्म आत्मा स (आत्मा) मे त्वयि (संवत्सरे) जै० उ० ३.२४.८. आत्मा वा एष संवत्सरस्य यद् विषुवान् तां० ४.७.१ आत्मा वै संवत्सरस्य विषुवानङ्गानि पक्षौ=(दक्षिणः पक्ष उत्तरः पक्षश्च) गो० पू० ४.१८. आत्मा वै संवत्सरस्य विषुवानङ्गानि मासाः श० १२.२.३.६. अथ ह वा ऽएष महासुपर्ण एव यत् संवत्सरः। तस्य यान् पुरस्ताद्विषुवतः षण्मासानुपयन्ति सोऽन्यतरः पक्षोऽथ यान् षडुपरिष्टात्सोऽन्यतर आत्मा विषुवान् श० १२.२.३.७. संवत्सरो वै व्रतं तस्य वसन्त ऋतुर्मुखं ग्रीष्मश्च वर्षाश्च पक्षौ शरन्मध्यं हेमन्तः पुच्छम् तां० २१.१५.२. तस्य (संवत्सरस्य) वसन्तः शिरः तै० ३.११.१०.२. वर्षा उत्तरः (पक्षः संवत्सरस्य) तै० ३.११.१०.३. वर्षा पुच्छम् (संवत्सरस्य) तै० ३.११.१०.४. संवत्सरे संवत्सरे वै रेतः सिक्तं जायते ऐ० ४.१४. संवत्सरे संवत्सरे वै रेतः सिक्तिर्जायते कौ० १९.९. संवत्सरो वै प्रजननम् गो० पू० २.१५. संवत्सरं हि प्रजा पशवोऽनुप्रजायन्ते तां० १०.१.९. तस्मादु संवत्सर ऽएव स्त्री वा गौर्वाविडवा वा विजायते श० ११.१.६.२. संवत्सर ऽएव कुमारो व्याजिहीर्षति श० ११.१.६.३. तस्मात्संवत्सरऽएव वेलायां प्रजाः (शिशवः) वाचं प्रवदन्ति श० ७.४.२.३८. चक्षुर्वा एतत् संवत्सरस्य यच्चित्रापूर्णमासः तां० ५.९.११. प्रजापतेर्ह वै प्रजाः संसृजानस्य पर्वाणि विसस्रंसुः। स वै संवत्सर एव प्रजापतिस्तस्यैतानि पर्वाण्यहोरात्रयोः सन्धी पौर्णमासी चामावास्या चर्त्तुमुखानि श० १.६.३.३५. संवत्सरोऽसि नक्षत्रेषु श्रितः। ऋतूनां प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.१४. (नक्षत्राणि) संवत्सरस्य प्रतिष्ठा तै० ३.११.१.१३. तस्मादाहुः संवत्सरः सर्वे कामा इति श० १०.२.४.१. संवत्सरो वै सर्वस्य शान्तिः तां० ९.८.१३.]

संवत्सरीणम् यः संवत्सरं भृतस्तम् (परमात्मानम्), प्र०='सम्परिपूर्वात् ख च' अ० ५.१.९२. इति भृतार्थे खः १७.१३. [संवत्सरप्राति० 'संपरिपूर्वात् ख च' अ० ५.१.९२. सूत्रेण निर्वृत्त अधीष्ट-भृत-भूत-भाव्यादिषु खः! खस्येनादेशः]

संवदध्वम् सम्यक् संवाद प्रश्नोत्तर प्रीति से करो सं वि० १८७, १०.१९१.२. सङ्गता भूत्वा परस्परं जल्पवितण्डादिविरुद्धवादं विहाय सम्प्रीत्या प्रश्नोत्तरविधानेन संवादं कुरुत ऋ० भू० ९२, १०.१९१.२. [सम्+वद व्यक्तायां वाचि (भ्वा०) धातोर्लोट्]

संवननेन सम्यक्तया धर्मकृत्य के सेवन के साथ सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.७, [सम्+वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्। संवननप्राति० टा]

संवपामि सम्यग् विस्तारयामि १.२१. [सम्+डुवप बीजसन्ताने (भ्वा०) धातोर्लट्]

संवयन्ती प्रापयन्त्यौ (उषासानक्ता) २०.४१. [सम्+वय गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

संवयन्ती निर्मिमाना (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २.३.६. [सम्+वेञ् तन्तु सन्ताने (भ्वा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

संवरणस्य स्वीकृतस्य (रायः=धनस्य) ५.३३.१०. **संवरणात्**=सम्यक् स्वीकरणात् ७.३.२. सम्यक्तयाऽऽच्छादनात् १५.६२. **संवरणेषु**=आच्छादकेषु व्यवहारेषु ४.२१.६. [सम्+वृञ् वरणे (स्वा०) वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोर्ल्युट्]

संवर्च्चसा सङ्गत्या विद्याध्ययनप्रकाशनेन ३.१९. [सम्-वर्चस्पदयोः समासः। वर्चस्=वर्च दीप्तौ (भ्वा०)+असुन्]

संवर्तयन्तः सम्यग् वर्त्तमानाः (किरणाः) ५.४८.३. [सम्+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छतृ]

संववृत्वत् संवरणशीलम् (तमः) ५.३१.३. [सम्+वृञ् वरणे (स्वा०) वृञ् आवरणे (चुरा०) धातोर्वा छान्दसं रूपम्]

संवसानाः सम्यगाच्छादकाः (स्वसारः=अङ्गुलयः) ४.६.८. **संवसानौ**=सम्यक् सुवस्त्रालङ्कारेणाच्छादितौ (विवाहितौ स्त्रीपुरुषौ) १२.५७. [सम्+वस आच्छादने (अदा०) धातोः शानच्]

संवाक् विनयपुरुषार्थयोः सम्यक् प्रकाशिनी वाणी, राजनीतिनिष्ठा सम्यग् वाणी, भा०—यस्य वाणी सर्वदा

सत्याऽस्ति स सम्राट् ६.१२. [सम्-वाच्पदयोः समासः। वाच्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोः 'क्विब्वचिप्रच्छ्यायतस्तु०' अ० ३.२.१७८ वा०सूत्रेण क्विप् दीर्घोऽसम्प्रसारणञ्च]

संवाजेभिः श्रेष्ठतया विज्ञानादिगुणैः सङ्ग्रामैर्वा १.५३.५. [सम्-वाजपदयोः समासे भिस ऐस् न भवति छन्दसि। वाजे संग्रामनाम निघं० २.१७.]

संवाजैः सम्यग् युद्धैरन्नैर्विज्ञानैर्वा १.४८.१६. [सम्-वाजपदयोः समासः। वाजः अन्ननाम निघं० २.७. बलनाम निघं० २.९. वाजे संग्रामनाम निघं० २.१७.]

संवावशन्तः सम्यक्तया पुनः पुनः प्रकाशयन्तः (नरः=मनुष्याः) १.६२.३. [सम्+वाशृ शब्दे धातोर्यङ्लुगन्ताच्छतृ। 'बहुलं छन्दसीति वक्तव्यम्' अ० ७.३.८७. वा०सूत्रेणोपधाया ह्रस्वत्वम्। धातूनामनेकार्थकत्वादत्र प्रकाशनेऽर्थे]

संविक्थाः एकीभावेन चल, अ०—विचल, प्र०—ओविजी भयचलनयोः इत्यस्माल्लोडर्थे लङ्, लङि मध्यमैकवचने 'वहुलं छन्दसि' इति विकरणाभावश्च १.२३. भयं कम्पनं च कुर्य्याः ६.३५. [सम्+ओविजी भयचलनयोः (तुदा०) धातोर्लङ्। अटोऽभावो विकरणस्य लुक् च छन्दसि]-

संवित् प्रतिज्ञा १८.७. [सम्+विद ज्ञाने (अदा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

संविदधातु ससाधनं विधानं करोतु २.२४. [सम्+वि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लोट्]

संविदानः प्रतिजानन् (सुसन्तानः) १९.५४. सम्यग् विज्ञानं कुर्वन् (विद्वज्जनः) ७.४४.४. सम्यग् ज्ञाता सन् (सोमः=चन्द्रलोकः) ऋ० भू० १३८, ऋ० ६.४.१३.३. सम्यग् ज्ञापयन् (प्रजापतिः=परमेश्वरः) १२.६१. **संविदानाः**=सम्यक् कृतप्रतिज्ञाः (अ०—विद्वांसो जनाः) १५.१३. सम्यग् विचारशीलाः (विद्वज्जनाः) १५.११. समाननिश्चयाः (विद्वांसो जनाः) १५.१०. सम्यग् लब्धज्ञानाः (विद्वज्जनाः) १५.१२. [सम्+विद ज्ञाने (अदा०) धातोः शानच्। 'समो गमादिषु विदिप्रच्छिस्वरतीनामुपसंख्यानम्' अ० १.३.२९ वा०सूत्रेणात्मनेपदम्]

संविदाना सम्यक् कृतप्रतिज्ञा (निर्ऋति=स्त्री) १२.६३. **संविदाने**=सम्यग् विज्ञाननिमित्ते, भा०—संविदितक्रिये (धनुर्ज्ये) २९.४१. प्रतिज्ञापालिके (योषा=पत्न्यौ) ६.७५.४. सम्यग् विज्ञापिके (उपासा=प्रातः सायंवेले) २९.६. [संविदान इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

संविदुः सम्यक्तया जानन्ति ५.४४.११. **संविद्युः**=एकीभावेन विदन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लिङ् १.२३.२४. **संविदाम्**=सम्यक्तया विदताम्, प्र०—विद ज्ञाने इत्यस्माल्लोटि प्रथमबहुवचने 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' अ० ७.१.४१. अनेन तकारलोपे सवर्णदीर्घे विदामिति रूपम् ६.३६. **संविदेय**=एकीभावेन विन्देय ४.२३. [सम्+विद ज्ञाने (अदा०) धातोर्लटि 'विदो लटो वे' ति सूत्रेण तिपादीन णलादय आदेशाः। अन्यत्र लिङ्। 'संविदाम्' प्रयोगे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः सम्पूर्वकाल् लोटि 'समो गमादिषु विदिप्रच्छिस्वरतीनामुपसंख्यानम्' इत्यात्मनेपदे 'लोपस्त आत्मनेपदेषु' इति तलोपे रूपम्। संविदेय=सम्+विदॢ लाभे (तुदा०) धातोर्लिङ्। नुमभावश्छान्दसः]

संविविक्तः सम्यक् पृथक् कुर्वतः (परमेश्वरस्य) ३.५४.८. [सम्+वि+विजिर् पृथग्भावे (जु०) धातोः क्तः]

संविव्यानः सम्यग् व्याप्नुवन् (राजा) ५.२९.४. सम्यक् प्राप्नुवन् (इन्द्रः=विद्वज्जनः) १.१३०.४. [सम्+व्येञ् संवरणे (भ्वा०) धातोः शानच्। शपः श्लुश्च छान्दसः]

संविव्ये संवृणोति १.१७३.६. **संविव्यथुः**=सन्तनुतं वेष्टयतम् ६.७२.५. [सम्+व्येञ् संवरणे (भ्वा०) धातोर्लिट्]

संविशस्व एकीभावेन विशस्व १४.३. [सम्+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

संविश्वतुरा सम्यक्तया यद् विश्वं सर्वं तुरति त्वरयति तेन (राया) १.४८.१६. [विश्वोपपदे तुर त्वरणे (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। ततः सग्पदेन समासः। ततष्टा प्रत्ययः]

संवृक् यः संवृक्ते सः (विद्वज्जनः) ३८.२८. यः सम्यग् वर्जयति सः (इन्द्रः=सूर्यलोकः) २.१२.३. [सम्+वृजी वर्जने (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

संवेशपतये सम्यग् विशन्ति ये ते पृथिव्यादयः पदार्थास्तेषां पतिः पालकस्तस्मै (अग्नये=परमेश्वायर भौतिकाय वा) २.२०. [संवेश-पतिपदयोः समासः। संवेशः=सम् विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः कर्त्तरि 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

संव्रता सत्यभाषणादीनि १२.५८. [सम्+व्रतपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि]

संशराय सम्यग्घसनाय ३०.१७. [सम्+शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोः 'ऋदोरबि' त्यप्]

संशाय सम्यक् सूक्ष्मबलान् कृत्वा १८.७१. [सम्+शो तनूकरणे (दिवा०) धातोः क्त्वा]

संशितम् सम्यक् तीक्ष्णबुद्धिस्वभावम् (राजानम्) २७.८. प्रशंसनीयम् (ब्रह्म=वेदविज्ञानम्) ११.८१. **संशितः**=सम्यक् सूक्ष्मीकृतः (रथः) २३.१४. स्तुतः (हयः=अश्वः) २३.१४. [सम्+शो तनूकरणे (दिवा०) धातोः क्तः। 'शाछोरन्यतरस्याम्' अ० ७.४.४१ सूत्रेणेकारान्तादेशः]

संशिशातु सम्यक्तया क्षयतु, प्र०—अत्र शो तनूकरणे इत्यस्मात् श्यनः 'बहुलं छन्दसि' श्लुः, ततः 'श्लौ' इति द्वित्वम् १.१११.५. **संशिशीतम्**=सम्यक् तीक्ष्णीकुर्याताम् २.३६.७. **संशिशीमहि**=शत्रून् सूक्ष्मान् जीर्णान् कुर्मः, प्र०—अत्र शो तनूकरणे इत्यस्माल्लटि श्यनः स्थाने व्यत्ययेन श्लुः 'छन्दस्युभयथा' इति श्लोरार्धधातुकत्वादाकारादेशः १.१०२.१०. **संश्यत्**=सम्यक् तनूकरोति १.१३०.४. [सम्+शो तनूकरणे (दिवा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसीति' श्लुः। 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.४.७८. सूत्रेणाभ्यासस्येत्वम्। संशिशीतम् प्रयोगे 'छन्दस्युभयथे' त्यार्धधातुकसंज्ञायां धातोराकारादेशे 'ई हल्यघोः' अ० ६.४.११३ सूत्रेण हलादौ सार्वधातुके क्ङिति आत ईकारादेशः। संशिशीमहि प्रयोगे लटि शपः श्लौ व्यत्ययेनात्मनेपदम्। 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकत्वादात्त्वम्। सार्वधातुकत्वाच्चेत्वम्। संश्यत् प्रयोगे लङ्। 'ओतः श्यनि' इत्याकारलोपः। अडभावश्छान्दसः]

संशिशाधि सम्यक् शिक्षस्व, भा०—एतान् दुर्व्यसनेभ्यो निवर्तयेत् सुशीलान् सम्पादयेत् २७.८. सम्यक्तया शिक्षय ६.१५.६. [सम्+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोर्लोट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः। अभ्यासस्येत्वम् 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.४.७८ सूत्रेण]

संसत् सम्राट्-सभा ४.१.८. **संसदः**=सम्यक् सीदन्ति यासु ताः (सभाः) २६.१. **संसदि**=संसीदन्ति विद्वांसो यस्यां तस्यां सभायाम् १.६४.१. [सम्+षदॢ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे क्विप् सम्पदादित्वात्]

संसनिष्यदत् सम्यक्तयाऽतिशयेन प्रस्रवन् (दधिक्राः=अश्वः), प्र०—अत्र स्यन्दू-धातोर्यङ्लुक् शतृप्रत्ययेऽभ्यासस्य निक् निपात्यते ६.१४. [सम्+स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताच्छतरि 'दाधर्त्तिदर्धर्त्ति०' अ० ७.४.६५. सूत्रेणाभ्यासस्य निगागमो धातोः सकारस्य षत्वञ्च निपात्यते]

संसन्नः सम्यक् गच्छन् प्राप्नुवन् (प्रजापतिः=जीवः) ३६.५. [सम्+षद्लृ विशरण गत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्तः]

संसमायुवसे सम्यक्तया मिश्रय, प्र०—अत्र विकरणाऽऽत्मनेपदव्यत्ययः १५.३०. [सम्+आङ्+यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेनात्मनेपदं शप्रत्ययश्च। समित्यस्य द्वित्वम् 'प्रसमुपोदः पादपूरणे' अ० ८.१.६. सूत्रेण]

संसमेतु एकीभावेन प्राप्नोतु, प्र०—अत्र 'प्रसमुपोदः पादपूरणे' अ० ८.१.६. इत्यनेन समित्यस्य द्वित्वम् ६.२०. [सम्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्। समित्यस्य द्वित्वम्]

संसर्पाय यः सम्यक् सर्पति गच्छति तस्मै (गुप्तचराय) २२.३०. **संसर्पेण**=सम्यक् प्रापणेन १५.७. [सम्+सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः पचाद्यच् कर्त्तरि अन्यत्र घञ्]

संसहस्रम् सम्यक् सहस्रम् (वचः=वचनम्) ७.८.६. [सम्+सहस्रपदयोः समासः]

संसादि सम्पाद्यते २.११.८. [सम्+साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः कर्मणि लुङ्। अडभावश्छान्दसः। धस्य दकारश्छान्दसः]

संसिसिचे संसिञ्चति ३.३२.१५. [सम्+षिच-क्षरणे (तुदा०) धातोर्लिट्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

संसीदस्व सम्यगास्व ३८.१७. [सम्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट्। शित्प्रत्यये धातोः सीदादेशः]

संसृक्षाथाम् संसर्गं कुरुतम् १६.७. **संसृज**=सम्यग् योजय १७.५०. सम्यग् युङ्ग्धि १७.५१. अ०—संयुनक्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२३.२४. एकीभावेन सम्यक् सृजति १.२३.२३. **संसृजामि**=एकीभावेन सम्बध्नामि १८.३५. सम्यक् निष्पादयामि १६.१. **संसृजेथाम्**=सम्यङ् निष्पादयेतम् १५.५४. अच्छे प्रकार उत्पन्न करो सं० वि० १३६, अथर्व० १४.२.३७. [सम्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लोट्। विकरणव्यत्ययेन श्नः। आत्मनेपदं च व्यत्ययेन। अन्यत्र लोट् लेट् च]

संसृज्य संसर्गीभूत्वा १२.३८. समुत्पाद्य ११.५४. [सम्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्त्वा। समासे क्त्वो ल्यप्]

संसृष्टजित् यः संसृष्टान् मिलिताञ्छत्रून जयति सः (इन्द्रः=सर्वसेनाधिपतिः) १७.३५. [संसृष्टोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्। संसृष्टः=सम्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तः]

संसृष्टान् सम्यग्गुणयुक्तान् (पदार्थान्) २४.१६. [सम्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तः]

संसृष्टाम् सम्यग् सुशिक्षया निष्पादिताम् (कन्याम्) ११.५५. [सम्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तान्ताट् टाप्]

संस्कृतत्रम् यः संस्कृतं त्रायते रक्षति तम् (विद्वज्जनम्) ६.२८.४. [संस्कृतोपपदे त्रैङ् पालने (दिवा०) धातोर्डः]

संस्कृतम् कृतसंस्कारम् (पदार्थम्) ५.७६.२. शिल्पविद्यासंस्कारयुक्तं) सर्वर्त्तुकम् (उत्तमयानम्) ४.३४. [सम्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्तः। 'संपर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे' इति कात्पूर्वः सुट्]

संस्कृतिः विद्यासुशिक्षाजनिता नीतिः ७.१४. [सम्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। कात् पूर्वः सुडागमः]

संस्तिरः सम्यगाच्छादकः (विद्वज्जनः) १.१४०.७. [सम्+स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्मूलविभुजादित्वात् कर्त्तरि कः]

संस्तुतेन सङ्गत्या प्रशंसितेन (वर्चसा=विद्याध्ययनप्रकाशनेन) ३.१९. [सम्+ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः]

संस्तुप् सम्यक् स्तुभ्नाति शब्दार्थसम्बन्धान् यया सा वाक् १५.५. [सम्+स्तुम्भु (सौत्रो धातुः) धातोः क्विप्]

संस्थाम् सम्यक् तिष्ठन्ति यस्यां ताम् (सभाम्) १९.२९. [सम्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः। ततः स्त्रियां टाप्। यास्सप्त संस्था या एवैतास्सप्त होत्राः प्राचीर्वषट् कुर्वन्ति ता एव ताः जै० उ० १.२१.४.]

संस्थे सम्यक् तिष्ठन्ति यस्मिँस्तस्मिन् राज्ये ५.३.८. जगति, प्र०—अत्र 'घञर्थे कविधानम्०' अ० ३.३.५८. इति वार्तिकेनाधिकरणे कः प्रत्ययः १.५.४. [सम्+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

संस्पृशः यः संस्पृशति तस्मात् (दिवः=प्रकाशाद्विद्युतः) ३७.१३. सम्यक् स्पर्शात् ३७.११. [सम्+स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः क्विप्]

संस्मयमाना सम्यङ् मन्दहासयुक्ता (उषा इव युवतिः) १.१२३.१०. [सम्+ष्मिङ् ईषद्हसने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छानच्। ततः स्त्रियां टाप्]

संस्रवभागाः सम्यक् स्रूयन्ते ये ते संस्रवाः, भज्यन्ते ये ते भागाः, संस्रवा भागा येषान्ते (देवाः=विद्वांसो दिव्याः पदार्था वा) २.१८. [संस्रव-भागपदयोः समासः। संस्रवः=सम्+स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'ऋदोरबि' त्यप्। भागः=भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्घञ्। संस्रवभागा वसवो वै रुद्रा आदित्या संस्रावभागाः तै० ३.३.९.७.]

संस्रष्टा श्रेष्ठानां मनुष्याणां शस्त्रास्त्राणां वा संसर्गस्य कर्त्ता (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३५. [सम्+सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। 'सृजिदृशोर्झल्यमकिती' ति सूत्रेणामागमे यणादेशः]

संहतः एकीभूताः (धेनवः=गावः) ३.१.७. [सम्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्तः]

संहन्मः संहितानि निमीलितान्यादर्शकानि कुर्मः ७.५५.६. [सम्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लट्]

संहंसि एकीभावेन नाशयसि १.५३.७. [सम्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लट्]

संहानाय संहन्यते यस्मिँस्तस्मै (संग्रामाय) २२.७. [सम्+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्घञ्]

संहाय सम्यक् त्यक्त्वा २.३८.४. [सम्+ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः क्त्वा। ततः समासे क्त्वो ल्यप्]

संहितम् कृतसाधनम् (अ०—जगत्) १.१६८.६. [सम्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः। 'दधातेर्हिरि' ति हिरादेशः]

संहितः दृढाङ्गः (पशुः) २९.५८. सर्वैर्भूतैर्द्रव्यैः सत्पुरुषैर्वा सह मिलितः (सूर्यः=सविता) १८.३९. [सम्+हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोः क्तः। (यजु० १८.३९) असौ वा आदित्य संहित एष अहोरात्रे संदधाति श० ७.४.१.८. संहिताम् (साम) तद्देवाः संहितेन समदधुर्यत् समदधुस्तस्मात् संहितम् तां० ८.४.९. संहितं भवति द्व्यक्षरनिधनं प्रतिष्ठायै प्रतिष्ठायै व सत्रमासते तां० ११.५.४. संहितं भवति द्व्यक्षरणिधनं प्रतिष्ठायै तां० १५.११.३.]

सँहिता सर्वपदार्थैः सह वर्त्तमाना विद्युत्, सर्वव्यापक ईश्वरो वा ३.२२. [संहितमिति व्याख्यातम्। ततष्टाप् स्त्रियाम्। परः संनिकर्षः संहिता। पदप्रकृतिः संहिता नि० १.१७.]

सँहिनोमि सम्यक्तया वर्धयामि १.६१.४. [सम्+हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्लट्]

साकञ्जानाम् सहैव जातानाम् (पदार्थानाम्) १.१६४.१५. [साकमित्युपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः । साकम् इत्यव्ययम् । साकञ्जानां सह जातानाम् नि० १३.३२.]

साकम् परस्परं मिलित्वा १.८०.९. सार्द्धम् १७.३३. सह २७.३१. सङ्गे ५.५५.३. [साकम् इति स्वरादिषु पाठादव्यम् । साकम् सह नि० ५.११.]

साकमुक्षे यः साकं सहोक्षति सुखेन सचति सम्बध्नाति तस्मै (विद्वज्जनाय) ७.५८.१. [साकम् इत्युपपदे उक्ष सेचने (भ्वा०) धातोः क्विप्]

साक्षि साक्षात्कर्त्ता फलदाता (ईश्वर) स० प्र० २३८, १०.४९.१. [साक्षादित्यव्ययम् । ततः 'साक्षाद द्रष्टरि संज्ञायाम्' अ० ५.२.९१ सूत्रेण इनिः]

साक्ष्व सहस्व ३.३७.७. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शपः सिप्, स च णित्]

साख्यस्य सख्युः कर्मणो भावस्य वा निर्माणस्य २.११.१९. [साखिप्राति० भावे कर्मणि च 'सख्युर्यः' अ० ५.१.१२६. सूत्रेण यः]

साच्यम् सचितुं समवेतुं योग्यम् (शिशुं=वालकम्) १.१४०.३. [षच समवाये (भ्वा०) धातोर्ण्यत्]

साढा सहनकर्त्ता (वीरपुरुषः) ७.५६.२३. [सह मर्षणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । 'सहिवहोरोदवर्णस्ये' त्योत्त्वं छान्दसत्वान् न भवति]

सात् निश्चिनुयात् ७.२८.४. विभजति ५.४५.२. [षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्वा लिङि छान्दसं रूपम्]

सातये सम्भोगाय ३.१३. सुखार्थं सम्यक् सेवनाय १.४.९. वहुधनप्राप्तये १.१०२.३. दायविभागाय ५.५.४. धर्माधर्मविभागाय ५.३९.३. संविभक्तये १.१३०.६. सत्यासत्ययोर्विवेकाय ३.५४.१७. **सातिम्**=विद्यादिदानं, संविभागं, अश्वशिक्षाविभागं संभक्ति वा १.१११.३. संविभागम्, प्र०—अत्र 'ऊतियूतिजूतिसाति०' अ० ३.३.९७. अनेनायं शब्दो निपातितः १.६.१०. **सातिः**=लोकानां विभक्तिः १.१६८.७ **सातौ**=संभजन्ते धनानि यस्मिन् युद्धे शिल्पकर्मणि वा तस्मिन् १.३६.१७. संविभक्तौ १.१८०.८. शूराणां सातिर्विभागो यस्मिँस्तस्मिन्त्सङ्ग्रामे ६.२६.१. संसेवने २.३०.५. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'ऊतियूति०' सूत्रेण क्तिन् निपात्यते]

साता सङ्ग्रामेण ६.१०.३. सम्यक् सेवने १.१३१.३. सम्भजनीये सङ्ग्रामे १.११२.२२. विभागे ६.६.१. [सातिरिति व्याख्यातम् । ततः 'सुपां सुलुक्०' इति सूत्रेण सप्तम्या डादेशः]

सातानि विभज्य दातुमर्हाणि (वस्तूनि) २.२४.१०. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

सातुः सत्याऽसत्ययोर्विभाजकस्य (पुत्रस्य) ४.६.७. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृचि छान्दसं रूपम्]

साद्द्योनिम् सीदन्तं धर्म्ये कारणे ५.४३.१२. [सादद्-योनिपदयोः समासः । सादत्=षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः शतरि सीदादेशे च रूपम् । वर्णव्यत्ययेनेकारस्याकारादेशः । अथवा सीदादेशाऽभाव उपधायाः छन्दसि दीर्घे च रूपम्]

सादनम् सीदन्ति यस्मिँस्तत् (गृहम्) प्र०—अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते' इति दीर्घः १.१३६.२. **सादनाय**=स्थितिमते (विद्वज्जनाय) ५.४७.७. **सादनेषु**=स्थानेषु ५.३०.११. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट् । धातोरुपधाया दीर्घश्छान्दसः]

साद्न्यम् सादनेषु स्थापनेषु साधुम् (राजानमध्यापकमुपदेशकं वा) ३४.२१. सदनं गृहमर्हति (धेनुं=वाणीम्), प्र०—'छन्दसि च' अ० ५.१.६७. इति सदनशब्दाद्यत् १.९१.२०. [सादनमिति व्याख्यातम् । ततः साध्वर्थेऽर्हत्यर्थे वा यत्]

सादय स्थापय ३.२९.८. अवस्थापय १.३१.१७. आसय, प्र०—अत्र 'अन्येषामपि दृश्यते, इति दीर्घः १.४५.९. प्रापय ३.५७.५. गमय ११.३५. हन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१५.४. **सादयताम्**=अवस्थापयतम् १४.१. **सादयतु**=संस्थापयतु १४.१२. **सादयध्वम्**=स्थापयत ५.४३.१२. **सादयन्तु**=अवस्थापयन्तु १५.१०. **सादयन्ते**=स्थापयन्ति ३.६.३. **सादयात्**=सादयेत्, प्रापयेत् २२.१७. **सादयासि**=स्थापयामि १.११. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । अन्यत्र लट्, लेट् चापि]

सादि साध्यताम् २.११.१८. सम्पाद्यते २.११.८. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्मणि लुङ् । अटोऽभावः]

सादे स्थितौ १.१६२.१७. स्थित्यधिकरणे २५.४०. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्घञ्]

साध साध्नुहि, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शः ३.५.११. साध्नोति ४.३.८. **साधत्**=साध्नुयात् २.१९.३.

साधत=साध्नुवन्तु ५.४५.३. **साधति**=साध्नोति, प्र०—विकरणव्यत्ययेनात्र श्नोः स्थाने शप् १.९४.२. **साधथः**=साध्नुतः, प्र०—अत्र व्यत्ययः ४.५६.७. **साधन्**=साध्नुवन्ति साधयन्ति वा १.९६.१. **साधन्ताम्**=साध्नुवन्तु ६.५३.४. [साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन शः शप् वा । अन्यत्र लेट्, लट्, लङ्, लोट् च]

साधदिष्टिभिः साधाः संसिद्धा दिष्टयश्च ताभिः (व्यवहारविद्याभिः) ३.३.६. [साध-दिष्टिपदयोः समासः । साधः=साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्घञ् । दिष्टिः=दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । संज्ञायां क्तिज् वा]

साधदिष्टिम् साध्नुवन्तीष्टं येन तम् (अग्नि=पावकम्) ३.२.५. [साधद्-इष्टिपदयोः समासः । साधत्=साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः शतरि व्यत्ययेन शप् । इष्टिः=इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः क्तिन्] .

साधन् संसाध्नुवन् (विद्वज्जनः) प्र०—अत्र व्यत्ययेन शप् ३.१.१७. [साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः शतृ । विकरणव्यत्ययेन शप्]

साधनम् साध्नोति येन तत् (विद्वज्जनम्) १.४४.११. सिद्धिकरम् (अग्नि=पावकम्) ३.२७.२. **साधनः**=यः साध्नोति सः (वाजी=वेगयुक्तोऽग्निः) ३.२७.८. [साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः करणे ल्युट् । कर्त्तरि वा ल्युट् 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति सूत्रेण । साधधातोर्वा ण्यन्तान् नन्द्यादित्वाल् ल्युः]

साधन्ता सम्यक् साधयन्तौ (मित्रावरुणा=सूर्यवायू) १.२.७. [साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः शत्रन्ताद् द्विवचनस्याकारादेशः । व्यत्ययेन शप्]

साधयन्ती विद्याशिक्षाभ्यामन्यान् विदुषः कारयन्ती (अध्यापिका स्त्री) २.३.८. [साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्णिजन्ताच्छत्रन्ताच्च स्त्रियां ङीप्]

साधवः अभीष्टं साध्नुवन्तः (अश्वासः=तुरङ्गाः) १३.३६. साधुगतयः (अश्वासः=वेगादयो गुणाः) ६.१६.४३. **साधवे**=परोपकार-साधकाय, भा०—साधुत्वयुक्ताय (विद्वज्जनाय) ३७.१०. **साधुना**=सुशिक्षितेन (शिष्येण) १.१५५.१. **साधुभिः**=सज्जनैः सह १.१३८.४. **साधुः**=सत्कर्मसेवी (इन्द्रः=योगैश्वर्ययुक्तो जनः) ७.३७.४ परोपकारी सन्मार्ग-स्थितो विद्वान् (जनः) १.७७.३. यः परोपकारी परकार्याणि साध्नोति सः (सभाध्यक्षः) १.७०.६. सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी (विद्वज्जनः) १.६७.१. श्रेष्ठः (क्षयः=निवासः) ५.१२.६. साध्नुवन्ति धर्मं यस्मिन् सः (पन्थाः=वेदोक्तो मार्गः) २.२७.६. **साधू**=शुभचरित्रस्थौ (विद्वांसौ स्त्रीपुरुषौ) २.२७.१५. **साधोः**=सन्मार्गस्थस्य (सज्जनस्य) ४.१०.२. [साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोः 'कृवापाजिमि०' उ० १.१. सूत्रेण उण् । साधुः साधयिता नि० ६.३३. साधु (यजु० ३७.१०.) अयं वै साधुर्योऽयं (वायुः) पवतऽएष हीमाँल्लोकान्त्सिद्धोऽनुपवते श० १४.१.२.२३.]

साधारणः सामान्येन व्याप्तः (इन्द्रः=परमेश्वरः) ४.३२.१३. [सह-धारणपदयोः समासे सधारणः । ततः स्वार्थेऽणि साधारणः]

साधारण्येव यथा साधारणया (क्रियया) १.१६७.४. [साधारण्या-इवपदयोः समासः]

साधपतिकेभ्यः अधिपतिना जीवेन सह वर्त्तमानेभ्यः (प्राणेभ्यः) ३९.१. [सह-अधिपतिपदयोः समासे सहस्य सादेशे समासान्तः कप्]

साधिष्ठः अतिशयेन साधुः (क्रतुः=प्रज्ञा) ५.३५.१. [साधुप्राति० अतिशायन इष्ठन्]

साधिष्ठेभिः अधिष्ठोऽधिष्ठानम्, समानमधिष्ठानं येषान्तैः (पथिभिः) १.५८.१. [समान-अधिष्ठपदयोः समासे समानस्य सादेशे भिस ऐसादेशो न भवति 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

साधु श्रेष्ठम् (आचरणम्) २.२७.३. समीचीनतया ७.४३.२. उत्तमं विज्ञानम् ५.८०.४. सम्यक् यथा स्यात्तथा १.१२४.३. [साधुरिति व्याख्यातम्]

साधु साधूनि (अपांसि=कर्माणि) २.३.६. [साधुरिति व्याख्यातम् । ततो जसः शेः 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण लुक्]

साधुकर्मा धर्म्यकर्माऽनुष्ठाता (सर्वाधिपती राजा) १७.२३. साधूनि श्रेष्ठानि कर्माणि यस्य सः (सभापतिः) ८.४५. [साधु-कर्मन्पदयोः समासः]

साधुया साधुना कर्मणा १.१७०.१. श्रेष्ठैः कर्मभिः १७.७३. साधु सत्यम् (विद्याप्रकाशम्) २३.४३. साधवः (नरः=नायका जनाः) ५.११.४. साधुना धर्मेण सह १४.१. [साधुप्राति० 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण याच्]

साध्यान् साद्धुं योग्यान् (पदार्थान्) ३९..९. **साध्याः**=साधनसाध्याः (देवाः=विद्वांसो जनाः) २९.११. कृतसाधनाः (देवाः) ३१.१६. साधनं योगाभ्यासादिकं

कुर्वन्तो ज्ञानिनः (जनाः) ३१.९. अन्यैर्विद्यार्थं संसेवितुमर्हाः (विद्वांसो जनाः) १.१६४.५०. **साध्येभ्यः**=ये साद्धुं योग्यास्तेभ्यः (पुरुषेभ्यः) ३०.१५. साधितुं योग्येभ्यः (जनेभ्यः) २४.२७. [साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्ण्यत् । साध्याः रश्मिनाम निघं० १.५. साध्या देवाः साधनात् नि० १२.४०. साध्या देवाः (यजु० ३१.१६.) प्राणा वै साध्या देवास्तऽएतं (प्रजापतिं) अग्रऽएवमसाधयन् श० १०.२.२.३. छन्दांसि वै साध्या देवास्तेऽग्रेऽग्निनाग्निमयजन्त ते स्वर्गं लोकमायन् ऐ० १.१६. साध्या वै नाम देवेभ्यो देवाः पूर्वं आसंस्त एतत् (शतसंवत्सरं) स त्रायणमुपायंस्तेनार्ध्नुवंस्ते सगवः सपुरुषाः सर्वं एव सह स्वर्गं लोकमायन् तां० २५.८.२. साध्या वै नाम देवा आसँस्तेऽवछिद्य तृतीयसवनम् माध्यन्दिनेन सवनेन सह स्वर्गं लोकमायन् तां० ८.३.५.]

साध्वीः श्रेष्ठाः (इषवः=बाणाः) २.२४.७. [साधु-प्राति० स्त्रियां 'वोतो गुणवचनात्' सूत्रेण ङीष्]

सानवि पर्वतस्य शिखरे ६.४८.५. आकाशप्रदेशे ४.४५.१. **सानु**=सम्भजनीयम् (विद्वज्जनम्) ३.५.३. मेघस्य शिखरः १.५८.२. सनन्ति सम्भजन्ति येन कर्मणा तत्, प्र०—अत्र 'दृसनिजनि०' उ० १.३. इति ञुण्प्रत्ययः १.५४.४. शिखरम् ४.५५.७. शिखरमिव विज्ञानम् ७.७.२. सम्भजनीयं धनम् ७.२.१. संसेवनीयम् (अन्नपानादि) २.३५.१२. अवयवम् २९.५०. विभागे ६.६.४. **सानुभ्यः**=शैलशिखरेभ्यः ३०.१६. **सानुम्**=शिखराकारं घनम् ६.३९.२. अङ्गानां संविभागम् १.८०.५. यथोक्तं त्रिविध-मर्थम् (पर्वतस्य शिखरं, कर्म, सिद्धिं वा) १.१०.२. **सानूनि**=प्रान्तप्रदेशान् ६.७.६. **सानोः**=पर्वतस्य शिखरात् संविभागात्, कर्मणः, सिद्धेर्वा, प्र०—अत्र 'दृसनिजनि०' उ० १.३. अनेन सनेर्ञुण् प्रत्ययः । अथवा 'षोऽन्तः-कर्मणि' इत्यस्मात् बाहुलकान्नुः १.१०.२. **सानौ**=उच्च-प्रदेशे २.३१.२. ऊर्ध्वदेशे ७.४३.३. विभक्ते जगति १.१४६.२. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'दृसनिजनि-चरिचटि०' उ० १.३. सूत्रेण ञुण् । षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्वा बाहु० औणा० नुः । सानु समुच्छ्रितं भवति समुन्नुन्नमिति वा नि० २.२४. सानूनि=सरणानि नि० ९.१९.]

सानसि संभक्तव्यं पुराणम् (द्युम्नं=धनम्) ११.६२. सनातनन् (ब्रह्म) १.७५.२. पुरातनम् (श्रवः=रक्षणादिकम्) ३.५९.६. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) षणु दाने (स्वा०) धातोर्वा 'सानसिवर्णसिपर्णसि०' उ० ४.१०७. सूत्रेणासिर् उपधावृद्धिश्च । सानसि (यजु० १२.१०९.) (=सनातन) पृणक्षि सानसि क्रतुमिति पृणक्षि सनातनं क्रतुमित्येतत् श० ७.३.१.३२.]

सानसिम् सनातनीम् (क्रतुं=प्रज्ञाम्) १२.१०९. पुराणम् (रयिं=धनम्) १२.११०. सम्भजनीयम् (रयिं) प्र०—'सानसिवर्णसि०' उ० ४.११०. अनेनाऽयं सन-धातो-रसिप्रत्ययान्तो निपातितः १.८.१. विभक्तव्यम् (सुखम्) ४.१५.६. **सानसिः**=संविभाजकः (मदः=ओषधिसारः) १.१७५.२. [पूर्वपदे व्याख्यातम्]

सानुकः सानुगादिः (मर्त्तः=मनुष्यः) २.२३.७.

सानुषक् सानुकूलता १.१७६.५. [सह-अनुषक्पदयोः समासः]

सान्तपनः सम्यक् शत्रून् तापयति यस्तस्याऽयम् (गृहस्थजनः) १७.८५. **सान्तपनाः**=सन्तपने भवाः शत्रूणां सन्तापकराः (मरुतः=विद्वांसो मानवाः) ७.५९.९. **सान्तपनेभ्यः**=सम्यक् तपनं ब्रह्मचर्याद्याचरणं येषान्तेभ्यः (विद्यार्थिजनेभ्यः) २४.१६. [सन्तपनप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थे भवार्थे वाऽण् । सन्तपनः=सम्+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि नन्द्यादित्वाल्ल्युः]

साप्तम् सप्तविधम् (प्राप्तव्यं पदार्थसमूहम्) २.१९.७. **साप्तानि**=सप्तवर्गाज्जातानि ब्रह्मचारि-गृहस्थ-वानप्रस्थ-संन्यासिनां यानि विशिष्टानि कर्म्माणि, पूर्वोक्तस्य यज्ञस्याऽनुष्ठानं=विद्वत्सत्कार-सङ्गतिकरणे दानमर्थात् सर्वोपकरणाय विद्यादानमिति सप्त १.२०.७. [सप्तन् संख्यावाचिनः प्राति० जातार्थेऽण्]

साम स्यन्ति खण्डयन्ति दुःखानि येन तत् (नमः=नमस्करणमन्नं वा), प्र०—अत्र 'सर्वधातुभ्यो मनिन्' इति करणकारके मनिन् १.६२.२. एतदुक्तं कर्म १५.१०. सामवेदम् १.१६४.२४. सामवेदांऽशः १०.१२. सामवेद-भागः १०.११. सिद्धान्तितं कर्म्म ४.५.३. तृतीयो वेदः १२.४. सामवेदाध्ययनम् ऋ० भू० १५४, १८.२९. सामगान को आर्याभि० १.५२, ऋ० १.८.६.८. **सामनी**=सामवेदस्य पूर्वोत्तरावयवौ द्वौ १०.१४. **सामानि**=साम-विशागाः ५.४४.१४. सामवेदप्रतिपादितविज्ञानानि ५.४४.१५. सामवेदमन्त्रगानानि १८.६७. **साम्नः**=सन्धेः २.२३.१६. **साम्ना**=सन्धिना १९.९४. सामवेदेन १९.२८. **सामभिः**=सामवेदस्थैर्गानैः १.१०७.२. [षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्मनिन् 'सातिभ्यां मनिन्मनिणौ' उ० ४.१५३. सूत्रेण । सामन्-सम्मितमृचा स्यतेर्वा ऋचां समम्

मेन इति नैदानाः नि० ७.१२. साम (देवाः सोमम्) साम्ना समानयन् । तत्साम्नः सामत्वम् तै० २.२.८.७. स (प्रजापतिः) हैवं षोडशधाऽऽत्मानं विकृत्य सार्धं समैत् । तद् यत् सार्धं समैत् तत्साम्नस्सामत्वम् जै० उ० १.४१.७. तद् यत् समेत्य साम प्राजनयतां तत्साम्नस्सामत्वम् जै० उ० १.५१.२. ता वा एता देवता अमावस्यां रात्रिं संयन्ति । चन्द्रमा अमावस्यां रात्रिमादित्यम्प्रविशत्यादित्योऽग्निम् । तद् यत् संयन्ति तस्मात् साम जै० उ० १.३३.६. समा उ ह वा अस्मिश्छन्दांसि साम्यादिति तत्स्माम्नः सामत्वम् सा० १.१.५. तद् यदेष (आदित्यः) सर्वैर्लोकैस्समस्तस्मादेष (आदित्यः) एव साम जै० उ० १.१२.५. (तमेतम् पुरुषम्) सामोत छान्दोगा (उपासते) एतस्मिन् हीदं सर्वं समानम् श० १०.५.२.२०. यो वै भवति यः श्रेष्ठतामश्नुते स सामन् भवत्यसामन्य इति हि निन्दन्ति ऐ० ३.२३. तद् यत्सा चाऽमश्च तत्सामाऽभवत् तत्साम्नस्सामत्वम् जै० उ० १.५३.५. साम वा असौ (द्यु--) लोकः । ऋगयं (भूलोक) तां० ४.३.५. सूर्यात् सामवेदः (अजायत) श० ११.५.८.३. (आदित्यस्य) अर्चिः सामानि श० ११.५.८.३. तस्माद्वारयुवे साम जै० उ० ३.१.१२. साम वै सहस्रवर्त्तनिः ('सहस्रवर्त्मा सामवेद' इति पातञ्जलमहाभाष्यस्य अ० १ पा० १ प्रथमाह्निके) ष० १.४. साम वाऽऋचः पतिः श० ८.१.३.५. ऋचि साम गीयते श० ८.१.३.३. एतावद् भाव साम यावान् स्वरः । ऋग्वा एषर्ते स्वराद् भवतीति जै० उ० १.२१.९. सर्वेषां वाऽएष वेदानां रसो यत्साम श० १२.८.३.२३. गो० उ० ५.७. साम हि नाष्ट्राणां रक्षसामपहन्ता श० ४.४.५.६. सोमाहुतयो ह वाऽएता देवानाम् यत्सामानि श० ११.५.६.६. तस्मादाहुः सामैवान्नमिति सा० १.१.३. सो (प्रजापतिः) ऽब्रवीदेकं वावेदम् अन्नाद्यमसृक्षि सामैव जै० उ० १.११.३. साम देवानामन्नम् तां० ६.४.१३. क्षत्रं वै साम श० १२.८.३.२३. साम्राज्यं वै साम श० १२.८.३.२३. सामवेद एव यशः गो० पू० ५.१५. तदाहुस्संवत्सर एव सामेति जै० उ० १.३५.१. सर्वं तेजः सामरूप्यं ह शश्वत् तै० ३.१२.९.२. साम हि सत्याशीः तां० ११.१०.१०. तयोः (सदसतोः) यत् सत् तत्साम तन्मनस्स प्राणः जै० उ० १.५३.२. मनो वाव साम्नश्श्रीः जै० उ० १.३९.२. श्रोत्रं वाव साम्नश्श्रुतिः जै० उ० १.३९.६. चक्षुर्वाव साम्नेऽपचितिः जै० उ० १.३९.५. सामवेदो ब्राह्मणानां प्रसूतिः तै० ३.१२.९.२. अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि वर्हिषीत्येवमादिं कृत्वा सामवेदमधीयते गो० पू० १.२९.]

सामगा इव यः सामानि गायति तद्वत् २.४३.१. [सामगा-इवपदयोः समासः । सामगा=सामन् इत्युपपदे गै शब्दे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सामन् सामनि वेदे १.१४७.१. सामन्यन्ते कर्मणि २२.२. [सामन् इति व्याख्यातम् । ततः सप्तम्या लुक् 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण]

सामनाम् प्रशस्तानि सामानि विद्यन्ते यस्यां ताम् (भूमिम्) ३.३०.९. [सामन्प्राति० प्रशंसायामर्थे (मत्वर्थे) पामादित्वान् नः । ततः स्त्रियां टाप्]

सामभृतम् यः सामवेदं दधाति तम् (आप्तं विद्वांसम्) ७.३३.१४. [सामन् इत्युपपदे भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सामविप्रम् सामसु मेधाविनम् (ऋषिं=वेदार्थविज्जनम्) ५.५४.१४. [सामन्-विप्रपदयोः समासः । विप्रः मेधाविनाम निघं० ३.१५.]

सामिधेनीः सम्यगिध्यन्ते याभिस्ताः सामिधेनीः (यज्ञसमिधः) १९.२०. [सामिधेनी—(ऋक्) एता हि वाऽइदं सर्वं समिन्धतऽएताभिरिदं सर्वं समिद्धं तस्मात् सामिधेन्यो नाम श० ११.२.७.६. वज्रो वै सामिधेन्यः कौ० ३.२.]

साम्नः साम्नः सामवेदस्य सामवेदस्य मध्ये २.२३.१७. [साम्नः पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । साम्नः=सामन्प्राति० षष्ठी]

साम्राज्यम् सम्यग् ये राजन्ते प्रकाशन्ते ते सम्राजो राजानस्तेषां भावः कर्म वा तत् ४.२४. **साम्राज्याय**=चक्रवर्त्तिनो भावाय १.१४१.१३. सम्राजां भावाय कर्मणे वा १०.२७. भूगोले चक्रवर्त्तिराज्यकरणाय २०.२. यद्राष्ट्रं सर्वत्र भूगोले सम्यग् राजते प्रकाशते तस्य भावाय १.२५.१०. **साम्राज्येन**=यः समग्राया भूमेर्मध्ये सम्यग्राजते स सम्राट्, तस्य भावेन सार्वभौमत्वेन १८.३७. सम्यग्राजमानस्य प्रकाशितेन कर्मणा ७.४६.२. सम्राजो भावेन ९.३०. [सम्राज्प्राति० भावे कर्मणि वा 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' अ० ५.१.१२८. सूत्रेण यक् । सम्राज्=सम्+राजृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । साम्राज्यम्=अवरं हि राज्यं परं साम्राज्यम् श० ५.१.१.१३. साम्राज्यं वै स्वर्गो लोकः तां० ४.६.२४.]

सायकम् स्यन्ति क्षयन्ति येन तम् (वज्रम्) १.८४.११. शस्त्रविशेषम् १.३२.३. **सायकानि**=शस्त्राऽस्त्राणि २.३३.१०. [षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोः

'कृतो बहुलम्' इति करणे ण्वुल् । सायक वज्रनाम निघं० २.२०.]

सायम् सन्ध्यासमय ५.७७.२. [षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्घञ्]

सायंप्रातः सन्ध्या और प्रातःकाल अर्थात् सब समय में सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.७. [सायम्-प्रातर्पदयोः समासः]

साय्यम् कर्मान्तकारिणम् (शिरः=मस्तकम्) ६.२०.६. [षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्ण्यत् । 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति कर्त्तरि ण्यत्]

सारघम् यदारघ्यते स्वाद्यते तदारघम्, समानञ्च तदारघञ्च तत् १९.९१. सुस्वादुयुक्तम् (दुग्धं=पयः) १९.९५. **सारघस्य**=सरघाभिर्मधुमक्षिकाभिर्निर्मितस्य (मधुनः) ३८.९. [सरघाप्राति० कृतार्थे 'संज्ञायाम्' अ० ४.३.११७. सूत्रेण अण् । अथवा=आङ्+रघ आस्वादने (चुरा०) धातोर्घञर्थे कप्रत्यय आरघम् । ततः समान-आरघपदयोः समासे समानस्य छन्दसि सादेशः]

सारथयः यानगमयितारः (मनुष्याः) १.५५.७. **सारथये**=रथचालकाय (जनाय) ६.२०.५. **सारथिः**=रथप्राजकः (जनः) १.१५८.६. नियन्ता (जनः) ६.५७.६. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् 'सर्त्तेर्णिच्च' उ० ४.८९. सूत्रेण घथिन् । अत्र णित्वाद् वृद्धिः]

सारथाय सुशिक्षिताय यानचालकाय (जनाय) २.१९.६. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् बाहु० औणा० अथः]

सारम् दृढभागमिव ३.५३.१९. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'व्याधिमत्स्यबलेष्विति वक्तव्यम्' अ० ३.३.१७. वा०सूत्रेण घञ्]

सारमेय साराणां निर्मातः (गृहस्थजन) ७.५५.२. सार वस्तुओं से मान करने योग्य (गृहस्थ जन) ७.५५.३. [सारोपपदे माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि यत्]

सारस्वतम् सरस्वत्या वेदवाण्या इदम् (वीर्यं=पराक्रमः) १९.८. **सारस्वतः**=सरस्वत्या वाण्याऽयं सम्बन्धी (व्यवहारः) १८.२०. **सारस्वतौ**=सरस्वत्यां वेदवाचि कुशलावुपदेशकावुपदेष्ट्र्यौ (स्त्रीपुरुषौ) १३.३५. [सरस्वतीप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् । सरस्वती वाङ्नाम निघं० १.११.]

सारस्वती सरस्वती देवता यस्याः सा (मेषी) २४.१. सरस्वती देवताका (मेषी) २९.५८. वाग्-गुणा (मेषी) २९.५९. **सारस्वत्यः**=वाग्देवताकाः (वत्सतर्य्यः=गावः) २४.१४. [सरस्वती वाङ्नाम निघं० १.११. ततः 'सास्य देवते' त्यर्थेऽण् । ततः स्त्रियां ङीप्]

सारस्वतेभिः सरस्वत्यां कुशलैः (विद्वज्जनैः) ७.२.८. सरस्वत्यां भवैः (देवैः=दिव्यैर्गुणैः) ३.४.८. [सरस्वती वाङ्नाम (निघं० १.११) ततः कुशलार्थे ऽण् भवार्थे वा । ततो भिस ऐस् न भवति छान्दसत्वात्]

साञ्जयः यो विविधान् न्याययुक्तान् व्यवहारान् सृजति तस्याऽपत्यम् (राजा) ६.४७.२५.

सावित्रः सविता सकलजगदुत्पादकः परमेश्वरो देवता यस्य सः (गृहपतिः पुरुषः) ८.७. सवितृदेवताकः (कृकवाकु=कुक्कुटः) २४.३५. सवितुः सूर्यस्याऽयं प्रभावः १८.२०. **सावित्रौ**=सवितृगुणौ (अधिरामौ पशू) २९.५९. [सवितृ-प्राति० 'सास्य देवता' इत्यर्थे भवार्थे वाऽण् । सावित्रः (अग्निः) स यदेते देवते अन्तरेण तत्सर्वं सीव्यति । तस्मात् सावित्रः तै० ३.१०.११.७. एष वाव स सावित्रः य एष (सूर्यः) तपति तै० ३.१०.९.१५.]

साविषत् सवेत्, प्र०—अत्र 'सिब्बहुलं णित्' अ० ३.१.३४. इति वार्त्तिकेन सिपि वृद्धिः ९.५. सुवतु १८.३०. उत्पादयेत् १.१६४.२६. **सावीः**=जनय ५.८२.४. सुनु २.२८.९. सव, उत्पादय, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङडभावश्च ८.६. [षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्लेट् । सिपो णित्वाद् वृद्धिः । अन्यत्रः लुङ् । साविषत् सुनोतु नि० ११.४३.]

साशनानशने अशनेन भोजनेन सह वर्त्तमानं साशनं न विद्यतेऽशनं यस्य तदनशनं, साशनञ्चाऽनशनञ्च प्राण्यप्राणिनौ, भा०—चराऽचरे जगती ३१.४. यदेकमशनेन भोजनकरणेन सह वर्त्तमानं जङ्गमं जीवचेतनादिसहितं च जगती ऋ० भू० १२२, ३१.४. [साशन-अनशनपदयोः समासः । साशनम्=सह-अशनपदयोः समासे सहस्य सादेशः । अशनम्=अश भोजने (क्र्या०) धातोर्ल्युट् । अनशनम्=नञ् अशन-पदयोः समासः]

सासहत् भृशं सहेत् ६.३३.१. **सासहीष्ठाः**=भृशं सहेथाः ६.४५.१८. **सासह्यात्**=भृशं सहेत् ५.७.१०. **सासह्याम**=भृशं सहेम १.१३२.१. पुनः पुनः सहेमहि, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदं लिङर्थे लोट् च १.८.४. **सासाह**=भृशं सहते, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् 'तुजादी-नाम्०' इत्यभ्यासदैर्घ्यम् ५.२५.६. [षह मर्षणे (भ्वा०)

धातोर्यङ्लुगन्ताल्लेट् । अन्यत्र लोट् लिङ् च]

सासहः अतिशयेन सोढा (सुभगः=विद्वान् राजा) १५.३९. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्तात् कर्त्तरि अच्]

सासहानः भृशं सहमानः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) १.१३१.४. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्यङलुगन्ताच्छानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सासहिम् अतिषोढारम् (इन्द्रं=विद्यैश्वर्यप्रापकं जनम्) १.१०२.१. अतिशयेन सोढारम् (जयशीलं सेनापतिम्) ११.७६. **सासहिः**=अतिशयेन सहनशीलः (इन्द्रः=ईश्वरः सेनाध्यक्षो वा) १.१००.३. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोः 'सहिवहिचलिपतिभ्यो यङन्तेभ्यः किकिनौ वक्तव्यौ' अ० ३.२.१७१. वा० सूत्रेण किः]

सासह्वान् भृशं सहमानः (मरणं प्राप्तो जीवः) ३९.७. भृशं तिरस्कर्त्ता (इन्द्रः=सभाध्यक्षः), प्र०—अत्र सह अभिषवे इत्यस्मात्क्वसुः 'तुजादीनाम्' इत्यभ्यासदैर्घ्यम् १.१००.५. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः । तुजादीनामित्यभ्यासस्य दीर्घः]

साहदेव्यम् विद्वत्सहचरम् (कुमारं=ब्रह्मचारिणम्) ४.१५.१०. **साहदेव्यः**=ये देवैः सह वर्त्तन्ते तत्र भवेषु साधुः (कुमारः) ४.१५.७. [सह-देवपदयोः समासे कृते भवार्थे यत् । ततः 'तत्र साधु' रित्यर्थेऽण्]

साहस्रम् सहस्रस्याऽसंख्यातानां सुखानामयं साधकस्तम् (गवादिकं वीर्यसेचकं वृषभं वा) १३.४९. **साहस्रस्य**=सहस्राणामसंख्यातानामिदमधिकरणं जगत्तस्य (रायः=धनस्य) १७.७१. **साहस्रः**=सहस्रमसंख्याताः पदार्था विद्या वा विद्यन्ते यस्य सः (विद्वज्जनः) १५.६५. **साहस्राय**=असंख्यप्रयोजनाय १५.६५. [सहस्रप्राति० 'तस्येदमि' त्यण् । अथवा सहस्रप्राति० मत्वर्थे 'अण् च' अ० ५.२.१०३. सूत्रेणाण् । साहस्रः=साहस्रो वा ऽएष शतधार उत्सो यद् गौः श० ७.५.२.३४. साहस्रः होता हि साहस्रः श० ४.५.८.१२. साहस्राः पशवः कौ० २१.५.]

साहस्रीम् असंख्यातां बहुफलप्रदाम् (महीं=भूमिम्) १३.४४. [साहस्रमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप् । साहस्री (गौः) वाग्वाऽएषा निदानेन यत् साहस्री तस्या एतत् सहस्रं वाचः प्रजातम् श० ४.५.८.४.]

साहि कर्मसमाप्तिं कुरु ४.११.२. [षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुकि श्यनोऽपि लुक्]

साह्वान् सहनशीलो वीरः (जनः) १.५८.५. सोढा (क्रतुः=यज्ञः) ४.२१.२. [षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसौ 'दाश्वान्साह्वान्मीढ्वांश्च' अ० ६.१.१२. सूत्रेण परस्मैपदमुपधादीर्घत्वम् अद्विर्वचनमनिट्त्वं च निपात्यते]

सांमनस्यम् मन से सम्यक् प्रसन्नता सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.१. [सम्-मनस्पदयोः समासे भावे कर्मणि वा ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ्]

सिकता बालुका १८.१३. [सिकताः आद्यन्तविपर्य्ययो भवति नि० २.१. द्वे हि सिकते शुक्ला च कृष्णा च श० ७.३.१.४३. अग्नेरेतद् वैश्वानरस्य रेतो यत् सिकताः श० ७.१.१.१०. रेतः सिकताः श० ७.१.१.११. सिकता वा अपां पुरीषम् श० ७.५.२.५९.]

सिकत्याय सिकतासु साधवे (पुरुषाय), भा०—सिकतादिषु भवाय सुवर्णाय १६.४३. [सिकताप्राति० भवार्थे यत्]

सिक्तम् संयुक्तम् (सोमं=दिव्यौषधिरसम्) १.१३०.२. [षिच क्षरणे (तुदा०) धातोः क्तः]

सिक्ता सिक्तानि वीर्याण्युदकानि वा ६.७०.३. [सिक्तमिति व्याख्यातम् । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सिचम् सिञ्चनम् ३.५३.२. [षिच क्षरणे (तुदा०) धातोर्घञर्थे कः]

सिचामहे सिञ्चेम २.१६.७. **सिञ्च**=सिञ्चति ४.४९.२. संयोजय १.३०.१. **सिञ्चत्**=सिञ्चति ४.४३.६. **सिञ्चतम्**=सिञ्चतः, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ६.७०.२. **सिञ्चन्ति**=सेवयन्ति पिबन्ति वा २०.२८. **सिञ्चामि**=सुगन्धिरसेन मार्ज्मि ९.३०. मार्जनेन स्वीकरोमि, सर्वथा स्वीकरोमि, अभिषिञ्चामि वा २०.३. अधिकरोमि, १०.१७. [षिच क्षरणे (तुदा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम् । 'शे मुचादीनाम्' इति नुम् न भवति छान्दसत्वात् । अन्यत्र लोट् लङ् लट् च]

सिचौ वृष्टिद्वारा सेचकौ वाय्वग्नी १.९५.७. [षिच क्षरणे (तुदा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः]

सिच्यते सर्वतः साध्यते १९.१५. [षिच क्षरणे (तुदा०) धातोः कर्मणि लट्]

सितम् शुद्धधर्मम् (रेभं=स्तोतृजनम्) १.११२.५. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः 'अञ्जिघृसिभ्यः क्तः' उ० ८.८९. सूत्रेण क्तः । सितमिति वर्णनाम नि० ९.२६.]

सिताम् शब्दार्थविज्ञानसम्बन्धिनीम् (गौर्यं=गौरीं वाचम्) ४.१२.६. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः 'अञ्जिघृसि-

भ्यः क्तः' उ० ३.८९. सूत्रेण क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

सिध्मलम् सिध्माः सुखसाधका विद्यन्ते यस्य तम् (जनम्) ३०.१७. [सिध्मप्राति० मत्वर्थे 'सिध्मादिभ्यश्च' अ० ५.२.९७. सूत्रेण लच् । सिध्मः=षिधु गत्याम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० मक्]

सिध्मः सेधति प्राप्नोति विजयं येन गुणेन सः, प्र०—अत्र षिधु गत्याम् इत्यस्मादौणादिको मक् प्रत्ययः १.३३.१३. सिध्माः=मङ्गलकारिणः (पश्वादयः) २४.१०. [षिधु गत्याम् (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० मक्]

सिध्यति निष्पद्यते १.१८.७. [षिधु संराद्धौ (दिवा०) धातोर्लट्]

सिध्रम् मङ्गलकरम् (यज्ञं=व्यवहारम्) १.१४२.८. शास्त्रबोधप्रकाशनिमित्तम् (यज्ञं=अध्ययनाध्यापनसङ्गतिमयम्) २.४१.२०. शीघ्रताम् १.१७३.११. साधकम् (स्तोमं=गुणकर्मस्वभावप्रशंसाम्) ५.१३.२. [षिधु गत्याम् (भ्वा०) षिधु संराद्धौ (दिवा०) धातोर्वा 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक् । सिध्रम्=साधनम् नि० ९.३८.]

सिध्रया मङ्गलया (छायया) ५.४४.६. [सिध्रमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

सिनम् बन्धनम् २.३०.२. अन्नादिकम् ३.६२.१. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः 'इण् सिञ्जि०' उ० ३.२. इति नक्। सिनमन्ननाम निघं० २.७. सिनम्=अन्नं भवति सिनाति भूतानि निघं० ५.५.]

सिनीवालि सिनी प्रेमबद्धा चाऽसौ बलकारिणी च तत्सम्बुद्धौ (देवि=कुमारि) ३४.१० प्रेम्णा युक्ते (कन्ये) २.३२.६. **सिनीवाली**=प्रेमास्पदाऽऽढ्या (परिचारिका स्त्री) ११.५६. या सिनीः प्रेमबद्धाः कन्या वलयति सा, भा०—हृद्या कन्या ११.५५. प्रेमास्पदप्रवणा (विदुषी स्त्री) २.३२.८. **सिनीवाल्यै**=प्रेमबद्धायै (सूत्तमायै पत्न्यै) २.३२.७. [सिनी-वालीपदयोः समासः । सिनी=सिनम् अन्ननाम निघं० २.७. ततो मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ च' अ० ५.२.१०९. वा०सूत्रेण ईः । वालप्राति० मत्वर्थं ईः । वालः=वृञ् वरणे (स्वा०) धातोर्घञ् । रेफस्य लत्वम् । सिनीवाली सिनमन्नं भवति सिनाति भूतानि वालं पर्व वृणोतेः, तस्मिन्नन्नवती वालिनी वा वालेनेवास्यामणु-त्वाच्चन्द्रमाः सेवितव्यो भवतीति वा नि० ११.३१. सिनीवाली कुहूरिति देवपत्न्याविति नैरुक्ताः । अमावस्ये इति याज्ञिकाः । या पूर्वामावस्या सा सिनीवाली योत्तरा सा कुहूरिति विज्ञायते नि० ११.३१. दृष्टेन्दुः कृष्णा चतुर्दशी सिनीवाली, नष्टेन्दुकलाऽमावास्या कुहूरिति परम्परया श्रूयते । सिनीवाली—या पूर्वाऽमावास्या सा सिनीवाली ऐ० ७.११. वाग्वै सिनीवाली श० ६.५.१ ९. या गौः सा सिनीवाली सा एव जगती ऐ० ३.४७. योषा वै सिनीवाली श० ६.५.१.१०.]

सिन्धवः समुद्रनदीवत् कठिनाऽवगाहाः शत्रवः १.६१.११. समुद्राः १.५२.१४. नद्यः समुद्रा वा १३.२७. प्रवाहरूपाः **सिन्धुम्**=स्यन्दते प्रस्रवति सुखानि समुद्र इव गम्भीरस्तम् (शूरं=सभाध्यक्षम्) १.११.६ अति कठिन नदी वा समुद्र को आर्याभिः १.३३. ऋ० १.७.७.१. नद्यादिकम् १.१६४.२५. सिन्धुः=सागरः ३३.४२. अन्तरिक्षस्थो जलसमूहः १.९८.३. सप्तविधः समुद्रः ३४.३०. विस्तीर्णा नदी १.९२.११. **सिन्धून्**=भूमौ महाजलाशयसमुद्रनदीकूपतडागस्थान् चतुरोऽन्तरिक्षे निकट-मध्य-दूरदेशस्थाँस्त्रींश्चेति सप्तजलाशयान् १.३२.१२. भौमसमुद्रमारभ्य मेघादूर्ध्वाऽवयवपर्यन्तान् सागरान् ३४.२४. नदान् समुद्रान्वा ४.३३.७. **सिन्धूनाम्**=महासमुद्राणाम् ऋ० भू० १.९६ ऋ० १.३.३४.८ समुद्रादीनाम् १.४६.८. नदीनां समुद्राणां वा ७.५.२ **सिन्धौ**=नद्याः समीपे १.१२६.१ [स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोः 'स्यन्देः सम्प्रसारणं धश्च' उ० १.११. सूत्रेण उः । धातोः सम्प्रसारणं दस्य च धकारादेशः । सिन्धवः नदीनाम निघं० १.१३. सिन्धुः स्रवणात् । नि० ५.२७. सिन्धूनाम्=स्यन्दमानानाम् नि० १०.५ सिन्धवः (ऋ० २.१२.१२) तद् यदेतैरिदं सर्वं सितं तस्मात् सिन्धवः जै० उ० १.२९.९.]

सिन्धुमातरा सिन्धूनां समुद्राणां नदीनां वा मातरौ यद्वा सिन्धवो मातरो ययोस्तौ (देवा=अध्यापकोपदेशकौ) १.४६.२. **सिन्धुमाता**=सिन्धूनां नदीनां परिमाणकर्त्री (सरस्वती=उत्तमा वाणी) ७.३६.६. [सिन्धु-मातृपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

सिन्धुमिव समुद्रमिव ५.११.५. यथा समुद्रं तथा १.९७.८. [सिन्धुम्-इवपदयोः समासः]

सिन्धुवाहसा यौ सिन्धुं वहतः प्रापयतस्तौ (अश्विना=शिल्पकार्यविदौ जनौ) ५.७५.२ [सिन्धु-वाहसपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः । वाहसः=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहियुभ्यां णित्' उ० ३.११९ सूत्रेणासच् । स च णित्]

सिमः व्यवस्थया शत्रूणां बन्धकः (सेनापतिः) १.१०२.६. सर्वो मनुष्यः १.१४५.२. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः 'अविसिविसिशुषिभ्यः कित्' उ० १.१४४ सूत्रेण

मन्। सिमेति सर्वादिगणे पाठात् सर्वनाम चापि। सिम सर्वस्मात् नि० ४.११. मह्यो हि सिमाः। तां० १३.५.३. ता ऊर्ध्वाः सीम्नोऽभ्यसृजत यदूर्ध्वाः सीम्नोऽभ्यसृजत तत्सिमा अभवंस्तत् सिमानां सिमात्वम्। ऐ० ५.७. सिमाः-(शाक्वरं साम, महानाम्न्यः) (इन्द्रो वृत्रस्य) सीमानमभिनत् तत् सिमा तां० १३.४.१.]

सिमाः प्रेम्णा बद्धाः (स्त्रियः) २३.३७. प्रेमबद्धाः (मातरः) २३.४२. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोरौणा० मन्]

सिरासु बन्धनरूपासु नाडीषु १.१२१.११. [षिञ् (स्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३ सूत्रेण रक्। ततः स्त्रियां टाप्। सिरा उदकनाम निघं० १.१२.]

सिलिकमध्यमासः सिलिकः संलग्नो मध्यदेशो येषान्ते (अश्वाः) २९.२१. सिलिकानां मध्ये भवाः (अश्वाः =अग्न्यादयः) १.१६३.१०. [सिलिक-मध्यमपदयोः समासे जसोऽसुक्। सिलिकमध्यमासः=संसृतमध्यमाः शीर्षमध्यमा वा। अपि वा शिर आदित्यो भवति यदनुशेते सर्वाणि भूतानि मध्ये चैषां तिष्ठति नि० ४.१३.]

सिषक्ति सिञ्चति ६.६८.३. समवैति १.५६.४. समेति सेवते वा १.३८.८. **सिषक्तु**=संयोजयतु, प्र०—षच समवाये इत्यस्माच्छपः स्थाने 'बहुलं छन्दसि' इति श्लुः 'बहुलं छन्दसि' इत्यभ्यासस्येकारादेशश्च ३.२९. परिचरतु ५.४१.२०. सम्बध्नातु ५.४१.१५. अतिशयेन सचयतु १.१८.२. **सिषक्षि**=समवैति १.७३.८. **सिषिचतुः**=सिञ्चेताम् ७.३३.१३. **सिषिचुः**= सिञ्चन्ति २.२४.४ **सिषिचे**=सिञ्चति ३.३२.१५. **सीक्षन्त**=सम्बध्नन्ति ७.६०.११. [सिषक्ति सिषक्तु उत्तराणि पदानि निघं० ३.२९. षच समवाये (भ्वा०) षच सेचने (भ्वा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपः श्लुः। अभ्यासस्येत्त्वं छान्दसम्। अन्यत्र लोट् लिट् लङ् चापि। सिषक्तु सेवताम् नि० ३.२१. सिसिचुः सिञ्चन्ति नि० १०.१३.]

सिषासतः सम्भक्तुमिवाचरतः (सज्जनस्य) २.३२.१ **सिषासन्**=कर्मसमाप्तिं कर्त्तुमिच्छन् (बृहस्पतिः=महान् राजा) ६.७३.३. ताडयितुं दण्डयितुमिच्छन्. (वज्री= परमात्मा) १.१३०.३. इच्छन् (सेनेशः) ५.३१.१. **सिषासन्तः**=विभजन्तः (मनुष्याः) ५.६२.९ सम्भक्तुमिच्छन्तः (विद्वांसो जनाः) १.१४६.४. सेवितुमिच्छन्तः (जनाः)२६.१८. [षण सम्भक्तौ (भ्वा० धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छतृ। षोऽन्तःकर्मणि (दिवा० धातोर्वा सन्नन्ताच्छतृ]

सिषासति सनितुं विभक्तुमिच्छति १.१३३.७. सम्भक्तुमिच्छति ७.३२.२०. [षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताल्लट्। 'सनीवन्तर्द्ध०' इतीड्विकल्पे इडभावे 'जनसनखनाम्०' इत्यात्त्वम्।

सिषासन्ती दातुमिच्छन्ती (उषा इव स्त्री) १.१२३.४. **सिषासन्तीषु**=सनितुं सम्भक्तुमिच्छन्तीषु (धीषु=प्रज्ञासु), प्र०—अत्र 'जनसनखन०' अ० ६.४.४२ अनेनाऽनुनासिकस्याकारादेशः १.१७.८. [षणु दाने (स्वा०) षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः सन्नन्ताच्छतृ। ततः स्त्रियां ङीप्]

सिषासवः सनितुं सम्भजितुमिच्छवः (जनाः) १.१०२.६. [षण सम्भक्तौ (भ्वाः) धातोः सन्नन्तात् 'सनाशंसभिक्ष उः' इति सूत्रेण उः। ततो जस्]

सिषेध निवारयति १.३२.१३. [षिधु गत्याम् (भ्वा०) धातोर्लिट्]

सिष्वदत् स्वादूकरोति १.१८८.१०. [ष्वद आस्वादने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

सिष्वप् स्वपन (इन्द्रः=सुखधर्त्ता राजा) ६.२०.१३, [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोः शतृ। 'बहुलं छन्दसि' इति श्लौ छान्दसं रूपम्]

सिष्वप स्वापय ६.२६.६ **सिष्वपः**=स्वापय, प्र०—अत्र 'वा छन्दसि' इति सम्प्रसारणनिषेधः १.१२१.११ [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्। अडभावः सम्प्रसारणाभावश्च छान्दसः]

सिष्विदानः स्नेहयुक्तः (राजा) ४.२.६. स्निह्यमानः (जनः) ५.४२.१०. [ञिष्विदा स्नेहनमोचनयोः (भ्वा०) धातोर्लिटः कानच्]

सिसर्ति गच्छति २.३८.२. **सिसर्षि**=गमयसि, प्र०—'बहुलं छन्दसि' इत्यभ्यासस्येत्वम् ३.३२.५. **सिसृतम्**=प्राप्नुतम् २१.९. **सिस्रते**=सरन्ति प्राप्नुवन्ति ४.२२.६. प्रापयन्ति, प्र०—अत्र सृधातोर्लटि शपः श्लुर्व्यत्ययेनात्मनेपदमन्तर्गतो ण्यर्थश्च १५.२४. प्राप्नुवन्तु ३.५२.२. सरन्ति गच्छन्ति ५.१.१. [सृ गतौ (जु०) धातोर्लट्। अभ्यासस्येत्त्वं छान्दसम्। सिसर्ति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

सिंहम् हिंसकम् (अग्नि=सूर्यम्) १.९५.५. **सिंहः** =यो हिनस्ति पश्वादीन् सः (पशुः) १४.९ हिंसको

व्याघ्रः २४.४०. [षिच क्षरणे (तुदा०) धातोः 'सिचेः संज्ञायां हनुमौ कश्च' उ० ५. ६२. सूत्रेण हप्रत्ययो नुमागमश्च । चस्य ककारः । तस्य च लोपः । अथवा हिंसि हिंसायाम् (रुधा०) धातोः पचाद्यच् कर्त्तरि । पृषोदरादित्वादाद्यन्तविपर्ययः । सिंहो व्याघ्र इति पूजायाम् नि० ३.१८. सिंहः सहनाद् हिंसेर्वा स्याद् विपरीतस्य सम्पूर्वस्य वा हन्तेः संहाय हन्तीति वा नि० ३.१८. सिंहम्=सहनम् नि० ८.१५.]

सिँहा इव व्याघ्रतुल्यबलाः (वायवः) १.६४.८. [सिंहाः-इवपदयोः समासः । सिंह इति व्याख्यातम्]

सिँही हिनस्ति दोषान् यया सा यद्वा सिञ्चत्युच्चारयति यया वाचा सा, प्र०—हिंसेः सिंह इति 'हयवरट्' इति सूत्रव्याख्याने महाभाष्यकारोक्तिः 'सिचेः संज्ञायां हनुमौ कश्च' उ० ५.६२. अनेन कः प्रत्ययो हकारादेशो नुमागमश्च । अत्र सर्वत्र गौराद्याकृतिगणान्तर्गतत्वान्ङीष्, अविद्याविनाशिका दुष्टशीलविनाशिनी वा (वाक्) ५.१०. अविद्याहन्त्री, क्रूरत्वादिदोषनाशिका, बलेन जाड्यत्वविनाशिनी, चोरदस्य्वन्यायप्रलयकारिणी सर्वदुःखप्रणाशिका वा (स्वाहा=वाक्) ५.१२. [सिंह इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां गौरादेराकृतिगणत्वान् ङीप्]

सिंह्यम् सिंहेषु भवं बलमिव ७.१८.१७. [सिंहप्राति० भवार्थे यत् । सिंह इति व्याख्यातम्]

सीक्षन्तः सोढुमिच्छन्तः (आयवः=मनुष्याः) ६.१४.३. [षह मर्षणे (भ्वा० धातोरिच्छायामर्थे सन्नन्ताच्छतृ प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

सीचापूः पक्षिविशेषान् २४.२५.

सीता सायन्ति क्षेत्रस्थलोष्ठान् क्षयन्ति यया सा काष्ठपट्टिका १२.७० **सीताम्**=भूमिकर्षिकाम् (कृष्युन्नतिं निष्पादयित्रीं यन्त्रीम्) ४.५७.७. **सीते**=हलादिकर्षणाऽवयवाऽयोनिर्मिता (कृष्युन्नायिका यन्त्री) ४.५७.६. सीता १२.७०. [षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० क्तः । ततः स्त्रियां टाप् । सीता—बीजाय वाऽ एषा योनिष्क्रियते यत् सीता । श० ७.२.२.५. प्राणा वै सीताः श० ७.२.३.३.]

सीद अवस्थितो भव ११.३५. स्थिरो भव ३.२९.१०. आस्व ३.२९.८. स्थिरा भव १३.२४. वर्त्तस्व १४.४. तिष्ठ १२.१५. अवतिष्ठस्व, प्राप्नुहि १२.५३. निवस ४.३.२. सादयति, प्र०—अत्र लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थो व्यत्ययश्च, प्रापयति, सीदति, गमयति, प्राप्नोति वा २.६. प्रापयसि प्रापयति वा ४.६६. **सीदत्**=सीद ५.११.२. निषीदति ७.३०.३. सीदति २०.३९. **सीदत**=प्राप्नुत २.३.४. शिल्पविद्यायां तिष्ठत १.५.१. वर्त्तध्वम् १.२२.८. उपाध्वम् २.४१.१३. गच्छत १.८५.४. आध्वम् ७.३४. अवस्थिता भवत १५.५४. **सीदतम्**=वसतम् ३.६२.१८. सीदतः १५.५७. तिष्ठेताम् १४.२७. भवेताम्, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः १३.२५. विजानीतम् १४.६. गच्छतम् १.४७.८. **सीदताम्**=स्थिरौ स्याताम् १.१८८.६. प्राप्नुतः १.१४२.७. **सीदतु**=समासताम् १.२६.४. **सीदन्**=तिष्ठन्ति १.७२.५. **सीदन्तु**=सादयन्तु, अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.१३.९. प्राप्नुवन्तु ६.२८.१. आसताम् ५.२६.९. **सीदसि**=अवस्थितोऽसि १.१४.११. **सीदस्व**=सम्यगास्व ३८.१७. दोषान् हिन्धि १.३६.९. अध्यापने आस्व ११.३७. **सीदः**=सीद ६.५.३. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट् । शितिप्रत्यये 'पाघ्राध्मास्था०' अ० ७.३.७८ सूत्रेण सीदादेशः । अन्यत्र लङ्, लट् चापि]

सीदन् गच्छन्नागच्छन्निमज्जन्नुन्मज्जन्वा (हंसः=पक्षिविशेषः) १.६५.५. तिष्ठन् (सूर्यः) ७.३४.१६. **सीदन्तम्**=तिष्ठन्तम् (इन्द्रं=स्वकीयं जीव-स्वरूपम्) २८.२७. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः शतृ । धातोः शित्प्रत्यये सीदादेशः]

सीम् सुखप्राप्ति, प्र०—सीमिति पदनामसु पठितम् निघं० ४.२. अनेन प्राप्त्यर्थो गृह्यते १.३३.९. सर्वतः, प्र०—प्रसीमादित्योऽसृजत् । प्रासृजत् सर्वत इति वा, निरु० १.७. इति सीमव्ययः सर्वार्थे गृह्यते १.३६.१. प्राप्तव्यमहोरात्रव्यवहारम् १.९५.२. सेनाम् १.६१.११. धर्मन्यायमर्यादापरिग्रहे १.१००.१४. खलु १.११७.१६. निश्चये १.११७.१९. सीमायाम् १.१२२.६. मर्यादायाम् १.११६.२०. आदित्यः ४.४८.४. परिग्रहे ३.५६.४. आदित्यप्रकाश इव ५.४७.२. [सीम् इति परिग्रहार्थीयो वा पदपूरणो वा । ••• अपि वा सीमेत्येतदनर्थमुपबन्धमाददीत पञ्चमी कर्माणाम् सीम्नः सीमतः नि० १.७. सीम् पदनाम निघं० ४.२.]

सीमतः सीमातो मर्यादातः १३.३. सीमा से युक्त मर्यादा सहित आर्याभि० २.२८, १३.३. [सीमन्=षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः 'नामन्सीमन्व्योमन्रोमन्०' उ० ४.१५१ सूत्रेण मनिन् प्रत्ययः । सीमतः सीमातो मर्यादातः । सीमा मर्यादा विसीव्यति देशौ नि० १.७.]

सीमहि बन्धयामः, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति

श्नोर्लुक् वर्णव्यत्ययेन दीर्घश्च १.२५.३. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोर्लटि विकरणस्य लुकि धातोश्च दीर्घत्वं छान्दसं रूपम्]

सीरम् कृषिसाधकं हलादिकम् १८.७. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोः 'शुसिचिमीनां दीर्घश्च' उ० २.२५ सूत्रेण क्रन् दीर्घश्च । सीराः नदीनाम निघं० १.१३. सीर आदित्यः सरणात् नि० ९.४०. सीरम्-सेरं हैतद् यत् सीरमिरामेवास्मिन्नेतद् दधाति श० ७.२.२.२.]

सीरा सीराणि हलानि १२.६७. हलादीनि कृष्युपकरणानि नाडीर्वा १२.६८. [सीरमिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

सीराः नाडीः १.१७४.९. नाड्यः ६.२०.१२. याः सरन्ति ता नद्यः ४.१९.८. [सीराः नदीनाम निघं० १.१३.]

सीव्यतु सूत्राणि सन्तानयतु २.३२.४. [षिवु तन्तुसन्ताने (दिवा०) धातोर्लोट्]

सीव्यन् रचयन् (जगदीश्वरः) २.१७.४. [षिवु तन्तुसन्ताने (दिवा०) धातोः शतृ]

सीषधः साधय ६.५६.५. **सीषधाति**=साधयेत् २५.४६. प्रसाधयति ६.४९.८. साध्नुयात् ३४.४२. **सीषधाम**=साधयेम २५.४६. [साध संसिद्धौ (स्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् । अडभावश्छान्दसः । सीषधाति प्रसाधयतु नि० ५.१२.]

सीषपन्त शपथान् कुरुत ७.४३.४. [शप आक्रोशे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ् । शस्य सकारो वर्णव्यत्ययेन]

सीसाः प्रेमबन्धिकाः (स्त्रियः), प्र०—अत्र षिञ् बन्धने इत्यस्मादौणादिकः क्सः प्रत्ययोऽन्येषामपि दृश्यते, इति दीर्घः २३.३७. [सीसम्-एतदयो न हिरण्य यत् सीसम् श० ५.१.२.१४.]

सीसेन सीसकधातुपात्रेणेव १९.८०. धनुर्विशेषेण २१.३६. [षिञ् बन्धने (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्सः । धातोर्दीर्घश्च बाहुलकादेव]

सु शोभनार्थे क्रियायोगे च १.९.६. सुष्ठु ५.६५.३. सर्वथा १.३८.६. श्रैष्ठ्ये ४.१४. [सु अभिपूजितार्थे नि० १.३.]

सुकपर्दा सुकेशी (परिचारिका स्त्री) ११.५६. [सु-कपर्दपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सुकर्मणा सुष्ठु धर्म्यया क्रियया २०.७५. [सु-कर्मन्पदयोः समासः]

सुकर्मा शोभनानि कर्माणि यस्य सः (मेधाविजनः) ४.३३.९. **सुकर्माणः**=शोभनानि कर्माणि येषान्ते (राजप्रजाजनाः) ४.२.१७. [सु-कर्मन्पदयोः समासः]

सुकर्ष सुष्ठुतया विलिखति ५.८३.७. [सु+कृष विलेखने (भ्वा०) धातोर्लडर्थे लोट्]

सुकीर्त्तिम् शोभनकीर्त्तिम् २.२८.१. **सुकीर्त्तिः**=पुण्यप्रशंसः (विद्वज्जनः) १.१८६.३. अतिप्रशंसनीयः १.६०.३. [सु-कीर्त्तिपदयोः समासः । कीर्त्तिः=कॄत संशब्दने (चुरा०) धातोः 'ऊतियूति०' इति क्तिन् निपात्यते । सुकीर्त्तिः-देवयोनिर्वै सुकीर्त्तिः ऐ० ६.२९.]

सुकुरीरा शोभनानि कुरीराण्यलङ्कृतान्याभूषणानि यया सा, भा०—सुशिक्षिता चतुरा (परिचारिका स्त्री) ११.५६. [सु-कुरीरपदयोः समासः । ततः स्त्रियां टाप् । कुरीरम्=डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृञ उच्च' उ० ४.३३ सूत्रेण ईरन् उकारश्चान्तादेशः]

सुकृणोतु शोभनतया करोतु १.८४.३. **सुकृण्वन्तु**=सर्वथा निष्पादयन्तु ३.३७.२. [सु+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन श्नुः]

सुकृत् यः सुष्ठु करोति सः (अग्निः=विद्वज्जनः) २७.१३. यः शोभनं धर्म्यं कर्म करोति सः (देवः=विद्वज्जनः) ३.५४.१२. यः सुष्ठु सत्यं कर्म करोति सः (जनः) ४.२५.५. **सुकृतः**=धर्मात्मानः (जनाः) ७.३५.१२. धर्म्यकर्माचरणाः (प्रजाजनाः) ५.४.८. सुष्ठु कर्मकारिणः विद्वांसो जनाः) १.१४७.३. सुकृतस्य धर्मात्मनः (जनस्य) ४.१३.१. उत्तमकर्मकारिणः (आप्ता भृत्याः) ४.४.१३. **सुकृताम्**=शोभनमकार्षुस्ते सुकृतस्तेषाम् (सज्जनानाम्) १८.५२. मुमुक्षूणाम् (जनानाम्) १८.५८. ये सुष्ठु धर्ममेव कुर्वन्ति तेषाम् (सज्जनानाम्) ७.३५.४. पुण्यात्माओं के सं० वि० १८९, अथर्व० ९.५.१. **सुकृतोः**=यौ शोभनं कुरुतस्तयोः (पुत्रपौत्रयोः) ३.३१.२. **सुकृत्सु**=पुण्यात्मसु (देवेषु=विद्वज्जनेषु) ७.९.१. [सूपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'सुकर्मपापमन्त्रपुण्येषु कृञः' अ० ३.२.८९. सूत्रेण क्विप् । तस्य सूर्यस्य ये रश्मयस्ते सुकृतः श० १.९.३.१०.]

सुकृतम् सुष्ठु निष्पन्नम् (वज्रम्) १.८५.९. धर्म्यं कर्म्म १.१२५.३. सुष्ठु कर्माणि क्रियन्ते यस्मिँस्तम् (यज्ञम्) १९.६७. पुण्यात्मकं सुष्ठु निष्पादितं कर्म १८.५. धर्माचरणेन प्राप्यम् (नाकम्=अविद्यमानदुःखं मोक्षम्) ११.२२. सुष्ठु कर्त्तव्यं कर्म्मं ८.४३. सुकृतस्य=सुष्ठु कृतस्य वेदोक्तकर्मणः १५.५०. सुष्ठु कृतो धर्मो येन तस्य (पुरुषस्य) १३.३१. सुकृतः=सुष्ठु साधनैः कृतो निष्पादितः (व्यव-

हारः) १.११७.२. शोभनानि कृतानि येन सः (पतिः) १.४८.११. शोभनं कृतं क्रियते येन सः (इन्द्रः=भगवान्) ७.३९. सुष्ठूत्पादितः (इन्द्रः=सूर्यः) ६.१९.१. **सुकृताः**=सुष्ठु कर्म येषां ते (मनुष्याः) १.१३४.२. **सुकृते**=धर्म्ये कर्मणि ५.६२.६. सुष्ठु कृतेऽनुष्ठिते (कर्मणि) ३.३१.७. [सु-कृतपदयोः समासः]

सुकृता शोभनं धर्म्यं कर्म क्रियते याभ्यां तौ (हस्ता=हस्तौ) ४.२१.९. सुष्ठुकृतानि निष्पादितानि (अन्नादीनि) १.१६२.१०. धर्म्येण निष्पादितानि (धनानि) ५.२९.१५. सुकृतं सुष्ठु संस्कृतम् (वस्तु), प्र०—अत्राऽऽकारादेशः २५.३३. सुकृतानि (कर्म=कर्माणि) ३.३२.८. शोभनेन धर्मयोगेन कृतानि (कर्माणि) ३.३४.६. धर्माचरणानि ७.३५.४. [सु-कृतपदयोः समासे द्विवचनस्याकारश्छान्दसः । शेर्लोपश्छन्दसि वा]

सुकृता सत्यभाषणादिशुभक्रियायुक्ता (काकुत्=सुशिक्षिता वाक्) ६.४१.२. **सुकृते**=ईश्वरेण सुष्ठु निर्मिते सुकृतकर्मनिमित्ते वा (रोदसी=सूर्यभूमी) ६.७०.२. [सु-कृतपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सुकृत्तरः अतिशयेन सुष्ठु करोति यः (विद्वज्जनः) १.१५६.५. योऽतिशयेन शोभनानि करोति सः (अग्निः=जगदीश्वरः) १.३१.४. [सुकृत्प्राति० अतिशायने तरप् । सुकृदिति व्याख्यातम्]

सुकृत्यया शोभनानि कृत्यानि कर्माणि यस्यां तया (शम्या=शान्तियुक्तक्रियया) १.८३.४. श्रेष्ठेन कर्मणा १.२०.८. शोभनक्रियया ४.३५.२. धर्मक्रियया ३.६०.३. [सु-कृत्यापदयोः समासः । कृत्या=डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृञः श च' अ० ३.३.१०० सूत्रेण स्त्रियां क्यप् । ततष्टाप्]

सुकृत्या सुकृतेन कर्मणा ४.३५.८. शोभनेन धर्म्येण कर्मणा ४.३५.७. [सु-कृतिपदयोः समासः]

सुकेतवः सुष्ठु केतुः प्रज्ञा येषान्ते (विद्वज्जनाः) ३.७.१०. [सु-केतुपदयोः समासः । केतुः प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

सुक्रतवः शोभन-प्रज्ञा-कर्माणः (देवाः=विद्वांसो जनाः) २९.२७. उत्तमप्रज्ञाः (देवाः) ७.२.२. **सुक्रतुम्**=सुष्ठु शोभनाः क्रतवः प्रज्ञाः क्रिया वा भवन्ति यस्मात्तम् (अग्निं=भौतिकम्) १.१२.१. शोभनकर्मकर्तृप्रज्ञम् (इन्द्रं=राजानम्) ३.४९.१. प्रशस्तप्रज्ञम् (अर्यमणं=न्यायकारिणं विद्वज्जनम्) ७.३६.४. **सुक्रतुः**=सुष्ठु बुद्धिमान् (विद्वज्जनः) ५.६५.१. शोभनाः क्रतवः कर्माणि प्रज्ञा वा यस्य सः (वरुणः=विद्वज्जनः) १.२५.१०. शोभनप्रज्ञः सुकर्मा वा (परमेश्वरो विद्वज्जनो वा) १ ९१.२. शोभनकर्मप्रज्ञः (सभापतिः) २०.२. शोभनानि प्रज्ञानानि कर्माणि वा यस्य सः (वैश्वानरः=जगदीश्वरः) ६.७.७. शोभना क्रतुः प्रज्ञा क्रिया वा यस्य सः (सम्राट्) १०.२७. **सुक्रतू**=उत्तमप्रज्ञौ सत्कर्माणौ वा (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ३.६२.१६. शोभनप्रज्ञायुक्तौ (मित्रावरुणा) ७.६१.२. समानक्रियौ (अग्निवायू) १.९३.५. **सुक्रतो**=सुष्ठु प्रज्ञाकर्मयुक्त (तेजस्विन् राजन्) ६.१६.२९. सुष्ठुप्रज्ञ उत्तमकर्मन्वा (अग्ने=प्रकाशात्मन् विद्वज्जन) ६.१६.३. श्रेष्ठकर्मबुद्धियुक्त (इन्द्र=विद्वज्जन) १.५.६. उत्तमप्रज्ञ धर्म्यकर्मकर्त्तः (नरोत्तम राजन्) ७.१६.६. [सु-क्रतुपदयोः समासः । क्रतुः कर्मनाम निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९. सुक्रतवः=सुकर्माणः नि० ८.७.]

सुक्रतुयया सुष्ठु प्रज्ञया कर्मणा वा १.१६०.४. [सु-क्रतुपदयोः समासे छान्दसं रूपम्]

सुक्रतुया शोभनः क्रतुः प्रज्ञा कर्म वा यस्मात्तेन (मातरिश्वना=वायुना तत्प्रकाशेन वा), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति यादेशः १.३१.३. [सु-क्रतुपदयोः समासात् टास्थाने यादेशश्छान्दसः]

सुक्षत्र शोभनं क्षत्रं क्षत्रियकुलं धनं वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्), प्र०—क्षत्रमिति धननाम निघं० २.१०, ५.३२.५. शोभनं क्षत्रं द्रव्यं वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ५.३८.१. **सुक्षत्रम्**=शोभनं राज्यम् १.११६.१९ **सुक्षत्रः**=शोभनं क्षत्रं धनं यस्य सः (विद्वज्जनः) २१.२२. सुष्ठु सुरिव क्षत्रं राष्ट्रं यस्य सः (आप्तो राजा) ३.५९.४. **सुक्षत्रान्**=उत्तमधनाञ्छ्रेष्ठराज्यान् वा (राजजनान्) ६.५१.४. [सु-क्षत्रपदयोः समासः । क्षत्रम् धननाम निघं० २.१०. उदकनाम निघं० १.१२.]

सुक्षत्रासः शोभनं क्षत्रं राष्ट्रं धनं वा येषान्ते (मित्रावरुणाऽग्नयः=अध्यापकोपदेशकाऽऽप्ताः पुरुषाः) ६.४९.१. शोभनं क्षत्रमन्तरिक्षस्थं राज्यं येषान्ते (राजपुरुषाः) १.१९.५. [सु-क्षत्रपदयोः समासाज् जसोऽसुगागमः]

सुक्षितयः श्रेष्ठमनुष्याः प्रजाः १२.११६. **सुक्षितये**=शोभनायै पृथिव्याः प्राप्त्यै ७.५६.२४. **सुक्षितिम्**=शोभना क्षितिर्भूमिर्यस्मिन् व्यवहारे तम् १.४०.८. शोभनां भूमिम् २.३५.१५. शोभना क्षितिर्भूमिर्यस्यां ताम्(स्वर्वित=सुखम्) ६.१४.६. शोभना क्षितिः पृथिवी राज्यं यस्य तम्

(राजानं सेनापतिं वा) ३४.२०. शोभनाः क्षितयो राज्ये यस्माद्वा तम् (सोमं=सेनाध्यक्षम्) १.९१.२१. शोभनां पृथिवीं सुनिवासं वा ६.२.११. **सुक्षितीः**=शोभनाः क्षितयः पृथिव्यो मनुष्या वा यासु ताः (इषः=अन्नाद्याः) ५.६.८. **सुक्षित्यै**=उत्तमायै भूम्यै ३७.१०. [सु-क्षिति-पदयोः समासः। क्षितिः पृथिवीनाम निघं० १.१. क्षितयः मनुष्यनाम निघं० २.३. सुक्षितिः—(यजु० ३७.१०.) अयं वै (पृथिवी) लोकः सुक्षितिरस्मिन् हि लोके सर्वाणि भूतानि क्षियन्ति श० १४.१.२.२४. अथोऽग्निर्वै सुक्षितिरग्निर्ह्येवास्मिँल्लोके सर्वाणि भूनानि क्षियति श० १४.१.२.२४.]

सुक्षेत्रा शोभनानि क्षेत्राणि ४.३३.७. [सु-क्षेत्रपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि]

सुक्षेत्रिया शोभनं क्षेत्रं वपनाधिकरणं यया नीत्या तया १.९७.२. [सु-क्षेत्रपदयोः समासे स्त्रियां टापि सुक्षेत्रा इति रूपम्। ततस्तृतीयैकवचनस्येयाडादेशः 'इयाडियाजीकाराणामुपसंख्यानम्' वा०सूत्रेण]

सुक्ष्मा शोभना चाऽसौ क्ष्मेयं पृथिवी च सा १.२७. [सु-क्ष्मापदयोः समासः। क्ष्मा पृथिवीनाम निघं० १.१.]

सुखतमे अतिशयेन सुखहेतौ (रथे=याने) १.१६.२. अतिशयितानि सुखानि यस्मिन् तस्मिन् (रथे=विमानादौ) १.१३.४. [सुखप्राति० अतिशायने तमप्]

सुखम् शोभनं खं विस्तृतमाकाशं स्थित्यर्थं यस्मिँस्तम् (रथं=विमानादियानसमूहम्) १.२०.३. आनन्दकारकम् (रथम्) १.४९.२. सुहितं खेभ्यो यस्तम् (रथं=यानम्) ३.३५.४. परमानन्दः प्रसन्नता १८.६. **सुखः**=शोभनानि खान्यवकाशा विद्यन्ते यस्मिन् सः (रथः) १.१२०.११. [सु-खपदयोः समासः। सुखन् उदकनाम निघं० १.१२. सुखं कस्मात्? सुहितं खेभ्यः। खं पुनः खनतेः नि० ३.१३.]

सुखरथम् सुखाय रथः सुखरथस्तम् ५.३०.१. [सुख-रथपदयोः समासः]

सुखादयः सुष्ठु खादयो भोजनादीनि येषान्ते (मनुष्याः) १.८७.६. **सुखादये**=यः सुष्ठु खादति तस्मै (धीमते जनाय) ५.८७.१. [सु-खादिपदयोः समासः। खादि खाद भक्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इन्]

सुखादितान् अन्यायेन परपदार्थानां भोक्तॄन् (स्तेनान्) ११.७८. [सु+खादितपदयोः समासः। खादितम्=खाद भक्षणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

सुगन्धिम् सुविस्तृतपुण्यकीर्त्तिम् (त्र्यम्बकं=परमेश्वरम्) ७.५९.१२. सुष्ठु गन्धो यस्मिँस्तम्, शोभनः शुद्धो गन्धो यस्मात्तम् (त्र्यम्बकं=रुद्रमीश्वरम्) ३.६०. [सु-गन्धपदयोः समासे 'गन्धस्येदुत्पूतिसुसुरभिभ्यः' अ० ५.४.१३५. सूत्रेण समासान्त इकारादेशः। सुगन्धिम् सुष्ठुगन्धिम् नि० १३.३५.]

सुगन्म प्राप्नुयाम २.२८.७. [सु+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ्। 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपो लुक्। 'म्वोश्च' अ० ८.२.६५. सूत्रेण धातोर्मस्य नकारः]

सुगभस्तिम् सुष्ठु प्रकाशम् (देवं=दातारं विद्वज्जनम्) १.४९.९. **सुगभस्तिः**=शोभना गभस्तयः किरणा यस्य सूर्यस्य सः ५.४३.४. [सु-गभस्तिपदयोः समासः। गभस्तयः रश्मिनाम निघं० १.५. अङ्गुलिनाम निघं० २.५.]

सुगम् सुष्ठुतया गच्छेयुर्यस्मिँस्तत् (अमा=गृहम्) ६.५१.१५. सुष्ठु गच्छन्ति यस्मिँस्तत् (योः=धर्मार्थकाममोक्षप्रापणं) १.१०६.५. सुष्ठु गच्छन्ति यस्मिन् मार्गे तम् २.२३.७. सुख से प्राप्त (वरिवः=चक्रवर्त्तीराज्य और साम्राज्य धन को) आर्याभि० १.४३, ऋ० १.७.१४.४. विद्यां गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति यस्मिन् कर्मणि तत् १.९४.४. सुखं गम्यं यस्मिन् तम् (शम्=सुखम्) १.४३.६. **सुगः**=सुखेन गच्छन्ति यस्मिन् सः (पन्थाः=मार्गः) ३.५४.२१. **सुगेषु**=सुगमेषु व्यवहारेषु ६.२१.१२. [सु+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सुदुरोरधिकरणे' अ० ३.२.४८. वा० सूत्रेणाधिकरणे डः सुगान् सुगमान् नि० ६.२. स्वागमनानि नि०. १२.४२.]

सुगवः शोभना गावो यस्य सः (मनुष्यः) १.११६.२५. [सु-गोपदयोः समासः। ततः 'गोरतद्धितलुकि' अ० ५.४.९२. सूत्रेण समासान्तः टच्]

सुगव्यम् सुष्ठु गोभ्यो हितम् (कार्यम्) २५.४५. सुष्ठु गोषु भवानि यस्मिँस्तत् (रयिं=श्रियम्) १.१६२.२२. [सु-गव्यपदयोः समासः। गव्यम्=गोप्राति० हितार्थे भवार्थे वा यत्]

सुगा सुष्ठु गन्तुं प्राप्तुं योग्यानि (सदना=गृहाणि), प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति लुक् ८.१८. [सु+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सुदुरोरधिकरणे' इति वार्त्तिकेन डः। ततश्शेश्छन्दसि लोपः]

सुगा सुष्ठु गन्तुं योग्या (स्त्री) ६.६४.४. **सुगाः**=सुष्ठु गच्छन्ति ताः (अपः=जलानि) १.६५.८. [सु+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्डः। ततः स्त्रियां टाप्]

सुगातुया शोभना गातु पृथिवी यस्यां तया (सुक्षेत्रिया=सुनीत्या) १.९७.२ [सु-गातुपदयोः समासे कृते 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण टा-स्थाने याजादेशः । गातुः पृथिवीनाम निघं० १.१.]

सुगार्हपत्याः शोभनो गार्हपत्योऽग्न्यादिपदार्थसमुदायो यासां ताः (इषः=अन्नानि) ५.४.२. [सु-गार्हपत्यपदयोः समासः । ततः स्त्रियां टाप् । गार्हपत्यः=गृहपतिप्राति० भावे कर्मणि चार्थे 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' अ० ५.१.१२८. सूत्रेण यक्]

सुगुः शोभना गावो यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१२५.२. **सुगू**=उत्तम चाल-चलन से धर्मयुक्त व्यवहार में अच्छे प्रकार चलने वाले (स्त्री पुरुषो) सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.४३. [सु-गोपदयोः समासे 'गोस्त्रियोरुपसर्जनस्ये' ति ह्रस्वः । अन्यत्र सु+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'ऊङ् च गमादीनाम्' अ० ६.४.४०. वा० सूत्रेण क्वौ परत ऊङ् । 'गमः क्वौ' सूत्रेणानुनासिकलोपः]

सुगृहपतिः शोभनश्चाऽसौ गृहस्य पालकश्च सः (गृहस्थजनः) शोभनानां गृहाणां पतिः पालयिता (जगदीश्वरो विद्वज्जनो वा) २.२७. [सु-गृहपतिपदयोः समासः]

सुगृहौ श्रेष्ठ गृहादि सामग्रीयुक्त (स्त्रीपुरुषो) सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.४३. [सु-गृहपदयोः समासाद् अर्श-आदित्वादच् मत्वर्थे]

सुगेभिः सुगमैर्मार्गैः २.२७.७. सुखेन गमनाधिकरणैः (पथिभिः=मार्गैः) ३४.२७. सुखेन गन्तुं योग्यैः (पथिभिः) २३.१६. सुष्ठु गच्छन्ति येषु तैः (पथिभिः) २५.४४. [सु+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सुदुरोरधिकरणे' वा०सूत्रेणाधिकरणे उः । ततः 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न भवति]

सुगोपा सुष्ठु रक्षकौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.१२०.७. [सु-गोपपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः । गोपः=गुपू रक्षणे (भ्वा०) कर्त्तर्यच्]

सुगोपातमः शोभनधर्मेण गां पृथिवीं वाचं वा पाति सोऽतिशयितः (जनः) ८.३१. अतिशयेन सुष्ठु स्वस्याऽन्येषाञ्च रक्षकः (जनः) १.८६.१. [सु-गोपापदयोः समासेऽतिशायने तमप् । गोपा=गो इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क्विप् । गौः पृथिवीनाम निघं० १.१. गौः वाङ्नाम निघं० १.११. अथवा सुगोपा=सूपपदे गुपू रक्षणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सुगोपाः सुष्ठु गवां धेनूनां पृथिव्यादीनां वा रक्षकाः (पञ्चजनाः=उत्तमा मनुष्याः) ६.५१.११. यथावत्प्रजापालकाः (वीरजनाः) सुष्ठु रक्षकाः (वीरजनाः) ५.३८.५. यः सुष्ठु रक्षति सः (विद्वज्जनः) ३.४५.३. [सुगोपा इति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

सुग्म्यम् सुखेषु भवमानन्दं सुखञ्च १.४८.१३. **सुग्म्यः**=सुखेषु सुखाधिकरणेषु साधुः (इन्द्रः=विद्वज्जनः) १.१७३.४. [सुग्म्य सुखनाम निघं० ३.६.]

सुग्रथितम् सुष्ठु निवद्धम् (शत्रुबलम्) १.१२१.१०. [सु-ग्रथितपदयोः समासः । ग्रथितम्=ग्रन्थ सन्दर्भे (क्र्या०) धातोः क्तः]

सुचक्रे शोभनं करोति ६.३७.३. [सु+डुकृञ् करणे (तना०) धातोर्लिट्]

सुचरिते यस्मिन् शोभनानि चरितानि धर्म्ये व्यवहारे तस्मिन् ४.२८. [सु-चरितपदयोः समासः । चरितम्=चर गतौ (भ्वा०)+क्तः]

सुचेतसम् शुद्धाऽन्तःकरणम् (सज्जनम्) ७.६०.६. सुष्ठु विज्ञानयुक्तम् (क्रतुं=प्रज्ञाम्) ७.४.१. प्रकृष्टविद्यायुक्तम् (क्रतुं=प्रज्ञाम्) ७.३.१०. **सुचेतसः**=सुष्ठु विज्ञानाः (शिल्पिजनाः) ४.३६.२. [सु-चेतस्पदयोः समासः । चेतस् प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

सुचेतुना सुष्ठु विज्ञानेन सह ४.३६.२. सुष्ठु संज्ञानेन १.१५९.५. उत्तमविज्ञानेन ५.६४.२. सुष्ठु चेतयित्रा, सुष्ठु विज्ञात्रा वा (जनेन) १.१२७.११. [सु-चेतुपदयोः समासः । चेतुः=चिती संज्ञाने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उः]

सुचोदय शोभनतया प्रेरय १.९.६. [सु+चुद सञ्चोदने (चुरा०) धातोर्लोट्]

सुजन्मनी शोभनं जन्म ययोस्ते (विद्युदन्तरिक्षे) १.१६०.१ [सु-जन्मन्पदयोः समासः]

सुजागृहि सुष्ठु जागरयति, सुष्ठु जागर्त्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च ४.१४. [सु+जागृ निद्राक्षये (अदा०) धातोर्लोट्]

सुजात सुष्ठु प्रसिद्ध (सुराजन्) ७.८.५. सुष्ठु जात (विद्वज्जन) ५.२१.२. शोभनेषु प्रसिद्ध (अग्ने=विद्वज्जन) २.६.२. **सुजातम्**=सुष्ठु प्रसिद्धं सुखम् ७.५६.२१. **सुजाताः**=सुष्ठु पुरुषार्थेन प्रसिद्धाः (सूरयः=विद्वज्जनाः) २.२.११. शोभनेषु विद्यादिगुणेषु प्रसिद्धाः (मरुतः=सभाध्यक्षप्रजामनुष्याः) १.८८.३. विद्याक्रियाकौशलेषु सुष्ठु प्रसिद्धाः (मनुष्याः) १.७२.३. सुष्ठु धर्म्येण व्यवहारेण प्रसिद्धाः (अर्काः=सत्कर्त्तव्या जनाः) ५.५७.५. [सु-जात-

पदयोः समासः । जातः=जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोः क्तः । सुजातः सुजाततरः नि० ११.३६.]

सुजाता सम्यक् प्रसिद्धा (कृतब्रह्मचर्या स्त्री) ५.५६.९. **सुजाते**=सुष्ठु रीत्योत्पन्ने (उषः=विदुषि स्त्रि) ५.७९.१. शोभनैः संस्कारैरुत्पन्ने (साध्वि स्त्रि) ५.७९.२. शोभनया विद्यया प्रकटीभूते (विदुषि स्त्रि) ५.७९.३ सत्कीर्त्या प्रकाशिते (कन्ये) १.१२३.३. [सु-जातपदयोः समासात् स्त्रियां टाप्]

सुजाता शोभनेषु विद्याग्रहणाख्यकर्मसु प्रादुर्भूतौ (स्त्रीपुरुषौ) १.११८.१०. [सुजात इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सुजातासः विद्यासु सुष्ठु जाताः प्रसिद्धाः (सूरयः=विद्वज्जनाः) १५.४२. सुष्ठु धर्म्येण व्यवहारेण प्रसिद्धाः (विद्वज्जनाः) ५.५७.५. शोभनेषु व्यवहारेषु प्रसिद्धाः (मर्याः=मनुष्याः) ५.५९.६. [सुजात इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

सुजिगातु सम्यक् प्रशंसतु २.३४.१५. [सु+गा स्तुतौ (जु०) धातोर्लोट्]

सुजिन्वथ शोभनतया प्राप्नुत, प्र०—जिन्वतीति गतिकर्मा निघं० २.१४, १.११२.१. [सु+जिन्वति गतिकर्मा निघं० २.१४. धातोर्लट्]

सुजिह्व सुष्ठु जोहूयन्ते धार्यन्ते यया जिह्वया शक्त्या तत्सहितः सुष्ठु हूयन्ते जिह्वायां ज्वालायां यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=जगदीश्वर) १.१४.७. शोभना जिह्वा वाग्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (तनूनपात्=धार्मिकमनुष्यः) २९.२६. शोभना जिह्वा मधुरभाषिणी वाग् यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.१४२.४. **सुजिह्वाः**=सत्यवाचः (विद्वांसो जनाः) १.१६६.११. **सुजिह्वौ**=शोभनाः पूर्वोक्ताः सप्त जिह्वा ययोस्तौ (दैव्यौ=प्रसिद्धाप्रसिद्धाग्नी) १.१३.८. [सु-जिह्वापदयोः समासः । जिह्वा वाङ्नाम निघं० १.११. सुजिह्व=कल्याणजिह्व नि० ८.६.]

सुजुष्टा सुष्ठु सेविना (सरस्वती=सत्या वाक्) ६.६१.१०. [सु+जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०) धातोः क्तान्ताट् टाप् स्त्रियाम्]

सुजूर्णिः सुष्ठु शीघ्रकारिणी (घृताची=रात्रिः) ४.६.३. [सु-जूर्णिपदयोः समासः । जूर्णिः क्षिप्रनाम निघं० २.१५.]

सुज्योतिषः शोभनानि ज्योतींषि प्रज्ञाप्रकाशा येषान्ते (देवाः=विद्वज्जनाः) ३.२०.१. सुष्ठु विनयप्रकाशकाः (विद्वांसो जनाः) ६.५०.२. **सुज्योतिः**=शोभनं विद्यादिसद्गुणप्रकाशं धर्मादिसद्गुणप्रकाशं वा ३८.१६. विद्याप्रकाशम् ३७.२१. [सु-ज्योतिष्पदयोः समासः । ज्योतिष्=द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'द्युतेरिसिन्नादेश्च जः' उ० २.११०. सूत्रेण इसिन् । धात्वादेश्च जकारादेशः]

सुतक्रे सुष्ठु प्रसन्न (इन्द्र=राजन्) ६.३१.४. [सु-तक्रपदयोः समासः । तक्रः=तक हसने (भ्वा०) धातोरौणा० रक्]

सुतप सम्यक् सन्तापय ३.१८.२. [सु+तप सन्तापे (भ्वा०) धातोर्लोट् ।

सुतपावन् यः सुतान् निष्पन्नान् पदार्थान् पुनाति तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ६.२४.९. **सुतपाव्ने**=सुतानामाभिमुख्येनोत्पादितानां पदार्थानां पावा रक्षको जीवस्तस्मै, प्र०-अत्र 'आतो मनिन्क्वनिब्वनिपश्च' इति वनिप्प्रत्ययः १.५.५. [सुतोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः 'आतो मनिन्०' इति वनिप् । अथवा सुतोपपदे पूञ् पवने (क्र्या०) धातोर्वनिप्प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

सुतपाः सुष्ठु तपस्वी (राजा) ६.२४.१. सुष्ठु धर्मात्मा रागद्वेषरहितः (इन्द्रः=राजा) ४.२५.७. यः सुतान् पदार्थान् पाति सः (सज्जनः) ६.२३.६. सुतं पाति रक्षति सः (विद्वज्जनः) १.१५५.२ [सु-तपस्पदयोः समासः अथवा सुतोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः क्विप्]

सुतपेयाय निष्पन्नरसपातव्याय ४.४४.३ [सुत-पेयपदयोः समासः । पेयम्=पा पाने (भ्वा०) धातोर्यत्]

सुतपौ सुष्ठु ब्रह्मचर्याद्यनुष्ठानाख्यं तपो ययोस्तौ (सभासेनेशौ) प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति सलोपः ६.६८.१०. [सु-तपस्पदयोः समासः । तपसोऽन्त्यलोपश्छान्दसः]

सुतम् सवति सत्कर्माऽनुष्ठानैरैश्वर्यं प्राप्नोति तं बालकम् ७.३३. उत्पन्नं संसारम् ३.१२.२. सुसंस्कारैर्निष्पादितम् (ओषधिगणम्) ३.४०.२. यत् सोमादिकं ग्रहीतुं विज्ञानं प्रकाशयितुञ्चाऽभीष्टं वस्तु १.३.७. अन्तःकरणाभिगतं विज्ञानम् १.३.८. क्रियया निष्पादितं व्यवहारम् १.२१.४. औषध्यादिरसम् १.१६.५ सुसाधितम् (सोमम्=ओषधिगणमिवैश्वर्यम्) ३.४२.१. विद्याजन्यमैश्वर्यवन्तं पुत्रं विद्यार्थिनं वा ३.१२.१. सम्पादितम् (सोमम्=ऐश्वर्यं सोमवल्ल्यादिरसं वा) ८.३९. प्रयत्नेनोत्पादितं प्रियं शब्दं स्तवनं वा १.१०.११. सुसंस्कृतम् (सवनं=धर्मपथम्) ६.६०.९. अभिनिष्पादितं दुग्धादिरसम् ६.६०.७ कर्मो-

पासनाज्ञानरूपं व्यवहारम् १.३.८. वर्षितम् (सोमम्=ऐश्वर्यम्) ५.२९.७. **सुतस्य**=प्राप्तस्य राज्यस्य ४.४८.४ **सुतः**=पुत्रः २.३६.५. प्रेरितः (अग्निः=पावकः) २०.५५. प्राप्तः (सोमः=ऐश्वर्यवृन्दः) ३.४४.१. सन्तापितः (सोमः=सभाध्यक्षः) १.८०.२. निष्पन्नः (सोमः=ऐश्वर्यसमूहः) ६.४४.२. निर्मितः (सोमः=रोगनाशकौषधिरसः) ६.४३.३. अभिनिष्पादितः (सोमः) १.१३७.२. **सुतान्**=पुत्रवद्वर्त्तमानान् शिक्षणीयान् शिष्यान् ५.७८.३. **सुतानाम्**=सुतान् त्वयोत्पादितान् पदार्थान्, प्र०—अत्र शेषे षष्ठी १.२.५. संसिद्धानाम् (ओषध्यादिरसानाम्) १.१३५.५ निष्पालनानाम् (ओषध्यादिरसानाम्) ५.५१.६. सुसंस्कारेण निष्पादितानामन्नानाम् ७.३८. **सुताः**=उत्पादिताः, अ०—पवित्रीकृताः (सोमासः=सर्वपदार्थाः) १.५.५. प्रत्यक्षभूताः पदार्थाः १.२.४. उत्पन्ना मूर्तिमन्तः पदार्थाः, अ०—संसारस्थाः प्रकाशयुक्ताः पदार्थाः १.३.४. आभिमुख्यतया पदार्थविद्यासारनिष्पादिनः (वृक्तबर्हिषः=शिल्पविद्याविदो विद्वज्जनाः), प्र०—अत्र बाहुलकात् कर्त्तृकारक औणादिकः क्तः प्रत्ययः १.३.३. अभिषेकक्रियाजाताः (सोमाः=सभासदः) २१.४२. सुविचारेणाऽभिसंस्कृताः (सोमाः=ओषध्यादयः पदार्थाः) ३.४०.४. निस्सारिताः (सोमाः=सोमाद्योषधिरसाः) १.१६८.३. **सुते**=निष्पन्नेऽस्मिञ्जगति ६.२३.१०. उत्पन्ने कार्ये जगति १.१०५.७. उत्पादिते होमशिल्पादिव्यवहारे १.१६.४. निष्पादिते (रसौ), प्र०—अत्र लिङ्गव्यत्ययश्छान्दसः १९.२७. **सुतेषु**=उत्पन्नेषु जातेषु विज्ञानबलेषु ७.२६.३. उत्पादितेषु स्वकीयसन्तानेषु १.१०.५. [षुञ् अभिषत्रे (स्वा०) षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः क्तः। बाहु० औणा० वा कर्त्तरि क्तः। सुतस्य अभिषुतस्य नि० १३.६. सुतेषु सोमेषु नि० ५.२२. सुतः, सुतम् इत्यन्ननामनी निघं० २.७.

सुतम् सुनुतम्, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' अ० २.४.७३. इति विकरणस्य लुक् ७.३१. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्लोट्। विकरणस्य लुक्]

सुतम्भरः य उत्पन्नं जगद् बिभर्ति सः (विद्वज्जनः) ५.४४.१३. [सुतोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'संज्ञायां भृतॄवृजिधारिसहितपिदमः' अ० ३.२.४६ सूत्रेण कर्त्तरि खच्। 'वा छन्दसी' ति वचनादसंज्ञायामपि भवति]

सुतरणान् सुखं तरणं येषान्तान् (सिन्धून्=नद्यः) ४.१९.६. [सु-तरणपदयोः समासः। तरणम्=तॄ प्लवनसंतरणयोः (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

सुतराः सुष्ठु तरन्ति यासु ताः (अपः=जलानि) ६.६०.११. [सु+तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'ॠदोरप्' त्यप्। ततः स्त्रियां टाप्]

सुतष्टम् सुष्ठु सुखस्य निर्वर्त्तकम् (मन्त्रं=विचारम्) २.३५.२. **सुतष्टः**=उत्तमेन शिल्पिना निर्मितः (रथः) ७.३४.१. [सु+तक्षू तनूकरणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

सुतसोमम् निष्पादितपदार्थविद्यम् (सखायम्) ५.३१.१२. सुतः सोम ऐश्वर्यं यस्मिँस्तम् (गृहम्) ५.३०.१. **सुतसोमस्य**=सुता उत्पादिताः सोमाः पदार्था येन तस्य (सत्पुरुषस्य) २.१२.६. **सुतसोमः**=सुतो निष्पन्नः सोम ऐश्वर्यं यस्मात् सः (यज्ञः=सङ्गतो व्यवहारः) ३.३२.१२. निष्पादितैश्वर्यः (राजा) ५.३७.५. सुतः सोम ऐश्वर्यं येन सः (विद्वज्जनः) १.१६७.६. **सुतसोमाय**=सुतः सोम ऐश्वर्यमोषधिरसो वा येन तस्मै (वाघते=मेधाविने जनाय) ४.२.१३. **सुतसोमाः**=सुता उत्पादिताः सोमा ओषध्यादिरसा विद्यार्थं यैस्ते (विद्वज्जनाः) १.२.२. [सुत-सोमन्पदयोः समासः। सुतः=षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोरौणाः० क्तः। सोमः=षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० मनिन्]

सुतसोमासः सुताः सम्पादिता उत्तमाः पदार्था यैस्ते (मेधाविजनाः) १.४४.८. निष्पादितैश्वर्यौषधयः (नरः=नायका जनाः) ५.२९.१२. [सुनसोममिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

सुतावतः प्राप्तपदार्थविद्यान् (वाघतः=ऋत्विजः) १.३.५. ऐश्वर्ययुक्तस्य (सज्जनस्य) ३.२५.४. निष्पन्नैश्वर्यकोशस्य ३.५८.९. निष्पादितवतः (ब्रह्माणि=अन्नानि धनानि वा) २०.८८. प्रशस्तानि सुतानि वेदविद्वत्प्रेरितानि कर्माणि यस्य तस्य (जनस्य) ३५.१. **सुतावान्**=प्रशस्तोत्पन्नपदार्थयुक्तः (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्षः) १. ८४.९. [सुतप्राति० मतुप्। सुतः=षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोरौणा० क्तः]

सुतासः सम्पादिताः (सोमासः=ओषधिरसाः) १.१३७.२. विद्यासुशिक्षाभ्यां निष्पन्नाः (प्रजाजनाः) ३३.७०. ईश्वरेणोत्पादिताः (इन्दवः=रसाः) १.१६.६. विद्यैश्वर्ये प्रादुर्भूताः (विद्यार्थिजनाः) ७.२६.२. ऐश्वर्यवन्तः (मतयः=विद्वज्जनाः) ३३.७८. निष्पादिता रसाः २.११.११. प्राप्ताः (मतयः) १.१६५.४. [षुञ् अभिषवे

(स्वा०) धातोरौणा० क्तप्रत्यये सुतः । ततो जसोऽसुक्]

सुतासुताभ्याम् निष्पादिताऽनिष्पादिताभ्याम् (अश्वि-भ्यां=विद्याव्यापिभ्यां योगिजनाभ्याम्) १९.९५. **सुताऽसुतौ**=प्रेरिताऽप्रेरितौ धर्माऽधर्मौ १९.७८. [सुत-असुतपदयोः समासः । सुतः=षुञ् अभिषवे (स्वा०) षू प्रेरणे (तुदा०) धातोर्वा क्तः । असुतः=नञ्-सुतपदयोः समासः]

सुतीर्था शोभनानि तीर्थानि दुःखतारकाण्याचार्य-ब्रह्मचर्य-सत्यभाषणादीनि येषां तान् (धार्मिकान् जनान्) ४.२९.३. [सु-तीर्थपदयोः समासे 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण शस आकारादेशः । तीर्थः तॄ प्लवनसन्तरणयोः (भ्वा०) धातोः 'पातॄतुदिवचि०' उ० २.७. सूत्रेण थक्]

सुतीर्था शोभनानि तीर्थानि वेदाध्ययनधर्माचरणादीनि आचरितानि यया सा (धीः) ४.११. [सुतीर्थ इति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

सुतुकः सुष्ठु विद्यावृद्धः (विद्वज्जनः) १.१४९.५. **सुतुकान्**=शोभनानि तुकानि अपत्यानि येषान्तान् (राज-पुरुषान्) ७.१८.६. [सु+तकति गतिकर्मा (निघं० २.२४) धातोर्बाहु० औणा० डुकन् । सु-तुक्पदयोर्वा समासे समा-सान्तश्छान्दसोऽच् । तुक् अपत्यनाम । निघं० २.२. सुतुकः सुतुकनः सुप्रजाः नि० ४.१८.]

सुतुका सुष्ठु वर्धकानि (वृत्रा=धनानि) ६.२२.१० [सु-तुकपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि । [तुकः=तु गति-वृद्धिहिंसासु (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० कन्]

सुतुकाः सुष्ठु आदात्र्यः (आपः=जलानि) १.१७८.२ [सु-तुकापदयोः समासः । तुका=तु गतिवृद्धिहिंसासु(अदा०) धातोः बाहु० औणा० कन् । ततः स्त्रियां टाप्]

सुतेगृभम् उत्पन्ने जगति गृहीतम् (उपकारम्) ५.४४.५. [सुते इत्युपपदे ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातो-र्मूलविभुजादित्वात् कः । 'कृतो बहुलमिति' कर्मणि कः । 'हृ-ग्रहोर्भश्छन्दसी' ति हस्य भकारादेशः । समासे सप्तम्या अलुक्]

सुत्याम् सुन्वन्ति यया 'क्रियया तस्याम् ५.७. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः 'संज्ञायां समजनिपद०' अ० ३.३.९९. सूत्रेण छन्दस्यसंज्ञायामपि स्त्रियां क्यप् । ततष्टाप् सुत्याः—अग्निष्टोमोऽत्यग्निष्टोम उक्थ्यः षोडशिमांस्ततः । वाजपेयोऽतिरात्रश्चाप्तोर्यामात्र सप्तम इत्येते सुत्याः । गो० पू० ५.२३.]

सुत्रात्रः यस्सुष्ठु रक्षकान् रक्षति सः (राजा) ६.६८.७. [सुत्रोपपदे त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः कः । सुत्राः=सूपपदे त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सुत्रात्रा यः सुष्ठु त्रायते तेन (न्यायेन) ५.७०.३. [सुत्रात्र इति व्याख्यातम् । ततस्तृतीयाया आकारादेश-श्छान्दसः]

सुत्रात्रासः सुष्ठु त्रातारः (पञ्चजनाः=उत्तममनुष्याः) ६.५१.११. [सुत्रात्र इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

सुत्रामा यः सुष्ठु त्रायते रोगाच्छरीरं सः (सविता=सद्वैद्यः) १९.८५. सुष्ठु पालकः (इन्द्रः=राजा) २१.५८. सुष्ठु रक्षकः (इन्द्रः) २०.५१. भा०—न्यायेन प्रजापालन-तत्परः (इन्द्रः) २०.५२. सूद्योगी, सुष्ठुत्राता (सभेशः) २०.७२. सम्यक् पालकः (इन्द्रः) ६.४७.१३. **सुत्रा-माणम्**=शोभनानि त्रामाणि रक्षणादीनि यस्यास्ताम् (नावम्) २१.६. सुष्ठु रक्षकम् (इन्द्रं=सेनेशम्) २१.४०. **सुत्राम्णे**=सुष्ठु रक्षकाय (जनाय), प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम्०' इत्यनेन करणे मनिन् २०.३३. सुष्ठु त्राणाय १०.३२. [सु+त्रैङ् पालने (भ्वा०) धातोर्मनिन्]

सुदक्षम् सुष्ठु बलयुक्तम् (हृद्यं पतिम्) ७.१.६. उत्तम-बलचातुर्यम् ६.१९.८. **सुदक्षः**=शोभनं दक्षं चातुर्ययुक्तं बलं यस्य (इन्द्रः=विद्वज्जनः) १.१०१.६. शोभनं दक्षं बलं यस्य सः (सविता=राजा) ६.७१.१. सुष्ठुविज्ञानः (परमे-श्वरो विद्वज्जनो वा) १.९१.२. सुष्ठुबलोपेतः (वीरपुरुषः) ७.२.६. सुष्ठु दक्षो बलं यस्मात् सः (अग्निः=विद्युदादि-कार्यकारणस्य स्वरूपः) २.९.१. [सु-दक्षपदयोः समासः । दक्षः बलनाम निघं० २.९. दक्षाय=अन्नम् निघं० ११.३०.]

सुदक्षा सुष्ठु चतुरौ (अश्विना=शिल्पविद्याध्यापका-ध्येतारौ, स्वामिसेवकौ वा) ३.५८.७. [सुदक्षमिति व्याख्या-तम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः । आदित्यो दक्षः नि० ११.२३. दक्षः=समर्द्धयतिकर्मणो दक्षधातोर्वा कर्त्तर्यच्]

सुदक्षिणम् शोभना दक्षिणा यस्य तम् (राजानम्) ७.३२.३. [सु-दक्षिणापदयोः समासः । दक्षिणा दक्षतेः समर्द्धयतिकर्मणो व्यृद्धं समर्द्धयति नि० १.७.]

सुदत्र सुष्ठु दातः (अग्ने=राजपुरुष) ७.८.३. **सुदत्रः**=सुष्ठु ज्ञानकर्ता (विद्वज्जनः) ८.१६. सुष्ठु दत्राणि दानानि यस्मात् सः (सुपुत्रः) १.१६४.४९. शोभनं दत्रं दानं यस्य सः (पुरुषः पतिर्वा) ३८.५. सुष्ठु सुखं ददातीति सः (त्वष्टा=जगदीश्वरः) २.२४. सुष्ठुदानः (राजा) ७.३४.२२. सुदानः (अध्यापको गृहपतिः) ८.१४. [सु-दत्रपदयोः समासः ।

सुदत्रः=कल्याणदानः नि० ६.१४. सु+डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्बाहु० औणा० कत्रन् । दत्रम् हिरण्यनाम निघं० १.२.]

सुदर्शतरः सुष्ठु द्रष्टुं योग्यः सुदर्शोऽतिशयेन सुदर्शः पूर्णकलश्चन्द्र इव (न्यायाधीशः) १.१२७.५. [सुदर्शप्राति० अतिशायने तरप् । सुदर्शः=सु+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

सुदंससः शोभनानि दंसांसि कर्माणि येषान्ते (वीरा जनाः) १.८५.१. **सुदंससा**=शोभनानि दंसांसि कर्माणि यस्मिन् तेन (श्रवसा=पृथिव्याद्यन्नेन) १.६२.८. **सुदंसाः**=शोभनानि धर्म्याणि दंसांसि कर्माणि यस्य सः (परमेश्वरः) ३.३२.८. शोभनानि दंसांसि यस्यां सा (उषाः=प्रभातवेला) ३.६१.४. [सु-दंसस्पदयोः समासः । दंसः कर्मनाम निघं० २.१. दंशो दशतेः नि० १.२०.]

सुदंससा शोभनानि दंसांसि कर्माणि ययोस्ते (द्यावा-पृथिव्यौ) ६.७०.६. प्रशंसितकर्मणी (क्षितिसूर्यौ) १.१५९.१. [सुदंसस् इति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सुदानवः शोभनं दानं येभ्यो मरुद्भ्यस्ते १.२३.९. सुष्ठुदानाः (मरुतः=उत्तममनुष्याः) ७.५९.१०. सुष्ठु दानवो दानानि येभ्यस्ते (वायवः) १.६४.६. सुष्ठु दातारः (वायवः) १.१७२.१. प्रशस्तदानकर्त्तारः (मरुतः=सज्जनाः) १.१७२.२. उत्तमविद्यादिशुभगुणदानाः (नरः=नायका जनाः) ५.५३.६. सुष्ठु दानहेतवः (मरुतः=वायवः), प्र०—अत्र 'दाभाभ्यां नुः' उ० ३.३२. इति सूत्रेण नुः प्रत्ययः १.१५.२. **सुदानवे**=उत्तमदानकर्त्रे (विद्वज्जनाय) ६.२.४. शोभना दानवो दानानि यस्य तस्मै (जनाय) १.४७.८. सुष्ठु दानकरणशीलाय (यजमानाय) १.९२.३. उत्तमदानाय (सुपात्राय) ७.३१.२. **सुदानुम्**=शोभनान् दातारम् (अग्निं=पावकम्) ३.२६.१. **सुदानुः**=सुष्ठु दाता (विप्रः+मेधाविजनः) ३.२९.७. उत्तमदानः (जनः) ६.६६.५.. **सुदानू**=शोभनानि दानानि ययोस्तौ (मित्रा-वरुणौ=अध्यापकोपदेशकौ) ६.६७.२. सुष्ठुदानशीलाविव वर्त्तमानौ (अश्विनौ=सभासेनेशौ) १.११७.२४. [सु-दानु-पदयोः समासः । दानुः=डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'दाभाभ्यां नुः' उ० ३.३२. सूत्रेण नुः । सुदानवः कल्याणदानाः नि० ६.२४.]

सुदामन् सुनियमबद्ध (इन्द्र=दुःखविदारक राजन्) ६.२४.४. सुष्ठु दातः (राजन्) ६.२०.७. [सु+डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कर्त्तरि मनिन्]

सुदासम् शोभना दासा दातारः सेवका वा यस्य तम् (सत्पुरुषम्) ७.१९.३. शोभनदानम् ३.३५.९. सुष्ठु दातारं सेवकं वा (जनम्) ७.३३.३. **सुदासः**=श्रेष्ठा दासाः सेवका दानानि वा यस्य सः (प्रजाजनः) ७.३२ १०. उत्तम-विद्यादानः (राजा) ७.१८.२५. **सुदासे**=सुष्ठु दातरि (सत्पुरुषे) ७.१८.१५. सुष्ठु दातव्ये व्यवहारे ७.१८.५. शोभना दासा दानकर्त्तारो यस्मिन् देशे तस्मिन् १.६३.७. सुष्ठु दानाख्ये व्यवहारे ७.६०.९. सुष्ठु दाने १.११२.१९. [सु-दासपदयोः समासः । दासः=डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्बाहु० औणा० सः । अथवा दंसु उपक्षये (दिवा०) धातोः 'दंसेष्टटनौ न आ च' उ० ५.१०. सूत्रेण टः । नस्य चाकारादेशः । दासो दस्यतेरुपदासयति कर्माणि नि० २.१७.]

सुदासे शोभना दासा दातारो ययोस्ते (द्यावापृथिवी=भूमिविद्युतौ) ७.५३.३. [सु-दासपदयोः समासः । ततष्टाप् स्त्रियाम् । ततः प्रथमाद्विवचनम्]

सुदासे सुदानाय (करदातृजनाय) ७.१९.६. यः सुष्ठु ददाति तस्मै (सुपात्राय जनाय) ७.२५.३. [सु+डुदाञ् दाने (जु०) धातोरौणा० असुन् । सुदाः कल्याणदानः नि० २.२५.]

सुदास्तराय अतिशयेन दात्रे (सज्जनाय) १.१८५.९. अतिशयेन सुष्ठु प्रदात्रे (उपकारिजनाय) १.१८४.१. [सुदास्प्राति० अतिशायने तरप् । सुदास्=सु+डुदाञ् दाने (जु०)+असुन्]

सुदिनत्वम् उत्तमदिनस्य भावम् २.२१.६. **सुदिनत्वे**=शोभनानां दिनानां भावे ३.२३.४. [सु-दिनपदयोः समासे भावे त्वः]

सुदिनम् शोभनश्च तद्दिनश्च तत् १८.६. **सुदिनानि**=सुखकराणि दिनानि ४.४.६. **सुदिने**=शोभने समये १.१८६.९. **सुदिनेषु**=सुखेन वर्त्तमानेष्वहःसु ४.३७.१. [सु-दिनपदयोः समासः । सुदिनम् सुखनाम निघं० ३.६. दिनम् अहर्नाम निघं० १.९.]

सुदिना शोभना दिनानि येषु तानि (अहानि) ७.११.२. सुखयुक्तानि दिनानि ७.१८.२१. [सु-दिनपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि]

सुदिना उत्तमदिना (पृश्निः=बुद्धिः) ५.६०.५. **सुदिनाः**=शोभनानि दिनानि याभ्यस्ताः (उषसः) १.१२४.९. [सु-दिनपदयोः समासे कृते ततः स्त्रियां टाप्]

सुदीतयः प्रशंसितप्रकाशाः (विद्वज्जनाः) ५.४६.६. शोभना दीतिर्विद्यादीप्तिर्येषान्ते (विद्वांसो जनाः), प्र०—अत्र 'छान्दसो वर्णलोपो वा' इति प्लोपः १.१५९.४. **सुदीतिभिः**=सुष्ठु दीप्तिभिः ६.४८.३. प्रशस्तप्रकाशैः ५.६४.५. सुष्ठुदानैः ५.८.४. **सुदीतिम्**=सुरक्षकम् (अग्निं=विद्वज्जनम्) ३.१७.४. सुष्ठु दीतिः क्षयो यस्मात्तम् (अग्निं=पावकम्) ३.२.१३. [सु-दीप्तिपदयोः समासः । छान्दसो वर्णलोपो वेति प्लोपः । अथवा सु-दीतिपदयोः समासः । दीतिः=दीङ् क्षये (दिवा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

सुदीती उत्तमया दीप्त्या ७.१.२१. [सुदीतिरिति व्याख्यातम् । ततष्टास्थाने 'इयाडियाजीकाराणामुपसंख्यानम्' इतीकारादेशः । पूर्वसवर्णदीर्घो वा 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण]

सुदीदितिम् विद्याविनयप्रकाशयुक्तम् (देवं=विद्वांसमुपदेशकम्) ३.९.१. [सु+दीदयति ज्वलतिकर्मा (निघं० १.१६.) धातोः क्तिन् । ततो अर्श आदित्वान् मत्वर्थेऽच्]

सुदीदिहि सम्यक् प्रकाशय ६.४८.३. [सु+दीदयति ज्वलतिकर्मा (निघं० १.१६.) धातोर्लोट्]

सुदीयतम् सर्वथा दद्यातम् ५.७४.९. [सु+दीयति गतिकर्मा (निघं० २.१४.) धातोर्लोट् । अत्र दानार्थे दीयति]

सुदुघा सुष्ठु कामस्य प्रपूरिका (पृश्निः=बुद्धिः) ५.६०.५. सुष्ठु सुखेन दुह्यत इति (धेनुः=गौः), प्र०—अत्र 'दुहः कप् घश्च' इति कर्मणि कप् १९.८६. कामान् या सुष्ठु दोग्धि प्रपूर्त्ति सा (स्त्री) २०.७५. सुष्ठु प्रपूरिका (धेनुः=वाक्) २.३५.७. **सुदुघाम्**=सुष्ठु कामपूर्णकर्त्रीम् (धेनुं=वाचम्) ६.३५.४. **सुदुघाः**=सुष्ठु दोग्धुमर्हाः (अपः=कर्माणि) ५.३१.८. सुष्ठु कामान् पूरयित्र्यः (विदुष्यः स्त्रियः) ७.३६.६. कामानां पूरयित्रीः (धाराः=वाचः) ७.४३.४. सुष्ठु कामानामलङ्कर्त्तारः (उस्राः=किरणाः) ४.१.१३. **सुदुघे**=सुष्ठु कामप्रपूरिके (धेनू=गावौ) २८.६. सुष्ठु कामवर्द्धिके (रात्रिदिने) २८.१६. [सु+दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः 'दुहः कब् घश्च' अ० ३.२.७०. सूत्रेण कप् घादेशश्च । ततः स्त्रियां टाप् । सुदुघाम्=सुदोहनाम् ११.४३.]

सुदुघामिव यथा कश्चिन्मनुष्यो बहुदुग्धदात्र्या गोः पयो दुग्ध्वा स्वाऽभीष्टं प्रपूरयति तथा, अ०—दोहनसुलभां गामिव १.४.१. [सुदुघाम्-इवपदयोः समासः । सुदुघेति व्याख्यातम्]

सुदुघेव यथा सुष्ठु कामधुक् (धेनुः=वाक्) १.१८६.४. [सुदुघा-इवपदयोः समासः । सुदुघेति व्याख्यातम्]

सुदुदुह्रे सम्यक् प्रपूरयन्ति ५.६३.२. [सु+दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोर्लिट् । 'बहुलं छन्दसि' अ० ७.१.८. सूत्रेण रुडागमः]

सुदृशम् सम्यग् द्रष्टुं योग्यं दर्शकं वा (अग्निं=विद्वज्जनम्) ३.१७.४. योगाभ्यासेन द्रष्टुं योग्यं, सुष्ठु दर्शकं वा (परमात्मानम्) ६.१५.१०. **सुदृशः**= ये सुष्ठु पश्यन्ति ते (देवाः=विद्वज्जनाः) ५.३.४. सुष्ठु द्रष्टव्यस्य (राज्ञो विद्वज्जनस्य वा) ४.२३.६. [सु+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्विप् । 'कृतो बहुलं वे' ति कर्मण्यपि क्विप्]

सुदृशी सुष्ठु दर्शनं यस्याः सा (स्त्री) १.१२२.२. **सुदृशीः**=शोभनं दृग्दर्शनं यासान्ताः (प्रजाः) ५.४४.२. [सु-दृशपदयोः समासे स्त्रियां ङीप् । दृशः=दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'त्यदादिषु दृशो०' सूत्रेण निरुपपदादपि छन्दसि कञ्]

सुदृशीकम् सुष्ठु द्रष्टुं योग्यम् (स्वः=सुखम्) ४.१६.४. **सुदृशीकः**=सुष्ठु दर्शनीयो दर्शयिता वा (अग्निः) ५.४.२. [सु+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कीकन्]

सुदृशीकरूपः सुष्ठु दर्शनीयस्वरूपः (वैश्वानरः=राजा) ४.५.१५. [सुदृशीक-रूपपदयोः समासः । सुदृशीकमिति व्याख्यातम्]

सुदृशीव सुष्ठु द्रष्टुं योग्येव (पुष्टिः) ४.१६.१५. [सुदृशी-इवपदयोः समासः । सुदृशीति व्याख्यातम्]

सुदेवम् शोभनं विद्वांसम् (जनम्) २८.१२. शोभनश्चासौ देवो दिव्यगुणो दाता च तम् (विद्वज्जनम्) १.७४.५. **सुदेवः**=शुभैर्गुणकर्मस्वभावैर्देदीप्यमानः (विद्वज्जनः) १.८४.१८. [सु-देवपदयोः समासः । सुदेवः कल्याणदेवः कमनीयदेवो वा नि० ५.२७.]

सुदेव्यम् सुष्ठु देवेषु विद्वत्सु भवं विज्ञानम् १.११२.१९. [सु-देवपदयोः समासे भवार्थे यत्]

सुदोघे कामानां सुष्ठुप्रपूरिके (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ३.१५.६. [सु+दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोः कर्त्तर्यच् । ततः स्त्रियां टाप् । हस्य घकारो वर्णव्यत्ययेन]

सुद्याभ्यः सुष्ठु क्लेदिकाभ्यः (अद्भ्यः=जलेभ्यः) २२.२५.

सुद्युतः अभितः प्रकाशमानस्य (अग्नेः=अध्यापकस्य) १.१४३.३. [सु+द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सुद्युते शोभना द्युतिर्यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.१४७.१. [सु-द्युतिपदयोः समासः]

सुद्युम्नाम् शोभनप्रकाशयुक्ताम् (घृताचीं=रात्रीम्) ३.१६.२. [सु-द्युम्नम्पदयोः समासः। ततष्टाप् स्त्रियाम्। द्युम्नम् धननाम निघं० २.१०. द्युम्नं द्योततेर्यशो वा अन्नं वा नि० ५.५.]

सुद्योत्मा सुष्ठु प्रकाशः (होता=विद्यादातृजनः) १.१४१.१२. **सुद्योत्मानम्**=सुष्ठु देदीप्यमानम् (अग्निं=पावकम्) २.४.१. [सु+द्युत दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्मनिन्]

सुद्रवम् यः सुष्ठु द्रवति गच्छति धावति तम् (नेमिं=चक्रम्) ७.३२.२०. [सु+द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच्]

सुद्रविणः शोभनानि द्रविणांसि यस्मात्तत्सम्बुद्धौ (ईश्वर विद्वज्जन वा) १.९४.१५. [सु-द्रविणस्पदयोः समासः। द्रविणम् बलनाम निघं० २.९. धननाम निघं० २.१०.]

सुधनौ धर्मेण जातश्रेष्ठधनौ (अध्यापकोपदेशकौ) ५.३४.८. [सु-धनपदयोः समासः]

सुधन्वने शोभनानि धन्वानि धनूंषि यस्य तस्मै (जनाय) १६.३६. **सुधन्वा**=शोभनं धनुर्यस्य सः (वीरजनः) ५.४२.११. [सु-धनुष्पदयोः समासः। ततः 'धनुषश्च' अ० ५.४.१३२ सूत्रेण समासान्तोऽनङ्]

सुधर्म शोभनो धर्मो यस्य तत्सम्बुद्धौ (पुरुष स्त्रि वा) ३८.१४. हे सुष्ठुधर्मशील (परमात्मन्) आर्याभि० २.३१, ३८.१४. परमेश्वर ऋ० भू० १५२. [सु-धर्मपदयोः समासः]

सुधातु शोभना धातवो यस्मिन् गृहे तत् ७.६०.११. [सू-धातुपदयोः समासः]

सुधातुदक्षिणम् शोभना धातवो दक्षिणा यस्य दातुस्तम् (पुरुषम्) ७.४६. [सु-धातु-दक्षिणापदानां समासः]

सुधातुम् शोभना धातवः शरीरस्था मन-आदयः सुवर्णादयो वा यस्य तम् (यज्ञपतिम्) १.१२. [सु-धातुपदयोः समासः]

सुधाराः शोभना धारा यासान्ताः (विदुष्यः स्त्रियः) ७.३६.६. [सु-धारापदयोः समासः। धारा वाङ्नाम निघं० १.११.]

सुधाः शोभनतया दध्याः ३.३६.१. [सु+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोर्लुङ् मध्यमैकवचनम्। अड-भावश्छान्दसः]

सुधितम् सुष्ठु हितम् (मन्त्रं=गूढं विचारम्) ७.३२.१३. सुष्ठु स्थितम् (अग्निम्) ६.१५.२. सुष्ठुप्रसन्नम् (मित्रम्) ५.३.२. सुष्ठु धृतम् (मनः) १.१४०.११. सुधितः=सुष्ठु हितो हितकारी (मित्रः=सखा) ४.६.७. सुहितस्तृप्तः (जनः) प्र०—अत्र 'सुधितवसु०' इति सूत्रेण ह्रस्व धः ४.५०.८. **सुधितानि**=सुष्ठु तृप्तिकराणि (प्रयांसि=अन्नादीनि वस्तूनि) ६.१५.१५. **सुधिते**=सुष्ठु हितकरे (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २८.१४. [सु-हितपदयोः समासः। 'सुधितवसुधित०' अ० ७.४.४५. सूत्रेण सुपूर्वस्य दधातेः क्तप्रत्यये इत्त्वमिडागमो वा प्रत्ययस्य निपात्यते]

सुधिता सुष्ठु धृतानि (विज्ञानानि) ३.११.८. [सुधितमिति व्याख्यातम्पूर्वपदे। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सुधितेभिः सुष्ठु तृप्तैः (अत्कैः=अश्वैः) ६.३३.३. [सुधितं व्याख्यातम्। ततो भिस ऐस् न भवति 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

सुधितेव सुष्ठु धृतेव (दिद्युत्=देदीप्यमाना विद्युदिव १.१६६.६. [सुधिता-इवपदयोः समासः। सुधिता=सुधितप्राति० टाप् स्त्रियाम्]

सुधुरः शोभना धुरो धारणानि येषान्ते (मनुष्याः) १.७३.१०. शोभना धूर्यस्य सः (वाजी=सुशिक्षितस्तुरङ्गः) ३.३८.१. [सु-धुर्पदयोः समासः। 'ऋक्पूरब्धूःपथामानक्षे' अ० ५.४.७४ सूत्रेण समासान्तोऽकारः]

सुधुरा शोभनाधुरो ययोस्तौ (वृषणा=वायुविद्युतौ) ४.४३.४. शोभना धूर्ययोस्तौ (अश्वौ) ५.२७.२. [सुधुर इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सुधृष्टमम् सुष्ठु सकलं जगद्धारयति सोऽतिशयितस्तम् (सदसस्पतिम्=परमेश्वरम्) १.१८.६. [सुधृष्प्राति० अतिशायने तमप्। सुधृष्=सु+धृष प्रसहने (चुरा०) धातोः क्विप्। अत्र धारणे धृषिः]

सुधृष्टमे सुष्ठ्वतिशयेन प्रसोढ्र्यौ (भूमिसूर्यौ) १.१६०.२. [सुधृष्टममिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाबन्ताद् द्विवचनम्]

सुध्यः शोभना धीर्येषान्ते (प्रजाजनाः), प्र०—अत्र 'छन्दस्युभयथा' अ० ६.४.८६. अनेन पाक्षिको यणादेशः १.५४.१४. [सु-धीपदयोः समासः। 'छन्दस्युभयथा' अ० ६.४.८६ सूत्रेण यणादेशः पाक्षिकः]

सुनवत् निष्पादयेत् ४.२४.७. **सुनवाम**=निष्पादयेम ३.५३.४. पूजयाम १.६६.१. हम अर्पित करते हैं आर्याभि० १.३३, ऋ० १.७.७.१. **सुनुध्वम्**=निष्पादयत ४.३५.४. **सुनोत**=अभिषवं कुरुत ३.३०.७. निष्पादयत ७.३२.८. **सुनोति**=पिबति ५.३४.३. निष्पादयति ४.२४.६. निष्पन्नान् करोति १.१२२.६. **सुन्वतः**=अभिनिष्पादयतः १.२.६. **सुन्वते**=निष्पाद्यन्ते १.२०.७. **सुन्वन्**=सुनुयुः २१.५६. **सुन्वन्ति**=निष्पादयन्ति ५.३०.६. **सुन्विरे**=सुन्वन्ति, उत्पादयन्ति ७.३२.४. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लोट् लट्, लङ् लिट् च]

सुनावम् शोभनां सुनिर्मितां नावम् २१.७. [सु-नौ-पदयोः समासाद् द्वितीयैकवचनम्]

सुनिधा शोभने निधाने (कलायन्त्रे) ३.२६.१२. [सु+नि+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' सूत्रेण स्त्रियामङ् । ततष्टाप् स्त्रियाम् । सप्तम्येकवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सुनिरजम् सुखेन नितरां क्षेप्तुं योग्यम् (राधः=विद्यासुवर्णादिधनम्) १.१०.७. [सु+निर+अज गतिक्षेपणयोः (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अन्]

सुनिरीरमन् सुष्ठु नितरां रमयन्ति २.१८.३. [सु+नि+रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लुङ्]

सुनिर्मथा शोभनेन मन्थनेन ३.२६.१२. [सु+निर्+मथिन्प्राति० टा । मथिन्=मन्थ विलोडने (भ्वा०) धातोः 'मन्थः' उ० ४.११. सूत्रेण इनिः किच्च । 'भस्य टेर्लोपः' इति टा-प्रत्यये टेर्लोपः]

सुनिषीद सुष्ठुतया नित्यमास्व १.७६.२. [सु+नि+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लोट् । शिति सीदादेशः]

सुनिष्काः शोभनानि निष्कानि सुवर्णमयान्याभूषणानि येषां ते (राजपुरुषाः) ४.३७.४. शोभनानि सौवर्णानि निष्कानि येषान्ते (योद्धृजनाः) ७.५६.११. [सु-निष्कपदयोः समासः । निष्कः=षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः 'नौ सदेर्डिच्च' उ० ३.४५. सूत्रेण कन् । डित्त्वाट् टेर्लोपः]

सुनीतिभिः सुष्ठु धर्म्यैर्न्यायमार्गैः २.२३.४. **सुनीतिः**=शोभना नीतिर्न्यायो यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ६.४७.७. [सु-नीतिपदयोः समासः । नीतिः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

सुनीती शोभनेन न्यायेन ६.४५.१. (सुनीतिप्राति० टास्थाने 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण पूर्वसवर्णदीर्घः]

सुनीथः यः सुष्ठु नयति सः (देवः=सूर्यः) ३४.२६. शोभनं नीथो नयनं प्रापणं यस्य सः (अर्वाङ् वायुः) १.३५.१०. सुष्ठु नीथाः पदार्थप्राप्तयो यस्मात् सः (सुपर्णः=सूर्यः) प्र०—अत्र 'हनिकुषि०' उ० २.२. अनेन णीञ् प्रापणे इति धातोः क्थन् प्रत्ययः १.३५.७. **सुनीथाय**=सुखानां सुष्ठु प्रापणाय १.६२.१३. **सुनीथाः**=शोभनो नीथो न्यायो येषान्ते (पञ्चजनाः=उत्तममनुष्याः) ६.५१.११. सुष्ठु सङ्गताः (वसु-रुद्र-आदित्यसंज्ञका देवाः) ३.८.८. **सुनीथे**=शोभने न्याये ५.७६.२. [सु-नीथपदयोः समासः । नीथः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः (हनिकुषि०' उ० २.२. सूत्रेण क्थन् । सुनीथ प्रशस्यनाम निघं० ३.८.]

सुनीथासः सुनीतिप्रदाः (विद्वांसो जनाः) ५.६७.४. [सुनीथ इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुगागमः]

सुन्वतः यज्ञं कुर्वतः (मनुष्यस्य) ५.३४.६. अभिषवं कुर्वतः (जनस्य) २७.२६. सुखाऽभिषवकर्त्तुः (अग्नेः=शिल्पिनः) १.६४.८. यज्ञं सम्पादयतः (यजमानस्य) ६.५४.६. पदार्थान्निष्पादयतः (सज्जनस्य) ६.६०.१५. अभिगतधर्मविद्यस्य मनुष्यस्य १.४.१०. **सुन्वते**=ऐश्वर्यमिच्छुकाय प्राप्ताय वा (यजमानाय) १.८३.३. ओषध्याद्यभिषवसेवनं कुर्वते (यजमानाय) १.६२.३. सोमौषध्यादिसिद्धिसम्पादकाय (सत्योपदेशकाय) ६.१६.५. शिल्पविद्यानिष्पादकाय (जनाय) १.५१.१३. ऐश्वर्योत्पादकाय (जनाय) १.१४१.१०. सारनिष्पादकाय (महाविद्वज्जनाय) ६.३१.४. सर्वविद्यासिद्धान्तं निष्पादयते (यजमानाय) ७.२१. सुखानामभिषवित्रे (यजमानाय जनाय) १.८१.२. **सुन्वन्**=निष्पादयन् (इन्द्रः=राजा) ६.२०.१३. **सुन्वन्तम्**=यज्ञं कुर्वन्तम् (सज्जनम्) २.३०.७. **सुन्वन्तः**=ऐश्वर्यप्राप्ति के यत्न करते हुए (पूरवः=जीवो) स० प्र० २३८, १०.४८.५. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः शतृ]

सुन्वानः निष्पादयन्, अभिषवान् कुर्वन् (जनाय) १.१३३.७. **सुन्वानाय**=अभिषवं कुर्वते (जनाय) १.१३३.७. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः शानच्]

सुपतयन्ति सम्यक्तया पतिरिवाऽऽचरन्ति १.१३५.६. [पति पदादाचारे क्यजन्तात् सुपूर्वाल्लट्]

सुपत्नी शोभनः पतिर्ययोस्ते (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ६.३.७. **सुपत्नीः**=शोभना भार्या इव ६.४४.२३. शोभनाश्च ताः पत्न्यश्च ताः १२.३५. शोभनाः पत्नीः २०.४०.

[सु-पतिपदयोः समासे स्त्रियां ङीप् नकारश्चान्तादेशः]

सुपथा यथा सुकृतः शोभनेन धर्म्यमार्गेण गच्छन्ति तथा ५.३६. धर्म्येण सुगमेन सरलेन मार्गेण १.१८९.११. योगमार्गेण ७.४३. शोभनश्चासौ पन्थाश्च सुपथस्तेन १.२५.१२. विद्याधर्मयुक्तेनाऽऽप्तमार्गेण १.४२.७. अच्छे वेदोक्तधर्ममार्ग से सं० वि० २१४, ४०.१६. अच्छे धर्म-युक्त-आप्त लोगों के मार्ग से सं० वि० ७, ४०.१६ [सु-पथिन्पदयोः समासे टा-विभक्तौ 'भस्य टेर्लोपः' इति टेर्लोपः]

सुपथा शोभनः पन्था येषु तानि (गृहकृत्यानि) ६.६४.१. [सु-पथिन्पदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि]

सुपथ्यम् शोभनस्य पथो भावम् १८.११. [सु-पथिन्-पदयोः समासे भावे ष्यञ्]

सुपदी शोभनाः पादा यस्याः सा (विदुषी स्त्री) ३.३१.६. [सु-पादपदयोः समासे 'संख्यासुपूर्वस्य' सूत्रेण समासान्तोऽन्त्यलोपः । ततः स्त्रियाम् 'पादोऽन्यतरस्याम्' इति ङीपि 'पादः पदि' ति पदादेशः]

सुपप्तनी शोभनं पतनं गमनं ययोस्तौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८२.५. [सु-पतनपदयोः समासे द्विवचनस्यैकारादेशश्छान्दसः । पुमागमश्छान्दसः]

सुपरिविष्टाः तत्तत्सेवासम्मुख्या एव, तथाभूता एव, अ०—कृतब्रह्मचर्याः स्वसमान् वरान् स्वीकृतवत्यः (कुमार्यः) ६.१३. [सु+परि+विश प्रवेशने (तुदा०) धातोः क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

सुपर्णचित् यः शोभनानि पर्णानि पालनानि चिनोति सः (विद्वज्जनो जिज्ञासुर्वा) २७.४५. [सुपर्णोपपदे चिञ् चयने (स्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । सुपर्णः पदनाम निघं० ५.४. सुपर्णा वाङ्नाम निघं० १.११ अश्वनाम निघं० १.१४. रश्मिनाम निघं० १.५.]

सुपर्णम् शोभनानि पर्णानि पालनानि पूरणानि यस्य तं रथादिकम् २९.४८. सुपर्णा रश्मयो विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (सूर्यम्) १.१६४.५२. शोभनं पर्णं पालनं यस्य तम् (वीरजनसमूहम्) ६.७५.११. सुष्ठु पालनपूर्त्तिकरम् (अग्निं=पावकम्) १८.५१. **सुपर्णः**=शोभनानि पर्णानि लक्षणानि यस्य सः, शोभनपतनशीलो वा (सुन्दरशाखापत्रपुष्पफलमूलो वृक्ष इव वेदादिशास्त्राध्येताऽध्यापकः पक्षी वा) १२.४१. शोभनानि पर्णानि पतनानि यस्य सः (चन्द्रमा=शैत्यकरश्चन्द्रलोकः) ३३.९०. शोभनानि पालितान्यङ्गानि यस्य सः (पतिः) १३.१६. पक्षिविशेषः २४.३७. शोभनानि पर्णानि पालनानि पूर्णानि कर्माणि यस्य सः जिसके उत्तम-पालन और पूर्ण कर्म हैं, वह (ईश्वर) स० प्र० १५, १.१६४.४६. शोभनानि पर्णानि पूर्णानि शुभलक्षणानि यस्य सः (विद्वान् योगिजनः) १७.७२. शोभनं पर्णं पतनं गमनं यस्य सः (चन्द्रमाः) १.१०५.१. शोभन-पतनशीला रश्मयो यस्य सः (सूर्यः) १.३५.७. **सुपर्णान्**=शोभनपक्षान् पक्षिणः २४.२५. **सुपर्णाः**=शोभनपर्णाः सुष्ठु-पालनकर्माणः (जीवाः) १.१६४.२२. सूर्यस्य किरणाः १.१०५.११. रश्मयः १.१६४.४७. शोभनकर्माणो जीवाः १.१६४.२१. [सु-पर्णपदयोः समासः। पर्णः=पॄ पालनपूरणयोः (क्र्या०) धातोः 'धापॄवस्यज्यतिभ्यो नः' उ० ३.६ सूत्रेण नः । सुपर्णाः सुपतना आदित्यरश्मयः नि० ३.१२. सुपर्णः पदनाम निघं० ५.४. सुपर्णा रश्मिनाम निघं० १.५. अश्वनाम निघं० १.१४. वाङ्नाम निघं० १.११. सुपर्णाः=सुपतनानीन्द्रियाणि च नि० ३.१२. हरणा आदित्यरश्मयः नि० ७.२४. सुपर्णवयो वै सुपर्णः कौ० १८.४. वीर्यं वै सुपर्णो गरुत्मान् श० ६.७.२.६. प्रजापतिर्वै सुपर्णो गरुत्मान् । (ऋ० १०.१४९.३) श० १०.२.२.४. पुरुषः सुपर्णः श० ७.४.२.५. अथ ह वाऽएष महासुपर्ण एव यत् संवत्सरः तस्य यान् पुरस्ताद् विषुवतः षण्मासानुपयन्ति सोऽन्यतरः पक्षोऽथ यान् षडुपरिष्टात्सोऽन्यतर आत्मा विषुवान् । श० १२.२.३.७.]

सुपर्णा शोभनानि पर्णानि, गमनागमनादीनि कर्माणि वा ययोस्तौ (जीवेशौ) १.१६४.२०. सुष्ठु पर्णानि पालनानि ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.४३.३. चेतनता और पालनादि-गुणों से सदृश (ब्रह्म और जीव) स० प्र० २८३, १.१६४.२०. [सुपर्ण इति व्याख्यातम् । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सुपाणिम् शोभनौ धर्मकर्मकरौ पाणी श्रेष्ठौ व्यवहारौ वा यस्य तम् (देवं=दातारं विद्वज्जनम्) ६.४९.९. शोभनौ पाणी हस्तौ यस्य तम् (नरम्) ७.४५.४. **सुपाणिः**=शोभनहस्तो राजा ७.३४.२०. प्रशस्तहस्तः (देवः=पतिः) ११.६३. शोभनौ पाणी हस्तौ यस्य सः (देवः=विद्वज्जनः) ३.५४.१२. **सुपाणी**=शोभनाः पाण्यो व्यवहारा ययोस्तौ (राजानौ) १.७१.९. [सु-पाणिपदयोः समासः । सुपाणिः कल्याणपाणिः । पाणिः पणायतेः पूजाकर्मणः नि० २.२६. पाणिः=पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः 'अशिपणाय्यो रुडायलुकौ च' उ० ४.१३३ सूत्रेण इण् । आय-प्रत्ययस्य च लुक्]

सुपारम् सुखेन पारं गन्तुं योग्यम् (इन्द्रं=विद्वज्जनम्) ३.५०.३. **सुपारः**=शोभनः पारो यस्मात् सः (इन्द्रः=राजा) ६.४७.७. सर्वकामानां सुष्ठु पूर्त्तिकरः (करुणामयः परमेश्वरः) १.४.१०. **सुपाराः**=शोभनः पारः पालनादिकर्म येषान्ते (विद्वज्जनाः) ३.३३.६. [सु-पारपदयोः समासः । पारः=पार कर्मसमाप्तौ (चुरा०) धातोर्घञ् । कर्त्तरि वा अच् । अथवा पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्घञ्]

सुपारा सुखेन पारः पूर्त्तिर्यस्याः सा (वृष्टिः=शक्तिः) १.१५२.७. [सुपार इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

सुपारा सुखेन पारं गन्तुं योग्यानि (अर्णांसि=उदकानि) ७.१८.५. [सुपार इति व्याख्यातम् । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सुपारासः शोभनो विद्यायाः पारो येषान्ते (मनुष्याः) ३.३६.८. [सुपार इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

सुपाः सर्वथा रक्ष ४.२०.४. [सु+पा रक्षणे (अदा०) धातोर्लुङ् मध्यमैकवचनम् । अडभावः सिचो लुक् च छान्दसौ]

सुपिप्पलः शोभनानि पिप्पलानि फलानि यस्य सः (वृक्षः) २१.५६. सुन्दरफलः (वनस्पतिः) २८.२०. [सु-पिप्पलपदयोः समासः । पिप्पलम्=पिप्पलम् उदकनाम । निघं १.१२.]

सुपिप्पलाः शोभनानि पिप्पलानि फलानि यासां ताः (ओषधयः) ११.३८. शोभनफलाः (ओषधीः) ११.४८. **सुपिप्पलाभ्यः**=सुष्ठु-फलाभ्यः (ओषधीभ्यः) ६.२. [सुपिप्पल इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

सुपिशः सुष्ठु पिंशन्त्यवयुवन्ति ये ते (वायवः) १.६४.८. [सु+पिश अवयवे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सुपुत्रा शोभनाः पुत्रा यस्याः सा (अदिति=माता) ३.४.११. [सु-पुत्रपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सुपूतम् सुष्ठु पवित्रम् (विज्ञानम्) ४.५७.२. [सु+पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्तः]

सुपूर्णस्य सुष्ठ्वलञ्जातस्य (विद्वज्जनस्य) ६.४८.१८ [सु·पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणा० नक्]

सुपूर्णा या सुष्ठु पूर्यते सा (दर्विः) ३ ४६. [सुपूर्णमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

सुपृक्षः शोभनं पृक्षोऽन्नं यस्य सः (विद्वज्जनः) ७.३७.७. [सु-पृक्षपदयोः समासः। पृक्षः अन्ननाम निघं० २.७.]

सुपेशसम् शोभनानि पेशांसि रूपाणि यस्मात्तम् (वाजं=विज्ञानसमूहम्) १.६३.६. सुन्दरं रूपम् २.३४.१३. सुरूपम् (मन्त्रं=गूढं विचारम्) ७.३२.१३ अतीव सुन्दररूपम् ५.३०.१३. शोभनं पेशो रूपं यस्मात्तत् (रयिम्) १.४८.१३. **सुपेशसः**=सुष्ठु पेशो रूपं सुवर्णं वा येषान्ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५७.४. सु शोभनं पेशो रूपं येषान्तान् (प्राणिनः) २.३५.१. सुरूपा दीप्तयः २.३२.५. **सुपेशसा**=शोभनं पेशो रूपं हिरण्यं वा यस्मिँस्तेन (रथेन) १.४७.२. [सु-पेशस्पदयोः समासः । पेशः रूपनाम । निघं० ३.७. हिरण्यनाम । निघं० १.२]

सुपेशसा सुष्ठु पेशो रूपं ययोस्तावध्यापकोपदेशकौ २१.१७. प्रशंसास्वरूपे कार्यकारणे १.१८८.६. शोभनं सुखदं पेशो रूपं ययोस्ते (नक्तोषसा=अहोरात्रे) १.१३.७. सुरूपे (रात्रिदिने) १.१४२.७. सुन्दरं पेशः सुवर्णं रूपं वा ययोस्ते (द्यावापृथिवी= भूमिसूर्यौ ६.७०.१. सुन्दरस्वरूपवन्तौ विद्वांसावध्यापकोपदेशकौ २८. २६. सुखरूपे स्त्रियौ २१.३५. सुरूपौ (नरा=अध्यापकोपदेशकौ) २०.७४. [सु-पेशस्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः । सुपेशसमिति व्याख्यातम् ।

सुपोषः श्रेष्ठाः पोषाः पुष्टयो यस्य सः (पुरुषः) ३.३७. सर्वपुष्टियुक्त (भक्तजन) आर्याभि० २.३५, ३.३७ प्रशस्त-पुष्टिः (सभापती राजा) ७.२६. उत्तमपुष्टियुक्त (पुरुष) सं० वि० १४५, ३.३७. **सुपोषाः**=अनुत्तमपुष्टयः (गृहस्थजनाः) ८.५३. [सु-पोषपदयोः समासः । पोषः=पुष पुष्टौ (दिवा०) धातोर्घञ्]

सुप्तस्य शयानस्य (जनस्य) ३४.१. सोते हुए (जन) का स० प्र० २४६, ३४.१. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोः क्तः]

सुप्रकेतम् सुष्ठु प्रकृष्टः केतः प्रज्ञा यस्य तमध्यापकम् ४.५०.२. [सु+प्र+केतस्पदयोः समासे सलोपश्छान्दसः केतः प्रज्ञानाम । निघं० ३.६.]

सुप्रकेतेभिः शोभनः प्रकृष्टः केतो विज्ञानं येषान्तैः विद्वज्जनैः) १.१७१.६. [सु+प्र+केतस्पदयोः समासः । केतः प्रज्ञानाम निघं० ३.६. सलोपश्छान्दसः]

सुप्रचेतसः शोभनं प्रगतं चेतो विज्ञानं येषान्ते (विद्वांसो जनाः) १.१५६.४. [सु+प्र+चेतस्पदानां समासः । चेतः प्रज्ञानाम निघं० ३.६.]

सुप्रजाम् उत्तमां प्रजाम् ४.५३.७. [सु-प्रजापदयोः समासः । प्रजा=प्र+जनी प्रादुर्भावे (दिवा०)+डः]

सुप्रजावतीम् सुष्ठु प्रजा विद्यते यस्यां ताम् (इषम्=अन्नम्) १.१११.२ [सु-प्रजापदयोः समासान् मतुबन्तान् ङीप्]

सुप्रजावनिः यया शोभना प्रजा वनति सम्भजति सा (स्वाहा=वाक्) ५.१२. [सुप्रजोपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' सूत्रेण इनिः]

सुप्रजास्त्वाय शोभनाश्च ताः प्रजाः सुप्रजास्तासां भावाय, भा०-उत्तमप्रजाप्राप्तये १३.१ शोभनाः सन्तानादयश्चक्रवर्तिराज्यञ्च प्रजा यस्मात्तस्य भावस्तस्मै ३.६३. [सु-प्रजापदयोः समासे 'नित्यमसिच् प्रजामेधयोः' अ० ५.४.१२२. सूत्रेण समासान्तोऽसिच् । सुप्रजास्प्राति० भावे त्वः]

सुप्रजाः शोभना प्रजा यस्य स सुप्रजाः, स यथा स्यात् तथा (न्यायाधीशो राजा) ७.१८. सुष्ठु प्रजा-सहितः (सभापतो राजा) ७.२६. शोभना सुशिक्षा-सद्विद्यासहिता प्रजा यस्य सः (पुरुषः) ३.३७. विद्याविनययुक्ताः श्रेष्ठाः प्रजा येषान्ते (जनाः) ४.५०.६. प्रशस्तसन्तानाः (गृहस्थजनाः) ८.५३. [सु-प्रजापदयोः समासे 'नित्यमसिच् प्रजामेधयोः' इति समासान्तोऽसिच्]

सुप्रणयन्त सुष्ठु प्राप्नुयुः १.१४८.३. [सु+प्र+णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोर्लङ् । अडभावश्छान्दसः]

सुप्रणीतयः शोभना प्रगता नीतिर्न्यायो येषान्ते (पितरः=पालका विद्वांस उपदेशकाः) १९.५९. **सुप्रणीतिम्**=शोभनाः प्रकृष्टा नीतयो यस्यां ताम् (महीं=भूमिम्) २१.५. बहुराजप्रजाऽखण्डितनीतियुक्ताम् (नावम्) २१.६. **सुप्रणीतिः** सुष्ठु प्रगता नीतिर्येन सः (अग्निः=राजा) ४.२.१३. शोभना प्रशस्ता नीतिर्यस्य सः (विद्वज्जनः) १.७३.१. **सुप्रणीते** शोभना प्रकृष्टा नीतिर्न्यायो यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वान् राजपुरुष) ३.१५.४. सुष्ठु प्रकृष्टा नीतिर्यस्मात्तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) ३.१.१६ [सु-प्र-नीतिपदानां समासः । नीतिः=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

सुप्रणीती सुष्ठु प्रगता नीतिर्याभ्यान्तौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.४२.१८. धर्म्यनीतियुक्तौ (अश्विनौ=अध्यापकोपदेशकौ) ५.४३.१७. शोभनयोत्तमया नीत्या ५.७६.४. [सुप्रणीतिरिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घश्छान्दसः । अन्या टास्थाने पूर्वसवर्णदीर्घः]

सुप्रतिचक्षम् सुष्ठु प्रतिचष्टे पश्यत्यनेका विद्या येन तम् (अग्निं=विद्युदाख्यम्) ७.१.२. [सु+प्रति+चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि, अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोः करणे घञ्]

सुप्रतिष्ठ शोभनतया प्रतिष्ठ ४.६.१. [सु+प्र+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट्]

सुप्रतिष्ठानः सुष्ठु प्रतिष्ठानं प्रतिष्ठा यस्य सः (गृहपतिः) ८.८. [सु-प्रतिष्ठानपदयोः समासः । प्रतिष्ठानम्=प्रति+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

सुप्रतीकम् सुष्ठु रूपादिप्रतीतिकरम् (चक्षुः) ७.६१.१. शोभनानि प्रतीकानि प्रतीतिकराणि द्वारादीनि यस्मिँस्तत् (गृहम्) ६.२८.६. शोभना प्रीतिर्यस्य तम् (अग्निं=व्यापकं विद्युदाख्यम्) ११.२२. सुष्ठु प्रत्येति येन तम् (द्रविणं=धनं यशो वा) ७.१०.३. शोभनानि प्रतीकानि कृतानि येन तम् (परमेश्वरम्) ६.१५.१०. सुष्ठु प्रतियन्ति सुखानि यस्मात्तम् (अग्निं=विद्युतम्) ११.२८ **सुप्रतीकस्य**=सुष्ठु प्रतीतियुक्तस्य (अग्नेः=अध्यापकस्य १.१४३.३. **सुप्रतीकः**=सुष्ठु प्रतीतिकारकः (देवः=सभाध्यक्षः) १.९६.७. सुष्ठु प्रतीकं प्रतीतिकरं ज्ञानं यस्य सः (अग्निः=विद्वान् सभेशः) १७.५३. शोभनानि प्रतीकानि लक्षणानि यस्य सः (विद्वज्जनः) १२.३१. प्राप्तशुभगुणः (अग्निः=योगाभ्यासेन प्रकाशितात्मा) १७.७३. [सु-प्रतीकपदयोः समासः । प्रतीकम्=प्रति+इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० कन् । अथवा सु+प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० कीकन् धातोस्तुडागमः]

सुप्रतीका शोभनानि प्रतीकानि यस्याः सा (उषाः) १.९२.६. **सुप्रतीके**=सुष्ठु प्रीतिविषये (द्यावापृथिवी) १.१८५.६. सुष्ठु प्रतीतिकरे (रात्रिदिने) ५.५.६ [सु-प्रतीकपदयोः समासे कृते स्त्रियां टाप्]

सुप्रतीका शोभनानि प्रतीकानि प्रतीतिकराणि कर्माणि याभ्यान्तौ (बाहू) ६.७१.५. [सु-प्रतीकपदयोः समासे कृते द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सुप्रतीची सुष्ठु प्रत्यक् पश्चिमः कालो यस्यां सा भा०—भविष्यत्काले सुखकारिणी (अदितिः=विद्युद्वाग् वा) ४.१९. [सु-प्रत्यक्पदयोः समासे कृते स्त्रियाम् 'अञ्चतेश्चोपसंख्यानम्' इति ङीप् । प्रत्यक्=प्रति+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' इति क्विन्]

सुप्रतूर्त्तिम् सुष्ठु प्रकृष्टा तूर्त्तिः त्वरिता शीघ्रता यस्मिँस्तम् (देवं=विद्वांसमुपदेशकम्) ३.९.१. सुष्ठु प्रकृष्टा तूर्त्तिस्त्वरिता प्राप्तिर्यया ताम् (इडां=पृथिवीं वाणीं

वा) १.४०.४. **सुप्रतूर्त्तौ**=अतितूर्णगती (द्यावापृथिवी) १.१८५.७. [सु-प्र-तूर्त्तिपदानां समासः। तूर्त्तिः—ञित्वरा सम्भ्रमे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्प्रत्यये 'ज्वरत्वर०' इति वस्य उपधायाश्च स्थान ऊठ्]

सुप्रपाणम् सुष्ठु प्रकर्षेण पिबन्ति यस्मिन् स जलाशयः ५.८३.८. **सुप्रपाणे**=सुन्दरे जलपानस्थाने ६.२८.७. [सु+प्र+पा पाने (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

सुप्रयसम् सुष्ठु प्रयत्नवन्तम् (पुरुषार्थिजनम्) ६.११.४. सुष्ठु कमनीयम् (अग्निं=पावकम्) २.४.१. **सुप्रयसः**=शोभनानि प्रयांसि प्रतीतान्यन्नादीनि यस्मात्तस्य (अग्नेः=पावकस्य) २७.१५. **सुप्रयसा**=सुष्ठु प्रयत्नेन ४.४१.३. **सुप्रयाः**=सुष्ठु प्रयः प्रगमनमस्य सः (वायुः, पूषा=सूर्यः) ३३.४४. यस्सर्वान् सुष्ठु प्रीणाति सः (सत्पुरुषः) ७.३६.२. [सु+प्र+यसु प्रयत्ने (दिवा०) धातोर्घञर्थे कः। सुप्रयसप्राति० मत्वर्थे अर्श आदित्वादच्। अथवा सु+प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोरौणा० असुन्। सुप्रयाः सुप्रायणम् नि० ५.२७.]

सुप्रयावभिः ये सुष्ठु प्रयान्ति तैः (विद्वज्जनैः) ५.४४.१२. [सु+प्र+या प्रापणे (अदा०) धातोर्वनिप्]

सुप्रवाचनम् सुष्ठ्वध्यापनमुपदेशनञ्च ४.३६.३. सुष्ठु प्रकाशनमध्यापनं श्रावणं वा २.१३.१७. [सु+प्र+वाचनपदानां समासः। वाचनम्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्ल्युट्]

सुप्रवाचनाः सुष्ठु प्रवाचनमध्यापनमुपदेशनञ्च येषान्ते (पितरः=विद्वज्जनाः) १.१०६.३. [सु-प्र-वाचनपदानां समासः। वाचनम्=वच परिभाषणे (अदा०)+णिच्+ल्युट्]

सुप्रवोचम् सुष्ठूपदिशेयम् १.१६४.२६. [सु+प्र+वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्लुङि उत्तमैकवचनम्। अडभावश्छान्दसः]

सुप्रस्थाः सुप्रतिष्ठेः ६.२४.६. [सु+प्र+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लुङ्। मध्यमैकवचनम्। अडभावः]

सुप्राङ् यः सुष्ठु पृच्छति सः (अजः=जन्मादिरहितो जीवः) २५.२५. [सु+प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोः 'क्विब्वचिप्रच्छि०' सूत्रेण क्विप् दीर्घोऽसम्प्रसारणं च। कुत्वं छान्दसम्]

सुप्राची शोभना प्राक् पूर्वः कालो यस्यां सा, भा०—भूतकाले सुखकारिणी (अदितिः=विद्युद्वाग्वा) ४.१६. [सु-प्राच्पदयोः समासे स्त्रियां ङीप्। प्राच्=प्र+अञ्चु गतिपूजनयोः क्विन्]

सुप्रायणतमम् सुप्रयान्ति यस्मिँस्तदतिशयितम् (बर्हिः=अन्तरिक्षम्) ६.६३.३. [सुप्रायणप्राति० अतिशायने तमप्। सुप्रायणम्=सु+प्र+अय गतौ+ल्युट्]

सुप्रायणाः सुष्ठु प्रायणं गमनं यासां ताः [सत् स्त्रियः) २.३.५. सुखेन गमनाधिकरणाः (द्वारः=गृहद्वाराणि) २६.५. सुष्ठु प्रायणं प्रकर्षेण गमनं यासु ताः (द्वारः=द्वाराणि) २८.२८. सुष्ठु प्रकृष्टमयनं गमनं याभ्यः ताः (पत्नीः) ५.५.५. शोभनानि प्रकृष्टान्ययनानि यासु ताः (द्वारः=द्वाराणि) २८.५. सुष्ठु प्रकृष्टं भवनं गृहं यासु ताः (द्वारः=अवकाशरूपाः) २६.३०. [सु-प्रायणपदयोः समासः। प्रायणम्=प्र+अय गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्। सुप्रायणाः सुप्रगमनाः नि० ४.१८.]

सुप्रावतम् शोभनतया प्रकर्षेण पालयतम् १.४७.५. [सु+प्र+अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्लोट्]

सुप्रावीः सुष्ठु रक्षकः (विद्वज्जनः) २.२६.१. सुष्ठु प्रजारक्षाकर्त्ता (इन्द्रः=सेनापतिः) १.८३.१. सुष्ठु शुभगुणप्राप्तः (जनः) ४.२५.५. [सु+प्र+अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० ईः]

सुप्राव्यम् सुष्ठु प्रावितुं चालितुमर्हम् (वह्निम्) १.६०.१. **सुप्राव्यः**=सुष्ठु प्रकाशेन रक्षितुं योग्यः (सेनेशः) २.१३.६. **सुप्राव्ये**=सुष्ठु प्रकृष्टमवितुं प्रवेशितुं योग्यस्तस्मिन् (बुद्धिमज्जने) प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति वृद्धिनिषेधः १.३४.४. [सु+प्रुङ् प्लुङ्गतौ (भ्वा०) धातोर्ण्यत्। अथवा सु+प्र+अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोर्ण्यत्]

सुप्रीतम् सुष्ठु प्रीतिनिबद्धम् (लोकं=गृहाश्रमम्) ८.२६. **सुप्रीतः**=सुष्ठु प्रसन्नः (सज्जनः=) ६.१५.२. [सु+प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः क्तः]

सुप्रीताः सुप्रसन्नाः (योगिन्यो विदुष्यः स्त्रियः) ७.१५. **सुप्रीते**=सुष्ठु प्रीतिर्याभ्यां ते (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २८.१४. [सु-प्रीतापदयोः समासः। प्रीता=प्रीञ् तर्पणे कान्तौ च (क्र्या०) धातोः क्तः। ततष्टाप्]

सुप्रैतुः सुष्ठु विद्योपेतस्य (विद्वज्जनस्य) १.१९०.६. [सु+प्र+इण् गतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्। ततः षष्ठी]

सुप्वा सुष्ठुतया पुनाति पवित्रहेतुर्वा तेन (यज्ञेन) १.३. [सु+पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्विप्]

सुफला शोभनानि फलानि यस्यां सा (भूमिः)

४.५७.६. [सु-फलपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सुबन्धवः शोभना बन्धवो येषान्ते (अष्टौ सभासदः) १.१२६.५. **सुबन्धुम्**=शोभना बन्धवो भ्रातरो यस्य तम् (जगद्धितैषिजनम्) २५.३०. **सुबन्धुः**=शोभना बन्धवो भ्रातरः सखायो वा यस्य सः (युवा नरः) ६.५८.४. शोभनो भ्राता ३.१.३. [सु-बन्धुपदयोः समासः]

सुबर्हिषम् शोभनं बर्हिरन्तरिक्षमुदकं वा यस्य तम् (इन्द्रं=स्वकीयं जीवस्वरूपम्) २८.२७. शोभनानि बर्हिष्यन्तरिक्षोदक-विज्ञानानि यस्य तम् (विद्वज्जनम्) १.७४.५. **सुबर्हिः**=सुशोभनं बर्हिरन्तरिक्षं यस्मात् सः (अग्निः=पावकः) २१.१५. [सु-बर्हिष्पदयोः समासः। बर्हिः अन्तरिक्ष नाम निघं० १.३. उदकनाम निघं० १.१२.]

सुबाहुः शोभनभुजः (देवः=दिव्यगुणकर्मस्वभावः पतिः) ११.६३. शोभनौ बाहू यस्याः सा (सूत्तमा पत्नी) २.३२.७. [सु-बाहुपदयोः समासः]

सुबुधा सुन्दर ज्ञानी (स्त्री) सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.३१. उत्तमबुद्धियुक्त (स्त्री) सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.७५. [सु-बुधापदयोः समासः। बुधा बुध=अवगमने (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः। ततः स्त्रियां टाप्]

सुबोधि शोभनतया बुध्यस्व ३.३१.१४. [सु+बुध अवगमने (दिवा०) धातोर्लुङ्। अडभावः]

सुब्रह्मा शोभनानि ब्रह्माणि धनाऽन्नानि यस्य यद्वा सुष्ठु चतुर्वेदवित् (सिद्धेच्छो राजा) ७.१६.२. [सु-ब्रह्मन्-पदयोः समासः। ब्रह्म धननाम निघं० २.१०. अन्ननाम निघं० २.७. उदकनाम निघं० १.१२.]

सुभग शोभनैश्वर्य (भा०—विद्वन्राजन्) १५.३९. प्राप्तोत्तमैश्वर्य (अग्ने=विद्वज्जन) ३.१६.६. **सुभगम्**=उत्तमैश्वर्यम् (देवं=विद्वांसमुपदेशकम्) ३.६.१. **सुभगस्य**=प्रशंसितैश्वर्यस्य (देवस्य=राज्ञः) ४.१.६. वरैश्वर्यस्य (ऋत्विजः) ३.१८.५. **सुभगः**=सुन्दरैश्वर्यः (पुत्रः=विद्वज्जनः) १.१८१.४. शोभनो भगो धनैश्वर्यं वा यस्य सः (मर्त्यः), प्र०—भग इति धननाम निघं० २.१०, १.८६.७. **सुभगान्**=शोभनो भगो विद्यैश्वर्ययोगो येषां तान् (सत्योपदेशप्राप्तान् जनान्) १.४.६. [सु-भगपदयोः समासः। भगः धननाम निघं० २.१०. भगो भजतेः नि० १.७.]

सुभगत्वम् अत्युत्तमैश्वर्य्यम् २.२१.६. [सु-भगपदयोः समासे ततो भावे त्वः]

सुभगा सौभाग्यकारिणी (उषाः) १.९२.१२. शोभना भगा ऐश्वर्याणि यस्याः सा (उषाः) १.४८.७. सुष्ठ्वैश्वर्यपुत्रपौत्रादिसौभाग्यसहिता (सरस्वती=विदुषी स्त्री) १.८९.३. सौभाग्ययुक्ता (भूमिः) ४.५७.६. सुष्ठ्वैश्वर्या (सरस्वती=वेदवाणी) २५.१६. उत्तमैश्वर्यप्रापिका (स्त्री) २.३२.४. **सुभगाम्**=उत्तमसुखयुक्ताम् (विवाहितस्त्रियम्) ऋ० भू० २१३, ऋ० ८.३.२८.५. सुन्दर सौभाग्य भोग वाली (पत्नी) को सं० वि १३४, १०.८५.४५. **सुभगाः**=सुष्ठ्वैश्वर्यप्रदाः (द्वारः=गृहद्वाराणि) २९.५. **सुभगे**=शोभनैश्वर्यनिमित्ते (उषासानक्ता=प्रत्यूषरात्र्यौ) २.३१.५. हे सौभाग्य की इच्छा करने वाली स्त्री स० प्र० १५४, १०.१०.१०. [सु-भगपदयोः समासात् स्त्रियां टाप्]

सुभगा सुष्ठ्वैश्वर्यप्रदानि (वना=वनानि) ३.१.१३. [सु-भगपदयोः समासाच्छेर्लोपश्छन्दसि]

सुभगासः शोभनैश्वर्य्याः (विद्यार्थिजनाः) २.२८.२. उत्तमैश्वर्याः (मरुतः=मनुष्याः) ५.६०.६. [सु-भगपदयोः समासाज् जसोऽसुक्]

सुभगो शोभनो भग ऐश्वर्यं यस्मात्तम् (नाम=प्रसिद्धिम्) ५.३७.४. [सु-भगपदयोः समासः। अकारस्योकारश्छान्दसः]

सुभद्राम् कल्याणभद्राम् (नीतिम्) १.१०.४. [सु-भद्रपदयोः समासाट् टाप् स्त्रियाम्। सुभद्राम् कल्याणभद्राम् नि० ११.३४.]

सुभद्रिकाम् सुष्ठु कल्याणकारिकाम् (काम्पीलवासिनीं=लक्ष्मीम्) २३.१८. [सु-भद्रिकापदयोः समासः। भद्रिका=भद्राप्राति० स्वार्थे कनि टापि इत्वे च रूपम्। भद्रा=भदि कल्याणे सुखे च (भ्वा०) धातोः 'ऋज्रेन्द्राग्र०' उ० २.२८. सूत्रेण रन्-प्रत्ययान्तो निपात्यते। नुमो नकारलोपो बाहुलकात्]

सुभरम् सुखेन भर्त्तुं योग्यम् (बर्हिः=उदकम्) २.३.४. **सुभरः**=यः शोभनं भरति सः (मनुष्यः) २.३.९. **सुभराः**=ये सुष्ठु भरन्ति पुष्णन्ति वा (विद्वज्जनाः) १.११२.२. [सु+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि पचाद्यच्]

सुभराम् सुष्ठु बिभ्रति सुखानि यया ताम् (नीतिम्) १.११२.२०. [सु+डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरच् 'कृतो बहुलम् वा' इति करणे। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

सुभरामहे शोभनतया धरामहे १.५३.१. [सु+भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोर्लट्]

सुभव भवतीति भवः शोभनश्चाऽसौ भवश्च सुभव-

स्तत्सम्बुद्धौ (देव=दिव्यात्मन् जन) ७.३. सुष्ठ्वैश्वर्य (अ०—योगिन्) ७.६. [सु-भवपदयोः समासः। भवः=भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच्]

सुभवासि शोभनं भवेः २७.४१. [सु+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लेट]

सुभागाः शोभनो भागो भजनं यासान्ताः (जनीः=स्त्रीः) १.१६७.७. [सु-भागपदयोः समासात् स्त्रियां टाप्। भागः=भज सेवायाम् (भ्वा०) धातोर्घञ्]

सुभु यत् सुष्ठु संस्कारैर्भाव्यते तत् (अन्नम्) २.३५.७. [सु+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः कर्मणि क्विप्]

सुभूताय सुष्ठु सत्याय व्यवहाराय, भा०—धर्मानुकूलव्यवहाराय ७.२१. [सु+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्तान्ताच्चतुर्थी]

सुभूयामो शोभनतया भवेमं, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इत्यस्योत्वम् ४.३२.६. [सु+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लिङ्। अकारस्योत्वं वर्णव्यत्ययेन]

सुभूषत शोभनतयाऽलङ्कुरुत १.१८२.१. [सु+भूष अलंकारे (भ्वा०) धातोर्लोट्]

सुभूः यः सुष्ठु भवतीति सः (प्रथमः=ईश्वरः) २३.६३. सुष्ठुतया सर्वेषु पदार्थेषु भवति यः सः (ईश्वरः) ऋ० भू० १६२, **सुभ्वः**=ये जनाः सुष्ठु सुखं भावयन्ति ते १.५२.१ सुष्ठु भवन्ति वृष्टयो येभ्यस्ते (पर्वताः=मेघाः) ४.१७.२. ये सुष्ठु भवन्ति ते (मेघाः)६.५२.१. ये शोभने धर्म्ये व्यवहारे भवन्ति ते (विद्याकामा जनाः) ५.८७.३. ये शोभनेषु कर्म्मसु भवन्ति ते (विद्वज्जनाः) ५.४१.१३. याः सुष्ठु भवन्ति ताः (नद्यः भा०—सरितः) १.५२.४. [सूपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सुभृतम् सुष्ठु धारितम् (लोकं=गृहाश्रमम्) ८.२६. सुष्ठु धृतम् (बृहस्पतिं=सूर्यम्) ४.५०.७, **सुभृतः**=शोभनं कर्म भृतं येनः सः (अग्निः=विद्युदिव बलिष्ठोऽध्यापकः) २.१.१२. [सु-भृतपदयोः समासः। भृतः=भृञ् भरणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

सुभोजसम् सुष्ठु भोजांसि भोजनानि यस्मात्तम् (रयिं=धनम्) २७.२७. [सु-भोजस्पदयोः समासः। भोजस्=भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोरसुन्]

सुमख शोभना मखा यज्ञा यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सज्जन) २.१८.४. सुष्ठु न्यायव्यवहारपालक (अग्ने=राजन्) ४.३.१४. **सुमखम्**=शोभना मखा यज्ञा यस्मात्तम् (नृम्णं=धनम्) ३३.२३. **सुमखाय**=शोभनाय चेष्टासाध्याय यज्ञाय १.६४.१. उत्तमयज्ञानुष्ठात्रे (इन्द्राय=विद्वज्जनाय) १.१६५.११. शोभना मखा यज्ञा यस्य तस्मै (धर्म्यपुरुषार्थाय) ५.४१.१४. सुष्ठु यज्ञसम्पादकाय (शिष्यवर्गाय) ४.३.७. **सुमखाः**=शोभनन्यायाचरणयज्ञाऽनुष्ठातारः (रुद्रासः=मध्यमा विद्वांसः) ५.८७.७. [सु-मखपदयोः समासः। मखः यज्ञनाम निघं० ३.१७. सुमखम् सुमहद् नि० ११.६. सुमखस्य=सुमहतो बलस्य नि० १२.५.]

सुमखासः शोभनाः शिल्पसम्बन्धिनः सङ्ग्रामा यज्ञा येषान्ते (सभाद्यध्यक्षादयः) १.८५.४. [सुमख इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

सुमङ्गल प्रशस्तमङ्गलाऽनुष्ठातः (सत्यराजन्=सत्यन्यायप्रकाशक सभेश) २०.४. सुष्ठु मङ्गलमय सुमङ्गलकारक (ईश्वर) ऋ० भू० २१८, २०.४. **सुमङ्गलः**=सुमङ्गलशब्दः (उपदेशकः) २.४२.१. सुमङ्गलोपदेशकः २.४२.२. शोभनानि कल्याणकराणि कर्माणि यस्य सः, भा०—शुभलक्षणः (राजा) १६.६. [सु-मङ्गलपदयोः समासे। तत अर्श आदित्वादच् मत्वर्थे। सुमङ्गलः=कल्याणमङ्गलः मङ्गलं गिरते गृणात्यर्थे गिरत्यनर्थानिति वा। अङ्गलमङ्गलवत्। मज्जयति पापकमिति नैरुक्ताः। मां गच्छत्विति वा नि० ९.४. मगि गतौ (भ्वा०) धातोः 'मङ्गेरलच्' उ० ५.७०. सूत्रेणालच्]

सुमङ्गली शोभनानि मङ्गलानि यासु ताः (उषसः) १.११३.१२. अच्छा मङ्गलाचरण करने वाली (पत्नी) सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२६. [सु-मङ्गलपदयोः समासे स्त्रियां गौरादिगणे 'सुमङ्गलात् संज्ञायाम्' अ० ४.१.४१. इति ङीष्]

सुमज्जानये सुष्ठु प्राप्तविद्याय प्रसिद्धाय (विद्यार्थिजनाय) १.१५६.२.

सुमत् सुष्ठु माद्यन्ति हृष्यन्ति यस्मिँस्तत् (बर्हिः=गृहम्) १.१४२.७. यः सुष्ठु मन्यते जानाति (विद्वज्जनः) १.१६२.७. स्वयम् २५.३०. स्वयमेव ५.२.४. [सु+मदी हर्षे (दिवा०) धातोरधिकरणे क्विप् 'कृतो बहुलं वा' इति वार्त्तिकेन। सुमत् स्वयम् नि० ६.२२.]

सुमतयः शोभना प्रज्ञा येषु ते (सज्जनाः) ७.१८.२०. **सुमतिभिः**=श्रेष्ठैर्विद्वद्भिस्सह ४.२३.२. उत्तमप्रज्ञैर्मनुष्यैः ७.५७.५. **सुमतिम्**=शोभना मतिर्यस्य सभ्यस्य तम् ४.४.८. **सुमतिः**=शोभना चाऽसौ मतिर्विज्ञानं यस्य सः (राजा प्रजाजनो वा) १.२४.६. **सुमतीनाम्**=वेदादि-

शास्त्रे परोपकारे, धर्माचरणे च श्रेष्ठा मतिर्येषां मनुष्याणाम् १.४.३. शोभना मतिर्बुद्धिर्येषान्ते सुमतयस्तेषां विदुषाम् (जनानाम्) १.३.११. [सु-मतिपदयोः समासः। मतयः मेधाविनाम निघं० ३.१५. मतिः=मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'मन्त्रे वृषेषपचमनविदभूवीरा उदात्तः' इति क्तिन्]

सुमतये सुष्ठु प्रज्ञायै १.१५८.२. उत्तमप्रज्ञायै ६.२९.१. **सुमतिभिः**=शोभना मतयो यासान्ताभिः (पत्नीभिः) २.१६.८. **सुमतिम्**=शोभनां प्रज्ञाम् १.१५६.३. धर्म्यां प्रज्ञाम् १.११४.४. शोभनं विज्ञानम् १.७३.६. शोभना मतिः प्रज्ञा यया ताम् (इषं=विद्याम्) ७.२५.६. शोभनां यथाविषयां प्रज्ञाम् १७.७४. **सुमतिः**=शोभना बुद्धिः १.८९.२. शोभना चाऽसौ मतिश्च सा ३.७.११. **सुमतौ**=शोभना मतिर्यस्य यस्माद्वा तस्याम् (ईश्वराज्ञायां विद्यासिद्धौ वा) १.९८.१. सुष्ठु सम्मतौ २०.५२. उत्तमाज्ञायां प्रज्ञायां वा ३.५९.३. **सुमत्या**=शोभना चासौ मतिर्विचारो यस्यां तया (शक्ती=आत्मसामर्थ्येन) १.३१.१८. [सु-मतिपदयोः समासः। सुमतिम्=कल्याणीं मतिम् नि० २.११. सुमतौ कल्याण्यां मतौ नि० १२.३४.]

सुमती शोभनया प्रज्ञया ४.१.२. [सु-मतिपदयोः समासे ततः 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण टास्थाने पूर्वसवर्णदीर्घः]

सुमतीवृधः यः सुमतिं वर्धयति तस्य (सवितुः=ईश्वरस्य) २२.१२. [सुमति इत्युपपदे वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। संहितायां पूर्वस्य दीर्घः। अन्तर्भावितण्यर्थः]

सुमत्क्षराणाम् सुष्ठु प्रमादनाशकानाम् (अवत्तानां=उदारचेतोजनानाम्) २१.४५. श्रेष्ठानन्दवर्षकाणाम् (शतरुद्रियाणां=विद्वदधिष्ठातृजनानाम्) २१.४४. सुष्ठु मदां क्षरः सञ्चलनं येषान्तेषाम् (अग्निष्वात्तानां=गृहीताग्निजनानाम्) २१.४३. [सु मद्क्षरपदानां समासः। मद्=मदी हर्षे (दिवा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्। क्षरः=क्षर सञ्चलने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

सुमत्स्व शोभनतयाऽऽनन्द ४.३२.२४. [सु+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्लोट्। विकरणस्य लुक्। व्यत्ययेनात्मनेपदञ्च]

सुमदंशुः शोभनोंऽशुर्ज्वलनं यस्याः सा (अग्नेर्ज्वाला) १.१००.१६. [सुमद्-अंशुपदयोः समासः। सुमत्=सु-प्राति० मतुप्। अंशुः समष्टमात्रो भवति। अननाय शं भवतीति वा नि० २.५.]

सुमद्गणः सुमतो गणा यस्य सः (विद्वज्जनः) २.३६.३. सुहर्षगणः (त्वष्टा=विद्वज्जनः) २६.२४. [सुमत्-गणपदयोः समासः। सुमत्=सु+मन ज्ञाने (दिवा०)+क्तः। अकारलोपश्छान्दसः। सु-शब्दाद्वा मतुप्। अथवा सु+मदी हर्षे (दिवा०)+क्विप्]

सुमद्रथः सुमतां प्रशस्तज्ञानानां रथ इव रथो यस्मात् सः (अग्निः=पावकः) ३.३.९. [सुमत्-रथपदयोः समासः। सुमत्=सु+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः क्तः। अलोपश्छान्दसः]

सुमनसः शोभनं मनो येषान्ते (राजजनाः) ४.४.९. प्रसन्नचित्ताः (अध्यापकोपदेशकाः) ६.५२.५. **सुमनाः**=शोभनं मनो विज्ञानं यस्य सः (पुरुषः) ३.४१. शोभनमनाः (सुराजः) ७.८.५ प्रसन्नचित्तः (अग्निः=राजादिपुरुषः) ३.५४.२२. शुद्धमनाः (होतृजनः) ५.१.२. शोभनं निरीर्ष्यकं मनो यस्य सः (इन्द्रः=शिल्पिजनः) ३.३५.८. सुखकारिमनाः (अग्निः=विद्वज्जनः) १५.४६. सुहृद्भावः (सेनाध्यक्षः) १६.१३. प्रसन्नस्वान्तः (राजा सेनापतिर्वा) १५.१. शोभनविज्ञानः (परमेश्वरो विद्वज्जनो वा) १.९.४. कल्याणमनाः (राजा) ४.१०.३. पवित्राऽन्तःकरणयुक्त, प्रसन्नचित्त (पति, पत्नी वा) सं० वि० ११४, १०.८५.४४. सु-मनस्पदयोः समासः। मनस्-मन ज्ञाने (दिवा०) धातोरौणा० असुन्]

सुमनस्यमानः सुष्ठु विचारयन् (राजा) १५.२. **सुमनस्यमानाः**=सुष्ठुं विचारं कुर्वन्तः (वीरजनाः) ६.७५.८. **सुमनस्यमानौ**=सुमनसौ सखायौ (विद्वांसाविवाचरन्तौ, भा०—विद्याविचारयुक्तौ (विवाहित-स्त्री-पुरुषौ) १२.५७. [सुमनस् पदादाचारेऽर्थे क्यङ्। ततः शानच्। अथवा मनस्यतिः पुनर्मनस्वी भावे (निघं० ३.७.) ततः सूपूर्वाच्छानच्]

सुमनस्यमाना सुष्ठु विचारवन्तौ (वैद्यराजानौ) ६.७४.४. सुष्ठु विचारयन्तः सज्जनाः ३४.५२. [सुमनस्यमान इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सुमनस्यमाना प्रसन्नचित्त (वरानना स्त्री) सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.३१. [सुमनस्यमान इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

सुमनायति सर्वथाऽऽत्मनो मन इवाचरति १.१३३.४. [सुमनस्पदाद् आचारे क्यचि लटि छान्दसं रूपम्। आचारे वा क्यङ्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

सुमन्तुनामा सुष्ठु मन्तव्यं ज्ञातव्यं नाम यस्य सः

(जनः) ६.१८.८. [सुमन्तु-नामन्पदयोः समासः। सुमन्तुः सु+मन ज्ञाने (दिवा०) धातोः 'कमिमनिजनि०' उ० १.७३. सूत्रेण तुः]

सुमन्तुभिः शोभनविद्यायुक्तैः (पुरुषैः) १.१२९.७. [सु-मन्तुपदयोः समासः। मन्तुरिति व्याख्यातम्]

सुमन्दिषीमहि शोभनतया शयीमहि ४.१४. [सु+मदि स्तुतिमोदमदस्वप्नकान्तिगतिषु (भ्वा०) धातोर्लिङ्]

सुमन्मभिः शोभनैर्विज्ञानैः ३३.८५. सुष्ठु विचारैः ३.२.१२. [सु-मन्मन्पदयोः समासः। मन्मन्=मन ज्ञाने (दिवा०)+मनिन् औणा०]

सुमहय समन्तात् शोभनतया पूजयोपकुरु वा १.५२.१. [सु+मह पूजायाम् (चुरा०) धातोर्लोट्]

सुमहः अतिमहत् (मन्म=विज्ञानम्) ४.११.२. सुष्ठु महतो महाशयान् (विद्वज्जनान्) ६.५०.२. [सु-महस्पदयोः समासः। महः महन्नाम निघं० ३.३. सलोपश्छान्दसः]

सुमहान् शुभैर्गुणकर्मभिः पूजनीयः (मनुषः=मनुष्यः) ७.८.२. [सु-महत्पदयोः समासः। महत् महन्नाम निघं० ३.३.]

सुमादयेथाम् सर्वथाऽऽनन्दयेथाम् १.१८४.२. [सु+मदी हर्षे (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

सुमायाः शोभना माया प्रज्ञा येषान्ते (मरुतः=सभाध्यक्षप्रजामनुष्याः) १.८८.१. [सु-मायापदयोः समासः। माया प्रज्ञानाम निघं० ३.९. सुमायाः=कल्याणकर्माणो वा कल्याणप्रज्ञा वा नि० ५०.१४.]

सुमिता सुष्ठु कृतप्रमाणानि (ज्ञानानि) ५.४५.२. [सुमितप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि। सुमितम्=सु-मितपदयोः समासः। मितम्=माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः क्तः]

सुमिती शोभनया प्रज्ञया ३.८.३. [सु+माङ् माने शब्दे च (जु०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। 'द्यतिस्यतिमास्थाम्०' इतीत्त्वम्। सुमितिप्राति० टास्थाने पूर्वसवर्णदीर्घादेशश्छान्दसः]

सुमित्रधः यः शोभनानि मित्राणि दधाति सः (सभाध्यक्षः) ४.२७. [सुमित्रोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः कः]

सुमित्रः शोभना सुष्ठुकारिणो मित्रा यतः सः (ईश्वरो विद्वज्जनो वा) १.९१.१२. सब का परम मित्र (ईश्वर) आर्याभि० १.३८. ऋ० १.६.२१.१२. [सु-मित्रपदयोः समासः]

सुमित्रियाः सुष्ठु सखाय इव (प्राणा ओषधयश्च) ३८.२३. सुमित्राणीव, अ०—सुमित्रवत् (आप ओषधयश्च) ६.२२. शोभनं मित्रमिव वर्त्तमानाः, भा०—मित्रवद्धितकारिण्यः (प्राण-जल-यवाद्याः) ३६.२३. सुमित्रा इव (प्राणा, जलानि, सोमलताद्याः) २०.१९. शोभना मित्रा इव सुखकराः (आप ओषधयश्च) ३५.१२. सुखप्रदा रोगनाशकाः (ओषधयः) ऋ० भू० २०१, [सु-मित्रपदयोः समास इवार्थे घश्छान्दसः]

सुमीह्ळे सुष्ठु सेचनीये (व्यवहारे) ६.६३.९. [सु+मिह् सेचने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० क्तः]

सुमृडतु सुष्ठुतया सुखयतु १.१७९.५. [सु+मृड सुखने (तुदा०) धातोर्लोट्]

सुमृडीकः यः शोभनेन मृडयति सुखयति सः (वायुः) प्र०—'मृडः कीकच्-किकिनौ' उ० ४.२४. इति कीकच्प्रत्ययः १.३५.१०. सुष्ठु सुखप्रदः (राजा) ३३.१६. सुष्ठु सुखयिता (रथः) १.११८.१. सुष्ठु सुखकरः (देवः=सूर्यः) ३४.२६. **सुमृडीकाय**=सुसुखप्रदाय सुखस्वरूपाय (देवाय=नृपाय) ४.३.३. **सुमृडीकाः**=सुष्ठु सुखिनः सूनवः=अपत्यानि) ६.५२.९. [सु+मृड सुखने (तुदा०) धातोः 'मृडः कीकच् कङ्कणौ' उ० ४.२४. सूत्रेण कीकच्]

सुमृडीकाम् सुष्ठु मृडन्ति सुखयन्ति यया ताम् (धियम्) ४.११. **सुमृडीकायै**=सुष्ठु सुखकारिकायै (अदित्यै=जनन्यै) २२.२०. [सुमृडीक इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

सुमेकः सुष्ठु प्रकाशमानः (सूर्यः) ४.६.३. [सु+मेकपदयोः समासः। मेकः=डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोरौणा० बाहु० कन्]

सुमेके सुष्ठु मेकः प्रक्षेपो ययोस्तौ (द्यावापृथिव्यौ) १.१४६.३. नियमे निक्षिप्ते (रात्र्युषसौ) १.११३.३. सुखरूपे (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ६.६६.२. शोभने मया सृष्टे सुष्ठु क्षिप्ते (रजसी) ४.४२.३. एकीभूते सम्बद्धे (द्यावापृथिवी=सूर्यभूमी) ४.५६.३. सुष्ठ्वेकीभूते (रोदसी) ३.५७.४. सुस्वरूपे (रोदसी) ७.५६.१७. [सु-मेकपदयोः समासः। मेकः=डुमिञ् प्रक्षेपणे (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कन्। मेङ् प्रणिदाने (भ्वा०) धातोर्वा कन्। सुमेकः संवत्सरः स्वेको ह वै नामैतद् यत् सुमेक इति श० १.७.२.२६.]

सुमेधा शोभना मेधा यस्यां सा (जिह्वा=वाणी)

३.५७.५. [सु-मेधापदयोः समासः]

सुमेधाः सुष्ठु मेधा धारणावती सङ्गमिका धीर्यस्य सः (पुरुषः) ३.४१. शोभना मेधा प्रज्ञा येषां ते (स्वपत्यानि=सुसन्तानाः) २७.२३. शोभन-प्रज्ञः (अग्निः=कारणाख्य ईश्वरः) १२.२४. शोभना मेधा प्रज्ञा यस्य सः (देवः=विद्वज्जनः) २.३.१. उत्तम बुद्धि से युक्त (पति) सं० वि० १४६, ३.४१. [सु-मेधापदयोः समासे 'नित्यमसिच् प्रजामेधयोः' अ० ५.४.१२२ सूत्रेण समासान्तोऽसिच्। मेधा धननाम निघं० २.१०. मेधा मतौ धीयते नि० ३.१९. मेधा—मेधृ संगमे च (भ्वा०) धातोः 'षिद्भिदादिभ्योऽङ्' अ० ३.३.१०४ सूत्रेण स्त्रियामङ्]

सुम्नम् मोक्षसुखम् १.४३.४. सुखम् ८.४. सुखस्वरूपम् (अपूपं=भोज्यपदार्थम्) १२.२६. **सुम्ने**=अत्युत्कृष्टे सुखे २.१९. सुखकारके (अग्निवायू) २.१९. भा०—सुखप्राप्तये ३.२६. [सुम्नम् सुखनाम निघं० ३.६. यज्ञो वै सुम्नम् श० ७.२ २.४. प्रजा वै पशवः सुम्नम् तै० ३.३.९.९. सुम्न (=साधु) सुम्ने स्थः सुम्ने मा धत्तमिति साध्व्यौ स्थः साधौ मा धत्तमित्येवैतदाह श० १.८.३.२७.]

सुम्नयता आत्मनः सुम्नं सुखमिच्छता (मनसा=अन्तःकरणेन) २.३२.२. **सुम्नयन्**=सुखमिच्छन् (जनः) १.१३८.१. सुखयन् (सभाध्यक्षो राजा) १.११४.३. [सुम्नम् सुखनाम निघं० ३.६. तत आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताच्छतृ। 'न छन्दस्यपुत्रस्य' इतीत्त्वप्रतिषेधः]

सुम्नयन्ता सुखं प्रापयन्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) ६.४९.१. [सुम्नयदिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सुम्नया सुम्नेन सुखेन १२.६७. [सुम्नम् सुखनाम निघं० ३.६. ततः तृतीयैकवचनस्यायादेशः]

सुम्नयुः य आत्मनः सुम्नं सुखमिच्छुः (विद्वज्जनः) ३.२७.१. य आत्मनः सुम्नं सुखमिच्छति तच्छीलः (विद्वज्जनः) १.७९.१०. सुम्नायवः=य आत्मनः सुम्नामिच्छवः (विद्वज्यानाः) ५.८.७. [सुम्नम् सुखनाम निघं० ३.६. तत इच्छायामर्थे क्यजन्तात् तच्छीलादिषु 'क्याच्छन्दसी' ति कर्त्तरि उः। सुम्नयुः (ऋ० ३.२७.१) यजमानो वै सुम्नयुः श० १.४.१.२१.]

सुम्नहूः यः सुम्नानि सुखान्याह्वयति सः (यज्ञः=परमात्मा) १७.६२. [सुम्नम् सुखनाम निघं० ३.६) तदुपपदे ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सुम्ना सुम्नानि सुखानि १.१६९.१. [सुम्नम् सुखनाम निघं० ३.६. ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सुम्नायवः आत्मनः सुम्नं सुखमिच्छवः (सज्जनाः) ६.१.७. **सुम्नायुः**=सुखं कामुकः (विद्वज्जनः) ६.२.३. [सुम्नायुप्राति० जस्। सुम्नायुः=सुम्नपदाद् (सुखनाम्नः) इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उः]

सुम्नावरी सुम्नानि प्रशस्तानि सुखानि विद्यन्ते यस्यां सा (उषाः) १.११३.१२. [सुम्नम् सुखनाम (निघं० ३.६) ततः प्रशंसायामर्थे 'छन्दसीवनिपौ' इति वार्त्तिकेन वनिप्। ततः स्त्रियाम् 'वनो र च' इति ङीप् रेफश्च। सुम्नावरी उषो नाम निघं० १.८.]

सुयजम् सुष्ठु यजन्ति यस्मात्तम् (राजानम्) ५.८.३. सुष्ठु सङ्गन्तारम्, भा०—श्रेष्ठौषधदायकम् (भिषजं=वैद्यम्) २९.९. **सुयजा**=सुष्ठु यजन्ति यस्मिन् यज्ञे तेन ५.४. [सु+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्। 'कृतो बहुलं वेति' नियमेन क्विप् कर्त्तृभिन्नेष्वपि कारकेषु भवति]

सुयजस्व सुष्ठुतया सङ्गच्छस्व ७.४२.३. [सु+यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोर्लोट्]

सुयज्ञः शोभना यज्ञा यस्मात् सः (अग्निः=पावकः) ३.१७.१. शोभना यज्ञा विद्वत्सत्कारादयो यस्य सः (इन्द्रः=विद्याप्रकाशको राजा) २.२१.४. **सुयज्ञाः**=शोभना यज्ञा विद्याधर्मप्रचारिका येषान्ते (कवयः=विद्वज्जनाः) ५.४५.४. शोभना यज्ञाः सङ्गताः क्रिया येषान्ते (कवयः) ३.५१.७. शोभनोऽध्ययनाऽध्यापनाख्यो यज्ञो येषान्ते (कवयः=मेधाविजनाः) ७.३५. [सु-यज्ञपदयोः समासः। यज्ञः=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) धातोः 'यजयाचयतविच्छ०' अ० ३.३.९० सूत्रेण नङ्]

सुयतः सुन्वतो निष्पादयतः (रोगनिवारकस्य वैद्यस्य) ७.२२.१. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः शतृ। विकरणव्यत्ययेन श्यन्]

सुयन्तम् सुष्ठुतया प्राप्नुतम् ४.५५.४. **सुयातम्**=सर्वथा प्राप्नुतम् २०.८१. [सु+या प्रापणे (अदा०) धातोर्लोटि छान्दसं रूपम्]

सुयन्तुभिः सुष्ठु यन्तवो नियन्तारो येषु तैः (राजपुरुषैः) ५.४४.४. [सु-यन्तुपदयोः समासः। यन्तु=यमु उपरमे (भ्वा०) धातोरौणा० तुन्]

सुयमम् सुष्ठु यमा यस्मात्तत् (क्षत्रं=धनं राज्यं वा) २७.४. [सु-यमपदयोः समासः। यमः=यमु उपरमे (भ्वा०) धातोरच्। यमो यच्छतीति सतः निघं० १०.१९. अग्निरपि यम उच्यते नि० १०.२०.]

सुयमम् शोभनो यमः सत्याचारपरिग्रहो यस्मिँस्तम् (जास्पत्यं=जायायाः पतित्वम्) ५.२८.३. सुष्ठु यमो नियमो यस्मिँस्तम् (जास्पत्यम्) ३३.१२ शोभना यमा यस्मात्तम् (क्षत्रं=धनं राज्यं वा) २७.४. **सुयमस्य**=सुष्ठु नियमेन प्रापणीयस्य (सत्यस्य=यथार्थस्य धर्मस्य, परमेश्वरस्य) ७.३५.२. **सुयमात्**=सुष्ठु यमसाधकात् (रायः=धनात्) २.२६.७. शोभनो यमो यस्मिँस्तस्मात् (रायः) २.२७.१७. शोभना यमा वैरादयो व्यवहारा यस्मात्तस्मात् (रायः) २.२८.११. [सुयममिति व्याख्यातम्]

सुयमा शोभननियमयुक्ता (विवाहितपतिसेविका स्त्री) ऋ० भू० २१४, अथर्व० १४.२.१८. अच्छे प्रकार धर्मनियम में चलने वाली (स्त्री) स० प्र० १५२, अथर्व० १४.२.१८. **सुयमे**=सु शोभनेऽर्थे यमे यच्छन्ति बलपराक्रमौ याभ्यान्ते (भा०—शुद्धेऽन्नजले) २.७. [सु-यमपदयोः समासे स्त्रियां टाप् । सुयममिति व्याख्यातम्]

सुयमासः संयमयुक्ताः (अश्वाः) १.१८०.१. सुष्ठु नियामकाः (अश्वाः=व्याप्ताः किरणाः) ३.६१.२. [सु-यमपदयोः समासे जसोऽसुक्]

सुयमेभिः शोभना यमा येषु तैः (जनैः) ५.५५.१. [सु-यमपदयोः समासाद् 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न भवति]

सुयवसम् शोभनो यवो यवाद्योषधिसमूहो यस्मिन् देशे तम् १.४२.८. शोभनं घासादिकम् ६.२८.७. **सुयवसः**= शोभनानि यवांस्यन्नादीनि यस्य तस्य (विद्वज्जनस्य) १.१९०.६. [सु-यवस्पदयोः समासः । यवस्=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोरौणा० असुन्]

सुयवसात् या शोभनानि यवसानि सुखानि अत्ति सा (विदुषी स्त्री) १.१६४.४०. [सु-यवसपदयोः समासः । यवसम्=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० असच्]

सुयवसाः शोभनानि यवसानि याभ्यस्ताः (अपः= जलानि) २.२७.१३. [सु-यवसपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सुयवस्यू आत्मनः सुयवसानिच्छू (गावौ=किरणाविव सेनाराजनीती) ६.२७.७. [सु-यवसप्राति० इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसि' इत्युः । अथवा या प्रापणे (अदा०) धातोः 'अर्त्तिस्तुसुहुसृ०' उ० १.१४० सूत्रेण मन्]

सुयामाः शोभना यामाः प्रहरा येषु ते (रश्मयः= किरणाः) ३.७.६. [सु-यामपदयोः समासः । यामः=यमु उपरमे (भ्वा०)+घञ्]

सुयुक् ये सुष्ठु युञ्जन्ति ते (विद्वज्जनाः) ३.५८.२. **सुयुग्भिः**=सुष्ठु योजितैः (अश्वैः=अग्न्यादिभिः पदार्थैः) ३.५८.३. **सुयुजम्**=सुष्ठु योक्तुमर्हम् (कामम्=इच्छाम्) ४.२३.५. **सुयुजः**=सुष्ठु युक्तान् योगिनः १.१२१.१२. ये सुष्ठु युञ्जते योजयन्ति वा ते (हरयः=राज्यकर्माधिकारिजनाः) ६.४४.१९. ये सुष्ठु धर्मेण युञ्जते तान् (राजादयो जनाः) ५.४४.४. **सुयुजा**=सुष्ठु युक्तेन (रथेन) १.११७.१५. सुष्ठु युञ्जन्त्यश्वान् यस्मिँस्तेन (रथेन) ४.१४.३. [सु+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुह०' अ० ३.२.६१ सूत्रेण क्विप् । 'कृतो बहुलं वा' इति कर्त्तृभिन्नेष्वपि कारकेषु क्विप्]

सुयुजा यौ सुष्ठु युङ्क्तस्तौ (हरी=अग्निजले) ४.३३.१०. [सुयुज् इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सुरणम् सुष्ठु रणः सङ्ग्रामो यस्मात्तत् (भा०— सङ्ग्रामविजयम्) ३.५३.६. **सुरणानि**=सुष्ठु रमणीयानि (साधनानि) ५.५६.८. [सु-रणपदयोः समासः । रणः संग्रामनाम निघं० २.१७.]

सुरणः शोभनो रणः सङ्ग्रामो यस्मात् सः (अग्निः= पावकः) ३.३.६. [सु-रणपदयोः समासः । रणः संग्रामनाम निघं० २.१७. सुरणानि सुरमणीयान्युदकानि नि० ११.५०.]

सुरत्नः शोभनं रत्नं रमणीयं धनं यस्मादस्य वा (सूर्यो विद्वज्जनो वा) ७.४५.१. [सु-रत्नपदयोः समासः । रत्नं धननाम निघं० २.१०.]

सुरथः प्रशस्तयानः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.२.४. **सुरथस्य**=शोभनानि रथादीन्यङ्गानि यस्मिँस्तस्य विद्याबोधकव्यवहारस्य ३.१४.७. **सुरथाः**=श्रेष्ठरथाः (योग्याः पुरुषाः) ४.४.८. सु शोभना रथा येषान्ते शिल्पिनो वीरजना वा) ५.५७.२. [सु-रथपदपोः समासः। रथः पदनाम निघं० ५.३. रथो रंहतेर्गतिकर्मणः स्थिरतेर्वा स्याद् विपरीतस्य रममाणोऽस्मिस्तिष्ठतीति वा, रपतेर्वा रसतेर्वा नि० ९.११.]

सुरथा सुष्ठु रथो ययोस्तौ (हरी=अश्वौ) ७.३६.४. शोभना रथा याभ्यां तौ (अश्विनौ=अग्निजले) १.२२.२. [सु-रथपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सुरथेभिः शोभनैर्यानैः २.१८.५. [सु-रथपदयोः समासे 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न भवति]

सुरभि सुगन्धादिगुणयुक्तं द्रव्यम् ४.३९.६. [सुर

ऐश्वर्यदीप्त्योः (तुदा०) धातोर्बाहु० औणा० अभिच् । ततो. मत्वर्थेऽच्]

सुरभि प्रशस्तसुगन्धियुक्तानि (मुखानि) २३.३२. [सुरभिरिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लुक् 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण]

सुरभिम् सुगन्धम् (अत्कं=वस्त्रम्) ६.२९.३. **सुरभौ**=सुगन्धिते (लोके) ५.१.६. ऐश्वर्यप्रकाशके (लोके) १२.३५. [षुर ऐश्वर्यदीप्त्योः (तुदा०) धातोर्बाहु० औणा० अभिच्]

सुरभिष्टमम् अतिशयेन सुरभिः सुगन्धिस्तम् १.१८६.७. [सुरभिरिति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप् सुडागमश्छान्दसः । सुरभयः—प्राणा वै सुरभयः तै० २.९.७.५.]

सुरया या सूयते सा सुरा तया १९.५. शोभनदानशीलया स्त्रिया १९.३३. सोमलतादिरसेन १९.८४. जलेन २१.३८. उदकेन २१.३१. **सुरा**=सोमवल्ल्यादिलता, भा०—ओषधिरसः, प्र०—अत्र० षुञ् अभिषवे इत्यस्माद्धातोरौणादिको रः प्रत्ययः १९.७. सोमरसः १९.१४. **सुरायाः**=अभिषुतस्य रसस्य १.११६.७. **सुरायै**=सोमाय २०.२८. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः सुसूधाञ्० उ० २.२४. सूत्रेण क्रन् । ततष्टाप् स्त्रियाम् । सुरा उदकनाम निघं० १.१२. सुरा सुनोतेः । नि० १.११. सुरा अनृतं पाप्मा तमः सुराः । श० ५.१.२.१०. यत्सुरा भवति क्षत्ररूपं तदथो अन्नस्य रसः । ऐ० ८.८. अपां च वाऽएष ओषधीनां च रसो यत्सुरा । श० १२.८.१.४. अन्नं सुरा । तै० १.३.३.५ यदन्नस्य (शमलमासीत्) सा सुरा (अभवत्) तै० १.३.२.६ प्रजापतेर्वाऽएतेऽअन्धसी यत्सोमश्च सुरा च । श० ५.१.२.१०. एतद्वै देवानां परममन्नं यत्सोमः । एतन्मनुष्याणां यत्सुरा । तै० १.३.३.२. पुमान् वै सोमः स्त्री सुरा । तै० १.३.३.४. विट् सुरा श० १२.७.३.८. यशो हि सुरा । श० १२.७.३.१४. अशिव इव वाऽएष भक्षो यत्सुरा ब्राह्मणस्य श० १२.८.१.५.]

सुराकारम् सोम-निष्पादकम् (सुशिक्षितं जनम्) ३०.११. [सुरा इति व्याख्यातम् । तदुपपदे करोतेरण् 'कर्मण्यण्' सूत्रेण]

सुरातयः शोभना रातिर्दानिच्छा येषान्ते (विद्वज्जनाः) ५.७९.४. [सु-रातिपदयोः समासः । रातिः=रा दाने (अदा०)+क्तिन्]

सुराधसः शोभनानि विद्याचक्रवर्त्तिराज्यसम्बन्धीनि राधांसि धनानि येषां तानेवम्भूतान् (विद्वज्जनान्) १.२३.६. सुष्ठु राधसः संसिद्धयो येभ्यस्ते (त्रयस्त्रिंशा देवाः पृथिव्यादयः) २०.११. सुष्ठुधनयुक्तान् (विद्वज्जनान्) ३३.४६. **सुराधाः**=शोभनैर्राधोभिर्धनैर्युक्तः (विद्वज्जनः) १.१००.१७. शोभनधनः (राजा) ४.५.४. धर्मेण सञ्चितधनः (राजा) ४.१७.८. [सु-राधस्पदयोः समासः । राधः धननाम निघं० २.१०. राधस्—राध संसिद्धौ (स्वा०) धातोरौणा० असुन्]

सुराधानी सुरा सोमरसो धीयते यस्यां सा 'गर्गरी १९.१६. [सुरोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'करणाधिकरणयोश्च' अ० ३.३.११७. सूत्रेणाधिकरणे ल्युट्]

सुरामम् सुष्ठु रमन्ते यस्मिँस्तम् (इन्द्रं=धनिजनम् १०.३३. शोभन आरामो येन रसेन तम् (सुरसम्) १०.३४ सुष्ठु रम्यम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) २०.७६. [सु-रामपदयोः समासः । रामः=रमु क्रीडायाम् (भ्वा०) धातोर्घञ्]

सुरामाणः सुष्ठु दातारः (सोमाः सभासदः) २१.४२. [सु+रा दाने (अदा०) धातोर्मनिन्]

सुरावतः सवं कुर्वतः (जनस्य) १.१९१.१० **सुरावन्तम्**=सुराः प्रशस्ता सोमा विद्यन्ते यस्मिँस्तम् (यज्ञम्) १९.३२. [सुरेति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसायां मतुप्]

सुरासोमान् सुरया रसेन युक्तान् सोमान् पदार्थान् २१.५९. ये सुरयाऽभिषवेन सूयन्ते तान् (उत्तमरसान्) २१.६०. [सुरा-सोमपदयोः समासः । सुरा व्याख्यातम् । [सोमः—षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्मन्]

सुरिषः सुष्ठुतया हिंस्याः ११.६८. [सु+रिष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्लङ् अडभावः]

सुरीरिषः सुष्ठु हिंस्या ७.४६.३. [सु+रिष हिंसार्थे (भ्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लङि छान्दसं रूपम्]

सुरुक्मे सुशोभमाने (उषासानक्ता=रात्रिदिने) २९.३१. रमणीये (कार्यकारणे) १.१८८.६. सुष्ठु दीप्यमाने (उषासानक्ता) २०.४१. [सु-रुक्मपदयोः समासः। सुरुक्मे सुरोचने । नि० ८.११. रुक्मम् हिरण्यनाम निघं० १.२.]

सुरुचम् सुष्ठु दीप्तं रुचिकारकम् (अग्निं=विद्युतम्) १.११२.१. सुष्ठु दीप्तिम् ३.२.५. सुष्ठु प्रकाशमानम् (अग्निम्) २.२.४. **सुरुचः**=सुप्रकाशमानः सुष्ठु रुचिविषयरुक् (ईश्वरः) प्र०—अत्राऽऽह यास्कः—आदित्यः सुरुच (आदित्यरश्मयः सुरोचनादपि नि० १.७, ११.३. सूर्यादिलोक

आर्याभि० २.२८, १३.३. [सु+रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः क्विप् । सुरुच आदित्यरश्मय सुरोचनात् नि० १.७. सुरुचः (यजु० १३.३.) इमे लोकाः सुरुचः श० ७.४.१.१४.]

सुरुचः सुष्ठु प्रीतिमत्यः (रायः) ५.३३.१०. सुष्ठु रुचः प्रीतयो येषान्ते (राजप्रजाजनाः) ४.२.१७. शोभने धर्म्ये कर्मणि रुक् प्रीतिर्यस्य तस्य (अतिथेः) १.१९०.१. शोभना रुक् रुचिः प्रीतिर्येषान्तान् (प्रजाजनान्) ६.३५.४. सुप्रीतिसम्पादकाः (सज्जनाः) ३.७.५. **सुरुचा**=यया सुष्ठु रोचते तया (प्रीत्या) ३.१५.६. [सु-रुच्पदयोः समासः। रुच्=रुच् दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

सुरूपकृत्नुम् य इन्द्रः सूर्यः सर्वान् पदार्थान् स्वप्रकाशेन स्वरूपान् करोतीति तम् (इन्द्रं=परमेश्वरम्) १.४.१. [सुरूपोपपदे डुकृञ् करणे (तना०)धातोः 'कृहनिभ्यां क्त्नुः' उ० ३.३०. सूत्रेण क्त्नुः । सुरूपकृत्नुः—योऽयमनिरुक्तः प्राणः स सुरूपकृत्नुः कौ० १६.४]

सुरेक्णाः शोभनं रेक्णं धनं यस्य सः (अग्निः=विद्वज्जनः) ६.१६.२६. [सु-रेक्णपदयोः समासः। रेक्णः धननाम निघं० २.१०.]

सुरेतसम् शोभनं रेतो वीर्यं यस्य तम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) २८.३२. सुष्ठुबलम् (सूर्यम्) १.१६०.३. सुष्ठुवीर्यम् (भिषजं=वैद्यम्) २८.९. **सुरेतसा**=सुष्ठु संश्लिष्टेन वीर्येण ३.१.१६. शोभनवीर्येण १.१५९.२· **सुरेताः**=शोभनानि रेतांसि वीर्याणि यस्य सः (विद्वज्जनः) १२.१. [सु-रेतस्पदयोः समासः। रेतस् उदकनाम निघं० १.१२.। रेतस्=रि गतौ (तुदा०) धातोः स्रुरिभ्यां तुट् च उ० ४.२०२. सूत्रेणासुन्]

सुरेतः शोभनं रेतो वीर्यं यस्मात्तत् (राधः=धनम्) १.१२१.५. [सु-रेतस्पदयोः समासः]

सुलोकम् सुष्ठुतया द्रष्टव्यम् (नाकम्=अविद्यमानदुःखं मोक्षम्) ११.२२. [सु+लोकृ दर्शने (भ्वा०) धातोः भवि घञ्]

सुव प्रेरय ५.८२.४. उत्पादय ११.७. ईर्ष्व ९.१ प्रेर्ष्व १९.३८. प्रक्षिप १६.५ उत्पादय सम्पादय वा ३०.१. गमय जनय वा ३०.३. **सुवतात्**=प्रेरय ४.५४.३. **सुवताम्**=प्रेर्ताम्, प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् ९.३९. **सुवति**=उद्योगे प्रेरयति ६.७१.४. **सुवते**=उत्पद्यन्ते ३.५५.५. गर्भान् विमुञ्चन्ति १.१३५.८. **सुवध्वम्**=प्रेर्ध्वम् १०.१८. निष्पादयत ९.४०. ईशिध्वम्, ऐश्वर्यसहितं कुरुत ऋ० भू० २२२, ९.४०. **सुवन्तु**=दूरे प्रेरयन्तु ७.५०.३. **सुवसि**=प्रेरयसि ४.५४.२. **सुवाति** सुवेत् प्रयच्छेत् ५.४२.३. जनयति ५.८२.३. उत्पादयेत् ३३.२०. प्रेरयेत् १८.३३. **सुवाते**=उत्पादयतः ५.१.४. [षू प्रेरणे (तुदा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेन शप् । षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्वा लोट् । अन्यत्र लट् लेट् चापि]

सुवज्र शोभनशस्त्राऽस्त्रप्रयोगकुशल (इन्द्र=प्रशंसनीय राजन्) ७.३०.१. **सुवज्रम्**=शोभनानि वज्राण्यायुधानि यस्य तम् (पुरुषम्) ४.१७.४. प्रशस्तशस्त्राऽस्त्रचालनसमर्थम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.१७.१३. शोभनऽस्त्राऽस्त्राणां प्रयोक्तारम् (इन्द्रम्) ४.१७.८. **सुवज्रः**=शोभनो वज्रः शस्त्राऽस्त्रसमूहोऽस्य सः (सभाद्यध्यक्षः) १.१००.१८. [सु-वज्रपदयोः समासः । वज्रः वज्रनाम निघं० २.२०. वज्रः कस्माद् वर्जयतीति सतः नि० ३.११.]

सुवर्चाः सुष्ठु-तेजाः, भा०—तेजस्वी, शत्रुतापकः, शोभनप्रकाशः (सूर्यः) ३३.५. शोभनदीप्तिः (सूर्यः) १.९५.१. सुरूप और सर्वशास्त्रविद्यायुक्त (स्त्री) स०-प्र० १५२, अथर्व० १४.२.१८. सुन्दर शुभ गुण-कर्म-स्वभाव और विद्या से प्रकाशित (पत्नी) सं० वि० ११४, १०.८५.४४. [सु-वर्चस्पदयोः समासः। वर्चस्=वर्च दीप्तौ (भ्वा०)+असुन्]

सुवर्णा शोभनो वर्णो ययोस्तौ (देवौ=विद्वज्जनौ) २९.७. [सु-वर्णपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

सुवर्त्त सुष्ठुतया वर्त्तते १.१६५.१४. [सु+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्लडर्थे लोट्]

सुवसनस्य सुष्ठु वासस्य ६.५१.४. [सु+वस निवासे (भ्वा०) धातोर्भावे ल्युट्]

सुवह्मा सुष्ठु वोढा (इन्द्रः=जगदीश्वरः) ६.२२.७. [सु+वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्मनिन्]

सुवाचम् सुष्ठु वाग्निमित्तम् (रयिं=श्रियम्) ३.१.१९. **सुवाचः**=सुष्ठु सत्या वाग् येषान्ते (विद्वज्जनाः) ३.७.१०. [सु-वाच्पदयोः समासः । वाच्=वच परिभाषणे (अदा०)+क्विप्]

सुवाचसा शोभनं वाचो वचनं ययोस्तौ (कवी=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८८.७. [सु-वाचस्पदयोः समासः । वाचस्=वच परिभाषणे (अदा०) धातोरौणा० असुन् । दीर्घश्छान्दसः]

सुवाचा प्रशस्तवाचौ (कारू=शिल्पिजनौ) २९.३२.

सुशिक्षिता वाग्ययोस्तौ (अध्यापकोपदेशकौ) २०.४२. [सु-वाच्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

सुवानम् सोतुमर्हम् (सोमम्) १.१३०.२. **सुवानस्य**=उत्पद्यमानस्य (अन्धसः=अन्नस्य) २.१९.१. ऐश्वर्यजनकस्य (राजजनस्य) २.११.२०. **सुवानः**=प्रेरयन् (सविता=जगदीश्वरः) ७.३८.२. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्वा बाहु० औणा० क्वनिप्]

सुवासः शोभनानि वासांसि धृतानि येन सः (गृहीतविद्यो जनः) ३.८.४. [सु-वासस्पदयोः समासः। वासस्=वस आच्छादने (अदा०) धातोः 'वसेर्णित्' उ० ४.२१८. सूत्रेण असुन्। णित्वाद् धातोरुपधाया वृद्धिः]

सुवासाः शोभनवस्त्राऽलङ्कृता (जाया=हृद्या स्त्री) ४.३.२. शोभनानि वासांसि यस्याः सा (स्त्री) १.१२४.७. सुन्दर वस्त्र आभूषण धारण करती हुई (स्त्री); स० प्र० ९०, १०.७१.४. [सु-वासस्पदयोः समासः। वासस् इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। सुवासाः कल्याणवासाः नि० १.१९.]

सुविचृत सुष्ठुतया विमुञ्च १२.६३. [सु+वि+चृती हिंसाग्रन्थनयोः (तुदा०) धातोर्लोट्]

सुवितम् सुष्ठूत्पादितम् (अन्नादिकम्) ४.५५.४. **सुवितस्य**=प्रेरितस्य (महज्ज्ञानस्य) ७.१.२४. **सुविताय**=ऐश्वर्याय ३३.८४. प्रेरणाय ६.३२.४. अभिषवाय ३.२.१३. उत्पादनीयाय (ऐश्वर्याय) १५.२७. ऐश्वर्यप्राप्तये १.१८९.३. ऐश्वर्यवते (विदुषे शिल्पिजनाय) ५.५९.१. प्रेरिताय दासाय १.१०४.२. प्रेरणायै ६.४०.३. **सुविते**=प्रेरिते (याने) २९.४. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः क्तः। षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्वा क्तः। षू प्रेरणे (तुदा०) धातोर्वा क्तः। षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोर्वा क्तः। सुविते—सुविते सु इते सूते। सुगते प्रजायामिति वा नि० ४.१७. सुविता सुप्रसूतानि नि० १२.२८.]

सुविदत्रम् सुष्ठु दातारम् (राजानम्) २.१.८. **सुविदत्रः**=सुष्ठु विज्ञानदाता (राजा) २.९.६. **सुविदत्रान्**=सुष्ठु विविधानां सुखानां दातॄन् (पितॄन्=जनकान्) १९.५६. [सु-विदत्रपदयोः समासः। सु+विद सत्तायाम् (दिवा०) धातोः 'सुविदेः कत्रन्' उ० ३.१०८. सूत्रेण कत्रन्। विद ज्ञाने (अदा०) विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोर्वा कत्रन्। सुविदत्रः कल्याणविद्यः नि० ६.१४. सुविदत्रं धनं भवति विन्दतेर्वैकोपसर्गाद् ददातेर्वा स्याद् द्व्युपसर्गात् नि० ७.९.]

सुविदत्राणि शोभनानि विदत्राणि विज्ञानानि येभ्यस्तानि (भा०—सुखसाधकानि वस्तूनि) २.२४.१०. [सु-विदत्रपदयोः समासः। सुविदत्रमिति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

सुविद्वाँसः शोभनाश्च ते योगिनः (जनाः) १७.६८. [सु-विद्वस्पदयोः समासः। विद्वस्=विद ज्ञाने (अदा०) धातोः शतृ। 'विदेः शतुर्वसुरि' ति शतुर्वसुरादेशः]

सुविप्रः शोभना विप्रा मेधाविनो यस्मिन् सः (अध्वर्युः=अहिंसायज्ञमिच्छुर्जनः) २५.२८. सुष्ठु मेधावी (विद्वज्जनः) १.१६२.५. [सु-विप्रपदयोः समासः। विप्रः मेधाविनाम निघं० ३.१५.]

सुविमुमुग्धि सुष्ठुतया विमुञ्च २.२८.६. [सु+वि+मुच्लृ मोचने (तुदा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन श्लुः]

सुविवृतम् सुष्ठु विकाशितम् (राधः=विद्यासुवर्णादिधनम्) १.१०.७. [सु+वि+वृतु वरणे (दिवा०) धातोः क्तः]

सुवीरम् शोभना वीराः प्राप्यन्ते यस्मात् तम् (रयिं=राज्यश्रियम्) १८.७४. शोभना वीरा येन भवन्ति तम् (रयिम्) ६.१६.२९. उत्तमवीराऽऽवृतम् (इन्द्रं=शत्रुविदारकं राजानम्) ६.१७.१३. उत्तमवीरनिमित्तम् (राधः धनम्) ५.५७.७. शोभनाः वीराः शरीरात्मबलयुक्ता यस्मात्तम् (यज्ञम्) १९.३२ उत्तमवीरप्रापकम् (रयिम्) ६.५.७. शोभनाः सुशिक्षिता वीरा यस्मात्तम् (रयिम्) १.९२.८. **सुवीरः**=शोभनश्चाऽसौ वीरश्च (राजसन्तानः) ४.१७.४. शोभना वीरा यस्य सः (इन्द्रः=राजा) ६.४५.६. शोभना वीरा यस्मिन् सः (यज्ञः) ४.३७. शोभनपुत्रादिभृत्यः (जनः) १.११६.२५. शोभनैर्वीरैर्युक्तः (विद्वज्जनः) १.९१.१९. सुष्ठु वीरयुक्तः (राजा) ६.४७.२६. सुभटः (जनः) ६.५०.९. प्रशस्तवीरयुक्तः (सभापती राजा) ७ २९. युद्ध में सदा विजयी (पुरुष) आर्याभि० २.३५, ३.३७. **सुवीराः**=सुष्ठु सकलविद्याव्यापिनः (विद्वत्तमा जनाः) २.२.१३. शोभनाश्च ते वीराश्च तैर्युक्ताः (सज्जनाः) २.१५. सुष्ठु शौर्योपेतैर्जनैर्गुणैर्वा युक्ताः (सज्जनाः) २.१३.१३. उत्कृष्ट-शूरवीराः (जनाः) १.१२२.८. शोभनाश्च ते वीरा व्याप्तविद्यास्ते (विद्वज्जनाः) २.३९.८. सुष्ठु प्राप्तशरीरबलाः (देवाः=विद्वज्जनाः) २.३५.१५. सुष्ठ प्राप्तवीर्याः सन्तः (प्रजाजनाः) २.३३.१५. [सु-वीरपदयोः समासः। सुवीराः—वीरवन्तः कल्याणवीरा वा। वीरो वीरयत्यमित्रान् वेतेर्वा स्याद् गतिकर्मणो वीरयतेर्वा नि० १.७. सुवीरा एष वाव सुवीरो यस्य पशवः तां० १३.१.४.]

सुवीरम् शोभना वीरा यस्मिन् येन वा तम्

(सभाध्यक्षम्) १.३१.१०. शोभना वीरा यस्मात्तत् (ब्रह्म=महद्धनम्) ३.८.२. [सु-वीरपदयोः समासः]

सुवीरा शोभना वीरा येभ्यस्तानि (कर्माणि) ६.१३.५. [सु-वीरपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि]

सुवीरा शोभना वीरा यस्यां सा (विट्=प्रजा) ७.५६.५ **सुवीराम्**=शोभना वीरा विज्ञानवन्तो यस्यां ताम् (इषं=विद्याम्) ७.२५.६. शोभना वीरा यस्यां सेनायां ताम् ४.३४.२. **सुवीराः**=शोभना वीरा याभ्यस्ताः (इषः=अन्नाद्याः) ३.५३.१. [सु-वीरपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सुवीरासः सुशिक्षाविद्यायुक्ता वीराः पुत्रा भृत्याश्च येषान्ते (मनुष्याः) १.११७.२५. शोभनाश्च ते वीराश्च (नरः=सिद्धकामा जनाः) ७.१.४. [सु-वीरपदयोः समासे जसोऽसुक्]

सुवीर्यम् शोभनं शरीरात्मपराक्रमलक्षणं बलम् १.३६.१७. शोभनं वीर्यं पराक्रमं यस्मिँस्तत् (बलम्) १.४०.२. शोभनानि वीर्याणि पराक्रमा यस्मात्तत् (वाजं=विज्ञानमन्नं वा) १.४८.१२. शोभनं धनम् ३.१०.८. सुष्ठु पराक्रमम् (विद्वज्जनम्) ५.१३.५. शोभनं विज्ञानादिधनं पराक्रमं वा ३.१०.३. शोभनानि वीर्याणि सखीनां कर्माणि यस्मिँस्तत् (बलम्) १.६४.२. शोभनञ्च तद्वीर्यञ्च तत् ११.५८. सुष्ठु वीर्याणि यस्य तत् (अन्नम्) १.४४.२. सुष्ठु पराक्रमयुक्तम् (आयुः=जीवनम्) १.६३ ३. सुबलम् ६.१६.१२. शोभनानि वीर्याणि यस्माद्विद्याऽभ्यासात्तम् १.६३.२. **सुवीर्यस्य**=सुष्ठुपराक्रमयुक्तस्य सैन्यस्य ४.५१.१०. सुष्ठु वीर्यं पराक्रमो यस्मात्तस्य (रायः=धनस्य) ७.४.६. शोभनेषु वीरेषु भवस्य (बलस्य) ३.१६.३. शोभनं वीर्यं पराक्रमो ब्रह्मचर्यं यस्य तस्य (राज्ञः) ६.४७.१२. **सुवीर्याय**=आरोग्येण सुष्ठु-पराक्रमाय १३.१. शोभनं वीर्यं शरीरात्मनो बलं पराक्रमो यस्मात्तस्मै (रायस्पोषाय) ३.६३. **सुवीर्ये**=शोभनैर्गुणैर्युक्तं वीर्यं पराक्रमो यस्मिंस्तस्मिन् (बले) १.१०.६. [सु-वीर्यपदयोः समासः। अथवा सु-वीरपदयोः समासे कृते भवार्थे यत्]

सुवीर्येभिः सुष्ठु वीर्यं बलं पराक्रमो वा येषान्तैः (धनान्नादिभिः) ६.१०.५. [सु-वीर्यपदयोः समासे 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐसादेशो न भवति]

सुवृक्ति सुष्ठु व्रजन्ति यस्मिँस्तम् (गर्भं=रथम्) ५.४१.१०. सुष्ठु वृक्तिर्वर्जनं सुवृक्ति यथा तथा १.१८४.५, सुष्ठु वृक्तयो वर्जिता दोषा येभ्यस्तानि (ब्रह्माणि=अन्नानि) १.६१.१६. सुष्ठु वृजते त्यजन्ति दोषान् यस्मात्तत् (स्तोमम्) १.६१.४. सुष्ठु व्रजन्ति येन यानेन तत् १.६१.२. [वृक्तिः वृजी वर्जने (अदा०) (रुधा०) धातोः क्तिन्। सु-वृक्तिपदयोः समासः। सुवृक्तिभिः=सुप्रवृत्ताभिः शोभनाभिः स्तुतिभिः नि० २.२४.]

सुवृक्तिभिः सुष्ठु वृक्तिर्दोषाणां छेदनं येषु तैः (यज्ञैः=शास्त्राभ्यास-सत्सङ्ग-योगाभ्यासैः) ३.६२.१२. सुष्ठु संविभागैः ३.५१.१. **सुवृक्तिम्**=सुष्ठु व्रजन्ति यस्मिन् मार्गे तम् ६.१०.६. सुष्ठु व्रजन्ति येन तम् (अग्निं=विद्युदादिस्वरूपम्) ६.१०.१. सुष्ठु वर्जयितारम् (अग्निं=पावकम्) २.४.१. सुष्ठु वृक्तिर्दुष्टकर्मवर्जनं यस्य तम् (सज्जनम्) २.३५.१५. सुष्ठु वर्जनम् ५.४१.२. **सुवृक्तिः**=शोभना वृक्तिर्वर्जनं यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१५३.२. [सु-वृक्तिपदयोः समासः। वृक्तिः=वृजी वर्जने (अदा०) धातोः क्तिन्। औणा० वा तिः किच्च]

सुवृक्तिभिः सुष्ठु शोभना वृक्तयो दुःखवर्जनानि यासु क्रियासु ताभिः १.५२.१. शोभनाश्च ते वृक्तयो वर्जनानि च ताभिः ३.३.६. सुष्ठु वृक्तिर्वर्जनीयं यासां ताभिः क्रियाभिः ५.२५.३. सुष्ठु छेदिकाभि. क्रियाभिः ६.६१.२. सुष्ठु वृक्तयो दोषवर्जनानि याभ्यस्ताभिः (क्रियाभिः) १.६२.१. सुष्ठु वृजन्ति गच्छन्ति याभिस्ताभिः (अच्छोक्तिभिः=स्तुतिभिः) १.६१.३. सुष्ठु व्रजन्ति याभिः क्रियाभिस्ताभिः ६.१५.४. **सुवृक्तिम्**=सुष्ठु वर्त्तमानाम् (उषसं=प्रभातवेलाम्) ३.६१.५. सुष्ठु व्रजन्ति यस्यां नीतौ ताम् ७.८.३. वर्जयन्त्यनया सा, शोभना चाऽसौ वृक्तिश्च ताम् १.६४.१. सुष्ठु व्रजन्ति दुःखानि यया ताम् (वाचम्) ७.३६.२. सुष्ठु वर्जयन्त्यन्यायं यया ताम् (सत्याचारनीतिम्) ७.३१.११. **सुवृक्तिः**=सुष्ठु व्रजन्ति यस्यां सा (नदी) ६.११.५. शोभना वृक्तिर्वर्त्तनं यस्याः सा (स्त्री) ७.२४.२. [सु-वृक्तिपदयोः समासः। सुवृक्तिरिति व्याख्यातम्]

सुवृजनासु शोभना वृजना गतयो यासां तासु (विक्षु=प्रजासु) १६.६८. [सु-वृजनापदयोः समासः। वृजना=वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० क्युन्। ततः स्त्रियां टाप्। वृजी वर्जने (अदा०) धातोर्वा 'कृपॄवृजिमन्दि०' उ० २.८१. सूत्रेण क्युः। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

सुवृत् यस्सुवर्त्तुमर्हः सः (रथः=यानम्) १.१८३.२. **सुवृतम्**=सुष्ठु रचितं साङ्गोपाङ्गसहितम् (रथं=विमानादियानम्) ४.३३.८. शोभनविभागयुक्तम् (रथम्) १.१११.१. यः सुष्ठु सर्वाङ्गैः शोभनस्तम् (रथम्)

१.१८३.३. **सुवृता**=शोभनैर्मनुष्यैः शृङ्गारैर्वा सह वर्त्तमानेन (रथेन) १.११८.२. शोभनैः साधनैः सह वर्त्तमानेन (रथेन) १.११८.३. यः सुष्ठु वर्त्तते तेन (रथेन) ३.५८.३. शोभनावृतोऽङ्गपूर्त्तिर्यस्य तेन (रथेन) १.४७.७. शोभनाऽऽवरणेन (रथेन) ४.४४.५. [सु+वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः क्विप्। वृतु वरणे (दिवा०) धातोर्वा क्विप्]

सुवृधम् सुष्ठु वर्धमानम् (मेघम्) ५.३२.४. **सुवृधः**= ये सुष्ठु वर्धन्ते ते (नरः=नायका जनाः) ५.५९.५. **सुवृधा**=यः सुष्ठु वर्धयति तेन (ब्रह्मणस्पतिना=विदुषा जनेन) २.२३.९. [सु+वृधु वृद्धौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। सुवृधा सुवर्धयित्रा नि० ३.११.]

सुवेति शोभनतया व्याप्नोति ६.१५.१. [सु+वी गतिव्याप्तिप्रजनादिषु (अदा०) धातोर्लट्]

सुवेदम् शोभनं वेदो विज्ञानं यस्य तम् (अग्नि=विद्युदाख्यम्) ४.७.६. [सु-वेदपदयोः समासः। वेदः=विद ज्ञाने (अदा०) धातोः 'हलश्चे' ति घञ्]

सुवेदाः धर्मोपार्जितैश्वर्यः (राजा) ७.३२.२५. शोभनं विज्ञानं यस्य सः (विद्वज्जनः) ६.४८.१५. सुलभ (ईश्वर) आर्याभि० १,—, ऋ० ५.३.२१.२५. [सु-वेदस्पदयोः समासः।वेदः धननाम निघं० २.१०. विद ज्ञाने (अदा०)+असुन्]

सुव्रतम् शोभनानि व्रतानि कर्माणि यस्य तम् (जनं=मनुष्यम्) ६.४९.१. **सुव्रतः**=शोभनैर्व्रतैर्धर्म्यैर्नियमैर्युक्तः (सूरिः=विद्वज्जनः) १.१८०.६. **सुव्रतानाम्**= शोभनानि व्रतानि सत्याचरणानि येषां तेषाम् (अपत्यानाम्) २१.५. [सु-व्रतपदयोः समासः। व्रतमिति कर्मनाम निघं० २.१.]

सुव्रतासः शोभनानि व्रतानि सत्याचरणानि येषान्ते (सूरयः=विद्वज्जनाः) १.१२५.७. [सु-व्रतपदयोः समासे जसोऽसुक्]

सुशक्तिः शोभना चाऽसौ शक्तिश्च सुशक्तिः ७.३२.२१. [सु-शक्तिपदयोः समासः। शक्तिः=शक्लृ शक्तौ (स्वा०)+क्तिन्]

सुशमि सुष्ठु दुःखं शमितुं शीलं, धर्मः, पदार्थानां साधुकरणं वा यस्य तत् (हविः=द्रव्यम्), प्र०—अत्र 'शमित्यष्टा०' अ० ३.२.१४१. अनेन शमेर्घिनुण्। समीक्षा— इदमपि उव्वट-महीधराभ्यामन्यथैव व्याख्यातम् १.१५. शोभनं कर्म्म ५.८७.९. [सु-शमिन्पदयोः समासः। शमिन् शमु उपशमने (दिवा०) धातोः 'शमित्यष्टाभ्यो घिनुण्' अ० ३.२.१४१ सूत्रेण घिनुण्। 'नोदात्तोपदेशस्य मान्तस्य०' इति वृद्धिप्रतिषेधः। शमी कर्मनाम निघं० २.१.]

सुशमी सुष्ठु शमयितुमर्हः, भा०—शान्तिकरः (विद्वज्जनः) १५.३४. शोभनकर्मा (सिद्धेच्छो राजा) ७.१६.२. [सु-शमिन्पदयोः समासः। शमिन्निति पूर्वपदे व्याख्यातम्। शमी कर्मनाम निघं० २.१.]

सुशरणः शोभनं शरणमाश्रयो यस्य सः (राजा) ७.३४.२२. **सुशरणाय**=शोभनाऽऽश्रयाय ५.४२.१३. [सु-शरणपदयोः समासः। शरणम् गृहनाम निघं० ३.४.]

सुशर्मणः सुशोभितगृहस्य (पत्युः) ११.४९. शोभनानि शर्माणि गृहाणि यस्य तस्य (अग्नेः=विद्वज्जनस्य) ३.१५.१. **सुशर्मा**=शोभनानि गृहाणि यस्य सः, भा०— सर्वर्त्तुसुखसम्पादकं गृहं यस्य सः (गृहपतिः) ८.८. **सुशर्माणम्**=सुशंसितगृहम् (गृहपतिम्) ५.८.२. **सुशर्माणः**=प्रशंसितगृहाः (पञ्चजनाः=उत्तममनुष्याः) ६.५१.११. [सु-शर्मन्पदयोः समासः। शर्म गृहनाम निघं० ३.४. सुशर्मा-सुप्रतिष्ठानः प्राणो वै सुशर्मा सुप्रतिष्ठानः श० ४.४.१.१४. शर्मन्=शॄ हिंसायाम् (क्र्या०) धातोरौणा० मनिन्]

सुशर्माणम् सुशोभितगृहाम् (नावम्) २१.६. शोभनानि गृहाणि यस्यास्ताम् (महीं=भूमिम्) २१.५. [सु-शर्मन्प्राति० द्वितीयैकवचनम्। सुशर्मन् इति व्याख्यातम्]

सुशर्माणा सुष्ठु सुखकारिणौ (अग्नीषोमौ= वाय्वग्नी) १.९३.७. [सुशर्मन् इति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सुशस्तयः शोभनप्रशंसाः (विद्वज्जनाः) ५.४६.६. **सुशस्तिभिः**=शोभनाः शस्तयो यासां क्रियाणां ताभिः १.२७.७. शोभनाभिः प्रशंसाभिः क्रियाभिः १२.१०८. सुष्ठु-प्रशंसाभिः ५.५३.११. [सु-शस्तिपदयोः समासः। शस्तिः=शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। सुशस्तिः (यजु० १२.१०८) (=सुष्टुतिः) ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिरिति। ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुष्टुतिभिरित्येतत् श० ७.३.१.३१. (यजु० ११.४१) ये वोढारस्ते सुशस्तयः श० ६.४.३.९.]

सुशस्ति सुष्ठु प्रशंसनम् ६ ६७.३. शोभना शस्तिः प्रशंसा यस्मिँस्तत् (जगत्=पुत्र-गवादिकम्) ३३.३४. [सु-शस्तिपदयोः समासे नपुंसके सोर्लुक्]

सुशस्ति सुष्ठु प्रशंसिताभिः (नीतिभिः) १.१८६.१. [सु-शस्तिपदयोः समासे 'सुपां सुलुक्०' इति भिसो लुक्]

सुशंसः शोभना शंसाः स्तुतयो यस्य विदुषः सः १.४४.६. शोभनस्तुतिः (राजा) ६.५२.६. सुष्ठु-प्रशंसः (सत्पुरुषः) ७.१६.६. [सु-शंसापदयोः समासः। शंसा—शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः 'गुरोश्च हलः' अ० ३.३.१०३ सूत्रेणाकारः। ततष्टाप्]

सुशिप्र शोभनं शिप्रं ज्ञानं प्रापणं वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=भगवन्) १.९.३. सुशोभितमुखाऽवयव (इन्द्र=आप्तजन) ७.२४.४. शोभनहनुनासिक (स्त्रि, पुरुष) ५.२२.४. सुवदन (सज्जन) ३.५०.२. सुमुखारविन्द (इन्द्र=राजन्) ५.३६.५. सुशोभितहनुनासिक (इन्द्र) ६.४६.५. सुष्ठु सुखप्रापक(इन्द्र=सेनाधिपते) १.१०१.१० **सुशिप्रः**=शोभनहनुनासिकः (इन्द्रः=परमैश्वर्ययुक्तो जनः) ३.३०.३. सुन्दराऽऽननः (सद्वैद्यः) २.३३.५. शोभनानि शिप्राणि सेवनानि यस्मिन् सः (इन्द्रः=परमेश्वरः) २.१२.६. [सु-शिप्रपदयोः समासः। सुशिप्र-शिप्रे हनूनासिके वा नि० ६.१७.]

सुशिल्पे सुष्ठु शिल्पक्रिया ययोस्ते (उषासा=प्रातः-सायं वेले) २९.६. सुन्दराणि शिल्पानि ययोस्ते (नक्तोषासा=रात्रिदिने) २८.२९. [सु-शिल्पपदयोः समासः। शिल्पम्=शील समाधौ (भ्वा०) धातोः 'खष्पशिल्पशष्प०' उ० ३.२८ सूत्रेण पः। निपातनाद् ह्रस्वादेशः]

सुशिश्विम् सुष्ठु वर्धकम् (सभेशम्) १.६५.२. [सु-टुओश्वि गतिवृद्धचोः (भ्वा०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि' इति वा०सूत्रेण किर्लिड्वच्च]

सुशिष्टौ शोभने शासने १.१७३.१०. [सु+शासु अनुशिष्टौ (अदा०) धातोः क्तः]

सुशुक्वनिः सुष्ठु शुचां पवित्राणां वनिः सम्भक्ता (अग्निः=विद्वज्जनः)११.४१. [सु-शुच्-वनिपदानां समासः। शुच्=शुच शोके (भ्वा०)+क्विप्। वनिः=वन संभक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इन्। सु-शुचोपपदे वा वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'छन्दसि वनसनरक्षिमथाम्' इतीन्]

सुशुक्वानः सुष्ठु शुद्धाः (विद्याकामा जनाः) ५.८७.३. [सु+ईशुचिर् पूतीभावे (दिवा०) धातोः क्वनिप्]

सुशूने शोभनतया वर्धने, प्र०—अत्र 'नपुंसके भावे क्तः' १.१०५.३. [सु-शूनपदयोः समासः। शूनम्=टुओश्वि गतिवृद्धचोः (भ्वा०) धातोः क्तः 'नपुंसके भावे क्तः' सूत्रेण]

सुश्रृणुतम् शोभनतयाऽन्नादिसमृद्धिं वर्धयतम् १.४७.२. **सुश्रृणुहि**=शोभनतया श्रृणुहि १.८२.१. [सु+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लोट्। 'श्रुवः श्रृ चे' ति शृ आदेशः श्नुप्रत्ययश्च]

सुशेव सुष्ठु सुखप्रद (राजशिष्य) २.१.९. **सुशेवम्**=सुष्ठुसुखम् (पुरुषम्) ६.५०.१. सुसुखकरम् (ब्रह्म=सच्चिदानन्दलक्षणं चेतनमीश्वरम्) ५.४२.२. सुष्ठु सुखकारकम् (लाङ्गलं=काष्ठम्) १२.७१. शोभनं निधिमिव वर्त्तमानम् (अग्नि=पावकम्) ३.२९.५. **सुशेवः**=शोभनं शेवं सुखं यस्य सः (राजा), प्र०—शेवमिति सुखनाम निघं० ३.६, १०.२८. शोभनं शेवं सुखं यस्मात् सः (अग्निः) ५.१५.१. सुष्ठु सुखः (अग्निः=परमेश्वरः) १२.२९. [सु-शेवपदयोः समासः। शेवः=शीङ् शये (अदा०) धातोः 'इण्शीभ्यां वन्' उ० १.१५ सूत्रेण वन्। शेवम् सुखनाम निघं० ३.६. सुशेवः सुसुखतमः नि० ३.३. सुशेवः सुसुखः। शेव इति सुखनाम शिष्यतेर्वकारो नामकरणोऽन्तःस्थान्तरोपलिङ्गी विभाषितगुणः नि० १०.१७.]

सुशेवा सुष्ठु-सुखा (स्त्री) १४.३. उत्तमसुखयुक्त (स्त्री) सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२६. **सुशेवाः**=सुष्ठु शेवं सुखं याभ्यस्ताः (आपः=प्राणा जलादयो वा) ४.१२. [सुशेव इति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां टाप्]

सुशेव्यम् सुष्ठु सुखेषु भवम् (पदं=मोक्षम्) ५.४३.१४. [सुशेव इति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत्]

सुशोकाः शोभनाः शोका दीप्तयो यस्य सः (अर्यः=स्वामीश्वरो जीवो वा) १.७०.१. [सु-शोकापदयोः समासः। 'गोस्त्रियोः०' इति ह्रस्वो न भवति छान्दसत्वात्। शोका—शोचतिज्वलतिकर्मा (निघं० १.१६) ततो घञन्तात् स्त्रियां टाप्]

सुश्चन्द्र शोभनश्चाऽसौ चन्द्र आह्लादकारकश्च तत्सम्बुद्धौ (भा०—ऋत्विग्, अध्यापक) १५.४३. सुष्ठु सुवर्णाद्यैश्वर्यं ५.६.९. शोभनं चन्द्रं हिरण्यं यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ५.६.५. शोभनं चन्द्रमाह्लादनं हिरण्यं वा यस्मात् तत्सम्बुद्धौ (आप्तविद्वज्जन) १.७४.६. **सुश्चन्द्रम्**=सुवर्णमिव २.३४.१३. [सु-चन्द्रपदयोः समासे 'ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे' अ० ६.१.१५१ सूत्रेण सुडागमः। चन्द्रम् हिरण्यनाम निघं० १.२. चन्द्रः=चदि आह्लादने दीप्तौ च (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' इत्यौणा० रक्]

सुश्रवसम् शोभनानि श्रवांसि यशांसि श्रवणानि वा यस्य यस्माद्वा तम् (सेनाद्यध्यक्षम्) १.९१.२१. सुष्ठु श्रवांस्य-

न्नादीनि यस्य तम् (कुत्सं=वज्रम्) १.५३.१०. शोभनानि श्रवांसि श्रवणान्यस्मिन् प्रसादे यस्य तम् (जनम्) १.४९.२. शोभनानि श्रवांस्यन्नानि यशांसि वा यस्य तम् (राजानं सेनापतिं वा) ३४.२०. **सुश्रवसा**=शोभनानि श्रवांसि श्रवणान्यन्नानि वा यस्य तेन मित्रेण सह १.५३.९. [सु-श्रवस्पदयोः समासः । श्रवस्=श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोरौणा० असुन् । श्रवः अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०.]

सुश्रवस्तमः शोभनानि श्रवांसि श्रवणान्यन्नानि वा यस्मात् स सुश्रवाः अतिशयेन सुश्रवा इति सुश्रवस्तमः विद्वज्जनः) १.९१.१७. अतिशयेन सुष्ठु शृणोति सः (विद्वज्जनः) १.१३१.७. सुष्ठुधनश्रवणयुक्तः सोऽतिशयितः (इन्द्रः=सम्राट्) ३.४५.५. [सुश्रवस् इति व्य.ख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

सुश्रवस्या शोभनाऽन्नेच्छया १.१७८.४. [सुश्रवस् इति व्याख्यातम् । तत इच्छाया.मर्थे क्यजन्तात् स्त्रियाम् 'अ प्रत्ययात्' इत्यकारः । ततष्टाप् स्त्रियाम् । 'सुपां सुलुक्०' इति तृतीयाया लुक्]

सुश्रियम् शोभना श्रीर्यस्मात्तम् (अग्निं=वह्निम्) ३.३.५. **सुश्रियः**=शोभना लक्ष्म्यो येषान्ते (विद्वज्जनाः) ५.७९.४. [सु-श्रीपदयोः समासः । श्रीः=श्रिञ् सेवायाम् (भ्वा०) धातोः 'क्विब्वचिप्रच्छ्या०' इति वा०सूत्रेण क्विप् दीर्घश्च]

सुश्रुतः शोभनं श्रुतं यस्य सः (विद्वज्जनः) ३.३६.१. [सु-श्रुतपदयोः समासः । श्रुतः=श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः क्तः]

सुश्रुता शोभनं श्रुतं याभ्यां तौ (कर्णौ) २.३९.६. [सु-श्रुतपदयोः समासे द्विवचनस्याकारश्छान्दसः]

सुश्रुधि सुष्ठुतया शृणु २.६.१. सुष्ठु शोभनरीत्या शृणु १.४५.५. [सु+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लोट् । 'श्रुशृणुपॄकृवृभ्यश्छन्दसि' अ० ६.४.१०२ सूत्रेण हेर्धिरादेशो भवति]

सुश्रोतुः सुष्ठु शृणोति यस्तस्य (सुश्रोतृजनस्य) १.१२२.६. [सु+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

सुश्लोक शुभकीर्त्ते, सत्यवाक् भा०—अतिप्रशंसनीय (सत्यराजन्=सत्यन्यायप्रकाशक सभेश) २०.४. सत्यकीर्त्ते (सत्यराजन्) ऋ० भू० २१८, २०.४. [सु-श्लोकपदयोः समासः । श्लोकः वाङ्नाम निघं० १.११.]

सुषखायः शोभनाः सखायो येषान्ते (जनाः) १.१७३.९. [सु-सखिपदयोः समासः । सस्य षकारश्छान्दसः]

सुषणनानि सुष्ठु विभाजितानि (वसु=द्रव्याणि) ७.१२.३. [सु+षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

सुषणा यानि सुखेन सन्यन्ते तानि सुषणानि, प्र०—अत्र अविहितलक्षणो मूर्धन्यः १.४२.६. [सु=षण सम्भ-भक्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सुषदः यः शोभनेषु व्यवहारेषु सीदति सः (अर्वा=विज्ञानयुक्तः पुत्रः) ११.४४. [सु+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच् । सुषदः (यजु० ११.४४) पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहण इति पृथुर्भव सुशामास्त्वमग्नेः पशव्यवाहन इत्येतत् (सुषदः=सुशीमः) श० ६.४.४.३.]

सुषदा या शोभने व्यवहारे सीदति सा (भा०—राजपत्नी) १०.२६. सुष्ठु सीदन्ति यस्यां सा (पत्नी) ३७.१२. सुखेन सीदन्ति यस्यां तस्याम् (योनौ=गृहे जन्मान्तरे वा), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति ङे-स्थाने आकारादेशः २.२०. **सुषदाम्**=सुष्ठु सुखदात्रीम् (राजनीतिम्) १०.२६. [सु+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरच् । ततष्टाप् स्त्रियाम् । 'कृतो बहुलं वा' इति नियमेनाच् कर्त्तृभिन्नेष्वपि कारकेषु भवति । अथवा घञर्थे कः । ततष्टाप्]

सुषमिधा सम्यक् प्रदीपकेनेन्धनेन ५.८.७. शोभनया समिधेव धर्म्यक्रियया ७.१७.१. [सु+सम्+ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः क्विप् । ततस्तृतीयैकवचनम्]

सुषहान् सुखेन सोढुं योग्यान् (अमित्रान्=शत्रून्) ६.४६.६. [सु+षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

सुषंसदम् शोभना संसद् यस्य तम् (विद्वज्जनम्) १.११२.७. [सु-संसद्पदयोः समासः । संसद्=सम्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सुषारथिः शोभनश्चाऽसौ सारथिश्चाऽश्वानामग्न्यादीनां वा नियन्ता (चालयितृजनः) २९.४३. यानचालयिता (जनः) ३४.६. [सु-सारथिपदयोः समासः । सुषारथिः =कल्याणसारथिः नि० ९.१६. सारथिः—सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सर्त्तेर्णिच्च' उ० ४.८९. सूत्रेण घथिन् । णित्वाद् वृद्धिः]

सुषाव सुनोति ४.४५.५. निष्पादयेत् १९.२. सुषुम निष्पादयेम १.१३७.१. सुनुवाम १.१०१.९. **सुषुवुः**=निष्पादयन्तु २०.६३. **सुषुवे**=प्रसुव उत्पादये ९.२३. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्लिट्]

सुषाहा सुष्ठु साहस्सहनं यस्य सः (देवः=आप्तो

जनः) १.१८६.२. [सु-साहपदयोः समासः । साहः=षह मर्षणे (भ्वा०) धातोर्घञ् भावे । 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण सु-स्थान आकारादेशः]

सुषिलीका पक्षिविशेषः २४.३६.

सुषुतम् सुष्ठु निष्पादितम् (अंशुः=सारम्) ३.३६.७ **सुषुतस्य**=सुष्ठु निर्मितस्य (महौषधिरसस्य) ७.२९.१. सुष्ठु विद्याविनयाभ्यां निष्पन्नस्य (भृत्यवर्गस्य) ४.२०.४. सम्यक् संस्कृतस्य (उत्तमजनस्य) ५.३३.७. यथावत् सिद्धस्य (सोमस्य=महौषधिगणस्यैश्वर्यस्य) ३.५३.२. सुष्ठुतया साधुकृतस्य (सोमस्य=विद्वज्जनस्य) ५.२९.३. [सु-सुतपदयोः समासः । सुतः=षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः क्तः]

सुषुपाणम् शोभनं पानं यस्य तम् (अ०—अधार्मिकं जनम्) ४.१९.३. [सु-पानपदयोः समासः । सुपदस्य द्वित्वं छान्दसम्]

सुषुपुः स्वपेयुः ७.१८.१४. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्लिट्]

सुषुप्वांसम् सुखेन शयानम् (निखातं=क्षेत्रम्) १.११७.५. **सुषुप्वांसः**=ये सुप्तास्ते (जडधियो जनाः) १.१६१.१३. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

सुषुम्ण शोभनसुखयुक्त (विद्वज्जन) ३८.२८. **सुषुम्णम्**=सुष्ठु सुखयुक्तम् (रुद्रं=परमेश्वरम्) ६.४९.१०. **सुषुम्णस्य**=शोभनं सुम्नं सुखं यस्य तस्य (पयसः=उदकस्य दुग्धस्य वा) ३८.२८. **सुषुम्णः**=सुशोभनं सुम्नं सुखं यस्मात् सः (चन्द्रमाः) १८.४०. [सु-सुम्नपदयोः समासः । सुम्नम् सुखनाम निघं० ३.६. सुषुम्णः (यजु० १८.४०) सुषुम्ण इति सुयज्ञिय इत्येतत् श० ९.४.१.९.]

सुषुम्णा सुष्ठु सुखयुक्तौ (अश्विना=शिल्पकार्यविज्जनौ) ५.७५.२. [सु-सुम्नपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

सुषुम्णे सुष्ठु सुखकरे (द्यावापृथिवी=विद्युद्भूमी) ६.५०.३. [सु-सुम्नपदयोः समासः]

सुषूतम् सुष्ठु प्रसूतम् (अग्निम्) २.१०.३. [सु+षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः क्तः]

सुषूतमम् सुष्ठु सूते तम् (करदायम्) ६.३०. [सुषूप्राति० अतिशायने तमप् । सुषूः=सु+षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०)+क्विप्]

सुषूदति सुष्ठु क्षरति वर्षति १.१४२.११. सुष्ठुतया ददाति १.१०५.१४. **सुषूदथ**=शोभनतया रक्षथ ५.५४.७. **सुषूदः**=सुष्ठुतया नाशय ७.१.२०. सम्यग् देहि ७.१.२५. **सुषूदिम**=सुष्ठु क्षारयेम १.१८७.११. [सु+षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लङ् लिट् च]

सुषूदः क्षयशरीरादियुक्तान् (मर्त्तान्=मनुष्यान्) १.७३.८. [सु+षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सुषूमा सुष्ठु प्रसवित्री (उत्तमा पत्नी) २.३२.७. [सु+षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः 'इषियुधीन्धि०' उ० १.१४५ सूत्रेण मक् । ततः स्त्रियां टाप्]

सुषूः सुष्ठु जनयित्री (माता) ५.७.८. [सु+षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोर्वा 'सत्सूद्विषद्रुह०' सूत्रेण क्विप्]

सुषेणः शोभना सेना यस्य सः (ग्रामणीरिव पौषमासः) १५.१९. [सु-सेनापदयोः समासः । सुषेण (यजु० १५.१९.) तस्य (पर्जन्यस्य) सेनजिच्च सुषेणश्च सेनानीग्रामण्याविति हैमन्तिकौ तावृतू । श० ८.६.१.२०.]

सुष्टुतम् शोभनकीर्त्तिम् (विद्वज्जनम्) ५.१३.५. **सुष्टुतः**—सुष्ठु प्रशंसितः (रथः) १.१५७.३. सर्वत्र व्याप्तसुकीर्त्तिः (इन्द्रः=राजा) ४.२४.२. [सु-स्तुतपदयोः समासः । स्तुतम्—ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः]

सुष्टुतयः शोभनाः स्तुतयो येषान्ते (सज्जनाः) ३.१९.३. [सु-स्तुतिपदयोः समासः । स्तुतिः=ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०)+क्तिन्]

सुष्टुतिम् शोभना प्रशंसा यस्यास्ताम् (देवीं=विदुषीं स्त्रियम्) ४.४३.१. प्रशस्तां स्तुतिम् १.११७.१२. उत्तमां प्रशंसाम् ५.४३.१०. शोभनां प्रशंसाम् ५.६६.३. **सुष्टुतिः**=शोभना चाऽसौ गुणस्तुतिश्च सा १.१७.९. शोभनप्रशंसा ७.५८.६. **सुष्टुतीः**=याः शोभनाः स्तुतयस्ताः १८.७२. [सु-स्तुति पदयोः समासः । सुष्टुतिः—स्तुतेः नि० ६.१८.]

सुष्टुती श्रेष्ठया प्रशंसया ७.१४.२. सुष्ठु प्रशंसया ३.३८.८. शोभनतया स्तुतया २.३२.४. [सु-स्तुतिपदयोः समासे 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण टा-विभक्तेः पूर्वसवर्णदीर्घः]

सुष्टुभः शोभनस्तोता (सज्जनः) ५.७५.४. [स्तोभति अर्चतिकर्मा । निघं० ३.१४. ततः सुपूर्वाद् इगुपधलक्षणः कः]

सुष्टुभा शोभनेन प्रशंसितेन (गणेन=किरणसमूहेनोपदेश्यविद्यार्थिसमुदायेन वा) ४.५०.५. सुष्ठु द्रव्यगुणक्रियास्थिरकारकेण (रवेण) १.६२.४. [सु+स्तोभति अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४) । ततः क्विप्]

सुष्वति सुन्वन्ति २.१६.५. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन श्लुः । अदभ्यस्तादिति झस्याद्-आदेशः]

सुष्वयन्त गच्छन्ति ७.३६.६. [सु+अय गतौ (भ्वा०) धातोर्लङ् । आडभावः । सुपदस्य च द्वित्वं छान्दसम्]

सुष्वयन्ती सुष्ठु शयाने इव (उषासानक्ता=रात्रिदिने २९.३१. [सु+ञिष्वप् शये (अदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप् । पस्य यकारश्छान्दसः । आसुष्वयन्ती=सेष्मीयमाणे इति वा, सुष्वापयन्त्याविति वा नि० ८.११.]

सुष्वये सुष्ठ्वभिषोत्रे (स्तुवते जनाय ६.२३..३. सुष्ठु निष्पादकाय (पक्तये=पाककर्त्रे जनाय) ४.२५.७. ऐश्वर्यप्राप्त्यनुष्ठात्रे (मर्त्याय=मनुष्याय) ४.२४.२. **सुष्विम्**=शोभनैश्वर्यप्रदम् (एतशम्=अश्वम्) १.६१.१५. सुष्ठ सोतारमैश्वर्यकारकम् (इन्द्रं=शत्रुविनाशकं राजानम्) ६.२३.९. **सुष्वेः**=सुष्ठु निष्पन्नस्याऽन्नस्य ४.२५.६. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि०' इति किः लिड्वच्च । तेन धातोर्द्वित्वम्]

सुष्वाणेभिः सुष्ठु शब्दायमानैः वीरैर्जनैः) ४.२९.२. [सु+स्वन शब्दे (भ्वा०) धातोः 'स्वनहसोर्वा' इति पक्षे घञ् । सुष्वाणप्राति० भिस ऐस् न भवति 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

सुष्वितराय सुष्ठ्वतिशयितमैश्वर्यं यः सुनोति तस्मै (विद्यार्थिजनाय) ७.१९.१. [सुष्विप्राति० अतिशायने तरप् । सुष्विरिति व्याख्यातम्]

सुसङ्काशा सुष्ठु शिक्षया सम्यक् शासिता (योषा=युवतिः १.१२३.११. [सु-सङ्काशपदयोः समासे स्त्रियां टाप् ।

सुसदृशः सम्यक् तुल्यगुणकर्मस्वभावाः (मरुतः=मनुष्याः) ५.५७.४. [सु-सदृशपदयोः समासः । सदृशः—समानोपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'समानान्ययोश्चेति वक्तव्यम्' इति० वा०सूत्रेण कञ् । समानस्य सादेशः 'दृग्-दृशवतुषु' सूत्रेण]

सुसनितः सुष्ठु संविभाजक (अग्ने=विद्वज्जन) ३.१८.५. [सु+षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कर्त्तरि क्तः]

सुसन्दृक् सुष्ठु पश्यति यया सा (तन्यतुः=विद्युत्) ७.३.६. [सु-सन्दृक्पदयोः समासः । सन्दृक्=सम्+दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः 'वा छन्दसि' इति क्विन्, सम्पदादित्वाद्वा क्विप् । सुसन्दृक्—प्राणो वै सुसन्दृक् तै० १.६.९.९. सन्दृक्—सन्द्रष्टा नि० १०.२६.]

सुसन्दृशम् यः सुष्ठु पश्यति दर्शयति वा तम् (भा०—सर्वद्रव्यप्रकाशकं सूर्यम्, भक्तजनाऽऽत्मसु विज्ञानोत्पादनेन सर्वसत्यव्यवहारप्रकाशकमीश्वरम्) ३.५२. एकीभावेन सर्वकर्मणां द्रष्टारम् (सेनाद्यध्यक्षम्) १.८२.३. सुष्ठु सन्द्रष्टव्यम् (द्रविणं=धनं यशो वा) ७. १०.३. **सुसन्दृशः**=सत्याऽसत्ययोः सुष्ठु सम्यग् द्रष्टुः (अग्नेः=अध्यापकस्य) १.१४३.३. सुष्ठु सम्यग् दर्शकस्य (नरोत्तमस्य) ७.९.४. [सु सन्दृक्पदयोः समास इति व्याख्यातम् पूर्वपदे]

सुसन्दृशा सुष्ठुतया सम्यग् द्रष्टारौ (इन्द्रवायू=राजप्रजाजनौ) ३३.८६. [सुसन्दृगिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सुसमिद्धम् सुष्ठु प्रदीप्यमानम् (महद्यशः=अतुलां कीर्तिम्) २८.२४. [सु-समिद्धपदयोः समासः । समिद्धम्=सम्+ञि इन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः क्तः]

सुसमिद्धः सुष्ठुतया सम्यक् प्रदीपितः (अग्निः=विश्वेश्वरो भौतिको वा) १.१३.१. सुष्ठु प्रकाशितः सूर्यः २१.१२. **सुसमिद्धाय**=सुप्रदीप्ताय (अग्नये) ५.५.१. सुष्ठु सम्यगिद्धो दीप्तस्तस्मिन् (रूपादिगुणस्वभावेऽग्नौ), प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तमी-स्थाने चतुर्थी ३.२. (सुसमिद्धमिति व्याख्यातं पूर्वपदे]

सुसमिधा सुष्ठुतया सम्यक् प्रदीप्तेनेन्धनेन ५.८.७. शोभनतया समिधेव धर्म्यक्रियया ७.१७.१. [सु-समिधपदयोः समासाट् टा । समिध्=सम्+ञि इन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः क्विप् ।

सुसमुब्धम् सुष्ठु सम्यगृजुम् (सरलस्वभावं पुरुषम्) १.१८५.५. [सु-समुब्धपदयोः समासः । समुब्धम्=सम्+उब्ज् आर्जवे (तुदा०) धातोर्घञ्-प्रत्यये छान्दसं रूपम्]

सुसम्पिष्टम् सुष्ठ्वेकत्र पिष्टं यस्मिँस्तत् (अनः=शकटमिव) ४.३०.११.

सुसम्मृष्टासः श्रेष्ठरीत्या सम्यक् शुद्धाः (आताः व्याप्ता दिशः) ३.४३.६. [सु-सम्मृष्टपदयोः समासे जसोऽसुक् । सम्मृष्टः=सम्+मृजूष् शुद्धौ (अदा०) धातोः क्तः]

सुसर्वाः सम्यगखिलाः (प्रजाः) ७.२६.३. [सु-सर्व-पदयोः समासः]

सुसहासति परस्परं सुसहायेन स्वसति सम्यक्

सुखोन्नतिः ऋ० भू० ६५, ऋ० ८.८.४६.४.

सुसस्याः शोभनानि सस्यानि धान्यादीनि याभ्यस्ताः (कृषीः=कृषिक्रियाः) ४.१०. [सु-सस्यपदयोः समासः । ततष्टाप् । सस्यम्=शसु हिंसायाम् (भ्वा०) धातोः 'माछाशसिभ्यो यः' उ० ४.११६ सूत्रेण यः । शस्य सकारो वर्णव्यत्ययेन]

सुशंसिताः सुष्ठु प्रशंसिताः (रश्मयः) ५.१६.५. [सु+शंसु स्तुतौ (भ्वा०) धातोः क्तः]

सुसंसत् शोभना संसत् सभा यस्य सः (विद्वज्जनः) ७.६.३. [सु-संसत्पदयोः समासः । संसत्=सम्+षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

सुसंस्कृताः शोभनाः संस्कृताः (रथाः=विमानादीनि यानानि) १.३८.१२. [सु-संस्कृतपदयोः समासः । संस्कृतम्=सम्+डुकृञ् करणे (तना०) धातोः क्तः । 'संपर्युपेभ्यः करोतौ भूषणे' इति सुडागमः]

सुसूव सम्यग् जनयति ७.२०.५. [षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोर्लिट् । परस्मैपदं व्यत्ययेन । वुगागमश्छान्दसश्च]

सुस्वरुः सुष्ठूपदेशकः (विद्वज्जनः) ५.४४.५. [सु+स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोः 'शृस्वृस्निहि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः]

सुहना सुहनानि हन्तुं सुगमानि (शत्रुसैन्यानि) ७.२५.५. [सु+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० अन् । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

सुहनानि सुष्ठु हन्तुं योग्यानि (वृत्रा=शत्रुसैन्यानि ४.२२.६. [सु+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोरौणा० बाहु० अन्]

सुहन्तु शोभनेन प्रकारेण नाशयतु ७.१६.४. [सु+हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लोट्]

सुहर्यत सुष्ठुतया कामयध्वम् ५.५४.१५. [सु+हर्यति कान्तिकर्मा (निघं० २.६.) धातोर्लोट्]

सुहवम् सुखेन होतुं योग्यम् (रयिम्) १.५८.६. सुष्ठ्वाह्वयितुं योग्यम् (देवं=दातारं विद्वज्जनम्) ६.४६.६. सुष्ठु प्रशंसितम् (इन्द्रं=परमैश्वर्यम्) ४.१६.१६. सुष्ठ्वाह्वानम् २०.५०. शोभनो हव आह्वानं सङ्ग्रामो वा यस्य तम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.४७.११. शोभनयुद्धकारिणम् (राजानम्) ऋ० भू० २२०, २०.५०. **सुहवस्य**=शोभनो हवो ग्रहणं दानं वा यस्य तस्य (पत्युः) ११.४६. सुष्ठु स्तुतस्य विदुषः ३.१५.१. **सुहवः**=शोभनो हवो सत्कारो यस्य सः (राजा) ६.५२.६. सुस्तुतिः (वीरजनः) ७.१.२१. सुष्ठुदानः (सद्वैद्यः) २.३३.५. सुष्ठु ग्रहणादानः (विद्वज्जनः) ५.४२.१६. सुष्ठु प्रशंसनीयः (विद्वज्जनः) ५.४३.५. शोभनाऽऽह्वानः (अग्निः=अध्यापको राजा वा) ४.१.५. शोभनाह्वानस्तुतिः (भूपतिः) ३.४९.३. शोभन इवाऽऽह्वानं यस्य सः (इन्द्रः=ईश्वरोपासको राजा) ६.२६.६. सुष्ठु ज्ञानविज्ञानः (इन्द्रः=राजा) ६.२१.८. सुष्ठुदानः (वैद्यः) २.३३.५. **सुहवाः**=सुष्ठु प्रशंसिताः (विद्वद्धर्मात्मजनाः) २.३६.३. सुष्ठु दानाऽदानाः (राजानः) ७.४०.४. शोभनाह्वानाः (विद्वांसः) २६.२४. [सु-हवपदयोः समासः । हवः=हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'ऋदोरबि' त्यप् । अथवा ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः 'भावेऽनुपसर्गस्य' सूत्रेण भावेऽप्प्रत्ययः सम्प्रसारणञ्च । सुहवां सुह्वानाम् नि० ११.३१.]

सुहवा शोभनानि हवान्याह्वानानि ययोस्तौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) ७.४४.२. सुष्ठ्वाहवनीयौ (इन्द्रवायू=राजप्रजाजनौ) ३३.८६. सुष्ठुप्रशंसितावध्यापकोपदेशकौ) ६.५२.१६. [सुहवमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सुहवा सुष्ठु सुखप्रदा (पत्नी) १.१२३.१३. **सुहवाम्**=सुष्ठु स्पर्धनीयाम् (स्त्रियम्) २.३२.४. [सुहवमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

सुहवानि सुष्ठ्वाह्वानानि प्रशंसनानि वा ७.३५.३. [सुहवमिति व्याख्यातम्]

सुहवामहे सुष्ठुतयाऽऽह्वयामहे १.११८.१०. [सु+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लेटि छान्दसं रूपम्]

सुहवासः सुष्ठ्वादातारः (अश्वाः=किरणाः) ३.६.८. ये सुष्ठ्वाह्वयन्ति ते (देवासः=विद्वज्जनाः) ४.१६.१. [सुहवमिति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

सुहविषे सुसामग्रीकाय (जनाय) ४.२.४. [सु-हविष्पदयोः समासः । हविः उदकनाम निघं० १.१२.]

सुहव्यम् शोभनानि हव्यानि यस्य तम् (विद्वांसम्) १.७४.५. [सु-हव्यपदयोः समासः । हव्यम्=हु दानादानयोः (जु०) धातोर्यत्]

सुहव्याम् सुष्ठु ग्रहीतव्याम् (देवीं=विदुषीं स्त्रीम्) ४.४३.१. [सुहव्यमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

सुहस्त शोभना हस्तक्रिया यस्य तत्सम्बुद्धौ (मित्र=विद्वन् सभाध्यक्ष) ४.२७. **सुहस्तः**=शोभनौ हस्तौ यस्य

सः (गोधुक्) १.१६४.२६. **सुहस्ताः**=शोभनेषु कर्मसु हस्ता येषान्ते (ऋभवः=मेधाविजनाः) ७.३५.१२. शोभना धर्म्यकर्मकरा हस्ता येषान्ते (ऋभवः) ४.३५.६. शोभनाः, कर्मसाधका हस्ता येषान्ते (ऋभवः) ४.३३.८. [सु-हस्तपदयोः समासः। सुहस्तः कल्याणहस्तः नि० ११.४३.]

सुहस्ता शोभनौ हस्तौ ययोस्तद्वत् (विद्युत्प्राणौ) ३.५७.२. [सु-हस्तपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

सुहस्त्यः शोभना हस्तक्रियाः सुहस्तास्तासु साधुः (विद्वान् जनः) १.६४.१. [सु-हस्तपदयोः समासे कृते ततः साध्वर्थे यत्]

सुहिरण्यः शोभनानि हिरण्यानि यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१२५.२. उत्तमसुवर्णादिधनः (पुरुषः) ४.४.१०. [सु-हिरण्यपदयोः समासः]

सुहिरण्ये सुष्ठुतेजोयुक्ते (उषासा=प्रातःसायंवेले) २६.६. [सु-हिरण्यपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

सुहुताः सुष्ठु हुतानि योगदानरूपाणि कर्माणि याभिर्योगिनीभिः स्त्रीभिस्ताः (योगिन्यो विदुष्यः) ७.१५. [सु-हुतपदयोः समासे स्त्रियां टाप्। हुतम्=हु दानादानयोः (जु०) धातोः क्तः]

सुहुवेम शोभनतयाऽऽदद्याम २१.५. [सु+हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लिङ्। विकरणव्यत्ययेन शः। हुवेम ह्वयेम नि० १०.२८.]

सुहूमहे सुष्ठुतयाऽऽह्वयाम ६.४६.६. [सु+ह्वेञ् स्पर्धायाम् (भ्वा०) धातोर्लट्। शपो लुक् सम्प्रसारणं च छान्दसम्]

सुहूः सुष्ठु हूयते यो या वा स सा (जगदीश्वरो यज्ञक्रिया वा) १.३०. [सु+ह्वेञ् स्पर्धायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्। यजादित्वात् सम्प्रसारणम्। 'हलः' इति दीर्घः]

सू शोभनार्थे क्रियायोगे, प्र०—अत्र 'निपातस्य च' इति दीर्घः १.१०.११.।

सूकरस्य यः सुष्ठु करोति तस्य (इन्द्रस्य=परमेश्वरस्य) ७.५५.४. **सूकरः**=यः सुष्ठु शुद्धिं करोति सः बलिष्ठो वराहः २४.४०. यः सम्यक् करोति सः (गृहस्थो जनः) ७.५५.४. [सूपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृञो हेतुताच्छील्यानुलोम्येषु' इति ताच्छील्ये टः। 'निपातस्य च' इति पूर्वस्य दीर्घः। कर्त्तरि वा पचाद्यच्]

सूक्तम् सुष्ठु कथितम् (भा०—विद्याध्ययनाध्यापनश्रवणोपदेशनम्) १८.५. शोभनं वचनम् ७.५८.६. **सूक्तस्य**=यः सुष्ठूच्यते तस्य (वेदचतुष्टयस्य) २.२३.१६. सुष्ठु वक्तुमर्हस्य (भा०—विद्यायाः सत्यस्य व्यवहारस्य) ३४.५८. **सूक्तानि**=सूष्ठ्वर्था उच्यन्ते येषु गायत्र्यादिछन्दोयुक्तेषु वेदस्थेषु (वेदमन्त्रसमूहेषु) तानि १.९३.१. **सूक्तेन**=सुष्ठु प्रतिपादितेन (वचसा=भाषणेन) २.१८.३. वेदमन्त्रसमूहेन ६.५२.१७. सुष्ठु कथितेन (वेदमन्त्रसमूहेन) १.१७१.१. सुष्ठूक्तेन (मन्त्रवचनेन) २.६.२. **सूक्तैः**=सुष्ठ्वर्थवाचकैर्वेदविभागैः ५.४६.२. सुष्ठूक्तार्थैर्वेदवचोभिः ७.२६.३. शोभनान्युक्तानि वचनानि येषूपदेशनेषु तैः १.७०.३. सुष्ठु सत्यैर्वचनैर्वेदोक्तैर्वा (विभागैः) ५.८२.७. [सु-उक्तपदयोः समासः। उक्तम् वच परिभाषणे (अदा०) धातोः क्तः। 'वचिस्वपि०' इति सम्प्रसारणम्। सूक्तम्=यजमानो हि सूक्तम् ऐ० ६.६. आत्मा सूक्तम् कौ० १४.४. द्यौस्सूक्तम् जै० उ० ३.४.२. शिरस्सूक्तम् जै० उ० ३.४.३. गृहाः सूक्तम् ऐ० ३.२३. विट् सूक्तम् ऐ० २.३३. प्रजाः पशवः सूक्तम् कौ० १४.४.]

सूक्तवाकाय सूक्तानि वाकेषु यस्य तस्मै (मनुष्याय) २१.६१. **सूक्तवाकेन**=सुष्ठूच्यते तत्सूक्तवाकन्तेन १६.२६. [सूक्त-वाकपदयोः समासः। अथवा सूक्तोपपदे वच परिभाषणे (अदा०) धातोर्घञ्। सूक्तवाकः—संस्था सूक्तवाकः। श० ११.२.७.२८. प्रतिष्ठा वै सूक्तवाकः कौ० ३.८.]

सूक्तवाचः सुस्तुताः सुप्रशंसिता वाग् येषान्ते (विद्वज्जनाः) ५.४६.५. [सूक्त-वाच्पदयोः समासः। सूक्तं व्याख्यातम्। वाच्—वच परिभाषणे (अदा०) धातोः क्विप्]

सूक्ता सुष्ठु वक्तव्यानि (समुदितवचनानि) २१.६१. [सूक्तं व्याख्यातम्। ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

सूक्तेभिः सुष्ठूच्यन्ते यानि तैः (वचोभिः=वचनैः) ५.४५.४. सुष्ठूक्ता विद्या येषु तैः (वचोभिः=वेदार्थज्ञानयुक्तैर्वचनैः) १.३६.१. [सूक्तं व्याख्यातम्। ततः 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न]

सूक्तोक्तौ सूक्तानां वेदस्थानां प्रामाण्यस्योक्तिर्यस्मिन् गृहाऽऽश्रमे ८.२५. [सूक्त-उक्तिपदयोः समासः। सूक्तं व्याख्यातम्। उक्तिः=वच परिभाषणे (अदा०)+क्तिन्]

सूचीकाः सूचीव व्यथका वृश्चिकादयः १.१९१.७. [सूचीप्राति० इवार्थे कन्]

सूचीभिः अनुसन्धानक्रियाभिः २३.३६. सीवनसाधिकाभिः २३.३३. अनुसन्धानसाधिकाभिः क्रियाभिः २३.३४. **सूच्या**=सीवनसाधनया २.३२.४. [सूची=

षिवु तन्तुसन्ताने (दिवा०) धातोः 'सिवेष्टेरू च' उ० ४.९३. सूत्रेण चट् प्रत्ययः टेश्च ऊः । ततः स्त्रियां ङीप् । सूची सीव्यतेः नि० ११.३१.]

सूतम् क्षत्रियाद् ब्राह्मण्यां जातम् (श्रेष्ठं धार्मिकं जनम्) ३०.६. **सूताय**=क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां जाताय वीराय प्रेरकाय वा १६.१८. [षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः क्तः । सवो वै सूतः श० ५.३.१.५.]

सूते उत्पादयति १.१६४.१७. [षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोर्लट्]

सूददोहसः सूदाः पाककर्त्तारो दोहसः प्रपूरकाश्च यासु ताः (विशः=प्रजाः) १५.६०. सूदाः सुष्ठु पाचका दोहसो गवादिदोग्धारश्च यासां ताः (पृश्नयः=पत्न्यः) १२.५५. [सूद-दोहस्पदयोः समासः । सूदः=सूदति क्षरति क्षारयति रसानिति विग्रहे षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः । दोहस्=दुह प्रपूरणे (अदा०) धातोरौणादिकोऽसुन् । सूददोहाः—आपो वै सूदोऽन्नं दोहा श० ८.७.३.२१. प्राणः सूददोहाः श० ७.१.१.१५. प्राणो वै सूददोहाः श० ७.१.१.२६. त्वक् सूददोहाः श० ८.१.४.५.]

सूदनम् क्षरणम् ४.३९.५. [षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

सूदय क्षरय ४.४.१४. विनाशय ७.१६.६. **सूदयत्**=क्षरति वर्षयति ३३.११. सूदयेत् १.७१.८. **सूदयन्तु**=वर्षयन्तु वर्धयन्तु ४.४०.१. दूरीकारयन्तु २३.४१. क्षरयन्तु दूरीकुर्वन्तु ४.३९.१. **सूदयाति**=क्षरयति प्रापयति २.३.१०. सूक्ष्मीकृत्य वायौ प्रसारयति २७.२१. क्षरयेत्, वर्षयेत् ३.४.१०. सूदयेत् क्षरयेत् ७.२.१०. **सूदयामि**=क्षरयामि १.१६२.१७. प्रापयामि २५.४०. [षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट् । अन्यत्र लङ् लेट् लट् चापि]

सूदाः पाककर्त्तारः (सेवका जनाः) ७.३६.३. [सूदति क्षरति रसानिति विग्रहे षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोरिगुपधलक्षणः कः । सूदः कूपनाम निघं० ३.२३.]

सूद्याभ्यः सुष्ठु क्लेदिकाभ्यः (अद्भ्यः=जलेभ्यः) २२.२५. [षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० यः । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

सूनया हिंसया १.१६१.१०. **सूनाः**=प्रसूताः (पदार्थाः) २५.३६. प्रेरिताः (अङ्काः=लक्षणानि) १.१६२.१३. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः 'सुञो दीर्घश्च' उ० ३.१३. सूत्रेण नः प्रत्ययो दीर्घश्च । ततः स्त्रियां टाप् च]

सूनरम् शोभना नरा यस्मिँस्तत् (वसु=धनम्) ५.३४.७. शोभना नरा यस्मात्तत् (वसु) १.४०.४. [सु-नरपदयोः समासः । पूर्वपदस्य संहितायां दीर्घः]

सूनरि सुष्ठुतया व्यवहारनेत्रि (उषः) १.४८.१०. **सूनरी**=या सुष्ठु नयति सा (उषाः) १.४८.५. सुष्ठु-नेत्री (दुहिता=कन्या) ४.५२.१. [सूपपदे नृ नये (भ्वा०) धातोः कर्त्तर्यच् । ततः स्त्रियां ङीप् छान्दसः । सूनरी उषोनाम निघं० १.८.]

सूनवः ये प्राणिगर्भान् विमोचयन्ति ते (वायवः) १.३७.१०. पुत्रा, विद्यार्थिनः १.४५.५. अपत्यानि ६.५०.४. **सूनवे**=औरसाय सन्तानाय, भा०—स्वसन्तानाय ३.२४. विद्यापुत्राय १.३४.६. अपने पुत्र के लिए आर्याभि० २.१५, ३.२४. **सूनुभिः**=पुत्रैः पुत्रवद् भृत्यैर्वा १.१००.५. **सूनुम्**=पुत्रवद्वर्त्तमानं प्राणिगर्भविमोचकं वा (मारुतं गणम्) १.६४.१२. अपत्यवत्सेवकम् ३.११.४. अपत्यमिव वर्त्तमानम् ६.६२.६. **सूनुः**=सूयत उत्पद्यते किरणसमूह इव (सभाध्यक्षो राजा) ६.६. सूर्यः ३.२५.१. अपत्यवच्छिष्यः ३.२३.५. सुतः (तनयः) १२.२२. वीरपुत्रः (वज्री=सेनापतिः) १.१०३.४. उत्पन्नः (तनयः=पुत्रः) १२.५१. **सूनून्**=प्रसवगुणान् ५.४२.१५. **सूनो**=यः सूयते सुनोति वा तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वज्जन) १.५८.८. यत्सूयते सकलं जगत् तत्सम्बुद्धौ (ब्रह्म) ६.४.४. विद्या-सन्तान ६.५०.६. सत्पुत्र ७.७.७. अविद्याहिंसक (अग्ने=विद्वज्जन) ३.२५.५. बलवत् (अग्ने=राजन्) ६.१३.५. पुत्र, दुष्टानां हिंसक (प्रकाशयुक्त राजन्) ३.२४.३. [षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोः 'सुवः कित्' उ० ३.३५. सूत्रेण नुः किच्च । सूनु अपत्यनाम निघं० २.२. सूनवः पुत्राः नि० ११.१७. सूनुः (यजु० १२.५१.) प्रजा वै सूनुः श० ७.१.१.२७.]

सूनुमतः पुत्रयुक्तान् (सज्जनान्) ३.२४.५. [सूनुरिति व्याख्यातम् । ततो मतुप्]

सूनृता प्रियसत्यप्रकाशिता वाक्, अन्नादिपदार्थवती वा (मही=पृथिवी), सुष्ठु ऋतं यथार्थज्ञानं यस्यां सा (वेदचतुष्टयी वाणी) अन्नवती वा (पृथिवी) १.८.८. सत्यलक्षणोज्ज्वलिता वाक् ३३.८९. प्रियसत्याचरणलक्षणवाणीयुक्ता (देवी—सर्वशास्त्रवेत्री स्त्री) १.४०.३. अन्नादिसमूहकरी राजनीतिः १.५१.२. सुशिक्षिता सत्यप्रिया वाक् १.१३५.७. सत्यप्रियवाणी ७.३७.३. सत्यभाषणादिसुशीलता युक्ता (देवी=विदुषी स्त्री) ३७.७. **सूनृतानाम्**=सुतरामूनयत्यनृतं यत् कर्म तत् सूनृ तदृतं यथार्थं सत्यं येषान्ते सूनृतास्तेषाम् (सुमतीनां=विद्वज्जनानाम्),

प्र०—अत्र ऊन परिहाणे अस्मात् 'क्विप् च' इति क्विप् १.३.११. सुशिक्षितानां वाणीनाम् २०.८५. वाग्जागरितादिव्यवहाराणाम् १.११३.४. शोभनकर्माऽन्नानाम् १.९३.७. वाचामन्नादिपदार्थानां वा १.११३.१८. सुष्ठु ऋतानि सत्यानि यासु तासाम् (गिरां=वाचाम्) ३.३१.१८. **सूनृताभिः**= विद्यासत्यभाषणादिशुभगुणयुक्ताभिर्वाणीभिः १.१२५.३. **सूनृतायै**=उत्तमायै प्रियसत्यवाचे १.१२१.१४. **सूनृताः**=वेदादिसत्यशास्त्रसिद्धान्तवाचः १.११३.१२. सत्यादिलक्षणान्विता वाचः ३.३१.२१. सुष्ठु सत्याः क्रियाः ३.६१.२. **सूनृते**=सुष्ठु सत्यस्वभावे (उषः) १.१२४.१०. सत्याचरणयुक्ते (कन्ये) १.१२३.५. सत्यवाक् (विदुषि स्त्रि) ४.५५.९. [सूनृता उषो नाम निघं० १.८. अन्ननाम निघं० २.७. वाङ्नाम निघं० १.११.]

सूनृता सूनृतानि धर्मेण सम्पादितानि (मघानि=धनानि) ७.५७.६. [सूनृतेति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

सूनृतावतः सत्यवाणीयुक्तान् (जनान्) १.८२.१. **सूनृतावान्**=सूनृता अन्नादीनि प्रशस्तानि विद्यन्ते यस्मिन् सः (अग्निः=सर्वद्योतकः परमात्मा) १.५९.७. [सूनृतेति व्याख्यातम् । ततो मतुप् प्रशंसायाम्]

सूनृतावति सूनृतान्यानृशंस्यानि प्रशस्तानि कर्माणि अस्यास्तत्सम्बुद्धौ (उषः) १.९२.१४. सूनृता प्रशस्ता बुद्धिर्विद्यते यस्यां सा (कशा—वाक्), प्र०—सूनृतेति वाङ्नामसु पठितम् निघं० १.११. अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.२२.३. [सूनृतेति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसार्थे मतुपि स्त्रियां ङीपि च सम्बुद्धौ रूपम्। सूनृतावती उषो नाम निघं० १.८.]

सूनृतावरि सत्यवाक्-प्रकाशिके (स्त्रि) ४.५२.४. [सूनृताशब्दान्मत्वर्थे 'छन्दसीवनिपौ' इति वनिप् । 'वनो र च' सूत्रेण ङीप् रेफश्च। ततः सम्बुद्धौ रूपम् । सूनृतावरी उषो नाम निघं० १.८.]

सूपभुवः सुष्ठुतया समीपं भव, प्र०—अत्र लुङि विकरणव्यत्ययेन शः प्रत्ययोऽडभावश्च १.१३८.४. [सु+उप+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लुङि छान्दसोऽडभावः शप्रत्ययश्च विकरण-व्यत्ययेन]

सूपस्थाः ये सुष्ठूपतिष्ठन्ति ते (सूदाः=पाककर्त्तारो जनाः) २८.४६. [सु+उप+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः प्रत्ययः]

सूपशृणवः सुष्ठुतया समीपं शृणु ७.२९.२. [सु+उप+श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोर्लङ् । 'व्यत्ययो बहुलम्' इति द्विविकरणता । तेन शप् अपि]

सूपायनः सुष्ठूपगतमयनं ज्ञानं, सुखसाधनं, पदार्थप्रापणं यस्मात् सः (अग्निः=ज्ञानस्वरूपो जगदीश्वरः) १.१.९. स्वकृपया सुखेनैव प्राप्तः (ईश्वरः) वे० भा० न०, १.१.९. सुख से प्राप्त, श्रेष्ठोपाय के प्रापक, अत्युत्तम स्थान के दाता (परमेश्वर) आर्याभि० २.१५, ३.२४. [सु+उप-अयनपदानां समासः । अयनम्=अय गतौ (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

सूयते निष्पद्यते ४.५८.९. उत्पद्यते १७.९७. [षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) धातोर्लट्]

सूयमानः उत्पद्यमानः (वायुः=प्राणः) ८.५७. [षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) धातोः शानच्]

सूयवसाः शोभनानि यवसानि याभ्यस्ताः (अपः=जलानि) २.२७.१३. [सु-यवसपदयोः समासः । 'निपातस्य चे' ति पूर्वस्य दीर्घः । यवसम्=यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० असच्]

सूयवसिनी बहूनि शोभनानि मिश्रितान्यमिश्रितानि वस्तूनि विद्यन्ते यस्यां सा (अ०—भूमिर्वाग्वा) ५.१६. [सूयवसमिति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततो मत्वर्थ इनिः । ततो ङीप् स्त्रियाम्]

सूयवसे शोभने भक्षणीये घासे ७.१८.४. [सु-यवसपदयोः समासः । पूर्वस्य दीर्घश्छान्दसः]

सूरचक्षसः सूरे सूर्ये चक्षांसि दर्शनानि येषान्ते (हरयः=किरणाः) १.१६.१. सूर ऐश्वर्ये प्रेरणे वा चक्षो दर्शनं येषान्ते (देवाः=विद्वज्जनाः) २५.२०. सूरे सूर्ये प्राणे वा चक्षो व्यक्तं वचो दर्शनं वा येषान्ते (देवाः) १.८९.७. सूरप्रज्ञानाः (ऋभवः=मेधाविजनाः) १.११०.४. [सूर-चक्षस्पदयोः समासः। सूरः=षू प्रेरणे (तुदा०) धातोः षूङ् प्राणिप्रसवे (अदा०) धातोर्वा 'सुसूधाञ्गृधिभ्यः क्रन्' उ० २.२४ सूत्रेण क्रन् । चक्षस्=चक्षिङ् व्यक्तायां वाचि अयं दर्शनेऽपि (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० असुन् । सूरचक्षस सूरख्याना वा सूरप्रजा वा नि० ११.१६.]

सूरम् प्रेरयितारमध्यापकम् १.८६.५. **सूरः**=यः सरति प्राप्नोति स सूर्यः १.५०.९. प्राणिगर्भविमोचिका प्राणस्थविद्युदिव १.७१.९. प्रेरकः सविता १.१२१.७. वीरः (कोमलभाषी जनः) ६.५६.३. **सूराय**=सूर्यलोकाय १.५०.२. **सूरे**=सूर्य इव वर्त्तमाने सैन्ये ४.३.८. [षू प्रेरणे (तुदा०) षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) धातोर्वा 'सुसूधाञ्०'

उ० २.२४ सूत्रेण क्रन्]

सूरयः प्रकाशितविद्याः (प्रजाजनाः) ४.२६.५. धार्मिका मेधाविनः पुरुषार्थयुक्ता विद्वांसः (जनाः), प्र०—अत्र 'सूङः क्रिः' उ० ४.६५. अनेन सूङ् धातोः क्रिः १.२२.२०. विद्याजिज्ञासवो मनुष्याः २.१.१६. विपश्चितः (चर्षणयः=मनुष्याः) ६.२५.७. पूर्णविद्यावन्तो विद्वांसः (जनाः) १.६७.४. स्तोतारो विद्वांसः (जनाः) १.४८.४. वेदविदः, भा०—निर्द्धूतमला विशुद्धाचरणशीला विद्वांसः (जनाः) ६.५. धर्मात्मा, जितेन्द्रिय, सबके हितकारक विद्वान् लोग आर्याभि० १.२१, ऋ० १.२.७.२०. **सूरिम्**=शास्त्रविदम् (विद्वज्जनम्) १.६१.३. युद्ध-विद्याकुशलं धार्मिकं विद्वांसम् १.११६.३. **सूरिः**=अतिप्रवीणो विद्वान् (जनः) १.१८६.३. **सूरेः**=सर्वविद्याविदः (महाविद्वज्जनस्य) १.१२२.११. [षू प्रेरणे (तुदा०) षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) धातोर्वा 'सूङः क्रिः' उ० ४.६४ सूत्रेण क्रिः। सूरिः स्तोतृनाम निघं० ३.१६. सूरिः प्रज्ञाता नि० १०.२६.]

सूर्त्ते प्राप्ते प्रत्यक्षे (रजसि=लोके) १७.२८. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः क्तप्रत्यये 'नसत्तनिषत्त०' अ० ८.२.६१. सूत्रेणोत्वं निपात्यते। असूर्त्ते सूर्त्ते=असुसमीरिताः सुसमीरिता वा नि० ६.१५.]

सूर्म्या सच्छिद्रया मूर्त्त्या कलया वा ७.१.३. ऐश्वर्येण १७.७६. [सूर्मि कल्याणोर्मि नि० ५.२७.]

सूर्य सूर्यस्येव न्यायविद्यासु प्रकाशमान (राजन्) ८.४०. सूर्यवद्वर्त्तमान राजन् ३३.३६. सूर्यविद्यैश्वर्योत्पादक (विद्वज्जन) ३३.३५. सवितृवत्सर्वप्रकाशक (ईश्वर), भा०—मेघप्रकाशकारि सूर्य ३३.४०. चराचरात्मन् (ईश्वर) ३३.३६. सर्वप्रकाशक सर्वात्मन् (ईश्वर) १.५०.४. ज्ञानस्वरूप ज्ञानप्रापक वा १.५०.८. सर्वौषधि-रोगनिवारणविद्यावित् (विद्वन् वैद्य) १.५०.११. **सूर्यम्**=सूरिषु विद्वत्सु भवम् (राजानम्) ९.२६. सवितारं प्राणं वा १.१०० १८. यः स्रियते विज्ञाप्यते वा विद्वैर्विद्वद्भिश्च तम् (आदित्यं ब्रह्म वा) ७.४१. सवितृलोकः, प्र०—अत्र विभक्तिव्यत्ययः ३४.२५. सरणशीलं स्वकीयरश्मिगणम् १.३५.९. सवितृप्रकाशमिव युद्धन्यायम् १.१००.६. प्रकाशमयम् १.११२.१३. सवितुः सवितारम् ५.४०.६. अन्तर्यामिरूपेण स्वव्याप्त्या चराचरात्मानं परमात्मानम् ३५.१४. सवितृमण्डलम् २.१९.३. स्वप्रकाशं सर्वात्मानं जगदीश्वरम् ३०.४१. प्राणम् ३.५४. **सूर्यस्य**=चराचरस्याऽऽत्मनो जगदीश्वरस्य विदुषो जीवस्य वा, प्र०—'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च यजु० ७.४२. अनेनेश्वरस्य ग्रहणम्। सूर्य इति पदनामसु पठितम् निघं० ५.६. इति गत्यर्थेन ज्ञानरूपत्वादीश्वरो व्यवहारप्रापकत्वाद् विद्वानेवाऽत्र गृह्यते २.२६. मार्तण्डस्य ७.१६. सवितृमण्डलस्य विद्युतो वा ४.३२. अर्कस्य १०.६. प्रेरकस्येश्वरस्य ३७.११. स्वप्रकाशस्येश्वरस्य न्यायप्रकाशकस्य विदुषो वा २.२७. सर्वान्तर्गतस्य प्राणस्य सूर्यलोकस्य वा ३.१९. यः सुवति ऐश्वर्यं ददाति, ऐश्वर्यहेतून् प्रेरयति स परमेश्वरः प्राणो वा तस्य १.३१. सरति जानाति प्रकाशयति चराचरं जगत्तस्य चराचरात्मनः परमेश्वरस्य प्रकाशमयस्य सूर्यलोकस्य वा. प्र०—'राजसूयसूर्य०' अ० ३.१.११४. इत्यनेनायं निपातितः १.३१. **सूर्यः**=ब्रह्माण्डस्थो मार्त्तण्डः शरीरस्थः प्राणो वा १.९०.८. सवितेव ज्ञानप्रकाशः १.११५.१. सकलविद्यादिव्यवहारप्रापकत्वेन वर्त्तमानः प्राणादिसमूहो वायुगणः ३.९. सूर्य इव सर्वप्रकाशकः (ईश्वरः) ४.२६.१. सवितृलोकस्तत्प्रकाशो वा १.२३.१७. सुवत्यैश्वर्यहेतुर्भवति सोऽयं सूर्यलोकः २.५. यः सुवति स्वप्रकाशेन प्रेरणाहेतुर्भवति स सूर्यलोकः, सर्वव्यापकः, सकलविद्याप्रकाशको जगदीश्वरः ३.९. **सूर्याय**=सूर्यस्येव योगप्रकाशाय ७ ६. सूर्यगुणाय ६.२५. परमेश्वरविज्ञानाय १.१२३.२. **सूर्ये**=सूरिषु स्तोतृषु भवे (व्यवहारे) १२.२७. **सूर्येण**=प्रेरकेण (ईश्वरेण) ३७.१५. सूर्य की कान्ति के समान सं० वि० १३९, अथर्व० १४.२.३२. [सृ गतौ (भ्वा०) षू प्रेरणे (तुदा०) धातोः 'राजसूयसूर्यमृषोद्यरुच्य०' अ० ३.१.११४ सूत्रेण क्यप्प्रत्यये सर्त्तेरुत्वं सुवतेर्वा रुडागमो निपात्यते। सूरि स्तोतृनाम निघं० ३.६. ततो भवार्थे वा यत्। सूर्यः पदनाम निघं० ५.६. सूर्यः=सूर्य सर्त्तेर्वा सुवतेर्वा स्वीर्यतेर्वा नि० १२.१४. सूर्यः—तं (इन्द्रं) देवा अब्रुवन् सुवीर्य्यो मर्या यथा गोपायत इति। तत्सूर्यस्य सूर्यत्वम् तै० २.२.१०.४. असौ वै सूर्यो योऽसौ तपति कौ० ५.८. (यजु० १८.५०) असौ वाऽआदित्यः सूर्यः श० ९.४.२.२३. एष वै शुक्रो य एष (सूर्यः) तपत्येष उऽएव बृहत् श० ४.५.९.६. यः सूर्यः स धाता स उ एव वषट्कारः ऐ० ३.४८. एष एव वषट्कारो यः एष (सूर्यः) तपति श० १.७.२.११. एष वै स्वाहाकारो य एष (सूर्यः) तपति श० १४.१.३.२६. अर्कश्चक्षुस्तदसौ सूर्यः तै० १.१.७.२. स हैष (सूर्यः) भर्त्ता श० ४.६.७.२१. (द्युस्थानः) सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य इति तदमुं लोकं (=द्युलोकं) लोकानामाप्नोति तृतीयसवनं यज्ञस्य कौ० १४.१. (यजु० २०.३१)

स्वर्गो वै लोकः सूर्यो ज्योतिरुत्तमम् श० १२.९.२.८. सूर्यो वै सर्वेषां देवानामात्मा श० १४.३.२.९. अथ सूर्यमुदीक्षते । सैषा गतिरेषा मतिरेषा प्रतिष्ठा श० १.९.३.१५. ते (देवाः) सूर्यं काष्ठाङ्कृत्वाजिमधावन् तां० ९.१.३५. एतद्वाऽअनपराद्धं नक्षत्रं यत्सूर्यः श० २.१.२.१९. सूर्योऽग्नेर्योनिरायतनम् तै० ३.९.२१.२-३. सूर्यो हि नाष्ट्राणां रक्षसामपहन्ता श० १.३.४.८. सूर्यो वै प्रजानां चक्षुः श० १३.३.८.४. सूर्यो मे चक्षुषि श्रितः तै० ३.१०.८.५. सूर्य उद्गाता गो० पू० १.१३. सूर्यात्सामवेदः (अजायत) श० ११.५.८.३.]

सूर्यत्वचसः सूर्यस्य त्वचः संवार इव त्वचो येषान्ते (राजपुरुषाः) १०.४. [सूर्य-त्वचस्पदयोः समासः । त्वचस्=त्वच संवरणे (तुदा०) धातोरौणा० असुन्]

सूर्यत्वचः सूर्य इव प्रकाशमाना त्वग्येषान्ते (मरुतः=विद्वज्जनाः) ७.५९.११. **सूर्यत्वचा**=सूर्य इव त्वग् यस्य तेन (रथेन) १.४७.९. भा०—सुशोभितेन सूर्यवत् प्रकाशितेन (रथेन=यानेन) ३३.७३. सूर्य इव देदीप्यमानास्त्वग् बाह्यमावरणं यस्य तेन (रथेन) ३३.३३. [सूर्य-त्वच्पदयोः समासः । त्वच्=त्वच संवरणे (तुदा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति क्विप्]

सूर्यरश्मिः सूर्यस्य किरणः १५.१५. सूर्यस्य रश्मयः किरणा दीप्तयो यस्मिन् सः (चन्द्रमाः) १८.४०. [सूर्य-रश्मिपदयोः समासः]

सूर्यवर्चसः सूर्यस्य प्रकाश इव वर्चो विद्याध्ययनं येषान्ते (राजपुरुषाः) १०.४. [सूर्य-वर्चस्पदयोः समासः । वर्चस्=वर्च दीप्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

सूर्यसमम् सूर्येण तुल्यम् (ब्रह्म) २३.४७. [सूर्य-समपदयोः समासः]

सूर्या इव सूर्यस्य किरणा इव (सत्वानः=बलपराक्रमप्राणिभूतगणाः) १.६४.२. [सूर्या-इवपदयोः समासः । सूर्या इति व्याख्यास्यते]

सूर्या सूर्यसम्बन्धिन्युषा इव (स्त्री) ५.७३.५. सूर्यस्य दीप्तिः १.१६७.५. **सूर्याम्**=सूर्यसम्बन्धिनीं कान्तिम् ४.४४.१. सूर्य की किरणवत् सौन्दर्यगुणयुक्त (वधू) को सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१.९. **सूर्यायाः**=सूर्यस्य कान्तेः १.१८४.३. सूर्यस्येयं कान्तिरुषास्तस्याः ४.४३.६. उषस इव सम्बन्धिन्याः प्रजायाः ६.६३.६. **सूर्यायै**=सूर्यवत् शुभगुणस्वभावप्रकाशितायै कन्यायै ६.५८.४. [सूर्यप्राति० स्त्रियाम् 'सूर्याद् देवतायां चाब् वक्तव्यः' अ० ४.१.४८. वा० सूत्रेण चाप् । सूर्या वाङ्नाम निघं० १.११. सूर्या पदनाम निघं० ५.६. सूर्या=सूर्यस्य पत्नी । एषैवाभिमृष्टकालतमा नि० १२.७.]

सूर्याचन्द्रमसा सूर्याचन्द्रादिलोकसमूहौ १.१०२.२. सूर्य और चन्द्रमा स० प्र० २९९, १०.१९०.३. [सूर्य-चन्द्रमस्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः । पूर्वपदस्यानङादेशः 'देवताद्वन्द्वे च' सूत्रेण]

सूर्यामिव सूर्य की किरण के समान (वस्त्र और आभूषणादि से सुशोभित, आनन्दित, अनुकूल, प्रियाचरणयुक्त स्त्री) को सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५३. [सूर्या-इवपदयोः समासः]

सूर्यासः सवितार इव तेजस्विनो जनाः १.१२५.६. [सूर्य इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

सूर्व्याय सुष्ठु ऊर्वौ भवाय (पुरुषाय) १६.४५. [सु-ऊरुपदयोः समासे ततो भवार्थे यत् । ऊरुः=ऊर्णुञ् आच्छादने (अदा०) धातोः 'ऊर्णोतेर्नुलोपश्च' उ० १.३० सूत्रेण कुः । नुलोपश्च]

सूषाः शोभना उषा यस्मिन् स कालः १८.६. [सु-उषस्पदयोः समासः]

सूष्यन्त्या इव प्रसवत्याः स्त्रिया इव ५.७८.५. [सूष्यन्त्या-इवपदयोः समासः । सूष्यन्त्या—सूष्यन्ती+टा । सूष्यन्ती=षूङ् प्राणिगर्भविमोचने (अदा०) धातोर्लृटः शतृप्रत्यन्तान् ङीप् स्त्रियाम्]

सूः या सुवति प्रेरयति सा (चित्तवृत्तिः) १८.७. सूयत उत्पादयति या सा माता, प्र०—अत्र सूङ्धातोः क्विप् १.३२.९. यः सूते सः (वीरजनः) १.१४६.५. [षूङ् प्राणिप्रसवे (दिवा०) षू प्रेरणे (तुदा०) धातोर्वा क्विप्]

सृकम् वज्रतुल्यं शस्त्रम् १८.७१. **सृके**=वज्र इव किरणसमूहे १.३२.१२. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'सृवृभूशुषिमुषिभ्यः कक्' उ० ३.४१ सूत्रेण कक् । सृकः वज्रनाम निघं० २.२०.]

सृकायिभ्यः सृकेण वज्रेण सज्जनानेतुं प्राप्तुं शीलमेषां तेभ्यः (प्रजाजनेभ्यः) १६.२१. [सृकोपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः । सृकः वज्रनाम निघं० २.२०.]

सृकाहस्ताः सृका वज्राणि हस्तेषु येषान्ते (जनाः) १६.६१. [सृक-हस्तपदयोः समासः । पूर्वस्य दीर्घश्छान्दसः]

सृक्वाणम् सृजन्तं दिनम् १.१६४.२८. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्वनिप् कर्त्तरि । सृक्वाणम्=सरणम् ।

नि० ११.४२.]

सृक्षाथाम् संसर्गं कुरुत १६.७. **सृज**=निष्पादय, सृजति, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१३.११. संयोजय २०.२२. सृजत्=सृजेत् ४.२७.३. सृजति १.५५.६. **सृजत**=प्रक्षिपत १.३६.१०. विविधतया प्रकाशयत सम्पादयत वा १.६.२. **सृजतम्**=निष्पादयतम् १.१५१.६.. **सृजति**=भा०—उत्पादयति १.४८.६. **सृजध्वम्**=विविधविद्यायुक्तं कुरुत ६.४८.११. **सृजः** संयोजयेः १.१८६.५. उत्पादय २.११.२. सृज ४.१७.१. सृजति ५.३२.१. **सृजामि**=सम्बध्नामि १८.३५. सम्पद्ये प्रक्षिपामि वा ५.११. निष्पादयामि ११.५३. **सृजेथाम्**=निष्पादयेताम् १८.६१. निष्पादयेतम्, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १५.५०. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोर्लोट् । विकरणव्यत्ययेन क्सः । अन्यत्र लेट् लोट् लङ् लट् च]

सृजयः पक्षिविशेषः २४.३३.

सृजानः उत्पादयन् (सविता=जगदीश्वरः) ७.३८.२ **सृजानाः** सुशिक्षिताः (सज्जनाः) ६.३२.५. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः शानच् व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सृजाना निष्पादिता (प्रसितिः=प्रकृष्टं बन्धनम्) ६.६.५. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

सृञ्जयाय उत्पादनाय ६.२७.७.

सृञ्जयाय उत्पादनाय ६.२७.७. **सृञ्जये**=यः प्राप्ताञ्छत्रून् जयति तस्मिन् (सङ्ग्रामे) ४.१५.४.

सृण्यः प्राप्तवलाः सुशिक्षिताः सेनाः ४.२०.५. याः क्षेत्रयोगान् गता यवादिजातयः १२.६८. सर्वक्लेशहन्त्र्यः (योगवृत्तयः) ऋ० भू० १५६, १२.६८. **सृण्या**=धारणेन हननेन वा १.५८.४. [सृणिः=सृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'जनिदाच्युसृ०' उ० ४.१०४. सूत्रेण क्निन् । सृणिरङ्कुशो भवति सरणात् नि० ५.२८. सृणिप्राति० जसि छान्दसो गुणाऽभावः]

सृती सरन्ति गच्छन्त्यागच्छन्ति जीवा ययोस्ते (गती) १६.४७. पितृयान-देवयानौ मार्गौ ऋ० भू०. २०५,१६.४७. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । ततः सृतिप्राति० द्विवचनम्]

सृप्रदानुम् सृप्रः सर्पणं दानुं दानं यस्मात्तम् (अग्निं=परमेश्वरम्) १.९६.३. सब जगत् को चलने की शक्ति देने वाला और ज्ञान का दाता (परमात्मा) ऋ० भू० १.४०, ऋ० १.७.३.३. [सृप्र-दानुपदयोः समासः । सृप्रः=सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोरौणा० बाहु० रक् । दानुः=डुदाञ् दाने (जु०) धातोरौणा० 'दाभाभ्यां नुः उ० ३.३२. सूत्रेण नुः]

सृप्रभोजसम् प्राप्तानां पालकम् (विष्णुं=परमेश्वरम्) ६.४८.१४. [सृप्र-भोजस्पदयोः समासः । सृप्रः=सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोरौणा० रक् । भोजस्=भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोरौणा० असुन्]

सृप्रम् प्राप्तशुभगुणम् (जनम्) ४.५०. २. [सृप्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक् सृप्रः—सृप्रः सर्पणात् । इदमपीतरत् सृप्रमेतस्मादेव सर्पिर्वा तैलं वा नि० ६.१७.]

सृप्रवन्धुरः सृप्रैः सङ्गतैर्बन्धुरैर्बन्धनैर्युक्तः (रथः) १.१८१.३. [सृप्र-बन्धुरपदयोः समासः । सृप्र इति व्याख्यातम्]

सृप्रा सर्प्पन्ति प्राप्नुवन्ति याभ्यान्तौ (करस्ना=बाहू) ३.१८.५. (सृप्रमिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः]

सृमरः गवयः २४.३६. [सृ गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अरन् किच्च । बहुलवचनादेव मुडागमः]

सृष्टा युद्धाय प्रेरिता (सेना) १.६६.४. सम्प्रयुक्ता (विद्युद्विद्या) ७.३.४. **सृष्टाः**=शत्रूणामुपरि नियताः कृताः (बलिष्ठाः सेनाः) ७.१८.१५. निर्मिताः (सिन्धवः) १.७२.१०. रचिताः (मनुष्यप्रजाः) ऋ० भू० १०१ अथर्व० १२.५.१. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

सेकम् सिञ्चनम् ४.१६.३. सेचनम् ३.३१.१. [षिच क्षरणे (तुदा०) धातोर्घञ्]

सेक्तेव पूरकवत् (जनवत्) ३.३२.१५. [सेक्ता-इवपदयोः समासः । सेक्ता—षिच् क्षरणे (तुदा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । अत्र पूरणार्थे षिच्]

सेत् सम्बध्नीयात् ९.६. सिनुयात् ९.५. [षिञ् बन्धने (क्रया०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक् । लङि वाऽडभावो विकरणलुक् च]

सेद निष्पादयत ७.५९.७. **सेदथुः**=निषीदतः ४.५६.७. **सेदिम**=उपतिष्ठेम ५.८.४. प्राप्नुयाम १.८९.२ **सेदिरे**=सीदन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लिट् १.२५.१३. **सेदुः** सीदन्ति ६.३०.३. प्राप्नुयुः ३.३१.९. प्रसीदन्ति ४.१.१३. निषीदन्ति ४.६.११. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिट्]

सेदिम् हिंसाम्, प्र०—'सेदिमनि०' अ० ३.२.१७१. इति वार्त्तिकेनास्य सिद्धिः १२.१०५. नाशमुत्पत्तिर्वा २०.२६, [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः 'किकिनावुत्सर्गश्छन्दसि' अ० ३.२.१७१. वा०सूत्रेण किः प्रत्ययो लिड्वच्च]

सेदुषः ज्ञानवतः (मनुष्यान्) ५.१५.२. [षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोर्लिटः क्वसुः]

सेध शास्त्राणि शिक्षय १.१७. साध्नुहि ६.४४.६. अपनय ६.४७.२६. दूरीकुरु २६.५५. **सेधतम्**=गमयतम् ३४.४७. मङ्गलं सुखं प्राप्नुतम् १.३४.११. दूरीकृतम् १.१५७.४. **सेधति**=दूरीकरोति १.७६.१२. साधयति ७.१५.१०. **सेधन्ति**=निवर्त्तयन्तु १.१०५.११. [षिधू शास्त्रे माङ्गल्ये च (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् चापि]

सेनजित् यः सेनया जयति सः (सेनापतिः), प्र०—अत्र 'संज्ञाछन्दसोर्बहुलम्' इति ह्रस्वत्वञ्च १५.१६. यः सेनां जयति सः (गणः=गणनीयो विद्वज्जनः) १७.८३. [सेनोपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । पूर्वपदस्य ह्रस्वत्वं छान्दसम् । सेनेति व्याख्यास्यते । सेनजित्—(यजु० १५.१६.) तस्य (पर्जन्यस्य) सेनजिच्च, सुषेणश्च सेनानीग्रामण्याविति हैमन्तिकौ तावृतू श० ८.६.१.२०]

सेना इव यथा सुशिक्षिता वीरपुरुषाणां विजयकर्त्री सेनास्ति तथाभूतः (सेनेशः) १.६६.४. [सेना-इवपदयोः समासः । सेनेति व्याख्यास्यते]

सेनाजुवा वेगेन सेनां गमयितारौ (अश्विनौ=जलाग्नी) १.११६.१. [सेनोपपदे जु वेगितायां गतौ (सौत्रो धातुः) धातोः 'भ्राजभासधुर्विद्युतोर्जि०' अ० ३.२.१७७. सूत्रेण क्विप् धातोर्दीर्घश्च]

सेनानिभ्यः ये सेनां नयन्ति तेभ्यो नायकेभ्यः प्रधानपुरुषेभ्यः, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन ईकारस्य इकारः १६.२६. **सेनानीः**=यः सेनां नयति सः (सेनाधिपः प्रभुः) ७.२०.५. **सेनान्ये**=यः सेनां शिक्षां प्रापयति तस्मै (सेनापतये) १६.१७. [सेनोपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि 'सत्सूद्विषद्रुह०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप्]

सेनानीग्रामण्यौ सेनानीश्च ग्रामणीश्च ताविव १५.१५. एतद्वद्वर्त्तमानौ मार्गशीर्षपौषौ मासौ १५.१६. [सेनानी-ग्रामणीपदयोः समासः]

सेनाभ्यः सिञ्चन्ते बध्नन्ति शत्रून् याभिस्ताभ्यः १६.२६. **सेनाः**=सिन्वन्ति बध्नन्ति शत्रून् याभिस्ताः १७.३३. बलानि २.३३.११. [षिञ् बन्धने (क्र्या०) धातोः 'कृवृजॄसिद्रू०' उ० ३.१०. सूत्रेण नः । ततः स्त्रियां टाप् । अथवा सह इनपदयोः समासः । सेना-सेना सेश्वरा समानगतिर्वा नि० २.११. सेना-सेनेन्द्रस्य पत्नी । गो० उ० २.६.]

सेन्यः सेनासु साधुः सेनाभ्यो हितो वा (सेनापतिः) १.८१.२. [सेनेति व्याख्यातम् । ततः साध्वर्थे हितार्थे वा यत्]

सेपुः शपथं कुर्युः ६.२६.१. [शप आक्रोशे (भ्वा०) धातोर्लिट् । शकारस्य सकारो वर्णव्यत्ययेन । षप समवाये (भ्वा०) धातोर्वा लिट्]

सैर्या तडागादितटेषु भवास्तृणविशेषस्थाः (मौञ्जा=मुञ्जपादपस्था जीवाः) १.१६१.३.

सैलगम् सीलाङ्गस्य दुष्टस्याऽपत्यम् ३०.१८.

सोतवे यवाद्यौषधीनां सारं निष्पादयितुम् १.२८.१. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

सोता अभिषवस्य कर्त्ता (अग्निः=राजा) ४.३.३. **सोतुः**=अभिषवकर्त्तुः (वैद्यस्य) ७.२२.१. **सोतृभिः**=अभिषवकर्त्तृभिः (चतुर्वेदविच्छ्रोत्रियैः) ४.२६.२. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

सोमः ऐश्वर्ययुक्त (विद्वज्जन) २६.२५. सुवति चराचरं जगत्तत्सम्बुद्धौ जगदीश्वर, अथवा सूयन्ते रसा यस्मात् स सोमौषधिराजः ३.५६. सोमविद्यासम्पादक विद्वन् ४.३७. चन्द्र इव वर्त्तमान (राजपुरुष विद्वज्जन वा) १२.११२. ऐश्वर्यसम्पन्न (इन्द्र=राजन्) ४.२८.१. सर्वजगदुत्पादक (ईश्वर) आर्याभि० १.३८, ऋ० १.६.२१.१२. सोमवल्लीव सर्वरोगविनाशक (राजन्) ३४.२२. वीर्यवत्तम (विद्वज्जन) १.९१.१६. ऐश्वर्यस्य प्रापक (विद्वज्जन) १.९१.१८. सर्वविद्यायुक्त (सेनाध्यक्ष) १.९१.२३. सोम्यगुणसम्पन्न, आरोग्यबलप्रापक (ईश्वर) १.९१.२२. शुभकर्मगुणेषु प्रेरक (परमेश्वर विद्वन्वा) १.९१.३. सर्वसुहृत् सौहार्दप्रद वा (ईश्वर विद्वन्वा) १.९१.८. यवाद्योषधिरसव्यापिन (ईश्वर) १.१८७.६. सकलैश्वर्याढ्य (राजन्) ८.५०. बहुसुखप्रसावक वायो १.९३.५. सकलपदार्थानां जनक प्रकाशिके वा (देव=ईश्वर विद्युद्वा) ५.७. सन्मार्गे प्रापक (सभाध्यक्ष राजन्) ५.३९. विज्ञातव्यगुणकर्मस्वभाव (वैद्य) १.९१.११. सोमवद्वर्त्तमान (अ०—सुसन्तान) १९.५४. सर्वसुखप्रापक (सभाध्यक्ष) १.४३.७. सर्वसुखैश्वर्यप्रद (ईश्वर) १.४३.६. प्रशस्तगुण शिष्य ७.१४. प्रशस्तैश्वर्ययुक्त (सभाध्यक्ष राजन्)

६.२६. सकलैश्वर्यप्रेरक (सभापते) ६.३३. ऐश्वर्यम् १९.९५. रक्षक (ईश्वर विद्वन्वा) १.९१.११. ऐश्वर्याढ्य गृहस्थजन ८.२६. सब का सार निकालने वाला, प्राणस्वरूप, शान्ताऽऽत्मा (ईश्वर) आर्याभि० १.१९, ऋ० १.६.१९.५. योगैश्वर्ययुक्त (संन्यासिन्) सं० वि० १९५, ९.११३.४. **सोमम्**=सोमरसान्वितं पाकम् १२.५५. पदार्थरसम् १.१५.५. सर्वपदार्थाऽभिषवम् १.१६.७. सर्वरोगनाशकं महौषधिरसम् ३.५३.६. ऐश्वर्यकारकम् (ओषधिम्) ३.५१.७. उत्पन्नं पदार्थसमूहम् १.२१.१. ऐश्वर्यवन्तम् (अध्यापकमुपदेशकं वा) २५.१६. ओषधिजन्यं घृतदुग्धादिकं रसम् ३.४७.४. सोमलताद्योषधिसारपातारम् (वैद्यम्) २.११.११. सकल-जगतः प्रसवितारम् (ईश्वरम्) ७.२५. सकलगुणैश्वर्यकल्याणकर्त्रध्ययनाध्यापनाख्यं यज्ञम् ७.३५. सोमवल्ल्यादिनिष्पन्नमाह्लादकमासवविशेषम् ८.१०. ओषधिरसं, प्रेरणाख्यं व्यवहारं वा २०.६३. बलपुष्टिबुद्धिवर्धकमुत्तमौषध्यभिषवम् १.२८.९. वीररसादिकम् १.४७.३. सृष्टिक्रमेण सर्वपदार्थाभिषवकर्त्तारं शान्तम् (विद्वज्जनम्) १.८९.३. महौषधिविशिष्टमन्नम् ३.४०.५. सूयन्ते यस्मिँस्तं संसारम् ३.४७.३. जलम् ५.३४.३. सोमाद्योषधिगणम् २८.२६. ऐश्वर्यकारकं वेदशास्त्रबोधम् १.१०१.९. पुरुषार्थे प्रेरकम् १९.३४. सोमगुणसम्पन्नम् (राजानम्) ९.२६. सोमवल्ल्याद्यौषधिरसान्वितं पाकम् १५.६०. सोममिव सर्वदुःखप्रणाशकम् (राजानम्) ९.२३. योगसिद्धमैश्वर्यम् ७.४. अमृताख्यं रसम् ४.३१. अन्तर्यामी प्रेरक (ईश्वर) को सं० वि० १५५, ७.१४.१. प्रियगुण विशिष्ट पदार्थ समूह को आर्याभि० १.३३, ऋ० १.७.७.१. उत्तममूलफलरस को सं० वि० १९५, ९.११३.१. **सोमस्य**=ऐश्वर्यगुणयुक्तस्य गृहाश्रमस्य ८.४९. सोतव्यस्य सुखस्य १.२२.१. यः सूयते सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यो रसस्तस्य १.१६.३. धान्याद्यैश्वर्यस्य ४.३२.१७. उत्पन्नस्य जगतः १.४६.१२. धर्मप्रेरकस्य (संन्यासिनः) १.११९.९. अभिषोतुमर्हस्य (ओषधिरसस्य) १९.२१. अंशुमदादिसंज्ञस्य चतुर्विंशतिधा भिद्यमानस्य १९.३३. ओषधिजातस्य रसस्य ४.४९.५. वैद्यविद्यासम्पादितस्य (रसस्य) १.५५.२. उत्पद्यमानस्य (जगतः) २.१५.३. **सोमः**=यः सुनोति सः (सज्जनः) ६.३४.४. ओषधिराजः २९.४९. ऐश्वर्ययोगः २६.२३. महौषधिरस ऐश्वर्य वा ५.४३.५. वैद्यकशिल्पक्रियया संसाधित ओषधी रसः १.४७.१. सुखैश्वर्यकारको न्यायः १.१३६.४. विद्यैश्वर्ययुक्तः सत्कारी (जनः) १.४५.१०. यः सर्वं जगत् सूते सः (धराधरः परमात्मा) ६.४४,२४. सत्याचारे प्रेरकः (राजाऽध्यापक उपदेशको वा) ३४.२१. सोमलतादिसमूहरसः १.१८.४. सोमलताद्यौषधिसमूहः १.१८.५. चन्द्रः ३.६२.१४. योगैश्वर्यवृन्दः ७.९. सौम्यगुणसम्पन्नो राजा ७.२१. मृदुगुणवर्धकः (गृहाश्रमः) ८.१. ऐश्वर्यमिच्छुः (न्यायाधीशः) ९.३१. शुभगुणप्रसिद्धः (राजा) १०.१८. सेनाप्रेरकः (अध्यक्षः) १७.४०. ऐश्वर्यवान्, सत्याचारे प्रेरकः (राजाऽध्यापक उपदेशको वा) शरीरात्मबलं वा ३४.२१. सुपथ्ये युक्ते व्यवहारे प्रेरयन् (सखा) ३.६२.१५. रसविशेषः १९.२५. चन्द्रमा, सोमलताद्योषधिगण सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५४. सौकुमार्यादिगुणयुक्तत्वाद् विवाहितः प्रथमः पतिः ऋ० भू० २१३, ऋ० ८.३.२७.५. राजसभायाः सभासत् प्रजाजनो वा ७.२१. **सोमाय**=सुवन्त्यैश्वर्याणि प्राप्नुवन्ति यस्मिन् संसारे तस्मिन् २.१९. उत्तमरससम्पादकाय, पदार्थविद्यास्वीकारकाय (विद्वज्जनाय) ऐश्वर्ययुक्ताय राज्याय वा ४.२४. ओषधिविज्ञानाय १०.५. ओषधिगणशोधनाय २२.६. शुभकर्मसु प्रवृत्ताय (विद्वज्जनाय) ८.४९. ऐश्वर्योपपन्नाय (जनाय) १६.३९. **सोमाः**=ये सुन्वन्ति सूयन्ते वा ते पदार्थाः ३.३६.२. सूयन्त उत्पद्यन्ते ये ते पदार्थाः १.२.१. ऐश्वर्यप्रापकाः (अग्न्यादयः पदार्थाः) ३३.१. ऐश्वर्यवन्तः सभासदः २१.४२. सैश्वर्याः पदार्थाः ४.१४.४. सौम्यगुणसम्पन्नाः सभ्या जनाः ४.१७.६. **सोमे**=सोतव्ये सर्वस्मिन् पदार्थे विमानादियाने वा १.५.२. ऐश्वर्यप्रापके ब्रह्मणि १.८०.१. **सोमेन**=सोमलताद्योषधिसमूहेन १९.१. चन्द्रेण प्रकाशमानेनेवाऽऽह्लादकत्वेन १०.३०. चन्द्रलोकेन ऋ० भू० १४३, अथर्व० १४.१.२. सोमलतोद्भवेन (ओषधिरसेन) ५.३४.२. शिल्पविद्यया सम्पादितेन रसेनाऽऽनन्देन वा १.४. विद्या, योगाभ्यास और परमेश्वर की भक्तिरूप सोम से सं० वि०, ९.११३.६. **सोमैः**=रसभूतैर्जलैः १.१०८.४. ओषधिरसैरैश्वर्यैर्वा २.१४.३. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) षू प्रेरणे (तुदा०) षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्वा 'अर्त्तिस्तुसुहुसृ०' उ० १.१४०. सूत्रेण मन्। सोम—ओषधिः सोमः सुनोतेर्यदेनमभिषुण्वन्ति नि० ११.२. सोमः—स्वा वै मऽएषेति तस्मात्सोमो नाम श० ३.९.४.२२. सत्यं (वै) श्रीर्ज्योतिः सोमः श० ५.१.२.१०. श्रीर्वै सोमः श० ४.१.३.९. सोमो राजा राजपतिः तै० २.५.७.३. असौ वै सोमो राजा विचक्षणश्चन्द्रमाः कौ० ४.४. सोमो राजा चन्द्रमाः श० १०.४.२.१. चन्द्रमा वै सोमः कौ० १६.५. वृत्रो वै सोम आसीत् श० ३.४.३.१३. पितृलोकः सोमः कौ० १६.५. पितृदेवत्यो वै सोमः श० २.३.२.१२. संवत्सरो वै सोमः पितृमान् तै०

१.६.८.२. (ऋ० ४.५३.७.) संवत्सरो वै सोमो राजा कौ० ७.१०. प्रच्यवस्व भुवस्पतऽ इति भुवनानां ह्येष (सोमः) पतिः श० ३.३.४.१४. सोमो हि प्रजापतिः श० ५.१.५.२६. सोमो वैष्णवो राजेत्याह तस्याप्सरसो विशः श० १३.४.३.८. जुष्टा विष्णव इति । जुष्टा सोमायेत्येवैतदाह (विष्णुः=सोमः) श० ३.२.४.१२. तद् यदेवेदं क्रीतो विशतीव तदु हास्य (सोमस्य) वैष्णवं रूपम् कौ० ८.२. सोमो वै पवमानः श० २.२.३.२२. एष (वायुः) वै सोमस्योद्गीथो यत्पवते तां० ६.६.१८. तस्मात् सोमं सर्वेभ्यो देवेभ्यो जुह्वति तस्मादाहुः सोमः सर्वा देवता इति श० १.६.३.२१. सोमो वाऽइन्द्रः श० २.२.३.२३. सोमो रात्रिः श० ३.४.४.१५. सोम एव सवृत इति गो० उ० २.२४. सोमो वै चतुर्होता तै० २.३.१.१. सोमो वै पर्णः श० ६.५.१.१. सोमो वै पलाशः कौ० २.२. पशुर्वै प्रत्यक्षं सोमः श० ५.१.३.७. सोम एवैष प्रत्यक्षं यत्पशुः कौ० १२.६. पशवः सोमो राजा तै० १.४.७.६. सोमो वै दधि तै० १.४.७.६. एष वै यजमानो यत्सोमः तै० १.३.३.५. द्यावापृथिव्योर्वा एष गर्भो यत्सोमो राजा ऐ० १.२६. क्षत्रं सोमः ऐ० २.३८. यशो वै सोमः श० ४.२.४.९. यशो (ऋ० १०.७२.१०.) वै सोमो राजा ऐ० १.१३. यश उ वै सोमो राजान्नाद्यम् कौ० ९.६. प्रजापतेर्वाऽएतेऽअन्धसी यत्सोमश्च सुरा च श० ५.१.२.१०. श० ५.१.२.१०. अन्नं सोमः कौ० ९.६. एतद्वै देवानां परममन्नं यत्सोमः तै० १.३.३.२. एतद्वै देवानां परममन्नाद्यं यत्सोमः कौ० १३.७. हविर्वै देवानां सोमः श० ३.५.३.२. एष ह परमाहुतिर्यत्सोमाहुतिः श० ६.६.३.७. सोमः खलु वै सान्नाय्यम् (हविः) तै० ३.२.३.११. प्राणः सोमः श० ७.३.१.२. सोमो वै राजपेयः तै० १.३.२.३. एष वाऽउत्तमः हविर्यत्सोमः श० ३.९.४.५. रेतः सोमः कौ० १३.७. सोमो रेतोऽदधात् तै० १.६.२.२. सोमो वै वृष्णो अश्वस्य रेतः तै० ३.९.५.५. सोमो वै बभ्रुः (यजु० १२.७५.) श० ७.२.४.२६. रसः सोमः श० ७.३.१.३. वाज्येवैनं (सोमं) पीत्वा भवति तै० १.३.२.४. भद्रा तत्सोमः ऐ० ५.२५. सोमः शल्यः ऐ० १.२५. तिरो अह्न्या हि सोमा भवन्ति कौ० १८.५. तद् यदेतत्तदमृतं सोमः सः ९.५.१.८. सर्वं हि सोमः श० ५.५.४.११. तस्मात् सोमो राजा सर्वाणि नक्षत्राण्युपैति ष० ३.१२. तृतीयस्यामितो दिवि सोम आसीत् । तं गायत्र्याहरत् तै० १.१.३.१०. अन्तरिक्षदेवत्यो हि सोमः गो० उ० २.४. गिरिषु हि सोमः श० ३.३.४.७. घ्नन्ति खलु वाऽएतत्सोमं यदभिषुण्वन्ति तै० २.२.८.१. सोमो राजा मृगशीर्षेण आगन् श० ३.१.२.२. सोमवीरुधां पते तै० ३.११.४.१. सोमो वा अकृष्टपच्यस्य राजा तै० १.६.१.११. सोम ओषधीनामधिराजः गो० उ० १.१७. एष वै ब्राह्मणानां सभासाहः सखा (ऋ० १०.७१.१०.) यत्सोमो राजा ऐ० १.१३. एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजेति श० ५.४.२.३. ब्राह्मणानां स (सोमः) भक्षः ऐ० ७.२९. सोमो वै ब्राह्मणः तां० २३.१६.५. शोभनं ह्येतस्य (सोमस्य) वासः श० ३.३.२.३. सोमः पयः श० १२.७.३.१३. आपः सोमः सुतः श० ७.१.१.२२. आपो ह्येतस्य (सोमस्य) लोकः श० ४.४.५.२१. तद् यदेवात्रपयस्तन् मित्रस्य सोम एव वरुणस्य श० ४.१.४.९. दीक्षा सोमस्य राज्ञः पत्नी गो० उ० २.९. पुमान् वै सोमः स्त्री सुरा तै० १.३.३.४. रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु तै० २.८.१.६. वैराजः सोमः कौ० ९.६.]

सोमकः सोम इव शीतलस्वभावः (कुमारः=ब्रह्मचारिजनः) ४.१५.९. [सोमप्राति० इवार्थे कः]

सोमकामम् अभिसुतानां पदार्थानां रसं कामयते यस्तम् (सभाध्यक्षम्) १.१०४.९. [सोमोपपदे कमु कान्तौ (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

सोमक्रयणाः ये सोमानुत्तमान् पदार्थान् क्रीणन्ति ते (प्रजाजनाः) ४.२७. [सोमोपपदे डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये (क्र्या०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्]

सोमक्रयण्याम् सोमाद्योषधीनां ग्रहणे ८.५४. [सोमक्रयणमिति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां ङीप् । सोमक्रयणी—(गौः) सा या बभ्रुः पिङ्गाक्षी (गौः) सा सोमक्रयणी श० ३.३.१.१४. वाग्वै सोमक्रयणी श० ३.२.४.१०.]

सोमगोपाः सोमानामोषधीनामैश्वर्याणां वा रक्षकः (राजा) १२.२२. ऐश्वर्यपालकाः (प्रजाजनाः) १२.२९. [सोम-गोपापदयोः समासः । गोपाः—गुपू रक्षणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

सोमधानः सोमाद्योषधिगणा धीयन्ते यस्मिन् सः (समुद्रः=अन्तरिक्षं मेघो वा) ६.६९.६. **सोमधानाः**=सोमानां धाना येषु ते (ह्रदाः=गभीरा जलाशयाः) ३.३६.८. [सोम-धानपदयोः समासः । धानः=डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरधिकरणे ल्युट् । अथवा सोमोपपदे दधातेर्वा ल्युडधिकरणे]

सोमधाना सोमं दधति ययोस्तौ (कलशा=कुम्भौ) ६.६८.२. [सोमधान इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सोमनेत्राः सोमलतादिष्वोषधीषु नेत्रं नयनं येषान्ते (देवाः=आयुर्वेदविदो विद्वज्जनाः) ९.३६. **सोमनेत्रेभ्यः**= सोमस्य चन्द्रस्यैश्वर्यवती नेत्रं नयनमिव नीतिर्येषां तेभ्यः (देवेभ्यः=विद्वज्जनेभ्यः) ९.३५. [सोम-नेत्रपदयोः समासः। नेत्रम्=णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोरौणा० ष्ट्रन्]

सोमपतिम् ऐश्वर्याणां स्वामिनम् (परमेश्वरम्) १.७६.३. **सोमपते**=ऐश्वर्यस्य पालक (सज्जन) ३.३२.१. [सोम-पतिपदयोः समासः। सोम इति व्याख्यातम्]

सोमपरिबाधः ये सोमानुत्तमान् पदार्थान् परितः सर्वतो बाधन्ते ते (विरोधिजनाः) १.४३.८. [सोमोपपदे परिपूर्वकाद् बाधृ विलोडने (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सोमपर्वभिः सोमानां पदार्थानां पर्वाण्यवयवास्तैस्सह १.९.१ सोमाद्योषधीनामवयवैः ३३.२५. [सोम-पर्वन्पदयोः समासः]

सोमपा यौ सोमान् पदार्थसमूहान् रक्षतस्तौ (इन्द्राग्नी=वाय्वग्नी) १.२१.३. यौ सोमं पिबतस्तौ (इन्द्राबृहस्पती=राजाऽध्यापकौ) ४.४९.३. [सोमोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः। ततो द्विवचनस्याकारादेशश्छान्दसः। अथवा सोमोपपदे पा पाने (भ्वा०) धातोरपि छन्दसि कः]

सोमपातमम् अतिशयेन सोमपातारम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.४२.२. **सोमपातमः**=यः सोमान् पदार्थान् किरणैः पाति सोऽतिशयितः (इन्द्रः=सूर्यलोकः) १.८.७. [सोमप्राति० अतिशायने तमप्। सोमपाः सोमोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

सोमपातमा सोमानां पदार्थानामतिशयेन पालकौ (इन्द्राग्नी=वायुवह्नी) १.२१.१. [सोमपातममिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सोमपावन् यः सोमान् श्रेष्ठान् रसान् पिबति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाद्यध्यक्ष) १.५५.७. **सोमपावा**= श्रेष्ठौषधिरसस्य पाता (राजा) ५.४०.४. **सोमपाव्ने**=यः सोमं पिबति तस्मै (इन्द्राय=परमैश्वर्याय) ७.३१.१. महौषधिरसस्य पात्रे (मनुष्याय) ७.३२.८. **सोमपाव्नाम्**= सोमानां पावानो रक्षकास्तेषाम् (सखीनां=सर्वमित्राणां पुरुषाणाम्) १.३०.११. [सोमोपपदे पा पाने (भ्वा०) पा रक्षणे (अदा०) धातोर्वा कर्त्तरि वनिप्]

सोमपाः सोमानुत्तमान् पदार्थान् पाति रक्षति तत्सम्बुद्धौ पदार्थानां रक्षणहेतुर्वा (इन्द्र=ईश्वर सूर्यो वा) १.१०.३. यः सोममैश्वर्यं पाति सः (इन्द्रः=राजा) ४.३२.१४. ऐश्वर्यपालकाः (कृष्टयः=मनुष्याः) ३.४६.१. सर्वपदार्थरक्षकः (इन्द्रः=सूर्यः) १.४.२. ये वीराः सोमाद्योषधिरसं पिबन्ति ते १.५४.८. यः सोमं रसं पिबति सः (इन्द्रः=सूर्यः) २.१२.१३. यः सोमैर्जगत्युत्पन्नैः पदार्थैः सह सर्वान् पाति रक्षति तत्सम्बुद्धौ (सखे=सभाद्यध्यक्ष) १.३०.१२. **सोमपाम्**=ऐश्वर्यरक्षकम् (इन्द्रं=राजाद्यध्यक्षम्) ३.४१.५. [सोमोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः पा पाने (भ्वा०) धातोर्वा कर्त्तरि क्विप्]

सोमपित्सरु ये सोमं यवाद्योषधीः पालयन्ति तान् त्सरयति कुटिलं गमयति यः सः लाङ्गलम्) १२.७१. [सोमपि इत्युपपदे त्सर छद्मगतौ (भ्वा०) धातोः 'भृमृशीतृचरित्सरि०' उ० १.७. सूत्रेण उः। सोमपिः=सोमोपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० इः किच्च]

सोमपीतये सूयन्ते ये पदार्थास्तेषां पीतिः पानं यस्य तस्मै विदुषे मनुष्याय, प्र०—अत्र 'सह सुपा' इति समासः १.२.३. सोमानां सुखकारकाणां पीतिः पानं यस्माद्यज्ञात् तस्मै १.१४.१. सोमानां सुतानां पदार्थानां पीतिः पानं यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.१६.१. सोमानां पदार्थानां पीतिः रक्षणं यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.२१.३. सोमानां पदार्थानां पीतिर्ग्रहणं यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.२२.९. सोमानां सुतानां पीतिः पानं यस्मिन्नानन्दे तस्मै १.१६ ८. सोमानामनुकूलानां सुखादिरसयुक्तानां पीतिः पानं यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.२३.४.पदार्थानां यथावद्भोगाय १.२३.१० पुष्टिशान्त्यादिगुणयुक्तानां पदार्थानां पानं यस्मिन् व्यवहारे तस्मै १.९२.१८. सोमा ओषधिरसाः पीयन्ते यस्मिँस्तस्मै (रोगाय) १.३७.३. सोमस्य पानाय ४.४६.३. ऐश्वर्यपालनाय ४.४७.३. उत्तमरसपानाय ४.४७.१. प्रशस्तपदार्थभोगनिमित्ताय १.२३.७. यया सोमा विद्यैश्वर्याणि जायन्ते तस्यै (क्रियायै) २.४१.२१. सोमः पीतो यस्मिंस्तस्मै (उत्सवाय) ३.४१.१. सोमानामैश्वर्याणां पीतिर्भोगो यस्मिँस्तस्मै (कर्म्मणे) १.२२.१२. [सोम-पीतिपदयोः समासः। पीतिः पा पाने (भ्वा०) पा रक्षणे (अदा०) धातोर्वा स्त्रियां क्तिन्। 'घुमास्थागापा०' इत्यादिसूत्रेणेत्वं यद्यपि पा पाने (भ्वा०) धातोरेव भवति, अत्र छान्दसत्वात् पा रक्षणे (अदा०) धातोरपि भवति। सोमपीतये सोमपानाय नि० ९.३७.]

सोमपीथम् सोमपानम् १९.५१. सोम विद्यारक्षणम् ऋ० भू० २६०, १९.५१. **सोमपीथः**=सोमः पीयते यस्मिन् सः (गृहाश्रमः) ८.५. **सोमपीथाय**=सुखकारकपदार्थभोगाय १.५१.७. [सोम-पीथपदयोः समासः। पीथः पा पाने (भ्वा०) पा रक्षणे (अदा०) धातोर्वा 'पातृतुदि०'

उ० २.७. सूत्रेण थक् । इन्द्रियं सोमपीथः तै० १.३.१०.२.]

सोमपुरोगवः सोम ओषधिगणओध ऐश्वर्ययोगो वा पुरोगामी यस्य सः (ब्रह्मा=पदार्थविज्ञाता योगी) २३.१४. [सोम-पुरोगुपदयोः समासः । पुरोगुः पुरस् उपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'डु-प्रकरणे मितद्र्वादीनामुपसंख्यानम्' इति डुः । वचनव्यत्ययेन जस्]

सोमपृष्ठाय सोमः पृष्ठो येन तस्मै (अग्नये=जनाय) २०.७८. [सोम-पृष्ठपदयोः समासः । पृष्ठः=पृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'तियपृष्ठगूथयूथप्रोथाः' उ० २.१२. सूत्रेण थक्प्रत्ययान्तो निपात्यते]

सोमपेयम् सोमस्य पातव्यं रसम् ५.२९.५. सोमैरैश्वर्ययुक्तैः पातुं योग्यं रसम् १.१२०.११. सोमश्चाऽसौ पेयश्च तम् ३.४३.१. सोमानां पदार्थानां पातुं योग्यम् (रसम्) २.१८.४. सोमेष्वोषधीषु यः पेयो रसस्तम् २.१८.५. **सोमपेयाय**=पेयः सोमो येन तस्मै (राज्ञे) ३.५२.८. ऐश्वर्यप्राप्तये ३.२५.४. यः सोमो रसश्च पेयः पातुं योग्यश्च तस्मै १.४५.९. उत्तमौषधिरसपानाय ७.२४.३. [सोम-पेयपदयोः समासः । पेयम् पा पाने (भ्वा०) धातोर्यत्]

सोमभृते यः सोममैश्वर्यसमूहं बिभर्त्ति तस्मै (सभापतये राज्ञे) ६.३२. यः सोमान् बिभर्त्ति तस्मै यजमानाय ५.१. [सोमोपपदे डुभृञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप् कर्त्तरि]

सोममादः ये सोमेन मदन्ति हर्षन्ति ते (यज्ञानुष्ठातारो जनाः) ७.२१.२. [सोमोपपदे मदी हर्षे (दिवा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण् । वचनव्यत्ययः]

सोममिव यथा सोमवल्ल्यादि हविः १.११६.२४. [सोमम्-इवपदयोः समासः]

सोमराज्ञी सोमो राजा यासां ताः (ओषधीः=सोमादयः) १२.९२. सोमप्रमुखाः (ओषधीः=ओषध्यः) १२.९३. [सोम-राजन्पदयोः समासे ततः स्त्रियां ङीप् । सोमराज्ञी या ओषधीः सोमराज्ञीः मं० २.८.३-४.]

सोमवताम् सोमगुणयुक्तानाम् (पितॄणां=जनक-जननीनाम्) २४.१८. [सोमप्राति० मतुप् । ततः षष्ठ्या बहुवचनम्]

सोमवृद्ध सोमेन विद्यैश्वर्येण वृद्धस्तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=विद्वज्जन) ३.३९.७. **सोमवृद्धः**=सोमेनैश्वर्येणौषध्या वा प्रवृद्धः (धार्मिक उद्योगिजनः) ६.१९.५. [सोमवृद्धपदयोः समासः]

सोमसखा सोमः परमेश्वरः सोमविद्याविन्मनुष्यो वा सखा सुहृद्यस्याः सा (विद्याप्रकाशयुक्ता वाणी) ४.२०. [सोम-सखिपदयो. समासः]

सोमसुतः सोमाः सुता येभ्यस्ते (ग्रावाणः=मेघादयः) १.८९.४. औषध्यैश्वर्योत्पादकाः (ग्रावाणः) २५.१७. **सोमसुद्भिः**=ये सोममैश्वर्यमोषधिगणं वा सुन्वन्ति तैः (राजपुरुषैः) ४.२४.८. [सोमोपपदे षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोः 'सोमे सुञः' अ० ३.२.९०. सूत्रेण क्विप्]

सोमसुत्वा यः सोममैश्वर्यं सवति सः (विद्वज्जनः) १.११३.१८. [सोमोपपदे षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोः 'सुयजोर्ङ्वनिप्' अ० ३.२.१०३. सूत्रेण ङ्वनिप्]

सोमा सौम्यगुणसम्पन्नौ (राजप्रजाजनौ) ४.२८.५. [सोम इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

सोमा इव सोमलतेव ६.८.१. [सोमाः-इवपदयोः समासः]

सोमानम् सुनोति निष्पादयत्योषधिसारान् विद्यासिद्धीश्च येन तम् (विद्वज्जनम्) ३.२८. यः सवत्यैश्वर्यं करोति तं यज्ञानुष्ठातारम् (यजमानम्) १.१८.१. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) षु प्रसवैश्वर्ययोः (भ्वा०) धातोर्वा मनिन्]

सोमापूषणा प्राणाऽपानौ २.४०.१. अग्निवायू २.४०.३. [सोम-पूषन्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः पूर्वपदस्यानङ् 'देवताद्वन्द्वे च' सूत्रेण]

सोमापूषणौ शान्ति-पुष्टिगुणवन्तौ (वायू) २.४०.५. **सोमापूषभ्याम्**=चन्द्रौषधिगणाभ्याम् २.४०.२. [सोम-पूषन्पदयोः समासः । पूर्वपदस्यानङ्]

सोमारुद्रा चन्द्र-प्राणाविव राजवैद्यौ ६.७४.१. यज्ञशोधितौ सोमलता-वायू इव राजवैद्यौ ६.७४.३. ओषधि-प्राणवत्-सुखसम्पादकौ (राजवैद्यौ) ६.७४.२. [सोम-रुद्र-पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशे पूर्वपदस्यानङादेशे च रूपम्]

सोमारुद्रौ शुद्धावोषधिप्राणाविव (वैद्यराजानौ) ६.७४.४. [सोम-रुद्रपदयोः समासः । सोम-रुद्रौ व्याख्यातौ]

सोमावतीम् बहुरससहिताम् (महौषधीम्) १२.८१. [सोमप्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप् । 'मन्त्रे सोमाश्वेन्द्रिय०' अ० ६.३.१३१. सूत्रेण पूर्वस्य छन्दसि दीर्घः]

सोमासः सूयन्त उत्पद्यन्ते सुखानि येभ्यस्ते (इन्दवः=रसाः) १.१६.६. ऐश्वर्ययुक्ताः (ओषधिरसाः) १.१३५.६. अभिषुताः सुसम्पादिताः पदार्था यैस्ते (ओषधिरसाः) १.५३.६. प्रेरकाः (जनाः) ७.३२.४. सूयन्त उत्पद्यन्ते ये

ते पदार्थाः, प्र०—अत्र 'अर्त्तिस्तु-सु-हु-सृ०' उ० १.१३९. अनेन षु-धातोर्मन्-प्रत्ययः 'आज्जसेरसुक्' इत्यसुक् च १.२३.१. अभिसूयन्त उत्पद्यन्ते उत्तमा व्यवहारा यैस्ते (अ०—सर्वपदार्थाः) १.५५. ऐश्वर्यवन्तः (मनुष्याः) ४.४२.६. [सोम इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

सोमाहुतः सोमैरैश्वर्यकारकैर्गुणैः पदार्थैर्वाऽऽहुतो वर्द्धितः सन् (अग्निः) १.९४.१४. [सोम-आहुतपदयोः समासः । आहुतः=आङ्+हु दानादानयोः (जु०) धातोः क्तः]

सोमांशवः सोमस्यांशाः १९.१३. [सोम-अंशुपदयोः समासः]

सोमिनः सोमाः प्रशस्ताः पदार्थाः सन्ति यस्य तस्य (गृहस्थिजनस्य), प्र०—अत्र प्रशंसार्थ इनिः १.२२.४. ओषध्यादियुक्तस्यैश्वर्यवतो वा (सज्जनस्य) ७.३२.८. बह्वैश्वर्ययुक्तस्य (विद्वज्जनस्य) १.१५१.२. **सोमी**=बहुविधमैश्वर्यं विद्यते यस्य सः (जनः) ४.२५.५. [सोम इति व्याख्यातम् । ततो भूम्न्यर्थे प्रशंसायां वार्थ इनिः]

सोमेभिः ऐश्वर्य प्रेरणादिक्रियाभिः ६.२३.९. [सोमप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न भवति]

सोम्यम् सोमं प्रसवं, सुखानां समूहं, रसादानमर्हति तत् (मधु=रसम्) १.१९.९. सोम-सम्पादनाऽर्हम् (मधु) १.१४.१०. यत्सोममर्हति तत् (मधु) २.३६.६. सोमगुणसम्पन्नम् (मधु=मधुरमुदकम्) २.३६.४. सोमे सोमलताद्योषधिगणे भवम् (मधु=मधुरविज्ञानम्) २०.९०. सोम ऐश्वर्ये साधुम् (मधु=द्रव्यम्) ३.५३.१०. सोमेष्वाषधीषु भवं रसम् ३३.३०. सोमाऽर्हम् (मधु=मधुररसम्) २१.४२. ऐश्वर्य, आरोग्य, सर्वदा सुखदायक (सदः=उत्तम घर) सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१९. **सोम्यस्य**=सोम ऐश्वर्ये भवस्य (अन्धसः=अन्नस्य) ३.४८.१. सोममैश्वर्यमर्हस्य (विद्वज्जनस्य) १.१०५.३. **सोम्यानाम्**=सोमवच्छान्त्यादिगुणयुक्तानाम् (पितॄणां=जनकानाम्) ४.१७.१७. **सोम्ये**=सोम इवाऽऽनन्दकरे (सर्वार्थ ऐश्वर्ये) ७.५९.६. [सोमप्राति० अर्हत्यर्थे 'सोममर्हति यः' अ० ४.४.१३७. सूत्रेण यः । अन्यत्र भवार्थे साध्वर्थे वा यत् । सोम्यम्-सोममयम् नि० १०.३७. सोमसम्पादिनः नि० ११.१८.]

सोम्यासः ये सोममैश्वर्यमर्हन्ति ते (पितरः=जनकादयः) १९.५७. सोमगुणानर्हाः (विद्वज्जनाः) ६.७५.१०. सौम्यगुणसम्पन्नाः (पितरः) १९.४९. सोमेष्वैश्वर्यादिषु साधवः (सखायः) ३४.१८. सोम ऐश्वर्ये भवाः सोमवच्छान्ता वा (पितरः) १९.३७. प्रतिष्ठार्हाः (पितरः), ऋ० भू० २६२, १९.३६. [सोम्यमिति व्याख्यातम् । ततो जसो ऽसुक्]

सोसवीति भृशं सुवति ३.५६.७. [षुञ् अभिषवे (स्वा०) धातोर्यङ्लुगन्ताल्लट्]

सौत्रामणी सूत्राणि यज्ञोपवीतादीनि मणिना ग्रन्थिना युक्तानि ध्रियन्ते यस्मिँस्तस्मिन् (यज्ञे) १९.३१. [सूत्रमणिपदयोः समासे 'तस्येदम्' इत्यण्-प्रत्यये छान्दसं रूपम् । सौत्रामणी तावश्विनौ च सरस्वती च । इन्द्रियं वीर्यं नमुचेराहृत्य तदस्मिन् पुनरदधुस्तं पाप्मनोऽत्रायन्त सुत्रातं वतनै पाप्मनोऽत्रास्महीति तद्भाव सौत्रामण्यभवत्तत्सौत्रामण्यै सौत्रामणीत्वम् श० १२.७.१.१४. ते देवा अब्रुवन् सुत्रातं वतैनमत्रासतामिति तस्मात् सौत्रामणी नाम कौ० १६.१०. ऐन्द्रो वाऽएष यज्ञो यत्सौत्रामणी कौ० १६.१०. उभयं सौत्रामणीष्टिश्च पशुबन्धश्च श० १२.७.२.२१. देवसृष्टो वाऽएषेष्टिर्यत् सौत्रामणी श० ५.५.४.१४. तस्मादेष ब्राह्मणयज्ञ एव यत् सौत्रामणी श० १२.९.१.१. सुरावान् वाऽएष बर्हिषद् यज्ञो यत् सौत्रामणी श० १२.८.१.२. सोमो वै सौत्रामणी श० १२.७.२.१२. पवित्रं वै सौत्रामणी श० १२.८.१.८. स यो भ्रातृव्यवान्त्स्यात्स सौत्रामण्या यजेत् श० १२.७.३.४.]

सौधन्वनासः शोभनेषु धन्वसु धनुर्विद्यास्विमे कुशलाः (नरः=नायका जनाः) १.११०.८. शोभनानि धनूंषि येषु ते सुधन्वानस्तेषु कुशलाः सौधन्वनाः (मनुष्याः) १.११०.२. शोभनज्ञानस्य पुत्राः (मुमुक्षवो जनाः) ३.६०.३. [सु-धन्वन्पदयोः समासे कुशलार्थेऽपत्यार्थे वाण् । ततो जसोऽसुगागमः]

सौधन्वनाः शोभनानि धन्वान्यन्तरिक्षस्थानि येषान्तेषामिमे(ऋभवः=मेधाविजनाः) ४.३५.१. शोभनं धन्वाऽन्तरिक्षं येषान्ते, तेषां पुत्राः ४.३५.८. शोभनं धन्वमन्तरिक्षं यस्य तदपत्यानि (राजपुरुषाः) ३.६०.१. शोभनविज्ञानाः ऋभवः १.११०.४. आप्तस्य पुत्राः (ऋभवः) ३.६०.४. शोभनेषु धनुष्षु कुशलाः (विद्वज्जनाः) १.१६१.२. सुधन्वनि कुशलाः (शिल्पिजनाः) १.१६१.७. [सु धन्वन्पदयोः समासे 'तस्येदम्' इत्यण् । अथवा अपत्यार्थे कुशलार्थे वाऽण् । धन्वन् अन्तरिक्षनाम निघं० १.१३. पदनाम निघं० ४.२.]

सौभगत्वम् शोभना भगा ऐश्वर्याणि यस्मात्पुरुषात् तस्येदं सौभगम्, तस्य भावः सौभगत्वम् १.३४.५. **सौभग-**

त्वस्य=सुष्ठु भगानामैश्वर्याणामयं समूहस्तस्य भावस्य १.९४.१६. **सौभगत्वाय**=सन्तानोत्पत्त्यादिप्रयोजनसिद्धये, ऋ० भू० २०८, ऋ० ८.३.२७.१. ऐश्वर्य, सुसन्तानादि सौभाग्य की वृद्धि के लिए सं० वि० १२१, १०.८५.३६. [सु-भगपदयोः समासे ततः 'तस्येदमि' त्यण् । ततः सौभगप्राति० भावे त्वः]

सौभगम् शोभना भगा ऐश्वर्ययोगा यस्य तस्य भावस्तम् १.३६.१७. शोभनैश्वर्यस्य भागम् (महदैश्वर्यम्) ५.८२.४, शोभनानां भगानामैश्वर्याणामिदम् १.४८.९. सुभगस्य श्रेष्ठैश्वर्यस्य भावम् ४.५४.६. सौभाग्य-वर्धकम् (राधः=धनम्) ५.५३.३. **सौभगस्य**=सुष्ठ्वैश्वर्यभावस्य ४.५५.८. आरोग्यस्याऽऽनन्दस्य च पं० वि०, अथर्व० १९.५५.३.४. **सौभगानि**=उत्तमधनाद्यैश्वर्याणां भावरूपाणि (अमृता=स्वादून्युदकानि) ५.७६.५. श्रेष्ठानामैश्वर्याणां भावान् ६.५.२. **सौभगाय**=शोभनस्य भगस्यैश्वर्यस्य भावाय २७.२. उत्तमैश्वर्यभावाय २७.८. [सु-भगपदयोः समासे 'तस्येदम्' इत्यर्थे भवार्थे वाऽण् । अथवा सुभगप्राति० भावे कर्मणि चार्थे 'प्राणभृज्जाति०' अ० ५.१.१२९ सूत्रेणाञ् उद्गातृत्वाद्]

सौभगा सुभगस्योत्तमैश्वर्यस्य भावो येषु तानि (वस्तूनि) ७.४.१०. सुभगानां कर्माणि, प्र०—अत्रोद्गातृत्वादञ् १.३८.३. उत्तमैश्वर्याणां भावान् ७.३.१०. [सौभगमिति व्याख्यातम् । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि । अथवा सुभगप्राति० 'प्राणभृज्जातिवयोवचनोद्गात्रादिभ्योऽञ्' अ० ५.१.१२९ सूत्रेण भावे कर्मणि वाऽञ्]

सौभगा सुभगानामैश्वर्याणां सम्बन्धिनीः (पुरः=नगरीः) ३.१५.४. [सौभगमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप् छान्दसः]

सौभाग्यम् उत्तमैश्वर्यस्य भावः, अ०—सौभाग्ययुक्तम् (भगः, पसः=ऐश्वर्यं लिङ्गम्) २०.९. [सौभगमिति व्याख्यातम् । ततो भावे ष्यञ् । छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पितत्वादत्र 'हृद्भगसिन्ध्वन्ते पूर्वपदस्य चे' ति प्राप्ता वृद्धिर्न भवति]

सौमनसः शोभनं मनः सुमनस्तस्याऽयमानन्दः सुहृद्भावः, प्र०—अत्र 'तस्येदम्' इत्यण् ३.४२. शोभनश्च तन्मनः सुमनस्तस्य भावः १८.८. मन का आनन्दयुक्त शुद्धभाव सं० वि० १४३, अथर्व० ३.३०.७. **सौमनसाय**=धर्मे सुष्ठु प्रवृत्तमनस आह्लादनाय १.९२.६. मनसो निर्वैरत्वाय १.७६.२. शोभनस्य मनसो भावाय ५.४२.११. अनुत्तमसुखाय १.१०८.४. सुमनसो भावाय (सद्गुणाय) ६.४४.१६. **सौमनसे**=सुष्ठु धर्मयुक्ते मानसे व्यवहारे ६.४७.१३. शोभनस्य मनसो भावे ३.१.२१. सुमनसि भवे व्यवहारे ३.५९.४. शोभनं मनः सुमनस्तस्य भावे १९.५०. [सु-मनस्पदयोः समासे 'तस्येदम्' इत्यण् । सुमनस्प्राति० वा भवार्थेऽण् । भावे वाऽण् । सौमनसे कल्याणे मनसि नि० ११.१९.]

सौमापौष्णः सोमपूषदेवताकः (श्यामः पशुः) २४.१. [सोम-पूषन्पदयोः समासे 'सास्य देवता' इत्यण्]

सौम्यस्य सोमानामोषधिसराणां भावस्य १९.२३. **सौम्यः**=सोमदेवताकः (बभ्रुः पशुः) २९.५८. [सोमप्राति० भावे ष्यञ् । सोमप्राति० वा 'सास्य देवते' त्यर्थे सोमाट्टयण्' अ० ४.२.३० सूत्रेण टयण्]

सौरभेयम् सुरभ्या अपत्यम् (अ०—अग्निम्) ३५.१३. [सुरभिप्राति० अपत्यार्थे 'स्त्रीभ्यो ढग्' इति ढक् । ढस्यैयादेशः]

सौरी सूर्यो देवता यस्याः सा (बलाका-विशेषपक्षिणी) २४.३३. [सूर्यप्राति० 'सास्य देवता' इत्यर्येऽण् । ततः स्त्रियां ङीपि 'सूर्यतिष्यागस्त्यमत्स्यानाम्०' इति यलोपः]

सौर्ययामौ सूर्ययमसम्बन्धिनौ (श्वेतकृष्णौ पशू) २४.१. [सौर्य-यामपदयोः समासः । सौर्यम्=सूर्यप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् । यामः=यमप्राति० 'तस्येदमि' त्यर्थेऽण्]

सौर्याः सूर्यवत्प्रकाशमानाः (सूर्यगुणाः पशवः) २४.१९. [सूर्यप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण्]

सौवम् स्वः सुखस्येदं साधनम् (श्रोत्रं=कर्णम्) १३.५७. [स्वर्प्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् । 'द्वारादीनां च' अ० ७.३.४ सूत्रेणौजागमः । 'अव्ययानां भमात्रे टिलोपः' अ० ७.३.४. वा०सूत्रेण टिलोपः]

सौवश्व्यम् शोभनेष्वश्वेषु महत्सु पदार्थेषु वा भवम् (स्वं बलम्) ६.३३.१. **सौवश्व्ये**=शोभना अश्वास्तुरङ्गा विद्यन्ते यासु सेनासु ते स्वश्वास्तेषां भावे १.६१.१५. [सु-अश्वपदयोः समासे कृते भावे ष्यञ्]

सौव्रत्येन श्रेष्ठेन कर्म्मणा ३९.९. [सु-व्रतपदयोः समासे कृते भावे कर्मणि वा ष्यञ् । व्रतम् कर्मनाम निघं० २.१.]

सौश्रवसा सुश्रवसा विदुषा निर्वृत्तानि (कर्माणि) ६.१३.५. [सौश्रवसप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि । सौश्रवस=सु-श्रवस्पदयोः समासे कृते निर्वृत्तार्थेऽण्]

सौश्रवसानि सुश्रवसि संस्कृतेऽन्ने भवानि (वस्तूनि) ६.१.१२. सुश्रवस्सु भवान्यन्नादीनि ६.७४.२. **सौश्रवसाय**=शोभनं श्रवः कीर्त्तिर्यस्य सः सुश्रवास्तस्य भावाय २५.२६. सुश्रवसो भावाय ६.६८.८. शोभनेष्वन्नेषु भवाय (रसाय) १.१६२.१३. **सौश्रवसेषु**=भा०—पाककरणे १२.२७. [सु-श्रवस्पदयोः समासे कृते भवार्थेऽण्। भावे वाऽण्]

स्कन् निस्सारयतु १.२६. [स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोर्लङ्। अडभावः। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

स्कन्दति अन्यान् प्रति गच्छति, अ०—वायुना सह सर्वत्र गच्छति ७.२६. [स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोर्लट्]

स्कन्धाः भुजदण्डमूलानि २५.६. [स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोः 'स्कन्देश्च स्वाङ्गे' उ० ४.२०७ सूत्रेणासुन्। धकारश्चान्तादेशः। अत्र सलोपश्छान्दसः। स्कन्धो वृक्षस्य समास्कन्नो भवति। अयमपीतरः स्कन्ध एतस्मादेवास्कन्नं काये नि० ६.१७.]

स्कन्धांसीव शरीराऽवयवबाहुमूलानीव १.३२.५. [स्कन्धांसि-इवपदयोः समासः। स्कन्धस् इति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

स्कन्नम् प्राप्तम् (आनन्दम्) ७.३३.११. [स्कन्दिर् गतिशोषणयोः (भ्वा०) धातोः क्तः। 'रदाभ्याम्०' इति निष्ठानत्वम्]

स्कभायत् विशेषेण स्कभ्नाति ५.२९.४. दधाति ६.४४.२४. [स्कम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोर्लङ्। अडभावः। 'स्तम्भुस्तुम्भु०' इति श्ना। 'छन्दसि शायजपि' इति श्नः शायच्]

स्कभिता स्तभितानि धृतानि (रजांसि=लोकान्) ८.५९. [स्कभितप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि। स्कभितः=स्कम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोः क्तः]

स्कभितासः स्थापिता धारिताः (पवयः=कलाचक्राणि १.३४.२. सर्वकलानां स्थापनार्थाः (वज्रतुल्याश्चक्रसमूहाः) ऋ० भू० १९४, ऋ० १.३.४.१. [स्कभित इति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

स्कभ्नुवन्तः प्रतिष्टम्भनं कुर्वन्तः (जनाः) ९.१३. [स्कम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोः शतृ। 'स्तम्भुस्तुम्भु०' इति श्नुः]

स्कम्भथुः स्कम्भेतम् ६.७२.२. [स्कम्भु स्तम्भार्थे सौत्रो धातुः। ततो लिट्। द्वित्वाऽभावश्छान्दसः]

स्कम्भदेष्णाः स्तम्भनदातारः (जनाः) १.१६६.७. [स्कम्भ-देष्णुपदयोः समासः। वर्णव्यत्ययेनोकारस्याकारादेशः। देष्णुः=डुदाञ् दाने (जु०) धातोः 'गादाभ्यामिष्णुच्' उ० ३.१६. सूत्रेणेष्णुच्]

स्कम्भनीः स्कम्भं प्रतिबद्धं नयतीति सा (धिषणा=धारणावती द्यौः) १.१९. [स्कम्भोपपदे णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः क्विप्]

स्कम्भनेन धारणेन ३.३१.१२. [स्कम्भु स्तम्भार्थे सौत्रो धातुः। ततो ल्युट्]

स्कम्भनेभिः स्तम्भनैः १.१६०.४. [स्कम्भनम्=स्कम्भुधातोर्ल्युट्। ततो भिस ऐसादेशो न भवति छान्दसत्वात्]

स्कम्भम् सर्वजगद्धारकम् (परमेश्वरम्) ऋ० भू० १०, अथर्व० १०.२३.४.२०. **स्कम्भः**=गृहाऽऽधारको मध्ये स्थित-स्तम्भ इव (पूर्णकामो जनः) ४.१४.५. स्तम्भ इव धारकः (परमेश्वरः) ४.१३.५. [स्कम्भु स्तम्भार्थे सौत्रो धातुः। ततः कर्त्तर्यच्]

स्कम्भसर्जनी या क्रिया स्कम्भानामाधारकाणां सर्जन्युत्पादिका सा ४.३६. [स्कम्भ-सर्जनीपदयोः समासः। सर्जनी—सृज विसर्गे (तुदा०)+ल्युट्+ङीप्]

स्कम्भासः धारणार्थाः स्तम्भविशेषाः १.३४.२. स्तम्भनार्था स्तम्भाः ऋ० भू० १९४, ऋ० १.३.४.१. [स्कम्भमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

स्त सन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च ३.२१. **स्तः**=भवामः १.६१.८. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लोट्। अन्यत्र लट्। पुरुषव्यत्ययः]

स्तनथाः शब्दयेः ५.८३.३. **स्तनय**=गर्जति, प्र०—अत्र व्यत्ययः ५.८३.७. **स्तनयन्ति**=शब्दयन्ति १.७९.२. ध्वनयन्ति ४.१०.४. **स्तनिहि**=शब्दय ६.४७.३०. विस्तृणीहि २९.५६. [स्तन देवशब्दे (चुरा०) धातोर्लङ्। अडभावः। 'छन्दस्युभयथा' इत्यार्धधातुकत्वाद् णिचो लोपः। अन्यत्र लोट् लट् च]

स्तनम् दुग्धस्याऽऽधारम् १.१६९.४. **स्तनः**=स्तन इव वर्त्तमानः शुद्धो व्यवहारः १.१६४.४९. [स्तन देवशब्दे (चुरा०) धातोरच्]

स्तनयते दिव्यं शब्दं कुर्वते (अग्नये) २२.२६. **स्तनयद्भिः**=शब्दायमानैः (अभ्रैः=मेघैः) ४.१७.१२. **स्तनयन्**=शब्दयन् (पर्जन्यः=मेघः) ५.८३.२. गर्जनं

कुर्वन् (पर्जन्यः) ५.८३.९. [स्तन देवशब्दे (चुरा०) धातोः शतृ]

स्तनयदमाः स्तनयन्ति शब्दयन्त्यमा गृहाणि येषां ते (मरुतः=मानवाः) ५.५४.३. [स्तनयत्-अमापदयोः समासः। अमा गृहनाम निघं० ३.१४.]

स्तनयन्निव विद्युद्वद् गर्जयन् (अग्निः=विद्वान्राजा) १२.३३. यथा दिव्यं शब्दं कुर्वन् (द्यौः=सूर्यप्रकाशः) १२.६. [स्तनयत्-इवपदयोः समासः]

स्तनयित्नवे स्तनयित्नुरिव दुष्टानां भयङ्कराय (भगवते) ३६.२१. **स्तनयित्नुना**=विद्युद्रूपेण ५.८३.६. **स्तनयित्नुम्**=शब्दनिमित्तां विद्युतम् २५.२. [स्तन देवशब्दे (चुरा०) धातोः 'स्तनिहृषिपुषिगदिमदिभ्यो णेरित्नुच्' उ० ३.२९ सूत्रेणेत्नुच्। स्तनयित्नु-कतमस्तनयित्नुरित्यशनिरिति। श० ११.६.३.९. (प्रजापतिः) स्तनयित्नुमुद्गीथम् (अकरोत्) जै० उ० १.१३.१. स्तनयित्नुः सावित्री गो० पू० १.३३. स्तनयित्नुरेव सविता जै० उ० ४.२७.९.]

स्तनाभुजः दुग्धयुक्तैः स्तनैः सवत्सान् मनुष्यादीन् पालयन्त्यः (धेनवः=गावः) १.१२०.८. [स्तनोपपदे भुज पालनाभ्यवहारयोः (रुधा०) धातोः क्विप्। पूर्वस्य दीर्घश्छान्दसः]

स्तब्धः निष्कम्पः, सर्वस्य स्थिरतां कुर्वन् सन् स्थिरः (परमेश्वरः) ऋ० भू० ११९, नि० २.३. [स्तम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोः क्तः]

स्तभान उत्तभान ५.२७· [स्तम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोर्लोटि 'हलः श्नः शानज्झौ' इति श्नः शानच्]

स्तभायत् स्तभ्नाति ४.६.२. स्तभ्नीयात् ४.५.१. **स्तभायः**=स्तभ्नाति ६.१७.७. [स्तम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोर्लङि 'छन्दसि शायजपि' इति श्नः शायच्। अडभावः]

स्तभायन् स्तम्भयन् (इन्द्रः=राजा) ४.२१.५. [स्तम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोः शतृ। 'छन्दसि शायजपि' इति शायच्]

स्तभितम् धृतम् (स्वः=सुखम्) ३२.६. धारण किए हुए (सुख) को सं० वि० ६, ३२.६. [स्तम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोः क्तः]

स्तभूयमानम् लोकानां धारकम् (त्वाष्ट्रं=सूर्यस्येदं तेजः) ३.७.४. [स्तम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोः कर्मणि शानच्]

स्तभ्नातु धरतु १५.१०. गृह्णातु १५.१२. स्थिरीकरोतु १५.११. **स्तम्भीत्**=धरेत्, प्र०–अत्राऽडभावः १.१२१.२. [स्तम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोर्लोट्। 'स्तम्भुस्तुम्भु०' इति शपः श्ना। अन्यत्र लुङ्। अडभावः]

स्तरते स्तृणोत्याच्छादयति १.१२९.४. [स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्लट्। विकरणव्यत्ययेन शप्]

स्तरीः कलायन्त्रादिसंयोगेनास्तारिषत यास्ता नौकाः १.१२२.२. **स्तर्यः**=स्तृणन्ति याभिस्ताः (गावः=किरणाः ३३.१८. आच्छादिकाः (पत्न्यः) ४.१९.७. आच्छादिताः (गावः=किरणाः) ७.२३.४. [स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोः 'अवितॄस्तृतन्त्रिभ्य ईः' उ० ३.१५८. सूत्रेण ईः]

स्तरीः स्वभावाच्छादकः (इन्द्रः=पतिः) ८.२. यः सुखैः स्तृणाति आच्छादयति सः (इन्द्रः=सुखप्रद ईश्वरः) ३.३४. छलकपटाचरणरहितः, सत्यभावप्रकाशकः (विद्वान् पतिः) ८.२. [स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोः 'अवितॄस्तॄ०' उ० ३.१५८. सूत्रेण ईः]

स्तर्यम् स्तरीषु नौकादियानेषु साधुम् (वाः=वारि) १.११६.२२. सुखैराच्छादिकाम् (गां=पृथिवीम्) १.११७.२०. [स्तरीति पूर्वपदे व्याख्यातम्। ततः साध्वर्थे यत्]

स्तव स्तवाम, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन शप्, पुरुषव्यत्ययश्च २.११.६. **स्तवत्**=स्तूयात् ६.४७.१५. प्रशंसेत् ६.५९.४. **स्तवते**=प्रशंसति २.२४.१ स्तौति १.१५४.२. **स्तवथ**=प्रशंसथ ४.२१.२. **स्तवन्त**=स्तुवन्ति ४.२२.७. **स्तवन्ते**=प्रशंसन्ति ६.२६.७. **स्तवान्**=स्तूयात् ६.२४.८. **स्तवाम**=प्रशंसेम २.११.६. **स्तविष्यामि**=स्तोष्यामि १.४४.५. **स्तवे**=प्रशंसामि, प्र०—अत्र शपो लुक् न १.९२.७. **स्तवेत्**=प्रशंसेत् ५.१८.१. **स्तवै**=प्रशंसानि ३.३२.१४. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लोट्। बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न। अन्यत्र लेट्, लट्, लङ्, लृट्, लिङ् च। स्तवत्-स्तौति नि० ५.२२. स्तवे स्तूयते। नि० ६.२३.]

स्तवध्यै स्तोतुम् ७.३७.८. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोस्तुमर्थेऽध्यैः प्रत्ययः]

स्तवमान स्तुतिकर्त्तः (विद्वज्जन) १.१४७.५. **स्तवमानः**=सर्वान् योद्धॄन् वीररसयुक्तव्याख्यानेनोत्साहयन् (इन्द्रः=शत्रुविदारको सेनेशः) ७.१९.११. गुणकीर्त्तनं कुर्वन् (विद्वज्जनः) १.१३९.६. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः शानच्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न भवति]

स्तवमानेभिः स्तुवन्ति यैस्तैः (अर्कैः=स्तोत्रः

१.६२.७. [स्तवमानप्राति० भिस ऐस् न भवति छान्दसत्वात् । स्तवमानः=ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०)धातोर्बाहु० औणा० आनच्]

स्तवसे स्तावकाय (विद्यार्थिजनाय) ५.१०.७. स्तुतये १.१६६.८. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोरौणा० असुन्]

स्तवान् स्तुतीः २.२०.५. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः 'ऋदोरबि' त्यप् । प्राणो वै स्तवः कौ० ८.३]

स्तवान यः सत्यं स्तौति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ३.४०.३. **स्तवानः**=स्वेन प्रवृद्धः (अग्निः=राजा) ४.२.६. प्रशंसन् (विद्वज्जनः) ५.१०.७. स्तुवन् (विद्वज्जनः) २७.३८. स्तोतुं शीलः (पतिः), प्र०—अत्र स्वरव्यत्ययेनाद्युदात्तत्वम् १.११३.१७. यः स्तौति सः (इन्द्रः=मनुष्यः) १.५१.६. स्तूयमानो गृहीतगुणो वा (अग्निः=राजा), प्र०-अत्र 'सम्यानच् स्तुवः' उ० २.८६. इति बाहुलकात् समुपपदाभावेऽपि कर्मण्यौणादिक आनच्प्रत्ययः । समी०—अत्र सायणाचार्येण लटः स्थाने शानचमाश्रित्य स्तूयमानमिति व्याख्यानं कृतमत इदमशुद्धम् १.१२.११. स्तावकः सन् (अग्निः=राजा) ४.११.२. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० आनच्]

स्तवाना सत्यप्रशंसकौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.५५.४. [स्तवान इति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

स्तवानेभिः सर्वविद्यास्तावकैः (देवैः=विद्वज्जनैः) १.१६६.८. [स्तवान इति व्याख्यातम् । ततो भिस ऐसादेशो 'बहुलं छन्दसी' ति न भवति]

स्तवे स्तवने ७.१२.२. प्रशंसनीये (दमे=गृहे) ६.१२.४. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः 'ऋदोरबि' त्यप्]

स्तामुः स्तावकः (प्रजाजनः) ७.२०.६. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० उण् । वस्य मकारश्छान्दसः । स्तामुः स्तोतृनाम । निघं० ३.१६.]

स्तायूनाम् चौर्येण जीवताम् (प्रजाजनानाम्) १६.२१. [तायुः स्तेननाम (निघं० ३.२४) सकारोपजनश्छान्दसः]

स्तावा याः स्तूयन्ते प्रशस्यन्ते ताः (दक्षिणाः) १८.४२. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्घञ् । स्तावाः—(अप्सरसः यजु० १८.४२.) दक्षिणा वै स्तावा दक्षिणाभिर्हि यज्ञः स्तूयते]

स्तियानाम् संहतानां स्थावरजङ्गमानां प्राण्यप्राणिनाम् ६.४४.२१. अपां जलानाम् ७.५.२. [स्तियानाम्=स्तिया आपो भवन्ति स्त्यायनात् । नि० ६.१७. स्त्यै शब्दसंघातयोः (भ्वा०) धातोर्विच् । धातोर्मध्ये इकारोपजनश्छान्दसः]

स्तीन् संहतान् मिलितान् (प्रजाजनान्) ७.१९.११ [स्त्यै शब्दसंघातयोः (भ्वा०) धातोः क्विपि छान्दसं सम्प्रसारणम्]

स्तीर्णबर्हिषम् स्तीर्णमाच्छादितं बर्हिरन्तरिक्षं येन तम् (अग्निं=विद्युदादिम्) १५.४९. [स्तीर्ण-बर्हिष्पदयोः समासः । स्तीर्णम्=स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोः क्तः । बर्हिः अन्तरिक्षनाम । निघं० १.३. उदकनाम । निघं० १.१२]

स्तीर्णम् सर्वतोऽङ्गोपाङ्गैराच्छादितं यानम् २९.४. आच्छादकम् (बर्हिः=अन्तरिक्षम्) २१.५७. काष्ठैर्हविषा चाऽऽच्छादनीयम् (हुतं द्रव्यम्) २८.१२ [स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोः क्तः]

स्तीर्णाः शुभगुणैराच्छादिताः (धेनवः=गावः) ३.१.७. [स्तीर्णमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

स्तुतस्तोमस्य स्तुतः स्तोमः सामवेदगानादिविशेषो येन तस्य (वीरगृहपतेः) ८.१२. [स्तुत-सोमपदयोः समासः]

स्तुतः प्राप्तप्रशंसः (इन्द्रः=राजा) ४.१९.११. प्रशंसितः (मनुष्यः) ४.१६.२१. स्तुत्या लक्षितः, अ०—प्रकाशितगुणः सन् (इन्द्रः=जगदीश्वरः सूर्यो वा) ३.५२. प्रशंसां प्राप्तः (मघवा=विद्वज्जनः) १.१७१.३. प्राप्तप्रशंसः (इन्द्रः=राजा) ४.२१.१. **स्तुताः**=स्तुतिप्रकाशकाः (मन्त्राः=विचारसाधका उपदेशाः) ३४.५३. प्राप्तस्तुतयः (वसवः=पृथिव्यादयो विद्वज्जना वा) २१.२३. प्रशस्ताः (रुद्राः=मध्यमा विद्वांसः) २१.२४. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः । अन्यत्रौणा० वा क्तः]

स्तुतः स्तुतिं कुर्वत्यः (मातरः), प्र०—क्विबन्तः शब्दोऽयम् १.१६६.४. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्विप् । 'ह्रस्वस्य पिति कृति तुक्' इति तुकि जसि च रूपम्]

स्तुतासः प्राप्तप्रशंसाः (मनुष्याः) ७.५७.६. प्रशंसिताः (विद्वज्जनाः) १.१७१.३. [स्तुतः=ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः क्तः । स्तुतप्राति०जसोऽसुक्]

स्तुतीः गुणस्तवनानि ८.३५. प्रशंसाः १.८४.२. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

स्तुपः शिखा, प्र०—यज्ञो वै विष्णुस्तस्येयमेव शिखा

स्तुपः श० १.३.३.५., २.२. **स्तुपेन**=हिंसनेन २५.२.

स्तुभः यः स्तोभते सः (सज्जनः) ३.५१.३. **स्तुभा**=स्तोभते स्थिरीकरोति येन तेन (रवेण) १.६२.४. [स्तोभति अर्चतिकर्मा (निघं० ३.१४)। ततः कर्त्तरि क्विप्। स्तुम्भु स्तम्भार्थे (सौत्रो धातुः) धातोर्वा क्विप् । स्तुभ् स्तोतृनाम निघं० ३.१६.]

स्तुभः स्तम्भिकाः (विद्यार्थिजनाः) १.१९०.७. [स्तोभति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. । ततः क्विप् । स्तुभ् स्तोतृनाम निघं० ३.१६.]

स्तुभ्वा अर्चकः (सज्जनः) १.६६.२. [स्तोभति अर्चतिकर्मा। निघं० ३.१६. ततः कर्त्तरि वनिप्]

स्तुमसि स्तुमः ६.२३.५. **स्तुवते**=प्रशंसति २.२२.३. स्तौति, प्र०—अत्र श-विकरणः ३३.५०. **स्तुवन्त**=प्रशंसत ६.२९.४. **स्तुवन्ति**=प्रशंसन्ति ३३.९७. **स्तुवीत**=प्रशंसेत् ४.५५.६. **स्तुषे** प्रशंससि १.१५९.१. तद्गुणान् प्रकाशयसि १.४६.१. स्तौति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन मध्यमः १.१२२.७. स्तौमि ६.५१.३. **स्तुहि**=प्रशंस ५.५३.३. प्रकाशय १.१२.७. प्रशंसय १.२२.६. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लट् । 'इदन्तो मसि' इति मस इदन्तत्वम् । अन्यत्र लङ्, लिङ्, लोट् च]

स्तुवतः प्रशंसकान् (जनान्) ५.५३.१६. स्तावकान् (मर्त्तान्=मनुष्यान्) ७.१८.१८. स्तुवताम्=विशाप्रशंसकानाम् (सज्जनानाम्) ६.५४.६. **स्तुवते**=प्रशंसां कुर्वते (जनाय) ५.४२.७. सत्यस्य स्तावकाय (सभाद्यध्यक्षाय) १.६२.१. सत्यं वदते (पुरुषाय) ४.२१.९. धर्म्मं श्लाघमानाय (विद्वज्जनाय) १.११६.२३. स्तुतिं कुर्वते (विद्यार्थिजनाय) १.११६.७. यः शास्त्रार्थान् स्तौति तस्मै (नायकाय जनाय) ३४.१६. प्रशंसिताय (सत्यस्योपदेशकाय), प्र०—अत्र 'कृतो बहुलम् वा' इति कर्मणि कृत् ६.६२.५. सत्यवक्त्रे (राज्ञे) १.११७.७. **स्तुवन्**=स्तुतिं कुर्वन् (जनः) ४.५१.७. **स्तुवन्तम्**=स्तुतिकर्त्तारम् (अध्यापकम्) १.१४७.५. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः शतृ]

स्तुषे स्तोतुम् ५.५८.१. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोस्तुमर्थे सेप्रत्ययः]

स्तूपम् किरणसमूहम् १.२४.७. **स्तूपैः**=सन्तप्तैः (रश्मिभिः=किरणैः) ७.१.२. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०)धातोः 'स्तुवो दीर्घश्च' उ० ३.२५. सूत्रेण पः । धातोर्दीर्घश्च । स्तूपः स्त्यायतेः संघातः नि० १०.३३]

स्तूयमानाः स्तुतिं प्राप्नुवन्तः (मरुतः=पवनः) १.१०७.२. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः कर्मणि शानच्]

स्तूयसे प्रशस्यसे १२.४७. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः कर्मणि लट्]

स्तृणन्ति यन्त्रैश्छादयन्ति ७.३२. **स्तृणामि**=आच्छादयामि २.२. **स्तृणीत**=आच्छादयत ७.४३.२. **स्तृणीताम्**=तनोतु ७.१७.१. **स्तृणीते**=आच्छादयति प्राप्नोति वा ६.६७.२. **स्तृणीमहि**=आच्छादयेम ३.४.४. **स्तृणोषि**=आच्छादयसि १.१२९.४. [स्तॄञ् आच्छादने (क्र्या०) धातोर्लट् । अन्यत्र लिङ् लोट् चापि । स्तृणाति वधकर्मा । निघं० २.१९.]

स्तृणासाः आच्छादकाः (उद्यमिनो जनाः) १.१४२.५. आच्छादयन्तः (सत्पुरुषाः) २.११.१६. [स्तृञ् आच्छादने (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० नक् । ततो जसोऽसुक्]

स्तृभिः प्राप्तव्यैर्गुणैः १.६८.५. शत्रुबलाच्छादकैर्गुणैः, प्र०—स्तृञ् आच्छादने इत्यस्मात् क्विप् 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति' इति तुगभावः १.८७.१. आच्छादितैर्नक्षत्रैः १.१६६.११. [स्तृञ् आच्छादने (स्वा०) धातोः क्विप् । 'ह्रस्वस्य०' इति तुगपिं न भवति छान्दसत्वात् । स्तृभिस्तीर्णानीव ख्यायन्ते नि० ३.२०.]

स्तेन इव यथा चोरो भित्त्यादिकं तथा १२.८४. [स्तेन-इवपदयोः समासः]

स्तेनम् चोरम् ६.५१.१३. **स्तेनस्य**=अप्रसिद्धचोरस्य, भा०—स्तेनसम्बन्धिनः (दुर्जनस्य) १२.६२. स्तेनान्=परपदार्थाऽपहर्त्तॄन् (दुर्जनान्) ११.७८. **स्तेनानाम्**=अन्यायेन परस्वाऽऽदायिनाम् (भा०—चोरादीनाम्) १६.२०. **स्तेनाः**=सुरङ्गं दत्त्वा परपदार्थाऽपहारिणः (भा०—दस्य्वादयो जनाः) १.१. [स्तेनः कस्मात् संस्त्यानमस्मिन् पापकमिति नैरुक्ताः नि० ३.१९]

स्तेनहृदयम् चोरस्य हृदयमिव हृदयमस्य तम् (दुर्जनम्) ३०.१३. [स्तेन-हृदयपदयोः समासः]

स्तेनासः गुप्ताश्चोराः, भा०—प्रसिद्धा अप्रसिद्धाश्चोराः ११.७९. [स्तेनम् इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

स्तेयम् चोरी को सं० वि० १२२, अथर्व० १४.१.५७. [स्तेनप्राति० भावे कर्मणि वा यत् नलोपश्च 'स्तेनाद्यन्नलोपश्च' अ० ५.१.१२५. सूत्रेण]

स्तोकस्य अपत्यस्य ३४.१३. **स्तोकानाम्**=स्वल्पानाम् (अ०—स्तोकान्सूक्ष्मव्यवहारान्), प्र०—अत्र शेष-

विवक्षातः कर्मणि षष्ठी ६.१६. अल्पानां पदार्थानाम् ३.२१.१. **स्तोकाः**=स्तावकाः (सज्जनाः) ३.२१.३. [स्तोकः-आद्यन्तविपर्ययः नि० २.१. स्तोको वै द्रप्सः गो० उ० २.१२.]

स्तोकासः गुणानां स्तावकाः (सज्जनाः) ३.२१.४. [स्तोक इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

स्तोतः स्तावक (भक्तजन) २३.७. **स्तोता**=प्रशंसकः (राजपुरुषः) ३.५२.५. स्तुतिकर्त्ता सभाध्यक्षो राजा १.३८.४. सत्यविद्याप्रकाशकः (मनुष्यः) ५.१८.२. **स्तोतारम्**=विद्यागुणस्तावकम् (सज्जनम्) १.११२.११. धर्म्मस्य स्तावकम् (विद्वज्जनम्) १.१०५.८. ऋत्विजम् ४.१७.१३. विद्वांसम् ३.४१.६. **स्तोतुः**=गुणप्रकाशकस्य (विद्वज्जनस्य) १.५७.५. **स्तोतृभ्यः**=प्रशंसकेभ्यो मनुष्येभ्यः ३६.७. स्तुवन्ति जगदीश्वरं सृष्टिगुणांश्च ये तेभ्यो धार्मिकेभ्यो विद्वद्भ्यः १.११.३. सुपात्रेभ्यो विपश्चिद्भ्यः ५.६.८. सकलविद्याऽध्यापकेभ्यो विद्वद्भ्यः २.१.१६. सकलप्रयोजनविद्भ्यः (जनेभ्यः) २.३४.७. विद्याप्रचारकेभ्यः (सज्जनेभ्यः) ३.१०.८. स्तावकेभ्यो विद्वद्भ्यः १५.४१. विद्यामिच्छुभ्यः (जनेभ्यः) २.११.९. य ईश्वरं स्तुवन्ति तेभ्यः (सज्जनेभ्यः) १.३३.५. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच् । स्तोता स्तवनात् नि० ३.१९. स्तोता—वायुर्वै स्तोता श० १३.२.६.२.]

स्तोत्रम् स्तुवन्ति येन तत् (स्तवनम्) ३.५२.११. स्तोतुमर्हम् (अवः=रक्षणादिकम्) ३.३१.१४. **स्तोत्रस्य**=प्रशंसितस्य (सख्यस्य) ५.५५.९. **स्तोत्रे**=स्तवने ३३.२९. प्रशंसासाधने ६.३५.१. स्तोतव्ये व्यवहारे १.१०२.१. [ष्टुञ् स्तुतौ (भ्वा०) धातोः 'दाम्नीशसयु०' अ० ३.२.१८२ इति करणे ष्ट्रन् । स्तोत्रम्—क्षत्रं वै स्तोत्रम् ष० १.४. आत्मा वै स्तोत्रम् श० ५.२.२.२०.]

स्तोत्रियाः ये स्तोत्राण्यर्हन्ति ते (विद्वज्जनाः) १९.२४. [स्तोत्रमिति व्याख्यातम् । ततोऽर्हत्यर्थे घश्छान्दसः । स्तोत्रियः—इयं (पृथिवी) एव स्तोत्रियः जै० उ० ३.४.२. आत्मैव स्तोत्रियः जै० उ० ३.४.३.]

स्तोभत स्तम्भयत १.८०.९. **स्तोभति**=बध्नाति १.८८.६. **स्तोभन्ति**=स्तुवन्ति ५.८३.२. स्तभ्नन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् २.१६८.८. [स्तोभति अर्चतिकर्मा निघं० ३.१४. स्तुम्भु (सौत्रो धातुः) धातोर्वा रूपाणि]

स्तोमतष्टा स्तोमैस्स्तुतिभिस्तष्टा विस्तृता (मतिः=प्रज्ञा) ३.३९.१. **स्तोमतष्टाः**=विस्तृतस्तुतयः ३.४३.२. [स्तोम-तष्टापदयोः समासः । तष्टा=तक्षू तनूकरणे (भ्वा०)+क्त+टाप्]

स्तोमपृष्ठा स्तोमाः पृष्ठा ज्ञापयितुमिष्टा यस्याः सा (स्त्री) १५.३. स्तोमानां पृष्ठं ज्ञीप्सा यस्याः सा (स्त्री) १५.४. [स्तोम-पृष्ठापदयोः समासः । पृष्ठा=प्रच्छ ज्ञीप्सायाम् (तुदा०) धातोः क्तान्तात् स्त्रियां टाप् । टस्य ठकारश्छान्दसः]

स्तोमम् स्तूयते येनाऽसौ स्तोमस्तं स्तुतिसमूहम् १.१०.९ स्तूयते गुणसमूहो यस्तं यज्ञम् १.१६.५. अतिप्रशंसनीयम् (प्रमाणादिपदार्थसमूहम्) स्तोतुमर्हम् (क्रियाकौशलम्), स्तवनीयम् (अहङ्कारम्) ९.३४. स्तोतुं योग्यम् (व्यवहारम्) ९.३३. प्रशंसनीयकलाकौशलम् १.१२.१२. गुणप्रकाशम् १.२१.१. स्तुतिम् ५.४२.२. विद्याप्रशंसाम् ३.१५.२. स्तूयते यस्तम् (यज्ञं=विद्याधर्मसङ्गमयितारं व्यवहारम्) ११.८. श्लाघनीयम् (कर्म) ५.१.१२. श्लाघाम् ३.६१.१. गुणकीर्त्तनम् १.९४.१. स्तुतिविषयं न्यायप्रज्ञापनम् १.४४.१४. सकलशास्त्राध्ययनाध्यापनम् ५.३५.८. स्तुत्यं कर्म्म १५.२५. **स्तोमः**=सामगानविशेषः स्तुतिसमूहः १.८.१०. प्रश्नोत्तराख्य आलापः १.१६८.१०. श्लाघनीयो मेघो वह्निर्वा ५.४२.१६. श्लाघाविषयः ५.४२.१५. गुणप्रकाश-समूहक्रियः (वायुः) १.१६.७. स्तुतिः ४.३२.१५. स्तुवन्ति येन सह (ऋचां भागः) १५.११. स्तूयमानः (ऋतुर्वसन्तः) १०.१०. प्रशंसामयो व्यवहारः ६.४५.३०. स्तोतुमर्हः ऋग्वेदः १२.४. स्तुवन्ति यस्मिन् सोऽथर्ववेदः १८.२९. प्रशंसाव्यवहारः ७.३४.१४. स्तुतिविषयः १.१७१.२. श्लाघ्यो व्यवहारः ७.२४.५. श्लाघ्यगुणकर्मस्वभावः ६.३८.३. स्तुतिसाधकः (सोमः=चन्द्रः) १५.१३. स्तोतव्यः (विद्वज्जनः) १४.२५. स्तुवन्ति येन सः, स्तोता यः स्तूयते, स्तावकः (विद्वज्जनः) १४.२४. **स्तोमान्**=अ०—वेदस्तुतिसमूहान् १.१०.४. स्तोतुमर्हान् विद्याविशेषान् १.१२६.१. मार्गाय समूढान् पृथिवीपर्वतादीन् १.११६.१. स्तुत्यान् रत्नादिद्रव्यसमूहान् १.११४.९. **स्तोमाः**=पदार्थगुणप्रशंसाः १९.२८. प्रशंसनीया विद्वांसोऽध्येतारश्च ७.१९.१०. स्तुवन्ति यैस्ते स्तुतिसमूहाः १.११.८. वेदस्तुतिसमूहाः १.५.८. **स्तोमे**=स्तुतिव्यवहारे २१.२५. प्रशंसिते विजये ३.५४.२. **स्तोमेन**=स्तुतियुक्तेन व्यवहारेण ३.५३. इन्धनसमूहेन २२.१५. गुणप्रशंसनेन ५.१४.१. **स्तोमेषु**=स्तुवन्ति सर्वा विद्या येषु तेषु (उक्थेषु=

वाक्येषु) २.११.३. **तोमैः**=प्रशंसावचनैः ३.४२.४. प्रशंसितैर्व्यवहारैर्वाग्भिः ५.२२.४. विद्यास्तुतिविशेषैर्वेदभागैः १५.४४. पदार्थविद्याप्रशंसनैः ३३.८१. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोः 'अर्त्तिस्तुसु०' उ० १.१४०. सूत्रेण मन् । स्तोमः स्तवनात् नि० ७.२२. स्तोमः—सप्तस्तोमाः श० ९.५.२.८. त्रिवृत्पञ्चदशः सप्तदश एकविंश एते वै स्तोमानां वीर्यवत्तमाः तां० ६.३.१५. यदु ह किं च देवा कुर्वते स्तोमेनैव तत् कुर्वते श० ८.४.३.२. स्तोमो वै देवेषु तरो नामासीत् तां० ८.३.३. स्तोमा वै परमाः स्वर्गा लोकाः ऐ० ४.१८. स्तोमा वै त्रयः स्वर्गा लोकाः ऐ० ४.१८. स्तोमो हि पशुः तां० ५.१०.८. अन्नं वै स्तोमाः श० ९.३.३.६. प्राणा वै स्तोमाः श० ८.४.१.३. वीर्यं वै स्तोमाः तां० २.५.४. वीरजननं वै स्तोमः तां० २१.९.३. गायत्रीमात्रो वै स्तोमः कौ० १९.८. नाक्षराच्छन्दसो व्येत्येकस्मान्न द्वाभ्यां न स्तोत्रियया स्तोमः श० १२.२.३.३. देवा वा आदित्यस्य स्वर्गाल्लोकादवपादादबिभयुस्तमेतैः स्तोमैः सप्तदशैरदृंहन्यदेते स्तोमा भवन्त्यादित्यस्य धृत्यै तां० ४.५.९.]

स्तोमवाहसः प्रशंसाप्रापकाः (गोतमाः=विद्वांसो जनाः) ४.३२.१२. स्तोमः स्तुतिसमूहो वाहः प्राप्तव्यः प्रापयितव्यो येषान्ते (सखायः=विद्वांसो जनाः) १.५.१. [स्तोम-वाहस्पदयोः समासः । वाहस्=वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताद् औणा० असुन्]

स्तोमवाहाः ये स्तोमान् वहन्ति ते (मनुष्याः) ६.२३.४. [स्तोमोपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

स्तोमासः स्तुतिकर्त्तारः (विद्वज्जनाः) ५.८४.२. ये स्तूयन्ते ते (सज्जनाः) ६.६९.२. प्रशंसिताः (गुणाः) ५.२९.११. स्तावकाः (विद्वज्जनाः) ३.५४.१४. [स्तोम इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुगागमः]

स्तोमेभिः वेदस्थैः प्रकरणैः स्तोत्रैः ५.१०.३. प्रशसितैः कर्मभिः ३.३२.१३. स्तुवन्ति सकला विद्या यैस्तैः (गीर्भिः=वाग्भिः) ३.५.२. वेदस्थैः स्तुतियुक्तैः त्वद्गुणप्रकाशकैः स्तोत्रैः १.९.३. [स्तोम इति व्याख्यातम् । ततो भिस ऐस् न भवति 'बहुलं छन्दसी' ति सूत्रेण]

स्तोम्यः प्रशंसनीयः (सविता=जगदीश्वरः सूर्यो वा) १.२२.८. [स्तोम इति व्याख्यातम् । ततोऽर्हत्यर्थे 'छन्दसि च' अ० ५.१.६७. सूत्रेण यत्]

स्तोम्या स्तोतुमर्हा (सरस्वती=सत्या वाक्) ६.६१.१०. [स्तोम्य इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

स्तोषत् स्तुयात् ५.३६.३. **स्तोषम्**=प्रशंसेयम् १.१८७.१. स्तुवे ३४.७. **स्तोषाम**=गुणान् कीर्त्तयेम १.५३.११. **स्तौत्**=स्तौति ७.४२.६. [ष्टुञ् स्तुतौ (अदा०) धातोर्लेट् । अन्यत्र लङपि । स्तोषम्=स्तौमि नि० ९.२५.]

स्तौनाः चौराः, प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेनैकार-स्थान औकारः ६.६६.५. [स्तेन इति व्याख्यातम् । वर्णव्यत्ययेनैकारस्यौकारः]

स्तौलाभिः स्थूले भवाभिः (सेनाभिः), प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन थस्य स्थाने तः ६.४४.७. [स्थूलप्राति० भवार्थेऽण् । वर्णव्यत्ययेन थस्य तकारः]

स्त्यायताम् सर्वतो वर्धताम्, संहता भवन्तु वा, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् ३८.१८. [स्त्यै ष्ट्यै शब्दसंघातयोः (भ्वा०) धातोर्लोट् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

स्त्री भा०—याऽन्यायाचरणादपूज्यपूजनाद्विरहा पत्या माननीया सा (पत्नी) ५.६१.६. [स्त्यै ष्ट्यै शब्दसंघातयोः (भ्वा०) धातोः 'स्त्यायतेर्ड्रट्' उ० ४.१६६. सूत्रेण ड्रट् । ततः स्त्रियां ङीप् । स्त्रियः स्त्यायतेरपत्रपणकर्मणः नि० ३.२१. स्त्री सावित्री जै० उ० ४.२७.१७.]

स्त्रीषखम् स्त्रिया मित्रं पतिम् ३०.६. [स्त्री-सखिपदयोः समासे समासान्तः टच् 'राजाहस्सखिभ्य०' सूत्रेण]

स्थ सन्ति, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययेन लडर्थे लोट् १.१५.२. भवथ ५.५७.२. भवत १२.४६. सन्तु ४.३४.६. तिष्ठत ५.६१.१. सन्ति, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययेन प्रथमपुरुषस्थाने मध्यमपुरुषः १.१. **स्थः**=भवथः १.१५७.६. स्तः, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१७.२. वर्त्तेते १.१०८.११. भवतं स्यातं वा ९.४. भवथः, भवतो वा १.१०८.९. तिष्ठथः ५.७३.१. तिष्ठतः ५.२१. स्याताम् १०.६. **स्थात्**=तिष्ठति २.१५.७. तिष्ठेत् ३.१५.६. उपतिष्ठते २.३.१०. **स्थात**=तिष्ठत ५.५३.८. **स्थाः**=तिष्ठेः ६.२४.९. तिष्ठति ४.३०.१२. **स्थाति**=तिष्ठति २.३१.३. **स्थाथः**=भवथः ४.४६.४. **स्थाम्**=अवतिष्ठस्व २.२८.११. तिष्ठेयम् २.२७.१७. **स्थाम**=तिष्ठेम १.१३९.४. **स्थाः**=तिष्ठेः ६.२४ ९. तिष्ठति ४.३०.१२. भवेः १.१७४.१०. **स्थुः**=तिष्ठेयुः १.१६७.१. तिष्ठन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लुङडभावश्च १.२४.७. उपतिष्ठन्तु ७.१८.३. **स्थेयाम**=तिष्ठेम ६.४७.८. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लोट् । छान्दसत्वात् शिति तिष्ठादेशो न भवति । अन्यत्र लुङ, लेट्, लिङ् चापि]

स्थन तिष्ठत ५.८७.६. भवत १२.८३. सन्ति १.१०५.१५. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्लोटि छन्दसि तिष्ठादेशाऽभावे छान्दसं रूपम्]

स्थपतये तिष्ठन्ति यस्मिन्निति स्थम्, तस्य पतये पालकाय (सेनापतये) १६.१९. [स्थ-पतिपदयोः समासः । स्थः—ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

स्थविरम् स्थूलम् (वज्रं=विद्युद्रूपम्) ४.२०.६. स्थूल वृद्धं वा (वृषभम्) ४.१८.१०. प्रवृद्धम् (क्षत्रम्) १.५४.८. **स्थविरस्य**=विद्याविनयाभ्यां वृद्धस्य (राज्ञः) ६.४७.८. विद्यया वयसा वा वृद्धस्य (सज्जनस्य) ६.१८.१२. **स्थविरः**=कृतज्ञो वृद्धः (सभेशो राजा) १.१७१.५. वृद्धो विज्ञातराजधर्मव्यवहारः (इन्द्रः=सेनापतिः) १७.३७. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातो 'अजिरशिशिरशिथिल०' उ० १.५३. सूत्रेण किरच्प्रत्यये धातोर्वुक् ह्रस्वत्वञ्च निपात्यते]

स्थविरा स्थूला विस्तीर्णा (गीः=वाणी) १.१८१.७. [स्थविरमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

स्थविरेभिः स्थूलैः (वाजैः=सङ्ग्रामैः) ६.१.११. विद्यावयोवृद्धैः (जनैः) ७.२४.४. [स्थविरमिति व्याख्यातम् । ततो भिस ऐस् न भवति 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण]

स्थशः तिष्ठन्तीति स्थास्तानि बहूनि इति स्थशः (जन्मानि) प्र०—अत्र 'बह्वल्पार्था०' इति शस् २.३८.८. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः क्विप् । ततः शस्]

स्थाणुः वृक्षः, स० प्र० ६९, नि० १.१८. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'स्थो णुः' उ० ३.३७. सूत्रेण णुः । स्थाणुस् तिष्ठतेः नि० १.१८.]

स्थातः यस्तिष्ठति तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=नृप) ६.४१.३ **स्थातारः**=ये तिष्ठन्ति ते (विद्वज्जनाः) ५.८७.६. **स्थातुः**=स्थिरस्य स्थावरस्य (जगतः) ४.५३.६. कृतस्थितेः (तिष्ठतो वृक्षाऽऽदेः) १.५८.५. तिष्ठतो जगतः १.७०.४. अचरस्य (जगतः) १.१५९.३. **स्थातॄन्**=भूम्यादिस्थावरान् (लोकान्) १.७२.६. **स्थात्रे**=स्थिरस्य कारणस्य मध्ये, प्र०—अत्र षष्ठ्यर्थे चतुर्थी १.१६४.१५. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

स्थाताम् स्थावराणाम् (वनानां=पदार्थानां रश्मीनां वा), प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि सर्वे विधयो भवन्ति, इति तुक् १.७०.२. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । 'वा छन्दसी' ति तुक्]

स्थातारा स्थातारौ (अध्यापकोपदेशकौ) १ १८१.३. ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोस्तृजन्ताद् द्विवचनस्याकारादेशः]

स्थातुः स्थावरसमूहम्, प्र०—अत्र ष्ठा-धातोस्तुः प्रत्ययः 'सुपां सुलुक्०' इत्यमः स्थाने सुश्च १.६८.१. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोरौणा० तुर्बाहुलकात्]

स्थानम् तिष्ठन्ति यस्मिँस्तत् ५.७६.४. स्थित्यर्थम् (स्थलम्) २.८. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्]

स्थारश्मानः स्थिरा रश्मानः किरणा इव व्यवहारा येषां ते (विद्वांसो राजजनाः) ५.८७.५. [स्था-रश्मान्पदयोः समासः.। स्था=ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०)+क्विप् । रश्मन् रश्मिपर्यायश्छान्दसः]

स्थालीभिः यासु पदार्थान् स्थापयन्ति पाचयन्ति वा ताभिः (पात्रविशेषाभिः) १९.२७. **स्थालीः**=यासु पच्यन्तेऽन्नानि ताः (पात्रविशेषाः) १९.८६. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'स्थाचतिमृजेरालच्०' उ० १.११६. सूत्रेण आलच् । ततः स्त्रियां गौरादित्वान् ङीष् । पत्नी स्थाली तै० २.१.६.१.]

स्थाः स्थावरम् (जगत्) २.२७.४. [स्था-स्थावर नि० ५.३.]

स्थिरधन्वने स्थिरं दृढं धनुर्यस्य तस्मै (रुद्राय=शूरवीराय) ७.४६.१. [स्थिर-धन्वन्पदयोः समासः । स्थिरधन्वने—दृढधन्वने नि० १०.६.]

स्थिरपीतम् धर्माऽनुष्ठानेश्वरप्राप्तिरूपं मोक्षफलं पीतं प्राप्तं येन तं विद्वांसम् ऋ० भू० ३१७, १०.७१.५. दृढविद्यायुक्तम् (विद्वज्जनम्) पं० वि० । [स्थिर-पीतपदयो समासः । पीतम्=पा पाने (भ्वा०) धातोः क्तः]

स्थिरम् ध्रुवम् (रथं=यानम्) ३.३५.४. निश्चलम् (बलम्) १.१२७.३. गमनरहितम् (यानम्), दृढं बलम् १.३९.३. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'अजिरशिशिरशिथिल०' उ० १.५३. सूत्रेण किरच्प्रत्यये धातोराकारलोपः]

स्थिरः निश्चलप्रवृत्तिः (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्षः) १.१०१.४. स्वपरिधिस्थः (इन्द्रः=सूर्यः) २.४१.१०. निश्चलः (अर्वा=विज्ञानयुक्तः सुसन्तानः) ११.४४. **स्थिरैः**=दृढैः (अङ्गैः) २५.२१. [स्थिरमिति व्याख्यातम्]

स्थिरा निश्चलाः (जनीः=मातरः) प्र०—अत्राऽऽकारादेशः १.१६७.७. निश्चलानि (दैव्यानि वस्तूनि) १३.१३. स्थिराणि दृढानि (शवांसि=बलानि) ७.५६.७.

चिरं स्थातुमर्हाणि (आयुधा=आग्नेयादि—शतघ्न्यादीनि अस्त्र-शस्त्राणि), प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि०' इति लोपः १.३९.२. [स्थिरमिति व्याख्यातम् । ततः शेर्लोपश्छन्दसि]

स्थिरा निश्चला (मतिः) १६.५०. **स्थिराः**=दृढाः (नेमयः=कलाचक्राणि) १.३८.१२. [स्थिरमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

स्थिरेभिः दृढैः (अङ्गैः=अवयवैः) २.३३.९. [स्थिरप्राति० 'बहुलं छन्दसी' ति भिस ऐस् न भवति]

स्थूणा स्तम्भ इव दृढा नीतिः ५.६२.७. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'रास्नासास्नास्थूणावीणाः' उ० ३.१५. सूत्रेण नः । आकारस्य ऊ आदेशो निपातनात् । ततः स्त्रियां टाप्]

स्थूणेव [स्थूणावत् ५.४५.२. यथा धारकः स्तम्भः १.५९.१. स्थूणा-इवपदयोः समासः]

स्थूरम् स्थिरम् (रत्नं=रमणीयं धनम्) ६.१९.१०. **स्थूरयोः**=स्थूलयोः (गभस्त्योः=बाह्वोः) प्र०—अत्र वर्णव्यत्ययेन लस्य स्थाने रः ६.२९.२. **स्थूराभ्याम्**=स्थूलाभ्याम् (पदार्थाभ्याम्), प्र०—अत्र कपिलकादित्वाल्लत्वविकल्पः २५.६. [ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः 'स्थः किच्च' उ० ५.४. सूत्रेण ऊरन् । स्थूरः समाश्रितमात्रो महान् भवति नि० ६.२२.]

स्थूलगुदया स्थूलया गुदया सह २५.७. [स्थूलागुदापदयोः समासः । स्थूलं स्थूरेण व्याख्यातम्]

स्थूलपृषती स्थूलानि पृषन्ति यस्याः सा (भा०—चन्द्रादिगुणयुक्ता पशू) २४.२. [स्थूल-पृषत्पदयोः समासः । स्त्रियां ङीप् । स्थूलं स्थूरेण व्याख्यातम् । पृषत्—पृषु सेचने (भ्वा०) धातोः 'वर्त्तमाने पृषद्बृहत्०' २.८४. सूत्रेणातिः शतृवच्च]

स्थूलम् महत् कर्म्म २३.२८. [स्थूलमिति स्थूरेण व्याख्यातम्]

स्नातः कृतस्नानः (मनुष्यः) २०.२०. स्नानविधि को किया हुआ (ब्रह्मचारी) सं० वि० ७९, अथर्व० ११.५.२६. [ष्णा शौचे (अदा०) धातोः क्तः]

स्नातः स्नानं कुरुतः १.१०४.३. [ष्णा शौचे (अदा०) धातोर्लट् । स्नातेः शुद्ध्यर्थस्य नि० १२.२६.]

स्नाती शुद्धा (उषाः) ५.८०.५. [ष्णा शौचे (अदा०) धातोः शत्रन्तान् ङीप्]

स्नावभ्यः स्थूलनाडीभ्यः, सूक्ष्माभ्यः सिराभ्यो वा ३९.१०. [ष्णा शौचे (अदा०) धातोः 'स्नामदिपद्यर्त्ति०' उ० ४.११३. सूत्रेण वनिप्]

स्नीहितीषु स्नेहकारिणीषु (कृष्टिषु=मनुष्यादिप्रजासु) १.७४.१. [ष्णिह प्रीतौ (दिवा०) धातोः क्तिन् । धातोर्दीर्घश्छान्दसः]

स्नुना व्याप्तेन (सहसा=बलेन) ४.२८.२. **स्नुभिः**=इच्छावद्भिः (मनुष्यैः) ५.६०.७. पवित्रैर्गुणैः ५.८७.४. **स्नुषु**=प्रान्तेषु १७.१४. **स्नोः**=प्रकाशमानात् पुरुषार्थात् ४.२७.४. [ष्णा शौचे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० कुः]

स्पट् स्पष्टा (राजा) ५.५९.१. [स्पश बाधनस्पर्शनयोः (भ्वा०) धातोः क्विप् कर्त्तरि]

स्पन्दने किञ्चिच्चलने ३.५३.१९. [स्पदि किञ्चिच्चलने (भ्वा०) धातोर्ल्युट्]

स्पन्द्रा प्रचलितौ (अश्विनौ=स्त्रीपुरुषौ) १.१८०.९. [स्पदि किञ्चिच्चलने (भ्वा०) धातोरौणा० रक् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

स्परत् प्रीणयेत्, प्र०—अत्र लङ्यडभावः १.१६१.५. [स्पृ प्रीतिपालनयोः (स्वा०) धातोर्लङ् । व्यत्ययेन शप् । अडभावश्च]

स्पर्द्धन्ते परोत्कर्षं न सहन्ते ६.१४.३. [स्पर्द्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोर्लट्]

स्पर्द्धमाना ईर्ष्यन्ती (सेना) १७.४७. [स्पर्द्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप्]

स्पर्द्धमानाः ईर्ष्यकाः (अयज्वानो जनाः) १.३३.५. [स्पर्द्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोः शानच्]

स्पशम् बन्धकम् (सूर्यम्) ४.१३.३. दूतम् ३३.६०. **स्पशः**=स्पर्शकान् (शुभगुणान्) ४.४.३. अविद्याऽन्धकारं बाधमाना विद्याप्रकाशं स्पर्शन्तः (देवासः=आप्ता विद्वज्जनाः) ६.६७.५. स्पर्शवन्तः पदार्थाः १.२५.१३. बाधनानि १३.११. [स्पश बाधनस्पर्शनयोः (भ्वा०) धातो रच् । औणा० वा अन्]

स्पार्हम् स्पृहा वाञ्छा तस्या इदम् १.३१.१४. [स्पृहाप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् । स्पृहा=स्पृह ईप्सायाम् (चुरा०) धातोः स्त्रियामङ् । ततष्टाप्]

स्पार्हराधाः स्पार्हं स्पृहणीयं राधो धनं यस्य सः (राजा) ४.१६.१६. [स्पार्ह-राधस्पदयोः समासः । स्पार्हमिति व्याख्यातम् । राधम् धननाम निघं० २.१०.]

स्पार्हवीरम् स्पार्हा अभिकाङ्क्षिता वीरा यस्मिन् तम् (रयिं=श्रियम्) ५.५४.१४. [स्पार्ह-वीरपदयोः

समासः । स्पार्हं इति व्याख्यातम्]

स्पार्हः स्पर्हणीयः (विद्वज्जनः) ४.४७.१. स्पृहणीयः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.१.१२. यः स्पृहयति तस्याऽयम् (देवः=दिव्यगुणसम्पन्नो मनुष्यः) २७.३०. **स्पार्हे**=अभीप्सनीये (वर्णे=शुक्लादिगुणे) २.१.१२. [स्पृहा-प्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् । स्पृहा—स्पृह ईप्सायाम् (चुरा०) धातोः स्त्रियामङ् । ततष्टाप् । स्पार्हा—स्पृहणीयानि नि० ३.११.]

स्पार्हा ईप्सितव्यानि (वस्त्रादीनि) १.१३५.२. अभिकाङ्क्षितुं योग्यानि (जनिमानि=जन्मानि) ४.१.७. स्पर्हणीयानि (कर्माणि) ४.१.६. स्पृहणीयानि (वस्तूनि) १.१२३.६. स्पृहणीयाः (श्रियः) ७.१५.५. अभिकाङ्क्षितुमर्हेण (शिक्षकेण) २.२३.६. [स्पार्हप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि । स्पार्हमिति व्याख्यातम् । स्पार्हा स्पृहणीयानि नि० ३.११.]

स्पूर्धन् स्पर्द्धमानाः (शत्रुवद् दुर्जनाः) ६.६७.६. [स्पर्द्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोः शतृ । वर्णव्यत्ययेनाकारस्योकारादेशः]

स्पूर्धसे स्पर्धायै ५.६४.४. [स्पर्द्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोरौणा० असुन् । वर्णव्यत्ययेनाकारस्योकारादेशः]

स्पृणवाम अभीच्छेम ५.४४.१०. [स्पृ प्रीतिसेवनयोः (स्वा०) धातोर्लेट्]

स्पृतम् सेवितम् (चतुष्पात्=गवादिकम्) १४.२५. प्रीतम् (क्षत्रं=राज्यकुलम्) १४.२४. **स्पृताः**=प्रीतिमन्तः (सज्जनाः) १४.२५. प्रीताः (प्रजाः) १४.२६. [स्पृ प्रीतिसेवनयोः (स्वा०) धातोः क्तः]

स्पृत्वा अभिव्याप्य ३१.१. [स्पृ प्रीतिसेवनयोः (स्वा०) धातोः क्त्वा]

स्पृधः स्पर्द्धमाना ईर्ष्यायुक्ताः शत्रुसेनाः ३३.६६. स्पर्द्धन्ते येषु तान् (सङ्ग्रामान्) ६.२०.९. स्पर्द्धन्ते यासु ताः सङ्ग्रामसेनाः ६.५.६. अरिसेनाः ३३.६७. याः स्पर्द्धन्ते ताः शत्रुसेनाः १९.७१. याः स्पर्धयन्ते ताः (सेनाः) सङ्ग्रामा वा ५.५५.६. स्पर्हणीयान् सङ्ग्रामान् ६.४५.१८. स्पर्धमानान् शत्रून् १.८.३. [स्पृधः सङ्ग्रामनाम निघं० २.१७. स्पर्द्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोः क्विप् । 'बहुलं छन्दसि' अ० ६.१.३४. इति सम्प्रसारणमल्लोपश्च]

स्पृधानम् स्पर्द्धमानम् (ज्योतिः=प्रकाशम्) ३.३१.४. [स्पर्द्ध संघर्षे (भ्वा०) धातोः शानच् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक् । धातोः सम्प्रसारणमपि 'बहुलं छन्दसि' अ० ६.१.३४. इति सूत्रेण । अल्लोपश्च छान्दसः]

स्पृधि अभिकाङ्क्ष ५.३.९. [स्पृ प्रीतिपालनयोः (स्वा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति विकरणस्य लुक्]

स्पृश अनुगतो भव १३.१०. गृहाण ४.३.१५. **स्पृशन्ति**=आलिङ्गयन्ति १.६२.११. सम्बध्नन्ति १.३६.३. [स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट्]

स्पृहयद्वर्णः स्पृहयन् वर्णो यस्य सः (अग्निः=पावकः) २.१०.५. यः स्पृहयद्भिर्वर्ण्यते स्वीक्रियते सः (अग्निः=शरीरस्था) विद्युत् ११.२४. [स्पृहयत्=वर्णपदयोः समासः । स्पृहयत्=स्पृह ईप्सायाम् (चुरा०) धातोः शतृ]

स्पृहयाय्यः स्पृहणीयः (रयिः=धनम्) ७.४.६. [स्पृह ईप्सायाम् (चुरा०) धातोः 'स्पृहिगृहि०' अ० ३.२.१५८. सूत्रेणालुच्]

स्पृहयाय्याणि स्पृहणीयानि (वसूनि) ६.७.३. [स्पृह ईप्सायाम् (चुरा०) धातोः 'श्रुदक्षिस्पृहिगृहिभ्य आय्यः' उ० ३.९६. सूत्रेण आय्यः]

स्पृहयेत् ईप्सेत् आप्तुमिच्छेत् १.४१.९. [स्पृह ईप्सायाम् (चुरा०) धातोर्लिङ् । कथादिष्वदन्तत्वादल्लोपस्य स्थानिवद्भावेन वृद्धिगुणयोरभावः]

स्फरीः अवृद्धं मा कुर्याः ६.६१.१४. [स्फर स्फुरणे (अदा०) धातोर्लुङ् । अटोऽभावः]

स्फातिम् वृद्धिम् १.१८८.९. [स्फायी वृद्धौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

स्फिग्या मध्यस्थाऽवयवरूपया (पृथिव्या) ३.३२.११.

स्फुर पुरुषार्थय ४.३.१४. **स्फुरत्**=सञ्चालयेत् १.८४.८. [स्फुर संचलने (तुदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लेट् । स्फुरत्—अवस्फुरिष्यति नि० ५.१७.]

स्फुरान् स्फूर्तिमतः (धेनूः किरणान्वा) ६.६७.११. [स्फुर संचलने (तुदा०) धातोर्घञर्थे कः । ततो मत्वर्थीयस्य लुक्]

स्म ष्मा एव ४.१०.७. आश्चर्यगुणप्रकाशे १.१०२.३. हर्षे १.१०२.५. आनन्दे १.१०४.५. अतीतार्थे क्रियायोगे १.२८.६. प्रकारार्थे १.१२.५. स्पष्टार्थे १.१२.८. प्रसिद्धौ, प्र०—अत्र 'निपातस्य च' इति दीर्घः षत्वञ्च छान्दसं दृश्यते ३३.९४. वर्त्तमाने ३.४६. सुखार्थे १.१५.१०. खलु, प्र०—अत्रा'ऽविहितलक्षणो मूर्धन्यः सुषामादिषु द्रष्टव्यः' अ० ८.३.५३. इति वार्त्तिकेन मूर्धन्यादेशः १.३७.१५.

स्मत् एव ५.८७.८. श्रेष्ठार्थे १.५१.१५. प्रशंसायाम् १.१८६.६. तत्कर्मानुष्ठानोक्तम् १.१००.१३.

स्मदूध्नी बहुदुग्धप्रापिकाः (गावः), प्र०—अत्र स्मदुपपदाद् ऊधसोऽनङ् १.७३.६. [स्मद्-ऊधस्पदयोः समासे समासान्तोऽनङ् 'ऊधसोऽनङ्' सूत्रेण । ततः स्त्रियां ङीप्]

स्मद्दिष्टयः निश्चिता दिष्टयो दर्शनानि येषान्ते (विद्वांसो जनाः) ७.१८.२३. **स्मद्दिष्टिः**=कल्याणोपदेष्टा (इन्द्रः=सम्राट्) ३.४५.५. **स्मद्दिष्टीन्**=प्रशंसितदर्शनान् (जनान्) ६.६३.६. [स्मद्-दिष्टिपदयोः समासः । दिष्टिः=दिश अतिसर्जने (तुदा०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । धातूनामनेकार्थकत्वादत्र दिश दर्शनेऽर्थे]

स्मयते आनन्दयति, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो ण्यर्थः १.९२.६. **स्मयन्त**=ईषद्धसन्ति १.१६८.८. **स्मयेते**=ईषद्धसतः ३.४.६. [स्मिङ् ईषद्धसने (भ्वा०) धातोर्लट् । अन्यत्र लङ् । अडभावश्छान्दसः]

स्मयमानः किञ्चिद्धसन्निव (प्रवक्तृजनः). २.४.६. [स्मिङ् ईषद्हसने (भ्वा०) धातोः शानच्]

स्मयमानाभिः किञ्चिद्धासकारिकाभिः (कन्याभिः) १.७९.२. [स्मिङ् ईषद्हसने (भ्वा०)+शानच्+टाप्+भिस्]

स्मयमानासः किञ्चिद् हासेन प्रसन्नताकारिण्यः (योषाः=स्त्रियः) १७.९६. किञ्चिद्धसन्त्यो मितहासाः (योषाः) ४.५८.८. [स्मयमानेति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

स्मर पर्यालोचय, भा०—परमेश्वरस्याऽऽज्ञापालनमुपासनञ्च कुरु ४०.१५. [स्मृ चिन्तायाम् (भ्वा०) धातोर्लोट्]

स्मरकारीम् या स्मरं कामं करोति तां दूतिकाम् ३०.९. [स्मरोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण् । ततः स्त्रियां ङीप् । स्मरः=स्मृ आध्याने (भ्वा०)+भावेऽप्]

स्मसि स्मः १.५७.५. भवेम १.३७.१५. भवामः १.२९.१. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लटि उत्तमे बहुवचनम् । 'इदन्तो मसि' इति मस इदन्तत्वम्]

स्य अन्तं प्रापय ४.१६.२. **स्यतम्**=तनूकुरुतम् ६.७४.३. **स्यताम्**=अन्ते भवताम् २.४०.४. **स्यतु**=प्राप्नोतु १.१४२.१०. विमुञ्चत २७.२०. **स्यन्ति**=कार्याणि समापयति १.८५.५. **स्यस्व**=विद्यां पारङ्गमय ७.२.९. अन्तं कुरु ३.४.९. प्राप्नुहि १.१०१.१०. [षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लडपि । स्यस्व-प्रयोगे व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

स्यन्दताम् प्रस्रवन्तु ५.८३.८. [स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोर्लोट् स्यन्दते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

स्यन्दमानाभ्यः प्रस्रुताभ्यः (अद्भ्यः=जलेभ्यः) २२.२५. **स्यन्दमानाः**=प्रस्रवन्त्यः (आपः=जलानि) १.३२.२. [स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोः शानच् । ततः स्त्रियां टाप्]

स्यन्दयध्यै स्यन्दयितुं प्रस्रावयितुम् ४.२२.७. [स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् तुमर्थेऽध्यैः]

स्यन्द्रः प्रस्रावकः (तायुः=स्तेनः) ६.१२.५. **स्यन्द्राः**=धैर्यगतयः (नरः=नायका जनाः) ५.५२.८. [स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० रक्]

स्यन्द्रासः किञ्चिच्चेष्टमानाः (पुरुषार्थिजनाः) ५.५२.३ प्रस्रवन्तः प्रस्रावयन्तो वा (अग्नयः=पावकाः) ५.८७.३. [स्यन्द्र इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक् । स्यन्द्रासः बलनाम निघं० २.९.]

स्यन्नाः आशुगमनाः (एन्यः=नद्यः) ५.५३.७. [स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोः क्तः । ततः स्त्रियां टाप्]

स्य असौ, प्र०—अत्र 'स्यश्छन्दसि बहुलम्' इति सोर्लोपः ९.१४. [त्यद् सर्वनाम्नः सौ रूपम् । सोर्लोपश्छन्दसि]

स्यात् भवेत् ७.३४.२१. **स्यात**=भवेयुः १.१. **स्याम्**=भवेयम् ६.५०.९. **स्याम**=भवेम १.४.६. होवें, सं० वि० १५६, ७.४१.५. प्रवृत्ता भवेम ५.६५.५. **स्याः**=भवेत् ४.१६.१८. भवेः ७.१.८. भूयाः ६.३३.५. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लिङ्]

स्यातन भवेत १.३८.४. [अस भुवि (अदा०) धातोर्लिङ् । तस्य तनबादेशश्छान्दसः]

स्यामि प्रविशामि १२.६५. [षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोर्लट् । धातूनामनेकार्थकत्वादत्र प्रवेशनेऽपि]

स्यालात् स्वस्त्रीभ्रातुः १.१०९.२. [स्याल आसन्नः संयोगेनेति नैदानाः । स्याल्लाजानावपतीति वा नि० ६.९.]

स्यूतम् विविधसाधनैः कारुभिर्निष्पादितम् (नरं=विनयाभियुक्तं मनुष्यम्) १.३१.१५. [षिवु तन्तुसन्ताने (दिवा०) धातोः क्तः । 'च्छ्वोः शूडनुनासिके च' ति वकारस्य ऊठ्]

स्यूमगभस्तिः समूहकिरणः (सूरः=सूर्यः) १.१२२.१५. [स्यूम-गभस्तिपदयोः समासः]

स्यूमगृभे स्यूमाननुस्यूतान् गृह्णाति तस्मै (वीर्याय=पराक्रमाय) ६.३६.२. [स्यूमोपपदे ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । हस्य भश्छान्दसः । स्यूमः—षिवु तन्तुसन्ताने (दिवा०) धातोः 'अविसिवि०' उ० १.१४४ सूत्रेण मन् किच्च]

स्यूमना स्यूमानः सकलविद्यायुक्ता (वेदवाणीः), प्र०—अत्राऽऽकारादेशः १.११३.१७.

स्यूमन्यू आत्मनः स्यूमानं शीघ्रं गमनमिच्छू (अश्वौ) १.१७४.५. [स्यूमन्पदादात्मन इच्छायामर्थे क्यजन्तादुः]

स्यूमरश्मये स्यूमाः संयुक्तरश्मयो न्यायदीप्तयो यस्य तस्मै (मनवे=राज्ञे) १.११२.१६. [स्यूम-रश्मिपदयोः समासः]

स्यूमेव तन्तुवद् व्याप्ता (उषाः=प्रभातवेला) ३.६१.४. [स्यूमा-इवपदयोः समासः]

स्यूः यः सीव्यति सः (विविधं जगत्) ५.२१. यः सीवयति सह योजयति सः (जगदीश्वरः सभाध्यक्षो वा) ५.३०. [षिवु तन्तुसन्ताने (दिवा०) धातोः क्विप् । 'छ्वोः शूठ्०' इत्यूठ्]

स्योनम् सुखकारकम् (स्थानम्) २०.३९. सुखम् ४.२७. सुखकारणम् (लोकम्) ५.४.११. **स्योनः**=सुखकारी (अग्निः=विद्वज्जनः) ५.४. सुखकारकः (मित्रः=सभाध्यक्षो जनः) ४.२७. [षिवु तन्तुसन्ताने (दिवा०) धातोः 'सिवेष्टेर्यू च' उ० ३.९ सूत्रेण नः । टेर्यूरादेशश्च । स्योनम् सुखनाम निघं० ३.६. स्योनमिति सुखनाम, स्यतेरवस्यन्त्येतत् सेवितव्यं भवतीति वा नि० ८.९. स्योनः—स्योनः स्योनमिति शिवः शिवमित्येवैतदाह श० ३.३.३.१०. स्योनामासी दसुषदामासीदेति शिवां शग्मामासीदेत्येवैतदाह श० ५.४.४.४.]

स्योनकृत् यः स्योनं सुखं करोति सः (मनुष्यः) १.३१.१५. [स्योनोपपदे (डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि क्विप् । स्योनमिति व्याख्यातम्]

स्योनशीः यः स्योनेषु सुखेषु विद्याधर्मपुरुषार्थेषु शेते आस्ते सः (अतिथिर्जनः) १.७३.१. यः सुखेन शेते सः (अतिथिजनः) ७.४२.४. [स्योनोपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः क्विप्]

स्योना सुखकरी (भूमिः) ३५.२१. सुखरूपा (राजपत्नी) १०.२६. सुखप्रदा (पृथिवी) १.२७. सुखयुक्ता, सुखकारिणी (विवाहितपतिसेविका स्त्री) ऋ० भू० २१४, अथर्व० १४.२.१८. स्वयं प्रसन्न हुई, सुखदायक (वधू) सं० वि० १३८, अथर्व० १४.२.२७. सुख देने वाली (स्त्री) सं० वि० १५२, अथर्व० १४.२.१८. सुखहेतुः (भूमिः) १.२२.१५. [स्योनमिति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

स्रक्तीः सृज्यमानाः सेनाः ७.१८.१७. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः क्तिन् । सम्प्रसारणं छान्दसम्]

स्रक्वेषु प्राप्तेषूत्तमेषु गृहेषु ७.५५.२.

स्रक्षु माल्येषु मणिषु ५.५३.४. **स्रजम्**=मालामिव सेनाम् ४.३८.६. [सृज विसर्गे (तुदा०) धातोः 'ऋत्विग्दधृक्०' अ० ३.२.५९ सूत्रेण कर्मणि क्विन् अमागमश्च]

स्रव प्राप्नुहि २६.१७. स्रवतः=प्रापयतः ७.१८.२४. **स्रवन्ति**=चलन्ति ४.५८.६. क्षरन्ति १७.९४, गच्छन्ति १३.३८. **स्रवन्तु**=वर्षन्तु ३६.१२. प्राप्नुवन्तु ३५.२०. **स्रवेत्**=दण्डयेद्, गमयेद् वा १.१२९.६. **स्रसेम**=गच्छेम ६.११.६. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट् अन्यत्र लट्, लिङ् चापि]

स्रवतः प्राणान् १.७१.७. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ]

स्रवतः गच्छन्त्यः (नद्यः) १.१९०.७. चलन्त्यः सरितः, प्र०—अत्र 'वाच्छन्दसि' इति वर्णलोपो वेतीकाराभावे नुमोऽप्यभावः ३.४६.४. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः शतृ । स्त्रियां ङीपोऽभावश्छान्दसः]

स्रवथे स्रवणे गमने ३.१.७. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० अथः]

स्रवन्तीभ्यः सद्यो-गामिनीभ्यः (अद्भ्यः=जलेभ्यः) २२.२५. **स्रवन्तीः**=गमनं कुर्वन्तीः (नदीर्नाडीर्वा) प्र०—स्रु धातोर्गत्यर्थत्वाद् रुधिरप्राणगमनमार्गाः जीवनहेतवो नाड्योऽपि गृह्यन्ते १.३२.१४. गच्छन्तीः (सीराः=नाडीः) १.१७४.९. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्तात् स्त्रियां ङीप् । स्रवन्त्यः नदीनाम निघं० १.१३.]

स्रवितवे स्रोतुं गन्तुम् ४.३.१२. स्रवितुं चलितुम् ४.१९.८. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

स्रवितवै स्रवितुम् ७.२१.३. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे तवैः प्रत्ययः]

स्रामम् सततं प्रस्रवित-जलनेत्रम् ३०.१०. दुःखप्रदमन्यायम् १.११७.१९. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्घञ् । वस्य मकारश्छान्दसः]

स्रिधत् हिंसितः स्यात् ७.३४.१७ **स्रेधत**=हिंसत ७.३२.९. **स्रेधति**=नक्षीयते ५.५४.७.

स्रिधः अतिसहनशीलाः (प्रजाः) ३,९.४. दुष्टाचारान्

२७.६. दुःखनिमित्तात् पापात् १.१२९.११. विद्यादिसद्व्यवहारविरोधिनः (दुर्जनाः) ३.१०.७. हिंसकान् क्षयकर्त्तृ न् शत्रून् १.३६.७.

स्रुक् या स्रवति सा ६.११.५. **स्रुग्भ्यः**=स्रावयन्ति गमयन्ति हविर्येभ्यस्तेभ्यः, प्र०–अत्र स्रु गतौ धातोः इत्यस्मात् 'चिक् च' उ० २.६१. अनेन चिक्प्रत्ययः २.१. **स्रुचः**=जुह्वादयः १८.२१. होमसाधनानि २७.१४. विज्ञानयुक्ताः (धियः) १.१४४.१. यज्ञसाधनानि पात्राणि ५.२१.२. गमनशीलाः (विद्वज्जनाः) ५.४१.१२. **स्रुचा**=यज्ञसाधनेनेव योगाभ्यासेन ५.१४.३. कर्म्मणा १.८४.१८. येन यज्ञः साध्यते तेन (जुह्वा) १८.६३. चमसा आदि से सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.५. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'चिक् च' उ० २.६२ सूत्रेण चिक्। स्रुक्–योषा वै स्रुग् वृषा स्रुवः। श० १.३.१.९. युजौ ह वाऽएते यज्ञस्य यत् स्रुचौ। श० १.८.३.२७. बाहू वै स्रुचौ श० ७.४.१.३३. वाग्वै स्रुचः श० ६.३.१.८. गौर्वै स्रुचः तै० ३.३५.४. यजमानः स्रुचः तै० ३.३.६.३. इमे वै लोकाः स्रुचः तै० ३.३.१.२.]

स्रुक्कारेण स्रुचा के समान सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.५.

स्रुचीव यथा स्रुङ्मुखे २०.७९. [स्रुचि-इवपदयोः समासः]

स्रुचेव यथा होमोपकरणेन तथा १.११०.६. यथा स्रुचा प्रेरयन्ति तथा २५.४०. [स्रुचा-इवपदयोः समासः। स्रुचा=स्रुगिति व्याख्यातम्। ततष्टा प्रत्ययः]

स्रुतयः स्रुवन्त्यः (भूमयः) ६.२४.४. **स्रुतिम्**=विविधां गतिम् २.१३.१२. **स्रुतिः**=स्रवणं गमनं यस्मिन् मार्गे सः १.४६.११. **स्रुतेः**=स्रवन्ति गच्छन्ति यस्मिन् स स्रुतिर्मार्गस्तस्मात्, प्र०—अत्र 'क्तिच्क्तौ च संज्ञायाम्' अ० ३.३.१७४. अनेन स्रुधातोः संज्ञायां क्तिच् १.४२.३. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्। अथवा संज्ञायां क्तिच्]

स्रुत्याय स्रुतौ प्रस्रवणे भवाय (भा०—स्रोतसां जलाय) १६.३७. [स्रुतिप्राति० भवार्थे यत्। स्रुतिरिति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

स्रुवेण उत्थापकेन यज्ञपात्रेण १.११६.२४. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः। स्रुवः—प्राणः स्रुवः श० ६.३.१.८. योषा वै स्रुग्वृषा स्रुवः १.३.१.९]

स्रेधन्तम् हिंसन्तम् (नरम्) ७.३२.२१.

स्रोतसा प्रस्रवितेन (जलप्रवाहेण) १.५१.११.

स्रोतः=स्रवन्ति वस्तूनि जलानि वा येन तत् (ऊर्मिम्=उषसम्) १.९५.१०. [स्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'स्रुरिभ्यां तुट् च' उ० ४.२०२. सूत्रेणासुन् तुडागमश्च। स्रोतः उदकनाम निघं० १.१२.]

स्रोत्याभिः स्रोतस्सु भवाभिर्गतिभिः ३.३३.९. [स्रोतस् इति व्याख्यातम्। ततो भवार्थे यत्। ततः स्त्रियां टाप्। स्रोत्या नदीनाम निघं० १.१३.]

स्वक्षत्रम् स्वं राज्यं, स्वस्य क्षत्रियकुलं वा ५.३५.४. स्वस्य राज्यम् १.५४.३. **स्वक्षत्राय**=स्वकीय-राज्याय क्षत्रियकुलाय वा ५.४८.१. [स्व-क्षत्रपदयोः समासः। क्षत्रम् धननाम। निघं० २.१०. उदकनाम निघं० १.१२.]

स्वगा स्वयं गच्छतीति स्वगास्तं स्वयं गामिनम् (विद्वज्जनम्), प्र०—अत्र विभक्तेर्डादेशः २२.४. यत् स्वान् गच्छति प्राप्नोति तत्स्वगा (नमः=अन्नं सत्कारो वा) १८.५७. [स्वोपपदे गाङ् गतौ (भ्वा०) धातोः क्विप्। ततः सोः स्थाने डादेशश्छान्दसः]

स्वगाकारः येन स्वान् पदार्थान् गाते तं करोतीति (जनः) १८.२१. [स्वगा इति व्याख्यातम्। तदुपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। संवत्सरः स्वगाकारः। तै० २.१.५.२.]

स्वगूर्त्ता स्वेन प्राप्तानि (अपांसि=कर्माणि) ४.१९.१०. [स्व-गूर्त्तपदयोः समासे शेर्लोपश्छन्दसि। गूर्त्तः=गुर्वी उद्यमने (भ्वा०) गुरी हिंसागत्योः (दिवा०) धातोर्वा क्तः। स्वगूर्त्ताः स्वयं गामिन्यः। नि० १०.४६.]

स्वगूर्त्ताः स्वैरुद्यताः (जनाः) १.१४०.१३. स्वेन पराक्रमेणोद्यमिनः (वीरजनाः) ६.६८.४. [स्व-गूर्त्तपदयोः समासः। गूर्त्त इति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

स्वग्नयः शोभना अग्नयो येषान्ते (प्रजाजनाः) ७.१५.८. शोभनः सुखकारकोऽग्निः सम्पादितो यैस्ते (राजप्रिया जनाः) १.२६.७. ये शोभनाऽनुष्ठानतेजोयुक्तास्ते, शोभनोऽग्निर्येषान्ते मनुष्याः पृथिव्यादयो वा १.२६.८. [सु-अग्निपदयोः समासः]

स्वङ्गः शोभनान्यङ्गानि यस्य सः, भा०—सुन्दराऽङ्गः (अग्निः=सूर्यवद्राजा) १२.१३. [सु-अङ्गपदयोः समासः]

स्वङ्गा शोभनान्यङ्गानि ययोस्तौ (वृषणा=वायुविद्युतौ) ३.४३.४. [सु-अङ्गपदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः]

स्वङ्गुरिः शोभना अङ्गुलयो यस्य सः (देवः=पतिः) ११.६३. शोभनाऽङ्गुरयोऽङ्गुलयो यस्याः सा (सूत्तमा पत्नी)

२.३२.७. [सु-अङ्गुरिपदयोः समासः]

स्वजन्मना स्वस्य जन्मना ७.१.१२. [स्व-जन्मन्-पदयोः समासः]

स्वजाम् स्वात्मजनिताम् (मेनां=वाचम्) १.१२१.२ **स्वजाः**=स्वस्मत्कारणाज्जाताः (धूतयः=मनुष्याः) १.१६८.२. [स्वोपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः। ततः स्त्रियां टाप्]

स्वजेन्यम् स्वेन जेतुं योग्यम् (व्यवहारम्) ५.७.५. [स्व-जेन्यपदयोः समासः। जेन्यम्—जि जये (भ्वा०) धातोर्यत्। नुगागमश्छान्दसः]

स्वञ्चम् यः सुष्ठ्वञ्चति जानाति प्रापयति वा तम् (परमात्मानम्) ६.१५.१०. सुष्ठ्वञ्चन्तं प्राप्तशरीरात्मबलेन युक्तम् (युवानं जनम्) ६.५८.४. **स्वञ्चः**=ये सुष्ठ्वञ्चन्ति गच्छन्ति ते (मरुतः=बलिष्ठा मनुष्याः) ७.५६.१६. याभिः सुष्ठ्वञ्चन्ति गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति वा ते (हरितः=अङ्गुलयः) ४.६.९. [सु+अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। 'ऋत्विग्दधृक्०' इत्यादिना वा क्विन्]

स्वञ्चाः यः सुष्ठ्वञ्चति सः (शिल्पिजनः) ५.३७.१. [सूपपदे अञ्चु गतिपूजनयोः (भ्वा०)धातोरसुन्। स्वञ्चाः—स्वञ्चाः सु अञ्चनः। नि० ५.७.]

स्वतवद्भ्यः स्वतो वासो येषान्तेभ्यः (मरुद्भ्यः=मनुष्येभ्यः) २४.१६. **स्वतवान्**=स्वैर्गुणैर्वृद्धः (इन्द्रः=राजा) ४.२०.६. यः स्वान् तौति वर्धयति सः (गृहस्थो जनः), प्र०—अत्र तु-धातोरौणादिक आनिः प्रत्ययः १७.८५. स्वेन प्रवृद्धः (पायुः=रक्षको राजा) ४.२.६. [स्वोपपदे तु गति वृद्धिहिंसासु (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० आनिः]

स्वतवसः स्वकीयबलयुक्ताः (धूतयः=मनुष्याः) १.१६८.२. स्वं स्वकीयं तवो बलं येषां ते (विद्वज्जनाः) १.१६६.२. स्वकीयबलाः (मरुतः=विद्वज्जनाः) ७.५९.११. **स्वतवः**=स्वकीयं तवो बलं यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=गृहस्थिजन) ६.२२.६. [स्व-तवस्पदयोः समासः। तवः बलनाम निघं० २.९.]

स्वतवः स्वं स्वकीयं तवो बलं यस्मिँस्तत् (मनः) १.१५९.२. [स्व-तवस्पदयोः समासः। तवः बलनाम निघं० २.९.]

स्वद आस्वादय ३.१४.७. **स्वदतु**=आभुनक्तु ९.१. आस्वादयतु ३०.१. स्वदतां स्वादिष्ठां करोतु प्र०—अत्र व्यत्ययेन परस्मैपदम् ११.७. **स्वदन्ताम्**=भुञ्जताम् ६.७. **स्वदन्ति**=सुस्वादमदन्ति ७.२.२. **स्वदन्तु**=प्राप्नुवन्तु २९.३५. सुष्ठु सेवन्ताम्, अ०—सुसेवन्ताम् ४.१२. स्वदस्व भुङ्क्ष्व ३.५४.२२. **स्वदाति**=आस्वदेत्, प्र०—अत्र लेटि व्यत्ययेन परस्मैपदम् २०.४५. [ष्वद आस्वादने (भ्वा०) धातोर्लोट्। व्यत्ययेन परस्मैपदम्। अन्यत्र लट् लेट् लोट् चापि। स्वदति अर्चतिकर्मा। निघं० ३.१४.]

स्वदन्तः सुष्ठु भुञ्जानाः (मर्त्तासः=मनुष्याः) २.१.१४. [ष्वद आस्वादने (भ्वा०) धातोः शतृ। व्यत्ययेन परस्मैपदम्]

स्वदय आस्वादय २९.२६. [ष्वद आस्वादने (चुरा०) धातोर्लोट्]

स्वदितानि आस्वादितानि (हव्या=अत्तुमर्हाणि वस्तूनि २९.१०. [ष्वद आस्वादने (भ्वा०) धातोः क्तः]

स्वधया स्वकीयया धृतया प्रज्ञया ४.५८.४. अन्नादिना ८.६१. स्वस्वरूपधारणाया क्रियया १.१५४.४. अन्नादिपदार्थयुक्तया पृथिव्या सह ४.१३.५. स्वकीयया गत्या ४.१४.५. अन्नविद्यया, शरीरबुद्धिबलधारणेन ऋ० भू० २६२, १९.६०. अमृतरूपया सेवया ऋ० भू० २५४, २.३४. स्वकीयपदार्थधारणक्रियया १९.६०. जलेनान्नेन वा ३.४.७. उदकेनाऽन्नेन वा १.१०८.१२. अपने ही अन्नादि पदार्थ के धारण से सं० वि० १४३, अथर्व० १२.५.३ **स्वधा**=या स्वं दधाति सा (स्त्री) ५.३४.१. अमृतात्मकमन्नम् २.७. स्वान् दधाति यया सा क्रिया, स्वेन धारिता सेवा वा १९.३६. ये स्वं दधति ते (मनुष्याः), प्र०—अत्र विभक्तिलोपः ३३.७४. अपना ही धारण सं० वि० १९७ ९.११३.१०. **स्वधाभिः**=स्वयं धारितैः पदार्थैः १.११३.१३. द्यावापृथिवीभिः १.९५.४. **स्वधाम्**=स्वकीयां धारणशक्तिम् १.८८.६. सूदकम् २.३५.७. **स्वधायै**=स्ववस्तुधारणलक्षणायै राजनीत्यै १०.२१. मोक्षविद्याप्राप्तये ऋ० भू० २५८, १९.४५. अन्नाय, पृथिवीराज्याय, न्यायप्रकाशाय वा २.३२. **स्वधाः**=उदकानि १.१४४.२. ये स्वयमेव दधते ते (पुत्रादय) २.३४. [स्वोपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्विप् सम्पदादित्वात्। अथवा ष्वद आस्वादने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० आः प्रत्ययः। धातोर्दस्य धः। स्वधा अन्ननाम निघं० २.७.। उदकनाम निघं० १.१२. द्यावापृथिव्योर्नाम निघं० ३.३०. स्वधा—स्वधा वै पितॄणामन्नम् श० १३.८.१.४. स्वधा वै शरद्। श० १३.८.१.४.]

स्वधर्मन् स्वस्य वैदिके धर्मणि ३.२१.२. [स्व-धर्मन्.

पदयोः समासे 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्या लुक्]

स्वधापते अन्नादीनां स्वामिन् (इन्द्र=महैश्वर्ययुक्त प्रजाजन) ६.४४.२. स्वकीयपदार्थानां धर्त्तः (इन्द्र=राजन्) ६.४४.३. अन्नस्वामिन् (इन्द्र=राजादिजन) ६.४४.१. [स्वधा-पतिपदयोः समासः । स्वधेति व्याख्यातम्]

स्वधायिभ्यः ये स्वधामुदकमन्नं वैतुं प्राप्तुं शीलास्तेभ्यः (पितृभ्यः=पालकेभ्यो जनकाध्यापकेभ्यः) १९.३६. [स्वधोपपदे इण् गतौ (अदा०) धातोस्ताच्छील्ये णिनिः । स्वधेति व्याख्यातम्]

स्वधावन् प्रशस्ताऽन्नयुक्त (राजन्) ५.३.२. **स्वधावान्**=प्रशस्तस्वधा अमृतरूपा गुणा विद्यन्ते यस्मिन् सः (भा०—हृद्यो महागुणी बालः, अमृतवर्षकश्चन्द्रमाः) ३३.५. बहुधनधान्ययुक्तः (इन्द्रः=सूर्य इव राजा) ७.२०.१. स्वेन स्वकीयेन गुणेन धार्यत इति स्वधाऽमृतरूप ओषध्यादिरसस्तद्वान् (हरिः=चन्द्रः) १.९५.१. स्वधाः स्वकीया अवयवाः प्रशस्ता विद्यन्तेऽस्मिन् सः (कविः=कालः) १.९५.४. प्रभूताऽन्नवान् (इन्द्रः=पुरुषार्थिसभेशः) २.२०.६ बह्वन्नाद्यैश्वर्यः ४.५.२. [स्वधाप्राति० प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुप् । स्वधेति व्याख्यातम् । स्वधावत्—अन्नवते नि० १०.६. स्वधावः अन्नवन् नि० १२.१७.]

स्वधावरी बह्वन्नादिप्रदे (रोदसी=द्यावापृथिव्यौ) ७.३१.७. [स्वधावन् इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां 'वनो र च' इति ङीप्-रेफौ]

स्वधावः प्रशस्तं स्वधाऽन्नं विद्यते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=जगदीश्वर सभाध्यक्ष वा) १.६३.६. बह्वन्नयुक्त (जगदीश्वर) १७.२१. प्रशस्तानि स्वधा अमृतरूपाण्यन्नानि विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=प्रकाशात्मन् विद्वज्जन) ३.२०.३. बहुधनधान्ययुक्त (राजन्) ५.३.५. हे स्वसामर्थ्यादि धारण करने वाले (ईश्वर) आर्याभि० २.३८, १७.२१. **स्वधाग्ने**=यः स्वं दधाति तस्मै (पत्ये) ५.३२.१०. यः स्वं वस्त्वेव दधाति, यः स्वां धार्मिकां क्रियां दधाति तस्मै (देवाय=विद्वज्जनाय) ७.४६.१. [स्वधावन् इति व्याख्यातम् । ततः सम्बुद्धौ 'मतुवसो रु सम्बुद्धौ०' अ० ८.३.१. सूत्रेण रुत्वम्]

स्वधास्थाः सत्यविद्याभक्ति-स्वपदार्थधारिणः (सर्वमनुष्याः) ऋ० भू० २५४, [स्वधोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः । स्वधेति व्याख्यातम्]

स्वधितिम् वज्रम् २.३९.७. **स्वधितिः**=विद्युत् १.१६२.१८. वज्र इव वर्त्तमानः (वैद्यः) २५.४१. अविनाशित्वाद् वज्रमयः (रुद्रः=उपदेशकः) ३.६३. **स्वधिते**=स्वेष्वात्मीयेषु धितिः पोषणं यस्यास्तत्सम्बुद्धौ (अध्यापिके स्त्रि) ६.१५. रोगनाशने स्वधितिर्वज्रवत् प्रवर्त्तमान (विद्वज्जन) ४.१. दुःखविच्छेदक (विद्वज्जन) ५.४२. **स्वधितौ**=वज्रवद्वर्त्तमानौ (स्वरौ) २५.३२. स्वेन धृतौ (स्वरौ=शब्दोपतापौ) १.१६२.९. [स्व-धितिपदयोः समासः । धितिः—डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । स्वधितिः वज्रनाम निघं० २.२०.]

स्वधितिवान् स्वधितिः प्रशस्तो वज्रो विद्यते यस्य सः (विद्वान् शिल्पिजनः) १.८८.२. [स्वधितिरिति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसायां मतुप्]

स्वधितीव वज्रधर इव (राजेव) ५.७.८. [स्वधिति-इवपदयोः समासः । स्वधितिः वज्रनाम निघं० २.२०.]

स्वधृतिः स्वेषां धारणम् २२.१९. स्वेषां पदार्थानां धारणम् ८.५१. [स्व-धृतिपदयोः समासः । धृतिः=धृञ् धारणे (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

स्वध्वर शोभना अध्वरा यस्य तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.४४.८. सुष्ठ्वहिंसायुक्त (राजन्) ५.२८.५. **स्वध्वरम्**=सुष्ठ्वहिंसनीयम् (विद्युदाख्यं वह्निम्) ३.९.८. शोभना अध्वरा यस्मात्तम् (अग्निं=प्रकाशमानामग्निविद्याम्) ६.१६.४०. सुष्ठ्वध्वरा अहिंसिता क्रिया यस्मात्तम् (रथं=रमणीयं यानम्) ४.४६.४. सुष्ठ्वहिंसाधर्मप्राप्तम् (अग्निम्) ५.९.३. शोभना पालनीया अध्वरा यस्य तम् (जनम्) १.४५.१. सुष्ठ्वध्वरा अहिंसनीया व्यवहारा यस्मात्तम् (अग्निं=अग्निविद्याम्) १५.३२. शोभना अध्वरा अहिंसादयो व्यवहारा यस्य तम् (अग्निं=सत्योपदेशकम्) ७.१६.१. **स्वध्वरः**=शोभनकारित्वादहिंसनीयः (पुरुषः) १५.४७. सुष्ठु यज्ञस्याऽनुष्ठाता (पतिः) १.१२७.१ हिंसितुमनर्हः (राजा) २.२.८. **स्वध्वरे**=सुशोभमाने (यज्ञे) १.१४२.५. शोभनेऽहिंसामये (यज्ञे) ५.१७.१. [सु-अध्वरपदयोः समासः । अध्वरः यज्ञनाम निघं० ३.१७. अध्वर इति यज्ञनाम । ध्वरति हिंसाकर्मा तत्प्रतिषेधः नि० १.८.]

स्वध्वरा सुष्ठ्वहिंस्रस्वभावयुक्तान् (विद्यार्थिजनान्) ७.१७.४. सुष्ठ्वहिंसाधर्मयुक्तान् (सज्जनान्) ६.१०.१. शोभनान्यहिंसादीनि कर्माणि येषु व्यवहारेषु तान् ३.२९.१२. शोभनोऽध्वरोऽहिंसामयो व्यवहारो येषान्तान् (देवान्=विदुषोऽध्यापकान्) ७.१७.३. सुष्ठ्वध्वरो यज्ञो याभ्यान्तौ (सूर्यविद्युतौ) ३.६.६. [सु-अध्वरपदयोः समासे 'सुपां

सुलुक्०' सूत्रेण शसः स्थान आकारादेशः । अन्यत्र प्रथमाद्विवचनस्याकारः]

स्वधरासः सुष्ठ्वध्वराः क्रियायोगसिद्धयो येभ्यस्ते (अग्नयः=पावकाः) ४.४५.५. [सु-अध्वरपदयोः समासे जसोऽसुक्]

स्वनः शब्दः १.१४३.५. [स्वन शब्दे (भ्वा०) धातोः 'स्वनहसोर्वा' इत्यप् । स्वनः वाङ्नाम निघं० १.११.]

स्वनयेन स्वस्य नयनं यस्य दातुरतेन (दातृजनेन) १.१२६.३. [स्व-नयपदयोः समासः । नयः—णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'एरच्' इत्यच्]

स्वनीक शोभनमनीकं सेना यस्य तत्सम्बुद्धौ (सेनापते) २.१.८. उत्तमसैन्य (अग्ने=राजन्) ४.६.६. शोभनान्यनीकानि सैन्यानि यस्य तत्सम्बुद्धौ (अग्ने=विद्वन्राजन्) ६.१५.१६. [सु-अनीकपदयोः समासः । अनीकम्=अन प्राणने (अदा०) धातोः 'अनिहृषिभ्यां किच्च' उ० ४.१७. सूत्रेण ईकन्]

स्वप शेष्व ७.५५.२. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्लोट् । 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुङ् न]

स्वपतः शयनं प्राप्तस्य (लोकस्य=जीवस्य) ३४.५५. **स्वपते**=प्राप्तसुषुप्तये (जनाय) २२.७. **स्वपन्**=शयानः सन् (भा०—उत्तमपुरुषः) ५.४४.१३. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोः शतृ]

स्वपत्यम् सुष्ठ्वपत्ययुक्तम् (रयिं=श्रियम्) २.४.८. शोभनान्यपत्यानि सन्ताना यस्मात्तम् (रयिम्) ७.१.५. शोभनं सन्तानम् १.११६.१९. **स्वपत्यस्य**=शोभनान्यपत्यानि विद्यार्थिनो वा यस्य तस्य (शिक्षोः=शिक्षकजनस्य) ३.१९.३. शोभनापत्यसहितस्य (रायः=धनस्य) २.२.१२. **स्वपत्यानि**=शोभनानि च तान्यपत्यानि २७.२३. शोभनशिक्षायुक्तान् पुत्रादीन् १.७२.९. सुष्ठु शिक्षयोत्तमानि चाऽपत्यानि च तानि ४.३४.९. **स्वपत्ये**=स्वकीये सन्ताने ३.३.७. [सु-अपत्यपदयोः समासः । अपत्यम् अपत्यनाम निघं० २.२. अपत्यं कस्मात् ? अपततं भवति । नानेन पततीति वा नि० ३.१.]

स्वपत्यै शोभनान्यपत्यानि यस्यां तस्यै (इषे=अन्नरूपायै राज्यलक्ष्म्यै) १.५४.११. [सु-अपत्यपदयोः समासे स्त्रियां टापि चतुर्थ्येकवचने छान्दसं रूपम्]

स्वपनम् निद्राम् ३०.१७. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्ल्युट्]

स्वपसः शोभनानि धर्म्याणि कर्माणि येषान्ते (विद्वज्जनाः) १.१६१.६. सुष्ठ्वपो धर्म्यं कर्म कुर्वाणाः (विद्वज्जनाः) ४.२.१९. सुष्ठ्वपांसि कर्माणि येभ्यस्ते (पितरः) १.१५९.३. **स्वपसा**=सुष्ठु कर्मणा २५.३. **स्वपाः**=शोभनानि धर्म्याण्यपांसि कर्माणि यस्य सः (विद्वज्जनः) १.१३०.६. सत्यभाषणादिकर्मा (योगिजनः) ५.२९.१५. शोभनान्यपांसि कर्माणि यस्य तद्वन् (अग्ने=सभापते राजन्) ८.३८. सुष्ठुकर्मा (विद्वज्जनः) ५.२.१०. श्रेष्ठकर्मानुष्ठानः (पिता) ५.६०.५. [सु-अपस्पदयोः समासः । अपः कर्मनाम निघं० २.१. स्वपसः सुकर्माणः नि० ८.१३.]

स्वपस्तमम् अतिशयेन शोभनान्यपांसि कर्माणि यस्मात्तम् (वज्रं=किरणसमूहम्) १.६१.६. **स्वपस्तमः**=शोभनान्यपांसि कर्माणि यस्य सोऽतिशयितः (राजसन्तानः) ४.१७.४. [स्वपस् इति व्याख्यातम् । ततोऽतिशायने तमप्]

स्वपस्यमानः शोभनानि चाऽपांसि कर्माणि च स्वपांसि, तान्याचरतीव सः (सूनुः) १.६२.९. [स्वपस् इति व्याख्यातम् । तत आचारेऽर्थे क्यङन्ताच्छानच्]

स्वपस्यया आत्मनः सुष्ठ्वपसः कर्मण इच्छया १.१६१.११. सुष्ठ्वपांसि कर्माणि तान्यात्मन इच्छया ४.३५.२. शोभनान्यपांसि कर्माणि यस्यां तया क्रियया १.११०.८. **स्वपस्या**=सुष्ठु धर्म्यकर्मेच्छया ४.३५.९. [स्वपस् इति व्याख्यातम् । तत आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्तात् स्त्रियाम् 'अ प्रत्ययात्' इत्यकारः ततष्टाप्]

स्वपस्याय शोभनान्यपांसि कर्माणि यस्य ,तस्मै (इन्द्राय=ऐश्वर्ययुक्ताय जनाय) २४.१. [सु-अपस्पदयोः समासे कृते मत्वर्थे यत् छान्दसः]

स्वपाक सुष्ठ्वपरिपक्वज्ञान (अग्ने=राजन्) ४.३.२. [सु-अपाकपदयोः समासः । अपाकः—नञ्-पाकयोः समासः । पाकः=डुपचष् पाके (भ्वा०) धातोर्घञ्]

स्वपिवात वायुरिव वर्त्तमान (राजन्) ७.४६.३. [स्वपिवातः स्वाप्तवचनः नि० १०.६.]

स्वपूभिः शयानैः, स्वकीयैः पवित्राचरणैः सह ७.५६.३. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० ऊः । अथवा स्वोपपदे पूञ् पवने (क्र्या०) धातोः क्विप्]

स्वप्नस्य निद्रायाः १.१२०.१२. **स्वप्नेन**=शयनेन २.१५.९. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोः 'स्वपो नन्' इति नन्]

स्वभानवः स्वकीया भानुर्दीप्तिः प्रकाशो येषान्ते (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.५१. वायुवत् स्वभानवो ज्ञान-

दीप्तयो येषान्ते (विद्वांसो जनाः) १.३७.२. **स्वभानवे**=स्वकीयप्रज्ञाप्रदीप्तये ६.४८.१२. **स्वभानो**=स्वकीयदीप्ते (विवाहितजन) ६.६४.४. [स्व-भानुपदयोः समासः। भानुः अहर्नाम निघं० १.९. भा दीप्तौ (अदा०) धातोः 'दाभाभ्यां नु' रिति नुः]

स्वभिष्टयः शोभना अभिष्टयोऽभिप्राया येषान्ते (नरः=नायका जनाः) १.१७३.९. **स्वभिष्टिम्**=शोभना अभिष्टय इष्टयो यस्मात्तम् (इन्द्रं=सेनेशम्), प्र० – अत्र व्यत्ययेन ह्रस्वः १.५१.२. **स्वभिष्टिः**=सुष्ठ्वभिगता सङ्गतिर्यस्य सः (इन्द्रः=नृपः) ६.३३.१. [सु-अभीष्टि-पदयोः समासे छान्दसं ह्रस्वत्वम्। अभीष्टिः=अभि+इषु इच्छायाम् (तुदा०)+क्तिन्]

स्वभिष्टिसुम्नः सुष्ठ्वभिष्टिः सुम्नं सुखं यस्य यस्माद् वा (इन्द्रः=परमैश्वर्यो राजा) ६.२०.८. [स्वभिष्टिरिति व्याख्यातम्। तस्य सुम्नपदेन सह समासः। सुम्नम् सुखनाम निघं० ३.६.]

स्वभूतिः अपना ऐश्वर्य आर्याभि० १.१३, ऋ० १.४.१४.२. **स्वभूते**=स्वकीयैश्वर्ये (वायुवद्विद्वज्जन) २७.३३. [स्व-भूतिपदयोः समासः]

स्वभूत्योजाः स्वकीया भूतिरैश्वर्यमोजः पराक्रमो वा यस्य सः (परमेश्वरः) १.५२.१२. [स्व-भूति-ओजस् पदानां समासः]

स्वम् स्वकीयम् १.४६.६. **स्वः**=स्वयम् (ऋत्विग्) २.५.७.

स्वमहिम्ना स्वप्रभावेण १.५९.७. [स्व-महिमन्-पदयोः समासः]

स्वमीढेषु स्वः सुखं मिह्यते सिच्यते येषु तेषु (सङ्ग्रामेषु) १.१३०.८. [स्वर्-मीढपदयोः समासे पूर्वपदस्य रेफस्य लोपश्छान्दसः। मीढः=मिह सेचने(भ्वा०)+क्तः]

स्वयञ्जाः स्वयं जाताः (आपः=जलानि) ७.४९.२. [स्वयमुपपदे जनी प्रादुर्भावे (दिवा०) धातोर्डः। ततः स्त्रियां टाप्]

स्वयतासः स्वेन बलेन नियमं प्राप्ता नत्वन्येनाश्वादिनेति १.१६६.४. [स्व-यतपदयोः समासे जसोऽसुक्। यतः=यमु उपरमे (भ्वा०)+क्तः]

स्वयम्भूः यः स्वयं भवति सः, उत्पत्तिनाशरहितः (प्रथमः=ईश्वरः) २३.६३. स्वयंभवदनादिस्वरूपः (सूर्यः=जगदीश्वरो विद्वान् जीवो वा) २.२६. यो निमित्तोपादानसाधारणकारणरहितः (परमात्मा) ऋ० भू० ३६, ४०.८. सदा स्वसामर्थ्ययोगैकरसत्वाभ्यां वर्त्तमानः (ईश्वरः) पं० वि०। सनातन स्वयं सिद्ध परमेश्वर स० प्र० २४४, ४०.८. जिसका आदि-कारण माता, पिता, उत्पादक कोई नहीं, किन्तु सब का आदि कारण वह (ईश्वर) आर्याभि० २.२, ४०.८. अनादिस्वरूपो यस्य संयोगेनोत्पत्तिर्वियोगेन विनाशो, मातापितरौ, गर्भवासो, जन्म, वृद्धिक्षयौ च न विद्येते सः (परमात्मा) ४०.८. [स्वयमुपपदे भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः क्विप्। स्वयम्भूः अन्तरिक्षनाम निघं० १.३.]

स्वयशसम् स्वकीयगुणकर्मस्वभावकीर्त्तियुक्तम् (सीम्=अहोरात्रव्यवहारम्) १.९५.२. **स्वयशसः**=स्वकीयं यशो येषान्ते (जनाः) १.१३६.७. **स्वयशाः**=स्वकीयं यशः कीर्त्तिर्यस्य सः (सत्पुरुषः) ७.३७.४. स्वकीयकीर्त्तिः (अग्निः=सूर्यः) १.९५.५. [स्व-यशस्पदयोः समासः। स्वयशस्—आत्मयशाः नि० ८.१५.]

स्वयशस्तरम् स्वकीयं यशः कीर्त्तिर्यस्य तदतिशयितम् (स्वराज्यम्) ५.८२.२. [स्व-यशस्पदयोः समासेऽतिशायने तरप्]

स्वयशस्तरः स्वकीयं यशो धनं प्रशंसनं वा यस्य सोऽतिशयितः (इन्द्रः=सम्राट्) ३.४५.५. अतिशयेन स्वकीयं यशो यस्य सः (धर्मात्मजनः) ५.१७.२. [स्व-यशस्पदयोः समासेऽतिशायने तरप्। यशः अन्ननाम निघं० २.७. धननाम निघं० २.१०.]

स्वयशोभिः स्वकीयाभिः प्रशंसाभिः १.१२९.८. स्वगुणस्वभावकीर्त्तिभिः १.९५.९. [स्व-यशस्पदयोः समासः]

स्वयुक्ताः स्वेनैव गच्छन्तः (मरुतः=वायवः) १.१६८.४. [स्व-युक्तपदयोः समासः। युक्तः=युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्तः]

स्वयुक्तिभिः स्वा युक्तयो योजनानि यासु ताभिः (नीतिभिः) १.५०.९. आत्मीय-प्रकारैः १.११९.४. [स्व-युक्तिपदयोः समासः। युक्तिः=युजिर् योगे (रुधा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

स्वयुः यः स्वयं याति सः (अग्निः=वह्निः) २.४.७. यः स्वं धनं याति सः (इन्द्रः=सम्राट्) ३.४५.५. [स्वोपपदे या प्रापणे (अदा०) धातोः 'मृगय्वादयश्च' उ० १.३७. इति कुः]

स्वर जानीहि, प्राप्नुहि, प्र०—स्वरतीति गतिकर्मसु, निघं० २.१४, १.१०.४. **स्वरन्ति**=शब्दयन्ति ५.५४.२. उच्चरन्ति ५.५४.१२. [स्वरति गतिकर्मा निघं० २.१४.

ततो लोट् । अन्यत्र लट् । अथवा स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् च]

स्वरङ्कृतेन सुष्ठु पूर्णेन कृतेन (यज्ञेन) १.१६२.५. सुष्ठ्वलङ्कृतेन (यज्ञेन), प्र०—अत्र कपिलकादित्वाद्रेफः २५.२८. [सु-अलम्-कृतपदानां समासः । कपिलकादित्वात् लस्य रेफः]

स्वरणम् यः स्वरति शब्दार्थसम्बन्धानुपदिशति तम् (सोमानं=यजमानम्) १.१८.१. सर्वविद्याप्रवक्तारम् (विद्वज्जनम्) ३.२८. [स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोः इति 'कृत्यल्युटो बहुलम्' कर्त्तरि ल्युट् । स्वरणम्=प्रकाशनवन्तम् नि० ६.१०]

स्वरवः सुस्वरान् सेवमानाः (हंसाः पक्षिविशेषाः) ३.८.९. स्वकीयो रवो विद्याप्रज्ञापकः शब्दो येषान्ते (देवासः=विद्वज्जनाः) ३.८.६. प्रशंसकाः विद्वज्जनाः) ३.८.१०. प्रतापयुक्ताः (उषस इव कन्याः) ४.५१.२. **स्वरुम्**=तापकमादित्यम् १.९२.५. **स्वरुः**=उपदेष्टा (विद्वज्जनः) ४.६.३. भा० प्रतापयुक्तः (इन्द्रः=ईश्वरः) ३३.२४. **स्वरूणाम्**=यज्ञशालास्तम्भ-शब्दानाम् ७.३५.७. [स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोः 'शृस्वृस्निहि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः । स्वरुः—एतस्माद् (यूपात्) वाऽएषो (शकलः) ऽपछिद्यते तस्मै तत्स्वमेवारुर्भवति तस्मात् स्वरुर्नाम श० ३.७.१.२४.]

स्वरः स्वयं राजमानं स्वातन्त्र्यम् १८.१. **स्वरेण**=महाशब्देन १.६२.४. **स्वरौ**=शब्दोपतापौ १.१६२.९. [स्वोपपदे राज़ृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोर्डः । अन्यत्र—स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोरच् । स्वर वाङ्नाम । निघं० १.११. स्वरः—स यदाह स्वरोऽसीति सोमं वा एतदाहैष ह वै सूर्यो भूत्वाऽमुष्मिल्लोके स्वरति तद् यत् स्वरति तस्मात्स्वरस्तत् स्वरस्य स्वरत्वम् । गो० पू० ५.१४. य आदित्यस्स्वर एव सः जै० उ० ३.३३.१. प्राणः स्वरः तां० ७.१.१०. पशवः स्वरः गो० उ० ३.२२. श्रीर्वै स्वरः श० ११.४.२.१०. प्रजापतिः स्वरः । ष० ३.७. यथा स्वरेण सर्वाणि व्यञ्जनानि व्याप्तान्येवं सर्वान् कामानाप्नोति यश्चैवं वेद । संहितो० खं० २. तस्माद् यज्ञे स्वरवन्तं दिदृक्षन्तऽएव । श० १४.४.१.२७. अनन्तो वै स्वरः । तां० १७.१२.३.]

स्वराजम् यः स्वेन सूर्य इव राजते तम् (सर्वाधीशं राजानम्) ३.४९.२. स्वेषां राजा स्वराजस्तम् (अग्नि=सभाध्यक्षम्) १.३६.७. **स्वराजः**=यः स्वेन राजते तस्य (राज्ञः) ३.४६.१. स्वः राजत इति स्वराट्, तस्य (जगतः) ५.५२.१. स्वयं राजमानाः (विद्युदादयोऽश्वाः) १.१८१.२. ये स्वं राजन्ते ते, भा० स्वाधीनाः (राजपुरुषाः) १०.४. **स्वराजे**=यः स्वयं राजते तस्मै सर्वाधिपतये परमेश्वराय १.५१.१५. **स्वराट्**=यः सर्वेषु धर्माचरणेषु स्वयं राजते सः (पतिः) १३.२४. यः स्वेनैव राजते सः (इन्द्रः=सम्राट्) ३.४५.५. यः स्वयं राजतेऽसौ परमात्मा १९.६०. बुद्धिः २०.६. यः सम्यग् राजते सः (कृतविवाहः पुरुषः) १३.३५. या स्वयं राजते सा (स्त्री) १४.१३. यः स्वयं राजते प्रकाशते स्वान् राजयति प्रकाशयति वा स स्वराट् परमेश्वरः ऋ० भू० २६२, १९.६०. [स्वोपपदे राज़ृ दीप्तौ (भ्वा०) धातोः 'सत्सूद्विषद्रुह०' अ० ३.२.६१. सूत्रेण क्विप् । स्वराट्—(यजु० १३.२४.) असौ वै (द्यु-) लोकः स्वराट् । श० ७.४.२.२२. स्वराट् वै तच्छन्दो यत् किञ्च चतुस्त्रिंशदक्षरम् । कौ० १७.१. सोऽश्वमेधेनेष्ट्वा स्वराडिति नामाधत्त गो० पू० ५.८.]

स्वराज्यम् स्वस्य राज्यम् १.८०.४. स्वकीयं राज्यम् १.८०.२. स्वप्रकाशवन्तम् (अग्नि=विद्युतम्) २.८.५. **स्वराज्ये**=स्वकीये राष्ट्रे ५.६६.६. [स्व-राज्यपदयोः समासः । राज्यम्—राजन्प्राति० भावकर्मणोरर्थयोः 'पत्यन्तपुरोहितादिभ्यो यक्' इति यक्]

स्वरितारः अध्यापका उपदेष्टारो वा १.१६६.११. [स्वृ-शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

स्वरित्राम् शोभनान्यरित्राणि यस्यां ताम् (नावम्) २१.६. [सु-अरित्रपदयोः समासे स्त्रियां टाप् । अरित्रम्—ऋ गतौ (भ्वा०) धातोः 'अर्त्तिलूधूसू०' अ० ३.२.१८४. सूत्रेण करणे इत्रः]

स्वरिः यः शोभनश्चासावरिश्च (इन्द्रः=सूर्यः सभाध्यक्षो वा) १.६१.९. [सु-अरिपदयोः समासः]

स्वरोचिषः स्वयं रोची रोचनमेषान्ते (विद्वांसो राजजनाः) ५.८७.५. **स्वरोचिः**=स्वकीयं रोचिर्दीपनं यस्य सः (सूर्यः) ३.३८.४. स्वकीया रोचिर्दीप्तिर्यस्य सः (विद्युदग्निः) ३३.२२. [स्व-रोचिष्पदयोः समासः । रोचिष्=रुच दीप्तावभिप्रीतौ च (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० इसिः]

स्वर्काः शोभना अर्का अन्नादयः पदार्था येषान्ते (यजमानाः) १९.३२. शोभना अर्का मन्त्रा विचारा येषां ते (मरुतः=मनुष्याः) ७.३५.९. शोभनोऽर्कोऽन्नादिकमैश्वर्यं येषान्ते (अश्वा योद्धारो वा) ७.३८..७. सुष्ठ्वर्का अन्नानि वज्रा वा येषान्ते (विद्वज्जनाः) २१.१०. शोभनोऽर्कोऽन्नं

सत्कारो वा येषान्ते (वीरराजजनाः) ९.१६. **स्वर्कैः**=शोभना अर्का मन्त्रा विचारा वा देवा विद्वांसो येषु तैः (रथैः) १.८८.१. [सु-अर्कपदयोः समासः । अर्कः अन्ननाम । निघं० २.७. वज्रनाम निघं० २.२०. पदनाम निघं० ४.२. स्वर्कैः स्वञ्चनैरिति वा स्वर्चनैरिति वा, स्वर्चिभिरिति वा । नि० ११.१४. स्वर्काः—स्वञ्चना इति वा, स्वर्चना इति वा, स्वर्चिष इति वा नि० १२.४४. अर्कः—अर्को देवो भवति यदेनमर्चति । अर्को मन्त्रो भवति यदनेनार्चन्ति । अर्कमन्नं भवत्यर्चति भूतानि नि० ५.४.]

स्वर्गम् अत्यन्त सुख को सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.६. **स्वर्गान्**=स्वः सुखं गच्छन्ति प्राप्नुवन्ति येभ्य स्तान् (समुद्रान्=लोकान्) १३.३१. **स्वर्गाय**=विशेषसुखभोगाय, भा०—मुक्तिसुखाय ३५.२२. सुखविशेषाय ३०.१३. सुखगमकाय पुरुषार्थाय, भा० आभ्युदयः नैश्रेयसिकसुखप्राप्तये २२.३४. **स्वर्गे**=सुखकारके (लोके) १५.११. सुखमये (लोके) २३.२०. सुखप्रापके (लोके) १५.१०. [स्वर् इत्युपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'डप्रकरणेऽन्येष्वपि दृश्यते' अ० ३.२.४८. वा०सूत्रेण डः । स्वर्गो लोकः परो वा अस्माल्लोकात्स्वर्गो लोकः ऐ० ६.३०. प्रतिकूलमिव हीतः स्वर्गो लोकः तां० ६.७.१०. एकविंशो वा इतः स्वर्गो लोकः तै० ३.१२.५.७. सहस्रसंमितो वै स्वर्गो लोकः श० १३.१.३.१ सहस्राश्वीने वा इतः स्वर्गो लोकः ऐ० २.१७. चतुश्चत्वारिंशदाश्वीनानि सरस्वत्या विनशनात् प्लक्षः प्रास्रवणस्तावदितः स्वर्गो लोकः सरस्वती सम्मितेनाध्वना स्वर्गं लोकं यन्ति तां० २५.१०.१६. अपरिमितो वै स्वर्गो लोकः ऐ० ६.२३. अनन्तोऽसौ (स्वर्गः) लोकः तां० १७.१२.३. साम्राज्यं वै स्वर्गो लोकः तां० ४.६.२४. स्वर्गो लोकः सरस्वान् तां० १६.५.१५. स्तोमा वै त्रयः स्वर्गा लोकाः ऐ० ४.१८. स्वर्गो वै लोकः सूर्यो ज्योतिरुत्तमम् (यजु० २०.२१.) श० १२.९.२.८. अहर्वै स्वर्गो लोकः । ऐ० ५.२४. स्वर्गो वै लोको ब्रध्नस्य विष्टपम् ऐ० ४.४. स्वर्गो वै लोको नाकः (यजु० १२.२.) श० ६.३.३.१४. दिशो वै स नाकः स्वर्गो लोकः श० ८.६.१.४. स्वर्गो वै लोकः सधस्थः (यजु० १८.५९) श० ९.५.१.४६. अथ यत्परं भाः (सूर्यस्य) प्रजापतिर्वा स स्वर्गो लोकः श० १.९.३.१०. असौ वै (स्वर्गो) लोको महांसि तस्यादित्या अधिपतयः तै० ३.८.१८.२. अग्निर्वै स्वर्गस्य लोकस्याधिपतिः ऐ० ३.४२. एष वै स्वर्गो लोको यत्र पशुं संज्ञपयन्ति श० १३.५.२.२. ओमिति वै स्वर्गो लोकः ऐ० ५.३२. स्वरिति सामभ्योऽक्षरत् स्वः स्वर्गलोकोऽभवत् ष० १.५. इदं वा वामदेव्यं यजमानलोकोऽमृतलोकः स्वर्गो लोकः ऐ० ३.४६. स्वर्गो वै लोको यज्ञायज्ञियं (साम) श० ९.४.४.१०. बृहद् वै स्वर्गो लोकः तै० १.२.२.४. बृहता (साम्ना) वै देवा स्वर्गं लोकमायन् । तां० १८.२.८. स्वर्गा वै लोकाः स्वरसाम् कौ० १२.५. स्वर्गा वै लोकाः षष्ठमहः ऐ० ६.२६. स्वर्ग एव लोकः षष्ठी चितिः श० ८.७.४.१७. एकवृद् वै स्वर्गो लोकः श० १३.२.१.५. वाजो वै स्वर्गो लोकः तां० १८.७.१२. तस्मात् (भूर्लोकात्) असावेव (स्वर्गो) लोकः श्रेयान् (अथर्व० ७.९.१) ऐ० १.१३. स्वर्गो वै लोकोऽभयम् श० १२.८.१.२२. स्वर्गो लोको देवो देवता भवति गो० पू० ४.८. स्वर्गो वै लोको दुरोहणम् ऐ० ४.२०. स्वर्गस्य हैष लोकस्य रोहो यन्निविद् ऐ० ३.१९. स्वर्गो वै लोको रोहः (यजु०१३.५१) श० ७.५ २.३६. मध्ये ह संवत्सरस्य स्वर्गो लोकः श० ६.७.४.११. तस्य (संवत्सरस्य) वसन्त एव द्वारं हेमन्तो द्वारं तं वाऽएतं संवत्सरं स्वर्गं लोकं प्रपद्यते श० १.६.१९. ता वा एताः पञ्च (इष्टयः) स्वर्गस्य लोकस्य द्वारः । अपाद्मा अनुवित्तयो नाम । तपः प्रथमां रक्षति । श्रद्धा द्वितीयाम् । सत्यं तृतीयाम् । मनश्चतुर्थीम् । चरणं पञ्चमीम् तै० ३.१२.४.७. ता वा एताः सप्त (इष्टयः) स्वर्गस्य लोकस्य द्वारः । दिवः श्येनयोऽनुवित्तयो नाम । आशा प्रथमां रक्षति । कामो द्वितीयाम् । ब्रह्म तृतीयाम् । यज्ञश्चतुर्थीम् । आपः पञ्चमीम् । अग्निर्बलिमान् षष्ठीम् । अनुवित्तिः सप्तमीम् । तै० ३.१२.२.९ एतस्यां ह (उदीच्यां प्राच्यां) दिशि स्वर्गस्य लोकस्य द्वारम् श० ६.६.२.४. स्वर्गो वै लोको यज्ञः कौ० १४.१. तथा ह यजमानः सर्वमायुरस्मिँल्लोके एत्याप्नोत्यमृतत्वमक्षितिं स्वर्गे लोके । कौ० १३.५. ऋतेनैवैनं स्वर्गं लोकं गमयन्ति तां० १८.२.९. छन्दोभिर्हि स्वर्गं लोकं गच्छन्ति श० ६.५.४.७. सर्वैर्वै छन्दोभिरिष्ट्वा देवाः स्वर्गं लोकमजयन् । ऐ० १.९. छन्दोभिर्वै देवा आदित्यं स्वर्गं लोकमहरन् तां० १२.१०.६. स्वर्गो वै लोको माध्यन्दिनं सवनम् । गो० उ० ३.१७. अवस्तात्प्रपदनो ह स्वर्गो लोकः श० ८.६.१.२३. नव स्वर्गा लोकाः ऐ० ४.१६. दश स्वर्गा लोकाः गो० उ०.६.२. दश पुरुषे स्वर्गनरकाणि तान्येनं स्वर्गं गतानि स्वर्गं गमयन्ति नरकं गतानि नरकं गमयन्ति जै० उ० ४.२५.६. न वै मनुष्यः स्वर्गं लोकमञ्चसा वेदाश्वो वै स्वर्गं लोकमञ्चसा वेद श० १३.२.३.१. असमायी वै स्वर्गो लोकः कश्चिद्वै स्वर्गे लोके समेतीति ऐ० ६.२६.]

स्वर्ग्याय स्वः सुखं गच्छति येन तद्भावाय ११.२.

मोक्षसुखाय ऋ०भू० १५६, ११.३. [स्वर्ग-प्राति० भवार्थे यत्]

स्वर्चिः प्रशंसितदीप्तिः (अग्निः) २.३.२. [सु-अर्चिष्-पदयोः समासः । अर्चिः ज्वलतोनाम निघं० १.१७]

स्वर्जितम् स्वः सुखं जयत्युत्कर्षति येन तम् (यज्ञम्) ११.८. **स्वर्जिते**=यः सुखेन जयति तस्मै (इन्द्राय=सेनेशाय) २.२१.१. [स्वर् इत्युपपदे जि जये (भ्वा०) धातोः क्विप्]

स्वर्जेषे सुखेन जयशीलाय (विदे=ज्ञानवते विदुषे) १.१३२.२. [स्वर् इत्युपपदे जि जये (भ्वा०) धातोस्तुमर्थे से-प्रत्ययः]

स्वर्ज्योतिः यया स्वरन्तरिक्षलोकसमूहं द्योतते तथा (भगवान्) ५.३२. [स्वर्-ज्योतिष्पदयोः समासः]

स्वर्णरम् यः स्वः सुखं नयति तम् (अग्निं=पावकम्) ६.१५.४. सुखस्य नेतारम् (अग्निं=विद्युदादिस्वरूपम्) २.२.१. स्वर्णरः=ये स्वः सुखं नयन्ति ते (मरुतः=मनुष्याः) ५.५४.१०. **स्वर्णरात्**=स्वरादित्य इव नरान्नायकात् (राज्ञः) ४.२१.३. **स्वर्णरे**=स्वः सुखेन युक्ते नरे ५.१८.४. [स्वर्-नरपदयोः समासः]

स्वर्थम् सुष्ठ्वर्थः प्रयोजनं यस्माद्यद्वाऽनर्थसाधनरहितम् (रयिं=धनम्) १.१४१.११. **स्वर्थे**=शोभनाऽर्थे (रात्रिदिने) १.९५.१. सुष्ठ्वर्थः प्रयोजनं ययोस्ते (स्त्रियौ) ३३.५. [सु-अर्थपदयोः समासः]

स्वर्दृक् यः स्वः सुखं पश्यति सः (जनः) ७.५८.२. **स्वर्दृशम्**=स्वः सुखं दृश्यते यस्मात्तम् (अग्निं=वह्निम्) ३.२.१४. सुखं द्रष्टुम् ७.३२.२२. यः स्वरादित्येन दृश्यते तम् (विद्वज्जनम्) ५.२६.२. सुखेन द्रष्टुं योग्यम् (इन्द्रं=सभेशं राजानम्) २७.३५. **स्वर्दृशः**=ये सुखेन विद्याऽऽनन्दं पश्यन्ति तान् (देवान्=विद्वज्जनान्) १.४४.९. यः सुखं पश्यति तस्य (ब्रह्मचारिणः) १.१५५.५. स्वः सुखं पश्यन्ति येभ्यस्ते (सज्जनाः) २.२४.४. ये स्वः सुखं यन्ति ते (ऋभुक्षणः=मेधाविजनाः) ७.३७.२. **स्वर्दृशौ**=यौ स्वः सुखं दर्शयतस्तौ (राजामात्यौ) ५.६३.२. [स्वर् इत्युपपदे दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्विप् । स्वर्दृशः—सूर्यदृशः नि० १.२३ असौ (सूर्यः) वाव स्वर्दृक् ऐ० ४.१०]

स्वर्देवाः सुखे प्रकाशिताः (विद्वज्जनाः) ऋ० भू० १५४, १८.२१. [स्वर्-देवपदयोः समासः । स्वर् इति व्याख्यास्यते]

स्वर्भानुः यः स्वरादित्यं भाति स विद्युद्रूपः (सूर्य्यः) ५.४०.५. आदित्येन प्रकाशितः (मेघः) ५.४०.९. **स्वर्भानोः**=आदित्यप्रकाशस्य ५.४०.६. स्वरादित्यस्य भानुर्दीप्तिर्यस्य तस्य (मेघस्य) ५.४०.८. [स्वर्-भानु-पदयोः समासः]

स्वर्मीढस्य सुखैः सेचकस्य (प्रधनस्य=प्रकृष्टस्य धनस्य) १.१६९.२. **स्वर्मीढे**=स्वः सुखस्य मीढः सेचनं यस्मिँस्तस्मिन् (आजौ) १.६३.६. स्वः किरणान् जलानि वा मेहयति यस्मादन्तरिक्षात्तस्मिन् १.५६.५. स्वः सुखेन युक्ते सङ्ग्रामे ४.१६.१५. [स्वर्-मीढपदयोः समासः । मीढः=मिह सेचने (भ्वा०)+क्तः । मीढः संग्रामनाम निघं० २.१७.]

स्वर्यतः शुद्ध-भाव-प्रेम्णा ऋ० भू० १५६, ११.४. [स्वर्यन्तः स्वर्गच्छन्तः नि० १३.९.]

स्वर्यम् स्वरेषु शब्देषु साधुम् (अश्मानं=मेघम्) ५.५६.४. स्वरेषु विद्यासु सुशिक्षितासु वाक्षु साधु (अनीकं=सैन्यम्) १.२१.४. स्वः सुखे साधुस्तम् (वृत्रं=किरण-समूहम्) १.६१.६. स्वर्हितम् (पुरुषम्) ४.१७.४. प्रकाशमयम् (वज्रम्) ऋ० भू० २८३, १.३२.२. स्वरे गर्जने वाचि वा साधुस्तम् (अहिं=मेघमिव शत्रुम्) प्र०—स्वरिति वाङ्नामसु पठितम् निघं० १.११. समी०—इदं पदं सायणाचार्येण मिथ्यैव व्याख्यातम् १.३२.२. **स्वर्यः**=स्वरेषु साधुः (इन्द्रः=सभाद्यध्यक्षः) १.६२.४. [स्वरः वाङ्नाम निघं० १.११. ततः साध्वर्थे यत् । स्वर्प्राति० साध्वर्थे यत्]

स्वर्यवः यः आत्मनः स्वः सुखं कामयन्ते ते (विप्राः=मेधाविजनाः) ३.३०.२०. ये सुखं यावयन्ति मिश्रयन्ति ते (विप्राः) ३.५०.४. [स्वर्प्राति० आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्ताद् उः । अथवा स्वर् इत्युपपदे यु मिश्रणेऽमिश्रणे च (अदा०) धातोः क्विप्]

स्वर्वत् बहुसुखयुक्तम् (ज्योतिः=ज्ञानप्रकाशम्) ६.४७.८. स्वः सुखं सम्बद्धं यस्मिन् तत् (साम), प्र०—अत्र सम्बन्धे मतुप् १.१७३.१. स्वः बहुविधं सुखं विद्यते यस्मिँस्तत् (द्युम्नं=यशो धनं वा) ६.१९.९. सुखवत् (दात्रं=दानम्) १.१८५.३. [स्वर्प्राति० सम्बन्धे मतुप् भूम्न्यर्थे वा]

स्वर्वती विद्यमानसुखा (त्वेषा=प्रदीप्तिः) १.१६८.७. सुखवती (स्त्री) ५.३४.१. **स्वर्वतीम्**=बहुसुखकारिकाम् (अदितिं=दिवम्) १.१३६.३. **स्वर्वतीः**=स्वः सुखं विद्यते यासु ताः (अपः=कर्माणि)

१.१०.८. स्वः प्रशस्तानि सुखानि विद्यन्ते यासु ताः (ऊतीः=रक्षणाद्याः) १.११९.८. प्रशस्तसुखयुक्ताः (अपः=प्राणान्) ५.२.११. [स्वर्प्राति० भूम्न्यर्थे मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप्]

स्वर्वन्तः बहुसुखयुक्ताः (विद्वज्जनाः) ६.५०.२. **स्वर्वान्**=बहु सुखं विद्यते यस्मिन्त्सः (परमात्मा) ६.२२.३. स्वर्बहुसुखं विद्यते यस्य सः (कीरिः=स्तोता विद्वज्जनः) ६.३७.१. [स्वर्प्राति० मतुप् भूम्न्यर्थे। स्वर् इति व्याख्यास्यते]

स्वर्वित् प्राप्तसुखः (वैश्वानरः=प्रधानपुरुषः) ३.३.१०. सुखप्रापकः (मातरिश्वा=वायुः) १.९६.४. **स्वर्विदम्**=स्वः सुखं वेदयति तम् (वृजनं=योगबलम्) ७.१२. स्वः सुखं विन्दन्ति येन तम् (राजानम्) ५.४४.१. स्वोऽन्तरिक्षं विन्दति येन तम् (रथम्) १.५२.१. स्वः सुखं विन्दति यस्मात्तम् (अग्निम्) ३.३.५. स्वरुदकं विन्दन्ति येन तम् (विद्वज्जनम्) २.२३.३ **स्वर्विदः**=सुख को प्राप्त होने वाले (विद्वान् लोग) सं० वि० १८९, अथर्व० १९.४१.१. **स्वर्विदा**=स्वः सुखं विन्दति येन तेन (नाभिना=बन्धनेन) ६.३९.४. **स्वर्विदे**=यः सुखं वेत्ति तस्मै, भा०—सुखप्रापकाय (विद्वज्जनाय) १७.१२. [स्वर् इत्युपपदे विद्लृ लाभे (तुदा०) धातोः क्विप्। स्वर्विदि सूर्यविदि नि० ७.२५.]

स्वर्विदा यौ सुखं विन्दतस्तौ (स्त्रीपुरुषौ) ११.३१. [स्वर्विदिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

स्वर्षाता सुखस्य दाता (राजा) ६.३३.४. सुखानां विभाजकः (अविद्यो जनः) ६.१७.८. सुखस्याऽन्तं प्राप्तः (राजा) ४.१६.९. सुखानां विभागे, प्र०—अत्र 'सुपां सुलुक्०' इति ङेर्डा १.१३१.६. [स्वर् इत्युपपदे षणु दाने (तना०) धातोः क्तः। षण सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोर्वा क्तः। स्वर्षातप्राति० सोर्विभक्तेर्डादेशः। अथवा स्वर् इत्युपपदे षोऽन्तःकर्मणि (दिवा०) धातोः क्तः। ततः सोर्डादेशः]

स्वर्षाम् यः स्वः सुखं सनोति तम् (सेनाद्यध्यक्षम्), प्र०—अत्र 'सनोतेरनः' अ० ८.३.१०८. अनेन षत्वम् १.९१.२१. स्वः सुखं सनति विभजति यया ताम् (धियं=प्रज्ञां कर्म वा) ५.४५.१०. सुखप्रापकम् (सूरिं=विद्वज्जनम्) १.६१.३. यः स्वः सुखं सनति सम्भजति तम् (राजानं सेनापतिं वा) ३४.२०. स्वः सुखानि सनन्ति भजन्ति यया ताम् (जिह्वां=वाचम्) १३.१५. स्वः सुखं सनोति ददाति यया ताम् (जिह्वाम्) १५.२३. **स्वर्षाः**=स्वः सुखेन सनोति सः (वज्रः=शस्त्रास्त्रसमूहः), प्र०—अत्र स्वपूर्वात् सन-धातोः 'कृतो बहुलम् वा' इति करणे विच् १.१००.१३. स्वः सुखं सनोति येन सः (मनुष्यः) २.१८.१. [स्वर् इत्युपपदे षण सम्भक्तौ (भ्वा०) षणु दाने (तना०) धातोर्वा 'जनसनखन०' इति विट्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इत्याकारादेशः। 'सनोतेरनः' अ० ८.३.१०८. सूत्रेण षत्वम्]

स्ववर्त्तयः शोभनं वर्त्तयेः ५.३०.७. [सु+वृत्तु वर्त्तने (भ्वा०) धातोर्णिजन्ताल्लङ्]

स्ववसम् शोभनमवो रक्षणादिकं यस्य तम् (गृहपतिम्) ५.८.२. सुष्ठ्ववो रक्षणं यस्मात्तम् (अग्निं=विद्युतम्) ५.६०.१. **स्ववसः**=शोभनमवो रक्षणादिकं कर्म येषां ते (ऋभवः=मेधाविजनाः) ४.३३.८. [सु-अवस्पदयोः समासः। अवस्=अव रक्षणादिषु (भ्वा०) धातोरसुन्]

स्ववसा सुष्ठु रक्षकौ (वाय्वग्नी) १.९३.७. [सु-अवस्पदयोः समासे द्विवचनस्याकारादेशः। अवस्=अव रक्षणगत्यादिषु (भ्वा०) धातोरसुन्]

स्ववान् प्रशस्तं स्वं विद्यते यस्य सः (इन्द्रः=सभेशः) २०.५२. स्वे प्रशस्ताः स्पर्शादयो गुणा विद्यन्ते यस्य सः (वायुः) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.३५.१०. बहवः स्वे स्वकीया उत्तमा जना विद्यन्ते यस्य सः (इन्द्रः=राजा) २०.५१. स्वे आत्मीया बहवो विद्यन्ते यस्य सः (सर्वोत्तमो राजा) ६.६८.५. प्रशस्ताः स्त्रे भृत्याः पदार्था वा विद्यन्ते यस्मिन् सः (रथः) १.११८.१. स्वकीयसामर्थ्ययुक्तः इन्द्रः=राजा) ६.४७.१८. स्वे स्वकीयाः प्रकाशादयो गुणा विद्यन्ते यस्मिन् सः (देवः=सूर्यः) ३४.२६. [स्वप्राति० प्रशंसायां भूम्न्यर्थे वा मतुप्]

स्वविद्युतः स्वेन रूपेण व्याप्ताः (अग्नयः=पावकाः) ५.८७.३. [स्व-विद्युत्पदयोः समासः]

स्ववृष्टिम् स्वकीयानां घनानामिव प्रेरितानां पदार्थानां जलानां वा वर्षणं प्रति १.५२.१४. स्वस्य शस्त्राणां वा वृष्टिर्यस्य तम् (सूर्यं सभाद्यध्यक्षं वा) १.५२.५. [स्व-वृष्टिपदयोः समासः]

स्वशोचिः स्वं शोचिस्तेजो यस्य सः (तेजस्विजनः) ६.६६.६. [स्व-शोचिष्पदयोः समासः। शोचिः ज्वलतो नाम निघं० १.१७.]

स्वश्चन्द्रम् स्वेन प्रकाशेनाऽऽह्लादकारकेण युक्तं सुवर्णम् १.५२.९. [स्व-चन्द्रपदयोः समासः। चन्द्रमिति हिरण्यनाम निघं० १.२. 'ह्रस्वाच्चन्द्रोत्तरपदे मन्त्रे'

अ० ६.१.१५१. सूत्रेण सुडागमः]

स्वश्नम् सुष्ठु मेघम् २.१४.५. [सु-अश्नपदयोः समासः। अश्नः मेघनाम निघं० १.१०.]

स्वश्वः शोभना अश्वा वेगवन्तो विद्युदादयस्तुरङ्गा वा यस्मिन् सः (रथः) १.११७.२. शोभना अश्वा यस्य सः (इन्द्रः=नृपः) ६.३३ १. शोभनाऽश्वः (मनुष्यः) ४.४५.७. सुष्ठ्वश्वा यस्य सः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.२.४. **स्वश्वान्**=शोभनाश्च तेऽश्वाश्च तान् १०.२२. **स्वश्वाः**=शोभना अश्वास्तुरङ्गा अग्न्यादयः पदार्था वा येषान्ते (नरः=नायका जनाः) ४.४२.५. शोभना अश्वास्तुरङ्गा महान्तो जना वा येषान्ते (नरः=श्रेष्ठा मनुष्याः) ७.५६.१. [सु-अश्वपदयोः समासः]

स्वश्वासः शोभना अश्वा येषां ते (मनुष्याः) ५ ६५.३ [सु-अश्वपदयोः समासे जसोऽसुगागमः]

स्वश्व्यम् शोभनेष्वश्वेषु साधुम् (रत्नं=धनम्) ३.२६.३. शोभनेष्वश्वेषु भवम् (कार्यम्) २५.४५. शोभना अश्वा यस्मिँस्तम् (रथम्) १.१८०.९. शोभनेष्वश्वेषु विद्याव्याप्तिविषयेषु साधुम् (वीर्यम्) १.४०.२०. शोभनेष्वश्वेषु अग्न्यादिषु भवम् (बलम्) २.१.५. [सु-अश्वपदयोः समासे भवार्थे साध्वर्थे वा यत्]

स्वसरम् दिनम् ६.६८.१०. **स्वसराणि**=अहानि, प्र०—स्वसराणीत्यहर्नामसु पठितम् निघं० १.९, १.३.८. **स्वसरेषु**=गोष्ठेषु २.२.२. [स्वसराणि अहर्नाम निघं० १.९. गृहनाम निघं० ३.४. पदनाम निघं० ४.२. स्वसराणि—स्वसराण्यहानि भवन्ति स्वयं सारिण्यपि वा। स्वरादित्यो भवति स एनानि सारयति नि० ५.४.]

स्वसा भगिनी १.८०.२. बहिन सं० वि० १४१, अथर्व० ३.३०.३. **स्वसारम्**=भगिनीस्वरूपां रात्रिम् १.९२.११. **स्वसारः**=अङ्गुलयः ४.६.८. भगिन्यः कन्याः २.५.५. भगिन्य इव सर्पादिनाशेन सुखप्रदाः (मयूर्यः) १.१९१.१४. भगिन्य इव वर्त्तमानाः कलाः १.१६४.३. अङ्गुल्य इव मैत्रीं भगिनित्वमाचरन्त्यः (विदुष्यः स्त्रियः) ४.२२.७. युवतयो भगिन्यः १.७१.१. **स्वस्रा**=सुष्ठ्वस्यति प्रक्षिपति यया विद्यया क्रियया वा तया, भा०—वेदादिशब्दविद्यया, प्र०—'सावसेर्ऋन्' उ० २.९६. अनेन स्वसृशब्दः सिध्यति ३.५७. **स्वसुः**=भगिन्या इव वर्त्तमानाया उपसः ६.५५.४. **स्वसृः**=स्वसेव वर्त्तमानाः (सर्वमूर्त्तद्रव्याः) ६.६१.९. **स्वस्राम्**=स्वसॄणां भगिनीनाम् १.६५.४. **स्वस्रोः**=भगिनीवद्वर्त्तमानयोः (रात्र्युषसोः) १.११३.३. [सु+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः 'सावसेर्ऋन्' उ० २.९६. सूत्रेण ऋन्। स्वसारः अंगुलिनाम निघं० २.५. स्वसा=सु असा स्वेषु सीदतीति वा नि० ११.३२.]

स्वसिचः याः स्वैर्जनैर्जलेन सिच्यन्ते ताः (नावः=विमानानि) १०.१९. [स्वोपपदे षिच क्षरणे (तुदा०) धातोः कर्मणि क्विप्]

स्वसृत् यः स्वान् सरति प्राप्नोति सः (सेनापतिः) १.८७.४. **स्वसृतः**=ये स्वान् गुणान् सरन्ति प्राप्नुवन्ति ते (मरुतः=मनुष्याः) १.६४.११. [स्वोपपदे सृ गतौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। 'ह्रस्वस्य पिति०' इति तुगागमः]

स्वस्तकौ उत्तम घर वाले (स्त्री पुरुषो) सं० वि० १३७, अथर्व० १४.१.२२. सुखयुक्त (स्त्रीपुरुषो) सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.६४.

स्वस्तये सुखाय कल्याणाय च १.१.९. निरुपद्रवाय (सुखाय), परमसुखाय ५.५१.१२. सुखलब्धये ६.१५.१८. आनन्दाय ५.५१.१३. अविनष्टायाऽभिपूजिताय सुखाय १.२२.१२. सर्वसुखाय ऋ० भू० ८८, ऋ० १.६.१५.५. निरुपद्रवता के लिए आर्याभि० २.५०, २५.१८. सब दुःखों के नाश के लिए आर्याभि० २.१५, ३.२४. स्वस्थता के लिए आर्याभि० १.१०, ऋ० १.६.१५.५. ऐहिक-पारमार्थिक-सुखाय, वे० भा० न०। **स्वस्तिभिः**=कल्याणकरैः कर्म्मभिः २०.५४. स्वास्थ्यकारिकाभिः सुखैः कर्मभिर्वा ७.३.१०. स्वास्थ्यप्रदैः सुखैः, भा०—विद्याशिक्षासौभाग्यैः ३४.४०. विद्यादिदानैः ७.३५.१५. सुखैः सह २७.२८. सब प्रकार के रक्षणों से आर्याभि० १.२७, ऋ० ५.३.२७.२५. **स्वस्तिम्**=सुखं शान्ति वा ६.२.११. **स्वस्तिः**=स्वास्थ्यम् ३.३८.९. **स्वस्त्या**=प्रापकसुखक्रियया १३ १९. सत्क्रियया १५.६४. [स्वस्तीत्यविनाशिनाम। अस्तिरभिपूजितः सु-अस्तीति नि० ३.२२. स्वस्तये-स्वस्त्ययनाय नि० ५.२७.]

स्वस्ति स्वास्थ्यम् ३.३८.९. शरीरसुखं धातुसाम्यसुखं, इन्द्रियशान्तिसुखं, विद्ययाऽऽत्मसुखं वा १.८९.६. प्राप्तव्यं सुखम्, प्र०—स्वस्तीति पदनामसु पठितम् निघं० ५.५. अनेन प्राप्तव्यं सुखं गृह्यते ३.१८. सुखमयम् (धनम्) ५.४.११. सुखं सुखेन वा ४.३३. कल्याणम् १७.३९. शोभनमस्ति यस्मिन् प्राप्तव्ये तत्सुखम् ४.२०. [सु-अस्ति-पदयोः समासः। स्वस्ति पदनाम निघं० ५.५. स्वस्ति स्वपितिकर्मा निघं० ३.२२.]

स्वस्तिगव्यूतिः स्वस्ति सुखेन सह गव्यूतिर्मार्गो

यस्य सः (नृपः) ११.१५. [स्वस्ति-गव्यूतिपदयोः समासः। गव्यूतिः—गो-यूतिपदयोः समासे 'अध्वपरिमाणे च' अ० ६.१.७६. वा०सूत्रेण वान्तादेशः]

स्वस्तिगाम् सुखं गच्छन्ति यस्मिँस्तम् (पन्थां=मार्गम्) ६.५१.१६. स्वस्ति सुखं गच्छन्ति येन तम् (पन्थां=मार्गम्) ४.२६. [स्वस्ति इति व्याख्यातम्। तदुपपदे गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोः 'जनसनखन०' अ० ३.२.६७. सूत्रेण विट्। 'विड्वनोरनुनासिकस्यात्' इत्यात्त्वम्]

स्वस्तिमत् बहुसुखयुक्तम् (छर्दिः=गृहम्) ६.४६.६. **स्वस्तिमतः**=सुखयुक्तान् (मनुष्यान्) १.६०.५. [स्वस्ति इति व्याख्यातम्। ततो भूम्न्यर्थे मतुप्]

स्वः यदभिव्यानयति चेष्टयति प्राणादिसकलं जगत् स व्यान ईश्वरः पं० वि०, ३६.३. निर्विकारं, सुखस्वरूपं, यस्मिन् दुःखं लेशामत्रमपि नास्ति तद् आनन्दघनब्रह्म ऋ० भू० ४, अथर्व० १०.२३.४.१. स्वयं सुखस्वरूप और अपने उपासकों को सुख की प्राप्ति कराने वाला (परमेश्वर) सं० वि० ७५, ३६.३. यो विविधं जगद् व्यानयति व्याप्नोति स व्यानः परमेश्वरः, जो नानाविध जगत् में व्यापक होके सबको धारण करता है, इसलिए उस परमेश्वर का नाम 'स्वः' है स० प्र० ५१, ३६.३., नित्य-सुख सं० वि० १६६, ९.११३.७. सुखविशेष पदार्थ स० प्र० ३१६, १०.१९०.३. मोक्षसुखम् १८.२९. सांसारिकं सुखम् १८.६३. ऐन्द्रियं सुखम् १८.६४. सर्वचेष्टानिमित्तो व्यानः, प्राणाऽपानव्यानैर्युक्तः सन् (मनुष्यः) ३.३७. ज्ञानविद्याम् ३६.३. सुखमादित्यं वा. प्र०—स्वरादित्यो भवति स एतानि सारयति नि० ५.४, ४.२५. सुखमुदकं वा, अ०—सुखरूपं परमेश्वरम् १.११. अन्तरिक्षम् ३३.७५. दिनमिव सुखम् २.२१.४. मध्यस्थं लोकम् पं० वि०, १.१९०.३. सूर्य इव सुखकारी (अग्निः=राजा) ४.१०.३. सुखसम्पादकं दिग्रूपम् १३.५७. उपतपन्नादित्य इव (सभापती राजा) ७.४५. अन्तरिक्षमिवाऽक्षयं सुखम् ६.७३.३. सुखकारकः (जीवः) १.७०.४. स्वर्ग, सुखसाधनम् आर्याभि० २.१३, १८.२९. सुखसाधकम् (सूर्य=जगदीश्वरम्) २७.१०. प्रकाशस्थांल्लोकान् २३.८. दिवम्, प्र०–"स्वरिति दिवम्, एतावद्वा, इदं सर्वं यावदिमे लोकाः सर्वेणैवाधीयते" श० २.१.४.११, ३.५. [स्वरादित्यो भवति सु अरणः सु ईरणः। स्वृतो रसान्। स्वृतो भासं ज्योतिषाम्। स्वृतो भासेति वा। एतेन द्यौर्व्याख्याता नि० २.१४. स्वरादित्यो भवति स एनानि सारयति नि० ५.४. स्वः-साधारणनाम निघं० १.४. स्वः उदकनाम निघं० १.१२. असौ (द्यु-) लोकः स्वः ऐ० ६.७. (यजु० १.११.) यज्ञो स्वरहर्देवाः सूर्यः श० १.१.२.२१. देवा वै स्वः श० १.९.३.१४. अन्तो वै स्वः ऐ० ५.२०.]

स्वाः सम्बन्धिनः (लोकाः) २७.२४. स्वकीयाः (सेनाः) २.२३.६. [स्वप्राति० जस्। 'स्वमज्ञातिधनाख्यायाम्' अ० १.१.३५ सूत्रेण जसि सर्वनामसंज्ञाया विकल्पः]

स्वागतम् सुष्ठु गत्या समन्ताद् गच्छतम्, प्र०––अत्र विकरणलोपश्च १.११२.८. [सु+आङ्+गम्लृ गतौ (भ्वा०) धातोर्लोट्। शपो लुक्]

स्वाग्रयणः शोभनश्चासावाग्रयणश्च तद्वत् (सभापतिराजा उपदेशको वा) ७.२०. [सु-आग्रयणपदयोः समासः]

स्वाङ्कृतः स्वयंसिद्धोऽनादिस्वरूपः (सुभवः=सुष्ठ्वैश्वर्यो योगी जनः) ७.६. स्वयं कृत इव (देवः=दिव्यात्मा जनः) ७.३. [स्वयम्-कृतपदयोः समासे छान्दसं रूपम्]

स्वात्तम् स्वेन समन्ताद् गृहीतम्, अ०—धर्मानुष्ठानस्वीकृतम् (देवहविः=देवेभ्यो हविरिव हुतद्रव्यम्) ६.१०. [सु+आङ् डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्तः। 'अच उपसर्गात्तः' इति तादेशः]

स्वादिष्ठ अतिशयेन स्वादित (ईश्वर) १.१८७.५. [स्वादुप्राति० अतिशायने इष्ठन्]

स्वादिष्ठम् अतिशयेन स्वादु (नमः=अन्नम्) १.१३६.१. [स्वादुप्राति० अतिशायन इष्ठन्]

स्वादिष्ठया अतिशयेन स्वादुयुक्तया (धारया=वाचा), भा०––सर्वरोगप्रणाशकयौषध्या २६.२५. अतिशयेन मधुरादिरसयुक्तया (गिरा=वाण्या) ३.५३.२. **स्वादिष्ठा**=अतिशयेन स्वादिता (सन्दृष्टिः=सम्यग् दृष्टिः प्रेक्षणम्) ४.१०.५. अतिशयेन स्वाद्वी (धीतिः=धीः) १.११०.१. [स्वादिष्ठमिति व्याख्यातम्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

स्वादीयः अतिशयेन स्वादु प्रियकरम् (मर्त्तभोजनम्) १.११४.६. [स्वादुप्राति० अतिशायन ईयसुन्]

स्वादु स्वादिष्ठम् (फलम्) १.१६४.२२. **स्वादुना**=मधुरादिना (रसेन) १९.१. [ष्वद आस्वादने (भ्वा०) धातोः 'कृवापाजिमि०' उ० १.१ सूत्रेण उण्]

स्वादुक्षद्मा स्वादूनि क्षद्मानि जलानि, अन्नानि यस्य सः (मनुष्यः) १.३१.१५. [स्वादु-क्षद्मन्पदयोः समासः। क्षद्मन्—अन्ननाम निघं० २.७. उदकनाम निघं० १.१२.]

स्वादुषंसदः ये स्वादून्यन्नानि भोक्तुं संसीदन्ति न्यायं कर्त्तुं सभायां वा ते (राजपुरुषाः) ६.७५.६. ये स्वादुषु भोज्याद्यन्नेषु सम्यक् सीदन्ति ते (पितरः=पालनक्षमा राजपुरुषाः) २६.४६. [स्वादूपपदे सम्पूर्वकात् षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोः क्विप्। समः सस्य मूर्धन्यश्छान्दसः]

स्वादुः सुस्वादयुक्तः (ओषधिसारः) ६.४७.१. [स्वादुरिति व्याख्यातम्। ततो मत्वर्थीयस्य लुक्]

स्वादो स्वादु (अन्नम्) १.१८७.२. [स्वादुरिति व्याख्यातम्। ततः सम्बुद्धौ रूपम्]

स्वादोः स्वादयुक्तस्य (मध्वः=मधुरादिगुणयुक्तस्य पदार्थस्य) १.८४.१०. स्वादिष्ठात् (मर्त्तभोजनात्) १.११४.६. [स्वादुरिति व्याख्यातम्]

स्वाद्म अतिस्वादुमत् (वस्तु) ३.३०.१४. स्वादिष्ठम् (मधु=रसम्) ३.३१.११. [स्वाद आस्वादने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० मनिन्]

स्वाद्म स्वादिष्ठानाम् (पितूनाम्=अन्नानाम्) १.६९.२. [स्वाद आस्वादने (भ्वा०) धातोरौणा० मनिन्]

स्वाद्मानम् स्वादिष्ठं भोगम् २.२१.६. **स्वाद्मानः**= स्वादिष्ठाः पदार्थाः १.१८७.५. [स्वाद आस्वादने (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० मनिन्]

स्वाद्वीम् सुस्वादुयुक्ताम् (ओषधीम्) १९.१. [स्वादुरिति व्याख्यातम्। ततः स्त्रियां ङीष् 'वोतो गुणवचनात्' सूत्रेण]

स्वाधीभिः शोभना आधयः सन्ति यासां ताभिर्नीतिभिः ६.३२.२. सुष्ठु-ध्यानयुक्तैः (जनैः) ५.१४.६. **स्वाधीः**= सुष्ठ्वाधीयते येन सः (सविता=परमेश्वरः) ५.८२.८. शोभनध्यानयुक्ताः प्रजाः १२.१८. यः सुष्ठु समन्ताच्चिन्तयति सः (अग्निः=राजा) ४.३.४. यः सुष्ठु समन्ताद् ध्यायति सर्वान् पदार्थान् सः (जगदीश्वरो जीवो वा) १.७०.२. सुष्ठु समन्ताद् धीयते येन सः (होतृजनः) १.६७.१. **स्वाध्यम्**=यः सुष्ठु ध्यायते तम् (रेतः=वीर्यकरं जलम्) ३३.११. सुष्ठु समन्ताद् विद्याऽधीयते यस्मिन् यस्यां वा तम् (नृपतिं विद्वांसम्) १.७१.८. **स्वाध्यः**= सुष्ठु चिन्तयन्तः (सज्जनाः) ७.२.५. सुष्ठु धीर्येषां ते (विद्यार्थिजनाः) २.२८.२. सुष्ठु आधीर्येषान्ते (विद्वज्जनाः) १.१५१.१. ये सुष्ठु समन्ताद् ध्यायन्ति ते (मर्त्तासः= मनुष्याः) ६.१६.७. ये सुष्ठु सम्यक् सर्वेषां कल्याणं ध्यायन्ति ते (विद्वज्जनाः) १.७२.८. सुष्ठु विद्याऽऽधानकर्त्तारः (विद्वांसो जनाः) ३.८.४. ये स्वाध्यायन्ति ते (सज्जनाः), प्र०—अत्र स्वाङ्पूर्वकाद् ध्यै चिन्तायाम् इत्यस्माद् 'ध्यायतेः सम्प्रसारणञ्च' अ० ३.२.१७८. अनेन वार्तिकेन क्विप् सम्प्रसारणं च १.१६.९. सुबुद्धियुक्त (प्रजाजन) आर्याभि० १.३५, ऋ० १.१.३१.९. अच्छे प्रकार ध्यानयुक्त (विद्वान् लोग) स० प्र० १०९, ३.८.४. [सु+आङ्+ध्यै चिन्तायाम् (भ्वा०) धातोः 'ध्यायतेः सम्प्रसारणञ्च' अ० ३.२.१७८. वा०सूत्रेण क्विप् सम्प्रसारणं च। अथवा सु-आधिपदयोः समासः। आधिः—आङ्+डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः 'उपसर्गे घोः किः' इति किः]

स्वान स्वनत्युपदिशति यस्तत्सम्बुद्धौ (मित्र=सभाध्यक्ष विद्वन्) ४.२७. **स्वानः**=शब्दायमानः (रथः) ५.१०.५. शब्दं कुर्वन् (अर्वः=अश्वः) १.१०४.१. शब्दः ५.२५.८. [स्वन शब्दे (भ्वा०) धातोः 'वा छन्दसी' ति नियमेन निरुपपदादपि 'कर्मण्यण्' इत्यण्। अथवा 'स्वनहसोर्वा' ३.३.६२ सूत्रेण पक्षे घञ्]

स्वानासः उपदेशकाः (सज्जनाः) ५.२.१०. [स्वन शब्दे (भ्वा०) धातोः छन्दसि निरुपपदादपि कर्मण्यण्। ततो जसोऽसुक्]

स्वानिनः बहवः स्वानाः शब्दा विद्यन्ते येभ्यस्ते (मरुतः=वायवः) ३.२६.५. [स्वानप्राति० भूम्न्यर्थ इनिः। स्वानः स्वन शब्दे (भ्वा०) धातोर्घञ्]

स्वानीत् शब्दायते २.४.६. [स्वन शब्दे (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

स्वापय निवारय, प्र०—अत्राऽन्तर्गतो णिच् 'अन्येषामपि०' इति दीर्घश्च १.१९.३. [ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

स्वापये सुखानां सुष्ठु प्राप्तये ९.२०. **स्वापी**= शयानौ (राजाऽमात्यौ) ४.४१.७. [सु+आप्लृ व्याप्तौ (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा इन्। अन्यत्र स्वापप्राति० मत्वर्थं इनिः। द्विवचनस्य पूर्वसवर्णं दीर्घः। स्वापः= ञिष्वप् शये (अदा०) धातोर्घञ्]

स्वाभुवम् यः स्वयमाभवति तम् (पदार्थम्) ५.६.३. **स्वाभुवः**=ये सुष्ठु समन्तात् परोपकारे भवन्ति ते (मित्रासः=सखायः) १.१५१.२. ये सुष्ठु समन्तादुत्तमा भवन्ति ते (विद्यावयोवृद्धा धार्मिका जनाः) ७.३०.४. ये स्वयं भवन्ति ते (इन्दवः=ऐश्वर्याणि) ४.५०.१०. [सु+आङ्+भू सत्तायाम् (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

स्वायुजः याः सुष्ठु समन्ताद् युञ्जन्ति ताः

(भानवः=सूर्यकिरणाः) १.६२.२. [सु+आङ्+युजिर् योगे (रुधा०) धातोः क्विप्]

स्वायुधम् उत्तमाऽऽयुधप्रक्षेपकुशलम् (इन्द्रं=राजानम्) ६.१७.१३. **स्वायुधाय**=शोभनान्यायुधानि यस्य तस्मै (राजपुरुषाय) १६.३६. **स्वायुधाः**=शोभनान्यायुधानि ५.५७.२. [सु-आयुधपदयोः समासः। आयुधम्=आङ्+युध सम्प्रहारे (दिवा०) धातोर्घञर्थे कः। आयुधानि उदकनाम निघं० १.१२.]

स्वायुधासः स्वकीयान्यायुधानि येषान्ते (विद्वांसो राजपुरुषाः) ५.८७.५. शोभनान्यायुधानि येषां ते (युद्धविद्याकुशला जनाः) ७.५६.११. [स्व-आयुधपदयोः सु-आयुधपदयोर्वा समासे जसोऽसुक्]

स्वायुषा शोभनमायुर्जीवनं प्राणधारणं यस्मिँस्तेन ४.२८. **स्वायुः**=शोभनश्च तदायुश्च २७.५. [सु-आयुष्पदयोः समासः। आयुष्—इण् गतौ (अदा०) धातोः 'एतेर्णिच्च' उ० २.११८. सूत्रेण उसिः। णित्वाद् वृद्धिः]

स्वारम् तापाज्जातं तेजः १३.५५. उपतापं शब्दं वा २.११.७. [स्वरः—स्वृ शब्दोपतापयोः (भ्वा०) धातोरच्। ततो जातार्थे स्वरप्राति० अण्। अन्यत्र स्वृधातोर्घञ्]

स्वावसुः स्वेषु यो वसति स्वान् वा वासयति सः (सूर्यः=विद्वज्जनः) ५.४४.७. [स्व-वसुपदयोः समासे पूर्वपदस्य संहितायां दीर्घः]

स्वावेशः स्व आवेशो यस्य सः (गृहस्थो जनः) ७.५४.१. यथाऽऽप्तः शोभनं धर्ममाविशति तथा (नेता सभाध्यक्षः) ६.२. [स्व-आवेशपदयोः समासः। आवेशः—आङ्+विश प्रवेशने (तुदा०)+घञ्]

स्वावेशा सुष्ठु समन्ताद् वेशो यस्याः सा, भा०—सदैवाऽत्युत्तमैर्वस्त्राभूषणैः संसृष्टा (स्त्री) १४.३. [सु-आङ्-वेशपदानां समासः। ततष्टाप् स्त्रियाम्। वेशः—विश प्रवेशने (तुदा०) धातोर्घञ्]

स्वासम् शोभनं मुखम् ४.६.८. [सु-आस्यपदयोः समासः। यलोपश्छान्दसः]

स्वासस्थम् सुष्ठ्वास्ते यस्मिँस्तत् (बर्हिः=अन्तरिक्षम्) २८.२१. शोभने आसे उपवेशने तिष्ठतीति तम् (यज्ञम्) २.५. [स्वासोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः। स्वासः=सु+आस उपवेशने (अदा०) धातोर्घञर्थे कः]

स्वासस्थाम् सुष्ठु आसाः प्रक्षिप्तास्तिष्ठन्ति यस्यां सा वेदिस्ताम्, प्र०—अत्र 'घञर्थे कविधानम्०' अ० ३.३.५८. इति वार्त्तिकेन कः प्रत्ययः २.२. [स्वासोपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः। ततष्टाप् स्त्रियाम्। स्वासः—सु+असु क्षेपणे (दिवा०) धातोर्घञ्]

स्वाहा या सत्क्रिया समूहाऽस्ति तया (वाण्या) १.१३.१२. सत्यभाषणयुक्ता वाक्, यच्छोभनं वचनं सत्यकथनं, स्वपदार्थान् प्रति ममत्ववचो, मन्त्रोच्चारणेन हवनं चेति स्वाहा-शब्दार्था विज्ञेयाः २.२. वेदवाणी इदं कर्म्म आह २.६. सुहुतं सुखकारि आहेश्वरः २.११. सु आहेत्यस्मिन्नर्थे २.१८. स्वकीयं पदार्थं प्रत्याह यस्यां क्रियायां सा वा २.२०. स्वं दधात्यनया सा स्वाहा क्रिया २.२९. वेदवाणी यज्ञक्रियामाहेत्यस्मिन्नर्थे सुष्ठु सत्यमाह यस्यां वाचि सा स्वकीया हृदयस्था वाग् यदाह तदेव सत्यं वाच्यं नाऽनृतमित्यस्मिन्नर्थे ३.९. शोभनं देयमादेयमाह यया सा (वेदवाणी) ३.५७. सुष्ठु जुहोति, गृह्णाति, ददाति यया क्रियया तया, सुशिक्षितया वाचा, विद्याप्रकाशिकया वाण्या, सत्यप्रियत्वादिगुणविशिष्टया वाचा ४.६. वेदवाणीप्रचाराय, परोपकारिकायै, अध्ययनाऽध्यापनविद्यायै, सत्यवाक्प्रवृत्तये, सङ्गतां प्रियां शोभनां स्तुतिप्रयुक्तां वाचम् ४.७. येभ्यो विद्यावाक् प्राप्ता भवति (विद्यायुक्ता वाणी) ४.११. सुहितं हविरन्नम् ५.४. अध्ययनाऽध्यापनराजव्यवहारकुशला वाक्, ज्योतिश्शास्त्रसंस्कारयुक्ता वाणी, व्यवहारेण धनप्रापिका दिव्यविद्यासम्पन्ना (वाणी) वा ५.१२. वेदवाणी चक्षुरिन्द्रियं वा ५.१६. सत्यकृत्यानुरूपा (वाणी), सत्कृत्यानुकूला वा (वाणी) ६.११. युद्धाऽनुकूलां शोभनां वाचं, तत्स्थानानुकूलां शोभनां वाचं वा ६.१९. बृहन्नौकारचनादिविद्यासिद्धेन यानेन, खगोलप्रकाशिकया विद्यया सम्पादितेन विमानेन, वेदवाचा, सत्सङ्गसंस्कृतया (वाण्या) वा, योगयुक्तया वाचा, ज्योतिर्बोधयुक्तया वाचा, वेदाङ्गादिविज्ञानसहितया वाचा, भूमियानाऽऽकाशयानरचनभूगोलभूगर्भखगोल-विद्यया, वैद्यकशास्त्र-बोधाऽर्हया वाचा, तद्बोधयुक्तया वाण्या, तद्गुणविज्ञापयित्र्या वाचा, यज्ञाऽनुष्ठानयन्त्ररचनविद्यया वा ६.२१. स्तुतियुक्ता वाग् यथा तथा ६.२६. उत्साहिकया वाचा ६.२९. सत्यां क्रियां, सत्यां वाचं वा ७.२. सत्यया स्वकीयया वाचा वेदवाचा वा ७.४३. वैद्यकयुद्धविद्यया, शिक्षितया वाचा वा ७.४४. श्रेष्ठक्रियया ८.१८. शास्त्रोक्तक्रियया ८.२०. धर्म्यया क्रियया ८.२१. सत्य-न्यायप्रकाशितया वाचा वा ८.२२. प्रेमोत्पादयित्र्या वाचा ८.२५. सत्यां सकलविद्यायुक्तां वाचं ८.३०. सत्यवाग्युक्तया क्रियया ८.६२. सत्या क्रिया, धर्म्या क्रिया,

पुरुषार्थयुक्ताऽध्ययनाऽध्यापनप्रवर्त्तिका क्रिया, कालविज्ञापिका वाणी, विज्ञानयुक्ता वाक्, चेतयित्रीं वाणीं, नष्टकर्मनिवारिका वाणी, पदार्थ-विज्ञापिका वाक्, योगविद्याजनिता प्रज्ञा, सर्वव्यवहारविज्ञापिका वाग् वा ६.२०. सत्यया नीत्या ६.२५. सत्यविद्यायुक्तां वाणीम् ६.२६. दानक्रियाम्, उत्साहकारिकां वाचं, दौत्यकुशलताम्, आप्तवाणीं वा ६.३५. आन्वीक्षिकीं विद्यां, सर्वोपकारिणीं नीतिं, धर्मौषधिविद्यां वा ६.३६. सुष्ठुवाचा, सत्यया नीत्यया वा २०.२. न्याययुक्तया नीत्या, प्रियया वाचा, युक्तिमत्या वाचा वा १०.३. सत्यवाक्प्रियाचरणयुक्ता विद्या, वैद्यकपुरुषार्थविद्या, व्याकरणाद्यङ्गविद्या, योगव्यवहारविद्या, ब्रह्मविद्या, विवेकविद्या, तथ्योपदेशे वक्तृत्वविद्या, तत्त्वकाव्यशास्त्रादिविद्या, सूक्ष्म-पदार्थविद्या, राजनीतिविद्या वा १०.५. वैद्यकशास्त्रबोधजनितां क्रियां, योगशान्तिदां वाचं, सुशिक्षायुक्तां वाचमुपदिष्टिम् १०.२३. क्रियायोगरीत्या ११.६६. सत्या क्रिया, साध्वी क्रिया, योगाभ्यासादिक्रिया, धनप्रापिका क्रिया, कालविज्ञापिका क्रिया, वैराग्ययुक्ता क्रिया, सत्योपदेशिका वाक्, सत्या वाणी, सुष्ठूपदेशः, उत्तमा वाक्, राजव्यवहारसूचिका क्रिया, राजधर्मद्योतिका नीतिः १८.२८. सुष्ठु रक्षणक्रियया, उत्तमरीत्या, निदानादिविद्यया, सुष्ठुविद्यया वा २१.४०. सुखप्रापिका क्रिया २२.६. विचारयुक्ता वाणी, सत्यभाषणादियुक्ता भारती, आप्तोपदेशयुक्ता गीः २२.२३. शुद्धिकारिका क्रिया २२.२५. उत्तमयज्ञक्रिया, उन्नता क्रिया, तदनुरूपा क्रिया २२.२६. सद्विद्यायुक्ता प्रज्ञा २३.२. ब्रह्मचर्यक्रियया, सुशीलतायुक्तया क्रियया वा २५.१. सत्यया क्रियया वाचा वा ३२.१३. सत्याऽऽचरणया क्रियया, भा०—ईश्वराज्ञापालनेन, विदुषां सेवया सत्कारेण ३२.१६. स्वकीयया क्रियया ३६.७. भा०—सत्या मतिः, सत्या वाक्, सत्या क्रिया ३६.११. भा०—घृतेन्धनप्रक्षेपः ३६.१०. प्रत्यक्षलक्षणया वेदस्थया वाचा ४.६. वाचं विद्युतं वा ४.१८. यया क्रियया सुहुतं यजति तया ४.२२. सुहुतं जुहोतीत्यर्थे ५.१५. क्रियायोगरीत्या ११.६६. सत्येन व्यवहारेण ११.६६. परमोत्तमया क्रियया २१.४०. हवि अर्थात् पुष्ट्यादि कारक घृतादि उत्तम पदार्थों के होम करने से स० प्र० ३९५. स्वाहया सत्यविद्यान्वितया (मेधया) पं० वि०, स्वमेव पदार्थं प्रति सत्यकथनम् पं० वि०, सत्यमानं, सत्यभाषणं सत्याचरणं सत्यवचनश्रवणञ्च ऋ० भू० २४०, ३.४५. वेदोक्ता वाक् ७.३. सुष्ठ्वाहुतं हविः करोत्यनया सा (वाक्) २.२१. सु आहाऽनया सा (वाणी) २.२०. ईश्वरस्य स्वा वागाह ३.१०. हुतामाहुतिम् ३.१०. सत्यवचनरूपा क्रिया, अ०—सत्यारूढा क्रिया ७.६. शोभनं हविर्जुहोति यया क्रियया सा २.२२. शोभनाऽन्नेन सुशिक्षितया वाचा वा ३.४.११. जैसा हृदय में ज्ञान वैसा वाणी से भाषण आर्याभि० २.१३, १८.२६. प्रशंसिता वाक् ३८.१८. [स्वाहा वाङ्नाम निघं० १.११. स्वाहा—स्वाहेत्येतत् सु आहेति वा, स्वा वागाहेति वा, स्वं प्राहेति वा, स्वाहुतं हविर्जुहोतीति वा नि० ८.२०. सु-आहपदयोः समासे स्त्रियां टाप्। 'मयूरव्यंसकादयश्चे' ति समासः। आह—ब्रूञ् व्यक्तायां वाचि (अदा०) धातोर्लटि 'ब्रुवः पञ्चानाम्०' अ० ३.४.८४. सूत्रेण तिपो णल् आहादेशश्च। अथवा सु+आङ्+हु दानादानयोः (जु०) धातोर्डः। ततः स्त्रियां टाप्। अथवा स्वं दधातीति विग्रहे स्वोपपदे आङ्पूर्वाद् डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोश्छान्दसं रूपम्। स्वाहाकारः—स प्रजापतिर्विदाञ्चकार स्वो वै मा महिमाहेति स स्वाहेत्येवाजुहोत्तस्मादु स्वाहेत्येव हूयते श० २.२.४.६. हेमन्तो वाऽऋतूनां स्वाहाकारो हेमन्तो हीमाः प्रजाः स्वं वशमुपनयते श० १.५.४.५. स्वाहा वै सत्यसम्भूता ब्रह्मणो दुहिता ब्रह्मप्रकृता लातव्यसगोत्रा त्रीण्यक्षराण्येकं पदं त्रयो वर्णाः शुक्लः पद्मः सुवर्ण इति ष० ४.७. अन्तो वै यज्ञस्य स्वाहाकारः श० १.५.३.१३. यज्ञो वै स्वाहाकारः श० ३.३.२.७. अहुतमिवैतद् यदस्वाहाकृतम् श० ४.५.२.१७ अनिरुक्तो वै स्वाहाकारः श० २.२.१.३. स्वाहा वै सत्यसम्भूता ब्रह्मणा प्रकृता लामगायनसगोत्रा द्वे अक्षरे एकं पदं त्रयश्च वर्णाः शुक्लः पद्मः सुवर्ण इति गो० पू० ३.१६. एष वै स्वाहाकारो य एष (सूर्यः) तपति श० १४.१.३.२६. अन्नं हि स्वाहाकारः श० ६.६.३.१७. तस्यै (वाचे) द्वौ स्तनौ उपजीवन्ति स्वाहाकारं च वषट्कारं च श० १४.८.६.१.]

स्वाहाकृतम् सत्क्रियया निष्पादितम् (हव्यं=ग्रहीतुमर्हं द्रव्यम्) २.३.११. वेदवाणीनिष्पादितम् (हव्यम्) १७.८८. सत्येन निष्पादितं कृतहोमं वा (हविः=अत्तव्यमन्नादिकम्) २९.३६. **स्वाहाकृतस्य**=सत्यक्रियानिष्पन्नस्य (घर्मस्य=यज्ञस्य) ३९.१०. सत्यवाङ्निष्पन्नस्य धर्मस्य १.११०.१. **स्वाहाकृतः**=सत्यक्रियया निष्पन्नः (विद्वज्जनः) २२.३. **स्वाहाकृतेन**=सुष्ठु संस्कारक्रियया निष्पादितेन (हविषा=दातुमर्हेण पदार्थेन) २९.११. [स्वाहा-कृतपदयोः समासः। स्वाहेति व्याख्यातम्]

स्वाहाकृतानि सत्यक्रियया निष्पादितानि (हव्यानि=ज्ञानानि) १.१४२.१३. [स्वाहा-कृतपदयोः समासः]

स्वाहाकृताः याः क्रियया सुसंस्कृताः क्रियन्ते ताः (आपः=जलानि) ४.१३. याः स्वाहा सत्यां क्रियां कुर्वन्ति ताः (सभासत्स्त्रियः) १०.२६. **स्वाहाकृते**= सत्यवाचमुपगते व्यवहारे, अ०—द्यावापृथिव्यौ ६.१६. [स्वाहा-कृतापदयोः समासः। अन्यत्र स्वाहोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि बाहु० औणा० क्तः। ततः स्त्रियां टाप्]

स्वाहाकृतीनाम् सत्यवाक्क्रियाऽनुष्ठानानाम् (भा०—सत्क्रियाणाम्) २८.११. **स्वाहाकृतीषु**=स्वाहया कृतयः क्रिया येषु व्यवहारेषु तेषु १.१८८.११. **स्वाहाकृतीः**=वाण्यादिभिः कृताः क्रियाः २८.३४. [स्वाहा-कृतिपदयोः समासः। प्राणा वै स्वाहाकृतयः कौ० १०.५. प्रतिष्ठा वै स्वाहाकृतयः ऐ० २.४.]

स्वाहुत सुष्ठु सत्कृत (अग्ने=राजन्) ७.१६.७. सुष्ठ्वादत्तविद्य (भा०—अग्न्यादिपदार्थविद्याविज्जन) ३३.१४. **स्वाहुतम्**=सुष्ठ्वाहुतम् (अग्नि=विद्युतम्) ७.१२.१. यः सुष्ठ्वाहूयते तम् (अग्नि=विद्वांसम्) १.४४.४. **स्वाहुतः**=सुष्ठु समन्ताद् हुत आदत्तः सन् (भौतिकोऽग्निः) १५.३३. सुष्ठु-मानेन कृताऽऽह्वानः (अग्निः=वह्निः) ६.२७.५. सुष्ठु निमन्त्रितो विद्वान् १५.३४. यः सुखेनाऽऽहूयते सः (विद्वज्जनः) १.४४.६. [सु-आहुतपदयोः समासः। आहुतः—आङ्+हु दानादानयोः (जु०) धातोः क्तः। अथवा सु+आङ्+ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तः। 'हलः' सूत्रेण प्राप्तो दीर्घो न भवति छान्दसत्वात्। छान्दसं ह्रस्वत्वं वा]

स्वित् प्रश्ने २३.६. वितर्के १७.१८. अपि ३३.७४. सवितर्कम् १७.१८.

स्विते सुष्ठु ईयते प्राप्यते येन व्यवहारेण तस्मिन्, समीक्षा—इदं पदमवैयाकरणेन महीधरेण लेट्-लकारस्य रूपमित्यशुद्धं व्याख्यातम् ५.५. [सु-इतपदयोः समासः। इतः=इण् गतौ (अदा०) धातोः क्तः]

स्विध्मा सुष्ठु इध्मा सुखप्राप्तिर्यया सा (वनधृतिः= वनानां धृतिः) १.१२१.६. [सु-इध्मापदयोः समासः। इध्मा=ञिइन्धी दीप्तौ (रुधा०) धातोः 'इषियुधीन्धि०' उ० १.१४५. सूत्रेण मक्। ततः स्त्रियां टाप्। धातूनामनेकार्थकत्वादत्र प्राप्त्यर्थ इन्धी]

स्विन्नः स्वेदयुक्तः (मनुष्यः) २०.२०. [ञिष्विदा गात्रप्रक्षरणे (दिवा०) धातोः क्तः। 'रदाभ्याम्०' इति नत्वम्]

स्विषुः शोभना इषवो यस्य सः (वीरजनः) ५.४२.११ [सु-इषुपदयोः समासः]

स्विष्टकृत् यः शोभनमिष्टं करोति सः (भगवान्) २.६. सुष्ठु सुखकारी (इन्द्रः=राजा), शोभनेष्टकारी (अग्निः=वह्निः) २१.५८. उत्तमेष्टकारी (अग्निः) २८.२२. [स्विष्टोपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। 'ह्रस्वस्य पिति०' इति तुक्। स्विष्टम्=सु-इष्टपदयोः समासः। स्विष्टकृत्—(अग्निः) तदेभ्यः (देवेभ्योऽग्नि) स्विष्टमकरोत्तस्मात् (अग्नये) स्विष्टकृतऽइति (क्रियते) श० १.७.३.६. अग्निर्हि स्विष्टकृत् श० १.५.३.२३. रुद्रः स्विष्टकृत् श० १३.३.४.३. रुद्रियः (=रुद्रदेवत्यः) स्विष्टकृत् (यागः) श० १.७.३.२१. क्षत्रं वै स्विष्टकृत् श० १२.८.३.१६. तपः स्विष्टकृत् श० ११.२.७.१८. अयमेवा-वाङ्प्राणः स्विष्टकृत् श० ११.१.६.३०. तृतीयसवनं वै स्विष्टकृत् श० १.७.३.१६. वास्तु स्विष्टकृत् श० १.७.३.१८. प्रतिष्ठा वै स्विष्टकृत् ऐ० २.१०. कौ० ३.८. एषा (उत्तरा=उदीची) हि दिक् स्विष्टकृत् श० २.३. १.२३.]

स्विष्टकृतम् स्विष्टेन कृतम्, भा०—स्वेष्ट-साधकम् (अग्निम्) २१.४७. [स्विष्ट-कृतपदयोः समासः। स्विष्टम्= सु-इष्टपदयोः समासः। इष्टम्=इषु इच्छायाम् (तुदा०)+क्तः]

स्विष्टम् शोभनञ्च तदिष्टम् (पदार्थम्), अतिशयेनाऽभीप्सितम् (कार्यम्) २८.२२. [सु-इष्टपदयोः समासः। इष्टम्=इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोः क्तः]

स्विष्टः शोभनश्चाऽसाविष्टश्च सः (इन्द्रः=राजा) शोभनमिष्टं यस्मात् सः (अग्निः=वह्निः) २१.५८. शोभनमिष्टं येभ्यस्ते (देवाः=विद्वज्जनाः) २१.५८. **स्विष्टेन**=शोभनेनेष्टेन (यज्ञेन) २५.२८. [सु-इष्टपदयोः समासः। स्विष्टम्=यद्वै यज्ञस्यान्यूनातिरिक्तं तत्स्विष्टम्। श० ११.२.३.६.]

स्विष्टाः शोभनानीष्टानि याभ्यस्ताः (योगिन्यो विदुष्यः) ७.१५. [सु-इष्टपदयोः समासे स्त्रियां टाप्]

स्विष्टिम् शोभना इष्टिर्यस्यास्ताम् (अग्नेर्जिह्वां= पावकस्य ज्वालाम्) २७.१८. [सु-इष्टिपदयोः समासः। इष्टिः=यज देवपूजासंगतिकरणदानेषु (भ्वा०) इषु इच्छायाम् (तुदा०) धातोर्वा स्त्रियां क्तिन्]

स्विष्टे शोभनमिष्टं याभ्यां ते (अ०—सुखे) २.१६. [सु-इष्टपदयोः समासः]

स्वेतन सुष्ठु समन्तात् प्राप्नुत १७.८४. [सु+आङ्+इण् गतौ (अदा०) धातोर्लोट्। तस्य तनबादेशश्छान्दसः]

स्वेदम् प्रस्वेदमिव (वर्ष) ५.५८.७. **स्वेदस्य**=पुरुषार्थेन जायमानस्य (विद्वज्जनस्य) १.८६.८. [ञिष्विदा स्नेहनमोचनयोः (भ्वा०) धातोर्घञ् । ञिष्विदा गात्रप्रक्षरणे (दिवा०) धातोर्वा घञ् । स्वेदः तद् यदब्रवीन् महद्वै यज्ञं सुवेदमविदामहे इति तस्मात्सुवेदोऽभवत्तं वा एतं सुवेदं सन्तं स्वेद इत्याचक्षते गो० पू० १.१.]

स्वेदुहव्यैः स्वानि इदूनि ऐश्वर्याणि हव्यानि दातुमादातुं योग्यानि येभ्यो दुग्धादिभ्यस्तैः १.१२१.६. स्वेन प्रकाशितदानाऽऽदानैः १.१७३.२. [स्व-इदु-हव्यपदानां समासः । इदु=इदि परमैश्वर्ये (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० कुः । नुमोऽभावश्छान्दसः । हव्यम्=हुदानादानयोः (जु०) धातोर्यत्]

स्वेषते सुष्ठु समन्तात् प्राप्नोति ५.६७.५. [सु+इष गतौ (दिवा०) धातोर्लट् । विकरणव्यत्ययेन शप्]

स्वैतवः सुष्ठु गमनाः (विद्वांसो जनाः) ५.४१ ९. [सु-ऐतुपदयोः समासः । ऐतुः=इण् गतौ (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० तुन् णिच्च]

स्वोजः सुष्ठु पराक्रमो यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=गृहस्थिपुरुष) ६.२२.६. **स्वोजाः**=शोभनमोजः पराक्रमोऽन्नं वा यस्य सः (इन्द्रः=विद्युदिव राजा) ७.२०.३. [सु-ओजस्पदयोः समासः । ओजस् बलनाम निघं० २.९. उदकनाम निघं० १.१२.]

स्वौपशा उप समीपे श्यति तनूकरोति यया पाकक्रियया सोपशा, तस्या इदं कर्म्म औपशं, तच्छोभनं विद्यते यस्याः सा (परिचारिका स्त्री) ११.५६. [सु-औपशपदयोः समासे स्त्रियां टाप् छान्दसः । औपशम् उपशाप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् । उपशा=उप+शो तनूकरणे(दिवा०) धातोः 'आतश्चोपसर्गे' इति स्त्रियामङ्]

ह किल १.११६.३. खलु १.६३.४. प्रसिद्धम् १.६३.५. एव ३१.१६. निश्चयेन १.५७.२. स्फुटम् १.३७.१३. वैसे ही सं० त्रि० १०५, ५.४१.७. [अह इति च ह इति विनिग्रहार्थीयौ पूर्वेण संयुज्येते—अयमहेदं करोत्वयमिदं ह करिष्यतीदं न करिष्यति नि० १.५.]

हत घ्नन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययो लडर्थे लोट् च १.२३.९. **हतम्**=नाशयतम् १.१८२.४. हन्यातं, विनश्यतम् ८ ५३. **हतः**=हिंसतः ६.६०.६. **हथ**=भग्नाऽङ्गाञ्छत्रून् कुरुथ १.३९.३. **हन्**=हंसि ६.२६.५. हन्ति ५.२९.२. हन्यात् ५.२९.४. **हनति**=हन्ति, प्र०—अत्र 'वहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् न ३३.९६ **हनन्त**=घ्नन्ति ७.५६.२२. **हनः**=हन्याः १.८१.३. **हनाम**=हिंसेम १.१६१.५. **हन्ति**=नाशयति, दूरीकरोति १.१९१.२. **हन्तु**=दूरीकुर्वन्तु ३.३३.१३. **हन्मः**=संहितानि निमीलितान्यदर्शकानि कुर्मः ७.५५.६. **हंसि**=नाशयसि प्राप्नोषि वा ७.१९.४. हन्ति, प्र०—अत्र पुरुषव्यत्ययः ५.८३.९.[हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लोट् । अन्यत्र लट् लङ् लेट् चापि । हनति गतिकर्मा निघं० २.१४.]

हतम् विनष्टम् (रक्षः=राक्षसं जनम्) ९.३८ **हतः**=नष्टः (पाप्मा=अपराधः) ६.३५. विनष्टः (दुर्जनः) ९.३८. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्तः]

हतवृष्णीः हतो वृषा मेघो यासां ताः (आपः=जलानि) ४.१७.३. [हत-वृषन्पदयोः समासे स्त्रियां ङीप् । वृषन्=वृषु सेचने (भ्वा०) धातोरौणा० कनिन्]

हताऽघशंसौ हता अघशंसाः स्तेना याभ्यां तौ, भा०—स्तेननाशकौ (देवा=वायुवह्नी) २८.१७. [हत-अघशंसपदयोः समासः । अघशंसः स्तेननाम निघं० ३.२४.]

हतासः नष्टाः (देवशत्रवः=विदुषामरयः) ६.५९.१. [हतप्राति० जसोऽसुक् । हतः=हन हिंसागत्योः (अदा०)+क्तः]

हताः विनाशिताः (अमित्राः=शत्रवः) १.१३३.१. **हते**=हिंसिते (योषे=विरुद्धे स्त्रियौ) १.१०४.३. [हत इति व्याख्यातम् । अन्यत्र हतप्राति० स्त्रियां टाप्]

हत्नवे हननकरणाय १.२५.२. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृहनिभ्यां क्त्नुः' उ० ३.३०. सूत्रेण क्त्नुः]

हत्वी हत्वा २.२०.८. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः क्त्वा । 'स्नात्व्यादयश्च' अ० ७.१.४९. इतीदन्तत्वम्]

हथैः हननैः ४.३०.२१. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हनिकुषिनी०' उ० २.२. इति क्थन् । हथः हननात् नि० ६.२७.]

हनिष्ठः अतिशयेन हन्ता (इन्द्रः=राजा) ६.३७.५. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तात् 'तुश्छन्दसि' सूत्रेणातिशायन इष्ठन् । 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः]

हनिष्यन् हननं करिष्यन् (पुत्रः=सन्तानः) ४.१८.११. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'लृटः सद्वा' इति शतृ]

हनीयसे दुष्टानामतिशयेन हन्त्रे विनाशकाय (जनाय) १६.४०. [हन्तृप्राति० 'तुश्छन्दसी' त्यतिशायन ईयसुन् । ततः तृचो लोपः 'तुरिष्ठेमेयस्सु' सूत्रेण]

हनुभ्याम् ओष्ठमूलाभ्याम् ११.७८. मुखैकदेशाभ्याम् २५.१. **हनू**=मुखनासिके ५.३६.२. मुखपार्श्वौ ४.१८.९.

हन्वोः=मुखाऽवयवयोः २४.१. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'शॄस्वृस्निहि०' उ० १.१०. सूत्रेण उः। हनुर्हन्तेः नि० ६.१७.]

हन्तन घ्नत २.३४.६. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्लोट्। तप्रत्ययस्य तनबादेशश्छान्दसः]

हन्तवे हन्तुम् ३.३७.६. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवेन्]

हन्तवै हन्तुम् ५.३१.४. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोस्तुमर्थे तवैः प्रत्ययः]

हन्ता नाशकः (विद्वान् पुरुषः) १२.५. शत्रूणां घातकः (इन्द्रः=सूर्य इव राजा) ७.२०.२. **हन्त्रे**=यो दुष्टान् हन्ति तस्मै (जनाय) १६.४०. [हन् हिंसागत्योः (अदा०) धातोः कर्त्तरि तृच्]

हन्तोः हन्तुम् ३.३०.१०. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोस्तुमर्थे तोसुन् छान्दसः। हन्तोः हननाद् नि० ६.२.]

हन्त्वासः हन्तुं योग्याः (रिपवः=शत्रुजनाः) ३.३०.१५. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० त्वन्। जसोऽसुक्]

हन्मना हननेन ७.५९.८. हन्ति येन तेन (मनसा) १.३३.११. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृतो बहुलम् वा' इति करणे मनिन्। 'न संयोगाद्वमन्तात्' अ० ६.४.१३७. इत्यल्लोपो न भवति]

हन्वेव यथा हनू तथा १.१६८.५. [हनू-इवपदयोः समासः]

हयन्ता गच्छन्तौ (अश्विनौ=सभासेनाधीशौ) १.११६.१८. [हयति गतिकर्मा निघं० २.१४. हय गतौ (भ्वा०) धातोः शत्रन्ताद् द्विवचनस्याकारादेशः]

हयः सुशिक्षितोऽश्वः ५.४६.१. हय इव शीघ्रगामी (अग्निः=सूर्यरूपः) २२.१९. ज्ञानवर्धनम्, प्र०—हि गतिवृद्ध्योः इत्यस्मादौणादिकोऽसुन् प्रत्ययः ७.४७. [हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोः पचाद्यच्। अथवा हि धातोरौणा० असुन्। हयः अश्वनाम निघं० १.१४. हयो भूत्वा देवानवहत् श० १०.६.४.१. हयः—(हेऽश्व त्वं हयोऽसि तां० १.७.१.]

हये सम्बोधने २.२९.४

हर निस्सारय २५.३५. **हरयन्त**=कामयन्ताम् ४.३७.२. **हराणि**=प्रयच्छानि ३.५०. **हरासि**=हर, प्रयच्छ, प्र०—अयं लेट्प्रयोगः ३.५०. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लोट् अन्यत्र लेट्। हरयन्त-प्रयोगे हरतेर्णिजन्ताल्लङ्। अडभावश्छान्दसः]

हरन्तः प्रापयन्तः (जनाः) ऋ० भू० २६८, अथर्व० १९.७.७. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः शतृ]

हरन्निव भा०—यथा सूर्यो मेघमण्डले जलभारं नयन् २३.२७. [हरन्-इवपदयोः समासः। हरत्=हृञ् हरणे (भ्वा०)+शतृ]

हरयः हरन्ति ये ते किरणाः, प्र०—'हृपिषिरुहि०, उ० ४.११८ इति हृधतोरिन् प्रत्ययः १.१६.१. हरणशीलाः (रश्मयः) १.१६४.४७. पुरुषार्थिनो मनुष्याः ३.५.२. सुशिक्षितास्तुरङ्गा इवाऽग्न्यादयः ३.४३.६. अश्वा इवेन्द्रियाण्यन्तःकरणप्राणाः ६.४७.१८. **हरिभिः**=हरणाऽऽहरणशीलैर्वेगवद्भिः किरणैः १.१६.४. प्रयत्नवद्भिर्मनुष्यैरिवाऽश्वैः किरणैर्वा ३.४५.१. उत्तमैर्वीरपुरुषैः ४.२९.१. सदगुणाकर्षकैर्मनुष्यैस्सह ७.२९.२. प्रशस्तैर्नरैः सह ४.२०.२. **हरिभ्याम्**=धारणाकर्षणवेगगुणैर्युक्ताभ्यां तुरङ्गाभ्याम् जलाग्निभ्यां वा ३४.१९. अश्वाभ्यामिव पठनाऽभ्यासाभ्याम् ४.१५.७. धारणाकर्षणाभ्याम् १.७६.३. वाय्वग्नीभ्याम् ३.४३.२. हरणशीलाभ्यां हस्ताभ्याम् ५.३६.५ अध्यापकोपदेशकाभ्यां मनुष्याभ्याम् ६.२३.४. **हरिम्**=हयम् १.१२१.८. हरमाणम् अद्रिबुध्नं=मेघाकाशम्) १३.४२. **हरिः**=यो हरते वहते यथायोग्यं गृहाश्रमव्यवहारान् सः (गृहपतिः) ८.११. मनोहारी चन्द्रो बालो वा ३३.५. हरणशीलो वायुः ३.४४.३ हरत्युष्णतामिति (चन्द्रः) १.९५.१. आशुगन्ता, सर्वेभ्यो ज्येष्ठः (विद्युद्रूपोऽग्निः) ३८.२२. **हरी**=अविद्याया हन्तारौ (अध्यापकोपदेशकौ) ४.१५.८. तुरङ्गाविवाऽग्निजले ४.३३.१०. धारणाकर्षणकर्माणौ (केतू=किरणौ) २.११.६. वायुविद्युतौ ४.३५.५. हरणशीलावाकर्षणवेगगुणौ (रथे=याने) १.६.२. व्याप्तिहरणशीलावश्वौ १.१०.३. हरति याभ्यान्तौ कृष्णशुक्लपक्षौ वा पूर्वपक्षाऽपरपक्षौ वा १.१६.२. बलपराक्रमौ धारणाकर्षणे वा ३.५२. यानहारकौ (अश्वौ) ३.३५.५. सद्व्यवहारहरणशीलसेनान्यायप्रकाशौ १.६३.२. सूर्यस्य प्रकाशाऽऽकर्षणे १.१२१.८. यौ यानानि हरतस्तौ (अश्वौ) १.१७४.४. धारणाकर्षणगुणौ १.१६२.२१. संयुक्तावश्वाविव राजप्रजाजनौ ६.४०.१. **हर्योः**=हरणाहरणगुणयोः (इन्द्रयोः=वायुसूर्ययोः) १.७.२. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः 'हृपिषिरुहि०' उ० ४.११८. सूत्रेण इन्। हरी इन्द्रस्य निघं० १.१५. हरयः मनुष्यनाम निघं० २.३. हरिः सोमो हरितवर्णः। अयमपीतरो हरिरेत मादेव नि० ४.१९.

हरयः हरणाः (आदित्यरश्मयः) नि० ७.२४. हरिः—(ऋ० ६.४७.१८. युक्ता ह्यस्य (इन्द्रस्य) हरयश्शतादशेति सहस्रं हैत आदित्यस्य रश्मयः । तेऽस्य युक्तास्तैरिदं सर्वं हरति । तद् यदेतैरिदं सर्वं हरति तस्माद्धरयः(=रश्मयः) । जै० उ० १.४४.५. प्राणो वै हरिः स हि हरति । कौ० १७.१. एष वै वृषा हरिर्य एष (आदित्यः) तपति श० १४.३.१.२६. हरी—(इन्द्रस्य) ऋक्सामे वा इन्द्रस्य हरी ताभ्यां हीदं सर्वं हरति ष० १.१.]

हरसा हरति येन तेन बलेन १९.८८. ज्वलितेन तेजसा १३.४१. ज्वलनेन, प्र०—हर इति ज्वलतो नाम निघं० १.१७, १२.१६. **हरसे**=हरति पापानि यस्तस्मै (ईश्वराय) ३६.२०. यो दुःखं हरति तस्मै (सभापतये) १७.११. [हृ हरणे (भ्वा०) धातोरौणा० असुन् । हरः ज्वलतो नाम निघं० १.१७. क्रोधनाम निघं० २.१३. पदनाम निघं० ४.१. वीर्यं वै हर इन्द्रोऽसुराणां सपत्नानां समवृङ्क्त श० ४.५.३.४. हर —(यजु० १३.४१) (=अर्चिः) परिवृङ्ग्धि हरसा माभिमंस्था इति पर्येनं वृङ्ध्यर्चिषा मैनं हिंसीरित्येतत् । श० ७.५.२.१७. हरः=हरो हरतेर्ज्योतिर्हर उच्यते नि० ४.१९]

हरस्वती बहुहरणशीला सेना २.२३.६. [हरस् इति पूर्वपदे व्याख्यातम् । ततो मतुबन्तात् स्त्रियां ङीप् । हरस्वत्यः नदीनाम निघं० १.१३]

हरिकेशम् हरयो हरणशीलाः केशा रश्मयो यस्मात्तम् (अग्नि=पावकम्) ३.२.१३. **हरिकेशः**=हरणशीला हरितवर्णाः केशा इव केशाः प्रकाशाः यस्य सः (सूर्यरश्मिः=सूर्यस्य किरणः), प्र०—अत्र 'क्लिशेरन् लो लोपश्च' उ० ५.५३. इत्यन् लकारलोपश्च १५.१५, हरितवर्णः (सूर्यरश्मिः) १७.५८. **हरिकेशाय**=हरिता केशा यस्य तस्मै (सेनाधीशाय) १६.१७. **हरिकेशेभ्यः**=हरयो हरणशीलाः सूर्यरश्मयो येषु तेभ्यः (वृक्षेभ्यः) १६.१७. हरयोः हरिताः केशा येषां तेभ्यो वृक्षेभ्यः १६.४०. [हरिकेशपदयोः समासः । हरिरिति व्याख्यातम् । केशः=क्लिश उपतापे (दिवा०) धातोः 'क्लिशेरन् लो लोपश्च' उ० ५.३३. सूत्रेणान् ललोपश्च । केशा रश्मयः ।'''काशनाद्वा प्रकाशनाद्वा नि० १२.२५. हरिकेशः—(यजु० १५.१५.) यद्धरिकेश इत्याह हरिरिव ह्यग्निः श० ८.६.१.१६.]

हरिणस्य हर्त्तुं शीलस्य वीरस्य २९.१२. **हरिणः**=पशुविशेषः २३ ३०. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः 'श्यास्त्याहृञविभ्य इनच्' उ० २.४६. सूत्रेण इनच् । हरिणः—(यजु० २३.३०.) राष्ट्रं हरिणः श० १३.२.९.८.]

हरिणीः प्रशस्तो हरो हरणं विद्यते यासां ताः (स्त्रियः) २३.३७. [हरप्राति० प्रशंसायामर्थ इनिः । ततः स्त्रियां ङीप् । हरः=हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोरप् । हरितप्राति० वा स्त्रियां 'वर्णादनुदात्तात्तोपधात्तो नः' अ० ४.१.३९. सूत्रेण ङीप् तस्य नकारादेशश्च । हरिणी (सूची) ऊर्ध्वा हरिण्यः (सूच्यः) । तै० ३.९.६.५. हरिणी (=सुवर्णमयी) द्यौः । गो० उ० २.७. दिवो (रूपं) हरिण्यः (सूच्यः) तै० ३.९.६.५. हरिणीव हि द्यौः श० १४.१.३.२९. विड् वै हरिणी तै० ३.९.७.२.]

हरितम् कमनीयम् (विश्वम्) ३.४४.४. अग्न्यादिभिर्वाहितम् (रथं=रमणीयं यानम्) ३.४४.१. हरितः=ये हरन्त्युदकादिकं ते (किरणाः) ५.४५.१०. दिशौ इव (देवाः) ७.४२.२. रश्मीन् १.१२१.१३. हरितवर्णाः किरणाः ५.२९.५. हरन्ति यास्ता ज्वालाः १.१४.१२. हरणशीला दिशः ३३.३८. ह्रियन्ते पदार्था यासु ता दिशः ३३.३७. दिश इव व्याप्ताः किरणाः ४.१३.३. अङ्गुलयः ४.६.९. यैः किरणैः रसान् हरन्ति त आदित्यरश्मयः १.५०.८. दिशो विदिशः १.१३०.२. **हरितोः** हरणशीलयोर्गुणयोः ३.४४.३. [हरित्=हृञ् हरणे (भ्वा०) धातो- 'हृसृरुहि०' उ० १.९७. सूत्रेण इतिः प्रत्ययः । हरितः हरणानादित्यरश्मीन् हरितोऽश्वानिति वा नि० ४.११. हरितः दिङ्नाम निघं० १.६. नदीनाम निघं० १.१३. अङ्गुलिनाम निघं० २.५. हरित आदित्यस्य निघं० १.१५. हर्यति कान्तिकर्मा (निघं० २.६. धातोर्वा रूपम् । हरितः—दिशो वै हरितः श० २.५.१.५.]

हरितः हरितादिवर्णः (वृषः=सूर्यः) ३.४४.४. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः 'हृश्याभ्यामितन्' उ० ३.९३. सूत्रेण इतन्]

हरिता हरणशीलावश्वौ ६.४७.१९. [हरित इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

हरित्याय हरितेषु सरसेषु आर्द्रेषु भवाय (भा०—हरितत्वकारकाय वायवे) १६.४५. [हरित इति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत्]

हरिधायसम् या हरीन् किरणान् दधाति ताम् (द्यां=प्रकाशम्) ३.४४.३. [हरिरिति व्याख्यातम् । तदुपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरौणा० असुन् णिच्च]

हरिप्रिय यो हरीन् हरणशीलान् प्रीणाति तत्सम्बुद्धौ

(इन्द्र=ऐश्वर्ययुक्तमित्रजन) ३.४१.८. [हरि-प्रियपदयोः समासः]

हरिमाणम् हरणशीलं रोगम् १.५०.१२. सुखहरणशीलम् (चोरादिकम्) १.५०.११. चित्ताकर्षकं व्याधिम् १.५०.१२ [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः 'हृमृधृसृस्तृशृभ्य इमनिच्' उ० ४.१४८. सूत्रेण इमनिच्]

हरियूपीयायाम् हरीन् मुनीनिच्छतां पीयायां पानक्रियायाम् ६.२७.५, [हरियु-पीयापदयोः समासः पूर्वस्य दीर्घः। हरियु—हरिपदादिच्छायां क्यजन्तात् ताच्छील्य उः। पीया=पीङ् पाने (दिवा०) धातोर्बाहु० औणा० यक्। ततः स्त्रियां टाप्]

हरियोगम् हरीणामश्वादीनां योगो यस्मिँस्तम् (रथम्) १.५६ १. [हरि-योगपदयोः समासः]

हरियोजनाय हरीणां मनुष्याणां योजनाय समाधानाय १.६२.१३. [हरि-योजनपदयोः समासः। योजनम्=युज समाधौ (दिवा०) धातोर्ल्युट्। हरयः मनुष्यनाम निघं० २.३.]

हरिवते प्रशस्ताऽश्वादियुक्ताय (राज्ञे) ३.५२.७. **हरिवः**=प्रशस्ता हरयोऽश्वा विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=विद्वज्जन) २०.८९. प्रशस्तौ हरी विद्येते यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ३४.१९. विद्वत्सङ्गप्रिय (इन्द्र=राजन्) ४.२१.११. प्रशस्ता हरयो मनुष्या विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ६.१९.६. प्रशस्तमनुष्ययुक्त (इन्द्र=नृप) ६.४१.३. प्रशंसिताऽश्व (मनुष्य) ४.१६.२१. वेगाद्यश्ववन्, हरयो हरणनिमित्ताः प्रशस्ताः किरणा विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=वायो सूर्य वा), प्र०—अत्र प्रशंसायां मतुप् 'मतुवसो रुः सम्बुद्धौ छन्दसि' इत्यनेन रुत्वविसर्जनीयौ 'छन्दसीरः' इत्यनेन वत्वम्। हरीति इन्द्रस्य नाम निघं० १.१५, १.३.६. प्रशस्ता हरयः किरणा इवाऽश्वा विद्यन्ते यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ३३.६३. प्रशस्ताऽश्वयानयुक्त (विद्वज्जन) ३.३०.२. प्रशस्तविद्यार्थियुक्त (इन्द्र=विद्वज्जन) ४.२२.११. प्रशस्ता हरयो हरणगुणा विद्यन्ते यस्मिँस्तत्सम्बुद्धौ (विद्वज्जन) १.१६५.३. उत्तमाऽमात्ययुक्त(राजन्) ५.३६.४. बहुसेनाङ्गयुक्त (इन्द्र=राजन्) ४.२०.११. धारणाकर्षणादियुक्त (इन्द्र=सज्जन) १.१६७.१. हरयोऽश्वहस्त्यादयः प्रशस्ताः सेनासाधका विद्यन्ते यस्य सः हरिवान्, तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=वीरजन) १.३३.५. **हरिवान्**=बहुप्रशस्तमनुष्ययुक्तः। (इन्द्रः=राजा) ७.३२.१२. प्रशस्ता हरयोऽश्वा विद्यन्ते यस्य सः (पुरन्दरः=सेनेशः) २०.३८. [हरिरिति व्याख्यातम्। ततः प्रशंसायामर्थे (मत्वर्थे) मतुप्। 'छन्दसीरः' इति मतोर्वत्वम्। हरिवः-प्रयोगे हरिवत्प्राति० सम्वुद्धौ 'मतुवसो रुः सम्वुद्धौ०' इति रुत्वम्]

हरिवर्पसम् हरयः किरणा वर्पसो रूपस्य प्रकाशका यस्यास्ताम् (पृथिवीं=भूमिम्) ३.४४.३. [हरि-वर्पस्पदयोः समासः। वर्पस्=वर्पः रूपनाम निघं० ३.७.]

हरिव्रतम् हरयोऽश्वा व्रतं शीलं यस्य तम् (अग्नि=वह्निम्) ३.३.५. [हरि-व्रतपदयोः समासः। व्रतम् कर्मनाम निघं० २.१.]

हरिशया या हरिषु सूर्यकिरणेषु शेते सा (विद्युत्) ५.८. [हरि इत्युपपदे शीङ् शये (अदा०) धातोः 'अधिकरणे शेतेः' अ० ३.२.१५. इत्यच्। ततः स्त्रियां टाप्]

हरिशिप्रः हरणशीलहनुः (अग्निः) २.२.५. [हरि-शिप्रपदयोः समासः। शिप्रे हनू नासिके वा नि० ६.१७.]

हरिष्ठाम् हरयो मनुष्यास्तिष्ठन्ति यस्मिँस्तम् (सर्वबलाध्यक्षं राजानम्) ३.४९.२. **हरिष्ठाः**=यो हरौ विषहरणे तिष्ठति सः (वैद्यः) १.१९१.१० अतिशयेन हर्त्ता (इन्द्रः=राजा) ६.१७.२. [हरि इत्युपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। हरयः मनुष्यनाम निघं० २.३. अन्यत्र हर्तृप्राति० अतिशायने 'तुश्छन्दसि' सूत्रेण इष्ठन्। 'तुरिष्ठेमेयस्सु' इति तृचो लोपः। हरिष्ठप्राति० सोराकारादेशश्छान्दसः]

हर्मि हरामि, प्र०—अत्र शपो लुक् १.६१.१. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक्]

हर्म्यम् कमनीयं गृहम् ७.५५.६. **हर्म्यस्य**=न्यायगृहस्य मध्ये १.१२१.१. **हर्म्ये**=प्रासादे ५.३२.५. [हर्म्यम् गृहनाम निघं० ३.४.]

हर्म्या उत्तमानि गृहाणि १.१६६.४. [हर्म्यमिति व्याख्यातम्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

हर्म्येष्ठाः ये हर्म्ये तिष्ठन्ति ते (मरुतः=बलिष्ठा राजजनाः) ७.५६.१६. [हर्म्योपपदे ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः कः। हर्म्यमिति व्याख्यातम्]

हर्य कामयस्व ३.४०.२. **हर्यत**=कामयध्वम् ५.५४.१५. प्रेमपूर्वक कामना से वर्त्ता करो सं० वि० १७२ वेदार्षे ३.३०.१. **हर्यतम्**=प्राप्नुतः १.९३.७. कामयेथाम् १.९३.१. **हर्यति**=कामयते १७.९६. **हर्यते**=कामयते ५.५७.१. **हर्यथ**=कामयध्वम् १.१६१.८. हर्यन्ति=कामयन्ते १.१६५.४. [हर्यति कान्तिकर्मा निघं०

२.६. गतिकर्मा निघं० २.१४. ततो लोट् । अन्यत्र लडपि । हर्यति हर्यतेर्वा स्यात् प्रेप्साकर्मणः नि० २.१०.]

हर्य कमनीय, सर्वसुखप्रापक (इन्द्र=जगदीश्वर) १.५७.४. **हर्याः**=कमनीयाः (अपः=प्राणान्) ५.२.११. [हर्यति कान्तिकर्मा निघं० २.६. ततोऽच् । हर्य गतिकान्त्योः (भ्वा०) धातोर्वाऽच्]

हर्यय कामिताय (इन्द्राय=सभेशाय) १.१३०.२. हर्यति कान्तिकर्मा निघं० २.६. गतिकर्मा निघं० २.१४. औणादिकोऽतच्]

हर्यक्षम् हरीणां वानराणामक्षिणी इवाऽक्षिणी यस्य तम् (जनम्) ३०.२१. [हरि-अक्षिपदयोः समासे समासान्तोऽच् छान्दसः]

हर्यत प्रापक कमनीय वा, भा०—वायुना सह देशान्तरं प्रापक (अग्ने) ३.४. **हर्यतम्**=कमनीयम् (सोमम्=ऐश्वर्यम्) २.२१.१. **हर्यतः**=सर्वेषां सुबोधं कामयमानः (अध्यापक उपदेशको वा) १.५५.४. गमयिता कमनीयो वा (व्यवहारः) १.५७.२. [हर्य गतिकान्त्योः (भ्वा०) धातोः 'भृमृदृशियजि०' उ० ३.११० सूत्रेणातच्]

हर्यता प्रकाशवन्तौ (किरणौ, अश्वौ वा) ऋ० भू० १३६, [हर्यत इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

हर्यन् कामयमानः (इन्द्रः=राजा) ४.२४.७. प्राप्नुवन् प्रापयन् वा (श्रीमज्जनः) ३.४४.२. **हर्यन्तम्**=कामयन्तम् (वज्रं=किरणसमूहम्) ३.४४.५. [हर्य गतिकान्त्योः (भ्वा०) धातोः शतृ]

हर्यमाणः कमनीयः (अग्निः=सूर्यलोकः) ३.६.४. [हर्य गतिकान्त्योः (भ्वा०) धातोस्ताच्छील्ये चानश्]

हर्यश्व हरयोऽश्वा महान्तो मनुष्या वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ७.३२.१५. हर्याः कामयमाना अश्वा आशुगामिनोऽग्न्यादयस्तुरङ्गा वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (श्रीमज्जन) ३.४४.२. हरणशीला हरिता वाऽश्वा व्यापनस्वभावाः (तुरङ्गाः) यस्य तत्सम्बुद्धौ, अश्वा इवाऽग्न्यादयो विदिता येन तत्सम्बुद्धौ वा (इन्द्र=विद्वज्जन) ३.३२.५. हरयो वेगवन्तोऽश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=विद्वज्जन) ३.३६.९. हर्याः कमनीया गमनीया वाऽश्वा यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=राजन्) ४.३५.७. सद्गुणग्रहणशीला हरयोऽश्वा महान्तो यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=विद्वज्जन) ७.३७.५. कमनीयाऽश्व (राजन्) ७.१९.४. **हर्यश्वम्**=हरयो हरणशीला अश्वा यस्य तम् (पुरुषोत्तमम्) ३.३६.४. **हर्यश्वः**=हर्याः कामयमाना आशुगामिनो गुणा यस्य विद्युद्रूपस्य सः (वृषा=सूर्यः) ३.४४.४. हरयो मनुष्या अश्वा महान्त आसन् यस्य तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=महाशय जन) ७.२४.४ **हर्यश्वाय**=हरणशीला आशुगामिनोऽश्वास्तुरङ्गा अग्न्यादयो वा विद्यन्ते यस्य तस्मै (राज्ञे) ३.५२.७. हरयो मनुष्या हरणशीला वाऽश्वा यस्य तस्मै (इन्द्राय=परमैश्वर्याय मित्राय) ७.३१.१. प्रशंसितमनुष्याऽश्वादियुक्ताय (राज्ञे) ७.३१.१२. प्रशंसितनराऽश्वाय (राज्ञे) ७.२५.५. **हर्यश्वेन**=हरणशीला अश्वा यस्मिन् तेन (रथेष्ठेन जनेन) २.१७.३. [हरि-अश्वपदयोः समासः । हरयः मनुष्यनाम निघं० २.३. अश्वः—अश्वः कस्मादश्नुतेऽध्वानं महाशनो भवतीति वा नि० २.२७.]

हर्यश्वप्रसूताः हरयो हरणशीला अश्वा किरणा यस्य तेन प्रसूता जनिताः (दिशः=पूर्वाद्याः) ३.३०.१२. [हरि-अश्वपदयोः समासे ततः प्रसूतपदेन समासः]

हर्षतः प्राप्तहर्षस्य (यज्ञस्य=व्यवहारस्य) १.१२७.६ [हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोः शतृ । व्यत्ययेन शप्]

हर्षते हर्षति, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.५१.७. **हर्षसे**=आनन्दसि ४.२१.९. [हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोर्लट् । व्यत्ययेन शप् आत्मनेपदञ्च]

हर्षमाणः आनन्दितः सन् (पूरुः=मनुष्यः) ४.३८.३. [हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

हर्षय उत्कर्षय १७.४२. [हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोर्णिजन्ताल्लोट्]

हर्ष्या हर्षं जनितुं योग्यानि कर्माणि १.५६.५. [हृष तुष्टी (दिवा०) धातोर्ण्यत् । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

हलिक्ष्ण मृगेन्द्र-विशेषः २४.३१.

हवते गृह्णाति, प्र०—अत्र 'बहुलं छन्दसि' इति शपः स्थाने श्लोरभावः १.१०५.१७. स्तौति ७.२२.६. आदत्ते ३.२०.१. स्पर्द्धते २.३३.५. आह्वयति ७.५६.१८. श्रावयेत् ६.२६.२. **हवन्त**=गृह्णीत १.१२.२. **हवन्ते**=आह्वयन्तु ७.३०.२. स्तुवन्ति १.१४२.१३. गृह्णन्ति, प्र०—अत्र व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदम् १.२३.३. आह्वयन्ति ७.२७.१. स्वीकुर्वन्ति ४.४२.५. स्पर्द्धन्त आददति वा ७.२६.२. आह्वयन्ते ३.३२.१४. स्पर्द्धयन्ति ४.२५.८. प्रेप्सन्ते १.६३.६. पुकारते हैं स० प्र० २३८, १०.४८.१. **हवामहे**=आह्वयामहे स्पर्द्धामहे वा, प्र०—ह्वेञ्धातोरिदं लेटो रूपं 'बहुलं छन्दसि' अ० ६.१.३४. अनेन सम्प्रसारणम् १.७.५. आदद्महि ६.१९.१२. आदद्मः ६.६०.५. स्वीकुर्महे १.२१.३. विद्यासिद्ध्यर्थमुपदिशामः

शृणुमश्च १.२१.४. दधाम ३.४२.६. प्राप्तुमिच्छेम ५.८६.४. स्तुवीमः १.७.१०. आदद्यामाऽऽह्वयेम वा ३४.३४. गृह्णीयाम ३.२६.१. आह्वयामः ३३.६१. गृह्णीमः १.२३.७. प्रशंसामहे ७.३२.२३. अत्यन्त प्रार्थना से गद्गद होके बुलावें आर्याभि० १.४४. ऋ० १.७.१२.५. होमेन विचारेण प्रशंसेम ७.४१.१. स्तूमहे आश्रयेम ४.३२.१३. स्वीकुर्मः २.१६.१. दद्याम ३.४२.६. स्तुवीमः २७.३६. ग्रहण करता हूँ आर्याभि० २.४६, २३.१६. हम स्तुति करते हैं सं० वि० १५५, ७.४१.१. **हवे**=स्तौमि १.११८.११. **हवेते**=गृह्णीतः, आदत्तः २.१२.८. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लेट्। 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण शपः श्लुर्न भवति। ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्वा लेटि 'बहुलं छन्दसि' अ० ६.१.३४ सूत्रेण सम्प्रसारणम्। अन्यत्र लङ् लट् च]

हवनश्रुत् यो हवनं दानमादानं शृणोति सः (रुद्रः=वैद्यः) २.३३.१५. [हवनोपपदे श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। हवनम्=हु दानादानयोः (जु०) धातोर्ल्युट्। हवनश्रुतः—ह्वानश्रुतः नि० ६.२७.]

हवनश्रुतम् हवनमाह्वानं शृणोतीति तम् (इन्द्रं=परमेश्वरम्) १.१०.१०. **हवनश्रुतः**=ये हवनमध्ययनं शृण्वन्ति ते (विश्वेदेवाः=सर्वविद्वांसः) ६.५२.१०. ये हवनानि ग्राह्याणि शास्त्राणि शृण्वन्ति ते (राजपुरुषाः) ६.१७. [हवनोपपदे श्रु श्रवणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विपि तुगागमः]

हवनश्रुता यौ हवनानि शृण्वतस्तौ (इन्द्राग्नी=विद्युद्विद्याविदौ विद्वज्जनौ) ६.५९.१०. हवनं श्रुतं ययोस्तौ (अश्विना=विद्याध्यापकोपदेशकौ) ५.७५.५. [हवनश्रुदिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

हवनस्यदम् येन हवनं पन्थानं स्यन्दते तम् (रथं=विमानादिकम्) १.५२.१. [हवनोपपदे स्यन्दू प्रस्रवणे (भ्वा०) धातोः 'कृतो बहुलम् वा' इति करणे क्विप्। स्यन्दते गतिकर्मा निघं० २.१४.]

हवना दातुमादातुमर्हाणि (ब्रह्माणि=धनानि) ६.६९.४. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्ल्युडन्ताद् द्विवचनस्याकारः]

हवनानि दानादीनि कर्माणि ६.३४.४. दातुं ग्रहीतुं योग्यानि वस्तूनि ५.५६.२. प्रार्थनावाग्दत्तानि ८.४५. ग्राह्याणि कर्म्माणि १७.२३. **हवनाय**=आदानाय ६.६३.२. **हवनेषु**=दानयोग्येषु कर्मसु १.१०२.१०. धर्मेणैवादानेषु ७.१७. आदानयोग्येषु कर्मसु १.१०२.१०. [हवनमिति पूर्वपदे व्याख्यातम्]

हवम् अर्चनम् ६.२६. स्तुतिवादम् ७.३४. स्तुतिसमूहम् ७.६. जुहोति ददात्याददाति यस्मिँस्तं होमशिल्पव्यवहारम् १.१७.२. कर्त्तव्यं शब्दव्यवहारम् १.२३.८. स्तवनम् १.२.१. आदातव्यं सत्यं वचनम् १.१०.६. प्रार्थनादिकं कर्म्म १.३०.८. ग्राह्यं देयमध्ययनाऽध्यापनाख्यं व्यवहारम् १.४५.३. ग्राह्यं विद्याशब्दसमूहम् १.४७.२. श्रोतव्यं श्रावितव्यं वा शब्दसमूहम् १.४८.१०. देयं ग्राह्यं विद्याशब्दार्थसम्बन्धमयं वाक्यम् १.९३.१. परीक्षितुमर्हमध्ययनाऽध्यापनं वा १.८६.२. आह्वानं, प्रशंसावाक्यम् १.११४.११. उपदेशाख्यं शब्दम् १.१२२.११. दातुमादातुमर्हं न्यायम् १.१२१.३. आदातुमर्हं विद्याबोधम् १.१७८.३. विद्योपदेशम् २.१०.२. श्रोतुमर्हं शब्दम् १.१८१.७. दानम् १.१८३.५. शास्त्रबोधजन्यं शब्दम् २.११.१. आह्वानम् २.२४.१५. आदातव्यं शब्दार्थसम्बन्धाऽध्ययनम् २.४१.१३. प्रशंसनीयं व्यवहारम् ५.८७.८. शब्दार्थसम्बन्धविषयम् ४.९.७. सत्यप्रशंसाम् ६.५०.६. वार्त्ताम् ६.४५.११. श्रुताऽधीतज्ञातविषयम् ६.५२.१३. विद्याविषयं शब्दम् ६.६२.७. स्वाध्यायम् ६.६९.७. श्रोतुं श्रावयितुमर्हं स्तुतिसमूहं यज्ञम् ३.२६. अध्ययनाऽध्यापनजन्यं बोधशब्दसमूहमर्थिप्रत्यर्थिनां विवादञ्च ९.१७. आह्वानरूपं प्रशंसावाक्यम् १.११४.११. प्रशंसनीयं वाग्व्यवहारम् ७.२८.२. वक्तव्यं श्रोतव्यं वा (व्यवहारम्) ५.४३.११. अ०—सर्वं शब्दव्यवहारम् १.२.१. उच्चारितशब्दम् ६.२१.१०. पठनपरीक्षाख्यम् ५.८७.६. पठितम् (विषयम्) ५.२४.३. प्रशंसनम् ५.७४.१०. **हवस्य**=दातुमादातुमर्हस्य (व्यवहारस्य) २.३६.६. हवे=प्रशंसनीये धर्म्ये व्यवहारे ६.५२.१६. **हवेषु**=सङ्ग्रामादिषु व्यवहारेषु १९.४९. दानाऽऽदानेषु २१.१०. ह्वयन्ति स्पर्द्धन्ते परस्परं येषु सङ्ग्रामेषु तेषु १७.४३. हवनादिसत्कर्मसु ७.३५.१२. गृह्णन्ति येषु पदार्थेषु ७.२.७. सङ्ग्रामेषु ९.१६. [हवम्—हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'ऋदोरब्' इत्यप्। अथवा ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः 'भावेऽनुपसर्गस्य' अ० ३.३.७५ सूत्रेणाप् सम्प्रसारणञ्च। अथवा ह्वेञ्धातोः 'आङि युद्धे' सूत्रेण छन्दसि निरुपपदादपि अप्। हवम् ह्वानम् नि० १०.२.]

हवमानम् स्पर्द्धमानम् (विप्रं=मेधाविजनम्) ४.२९.४. **हवमानाय**=प्रशंसमानाय (सज्जनाय) ३.१५.७. आनन्दाय ३.२.२३. विद्यां स्पर्द्धमानाय (तनयाय) १२.५१.

आददानाय (शिष्यवर्गाय) ३.५.११. [ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः शानच् । धातोः सम्प्रसारणं छान्दसम् । हु दानादानयोः (जु०) धातोर्वा शानच्]

हवमानासः आदातुमिच्छन्तः (ब्रह्मचारिणो जनाः) ५.३२.११. [हवमानं व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

हवसा ग्रहणत्यागभक्षणादिकर्म्मणा १.६४.१२. आदानेन ६.६६.११. [हु दानादानयोः (जु०) धातोरसुन् । ततस्तृतीयैकवचनम्]

हवा होतुमर्हाणि वचनानि १.१२२.६. हवानि श्रुतानि (वचनानि) ७.२९.३. हवानि हवनानि २१.९. [हवमिति व्याख्यातम् । ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

हवासः दानाऽऽदानऽदनाख्याः (व्यवहाराः) ६.२३.८. [हवमिति व्याख्यातम् ततो । जसोऽसुक्]

हविरद्यम् दातुमर्हमत्तुं योग्यञ्च, भा०—दण्डं, सत्कारञ्च २९.२०. **हविरद्याय**=हविश्चाऽद्यमत्तव्यञ्च तस्मै (विद्वज्जनाय) ५.४.४. अत्तुं योग्यायाऽन्नाद्याय ५.१.११. [हविष्-अद्यपदयोः समासः । हविष्=हु दानादानयोः (जु०) 'अर्चिशुचिहु०' उ० २.१०८ इति इसिः । हविः उदकनाम निघं० १.१२. अद्यम्–अद भक्षणे (अदा०) धातोर्बाहु० औणा० यत् । ण्यति वा वृद्ध्यभावश्छान्दसः]

हविर्दे यो हवींषि दातव्यानि ददाति तस्मै (शिष्याय राजकुमाराद्ये) ४.३.७. [हविष् इत्युपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः क्विप् । धातोराकारलोपश्छान्दसः]

हविर्धानम् हवींषि ग्राह्याणि देयानि वा संस्कृतानि वस्तूनि धीयन्ते यस्मिन् (सदः=सभा) १९.१८. हविषां धानं स्थित्यधिकरणम् (ऋत्विग्) १.९. होम करने के पदार्थ रखने का स्थान सं० वि० १६६, अथर्व० ९.२.३.७. **हविर्धानानि**=हवि के स्थापन करने के पात्र सं० वि० २०९, अथर्व० ९.६.७. **हविर्धाने**=हविषां ग्रहीतुं योग्यानां पदार्थानां धारणे ८.५६. हविषां धारणे (गायत्र्यां विद्यायाम्) ३८.१८. [हविष् इत्युपपदे डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोरधिकरणे ल्युट् । हविर्धाने हविषां निधाने नि० ९.३६. हविर्धानम् अथ यदस्मिन्त्सोमो भवति हविर्वै देवानां सोमस्तस्माद्धविर्धानं नाम श० ३.५.३.२. वैष्णवं हि हविर्धानम् श० ३.५.३.१५. एतद्वै देवानां निष्केवल्यं यद्धविर्धानम् श० ३.६.१.२३. शिरो वा एतद् यज्ञस्य यद्धविर्धाने कौ० ११.८. तस्य (पुरुषस्य) शिर एव हविर्धाने कौ० १७.७. द्यौर्हविर्धानम् । तै० २.१.५.१. द्यावापृथिवी वै देवानां हविर्धाने आस्ताम् ऐ० १.२९. वाक् च वै मनश्च हविर्धाने कौ० ९.३. अयं वै लोको दक्षिणं हविर्धानं कौ० ९.४.]

हविर्भिः होतुं दातुमर्हैः पदार्थैः २१.२. आदेयैः गुणकर्मस्वभावैः सह १.७६.५. यज्ञसामग्रीभिः १.९५.६. आदातुमर्हैः साधनैः ३.१.१५. आदातव्यैः साधनैः ३.१४.३. होमसाधनैः ७.१४.१. आदातुं योग्यैरुपदेशैर्द्रव्यैर्वा ४.५०.६. होतुमर्हैः संस्कृतैर्द्रव्यैः १८.४९. होतव्यैः पदार्थैरिवाऽऽदत्तैः शान्तैश्चित्तादिभिः ७.४०.५. सुष्ठ्वौषधदानैः २.३३.५. **हविषः**=आदातुमर्हस्य (वस्तुनः) २१.४७. होतव्यस्य (द्रव्यस्य) प्र०—अत्र कर्मणि षष्ठी ६.११. भोक्तुमर्हात् (वित्तात्=धनात्) ५.६०.६. दातुं योग्यस्य (पदार्थस्य) २१.४६. ग्रहीतुमर्हस्य (वस्तुनः) २१.४७. प्रक्षिप्तस्य घृतादेर्द्रव्यस्य १.९३.७. सङ्गन्तुमर्हस्य (व्यवहारस्य) ७.११.४. **हविषा**=ग्राह्येण दातव्येन पदार्थेन साधकेन वा ४.३७. सामग्र्या दानेन ६.४७.२७. संस्कृतेन घृतादिना १२.६९. उपादेयेन भक्तियोगेन १२.१०२. आत्माऽऽदिसर्वस्व-दानेन २३.१. भक्तिविशेषेण, भा०—उपासनेन २३.२. धारणेन, भा०—योगाभ्यासेन २७.२५. अग्नौ प्रक्षेपसामग्र्या ५.३७.२. होतव्येन विज्ञानेन धनादिना वा १.८४.१८. दानाऽऽदानेन १.१६.४. दानेन ५.३.८. सद्व्यवहारग्रहणेन २.२६.३. हविर्दानेन ऋ० भू० १३८, ऋ० ८.२.१०.१. सत्येन धर्मेण ऋ० भू० ९४, ऋ० ८.८.४९.३. आदातव्येन योगाऽभ्यासेन ३२.७. साकल्यात् ३.३५.१०. आत्मादि पदार्थों के समर्पण से आर्याभि० २.२०, १३.४. होतव्येन पदार्थेन २५.१०. प्रेमभक्तिभावेन ३२.६. हवनयोग्येन पदार्थेन २५.१२. यथायोग्येन ग्रहीतव्यव्यवहारेण २८.७. होतुमर्हं शुद्धं संस्कृतं हविस्तेन २.२२. होतुमादातुमर्हेण (पुरुषेण=परमेश्वरेण) ३१.१४. आदानेन २९.५३. सुसंस्कृतेन हविषा १.९३.८. होतुमर्हेण सुगन्ध्यादियुक्तेन (घृतेन=आज्येन) २.१०.४. सामग्र्या सत्यप्रेमभावेन वा ४.७. आदत्तेन देहेन १.५८.१. तदाज्ञायोगाभ्यासधारणेन २७.२६. आत्मादिसामग्र्या १३.४. दानाऽऽदानेन प्राणेन वा २०.४३. सुसंस्कृतहोमसामग्र्या २०.६८. उपादत्तेन पुरुषार्थेन २०.७३. सद्विद्यादानाऽऽदानेन २०.३८. सब सामर्थ्य से सं० वि० ६, ३२.६. हवनेनोत्तमगुणदानेन १७.२२. आदातव्येन (वर्धनेन) १७.२४. ग्रहण करने योग्य योगाऽभ्यास, अति प्रेम से सं० वि० ५, १३.४. आत्मा, अन्तःकरण से सं० वि० ५, २५.१३. विद्यादानाऽऽदानाख्येन १.९१.१९. **हविषि**=दातव्येऽत्तव्ये वाऽन्नादौ

६.५२.१७. दातुमादातुमर्हे व्यवहारे १७.२१. दान और ग्रहण व्यवहार में आर्याभि० २.३८, १७.२१. **हविषे**=हविर्दातुमर्हम् (वस्तु), प्र०—अत्र व्यत्ययेन द्वितीयास्थाने चतुर्थी १९.७०. सद्विद्याग्रहणाय धनाद्युत्तमपदार्थदानाय वा ऋ० भू० २६५, १९.७०. **हविः**=अन्तःकरणम् ६.१६.४७. आदीयत इति (सेनाध्यक्षः) ६.१९. ग्रहीतुं योग्यं करम् १.११४.३. संस्कृतं सुगन्ध्यादियुक्तं द्रव्यम् १.१५. हुतं द्रव्यम् १७.९, होमम् १७.५२. होतव्यं शुद्धं सुखकरद्रव्यम् १७.७८. दुग्धादिकम् १९.९५. दातव्यमादातव्यम् (वयः=कमनीयं सुखम्) २१.२६. ग्राह्यं वस्तु २७.२२. ग्रहीतुं दातुमत्तुं योग्यं पदार्थम् १.४५.८. रोगनाशकं वस्तु २१.४५. सङ्गन्तव्यं वस्तु २१.४७. संस्कृतमन्नादिकम् २१.४६. क्रियाकौशलयुक्तं कर्म्म १.१०१.९. आदेयं विज्ञानम् १.१०१.८. अत्तव्यं वस्तु ५.२८.२. अत्तुमर्हमन्नम् १.९४.३. भा०—शोभनं भोजनाऽऽच्छादनम् २१.४३. आदातव्याऽग्नीन्धनजलकाष्ठधात्वादि २९.४५. अत्तव्यमन्नादिकम् २९.३६. हवनीयम् (भूमिमौषधीं वा) १.२३.१८. हविषा संस्कृतद्रव्येण, प्र०—अत्र विभक्तिव्यत्ययः १८.५७. प्रक्षेप्तव्यं सुसंस्कृतमन्नादिकम् २१.४१. **हवींषि**=यज्ञार्थानि द्रव्याणि १.९४.४. दातुमादातुं योग्यानि वस्तूनि २.३७.५. विज्ञानादीनि ऋ० भू० २६०, १९.५१. [हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'अर्चिशुचिहु०' उ० २.१०८ सूत्रेण इसिः। हविष् उदकनाम निघं० १.१२. हविः—अक्तं हि हविः श० २.६.२.६. हवींषि ह वाऽआत्मा यज्ञस्य श० १.६.३.३९. जीवं वै देवानां हविरमृतममृतानाम् श० १.२.१.२०. मासा हवींषि श० ११.२.७.३.]

हविर्वाट् विज्ञानादिप्रापकः (विद्वज्जनः) १.७२.७. [हविष् इत्युपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'वहश्च' इति ण्विः]

हविष्कृत् हविः करोति अनया वेदवाण्या सा हविष्कृद् वाक्, समीक्षा—अत्र यज्ञसम्पादनाय ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यशूद्राणां वेदाध्ययनसंस्कृता सुशिक्षिता वाग् गृह्यते १.१५ [हविष् इत्युपपदे डुकृञ्करणे (तना०) धातोः क्विप्। तुगागमः।

हविष्कृतम् हविर्भिः क्रियते तम् (अग्निं=भौतिकम्), प्र०—अत्र वर्त्तमानकाले कर्मण्यौणादिकः क्तः प्रत्ययः १.१३.३. [हविष्-कृतपदयोः समासः। हविष् इति व्याख्यातम्]

हविष्कृतिम् हविषां कृतिः करणं यस्य तम् (अध्वरं=जगत्), प्र०—अत्र 'सह सुपा' इति समासः १.१८.८. हविषो होतव्यस्य पदार्थस्य कृतिं करणरूपाम (आहुतिम्) १.९३.३. [हविष्-कृतिपदयोः समासः। कृतिः=डुकृञ् करणे (तना०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

हविष्पतिः हविषां दातुं ग्रहीतुं योग्यानां द्रव्याणां गुणानां वा पतिः पालकः कर्मानुष्ठाता (मनुष्यः) १.१२.८. हविषां पालकः (भा०—पुरोहितो जनः) २०.७०. [हविष्-पतिपदयोः समासः]

हविष्मतः प्रशस्तानि हवींषि विद्यन्ते यस्य तस्य (इन्द्रस्य=विद्युतः) १.५७.२. प्रशस्तानि हवींषि विद्यन्ते येषु तान् (मरुतः=ऋत्विजः) ३.४६. बहुविद्यादानसम्बन्धिनः (मरुतः=विद्वज्जनाः) १.१७३.१२. **हविष्मता**=प्रशस्तविद्यादानग्रहणयुक्तेन व्यवहारेण १.१५६.१. **हविष्मते**=प्रशस्तानि हवींषि दातव्यानि यस्य तस्मै (अग्नये=पावकाय) ३.१०.४. बहूनि हवींषि विद्यन्ते यस्य तस्मै विदुषे, प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् १.१३.१. **हविष्मद्भिः**=बहूनि हवींष्यादत्तानि साधनानि यैस्तैः (मनुष्यैः) ३.२९.२. **हविष्मन्तम्**=बहुसामग्रीयुक्तम् (भोजं=भोगम्) ४.४५.७. **हविष्मन्तः**=बहूनि हवींषि दातुमादातुं योग्यानि वस्तूनि विद्यन्ते येषान्ते (जनाः) १६.१६. प्रशस्तसामग्रीयुक्ताः (मानुषासः=मनुष्याः) ७.११.२. हवींषि दातुमादातुमत्तुं योग्यानि अतिशयितानि वस्तूनि विद्यन्ते येषान्ते (ऋत्विजः), प्र०—अत्राऽतिशायने मतुप् १.१४.५. हवींषि प्रशस्तानि जगदुपकरणानि कर्माणि विद्यन्ते येषां ते (पुरुषाः) १.११४.८. बहूनि हवींषि देयानि वस्तूनि विद्यन्ते येषु ते (प्रजाजनाः) १६.१६. **हविष्मान्**=प्रशस्तानि हवींषि विद्यन्ते यस्य वायोः सः ६.२३. बहूनि हवींषि दानानि विद्यन्ते यस्य सः (मर्त्तः=मनुष्यः) ६.१६.४६. शुद्धसामग्रीयुक्तः (विद्वज्जनः) १.१८०.३. सम्बद्धानि हवींषि यस्मिन् सः (अश्वः=अग्निः) १.१६२.२२. प्रशस्तानि हवींषि गृहीतानि विद्यन्ते यस्य सः (स्तोमः=स्तुतिः) १.१२७.१०. बहूनि हवींषि दातव्यानि भोक्तव्यानि विद्यन्ते येषु सः (अग्निः=पुरुषार्थिजनः) ६.१०.६. प्रशस्तानि हवींषि सुखदानानि यस्मिन् सः (अश्वः) २५.४५. हवींषि उत्तमानि द्रव्याणि कर्माणि वा विद्यन्ते यस्य सः (जनः) प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् १.१२.९. हवींषि हुतानि द्रव्याणि विद्यन्ते यस्मिन् सः (सूर्य इव राजा) ६ ७३.१. बहुपदार्थहेतुः (होतृजनः) ४.४१.१. प्रशंसितादेययुक्तः (गोतमः=नौकादियानयायी जनः) १.१८३.५.

आदत्तबहुविद्यः (विद्वज्जनः) १.१६७.६. [हविष् इति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसार्थे भूम्न्यर्थे वा मतुप्]

हविष्मतो प्रशस्तानि हवींष्यादातुमर्हाणि विद्यन्ते यस्याः सा (सरस्वती=स्त्री) २०.७४. बहूनि हवींषि ग्राह्यवस्तूनि विद्यन्ते यस्यां सा (घृताची=रात्रिः) ७.१.६. **हविष्मतीः**=प्रशस्तानि हवींषि विद्यन्ते यासु ताः (समिधः), प्र०—अत्र प्रशंसार्थे मतुप् ३.४. विविधविज्ञान-सहिताः (भा०—प्रशस्ता विज्ञानवत्य सुमेधाश्च स्त्रियः) २८.८. [हविष् इति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसार्थे भूम्न्यर्थे मतुबन्तान् ङीप् स्त्रियाम्]

हविष्यम् हविष्षु ग्रहणेषु साधुम् (अश्वम्) १.१६२.४. हविर्भ्यो हितम् (अश्वम्), भा०—आहार-विहारम् २५.२७. [हविष् इति व्याख्यातम् । ततः साध्वर्थे हितार्थे वा यत् । हविष्यः—यो व ऊर्मिर्हविष्य इति यो ऊर्मिर्यज्ञिय इत्येवैतदाह श० ३.९.३.२५.]

हवीमन् हवींषि दातव्यानि वस्तूनि विद्यन्ते यस्मिँस्तस्मिन् (धनस्वामिनि) ७.५६.१५. होमे ६.६३.४. [हवीमन्प्राति० 'सुपां सुलुक्०' इति सप्तम्या लुक् । हवीमन्—हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' इति मनिन् । ईडागमश्छान्दसः । औणा० वा जुहोतेर् ईमनिन्]

हवीमभिः स्तोतुमर्हैराह्वातुमर्हैर्वा कर्म्मभिः १.१३१.६. सुष्ठ्वौषधदानैः २.३३.५. ग्रहीतुं योग्यैरुपासनादिभिः शिल्पसाधनैर्वा, प्र०—हु दानादानयोः इत्यस्माद् 'अन्येभ्योऽपि दृश्यन्ते' अ० ३.२.७५. इति मनिन्प्रत्ययः 'बहुलं छन्दसि' इतीडागमश्च १.१२.२. स्तोतुमर्हैर्गुणैः १.५९.२. [हवीमन् इति हुधातोः पूर्वपदे व्याख्यातम् । अथवा ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्मनिन् । धातोः सम्प्रसारणमीडागमश्च छान्दसः]

हवेभिः हवनैः ७.१९.९. [हवमिति व्याख्यातम् । ततो 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण भिस ऐसादेशो न भवति]

हवे हवे सङ्ग्रामे सङ्ग्रामे ६.४७.११. युद्धे युद्धे २०.५०. [हवे पदस्य वीप्सायां द्वित्वम् । हवः=ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः 'आङि युद्धे' इति वा छन्दसीति नियमेन निरुपपदादपि अप्]

हव्यम् आदातुमर्हम् (अध्वरम्=अहिंसनीयं व्यवहारम्) ४.९.६. ग्रहीतुमर्हम् (अन्नम्) ४.२६.४. दातुमर्हं सुखम् ५.४.८. अत्तुमर्हम् (भागम्) ५.२९.३. होतुमादातुमर्हं विज्ञानम् १३.३४ अत्तव्यम् (भा०—हुतं द्रव्यम्) २९.३५. आह्वानयोग्यम् (सर्वप्रियं राजानम्) ७.३०.२. **हव्यानि**=आदातुं योग्यानि युद्धकार्याणि १.१०१.१०. अत्तव्यानि (वस्तूनि) १.१८८.१०. दातुं योग्यानि (वस्तूनि) ४.१५.३.

हव्यः होतुमादातुं स्वीकर्त्तुमर्हः (शिष्यः) १.१४४.३. आहवनीयः (सेनाध्यक्षः) १.१०१.६. आह्वयितुं योग्यः (इन्द्रः=राजा) ६.४५.११. ग्राह्यः (अग्निः) ऋ० भू० १९४, ऋ० १.८.९.१. आह्वातुं योग्यः (इन्द्रः=राजा) ४.२४.२. **हव्याय**=होतुमर्हाय यज्ञाय १.४५.६. होतुं दातुमर्हम् (विद्वांसं राजानं वा), प्र०—अत्र विभक्ति-व्यत्ययः ३४.१५. प्रशंसनीयाय (वोढवे=वाहनाय) ३.२९.४. स्वीकर्त्तव्यमन्नादिपदार्थम्, प्र०—अत्र सुब्व्यत्ययेन द्वितीयैकवचनस्य चतुर्थ्यैकवचनम् १५.३१. **हव्येन**=ग्रहीतव्येन (राया=धनेन) ७.१०. आदातुं दातुमर्हेण प्रशंसितेनाध्ययनेन श्रवणेन वा ६.५२.८. **हव्यैः**=पूजितुमर्हैः (गुणैः) ५.३.८. होतुं दातुमर्हैः (पदार्थैः) ४.२.१. अत्तुमर्हैः (पदार्थैः) २०.४५. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्यत् । ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्वा यत्प्रत्यये संप्रसारणादिकार्येषु छान्दसं रूपम् । हव्यानि=हवींषि नि० ८.७. हव्यः=हवनार्हः नि० १०.४२.]

हव्यजुष्टिम् आदातव्यसेवाम् १.१५२.७. [हव्य-जुष्टिपदयोः समासः । हव्यं व्याख्यातम् । जुष्टिः—जुषी प्रीतिसेवनयोः (तुदा०)+क्तिन्]

हव्यदातये दातव्यदानाय ५.२६.४. हव्यानामादातुमर्हाणामादानाय ३३.८७. दातव्यानां दानाय, भा०—विद्यादानाय २७.४४. **हव्यदातिम्**=हव्यानां दातिर्दानं येन तम् (विद्वज्जनम्) ३.२.८. यो हव्यानि ददाति तम् (अग्निम्) ६.१.९. होतुं दातुं ग्रहीतुं वा योग्यानां खण्डनम् ७.१६.९. दातव्यदानक्रियाम् ६.४७.२८. [हव्य-दातिपदयोः समासः । दातिः—डुदाञ् दाने (जु०) धातोः स्त्रियां क्तिन् । दो अवखण्डने (दिवा०) धातोर्वा क्तिन् । अथवा हव्योपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोर्बाहु० औणा० तिः । हव्यदातिः (ऋ० ६.१६.१०.) यजमानो वै हव्यदातिः श० १.४.१.२४.]

हव्यवाट् यो हव्यान् दातुमर्हाणि वस्तूनि वहति प्राप्नोति सः (अग्निः=विद्वज्जनः) ३.११.२. यो ग्राह्यदातव्यान् पदार्थान् वहति प्रापयति सः (विद्वज्जनः) १.६७.१. पृथिव्यादिवोढा (अग्निरिव राजा) ५.२८.५. यो हुतं द्रव्यं देशान्तरं वहति प्रापयति सः (अग्निः) १.१२.६. यो

हव्यानि प्राप्तव्यानि वस्तूनि वहति प्रापयति सः (अग्निः) ३.२७.५. **हव्यवाहम्**=होतुं दातुमत्तुमादातुञ्च योग्यानि ददाति, वा यानादीनि वस्तूनीतस्ततो वहति प्रापयति तम् (अग्निं=परमेश्वरं विद्युद्रूपं वा) १.१२.२. दातव्यविज्ञान-प्रापकम् (आप्तं विद्वज्जनम्) ३.१०.९. धर्त्तव्यवाहकम् (विप्रं=मेधाविजनम्) ६.१५.४. यो हव्यान् दातुमादातुं च योग्यान् रसान् वहति तम् (अग्निम्) २.२.१७. यो हव्यानि हुतानि द्रव्याणि वहति तद्वद्वर्त्तमानम् (अध्यापकम्) ७.१७.६. हव्यानां पदार्थानां प्रापकम् (अग्निं=विद्वज्जनम्) ३.१७.४. यो हव्यं हविर्वहति तम् (ओग्न=पावकम्) ३.५.१०. **हव्यवाहः**=ये हव्यं वहन्ति ते (प्रियाचाराः सखायः) ३.४३.१. [हव्योपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि 'वहश्चे' ति ण्विः। हव्यवाट्—वायुर्वै तूर्णिर्हव्यवाड् वायुर्देवेभ्यो हव्यं वहति ऐ० २.३४. एष हि हव्यवाड् यदग्निः। श० १.४.१.३९.]

हव्यवाहन यो हव्यानि होतुं दातुमर्हाणि द्रव्याणि सुखसाधकानि वहति प्रापयति तत्सम्बुद्धौ (परमेश्वर) १.४४.५. यो हव्यानि ग्रहीतव्यानि प्रापयति तत्सम्बुद्धौ (विद्वन्नुपदेशक) ३.९.६. **हव्यवाहनम्**=उत्तमपदार्थ-प्रापकम् (अग्निम्) ५.५८.६. यो हव्यं वहति तम् (अग्निं=पावकम्) २.४१.१९. **हव्यवाहनः**=यो हव्यानि हुतानि द्रव्याणि वहति सः (अग्निः) ६.१६.२३. यो हव्यानि ग्राह्यदातव्यानि हुतानि द्रव्याणि यानानि वा वहति प्राप्नोति सः (अग्निः) १.४४.२. यो हव्यानि ग्रहीतुं योग्यानि वस्तूनि वहति प्रापयति सः (विद्वज्जनः) ३४.९. आदातव्यपदार्थान् देशान्तरे प्रापकः (अग्निः) ५.११.४. यथाऽग्निर्हव्यानि वहति तथा (जगदीश्वरो विद्वज्जनो वा) ५.३१. सब हव्य उत्कृष्ट रसों के भेदक आकर्षक तथा यथावत् स्थापक (ईश्वर) आर्याभि० २.१६, ५.३१. [हव्योपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोर्णिजन्तात् 'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ल्युट्। हव्यवाहनः एष हि हव्यवाहनो यद् अग्निः श० १.४.१.३९.]

हव्यवाहम् हव्यानि होतुं दातुमर्हाणि प्रज्ञानानि यया ताम् (जिह्वां=वाचम्) १३.१५. [हव्योपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। वहश्चेति वा ण्विः]

हव्यसूक्तीनाम् बहूनि हव्यानां सूक्तानि यासु तासाम् (भा०—विद्यानाम्) २८.११. [हव्य-सूक्तिपदयोः समासः। सूक्तिः=सु+वच परिभाषणे (अदा०)+क्तिन्]

हव्यसूदनः यथा हव्यानि सूदते तथा (भगवान् विद्वज्जनो वा) ५.३२. मिष्ट, सुगन्ध, रोगनाशक, पुष्टि-कारक द्रव्यों से वायु वृष्टि की शुद्धि करने कराने वाला (परमेश्वर) आर्याभि० २.१७. ५.३२. [हव्योपपदे षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोः 'अन्येभ्योऽपि दृश्यते' अ० ३.३.१३०. सूत्रेण युच्]

हव्यसूदः यो हव्यानि सूदयति क्षरयति सः (बृहस्पतिः=सूर्यः) ४.५०.५. [हव्योपपदे षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोरच् कर्त्तरि]

हव्यसूदः या हव्यानि दुग्धादीनि क्षरन्ति ताः (गावः) १.९३.१२. [हव्योपपदे षूद क्षरणे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

हव्या उच्चारणीया (वाक्) ६.६१.१२. **हव्ये**=स्वीकर्त्तुमर्हे (पत्नि) ८.४३. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्यत्। ततष्टाप् स्त्रियाम्। ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्वा बाहु० औणा० क्यप्। ततष्टाप् स्त्रियाम्]

हव्या दातुमादातुं योग्यानि वस्तूनि १.९३.११. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्यत्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

हव्या अत्तुमर्हाणि (वस्तूनि) २९.१०. आदातुमर्हाणि (शस्त्रास्त्राणि) १.१७१.४. होतुमत्तुमर्हाणि (वसु=धनानि) ६.७. होतुं धर्माऽर्थकाममोक्षान् साधयितुमर्हाणि साधनानि ३.२१.१. ग्रहीतुं योग्यान् (देवान्=विदुषो दिव्य-गुणान्वा) १.७४.६. आदातुमर्हाणि होमद्रव्याणि १.१३९.३ दातुमादातुमर्हाः (इषः=अन्नाद्याः) ५.७.३. दातुमत्तुमादातु-मर्हाणि वस्तूनि, अ०—होतव्यानि द्रव्याणि, प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति लोपः ३.१. [हव्यप्राति० शेर्लोपश्छन्दसि। हव्यम्—हु दानादानयोः (जु०) धातोर्यत्]

हव्यात् यो हव्यान्यत्ति सः (अग्निः=पावकः) ७.३४.१४. [हव्योपपदे अद भक्षणे (अदा०) धातोः 'अदोऽनन्ने' अ० ३.२.६८. सूत्रेण विट्]

हव्येभिः दातुमर्हैः (नमोभिः=अन्नादिभिः) १.१५३.१ आदातुमर्हैः (नमोभिः) ४.४२.९. [हव्यमिति व्याख्यातम्। ततो भिस ऐस् न भवति 'बहुलं 'छन्दसि' सूत्रेण]

हसामुदौ सदा हास्य और आनन्दयुक्त (स्त्री-पुरुष) सं० वि० १४०, अथर्व० १४.२.४३. [हस-मुदपदयोः समासः। पूर्वस्य संहितायां दीर्घः। हसः=हसे हसने (भ्वा०) धातोरच्। मुदः=मुद हर्षे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि इगुपधलक्षणः कः]

हसाय हसनाय ३०.६. [हसे हसने (भ्वा०) धातोर्घञर्थे कः]

हस्कर्त्तारम् प्रकाशकर्त्तारम् (अग्निम्=ईश्वरम्) ४.७.३. [हस्-कर्तृपदयोः समासः । हस्=हसे हसने (भ्वा०)+क्विप्]

हस्कारात् हसनं हस्तत्करोति येन तस्मात् (वायोः) १.२३.१२. [हस् इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कृतो बहुलम् वा' इति करणेऽण् । हस्=हसे हसने (भ्वा०) +क्विप्]

हस्त हसन्ति प्रसन्ना भवन्ति यस्मात्तत्सम्बुद्धौ (मित्र=विद्वन् सभाध्यक्ष) ४.२७. **हस्तम्**=हाथ को सं० वि० १२१, अथर्व० १४.१.५१. **हस्तयोः**=करयोः १.५५.८. भुजयोः १.१३५.९. **हस्तः**=यो हसति सः (अध्यापको वैद्यः) २.३३.७. **हस्ताभ्याम्**=ग्रहणविसर्जनाभ्याम् १.१०. प्राणाऽपानाभ्याम्, १.२१. ग्रहणत्यागहेतुभ्यामुदानाऽपानाभ्याम् १.२४. रोगनाशकधातुसाम्यकारकाभ्यां गुणाभ्याम् ६.३०. हस्त इव वर्त्तमानाभ्यां धारणाकर्षणाभ्याम् ६.९. ग्रहणदानाभ्याम् ऋ० भू० २१८, २०.३. कराभ्याम् १८.३७. शोधन-सर्वाङ्गप्रापणाभ्याम् २.११. गतिधारणाभ्यामिव कराभ्याम् ३८.१. यथा प्रबलभुजदण्डाभ्यां तथा ५.२६. उत्साहपुरुषार्थाभ्याम् २०.३. **हस्तेषु**=हस्ताद्यङ्गेषु, समी०—बहुवचनादङ्गानीति ग्राह्यम् १.३७.३. [हसे हसने (भ्वा०) धातोः 'हसिमृग्रिण्वामिदमि०' उ० ३.८६. सूत्रेण तन् । हस्तो हन्तेः प्राशुर्हनने नि० १.७. हस्तः हस्तो वितस्तिः श० १०.२.२.८. (नक्षत्रम्) देवस्य सवितुर्हस्तः तै० १.५.१.३. हस्त एवास्य (नक्षत्रियस्य प्रजापतेः) हस्तः । तै० १.५.२.२.]

हस्तग्राभस्य विवाहे संगृहीतहस्तस्य (पत्युः) ऋ० भू० २११, १०.१८.८. पाणिग्रहण करने वाले नियुक्त पति के स० प्र० १५२, १०.१८.८. [हस्तोपपदे ग्रह उपादाने (क्र्या०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण् । 'हृग्रहोर्भश्छन्दसि' इति हस्य भकारः]

हस्तघ्नः यो हस्ताभ्यां हन्ति सः, भा०—बाहुबलः, शस्त्रास्त्रप्रक्षेपणवित् (पुमान्=पुरुषार्थी सेनापतिः) २९.५१. [हस्तोपपदे हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'कृतो बहुलं वे' ति टक् । मूलविभुजादित्वाद्वा कः । हस्तघ्नः हस्ते हन्यते । नि० ९.१४.]

हस्तच्युती हस्तयोः प्रच्युत्या भ्रामणक्रियया ७.१.१. [हस्त-च्युतिपदयोः समासे 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण पूर्वसवर्णदीर्घः । च्युतिः=च्युङ् गतौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियां क्तिन्]

हस्तयतः हस्ता यता निगृहीता वशीभूता यस्य सः (विद्वज्जनः) ५.४५.७. [हस्त-यतपदयोः समासः । यतः=यमु उपरमे (भ्वा०) धातोः क्तः]

हस्ता बलवीर्यौं बाहू वा ५.१९. [हस्त इति व्याख्यातम् । ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

हस्तासः हस्तवद्वर्त्तमानाः (गायत्र्यादीनि सप्त छन्दांसि विभक्तयः प्राणा वा) ४.५८.३. हस्तेन्द्रियमिव (विभक्तयः) १७.९१. [हस्त इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

हस्तिनः कुञ्जरान् २४.२९. प्रशस्ता हस्ता विद्यन्ते येषान्ते (सिद्धिमन्तो राजप्रजाजनाः) ३.३६.७. किरणाः १.६४.७. **हस्तिभिः**=इभैः ५.६४.७. [हस्त इति व्याख्यातम् । ततः प्रशंसायामर्थे इनिः]

हस्तिपम् हस्तिनां पालकम्' भा०—हस्तिरक्षकम् (प्रजाजनम् ३०.११. [हस्तिन् इत्युपपदे पा रक्षणे (अदा०) धातोः कः]

हस्त्यम् हस्तेषु साधुम् (पदार्थम्) २.१४.९. [हस्त इति व्याख्यातम् । ततो भवार्थे यत्]

हस्रेव हसन्ति (उषाः) इव १.१२४.७. [हस्रा-इवपदयोः समासः । हस्रेव=हसनेव । नि० ३.५. । हस्रा—हसे हसने (भ्वा०) धातोः 'स्फायितञ्चि०' उ० २.१३. सूत्रेण रक् । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

हंसः पक्षिविशेषः १.६५.५. यः संहन्ति सर्वान् पदार्थान् स जगदीश्वरः १०.२४. दुष्टकर्महन्ता (ब्रह्म जीवो वा) १२.१४. यो हन्ति पापानि सः (जीवात्मा) ४.४०.५. यो हन्ति दुःखानि सः (अ०—विवेकी जनः) १९.७४. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'वृतृवदिवचि०' उ० ३.६२. सूत्रेण सः । हंसासः अश्वनाम निघं० १.१४. हंसाः—हन्तेर्घ्नन्त्यध्वानम् नि० ४.१३. हंसाः सूर्यरश्मयः नि० १३.३०]

हंसा इव हंसपक्षिवत् १.१६३.१०. हंसवद् गन्तारः, भा०—हंसवद् गतयः (अश्वाः) २९.२१. यथा पक्षिविशेषाः ३.८.९. [हंसाः-इवपदयोः समासः]

हंसासः हंसा इव गमनकर्त्तारः (प्राणाः) ७.५९.७. हंस इव सद्यो गन्तारोऽश्वाः ४.४५.४. [हंस इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक् । हंसासः अश्वनाम निघं० १.१४.]

हारिद्रवेषु ये हरन्ति द्रवन्ति द्रावयन्ति च तेषामेतेषु (रोगेषु) १.५०.१२ [हरिद्रुप्राति० 'तस्येदम्' इत्यर्थेऽण् । हरिद्रुः=हरि इत्युपपदे द्रु गतौ (भ्वा०) धातोः 'हरिमितयो-

र्द्रुवः' उ० १.३४. सूत्रेण कुर्डिच्च]

हारियोजन यो हरीन् तुरङ्गान् अग्न्यादीन्वा युनक्ति स एव तत्सम्बुद्धौ (इन्द्र=सभाध्यक्ष) १.६१.१६. **हारियोजनः**=हरीन् योजयति यः सारथिः स हरियोजनः, हरियोजन एव हारियोजनस्तद्वत् (गृहपतिः) ८.११. हरीणामश्वानां योजयिता तस्याऽयमनुक्रमः १८.२०. [हरियोजनप्राति० स्वार्थे प्रज्ञादित्वादण्। हरियोजनः—हरि इत्युपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोः 'कृत्यल्युटो बहुलमि' ति कर्त्तरि ल्युट्। हारियोजनः—(ग्रहः) छन्दांसि वै हरियोजनः श० ४.४.३.२]

हारियोजनम् हरयोऽश्वा युज्यन्ते यस्मिँस्तत् (रथं=ज्ञानम्) १.८२.४, [हरियोजनम्—हर्युपपदे युजिर् योगे (रुधा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। ततः स्वार्थेऽण्]

हार्दि हृदयस्याऽतिशयेन प्रियम् (मनः=चित्तम्) ६.२१. हृदि भवं मनः ३३.५१. हृदयस्येदम् (सवनम्=ऐश्वर्यम्) ५.४४.९. हार्दमस्मिन्नस्ति तत् (ज्ञानम्) २.२९.६ [हार्दप्राति० मत्वर्थ इनिः। हार्दम्—हृदयप्राति० प्रियार्थे 'तस्येदम्' इत्यर्थे वाऽण्। 'हृदयस्य 'हृल्लेखयदण्लासेषु' अ० ६.३.५०. सूत्रेण हृदयस्य हृदादेशः]

हार्द्वानम् हृदं वनति सम्भजति येन तदेव (घर्मम्) ३८.१२. हृदोपपदे वन सम्भक्तौ (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। ततः स्वार्थेऽण्]

हासमाना आनन्दमयी (पृत्सुतिः=वीरसेना) १.१६९.२. [हसे हसने (भ्वा०) धातोः शानजन्तात् स्त्रियां टाप्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। हासमाने—हासतिः स्पर्द्धायां हर्षमाणे वा नि० ९.३९.]

हाः त्यजेः ३.५३.२०. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोर्लङ्। अडभावः। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

हि सादृश्ये ७.८. निश्चये ३.३३. प्रसिद्धौ १२.२१. एवार्थे १.१०.१०. हेत्वपदेशे १.८.१०. हेत्वर्थे १.८.९. किल २१.४६. खलु १८.७५. यतः ८.२०. विस्मये १.१८०.७. कदाचिदर्थे १.२५.१. चाऽर्थे १.२४.८. [हि-हीत्येषोऽनेककर्मेदं हि करिष्यतीति हेत्वपदेशे, कथं हि करिष्यतीत्यनुपृष्टे कथं हि करिष्यतीत्यसूयायाम् नि० १.५.]

हिङ् हिङ्कारम् १.१६४.२८.

हिङ्काराय यो हिङ्करोति तस्मै (जनाय) २२.७. [हिङ् इत्युपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोरण्। हिङ्कारः—तस्य (एकविंशसाम्नः) त्रय्येव विद्या हिङ्कारः जै० उ० १.१९.२. एष वै साम्नां रसो यद्धिङ्कारः तां० ६.८.७. हिङ्कृत्य तदैतद् यज्ञस्याग्रे गेयं यद्धिङ्कारः। गो० उ० ३.९. न वाऽअहिंकृत्य साम गीयते श० १.४.१.१. हिङ्कारो वै गायत्रस्य प्रतिहारः तां० ७.१.४. श्रीर्वा एषा प्रजापतिस्साम्नो यद्धिङ्कारः जै० उ० ३.१२.३. एष वै स्तोमस्य योगो यद्धिङ्कारः तां० ६.८.६. वज्रो वै हिङ्कारः कौ० ३.२. शुक्लमेव हिङ्कारः जै० उ० १.३४. वायुरेव हिङ्कारः जै० उ० १.३६.९. स (प्रजापतिः) पुरोवातमेव हिङ्कारमकरोत् जै० उ० १.१२.९. प्राणो हि वै हिङ्कारस्तस्मादपिगृह्य नासिके न हिङ्कर्त्तुं शक्नोति श० १.४.१.२. प्रजापतिर्वै हिङ्कारः तां० ६.८.५. लोमैव हिङ्कारः जै० उ० १.३६.६. स (प्रजापतिः) मन एव हिङ्कारमकरोत् जै० उ० १.११.५. चन्द्रमा एव हिङ्कारः जै० उ० १.३३.५. तस्य साम्न इयमेव प्राची दिग्घिङ्कारः जै० उ० १.३१.२. यदनुदितः (आदित्यः) स हिङ्कारः जै० उ० १.१२.४. रश्मय एव हिङ्कारः जै० उ० १.३३.९. अहोरात्राणि हिङ्कारः ष० ३.१. स (प्रजापतिः) वसन्तमेव हिङ्कारमकरोत् जै० उ० १.१२.७. वसन्तो हिंकारः ष० ३.१. वृषा हिंकारः गो० पू० ३.२३. स (प्रजापतिः) यजूंष्येव हिङ्कारमकरोत् जै० उ० १.१३.३.]

हिङ्कृण्वती हिङिति शब्दयन्ती (अघ्न्या=गौः) १.१६४.२७. [हिङ्पूर्वाद् डुकृञ् करणे (तना०) धातोः शत्रन्तान्ङीप्। व्यत्ययेन श्नुः]

हिङ्कृताय हिङ्कृतं येन तस्मै (जनाय) २२.७. [हिङ्-कृतपदयोः समासः]

हितम् हितकारिणम् (अग्निम्) १५.२८. स्थितम् (बलम्) ५.५७.६. धृतं प्रसन्नं वा (मनः) १.१८७.६. प्रवृद्धम् (धनम्) ६.४५.१५. सुखकारकम् (धनम्) ६.४५.१२. सुखकारि (धनं=द्रव्यम्) ६.४५.२. स्थापितं स्थितं वा (राजानं=प्राणं जीवं वा) १.२३.१४. स्थितं परमात्मानम् ५.११.६. सर्वाऽविरुद्धम् (सुप्रवाचनम्=अध्यापनमुपदेशनं वा) १.१०५.१२. सुखसाधकम् (अविरोधनम्) ३.१२.८. **हितः**=धृतः सन् हितकारी, अ०—स्थापितः (अग्निः) १.१३.४. सर्वस्य हितं दधन् (जातवेदाः=तनयः) १२.१०८. हितसम्पादकः (विद्वज्जनः) १.१२८.७. **हितेषु**=सुखनिमित्तेषु (कार्येषु) ५.१.५. **हिते**=हितसाधके (तनये) ४.४१.६. [डुधाञ् धारणपोषणयोः (जु०) धातोः क्तः। 'दधातेर्हिः' अ० ७.४.४२. सूत्रेण हिरादेशः अथवा हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोः क्तः। हितम्—प्राणो वै हितं प्राणो हि सर्वेभ्यो भूतेभ्यो

हितः श० ६.१.२.१४.]

हितमित्रः हिता धृता मित्राः सुहृदो येन सः (सभाध्यक्षः) १.७३.३. प्रियमित्रवान् (राजा) आर्याभि० १.४६. ऋ० १.५.१६.३. हितानि धृतानि मित्राणि येन सः राजा ३.५५.२१. [हित-मित्रपदयोः समासः]

हितवान् हितं विद्यते यस्य सः (जनः) १.१८०.७. [हितं व्याख्यातम् । ततो मतुप्]

हिता हितकारिणी (तविषी=बलयुक्ता सेना) १.५१.७. **हिताः**=हिन्वन्ति गच्छन्ति यास्ताः (नद्यः) १.५४.१०. [हितं व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाप्]

हिता इव यथा हितसम्पादकारतया १.१६६.३. [हिताः-इवपदयोः समासः]

हितानि हितकराणि (वसूनि=द्रव्याणि) ५.४२.३. **हिते**=सुखवर्धके (धने) १.११६.१५. [हितमिति व्याख्यातम्]

हितेनेव हितसाधकेन सैन्येनेव ४.५७.१. [हितेन-इव पदयोः समासः]

हित्वा त्यक्त्वा ५.५३.१४. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः क्त्वा । 'जहातेश्च क्त्वि' इति हिभावः]

हित्वी हित्वा २.३८.६. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः क्त्वा । धातोर्हिभावः 'जहातेश्च क्त्वि' सूत्रेण । 'स्नात्व्यादयश्च' सूत्रेणेत्त्वम्]

हिन खलु ६.४८.२.

हिन हिनु वर्धय, प्र०—अत्र हि गतौ वृद्धौ च इत्यस्माल्लोण्मध्यमैकवचने वर्णव्यत्ययेनोकारस्याऽकारः २७.४४. **हिनु**=वर्धयतु ६.४५.३०. वर्द्धय ३४.८. **हिनुहि**=जानीहि १.१४३.४. वर्धय ६.४५.१४. **हिनोत**=वर्धयत ७.३४.५. प्रेरयत २.१४.४. **हिनोतम्**=प्राप्नुतम् १.१८४.४. **हिनोति**=वर्धयति १.१८.४. **हिनोमि**=प्राप्नोमि २.३२.३. वर्धयामि १.६१.४. गमयामि ३५.१६. **हिनोषि**=वर्धयसि ६.१३.३. **हिन्वति**=वर्धयन्ति वर्धन्ते वा, प्र०—अत्र पक्षेऽन्तर्भावितो ण्यर्थः ३.३१.१६. **हिन्वतु**=प्रीणयतु, प्र०—अत्र लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थः १.२७.११. **हिन्वन्ति**=प्रेरयन्ति १.८४.११. प्राप्नुवन्ति वर्धयन्ति वा ७.६.२. हितं कुर्वन्ति प्रीणयन्ति १.१४४.५. हिंसन्ति ऋ० भू० ३१७, १०.७१.५. बढ़ाते हैं पं० वि०, **हिन्वन्तु**=प्रीणन्तु प्रीणयन्ति सेधयन्ति, प्र०—अत्र लडर्थे लोडन्तर्गतो ण्यर्थश्च १.२३.१७. विज्ञापयन्तु वर्धयन्तु वा १.१११.४. **हिन्विरे**=वर्धयन्ति ५.६.६. **हिन्वे**=गमयेय ४.७.११. [हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्लोट् । वर्णव्यत्ययेनोकारस्याकारः । अन्यत्र लट् लिट् च । हिनु धेहि नि० ११.३०. हिनोत प्रहिणुत नि० ६.२२. हिन्वन्ति आप्नुवन्ति नि० १.२०.]

हिन्वन् गमयन् (सोमलतेव व्यवहारः) ५.३६.२. [हि गतौ वृद्धौ च (भ्वा०) धातोः शतृ]

हिन्वानः वर्धयन् (अग्निः=विद्युदादिपदार्थः) ७.१०.१. **हिन्वानाः**=वर्धयमानाः (मनीषिणो जनाः) २.२१.५. [हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोः शानच् । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

हिन्वानासः सुखं सम्पादयन्तः (शत्रवो दुष्टमनुष्याः) १.३३.८. [हिन्वान इति व्याख्यातम् । ततो जसोऽसुक्]

हिन्वानाः प्रीतिकारिका नद्यः १.१०४.४. [हिन्वान इति व्याख्यातम् । ततः स्त्रियां टाबन्ताज्जस्]

हिमवते बहूनि हिमानि विद्यन्ते यस्य तस्मै (पर्वताय) २४.३०. **हिमवन्तः**=हिमालयादयः पर्वताः २५.१२. [हिमप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । हिमम्=हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हन्तेर्हि च' उ० १.१४४. इति मक् । धातोर्हिरादेशश्च]

हिमस्य शीतस्य २३.६. **हिमाः**=वर्षाणि ५.५४.१५ संवत्सरान् २.३३.२. हेमन्तर्त्तुयुक्तानि वर्षाणि ३.१८. वृद्धीर्हेमन्तानृतून् वा ६.४८.८. हेमन्तर्त्तवः २.२७. [हिममिति पूर्वपदे व्याख्यातम् । अथवा हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० मक् । हिमम्—हिमं पुनर् हन्तेर्वा हिनोतेर्वा नि० ४.२७. हिमस्य जरायु (यजु० १७.५.) यद्वै शीतस्य प्रशीतं तद्धिमस्य जरायु श० ९.१.२.२६. हिमाः—(यजु० २.२७.) शतं हिमा इति शतं वर्षाणि जीव्यासमित्येवैतदाह श० १.९.३.१९. हिमा रात्रिनाम निघं० १.७. हिमेन=उदकेन नि० ६.३६.]

हिम्येव हेमन्तर्त्तौ भवा महाशीतयुक्ता रात्रय इव, प्र०—'भवे च छन्दसि' इति यत् हिम्येति रात्रिनाम निघं० १.७. 'हन्तेर्हि च' उ० १.११४. इति हन्धातोर्मक् ह्यादेशश्च १.३४.१. [हिम्या-इवपदयोः समासः । हिम्या—हिमप्राति० भवार्थे यत् । ततष्टाप् स्त्रियाम्]

हियानस्य वर्धमानस्य (दाहकस्याऽग्नेः), प्र०—अत्र व्यत्ययेनात्मनेपदम् २.४.४. [हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोः शानच् । विकरणस्य लुक्]

हिरणिनः हिरणाः सन्ति येषान्तान् (जनान्) ६.६३.९. हिरण्यादिधनयुक्तस्य (सूरेः=मेधाविजनस्य)

५.३३.८. [हिरणप्राति० मत्वर्थ इनिः । हिरण्यप्राति० मत्वर्थ इनिप्रत्यये छान्दसं रूपम्]

हिरण्मयेन ज्योतिर्मयेन (पात्रेण=रक्षकेणेश्वरेण) ४०.१७. [हिरण्यप्राति० अवयवे विकारे वार्थे मयट्प्रत्यये 'दाण्डिनायनहास्तिनायन०' अ० ६.४.१७४. सूत्रेण यादिलोपो निपात्यते । हिरण्यम्=हर्य गतिकान्त्योः (भ्वा०) धातोः 'हर्यतेः कन्यन् हिरच्' उ० ५.४४. सूत्रेण कन्यन् । हिरच् चादेशः । हिरण्यं कस्माद् ध्रियत आयम्यमानमिति वा ह्रियते जनाज्जनमिति वा हितरमणं भवतीति वा हृदयरमणं भवतीति हर्यतेर्वा स्यात् प्रेप्साकर्मणः नि० २.१०. हिरण्यम् हिरण्यनाम निघं० १.२. ज्योतिर्हि हिरण्यम् श० ४.३.४.२१.]

हिरण्यकर्णम् हिरण्यं कर्णे यस्य तम् (अयं=वैश्यम्) १.१२२.१४. [हिरण्य-कर्णपदयोः समासः]

हिरण्यकारम् सुवर्णकारं सूर्यं वा ३०.१७. [हिरण्योपपदे डुकृञ् करणे (तना०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्]

हिरण्यकेशः हिरण्यवत्तेजोवत्केशा न्यायप्रकाशा यस्य सः (अहिः=मेघ इव) १.७९.१. [हिरण्य-केशपदयोः समासः । केशा रश्मयः, काशनाद्वा प्रकाशनाद्वा नि० १२.२६.]

हिरण्यगर्भः हिरण्यानि सूर्यादितेजांसि गर्भे यस्य स परमात्मा २५.१०. हिरण्यानि सूर्यादीनि ज्योतींषि गर्भे यस्य कारणरूपस्य सः (परमेश्वरः) २३.१. सूर्यविद्युदादिपदार्थाऽधिकरणः (ईश्वरः) ३२.३. हिरण्यानां सूर्यादीनां तेजस्विनां गर्भ उत्पत्तिस्थानम् (परमेश्वरः) ऋ० भू० ३००, ३२.३. हिरण्यं ज्योतिर्विज्ञानं गर्भः स्वरूपं यस्य सः (परमेश्वरः) एवञ्च ज्योतिः प्रकाशोऽमृतं मोक्ष, आदित्यादयः केशाः प्रकाशलोका, यशः सत्कीर्त्तिर्धन्यवाद, आत्मा, जीव, इन्द्रः, सूर्योऽग्निश्चैतत् सर्वं हिरण्याख्यं गर्भे सामर्थ्ये यस्य स हिरण्यगर्भः परमेश्वरः ऋ० भू० ७५, ३२.३. हिरण्यानि सूर्यादीनि तेजांसि गर्भे मध्ये यस्य सः (प्रजापतिः=परमात्मा) १३.४. सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों का गर्भ नाम उत्पत्तिस्थान उत्पादक (ईश्वर) आर्याभि० २.२०, १३.४. जिसने प्रकाश करने वाले सूर्यचन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न किए हैं वह प्रकाश स्वरूप (ईश्वर) सं० वि० ४, १३.४. सब सूर्यादि तेजस्वी लोकों का आधार (देवः=परमात्मा) स० प्र० २८२, १०.१२१.१. [हिरण्य-गर्भपदयोः समासः । हिरण्यमिति व्याख्यातं हिरणमयेन पदे । प्रजापतिर्वै हिरण्यगर्भः श० ६.२.२.५. हिरण्यगर्भः—हिरण्यगर्भो हिरण्यमयो गर्भो, हिरण्यमयो गर्भोऽस्येति वा । गर्भो गृभेर्गृणात्यर्थे गिरत्यनर्थानिति वा नि० १०.२३.]

हिरण्यचक्रान् हिरण्यानि सूर्यादीनि तेजांसि चक्रेषु येषां विमानादीनां तान् (रथान्) १.८८.५. [हिरण्यचक्रपदयोः समासः]

हिरण्यजिह्वः=हिरण्यमिव सत्येन सुप्रकाशिता वाणी यस्य सः (सविता=राजा) ६.७१.३. हिरण्यं हितरमणीया जिह्वा वाग् यस्य सः (राजा राजपुरुषो वा), प्र०—हितरमणं भवतीति वा हृदयरमणं भवतीति वा नि० २ १०. जिह्वेति वाङ्नाम निघं० १.११, ३३.६९. [हिरण्य-जिह्वापदयोः समासः । हिरण्यमिति व्याख्यातम् जिह्वा वाङ्नाम निघं० १.११.]

हिरण्यत्वक् हिरण्यं तेजः सुवर्णं चैव त्वगुपरिवर्णं यस्य सः (रथः=विमानादियानम्) ५.७७.३. [हिरण्य-त्वच्पदयोः समासः]

हिरण्यदन्तम् हिरण्येन सुवर्णेन तेजसा वा तुल्या दन्ता यस्य तम् (कुमारम्) ५.२.३. [हिरण्य-दन्तपदयोः समासः]

हिरण्यदाः ये वायवो हिरण्यं तेजो ददति ते २.३५.१०. [हिरण्योपपदे डुदाञ् दाने (जु०) धातोः कः]

हिरण्यनिर्णिक् यः पृथिव्या हिरण्यमग्नेस्तेजश्च नितरां नेनेक्ति सः (विद्वज्जनः) ५.६२.७. या हिरण्येन निर्णेनेक्ति पुष्णाति सा (वाक्) १.१६७.३. [हिरण्योपपदे निरुपपदे णिजिर् शौचपोषणयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

हिरण्यनेमयः हिरण्यस्वरूपा नेमिः सीमा यासां ताः (विद्युतः) १.१०५.१. [हिरण्य-नेमिपदयोः समासः । नेमिः वज्रनाम निघं० २ २०. नेमिः—णीञ् प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'नियो मिः' उ० ४.४३. सूत्रेण मिः]

हिरण्यपक्षः हिरण्यस्य सुवर्णस्य पक्षः परिग्रहो यस्य सः (विद्वान् सभेशः) १८.५३. [हिरण्य-पक्षपदयोः समासः]

हिरण्यपर्णम् हिरण्यानि तेजांसि पर्णानि पालकानि यस्य तम् (वनस्पतिं=किरणपालकं सूर्यम्) २८.३३. **हिरण्यपर्णः**=हिरण्यानि तेजांसि पर्णानि यस्य सः (वनस्पतिः=सूर्यः) २८.२०. हिरण्यवर्णः तेजस्वरूपः (वनस्पतिः) २१.५६. **हिरण्यपर्णाः**=हिरण्यानि पर्णानि पक्षा येषां ते (हंसासः=अश्वाः) ४.४५.४. [हिरण्य-पर्णपदयोः समासः । पर्णः—पॄ पालनपूरणयोः (जु०) धातोः 'धापॄवस्यज्यतिभ्यो नः' उ० ३.६ सूत्रेण नः । हिरण्यपर्ण

ऋतपर्णापि वोपमार्थे स्याद्धिरण्यवर्णपर्णेति । नि० ८.१९.]

हिरण्यपाणिम् हिरण्यानि सूर्यादीनि तेजांसि पाणौ स्तवने यस्य तम् (सवितारम्=ईश्वरम्) २२.१०. हिरण्यानि सुवर्णादीनि रत्नानि पाणौ व्यवहारे लभन्ते यस्मात्तम् (सवितारं=परमात्मानम्) १.२२.५. **हिरण्यपाणिः**=हिरण्यं ज्योतिः पाणिरिव यस्य सः (सूर्यः) ३४.२५. हिरण्यादिकं सुवर्णं पाणौ यस्य सः (सविता=विद्वान्राजा) ६.७१.४. हिरण्यानि ज्योतींषि सूर्य्यादीनि सुवर्णादीनि वा पाणौ व्यवहारे यस्य सः (सुक्रतुः=ईश्वरः, सभास्वामी प्रजाजनो वा), प्र०—ज्योतिर्हि हिरण्यम् श० ४.३.४.२१. इति प्रमाणेन हिरण्यशब्देन ज्योतिषो ग्रहणम् ४.२५. हिरण्यं ज्योतिः, पाणिर्हस्तः किरणव्यवहारो वा यस्य सः (वायुः) १.१६. हिरण्यानि ज्योतींषि पाणयो हस्तवद् ग्रहणसाधनानि यस्य सः (सविता=सूर्यलोकः) १.३५.९. हिरण्यं सुवर्णादिकं पाणौ हस्ते यस्य सः (दातृजनः) ६.५०.८. हिरण्यस्याऽमृतस्य मोक्षस्य दानाय पाणिर्व्यवहारो यस्य सः (सविता=जगदीश्वरः), प्र०—अमृतं हिरण्यम् श० ७.३.१.१५. यद्वा हिरण्यं प्रकाशार्थं ज्योतिः पाणिर्व्यवहारो यस्य सः (सविता=सूर्यलोकः) १.२०. पाणिरिव हिरण्यं तेजो यस्य सः (सविता=सूर्यः) ३.५४.११. **हिरण्यपाणे**=हिरण्यं हितरमणं पाणिर्व्यवहारो यस्य तत्सम्बुद्धौ (सविता=जगदीश्वरः) ७.३८.२. [हिरण्य-पाणिपदयोः समासः । हिरण्यमिति व्याख्यातम् । पाणिः=पण व्यवहारे स्तुतौ च (भ्वा०) धातोः 'अशिपणाय्यो रुडायलुकौ च' उ० ४.१३३. सूत्रेण इण् । हिरण्यपाणिः—तस्मात् (सविता) हिरण्यपाणिरिति स्तुतः । कौ० ६.१३. गो० उ० १.२.]

हिरण्यपिण्डान् सुवर्णादिसमूहान् ६.४७.२३. [हिरण्य-पिण्डपदयोः समासः]

हिरण्यप्रउगम् हिरण्यस्य ज्योतिषोऽग्नेः प्रउगं सुखवत्स्थानं यस्मिँस्तं प्रयोगार्हम् (रथं=विमानादियानम्) प्र०—पृषोदरादिनाऽभीष्टरूपसिद्धिः १.३५.५. [हिरण्य-प्रउगपदयोः समासः । प्रउगमिति पृषोदरादिना साधनीयम्]

हिरण्यबाहवे हिरण्यं ज्योतिरिव तीव्रतेजस्कौ बाहू यस्य तस्मै (सेनाधीशाय) १६.१७. **हिरण्यबाहुः**=हिरण्यं बाह्वोर्दानाय यस्य सः (इन्द्रः=सूर्य इव राजा) ७.३४.४. [हिरण्य-बाहुपदयोः समासः]

हिरण्यम् सुवर्णम् १४.१९. ज्योतिः सुवर्णादिकम् १.४६.१०. तेजोमयं सुवर्णादिकम्, भा०—समग्रमैश्वर्यम् ३४.५०. ज्योतिर्मयम् (ब्रह्मचर्यम्) ३४.५१. सत्यासत्यप्रकाशं विज्ञानम् ३४.५२. **हिरण्यानि**=हिरण्यैर्निर्मितान्याभूषणादीनि २५.३९. **हिरण्येन**=न्यायप्रकाशेन सुवर्णादिधातुमयेन (सूर्येण) वा १.३३.८. **हिरण्यैः**=किरणैरिव तेजोभिः २.३३.९. सुवर्णैस्तेजआदिभिः ५.६०.४. [हर्य गतिकान्त्योः (भ्वा०) धातोः 'हर्यतेः कन्यन् हिरच्' उ० ५.४४. सूत्रेण कन्यन् हिरजादेशश्च । हिरण्यं कस्माद् ध्रियते आयम्यमानमिति वा ह्रियते जनाज्जनमिति वा हितरमणं भवतीति वा हृदयरमणं भवतीति वा हर्यतेर्वा स्यात् प्रेप्साकर्मणः नि० २.१०. ज्योतिर्हि हिरण्यम् श० ४.३.१.२१. हिरण्यम्—तद् यदस्य (प्रजापतेः) एतस्यां रम्यायां तन्वां देवा अरमन्त तस्माद्धिरण्यं ह वै तद् हिरण्यमित्याचक्षते परोऽक्षम् श० ७.४.१.१६. (अथर्व० ५.२८.६. त्रेधा जातं जन्मनेदं हिरण्यमग्निरेकं प्रियतमं बभूव सोमस्यैकं हिंसितस्य परापतत् अपामेकं वेधसां रेत आहुस्तत् ते हिरण्यं त्रिवृदस्त्वायुषे) अग्निर्ह वाऽपोऽभिदध्यौ मिथुनमाभिः स्यामिति ताः सम्बभूव तासु रेतः प्रासिञ्चन्तद्धिरण्यमभवत् तस्मादेतदग्निसंकाशामग्नेर्हि रेतस्तस्मादप्सु विन्दन्त्यप्सु हि प्रासिञ्चत् श० २.१.१.५. तस्य (अग्नेः) रेतः परापतत् । तद्धिरण्यमभवत् तै० १.१.३.८, अग्नेर्वाऽएतद् रेतो यद्धिरण्यं नाष्ट्राणां रक्षसामपहत्यै श० १४.१.३.२९. समानजन्म वै अयश्च हिरण्यश्चोभयं ह्यग्निरेतसम् श० ३.२.४.८. अश्वस्य वा आलब्धस्य रेतः उदक्रामत् । तत्सुवर्णं हिरण्यमभवत् तै० ३ ८.२.४. श० १३.१.१.३. रेतो हिरण्यम् तै० ३.८.२.४. (प्रजापतिः) अयसो हिरण्यं (असृजत) तस्मादयो बहुध्मातं हिरण्यसंकाशमिवैव भवति श० ६.१.३.४. क्षत्रस्यैतद् रूपं यद्धिरण्यम् श० १३.२.२.१७. आयुर्हि हिरण्यम् श० ४.३.४.२४. (आयुष्यं वर्चस्यं रायस्पोषमौद्भिदम् । इदं हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्रायाविशतादु माम् यजु० ३४.५०. नैनं रक्षांसि न पिशाचाः सहन्ते देवानामोजः प्रथमजं ह्येतत् । यो बिभर्त्ति दाक्षायणं हिरण्यं स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः २. अपां तेजो ज्योतिरोजो बलं च वनस्पतीनामुत वीर्याणि । इन्द्र इवेन्द्रियाण्यधिधारयामो अस्मिन् तद् दाक्षायणो बिभ्रद् हिरण्यम् ३. अथर्व० १.३५.२-३. यद्धिरण्यं ददाति आयुस्तेन वर्षीयः कुरुते गो० उ० ३ १९. अमृतमायुर्हिरण्यम् श० ३.८.२.२७. (यजु० १८.५२.) अमृतं वै हिरण्यम् श० ९.४.४.५. प्राणो वै हिरण्यम् श० ७.५.२.८. सोमस्य वा अभिषूयमाणस्य प्रिया तनूरुदक्रामत् तत्सुवर्णं हिरण्यमभवत् तै० १.४.७.४-५. वरुणस्य वा अभिषिच्यमानस्याप इन्द्रियं वीर्यं निरघ्नन् ।

तत्सुवर्णं हिरण्यमभवत् तै० ८.१.९.१. वर्चो वै हिरण्यम् तै० १.८.९.१. तेजो वै हिरण्यम् तै० १.८.९.१. चन्द्रं हिरण्यम् तै० १.७.६.३. चन्द्रं, ह्येतच्चन्द्रेण क्रीणाति यत्सोमं हिरण्येन (चन्द्रः=सोमः, चन्द्रं=हिरण्यम्) श० ३.३.३.६. शुक्रं हिरण्यम् तै० १.७.६.४. शुक्रं ह्येतच्छुक्रेण क्रीणाति यत्सोमं हिरण्येन श० ३.३.३.६. ज्योतिर्वै शुक्रं हिरण्यम् ऐ० ७.१२. ज्योतिर्वै हिरण्यम् तां० ६.६.१०. यशो वै हिरण्यम् ऐ० ७.१८. सत्यं वै हिरण्यम् गो० उ० ३.१७. देवानां वा ऽएतद्रूपं यद्धिरण्यम् श० १२.८.१.१५. पवित्रं वै हिरण्यम् तै० १.७.२.६. तस्माद्धिरण्यं कनिष्ठं धनानाम् तै० ३.११.८.७.]

हिरण्यमिव यथा सुवर्णं प्रीतिकरम् १.४३.५. [हिरण्य-इवपदयोः समासः]

हिरण्ययम् तेजः सुवर्णं वा प्रचुरं यस्मिँस्तम् (रथम्) १.५६.१. हिरण्यप्रभूतं धनम् १.१३९.२. सुवर्णादिप्रचुरं धनम् ३.३४.९. सुवर्णादियुक्तं तेजोमयं वा (चक्रम्) ६.५६.३. ज्योतिर्मयम् (वज्रम्) १.८५.९. **हिरण्ययः**=तेजस्स्वरूपः (वेतसः=कमनीयो मनुष्यः) १७.९३. ज्योतिर्मयः (इन्द्रः=सूर्यलोकः), प्र०—'ऋत्व्यवास्त्व्य०' अ० ६.४.१७५. अनेन हिरण्यमयशब्दस्य मलोपो निपात्यते। 'ज्योतिर्हि हिरण्यम्' श० ४.३.१.२१, १.७.२. तेजोमयः सुवर्णमयो वा (विद्वज्जनः) ४.५८.५. यशस्वी (ईश्वरः) १३.३८. **हिरण्ययाः**=सुवर्णप्रचुराः (पवयः=चक्राणि) १.१८०.१. **हिरण्यये**=प्रभूतसुवर्णमये (रथे) १.१३९.४. **हिरण्ययेन**=सुवर्णादिनाऽलङ्कृतेन (रथेन=विमानादियानेन) ४.४४.५. ज्योतिर्मयेन सुवर्णाद्यलङ्कृतेन (रथेन) ४.४४.४. तेजोमय वरूप के साथ स० प्र० ३१३, ३३.४३. **हिरण्ययौ**=प्रभूतहिरण्यमय्यौ (द्यावापृथिव्यौ) १.१४४.६. [हिरण्यमिति व्याख्यातम्। ततोऽवयवे विकारे वार्थे मयट्प्रत्यये 'ऋत्व्यवास्त्व्य०' अ० ६.४.१७५. सूत्रेण निपातनान् मलोपः]

हिरण्यया हिरण्याद्याभूषणयुक्तौ (बाहू=भुजौ) ६.७१.१. ज्योतिष्प्रचुरे (पृथिवीसूर्यौ) ३३.७१. हिरण्यवत्सुदृढौ सुशोभितौ (बाहू) ६.७१.५. [हिरण्ययमिति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्याकारादेशः]

हिरण्ययासः हिरण्येन विद्युत्तेजसा प्रचुराः (मरुतः=वायवः) ६.६६.२. [हिरण्यप्राति० 'तत्प्रकृतवचने मयट्' इति मयट्प्रत्यये 'ऋत्व्यवास्त्व्य०' अ० ६.४.१७५. सूत्रेण मलोपः। ततो जसोऽसुक्]

हिरण्ययी रोगरहिता शुद्धा (योनिः=जन्मस्थानम्) ८.२९. **हिरण्ययीम्**=हिरण्यादिबहुधनयुक्ताम् (अमतिं=सुरूपां लक्ष्मीम्) ३.३८.८. तेजोमयीम् (अभ्रिं=खननसाधिकां शस्त्रीं) ११.११. हिरण्यादिप्रचुराम् (श्रियम्) ७.३८.१. **हिरण्ययीः**=सुवर्णप्रचुराः (शिप्राः=उष्णिषः) ५.५४.११. तेजोमय्यः सुवर्णादिसुभूषिताः (नावः) ६.५८.३. सुवर्णादिभिरनुलिप्ताः (द्वारः=द्वाराणि) २८.२८. हिरण्यप्रकाराः (देवीः=वाचः) २८.३१. [हिरण्यप्राति० अवयवे विकारे वार्थे मयट्प्रत्ययान्तात् स्त्रियां ङीप्]

हिरण्ययी प्रभूतहिरण्यमय्यौ (द्यावापृथिव्यौ) १.१४४.६. [हिरण्ययीति व्याख्यातम्। ततो द्विवचनस्य पूर्वसवर्णदीर्घः]

हिरण्ययुः हिरण्यं सुवर्णं कामयमानः (विद्वान्राजाऽध्यापकः परीक्षको वा) ७.३१.३. [हिरण्यप्राति० आत्मन इच्छायामर्थे क्यजन्तात् 'क्याच्छन्दसी' ति उः। 'न छन्दस्यपुत्रस्य' इतीत्त्वप्रतिषेधः]

हिरण्ययेभिः तेजोमयैः (पविभिः=चक्रैः) १.६४.११. [हिरण्यय इति व्याख्यातम्। ततो भिस ऐस् 'बहुलं छन्दसि' इति न भवति]

हिरण्यरथम् हिरण्यानां ज्योतिर्मयानां सूर्यादीनां लोकानां सुवर्णादीनां वा रथो देशान्तरप्रापणो यानसमूहः, प्र०—अत्र रथ इति रमु क्रीडायाम् इत्यस्य रूपं रम-धातोर्वा रूपम् १.३०.१६. **हिरण्यरथाः**=हिरण्यं सुवर्णं रथेषु येषां ते यद्वा हिरण्यं तेज इव रथा येषां ते रुद्रासः=विद्वांसो जनाः) ५.५७.१. **हिरण्यरथः**=तेजोमय रमणीयस्वरूपः सूर्य इव रथो व्यवहारो यस्य सः (अग्निः=राजा) ४.१.८. [हिरण्य-रथपदयोः समासः]

हिरण्यरूपम् हिरण्यस्य तेजसो रूपमिव रूपं यस्य तम् (अग्निं=सूर्यमिव राजानम्) ४.३.१. तेजःस्वरूपम् अयःस्थूणं=सुवर्णस्तम्भम्) ५.६२.८. **हिरण्यरूपौ**=ज्योतिःस्वरूपौ (मित्रावरुणौ=उपदेशकसेनापती) १०.१६. [हिरण्य-रूपपदयोः समासः। हिरण्यरूपः—हिरण्यवर्णस्येवास्य रूपम् नि० ३.१६.]

हिरण्यवत् हिरण्यादिना तुल्यम् (यज्ञम्) ८.६३. [हिरण्यप्राति० तुल्यार्थे वतिः]

हिरण्यवत् प्रशस्तानि हिरण्यादीनि विद्यादीनि तेजांसि वा विद्यन्ते यस्मिँस्तत् (रथं=रमणयानम्) १.९२.१६. हिरण्यं सुवर्णादिकं बहुविधं साधनं यस्य तत् (यानम्)

प्र०—अत्र भूम्न्यर्थे मतुप् १.३०.१७. [हिरण्यं व्याख्यातम् । ततो भूम्न्यर्थे मतुप्]

हिरण्यवन्धुरम् हिरण्यानि सुवर्णादीनि बन्धुराणि बन्धनानि यस्मिँस्तम् (रथं=रमणीयं यानम्) ४.४६.४. [हिरण्य-बन्धुरपदयोः समासः । बस्य वकारश्छान्दसः । बन्धुरः=बन्ध बन्धने (क्र्या०) धातोः 'मद्गुरादयश्च' उ० १.४१. सूत्रेण उरच्]

हिरण्यवर्ण यो हिरण्यं वृणोति तत्सम्बुद्धौ (राजन्) ५.३८.२. **हिरण्यवर्णम्**=तेजोमयं शोभनस्वरूपम् (घृतम्=उदकमाज्यं वा) २.३५.११. तेजस्विनम् (विद्वज्जनम्) ५.४३.१२. **हिरण्यवर्णः**=तेजःस्वरूपः (वनस्पतिः=सूर्यः) २१.५६. हिरण्यं सुवर्णमिव वर्णो यस्य सः (अग्निः) २.३५.१०. [हिरण्य-वर्णपदयोः समासः]

हिरण्यवर्णाम् तेजोमयीम् (विदुषीं स्त्रीम्) ३.६१.२. **हिरण्यवर्णाः**=हिरण्यवद् वर्णो यासां ता नद्यः २.३५.९. [हिरण्य-वर्णपदयोः समासे स्त्रियां टाप् । हिरण्यवर्णा नदीनाम निघं० १.१३.]

हिरण्यवर्त्तनिः हिरण्यस्य विद्याव्यवहारस्य वर्त्तनिमर्गो यस्यां सा (सरस्वती—वाणी) ६.६१.७. [हिरण्य-वर्त्तनिपदयोः समासः । वर्त्तनिः—वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः 'वृतेश्च' उ० २.१०६. सूत्रेणानिः]

हिरण्यवर्त्तनी यौ हिरण्यं ज्योतिः सुवर्णं वा वर्त्तयतस्तौ (अश्विना=शिल्पिजनौ) ५.७५.२. हिरण्यं प्रकाशं वर्त्तयन्तौ (अश्विनौ=वाय्वग्नी) १.९२.१८. [हिरण्यवर्त्तनिरिति व्याख्यातम् । ततो द्विवचने रूपम्]

हिरण्यवाशीमत्तम हिरण्येन सत्यप्रकाशेन परमयशसा सह प्रशस्ता वाशी वाग् विद्यते यस्य सोऽतिशयितस्तत्सम्बुद्धौ (पृथिवीराज्ययुक्त सभेश) प्र०—वाशीति वाङ्नाम निघं० १.११, १.४२.६. [हिरण्य-वाशीपदयोः समासे प्रशंसायामर्थे मतुप् । ततोऽतिशायने तमप् । वाशी वाङ्नाम निघं० १.११.]

हिरण्यशम्यम् हिरण्यानि सुवर्णान्यन्यानि वा ज्योतींषि शम्यानि शमितुं योग्यानि यस्मिँस्तम् (रथम्) १.३५.४. [हिरण्य-शम्यपदयोः समासः । शम्यम्=शमु उपशमे (दिवा०) धातोर्यत् 'पोरदुपधात्' सूत्रेण]

हिरण्यशिप्राः हिरण्यमिव शिप्राणि मुखानि येषां ते (राजपुरुषाः) २.३४.३. [हिरण्य-शिप्रपदयोः समासः । शिप्रे हनूनासिके वा नि० ६.१७.]

हिरण्यशृङ्गः हिरण्यानि तेजांसि शृङ्गाणीव यस्य सः (विद्युदग्निः) १.१६३.९. [हिरण्य-शृङ्गपदयोः समासः । शृङ्गम्—शृङ्गं श्रयतेर्वा शृणातेर्वा शम्नातेर्वा शरणायोद्गतमिति वा शिरसो निर्गतमिति वा नि० २.८.]

हिरण्यसन्दृक् यो हिरण्यं तेजः सम्यग् दर्शयति सः (अग्निः) २.३५.१०. **हिरण्यसन्दृशः**=हिरण्यं तेज इव सन्दृक् समानं दर्शनं येषान्ते (सज्जनाः) ६.१६.३८. [हिरण्योपपदे सम्पूर्वाद् दृशिर् प्रेक्षणे (भ्वा०) धातोः क्विन् छान्दसः]

हिरण्यस्येव यथा सुवर्णस्य १.११७.१२ [हिरण्यस्य-इवपदयोः समासः]

हिरण्यहस्तम् हिरण्यानि सुवर्णादीनि हस्ते यस्य यद्वा विद्यातेजांसि हस्ताविव यस्य तम् (विद्यात्रातृपुत्रम्) १.११७.२४. हिरण्यं हस्ते यस्मात् तम् (श्रुतं=पठितम्) १.११६.१३. **हिरण्यहस्तः**=हिरण्यानि ज्योतींषि हस्तवद् यस्य सः (देवः=सूर्यः) ३४.२६. हिरण्यानि सर्वतो गमनानि हस्ता इव यस्य सः (वायुः), प्र०—अत्र गत्यर्थाद् हर्यधातोरौणादिकः कन्यन् प्रत्ययः १.३५.१०. [हिरण्य-हस्तपदयोः समासः]

हिरण्या सुवर्णादीनि धनानि ४.१७.११. [हिरण्य-प्राति० शेर्लोपश्छन्दसि]

हिरण्याऽक्षः हिरण्यानि ज्योतींषि अक्षीणि व्याप्तिशीलानि यस्य सः (देवः=सूर्यलोकः) १.३५.८. हिरण्यानि ज्योतींष्यक्षीणी इव यस्य सः (सूर्य्यः) ३४.२४. [हिरण्य-अक्षिपदयोः समासे समासान्तोऽच् छान्दसः]

हिराभिः वृद्धिभिः २५.८. [हि गतिवृद्ध्योः (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० रक् । ततः स्त्रियां टाप्]

हिरिशिप्रः हिरी हरिते शिप्रे हनुनासिके यस्य सः (इन्द्रः=ईश्वरोपासको राजा) ६.२९.६. हरणशीलहनुः (विद्वज्जनः) २.२.५. [हिरि-शिप्रपदयोः समासः । हिरिः=हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोरौणा० इन्प्रत्यये हरिः । अकारस्येकारश्छान्दसः । शिप्रे हनूनासिके वा नि० ६.१७.]

हिरिश्मश्रुः हिरण्यमिव श्मश्रूणि यस्य सः (मेधावी राजा) ५.७.७. [हिरि-श्मश्रुपदयोः समासः । श्मश्रुलोम, श्मनि श्रितं भवति नि० ३.५.]

हिरुक् पृथक् १.१६४.३२. [हिरुक् निर्णीतान्तर्हितनाम निघं० ३.२५.]

हिषे प्रहिणोमि ७.७.१. [हि गतिवृद्ध्योः (स्वा०) धातोर्लट् । विकरणस्य लुक् 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेण । व्यत्ययेनात्मनेपदम्]

हिंसिषम् उच्छिन्द्याम्, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् १.२५. **हिंसिष्ट**=नष्ट करें सं० वि० १९०, अथर्व० १९.४.३. **हिंसिष्टम्**=हिंस्यातम् ५.३. **हिंसीत्**=हिनस्तु, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् १.२२. रोगैंहिंस्यात् १२.१०२. हन्यात्, ताडयेद्, विमुखं कुर्यात् ३२.३. **हिंसीः**=हिंस्यात् अ०—हननं कुर्याः, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् ४.१. हिंस्याः १३.४७. हिन्धि, अ०—विचालनं वा कुर्याः, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् ४.९. कुशिक्षया लालनेन वा विनाशयेः ६.१५. हिंसया युक्तं कुर्याः ३७.२०. हन्याः ५.४३. ताडयेः १८.५३. पीडित कर सं० वि० १६७, अथर्व० ९.२.३.१६. [हिसि हिंसायाम् (रुधा०) धातोर्लुङ्। अटोऽभावः]

हीडितस्य अनादृतस्य (राज्ञः) ७.४६.४. **हीडितः**=अनादृतः (विद्वज्जनः) १.८०.५. [हेडृ अनादरे (भ्वा०) धातोः क्तः। एकारस्येकारश्छान्दसः]

हीयताम् त्यज्यताम् ६.५२.१. [ओहाक् त्यागे (जु०) धातोः कर्मणि लोट्]

हुतम् वह्नौ प्रक्षिप्तम् (मधु=घृतादि) ३८.१६. शब्दितः (प्रजापतिः=जीवः)३९.५. [हु दानादानयोः (जु०) धातोः क्तः। अथवा ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तः। दीर्घाऽभावश्छान्दसः]

हुतासः सत्कारेण हुताः (देवाः=विद्वांसो जनाः) ६.५०.१५. [हुतमिति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

हुरश्चितम् उत्कोचकं हस्तात्परपदार्थाऽपहर्त्तारम् (स्तेनम्) १.४२.३. [हुरश्चित् स्तेननाम निघं० ३.२४.]

हुरः कुटिलस्य (दुर्जनस्य) ४.३.१३. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्। 'बहुलं छन्दसि' सूत्रेणोकारादेशः]

हुवतः स्तुवतः (सज्जनान्), ६.२१.१०. [हु दानादानयोः (जु०) ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्वा शतरि छान्दसं रूपम्]

हुवध्यै ग्रहीतुम् ५.४५.४. होतुमादातुम् १.१२२.५. आह्वातुम् ५.४३.८. ग्रहणाय ५.४१.३. [हु दानादानयोः (जु०) धातोः ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्वा तुमर्थे कध्यैः]

हुवन्यति आत्मनो हुवनं दानमादानञ्चेच्छति, प्र०—अत्र हुवनशब्दात् क्यचि 'वाच्छन्दसि' इतीत्वाभावेऽल्लोपः १.११९.९. [हुवनप्राति० इच्छायामर्थे क्यजन्ताल्लट्। हुवनम्=हु दानादानयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणा० क्युः]

हुवानः स्पर्धमानः (तेजस्वी राजा) ७.३०.३. आददानः (विद्वज्जनः) ५.४३.१३. आहूतः (इन्द्रः=ऐश्वर्यकारको जनः) ३.४१.४. स्तुवन् (प्रशस्तो जनः) ७.७.३. ददन् (विद्वज्जनः) ५.४३.१०. **हुवानाः**=आह्वातारः (देवाः=विद्वज्जनाः) ६.५०.१४. कृताऽऽह्वानाः (उस्राः=किरणाः) ४.१.१३. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः शानच्। शपो लुक्। औणा० वा आनच् किच्च। अथवा हु दानादानयोः (जु०) धातोः शानच्। शपो लुक्। व्यत्ययेनात्मनेपदम्। हुवानाः—हूयमानाः नि० १२.३३.]

हुवामहे स्पर्द्धामहे ५.५६.८. **हुवे**=गृह्णामि, प्र०—अत्र हु दानादानयोः इत्यस्माद् धातोर् 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् व्यत्ययेनाऽऽत्मनेपदं च ३.१३. स्पर्द्धे १.१३८.२. आह्वये १५.३२. प्रशंसेयम् ७.४२.२. आदद्मि ५.४६.३. आददे, प्र०—लडुत्तमस्यैकवचने रूपम् १.१७.७. स्तुवे १.११९.१. स्वीकरोमि १.१८१.१. आदद्याम्, प्र०—अत्र विकरणाऽभावो लिङर्थे लट् च १.२.७. स्तुयाम् ३३.४९. स्वीकुर्वे १.१८५.३. प्रशंसामि १.१८५.६. स्तौमि ६.४५.१९. आह्वयामि ६.४५.७. आददे ६.५०.१. आदद्मि ६.५.१. **हुवेम**=आदद्याम ४.४४.१. प्रशंसेम ७.४१.१. स्वीकुर्वीमहि ६.३६. आह्वयेम ८.४५. शब्दयेम ७.४१.२. स्वीकुर्याम १७.२३. गृह्णीयाम ३४.३४. स्तूयामहि ६.४९.१०. आह्वयामः ३३.९१. हम स्तुति, प्रार्थना करते हैं सं० वि० १५५, ७.४१.१. **हूमहे**=स्पर्धामहे, प्र०—अत्र ह्वेञ् इत्यस्माल्लटि 'बहुलं छन्दसि' इति शपो लुक् 'बहुलं छन्दसि' अ० ६.१.३४. इति सम्प्रसारणं 'सम्प्रसारणाच्च' इति पूर्वरूपञ्च 'हलः' अ० ६.४.२. इति दीर्घत्वम् १.१०.१०. स्पर्द्धेमहि २५.१६. स्तुमः २५.१८. स्वीकुर्महे ५.३५.३. आह्वयामः ६.४६.६. प्रशंसामः ६.४६.३. प्रशंसेम १.८९.३. हम अत्यन्त स्पर्द्धा करते हैं, स्पर्द्धा से आह्वान करते हैं आर्याभि० २.५०, २५.१८. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लट्। छान्दसे सम्प्रसारणे गुणेऽवादेशे चाकारस्योकारश्छान्दसः। अथवा हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लटि छान्दसं रूपम्। अन्यत्र लिङ् चापि। हुवे आह्वये नि० ११.३१. हुवेम ह्वयेम नि० १०.२८.]

हूतः प्रशंसितः (कुमारः=ब्रह्मचारी) ४.१५.७. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः क्तः]

हूतासः कृताऽऽह्वानाः सन्तः (वसवः=विद्वांसो जनाः) ६.५०.४. [हूत इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुक्]

हूयते स्पर्द्धयते १.१०१.६. स्तूयते १.१३५.२. दीयते

१.३६.६. क्षिप्यते दीप्यते १.३४.१०. प्रक्षिप्यते १.२६.६. **हूयसे**=स्तूयसे ३.४०.९. अध्वरसिद्धयर्थं शब्द्यते, प्र०—अत्र व्यत्ययः १.१९.१. [ह्वेञ् स्पर्द्धायां शब्दे च (भ्वा०) हु दानादानयोः (जु०) धातोर्वा कर्मणि लट्]

हूयमानम् स्पर्द्धमानम् (विद्यार्थिनं राजजनं वा) ४.२३.३. **हूयमानः**=कृताऽऽह्वानः (सभाध्यक्षः) १.१०४.९. शब्द्यमानः (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. स्वीकृतः (रुद्रः=जीवः) ८.५८. स्तूयमानः (राजा) ४.२९.२. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्]

हूयमाना कृताऽऽह्वानौ प्रशंसितौ (अश्विना=अध्यापकोपदेशकौ) ४.४३.४. आहूयमानौ (मित्रावरुणा=अध्यापकोपदेशकौ) ६.६७.३. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानजन्ताद् द्विवचनस्याकारः]

हूयमानाः जुह्वानाः (पतिव्रताः स्त्रियः) २.३.५. [हु दानादानयोः (जु०) धातोः कर्मणि शानच्]

हृणानस्य लज्जितस्य (कस्यचिज्जनस्य) १.२५.२. [ह्री लज्जायाम् (जु०) धातोः शानच् । विकरणव्यत्ययेन श्नाधातोः सम्प्रसारणं छान्दसम्]

हृणायन्तम् हरतीति हृणो हरिणस्तद्वदाचरन्तम् (दुर्जनम्) १.१३२.४. [हृणपदादाचारे क्यजन्ताच्छतृ । हृणः=हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० नक्]

हृणीयमानः क्रोधं कुर्वन् (विद्वज्जनः) ५.२.८. [हृणीङ् रोषणे लज्जायां च (कण्ड्वा०) धातोः शानच् । हृणीयते क्रुध्यतिकर्मा निघं० २.१२.]

हृणीषे हरसि, प्र०—अत्र विकरणव्यत्ययेन श्ना २.३३.१५. [हृञ् हरणे (भ्वा०)धातोर्लट् । व्यत्ययेन श्ना]

हृत्प्रतिष्ठम् हृदि प्रतिष्ठा स्थितिर्यस्य तत् (मनः) ३४.६. हृदय में प्रतिष्ठित (मन) स० प्र० २४७, ३४.६. [हृद्-प्रतिष्ठापदयोः समासः । प्रतिष्ठा=प्रति+ष्ठा गतिनिवृत्तौ (भ्वा०) धातोः स्त्रियामङ् । ततष्टाप्]

हृत्सु हृदयेषु ४.३१. **हृदः**=हृदयात् ३.३९.१. हृद इव प्रियान् (मघोनः=धनाढ्यान् जनान्) ५.३१.९. सुहृदः (मानुषासः=मनुष्याः) १.६०.३. हृदयस्य (समीपे स्थितं मन्त्रं=विचारम्) २.३५.२. आत्मनः १८.५८. **हृदा**=अन्तःकरणेन २०.७८. हृदयेन १.१०५.१५· विषयहारकेण (मनसा=शुद्धाऽन्तःकरणेन) १७.९४. हृदयस्थेन विज्ञानेन १.६७.२. हृदि=हृदय में आर्याभि० १.३७, ऋ० १.६.२१.१३. **हृदे**=हृदयस्य चेतनत्वाय, भा०—आत्मशुद्धये ३७.१९. हृत्सुखाय ६.२५. **हृद्भिः**=चित्तैः १.११६.१७. [हृदयप्राति० शस्प्रभृतिषु विभक्तिषु 'पद्दन्नोमास्हृद्०' अ० ६.१.६३ सूत्रेण हृदादेशः । हृत्सु हृदयानि नि० ९.३३. हृदे—हृदयाय नि० १०.३५.]

हृत्स्वसः ये हृत्स्वस्यन्ति बाणान् तान् (मयोभून्=सुवीरान् जनान्) १.८४.१६. [हृदुपपदे असु क्षेपणे (दिवा०) धातोः क्विप् । विभक्तेरलुक्]

हृदयम् अन्तःकरणम् ११.३९. आत्मबलं जीवनहेतुस्थानम् २०.६. **हृदयस्य**=आत्मनो मध्ये ७.३३.९. प्राणात्मा का आर्याभि० २.३९, ३६.२. **हृदयानि**=मानसानि (प्रेमप्रचुराणि कर्माणि) ऋ० भू० ९५, ऋ० ८.८. ४९.४. **हृदये**=भा०—स्वाऽन्ते २१.५३. मध्ये १५.६३. **हृदयेन**=स्वाऽऽत्मना १९.८५. हृदयाऽवयवेन ३९.८. **हृदयेभ्यः**=हृद्वद्वर्त्तमानेभ्यः (किरिकेभ्यः=विक्षेपकेभ्यो जनेभ्यः) १६.४६. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः 'वृह्रोः षुग्दुकौ च' उ० ४.१००. सूत्रेण कयन् दुगागमश्च । हृदयम्—तदेतत् त्र्यक्षरं हृदयमिति हृ इत्येकमक्षरमभिहरन्त्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद, द इत्येकमक्षरं ददत्यस्मै स्वाश्चान्ये च य एवं वेद, यमित्येकमक्षरमेति स्वर्गं लोकं य एवं वेद श० १४.८.४.१. तस्मादिदं गुहेव हृदयम् श० ११.२.६.५. मूर्द्धा हृदये (श्रितः) तै० ३.१०.८.९. आत्मा वै मनो हृदयम् श० ३.८.३.८. एष प्रजापतिर्यद्धृदयम् श० १४.८.४.१. हृदयं वै सम्राट् । परमं ब्रह्म श० १४.६. १०.१८. पुत्रो हि हृदयम् तै० २.२.७.४. असौ वाऽआदित्यो हृदयम् श० ९.१.२.४०. प्राणो वै हृदयमतो ह्ययमूर्ध्वः प्राणः सञ्चरति श० ३.८.३.१५. परिमण्डलं हृदयम् श० ९.१.२.४०. श्लक्ष्णं हृदयम् श० ९.१.२.४०. हृदयं वै स्तोमभागाः श० ८.६.२.१५.]

हृदयाग्रेण हृदयस्य पुरोभागेन ३९.८. [हृदय-अग्रपदयोः समासः]

हृदयाविधः यो हृदयमाविध्यति सः (प्रजापुरुषः) ८.२३. हृदयं विध्यति तस्याऽधर्मस्याऽधार्मिकस्य शत्रोर्वा, प्र०—अत्र 'नहि-वृति-वृषि-व्यधि-रुचि-सहि-तनिषु क्वौ' अ० ६.३.११६. [हृदयोपपदे आङ्पूर्वाद् व्यध ताडने (दिवा०) धातोः कर्त्तरि क्विपि 'नहिवृतिवृषि०' अ० ६.३.११६. सूत्रेण पूर्वस्य दीर्घः । ग्रहिज्यादिसूत्रेण सम्प्रसारणम् । वचनव्यत्ययः]

हृदयौपशेन यो हृदये आ समन्तादुपशेते स हृदयौपशो जीवस्तेन २५.८. [हृदयोपपदे आङ्पूर्वाद् उपपूर्वाच्च शीङ् स्वप्ने (अदा०) धातोर्डः]

हृदय्याय हृदये साधवे (पुरुषाय) १६.४४. [हृदयप्राति० 'तत्र साधु' इत्यर्थे यत् । 'हृदयस्य हृल्लेख०' इति प्राप्तो हृदादेशो 'वा छन्दसि' नियमेन न भवति]

हृदिस्पृक् यो हृद्यन्तःकरणे सुखं स्पृशति सः (स्तोमः=गुणप्रकाशसमूहक्रियः) १.१६.७. **हृदिस्पृशम्**= यो हृद्यात्मनि स्पृशति तम् (विद्याबोधम्) १५.४४. हृदयस्य प्रियम् (मोक्षमार्गम्) ४.१०.१. [हृदोपपदे स्पृश संस्पर्शने (तुदा०) धातोः क्विप् । सप्तम्या अलुक् । 'हृद्द्युभ्यां ङेः' अ० ६.३.६. वा०सूत्रेण]

हृद्यम् हृदयस्य प्रियम् (सूनुम्=अपत्यम्) ५.४२.२. **हृद्यात्**=हृदये भवात् (समुद्रात्=अन्तरिक्षात्) १७.६३. [हृदयप्राति० प्रियार्थे 'हृदयस्य प्रियः' इति यत् । भवार्थे वा यत् । 'हृदयस्य हृल्लेख०' इति हृदादेशः]

हृद्रोगम् यो हृदयस्याऽज्ञानादि-ज्वरादिरोगस्तम् १.५०.११. [हृदय-रोगपदयोः समासे 'वा शोकष्यञ् रोगेषु' अ० ६.३.५१. सूत्रेण हृदादेशः]

हृषितम् जातहर्षम् (आनन्दम्) १.१०३.७. [हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोः क्तः]

हृषीवतः बह्वानन्दयुक्तस्य (यज्ञस्य=व्यवहारस्य) १.१२७.६. **हृषीवन्तः**=बहुहर्षयुक्ताः (वयः=पक्षिणः) २.३१.१. [हृषिप्राति० भूम्न्यर्थे मतुप् । 'छन्दसीरः' इति मतोर्वत्वम् । हृषिः—हृष तुष्टौ (दिवा०) धातोरौणा० इन् किच्च]

हेडः हिड्यते विज्ञायते प्राप्यते यः सः (व्यवहारः) १.२४.१४. हेडन्तेऽनादृता भवन्ति यस्मिन् सः (अनादरव्यवहारः) ४.१.४. अनादरम् १.१७१.१. भा०—असत्कारः २१.३. अनादरकर्त्ता (राजा) १६.६. [हेडृ अनादरे (भ्वा) धातोर्घञ् । हेडः क्रोधनाम निघं० २.१३.]

हेडः धार्मिकाणामनादरकर्त्तॄन धार्मिकाञ्जनान् १.११४.४. [हेडृ अनादरे (भ्वा०) धातोः कर्त्तरि क्विप्]

हेडांसि अनादर-रूपाणि (कर्माणि) ६.४८.१०. [हेडस्=हेडृ अनादरे (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

हेतयः वज्रा वृद्धयो वा १७.७. गतयः १.१६०.४. वज्रवद्वर्त्तमानाः शस्त्राऽस्त्रोन्नतयः १७.१५. प्रबला वज्रगतयः १६.५३. वज्रादिशस्त्रास्त्रयुक्ताः सेनाः १७.११. वज्र इव व्यवस्थाः, भा०—शासनाः ३६.२०. **हेतिम्**= बाणम् २६.५१. सुखवर्द्धकं वज्रम् १.१०३.३. वज्रवद् बाणम् ६.७५.१४. **हेतिः**=वज्रघोषः १५.१६. वृद्धिः १५.१८. वज्रादिव पीडा २.३३.१४. वज्रम् १६.११. वज्र इव घातुकः (पौरुषेयः=पुरुषाणां समूहः) १५.१५. **हेतीनाम्**=विद्युताम् १५.१२. वज्रास्त्रादीनाम् १५.१०. वज्रवद्वर्त्तमानानां किरणानाम् १५.१३. वृद्धानाम् (लोकानाम्) १५.१४. **हेत्यै**=वज्रादिशस्त्रनिर्माणाय ३०.७. वृद्धयै १६.१८. [हेतिः वज्रनाम निघं० २.२०. हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोः, हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोर्वा स्त्रियां क्तिन्प्रत्यये 'ऊतियूतिजूति०' अ० ३.३.९७. सूत्रेण निपात्यते । हेतिर्हन्तेः नि० ६.३. हेतिम्=वधात् नि० ६.१५.]

हेत्वः प्रवृद्धो वेगवान् (सप्तिः=अश्वः) ७.४३.१२. [हि गतौ वृद्धौ च (स्वा०) धातोर्बाहु० औणा० त्वन्]

हेमन्तः हन्त्युष्णतां येन सः (ऋतुः) १३.५८. **हेमन्ताय**=हेमन्तर्त्तौ कार्यसाधनाय २४.११. **हेमन्तेन**= वर्द्धन्ते देहा यस्मिँस्तेन, भा०—सर्वरसपरिपाचकेन (ऋतुना) २१.२७. [हन हिंसागत्योः (अदा०) धातोः 'हन्तेर्मुट् हि च' उ० ३.१२९. सूत्रेण झच् धातोश्च हिरादेशः । हेमन्तः— हिमवान् । हिमं पुनर्हन्तेर्वा हिनोतेर्वा नि० ४.२७. हेमन्तः—(ऋतुः) एतौ (सहश्च सहस्यश्च) एव हैमन्तिकौ (मासौ) स यद्धेमन्त इमाः प्रजाः सहसेव स्वं वशमुपनयते तेनो हैतौ सहश्च सहस्यश्च श० ४.३.१.१८. तस्य (पर्जन्यस्य) सेनजिच्च सुषेणश्च सेनानीग्रामण्याविति हैमन्तिकौ तावृतू श० ८.६.१.२०. हेमन्तो होता तस्माद्धेमनवषट्कृताः पशवः सीदन्ति श० ११.२.७.३२. हेमन्तो मध्यम् (संवत्सरस्य) तै० ३.११.१०.४. तस्य (संवत्सरस्य) वसन्त एव द्वारं हेमन्तो द्वारं तं वा एतं संवत्सरं स्वर्गं लोकं प्रपद्यते श० १.६.१.१९. यद् वृष्टचोद्गृह्णाति तद्धेमन्तस्य (रूपम्) श० २.२.३.८. हेमन्तो निधनम् ष० ३.१. अन्त ऋतूनां हेमन्तः श० १.५.३.१३. हेमन्तो वाऽऋतूनां स्वाहाकारो हेमन्तो हीमाः प्रजाः स्वं वशमुपनयते श० १.५.४.५. स्वाहाकृतिमन्तं यजति हेमन्तमेव हेमन्ते वा इदं सर्वं स्वाहाकृतम् कौ० ३.४.]

हेम्यावान् हेमन्युदके भवा रात्रिर्विद्यते यस्य सः (अग्निः=विद्वज्जनः) ४.२.८. [हेमा उदकनाम निघं० १ १२. ततो भवार्थे यति स्त्रियां टापि च हेम्या । ततो मतुप्]

हेषक्रतवः हेषाः शब्दाः क्रतवः प्रज्ञाः क्रिया वा येषान्ते (मनुष्याः) ३.२६.५. [हेष-क्रतुपदयोः समासः । हेषः—हेषृ अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोर्घञ् । क्रतुः कर्मनाम । निघं० २.१. प्रज्ञानाम निघं० ३.९.]

हेषन्तम् शब्दं कुर्वन्तम् (स्तुत्यं जनम्) ५.८४.२. [हेषृ अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोः शतृ]

हेषस्वतः हेषाः प्रसिद्धाः शब्दा विद्यन्ते यस्य तस्य (विद्वज्जनस्य) ६.३.३. [हेषस्प्राति० मतुप् । हेषस्—हेषृ अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

हैमन्तिकौ हेमन्ते भवौ मार्गशीर्षः पौषश्च मासौ १४.२७. [हेमन्तप्राति० भवार्थे 'हेमन्ताच्च' अ० ४.३.२१. इति ठञ्]

हैमन्ती हेम्नो व्याख्यात्री (पङ्क्तिः=छन्दः) १३.५८. [हेमन्तप्राति० व्याख्यानार्थे 'संधिवेलाद्यृतु०' इत्यण् । ततः स्त्रियां ङीप्]

होतः दातः (जन) २३.६४. हवनकर्त्तः (अग्ने=वह्निरिव विद्वज्जन) ७.१४.२. धातः (विद्वज्जन) ६.१०.१. आदातः (जन) २९.९. साधनोपसाधनानामादातः (विद्वज्जन) ३.२९.१६. सुखप्रदातः (अग्ने=विद्वज्जन) ३.२९.८. दातरादातर्वा (विश्वेश्वर भौतिकाऽग्ने वा) १.१३.१. युक्ताहारविहारकृत् (सद्वैद्य) २८.७. यजमान (जन) २८.१. **होता**=दाता ग्रहीताऽत्ता वा (परमेश्वरः) १०.२४. सत्यस्य ग्रहीता ग्राहयिता वा (ब्रह्म जीवो वा) १२.१४. यज्ञसाधकः (विद्वज्जनः) १.१६२.५. दाताऽनुग्रहीता (विद्वज्जनः) १.६७.१. आदाता धर्त्ता (अग्निः) ३.६.१०. यज्ञकर्त्ता (अग्निः=परमात्मा) ४.६.५. यज्ञाऽनुष्ठाता ४.६.४. सद्गुणग्रहीता (मनुष्यः) १.१४४.१. आकर्षणेनाऽऽदाता (विद्युदिव विद्वज्जनः) १.१४९.४. न्यायस्य दाता (इन्द्रः=राजा) ४.२१.५. सर्वस्य जगतो विज्ञानस्य वा दाता (विद्वज्जनः) १.७७.२. अत्ता खल्वादाता (दूतः=जीवात्मा) १.५८.१. प्रशंसितुं योग्यः (जनः) २१.३२. हुतस्य पदार्थस्य दाता (अग्निः=ईश्वरो भौतिको वा) १.१२.३. ग्राहकः (अग्निः) ३.१५. विद्याया दाताऽऽदाता वा (अध्यापकोऽध्येता वा) २८.८. सुखप्रदाता (वैद्यः) २८.७. दातुमादातुमर्हा (विद्यावाणी) १.१४२.९. सङ्गतक्रियाकर्त्ता (प्रजाजनः) ५.१.५. दाता ग्रहीता द्योतको वा (अग्निः=परमेश्वरो भौतिको वा) १.१.५. जगदुत्पत्ति समय में देने और प्रलय समय में सबको लेने वाला परमात्मा आर्याभि० २.३०, १७.१७. यज्ञसम्पादकः (विष्पतिः=सभाध्यक्षः) १.२६.७. हवनकर्त्ता (जनः) ५.१.२. भा०—यः सद्विद्यादिपदार्थानां दानं करोति सः (पुरुषः) २८.२४. **होतारम्**=विद्यादातारम् (विद्वांसं जनम्) ३.१९.५. सर्वस्य धर्त्तारं दातारं वा (अग्नि=परमात्मानम्) ६.१४.२. विद्याया आदातारम् (विद्यार्थिजनम्) ७.१६.१२. यज्ञनिष्पादकम् (विद्वांसं गृहपतिम्) ८.२०. यानेषु वेगादिगुणदातारम् (अग्निम्) १.१२.१. हवनस्य कर्त्तारम् (विद्वांसम्) १.४४.७. दातारमादातारं वा (अग्नि=परमेश्वरं भौतिकं वा) १.१.१. सर्वजगते सर्वपदार्थानां दातारं, मोक्षसमये प्राप्तमोक्षाणामादातारं ग्रहीतारं, वर्त्तमानप्रलययोः समये सर्वस्य जगतो ग्रहीतारमाधारभूतम् (अग्नि=परमेश्वरम्) वे० भा० न०, १.१.१. समस्त जगत् को सब योग और क्षेम के देने वाले, प्रलय समय में कारण में सब जगत् का होम करने वाले (ईश्वर) को आर्याभि० १.२, ऋ० १.१.१.१. **होतुः**=न्यायादिकर्मकर्त्तुः (आचार्यात्) ४.२३.१. [हु दानादानयोः (जु०) धातोः कर्त्तरि तृजन्तस्य रूपाणि । होतुः—ह्वातव्यस्य नि० ४.२६. होतारम् ह्वातारम् निघं० ७.१५. होता—यद्वा स तत्र यथाभाजनं देवता अमुमावहामुमावहेत्यावहति तदेव होतुर्होतृत्वम् ऐ० १.२. मध्यं वा एतद् यज्ञस्य यद्धोता तै० ३.३.८.१०. आत्मा वै यज्ञस्य होता कौ० ९.६. (ऋ० ६.१६.१०, यजु० ११.३५.) अग्निर्वै होता श० १.४.१.२४. अग्निर्वै देवानां होता ऐ० १.२८. अग्निर्वै होताऽधिदैवं वागध्यात्मम् श० १२.१.१.४. वाग्वै होता (यजु० १३.७.) कौ० १३.९.१७.७. वाग्वै यज्ञस्य होता श० १२.८.२.२३. वाग्घोता षड्ढोतॄणाम् तै० ३.१२.५.२. मनो होता तै० २.१.५.९. प्राणो वै होता ऐ० ६.८. असौ वै होता योऽसौ (सूर्यः) तपति गो० उ० ६.६. पुरुषो वाव होता गो० उ० ६.६. क्षत्रं वै होता ऐ० ६.२१. संवत्सरो वै होता कौ० २९.८. हेमन्तो होता तस्माद्धेमनवषट्कृताः पशवः सीदन्ति श० ११.२.७.३२. होतैव भर्गः गो० पू० ५.१५. होता हि साहस्रः श० ४.५.८.१२. प्राची दिग् होतुः श० १३.५.४.२४. उत्तरत आयतनो वै होता तै० ३.९.५.२.]

होतारा विद्याया दातारौ (विद्वदुपदेशकौ) ३.७.८. आदातारौ (कवी=अध्यापकोपदेशकौ) १.१८८.७. सर्वस्य सुखदातारौ (भिषजा=वैद्यौ) २०.६२. रोगं निवर्त्य सुखस्य प्रदातारौ (चिकित्सकौ) २८.७. धर्त्तारौ वायुपावकौ २८.१७. [होतृप्राति० द्विवचनस्य 'सुपां सुलुक्०' सूत्रेण आकारादेशः । होतृ—हु दानादानयोः (जु०) धातोस्तृच्]

होतृवूर्ये होतारो व्रियन्ते ययोस्ते (विद्युदन्तरिक्षे) ६.७०.४. होतॄणां स्वीकर्त्तव्ये १.३१.३. [होतृवूर्यपदयोः समासः । वूर्यम्=वृ वरणे (क्र्या०) धातोर्बाहु० औणा० क्यप् । 'उदोष्ठ्यपूर्वस्य' अ० ७.१.१०२. सूत्रेण ऋकारस्योकारः । 'हलि चे' ति दीर्घश्च]

होतृषदने होतृणां दातृणां सदने स्थाने वेद्यां वा २.९.१. होतृणां विदुषां स्थाने ११.३६. [होतृ-सदनपदयोः समासः। होतृ इति व्याख्यातम्। सदनम्=षद्लृ विशरणगत्यवसादनेषु (भ्वा०) धातोरधिकरणे ल्युट्। होतृषदनम्—(यजु० ११.३६.) कृष्णाजिनं होतृषदनम् श० ६.४.२.७.]

होतेव यथा दाता (विद्वज्जनः) ५.४३.३. दाता यथा ग्रहीता (सद्म=गृहवद्वर्त्तमानं शरीरम्) १.७३.१. [होता-इवपदयोः समासः]

होत्रम् हूयते दीयते यस्मिँस्तत् (सत्कर्म्म) २.१.२. अदनम्, भा०—पथ्यं भोजनम् २८.१९. जुह्वति यस्मिन् तद्यज्ञकर्म्म २.९. हवनीयं वस्तु १.७६.४. हवनाऽभ्यासम् ३.१७ २. **होत्रात्**=दानात् २.३६.१. आदानात् २.३७.१. हवनात् २.३७.४. **होत्राय**=आदानाय दानाय वा ६.११.१. **होत्राः**=आदातारः, अ०—अनुग्रहीतारः (प्राणादय सप्त) १३.५. दातुं ग्रहीतुं शीलाः, भा०—युक्ताहारविहाराः (विप्राः=मेधाविजनाः) ११.४. ऋत्विजः (सज्जनाः) १७.७९. योगिनो मनुष्याः ऋ० भू० १५६, ११.१. ये जुह्वत्याददति ते (विप्राः=योगिजनाः) ३७.२. **होत्राणि**=हवनसम्बन्धीनि कर्म्माणि ३.४.५. [हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'हुयामाश्रुभसिभ्यस्त्रन्' उ० ४.१६७. सूत्रेण त्रन्। होत्राः—ऋतवो वाव होत्राः गो० उ० ६.६. रश्मयो वाव होत्राः गो०उ० ६.६. अङ्गानि वाव होत्राः गो० उ० ६.६.]

होत्रया दातुमर्हया (चितयन्त्या=बुद्धिमत्या स्त्रिया) १.१२९.७. **होत्रा**=शत्रुबलमादातुं विजयञ्च दातुं योग्या (सेना) १.१२०.१. **होत्राभिः**=आदातुमर्हाभिः क्रियाभिः १.१२२ ९. हवन-क्रियाभिर्वाग्भिर्वा, प्र०—होत्रेति वाङ्नाम निघं० १.११, ७.६०.९. **होत्राम्**=हुतद्रव्यगतिम् (धिषणां=वाचम्) १.२२.१०. **होत्राः**=आददानाः (क्रियाः) ४.४८.१. हवनकर्मानुष्ठात्र्यः, भा०—अग्निहोत्रादिकर्मसु निरताः (पत्न्यः) ६.२५. स्वीकर्त्तुमर्हाः (योगिन्यो विदुष्यः) ७.१५. [हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'हुयामाश्रुभसिस्त्रन्' उ० ४.१६७. सूत्रेण त्रन्। ततः स्त्रियां टाप्। होत्रा वाङ्नाम निघं० १.११. यज्ञनाम निघं० ३.१७.]

होत्रवाहम् यो होत्राणि हुतानि द्रव्याणि वहति तम् (पावकम्) ५.२६.७. [होत्रमिति व्याख्यातम्। तदुपपदे वह प्रापणे (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण्। 'वहश्चे' ति वा ण्विः]

होत्रा जुह्वति येषु यानि तानि (हवनानि), प्र०—अत्र 'शेश्छन्दसि बहुलम्' इति लोपः 'हुयामाश्रु०, उ० ४.१६७. अनेन हुधातोस्त्रन् प्रत्ययः १.१८.८. [होत्रमिति व्याख्यातम्। ततश्शेर्लोपश्छन्दसि]

होत्राविदम् होत्राणि हवनानि वेत्ति तम् (राजानम्) ५.८.३. [होत्रमिति व्याख्यातम्। तदुपपदे विद ज्ञाने (अदा०) धातोः क्विप्। पूर्वस्य संहितायां दीर्घश्छान्दसः]

होत्रियम् दातव्याऽऽदातव्यानामिदम् (अवः=रक्षणादिकम्) १.८३.२. [होत्रमिति व्याख्यातम्। ततः 'तस्येदम्' इत्यर्थे घश्छान्दसः। घस्येयादेशः]

होम आह्वयामः १ ९.९. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लटि उत्तमपुरुषबहुवचने मस्प्रत्यये 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्। 'छन्दस्युभयथा' इत्युभयसंज्ञात्वे गुणः सम्प्रसारणं च भवतः। 'छान्दसो वर्णलोपो वेति' सकारलोपश्च]

होम ग्रहणं दानं वा १.८४.१८. **होमनि**=आदातव्ये व्यवहारे ३.६०.७. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्बाहु० औणा० मनिन्]

होमाय=दानायाऽऽदानाय वा ८.५८. [हु दानादानयोः (जु०) धातोः 'अर्त्तिस्तुसुहुसृ०' उ० १.१४०. सूत्रेण मक्]

होमासः दानाऽऽदानानि, भा०—व्यापारयोग्यानि साधनानि २३.५७. [होम इति व्याख्यातम्। ततो जसोऽसुगागमः]

होषि जुहोसि ६.४४.१४. [हु दानादानयोः (जु०) धातोर्लट्। 'बहुलं छन्दसी' ति शपो लुक्]

ह्रदम् जलाशयम् ३.४५.३. [ह्रदो ह्रादतेः शब्दकर्मणः ह्लादतेर्वा स्याच्छीतीभावकर्मणः नि० १.९]

ह्रदा इव यथा गभीरा जलाशयास्तथा (प्रसन्नात्मनो जनाः) ३.३६.८. [हृदाः-इवपदयोः समासः। हृद इति व्याख्यातम् पूर्वपदे]

ह्रस्वाय बालकाय १६.३०. [ह्रसति शब्दयतीति विग्रहे ह्रस शब्दे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० वन्। ह्रस्वः ह्रस्वनाम। निघं० ३.२.]

ह्रादुनिम् ह्रादतेऽव्यक्तान् शब्दान् करोति यया वृष्ट्या ताम् (विद्युतम्), प्र०—अत्र ह्रादधातोर्बाहुलकादौणादिक उनिः प्रत्ययः १.३२.१३. **ह्रादुनीभ्यः**=अव्यक्तं शब्दं कुर्वतीभ्यः (विद्युद्भ्यः) २२.२६. **ह्रादुनीः**=शब्दानामव्यक्तोच्चारणक्रियाः २५.९. [ह्राद अव्यक्ते शब्दे (भ्वा०) धातोर्बाहु० औणा० उनिः]

ह्लादुनीवृतः ये ह्लादुन्या शब्दकर्त्र्या विद्युता युक्तास्ते (मरुतः=मानवाः) ५.५४ ३. [ह्लादुनिरिति व्याख्यातम्। तदुपपदे वृतु वर्त्तने (भ्वा०) धातोः क्विप्]

ह्रियमाणः यो ह्रियते सः (प्रजापतिः=जीवः) ३९.५. [हृञ् हरणे (भ्वा०) धातोः कर्मणि शानच्। 'रिङ् शयग्०' इति रिङादेशः]

ह्रियै लज्जायै २४.३५. [ह्री लज्जायाम् (जु०) धातोः सम्पदादित्वात् क्विप्]

ह्रुणाति कुटिलं गच्छति १.१६६.१२. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोर्लट्। व्यत्ययेन श्नाप्रत्यये छान्दसं सम्प्रसारणम्। रेफागमश्च]

ह्रुतः कुटिलत्वं गतः (अत्यः=अश्वः) ६.४.५. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः क्तः। सम्प्रसारणं छान्दसम्। रेफागमश्च]

ह्वय निमन्त्रय ५.५३.१६. **ह्वयताम्**=ह्वयति, प्र०-अत्र व्यत्ययेन लडर्थे लोट् २.११. स्पर्द्धतामुपदिशताम् १.१०. **ह्वयन्ते**=प्रशंसेयुः ४.३९.५. स्पर्द्धन्ते १.१०२.६. **ह्वयामहे**=स्पर्द्धामहे १.४७.१०. शब्दयामहे ३.४२. स्वसुखदुःखनिवेदनं कुर्महे १.११४.४. **ह्वयामि**=आह्वयामि ६.४७.११. स्पर्द्धे, स्वीकरोमि प्राप्नोमि, गृह्णामि वा १.३५.१. आश्रयामि ऋ० भू० २२१ **ह्वये**=आह्वये १.१३.१२. उपतापये १.१३.३. स्पर्द्धे १.१३.७. स्वीकरोमि १.१६४.२६. शब्दयेयम् ५.५६.१. उपस्तुयाम् २२.१३. ध्यानयोगेनाऽऽह्वये २२.१०. स्तौमि ३४.२९. **ह्वामहे**=स्पर्धामहे ३.५३. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लोट्। अत्र लट्। ह्वामहे प्रयोगे 'छन्दस्युभयथे' त्यार्धधातुकत्वाच्छपोऽभाव आत्त्वम्। ह्वयते अर्चतिकर्मा नि० ३.१४. ह्वयति अत्तिकर्मा निघं० २.८.]

ह्वयामसि आह्वयामः ६.४१.५. प्रज्ञापयेम ६.२६.१. आह्वयेम ६.३३.४. [ह्वेञ् स्पर्धायां शब्दे च (भ्वा०) धातोर्लट्। 'इदन्तो मसि' इति मस इदन्तत्वम्]

ह्वरः कुटिलाचरणाः (दुर्जनाः) ५.२०.२. ये ह्वरन्ति कुटिलं गच्छन्ति तान् (शत्रून्) ३८.२०. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः अप्]

ह्वरः क्रोधः २.२३.६. [ह्वरः क्रोधनाम निघं० २.१३]

ह्वरांसि अनादररूपाणि ६.४८.१०. कुटिलानि कर्माणि ६.४८.१०. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोरौणा० असुन्]

ह्वारः कुटिलतां कारयन् (विद्वज्जनः) १.१४१.७. ह्वरस्य क्रोधस्याऽयं निवारकः (विद्वज्जनः) १.१८०.३. **ह्वारे**=ह्वरन्ति कुटिलां गतिं गच्छन्ति पदार्था यस्मिँस्तस्मिन् (अग्नौ) २०.२.४. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः 'कर्मण्यण्' इत्यण् निरुपपदादपि छन्दसि सर्वविधीनां विकल्पकत्वात् अन्यत्र घञ्]

ह्वार्यः कुटिलं मार्गं गन्तुं योग्यः (शिशुः=बालकः) ६.२.८. **ह्वार्याणाम्**=कुटिलानाम् (जनानाम्) ५.९.४. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोः 'ऋहलोर्ण्यत्' इति ण्यत्। अन्यत्र—'कृत्यल्युटो बहुलम्' इति कर्त्तरि ण्यत्। ह्वार्याणाम् अश्वनाम निघं० १.४.]

ह्वार्षीत् ह्वरतु ह्वर वा, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् १.२. त्यजतु १.९. **ह्वाः**=त्यजेः, प्र०—अत्र लिङर्थे लुङ् १.९. ह्वरतु, प्र०—अत्र लोडर्थे लुङ् १०.२. [ह्वृ कौटिल्ये (भ्वा०) धातोर्लुङ्। अडभावश्छान्दसः]

नेत्ररामाभ्रपक्षाब्दे पौषमासेऽसिते दले।
पञ्चम्यां मङ्गले वारे कोषः पूर्तिमगादयम्॥

इति हरयाणाप्रान्तीयगुरुकुलझज्जरेऽधीतविद्येन तत्रभवतां विद्वद्वर्यविश्वप्रियाणां शिष्येनाचार्यभगवान्-
देवानामन्तेवासिना, उत्तरप्रदेशान्तर्गतमयराष्ट्रमण्डले 'फजलगढ'-नाम्निग्रामे लब्धजन्मना
श्रीमत्या मनसादेवी-गर्भजेन श्रीलशिवचरणदासतातपादानां सुतेनाचार्यो-
पाधिधारिणा राजवीरशास्त्रिणा निर्मिता कोषान्तर्गतविमर्श-
टीका कोषश्च पूर्तिमगमत्।

95368